Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानक हिन्दी-हिन्दी शब्दकोश

डॉ शिवप्रसाद शास्त्री

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

137476

पुस्तकालय
कुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
या _____ आगत नं० 137476
मारहाज, शिवप्रसाद
मानक हिन्दी-हिन्दी
शब्दकोश

	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

Rs. 550 /-

CC-0. Gurukul

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

9.1
6

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या..... आगत संख्या 137476

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानक हिन्दी–हिन्दी शब्दकोश

137476

संपादक
डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज शास्त्री
एम.ए. पी-एच.डी., डी. लिट्

राधा पब्लिकेशन्स
नई दिल्ली-110002

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्करण 2004
© सुरक्षित
ISBN-81-7487-352-X

R
7.7
/6

राधा पब्लिकेशन्स
4378/4बी, अंसारी रोड, दरिया गंज, नई दिंल्ली-2
फोन : 23261839, 23254306

अशोक प्रकाशन द्वारा राधा पब्लिकेशन के लिए प्रकाशित। साहिल कम्प्यूटर्स द्वारा शब्द संयोजन तथा आर.के. ऑफसेट प्रेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली में मुद्रित।

MANAK HINDI—HINDI SABDKOSH
by Dr. Shiv Prasad Bhardwaj Shastri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R 1.1/7
137476

भूमिका

वाणी के साथ अर्थ की संपृक्ति, वाङ्मय का एक विशिष्ट गुण है। वाणी से निसृत शब्द-सृष्टि की कोई सीमा नहीं है। शब्दशास्त्र को अनंत पार इसी से कहा गया है। शब्द के अर्थों का और भी अधिक विस्तार है। आकाश अनंत है। उसका पार तो गरुड़ महाराज भी नहीं पा सकते फिर भी प्रत्येक पक्षी अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार, आकाश में उड़ता है–'पतन्ति खे ह्यात्मसमं पतत्रिणः'। महर्षि पतंजलि ने अपने व्याकरण महाभाष्य में संकेत किया है– ''बृहस्पतिरिन्द्राय दिव्यं वर्ष सहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्द पारायणं प्रोवाच नान्तं जगाम।'' अर्थात् बृहस्पति ने इंद्र को दिव्य सहस्र वर्षों तक प्रतिपद शब्दों का पारायण कहा फिर भी अंत नहीं हुआ। तात्पर्य यह है कि शब्द की कोई सीमा नहीं है। भर्तृहरि ने 'वाक्यपदीय' ग्रंथ में शब्द को ब्रह्म की तरह आदि अंत रहित और अविनाशी कहा है–

अनादि निधनं ब्रह्म शब्द तत्त्वं यदक्षरम्।
विवर्त्ततेऽर्थ भावेन प्रक्रिया जगतो यतः।।

अर्थात् शब्द तत्त्व तो ब्रह्म की तरह अनादि और कभी नष्ट न होनेवाला है। वह अर्थ के रूप में दिखलाई देता है और उसी से ब्रह्म की जगत् सृष्टि की तरह वाङ्मय संसार की प्रक्रिया होती है।

शब्दशास्त्र की व्यापकता, विशदता और गंभीरता की कठिनाई को अतीत काल से ही अनुभव किया जाता रहा है। शब्दशास्त्र की गंभीरता को सरल बनाने के लिए प्राचीनकाल के ऋषियों ने बहुत से प्रयास किए थे। वैदिक शब्दों से संबंध रखनेवाले निघण्टु और निरुक्त ग्रंथ उसी तरह के ऋषि प्रणीत ग्रंथ हैं। अमरकोष और नाममाला जैसे ग्रंथ उसी श्रेणी के हैं और शब्द सामर्थ्य के अपनी तरह के सरलीकृत निर्वचन हैं।

भाषा बहता नीर है। वह परिवर्तनशील है। भाषा की परिवर्तनशील प्रकृति भाषा-विकास की विधायिका है। भाषा में विकास होता रहता है। वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से मार्ग बनाती भाषा की पयस्विनी हिन्दी और उसकी सहेली भाषाओं के रूप में विपुल विस्तारभरी दृष्टिपथ पर आती है। भाषा शब्दों को समझाने के प्रयत्न के फलस्वरूप अनेक उच्चावच कोश-ग्रंथ देखने में आते हैं। ये शब्दनिधि हैं। रत्नों की निधि, जल की निधि की तरह शब्द-समुद्र हैं, शब्दों के आगार हैं, खजाने हैं और उन्हीं की तरह उपयोगी हैं। संस्कृत के महान महत्त्व के कोश-ग्रंथों में 'वाचस्पत्यम्', 'शब्दकल्पद्रुम' जैसे ग्रंथों की उपादेयता सर्वस्वीकृत सत्य है। हिन्दी भाषा में भी 'विशाल शब्द सागर', 'बृहद् हिन्दी कोश',

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'प्रामाणिक हिन्दी कोश' आदि अनेक कोश-ग्रंथ उसी परंपरा-शृंखला की आगे की कड़ी हैं।

काल का पहिया घूमकर नए परिवर्तित संसार की परिधि पर चल रहा है। आज के ज्ञान-विज्ञान के विविध आयामी अध्ययनों-आविष्कारों के युग में शब्दों के प्रयोगों की नित नवीनता का विस्तार हो रहा है। विज्ञान, राजनीति, तकनीकी शिक्षा, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान आदि अनेक शास्त्रों की अपनी-अपनी शब्दावली का उद्‌भव और विकास देखने में आता है। उनका विपुल शब्द-भंडार है। अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं की शब्दावली सामान्य व्यवहार में बहुत अधिक प्रयुक्त होने लगी है। ये सब भाषाएँ हिन्दी भाषा-प्रयोग में किसी सीमा तक रच-पच गई हैं। ऐसे समय में हिन्दी भाषा का एक ऐसा शब्दकोश एक आवश्यकता बन गई है जो अपनी भाषागत अस्मिता को बनाए रखकर उपर्युक्त बहुशः प्रयुक्त भाषा-शब्दों की सीमाओं का भी स्पर्श करता चले। प्रस्तुत शब्दकोश उसी तरह का एक प्रयास है। डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज शास्त्री ने **अशोक मानक हिन्दी शब्दकोश** का परिश्रमपूर्वक संपादन किया है। इस कोश के अंत में लोकोक्तियाँ तथा मुहावरे, अंग्रेज़ी तथा हिन्दी की कहावतें, एक शब्द के अनेक. अर्थ, प्रामाणिक शासन शब्दावली—जनतंत्र की केंद्रीय तथा प्रादेशिक शासन-व्यवस्था में प्रयुक्त शब्दों की हिन्दी सूची, भारतीय गणतंत्र के संविधान में प्रयुक्त हिन्दी के पारिभाषिक शब्दों और पदों के अंग्रेज़ी समानार्थक शब्द व पद, शासन व्यवस्था एवं समाज में प्रयुक्त आँग्ल पारिभाषिक शब्दों के पर्यायवाची हिन्दी शब्द इत्यादि का समावेश किया गया है। संपादक और प्रकाशक दोनों बधाई के पात्र हैं। आशा है पाठकवर्ग इससे यथोचित लाभ उठाएगा। यद्यपि शब्द और अर्थ आदि के प्रस्तुतीकरण में पर्याप्त सावधानी रखी गई है, फिर भी जाने-अनजाने में जो त्रुटियाँ रह गई हों उन्हें सुधी पाठक सुधारकर पढ़ लेने की कृपा करें। मेरी मंगलमय प्रभु से प्रार्थना है कि वह संपादक और प्रकाशक को यश और श्री प्रदान करे।

सन् 2001

डॉ. श्रीनिवास शर्मा
एम.ए. (हिन्दी, संस्कृत)
पी-एच.डी.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

भूमिका	...	...	...	(iii-iv)
संकेताक्षर	...	...	...	(viii)
अ	...	...	...	9-90
आ	...	...	...	91-113
इ	...	...	...	113-117
ई	...	...	...	117-118
उ	...	...	...	118-145
ऊ	...	...	...	145-147
ऋ	...	...	...	147-148
ए	...	...	...	148-151
ऐ	...	...	...	151-153
ओ	...	...	...	153-155
औ	...	...	...	155-157
क	...	...	...	157-227
ख	...	...	...	227-244
ग	...	...	...	244-281
घ	...	...	...	281-292
ङ	...	...	...	293-293
च	...	...	...	293-330
छ	...	...	...	331-343
ज	...	...	...	343-375
झ	...	...	...	375-385
ञ	...	...	...	385-385
ट	...	...	...	386-396
ठ	...	...	...	397-403
ड	...	...	...	403-411
ढ	...	...	...	411-415
ण	...	...	...	415-415
त	...	...	...	415-454
थ	...	...	...	454-457
द	...	...	...	457-503
ध	...	...	...	503-518
न	...	...	...	519-573

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प	...	...	...	573-676
फ	...	...	...	676-688
ब	...	...	...	688-747
भ	...	...	...	747-772
म	...	...	...	773-837
य	...	...	...	837-845
र	...	...	...	845-871
ल	...	...	...	871-895
व	...	...	...	895-945
श	...	...	...	945-971
ष	...	...	...	971-972
स	...	...	...	973-1090
ह	...	...	...	1090-1115

लोकोक्तियाँ तथा मुहावरे
Hindi Proverbs & Phrases 1116-1140

अंग्रेज़ी तथा हिन्दी की कहावतें
English Proverbs with their Hindi Meanings ... 1141-1152

एक शब्द के अनेक अर्थ
Different Meanings of the Word ... 1153-1154

भिन्नाकार सूक्ष्म भिन्नार्थक
With Minute Difference in Meanings ... 1155-1156

साहित्यिक पारिभाषिक शब्दावली
Literary Technical Vocabulary ... 1157-1171

प्रामाणिक शासन शब्दावली
जनतंत्र की केंद्रीय तथा प्रादेशिक शासन-व्यवस्था में प्रयुक्त शब्दों की हिन्दी सूची
(Authenticated Administrative Vocabulary)
अ से स तक 1172-1207

भारतीय गणतंत्र के संविधान में प्रयुक्त हिन्दी के पारिभाषिक शब्दों और पदों के अंग्रेजी समानार्थक शब्द व पद
(Hindi Vocabulary used in Indian Constitution and Synonyms in English)
अ से क्ष तक 1208-1221

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शासन व्यवस्था एवं समाज में प्रयुक्त आँग्ल पारिभाषिक शब्दों के पर्यायवाची हिन्दी शब्द
(Authenticated Administrative & Social Phraseology)
A to Z 1222-1261

भारतीय जड़ी-बूटियों के अंग्रेजी, लैटिन व आयुर्वेदिक नामों की तालिका
Some Indian and European Herbs ... 1262-1288

चिन्ह एवं प्रतीक (Signs and Symbols) ... 1289-1291

भारतीय भोजन का प्रोटीन मूल्य 1292-1292

संतुलित आहार का संघटन 1292-1292

List of Corresponding Roman and Hindu-Arabic Numerals 1293-1293

चिकित्सा विज्ञान (आयुर्विज्ञान) की प्रमुख 1294-1294

तापक्रम और नब्ज संबंधी तालिका 1294-1294

List of Important Geographical Names ... 1295-1295

संक्षिप्त लेख 1296-1296

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकेताक्षर

अं.	अंग्रेजी भाषा
अ.	• अकर्मक क्रिया
	• अरबी भाषा
अनु.	अनुकरण
अप.	अपभ्रंश
अल्पा.	अल्पार्थक रूप
अव.	अवधी भाषा
अव्य.	अव्यय
इब.	इबरानी
उड़ि.	उड़िया
उप.	उपसर्ग
कहा.	कहावत
कोंक.	कोंकणी भाषा
क्रि. प्र.	क्रिया प्रयोग
क्रि. वि.	क्रिया विशेषण
क्व.	क्वचित् अर्थात कहीं-कहीं प्रयुक्त
गुज.	गुजराती भाषा
जर.	जर्मन भाषा
जा.	जापानी भाषा
ता.	तातारी भाषा
तु.	तुरकी भाषा
देश.	देशज
ना. धा.	नाम धातु
निपा.	निपात
पं.	पंजाबी
पद.	पदबंध
परि.	परिशिष्ट
पा.	पाली भाषा
पुं.	पुलिंग
पु. हिं.	पुरानी हिन्दी
पुर्त.	पुर्तगाली भाषा
पू.	पूर्वी हिन्दी
पूर्व.	पूर्वकालिक क्रिया
प्रत्य.	प्रत्यय
प्रा.	प्राकृत भाषा
प्रे., प्रेर.	प्रेरणार्थक क्रिया
फा.	फारसी भाषा
बँग.	बँगला भाषा
बहु.	बहुवचन
भाव.	भाववाचक संज्ञा
भूत. कृ.	भूतकालिक कृदंत
मि.	मिलाओ
मुसल.	मुसलमानों में प्रयुक्त
मुहा.	मुहावरा
यू.	यूनानी भाषा
यौ.	यौगिक (दो या दो से अधिक शब्दों के पद)
यो., योज.	योजक
राज.	राजस्थानी
ले.	लेटिन
व. वि.	वर्ण-विपर्यय
वि.	विश्लेषण
विप.	विपर्याय
विभ.	विभक्ति
विरु.	विरुद्धार्थक
विस्मयादि.	विस्मयादिक
व्या.	व्याकरण
व्रज.	व्रज भाषा
सं.	संस्कृत
संक्षि.	संक्षिप्त
स.	सकर्मक क्रिया
सम.	समस्त पद
सर्व.	सर्वनाम
सा.	साहित्य
स्त्री.	स्त्रीलिंग
स्पे.	स्पेनिश भाषा
हिं.	हिन्दी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ॐ

अशोक
मानक हिन्दी शब्दकोश

अ

अ देवनागरी वर्णमाला का पहला अक्षर स्वर वर्ण, इसका उच्चारण कंठ से होता है, व्यंजनों का उच्चारण करते समय उनके अंत में इसका उच्चारण भी आपसे आप हो जाता है। जब किसी व्यंजन का उच्चारण इसके बिना होता है, तब वह हल् कहलाता है, बोलते समय किसी शब्द के अंत में रहने पर भी इसका उच्चारण प्रतीत नहीं होता। जैसे–काम (काम्) राम (राम्) पर साथ में विभक्ति या सर्ग लगने पर स्पष्ट हो जाता है। जैसे काम से, अर्जुन ने।

अ *उप.* {सं.} व्यंजनों से आरम्भ होनेवाली तत्सम संज्ञाओं और विशेषणों के पहले जब यह उपसर्ग के रूप में लगता है, तब प्रायः उनका अर्थ या तो उलट देता है या बहुत-कुछ बदल देता है, जैसे धर्म और अधर्म, कर्म और अकर्म, खण्ड और अखण्ड, विचार और अविचार आदि। जब यह स्वर से आरम्भ होनेवाले संस्कृत शब्दों के पहले लगता है, तब उसका रूप 'अन्' हो जाता है, जैसे अंत और अनन्त, आदि और अनादि, एक और अनेक आदि।

अ[1] *उप.* {हिं.} कभी शब्द के पहले लगने पर अभाव का बोध कराता है; जैसे असत्य, अभाव, अज्ञान।

अ[2] {सं.} वासुदेव।

अंक पाप, अपराध, वर्ण बीच मध्य।

मुहा. अंक में लेना = गोद में उठाना; *अंक में भरना* = छाती से लगाना।

अंक *पु.* {सं.} चिह्न, छाप; लेख, लिखावट; संख्या का सूचक चिह्न, जैसे 1, 2, 3, 4, आदि। (फिगर); भाग्य; धब्बा; शरीर, देह; गोद, क्रोड़।

मुहा. अंक देना, भरना या लगाना = आलिंगन करना, गले लगना; काजल की बिन्दी जो बच्चों को नजर से बचाने के लिए लगाते हैं; नाटक का खण्ड या भाग जिसमें कभी-कभी कई दृश्य भी होते हैं; पत्र-पत्रिका आदि का कोई प्रकाशन जो अपने नियत समय पर एक बार में हुआ हो।

अंकक *पुं.* {सं.} रबर की मुहर; निशान लगानेवाला, गिननेवाला।

अंकगणित *पुं.* {सं.} वह विद्या जिसमें संख्याओं के जोड़ने-घटाने, गुणा-भाग आदि की विधि बतलाई जाती है, हिसाब (एरिथमेटिक)।

अंकगत *वि.* {सं.} गोद में लिया हुआ; बीच में स्थित।

अंकति {सं.} ब्रह्मा, पवन, अग्नि, जाँचना।

अंकन *पुं.* {सं.} (*वि.* अंकित) अंक या चिह्न बनाना; कलम या कूँची से चित्र बनाना; वर्णन या चित्रण करना।

अँकना *अ.* {सं. अंकन} लिखा, आँका या कूता जाना।

अंकनीय *वि.* {सं.} अंकन करने योग्य; उल्लेखनीय; मुद्रण के योग्य।

अंकयोग *पुं.* {सं.} प्राप्त या कुल अंकों का योग (एग्रिगेट मार्क्स)।

अँकरा *पुं.* अँकटा।

अँकवार *स्त्री.* {सं. अंकपालिका, प्रा. अंकवारिया} छाती, हृदय; गोद, क्रोड़।

मुहा. अँकवार देना या भरना = गले लगाना।

अँकवारना *सं.* {हिं. अँकवार} गले लगाना, आलिंगन करना। गोद में भरना।

अंकविद्या *स्त्री.* {सं.} अंकगणित। गणित शास्त्र।

अंकशायी (यिन्) *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अंकशायिनी} गोद में खेलनेवाला, मध्य में रहनेवाला (भुजंगांकशायी)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अँकाई *स्त्री.* {हिं. आँकना} आँकने की क्रिया या भाव, कूत, अटकल; आँकने का पारिश्रमिक या मजदूरी। जाँच, पहचानना।

अंकित *वि.* {सं.} जिसपर अंक या चिह्न बना हो; जिसका वर्णन हुआ हो, लिखा हुआ, लिखित; चित्र के रूप में बना हुआ, चित्रित; जिसपर मोहर लगी हो; *क्रि. प्र.* करना, -होना; अभिनीत, दागा गया, चर्चित।

अंकित मूल्य *पुं.* {सं.} किसी वस्तु का वह मूल्य जो उसपर अंकित रहता है (फेस वैल्यू)।

अंकिनी {*स्त्री.*} चिह्नों या लक्षणोंवाली, ऐसी वस्तु जिसपर अंक बने हों।

अंकी {सं.} छोटा नगाड़ा, तबला या मृदंग।

अंकीय *वि.* {सं.} अंक-सम्बन्धी।

अँकुड़ा *पुं.* {सं. अंकुटक} {*स्त्री.* अल्पा. अँकुड़ी} कोई चीज फँसाने या टाँगने आदि के लिए बिना हुआ लोहे का टेढ़ा काँटा, जैसे किवाड़ का अँकुड़ा।

अँकुड़ी *स्त्री.* हुक, हल का फाले वाला भाग, कील पहिये में लगनेवाली।

अंकुर *पुं.* {सं.} {*वि.* अंकुरित} बोए हुए बीज में से निकला हुआ पहला छोटा कोमल डंठल जिसमें नए पत्ते निकलते हैं; किसी वस्तु का वह आरम्भिक रूप जो आगे चलकर बहुत बढ़ या फैल सकता हो; *क्रि. प्र.* -निकलना, -फूटना।

अंकुरण *पुं.* {सं.} बीज आदि का जमीन में पड़कर अंकुरित होना (जरमिनेशन); उत्पन्न या प्रकट होना।

अंकुरणीय *वि.* {सं.} अंकुरित होने योग्य।

अँकुरना *अ.* {सं. अंकुर + हिं. ना (प्रत्य.)} अंकुर निकलना या फूटना, अंकुरित होना।

अंकुरित *वि.* {सं.} अंकुर के रूप में निकला या आया हुआ, जिसने अंकुर का रूप धारण किया हो; *क्रि. प्र.* -होना।

अंकुरित यौवना *स्त्री.* {सं.} वह लड़की जिसमें यौवन के लक्षण आ रहे हों; किशोरी।

अंकुरी *स्त्री.* {सं.} भिगोने से अंकुरित अन्न।

अंकुश *पुं.* {सं.} वह छोटा दुमुँहाँ भाला जिससे हाथी चलाया और वश में रखा जाता है; वह वस्तु या कार्य जो किसी को रोकने या दबाव में रखने के लिए हो, दबाव, रोक प्राचीन काल में प्रयुक्त एक शस्त्र रोकथाम (लाक्ष.) एक मुद्रा उँगलियों से बनी आकृति।

अंकुशकृमि *पुं.* {सं.} आँतों में पैदा होनेवाला एक प्रकार का कृमि (हुक वर्म)।

अंकुशग्रह {सं.} महावत।

अंकुशा {सं. *स्त्री.*} एक जैन देवी।

अँकोर *पुं.* अँकवार; भेंट, नजर; रिश्वत, घूस।

अँखुआ *पुं.* {क्रि. अँखुआना} अंकुर।

अंग *पुं.* {सं.} शरीर, देह, बदन; शरीर का कोई भाग, जैसे हाथ, पैर, मुँह, नाक आदि; भाग, अंश; पक्ष, पार्श्व, जैसे इस प्रश्न के कई अंग हैं; सहायक; एक देश।

अंगचारी (रिन्) *पुं.* {सं.} सखा, साथी।

अंगच्छेद *पुं.* {सं.} शरीर का कोई अंग या अवयव काटकर निकाल या अलग कर देना (एम्प्यूटेशन)।

अंगज *वि.* {सं.} जो अंग से उत्पन्न हुआ हो, जैसे पसीना, रोआँ या बाल; मल, शारीरिक चेष्टा, सात्विक अनुभाव; *पुं.* पुत्र, बेटा।

अंगजा, अंगजाई {*स्त्री.*} बेटी।

अँगड़ाई *स्त्री.* {हिं. अँगड़ाना} शरीर की वह क्रिया जिसमें धड़ और बाँहें कुछ समय के लिए तनती या ऐंठती हैं (ऐसा प्रायः आलस्य के कारण, सोकर उठने पर या ज्वर आने से पहले होता है); *क्रि. प्र.* -लेना।

अँगड़ाना *अ.* {सं. अंग} अँगड़ाई लेना।

अंगत्राण कवच (Armour) जिरह-बख़्तर। अंगों की रक्षा।

अंगद *पुं.* {सं.} बाँह पर पहनने का बाजूबन्द; राम की सेना का एक वानर जो बालि का पुत्र था।

अंगदान {भा. सं. *पुं.*} आत्म-समर्पण, सैनिक या अपराधी द्वारा, स्त्री द्वारा आत्म-समर्पण।

अँगनाई *स्त्री.* आँगन।

अंगभंग *पुं.* {सं.} अंग का भंग या खंडित होना; अंगभंगी।

अंगभंगी *स्त्री.* {सं. अंगभंगिमा} मुँह, हाथ, आँख आदि अंग हिला-डुलाकर प्रकट की जानेवाली चेष्टा या भाव; स्त्रियों के हाव-भाव (पुरुषों को मोहित करनेवाला)।

अंगरक्षक *पुं.* {सं.} वह सैनिक जो राजाओं या बड़े शासकों के साथ, उनकी शारीरिक रक्षा के लिए रहता है (बॉडीगार्ड)।

अँगरखा *पुं.* {हिं. अंग + रखना = रक्षा करना} (कोट की तरह का) एक प्रकार का लम्बा पहनावा, अंगा, चपकन।

अंगराग *पुं.* {सं.} शरीर पर मलने का (सुगन्धित) उबटन बटना; शरीर की सजावट; शरीर की सजावट की सामग्री।

अंगराज {*वि.*} अंगदेश (भागलपुर के समीप का भाग) का राजा कर्ण या लोमपाद।

अँगरेज़ *पुं.* = अंग्रेज़।

अँगरेज़ियत *स्त्री.* = अंग्रेज़ियत।

अँगरेज़ी *स्त्री.* = अंग्रेज़ी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अँगवना *स.* {सं. अंग} गले लगाना, आलिंगन करना; ग्रहण या स्वीकृत करना, लेना या मानना; सहना।

अंगविकार *पुं.* {सं.} शरीर के किसी अंग में होनेवाला विकार या खराबी; हाथ-पैर का मुड़ जाना।

अंगविक्षेप *पुं.* {सं.} अंगों को इस प्रकार हिलाना-डुलाना कि उनसे संकेत या सौंदर्य झलकता हो।

अंगागीभाव *पुं.* {सं.} वह भाव या संबंध जो अंग और उसके मूल शरीर (अंगी) में होता है, किसी बड़ी वस्तु का उसके अंगों के साथ रहनेवाला संबंध; प्रधान वस्तु के साथ उसके अंग का संबंध, लबादा जो पूरे शरीर को ढक लेता है।

अंगा *पुं.* {सं. अंगक} अँगरखा या चपकन नाम का पहनावा।

अंगारपर्ण *पुं.* {सं.} गंधर्वों के राजा का नाम।

अंगार *पुं.* {सं.} आग का अंगारा। *विशे.* अंगारा।

अंगारक *पुं.* {सं.} एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण अधात्वीय तत्व जो जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों और खनिज पदार्थों में पाया जाता है, (कोयला, पेट्रोल आदि इसी के बल से जलते हैं) (कार्बन); अंगारों पर सेंकी हुई बाटी; मंगल ग्रह; इस नाम का एक रुद्र।

अंगारकण्डिका-दियासलाई

अंगारपेटी-दियासलाई या माचिस की डिबिया।

अंगारा *पुं.* {सं. अंगारक} जलता हुआ कोयला या जलती हुई लकड़ी का टुकड़ा।

मुहा. अंगारों पर लेटना = बहुत अधिक क्रोध या ईर्ष्या से जलना; *अंगारे बरसना* = बहुत गरमी पड़ना; *अंगारे पकड़ना* = अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना; *अंगारे उगलना* = जली-कटी बातें कहना; अंगारे बरसना = कड़ी गर्मी।

अंगार मती-कर्ण की स्त्री का नाम।

अंगाराश्म *पुं.* {सं.} कड़े पत्थर का कोयला (एनथ्रासाइट)।

अँगिया *स्त्री.* {सं. अँगिका} स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की छोटी कुरती, चोली, कंचुकी।

अंगिरस, अंगिरस् *पुं.* {सं.} एक प्राचीन ऋषि जो प्रजापतियों में माने गए हैं; बृहस्पति।

अंगी *पुं.* {सं. अंगिन} वह जिसने अंग या शरीर धारण किया हो, शरीरी; अंगवाला, अन्य वस्तु जिसका हिस्सा समझी जाय; *वि.* मुख्य, प्रधान।

अंगीकरण, अंगीकार *पुं.* {सं.} {*वि.* अंगीकृत} अपने अंग पर या अपने ऊपर लेने की क्रिया या भाव, स्वीकार, ग्रहण, अपना बना लेना।

अंगीकृत *वि.* {सं.} जिसे अंगीकार किया गया हो, जो अपने ऊपर लिया गया हो, स्वीकृत, गृहीत; दूसरे का हिस्सा बना हुआ।

अँगीठा *पुं.* {सं. अग्निष्ठ} बड़ी अँगीठी। *विशे.* अँगीठी।

अंगीठी *स्त्री.* {हिं. अग्निष्ठिका} लोहे, मिट्टी आदि का वह प्रसिद्ध पात्र जिसमें आग सुलगाते हैं।

अंगीभूत *वि.* {सं.} शरीर में समाहित किया हुआ; दूसरे का भाग बनी वस्तु या स्थान।

अंगुल *पुं.* {सं.} उँगली; एक नाप जो उँगली की चौड़ाई के बराबर होती है।

अंगुलि *स्त्री.* {सं.} उँगली।

अंगुलिछाप *स्त्री.* उँगलियों के अगले भाग की छाप जो व्यक्तियों की पहचान के लिए ली जाती है। (फिंगर प्रिंट)।

अंगुली *स्त्री.* उँगली।

अंगुश्ताना *पुं.* {फा.} (सिलाई के समय) उँगली पर पहनी जानेवाली पीतल या लोहे की टोपी।

अंगुष्ठ *पुं.* {सं.} अँगूठा।

अंगुष्ठिका *स्त्री.* {सं.} अँगूठी।

अँगूठा *पुं.* {सं. अंगुष्ठ} हाथ या पैर की सबसे मोटी उँगली।

मुहा. अँगूठा चूमना = परम अधीन या वशवर्ती होना; *अँगूठा दिखाना* = (किसी को कोई चीज) देने से इन्कार कर देना; *अँगूठा टेक* = सर्वथा अनपढ़।

अंगूर *पुं.* {फा.} {*वि.* अंगूरी} एक प्रसिद्ध मीठा फल जो लताओं में लगता है, दाख, द्राक्षा।

मुहा. अंगूर खट्टे होना = वस्तु के प्राप्त न होने पर उसमें दोष निकालना।

अंगूर *पुं.* {सं. अंकुर} घाव भरने के समय उसमें दिखाई पड़नेवाले मांस के छोटे लाल दाने।

अंगूरोत्पादन *पुं.* {फा. सं.} अंगूर की खेती।

अँगेट *स्त्री.* {सं. अंग} अंग या शरीर की शोभा, दीप्ति या चमक।

अँगोछना *पुं.* {हिं अँगोछा} गीले अँगोछे से शरीर पोंछना।

अँगोछा *पुं.* {हिं. अंग + पोंछना} {*क्रि.* अँगोछना} गीला शरीर पोंछने का छोटा कपड़ा।

अँगोजना *स.* अँगेजना।

अंगोरा *पुं.* मच्छर।

अँगोरी आग की चिनगारी।

अँगोरिया हलवाहा जो मजदूरी पर खेती करता है।

अंचल *पुं.* {सं.} साड़ी या चादर का सिरा, पल्ला; सीमा के पास का प्रदेश; किनारा, तट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंचित युक्त, शोभित, मुड़ा हुआ, कुटिल, सजाया गया; *वि. स्त्री.* कुटिल भवोंवाली सुंदरी।

अंजन *पुं.* {सं.} आँखों में लगाने का सुरमा या काजल।

अंजनक *पुं.* {सं.} रसांजन, सुरमा।

अंजनसार *वि.* {सं. अंजन + हिं. सारना = लगाना} (आँखें) जिनमें अंजन, काजल या सुरमा लगा हो।

अंजनहारी *स्त्री.* {सं. अंजनकारिका} आँख पर की छोटी फुंसी, गहेरी. बिलनी।

अंजना *स्त्री.* {सं.} हनुमान जी की माता का नाम।

अंजनानंदन *पुं.* {सं.} हनुमान।

अंजर-पंजर *पुं.* {प्रायः बहुवचन} {सं. पंजर का अनु. अंजर + सं पंजर} शरीर या ढाँचे आदि के अंग और जोड़।

अंजलि *स्त्री.* {सं.} दोनों हथेलियों को मिलाने से बना हुआ गड्ढा जिसमें भरकर कुछ दिया या लिया जाता है।

अंजलिबद्ध *क्रि. वि.* {सं.} हाथ जोड़कर, अंजलि बाँधे, प्रणाम की मुद्रा।

अंजीर *पुं.* {फा.} गूलर की तरह का एक प्रसिद्ध, पेड़ और उसका फल।

अँजोरना *स.* {हिं अँजोरा} (दीया) जलाना; (दीया जलाकर) घर में प्रकाश करना।

अंटी *स्त्री.* {सं. अष्टि} दो उँगलियों के बीच की जगह; कमर के पास की धोती की लपेट; कपड़े के पल्ले की गाँठ, जिसमें रुपए-पैसे बँधे हों।

अंड *पुं.* {सं.} अंडा; अंडकोश; ब्रह्मांड, विश्व।

अंडकोश *पुं.* {सं.} दूध पीकर पलनेवाले जीवों के नरों या पुरुषों की इंद्रिय के नीचे की थैली जिसमें दो गुठलियाँ होती हैं; ब्रह्मांड, विश्व।

अंडज *वि.* {सं.} अंडे में से जन्म लेनेवाला, अंडे से उत्पन्न। *पुं.* मछली, चिड़िया, साँप, आदि वे जीव जो अंडे देते और अंडे से उत्पन्न होते हैं।

अंडबंड *वि.* {अनु.} व्यर्थ का, बेसिर-पैर का; भद्दा और अनुचित, खराब; *पुं.* व्यर्थ की, बे सिर-पैर की या भद्दी और बुरी बात।

अंडा *पुं.* {सं. अंड} वह गोल पिंड जिसमें से मछलियाँ, चिड़ियाँ आदि जन्म लेती हैं।

मुहा. अंडा चटखना = अंडे फूट जाना; शरीर को चोट लगना (*व्यं.*); *अंडे सेना* = घर में बेकार बैठना।

अंडाकार *वि.* {सं.} अंड के आकार का, लम्बोतरा, गोल।

अंडावरण *पुं.* {सं.} अंडे का आवरण या खोल।

अंडाशय *पुं.* {सं.} अंडाणु उत्पन्न करनेवाला शरीर का अंग।

अंडी *स्त्री.* {सं. एरंड} रेंड़ का वृक्ष या बीज, रेंड़ी; एक प्रकार का रेशम।

अंतः *पुं.* अन्दर, भीतरी, मन; यह उपसर्ग के रूप में अनेक शब्दों के पहले लगता है; आंतरिक इन्द्रिय, आँख आदि बाहरी इंद्रियाँ होती हैं। मन भीतरी इंद्रिय कहलाता है।

अंतःकथा *स्त्री.* एक कथा या निबंध के बीच में आनेवाली कहानी।

अंतःकलह *पुं.* भीतरी झगड़ा; किसी परिवार या संस्था के सदस्यों के बीच झगड़ा।

अंतःकरण *पुं.* {सं.} मनुष्य के अंदर की वह शक्ति जिससे वह संकल्प-विकल्प और अच्छे-बुरे की पहचान, निश्चय, स्मरण आदि करता है। (हमारे यहाँ इसके चार विभाग—मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार किए गए हैं) (कंशेन्स)।

अंतःकालीन *वि.* {सं.} दो घटनाओं या कालों के बीच का (फलतः अस्थायी)।

अंतःपुर *पुं.* {सं.} घर या महल का वह भीतरी भाग, जिसमें स्त्रियाँ रहती हैं।

अन्तःशुद्धि *स्त्री.* {सं.} हृदय की शुद्धि; मन का स्वच्छ होना; साँस लेना।

अंतःसलिला *स्त्री.* {सं.} वह नदी जिसकी धारा अंदर ही अंदर बहती हो और ऊपर से दिखाई न देती हो; सरस्वती नदी; ऊपर से बंद नाली।

अंत[1] *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ कोई वस्तु समाप्त होती हो, सिरा, छोर; समाप्ति, आखीर; परिणाम, फल; नाश; मृत्यु से सारांश निष्कर्ष।

अंत[2] *पुं.* {सं. अंतस्} अंतःकरण, हृदय; भेद, रहस्य; थाह; वास्तविक रूप; *पुं.* आँत; *वि.* अंतकाल।

अंतक *वि.* {सं.} अंत या नाश करनेवाला; *पुं.* मृत्यु, मौत; यमराज, काल।

अंतरंग *वि.* {सं.} बहुत पास या निकट का, आत्मीय, जैसे अंतरंग संबंध; बिल्कुल अंदर का, भीतरी, जैसे अंतरंग सभा; गहरा, विश्वस्त।

अंतरंग सभा *स्त्री.* {सं.} किसी संस्था की व्यवस्था करनेवाली समिति, प्रबंध-समिति; प्रधान अधिकारियों की कमेटी।

अंतर्[1] *उप.* {सं.} एक उपसर्ग जो कुछ शब्दों के पहले लगकर से अर्थ देता है—किसी के अंदर का, अंतर्गत या किसी वर्ग में छोटा, जैसे अंतवर्ग, अंतर्दशा; एक ही प्रकार के पर दो भिन्न वर्गों आदि से संबंध रखनेवाला, जैसे अंतर्जातीय विवाह; भीतरी भाग से संबंध रखनेवाला, जैसे अंतर्देशीय।

अंतर्[2] *उप.* {अं. इंटर} भीतरी संबंध का सूचक, इकाइयों, पक्षों, व्यक्तियों आदि के बीच या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारस्परिक रूप से होनेवाला, जैसे अंतर्राष्ट्रीय (इंटरनेशनल), अंतरर्विभागीय (इंटरडिपार्टमेंटल)।

अंतर[3] पुं. {सं.} दो वस्तुओं के बीच का भेद या दूरी, भेद, फर्क (डिफरेंस); परिवर्तन; दो बातों के बीच का समय; ओट, आड़, परदा; *क्रि. वि.* दूर, अलग, जुदा।

अंतर[4] पुं. {सं. अंतस्} अंत:करण, हृदय, मन; *क्रि. वि.* अंदर, भीतर।

अंतर[5] *क्रि. वि.* समीप, फासला।

अंतर[6] पुं. (सं.) आत्मा, अवकाश।

अंतर-अयन पु. {सं.} किसी तीर्थ के चारों ओर की जानेवाली परिक्रमा।

अंतरण पुं. {सं. अन्तर} {*वि.* अंतरित} किसी वस्तु का बिककर या और किसी प्रकार दूसरे स्वामी के हाथ जाना, बिकना; अधिकारी या कार्यकर्ता का एक स्थान या विभाग से दूसरे स्थान पर या विभाग में भेजा जाना, बदली; धन आदि का एक खाते से दूसरे खाते में जाना।

अंतरण-पत्र पुं. {सं.} वह पत्र जिसके अनुसार कोई व्यक्ति अपनी संपत्ति, सत्ता आदि दूसरे के हाथ सौंपता है (ट्रांसफरेंस डीड)।

अंतरतम पुं. {सं. अंतस् + तम) किसी वस्तु का सबसे भीतरी भाग; हृदय का भीतरी भाग; अंत:करण।

अंतरदिशा पुं {सं.} दो दिशाओं के बीच की दिशा, कोण।

अंतरपट पुं. {सं.} आड़ करने का कपड़ा, परदा, (विवाह के समय की एक विशेष रीति या रसम; अंत:पट।

अंतरा पुं. {सं. अंतर} किसी गीत के पहले पद या टेक को छोड़कर अन्य पद या चरण (पहला पद या चरण स्थायी कहलाता है) बिना; बीच।

अंतरात्मा पुं {सं.} जीवात्मा; जीव, प्राणी; अंत:करण, मन।

अंतराल पुं. {सं.} दो बिन्दुओं के बीच का स्थान या समय।

अंतरिक्ष पुं {सं.} पृथ्वी और दूसरे ग्रहों या नक्षत्रों के बीच का स्थान, आकाश; स्वर्ग; पृथ्वी और स्वर्ग के बीच का भाग, एयर स्पेस।

अंतरिक्ष-किरण *स्त्री.* {सं.} अंतरिक्ष से आनेवाली एक प्रकार की किरण जो अत्यन्त भेदक होती है।

अंतरिक्ष-विज्ञान पुं {सं.} ग्रह आदि, ऋतु प्रभाव, वायुगति आदि का ज्ञान कराने वाली विज्ञान की शाखा (मीटीरियालोजी)।

अंतरित *वि.* {सं.} अंदर रखा, छिपाया या छिपा हुआ; एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर रखा या किया हुआ; एक के हाथ से दूसरे के हाथ में गया या बिका हुआ (ट्रांस्फर्ड)।

अंतरिती पुं. {सं. अंतरित} वह जिसके हाथ कोई अपनी संपत्ति और उसके संबंध के अधिकार आदि दे या अंतरित करे, वह जिसके पक्ष में अंतरण हो (ट्रांसफरी)।

अंतरिम *वि.* {सं. अंतर} दो अलग कालों या समयों के बीच का, मध्यवर्ती (इंटरिम)।

अंतरीख पुं. = अंतरिक्ष, आकाश, अंतरिक्ष का अप।

अंतरीप पुं. {सं.} पृथ्वी का वह भाग जो दूर तक समुद्र में चला गया हो (केप)।

अंतरीय अंतर्वस्त्र, बनियान, पेटीकोट, लंगोट आदि।

अंतरौटा पुं. बारीक वस्त्र के नीचे लगानेवाला कपड़ा, अस्तर; प्रसंग में चर्चित कथा।

अंत:कथा *स्त्री* {सं.} संकेत रूप से कही हुई बात के अंदर छिपी हुई कोई दूसरी बात, घटना या प्रसंग (एल्यूजन)।

अंतर्गत *वि.* {सं.} किसी के अंदर छिपा, समाया, गया या मिला हुआ; अंग के रूप में किसी में मिला हुआ (इंक्लूडिड इन)।

अंतर्गामी (मिन्) *वि.* {सं.} अन्दर की ओर आनेवाला।

अंतर्ज्ञान पुं. {सं.} मन में होनेवाला ज्ञान; मन में होनेवाला वह स्वाभाविक ज्ञान जिससे कोई बात बिना सोचे आप-से-आप समझ में आ जाती है।

अंतर्ग्रस्त *वि.* {सं.} (व्यक्ति) जिसे झंझट या झगड़े में फँसाया गया हो (इंवाल्व्ड); बीच में फँसा हुआ; पचड़ों में पड़ा हुआ।

अंतर्दशा *स्त्री.* {सं.} वह दशा या अवस्था जो किसी एक ग्रह के भोगकाल के अंतर्गत पड़नेवाले अन्य ग्रहों के भोगकाल से उत्पन्न होती है।

अंतर्दाह पुं. {सं.} हृदय की दाह या जलन, घोर मानसिक कष्ट।

अंतर्दृष्टि *स्त्री.* {सं.} वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा व्यक्ति प्रच्छन्न रहस्य को जान लेता है।

अंतर्देशीय *वि.* {सं.} किसी देश के अंदर या उसके भीतरी भागों में होने या उससे संबंध रखनेवाला, जैसे अंतर्देशीय जलमार्ग।

अंतर्द्वंद्व पुं. {सं.} वह स्थिति जब मन में ऐसे विचार उत्पन्न होते हैं, जिनमें परस्पर विरोध और संघर्ष होता है (कानफ्लिक्ट)।

अंतर्धान *वि.* {सं.} इस प्रकार अदृश्य हो जानेवाला कि कहीं पता न चले, लुप्त, गायब।

अंतर्धारा *स्त्री.* {सं.} नदी, समुद्र आदि में पानी की ऊपरी सतह से नीचे बहनेवाली धारा; किसी वर्ग या समाज में अंदर ही अन्दर फैली हुई

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी धारणा या विचार जिसका पता साधारणतः ऊपर से चलता हो (अंडर करेंट)।

अंतर्निहित *वि.* {सं.} अंदर छिपा हुआ; जो अंदर स्थायी रूप से स्थित हो; भीतर रखा गया; भीतर समाया हुआ।

अंतर्भाव *पुं.* {सं.} किसी का किसी दूसरे में समाया आ जाना; सम्मिलित, समाविष्ट या अंतर्गत होना (इनक्लूजन); भीतरी आशय, अभिप्राय, एक विषय का भाव का दूसरे से ग्रहण कर लिया जाना।

अंतर्भावित *वि.* {सं.} जो किसी के अन्दर आ या समा गया हो, अंतर्भूत, समाविष्ट; जो दूसरे के भीतर छिपा हो, दूसरे में छिपा मान लिया जाए।

अंतर्भुक्त *वि.* {सं.} किसी के अन्दर आया, समाया या मिला हुआ; जिसका अन्य के बीच के उपयोग हो जाय, वह ग्रहदशा जो दूसरी दशा में भोग ली गई हो; अंदर शामिल।

अंतर्भूत *वि.* अंतर्भावित।

अंतर्मुखी (खिन्) *वि.* {सं.} जिसका मुख या प्रवृत्ति अन्दर की ओर हो, अर्थात् जो अपने ही विचारों में सुख-सन्तोष का अनुभव करता हो (इंट्रोवर्ट); आध्यात्मिक प्रवृत्ति का; चिंतनशील, लौकिक विषयों से दूर।

अंतर्यामी (मिन्) *वि.* {सं.} सबके मन में रहने और सबके मन की बात जाननेवाला (ईश्वर); भीतरी भाव जाननेवाला।

अंतराष्ट्रीय *वि.* {सं.} सब या कुछ राष्ट्रों से संबंध रखनेवाला विभिन्न राष्ट्रों से संबद्ध।

अंतर्वर्ग *पुं.* {सं.} किसी वर्ग या विभाग के अंतर्गत होनेवाला कोई छोटा वर्ग या विभाग; भीतर का ग्रुप; काम क्रोध आदि आंतरिक भाव (सब-आर्डर)।

अंतर्वर्ती (र्तिन) *वि.* {सं} अंदर रहनेवाला; अंतर्गत अन्तर्भुक्त।

अंतर्वर्ती {*स्त्री.*} गर्भवती स्त्री।

अंतश्छद *पुं.* {सं.} भीतरी आवरण।

अंतश्छिद *पुं.* {सं.} भीतरी छेद, घरेलू झगड़े, भीतरी दुर्गुण।

अंतर्वाणिज्य *पुं.* {सं.} किसी देश के भीतरी भागों में होनेवाला वाणिज्य या व्यापार, 'बहिर्वाणिज्य' का उलटा (इंटर्नल ट्रेड)।

अंतर्विरोध *पुं.* {सं.} वह स्थिति जब किसी कथन में परस्पर विरोधी शब्द हों।

अंतर्वेद *पुं.* {सं.} गंगा और यमुना के मध्य के प्रदेश का पुराना नाम; उत्तर प्रदेश के इस क्षेत्र का प्राचीन नाम।

अंतर्वेदना *स्त्री.* {सं.} अंतःकरण में होनेवाली वेदना या कष्ट।

अंतर्वेशन *पुं.* {सं.} अंदर कर या मिला लेना (इंक्लूजन)।

अंतस्तल *पुं.* {सं.} हृदय का मन (का भीतरी भाग)।

अंतस्थ *वि.* {सं.} अंदर या बीच का; अंत का अंतिम, आखिरी; *पुं.* य, र, ल और व ये चारों वर्ण।

अंतःसार *वि.* {सं.} भीतर से ठोस।

अंतावरी *स्त्री.* अंतड़ी।

अंतावसायी *वि.* आखिर में मिटनेवाला, नश्वर।

अंतराष्ट्रीय *वि.* अन्तर्राष्ट्रीय; राष्ट्रों के बीच संबद्ध।

अंतिम *वि.* {सं.} सबके अंत या पीछे का, पिछला, आखिरी; (आज्ञा, निर्णय आदि) जो सबके अंत में निश्चित रूप से हो और जिसमें कोई परिवर्तन न हो सके (फाइनल)।

अंतेउर *पुं.* अंतःपुर; रनवास।

अंतेवासी (सिन्) *पुं.* {सं.} गुरु के पास रहकर शिक्षा पानेवाला, शिष्य, चेला; वह जो किसी के पास या किसी कार्यालय में रहकर नौकरी पाने की आशा से कुछ काम करता या सीखता हो (अप्रेंटिस); अंत्यज।

अंत्य *वि.* {सं.} सबके अंत का, अंतिम, आखिरी; अंतिम।

अंत्यज *पुं.* {सं.} हिन्दुओं में वह व्यक्ति जिसे सवर्ण के लोग नहीं छूते थे।

अंत्यवर्ण *पुं.* {सं.} वर्णमाला के वर्णों या अक्षरों में से अंतिम अर्थात् 'ह'; कविता में किसी पद या चरण के अन्त में आया हुआ अक्षर।

अंत्यशेष *पुं.* {सं.} वह धन या रकम जो कोई खाता बन्द करने के समय अन्त में बाकी निकले (बैलेंस)।

अंत्याक्षरी *स्त्री.* {सं.} विद्यार्थियों का एक प्रकार का खेल या प्रतियोगिता जिसमें कोई एक कविता पढ़ता और दूसरा उस कविता के अंतिम अक्षर से आरंभ होनेवाली दूसरी कविता पढ़ता है।

अंत्यानुप्रास *पुं.* {सं.} पद्य में अंतिम अक्षरों का मेल या अनुप्रास, तुक; कविता का एक अलंकार।

अंत्यानुप्रास *पुं.* {सं.} पद्य में अंतिम अक्षरों का मेल या अनुप्रास, तुक।

अंत्येष्टि *स्त्री.* {सं.} किसी के मरने पर होनेवाले धार्मिक कृत्य या संस्कार; अंतिम संस्कार।

अंत्र *पुं.* {सं.} आँत, अँतड़ी।

अंत्रवृद्धि *स्त्री.* {सं.} आँत उतरने का रोग जो बहुत कष्टदायक होता है।

अंत्री *स्त्री* = अँतड़ी (आँत); हार्निया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अँथऊ पुं. {अं. अस्त} सूर्यास्त सें पहले का भोजन (जैन)।

अँदरसा पुं. {सं. इंद्राश} एक प्रकार की मिठाई जोकि चावल कूटकर बनाई जाती है।

अंदरी *वि.* {हिं. अंदर} अंदर का, भीतरी।

अंदाज़ पुं. {फा.} अनुमान, अटकल; ढब, ढंग, तौर; स्वर का एक प्रकार; स्त्रियों की कोमल चेष्टा, हाव-भाव।

अंदाज़न *क्रि. वि.* {फा.} अंदाज या अनुमान से, अनुमानतः।

अंदाज़ा पुं. {फा.} अनुमान, अटकल; कूत।

अंदेशा पुं. {फा.} चिंता, सोच-विचार; संशय, संदेह, शक; आशंका, खटका, भय; संभावना, पूर्वाभास।

अँदोर पुं. {सं. आंदोलन} हो-हल्ला; आंदोलन, हलचल।

अंध *वि.* {*स.*} दृष्टि शक्ति से रहित, विवेकहीन, दिखाई देना; मतवाला, उन्मत्त; जिसमें कुछ देखा-सुना या समझा-बूझा न गया हो, आँखें बंद करके किया जाने वाला, जैसे अंधानुकरण, अंधविश्वास; पुं. अंधा; अंधकार।

अंधकार पुं. {सं.} प्रकाश न होना, अँधेरा; अज्ञान।

अंधड़ पुं. आँधी; बिन वर्षा का तूफान।

अंधता *स्त्री.* {सं.} अंधे होने की दशा या भाव, अंधापन।

अंधतामिस्र पुं. {सं.} एक नरक जो बहुत अधिक अंधकारपूर्ण माना जाता है; 21 नरकों में से एक; घोर अज्ञान, घोर निराशा।

अंधपरंपरा *स्त्री.* {सं.} बहुत दिनों की चली आई हुई प्रथा या परंपरा के अनुसार बिना समझे-बूझे काम करना।

अंधवाई *स्त्री.* आँधी।

अंधर *वि.* अँधेरा।

अँधर *वि.* अंधा।

अंधविश्वास पुं. {सं.} बिना समझे-बूझे या आँखें बन्द करके किसी बात पर किया जानेवाला विश्वास; आँख मूँदकर यथार्थ मान लेना (सुपर्स्टिशन)।

अंधा कुआँ-पुं. सूखा कुआँ।

अंधा शीशा पुं. ऐसा आईना जिसमें मुँह दिखाई न दे।

अंधा घोड़ा पुं. फकीर।

अंधा बनना पुं. मूर्ख बनना

अंधाधुंध *क्रि. वि.* {हिं. अंधा + धुंध} बिना सोचे-समझे और बहुत तेजी से, बहुत वेग से।

अंधानुकरण पुं {सं.} बिना सोचे-समझे किसी बात या व्यक्ति का किया जानेवाला अनुकरण, भेड़चाल; वास्तविकता को जाने बिना नकल करना।

अँधियारी *स्त्री.* {हिं. अँधेरा} अँधेरा; वह पट्टी जो उपद्रवी घोड़ों और शिकारी जन्तुओं की आँखों पर बाँधी जाती है; *मुहा. अँधियारी डालना* = आँख मूँद कर दुर्गति करना।

अंधी घाटी *स्त्री.* वह घाटी जहाँ किसी नदी का सारा जल भूमि में समा जाता है।

अंधेर पुं. {सं. अंधकार} ऐसा काम जिसमें सोच-विचार या न्याय से काम न लिया जाए, अन्याय और अत्याचार; बहुत अधिक गड़बड़ी या कुप्रबन्ध; अंधेर खाता, न्याय अन्याय का विचार न होना।

अँधेर नगरी *स्त्री.* {हिं. अंधेर = अन्याय + नगरी} वह स्थान जहाँ सब बातों में पूरी-पूरी अव्यवस्था और अन्याय होता हो।

अँधेरना *स.* {हिं. अँधेरा} अँधेरा करना, अंधकार फैलाना।

अँधेरा पुं. {सं. अंधकार} 'प्रकाश' या 'उजाला' का उलटा, अंधकार; काली छाया, परछाईं; उदासीनता, उदासी; *वि.* जिसमें या जहाँ प्रकाश या उजाला न हो, अन्धकारपूर्ण।
मुहा. अँधेरा छा जाना = घोर निराशा या अत्यंत दुःख होना; *अँधेरे घर का उजाला* = एकलौता बेटा होना; *अँधेरे मुँह* = रात खुलने से पहले ही।

अँधेरा पक्ष पुं. {हिं. अँधेरा + पक्ष} परिवा से अमावस्या तक के 15 दिन।

अँधेरी *स्त्री.* {हिं. अँधेरा} अंधकार, अँधेरा; अँधेरी या काली रात; आँधी; वह कपड़ा जो नटखट घोड़ों, बैलों आदि या शिकारी जानवरों की आँखों पर बाँधा जाता है; अँधियारी।

अँधेरी कोठरी *स्त्री.* पेट; वह स्थान जिसके अंदर का कुछ पता न चले।

अँधौटा पुं. {सं. अंधपट्ट, प्रा. अंधउट्ट} {*स्त्री.* अल्पा. अँधौटी} कपड़े, चमड़े आदि की वह पट्टी जो बैलों या घोड़ों की आँखों पर बाँधी जाती है; अँधियारी।

अंध्र पुं. दक्षिण भारत का एक प्रदेश, वर्तमान आंध्र राज्य; एक शूद्र जाति।

अंध्रभृत्य पुं. मगध का एक राजवंश; अंध्रवंश के पश्चात् इसका राज्य चला।

अंब *स्त्री.* अंबा; पुं. आम (फल और वृक्ष); आम का वृक्ष, फूल, माता, आँख, पानी (अम्बु); *स्त्री.* अंबा।

अंबक पुं. {सं.} नेत्र, आँख, जैसे त्रयंबक = महादेव; पिता, बाप।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंबर¹ पुं. {सं.} पहनने का कपड़ा, वस्त्र; आकाश, आसमान; मेघ, बादल; केसर, राजपूताने का एक नगर (वर्तमान आमेर), एक प्रकार की गाड़ी, अभ्रक।

अंबर² पुं. {अ.} एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य जो ह्वेल नाम की मछली की आँतों से निकलता है।

अंबर-डंबर पुं. {सं. अंबर = आकाश} संध्या की लालिमा।

अंबरबेलि *स्त्री.* आकाशबेल; अमरवल्ली।

अँबराई *स्त्री.* अमराई; आम के वृक्षों की पंक्ति, आम का बाग, आम्रराजी।

अंबरीष पुं. {सं.} विष्णु; शिव; सूर्य; अयोध्या के प्रसिद्ध और प्राचीन सूर्यवंशी राजा; भाड़; बछड़ा।

अंबल *वि.* = अम्ल; पुं. = अमल; खट्टा पदार्थ।

अंबष्ठ पुं. {सं.} मध्य पंजाब का प्राचीन नाम; इस देश का निवासी; महावत, हाथीवान; एक जाति जो ब्राह्मण पिता और वैश्या माता से उत्पन्न संतान से चली।

अंबा *स्त्री.* {सं.} माता, माँ; गौरी या पार्वती देवी; काशिराज की पुत्री जिसका भीष्म ने हरण किया और बाद में शिखण्डी बनी, पाढ़ा बेल; पुं. आम (फल और वृक्ष)।

अंबार पुं. {फा.} राशि, ढेर।

अंबारी *स्त्री.* {अ. अमारी} हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला हौदा।

अंबिका *स्त्री.* अंबा; धृतराष्ट्र की माता।

अंबिकावन पुराणों में वर्णित एक वन।

अँबरिया *क्रि. वि.* = वृथा।

अंबु पुं. {सं.} जल, पानी।

अंबुकंटक पुं. मगर, नाका।

अंबुकीश पुं. सूंस।

अंबुकेशर पुं. नींबू का वृक्ष।

अंबुचा, अंबुचारी पुं. पानी का जीव, मच्छ आदि।

अंबुज *वि.* {सं.} जो जल में उत्पन्न हुआ हो; पुं. कमल; शंख; ब्रह्मा; चंद्रमा; सारस।

अंबुद पुं. {सं.} मेघ, बादल; नागरमोथा; पानी देनेवाला।

अंबुधर पुं. {सं.} मेघ, बादल; पानी का बर्तन।

अंबुधि पुं. {सं.} समुद्र, सागर; जलाशय की संख्या।

अंबुपति पुं. {सं.} समुद्र; वरुण; जलाशय का रक्षक।

अंबुरुह पुं. {सं.} कमल; शंख, शुक्ति।

अंबुवाह पुं. {सं.} बादल, पनिहार, बहिश्ती, अंबुवाहिनी; *स्त्री.* पनिहारी।

अंबुशायी (यिन्) पुं. {सं.} विष्णु।

अंभ, अभंस् पुं. {सं.} जल, पानी; पितृ, पितर; पितृलोक।

अंभसार पुं. {सं. अंभःसार} मोती।

अंभोज पुं. {सं.} कमल; सारस; चंद्रमा; कपूर।

अंभोरुह पुं. {सं.} कमल।

अंश पुं. {सं.} भाग, हिस्सा, जैसे लाभ का अंश (शेयर); किसी वस्तु का चौथाई भाग; किसी वस्तु विशेषत: चंद्रमा का सोलहवाँ भाग, कला; वृत्त की परिधि का 360 वाँ भाग (डिगरी)।

अंशक पुं. {सं.} भाग, टुकड़ा; अंशी; *वि.* अंश धारण करनेवाला; अंश या भाग लगानेवाला, विभाजक।

अंशकालिक *वि.* {सं.} कुछ या थोड़े समय के लिए होने या किया जानेवाला (पार्ट-टाईम)।

अंशज *वि.* अंश से उत्पन्न, जैसे राम, विष्णु के अंश से उत्पन्न।

अंशत: *क्रि. वि.* {सं.} कुछ अंश या अंशों में (पार्टली, इन् पार्ट)।

अंशदाता पुं. {सं.} जो औरों के साथ-साथ सहायता आदि के रूप में अपना भी अंश या हिस्सा देता हो (कांट्रिब्यूटर)।

अंशदान पुं. {सं.} (औरों के साथ-साथ) अपना अंश या हिस्सा, सहायता आदि के रूप में देना (कांट्रिब्यूशन)।

अंशधर पुं. {सं.} किसी अंश या हिस्से का मालिक, अंशी, हिस्सेदार (शेयरहोल्डर)।

अंशपत्र पुं. {सं.} वह पत्र जिसपर यह लिखा हो कि किसी संपत्ति या व्यापार आदि में किसका कितना अंश लिखा है।

अंशभाग पुं. {सं.} वह अंश जो किसी के हिस्से का हो (शेयर)।

अंशभाजन *वि.* {सं.} जो किसी संपत्ति आदि में अंश का हकदार हो।

अंशमापन पुं. {सं.} {*वि.* अंशमापक} किसी चीज के अंशों को नापना जैसे तापमापक यंत्र के अंश नापना।

अंश-विकसित *वि.* {सं.} जिसका कुछ अंश ही विकसित हुआ हो।

अंश-शोधन पुं. {सं.} किसी लेख या वस्तु के एक भाग की खोज या शुद्ध करना।

अंशांक पुं. {सं.} गणित में किसी मान के विभिन्न अंशों की सूचक संख्याओं में से कोई एक।

अंशांकन पुं. {सं.} किसी ट्यूब, नाल आदि का भीतरी व्यास नापने की क्रिया (कैलिब्रेशन)।

अंशावतार पुं. {सं.} वह अवतार जिसमें ईश्वरता पूरी न हो, बल्कि कुछ अंशों में ही हो; जैसे परशुराम।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंशिका *स्त्री.* {सं.} अंश रूप में दी हुई (बँधी हुई) राशि (इंस्टालमेंट)।
अंशी *पुं.* {सं. अंशिन्} अंशधर; अंशवाला।
अंशीय *वि.* {सं. अंश} अंश अर्थात् हिस्से से संबद्ध।
अंशु *पुं.* {सं.} सूर्य या चंद्रमा की किरण, रश्मि।
अंशुक *पुं.* {सं.} वस्त्र।
अंशुमान *पुं.* {सं.} सूर्य; राजा सगर का पौत्र; *वि.* किरणोंवाला।
अंशुमाली (लिन्) *पुं.* {सं.} सूर्य।
अंस *पुं.* = अंश; स्कंध, कंधा।
अंसभारिक *वि.* कंधे पर भार ढोनेवाला।
अँसुआ *पुं.* = आँसू।
अँसुआना *अ.* {हिं. आँसू} आँखों का आँसुओं से भरना।
अंह *पुं.* {सं.} पाप।
अंहि *पुं.* चरण, पाँव।
अउर *यो.* = और।
अऊत *वि.* {सं. अपुत्र} जिसे पुत्र या संतान न हो, अपुत्र, निपूता।
अऋण *वि.* {सं.} ऋण के बिना, कर्ज से मुक्त।
अएरना *क्रि.* {सं. अंगीकरण} अंगीकार करना, ग्रहण या स्वीकृत करना।
अकंटक *वि.* {सं.} जिसमें कोई कंटक या बाधा न हो, निर्विघ्न।
अकच *वि.* {सं.} केशरहित।
अकचकाना *क्रि.* हैरान होना।
अकड़ *स्त्री.* {हिं. अ + कड्ड} ऐंठने की क्रिया या भाव, ऐंठ, तनाव; अभिमान या घमंड, शेखी।
अकड़ना *अ.* {हिं. अकड़} सूखने या कड़े होने के कारण तनना, ऐंठना; अभिमान या घमंड दिखलाना, ऐंठना, इतराना; ढिठाई, हठ करना।
अकड़फों *स्त्री.* {हिं. अकड़ + फों (अनु.)} अभिमानपूर्ण आचरण, दंभ।
अकड़बाज *वि., पुं.* {हिं. अकड़ + फा. बाज़} {*भाव.* अकड़बाजी} अकड़ दिखानेवाला, घमंडी।
अकड़ाव *पुं.* {हिं. अकड़ना} अकड़ने की क्रिया या भाव, ऐंठन।
अकत *वि.* {सं. अक्षत} सारा, पूरा, समूचा, सब।
अकथ *वि.* अकथनीय; जो कहने में न आवे; कहा न जा सके।
अकथनीय *वि.* {सं.} जो कहा न जा सके, जिसका वर्णन करना कठिन हो; अकथ।
अकथ्य *वि.* अकथनीय।
अकधक *स्त्री.* {अनु.} {*क्रि.* अकधकाना} भय, डर; आशंका, खटका, घबराहट; आगा-पीछा, सोच-विचार, असमंजस।
अकना *स.* {सं. आकुल} उकताना, ऊबना।
अकबक *स्त्री.* {हिं. बकना} {*क्रि.* अकबकाना} व्यर्थ की बात, प्रलाप, बकवाद; अकधक; घबराहट में ऊटपटाँग बोलना; *वि.* भौचक्का, चकित।
अकबकाना *अ.* {हिं. अकबक} भौचक्का हो जाना; घबरा जाना; त्रस्त होना।
अकबर[1] *पुं.* {*अ.*} मुगलवंश का तीसरा सम्राट।
अकबर[2] *वि.* {*अ.*} अति महान्।
अकबरी *वि.* {फा.} सम्राट अकबर या उसके शासनकाल से संबद्ध; अकबर के ढंग का।
अकर *वि.* {सं. अ + कर} न करने योग्य; जिसके हाथ न हो; जिसपर कर न लगे; निकम्मा।
अकरकरा *पुं.* {*अ.* अकरकरह} एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ दवा के काम आती है।
अकरखना *स.* {सं. आकर्षण} आकर्षित करना, खींचना या तानना; तद्भव।
अकरण *पुं.* {सं.} न करना, कर्म का अभाव; जो करना चाहिए, वह न करना, कर्तव्य छोड़ देना (ओमिशन); करने पर भी न किए हुए के समान हो जाना; ईश्वर, जो सब इंद्रियों से रहित माना जाता है; शरीर रहित, निराकार, अकृत्रिम; *वि.* न करने योग्य; अनुचित, बुरा, कठिन।
अकरणीय *वि.* {सं.} जिसे करना ठीक न हो, न करने योग्य।
अकरा *वि.* {सं. अक्रय} अधिक मूल्य का, महँगा; खरा, अच्छा; *स्त्री.* आमलकी, बिना हाथ की।
अकराल *वि.* {सं.} जो डरावना न हो; बराबर, ऊपर-नीचे नहीं।
अकरास *स्त्री.* {सं. अकर} आलस्य सुस्ती; अँगड़ाई।
अकरासू *वि., स्त्री.* {हिं. अकरास} गर्भवती।
अकर्ता *वि.* {सं.} जो कुछ न करता हो, न करनेवाला; *पुं.* सांख्य के अनुसार पुरुष जो सबकुछ करने पर भी कर्मों से अलग माना जाता है।
अकर्म *पुं.* {सं.} कार्य का न होना, कर्म का अभाव; बुरा या अनुचित काम, खोटा काम।
अकर्मक *वि.* {सं.} व्याकरण में वह क्रिया जिसके साथ कोई कर्म न हो, जैसे चलना, दौड़ना, सोना (इंट्रांज़िटिव)।
अकर्मण्य *वि.* {सं.} {*भाव.* अकर्मण्यता} जो कोई काम न कर सकता हो, निकम्मा; (पदार्थ) जो किसी काम न आ सकता हो; कर्म से दूर रहनेवाला।
अकर्मण्यता *स्त्री.* {सं.} 'अकर्मण्य' होने का भाव, निकम्मापन।
अकर्मा *वि.* कर्मबंधन से रहित, ईश्वर, संन्यासी, सांख्यदर्शन का पुरुष।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकर्मी *वि.* कर्म न करनेवाला; कुकर्मी, भला काम न करनेवाला।

अकर्षण *पुं.* = आकर्षण।

अकलंक *वि.* {सं.} {*भाव.* अकलंकता, *वि.* अकलंकित} जिसमें कोई कलंक या दोष न हो, सब तरह से अच्छा, निर्मल; विशेष कलंक; जो बदनाम न हो; एक जैन संप्रदाय।

अकलंकी *वि.* {सं. अकलंकिन्} जिसमें कोई कलंक या दोष न हो, निर्दोष; अकलंक; भावी कल्कि अवतार।

अकल *पुं.* {सं.} जिसमें अवयव या अंग न हों; जिसके टुकड़े न हों, पूरा, समूचा; जिसमें कोई कला या कौशल न हो; *स्त्री.* अक्ल, बुद्धि; जिसे कल न पड़े, बेचैन।

अकलवर *पुं.* एक पौधा जिसकी जड़ से रेशम पर रंग चढ़ाया जाता है; अक्लमंद बुद्धिमान।

अकलित *वि.* {सं.} नाममात्र का।

अकलुष *वि.* {सं.} निष्पाप, निर्दोष; निष्कलंक।

अकल्पित *वि.* {सं.} जो कल्पित या मन से गढ़ा हुआ न हो, वास्तविक; जिसकी कल्पना या अनुमान न किया गया हो; जिसे गिना न गया हो, जिसे अपनाया न हो।

अकवन *पुं.* मदार (पौधा)।

अकस *पुं.* {सं. आकर्ष} मन में रखा हुआ दुर्भाव या वैर, द्वेष, शत्रुता; परछाहीं; अकस्मात्।

अकसर *क्रि. वि.* {हिं. एक + सर} बिना साथी के, अकेले; *क्रि. वि.* प्रायः।

अकसीर *वि.* {*अ.*} अपना गुण या प्रभाव दिखलानेवाला, अव्यर्थ; असरदार, अमोघ।

अकस्मात् *क्रि. वि.* {सं.} {*वि.* आकस्मिक} एकदम से, अचानक, सहसा; बिनास संभावना के।

अकह *वि.* जो कुछ न कहे; जो कहा न जा सके; कहने के योग्य न हो; गंदी बात।

अकांड *वि.* {सं.} (वृक्ष) जिसमें कांड या शाखाएँ न हों; *क्रि. वि.* अकस्मात्, अचानक।

अकांड तांडव *पुं.* {सं.} व्यर्थ की उछल-कूद या झगड़ा; सहसा हुआ उपद्रव।

अकाचित *वि.* {सं.} जिसका तल चमकीला न हो (अनग्लेज्ड)।

अकाज *पुं.* {सं. अकार्य} {*क्रि.* अकाजना} अनुचित या बुरा काम; हानि, हरज; बिना काम के।

अकाजना *अ.* {हिं. अकाज} हरज या हानि होना; *स.* हरज या हानि करना; अकाज करना, काम बिगाड़ना।

अकाजी *वि.* {हिं. अकाज} काम में हर्ज करनेवाला, काम में विघ्न डालने या औरों का समय नष्ट करनेवाला।

अकाट्य *वि.* {सं. अ + हिं. कांटना} जिसका खंडन न हो सके, जो काटा न जा सके; जिस बात को गलत साबित न किया जा सके।

अकातर *वि.* {सं.} निडर, जो घबरानेवाला न हो।

अकादमिक *वि.* {अं. एकैडमिक} शास्त्रीय अध्ययन या विवेचन से संबद्ध; अकादमी से संबंध रखनेवाला।

अकादमी *स्त्री.* {अं. एकाडमि} वह संस्था जिसका उद्देश्य कला, साहित्य, विज्ञान आदि की उन्नति तथा प्रचार हो; साहित्यिक प्रगति के लिए बनी संस्था।

अकाम[1] *वि.* {सं.} जिसमें कोई कामना या इच्छा न हो, निष्काम, निस्पृह।

अकाम[2] *क्रि. वि.* {सं. अकर्म} बिना काम के, व्यर्थ, यों ही।

अकामता *स्त्री.* {सं.} कामना शांत होने की अवस्था, काम वासना से रहित होना।

अकामी *वि.* {सं.} कामना न रखनेवाला, वासना रहित।

अकाय *वि.* {सं.} जिसकी काया या शरीर न हो, देहरहित; अजन्मा; निराकार; वायव्य, बिना धड़ का राहु।

अकार *पुं.* {सं.} 'अ' अक्षर या उसकी मात्रा।

अकारज *पुं.* अकाज।

अकारण *क्रि. वि.* बिना किसी कारण या वजह के, व्यर्थ, यों ही; निस्स्वार्थ, अहैतुक; *वि.* आपसे आप होनेवाला, स्वयंभू।

अकारथ *क्रि. वि.* व्यर्थ।

अकार्बनिक *वि.* कार्बनिक से भिन्न (इनारगैनिक)।

अकार्य *पुं.* अकर्म; बिना काम के, बुरा काम।

अकाल *पुं.* {सं.} ऐसा समय जो ठीक या उपयुक्त न हो, जैसे अकाल मृत्यु; ऐसा समय जब अन्न न मिलता हो, दुर्भिक्ष; बेमौके, समय से पहले या बाद में; *वि.* जो कभी मरता या नष्ट न होता हो, अविनाशी, अनिवश्वर।

अकाल वलित *वि.* {सं.} असमय मृत्यु का शिकार।

अकालकुसुम *पुं.* {सं.} वह फूल जो अपने समय से पहले या पीछे खिला हो (ऐसा फूल फूलना अशुभ माना जाता है); वह चीज जो अपने समय से पहले या पीछे हो (आश्चर्य की बात); बिना मौसम के फूलनेवाला वृक्ष।

अकालपीड़ित *वि.* {सं.} अकाल से पीड़ित।

अकालप्रसव *पुं.* {सं.} स्त्री को नियत या ठीक समय से पहले संतान होना।

अकालमृत्यु *स्त्री.* {सं.} उचित समय से पहले होनेवाली मृत्यु, असामयिक मृत्यु; दुर्घटना आदि से हुई मृत्यु।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अकालवृष्टि *स्त्री.* {सं.} नियत समय से पहले अथवा बाद में होनेवाली (हानिकर) वर्षा।
अकाल सहायता *स्त्री.* {सं.} अकालपीड़ितों की की जानेवाली सहायता; अकस्मात् की गई सहायता।
अकालिक *वि.* {सं.} अकाल या असमय में होनेवाला; बेमौके होनेवाला।
अकाली *पुं.* {हिं. अकाल (पुरुष)} सिक्खों का एक संप्रदाय; अकाल पुरुष के उपासक।
आकाशदीप *पुं.* {सं. आकाशदीप} जहाजों को रात्रि में मार्ग दिखानेवाला प्रकाश-स्तंभ; आकाश का तद्भव।
अकास *पुं.* आकाश।
अकासदीया *पुं.* {हिं.} आकाशदीप।
अकासबानी *स्त्री.* आकाशवाणी।
अकासबेल *स्त्री.* अमर बेल जो वृक्षों व पौधों के ऊपर ही फैलती है।
अकासी *स्त्री.* {सं. आकाश} चील (पक्षी); ताड़ का रस, ताड़ी।
अकिंचन *वि.* {सं.} {*भाव.* अकिंचनता} बहुत ही दीन या दरिद्र, गरीब; बहुत ही साधारण, बिल्कुल मामूली; कुछ, नगण्य।
अकिंचनता *स्त्री.* {सं.} घोर दरिद्रता।
अकिंचित् *वि.* {सं.} जिसकी कोई गिनती न हो, नगण्य, तुच्छ।
अकिंचितकर *वि.* {सं.} जो कुछ न कर सके।
अकिंचिज्ञ *वि.* {सं.} जो कुछ भी न जानता हो, सर्वथा अनजान।
अकि *यो.* {फा. कि} कि, या, अथवा।
अकिल *स्त्री.* अक्ल।
अकिल-दाढ़ *स्त्री.* अक्ल-दाढ़।
अकीक *पुं.* {*अ.*} एक प्रकार का लाल पत्थर या उपरत्न (एगेट)।
अकीर्ति *स्त्री.* {सं.} बुरी कीर्ति, अपकीर्ति, बदनामी।
अकीर्तिकर *वि.* {सं.} (काम या बात) जो किसी की कीर्ति में बट्टा लगानेवाली हो, अपयशस्कर।
अकुंठ *वि.* {सं.} जो कुंठित न हो, तीखा, तीव्र; तेजधार का, जो निष्फल न हो; अकुंठवीर्य; हतोत्साह न होनेवाला।
अकुताना *अ.* उकताना; ऊबना।
अकुतोभय *वि.* {सं.} जिसे किसी से डर न हो; बेखटके।
अकुल *पुं.* {सं.} बुरा या छोटा कुल या वंश; वह जिसे कुल में कोई न हो; शिव।
अकुलाना *अ.* {सं. आकुल} आकुल, होना, घबराना; ऊबना; शीघ्रता करना, जल्दी मचाना; विह्वल होना।
अकुलीन *वि.* {सं.} जो कुलीन न हो, छोटे नीच या तुच्छ कुल या वंश का।
अकुशल *वि.* {सं.} जो कार्य करने में कुशल या दक्ष न हो (अनस्किल्ड)।
अकुशलता *स्त्री.* {सं.} अकुशल होने की अवस्था या भाव; अनाड़ीपन।
अकूट *वि.* {सं.} जो अवास्तविक या कृत्रिम न हो, सच्चा, असली (जेनुइन); मिश्रण से रहित, बनावटी न हो।
अकूत *वि.* {हिं. अ + कूतना} जो कूता न जा सके; बहुत अधिक; *क्रि. वि.* आप-से-आप; अचानक, अकस्मात्।
अकूप *वि.* वह प्रदेश जहाँ कुआँ न हो।
अकूल *वि.* {सं.} जिसका कोई कूल, किनारा या अंत न हो, असीम; अपार नदी या समुद्र; लालसा।
अकृर्त *वि.* {सं.} जो किया न गया हो, बिना किया हुआ; जिसमें सफलता न हुई हो; जिसमें न किया हो; रद्द; सहज।
अकृतकार्य *वि.* {सं.} जो अपने कार्य में सफल न हुआ हो, विफल; जिसने अपना काम न किया हो।
अकृतज्ञ *वि.* {सं.} जो किसी का किया हुआ उपकार न माने, कृतघ्न; अहसान न माननेवाला।
अकृती *वि.* {सं. अ + कृती} जिसने कुछ भी न किया हो; जिससे कुछ हो न सकता हो, अकर्मण्य; अपने कार्य में असफल, अपने काम में अकुशल।
अकृत्य *पुं.* {सं.} न करने योग्य या बुरा काम।
अकृपण *वि.* {सं.} जो कृपण न हो, फलतः उदार; दानी, खुले दिलवाला।
अकृषिक *वि.* {सं.} जो कृषि से संबंध न रखता हो 'कृषिक' का उलटा (नॉन एग्रिकलचरल)।
अकृषित, अकृष्ट *वि.* {सं.} (खेत) जो जोता-बोया न गया हो (अनकलटिवेटिड); खेती के काम में न आई भूमि; न जोती गई।
अकृष्टपच्या *वि.* {सं.} बिना हल जोते उगनेवाली फसल।
अकष्ट पूर्वा *वि.* {सं.} वह भूमि जो पहले न जोती गई हो।
अकुंचनीय *वि.* {सं.} जो सिकुड़ता न हो।
अकेतन *वि.* {सं.} गृहहीन, जिसका कोई ठौर ठिकाना न हो।
अकेतु *वि.* {सं.} बिना पहचान का।
अकेला *वि.* {सं. एकल} जिसके साथ और कोई न हो, बिना संग-साथवाला; *पुं.* एकांत स्थान।
अकेला-दुकेला *वि.* जो अकेला हो या जिसके साथ कोई एक और आदमी हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेले *क्रि. वि.* {हिं. अकेला} बिना किसी संग साथ के; केवल, सिर्फ।

अकेश *वि.* {सं.} बिना बालों का।

अकेशी *स्त्री.* बिना बालों की (स्त्री)।

अकैतव *वि.* {सं.} निश्छल।

अकोट *वि.* {सं. कोटि} करोड़ों; बहुत अधिक; असीमित, जो आँका न हो।

अकौआ *पुं.* {हिं. कौआ} गले के अंदर की घंटी, कौआ; आक का पौधा।

अकौता *पुं.* उकवत; चंबल; एक रोग।

अकौशल *पुं.* {सं.} कौशल या दक्षता का अभाव, कुशल या दक्ष न होना (इन-एफिशिएंसी)।

अकौशलपूर्ण *वि.* {सं.} दक्षता के बिना किया गया कार्य।

अक्खड़ *वि.* {सं. अक्षर} {*भाव.* अक्खड़पन} वह जो अपनी बात पर अड़ा रहे और किसी की न सुने; जल्दी लड़ पड़नेवाला, बिगड़ैल, झगड़ालू।

अक्खर *पुं.* अक्षर; अक्षर का तद्‌भव।

अक्त *प्रत्य.* {सं.} किसी से मिला या लगा हुआ, युक्त, जैसे विषाक्त = जिसमें विष हो या मिला हो।

अक्रम *वि.* {सं.} बिना बारी के, जो रीतिबद्ध न हो।

अक्रमित *वि.* {सं.} क्रम से रहित।

अक्रिय *वि.* {सं.} (व्यक्ति) जो सक्रिय न हो; (धन, समय आदि) जो बेकार हो; सुप्त।

अक्रियमाण *वि.* {सं.} जो कार्य रूप में न हो रहा हो; जो अपनी क्रिया का कार्य न कर रहा हो (इनऑपेटिव); जो काम चालू न हो।

अक्रूर *वि.* {सं.} जो क्रूर न हो, दयालु; *पुं.* एक यादव जो श्रीकृष्ण के चाचा थे; ये कंस के आदेश से कृष्ण-बलराम को गोकुल से मथुरा ले गए थे।

अक्ल *स्त्री.* {*अ.*} बुद्धि, समझ।

मुहा. अक्ल का अंधा या दुश्मन = मूर्ख, बेवकूफ; *अक्ल का पूरा* = मूर्ख; *अक्ल चरने जाना* = बुद्धि न रह जाना।

अक्ल-दाढ़ *स्त्री.* देर में निकलनेवाली दाढ़; ऐसा माना जाता है कि इसके निकलने पर मनुष्य को समझ आती है।

अक्लमंद *वि.* {*अ.* अक्ल + फा. मंद} {*भाव.* अक्लमंदी} बुद्धिमान, समझदार।

अक्लमंदी *स्त्री.* {*अ.* + फा.} बुद्धिमत्ता, समझदारी।

अक्ष *पुं.* {सं.} जुआ खेलने का पासा; दो या अधिक वस्तुओं के बीच की वह कल्पित या वास्तविक रेखा जिसके आधार पर वे वस्तुएँ रहती, चलती या घूमती हैं, मेरु, धुरा (ऐक्सिस); भूगोल में कल्पित रेखाएँ जो सारी पृथ्वी पर समान अंतर पर पड़ी हुई मानी जाती हैं (लैटिट्यूड); रुद्राक्ष आदि के बीज जिनसे माला बनती है; इंद्रिय।

अक्षक्रीड़ा *स्त्री.* {सं.} पासे या चौसर का खेल।

अक्षत *वि.* {सं.} जिसे क्षत या चोट न लगी हो; जिसके सही सलामत, जीते जी; टुकड़े न हुए हों, अखंड, पूरा; *पुं.* कच्चा चावल (जो देवताओं पर चढ़ाया जाता है)।

अक्षतयोनि *वि., स्त्री.* {सं.} (कन्या) जिसका पुरुष से संबंध न हुआ हो; अछूती स्त्री।

अक्षपाद *पुं.* {सं.} न्यायशास्त्र के प्रवर्तक गौतम ऋषि; चौसर का एक भाग।

अक्षम *वि.* {सं.} {*भाव.* अक्षमता} जिसमें क्षमता या शक्ति न हो, असमर्थ (डिसेबल्ड); जिसमें किसी कार्य के लिए योग्यता न हो, अयोग्य (इन्कैपेबल); जो क्षमाशील न हो; भूमिहीन।

अक्षमा *स्त्री.* {सं.} सहन शक्ति का अभाव; किसी को माफ न करना।

अक्षम्य *वि.* {सं.} जिसे क्षमा न कर सकें; माफ न करने योग्य।

अक्षय *वि.* {सं.} जिसका कभी क्षय या नाश न हो, सदा एक-सा बना रहनेवाला, अविनाशी; अनश्वर, जो घटे नहीं।

अक्षयतृतीया *स्त्री.* {सं.} वैशाख शुक्ल तृतीया; यह स्वयंसिद्ध मुहूर्त मानी जाती है।

अक्षयनिधि *स्त्री.* {सं.} वह स्थायी निधि जिससे ब्याज आदि प्राप्त होता हो (एंडौमेंट); वह कोश जो घटे नहीं; जिसमें से धन न निकाला जाए; जो खर्च करने से न घटे–विद्या।

अक्षर *पुं.* {सं.} वर्णमाला का कोई स्वर या व्यंजन वर्ण, हरफ (लेटर, एल्फाबेट); शब्द का वह अंश जिसका उच्चारण श्वास के एक झटके में होता हो (सिलेबुल); आत्मा; ब्रह्म; मोक्ष; *वि.* सदा एक-सा बना रहनेवाला, अविनाशी, नित्य।

अक्षरक्रम *पुं.* {सं.} शब्दों, नामों आदि के रखने या लगाने का वह क्रम जिसमें उनके आरंभ के अक्षर उसी तरह या क्रम से रहते हैं, जिस तरह या क्रम से वर्णमाला के अक्षर रहते हैं (एल्फाबैटिक ऑर्डर); विषय सूची जो वर्णमाला के अक्षरों के क्रम के अनुसार बनाई जाती है; उसमें अपनाया गया वर्णक्रम।

अक्षरजीवी (विन्) *वि.* {सं.} लिख-पढ़कर अपनी जीविका चलानेवाला (व्यक्ति); लिपिक जो लोगों के पत्र आदि लिखकर वृत्ति चलाए।

अक्षरशः *क्रि. वि.* {सं.} एक अक्षर का भी अंतर न रखकर, ठीक ज्यों-का-त्यों (कथन या लेख)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षरी *स्त्री.* {सं. अक्षर} शब्दों के अक्षरों का क्रम, वर्तनी, हिज्जे।

अक्षरेखा *स्त्री.* {सं.} वह सीधी रेखा जो किसी गोल पदार्थ के केंद्र से दोनों पृष्ठों पर सीधी गिरती है; धुरी।

अक्षांश *पुं.* {सं.} भूगोल में पृथ्वी पर पूर्व से पश्चिम गई हुई कल्पित समान अंतरवाली रेखा या अक्ष का अंश; भूमध्य रेखा से उत्तर या दक्षिण का अंतर।

अक्षि *स्त्री.* {सं.} आँख, नेत्र।

अक्षिकूप *पुं.* {सं.} आँखों के गड्ढे।

अक्षिकोण *पुं.* {सं.} आँखों के कोने, कटाक्ष (एंगल)।

अक्षिसाक्षी *पुं.* {सं.} ऐसा साक्षी जिसने कोई घटना अपनी आँखें से देखी हो।

अक्षुण्ण *वि.* {सं.} {*भाव.* अक्षुण्णता} ज्यों-का-त्यों और पूरा, बिना टूटा-फूटा, समूचा, सारा।

अक्षुब्ध *वि.* {सं.} शांत।

अक्षेमकर *वि.* {सं. अक्षेम} असुरक्षित; सुरक्षित न करनेवाला, हानि पहुँचानेवाला।

अक्षोभ *पुं.* {सं.} मन की शांत स्थिति।

अक्षौहिणी *स्त्री.* {सं.} वह सेना जिसमें बहुत से हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सिपाही हों (प्राचीन काल में वह सेना अक्षौहिणी मानी जाती थी, जिसमें 109350 पैदल सिपाही, 65610 घुड़सवार, 21870 रथ और 21870 हाथी होते थे, यही पूरी चतुरंगिणी सेना भी कहलाती थी)।

अक्स *पुं.* {*अ.*} प्रतिबिंब, छाया, परछाईं; चित्र, तस्वीर; असर, प्रभाव।

अक्सर *क्रि. वि.* प्रायः; अधिकतर।

अक्सीर *वि., पुं.* अकसीर।

अखंग *वि.* अक्षय; बिना खड्ग का।

अखंड *वि.* जिसके खंड या टुकड़े न हों, बिना टूटा हुआ, पूरा; संपूर्ण।

अखंडता *स्त्री.* {सं.} अखंड होने की अवस्था या भाव संपूर्णता; किसी वस्तु या देश की वह स्थिति जिसमें टुकड़े न हों।

अखंडनीय *वि.* {सं.} जिसके खंड या टुकड़े न किए जा सकें; जो अशुद्ध या झूठा न सिद्ध किया जा सके; जिसे न काट सकें, जिसका प्रतिवाद न हो सके।

अखंडित *वि.* {सं.} जो खंडित या टूटा-फूटा न हो, पूरा, समूचा; जिसका खंडन न हुआ हो।

अखज *वि.* अखाद्य; खाने के अयोग्य।

अखड़ैत *पुं.* {हिं. अखाड़ा + ऐत (प्रत्य.)} मल्ल, पहलवान; अखाड़िया; अकड़कर रहनेवाला जिद्दी।

अखट्ट *पुं.* {सं.} पियाल का वृक्ष।

अखट्टि *स्त्री.* {सं.} बच्चों के ख्याल।

अखती *स्त्री.* अक्षयतृतीया।

अखबार *पुं.* {*अ.*} समाचार-पत्र।

अखबारी *वि.* {*अ.*} अखबार-संबंधी; वह कागज जो केवल अखबार के काम आता है।

अखबारी कागज *पुं.* एक प्रकार का कागज जिसपर समाचार-पत्र छपते हैं (न्यूज प्रिंट)।

अखय *वि.* अक्षय।

अखर *वि., पुं.* अक्षर।

अखरना *अ.* {सं. खर} अनुचित या कष्टदायक जान पड़ना, अच्छा न लगना, खलना; मन को खटकना।

अखरा *वि.* {सं. अ + हिं. खरा = सच्चा} बनावटी, कृत्रिम; जो शुद्ध या बिना मिलावट का न हो।

अखरावट *स्त्री.* अखरौटी; वर्णमाला, लिपि।

अखरोट *पुं.* {सं. अक्षोट} एक फलदार ऊँचा पेड़ जिसके फलों की गिनती मेवों में होती है (वॉलनट)।

अखरौटी *स्त्री.* {हिं. अक्षर} वर्णमाला; लिखने का ढंग, लिखावट; अखरावटी; अक्षरपाटी का तद्भव; वह कविता जिसके पद क्रमशः वर्णमाला के अक्षरों से आरंभ होते हैं।

अखर्व *वि.* {सं.} जो खर्व या छोटा न हो, बहुत बड़ा।

अख़लाक़ *पुं.* {*अ.*} सभ्यता, शिष्ट व्यवहार, अदब।

अखाड़ा *पुं.* {सं. अक्षवाट} वह स्थान जहाँ लोग व्यायाम करते और कुश्ती लड़ते हैं; साधुओं की मंडली और निवासस्थान; वह स्थान जहाँ लोग इकट्ठे होकर अपना कोई कौशल दिखलाते हों।

अखाड़िया *वि.* {हिं. अखाड़ा} बड़े-बड़े अखाड़ों में कौशल दिखानेवाला, अपने विषय या कार्य का बहुत बड़ा ज्ञाता या पटु; अखाड़ों में रहनेवाला।

अखाड़ेबाज़ *पुं.* जिसे अखाड़ा जमाने या लोगों की भीड़ इकट्ठी की आदत हो; खेला राजनीतिज्ञ।

अखाड़ा जमाना *पुं.* भीड़ इकट्ठी करना, प्रचार के लिए कहीं जम कर बैठ जाना।

अखात *पुं.* {सं.} समुद्र का वह थोड़ा अंश जो स्थल से तीन ओर से घिरा हो, उपसागर, खाड़ी; झील।

अखाद्य *वि.* {सं.} (वस्तु) जो खाने के योग्य न हो; जो खाने की वस्तु न हो, बाहरी उपयोग में आनेवाली दवा।

अखान *पुं.* = आख्यान।

अखिल *वि.* {सं.} समस्त, सारा, सब।

अखिलेश (श्वर) *पुं.* {सं.} सबका स्वामी या मालिक, ईश्वर; सबका प्रभु।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखीर पुं. अंत।

अखूट *वि.* {हिं. अ + खूटना = कम होना} जो घटे नहीं, कम न होनेवाला, बहुत अधिक; प्रचुर पर्याप्त।

अखेट पुं. = आखेट (शिकार)।

अखेटक पुं. शिकारी, आखेट करनेवाला, अहेरी।

अखोर *वि.* {हिं. अ + खोर = बुरा} भद्र, सज्जन; सुंदर; निर्दोष; दोषरहित, शुद्ध।

अख्तियार पुं. {अ.} अधिकार; प्रमुख।

अख्यान पुं. = आख्यान।

अग *वि.* {सं.} न चलनेवाला, अचल; टेढ़ा चलनेवाला।

अगज *वि.* {सं.} पर्वत से उत्पन्न; पर्वत पर होनेवाला, पहाड़ी; शिलाजीत; हाथी।

अगड़ *स्त्री.* अकड़; ऐंठ, अभिमान प्रकट करना।

अगड़-बगड़ *वि.* {अनु. या सं. अकटा, विकटा (देवियाँ)} अंडबंड, बेसिर-पैर का; निकम्मा, व्यर्थ का; आसपास में।

अगड़म-बगड़म पुं. अंडबंड; इधर-उधर का कूड़ा-कबाड़ा।

अगण पुं. {सं.} छंदशास्त्र में ये चार निषिद्ध और हीन गण—जगण, रगण, सगण और तगण।

अगणित *वि.* {सं.} जिसकी गिनती न हो सके, बहुत अधिक, असंख्य; जिन्हें गिना न हो; जो किसी गण में न शामिल हो।

अगण्य *वि.* {सं.} जिसे गिन न सकें, बहुत अधिक; जो किसी गिनती में न हो, नगण्य।

अगत *वि.* {सं.} जो गया न हो; महावत द्वारा हाथी को आगे बढ़ाने के लिए बोला गया शब्द।

अगति *स्त्री.* {सं.} गति का न होना, स्थिर या ठहरा हुआ होना; मरे हुए का संस्कार आदि न होना; लाचारी, कोई और रास्ता या विकल्प न होना।

अगतिक *वि.* {सं.} जिसकी कहीं गति या ठिकाना न हो, अशरण, निराश्रय; मरने पर जिसकी अंत्येष्टि-क्रिया आदि न हुई हो; जिसके लिए और मार्ग न हो, मजबूर।

अगतिक-गति *स्त्री.* {सं.} लाचार का एकमात्र सहारा; मजबूरी में मिला सहारा।

अगत्या *क्रि. वि.* {सं.} विवश होकर, लाचार होकर; मजबूरी से, मजबूरी में।

अगंदकार पुं. {सं.} वैद्य।

अगद पुं. {सं.} औषध, दवा; *वि.* जिसे कोई बीमारी न हो।

अगदित *वि.* {सं.} जो कहा न हो।

अगन पुं. = अगण; *वि.* अगण्य, जो गिना न हो; *स्त्री.* = अग्नि।

अगनिउ पुं. {सं. आग्नेय} पूर्व-दक्षिण का कोना, आग्नेय दिशा; *वि.* न गिना गया।

अगनी *वि.* अगणित; अग्नि का तद्भव रूप।

अगनू पुं. {सं. आग्नेय} पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा या कोण, अग्निकोण।

अगनेत पुं. {सं. आग्नेय} आग्नेय दिशा, अग्निकोण।

अगम *वि.* {सं. अगम्य} {*भाव.* अगमता} जहाँ तक कोई पहुँच न सके, दुर्गम; जो जल्दी समझ में न आए, कठिन; जिसकी थाह न लगे, अथाह; विकट; बहुत, अधिक; आगम, शास्त्र।

अगमन *क्रि. वि.* {सं. अग्रवान्} आगे, पहले; आगे से, पहले से; *क्रि.* न जाना।

अगमनीया *वि.* {सं.} वेश्या, राजस्वला, वह भूमि जहाँ जा न सके।

अगमानी पुं. {सं. अग्रगामी} अगुआ, नायक, सरदार; *स्त्री.* अगवानी; *क्रि.* आगे जाकर लाना।

अगम्य *वि.* {सं.} {*भाव.* अगम्यता} जिसके अंदर या पास न पहुँच सकें, दुर्गम; जिसे समझना कठिन हो; अप्राप्य।

अगम्या *वि., स्त्री.* {सं.} (स्त्री) जिसके साथ संभोग करना निषिद्ध हो; अगमनीया।

अगम्यागमन पुं. {सं.} ऐसी स्त्री के साथ किया जानेवाला संभोग, जिसके साथ संभोग करना शास्त्रों द्वारा वर्जित हो; ऐसी स्त्री से संग करना।

अगम्यागामी *वि.* {सं.} अगम्या से संग करनेवाला पुरुष; ऐसा साहसी जो दुर्गम भूमि पर जाए।

अगर[1] *यो.* {फा.} यदि, जो।

अगर[2] पुं. {सं. अगरु} एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी सुगंधित होती है, ऊद; सुगंधित द्रव्य।

अगरबत्ती *स्त्री.* {सं. अगरु + हिं. बत्ती} सुगंध के निमित्त जलाने की बत्ती।

अगर-मगर *स्त्री.* {फा. + अनु} दुविधा, असमंजस; *क्रि. प्र.* बहाने करना, दुविधा में पड़ना।

मुहा. अगर-मगर करना = आनाकानी करना।

अगराना *स.* {सं. अंग} प्यार या दुलार से छूना।

अगरी[1] *स्त्री.* {सं. अर्गल} लकड़ी या लोहे का छोटा डंडा जो किवाड़ के पल्ले में कौंढ़ा लगाकर डाला रहता है, ब्योंड़ा; अर्गला।

अगरी[2] *स्त्री.* {सं. अगिर = अवाच्य} अंडबंड या बुरी बात, अनुचित बात।

अगरु पुं. {सं.} अगर या ऊद नाम की सुगंधित लकड़ी; अगर।

अगरो *वि.* {सं. अग्र} आगे का, अगला; बड़ा; कुशल, चतुर; श्रेष्ठ।

अगर्व *वि.* {सं.} अभिमान से रहित।

अगल-बगल *क्रि. वि.* {फा. बगल} इधर-उधर, आसपास।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगला *वि.* {सं. अग्र} आगे या सामने का; पहले का; पुराना; जो अभी आने को हो, आनेवाला, आगामी; बाद या पीछे का, परवर्ती, दूसरा; अगुआ, पूर्वज।

अगवना *अ.* {हिं. आगे} स्वागत करने के लिए आगे बढ़ना; आगे जाकर लाना।

अगवाड़ा *पुं.* {सं. अग्रवाट} अगला हिस्सा शरीर का या मकान का।

अगवानी *स्त्री.* {हिं. आगे} किसी आनेवाले का सत्कार करने के लिए, आगे बढ़ना, स्वागत; आगे जाकर स्वागत करना।

अगवार *पुं.* वह अन्न जो मंदिर में या पुरोहित अथवा फकीर को देने को अलग निकाल कर रखा जाए।

अगसर *अ.* पहले।

अगसार *क्रि. वि.* = आगे।

अगस्त *पुं.* {सं. ऑगस्ट} ईसवी सन् का आठवाँ महीना।

अगस्त्य *पुं.* {सं.} एक प्रसिद्ध ऋषि; एक प्रसिद्ध तारा; एक वृक्ष जिसमें लाल या सफेद फूल होते हैं।

अगहन *पुं.* {सं. अग्रहायण} {*वि.* अगहनियाँ, अगहनी} मार्गशीर्ष या मंगसिर; कार्तिक के बाद और पूस के पहले का महीना।

अगहनी *वि.* {हिं. अगहन} अगहन-संबंधी; अगहन में तैयार होनेवाली; फसल।

अगाऊ *वि.* {हिं. आगे} (धन) जो किसी काम के लिए पहले दिया जाए, अग्रिम, पेशगी।

अगाड़ी *क्रि. वि.* {हिं. अगाड़} भविष्य में; सामने, आगे; पहले; आगे का भाग, पहले का भाग, सामने का; *स्त्री.* किसी वस्तु के आगे या सामने का भाग; घोड़े के गले में बँधी हुई दो रस्सियाँ जो दाहिने-बाएँ दो खूँटों से बँधी रहती हैं।

अगोता *वि.* {सं.} न गानेवाला।

अगाध *वि.* {सं.} जिसकी गहराई या थाह का पता न चले, बहुत गहरा।

अगान *वि., पुं.* = अज्ञान; *क्रि.* न गाना, न जानना।

अगमै *क्रि. वि.* = आगे।

अगार (री) *क्रि. वि.* = आगे; अगाड़ी।

अगाह *वि.* {सं. अगाध} अथाह, बहुत गहरा; अत्यंत, बहुत; अति कठिन, दुर्बोध; *क्रि. वि.* आगे से, पहले से; *वि.* आगाह।

अगि *पुं.* {सं.} अग्नि; *त.* आग।

अगिदाहु *पुं.* = अग्निदाह; आग से जलना।

अगिन *स्त्री.* {सं. अग्नि} {*क्रि.* अगियाना} अग्नि, आग; एक प्रकार की छोटी चिड़िया; अगिया घास; अगणित।

अगिनगोला *पुं.* {सं. अग्नि + हिं. गोला} वह गोला जिसके फटने से आग लग जाती हो।

अगिनबोट *पुं.* {सं. अग्नि + अं. बोट} वह बड़ी नाव जो भाप के इंजिन के जोर से चलती है, धुआँकश, स्टीमर; मोटर से चलनेवाली नाव, छोटा जहाज।

अगिनित *वि.* = अगणित + तद्भव; अगनित।

अगिया *स्त्री.* {सं. अग्नि} एक प्रकार की घास; नीली चाय, अगिन घास; एक पहाड़ी पौधा जिसके पत्तों में जहरीले रोएँ होते हैं; अगियासन नाम की घास; पैरों में छाले पड़ने का एक रोग; *वि.* आग की तरह जलन उत्पन्न करनेवाला, जैसे अगियासन।

अगिया बैताल *पुं.* {सं. अग्नि, प्रा. अग्गि + बैताल} विक्रमादित्य के कल्पित दो बैतालों में से एक; छलावा; बेताल पच्चीसी में चर्चित बैताल।

अगियारी *स्त्री.* {सं. अग्निकार्य} आग में सुगंधित द्रव्य डालने की पूजन-विधि, धूप देने की क्रिया; पारसियों का मंदिर।

अगियासन *पुं.* {हिं. अगिया + सन (पौधा)} एक पौधा जिसकी पत्ती छूने से शरीर में जलन होती है; संभवतः बिच्छू घास।

अगिर *पुं.* {सं.} सूर्य, स्वर्ग, अग्नि; *वि.* वाणी से रहित।

अगिरी *स्त्री.* घर का अगला भाग।

अगिला *वि.* = अगला।

अगुआ *पुं.* {सं. अग्रप, प्रा. अग्गवय} आगे चलनेवाला, नेता, नायक; मुखिया, प्रधान, पथदर्शक, मार्ग बतानेवाला; आगे रहनेवाला।

अगुआई *स्त्री.* {हिं. आगे} सबसे आगे होने की क्रिया या भाव; नेतृत्व, सरदारी; आगे बढ़कर मार्ग दिखाने की क्रिया या भाव; आगे रहना, अगवानी करना, नेता बनना।

अगुआनी *स्त्री.* = अगवानी; अगुआई।

अगुण *वि.* {सं.} रज, तम आदि गुणों से रहित, निर्गुण; गुणहीन, मूर्ख; गुण का अभाव; जिसमें कोई अच्छाई न हो; *पुं.* अवगुण, दोष।

अगुणज्ञ *वि.* {सं.} गुण की पहचान न करनेवाला, गुणों की कदर न करनेवाला।

अगुणी *वि.* {सं.} गुणहीन।

अगुरु *वि.* {सं.} जो भारी न हो, हलका; जिसने गुरु से शिक्षा या उपदेश न पाया हो।

अगुसरना *अ.* {सं. अग्रसर} {*स.* अगुसारना} आगे बढ़ना।

अगूढ़ गंध, अगूढगंधा *स्त्री.* जिसकी गंध बाहर फैले; हींग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगेर *क्रि. वि.* = आगे।

अगेह *वि.* {सं. अ + हिं. गेह} जिसके रहने का घर-बार न हो, गृहविहीन, बेघर; जो गृहस्थ न हो, घर त्याग दे।

अगोई *वि.* {सं. अ + गोपन} जो गुप्त या छिपा न हो; प्रकट, जाहिर; *वि.* छिपाए।

अगोचर *वि.* {सं.} जो केवल इंद्रियों के द्वारा जाना जा सके, जो देखा, सुना या समझा न जा सके; जो इंद्रियों का विषय न हो।

अगोटना[1] *स.* {सं. आगुंठन} रोकना, छेकना; पहरे में रखना; छिपाना; चारों ओर से घेरना।

अगोटना[2] *स.* {सं. अंग + हिं. ओट} अंगीकार करना, स्वीकार करना; पसंद करना, चुनना।

अगोरना[1] *स.* {सं. आगूरण} राह देखना, प्रतीक्षा करना; रखवाली या चौकसी करना।

अगोरिया *पुं.* {हिं. अगोरना} अगोरने या रखवाली करनेवाला; सँभाल करनेवाला, खेत का रक्षक।

अगौला *पुं.* {हिं. आगे + औला (प्रत्य.)} ऊख या गन्ने का अगला भाग।

अगौहैं *क्रि. वि.* {सं. अग्रमुख} आगे की ओर।

अग्नि *स्त्री.* {सं.} {*वि.* आग्नेय} जलती हुई लकड़ी, कोयला या इसी प्रकार की और कोई वस्तु या उस वस्तु के जलने पर होनेवाला प्रकाशयुक्त ताप; पेट की वह शक्ति जिससे भोजन पचता है; किसी प्रकार की जलन या ताप; पाँच महाभूतों में एक, दाहक तत्व, आग का अभिभावी देवता।

अग्निकर्म *पुं.* {सं.} मरे हुए व्यक्ति का जलाया जाना।

अग्निकांड *पुं.* {सं.} घर, दुकान, बाजार, जंगल आदि में लगनेवाली वह आग जिसमें संपत्ति का विनाश हो (कॉनफ्लेगरेशन); सहसा आग लगने की घटना।

अग्निकाष्ठ *पुं.* {सं.} अरणि जिससे याज्ञिक आग जलाते हैं।

अग्निकीट *पुं.* {सं.} एक कीड़ा जो आग को बुझा देता है।

अग्निकोण *पुं.* {सं.} पूर्व और दक्षिण के बीच का कोना।

अग्निक्रीड़ा *स्त्री.* {सं.} आतिशबाजी।

अग्निगर्भ *वि.* {सं.} वह वृक्ष जिसमें आग छिपी रहती है, शमी का वृक्ष।

अग्निदाह *पुं.* {सं.} जलाना; शवदाह, मुर्दा जलाना; आग देना।

अग्निदीपन *पुं.* {सं.} {*वि.* अग्निदीपक} वह औषध या उपचार जिससे भोजन पचानेवाली पेट की अग्नि बढ़ती हो।

अग्नि-परीक्षा *स्त्री.* {सं.} प्राचीनकाल की एक परीक्षा जिसमें कोई व्यक्ति हाथ में आग लेकर या आग में बैठकर अपना निर्दोष होना सिद्ध करता था; बहुत कठिन परीक्षा या जाँच, जिसमें सब लोग या सब बातें जल्दी पूरी न उतर सकती हों (एसिड टेस्ट)।

मुहा. अग्नि-परीक्षा देना = गहरी या कठिन परीक्षा से निकलना या गुजरना।

अग्निपूजक *पुं.* {सं.} वह जो अग्नि को देवता मानकर पूजे, जैसे पारसी।

अग्निमांद्य *पुं.* {सं.} वह अवस्था या रोग जिसमें भोजन ठीक तरह से नहीं बल्कि कम पचता हो और पेट की अग्नि मंद पड़ गई हो; भूख बंद होना, खाना हजम न होना।

अग्निवर्धक *वि.* {सं.} जिससे पेट की अग्नि या भोजन पचाने की शक्ति बढ़े, भूख बढ़ानेवाला; आग को और धधकानेवाला पदार्थ घी।

अग्निबाण *पुं.* {सं.} प्राचीनकाल का एक प्रकार का बाण जिसे चलाने पर आग बरसती थी।

अग्निवारक *वि.* {सं.} आग को जलने से रोकनेवाला एक पौधा।

अग्निशामक *वि.* {सं.} आग बुझानेवाला यंत्र।

अग्निशिखा *स्त्री.* {सं.} आग की लपट या लौ।

अग्निसंस्कार *पुं.* अग्निकर्म।

अग्निसह *वि.* {सं.} जिसे आग अपने प्रभाव से विकृत या नष्ट न कर सकती हो, अग्नि और उसका ताप सहन करने में सक्षम (फायरप्रूफ); अग्नि सहनेवाला; अग्नि से प्रभावित न होनेवाली।

अग्निसात *वि.* {सं.} आग में डाला गया; आग में डालना।

अग्निसेवन *पुं.* {सं.} आग तापना।

अग्निस्तंभ *वि.* {सं.} आग का असर रोकनेवाला, अभ्रक तथा बूटी।

अग्निस्फुलिंग *पुं.* {सं.} आग की चिंगारी; चिनगारी।

अग्निहोत्र *पुं.* {सं.} वेदों में बतलाया हुआ एक प्रकार का होम जो नित्य किया जाता है और जिसकी आग कभी बुझने नहीं दी जाती; नित्य हवन कराना।

अग्निहोत्री (त्रिन्) *पुं.* {सं.} वह जो सदा अग्निहोत्र करता हो; वैदिक विद्वान।

अग्न्यस्त्र *पुं.* = आग्नेयास्त्र।

अग्र *वि.* {सं.} आगे या सामने का, अगला; प्रधान, मुख्य; पहला, पूर्व, नोक, शिखर।

अग्रकर *पुं.* {सं.} हाथ को अगला भाग, पंजा, प्रथम किरण।

अग्रगण्य *वि.* {सं.} पंक्ति में पहला जिसे सबसे पहले गिनें, सर्वप्रमुख; श्रेष्ठ, उत्तम; सर्वश्रेष्ठ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्रगामी (मिन्) पुं. {सं.} वह जो सबके आगे चलता हो, औरों को अपने पीछे लेकर चलनेवाला; सबसे आगे रहनेवाला, दूरगामी।

अग्रज पुं. {सं.} बड़ा भाई; *वि.* जो पहले उत्पन्न हुआ हो; श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा।

अग्रजन्मा पुं. {सं.} ब्राह्मण।

अग्रजा *स्त्री.* {सं.} बड़ी बहन।

अग्रणी पुं. {सं.} वह जो सबके आगे रहता हो, नायक, नेता, अगुआ; मुखिया, बड़ा अधिकारी; *वि.* उत्तम, श्रेष्ठ।

अग्रता *स्त्री.* {सं.} क्रम, समय, महत्व आदि के विचार से अग्र होने की अवस्था, प्रमुखता (प्रिऑरिटी); प्रखरता, पहले की अवस्था।

अग्रदान पुं. {सं.} देन या दातव्य धन पहले से दे देना; अर्गिम, पेशगी।

अग्रदूत पुं. {सं.} वह जो किसी से पहले आकर उसके आने की सूचना दे (हेरल्ड); सबसे पूर्व सूचना देनेवाला।

अग्रपूजा *स्त्री.* {सं.} किसी की वह पूजा जो औरों से पहले की जाए; अन्य से पूर्व किया गया सम्मान।

अग्रभाग पुं. {सं.} (मकान, सेना आदि का) आगे का या अगला भाग; नोक, शिखर।

अग्रलेख पुं. {सं.} पहले पृष्ठ पर आयी सूचना, सुर्खी।

अग्रवर्ती *वि.* {सं. अग्रवर्तिन्} सबसे आगे रहनेवाला।

अग्रसर *वि.* {सं.} {*भाव.* अग्रसरता} आगे बढ़ा हुआ; पुं. नेता, अगुआ, प्रधान व्यक्ति, मुखिया; सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक आदि विचारों, व्यवहारों और कार्यों में औरों की अपेक्षा आगे बढ़ा हुआ और अधिक उदार, प्रगतिशील।

अग्रसारण पुं. {सं.} {*वि.* अग्रसारित, कर्ता अग्रसारी} आगे की ओर बढ़ाना; किसी का निवेदन, प्रार्थना आदि उचित आज्ञा के लिए अपने से बड़े अधिकारी के पास भेजना (फॉरवर्डिंग); आगे करना, और आगे फैलाना।

अग्रसारित *वि.* {सं.} आगे बढ़ाया हुआ; किसी का निवेदन उचित आज्ञा आदि के लिए बड़े अधिकारी के पास भेजा हुआ (फॉरवर्डिड); आगे फैलाया गया।

अग्रसूची *स्त्री.* {सं.} सुई की अगली नोक; *वि.* आगे की सूचना देनेवाला; पहले।

अग्रसोची *वि.* {सं. अग्र + हिं. सोची = सोचनेवाला} भविष्य में होनेवाली बातों का पहले से ही विचार करनेवाला, दूरदर्शी।

अग्रस्थान पुं. {सं.} पहला स्थान; पहला पद, मुख्य पद, सूचना देनेवाला।

अग्रहर *वि.* {सं.} प्रथम लेनेवाला; आगे ले जानेवाला।

अग्रहस्त पुं. {सं.} हाथ का अगला भाग, पंजा।

अग्रहायण *वि.* {सं.} कार्तिक के बाद और पूस से पहले का महीना, अगहन; मार्गशीर्ष, मंगसिर।

अग्रहार पुं. {सं.} ब्राह्मण को दान में दिया गया गाँव या भूसंपत्ति।

अग्रांचल *वि.* {सं.} सामने का; अगला भाग।

अग्रासन पुं. {सं.} सबसे आगे का या ऊँचा आसन जो किसी मान्य व्यक्ति को उसका आदर करने और उसके प्रति अपनी श्रद्धा दिखाने के लिए दिया जाता है; पहला पद, प्रधान पद, सबसे ऊँची कुर्सी।

अग्राह्य *वि.* {सं.} {*भाव.* अग्राह्यता} जिसे ग्रहण न किया जा सके; जो माना न जा सके।

अग्रिम *वि.* {सं.} वस्तु लेने से पहले चुकाया जानेवाला (मूल्य), अगाऊ, पेशगी; आगे आनेवाला, आगामी।

अघ पुं. {सं.} पाप, पातक; दुख; व्यसन; बुरा, हानि; चोट पहुँचाना।

अघट *वि.* {सं. अ + घटना} जो घटित न हो, न होनेवाला; दुर्घट, कठिन; ठीक न बैठनेवाला, बेमेल; न घटनेवाला।

अघटन पुं. {सं.} {*वि.* अघिटत} न घटना या न होना।

अघटित *वि.* {सं.} जो या जैसा पहले न हुआ हो, अभूतपूर्व; बिल्कुल नया या अनोखा; जो हुआ ही नहीं।

अघटित पूर्व *वि.* {सं.} जो बात पहले कभी न हुई हो।

अघमर्षण *वि.* {सं.} पापों का नाश करनेवाला, पापनाशक; एक मंत्र जो पाप दूर करने के लिए पढ़ा जाता है; ऐसी क्रिया।

अघवाना *स.* {हिं. अघाना} 'अघाना' का प्रेरणार्थक रूप, ऐसा काम करना जिससे कोई अघा जाए; तृप्त कर देना।

अघात[1] पुं. आघात।

अघात[2] *वि.* {हिं. अघाना} बहुत तृप्त होना; तृप्ति, आगे और पाने की इच्छा न रखना; ऊबना।

अघाना *अ.* {सं. अग्रह} कोई वस्तु आवश्यकता से अधिक प्राप्त होने पर परम प्रसन्न और संतुष्ट होना; किसी काम से जी भर जाने के कारण उकताना; थकना; *स.* ऐसा काम करना जिससे कोई वस्तु प्राप्त करके कोई परम संतुष्ट और प्रसन्न हो, संतुष्ट और तृप्त करना; थकाना।

अघासुर पुं. {सं.} एक असुर जो कंस का सेनापति था और जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अघी *वि.* {सं. अघिन्} पापी।

अघोर *वि.* {सं.} जो घोर या भीषण न हो; अघोर संप्रदाय; अघोरपंथ; ये प्रायः सर्वभक्षी परंतु बड़े सिद्धि-संपन्न होते हैं।

अघोरपंथ *पुं.* {सं.} शिव का अनुयायी एक पंथ या संप्रदाय; (इस संप्रदाय के लोगों का आचरण प्रायः बहुत वीभत्स होता है)।

अघोरपंथी *वि.* {सं.} अघोरपंथ का अनुयायी, अघोरी, औघड़; घृणित, गंदी वस्तु खानेवाला; *वि.* अघोरपंथ-संबंधी।

अघोरपथ *पुं.* अघोरमार्ग।

अघोरा *स्त्री.* {सं.} भादों कृष्णपक्ष की चतुर्दशी।

अघोष *पुं.* {सं.} व्याकरण में घोष से भिन्न व्यंजन वर्ण-समूह जिसमें क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, स और प हैं; वे वर्ण जिनके उच्चारण में हलका शब्द होता है।

अघोघ *पुं.* {सं.} पापों का समूह।

अघ्य *वि.* {सं.} न मारने योग्य; *पुं.* ब्रह्मा।

अघ्या *स्त्री.* {सं.} न मारने योग्य, गाय।

अघ्रान *पुं.* आघ्राण; बिना नाक का।

अचंभव *पुं.* = अचंभा; विस्मय, हैरानी।

अचंभा *पुं.* {सं. असंभव} विस्मय, आश्चर्य, ताज्जुब; विस्मयपूर्ण या आश्चर्यजनक बात; आश्चर्यचकित होना।

अचंभित *वि.* {हिं. अचंभा से बना हुआ अशुद्ध रूप} जिसे अचंभा या आश्चर्य हो, चकित।

अचंभो *पुं.* अचंभा; हैरानगी।

अचक *वि.* {?} भरपूर; हैरानी; *पुं.* भौचक्कापन, विस्मय, आश्चर्य।

अचकन *स्त्री.* {सं. कंचुक} अंगे की तरह का एक लंबा पहनावा; एक मुसलमानी पहनावे का लंबा कोट जो कि प्रायः चूड़ीदार पायजामे के साथ पहना जाता है।

अचक्का *क्रि. वि.* = अचानक।

अचगरा *वि.* {?} नटखट, पाजी, दुष्ट; धोखा।

अचगरी *स्त्री.* {हिं. अचगरा} दुष्टता, पाजीपन, नटखटी; उत्पाती, शरारती।

अचतुर *वि.* {सं.} अकुशल, बुद्धू, सरल।

अचपल *वि.* {सं.} जो चपल न हो धीर, गंभीर और शांत बहुत अधिक चपल या चंचल; सीधा, गंभीर स्वभाव का।

अचपली *स्त्री.* {हिं. अचपल} अचपल या अचंचल होने का भाव; बहुत चपलता के कारण किया जानेवाला कार्य, नटखटी, शरारत; मनोविनोद के लिए की जानेवाली क्रीड़ा, किलोल, अठखेली।

अचर *वि.* {सं.} {*भाव.* अचरता} जो चलता न हो, स्थावर; न चलने-फिरनेवाला, स्थावर।

अचरज *पुं.* = आश्चर्य, तद्भव।

अचरम *वि.* {सं.} जो अंतिम न हो।

अचल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अचला, *भाव.* अचलता} जो अपने स्थान से हटे या चले नहीं (इम्मूवेबुल); स्थिर, अटल, दृढ़; अडिग, न हिलने-डुलनेवाला, जड़; *पुं.* पर्वत, पहाड़।

अचल संपत्ति *स्त्री.* {सं.} वह संपत्ति जो अपने स्थान पर अचल रूप से स्थित हो और कहीं हटाई-बढ़ाई न जा सकती हो, जैसे खेत, घर आदि; जायदाद भूमि मकान आदि के रूप में।

अचला *वि., स्त्री.* {सं.} जो न चले, ठहरी हुई, स्थिर; *स्त्री.* पृथ्वी।

अचवन *पुं.* आचमन।

अचवना *स.* {सं. आचमन} आचमन करना, पीना; भोजन के बाद हाथ-मुँह धोना और कुल्ला करना; छोड़ देना; पूजा में जो तीन बार थोड़ा-थोड़ा पानी पिया जाता है।

अचवाना *स.* {हिं.} 'अचवना' का प्रे.; आचमन कराना।

अचानक *क्रि. वि.* {सं. अज्ञानात्} एकबारगी, सहसा, अकस्मात्; एकाएक, बिना संभावना के।

अचापल *पुं.* {सं.} चपलता का अभाव।

अचार[1] *पुं.* {ग.} मसालों के साथ तेल में या यों ही कुछ दिन रखकर खट्टा किया हुआ फल या तरकारी आदि।

अचार[2] *पुं.* आचार; चिरौंजी का वृक्ष; चार न होना।

अचारज *पुं.* = आचार्य; मृतक का संस्कार करानेवाला ब्राह्मण जो मृतक संबंधी दान लेता है।

अचारी *स्त्री.* {हिं. अचार} आम का एक प्रकार का अचार।

अचारु *वि.* {सं.} जो सुंदर या अच्छा न हो।

अचालक *वि.* {सं.} जिसमें से विद्युत न प्रवाहित होती हो (नॉन-कांडक्टर); बिना चालक या ड्राइवर का वाहन; जो न चलाता हो।

अचालू *वि.* जिसका प्रचलन न हो; जो चालाक या धूर्त न हो।

अचाह *स्त्री.* {हिं. अ + चाह} {*वि.* अचाहा} चाह या इच्छा न होना; अनिच्छा; *वि.* जिसे चाह या इच्छा न हो; अनिच्छुक।

अचिंतनीय *वि.* {सं.} जो ध्यान में न आ सके, अज्ञेय, दुर्बोध; जो चिंता का विषय न हो।

अचिंतित *वि.* {सं.} जो सोचा न गया हो, अप्रत्याशित, असंभावित।

अचिंत्य *वि.* {सं.} जिसका चिंतन न हो सके, अज्ञेय, कल्पनातीत; जिसका अंदाजा न हो सके,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतुल; आशा से अधिक; आकस्मिक; जो सोचने लायक न हो, बुरा कर्म या बुरी वस्तु।

अचिकित्स्य *वि.* {सं.} (रोग) जिसकी चिकित्सा न हो सके; (रोगी) जो चिकित्सा से नीरोग न किया जा सके; असाध्य रोगवाला।

अचिकित्सित *वि.* {सं.} जिसकी चिकित्सा न की गई हो।

अचिर *क्रि. वि.* {सं.} {*भाव.* अचिरता} शीघ्र, जल्दी; तुरंत, तत्काल, उसी समय; *वि.* अल्प।

अचिरद्युति *स्त्री.* {सं.} बिजली लाइटनिंग।

अचिरात, अचिरात् *क्रि. वि.* {सं.} तुरंत, तत्काल, जल्दी।

अचूक *वि.* {सं. अमोघ} न चूकनेवाला; अपना प्रभाव या फल अवश्य दिखानेवाला; भ्रमरहित, ठीक, पक्का; भूल न करनेवाला, व्यर्थ न जानेवाला; *क्रि. वि.* सफाई से, कौशल से; निश्चय ही, अवश्य जरूर।

अचेत *वि.* बेहोश।

अचेतन *वि.* {सं.} जिसमें चेतन, ज्ञान या संज्ञा न हो; बेहोश; जिसमें जीवन या प्राण न हो, जड़ 'चेतन' का उलटा; संज्ञाहीन, स्थावर।

अचेष्ट *वि.* {सं.} जिसमें कोई चेष्टा या गति न हो, जो हिलता-डुलता न हो।

अचेष्टित *वि.* {सं.} जिसके लिए कोई चेष्टा या प्रयत्न न हुआ हो; चेष्टाहीन, जो कुछ चेष्टा न करता हो।

अचैतन्य *वि.* {सं.} जिसमें चेतना या चैतन्य न हो; *पुं.* चैतन्य या चेतना न होने की अवस्था, मृतदशा।

अचैन *पुं.* {हिं. अ + चैन} चैन या सुख-शांति का अभाव; *वि.* जिसे चैन न मिल रहा हो, विकल, व्याकुल; बेचैन; सुख का अभाव, बेचैनी।

अचोना *पुं.* {हिं. आचमन} वह बरतन जिसमें हाथ-मुँह धोते या कुल्ला करते हैं; *स.* आचमन करना; आचमनी, ताँबे का बना आचमन का पात्र।

अच्छ *वि.* {सं.} स्वच्छ, निर्मल; स्पष्ट, भालू, अक्षिको तद्भव, सुंदर; *पुं.* अक्ष।

अच्छत *वि., पुं.* अक्षत; पूजा योग्य साबुत चावल, सही सलामत।

अच्छर *वि., पुं.* अक्षर।

अच्छरा *स्त्री.* अप्सरा; अक्षरा; पर्याप्त, निर्दोष।

अच्छा *वि.* {सं. अच्छ} उत्तम, बढ़िया, अच्छे से अच्छा = बहुत अच्छा; स्वस्थ, तंदुरुस्त, नीरोग। *मुहा. अच्छा खासा* = पर्याप्त मात्रा में, ठीकठाक; *अच्छा भला* = सुरक्षित, ठीक हालत में। *क्रि. वि.* अच्छी तरह, खूब। *मुहा. अच्छे आना* = ठीक या उपयुक्त अवसर पर आना (व्यंग्य)।

अच्छाई *स्त्री.* {हिं. अच्छा + आई} अच्छापन; अच्छी बात; भलापन, भलाई।

अच्छापन *पुं.* {हिं. अच्छा + हिं. पन} अच्छे होने का भाव, उत्तमता; भद्रता, भला होना।

अच्छि *स्त्री.* {सं. अक्षिन, अक्षन्} आँख, नेत्र; तद्भव।

अच्युत *वि.* {सं.} {*भाव.* अच्युति} अपने स्थान से न हटने या न गिरनेवाला; जो अपने पद से न हटे; *पुं.* विष्णु; कृष्ण।

अच्युत-पुत्र *पुं.* {सं.} कामदेव।

अच्युत मध्यम *पुं.* संगीत का एक स्वर।

अछक *वि.* {हिं. अ + छकना = तृप्त होना} जो छका या तृप्त न हुआ, अतृप्त; तृप्त न होनेवाला, खाकर संतुष्ट न हुआ।

अछत *क्रि. वि.* {हिं. 'आछना' का कृदंत रूप} रहते हुए; उपस्थिति में; सही सलामत रहते, उपस्थित रहने पर भी।

अछन *पुं.* {सं. अ + क्षण} बहुत दिन, दीर्घकाल, चिरकाल; क्षण से अधिक समय; *क्रि. वि.* धीरे-धीरे, ठहर-ठहरकर; अस्तित्व, बना रहना।

अछना *अ.* {सं. अस्ति} विद्यमान रहना, मौजूद होना, रहना।

अछय *पुं.* अक्षय।

अछरा *स्त्री.* अप्सरा; अक्षरा।

अछरी *स्त्री.* अप्सरा; अक्षरी।

अछरौटी *स्त्री.* अखरौटी।

अछल *वि.* {सं. अच्छल} छलरहित, निष्कपट।

अछवाई *स्त्री.* {हिं. अच्छा} अच्छापन, अच्छाई; अच्छी बात, अच्छाई; स्वच्छता, सफाई; स्वच्छ होना, भला होना, स्पर्श करना।

अछवाना *स.* {सं. अच्छ = साफ} साफ करना; सँवारना; सुजाना, सुधारना।

अछवानी *स्त्री.* {हिं. अजवायन} कुछ मसालों को पीसकर घी में पकाया हुआ चूर्ण जो प्रसूता स्त्रियों को पिलाते हैं; जिसे बादाम दूध के साथ छौंककर प्रसूता के लिए बना पेय (अकौनी)।

अछाम *वि.* {हिं. अ + क्षाम} खूब मोटा, बड़ा या भारी; जो दुर्बल न हुआ हो।

अछूत *वि.* {सं. अ = नहीं + हिं. छूत} अछूता, अस्पृष्ट; जो काम में न लाया गया हो, नया, ताजा; जिसे अपवित्र मानकर लोग न छूते हों, अस्पृश्य; जिसका स्पर्श वर्जित हो, अंत्यज या रजस्वला स्त्री।

अछूता *वि.* {सं. अ = नहीं + हिं. छूत = छूता हुआ} {*स्त्री.* अछूती} जिसे अभी तक किसी ने

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न छुआ हो, अस्पृष्ट; जो काम में न लाया गया हो, नया, कोरा, ताजा; जिसपर अभी तक किसी ने विचार या विवेचन न किया हो, जैसे अछूता विषय; कोरा, उपयोग में न आया हुआ, जिस स्थान पर कोई न पहुँचा हो।

अछूतोद्धार पुं. {हिं. अछूत + सं. उद्धार} अछूतों या अंत्यजों का उद्धार (अशुद्ध यौगिक); महात्मा गांधी द्वारा चलाया गया एक आंदोलन।

अछेद *वि.* {सं. अछेद्य} जो छेदा न जा सके, अभेद्य; जिसमें कोई छेद न हो; निर्दोष; पुं. भेद, भिन्नता आदि का अभाव।

अछेद्य *वि.* {सं.} जो छेदा न जा सके; जैसे आत्मा।

अछेव *वि.* = निष्कलंक।

अछेह *क्रि. वि.* = निरंतर।

अछोर *वि.* {हिं. अ + छोर} अनंत, असीम; बहुत अधिक; जिसका किनारा न हो, अपार; जिसका वास्तविक भेद न जाना जा सके।

अज *वि.* {*स्त्री.* अजा} जिसका जन्म न हुआ हो; पुं. {सं.} ईश्वर; ब्रह्म; बकरा; ब्रह्मा, जीवात्मा; राजा दशरथ के पिता का नाम; कामदेव, चंद्रमा; मेष राशि।

अजगर पुं. {सं.} एक प्रकार का बहुत बड़ा और मोटा साँप।

अजगव पुं. {सं.} शिव का धनुष, पिनाक।

अजगुत पुं. {सं. अयुक्त} अद्‌भुत या विलक्षण बात।

अजगैबी *वि.* {फा. अज + *अ.* गैब} छिपा हुआ, गुप्त. अचानक होनेवाला, आकस्मिक।

अजजीवी पुं. {सं.} गड़रिया।

अजन *वि.* {*अ.*} अज्ञात, अपरिचित; नया आया हुआ, परदेसी; अकस्मात् प्रकट होनेवाला।

अजन्मा *वि.* {सं.} जो हो तो सही, पर बिना जन्म लिए हो, जैसे ईश्वर; जारज, दोगला; निंदित जन्मवाला।

अजपा *वि.* {सं.} जिसका जोर-जोर से जप न किया जाए; ब्रह्मविद्या जो केवल मनन का विषय होती है; जो जपा न जाए; जो जप न करे; पुं. तांत्रिकों का एक प्रकार का मंत्र जिसका जप नहीं किया जाता, मन ही मन ध्यान मात्र किया जाता है।

अजपाजाप पुं. {सं.} वेदांत की परिभाषा, 'अहंब्रह्मास्मि', 'सोऽहम' जैसे वचनों का मन ही मन मनन करना।

अजब *वि.* {*अ.*} विलक्षण, अद्‌भुत, विचित्र, अनोखा; अजीब।

अजमाना *स.* = आजमाना; परीक्षा करना।

अजय पुं. {सं.} पराजय, हार; जिसकी जीत न हुई हो; *वि.* जो जीता न जा सके, अजेय।

अजर *वि.* {सं.} जिसे जरा या बुढ़ापा न आए, सदा ज्यों-का-त्यों रहनेवाला; जो पुराना न पड़े।

अजरायल *वि.* {सं. अजर} दृढ़ और स्थायी, पक्का; टिकाऊ।

अजराल *वि.* अजरायल।

अजल *वि.* {सं.} जिसमें जल का अंश न हो; निर्जल।

अजवायन *स्त्री.* {सं. यवनिका} एक पौधा जिसके सुगंधित बीज मसाले और दवा के काम में आते हैं, यवानी; अजमोद, अजमोद का एक भेद।

अजस पुं. {सं. अयश} अपयश, अपकीर्ति, बदनामी।

अजसी *वि.* {हिं. अजस} जिसे अच्छा काम करने पर भी यश न मिलता हो; लोक में जिसका अपयश फैला हो, बदनाम।

अजहल्लक्षणा *स्त्री.* {सं.} लक्षणावृत्ति का वह भेद जिसमें शब्द वाच्य अर्थ का त्याग न करे।

अजस्र *वि.* {सं.} {*भाव.* अजस्रता} बहुत अधिक, अपरिमित; *क्रि. वि.* लगातार, निरंतर।

अजहुँ (हूँ) *क्रि. वि.* {हिं. आज + हूँ (प्रत्य.)} अभी तक, इस समय तक; आज भी, अभी भी।

अजा *स्त्री.* {सं.} बकरी; दुर्गा; कभी जन्म न लेनेवाली, प्रकृति, माया।

अजागलस्तन पुं. {सं.} बकरी के गले पर स्थित स्तन।

अजाचक *वि.* {सं. अ + याचक} जो कभी किसी से कुछ न माँगता हो; किसी से न माँगनेवाला।

अजाजीव, अजाजीवी पुं. {सं.} गड़रिया; बकरी पालनेवाला।

अजात[1] *वि.* {सं.} जो हो तो, पर जिसका जन्म न हुआ हो; जो अभी तक जनमा न हो।

अजात[2] *वि.* {सं. अ + जाति} जिसकी कोई जाति न हो; जाति से निकाला हुआ।

अजातपक्ष *वि.* {सं.} जिसके पंख न निकले हों।

अजातश्मश्रु *वि.* {सं.} जिसकी मूँछें न निकली हों।

अजातशत्रु पुं. {सं.} जिसका कोई शत्रु न हो; पुं. राजा युधिष्ठिर का एक नाम; मगध के राजा बिम्बिसार का पुत्र जो गौतम बुद्ध के समय में हुआ था; आधुनिककाल में डॉ. राजेंद्र प्रसाद के लिए प्रयुक्त विशेषण।

अजाति *वि.* {सं. अ + जाति} जाति से निकाला हुआ, पंक्तिच्युत; जिसका कोई कुल या जाति न हो, जैसे ईश्वर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजाद *वि.* = आजाद।
अजादी *स्त्री.* = आजादी।
अजान *वि.* {हिं. अन + जानना} जो न जाने, अनजान, अबोध, नासमझ; अपरिचित, अज्ञात; मस्जिद के इमाम द्वारा नमाज़ की सूचना के लिए दी गई बाँग; *पुं.* अज्ञान, अनभिज्ञता।
अजानता *स्त्री.* = अज्ञान; अनजान होना, अज्ञानता।
अजायबघर *पुं.* {*अ.* अजायब + हिं. घर} वह स्थान जिसमें अनेक प्रकार की अद्‌भुत, विलक्षण और कला-कौशल की वस्तुएँ जन-साधारण के देखने के लिए स्थायी रूप से रखी रहती हैं (म्यूजियम); अद्‌भुतालय।
अजार *पुं.* {फा. आज़ार} बीमारी।
अजित *वि.* {सं.} जिसे जीत न सकें; जो किसी ने न जीता हो।
अजिर *पुं.* {सं.} आँगन, सहन; वायु, हवा; शरीर; इंद्रियों का विषय; वायु, छछूँदर।
अजीब *वि.* {*अ.*} विलक्षण, विचित्र, अनोखा, अनूठा; अनदेखा।
मुहा. अजीबोगरीब = कभी न देखा न सुना।
अजीरन *पुं.* = अजीर्ण।
अजीर्ण *पुं.* {सं.} वह रोग जिसमें भोजन नहीं पचता, अपच, बदहजमी; किसी वस्तु का इतना अधिक हो जाना कि वह सँभाली न जा सके; *वि.* जो जीर्ण या पुराना न हो, नया; मन्दाग्नि या अपच रोग।
अजीव *पुं.* {सं.} जीवतत्व से रहित या भिन्न जड़ पदार्थ; जिसमें जीव न पड़ा हो जैसे अण्डा।
अजुगत *वि.* जो युक्तिसंगत न हो, जो संभव न हो।
अजुगति *स्त्री.* {सं. अयुक्त} विलक्षण या अनहोनी बात।
अजूजा *पुं.* {देश.} बिज्जू की तरह का एक जानवर जो मुरदे खाता है।
अजूबा *वि.* {*अ.*} अद्‌भुत, अनोखा।
अजूरा[1] *पुं.* {हिं. अ + जुड़ना} पृथक्, अलग।
अजूह *पुं.* {सं. युद्ध} युद्ध, लड़ाई।
अजेय *वि.* {सं.} {*भाव.* अजेयता} जिसे कोई जीत न सके, अपराजेय; किसी से न जीता जाने योग्य।
अजैकपाद *पुं.* {सं.} विष्णु; रुद्र।
अजैव *वि.* {सं.} जिसका जीव से संबंध न हो या जो जीवन से युक्त न हो (इन-आर्गैनिक); भौतिक द्रव्य।
अजोग *पुं.* {हिं. अ + योग} बुरा या खराब योग; प्रतिकूल समय; *वि.* = अयोग्य।
अजौं *क्रि. वि.* {सं. अद्य} अब तक; अभी भी।
अज्ञ *वि.* {सं.} {*भाव.* अज्ञता} जो कुछ जानता न हो या जिसे कुछ आता न हो, मूर्ख, नासमझ; अजान, सर्वथा अज्ञानी।
अज्ञात *वि.* {सं.} जो जाना हुआ न हो, बिना जाना; छिपा हुआ गुप्त; जिसको किसी प्रकार जान न सकें, अगोचर।
अज्ञातकुल *वि.* {सं.} जिसके खानदान का पता न हो।
अज्ञातनाम *वि.* {सं.} जिसका नाम विदित न हो; अविख्यात; जिसका नाम भी मालूम न हो; गुप्त।
अज्ञातयौवना *स्त्री.* {सं.} वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन के आगमन का ज्ञान न हो।
अज्ञातवास *पुं.* {सं.} ऐसे स्थान पर रहना जिसका कोई पता न पा सके, छिपकर रहना।
अज्ञान *पुं.* {सं.} ज्ञान या बोध का अभाव; जड़ता, मूर्खता; जीवात्मा को गुण और गुण के कार्यों से पृथक् न समझने का अविवेक (अध्यात्म); न्याय में एक निग्रह स्थान; किसी विषय का ज्ञान या परिचय न होना, ज्ञान आदि का अभाव (इग्नरेन्स); *वि.* मूर्ख, नासमझ।
अज्ञानविद्या *वि.* जो ज्ञानरहित हो।
अज्ञानतिमिर *पुं.* {सं.} अज्ञानरूपी अँधेरा।
अज्ञानतः *क्रि. वि., अ.* {सं.} अज्ञान के कारण, अनजाने में।
अज्ञानता *स्त्री.* {सं.} 'अज्ञान' का भाव, धर्म या गुण; किसी बात से परिचित न होने का भाव; मूर्खता, नासमझी; अनजानपन, अज्ञान की स्थिति।
अज्ञेय *वि.* {सं.} जो समझ में न आ सके, ज्ञानातीत, अबोधगम्य।
अज्ञेयवाद *पुं.* {सं.} यह सिद्धांत कि दृश्य जगत् से परे जो कुछ है, वह जाना नहीं जा सकता (एग्नॉस्टिसिज्म); आत्मा, ईश्वर आदि को ज्ञान की सीमा से बाहर मानने का सिद्धांत।
अझूना *वि.* {हिं. अ + सं. जीर्ण} ज्यों-का-त्यों रहनेवाला स्थायी; जो पुराना न पड़े।
अटंबर *पुं.* {सं. अट्ट + फा. अंबार} अटाला, ढेर, राशि; आडंबर, बहुत सारा।
अटक *स्त्री.* {हिं. अटकना} अटकने की क्रिया या भाव; रोग, रुकावट; अड़चन, बाधा; संकोच; एक नगर तथा एक नद जो अब पाकिस्तान में है।
अटकन *स्त्री.* = अटक; रुकावट।
अटकना *अ.* {सं. हत + हिं. क + ना} {*स.* अटकाना} चलते-चलते रुकना, अड़ना; फँसकर रुकना; झगड़ा करना; अवरुद्ध होना, अवरोध।
अटकर *स्त्री.* = अटकल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अटकल *स्त्री.* {?} अनुमान, अंदाज।
अटकलबाज *वि.* जो यथार्थ जानने का यत्न न करे, केवल अनुमान लगाए।
अटकलपच्चू *वि.* {हिं. अटकल} केवल अटकल या अनुमान से सोचा या समझा हुआ।
अटकलबाजी *स्त्री.* अटकल लगाने की प्रवृत्ति।
अटका *पुं.* {?} जगन्नाथ को चढ़ाया जानेवाला भात और धन।
अटकाना *स.* {हिं. अटकना} रोकना, ठहराना; अड़ाना, फँसाना; पूरा करने में विलंब करना; जानबूझ कर रोकना।
अटकाव *पुं.* {हिं. अटकना} अटकने की क्रिया या भाव; रोक, रुकावट, प्रतिबंध; बाधा, विघ्न; रुकने की स्थिति, अवरोध।
अटखट *वि.* अट्टसट्ट; बेकार का सामान; *क्रि. वि.* निरा, बिल्कुल।
अटना[1] *अ.* {सं. अटन} घूमना, फिरना; यात्रा करना, सफर करना; समाना।
अटना[2] *अ.* आड़ करना, ओट करना, छेकना; भर देना, भीड़ करना।
अटनी *स्त्री.* {सं.} धनुष की डोरी, प्रत्यञ्चा का स्थान।
अटपटा *वि.* {अनु.} {*स्त्री.* अटपटी} बेठिकाने का, बेसिर-पैर का; विकट, कठिन; जिसका अर्थ या संगति ठीक न बैठे, असंबद्ध, जैसे अटपट बानी; असंगत, बेमेल।
अटपटी *स्त्री.* {हिं. अटपट} नटखटी, शरारत, अनरीति; बेतुक।
अटब्बर *पुं.* {सं. आडंबर} आडंबर; दर्प; बड़ा समूह, ऊपरी दिखावा।
अटर्नी *पुं.* {अं.} वकील।
अटल *वि.* {हिं. अ + टलना} {*भाव.* अटलता} जो अपने स्थान से हटे या टले नहीं, स्थिर; दृढ़, पक्का; अवश्य होनेवाला; निश्चित।
अटवी *स्त्री.* {सं.} जंगल, बन; मैदान; महारण्य; घना जंगल।
अटा *स्त्री.* अटारी; अट्टालिका।
अटाटूट *वि.* {सं. अट्टट्ट} बहुत अधिक; असीम, जो खत्म न हो।
अटाट्या *स्त्री.* {सं.} पर्यटन, टहलना।
अटारी *स्त्री.* {सं. अट्टाली} घर का ऊपरी भाग, कोठा।
अटाल *पुं.* अटाला; बड़ी हवेली, ऊँचा मकान।
अटाला *पुं.* {सं. अट्टाल} ढेर, राशि; आडंबर, ढेर।
अटित *वि.* {सं. अटा} अटारियों या ऊँचे मकानों से युक्त (नगर)।
अटीक *वि.* {सं.} जिसके बारे में कुछ न कह सकें; असंगत जो समाप्त न हो, अटूट भंडार, अटूट संबंध, कमी न होना।
अटूट *वि.* {सं. अ = नहीं + हिं. टूटना} न टूटने योग्य, दृढ़, पुष्ट, मजबूत; जिसका पतन न हो, अजेय; अखंड; बहुत अधिक; *क्रि. वि.* लगातार।
अटेरन *स्त्री.* {सं. अति + ईरण} {*क्रि.* अटेरना} सूत की आँटी बनाने का लकड़ी का एक उपकरण; घोड़े को कावा या चक्कर देने की एक रीति।
अटेरना *स.* {हिं. अटेरन} अटेरन से सूत की आँटी बनाना; मात्रा से अधिक मद्यपान करना।
अटैची *स्त्री.* {सं.} चमड़े या कैनवस की बनी सँदूकची जो यात्रा के काम आती है; दूतावास का एक अधिकारी।
अट्ट *पुं.* {द्रविड़ से गृहीत सं.} बड़ा मकान, भवन; अटारी, कोठा; हाट, बाजार; किले का बुर्ज; अधिक मात्रा; *वि.* ऊँचा, उच्च।
अट्टसट्ट *वि.* {अन.} अंडबंड, ऊटपटाँग; असंगत, बेमेल।
अट्टहास *पुं.* {सं.} खूब जोर की हँसी, ठहाका; शंकर का प्रलय के समय भीषण हास।
अट्टालिका *स्त्री.* {सं.} बड़ा और ऊँचा मकान; अटारी, कोठा।
अट्टी *स्त्री.* {हिं. अंठी} अटेरन पर लपेटा हुआ सूत या ऊन, सूत की लट; लच्छा।
अटचा *स्त्री.* {सं.} भ्रमण, पर्यटन।
अठंग *पुं.* {सं. अष्टांग} योग, जिसके आठ अंग माने गए हैं; *वि.* आठ अंगोंवाला।
अठ *वि.* आठ (यौगिक शब्दों के आरंभ में, जैसे अठपहलु)।
अठकोसला *स्त्री.* {सं. अष्ट कौशला} पंचायत, संसद, बड़ी जमात।
अठखेली *स्त्री.* {सं. अष्टकेलि} विनोद, क्रीड़ा; चपलता, चुलबुलापन; किसी के साथ की जानेवाली छेड़छाड़।
अठन्नी *स्त्री.* {हिं. आठ + आना} आठ आने का पुराना सिक्का; पचास पैसे का सिक्का; प्राचीन रुपए का आधा भाग।
अठपहला *वि.* {हिं. आठ + पहल = पार्श्व} आठ पहलों या पार्श्वोंवाला; अठपहलू भवन।
अठपेजी *वि.* {हिं. आठ + अं. पेज = पृष्ठ} (पुस्तकों आदि की छपाई में) जो कागज के एक ताव या तख्ते को चार बार मोड़कर आठ पृष्ठों के रूप में लाया गया हो (ऑक्टेवो)।
अठमासा *वि.* {सं. अष्टमास} जो आठ महीने गर्भ में रहा हो; *पुं.* सीमंत संस्कार; वह खेत जो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आषाढ़ से माघ तक समय-समय पर जोता जाए और जिसमें ईख बोई जाए।

अठलाना *अ.* {हिं. इठलाना} ऐंठ दिखलाना, इतराना; चोचला करना, नखरा करना; मदोन्मत्त होना, मस्ती दिखाना; जान-बूझकर अनजान बनना; जानबूझकर अकड़ना; रूठने का बहाना करना।

अठवाँसा *वि., पुं.* {सं. अष्टमासिक} अठमासा; ऐसा बच्चा दुर्बल या अल्पजीवी माना जाता है।

आठवार *स्त्री.* {सं. अष्ट बलि} पर्वतीय प्रदेशों में प्रचलित एक धार्मिक कृत्य जिसमें देवी को आठ जीवों की बलि चढ़ाई जाती थी (अठ्चाड़)।

अठवारा *पुं.* {हिं. आठ + सं. वार} आठ दिन का समय; सप्ताह, हफ्ता; आठ दिनों में वाला; आठ दिनों का समूह।

अठसिला *स्त्री.* {सं. अष्टशिला} आठ तीरों वाली चौकी।

अठसिल्या *स्त्री.* {सं. अष्टशिला} राजा, देवता आदि का सिंहासन।

अठान *पुं.* {सं. अ = नहीं + हिं. ठानना} न ठानने योग्य कार्य, अनुचित या कठिन काम; वैर, शत्रुता; झगड़ा; निश्चित न करने योग्य कर्म।

अठाना[1] *स.* {सं. अट्ट = वध करना} सताना, पीड़ित करना।

अठाना[2] *स.* {हिं. ठानना} ठानना; निश्चय करना।

अठोतरी *स्त्री.* {सं. अष्टोत्तरी} एक सौ आठ मनकों की माला, इतने नामों से की गई स्तुति।

अड़ंगा *पुं.* {हिं. अड़ाना + टाँग} टाँग अड़ाने का काम; बाधा, रुकावट।

अड़ंगेबाज *वि.* जिसे हर काम में रुकावट डालने की आदत हो।

मुहा. अड़ंगा डालना = रुकावट या बाधा डालना।

अडंड *वि.* {सं. अ + दंड्य} दंड के अयोग्य।

अडंबर *पुं.* {हिं. अंबर-डंबर} सूर्योदय या सूर्यास्त के समय सूर्य की किरणों के कारण बादलों में दिखाई देनेवाली लाली; बादल छाना; *पुं.* आडंबर।

अड़ *स्त्री.* {सं. हठ} हठ, जिद; किसी बात पर जमना।

अड़गड़ा *पुं.* {अनु.} बैल-गाड़ियों के ठहरने का स्थान; बैलों या घोड़ों की बिक्री का स्थान।

अड़गोड़ा *पुं.* चौपायों के गले में बाँधने की मोटी लकड़ी जिसके कारण वे भाग नहीं सकते।

अड़चन *स्त्री.* {हिं. अड़ना + चलना} बाधा, विघ्न; कठिनता।

अड़तल *स्त्री.* {हिं. अड़ = हठ + फा. दार (प्रत्य.)} दुराग्रही, हठी; चलते समय बीच-बीच रुकनेवाला, अड़ियल; घमंडी, अभिमानी; मतवाला, मत्त, मस्त; जो दूसरे का कहा न माने।

अड़ना *अ.* {सं. अल = वारण करना} रुकना, ठहरना; हठ करना; हठकर के रुकना।

अड़बंग *वि.* {हिं. अड़ + सं. वक्र} टेढ़ा-मेढ़ा, अटपट; विकट, कठिन; विलक्षण; अष्टावक्र का अपभ्रंश।

अडर *वि.* {सं. अ + हिं. डर} निडर, निर्भय, बेडर।

अड़हुल *पुं.* {सं. ओड़ + फुल्ल} देवीफूल, जवापुष्प; गुडहल।

अड़ान *स्त्री.* {हिं. अड़ना} अड़ने की क्रिया या भाव; पड़ाव।

अड़ाना *स.* {हिं. अड़ना } टिकाना, रोकना, ठहराना, अटकाना; टेकना, डाट लगाना; कोई वस्तु बीच में देकर गति रोकना; ठूसना, भरना; गिराना, ढरकाना; रोक लगाना, गिरने से बचाने के लिए कुछ ठोसना या फँसाना; *पुं.* एक राग; वह लकड़ी जो गिरती हुई छत या दीवार आदि को गिरने से बचाने के लिए उसके नीचे लगाई जाती है, डाट, चाँड़।

अड़ायता *वि.* {हिं. आड़} आड़ या ओट करनेवाला; अपनी शरण में रखकर रक्षा करनेवाला।

अड़ार[1] *पुं.* {सं. अट्टाल = बुर्ज} समूह, राशि, ढेर; बिक्री के लिए रखा हुआ ईंधन का ढेर; लकड़ी या ईंधन की दुकान।

अड़ार[2] *वि.* {सं. अराल} टेढ़ा, तिरछा।

अड़ासा *पुं.* {हिं. अड़ाना} पहिए की गति रोकने के लिए लगाया जानेवाला उपकरण।

अडिग *वि.* {हिं. अ + डिगना} अपने स्थान से न डिगने या न हटनेवाला, अटल।

अड़ियल *वि.* {हिं. अड़ना} अड़कर चलनेवाला, चलते-चलते रुक जानेवाला; सुस्त, मट्ठर; हठी।

मुहा. अड़ियल टट्टू = जो बात-बात पर अड़ता हो।

अड़िल्ल एक छंद जो प्राचीन हिन्दी कविता में प्रयुक्त होता था।

अड़ी *स्त्री.* {हिं. अड़ना} जिद, हठ, आग्रह; रोक; जरूरत का वक्त या मौका।

अडीठ *वि.* {हिं. अ + डीठ} जो दिखाई न दे; छिपा हुआ; दृष्टि से बाहर गुप्त।

अडूसा *पुं.* {सं. अटरूप} श्वास, कास आदि के काम आती है; इसके फूल सफेद होते हैं, जिनसे गुलकंद भी बनता है।

अडोल *वि.* {सं. अ = नहीं + हिं. डोलना} जो हिले नहीं, अटल, स्थिर; स्तब्ध, चकित।

अड़ोस-पड़ोस *पुं.* {हिं. पड़ोस} अपने घर के आसपास के घर, भवन आदि; परिवेश, परिसर, निकटवर्ती स्थान या वहाँ रहनेवाले लोग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अड्डा पुं. {सं. अट्टा = ऊँची जगह} टिकने की जगह, ठहरने का स्थान; किसी विशेष कार्य के लिए कुछ लोगों के मिलने या इकट्ठा होने की जगह; केंद्रस्थान, प्रधान स्थान; चिड़ियों के बैठने के लिए लकड़ी या लोहे का बना हुआ ढाँचा या छड़; कबूतरों की छतरी; कारीगरों के बैठकर काम करने की जगह; करघा।
मुहा. अड्डा जमाना = कहीं पर जमकर बैठ जाना; *अड्डा बनाना* = टिकने का स्थान बनाना; अपराधियों के एकत्रित होने के कारण बदनाम जगह।

अढ़तिया पुं. {हिं. आढ़त} वह दुकानदार जो ग्राहकों या महाजनों को माल खरीदकर भेजता और उनका माल मँगाकर बेचता हो, आढ़त करनेवाला; दलाल; थोक माल बेचनेवाला, आढ़ती।

अणि *स्त्री.* {सं.} काँटे या शूल का अग्रभाग जो अत्यंत पैना हो।

अणिमा *स्त्री.* {सं.} अष्ट सिद्धियों में पहली सिद्धि जिससे योगी लोग किसी को दिखाई नहीं पड़ते; अत्यंत सूक्ष्म या छोटा होने की शक्ति प्राप्त होना।

अणु पुं. {सं.} साठ परमाणुओं का एक प्राचीन मान (विशेष 'परमाणु'); किसी वस्तु का बहुत ही छोटा टुकड़ा या कण; रजकण; सूक्ष्म मात्रा; छोटा, थोड़ा; *वि.* अति सूक्ष्म, अत्यंत छोटा; जो दिखाई न दे।

अणुजीव पुं. {सं.} प्राणी या वनस्पति वर्ग का बहुत ही छोटा जीव (माइक्रोब)।

अणुबम पुं. {सं. अणु + अं. बॉम्ब} एक प्रकार का परम भीषण बम (गोला); यह अणुओं से बनाया जाता है।

अणुभाष्य ब्रह्मसूत्र पर वल्लभाचार्य कृत भाष्य।

अणुवाद पुं. {सं.} {*वि.* अणुवादी} वह दर्शन या सिद्धांत जिसमें जीव या आत्मा माना गया हो।

अणुवादी पुं. {सं. अणुवादिन्} अणु सिद्धांत को माननेवाला।

अणुवीक्षण पुं. {सं.} सूक्ष्मदर्शक यंत्र, खुर्दबीन; बाल की खाल निकालना, छिद्रान्वेषण।

अणुव्रत पुं. {सं.} जैन मत के अनुसार गृहस्थों द्वारा पालनीय पाँच व्रत।

अतंक पुं. आतंक।

अतंत्र *वि.* {सं.} बिना तार; अव्यवस्थित।

अतंद्र *वि.* {सं.} आलस्य रहित।

अतद्‌गुण पुं. {सं.} साहित्य में एक अलंकार; जो एक वस्तु के पास की अन्य वस्तु का गुण ग्रहण; न करने के वर्णन से बनता है।

अतनु पुं. {सं.} कामदेव; शरीरहीन, जो दुबला न हो।

अतरक *वि.* अतर्क्य; तर्क की सीमा से बाहर।

अतर्कित *वि.* {सं.} जिसका पहले से अनुमान या कल्पना न हो; आकस्मिक; अचानक आ पड़नेवाला, जैसे अतर्कित व्यय।

अतर्क्य *वि.* {सं.} जो तर्क से सिद्ध न हो, केवल आस्था का विषय हो।

अतल पुं. {सं.} सात पातालों में दूसरा पाताल; अथाह, वह पात्र जिसका तला न हो।

अतलस्पर्शी *वि.* {सं.} अतल को छूनेवाला, अत्यंत गहरा, अथाह; अगाध।

अतलांतक पुं. {अं. एटलान्टिक} अफ्रीका और अमेरिका के बीच का महासमुद्र।

अतवान *वि.* {सं. अति} बहुत, अधिक।

अतसी *स्त्री.* {सं.} अलसी, अतसी-पुष्प; पुं. {सं.} अलसी का फूल।

अति *वि.* {सं.} बहुत, अधिक; एक उपसर्ग जो शब्द के पहले लगकर आवश्यकता से अधिक का भाव प्रकट करता है; जैसे–अतिनिद्रा, अतिपान आदि; *स्त्री.* अधिकता, ज्यादती।

अतिकाय *वि.* {सं.} भारी-भरकम, विशाल; इस नाम का रावण का एक पुत्र।

अतिकाल पुं. {सं.} विलंब, देर, विकाल; कुसमय; समय बीतने के बाद।

अतिक्रमण पुं. {सं.} अपने कार्य, अधिकार, क्षेत्र आदि की सीमा पार करके ऐसी जगह पहुँचना, जहाँ जाना या रहना अनुचित, मर्यादा-विरुद्ध या अवैध हो, सीमा का अनुचित उल्लंघन (एंक्रोचमेंट)।

अतिक्रांत *वि.* {सं.} हद के बाहर गया हुआ; बीता हुआ; जो नियत समय या सीमा लाँघे।

अतिक्रामक पुं. {सं.} वह जो अपने अधिकार आदि की सीमा का उल्लंघन करके आगे बढ़े, दूसरे के अधिकारों में हस्तक्षेप करनेवाला; समय, नियम या सीमा को लाँघनेवाला।

अतिगहन *वि.* {सं.} बहुत गूढ़, बहुत गहरा या घना, विषय या गुफा, वन आदि।

अतिचरण पुं. {सं.} अतिक्रमण; अतिचार।

अतिचार पुं. {सं.} अपने अधिकार या अधिकृत सीमा के बाहर अनुचित रूप से और इस प्रकार जाना कि दूसरे के अधिकार में बाधा पहुँचे (ट्रांसग्रेशन); मर्यादा को लाँघने का कार्य।

अतिजगती *स्त्री.* {सं.} एक छंद की जाति जिसमें 3 वर्ण होते हैं।

अतिजव *वि.* {सं.} सीमा से अधिक वेगवाला, अधिक तीव्र रफ्तार।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिजीवन *पुं.* {सं.} साधारणतः औरों का अंत हो जाने पर भी, अथवा कुछ विशिष्ट घटनाओं के बाद भी बचा, बना या जीता रहना (सरवाइवल)।

अतिजीवी *वि.* {सं.} बहुत दीर्घकाल तक जीनेवाला; मार्कण्डेय ऋषि।

अतिथि-गृह *पुं.* {सं.} अतिथियों को ठहराने के लिए बनाया हुआ भवन।

अतिथि-सेवा *स्त्री.* {सं.} अभ्यागत या मेहमान की खातिरदारी।

अतिदिष्ट *वि.* {सं.} {*संज्ञा* अतिदेश} आरोपित; अपनी नियत सीमा, अवधि आदि से आगे बढ़ाया हुआ (एक्स्टेंडिड); धर्म, स्वरूप, प्रकृति आदि के विचार से किसी के समान (एनैलोगस); अतिदेश का विषय, आरोपित; नियत अवधि को लाँघा हुआ; समानता रखनेवाला; निर्धारित से अधिक।

अतिदेश *पुं.* {सं.} {*वि.* अतिदिष्ट} किसी विषय की किसी बात, नियम या धर्म का दूसरे विषय में किया जानेवाला आरोप; किसी कार्य या बात की सीमा या अवधि आगे बढ़ाने की क्रिया या भाव, विस्तारण; कई भिन्न या विरोधी बातों या वस्तुओं में कुछ विशेष तत्वों की समानता; **पारिभाषिक शब्द**–एक धर्म का दूसरे पदार्थ में संक्रमण; एक वस्तु से अन्य में परिवर्तित करना, दूसरे में आरोप; भाव का विस्तार; समानता करना; जैसे–भेड़िया कुत्ते के समान।

अतिपात *पुं.* {सं.} हिंसा, विशेषतः गृहस्थों द्वारा अनजान में नित्य होनेवाली जीवहिंसा; अव्यवस्था; बाधा, विघ्न; समय का अतिक्रमण; मर्यादा का उल्लंघन; व्यपगति।

अतिप्रजन *पुं.* {सं. अतिप्रजा} किसी नगर या देश में रहनेवालों और बसनेवालों का इतना अधिक हो जाना कि वहाँ उनका ठीक और पूरी तरह से निर्वाह न हो सके (ओवर-पॉपुलेशन)।

अतिप्रश्न *पुं.* {सं.} उचित उत्तर मिलने पर भी पूछने का कार्य।

अतिप्रसंग *पुं.* {सं.} सीमा या औचित्य से अधिक संभोग।

अतिभोग *पुं.* {सं.} नियत समय के उपरांत भी अथवा बहुत दिनों से किसी संपत्ति का भोग करना (प्रेस्क्रिप्शन); सीमा से अधिक उपयोग।

अतिरंजन *पुं.* {सं.} {*वि.* अतिरंजित} कोई बात बढ़ा-चढ़ाकर कहना, अत्युक्ति करना; अत्यधिक, औचित्य से अधिक परिमाण।

अतिराष्ट्रीयता *स्त्री.* {सं.} उत्कट तथा उग्र राष्ट्रप्रेम (चौवनिज्म); ऐसी राष्ट्रीयता जो दूसरों की विपत्ति का कारण बन जाए।

अतिरिक्त *वि.* {सं.} आवश्यकता या उपयोग से अधिक (एक्सट्रा); बचा हुआ या शेष; अलग, भिन्न, जुदा; साधारण या नियमित के बाद आवश्यकता के अनुसार उसमें कुछ और जोड़ा, बढ़ाया या लगाया हुआ, जैसे अतिरिक्त आय या कर (ऐडिशनल, एक्स्ट्रा); फालतू, उसके साथ-साथ; *क्रि. वि.* छोड़कर, सिवा, अलावा।

अतिरेक *पुं.* {सं.} अधिकता, बहुतायत; व्यर्थ की वृद्धि या विस्तार; किसी वस्तु या बात का आवश्यकता या औचित्य से अधिक या गंभीर होने का भाव (एग्रेवेशन); सीमा या और चित्य से अधिक उपवास रखना।

अतिलंघन *पुं.* {सं.} अतिक्रमण।

अतिलोमश *वि.* {सं.} जिसके शरीर पर बहुत बाल हों।

अतिलोमशा *स्त्री.* {सं.} ऐसी नारी।

अतिलौल्य *पुं.* {सं.} बहुत अधिक चपलता, मनचलापन, चटोरापन।

अतिवर्ती *वि.* {सं.} मर्यादा छोड़कर व्यवहार करनेवाला, सबसे आगे रहनेवाला।

अतिवाद *पुं.* {सं.} किसी कार्य में सीमा को लाँघने की प्रवृत्ति; बहुत अधिक बोलना, डींग मारना।

अतिवृष्टि *स्त्री.* {सं.} बहुत अधिक वर्षा (6 ईतियों में से एक)।

अतिव्याप्ति *स्त्री.* {सं.} साहित्य और तर्कशास्त्र में किसी लक्षण या कथन के अंतर्गत लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य वस्तु के आ जाने का दोष; लक्षण का लक्ष्य से अन्य पर भी लागू होना।

अतिशय *वि.* {सं.} {*भाव.* अतिशयता} बहुत, ज्यादा; *पुं.* एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु की उत्तरोत्तर संभावना या असंभावना दिखलाई जाती है।

अतिशायी *वि.* {सं.} जो अन्य से आगे बढ़ गया हो; बहुत सोनेवाला।

अतिशयोक्ति *स्त्री.* {सं.} बहुत बढ़ा-चढ़ाकर या अपनी ओर से बहुत-कुछ मिलाकर कही हुई बात (एग्जैजरेशन); एक अलंकार जिसमें भेद में अभेद, असंबंध में संबंध आदि दिखाकर किसी वस्तु का बहुत बढ़ाकर वर्णन होता है।

अतिसार *पुं.* {सं.} एक रोग जिसमें खाया हुआ पदार्थ अँतड़ियों में से पतले दस्तों के रूप में निकल जाता है; *वि.* अत्यंत सारगर्भित वचन; अतिसार, संग्रहणी का रोग।

अतिसूक्ष्म *वि.* {सं.} अत्यंत सूक्ष्म।

अतिस्वन *वि.* {सं.} (हवाई जहाज) जिसकी गति शब्द की गति (738 मील प्रति घंटे) से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक हो (सुपर सॉनिक); ध्वनि का अतिक्रमण करनेवाला।

अतींद्रिय *वि.* {सं.} जिसका अनुभव इंद्रियों द्वारा न हो, अगोचर; ध्यान या मनन से ज्ञेय।

अतीत *वि.* {सं.} {*क्रि.* अतीतना} गत, व्यतीत, बीता हुआ; पृथक्, अलग; मरा हुआ, मृत।

अतीव *वि.* {सं.} बहुत, अत्यंत; बहुत ही अधिक।

अतीस *स्त्री.* {सं. अतिविषा} एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम आती है।

अतुकांत *वि.* {हिं. अ + तुकांत} (कविता का वह प्रकार) जिसके अंतिम चरणों का तुक या काफिया न मिलता हो; अंत्यानुप्रास से रहित।

अतुराई *स्त्री.* आतुरता; रुग्णता।

अतुल *वि.* {सं.} {*भाव.* अतुलता} जिसकी तौल या अंदाज न हो सके; अमित, असीम, बहुत अधिक; अनुपम, बेजोड़; बिना तुला या तराजू के।

अतुलनीय *वि.* {सं.} अपरिमित, अपार, बहुत अधिक; असंख्य; अनुपम; जो तुलना के योग्य न हो।

अतुल्य *वि.* {सं.} = अतुलनीय; अनुपम।

अतृप्त *वि.* {सं.} {*भाव.* अतृप्ति} जो तृप्त या संतुष्ट न हो; भूखा; अतिलोभी।

अतृप्ति *स्त्री.* {सं.} मन न भरने की दशा, तृप्ति न होना; असंतोष, इच्छा शेष रह जाना।

अतृष्ण *वि.* {सं.} तृष्णा से रहित।

अतोर *वि.* {*अ.* + हिं. तोड़} जो न टूटे, पक्का, दृढ़।

अत्तार *पुं.* {*अ.*} इत्र या तेल बेचने वाला, गंधी; यूनानी दवाएँ बनाने और बेचने वाला; सुगंधित पदार्थ व जड़ी-बूटी बेचने वाला।

अत्यंत *वि.* {सं.} बहुत अधिक, अतिशय, हद से ज्यादा।

अत्यंत तिरस्कृत वाच्य *वि.* {सं.} ध्वनि काव्य का एक भेद जिसमें शब्द अपने वाच्य अर्थ को छोड़कर अन्य अर्थ का बोध कराता है।

अत्यंताभाव *वि.* {सं.} किसी वस्तु का बिल्कुल न होना, अस्तित्व की परम शून्यता; न्याय-वैशेषिक दर्शन में प्रतिपादित पाँच प्रकार के अभावों में से एक, जैसे–खरहे का सींग, बाँझ का पुत्र।

अत्यंतगामी *वि.* {सं.} बहुत दूर जानेवाला; हद करनेवाला।

अत्यधिक *वि.* {सं.} {*भाव.* अत्यधिकता} बहुत अधिक।

अत्यल्प *वि.* {सं.} {*भाव.* अत्यल्पता} बहुत कम।

अत्याचार *पुं.* {सं.} आचार का अतिक्रमण; दूसरों के साथ बलपूर्वक किया जानेवाला वह अनुचित व्यवहार जिससे उन्हें बहुत कष्ट हो, जुल्म (टिरैनी); दुराचार, पाप; पाखंड, ढोंग; पीड़ित करना, अन्याय करना।

अत्याचारी *पुं.* {सं. अत्याचारिन्} वह जो अपने बल के आधार पर दूसरों के साथ बहुत बुरा व्यवहार करके उन्हें बहुत कष्ट पहुँचाता हो, जालिम (टायरेंट)।

अत्यानन्दा *वि., स्त्री.* {सं.} संभोग से अत्यधिक आनंद चाहनेवाली, इस रोग से से ग्रस्त नारी, सैक्सी, अतिकामुकी।

अत्याज्य *वि.* {सं.} जिसका त्याग न किया जा सके; जिसे त्याग करना या छोड़ना ठीक न हो।

अत्याय *पुं.* {सं.} सीमा लाँघना, बहुत ज्यादा आमदनी होना, निकल जाना।

अत्युक्त *वि.* {सं.} जिसमें अत्युक्ति हो, जिसे बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया हो।

अत्युक्ति *स्त्री.* {सं.} कोई बात बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना; इस प्रकार बढ़ा-चढ़ाकर कही हुई बात; एक काव्यलंकार जिसमें ऐसा वर्णन होता है।

अत्युत्तय *वि.* {सं.} अति उत्तम।

अत्युत्पादन *पुं.* अति-उत्पादन।

अत्र *क्रि. वि.* {सं.} यहाँ, इस जगह; इस विषय में, इस प्रसंग में।

अथ *क्रि. वि.* {सं.} एक शब्द जिससे प्राचीन लोग ग्रंथ या लेख का आरंभ करते थे; अब; अनंतर; इति का विपरीत, आरंभ; इसके पश्चात्।

अथऊ *पुं.* {हिं. अथना} जैनों का सूर्यास्त से पहले होनेवाला भोजन।

अथक *वि.* {सं. अ = नहीं + हिं. थकना} जो न थके, अश्रांत।

अथच *यो.* {सं.} और, और भी; इसके अतिरिक्त, इसके अलावा।

अथना *अ.* {सं. अस्त} (सूर्य, चंद्रमा आदि का) अस्त होना, डूबना; समाप्त होना; आलंकारिक भाषा में किसी महान की मृत्यु।

अथमना *पुं.* {सं. अस्तमन} पश्चिम दिशा जिसमें सूर्य अस्त होता है, 'उगमना' का उलटा।

अथर्वशिरस्, अथर्वशीर्ष *पुं.* {सं.} एक उपनिषद् का नाम।

अथर्वास्वन् *पुं.* {सं.} ब्रह्मा के पुत्र एक मुनि जिनके नाम से चौथा वेद प्रसिद्ध है; इन्हें अग्नि को स्वर्ग से पृथ्वी पर लानेवाला कहा गया है।

आथर्वण *पुं.* {सं.} अथर्ववेद का ज्ञाता; *वि.* अथर्ववेद से संबद्ध विधान।

अथर्व *पुं.* {सं. अथर्वन्} आर्यों या हिन्दुओं के चार वेदों में से अंतिम वेद, चौथा वेद जिसके मंत्रद्रष्टा या ऋषि भृगु और अंगिरा गोत्रवाले थे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवना *अ.* {सं. अस्त + हिं. ना} सूर्य अस्त होना; छिपना।

अथवा *यो.* {सं.} एक योजक जिसका प्रयोग वहाँ होता है, जहाँ कई शब्दों या पदों में से किसी एक का ग्रहण अभीष्ट हो, या वा, किंवा; विकल्प का बोधक।

अथाई *स्त्री.* {सं. आस्थानी} बैठने की जगह, बैठक; घर के सामने का चबूतरा जहाँ लोग इकट्ठे होकर पंचायत करते हैं; मंडली, जमावड़ा।

अथाना *अ.* अथवना; *क्रि.* थाह लेना, गहराई नापना।

अथावत *वि.* {सं. अस्ताध} जिसकी थाह न हो, बहुत अस्त हुआ, डूबा हुआ गहरा; जिसका अंदाज न हो सके, अपरिमित, बहुत अधिक; गंभीर, गूढ़; *पुं.* गहराई; जलाशय; समुद्र।

अथाह *वि.* {सं. अ + हिं. थाह} जिसकी थाह न मिले; अगाध बहुत अधिक गहरा।

अथिर *वि.* {सं. अ = नहीं + हिं. थोर} नश्वर, अस्थिर, क्षणिक।

अथोर *वि.* जो थोड़ा न हो, अधिक।

अदंड *वि.* {सं.} जो दंड के योग्य न हो; जिसपर कर या महसूल न लगे; स्वेच्छाचारी; दंड का अभाव; *पुं.* वह भूमि जिसकी मालगुजारी न लगे, मुआफी।

अदंडनीय, अदंड्य *वि.* {सं.} जिसे दंड न दिया जा सके, सजा से बरी; जो दंड के योग्य न हो।

अदंत *वि.* {सं.} जिसके दाँत न हो; बहुत थोड़ी अवस्था का, दुधमुँहाँ; जिसके दाँत आए ही न हों; *स्त्री.* जोंक।

अदंत्य *वि.* {सं.} जो वस्तु दाँतों के अनुकूल न हो; वर्ण दन्त्य न हो।

अदग *वि.* {सं. अदग्ध} बेदाग, शुद्ध; निरपराध, निर्दोष; अछूता, अस्पृष्ट; साफ; जिसे दागा न गया हो, निष्कलंक।

अदग्ध *वि.* {सं.} जो जला न हो; जो जलने से बच जाए।

अदत्त *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अदत्ता} जो दिया न गया हो, बिना दिया हुआ; जिसका मूल्य, कर आदि न चुकाया गया हो; चोरी या अन्य अनुचित रीति से लिया; जो बिना दिए कब्जाया गया हो; *पुं.* वह वस्तु जो मिलने पर भी पानेवाला ले या रख न सकता हो (स्मृति)।

अदत्ता *स्त्री.* {सं.} वह कन्या जो अभी किसी को दी न गई हो, कुमारी; जिसका वाग्दान न हुआ हो।

अदद *स्त्री.* {*अ.*} संख्या, गिनती; संख्या या चिह्न या संकेत।

अदन *पुं.* {*अ.*} ईसाइयों, मुसलमानों आदि के अनुसार स्वर्ग का वह उपवन जो परम सुंदर और रमणीक माना गया है।

अदना[1] *वि.* {*अ.*} बहुत ही छोटा या साधारण, तुच्छ; मामूली, क्षुद्र।

अदब *पुं.* {*अ.*} बड़ों के प्रति होनेवाला आदर और शिष्टाचार; साहित्य।

मुहा. अदब करना = इज्जत करना।

अदभ्र *वि.* {सं.} दभ्र (अल्प) का अभाव, बहुत, पर्याप्त।

अदमपैरवी *स्त्री.* {फा.} पैरवी का अभाव।

अदममौजूदगी *स्त्री.* {फा.} मौजूदगी का अभाव, गैरहाजिरी, अनुपस्थिति।

अदम्य *वि.* {सं.} जो किसी प्रकार दबाया न जा सके, जिसका दमन न हो सके; बहुत प्रबल या उग्र; जिसे काबू न किया जा सके।

अदय *वि.* {सं.} जिसमें दया न हो, दयारहित, निर्दय।

अदरक *पुं.* {सं. आर्द्रक, फा. अदरक} एक पौधा जिसकी तीक्ष्ण और चरपरी जड़ या गाँठ औषध और मसाले के काम में आती है; इसका कंद सुखाकर सोंठ बनती है जो मसाले और औषध के काम आती है; यह वायु को विशेष रूप से दूर करती है।

अदर्श *पुं.* {सं.} अमावस न होना, उससे भिन्न दिन।

अदर्शन *पुं.* {सं.} विद्यमान या उपस्थित न होना, अभाव; लोप, विनाश; दिखाई न देना, छिपना।

अदर्शनीय *वि.* {सं.} जो देखने योग्य न हो, भद्दा; मनहूस जिसका मुँह देखना अच्छा न हो।

अदल *पुं.* {*अ.*} न्याय; न दला, साबुत; जिसका दल न हो, अकेला; पत्ते के बिना।

अदल-बदल *पुं.* {*अ.* बदल + अदल (अनु.)} उलट-पुलट; हेर-फेर, परिवर्तन; आगे-पीछे या इधर-उधर करना।

अदला *स्त्री.* {सं.} घी कुवाँर का पौधा।

अदला-बदली *स्त्री.* {हिं. बदल + अदल} चीजों को हटाकर परस्पर एक दूसरी की जगह रखना; एक चीज लेने के लिए उसके बदले दूसरी चीज देना (बार्टर)।

अदली *वि.* न्याय करनेवाला, इंसाफ पसंद।

अदवान *स्त्री.* {सं. अधः = नीचे + हिं. वान = रस्सी} चारपाई के पैताने की बुनावट को खींचकर कड़ी रखने के लिए उसके छेदों में पड़ी हुई रस्सी, उनचन।

अदह *वि.* {सं.} आग जिसे जलाकर विकृत या नष्ट न कर सके; जो जलानेवाला न हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदहन पुं. {सं. आदहन} वह पानी जो दाल, चावल आदि पकाने के लिए पहले गरम किया जाता है।

अदांत *वि.* {सं.} अपनी इंद्रियों या वासनाओं का दमन न कर सकनेवाला, विषयी, लोलुप; उद्दंड।

अदा *वि.* {*अ.*, मि. सं. आदान} (ऋण या देन) चुकाया हुआ, चुकता; जिसका पालन हुआ हो; करके दिखलाया हुआ; लौटाना, निभाना।

मुहा. कर्ज अदा करना = ऋण चुकाना; *फर्ज अदा करना* = कर्तव्य निभाना।

स्त्री. चुकता करना।

अदाई *वि.* {*अ.*} चालबाज।

अदाग *वि.* {हिं. अ + *अ.* दाग़} जिसमें दाग या धब्बा न हो; निर्दोष; विशुद्ध।

अदाता *वि.* {सं.} न देनेवाला, दाता से भिन्न, दान न करनेवाला।

अदान पुं. {सं.} दान का अभाव, बिना दान के; नादान; अ-दान, वह हाथी जिसकी कनपटी से मदजल न चूता हो।

अदानी *वि.* {हिं. अ + दानी} जो दानी न हो।

अदाय *वि.* {सं.} जो उत्तराधिकार पाने का हक न रखे।

अदायगी *स्त्री.* {फा.} ऋण चुकाने या धन आदि देने की क्रिया या भाव।

अदायाद *वि.* {सं.} जो कुल से संबद्ध न होने से उत्तराधिकार पाने का हकदार न हो।

अदायी *वि.* {हिं. अ + दायाँ = दाहिना} प्रतिकूल, वाम; बुरा, खराब; (न + दायी) न देनेवाली।

अदार *वि.* {सं.} बिना पत्नी का।

अदालत *स्त्री.* {*अ.*} न्यायालय, कचहरी।

अदालती *वि.* {*अ.*} अदालत-संबंधी।

अदाह *स्त्री.* {*अ.* अदा} स्त्रियों का हाव-भाव।

अदित पुं. {सं. आदित्य} सूर्य; रविवार, एतवार।

अदिति *स्त्री.* {सं.} प्रकृति; पृथ्वी; दक्ष प्रजापति की कन्या और कश्यप की पत्नी जिनसे देवताओं का जन्म हुआ था; मृत्यु, अक्षीणता, निर्धनता।

अदिन पुं. {सं.} बुरा दिन, संकट या दुख का समय; अभाग्य।

अदीनात्मा (त्मन्) पुं. {सं.} स्वाभिमानी, जिसका मन छोटा नहीं।

अदीपित *वि.* {सं.} अप्रकाशित, बिना रोशनी का।

अदिव्य *वि.* {सं.} लौकिक; साधारण; बुरा; शपथ न लेनेवाला; पार्थिव, स्वर्ग से संबंध न रखनेवाला; पुं. साहित्य में वह नायक जो दिव्य या देवता न हो, बल्कि मनुष्य हो।

अदिष्ट *वि.* {सं.} जिसे दिशा न प्रदान की गई हो, अनिर्दिष्ट।

अदिष्टी *वि.* {सं. अदृष्ट} अभागा; मूर्ख।

अदीन *वि.* {सं.} दीनतारहित; उग्र, प्रचंड; निडर; ऊँची तबियत का, उदार।

अदीह *वि.* {सं. अ + दीर्घ} छोटा; जो लंबा न हो।

अदीप्त *वि.* {सं.} अंधकारपूर्ण; जो चमकीला न हो; मलिन।

अदुतिय *वि.* = अद्वितीय।

अदूरदर्शी (शिन्) *वि.* {सं.} जो दूर तक न सोचे, स्थूलबुद्धि, नासमझ; जल्दबाज़, किसी कार्य का परिणाम न सोचनेवाला।

अदृश्य *वि.* {सं.} {*भाव.* अदृश्यता} जो दिखाई न दे; जिसका ज्ञान इंद्रियों को न हो, अगोचर; लुप्त, गायब।

अदृष्ट *वि.* {सं.} न देखा हुआ; लुप्त, अंतर्धान, गायब; पुं. पूर्वजन्म में किए हुए कर्मों का फल; भाग्य; अग्नि और जल आदि से उत्पन्न विपत्ति।

अदृष्टपूर्व *वि.* {सं.} जैसा या जो पहले कभी देखा न गया हो, अर्थात् अनोखा या विलक्षण; जो पहले कभी न देखा हो; नया।

अदृष्टवाद पुं. {सं.} {*वि.* अदृष्टवादी} परलोक आदि परोक्ष बातों का निरूपक सिद्धांत।

अदेखा *वि.* {सं. अ = नहीं + हिं. देखना} छिपा हुआ, अदृश्य, गुप्त; न देखा हुआ, अदृष्ट।

अदेय *वि.* {सं.} जो दिया न जा सके, न देने योग्य; दान के अयोग्य पदार्थ।

अदेस पुं. {सं. आदेश} आदेश, आज्ञा, हुकुम; प्रणाम, दंडवत, नमस्कार; ठीक स्थान का अभाव।

अद्ध *वि.* = अर्द्ध; तद्भव।

अद्धा पुं. {सं. अर्द्ध} किसी वस्तु का आधा मान; वह बोतल जो पूरी बोतल की आधी हो।

अद्भुत *वि.*{सं.} आश्चर्यजनक, विलक्षण, विचित्र, अनोखा; जो पहले न हुआ हो, न देखा व सुना हो; पुं. नौ रसों में से एक जो आश्चर्य से उत्पन्न होता है।

अद्भुतसार पुं. {सं.} खदिरसार, कत्था।

अद्भुतालय पुं. {सं.} अद्भुत वस्तुओं को रखने का घर, अजायबघर (म्यूजियम)।

अद्भुतोपमा *स्त्री.* {सं.} उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें उपमेय के ऐसे गुणों का उल्लेख होता है जिनका उपमान में होना कभी संभव न हो।

अद्य *क्रि. वि.* {सं.} इस समय; आज, अब।

अद्यतन *वि.* {सं.} नवीनतम विचारों, मान्यताओं आदि के अनुरूप; आज होनेवाला वर्तमान युग का।

अद्यावधि *क्रि. वि.* {सं.} अब तक, आज तक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अद्रव पुं. {सं.} जो पिघलनेवाला न हो, ठोस, धन।

अद्रव्य *वि.* {सं.} रुपये पैसे के बगैर, धनहीन, साधारण, निकम्मा, तुच्छ।

अद्रि पुं. {सं.} पर्वत, पहाड़।

अद्रिजा *वि.* {सं.} पर्वत में उत्पन्न; *स्त्री.* पार्वती।

अद्वितीय *वि.* {सं.} {*भाव.* अद्वितीयता} जिसके समान और कोई न हो, अनुपम, बेजोड़ (यूनीक); विलक्षण, अद्‌भुत।

अद्वैत *वि.* {सं.} अद्वैतवाद-संबंधी; दो या दुई का भाव न रखना, अभेद, ऐक्य।

अद्वैतवाद पुं. {सं.} {*वि.* अद्वैतवादी} वेदांत का वह सिद्धांत जिसमें आत्मा और परमात्मा को एक माना जाता है और ब्रह्म के सिवा और सब वस्तुओं या तत्वों की सत्ता अवास्तविक या असत्य मानी जाती है (मॉनिज्म); पाश्चात्य दर्शन के अनुसार यह सिद्धांत कि सारी सृष्टि एक ही मूल तत्व से विकसित हुई है।

अधः *क्रि. वि.* {सं.} नीचे, तले; ऊर्ध्व का विपरीत, नीचे का लोक, नीचे की ओर।

अधःपतन पुं. {सं.} नीचे की ओर गिरना, पतित होना, अवनति; दुर्दशा, दुर्गति।

अधःपात पुं. अधःपतन।

अध *वि.* {सं. अर्द्ध} 'आधा' का वह संक्षिप्त रूप जो उसे दूसरे शब्दों के पहले लगने पर प्राप्त होता है, जैसे अधखुला, अधमरा आदि।

अधकचरा *वि.* {हिं. आधा + कचरना} जो पूरा पक्का न हो; आधा सीखा हुआ, अपूर्ण ज्ञानवाला; अधूरा, अपूर्ण; जो पूरा, कुशल या दक्ष न हो; आधा कूटा या पीसा हुआ, दरदरा।

अधकपारी *स्त्री.* {हिं. आधा + कपार} आधे सिर का दर्द, आधासीसी; सिर का वह दर्द जो सूर्योदय के साथ बढ़े।

अधकहा *वि.* {हिं. आधा + कहना} अर्धोक्त, जो बात बीच में ही कट गई हो।

अधखिला *वि.* {हिं. आधा + खिलना} पूरा नहीं, बल्कि आधा ही खिला हुआ।

अधखुला *वि.* {हिं. आधा + खुलना} जो आधा खुला हो; आधा खुला द्वार, आधा खुला मुँह।

अधगोरा *वि.* आधा गोरा; यूरेशियन, इंडोयूरोपियन।

अधगोल *वि.* अर्धगोलक, हेमिस्फेयर।

अधघट *वि.* अटपट।

अधघड़ी *स्त्री.* आधी घड़ी का समय।

अधचरा *वि.* {हिं. आधा + चरना} जो पूरा नहीं, बल्कि आधा चरा गया हो।

अधजला *वि.* {हिं. आधा + जलना} आधा जला हुआ।

अधड़ा *वि.* {हिं. आधा या सं. अधर} जो अधर में या बिना किसी आधार के हो; जिसका सिर-पैर न हो, ऊटपटाँग, असंबद्ध; जिसका धड़ आधा ही हो, क्षत-विक्षत।

अधन *वि.* निर्धन।

अधन्ना पुं. {हिं. आधा + आना} आधे आने या दो पैसे का ताँबे का सिक्का।

अधन्नी *स्त्री.* {हिं. आधा + आना} अधन्ना।

अधन्म *वि.* {सं.} अभागा, अकृतार्थ।

अधपका *वि.* {हिं. आधा + पका} जो आधा पका और आधा कच्चा हो; जो आधा ही पका हो।

अधफटा *वि.* आधा फटा वस्त्र।

अधफर पुं. {हिं. आधा + फलक} बीच का भाग; अंतरिक्ष; मध्य आकाश, अधर।

अधबर पुं. {हिं. आधा + बाट = मार्ग} आधा मार्ग या रास्ता; मध्य, बीच।

अधबुध *वि.* {हिं. आधा + बुद्ध} कम या थोड़ा ज्ञान रखनेवाला; {सं.} अर्द्धबुद्ध, अधजगा।

अधबेसू *वि.* {सं. अर्द्धवयस्} जिसकी आधी या उससे कुछ अधिक अवस्था बीत चुकी हो, अधेड़।

अधम *वि.* {सं.} {*भाव.* अधमता} बिल्कुल निम्न या निकृष्ट कोटि का; जाति, स्वभाव या कर्म से नीच; बहुत बड़ा, पापी, दुष्ट या दुराचारी।

अधमता *स्त्री.* {सं.} अधम होने की अवस्था या भाव, नीचता; अधम कृत्य।

अधमरा *वि.* {हिं. आधा + मरना} जो पूरा नहीं, बल्कि आधा ही मरा हो, जिसमें कुछ ही प्राण हो, मृतप्राय।

अधमर्ण पुं. {सं.} वह जिसने किसी से ऋण लिया हो, कर्जदार।

अधमा *वि., स्त्री.* {सं.} अधम स्वभाव या आचरणवाली, दुष्ट प्रकृति की, जैसे अधमा दूती, अधमा नायिका।

अधमाई *स्त्री.* अधमता।

अधमुआ *वि.* अधमरा।

अधर पुं. {सं.} होठ, ओंठ; नीच, बुरा, पराजित, नीचा, धरा से ऊपर, बीच, बिना आधार।

मुहा. अधर में झूलना या लटकना = अनिश्चय की दशा में पड़े रहना; कुछ निर्णय न कर पाना।

पाताल।

अधरज पुं. {सं. अधर + रज} होठों की ललाई या सुर्खी; होठों पर की पान या मिस्सी की धड़ी।

अधरयुग पुं. {सं.} दोनों होंठ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधररस पुं. {सं.} होंठों का रस।
अधराग पुं. {सं.} नीचे के अंग, गुप्त अंग।
अधर्म पुं. {सं.} धर्म के विरुद्ध कार्य, कुकर्म, दुराचार, बुरा काम।
अधवा *स्त्री.* विधवा।
अधस्तल पुं. {सं.} नीचे की कोठरी; नीचे का तल (बाटाम); तहखाना।
अधारा *वि.* {हिं. अ + धार} (शस्त्र) जिसमें धार न हो, बिना धार का अशित; धारा का अभाव।
अधारी *स्त्री.* {सं. आधार} आधार, सहारा; यात्रा के समय सामान रखने का झोला; काठ का वह ढाँचा जिसे साधु लोग बैठने के समय सहारे के लिए बाँह के नीचे लगाते हैं; अच्छी स्त्री, सहारा देनेवाली।
अधार्मिक *वि.* {सं.} जो धार्मिक न हो; जो धर्म की दृष्टि से अनुचित हो।
अधि *उप.* एक संस्कृत उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगाया जाता है और जिसके ये अर्थ होते हैं–ऊपर, ऊँचा, प्रधान, मुख्य जैसे अधिप्रचार; अब यह कुछ शब्दों के आरंभ में अधिकार के वाचक और संक्षिप्त रूप की भाँति भी लगने लगा है, जैसे अधिक्षेत्र = अधिकार-क्षेत्र, अधिपत्र = अधिकार-पत्र।
अधिक *वि.* {सं.} बहुत, ज्यादा, विशेष; बचा हुआ, फालतू; पुं. वह अलंकार जिसमें आधेय को आधार से अधिक बतलाते हैं।
अधिकतम *वि.* {सं.} अधिक से अधिक जितना हो सकता हो (मैक्सिमम); ज्यादा से ज्यादा।
अधिकतर *वि.* {सं.} किसी की अपेक्षा अधिक; किसी में का अधिक (अंश या भाग); दूसरे से बढ़कर।
अधिकता *स्त्री.* {सं.} अधिक या ज्यादा होने की दशा या भाव, बहुतायत, ज्यादती; बढ़ती, वृद्धि; प्रचुरता।
अधिकमास पुं. मलमास; लोंद का महीना।
अधिकरण पुं. {सं.} आधार, सहारा; व्याकरण में, क्रिया का आधार जो सातवाँ कारक है; प्रकरण; किसी विशिष्ट विवाद के निर्णय के लिए स्थापित विशेष न्यायालय (ट्रिब्युनल)।
अधिकरण-स्थल पुं. {सं.} न्यायालय- शिविर।
अधिकरणिक पुं. {सं.} न्यायाधिकारी।
अधिकांश पुं. {सं.} अधिक भाग, ज्यादा हिस्सा; *वि.* बहुत; अधिकतर; *क्रि. वि.* ज्यादातर, विशेषकर; प्रायः, अक्सर; से अधिक।
अधिकाई *स्त्री.* = अधिकता।
अधिकाधिक *वि.* {सं.} अधिक से अधिक; अधिकतम; अधिक बनाना, अधिक दिखाना।
अधिकार पुं. {सं.} वह शक्ति जो किसी को विधि, अपने पद, मर्यादा अथवा योग्यता आदि के कारण प्राप्त हो (अथॉरिटी); प्रभुत्व, आधिपत्य, स्वत्व (राइट); किसी वस्तु या विषय से संबंध रखनेवाला ऐसा पूर्ण ज्ञान जिसके कारण उसका कथन से संबंध रखनेवाला ऐसा पूर्ण ज्ञान जिसके कारण उसका कथन प्रामाणिक माना जाता हो, पूरी जानकारी; किसी वस्तु या संपत्ति आदि पर होनेवाला स्वामित्व, कब्जा (पज़ेशन); संदर्भ, प्रकरण; नाट्यशास्त्र में रूपक के प्रधान फल की प्राप्ति की योग्यता।
अधिकार-क्षेत्र पुं. {सं.} वह क्षेत्र या प्रदेश जिसमें किसी को कार्य करने का अधिकार प्राप्त हो, अधिक्षेत्र (जूरिस्डिक्शन)।
अधिकाराच्युत *वि.* {सं.} अधिकार से हटाया गया।
अधिकार-त्याग पुं. {सं.} अपना अधिकार छोड़कर अलग हो जाना (एब्डिकेशन); कब्जा छोड़ना, पद त्याग।
अधिकार संपन्न *वि.* {सं.} अधिकृत।
अधिकार-पत्र पुं. {सं.} वह पत्र जिसके अनुसार किसी को कोई कार्य करने का अधिकार प्राप्त हो; आदेश लेख, आदेश पत्र, नियुक्ति पत्र।
अधिकारातीत *वि.* {सं.} अधिकार-क्षेत्र से बाहर का; जिस विषय पर प्रभुत्व न चलता हो।
अधिकाराधीन *वि.* {सं.} जो अधिकार-क्षेत्र के अंतर्गत हो; वे विषय जो किसी कर्मचारी के अधिकार की सीमा में हो।
अधिकारी (रिन्) पुं. {सं.} {*स्त्री.* अधिकारिणी} प्रभु, स्वामी; वह जिसे कोई स्वत्व प्राप्त हो; वह जिसमें किसी विषय या कार्य की विशेष योग्यता या क्षमता हो; वह कर्मचारी जो किसी पद पर रहकर कोई कार्य करता हो, अफसर (ऑफिसर); साधारणतः कोई अधिकार प्राप्त व्यक्ति (ऑथारिटी); नाटक का वह पात्र जिसे रूपक का प्रधान फल प्राप्त हो; *वि.* अधिकार रखनेवाला, अधिकारधारी; जिसे कुछ पाने या करने का अधिकार हो, जैसे वे इसका निर्णय करने के अधिकारी हैं (एंटाइटिल्ड)।
अधिकारी-तंत्र पुं. {सं.} नौकरशाही।
अधिकृत *वि.* {सं.} जिसपर अधिकार कर लिया गया हो; जो किसी के अधिकार में हो; जिसको कोई काम करने का अधिकार दिया गया हो; जिसको कोई काम करने का अधिकार हो (ऑथराइज्ड); कब्जे में ली गई वस्तु, अधिकार प्राप्त व्यक्ति।
अधिकृति *स्त्री.* {सं.} अधिकार देना, कब्जा, स्वत्व।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अधिकोष पुं. {सं.} बैंक।

अधिक्रम पुं. {सं.} किसी पर चढ़ना, आरोहण; अधिक्रमण; अन्य के हाथ से अधिकार छीनना।

अधिक्रान्त *वि.* {सं.} जिसका अधिकार छीनकर अन्य को दिया हो।

अधिक्षेत्र पुं. {सं. अधि + क्षेत्र} किसी के अधिकार या कार्य का क्षेत्र (ज्युरिस्डिक्शन)।

अधिगत *वि.* {सं.} प्राप्त, पाया हुआ; जाना हुआ, ज्ञात; हाथ लगा, हाथ में आया, कहीं से मिला।

अधिगम पुं. {सं.} पहुँच, गति; दूसरे के उपदेश से मिला हुआ ज्ञान; न्यायालय का वह निष्कर्ष जो किसी अभियोग या वाद की पूरी सुनवाई हो चुकने पर उसे प्राप्त हुआ हो (फाईंडिंग); पाना, किसी स्रोत से जानकारी लेना, लाभ।

अधिगमन पुं. {सं.} किसी वाक्य की वह व्याख्या जो उसकी पद-योजना के आधार पर की जाए (रीडिंग)।

अधिग्रहण पुं. {सं. अधि = अधिकार + ग्रहण} अधिकारपूर्वक अथवा अधियाचन के द्वारा किसी की संपत्ति या और कोई चीज ले लेना (एक्वायर)।

अधिग्राहक पुं. {हिं. अधिग्रहण} वैध उपाय से अधिग्रहण करनेवाला (एक्वायर)।

अधिजनन पुं. {सं.} कृत्रिम गर्भाधानादि से जन्म देना।

अधिज्य *वि.* {सं.} जिसपर डोरी या प्रत्यंचा चढ़ी हो, ऐसा धनुष।

अधित्यका *स्त्री.* {सं.} पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि, ऊँचा पहाड़ी मैदान।

अधिदेव पुं. {सं.} {*स्त्री.* अधिदेवी} इष्टदेव; कुलदेव; अभिमानी देवता, प्रधान देवता।

अधिनायक पुं. {सं.} {*स्त्री.* अधिनायिका} सरदार, मुखिया; विशेष अवस्थाओं या परिस्थितियों के लिए नियत किया हुआ सर्वप्रधान और पूर्ण अधिकार-प्राप्त शासक या अधिकारी (डिक्टेटर); जो स्वयं अधिकार हाथ में लेकर शासक बन जाए।

अधिनायक-तंत्र पुं. {सं.} वह राज्य जिसके सब काम केवल अधिनायक की आज्ञा से होते हों; अधिनायक द्वारा चलाई गई शासन-व्यवस्था, डिक्टेटरशिप।

अधिनियम पुं. {सं. अधि + नियम} संसद द्वारा बनाया हुआ नियम (एक्ट); शासन द्वारा जारी किया गया कानून।

अधिनिर्णय पुं. {सं.} अधिकारपूर्ण निर्णय, न्यायाधीश या पंच का निर्णय।

अधिपति पुं. {सं.} स्वामी।

अधिपत्र पुं. {सं. अधि (अधिकार) + पत्र} वह पत्र जिसमें किसी को कोई काम करने का अधिकार या आदेश दिया गया हो, जैसे किसी को कुछ धन देने या पकड़ने का अधिपत्र (वारंट)।

अधिभार पुं. {सं.} कर या शुल्क आदि का वह विशेष या अतिरिक्त अंश जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए अथवा किसी विशेष परिस्थिति में अलग से अधिक लिया जाता है (सुपरचार्ज)।

अधिभूत पुं. {सं.} जड़, जगत्, प्रकृति का प्रसार नष्ट होनेवाला स्थूल प्रपंच।

अधिमंथ पुं. {सं.} आँख का एक रोग।

अधिमंथन पुं. {सं.} लकड़ियों को रगड़कर यज्ञ में अग्नि उत्पन्न करना, अरणिमंथन।

अधिमत *वि.* {सं.} जिसे अधिक लोग पसंद करते हों, अधिमानित; अन्य निर्णय के विरुद्ध किया गया अधिक व्यक्तियों का निर्णय।

अधिमान पुं. {सं.} औरों की अपेक्षा अधिक आदर देना; किसी को औरों से अच्छा समझकर ग्रहण करना (प्रिफरेंस)।

अधिमानित *वि.* {सं.} जिसका तौल अधिक लगाया गया हो; जिसे औरों से अच्छा समझकर ग्रहण किया गया हो, जिसका अधिमान किया गया हो (प्रिफर्ड)।

अधिमान्य *वि.* {सं.} औरों की तुलना में अधिक मान के योग्य।

अधिमास पुं. {सं.} मलमास।

अधिमुद्रण पुं. {सं.} किसी ग्रंथ या सामयिक पत्र-पत्रिका का बहुत अधिक मात्रा में छापा जाना।

अधिमूल्य पुं. {सं.} किसी वस्तु का साधारण से अधिक वह मूल्य आदि जो विशेष परिस्थिति में लिया जाए; अधिभार।

अधिया पुं. {हिं. आधा} आधा हिस्सा; गाँव में आधी पट्टी की हिस्सेदारी; एक रीति जिसके अनुसार उपज का आधा मालिक को और आधा परिश्रम करनेवाले को मिलता है; अधेल में भूमि खेती के लिए देना।

अधियाचन पुं. अधिकार पूर्वक की गई विशेष याचना (रिक्विजिशन)।

अधियारी *स्त्री.* {हिं. अधियार} किसी जायदाद में आधी हिस्सेदारी।

अधिरथ पुं. {सं.} रथ हाँकनेवाला, गाड़ीवान; बड़ा रथ; धृतराष्ट्र के सारथी का नाम।

अधिराज पुं. {सं.} राजाओं पर भी शासन करनेवाला; महाराज।

अधिराज्य पुं. {सं.} साम्राज्य।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिरोप पुं. {सं.} किसी पर अपराध का आरोप, अभियोग या दोष लगाया जाना (चार्ज); दोषारोपण।

अधिरोपित *वि.* {सं.} जिसपर अपराध आदि का अधिरोप हुआ हो; (अपराध) जिसका अधिरोप किया गया हो (चार्ज्ड)।

अधिरोहण पुं. {सं.} चढ़ाई करना, प्रतिष्ठित होना, सवारी करना।

अधिरोहणी *स्त्री.* {सं.} सीढ़ी।

अधिलाभ पुं. {सं.} लाभ का वह अंश जो किसी समवाय या मंडली के अंशियों अथवा संस्था के नौकरों को साधारण लाभांश या वेतन के अतिरिक्त दिया जाता है (बोनस)।

अधिवक्ता पुं. {सं.} उच्च न्यायालय का वकील (एडवोकेट); वादी या प्रतिवादी के पक्ष में बोलनेवाला।

अधिवर्ष पुं. {सं.} वह वर्ष जिसमें कोई मलमास पड़ता हो; वह वर्ष जिसमें फरवरी का महीना 28 की जगह 29 दिनों का होता है (लीप इयर)।

अधिवास पुं. {सं.} रहने का स्थान; स्थायी रूप से निवास करना); अन्य देश में बस जाना (डोमिसाइल); सुगंध।

अधिवासी (सिन्) पुं. {सं.} निवासी; दूसरे देश में जाकर बसनेवाला (डोमिसाइल्ड)।

अधिविन्ना *स्त्री.* {सं.} ऐसी पत्नी जिसके होते हुए भी पति दूसरा विवाह करे।

अधिवेत्ता पुं. {सं.} पहली पत्नी के रहते अन्य विवाह करनेवाला पुरुष।

अधिवेशन पुं. {सं.} सभा, सम्मेलन आदि की बैठक (सेशन); समिति, संगत।

अधिशासी *वि.* {सं. अधि + शासन} प्रधान कार्यकारी या शासक से संबद्ध।

अधिशासी अभियंता पुं. वह अभियंता जिसकी देख-रेख में निर्माण-संबंधी कार्य होते हों (एक्जिक्यूटिव इंजीनियर)।

अधिशुल्क पुं. {सं.} साधारण से अधिक या अतिरिक्त वह शुल्क जो किसी विशेष परिस्थिति में लिया जाता है (सुपरचार्ज); अतिरिक्त फीस।

अधिष्ठाता पुं. {सं. अधिष्ठातृ} {*स्त्री.* अधिष्ठात्री} अध्यक्ष; मुखिया, प्रधान; वह जिसके हाथ में किसी कार्य का भार हो; ईश्वर।

अधिष्ठान पुं. {सं.} {*वि.* अधिष्ठित} वासस्थान, रहने का स्थान; नगर, शहर; ठहरने का स्थान, पड़ाव; आधार, सहारा; वह वस्तु जिसमें भ्रम का आरोप हो, जैसे रज्जु में सर्प या शुक्ति में रजत का अधिष्ठान; शासन, राजसत्ता; संस्था; संस्था के कार्यकर्ता और अधिकारी लोग (एस्टैब्लिशमेंट); लाभ के लिए व्यापार या और किसी काम में धन लगाना (इनवेस्टमेंट)।

अधिष्ठित *वि.* {सं.} अधिकृत, निवास के रूप में स्वीकृत, नीचे दबाई हुई, जिसके ऊपर बैठा हो, निर्दिष्ट।

अधिसूचना *स्त्री.* {सं.} आधिकारिक सूचना विशेषत: जो राजपत्र में प्रकाशित हुई हो।

अधिसूचित *वि.* {सं.} जिसकी सूचना अधिकृत रीति से दी गई हो।

अधिहरण पुं. {सं.} अधिकारपूर्वक हरण करना, जब्त करना (कनफिस्केशन); बलात् छीन लेना।

अधीक्षक पुं. {सं.} विभाग की देखरेख करनेवाला मुख्य अधिकारी (सुपरिंटेंडेंट)।

अधीक्षण पुं. {सं.} {*वि.* अधीक्षक} किसी कार्यालय या विभाग के कर्मचारियों के सब कार्यों की देखभाल करना, अधीक्षक का काम (सुपरिंटेंडेंस)।

अधीत *वि.* {सं.} (ग्रंथ, पाठ आदि) जो पढ़ा जा चुका हो; पढ़ी गई पुस्तक, पत्र आदि; जिसका भली प्रकार अध्ययन कर लिया हो।

अधीन *वि.* {सं.} {*भाव.* अधीनता} किसी के अधिकार, शासन, निरीक्षण या वश में रहनेवाला, मातहत; किसी के आसरे या सहारे पर रहनेवाला, आश्रित, अवलंबित; किसी नियम, निर्देश आदि से बँधा हुआ या नियोत्रित (सब्जेक्ट टू); वशीभूत, आज्ञाकारी; विवश, लाचार; अलंबित, मुनहसर।

अधीनता *स्त्री.* {सं.} परवशता, परतंत्रता; मातहती; पराधीनता, स्वाधीन न होना।

अधीनस्थ *वि.* {सं.} किसी की आज्ञा, अधिकार आदि में किसी के नीचे रहनेवाला, किसी के अधीन (सुबॉर्डिनेट); अन्य की देखरेख या आज्ञा के अनुसार काम करनेवाले, आश्रित।

अधीनस्थ न्यायालय पुं. {सं.} किसी उच्च न्यायालय की दृष्टि से उससे छोटा और उसके अधीन रहनेवाला न्यायालय (सुबॉर्डिनेट कोर्ट) छोटी अदालत।

अधीनीकरण पुं. {सं.} {*वि.* अधीनीकृत} किसी को अपने अधीन करना या अपने अधिकार में लाना (सबजुगेशन)।

अधीयान पुं. {सं.} अध्ययन करता हुआ; *स्त्री.* अधीयाना।

अधीर *वि.* {सं.} {*भाव.* अधीरता} धैर्यरहित; घबराया हुआ, उद्विग्न; बेचैन, व्याकुल; आतुर।

अधीरा *स्त्री.* {सं.} वह नायिका जो नायक में नारीविलास सूचक चिह्न देखने से अधीर होकर प्रत्यक्ष कोप करे; चपल प्रकृति।

अधीश पुं. {सं.} मालिक, स्वामी; भूपति, राजा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधीश्वर पुं. {स्त्री. अधीश्वरी.} अधीश।
अधूम वि. {सं.} धुएँ से रहित; धुआँ न देती, आग या चिमनी, बिना धुएँ का स्थान।
अधूरा वि. {हिं. अध + पूरा} {स्त्री. अधूरी} जो पूरा न हो, अपूर्ण; आधा रहा; अपूर्ण।
अधृष्ट पुं. {सं.} जो ठीक न हो, विनम्र।
अधृष्य पुं. {सं.} जिसे जीता न जा सके।
अधेड़ वि. {हिं. आधा + एड़ (प्रत्य.)} ढलती जवानी का, बुढ़ापे और जवानी के बीच का; चालीस से ऊपर का प्रौढ़; बड़ी आयु का।
अधैर्य पुं. {सं.} धैर्य का अभाव, धबराहट, वि. धैर्यहीन।
अधस्, अध अ. क्रि. वि. {सं.} नीचे।
अधोगति स्त्री. {सं.} पतन, गिराव, अवनति; दुर्दशा।
अधोगमन पुं. {सं.} नीचे जाना; अवनति, पतन।
अधोगामी वि. {सं. अधगामिन्} {स्त्री. अधोगामिनी} नीचे जानेवाला; अवनति की ओर जानेवाला।
अधोभूमि स्त्री. {सं.} भूमि या जमीन के ऊपरी स्तर के नीचेवाला स्तर या भाग (सबसायल)।
अधोमंडल पुं. {सं.} पृथ्वी से साढ़े सात मील तक ऊँचा वायुमंडल (बिजली, आँधी, बादल आदि इसी में होते हैं)।
अधोमार्ग वि. {सं.} नीचे की ओर का रास्ता, मलद्वार।
अधोमुख वि. {सं.} जो नीचे मुँह किए हुए हो; औंधा, उलटा; क्रि. वि. औंधे, मुँह के बल।
अधोरेखा स्त्री. {सं.} शब्द, वाक्य आदि के नीचे खींची गई रेखा।
अधोलिखित वि. {सं.} नीचे लिखा, निम्नलिखित।
अधोलोक पुं. {सं.} नीचे का लोक, पाताल।
अधोहस्ताक्षरी(रिन्) वि. {सं.} जिसने पत्र, प्रपत्र, लेख आदि के नीचे हस्ताक्षर किए हों (अंडर साइन्ड); जिसके हस्ताक्षरों से आदेश जाय; नीचे हस्ताक्षर करनेवाला।
अधोवस्त्र पुं. {सं.} नीचे पहनने वाला वस्त्र, नीचे का वस्त्र।
अधोवायु पुं. {सं.} अपान वायु, गुदा की वायु, पाद।
अधोक्षज पुं. {सं.} जो ऐंद्रिय ज्ञान से परे हो; अध्यात्म, ईश्वर, विष्णु।
अध्यक्ष पुं. {सं.} स्वामी, मालिक; नायक, मुखिया; अधिष्ठाता; सभा या संस्था आदि का प्रधान (चेयरमैन); प्रधान; प्रबंधक।
अध्यक्षता स्त्री. {सं.} अध्यक्ष होने की क्रिया या भाव; अध्यक्ष का पद या स्थान; किसी समाज या वर्ग में सबसे ऊँचा और प्रतिष्ठित आसन; कार्य-संचालन आदि के लिए उच्च या प्रतिष्ठित पद पर बैठना।
अध्ययन पुं. {सं.} किसी विषय के सब अंगों या गूढ़ तत्वों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे देखना, समझना या पढ़ना, पठन-पाठन, पढ़ाई।
अध्ययन-कक्ष पुं. {सं.} जिस कमरे में पढ़ाई हो, क्लास-रूम।
अध्ययनावकाश पुं. {सं.} वह अवकाश या छुट्टी जो किसी कर्मचारी या अधिकारी को किसी विषय का विशेष रूप से अध्ययन करने के लिए मिले; पढ़ाई करने के लिए मिली छुट्टी; अध्ययन से फुर्सत मिलना।
अध्ययनीय वि. पढ़ने योग्य विषय, पुस्तक या अन्य सामग्री।
अध्यर्थ पुं. {सं.} वह वस्तु जिस पर अधिकार जताया जाए (क्लेम)।
अध्यर्थन पुं. {सं.} किसी वस्तु पर स्वत्व या अधिकार जताना, दावा (क्लेम)।
अध्यर्थी पुं. {सं.} किसी वस्तु पर अधिकार जताने वाला।
अध्यवसान पुं. {सं.} निश्चय, उद्यम, प्रयत्न; साहित्यशास्त्र के अनुसार उपमेय का शब्द से कथन करके केवल उपमान का कथन।
अध्यवसाय पुं. {सं.} {कर्ता अध्यवसायी} दृढ़तापूर्वक तथा निरंतर किसी काम में लगे रहना, घोर परिश्रम; उत्साह।
अध्यवसायी(यिन्) वि. {सं.} घोर परिश्रम करनेवाला; उद्यमी, अध्यवसायशील।
अध्यवसित वि. {सं.} जिसका अध्यवसान किया गया हो।
अध्यात्म पुं. {सं.} आत्मा और ब्रह्म का विवेचन, ज्ञानतत्व, आत्मज्ञान; आत्मा से संबद्ध विषय।
अध्यात्मयोग पुं. {सं.} मन को आत्मचिंतन में लगाना।
अध्यात्मवाद पुं. {सं.} {वि. अध्यात्मवादी} ब्रह्म और आत्मा को मुख्य मानने का सिद्धांत।
अध्यादेश पुं. {सं.} किसी कार्य, व्यवस्था आदि के संबंध में राज्य द्वारा दिया या निकाला हुआ कोई आधिकारिक आदेश; वि. अध्यादिष्ट।
अध्यापक पुं. {सं.} {स्त्री. अध्यापिका} वह जो विद्यार्थियों को पढ़ाता हो, शिक्षक, उस्ताद; पढ़ानेवाला, उपाध्याय।
अध्यापकी स्त्री. {सं. अध्यापक} अध्यापन, पढ़ाने का काम, शिक्षण; पढ़ाने का व्यवसाय, पढ़ाने का काम।
अध्यापन पुं. {सं.} शिक्षण, पढ़ाने का कार्य।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याप्य *वि.* {सं.} पढ़ाने योग्य, पढ़ाने का विषय, ग्रंथ।

अध्याय *पुं.* {सं.} ग्रंथ का खंड या विभाग जिसमें किसी विषय या उसके विशेष अंग का विवेचन हो, प्रकरण (चैप्टर); अध्ययन; जैसे स्वाध्याय।

अध्यारोप *पुं.* {सं.} एक बात भूल से दूसरी जगह लगाना; मिथ्या या निराधार कल्पना; किसी धर्म या देश को भूल से दूसरे में मानना या कहना।

अध्यास *पुं.* {सं.} मिथ्या ज्ञान; कुछ का कुछ दिखाई देना या जान पड़ना, भ्रम, धोखा (इल्युजन); जैसे रस्सी को साँप समझना।

अध्यासन *पुं.* {सं.} {*वि.* अध्यासीन} उपवेशन, बैठना; आरोपण।

अध्याहार *पुं.* {सं.} {*वि.* अध्याहृत} तर्क-वितर्क, विचार, बहस; वाक्य पूरा करने के लिए उसमें और कुछ शब्द ऊपर से जोड़ना; अस्पष्ट वाक्य को दूसरे शब्दों में स्पष्ट करने की क्रिया; आशय स्पष्ट करने के लिए वाक्य में दूसरे वाक्य से शब्द लेकर जोड़ना।

अध्यूढ़ा *स्त्री.* {सं.} जिसके रहते पति ने दूसरा विवाह किया हो; ज्येष्ठा पत्नी।

अध्येता *पुं.* {सं.} वह जो (निरंतर) अध्ययन करता हो, पढ़नेवाला, अध्ययनशील।

अध्येतव्य *पुं.* {सं.} अध्येय।

अध्येय *वि.* {सं.} अध्ययन करने या पढ़ने योग्य; जो पढ़ा जा रहा हो या पढ़ा जाने को हो; पढ़ने लायक, पाठ्य ग्रंथ।

अध्येक्षण *पुं.* {सं.} याचना, प्रार्थना, आदरपूर्वक प्रेरणा।

अध्वर *पुं.* {सं.} यज्ञ।

अध्वर्यु *पुं.* {सं.} यजुर्वेद-विहित कर्म करनेवाला ऋत्विक; यज्ञ के चार ऋत्विजों में एक।

अनंग *वि.* {सं.} {*क्रि.* अनंगना} बिना शरीर का, देहरहित; *पुं.* कामदेव का नाम।

अनंगलेख *पुं.* {सं.} प्रेमपत्र; लव लैटर।

अनंगारि *पुं.* {सं.} अनंग अर्थात् कामदेव के शत्रु, शिव।

अनंगी *वि.* {सं. अनंगिन्} {*स्त्री.* अनंगिनी} अंगरहित, बिना देह का; *पुं.* ईश्वर; कामदेव।

अनंगीकार *पुं.* {सं.} स्वीकार न करना, न मानना।

अनंत *वि.* {सं.} जिसका अंत या पार न हो, असीम; बहुत अधिक या बहुत बड़ा; अविनाशी; *पुं.* विष्णु; शेषनाग; लक्ष्मण; बाजूबंद।

अनंतचतुर्दशी *स्त्री.* {सं.} भाद्रपद शुक्ल 14 जिस दिन अनंत भगवान का व्रत स्त्रियाँ रखती हैं।

अनंतर *क्रि. वि.* {सं.} पीछे, उपरांत, बाद; निरंतर, लगातार।

अनंद *पुं.* आनंद।

अन *उप.* {सं. अ} एक उपसर्ग जो तद्भव शब्दों के पहले लगकर अभाव या विपरीत भाव सूचित करता है, जैसे अनगढ़, अनगिनती।

अनक आनक।

अनकना *स.* {सं. आकर्णन} सुनना; चुपचाप या छिपकर सुनना।

अनकहा *वि.* {हिं. अन + कहना} {*स्त्री.* अनकही} बिना कहा हुआ, अकथित, अनुक्त।
मुहा. अनकही देना = चुपचाप रहना।

अनख[1] *स्त्री.* {सं. अन् + अक्ष} क्रोध, कोप; ग्लानि, खिन्नता; ईर्ष्या।

अनख[2] *वि.* {सं. अ + नख} बिना नख का।

अनखना *अ.* {हिं. अनख} क्रोध करना; रुष्ट होना।

अनखा *पुं.* {हिं. अनख} काजल की बिंदी (कुदृष्टि से बचाने के लिए)।

अनखाना *अ.* अनखना; *स.* अप्रसन्न करना।

अनखाहट *स्त्री.* अनख।

अनखी *वि.* {हिं. अनख} जो जल्दी रुष्ट हो जाए; क्रोधी।

अनखुला *वि.* {हिं. अन + खुलना} बिना खुला, बंद।

अनखौहाँ *वि.* {हिं. अनख} {*स्त्री.* अनखौहीं} क्रोध से भरा, कुपित; चिड़चिड़ा; क्रोध दिखाने वाला; अनुचित, बुरा; ऐसे स्वभाव का व्यक्ति।

अनगढ़ *वि.* {हिं. अन + गढ़ना} बिना गढ़ा हुआ; जिसे किसी ने बनाया न हो, स्वयंभू; बेडौल, भद्दा, बेढंगा; उजड्ड, अक्खड़; स्वभावतः उस प्रकार का, प्राकृतिक, जिसे सँवारा न हो, अनिर्मित।

अनगन *वि.* अनगिनत; अगणित।

अनगार *वि.* {सं.} अकेतन।

अनगिनत *वि.* {हिं. अन + गिनना} जो गिना न जा सके, बहुत अधिक; गिनती से बाहर।

अनग्नि *वि.* {सं.} आग से रहित स्थान; *क्रि. वि.* बिना की आग के; अग्निहोत्र न करनेवाला।

अनगिना *वि.* {हिं. अन + गिनना} जो गिना न गया हो; बहुत अधिक।

अनघ *पुं.* {सं.} वह जो अघ या पाप न हो; पाप का अभाव; *वि.* पापरहित, निर्दोष।

अनघोरी *क्रि. वि.* {?} चुपके से, चुपचाप; अचानक, अकस्मात्।

अनचाहा *वि.* {हिं. अन + चाहना} जिसकी चाह या इच्छा न की गई हो।

अनचिन्हा *वि.* = जिसका कोई निशान न हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनचीन्हा *वि.* न पहचाना गया; अपरिचित।

अनजान *वि.* {हिं. अन + जानना} अज्ञानी, नादान, नासमझ; अजन्मा, जन्मरहित; अपरिचित, अज्ञात।

अनजाने *क्रि. वि.* बिना जाने, अनजान में; ज्ञान के बिना ही।

अनट *पुं.* {सं. अनृत} उपद्रव; अत्याचार; अन्याय।

अनडीठ *वि.* {हिं. अन + डीठ = दृष्टि} जिसे देखा न हो, बिना देखा हुआ; दृष्टिहीन, अदृष्ट।

अनत *वि.* {सं.} बिना झुका हुआ।
उदा. मेरे मन अनत कहाँ सुख पावै। --सूर
क्रि. वि. {सं. अन्यत्र} दूसरे जगह।

अनति *स्त्री.* {सं.} नम्रता का अभाव, अहंकार।

अनदेखा *वि.* {हिं. अन + देखना} {*स्त्री.* अनदेखी} बिना देखा हुआ; अदृष्ट।

अनद्यतन *वि.* {सं.} जो आज न हुआ हो।

अनधिक *वि.* {सं.} जो अधिक न हो।

अनधिकार *पुं.* {सं.} अधिकार, का अभाव, अधिकार न होना; बेबसी, लाचारी; अयोग्यता; हक न होना, अपात्रता।

अनधिकार-चर्चा *पुं.* {सं.} जिस विषय का ज्ञान न हो, उस पर बोलना; जहाँ बोलने का हक न हो, वहाँ भी बात छेड़ना, बीच में बोलना।

अनधिकारी(रिन्) *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अनधिकारणी} जिसे अधिकार न हो; अयोग्य, अपात्र; अधिकारविहीन।

अनधिकृत *वि.* {सं.} जिस पर अधिकार प्राप्त न हो; जिसके लिए अधिकार न मिला हो; बिना अधिकार; जिस पर अधिकार न किया हो।

अनधिगत *वि.* {सं.} जो अधिगत अर्थात् जाना या समझा हुआ न हो, अज्ञात; जिस का कुछ अता-पता न हो, जो हाथ न आया हो, जो मिला हो।

अनध्याय *पुं.* {सं.} वह दिन जो शास्त्रानुसार पढ़ने-पढ़ाने का न हो। (अमावस्या, परिवा, अष्टमी, चतुर्दशी और पूर्णिमा); जिस दिन पाठ न पढ़े; पढ़ने के अवकाश का दिन।

अनध्यास *पुं.* {सं.} स्मृति का अभाव।

अननिवार्य *वि.* {सं.} जो अनिवार्य न हो (अनअसैंशल); जो जरूरी न हो।

अननुकूल *वि.* {सं.} जो अपने को (परिस्थितियों के) अनुकूल न बना सके।

अननुज्ञा *स्त्री.* {सं.} अनुमति का अभाव।

अननुज्ञात *वि.* {सं.} जिस कार्य के लिए अनुमति न मिली हो।

अननुरूप *वि.* {सं.} जो किसी के अनुरूप न हो, 'अनुरूप' का उलटा; जो किसी की मर्यादा को देखते हुए उसके अनुरूप या उपयुक्त न हो।

अननुभूत *वि.* {सं.} जिसका अनुभव न किया हो।

अननुमत *वि.* {सं.} जिसके लिए अनुमति न हो; जिसे अनुमति न मिली हो।

अनन्नास *पुं.* {पुर्त. अनानास} एक छोटा पौधा जिसके फल खटमीठे होते हैं।

अनन्य *वि.* {सं.} {*भाव.* अनन्यता} अन्य से संबंध न रखनेवाला, एक ही में लीन, एकनिष्ठ।

अनन्यभाव *पुं.* {सं.} एकनिष्ठता।

अनन्वय *पुं.* {सं.} एक अलंकार जिसमें उपमेय को ही उपमान मान लिया जाता है, जैसे भरत भरत ही है; असंबद्ध; वंशहीन।

अनपच *पुं.* {हिं. अन + पचना} भोजन न पचने की अवस्था या दोष, अजीर्ण, बदहजमी।

अनपढ़ *वि.* {हिं. अन + पढ़ना} जो पढ़ा-लिखा न हो, अशिक्षित।

अनपत्य *वि.* {सं.} जिसे अपत्य या संतान न हो, नि:संतान।

अनपराध *वि.* {सं.} जिसका कोई अपराध न हो, निर्दोष; बेकसूर।

अनपाय *वि.* {सं.} विघ्न के बिना, विपत्ति रहित।

अनपेक्ष *वि.* {सं.} जिसे किसी की अपेक्षा या आवश्यकता न हो; जो किसी की चिंता या परवाह न करे, लापरवाह; स्वावलंबी।

अनपेक्षा *स्त्री.* {सं.} अपेक्षा का न होना; उपेक्षा।

अनपेक्षित *वि.* {सं.} जो अपेक्षित न हो; जिसकी अपेक्षा न की हो, अनचाहा।

अनबन *स्त्री.* {हिं. अन + बनना} बिगाड़, विरोध, खटपट।

अनबिधा *वि.* {हिं. अन + बिधना} बिना बेधा या छेद किया हुआ, जैसे अनबिधा मोती।

अनबूझ *वि.* {हिं. अन + बूझना} जिसे समझ-बूझ न हो, अज्ञानी; जो समझ में न आ सके।

अनबोल, अनबोलता *वि.* {हिं. अन + बोलना} न बोलनेवाला, मौन; जो अपना सुख-दुख न कह सके।

अनबोला *पुं.* {हिं. अनबोल} (किसी से) बोलचाल या बातचीत बंद हो जाना।

अनभल (ा) *वि.* {हिं. अन + भला} भले का विपरीत; बुरा, खराब; *पुं.* अहित, बुराई।

अनभाव *पुं.* {हिं. अन + सं. भाव} आपस का वैर-विरोध या द्वेष; अभाव न होना।

अनभावता *वि.* {हिं. अन + भाना = भला लगना} जो अच्छा या भला न लगे, अप्रिय।

अनभिज्ञ *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अनभिज्ञा; *भाव.* अनभिज्ञता} अज्ञ, अनजान, मूर्ख; अपरिचित, नावाकिफ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनभिज्ञेय *वि.* {सं.} जिसका पता न लगाया जा सकता हो; पहचान में न आने योग्य।

अनभीष्ट *वि.* {सं.} जो अभीष्ट न हो, जिसकी चाह या इच्छा न हो; जो पसंद न हो, जिसकी कामना न हो।

अनभो *पुं.* {हिं. अन + भेद} अचम्भा, अचरज; अनहोनी बात; *वि.* अपूर्व, अलौकिक; अद्‌भुत, विलक्षण।

अनभोरी *स्त्री.* {हिं. भोर = भुलावा} भुलावा, चकमा; धोखा।

अनभ्यस्त *वि.* {सं.} जिसका अभ्यास न किया गया हो; जिसकी आदत न हो; जिसने अभ्यास न किया हो, अपरिपक्व।

अनभ्र *पुं.* {सं.} बादल का अभाव; *वि.* बिना बादलों का आकाश।

अनमना *वि.* अन्यमनस्क।

अनमांगा *वि.* हिं. बिना माँगा, अयाचित।

अनमाया *वि.* {हिं. अन + माय(माप)} जो नापा न जा सके, जिसकी थाह न हो।

अनमिख *वि.* = अनिमेष; जिसकी पलकें न झपकी हों।

अनमित्र *वि.* {सं.} जिसका मित्र न हो।

अनमिल *वि.* {हिं. अन = नहीं + मिलना} बेमेल, बेजोड़, असंबद्ध।

अनमीच *क्रि. वि.* {हिं. अन + मीच = मृत्यु} बिना मृत्यु आए।

अनमीलना *स.* {सं. उन्मीलन} (आँखें) खोलना।

अनमेल *वि.* {हिं. अन + मेल} मेल न खानेवाला, असंबद्ध; बिना मिलावट का, विशुद्ध; अमिश्रित।

अनमोल *वि.* {हिं. अन + मोल} अमूल्य; मूल्यवान, बहुमूल्य, कीमती; सुंदर; उत्तम; जिसका मूल्य न लग सके।

अनम्र *वि.* {सं.} जिसमें नम्रता न हो, नम्रतारहित।

अनय *पुं.* {सं.} अमंगल; विपत्ति; अनीति, अन्याय।

अनयास *क्रि. वि.* अनायास।

अनरथ *पुं.* = अनर्थ।

अनरस *पुं.* {हिं. अन = नहीं + सं. रस} रसहीनता, शुष्कता; नीरस, स्वाद के बिना, अरसीला; अनरस, अन्न का रस।

अनरसा *वि.* {हिं. अन + सं. रस} अनमना; माँदा, बीमार, रोगी; किसी काम में रस न लेनेवाला।

अनराता *वि.* {हिं. अन + राता} बिना रँगा; प्रेम में न पड़ा हुआ।

अनरीति *स्त्री.* {हिं. अन + सं. रीति} बुरी रीति, कुरीति; अनुचित व्यवहार, बुरा और नामुनासिब बरताव।

अनरुचि *स्त्री.* = अरुचि; दिलचस्पी का अभाव, घृणा।

अनरूप *वि.* {हिं. अन = बुरा + सं. रूप} कुरूप, भद्दा; असमान, असदृश; अच्छे रूप का अभाव, अननुरूप।

अनर्गल *वि.* {सं.} {*भाव.* अनर्गलता} बेसिर-पैर का, अंडबंड; लगातार; बेरोकटोक।

अनर्घ *वि.* {सं.} बहुमूल्य, कीमती; कम कीमत का, सस्ता; मोल के बिना।

अनर्ध्य *वि.* {सं.} जिसका मोल न लग सके।

अनर्जक *वि.* {सं.} जो कमाता न हो; अपूज्य, आदर के अयोग्य।

अनर्जित *वि.* {सं.} जो अर्जित न हो; न कमाया गया।

अनर्थ *पुं.* {सं.} विरुद्ध या उलटा अर्थ; बहुत बुरी और अनुचित बात, भारी अन्याय; वह धन जो अधर्म से प्राप्त किया जाए; प्रयोजन की हानि, क्षति, काम बिगड़ना।

अनर्थक *वि.* {सं.} निरर्थक, अर्थरहित; व्यर्थ, बेफायदा।

अनर्थकारी (रिन्) *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अनर्थकारिणी} उलटा मतलब निकालने वाला; अनर्थ या तबाही करनेवाला, जैसे अनर्थकारी भूकम्प।

अनर्ह *वि.* {सं.} अपात्र, जो किसी पद या मान के योग्य न हो।

अनलंकृत *वि.* {सं.} जिसे सजाया न गया हो; जिसे आभूषण न पहनाए गए हों; सादा।

अनल *पुं.* {सं.} अग्नि, आग।

अनलस *वि.* {सं.} आलस्यरहित, फुर्तीला; चैतन्य।

अनर्हता *स्त्री.* {सं.} अपात्रता, किसी पद, पुरस्कार या मान के योग्य न होना; अयोग्य; आलस्यहीन।

अनलेखा *वि.* {हिं. अन + लेखा} जिसका लेखा या हिसाब न हो सके, अनगिनत, असंख्य; जो किसी हिसाब में न आये।

अनल्प *वि.* {सं.} जो अल्प या थोड़ा न हो, बहुत, अधिक; प्रचुर, पर्याप्त।

अनवकाश *पुं.* {सं.} अवकाश न होना, अवकाश का अभाव; स्थान की गुंजाइश न होना।

अनवगत *वि.* {सं.} जो जाना न गया हो, जो अवगत न हो।

अनवच्छिन्न *वि.* {सं.} जो विच्छिन्न, विभक्त या खंडित न हो, अखंडित, अटूट; जुड़ा हुआ, संयुक्त; विशेषणरहित, अबाधित, पृथक् न किया गया।

अनवत्व *पुं.* {सं.} नया न होना, नवीनता का अभाव।

अनवीनता *स्त्री.* अनवत्व।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनवद्य *वि.* {सं.} दोषरहित, निर्दोष; अनिंद्य।

अनवधान *वि.* {सं.} {*भाव.* अनवधानता} असावधान; लापरवाही, प्रमाद, ध्यान न देना।

अनवधानता *स्त्री.* {सं.} असावधानी; प्रमादीपन, लापरवाह होना।

अनवय *पुं.* {सं. अन्वय} वंश, कुल, खानदान; अन्वय।

अनवभव *वि.* {सं.} अवयवहीन, जिसके हिस्से न हों।

अनवरत *क्रि. वि.* {सं.} निरंतर, सतत, लगातार।

अनवसर *पुं.* {सं.} गलत अवसर; बेमौके, मौका न होना।

अनवस्था *स्त्री.* {सं.} ठीक अवस्था या स्थिति न होना; अव्यवस्था; आतुरता, अधीरता।

अनवस्थिति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* अवस्थित} चंचलता; अधीरता; आधारहीनता; न रुकना, न टिकना।

अनवाप्त *वि.* {सं.} अप्राप्त, जो न मिला हो।

अनवाप्ति *स्त्री.* {सं.} न मिलना।

अनवेक्षा *स्त्री.* {सं. अन् + अवेक्षा} {*वि.* अनवेक्षित, अनवेक्षणीय} ऐसे सामान्य अपराध या अनुचित बात पर ध्यान न देना जिस पर विधि के अनुसार ध्यान दिया जा सकता हो।

अनवेक्षणीय *वि.* {सं.} (ऐसा अपराध) जिस पर ध्यान देना आवश्यक हो (नॉनकाग्निजेबुल); ध्यान देने योग्य, विचार के अयोग्य, अनावश्यक।

अनशन *पुं.* {सं.} लंघन करना, व्रत या रोग अथवा किसी आंदोलन के प्रसंग में भोजन न करना।

अनश्वर *वि.* जो नष्ट होनेवाला न हो; नश्वर का विपरीत।

अनसखरी *वि. स्त्री.* {हिं. अन + सखरी} पूरी, पराठा आदि के रूप में पकी रसोई; घी, दूध, तेल में पका या आग में भुना अन्न पक्का माना जाता है। रोटी चावल आदि कच्ची या सखरी।

अनसाना *अ.* {हिं. अनख} मन में अप्रसन्न रहना या नाराज होना, बिगड़ना; चिढ़ना; चिढ़ाकर रुष्ट करना; *स.* किसी को अप्रसन्न या नाराज करना।

अनसुना *वि.* {हिं. अन + सुना} जो सुना न गया हो।

मुहा. अनसुनी करना = किसी की बात पर ध्यान ही न देना; सुनकर भी उस बात पर ध्यान न देना।

अनसूया *स्त्री.* {सं.} असुया या ईर्ष्या-द्वेष का अभाव, किसी का बुरा न मनाना; अत्रिमुनि की पत्नी का नाम; *वि.* अनसूचक-जो असूया न करे।

अनस्तित्व *पुं.* {सं.} अस्तित्व न होना; किसी वस्तु या व्यक्ति की सत्ता का अभाव।

अनहद *पुं.* अनाहद।

अनहोना *वि.* {हिं. अन = नहीं + होना} जैसा पहले कभी घटित न हुआ हो, जैसे अनहोनी घटना।

अनाकानी *स्त्री.* आनाकानी; बिना शक्ल या शरीर का, सूक्ष्म।

अनाक्रमण *पुं.* {सं.} आक्रमण न करना; अन्य पर हमला न करना, आक्रमण का अभाव।

अनागत *वि.* {सं.} जो न आया हो, अनुपस्थित; भावी, होनहार; अपरिचित, अज्ञात; अनादि; अद्‌भुत, विलक्षण; *क्रि. वि.* अचानक, सहसा।

अनागत-विधाता *वि.* विपत्ति आने से पहले ही रस का प्रतिकार करनेवाला।

अनाचरण *पुं.* {सं.} किसी कार्य का आचरण न करना; जो करना हो वह न करना, करने का काम छोड़ देना (ओमिशन); किसी शिक्षा के अनुसार न चलना।

अनाचार *पुं.* {सं.} नीतिविरुद्ध, बुरा या निंदनीय आचरण, कदाचार; दुराचार, भ्रष्टाचार।

अनाचारी(रिन्) *वि.* {सं.} अनाचार करनेवाला; दुराचारी; दुश्चरित्र।

अनाज *पुं.* {सं. अन्नाद्य} {*वि.* अनाजी} अन्न, धान्य, दाना, गल्ला।

अनाड़ी *वि.* {सं. अनार्य} नासमझ, नादान, अनजान; जो निपुण न हो, अकुशल, अदक्ष; किसी कार्य को करने में अकुशल, उसे ठीक ढंग से न कर सके।

अनाज्ञात *वि.* जिसे किसी कार्य के लिए आज्ञा न मिली हो।

अनाढ्य *वि.* जो आढ्य-धनी न हो, निर्धन।

अनाथ *वि.* {सं.} जिसका कोई पालन करनेवाला न हो; असहाय; बिन स्वामी, बेसहारा।

अनाथालय *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ अनाथों, असहायों या दीन-दुखियों का पालन हो।

अनादर *पुं.* {सं.} {*वि.* अनादृत, अनादरणीय} आदर न होना, निरादर, अपमान, अप्रतिष्ठा, बेइज्जती; साहित्य में एक अलंकार जिसमें अप्राप्त वस्तु की इच्छा करके प्राप्त वस्तु का अनादर किया जाता है।

अनादरण *पुं.* {सं.} बैंक द्वारा चेक का (बिना भुगतान किए ही); लौटा देना; आदर न करना।

अनादि *वि.* {सं.} जिसका आदि न हो, जो सदा से हो।

अनादृत *वि.* {सं.} जिसका अनादर या अपमान हुआ हो; जिसका आदर या सम्मान न होता हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनादेय *वि.* जो लेने योग्य न हो; जो नदी का न हो; बिना आधार या बिना सहारे का।

अनापद *वि.* ऐसा स्थान जहाँ कोई खतरा न हो।

अनापन्न *वि.* जो शरण में न आया हो।

अनापशनाप *वि.* {सं. अनाप्त + अनु.} व्यर्थ का और असंबद्ध (कथन); अंडबंड, ऊटपटाँग।

अनाप्त *वि.* {सं.} अप्राप्त, अलब्ध; अविश्वस्त; असत्य; अकुशल, अनाड़ी; अनात्मीय, अबंधु।

अनाम *वि.* {सं. अनामन्} {*स्त्री.* अनामा} (रचना) जिसके रचयिता का नाम कोई न जानता हो; बना नाम का, अप्रसिद्ध; नाम रहित व्यक्ति या वस्तु।

अनामय *वि.* {सं.} रोगरहित; *स्त्री.* नीरोगता।

अनामिका *स्त्री.* {सं.} कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की उँगली।

अनायत्त *वि.* {सं.} जो वश में न हुआ हो; स्वतंत्र, स्वाधीन; जो लंबा-चौड़ा न हो।

अनायास *क्रि. वि.* {सं.} बिना आयास या प्रयास के, बिना परिश्रम; अकस्मात्, अचानक; आसानी से, जोर लगाये बिना।

अनार *पुं.* {फा.} एक पेड़ और उसके फल का नाम, दाड़िम।

अनारदाना *पुं.* {फा.} खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना।

अनार्जव *पुं.* {सं.} आर्जव या ऋजुता का अभाव; बेईमानी (डिस्-ऑनेस्टी); सरलता या सीधापन का अभाव।

अनार्य *पुं.* {सं.} {*भाव.* अनार्यता} वह जो आर्य जाति का न हो; मलेच्छ; *वि.* हीन, नीच, दुष्ट।

अनावरण *पुं.* {सं.} आवरण हटाना, खुले में रखना।

अनावरण समारोह *पुं.* {सं.} ऐसा समारोह जिसमें आवरण हटाकर किसी वस्तु को सर्वसुलभ कराया जाता है।

अनावर्तक *वि.* {सं.} आवृत्ति से रहित, बार-बार न होनेवाला (नॉन-रेकरिंग)।

अनावश्यक *वि.* {सं.} जिसकी आवश्यकता न हो, अप्रयोजनीय, गैरजरूरी।

अनावृत्त *वि.* {सं.} जो ढका न हो, खुला; जो घिरा न हो; जो ढका या लिपटा न हो।

अनावृष्टि *स्त्री.* {सं.} वर्षा का अभाव, अवर्षा, सूखा (ड्राट)।

अनावेशित *वि.* {सं.} जिसे चार्ज न किया गया हो (अनचार्ड)।

अनाश्रमी *वि.* {सं. अनाश्रमिन्} गार्हस्थ्य आदि चारों आश्रमों से रहित, आश्रमभ्रष्ट।

अनाश्रय *पुं.* {सं.} आश्रय का अभाव।

अनाश्रित *वि.* {सं.} जिसे सहारा न हो, आश्रयरहित, निरवलम्ब; दूसरे पर निर्भर न हो।

अनासक्त *वि.* {सं.} जो आसक्त न हो, निर्लिप्त; किसी वस्तु या विषय में जो न फँसा हो, आदी न हो।

अनासक्ति *स्त्री.* {सं.} आसक्ति या अनुराग न होना; अलग, दूर या उदासीन रहना।

अनासीन *वि.* {सं.} अपने आसन, पद या स्थान से हटाया हुआ (अनसीटेड); बिना बैठे; जो किसी पद पर या आसन पर न हो।

अनाहत *वि.* {सं.} जिसपर आघात न हुआ हो; *पुं.* हठयोग में वह शब्द जो अँगूठों से दोनों कानों को बंद करने से सुनाई देता है; हठयोग में शरीर के अंदर के छह चक्रों में से एक जो हृदय के पास है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार यह उन गिलटियों के पास है जो शरीर को बलवान बनाती हैं और जो वृद्धावस्था आने से पहले ही प्रायः लुप्त हो जाती हैं।

अनाहार *पुं.* {सं.} {*वि.* अनाहारी} भोजन का त्याग, भोजन न करना; बिना भोजन का व्रत, निराहार; *वि.* जिसने कुछ खाया न हो।

अनाहृत *वि.* न लाया गया, संपन्न न किया गया।

अनाहरित *वि.* वह राशि जो खाते से न निकाली गई हो।

अनाहूत *वि.* {सं.} जो बुलाया न गया हो, बिना बुलाया हुआ।

अनिन्दनीय *वि.* निंदा के योग्य नहीं, निर्दोष।

अनिच्छा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* अनिच्छित} इच्छा का अभाव, जी न चाहना।

अनिच्छित *वि.* {सं.} जिसकी इच्छा या चाह न की गई हो; जो रुचिकर न हो, अच्छा न लगनेवाला; अनचाहा या अनचाही।

अनिच्छुक *वि.* {सं.} जो इच्छा या चाह न करे; किसी की ओर प्रवृत्ति न रखनेवाला; न चाहने वाला।

अनित्य *वि.* {सं.} {*भाव.* अनित्यता} जो सदा न रहे, अस्थायी, क्षणभंगुर; कभी न कभी नष्ट हो जानेवाला; सदा न होनेवाला।

अनिद्र *वि.* {सं.} जिसे नींद न आती हो या न आई हो; *पुं.* नींद न आने का उन्निद्र नामक रोग।

अनिद्रित *वि.* जो सोया हुआ न हो।

अनिमिष, अनिमेष *क्रि. वि.* {सं.} बिना पलक गिराए, एकटक; निरंतर, लगातार; पलक गिराये बिना देखना; *पुं.* देवता।

अनियंत्रित *वि.* {सं.} जिस पर नियंत्रण न हो, प्रतिबंधरहित, बिना रोक-टोक का; मनमाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अनियत *वि.* अनिश्चित।

अनियम *पुं.* {सं.} {*वि.* अनियमित} नियम, व्यवस्था आदि का अभाव; किसी प्रकार का कायदा-कानून न होना।

अनियमित *वि.* {सं.} {*भाव.* अनियमितता} नियमरहित; जिसमें नियमों का ठीक तरह से या पूरा पालन न हुआ हो, बेकायदा (इर्रेगुलर); अनिश्चित, अनिर्दिष्ट।

अनियारा *वि.* {हिं. अनी = नोक + आरा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* अनियारी} नुकीला; धारदार, पैना।

अनियुक्त *वि.* जिसे किसी काम पर न लगाया हो।

अनियोग *पुं.* किसी जिम्मेवारी का अभाव; ड्यूटी न होना; प्रयोग न करना।

अनिरुद्ध *वि.* {सं.} जो निरुद्ध या रुद्ध न हो, जिसके आगे कोई रुकावट न हो, बिना रोका हुआ; *पुं.* श्रीकृष्ण के पोते और प्रद्युम्न के लड़के जिन्हें ऊषा ब्याही थी।

अनिर्देश *पुं.* {सं.} कुछ न बताना, कोई चर्चा न करना।

अनिर्देश्य *वि.* {सं.} जिसका निर्देश न हो सके, जो बताने योग्य न हो।

अनिर्दिष्ट *वि.* {सं.} जो निर्दिष्ट न हो, जिसका निर्देश न हुआ हो; अनिश्चित; जिसकी चर्चा न हुई हो, जो बताया न गया हो।

अनिर्बंध *वि.* {सं.} जिसके लिए कोई बंधन न हो, बंधनरहित; स्वतंत्र।

अनिरुक्त *वि.* {सं.} जिसका निर्वचन, विश्लेषण न हुआ हो।

अनिर्वाच्य[1] *वि.* {सं.} जो कहा न जा सके, अकथनीय; जिसके बारे में कुछ न कहा जा सके।

अनिर्वाच्य[2] *वि.* {सं.} जो निर्वाचन के योग्य न हो, जिसका चुनाव न हो सके, जो चुना न जा सके; चुनाव के अयोग्य।

अनिल *पुं.* {सं.} वायु, पवन, हवा, समीर; इला-पृथ्वी से रहित।

अनिलकुमार *पुं.* {सं.} हनुमान।

अनिवार *वि.* = अनिवार्य; बिना रोके।

अनिवार्य *वि.* {सं.} {*भाव.* अनिवार्यता} जिसका निवारण न हो सके, जिससे बचा न जा सके (एसेंशल); जो हटाया या छोड़ा न जा सके (इनेविटेबुल); जिसे लेना, रखना या मानना आवश्यक हो (कम्पल्सरी)।

अनिवार्यता *स्त्री.* {सं.} अनिवार्य होना; ऐसी स्थिति।

अनिश्चय *पुं.* {सं.} निश्चय का अभाव।

अनिश्चित *वि.* {सं.} जो निश्चित न हो, अनियत, अनिर्दिष्ट; आकस्मिक रूप से बीच में आ जानेवाला (कंटिंजेंट); अनिर्णीत।

अनिष्ट *वि.* {सं.} जो इष्ट न हो, अनभिलषित; *पुं.* अमंगल, अहित; हानि।

अनिष्टकर *वि.* {सं.} अनिष्ट करनेवाला; नुक्सान पहुँचानेवाला।

अनी[1] *स्त्री.* {सं. अणी} नुकीली चीज का अगला भाग, नोक।

अनी[2] *स्त्री.* {सं. अनीक} समूह, झुंड; सेना, फौज; समूह।

अनीक[1] *पुं.* {सं.} समूह, झुंड; सेना, फौज; युद्ध, लड़ाई।

अनीक[2] *वि.* {हिं. अ + नीक} जो 'नीक' (अच्छा) न हो, बुरा, खराब।

अनीठ *वि.* अनिष्ट।

अनीति *स्त्री.* {सं.} नीति, न्याय, औचित्य आदि का न होना; अन्याय, अंधेर; अत्याचार; मार्ग के विपरीत।

अनीश *वि.* {सं.} जिसका कोई ईश या स्वामी न हो; सबसे बड़ा; जो अपनी इच्छा से कार्य न कर सके, पराधीन; *स्त्री.* अनीशा।

अनीशता *स्त्री.* {सं.} परतंत्रता, लाचारी!

अनीश्वर *वि.* {सं.} जो स्वतंत्र न हो; जो अपने से ऊपर किसी को न माने; अनीश्वरवादी।

अनीश्वरवाद *पुं.* {सं.} {*वि.* अनीश्वरवादी} ईश्वर का अस्तित्व न मानना, नास्तिकता।

अनीहा *स्त्री.* {सं.} ईहा का न होना, वासना, अनुराग आदि का अभाव; कुछ न चाहने की वृत्ति।

अनु *उप.* {सं.} एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर पीछे, साथ, नित्यता और पौनः पुण्य का बोध कराता है जैसे अनुसार अनुकूल, अनुदिन आदि।

अनुकंपा *स्त्री.* {सं.} दूसरों का दुख देखकर उनके प्रति मन में उत्पन्न होनेवाली दया, कृपा।

अनुकंपित *वि.* जिसपर अनुकंपा की हो।

अनुकंप्य *वि.* जो अनुकंपा के योग्य हो।

अनुकरण *पुं.* {सं.} {*वि.* अनुकरणीय, अनुकृत} देखादेखी किया जानेवाला कार्य, नकल।

अनुकलन *पुं.* {सं.} {*वि.* अनुकलित} दूसरे की कोई बात लेकर और उसे अपने अनुकूल बनाकर ग्रहण करना (एडॉप्टेशन)।

अनुकारक *वि.* {सं.} ज्यों-की-त्यों किसी की नकल करनेवाला (इमीटेटर); अनुकर्ता।

अनुकूल *वि.* {सं.} {*भाव.* अनुकूलता} अनुरूप, मुआफिक; पक्ष में रहकर सहायता करनेवाला;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारों आदि में समान होने या मेल खानेवाला; अपने उपयोग के योग्य, जो अपना हितकर या पक्ष में हो; पुं. वह नायक जो एक ही विवाहिता स्त्री से संबंध और प्रेम रखे; साहित्य में एक अलंकार जिसमें प्रतिकूल से अनुकूल वस्तु की सिद्धि दिखाई जाती है।

अनुकूलता *स्त्री.* {सं.} अनुकूल होने का कार्य, अवस्था या भाव; अपने पक्ष में होने की स्थिति।

अनुकूलन पुं. {सं.} अनुकूल करने या बनाने की क्रिया या भाव; दूसरे को अपने पक्ष में करना; अपने उपयुक्त बनाना।

अनुकृत *वि.* {सं.} {*भाव.* अनुकृति} जिसका अनुकरण किया गया हो।

अनुकृति *स्त्री.* {सं.} दूसरे को देखकर वैसा ही किया हुआ कार्य, नकल; कोई चीज देखकर ज्यों-की-त्यों वैसी ही बनाई हुई चीज (इमिटेशन); साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक वस्तु का कारणांतर से दूसरी वस्तु के अनुसार होने का वर्णन होता है; प्रतिबिंब, चित्र।

अनुक्त *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अनुक्ता} बिना कहा हुआ, अकथित।

अनुक्रम पुं. {सं.} क्रम, सिलसिला; लगातार एक के बाद एक होने की क्रिया या भाव (सक्सेशन)।

अनुक्रमण पुं. {सं.} बारी-बारी से रखना।

अनुक्रमणिका *स्त्री.* {सं.} क्रम, सिलसिला; क्रम से दी हुई सूची (इंडेक्स); अनुक्रम से बनी विषय सूची।

अनुक्रांत *वि.* जिसका अनुक्रमण किया हो; पीछे से चला आ रहा (प्रसंग)।

अनुक्रिया *स्त्री.* {सं.} किसी क्रिया के फलस्वरूप होनेवाली क्रिया (रिस्पांस); प्रतिक्रिया, नकल।

अनुक्रोश पुं. {सं.} किसी को देख पसीजना।

अनुग *वि.* {सं.} पीछे चलनेवाला।

अनुगत *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अनुगता} {*भाव.* अनुगति} अनुगामी, अनुयायी; अनुकूल, मुआफिक; पुं. सेवक, नौकर।

अनुगम पुं. {सं.} तर्कशास्त्र में, कोई बात सिद्ध करने के लिए भिन्न-भिन्न तथ्यों या तत्वों के आधार पर स्थिर किया जानेवाला परिणाम।

अनुगमन पुं. {सं.} पीछे चलना, अनुसरण; किसी की देखा देखी, समान आचरण; विधवा का पति के साथ जल मरना।

अनुगामी *वि.* {सं. अनुगामिन्} {*स्त्री.* अनुगामिनी} पीछे चलनेवाला; समान आचरण करनेवाला; आज्ञाकारी।

अनुगृहीत *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अनुगृहीता} जिसपर अनुग्रह हुआ हो; उपकृत, कृतज्ञ; अहसानमंद।

अनुग्रह पुं. {सं.} कृपा, दया; सरकार या राज्य की ओर से होनेवाली रियायत; कृपा करना।

अनुग्रहांक पुं. {सं.} वे अंक जो अनुग्रहपूर्वक (छात्र को उत्तीर्ण करने के लिए) दिए जाएँ (ग्रेस मार्क्स)।

अनुग्राह्य *वि.* {सं.} जो अनुग्रह के योग्य हो; जिसपर अनुग्रह करना हो।

अनुचर पुं. {सं.} दास, नौकर; सहचारी, साथी।

अनुचिंतन पुं. {सं.} सोच-विचार; अनुशीलन, अध्ययन।

अनुचित *वि.* {सं.} {*भाव.* अनौचित्य} जो उचित न हो, नामुनासिब; बुरा, खराब; जो ठीक न हो।

अनुच्छिष्ट *वि.* {सं.} जो जूठा न हो; खाने से न बचा, अस्पष्ट।

अनुच्छेद पुं. {सं.} किसी साहित्यिक पुस्तक, विवेचन आदि के किसी प्रकरण के अंतर्गत वह विशिष्ट विभाग जिसमें किसी एक विषय या उसके किसी अंग का विवेचन होता है (पैराग्राफ); नियमावली, विधान, संविदा आदि का कोई एक विशिष्ट अंग, जिसमें किसी एक विषय आदि का विवेचन होता है (आर्टिकल); किसी लेख में संदर्भ खंड, नई पंक्ति से आरंभ होनेवाला भाग।

अनुज *वि.* {सं.} जिसका जन्म बाद में हुआ हो, जो पीछे जनमा हो; छोटा भाई, बहिन बाद में जन्म लेनेवाला, वाली; पुं. {*स्त्री.* अनुजा} छोटा भाई।

अनुजीवी पुं. {सं. अनुजीविन्} {*स्त्री.* अनुजीविनी} आश्रित; सेवक, नौकर; किसी के आश्रित जीनेवाला।

अनुज्ञप्ति *वि.* {सं.} कोई विशेष व्यापार या उत्पादन करने का शासन द्वारा प्रदत्त अधिकार (लाइसेंस)।

अनुज्ञा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* अनुज्ञप्त अनुज्ञात} आज्ञा, हुकुम; वह अनुमति या स्वीकृति जो किसी बड़े अधिकारी से कोई काम करने के लिए मिले, इजाजत (सैंक्शन, परमिशन); काव्यशास्त्र का एक अलंकार; जिसमें किसी बुरी चीज में भी कोई अच्छी बात देखकर उसे पाने की इच्छा का वर्णन होता है; किसी के आज्ञा माँगने पर उसकी स्वीकृति, अनुमति।

अनुज्ञात *वि.* {सं.} जिसके लिए अनुज्ञा मिली हो, अनुज्ञप्त। (एलाउड); जिसे करने की स्वीकृति मिली हो।

अनुज्ञापत्र पुं. {सं.} वह पत्र जिसमें किसी को किसी अधिकारी से कोई कार्य करने अथवा कुछ लेने की अनुज्ञा या स्वीकृति मिली हो (परमिट)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुज्ञापन पुं. {सं.} {*वि.* अनुज्ञापति, अनुज्ञप्त} अनुज्ञा देने की क्रिया या भाव, अनुज्ञा देना।

अनुज्ञापित *वि.* अनुज्ञात।

अनुज्ञेय *वि.* अनुज्ञा के योग्य, जिसको अनुमति देनी हो।

अनुतप्त *वि.* {सं.} जिसे अफसोस हो; जिसे बाद में गर्म किया हो।

अनुताप पुं. {सं.} {*वि.* अनुतप्त} तपन, दाह, जलन; दुख, रंज; पछतावा, अफसोस; किसी भूल या कार्य के लिए पछताना, पीछे अफसोस करना।

अनुत्तर *वि.* {सं.} जो उत्तर न दे सके, निरुत्तर; जवाब न मिलना; पुं. {*वि.* अनुत्तरित} उत्तर का अभाव, उत्तर या जवाब न देना।

अनुत्तरदायी(यिन्) *वि.* {सं.} जो अपने कर्तव्यपालन और उत्तरदायित्व का पूरा ध्यान न रखे और उनकी उपेक्षा करे (इर्रेस्पांसिबुल); जिस पर कोई जिम्मेवारी न हो, जो जिम्मेदारी न समझे।

अनुत्तरित *वि.* {सं.} जिसका उत्तर न दिया गया हो।

अनुत्तीर्ण *वि.* {सं.} जो परीक्षा में उत्तीर्ण न हुआ हो।

अनुदात्त *वि.* {सं.} छोटा, तुच्छ; नीचा (स्वर); लघु (उच्चारण); पुं. स्वर के तीन भेदों में से एक, जो उदात्त या ऊँचा नहीं, बल्कि कुछ नीचा होता है।

अनुदान पुं. {सं.} {*वि.* अनुदत्त} राज्य, शासन आदि से किसी विशेष कार्य के लिए सहायता के रूप में मिलनेवाला धन (ग्रांट)।

अनुदार *वि.* {सं.} जो उदार न हो, संकीर्ण; कृपण, कंजूस; थोड़ा।

अनुदित *वि.* {सं.} न कहा गया।

अनुदिन *क्रि. वि.* {सं.} प्रतिदिन दिनोंदिन।

अनुदृष्टि *स्त्री.* {सं.} बहुत सी वस्तुओं में से प्रत्येक वस्तु को उसके ठीक रूप में और सब वस्तुओं के अनुपात का ध्यान रखते हुए देखने की क्रिया या भाव, मुनासिबत (पर्सपेक्टिव); बारीकी से विचार करना।

अनुदेश पुं. {सं.} कार्य के लिए निर्देश; पूर्वकथित नियम की ओर संकेत।

अनुदिष्ट *वि.* जिसके विषय में निर्देश किया गया हो।

अनुद्दिष्ट *वि.* जिसका लक्ष्य निर्धारित न हो।

अनुद्यत *वि.* {सं.} जो उद्यत या तैयार न हो।

अनुद्धत *वि.* जो उद्दंड न हो, विनम्र; जो उड़ाया न गया हो।

अनुधर्मक *वि.* {सं.} धर्म, आकृति, स्वरूप आदि के विचार से किसी के समान, सदृश।

अनुधावन पुं. {सं.} पीछे चलना, अनुसरण करना; पीछे दौड़ लगाना।

अनुनय पुं. {सं.} विनय, विनती, प्रार्थना, रूठे हुए को मनाना; विनती करना, खुशामद करना, मनाना।

अनुनाद पुं. {सं.} गूँज; प्रतिध्वनि।

अनुनासिक *वि.* {सं.} (वर्ण) जिसके उच्चारण में नाक से भी कुछ स्वर निकलता हो (नैजल)।

अनुनीत *वि.* {सं.} जिसे विनती करके मना लिया गया हो।

अनुपजाऊ *वि.* {सं. अन् + हिं. उपजाऊ} जो उपजाऊ न हो; कम उपजवाला, बिना उपज का।

अनुपश्रुत *वि.* {सं.} शांत, उपद्रव रहित।

अनुपम *वि.* {सं.} {*भाव.* अनुपमता} जिसकी बराबरी का और कोई न हो, उपमारहित, बेजोड़ (यूनीक); बहुत अच्छा; जिसकी तुलना न हो।

अनुपमेय *वि.* अनुपम; तुलना के अयोग्य।

अनुपयुक्त *वि.* {सं.} {*भाव.* अनुपयुक्तता} जो उपयुक्त या योग्य न हो; जो काम का न हो।

अनुपयोग पुं. {सं.} काम में न लाना; इस्तेमाल न करना।

अनुपयोगी(गिन्) *वि.* {सं.} बेकाम, व्यर्थ का।

अनुपस्थित *वि.* {सं.} जो सामने, उपस्थित या मौजूद न हो, अविद्यमान, गैरहाजिर (ऐबसेंट)।

अनुपस्थिति *स्त्री.* {सं.} उपस्थित, वर्तमान या मौजूद न होने का भाव, सामने न होना, गैरमौजूदगी (ऐबसेंस)।

अनुपात पुं. {सं.} {*वि.* आनुपातिक} गणित की त्रैराशिक क्रिया; मान, माप, उपयोगिता आदि की तुलना के विचार से एक वस्तु का दूसरी वस्तु से रहनेवाला संबंध या अपेक्षा, तुलनात्मक स्थिति (प्रोपोर्शन)।

अनुत्पादक *वि.* {सं.} जो उत्पादक न हो।

अनुत्पादित *वि.* जो उत्पन्न न किया हो।

अनुपाय *वि.* {सं.} जिसके पास या जिसका कोई उपाय न हो; बिना साधन, उपाय- रहित।

अनुपालन पुं. {सं.} किसी मिली हुई आज्ञा का ठीक से पालन करना; किसी पत्र या आज्ञा को उसके ठीक स्थान तक पहुँचाने का काम, तामील (सर्विस)।

अनुपूरक *वि.* {सं.} किसी के साथ लग या मिलकर उसकी पूर्ति करनेवाला (कॉम्प्लिमेंटरी); छूट, त्रुटि, क्षति आदि की पूर्ति के लिए बाद में लगाया, मिलाया या बढ़ाया हुआ (सप्लिमेंटरी); साथ लगकर पूर्ति करनेवाला परिशिष्ट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुप्रमाणन पुं. {सं.} {*वि.* अनुप्रमाणित} तसदीक करना (एटेंटेशन); सही प्रमाणित करना, सिद्ध करना।

अनुप्रयाण पुं. {सं.} पीछे-पीछे प्रस्थान करना।

अनुप्राणन पुं. {सं.} {*वि.* अनुप्राणित} (किसी में) प्राण डालना, जीवन का संचार करना; नई शक्ति देना।

अनुप्रापण पुं. {सं.} {*वि.* अनुप्राप्त} (कर, दंड आदि के रूप में) प्राप्तव्य धन इकट्ठा करना या उगाहना, वसूली करने की क्रिया या भाव, वसूली (कलेक्शन); कर आदि एकत्रित करके कोष में पहुँचाना।

अनुप्राप्त *वि.* {सं.} जिसका अनुप्रापण हुआ हो, इकट्ठा किया या उगाहा हुआ, वसूल किया हुआ; बाद में मिला दंड।

अनुप्राप्ति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* अनुप्राप्त} (कर, दंड आदि के रूप में) प्राप्तव्य धन इकट्ठा करने की क्रिया या भाव, वसूली।

अनुप्रास पुं. {सं.} वह शब्दालंकार जिसमें किसी पद में एक ही अक्षर बार-बार आता है, वर्णवृति, वर्णमैत्री (एलिटरेशन)।

अनुबंध पुं. {सं.} {*वि.* अनुबद्ध} बाँधनेवाली चीज या संबंध, बंधन; किसी विषय की सब बातों का विवेचन; कोई काम करने के लिए दो पक्षों में होनेवाला ठहराव या समझौता (एग्रिमेंट); किसी भावी कार्य के संबंध में निश्चय (एंगेजमेंट); वस्तुओं, जीवों, अंगों आदि में आवश्यक या अनिवार्य रूप से होनेवाला घनिष्ट पारस्परिक संबंध (को-रिलेशन)।

अनुबंध-चतुष्टय पुं. {सं.} ग्रंथ निर्माण के प्रसंग में विषय, प्रयोजन, अधिकारी और परस्पर संबंध इन चार बातों का समुदाय।

अनुबंधक *वि.* {सं.} अनुबंध करनेवाले।

अनुबंधन पुं. {सं.} अनुबंध करना, करार करना।

अनुबंध-पत्र पुं. {सं.} वह पत्र जिसमें किसी अनुबंध की शर्तें लिखी हों, इकरारनामा (एग्रिमेंट)।

अनुबद्ध *वि.* {सं.} बँधा हुआ; जिसके संबंध में कोई अनुबंध या समझौता हुआ हो (एग्रीड)।

अनुबल पुं. {सं.} पीछे से रक्षा करनेवाली सेना।

अनुभव पुं. {सं.} {*वि.* अनुभवी, अनुभाव्य, अनुभूत} वह ज्ञान जो कोई काम या प्रयोग करने से प्राप्त हो (एक्सपीरिएंस); बाद में याद आना, याद कराना।

अनुभवी *वि.* {सं. अनुभविन्} अनुभव रखनेवाला, जिसने अनुभव प्राप्त किया हो।

अनुभाग पुं. {सं.} किसी विभाग के अंतर्गत कोई छोटा विभाग (सेक्शन)।

अनुभागीय *वि.* {सं.} अनुभाग-संबंधी।

अनुभाव पुं. {सं.} महिमा, बड़ाई; प्रभाव, नाटक में अभिनेता की चेष्टाएँ जो पात्र के मनोभाव का ज्ञान कराती हैं; किसी वस्तु, वर्ग आदि में विशेष रूप से पाए जाने वाले गुण या लक्षण (कैरेक्टरिस्टिक्स)।

अनुभावी *वि.* {सं. अनुभाविन्} {*स्त्री.* अनुभाविनी} जिसमें अनुभव करने की शक्ति हो; पुं. वह साक्षी जिसने सारी घटना स्वयं देखी हो।

अनुभावुक *वि.* जो अनुभव करे।

अनुभाव्य *वि.* {सं.} अनुभव के योग्य।

अनुभूत *वि.* {सं.} जिसका अनुभव या साक्षात् ज्ञान हुआ हो; परीक्षित, तजुरबा किया हुआ; जिसका अनुभव किया जाय, अनुभव के विषय में।

अनुभूति *स्त्री.* {सं.} ऐसा मानसिक व्यापार जिसकी बाहरी प्रतिक्रिया तो नहीं होती फिर भी जिससे सुख-दुख का अनुभव होता है (फीलिंग)।

अनुभूतिवाद पुं. {सं.} अनुभूति का सिद्धांत।

अनुमत *वि.* {सं.} जिसकी अनुमति दी गई हो।

अनुमति *स्त्री.* {सं.} आज्ञा, हुकुम; कोई काम करने से पहले उसके संबंध में बड़ों से मिलने या ली जानेवाली स्वीकृति जो बहुत-कुछ आज्ञा के रूप में होती है, अनुज्ञा (परमिशन); कोई काम करते समय या कर चुकने पर किसी बड़े या उच्चाधिकारी के द्वारा होनेवाला उसका अनुमोदन या समर्थन, स्वीकृति (एस्सेंट)।

अनुमन्ता *वि.* {सं.} अनुमति देनेवाला।

अनुमान पुं. {सं.} {*वि.* अनुमित, अनुमेय, अनुमानित} अपने मन से यह समझना कि ऐसा हो सकता है या होगा, अटकल, अंदाज (गेस); मोटा हिसाब लगाकर अंदाज से यह समझना कि यह ऐसा या इतना होगा (एस्टिमेट); न्याय में प्रमाण के चार भेदों में से वह भेद जिससे प्रत्यक्ष साधन के द्वारा अप्रत्यक्ष साध्य की भावना होती है।

अनुमानतः *क्रि. वि.* {सं.} अनुमान, अटकल या अंदाज से; शायद, अंदाजन।

अनुमानित *वि.* {सं.} जो अनुमान से सोचा या समझ गया हो (गेस्ड); जो अनुमान से मोटा हिसाब लगाकर ठहराया गया हो (एस्टिमेटेड); जिसका अनुमान किया हो।

अनुमित *वि.* = अनुमानित।

अनुमिति *स्त्री.* {सं.} अनुमान।

अनुभुमूर्षु *वि.* {सं.} अनुसरण चाहनेवाली।

अनुभूत (ता) *वि.* {सं.} साथ मरा या सती हुई स्त्री।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुमेय *वि.* {सं.} जिसका अनुमान करना हो।

अनुमोदन *पुं.* {सं.} {*वि.* अनुमोदित} प्रसन्नता प्रकट करना; किसी के किए हुए काम या सामने रखे हुए सुझाव को ठीक मानकर अपनी स्वीकृति देना या उसका समर्थन करना (एप्रूबल); पुष्टि, सहमति प्रकट करना।

अनुमोदित *वि.* {सं.} (प्रस्ताव) जिसका किसी ने अनुमोदन किया हो; (बात या विचार) जिसे किसी उच्च अधिकारी ने ठीक मान लिया हो और जिसके अनुसार कार्य करने की स्वीकृति दे दी हो; अनुमोदन किया गया विषय।

अनुयाचन *पुं.* {सं.} किसी को समझा- बुझाकर अपने अनुकूल करते हुए उससे कोई काम करने के लिए कहना (कैंवेसिंग)।

अनुयायी *वि.* {सं. अनुयायिन्} {*स्त्री.* अनुयायिनी} किसी के पीछे-पीछे चलनेवाला, अनुगामी; अनुकरण करनेवाला; किसी के सिद्धांत मानने और उनके अनुसार चलनेवाला (फॉलोअर); *पुं.* अनुचर, सेवक, दास।

अनुयाता *वि.* {सं.} अनुयायी *स्त्री.* जिस के पीछे को कोई चल रहा हो, अनुगत।

अनुयोग *पुं.* {सं.} कोई बात जानने के लिए कुछ पूछना या उस पर आपत्ति करना, किसी बात की सत्यता में संदेह प्रकट करना (क्वेश्चन)।

अनुयोक्ता *वि.* {सं.} अनुयोग या पूछताछ करनेवाला।

अनुयोजन *पुं.* {सं.} दूसरे के भाव को अपनी रचना में अपनाना। किसी रकम को जो पहले दी जा चुकी हो, आगे हिसाब में मिलाकर ठीक करना।

अनुरंजन *पुं.* {सं.} {*वि.* अनुरंजित} अनुराग, प्रीति; दिल-बहलाव; (विवाह से पूर्व) किसी कन्या से पुरुष का प्रेमाचार करना (कोर्टशिप)।

अनुरक्षक *पुं.* {सं.} वह व्यक्ति जो किसी बालिका या स्त्री के साथ-साथ उसके रक्षार्थ सार्वजनिक स्थानों पर जाता हो; रक्षा के लिए साथ रहनेवाला।

अनुरक्त *वि.* {सं.} जिसके मन में किसी के प्रति अनुराग हुआ हो; किसी की ओर झुका या ढला हुआ।

अनुरक्ति *स्त्री.* {सं.} अनुरक्त होने की क्रिया या भाव, अनुराग, प्रेम (एफेक्शन)।

अनुरणन *पुं.* {सं.} {*वि.* अनुरणित} किसी चीज का बोलना या बजना; एक वस्तु के शब्द करने के साथ अन्य ध्वनि होना; गूँज।

अनुरथ्या *स्त्री.* {सं.} सड़क के साथ लगी पटरी।

अनुराग *पुं.* {सं.} {*वि.* अनुरक्त} प्रीति, प्रेम; अनुरक्ति।

अनुरागी *वि.* {सं. अनुरागिन्} {*स्त्री.* अनुरागिनी} अनुराग रखनेवाला।

अनुराध *पुं.* {सं.} विनय, प्रार्थना।

अनुराधना *स.* {सं. अनुराधन} विनय करना, मनाना।

अनुराधा *स्त्री.* {सं.} एक नक्षत्र।

अनुरूप *वि.* {सं.} {*भाव.* अनुरूपता} तुल्य रूप का, सदृश, समान; योग्य, उपयुक्त।

अनुरूपक *पुं.* {सं.} वह जो किसी के अनुरूप हो या अनुकरण पर बना हो; प्रतिमा, मूर्ति; सदृश वस्तु, प्रतिमूर्ति।

अनुरूपता *स्त्री.* {सं.} किसी के अनुरूप होने की अवस्था या भाव, जैसा कोई और हो, वैसा ही या उसके समान होना (एग्रिमेंट); अनुरूप होना।

अनुरेखन *पुं.* {सं.} रेखाचित्र या अन्य चित्र का पारदर्शी कागज पर पेंसिल की रेखाओं से चित्र तैयार करना।

अनुरोध *पुं.* {सं.} रुकावट, बाधा; प्रेरणा, उत्तेजना; विनयपूर्वक किसी बात के लिए किया जानेवाला हठ, आग्रह।

अनुर्वर *वि.* {सं.} उपजाऊ न होनेवाला भूभाग।

अनुलंब *पुं.* {सं.} वह अवस्था जिसमें हाँ या न का कुछ निश्चय न हुआ हो, पर अभी होने को हो (सस्पेंस); अनिश्चय की दशा।

अनुलंब खाता *पुं.* उचिंत खाता।

अनुलंबन *पुं.* {सं.} किसी कर्मचारी के दोष या अपराध की सूचना पाने पर उसकी ठीक जाँच होने तक के लिए उसका अपने पद से हटाया जाना, मुअत्तल होना (सस्पेन्शन); कुछ समय के लिए किसी कार्य का स्थगित करना।

अनुलंबित *वि.* {सं.} (कार्यकर्ता) जिसका किसी अभियोग या अपराध के कारण अनुलंबन हुआ हो, जो अंतिम निर्णय तक के लिए अपने कार्य या पद से हटा दिया गया हो, मुअत्तल; कुछ समय के लिए स्थानच्युत।

अनुलग्न *वि.* {सं.} किसी के साथ लगा, मिला या जुड़ा हुआ (अटैच्ड, एन्क्लोज्ड); साथ रखा, संलग्न।

अनुलग्नक *पुं.* {सं.} वह पत्र या कागज जो किसी दूसरे पत्र के साथ लगा या जुड़ा हो।

अनुलाप *पुं.* {सं.} कही हुई बात फिर से कहना या दुहराना (रिपीटीशन); पुनःकथन।

अनुलेख *पुं.* {सं.} किसी लेख या पत्र पर अपनी स्वीकृति, सहमति आदि लिखकर उसका उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना (एन्डोर्समेंट); लेख या पत्र की पुष्टि में नीचे लिखी टिप्पणी।

अनुलेखन *पुं.* {सं.} {कर्ता अनुलेखक, *वि.* अनुलेख्य} घटना या कार्य का लेखा आदि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखना, जैसे वायु की गति या भूकम्प के धक्के का अनुलेखन; अनुलेख।

अनुलिपि *स्त्री.* {सं.} लेख की यथार्थ नकल।

अनुलिप्त *वि.* अनुलेप लगायें।

अनुलेप *पुं.* {सं.} सुगंधित लेप की वस्तु।

अनुलेपन *पुं.* {सं.} किसी के ऊपर लेप लगाना या चढ़ाना; शरीर में उबटन आदि लगाना; लीपने का कार्य; समोसन आदि कराना।

अनुलोम *पुं.* {सं.} ऊँचे से नीचे की ओर आने का क्रम, उतार; संगीत में सुरों का उतार, अवरोह; सीधा क्रम, ऊपर से नीचे आना, *वि.* ऊपर के वर्ण के पुरुष का निचले वर्ण की स्त्री से विवाह-अनुलोम विवाह।

अनुलोमन *पुं.* {सं.} बस्ति, स्वेदन आदि से शरीर की धातुओं को अनुकूल करना।

अनुलोमा *स्त्री.* {सं.} पति के समान अथवा हीन वर्ण में उत्पन्न पत्नी।

अनुवचन *पुं.* {सं.} {कर्ता अनुवक्ता} किसी की कही हुई बात फिर से कहना या दोहराना; प्रकरण, अध्याय; भाग, खंड, हिस्सा।

अनुवर्तन *पुं.* {सं.} {*वि.* अनुवर्ती} अनुकरण, अनुगमन; समान आचरण; कोई नियम कई स्थानों पर बार-बार लगाना; अनुसरण, पीछे चलना, समान आचरण करना।

अनुवर्ती(तिन्) *वि.* {सं.} अनुयायी; किसी के उपरांत उसके परिणामस्वरूप होनेवाला; अनुवर्तन करनेवाला, परिणामस्वरूप घटित।

अनुवाद *पुं.* {सं.} {*वि.* अनुवादित, अनूदित} फिर से करना, दुहराना; एक भाषा में लिखी हुई चीज या कही हुई बात दूसरी भाषा में लिखना या कहना, भाषांतर, उलथा, तरजुमा; किसी की कही बात दोहराना; एक भाषा से दूसरी में उल्था।

अनुवादक *पुं.* {सं.} अनुवाद या भाषांतर करनेवाला, एक भाषा से दूसरी भाषा में लिखने या कहनेवाला; उल्था करनेवाला।

अनुवादित *वि.* अनूदित; जिसका अनुवाद किया हो।

अनुवाद्य *वि.* {सं.} अनुवाद करने के योग्य; जिसका अनुवाद होने को हो; पीछे से या साथ में बजाने योग्य।

अनुवृत्ति *स्त्री.* {सं.} वेतन का वह अंश जो किसी कर्मचारी को बहुत दिनों तक काम करने पर, उसकी वृद्धावस्था में अथवा उसकी सेवा के विचार से, वृत्ति के रूप में या भरण-पोषण के लिए मिलता है (पेंशन); किसी रजिस्टर आदि में लिखा या चढ़ाया गया।

अनुवृत्तिक *वि.* {सं.} अनुवृत्ति-संबंधी, अनुवृत्ति का; (पद, सेवा आदि) जिसके लिए अनुवृत्ति मिलती अथवा मिल सकती हो (पेंशनबुल); अनुवृत्ति से संबद्ध।

अनुवृत्तिधारी(धारिन्) *पुं.* {सं.} वह जिसे अनुवृत्ति मिलती हो (पेंशनर)।

अनुव्रत *वि.* {सं.} व्रत, नियम या कर्तव्य का पालन करनेवाला, अणुव्रत रखनेवाले जैन।

अनुशंसा *स्त्री.* {सं.} किसी व्यक्ति या आदि के संबंध में यह कहना कि यह अच्छा, उपयुक्त, ग्राह्य अथवा मान्य है, सिफारिश (रिकमेंडशन)।

अनुशंसक *वि.* अनुशंसा करनेवाला।

अनुशंसित *वि.* {सं.} जिसके संबंध में अनुशंसा की गई हो, जिसकी सिफारिश की गई हो (रिकमेंडेड); जिसकी सिफारिश हो, जिसका नाम भेजा गया हो।

अनुशासक *पुं.* {सं.} वह जो अनुशासन करता हो; प्रशासक; अनुशासन चलानेवाला।

अनुशासन *पुं.* {सं.} आज्ञा, आदेश, हुकुम; उपदेश, शिक्षा; वह विधान जो किसी संस्था या वर्ग के सब सदस्यों को ठीक तरह से कार्य या आचरण करने के लिए बाध्य करे (डिसिप्लिन); 'प्रशासन'; आचरण आदि की शिक्षा देना; नियम या कायदे से चलाना।

अनुशासनिक *वि.* {सं.} अनुशासन-संबंधी, जैसे अनुशासनिक कार्रवाई; अनुशासन भंग करने पर होनेवाली कार्रवाई।

अनुशासित *वि.* {सं.} जो अनुशासन में रहता हो; कायदे से आचरण करनेवाला।

अनुशीलन *पुं.* {सं.} {*वि.* अनुशीलितकर्ता, अनुशीलक} चिंतन, मनन; बार-बार किया जानेवाला अध्ययन या अभ्यास; निरंतर अभ्यास व मनन करना।

अनुशीलित *वि.* {सं.} अभ्यस्त, भली प्रकार पढ़ा गया।

अनुश्रुति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* अनुश्रुत} परंपरा से चली आई हुई बात, कथा, उक्ति आदि; कहावत, गाथा।

अनुषंग *पुं.* {सं.} {*वि.* आनुषंगिक} करुणा, दया; संबंध लगाव; प्रसंग के अनुसार एक बात से उसके साथ होनेवाली दूसरी बात भी मान या समझ लेना।

अनुषंगी(गिन्) *वि.* {सं.} किसी कार्य, विषय या तथ्य के बाद सहायक या संबद्ध रूप में होनेवाला; बाद में घटनाक्रम से घटित।

अनुष्टुप *पुं.* {सं.} आठ-आठ अक्षरों के चार चरणों का एक संस्कृत छंद।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुष्ठान *पुं.* {सं.} {*वि.* अनुष्ठित} कार्य का आरंभ; नियमपूर्वक कोई काम करना; शास्त्रविहित कर्म करना; फल के निमित्त किसी देवता का आराधन, प्रयोग, पुरश्चरण।

अनुष्ठित *वि.* {सं.} जिसका अनुष्ठान हुआ हो; संपादित, किया हुआ।

अनुसंधान *पुं.* {सं.} किसी व्यक्ति या बात के पीछे चलना या पड़ना; अच्छी तरह देखकर वास्तविक बात का पता लगाना, जाँच-पड़ताल (इंवेस्टिगेशन); खोज; खोज करना, जाँच करना।

अनुसंधायक *पुं.* {सं.} अनुसंधान करनेवाला।

अनुसंधि *स्त्री.* {सं.} गुप्त परामर्श या संधि; षड्यंत्र, कुचक्र, जालसाजी, अनुसंधान, गुपचुप सलाह।

अनुसंधेय *वि.* अनुसंधान का विषय, खोज करने योग्य।

अनुसंहित *वि.* जिसकी खोज की जा चुकी हो।

अनुसमर्थन *पुं.* {सं.} समर्थन का समर्थन, समर्थन की पुष्टि।

अनुसर *वि., क्रि. वि.* = अनुसार।

अनुसरण *पुं.* {सं.} {*वि.* अनुसारी} किसी के पीछे चलना, अनुकरण (टु फॉलो); कोई बात या निर्णय मानकर उसके अनुसार काम करना।

अनुसरना *अ.* {हिं. अनुसरण} किसी के पीछे-पीछे चलना, अनुगमन करना; कोई बात मानकर उसके अनुसार काम करना; नियम या निश्चय के अनुसार चलना, अनुसरण।

अनुसार *वि.* {सं.} जो किसी के अनुकूल या अनुकरण पर हो, किसी के समान या सदृश, मुताबिक।

अनुसारतः *क्रि. वि.* {सं.} किसी के अनुसार, तदनुसार (एकॉरडिंगली); उसके सदृश, मुताबिक।

अनुसारता *स्त्री.* {सं.} 'अनुसार' होने की क्रिया या भाव (एकॉर्डेंस) अनुसरण।

अनुसारिता *स्त्री.* अनुसारता।

अनुसारी *वि.* {हिं. अनुसार} किसी के अनुसार चलनेवाला, अनुसरण करनेवाला।

अनुसार्य *वि.* अनुसरण करने के लायक जिसके मुताबिक चलना चाहिए।

अनुसूचित *वि.* {सं.} परिगणित सूची (लिस्ट) में आया, शेड्यूल्ड।

अनुसूचित जाति *स्त्री.* ऐसी जाति जिसका उल्लेख (किसी विशिष्ट) सूची में हो, परिगणित जाति।

अनुसूची *स्त्री.* {सं.} कोष्ठक आदि के रूप में वह नामावली जो किसी सूचना, विवरण, नियमावली आदि के अन्त में परिशिष्ट के रूप में हो (शेड्यूल)।

अनुस्मरण *पुं.* {सं.} भूली हुई बात फिर से याद होना या करना (रिकलेक्शन)।

अनुस्मृति *स्त्री.* पीछे आई याद ऐसा लेख जो स्मरण पर आश्रित हो।

अनुस्यूत *वि.* {सं.} साथ में नत्थी, साथ सिला।

अनुस्वार *पुं.* {सं.} स्वर के पीछे उच्चरित होनेवाला एक अनुनासिक वर्ण जिसका चिन्ह (ं) है; अक्षर के ऊपर की बिंदी, जो उक्त वर्ण की सूचक है।

अनुहार *वि.* {सं.} सदृश, तुल्य, समान; अनुसार, अनुकूल; आकृति, शक्ल, शक्ल की समानता; *पुं.* भेद प्रकार; चेहरे की बनावट, मुखारी; सादृश्य; किसी चीज की ज्यों-की-त्यों नकल, प्रतिकृति।

अनुहारना *स.* {सं. अनुहारण} तुल्य, सदृश या समान करना; आकार के समान बना देना।

अनूअर *क्रि. वि.* {सं. अनवरत} निरंतर, लगातार; बिना विराम के, बिना रुके।

अनूक *पुं.* {सं.} वंश, पीढ़ी कुल की विशेषता, विशिष्ट गुण।

अनूजरा *वि.* {हिं. अन + ऊजरा} जो उज्ज्वल न हो; मैला; अनुज्ज्वल, मालिन।

अनूठा *वि.* {सं. अनुच्छिष्ट} {*स्त्री.* अनूठी, *भाव.* अनूठापन} अनोखा, विचित्र, विलक्षण, अद्‌भुत; अच्छा, बढ़िया; असाधारण प्रकार का।

अनूढ़ *वि.* जो ब्याहा न हो; *स्त्री.* अनूढा कन्या जो किसी को चाहती हो।

अनूतर *वि., पुं.* अनुत्तर; उत्तर का अभाव; जवाब न देना।

अनूदक *वि.* {सं.} पानी की कमी वाला स्थान।

अनुदन *पुं.* {सं.} अनुवाद करना।

अनूदित *वि.* {सं.} कहा हुआ; अनुवाद किया हुआ, उल्था किया हुआ, भाषांतरित।

अनूद्य *वि.* {सं.} अनुवाद के योग्य, फिर से दोहराने लायक।

अनूप *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ जल अधिक हो, जलप्राय देश; *वि.* {सं. अनुपम} जिसकी उपमा न हो, बेजोड़; सुंदर, अच्छा।

अनृजु *वि.* {सं.} टेढ़ा छली।

अनृत *वि.* {सं.} मिथ्या, असत्य, झूठा; अन्यथा, विपरीत।

अनेक *वि.* {सं.} एक से अधिक, कई या बहुत सारे।

अनेग *वि.* = अनेक; नेग के बिना।

अनेरा *वि.* {सं. अनृत} {*स्त्री.* अनेरी} व्यर्थ, निष्प्रयोजन; झूठा; अन्यायी, अत्याचारी; दुष्ट पाजी; निकम्मा; *क्रि. वि.* व्यर्थ, फजूल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनैक्य पुं. {सं.} एकता या एका न होना, मतभेद, फूट; एकमत य संगठन का अभाव।

अनैच्छिक *वि.* {सं.} जो अपनी इच्छा से या जान-बूझकर न किया गया हो, बल्कि दूसरे की इच्छा से या परिस्थितियों आदि के कारण, कुछ विवश होकर या यों ही किया गया हो (इन-वालेंटरी); आवश्यक।

अनैतिक *वि.* {सं.} जो नीतिसंगत न हो, नीति के विरुद्ध; अनुचित, अनाचारपूर्ण।

अनैतिकता *स्त्री.* {सं.} अनैतिक कार्य या बात, अनाचार।

अनैतिहासिक *वि.* {सं.} जो इतिहास से सिद्ध न हो, उसके अनुरूप न हो या उसमें न आया हो।

अनैस *वि.* अनष्टि।

अनैसर्गिक *वि.* {सं.} निसर्ग या प्रकृति के विरुद्ध या उससे अलग, अस्वाभाविक (अन्नैचुरल); जो कुदरती या स्वाभाविक न हो, बनावटी, प्रयत्नजन्य।

अनोखा *वि.* {सं. अ + ईक्ष्} {*स्त्री.* अनोखी} जो सहसा देखने में न आता हो, अनूठा, निराला, विलक्षण, विचित्र; नया; सुंदर।

अनोखापन पुं. {हिं. अनोखा + पन (प्रत्य.)} अनूठापन, निरालापन, विलक्षणता विचित्रता; नयापन; सुंदरता, खूबसूरती; गैरमामूली होना।

अनौचित्य पुं. {सं.} अनुचित होने का भाव, नामुनासिब होना।

अनौपचारिक *वि.* {सं.} जो औपचारिक न हो (इनफार्मल); स्वाभाविक बिना ऊपरी दिखावे के।

अनौपचारिकता *स्त्री.* {सं.} बिना किसी उपचार; दिखावा या फॉर्मालिटी के बातचीत या कार्य करना।

अन्न पुं. {सं.} पौधों से उत्पन्न होनेवाले दाने (गेहूँ, चावल, दाल आदि) जो खाने के काम में आते हैं, अनाज, धान्य, गल्ला; इन दानों को पीस या उबालकर बनाया हुआ भोजन।

अन्नकाल पुं. {सं.} अन्न लेने का समय; अन्न का काल (अकाल) दुर्भिक्ष, विभिन्न प्रकार के खाद्यों का ढेर।

अन्नकूट पुं. {सं.} कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को होनेवाला एक उत्सव जिसमें गोवर्धन देवता के सामने अनेक प्रकार के व्यंजनों की ढेरियाँ लगाते हैं।

अन्नकोश पुं. {सं.} अन्न पर आश्रित स्थूल शरीर।

अन्नकोष्ठ-कोष्ठक पुं. {सं.} अन्न के कोठे, भंडार।

अन्नचोर पुं. {हिं.} अन्न चुरानेवाला, महँगा बेचने के लिए अन्न छुपानेवाला व्यापारी।

अन्नछेत्र पुं. निर्धनों को अन्न बाँटने का स्थान।

अन्नजल पुं. {सं.} खाने-पीने की सामग्री; किसी की दृष्टि से उसके स्थान की खाने-पीने की स्थिति, जैसे अब यहाँ से हमारा अन्नजल उठ गया।

अन्नपूर्णा *स्त्री.* {सं.} देवी का एक रूप; वह गृहिणी जो सुप्रबंध से घर में अन्न की कमी नहीं आने देती।

अन्नप्राशन पुं. {सं.} बच्चे को सर्वप्रथम अन्न चटाने का संस्कार।

अन्नसत्र पुं. {सं.} अन्नक्षेत्र।

अन्य *वि.* {सं.} कोई दूसरा, और, भिन्न (अदर)।

अन्यतम *वि.* {सं.} सबसे बढ़कर, सर्वश्रेष्ठ और सबमें से एक, बहुतों में एक।

अन्यत्र *क्रि. वि.* {सं.} किसी और स्थान पर, किसी दूसरी जगह।

अन्यथा *यो.* {सं.} नहीं तो, दूसरी अवस्था में (अदरवाइज); *वि.* विपरीत, उलटा; सत्य या वास्तविक से विपरीत, मिथ्या, झूठा।

मुहा. अन्यथा करना = पहले की आज्ञा या निश्चय रद्द करना या उलटना (सेट एसाइड)।

अन्यथासिद्ध *वि.* वह जिसके बिना भी काम सिद्ध हो जाय जैसे कुम्हार का गधा।

अन्यदा *क्रि. वि.* कभी फिर, किसी और दिन, बाद में।

अन्यपुरुष पुं. {सं.} संस्कृत व्याकरण के अनुसार प्रथम पुरुष, श्रोता से तीसरा व्यक्ति।

अन्यापदेश पुं. {सं.} अन्योक्ति अलंकार।

अन्यमनस्क *वि.* {सं.} {*भाव.* अन्यमनस्कता} जिसका जी या ध्यान किसी और तरफ हो, अनमना; खिन्न, उदास।

अन्याय पुं. {सं.} {कर्ता अन्यायी} न्याय का न होना या उलटा होना; न्याय के विरुद्ध व्यवहार या आचरण, अनीति, अंधेर; अत्याचार।

अन्यायी(यिन्) *वि.* {सं.} अन्याय करनेवाला।

अन्याश्रित *वि.* {सं.} अन्य के सहारे रहनेवाला।

अन्योक्ति *स्त्री.* {सं.} कोई बात कहने का वह ढंग जिसमें कुछ कहा तो किसी एक के संबंध में जाता है, पर वह बात घटती या ठीक बैठती किसी और पर है; अन्यापदेश।

अन्योन्य पुं. {सं.} परस्पर; साहित्यशास्त्र का एक अलंकार जिसमें दो व्यक्ति परस्पर एक-दूसरे के उपकारक वर्णित हों।

अन्योन्य प्रजनन पुं. {सं.} दो जातियों के परस्पर संसर्ग से अन्य प्रजाति उत्पन्न करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्योन्याश्रय पुं. {सं.} दो वस्तुओं का एक दूसरी पर आश्रित होना; न्याय में एक वस्तु के ज्ञान से दूसरी वस्तु का ज्ञान, साक्षेप ज्ञान।

अन्योन्याश्रित *वि.* {सं.} अन्योन्याश्रय।

अन्वय पुं. {सं.} दो वस्तुओं का आपसी संबंध या उनमें होनेवाली अनुरूपता; पद्य या कविता की वाक्यरचना को गद्य की वाक्यरचना के अनुसार बैठाने या ठीक करने की क्रिया; किसी वाक्य की शब्दावली के अनुसार उसका ठीक और संगत अर्थ लगाना; कार्य और कारण का पारस्परिक संबंध; एवं बात सिद्ध करने के लिए दूसरी बात की सिद्धि या उससे संबंध स्थापित करना।

अन्ववाय पुं. {सं.} कुल, खानदान।

अन्वित *वि.* {सं.} जिसका अन्वय हुआ हो; मिला हुआ, युक्त; परस्पर संबंध से जुड़ा, दूसरे से संबद्ध।

अन्विति *स्त्री.* {सं.} अन्वित होने का भाव, अनुरूपता, एकता; संबद्ध होना, अन्वय होना।

अन्वितार्थ पुं. {सं.} अन्वय करने पर निकलनेवाला अर्थ; अंदर छिपा हुआ अर्थ, गूढ़ आशय; संबद्ध आशय।

अन्वीक्षण पुं. {सं.} {कर्ता अन्वीक्षक} भली-भाँति देखना या सोचना-समझना; ढूँढ, खोज, तलाश।

अन्वेषण पुं. {सं.} {कर्ता अन्वेषक, अन्वेषी} छान-बीन करके बीती हुई बात के तथ्य, इतिहास आदि का पता लगाना। (रिसर्च); अनुसंधान।

अन्वेषी *वि.* {सं. अन्वेषिन्} अन्वेषण करनेवाला; खोजी।

अपंक *वि.* {सं.} कीचड़ के बिना।

अपंग *वि.* अंगहीन, विकलांग।

अपंडित *वि.* {सं.} जो विद्वान न हो, अज्ञानी।

अप *उप.* {सं.} एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उनमें निषेध, अपकर्ष विकार या किसी बुरी विशेषता का भाव उत्पन्न करता है, जैसे मान और अपमान, व्यय और अपव्यय, मृत्यु और अपमृत्यु, हरण और अपहरण या ह्रास और अपहास; 'आप' का संक्षिप्त रूप जैसे-अपवश, अपने वश में होना।

अपकरण पुं. {सं.} हानि पहुँचाना, बुरा करना।

अपकर्ता पुं. {सं. अपकर्तृ} {*स्त्री.* अपकर्त्री} अपकार करने या हानि पहुँचानेवाला, अपकारक; अन्य को हानि पहुँचानेवाला।

अपकर्ष पुं. {सं.} पीछे या नीचे खींचना या गिराना; गुण, योग्यता आदि का घटना या कम होना, उतार, ह्रास; मान, महत्व आदि में होनेवाली कमी; अवनति।

अपकर्षक *वि.* {सं.} अपकर्ष करनेवाला; अवनति करनेवाला, हानि पहुँचानेवाला।

अपकर्षण पुं. {सं.} नीचे या उतार की ओर खींचना या जाना, अवनति की ओर जाना; पद, मर्यादा या मान-महत्व का घटना या कम होना (डेरोगेशन); मूल्य आदि का कम होना या उतरना, घटाव, उतार; किसी वस्तु में से उसका कुछ अंश निकल या कम हो जाना, घट जाना।

अपकल्मर्ष *वि.* {सं.} जिसका कलंक मिट गया हो; जिसके दोष दूर हो गये हों।

अपकर्ता *वि.* {सं.} अपकार करनेवाला।

अपकाजी *वि.* {हिं. आप + काज = कार्य} अपना काम निकालनेवाला, स्वार्थी, मतलबी; खुदगर्ज।

अपकार पुं. {सं.} {*भाव.* अपकारिता} 'उपकार' का विपरीत भाव, 'भलाई' का उलटा, हानि, अहित, नुकसान (राँग)।

अपकारक *वि.* {सं.} अपकर्ता।

अपकारिता *स्त्री.* {सं.} अपकार या खराबी करने की क्रिया, भाव या गुण; अपकारी होना, अपकारीपन।

अपकीरति *स्त्री.* अपकीर्ति।

अपकीर्ति *स्त्री.* {सं.} 'कीर्ति' का विपरीत भाव, अपयश, बदनामी।

अपकृत *वि.* {सं.} जिसका उपकार हुआ हो, 'उपकृत' का उलटा; अपकार का शिकार।

अपकृति *स्त्री.* {सं.} अपकार; बुरा काम।

अपकृत्य पुं. {सं.} अपकार; दुष्कर्म।

अपकृष्ट *वि.* {सं.} जिसका अपकर्ष हुआ हो या किया गया हो, जिसका महत्व, मूल्य, मान आदि कम हुआ हो या किया गया है। विशेष अपकर्ष।

अपकेन्द्र पुं. {सं.} केन्द्र से हटकर।

अपक्रमण पुं. {सं.} किसी स्थान से रुष्ट या असंतुष्ट होकर उठ जाना। (वॉक आउट); बाहर निकलना हट जाना, भागना अविकसित।

अपक्रमी *वि.* अपक्रमण करनेवाला।

अपक्व *वि.* {सं.} {*भाव.* अपक्वता} जो अभी पका न हो, कच्चा; जिसके पूरे, पके या ठीक होने में अभी कुछ कसर हो (इम्मैच्योर); अविकसित।

अपक्षय पुं. {सं.} घटना, छीजना, क्षीण होते जाना।

अपगत *वि.* {सं.} {*भाव.* अपगति} भागा या हटा हुआ; मृत, मरा हुआ; नष्ट; दूर हो गया।

अपगति *स्त्री.* {सं.} बुरी गति; अनुचित मार्ग पर जाना; भागना या हटना; नाश।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपघर्षण पुं. {सं.} {*वि.* अपघर्षित} (पत्थर, चट्टान आदि का) हवा, पानी आदि की रगड़ से घिसना। (ब्रेजन)

अपघात पुं. {सं.} {कर्ता. अपघातक, अपघाती} किसी को मार डालना, हत्या, वध, हिंसा; आत्मघात; अनुचित ढंग से मारना।

अपच पुं. {सं.} भोजन आदि न पचने की क्रिया या भाव; भोजन न पचने का रोग, अजीर्ण (इंडाइजेशन); न पचना, हाजमा खराब होना।

अपचय पुं. {सं.} कम या थोड़ा होना, कमी, घटाव या ह्रास (एबेटमेंट); नाश; विफलता।

अपचरण पुं. {सं.} अपने अधिकार-क्षेत्र या सीमा से निकलकर दूसरे के अधिकार-क्षेत्र या सीमा में जाना, जो अनुचित और आपत्तिजनक माना जाता है (ट्रेसपासिंग); चोरी आदि के लिए दूसरे के मकान में घुसना।

अपचरित पुं. {सं.} दुश्चरित्र, दुष्कर्म, *वि.* बुरा काम जो किया हो।

अपचार पुं. {सं.} अनुचित कार्य; निंदा, बुराई; ऐसा काम जिससे अपना स्वास्थ्य नष्ट हो; अपने क्षेत्र या सीमा का उल्लंघन, अपचरण।

अपचारक पुं. {सं.} वह जो बुरा या अनुचित काम करे; वह जो ऐसे स्थान या क्षेत्र में जा पहुँचे, जहाँ जाना अनुचित या अधिकार-विरुद्ध हो (ट्रेसपासर); अपचार करनेवाला; जिसकी आदत अपचार की हो।

अपचाल *स्त्री.* {हिं. अप + चाल} बुरी चाल या व्यवहार; बुरा चलन, खोटे काम।

अपची *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार की गंडमाला (रोग); गले की बीमारी, इसमें गाँठें उत्पन्न होती हैं।

अपचेता(तस्) *वि.* {सं.} किसी का बुरा सोचनेवाला; बुरे मन वाला, बुरे विचार रखनेवाला।

अपछरा *स्त्री.* = अप्सरा।

अपजस पुं. = अपयश।

अपटी *स्त्री.* {सं.} नाटक का पर्दा, कनात।

अपटु *वि.* {सं.} अनाड़ी; जो पढ़ने में न आया हो, (पत्र आदि)।

अपठित *वि.* {सं.} न पढ़ा हुआ।

अपडर पुं. {*क्रि.* अपडरना} 'डर'; भय।

अपड़ाना *अ.* {सं. अपर} {*भाव.* अपड़ाव} खींचातानी या लड़ाई-झगड़ा करना; परायापन दिखाना।

अपड़ाव पुं. {?} {*क्रि.* अपड़ाना} लड़ाई-झगड़ा; खींचातानी।

अपढ़ *वि.* {सं. अपठ} जो कुछ पढ़ा-लिखा न हो, अशिक्षित; न पढ़ा हुआ, कुपढ़।

अपत[1] *वि.* {हिं. अ + पत्ता} (वृक्ष) जिसमें पत्ते न हों, पत्रहीन; बिन पत्ता।

अपत[2] *वि.* {हिं. अ + पत} निर्लज्ज, बेहया; अधम, नीच; अयोग्य, अनर्ह; *स्त्री.* बेइज्जती।

अपतई *स्त्री.* {हिं. अपत} निर्लज्जता, बेहयाई; धृष्टता, ढिठाई; पाजीपन, नटखटी; बखेड़ा, झंझट; पत्रहीनता; बेशर्मी।

अपति *स्त्री.* बिना पति की, अपतिका–अपति।

अपत्य पुं. {सं.} संतान, औलाद।

अपत्र *वि.* {सं.} पत्तों से रहित।

अपत्रप *वि.* {सं.} निर्लज्ज।

अपथ पुं. {सं.} बुरा या खराब रास्ता, कुमार्ग; कठिन या विकट रास्ता; जहाँ मार्ग न बना हो।

अपथ्य *वि.* 'कुपथ्य'।

अपदस्थ *वि.* {सं.} पद से हटाया हुआ, पदच्युत।

अपदेखा *वि.* {हिं. आप + देखना} अभिमानी, घमंडी; स्वार्थी, मतलबी; केवल अपनी ओर देखनेवाला।

अपदेश पुं. {सं.} ब्याज, बहाना, मिस, बुरा स्थान।

अपद्रव्य पुं. {सं.} बुरी वस्तु या धन; निकम्मी या बुरी वस्तु।

अपद्वार पुं. {सं.} पक्षद्वार; बगल का द्वार।

अपधीवन पुं. {सं.} सचाई से दूर हटना।

अपध्वंस पुं. {सं.} विध्वंस, विनाश; विनाश; अपमान; पराजित करने की क्रिया या भाव; बरबादी, गिरावट।

अपध्वस्त *वि.* {सं.} गिरा हुआ, बरबाद, विनष्ट।

अपनपौ पुं. {हिं. अपना} आत्मीयता, आपसदारी, अपनायत; सुध, ज्ञान, होश; अभिमान, घमंड; प्रतिष्ठा, इज्जत।

अपनयन पुं. {सं.} {*वि.* अपनीत} दूर या अलग करना, हटाना; एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना या पहुँचना; स्त्री, बालक आदि को उसके पति या माता-पिता के पास से हटाकर दुष्ट उद्देश्य से किसी दूसरी जगह से जाना, भगा ले जाना (एब्डक्शन)।

अपना *सर्व.* {सं. आत्मनः} {*क्रि.* अपनाना} हर एक ही दृष्टि से उसका निज का, दूसरे का नहीं (तीनों पुरुषों में); जो केवल उद्दिष्ट व्यक्ति से संबंध रखता हो, अभिप्रेत या संबद्ध का, व्यक्तिगत (पर्सनल)।

मुहा. अपना बनाना = आत्मीय बना लेना। *अपना ही सोचना* = केवल अपने हित की बात करना तथा अपनी चिंता करना।

अपनाना *स.* {हिं. अपना} अपना बनाना, अपना कर लेना; अपने अधिकार, शरण, रक्षा आदि में लेना; असहाय को सहारा देना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अपनाम *पुं.* {सं.} बदनामी।
अपनायत *स्त्री.* {हिं. अपना} अपनापन, आत्मीयता, आपसदारी।
अपनास *पुं.* {हिं. आप + नाश} स्वयं किया हुआ अपना नाश।
अपनीत *वि.* {सं.} दूर किया या हटाया हुआ; एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया हुआ; जिसे कोई भगा ले गया हो (एब्डक्टेड)।
अपपाठ *पुं.* {सं.} गलत पढ़ना।
अपबस *वि.* {हिं. आप + बस} जो अपने वश में हो, स्वतंत्र, 'परबस' का उलटा; अपने ऊपर नियंत्रण रखनेवाला, स्वाधीन।
अपबाहुक *पुं.* {सं.} बाँह का एक रोग।
अपभाषण *पुं* {सं.} गंदी बातों का कथन, अश्लील बातें कहना; अशुद्ध या अनुचित बात बोलना।
अपभ्रंश *पुं.* {सं.} {*वि.* अपभ्रष्ट} पतन, गिरना; बिगाड़, विकृति; मूल शब्द से बिगड़कर उसका नया बना हुआ रूप; गिरावट, एक भाषा जो आधुनिक भारतीय भाषाओं का पूर्वरूप थी; *स्त्री.* प्राचीनकाल की वह भाषा जो पुरानी हिंदी से पहले और प्राकृत भाषाओं के बाद इस देश में प्रचलित थी।
अपभ्रष्ट *वि.* {सं.} गिरा हुआ, पतित; बिगड़ा हुआ, विकृत; (शब्द) जो किसी तत्सम शब्द से निकलकर कुछ बिगड़े हुए रूप में प्रचलित हुआ हो; अपभ्रंश के रूप में आया शब्द।
अपमान *पुं.* {सं.} {*वि.* अपमानित} वह काम या बात जिससे किसी का मान या प्रतिष्ठा कम हो, अनादर, बेइज्जती (इनसल्ट); 'अवमान'; ऐसा कार्य जो अपमान का कारण बने; अपमान करनेवाला।
अपमानित *वि.* {सं.} जिसका अपमान हुआ हो; तिरस्कृत।
अपमार्ग *पुं.* {सं.} बुरा मार्ग; बुरा चलन।
अपमार्जन *पुं.* {सं.} संशोधन, सफाई, दोष निवारण।
अपमिश्रण *पुं.* {सं.} किसी अच्छी या बढ़िया चीज में बुरी या घटिया चीज मिलाना (एडल्टरेशन); बुरी वस्तु की; मिलावट करना।
अपमृत्यु *स्त्री.* {सं.} वह मृत्यु जो किसी दुर्घटना के कारण और आकस्मिक हो, जैसे छत से गिरकर या लाठी की चोट से मरना; दुर्घटना या बुरी बीमारी से तड़प-तड़प कर हुई मौत।
अपयश *पुं.* {सं.} बुरा यश, अपकीर्ति, बदनामी; यश का विपरीत।
अपयान *पुं.* {सं.} भाग जाना, पलायन।
अपयोग *पुं.* {सं.} बुरा योग; बुरा समय; 'अपयोजन'।
अपयोजन *पुं.* {सं.} {*वि.* अपयोजित} किसी का धन या संपत्ति अनुचित रूप से अपने काम में लाना (मिस्-एप्रोप्रिएशन)।
अपरंपार *वि.* {हिं. अपार + पार} जिसका पारावार या कूल-किनारा न हो, असीम; बहुत अधिक, बेहद; जिसका ठीक पता न लग सके।
अपर *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अपरा, *भाव.* अपरत्व} पहले का, पूर्व का; पिछला; अन्य, दूसरा; जितना हो या हुआ हो, उससे और आगे या अधिक, अतिरिक्त रूप में होनेवाला।
अपरता *स्त्री.* {सं.} परायापन, दूरी।
अपरती *स्त्री.* {हिं. अप + सं. रति} स्वार्थ; बेईमानी; केवल अपने आप से प्रेम करना।
अपरना *स्त्री.* अपर्णा; तद्भव रूप।
अपरबल *वि.* 'प्रबल'; दूसरे की या शत्रु पक्ष की सेना।
अपरा *स्त्री.* {सं.} अध्यात्म या ब्रह्मविद्या के अतिरिक्त अन्य विद्या, लौकिक विद्या, पदार्थ विद्या; पश्चिम दिशा; लौकिक ज्ञान, अन्य; *वि. स्त्री.* सं. 'अपर' का *स्त्री.*।
अपराजिता *स्त्री.* {सं.} विष्णुक्रांता लता, कौआ-ठोठी; कोयल; दुर्गा; जो परास्त न हुई हो; हरसिंगार; एक वर्णिक छंद।
अपराजेय *वि.* {सं.} जो पराजित न किया जा सके; जिसे कोई हरा न सके।
अपराध *पुं.* {सं.} कोई ऐसा अनुचित कार्य जिससे किसी को हानि पहुँचे; कोई ऐसा काम जो किसी विधि या विधान के विरुद्ध हो और जिसके लिए कर्त्ता को दंड मिल सकता हो; कोई अनुचित या बुरा काम, दोष, पाप; भूल-चूक।
अपराध-निरोध *पुं.* {सं.} अपराधों को होने से रोकने के लिए कार्रवाई।
अपराध विज्ञान *पुं.* {सं.} वह विज्ञान जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि लोग अपराध क्यों करते हैं और उनकी आपराधिक प्रवृत्ति का किन उपायों से अंत किया जा सकता है (क्रिमिनॉलोजी); अपराध करानेवाली प्रवृत्ति का विश्लेषण करनेवाली विद्या।
अपराधशील *वि.* {सं.} जो स्वभावतः अपराध करता या जिसे अपराध करने की आदत ही हो; जैसे अपराधशील जातियाँ (क्रिमिनल)।
अपराधी (धिन्) *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* अपराधिनी} वह जिसने कोई अपराध किया हो, अपराध करनेवाला, मुलजिम।
अपर्राह्न *पुं.* {सं.} दिन का अगला आधा भाग, अपराह्न।
अपराह्न *पुं.* {सं.} दिन का तीसरा पहर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपरिग्रह पुं. {सं.} दान न लेना; आवश्यक धन से अधिक का त्याग।
अपरिग्रही *वि.* {सं.} अविवाहित; दान न लेनेवाला।
अपरिचित *वि.* {सं.} जिससे परिचय या जान-पहचान न हो, बिना जाना हुआ, 'परिचित' का उलटा।
अपरिच्छद *वि.* {सं.} वस्त्ररहित, बना नौकर चाकर, अनाथ; अकेला; छूटा हुआ।
अपरिच्छिन्न *वि.* {सं.} जिसका विभाग न हो सके, अभेद्य; मिला हुआ; असीम।
अपरिणामी *वि.* {सं. अपरिणामिन्} {*स्त्री.* अपरिणामिनी} परिणामरहित; जो बदले नहीं, सदा एक-सा रहे।
अपरिणीत *वि.* {सं.} अविवाहित, *स्त्री.* अपरिणीता।
अपरिमित *वि.* {सं.} जिसकी कोई सीमा न हो, असीम, बेहद (अनलिमिटेड); असंख्य, अगणित।
अपरिवर्तनीय *वि.* {सं.} जिसमें परिवर्तन या फेर-बदल न हो सके।
अपरिष्कृत *वि.* {सं.} जो परिष्कृत न हो; सादा, अशुद्ध, मँजा हुआ नहीं।
अपरिहार्य *वि.* {सं.} जिसके बिना काम न चले, अनिवार्य; न छोड़ने योग्य, अत्याज्य; न छीनने योग्य; जिसे टाला न जा सके, अत्यावश्यक।
अपरीक्षित *वि.* {सं.} जिसकी परीक्षा या परीक्षण न हुआ हो।
अपर्णा *स्त्री.* {सं.} पार्वती; दुर्गा; देवी का एक नाम।
अपलक *वि.* {हिं. अ + पलक} जिसकी पलकें न गिरें; *क्रि. वि.* बिना पलक गिराए या झपकाए, एकटक।
अपलाप पुं. {सं.} व्यर्थ की बकबक; टालना, अनदेखी करना।
अपवर्ग पुं. {सं.} मोक्ष, निर्वाण, मुक्ति; त्याग।
अपवर्तन पुं. {सं.} {*वि.* अपवर्त्य, अपवर्तित} पीछे की ओर अथवा अपने मूल स्थान की ओर लौटना; राज्य द्वारा किसी की धन-संपत्ति पर इस प्रकार अधिकार किया जाना कि उसके स्वामी का उस पर कोई कोई अधिकार न रह जाए, जब्त होना, जब्ती (फोरफीचर); बलात् छीनना, एक ओर घूमना।
अपवर्तित *वि.* {सं.} पीछे लौटा हुआ; जिस पर राज्य ने अपना अधिकार कर लिया हो, जिसका अपवर्तन हुआ हो, जब्त किया हुआ (फोरफीटेड); छिना हुआ; हृताधिकार।
अपवर्त्य *वि.* {सं.} (वह संख्या) जो दी हुई संख्या से विभाजित हो जाए (मलटिपल); पूर्ण रूप से विभाजन के योग्य।
अपवाद पुं. {सं.} विरोध या खंडन; ऐसी निंदा जिससे किसी के सम्मान को आघात पहुँचे, बदनामी; दोष, पाप; वह बात जो किसी व्यापक या सामान्य नियम के विरुद्ध हो; बदनामी; जहाँ नियम लागू न हो, उत्सर्ग का विपरीत।
अपवादिक *वि.* {सं.} अपवाद-संबंधी; सामान्य नियम के विरुद्ध पड़नेवाला; जिसके कारण या द्वारा किसी का अपमान हो (स्लैंडरस)।
अपवादी पुं. = अपवादक; अपवाद फैलानेवाला।
अपवारण पुं. {सं.} ढकना, छिपाना, रोकना।
अपवित्र *वि.* {सं.} {*भाव.* अपवित्रता} जो पवित्र या शुद्ध न हो, मलिन, गंदा।
अपवित्रता *स्त्री.* {सं.} 'अपवित्र' होने की अवस्था या भाव, पवित्र या शुद्ध न होना।
अपव्यय पुं. {सं.} व्यर्थ किया जानेवाला व्यय, फजूलखर्ची; बुरे कार्यों में होनेवाला व्यय; गलत ढंग से पैसा लगाना।
अपव्ययी *वि.* {सं. अपव्ययिन्} व्यर्थ और अधिक खर्च करनेवाला, फजूलखर्च।
अपशकुन पुं. {सं.} बुरा शकुन, असगुन।
अपशब्द पुं. {सं.} अशुद्ध शब्द; गाली, कुवाच्च।
अपसंचय पुं. {सं.} वस्तुओं का अनियमित या अनुचित संचय।
अपसंचयी *वि.* {सं. अपसंचयिन्} गलत ढंग से जमा करना; गलत संचय करनेवाला जो गलत ढंग से जोड़ता हो।
अपसरक पुं. {सं.} वह जो सेवा विशेषतः सैनिक सेवा से अथवा अपना कोई कर्तव्य या उत्तरदायित्व (पत्नी या संतान का भरण-भोषण आदि) छोड़कर भाग गया हो (डिज़र्टर); एक ओर हटनेवाला; भाग जानेवाला।
अपसरण पुं. {सं.} कार्य या उत्तरदायित्व छोड़कर भाग जाना, जैसे सैनिक सेवा से अथवा विवाहिता स्त्री को अथवा अपने बच्चे को छोड़कर चल देना (डिज़र्शन); अलग हटना, परे होना।
अपसर्जन पुं. {सं.} {कर्ता. अपसर्जक, *वि.* अपसर्जित} छोड़ना, त्यागना; अपने उत्तरदायित्व से बचने के लिए किसी को असहाय अवस्था में छोड़कर हट जाना, जैसे माता द्वारा शिशु का अपसर्जन।
अपसव्य *वि.* {सं.} 'सव्य' का उलटा, दाहिना, दायाँ, दक्षिण; उलटा; जनेऊ अंगोछे को बायें कंधे के बजाय दायें कंधे पर करना।
अपसारण पुं. {सं.} {*वि.* अपसारित} किसी व्यक्ति या वाक्य को कहीं से हटा या निकाल देना, दूर करना (एक्सपल्शन)।
अपसारक पुं. {सं.} परे हटानेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपसारी (रिन्) *वि.* {सं.} एक-दूसरे से भिन्न या विरुद्ध दिशा में जाने, चलने या रहनेवाले (डाइवर्जेंट); अपसारण करनेवाला।

अपसृत *वि.* {सं.} जो कहीं से निकलकर हट गया हो या निकालकर हटा दिया गया हो, दूर हटा या हटाया हुआ; जिसे उसके पति या पत्नी ने परित्यक्त कर दिया हो और जिसकी देख-रेख करनेवाला कोई न रह गया हो (डिज़र्टेड)।

अपसर्प *पुं.* {सं.} गुप्तचर भेद लेनेवाला, चोर।

अपसर्पण *पुं.* {सं.} जासूसी करना, भागना, एक ओर चला जाना, लौटना।

अपस्तुति *स्त्री.* {सं.} ऐसी प्रशंसा जिससे निंदा का भाव निकले।

अपस्फीति *स्त्री.* {सं.} मुद्रा के परिमाण में कमी जिससे चीजों के दाम घटने लगते हैं (डिफ्लेशन); गलत ढंग से वृद्धि, वृद्धि का अभाव।

अपस्मार *पुं.* {सं.} एक रोग जिसमें रोगी काँपता हुआ मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ता है, मिर्गी (एपॉप्लेक्सी)।

अपस्वर *पुं.* {सं.} बुरा, बेसुरा या कर्कश स्वर; उचित स्वर के विपरीत।

अपसोस *पुं.* {*क्रि.* अपसोसना} अफसोस।

अपसौन *पुं.* अपशकुन।

अपहत *वि.* {सं.} नष्ट किया हुआ, मारा हुआ; दूर किया हुआ; लुप्त, मिटा दिया गया।

अपहरण *पुं.* {सं.} छीनकर या बलपूर्वक ले लेना; किसी व्यक्ति को कहीं से बलपूर्वक उठा ले जाना (किडनैपिंग); छिपाव, संगोपन।

अपहरणीय *वि.* अपहरण करने योग्य।

अपहर्ता *पुं.* {सं. अपहर्तृ} छीननेवाला, हर लेनेवाला, ले लेनेवाला; चोर, लुटेरा; छिपानेवाला।

अपहार *पुं.* 'अपहरण'; अपहरण करनेवाला।

अपहारक, अपहारी *पुं.* = अपहर्ता।

अपहार्य *वि.* अपहरणीय।

अपहास *पुं.* {सं.} उपहास; अकारण हँसी; भद्दे ढंग से हँसना।

अपहृत *वि.* {सं.} जिसका अपहरण किया गया हो; चुराया हुआ, लूटा हुआ।

अपह्नुति *स्त्री.* **{सं.} दुराव, छिपाव; बहाना, टालमटोल; साहित्य में एक अलंकार जिसमें उपमेय का निषेध करके उपमान का स्थापन किया जाता है।**

अपांग *वि.* {सं.} जिसका कोई अंग टूटा हो या न हो; अंगहीन, विकलांग; कटाक्ष।

अपा *पुं.* {हिं. आपा} अभिमान; आत्माभिमान।

अपाकर्म *पुं.* {सं.} वह कार्य जिसमें किसी मंडली या समवाय का देना-पावना चुकाकर उसका सारा व्यापार समेटा या बंद किया जाता है (लिक्विडेशन ऑफ कंपनी)।

अपाक्ष *वि.* {सं.} अपने अक्ष से हटा हुआ; अप + आक्षि, फूटी आँखवाला।

अपाठ्य *वि.* {सं.} जिसे ठीक-ठीक पढ़ा न जा सके; जिसे पढ़ना कठिन हो; न पढ़ाने या पढ़ने योग्य पढ़ने में न आये।

अपात्र *वि.* {सं.} {*भाव.* अपात्रता} जो पात्र होने के योग्य न हो; बुरा पात्र, कुपात्र; मूर्ख; अनर्ह, किसी पद के योग्य न हो, बिन बर्तन, छीन लेना लौटा लेना।

अपादान *पुं.* {सं.} हटाना, अलग करना; व्याकरण में पाँचवाँ कारक जिससे एक वस्तु से दूसरी वस्तु की क्रिया का प्रारंभ सूचित होता है, इसका चिह्न 'से' है, जैसे घर से चलना; जिससे अलग हो, वह अपादान कारक होता है।

अपान *पुं.* {सं.} अप + अन हवा को निकालना; शरीर की एक वायु जो नीचे से निकलती है; पाद; गुदा।

अपानवायु *स्त्री.* {सं.} गुदा से निकलनेवाली वायु, पाद।

अपामार्ग *पुं.* {सं.} चिचड़ा (क्षुप); एक पौधा जिसकी गोल पत्ती और उलटे काँटे होते हैं, दवा के काम आता है।

अपामार्जन *पुं.* {सं.} अपमार्जन, दोष की सफाई करना, अभियोग का निराकरण।

अपाय *पुं.* {सं.} अलगाव; नाश; अनरीति; बिन तट का, जिसका पार-दूसरा किनारा न मिले; न तरा जा सकनेवाला। सीमा रहित।

अपार *वि.* {सं.} सीमारहित, अनंत, असमीप; असंख्य, अतिशय।

अपारदर्शी(र्शिन्) *वि.* {सं.} जो पारदर्शी न हो; स्वच्छ न होना; धाँधलियों से भरा।

अपारिभाषिक *वि.* {सं.} जो पारिभाषिक न हो; किसी परिभाषा से संबंध न रखनेवाला।

अपार्थ *वि.* {सं.} दूषित अर्थवाला; बिना अर्थ का।

अपावन *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अपावनी} अपवित्र।

अपासन *पुं.* {सं.} {*वि.* अपासित} अपने सामने आई हुई प्रार्थना, कथन आदि की अस्वीकृति, नामंजूरी (रिजेक्शन); निरस्त करना, हटाना; जिसकी कुर्सी छिन गई हो।

अपासित *वि.* {सं.} जो माना न गया हो, अस्वीकृत; निरस्त, हटाया गया (रिजेक्टेड)।

अपाहज *वि.* {सं. अपथेय = जो चल न सके, प्रा. अपाहेज्ज} अंगहीन, खंज, लूला-लँगड़ा; काम करने के अयोग्य; आलसी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपाहिज *वि.* = अपाहज।

अपीच *वि.* {सं. अ + पीच्य} सुंदर, मनोहर; दर्शनीय, सलोना।

अपीच्य *वि.* अपीच।

अपील *स्त्री.* {सं.} निवेदन, विचारार्थ प्रार्थना; नीचे की या छोटी अदालत के फैसले के विरुद्ध ऊँची और बड़ी अदालत में फिर से विचार के लिए अभियोग रखना।

अपीलकर्ता *पुं.* {अं. + सं.} अपील करनेवाला व्यक्ति।

अपुच्छ *वि.* {सं.} बिना पूँछ का।

अपुण्य *पुं.* {सं.} पुण्य का अभाव, पाप, बुरा कर्म।

अपुत्र *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अपुत्री} जिसे पुत्र न हो।

अपुत्रिक *वि.* {सं.} उत्तराधिकारिणी न हो सकनेवाली पुत्री का पिता।

अपुनरावृत्ति *स्त्री.* दुबारा न लौटना।

अपूठना *स.* {सं. आपोथन} विध्वंस या नाश करना; उलटना।

अपूठा *वि.* {सं. अपुष्ट} अपरिपक्व; अनजान, अनभिज्ञ; बिन खिला (अस्फुट)।

अपूत[1] *वि.* {सं.} अपवित्र, अशुद्ध; न पूत-पवित्र नहीं, गंदा।

अपूत[2] *वि.* {हिं. अ + पूत} पुत्रहीन, निपूता; बिना पुत्र का; *पुं.* कुपूत, बुरा लड़का।

अपूतित *वि.* {सं.} राग तथा दुर्गंध फैलाने वाले कीटाणुओं से रहित (एसेप्टिक)।

अपूर *वि.* {सं. पूर्ण} पूरा या भरा हुआ; बहुत अधिक; पूरी तरह न भरा हुआ (अपूर्ण)।

अपूरब *वि.* = अपूर्व; जो पहले न हुआ हो, जो पहले न देखा-सुना हो।

अपूरित *वि.* {सं.} जो भरा न हो।

अपूर्ण *वि.* {सं.} {*भाव.* अपूर्णता} जो पूर्ण या भरा न हो; अधूरा, असमाप्त; कम।

अपूर्णता *स्त्री.* {सं.} अपूर्ण होने की अवस्था या भाव; कमी।

अपूर्णभूत *पुं.* भूतकाल का भेद जिसमें क्रिया पूरी न हुई हो।

अपूर्व *वि.* {सं.} {*भाव.* अपूर्वता} जो पहले न रहा हो; अद्‌भुत, अनोखा, विचित्र; उत्तम, श्रेष्ठ।

अपूर्वपति-अपूर्वपतिका *स्त्री.* जिसका पहले से पति न हो कुमारी, कन्या, जिसका पहला विवाह न हुआ हो।

अपूर्वविधि *स्त्री.* मीमांसा शास्त्र के अनुसार वह आदेश जिसका पहले पालन न हुआ हो।

अपेक्षा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* अपेक्षित} आकांक्षा, इच्छा, अभिलाषा, चाह; आवश्यकता, जरूरत (रिक्वायरमेन्ट); भरोसा, आशा; कार्य और कारण का अन्योन्य संबंध; तुलना; बनिस्बत।

अपेक्षाकृत *क्रि. वि.* {सं.} तुलना या मुकाबले में।

अपेक्षित *वि.* {सं.} जिसकी अपेक्षा या आवश्यकता हो, आवश्यक, जरूरी; चाहा हुआ, इच्छित, वांछित (रिक्वायर्ड)।

अपेत *वि.* चला गया, पृथक् हुआ, रहित।

अपेय *वि.* {सं.} जिसे पीना ठीक न हो, न पीने योग्य जो पीने लायक न हो, गंदला, खारा।

अपौरुषेय *वि.* {सं.} जो मनुष्य द्वारा निर्मित न हो अर्थात् ईश्वरकृत; पुरुष संबंधी न होना।

अप्रकट *वि.* {सं.} जो प्रकट न हो, छिपा हुआ, गुप्त।

अप्रकाशित *वि.* {सं.} जिसमें उजाला न हो, अँधेरा; जो प्रकट न हो, छिपा हुआ, गुप्त; जो सर्व-साधारण के सामने न रखा गया हो; जो छापकर प्रचलित या प्रकाशित न किया गया हो।

अप्रकृत *वि.* {सं.} जो प्रकृत या स्वाभाविक न हो; जो अपने उचित मान से घटा या बढ़ा हुआ हो, जो अपने ठीक ठिकाने पर न हो (एब्नॉर्मल)।

अप्रचलित *वि.* {सं.} जो प्रचलित न हो, अव्यवहृत, अप्रयुक्त, अच्छा होने पर भी जिसका समाज में प्रचार न हो।

अप्रतिबंध *वि.* {सं.} जिस पर या जिसके लिए कोई प्रतिबंध न हो (अनकंडीशनल); पूर्ण, परम; बिना रोकथाक के बेरोक-टोक (एबसोल्यूट)।

अप्रतिबद्ध *वि.* {सं.} जो प्रतिबद्ध न हो।

अप्रतिभ *वि.* {सं.} प्रतिभाशून्य; चेष्टाहीन, उदास; स्फूर्तिरहित, सुस्त, मन्द; मतिहीन, निर्बुद्धि, हक्का-बक्का।

अप्रतिम *वि.* {सं.} अद्वितीय, अनुपम, जिसकी मूर्ति न हो, जिसके तुल्य न हो।

अप्रतिष्ठा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* अप्रतिष्ठित} अनादर, अपमान; अपयश, अपकीर्ति।

अप्रतिष्ठित *वि.* {सं.} जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो; जिसकी अप्रतिष्ठा या अपमान किया गया हो।

अप्रत्यक्ष *वि.* {सं.} जो प्रत्यक्ष या सामने न हो; जो प्रत्यक्ष रूप से या सीधे मार्ग से न होकर किसी दूसरे मार्ग या हेर-फेर से हो, परोक्ष रूप से, लुके-छुपे, घुमा-फिरा कर किया गया (इन्-डाइरेक्ट)।

अप्रतिहत *वि.* {सं.} बिना रुकावट, निर्विघ्न।

अप्रतीकार *वि.* {सं.} जिसे रोकने का उपायन हो *पुं.* {सं.} प्रतिकार न करना जिसकी कोई उम्मेद की हो; जिसका क्रोध असर न पड़े।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रत्याशित *वि.* {सं.} जिसकी आशा न की गई हो, अचानक या अकस्मात् होनेवाला।
अप्रभावी *वि.* {सं.} प्रभावशून्य।
अप्रमेय *वि.* {सं.} जो नापा न जा सके, अपरिमित, अपार, अनंत; जो तर्क या प्रमाण से सिद्ध न हो; जिसका वास्तविक ज्ञान संभव न हो।
अप्रयुक्त *वि.* {सं.} जो काम में न लाया गया हो, व्यवहृत।
अप्रशस्त *वि.* {सं.} जो बढ़िया न हो; जिसकी प्रशंसा या तारीफ न हुई हो
अप्रशिक्षित *वि.* {सं.} जो प्रशिक्षित न हो, भली प्रकार ट्रेन्ड नहीं हुआ।
अप्रसन्नता *स्त्री.* {सं.} प्रसन्न न रहने की अवस्था या भाव, नाराजगी।
अप्रसिद्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* अप्रसिद्धि} जो प्रसिद्ध न हो, अविख्यात, जो मशहूर न हो; जो भली प्रकार कुशल न हो।
अप्रसूता *स्त्री.* जिसने बच्चा न जना हो; जो जच्चा न हो।
अप्रस्तुत *वि.* {सं.} जो प्रस्तुत या सामने न हो।
अप्रस्तुत प्रशंसा *स्त्री.* {सं.} एक अलंकार जिसमें अप्रस्तुत की चर्चा से प्रस्तुत का ज्ञान कराते हैं, अन्योक्ति अलंकार।
अप्राकृत *वि.* {सं.} जो प्राकृत न हो, अस्वाभाविक; असाधारण; जो गँवार न हो, शिष्ट, गैरमामूली।
अप्राकृतिक *वि.* {सं.} जो प्राकृतिक, नैसर्गिक या स्वाभाविक न हो, अनैसर्गिक (अन-नैचुरल)।
अप्राप्त *वि.* {सं.} {*भाव.* अप्राप्ति} जो प्राप्त न हो या न हुआ हो, दुर्लभ, अलभ्य; जिसे प्राप्त न हुआ हो; अप्रत्यक्ष, अप्रस्तुत।
अप्राप्तवय *वि.* {सं.} नाबालिग (माइनर)।
अप्राप्य *वि.* {सं.} {*भाव.* अप्राप्ति} जो प्राप्त न हो सके, अलभ्य।
अप्रामाणिक *वि.* {सं.} {*भाव.* अप्रामाणिकता} जो प्रमाण से सिद्ध न हो, ऊटपटाँग; जो मानने योग्य न हो, जो विश्वास करने योग्य न हो, जिसके पक्ष में कोई प्रमाण या सबूत न हो।
अप्रासंगिक *वि.* {सं.} प्रसंग के विरुद्ध, प्रस्तुत विषय से जिसका कोई संबंध न हो (इर्रेलेवेंट)।
अप्रिय *वि.* {सं.} जो न रुचे, अरुचिकर; जिसकी चाह न हो।
अप्रौढ़ *वि.* {सं.} जो प्रौढ़ न हो; प्रौढ़तारहित, जो अधेड़ न हो; अपरिपक्व, अनुभवी न हो।
अप्सरा *स्त्री.* {सं.} स्वर्ग की वेश्या; इन्द्र की सभा में नाचनेवाली देवांगना; परम रूपवती स्त्री, परी, हूर, देवांगना।
अफगान *पुं* {*अ.*} अफगानिस्तान देश का निवासी।
अफगानिस्तान *पुं.* {*अ.* + फा.} पाकिस्तान के पश्चिमी सीमाप्रान्त के उस पार का देश, प्राचीन कम्बोज देश, प्रधान रूप से पठानों का देश।
अफरन *स्त्री.* {हि. अफरना} पेट फूलने की क्रिया या भाव।
अफरना *अ.* {सं. स्फार} पेट भर खाना, भोजन से तृप्त होना; पेट का फूलना; और अधिक की इच्छा न रहना, ऊबना, अधिक धन के कारण इतराना।
अफरा-तफरी *स्त्री.* {फा.} घबराहट, दौड़-भाग।
अफराव *पुं.* {हिं. अफरना} अफरने या पेट फूलने की क्रिया, आध्मान जब साँस भी कठिनाई से आता है, भाव या अवस्था।
अफरीदी *पुं.* पाकिस्तान और अफगानिस्तान के मध्य भाग में रहने वाली एक कबायली जाति।
अफलातून *पुं.* {*अ.*} सुप्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक प्लेटो के नाम का अरबी रूप; वह जो अपने-आपको औरों से बहुत बड़ा समझता हो।
अफवाह *स्त्री.* {फा.} लोगों में फैली ऐसी बात जो मिथ्या हो अथवा जिसकी आधिकारिक पुष्टि न हुई हो, जनश्रुति, प्रवाद, किंवदंती।
अफसर *पुं.* {अं. ऑफिसर} {*भाव.* अफसरी} प्रधान, मुखिया; कर्मचारियों से काम लेनेवाले बड़े अधिकारी।
अफसोस *पुं.* {फा.} शोक, रंज, दुख; पश्चाताप, खेद, पछतावा।
अफीम *स्त्री.* {यू. ओपियन, *अ.* अफयून} पोस्त के डोडे का गोंद जो कड़वा, मादक और विषाक्त होता है।
अफीमची *पुं.* {हिं. अफीम + ची (प्रत्य.)} वह पुरुष जिसे अफीम खाने की लत हो।
अफुल्ल *वि.* {सं.} अनखिला, अविकसित।
अफेन *वि.* {सं.} बिना झाग का, जो झाग न रखता हो।
अफ्रेशिया *पुं.* अफ्रीका और एशिया इन दोनों महाद्वीपों का संयुक्त नाम (एफ्रो-एशिया)।
अब *क्रि. वि.* अधुना का समानार्थक, इस समय, इस क्षण, इस घड़ी।
मुहा. अब-तब लगना या होना = मरने का समय निकट पहुँचना; *अब तब करना* = टालमटोल करना।
अबंधु *वि.* {सं.} बिना भाई-बंद का, अकेला।
अबंध्य *वि.* {सं.} जो बंधन में न आ सके; अमोघ, अचूक।
अबटन *पुं.* उबटन।
अबध्य *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अबध्या, *भाव.* अबध्यता} जिसे मारना उचित न हो; जिसे शास्त्रानुसार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणदंड न दिया जा सके; जिसे कोई मार न सके।

अबर *वि.* {सं. अ + बल} दुर्बल, बलहीन।

अबरक पुं. {सं. अभ्रक} एक धातु जिसकी तहें काँच की तरह चमकीली होती हैं, लगती है जिससे आग न लगे भोडल, भोडर; एक प्रकार का पत्थर।

अबरन *वि.* {सं. अ + वर्ण} जिसमें कोई वर्ण या रंग न हो, वर्णरहित; जिसका रंग आसपास की चीजों से अलग प्रकार का हो, भिन्न या दूसरे रंग का।

अबरन *वि.* {सं. अ + वर्णन} जिसका वर्णन न हो सके, अवर्णनीय; जिसका वर्णन करने को शब्द न मिलें।

अबरस पुं. {फा.} घोड़े का एक रंग जो सब्जे के रंग से कुछ अधिक साफ या उजला होता है; इस रंग का घोड़ा।

अबरा पुं. {फा.} रजाई के ऊपर चढ़ाया जाने वाला खोल; रजाई के ऊपर का छपा कपड़ा।

अबरी *स्त्री.* {फा.} जिल्दबंदी में लगने वाला कागज; एक प्रकार का पीला पत्थर; लाख की एक प्रकार की रँगाई।

अबल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अबला} निर्बल, कमजोर।

अबलख *वि.* {सं. अवलक्ष} सफेद और काले या लाल रंगों से मिला-जुला, दो रंगों का, चितकबरा; जो सफेद न हो। रंग-बिरंगा; पुं उक्त प्रकार के रंग का घोड़ा, बैल या और कोई पशु।

अबला *स्त्री.* {सं.} स्त्री, औरत।

अबल्य *वि.* जो बलवर्धक न हो।

अबाँह *वि.* {हिं. अ + बाँह} जिसकी रक्षा करनेवाला कोई न हो, असहाय; बिना बाँह का।

अबाती *वि.* {हिं. अ + वात = वायु} जिसमें वायु न हो; जिसका वायु से कोई संपर्क न हो, वायुरहित; *वि.* {हिं. अ + बाती = बत्ती} (बिना बत्ती या अग्नि के) के आप-से-आप या अंदर ही अंदर जलनेवाला।

अबाद *वि.* निर्विवाद, जिसके बारे में कोई झगड़ा न हो, आबाद का तद्भव।

अबाध *वि.* {सं.} जिसके लिए कोई बाधा या रोक-टोक न हो, निर्विघ्न; बहुत अधिक, अपार; पूर्ण, परम (एब्सोल्यूट)।

अबाधा *स्त्री.* {सं.} रुकावट का अभाव।

अबाधित *वि.* {सं.} बाधारहित, बेरोक; स्वच्छन्द, स्वतन्त्र, न रोका गया।

अबाध्य *वि.* {सं.} {*भाव.* अबाध्यता} जो रोका न जा सके, बेरोक; अनिवार्य।

अबार *स्त्री.* {सं. अ + बेला} देर।

अबास पुं. जिसमें कोई गन्ध न हो; आवास निवास स्थान।

अबीर पुं. {*अ.*} {*वि.* अबीरी} रंगीन बुकनी या अबरक का चूरा जिसे लोग होली में इष्ट-मित्रों पर डालते हैं, गुलाल में मिलने वाला चूर्ण।

अबूझ *वि.* {हिं. अ + बूझना} जो बूझा, समझा या जाना न जा सके, अज्ञेय; अबोध।

अबूत *वि.* {हिं. अ + पूत} निःसन्तान, अपुत्र।

अबे *विस्मय.* {सं. अयि} अरे हे! (बहुत छोटे या हीन व्यक्ति के लिए सम्बोधन)।

मुहा. अबे-तबे करना = निरादरसूचक बातें कहना।

अबेर *स्त्री.* {सं. अवेला} विलम्ब।

मुहा. अबेर सबेर जाना = कभी-कभी जाना।

अबैन *वि.* {हिं. अ + बैन} मौन; अवचन, वचनरहित, जिसके वाणी न हो।

अबोध पुं. {सं.} अज्ञान, मूर्खता; *वि.* अनजान, नादान, मूर्ख।

अबोल *वि.* {हिं. अ + बोलना} मौन, अवाक्; जिसके विषय में कुछ बोल या कह न सकें, अनिर्वचनीय; पुं. कुबोल, बुरा बोल।

अब्ज पुं. {सं.} जल से उत्पन्न वस्तु; कमल; शंख; चन्द्रमा; सौ करोड़ की संख्या, अरब; धन्वन्तरि; बेंत का पेड़।

अब्द पुं. {सं.} वर्ष, साल; मेघ, बादल; आकाश; पानी देने वाला, एक पर्वत का नाम, मोथा (मुस्ता)।

अब्दकोश पुं. {सं.} प्रतिवर्ष प्रकाशित होनेवाला वह कोश जिसमें किसी देश, समाज या वर्ग आदि से संबंध रखनेवाली सभी जानने योग्य बातों का संग्रह हो (ईयर बुक)।

अब्दुर्ग पुं. {सं.} पानी का किला, पानी के मध्य का दुर्ग।

अब्धि पुं. {सं.} समुद्र, सागर; सरोवर, ताल; सात की संख्या, पानी का भंडार।

अब्धिजा *स्त्री.* {सं.} लक्ष्मी-ज-चंद्र।

अब्धिफेन पुं. {सं.} समुद्र का झाग।

अब्रह्मण्य पुं. {सं.} वह कर्म जो ब्राह्मणों के योग्य न हो; हिंसा आदि कर्म; वह जिसकी श्रद्धा ब्राह्मण में न हो, घोर अनर्थ।

अब्राह्मण पुं. नीच ब्राह्मण पतित ब्राह्मण; *वि.* ब्राह्मण से भिन्न।

अभंग *वि.* {सं.} अखंड, अटूट, पूर्ण; न मिटनेवाला, लगातार; समर्थ रामदास के पद।

अभंगपद पुं. {सं.} श्लेष अलंकार का वह भेद या प्रकार जिसमें उसके अक्षरों या पदों को इधर-उधर नहीं लगाना पड़ता, बल्कि ज्यों-का-त्यों रखकर अर्थ लगाया जाता है, अभंगश्लेष।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभंजनीय *वि.* {सं.} जो टूटे नहीं (अनब्रेकबल)।
अभक्ष्य *वि.* {सं.} अखाद्य, अभोज्य, जो खाने के योग्य न हो; जिसे खाने का धर्मशास्त्र में निषेध हो।
अभद्र *वि.* {सं.} {*भाव.* अभद्रता} अशिष्ट; अमांगलिक; जो भला न हो।
अभय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अभया} निर्भय, बेडर, बेखौफ।
अभयदान *पुं.* {सं.} भय से बचाने का वचन देना, शरण देना, रक्षा करना।
अभयपद *पुं.* {सं.} मुक्ति, मोक्ष।
अभयमुद्रा *पुं.* {सं.} शरीर की वह मुद्रा जो किसी को अभय या पूर्ण आश्वासन देने की सूचक होती है।
अभयवचन *पुं.* {सं.} भय से बचाने की प्रतिज्ञा, रक्षा का वचन, अभयदान का वचन।
अभरन *पुं.* आभरण; भरण-पोषण न करना।
अभव्य *वि.* मनहूस न होने योग्य, असुन्दर।
अभाऊ *पुं.* {सं. अ + भावुक} जो भावुक या रसिक न हो, शुष्कहृदय, अरसिक्त; अशिष्ट, उजड्ड।
अभागा *वि.* {सं. अभाग्य} {*स्त्री.* अभागिनी} भाग्यहीन, बदकिस्मत, दुर्भाग्यशील।
अभाग्य *पुं.* {सं.} प्रारब्धहीनता, बदकिस्मती।
अभाज्य *वि.* {सं.} (ऐसी संख्या) जिसके गुणनखंड न हों, जैसे 2, 3, 5, 7, 11 आदि।
अभाव *पुं.* {सं.} न होना, अविद्यमानता; त्रुटि, कमी; दुर्भाव।
अभावात्मक *वि.* {सं.} अभावसूचक, नकारात्मक, अभावरूप।
अभास *पुं.* आभास।
अभि *उप.* {सं.} एक उपसर्ग जो शब्दों में लगकर उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है—सामने, बराबर, अच्छी तरह, बुरा, अच्छा आदि।
अभिक *पुं.* {सं.} चाहनेवाला, जार, प्रेमी।
अभिकथन *पुं* {सं.} किसी व्यक्ति या पक्ष की ओर से कही जानेवाली ऐसी बात अथवा किया जानेवाला ऐसा आरोप जो अभी प्रमाणित न हुआ हो अथवा जिसके प्रमाणित होने में कुछ संदेह हो (एलिगेशन)।
अभिकरण *पुं.* {सं.} किसी की ओर से, उसके अभिकर्ता के रूप में काम करना; वह स्थान जहाँ किसी व्यक्ति या संस्था की ओर से उसका अभिकर्ता रहता और काम करता हो (एजेंसी)।
अभिकर्ता *पुं.* {सं.} वह जो किसी व्यक्ति या संस्था के ओर से उसके प्रतिनिधि के रूप में कुछ काम करने के लिए नियत हो (एजेंट); धन लेकर प्रतिनिधित्व करनेवाला।
अभिकर्ता-पत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जिसके अनुसार कोई अभिकर्ता नियुक्त किया गया हो और उसे कोई काम करने का पूरा अधिकार दिया गया हो; प्रतिनिधि के रूप में काम करने के लिए अधिकार-पत्र (पॉवर ऑफ एटॉरनी)।
अभिकलन *पुं.* अनुकलन।
अभिकलित्र *पुं.* {सं.} कम्प्यूटर मशीन।
अभिकल्प *पुं.* {सं.} प्राग्रूप, किसी यन्त्र, भवन आदि की रूपरेखा।
अभिनमाज *पुं* {सं.} आगे निकल जाना; आक्रमण; निरंतरउद्योग।
अभिक्रांति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* अभिक्रांत} किसी वस्तु का अपने स्थान से हट या हटा दिया जाना (डिस्पलेसमेंट)।
अभिख्या *स्त्री.* {सं.} शोभा, कान्ति।
अभिगमन *पुं.* {सं.} {*वि.* अभिगामी} पास जाना; सहवास, सम्भोग।
अभिग्रहण *पुं.* {सं.} (जमीन आदि) अपने अधिकार में लेना, अधिकरण, अधिकार करना।
अभिचार *पुं.* {सं.} {कर्ता अभिचारी} मंत्र-तंत्र द्वारा मारण, उच्चाटन आदि कर्म, पुरश्चरण।, किसी को हानि पहुँचाने के लिए जादू-टोना करना।
अभिजात *वि.* {सं.} अच्छे कुल में उत्पन्न, कुलीन; बुद्धिमान, पंडित; योग्य, उपयुक्त; मान्य, पूज्य; सुन्दर, मनोहर; अनुकूल।
अभिजात-तंत्र *पुं.* {सं.} वह शासन-प्रणाली जिसमें राज्य का सारा प्रबंध थोड़े से उच्च कुल के और सम्पन्न लोगों के हाथ में रहता है।
अभिजित *वि.* {सं.} {*भाव.* अभिजिति} जिसे जीत लिया गया हो, विजित; एक नक्षत्र जिसका स्वामी ब्रह्मा है।
अभिज्ञ *वि.* {सं.} जानकार, विज्ञ; निपुण, कुशल।
अभिज्ञता *स्त्री.* {सं.} जानकारी।
अभिज्ञा *स्त्री.* {सं.} पहले-पहल होनेवाला ज्ञान; स्मृति, याद; अलौकिक ज्ञानबल (बौद्ध)।
अभिज्ञान *पुं.* {सं.} {*वि.* अभिज्ञात} स्मृति; पहचान, देखकर बतलाना कि यह वही है (आइडेंटिफिकेशन); लक्षण, पहचान।
अभिज्ञात *वि.* {सं.} पहचाना गया।
अभिदान *पुं.* {सं.} {*वि.* अभिदत्त} किसी की वस्तु उसके पास पहुँचाना या उसे देना, चंदा देना, सौंप देना (डिलिवरी)।
अभिदिष्ट *वि.* {सं. अभिदेश} प्रसंगवश जिसकी चर्चा, उल्लेख या उद्धरण किया गया हो, या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसकी ओर संकेत या निर्देश किया गया हो (रैफर्ड टु); जिसके विषय में किसी का मत या आदेश माँगा गया हो (रेफर्ड)।

अभिदेश पुं. {सं. अभि + देश (आदेश)} {*वि.* अभिदिष्ट} पहले की किसी घटना, उल्लेख आदि की ऐसी चर्चा जो साक्षी, संकेत, प्रमाण आदि के रूप में की गई हो; किसी विषय में किसी का मत या आदेश लेने के लिए वह विषय या उसके कागज-पत्र उसके पास भेजना, उल्लेख, संकेत चर्चा (रेफरेंस, उक्त दोनों अर्थों के लिए)।

अभिदेश-ग्रंथ पुं. {सं.} वह ग्रंथ जो साधारणतः अध्ययन के लिए न हो, बल्कि जिसका उपयोग कुछ विशिष्ट अवसरों पर कुछ विशेष बातें जानने के लिए किया जाता हो, संदर्भग्रन्थ; जैसे शब्दकोश, विश्वकोश आदि (रेफरेंस बुक)।

अभिद्रुत *वि.* आक्रमण के द्वारा सताया गया।

अभिद्रोह पुं. {सं.} बैर करना, द्वेष करना।

अभिधा *स्त्री.* {सं.} कहना; नाम देना; वाच्यार्थ का ज्ञान कराने वाली वृत्ति (एजेन्सी ऑफ मीनिंग)।

अभिधान पुं. {सं.} नाम, संज्ञा; किसी पद का विशेष नाम या संज्ञा, जैसे–मंत्री, सचिव, निरीक्षक, आचार्य आदि (डेज़िग्नेशन); शब्दकोश; शब्द का अर्थ सीधा बताना, कहना अर्थ का बोधक, वह अर्थ जो शब्द से सीधा निकले (डिक्शनरी)।

अभिधायक पुं. {सं.} कहनेवाला, कहने योग्य बात।

अभिधेय *वि.* {सं.} प्रतिपाद्य, वाच्य; जिसका बोध नाम लेने ही से हो जाए; पुं. नाम।

अभिनंदन पुं. {सं.} {*वि.* अभिनंदनीय} आनंद; सम्मान; प्रशंसा; विनति, प्रार्थना, स्वागत-सत्कार, सम्मान देना।

अभिनंदन-पत्र पुं. {सं.} वह लेख जिसमें किसी के प्रति सम्मान प्रकट किया गया हो।

अभिनंदित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अभिनंदिता} जिसका अभिनंदन किया गया हो।

अभिनति *स्त्री.* {सं.} झुकाव; नमस्कार।

अभिनमन पुं. {सं.} अभिनति।

अभिनय पुं. {सं.} {*वि.* अभिनीत} दूसरे व्यक्तियों के भाषण तथा चेष्टा का कुछ काल के लिए अनुकरण करना, जैसा नाटकों आदि में होता है, स्वाँग, नकल (ऐक्टिंग); नाटक का खेल।

अभिनिर्णय पुं. {सं.} किसी के दोषी या निर्दोष होने के संबंध में अभिनिर्णायक (ज्यूरी) का दिया हुआ मत या निर्णय, निर्णायक मंडल द्वारा किया गया फैसला (वरडिक्ट ऑफ ज्यूरी)।

अभिनिर्णायक पुं. {सं.} वे लोग जो जज के साथ बैठकर किसी के दोषी या निर्दोष होने के संबंध में अपना निर्णय या मत देते हैं (ज्यूरी); खेल में हार-जीत का निर्णय करने वाला (रैफरी)।

अभिनिर्देश पुं. अभिदेश, निर्देश देना, उल्लेख करना, ग्रंथ-विशेष से सामग्री एकत्रित करना।

अभिनिर्धारण पुं. {सं.} किसी चिह्न आदि के आधार पर पहचान करना, निश्चित करना।

अभिनिर्माण पुं. {सं.} आक्रमण के लिए प्रस्थान।

अभिनिविष्ट *वि.* {सं.} जिसका या जिसमें अभिनिवेश हुआ हो; घुसा, धँसा, गड़ा या समाया हुआ; किसी काम में लगा हुआ, लिप्त, लीन, मग्न; अत्यधिक आसकता।

अभिनिवेश पुं. {सं.} {*वि.* अभिनिविष्ट} प्रवेश, पैठ, गति; मनोयोग, एकाग्र-चिंतन; दृढ़ संकल्प; मरण के भय से उत्पन्न क्लेश या कष्ट, आग्रह, आसक्ति।

अभिनीत *वि.* {सं.} निकट लाया हुआ; सुसज्जित, अलंकृत; जिसका अभिनय हुआ हो, खेला हुआ (नाटक)।

अभिनेता पुं. {सं. अभिनेतृ} {*स्त्री.* अभिनेत्री} अभिनय करने या स्वाँग दिखानेवाला पुरुष, नट (ऐक्टर)।

अभिनेत्री *स्त्री.* {सं.} अभिनय करनेवाली स्त्री, नटी (ऐक्ट्रेस)।

अभिनेय *वि.* {सं.} जो अभिनय के योग्य हो, अभिनय का विषय वह पात्र या रचना जिसका अभिनय करना है (नाटक)।

अभिन्न *वि.* {सं.} {*भाव.* अभिन्नता} जो भिन्न न हो; मिला या सटा हुआ, संबद्ध, रचना जिसका अभिनय करना है।

अभिन्यस्त *वि.* {सं.} किसी मद या विभाग में रखा या डाला हुआ, जमा किया हुआ (डिपॉजिटिड)।

अभिन्यास *वि.* {सं.} {कर्ता अभिन्यासक, *वि.* अभिन्यस्त} किसी मद या विभाग में रखना, जमा करना, किसी के सुपुर्द करना, कुछ समय के लिए रखना।

अभिपुष्ट *वि.* {सं.} जिसका अभिपोषण हुआ हो (रैटिफायड); प्रमाणित किया गया।

अभिपोषण पुं. {सं.} {*वि.* अभिपुष्ट, अभिपोषित, अभिपोषणीय} प्रतिनिधियों के किए हुए काम की स्वीकृति देकर उसे पक्का करना या मान लेना, प्रमाणित कर लेना, प्रमाणित मानना (रैटिफिकेशन)।

अभिप्राय पुं. {सं.} {*वि.* अभिप्रेत} आशय, मतलब, तात्पर्य; वह उद्देश्य या विचार जिसे मन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में रखकर कोई काम किया जाता है, उद्देश्य (इंटेंशन); वह प्राकृतिक या काल्पनिक वस्तु जिसकी आकृति किसी चित्र में सजावट के लिए बनाई जाए; साहित्य में वह विशिष्ट तत्व या रचना का विषय जिसपर उस रचना का ढाँचा बनता है, किसी लेख या वचन का असली भाव, मन की बात, सार (मोटिव, अंतिम दोनों अर्थों के लिए)।

अभिप्रेत *वि.* {सं.} चाहा हुआ, इष्ट, अभिलषित, वह बात या भाव जिसे प्रकट करने की इच्छा हो (इंटेंडेड)।

अभिभव *पुं.* {सं.} पराजय, हार; तिरस्कार, अनादर; विलक्षण घटना; किसी को बलपूर्वक दबाकर कहीं रोक रखना या किसी ओर ले जाना।

अभिभावक *पुं.* {सं.} संरक्षक, किसी की देखरेख या संरक्षण करनेवाला (गार्जिअन)।

अभिभावित *वि.* {सं.} जिसे किसी ने पूरी तरह से दबाकर निकम्मा या अपने अधीन कर लिया हो, किसी के नीचे दबा हुआ।

अभिभाषण *पुं.* {सं.} वक्तव्य, सभा व न्यायालय में दिया बयान।

अभिमंडन *पुं.* {सं.} सजाना।

अभिमंत्रण *पुं.* {सं.} {*वि.* अभिमंत्रित} मंत्र द्वारा संस्कार करना; आवाहन, परामर्श करना, किसी वस्तु को मंत्र पढ़कर प्रभावी बनाना।

अभिमंत्रित *वि.* मंत्र से संस्कृत।

अभिमत *वि.* {सं.} मनोनीत, वांछित; सम्मत, राय के मुताबिक, प्रिय, मनपसन्द, विचार के अनुकूल सहमति का विषय; *पुं.* मत, सम्मति, राय (ओपीनिअन); विचार; मनचाही बात।

अभिमन्यु *पुं.* {सं.} अर्जुन और सुभद्रा का पुत्र; क्रोध या शोक का विषय बनना।

अभिमान *पुं.* {सं.} {*वि.* अभिमानी} यह समझना कि हम औरों से बहुत अधिक योग्य, समर्थ या बढ़कर हैं, अहंकार, गर्व, घमंड।

अभिमानी *वि.* {सं. अभिमानिन्} {*स्त्री.* अभिमानिनी} अहंकारी, घमंडी।

अभिमुख *क्रि. वि.* {सं.} सामने, सम्मुख।

अभियंता *पुं.* {सं.} अभियान्त्रिकी विद्या में निष्णात, इंजीनियर, यांत्रिक।

अभियांत्रिकी *स्त्री.* {सं.} विद्या की वह शाखा जो भौतिक उन्नति के लिए प्राकृतिक साधनों का उपभोग करने का ज्ञान तथा कला सिखाती है, यंत्र विद्या (इंजीनियरिंग)।

अभियाचन *पुं.* {सं.} अपनी आवश्यकता, अधिकार अथवा प्राप्य बतलाते हुए किसी से कुछ माँगना, माँग (डिमांड)।

अभियाता *पुं.* {सं.} अभियान करने वाला।

अभियान *पुं.* {सं.} सैनिकों का चढ़ाई करने के लिए जाना; कोई बहुत बड़ा उद्देश्य सिद्ध करने के लिए निकलना, विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति के लिए होनेवाली यात्रा (एक्सपेडिशन)।

अभियामी *वि.* अभियान करने वाला।

अभियुक्त *पुं.* {सं.} वह जिसपर कोई अभियोग लगाया गया हो, दोषी, मुलजिम (एक्यूज्ड)।

अभियोग *पुं.* {सं.} किसी के संबंध में यह कहना कि इसने अमुक दोष या अनुचित कार्य किया है, फरियाद (अक्यूजेशन); न्यायालय के सामने न्याय के लिए किसी के विरुद्ध यह कहना कि इसने अमुक अपराध या नियमविरुद्ध कार्य किया है और इसका विचार होना चाहिए। (चार्ज); इस संबंध का वाद या व्यवहार जो अभियुक्त को दंड दिलाने के लिए न्यायालय में चलता है (प्रासिक्यूशन); किसी प्रकार की नालिश या मुकदमा, मामला (केस); निरन्तर प्रयत्न दोषारोपण।

अभियोजन *पुं.* {सं.} अभियोग लगाने की क्रिया या भाव, उद्यम करना।

अभियोज्य *वि.* {सं.} (कार्य) जिसके लिए अभियोग लगाना उचित हो, अभियोग लगाने के योग्य, अभियोग का लक, अभियोग का विषय।

अभिरक्षक *पुं.* {सं.} वह जो रक्षा के उद्देश्य से किसी संपत्ति या व्यक्ति को अपने अधिकार में रखता हो (कस्टोडिअन); वह जो किसी ऐसे व्यक्ति की देखरेख करता हो, जो स्वयं अपनी देखरेख न कर सके, अभिभावक (गार्जिअन)।

अभिरक्षा *स्त्री.* {सं.} किसी सम्पत्ति को रक्षित रखने के लिए अथवा किसी व्यक्ति को भागने आदि से रोकने के लिए अपने अधिकार या रक्षा में लेकर रखने की क्रिया या भाव (कस्टडी)।

अभिरक्ष्य *वि.* जिसकी इस प्रकार रक्षा की आवश्यकता हो।

अभिरत *वि.* {सं.} लीन, अनुरक्त; मिला हुआ, युक्त; निरन्तर लगा हुआ।

अभिरति *स्त्री.* {सं.} किसी में विशेष रूप से रमना, अभिनिवेश मन को रमाने वाला।

अभिराम *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अभिरामा, *भाव.* अभिरामता} मनोहर, सुंदर।

अभिरुचि *स्त्री.* {सं.} प्राकृतिक रुझान; पसंद; मन का आकर्षण।

अभिरूप *पुं.* {सं.} विद्वान; अनुरूप; आकर्षक।

अभिलषित *वि.* {सं.} जिसकी अभिलाषा की जाए, वांछित, चाहा हुआ।

अभिलाख *स्त्री.* {*क्रि.* अभिलाखना} अभिलाषा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिलाष पुं. {सं.} इच्छा, कामना, चाह; वियोग शृंगार में प्रिय से मिलने की इच्छा।

अभिलाषा *स्त्री.* {सं.} लालच।

अभिलाषी *वि.* {सं. अभिलाषिन्} {*स्त्री.* अभिलाषिणी} अभिलाषा या इच्छा करनेवाला, आकांक्षी, इच्छुक, जो चाहे (एम्पायरेंट)।

अभिलिखित *वि.* {सं.} जिसका अभिलेखन हुआ हो, अभिलेख के रूप में लाया हुआ, नियमित रूप से लिखा या अंकित किया हुआ, अभिलेख में सुरक्षित (रिकॉर्डेड)।

अभिलेख पुं. {सं.} किसी विषय के सम्बन्ध में लिखी हुई सब बातें, पिछली घटनाओं का लिखित संग्रह (रेकॉर्ड)।

अभिलेख-अधिकरण पुं. {सं.} किसी राज्य के प्रधान अभिलेख-विभाग का वह अधिकरण या न्यायालय जो अभिलेखों आदि में लिपि-संबंधी अथवा इसी प्रकार की दूसरी भूलें सुधारने का एकमात्र अधिकारी होता है (कोर्ट ऑफ रेकार्ड्स)।

अभिलेखन पुं. {सं.} स्थायी रूप से घटनाओं को लेख के रूप में सुरक्षित करना (रेकार्डिंग)।

अभिलेखपाल पुं. {सं.} वह अधिकारी जिसकी देखरेख में किसी कार्यालय के अभिलेख आदि रहते हों (रिकॉर्ड-कीपर)।

अभिलेखालय पुं. {सं.} वह स्थान जहाँ अभिलेख सुरक्षित रूप से रखे जाते हैं (रेकॉर्ड रूम)।

अभिलेखी पुं. {सं.} अभिलेखन करनेवाली मशीन अभिलेखन-यंत्र (रेकार्डर)।

अभिलोपन पुं. {सं.} किसी वस्तु को नष्ट या गायब करना।

अभिवंदन पुं. {सं.} {*स्त्री.* अभिवंदना} प्रणाम, नमस्कार; स्तुति, प्रशंसा; आदर प्रकट करना।

अभिवंचन पुं. {सं.} किसी को ठगना, धोखा देना उसके अधिकार से च्युत करना।

अभिवक्ता पुं. {सं.} वकील, न्यायालय में वादी या प्रतिवादी की ओर से बोलने वाला।

अभिवचन पुं. {सं.} वह बात जो न्यायालय में विधिक प्रतिनिधि या अभिवक्ता (वकील) अपने नियोजक की ओर से कहता है (प्लीडिंग)।

अभिवादन पुं. {सं.} प्रणाम, नमस्कार, वंदना; स्तुति; किसी बड़े के प्रति प्रकट की जानेवाली श्रद्धा या आदर-भाव (होमेज)।

अभिवृत्ति *स्त्री.* {सं.} कोई काम करने की प्राकृतिक रुझान।

अभिवृद्धि *स्त्री.* {सं.} अन्न-धन आदि की बढ़ोतरी, अधिकता।

अभिव्यंजक *वि.* {सं.} प्रकट करनेवाला, प्रकाशक, सूचक, बोधक (एक्सप्रेसिव) करनेवाला।

अभिव्यंजन पुं. {सं.} मन के भाव आदि सूचित करना (एक्सप्रेशन)।

अभिव्यंजित *वि.* {सं.} जिसका अभिव्यंजन किया गया हो, ध्वनित, सूचित।

अभिव्यक्त *वि.* {सं.} {*भाव.* अभिव्यक्ति} जिसका अभिव्यंजन हुआ हो, प्रकट, स्पष्ट, जाहिर (एक्सप्रेस्ड)।

अभिव्यक्ति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* अभिव्यक्त} अभिव्यक्त या प्रकट होने अथवा स्पष्ट रूप से सामने आने या दिखाई पड़ने की क्रिया या भाव, प्रकाशन, स्पष्टीकरण। विशेष अभिव्यंजन; सूक्ष्म या अप्रत्यक्ष कारण का प्रत्यक्ष या कार्य के रूप में सामने आना, जैसे बीज से अंकुर निकलना।

अभिव्यापक पुं. {सं.} सब ओर फैलने वाला, सब को अपने में समाहित करने वाला।

अभिव्याप्ति *स्त्री.* {सं.} सब को व्याप्त करना।

अभिशंसन पुं. {सं.} {*वि.* अभिशंसित} इस बात का निर्णय या कथन कि अभियुक्त पर लगाया हुआ दोष प्रमाणित हो गया है, और उसके फलस्वरूप से कुछ दंड भी मिला है।

अभिशंसा *स्त्री.* अभिशंसन।

अभिशंसित *वि.* {सं.} जिसको दंड आदि की सिफारिश की हो (कॉविक्टेड)।

अभिशप्त *वि.* {सं.} जिसे शाप दिया गया हो, शापित; जिसपर मिथ्या दोष लगा हो।

अभिशाप पुं. {सं.} {*वि.* अभिशप्त} शाप; मिथ्या दोषारोप।

अभिषंग पुं. {सं.} पराजय, हार; आक्रोश, कोसना; मिथ्या अपवाद; गले लगाना, आलिंगन; शपथ, कसम; भूत-प्रेत का आवेश; किसी कार्य या बात में किसी के साथ होना, संग, अपराध में साथी, अभिषंग का शिकार।

अभिषंगी(गिन्) पुं. {सं.} वह जो किसी बुरे या अनुचित काम में किसी का साथ दे (एकंप्लिस); *वि.* किसी के साथ होने या लगा रहनेवाला।

अभिषिक्त *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अभिषिक्तता} जिसका अभिषेक हुआ हो; बाधा-शान्ति के लिए जिसपर मंत्र पढ़कर दूर्वा या कुश से जल छिड़का गया हो; राजपद पर नियुक्त।

अभिषेक पुं. {सं.} {*वि.* अभिषिक्त} जल से सींचना, छिड़काव) ऊपर से जल डालकर किया जाने वाला स्नान; बाधा-शान्ति या मंगल के लिए मंत्र पढ़ते हुए तथा जल छिड़ककर राजगद्दी पर बैठाना; शिवलिंग के ऊपर छेदवाला घड़ा लटकाकर धीरे-धीरे पानी टपकाना, अभिमंत्रित जल से स्नान, छिड़काव।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभिषेक क्रिया *स्त्री.* किसी यज्ञ या अनुष्ठान के बाद कलश जल को यजमान दम्पति पर छिड़कना।
अभिषेचन *पुं.* अभिषेक।
अभिसंधि *स्त्री.* {सं.} {*वि.* अभिसंधित} वंचना, धोखा; चुपचाप काम करने की कई आदमियों की सलाह, कुचक्र, षड्यंत्र।
अभिसमय *पुं.* {सं.} पारस्परिक संबंधों, व्यापार, युद्ध आदि के विषय में विभिन्न राष्ट्रों या अधिकारियों का अधिकृत समझौता; परस्पर युद्ध करनेवाले राष्ट्रों के सैनिक अधिकारियों का युद्ध स्थगित करने अथवा इसी प्रकार की दूसरी बातों के संबंध में आपस में होनेवाला समझौता जिसका पालन सभी पक्षों के लिए आवश्यक होता है; किसी प्रथा या परिपाटी के मूल में रहनेवाला सब लोगों का वह समझौता या सहमति जिसे मान्यता के रूप में मानना सबके लिए आवश्यक होता है, जैसे कला, काव्य या संविधान संबंधी अभिसमय।
अभिसरण *पुं.* {सं.} आगे या पास जाना; प्रिया या प्रेमी से मिलने को छुपकर जाना।
अभिसरना *अ.* {सं. अभिसरण} आगे बढ़ना, जाना; किसी वांछित स्थान की ओर जाना; प्रिय से मिलने के लिए संकेतस्थल की ओर जाना।
अभिसर्ग *पुं.* {सं.} सृष्टि-रचना।
अभिसाधक *पुं.* अभिकर्ता।
अभिसाधन *पुं.* अभिकरण।
अभिसर *पुं.* {सं.} गुप्तचर, चोर, सेवक।
अभिसार *पुं.* {सं.} {*वि.* अभिसारिक, अभिसारी} प्रिय से मिलने के लिए संकेतस्थल पर जाना।
अभिसारिका *स्त्री.* {सं.} वह नायिका जो निश्चित मिलन स्थान पर पियामिलन को जाए; आधुनिक काल गर्ल।
अभिसारी *वि.* {सं. अभिसारिन्} {*स्त्री.* अभिसारिणी} जो कार्य सिद्ध करने में सहायक हो, साधक; एक दूसरे की ओर अथवा किसी एक केन्द्र पर पहुँचकर मिलने की प्रवृत्ति रखनेवाले (कंवर्जेन्ट); प्रिय से मिलने के लिए संकेत, अभिसार करने वाला पुरुष, स्थल पर जानेवाला (नायक)।
अभिस्तवन *पुं.* {सं.} प्रशंसा, पद या पुरस्कार के लिए किसी की अनुशंसा करना।
अभिस्तुति *स्त्री.* {सं.} प्रार्थना, प्रशंसा, सिफारिश।
अभिसूचना *स्त्री.* अधिसूचना।
अभिस्त्रावणी *स्त्री.* {सं.} शराब आदि चुआने की भट्ठी या कारखाना (डिस्टिलरी)।
अभिस्मेद *पुं.* रस टपकना, निकलना, सार, गोंद, रस।
अभिहित *वि.* {सं.} (इस) नामवाला, (इस) नाम से पुकारा जानेवाला; कहा गया, अभिधा द्वारा प्रकाशित।
अभिहितवयवाद *पुं.* {सं.} साहित्य शास्त्र का एक सिद्धांत जिसके अनुसार शब्दों के प्रकाशित अर्थों का आप ही आप संबंध होता जाता है।
अभीक *वि.* {सं.} निडर, पति, कवि, लालसावाला।
अभी *क्रि. वि.* {हिं. अब + ही} इसी क्षण, इसी समय, इसी वक्त।
अभीप्सा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* अभीप्सित} (कुछ पाने की) प्रबल इच्छा, तीव्र अभिलाषा।
अभीष्ट *वि.* {सं.} वांछित, चाहा हुआ, चाह, कामना; मनोनीत, पसन्द का; आशय के अनुकूल, अभिप्रेत।
अभुआना *अ.* {सं. आह्वान} हाथ-पैर पटकना और सिर हिलाना जिससे सिर पर भूत आना समझा जाता है।
अभुक्त *वि.* {सं.} जो न खाया या न भोगा गया हो, न खाया या न भोगा हुआ; भुनाया न गया हो, जिसका नगद धन या प्राप्त वस्तु न ली गयी हो; उपयोग में न आया, न भोगा न खाया गया।
अभूत *वि.* {सं.} जो हुआ न हो; अपूर्व, विलक्षण।
अभूतपूर्व *वि.* {सं.} जो पहले न हुआ हो; अपूर्व, अनोखा।
अभेद *पुं.* {सं.} {*वि.* अभेदनीय, अभेद्य} भेद का अभाव, अभिन्नता; रूपक अलंकार के दो भेदों में से एक; *वि.* भेदशून्य, एकरूप, समान; *वि.* अभेद्य।
अभेद्य *वि.* {सं.} जिसमें छेद न हो सके।
अभेर *पुं.* भिड़ंत, टकराना।
अभेरना *स.* {?} मिलाना।
अभोग *वि.* {सं.} जिसका भोग न किया गया हो; अछूता; भोग का अभाव, बिना फण का साँप; उपयोग में न लाया गया।
अभोगी (गिन्) *वि.* {सं.} जो भोग न विरक्त।
अभोग्य *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अभोग्या} जो भोग करने के योग्य न हो, जिसे भोगना अनुचित या वर्जित हो, जो उपयोग के योग्य न हो।
अभोज्य *वि.* {सं.} अभक्ष्य।
अभ्यंग *पुं.* {सं.} {*वि.* अभ्यक्त, अभ्यंजनीय} पोतना, लेपना; शरीर में तेल लगाना, मालिश करना, मलना।
अभ्यंतर *पुं.* {सं.} मध्य, बीच; हृदय; *वि.* अंदरूनी।
अभ्यधीन *वि.* {सं.} किसी नियम, पण, प्रतिबंध आदि के अधीन या उससे बँधा हुआ, कानून की सीमा में आया हुआ (सबजेक्ट टु); अधीन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभ्यर्थन पुं. {सं.} {*वि.* अभ्यर्थनीय, अभ्यर्थित} अपनी आवश्यकता या अधिकार जतलाते हुए किसी से कुछ माँगना या कोई काम करने के लिए जोर देकर कहना (डिमांड); किसी से अपना प्राप्य धन या पदार्थ माँगना; आगंतुक का स्वागत-सत्कार।

अभ्यर्थना *स्त्री.* {सं.} अभ्यर्थन।

अभ्यर्थी (र्थिन्) पुं. {सं.} उम्मीदवार; सत्कार करनेवाला।

अभ्यर्पक पुं. {सं.} वह जो किसी को कोई वस्तु, उसका स्वामित्व अथवा अधिकार दे (असाइनर)।

अभ्यर्पण पुं. {सं.} {*वि.* अभ्यर्पक} अपनी कोई वस्तु, उसका स्वामित्व या अधिकार किसी को सौंपना या देना, काम सौंपने वाला (सरेंडर)।

अभ्यर्पित *वि.* {सं.} (वस्तु उसका स्वामित्व या अधिकार) जो किसी को सौंप या दे दिया गया हो (असाइंड)।

अभ्यर्पिती पुं. {सं. अभ्यर्पितिन} वह जिसे कोई वस्तु, उसका स्वामित्व या अधिकार सौंप दिया गया हो; सौंपी गई वस्तु या अधिकार को लेने वाला (असाइनी)।

अभ्यस्त *वि.* {सं.} जिसका अभ्यास किया गया हो; जिसने अभ्यास किया हो, दक्ष, निपुण; जिसे आदत पड़ चुकी हो,

अभ्यागत *वि.* {सं.} आगंतुक; अतिथि, पाहुन, मेहमान; वह जो किसी से मिलने या भेंट करने आए।

अभ्यास पुं. {सं.} {*वि.* अभ्यासी, अभ्यस्त} पूर्णता या दक्षता प्राप्त करने के लिए बार-बार एक ही क्रिया या साधन, आवृत्ति, मश्क (प्रैक्टिस); आदत, स्वभाव, दोहराना।

अभ्यासतः *क्रि. वि.* {सं.} अभ्यास से, अभ्यास होने के कारण।

अभ्युत्थान पुं. {सं.} किसी के आने पर उसके आदर के लिए उठकर खड़े हो जाना, खड़े होकर स्वागत करना; बढ़ती, समृद्धि; आरंभ।

अभ्युदय पुं. {सं.} सूर्य आदि ग्रहों का उदय; प्रादुर्भाव, उत्पत्ति; मनोरथ की सिद्धि; वृद्धि, बढ़ती; नए सिरे से होनेवाली उन्नति, भाग्य खुलना, उगना।

अभ्युपगम पुं. {सं.} तर्क में पहले कोई सिद्ध या असिद्ध बात मानकर तब उसकी सत्यता की जाँच करना और उससे कोई निष्कर्ष या परिणाम निकालना; पाना; जानना; किसी बात को स्वीकार करना (डिडक्शन)।

अभ्र पुं. {सं.} मेघ, बादल; आकाश; स्वर्ण, सोना, न बरसने वाला बादल।

अभ्रक पुं. अभ्रक धातु, हृदयरोग में काम आने वाली औषद्य, अग्नि की प्रतिबंधक।

अभ्रांत *वि.* {सं.} भ्रांतिशून्य, भ्रमरहित; स्थिर।

अमंगल *वि.* {सं.} मंगलरहित, अशुभ; पुं. अकल्याण, अहित, खराबी।

अमचूर पुं. {हिं. आम + चूर} सुखाए हुए कच्चे आम का चूर्ण, सूखे आम का चूरा जो मसाले के काम आता है।

अमत पुं. {सं.} अनुकूल मत का अभाव, असम्मति; रोग।

अमत्त *वि.* {सं.} जिसे माना या स्वीकार न किया हो, जो मत्त न हो, जो नशे में न हो, जो घमंड के कारण फूला, लापरवाह न हो।

अमन पुं. शांति।

अमनैक पुं. {सं. आम्नायिक} सरदार, नायक; अधिकारी, हकदार।

अमनैकी *स्त्री.* {हिं. अमनैक} मनमाना आचरण या व्यवहार, स्वेच्छाचार, मनमानी, खाना पकाना।

अमर *वि.* {सं.} {*भाव.* अमरता} जो कभी न मरे, सदा जीवित रहनेवाला, चिरजीवी; जिसका कभी अंत, नाश या क्षय न हो, जो मृत्यु का विषय न बने।

मुहा. अजर अमर होना = सदा बने रहना।

पुं. देवता।

अमरख पुं. अमर्ष।

अमरण पुं. {सं.} न मरना।

अमरता *स्त्री.* {सं.} अमर होने की अवस्था या भाव, कभी न मरना, चिरजीवन; देवत्व, अम्रातक, चिढ़ न सहना, मुक्ति, अमर होना, मृत्यु के वश में न होना।

अमरत्व पुं. {सं.} अमरता।

अमरपद पुं. {सं.} मुक्ति, मोक्ष, देवत्व।

अमरबेल *स्त्री.* आकाश बेल, एक बेल जो पौधों पर या वृक्षों पर फैलती है।

अमरलोक पुं. {सं.} स्वर्ग।

अमरस पुं. {हिं. आम + रस} पके आम को निचोड़कर निकाला हुआ रस, आम का रस।

अमराई *स्त्री.* {सं. आम्रराजि} आम का बाग, आम की बारी, आम के पेड़ों की पंक्ति।

अमरावती *स्त्री.* {सं.} देवताओं की पुरी, स्वर्गलोक की राजधानी।

अमरुक पुं. {सं.} संस्कृत का एक शृंगारी कवि।

अमरू पु. {स. अम्बर} एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा, रेशम का बना वस्त्र विशेष।

अमर्त्य *वि.* {सं.} न मरनेवाला, अमर, देवयोनि।

अमर्याद *वि.* {सं.} मर्यादा के विरुद्ध, बेकायदा; सामाजिक आचार का उल्लंघन करने वाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमर्ष (ण) पुं. {सं.} {*वि.* अमर्षित, अमर्षी} क्रोध, कोप, गुस्सा; वह द्वेष या दुख जो विरोधी या शत्रु का कोई अपकार न कर सकने पर हो; चिढ़ना।

अमर्षी *वि.* {सं. अमर्षिन्} {*स्त्री.* अमर्षिणी} असहनशील; जल्दी बुरा माननेवाला; कुपित।

अमल[1] *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अमला} निर्मल, स्वच्छ; निर्दोष, पापशून्य।

अमल[2] पुं. {*अ.*} शासनकाल; नशा; व्यवहार, प्रयोग; कार्य।

मुहा. अमल में आना = निश्चय, आज्ञा आदि का कार्य के रूप में परिणत होना, अमल करना; उस आदर्श के मुताबिक चलना (टु टेक एफेक्ट)।

अमलतास पुं. एक प्रसिद्ध पेड़ जिसकी फलियाँ दवा के काम आती हैं।

अमलदारी *स्त्री.* {*अ.* + फा.} शासन; राज्यकाल।

अमलपट्टा पुं. {*अ.* अमल + हिं. पट्टा} वह दस्तावेज या अधिकार-पत्र जो किसी प्रतिनिधि या कारिंदे को किसी कार्य पर नियुक्त करने के समय दिया जाए; अधिकृत करने का आदेश-पत्र।

अमलबेल पुं. {सं. अम्लवेतस्} एक पेड़ जिसके फल की खटाई तीक्ष्ण होती है, अमलबेत, यह चूर्ण या गोलियों में प्रयुक्त होता है; हाजमा करता है।

अमला पुं. {*अ.*} **किसी संस्था के अधिकारियों का दल या समूह (स्टाफ)।**

अमलारा *वि.* {*अ.* अम्ल} अम्ल का नशा करनेवाला; नशे में मस्त या चूर।

अमलोनी *स्त्री.* {सं. अम्ललोणी} एक प्रकार की घास जिसका साग बनाकर खाते हैं और जो नमकीन होता है, कुलफा, यह पानी वाली जगह पर होता है पर तासीर गर्म होती है।

अमा *स्त्री.* {सं.} अमावस्या; चन्द्रमा की सोलहवीं कला; साथ।

अमात्य पुं. {सं.} मंत्री, वजीर, सचिव, सैक्रेटरी।

अमान *वि.* {सं.} जिसका मान या प्रतिष्ठा न हो।

अमानत *स्त्री.* {*अ.*} अपनी वस्तु किसी दूसरे के पास कुछ काल के लिए रखना; इस प्रकार रखी गई वस्तु, धरोहर, निक्षेप।

अमानतदार पुं. {*अ.* + फा.} वह जिसके पास अमानत रखी गई हो, अमानत अपने पास रखने वाला।

अमानतनामा पुं. {*अ.* + फा.} वह पत्र जो किसी के पास कुछ अमानत रखने के समय उसके प्रमाणस्वरूप लिखा जाता है, अमानत रखने का प्रमाण-पत्र।

अमाना *अ.* {सं. आ = पूरा + मान} पूरा-पूरा भरना, समाना, अँटना फूलना, इतराना, गर्व करना।

अमानी *स्त्री.* {सं. आत्मन्} वह भूमि जिसकी जमींदार सरकार हो, खास; लगान की वह वसूली जिसमें फसल के विचार से रियायत हो; ठेके पर न होनेवाला काम; अन्धेरगर्दी; जो अभिमानी न हो।

अमानुष पुं. {सं.} वह प्राणी जो मनुष्य न हो, बल्कि उससे भिन्न हो, जैसे देवता, राक्षस आदि; मनुष्यता के विपरीत; *वि.* अमानुषिक।

अमानुषिक *वि.* {सं.} मनुष्य की शक्ति के बाहर का; मनुष्यता के विरुद्ध, मनुष्य द्वारा न किये जाने योग्य कर्म आदि।

अमान्य *वि.* {सं.} जो मान्य न हो; जो आदरणीय न हो।

अमापनीय *वि.* {सं.} जो मापा न जा सके, न नापने योग्य।

अमाय *वि.* {सं.} निर्लिप्त; छल-कपट से शून्य।

अमारग पुं. {सं. अमार्ग} बुरा रास्ता, बुरा चलन।

अमार्जित *वि.* अपरिष्कृत, साफ न किया गया, बिना मँजा।

अमावट *स्त्री.* {हिं. आम + आवट (प्रत्य.)} आम के सुखाए हुए रस की परत या तह।

अमावस्या *स्त्री.* {सं.} कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि जिसमें रात को चंद्रमा बिल्कुल दिखाई नहीं देता।

अमिट *वि.* {हिं. अ + मिटना} जो न मिटे, जो नष्ट न हो, स्थायी; जिसका होना निश्चित हो, अवश्यंभावी; न मिटाया जा सकनेवाला।

अमित *वि.* {सं.} अपरिमित, असीम; बहुत अधिक।

अमिताभ *वि.* {सं.} अत्यधिक आभा से युक्त।

अमिताशन *वि.* बहुत खानेवाला, पेटू।

अमिथ्या *स्त्री.* सत्य; *वि.* जो झूठ न हो।

अमिय पुं. अमृत; अमृत का तद्भव।

अमिय मूरि *स्त्री.* {सं. अमृतमूल} अमृतबूटी, संजीवनी जड़ी; अमर कर देनेवाली जड़ी।

अमिल *वि.* {हिं. अ = नहिं + मिलना} न मिलनेवाला, अप्राप्य; बेमेल, बेजोड़; जिससे मेल-जोल न हो।

अमिश्र *वि.* {सं.} जिसमें मिलावट न हो, शुद्ध।

अमी पुं. अमृत।

अमीकर पुं. {सं. अमृतकर} चंद्रमा; जिसकी किरणों में अमृत है।

अमीत पुं. {सं. अमित्र} शत्रु, दुश्मन।

अमीन पुं. {*अ.* अमीन} {*भाव.* अमीनी} माल विभाग का वह कर्मचारी जो खेतों के बँटवारे आदि का प्रबंध करता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमीनिधि पुं. {हिं. अमी + सं. निधि} अमृत का भंडार; चंद्रमा।

अमीबा पुं. एक जल में रहनेवाला जीव जो स्वयं पुरुष व स्त्री दोनों रूपों में बदल जाता है।

अमीर पुं. {अ.} {भाव. अमीरी} अफगानिस्तान के राजाओं की उपाधि; सरदार; वि. धनी, धनाढ्य; उदार।

अमुक वि. {सं.} (वह) जिसका नाम न लिया गया हो, कोई (व्यक्ति)।

अमूर्त वि. {सं.} मूर्तिरहित, निराकार; जिसका कोई ठोस रूप सामने न हो, 'मूर्त' का उलटा (एब्स्ट्रैक्ट); पुं परमेश्वर; आत्मा; काल; आकाश; वायु।

अमूर्तवाद पुं. {सं.} यह सिद्धांत कि मूर्त पदार्थों की अभिव्यक्ति अमूर्त प्रतीकों के द्वारा की जानी चाहिए।

अमूल्य वि. {सं.} जिसका मूल्य न लग सके, अनमोल; बहुमूल्य।

अमृत वि. {सं.} {भाव. अमृतत्व} जो मरा न हो; स्वर्ग का पेय जो देवताओं का भोजन माना जाता है; वर्षा का पानी, अति स्वादिष्ट पदार्थ।

अमृतकर पुं. {सं.} चंद्रमा।

अमृतमूरि स्त्री. {सं.} संजीवनी बूटी।

अमेय वि. {सं.} असीम, बेहद; जो जाना न जा सके, जिसका यथार्थ ज्ञान न हो सके।

अमेयात्मा पुं. {सं.} विष्णु का नाम, जिसका स्वरूप न जाना जाए।

अमेल वि. {हिं. अ + मेल} असंबद्ध; जो किसी से मेल न खाता हो; लड़ाई-झगड़ा।

अमेव वि. अमेय।

अमैंड वि. {हिं. अ + मैंड़} मर्यादा या बंधन न माननेवाला; उच्छृंखल।

अमैठना स. उमेठना; मोड़ना।

अमोघ वि. {सं.} निष्फल न होनेवाला, अव्यर्थ, अचूक।

अमोघवीर्य वि. जिसका बल व्यर्थ न हो।

अमोरी स्त्री. अमोला।

अमोल वि. अमूल्य; बिन मोल का, जिसका मूल्य न लग सके।

अमोला पुं. {हिं. आम} आम के अंकुर, छोटे-छोटे आम।

अम्बा स्त्री. {सं.} माता, माँ; काशीराज की कन्या जो बाद में शिखंडी बनी।

अम्ल पुं. {सं.} खटाई; तेजाब; दही जमाने के लिए डाला जानेवाला जामन; वि. खट्टा, तुर्श।

अम्लता स्त्री. {सं.} अम्ल का गुण; खट्टास, खटाई; खट्टापन।

अम्लान वि. {सं.} जो म्लान न हो; निर्मल, स्वच्छ, साफ; जो मुरझाया न हो।

अम्लीय वि. {सं.} अम्ल-संबंधी; तेजाबी।

अम्हौरी स्त्री. पित्ती; गर्मी के कारण शरीर पर निकली फुंसी, घाम।

अयथा वि. {सं.} जो ठीक या सत्य न हो, मिथ्या, झूठा; जो उपयुक्त न हो, अनुपयुक्त; वास्तव के विपरीत।

अयथार्थ वि. {सं.} {भाव. अयथार्थता} वास्तविकता से भिन्न, असत्य, तथ्य से विरुद्ध।

अयन पुं. {सं.} गति, चाल; सूर्य या चंद्रमा की दक्षिण और उत्तर की गति या उससे संबंध रखनेवाली प्रवृत्ति, जिसको उत्तरायण और दक्षिणायन कहते हैं; आश्रम; स्थान; घर; काल, समय; गाय या भैंस के थन का वह ऊपरी भाग जिसमें दूध रहता है; वृत्त; चरित।

अयश पुं. {सं.} अपयश, अपकीर्ति; निंदा; यश का विपरीत, बदनामी।

अयशस्कर वि. जिससे बदनामी हो।

अयस्क पुं. {सं.} वह मिट्टी या शिलाखंड जिसमें से धातु निकलती हो (ओर)।

अयस्कांत पुं. {सं.} चुंबक।

अयाचक वि. {सं.} न माँगनेवाला, जो न माँगे।

अयाचित वि. {सं.} बिना माँगा हुआ; बिन माँगे ही प्राप्त; पुं. न माँगने की वृत्ति।

अयाची पुं. अयाचक।

अयानपन पुं. {हिं. अज्ञान + पन} अज्ञान, अनजानपन; भोलापन, सीधापन।

अयाना वि. {सं. अज्ञानी, प्रा. अञाना} {स्त्री. अयानी} अज्ञान, बुद्धिहीन।

अयाल पुं. {फा.} घोड़े और सिंह आदि की गरदन के बाल, केसर।

अयुग वि. जोड़ी न होना; अकेला।

अयुत पुं. दस हजार; वि. अमिश्रित।

अयोधम वि. जो युद्ध करने योग्य न हो।

अयोनि पुं. जिसका जन्मदाता कोई नहीं, शिव।

अयोनिजा स्त्री. द्रौपदी, सीता।

अयुक्त वि. {सं.} अयोग्य, अनुचित, बेठीक; असंयुक्त, अलग; आपद्ग्रस्त; अनमना; असंबद्ध, अंडबंड।

अयुक्ति स्त्री. {सं.} युक्ति का अभाव, असंबद्धता, गड़बड़ी; योग न देना या न होना, अप्रवृत्ति; जो ठीक तर्क न हो, गलत तरीका।

अयुक्तियुक्त वि. {सं.} जो युक्तियुक्त न हो, अतर्कसंगत; जो तर्क के अनुसार ठीक न बैठे।

अयोग पुं. {सं.} योग का अभाव; बुरा योग; कुसमय; संकट; जोड़ न होना, मेल न होना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयोग्य *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अयोग्या, *भाव.* अयोग्यता} जो योग्य न हो, अनुपयुक्त; नालायक, निकम्मा, अपात्र; अनुचित, नामुनासिब।

अयोग्यता *स्त्री.* {सं.} 'योग्य' न होने या 'अयोग्य' होने का भाव; निकम्मापन; अपात्रता; अनौचित्य; अनर्हता, ज्ञान या व्युत्पत्ति न होना।

अयौन *वि.* जो योनि से उत्पन्न न हो, योनि से असंबद्ध; अलैंगिक।

अरंभ *पुं.* आरंभ।

अरंभना *अ.* {सं. अ + रंभ = शब्द करना} बोलना; शोर; करना; रंभाना; आरंभ करना।

अर *स्त्री.* अड़।

अरक[1] *पुं.* {*अ.* अर्क} किसी पदार्थ का वह रस जो भभके से खींचने से निकले, आसव; रस।

अरक[2] *पुं.* {*अ.*} पसीना, स्वेद।

अरक[3] *पुं.* = अर्क (सूर्य)।

अरकना *अ.* {अनु.} अरराकर गिरना; टकराना।

अरकला *पुं.* {सं. अर्गल} रोकथाम, रुकावट; मर्यादा, सीमा।

अरकाटी *पुं.* दक्षिण भारत के अरकाट प्रदेश का; वह ठेकेदार जो विदेशों के लिए कुली, मजदूर आदि भेजने का काम करता हो।

अरकान *पुं.* {*अ.*} राज्य के स्तंभस्वरूप प्रमुख अधिकारी; वैभव, संपत्ति।

अरगजा *पुं.* {हिं. अगर + रजा} एक सुगंधित द्रव्य जो केसर, चंदन, कपूर आदि के मेल से बनता है; सुगंधित लेप।

अरगला *स्त्री.* अर्गला।

अरगा *पुं.* {फा. इर्कास} घोड़े की वह तेज चाल जिसमें उसके चारों पैर अलग-अलग पड़ते हैं।

अरघ *पुं.* = अर्घ, मूल्य।

अरघा *पुं.* {सं. अर्घ} चाँदी या ताँबे का बना एक प्रसिद्ध पात्र जिसमें अर्घ का जल रखकर दिया जाता है; वह आधार जिसमें शिवलिंग स्थापित किया जाता है, जलधरी।

अरचन[1] *पुं.* अड़चन, रुकावट।

अरचन[2] *पुं.* = अर्चन।

अरचना *स.* {सं. अर्चन} पूजना।

अरज *स्त्री.* = अर्ज; प्रार्थना।

अरजी[1] *स्त्री.* = अर्जी; प्रार्थनापत्र।

अरजी[2] *स्त्री.* {सं.} अर्ज करनेवाला, प्रार्थी।

अरज्जु *वि.* {सं.} बिना रस्सी का।

अरणी *पुं.* {सं.} गनियारी वृक्ष; सूर्य; काठ का एक यंत्र जिससे यज्ञों के लिए आग निकालते थे।

अरण्य *पुं.* {सं.} बन जंगल; संन्यासियों का एक भेद।

अरण्यरोदन *पुं.* {सं.} ऐसी पुकार जिसे कोई सुननेवाला न हो; ऐसी बात जिसपर कोई ध्यान न दे।

अरण्यानी *स्त्री.* {सं.} घना जंगल।

अरति *स्त्री.* {सं.} रति, अनुराग, प्रवृत्ति, वासना आदि न होना, उदासीनता (एपैथी)।

अरलि *पुं.* {सं.} बाँह, कुहनी।

अरथाना *स.* {सं. अर्थ} अर्थ करना, बतलाना या समझाना, व्याख्या करना।

अरथी[1] *पुं.* {सं. अ + रथी} जो रथ पर न हो, अर्थात् पैदल।

अरथी[2] *स्त्री.* {सं. रथ} वह शिविका या संदूक जिसमें रखकर शव को श्मशान ले जाया जाता है।

अरथी[3] *वि.* अर्थी; याचक।

अरदन *पुं.* = अर्दन; सताना।

अरदना *स.* {सं. अर्दन} कुचलना।

अरदली *पुं.* = अर्दली; अधिकारियों के अधीनस्थ सेवक।

अरदाना *स.* {सं. अर्दन} कुचलने का काम दूसरे से कराना; *अ.* कुचला जाना।

अरदास *स्त्री.* {*अ.* अर्ज़ + फा. दाश्त} गुरुद्वारे आदि में की जानेवाली प्रार्थना; प्रार्थना, निवेदन; कोई शुभ कार्य करते समय किसी देवता से की जानेवाली वह मंगलकामना जिसके साथ उस देवता के नाम पर कुछ धन दिया जाता है।

अरधंग *पुं.* {सं. अर्द्धांग} लकवा, फालिज, ऐसा रोग जिससे आधा शरीर बेकार हो जाता है।

अरध[1] *वि.* अर्ध।

अरध[2] *क्रि. वि.* {सं. अधः} अंदर, भीतर।

अरधाली *स्त्री.* {सं. अर्धालि} आधी चौपाई।

अरना[1] *पुं.* {सं. आरण्यक} जंगली भैंस।

अरना[2] *पुं.* {सं.} अड़ना।

अरनी *स्त्री.* अरणी।

अरपना *स.* {सं. अर्पण} अर्पण करना।

अरब[1] *पुं.* {सं. अर्बुद} सौ करोड़; सौ करोड़ की संख्या।

अरब[2] *पुं.* {सं. अर्वन्} घोड़ा; इंद्र।

अरब[3] *पुं.* {*अ.*} पश्चिमी एशिया का एक प्रसिद्ध रेगिस्तानी प्रदेश जिसके अंतर्गत ईराक, कुवैत, मिस्र आदि कई देश हैं।

अरबराना *अ.* {अनु. अर + बर} {*भाव.* अरबरी} घबराना, व्याकुल होना; चलने में लड़खड़ाना।

अरबरानि *स्त्री.* अचकाना, संभ्रम, हड़बड़ी।

अरबी *वि.* {फा.} अरब देश का; *पुं.* अरब देश का घोड़ा, ताजी; ताशा नामक राजा; *स्त्री.* अरब देश की भाषा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरबीला *वि.* {अनु.} आन-बानवाला; हठ करने या अड़नेवाला; बिना सिर-पैर का, अंडबंड।
अरभक *पुं.* बालक।
अरमण *पुं.* {सं.} न रमना, मन न लगना, संभोग न करना; *वि.* सुंदर।
अरमान *पुं.* {तु.} लालसा, वासना; कामना, उम्मीद।
अरर *पुं.* {सं.} किवाड़, ढक्कन, युद्ध।
अररान *अ.* {अनु.} मकान या टीले की गिरते समय आवाज।
अरबा *पुं.* {?} धान को यों ही कूटकर (उबालकर नहीं) निकला हुआ चावल (धान को उबालकर निकाला हुआ चावल 'भुजिया' कहलाता है); सीले से भिन्न चावल।
अरविंद *पुं.* {द्रविड़ से गृहीत सं.} कमल; सारस।
अरविंद घोष *पुं.* योगिराज अरविंद जो एक क्रांतिकारी से आध्यात्मिक योगी बने, पांडिचेरी में उनका आश्रम है।
अरवी *स्त्री.* {सं. आलु} तरकारी के काम का एक प्रसिद्ध कंद, अरुई; घुइयाँ।
अरस[1] *पुं.* {सं.} रस का अभाव; *वि.* जिसमें रस न हो, रसहीन; अरसिक, बेस्वाद।
अरस[2] *पुं.* आलस।
अरसना-परसना *पुं.* {सं. स्पर्शन} आलिंगन करना, गले लगाना।
अरस-परस *पुं.* {सं. दर्शन + स्पर्शन} देखना और छूना, दर्शन और स्पर्श करना।
अरसा *पुं.* {अ. अर्स:} समय, काल; देर, विलंब; बीता समय।
अरसी *स्त्री.* = अलसी।
अरसीला *वि.* {सं. अलस} आलस्यपूर्ण, आलस्य से भरा हुआ; स्वादरहित, शुष्क।
अरस्तू *पुं.* एक यूनानी दार्शनिक।
अरहन *पुं.* {सं. रंधन} वह आटा या बेसन जो तरकारी आदि पकाते समय उसमें मिलाया जाता है, रेहन; निहाई।
अरहना *स.* {सं. अर्हण} पूजा करना; *स्त्री.* अर्हण, आराधना या पूजा।
अरहर *स्त्री.* {?} एक दाल का नाम; एक अनाज जिसकी दाल खाई जाती है, तुअर।
अराग *पुं.* = आसक्ति या प्रेमरहित; अरति।
अराजक *वि.* {सं.} (स्थान, देश आदि) जिसमें राजा या शासन न हो; *पुं.* वह जो राज्य या शासन का प्रभुत्व न मानता हो; वह जो उपद्रव आदि करके शासन-व्यवस्था, नियंत्रण आदि तोड़ता और नष्ट करता हो (अनार्किस्ट)।
अराजकता *स्त्री.* {सं.} किसी देश की वह अवस्था जिसमें या तो राज्य या शासन का बिल्कुल अभाव होता है, अथवा राज्य या शासन अपना काम ठीक और पूरी तरह करने में असमर्थ होता है; किसी स्थान में उत्पन्न की जानेवाली वह अवस्था जिसमें व्यवस्था, नियंत्रण आदि बिल्कुल शिथिल या अक्रिय हो जाते हैं (अनार्की)।
अराजपत्रित *वि.* जिसकी सूचना राजपत्र (गजट) में न निकली हो।
अराजबीजी *वि.* {सं.} जो राजवंश में उत्पन्न न हुआ हो।
अराड़ *पुं.* {सं. अट्टाल} किसी चीज, विशेषत: काठ-कबाड़ का बहुत बड़ा और ऊँचा ढेर; वह स्थान जहाँ जलाने की लकड़ी बिकती हो।
अराति *पुं.* {सं.} शत्रु, छ: की संख्या।
अराधन *पुं.* = आराधन।
अराधना *स.* {सं. आराधन} आराधना करना, पूजा करना; जपना; ध्यान करना; *स्त्री.* आराधना।
अरारूट, अरारोट *पुं.* {अ. ऐरोरूट} एक पौधा जिसके कंद का आटा तीखुर की तरह काम में आता है।
अराल[1] *वि.* {सं.} वक्र, कुटिल, टेढ़ा।
अराल[2] *पुं.* {सं.} सिर के बाल, केश।
अरावल *पुं.* हरावल; सेना का अगला दस्ता।
अरावली *स्त्री.* राजस्थान की एक पर्वत-पंक्ति।
अरिद *पुं.* {सं. अरि} शत्रु, दुश्मन।
अरिंदम *वि.* {सं.} शत्रुओं को वश में करनेवाला।
अरिष्ट *पुं.* {सं.} दुख, कष्ट; आपत्ति, विपत्ति; दुर्भाग्य; अपशकुन; दुष्ट ग्रहों का मरणकारक योग; एक प्रकार का मद्य जो ओषधियों का खमीर उठाकर बनाया जाता है; अनिष्ट, उत्पात, जैसे भूकंप; एक असुर जो बालक कृष्ण द्वारा मारा गया; *वि.* {सं.} बुरा, अशुभ।
अरिहा *पुं.* = अर्हत; शत्रुनाशक।
अरीतिक *वि.* {सं.} जो रीति से हटकर अथवा उसके विपरीत हो।
अरुंधती *स्त्री.* {सं.} वशिष्ठ मुनि की स्त्री; दक्ष की एक कन्या जो धर्म से ब्याही गई थी; एक बहुत छोटा तारा जो सप्तर्षि-मंडल में है।
अरु *यो.* और।
अरुई *स्त्री.* = अरबी; घुइयाँ।
अरुचि *स्त्री.* {सं.} रुचि का अभाव, अनिच्छा; अग्निमान्द्य रोग जिसमें भोजन की इच्छा नहीं होती; घृणा।
अरुझना *अ.* उलझना।
अरुण *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अरुणा, *भाव.* अरुणता, अरुणिमा} सूर्योदय से पूर्व की लालिमा, गरुड़ का बड़ा भाई; लाल, रक्त (रंग)।
अरुणाई *स्त्री.* अरुणिमा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरुणाभ *वि.* {सं.} लाल आभा से युक्त, लाली लिए हुआ।
अरुणिमा *स्त्री.* {सं.} ललाई, लाली, सुर्खी।
अरुणोदय *पुं.* {सं.} दिन निकलने से कुछ पहले का समय, उषाकाल, ब्राह्ममुहूर्त, तड़का, भोर।
अरुणोपल *पुं.* {सं.} पद्मराग, लाल नामक रत्न।
अरुनाई *स्त्री.* लाली, लालिमा।
अरुनाना *अ.* {सं. अरुण} अरुण या लाल होना; *स.* लाल करना।
अरुनारा *वि.* {सं. अरुण} लाल रंग का।
अरुक्ष *वि.* {सं.} जो रूखा या कठोर न हो, सुकुमार प्रकृति।
अरूझना *अ.* उलझना।
अरूढ़ *वि.* आरूढ़; जो किसी विशेष अर्थ में रूढ़ न हो, यौगिक शब्द।
अरे *विस्मयादि.* {सं.} {*स्त्री.* अरी} संबोधन का शब्द, ए, ओ; एक आश्चर्यसूचक शब्द।
अरेहना *स.* {हिं. रेहना} रगड़ना; रेहना।
अरोग *वि.* {सं.} रोगरहित; *पुं.* आरोग्य।
अरोच *स्त्री.* = अरुचि।
अरोचक *वि.* जो स्वादिष्ट न हो, अरुचिका रोग, न भानेवाला।
आरोही *वि.* = आरोही (सवार)।
अर्क *पुं.* {सं.} सूर्य; इंद्र; ताँबा; विष्णु; आक, मदार; बारह की संख्या; *पुं.* अरक।
अर्गजा *पुं.* {सं.} एक सुगंधित लेप।
उदा. खर को कहा अर्गज जालेपन–**सूर**।
अर्गला *स्त्री.* {सं.} अरगल, अगरी, ब्योंड़ा; किवाड़ अवरोध, प्रतिबंध, रुकावट; कल्लोल; वे रंग-बिरंग के बादल जो सूर्योदय या सूर्यास्त के समय पूर्व या पश्चिम में दिखाई देते हैं; प्राचीन काल में फाटक बंद करने के लिए अड़ाया जानेवाला मूसल, कुंडी।
अर्घ *पुं.* {सं.} षोडशोपचार में से एक जिसमें जल, दूध, दही, सरसों, जव आदि मिलाकर देवता को अर्पित करते हैं; सामने जल गिराना; हाथ धोने के लिए जल देना; मूल्य, दाम; किसी वस्तु की उपयोगिता या महत्व का सूचक तत्व (वैल्यू)।
अर्घपतन *पुं.* {सं.} भाव का गिरना।
अर्घा *पुं.* {सं.} = अरघा।
अर्चक *वि.* {सं.} अर्चना या पूजा करनेवाला, पूजक।
अर्चन *पुं.* {सं.} पूजा, पूजन; आदर-सत्कार।
अर्चना *स्त्री.* {सं.} अर्चन।
अर्चा *स्त्री.* {सं.} पूजा; प्रतिमा।
अर्चि *स्त्री.* {सं.} लौ, लपट।
अर्जक *वि.* {सं.} अर्चन करने या कमानेवाला।
अर्जन *पुं.* {सं.} {*वि.* अर्जनीय} उपार्जन, पैदा करना, कमाना; इकट्ठा करना, संग्रह।
अर्जित *वि.* {सं.} व्यापार आदि में कमाया हुआ (अर्न्ड) किसी प्रकार प्राप्त या इकट्ठा किया हुआ, संगृहीत (एक्वायर्ड)।
अर्जी *स्त्री.* {*अ.* अर्ज़ी} प्रार्थना-पत्र।
अर्जुन *पुं.* {सं.} एक प्रकार का बड़ा वृक्ष, काहू; पाँच पांडवों में से मझले का नाम; सफेद।
अर्जुनोपम *पुं.* {सं.} अर्जुनसदृश, सागवान का वृक्ष।
अर्णव *पुं.* {सं.} समुद्र; सूर्य; चार की संख्या।
अर्थ *वि.* {सं.} लोगों के स्वकीय अधिकारों और उपचारों से संबंध रखनेवाला, पर आपराधिक से भिन्न (सिविल); *पुं.* शब्दों का वह अभिप्राय जो बोलचाल में लिया जाता है, मतलब, माने; वह अभिप्राय या आशय जो किसी शब्द, पद या वाक्य से निकलता है और जिसका बोध कराने के लिए वह शब्द या पद लोक में प्रचलित होता है (मीनिंग); हेतु, निमित्त; धन-संपत्ति, दौलत; प्रयोजन।
अर्थकरी *स्त्री.* {सं.} धन कमाने में सहायक विद्या।
अर्थकृच्छ्र *पुं.* {सं.} धन की कमी, धन की तंगी।
अर्थ-गौरव *पुं.* {सं.} अर्थ की गंभीरता।
अर्थदंड *पुं.* {सं.} वह दंड जो अर्थ या धन के रूप में हो, जुरमाना (फाइन); किसी प्रकार की क्षति या व्यय के बदले में लिया जानेवाला धन।
अर्थ-न्यायालय *पुं.* {सं.} वह न्यायालय जिसमें केवल अर्थ-संबंधी वादों का विचार होता हो, दीवानी कचहरी (सिविल कोर्ट)।
अर्थपति *पुं.* {सं.} राजा, धनवान।
अर्थपिशाच *पुं.* {सं.} बहुत बड़ा कंजूस, धनलोलुप।
अर्थ-प्रकृति *स्त्री.* {सं.} नाटक में वह चमत्कारपूर्ण बात जो कथावस्तु को कार्य की ओर बढ़ाने में सहायक होती है; यह पाँच प्रकार की कही गई है–बीज, बिंदु, पताका, प्रकरी और कार्य।
अर्थ-प्रक्रिया *स्त्री.* {सं.} अर्थ-न्यायालय के द्वारा होनेवाली प्रक्रिया या कार्य (सिविल प्रोसीजर)।
अर्थबंध *पुं.* {सं.} विशेष अवसर पर या विशेष कार्य के लिए होनेवाली आर्थिक व्यवस्था; व्यापारियों, संघों, राष्ट्रों आदि में पारस्परिक हित के विचार से होनेवाला कोई आर्थिक गुप्त समझौता (डील); काव्य रचना।
अर्थमंत्री (मंत्रिन्) *पुं.* {सं.} किसी राज्य या प्रांत के अर्थ विभाग का वह प्रधान अधिकारी या मंत्री जो आर्थिक विषयों की देख-रेख करता है (फाईनेंस मिनिस्टर)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थलिप्सा *स्त्री.* {सं.} धन प्राप्त करने की उत्कट, इच्छा।

अर्थवाद *पुं.* {सं.} किसी बात का अर्थ या प्रयोजन बतलाना; वह वाक्य जिसमें किसी विधि के करने की उत्तेजना या प्रोत्साहन हो, जैसे दान करने से स्वर्ग मिलता है; विधान की नियमावली आदि के आरंभ की वे बातें जिनसे उस विधान या नियमावली का अर्थ या प्रयोजन सूचित होता है (प्रिएम्बुल)।

अर्थविधि *स्त्री.* {सं.} वह विधि या कानून जो राज्य की ओर से जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए (आपराधिक विधि से भिन्न) बनाया गया हो (सिविल लॉ)।

अर्थविवाद *पुं.* {सं.} वह विवाद (मुकदमा) जो केवल अर्थ या धन से संबंध रखता हो, दीवानी मुकदमा (सिविल केस, सिविल सूट)।

अर्थ-व्यवस्था *स्त्री.* {सं.} देश की उन्नति तथा स्थायित्व के लिए आय-व्यय, उत्पादन-वितरण आदि के लिए अपनाई हुई व्यवस्था।

अर्थशास्त्र *पुं.* {सं.} वह शास्त्र जिसमें अर्थ या धन-संपत्ति की उत्पत्ति, उपयोग, विनिमय और वितरण का विवेचन होता है; राज्य के प्रबंध, समृद्धि, रक्षा आदि की विद्या (इकॉनॉमिक्स)।

अर्थशास्त्री (स्त्रिन्) *पुं.* {सं.} वह जो अर्थशास्त्र का ज्ञाता हो; *वि.* अर्थशास्त्र-संबंधी (इकॉनॉमिक)।

अर्थशुचि *वि.* {सं.} ईमानदार धन के विषय में सच्चा।

अर्थशौच *पुं.* {सं.} रुपये-पैसे के विषय में ईमानदारी।

अर्थसिद्धि *स्त्री.* {सं.} कार्य में सफलता, मनोरथ पूरा होना

अर्थहीन *वि.* {सं.} प्रसंग की दृष्टि से महत्वरहित, निरर्थक, व्यर्थ।

अर्थागम *पुं.* {सं.} धन की प्राप्ति।

अर्थांतरन्यास *पुं.* {सं.} साहित्य में एक अलंकार जिसमें सामान्य से विशेष का या विशेष से सामान्य का साधर्म्य या वैधर्म्य द्वारा समर्थन किया जाता है।

अर्थात, अर्थात् *यो.* {सं.} इसका अर्थ यह है कि, मतलब यह कि।

अर्थाधिकरण *पुं.* अर्थ-न्यायालय।

अर्थानुवाद *पुं.* {सं.} किसी कानूनन स्वीकृत बात का पुनः उल्लेख; किसी लेख का अर्थानुसारी अनुवाद या उल्था।

अर्थापत्ति *स्त्री.* {सं.} मीमांसा में वह प्रमाण जिसमें एक बात से दूसरी बात की सिद्धि आपसे आप हो जाए; एक अर्थालंकार जिसमें एक बात के कथन से दूसरी बात सिद्ध की जाती है।

अर्थापन *पुं.* {सं.} किसी गूढ़ पद या वाक्य का अर्थ लगाना या बताना, यह कहना कि इसका यह अर्थ है (इंटरप्रटेशन)।

अर्थालंकार *पुं.* {सं.} वह अलंकार जिसमें अर्थ-संबंधी चमत्कार हो।

अर्थी *वि.* {सं. अर्थिन्} {*स्त्री.* अर्थिनी} इच्छा रखनेवाला, चाह रखनेवाला; कार्यार्थी, प्रयोजन वाला, गर्जू; जरूरतमंद; *पुं.* वादी, मुद्दई; सेवक; धनी; *स्त्री.* अरथी।

अर्थोपचार *पुं.* {सं.} वह उपचार या क्षतिपूर्ति जो अर्थ-न्यायालय या अर्थविधि के द्वारा प्राप्त हो (सिविल रेमेडी)।

अर्दली *पुं.* {*अ.* ऑर्डली} बड़े अधिकारियों की सेवा में रहनेवाला चपरासी।

अर्द्ध *वि.* {सं.} पूरे के दो बराबर भागों में से एक, आधा; जिसमें कुछ अंश अपना और कुछ दूसरे का हो, 'पूरा' का उलटा, जैसे अर्द्धसरकारी, अर्द्धआर्य (सेमी); जिसमें बहुत कुछ कमी हो, अधूरा, जैसे अर्द्धशिक्षित।

अर्द्धचंद्र *पुं.* {सं.} अष्टमी का चंद्रमा जो आधा होता है; चंद्रिका, मोरपंख की आँख; नखक्षत; आनुनासिक चिह्न, चंद्रबिंदु; निकाल बाहर करने के लिए गले में हाथ लगाना, गरदनियाँ; धक्का देकर निकालना।

अर्द्धनारीश्वर *पुं.* {सं.} तंत्र में शिव और पार्वती का सम्मिलित रूप; वे पुरुष जो पुरुष व स्त्री दोनों का आचरण करें।

अर्द्धमागधी *स्त्री.* {सं.} प्राकृत का एक भेद, काशी और मथुरा के बीच के देश की पुरानी भाषा; जैन सूत्र ग्रंथों में अपनाई गई प्राकृत।

अर्द्धवृत्त *पुं.* {सं.} मध्यबिंदु से समान अंतर पर खिंची हुई गोल रेखा का आधा अंश, आधा गोला या वृत्त।

अर्द्धसमवृत्त *पुं.* {सं.} वह छंद जिसका पहला चरण तीसरे चरण के बराबर और दूसरा चौथे के बराबर हो, जैसे दोहा।

अर्द्धांगिनी *स्त्री.* {सं.} स्त्री, पत्नी।

अर्द्धाली, अर्धाली *स्त्री.* {सं. अर्धालि} आधी चौपाई।

अर्द्धासन *पुं.* {सं.} किसी का सम्मान करने के लिए उसे अपने आसन पर बैठाना या अपने आसन का आधा अंश उसे देना; अपने आसन पर साथ बैठाना।

अर्द्धोदक *पुं.* {सं.} मरते हुए व्यक्ति को अंत समय में किसी नदी या जलाशय में इस प्रकार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखना कि उसका आधा अंग जल में और आधा बाहर रहे।

अर्द्धोदय पुं. {सं.} एक पर्व जो उस दिन होता है जिस दिन माघ की अमावस्या रविवार को होती है और श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात योग पड़ता है।

अर्ध *वि.* अर्द्ध।

अर्धक पुं. {सं.} किसी आकृति को दो समान विभागों में बाँटनेवाली रेखा (बाइसेक्टर)।

अर्पण पुं. {सं.} {*वि.* अर्पित} देना, दान; नजर, भेंट।

अर्पित *वि.* {सं.} भेंट किया गया।

अर्बदर्ब पुं. {अनु. + सं. द्रव्य} धन-संपत्ति, दौलत।

अर्बुद पुं. {सं.} गणित में इकाई-दहाई के नवें स्थान की संख्या, दस करोड़; अरावल पहाड़; बादल; दो मास का गर्भ; एक रोग जिसमें शरीर में एक प्रकार की गाँठ पड़ जाती है, बतौरी; जैनियों का एक तीर्थस्थान।

अर्बुदी *वि.* {सं.} अर्बुद संख्यक धन का स्वामी; अर्बुद रोग से ग्रस्त।

अर्भ {सं.} छोटा, थोड़ा, बच्चा, कुशा।

अर्भक *वि.* {सं.} छोटा, अल्प; मूर्ख; दुबला-पतला; पुं. {सं.} बालक, लड़का।

अर्म पुं. {सं.} आँख में पड़नेवाली फूली।

अर्यमा पुं. {सं. अर्यमन्} सूर्य; बारह आदित्यों में से एक; दिव्य पितर।

अर्वाचीन *वि.* {सं.} {*भाव.* अर्वाचीनता} जिसका आरंभ या प्रचलन कुछ ही दिनों से हुआ हो, हाल का, आधुनिक; नवीन, नया (माडर्न); प्राचीन का उलट।

अर्श पुं. {सं.} बवासीर नामक रोग।

अर्शोघ्न *वि.* {सं.} अर्श रोग को हरनेवाली औषध।

अर्ह *वि.* {सं.} पूज्य; योग्य, उपयुक्त पात्र (यौगिक शब्दों के अंत में) जैसे पूजार्ह, मानार्ह, दंडार्ह; पुं. ईश्वर; इंद्र।

अर्हत पुं. {सं.} जिन, देव; बुद्ध।

अर्हता *स्त्री.* {सं.} ऐसा गुण, ज्ञान, अनुभव, योग्यता, कुशलता आदि जो किसी को किसी पद, स्थिति, पेशे आदि के लिए उपयुक्त सिद्ध करती है (क्वालिफिकेशन)।

अर्हन पुं. {सं.} पूजन, पूजा; जिन, देव।

अर्हित *वि.* {सं.} पूजित; पात्र माना गया।

अलंकरण पुं. {सं.} {*वि.* अलंकृत} अलंकारों आदि से सजाना, अलंकृत करना; सजावट, सज्जा।

अलंकार पुं. {सं.} {*वि.* अलंकृत} आभूषण, गहना, जेवर; साहित्य में वर्णन करने की वह रीति जिसमें चमत्कार और रोचकता आती है; नायिका के सौंदर्य बढ़ानेवाले हाव-भाव।

अलंकारशास्त्र पुं. {सं.} वह शास्त्र जिसमें यह बतलाया जाता है कि कथन या व्रर्णन किस प्रकार रोचक और प्रभावी बनाए जाते हैं (रेटोरिक)।

अलंकृत *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अलंकृता} विभूषित, सँवारा हुआ; साहित्यिक अलंकारों से युक्त।

अलंकृति *स्त्री.* {सं.} सजाना, काव्यालंकार।

अलंग पुं. {सं. अल् = पूर्ण + अंग} ओर, तरफ, दिशा।

मुहा. अलंग पर आना या होना = घोड़ी का मस्त होकर गर्भ धारण करने के योग्य होना।

अलंघनीय, अलंघ्य *वि.* {सं.} जो लाँघने योग्य न हो, जिसे लाँघ न सकें; जिसे टाल या छोड़ न सकें।

अलंजर पुं. {सं.} माट।

अलंपट *वि.* {सं.} जो लंपट या कामुक न हो, सदाचार।

अलंबुषा *स्त्री.* {सं.} एक अप्सरा का नाम; हठयोग में लिंग की नाड़ी; लाजवंती (छुई मुई)।

अलक *स्त्री.* {सं.} मस्तक के इधर-उधर लटकते हुए बाल, केश, लट; छल्लेदार बाल; घुँघराले बाल।

अलकनन्दा *स्त्री.* {सं.} 8 से 10 साल तक की कन्या, गंगा की एक धारा।

अलकतरा पुं. {*अ.* अलकतर:} पत्थर के कोयले को उबाल या गलाकर निकाला हुआ एक प्रसिद्ध गाढ़ा काला पदार्थ; कोलतार।

अलकरचना *स्त्री.* {सं.} बालों की सुंदर लटें बनाना या उन्हें घूँघरदार बनाना; केश शृंगार की कला।

अलकलड़ैता *वि.* {हिं. अलक = बाल + लाड़ = दुलार} दुलारा, लाड़ला।

अलका *स्त्री.* {सं.} कुबेर की पुरी का नाम।

अलकावलि *स्त्री.* {सं.} केशों का समूह, बालों की लटें; घुँघराले बाल, छल्लेदार बाल।

अलक्तक पुं. {सं.} अलता, जिसे स्त्रियाँ पैरों में लगाती है; महावर।

अलक्षण पुं. {सं.} {*स्त्री.* अलक्षणा} लक्षण का न होना; बुरा या अशुभ लक्षण; वह जिसमें बुरे लक्षण हों; अशकुन।

अलक्षित *वि.* अलक्ष्य; न देखा गया; जो लक्षण का विषय न बना हो; जो लक्षणा का विषय न हो।

अलक्ष्य *वि.* {सं.} जो दिखाई न पड़े, अदृश्य, गायब; जिसका लक्षण न बतलाया जा सके; जो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निशाना न बना हो; जो लक्षणा का विषय न हो; जो उद्देश्य न हो।

अलक्ष्यगति *वि.* {सं.} जिसकी चाल-ढाल दिखाई न दे।

अलख *वि.* {सं. अलक्ष्य} जो दिखाई न पड़े, अदृश्य, अप्रत्यक्ष; अगोचर, इंद्रियातीत (ईश्वर का एक विशेषण)।

मुहा. अलख जगाना = पुकार-पुकारकर परमात्मा के नाम पर भिक्षा माँगना।

अलखधारी (धारिन्) *पुं.* {सं.} एक प्रकार के साधु जो अलख जगाते हुए भीख माँगते हैं।

अलखनामी *पुं.* अलखधारी।

अलग *वि.* {सं. अलग्न} जुदा, पृथक, भिन्न।

मुहा. अलग करना = दूर करना, हटाना; नौकरी से छुड़ाना, बरखास्त करना।

बेलाग; बचाया हुआ, रक्षित।

अलगनी *स्त्री.* {सं. आलग्न} आड़ी रस्सी या बाँस जो कपड़े टाँगने के लिए घर में बाँधा जाता है, डारा।

अलगरजी *वि.* {अ. गरज़} स्वार्थी, मतलबी; किसी की बहुत अधिक परवाह या चिंता न करनेवाला, लापरवाह।

अलगाऊ *वि.* {हिं. अलग + आऊ (प्रत्य.)} अलग करने या रखनेवाला; अलग करने या रखने का पक्षपाती।

अलगाना *स.* {हिं. अलग} अलग करना, छाँटना; जुदा करना, दूर करना, हटाना।

अलगाव *पुं.* {हिं. अलग + आव (प्रत्य.)} अलग होने की क्रिया या भाव, पार्थक्य।

अलगोजा *पुं.* {अ.} एक प्रकार की बाँसुरी।

अलगौझा *पुं.* परिवार में विभाजन, अलगाव।

अलघु *वि.* जो छोटा या हलका न हो लंबा, बड़ा या भारी।

अलतई *वि.* {हिं. अलता} अलते के रंग का, लाल।

अलता *पुं.* {सं. अलक्तक} लाल रंग जो स्त्रियाँ पैरों में लगाती हैं; महावर; खसी की मूत्रेंद्रिय।

अलप *वि.* = अल्प।

अलबत्ता *यो.* {अ.} निस्संदेह, निःसंशय, बेशक; हाँ, बहुत ठीक, दुरुस्त; लेकिन, परंतु; बल्कि इसके विपरीत।

अलबम *पुं.* चित्र संग्रह करने की फाइल।

अलबेला *वि.* {सं. अलभ्य} {*स्त्री.* अलबेली; *भाव.* अलबेलापन} बाँका, बना-ठना, छैला; अनोखा, अनूठा; सुंदर; अल्हड़, बेपरवाह, मनमौजी; *पुं.* नारियल का बना हुआ हुक्का।

अलब्ध *वि.* {सं.} जो प्राप्त न हुआ हो।

अलभ *वि.* = अलभ्य।

अलभ्य *वि.* {सं.} {*भाव.* अलभ्यता} न मिलने योग्य, अप्राप्य; जो कठिनता से मिल सके, दुर्लभ; अमूल्य, अनमोल।

अलम, अलम् *क्रि. वि.* {सं.} यथेष्ट, पर्याप्त।

अलमस्त *वि.* {फा.} {*भाव.* अलमस्ती} मतवाला, मत्त, मस्त; निश्चिंत, बेफिक्र; फक्कड़।

अलमस्ती *स्त्री.* {फा.} मतवालापन, मत्तता; लापरवाही; फक्कड़पन।

अलमारी *स्त्री.* {पुर्त. अलमारियो} वह खड़ा संदूक जिसमें चीजें रखने के लिए खाने या दर बने रहते हैं, बड़ी भंडरिया।

अललटप्पू *वि.* {अनु.} अटकलपच्चू, बेठिकाने का, अंडबंड; नौसिखिया।

अललबछेड़ा *पुं.* {हिं. अल्हड़ + बछेड़ा} घोड़े का जवान बच्चा; अल्हड़ आदमी।

अलर्क *पुं.* {सं.} पागल कुत्ता।

अलल्ल *पुं.* घोड़ा।

अलवाँती *वि.* {सं. बालवती} (स्त्री) जिसने अभी हाल में प्रसव किया हो, प्रसूता।

अलवान *पुं.* {अ.} ऊनी चादर; विभिन्न रंगों में मिलनेवाला एक हलका कपड़ा।

अलसक *पुं.* एक उदररोग।

अलस *वि.* {द्रविड़ से गृहीत, सं.} {*भाव.* अलसता} आलसी, सुस्त।

अलसा *स्त्री.* लाजवंती (छुई मुई) का पौधा, आलसी स्त्री।

अलसाना *अ.* {सं. अलस} आलस्य में पड़ना, शिथिलता अनुभव करना।

अलसित *वि.* {सं.} जो शोभित न हो; अलसाया, मुरझाया।

अलसी *स्त्री.* {सं. अतसी} एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।

अलसेट (ठ) *स्त्री.* {सं. अलस} {*वि.* अलसेटिया} ढिलाई या व्यर्थ की देर; टाल-मटोल; भुलावा; बाधा; अड़चन; व्यर्थ या जान-बूझकर किया जानेवाला झगड़ा या तकरार।

अलसौंहा *वि.* {सं. अलस} {*स्त्री.* अलसौंही} आलस्ययुक्त, शिथिल; नींद से भरा हुआ, उनींदा।

अलहदगी *स्त्री.* {अ.} अलहदा, अलग या जुदा होने की क्रिया या भाव।

अलहदा *वि.* अलग।

अलहदी *वि.* {अ. अहदी} आलसी और अकर्मण्य।

अलात *पुं.* {सं.} जलती हुई लकड़ी; अंगारा; मशाल, उल्का।

अलातचक्र *पुं.* {सं.} जलती हुई लकड़ी जोर से घुमाने से बना हुआ मंडल; बनेठी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलान पुं. {सं. आलान} हाथी बाँधने का खूँटा या सिक्कड़; बंधन; बेड़ी; बेल चढ़ाने के लिए गाड़ी हुई लकड़ी या ढाँचा।

अलाप पुं. {सं. आलाप} एक ही सुर को दुगने या चौगुने सुरों में दुहराने की क्रिया या भाव।

अलापना अ. {सं., आलापन} बोलना, बातचीत करना; गाने में तान लगाना; गाना।

अलापी वि. {सं. आलापिन्} बोलनेवाला, शब्द करनेवाला; आलाप भरनेवाला।

अलाब, अलाखू स्त्री. {सं.} लौकी, तुम्बी।

अलाभ पुं. {सं.} लाभ न होना; घाटा, घटी।

अलाभकर वि. {सं.} जिससे कोई लाभ या फायदा न होता हो; जिसमें आर्थिक दृष्टि से कुछ लाभ या बचत न होती हो; हानि पहुँचानेवाला।

अलाम वि. {अ. अल्लामा} बातें बनानेवाला; मिथ्यावादी।

अलामत स्त्री. {अ.} निशान, चिह्न।

अलामत-मलामत स्त्री. {अ.} डाँट-फटकार।

अलाय-बलाय स्त्री. {फा. बला} विपत्ति या रोग।

अलार[1] पुं. {सं.} कपाट, किवाड़।

अलार[2] पुं. {सं. अलात} अलाव; आँवाँ।

अलाव पुं. {सं. अलात} सर्दी के दिनों में सामूहिक रूप से तापने के लिए खुले स्थान में जलाई हुई आग।

अलिंग वि. {सं.} लिंगरहित, बिना चिह्न का; जिसकी कोई पहचान न बतलाई जा सके; पुं. व्याकरण में वह शब्द जो दोनों लिंगों में समान रूप से व्यवहृत होता हो, जैसे हम, तुम, मित्र।

अलिंगी जनन पुं. बिना लैंगिक संबंध के संतान उत्पन्न करना।

अलिंजर पुं. {सं.} पानी रखने का मिट्टी का घड़ा, झंझर, सुराही आदि; बड़ा माट।

अलिंद[1] पुं. {सं.} मकान के बाहरी द्वार के आगे का चबूतरा या छज्जा; आँगन।

अलिंद[2] पुं. {सं. अलींद्र} भौंरा।

अलि पुं. {सं.} {स्त्री. अलिनी} भौंरा; कोयला; कौआ; बिच्छू; वृश्चिक राशि; कुत्ता; मदिरा।

अलिक पुं. {सं.} माथा, ललाट।

अलिखित वि. {सं.} जो लिखा तो न हो, फिर भी प्रायः लिखे हुए के समान हो, जैसे अलिखित आज्ञा या विधान; लिखा-पढ़ी में न आया, मौखिक।

अलिजिह्वा स्त्री. {सं.} गले में लटकनेवाला मांसपिंड, कौआ।

अलिप्त वि. {सं.} जो लिप्त न हो, निर्लिप्त।

अलिवृत्ति स्त्री. {सं.} भौंरों की तरह जगह-जगह रस लेते फिरने की आदत।

अली[1] स्त्री. {सं. आली} सखी, सहेली; पंक्ति; कतार।

अली[2] पुं. {सं. अलि} भौंरा; मुसलमानों के चौथे खलीफा।

अलीक[1] वि. {सं.} मिथ्या, झूठा; मर्यादारहित; अप्रतिष्ठित; सारहीन।

अलीक[2] पुं. {हिं. अ + अलीक} अप्रतिष्ठा; परंपरा या मर्यादा के बाहर।

अलीन वि. {हिं. अ + लीन} जो किसी में लीन न हो, विरत, अलग; जो ठीक या उपयुक्त न हो, अनुचित; पल्ला जड़ने के लिए लगी दरवाजे की चौखट की लकड़ी।

अलीपित वि. = अलिप्त।

अलीह वि. {सं. अलीक} मिथ्या, असत्य, झूठा; अनुचित।

अलुक् पुं. {सं.} व्याकरण में समास का एक भेद जिसमें बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता बल्कि वह ज्यों-की-त्यों बनी रहती है, जैसे मनसिज।

अलुझना अ. उलझना।

अलूप वि. = लुप्त; पुं. = लोप।

अलूला पुं. {हिं. बुलबुला} भभूका, बबूला, लपट; बुलबुला।

अलेख वि. {सं.} जिसके विषय में कोई भावना न हो सके, दुर्बोध; अज्ञेय।

अलेखा वि. {सं. अलेख} बेहद, बहुत; व्यर्थ, निष्फल; जैसा कभी देखा न गया हो, अद्भुत, विचित्र।

अलेखी वि. {सं. अलेख} बेहिसाब या अंडबंड काम करनेवाला; गड़बड़ मचानेवाला; अंधेर करनेवाला; अन्यायी; जो लिखे में न आई हो; जिसका कोई हिसाब न हो।

अलेप वि. {सं.} निर्लिप्त, बेलाग; जिसपर सीमेंट आदि का लेप न हो।

अलेपक वि. {सं.} लेप रहित; न लीपनेवाला।

अलैंगिक वि. {सं.} (जीव) जिसमें स्त्री या पुरुष में से किसी का लिंग या चिह्न वर्तमान न हो (एसेक्सुअल); लिंग के संबंध से रहित।

अलोक वि. {सं.} जो देखने में न आए, अदृश्य; निर्जन, एकांत; पुं. पाताल आदि लोक, परलोक; मिथ्या दोष, कलंक; निंदा; लोकों का विनाश।

अलोकना स. {सं. आलोक} आलोक या प्रकाश से युक्त करना, आलोकित करना; अ. आलोक या प्रकाश से युक्त होना, चमकना।

अलोना वि. {सं. अलवण} {स्त्री. अलोनी} जिसमें नमक न पड़ा हो; जिसमें नमक न खाया जाए, जैसे अलोना व्रत; फीका, स्वादरहित।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलोपना *अ.* {सं. लोप} लुप्त होना; *स.* लुप्त या गायब करना।
अलोल *वि.* {सं.} जो हिलता-डोलता न हो, स्थिर।
अलोलुप *वि.* {सं.} जो लालची या चटोरा न हो।
अलोह *वि.* {सं.} जिसमें लोहा न हो।
अलोहित *वि.* {सं.} जिसमें खून न हो; जो लाल न हो।
अलौकिक *वि.* {सं.} {*भाव.* अलौकिकता} जो इस लोक में दिखाई न दे, लोकोत्तर; अनोखा, अद्‌भुत, अपूर्व; अमानुषी।
अल्प *वि.* {सं.} {*भाव.* अल्पता, अल्पत्व} थोड़ा, कम; छोटा; *पुं.* साहित्य में एक अलंकार जिसमें आधेय की अपेक्षा आधार की अल्पता या छोटाई का वर्णन होता है।
अल्पकालिक *वि.* {सं.} जो कुछ ही दिनों से हो, या कुछ ही दिन रहे; थोड़े समय के लिए होने या दिया जानेवाला, जैसे अल्पकालिक ऋण।
अल्पकालीन *वि.* = अल्पकालिक।
अल्पकेशी *स्त्री.* भूतकेशी नाम का एक पौधा।
अल्पगंध *पुं.* रात को खिलनेवाली लाल कमल की एक जाति।
अल्पजीवी (जीविन्) *वि.* {सं.} जिसकी आयु कम हो, अल्पायु।
अल्पज्ञ *वि.* {सं.} {*भाव.* अल्पज्ञता} थोड़ा ज्ञान रखनेवाला, छोटी बुद्धि का; नासमझ; कम जानकार।
अल्पता *स्त्री.* {सं.} अल्प या थोड़ा होने की दशा या भाव।
अल्पप्राण *वि.* {सं.} (व्यंजन) जिसके उच्चारण में अपेक्षया कम वायु निस्सृत होती है।
अल्पप्रिय *वि.* {सं.} जो थोड़े लोगों को अच्छा लगे।
अल्पभुक् *वि.* {सं.} थोड़ा खानेवाला।
अल्पमत *पुं.* {सं.} थोड़े से लोगों का मत, 'बहुमत' का उलटा; वे लोग जिनकी संख्या और फलतः मत औरों के मुकाबले में कम हो, अल्पसंख्यक (माइनॉरिटी)।
अल्पवयस्क *वि.* {सं.} छोटी अवस्था का, थोड़ी या कम उम्रवाला; अवयस्क; नाबालिग।
अल्पविराम *पुं.* {सं.} एक प्रकार का विराम चिह्न जो पूर्णविराम की अपेक्षा कुछ थोड़े विराम का सूचक होता है (कॉमा)।
अल्पसंख्यक *पुं.* {सं.} वह समाज जिसके सदस्यों की संख्या औरों के मुकाबले में कम हो (माइनॉरिटी); *वि.* गिनती में थोड़े या कम।
अल्पायु *वि.* अल्पजीवी।
अल्पार्थक *पुं.* {सं.} वह शब्द जो किसी वस्तु के छोटे रूप का वाचक हो, जैसे 'फोड़ा' का अल्पार्थक 'फुड़िया' और 'घर' का अल्पार्थक 'घरौंदा' है (डिम्यूनिटिव)।
अल्पीकरण *पुं.* {सं.} कम करने की क्रिया या भाव।
अल्हड़ *वि.* {सं. अल् = बहुत + हिं. = लल = लालसा} {*भाव.* अल्हड़पन} मनमौजी, बेपरवाह; जिसे व्यवहार का ज्ञान या अनुभव न हो; उद्धत, उजड्ड; गँवार; नासमझ; *पुं.* वह नया बैल या बछड़ा जो निकाला न गया हो।
अवंती *स्त्री.* {सं.} उज्जैन या उज्जयिनी नामक नगरी जिसकी गिनती सात प्रसिद्ध पुरियों और तीर्थों में होती है; अवंतिदेश, मालवा।
अव *उप.* {सं.} एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उनमें निश्चय (जैसे अवधारण), अनादर (जैसे अवज्ञा), कमी (जैसे अवघात), उतार या निचाई (जैसे अवतार), बुराई या दोष (जैसे अवगुण), व्याप्ति (जैसे अवकाश) आदि भाव उत्पन्न करता है; *या.* और।
अवकर *पुं.* {सं.} कूड़ा कबाड़, धूल।
अवकलन *पुं.* {सं.} इकट्ठा होकर मिलना या इकट्ठा करके एक में मिलाना; देखना; ग्रहण करना; जानना, समझना।
अवकलना *अ.* {सं. अवकलन} ज्ञान या बोध होना, समझ में आना; *स.* इकट्ठा करना; देखना।
अवकाश *पुं.* {सं.} रिक्त या शून्य स्थान, खाली जगह; आकाश, अंतरिक्ष; दूरी, अंतर; अवसर, उपयुक्त समय; खाली समय; निरंतर काम करते रहने पर बीच में कुछ समय के लिए मिलनेवाली छुट्टी (लीव); फालतू स्थान।
अवकाशग्रहण *पुं.* {सं.} किसी पद या कार्य से हटकर अलग हो जाना, काम से अवकाश लेना या छुटकारा पाना (रिटायरमेंट)।
अवकाशप्राप्त *वि.* {सं.} जो अवकाशग्रहण कर चुका हो।
अवकीर्ण *वि.* {सं.} फैला, बिखरा या छितराया हुआ; तोड़-फोड़कर नष्ट किया हुआ।
अवकीर्णी *वि.* {सं.} अनुचित रूप से वीर्यक्षय करनेवाला पुरुष।
अवकेशी *पुं.* {सं.} बिना फल-फूलवाला वृक्ष।
अवक्र *वि.* {सं.} जो टेढ़ा न हो।
अवक्रम *पुं.* {सं.} क्रम का उल्लंघन, बारी लाँघकर किसी को ऊँचा करना।
अवक्रय *पुं.* {सं.} किसी वस्तु के बदले में दिया जानेवाला धन, निष्क्रय (कम्पेंसेशन); मूल्य, दाम (प्राइस)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवक्रांत *वि.* {सं.} (संस्था या संघ) जिसे वरिष्ट शक्ति या अधिकार के द्वारा हटा या दबाकर अपने अधिकार में ले लिया गया हो, जैसे अवक्रांत नगरपालिका (सुपरसीडेड)।

अवक्षय *पुं.* {सं.} सड़-गलकर या जीर्ण होने के कारण क्षीण होना (डिकेडेंस); घिसना।

अवगत *वि.* {सं.} विदित, ज्ञात, जाना हुआ, मालूम; नीचे आया हुआ गिरा हुआ।

अवगति *स्त्री.* {सं.} 'अवगत' होने की क्रिया या भाव, जानकारी; बुद्धि, धारणा, समझ; 'सद्‌गति' का उलटा, बुरी गति; जान लेना।

अवगलित *वि.* {सं.} नीचे गिरा या टपका हुआ।

अवगाधना *स.* अवगाहना।

अवगाह *वि.* {सं. अवगाध} अथाह, बहुत गहरा; अनहोना; कठिन; *पुं.* गहरा स्थान; संकट का स्थान; कठिनाई।

अवगाहन *पुं.* {सं.} नदी, तालाब आदि में पैठकर नहाना; प्रवेश पैठ; आलोड़न, मंथन; खोज, छानबीन; मन लगाकर विचार करना या सोचना।

अवगाहना *अ.* {सं. अवगाहन} तालाब, नदी आदि में पैठकर नहाना; पैठना, घुसना, धँसना; मगन या प्रसन्न होना; *स.* किसी विषय या बात की छानबीन करना; धारण या ग्रहण करना; (कोई बात) सोचना।

अवगीत *वि.* {सं.} निंदित, गलत स्वर में गाया गया।

अवगुंठन *पुं.* {सं.} {*वि.* अवगुंठित} ढकना, छिपाना; रेखा से घेरना; घूँघट।

अवगुंफन *पुं.* {सं.} {*वि.* अवगुंफित} गूँथना, पिरोना।

अवगुण *पुं.* {सं.} 'गुण' का विरोधी भाव; कोई खराब बात या बुरा गुण, दोष, ऐब, बुराई, खोटाई (वाइस)।

अवगुन *पुं.* दोष, औगुन।

अवग्रह *पुं.* {सं.} रुकावट, अड़चन, बाधा; वर्षों का अभाव, अनावृष्टि, सूखा; बाँध; समस्त पदों का संधिविच्छेद (व्या.); 'अनुग्रह' का उलटा भाव; शाप, कोसना।

अवघट *स्त्री.* {सं. अव + घट्ट = घट} विकट, दुर्गम; मुश्किल, कठिन।

अवघट्ट *पुं.* {सं.} बिल, माँद, चक्की।

अवचट *स्त्री., क्रि. वि.* औचट।

अवचनीय *वि.* {सं.} जो न कहा जा सके, जो निंदनीय न हो।

अवचय *पुं.* {सं.} फल-फूल आदि तोड़ या चुनकर इकट्ठा करना।

अवचेतन *वि.* {सं.} जिसे या जिसमें ठीक या पूरी चेतना न हो।

अवचेतन मन *पुं.* {सं.} मन की तंद्रा की-सी दशा में रहनेवाला चेतन पक्ष जिसमें अनुभूतियों, कल्पनाओं, वासनाओं आदि की कुछ अस्पष्ट-सी चेतना बनी रहती है।

अवचेतना *स्त्री.* {सं.} चेतना की वह सुप्त अवस्था जिसमें किसी वस्तु का स्पष्ट ज्ञान नहीं होता, अर्द्धचेतना।

अवच्छिन्न *वि.* {सं.} अलग किया हुआ, पृथक्; विशिष्ट (न्याय शास्त्र)।

अवच्छेद *पुं.* {सं.} {*वि.* अवच्छेद्य, अविच्छिन्न, कर्ता अवच्छेदक} अलगाव, पार्थक्य; भेद, अंतर; हद, सीमा; अवधारण; छानबीन; (ग्रंथ का) परिच्छेद, प्रकरण।

अवजात *वि.* {सं.} नीच कुल में उत्पन्न।

अवज्ञा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* अवज्ञात, अवज्ञेय} किसी के प्रति उचित मान या आदर का अभाव, अनादर; आज्ञा या बात न मानना, अवहेलना (डिस्ओबीडिएंस); साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक वस्तु के गुण या दोष का दूसरी वस्तु पर प्रभाव न पड़ने का वर्णन होता है।

अवज्ञात *वि.* {सं.} {*संज्ञा* अवज्ञा} जिसकी अवज्ञा, अपमान या अनादर किया गया हो; अपमानित; (आज्ञा) जिसका उल्लंघन किया गया हो; हारा हुआ, पराजित।

अवज्ञेय *वि.* {सं.} अवज्ञा, अपमान या अनादर करने के योग्य; (आज्ञा या कथन) उल्लंघन करने के योग्य, न मानने योग्य; जो अनादर का विषय हो।

अवट *स्त्री.* अवढी-गढ़ा, गहरा गड्ढा।

अवटना *स.* {सं. आवर्तन} मथना, आलोड़न करना; किसी द्रव पदार्थ को आग पर चढ़ाकर गाढ़ा करना; *अ.* घूमना, फिरना।

अवडेरना *स.* {हिं. अवडेर} झंझट या झगड़े में डालना या फँसाना; तंग, परेशान या दिक करना।

अवडेरा *वि.* {हिं. अवडेर} जिसमें घुमाव-फिराव हो, चक्करदार, पेचीला; जिसमें बहुत झगड़ा-बखेड़ा या झंझट हो; विकट; बेढंगा; बेढब।

अवढर *वि.* {हिं. अव + ढलना} अकारण ही प्रसन्न या अनुरक्त होनेवाला; औढर।

अवतंस *पुं* {सं.} {*वि.* अवतंसित} भूषण, अलंकार; शिरोभूषण, शिरोमणि; मुकुट; श्रेष्ठ व्यक्ति, उत्तम पुरुष; माला, हार; कान की बाली; करनफूल; दूल्हा।

अवतंसक *पुं* {सं.} शृंगार-साधन, भूषित करनेवाला।

अवतंसित *वि.* {सं.} भूषित, जो भूषण पहने हो।

अवतप्त *वि.* {सं.} तपा हुआ, गर्म।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवतरण पुं. {सं.} {*वि.* अवतीर्ण} वायुयान का आकाश से धरती पर उतरना; पार होना; घटना, कम होना; जन्म ग्रहण करना; सीढ़ी; घाट; किसी की कही या लिखी हुई वह बात जो कहीं ज्यों-की-त्यों लाकर प्रमाण, विचार आदि के लिए सामने रखी गई हो, उद्धरण, प्रोक्ति।

अवतरण-चिह्न पुं. {सं.} उलटे हुए अल्पविराम चिह्न जिनके बीच किसी का कथन उद्धृत रहता है, जैसे " "।

अवतरणिका *स्त्री.* {सं.} ग्रंथ की प्रस्तावना, भूमिका; परिपाटी, रीति, प्रथा।

अवतरणी *स्त्री.* {सं.} संदर्भ से पहले सूत्ररूप में दी गईं पंक्तियाँ।

अवतरना *अ.* {सं. अवतरण} प्रकट होना, उपजना; उतरना।

अवतरित *वि.* {सं.} ऊपर से नीचे उतरा हुआ; किसी दूसरे स्थान से लिया हुआ, उद्धृत; जिसने अवतार धारण किया हो।

अवतार पुं. {सं.} {*वि.* अवतीर्ण, अवतरित} उतरना, नीचे आना; घाट, सीढ़ी; जन्म होना, शरीर धारण करना; देवता का मनुष्य आदि संसारी प्राणियों के शरीर में आना (इंकारनेशन); सृष्टि।

अवतारण पुं. {सं.} {*स्त्री.* अवतारणा} उतारना, नीचे लाना; नकल करना; प्रस्तुत या उदाहृत करना।

अवतारी *वि.* {सं. अवतार} उतरनेवाला; अवतार लेनेवाला; अवतार के धर्मवाला; जिसमें ईश्वर या देवता का अंश हो या माना जाता हो, अलौकिक काम करनेवाला; अलौकिक शक्ति वाला।

अवतीर्ण *वि.* {सं.} ऊपर से नीचे आया हुआ, उतरा हुआ; जिसने अवतार धारण किया हो, अवतरित; उत्तीर्ण।

अवदात *वि.* {सं.} उज्ज्वल, सफेद; स्वच्छ, निर्मल, साफ।

अवदान पुं. {सं.} {*वि.* अवदान्य} शुद्ध आचरण, अच्छा काम; खंडन, तोड़ना; शक्ति, बल; अतिक्रमण, उल्लंघन; स्तुति; महान कार्य; आख्यान।

अवदान्य *वि.* {सं.} बलवान और वीर, पराक्रमी; जिसमें उदारता न हो।

अवदीर्ण *वि.* {सं.} नष्ट-भ्रष्ट; दुखी और चिंतित; चीरा गया, फटा हुआ।

अवद्य *वि.* {सं.} निकृष्ट, बुरा; नीच, अधम; निंदनीय।

अवध पुं. {सं. अयोध्या} कोशल देश; अयोध्या नगरी; *स्त्री.* अवधि।

अवधान पुं. {सं.} मन एकाग्र करके किसी ओर लगाना, ध्यान देना, मनोयोग; सावधानी, चौकसी; किसी कार्य या वस्तु की देख-रेख (केयर)।

अवधारणा पुं. {सं.} {*वि.* अवधारित, अवधाारणीय} अच्छी तरह विचार करके कोई निश्चय करना (डिटरमिनेशन); अच्छी तरह विचार करके कोई परिणाम निकालना (फाइंडिंग); विचार बनाना, मन्तव्य।

अवधारना *स.* {सं. अवधारण} धारण करना, ग्रहण करना।

अवधारक *वि.* {सं.} अवधारणा करनेवाला।

अवधार्य *वि.* {सं.} अवधारण के योग्य।

अवधि *स्त्री.* {सं.} सीमा, हद; किसी एक नियत समय से दूसरे नियत समय तक के बीच का काल (पीरियड); वह नियत या निश्चित समय जिसके पहले कोई काम होना आवश्यक हो, मियाद (लिमिटेशन)।

मुहा. अवधि बढ़ना = यह कहना कि हम यह काम इतने समय के अंदर कर लेंगे।

किसी पद या कार्य के एक बार आरंभ होने से अंत होने तक का समय (टर्म)।

निपा. तक, पर्यंत।

अवधि-बाधित *वि.* {सं.} (अधिकार, व्यवहार आदि) जिसकी अवधि बीत चुकी हो और इसीलिए जिसका विचार, प्रयोग या उपयोग न हो सकता हो (वार्ड बाई लिमिटेशन)।

अवधी *वि.* {सं. अयोध्या} अवध-संबंधी, अवध का; *स्त्री.* अवध की बोली।

अवधीरण पुं. {सं.} तिरस्कार करना, अवहेलना।

अवधू पुं. = अवधूत।

अवधूत पुं. {सं.} {*स्त्री.* अवधूतिन} संन्यासी, साधु, योगी; कंपित, हिलाया हुआ।

अवन *स्त्री.* = अवनि (पृथ्वी); रक्षा करना।

अवनत *वि.* {सं.} नीचा, झुका हुआ; गिरा हुआ, पतित; कम।

अवनति *स्त्री.* {सं.} घटती, कमी, न्यूनता; अधोगति, हीनदशा; झुकाव; नम्रता।

अवनमन पुं. {सं.} नतमस्तक होना; नीचे की ओर आना।

अवनि *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी, जमीन; आगमन।

अवनींद्र पुं. {सं.} राजा।

अवनीश्वर पुं. {सं.} {*स्त्री.* अवनीश्वरी} राजा, महीप।

अवपात पुं. {सं.} गिराव, पतन; गड्ढा; नाटक के अंक की वह समाप्ति जिसमें लोग डर या घबराकर भागते हुए दिखाई देते हैं।

अवबोध पुं. {सं.} जागना; ज्ञान, बोध।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवबोधक *वि.* {सं.} जगानेवाला, समझानेवाला।
अवबोधन *पुं.* {सं.} समझाना, ज्ञान कराना, जगाना।
अवभृथ *पुं.* {सं.} वह शेष कर्म जिसके करने का विधान मुख्य यज्ञ के समाप्त होने पर हो; यज्ञ की समाप्ति पर होनेवाला स्नान।
अवमत *वि.* {सं.} अपमानित, उपेक्षित।
अवमति *स्त्री.* {सं.} अपमान, अपमान करना, उपेक्षा।
अवमर्दन *पुं.* {सं.} {*वि.* अवमर्दित} कष्ट पहुँचाना; कुचलना, रौंदना या दलना; दबाना, मसलना।
अवमान *पुं.* {सं.} {*वि.* अवमानित} किसी के मान का पूरा ध्यान न रखना, जितना चाहिए उतना मान न करना (कंटेम्प्ट)।
अवमानना *स्त्री.* अवमान; *स.* किसी का अपमान करना।
अवमूल्यन *पुं.* {सं. अव + मूल्य} गिरावट; एक देश की मुद्रा के मूल्य में अन्य देशों की मुद्राओं के मूल्य की तुलना में होनेवाली कमी।
अवमोचन *पुं.* {सं.} खोलना, मुक्त करना, गाँठ खोलना।
अवयव *पुं.* {सं.} {*वि.* अवयवी} अंश, भाग, हिस्सा; शरीर का अंग। (ऑर्गन); तर्कपूर्ण वाक्य का कोई अंश या भेद (न्याय)।
अवयस्क *वि.* {सं.} जिसने विधि की दृष्टि में पूर्ण वय न प्राप्त किया हो, जो अभी वयस्क न हुआ हो, नाबालिग (माइनर)।
अवर[1] *वि.* {सं. अ + वर} जो ऊँचा या बड़ा न हो, बल्कि किसी की अपेक्षा कुछ नीचा या छोटा हो, 'वर' का विपर्याय। (इन्फीरियर); अधम; पद में छोटा, जूनियर।
अवर[2] *वि.* {सं. अपर} अन्य, दूसरा; और; *यो.* और।
अवरज *वि.* {सं.} छोटा भाई, अंतिम वर्ण (शूद्र) से जन्म।
अवरत *वि.* = विरत; *पुं.* = आवर्त्त।
अवराधना *स.* = आराधना करना।
अवरुद्ध *वि.* {सं.} रुँधा या रुका हुआ; चारों ओर से घेरकर बंद किया हुआ (इंपाउंडेड); छिपा हुआ, गुप्त।
अवरेखना *स.* {सं. अवलेखन} उरेहना, लिखना, चित्रित करना; देखना; अनुमान करना, कल्पना करना, सोचना; मानना; जानना।
अवरेब *पुं.* औरेब।
अवरोध *पुं.* {सं.} चारों ओर से घेरने की क्रिया या भाव, घेरा; काम या मार्ग में खड़ी की जानेवाली अड़चन, रुकावट, रोक; मुँह या रास्ता बंद करना, निरोध, काट, अन्तःपुर, रनिवास।
अवरोधन *पुं.* {सं.} {*वि.* अवरोधक, अवरुद्ध, अवरोधित} चारों ओर से घेरकर रोकना; इस प्रकार घेरकर रोकना कि इधर-उधर न हो सके (इंपाउंडिंग); अन्तःपुर।
अवरोधित *वि.* = अवरुद्ध।
अवरोधी *वि.* = अवरोधक; बाधा डालने वाला, अन्तःपुर से संबद्ध, अन्तःपुर का पहरेदार; उखाड़ना, उतारना।
अवरोपण *पुं.* {सं.} {*वि.* अवरोपित} किसी को, उस पर लगे हुए आरोप या अभियोग से न्यायालय का यह समझकर मुक्त करना कि उसने जो कुछ किया है, वह अपराध नहीं माना जा सकता (डिस्चार्ज)।
अवरोपित *वि.* {सं.} लगे हुए आरोप या अभियोग से मुक्त किया हुआ। उखाड़ा गया (डिस्चार्ज्ड)।
अवरोह (ण) *पुं.* {सं.} {*वि.* अवरोहक, अवरोहित} ऊपर से नीचे की ओर आना, उतार की ओर चलना, 'आरोह' का उलटा, उतार; गिरावट, अधःपतन; अवनति।
अवरोहना[1] *अ.* {सं. अवरोहण} उतरना, नीचे आना।
अवरोहना[2] *स.* {हिं. उरेहना} खींचना, अंकित करना, चित्रित करना।
अवरोहना[3] *स.* {सं. अवरोधन} रोकना।
अवरोही *वि.* {सं. अवरोहिन्} ऊपर से नीचे की ओर आनेवाला; जो क्रम के विचार से उतार की ओर हो, जैसे अवरोही स्वर-साधन = (संगीत में) निषाद से क्रमशः षड़ज तक के स्वरों का उच्चारण; षड़ज से क्रमशः निपाद तक का स्वर-साधन 'आरोही' कहलाता है।
अवर्ण *वि.* {सं.} वर्णरहित, बिना रंग का; बदरंग, बुरे रंग का; वर्णधर्म से रहित; निंदा, अपयश।
अवर्ण्य *वि.* {सं.} जिसका वर्णन न हो सके; जो वर्णन करने योग्य न हो (कुत्सित अश्लील)।
अवर्त्त *पुं.* = आवर्त्त।
अवर्षण *पुं.* {सं.} वर्षा न होना, अनावृष्टि।
अवलंघन *पुं.* = उल्लंघन।
अवलंब *पुं.* {सं.} आश्रय, सहारा।
अवलंबन *पुं.* {सं.} {*वि.* अवलंबनीय, अवलंबित, अवलंबी} आश्रय, आधार, सहारा; धारण, ग्रहण; सहारा लेना।
अवलंबना *स.* {सं. अवलंबन} अवलंबन करना, आश्रय लेना, टिकना; धारण करना।
अवलंबित *वि.* {सं.} किसी के आधार या सहारे पर ठहरा या टिका हुआ; जो किसी दूसरी बात के होने पर ही हो; कुछ समय के लिए स्थगित; टंगा या लटका हुआ (डिपेंडेड)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवलंबी *वि.* {सं. अवलंबिन्} {*स्त्री.* अवलंबिनी} अवलंबन करनेवाला, सहारा लेनेवाला; सहारा देनेवाला।

अवलग्न *वि.* अटका या उलझा, *पुं.* {सं.} कटिभाग।

अवलिप्त *वि.* {सं.} घमंडी; पुता हुआ।

अवली *स्त्री.* {सं. अवलि} पंक्ति, श्रेणी; समूह, झुंड; अन्न के वे डँठल या बालें जो नवान्न करने के लिए खेत से पहले-पहल काटी जाती हैं।

अवलीढ *वि.* {सं.} खाया गया, नोचा गया।

अवलेखना *स.* {सं. अवलेखन} खोदना; खुरचना; चिह्न या निशान लगाना।

अवलेखनी *स्त्री.* {सं.} चित्र बनाने की कूची या ब्रश।

अवलिप्त *वि.* {सं.} घमंडी, लिपा-पुता।

अवलेप *पुं.* = उबटन।

अवलेपन *पुं.* {सं.} लेप के रूप में किसी चीज पर लगाना, पोतना; वह वस्तु जो पोती या लगाई जाए, लेप; अभिमान, घमंड।

अवलेह *पुं.* {सं.} {*वि.* अवलेह्य} लेई जो न अधिक गाढ़ी हो न अधिक पतली हो; चटनी, माजूम; वह ओषधि जो चाटी जाए।

अवलेहन *पुं.* {सं.} चाटना; चाटने योग्य वस्तु।

अवलोक *पुं.* {सं.} देखना, निरीक्षण।

अवलोकन *पुं.* {सं.} देखना; अच्छी तरह या जाँच-पड़ताल करने के लिए देखना (पेरुज़ल)।

अवलोकनि *स्त्री.* {सं. अवलोकन} आँख, दृष्टि।

अवलोकनीय *वि.* {सं.} अवलोकन करने या देखने के योग्य; बहुत सुंदर या अच्छा।

अवलोकितेश्वर *पुं.* {सं.} एक बोधिसत्व; एक अवतार।

अवलोचना *स.* {सं. आलुंचन} कहीं से हटाना या दूर करना।

अवलोप *पुं.* {सं.} काट कर फेंकना, अलग करना।

अवश *वि.* {सं.} {*भाव.* अवशता} विवश, लाचार; जो अपने वश में न हो।

अवशिष्ट *वि.* {सं.} {संज्ञा अवशेष} (कार्य या धन) बाकी बचा हुआ, शेष (एरियर)।

अवशीर्ण *वि.* {सं.} झड़ा हुआ, फटा हुआ, कट कर बिखरा।

अवशेष *वि.* {सं.} बचा हुआ, शेष, बाकी; समाप्त; नष्ट होने, खाने या छिनने से बचा; *पुं.* {सं.} {*वि.* अवशिष्ट} बची हुई वस्तु, कार्य, धन आदि (एरियर्स); अंत, समाप्ति।

अवश्यंभावी *वि.* {सं. अवश्यंभाविन्} जो अवश्य होकर रहे, टले नहीं, अटल, ध्रुव; जिसे किसी प्रकार हटा, छोड़ या टाल न सकें, अनिवार्य (इनेविटेबुल)।

अवश्य *क्रि. वि.* {सं.} निश्चित रूप से, निस्संदेह, जरूर; *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अवश्या} जो वश में न आ सके; जो वश में न हो।

अवसन्न *वि.* {सं.} {*भाव.* अवसन्नता} जिसे विषाद हो, दुखी; नष्ट होनेवाला; सुस्त, उदास।

अवसर *पुं.* {सं.} समय, काल; ऐसा समय या परिस्थिति जिसमें कोई कार्य या उद्देश्य सहज में, जल्दी या सुविधा से हो सके (अपरचुनिटी); ऐसा कोई विशिष्ट समय जब कोई विशेष घटना हुई हो अथवा कोई अभीष्ट कार्य किया जा सकता हो (अकेजन)।

मुहा. अवसर चूकना = मौका हाथ से जाने देना।

अवकाश, फुरसत; साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी घटना का ठीक या अपेक्षित समय पर घटित होने का वर्णन होता है।

अवसरवादी(दिन्) *वि.* {सं.} {*भाव.* अवसरवादिता} अवसरवाद-संबंधी; अपने लाभ के लिए सदा उपयुक्त अवसर की ताक में रहनेवाला (अपरच्युनिस्ट)।

अवसर्पिणी *स्त्री.* {सं.} जैन शास्त्रानुसार पतन का समय विशेषत: जिसमें रूप, गंध आदि का क्रमश: ह्रास होता है; नीचे की ओर फैलनेवाली।

अवसाद *पुं.* {सं.} {*वि.* अवसादित, अवसन्न} नाश, क्षय; विषाद, खेद, रंज; दीनता; आशा या उत्साह का अभाव; थकावट; कमजोरी; घिसना; सड़ना।

अवसादन *पुं.* {सं.} क्षीण होना या करना; दु:खी होना या सताना।

अवसान *पुं.* {सं.} विराम, ठहराव; समाप्ति, अंत (डिस्सोल्यूशन); सीमा; सायंकाल; मरण, मृत्यु।

अवसायी *वि.* {सं.} समाप्त होनेवाला; यह समस्तपद के अंत में आता है; जैसे-दिनावसायी।

अवसि *क्रि. वि.* = अवश्य।

अवसित *वि.* {सं.} जिसका अवसान या अंत हुआ हो, समाप्त; बीता हुआ गत; बदला हुआ।

अवसेख *वि.* = अवशेष।

अवसेचन *पुं.* {सं.} सींचना, पानी देना; वह क्रिया जिसके द्वारा रोगी के शरीर से पसीना या रक्त निकाला जाए (वैद्य)।

अवसेर *स्त्री.* {सं. अवसर} अटकाव, उलझन; देर, विलंब; चिंता; व्यग्रता; प्रिय के विरह या प्रतीक्षा में होनेवाली विकलता।

अवस्था *स्त्री.* {सं.} किसी विषय, बात या घटना की कोई विशेष स्थिति, दशा, हालत (केस);

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय, काल; आयु, उम्र; स्थिति, दशा, जैसे जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय आदि।

अवस्थान पुं. {सं.} स्थान, जगह, अड्डा, टिकना; ठहराने की क्रिया या भाव, ठहराव; स्थिति; उन्नति या विकास के क्रम में कुछ समय तक रुकने या ठहरने का स्थान अथवा श्रेणी (स्टेज); वह परिमित और निश्चित स्थान, बात या स्थिति जिस पर कोई बात पूरी तरह से अवलंबित या आश्रित हो, केन्द्रबिन्दु (पॉइन्ट); रेलगाड़ी के नियमित रूप से ठहरने का स्थान (स्टेशन); वह स्थान जहाँ पुलिस, सेना आदि के लोग रहते हों (स्टेशन); सम्पत्ति पर किसी व्यक्ति के स्वत्व की मात्रा, प्रकार या विस्तार (एस्टेट)।

अवस्थापन पुं. {सं.} टिकाना, ठहराना, प्रतिष्ठित करना, रखना।

अवस्थित *वि.* {सं.} उपस्थित, मौजूद; ठहरा हुआ; टिका हुआ, टिकना।

अवस्थिति *स्त्री.* {सं.} वर्तमानता, मौजूदगी; स्थिति, सत्ता।

अवहद *स्त्री.* {सं. अपभ्रष्ट} हिंदी का प्राचीनतम रूप।

अवहित *वि.* {सं.} सावधान, ध्यान दिये हुए, मन लगाये।

अवहित्था *स्त्री.* {सं.} मन का भाव छिपाना, दुराव; एक व्यभिचारी भाव (साहित्य)।

अवहेलना[1] *स्त्री.* {सं.} {*वि.* अवहेलित} अवज्ञा, तिरस्कार; उचित या आवश्यक ध्यान न देना, बेपरवाही (डिस्‌रिगार्ड)।

अवहलेना[2] *स.* {सं. अवहेलन} तिरस्कार करना, अवज्ञा करना।

अवहेला *स्त्री.* अवहेलना।

अवहेलित *वि.* {सं.} जिसकी अवहेलना या अवज्ञा हुई हो, उपेक्षित।

अवाँ पुं. भाड़।

अवांछनीय *वि.* {सं. अ + वांछनीय} जिसका होना अभीष्ट न हो, जिसके होने की इच्छा न की जाए; अनुचित, बुरा; न चाहने योग्य।

अवांछित *वि.* {सं.} जिसकी वांछा या इच्छा न की गई हो; अवांछनीय।

अवांतर *वि.* {सं.} किसी के अंतर्गत या बीच में होनेवाला, जैसे इस कथा में एक अवांतर कथा भी है।

अवांतर दिशा *स्त्री.* {सं.} दो दिशाओं के बीच की दिशा, विदिशा; मध्यवर्ती; जैसे उत्तर और पूर्व के बीच ईशान।

अवांतर भेद पुं. {सं.} किसी भेद या विभाग के अंतर्गत दूसरे छोटे भेद या विभाग।

अवाँसना *स.* {सं. वासन} पहले-पहल काम में लाना।

अवाइ *स्त्री.* {हिं. आना} आने की क्रिया या भाव, आगमन, आना।

अवाक् *वि.* {सं. अवाच्} चुप, मौन; स्तम्भित, चकित, विस्मित।

अवाङ्मुख *वि.* {सं.} जिसका मुँह या सिर नीचे की ओर हो; उलटा या औंधाया हुआ; मुँह लटकाये।

अवाची *स्त्री.* {सं.} दक्षिण दिशा।

अवाच्य *वि.* {सं.} जो कहने योग्य न हो, अकथ्य; अपशब्द; जिससे बात करना उचित न हो, नीच; पुं. {सं.} कुवाच्य, गाली।

अवाज *स्त्री.* = आवाज।

अवात *वि.* {सं.} ऐसा स्थान जहाँ हवा न जाये।

अवान पुं. {सं.} साँस लेना, साँस अंदर को खींचना।

अवाप्त *वि.* {सं.} जिस पर अधिकारपूर्वक कुछ देन लगाया गया हो और वह देन उचित प्राप्य के रूप में उगाहा जा सके (लेवीड); पाया हुआ, हाथ लगा।

अवाप्ति *स्त्री.* {सं.} अधिकारपूर्वक कर, शुल्क, आदाय आदि के रूप में लगाना, लेना या उगाहना; अधिकारपूर्वक लोगों को बुलाकर उन्हें सेना के रूप में रखना या उनकी सेना खड़ी करना (लेवी); पाना, हाथ में आना।

अवाप्य *वि.* {सं.} अधिकारपूर्वक कर, शुल्क आदि के रूप में लेने के योग्य, जिसके संबंध में अधिकारपूर्वक धन, कर आदि लिया जा सके (लेविएबुल); प्राप्त करने योग्य।

अवार पुं. {सं.} नदी के इस ओर का भाग या तट जिधर वक्ता हो, 'पार' का उलटा।

अवारजा पुं. {फा.} वह बही जिसमें असामी की जोत आदि का लेखा रहता है; आय, व्यय आदि लिखने की बही।

अवारना *स.* {सं. वारण} रोकना, मना करना; वारना।

अवारा *वि.* आवारा।

अवारित *वि.* {सं.} न रोका गया, बेरोकटोक।

अवारी[1] *स्त्री.* {सं. अवार} किनारा, सिरा।

अवारी[2] *स्त्री.* {हिं. बार = द्वार} विवर, छेद।

अवार्य *वि.* {सं.} न रोकने योग्य।

अवास पुं. आवास।

अवाससू *वि.* {सं.} अवासा, वस्त्ररहित, नग्न।

अवास्तव *वि.* {सं.} जो यथार्थ न हो।

अवाहन *वि.* {सं.} सवारी के बिना; अ + वाहन, विष्णु की सवारी, गरुड़।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविकच *वि.* {सं. अ + विकच} बिना खिला हुआ; जो सफल न हुआ हो।

अविकट *वि.* {सं.} जो कठिन, दुर्गम या भयंकर न हो।

अविकत्थ *वि.* {सं.} जो डींग न मारता हो।

अविकल *वि.* {सं.} ज्यों-का-त्यों, बिना उलट-फेर का; पूर्ण, पूरा; निश्चल, शांत; ज्यों-का-त्यों किसी का लिया हुआ (कथन आदि); (वरबेटिम)।

अविकल्प *वि.* {सं.} जिसमें कुछ हेर-फेर न हो सके, निश्चित (एब्सोल्यूट); अंतिम रूप से कहा या किया हुआ (फाइनल); जिसमें कुछ भी संदेह न हो, असंदिग्ध।

अविकार *वि.* {सं.} विकाररहित, निर्दोष; जिसका रूप-रंग न बदले; ज्यों-का-त्यों; *पुं.* {सं.} विकार का अभाव।

अविकारी *वि.* {सं.} जिसमें किसी प्रकार का विकार न हो या न होता हो; जैसे आत्मा; *पुं.* व्याकरण में ऐसा शब्द, जिसके रूप में कभी विकार नहीं होता, जैसे बहुधा, प्रायः, अतः आदि।

अविकृत *वि.* {सं.} जो बिगड़ा या बदला न हो; जिसमें कोई खराबी न आई हो।

अविगत *वि.* {सं.} अज्ञात, अज्ञेय।

अविचल *वि.* अचल; अडिग, जो हिले-डुले नहीं।

अविचार *पुं.* {सं.} {कर्ता अविचारी} विचार का अभाव; अज्ञान, अविवेक; अन्याय, अत्याचार; बुरा खयाल।

अविच्छिन्न *वि.* {सं.} अटूट, लगातार चलनेवाला।

अविच्छेद *पुं.* {सं.} विच्छेद का अभाव, विच्छिन्न या अलग न होना, एक में मिला होना।

अविजेय *वि.* {सं.} जो जीता न जा सके, अजेय।

अविद्यमान *वि.* {सं.} जो विद्यमान या उपस्थित न हो, अनुपस्थित (ऐब्सेंट); असत्य, मिथ्या।

अविद्या *स्त्री.* {सं.} विरुद्ध या मिथ्या ज्ञान, अज्ञान, मोह; माया का एक भेद; कर्मकांड; सांख्य के अनुसार प्रकृति, जड़ पदार्थ।

अविनय *पुं.* {सं.} विनय का अभाव, ढिठाई, उद्दंडता; आचार का उल्लंघन।

अविनश्वर *वि.* {सं.} जिसका नाश न हो, जो बिगड़े नहीं, अक्षय, चिरस्थायी।

अविनाशी *वि.* अविनश्वर।

अविनीत *वि.* {सं.} ढीठ, उद्दंड, अक्खड़।

अविभक्त *वि.* {सं.} जिसके टुकड़े न हुए हों, पूर्ण; जो हटे नहीं।

अविरत *वि.* {सं.} {*भाव.* अविरति} विरामशून्य, निरंतर होता या चलता रहनेवाला (कांस्टेंट); *क्रि. वि.* {सं.} निरंतर, लगातार; नित्य, हमेशा, सदा।

अविराम *पुं.* {सं.} न रुकना, *क्रि. वि.* बिना रुके।

अविलंब *क्रि. वि.* {सं.} बिना विलंब के, तुरंत, तत्काल, फौरन; उसी समय।

अविवाहित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अविवाहिता} जिसका ब्याह न हुआ हो, कुँआरा या कुँआरी।

अविवेक *पुं.* {सं.} विवेक का अभाव, अविचार; अज्ञान, नादानी; अन्याय; उचित-अनुचित का विचार करने की शक्ति न होना; *वि.* {सं.} जिसे विवेक न हो, जो विवेकपूर्वक काम न करता हो।

अविवेकता *स्त्री.* {सं.} विवेकहीन होना।

अविवेकी *वि.* {सं. अविवेकिन्} विवेकहीन, जिसे विवेक न हो, जो विवेकपूर्ण काम न करता हो।

अविश्रांत *वि.* {सं.} जो रुके नहीं; जो थके नहीं; जो विश्राम न ले।

अविश्वसनीय *वि.* {सं.} जिस पर विश्वास न किया जा सके।

अविश्वस्त *वि.* {सं.} अविश्वसनीय; जिस पर भरोसा न हो।

अविश्वास *पुं.* {सं.} विश्वास का अभाव, बेएतबारी; अनिश्चय; भरोसा न करना।

अविशंक *वि.* {सं.} निडर, शंकाहीन।

अविस्तार *पुं.* {सं.} न फैलाना।

अविसह्य *वि.* {सं.} न सहने लायक।

अवेक्षण *पुं.* {सं.} {*वि.* अवेक्षित, अवेक्षणीय} अवलोकन, देखना; जाँच-पड़ताल, देखभाल।

अवेक्षणीय *वि.* {सं.} (ऐसा अपराध) जिस पर विधि के अनुसार अधिकारियों को ध्यान देना आवश्यक हो (काग्निज़ेबुल); निगरानी के योग्य।

अवेक्षा *स्त्री.* {सं.} अवेक्षण; किसी दोष या अपराध आदि की ओर न्यायालय या अधिकारी का इस प्रकार ध्यान जाना कि वह उसके संबंध में कुछ उचित कार्य या उसका प्रतिकार करे (काग्निज़ेन्स); विशेष रूप से ध्यान देना।

अवैज्ञानिक *वि.* {सं.} जो विज्ञान के सिद्धांतों के विरुद्ध हो।

अवैतनिक *वि.* {सं.} बिना वेतन या तनख्वाह के काम करनेवाला (ऑनरेरी)।

अवैध *वि.* {सं.} विधि, कानून आदि के विरुद्ध, नियमविरुद्ध, जैसे अवैध अनुतोषण। (इल्लीगल); अवैधानिक।

अवैधाचरण *पुं.* {सं.} विधिक दृष्टि से अवैध (फलतः दंडनीय) आचरण।

अवैधानिक *वि.* {सं.} जो विधान या संविधान के नियमों के विरुद्ध हो; (अनकान्सिट्यूशनल)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अव्यक्त *वि.* {सं.} {*भाव.* अव्यक्तता, अव्यक्ति} जो प्रकट या जाहिर न हो, अप्रत्यक्ष, अगोचर; अज्ञात; अनिर्वचनीय; जिसका कोई रूप न हो; *पुं* {सं.} विष्णु; कामदेव; शिव; प्रकृति (सांख्य); सूक्ष्म शरीर और सुषुप्ति अवस्था; ब्रह्म; बीजगणित में वह राशि जिसका मान अज्ञात हो; जीव।

अव्यय *वि.* {सं.} जिसमें विकार न हो, सदा एक रस रहनेवाला; आदि अंत से रहित, अक्षय; नित्य; खर्च न करना; *पुं* {सं.} व्याकरण में वह शब्द जिसका सब लिंगों, विभक्तियों और वचनों में समान रूप से प्रयोग हो; परब्रह्म; शिव; विष्णु।

अव्ययीभाव *पुं* {सं.} बिल्कुल खर्च न होना; अव्यय निर्विकार बन जाना; एक समास जिससे समस्त शब्द अव्यय बन जाता है, जैसे–यथाशक्ति।

अव्यर्थ *वि.* {सं.} {*भाव.* अव्यर्थता} जो व्यर्थ न हो, सफल; सार्थक; अमोघ, न चूकनेवाला; अवश्य असर करनेवाला।

अव्यवस्था *स्त्री.* {सं.} {*वि.* अव्यवस्थित} व्यवस्था, मर्यादा, क्रम आदि का ऐसा अभाव जो किसी के ठीक तरह से कर्तव्य पूरा न करने के कारण हो; ऐसी स्थिति जिसमें मर्यादा का पालन न हो; शास्त्र आदि के विरुद्ध व्यवस्था; गड़बड़ी।

अव्यवस्थित *वि.* {सं.} जिसमें व्यवस्था न हो या न रह गई हो; जो ठीक या उचित दशा या स्थिति में न हो; जो ठीक क्रम से न हो; जिसके रहन-सहन का ठीक प्रबंध न हो; जिसका मन डाँवाडोल हो।

अव्यवहार्य *वि.* {सं.} जो व्यवहार में न लाया जा सके; पतित; जिससे कोई नाते-रिश्ते का व्यवहार न किया जा सके।

अव्यवहित *वि.* {सं.} जहाँ व्यवधान न हो, बिल्कुल साथ लगा।

अव्यवहृत *वि.* {सं.} जो व्यवहार में न आया हो, न फैलना; एक शास्त्रीय दोष जो लक्षण के लक्ष्य पर पूर्णरूप से न घटने के कारण उत्पन्न होता है।

अव्याख्येय *वि.* {सं.} जिसकी व्याख्या न हो सके।

अव्याप्ति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* अव्याप्त} व्याप्ति का अभाव।

अव्याहत *वि.* {सं.} सभी दृष्टियों से सही, ठीक; बेरोकटोक।

अशक्त *वि.* {सं.} {*भाव.* अशक्तता, अशक्ति} निर्बल, कमजोर; असमर्थ।

अशक्यता *स्त्री.* {सं.} अशक्य या असमर्थ होने की अवस्था या भाव।

अशन *पुं* {सं.} भोजन, आहार; खाने की क्रिया, खाना; *पुं* भारी मुसीबत पड़ना।

अशनि *पुं* {सं.} वज्र, बिजली।

अशनिपात *पुं* {सं.} वज्रपात।

अशरण *वि.* {सं.} जिसे कहीं शरण न मिले, अनाथ, निराश्रय।

अशरणशरण *वि.* {सं.} अशरण को शरण देनेवाला।

अशरीर-अशरीरिन *पुं* {सं.} कामदेव, *वि.* बिना शरीर का।

अशस्त्र *वि.* {सं.} जिसके पास कोई हथियार न हो।

अशांत *वि.* {सं.} {*भाव.* अशांति} जो शांत न हो, अस्थिर, चंचल; जिसमें शान्ति न हो।

अशांति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* अशांत} अस्थिरता, चंचलता; क्षोभ; असंतोष।

अशालीन *वि.* {सं.} जो सभ्य न हो।

अशास्त्रीय *वि.* {सं.} जो बात किसी शास्त्र के अनुकूल न हो।

अशिक्षित *वि.* {सं.} जिसने शिक्षा न पाई हो, बेपढ़ा-लिखा, अनपढ़।

अशिव *पुं* {सं.} अमंगल, बुरा; *वि.* अमंगल करनेवाला।

अशिष्ट *वि.* {सं.} {*भाव.* अशिष्टता} जो शिष्ट न हो, उजड्ड, बेहूदा।

अशुचि *वि.* {सं.} बेईमान, अपवित्र।

अशुद्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* अशुद्धता, अशुद्धि} अपवित्र, नापाक; बिना शोधा हुआ, असंस्कृत; गलत।

अशुद्धि *स्त्री.* {सं.} शुद्धि का अभाव; लिखने-पढ़ने आदि में वस्तुतः जो कुछ होना चाहिए, उसे स्थान पर होनेवाली ऐसी बात या लेख जो नहीं होना चाहिए, भूल, गलती।

अशुभ *पुं* {सं.} अमंगल, अहित; पाप, अपराध।

अशेष *वि.* {सं.} पूरा, समूचा; समाप्त, खतम; अनंत, बहुत।

अशोषित *वि.* {सं.} जिसमें से कुछ भी शेष न छोड़ा हो।

अशोक *वि.* {सं.} शोक से रहित, दुखशून्य; *पुं* एक पेड़ जिसकी पत्तियाँ आम की पत्तियों की तरह लंबी होती हैं; पारा।

अशोकवनिका, अशोकवाटिका *स्त्री.* {सं.} लंका की बगीची जहाँ सीता को रखा था।

अशौच *पुं* {सं.} {*वि.* अशुचि} अपवित्रता, अशुद्धता; हिन्दू शास्त्रानुसार वह अशुद्धि जो घर के किसी प्राणी के मरने या संतान होने पर परिवारवालों को कुछ दिनों तक माननी पड़ती है, सूतक; बेईमानी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्म पुं. {सं.} पहाड़; पत्थर; बादल।
अश्मक पुं. {सं.} दक्षिण दिशा में स्थित एक देश।
अश्मज पुं. {सं.} एक प्रकार का काला लसीला खनिज पदार्थ जो नलों आदि के जोड़ पर इसलिए लगाया जाता है कि उनमें का जल चू न सके, यह सड़कों पर अलकतरे की तरह बिछाने के भी काम आता है (एस्फाल्ट)।
अश्मरी *स्त्री.* {सं. अश्म} एक रोग जिसमें मूत्राशय के मार्ग में पत्थर के समान कण बनने तथा जमने लगते हैं।
अश्राव्य *वि.* {सं.} जो किसी के सुनने योग्य न हो; पुं. स्वगतकथन।
अश्रि-(अस्त्रि) *स्त्री.* {सं.} किनारा, कोना; धार।
अश्रीक *वि.* {सं.} शोभाहीन; दरिद्र।
अश्रु पुं. {सं.} आँसू।
अश्रुगैस *स्त्री.* {सं. अश्रु + अं. गैस} एक प्रकार की गैस जिसके लगने से चेहरा कुछ सूज जाता, आँसू बहने लगते हैं और जिसका प्रयोग प्रायः अवैध भीड़ हटाने में होता है।
अश्रुतपूर्व *वि.* {सं.} जो पहले न सुना गया हो; अद्‌भुत, विलक्षण।
अश्लिष्ट *वि.* {सं.} {*भाव.* अश्लिष्टता} जो श्लिष्ट न हो; जो जुड़ा न हो; दो अर्थ का न हो।
अश्लील *वि.* {सं.} {*भाव.* अश्लीलता} फूहड़, भद्दा; लज्जाजनक।
अश्लीलता *स्त्री.* {सं.} अश्लील होने की अवस्था या भाव; अश्लील काम, बात आदि।
अश्व पुं. {सं.} घोड़ा, तुरंग।
अश्वतर पुं. {सं.} {*स्त्री.* अश्वतरी} नागराज।
अश्वत्थ पुं. {सं.} पीपल।
अश्वत्थामा पुं. {सं. अश्वत्थामन्} वह जिसमें घोड़े की-सी शक्ति हो; द्रोणाचार्य के पुत्र का नाम।
अश्वमेध पुं. {सं.} एक बड़ा यज्ञ जिसमें घोड़े के सिर पर जयपत्र बाँधकर उसे भूमंडल में घूमने के लिए छोड़ देते थे, फिर उसको मारकर उसकी चरबी से हवन किया जाता था।
अश्वायुर्वेद पुं. {सं.} आयुर्वेद या चिकित्साशास्त्र का वह अंग जिसमें घोड़ों तथा अन्य पशुओं की चिकित्सा का वर्णन रहता है, शालिहोत्र।
अश्वारोही(हिन्) *वि.* {सं.} घोड़े का सवार।
अश्विन पुं. {सं.} एक प्राचीन वैदिक देवता।
अश्विनी *स्त्री.* {सं.} घोड़ी; 27 नक्षत्रों में से पहला नक्षत्र; सूर्य की पत्नी जिसने घोड़ी का रूप धारण किया था।
अश्विनी कुमार पुं. {सं.} त्वष्टा की पुत्री प्रभा नाम की स्त्री से उत्पन्न सूर्य के दो पुत्र जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।
अष्टक पुं. {सं.} आठ वस्तुओं का संग्रह; वह स्तोत्र या काव्य जिसमें आठ श्लोक या पद्य हों।
अष्टगुण पुं. {सं.} ब्राह्मण के आठ गुण-दया, क्षमा, अनसूया, शौच, अनायास, मंगल, कृपणता का अभाव, किसी प्रकार की इच्छा न रखना।
अष्टछाप पुं. {सं. अष्ट + हिं. छाप} गोसाईं बिट्ठलनाथ जी का निश्चित किया हुआ आठ सर्वोत्तम पुष्टिमार्गी कवियों का एक वर्ग (इन आठों कवियों के नाम से हैं–सूरदास, कुंभनदास, परमानन्ददास, कृष्णदास, छीतस्वामी, गोविंदस्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास)।
अष्टधातु *स्त्री.* {सं.} ये आठ धातुएँ–सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा और पारा।
अष्टभुज पुं. {सं.} आठ भुजाओं वाला क्षेत्र।
अष्टम *वि.* {सं.} आठवाँ; *स्त्री.* अष्टमी।
अष्टमूर्ति पुं. {सं.} शिव, पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, अग्नि, यजमान, सूर्य और चन्द्र ये शिव की आठ मूर्तियाँ कही गई हैं।
अष्टवर्ग पुं. {सं.} आठ ओषधियों का समूह जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, ऋषि और बृद्धि; राज्य के ऋषि, वस्ति, दुर्ग, सेना, हस्तिबंधन, खान, करग्रहण और सैन्य संस्थापन का समूह।
अष्टसिद्धि *स्त्री.* {सं.} योग से प्राप्त होनेवाली ये आठ सिद्धियाँ-अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व।
अष्टांग पुं. {सं.} {*वि.* अष्टांगी} किसी वस्तु के आठ अंग, जैसे योग के यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि; आयुर्वेद के शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्य, अगदतंत्र, रसायनतंत्र और बाजीकरण; शरीर के जानु, पद, हाथ, उर, सिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि जिनसे प्रणाम करने का विधान है; *वि.* {सं.} आठ अवयवों वाला; अठपहला।
अष्टादश पुं. {सं.} अठारह की संख्या।
अष्टावक्र पुं. {सं.} एक ऋषि; टेढ़े-मेढ़े अंगोंवाला मनुष्य।
असंख्य *वि.* {सं.} अनगिनत, बेशुमार।
असंख्येय *वि.* {सं.} जिनकी गिनती न हो सके।
असंगत *वि.* {सं.} जो संगत या संबद्ध न हो, जो आगे-पीछे की परंपरा से मेल न खाता हो (इन्-कांसिस्टेंट); अलग, असंबद्ध; अनुचित, नामुनासिब; जो प्रसंग से संबंध न रखता हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असंगति *स्त्री.* {सं.} बेमेल होने का भाव; साहित्य में एक अलंकार जिसमें कारण कहीं बताया जाए और कार्य कहीं।

असंतोष *पुं.* {सं.} {*वि.* असंतोषी} संतोष का अभाव; अतृप्ति; अप्रसन्नता, नाराजगी।

असंतोषी *वि.* {सं.} संतोष न करनेवाला, लालची।

असंदिग्ध *वि.* {सं.} जिसमें कुछ भी संदेह या शंका की जगह न हो (अनईक्वीवोकल); निश्चित।

असंपर्क *पुं.* {सं.} मेलजोल या संबंध न होना।

असंप्रज्ञात *पुं.* {सं.} समाधि का एक भेद जिसमें बाह्य विषयों का ज्ञान न रहे।

असंबद्ध *वि.* {सं.} जो मेल न खाता हो; पृथक्, अलग; अनमिल, बेमेल, अंडबंड, जैसे असंबद्ध प्रलाप।

असंभव *वि.* {सं.} {*भाव.* असंभवता} जो संभव न हो, जो न हो सके, नामुमकिन; *पुं.* साहित्य में एक अलंकार जिसमें यह दिखाया जाता है कि जो बात हो गई, उसका होना असंभव था।

असंभावना *स्त्री.* {सं.} {*वि.* असंभावित, असंभाव्य} संभावना का अभाव, अनहोनापन; होने की कल्पना का भी अभाव।

असंभावित *वि.* {सं.} जिसकी संभावना न हो।

असंभाव्य *वि.* {सं.} जिसकी संभावना न हो, अनहोना।

असंयत *वि.* {सं.} संयम से रहित; उग्र।

असंयम *पुं.* {सं.} संयम का अभाव; विलासी होना; अपने पर काबू न होना।

असंलक्ष्य *वि.* {सं.} जो लक्षित हो; ध्वनि का एक भेद, असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य; असभ्य, शुद्ध न किया गया।

असंसदीय *वि.* {सं.} जो संसदीय न हो, जो संसद की मर्यादा के अनुकूल न हो।

असंस्कृत *वि.* {सं.} जिसका संस्कार न किया गया हो, अपरिमार्जित।

असगंध *स्त्री.* {सं. अश्वगंधा} एक झाड़ जिसकी जड़ दवा के काम में आती है, अश्वगंधा।

असंशय *पुं.* {सं.} संदेह का अभाव।

असतत *वि.* {सं.} जो सतत न हो; जो निरंतर न चले।

असत्य *वि.* {सं.} {*भाव.* असत्यता} जो सत्य या ठीक न हो, मिथ्या, झूठ।

असन *पुं.* {सं. अशन} भोजन, आहार, खाना; एक प्रकार का वृक्ष।

असफल *वि.* {सं.} जो सफल न हुआ हो, विफल।

असफलता *स्त्री.* {सं.} विफलता।

असबाब *पुं.* {*अ.*} प्रयोजनार्थ पदार्थ, सामग्री सामान।

असभ्य *वि.* {सं.} {*भाव.* असभ्यता} जो सभ्य न हो; अशिष्ट, गँवार (अनसिविलाइज्ड)।

असमंजस *स्त्री.* {सं.} दुविधा, आगा-पीछा; अड़चन, कठिनाई; अनिश्चय की स्थिति।

असमंत {सं. अश्वमत} चूल्हा।

असम *वि.* {सं.} {*भाव.* असमता} जो सम या तुल्य न हो, असदृश; विषम, ताक; ऊँचा-नीचा, ऊबड़-खाबड़; *पुं.* साहित्य में एक अलंकार जिसमें उपमान का मिलना असंभव बतलाया जाता है; पूर्वी भारत की सीमा पर एक प्रदेश जो भूल से 'आसाम' कहलाता है।

असमग्र *वि.* {सं.} अपूर्ण समान न होना।

असमता *स्त्री.* {सं.} समता का अभाव, विषमता।

असमय *पुं.* {सं.} विपत्ति का समय, बुरा समय; बेमौके; *क्रि. वि.* अनुपयुक्त समय में।

असमर्थ *वि.* {सं.} {*भाव.* असमर्थता} सामर्थ्यहीन; दुर्बल, अशक्त; अयोग्य।

असमस्त *वि.* {सं.} समासरहित शब्द, पूरा नहीं।

असमान *वि.* {सं.} {*भाव.* असमानता} जो समान न हो; बेमेल।

असमानता *स्त्री.* {सं.} समानता का अभाव।

असमीया *वि.* {सं. असम} असम-संबंधी, असम का; *स्त्री.* असम राज्य की भाषा; *पुं.* असम राज्य का निवासी।

असम्मत *वि.* {सं.} {*भाव.* असम्मति} जो राजी न हो, असहमत; जिस पर किसी की राय न हो।

असम्मति *स्त्री.* {सं.} एक राय न होना।

असम्मान *पुं.* {सं.} अनादर।

असल *वि.* {*अ.*} सच्चा, खरा; उच्च, श्रेष्ठ; बिना मिलावट का, शुद्ध, खालिस; जो झूठा या बनावटी न हो; *पुं.* जड़, बुनियाद; मूलधन।

असलियत *स्त्री.* {*अ.*} तथ्य, वास्तविकता; जड़, मूल; मूल तत्व, सार; सचाई।

असली *वि.* {*अ.* असल} सच्चा, खरा; मूल, प्रधान; बिना मिलावट का, शुद्ध।

असवर्ण *वि.* {सं.} जो सवर्ण न हो, छोटी जाति का; भिन्न वर्ग का वर्ण।

असहनीय *वि.* = असह्य।

असहयोग *पुं.* {सं.} {*वि.* असहयोगी} किसी से किसी काम में सहयोग न करना, साथ मिलकर काम न करने का भाव; इस सिद्धांत का वह आंदोलन जो सन् 1921 में महात्मा गांधी ने भारत को स्वतंत्र करने के लिए चलाया था और जिसमें लोगों से सरकारी सेवाएँ, पदवियाँ,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायालय, शिक्षा-संस्थाएँ आदि छोड़ने के लिए कहा जाता था।

असहाय *वि.* {सं.} जिसे कोई सहारा न हो, निस्सहाय, निराश्रय।

असहिष्णु *वि.* {सं.} {*भाव.* असहिष्णुता} असहनशील; चिड़चिड़ा; जो बर्दाश्त न करता हो।

असह्य *वि.* {सं.} जो अपनी उग्रता, कठोरता, अनौचित्य आदि के कारण सहा न जा सकता हो, जो बरदाश्त न हो सके, असहनीय (इन-टॉलरेबुल)।

असांसद *वि.* {सं. अ + संसद} जो संसद के उपयुक्त या उसकी मर्यादा के अनुकूल न हो (अन-पार्लमेन्टरी); जो संसद का सदस्य न हो।

असाढ़ *पुं.* आसाढ़।

असाढ़ी *वि.* {सं. आषाढ़} आसाढ़ का; *स्त्री.* वह फसल जो आसाढ़ में बोई जाए, शरीफ; आसाढ़ी पूर्णिमा।

असाधन *वि.* {सं.} साधनहीन।

असाधारण *वि.* {सं.} {*भाव.* असाधारणता} जो अपनी साधारण अवस्था में नहीं, बल्कि उससे कुछ घट या बढ़कर हो (अन-कॉमन); जैसा साधारणत: होता हो, उससे भिन्न प्रकार का (एक्स्ट्रा- आर्डिनरी, अन्-यूजुअल); असामान्य; विशेष प्रकार का।

असाधु *वि.* {सं.} (शब्द का प्रयोग) जो शिष्टसम्मत न हो; (व्यक्ति) जो भला न हो; दुर्जन।

असाध्य *वि.* {सं.} जिसका साधन न हो सके, जो साधा न जा सके, दुष्कर कठिन; न आरोग्य होने के योग्य, जैसे असाध्य रोग।

असाध्वी *स्त्री.* {सं.} व्यभिचारिणी स्त्री।

असामयिक *वि.* {सं.} जो उपयुक्त या नियत समय से पीछे या पहले हो, ठीक या उचित समय से पहले या पीछे होनेवाला (अन्-टाइमली); बेमौके होनेवाला।

असामर्थ्य *पुं.* {सं.} शक्ति या क्षमता का अभाव।

असामान्य *वि.* {सं.} जो अपनी सामान्य अवस्था में नहीं, बल्कि उससे कुछ घट या बढ़कर हो। (एब्नार्मल); असाधारण।

असामी *पुं.* {*अ.* आसामी} व्यक्ति, प्राणी; वह जिससे किसी प्रकार का लेन-देन हो; वह छोटा किसान जो पहले लगान देकर किसी जमींदार का खेत जोतता-बोता रहा हो, पर अब जिसे उस जमीन पर स्थायी और पैतृक अधिकार हो गया हो, छोटा काश्तकार; देनदार; अपराधी; वह जिससे किसी प्रकार का मतलब निकालना हो।

असार *वि.* {सं.} {*भाव.* असारता} साररहित, निस्सार; शून्य, खाली; तुच्छ; थोथा; धनहीन।

असावधान *वि.* {सं.} जो सावधान न हो।

असावधानता *स्त्री.* {सं.} सावधान न रहने की अवस्था या भाव, पूरी तरह से सचेत न रहना, बेपरवाही।

असावधानी *स्त्री.* असावधानता।

असि *स्त्री.* {सं.} तलवार, खड्ग।

असिजीवी *पुं.* {सं.} सैनिक।

असिधाराव्रत *पुं.* {सं.} कठिन व्रत पति-पत्नी का साथ रहकर भी ब्रह्मचर्य पालन।

असिद्ध *वि.* {सं.} जो व्याकरण, नियम, सिद्धांत आदि से सिद्ध या ठीक न हो, अप्रामाणिक; बेपका, कच्चा; अपूर्ण, अधूरा; निष्फल, व्यर्थ।

असीम *वि.* {सं.} जिसकी सीमा न हो, बेहद; बहुत अधिक, अपार; अनंत और परम।

असीमित *वि.* {सं.} जिसकी कोई सीमा हो।

असीसना *स.* {सं. आशिष} आशीर्वाद देना, दुआ देना।

असु *पुं.* {सं. अश्व} घोड़ा; प्राण।

असुकर *वि.* {सं.} जो कार्य सरल न हो।

असुर *पुं.* {सं.} दैत्य, राक्षस (डेमन); रात; नीच वृत्ति का पुरुष; पृथ्वी; सूर्य; बादल; राहु; एक प्रकार का उन्माद जिसका मूल असुरों के उत्पात से माना जाता है।

असुरविद्या *स्त्री.* {सं.} वह विद्या या शास्त्र जिसमें भिन्न-भिन्न देशों के असुरों और उनके कार्यों का विवेचन या अध्ययन होता है (डेमनॉलोजी)।

असुरारि *पुं.* {सं.} देवता; विष्णु।

असुविधा *स्त्री.* {सं. अ = नहीं + सुविधि = अच्छी तरह} कठिनाई, अड़चन; तकलीफ, दिक्कत।

असूयक *वि.* {सं.} दूसरों से असूया रखने वाला।

असूया *स्त्री.* {सं.} किसी के गुण को भी अवगुण समझना; ईर्ष्या, डाह (जेलसी) (यह रस के अंतर्गत एक संचारी भाव भी माना जाता है)।

असूर्यपश्या *वि. स्त्री.* {सं.} जिसको सूर्य भी न देख सके, परदे में रहनेवाली।

असूल *पुं.* {*अ.* उसूल} नियम।

असृक्-असृण *पुं.* {सं.} खून, केसर, मंगल ग्रह।

असृग्वहा *स्त्री.* {सं.} रक्तवाहिनी नाड़ी।

असैनिक *वि.* {सं.} जिसका संबंध सेना से न हो; जो सैनिक न हो।

असैला *वि.* {सं. अ = नहीं + शैली = रीति} {*स्त्री.* असेली} रीति-नीति के विरुद्ध काम करनेवाला; कुमार्गी; प्रचलित शैली के विरुद्ध होनेवाला; अनुचित।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असोच[1] *वि.* {हिं. अ + सोच} चिन्तारहित, निश्चिंत।

असोच[2] *वि.* {सं. अशुचि} .अपवित्र, अशुद्ध; अशौच का अपभ्रंश।

असोज *पुं.* {सं. अश्वयुज} आश्विन मास।

असौंध *स्त्री.* दुर्गंध।

अस्तंगत *वि.* {सं.} जो अस्त हो चुका हो; अवनत, हीन।

अस्त *वि.* {सं.} छिपा हुआ, तिरोहित; जो न दिखाई दे, अदृश्य; डूबा हुआ (सूर्य, चंद्र आदि); नष्ट, ध्वस्त; *पुं.* {सं.} लोप, अदर्शन।

अस्तगिरि *पुं.* {सं.} जिस पर्वत से सूर्य छिपता है; पश्चिम का पर्वत।

अस्तबल *पुं.* {*अ.*} घुड़साल, तबेला।

अस्तमन *पुं.* {सं.} {*वि.* अस्तमित} अस्त होना।

अस्तर *पुं.* {फा., मि. सं. स्तर} नीचे की तह या पल्ला, भितल्ला; दोहरे कपड़े में नीचे का कपड़ा; चंदन का तेल जिसके आधार पर इत्र बनाए जाते हैं, जमीन; वह कपड़ा जिसे स्त्रियाँ बारीक साड़ी के नीचे लगाकर पहनती हैं, अँतरौटा, अंतरपट; वह मसाला जिससे किसी चित्र की जमीन या सतह तैयार की जाए; स्तर, तह।

अस्तव्यस्त *वि.* {सं.} उलटा-पुलटा, छिन्न-भिन्न, तितर-बितर।

अस्ताचल *पुं.* {सं.} अस्तगिरि।

अस्ति *स्त्री.* {सं.} भाव, सत्ता; विद्यमानता, वर्तमानता।

अस्ति-नास्तिवाद *पुं.* {सं.} सत्-असत् का विवाद, ईश्वर है या नहीं का विवाद।

अस्तु *निपा.* {सं.} जो हो, चाहे जो हो; खैर, भला, अच्छा।

अस्तेय *पुं.* {सं.} चोरी का त्याग, चोरी न करना। (दस धर्मों में से एक); पाँच जैन अर्णुयां बृहद् व्रतों में एक।

अस्तोदय *पुं.* {सं.} ज्योतिषशास्त्र के अनुसार सूर्य-चन्द्र का उदय और अस्त; अवनति और उन्नति होना।

अस्त्र *पुं.* {सं.} वह हथियार जो शत्रु पर फेंककर चलाया जाए, जैसे बाण, शक्ति; वह हथियार जिससे शत्रु के चलाए हुए हथियारों की रोक हो, जैसे ढाल; वह हथियार जो मंत्र द्वारा चलाया जाए; वह हथियार जिससे चिकित्सक चीर-फाड़ करते हैं; शस्त्र, हथियार।

अस्त्र-चिकित्सा *स्त्री.* {सं.} वैद्यक शास्त्र का वह अंश जिसमें चीर-फाड़ करके चिकित्सा की जाती है; शल्य-चिकित्सा का दूसरा नाम।

अस्त्र निर्माणशाला *स्त्री.* {सं.} शस्त्रास्त्र बनाने का कारखाना।

अस्त्रमोक्ष *पुं.* {सं.} हथियार फेंकना, हथियार चलाना।

अस्त्रलाघव *पुं.* {सं.} हथियार चलाने में दक्षता।

अस्त्रशाला *स्त्री.* {सं.} वह स्थान जहाँ अस्त्र-शस्त्र रखे जाएँ।

अस्त्रीकरण *पुं.* {सं.} युद्ध के लिए नागरिकों को अस्त्र-शस्त्र से सज्जित करने की क्रिया या भाव (मिलिटराइज़ेशन)।

अस्थायी (यिन्) *वि.* {सं.} {*भाव.* अस्थायित्व} जो स्थायी या सदा बना रहनेवाला न हो, थोड़े समय तक रहनेवाला; जो किसी के स्थान पर उसका काम चलाने के उद्देश्य से कुछ समय के लिए रखा गया हो (टेम्परेरी); नश्वर, अल्पकालिक।

अस्थि *स्त्री.* {सं.} हड्डी।

अस्थिभंग *पुं.* {सं.} हड्डी का टूट जाना।

अस्थिर *वि.* {सं.} {*भाव.* अस्थिरता} चंचल, चलायमान, डाँवाडोल; जिसका कुछ ठीक न हो, जो प्रायः बदलता, घटता-बढ़ता या इधर-उधर होता रहता हो (अन्स्टैबुल); *वि.* स्थिर।

अस्थिरता *स्त्री.* {सं.} अस्थिर (चंचल, अनिश्चित आदि) होने का भाव (अन्स्टैबिलिटी)।

अस्थिसंचय *स्त्री.* {सं.} अन्त्येष्टि संस्कार के बाद जलने से बची हुई हड्डियाँ एकत्र करने का काम।

अस्थूल *वि.* = स्थूल।

अस्पष्ट *वि.* {सं.} {*भाव.* अस्पष्टता} जो स्पष्ट न हो।

अस्पृश्य *वि.* {सं.} {*भाव.* अस्पृश्यता} जिसे छूना ठीक न हो, जो स्पर्श करने के योग्य न हो (अन्टचेबल); *पुं.* अंत्यज।

अस्पृश्यता *वि.* {सं.} अस्पृश्य या अछूत होने की अवस्था या भाव; धार्मिक और सामाजिक दृष्टियों से किसी अस्पृश्य को न छूने का विचार या भाव (अन्टचेबिलिटी)।

अस्पृष्ट *वि.* {सं.} जो छुआ न हो।

अस्पृह *वि.* {सं.} जिसे किसी प्रकार की इच्छा न हो।

अस्मिता *स्त्री.* {सं.} दृक्, दृष्टया और दर्शन शक्ति को एक मानना या पुरुष (आत्मा) और बुद्धि में अभेद मानने की भ्रांति (योग); गर्व, अभिमान; मोह; अपने अस्तित्व पर गौरव का भाव।

अस्व *वि.* {सं.} धनरहित।

अस्वच्छ *वि.* {सं.} गंदा, मटमैला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्वस्थ *वि.* {सं.} {*भाव.* अस्वस्थता} रुग्ण, बीमार; अनमना; मन ठिकाने न होना।

अस्वाधीन *वि.* {सं.} जो स्वतंत्र न हो।

अस्वाभाविक *वि.* {सं.} {*भाव.* अस्वाभाविकता} जो स्वाभाविक न हो।

अस्वामिकता *स्त्री.* {सं.} किसी वस्तु के संबंध की वह अवस्था जबकि उसके मिलने पर उसका कोई स्वामी दिखाई न देता हो, जैसे जमीन खोदने पर मिलनेवाला खजाना (ऐसी अवस्था में मिलनेवाली वस्तु पर प्रायः राज्य का अधिकार हो जाता है)।

अस्वीकरण *पुं.* {सं.} अस्वीकृत करने की क्रिया या भाव, नामंजूर करना (रिजेक्शन); अस्वीकार।

अस्वीकार्य *वि.* {सं.} न मानने योग्य, न लेने योग्य।

अस्वीकृत *वि.* {सं.} जो स्वीकृत या मंजूर न किया गया हो (रिजेक्टेड)।

अहं *पुं.* {सं.} अहंकार, अभिमान।

अहंकार *पुं.* {सं.} {*वि.* अहंकारी} अभिमान, गर्व, घमंड; 'मैं हूँ' या 'मैं करता हूँ', की भावना।

अहंकारी (रिन्) *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अहंकारिणी} अहंकार करनेवाला, घमंडी।

अहंता *स्त्री.* {सं.} अहंकार, गर्व; अहंभाव, अस्मिता।

अहंमन्य *वि.* {सं.} {*भाव.* अहंमन्यता} अभिमानी, घमंडी।

अहंवाद *पुं.* {सं.} अपने आपको तथा अपने स्वार्थ को सर्वोपरि समझने की प्रवृत्ति।

अह *पुं.* {सं. अहन्} दिन; विष्णु; सूर्य; दिन का देवता।

अहक *स्त्री.* {सं. ईहा} इच्छा।

अहकना *स.* {हिं. अहक} इच्छा करना, लालसा करना।

अहदी *वि.* {*अ.*} आलसी, आसक्ती; अकर्मण्य; निठल्लू; *पुं.* अकबर के समय के एक प्रकार के सिपाही जिनसे विशेष आवश्यकता के समय काम लिया जाता था और जो यों ही सब दिन बैठे रहते थे।

अहदीखाना *पुं.* अहदियों के रहने का मकान।

अहना *अ.* {सं. अस् = होना} होना। (अब यह क्रिया केवल वर्तमान रूप 'अहै' में ही आती है)।

अहमक *वि.* {*अ.*} मूर्ख।

अहमिति *स्त्री.* {सं.} 'मैं ही मैं' का भाव।

अहरन *पुं.* निहाई।

अहरह *क्रि. वि.* {सं.} प्रतिदिन; नित्य, सदा; लगातार, निरंतर।

अहरा *पुं.* {सं. आहरण} कंडों का ढेर; वह स्थान जहाँ लोग ठहरें।

अहराम *पुं.* {*अ.*} पुरानी इमारतें (मिस्र के पिरामिड आदि)।

अहरी *स्त्री.* {सं. आहरण} वह स्थान जहाँ पशु पानी पीने के लिए एकत्र होते हैं।

अहर्निश *क्रि. वि.* {सं.} रात-दिन; सदा, नित्य।

अहलकार *पुं.* {फा.} कर्मचारी; कारिंदा।

अहलमद *पुं.* {फा.} न्यायालय का एक कर्मचारी।

अहलाद *पुं.* आह्लाद।

अहल्या *स्त्री.* {सं.} गौतम ऋषि की पत्नी व शतानन्द की माता जो पति के शाप से शिला बन गई थी। राम के चरण स्पर्श से अपने रूप में आई।

अहस्कर *पुं.* {सं.} सूर्य।

अहा[1] *विस्मयादि.* {सं. अहह} आह्लाद और प्रसन्नतासूचक एक शब्द।

अहा[2] *अ.* अवधी और पूर्वी हिंदी में 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप, था।

अहाता *पुं.* {*अ.*} घेरा, हाता, बाड़ा; चहारदीवारी।

अहारना *पुं.* {सं. आहरण} खाना, भक्षण करना।

अहिंसक *वि.* {सं.} जो हिंसा न कर सके।

अहिंसा *स्त्री.* {सं.} किसी को न सताना, न मारना या दुख न देना।

अहि *पुं.* {सं.} साँप; वृत्रासुर; पृथ्वी; सूर्य।

अहित *पुं.* {सं.} अपकार, बुराई या खराबी, 'हित' का विरोधी भाव; शत्रु, वैरी।

अहिनाथ *पुं.* {सं.} शेषनाग।

अहिफेन *पुं.* {सं.} सर्प के मुँह की लार या फेन; अफीम।

अहिम *वि.* {सं.} जो ठंडा न हो; *पुं.* बर्फ का अभाव।

अहिवात *पुं.* {सं. अभिवाद} {*वि.* अहिवाती} स्त्री का सौभाग्य, सोहाग।

अहीर *पुं.* {सं. आभीर} {*स्त्री.* अहीरिन} एक जाति जिसका काम गाय-भैंस रखना और दूध बेचना है, ग्वाला।

अहेतु *वि.* {सं.} बिना हेतु का; *क्रि. वि.* बिना हेतु के।

अहेतुक *वि.* {सं.} बिना कारण के।

अहेर *पुं.* {सं. आखेट} {कर्ता अहेरी} शिकार, मृगया; वह जंतु जिसका शिकार किया जाए।

अहेरु *स्त्री.* मूसली, शतावर।

अहोई *स्त्री.* {हिं. अ + होना} एक पूजा जो स्त्रियाँ दीपावली के आठ दिन पहले संतान की प्राप्ति और रक्षा के लिए करती हैं।

अहोरात्र *पुं.* {सं.} दिन और रात।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ

आ¹ देवनागरी वर्णमाला का दूसरा अक्षर जो 'अ' का दीर्घ रूप है।

आ² *उप.* उपसर्ग के रूप में यह प्राय: गत्यर्थक धातुओं के पहले लगकर उनके अर्थों में कुछ विशेषता उत्पन्न करता है, जैसे आरोहण, आकर्षक। कभी-कभी यह कुछ शब्दों के पहले लगकर उनका अर्थ कुछ उलट भी देता है, जैसे मगन और आगमन, दान और आदान, नयन (ले जाना) और आनयन (ले आना)। कुछ संस्कृत शब्दों में 'तक' का अर्थ भी देता है, जैसे आजीवन, आजन्म।

आँक *पुं.* {सं. अंक} अंक, चिह्न, निशान; संख्या का चिह्न, अदद; अक्षर, हरफ; गढ़ी हुई बात; अंश, हिस्सा; किसी चीज का संकेत रूप में टाँका हुआ उसका दाम।

आँकुड़ा *पुं.* = अंकुड़ा, मुड़ी कील।

आँकड़े *पुं. बहु.* {हिं. आँक} गणित की सहायता से किसी विषय या विभाग के संबंध में स्थिर किए हुए अंक जो उस विषय या विभाग की स्थिति सूचित करते हैं (स्टैटिस्टिक्स)।

आँकना *स.* {सं. अंकन} चिह्नित करना, निशान लगाना, दागना; कूतना, अंदाज करना, मूल्य लगाना; अनुमान करना, इठराना; चित्र बनाना; पहचान; पहचानने की शक्ति।

आँख *स्त्री.* {सं. अक्षि} वह इंद्रिय जिससे प्राणियों को रूप वर्ण, विस्तार तथा आकार का ज्ञान होता है, नेत्र, नयन; दृष्टि, नजर, ध्यान।

मुहा. *आँख आना* = आँख में लाली, पीड़ा और सूजन होना; *आँख उठाना* = बुरे भाव से देखना, हानि पहुँचाने की चेष्टा करना; *आँख खुलना* = नींद टूटना, ज्ञान होना, भ्रम दूर होना; *आँख दिखाना* = क्रोध की दृष्टि से देखना, क्रोध जताना; *आँख का अंधा गाँठ का पूरा होना* = मूर्ख धनी; *आँख न ठहरना* = चमक या द्रुतगति के कारण दृष्टि न जमना; *आँख फड़कना* = आँख का बार-बार हिलना (शुभ-अशुभ सूचक); *आँख भर देखना* = स्नेहवश खूब अच्छी तरह से देखना, इस भाव से कि फिर देखने को मिले या न मिले; *आँख मारना* = इशारा करना, सनकारना, आँख के इशारे से मना करना; *आँख लगना* = प्रीति होना, प्रेम होना, नींद आना; *आँख लड़ना* = देखादेखी होना, आँख मिलना, प्रेम होना, प्रीति होना; *आँख होना* = परख की शक्ति होना, पहचान होना, ज्ञान होना, विवेक होना; *आँखें चार करना* = देखादेखी होना, सामने आना; *आँखें चुराना या छिपाना* = सामने न होना, लज्जा से बराबर न ताकना; *आँख की किरकिरी होना* = जिसे देखना न सुहाये; *आँख निकालना* = क्रोध की दृष्टि से देखना, आँखों के डेले काटकर अलग कर देना; *आँखें नीची करना* = सिर नीचा होना, लज्जा उत्पन्न होना; *आँखें फिर जाना* = पहले की-सी कृपा न रहना, बेमुरौवती आ जाना, मन में बुराई आना; *आँखें फेरना* = पहले का सा भाव न रखना; *आँखें बंद होना* = मृत्यु होना, मरना; *आँखें बंद करके या मूँदकर* = बिना सब बातें देखे, सुने या विचार किए; *आँखें बिछाना* = प्रेम से स्वागत करना, प्रेमपूर्वक प्रतीक्षा करना; *आँख सेकना* = सुंदर स्त्री या पुरुष को चाह से देखना; *आँखों पर परदा पड़ना* = अज्ञान या अंधकार छाना, भ्रम होना; *आँखों में चरबी छाना* = गर्व से किसी की ओर ध्यान न देना; *आँखों में धूल झोंकना या डालना* = सरासर धोखा देना, भ्रम में डालना; *आँखों में समाना* = हृदय में बसना।

विचार, विवेक; परख, पहचान; कृपादृष्टि, दयाभाव; आँख के आकार का छेद या चिह्न, जैसे सुई की आँख; संतान।

आँख-मिचौली *स्त्री.* {हिं. आँख + मीचना} लड़कों का एक खेल जिसमें एक लड़का किसी दूसरे लड़के की आँखें मूँदकर बैठता है और बाकी लड़के इधर-उधर छिपते हैं, जिन्हें उस आँख मुँदानेवाले लड़के को ढूँढ़कर छूना पड़ता है; *पुं.* छिप-छिप कर देखना।

आँगन *पुं.* {सं. अंगण} घर के अंदर का सहन, चौक, अजिर।

आंगार *पुं.* {सं.} अँगारों का ढेर।

आंगिक *वि.* {सं.} अंग-संबंधी, अंग का; जो किसी के अंग के रूप में हो; *पुं.* चित्त के भाव प्रकट करनेवाली चेष्टा, जैसे भौंहें नचाना, हावभाव आदि; रस में कायिक अनुभाव; नाटक के अभिनय के चार भेदों में से एक।

आंगिरस *पुं.* {सं.} बृहस्पति; *वि.* {सं.} अंगिरा के गोत्र में उत्पन्न।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंग्ल *वि.* {अ. एंग्लो} अंग्रेजों या इंग्लैंड से संबद्ध।

आंग्ल-भारतीय *वि.* जिसके माता-पिता में से एक अंग्रेज और दूसरा भारतीय हो (एंग्लोइंडियन)।

आँघी *स्त्री.* {सं. घृ = क्षरण} महीन कपड़े या जाली से मढ़ी हुई चलनी।

आँच *स्त्री.* {सं. अर्चि} गरमी, ताप; आग की लपट, लौ; आग।

मुहा. आँच आना = कुछ हानि पहुँचना या अपकार होना। *आँच खाना* = गरमी खाना, आग पर चढ़ना, तपना; *आँच न आने देना* = कोई हानि न होने देना।

एक बार पहुँचा हुआ ताप; तेज, प्रताप; आघात, चोट; हानि, अहित, अनिष्ट; विपत्ति, संकट, आफत; प्रेम, मुहब्बत; काम- वासना।

आँचल *पुं.* {सं. अंचल} धोती, दुपट्टे आदि के दोनों छोरों पर का भाग, पल्ला, छोर; साड़ी या ओढ़ना का वह भाग जो सामने छाती पर रहता है; किसी देश का एक भाग ताल्लुक या तहसील आदि।

मुहा. (किसी के आगे) आँचल फैलाना = कुछ माँगना; *आँचल में बाँधना* = सदा स्मरण रखना।

आंचलिक *वि.* {सं.} अंचल-संबंधी।

आंचलिकता *स्त्री.* {सं.} किसी रचना में कथावस्तु आदि का देश के किसी अंचल से संबद्ध होना।

आँजना *स.* {सं. अंजन} आँखों में अंजन लगाना।

आँट *स्त्री.* {हिं. अंटी} तर्जनी और अँगूठे के नीचे का स्थान; दाँव, पेच; दुर्भावना; वैर, लाग-डाँट; गिरह, गाँठ; ऐंठन; पूला, गट्ठा।

आँटी *स्त्री.* {हिं. आँटना} लंबे, तृणों का छोटा गट्ठा, पूला; लड़कों के खेलने की गुल्ली; सूत का लच्छा; धोती की गिरह, टेंट, मुर्री।

आँठी *स्त्री.* अंठी।

आँड़ी *स्त्री.* {सं. आंडीक = एक प्रकार का कमल} गाँठ के रूप में होनेवाला कंद का कोई समूचा रूप, जैसा प्याज या लहसुन की आँड़ी।

आँडू *वि.* {सं. अंड} जिसके अंडकोष निकाले न गए हों, जो बधिया न हो।

आँत *स्त्री.* {सं. अन्त्र} प्राणियों के पेट के भीतर की वह लंबी नली जो गुदा तक रहती है और जिससे होकर मल या रद्दी पदार्थ बाहर निकल जाता है, अंत्र, अँतड़ी, लाद।

मुहा. आँत उतरना = एक रोग जिसमें आँत ढीली होकर नाभि के नीचे उतर आती है और अंडकोश में पीड़ा उत्पन्न होती है; *आँतें कुलकुलाना या सूखना* = भूख के मारे बुरी दशा होना।

आंतर *वि.* {सं.} अंदर का, भीतरी; किसी निश्चित क्षेत्र या सीमा के भीतरी भागों में होनेवाला; किसी वस्तु के वास्तविक मूल्य, तत्व, महत्व आदि से संबंध रखनेवाला; बीच का।

आंतराल *वि.* {सं.} बीच का।

आंतरिक *वि.* {सं.} अंदर का, भीतरी; किसी देश के भीतरी भागों से संबंध रखनेवाला, जैसे आंतरिक व्यवस्था, 'वैदेशिक' या 'परराष्ट्रीय' का उलटा (इन्टर्नल); किसी इमारत या घिरे हुए क्षेत्र के भीतरी भागों से संबंध रखनेवाला। (इन्-डोर); हृदय या मन में होनेवाला, जैसे आंतरिक प्रेम, आंतरिक द्वेष; अंतरंग विषय।

आंतरिक्ष *वि.* {सं.} अंतरिक्ष से संबद्ध।

आंतिक कर *पुं.* {हिं. आंतिक + कर} वह कर जो किसी यात्रा की समाप्ति के स्थान पर पहुँचने के विचार से लिया जाता है (टरमिनल टैक्स)।

आंतिका *स्त्री.* {सं.} बड़ी बहन।

आंत्र *पुं.* {सं.} {*वि.* आंत्रिक} आँत।

आँदू *पुं.* {देश.} हाथी के पैर में बाँधने का सिक्कड़।

आंदोलक *वि.* {सं.} झुलानेवाला।

आंदोलन *पुं.* {सं.} बार-बार हिलना-डोलना; हिलाना-डुलाना; उथल-पुथल करनेवाला प्रयत्न, हलचल (एजिटेशन)।

आंदोलनकारी *वि. पुं.* {सं. आंदोलनकारिन्} आंदोलन करनेवाला, आंदोलन में सम्मिलित होनेवाला।

आंदोलित *वि.* {सं.} जो हिल-डुल रहा हो; झुलाया गया; हलचल से भरा; अशांत।

आँधी *स्त्री.* {सं. अंध = अँधेरा} बहुत वेग की हवा जिससे इतनी धूल उठे कि चारों ओर अँधेरा छा जाए अंधड़; वात्या; *वि.* आँधी की तरह तेज।

आँध *स्त्री.* अँधेरा, रतोंधी।

आँधर *वि.* आंधर, आँधरो।

आंध्य *पुं.* {सं.} अंधापन, अंधता।

आंध्र *पुं.* {सं.} भारत का एक राज्य; एक प्राचीन जाति।

आंध्रवासी (वासिन्) *पुं.* {सं.} आंध्र प्रदेश का वासी।

आंबष्ठ *वि.* {सं.} महावत संबंधी; अम्बष्ठ देश का।

आंबाहल्दी *स्त्री.* एक औषध जो रक्तरोग में काम आती है।

आंबिकेय *पुं.* {सं.} अम्बिका-पुत्र, कुमार कार्तिकेय, धृतराष्ट्र।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आँव पुं. {सं. आम = कच्चा} वह चिकना, सफेद, लसदार मल जो अन्न न पचने से उत्पन्न होता है।

आँवल पुं. {सं. अपरा (जरायु) प्रा. अवरा; पुं. {हिं. आँव} वह झिल्ली जिससे गर्भ में बच्चे लिपटे रहते हैं, खेड़ी, जेरी।

आँवलनाल *स्त्री.* आँवल।

आँवला पुं. {सं. आमलक} एक पेड़ जिसके गोल फल खट्टे होते तथा खाने और दवा के काम में आते हैं उस वृक्ष का फल।

आँवाँ पुं. {सं. आपाक} वह गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बर्तन पकाते हैं।

मुहा. *आँवे का आँवाँ बिगड़ना* = किसी समाज के सब लोगों का बिगड़ना।

आंशिक *वि.* {सं.} अंश-संबंधी, अंश- विषयक; जो अंश रूप में हो, थोड़ा, कुछ या कम।

आँस[1] *स्त्री.* {सं. पाश} डोरी; रेशा।

आँस[2] पुं. आँसू।

आँसला *वि.* {हिं. आँसू} आँसुओं से युक्त; जिसके हृदय में बहुत वेदना हो।

आँसू पुं. {सं. अश्रु} वह जल जो आँखों से शोक या पीड़ा के समय निकलता है, अश्रु।

मुहा. *आँसू गिराना या ढालना* = रोना; *आँसू पीकर रह जाना* = मन ही मन रोकर रह जाना; *आँसू पुछना* = आश्वासन मिलना, ढारस बँधना; *(किसी के) आँसू पोंछना* = (किसी को) ढारस देना।

आँहड़ पुं. {सं. भांड} बरतन, भाँडा।

आइंदा *क्रि. वि.* {फा.} भविष्य में, आगे चलकर।

आईन पुं. {पहलवी से फा., मि. सं. अयन (मार्ग)} नियम, कायदा; कानून, विधान।

आईना पुं. {फा.} दर्पण, शीशा।

मुहा. *आईना होना* = बिल्कुल स्पष्ट होना, अनायास समझ में आने के योग्य होना।

आउंकार पुं. = ओंकार।

आउ *स्त्री.* = आयु।

आउज पुं. {सं. आ + वाद्य} ताशा नाम का बाजा।

आऊ *स्त्री.* = आयु।

आक पुं. {सं. अर्क} मदार, अकौवन।

आकंठ *क्रि. वि.* {स.} गले तक।

आकंप पुं. {सं.} काँपना।

आकर करहा पुं. {सं.} अकार भकारादि; अकरकरा, एक जड़ी।

आकर ग्रंथ पुं. {सं.} किसी सिद्धांत के मूल ग्रंथ।

आकबाक *स्त्री.* अकबक।

आकर पुं. {सं.} खान, उत्पत्ति-स्थान; खजाना, भंडार; प्रकार।

आकरभाषा *स्त्री.* {सं.} वह मूल प्राचीन भाषा जिससे नई भाषा आवश्यकता पड़ने पर, शब्द ले, जैसे हिंदी की आकरभाषा संस्कृत और उर्दू की अरबी-फारसी है।

आकरिक पुं. {सं.} खान खोदनेवाला।
वि. आकर या खान से संबंध रखनेवाला।

आकरी *वि.* {सं.} खान से उत्पन्न, उत्तम, नस्ल का।

आकर्षक *वि.* {सं.} जिसमें आकर्षण हो, खींचने वाला।

आकर्षण पुं. {सं.} {*वि.* आकर्षित, आकृष्ट} किसी वस्तु का दूसरी वस्तु के पास उसकी शक्ति या प्रेरणा से लाया जाना; खिंचाव; तंत्र में एक प्रकार का प्रयोग जिसके द्वारा दूर देशस्थ पुरुष या पदार्थ पास आ जाता है; रीझना।

आकर्षण-शक्ति *स्त्री.* {सं.} भौतिक पदार्थों की वह शक्ति जिससे वे अन्य पदार्थों को अपनी ओर खींचते हैं।

आकर्षणा *स.* {सं. आकर्षण} खींचना।

आकर्षित *वि.* {सं.} खींचा हुआ; आकृष्ट।

आकलन पुं. {सं.} {*वि.* आकलनीय, आकलित} ग्रहण, लेना; संग्रह, संचय, इकट्ठा करना; गिनती करना; खाते में जमा करना (क्रेडिट) अनुसंधान; धारण करना।

आकलन-पक्ष पुं. {सं.} खाते या हिसाब का वह पक्ष या अंग जिसमें आया हुआ धन जमा किया जाता है (क्रेडिट साइड)।

आकलन-पत्रक पुं. {सं.} वह पत्रक जो खाते में किसी के समुचित आकलन पक्ष या यथेष्ट धन जमा होने का सूचक होता है (क्रेडिट नोट)।

आकस्मिक *वि.* {सं.} {*भाव.* आकस्मिकता} यों ही किसी समय हो जानेवाला (कैजुअल); अचानक या सहसा होनेवाला (कन्टिंजेन्ट); आप से आप, किसी घटनावश या संयोगवश हो जानेवाला (ऐक्सिडेंटल)।

आकस्मिकता *स्त्री.* {सं.} अचानक, आप से आप या आकस्मिक रूप से होने का भाव; इसमें कारण का विचार नहीं होता।

आकस्मिकतावाद पुं. {सं.} दर्शनशास्त्र में यह सिद्धांत कि संसार में जो कुछ होता है वह सब यों ही, अकस्मात् या घटनावश होता चलता है, 'नियतिवाद' का विरोधी सिद्धांत; स्वभाववाद।

आकांक्षा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* आकांक्षित} इच्छा, अभिलाषा, वांछा, चाह; अपेक्षा; अनुसंधान;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाक्यार्थ के ठीक ज्ञान के लिए एक शब्द का दूसरे शब्द पर आश्रित होना (न्याय)।

आकांक्षी *वि.* {सं. आकांक्षिन्} {*स्त्री.* आकांक्षिणी} इच्छा करनेवाला, इच्छुक।

आकार *पुं.* {सं.} स्वरूप, आकृति, सूरत; किसी वस्तु या कार्य का वह निश्चित या लोक-प्रचलित रूप में जिसमें वह साधारणः होता या पाया जाता हो (फार्म); डील-डौल; बनावट; निशान, चिह्न; चेष्टा; 'आ' वर्ण।

आकारी *वि.* {सं.} {*स्त्री.* आकारिणी} मूर्त, आकारवान्; आह्वान करनेवाला, बुलानेवाला।

आकाश *पुं.* {सं.} खुले स्थान में ऊपर की ओर दिखाई देनेवाला खाली स्थान, व्योम, अंतरिक्ष, आसमान; शून्य।

मुहा. आकाश छूना या चूमना = बहुत ऊँचा होना; *आकाश-पाताल एक करना* = भारी उद्योग करना; *आकाश-पाताल का अंतर* = बहुत बड़ा अंतर।

एक लचीला पारदर्शी तत्व जो उक्त खाली स्थान में व्याप्त माना जाता है और जिसमें से होकर सूर्य की किरणें पृथ्वी तक पहुँचती हैं (ईथर); वह खाली स्थान जिसमें वायु के सिवा और कुछ न हो।

आकाशकक्षा *स्त्री.* क्षितिज।

आकाशकुसुम *पुं.* {सं.} आकाश में फूल खिलने की-सी असंभव बात।

आकाशगंगा *स्त्री.* {सं.} बहुत से तारों का एक विस्तृत समूह जो आकाश में उत्तर-दक्षिण फैला है, डहर; पुराणानुसार स्वर्ण की गंगा, मंदाकिनी।

आकाशचारी (रिन्) *वि.* {सं.} आकाश में फिरनेवाला, आकाशगामी; *पुं.* सूर्य आदि ग्रह और नक्षत्र; वायु; पक्षी; देवता।

आकाशबेल *स्त्री.* {सं. आकाशवल्ली} वृक्षों आदि पर होनेवाली एक प्रकार की बेल जिसकी जड़ और पत्तियाँ नहीं होतीं, अमरबेल।

आकाशभाषित *पुं.* {सं.} नाटक के अभिनय में वक्ता का ऊपर की ओर देखकर इस तरह कोई प्रश्न कहना मानो वह आकाश से किया जा रहा हो, और तब फिर उसका उत्तर देना।

आकाशयान *पुं.* {सं.} विमान, हवाई जहाज।

आकाशवाणी *स्त्री.* {सं.} वह बात जो ईश्वर की ओर से कही हुई और आकाश से सुनाई पड़नेवाली मानी जाए, देववाणी। (औरेकल); रेडियो।

आकाशवृत्ति *पुं.* {सं.} ऐसी आमदनी जो बँधी न हो, अनिश्चित जीविका।

आकाशीय *वि.* {सं.} आकाश से संबद्ध।

आकिल *वि.* {*अ.*} अकल रखनेवाला।

आकीर्ण *वि.* {सं.} {*भाव.* आकीर्णता} फैला हुआ; व्याप्त; बिखेरा हुआ।

आकुंचन *पुं.* {सं.} {*वि.* आकुंचित} सिकुड़ना, सिमटना, संकोचन; विस्तार का उलट।

आकुंठन *पुं.* {सं.} लज्जित होना, नाक रहित होना या करना।

आकुल *वि.* {सं.} {*वि.* आकुलित, *भाव.* आकुलता} व्यग्र, घबराया, हुआ, उद्विग्न; विह्वल, कातर।

आकुलता *स्त्री.* {सं.} {*वि.* आकुलित} व्याकुलता, घबराहट।

आकृति *स्त्री.* {सं.} बनावट, गढ़न, ढाँचा; किसी वस्तु की वे बाहरी और दृश्य बातें जिनसे उसकी लंबाई, चौड़ाई, प्रकार, स्वरूप आदि का ज्ञान होता है, रूप। (फिगर); मुख, चेहरा; मुख का भाव, चेष्टा।

आकृष्ट *वि.* {सं.} खींचा या खिंचा हुआ।

आक्रन्द *पुं.* {सं.} चिल्लाहट।

आक्रमण *पुं.* {सं.} {*वि.* आक्रमित} बलपूर्वक सीमा का उल्लंघन करके दूसरे के राज्य या क्षेत्र में जाना, चढ़ाई; आघात पहुँचाने के लिए किसी पर झपटना या उसे मारना (एसॉल्ट); घेरना, छेंकना; किसी के कार्यों या विचारों पर किया जानेवाला आक्षेप या उसकी निंदा।

आक्रमित *वि.* {सं.} जिस पर आक्रमण हुआ हो, आक्रांत।

आक्रांत *वि.* {सं.} जिस पर आक्रमण हुआ हो; घिरा हुआ, आवृत्त; वशीभूत, विवश; व्याप्त; पराजित।

आक्रामक *वि.* {सं.} आक्रमण करनेवाला, जो आक्रमण करे।

आक्रीड *पुं.* {सं.} बाग।

आक्रोश *पुं.* {सं.} क्रोध, रोष।

आक्षरिक *वि.* {सं.} अक्षर-संबंधी।

आक्षिप्त *वि.* {सं.} जिसपर आक्षेप हुआ हो; बुरा, खराब, निंदनीय।

आक्षेप *पुं.* {सं.} {कर्ता आक्षेपक} फेंकना, गिराना; दोष लगाना, अपवाद या इल्जाम लगाना; किसी के कथन आदि के संबंध में की जानेवाली आपत्ति, वह बात जिसके द्वारा किसी का कोई कथन ठीक न माना जाए (चैलेंज) कटु उक्ति, ताना; एक बात रोग जिससे किसी अंग में कँपकँपी होती है; झटका आना; व्यंग्य; झटका, झटका देना।

आक्षेपक *वि.* {सं.} आक्षेप करनेवाला।

आक्साइड *पुं.* {*अ.*} आक्सीजन और किसी तत्व के योग से बना हुआ यौगिक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखन *क्रि. वि.* {सं. आ + क्षण} प्रतिक्षण, हर घड़ी।

आखना[1] *अ.* {सं. आकांक्षा} चाहना।

आखना[2] *पुं.* {हिं. आँख} देखना, ताकना; कहना।

आखर *पुं.* अक्षर।

आखात *पुं.* {सं.} खाड़ी; खोदने के साधन; खोदना।

आखातीज *स्त्री.* अक्षय तृतीया।

आखिर *वि.* {फा.} अंतिम, पीछे का; *पुं.* अंत; परिणाम, फल; *क्रि. वि.* अंत में, अंत को।

आखिरकार *क्रि. वि.* {फा.} परिणामस्वरूप, अंत में।

आखिरी *वि.* {फा.} अंतिम, पिछला।

आखीर *पुं.* = आखिर।

आखु *पुं.* {सं.} चूहा; चोर; कुदाल।

आखुग *वि.* {सं.} चूहे की सवारी करनेवाले, गणेश।

आखुपाषाण *पुं.* {सं.} चुंबक, संखिया।

आखुभुज् (क) *पुं.* {सं.} बिलाव, बिल्ली।

आखेट *पुं.* {सं.} {कर्ता आखेटक} जंगली पशु-पक्षियों को मारना, शिकार।

आख्ता *वि.* {फा.} बधिया।

आख्या *स्त्री.* {सं.} नाम, संज्ञा; कीर्ति, यश; व्याख्या; किसी घटना या कार्य का विवरण जो किसी को सूचित करने के लिए हो (रिपोर्ट); टिप्पणी।

आख्यात *वि.* {सं.} प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर; जो आख्या, विवरण या सूचना के रूप में किसी को बतलाया गया हो (रिपोर्टेड)।

आख्याति *स्त्री.* = ख्याति।

आख्यान *पुं.* {सं.} वर्णन, वृत्तान्त, बयान; कथा, कहानी, किस्सा; उपन्यास के नौ भेदों में से एक, वह कथा जो स्वयं कवि या लेखक कहे; पुरानी बात को कहना।

आख्यापक *पुं.* {सं.} वह जो किसी को कोई विवरण बतलाए या सूचना दे, आख्या देनेवाला।

आख्यायिका *स्त्री.* {सं.} कथा, कहानी; वह कल्पित कथा जिससे कुछ शिक्षा निकले; एक प्रकार का आख्यान जिसमें पात्र भी अपने चरित्र अपने मुँह से कुछ-कुछ कहते हैं; गद्य-काव्य का एक भेद जिसका कथानक ऐतिहासिक भी हो सकता है।

आख्येय *वि.* {सं.} कहने योग्य बात।

आगंता *वि.* {सं.} आनेवाला, जिसके आने की संभावना हो।

आगंतुक *पुं.* {सं.} वह जो आए, आनेवाला; जो दिन बुलाये आये।

आग *स्त्री.* {सं. अग्नि} तेज और प्रकाश का पुंज जो तीव्र उष्णतावाली वस्तुओं में देखा जाता है, अग्नि, बसन्दर; जलन, ताप, गरमी; काम का वेग; वात्सल्य प्रेम; डाह, ईर्ष्या; *वि.* जलता हुआ, बहुत गरम; जो गुण में उष्ण हो।
मुहा. आग लगना = बहुत क्रोध उत्पन्न होना; *आग बबूला होना* = अत्यंत क्रुद्ध होना; *आग लगाना* = आग से किसी वस्तु को जलाना, गरमी करना, जलन पैदा करना, क्रोध उत्पन्न करना, बिगाड़ना, नष्ट करना; *पानी में आग लगाना* = असंभव कार्य करना, जहाँ लड़ाई की कोई बात न हो, वहाँ भी लड़ाई लगा देना।

आगत *वि.* {सं.} {*स्त्री.* आगता} आया हुआ; प्राप्त, उपस्थित; अतिथि; पहुँचा, हाथ लगा।

आगतपतिका *स्त्री.* {सं.} वह नायिका जिसका पति अभी परदेश से लौटा हो।

आगतमात्र *वि.* {सं.} जैसे ही आया, तुरंत।

आगम *पुं.* {सं.} आने की क्रिया या भाव, अवाई, आगमन; भविष्यतकाल, आनेवाला समय; होनहार; समागम, संगम; आमदनी, आय; व्याकरण में किसी शब्द-साधन में वह वर्ण जो बाहर से लाया जाए; उत्पत्ति; वेद और शास्त्र; किसी धर्म के वे मुख्य ग्रंथ जिनपर वह धर्म आश्रित हो, धर्मग्रंथ (स्क्रिप्चर); नीतिशास्त्र; वह अधिकार या अधिकारसूचक पत्र जिसके आधार पर कोई किसी वस्तु का स्वामी या उत्तराधिकारी होता है (टाइटिल); तत्व ग्रंथ; वे धर्मग्रंथ जो परंपरा से चले आये हों।

आगमजानी *वि.* {सं. आगमज्ञानी} होनहार जाननेवाला, आगमज्ञानी।

आगमन *पुं.* {सं.} किसी के कहीं से आकर पहुँचने की क्रिया या भाव, अवाई, आना, आमद; किसी कार्य या बात के नए सिरे से सामने आने या होने की क्रिया या भाव (एडवेंट); प्राप्ति, लाभ।

आगमरहित *वि.* {सं.} शास्त्र-प्रमाण के बिना; जिसे शास्त्र ज्ञान न हो; अधिकारपत्ररहित।

आगमवृद्ध *वि.* {सं.} शास्त्रीय ज्ञान के कारण बड़ा, शंकराचार्य की एक उपाधि।

आगमित *वि.* {सं.} आगमों के ज्ञान वाला; बाहर से मँगाया (यी) वस्तु।

आगमी *वि.* {सं.} शास्त्रज्ञ, ज्योतिषी।

आगर[1] *पुं.* {सं. आकर} {*स्त्री.* आगरी} खान, आकर; समूह, ढेर; कोष, निधि, खजाना; वह गड्ढा जिसमें नमक जमाया जाता है।

आगर[2] *पुं.* {सं. आगार} घर, गृह; छाजन, छप्पर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगर³ *वि.* {सं. अग्र} श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़कर; चतुर, होशियार, दक्ष, कुशल; *क्रि. वि.* बहुत अधिक।

आगरा *वि.* {हिं. आगे} आगे बढ़ा हुआ; एक भारतीय नगर।

आगवन *पुं.* आगमन।

आगा¹ *पुं.* {सं. अग्र} किसी चीज के आगे का भाग, अगला भाग; सामने का भाग, मुख, मुँह; अंगरखे या कुरते आदि की काट में आगे का टुकड़ा; सेना या फौज का अगला भाग, हरावल; घर के सामने का मैदान; आनेवाला समय, भविष्य।

आगा² *पुं.* {तु. आगा} मालिक, सरदार; काबुली, अफगान।

आगा-पीछा *पुं.* {हिं. आगा + पीछा} हिचक, सोच-विचार, दुविधा; परिणाम, नतीजा; शरीर या मकान का अगला और पिछला भाग।

आगामिक *वि.* {सं.} आगम से संबंध रखनेवाला; आनेवाला; खानदानी।

आगामी *वि.* {सं. आगामिन्} {*स्त्री.* आगामिनी, *वि.* आगामिक} भावी, आनेवाला।

आगार *पुं.* {सं.} घर, मकान, स्थान, जगह; खजाना।

आगाह *वि.* {फा.} {*भाव.* आगाही} जिसे पहले से किसी बात की सूचना मिल चुकी हो; सूचना।

आगाही *स्त्री.* {फा.} आगाह होने की अवस्था या भाव, पहले से होनेवाली जानकारी।

आगी *स्त्री.* आग।

आगू *पुं.* आगा।

आगृहीत *वि.* {सं.} आग्रहण किया हुआ, जमा किए हुए धन में से लिया या निकाला हुआ (धन) (ड्रान)।

आगृहीती *पुं.* {सं. आगृहीत} वह जो आग्रहण करे, कहीं से कुछ रुपए उठाने, निकालने या लेनेवाला (ड्राई)।

आगे *क्रि. वि.* {सं. अग्र} सामने की ओर कुछ दूरी पर, और बढ़कर, 'पीछे' का उलटा; समक्ष, सामने, सम्मुख; जीवनकाल में, जीते जी; भविष्य में, आगे चलकर; अनंतर, पीछे, बाद; पूर्व, पहले; गोद में, जैसे उसके आगे एक लड़का है।

मुहा. आगे आना = सामने आना या पड़ना, मिलना; सामना करना, भिड़ना, घटित होना, घटना; *आगे करना* = उपस्थित या प्रस्तुत करना, अगुआ या मुखिया बनाना; *आगे को* = भविष्य में; *आगे चलकर* = कुछ दिनों बाद; *आगे निकलना* = बढ़ जाना; *आगे-पीछे* = एक के पीछे एक, आस-पास; *आगे से* = आइन्दा से, भविष्य में, पहले से, पहले या बाद में, देर-सवेर।

आगोश *पुं.* आलिंगन।

आग्नीध्र *पुं.* {सं.} अग्नि सुरक्षित रखने का स्थान; अग्निहोत्री।

आग्नेय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* अग्नेया} अग्नि-संबंधी, अग्नि का; अग्नि से उत्पन्न; जिससे आग निकले, जलानेवाला, जैसे आग्नेय अस्त्र; *पुं.* सुवर्ण, सोना; अग्नि के पुत्र कार्तिकेय; ज्वालामुखी पर्वत; दक्षिण का एक देश जिसकी प्रधान नगरी महिष्मती थी; वह पदार्थ जिससे आग भड़क उठे, जैसे बारूद; अग्निकोण; आग्नेय; एशिया।

आग्रह *पुं.* {सं.} अनुरोध; हठ, जिद; तत्परता, परायणता; बल, जोर, जैसे आग्रहपूर्वक कहना।

आग्रहण *पुं.* {सं.} {*वि.* आग्राहक, आगृहीत} अपने जमा किए हुए रुपयों में से अपने नाम के देयादेश (चेक आदि) के आधार पर कहीं से कुछ रुपए निकालना या लेना (ड्रॉ)।

आग्रहायण *पुं.* {सं.} अगहन (महीना)।

आग्रही *वि.* {सं. आग्रहिन्} आग्रह करनेवाला, हठी, जिद्दी।

आघर्षण *पुं.* {सं.} रगड़, रगड़ना, घिसना।

आघर्षणी *स्त्री.* {सं.} रबर, घिसने की सलाई।

आघात *पुं.* {सं.} धक्का, ठोकर; मार, प्रहार, चोट (इंजरी)।

आघ्राण *पुं.* {सं.} {*वि.* आघ्रात, आघ्रेय} सूँघना, वास लेना; अघाना, तृप्ति।

आघ्रात *वि.* {सं.} सूँघा गया।

आघ्रेय *वि.* {सं.} सूँघने योग्य।

आचमन *पुं.* {सं.} {*वि.* आचमनीय, आचमित} जल पीना; पूजा या धर्म-संबंधी कर्म के आरंभ में दाहिने हाथ में थोड़ा-सा जल लेकर मंत्र पढ़ते हुए पीना।

आचमनी *स्त्री.* {सं. आचमनीय} एक छोटा चम्मच जिससे आचमन करते हैं।

आचमनीयक *वि.* {सं.} आचमन के लिए लाया जल।

आचरज *पुं.* = आश्चर्य।

आचरण *पुं.* {सं.} {*वि.* आचरणी, आचरित} कोई कार्य करना, किसी कार्य का अनुष्ठान, करना (ऐक्ट); व्यवहार, बरताव, चाल-चलन। (कांडक्ट); आचार-शुद्धि, सफाई।

आचरण-पंजी *स्त्री.* = आचरण-पुस्तिका।

आचरण-पुस्तिका *स्त्री.* {सं.} वह पुस्तिका जिसमें किसी कार्यकर्ता के कार्यों या कर्तव्य-पालन से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबंध रखनेवाले आचरणों या व्यवहारों का उल्लेख हो (कैरेक्टर बुक)।

आचरणीय *वि.* {सं.} व्यवहार करने योग्य, आचरण करने योग्य।

आचरण *पुं.* = आचरण।

आचरित *वि.* {सं.} आचरण के रूप में लाया हुआ, कार्य के रूप में किया हुआ (कमिटेड); चलन।

आचार *पुं.* {सं.} {*वि.* आचारिक} चाल-चलन और रहन-सहन; रीति-व्यवहार, जैसे देशाचार, कुलाचार; चरित्र, चाल-ढाल; अच्छा शील या स्वभाव; सभ्यता; मृतक का संस्कार करानेवाला, चारण।

आचारज *पुं.* = आचार्य।

आचारवान (वान्) *वि.* {सं.} {*स्त्री.* आचारवती} पवित्रता से रहनेवाला, शुद्ध आचारवाला; सदाचारी।

आचार-विचार *पुं.* {सं.} वह शास्त्र जिसमें मनुष्य के चरित्र, आचरण, कीर्ति और सामाजिक व्यवहारों आदि का विवेचन होता है (ईथिक्स); चालचलन, चरित्र तथा विचार।

आचार-संहिता *स्त्री.* {सं.} आचार-संबंधी नियमों का ग्रंथ (कोड ऑफ कंडक्ट)।

आचारी *वि.* {सं. आचारिन्} {*स्त्री.* आचारिणी} आचारवान, चरित्रवान।

आचार्य *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* आचार्या, आचार्याणी} उपनयन के समय गायत्री मंत्र का उपदेश करनेवाला; वेद पढ़ानेवाला गुरु; वह जो यज्ञ के समय कर्मों का उपदेश करता हो; पुरोहित; अध्यापक; किसी महाविद्यालय (कॉलेज) का वह सर्वप्रधान अधिकारी जिसकी अधीनता में सब प्राध्यापक काम करते हैं (प्रिंसिपल); ब्रह्मसूत्र के प्रधान भाष्यकार शंकर, रामानुज, माध्व, वल्लभाचार्य आदि; वेद का भाष्यकार; किसी विशेष सिद्धांत का प्रवर्तक।

आचार्यक *पुं.* {सं.} आचार्य का कर्म; आचार्य से मिली शिक्षा।

आचार्या *स्त्री.* {सं.} आचार्य का काम करनेवाली स्त्री।

आचार्याणी *स्त्री.* {सं.} आचार्य की पत्नी।

आचिंत्य *वि.* {सं.} चिंतन या विचार करने योग्य।

आच्छन्न *वि.* आच्छादित।

आच्छादक *वि.* {सं.} आच्छादन करने या ऊपर से ढकनेवाला; ढका हुआ।

आच्छादन *पुं.* {सं.} {*वि.* आच्छादित} ढकना; वस्त्र, कपड़ा; छाजन, छवाई।

आच्छादित *वि.* {सं.} जिसके ऊपर कोई आच्छादन हो, ढका हुआ।

आच्छुरित *वि.* {सं.} खुर्चा हुआ; चमकाया हुआ।

आच्छेत्ता *वि.* {सं.} काटनेवाला।

आछत *क्रि. वि.* {हिं. 'आछना' का कृदन्त रूप} होते हुए, रहते हुए, विद्यमानता में, मौजूदगी में।

आछना *अ.* {सं. अस = होना} होना; रहना, विद्यमान होना।

आछे *क्रि. वि.* {हिं. अच्छा} भले प्रकार से, भली-भाँति, अच्छी तरह; *अ.* = है।

आछेप *पुं.* = आक्षेप।

आज-कल *क्रि. वि.* {हिं. आज + कल} इन दिनों, इस समय, वर्तमान दिनों में।

मुहा. आज-कल करना = टालमटोल करना, हीला-हवाली करना; *आज-कल लगना* = अब-तब लगना, मरणकाल निकट आना।

आजगव *पुं.* {सं.} शिव का धनुष।

आजन्म *क्रि. वि.* {सं.} जन्म से अब तक, जीवन में आज तक।

आजमाइश *स्त्री.* {फा. आज़माइश} परीक्षा, जाँच।

आजमाना *स.* {फा. आज़माइश} परीक्षा करना, परखना।

आजाद *वि.* {फा. आज़ाद} स्वतंत्र।

आजादी *स्त्री.* {फा. आज़ादी} स्वतंत्रता।

आजानु *वि.* {सं.} जाँघ या घुटने तक लंबा।

आजानुबाहु *वि.* {सं.} जिसके बाहु जानु तक लंबे हों, जिसके हाथ घुटने तक पहुँचे (वीरों का लक्षण)।

आजीव *पुं.* {सं.} धंधा, पेशा, जीविका का साधन।

आजीवक *पुं.* {सं.} मंखली घोषाल द्वारा चलाया गया एक संप्रदाय।

आजीवन *क्रि. वि.* {सं.} जब तक जीवन रहे, तब तक, जीवनपर्यंत, जिंदगी-भर (लाइफ-लांग)।

आजीविका *स्त्री.* जीविका।

आज्ञप्त *वि.* {सं.} जिसकी या जिसके संबंध में आज्ञा दी गई हो।

आज्ञप्ति *स्त्री.* {सं.} सर्वोच्च अधिकारी अथवा अधिकारिक परिषद आदि की वह आज्ञा जो किसी कार्य, व्यवस्था आदि के संबंध में सर्वोपरि होती है और प्रायः विधान के रूप में भेजी जाती है; वह निर्णय-सूचक लेख जो किसी अर्थ-व्यवहार (दीवानी मुकदमे) में किसी पक्ष के विजयी होने पर उसके पक्ष में न्यायालय के निर्णय के रूप में लिखा जाता है (डिक्री)।

आज्ञा *स्त्री.* {सं.} बड़ों का छोटों को किसी काम के लिए कहना, हुकुम; राज्य, अधिकारी आदि का यह कहना कि अमुक कार्य इसी रूप में हो अथवा बिल्कुल न हो, हुकुम (ऑर्डर); आदेश जिसका पालन आवश्यक हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज्ञाकारी *वि.* {सं. आज्ञाकारिन्} {*स्त्री.* आज्ञाकारिणी} आज्ञा माननेवाला; शिष्य, भक्त, सेवक आदि।

आज्ञाचक्र *पुं.* {सं.} शरीर में माने जानेवाले आठ चक्रों में से छठा जो दोनों भौंहों के बीच स्थित है।

आज्ञापक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* आज्ञापिका} आज्ञा देनेवाला; प्रभु, स्वामी।

आज्ञापत्र *पुं.* {सं.} वह जिसमें कोई आज्ञा लिखी हो, हुकुमनामा।

आज्ञापालन *पुं.* {सं.} {*वि.* आज्ञापालक} किसी की दी हुई आज्ञा के अनुसार कोई काम करना।

आज्ञापित *वि.* {सं.} सूचित किया हुआ, जताया हुआ; जिसे आज्ञा दिलाई गई हो; जिस संबंध में आदेश दिया हो।

अज्ञापफलक *पुं.* {सं.} वह पत्र जिसपर किसी विषय या व्यवहार के संबंध की आज्ञा लिखी हो (ऑर्डर शीट)।

आज्ञाभंग *पुं.* {सं.} किसी की आज्ञा न मानना, या उसके विरुद्ध काम करना (डिस्ओबीडिएंस)।

आज्य *पुं.* {सं.} वे वस्तुएँ जिनकी यज्ञ में आहुति दी जाती है, हवि; घी।

आज्यधानी *स्त्री.* {सं.} घी खाने का काँसे का पात्र।

आटना *स.* {सं. अट्ट} ढकना; दबाना; जमा होना या करना।

आटविक *वि.* {सं.} वनरक्षक; प्राचीनकाल में सेना की एक टुकड़ी जो वनवासी सैनिकों से बनती थी।

आटा *पुं.* {सं. अटन = घूमना} किसी अन्न का चूर्ण, पिसान, चून।

मुहा. आटे-दाल का भाव मालूम होना = संसार के व्यवहार का ज्ञान होना; *आटे-दाल की फिक्र* = जीविका का चिंता; *कंगाली में आटा गीला होना* = तंगी में और खर्च आ पड़ना; किसी वस्तु का चूर्ण, बुकनी।

आठ *वि.* {सं. अष्ट} चार का दूना।

मुहा. आठ-आठ आँसू रोना = बहुत अधिक विलाप करना; *आठों पहर* = दिन रात।

कहा. आठों गाँठ कुम्मैत = बहुत ही चतुर या धूर्त, छँटा हुआ।

आठों *स्त्री.* अष्टमी तिथि, अव्य. आठ के आठ।

आडंबर *पुं.* {सं.} {*वि.* आडंबरी} गंभीर शब्द; तुरही का शब्द; हाथी की चिंघाड़; ऊपरी बनावट, तड़क-भड़क, टीम-टाम, ढोंग; आच्छादन; तंबू; बड़ा ढोल जो युद्ध में बजाया जाता है।

आड़[1] *स्त्री.* {सं. अल् = रोक} ओट, परदा, आवरण; रक्षा, शरण, पनाह; सहारा, आश्रय; रोक, अड़ान; थूनी, टेक।

आड[2] *स्त्री.* {सं. आलि = रेखा} लंबी कटीली बिंदी जो स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं; स्त्रियों के भाल पर का आड़ा तिलक; माथे पर पहनने का एक गहना, टीका।

आड़ना *स.* {सं. अल् = वारण करना} रोकना, छेंकना; बाँधना; मना करना, न करने देना; गिरवी या रेहन रखना, गहने रखना।

आड़ा *पुं.* {सं. अलि} धारीदार कपड़ा; लट्ठा, शहतीर; तिरछा; *वि.* आँखों के समानांतर दाहिने से बाईं ओर को या बाएँ से दाहिनी ओर को गया हुआ; इस पार से उस पार तक रखा हुआ।

मुहा. आड़े आना = सामने आना, रुकावट डालना, आड़े वक्त में काम आना, कठिन समय में सहायक होना; *आड़े हाथों लेना* = किसी को व्यंग्योक्ति द्वारा लज्जित करना।

आड़ु *पुं.* {सं. आडुकम्} एक फल जो गर्मी के मौसम में होता है।

आढ़[1] *पुं.* {सं. आढ़क} चार सेर की एक तौल।

आढ़[2] *स्त्री.* {हिं. आड़} चोट; अंतर, फरक; नागा।

आढक *पुं.* {सं.} आढ़।

आढकी *स्त्री.* {सं.} अरहर की दाल।

आढ़त *स्त्री.* {हिं. आढ्य = जमानत देना} किसी अन्य व्यापारी के माल की बिक्री करा देने का व्यवसाय; वह स्थान जहाँ आढ़त का माल रहता हो; वह धन जो इस प्रकार बिक्री करने के बदले में मिलता है।

आढ़तिया, आढ़ती *पुं.* अढ़तिया; जो आढ़त लेता है।

आढ्य *वि.* {सं.} पूरी तरह से युक्त या संपन्न, जैसे धनाढ्य, गुणाढ्य।

आणविक *वि.* {सं.} अणु-संबंधी, अणु का; अणु के विस्फोट से उत्पन्न होनेवाली शक्ति से संबंध रखनेवाला।

आतंक *पुं.* {सं.} रोब , दबदबा, प्रताप; भय, आशंका; रोग; किसी वस्तु या बात का ऐसा अधिक और विकट भय जो बहुत-कुछ रोग का रूप धारण कर ले, जैसे जलांतक (फोबिया); बहुत ही कठोर व्यवहारों, अत्याचारों, प्रकोपों आदि के कारण लोगों के मन में उत्पन्न होनेवाला भय (टेरर)।

आतंकवाद *पुं.* {सं.} यह सिद्धांत की अपना कोई बड़ा या विकट उद्देश्य सिद्ध करने के लिए लोगों को अपनी शक्ति से अत्यंत भयभीत रखना चाहिए (टेररिज्म)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आतंकवादी (दिन्) पुं. {सं.} वह जो लोगों को आतंकित करता हो; *वि.* आतंकवाद-संबंधी।

आत पुं. शरीफा।

आतत *वि.* {सं.} फैला हुआ; खींचा गया।

आततायी पुं. {सं. आततायिन्} {*स्त्री.* आततायिनी} वह जो लोगों की धन-संपत्ति लूट ले उनके घरों में आग लगा दे, स्त्रियाँ छीन ले या इस प्रकार का और उपद्रव या दुष्कर्म करे; दूसरों को ज़हर दे।

आतप पुं. {सं.} {*भाव.* आतपता} धूप, घाम; गर्मी, उष्णता; सूर्य का प्रकाश।

आतप्त *वि.* {सं.} कुछ अथवा खूब तपा हुआ।

आतर पुं. {सं.} नाव या जहाज की मजदूरी, भाड़ा।

आतपस्नान पुं. {सं.} धूप में इस प्रकार बैठना या लेटना कि सारे शरीर पर उसका प्रभाव पड़े (सन्‌बाथ)।

आतश, आतिश *स्त्री.* {फा.} आग, अग्नि।

आतशक पुं. गर्मी की बीमारी।

आतशबाज़ी, आतिशबाज़ी *स्त्री.* {फा.} बारूद, गंधक, शोरे आदि के योग से बने हुए चक्र, अनार आदि जिनके जलने पर रंग-बिरंगी चिनगारियाँ निकलती हैं।

आतशी शीशा पुं. {फा.} एक प्रकार का शीशा जिसमें से सूर्य-किरणें निकलने पर अग्नि उत्पन्न होती है; सूर्यकांत।

आता-जाता पुं. {हिं.} (कहीं) आने या जानेवाला व्यक्ति; अतिथि।

आतिथेय पुं. {सं.} वह जिसके यहाँ अतिथि ठहरा हो।

आतिथ्य पुं. {सं.} अतिथि का सत्कार, पहुनाई, मेहमानदारी; अतिथि का सत्कार करनेवाला।

आतुर *वि.* {सं.} {*भाव.* आतुरता} व्याकुल, व्यग्र, घबराया हुआ; उतावला, अधीर; उद्विग्न, बेचैन; उत्सुक; दुखे; रोगी; *क्रि. वि.* शीघ्र, जल्दी।

आतुरता *स्त्री.* {सं.} विकलता, बेचैनी।

आतुरालय पुं. {सं.} अस्पताल, चिकित्सालय।

आत्म *वि.* {सं. आत्मन्} अपना।

आत्मक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* आत्मिका} (यौगिक शब्दों के अंत में) मय, युक्त; जैसे ध्वंसात्मक, व्यंग्यात्मक, हास्यात्मक; स्वरूप का वाचक।

आत्मकथा *स्त्री.* {सं.} अपने संबंध की आप कही हुई बातें; आत्मचरित्र; आपबीती, अपनी जीवनी स्वयं कही।

आत्मगत *वि.* {सं.} अपने में आया या मिला हुआ; अपने अंदर स्थित, अपने से संबद्ध; पुं. स्वगतकथन।

आत्मगौरव पुं. {सं.} अपनी बड़ाई या प्रतिष्ठा का ध्यान, आत्मसम्मान; स्वाभिमान।

आत्मघात पुं. {सं.} अपने हाथों अपने को मार डालना, आत्महत्या।

आत्मचरित्र पुं. {सं.} किसी का वह जीवनचरित्र जो उसने स्वयं लिखा हो (ऑटोबायोग्रैफी)।

आत्मज पुं. {सं.} {*स्त्री.* आत्मजा} पुत्र लड़का; कामदेव।

आत्मज्ञान पुं. {सं.} जीवात्मा और परमात्मा के विषय में जानकारी; ब्रह्म का साक्षात्कार।

आत्मत्याग पुं. {सं.} दूसरों के हित के लिए अपना स्वार्थ छोड़ना।

आत्मनियंत्रण पुं. {सं.} अपने ऊपर रखा हुआ नियंत्रण।

आत्मनिर्भर *वि.* {सं.} {*भाव.* आत्मनिर्भरता} जो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ हो; स्वावलंबी।

आत्मनिवेदन पुं. {सं.} अपने आपको या अपना सर्वस्व अपने इष्टदेव पर चढ़ा देना, आत्मसमर्पण; अपने विचार प्रकट करना।

आत्मप्रदर्शन पुं. {सं.} अपने गुणों, कृत्यों आदि का प्रदर्शन; अपने शरीर को दिखाना।

आत्मप्रशंसा *स्त्री.* आत्मश्लाघा।

आत्मबलि *स्त्री.* {सं.} किसी कार्य के लिए दी जानेवाली अपनी बलि।

आत्मभू *वि.* {सं.} अपने शरीर से उत्पन्न; आप-ही-आप उत्पन्न; पुं. पुत्र; कामदेव; ब्रह्मा; विष्णु; शिव।

आत्मरक्षा *स्त्री.* {सं.} अपनी रक्षा या बचाव।

आत्मयोनि पुं. {सं.} ब्रह्मा, विष्णु, शिव, काम।

आत्मवाद पुं. = अध्यात्मवाद।

आत्मविद्या *स्त्री.* {सं.} वह विद्या जिससे आत्मा और परमात्मा का ज्ञान हो, ब्रह्मविद्या, आध्यात्मविद्या।

आत्मविश्वास पुं. {सं.} अपने आप पर भरोसा।

आत्मविस्मृति *स्त्री.* {सं.} अपने आपको भूल जाना, अपना ध्यान न रखना।

आत्मश्लाघा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* आत्मश्लाघी} अपनी तारीफ स्वयं करना।

आत्मसंयम पुं. {सं.} अपने मन को रोकना, इच्छाओं को वश में करना।

आत्म-संवेदन पुं. {सं.} आत्मानुभूति, आत्मज्ञान।

आत्मसमर्पण पुं. {सं.} अपने आपको किसी के हाथ सौंपना, पूरी तरह किसी के वश में या अधीन हो जाना; अपना शरीर सौंपना; अपने अधीन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मसात् *वि.* {सं.} जिसे पूरी तरह से अपने अंतर्गत कर लिया गया हो, अपने आप में लीन किया या मिलाया हुआ।

आत्महत्या *स्त्री.* {सं.} अपने आपको मार डालना, आत्मघात (सुसाइड)।

आत्मा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* आत्मिक, आत्मीय} मन या अन्त:करण के व्यापारों का ज्ञान करानेवाली सत्ता, जीवात्मा, चैतन्य (सोल); मन, चित्त; हृदय।

आत्मानंद *पुं.* {सं.} परमानन्द।

आत्माभिमान *पुं.* {सं.} {*वि.* आत्माभिमानी} अपनी इज्जत या प्रतिष्ठा का खयाल, मान-अपमान का ध्यान; आत्मगौरव।

आत्मायन *पुं.* {सं.} एक संप्रदाय जो प्रेतात्माओं का आह्वान करता है।

आत्माराम *वि.* {सं.} वे योगी जो आत्मचिंतन में लीन रहते हैं।

आत्मावलंबी (बिन्) *वि.* {सं.} जो सब काम अपने बल पर करे; आत्मनिर्भर।

आत्मीय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* आत्मीया} निज का, अपना; *पुं.* अपना संबंधी, रिश्तेदार।

आत्मोत्कर्ष *पुं.* {सं.} अपनी उन्नति।

आत्मोत्सर्ग *पुं.* {सं.} दूसरे की भलाई के लिए अपने हिताहित का ध्यान छोड़ना; आत्मबलि।

आत्मोद्धार *पुं.* {सं.} अपनी आत्मा को संसार के दुख से छुड़ाना या ब्रह्मा में मिलाना, मोक्ष; अपना उद्धार या छुटकारा; स्वयं को सांसारिक प्रपंचों से निकालकर मुक्ति की ओर लगाना।

आत्मोन्नति *स्त्री.* {सं.} आत्मा की उन्नति; अपनी उन्नति।

आत्यंतिक *वि.* {सं.} चरम सीमा पर पहुँचा हुआ, अत्यधिक; सर्वथा, हमेशा के लिए।

आत्रेय *वि.* {सं. आत्रि} अत्रि गोत्रवाला; *पुं.* अत्रि के पुत्र दत्त, दुर्वासा और चंद्रमा।

आत्रेयी *स्त्री.* {सं.} एक तपस्विनी जो वेदांत की बहुत बड़ी पंडिता थी; अत्रिगोत्र में उत्पन्न स्त्री।

आथ *पुं.* अर्थ।

आथन *पुं.* {सं. अस्तमन} अस्त होने की क्रिया या भाव।

आथि *स्त्री.* {हिं. थाती} पूँजी, धन।

आदत *स्त्री.* {अ.} स्वभाव; अभ्यास।

आदम *पुं.* {अ.} इबरानी और अरबी मतों के अनुसार मनुष्यों का आदि प्रजापति; मनु का समानान्तर।

आदमियत *स्त्री.* मनुष्यता।

आदमी *पुं.* मनुष्य।

आदर *पुं.* {सं.} सम्मान, सत्कार; प्रतिष्ठा, इज्जत; उत्सुकता; चाहना; रुचि दिखाना।

आदरणीय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* आदरणीया} आदर किए जाने के लायक।

आदर्श *पुं.* {सं.} दर्पण, शीशा, आईना; टीका, व्याख्या; वह जिसके रूप और गुण आदि का अनुकरण किया जाए, नमूना (आइडियल)।

आदर्श मंदिर *पुं.* {सं.} शीशमहल।

आदर्शलोक *पुं.* {सं.} ऐसा राज्य जो आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि दृष्टियों से आदर्श हो।

आदर्शवाद *पुं.* {सं.} {*वि.* आदर्शवादी} यह सिद्धांत कि मनुष्य को सदा अपने आदर्श या अच्छी से अच्छी बातें अपने सामने रखकर उनकी सिद्धि या प्राप्ति के लिए सब कार्य करने चाहिए (आइडियलिज्म); आदर्शों में भरोसा।

आदर्शविज्ञान *पुं.* {सं.} विज्ञान की दो शाखाओं में से एक, जिसमें वे विज्ञान आते हैं जो कल्पना आदि के आधार पर आदर्शों का विवेचन करते हैं (नारमेटिव साइंस)।

आदर्शीकरण *पुं.* {सं.} किसी वस्तु, कार्य आदि को आदर्श रूप देना (आइडियलाइज़ेशन)।

आदाता *पुं.* {सं.} वह व्यक्ति जो किसी विवादग्रस्त संस्था का प्रशासन-भार न्यायालय के अनुरोध पर स्वीकार करता है (रिसीवर); ग्रहण करनेवाला।

आदान *पुं.* {सं.} किसी से कुछ लेना, ग्रहण करना, 'दान' का उलटा; वह जो कर, शुल्क आदि के रूप में लिया जाने को हो या प्राप्य हो; पकड़ना।

आदान-प्रदान *पुं.* {सं.} किसी से कुछ लेना और उसे कुछ देना, जैसे वस्तुओं या विचारों का आदान-प्रदान; विनिमय।

आदायक *वि.* वह व्यक्ति जो न्यायालय द्वारा विवादग्रस्त संपत्ति को अपने अधिकार में लेकर उसकी देखभाल के लिए नियुक्त हो।

आदि *वि.* {सं.} प्रथम, पहला, शुरू का, आरंभ का; शुरुआत; *पुं.* {सं.} आरंभ, बुनियाद, मूल कारण; परमेश्वर; *निपा.* वगैरह।

आदिकारण *पुं.* {सं.} सृष्टि का मूल कारण, जैसे ईश्वर या प्रकृति।

आदित्य *पुं.* {सं.} अदिति के पुत्र; जो संख्या में 12 हैं; देवता; सूर्य; इन्द्र।

आदिनाथ *पुं.* {सं.} शिव, महादेव; जैनों के अनुसार ऋषभदेव।

आदिपुरुष *पुं.* {सं.} परमेश्वर; वह जिससे किसी वंश का आरंभ हुआ हो, मूल पुरुष।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदिभव, आदिभू पुं. {सं.} सबसे प्रथम उत्पन्न, ब्रह्मा, विष्णु, बड़ा भाई; शंकर।

आदिमजाति *स्त्री.* {सं.} किसी देश में रहनेवाली सबसे पहली और पुरानी मनुष्यजाति (प्रिमिटिव रेस)।

आदिवासी(वासिन्) पुं. {सं.} किसी स्थान पर रहनेवाले वहाँ के मूल, निवासी; आरंभ से रहनेवाले।

आदिष्ट *वि.* {सं.} जिसे आदेश मिला हो; जिसके विषय में कोई आदेश दिया गया हो।

आदी *वि.* {अ.} अभ्यस्त; आदतमंद; अदरक।

आदीपन पुं. {सं.} चमकाना, पुताई करना, आग लगाना।

आदृत *वि.* {सं.} जिसका आदर किया गया हो, सम्मानित।

आदेय *वि.* {सं.} किसी से लेने योग्य, जो लिया जा सके; जिस पर कर, शुल्क आदि लिया या लगाया जा सके; जिस पर कर, शुल्क आदि लगाया गया हो; ग्रहण करने योग्य।

आदेश पुं. {सं.} {*वि.* आदेशक, आदिष्ट} आज्ञा; उपदेश; ज्योतिषशास्त्र में, ग्रहों का फल; व्याकरण में, एक अक्षर के स्थान पर दूसरे अक्षर का आना, अक्षर-परिवर्तन।

आद्यंत *क्रि. वि.* {सं.} आदि से अंत तक, शुरू से आखिर तक।

आद्य *वि.* {सं.} बिल्कुल आरंभ या आदि का, सर्वप्रथम विशेषतः जिससे औरों की उत्पत्ति या विकास हुआ हो (प्राइम)।

आद्यशेष पुं. {सं.} हिसाब में वह धन जो पहले रोकड़-बाकी के रूप में रहा हो और अब नए खाते या पृष्ठ में गया हो (ओपनिंग बैलेंस)।

आद्या *स्त्री.* {सं.} दुर्गा, दस महाविद्याओं में से एक; जो सबसे पहली हो, आद्य शक्ति।

आद्याक्षर पुं. {सं.} {*वि.* आद्याक्षरित} व्यक्ति के नाम के शब्दों के आरंभ के अक्षर जो पूरे मान के सूचक होते और संक्षिप्त हस्ताक्षर का काम देते हैं, जैसे कृष्णचन्द्र के कृ. च. (इनिशियल)।

आद्याक्षरित *वि.* {सं.} जिस पर हस्ताक्षर के रूप में नाम के शब्दों के आरंभ के अक्षर लिखे हों (इनिशियल्ड)।

आद्योपांत *क्रि. वि.* {सं.} शुरू से अंत तक।

आध *वि.* {हिं. आधा} दो बराबर भागों में से एक, आधा (यौगिक में)।

आधमन पुं. {सं.} जमा करना, फूँक भरना।

आधर्षण पुं. {सं.} न्यायालय का अभियुक्त को दोषी पाकर अपराधी मानना और दंड देना (कन्विक्शन)।

आधर्षित *वि.* {सं.} जो अपराधी सिद्ध होने पर न्यायालय में दंडित हुआ हो (कन्विक्डेट)।

आधा *वि.* {सं. अर्द्ध} {*स्त्री.* आधी} दो समान, भागों में से एक अर्द्ध।

पद आधो-आध = दो बराबर भागों में।

मुहा. आधा तीतर आधा बटेर = कुछ एक तरह का और कुछ दूसरी तरह का।

आधान पुं. {सं.} स्थापन, रखना; गिरवी या बंधक रखना; वसूली; भरना।

आधार पुं. {सं.} {*वि.* आधृत, आधारित} जिस पर कोई दूसरी चीज खड़ी या टिकी रहती हो, आश्रय, सहारा, जैसे प्राणाधार (सपोर्ट); व्याकरण में, अधिकरण कारक; त्रिभुज की वह भुजा जिस पर त्रिभुज स्थित माना जाता है (बेस); पौधे के नीचे मिट्टी लगाना; मकान के नीचे पुस्ता बाँधना।

आधारवर्ष पुं. {सं.} वह वर्ष जिसके तथ्यों को आधार मानकर अन्य वर्षों के तथ्यों का आपेक्षित मान सूचित किया जाता हो (बेस इयर)।

आधारित *वि.* {सं. आधार} किसी के आधार पर ठहरा हुआ, अवलंबित, आश्रित।

आधारी *वि.* {सं. आधारिन्} {*स्त्री.* आधारिणी} सहारा रखनेवाला, सहारे पर रहनेवाला; साधुओं के टेकने की, अड्डे के आकार की एक लकड़ी।

आधासीसी *स्त्री.* {हिं. आधा + सीस = सिर} अधकपारी; वह सिर दर्द जो सूर्योदय से आरंभ होता है और सिर के एक ओर रहता है; सूर्यावर्त।

आधि *स्त्री.* {सं.} मानसिक व्यथा, चिंता; रेहन, बंधक।

आधिकरणिक *वि.* {सं.} अधिकरण या न्यायालय से संबंध रखनेवाला; अधिकरण या न्यायालय की आज्ञा से होनेवाला, जैसे आधिकरणिक विक्रय (कोर्ट सेल)।

आधिकारिक *वि.* {सं.} किसी प्रकार के अधिकार से युक्त, अधिकार-संपन्न; पुं. साहित्य में दृश्य-काव्य की मुख्य कथावस्तु।

आधिकारिकी *स्त्री.* {सं. आधिकारिक} व्यक्तियों का वह समूह जो किसी अधिकार का प्रयोग या व्यवहार करता हो (ऑथारिटी)।

आधिदैविक *वि.* {सं.} देवता भाग्य आदि से होने वाला सुख या दुःख; जो साधारणतः प्राकृतिक या लोकगत न हो, बल्कि उससे बहुत बढ़-चढ़कर हो (सुपर-नेचुरल)।

आधिपत्य पुं. {सं.} 'अधिपति' होने की अवस्था या भाव, प्रभुत्व, स्वामित्व।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधिभौतिक *वि.* {सं.} प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न सुख-दुख।

आधीन *वि.* अधीन।

आधुनिक *वि.* {सं.} {*भाव.* आधुनिकता} वर्तमान या इस समय का, आजकल का (मॉडर्न)।

आधुनिकता *स्त्री.* {सं.} नये जमाने का होना; प्रगतिशीलता।

आधुनिका *स्त्री.* {सं.} आधुनिक युग की बाला; पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित बाला।

आधृत *वि.* {सं.} आश्रित, टिका हुआ।

आधेय *पुं.* {सं.} किसी सहारे पर टिकी हुई चीज; जिसे कुछ पर टिकाना हो; *वि.* ठहरने योग्य; रचने योग्य; रेहन रखने योग्य।

आधोरण *पुं.* {सं.} महावत, हाथीवान।

आध्यात्मिक *वि.* {सं.} {भाव. आध्यात्मिकता} अध्यात्म या आत्मा-संबंधी; ब्रह्म और जीव-संबंधी।

आध्यासिक *वि.* {सं.} अध्यास या भ्रम से उत्पन्न।

अनिन्तर्य *पुं.* {सं.} लगातार होना, बिना व्यवधान के स्थिति।

आनंद *पुं.* {सं.} {*वि.* आनंदित, आनंदी} अत्यधिक सुख, मजा।

आनंद-बधाई *स्त्री.* {सं. आनंद + हिं. बधाई} मंगल-उत्सव; मंगल अवसर।

आनंदमंगल *पुं.* {सं.} कोई ऐसी सुखद या शुभ बात अथवा अवसर जिसमें सब लोग मिलकर आनंद उठाते हों।

आनंदवन *पुं.* {सं.} काशी नगरी।

आनंद-सम्मोहिता *स्त्री.* {सं.} वह प्रौढ़ा नायिका जो रति के आनंद में अत्यंत निमग्न और मुग्ध हो रही हो।

आनंदित *वि.* {सं.} जिसे आनंद हुआ हो, हर्षित, प्रसन्न।

आनंदी *वि.* {सं.} हर्षित, प्रसन्न; सदा प्रसन्न रहनेवाला।

आन[1] *स्त्री.* {सं. अणि = मर्यादा, सीमा} मर्यादा; शपथ, सौगंध, कसम; विजय-घोषणा, दुहाई; ढंग; क्षण, लमहा।
मुहा. आन की जान में = चटपट।
अकड़, ऐंठ, ठसक; अदब, लिहाज; प्रतिज्ञा, प्रण, टेक; आज्ञा, हुकुम।

आन[2] *वि.* = अन्य।

आनक *वि.* {सं.} झुका हुआ, नत, नम्र; एक बाजा।

आनकदुन्दुभि *पुं.* {सं.} श्रीकृष्ण के पिता वासुदेव का नाम।

आनत *वि.* {सं.} झुका हुआ, नीचे खिंचा हुआ।

आनद्ध *वि.* {सं.} कसा या मढ़ा हुआ हो, *पुं.* चमड़े से मँढा बाजा, जैसे ढोल, मृदंग आदि।

आनन *पुं.* {सं.} मुख, मुँह; चेहरा, मुखड़ा।

आन-बान *स्त्री.* {हिं. आन + बान} सज-धज, ठाठ-बाट, तड़क-भड़क; ठसक, अदा।

आनयन *पुं.* {सं.} कहीं से कोई चीज ले आना, लाना; उपनयन संस्कार; मँगाना।

आनर्त *पुं.* {सं.} {*वि.* आनर्तक} द्वारकापुरी या प्रदेश; इस देश का निवासी; नृत्यशाला; युद्ध।

आना[1] *अ.* {सं. आगमन} कहीं से चलकर वक्ता के पास पहुँचना, आगमन करना।
मुहा. आना-जाना = जन्म व मृत्यु; *आ धमकना* = अचानक आ पहुँचना; *आ पड़ना* = सहसा आ पहुँचना, सहसा गिर पड़ना, जैसे ऊपर से पेड़ या पत्थर आ पड़ना; *आ पड़ना* = गिर पड़ना; *आ लेना* = पास पहुँच जाना, आक्रमण करना, टूट पड़ना; *(किसी की) आ बनना* = लाभ उठाने का अच्छा अवसर हाथ आना; *(किसी को) कुछ आना* = कुछ ज्ञान होना।
जाकर लौटना; काल या समय का प्रारंभ होना; पौधों आदि में फल-फूल लगना; मन में कोई भाव उत्पन्न होना, जैसे आनंद आना।

आना[2] *पुं.* {सं. आणक} पुरानी मुद्रा के अनुसार; एक रुपए का सोलहवाँ हिस्सा; किसी वस्तु का सोलहवाँ अंश।

आनाकानी *स्त्री.* {सं. अनाकर्णन} सुनी-अनसुनी करने का कार्य, न ध्यान देने का कार्य; टाल-मटोल, हीला-हवाली; कानाफूसी।

आनाय *पुं.* {सं.} जाल।

आनाह *पुं.* {सं.} पेट फूलना; पुटलिस; विस्तार।

आनि *स्त्री.* आन, मर्यादा, *पू. क्रि.* लाकर।

आनुक्रमिक *वि.* {सं.} क्रम से आया हुआ।

आनुपातिक *वि.* {सं.} अनुपात के विचार या दृष्टि से ठीक (प्रोपोरशनल)।

आनुपूर्वी *वि.* {सं. आनुपूर्वीय} क्रमानुसार, ऐक के बाद दूसरा (सक्सेसिव)।

आनुमानिक *वि.* {सं.} अनुमान से सोचा या समझा हुआ।

आनुयात्रिक *वि.* {सं.} पीछे चलनेवाला, सेवक।

आनुवंशिक *वि.* {सं.} जो किसी वंश में बराबर होता आया हो और जिसके आगे भी उस वंश में होते रहने की संभावना हो, वंशानुक्रमिक, जैसे आनुवंशिक रोग (हेरिडेटरी)।

आनुशासनिक *वि.* {सं.} अनुशासन-संबंधी।

आनुषंगिक *वि.* {सं.} अकस्मात् या संयोग-वश होनेवाला; अनुषंग या प्रसंग से यों ही हो जानेवाला, प्रासंगिक, जैसे आनुषंगिक परिव्यय।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनृत *वि.* {सं.} मिथ्या।

आप[1] *क्रि. वि.* {सं. आप्त} अपने शरीर से, स्वयं, खुद (तीनों पुरुषों में)।

मुहा. आप आपकी पड़ना = अपनी-अपनी रक्षा या लाभ का ध्यान रहना; *आप-आपका* = सबको अलग-अलग; *अपने-आपको भूलना* = किसी मनोवेग के कारण बेसुध होना, घमंड में चूर होना; *आप से आप या आप की आप* = स्वयं, खुद, मन ही मन, स्वगत; *सर्व.* 'तुम' और 'वे' के स्थान पर आदरार्थक प्रयोग।

आप[2] *पुं.* {सं. आप:} जल, पानी।

आपजात्य *पुं.* {*वि.* अपजात} गुण आदि के विचार से अपने जनक, उत्पादक या मूल से कम और हीन होना (डीजेनरेशन)।

आपण *पुं.* {सं.} दुकान।

आपत्काल *पुं.* {सं.} {*वि.* आपत्कालिक} विपत्ति, दुर्दिन; बुरा समय, कुसमय।

आपत्ति *स्त्री.* {सं.} दुख, क्लेश, कष्ट; विपत्ति, संकट, आफत; कष्ट का समय; जीविका का कष्ट; दोषारोपण; किसी बात को ठीक न मानकर उसके संबंध में कुछ कहना, उज्र, एतराज (ऑब्जेक्शन)।

आपत्तिकर्ता (कर्तृ) *पुं.* {सं.} आपत्ति करनेवाला।

आपत्तिकाल *पुं.* {सं.} संकट का समय।

आपत्तिजनक *वि.* {सं.} जो मन को बुरा लगे; जिस पर आपत्ति की जा सकती हो।

आपत्ति-पत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जिसमें किसी कार्य या विषय में अपनी आपत्ति और मतभेद लिखा हो (पेटिशन ऑफ ऑब्जेक्शन)।

आपद्, आपदा *स्त्री.* {सं.} दुख, क्लेश; विपत्ति, आफत; कष्ट का समय।

आपद्धर्म *पुं.* {सं.} वह कर्म जिसका विधान केवल आपत्काल के लिए हो; किसी वर्ण के लिए वह व्यवसाय या काम जिसकी आज्ञा या विधान और कोई जीवनोपाय न होने की ही दशा में हो, जैसे ब्राह्मण के लिए वाणिज्य (स्मृति); ऐसा काम जो अनुचित होने पर भी विपत्ति में अनुमत हो।

आपन *सर्व.* मैं या हम; *क्रि. वि.* अपने आप।

आपना *सर्व.* अपना।

आपन्न *वि.* {सं.} आपद्ग्रस्त, दुखी; प्राप्त, जैसे संकटापन्न; पास आया।

आप-बीती *स्त्री.* {हिं.} वह बात या घटना जो स्वयं अपने ऊपर बीती हो।

आपराधिक *वि.* {सं.} ऐसे कार्यों या बातों से संबंध रखनेवाला जिनकी गणना अपराधों में हो और जिनके लिए न्यायालय से दंड मिल सकता हो, जैसे आपराधिक प्रक्रिया (क्रिमिनल); ऐसी बातों से संबंध रखनेवाला जिनमें अपराध का विचार, भाव या ईप्सा हो, आपराधिक प्रमाद। (कल्पेबुल); अपराधशील।

आपस का *वि.* {हिं. आप} इष्ट-मित्रों या भाई-बंधुओं के बीच का; पारस्परिक, एक दूसरे का, परस्पर का।

आपसी *वि.* {हिं. आपस} आपस का, पारस्परिक।

आपस्तम्ब *पुं.* {सं.} एक स्मृतिकार।

आपा *पुं.* {हिं. आप} अपनी सत्ता या अस्तित्व; अहंकार, घमंड, गर्व; होश-हवास, सुध-बुध।

मुहा. आपा खोना = अहंकार छोड़कर नम्र होना, अपना गौरव छोड़ना; *आपा तजना* = अपनी सत्ता को भूलना, आत्मभाव का त्याग, अहंकार छोड़ना, निरभिमान होना, प्राण तजना, मरना; *आपे में आना* = होश-हवास में होना, चेत में होना; *आपे में न हरना या आपे से बाहर होना* = अपने ऊपर वश न रखना, बेकाबू होना, घबराना, बदहवास होना, अत्यंत क्रोध करना।

आपात *पुं.* {सं.} {*वि.* आपातिक} गिराव, पतन; किसी घटना का अचानक हो जाना; आरंभ; अंत; वह घटना या बात जो अचानक ऐसे रूप में सामने आ जाए जिसकी पहले से कोई संभावना या कल्पना न हो (एमर्जेंसी)।

आपातकाल *पुं.* {सं.} विकट स्थिति का समय।

आपातस्थिति *स्त्री.* {सं.} वह विकट स्थिति जिसमें शासन वैयक्तिक अधिकारों को स्थगित कर देता या स्वयं ग्रहण कर लेता है।

आपातिक *वि.* {सं.} अचानक ऐसे रूप में सामने आनेवाला, जिसकी कोई आशा या संभावना न हो (एमर्जेंट)।

आपाद *अ.* {सं.} पैरों तक।

आपादमस्तक *क्रि. वि.* {सं.} पैर से सिर तक; नीचे से ऊपर तक।

आपाधापी *स्त्री.* {हिं. आप + धाप} अपनी-अपनी चिंता, अपनी-अपनी धुन; खींच-तान, लाग-डाँट।

आपान *पुं.* {सं.} शराब पीने का अड्डा।

आपुन *सर्व., वि.* अपना।

आपापंथी *वि.* मनमानी करनेवाला, खुदगर्ज।

आपूर्ति *स्त्री.* {सं.} पूर्ति करने की क्रिया या भाव।

आपेक्षिक *वि.* {सं.} सापेक्ष, अपेक्षा रखनेवाला; दूसरी वस्तु के अवलंब पर रहनेवाला, किसी की अपेक्षा में या किसी पर आश्रित रहनेवाला; किसी की अपेक्षा, तुलना या अनुपात में होनेवाला (रिलेटिव)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपेक्षिकता-सिद्धांत पुं. अमेरिकन वैज्ञानिक आइंस्टाइन द्वारा प्रवर्ति मत थियोरी ऑफ रिलेटिविटी।

आप्त *वि.* {सं.} {*भाव.* आप्ति} प्राप्त, लब्ध (यौगिक में); कुशल, दक्ष; विषय को ठीक तौर से जाननेवाला; पूर्ण तत्वज्ञ का कहा हुआ और इसी कारण प्रामाणिक; पुं. {सं.} ऋषि; शब्द-प्रमाण; गणित में भाग की लब्धि।

आप्तकाम पुं. {सं.} वह जिसकी सब कामनाएँ पूर्ण हो चुकी हों, पूर्णकाम।

आप्तपुरुष पुं. {सं.} जिसकी बात सर्वथा प्रामाणिक मानी जाय।

आप्लावन पुं. {सं.} चारों ओर जल से भर जाना; डुबाना।

आप्लावित पुं. {सं.} जल में डूबा हुआ।

आफत *स्त्री.* {*अ.*} विपत्ति; कष्ट, दुख; कष्ट या विपत्ति के दिन।

मुहा. आफत उठाना या मचाना = जल्दी मचाना।

आफत का परकाला *वि.* बड़े-बड़े और विकट काम भी तुरंत कर डालनेवाला।

आब *स्त्री.* {फा.} चमक, तड़क-भड़क, आभा, कांति, पानी; शोभा, रौनक, छवि; तेज, शान; पुं. पानी, जल।

आबकारी *स्त्री.* {फा.} वह स्थान जहाँ शराब चुआई या बेची जाती हो, शराबखाना, कलवरिया, भट्ठी; मादक वस्तुओं के उत्पादन, वितरण, नियंत्रण आदि से संबंध रखनेवाला सरकारी विभाग।

आबकारी शुल्क पुं. {फा. + सं.} वह शुल्क जो राज्य की ओर से शराब, अफीम, भंग आदि मादक द्रव्यों के उत्पादन पर लगता है।

आबजोश पुं. लाल मुनक्का।

आबदस्त पुं. {*अ.*} शौच के बाद पानी लेना, गुदा धोना।

आबदाना पुं. {फा.} अन्नजल, दाना-पानी, खानापान; जीविका; रहने का संयोग।

मुहा. आबोदाना उठना = जीवित, जिंदा न रहना, रहने का संयोग टलना, किसी स्थान को छोड़कर जाना पड़ना।

आबदार *वि.* {फा.} {*भाव.* आबदारी} जिसमें आब या चमक हो, चमकीला; पुं. वह व्यक्ति जो पुरानी तरह की तोप चलने के समय बीच-बीच में उस पर पानी का पुचारा देता था।

आबद्ध *वि.* {सं.} बँधा हुआ; कैद।

आबनूस पुं. {फा.} {*वि.* आबनूसी} एक प्रकार का पेड़ जिसके हीर की लकड़ी बहुत काली होती है।

आबनूस का कुंदा पुं. {सं.} अत्यंत काले रंग का मनुष्य।

आबपाशी *स्त्री.* {फा.} सिंचाई।

आबरवाँ *स्त्री.* {फा.} एक प्रकार की बढ़िया महीन मलमल।

आबरू *स्त्री.* {फा.} इज्जत, प्रतिष्ठा।

आबाद *वि.* {फा.} बसा हुआ (गाँव, नगर, घर आदि); जोतने योग्य, उपजाऊ (जमीन)।

आबाद करना पुं. जमीन को कृषि योग्य बनाना, बस्ती बसाना।

आबादी *स्त्री.* {फा.} बस्ती; जनसंख्या, मर्दुमशुमारी; वह भूमि जिसपर खेती हो।

आबाल *अ.* {सं.} बच्चों से लेकर।

आबालवृद्ध *अ.* {सं.} बच्चों से बूढ़ों तक।

आभरण पुं. {सं.} {*वि.* आभरित} गहना, आभूषण।

आभा *स्त्री.* {सं.} चमक-दमक, कांति, दीप्ति; झलक, छाया; रंगों आदि की दिखाई देनेवाली साधारण से कुछ हलकी या गहरी छाया (शेड)।

आभार पुं. {सं. आ + भार} बोझ, भार; गृहस्थी का बोझ, घर की देखभाल की जिम्मेदारी (ऑब्लिगेशन, अंतिम दोनों अर्थों के लिए)।

आभारी पुं. {हिं. आभार} जिसके साथ कोई उपकार किया गया हो, उपकृत; आभार मानने वाला, कृतज्ञ मालूम देना।

आभास पुं. {सं.} प्रतिबिंब, छाया, झलक; निशान, संकेत; मिथ्या ज्ञान, जैसे रस्सी में सर्प का आभास; वह जो पूरा न हो, पर जिसमें असल की झलक भर हो, जैसे रसाभास, हेत्वाभास।

आभिजात्य पुं. {सं.} कुलीनों के लक्षण और गुण, कुल-संस्कार; सौंदर्य, खानदानीपन।

आभीर पुं. {सं.} {*स्त्री.* आभीरी} अहीर, ग्वाला, गौ; यादवों की एक जाति।

आभुक्ति *स्त्री.* {सं.} किसी सुख या सुभीते का वह लाभ जो पहले से प्राप्त हो (ईजमेंट)।

आभूषण पुं. {सं.} {*वि.* आभूषित} गहना, जेवर, आभरण, अलंकार; वह चीज या बात जिससे किसी दूसरी चीज या बात की शोभा या सौंदर्य बढ़े (ऑर्नामेंट)।

आभोग पुं. {सं.} किसी वस्तु को लक्षित करनेवाली सब बातों की विद्यमानता, पूर्ण लक्षण; मंडल, विस्तार, आसपास का वातावरण, परिवेश; आभुक्ति।

आभ्यंतर *वि.* {सं.} अंदर का, भीतरी; किसी वस्तु के भीतरी भागों या कार्यों से संबंध रखनेवाला, अंतरंग-संबंधी, आंतरिक (इंटर्नल)।

आमंत्रण पुं. {सं.} {*वि.* आमंत्रित} बुलाना, आह्वान; निमंत्रण, न्योता; विदा लेना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमंत्रित *वि.* {सं.} बुलाया हुआ; निमंत्रित, न्योता हुआ।

आम[1] *पुं.* {सं. आम्र} एक प्रसिद्ध बड़ा पेड़ जिसके फल खाए या चूसे जाते हैं; इस पेड़ का फल।

आम[2] *वि.* {सं.} कच्चा, अपक्व, असिद्ध; *पुं.* खाए हुए अन्न का बिना पचा हुआ सफेद और लसदार मल जो मरोड़ के साथ थोड़ी-थोड़ी देर में शौच में निकलता है, आँव।

आम[3] *वि.* {अ.} साधारण, मामूली; जनसाधारण का, जनता का; प्रसिद्ध, विख्यात।

आमदनी *स्त्री.* {फा.} आनेवाला धन, आय, प्राप्ति; व्यापार की वस्तु जो और देशों से अपने देश में आए, आयात।

आमना-सामना *पुं.* {हिं. सामना} मुकाबला; भेंट।

आमने-सामने *क्रि. वि.* {हिं. सामने} एक दूसरे के समक्ष या मुकाबले में।

आमरण *क्रि. वि.* {सं.} जब तक मृत्यु न आए तब तक, मरणकाल तक, जिंदगी-भर।

आमर्ष *पुं.* {सं.} क्रोध, गुस्सा; रस में एक संचारी भाव, असहनशीलता।

आमलक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* अल्पा. आमलकी} आँवला।

आमवात *पुं.* {सं.} एक रोग जिसमें आँव गिरता है और शरीर सूजकर पीला पड़ जाता है।

आमश्राद्ध *पुं.* {सं.} कच्चा अन्न देकर किया जानेवाला श्राद्धकर्म।

आमादा *वि.* {फा.} उतारू, उद्यत।

आमाशय *पुं.* {सं.} पेट के अंदर की वह थैली जिसमें भोजन किए हुए पदार्थ इकट्ठे होते और पचते हैं।

आमिर *पुं.* आमिल।

आमिल[1] *पुं.* {अ.} कार्यकर्ता; अधिकारी, हाकिम; ओझा, सयाना।

आमिल[2] *पुं.* {हिं. आम} कच्चे आम को सुखाकर बनाई हुई एक प्रकार की खटाई।

आमिष *पुं.* {सं.} मांस, गोश्त; भोग्य वस्तु; लोभ, लालच; शिकार (विक्टिम)।

आमिषभोजी (जिन्) *वि.* {सं.} मांसाहारी।

आमीलन *पुं.* {सं.} आँखें मूँदना, मरना, फूल का मुरझाना।

आमुख *पुं.* {सं.} नाटक की प्रस्तावना; पुस्तक के आरंभ में दी जानेवाली उसकी भूमिका या प्रस्तावना (प्रिफेस)।

आमुष्मिक *वि.* {सं.} परलोक संबंधी।

आमूल *अ.* {सं.} जड़ तक, नीचे तक।

आमोद *पुं.* {सं.} {*वि.* आमोदित, आमोदी} आनंद, हर्ष, खुशी, प्रसन्नता; मन-बहलाव; सुगंध, महक।

आमोद-प्रमोद *पुं.* {सं.} ऐसे काम जो केवल मन-बहलाव या चित्त प्रसन्न करने के लिए होते या किए जाते हों, जैसे खेल-तमाशे, संगीत, नृत्य, जादू के खेल आदि (एंटरटेन्मेंट); हँसी-ठट्ठा।

आमोदी *वि.* {सं.} खुशमिजाज, सुगंध वाला।

आम्र *पुं.* {सं.} आम का पेड़ या फल।

आय *स्त्री.* {सं.} लाभ आदि के रूप में आने या प्राप्त होनेवाला धन, आमदनी, प्राप्ति, धनागम (इन्कम)।

आयकर *पुं.* {सं.} आय पर लगनेवाला कर; उक्त कर की राशि।

आयत[1] *पुं.* {सं.} विस्तृत, लंबा-चौड़ा, दीर्घ, विशाल; (क्षेत्र) जिसके चारों कोण सम हों; *पुं.* चार भुजाओंवाला वह क्षेत्र जिसकी आमने-सामने की भुजाएँ बराबर और चारों कोण सम हों (रेक्टैंगिल)।

आयत[2] *स्त्री.* {अ.} इंजील या कुरान का कोई वाक्य।

आयताक्षी *स्त्री., वि.* बड़ी आँखोंवाली।

आयतन *पुं.* {सं.} मकान, घर; ठहरने की जगह; देवताओं की वंदना की जगह, मंदिर; कोई पदार्थ ग्रहण करने की पात्रता या क्षमता के विचार से किसी पात्र या खाली जगह के अंदर का स्थान या अवकाश (कैपेसिटी)।

आयति *स्त्री.* {सं.} विस्तार; भविष्य; शान; पुरुषार्थ।

आय-व्यय *पुं.* {सं.} आमदनी और खर्च।

आय-व्ययिक *पुं.* {सं. आय-व्यय} भविष्य में कुछ निश्चित काल तक होनेवाली आय और व्यय का अनुमान से लगाया हुआ हिसाब।

आय-व्यय-फलक *पुं.* तलपट।

आयसु *स्त्री.* {सं. आदेश} आज्ञा।

आया *स्त्री.* {पुर्त.} बच्चों को दूध पिलाने और उनको खिलानेवाली स्त्री, दाई; स्कूलों में बालकों की परिचारिका, धाय।

आयात *पुं.* {सं.} वह वस्तु या माल जो व्यापार के लिए विदेश से अपने देश में मँगाया या लाया जाए (इम्पोर्ट)।

आयातित *वि.* {सं.} (माल आदि) जो दूसरे स्थान या देश से आया हो, बाहर से आया या मँगाया हुआ (इम्पोर्टेड)।

आयाम *पुं.* {सं.} लंबाई, विस्तार; नियमित करने की क्रिया, नियमन, जैसे प्राणायाम।

आयास *पुं.* {सं.} परिश्रम, मेहनत; किसी काम को करने में जोर लगना।

आयु *स्त्री.* {सं.} जन्म से मृत्यु तक का समय, वय, उमर, जीवनकाल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. आयु सरना = जीवन बीतना; जीवन समाप्त होना।

आयुक्त पुं. {सं.} मंडल (कमिश्नरी) का प्रधान शासनिक अधिकारी (कमिश्नर); विशेष अधिकार पर नियुक्त व्यक्ति।

आयुध पुं. {सं.} लड़ाई के हथियार, शस्त्र (आर्म्स)।

आयुधविधान पुं. {सं.} वह विधान जिसमें जनता द्वारा आयुध रखने और उनके प्रयोग से संबंध रखनेवाले नियम रहते हैं (आर्म्स ऐक्ट); शस्त्रास्त्रों का निर्माण।

आयुधशाला *स्त्री.* {सं.} वह भवन जिसमें अस्त्र-शस्त्र, गोला-बारूद आदि रखे जाते हों (ऑरस्नल); अस्त्रागार।

आयुधीय *वि.* {सं.} आयुधों से संबंध रखनेवाला, शस्त्रों का; पुं. युद्ध में काम आनेवाले अस्त्र-शस्त्र और उनके सभी आवश्यक उपकरण, जैसे गोला-बारूद, बंदूकें, तोपें आदि (एम्युनिशन)।

आयुर्वेद पुं. {सं.} {*वि.* आयुर्वेदीय} आयु-संबंधी शास्त्र, चिकित्साशास्त्र।

आयुष पुं. {सं.} उम्र, जीवनकाल।

आयुष्कर *वि.* {सं.} आयुष्य।

आयुष्मान, आयुष्मान् *वि.* {सं.} {*स्त्री.* आयुष्मती} दीर्घजीवी, चिरजीवी; लंबी आयुवाला।

आयुष्य पुं. {सं.} आयु, उमर; आयु बढ़ानेवाला, ऐसी औषध।

आयोग पुं. {सं.} वह व्यक्ति या लोग जिन्हें किसी बात का छानबीन करने तथा उसके संबंध में अपनी रिपोर्ट देने के लिए सरकार द्वारा नियुक्त किया गया हो (कमीशन); एक समिति।

आयोजक पुं. {सं.} आयोजन-कर्ता।

आयोजन पुं. {सं. आयोजना, कर्ता आयोजक; *वि.* आयोजित} किसी को किसी कार्य में लगाना, नियुक्ति; किसी काम के लिए पहले से किया जानेवाला प्रबंध; उद्योग; सामग्री; योजना।

आयोधन पुं. {सं.} युद्ध।

आरंभ पुं. {सं.} कोई काम हाथ में लेकर उसके पहले अंश का संपादन या प्रवर्तन करना; किसी कार्य, व्यापार आदि का पहलेवाला अंश या भाग, शुरू का हिस्सा, आदि; शुरू होने की क्रिया या भाव, उत्पत्ति; नाटक में फल की प्राप्ति के लिए किया जानेवाला पहला यत्न।

आरंभतः *क्रि. वि.* {सं.} बिल्कुल आरंभ से, ठीक पहले से; बिल्कुल नए सिरे से (एब-इनीशियो)।

आरंभिक *वि.* {सं.} आरंभ का, शुरू का, पहले का; कोई काम करने से पहले, उसकी तैयारी, व्यवस्था आदि से संबंध रखनेवाला, प्रारंभिक।

आर¹ *स्त्री.* {सं. अल् = डंक} लोहे की पतली कील जो साँटे या पैने में लगी रहती है, अनी, पैनी; नर मुर्गे के पंजे के ऊपर का काँटा; बिच्छू, बर्रे या मधुमक्खी आदि का डंक; चक्र के आरे।

आर² पुं. {सं.} किनारा, सिरा या पार्श्व; इस ओर का या अपनी ओर का सिरा या पार्श्व; पीतल; मंगल ग्रह।

आरक्त *वि.* {सं.} ललाई लिए हुए, कुछ लाल; लाल; कुछ रँगा हुआ।

आरक्ष पुं. {सं.} रक्षाकार्य, चौकसी, पुलिस, किसी की सुरक्षा करना।

आरक्षण पुं. {सं.} किसी सीट, कक्ष, स्थान आदि को किसी विशिष्ट व्यक्ति संस्था, जाति आदि के लिए निश्चित करना।

आरक्षित *वि.* {सं.} जिसका आरक्षण हुआ हो।

आरट्ट पुं. {सं.} पंजाब का एक प्रदेश जहाँ के वासी अरोड़ कहलाए जाते हैं।

आरण्य *वि.* {सं.} वन में उत्पन्न, वन में रहनेवाला।

आरण्यक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* आरण्यकी} वन का, जंगली; पुं. {सं.} वेदों की शाखा का वह भाग जिसमें वानप्रस्थों के कृत्यों का विवरण और उनके लिए उपदेश हैं।

आरत *वि.* आर्त।

आरती *स्त्री.* {सं. आरार्तिक} किसी मूर्ति के सामने दीपक घुमाना, नीराजन; वह पात्र जिसमें बत्ती रखकर आरती की जाती है; वह स्रोत जो आरती के समय पढ़ा जाता है।

आरन पुं. {सं. अरण्य} वन, जंगल।

आरना *वि.* जंगली।

आरनाल पुं. {सं.} काँजी, खटाई।

आर-पार पुं. {सं. आर = इधर का किनारा + पार = उधर का किनारा} यह और वह किनारा, यह छोर और वह छोर; *क्रि. वि.* एक किनारे या सिरे से दूसरे किनारे या सिरे तक, जैसे आर-पार या आर-पार छेद होना।

आरब्ध *वि.* {सं.} आरंभ किया हुआ।

आरभट पुं. {सं.} साहसी पुरुष।

आरभटी *स्त्री.* {सं.} क्रोध आदि उग्र भावों का आवेग; नाटक में एक वृत्ति जिसमें संग्राम, क्रोध, इंद्रजाल आदि का वर्णन या प्रदर्शन होता है और जिसका व्यवहार रौद्र, भयानक और वीभत्स रसों में होता है; नृत्य की एक रीति।

आरस¹ पुं. {सं. आलस्य} सुखभोग के उपरांत आनेवाला आलस्य।

आरस² पुं. {सं. आदर्श} दर्पण, शीशा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरसी *स्त्री.* {सं. आदर्शिका} शीशा, दर्पण; वह अँगूठी जिसमें शीशा जड़ा हो।
लोको. हाथ कंगन को आरसी क्या?

आरा *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* अल्पा. आरी} लोहे की वह दाँतीदार पटरी जिससे लकड़ी चीरी जाती है; लकड़ी की चौड़ी पटरी जो पहिए की गड़ारी और पुट्ठी के बीच जड़ी रहती है।

आराधक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* आराधिका} उपासक, पूजा करनेवाला; भक्त, पूजक।

आराधन *पुं.* {सं.} {*वि.* आराधक, आराधित, आराधनीय, आराध्य} किसी को पूज्य या कल्याणकारक मानकर की जानेवाली उसकी सेवा, पूजन, चिंतन आदि, उपासना (वरशिप); प्रसन्न करना, तोषण।

आराधना *स.* {सं. आराधन} उपासना करना, पूजना; संतुष्ट करना, प्रसन्न करना; *स्त्री.* = आराधन।

आराधित *वि.* {सं.} जिसकी आराधना की गई हो।

आराध्य *वि.* = आराधनीय।

आराम[1] *पुं.* {सं.} बाग, उपवन।

आराम[2] *पुं.* {फा.} चैन, सुख; चंगापन, स्वास्थ्य; थकावट मिटाना, दम लेना, विश्राम।

आराम-कुर्सी *स्त्री.* {फा. + अ.} एक प्रकार की लंबी कुर्सी।

आरू *पुं.* आड़ू फल।

आरूढ़ *वि.* {सं.} {*भाव.* आरूढ़ता} चढ़ा हुआ, सवार; किसी बात पर जमा हुआ, दृढ़ स्थिर; सन्नद्ध, तत्पर, उतारू; ऊपर बैठा हुआ।

आरूढ़ि *स्त्री.* {सं.} सवार होना, ऊपर चढ़ना, हावी होना, ऊपर बैठना।

आरेचन *पुं.* {सं.} खाली करना, साँस को बाहर निकालना।

आरोग्य *वि.* {सं.} रोगरहित, स्वस्थ।

अरोग्यलाभ *पुं.* {सं.} रोग दूर होने के बाद आराम।

आरोग्याश्रम *पुं.* {सं.} स्वास्थ्य सुधार के लिए बना आश्रम।

आरोप *पुं.* {सं.} स्थापित करना; अधिकार पूर्वक कर, शुल्क, आदाय आदि के रूप में लगाना, लेना या उगाहना (लेवी); किसी पर अभियोग लगाना (चार्ज); एक पेड़ को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना, रोपना, बैठाना; एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ के धर्म या गुण की कल्पना; उपमेय में उपमान का जानबूझ कर ज्ञान; धनुष का चिल्ला चढ़ाना।

आरोपक *वि.* {सं.} आरोप या आरोपण करनेवाला, लगानेवाला।

आरोपण *पुं.* {सं.} लगाने, चढ़ाने या स्थापित करने का कार्य।

आरोप-फलक *पुं.* {सं.} न्यायालय द्वारा प्रस्तुत किया हुआ वह फलक या पत्र जिसमें किसी पर लगाए हुए अभियोगों या आरोपों की सूची या विवरण होता हो (चार्ज-शीट)।

आरोपित *वि.* {सं.} {*वि.* आरोही} लगाया हुआ, स्थापित किया हुआ; रोपा हुआ।

आरोह *पुं.* {सं.} {*वि.* आरोही} ऊपर की ओर बढ़ना, चढ़ाव; आक्रमण, चढ़ाई; घोड़े, हाथी, आदि पर चढ़ना, सवारी; वेदांत में क्रमानुसार जीवात्मा की उर्ध्व गति या क्रमशः उत्तमोत्तम योनियों की प्राप्ति; कारण से कार्य का होना या पदार्थों का एक अवस्था से दूसरी अवस्था में पहुँचना, जैसे बीज से अंकुर; क्षुद्र और अल्प चेतनावाले जीवों से क्रमानुसार उन्नत प्राणियों की उत्पत्ति, विकास; संगीत में नीचे स्वर के बाद क्रमशः ऊँचे स्वर निकालना।

आरोहण *पुं.* {सं.} {*वि.* आरोहित} चढ़ना; सवार होना; स्वर ऊँचा चढ़ाना, साँस ऊपर चढ़ाना।

आरोही *वि.* {सं. आरोहिन्} {*स्त्री.* आरोहिणी} चढ़ने या ऊपर जानेवाला; *पुं.* संगीत में वह स्वरसाधन जो षड्ज से लेकर निषाध तक उत्तरोत्तर चढ़ता जाता है, 'अवरोही स्वरसाधन' का उलटा; सवार।

आर्जव *पुं.* {सं.} सीधापन, ऋजुता; सरलता, सुगमता; व्यवहार की सरलता और शुद्धता, ईमानदारी (ऑनेस्टी)।

आर्त *वि.* {सं.} {*भाव.* आर्तता} पीड़ित, चोट खाया हुआ; दुखी, कातर; अस्वस्थ।

आर्तनाद *पुं.* {सं.} दुखसूचक शब्द, पीड़ा के समय निकली हुई ध्वनि; चीख-पुकार।

आर्तव *पुं.* {सं.} ऋतु-संबंधी; माहवारी; ऋतु कुसम या फल।

आर्थिक *वि.* {सं.} धन-संबंधी, द्रव्य-संबंधी, रुपए पैसे का, माली (पिक्यूनरी); अर्थशास्त्र-संबंधी (इकॉनामिक)।

आर्थी *वि.* {सं.} अर्थ-संबंधी।

आर्थी व्यंजना *स्त्री.* {सं.} काव्य शास्त्र के अनुसार व्यंजनावृत्ति का वह भेद जो शब्द पर आश्रित न होकर अर्थ पर आश्रित हो।

आर्द्र *वि.* {सं.} {*भाव.* आर्द्रता} गीला, ओदा, तर; सना, लथपथ; भावपूर्ण; सरस।

आर्द्रता *स्त्री.* {सं.} हवा में होनेवाली भाप की मात्रा, नमी।

आवार्द्रता *स्त्री.* {सं.} करुण, आनंद आदि से मन का पिघलना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्द्रा *स्त्री.* {सं.} सत्ताइस नक्षत्रों में से छठा नक्षत्र; आषाढ़ का आरंभ, जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में होता है।

आर्य *वि.* {सं.} {*स्त्री.* आर्या, *भाव.* आर्यत्व} मान्य, पूज्य; श्रेष्ठ, उत्तम; श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न, कुलीन; उत्तम चरित्रवाला।

आर्यक *पुं.* {सं.} नाना, पिता या चाचा का मामा।

आर्यपुत्र *पुं.* {सं.} पति को पुकारने या संबोधन करने का संकेत।

आर्यभट *पुं.* {सं.} एक प्राचीन भारतीय ज्योतिषी जिसने बीजगणित का आविष्कार किया।

आर्यमिश्र *पुं.* {सं.} आदरणीय व्यक्ति।

आर्यवृत्त *वि.* {सं.} उत्तम चरित्रवाला।

आर्यसमाज *पुं.* {सं.} {*वि.* आर्यसमाजी} एक धार्मिक समाज जिसके संस्थापक स्वामी दयानंद थे, इस समाज के लोग मूर्तिपूजा या पौराणिक रीतियाँ आदि नहीं मानते।

आर्यावर्त *पुं.* {सं.} उत्तरी भारत; पूर्वी व पश्चिमी समुद्र का मध्यवर्ती भारतीय भाग।

आर्या *स्त्री.* {सं.} पार्वती; सास; दादी, पितामही; एक प्रकार का अर्द्धमात्रिक छंद।

आर्ष *वि.* {सं.} ऋषि-संबंधी; ऋषिप्रणीत, ऋषिकृत; वैदिक।

आर्षप्रयोग *पुं.* {सं.} शब्दों का वह व्यवहार जो व्याकरण के नियम के विरुद्ध हो, पर प्राचीन ग्रंथों में मिलता हो।

आर्षविवाह *पुं.* {सं.} आठ प्रकार के विवाहों में से तीसरा, जिसमें वर से कन्या का पिता दो बैल शुल्क में लेता था।

आर्हत *वि.* {सं.} जैन धर्म संबंधी।

आलंकारिक *वि.* {सं.} अलंकार-संबंधी, अलंकार का; जो सीधी तरह से नहीं, बल्कि अलंकारपूर्ण भाषा में कहा गया हो, अलंकारयुक्त (फिगरेटिव); जिसमें सजावट के लिए बेल-बूटे आदि बने हों, अलंकारयुक्त (फ्लोरिड); *पुं.* अलंकार जानने वाला।

आलंब *पुं.* {सं.} अवलंब, आश्रय, सहारा; शरण।

आलंबन *पुं.* {सं.} {*वि.* आलंबित} सहारा, आश्रय, अवलंब; रस में वह तत्व जिसके आलंबन से रस की उत्पत्ति होती है, जैसे शृंगार रस में नायक और नायिका, रौद्र रस में शत्रु; साधन, करण।

आलजाल *पुं.* {हिं. आल = झंझट} व्यर्थ का, ऊटपटाँग; बनावटी बातें।

आलन *पुं.* {?} दीवार की मिट्टी में मिलाया जानेवाला घास-भूसा; साग में मिलाया जानेवाला आटा या बेसन।

आलपीन *स्त्री.* {पुर्त. आलफिनेट} एक घुंडीदार सुई जिससे कागज आदि के टुकड़े जोड़ते या नत्थी करते हैं।

आलम *पुं.* {अ.} संसार।

मुहा. आलम इकट्ठा कर लेना = भीड़ लगा लेना।

आलमारी *स्त्री.* अलमारी।

आलय *पुं.* {सं.} घर, मकान; स्थान; भण्डार; दीवार में बना खाना।

आलवार *पुं.* {सं.} दक्षिण भारत का एक वैष्णव संप्रदाय।

आलवाल *पुं.* {सं.} वृक्षों के नीचे का थाला, थाँवला।

आलस *पुं.* आलस्य।

आलसी *वि.* {हिं. आलस} सुस्त, काहिल।

आलस्य *पुं.* {सं.} कार्य करने में अनुत्साह, सुस्ती, काहिली।

आला[1] *पुं.* {सं. आलय} दीवार में का ताखा।

आला[2] *वि.* {अ.} सबसे बढ़िया, श्रेष्ठ।

आला[3] *पुं.* {अ.} औजार, हथियार।

आला[4] *वि.* {सं. आर्द्र} {*स्त्री.* आली} गीला।

आलात *पुं.* {सं.} जलती लकड़ी, लाट, अलात।

आलान *पुं.* {सं.} हाथी बाँधने का खूँटा, रस्सा या सिक्कड़; बंधन।

आलाप *पुं.* {सं.} {*वि.* आलापक, आलापित} कथोपकथन, संभाषण, बातचीत; संगीत में स्वरों का विस्तारपूर्वक साधन, तान।

आलापी *वि.* {सं. आलापिन्} {*स्त्री.* आलापिनी} बोलनेवाला; आलाप करने वाला, तान लगानेवाला; गानेवाला।

आलिंगन *पुं.* {सं.} {*वि.* आलिंगित} गले से लगाना, परिम्भण।

आलिंग्य *पुं.* {सं.} प्राचीन कालीन एक बाजा।

आलि *स्त्री.* {सं.} सखी, सहेली; भ्रमरी; पंक्ति, अवली।

आलिंजर *पुं.* {सं.} बड़ा माट, मिट्टी का बड़ा बर्तन।

आलिप्त *वि.* {सं.} पूरा लिपा-पुता।

आली *स्त्री.* {सं. आलि} सखी।

आलीशान *वि.* {अ. + पु.} शानदार, भव्य।

आलूचा *पुं.* {फा. आलूचः} एक प्रकार के वृक्ष का खटमीठा फल जो खाया जाता है।

आलूबुखारा *पुं.* {फा.} आलूचे की जाति के एक प्रकार के वृक्ष का फल जो सुखाकर रखा जाता है और औषध के काम में आता है।

आलेख *पुं.* {सं.} लिखावट, लिपि; रेखाओं का ऐसा अंकन जो किसी प्राकृतिक घटना या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौकिक व्यवहार में समय-समय पर होते रहनेवाले परिवर्तन, उतार-चढ़ाव आदि का सूचक होता है, जैसे जन्म-मरण के लेखे अथवा विदेशों से होनेवाले व्यापार का आलेख (ग्राफ); किए जानेवाले कार्य का अनुमानित रूप, खाका (ड्राफ्ट); लिखित रूप।

आलेखन पुं. {सं.} {*वि.* आलैखिक, आलिखित, *संज्ञा* आलेखक} लिखना, लिपिबद्ध करना; चित्र आदि रेखाओं द्वारा अंकित करना (स्केचिंग)।

आलेख्य पुं. {सं.} चित्र; वह अंकन जिसमें रूपरेखाएँ मात्र हों (स्केच)।

आलेख्य शेष *वि.* {सं.} जिसका चित्र ही रह गया हो, मृत।

आलोक पुं. {सं.} {*वि.* आलोक्य, आलोकित} प्रकाश, चाँदनी, उजाला; चमक, ज्योति; किसी विषय पर लिखी हुई टिप्पणी या सूचना (नोट); दर्शन।

आलोकन पुं. {सं.} प्रकाश डालना; चमकाना; दिखलाना; देखना।

आलोकित *वि.* {सं.} जिसपर प्रकाश पड़ रहा हो; चमकता हुआ; देखा हुआ।

आलोचक पुं. {सं.} {*स्त्री.* आलोचिका} देखनेवाला; जो आलोचना करे; गहराई से विचार करनेवाला।

आलोचन पुं. {सं.} दर्शन; गुण-दोष का विचार, विवेचन; समालोचना।

आलोचना *स्त्री.* {सं.} आलोचन; समालोचना; किसी बात या कार्य के गुण, दोष आदि के संबंध में प्रकट किया जानेवाला विचार, समीक्षा; टीका-टिप्पणी (कॉमेंट्स)।

आलोच्य *वि.* {सं.} आलोचना के योग्य, वह विषय जो विचारणीय हो।

आलोड़न पुं. {सं.} {*वि.* आलोड़ित} मथना, हिलोरना; विचार; जोर से हिलाना।

आलोडित *वि.* {सं.} भली प्रकार मथा गया, गहराई से विचारा गया।

आलोप पुं. उत्सादन।

आल्हा पुं. {देश.} 31 मात्राओं का एक छंद, वीर छंद; महोबा के एक वीर का नाम जो पृथ्वीराज के समय में था; जगनिककृत काव्य का नायक।

आवक पुं. माल का बाजार में आना।

आवाज पुं. {सं. वाद्य} ताशा नाम का बाजा।

आवटना पुं. {सं. आवर्त} हलचल, उथल-पुथल, अस्थिरता; संकल्प-विकल्प, ऊहापोह।

आवधिक *वि.* {सं.} अवधि का; हर अवधि में होनेवाला।

आवन पुं. {सं. आगमन} आगमन, आना।

आवभगत *स्त्री.* {हिं. आना + भगति} आदर-सत्कार, खातिरदारी।

आवरण पुं. {सं.} {*वि.* आवरित, आवृत्त} वह चीज जिसकी आड़ में कोई दूसरी चीज छिपाई जाए, आड़ करने या ढकनेवाली वस्तु, आच्छादन, पट, परदा (कर्टेन); किसी वस्तु को ऊपर से या चारों ओर से ढकनेवाली कोई चीज (एनवेलप); वह चीज जिससे कोई चीज ढकी जाए या कोई मुँह बंद किया जाए, ढकना; वह कपड़ा जो किसी वस्तु के ऊपर लपेटा हो, बेठन; ढाल; चलाए हुए अस्त्र-शस्त्र को निष्फल करनेवाला अस्त्र।

आवरण-पृष्ठ पुं. {सं.} वह कागज जो किसी पुस्तक के ऊपर रक्षा के लिए मढ़ा रहता है और जिसपर उसका तथा लेखक का नाम रहता है (टाइटिल)।

आवरा *वि.* {सं. अवर} पराया, विमुख, विपरीत; मलिन, मैला।

आवर्जक *वि.* {सं.} आकर्षक, अपनी ओर खींचनेवाला।

आवर्जन पुं. {सं.} {*वि.* आवर्जित} छोड़ देना, परित्याग; आकृष्ट करना।

आवर्त पुं. {सं.} पानी का भँवर; ऐसा बादल जिससे पानी न बरसे; एक प्रकार का रत्न, राजावर्त्त, लाजवर्द; *वि.* घूमा हुआ, मुड़ा हुआ; घुमाव; घोड़े या मनुष्य के माथे पर बालों की घुमावदार रेखा, भँवर या भौंरी।

आवर्तक पुं. {सं.} घूमने या चक्कर खानेवाला; कुछ निश्चित समय पर बार-बार होनेवाला, जैसे आवर्तक अनुदान (रेकरिंग)।

आवर्तन पुं. {सं.} {*वि.* आवर्तनीय, आवर्तित} चारों ओर घूमना या चक्कर लगाना; चक्कर, फेरा, घुमाव; मथना, हिलाना; किसी बात का बार-बार होना (रिपीटीशन); किसी घटना या कार्य का फिर से या फिर-फिर घटित होना (रेकरेंस)।

आवर्ती *वि.* आवर्तक।

आवर्धन पुं. {सं.} {*वि.* आवर्धित} आकार-प्रकार में बड़ा करना या बनाना।

आवली *स्त्री.* पंक्ति, कतार।

आवश्यक *वि.* {सं.} जो अवश्य और शीघ्र होना चाहिए, जरूरी, सापेक्ष (अर्जेंट); जिसके बिना काम न चले, प्रयोजनीय (नेसेसरी)।

आवश्यकता *स्त्री.* {सं.} जरूरत, अपेक्षा; प्रयोजन, मतलब।

आवस *स्त्री.* ओस।

आवसथ पुं. {सं.} निवास स्थान, विश्राम स्थान।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवह *वि.* {सं.} लानेवाला; उत्पन्न या आविर्भाव करनेवाला, जैसे भयावह; *पुं.* आकाश के सात स्कंधों में से पहले स्कंध की वायु, जिससे बिजली, ओले आदि की उत्पत्ति मानी गई है; वातावरण।

आवागमन *पुं.* {हिं. आवा = आना + सं. गमन} आना-जाना; बार-बार मरना और जन्म लेना।

आवाज *स्त्री.* {फा. आवाज़, मि. सं. आवद्य} शब्द, ध्वनि, नाद; बोली, वाणी, स्वर।
मुहा. किसी के खिलाफ आवाज उठाना = किसी के विरुद्ध कहना; *आवाज देना* = पुकारना; *आवाज बैठना* = गले में कफ के कारण स्वर का साफ न निकलना।

आवाजाही *स्त्री.* {हिं. आना + जाना} बार-बार आना-जाना।

आवापन *पुं.* {सं.} बुनने का यंत्र, करघा आदि।

आवारा *वि.* {फा.} {*भाव.* आवारगी} व्यर्थ इधर-उधर घूमनेवाला, निकम्मा, निठल्लू; बेठौर-ठिकाने का; बदमाश, लुच्चा।

आवारागर्द *वि.* {*भाव.* आवारागर्दी} = आवारा।

आवास *पुं.* {सं.} {*वि.* आवासिक} रहने की जगह, निवास स्थान (एबोड); मकान, घर; स्थायी रूप से बसकर रहने की जगह (रेजीडेंस); पड़ाव।

आवासिक *वि.* {सं.} स्थायी रूप से किसी स्थान पर रहने या बसनेवाला (रेजीडेंट); आवासी।

आवासी *पुं.* {सं.} आवास करनेवाला।

आवाहक *पुं.* {सं.} आवाहन करने या बुलानेवाला।

आवाहन *पुं.* {सं.} किसी को पुकारने या बुलाने का कार्य; आमंत्रित करना, बुलाना; विशेष रूप से देवता का आमंत्रण।

आविर्भाव *पुं.* {सं.} {*वि.* आविर्भूत} सामने आना, प्रकट होना; उत्पत्ति; प्रकट या उत्पन्न होकर सामने आना (एड़वेंट); प्रकाश में आना।

आविर्भूत *वि.* {सं.} प्रकाशित, प्रकटित; उत्पन्न; सामने आया हुआ, उपस्थित।

आविष्करण *पुं.* {सं.} आविष्कार करना।

आविष्कर्ता *वि.* {सं.} आविष्कार करनेवाला।

आविष्कार *पुं.* {सं.} {*वि.* आविष्कारक, आविष्कर्ता, आविष्कृत} प्रकट होना; कोई ऐसी नई वस्तु तैयार करना या नई बात ढूँढ़ निकालना जो पहले किसी को मालूम न रही हो, किसी बात का पता पहले-पहले लगाना, ईजाद (डिस्कवरी); नई खोज।

आविष्कृत *वि.* {सं.} प्रकाशित, प्रकटित; पता लगाया हुआ, जाना हुआ; ईजाद किया हुआ; जिस वस्तु की खोज हुई हो।

आविष्ट *वि.* {सं.} आवेश से युक्त।

आवृत *वि.* {सं.} {*स्त्री.* आवृता} छिपा हुआ, ढका हुआ; लपेटा या घिरा हुआ; जो भीतर बैठा हो।

आवृत्ति *स्त्री.* {सं.} बार-बार किसी बात का अभ्यास; पढ़ना; दोहराना; किसी पुस्तक का पहली बार या फिर से ज्यों-का-त्यों छपना।

आवृत्तिदीपक *पुं.* {सं.} एक अलंकार जिसमें क्रियापद दोहराया जाता है।

आवेग *पुं.* {सं.} चित्त की प्रबल वृत्ति, जोश, मन की झोंक; अकस्मात् इष्ट या अनिष्ट के प्राप्त होने से मन की विकलता, घबराहट; मनोविकार; सहसा मन में उत्पन्न होनेवाला वह विकार जो मनुष्य को बिना सोचे-समझे कुछ कर डालने में प्रवृत्त करता है (इम्पल्स)।

आवेदक *वि.* {सं.} आवेदन करनेवाला; प्रार्थी।

आवेदन *पुं.* {सं.} {*वि.* आवेदनीय, आवेदित, आवेद्य} अपनी दशा सूचित करना; किसी काम के लिए की जानेवाली प्रार्थना, निवेदन।

आवेदन-पत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जिस पर कोई अपनी दशा या प्रार्थना लिखकर किसी को सूचित करे, अरजी; प्रार्थना-पत्र।

आवेश *पुं.* {सं.} व्याप्ति, संचार, दौरा; प्रवेश; मन की प्रेरणा; झोंक, वेग, जोश; भूत-प्रेत की बाधा; मिर्गी रोग; काम क्रोध आदि का जोर।

आवेष्टन *पुं.* {सं.} {*वि.* आवेष्टित} छिपाने या ढकने का कार्य; छिपाने, लपेटने या ढकने की वस्तु; लपेटना।

आशंका *स्त्री.* {सं.} {*वि.* आशंकित} डर, भय; शक, संदेह; अप्रिय या अनिष्ट की संभावना से मन में होनेवाला भय, भीति, खुटका (एप्रिहेंशन)।

आशंसा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* आशंसित} आशा, उम्मीद; इच्छा, कामना, वासना; संदेह, शक; प्रशंसा; आदर-सत्कार, अभ्यर्थन; संभावना।

आशंसित *वि.* {सं.} जिसकी संभावना, सिफारिश या आशा की गई हो।

आशय *पुं.* {सं.} अभिप्राय, मतलब, तात्पर्य; मन का भाव; वासना, इच्छा; उद्देश्य, नीयत (इंटेशन)।

आशा *स्त्री.* {सं.} मन का यह भाव कि अमुक कार्य हो जाएगा या अमुक पदार्थ हमें मिल जाएगा; उम्मेद; दिशा (डाइरेक्शन)।

आशातीत *वि.* {सं.} जितनी आशा की गई हो, उससे अधिक, जैसे आशातीत सफलता या लाभ अथवा हानि।

आशापिशचिका *स्त्री.* {सं.} झूठी आशा, मृगतृष्णा।

आशावाद *पुं.* {सं.} {*वि.* आशावादी} यह सिद्धांत की सदा अच्छी बातों की आशा रखनी चाहिए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशावादिता *स्त्री.* {सं.} आशावाद पर भरोसा रखना, विश्वास रखना।

आशास्य *वि.* {सं.} चाहने योग्य, जिसके लिए आशीर्वाद दिया जाए।

आशिक *पुं.* {*अ.*} प्रेम करनेवाला मनुष्य, अनुरक्त पुरुष, आसक्त व्यक्ति।

आशिष *स्त्री.* {सं.} आशीर्वाद, आशीष, दुआ; एक अलंकार जिसमें अप्राप्त वस्तु के लिए प्रार्थना होती है।

आशीर्वाद *पुं.* {सं.} कल्याण या मंगल की कामना का सूचक कथन, आशिष, दुआ।

आशु *क्रि. वि.* {सं.} शीघ्र, जल्द।

आशुकवि *पुं.* {सं.} वह कवि जो तत्क्षण या बहुत जल्दी-जल्दी कविता करता हो; तुरंत काव्य रचना करनेवाला।

आशुग *वि.* {सं.} बहुत जल्दी-जल्दी या शीघ्र चलनेवाला, जैसे आशुग रेल (एक्सप्रेस); (पत्र, तार आदि) जो पानेवाले के पास बहुत जल्दी पहुँचाया जाने को हो (एक्सप्रेस); *पुं.* वायु, हवा; बाण, तीर।

आशुतोष *वि.* {सं.} शीघ्र संतुष्ट होनेवाला, जल्दी प्रसन्न होनेवाला; *पुं.* शिव, महादेव।

आश्चर्य *पुं.* {सं.} {*वि.* आश्चर्यित} मन का वह भाव जो किसी नई, विलक्षण या असाधारण बात को देखने, सुनने या ध्यान में आने से उत्पन्न होता है, अचंभा, विस्मय, ताज्जुब; रस के नौ स्थायी भावों में से एक।

आश्रम *पुं.* {सं.} {*वि.* आश्रमी} ऋषियों और मुनियों का निवासस्थान, तपोवन; साधु-संत के रहने की जगह; विश्राम का स्थान, ठहरने की जगह; हिन्दुओं के जीवन की चार अवस्था—ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास।

आश्रय *पुं.* {सं.} {*वि.* आश्रयी, आश्रित} आधार, सहारा; शरण, पनाह; जीवन-निर्वाह का आधार सहारा; घर।

आश्रयदाता *वि.* {सं.} बेसहारे को सहारा देनेवाला।

आश्रव *पुं.* {सं.} नदी; अपराध, कसूर; वह जो किसी के बंधन का कारण हो; आज्ञाकारी (जैन धर्म)।

आश्रित *वि.* {सं.} किसी के आधार, आश्रय या सहारे पर टिका हुआ, दूसरे पर निर्भर, ठहरा हुआ (बेस्ड); किसी के आश्रय में, आधीन या भरोसे रहनेवाला (डिपेन्टेड); जो अल्पवयस्क या और किसी असमर्थता के कारण किसी दूसरे की देखरेख में रहता हो, किसी प्रतिपालक के आश्रय या अधीनता में रहनेवाला (वार्ड)।

आश्वस्त *वि.* {सं.} जिसे आश्वासन मिला हो, जिसे तसल्ली दी गई हो; निश्चिंत हुआ; जिसकी घबराहट, बेचैनी या डर दूर हो गया हो।

आश्वासन *पुं.* {सं.} {*वि.* आश्वसनीय, आश्वासित, आश्वास्य} दिलासा, तसल्ली, सांत्वना।

आश्वास्य *वि.* {सं.} जो आश्वासन देने योग्य हो।

आश्विन *पुं.* {सं.} भारतीय महीनों में भाद्रपद के बाद और कार्तिक के पहले का महीना, कुआर का महीना।

आषाढ़ *पुं.* {सं.} जेठ के बाद का महीना, आसाढ़; ढाक का डंडा।

आसंग *पुं.* {सं.} साथ, संग; लगाव, संबंध; मोह, आसक्ति (एटैचमेंट)।

आसंजन *पुं.* {सं.} आसंग; न्यायालय की ओर से किसी देनदार, अपराधी या ऋणी की संपत्ति पर वह अधिकार जो ऋण या अर्थदंड चुकाने के लिए होता है, कुर्की (एटेचमेंट)।

आसंजित *वि.* {सं.} (वह संपत्ति) जिसका आसंजन हुआ हो, कुर्क किया हुआ (एटैच्ड)।

आसंदी *स्त्री.* {सं. आशा} आशा, उम्मीद; लालसा, कामना; सहारा, आधार, भरोसा; कुर्सी, आसन।

आसन्दिका *स्त्री.* {सं.} छोटी चौकी, पीढ़ी, कुर्सी।

आसक्त *वि.* {सं.} अनुरक्त, लीन, लिप्त; मोहित, लुब्ध, मुग्ध।

आसक्ति *स्त्री.* {सं.} अनुरक्ति, लिप्तता; लगन, चाह, प्रेम; आसक्त होना।

आसन *पुं.* {सं.} बैठने का ढंग या भाव, बैठने का ढब, स्थिति, बैठक।

मुहा. आसन उखड़ना = अपनी जगह से हिल जाना; *आसन जमना* = बैठने में स्थिरता आना; *आसन डिगना या डोलना* = बैठने में स्थिर न रहना, चित्त, चंचल होना, मन डोलना, स्थिति डगमगाना; *आसन देना* = सत्कारार्थ बैठने के लिए कोई वस्तु सामने रखना या बतलाना; *आसन जमा कर बैठना* = उठने का नाम न लेना।

वह वस्तु जिसपर बैठें, जैसे चौकी, कुर्सी आदि; निवासस्थान।

आसन्न *वि.* {सं.} निकट आया हुआ, समीपस्थ, प्राप्त; अनुमान से लगभग ठीक या वास्तविक के बहुत-कुछ पास तक पहुँचता हुआ (एप्रॉक्सिमेट); जो शीघ्र आने या होनेवाला हो।

आसन्नभूत *पुं.* {सं.} भूतकालिक क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया की पूर्णता और वर्तमान से उसकी समीपता पाई जाती है, जैसे मैं हो आया हूँ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस-पास *क्रि. वि.* {अनु. आस + हिं. पास} चारों ओर, इधर-उधर।

आसमान *पुं.* {फा. आस्मान} {*वि.* आसमानी} आकाश, गगन।

मुहा. आसमान के तारे तोड़ना = कठिन या असंभव काम करना; *आसमान पर चढ़ना* = शेखी करना, घमंड दिखाना; आसमान पर चढ़ना = बहुत प्रशंसा करके मिजाज बिगाड़ देना; *आसमान में थिगली लगाना* = विकट काम करना; *दिमाग आसमान पर होना* = बहुत अभिमान होना; *आसमान में थूकना* = किसी भले आदमी पर लांछन लगाना; *आसमान सिर पर उठाना* = बहुत अधिक शोर मचाना।

स्वर्ग, देवलोक।

आसमानी *वि.* {फा. आस्मानी} आकाश-संबंधी, आकाशीय, आसमान का; आकाश के रंग का, हलका नीला।

आसरा *पुं.* {सं. आश्रय} सहारा, आधार, अवलंब; भरण-पोषण की आशा, भरोसा, आस; किसी से सहायता पाने का निश्चय; जीवन-निर्वाह का आधार, आश्रयदाता; सहायक; शरण; प्रतीक्षा, प्रत्याशा; आशा।

आसव *पुं.* {सं.} वह मद्य जो फलों के खमीर को निचोड़कर बनाया जाता हो; आयुर्वेदोक्त अलकोहल वाली औषध जो शराब के ढंग से बनाई जाती है; औषध; अर्क।

आसवन *पुं.* {सं.} द्रव को वाष्प और पुनः वाष्प को द्रव्य में परिवर्तन करने की क्रिया या भाव (डिस्टिलेशन)।

आसवनी *स्त्री.* {सं.} वह स्थान जहाँ आसवन की क्रिया हो, मद्य चुआने का स्थान।

आसा *पुं.* {*अ.* असा} सोने या चाँदी का वह डंडा जो राजा-महाराजाओं अथवा बारात और जलूस के आगे चोबदार लेकर चलते हैं; *स्त्री.* आशा।

आसावरी *स्त्री.* श्रीराग से संबद्ध एक रागिनी।

आसान *वि.* {फा.} {*भाव.* आसानी} सहज, सरल।

आसानी *स्त्री.* {फा.} सरलता, सुगमता; सुविधा।

आसाम *पुं.* = असम (राज्य)।

आसार *पुं.* {*अ.*} लक्षण, चिह्न; ढंग।

आसीन *वि.* {सं.} बैठा हुआ, स्थित; आरूढ़।

आसीस *स्त्री.* आशिष।

आसु *पुं.* {?} प्राण, जीवनी-शक्ति; इसका।

आसुत *वि.* {सं.} आसवन किया हुआ, चुआया हुआ (डिस्टिल्ड)।

आसुर *वि.* {सं.} असुर-संबंधी।

आसुर विवाह *पुं.* {सं.} वह विवाह जो कन्या के माता-पिता को द्रव्य देकर किया जाए।

आसुरी *वि.* {सं.} असुर-संबंधी, असुरों का; *स्त्री.* असुर की स्त्री।

आसोज *पुं.* {सं. अश्वयुज} आश्विन मास, क्वार का महीना।

आस्कन्द *पुं.* {सं.} आक्रमण, चढ़ाई, ऊपर बैठना, छीनना।

आस्तरण *पुं.* {सं.} शय्या; बिछौना, बिस्तर; दुपट्टा; फैलाव।

आस्तिक *वि.* {सं.} {*भाव.* आस्तिकता} वेद, ईश्वर और परलोक आदि पर विश्वास रखनेवाला; ईश्वर का अस्तित्व माननेवाला (थीइस्ट)।

आस्तिकता *वि.* {सं.} वेद, ईश्वर, परलोक आदि पर विश्वास रखने का भाव (थीइज्म)।

आस्तीन *स्त्री.* {फा.} पहनने के कपड़े का वह भाग जो बाँह को ढकता है, बाँह।

मुहा. आस्तीन का साँप = वह व्यक्ति जो मित्र होकर शत्रुता करे।

आस्तीर्ण *वि.* {सं.} बिछा हुआ, फैलाया हुआ।

आस्था *स्त्री.* {सं.} पूज्य बुद्धि, श्रद्धा; विश्वास; सभा, समाज; आलंबन, सहारा।

आस्थान *पुं.* {सं.} बैठने की जगह, बैठक; सभा, दरबार; कोर्टरूम।

आस्पद *पुं.* {सं.} स्थान, जगह; आधार, अधिष्ठान; कार्य, कृत्य; पद, प्रतिष्ठा; अल्ल, वंश का नाम; कुल या जाति; पात्र, अर्ह।

आस्फालन *पुं.* {सं.} {*वि.* आस्फलित} आत्मश्लाघा, डींग; संघर्ष; उछल-कूद; उछालना; हाँकना।

आस्फालित *वि.* {सं.} हाँका या उठाला गया।

आस्मान *पुं.* = आसमान।

आस्वादन *पुं.* {सं.} {*वि.* आस्वादनीय, आस्वादित} चखना, स्वाद लेना; आनंद का अनुभव करना।

आह[1] *विस्मयादि.* {सं. अहह} पीड़ा, शोक, दुख, खेद या ग्लानि का सूचक शब्द; *स्त्री.* दुख या क्लेशसूचक शब्द; ठंडी साँस, उसास।

मुहा. किसी की आह पड़ना = शाप पड़ना, किसी को दुख देने का फल मिलना; *आह भरना* = ठंडी साँस लेना।

आह[2] *पुं.* {सं. साहस} साहस, हिम्मत; बल, जोर।

आहट *स्त्री.* {हिं. आ = आना + हट (प्रत्य.)} वह शब्द जो चलने में पैर तथा दूसरे अंगों से होता है, आने का शब्द, पाँव की धमक, खटका, पदचाप; किसी स्थान पर रहने के कारण होनेवाला शब्द; पता, टोह।

आहत *वि.* {सं.} {*भाव.* आहति} चोट खाया हुआ, घायल, जख्मी; वह संख्या जिसको गुणित करें, गुण्य।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आहतोपचारक *वि.* {सं.} घायलों की परिचर्या करनेवाला, डॉक्टर या कम्पाउण्डर।
आहर[1] *पुं.* {अह:} समय।
आहर[2] *पुं.* {सं. आहव} युद्ध, लड़ाई।
आहरण *पुं.* {सं.} {*वि.* आहरणीय, आहत} छीनना, हर लेना; कोई वस्तु दूसरे स्थान पर ले जाना; ग्रहण, लेना; (बैंक, व्यापार आदि में से) रुपया निकलना; लाना, निकालना, अनुष्ठान।
आहर्ता *पुं.* {सं.} निकालने वाला, लाने वाला।
आहरन *स्त्री.* निहाई।
आहा *विस्मयादि.* {सं. अहह} आश्चर्य या हर्षसूचक शब्द।
आहार *पुं.* {सं.} भोजन, खाना; खाने की वस्तु।
आहार-विहार *पुं.* {सं.} खाना, पीना, सोना आदि शारीरिक व्यवहार, रहन-सहन।
आहार्य *वि.* {सं.} ग्रहण किया हुआ; खाने योग्य; *पुं.* {सं.} नायक और नायिका का एक दूसरे का वेष धारण करना; ऐच्छिक ज्ञान, आरोपित।
आहि *अ.* {सं. अस} 'असना' क्रिया का वर्तमान कालिक रूप है; है, होता है।
आहिस्ता *क्रि. वि.* {फा.} {*भाव.* आहिस्तगी} धीरे-धीरे, शनैः-शनैः।
आहुति *स्त्री.* {सं.} मंत्र पढ़कर देवता के लिए कुछ निश्चित पदार्थ अग्नि में डालना, होम, हवन; हवन में डालने की सामग्री; होम द्रव्य की उतनी मात्रा जो एक बार यज्ञकुंड में डाली जाए।
आहौ *अ.* 'हूँ' का पुराना अवधी रूप।
आह्निक *पुं.* {सं.} नित्य का, दैनिक; एक दिन में होने या किया जानेवाला।
आह्लाद *पुं.* {सं.} {*वि.* आह्लादक, आह्लादित} आनंद, खुशी, हर्ष।
आह्लादन *पुं.* {सं.} आनंदित करना।
आह्वान *पुं.* {सं.} बुलाना, बुलावा, पुकार; चुनौती, ललकार; राजा की ओर से बुलावे का पत्र, समन; यज्ञ में मंत्र द्वारा देवताओं को बुलाना।

इ

इ देवनागरी वर्णमाला का तीसरा स्वर, जिसका दीर्घ रूप 'ई' है; इसका उच्चारण तालु से होता है, और प्रयत्न संवृत होता है।
इंगला *स्त्री.* {सं.} शरीर में इड़ा नाम की नाड़ी (हठयोग); कामदेव।
इंगित *पुं.* {सं.} चेष्टा द्वारा अभिप्राय प्रकट करना, इशारा करना, चेष्टा।
इंगुदी *स्त्री.* {सं.} हिंगोट का पेड़; मालकँगनी।
इंच *स्त्री.* {अं.} एक फुट का बारहवाँ हिस्सा, तसू (नाप)।
इँचना *अ.* खिंचना।
इंजन *पुं.* {अं. एंजिन} भाप या बिजली से चलनेवाला यंत्र; जो अन्य मशीनें चलाता है; रेल में वह आगेवाली यंत्रयुक्त गाड़ी जो सब गाड़ियों को खींचती है; मोटर जो अन्य मशीनों को चलाता है।
इंजीनियर *पुं.* {अं. एंजीनियर} यंत्र की विद्या जाननेवाला, कलों को बनाने, चलाने या मरम्मत करनेवाला; शिल्पविद्या में निपुण, विश्वकर्मा; यांत्रिक; वह अधिकारी जो सड़कें, इमारतें और पुल आदि अपनी देखरेख में बनवाने की व्यवस्था करता है।
इंजीनियरी *स्त्री.* {अं. एंजीनियरिंग} यंत्र आदि बनाने, सुधारने, चलाने आदि की विद्या या कला; इंजीनियर का कार्य या पद।
इंजील *स्त्री.* बाइबिल, ईसाइयों की धर्म पुस्तक।
इँडुआ *पुं.* {सं. कुंडल} कपड़े की बनी हुई छोटी गोल गद्दी जो बोझ उठाते समय सिर पर रख लेते हैं, गेंडुरी।
इंतकाम *अ.* बदला लेना।
इंतखाब *पुं.* {अ.} चुनाव, निर्वाचन; पसंद; पटवारी के खाते की नकल।
इंदराज *पुं.* {फा.} लेखे, बही, पंजी आदि में लिखा या चढ़ाया जाना; निविष्टि, लेखी (एंट्री)।
इंदिरा *स्त्री.* {सं.} लक्ष्मी; कांति, शोभा, संपत्ति।
इंदीवर *पुं.* {सं.} नीलकमल, नीलोत्पल।
इंदु *पुं.* {सं.} चंद्रमा; कपूर; एक की संख्या।
इंदुकला *स्त्री.* {सं.} चंद्रमा की कला; गिलोय।
इंदुभूषण, इंदुशेखर *वि.* {सं.} शिव।
इंद्र *वि.* {सं.} ऐश्वर्यवान, संपन्न; श्रेष्ठ, बड़ा, जैसे नरेन्द्र; *पुं.* एक वैदिक देवता जो पानी बरसाता है; देवताओं का राजा; बारह आदित्यों में से एक, सूर्य; मालिक, स्वामी; आत्मा।
इंद्र का अखाड़ा *पुं.* इंद्र की सभा जिसमें अप्सराएँ नाचती हैं; बहुत सजी हुई सभा जिसमें खूब नाच-रंग होता हो।
इंद्र की परी *स्त्री.* अप्सरा; बहुत सुंदर स्त्री।
इंद्रगोप *पुं.* {सं.} बीरबहूटी (एक लाल रंग का बरसाती कीड़ा)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंद्रजव पुं. {सं. इंद्रयव} कुड़ा, कुरैया का बीज।

इंद्रजाल पुं. {सं.} {वि. ऐन्द्रजालिक} जादू के वे आश्चर्यचकित करनेवाले खेल जो जल्दी समझ में न आएँ, जादूगरी।

इंद्रजित वि. {सं.} इंद्र को जीतनेवाला; पुं. रावण का पुत्र, मेघनाद।

इंद्रधनुष पुं. {सं.} सात रंगों का वह अर्द्धवृत्त जो वर्षाकाल में सूर्य के सामने की दिशा में दिखाई देता है।

इंद्रनील पुं. {सं.} नीलम (रत्न)।

इंद्रप्रस्थ पुं. {सं.} एक नगर जिसे पांडवों ने खांडव वन जलाकर बसाया था।

इंद्रलोक पुं. {सं.} स्वर्ग।

इंद्राणी स्त्री. {सं.} इंद्र की पत्नी, शची; इंद्रायन।

इंद्रासन पुं. {सं.} इंद्र का सिंहासन; राजसिंहासन; वह स्थान जहाँ हर प्रकार का सुख मिले।

इंद्रिय स्त्री. {सं.} वह शक्ति जिससे बाहरी विषयों का ज्ञान होता है; जिससे विषयों का ज्ञान होता है जैसे आँख, नाक, कान, जीभ और त्वचा ये ज्ञानेंद्रियाँ और कर्मेंद्रियाँ, वे अंग या अव्यव जिनसे कर्म किए जाते हैं, जैसे वाणी, हाथ, पैर, गुदा, उपस्थ; लिंगेंद्रिय; पाँच की संख्या।

इंद्रियगोचर वि. {सं.} इंद्रियों के विषय।

इंद्रियग्राम पुं. {सं.} इंद्रियों का समूह।

इंद्रियनिग्रह पुं. {सं.} इंद्रियों का वेग या वासना रोकना।

इंद्रियलोलुप वि. {सं.} जिसे इंद्रियों के सुखभोग की बहुत अधिक लालसा हो।

इंद्रियातीत वि. {सं.} जिसका ज्ञान या अनुभव इंद्रियों से न हो सके, अगोचर, जैसे आत्मा का ईश्वर।

इंद्रियारामी वि. {हिं. इंद्रिय + अ. आराम} इंद्रियों का सुख चाहनेवाला, इंद्रिय-लोलुप।

इंद्रियार्थ पुं. {सं.} इंद्रियों के सुख का साधन।

इंधन पुं. ईंधन, जलाने का साधन; दीप्त करना, भड़काना।

इंसाफ पुं. {अ.} न्याय।

इंस्पेक्टर पुं. {अं.} निरीक्षक।

इक वि. एक।

इकट्ठा वि. {सं. एकस्थ} एकत्र, जमा।

इकतरफा वि. = एकतरफा।

इकता स्त्री. = एकता।

इकतारा पुं. {हिं. एक + तारा} सितार की तरह का एक बाजा जिसमें एक ही तार रहता है; एक प्रकार का कपड़ा।

इकबाल पुं. {अ.} प्रताप; बयान देना।

इकरार पुं. {अ.} स्वीकार करना, बयान देना; प्रतिज्ञा, वादा; कोई काम करने का वचन।

इकरारनामा पुं. {अ. इकरार + फा. नामः} वह पत्र जिसमें कोई इकरार या इसकी शर्तें लिखी हों, अनुबंधपत्र (एग्रिमेंट)।

इकला वि. अकेला।

इकलाई स्त्री. {हिं. एक + लाई या लोई = परत} एक पाट का दुपट्टा या चादर; अकेलापन।

इकलौता पुं. {हिं. इकला + ऊत (पुत्र)} {स्त्री. इकलौती} वह लड़का जो अपने माँ-बाप का एक ही हो।

इकसर वि. {हिं. एक + सर (प्रत्य.)} अकेला, एकाकी; एकसार, पूरा एकसा।

इकसूत वि. {सं. एक + सूत्र} एक में मिला हुआ, इकट्ठा, एकत्र।

इकहरा वि. {हिं. एक + धारा (प्रत्य.)} एक परतवाला।

इकहाई क्रि. वि. {हिं. एक + हाई (प्रत्य.)} तुरंत; अचानक, एकाएक।

इकाई स्त्री. {हिं. एक + आई (प्रत्य.)} गिनती या संख्या में एक होने की अवस्था या भाव; गणित में पहला और सबसे छोटा पूर्णांक जो 'एक' है; संख्याएँ लिखने के क्रम में वह अंतिम स्थान जहाँ 9 या उससे कम के सूचक अंक लिखे जाते हैं; किसी पूरे वर्ग या समूह का कोई ऐसा अंग या भाग जो विश्लेषण के काम के लिए किसी प्रकार अलग और स्वतंत्र माना या समझा जाता हो; पैर, मुँह, हाथ अथवा खून, चमड़ा, हड्डी आदि हमारे शरीर की इकाइयाँ हैं; किसी नापजोख के लिए माना गया मानक मान (यूनिट)।

इकौंसा वि. {हिं. एक} {स्त्री. इकौंसी} जहाँ कोई न हो, एकांत; जिसके साथ कोई न हो, अकेला।

इकौना वि. {हिं. एक} अनुपम, बेजोड़।

इक्का वि., पुं. एक्का।

इक्का-दुक्का वि. अकेला-दुकेला।

इक्कीस वि. {सं. एकविंशति} बीस से एक अधिक; (किसी की अपेक्षा) अधिक अच्छा, श्रेष्ठतर।

इक्षु पुं. {सं.} ईख, गन्ना।

इक्षुपाक पुं. {सं.} गुड़।

इक्षुमेह पुं. {सं.} मधुमेह, डायबिटीज़ का रोग।

इक्ष्वाकु पुं. {सं.} सूर्यवंश का एक प्रसिद्ध राजा।

इख्तियार पुं. {अ.} अधिकार; प्रभुत्व।

इच्छा स्त्री. {सं.} {वि. इच्छित, इच्छुक} वह मनोवृत्ति जो किसी बात या वस्तु की प्राप्ति की ओर ध्यान ले जाती है, कामना, लालसा, अभिलाषा, चाह।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छापत्र पुं. {सं.} वह पत्र जिसमें व्यक्ति मृत्यु के बाद अपनी संपत्ति के निपटारे के संबंध में इच्छा व्यक्त करता है (विल)।

इच्छित *वि.* {सं.} जिसकी इच्छा की जाए, चाहा हुआ, वांछित।

इच्छुक *वि.* {सं.} चाहनेवाला।

इजरा (य) पुं. {अ.} जारी या प्रचलित करना; काम में लाना; दीवानी न्यायालय से मिले हुए जयपत्र या डिगरी के अनुसार प्राप्य धन वसूल करने के लिए की जानेवाली विधिक क्रिया या कार्रवाई (एक्जीक्यूशन); परती छोड़ी हुई जमीन।

इजलास पुं. {अ.} अधिवेशन, बैठक; कचहरी, न्यायालय, अधिकरण; न्यायालय की बैठक।

इजहार पुं. {अ. इज़्हार} मन का भाव सामने रखना, जाहिर या प्रकट करना, प्रकटीकरण; किसी के सामने दिया जानेवाला बयान; साक्षी।

इजाज़त *स्त्री.* {अ.} आज्ञा, स्वीकृति; अनुमति।

इजाफ़ा *स्त्री.* {अ.} बढ़ती, वृद्धि।

इज़ार *स्त्री.* {अ.} पायजामा, सूथन।

इज़ारदार *वि.* {फा.} किसी पदार्थ को हजारे या ठीके पर लेनेवाला, ठेकेदार।

इज़ारबंद पुं. {फा.} वह डोरी जो पायजामे या लहँगे के नेफे में उसे कमर से बाँधने के लिए पड़ी रहती है, नारा।

इज्जत *स्त्री.* {अ. इज़्ज़त} मान, मर्यादा, सम्मान।
मुहा. इज्जत उतारना = मर्यादा नष्ट करना; *इज्जत रखना* = प्रतिष्ठा की रक्षा करना।

इज्जतदार *वि.* {अ. + फा.} प्रतिष्ठित।

इटली पुं. यूरोप का एक देश जिसकी राजधानी रोम है।

इटेलियन *वि.* {अं.} इटली-संबंधी; *स्त्री.* इटली की भाषा।

इठलाना *अ.* इतराना।

इठाई *स्त्री.* {सं. इष्ट} रुचि, चाह; मित्रता।

इडली *स्त्री.* दक्षिण प्रदेश का एक खाद्य पदार्थ जो उड़द की दाल से बनता है।

इड़ा *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी; भूमि; हठयोग की साधना में बाईं ओर की एक कल्पित नाड़ी; दुर्गा; वाणी; कामायनी की एक पात्री; इला-पुरूरवा की माता।

इत *क्रि. वि.* {सं. इतः} इस ओर, इधर।

इतना *क्रि. वि.* {सं. एतावत अथवा हिं. ई (यह) तना (प्रत्य.)} {*स्त्री.* इतनी} इस मात्रा का, इस कदर।

इतने में *क्रि. वि.* इसी बीच में।

इतफाक *स्त्री.* {अ. इत्तिफाक} संयोग।

इतमीनान पुं. {अ.} संतोष।

इतर *वि.* {सं.} दूसरा, अपर, अन्य; छोटा, तुच्छ या नीच; पुं. इत्र।

इतराना *अ.* {सं. इतर} {*भाव.* इतराहट} घमंड करना; ठसक दिखाना, इठलाना।

इतरेतर *क्रि. वि.* {सं.} परस्पर।

इतरौंहाँ *वि.* {हिं. इतराना + औंहाँ (प्रत्य.)} जिससे इतराने का भाव प्रकट हो।

इत्तला पुं. {अ. इत्तला} सूचना, जानकारी।

इत्वरी *स्त्री.* {सं.} मनचली स्त्री।

इतस्ततः *क्रि. वि.* {सं.} इधर-उधर।

इति *स्त्री.* {सं.} समाप्ति, पूर्णता।

इति+अथ पुं. {सं.} समाप्ति और शुरुआत, आदि-अंत।

इतिश्री *स्त्री.* {सं.} समाप्ति, अंत।

इतिवृत्त पुं. {सं.} पुरानी कथा या कहानी; वर्णन, हाल; इतिहास; किसी काव्य आदि का कथावस्तु।

इतिहास पुं. {सं.} बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओं और उनसे संबंध रखनेवाले पुरुषों का कालक्रम से वर्णन, तवारीख (हिस्ट्री)।

इतेक *वि.* इतना।

इतै *क्रि. वि.* = इधर।

इतौ *वि.* इतना।

इत्तिफाक पुं. {अ.} मेल, एकता; संयोग, अवसर; चांस।

इत्तला *स्त्री.* {अ. इत्तलाअ} सूचना।

इत्थं *क्रि. वि.* {सं.} ऐसे, यों।

इत्थंभूत *वि.* {सं.} ऐसा।

इत्थे *क्रि. वि.* = यहाँ।

इत्यादि *क्रि. वि.* {सं.} इसी प्रकार और भी, आदि वगैरह।

इत्र पुं. {अ.} फूलों का सुगंधित सार, पुष्पसार।

इधर *क्रि. वि.* {सं. इतर} इस ओर, इस तरफ।

इधर-उधर *क्रि. वि.* आसपास; चारों ओर, सब ओर।
मुहा. इधर-उधर की करना = टाल-मटोल करना, उलट-पुलट करना, तितर-बितर करना; *इधर-उधर की बात* = सुनी-सुनाई बात, बेठिकाने की बात; *इधर की उधर करना या लगाना* = झगड़ा लगाना।

इन *सर्व.* {हिं.} 'इस' का बहु. रूप।

इनक़लाब पुं. {अ.} क्रांति, उथल-पुथल।

इनाम पुं. पुरस्कार।

इनायत *स्त्री.* {अ.} कृपा, दया, अनुग्रह; एहसास।

इने-गिने *वि.* {अनु. इन + हिं. गिनना} कतिपय, कुछ थोड़े से, चुने-चुने।

इन्कार पुं. अस्वीकृति; मना कर देना।

इन्सान पुं. मनुष्य।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्सानियत *स्त्री.* {अ.} मनुष्यता।
इन्सानी *वि.* = मानवीय।
इन्साफ *पुं.* {अ.} न्याय।
इबलीस *पुं.* {अ.} शैतान।
इबादत *स्त्री.* {अ.} आराधना; प्रार्थना।
इबारत *स्त्री.* {अ.} {*वि.* इबारती} लेख; लेखनशैली।
इभ *पुं.* {सं.} हाथी।
इभ्य *पुं.* {सं.} धनवान।
इमदाद *स्त्री.* {अ.} सहायता।
इमरती *स्त्री.* {सं. अमृत} जलेबी की तरह की एक प्रकार की मिठाई।
इमली *स्त्री.* {सं. अम्ल + हिं. ई (प्रत्य.)} एक प्रकार का बड़ा पेड़ जिसकी गूदेदार लंबी फलियाँ खटाई के काम आती हैं; पेड़ का फल।
इमाम *पुं.* {अ.} अगुआ; मुसलमानों के धार्मिक कृत्य करानेवाला।
इमामदस्ता *पुं.* कूटने के लिए बना लोहे का भारी पात्र।
इमामबाड़ा *पुं.* {अ. इमाम + हिं. बाड़ा} वह अहाता जिसमें शिया मुसलमान ताजिया गाड़ते हैं।
इमारत *स्त्री.* {अ.} {*वि.* इमारती} ईंट, पत्थर आदि से बनाया हुआ, विशेषत: कोई बड़ा और पक्का मकान, भवन (बिल्डिंग); वास्तु।
इमारती लकड़ी *स्त्री.* {अ. इमारती + हिं. लकड़ी} अच्छे वृक्षों की वह पक्की लकड़ी जो इमारत बनाने के काम में आती है, वास्तुकाष्ठ (टिम्बर)।
इमि *क्रि. वि.* {सं. एवम्} इस प्रकार।
इम्तहान *पुं.* {अ.} परीक्षा।
इयत्ता *स्त्री.* {सं.} सीमा, हद; परिमाण की सीमा; सदस्यों की वह कम-से-कम नियत संख्या जो किसी सभा का कार्य संचालित करने के लिए आवश्यक हो, गणपूर्ति (कोरम)।
इरषा *स्त्री.* ईर्ष्या।
इराकी *वि.* {अ.} इराक देश का।
इरादा *पुं.* {अ.} विचार, संकल्प।
इर्दगिर्द *क्रि. वि.* {अनु. इर्द + फा. गिर्द} चारों ओर; आसपास।
इलजाम *पुं.* अभियोग।
इलहाम *पुं.* {अ.} पैगंबरी मतों में, ऐसी बात जो ईश्वर की ओर से कही हुई मानी जाए, आकाशवाणी, देववाणी; ईश्वरी प्रेरणा, आंतरिक अनुभूति।
इला *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी; पार्वती; सरस्वती, वाणी; गौ; पुरूरवा की माता।
इलाका *पुं.* {अ.} क्षेत्र, प्रदेश; कई गाँवों की जमींदारी।
इलाज *पुं.* {अ.} दवा, औषध; चिकित्सा; उपाय, युक्ति।
इलायची *स्त्री.* {सं. एला} एक सदाबहार पेड़ जिसके फल के सुगंधित बीज मसाले में पड़ते हैं, यह छोटी और बड़ी दो प्रकार की होती है।
इलाही *पुं.* {अ.} ईश्वर, खुदा; *वि.* देवी, ईश्वरीय।
इलाही गज *पुं.* {फा. + अ.} अकबर के समय से चला हुआ एक प्रकार का गज जो 42 अंगुल लंबा होता है।
इलीका *स्त्री.* {सं.} कीड़ा।
इलैक्ट्रान *पुं.* {अं.} वह सूक्ष्म कण जिसपर विद्युत का ऋण आवेश होता है।
इल्म *पुं.* {अ.} विद्या; ज्ञान।
इल्मे-इलाही *पुं.* {अ.} अध्यात्म विद्या।
इल्लत *स्त्री.* {अ.} रोग, बीमारी; झंझट, बखेड़ा; दोष, अपराध, बुरी आदत।
इव *क्रि. वि.* {सं.} उपमावाचक शब्द, समान, नाँई, तरह।
इशारा *पुं.* {अ.} संकेत; संक्षिप्त कथन; हलका सहारा; गुप्त प्रेरणा।
इशारेबाजी *स्त्री.* {अ. + फा.} इशारों से परस्पर बातचीत करना।
इश्क *पुं.* {अ.} {*वि.* आशिक} मुहब्बत, चाह, प्रेम।
इश्तहार *पुं.* {अ.} विज्ञापन।
इषणा *स्त्री.* एषणा।
इषु *पुं.* {सं.} बाण, पाँच की संख्या।
इष्ट *वि.* {सं.} अभिलषित, चाहा हुआ, वांछित; पूजित; *पुं.* अग्निहोत्र आदि के शुभ कर्म; इष्टदेव, कुलदेव; मित्र; किसी का प्रमुख आराध्य।
इष्टकाल *पुं.* {सं.} किसी की जन्मकुंडली बनाने के लिए ज्योतिषियों द्वारा गणित से निर्धारित जन्म-समय।
इष्टसिद्धि *स्त्री.* {सं.} मनोरथ पूरा होना।
इस *स्त्री.* {सं. एष:} 'यह' शब्द का परसर्ग या विभक्ति के पहले का रूप, जैसे इसको।
इसबगोल *पुं.* {फा. यशबगोल} एक झाड़ी या पौधा जिसके रेचक गोल बीज दवा में काम आते हैं।
इसराज *पुं.* {?} सारंगी की तरह का एक बाजा।
इसारत *स्त्री.* इशारा।
इसे *सर्व.* {सं. एष:} 'यह' का कर्म कारक और संप्रदान कारक का रूप।
इस्तमरारी *वि.* {अ.} सदा रहनेवाला, नित्य; जो स्थायी रूप से निश्चित हुआ हो, दवामी (परमानेंट)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इ Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्तरी *स्त्री.* {सं. स्तरी = तह करनेवाली} कपड़े की तह बैठाने का धोबियों या दरजियों का एक उपकरण।

इस्तीफा *पुं.* त्यागपत्र।

इस्तेमाल *पुं.* {अ.} उपयोग।

इस्पंज *पुं.* {अ. स्पंज} समुद्र में एक प्रकार के बहुत छोटे कीड़ों के योग से बना हुआ रुई की तरह का मुलायम सजीव पिंड जो पानी खूब सोखता है, मुर्दाबादल।

इस्पात *पुं.* {सं. अयस्पत्र, अथवा पुर्त. स्पेडा} एक प्रकार का बढ़िया लोहा।

इस्लाम *पुं.* {अ.} {*वि.* इस्लामी} मुसलमानी धर्म।

इहलीला *स्त्री.* {सं.} इस लोक की लीला या जीवन, जिंदगी।

इहामुन्न *क्रि. वि.* {सं.} यहाँ और वहाँ इस लोक और परलोक में।

इहाँ *क्रि. वि.* यहाँ।

ई

ई देवनागरी वर्णमाला का चौथा वर्ण और 'इ' का दीर्घ रूप, जिसका उच्चारण तालु से होता है; प्रत्यय के रूप में यह स्त्रीलिंग का वाचक (जैसे घोड़ी, पीली आदि), भाववाचकता का सूचक (जैसे लाली, हरियाली आदि) और संबंधवाचक या वाला का बोधक (जैसे चैती, दरबारी आदि) होता है।

ईकार *पुं.* {सं.} ईस्वर।

ईंगुर *पुं.* {सं. हिंगुल, प्रा. इंगुल} एक खनिज पदार्थ जिसकी ललाई बहुत चटकीली और सुंदर होती है, सिंगरफ; यह माथे पर बिंदी लगाने के काम भी आता है।

ईंचना *स.* खींचना।

ईंट *स्त्री.* {सं. इष्टका} ढला हुआ मिट्टी का चौकोर लंबा टुकड़ा जिसे जोड़कर दीवार बनाई जाती है।

मुहा. ईंट से ईंट बजाना = किसी नगर या घर को ढाना या ध्वस्त करना; *ईंटें चुनना* = दीवार बनाने के लिए ईंट पर ईंट रखना; *डेढ़ ईंट की मसजिद अलग बनाना* = जो सब लोग कहते या करते हों, उसके विरुद्ध कहना या करना।

धातु का चौखूँटा टुकड़ा।

ईंट-पत्थर *पुं.* व्यर्थ की चीजें; कुछ न होना।

ईंडुरी *स्त्री.* {सं. कुंडली} कपड़े की गोल गद्दी जिसे घड़ा या बोझ उठाते समय सिर पर रख लेते हैं।

ईंधन *पुं.* {सं.} जलाने की लकड़ी या कंडा, जलावन।

ईक्षण *पुं.* {सं.} {*वि.* ईक्षणीय, ईक्षित, ईक्ष्य} दर्शन, देखना; आँख; विवेचन; विचार; जाँच।

ईख *स्त्री.* {सं. इक्षु} शर जाति की एक घास जिसके डंठलों में मीठा रस रहता है (इसी रस से गुड़ और चीनी बनाती है), गन्ना।

ईक्षित *वि.* देखा या देखी गई।

ईखना *स.* {सं. ईक्षण} देखने की क्रिया या भाव, दृष्टिपात; नेत्र, आँख।

ईछना *स.* {सं. इच्छा} इच्छा करना।

ईजाद *स्त्री.* आविष्कार।

ईठ *पुं.* {सं. इष्ट} मित्र, सखा।

ईठि *स्त्री.* {सं. इष्टि} मित्रता, दोस्ती; प्रयत्न; दृष्टि।

ईढ़ *स्त्री.* {सं. इष्ट} जिद, हठ।

ईतर *वि.* {हिं. इतरना} इतरानेवाला, ढीठ, शोख, गुस्ताख।

ईति *स्त्री.* {सं.} खेती को हानि पहुँचानेवाला उपद्रव, जैसे अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डी पड़ना, चूहे लगना, पक्षियों की अधिकता या सेना की चढ़ाई; पड़ोसी राज्य; बाधा; पीड़ा, दुख।

ईथर {अं.} आकाश, एक आकाशीय तत्व जो विद्युतरंगों के प्रसार में सहायक माना जाता है।

ईद *स्त्री.* {अ.} मुसलमानों का एक प्रसिद्ध त्योहार।

ईदृश *क्रि. वि.* {सं.} इस प्रकार; *वि.* इस प्रकार का, ऐसा।

ईप्सा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* ईप्सित, ईप्सु} इच्छा, अभिलाषा; कोई काम करने के लिए मन में होनेवाला विचार या उद्देश्य, इरादा (इंटेशन)।

ईमान *पुं.* {अ.} {*वि.* ईमानदार, *भाव.* ईमानदारी} धर्म पर विश्वास, आस्तिक्य बुद्धि; चित्त की सद्वृत्ति या अच्छी नीयत; धर्म; सत्य।

ईमानदार *वि.* {अ. ईमान + फा. दार} {*भाव.* ईमानदारी} चित्त में सद्वृत्ति या अच्छी नीयत रखनेवाला, चोरी या छल-कपट न करनेवाला (ऑनेस्ट)।

ईमानदारी *वि.* {अ. ईमान + फा. दारी} {*भाव.* ईमानदारी} चित्त में सद्वृत्ति या अच्छी नीयत, चोरी या छल-कपट न करने की वृत्ति या भाव।

ईरखा *स्त्री.* ईर्ष्या।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGan

ईरानी *वि.* ईरान से संबद्ध।
ईर्ष्या *स्त्री.* {सं.} दूसरे का लाभ या हित देखकर दुखी होना, जलना, डाह (जेलसी)।
ईर्ष्यालु *वि.* {सं.} ईर्ष्या करनेवाला।
ईश *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* ईशा, ईशी *भाव.* ईशता} स्वामी, मालिक; राजा; ईश्वर; शिव; ग्यारह की संख्या।
ईशन *पुं.* ईशान।
ईशान *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* ईशानी} स्वामी, आधिपति; शिव; पूरब और उत्तर के बीच का कोना; ईशान कोण का स्वामी, रुद्र।
ईशिता *स्त्री.* {सं.} आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक जिससे साधक सब पर शासन कर सकता है; शासन करनेवाला।
ईशित्व *पुं.* {सं.} ईशिता।
ईश्वर *पुं.* {*स्त्री.* ईश्वरी, *भाव.* ईश्वरता} परमेश्वर, भगवान; मालिक, स्वामी; समर्थ; शिव।
ईश्वरवाद *पुं.* {सं.} यह मानना कि ईश्वर है और वही सारी सृष्टि का रचयिता है।
ईश्वरवादी (वादिन्) *पुं.* {सं.} ईश्वरवाद को माननेवाला।
ईश्वरी *स्त्री.* {सं.} स्वामिनी, मालकिन, सर्वसमर्थ; शक्ति, दुर्गा।
ईश्वरीय *वि.* {सं.} ईश्वर-संबंधी, ईश्वर का।
ईषत् *वि.* {सं.} थोड़ा, कुछ।
ईषना *स्त्री.* {सं. एषणा} प्रबल इच्छा।
ईस *पुं.* = ईश।
ईसर *पुं.* ईश्वर; ऐश्वर्य।
ईसवी *वि.* {फा.} ईसा से संबंध रखनेवाला, ईसा का।
ईसवी सन् *पुं.* ईसा मसीह के जन्मकाल से चला हुआ संवत्।
ईसा *पुं.* {अ.} एक प्रसिद्ध धर्म प्रवर्तक जिनका चलाया हुआ धर्म 'ईसाई धर्म' कहलाता है; क्राइस्ट।
ईसाइयत *स्त्री.* ईसाईपन।
ईसाई *पुं.* {फा.} ईसा को माननेवाला, ईसा के चलाए धर्म पर चलनेवाला।
ईहा *स्त्री.* {सं.} प्रयत्न, चेष्टा; लोभ, लालसा; इच्छा करना।
ईहामृग *पुं.* {सं.} चार अंकों का एक प्रकार का रूपक; नाटक का एक भेद।

उ उ

उ देवनागरी वर्णमाला का पाँचवाँ संवृत स्वर जिसका उच्चारण ओष्ठ से होता है; कभी-कभी कविता में इसका प्रयोग 'वह' के लिए होता है।
उँ असहमति, क्रोध, आनाकानी प्रकट करने के लिए किया गया शब्द।
उँगली *स्त्री.* {सं. अंगुलि} हथेली के आगे निकले हुए पाँच अवयव जिनसे चीजें पकड़ी या छुई जाती हैं।
मुहा. उँगली उठाना = निंदा का लक्ष्य बनाना, लांछित करना, दोषी ठहराना, तनिक भी हानि पहुँचाना; *उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना* = सहारा पाकर विशेष की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना; *उँगलियों पर नचाना* = जैसा चाहे, वैसा करना, अपनी इच्छा के अनुसार चलाना; *कानों में उँगली देना* = किसी की बात से उदासीन होकर उसकी चर्चा न सुनना; *पाँचों उँगलियाँ घी में होना* = सब प्रकार से लाभ ही लाभ होना।
उँघाई *स्त्री.* उँघ।
उंचन *स्त्री.* उनचन।
उँचाई *स्त्री.* ऊँचा होना, ऊँचाई।
उँचाना *स.* {हिं. ऊँचा} ऊँचा करना; *अ.* ऊँचा होना।
उंचास *पुं.* एक कम पचास की संख्या।
उंछवृत्ति *स्त्री.* {सं.} खेत में गिरे हुए दाने चुनकर जीवननिर्वाह करना।
उंछशील *वि.* {सं.} उंछवृत्ति से जीवन-निर्वाह करनेवाला।
उँडेलना *स.* {सं. उद्धारण} तरल पदार्थ को एक बरतन से दूसरे बरतन में डालना, ढालना; तरल पदार्थ गिराना।
उँह *विस्मयादि.* {अनु.} अस्वीकार, घृणा या बेपरवाही का सूचक शब्द; वेदनासूचक शब्द।
उअना *अ.* उगना।
उआना *स.* उगाना; उठाना; उत्पादन।
उऋण *वि.* {सं. उत् + ऋण} ऋण से मुक्त, जिसका ऋण से उद्धार हो गया हो।
उकटना *स.* उघटना; खुलना।
उकटा *वि.* {हिं. उकटना} {*स्त्री.* उकटी} उघटनेवाला, एहसान जतानेवाला; *पुं.* किसी के किए हुए अपराध या अपने उपकार का बार-बार कथन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उकटा पुराण पुं. गई-बीती और दबी-दबाई बातों का विस्तारपूर्वक कथन।

उकठना अ. {हिं. काठ} सूखकर लकड़ी की तरह कड़ा होना या ऐंठना।

उकड़ूँ पुं. {सं. उत्कृतोरु} घुटने मोड़कर बैठने की मुद्रा।

उकढ़ना अ. = कढ़ना (बाहर निकलना)।

उकताना अ. {सं. आकुल} ऊबना; जल्दी मचाना।

उकति स्त्री. उक्ति।

उकवत पुं. {सं. उत्कोथ} एक प्रकार का चर्मरोग; अकौता।

उकसना अ. {सं. उत्कर्षण या उत्सुक} उभरना; निकलना, अंकुरित होना; उधड़ना।

उकसाना स. {हिं. 'उकसना' का प्रे.} {भाव. उकसाहट} ऊपर उठाना; उभाड़ना, उत्तेजित करना; उठा या हटा देना; (दीए की बत्ती) बढ़ाना या खसकाना।

उकसौंहाँ वि. {हिं. उकसना + ओहाँ (प्रत्य.)} {स्त्री. उकसौंही} उभड़ता हुआ; उकसनेवाला।

उकार पुं. उ वर्ण हिन्दी का पाँचवाँ स्वर; शिव।

उकासना स. {हिं. उकसना} उभाड़ना; खोदकर ऊपर फेंकना; खोलना।

उकेरना स. {सं. उत्कीर्ण} किसी कड़ी चीज पर खोदकर बेल-बूटे आदि बनाना, नक्काशी करना (एनग्रेव)।

उत्किरण पुं. पत्थर या लकड़ी पर खोद कर लिखना।

उकेरी स्त्री. {हिं. उकेरना} उकेरने या खोदकर बेल-बूटे बनाने का काम, नक्काशी (एनग्रेविंग); वि. उत्कीर्ण की गई।

उकेलना स. {हिं. उकलना} तह या परत अलग करना, उचाड़ना; लिपटी हुई चीज को छुड़ाना या अलग करन, उधेड़ना।

उक्त वि. {सं.} जो कहा गया हो, कहा हुआ, कथित।

उक्त-प्रयुक्त वि. {सं.} कहा गया व उसका उत्तर।

उक्ति स्त्री. {सं.} कथन, वचन; अनोखा वाक्य, चमत्कारपूर्ण कथन।

उक्षण पुं. {सं.} छींटे देकर सींचना।

उक्षित पुं. {सं.} यज्ञ आदि में छींटे देकर पवित्र किया गया।

उखटना अ. {सं. उत्कर्षण} चलने में इधर-उधर पैर रखना, लड़खड़ाना; खोंटना, कुतरना।

उखड़ना अ. {सं. उत्खात} जमी या गड़ी हुई वस्तु का अपने स्थान से अलग हो जाना, 'जमाना' का उलटा; किसी दृढ़ स्थिति से अलग होना।

मुहा. पैर उखड़ना = मुकाबले में ठहर न सकने के कारण भागने को होना।

जोड़ से हट जाना।

मुहा. उखड़ी-उखड़ी बातें करना = उदासीनता या विराग दिखाते हुए बातें करना।

(घोड़े के संबंध में) चाल में भेद पड़ना, गति ठीक न रहना; तितर-बितर हो जाना; टूटना।

उखली स्त्री. ऊखल।

उखाड़ पुं. {हिं. उखाड़ना} उखाड़ने की क्रिया या भाव; उखाड़ने या रद्द करने की युक्ति।

उखाड़-पछाड़ किसी की जड़ काटने के लिए षड्यंत्र करना।

उखाड़ना स. {हिं. उखड़ना का स.} किसी जमी या गड़ी हुई वस्तु को हटाकर अलग करना; हटाना; नष्ट करना।

मुहा. गड़े मुरदे उखाड़ना = पुरानी बातों को फिर से छेड़ना; *पैर उखाड़ देना* = पुरानी बातों को फिर से छेड़ना; *पैर उखाड़ देना* = हटाना, भगाना।

किसी की स्थिति दुर्बल करना।

उखाड़ना-पछाड़ना स. {भाव. उखाड़- पछाड़} स्थापित व्यक्ति को विस्थापित तथा पराजित करना।

उखारी स्त्री. {हिं. ऊख} गन्ने या ईख का खेत।

उगना अ. {सं. उद्गम} सूर्य, चंद्र आदि का निकलना, उदय या प्रकट होना; जमना, अंकुरित होना; उपजना, उत्पन्न होना।

उगरना अ. {सं. उद्गरण} (भरा हुआ पानी आदि) निकलना, बाहर आना; चश्मे का पानी फूटना।

उगलना अ. {सं. उद्गिलन्} पेट या मुँह में गई हुई वस्तु मुँह से बाहर थूकना; पचाया हुआ माल विवश होकर वापस करना; गुप्त बात प्रकट कर देना; जहर आदि बाहर फेंकना।

उगाना स. {हिं. उगना का स.} जमाना, अंकुरित करना, उत्पन्न करना; उदय करना, प्रकट करना।

उगारना स. {सं. अग्र} सामने लाना; निकालना।

उगालदान पुं. पीकदान।

उगाहना स. {सं. उद्ग्रहण} {भाव. उगाही} दूसरों से धन आदि लेकर इकट्ठा करना, वसूल करना।

उगाही स्त्री. {हिं. उगाहना} रुपया, पैसा वसूल करने का काम, वसूली; वसूल किया हुआ रुपया-पैसा।

उग्र वि. {सं.} {भाव. उग्रता} प्रचंड, उत्कट, तेज; पुं. महादेव; वत्सनाग विष, बछनाग जहर; क्षत्रिय पिता और शूद्र माता से उत्पन्न एक संकट जाति; केरल देश; सूर्य; विष्णु का एक नाम।

उग्रगंधा स्त्री. {सं.} बच, अजवायन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उग्रह पुं. {सं.} सूर्य, चंद्र या किसी ग्रह का ग्रहण से मुक्त होना।

उघटना स. {सं. उत्कथन} दबी-दबाई बात उभाड़ना; कभी के किए हुए अपने उपकार या दूसरे के अपराध का उल्लेख करके ताना देना; बोलना, कहना; छिपी बात मुँह से निकलना।

उघटापुराण पुं. (बेमतलब) पुरानी बातों का वर्णन।

उघड़ना अ. {सं. उद्घाटन} आगे पड़ा हुआ आवरण हटना, खुलना; नंगा होना; प्रकट होना; भंडा फूटना; सिलाई खुलना।

उघरना अ. = उघड़ना।

उघाड़ना स. {हिं. 'उघड़ना' का स.} आवरण या ढक्कन हटाना, घोलना; नंगा करना; प्रकट करना; गुप्त बात खोलना, भंडा फोड़ना।

उघाड़ा वि. {हिं. उघड़ना} जिसके ऊपर कोई आवरण न हो, नंगा; खोला हुआ।

उघार पुं. {हिं. उघारना} उघारने या खोलने की क्रिया या भाव।

उघारना स. = उघाड़ना।

उघेलना स. = खोलना।

उचकन पुं. {सं. उच्च + करण} ईंट आदि का वह टुकड़ा जिसे नीचे देकर कोई चीज एक ओर से ऊँची करते हैं।

उचकना अ. {सं. उच्च = ऊँचा + करण = करना} ऊँचा होने के लिए एड़ी उठाकर खड़े होना; उछलना; स. उछलकर लेना या छीनना।

उचका क्रि. वि. औचक।

उचक्का पुं. {हिं. उचकना} {स्त्री. उचक्की, भाव. उचक्कापन} चीज उठाकर ले भागनेवाला आदमी, चाईं; उठाईगीर।

उचटना अ. {सं. उच्चाटन} जमी हुई वस्तु का उखड़ना; अलग होना, छूटना; भड़कना, बिचकना; विरक्त होना।

उचटाना स. {सं. उच्चाटन} नोचना; अलग करना, छुड़ना; उदासीन या विरक्त करना।

उचड़ना अ. उखड़ना।

उचनि स्त्री. उठाना, उछलना।

उचरना स. {सं. उच्चारण} उच्चारण करना, बोलना; अ. मुँह से शब्द निकलना; उखड़ना।

उचाट पुं. {सं. उच्चाट} मन का उचटना, विरक्ति, उदासीनता।

उचाटना स. {सं. उच्चाटन} उच्चाटन करना, जी हटाना, विरक्त करना; उचाड़ना।

उचाटी स्त्री. उचाट।

उचाड़ना स. उखाड़ना।

उचाना स. {सं. उच्च + करण} ऊँचा करना; ऊपर उठाना।

उचार पुं. {सं.} बोलना, उच्चारण।

उचारना स. {सं. उच्चारण} उच्चारण करना, मुँह से शब्द निकालना; स. उखाड़ना।

उचिंत वि. {हिं. उचाना} (वह दी हुई रकम) जिसका हिसाब बाद में या खर्च होने पर मिलने को हो (सस्पेंस)।

उचित वि. {सं.} {भाव. औचित्य} जैसा होना चाहिए वैसा, योग्य, ठीक मुनासिब, वाजिब (प्रॉपर); आवश्यकता, अवसर आदि देखते हुए जो ठीक हो या जैसा करना ठीक हो (फिट्)।

उचौंहा वि. {हिं. ऊँचा + औंहाँ (प्रत्य.)} {स्त्री. उचौंही} ऊँचा उठा हुआ।

उच्च वि. {सं.} ऊँचा; श्रेष्ठ।

मुहा. उच्च के चंद्रमा होना = सौभाग्य और उन्नति के दिन होना, ज्योतिष के अनुसार अच्छे स्थान-विशेष में स्थित।

पुं. संगीत में 'तार' नामक सप्तक।

उच्चक वि. {सं. उच्च} ऊँचाई के विचार से उस निश्चित सीमा तक पहुँचने वाला जिससे आगे बढ़ना या ऊपर चढ़ना निषिद्ध हो, जैसे सरकार ने गेहूँ का उच्चक मूल्य 250 रुपए प्रति क्विंटल रखा है (सीलिंग)।

उच्चतम वि. {सं.} सबसे ऊँचा; अधिकतम।

उच्चता स्त्री. {सं.} ऊँचाई; श्रेष्ठता, उत्तमता।

उच्चरण पुं. {सं.} {वि. उच्चरणीय, उच्चरित} कंठ, तालू, जिह्वा आदि से शब्द निकलना, मुँह से शब्द निकलना; बोलना।

उच्चय पुं. {सं.} जमा होना, ढेर।

उच्चयन पुं. {सं.} फूल तोड़कर एकत्रित करना।

उच्चरित वि. {सं.} जिसका उच्चारण हुआ हो; जिसका उल्लेख हुआ हो; बोला हुआ।

उच्चलित वि. {सं.} अपने स्थान से हिला या चला।

उच्चवर्ग पुं. {सं.} समाज का वह वर्ग जिससे सभी लोग धनिक होते हैं और इसीलिए जो ऊँचा माना जाता है (अपर क्लास) (शेष दो वर्ग मध्यम और निम्न कहलाते हैं)।

उच्चाकांक्षा स्त्री. {सं.} ऊँची आकांक्षा, महत्वाकांक्षा (एम्बिशन)।

उच्चाकांक्षी वि. {सं. उच्चाकांक्षिन्} जिसकी बहुत बड़ी आकांक्षा हो, महत्वाकांक्षी।

उच्चाट वि. {हिं. उचटना} उचटा हुआ।

उच्चाटन पुं. {सं.} {वि. उच्चाटनीय, उच्चाटित} उचाड़ना, उखाड़ना; किसी का चित्त कहीं से हटाना (तंत्र के छह अभिचारों में से एक); अनमनापन, विरक्ति; किसी को उसके स्थान से उठाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उच्चाधिकारी पुं. {सं.} ऐसा अधिकारी जो किसी ऊँचे पद पर हो (हाई ऑफिशल)।

उच्चाधिकृत पुं. {सं.} उच्चाधिकारी।

उच्चायुक्त पुं. {सं.} उच्चायोग का प्रधान, हाई कमिश्नर।

उच्चायोग पुं. {सं.} दूतावास के तुल्य राजकीय संस्थान (हाई कमीशन)।

उच्चार पुं. {सं.} मुँह से शब्द निकलना, बोलना, कथन।

उच्चारण पुं. {सं.} {*वि.* उच्चारणीय, उच्चरित, उच्चार्य} मनुष्यों का मुँह से व्यक्त और स्पष्ट ध्वनि निकालना, मुँह से स्वर और व्यंजनयुक्त शब्द निकालना; वर्णों या शब्दों के बोलने का ढंग (प्रोनन्सिएशन)।

उच्चारित *वि.* उच्चरित।

उच्चावच *वि.* {सं.} ऊँचा-नीचा, तरह-तरह का।

उच्चित्रण पुं. {सं.} उभाड़दार चित्रण।

उच्चैःश्रवा पुं. {सं.} इंद्र या सूर्य का सफेद घोड़ा जो समुद्र से निकला था।

उच्छन्न *वि.* {सं.} दबा हुआ, लुप्त; बरबाद किया हुआ।

उच्छलन पुं. {सं.} उछलना, छलकना।

उच्छव पुं. उत्सव।

उच्छाह पुं. उछाह।

उच्छिन्न *वि.* {सं.} कटा हुआ, खंडित; उखड़ा हुआ; नष्ट।

उच्छिष्ट *वि.* {सं.} किसी के खाने से बचा हुआ, जूठा, जूठन; दूसरे का बरता हुआ; ब्रह्म (अथर्ववेद)।

उच्छू पुं. {सं. उत्थान, पं. उत्थू} वह खाँसी जो गले में पानी आदि रुकने से आती है।

उच्छृंखल *वि.* {सं.} {*भाव.* उच्छृंखलता} जो शृंखलाबद्ध न हो, क्रमरहित, अंडबंड; मनमाना काम करनेवाला, निरंकुश, स्वेच्छाचारी; उद्दंड, अक्खड़; अनुशासनहीन।

उच्छेद (न) पुं. {सं.} उखाड़ने का कार्य; नाश; काट डालना।

उच्छ्वास पुं. {सं.} {*वि.* उच्छवसित, उच्छ्वासी} ऊपर को खींचा हुआ साँस, उसास, आह भरना; साँस, श्वास; ग्रंथ का प्रकरण।

उच्छ्वसित पुं. {सं.} लंबी साँस, आह भरने की क्रिया।

उछंग पुं. {सं. उत्संग} गोद, क्रोड़; हृदय।

उछरना *अ.* = उछलना।

उछल-कूद *स्त्री.* {हिं. उछलना + कूदना} उछलने या कूदने की क्रिया या भाव; खेल-कूद; किसी काम के लिए किया जानेवाला प्रयास।

उछलना *अ.* {सं. उच्छलन} वेग से ऊपर उठना; कूदना; अत्यंत प्रसन्न होना, खुशी से फूलना; ऊपर या सामने आना, जैसे नाम उछलना (नाम के अंतर्गत देखें)।

उछाल *स्त्री.* {सं. उच्छालन} उछलने की क्रिया या भाव; पानी की लहर का ऊँचा उठना, ज्वार; छलाँग, चौकड़ी, कुदान; वह ऊँचाई जहाँ तक कोई उछल सके; वमन, कै; संगीत में स्थायी या पहला पद शुरू में गा चुकने पर वही पद या उसका कुछ अंश ऊँचे स्वरों तथा भिन्न प्रकार से गाने की क्रिया या भाव।

उछालना *स.* {सं. उच्छालन} ऊपर की ओर फेंकना; प्रकट करना (व्यंग्य); किसी को उकसाना।

उछाह पुं. = उत्साह।

उछाही *वि.* {हिं. उछाह} आनंद मनानेवाला; उत्साही।

उजड़ना *अ.* {?} {*वि.* उजाड़} टूट-फूटकर नष्ट होना, उखड़ना-पुखड़ना ध्वस्त होना; गिर-पड़ जाना; तितर-बितर होना, बरबाद होना, नष्ट होना।

उजड्ड *वि.* {सं. उद्दंड} {*भाव.* उजड्डपन} वज्र मूर्ख; अशिष्ट, असभ्य।

उजबक पुं. {तु.} तातारियों की एक जाति; उजड्ड; मूर्ख; उज्बेकिस्तान के निवासी।

उजरत *स्त्री.* {अ. उज्रत} पारिश्रमिक; मजदूरी; आपत्ति।

उजरा *वि.* उजला।

उजराना *स.* उजालना।

उजवास पुं. प्रयत्न, चेष्टा।

उजला *वि.* {सं. उज्ज्वल} {*स्त्री.* उजली} {*भाव.* उजलापन} श्वेत, सफेद; स्वच्छ, साफ, निर्मल; चमकदार।

उजागर *वि.* {सं. उद् = ऊपर + जागर = जागना} {*स्त्री.* उजागरी} प्रकाशित, जाज्वल्यमान, जगमगाता हुआ; प्रसिद्ध, विख्यात।

उजाड़ पुं. {हिं. उजड़ना} उजड़ा हुआ स्थान, वह जगह जहाँ बस्ती न रह गई हो; निर्जन स्थान; बन; *वि.* ध्वस्त, उच्छिन्न, गिरा-पड़ा; जो आबाद या बसा हुआ न हो; सुनसान।

उजाड़ना *स.* {हिं. उजड़ना} ध्वस्त करना, गिराना-पड़ाना; उधेड़ना; उच्छिन्न या नष्ट करना। *मुहा. घर उजाड़ना* = बरबाद करना।

उजारना पुं. उजाड़ना, बरबाद करना।

उजार *वि.* उजाला; पुं. उजाला; उजाड़।

उजारा पुं. उजाला।

उजालना *स.* {सं. उज्ज्वलन} साफ करना, चमकाना, निखारना; प्रकाशित करना; बालना, जलाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उजाला पुं. {सं. उज्ज्वल} {*स्त्री.* उजाली} प्रकाश, चाँदनी, रोशनी, 'अंधेरा' का उलटा; *वि.* प्रकाशवान।

उजाली *स्त्री.* {हिं. उजाला} चाँदना, चंद्रिका।

उजास पुं. {सं. ओज + अंश} {*क्रि.* उजासना} प्रकाश, उजाला।

उजियारा पुं. {सं. उद्योत} उजाला।

उजेला पुं. उजाला।

उज्जल *क्रि. वि.* {सं. उद् = ऊपर + जल = पानी} बहाव से उलटी ओर, नदी के चढ़ाव की ओर; *वि.* उज्ज्वल।

उज्झित *वि.* {सं.} त्यागा गया।

उज्ज्वल *वि.* {सं.} {*भाव.* उज्ज्वलता} प्रकाशमान; शुभ्र, स्वच्छ, निर्मल; बेदाग; सफेद।

उज्यारा पुं. उजाला।

उज्यास *स्त्री.* प्रकाश, उजाला।

उज्र पुं. {अ. उज्र} किसी कार्य या बात का विरोध करते हुए यह कहना कि यह ठीक नहीं है अथवा ऐसे नहीं होना चाहिए, आपत्ति।

उज्रदार *वि.* {फा. उज्रदार} {*भाव.* उज्रदारी} उज्र या आपत्ति करनेवाला।

उझकना *अ.* {हिं. उचकना} उचकना, उछलना; ऊपर उठना, उभड़ना; उछलना; ऊपर उठना; चौंकना।

उझल *स्त्री.* {हिं. उलझना} उझलने या उँडेलने की क्रिया या भाव; वर्षा, वृष्टि; अचानक बहुत अधिक मात्रा में आ पड़ने का भाव, उमड़ाव।

उझलना *स.* उड़ेलना; *अ.* उमड़ना, बढ़ना।

उझिला पुं. भुनी या उबाली सरसों।

उटंग *वि.* {सं. उत्तंग} पहनने में ऊँचा या छोटा (कपड़ा); जो ऊपर टँगा रहे।

उटंगन *स्त्री.* आड़, वह वस्तु जिसके सहारे बैठे, एक औषध।

उटकना *स.* {सं. उकलन} अनुमान करना, अटकल लगाना।

उटकर *क्रि. वि.* = अंधाधुंध।

उटज पुं. {सं.} झोंपड़ी, पर्णकुटी।

उठँगना *अ.* {सं. उत्थ + अंग} ऊँची वस्तु का सहारा लेकर बैठना, उठने की चेष्टा करना।

उठतक *स्त्री.* घोड़े की पीठ पर जीन के नीचे रखने की वस्तु।

उठना *अ.* {सं. उत्थ + अंग} ऐसी स्थिति में होना जिससे विस्तार पहले से अधिक ऊँचाई तक पहुँचे, ऊँचा होना।

मुहा. उठ जाना = मर जाना; *उठती जवानी* = युवावस्था का आरंभ; *उठते-बैठते* = प्रति क्षण, हर समय।

ऊपर जाना या ऊपर चढ़ना; बिस्तर छोड़ना, जागना; निकलना, उदय होना; उत्पन्न होना, पैदा होना, जैसे मन में विचार उठना, दर्द उठना; तैयार होना, उद्यत होना, उभड़ना; खमीर आना, सड़कर उफनना; किसी दुकान या कारखाने का काम बंद होना; किसी प्रथा का बंद या अंत होना; काम में लगना, व्यय होना, जैसे रुपया उठना; बिकना या भाड़े पर जाना; याद आना, ध्यान पर चढ़ना; गाय, भैंस, घोड़ी आदि का मस्ताना, अलंग पर आना।

उठल्लू *वि.* {हिं. उठना + लू (प्रत्य.)} एक स्थान पर जमकर न रहनेवाला; बेठिकाने का, आवारा।

मुहा. उठल्लू का चूल्हा या उठल्लू चूल्हा = व्यर्थ इधर-उधर फिरनेवाला।

उठाईगीरा *वि.* {हिं. उठाना + फा. गीर} आँख बचाकर चीज उठाकर ले भागनेवाला, उचक्का, चाईं।

उठान *स्त्री.* {सं. उत्थान} उठने की क्रिया या भाव; बढ़ने का ढंग, बाढ़, वृद्धिक्रम; गति की प्रारंभिक अवस्था।

उठाना *स.* {हिं. उठना का स.} पड़ी या टेढ़ी स्थिति से खड़ी या उठी स्थिति में करना, जैसे लेटे हुए आदमी को उठाकर बैठाना; नीचे से ऊपर ले जाना; जगाना; आरंभ करना, शुरू करना, उद्यत करना; तैयार करना; मकान या दीवार आदि तैयार करना; कोई प्रथा बंद करना; खर्च करना, लगाना; भाड़े या किराए पर देना; प्राप्त या हस्तगत करना, जैसे लाभ उठाना; अनुभव करना, जैसे मजा उठाना; कोई वस्तु हाथ में लेकर कसम खाना, जैसे गंगाजल उठाना।

उठापटक *स्त्री.* {हिं. उठाना + पटकना} वह स्थिति जिसमें एक दूसरे को उठाया और पटका जाता है।

उठेल पुं. {हिं. ठेलना} धक्का देना, रेला; आघात, चोट।

उठेलना *स.* = ठेलना।

उठौआ *वि.* {हिं. उठाना} जिसका कोई स्थान नियत न हो, जो नियत स्थान पर न रहता हो; जो उठाया जाता हो।

उठौनी *स्त्री.* {हिं. उठाना} उठाने की क्रिया या भाव; वह रुपया जो किसी फसल की पैदावार आदि खरीदने के लिए पेशगी दिया जाए; वह धन या अन्न जो किसी देवता की पूजा के लिए अलग रखा जाए; किसी के मरने के दूसरे या तीसरे दिन बिरादरी के लोगों का इकट्ठा होकर कुछ रस्म और लेन-देन करना; हमला (पद्मावत)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by ... maj Foundation Chennai and eGangotri

उडंबर *पुं.* {सं. उदुम्बर} गूलर का फल।
उड़द *स्त्री.* एक दाल।
उड़नखटोला *पुं.* {हिं. उड़ना + खटोला} उड़नेवाला खटोला (कल्पित); विमान, आकाशयान।
उड़नछू *वि.* {हिं. उड़ना} देखते-देखते अदृश्य हो जानेवाला, चम्पत, गायब।
उड़नतश्तरी *स्त्री.* एक प्रकार का अज्ञात ज्योतिर्मय पिंड जो आकाश में उड़ता हुआ दृष्टिगत होता है।
उड़नमीन *स्त्री.* उड़नेवाली मछली।
उड़ना *अ.* {सं. उड्डयन} चिड़ियों आदि का आकाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना; आकाशमार्ग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना; हवा में ऊपर उठना या फैलना, जैसे पतंग या गुड्डी उड़ना; इधर-उधर हो जाना, छितराना, बिखरना; फहराना, फरफराना, जैसे झंडा उड़ना; खूब तेज चलना; पृथक् होना, हटना; खर्च होना; किसी भोग्य वस्तु का भोगा जाना, जैसे लड्डू उड़ना; आमोद-प्रमोद की वस्तु का व्यवहार होना; रंग आदि का फीका या धीमा पड़ना; फलाँग मारना, कूदना (कुश्ती); सहसा गायब होना।
मुहा. उड़ *चलना* = तेज दौड़ना, सरपट भागना, शोभित होना, कुमार्ग में लगना, इतराना, घमंड करना।
वि. उड़नेवाला, उड़ाका।
उड़ती खबर *स्त्री.* किंवदंती; अपुष्ट सूचना।
उड़प *पुं.* {हिं. उड़ना} नृत्य का एक भेद; एक बाजा; *पुं.* उडुप।
उड़सना *अ.* {?} भंग या नष्ट होना।
उड़ाऊ *वि.* {हिं. उड़ना} उड़नेवाला, उड़ाका; बहुत खर्च करनेवाला, खर्चीला।
उड़ाक *वि., पुं.* उड़ायक।
उड़ाका *वि.* {हिं. उड़ना} जो उड़ता हो, बहुत उड़नेवाला; वायुयान चलानेवाला।
उड़ाका दल *पुं.* पुलिस का वह दस्ता जो घटना-स्थल पर यथाशीघ्र पहुँचता है।
उड़ान *स्त्री.* {सं. उड्डयन} उड़ने की क्रिया या भाव; छलाँग, कूदान; उतनी दूरी, जितनी एक दौड़ में तै करें; कलाई, गट्टा, पहुँचा; अत्यधिक उन्नति।
उड़ाकू *वि.* उड़ाक।
उड़ाना *स.* {हिं. उड़ना} किसी वस्तु या जीव को उड़ने में प्रवृत्त करना; हवा में फैलाना, जैसे धूल उड़ाना; झटके से अलग करना, काटकर दूर फेंकना; हटाना, दूर करना; चुराकर ले लेना; नष्ट करना, बरबाद करना; खाने-पीने की चीज खूब स्वाद से खाना-पीना; आमोद-प्रमोद की वस्तु का भोग करना; प्रहार करना, मारना; भुलावा या चकमा देना; किसी की विद्या इस प्रकार सीखना कि उसे खबर न हो।
उड़ायक *वि.* {हिं. उड़ान + क (प्रत्य.)} उड़ानेवाला।
उड़ासना *स.* {सं. उद्वासन} बिछौना समेटना; तहस-नहस करना, उजाड़ना; बैठने या सोने में विघ्न डालना; निकाल बाहर करना।
उड़िया *वि.* {हिं. उड़ीसा} उड़ीसा देश का रहनेवाला; *स्त्री.* उड़ीसा देश की भाषा।
उड़ी *स्त्री.* {हिं. उड़ना} मालखंभ की एक कसरत; कलाबाजी; जम्मू-कश्मीर का एक स्थान।
उड़ीसा *पुं.* {सं. ओड्र} भारत का एक राज्य।
उडु *पुं.* {सं.} नक्षत्र, तारा; पक्षी, चिड़िया; केवट, मल्लाह; जल, पानी।
उडुस *पुं.* खटमल।
उडुप *पुं.* {सं.} चंद्रमा; नाव; बड़ा गरुड़।
उडुपति *पुं.* {सं.} चंद्रमा।
उड़ैना *पुं.* {*स्त्री.* अल्पा. उड़ैनी} जुगनू।
उड़ौहाँ *वि.* {हिं. उड़ना} उड़नेवाला; उड़ने के स्वभाव वाला।
उड्डयन-बंध *पुं.* {सं.} हठयोग के अनुसार एक यौगिक आसन।
उड्डयन-विभाग *पुं.* {सं.} राज्य का वह विभाग जिसके जिम्मे सब तरह के हवाई जहाजों आदि की व्यवस्था हो।
उढरना *वि.* {सं. उत्तुंग} ऊँचा; श्रेष्ठ।
उढारना पराई स्त्री को भगा ले जाना।
उतंग *वि.* उत्तुंग।
उत *क्रि. वि.* {सं. उत्तर} उधर।
उतन *क्रि. वि.* {हिं. उ + तनु} उधर।
उतना *वि.* {हिं. उस + तना (हिं. प्रत्य.)} उस मात्रा का, जितना वह है, उसके बराबर।
उतन्ना *पुं.* कान में पहनने की बाली।
उतपति *स्त्री.* उत्पत्ति; सृष्टि।
उतपाटना *स.* = उखाड़ना।
उतपात *पुं.* = उत्पात।
उतपादना *स.* {सं. उत्पन्न} उत्पन्न करना, उपजाना; *अ.* उत्पन्न होना; उत्पादन।
उतरन *स्त्री.* {हिं. उतरना} पहनकर उतारे हुए पुराने कपड़े।
उतरना¹ *अ.* {सं. अवतरण} ऊँचे स्थान से क्रम से नीचे की ओर आना।
मुहा. चित्त से उतरना = विस्मृत होना, भूल जाना, पहले का-सा अनुराग न रहना; आदर, मान, प्रेम आदि कम होना।
अवनति पर होना, ढलना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. उतरकर = नीचे दरजे का, (किसी की तुलना में) घटकर; *चेहरा उतरना* = चेहरे पर उदासी आना; लज्जा, खिन्नता या उदासीनता प्रकट होना।

शरीर के किसी जोड़ या हड्डी का अपनी जगह से हट जाना; कांति, तेज आदि का फीका पड़ना, प्रभाव या उद्वेग कम होना; वर्ष, मास या नक्षत्र विशेष का समाप्त होना; धीरे-धीरे होनेवाला काम पूरा होना, जैसे गंजी उतरना; भाव का कम होना; डेरा करना, ठहरा, टिकना; प्रतिलिपि का अंकित होना; भभके से खिंचकर तैयार होना, जैसे अरक उतरना; धारण की हुई वस्तु का अलग होना; तौल में ठहरना; बाजे की कसन का ढीला होना; अवतरित होना।

उतरना² *स.* {सं. उत्तरण} नदी आदि पार होना।

उतरहा *वि.* उत्तर का वासी।

उतराँहीं *स्त्री.* {हिं. उत्तर (दिशा)} उत्तर की ओर से आनेवाली हवा।

उतराई *स्त्री.* {हिं. उतरना} ऊपर से नीचे आने की क्रिया या भाव, उतार; नदी पार उतारने का महसूल; नीचे की ढलती हुई भूमि।

उतराना *अ.* {सं. उत्तरण} पानी के ऊपर आना, पानी की सतह पर तैरना; उबलना, उफान खाना; प्रकट होना, हर जगह दिखाई देना; *अ.* 'उतरना' का प्रे.।

उतरवि *पुं.* उतार।

उतरिन *वि.* उऋण।

उतरौंहाँ *क्रि. वि.* {सं. उत्तर + हिं. हा (प्रत्य.)} उत्तर की ओर।

उताइल *वि.* = उतावला; *स्त्री.* = उतावली।

उतान *वि.* {सं.} = उत्तान।

उतार *पुं.* {हिं. उतरना} उतरने की क्रिया या भाव; क्रमशः नीचे की ओर प्रवृत्ति; उतरने योग्य स्थान; किसी वस्तु की मोटाई या घेरे में क्रमशः होनेवाली कमी; रोग या वस्तु के मूल्य में घटाव, कमी; नदी में चलकर पार करने योग्य स्थान; समुद्र का भाटा; वह वस्तु या प्रयोग जिससे नशे, विष आदि का प्रभाव दूर हो, मारक, परिहार, जैसे भाँग का उतार खटाई है; किसी चीज के भाव में होनेवाली कमी (फ्लकचुएशन)।

उतारना *स.* {सं. अवतारणा} ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना; प्रतिलिपि या प्रतिरूप बनाना; लगी हुई वस्तु को अलग करना, उचाड़ना; उधेड़ना; पहनी हुई चीज अलग करना; ठहराना, ठिकाना, डेरा देना; कोई वस्तु चारों ओर घुमाकर भूत-प्रेत की भेंट के रूप में चौराहे आदि पर रखना उतारा करना; निछावर करना, वारना; वसूल करना, उगाहना, जैसे चंदा उतारना; कोई उग्र प्रभाव दूर करना; पीना, घूँटना; ऐसी वस्तु तैयार करना जो खराद, साँचे आदि पर चढ़ाकर बनाई जाए; बाजे आदि की कसन ढीली करना; भभके से खींचकर अरक बनाना; ऋण आदि लौटाना; उठाई हुई वस्तु को भूमि पर रखना; नदी आदि से पार करना।

उतारा *पुं.* {हिं. उतारना} प्रेतबाधा या रोग के लिए किसी व्यक्ति के चारों ओर कुछ सामग्री घुमाकर चौराहे पर रखना; उतारे की सामग्री।

उतारू *वि.* {हिं. उतरना} किसी बात या काम के लिए उद्यत, तत्पर; अड़ा हुआ।

उताल *वि.* {हिं. उताली} तेज, फुरतीला; उतावला।

उताली *स्त्री.* {सं. उद् + त्वर} शीघ्रता, जल्दी; तेजी, फुरती; उतावली, जल्दबाजी; उतावलापन; *क्रि. वि.* शीघ्रतापूर्वक, जल्दी से।

उतावला *वि.* {सं. उद् + त्वर} {*स्त्री.* उतावली} जल्दी मचानेवाला, जल्दबाज।

उतावली *स्त्री.* {हिं. उतावला} उताली।

उताहल *क्रि. वि.* {सं. उद् + त्वर} जल्दी से।

उतिम *वि.* = उत्तम।

उतै *क्रि. वि.* {सं.} उधर।

उत्क *वि.* {सं.} उत्सुक, उत्कंठित।

उत्कट *वि* {सं.} तीव्र, बहुत अधिक।

उत्कंठा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* उत्कंठित} किसी बात की प्रबल इच्छा, तीव्र अभिलाषा (लांगिग); किसी को मिलने की तीव्र इच्छा; किसी कार्य के होने में विलंब न सहकर उसे झटपट करने की अभिलाषा (साहित्य)।

उत्कंठित *वि.* {सं.} उत्कंठायुक्त, चाव से भरा।

उत्कंठिता *स्त्री.* {सं.} संकेत स्थान पर प्रिय के न मिलने पर तर्क-वितर्क करनेवाली नायिका।

उत्कट *वि.* {सं.} {*भाव.* उत्कटता} तीव्र, विकट, उग्र।

उत्कर्ष *पुं.* {सं.} {*वि.* उत्कर्षित, उत्कृष्ट} बड़ाई, प्रशंसा; श्रेष्ठता, उत्तमता; समृद्धि; भाव, मूल्य, महत्व आदि का बढ़ना या चढ़ना (राइज़, एप्रिसिएशन); उन्नति प्रगति।

उत्कर्षक *वि.* {सं.} उत्कर्ष बढ़ानेवाला, उन्नत करनेवाला।

उत्कल *पुं.* {सं.} उड़ीसा देश।

उत्कलिका *स्त्री.* {सं.} उत्सुकता; कली; लहर।

उत्कलित *वि.* {सं.} लहराता हुआ; खिला हुआ।

उत्कीर्ण *वि.* {सं.} लिखा हुआ; खुदा हुआ।

उत्कृष्ट *वि.* {सं.} {*भाव.* उत्कृष्टता} उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्कोच *पुं.* {सं.} घूस, रिश्वत।
उत्क्रम *पुं.* {सं.} उलटा क्रम; लाँघना।
उत्क्रमण *पुं.* {सं.} प्राण निकलना; ऊपर को जाना, दूसरे लाँघकर आगे जाना।
उत्क्रमी *वि.* {सं. उत्क्रम} उलटा; लाँघनेवाला।
उत्क्रांत *वि.* {सं.} {*भाव.* उत्क्रांति} ऊपर की ओर चढ़नेवाला; जिसका उल्लंघन या अतिक्रमण हुआ हो; जो औरों को नीचे छोड़ ऊपर चढ़ा हो।
उत्खनन *पुं.* {सं.} {*वि.* उत्खात} खेदने की क्रिया, खोदाई।
उत्तंग *वि.* उत्तुंग।
उत्तंस *पुं.* अवतंस।
उत्तप्त *वि.* {सं.} खूब तपा हुआ, बहुत गरम; दुखी, पीड़ित, संतप्त।
उत्तम *वि.* {सं.} {*स्त्री.* उत्तमा} सबसे अच्छा, सर्वश्रेष्ठ (बेस्ट)।
उत्तमतया *क्रि. वि.* {सं.} अच्छी तरह से भली भाँति।
उत्तमता *स्त्री.* {सं.} उत्तम होने की स्थिति या भाव, श्रेष्ठता या उत्कृष्टता।
उत्तम पुरुष *पुं.* {सं.} वह सर्वनाम जो बोलनेवाले पुरुष का सूचक होता है, जैसे 'मैं' या 'हम' (फर्स्ट परसन)।
उत्तमर्ण *पुं.* {सं.} ऋण देनेवाला व्यक्ति, महाजन।
उत्तम श्लोक *पुं.* {सं.} विष्णु।
उत्तमांग *पुं.* {सं.} सिर।
उत्तमा दूती *स्त्री.* {सं.} वह दूती जो नायक या नायिका को मीठी बातों से समझा-बुझाकर मना लाती हो।
उत्तमा नायिका *स्त्री.* {सं.} वह स्वकीया नायिका जो पति के प्रतिकूल रहने पर भी स्वयं अनुकूल बनी रहे।
उत्तमोत्तम *वि.* {सं.} अच्छे से अच्छे।
उत्तर *पुं.* {सं.} दक्षिण दिशा के सामने की दिशा, उदीची; कोई प्रश्न या बात सुनकर उसके समाधान के लिए कही हुई बात, जवाब; किसी कार्य या व्यवहार के बदले में किया जानेवाला कार्य या व्यवहार, प्रतिकार, बदला; साहित्य में एक अलंकार जिसमें उत्तर सुनते ही प्रश्न का अनुमान किया जाता है या प्रश्न के वाक्यों में ही उत्तर भी होता अथवा बहुत से प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है; *वि.* पिछला, बाद का; ऊपर का; बढ़कर, श्रेष्ठ; राजा विराट का छोटा पुत्र जो बृहन्नला रूपधारी अर्जुन को सारथी बनाकर कौरवों से लड़ने गया था (महाभारत); *क्रि. वि.* पीछे, बाद।
उत्तर कांड *पुं.* {सं.} रामायण व रामचरितमानस का अंतिम कांड।
उत्तर काम *पुं.* {सं.} शरीर का ऊपरी भाग।
उत्तर क्रिया *स्त्री.* {सं.} अंत्येष्टि।
उत्तरजात *वि.* {सं.} पिता की मृत्यु के बाद उत्पन्न होनेवाला (बालक) (आफ्टर बॉर्न)।
उत्तरजीवी (विन्) *पुं.* {सं.} वह जो औरों के किसी दुर्घटना, संहार आदि में मारे जाने के बाद बचा हो।
उत्तरण *पुं.* {सं.} पार उतरने की क्रिया या भाव; यानों आदि पर से पृथ्वी पर उतरना (लैंडिंग)।
उत्तरदाता *पुं.* {सं. उत्तरदातृ} {*स्त्री.* उत्तरदात्री} वह जिससे किसी कार्य के बनने-बिगड़ने पर पूछताछ की जाए, जवाबदेह, जिम्मेदार।
उत्तरदान *पुं.* {सं.} उत्तराधिकारी के रूप में मिली हुई वस्तु या संपत्ति (लीगेसी)।
उत्तरदायित्व *पुं.* {सं.} उत्तरदायी होने की अवस्था या भाव, जवाबदेही, जिम्मेदारी (रेस्पांसिबिलिटी); भार।
उत्तरदायी (यिन्) *वि.* {सं.} जिसपर कोई उत्तरदायित्व हो, जिम्मेदार (रेस्पांसिबुल)।
उत्तरपद *पुं.* {सं.} समस्त पदों में वह शब्द जो अंत में रहता है, 'पूर्वपद' का उलटा, जैसे कासमर्द में 'मर्द' और अमरकोट में 'कोट' उत्तरपद हैं।
उत्तर प्रदेश *पुं.* {सं.} आधुनिक भारत का वह उत्तरी मध्य भाग जो सहारनपुर, मेरठ आदि से बनारस और गोरखपुर तक है।
उत्तरा *स्त्री.* {सं.} राजा विराट की पुत्री व अभिमन्यु की पत्नी।
उत्तराखंड *पुं.* {सं. उत्तर + खंड} भारतवर्ष का हिमालय के पास का भाग; इसमें गढ़वाल, कुमाऊँ आदि क्षेत्र आते हैं; वर्तमान में बना उत्तरांचल राज्य।
उत्तराधिकार *पुं.* {सं.} वह अधिकार जिसके अनुसार कोई किसी व्यक्ति के मरने पर उसकी संपत्ति अथवा उसके हटने पर उसका पद या स्थान पाता है (इन्हेरिटेंस, सक्सेशन) किसी अधिकारी या संस्था के कार्य, अधिकार आदि उसके बाद आनेवाले दूसरे अधिकारी, संस्था आदि को मिलना।
उत्तराधिकारी (रिन्) *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* उत्तराधिकारिणी} वह जो किसी के मर जाने पर नियमत: उसकी संपत्ति आदि का अधिकारी हो, वारिस (एयर); वह जो किसी के हट जाने या न रहे पर उसके पद या स्थान का अधिकारी हो (सक्सेसर)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तरापथ पुं. {सं.} पंजाब व काश्मीर का क्षेत्र।
उत्तराभास पुं. {सं.} गलत उत्तर।
उत्तरापेक्षी (क्षिन्) पुं. {सं.} वह जिसे उत्तर की अपेक्षा हो।
उत्तराभिमुख (खिन्) *वि.* {सं.} जिसका मुख उत्तर की ओर हो।
उत्तरायण पुं. {सं.} मकर संक्रांति से कर्क की संक्रांति के मध्य का समय; वह छह महीने का समय जब सूर्य इस गति से बराबर उत्तर की ओर बढ़ता रहता है।
उत्तरार्द्ध पुं. {सं.} पिछला, आधा, पीछे का आधा भाग; जैसे दोपहर के बाद।
उत्तरित *वि.* {सं.} जिसका उत्तर या जवाब दिया जा चुका हो (रिप्लायड)।
उत्तरीय *वि.* {सं.} उपरना, दुपट्टा; *वि.* ऊपर का, ऊपरवाला; उत्तर दिशा का; उत्तर दिशा-संबंधी।
उत्तरोत्तर *वि.* {सं.} एक के पीछे एक, एक के अनंतर दूसरा; *क्रि. वि.* क्रमशः, लगातार; आगे-आगे।
उत्तल *वि.* {सं.} (चश्मे आदि का शीशा) जिसका आकार उलटे कटोरे की तरह हो (कानवेक्स)।
उत्ताप पुं. {सं.} {*वि.* उत्तप्त, उत्तापित} गरमी, तपन, ताप; वेदना, पीड़ा; कष्ट, दुख; गर्मी या कष्ट में वृद्धि।
उत्तारण पुं. {सं.} पार उतारना; कोई चीज एक जगह से दूसरी जगह ले जाकर पहुँचाना (ट्रांसपोर्टेशन); विपत्ति या संकट में पड़े हुए का उद्धार करना (रेसक्यूइंग); पार उतारनेवाला।
उत्तीर्ण *वि.* {सं.} पार गया हुआ, पारंगत; मुक्त; परीक्षा में कृतकार्य, जो पारित या पास हो चुका हो; जो नदी या खाई पार की हो।
उत्तुंग *वि.* {सं.} बहुत ऊँचा।
उत्तू पुं. {फा.} वह औजार जिससे बेल-बूटे या चुनट के निशान डालते हैं; बेल-बूटे का वह काम जो इस औजार से बनता है।
मुहा. ऊतू करना = बहुत मारना।
वि. बदहवास; नशे में चूर।
उत्तेजक *वि.* {सं.} उभाड़ने, बढ़ाने या उकसाने वाला, प्रेरक; मनोवेगों को तीव्र करनेवाला; भड़काने वाला।
उत्तेजना *स्त्री.* {सं.} {*वि.* उत्तेजित, उत्तेजक} प्रेरणा, बढ़ावा, प्रोत्साहन; ऐसी बात या कार्य जिससे कोई वृत्ति या भाव जाग्रत या प्रबल होकर किसी को कोई काम करने के लिए प्रवृत्त करे; आवेगों को तीव्र करने की क्रिया।
उत्तोलन पुं. {सं.} {*वि.* उत्तोलक} ऊँचा करना, तानना; तौलना; ऊपर उठाकर रखना।
उत्थ {सं.} निकला हुआ, यह समस्त पद के अंत में जुड़ता है; जैसे मधूत्थ–शहद से निकला, मोम; सिंधूत्थ–समुद्र से निकला चंद्र, विष आदि।
उत्थनि *स्त्री.* उत्थान।
उत्थान पुं. {सं.} उठने का कार्य का भाव; उठान, आरंभ; उन्नति।
उत्थानक *वि.* उत्थान करने, ऊपर उठाने या ऊँचा चढ़ानेवाला; पुं. बिजली के द्वारा चढ़ने-उतरनेवाला वह चौकोर संदूक जिसकी सहायता से लोग बहुत ऊँचे मकानों या गहरी खानों में चढ़ते-उतरते हैं (लिफ्ट)।
उत्थापन पुं. {सं.} ऊपर उठाना; जगाना।
उत्थापक *वि.* {सं.} ऊपर उठानेवाला।
उत्थित *वि.* {सं.} उटा हुआ, उन्नत; जो उठकर खड़ा हुआ हो; जागा हुआ।
उत्पत्ति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* उत्पन्न} पहले-पहल अस्तित्व में आना, उद्‌भव; जन्म पैदाइश; उपज, पैदावार; किसी वस्तु में उपयोगिता या उसके स्वरूप में कोई नवीनता आने की क्रिया या भाव (प्रोडक्शन)।
उत्पथ पुं. {सं.} गलत रास्ता, अन्याय, अनुचित आचरण।
उत्पन्न *वि.* {सं.} {*स्त्री.* उत्पन्ना} जिसकी उत्पत्ति हुई हो, पैदा; जो किसी प्रकार अस्तित्व में आया हो, उद्‌भूत, जैसे संदेह उत्पन्न होना।
उत्पल पुं. {सं.} कमल; दुबला-पतला।
उत्पाटन पुं. {सं.} {*वि.* उत्पाटित, कर्ता उत्पाटक} उखाड़ना; फाड़ना।
उत्पात पुं. {सं.} कष्ट पहुँचानेवाली; आकस्मिक घटना, उपद्रव, आफत; अशांति, हलचल; ऊधम, दंगा; शरारत।
उत्पाती पुं. {सं. उत्पातिन्} {*स्त्री.* उत्पातिनी} उत्पात या उपद्रव मचाने वाला, उपद्रवी; नटखट, शरारती।
उत्पाद पुं. {सं.} ऐसी चीज जिसे प्रकृति ने उत्पन्न किया हो या व्यक्ति ने बनाया हो (प्राडक्ट); उत्पन्न होना; उत्पन्न करना; निर्माण करना; उत्पन्न किया पदार्थ।
उत्पादक *वि., पुं.* {सं.} {*स्त्री.* उत्पादिका} उत्पन्न करनेवाला; (वस्तु या कार्य) जिससे कुछ उत्पादन हो (प्रोडक्टिव); लोगों के व्यवहार के लिए सामान या माल तैयार करनेवाला (प्रोड्यूसर)।
उत्पाद-कर पुं. {सं.} कुछ चीजों के उत्पादन पर लगनेवाला कर, उत्पाद-शुल्क।
उत्पादन पुं. {सं.} {*वि.* उत्पादित} उत्पन्न करना, पैदा करना; बनाना; लोगों के व्यवहार के लिए सामान या माल तैयार करना (प्रोडक्शन)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पाद-शुल्क पुं. {सं.} वह शुल्क जो राज्य में बननेवाले कुछ विशिष्ट पदार्थों (जैसे कपड़े, दियासलाई, नमक आदि) के बनते ही और बाजार में बिकने के लिए आने से पहले ही राज्य की ओर से ले लिया जाता है (एक्साइज़ ड्यूटी)।

उत्पादिता *स्त्री.* {सं.} उत्पादन-संबंधी कार्यक्षमता; उत्पन्न की गई।

उत्पादी *वि.* {सं.} उत्पन्न होनेवाला; उत्पन्न किया जानेवाला; उत्पादक।

उत्पीड़न पुं. {सं.} {*कर्ता* उत्पीड़क, *वि.* उत्पीड़ित} किसी को पीड़ा या कष्ट पहुँचाना, बहुत दुख देना, सताना।

उत्पीड़ित *वि.* {सं.} जिसे पीड़ा या कष्ट पहुँचाया गया हो, सताया हुआ।

उत्प्रवास पुं. {सं.} मूल स्थान छोड़कर विदेश में रहने के लिए जाना।

उत्प्रवासी (सिन्) *वि.* {सं.} उत्प्रवास-संबंधी।

उत्प्रेक्षा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* उत्प्रेक्ष्य, उत्प्रेक्षणीय, *कर्ता* उत्प्रेक्षक} उद्भावना; उपेक्षा; एक अर्थालंकार जिसमें भेदज्ञान होने पर भी उपमेय में उपमान की प्रतीति कल्पित होती हो, जैसे पुस्तक मानो रत्न है।

उत्फुल्ल *वि.* {सं.} {*भाव.* उत्फुल्लता} विकसित, खिला हुआ; प्रसन्न।

उत्स पुं. {सं.} स्रोत, उत्पत्ति स्थान, सोर्स।

उत्संग पुं. {सं.} गोद, क्रोड, अंक; मध्य भाग, बीच; ऊपर का भाग; *वि.* निर्लिप्त, विरक्त।

उत्सन्न *वि.* नष्ट, बरबाद।

उत्सर्ग पुं. {सं.} किसी के नाम पर या किसी के उद्देश्य से छोड़ना, जैसे वृषोत्सर्ग; छोड़ना, त्यागना; दान; निछावर; समाप्ति, अंत; कोई साधारण या व्यापक नियम।

उत्सर्जन पुं. {सं.} {*वि.* उत्सर्जित, उत्सृष्ट} त्याग, छोड़ना; दान; किसी कर्मचारी को बिना किसी दोष या लांछन के, यों ही अथवा काम न होने के कारण, उसके पद से हटाया या अलग करना (डिस्चार्ज)।

उत्सव पुं. {सं.} धूमधाम से होनेवाला कोई सार्वजनिक, बड़ा शुभ या मंगल कार्य, समारोह; आनंदमंगल का समय; त्योहार, पर्व (फंक्शन)।

उत्सादन पुं. {सं.} {*वि.* उत्सादित} कोई पद, स्थान आदि न रहने देना। (एबॉलिशन); किसी की आज्ञा रद्द करना। (सेट एसाइड); किसी को मिटाना।

उत्सादित *वि.* {सं.} (पद आदि) जो न रहने दिया गया हो। (एबॉलिश्ड); (आज्ञा या निश्चय) जो रद्द कर दिया गया हो (सेट-एसाइड); नष्ट किया गया।

उत्साह पुं. {सं.} {*वि.* उत्साहित, उत्साही} उमंग, उछाह, जोश, हौसला; हिम्मत, साहस।

उत्साहित *वि.* उत्साही।

उत्साही *वि.* {सं. उत्साहिन्} उत्साहयुक्त, हौसलेवाला।

उत्सिक्त *वि.* {सं.} अभिमानी, घमंडी।

उत्सुक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* उत्सुका} उत्कंठित, अत्यंत इच्छुक; चाही हुई बात में देर न सहकर उसकी प्राप्ति में तत्पर होनेवाला।

उत्सुकता *स्त्री.* {सं.} प्रबल इच्छा; किसी कार्य में विलम्ब न सहकर उसमें तत्पर होना (एक संचारी भाव)।

उत्सृष्ट *वि.* {सं.} छोड़ा हुआ, त्यक्त; किसी विशेष प्रयोजन से छोड़ा गया।

उत्सेक पुं. {सं.} गर्व, अभिमान।

उत्सेध पुं. {सं.} ऊँचाई, उत्कृष्टता।

उथराई *स्त्री.* {दे.} उठना, बढ़ना, उठान।

उथलना *अ.* {सं. उत् + स्थल} डगमगाना, डाँवाडोल होना; उलट-पुलट होना; पानी का उथला होना; *स.* नीचे-ऊपर या इधर-उधर करना।

उथल-पुथल *स्त्री.* {हिं. उथलना + अनु.} उलट-पुलट, विपर्यय, क्रमभंग; उलटना-पलटना; वस्तुओं या व्यवस्था में हेरफेर; *वि.* उलट-पुलट।

उथला *वि.* {हिं. उथलना} {*स्त्री.* उथली} (जल या पात्र) जो अधिक गहरा न हो, छिछला; जिसकी ऊँचाई अधिक न हो, कम ऊँचा।

उथापना *स.* {सं. उत्थापन} ऊपर उठाना; खड़ा करना; उखाड़ना; थापना।

उद् *उप.* {सं.} एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उनमें ये विशेष अर्थ उत्पन्न करता है—ऊपर; जैसे उद्गमन; पार जाना; जैसे उत्तीर्ण; प्रबलता; जैसे उद्वेग; प्रकाश; जैसे उच्चारण।

उदंचन पुं. {सं.} कुएँ आदि से पानी निकालने का साधन, डोल आदि-आदि, पानी उलीचना।

उदंत पुं. {सं.} वृत्तांत हाल।

उदक पुं. {सं.} जल, पानी।

उदकक्रिया *स्त्री.* {सं.} तिलांजलि; मृतक को पानी देना, तर्पण।

उदकना *अ.* {देश.} कूदना।

उदगारना *स.* {सं. उद्गार} बाहर निकालना, बाहर फेंकना; उभाड़ना, भड़काना, उत्तेजित करना।

उदगारी *वि.* {सं. उद्गार} उगलनेवाला; बाहर निकलनेवाला; डकार लेने वाला; प्रकाशित करनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Che d eGangotri

उदग्ग *वि.* उदग्र।

उदग्र *वि.* {सं.} उच्च, ऊँचा; विशाल, बड़ा; उद्दंड; विकट; तीव्र, तेज; बहुत प्रबल, प्रचंड।

उद्घाटना *स.* {सं. उद्घाटन} प्रकट करना, प्रकाशित करना, खोलना; किसी नई पुस्तक या भवन को सार्वजनिक प्रयोग के लिए प्रस्तुत करना।

उद्घाटन *पुं.* {सं.} जनता के समक्ष प्रकाशित करना।

उद्घाटक *वि.* {सं.} उद्घाटन करनेवाला; इसको आक्सीजन से मिलाने से पानी बनता है।

उदथ *पुं.* {सं. उद्गीथ} सूर्य।

उद्गीथ *पुं.* {सं.} सामवेद, एक सामगान, ओंकार।

उदधि *पुं.* {सं.} समुद्र, मेघ।

उदपान *पुं.* {सं. उदक + पान = पीना} कमंडल, जिसमें साधु लोग पीने का जल रखते हैं; जलाशय, प्याऊ।

उदबस *वि.* {हिं. उद्वासन} उजाड़, सूना; एक स्थान पर न रहनेवाला, खानाबदोश।

उदबासना *स.* {सं. उद्वासन} तंग करके स्थान से हटाना, रहने में विघ्न डालना।

उदमद *वि.* उन्मत।

उदमदना *अ.* {सं. उन्मत्त} उन्मत्त होना।

उदमादना *स.* {सं. उन्मत्त} उन्मत्त करना; *अ.* उदमदना।

उदय *पुं.* {सं.} {*वि.* उदित, उदीयमान} (विशेषत: ग्रहों के लिए) ऊपर आना, निकलना, प्रकट होना; किसी नई चीज, बात, शक्ति, आदि का उत्पन्न होकर सामने आना जैसे किसी नए राष्ट्र या देश का उदय (राइज); वृद्धि, उन्नति, बढ़ती; निकलने का स्थान, उद्गम; उदयाचल।

उदयाचल *पुं.* {सं.} पुराणानुसार पूर्व दिशा का एक पर्वत जहाँ से सूर्य का निकलना माना जाता है; उदयगिरि।

उदर *पुं.* {सं.} पेट, जठर; अंदर या बीच का भाग, मध्य, पेटा।

उदरना *अ.* ओदरना।

उदरामय *पुं.* {सं.} पेट का रोग, बदहज़मी, अतिसार आदि।

उदरीय *वि.* {सं.} उदर-संबंधी।

उद्वर्तन *पुं.* {सं.} उबटना, शरीर पर लगाने के लिए सुगंधित लेप; चरित्रवान।

उदात्त *वि.* {सं.} ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ; दयावान, कृपालु; दाता, उदार; श्रेष्ठ, बड़ा; स्पष्ट, विशद; समर्थ; *पुं.* {सं.} वेद के स्वर के उच्चारण का एक भेद; साहित्य में एक अलंकार जिसमें संभाव्य विभूति का वर्णन बहुत बढ़ा- चढ़ाकर किया जाता है।

उदात्तीकरण *पुं.* {सं.} उदात्त स्वरूप प्रदान करने की क्रिया या भाव; संस्कार सुधार का चरित्र को ऊँचा बनाना।

उदान *पुं.* {सं.} वह प्राणवायु जिससे छींकें और डकार आते हैं।

उदाम *वि.* उद्दाम।

उदायन *पुं.* {सं. उद्यान} बाग।

उदार *वि.* {सं.} {*भाव.* उदारता} रूढ़ियों में सुधार चाहनेवाला तथा प्रगतिशील विचारों का समर्थक; दाता, दानशील; सहिष्णु; ऊँचे विचारों वाला।

उदारचरित *वि.* {सं.} जिसका चरित्र उदार हो, ऊँचे दिल का; महानुभाव।

उदारचेता *वि.* उदारचरित।

उदारता *स्त्री.* {सं.} उदार होने की अवस्था या भाव; दानशीलता; सहिष्णुता; बड़े मन का होना।

उदारदर्शन *वि.* {सं.} देखने में सुंदर; उच्च विचारों वाला।

उदारधी *वि.* {सं.} अतिबुद्धिमान; ऊँचे सोच-विचार वाला।

उदाराशय *वि.* {सं.} उदारचेता।

उदावर्त *पुं.* {सं.} एक उदर रोग।

उदास *वि.* {सं. उदास्} जिसका चित्त किसी पदार्थ से दुखी होकर हट गया हो, विरक्त; झगड़े से अलग, निरपेक्ष, तटस्थ; दुखी, रंजीदा।

उदासना *स.* {सं. उदसन} उजाड़ना; तितर-बितर करना।

उदासी *पुं.* {सं. उदास् + हिं, ई (प्रत्य.)} विरक्त या त्यागी पुरुष; सनातनधर्मी साधुओं का एक समुदाय जो गुरु नानक के पुत्र महात्मा श्रीचन्द्र का अनुयायी है; उदासीन; *स्त्री.* उदास होने की क्रिया या भाव, खिन्नता; दुख।

उदासीन *वि.* {*भाव.* उदासीनता} जिसका चित्त दुखी होकर किसी बात से हट गया हो, विरक्त; झगड़े-बखेड़े से अलग; जो परस्पर विरोधी पक्षों में से किसी की ओर न हो, निष्पक्ष, तटस्थ; श्रीचन्द्र के संप्रदाय का अनुयायी।

उदासीनता *स्त्री.* {सं.} विरक्ति, त्याग; निरपेक्षता, तटस्थता; उदासी; खिन्नता।

उदाहरण *पुं.* {सं.} बहुत-सी घटनाओं या बातों में से ली हुई कोई ऐसी घटना या बात, जिससे उन सब घटनाओं या बातों का ठीक-ठाक और स्पष्ट स्वरूप मालूम हो जाए (इलेस्ट्रेशन); ऐसा कार्य जो आदर्श रूप हो और जिसे देखकर लोग वैसा ही कार्य करने के लिए उत्साहित हों (एग्जाम्पुल); कही या बतलाई हुई ऐसी घटना या तथ्य जिससे किसी विषय या परिस्थिति का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठीक स्वरूप समझ में आ जाए, दृष्टांत, मिसाल (इंस्टेंस); एक काव्यालंकार जिसमें दूसरा वाक्यांश उदाहरण के रूप में लिया जाता है।

उदाहृत *वि.* {सं.} जो उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया हो।

उदिक *वि.* {सं.} जल-संबंधी; उस जल से संबंध रखनेवाला जो नल आदि के द्वारा कहीं पहुँचता हो।

उदित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* उदिता} जो उदय हुआ हो, निकला हुआ; प्रकट, जाहिर; उज्ज्वल; स्वच्छ; प्रचलित।

उदियाना *अ.* {सं. उद्विग्न} होना, घबराना; *स.* उद्विग्न करना।

उदीची *स्त्री.* {सं.} उत्तर दिशा।

उदीच्य *वि.* {सं.} उत्तर का रहनेवाला; उत्तर दिशा का।

उदीयमान *वि.* {सं. उदयमान} जिसका उदय हो रहा हो; उठता या उभड़ता हुआ; जिसमें आरंभ से ही बड़े और अच्छे होने के लक्षण दिखाई दें, होनहार (प्रॉमिसिंग)।

उदीरण *पुं.* {सं.} कहना, कथन; प्रेरित करना; फेंकना; अस्त्र चलाना।

उदीरित *वि.* {सं.} कहा हुआ।

उदीर्ण *वि.* {सं.} कहा हुआ; ऊपर फेंका गया; प्रेरित।

उदुंबर *पुं.* {सं.} {*वि.* औदुंबर} गूलर; देहली, ड्योढ़ी; नपुंसक; एक प्रकार का कोढ़।

उदूढ़ *वि.* {सं.} जिसने भार उठाया हो; विवाहित, यह समस्त पद के आदि में आता है।

उदेग *पुं.* उद्वेग।

उदोत *पुं.* {सं. उद्योत} प्रकाश; *वि.* प्रकाशित दीप्त; उत्पन्न।

उद्‌गत *वि.* {सं.} फूट कर ऊपर निकला हुआ, उत्पन्न।

उद्‌गम *पुं.* {सं.} उदय, आविर्भाव; उत्पत्ति का स्थान, उद्‌भवस्थान, निकास; वह स्थान जहाँ से कोई नदी निकलती हो; निकलना, फूटना, ऊपर आना।

उद्‌गार *पुं.* {सं.} {*वि.* उद्‌गारी, उद्‌गीर्ण} उबाल, उफान; वमन, कै; थूक, कफ; घोर शब्द; एकाएक मुँह से निकली हुई वह बात जो बहुत दिनों से मन में रखी रही हो; मन का विचार या भाव।

उद्‌घाटक *वि., पुं.* {सं.} उद्‌घाटन करनेवाला; प्रकाश में लानेवाला, खिलाने या खोलनेवाला।

उद्‌घाटन *पुं.* {सं.} आगे पड़ा हुआ परदा उठाना, खोलना या उभारना; छिपी हुई बात प्रकट या प्रकाशित करना, रहस्य खोलना; किसी बड़े समारंभ, सार्वजनिक उत्सव, सम्मेलन आदि का महत्व और गौरव बढ़ाने के लिए किसी बड़े आदमी के द्वारा उसके कार्य का आरंभ किया जाना (इनॉगुरेशन)।

उद्‌घाटित *वि.* {सं.} जिसका उद्‌घाटन हुआ हो।

उद्‌घोषणा *स्त्री.* {सं.} सार्वजनिक रूप से दी जानेवाली सूचना (प्रोक्लेमेशन)।

उद्‌घोषित *वि.* {सं.} जिसकी घोषणा की गई है।

उद्‌घोषक, उद्‌घोषिका *वि.* {सं.} दूरदर्शन या आकाशवाणी पर घोषित करनेवाला/वाली; अनाउंसर।

उद्दंड *वि.* {सं.} {*भाव.* उद्दंडता} जिसे दंड का भय न हो, अक्खड़, उद्धत।

उद्दाम *वि.* {सं.} जो रस्सी तुड़ाकर भाग जाय; बंधनरहित; निरंकुश, उद्दंड, बेकहा; स्वतंत्र; महान; गंभीर; प्रबल।

उद्दिष्ट *वि.* {सं.} दिखाया हुआ, इंगित किया हुआ; जो उद्देश्य रूप में सामने हो, लक्षित, अभिप्रेत; *पुं.* वह क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कोई छंद मात्रा-प्रस्तर का कौन सा भेद है।

उद्दीपक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* उद्दीपिका} उत्तेजित या उद्दीप्त करनेवाला; भड़कानेवाला।

उद्दीपन *पुं.* {सं.} {*वि.* उद्दीप्त, उद्दीप्य} उत्तेजित करने की क्रिया या भाव, उभाड़ना, बढ़ाना, जगाना; उद्दीप्त या उत्तेजित करनेवाला पदार्थ; काव्य में वे पदार्थ जो भाव को उत्तेजित करते हैं जैसे ऋतु, पवन आदि।

उद्दीप्त *वि.* {सं.} उमड़ा, बढ़ा या जागा हुआ; उत्तेजित; तीव्र भड़का हुआ।

उद्देश *पुं.* {सं.} {*वि.* उद्दिष्ट, उद्देशित} अभिलाषा, चाह; कुछ करने की कामना, इच्छा या विचार, मंशा; मतलब, अभिप्राय।

उद्देश्य *पुं.* {सं.} वह वस्तु या बात जिसे ध्यान में रखकर कुछ कहा या कोई काम किया जाए, ध्येय। (ऑबजेक्ट); व्याकरण में वह पद जिसके संबंध में कुछ कहा या विधान किया जाए, जैसे वह बैठा है में 'वह' उद्देश्य है।

उद्ध *क्रि. वि.* ऊर्ध्व।

उद्धत *वि.* {सं.} उग्र, प्रचंड; अक्खड़; प्रगल्भ; विषम, ऊपर को उछाला गया।

उद्धरण *पुं.* {सं.} {*वि.* उद्धरणीय, उद्‌धृत} ऊपर उठना; मुक्त होना; बुरी अवस्था से अच्छी अवस्था में आना; पढ़ा हुआ पिछला पाठ अभ्यास के लिए फिर-फिर पढ़ना; किसी लेख का कोई अंश दूसरे लेख में ज्यों-का-त्यों रखना, उपनय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(कोटेशन, साइटेशन); प्रमाण, साक्षी के रूप में लिया हुआ किसी लेख आदिं का कोई अंश (एक्सट्रैक्ट); गड़ी हुई वस्तु को निकालना; किसी को ऊँचा उठाना।

उद्धरणी *स्त्री.* {सं. उद्धरण + हिं. ई (प्रत्य.)} पढ़ा हुआ पिछला पाठ अभ्यास के लिए बार-बार पढ़ना; उद्धरण।

उद्धव *पुं.* {सं.} उत्सव; कृष्ण के एक प्रसिद्ध सखा जिन्हें उन्होंने द्वारका से गोपियों को सांत्वना देने के लिए ब्रज में भेजा था।

उद्धवदूत *पुं.* {सं.} जगन्नाथदास 'रत्नाकर' कृत हिन्दी काव्य।

उद्धार *पुं.* {सं.} {*वि.* उद्धार्य} नीचे से निकाल या उठाकर ऊपर से जाना; विपत्ति, संकट आदि से किसी को मुक्त करना, मुक्ति; संकट या विपत्ति में पड़े हुए को बचाने के उद्देश्य से उसके पास पहुँचकर उसकी रक्षा करना; दुरवस्था में या व्यर्थ पड़ी हुई चीज को सुधार या ठीक करके काम में आने योग्य बनाना; ऋण, देन आदि से होनेवाला छुटकारा; प्राचीन व्यवहार या लेन-देन में वह ऋण जिस पर ब्याज न लगे, बिना सूद का कर्ज; उधार।

उद्धारक *वि.* {सं.} उद्धार करनेवाला।

उद्धारण *पुं.* {सं.} उद्धार करने की क्रिया या भाव; वाक्य, पद, शब्द आदि कहीं से जान-बूझकर निकाल या अलग कर देना।

उद्धारणिक *पुं.* {सं.} वह जिसने किसी से ऋण या उधार लिया हो, कर्ज लेनेवाला (बॉरोअर)।

उद्धुर *वि.* {सं.} जो जूआ तुड़ा कर चला जाय; भारमुक्त, प्रबल।

उद्धूत *वि.* {सं.} ऊपर उठाया गया; उड़ाया गया; फहराया गया।

उद्धृत *वि.* **{सं.} उगला हुआ; ऊपर उठाया हुआ; अपने कथन के समर्थन, प्रमाण आदि के लिए अन्य स्थान से उद्धरण के रूप में ज्यों-का-त्यों लिया हुआ (कोटेड)।**

उद्बंध *पुं.* {सं.} बंधनयुक्त; बंधन, बाँधकर लटकाना।

उद्बुद्ध *वि.* {सं.} विकसित, खिला हुआ; प्रबुद्ध; जिसे ज्ञान हो गया हो, सचेत; जागा हुआ।

उद्बोधन *पुं.* {सं.} {*वि.* उद्बोधक, उद्बोधनीय, उद्बोधित} बोध या ज्ञान कराना, जताना; प्रकाशित, प्रकट या सूचित करना; उत्तेजित करना; समझाना, सचेत करना।

उद्भट *वि.* {सं.} {*भाव.* उद्भटता} प्रबल, प्रचंड; श्रेष्ठ; बहुत बड़ा; एक प्राचीन काश्मीरी काव्यशास्त्री।

उद्भव *पुं.* {सं.} {*वि.* उद्भूत} उत्पत्ति, जन्म; किसी पूर्वज के वंश में उत्पन्न होने अथवा किसी मूल के निकलने का तथ्य या भाव (डिसेंट); वृद्धि, बढ़ती।

उद्भावना *स्त्री.* {सं.} मन की उपज, कल्पना: उत्पत्ति; नई संभावना, नई योजना।

उद्भावक *वि.* {सं.} उद्भावना करनेवाला।

उद्भासन *पुं.* {सं.} प्रकाशित करना चमकाना।

उद्भासक *वि.* (सं.) चमकानेवाला।

उद्भासित *वि.* {सं.} प्रकाशित, उद्दीपित, चमकाया गया।

उद्भिद *पुं.* उदभिज्ज; जिसका उद्भव हुआ हो।

उद्भूत *वि.* {सं.} उत्पन्न।

उद्भेदन *पुं.* {सं.} तोड़ना-फोड़ना; फोड़कर निकालना।

उद्भ्रम *पुं.* {सं.} ऊपर की ओर उठना या भ्रमण करना; बुद्धि का विनाश, विभ्रम; मन का उद्वेग।

उद्भ्रांत *वि.* {सं.} घूमता या चक्कर खाता हुआ; भूला-भटका; चकित, भौचक्का; उन्मत्त, पागल; विकल, विह्वल।

उद्भ्रांति *स्त्री.* {सं.} उद्भ्रांत होने की दशा।

उद्यत *पुं.* {सं.} तैयार, तत्पर, प्रस्तुत, मुस्तैद; उठाया हुआ।

उद्यम *पुं.* {सं.} {*वि.* उद्यमी, उद्यत} प्रयास, प्रयत्न, उद्योग; मेहनत; वह काम जिसके द्वारा कोई अपनी जीविका चलाता हो, पेशा (अकुपेशन)।

उद्यमी *वि., पुं.* {सं. उद्यमिन्} उद्यम करनेवाला, उद्योगी, प्रयत्नशील।

उद्यान *पुं.* {सं.} ऊपर जाना; बाग।

उद्यानीकरण (उद्यानकर्म) *पुं.* {सं.} बाग-बगीचों में पौधे आदि लगाने, उनकी देखरेख करने और ऐसे ही दूसरे कामों की विद्या या कला (हॉर्टिकल्चर)।

उद्यानपाल *पुं.* {सं.} बगीचे का रक्षक, माली; *स्त्री.* उद्यानपाली।

उद्यापन *पुं.* {सं.} किसी व्रत की समाप्ति पर किया जानेवाला कृत्य, हवन, ब्राह्मण-भोजन आदि।

उद्योग *पुं.* {सं.} {*वि.* उद्योगी, उद्युक्त} प्रयत्न, प्रयास, कोशिश; उत्पादन में रत कारखाना या संस्थान (इंडस्ट्री)।

उद्योग-धंधे *पुं. बहु* {सं. उद्योग + हिं. धंधा} (किसी क्षेत्र के) उद्योग तथा व्यापारिक संस्थान।

उद्योगपति *पुं.* {सं.} वह जो कच्चे माल से पक्का माल तैयार करनेवाले किसी कारखाने का मालिक हो (इंडस्ट्रिअलिस्ट)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उद्योगीकरण *पुं.* {सं.} देश में बड़े-बड़े उद्योगों को स्थापित करने की क्रिया या भाव।

उद्योत *पुं.* {सं.} प्रकाश, उजाला; चमक, आभा।

उद्योतक *वि.* {सं.} प्रकाशक चमकानेवाला।

उद्योतित *वि.* {सं.} प्रकाशित किया गया, चमकाया गया।

उद्रिक्त *वि.* {सं.} भड़का या भड़की हुई, तीक्ष्ण, बढ़ा हुआ; भड़काव; तीक्ष्णता।

उद्रेक *पुं.* {सं.} {*वि.* उद्रिक्त} वृद्धि, बढ़ती, अधिकता; साहित्य में एक अलंकार जिसमें वस्तु के कई गुणों या दोषों का किसी एक गुण या दोष के आगे मंद पड़ने का वर्णन होता है।

उद्वासन *पुं.* {सं.} {*वि.* उद्वासनीय, उद्वासित, उद्वास्य, कर्ता उद्वासक} कहीं बसे हुए व्यक्ति को कष्ट पहुँचाकर उससे उसका निवासस्थान छुड़ाना, भगाना, खदेड़ना; उजाड़ना, वासस्थान नष्ट करना; मारना।

उद्वासित *वि.* {सं.} (व्यक्ति) जिसे अपने निवास स्थान से मार या उजाड़कर भगा दिया गया हो।

उद्वाह *पुं.* {सं.} विवाह; उठाकर ले जाना।

उद्वाही *वि.* {सं.} ब्याहनेवाला; उठाकर ले जानेवाला।

उद्विग्न *वि.* {सं.} {*भाव.* उद्विग्नता} उद्वेगयुक्त, आकुल, घबराया हुआ।

उद्वृत्त *वि.* {सं.} चरित्रहीन।

उद्वेग *पुं.* {सं.} {*वि.* उद्विग्न} चित्त की व्याकुलता, घबराहट। (संचारी भावों में से एक); मनोवेग, चित्त की तीव्र वृत्ति, आवेश जोश; झोंक; किसी विकट या चिंताजनक घटना के कारण लोगों को होनेवाला भय जिसके फलस्वरूप लोग अपनी रक्षा के उपाय सोचने लगते हैं (पैनिक); त्रास।

उद्वेगशील *वि.* {सं.} जो बहुत जल्दी उद्विग्न या उत्तेजित हो जाता हो (नर्वस); खिन्न, घबराया हुआ।

उद्वेजक *पुं.* {सं.} उद्विग्न करनेवाला।

उद्वेजन *पुं.* {सं.} उद्विग्न करना।

उद्वेलन *पुं.* {सं.} {*वि.* उद्वेलित} किसी चीज में भर जाने के कारण इधर-उधर बिखरना; छलकना, छलछलाना।

उधड़ना *अ.* {सं. उद्धरण} खुलना, उधड़ना; सिला, जमा या लगा न रहना; उजड़ना; भेद प्रकाश में आना।

उधर *क्रि. वि.* {सं. उत्तर} उस ओर, उस तरफ, दूसरी तरफ।

उधरना *स.* {सं. उद्धार} उद्धार करना; *अ.* मुक्त होना; उधड़ना।

उधार *पुं.* {सं. उद्धार} वह धन जो चुका देने के वादे पर माँगकर लिया गया हो, कर्ज, ऋण। *मुहा. उधार खाए बैठना* = किसी भारी आसरे पर दिन काटते रहना। हर समय तैयार रहना। इस प्रकार किसी से धन लेने की क्रिया या भाव; किसी एक वस्तु का दूसरे के पास केवल कुछ दिनों के व्यवहार के लिए जाना, मँगनी; *पुं.* उद्धार।

उधारक *वि.* उद्धारक।

उधारना *स.* {सं. उद्धरण} उद्धार करना।

उधारी *वि.* उद्धारक।

उधेड़ना *स.* {सं. उद्धरण} मिली हुई परतों को अलग-अलग करना; सिलाई के टाँके खोलना; छितराना, बिखराना; *पुं.* बखिया उधेड़ना-किये भेद खोलना।

उधेड़बुन *स्त्री.* {हिं. उधेड़ना + बुनना} सोच-विचार, ऊहापोह; युक्ति बाँधना; तरह-तरह की चिंता।

उध्वंस *पुं.* = विध्वंस।

उध्वस्त *वि.* = विध्वस्त।

उन *सर्व.* हिं. 'उस' का बहुवचन।

उनचन *स्त्री.* {हिं. उनचना} वह रस्सी जो चारपाई में पैताने की ओर उसकी बुनावट कसने के लिए लगाई जाती है।

उनचना *स.* {हिं. ऐंचना} चारपाई को उनचन ढीली हो जाने पर कसना।

उनदौंहाँ *वि.* उनींदा।

उनना *स.* = बुनना।

उनमद *वि.* उन्मत्त; पागल, घमंडी।

उनमान *पुं.* {सं. उद् + मान} परिणाम; नाप-तौल, थाह; शक्ति, सामर्थ्य; *वि.* तुल्य, समान; *पुं.* अनुमान।

उन्मुक्त *वि.* {सं.} खुला हुआ, स्वतंत्र, बंधनमुक्त।

उनमुना *वि.* अनमना; *स्त्री.* उनमुनी; उदास।

उन्मूलन *पुं.* {सं.} जड़ से उखाड़ना, बरबाद करना, खिलना, उदय।

उनमूलना *स.* उखाड़ना।

उनमेख *पुं.* उन्मेष।

उनमेखना *स.* {सं. उन्मेष} (आँखों का) खुलना, उन्नीलित होना; (फूलों आदि का) विकसित होना।

उनमोचन *पुं.* {सं.} मुक्त करना, स्वतंत्र करना, खोलना।

उनमेद *पुं.* {?} बरसात के आरंभ में होनेवाले जल का जहरीला फेन, माँजा।

उनवना *अ.* {सं. उन्नमन} झुकना, लटकना; (मेघ, मनोविकार आदि का) छाना, घिर आना; टूटना, ऊपर पड़ना; उमड़ना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनवर *वि.* {सं. ऊन} कम, न्यून।
उनवान *पुं.* अनुमान।
उनहार *वि.* अनुसार।
उनाना *स.* {सं. उन्नमन} झुकाना; लगाना, प्रवृत्त करना।
उनारना *स.* {सं. उन्नयन} उठाना; बढ़ाना; उनाना।
उनि *सर्व.* उन्होंने।
उनींदा *वि.* {सं. उन्निद} {*स्त्री.* उनींदी} बहुत जागने के कारण अलसाया हुआ, नींद से भरा हुआ, ऊँघता हुआ।
उनैना *अ.* उनवना; उमड़ा हुआ।
उन्न *वि.* {सं.} भीगा हुआ, गीला।
उन्नत *वि.* {सं.} ऊँचा, ऊपर उठा हुआ।
उन्नतांश *पुं.* {सं.} किसी आधार, स्तर या रेखा से ऊपर की ओर का विस्तार, ऊँचाई (आल्टिट्यूड); ऊँचा भाग।
उन्नति *स्त्री.* {सं.} ऊँचाई, चढ़ाव; जितना हो, उससे कुछ और अधिक होना, वृद्धि, समृद्धि; पहले की अवस्था से अच्छी या ऊँची अवस्था की ओर बढ़ना; जितना या जहाँ तक हो, उससे अधिक होना या आगे बढ़ना, सुधार।
उन्नतिशील *वि.* {सं.} नित्य प्रगति करनेवाला/वाली।
उन्नतोदर *पुं.* {सं.} चाप या वृत्तखंड का ऊपरी तल; वह वस्तु जिसका वृत्तखंड उठा या उभरा हुआ हो (कांवेक्स); जिसका पेट ऊपर निकला हो।
उन्नयन *पुं.* {सं.} {*वि.* उन्नति} ऊपर की ओर उठाना या ले जाना; ऊँची कक्षा या पद पर भेजा जाना (प्रोमोशन); उन्नति की ओर अग्रसर करना, जिसकी आँखें ऊपर की ओर लगीं हों।
उन्नाब *पुं.* {अ.} एक प्रकार का बेर जो हकीमी दवाओं में पड़ता है।
उन्नाबी *वि.* {अ.} उन्नाब के रंग का, बैंगनीपन लिए लाल।
उन्नायक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* उन्नायिका} ऊँचा करनेवाला, उन्नत करनेवाला; बढ़ानेवाला।
उन्नाव *पुं.* उत्तर भारत का एक नगर।
उन्निद्र *वि.* {सं.} निद्रारहित, जैसे उन्निद्र रोग; जिसे नींद न आई हो; विकसित।
पुं. एक रोग जिसमें मनुष्य को नींद बिल्कुल नहीं आती या कभी-कभी और बहुत कम आती है (इंसोम्निया)।
उन्नीत *वि.* {सं.} ऊपर चढ़ाया या पहुँचाया हुआ; ऊपर की कक्षा में या पद पर पहुँचाया हुआ (प्रोमोटेड); ऊपर ले जाया गया।
उन्नीस *वि.* {सं. एकोनविंशति} एक कम बीस, दस और नौ।
मुहा. उन्नीस बिस्वे = अधिकतर, प्रायः, अधिकांशतः; *उन्नीस होना* = मात्रा में कुछ कम होना, थोड़ा होना; गुण या विशेषता में किसी की अपेक्षा कुछ घटकर होना (दो वस्तुओं का परस्पर); *उन्नीस-बीस होना* = दो वस्तुओं का प्रायः समान होने पर भी उनमें से एक का दूसरी से कुछ अच्छा होना।
उन्मत्त *वि.* {सं.} {*भाव.* उन्मत्तता} मतवाला, मदान्ध; जो आपे में न हो, बेसुध; पागल, बावला; उन्माद रोग से ग्रस्त, अभिमानी।
उन्मद *पुं.* {सं.} उन्मत, प्रमत्त; पागल, बावला; उन्माद, पागलपन।
उन्मन *वि.* अन्यमनस्क।
उन्मनी *स्त्री.* {सं.} हठयोग के अनुसार नाक की नोक पर दृष्टि गड़ाना।
उन्माद *पुं.* {सं.} मस्तिष्क का वह रोग जिसमें मन और बुद्धि का कार्यक्रम बिगड़ जाता है, पागलपन, विक्षिप्तता, चित्तविभ्रम; रस के तैंतीस संचारी भावों में से एक, जिसमें वियोग के कारण चित्त ठिकाने नहीं रहता।
उन्मादक *वि.* {सं.} उन्माद से युक्त करनेवाला।
उन्मादन *पुं.* {सं.} उन्मत्त या मतवाला करना; कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
उन्मादी *वि.* {स्त्री. उन्मादिनी} उन्मत्त।
उन्मान *पुं.* {सं.} किसी वस्तु, व्यक्ति, गुण आदि का मान, मूल्य या महत्व समझना (एप्रिसिएशन)।
उन्मीलन *पुं.* {सं.} {*वि.* उन्मीलनीय, उन्मीलित} खुलना (नेत्र); विकसित होना, खिलना; जागना; आँखें खोलना।
उन्मीलित *वि.* {सं.} खिला हुआ; खुला हुआ; *पुं.* साहित्य में एक अलंकार जिसमें दो वस्तुओं में इतना अधिक सादृश्य दिखाया जाता है कि केवल एक बात के कारण उनमें भेद दिखाई पड़ता है।
उन्मुक्त *वि.* {सं.} जो बँधा न हो, खुला हुआ, जैसे उन्मुक्त केश; जो किसी प्रकार के बंधन से छोड़ दिया गया हो, मुक्त किया हुआ (डिस्चार्ज्ड)।
उन्मुक्ति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* उन्मुक्त} मुक्त होने की क्रिया या भाव, छुटकारा; अभियोग आदि से छुटकारा (एक्विटल); नियम के बंधनों से किसी विशेष कारण से मुक्त होना; (एग्जेम्प्शन); किसी प्रकार के अभियोग, बंधन आदि से छोड़ा (डिस्चार्ज)।
उन्मुख *वि.* {सं.} {*स्त्री.* उन्मुखा, *भाव.* उन्मुखता} जो ऊपर मुँह किए हो; उत्कंठित, उत्सुक; उद्यत; यह भावी क्रिया की सूचना देने को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्त पद के अंत में लगता है जैसे- विकासोन्मुख।

उन्मूलक *वि.* {सं.} समूल नष्ट करनेवाला, बरबाद करनेवाला; उखाड़नेवाला।

उन्मूलन *पुं.* {सं.} {*वि.* उन्मूलनीय, उन्मूलित} जड़ से उखाड़ना, समूल नष्ट करना; पहले की आज्ञा, निश्चय या कार्य न रहने देना; अस्तित्व मिटाना (एबॉलिशन); इस प्रकार नष्ट करना कि फिर उठ या पनप न सके (एक्स्टर्पेशन)।

उन्मेष *पुं.* {सं.} {*वि.* उन्मेषित} खुलना (आँखों का); विकास, खिलना; थोड़ा प्रकाश; उदय।

उन्मोचन *पुं.* {सं.} {कर्ता उन्मोचक} मोचन; किसी विशेष कारण से किसी को किसी नियम के बंधन आदि से मुक्त या अलग रखना (एग्ज़ेम्पशन)।

उन्हारि *स्त्री.* {सं. अनुसार} समानता, एकरूपता; आकृति, शकल, सूरत।

उप *उप.* {सं.} एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उनमें इन अर्थों की विशेषता उत्पन्न करता है–समीपता; जैसे उपकूल, उपनयन; विस्तार या अधिकता; जैसे उपकार; पद, मर्यादा आदि के विचार से होनेवाली कुछ छोटाई या गौणता (वाइस); जैसे उपमंत्री, उपसभापति; व्याप्ति; जैसे उपकीर्ण।

उपकथा *स्त्री.* {सं.} कहानी के बीच आई दूसरी कहानी।

उपकरण *पुं.* {सं.} किसी प्रयोग में आनेवाला औजार या तत्व; सामग्री; साधना; किसी का उपकार करना; किसी का चमचा बनना।

उपकरणिका *स्त्री.* {सं.} ऐसा उपकरण जो सूक्ष्म अर्थात् कलापूर्ण या वैज्ञानिक कार्यों के संपादन में प्रयुक्त हो (इंस्ट्रूमेंट)।

उपकल्पक *वि.* {सं.} आमोजक, तैयारी करनेवाला।

उपकल्पन *पुं.* {सं.} किसी काम की तैयारी, आयोजन (प्रिपरेशन)।

उपकार *पुं.* {सं.} हित-साधन, भलाई, नेकी; लाभ, फायदा।

उपकारक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* उपकारिका} उपकार या भलाई करनेवाला; हित-साधक।

उपकारी *वि.* {सं. उपकारिन्} {*स्त्री.* उपकारिणी} उपकार करनेवाला; लाभ पहुँचानेवाला।

उपकृत *वि.* {सं.} {*स्त्री.* उपकृता} जिसके साथ उपकार किया गया हो; कृतज्ञ।

उपकोशागार *पुं.* किसी कोशागार के अधीन, उसकी शाखा के रूप में अथवा कुछ परिमित क्षेत्र में उसके कार्य करनेवाला कोई छोटा कोशागार (सब-ट्रेज़री); छोटा खजाना।

उपक्रम *पुं.* {सं.} कार्यारंभ की पहली अवस्था, अनुष्ठान, उठान; कोई कार्य आरंभ करने के पहले का आयोजन, तैयारी (प्रिपरेशन); भूमिका।

उपक्रमणिका *स्त्री.* {सं.} किसी पुस्तक के आदि में दी हुई विषयसूची।

उपक्रान्त *वि.* {सं.} आरंभ किया गया, छेड़ा गया।

उपक्षेप *पुं.* {सं.} अभिनय के आरंभ में नाटक के समस्त वृत्तांत का संक्षेप में कथन (साहित्य); आक्षेप; कोई वस्तु किसी के सामने ले जाकर रखना या उसे देना (टेंडर); कोई कार्य या ठेका पाने के लिए उसके व्यय आदि के विवरणों से युक्त पत्र जो वह कार्य या ठेका पाने के लिए (प्रायः प्रतियोगिता के रूप में) देना पड़ता है।

उपखंड *पुं.* {सं.} विधि-विधानों में किसी धारा या उपधारा के अंश या खंड का कोई विभाग (सब-क्लॉज़)।

उपखान *पुं.* उपख्यान।

उपगत *वि.* {सं.} प्राप्त; स्वीकार; ज्ञात।

उपग्रह *पुं.* {सं.} पकड़ा जाना, गिरफ्तारी; कारावास, कैद; बँधुआ, कैदी; वह छोटा ग्रह जो किसी बड़े ग्रह के चारों ओर घूमता हो (सैटेलाइट)।

उपचना *अ.* {सं. उपचय} उन्नत होना, बढ़ती; संचय, जमा करना।

उपचयन *पुं.* {सं.} संग्रह करना, बढ़ाना।

उपचित *वि.* {सं.} बढ़ा हुआ, संचित।

उपचरित *पुं.* {सं.} उपचार; जिसका उपचार किया हो।

उपचर्या *स्त्री.* {सं.} सेवा-सुश्रूषा; चिकित्सा, इलाज।

उपचार *पुं.* {सं.} व्यवहार, प्रयोग संबोधन; रोगी का रोग दूर करने के लिए नियमपूर्वक की जानेवाली प्रक्रिया, चिकित्सा, इलाज (ट्रीटमेंट); रोगी की सेवा-सुश्रूषा; किसी की हानि या अपकार का प्रतिकार; नियम, परिपाटी, व्यवहार आदि का ठीक तरह से और पूरा-पूरा होनेवाला वह पालन जो विहित और आवश्यक हो (फॉरमैलिटी); वह आचरण या व्यवहार जो दिखाने भर को हो और जिसमें केवल बाह्य रूप का पालन या निर्वाह हुआ हो (फॉरमैलिटी); पूजन के अंग या विधान, जैसे षोडशोपचार; खुशामद; घूस, रिश्वत; एक प्रकार की संधि जिसमें विसर्ग के स्थान पर श या स हो जाता है, जैसे निःछल से निश्छल; गौणी लक्षण, गौण व्यवहार (का. शा.)।

उपचारक *पुं.* {सं. उपचारिका} उपचार या सेवा करनेवाला; विधान करनेवाला; चिकित्सा करनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपचारना *स.* {सं. उपचार} व्यवहार में लाना; विधान।

उपचारिका *स्त्री.* {सं.} सेवा करनेवाली (नर्स)।

उपच्छाया *स्त्री.* {सं.} किसी वस्तु की मूल छाया के अतिरिक्त इधर-उधर पड़नेवाली उसकी कुछ आभा या हलकी काली झलक, जैसी ग्रहण के समय चंद्रमा या पृथ्वी की मुख्य छाया के अतिरिक्त दिखाई पड़नेवाली छाया (पेनम्ब्रा)।

उपज *स्त्री.* {हिं. उपजना} उपजने की क्रिया या भाव, उत्पत्ति, उद्‌भव; वह वस्तु जो उपज के रूप में प्राप्त हो, पैदावार, जैसे खेत की उपज; नई सूझ, उद्‌भावना; मनगढ़ंत बात; गाने में राग की सुंदरता के लिए उसमें बँधी हुई तानों के सिवा कुछ तानें अपनी ओर से मिलाना।

उपजना *अ.* {सं. उत्पद्यते} उत्पन्न होना, पैदा होना; उगना; *स.* उपजाना।

उपजन *पुं.* {सं.} बढ़ोतरी, योग, जोड़ना।

उपजाऊ *वि.* {हिं. उपज + आऊ (प्रत्य.)} (भूमि) जिसमें अच्छी उपज हो, उर्वर (फर्टाईल)।

उपजाऊपन *पुं.* {हिं. उपजाऊ + पन (प्रत्य.)} भूमि की वह शक्ति जिससे उसमें फसल आदि उत्पन्न होती है, उर्वरता।

उपजाति *स्त्री.* {सं.} किसी जाति के अंतर्गत उसका कोई छोटा विभाग; जो दो छंदों के मेल से बनते हैं जैसे इंद्रवज्रा व उपेंद्रवज्रा के मेल से।

उपजाना *स.* {हिं. उपजना का स.} उत्पन्न करना, पैदा करना।

उपजाय *पुं.* {सं.} भड़काना, चुगली, कान भरना।

उपजीवक *वि.* {सं.} दूसरे का सहारा लेनेवाला, सेवक।

उपजीविका *स्त्री.* {सं.} प्रधान जीविका के सिवा निवाह या जीवन बिताने का और कोई आर्थिक साधन; जीवन-निर्वाह के लिए कहीं से मिलनेवाली अतिरिक्त सहायता या वृत्ति।

उपजीवी *वि.* {सं. उपजीविन्} {*स्त्री.* उपजीविनी} दूसरे के सहारे जीवन बितानेवाला।

उपज्ञ *वि.* {सं.} मूल रचना, रचित, यह पद रचयिता के नाम के साथ जुड़ता है।

उपज्ञा *स्त्री.* {सं.} कोई नया पदार्थ, यंत्र या प्रक्रिया ढूँढ़ निकालना, ईजाद (इंवेन्शन)।

उपटन *पुं.* {सं. उत्पतन} वह अंक या चिह्न जो आघात, दबाने या लिखने से पड़ जाए, निशान, साँट; *पुं.* उबटन।

उपटना *अ.* {सं. उपट = पट के ऊपर} आघात, दाब या लिखने का चिह्न पड़ना, निशान पड़ना; उखड़ना।

उपटाना[1] *स.* {हिं. 'उपटना' का प्रे.} उबटन लगाना।

उपटाना[2] *स.* {सं. उत्पाटन} उखड़वाना; उखाड़ना।

उपटारना *स.* {सं. उत्पाटन} उच्चाटन करना; उठाना; हटाना।

उपड़ना *क्रि.* उखड़ना।

उपडाकघर *पुं.* डाकखाने की शाखा, सब या ब्रांच पोस्ट ऑफिस।

उपडाकपाल *पुं.* सहायक पोस्ट मास्टर।

उपत्यका *स्त्री.* {सं.} पर्वत के पास की नीची भूमि, तराई।

उपदंश *पुं.* {सं.} गरमी या आतशक नामक रोग, फिरंग रोग; सुजाक।

उपदा *स्त्री.* {सं.} भेंट, उपहार, रिश्वत।

उपदिशा *स्त्री.* {सं.} दो दिशाओं के बीच की दिशा, कोण, विदिशा।

उपदिष्ट *पुं.* {सं.} (व्यक्ति) जिसे उपदेश दिया गया हो; (विषय या बात) जिसका उपदेश दिया गया हो, ज्ञापित।

उपदेश *पुं.* {सं.} {*वि.* उपदिष्ट} हित की बात बतलाना, अच्छी बात या अच्छा काम करने के लिए कहना, निर्देश, सीख, नसीहत (प्रिसेप्ट); दीक्षा, गुरुमंत्र; किसी शब्द का पहला निर्देश (व्या.)।

उपदेशक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* उपदेशिका} उपदेश करनेवाला, अच्छी बातों की शिक्षा देनेवाला; वह जो घूम-घूमकर अच्छी बातों का प्रचार करता हो।

उपदेष्टा *पुं.* {सं.} उपदेशक।

उपद्रव *पुं.* {सं.} {*वि.* उपद्रवी} हलचल, विप्लव; अशांति; उत्पात, ऊधम, दंगा-फसाद; किसी प्रधान रोग के बीच में होनेवाले दूसरे विकार या पीड़ाएँ।

उपद्रवी *वि.* {सं. उपद्रविन्} उपद्रव या ऊधम मचानेवाला; नटखट।

उपद्रुत *वि.* {सं.} वह स्थान या देश जहाँ उपद्रव मचा हो।

उपद्वीप *पुं.* प्रायद्वीप।

उपधातु *स्त्री.* {सं.} अप्रधान धातु, जो या तो लोहे, ताँबे आदि धातुओं के योग से बनती है अथवा खानों से निकलती हो, जैसे काँसा।

उपधारा *स्त्री.* {सं.} किसी विधान या लेख की किसी धारा के अंतर्गत उसका कोई विभाग या अंत (सब-सेक्शन)।

उपधि *स्त्री.* {सं.} छल, षड्‌यंत्र, बहाना, धोखा।

उपनगर *पुं.* {सं.} छोटा नगर; नगर के बाहरी हिस्से का कोई मुहल्ला; नगर का एक भाग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपनदी *स्त्री.* {सं.} किसी बड़ी नदी में मिलनेवाली उसकी सहायक नदी।

उपनय *पुं.* {सं.} किसी के पास या सामने ले जाना; उपनयन संस्कार; कोई उदाहरण देकर उसका धर्म या सिद्धांत और कहीं सिद्ध करना; अपने पक्ष का समर्थन करने या इसी प्रकार के और किसी काम के लिए किसी उक्ति, सिद्धांत, विधि आदि का उल्लेख या कथन करना, उद्धरण (साइटेशन); किसी कानून के अंतर्गत उपकानून।

उपनयन *पुं.* {सं.} {*वि.* उपनीत} यज्ञोपवीत संस्कार।

उपनागरिका *स्त्री.* {सं.} काव्य शास्त्र में वर्ण योजना की एक वृत्ति जो वृत्यनुप्रास का आधार है। इसमें मधुर वर्णों की योजना होती है।

उपनाना *स.* {हिं. उपनना} उत्पन्न या पैदा करना।

उपनाम *पुं.* {सं.} किसी के नाम के साथ जुड़नेवाला दूसरा नाम जो उसकी उपाधि, वंश आदि का सूचक होता है।

उपनायक *पुं.* {सं.} नाटकों में प्रधान नायक का साथी या सहकारी; जिसका चरित्र नायक के समान व्यापक हो।

उपनायिका *स्त्री.* {सं.} नायिका के बाद दूसरा महत्वपूर्ण स्त्री पात्र।

उपनाह *पुं.* {सं.} पुल्टिस, मरहम, लेप।

उपनिबंधक *पुं.* {सं.} वह जो किसी निबंधक के अधीन रहकर या उसका या उसके समान काम करता हो (सब-रजिस्ट्रार)।

उपनियम *पुं.* {सं.} किसी नियम के अंतर्गत बना हुआ कोई और छोटा नियम (सबरूल); किसी कानून के अंतर्गत अन्य धारा।

उपनिर्वाचन *पुं.* {सं.} किसी स्थान, पद, सदस्यता आदि के लिए होनेवाला वह निर्वाचन जो किसी सत्र की अवधि पूरी होने से पहले, किसी विशेष कारण से किसी स्थान के रिक्त हो जाने पर उसकी पूर्ति के लिए होता है (बाइ-इलेक्शन)।

उपनिविष्ट *वि.* {सं.} दूसरे स्थान से आकार बसा हुआ।

उपनिवेश *पुं.* {सं.} एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर बसना; अन्य स्थान से आए हुए लोगों की बस्ती (कॉलोनी); बाहरी तत्वों, कीटाणुओं आदि का किसी स्थान पर होनेवाला जमाव (कॉलोनी); एक राज्य द्वारा अपने अधीन किया गया अन्य देश।

उपनिवेशवाद *पुं.* {सं.} उपनिवेशों का अपने अधीन रखने का सिद्धांत (कॉलोनिअलिज़्म)।

उपनिषद् *उभय.* {सं.} किसी के पास बैठना; ब्रह्मविद्या की प्राप्ति के लिए गुरु के पास बैठना; वेद की शाखाओं के ब्राह्मणों के वे अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा आदि का निरूपण है।

उपनीत *वि.* {सं.} जो किसी के सामने लाया गया हो; जिसका उपनयन संस्कार हो चुका हो; (उल्लेख या चर्चा) जो अपने पक्ष का समर्थन करने अथवा इसी प्रकार के और किसी काम के लिए की गई हो।

उपनृत्य *पुं.* {सं.} सहायक नृत्य; नाचघर, नृत्यशाला।

उपनेता *पुं.* {सं.} उपनयन करानेवाला आचार्य; पास ले जानेवाला।

उपन्यस्त *वि.* {सं.} प्रस्तुत; चर्चित; सामने पेश किया गया; प्रस्ताव रखना, पेश करना, चर्चा चलाना।

उपन्यास *पुं.* {सं.} {*वि.* उपन्यस्त} वाक्य का उपक्रम, बंधान; अध्यायों या प्रकरणों में लिखी हुई वह कल्पित और बड़ी आख्यायिका जिसमें बहुत से पात्र और विस्तृत तथा संबद्ध घटनाएँ हों (नॉवेल)।

उपन्यासकार *पुं.* {सं.} वह जो उपन्यास लिखता हो (नॉवेलिस्ट)।

उपपति *पुं.* {सं.} वह पुरुष जिससे किसी दूसरे की स्त्री प्रेम करे, यार।

उपपत्ति *स्त्री.* {सं.} हेतु द्वारा किसी वस्तु की स्थिति का निश्चय; चरितार्थ होना, मेल मिलना, संगति; युक्ति।

उपपत्नी *स्त्री.* {सं.} रखैल, पत्नी के अतिरिक्त प्रेमिका।

उपपन्न *वि.* {सं.} पास या शरण में आया हुआ; मिला हुआ, प्राप्त; लगा हुआ, युक्त; उपयुक्त; संगत, सिद्ध।

उपपातक *पुं.* {सं.} परस्त्रीगमन आदि 50 गौण पाप।

उपपादक *वि.* {सं.} उपपादन करनेवाला; (डिमांसट्रेटर); संगत करनेवाला हेतु; तर्क।

उपपादन *पुं.* {सं.} {*वि.* उपपादित, उपपन्न, उपपाद्य} तर्क, प्रमाण, प्रयोग आदि की सहायता से कोई बात समझाते हुए ठीक सिद्ध करना (डिमांसट्रेशन); कार्य पूरा करना।

उपपाद्य *वि.* {सं.} (बात, तथ्य या सिद्धांत) जो स्वयंसिद्ध न हो, बल्कि जिसे तर्क या प्रमाण से सिद्ध करना आवश्यक हो (थियोरम)।

उपपुर *पुं.* {सं.} नगर के पास की छोटी बस्ती; उपनगर।

उपपुराण *पुं.* {सं.} अठारह मुख्य पुराणों के अतिरिक्त छोटे पुराण जो अठारह हैं।

उपप्रश्न *पुं.* {सं.} प्रश्न के अंतर्गत अन्य प्रश्न।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपप्लव पुं. {सं.} उपद्रव, क्रांति, विद्रोह से उपबर्हण या उपबर्ह का अपभ्रंश।

उपभुक्त *वि.* {सं.} काम में लाया हुआ; जूठा, उच्छिष्ट।

उपभोक्ता *वि.* {सं. उपभोक्तृ} उपयोग करनेवाला; पुं. वह जो वस्तुएँ खरीदकर उनका उपभोग करता या उन्हें अपने काम में लाता हो (कंज्यूमर)।

उपभोग पुं. {सं.} {उपभोग्य} किसी वस्तु के व्यवहार का सुख या मजा लेना; बरतना; कोई चीज लेकर अपने काम में लाना (कन्जम्पशन)।

उपभोग्य *वि.* {सं.} उपभोग या व्यवहार करने के योग्य।

उपमंत्री पुं. {सं.} वह मंत्री जो किसी मंत्री के नीचे हो।

उपमर्दन पुं. {सं.} {*वि.* उपमर्दित} बुरी तरह से दबाना या रौंदना; उपेक्षा या तिरस्कार करना; कुचलना।

उपमा *स्त्री.* {सं.} किसी वस्तु, कार्य का गुण को दूसरी वस्तु, कार्य या गुण के समान बतलाना, तुलना, मिलान; साहित्य में एक अलंकार जिसमें दो वस्तुओं (उपमेय और उपमान) में भेद रहते हुए भी उन्हें समान बतलाया जाता है (सिमरली)।

उपमाता पुं. {सं. उपमातृ} {*स्त्री.* उपमात्री} उपमा देनेवाला।

उपमान पुं. {सं.} वह वस्तु जिससे उपमा दी जाए, वह जिसके समान कोई दूसरी वस्तु बतलाई जाए; किसी पदार्थ के साधर्म्य से साध्य का साधन जो न्याय में चार प्रकार के प्रमाणों में से एक है।

उपमित *वि.* {सं.} जिसकी उपमा दी गई हो; पुं. वह समास जो दो शब्दों के बीच उपवाचक शब्द का लोप करके बनाया जाता है, जैसे पुरुषसिंह।

उपमिति *स्त्री.* {सं.} उपमा या सादृश्य से होनेवाला ज्ञान; उपमा करना, सादृश्यजनक करना।

उपमेय *वि.* {सं.} जिसकी उपमा दी जाए।

उपमेयोपमा *स्त्री.* {सं.} वह उपमा अलंकार जिसमें उपमेय की उपमा उपमान हो और उपमान की उपमेय हो।

उपयंता पुं. {सं.} विवाह करनेवाला।

उपयम, उपयमन पुं. {सं.} विवाह संस्कार, विवाह करना।

उपयुक्त *वि.* {सं.} {*भाव.* उपयुक्तता} जो किसी के साथ ठीक बैठे, किसी के साथ पूरी तरह से मेल खानेवाला (फिट); जैसा होना या करना ठीक हो, उचित, मुनासिब (प्रॉपर); जो नियम, विधि आदि के अनुसार ठीक अधिकारी हो, जैसे उपयुक्त न्यायालय; उपयोग में लाई गई वस्तु; उपयोगी।

उपयोग पुं. {सं.} {*वि.* उपयोगी, उपयुक्त} किसी वस्तु के काम में आने या लाए जाने का भाव, व्यवहार, इस्तेमाल, प्रयोग; (यूज); योग्यता; फायदा, लाभ; प्रयोजन, आवश्यकता।

उपयोगिता *स्त्री.* {सं.} काम में आने की योग्यता, लाभकारिता; किसी वस्तु में होनेवाला वह गुण या तत्व जिससे उस वस्तु के द्वारा किसी की कोई आवश्यकता पूरी होती है; उपयोग में आने की अवस्था या भाव (यूटिलिटी)।

उपयोगितावाद पुं. {सं.} वह सिद्धांत जिसमें प्रत्येक वस्तु और बात का विचार केवल उसकी उपयोगिता की दृष्टि से किया जाता है। (उसके नैतिक अंगों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता) (यूटिलिटेरियनिज्म)।

उपयोगितावादी पुं. {सं. उपयोगिता + वादिन्} वह जो उपयोगितावाद के सिद्धांतों का अनुयायी हो (यूटिलिटेरिअन); *वि.* उपयोगितावाद-संबंधी; उपयोगिता की दृष्टि से होनेवाला।

उपयोगी *वि.* {सं. उपयोगिन्} {*स्त्री.* उपयोगिनी} काम में आनेवाला, प्रयोजनीय; लाभदायक, फायदेमंद; अनुकूल, मुआफिक; उपयुक्त।

उपयोजन पुं. {सं.} अपने उपयोग या काम में लाना; दूसरे की वस्तु अनुचित रूप से लेकर अपने काम में लाना; गलत ढंग से इस्तेमाल।

उपरंजक *वि.* {सं.} रँगनेवाला; जो दूसरे को अपने रंग में रंग दे।

उपरंजन पुं. {सं.} {*वि.* उपरंजित, उपरक्त} एक वस्तु या बात का दूसरी वस्तु या बात पर पड़नेवाला ऐसा अनिष्ट प्रभाव जिससे प्रभावित होनेवाली वस्तु या बात की उपयोगिता कम होती हो।

उपरक्त *वि.* {सं.} जिस पर किसी का कोई प्रतिकूल या अनिष्ट प्रभाव पड़ा हो (एफेक्टेड); ग्रहण से ग्रस्त सूर्य या चन्द्र।

उपरत *वि.* {सं.} जो रत न हो, विरक्त।

उपरति *स्त्री.* {सं.} विषय-वासना के भोग से विराग, विरति, त्याग (ऐब्स्टिनेंस); उदासीनता; मृत्यु, मौत; मृत, हटना, किसी कार्य से उपराम।

उपरत्न पुं. {सं.} कम दाम के या घटिया रत्न, जैसे सीप, मरकत, मणि आदि।

उपरना पुं. {हिं. ऊपर} दुपट्टा या चादर जो ऊपर ओढ़ते हैं; *अ.* उखड़ना।

उपरम पुं. {सं.} विषयभोगों से मन हटना।

उपरला *वि.* {हिं. ऊपर + ला (प्रत्य.)} जो ऊपर की ओर हो, ऊपरवाला, ऊपरी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उपरस पुं. {सं.} गंधक, अभ्रक आदि गौण रस।
उपराचढ़ी *स्त्री.* {सं.} एक-दूसरे पर चढ़ने का यत्न, परस्पर, प्रतिस्पर्धा।
उपरांत *क्रि. वि.* {सं.} अनंतर, बाद, पीछे।
उपराग पुं. {सं.} रँगनेवाली वस्तु या तत्व, रंग; किसी वस्तु पर उसके पास की वस्तु का आभास; विषयों में अनुरक्ति; चंद्रमा या सूर्य का ग्रहण।
उपराज पुं. {सं.} राजा का वह प्रतिनिधि जो किसी देश का शासक हो।
उपराना[1] *स.* {हिं. उपराजना} पैदा या उत्पन्न करना, कमाना।
उपराना[2] *अ.* {सं. उपरि} तल से उछलकर ऊपर आना; सामने आना; प्रकट होना; उतरना; *स.* ऊपर करना, उठाना; प्रकट करना।
उपराही *क्रि. वि.* ऊपर; *वि.* बढ़कर, श्रेष्ठ; अधिक, ज्यादा।
उपरूपक पुं. {सं.} साहित्य में नाट्य रचना की एक विशेष विधा जिसके 18 भेद कहे गए हैं।
उपरोक्त *वि.* उपर्युक्त।
उपरोध पुं. {सं.} {*वि.* उपरोधक, उपरोध्य} होते हुए काम को रोकनेवाली बात, बाधा, रुकावट; आच्छादन, ढकना; घेरा डालना।
उपरुद्ध *वि.* {सं.} रुका हुआ, घेरा हुआ।
उपर्युक्त *वि.* {सं.} जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका हो, ऊपर कहा हुआ (एफोर-सेड)।
उपल पुं. {सं.} पत्थर; ओला; रत्न; मेघ, बादल।
उपलक्ष पुं. = उपलक्ष्य।
उपलक्ष्य पुं. {सं.} संकेत, चिह्न; लक्ष्य, उद्देश्य; संबंध, बारे में।
उपलक्ष्य में *क्रि. वि.* दृष्टि से, विचार से।
उपलब्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* उपलब्धि} सुलभ या प्राप्त।
उपलब्धि *स्त्री.* {सं.} प्राप्त वस्तु; पाई विशेष योग्यता या उन्नति (एचीवमेंट)।
उपला पुं. {सं. उत्पल} {*स्त्री.* अल्पा. उपली} जलाने के लिए सुखाया हुआ गोबर, कंडा, गोहरा।
उपल्ला पुं. {हिं. ऊपर + ला (प्रत्य.)} किसी वस्तु की ऊपरी तह या परत।
उपवन पुं. {सं.} छोटा वन या जंगल; बाग, बगीचा, फुलवारी; बड़ा बाग जिसमें कई खुले हुए और बड़े मैदान हों (पार्क)।
उपवाक्य पुं. {सं.} किसी बड़े वाक्य का वह अंश जिसमें कोई समापिका क्रिया हो (क्लॉज)।
उपवस्त्र पुं. {सं.} गौण वस्त्र बनियान, अँगोछा आदि।
उपवास पुं. {सं.} {*वि.* उपवासी} नियत समय पर और उसके बाद कुछ समय तक भोजन न करना, फाका; वह व्रत जिसमें भोजन नहीं किया जाता; रोग होने पर उसकी शांति के लिए भोजन न करना।
उपवासी *वि.* {सं.} उपवास रखनेवाला।
उपवाह्य *वि.* {सं.} ढोने योग्य; सवारी करने योग्य।
उपविधि *स्त्री.* {सं.} किसी विधि (कानून) के अधीन या अंतर्गत बनी हुई कोई छोटी विधि (बाई-लॉ)।
उपविभाग पुं. {सं.} विभाग के अंतर्गत छोटा विभाग (सब-डिवीजन)।
उपविष पुं. {सं.} हलका जहर, जैसे अफीम य धतूरा; गौण विष।
उपविष्ट *वि.* {सं.} बैठा हुआ।
उपवीत पुं. {सं.} {*वि.* उपवीती} जनेऊ, यज्ञसूत्र; उपनयन।
उपवेद पुं. {सं.} वे विद्याएँ जो वेदों से निकली हैं; ये चार हैं, जैसे धनुर्वेद, गान्धर्ववेद, आयुर्वेद और स्थापत्यवेद।
उपवेशन पुं. {सं.} {*वि.* उपवेशित, उपवेशी, उपवेश्य, उपविष्ट} बैठना; स्थित होना, जमना; बसाना; बैठाना; बैठक बुलाना।
उपवेशिका *स्त्री.* {सं.} बैठक; छोटी कुरसी।
उपशम पुं. {सं.} मन की इच्छाएँ या वासनाएँ दबाना, इंद्रियनिग्रह; बड़े हुए वेग या उग्र तत्व का कम होना या ठंडा पड़ना, शांति, जैसे रोग या विकार का उपशम; किसी के कष्टों, विपत्तियों आदि के निवारण का उपाय, इलाज; विद्रोह आदि अशान्ति के कारणों का निवारण।
उपशमन पुं. {सं.} {*वि.* उपशमित} शांत करना या होना।
उपशामक *वि.* {सं.} शांत करनेवाला, बुझानेवाला (फायर ब्रिगेड)।
उपशायी *वि.* {सं.} पास में सोनेवाला।
उपशाला *स्त्री.* {सं.} मकान के पास का, उठने-बैठने के लिए दालान या छोटा कमरा, बैठक।
उपसंपादक पुं. {सं.} {*स्त्री.* उपसंपादिका} किसी कार्य में मुख्यकर्ता का सहायक या उसकी अनुपस्थिति में उसका कार्य करनेवाला व्यक्ति; किसी सामयिक पत्र में संपादक के अधीन रहकर उसके सहायक रूप में काम करनेवाला व्यक्ति।
उपसंहार पुं. {सं.} विषय को समेटना; परिहार; समाप्ति, अंत; किसी पुस्तक के अंत का वह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय जिसमें उसका सारांश या परिणाम संक्षेप में बतलाया गया हो; सारांश।

उपसंहृत *वि.* {सं.} संक्षिप्त, समाप्त किया गया, समेटा गया।

उपसभापति *स्त्री.* {सं.} किसी संस्था का वह अधिकारी जिसका पद सभापति के उपरांत या उससे छोटा, पर मंत्री से बड़ा होता है और जो सभापति की अनुपस्थिति में उसके सब कार्य करता है (वाइस-प्रेसिडेंट)।

उपसमिति *स्त्री.* {सं.} किसी बड़ी समिति या सभा की बनाई हुई छोटी समिति (सब-कमेटी)।

उपसर्ग *पुं.* {सं.} वह उपशब्द जो किसी शब्द के पहले लगकर उसमें किसी अर्थ की विशेषता लाता है, जैसे अनुकरण में 'अनु' या उपयोग में 'उप' उपसर्ग है; अपशकुन; दैवी उत्पात; वह पदार्थ जो कोई दूसरा पदार्थ बनाते समय बीच में यों ही या आप-से-आप बन जाता या निकल आता हो, जैसे गुड़ बनाते समय शरा (बाई-प्रॉडक्ट)।

उपसागर *पुं.* {सं.} समुद्र की खाड़ी, समुद्र का एक भाग, खाड़ी।

उपस्कर *पुं.* {सं.} सजावट की सामग्री, उपकरण; कोई चीज बनाने या कोई काम करने में प्रयुक्त सभी वस्तुएँ; मसाला।

उपस्करण *पुं.* {सं.} घर, स्थान आदि सजाने की क्रिया या भाव (फरनिशिंग)।

उपस्कृत *वि.* {सं.} (घर या कक्ष) जो उपस्करों से सजा हो (फरनिश्ड)।

उपस्त्री *पुं.* {सं.} रखैल, प्रेमिका, उपपत्नी।

उपस्थ *पुं.* {सं.} नीचे या मध्य का भाग; पेड़; पुरुष-चिह्न, लिंग; स्त्री-चिह्न, भग; गोद; समीपवर्ती।

उपस्थाता *वि.* {सं.} हाजिर होनेवाला, आनेवाला।

उपस्थान *पुं.* {सं.} {*वि.* उपस्थानीय, उपस्थित} पास या सामने आना; अभ्यर्थना या पूजा के लिए निकट आना; सभा, समाज; सामने खड़ा होकर स्तुति करना।

उपस्थापक *पुं.* {सं.} वह जो विचार और स्वीकृति के लिए कोई विषय किसी सभा में उपस्थित करे, उपस्थित करनेवाला; प्रस्तोता; वह जो न्यायालय में अभियोगों और वादों आदि से संबंध रखनेवाले कागज-पत्र न्यायकर्ता अधिकारी के सामने उपस्थित करता और उनपर आज्ञाएँ आदि लिखता है, पेशकार (रीडर)।

उपस्थित *वि.* {सं.} समीप बैठा हुआ, सामने या पास आया हुआ, विद्यमान, मौजूद, हाजिर (प्रेजेंट); ध्यान में आया हुआ, याद।

उपस्थित-बुद्धि *वि.* {सं.} जो सही वक्त पर सही बात सोच लेता हो; प्रत्युत्पन्नमति, सूझबूझ वाला।

उपस्थिति *स्त्री.* {सं.} विद्यमानता, मौजूदगी, हाजिरी; पास रहना।

उपस्थिति-अधिकारी *पुं.* {सं.} शिक्षा- उपस्थिति की देखभाल अथवा उपस्थिति बढ़ाने का प्रयत्न करता हो (एटेंडेंस ऑफिसर)।

उपस्थिति-पत्र *पुं.* {सं.} किसी राजकीय अधिकारी की ओर से आधिकारिक रूप से किसी के नाम भेजा जानेवाला वह पत्र जिसमें उसे उस अधिकारी के सामने उपस्थित होने की आज्ञा दी जाती है, सम्मन, आकारक (साइटेशन)।

उपहत *वि.* {सं.} नष्ट या बरबाद किया हुआ; बिगड़ा हुआ; जिसे चोट लगी हो; उपरक्त; ग्रस्त, प्रभावित।

उपहसित *पुं.* {सं.} नाक फुलाकर, आँखें टेढ़ी करके और गर्दन हिलाते हुए हँसना (हास का एक भेद); *वि.* जिसकी हँसी उड़ाई गई हो।

उपहस्तिका *स्त्री.* {सं.} पानदान।

उपहार *पुं.* {सं.} बड़े या प्रिय को दी जानेवाली कोई अच्छी वस्तु, भेंट, नजर (प्रेजेंट)।

उपहृत *वि.* {सं.} भेंट किया गया।

उपहास *पुं.* {सं.} {*वि.* उपहास्य} हँसी, दिल्लगी; हँसते हुए किसी को निंदित ठहराना या उसकी बुराई करना, हास्ययुक्त निंदा; मजाक उड़ाना।

उपहासास्पद *वि.* {सं.} उपहास्य के योग्य, हँसी उड़ाने के लायक; निंदनीय, खराब, बुरा।

उपहासी *स्त्री.* उपहास।

उपह्व *पुं.* {सं.} एकांत।

उपांग *पुं.* {सं.} अंग का भाग, अवयव; किसी वस्तु के अंगों की पूर्ति करनेवाली वस्तु, जैसे वेद के उपांग।

उपांजन *पुं.* {सं.} लीपना, पुताई।

उपांत *पुं.* {सं.} अंत की ओर का भाग, आखिरी हिस्सा; आसपास का भाग या स्थान; कागज में, लिखने के समय, एक या दोनों ओर खाली छोड़ा जानेवाला वह स्थान जिस पर आवश्यकता होने पर कोई और छोटी-मोटी काम की बात या लेख्य की साक्षी, शीर्षक आदि लिखे जाते हैं, हाशिया (मार्जिन); किनारा।

उपांतस्थ *वि.* {सं.} उपांत पर होने, रहने या लिखा जानेवाला, जैसे किसी लेख्य पर का उपांतस्थ साक्षी आसपास खड़े या बैठे।

उपांतस्थ साक्षी *पुं.* {सं. साक्षिन्} वह साक्षी जिसने किसी लेख्य के उपांत पर हस्ताक्षर किया या अँगूठे का चिह्न लगाया हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उपाउ *पुं.* उपाय।

उपाकर्म *पुं.* {सं.} विधिपूर्वक वेदों का अध्ययन; श्रावणी कर्म, श्रावण की पूर्णिमा के दिन वैदिकों द्वारा किया जानेवाला ऋषिपूजन कर्म।

उपाख्यान *पुं.* {सं.} पुरानी कथा, पुराना वृत्तांत; किसी कथा के अंतर्गत कोई और कथा; वृत्तांत; रामायण, महाभारत आदि में आई बीच की कथाएँ।

उपागत *वि.* {सं.} आया हुआ, पास आया।

उपाटना *स.* उखाड़ना।

उपाड़ *पुं.* शरीर पर सहसा छाले आदि उत्पन्न होना।

उपादान *पुं.* {सं.} {*वि.* उपादानता} प्राप्ति, मिलना; ग्रहण, स्वीकार; किसी की कोई चीज लेकर अपने काम में लाना (एप्रोप्रिएशन); ज्ञान, बोध; वह कारण जो स्वयं कार्य के रूप में परिणत हो जाए जैसे मिट्टी से घड़ा; वह सामग्री या वे तत्व जिनसे कोई वस्तु बनी हो।

उपादेय *वि.* {सं.} {*भाव.* उपादेयता} ग्रहण करने योग्य; उत्तम, श्रेष्ठ।

उपाधि *स्त्री.* {सं.} कुछ को कुछ और बतलाने का छल, कपट; वह जिसके संयोग से कोई वस्तु और की और अथवा किसी विशेष रूप में दिखाई दे; उपद्रव, उत्पात; कर्तव्य का विचार, किसी वस्तु, वर्ग आदि का सूचक नाम (एपेलेशन); योग्यता, सम्मान आदि का सूचक शब्द जो किसी नाम के साथ लगाया जाता है, पदवी, खिताब (टाइटिल)।

उपाधिधारी *पुं.* {सं. उपाधिधारिन्} वह जिसे कोई उपाधि या खिताब मिला हो।

उपाधी (धिन्) *वि.* {सं.} ऊधम मचानेवाला।

उपाध्यक्ष *पुं.* {सं.} किसी संस्था आदि में अध्यक्ष के सहायक रूप में, पर उसके अधीन काम करनेवाला अधिकारी (वाइस चैयरमैन)।

उपाध्याय *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* उपाध्याया, उपाध्यायानी, उपाध्यायी} वेद-वेदांग पढ़ानेवाला; अध्यापक, शिक्षक।

उपानह *पुं.* {सं.} जूता।

उपाना *स.* {सं. उत्पन्न} उत्पन्न करना, पैदा करना; सोचना; *अ.* उत्पन्न होना; मन में आना, उद्भूत होना।

उपाय *पुं.* {सं.} {*वि.* उपायी, उपेय} पास पहुँचना, निकट आना; वह कार्य का प्रयत्न जिससे अभीष्ट तक पहुँचें, साधन, युक्ति, तरकीब; राजनीति के 4 उपाय–साम, दाम, दंड, भेद।

उपायन *पुं.* {सं.} भेंट, उपहार।

उपायनीकृत *वि.* {सं.} भेंट के रूप में प्रस्तुत।

उपायनीभूत *वि.* {सं.} भेंट बना हुआ।

उपायुक्त *पुं.* {सं.} आयुक्त का सहायक।

उपार्जक *वि.* {सं.} कमानेवाला, धन अर्जित करनेवाला।

उपार्जन *पुं.* {सं. उपार्जनीय, उपार्जित} परिश्रम या प्रयत्न करके धन प्राप्त करना, कमाना; अधिकार पूर्वक या वैध उपायों से प्राप्त करके अपने अधिकार में लेना।

उपार्जित *वि.* {सं.} कमाया हुआ; प्राप्त किया हुआ; संगृहीत।

उपालंभ *पुं.* {सं.} उलाहना, शिकायत, निंदा; व्यंग्य करना।

उपाव *पुं.* उपाय।

उपाश्रय *पुं.* {सं.} अस्थायी आश्रय; सहारा।

उपाश्रयण *पुं.* {सं.} कुछ समय के लिए आश्रय लेना; बैठने के लिए सहारा लेना।

उपाश्रित *वि.* {सं.} (आज्ञा, नियम, विधि आदि) जो किसी दूसरी आज्ञा, नियम, विधि आदि पर अवलंबित या आश्रित हो, जैसे यह नियम नीचे लिखी बातों का उपाश्रित है (सबजेक्ट टु); किसी के सहारे टिका हुआ।

उपास *पुं.* उपवास।

उपासक *वि., पुं.* {सं.} {*स्त्री.* उपासिका} पूजा या उपासना करनेवाला, भक्त।

उपासना[1] *स्त्री.* {सं.} {*वि.* उपासनीय, उपास्य, उपासित} पास बैठने की क्रिया; ईश्वर, देवता या किसी बड़े और पूज्य की की जानेवाली आराधना, पूजा; *अ.* उपासना, पूजा या सेवा करना, भजना।

उपासना[2] *अ.* {सं. उपवास} उपवास करना, भूखा रहना; निराहार व्रत करना।

उपासी {सं. उपवास} उपवास करनेवाला।

उपास्य *वि.* {सं.} पूजा किए जाने के योग्य, जिसकी सेवा की जाती हो, आराध्य।

उपेंद्र *पुं.* {सं.} इंद्र के छोटे भाई वामन या विष्णु भगवान।

उपेक्षणीय *वि.* उपेक्ष्य।

उपेक्षा *स्त्री.* {सं.} उदासीनता, लापरवाही, विरक्ति; किसी को तुच्छ या नगण्य समझना, अयोग्य समझकर ध्यान न देना या आदर न करना (डिस-रिगार्ड); गिनती न करना।

उपेक्षित *वि.* {सं.} जिसकी उपेक्षा की गई हो, तिरस्कृत।

उपेत *वि.* {सं.} बीता हुआ, गत; मिला हुआ, प्राप्त; साथ लगा हुआ, युक्त।

उपोद्घात *पुं.* {सं.} पुस्तक के आरंभ का वक्तव्य, प्रस्तावना, भूमिका; कोई व्यवस्था या कार्य आरंभ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने से पहले उसकी तैयारी के लिए आरंभ में किया जानेवाला कोई कृत्य (प्रिलिमिनरी)।

उपोषण *पुं.* उपवास।

उपोषित *वि.* {सं.} जिसने उपवास किया हो, व्रती।

उप्त *वि.* {सं.} बोया हुआ।

उफ़ *अ.* कष्ट या पीड़ा प्रकट करना।

उफनाना *अ.* {सं. उत् + फेन} उबलकर उठना, जोश खाना (दूध आदि का); उभड़ना।

उफान *पुं.* {सं. उत् = फेन} गरमी पाकर फेन के साथ ऊपर उठना, उबाल।

उफाल *स्त्री.* {हिं. फाल} लंबा डग।

उबकना *अ.* {हिं. उबाक} कै करना।

उबकाई *स्त्री.* {हिं. उबाक} वमन।

उबट *पुं.* {सं. उद्वाट} बीहड़ रास्ता; *वि.* ऊबड़-खाबड़, ऊँचा-नीचा।

उबटन *पुं.* {सं. उद्वर्तन} शरीर पर मलने के लिए सरसों, तिल; हल्दी, कचूर आदि से बना लेप।

उबटना *पुं.* {सं. उद्वर्तन} उबटन; *क्रि.* उबटन लगाना।

उबना *अ.* उगना; ऊबना; उबहना।

उबरना *अ.* {सं. उद्वारण} उद्धार या निस्तार पाना, मुक्त होना, छूटना; शेष रहना, बाकी बचना; संकट से बचना।

उबलना *अ.* {सं. उद् = ऊपर + वलन = जाना} आग पर चढ़े हुए तरल पदार्थ का फेन के साथ ऊपर उठना, उफनना; वेग से निकलना, उमड़ना।

उबसन *पुं.* बरतन माँजने का साधन।

उबहना[1] *स.* {सं. उद्वहन} हथियार उठाना, शस्त्र उठाना; पानी फेंकना, उलीचना; जोतना; उबेहना; *अ.* ऊपर उठना, उभरना; स्पष्ट या प्रगट होना, खुलना।

उबहना[2] *वि.* {सं. उपानह} बिना जूते का।

उबाँत *स्त्री.* वमन।

उबार *पुं.* {सं. उद्धारण} उद्धार करना, कष्ट से छुड़ाना या बचाना।

उबाल *पुं.* {हिं. उबलना} उबलने की क्रिया या भाव, उफान; आवेश।

उबालना *स.* {सं. उद्वालन} तरल पदार्थ आग पर रखकर इतना गरम करना कि वह फेन के साथ ऊपर उठने लगे, खौलाना।

उबासी *स्त्री.* जँभाई।

उबीधना *अ.* {सं. उद्विद्ध} फँसना, उलझना; धँसना, गड़ना।

उभड़ना *अ.* {सं. उद्भरण} किसी तल या सतह का आसपास की सतह से कुछ ऊँचा होना, उकसना; ऊपर निकलना, उठना, जैसे अंकुर उभड़ना; उत्पन्न होना, पैदा होना; प्रकाशित होना, सामने आना; अधिक या प्रबल होना, बढ़ना; हट जाना; जवानी पर आना।

उभय *वि.* {सं.} दोनों।

उभयचर *वि.* {सं.} (जीव) जो जल और स्थल दोनों पर रह सके।

उभयतः *क्रि. वि.* {सं.} दोनों ओर से।

उभयनिष्ठ *वि.* {सं.} जो दोनों में निष्ठा रखता हो; जो दोनों में सम्मिलित हो।

उभयमुख *वि.* {सं.} जिसके मुँह दोनों ओर हों, दुमुँहा साँप।

उभयमुखी *वि.* {सं.} ब्याती गाय।

उभयलिंग *पुं.* {सं.} {*वि.* उभयलिंगी} व्याकरण में वह संज्ञा जिसका प्रयोग स्त्रीलिंग और पुल्लिंग दोनों में होता हो; वह जीव जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों के लिंग या चिह्न समान रूप से पाए जाते हैं; जैसे अमीबा।

उभयसंकट *पुं.* {सं.} ऐसी स्थिति जिसमें दोनों ओर (कोई काम करने पर भी और न करने पर भी) संकट दिखाई दे, धर्मसंकट (डिलेम्मा)।

उभरना *अ.* {सं. उद्भरण} उभार, आना, फूल उठना।

उभाड़ना *स.* {हिं. उभड़ना} भारी वस्तु को धीरे-धीरे ऊपर की ओर उठाना, उकसाना; उत्तेजित करना, उकसाना; मुँह से कहलाना; क्रोध भड़काना।

उभार *पुं.* {हिं. उभरना} उभरे हुए होने की अवस्था या भाव, फुलाव, उठाव, जैसे छाती के उठने का आरंभ।

उभारना *पुं.* {हिं. उभरना} उभाड़ना; अस्पष्ट चित्र को स्पष्ट करना; उकसाना।

उभै *वि.* उभय।

उमंग *स्त्री.* {सं. उद् = ऊपर + मंग = चलना} मन में उत्पन्न होनेवाला वह सुखदायक मनोवेग जो कोई प्रिय या अभीष्ट काम करने के लिए होता है, मौज, लहर, उल्लास; उभाड़।

उमग *स्त्री.* उमंग।

उमगना *अ.* {हिं. उमंग} भरकर ऊपर उठाना, उभड़ना, उमड़ना; उल्लास में होना, हुलसना; उभरकर बाहर आना; स. हिं. 'उमगना' का स.।

उमगाना *पुं.* उत्साहित करना, उभारना।

उमचना *अ.* {सं. उन्मंच} हुमचना; चौकन्ना होना।

उमड़ना *अ.* {सं. उद्गमन} द्रव वस्तु का बहुतायत के कारण ऊपर उठना, उतराकर वह चलना; उठकर फैलना, छाना, जैसे बादल उमड़ना।

उमड़ना-घुमड़ना *अ.* घूम-घूमकर फैलना या छाना।

उमड़ाव *पुं.* उमड़।

उमदना *अ.* उमगना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमदाना *स.* {सं. उन्मद} उन्मत या मतवाला करना; *अ.* मतवाला होना; उमगना; *वि.* जो उन्मत्त हो गया हो, मतवाला, उन्मत्त।

उमन्नै *अ.* अनमनेपन से।

उमर *स्त्री.* {अ. उम्र} वर्षों के विचार से जीवन के बीते हुए दिन, अवस्था, वय; पूरा जीवनकाल, आयु।

मुहा. उमर भर का ठेका = सारे जीवन के लिए जिम्मेवारी लेना (व्यं.)।

उमराव *पुं.* उमरा; अमीर का बहुवचन।

उमस *पुं.* {सं. ऊष्म} {*क्रि.* उमसना} वह गरमी जो हवा न चलने पर होती है; उम्मरन।

उमहना *अ.* उमड़ना।

उमा *स्त्री.* {सं.} पार्वती; दुर्गा; कीर्ति; कान्ति।

उमाकना *अ.* {?} खोदकर फेंक देना; नष्ट करना।

उमाकांत *पुं.* {सं.} शिव।

उमाचना *स.* उभाड़ना।

उमासुत *पुं.* {सं.} पार्वती-पुत्र स्कंद; गणेश।

उमाद *पुं.* उन्माद।

उमाह *पुं.* उमंग।

उमाहना *अ.* उमड़ना; *स.* उमड़ाना, उमगाना।

उमेठना *स.* {सं. उद्वेष्टन} {*भाव.* उमेठन} इस प्रकार मरोड़ना कि रस्सी की तरह बल पड़ जाएँ, ऐंठना, जैसे मूँछें उमेठना।

उमेठवाँ *वि.* {हिं. उमेठना} जिसमें उमेठन पड़ी हो, ऐंठनदार।

उमेड़ना *स.* उमेठना।

उमेलना *स.* {सं. उन्मीलन} खोलना, प्रकट करना; वर्णन करना।

उमैना *अ.* {हिं. उमंग} मनमाना आचरण करना।

उम्दगी *स्त्री.* {फा.} अच्छापन, भलापन, खूबी।

उम्दा *वि.* {अ. उम्दः} अच्छा, भला।

उम्मीद *स्त्री.* {फा.} आशा, भरोसा।

उम्मीदवार *पुं.* {फा.} आशा या उम्मीद रखनेवाला; काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से कहीं बिना वेतन लिए या थोड़े वेतन पर काम करनेवाला आदमी, अंतेवासी; किसी पद पर चुने जाने के लिए, खड़ा होनेवाला आदमी।

उम्मीदवारी *स्त्री.* {फा.} उम्मीदवार होने की अवस्था या भाव; आशा, आसरा; बिना वेतन या थोड़े वेतन पर उम्मीदवार होकर काम करना; गर्भवती स्त्री को संतान होने की आशा।

उम्र *स्त्री.* उमर।

उरंग *पुं.* {सं.} सर्प।

उरंगम *पुं.* {सं.} सर्प, छाती के बल चलनेवाला।

उर *पुं.* {सं. उरस्} वक्षस्थल, छाती; हृदय, मन, चित्त।

उरग *पुं.* {सं.} साँप।

उरगना *स.* {सं. उररीकरण} स्वीकार या अंगीकार करना; सहना।

उरगिनी *स्त्री.* {सं. उरगी} सर्पिणी।

उरगाद *पुं.* {सं.} साँप को खानेवाला, गरुड़।

उरगारि *पुं.* {सं.} सर्पों का शत्रु, गरुड़; -रा. मानस।

उरगी *स्त्री.* {सं.} सर्पिणी।

उरज, उरजात *पुं.* उरोज।

उरझना *अ.* उलझना।

उरझेर *पुं.* {?} हवा का झोंका; उलझानेवाला।

उरझेरी *स्त्री.* {सं. अवरुंधन = उलझन} हृदय की व्याकुलता, विकलता; उरझेर।

उरण *पुं.* {सं.} भेड़ा, मेढ़ा; हमारे सौर जगत् का एक ग्रह जो शनि और वरुण के बीच में पड़ता है (यूरेनस)।

उरद *पुं.* {सं. ऋद्ध, पा. उद्ध} {*स्त्री.* अल्पा. उरदी} एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियों के बीजों या दानों की दाल होती है, माष; उड़द।

उरध *वि., क्रि. वि.* ऊर्ध्व; ऊपर।

उरना *अ.* उड़ना; भागना।

उरबसी *स्त्री.* {सं. उर्वशी} एक अप्सरा; उरबसी-मन में बसी।

उरबी *स्त्री.* पृथ्वी।

उरमना *अ.* लटकना।

उरमी *स्त्री.* {सं. ऊर्मि} लहर, तरंग; दुख, पीड़ा, कष्ट।

उरबिज *पुं.* {सं. उर्वी} मंगल ग्रह; पृथ्वी से उत्पन्न।

उरला[1] *वि.* {सं. अपर, अवर + हिं. ला (प्रत्य.)} इधर का, इस ओर का, 'परला' का विरोधी; पिछला, पीछे का।

उरछद *पुं.* {सं.} छाती को ढकनेवाला, कवच।

उरस[1] *वि.* {सं. कुरस} फीका, नीरस।

उरस[2] *पुं.* {सं. उरस्} छाती, वक्षस्थल; हृदय, चित्त।

उरसना *अ.* {हिं. उड़सना} ऊपर-नीचे करना, उथल-पुथल करना; अंदर।

उरसिज *पुं.* {सं.} स्तन।

उरहना *पुं.* उलाहना।

उराउ *पुं.* = उराव।

उराना *अ.* ओराना।

उराव *पुं.* {सं. उरस् + हिं. आव (प्रत्य.)} चाव, चाह; उमंग, उत्साह।

उराहना *पुं.* उलहना।

उरिन *वि.* उऋण।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उरु *वि.* {सं.} लंबा-चौड़ा; विस्तृत; *पुं.* जंघा, जाँघ।

उरुग्गिनी *स्त्री.* = उरगिनी (सर्पिणी)।

उरुवा *पुं.* {सं. उलूक, प्रा. उल्लूअ} उल्लू की तरह की एक चिड़िया, रुरुआ।

उरूज *पुं.* {अ.} बढ़ती, वृद्धि।

उरे *क्रि. वि.* {सं. अवर} परे, आगे; इस तरफ; अलग, पृथक्; दूर।

उरेखना *स.* {सं. उल्लेखन} चित्र अंकित करना; अवरेखना।

उरेह *पुं.* {सं. उल्लेख} चित्र; चित्रकारी।

उरेहना *स.* {सं. उल्लेख} (चित्र) खींचना, लिखना।

उरैंडना *स.* {हिं. उँडेलना का पुराना रूप} उँडेलना; गिराना।

उरोज *पुं.* {सं.} स्तन, कुच।

उर्जा *स्त्री.* {सं.} ऊर्जा, शक्ति।

उर्जित *वि.* {सं.} शक्तिशाली, बढ़ा हुआ।

उर्द *पुं.* उरद।

उर्णनाभ *पुं.* {सं.} मकड़ा।

उर्दू *स्त्री.* {तु.} छावनी का बाजार; हिंदी का वह रूप जिसमें अरबी-फारसी के शब्द अधिक होते हैं और जो फारसी लिपि में लिखा जाता है।

उर्ध *वि.* {सं.} ऊर्ध्व।

उर्फ *पुं.* {अ.} पुकारने का या प्रसिद्ध नाम, उपनाम।

उर्मिका *स्त्री.* {सं.} छोटी और हल्की लहर; अँगूठी।

उर्मिल *वि.* {सं.} लहरों से भरा, लहराता हुआ।

उर्मिला *स्त्री.* {सं.} लहराती नदी; लक्ष्मण की पत्नी।

उर्वर *वि.* {सं.} {*भाव.* उर्वरता} (भूमि) जिसमें फसलें अच्छी तरह उपजती हों, उपजाऊ (फर्टाइल); जिससे बहुत-सी बातें या चीजें निकलती या उत्पन्न होती हों, जैसे उर्वर मस्तिष्क।

उर्वरक *पुं.* {सं.} रासायनिक खाद।

उर्वरण *पुं.* {सं.} उर्वर बनाने की क्रिया या भाव; उपजाऊ बनाना।

उर्वरता *स्त्री.* {सं.} उर्वर होने की अवस्था या भाव, उपजाऊपन (फर्टिलिटी, प्रॉडक्टिविटी)।

उर्वारुक् *पुं.* {सं.} खरबूजा, फूट।

उर्वशी *स्त्री.* {सं.} एक अप्सरा।

उर्वी *स्त्री.* {सं.} पृथिवी; *वि. स्त्री.* विस्तृत; सपाट।

उर्वीजा *स्त्री.* {सं.} सीता; पृथ्वीपुत्री।

उलंघन *पुं.* उल्लंघन।

उलंघना *स.* {सं. उल्लंघन} लाँघना; उल्लंघन करना।

उलका *स्त्री.* उल्का; मसाल।

उलचना *स.* उलीचना।

उलछना *स.* {हिं. उलीचना} छितराना, बिखराना; उलीचना; उछालना; *अ.* उछलना।

उलझन *स्त्री.* {हिं. उलझना} उलझने की क्रिया या भाव, अटकाव, फँसान; गिरह, गाँठ; बाधा; समस्या; चिंता, फिक्र।

उलझना *अ.* {सं. अवरुंधन} फँसना, अटकना, 'सुलझना' का उलटा, जैसे काँटों में उलझना; बहुत से घुमावों के कारण फेर में फँसना; लिपटना; काम में लिप्त होना; हुज्जत करना, झगड़ना; कठिनाई या अड़चन में पड़ना; *वि.* फँसा हुआ; किसी फंदे में डालना।

उलझा *पुं.* उलझन।

उलझाना *स.* {हिं. उलझना} फँसाना, अटकाना; लगाए रखना, लिप्त रखना; टेढ़ा करना।

उलझौंहाँ *वि.* {हिं. उलझना} अटकाने या फँसानेवाला; लुभानेवाला।

उलट कम्बल *पुं.* एक विशेष प्रकार का पौधा जिसकी छाल से रस्सी बनती है।

उलटना *अ.* {सं. आवर्तते} ऊपर का भाग नीचे या नीचे का भाग ऊपर होना, औंधा होना, पलटना; पीछे मुड़ना, घूमना; तितर-बितर या अस्त-व्यस्त होना; जैसा पहले रहा हो, उसके पुराने रूप के विरुद्ध रूप में होना; बरबाद होना, नष्ट होना; बेहोश होना, बेसुध होना; गिरना; मादा चौपाए का पहली बार का गर्भ न ठहरना; *स.* नीचे का भाग ऊपर या ऊपर का भाग नीचे करना; औंधा गिराना; पटकना, गिरा देना; लटकती हुई वस्तु को समेटकर ऊपर उठाना; अंडबंड करना, अस्तव्यस्त करना; जैसा पहले रहा हो, उसके विरुद्ध या विपरीत करना, पुराने रूप के विरुद्ध रूप में लाना; उलटा बोलना; उत्तर-प्रत्युत्तर करना, विवाद करना; बीज मारे जाने पर फिर से बोने के लिए खेत जोतना; बेसुध करना, बेहोश करना।

उलट-पलट, उलट-पुलट *स्त्री.* {हिं.} अदल-बदल; अव्यवस्था, गड़बड़ी।

उलट-फेर *पुं.* {हिं. उलटना + फेर} परिवर्तन, अदल-बदल, हेर-फेर; जीवन की दिशा में होनेवाला बदलाव।

उलटबाँसी *स्त्री.* {हिं. उलटा + ?} ऐसा पद या कविता जिसका अर्थ शब्दार्थ से विपरीत-सा हो परंतु जिसका कुछ गूढ़ आशय भी हो। जैसे कबीर की नाव में नदिया डूबी जाय।

उलटा *वि.* {हिं. उलटना} {*स्त्री.* उलटी} जो सीधा न हो, जिसके ऊपर का भाग नीचे या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीचे का भाग ऊपर हो, औंधा; क्रम विपरीत होना।

मुहा. *उलटा साँस चलना* = (मरने के समय) रुक-रुककर साँस चलना; *उलटे मुँह गिरना* = धोखा खोकर बुरी तरह विफल होना; *उलटा फिरना या लौटना* = तुरंत लौट आना; *उलटी गंगा बहना* = अनहोनी या नियम-विरुद्ध बात होना; *उलटी माला फेरना* = अहित चाहना; *उलटे पाँव फिरना* = तुरंत लौट पड़ना; *उलटी पट्टी पढ़ाना* = गलत शिक्षा देना।

(कालक्रम में) जो आगे का पीछे या पीछे का आगे हो; विरुद्ध, विपरीत; बायाँ, वाम, 'सीधा' का विपरीत, जैसे उलटा हाथ; उचित के विरुद्ध, अयुक्त।

मुहा. *उलटा जमाना* = ऐसा समय, जब भली बात बुरी समझी जाए, अंधेर का समय; *उलटी खोपड़ी का* = जड़, मूर्ख; *उलटी-सीधी सुनाना* = खरी-खोटी सुनाना, भला-बुरा कहना।

क्रि. वि. विरुद्ध क्रम से; बेठिकाने, अंडबंड; जैसा होना चाहिए, उसके विरुद्ध प्रकार से; *पुं.* सामने की या सीधे पक्ष की विरुद्ध दिशा या पीछे रहनेवाला पक्ष, जैसे छापे के कपड़े का उलटा या सिक्के का उलटा (रिवर्स); बेसन से बननेवाला एक पकवान, चिलड़ा, चिल्ला।

उलटाना *स.* हिं. 'उलटना' का स.; लौटाना, बदलाना; *अ.* उलटना।

उलटा-पलटा, उलटा-पुलटा *वि.* {हिं. उलटना + पलटना} इधर का उधर, अंडबंड; आगे-पीछे करना।

उलटा-पलटी, उलटा-पुलटी *स्त्री.* {हिं. उलटना + पुलटना} फेर-फार, अदल- बदल।

उलटा-सीधा *वि.* {हिं.} क्रमरहित, अव्यवस्थित।

उलटी *स्त्री.* {हिं. उलटना} वमन, कै; कलैया, कलाबाजी।

उलत्थना *स.* उलटना।

उलत्थना-पलत्थना *स.* = उलटना-पलटना।

उलथना *अ.* {सं. उद् = नहीं + स्थल = जमना} ऊपर नीचे होना, उथल-पुथल होना; उछलना; उमड़ना; *स.* ऊपर-नीचे करना, उलटना-पलटना।

उलथा *पुं.* {हिं. उलथना} नाचने के समय ताल के अनुसार उछलना; कलाबाजी, कलैया; एक भाषा से दूसरी भाषा में लिखना, अनुवाद; *पुं.* उल्था।

उलद *स्त्री.* वर्षा की झड़ी।

उलफ़त *स्त्री.* {अ.} प्यार, मुहब्बत।

उलमना *अ.* {सं. अवलम्बन} लटकना, झुकना।

उलमा *पुं.* {अ.} विद्वान लोग।

उलरना *अ.* {सं. उल्ललन} उछलना; नीचे या ऊपर होना; झपटना; (बादल) घिर आना या छाना।

उलसना *अ.* {सं. उल्लसन} शोभित होना, सोहना; उल्लसित होना, प्रसन्न होना, हुलसना।

उलहना *अ.* {सं. उल्लंभन} उभड़ना; बाहर या सामने आना, निकलना, प्रस्फुटित होना; प्रसन्न होना, हुलसना; *पुं.* उलाहना।

उलार *वि.* {हिं. ओलरना = लेटना} जो बोझ के कारण का ओर झुका हो; *पुं.* बोझ के कारण एक ओर होनेवाला झुकाव।

उलारना *स.* उछालना।

उलाह *पुं.* उल्लास।

उलाहना *पुं.* {सं. उपालंभन} किसी की भूल या दोष उसे दुखपूर्वक जताना, यह कहना कि तुमने ऐसा नहीं किया या अनुचित किया, शिकायत; किसी के दोष या अपराध को उससे संबंध रखनेवाले किसी और आदमी से कहना, शिकायत। *स.* उलाहना देना; दोष देना, निंदा करना; व्यंग्य करना।

उलीचना *स.* {सं. उल्लुंचन} कोई चीज निकालकर बाहर या दूर करना; घर या नाव में भरा पानी बाहर में फेंकना।

उदा. पानी बाढ़े नाव में घर में बाढ़े दाम, दोनों हाथ उलीचिये—**कबीर**।

उलुप *पुं.* एक प्रकार की घास।

उलूक[1] *पुं.* {सं.} उल्लू नामक पक्षी; इंद्र; कणाद मुनि का एक नाम; भारत का एक प्रदेश।

उलूक[2] *पुं.* {सं. उल्का} आग की लपट, लुक, लौ।

उलूक-दर्शन *पुं.* {सं.} वैशेषिक दर्शन।

उलूखल *पुं.* {सं.} ओखली, ऊखल; खल, खरल; गूगल।

उलेड़ना *स.* उँड़ेलना।

उल्का *स्त्री.* {सं.} प्रकाश, तेज; जलती, लकड़ी, लुक; मशाल; दीया, दीपक; एक प्रकार के चमकीले पिंड जो कभी-कभी रात को आकाश में इधर-उधर जाते या पृथ्वी पर गिरते हुए दिखाई देते हैं।

उल्काचक्र *पुं.* {सं.} तारों की एक विशेष स्थिति।

उल्कापात *पुं.* {सं.} आकाश से पृथ्वी पर उल्का गिरना, तारा टूटना।

उल्कामुख *पुं.* छलावा; अगिया बैताल; प्रेतों का एक गण।

उल्काश्म *पुं.* {सं.} गिरी हुई उल्का जो पत्थर के रूप में होती है।

उल्टा *वि.* = उलटा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल्था पुं. {हिं. उलथन} अनुवाद, भाषांतर।
उल्लुक पुं. {सं.} जलती लकड़ी।
उल्लंघन पुं. {सं.} लाँघना, डाँकना; सीमा के बाहर जाना, अतिक्रमण; निश्चय, प्रतिज्ञा, नियम या विधि तोड़ना और उसके विरुद्ध कार्य करना।
उल्लसित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* उल्लसित} उल्लास या हर्ष से भरा हुआ, प्रसन्न।
उल्लाघ पुं. {सं.} आरोग्य।
उल्लास पुं. {सं.} {*वि.* उल्लसित} प्रकाश चमक; आनंद, प्रसन्नता; ग्रंथ का भाग, अध्याय, पर्व; एक अलंकार जिसमें एक के गुण या दोष से दूसरे में गुण या दोष का होना बतलाया जाता है।
उल्लिखित *वि.* {सं.} जिसका ऊपर या पहले उल्लेख हुआ हो, पूर्वोक्त, पूर्वकथित; जिसका उल्लेख या कथन हुआ हो, कथित (मेंशंड)।
उल्लू पुं. {सं. उल्लूक} दिन में न देखनेवाला एक प्रसिद्ध पक्षी, खूसट।
मुहा. उल्लू का पट्ठा = बहुत बड़ा मूर्ख; *कहीं उल्लू बोलना* = किसी स्थान का उजाड़ होना।
बेवकूफ, मूर्ख।
उल्लेख पुं. {सं.} {*वि.* उल्लेखनीय} लिखना, लेख; वर्णन, बयान; चर्चा, जिक्र (मेन्शन); चित्र खींचना; साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक ही वस्तु का अनेक रूपों में वर्णन होता है।
उल्लेखनीय, उल्लेख्य *वि.* {सं.} लिखने के योग्य; उल्लेख करने के योग्य।
उल्ब पुं. {सं.} वह झिल्ली जिसमें बच्चा बँधा हुआ पैदा होता है, आँवल; गर्भाशय; जेर।
उल्बण *वि.* {सं.} असंगत, खटकनेवाला।
उशीर पुं. {सं.} गाँड़र की जड़, खस।
उषःकाल पुं. = उषाकाल।
उषःपान पुं. {सं.} (हठयोग, वैद्यक आदि में) बहुत तड़के नाक के द्वारा या मुख से पानी पीना या पीकर मुँह से निकालना जो स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है, अमृतपान।
उषःपायी *वि.* {सं.} उषापान करनेवाला।
उषा *स्त्री.* {सं.} प्रभात, तड़का; अरुणोदय की लाली; बाणासुर की कन्या, अनिरुद्ध की पत्नी।
उषाकाल पुं. {सं.} प्रभात।
उषागान पुं. {सं.} प्रभाती।
उषित *वि.* {सं.} बासी; आबाद; जला हुआ।
उष्ट्र पुं. {सं.} ऊँट।
उष्ण *वि.* {सं.} {*भाव.* उष्णता} स्पर्श या तासीर में गरम; फुरतीला, तेज।
उष्ण कटिबंध पुं. {सं.} पृथ्वी का वह भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के बीच में पड़ता है।
उष्णकर पुं. {सं.} सूर्य।
उष्णता *स्त्री.* {सं.} गरमी, ताप।
उष्णवीर्य *वि.* {सं.} गर्म असरवाली औषध सोंठ आदि।
उष्णीष पुं. {सं.} पगड़ी, सोफा; मुकुट, ताज।
उष्णोत्स पुं. {सं.} गर्म पानी का सोता।
उष्मज पुं. {सं.} छोटे कीड़े जो पसीने और मैल आदि से पैदा होते हैं, जैसे खटमल, मच्छर आदि; गर्मी से उत्पन्न।
उष्मा *स्त्री.* {सं.} गरमी; धूप, गुस्सा, क्रोध; तेजी लू लगना।
उष्माघात पुं. {सं.} तेज धूप से होनेवाला आघात या विकार।
उस *सर्व.* उभ. {हिं. वह} 'वह' शब्द का रूप जो विभक्ति लगने पर उसे प्राप्त होता है, जैसे उसने, उसमें, उसका।
उसकाना *स.* उकसाना।
उसटना *अ.* {सं. उत्सरण} उखड़ना; भागना।
उसनना *स.* उबालना; आटा गूँधना।
उसनाना *क्रि. पु.* आटा आदि उसनने की प्रेरणा देना या उसमें सहायता करना।
उसरना *अ.* {उद् + सरण = जाना} हटना, दूर होना; बीतना, गुजरना; भूलना, विस्मृत होना; छिन्न-भिन्न होना।
उससना *स.* {हिं. उसांस} साँस लेना।
उसाँस पुं. {सं. उत् + श्वास} ऊपर को खींचा हुआ श्वास; मानसिक कष्ट, पश्चाताप आदि के कारण ली जानेवाली ठंडी साँस।
उसार पुं. {सं. अवसार = फैलाव} विस्तार, फैलाव; काम-धंधा, सफाई आदि।
उसारना *स.* {हिं. उसार} उखाड़ना; हटाना, टालना; बनाकर खड़ा करना, जैसे घर उसारना; बाहर निकालना या सामने लाना।
उसारा पुं. {हिं. उसार} {*स्त्री.* उसारी} दलान; छाजन; पसारा, बरामदा।
उसालना *स.* {सं. उत् + सारण} उखाड़ना; टालना; भागना; खिसकाना।
उसास पुं. उसाँस।
उसासी *स्त्री.* कुछ देर साँस लेना, विश्राम करना।
उसीर पुं. = उशीर (खस)।
उसूल पुं. {अ.} सिद्धांत।
उसूली *स्त्री.* {फा.} वसूली।
उस्तरा पुं. {फा.} बाल मूँड़ने का छुरा।
उस्ताद पुं. {फा.} {*स्त्री.* उस्तानी} गुरु, शिक्षक, अध्यापक; वह जो वेश्याओं को संगीत, नृत्य आदि की शिक्षा देता है; किसी विषय का बहुत बड़ा पंडित या ज्ञाता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उस्तादी *स्त्री.* {फा.} शिक्षक की वृत्ति, गुरुआई; दक्षता, निपुणता; विज्ञता; चालाकी, धूर्तता।

उस्तादनी *स्त्री.* {फा. उस्ताद} उस्ताद की स्त्री, गुरु-पत्नी; वह स्त्री जो शिक्षा दे, शिक्षिका।

उस्र *पुं.* {सं.} किरण, दिन, सूर्य।

उस्रा *स्त्री.* {सं.} गाय।

उस्वाँस *पुं.* उसाँस।

उहटना *अ.* उघड़ना; हटना।

उहाँ *क्रि. वि.* वहाँ।

ऊ

ऊ देवनागरी वर्णमाला का छठा स्वर जिसका उच्चरण-स्थान ओष्ठ है, कहीं-कहीं निपात के रूप में यह 'भी' और सर्वनाम के रूप में 'वह' का अर्थ देता है, प्रत्यय के रूप में यह प्राय: 'वाला' का अर्थ देता है, जैसे खाऊ, लेऊ आदि।

ऊँगा *पुं.* {सं. अपमार्ग} ओंगा, चिचड़ा, पं. पुठकंडा एक छोटा पौधा जो दवा के काम आता है।

ऊँघ *स्त्री.* {सं. अवाङ् = नीचे मुँह} ऊँघाई, झपकी, अर्द्धनिद्रा; कच्ची नींद, बैठे-बैठे नींद आना, बैठे-बैठे सोना।

ऊँघना *अ.* {सं. अवाङ् = नीचे मुँह} झपकी लेना, नींद में झूमना।

ऊँच *वि.* ऊँचा।

ऊँच-नीच *स्त्री.* {हिं.} हानि और लाभ, भला और बुरा।

ऊँचा *वि.* {सं. उच्च} दूर तक ऊपर की ओर गया हुआ, उठा हुआ, उन्नत; जिसका सिरा बहुत नीचे तक न हो, जिसका लटकाव कम हो, जैसे ऊँचा पाजामा; श्रेष्ठ, बड़ा, महान।

मुहा. ऊँचा-नीचा या ऊँची-नीची सुनाना = खोटी-खरी सुनाना, भला-बुरा कहना।

जोर का (शब्द), तीव्र (स्वर)।

मुहा. ऊँचा सुनना = केवल जोर की आवाज सुनना, कम सुनना; बहरा होना।

ऊँचाई *स्त्री.* {हिं. ऊँचा + ई (प्रत्य.)} ऊपर की ओर का विस्तार, उठान, उच्चता; गौरव, बड़ाई।

ऊँचा-नीचा *वि.* {हिं.} ऊबड़-खाबड़, जो समतल न हो; भले बुरे दोनों पक्ष; *पुं.* भला-बुरा, हानि-लाभ।

ऊँचे *क्रि. वि.* {हिं. ऊँचा} ऊँचाई पर, ऊपर की ओर; जोर से (शब्द करना)।

मुहा. ऊँचे-नीचे पैर पड़ना = बुरे काम में प्रवृत्त होना।

ऊँट *पुं.* {सं. उष्ट्र, पा. उट्ट} {*स्त्री.* ऊँटनी} एक प्रसिद्ध ऊँचा चौपाया जो सवारी और बोझ लादने में काम आता है और जो अधिकतर रेगिस्तान में सवारी के लिए उपयुक्त होता है; हठयोग में, मन।

मुहा. ऊँट को नीम ही सुहाता है = जिसे बुरी चीज का शौक हो, उसे वही भाती है; *गधा चला ऊँट की चाल* = बड़े की नकल करने में छोटा हानि उठाये; *ऊँट के मुँह में जीरा* = अधिक खानेवाले के आगे थोड़ा परोसना।

ऊँड़ा *पुं.* {सं. कुंड} वह बरतन जिसमें धन रखकर भूमि में गाड़ देते हैं; चहबच्चा, तहखाना; *वि.* गहरा, गंभीर।

ऊँदर *पुं.* {सं. इंदुर} चूहा।

ऊँहूँ *विस्मयादि.* {अनु.} नहीं; कभी नहीं, कदापि नहीं (उत्तर में); हल्का इन्कार, बनावटी इन्कार।

ऊक[1] *पुं.* {सं. उल्का} उल्का; दाह, जलन, ताप; लूक; आगे की ओर।

ऊक[2] *स्त्री.* {हिं. चूक का अनु.} भूल-चूक, गलती; प्रमाद।

ऊकना *अ.* {हिं. चूकना का अनु.} वार खाली, जाना, लक्ष्य पर न पहुँचना; भूल करना, गलती करना; निशाना चूकना; *स.* भूल जाना; उपेक्षा करना।

ऊकार *पुं.* {सं.} हिंदी वर्णमाला का ऊ अक्षर, उ का दीर्घ रूप।

ऊख[1] *पुं.* {सं. इक्षु} ईख, गन्ना।

ऊख[2] *वि.* {सं. उष्ण} तपा हुआ, गरम।

ऊखड़ *वि.* {सं.} पर्वत के नीचे की बंजर जमीन, ऊषर।

ऊखम *पुं.* ऊष्म।

ऊखल *पुं.* {सं. उलूखल} काठ या पत्थर का वह गहरा बरतन जिसमें धान, आदि मूसल से कूटते हैं, ओखली।

मुहा. ऊखल में सिर देना = झंझट या जोखिम के कान में पड़ना।

ऊज *पुं.* {सं. उद्धम} उपद्रव, ऊधम; अंधेर।

ऊजड़ *वि.* उजाड़; बस्ती न होना।

ऊजना *अ.* {हिं. पूजना} पूरा होना; परिपूर्ण होना, भरना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊजर *वि.* उजला; उजाड़।
ऊजू *पुं.* वजू।
ऊटना *अ.* {हिं. औंटना} उत्साहित होना, उमंग में आना; तर्क-वितर्क या सोच-विचार करना।
ऊटपटाँग *वि.* {हिं. ऊँट + पर + टाँग} अटपट, टेढ़ा-मेढ़ा, बेढंगा, बेमेल; निरर्थक, व्यर्थ, वाहियात।
ऊटी *स्त्री.* धागे की पूनी, दक्षिण का एक पर्वतीय पर्यटन स्थल।
ऊठ *स्त्री.* {?} उमंग; उठान; उभार।
ऊड़ना *स.* {सं. ऊढ़} विवाह करना; किसी स्त्री को रखैल बनाकर अपने पास रखना।
ऊड़ा *पुं.* {सं. ऊन} कमी, टोटा, घाटा; महँगी; अकाल; नाश, लोप; लक्ष्य, निशान।
ऊड़ी *स्त्री.* {हिं. उड़ना ?} पनडुब्बी नाम की चिड़िया; लक्ष्य, निशाना; पानी में डुबकी।
ऊढ़ *वि.* {सं.} विवाहित पुरुष, यह समास के आदि में लगता है, जैसे ऊढभार्य।
ऊढ़ना *अ.* {सं. ऊह} तर्क-वितर्क करना, सोच-विचार करना; ऊहापोह।
ऊढ़ा *स्त्री.* {सं.} विवाहित स्त्री; वह ब्याही हुई स्त्री जो अपने पति को छोड़कर दूसरे से प्रेम करे।
ऊत *वि.* {सं. अपुत्र} बिना पुत्र का, निपूता; उजड्ड; शरारती, उपद्रवी।
ऊतक *पुं.* एक ही कोशिकाओं से बना जीवों व वनस्पतियों का बीज रूप में सूक्ष्म अंश (टिशूज)।
ऊतर *पुं.* उत्तर; बहाना।
ऊतला *वि.* {हिं. उतावला} चंचल, चपल; वेगवान, तेज।
ऊद *पुं.* {अ.} अगर का पेड़ या लकड़ी; अगर की बत्ती जो सुगंध के लिए जलाते हैं, अगरबत्ती।
ऊदबिलाव *पुं.* {सं. उद् + बिडाल} नेवले की तरह का एक जंतु जो जल और स्थल दोनों में रहता है; एक जंगली पशु।
ऊदल *पुं.* {उदयसिंह का संक्षिप्त रूप} महोबे के राजा परमाल के मुख्य सामंतों में से एक वीर।
ऊदा *वि.* {अ. ऊद अथवा फा. कबद्} लाली लिए हुए काले रंग का, बैंगनी; मीराबाई की ननद।
ऊध *पुं.* {सं.} पशुओं का स्तन।
ऊधम *पुं.* {सं. उद्धम} उपद्रव, उत्पात।
ऊधमी *वि.* {हिं. ऊधम} {*स्त्री.* ऊधमिन} ऊधम करनेवाला, उत्पाती।
ऊधो *पुं.* उद्धव।
ऊन[1] *पुं.* {सं. ऊर्ण} भेड़, बकरी आदि के रोएँ जिनसे कम्बल और दूसरे गरम कपड़े बनते हैं।
ऊन[2] *वि.* {सं.} {*भाव.* ऊनता} कम, थोड़ा; तुच्छ; *पुं.* स्त्रियों के व्यवहार के लिए एक प्रकार की छोटी तलवार।
ऊनता *स्त्री.* {सं.} कमी, त्रुटि; घाटा।
ऊना *स्त्री.* = ऊन (तलवार)।
ऊनित *वि.* {सं.} कम किया गया।
ऊनी[1] *वि.* {सं. ऊन} कम, न्यून, थोड़ा; *स्त्री.* कमी, न्यूनता; उदासी।
ऊनी[2] *वि.* {सं. ऊन} ऊन का बना हुआ।
ऊप *स्त्री.* {सं. उपरि} ओप।
ऊपर *क्रि. वि.* {*वि.* ऊपरी} ऊँचे स्थान में, ऊँचाई पर; आधार पर, सहारे पर; ऊँची श्रेणी में, उच्च कोटि में; (लेख में) पहले; अधिक, ज्यादा; प्रकट में, देखने में; तट पर, किनारे पर; अतिरिक्त, सिवा।
मुहा. *ऊपर ही ऊपर* = बिना और किसी के जताए, चुपके से; *ऊपर की आमदनी* = इधर-उधर से मिलनेवाली रकम; *ऊपर-तले के* = वे दो भाई या बहनें जिनके बीच में और कोई भाई या बहनें न हुई हों; *ऊपर लेना* = (किसी कार्य का) जिम्मा लेना, हाथ में लेना; *ऊपर से* = ऊँचाई से; इसके अतिरिक्त, इसके सिवा; वेतन से अधिक आय; दिखाने के लिए; *ऊपर से देखने पर* = जो रूप दिखाई देता हो, उसके विचार से (प्राइमा फेसी)।
ऊपरी *वि.* {हिं. ऊपर} ऊपर का, बाहर का, बाहरी; कोई अदृश्य शक्ति, भूत-प्रेत आदि; बँधे हुए के सिवा; दिखौआ, नुमाइशी।
ऊब[1] *स्त्री.* {हिं. ऊबना} ऊबने की क्रिया या भाव, व्याकुलता, उद्वेग, घबराहट; तंग आना।
ऊब[2] *स्त्री.* {हिं. ऊभ} उत्साह, उमंग।
ऊबट *वि.* ऊबड़-खाबड़; *पुं.* कठिन या विकट मार्ग; नीतिविरुद्ध या बुरा मार्ग।
ऊबड़-खाबड़ *वि.* {अनु.} ऊँचा-नीचा, जो समतल न हो, अटपट।
ऊबना *अ.* {सं. उद्वेजन} उकताना, घबराना, अकुलाना।
ऊबार *पुं.* {हिं. उबरना} उबरने की क्रिया या भाव; *वि.* किसी चीज के अंदर भरे जाने पर बचा या निकला हुआ, अवशिष्ट।
ऊभ *वि.* {हिं. ऊभना} खड़ा होना; ऊँचा; ऊपर उठा या उभरा हुआ।
ऊभना *अ.* उठना; ऊबना।
ऊभा *वि.* {हिं. ऊभना} उठा हुआ; जो खड़ा हो।
ऊभी *स्त्री.* {*वि.*} खड़ी।
ऊमक *स्त्री.* {सं. उमंग} झोंक, वेग।
ऊमना *अ.* उमड़ना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ऊमर पुं. {सं. औदुबंर} गूलर।
ऊरध *वि.* ऊर्ध्व।
ऊरस *वि.* {सं. अव + रस} जिसमें रस न हो; बिना स्वाद का या बुरे स्वादवाला; पुं. नीरस या बुरे स्वादवाला पदार्थ।
ऊरु पुं. {सं.} जानु, जाँघ।
ऊरुस्तंभ पुं. {सं.} एक रोग जिसमें पैर जकड़ जाते हैं।
ऊरुज *वि.* {सं.} जाँघ से पैदा हुआ, और्व ऋषि, वडवानल।
ऊर्जस् पुं. {सं.} बल, शक्ति।
ऊर्जस्वी पुं. {सं.} बलवान, शक्तिमान; साहित्य में एक अलंकार जिसमें सहायकों के घटने पर भी अहंकार न टूटने का वर्णन होता है।
ऊर्जस्वल *वि.* {सं.} बलवान; चढ़ा हुआ।
ऊर्जा *स्त्री.* {सं.} शक्ति, जीवनशक्ति; वह शक्ति जिससे मशीनें चलती हैं; शक्तिप्रद आहार।
ऊर्जित *वि.* ऊर्ज।
ऊर्ण पुं. {सं.} ऊन।
ऊर्णा *स्त्री.* {सं.} ऊन।
ऊर्णायु पुं. {सं.} मेंढा; *वि.* ऊन का बना।
ऊर्द्ध्व *क्रि. वि.* {सं.} ऊपर; *वि.* जो ठीक और सीधा ऊपर की ओर गया हो (वर्टिकल); ऊँचा; खड़ा।
ऊर्ध्वक्रिया *स्त्री.* {सं.} अंत्येष्टि संस्कार।
ऊर्ध्वगति *स्त्री.* {सं.} मृत्यु के पश्चात् प्राप्त होनेवाली उत्तम गति।
ऊर्द्ध्वगामी (गामिन्) *वि.* {सं.} ऊपर की ओर जानेवाला; मुक्त।
ऊर्द्ध्वरेता (रेतस्) *वि.* {सं.} जिसका वीर्य कभी स्खलित न हुआ हो।
ऊर्द्ध्वलोक पुं. {सं.} आकाश।
ऊर्द्ध्वश्वास पुं. {सं.} (मरने या दम फूलने के समय) ऊपर चढ़ता हुआ श्वास।
ऊर्ध्व *क्रि. वि.* ऊर्द्ध्व।
ऊर्मि *स्त्री.* {सं.} {*वि.* ऊर्मिल} लहर, तरंग; 6 प्रकार की सांसारिक पीड़ाएँ।
ऊर्मिका *स्त्री.* {सं.} अँगूठी।
ऊर्मिल *वि.* {सं.} जिसमें लहरें उठती हों, तरंगित।
ऊर्मिमान् *वि.* {सं.} समुद्र।
ऊर्मिला *स्त्री.* लक्ष्मण की पत्नी।
ऊल-जलूल *वि.* {देश.} असंबद्ध, बेसिर-पैर का, अंडबंड; वाहियात।
ऊषा *स्त्री.* {सं.} पौ फटने की लाली, अरुणोदय।
ऊषाकाल पुं. {सं.} सवेरा।
ऊष्म पुं. {सं.} गर्मी; भाप; *वि.* गरम।
ऊष्म वर्ण पुं. {सं.} श, ष, स और ह अक्षर।
ऊष्मा *स्त्री.* {सं.} ताप; गर्मी।
ऊष्मासह *वि.* {सं.} जिस पर ताप का कोई असर न होता हो (हीटप्रूफ)।
ऊसर पुं. {सं. ऊषर} वह भूमि जिसमें रेह अधिक हो और जो खेती के योग्य न हो (बैरन लैंड)।
ऊह पुं. {सं.} अनुमान; तर्क।
ऊहापोह पुं. {सं. ऊह + अपोह} मन में होनेवाला तर्क-वितर्क, सोच-विचार; किसी विषय में तरह-तरह की सोचना।

ऋ

ऋ देवनागरी वर्णमाला का सातवाँ वर्ण, जिसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है। आजकल लोग इसका वास्तविक और मूल उच्चारण भूल गए हैं और यह 'रि' के समान बोला जाने लगा है।
ऋ *स्त्री.* {सं.} देवमाता, कश्यप की पत्नी।
ऋक् *स्त्री.* {सं.} वेदों की ऋचा; ऋग्वेद का मंत्र; पुं. ऋग्वेद।
ऋक्संहिता *स्त्री.* {सं.} ऋग्वेद का मंत्रग्रंथ।
ऋक्ष पुं. {सं.} {*स्त्री.* ऋक्षी} रीछ, भालू; तारा, नक्षत्र।
ऋक्षपति पुं. {सं.} चंद्रमा; जाम्बवान्।
ऋग्वेद पुं. {सं.} चार वेदों में से एक, जो पद्य में है।
ऋजु *वि.* {सं.} {*भाव.* ऋजुता} जो टेढ़ा न हो, सीधा; सरल, सहज; सरल चित्त का, सज्जन; जो चोरी, छलकपट आदि से सदा बचता हो, ईमानदार; अनुकूल; प्रसन्न; भोला-भाला; हितकारक।
ऋजुता *स्त्री.* {सं.} ऋजु होने का भाव; चोरी, छल-कपट आदि से सदा बचे रहने की वृत्ति, ईमानदारी (ऑनेटी); सरलता।
ऋण पुं. {सं.} {*भाव.* ऋणत्व; *वि.* ऋणी} कुछ समय के लिए ब्याज पर धन लेना, कर्ज, उधार। *मुहा. ऋण उतरना* = कर्ज अदा होना; *ऋण पटाना* = उधार लिया हुआ रुपया चुकता करना। *वि.* नकारात्मक; ऋणात्मक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋणग्राही *पुं.* {सं. ऋण + ग्रहण} वह जिसने किसी से ऋण लिया हो (बॉरोवर); कर्ज लेनेवाला।

ऋणपत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जिसके आधार पर कोई किसी से ऋण लेता है; वह पत्र जिसके आधार पर कोई संस्था जन-साधारण से ऋण लेती है (डिबेंचर)।

ऋणी *वि.* {सं. ऋणिन्} जिसने ऋण लिया हो, कर्ज लेनेवाला, अधमर्ण (डेटर); किसी के उपकार से दबा हुआ, अनुगृहीत; कर्जदार।

ऋतु *स्त्री.* {सं.} प्राकृतिक अवस्थाओं के अनुसार वर्ष के दो-दो महीने के छह विभाग जो ये हैं-वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त और शिशिर; रजोदर्शन के उपरांत वह काल जिसमें, स्त्रियाँ गर्भधारण के योग्य होती है; रजोदर्शन।

ऋतुचर्या *स्त्री.* {सं.} ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार रखना।

ऋतुमती *वि. स्त्री.* {सं.} रजस्वला; जिस (स्त्री) के रजोदर्शन के उपरांत सोलह दिन न बीतें हों और जो गर्भाधान के योग्य हो।

ऋतुराज *पुं.* {सं.} वसन्त ऋतु।

ऋतुविज्ञान *पुं.* {सं.} ऋतु-संबंधी शास्त्र।

ऋतुसंधि *स्त्री.* {सं.} दो ऋतुओं के मिलने का समय।

ऋतुस्नान *पुं.* {सं.} {*वि. स्त्री.* ऋतुस्नाता} रजोदर्शन के चौथे दिन का स्त्रियों का स्नान।

ऋत्विज *पुं.* {सं.} वह जिनका यज्ञ में वरण किया जाए, इनकी संख्या सोलह होती है जिनमें होता, अध्वर्यु, उद्‌गाता और ब्रह्मा मुख्य हैं।

ऋद्ध *वि.* {सं.} सम्पन्न, समृद्ध।

ऋद्धि *स्त्री.* {सं.} एक लता जिसका कंद दवा के काम आता है; समृद्धि, बढ़ती।

ऋद्धिमान् *वि.* {सं.} समृद्धिशाली।

ऋद्धि-सिद्धि *स्त्री.* {सं.} गणेश जी के साथ रहनेवाली उनकी दो दासियाँ, ऋद्धि और सिद्धि; सब प्रकार की समृद्धि और वैभव।

ऋषभ *पुं.* {सं.} बैल; श्रेष्ठतावाचक शब्द; संगीत के सात स्वरों में से दूसरा; एक प्राचीन राजा जो बाद में प्रथम परमहंस बने; जैनों के प्रथम तीर्थंकर, आदिनाथ।

ऋषभक *पुं.* {सं.} एक कंद जो वीर्यवर्धक और अष्टवर्ग में गिना जाता है।

ऋषि *पुं.* {सं.} {*भाव.* ऋषिता, ऋषित्व} वेदमंत्रों का प्रकाश करनेवाला, मंत्रद्रष्टा; आध्यात्मिक और भौतिक तत्वों का ज्ञाता, परम बुद्धिमान, दूरदर्शी, सच्चरित्र और त्यागी।

ऋषिकल्प *वि.* {सं.} ऋषियों के समान।

ए

ए देवनागरी वर्णमाला का ग्यारहवाँ और नागरी वर्णमाला का आठवाँ स्वरवर्ण जो अ और इ के योग से बना है। हिंदी में दीर्घ ऋ और लृ का प्रयोग न होने से इसकी स्वरों में आठवीं संख्या है।

एँचपेंच *पुं.* {फा. पेच} उलझन; दाँव-पेच।

एंजिन *पुं.* इंजन।

एकंगा *वि.* {हिं. एक + सं. अंग} {*स्त्री.* एकंगी} एक पक्ष का, एकतरफा; एकांगी।

एकंत *वि.* एकांत।

एक *वि.* {सं.} इकाइयों में सबसे छोटी और पहली पूरी संख्या, वह सबसे छोटा पूरा अंक जिससे गिनती आरंभ होती है।

मुहा. एक आँख से देखना = सबके साथ समान भाव रखना; *एक एक करके* = इस तरह कि एक के बाद एक हो; धीरे-धीरे; क्रम-से; *एकटक* = अनिमेष या स्थिर दृष्टि से; लगातार देखते हुए; *एक तार* = एक ही रूप रंग का, समान; लगातार, एक तार की चाशनी; *एक तो* = पहले तो, पहली बात तो यह है कि; *एक न चलना* = कोई युक्ति काम न आना; *एक बात* = दृढ़ प्रतिज्ञा; ठीक या सच्ची बात; एक-सा = समान, बराबर।

अद्वितीय, बेजोड़; समान, तुल्य; जिससे दूसरा कोई न हो, ईश्वर।

एकक *पुं.* {सं.} कोई एक वस्तु या समूह जो अपने में पूर्ण हो (यूनिट)।

एकचक्र *पुं.* {सं.} एक पहियेवाला; सूर्य का रथ; सूर्य; *वि.* चक्रवर्ती।

एकचक्रा *स्त्री.* {सं.} महाभारत में वर्णित एक नगरी जिसके एक राजा नराहारी राक्षस को भीम ने मारा था।

एकचर *वि.* {सं.} जो अकेला चलनेवाला या घूमनेवाला हो।

एकछत्र *वि.* {सं.} जिसमें कहीं और किसी का प्रभुत्व या अधिकार न हो, जैसे एकछत्र राज्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(एब्सोल्यूट मॉनर्की); *क्रि. वि.* एकाधिपत्य के साथ; *पुं.* {सं.} वह राज्य-प्रणाली जिसमें देश के शासक का सारा अधिकार केवल एक (राजा या अधिनायक) को प्राप्त हो।

एकज *वि.* {सं. एक + एव} एक ही पिता से उत्पन्न सगे भाई।

एकड़ *पुं.* {अं. एकर} भूमि की एक नाप जो डेढ़ बीघे से कुछ बड़ी होती है।

एकतंत्र *पुं. वि.* एकछत्र; एक के द्वारा संचालित शासन-पद्धति।

एकतः *क्रि. वि.* {सं.} एक ओर से।

एकत *क्रि. वि.* एकत्र।

एकतरफा *वि.* {फा.} एक ओर का, एक पक्ष का; जिसमें पक्षपात हुआ हो; एकरुखा, एक पार्श्व का।

एकतरफा डिगरी *स्त्री.* वह डिगरी जो मुद्दालेह के हाजिर न होने के कारण मुद्दई को प्राप्त हो।

एक तल्ला *वि.* एक मंजिलवाला मकान।

एकता[1] *स्त्री.* {सं.} सबसे मिलकर एक होने का भाव, ऐक्य (यूनिटी); समानता, बराबरी।

एकतान *वि.* {हिं. एक + तान} तन्मय, लीन, एकाग्रचित्त; मिलकर एक।

एकतारा *पुं.* {हिं. एक + तार} एक तार का सितार या बाजा, इकतारा।

एकत्र *क्रि. वि.* {सं.} एक स्थान पर।

एकत्रित *वि.* एकत्र।

एकत्व *पुं.* {सं.} एकता; एक ही तरह का या बिल्कुल एक-सा होना, पूरी समानता; अकेलापन।

एकदंत *पुं.* {सं.} गणेश।

एकदलीय *वि.* एक शासन-पद्धति जिसमें संपूर्ण देश में एक ही दल का शासन रहता है।

एकदिल *वि.* (बहु.) जिनके दिल एक हों।

एकदेशीय *वि.* {सं.} किसी एक देश, स्थान, विभाग या अंग से संबंध रखनेवाला; (सिद्धांत या नियम) जो एक ही अवसर या स्थल के लिए हो, जो सर्वत्र न घटे।

एकदैशिक *वि.* {सं.} एकदेशीय।

एकनिष्ठ *वि.* {सं.} एक ही पर निष्ठा या श्रद्धा रखनेवाला।

एकपक्षीय *वि.* {सं.} किसी एक पक्ष, दल दल या अंग से संबंध रखनेवाला, एकतरफा (युनिलेटरल)।

एकपत्नीव्रत *पुं.* {सं.} एक को छोड़कर दूसरी स्त्री से विवाह या प्रेम-संबंध न रखने का नियम।

एकपदी *स्त्री.* {सं.} पगडंडी; गायत्री मंत्र का एक भेद।

एकबारगी *क्रि. वि.* एक बार में, एक समय में; अचानक, अकस्मात्; बिल्कुल, निपट।

एकमत *वि.* {सं.} एक या समान मत रखनेवाले।

एकमात्र *वि.* {सं.} केवल एक, एक ही।

एकरंग *वि.* {हिं. एक + रंग} समान, तुल्य; कपटशून्य; जो सब तरह से एक-सा हो।

एकरदन *पुं.* {सं.} गणेश।

एकरस *वि.* {सं.} आदि से अंत तक एक-सा; जो सदा एक-सा रहे।

एकरूप *वि.* {सं.} {*भाव.* एकरूपता} रूप, बनावट, प्रकार आदि के विचार से एक-सा या औरों से बिल्कुल मिलता-जुलता हुआ (यूनिफॉर्म); जो सदा एक-सा रहे जब आकार प्रकार आदि से कोई भेद मालूम न पड़े।

एकरूपता *स्त्री.* {सं.} रूप, बनावट, प्रकार आदि के विचार से एक-सा या औरों के समान होने की अवस्था या भाव (युनिफॉर्मिटी)।

एकल *वि.* {हिं. एक} अकेला; अनुपम, बेजोड़; एक से संबंध रखनेवाला, जिसमें एक ही हो; अद्वितीय।

एकलव्य *पुं.* {सं.} निषादराज हिरण्यधनु का पुत्र जिसने द्रोणाचार्य की प्रतिमा को गुरु मानकर धनुर्विद्या का अभ्यास किया था।

एकलिंग *पुं.* {सं.} शिवलिंग जो मेवाड़ के गहलौत राजपूतों के कुलदेवता हैं।

एकलौता *वि.* इकलौता।

एकवचन *पुं.* {सं.} व्याकरण में वह वचन जिससे एक का बोध होता है (सिंग्युलर)।

एकवस्त्रा *वि.* {सं.} रजस्वला स्त्री।

एकवर्षी *वि.* {सं. एक + वर्ष} (पेड़ या पौधा) जो एक ही वर्ष तक रहकर नष्ट हो जाता हो (एनुअल); एक वर्ष की अवधि का।

एकवेणी *स्त्री.* {सं.} वह स्त्री जो अपने बालों की एक ही लट या वेणी बनाकर रखती हो (वियोगिनी या विधवा का लक्षण)।

एकशेष *पुं.* {सं.} द्वंद्व समास का एक भेद जिसमें एक ही पद बाकी रहता है।

एकसमान *वि.* {सं.} {*भाव.* एकसमानता} एक-जैसा, समतुल्य; जिसमें परिवर्तन न हो।

एकसर *वि.* {हिं. एक + सर (प्रत्य.)} एक पल्ले या परत का।

एकसाँ *वि.* {फा. यकसाँ} तुल्य, समान।

एकसूत्र *पुं.* {सं.} डमरू; परस्पर एकता।

एकहत्था *वि.* {हिं. एक + हाथ} (काम या व्यवसाय) जो एक ही के हाथ में हो।

एकांकी *पुं.* {सं.} दस प्रकार के रूपकों में से एक (इसमें ऐसे प्रसिद्ध नायक का चरित्र होता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, जिसका आख्यान रसयुक्त हो; इसकी भाषा सरल और वाक्य छोटे होने चाहिए); वह नाटक जो एक ही अंक में समाप्त हो।

एकांगी *वि.* {सं.} एक अंगवाला; एकतरफा; हठी, जिद्दी।

एकांड *वि.* {सं.} नपुंसक का एक भेद, वह पुरुष जिसका एक ही अंडकोश हो।

एकांत *वि.* {सं.} अत्यंत, बिल्कुल; सूना; *पुं.* {सं.} निर्जन या सूना स्थान।

एकांतर, एकांतरित *वि.* {सं.} बीच में एक अथवा एक-एक को छोड़कर उसके बाद होने या एक-एक को छोड़कर उनके परवर्ती से संबंध रखनेवाला (आल्टरनेट)।

एकांतवास *पुं.* {सं.} {*वि.* एकांतवासी} निर्जन स्थान या अकेले में रहना।

एकांतिक *वि.* एकदेशीय।

एका[1] *स्त्री.* {सं.} दुर्गा।

एका[2] *पुं.* {सं. ऐक्य} बहुत से लोगों के मिलकर एक होने का भाव, एकता।

एकाएक *क्रि. वि.* {हिं. एक} अकस्मात्, अचानक, सहसा।

एकाकार *पुं.* {सं.} किसी के साथ मिल-मिलाकर एक होने की दशा; *वि.* एक-से आकार का, समान; कइयों के योग से जिसने एक रूप या आकार धारण कर लिया हो; जो किसी में मिलकर उसी के आकार का हो गया हो।

एकाकारिता *स्त्री.* {सं.} एकाकार होने का गुण या धर्म।

एकाकी *वि.* {सं. एकाकिन्} {*स्त्री.* एकाकिनी} अकेला; असहाय।

एकाकीपन *पुं.* {सं. एकाकी + हिं. पन (प्रत्य.)} अकेलापन।

एकाक्ष *वि.* {सं.} जिसकी एक ही आँख हो, काना; एक ही अक्ष पर घूमनेवाला; *पुं.* कौआ; शुक्राचार्य।

एकाक्षर (मंत्र) *वि.* {सं.} एक ही अक्षरवाला अं, रं. श्री आदि।

एकाग्र *वि.* {सं.} {*भाव.* एकाग्रता} एक रूप में स्थिर, चंचलता-रहित; जिसका ध्यान एक ओर लगा हो।

एकाग्रता *स्त्री.* {सं.} मन के एकाग्र होने की दशा, वृत्ति या भाव (एसिडुइटी); मन का एक ओर लगना, दत्तचित्तता।

एकात्मता *स्त्री.* {सं.} एकता, अभेद; मिल-मिलाकर एक होना; रूप, प्रकृति, गुण आदि के विचार से किसी के इतना समान होना कि दोनों एक जान पड़ें (आइडेंटिटी)।

एकात्मवाद *पुं.* {सं.} {*वि.* एकात्मवादी} यह सिद्धांत कि सारे संसार के प्राणियों और वस्तुओं में एक ही आत्मा व्याप्त है।

एकादश *वि.* {सं.} ग्यारह; *स्त्री.* ग्यारह खिलाड़ियों की टीम।

एकादशक *पुं.* {सं.} क्रिकेट आदि के खेल में दल के ग्यारह खिलाड़ियों का वर्ग।

एकादशाह *पुं.* {सं.} मरने के दिन से ग्यारहवें दिन का कृत्य (हिन्दू)।

एकादशी *स्त्री.* {सं.} चान्द्र मास के शुक्ल और कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं तिथि जिसे व्रत का दिन माना जाता है।

एकाधिक *वि.* {सं. एक + अधिक} एक से अधिक, कई।

एकाधिकार *पुं.* {सं.} किसी वस्तु, कार्य या व्यापार आदि पर किसी व्यक्ति, दल या समाज का होनेवाला पूरा-पूरा अधिकार (मॉनोपोली)।

एकाधिपत्य *पुं.* {सं.} किसी संस्था या देश पर एक व्यक्ति या दल या समाज का होनेवाला आधिपत्य; एकाधिकार।

एकायन *पुं.* {सं.} वैष्णवों का एक संप्रदाय।

एकार *पुं.* ए स्वर।

एकार्थक *वि.* {सं.} जिसका एक ही अर्थ हो; जिसके अर्थ समान हों, समानार्थक।

एकार्णवा *वि.* {सं.} जब केवल समुद्र मात्र रह जाए, ऐसी स्थिति।

एकावली *स्त्री.* {सं.} साहित्य में एक अलंकार जिसमें पूर्व का और पूर्व के प्रति उत्तरोत्तर वस्तुओं का विशेष भाव से स्थापन अथवा निषेध दिखलाया जाता है; एक लड़ी का हार।

एकाह *वि.* {सं.} एक दिन में पूरा होनेवाला, जैसे रामायण का एकाह पाठ।

एकीकरण *पुं.* {सं.} {*वि.* एकीकृत} दो या अधिक वस्तुओं को मिलाकर उनमें एकता स्थापित करना (युनिफिकेशन)।

एकीभूत *वि.* {सं.} मिला हुआ, मिश्रित; जो मिलकर एक हो गया हो।

एकेंद्रिय *पुं.* {सं.} वह जीव जिसके केवल एक इंद्रिय अर्थात् त्वचा मात्र होती है, जैसे जोंक, केंचुआ आदि।

एकेश्वरवाद *पुं.* {सं.} एकमात्र ईश्वर की सत्ता का सिद्धांत।

एकोद्दिष्ट (श्राद्ध) *पुं.* {सं.} एक श्राद्ध जो एक पितर के उद्देश्य से किया जाए।

एक्का *वि.* {हिं. एक + का (प्रत्य.)} एक से संबंध रखनेवाला; अकेला; *पुं.* वह पशु या पक्षी जो अकेला चरता या घूमता हो; एक प्रकार की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो पहियों की गाड़ी जिसमें एक घोड़ा जोता जाता है; वह वीर या सैनिक जो अकेला बड़े-बड़े काम कर सकता है; ब्रह्म का वाचक शब्द।

एक्का-दुक्का *वि.* अकेला-दुकेला।

एक्कावान *पुं.* {हिं. एक्का + वान (प्रत्य.)} एक्का नाम की सवारी हाँकनेवाला।

एक्की *स्त्री.* {हिं. एक} वह बैलगाड़ी जिसमें एक ही बैल जोता जाए; एक्का।

एक्सरे *पुं.* {अं.} एक प्रकार की बिना चमकवाली विद्युत किरणें जिनकी सहायता से ठोस पदार्थों के भीतरी अंगों के चित्र लिए जाते हैं।

एजेंट *पुं.* {अं.} वह जो किसी की ओर से उसका प्रतिनिधि या अधीनस्थ होकर काम करता है, अभिकर्ता।

एजेंसी *स्त्री.* अभिकरण।

एड़ *स्त्री.* {सं. एडुक} एड़ी।

मुहा. एड़ करना = एड़ लगना; चलना, रवाना होना; *एड़ देना या लगाना* = लात मारना, घोड़े को आगे बढ़ाने के लिए एड़ से मारना, उकसाना, उत्तेजित करना, बाधा डालना।

एड़ी *स्त्री.* {सं. एडुक = हड्डी} पैर के नीचे का पिछला भाग।

मुहा. एड़ियाँ रगड़ना = बहुत दौड़-धूप करना, बहुत दिनों से क्लेश या बीमारी में पड़े रहना; *एड़ी से चोटी तक* = पूरी या पूरा जोर लगाना, आदि से अंत तक।

एड़क *पुं.* {सं.} मेंढा।

एत *वि.* = इतना।

एतद् *सर्व.* {सं.} यह।

एतदर्थ *क्रि. वि.* {सं.} इनके लिए; *वि.* तदर्थ।

एतदवधिक *वि.* {सं.} इतनी अवधि तक का।

एतद्देशीय *वि.* {सं.} इस देश का।

एतना *वि.* = इतना।

एतबार *पुं.* {अ.} विश्वास, प्रतीति।

एतराज *पुं.* {अ.} विरोध, आपत्ति।

एतवार *पुं.* {सं. आदित्यवार} शनिवार के बाद का और सोमवार से पहले का दिन, रविवार।

एता *वि.* {*स्त्री.* एती} इतना।

एतिक *वि.* {हिं. एती} इतनी।

एती *वि., स्त्री.* = इतनी।

एमन *वि.* {*स्त्री.* एमनी} ऐसा; *पुं.* ईमान।

एरंड *पुं.* {सं.} रेंड़, रेड़ी।

एरंड खरबूजा *पुं.* पपीता।

एराक *पुं.* {अ.} {*वि.* एराकी} = ईराक।

एराकी *वि.* {फा.} = ईराकी।

एलची *पुं.* {तु.} दूत; राजदूत।

एला *स्त्री.* {सं.} इलायची।

एल्यूमिनम *पुं.* {अं. एल्यूमिनिअम} मटमैले रंग की एक प्रसिद्ध हल्की धातु जिससे बरतन आदि बनते हैं; इसे साधारणरूप से सिल्वर भी कहते हैं।

एवं *क्रि. वि.* {सं.} ऐसे ही, इसी प्रकार।

एव *निपा.* {सं.} एक निश्चयार्थक शब्द, ही।

एवज *पुं.* {अ.} प्रतिफल, प्रतिकार; परिवर्तन, बदला; दूसरे की जगह पर कुछ दिनों के लिए काम करनेवाला, स्थानापन्न पुरुष।

एवजी *स्त्री.* एवज; किसी के बदले कुछ दिन काम करने की स्थिति।

एवमस्तु *पद* {सं.} ऐसा ही हो (शुभ आशीर्वाद)।

एषण *पुं.* {सं.} जाना, गमन; छानबीन, अन्वेषण; तलाश, खोज; इच्छा; लोहे का बाण; भेजना।

एषणा *स्त्री.* {सं.} इच्छा, अभिलाषा।

एह *सर्व., वि.* यह।

एहतमाल *पुं.* {अ.} रक्षा आदि के लिए किया जानेवाला प्रयत्न या बरती जानेवाली सतर्कता।

एहतमाली *वि.* {अ.} जिसमें सतर्कता का भाव या विचार हो; (भूमि) जिसके संबंध में दैवी विपत्तियों आदि की आशंका बनी रहती हो (प्रिकेरियस)।

एहतियात *स्त्री.* {अ. इहतियात} {*वि.* एहतियाती} बुरे या अनुचित काम से बचना, परहेज; रक्षा, बचाव; सतर्कता, सावधानी।

एहसान *पुं.* {अ.} कृतज्ञता, निहोरा।

एहसानमंद *वि.* {*वि.*} कृतज्ञ।

एहाता *पुं.* मकान का दीवार से घिरा क्षेत्र।

एहि *स्त्री.* {हिं. एह} एह का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने पर प्राप्त होता है इसको, इसे।

ऐ

ऐ देवनागरी वर्णमाला का नवाँ स्वर वर्ण, जिसका उच्चारण स्थान कंठ और तालु है; विस्मादिबोधक रूप में इसका व्यवहार संबोधन के लिए होता है।

ऐं *विस्मयादि.* {अनु.} एक शब्द जिसका प्रयोग अच्छी तरह न सुनी हुई बात फिर से जानने के लिए होता है; एक आश्चर्यसूचक शब्द।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by ... Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐंग्लो-इण्डियन *वि.* अंग्रेज और भारतीय माता-पिता की संतान।

ऐंग्लोवैदिक *वि.* अंग्रेजी और वेदों से संबद्ध संस्था।

ऐंचना *स.* {हिं. खींचना} खींचना; दूसरे का कर्ज अपने जिम्मे लेना।

ऐंचा *वि.* भैंगा, तिरछी आँखवाला।

ऐंचाताना *वि.* {हिं. ऐंचना + तानना} ताकने में जिसकी पुतली दूसरी ओर को खिंचती हो, भैंगा।

ऐंचातानी *स्त्री.* खींचतान।

ऐंचीला *वि.* खिंचने योग्य।

ऐंटीना, ऐंटेना *पुं.* {अं.} वह तार जो विद्युत की चुंबकीय तरंगों का प्रेषण का ग्रहण करता हो।

ऐंठ *स्त्री.* {हिं. ऐंठन} ऐंठने की क्रिया या भाव; अकड़, ठसक; गर्व, घमंड; शान।

ऐंठन *स्त्री.* {हिं. ऐंठना} ऐंठने की क्रिया या भाव; मरोड़, बल; तनाव; अकड़।

ऐंठना *स.* {सं. आवेष्टते} घुमाव या बल देना, मरोड़ना; दबाव डालकर या धोखा देकर लेना; *अ.* बल खाना, घुमाव के साथ तनना; तनना, खिंचना; मरना; अकड़ दिखाना, घमंड करना।

ऐंडदार *वि.* {हिं. ऐंड + फा. दार} ठसकवाला, घमंडी; बाँका-तिरछा; अकड़नेवाला।

ऐंड़ना *अ.* {सं. अवगुंठन} ऐंठना, बल खाना; अँगड़ाई लेना; इतराना, घमंड करना; *स.* ऐंठना या बल देना।

ऐंड़बैंड़ *वि.* अंडबंड।

ऐंड़ा *वि.* {सं. अकांड, प्र. अयंड} {*स्त्री.* ऐंडी} ऐंठा हुआ, टेढ़ा; घमंडी, अकड़ा हुआ।

ऐंड़ा-बैंड़ा *वि.* {सं. अकांड + विकांड} जो अपनी ठीक स्थिति में न हो; टेढ़ा, तिरछा; ऊटपटाँग।

ऐंद्रजालिक *पुं.* {सं.} इंद्रजाल के खेल करनेवाला, जादूगर।

ऐंपियर *पुं.* {अ.} वह मानक इकाई जिससे विद्युत्प्रवाह की शक्ति मापी जाती है।

ऐकपदिक *वि.* {सं.} केवल एक शब्द से संबद्ध।

ऐकमत्य *पुं.* {सं.} किसी विषय में कुछ लोगों के एकमत होने का भाव, मतैक्य (यूनैनिमिटी)।

ऐकांतिक *वि.* {सं.} एकांत-संबंधी, एकांत का, जैसे एकांतिक निवास; सबसे अलग और निराला; विशेष रूप से किसी एक ही विषय, व्यक्ति या कार्य के लिए रक्षित या व्यासिद्ध (एक्स्कलूसिव); जो व्यापक न हो।

ऐक्य *पुं.* एकता।

ऐक्ष्वाक, ऐक्ष्वाकव *वि.* {सं.} इक्ष्वाकु के कुल से संबद्ध।

ऐगुन *पुं.* अवगुण।

ऐच्छिक *वि.* {सं.} अपनी इच्छा या पसंद से किया, लिया या दिया जानेवाला; जिससे करना या न करना अपनी इच्छा पर हो, वैकल्पिक (ऑपशनल); पसंद पर निर्भर।

ऐतिहासिक *वि.* {सं.} {*भाव.* ऐतिहासिकता} इतिहास-संबंधी; जो इतिहास में हो।

ऐतिह्य *पुं.* {सं.} यह प्रमाण कि लोक में बहुत दिनों से ऐसा ही सुनते आए हैं; इतिहास।

ऐन[1] *पुं.* अयन।

ऐन[2] *वि.* {अ.} ठीक, उपयुक्त, सटीक।

ऐनक *स्त्री.* {अ. ऐन = आँख} आँखों में लगाने का चश्मा।

ऐन्द्रिय *वि.* {सं.} इंद्रियों से संबंध रखनेवाला, वाली।

ऐपन *पुं.* {सं. लेपन} हल्दी के साथ गीला-पिसा हुआ चावल जिससे देवताओं की पूजा में थापा लगाते हैं।

ऐब *पुं.* {अ.} {*वि.* ऐबी} दोष; अवगुण; बुरी आदतें।

ऐबी *वि.* {अ.} जिसमें ऐब हो, खोटा, बुरा; नटखट, दुष्ट; विकलांग, विशेषत: काना।

ऐयार *पुं.* {अ.} {*स्त्री.* ऐयारा, *भाव.* ऐयारी} चालाक, धूर्त या धोखेबाज व्यक्ति; वह जो भेस बदलकर विकट और विलक्षण कार्य करता हो; तिलिस्मी उपन्यासों का एक प्रमुख पात्र।

ऐयाश *वि.* {अ.} {*भाव.* ऐयाशी} बहुत ऐश या आराम करनेवाला; विषयी, लंपट; विलासी; आरामपसंद (सैक्सी)।

ऐरा-गैरा *वि.* {अ. गैर} बेगाना, अजनबी; तुच्छ, हीन।

मुहा. ऐरा-गैरा नत्थू खैरा = अवांछित, बेकार का आदमी।

ऐरापति *पुं.* ऐरावत।

ऐरावत *पुं.* {*स्त्री.* ऐरावती} बिजली से चमकता हुआ बादल; इंद्रधनुष; इंद्र का हाथी जो पूर्व दिशा का दिग्गज है।

ऐरावती *स्त्री.* {सं.} ऐरावत हाथी की हथिनी; बिजली; रावी नदी; इरावती।

ऐल[1] *पुं.* {सं.} इला का पुत्र, पुरूरवा।

ऐल[2] *पुं.* {?} बाढ़; अधिकता, बहुतायत; कोलाहल।

ऐश *पुं.* {अ.} भोग-विलास।

ऐश्वर्य *पुं.* {सं.} विभूति, धन-संपत्ति; अणिमा आदि सिद्धियाँ; प्रभुत्व, आधिपत्य।

ऐश्वर्यवान, ऐश्वर्यवान् *वि.* {सं.} {*स्त्री.* ऐश्वर्यवती} वैभवशाली, संपन्न।

ऐश्वर्यशाली *वि.* {सं.} ऐश्वर्यवान्।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐस *वि.* ऐसा।
ऐसन *वि.* = ऐसा (अवधी)।
ऐसा *वि.* {सं. ईदृश} {*स्त्री.* ऐसी} इस प्रकार का, इस ढंग का।
ऐसा-वैसा *वि.* साधारण या तुच्छ।
ऐसे *क्रि. वि.* {हिं. ऐसा} इस प्रकार।
ऐसो *वि.* = ऐसा (व्रज)।
ऐहलौकिक *वि.* {सं.} इस लोक का, इस लोक से ही संबद्ध।
ऐहिक *वि.* {सं.} जिसका संबंध केवल इस लोक या संसार से हो, परलोक, अध्यात्म आदि से न हो, लौकिक, सांसारिक (सेक्युलर)।

ओ

ओ देवनागरी वर्णमाला का दसवाँ स्वर वर्ण जिसका उच्चारण ओष्ठ और कंठ से होता है। विस्मयादि बोधक के रूप में यह संबोधन तथा आश्चर्यसूचक शब्द के रूप में प्रयुक्त होता है।
ओं *पुं.* {सं.} परब्रह्म का वाचक शब्द, प्रणव मंत्र।
ओंकना *अ.* {अनु.} (मन का) हट या फिर जाना; *अ.* ओकना।
ओंकार *पुं.* {सं.} परमात्मा का सूचक 'ओं' शब्द।
ओंगा *पुं.* {सं. अपमार्ग} चिचड़ा, सज्जी; पं. पुठकण्डा।
ओंठ *पुं.* {सं. ओष्ठ, प्रा. औट्ठ} मुँह के बाहर ऊपर-नीचे उभरे हुए अंश जिनसे दाँत ढके रहते हैं, होंठ।
मुहा. ओंठ काटना या चबाना = चुप रहकर केवल मुद्रा से क्रोध प्रकट करना; *ओंठ चाटना* = कोई वस्तु खा चुकने पर स्वाद के लालच से ओंठों पर भी जीभ फेरना।
ओंड़ा *वि.* {सं. कुंड} गहरा; *पुं.* गड्ढा; सेंध।
ओ *पुं.* {सं.} ब्रह्मा।
ओक[1] *पुं.* {सं.} घर, निवासस्थान; आश्रय, ठिकाना।
ओक[2] *स्त्री.* {अनु.} मिचली, कै।
ओक[3] *पुं.* {हिं. बूक} हथेली की पात्र के समान मुद्रा, अंजलि।
ओकना *अ.* {अनु.} कै करना; हथेली में ग्रहण करना।
ओकपति *पुं.* {सं.} सूर्य; चंद्रमा।
ओकाई *स्त्री.* {हिं. ओकना} वमन, कै।
ओखली *स्त्री.* परती जमीन; ऊखल।
ओखा *पुं.* {सं. ओख} मिस, तंग, बहाना; *वि.* {*भाव.* ओखापन} रूखा-सूखा; कठिन, विकट; जो शुद्ध या खालिस न हो, खोटा; विरल।
ओखाण, ओखान *पुं.* उपाख्यान।
ओघ *पुं.* {सं.} समूह, ढेर; घनत्व, घनापन; बहाव; धारा।
ओछा *वि.* {सं. अप + तुच्छक} {*भाव.* ओछापन} {*स्त्री.* ओछी} जो गंभीर या उच्चाशय न हो, तुच्छ, क्षुद्र, छिछोरा; जो गहरा न हो, छिछला; हलका, जैसे ओछा वार।
ओज *पुं.* {सं. ओजस्} प्रताप, तेज; उजाला, प्रकाश, रोशनी; कविता का वह गुण जिससे सुननेवाले के चित्त में वीरता आदि का आवेश उत्पन्न हो; शरीर के अंदर के रसों का सार भाग।
ओजस्विता *स्त्री.* {सं.} तेज, कांति।
ओजस्वी *वि.* {सं. ओजस्विन्} {*स्त्री.* ओजस्वनी} शक्तिशाली; प्रभावशाली।
ओझ *पुं.* पेट, अँतड़ी।
ओझर *पुं.* {सं. उदर, हिं. औझल} पेट की थैली, पेट; आँत।
ओझल *क्रि. वि.* ओट में; *वि.* दृष्टि से बाहर।
ओझा *पुं.* {सं. उपाध्याय} सरजूपारी और गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति; मैथिली की उपाधि; भूत-प्रेत झाड़नेवाला, सयाना।
ओझाई *स्त्री.* {हिं. ओझा} ओझा की वृत्ति, भूत-प्रेत झाड़ने का काम; ओझागिरि।
ओट *स्त्री.* {सं. उट = घास-फूस} ऐसी रोक जिससे सामने की वस्तु दिखाई न पड़े व्यवधान, आड़; शरण, पनाह, रक्षा; अपट।
ओटना[1] *स.* {सं. आवर्तन} कपास को चरखी में रखकर रुई और बिनौले अलग-अलग करना; बराबर अपनी ही बात करते जाना; पूनी बनाना।
ओटना[2] *अ.* {हिं. ओट} अपने ऊपर सहना।
ओटनी *स्त्री.* {हिं. ओटनी} कपास ओटने की चरखी, बेलनी; ओटन।
ओटा *पुं.* {हिं. ओटा} ओट या आड़ करने के लिए खड़ी की हुई दीवार।
ओठँगना *अ.* उठँगना।
ओठ *पुं.* होंठ।
ओड़न *स्त्री.* {हिं. ओड़ना} ओड़ने की क्रिया या भाव; वह चीज जिससे वार या आघात रोका जाए; आड़ करने या रोकनेवाली चीज; ढाल, फरी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओड़ना *स.* {हिं. ओट} रोकना, फैलाना, पसारना, जैसे आँचल या ओली ओड़ना; (आघात या प्रहार) अपने ऊपर लेना।

ओड़ा *पुं.* {?} ओटा; बड़ा टोकरा, खाँचा; कमी, टोटा।

ओड़ी *स्त्री.* नीवार, सवाँ।

ओढ़ *वि.* पास आया हुआ।

ओढ़न *स्त्री.* ओड़न।

ओढ़ना *स.* {सं. उपवेष्टन} शरीर के किसी भाग को वस्त्र आदि से आच्छादित करना; अपने सिर लेना, अपने ऊपर या जिम्मे लेना; *पुं.* ओढ़ने का वस्त्र, चादर।

ओढ़नी *स्त्री.* {हिं. ओढ़ना} स्त्रियों के ओढ़ने का वस्त्र या चादर।

ओढ़ाना *पुं.* विधवा से विवाह करना।

ओतप्रोत *वि.* {सं.} बहुत मिला-जुला, इतना मिला हुआ कि उसे अलग-अलग करना असंभव-सा हो; व्याप्त, अंदर फैला हुआ।

ओता *वि.* उतना।

ओदन *पुं.* {सं.} पका हुआ चावल; भात।

ओदर *पुं.* उदर।

ओदरना *अ.* {हिं. ओदारना} विदीर्ण होना, फटना; छिन्न-भिन्न करना, नष्ट करना; गिरना, ढहना।

ओदा *वि.* {*स्त्री.* ओदी} गीला।

ओदारना *स.* {सं. अवदारण} विदीर्ण करना, फाड़ना; छिन्न-भिन्न करना, नष्ट करना; चीरना।

ओधना *स.* {सं. आबद्ध} काम का उपक्रम करना, ठानना, जैसे युद्ध ओधना।

ओनंत *वि.* {सं. अनुन्नत} झुका हुआ; नत; अवनत।

ओनवना *अ.* {सं. अनुन्नत} झुकना; उमड़ना; *स.* झुकाना; उमड़ने में प्रवृत्त करना।

ओनहना *अ.* उनवना।

ओना *पुं.* {सं. उद्गम} तालाब में से पानी निकलने का मार्ग, निकास।

ओनाना *अ.* {सं. उन्नयन ?} किसी ओर उठना, लगना या प्रवृत्त होना; कान लगाकर सुनना; *स.* किसी ओर लगना या प्रवृत्त करना।

ओनामासी *स्त्री.* {सं. ॐ नमः सिद्धम्} पढ़ाई का आंरभ; आरंभ, शुरू।

ओप *स्त्री.* {हिं. ओपना} चमक, दीप्ति, आभा, कांति; शोभा, जिला (पॉलिश)।

ओपची *पुं.* {सं. ओप} कवचधारी योद्धा।

ओपना *स.* {सं. आवपन} चमकाना।

ओपनि *स्त्री.* ओप।

ओपनी *स्त्री.* {हिं. ओपना} यशब या अकीक पत्थर का वह टुकड़ा जिससे रगड़कर चित्र पर का सोना या चाँदी चमकाते हैं, बट्टी; तलवार चमकाने का साधन।

ओपी *वि.* {हिं. ओप} प्रकाशमान, चमकीला।

ओबरी *स्त्री.* {?} कोठरी (पूरब); मकान के नीचे की कोठरी, गर्भकक्ष।

ओम् *पुं.* ओंकार।

ओर *स्त्री.* {सं. अवार} किसी नियत स्थान के आसपास का विस्तार जिसे दाहिना, बायाँ, ऊपर, सामने आदि शब्दों से सूचित करते हैं, तरफ, दिशा; पक्ष; अभिमुख; *पुं.* सिरा, छोर, किनारा।
मुहा. ओर निभाना = अंत तक साथ देना।
आदि, आरंभ।

ओरमना *अ.* लटकना।

ओराना *अ.* {हिं. ओर} समाप्त होना; *स.* समाप्त करना, खत्म करना।

ओराहना *पुं.* उलाहना।

ओरी *स्त्री.* ओलती।

ओलंदेज, ओलंदेजी *वि.* {हॉलैंड (देश)} हॉलैंड देश-संबंधी, हॉलैंड देश का; *पुं.* हॉलैंड देश का निवासी।

ओलंबा *पुं.* उलाहना।

ओल[1] *पुं.* {सं.} सूरन, जिमीकंद।

ओल[2] *स्त्री.* {सं. क्रोड} गोद; आड़, ओट; शरण, पनाह; बहाना, मिस; स्मृति, याद; विरह, वियोग; किसी वस्तु या प्राणी का किसी दूसरे के पास जमानत के रूप में तब तक रहना, जब तक कुछ रुपया न मिले या कोई शर्त पूरी न हो; वस्तु या व्यक्ति जो इस प्रकार जमानत में रहे।

ओलगिया *पुं.* {राज.} परदेशी।

ओलना[1] *पुं.* {हिं. ओल} परदा करना, आड़ करना; रोकना; ऊपर सहना।

ओलना[2] *पुं.* {हिं. ओल} परदा, ओट; गुप्त बात, भेद।

ओला *प्रत्य.* {सं. पोतलक, प्रा. ओलअ = बच्चा या छोटा रूप} एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अंत में लगकर किसी चीज के बच्चे अथवा छोटे या आरंभिक रूप का अर्थ देता है, जैसे साँप से सँपोला, खाट से खटोला आदि; बर्फ के गोले जो आकाश से बरसते हैं।

ओलियाना[1] *स.* {हिं. ओल = गोद} गोद में भरना; गिराकर ढेर लगाना; बलपूर्वक घुसाना।

ओलियाना[2] *स.* {हिं. हूलना} घुसाना।

ओली *स्त्री.* {हिं. ओल} गोद; झोली; आँचल।
मुहा. ओली ओड़ना = आँचल फैलाकर कुछ माँगना।

ओवरकोट *पुं.* {अं.} कोट के ऊपर पहना जानेवाला बड़ा कोट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओवरड्राफ्ट पुं. {अं.} बैंक के खाते में जमा राशि से अधिक राशि (बैंक की अनुमति से) निकालना।
ओवरसियर पुं. {अं.} इंजीनियर के अधीन का निरीक्षक।
ओषधि *स्त्री.* {सं.} वह वनस्पति या जड़ी-बूटी जो दवा के काम आती है।
ओष्ठ पुं. {सं.} होठ, ओंठ।
ओष्ठ्य *वि.* {सं.} ओंठ-संबंधी; (वर्ण) जिसका उच्चारण ओंठ से हो, जैसे उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म (लैबिएल)।
ओस *स्त्री.* {सं. अवश्याय} हवा में मिली हुई भाप जो रात की सरदी से जमकर कणों के रूप में गिरती है; शबनम।
मुहा. ओस पड़ना या पड़ जाना = कुम्हलाना।
ओसरी *स्त्री.* {सं. अवसर} पारी, बारी।
ओसाना *स.* {सं. आवर्षण} {*भाव.* ओसाई} दाँए हुए अनाज को हवा में उड़ाना, जिससे भूसा अलग हो जाए, बरसाना, डाली देना; पुनना।
ओसार पुं. {सं. प्रसार} फैलाव, विस्तार।
ओह *विस्मयादि.* {अनु.} आश्चर्य, दुख या बेपरवाही का सूचक शब्द।
ओहदा पुं. {अ.} किसी विभाग में कार्यकर्ता का पद या स्थान।
ओहदेदार पुं. पदाधिकारी।
ओहार पुं. {सं. अवधार} रथ या पालकी के ऊपर आड़ करने का कपड़ा।
ओहो *अ.* विस्मयसूचक शब्द।

औ

औ देवनागरी वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वर वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान कंठ और ओष्ठ है। यह अ और ओ के संयोग से बना है। योजक के रूप में कविता में यह 'और' का अर्थ देता है। 'अव' 'अप' के अपभ्रष्ट रूप में प्रयुक्त होता है।
औंगना *स.* {सं. अंचन} गाड़ी के पहियों की धुरी में तेल देना।
औंगा *वि.* {*भाव.* औंगी} गूँगा; अवाक्।
औंघना *अ.* ऊँघना।
औंजना[1] *अ.* {सं. उद्वेजन} ऊबना।
औंजना[2] *स.* {देश.} झालना, उँडेलना।
औंटना *अ.* औटाना।
औंटाना *स.* औटाना।
औंठ *स्त्री.* {सं. ओष्ठ} उठा या उभड़ा हुआ किनारा, बारी, बाढ़।
औंड़ पुं. {सं. कुंड} मिट्टी खोदनेवाला मजदूर, बेलदार।
औंदना *अ.* {सं. उन्माद या उद्विग्न} उन्मत्त या बेसुध होना; व्याकुल होना, घबराना; उन्मादी होना।
औंधा *वि.* {सं. अव + मूर्ध} {*स्त्री.* औंधी} जिसका मुँह नीचे की ओर हो, उलटा; पेट के बल लेटा हुआ, पट।
मुहा. औंधी खोपड़ी = मूर्ख, जड़; *औंधे मुँह गिरना* = धोखा खाना।
औंधाना *स.* {सं. अधः} ऊपर का भाग नीचे और नीचे का ऊपर करना, औंधा करना, उलटना; लटकाना।
औंरा पुं. आँवला।
औंस पुं. एक अंग्रेजी वज़न या नाप जो हिन्दी के आधी छटाँक के बराबर होता है।
औंस *स्त्री.* उमस।
औंसना *अ.* {हिं. उमस} उमस होना।
औकात *स्त्री.* {सं. वक्त का बहु.} वक्त, समय; हैसियत, बिसात, वित्त।
औगत *स्त्री.* {सं. अवगति} दुर्गति; मालूम; *वि.* अवगत।
औगाहना *स.* अवगाहना।
औगुन पुं. अवगुण।
औघट *वि.* अवघट; अपघट।
औघड़[1] पुं. {*स्त्री.* औघड़िन} अघोरी।
औघड़[2] *वि.* {सं. अव = घट} अटपट, अनगढ़, अंडबंड, उलटा-पुलटा।
औचक पुं. {हिं. अव + चट = जल्दी} अचानक का भाव; कठिनाई या असमंजस की स्थिति, सहसा, चौंका; *क्रि. वि.* अकस्मात्, अचानक; *क्रि. वि.* अचानक।
औचट *स्त्री.* {?} संकट, कठिनता; ध्यान भंग, मन उचटना।
औचिंत *वि.* {सं. अव + चिन्ता} निश्चिंत; बेखबर।
औचित्य पुं. {सं.} उचित या ठीक होने का भाव, उपयुक्तता।
औज पुं. ओज।
औजार पुं. {अ. औज़ार} वे यंत्र जिनसे लोहार, बढ़ई आदि कारीगर अपना काम करते हैं, हथियार, उपकरण।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औझड़ *क्रि. वि.* {सं. अव + हिं. झड़ी} लगातार, निरंतर; *वि.* झक्की; अक्खड़।
करते हैं, हथियार, उपकरण।

औझड़ *क्रि. वि.* {सं. अव + हिं. झड़ी} लगातार, निरंतर; *वि.* झक्की; अक्खड़।

औटना *स.* {सं. उत्तापन} {*भाव.* औटन} दूध या कोई पतली चीज आँच पर चढ़ाकर गाढ़ी करना, खौलाना; *अ.* तरल वस्तु का आँच या गरमी पाकर गाढ़ा होना; व्यर्थ घूमना।

औटाना *स.* {सं. उत्तापन} तरल पदार्थ को आग पर रखकर गरम या गाढ़ा करना।

औठपाय *पुं.* {सं. उत्पात} शरारत, पाजीपन, नटखटी।

औढर *वि.* {सं. अव + हिं. ढार या ढाल} जिस ओर मन हो, उसी ओर ढल पड़नेवाला, मनमौजी।

औडव *पुं.* एक तरह का राग।

औढरदानी *वि.* मनमाने ढंग से अर्थात् अत्यंत उदारतापूर्वक दान करनेवाला; *पुं.* शिव।

औतरना *अ.* अवतरना।

औतरा *वि.* अपुत्र, संतानहीन।

औतार *पुं.* अवतार।

औत्तापिक *वि.* {सं.} उत्ताप-संबंधी।

औतिक *वि.* ऊतकों से संबद्ध, ऊतकों का।

औतिकी *स्त्री.* ऊतक-संबंधी विज्ञान।

औत्पत्तिक *वि.* {सं.} उत्पत्ति-संबंधी।

औत्सुक्य *पुं.* {सं.} उत्सुकता।

औथरा *वि.* उथला।

औदक *वि.* {सं.} पानी का।

औदरिक *वि.* {सं.} उदर-संबंधी; बहुत खानेवाला, पेटू।

औदार्य *पुं.* {सं.} उदारता।

औदसा *स्त्री.* दुर्दशा।

औदुंबर *पुं.* {सं.} गूलर की लकड़ी का बना एक यज्ञ-पात्र; एक प्रकार के मुनि।

औद्धत्य *पुं.* {सं.} उद्धतता।

औद्योगिक *वि.* {सं.} उद्योग-संबंधी; वस्तुएँ तैयार करने के काम से संबंध रखनेवाला (इंडिस्ट्रियल)।

औद्योगिकी *स्त्री.* {सं.} उद्योगों को उन्नत करने तथा उन्हें सही ढंग से चलाने की विद्या।

औद्योगीकरण *पुं.* {सं. उद्योग + करण} = उद्योगीकरण।

औध *पुं.* अवध; अयोध्या; *स्त्री.* अवधि।

औना-पौना *वि.* {हिं. ऊन (कम) + पौना} आधा-तीहा, थोड़ा-बहुत; जितना मिले।

औने-पौने *क्रि. वि.* {सं.} कमती-बढ़ती दर पर।
मुहा. औने-पौने करना = जितना दाम मिले, उतने पर बेच डालना।

औनि *स्त्री.* अवनि; पृथ्वी।

औपचारिक *वि.* {सं.} उपचार-संबंधी; जो केवल दिखाने भर को किया गया हो (फार्मल)।

औपचारिकता *स्त्री.* {सं.} ऐसा आचरण या कार्य जो आवश्यक न होने पर भी परिपाटी के पालनार्थ किया जाता है (फारमेलिटी); उपचार निभाने की रीति।

औपनिवेशिक *पुं.* {सं.} उपनिवेश में रहनेवाला; *वि.* उपनिवेश-संबंधी (कोलोनियल)।

औपनिवेशिक स्वराज्य *पुं.* {सं.} ब्रिटिश साम्राज्य-प्रणाली के अनुसार एक प्रकार का स्वराज्य जो अधीनस्थ उपनिवेशों (जैसे कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि) को प्राप्त है; इसमें उपनिवेशों को ब्रिटिश सम्राट की अधीनता तथा इसी प्रकार की दो-तीन छोटी-छोटी बातें माननी पड़ती हैं तथा शेष बातों में वे स्वतंत्र रहते हैं।

औपनिषद, औपनिषदिक *वि.* {सं.} उपनिषद-संबंधी।

औपन्यासिक *वि.* {सं.} उपन्यास-विषयक, उपन्यास-संबंधी; उपन्यास में वर्णन करने के योग्य; अद्‌भुत; *पुं.* उपन्यास-लेखक, उपन्यासकार; प्रस्तुत।

औपपत्तिक *वि.* {सं.} तर्क या युक्ति के द्वारा सिद्ध होनेवाला।

औपायनिक *वि.* {सं.} उपायन संबंधी।

औम *स्त्री.* अवम तिथि।

और *यो.* {सं. अपर} दो शब्दों या वाक्यों को जोड़नेवाला शब्द; *वि.* दूसरा, अन्य, भिन्न।
पद और का और = कुछ का कुछ, विपरीत, अंडबंड; *और क्या* = हाँ ऐसी ही है (उत्तर में); *और तो क्या* = और बातों का तो जिक्र ही क्या।
अधिक, ज्यादा।

औरत *स्त्री.* {अ.} स्त्री, महिला; पत्नी, जोरू; नौकरानी, मजदूरनी।

औरस *वि.* {सं.} जो विवाहिता स्त्री से उत्पन्न हो; खास अपना पुत्र; छाती का।

औरेब *पुं.* {सं. अव + रेव = गति} वक्र गति; तिरछी काट; पेंच, उलझन; पेंच या चाल की बात; साधारण या थोड़ी हानि अथवा खराबी।

और्ध्वदैहिक *वि.* {सं.} मृत्यु के उपरांत किया जानेवाला संस्कार।

और्व *पुं.* {सं.} एक ऋषि; गुरु से उत्पन्न; *वि.* बड़वानल।

औलना *अ.* जलना; औंसना।

औला *प्रत्य.* {सं. पोतलक, प्रा. ओलअ = बच्चा या छोटा रूप} एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अंत में लगकर उसके बच्चे अथवा छोटे या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरंभिक रूप का अर्थ देता है, जैसे बिनौला = बन या कपास का आरंभिक रूप, अगौला = गन्ने का अगला भाग या आरंभिक रूप आदि।

औलाद *स्त्री.* {अ.} संतान, संतति।

औला-दौला *वि.* {अ. औला = सर्वश्रेष्ठ = दौला (अनु.) या दौलत} जो कोई काम करने, विशेषत: उदारता दिखाने के समय कुछ सोच-विचार न करे।

औलिया *पुं.* {अ. वली का बहु.} मुसलमान सिद्ध, पहुँचा हुआ फकीर।

औषध *पुं.* {सं.} रोग दूर करनेवाली ओषधियों का मिश्रित रूप, दवा (मेडिसिन)।

औषधविज्ञान *पुं.* {सं.} औषधशास्त्र, ओषधियों के गुण-दोष बतानेवाला शास्त्र।

औषधशाला *स्त्री.* {सं.} वह स्थान जहाँ ओषधियों का निर्माण होता हो।

औषधालय *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ दवाएँ मिलती, बनती यां बिकती हों (डिस्पेंसरी)।

औष्ट्र *वि.* {सं.} ऊँटों का, ऊँटों से संबद्ध।

औष्ठ्य *वि.* {सं.} होंठ-संबंधी।

औसत *स्त्री.* {अ.} एक से अधिक राशियों के जोड़ को उनकी संख्या से भाग देने पर प्राप्त होनेवाली राशि; सामान्य स्तर; *वि.* माध्यमिक, साधारण।

औसर *पुं.* {सं. अवसर} मौका।

औसान[1] *पुं.* अवसान।

औसान[2] *पुं.* {फा.} सुध-बुध, होश-हवास।

औसि *क्रि. वि.* अवश्य।

औसेर *स्त्री.* अवसेर।

औहत *स्त्री.* {सं. अपघात} अपमृत्यु; दुर्गति, दुर्दशा।

औहाती *स्त्री.* अहिवाती।

क

क देवनागरी वर्णमाला का पहला व्यंजन वर्ण, इसका उच्चारण कंठ से होता है, इसे स्पर्श वर्ण भी कहते हैं। अल्प, कर्ता या भाव का अर्थसूचित करता है। शब्दों के अंत में प्रत्यय के रूप में लगकर देता है।

कंक *पुं.* {द्रविड़ से गृहीत, सं.} {*स्त्री.* कंका} सफेद चील; ऐसा पक्षी जिसके पंख बाण में लगाए जाते थे; अज्ञातवास में राजा विराट के यहाँ रहते युधिष्ठिर का नाम; यमराज।

कंकट *पुं.* {सं.} कवच।

कंकड़ *पुं.* {सं. कर्कर} {*स्त्री.* अल्पा. कंकड़ी, *वि.* कंकड़ीला} चिकनी मिट्टी और चूने से बने रोड़े जिनसे सड़क बनती है; पत्थर या और किसी वस्तु का छोटा टुकड़ा, अँकड़ा; सूखा या सेंका हुआ तमाकू का पत्ता।

कँकड़ीला *वि.* जिसमें कंकड़ हों; कँकरीला मार्ग आदि।

कंकण *पुं.* {सं.} कलाई में पहनने का एक गहना, कंगन; वह धागा जो विवाह से पहले वर और वधू के हाथ में रक्षार्थ बाँधते हैं।

कंकर *स्त्री.* कंकड़।

कंकरीट *स्त्री.* {अं. कांक्रीट} चूने, कंकड़, बालू आदि के मेल से बना गच बनाने का मसाला, छर्रा, बजरी; छोटी कंकड़ियाँ जो सड़कों पर बिछाई और कूटी जाती हैं (कांक्रीट)।

कंकाल *पुं.* {सं.} अस्थिपंजर; मांसरहित शरीर।

कंकालशेष *वि.* {सं.} वह प्राणी जिसका शरीर हड्डी का ढाँचा रह गया हो।

कंकालिनी *स्त्री.* {सं.} काली; दुष्ट और लड़ाकी स्त्री, कर्कशा।

कंकोल *पुं.* शीतल चीनी।

कंगन *पुं.* {सं. कंकण} हाथ में पहनने का एक गहना, कंकण; लोहे का चक्र जो अकाली सिर पर बाँधते हैं।

कँगनी[1] *स्त्री.* {हिं. कँगना} छोटा कंगन; दीवार के ऊपरी भाग में बाहर की ओर बहुत थोड़ा-सा निकला हुआ अंश जो शोभा के लिए बनाया जाता है; गरदनी, कारनिस।

कँगनी[2] *स्त्री.* {सं. कंगु} एक अन्न जिसके चावल खाए जाते हैं, काकुन; कांगनी।

कंगला *वि.* = कंगाल; बहुत ही निर्धन या गरीब।

कंगाली *स्त्री.* {हिं. कंगाल + ई (प्रत्य.)} बहुत अधिक गरीबी, घोर दरिद्रता।

कँगूरा *पुं.* {फा. कुंग} {*वि.* कँगूरेदान} शिखर, चोटी; किले की दीवार में थोड़ी-थोड़ी दूर पर बने हुए वे ऊँचे स्थान जहाँ खड़े होकर सिपाही लड़ते हैं, बुर्ज; छपाई, गहनों आदि में शिखर के आकार की बनावट।

कंघा *पुं.* {सं. कंक} {*स्त्री.* अल्पा. कंघी} लकड़ी, सींग या धातु की बनी हुई वह चीज जिससे सिर के बाल झाड़ते हैं; जुलाहों का एक औजार जिससे वे तागे कसते हैं, बय, बौला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंघई *स्त्री.* एक वीर्यवर्धक औषध।

कंघी *स्त्री.* {सं. कंकली} छोटा कंघा; एक पौधा जिसकी पत्तियाँ दवा के काम में आती है; कंघा।

कंघी-चोटी *स्त्री.* बनाव-सिंगार; चोटी आदि बनाना।

कँघेरा *पुं.* {हिं. कंघी + एरा (प्रत्य.)} कँघियाँ बनानेवाला कारीगर।

कंच *पुं.* काँच।

कंचन *पुं.* {सं. कांचन} सोना, सुवर्ण; धन, संपत्ति; धतूरा; {*स्त्री.* कंचनी} एक जाति जिसकी स्त्रियाँ प्रायः वेश्या का काम करती हैं; *वि.* नीरोग, स्वस्थ; स्वच्छ।

कंचुक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* कंचुकी} जामे या चपकन की तरह का एक पुराना पहनावा; चोली, अँगिया; वस्त्र, कपड़ा; बकतर, कवच; साँप की केंचुली; पारे का मैल।

कंचुकी[1] *स्त्री.* {सं.} अँगिया, चोली; स्त्रियों का जम्पर या ब्लाउज़।

कंचुकी[2] *पुं.* {सं. कंचुकिन्} प्राचीन काल में राजाओं क रनिवास की दास-दासियों का अध्यक्ष, अंतःपुर का रक्षक; महल का दारोगा।

कँचेरा *पुं.* {हिं. काँच + ऐरा (प्रत्य.)} काँच तैयार करनेवाला; काँच के बर्तन तैयार करनेवाला।

कंज *पुं.* {सं.} ब्रह्मा; कमल; अमृत; सिर के बाल, केश।

कंजनाभ *पुं.* {सं.} विष्णु।

कंजई *वि.* {हिं. कंजा} कंजे या धुएँ के रंग का, खाकी।

कंजर *पुं.* {देश या कालिंजर} {*स्त्री.* कंजरिन} एक घूमने-फिरनेवाली जाति जो रस्सी बटने, सिरकी बनाने आदि का काम करती है; ये साँप आदि जीव खाते हैं।

कंजा[1] *पुं.* {सं. करंज} एक कँटीली झाड़ी जिसकी फली औषध के काम आती है।

कंजा[2] *वि.* {*स्त्री.* कंजी} कंजे के रंग का, गहरा खाकी; जिसकी आँखें इस रंग की हों।

कंजूस *वि.* {सं. कण + हिं. चूस} {*भाव.* कंजूसी} जो धन का भोग या व्यय न करे, कृपण, सूम।

कंटक *पुं.* {सं.} {*वि.* कंटकित} काँटा; कार्य में होनेवाली बाधा, विघ्न, बखेड़ा; ऐसी बात या कार्य जिससे किसी को कष्ट पहुँचे (नुएज़ेन्स); रोमांच; कवच; बाधा डालनेवाला; निर्माणशाला।

कंटकाकीर्ण *वि.* {सं.} काँटों से भरा; विकट तथा कष्टप्रद।

कंटकाशन *पुं.* {सं.} ऊँट।

कंटकी *स्त्री.* {सं.} भटकटैया।

कंटकित *वि.* {सं.} काँटेदार, कँटीला; जिसे रोमांच हो आया हो, पुलकित; रुकावटों से मुक्त; कवच पहने।

कंटकी (टिन्) *वि.* {सं.} काँटेदार; कवच पहने।

कंटिका *स्त्री.* {सं.} सुई के आकार की लोहे, पीतल आदि की छोटी तीली जिसमें कागज एक में नत्थी किए जाते हैं, आलपीन (पिन)।

कँटिया *स्त्री.* {हिं. काँटी} छोटा काँटा या कील; मछली मारने की पतली नोकदार अँकुसी; अँकुसियों का वह गुच्छा जिससे कुएँ में गिरी हुई चीजें निकालते हैं; सिर का एक गहना।

कँटीला *वि.* {हिं. काँटा + ईला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* कँटीली} जिसमें काँटे हों।

कंठ *पुं.* {सं.} {*वि.* कंठ्य, *भाव.* कंठता} गला; गले की वे नलियाँ जिनसे भोजन पेट में उतरता है और आवाज निकलती है, घाँटी।

मुहा. कंठ फूटना = वर्णों के स्पष्ट उच्चारण का आरंभ होना, मुँह से शब्द निकलना; *कंठ सूखना* = गला सूखना, मुँह से शब्द न निकलना।

किनारा, तट, तीर; *वि.* (विषय, बात, पद्य आदि) जो जबानी याद हो या याद की गई हो, जैसे उन्हें सारी गीता कंठ है; *पुं.* कंठा।

कंठबंध *पुं.* {सं.} कंठ लंगोट, नैकटाई।

कंठमाला *स्त्री.* {सं.} गले का एक रोग जिसमें फोड़े निकलते हैं।

कंठसंगीत *पुं.* {सं.} गले से गाया जानेवाला या होनेवाला संगीत (वोकल म्यूजिक)।

कंठसूत्र *पुं.* {सं.} एक प्रकार का आलिंगन; गले का हार।

कंठस्थ *वि.* {सं.} गले में अटका हुआ, कंठगत; जबानी याद, कंठाग्र।

कंठस्वर *पुं.* {सं.} आवाज की मधुरता; गले की आवाज।

कंठा *पुं.* {हिं. कंठ} {*स्त्री.* अल्पा. कंठी} वह रेखा जो तोते आदि पक्षियों के गले के चारों ओर होती है, हँसली; गले का एक गहना जिसमें बड़े-बड़े मनके होते हैं; कठुला; कुरते या अँगरखे का वह अर्ध-चंद्राकार भाग जो गले पर रहता है।

कंठी *स्त्री.* {हिं. कंठा का अल्पा.} छोटी गुरियों का कंठा; तुलसी आदि मनियों की माला (वैष्णव)।

कंठोष्ठ्य *वि.* {सं.} वर्ण जो एक साथ कंठ और होंठ के सहारे से बोला जाए जैसे 'ओ' और 'औ' वर्ण (गटरो-लैबिएल)।

कंठ्य *वि.* {सं.} कंठ-संबंधी, गले का; गले से उत्पन्न (वर्ण), जिसका उच्चारण कंठ से हो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(गटरल); पुं. वह वर्ण जिसका उच्चारण कंठ से हो–अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्ग।

कंडरा *स्त्री.* {सं.} रक्त की नाड़ी।

कंडा पुं. {सं. स्कंदन} {*स्त्री.* अल्पा. कंडी} सूखा गोबर जो जलाने के काम में आता है, उपला; सूखा मल, गोटा, सुद्दा।

कंडाल पुं. {सं. कंडोल} पानी रखने का लोहे, पीतल आदि का बड़ा बरतन; डोल।

कंडिहार पुं. {सं. कर्णधार} केवट, मल्लाह।

कंडी *स्त्री.* {हिं. कंडा} छोटा कंडा, गोहरी, उपली; सूखा मल, गोटा; घास या बेंत से बनी छोटी टोकरी या पेटी।

कंडील *स्त्री.* {*अ.* कंदील} मिट्टी, अबरक, कागज आदि की बनी हुई वह लालटेन जिसका मुँह ऊपर की ओर होता है; दीवाली के उत्सव या रंगीन कागजों के बने दीपकों के आवरण।

कंडु *स्त्री.* {सं.} खुजली।

कंडोल पुं. {सं.} वह बड़ा पात्र जो सड़कों पर कूड़ा फेंकने के लिए रखा रहता है; पानी का डोल; बेंत या बाँस के बने अन्न रखने के बड़े पात्र; स्टोर।

कंत, कंथ पुं. कांत।

कंथा *स्त्री.* {सं.} गुदड़ी; प्रिय; रजाई।

कंद[1] पुं. {सं.} गूदेदार और बिना रेशे की जड़, जैसे सूरन, शकरकंद आदि; बादल; आलू, प्याज आदि।

कंद[2] पुं. {फा.} जमाई हुई चीनी, मिसरी; बरफी नाम की मिठाई।

कंदरा *स्त्री.* {सं.} गुफा, गुहा।

कंदर्प पुं. {सं.} कामदेव।

कंदला पुं. {सं. कंदल = सोना} चाँदी का वह लंबा छड़ जिससे तारकश तार बनाते हैं, गुल्ली; सोने या चाँदी का पतला तार; *स्त्री.* कंदरा।

कंदली *स्त्री.* {सं.} एक पौधा जिसपर लाल पीले बड़े फूल लगते हैं।

कंदील *स्त्री.* कंडील।

कंदुक पुं. {सं.} गेंद; छोटा गोल तकिया।

कंद्रप पुं. = कंदर्प (कामदेव)।

कंध पुं. {सं. स्कंध} डाली, शाखा; कंधा।

कंधनी *स्त्री.* करधनी।

कंधर पुं. {सं.} गरदन; बादल।

कंधा पुं. {सं. स्कंध} शरीर का वह भाग जो गले और मोढ़े के बीच में होता है; बाहुमूल, मोढ़ा; सहारा।

मुहा. *कंधा देना* = मृतक की अर्थी कंधे पर उठाना।

कंधार पुं. {सं. गांधार} अफगानिस्तान का एक नगर और प्रदेश।

कंधारी *वि.* {हिं. कंधार} कंधार देश का; कंदहारी अनार; पुं. घोड़ों की एक जाति।

कँधावर *स्त्री.* {हिं. कंधा + आवर (प्रत्य.)} जुए का वह भाग जो बैल के कंधों पर रहता है; चादर; *वि.* मोटे कंधेवाला।

कँधेला पुं. {हिं. कंधा + एला (प्रत्य.)} स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो कंधे पर पड़ता है।

कंधेली *स्त्री.* घोड़े या बैल के कंधे पर रखी जानेवाली कपड़े की गद्दी।

कंप पुं. {सं.} कँपकँपी, काँपना (सात्विक अनुभावों में से एक)।

कँपकँपी *स्त्री.* {हिं. काँपना} थरथराहट, काँपना, कंपन।

कंपन पुं. {सं.} {*वि.* कंपित} काँपना, थरथराहट, कँपकँपी।

कँपना *अ.* काँपना।

कंपना *स्त्री.* {सं.} सेना।

कंपनी *स्त्री.* {अं.} व्यापारियों या व्यवसायियों का वह समूह या दल जो एक साथ मिलकर कोई व्यापार या व्यवसाय करता हो, पूग, समवाय (कंपनी); मंडली।

कँपनी *स्त्री.* कँपकँपी।

कंपा पुं. {हिं. काँपा} बाँस की तीलियाँ जिनमें बहेलिए लासा लगाकर चिड़ियाँ फँसाते हैं।

कँपाना *स.* {हिं.} काँपना का प्रे.।

कंपायमान *वि.* कंपित।

कंपास पुं. {अं.} दिक्सूचक यंत्र, कुतुबनुमा।

कंपित *वि.* {सं.} काँपता या हिलता हुआ; भयभीत, डरा हुआ।

कंपिल्ल पुं. {सं.} कांपिल्ल (वर्तमान कालपी); कबीला।

कंपू पुं. छावनी।

कंपोज *क्रि.* {अं.} मुद्रण के लिए अक्षर जोड़ना।

कंपोजिटर *वि.* {अं.} कंपोज करनेवाला।

कंपोस्ट पुं. {अं.} हरी खाद; हरे पत्ते, कूड़ा, गोबर आदि को सड़ाकर बनाई हुई खाद।

कंबख्त *वि.* {फा.} {*भाव.* कंबख्ती} अभागा, भाग्यहीन।

कंबख्ती *स्त्री.* {फा.} दुर्भाग्य; शामत, दुर्दशा; विपत्ति।

कंबल पुं. {?} {*स्त्री.* अल्पा. कमली} ऊन का बना हुआ वह मोटा कपड़ा जो ओढ़ने-बिछाने के काम में आता है; बरसाती कीड़ा, कमला।

कंबुक पुं. {सं.} शंख; शंख की चूड़ी; घोंघा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कंबोज पुं. {सं.} {वि. कांबोज} सोवियत रूस के एक भाग का प्राचीन नाम; प्रायः पठानों के लिए प्रयुक्त नाम।

कँवल पुं. कमल।

कंवलगट्टा पुं. कमल का बीज।

कंस पुं. {सं.} काँसा; कटोरा; सुराही; मँजीरा, झाँझ; मथुरा के राजा उग्रसेन का लड़का जिसे कृष्ण ने मारा था।

कँसताल पुं. झाँझ।

कई *वि.* {सं. कति, प्रा. कइ} एक से अधिक, अनेक।

ककड़ी *वि.* {सं. कर्कटी} बेल जिसमें लंबे फल लगते हैं; उक्त बेल का फल।

ककनू पुं. कुकनुस (पक्षी)।

ककुद पुं. {सं.} बैल के कंधे पर का कूबड़, डिल्ला; राजचिह्न; उपाधि।

ककुभ पुं. {सं.} दिशा; सफेदे का वृक्ष।

ककहरा पुं. {हिं. क + ह} क से ह तक के अक्षर।

कक्कड़ पुं. {सं. कर्कर} सूखी या सेंकी हुई सुरती का भुरभुरा चूर जिसे छोटी चिलम पर रखकर पीते हैं।

कक्का[1] पुं. {सं. केकय} केकय देश।

कक्का[2] पुं. {सं.} नगाड़ा, दुंदुभी।

कक्ष पुं. {सं.} काँख, बगल; काछ, कछोटा, लाँग; कछार; जंगल; सूखी घास; कमरा, कोठरी; पाप, दोष; काँख का फोड़ा, कखौरी; दरजा, श्रेणी; सेना के अगल-बगल का भाग।

कक्षा *स्त्री.* {सं.} परिधि, घेरा; ग्रह के भ्रमण करने का मार्ग; श्रेणी, दर्जा, जैसे विद्यालय की सातवीं कक्षा (क्लास); काँख, बगल; घर की दीवार या पाख; कछौटा; आँगन; दायरा।

कक्षानायक पुं. {सं.} कक्षा-संबंधी कार्य करनेवाला प्रमुख विद्यार्थी (मानीटर)।

कक्ष्या *स्त्री.* {सं.} हाथी-घोड़े आदि की रस्सी, हौदा, अंतःपुर।

कखौरी *स्त्री.* {हिं. काँख} काँख; काँख का फोड़ा।

कगर पुं. {सं. क = जल + अग्न} ऊँचा किनारा; बाढ़, मेंड़, डाँडा।

कगार पुं. {हिं. कगर} ऊँचा किनारा; नदी का करारा; टीला।

मुहा. कगार पर खड़ा होना = ऐसे स्थान पर आ पहुँचना जहाँ से पतन अवश्यंभावी हो।

कग्गद पुं. कागज।

कच[1] पुं. {सं.} बाल; फोड़ा या घाव; झुंड; बादल; बृहस्पति का पुत्र जो शुक्र के पास संजीवनी विद्या सीखने गया था।

कच[2] पुं. {अनु.} धसने या चुभने का शब्द या भाव; कुचले जाने का शब्द।

कच[3] *वि.* कच्चा का अल्पा. रूप जो समास में शब्द के पहले लगने पर होता है, जैसे कचलहू।

कचक *स्त्री.* {हिं. कच} वह चोट जो दबने या कुचले जाने से लगे।

कचकेला पुं. केले का एक भेद।

कचकोल पुं. {फा. कशकोल} दरियाई नारियल का भिक्षापात्र, कपाल, कासा।

कचदिला *वि.* {हिं. कच्चा + फा. दिल} जिसे कष्ट, पीड़ा आदि सहने या देखने का साहस न हो, कच्चे दिल का।

कचनार पुं. {सं. काञ्चनार} एक छोटा पेड़ जिसमें सुंदर फूल लगते हैं।

कचपच *स्त्री.* {अनु.} थोड़े से स्थान में बहुत-सी चीजों या लोगों का भर जाना; गिचपिच।

कचपची *स्त्री.* {हिं. कचपच} कृत्तिका नक्षत्र; वे चमकीली बिंदियाँ जो स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं।

कचरकूट पुं. {हिं. कचरना + कूटना} खूब मारना-पीटना; खूब पेट भर भोजन, इच्छा-भोजन।

कचरना *स.* {सं. कच्चरण} पैर से कुचलना, रौंदना; खूब खाना।

कचरी *स्त्री.* {हिं. कच्चा} ककड़ी की जाति की एक बेल जिसके फल पकाकर खाए जाते हैं, पेंहटा; कचरी या कच्चे पेंहटे या किसी और फल के सुखाए हुए टुकड़े, जो तलकर खाए जाते हैं।

कचहरी *स्त्री.* {सं. कृत्यगृह} अदालत, न्यायालय; वह स्थान जहाँ राजा या कोई अधिकारी न्याय, व्यवस्था आदि संबंधी कार्य करता था।

कचाना *अ.* {हिं. कच्चा} साहस छोड़ देना; आनाकानी करना।

कचारना *स.* {अनु.} पटक या पीटकर कपड़े धोना।

कचालू पुं. अरबी का एक भेद।

कचाहट *स्त्री.* हिचक, काम करने का साहस न होना, अभ्यस्त न होना।

कचीची *स्त्री.* {अनु.} क्रोध में दाँत पीसने की मुद्रा।

कचूमर पुं. {हिं. कुचलना} किसी वस्तु का कुचला हुआ रूप, मलीदा।

मुहा. कचूमर निकाल देना = बुरी तरह पिटाई करना।

कचूर पुं. {सं. कर्चूर} हल्दी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ दवा के काम आता है।

कचोट *स्त्री.* चुभन, भीतरी पीड़ा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कचोटना *अ.* {अनु.} (मन में) चुभना या (मन को) पीड़ा देना।

कचौड़ी *स्त्री.* = कचौरी।

कचौरी *स्त्री.* {प्रा. कचडरिया} ऐसी पूरी जिसमें पीठी आदि भरी हो।

कच्चा *वि.* {सं. कषण} {*भाव.* कच्चापन} जो पका न हो, हरा और बिना रस का, अपक्व; समय से पूर्व का; जो आँच पर पका न हो, जैसे कच्चा चावल; जो पुष्ट न हुआ हो, अपरिपुष्ट; जिसके तैयार होने में कसर हो; जो दृढ़ या पुष्ट न हो, कमजोर।

मुहा. कच्चा जी या दिल = कम साहसवाला और विचलित होनेवाला चित्त; *कच्चा करना* = डराना, भयभीत करना।

जो प्रमाणों से पुष्ट न हो, बेठीक।

मुहा. कच्चा करना = अप्रामाणिक ठहराना, झूठा सिद्ध करना, लज्जित करना, शर्मिंदा करना; *कच्ची उम्र की* = संभोग के अयोग्य; *कच्ची उम्र का* = अनुभवरहित।

जो प्रामाणिक तौल या मान से कम हो, जैसे कच्चा सेर; जिसमें से लागत, परिव्यय आदि निकाले न गए हों, स्थूल, 'पक्का' का उलटा (ग्रॉस); जिसे अभी पूरा ज्ञान या अभ्यास न हो, अपटु; पुं. दूर-दूर पर पड़ा हुआ तागे का डोभ जिसपर बखिया करते हैं; ढाँचा, ढड्ढा; पांडुलेख, मसौदा।

कच्चा चिट्ठा पुं. {हिं. कच्चा + चिट्ठा} ज्यों का त्यों कहा जानेवाला भीतरी हाल या लेखा; गुप्त भेद, रहस्य; आय, व्यय आदि का वह लेखा जो अभी कार्यालय से पूरी तरह जाँचा न गया हो।

कच्चा माल पुं. {हिं. कच्चा + माल} वह द्रव्य जिससे व्यवहार की चीजें बनती हों, सामग्री, जैसे रुई, तिल आदि।

कच्ची बही *स्त्री.* {हिं. कच्ची + बही} वह बही जिसमें ऐसा हिसाब लिखा हो जो पूर्ण रूप से निश्चित न हो।

कच्ची बात *स्त्री.* अपमानजनक बात, गाली।

कच्ची रसोई *स्त्री.* {हिं. कच्ची + रसोई} केवल पानी में पकाया हुआ अन्न, जैसे रोटी, दाल, भात, आदि।

कक्ष पुं. {सं.} कमरा, कोठरी, बगल, घास का ढेर, पाप, सूखा जंगल।

कक्षा *स्त्री.* {सं.} ग्रहपथ, लांग, हाथी या घोड़े की तंग, कमरपट्टी, अंतःपुर।

कच्छ[1] पुं. {सं.} {*वि.* कच्छी} जलप्राय देश, अनूप देश; गुजरात के समीप का एक प्रदेश।

कच्छ[2] पुं. {सं. कक्ष} धोती की लाँग।

कच्छ[3] पुं. {सं. कच्छप} कछुआ।

कच्छप पुं. {सं.} {*स्त्री.* कच्छपी} कछुआ; विष्णु के चौबीस अवतारों में से एक।

कच्छा पुं. {सं. कच्छ} एक प्रकार की बड़ी नाव; कई नावों को मिलाकर बनाया हुआ बड़ा बेड़ा; छोटा जाँघिया जो अंदर पहना जाता है।

कच्छी *वि.* {हिं. कच्छ} कच्छ देश का; पुं. कच्छ देश का निवासी; घोड़े की एक जाति; छोटे बच्चे की कछनी; *स्त्री.* कच्छ देश की भाषा।

कच्छू पुं. कछुआ; खुजली।

कछनी *स्त्री.* {हिं. काछना} घुटने तक ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती; वह वस्तु जिससे कोई चीज काछी जाए, कछान, कछाना।

कछवाहा पुं. {सं.} राजपूतों की एक जाति।

कछान (1) पुं. {हिं. काछना} धोती पहनने का वह प्रकार जिसमें वह घुटनों के ऊपर चढ़ाकर कसी जाती है।

कछार पुं. {सं. कच्छ} समुद्र या नदी के किनारे की उपजाऊ नीचे भूमि; अनूप प्रदेश।

कछारी क्षेत्र पुं. {हिं. कछार + सं. क्षेत्र} वह क्षेत्र या भूभाग जिसमें कछार हों (एल्यूवियल एरिया); कच्छ क्षेत्र।

कछुआ पुं. {सं. कच्छप} {*स्त्री.* कछुई} एक प्रसिद्ध जंतु जिसकी पीठ पर कड़ी ढाल की तरह खोपड़ी होती है।

कछुक *वि.* कुछ।

कछौटा पुं. {सं. कच्छपट्ट} धोती पहनने का 'कछाना' नाम का प्रकार या ढंग; कछनी।

कज पुं. {फा.} टेढ़ापन; दोष, ऐब।

कजरा पुं. {सं. कज्जल} काजल; काली आँखोवाला बैल; *वि.* = कजरारा।

कजरारा *वि.* {हिं. काजल + आरा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* कजरारी} (नेत्र) जिसमें काजल लगा हो, अंजनयुक्त; काजल के समान काला।

कजरी[1] *स्त्री.* कजली; कदली; काजल लगी; एक प्रकार का गीत; एक गाय।

कजरी[2] पुं. {?} एक प्रकार का धान या उसका चावल।

कजलाना *अ.* {हिं. काजल} काला पड़ना; आग का बुझना।

कजली *स्त्री.* {हिं. काजल} कालिख; पिसे हुए पारे और गंधक की बुकनी; रस फूँकने में धातु का वह अंश जो पात्र में लग जाता है; वह गाय जिसकी आँखों के किनारे काला घेरा हो; एक बरसाती त्योहार; एक प्रकार का गीत जो बरसात में गाया जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कजली वन पुं. कदली वन।

कजलौटा पुं. {हिं. काजल + औटा (प्रत्य.)} {स्त्री. अल्पा. कजलौटी} काजल रखने की डंडीदार लोहे की डिबिया।

कज़ा स्त्री. {फा.} मुसीबत, मृत्यु, न्याय, भाग्य, कज़ा आना, मौत आना।

कजाकी स्त्री. {फा. कज्जाक} लुटेरापन; छल-कपट, धोखेबाजी।

कजावा पुं. {फा.} ऊँट की काठी।

कजिया पुं. {अ.} झगड़ा, बखेड़ा; झंझटभरा प्रश्न।

कजी स्त्री. {फा.} टेढ़ापन; दोष।

कज्जल पुं. {सं.} {वि. कज्जलित; भाव. कज्जलता} अंजन, काजल; सुरमा; कालिख।

कज्जली स्त्री. {सं.} रस व भस्म बनाने के लिए पारे और गंधक का घुटा संमिश्रण।

कज्जाक पुं. डाकू; कज्जाकिस्तान की एक जाति।

कट[1] पुं. {सं.} हाथी का गंडस्थल; खस, सरकंडा आदि घास या उनकी टट्टी; शव, लाश; श्मशान; घास-फूस, चटाई।

कट[2] पुं. {हिं. कटना} काट का संक्षिप्त रूप, जिसका व्यवहार यौगिक शब्दों में होता है, जैसे कटखना।

कटक पुं. {सं.} सेना, फौज; राज-शिविर; कंकण, कड़ा; पर्वत का मध्य भाग; समूह, झुंड; सोना, उड़ीसा का एक प्रमुख नगर।

कटकई स्त्री. {सं. कटक = सेना} सेना, फौज; सेना या दल-बल के साथ चलने की तैयारी।

कटकट स्त्री. {अनु.} दाँतों के बजने का शब्द; लड़ाई-झगड़ा।

कटकटाना अ. {हिं. कटकट} क्रोध में आकर दाँत पीसना।

कटकाई स्त्री. कटकई।

कटकीना पुं. {हिं. काट} गहरी चाल या युक्ति, हथकंडा।

कटखना वि. {हिं. काटना + खाना} काट खानेवाला, दाँत से काटनेवाला।

कटघरा पुं. {हिं. काठ + घर} काठ का वह घर जिसमें जँगला लगा हो; बड़ा पिंजरा; न्यायालय में वह स्थान जहाँ खड़ा होकर वादी, प्रतिवादी, अभियुक्त या साक्षी अपना बयान देता है।

कटनंस पुं. {हिं. काटना + सं. नाश} काटने और नष्ट करने की क्रिया।

कटनांस पुं. {देश.} नीलकंठ (पक्षी)।

कटनि स्त्री. {हिं. कटना} काट; आसक्ति, रीझ।

कटनी स्त्री. {हिं. कटना} काटने का औजार; काटने का काम; खेत की फसल का काटा जाना; मध्य प्रदेश का एक नगर।

कटपीस पुं. {अं.} (बिक्री के लिए) नए कपड़े का टुकड़ा (जिससे कमीज, कोट, पैंट, ब्लाउज आदि बन सके)।

कटमी स्त्री. अपराजिता लता।

कटरा[1] पुं. {हिं. कटहरा} छोटा चौकोर बाजार।

कटरा[2] पुं. {सं. कटाह} भैंस का नर बच्चा; कटड़ा, पाड़ा।

कटरी स्त्री. नदी के पास की दलदल-भरी भूमि।

कटवाँ वि. {हिं. कटना + वाँ (प्रत्य.)} जो कटकर बना हो, कटा हुआ; (ब्याज) जो एक-एक रकम और एक-एक दिन के हिसाब से जोड़ा जाए।

कटवाना स. {हिं. काटना} काटने का काम दूसरे से कराना।

कटहरा पुं. कटघरा।

कटहरी स्त्री. चंपा का एक भेद।

कटहल पुं. {सं. कंटकिफल} एक पेड़ जिसमें बड़े और भारी फल लगते हैं; इस पेड़ का फल; पनस।

कटहा वि. {हिं. काटना + हा (प्रत्य.)} {स्त्री. कटही} काट खानेवाला; जैसे पागल कुत्ता।

कटाइक वि. {हिं. काटना} काटनेवाला।

कटाई स्त्री. {हिं. काटना} काटने का काम, भाव या मजदूरी (विशेषत: फसल की)।

कटाकटी स्त्री. {हिं. काट} कट-कट शब्द; लड़ाई; वैमनस्य, वैर।

कटाक्ष पुं. {सं.} तिरछी चितवन, तिरछी नजर; किसी पर आक्षेप करने के लिए कही जानेवाली कोई व्यंग्यपूर्ण बात (सरकैस्ज्म); ताने मारना या चुभती बात कहना।

कटाक्षिक वि. {सं. कटाक्ष + इक (प्रत्य.)} (उक्ति) जिसमें कटाक्ष हो, कटाक्ष से युक्त, कटाक्षपूर्ण (सरकैस्टिक)।

कटाग्नि स्त्री. {सं.} घास-फूस की आग।

कटाछ पुं. = कटाक्ष।

कटान स्त्री. {हिं. काटना} काटने की क्रिया, भाव ढंग।

कटाना स. {हिं.} काटना का प्रे. रूप; कटवाना।

कटार स्त्री. {सं. कट्टार} {स्त्री. अल्पा. कटारी} प्राय: एक बित्ते का दुधारा हथियार; कटाव।

कटाव पुं. {हिं. काटना} कटने या काटने की क्रिया या भाव; काट-छाँट, कतर-ब्यौंत; काटकर बनाए हुए बेल-बूटे; वर्षा, बाढ़ आदि के कारण जमीन का कटकर बह जाना (इरोजन)।

कटावदार वि. {हिं. कटाव + फा. दार} जिसमें कटाव हो; आरी के दाँतों की शक्ल का; तराशी के साथी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटास *स्त्री.* {हिं. काटना} काटने की इच्छा।
कटाह *पुं.* {सं.} कड़ाहा, बड़ी कड़ाही; कछुए की खोपड़ी; भैंस का बच्चा; एक द्वीप; एक नरक।
कटि *स्त्री.* {सं.} कमर; हाथी का गंडस्थल; पेड़ू।
कटिका *स्त्री.* नितम्ब स्थल।
कटिबंध *पुं.* {सं.} कमर में बाँधने का कपड़ा या और कोई चीज, कमरबंद; भूगोल में गरमी-सरदी के विचार से किए हुए पृथ्वी के पाँच भागों में से कोई एक, जैसे उष्ण कटिबंध, शीत कटिबंध (ज़ोन)।
कटिबद्ध *वि.* {सं.} जो कमर बाँधे हुए हो; तैयार, तत्पर, उद्यत।
कटिसूत्र *पुं.* {सं.} मेखला।
कटिस्नान *पुं.* {सं.} टब के पानी में बैठ कर किया जानेवाला स्नान।
कटीला *वि.* {हिं. काटना} {*स्त्री.* कटीली} काट करनेवाला, तीक्ष्ण, चोखा; बहुत तीव्र प्रभाव डालनेवाला; मोहित करनेवाला।
कटु *वि.* {सं.} {*भाव.* कटुता} छह रसों में से एक, चरपरा, कड़ुआ; बुरा लगनेवाला, अप्रिय।
कटुआ ब्याज *पुं.* मिती-काटा।
कटुता *स्त्री.* {सं.} एक दूसरे के प्रति होनेवाली दुर्भावना।
कटूक्ति *स्त्री.* {सं.} अप्रिय बात जो दूसरे के मन को चुभे; कड़वे बोल।
कटेरी *स्त्री.* भटकटैया।
कटैला *पुं.* एक कीमती पत्थर।
कटोरदान *पुं.* {हिं. कटोरा + दान (प्रत्य.)} वह ढक्कनदार बरतन जिसमें भोजन आदि रखते हैं।
कटोरा *पुं.* {सं. कटोर} नीची दीवार और चौड़े पैंदे का एक छोटा बरतन, प्याला; केस।
कटोरी *स्त्री.* {हिं. कटोरा का अल्पा.} छोटा कटोरा, प्याली; अँगिया या चोली का वह भाग जिसमें स्तन रहते हैं; फूल के सींके का सिरा जिसपर दल रहते हैं।
कटौती *स्त्री.* {हिं. कटना} काटकर कम करने की क्रिया या भाव; कोई रकम देते समय उसमें से कुछ बँधा हक या धर्मार्थ द्रव्य निकाल लेना (डिडक्शन)।
कट्टर *वि.* {हिं. काटना} {*भाव.* कट्टरपन} काट खानेवाला, कटहा; अपने विश्वास पर बहुत दृढ़ रहने और उसके विरुद्ध कोई बात न सुनने या न माननेवाला, अंधविश्वासी (फैनेटिक); हठी, दुराग्रही।
कट्टा *वि.* {हिं. काठ} मोटा-ताजा, हट्टा-कट्टा; बलवान, बली; *पुं.* जबड़ा; बंदूक की नकल पर बनी हुई आधे नालवाली पिस्तौल।
मुहा. कट्टे लगना = किसी की वस्तु का अनुचित रूप से दूसरे के उपयोग में आना।
कट्ठा *पुं.* पूरब की ओर प्रचलित भूमि का एक नाप; एकसाथ।
कठ *पुं.* {हिं.} 'काठ' का अल्पार्थक रूप; एक मुनि जिनके नाम पर यजुर्वेद की कठ शाखा प्रचलित हुई।
कठड़ा *पुं.* {हिं. कठघरा} कठघरा, कटहरा; काठ का बड़ा संदूक; कठौता।
कठपुतली *स्त्री.* {हिं. काठ + पुतली} काठ की गुड़िया या पुतली जिसे डोरे की सहायता से नचाते हैं; वह जो केवल दूसरे के कहने पर, दूसरों की ओर से और दूसरों के स्वार्थ-साधन के लिए सब काम करे (पपेट); दूसरे के इशारे पर नाचने वाला।
कठप्रेम *पुं.* {हिं. काठ + प्रेम} प्रिय के रुष्ट, उदासीन या विमुख होने पर उसके प्रति बना रहनेवाला प्रेम; इकतरफा प्रेम।
कठफोड़वा *पुं.* {हिं. काठ + फोड़ना} एक चिड़िया जो पेड़ों की छाल छेदती है।
कठबंधन *पुं.* लकड़ी की बनी हाथी के पैरों में डालनेवाली बेड़ी।
कठबाप *पुं.* {हिं. काठ + बाप} सौतेला बाप।
कठभाई *पुं.* {हिं. काठ + भाई} संबंध के विचार से विमाता का पुत्र; सौतेला भाई।
कठमलिया *पुं.* {हिं. काठ + माला} काठ की माला या कंठी पहननेवाला, वैष्णव; झूठ-मूठ कंठी पहननेवाला, बनावटी साधु या संत।
कठमुल्ला *पुं.* धर्मांध मौलवी।
कठला *पुं.* {हिं. कठ + ला (प्रत्य.)} बच्चों के पहनने की एक प्रकार की माला; कठुला।
कठवत *स्त्री.* कठौत।
कठिन *वि.* {सं.} कड़ा, सख्त, कठोर; जिसे करना या सहज न हो, मुश्किल, दुष्कर, दुस्साध्य।
कठिनई *स्त्री.* = कठिनता।
कठिनता *स्त्री.* {सं.} कठोरता, कड़ाई, कड़ापन, सख्ती; मुश्किल, दिक्कत; निर्दयता, बेरहमी; मजबूती, दृढ़ता।
कठिया *वि.* काठा; कड़े छिलके वाला बादाम, अखरोट आदि।
कठियाना, कठुआना *अ.* {हिं. काठ + आना} सूखकर काठ की तरह कड़ा होना।
कठूमर *पुं.* {हिं. काठ + ऊमर} जंगली गूलर।
कठैत *पुं.* {सं.} एक जाति; काठ का व्यापारी।
कठोर *वि.* {सं.} {*स्त्री.* कठोरा, *भाव.* कठोरता} कठिन, सख्त, कड़ा; निर्दय, निष्ठुर, बेरहम, तीखा असह्य।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठोरता *स्त्री.* {सं.} कड़ाई, सख्ती; निर्दयता, बेरहमी।

कठोरीकरण *पुं.* {सं.} कठोर या कड़ा बनाने की क्रिया।

कठौत (ता) *पुं.* {सं. काष्ठपात्र} काठ का बना एक बड़ा और चौड़ा बरतन; लकड़ी की बनी परात, खट्टे पदार्थ रखने के लिए काठ का बना पात्र।

कड़क *स्त्री.* {हिं. कड़कड़} कड़कने की क्रिया या भाव; कड़कड़ाहट का कठोर शब्द; तड़प, डपट; गाज, वज्र; वह दर्द जो रुक-रुककर हो, कसक; शक्ति सूचक दृढ़ता, स्वर में कठोरता।

कड़कड़ाता *वि.* {हिं. कड़कड़} कड़कड़ शब्द करता हुआ; कड़ाके का, बहुत तेज, प्रचंड, जैसे कड़कड़ाता जाड़ा।

कड़कड़ाना *अ.* {अनु.} कड़कड़ शब्द होना; कड़कड़ शब्द के साथ टूटना; घी, तेल आदि का आँच पर तपकर कड़कड़ शब्द करना; *स.* 'कड़कड़' शब्द करना या 'कड़कड़' शब्द के साथ तोड़ना; घी, तेल आदि खूब तपाना।

कड़कड़ाहट *स्त्री.* {हिं. कड़कड़} कड़कड़ाने की क्रिया या भाव; कड़कड़ शब्द, घोर नाद, गरज।

कड़कना *अ.* {हिं. कड़कड़} कड़कड़ शब्द होना; चिटकने का शब्द होना; चिटकना, फटना; कौंधने के साथ बिजली का शब्द होना।

कड़कनाल *स्त्री.* {हिं. कड़क + नाल} एक प्रकार की तोप।

कड़क-बिजली *स्त्री.* {*स्त्री.* कड़क + बिजली} कान का एक गहना, चाँदबाला; तोड़ेदार बंदूक।

कड़खा *पुं.* {हिं. कड़क} लड़ाई के समय गाया जानेवाला एक तरह का गीत।

कड़वा *वि.* {*स्त्री.* कड़वी} कड़ुआ।

कड़वी *स्त्री.* {सं. कांड, हिं. काँड़ा} ज्वार का वह पेड़ जो चारे के लिए छोड़ा हो; कटुकी, एक दवा जो ज्वर में प्रयुक्त होती है।

कड़ा[1] *पुं.* {सं. कटक} {*स्त्री.* कड़ी} हाथ या पाँव में पहनने का प्रसिद्ध गहना; इस आकार का लोहे या और किसी धातु का छल्ला या कुंडा।

कड़ा[2] *वि.* {सं. कड्डु} {*स्त्री.* कड़ी, *भाव.* कड़ाई} जो दबाने से जल्दी न दबे, कठोर, कठिन, सख्त; जिसकी प्रकृति कोमल न हो, उग्र; कसा हुआ, चुस्त; जो बहुत गीला न हो; हृष्ट-पुष्ट, तगड़ा, दृढ़; जोर का, प्रचंड, तेज, जैसे कड़ी चोट, कड़ा जाड़ा; सहनशील, झेलनेवाला; दुष्कर, दुस्साध्य, कठिन; तीव्र प्रभाववाला, तेज।

कड़ाका *पुं.* {हिं. कड़कड़} किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द।

मुहा. कड़ाके का = जोर का, तेज। उपवास, लंघन, फाका।

कड़ाबीन *स्त्री.* {तुं. कारबीन} चौड़े मुँह की बंदूक; छोटी बंदूक।

कड़ार *वि.* {सं.} कुछ लाल-पीले रंग का।

कड़ाहा *पुं.* {सं. कटाह, प्रा. कड़ाह} {*स्त्री.* अल्पा. कड़ाही} आँच पर चढ़ाने का लोहे का बड़ा गोल बरतन।

कड़ाही *स्त्री.* {हिं. कड़ाह} छोटा कड़ाहा।

मुहा. कड़ाही में हाथ डालना = अग्नि परीक्षा देना।

कड़ि *स्त्री.* कली, कटि (कड़-हरयाणवी)।

कड़ियल *वि.* {हिं. कड़ा} कड़ा।

कड़ी[1] *स्त्री.* {हिं. कड़ा = मोटी चूड़ी} सिकड़ी की लड़ी का कोई छल्ला; वह छोटा छल्ला जो किसी वस्तु को अटकाने के लिए लगाया जाए; शृंखला, प्रसंग को जोड़नेवाली बात; गीत का एक पद।

कड़ी[2] *स्त्री.* {हिं. कड़ा = कठिन} संकट, दुख।

कड़ुआ *वि.* {सं. कटुक} {*स्त्री.* कड़ुई, *भाव.* कड़ुआहट} स्वाद में उग्र और अप्रिय, जैसे नीम, चिरायता आदि; तीखी प्रकृति का, अक्खड़; जो भला न लगे, अप्रिय।

मुहा. कड़ुआ करना = व्यर्थ रुपए लगाना, कुछ दाम खड़ा करना, स्वाद बिगाड़ना, मुँह से बुरी बात निकलवाना; *कड़ुआ होना* = बुरा बनना, क्रोध करना।

विकट, टेढ़ा, कठिन।

मुहा. कड़ुए-कसैले दिन = बुरे दिन, कष्ट के दिन, दो-रसे दिन, जिनमें रोग फैलते हैं, गर्भ के दिन; *कड़ुआ घूँट* = असह्य बात।

कड़ुआ तेल *पुं.* {हिं. कड़ुआ + तेल} सरसों का तेल।

कड़ुला *पुं.* छोटे बच्चों के हाथ या पाँव में पहनाया जानेवाला छोटा कड़ा।

कढ़त *स्त्री.* कढ़ाई, बेल-बूटे निकालने की कला, नक्काशी।

कढ़ना *अ.* {सं. कर्षण} परीक्षा में सफल निकलना; निकलना, बाहर आना; उदय होना; (प्रतिद्वन्द्विता में) आगे निकल जाना, बढ़ जाना; स्त्री का उपपति के साथ घर छोड़कर चला जाना; दूध आदि का औटकर गाढ़ा होना; किसी काढ़े (क्वाथ) आदि को खूब पकाना।

कढ़लाना *स.* {हिं. काढ़ना + लाना} घसीटकर बाहर करना।

कढ़ाई *स्त्री.* {हिं. काढ़ना} कढ़ने या कढ़ाने की क्रिया या भाव।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कढ़ाव *पुं.* {हिं. कढ़ना} कढ़ने या कढ़ाने की क्रिया या भाव; कशीदे का काढ़ा हुआ काम; बेल-बूटों का उभार।

कढ़िहार *वि.* {हिं. काढ़ना} काढ़न या निकालने वाला; उद्धार करनेवाला; उधार या ऋण लेनेवाला।

कढ़ी *स्त्री.* {हिं. कढ़ना = गाढ़ा होना} वेशवार, दही या लस्सी में बेसन घोलकर बना पतला सालन।

मुहा. कढ़ी में कंकर डालना = मज़ा किरकिरा करना; *कढ़ी का-सा उबाल* = शीघ्र ही छा जानेवाला आवेश।

कढ़ुआ *वि.* {हिं. कढ़ना} कढ़ा या औंटाया हुआ (दूध)।

कढ़ुई *स्त्री.* {हिं. काढ़ना} मिट्टी का छोटा पुरवा जिससे बड़े बरतन में से कोई चीज निकाली जाती हो।

कढ़ैया *पुं.* कढ़िहार।

कण *पुं.* {सं.} बहुत छोटा टुकड़ा, तिनका, रवा; चावल का छोटा टुकड़ा, कना; अन्न के कुछ दाने; भिक्षा।

कतई *क्रि. वि.* {अ.} कदापि, किसी अवस्था में भी; सर्वथा।

पद कतई नहीं = बिल्कुल नहीं, कदापि नहीं।

कतक *क्रि. वि.* {सं. कुतः} किसलिए, क्यों; *वि.* कितना; निर्मली फल, रीठा।

कतना *अ.* {हिं. कातना} (सूत का) काता जाना।

कतनी *स्त्री.* तकली जिससे सूत काता जाता है।

कतरन *स्त्री.* {हिं. कतरना} कपड़े, कागज आदि के वे छोटे रद्दी टुकड़े जो कोई चीज काटने पर बचे रहते हैं।

कतरनी *स्त्री.* {हिं. कतरना} बाल, कपड़े, धातु आदि काटने की कैंची।

कतर-ब्योंत *स्त्री.* {हिं. कतरना + ब्योंत} काट-छाँट; उलट-फेर, इधर का उधर करना; उधेड़-बुन, सोच-विचार; युक्ति, जोड़-तोड़।

कतरवाँ *वि.* {हिं. कतरना} कतरकर बनाया हुआ; छोटे-छोटे टुकड़ों के रूप में।

कतरवाना *स.* {हिं. कतरना} कतरने का काम दूसरे से करवाना।

कतरा[1] *पुं.* {हिं. कतरना} कटा हुआ टुकड़ा, खंड; बूँद।

कतराना[1] *अ.* {हिं. कतरना} {*भाव.* कतराई} किसी वस्तु या व्यक्ति को बचाकर किनारे से निकल जाना; किसी काम को करने में हिचकना।

मुहा. काम से कतराना = काम करने में आगा पीछा करना।

कतल *पुं.* {अ. कत्ल} वध, हत्या।

कतलाम *पुं.* {अ. कत्ले-आम} जन-साधारण का वध, सर्वसंहार।

कतली *स्त्री.* {अ. कतरः} मिठाई आदि का चौकोर टुकड़ा।

कतवाना *क्रि.* कतरई कराना।

कतवार[1] *पुं.* {हिं. पतवार = पताई} कूड़ा-करकट।

कतवार[2] *पुं.* {हिं. कातना} कातनेवाला।

कतवारखाना *पुं.* कूड़ा फेंकने की सार्वजनिक जगह।

कतहुँ (हूँ) *क्रि. वि.* कहीं।

कताई *स्त्री.* {हिं. कातना} कातने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

कतान *स्त्री.* {फा.} अलसी की छाल का बढ़िया कपड़ा जो पहले बनता था; एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा; कातने का कार्य।

कताना *स.* {हिं.} 'कातना' का प्रे.।

कतार *स्त्री.* {अ.} पंक्ति, श्रेणी; समूह, झुंड।

कतारा *पुं.* {सं. कांतार} {*स्त्री.* अल्पा. कतारी} एक प्रकार का मोटा गन्ना।

कति, कतिक *वि.* {सं. कति} कितना; बहुत।

कतिपय *वि.* {सं.} कितने ही, कई; कुछ, थोड़े से; इने-गिने।

कतीरा *पुं.* {अ. कतीरः} गुलू नामक वृक्ष का गोंद।

कतेब *स्त्री.* {फा. किताब} पुस्तक, किताब; धर्मग्रंथ।

कत्ती *स्त्री.* {सं. कर्त्तरी} चाकू, छुरी; छोटी तलवार; कटारी; सुनारों की करतनी; बत्ती की तरह बटकर बाँधी जानेवाली पगड़ी।

कातिब *पुं.* {फा.} किताब आदि लिखनेवाला।

कत्थई *वि.* {हिं. कत्था} कत्थे या खैर के रंग का।

कत्थक *पुं.* {सं. कथक} एक जाति जिसका काम गाना-बजाना है; एक भारतीय नृत्य।

कत्था *पुं.* {सं. क्वाथ} {*वि.* कत्थई} खैर की लकड़ियों को उबालकर निकाला हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ जो पान पर लगाकर खाते हैं; खैर का पेड़।

कत्ल *पुं.* कतल।

कथंचित् *क्रि. वि.* {सं.} कदाचित्, शायद; जैसे-तैसे।

कथक *पुं.* {सं.} कथा कहनेवाला, पौराणिक; कत्थक।

कथकली *स्त्री.* दक्षिण भारत की एक प्रसिद्ध नृत्यकला।

कथक्कड़ *पुं.* {सं. कथा + हिं. कड़ (प्रत्य.)} बहुत कथा कहनेवाला।

कथन *पुं.* {सं.} {*वि.* कथित, कथनीय, कथ्य} कुछ कहना या बोलना; कही हुई बात, उक्ति;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी के संबंध में कही हुई कोई ऐसी बाज जो अभी प्रमाणित न हुई हो; (एलीगेशन); किसी के सामने दिया हुआ वक्तव्य, बयान (स्टेटमेंट)।

कथना *स.* {सं. कथन} कहना, बोलना; निंदा या बुराई करना।

कथनाश्रय *पुं.* {सं. कथन + आश्रय} वह पद या शब्दसमूह जो कुछ लोगों की बातचीत में अभ्यासवश पर निरर्थक रूप से प्रायः आता है, सखुन-तकिया, जैसे जो है सो, क्या नाम आदि।

कथनी *स्त्री.* {सं. कथन + ई (प्रत्य.)} कहने की क्रिया या भाव, कथन, बात; कोरी बकवाद; हुज्जत, तकरार, जैसे कथनी बहुत-कुछ, करनी कुछ भी नहीं।

मुहा. कथनी और करनी में अंतर = कुछ कहना और आचरण और।

कथनीय *वि.* {सं.} कहने योग्य, वर्णनीय; निंदनीय, बुरा।

कथमपि *क्रि. वि.* किसी भी तरह, जैसे तैसे।

कथरी *स्त्री.* {सं. कथा + री (प्रत्य.)} पुराने चिथड़ों को जोड़कर बनाया हुआ बिछौना, गुदड़ी।

कथा *स्त्री.* {सं.} वह जो कहा जाए, बात; धर्मविषयक व्याख्यान; चर्चा, जिक्र; समाचार, हाल; कहानी।

कथानक *पुं.* {सं.} कथा; छोटी कथा, कहानी; नाटक, उपन्यास, कहानी आदि का मूल ढाँचा, कथावस्तु (प्लॉट)।

कथान्तर *पुं.* {सं.} बातचीत में, बातों-बातों में।

कथा-वार्ता *स्त्री.* {सं.} अनेक प्रकार की बातचीत; पौराणिक आख्यान; इधर-उधर की बातें।

कथा सरित्सागर *पुं.* {सं.} क्षेमेन्द्र का बना संस्कृत का कहानी-ग्रंथ।

कथासूत्र *पुं.* {सं.} कहानी की कड़ी।

कथित *वि.* {सं.} कहा हुआ; जो अभी कहा तो गया हो, पर प्रमाणित न किया गया हो (अलेज्ड)।

कथीर *पुं.* {सं. कस्तीर} राँगा नामक धातु।

कथोद्घात *पुं.* {सं.} प्रस्तावना, कथा का प्रारंभ; (नाटक में) सूत्रधार की बात अथवा उसके आशय के अनुसार पहले-पहल पात्र का आना और अभिनय आरंभ करना।

कथोपकथन *पुं.* {सं.} कुछ व्यक्तियों में होनेवाली कोई औपचारिक या कल्पित बातचीत, बनाया या माना हुआ वार्तालाप (डॉयलॉग); किसी प्रकार की बातचीत, वार्तालाप; संवाद।

कथ्य *वि.* {सं.} कहने योग्य, कथनीय; साधारण बोलचाल की भाषा में प्रचलित; जो कहा जाता हो, कहा जानेवाला; जो कहने की बात हो।

कदंब *पुं.* {सं. कदम्ब} एक प्रसिद्ध वृक्ष, कदम; समूह; ढेर, राशि।

कद[1] *स्त्री.* {फा. कद} {*वि.* कद्दी} द्वेष, शत्रुता; हठ, जिद।

कद[2] *क्रि. वि.* {सं. कदा} कब, किस समय।

कद[3] *पुं.* {*अ.* कद} ऊँचाई (प्राणियों, वृक्षों आदि की); प्रतिष्ठा।

कदन *पुं.* {सं.} विनाश; वध, हिंसा; युद्ध; पाप; दुख; *वि.* संहार या नाश करनेवाला (यौ. के अंत में जैसे मदन-कदन = शिव)।

कदन्न *पुं.* {सं.} दूषित, न खाने योग्य अन्न।

कदपत्य *पुं.* {सं.} खोटी संतान।

कदम[1] *पुं.* {सं. कदंब} एकएक सदाबहार बड़ा पेड़ जिसमें गोल फल लगते हैं; इस वृक्ष का फल।

कदम[2] *पुं.* {*अ.* कदम} पैर, पाँव।

मुहा. कदम उठाना = चलना, कोई काम करने के लिए आगे बढ़ना; *कदम छूना* = प्रणाम करना; *किसी के कदम छूकर कुछ कहना* = किसी की शपथ खाकर कुछ कहना; *कदम बढ़ाना* = तेज चलना, उन्नति करना; *कदम रखना* = प्रवेश करना; *देखकर कदम रखना* = सोच विचार कर काम करना।

पैर का चिह्न।

मुहा. कदम पर कदम रखना = अनुकरण करना।

चलने में एक पैर तक का अंतर, पैंड, पग, फाल; घोड़े की वह चाल जिसमें उसके पैरों में गति होती है, पर बदन नहीं हिलता।

कदर *स्त्री.* {*अ.* कद्र} मात्रा, मिकदार; मान, प्रतिष्ठा, आदर; गुणों को मानना।

कदरई *स्त्री.* कायरता; कातरता।

कदरदान *वि.* {फा. कद्रदाँ} गुणग्राहक।

कदराई *स्त्री.* कायरता।

कदराना *अ.* {हिं. कादर} कायरता दिखाना; डरना; *स.* किसी में कायरता उत्पन्न करना।

कदर्थ *वि.* {सं.} कुत्सित, बुरा; अनुचित प्रयोजन।

कदर्थना *स्त्री.* {सं.} {*वि.* कदर्थित} दुर्दशा, दुर्गति; निंदा; अनादर करना।

कदर्थित *वि.* {सं.} अपमानित; सताया गया।

कदर्थ *वि.* {सं.} कंजूस।

कदली *स्त्री.* {सं.} केला; एक प्रकार का हिरन।

कदली वन *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ केले के बहुत अधिक पौधे हों; जहाँ हाथियों की संख्या बहुत हो।

कदा *क्रि. वि.* {सं.} कब, किस समय।

कदाकार *वि.* {सं.} बुरे आकार का, बदशकल, भद्दा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदाचार पुं. {सं.} {*वि.* कदाचारी} अनुचित या बुरा व्यवहार अथवा आचरण (मिस-बिहेवियर); दुश्चरित्र।

कदाचित् *क्रि. वि.* {सं.} कभी, किसी समय; शायद।

कदापि *क्रि. वि.* {सं.} कभी, हर्गिज (इसके बाद 'नहीं' या 'न' आना आवश्यक होता है, जैसे मैं वहाँ कदापि न जाऊँगा)।

कदाशय *वि.* {सं.} बुरे आशय या उद्देश्यवाला।

कदाशयता *स्त्री.* {सं.} बुरा आशय या उद्देश्य रखना।

कदाहार पुं. {सं.} बुरा भोजन।

कदी *क्रि. वि.* = कभी।

कदीम (मी) *वि.* {अ.} पुराना, प्राचीन।

कद्दू पुं. {फा. कद्दू} लौकी, घीया, काशीफल।

कद्र *स्त्री.* {अ.} आदर, मान, प्रतिष्ठा; गुण स्वीकार करना।

कद्रू *स्त्री.* {सं.} सर्पों की माता।

कधी *क्रि. वि.* कभी।

कन पुं. {सं. कण} बहुत छोटा टुकड़ा, कण; अन्न का दाना या उसका टुकड़ा; अनाज; देवता या बड़े का प्रसाद; भीख का अन्न; शारीरिक शक्ति।

कनउड़ा *वि., पुं.* कनौड़ा।

कनक[1] पुं. {सं.} सोना, सुवर्ण; धतूरा; पलाश, ढाक।

कनक[2] पुं. {सं. कणक} गेहूँ।

कनक-चंपा पुं. {सं. कनक + हिं. चंपा} एक प्रकार का चंपा (फूल); जिसका फूल कुछ सुनहरे रंग का होता है।

कनकटा *वि.* {हिं. कान + कटना} जिसका कान कटा हो, बूचा; कान काट लेनेवाला।

कनकना *वि.* {हिं. कनकनाना} {*स्त्री.* कनकनी} जिससे कनकनाहट उत्पन्न हो, चुनचुनानेवाला; अरुचिकर; गुनगुना, थोड़ा गर्म; चिड़चिड़ा।

कनकनाना[1] *अ.* {हिं. काट, पुं. हिं. कान} {*भाव.* कनकनाहट} सूरन, अरबी आदि तरकारियों के स्पर्श से अंगों में चुनचुनाहट होना, चुनचुनाना अरुचिकर लगना।

कनकनाना[2] *अ.* {हिं. ?} चौकन्ना होना; रोमांचित होना।

कनकालुका *स्त्री.* {सं.} सोने की झाँझर।

कनकी *स्त्री.* चावलों के टूटे कण।

कनकूत *स्त्री.* {सं. कण + हिं. कूत} खेत में खड़ी फसल का उपज का अनुमान।

कनकौआ पुं. {हिं. कन्ना + कौआ} कागज की बड़ी गुड्डी, पतंग।

कनखजूरा पुं. {हिं. कान + खर्जु = एक कीड़ा} एक जहरीला छोटा कीड़ा जिसके बहुत से पैर होते हैं, गोजर।

कनखा पुं. {सं. काण्ड} कोंपल; शाखा, डाली।

कनखियाना *स.* {हिं. कनखी} कनखी या तिरछी निगाह से देखना; आँख से इशारा करना।

कनखी *स्त्री.* {हिं. कोना + आँख} पुतली को आँख के कोने पर ले जाकर और दूसरों की दृष्टि बचाकर देखना; आँख का इशारा।
मुहा. कनखी मारना = आँख से इशारा या मना करना।

कनखोदनी *स्त्री.* {हिं. कान + खोदना} कान से मैल निकालने का चम्मच की शक्ल का एक छोटा उपकरण।

कनूगरिया *स्त्री.* सबसे छोटी हाथ की अंगुली।

कनछेदन पुं. {हिं. कान + छेदना} हिन्दुओं का एक संस्कार जिसमें बच्चों के कान छेदे जाते हैं, कर्णवेध।

कनटोप पुं. {हिं. कान + टोपी} वह टोपी जिससे सिर और दोनों कान ढक जाएँ।

कनपटी *स्त्री.* {हिं. कान + सं. पट} कान और आँख के बीच का स्थान।

कनपाड़ा *वि.* {सं.} जिसके कान फटे हों, नाथपंथी।

कनपेड़ा पुं. {हिं. कान + पेड़ा} एक रोग जिसमें कान के पास सूजन होती है।

कनफटा पुं. {हिं. कान + फटना} फटे कानवाला नाथ या गोरखपंथी योगी जो कानों में बिल्लौर की मुद्राएँ पहनते हैं।

कनफुँका *वि.* {हिं. कान + फूँकना} {*स्त्री.* कनफुँकी} कान में मंत्र सुनाकर दीक्षा देनेवाला; जिसने इस प्रकार से दीक्षा ली हो; कान फूँकने या चुगली करनेवाला।

कनमनाना *अ.* {अनु.} किसी की आहट पाकर कुछ हिलना-डुलना; असहमति की सूचक चेष्टा करना; किसी बात के विरुद्ध धीरे से कुछ कहना या चेष्टा करना।

कनय पुं. {सं. कनक} सोना, सुवर्ण।

कनरश्याम पुं. एक राग।

कनरस पुं. {हिं. कान + रस} भाषण, संगीत आदि सुनने का आनंद।

कनरसिया पुं. {हिं. कान + रसिया} गाना-बजाना सुनने का शौकीन।

कनसुई *स्त्री.* {हिं. कान + सुनना} आहट, टोह।
मुहा. कनसुई या कनसुइयाँ लेना = छिपकर किसी की बात सुनना।

कनस्तर पुं. {अं. कैनिस्टर} टीन का चौखूँटा पीपा, जिसमें घी, तेल आदि रखे जाते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कनहार *पुं.* {सं. कर्णधार} मल्लाह।
कनागत *पुं.* {सं. कन्यागत (सूर्य)} पितृपक्ष (जिसमें श्राद्ध होते हैं); श्राद्ध के दिन, श्राद्धकर्म।
कनात *स्त्री.* {तु.} कपड़े का वह परदा जिससे कोई स्थान घेरा जाता है।
कनावड़ा *वि.* कनौड़ा।
कनारी *स्त्री.* कर्नाटक की भाषा, कन्नड़।
कनिया *स्त्री.* गोद।
कनियाना *अ.* {?} गोद में उठाना; कंधे पर लादना; *अ.* कतराना।
कनियार *पुं.* कनक-चंपा।
कनिष्ठ *वि.* {सं.} {*स्त्री.* कनिष्ठा, *भाव.* कनिष्ठता} बहुत छोटा, सबसे छोटा; जो पीछे या बाद में उत्पन्न हुआ हो; वय या अवस्था में किसी से कम, उमर में किसी से छोटा (यंगर); पद, मर्यादा, अवस्था आदि में छोटा, 'कनिष्ठ' का उलटा (जूनियर); हीन, निकृष्ट।
कनिष्ठिका *स्त्री.* {सं.} कन्नी उंगली।
कनिहार *पुं.* {सं. कर्णधार} मल्लाह।
कनी *स्त्री.* {सं. कण} छोटा टुकड़ा; हीरे का बहुत छोटा टुकड़ा; बालिका।
मुहा. कनी खाना या चाटना = हीरे की कनी निगलकर प्राण देना।
चावल के टुकड़े, कनकी; वर्षा की बूँद।
कनीज *स्त्री.* {फा. कनीज़} दासी।
कनीन *पुं.* {सं.} क्वाँरी लड़की से हुआ लड़का।
कनु *स्त्री.* यमुना।
कनूका *पुं.* कनका।
कने *क्रि. वि.* {सं. किरणे = स्थान में} पास, निकट; ओर, तरफ।
कनेखी *स्त्री.* कनखी, तिरछी नजर।
कनेठी *स्त्री.* {हिं. कान + ऐंठना} कान मरोड़ने की सजा।
कनेर *पुं.* {सं. कणेर} एक पेड़ जिसमें लाल या पीले सुंदर फूल लगते हैं; इसमें सुगंध नहीं होती।
कनेरी *स्त्री.* {अं. कैनरी} एक गाने वाली चिड़िया।
कनोई *स्त्री.* कान का मैल।
कनोखा *वि.* {हिं. कनखी} कनखियों से देखनेवाला।
कनोखी *वि., स्त्री.* कनखी।
कनौजिया *वि.* {हिं. कन्नौज + इया (प्रत्य.)} कन्नौज का; *पुं.* कन्नौज का निवासी; कन्नौज के कान्यकुब्ज ब्राह्मण।
मुहा. सात कनौजिये तेरह चूल्हे = सबका अलग-अलग खाना, एकता का अभाव।
कनौठा *पुं.* कोना, किनारा।
कनौड़ *स्त्री.* {हिं. कनौड़ा} कनौड़े या खंडित होने का भाव; कलंक; लज्जा, संकोच; हीनता।
कनौड़ा[1] *वि.* {हिं. काना + औड़ा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* कनौड़ी} काना; जिसका कोई अंग खंडित हो, अपंग, खोंड़ा; कलंकित, निंदित; लज्जित, संकुचित; किसी के उपकार या भार से दबा हुआ, दबैल; तुच्छ, हीन; दुर्बल या असमर्थ।
कनौड़ा[2] *पुं.* {हिं. कीनना = मोल लेना} मोल लिया हुआ दास।
कनौती *स्त्री.* {हिं. कान + औती (प्रत्य.)} पशुओं के कान; घोड़ों के कान उठाए रखने का ढंग; कान में पहनने की बाली।
कन्नड़ *पुं.* दक्षिण भारत का एक प्रदेश; *स्त्री.* उक्त प्रदेश की भाषा।
कन्ना *पुं.* {सं. कण} चावल का टुकड़ा।
कन्नी *स्त्री.* {हिं. कन्ना} पतंग या कनकौए के दोनों ओर के किनारे; किनारा।
मुहा. कन्नी काटना = सामने न आना।
कन्नौज *पुं.* {सं. कान्यकुब्ज} उत्तरप्रदेश का प्रसिद्ध नगर जहाँ का इत्र प्रसिद्ध है।
कनौजिया *वि.* {सं.} इस जाति के।
कनौती *स्त्री.* पशु का कान, कान का कोना।
कन्या *स्त्री.* {सं.} अविवाहिता लड़की, कुँआरी लड़की; पुत्री, बेटी; बारह राशियों में से छठी राशि (वर्गों)।
कन्याकुमारी *स्त्री.* {सं. कन्या + कुमारी} भारत के दक्षिण में रामेश्वर के पास का एक अंतरीप, रासकुमारी।
कन्यादान *पुं.* {सं.} विवाह में वर को दान रूप में कन्या देने की रीति।
कन्यारासी *वि.* {सं. कन्या + राशि} जिसके जन्म के समय चंद्रमा कन्या राशि में हो; स्त्री की तरह दुर्बल।
कन्हाई *पुं.* कन्हैया।
कन्हैया[1] *पुं.* {सं. कृष्ण, प्रा. कण्ह} श्रीकृष्ण।
कन्हैया[2] *स्त्री.* {सं. स्कंध} कंधा; बच्चों का बड़ों के कंधे पर बैठकर चलना; लड़कों का एक प्रकार का खेल जिसमें दो लड़के अपनी बाँहों पर किसी दूसरे लड़के को बैठाकर ले चलते हैं।
कपट *पुं.* {सं.} {*वि.* कपटी} अभिप्राय साधने के लिए हृदय की बात छिपाना, छल, धोखा; दुराव, छिपाव।
कपट तपस्वी *पुं.* {सं.} धोखा देने के लिए साधु बना हुआ।
कपटना *स.* {सं. कल्पन} काट या निकालकर अलग करना; चोरी या छल से कुछ अंश निकलाकर अपने लिए अलग कर लेना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपटपूर्ण *वि.* {सं.} कपट से भरा।
कपटलेख *पुं.* {सं.} जालीपत्र।
कपटा *पुं.* {सं. क्लृप्ता = कपटने या काटनेवाला} खेत की फसल को काटनेवाला मँजदूर, लावा।
कपटी *वि.* {सं. कपटिन्} कपट करनेवाला।
कपड़खसोट *वि.* लूटमार करनेवाला।
कपड़छन *पुं.* {हिं. कपड़ा + छानना} ऊपर से भला मन में द्वेष रखनेवाला; मसाले या दबाकर चूर्ण कपड़े से छानना।
कपड़द्वार *पुं.* {हिं. कपड़ा + मिट्टी} कपड़ों का भंडार, वस्त्रागार, तोशाखाना।
कपड़मिट्टी *स्त्री.* {हिं. कपड़ा + मिट्टी} रस या भस्म बनाने के लिए; औषध फूँकने के गोले पर गीली मिट्टी के लेप के साथ कपड़ा लपेटने की क्रिया, कपड़ौटी; कपरौठी।
कपड़ा *पुं.* {सं. कर्पट} रुई, रेशम, ऊन आदि के तागों से बुना हुआ शरीर का आच्छादन, वस्त्र पट।
मुहा. कपड़ों से होना = मासिक धर्म से होना, रजस्वला होना (स्त्रियों का)।
पहनावा, पोशाक।
कपर्द (क) *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* कपर्दिका} (शिव का) जटाजूट; कौड़ी।
कपर्दिका *स्त्री.* {सं.} कौड़ी।
कपर्दी *पुं.* {सं. कपर्दिन्} शिव; जटाजूटधारी।
कपाट *पुं.* {सं.} किवाड़, दरवाजा; फाटक।
कपाटसंधि *स्त्री.* {सं.} किवाड़ों का जोड़।
कपार *पुं.* कपाल।
कपाल *पुं.* {सं.} {*वि.* कपाली, कपालिका} खोपड़ा, खोपड़ी; ललाट, मस्तक; अदृष्ट, भाग्य; मिट्टी का भिक्षापात्र, खप्पर।
कपालक *वि.* कापालिक।
कपालक्रिया *स्त्री.* {सं.} शवदाह का एक कृत्य जिसमें शव की खोपड़ी बाँस या लट्ठे से तोड़ते हैं।
कपालिका *स्त्री.* {सं.} रणचंडी।
कपाली *पुं.* {सं. कपालिन्} {*स्त्री.* कपालिनी} शिव, महादेव; भैरव; ठीकरा लेकर भीख माँगनेवाला।
कपास *स्त्री.* {सं. कपोस} {*वि.* कपासी} एक प्रसिद्ध पौधा जिसके डोडों से रुई निकलती है।
कपिंजल *पुं.* {सं.} चातक, पपीहा; गौरा पक्षी; तीतर; *वि.* पीले रंग का।
कपि *पुं.* {सं.} बंदर; हाथी; सूर्य।
कपिकेतन *पुं.* {सं.} अर्जुन का नाम।
कपित्थ *पुं.* {सं.} कैथ का पेड़ या फल।
कपिल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* कपिला, *भाव.* कपिलता} भूरा, मटमैला, तामड़े के रंग का; सफेद; भोला-भाला; *पुं.* अग्नि; महादेव; सूर्य; सांख्यशास्त्र के कर्ता एक मुनि।
कपिलता *स्त्री.* केवाँच।
कपिला *स्त्री.* {सं.} सफेद रंग की गाय; सीधी गाय; काली गाय जिसके सफेद रंग का दाग हो।
कपिश *वि.* {सं.} मटमैला; पीला-भूरा या लाल-भूरा।
कपिष्ठल *पुं.* {सं.} आधुनिक कैथल नगर।
कपीश *पुं.* {सं.} वानरों का राजा, जैसे हनुमान, सुग्रीव आदि।
कपूत *पुं.* {सं. कुपुत्र} बुरी चाल-चलन का पुत्र, बुरा लड़का।
कपूर *पुं.* {सं. कर्पूर} सफेद रंग का एक प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य जो दारचीनी की जाति के पेड़ों से निकलता है; घनसार।
कपूर-कचरी *स्त्री.* {सं. कपूर + कचरी} एक बेल जिसकी सुगंधित जड़ दवा के काम में आती है।
कपूरी *वि.* {हिं. कपूर} कपूर का बना हुआ; हलके पीले रंग का; कपूरी गंध का; *पुं.* कुछ हलका पीला रंग; एक प्रकार का पान।
कपोत *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* कपोतिका, कपोती} कबूतर; परेवा; पक्षी, चिड़िया।
कपोतव्रत *पुं.* {सं.} चुपचाप दूसरे के अत्याचार सहने का व्रत, या वृत्ति; जानबूझकर अनदेखी करना; संचय न करना, अपरिग्रह।
कपोतहस्त *पुं.* {सं.} दोनों हथेलियाँ जोड़कर बनी प्रणाम मुद्रा।
कपोती *स्त्री.* {सं.} कबूतरी; पेंडुकी; कुमरी।
कपोल *पुं.* {सं.} गाल।
कपोल-कल्पना *स्त्री.* {सं.} {*वि.* कपोल-कल्पित} मनगढ़ंत या बनावटी बात।
कपोल-कल्पित *वि.* {सं.} मनगढ़ंत।
कप्तान *पुं.* {अं. कैप्टन} टीम का नायक; सेना का बड़ा अधिकारी।
कफ *पुं.* {सं.} शरीर के अंदर की वह गाढ़ी लसीसी वस्तु जो खाँसने या थूकने से मुँह या नाक से निकलती है, श्लेष्मा, बलगम।
कफज्वर *पुं.* {सं.} कफ के कारण होनेवाला ज्वर।
कफन *पुं.* {अ.} वह कपड़ा जिसमें शव लपेटकर गाड़ा या फूँका जाता है।
कफन-खसोट *वि.* {अ. कफन + हिं. खसोटना} अत्यंत लोभी और निंदनीय कर्म करनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कफनी *स्त्री.* {हिं. कफन} वह कपड़ा जो शव के गले में पहनाते हैं; गले में पहनने का साधुओं का कपड़ा।

कफस *पुं.* {अ.} पिंजरा; बंधन, कैद।

कबंध *पुं.* {सं.} कंडाल; बादल; पेट; बिना सिर का धड़, रुंड; एक दैत्य जो सीताजी की खोज में घूमते राम के हाथों मारा गया था।

कब *क्रि. वि.* {सं. कदा} किस समय? किस वक्त?

पद कब का, कब के, कब से = देर से; *कब नहीं* = बराबर, सदा।

कबड्डी *स्त्री.* {सं. कपर्दी} लड़कों का एक खेल जो दो दलों में होता है।

कबर *स्त्री.* कब्र।

कबरा *वि.* चितकबरा; काला-सफेद रंग।

कबरिस्तान *पुं.* {फा.} जहाँ मुसलमानों व ईसाइयों की कब्रें बनी होती हैं (ग्रेव यार्ड)।

कबरी *स्त्री.* {सं. कवरी} स्त्रियों के सिर की चोटी; केशबंध, केशसज्जा।

कबा *पुं.* {अ.} एक प्रकार का लंबा ढीला पहनावा।

कबाड़ *पुं.* {सं. कर्पट} {*वि.* कबाड़ी} काम में न आनेवाली वस्तु; व्यर्थ का काम।

कबाड़खाना *पुं.* वह स्थान जहाँ व्यर्थ समझी जानेवाली वस्तु गँजी हो; वह कमरा या घर जिसका सारा सामान अस्त-व्यस्त हो।

कबाड़ा *पुं.* झंझट; बिगाड़।

मुहा. कबाड़ा करना = काम बिगाड़ देना।

कबाड़िया, कबाड़ी *पुं.* {हिं. कबाड़} पुरानी, रद्दी या टूटी-फूटी चीजें खरीदने तथा बेचनेवाला आदमी; झगड़ालू।

कबाब *पुं.* {अ.} सीखों पर भूना हुआ मांस।

कबाब-चीनी *स्त्री.* {अ. कबाब + हिं. चीनी} एक झाड़ी जिसके गोल फल दवा के काम में आते हैं।

कबाबी *वि.* {अ.} कबाब बेचनेवाला; मांसाहारी।

कबायली *पुं.* {अ.} पश्चिमी पाकिस्तान में रहनेवाली किसी कबीले का आदमी।

कबार *पुं.* {हिं. कबाड़} रोजगार, व्यवसाय; कबाड़।

कबाला *पुं.* {अ.} वह दस्तावेज जिसके द्वारा कोई जायदाद दूसरे के अधिकारों में चली जाए, जैसे बैनामा।

कबित्थ *पुं.* {सं. कपिल} कैथ का फल जो बेस्वाद होता है।

कबाहत *स्त्री.* {अ.} बुराई, खराबी; झंझट, अड़चन।

कबीर *पुं.* {अ. कबीर = बड़ा, श्रेष्ठ} एक प्रसिद्ध कवि तथा भक्त जो जुलाहे थे; एक प्रकार का अश्लील गीत जो होली में गाया जाता है।

कबीर-पंथ *पुं.* {हिं. कबीर + पंथ} कबीर का संप्रदाय।

कबीर-पंथी *वि.* {हिं. कबीर + पंथ} कबीर के संप्रदाय का।

कबीला *पुं.* {अ. कबीलः} समूह, झुंड; एक वंश के सब लोगों का वर्ग; गण; *स्त्री.* जोरू, पत्नी।

कबूतर *पुं.* {फा., मि. सं. कपोत} {*स्त्री.* कबूतरी} झुंड में रहनेवाला एक प्रसिद्ध पक्षी।

कबूतरखाना *पुं.* {फा.} कबूतर रखने का स्थान; ऐसा मकान जहाँ लोग घिच से बैठते हों।

कबूतरबाजी *स्त्री.* कबूतर पालने तथा उड़ाने का काम।

कबूल *पुं.* {अ.} स्वीकार, मंजूर।

कबूलना *स.* {अ. कबूल + ना (प्रत्य.)} स्वीकार करना, मंजूर करना, सकारना।

कबूलियत *स्त्री.* {अ.} वह कागज जो पट्टा लेनेवाला पट्टे की स्वीकृति में पट्टा देनेवाले को लिखकर देता है।

कबूली *स्त्री.* {फा.} चने की दाल की खिचड़ी।

कब्जा *पुं.* {अ.} मूठ, दस्ता; किवाड़ या संदूक में जड़े जानेवाले लोहे या पीतल की चादर के बने हुए दो चौखूँटे टुकड़े जो पेंच से जड़े जाते हैं; वह स्वत्व जो किसी वस्तु या संपत्ति पर उसके भोग आदि के संबंध में किसी का प्राप्त होता है, अधिकार (पजेशन); वश, इख्तियार।

कब्जियत *स्त्री.* {अ.} पाखाना साफ न आना, मलावरोध।

कब्र *स्त्री.* {अ.} व गड्ढा जिसमें मुसलमान, ईसाई आदि मुरदा गाड़ते हैं; वह चबूतरा जो ऐसे गड्ढे के ऊपर बनाया जाता है।

मुहा. कब्र में पैर लटका होना = मरने के समीप होना।

कब्रगाह *स्त्री.* कब्रिस्तान।

कब्रिस्तान *पुं.* {फा.} वह स्थान जहाँ मुरदे गाड़े जाते हैं (बरियल ग्राउंड); जहाँ कब्रें बनी होती हैं, वह घेरा।

कभी *क्रि. वि.* {हिं. कब + ही} किसी समय, किसी अवसर पर।

पद कभी का = बहुत देर से; *कभी न कभी* = आगे चलकर किसी अवसर पर।

किसी समय भी, कदापि, हरगिज; कभी-कभार।

कमंगर *पुं.* {फा. कमानगर} कमान बनानेवाला; जोड़ की उखड़ी हुई हड्डी बैठानेवाला; चित्रकार, चितेरा।

कमंडल *पुं.* {सं. कमंडलु} संन्यासियों का जलपात्र जो धातु या दरियाई नारियल आदि का होता है।

कमंध *पुं.* कबंध, बिना सिर की लाश; लड़ाई-झगड़ा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमंद *स्त्री.* {सं.} वह फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर, जंगली पशु फँसाए जाते हैं, फंदा, पाश; वह फंदेदार रस्सी जिसके सहारे चोर ऊँचे मकानों पर चढ़ते हैं।

कम *वि.* {फा.} थोड़ा, न्यून, अल्प।
मुहा. कम-से-कम = अधिक नहीं, तो इतना तो अवश्य, और नहीं, तो इतना जरूर।
बुरा, जैसे कमबख्त; *क्रि. वि.* प्रायः नहीं, बहुधा नहीं।

कम-असल *वि.* {फा. कम + *अ.* अस्ल} वर्णसंकर, दोगला; नीच।

कमखर्च *वि.* {फा.} {*भाव.* कमखर्ची} कम खर्च करनेवाला, मितव्ययी; कंजूस।

कमखाब *पुं.* {फा.} एक प्रकार का बूटीदार रेशमी कपड़ा।

कमची *स्त्री.* {तु., मि. सं. कंचका} वह पतली लचीली टहनी जिससे टोकरियाँ बनाते हैं, तीली; पतली लचीली छड़ी।

कमजोर *वि.* {फा. कमज़ोर} दुर्बल, अशक्त।

कमजोरी *स्त्री.* {फा. कमज़ोरी} दुर्बलता।

कमठ *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* कमठी} कछुआ; साधुओं का तूँबा; बाँस।

कमठी *स्त्री.* {सं. कमठ} बाँस की पतली लचीली धज्जी, फट्टी; *स्त्री.* कछुई।

कमती *वि.* थोड़ा, कम।

कमध *पुं.* कछुवा; राजपूतों की एक कछवाहा जाति।

कमन *वि.* {सं.} लोभ, कामी।

कमनी *वि.* कमनीय।

कमनीय *वि.* {सं.} {*भाव.* कमनीयता} सुंदर, मनोहर।

कमनैत *पुं.* {फा. कमान + हिं. ऐत (प्रत्य.)} {*भाव.* कमनैती} कमान चलानेवाला, तीरंदाज।

कमबख्त *वि.* {फा.} अभागा; कम्बख्त।

कमबख्ती *स्त्री.* {फा.} दुर्भाग्य।

कमर *स्त्री.* {फा.} शरीर में पेट और पीठ के नीचे और पेड़ू तथा चूतड़ के ऊपर का अंग; पृष्ठभाग।
मुहा. कमर कसना या बाँधना = तैयार होना, उद्यत होना, चलने की तैयारी करना; *कमर टूटना* = कुछ करने के योग्य न रह जाना।
किसी लंबी वस्तु के बीच का पतला भाग, जैसे कोल्हू की कमर।

कमरकस *पुं.* ढाक का गोंद।

कमरख *स्त्री.* {सं. कर्मरंग, फा. कम्मरंग} एक पेड़ जिसके फाँकवाले लंबे फल खट्टे होते हैं, कमरंग।

कमरतोड़ *वि.* {हिं. कमर + तोड़ना} कमर तोड़ देनेवाला; कष्टसाध्य, श्रमसाध्य; कठिन।

कमरबंद *पुं.* {फा.} वह लंबा कपड़ा जिससे कमर बाँधते हैं, पटका; पेटी; इजारबंद, नारा; कमर बाँधने का फेंटा।

कमरबंदी *स्त्री.* युद्ध की तैयारी, लड़ने के लिए कमर कसना।

कमर-बल्ला *पुं.* {फा. कमर + हिं. बल्ला} वह छोटी दीवार जो किलों और चारदीवारियों के ऊपर होती है और जिसमें कँगूरे और झरोखे होते हैं; वह छोटी दीवार जो किसी बड़ी दीवार के सहारे के लिए उसके नीचेवाले भाग के साथ, प्रायः ढालुएँ रूप में खड़ी की जाती है।

कमरा *पुं.* {लै. कैमेरा} कोठरी; छाया-चित्र या फोटो उतारने का यंत्र; कक्ष।

कमरी *स्त्री.* कमली।

कमल *पुं.* {सं.} पानी में होनेवाला एक पौधा जो अपने सुंदर फूलों के लिए प्रसिद्ध है; इस पौधे का फूल; इस फूल के आकार का एक मांसपिंड जो पेट में दाहिनी ओर होता है, क्लोम; जल, पानी; योनि के अंदर की एक कमलाकार गाँठ, फूल, धरन; एक प्रकार का पित्त रोग जिसमें आँखें पीली पड़ जाती हैं, पीलिया; कमल के फूल या बड़े गिलास के आकार का शीशे का एक आधान जिसमें प्रकाश के लिए मोमबत्ती जलाते हैं।

कमल-ककड़ी *स्त्री.* भसींड़।

कमलगट्टा *पुं.* {सं. कमल + हिं. गट्टा} कमल का बीज, पद्मबीज; भिस।

कमलनयन *वि.* {सं.} {*स्त्री.* कमलनयनी} जिसकी आँखें कमल की तरह बड़ी और सुंदर हों; *पुं.* विष्णु।

कमलनाभ *पुं.* {सं.} विष्णु।

कमलनाल *स्त्री.* {सं.} कमल की डंडी, जिस पर फूल रहता है, मृणाल।

कमलबंधु *पुं.* {सं.} सूर्य।

कमलबाई *स्त्री.* कमल (रोग)।

कमलमूल *पुं.* {सं.} कमल।

कमला *स्त्री.* {सं.} लक्ष्मी; धन-संपत्ति; एक प्रकार की बड़ी नारंगी, संतरा।

कमलाकर *पुं.* {सं.} कमलों से भरा जलाशय; लक्ष्मी का हाथ।

कमलाकांत *पुं.* {सं.} विष्णु।

कमलाक्ष *वि.* {सं.} कमलनयन।

कमलालया *स्त्री.* लक्ष्मी।

कमलासन *पुं.* {सं.} ब्रह्मा; योग का पद्मासन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमलिनी *स्त्री.* {सं.} छोटा कमल; कमल की बेल; कमलोंवाली बावड़ी।

कमली *स्त्री.* {हिं. कम्बल} ब्रह्मा; छोटा कंबल।

कमवाना *स.* {हिं. कमाना का प्रे.} कमाने का काम दूसरे से कराना।

कमाई *स्त्री.* {हिं. कमाना} कमाया हुआ धन, अर्जित द्रव्य; कमाने का काम; धन का अर्जन।

कमाच *पुं.* {?} एक प्रकार का रेशमी कपड़ा; कौंछ।

कमाची *स्त्री.* {तु. कमची} छोटी पतली छड़ी; सारंगी बजाने की कमानी।

कमान[1] *स्त्री.* {फा.} धनुष।
मुहा. कमान चढ़ना = दौर-दौरा होना; त्योरी चढ़ना, क्रोध में होना।
इंद्रधनुष; मेहराब; तोप; बंदूक।

कमान[2] *स्त्री.* {अं. कमांड} आज्ञा, हुक्म; फौजी आज्ञा; फौजी नौकरी।
मुहा. कमान पर जाना = लड़ाई पर जाना; *कमान बोलना* = सिपाही को नौकरी या लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना।

कमान सँभालना सेना, आंदोलन या दल का नेतृत्व हाथ में लेना।

कमाना[1] *स.* {हिं. काम} काम-धंधा करके धन पैदा करना; सुधारक काम के योग्य बनाना।
पद कमाई हुई हड्डी या देह = कसरत से बलिष्ठ किया हुआ शरीर; *कमाया साँप* = वह साँप जिसके विषैले दाँत उखाड़ लिए गए हों।
सेवा-संबंधी छोटे काम करना, जैसे पाखाना कमाना (उठाना), दाढ़ी कमाना (हजामत बनाना); कर्म का संचय करना, जैसे पाप कमाना; *अ.* मेहनत-मजदूरी करना; स्त्री का व्यभिचार से धन उपार्जित करना, कसब करना।

कमानी *स्त्री.* {फा. कमान} {*वि.* कमानीदार} तार अथवा और कोई लचीली वस्तु, जो इस प्रकार बैठाई हो कि दब और उठ जाए; झुकाई हुई लोहे की लचीली तीली; एक प्रकार की चमड़े की पेटी जिसे आँत उतरने के रोगी कमर में बाँधते हैं; मोड़ी हुई खपची।

कमानीदार *वि.* टेढ़ी (भवें या मेहराब)।

कमाल *पुं.* {*अ.*} {*भाव.* कमालियत} परिपूर्णता, पूरापन; निपुणता, कुशलता; अद्‌भुत या अनोखा काम; विशेष निपुणता।

कमालपाशा *पुं.* टर्की के क्रांतिकारी नेता।

कमालियत *स्त्री.* कमाल दिखानेवाली दक्षता।

कमिया *पुं.* {फा. काम + हिं. इया (प्रत्य.)} मजदूरी करनेवाला, मजदूर।

कमी *स्त्री.* {फा. कम} कम होने की अवस्था का भाव, न्यूनता, अल्पता; कम किए जाने की क्रिया या भाव (रिडक्शन); हानि, नुकसान।

कमीज *स्त्री.* {*अ.* कमीज़} कुरते की तरह का कालरदार प्रसिद्ध पहनावा।

कमीना *वि.* {फा.} {*स्त्री.* कमीनी} {*भाव.* कमीनापन} नीचे, क्षुद्र।

कमीला *पुं.* कबीला, एक लाल औषध जो कीड़े मारने के काम आती है।

कमीशन *पुं.* {अं.} कोई माल बेचने, बिकवाने अथवा इसी प्रकार का कोई काम करने-कराने के बदले में मिलनेवाला धन, दलाली; आयोग।

कमुकंदर *पुं.* {सं. कार्मुक + दर} शिव का धनुष तोड़नेवाले, रामचंद्र।

कमेरा *पुं.* {हिं. काम + एरा (प्रत्य.)} छोटा काम करनेवाला, जैसे मजदूर; कमानेवाला।

कमेला *पुं.* {हिं. काम + एला (प्रत्य.)} वह जगह जहाँ पशु मारे जाते हैं, वधस्थान, कसाईखाना।

कमोड *पुं.* {अं.} विदेशी ढंग का पाखाने का ऊँचा गमला।

कमोदिन *स्त्री.* कुमुदिनी।

कमोरा *पुं.* {सं. कुंभ + हिं. ओरा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* कमोरी, कमोरिया} मिट्टी का वह बड़ा बरतन जिसमें दूध, दही या पानी रखा जाता है, घड़ा, कछरा।

कम्युनिज्म *पुं.* {अं.} साम्यवाद।

कम्युनिस्ट *वि., पुं.* {अं.} साम्यवादी।

कम्यून *पुं.* {सं.} स्थानीय शासन के अंतर्गत कोई प्रशासनिक क्षेत्र।

कया *स्त्री.* काया।

कयाम *पुं.* {*अ.*} ठहराव, टिकाव; ठहरने की जगह, विश्राम-स्थान; निश्चय, स्थिरता।

कयामत *स्त्री.* {*अ.*} मुसलमानों, ईसाइयों आदि के अनुसार सृष्टि का वह अंतिम दिन सब मुरदे उठकर खड़े होंगे; प्रलय।

कयास *पुं.* {*अ.*} अनुमान।

करंक *पुं.* {सं.} हड्डियों का ढाँचा, निर्धन; छोटी पिटारी, पानदान आदि।

करंज[1] *पुं.* {सं.} कंजा; एक प्रकार का छोटा जंगली पेड़।

करंज[2] *पुं.* {सं. कलिंग} मुरगा।

करंजुआ *वि.* {सं. करंज} करंज के रंग का, खाकी।

करंड[1] *पुं.* {सं.} मधुमक्खी का छत्ता; तलवार; कारंड या कारंडव नाम का हंस।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करंड[2] पुं. {सं. कुरविंद} कुरुल पत्थर जिसपर रखकर हथियार आदि तेज किए जाते हैं।
करंडक पुं. {सं.} बाँस या बेंत की बुनी पिटारी या टोकरी।
करंब पुं. {सं.} समूह, ढेर।
कर[1] पुं. {सं.} हाथ; हाथी की सूँड़ जिससे वह हाथ के समान काम लेता है; सूर्य या चंद्रमा की किरण; वह नियत धन जो किसी व्यक्ति या किसी संपत्ति, व्यापार आदि की आय में से कोई अधिकारी अपने लिए लेती है, महसूल, जैसे आयकर, मार्गकर (टैक्स)।
कर[2] *वि.* {*स्त्री.* करी} करने, देने या प्राप्त करानेवाला (समस्त पदों के अंत में, जैसे दिनकर सुखकर आदि)।
कर[3] *विभ.* {सं. कृत} संबंधकारक का चिह्न, का, जैसे तिनकर।
करक *स्त्री.* कसक (पीड़ा); ओले, बर्फ के पत्थर; मिट्टी का पात्र–करवा।
करकच[1] पुं. {देश.} समुद्र के पानी से बनाया हुआ नमक, समुद्री नमक।
करकच[2] पुं. {अनु.} झगड़ा, बखेड़ा; हुज्जत, तकरार।
करकट पुं. {हिं. खर + सं. कट} कूड़ा, कतवार; केकड़ा।
करकना *अ.* कड़कना, चुभना; *वि.* करकरा।
करकरा[1] पुं. {देश.} एक प्रकार का सारस।
करकरा[2] *वि.* {सं. कर्कर} खुरदुरा; करारा; कड़ा; दृढ़, पक्का; चुभनेवाला।
करकराहट *स्त्री.* {हिं. करकरा + आहट (प्रत्य.)} कड़ापन; खुरखुराहट; आँख में किरकिरी पड़ने की-सी पीड़ा।
करका पुं. ओला।
करखा पुं. {सं. कर्ष} उत्तेजना, बढ़ावा; युद्धगीत; पुं. कालिख; कड़खा।
करखाना *अ.* {हिं. कालिख} कालिख से युक्त होना, काला पड़ना; कालिख लगाकर काला करना; *अ.* हिं. 'करखना' का प्रे.।
करगत *वि.* {सं.} हाथ में आया हुआ, हस्तगत; प्राप्त, अपने अधिकार में स्थित वस्तु।
करगह पुं. करघा।
करगी[1] *स्त्री.* {सं. कर + ग्रहण} जमी हुई चीज खुरचने का एक उपकरण।
करगी[2] *स्त्री.* {देश.} पानी की बाढ़; ओला, पत्थर।
करग्रह पुं. {सं.} पाणिग्रहण विवाह।
करग्राही पुं. {सं.} हाथ पकड़नेवाला, वर, दूल्हा।
करघा पुं. {फा. कारगाह} जुलाहों का वह यंत्र जिससे वे कपड़ा बुनते हैं, खड्डी।
करचंग पुं. {हिं. कर + चंग} ताल देने का एक बाजा; डफ।
करज पुं. {सं.} नाखून; उँगली; एक सुगंधित द्रव्य।
करजाल पुं. {सं.} किरणों का समूह।
करट पुं. {सं.} कौआ; हाथी की कनपटी।
करटी पुं. {सं.} हाथी।
करण पुं. {सं.} {*भाव.* करणता} कोई काम करने की क्रिया, कुछ करना, आचरण, जैसे साधारणीकरण, सरलीकरण (एक्ट); वह जो कुछ किया जाए, कार्य (एक्ट); वह वस्तु या साधन जिसके द्वारा कोई कार्य किया जाए, करने का साधन, जैसे हथियार, औजार आदि (इन्स्ट्रूमेंट); विधिक क्षेत्र में वह लेख्य जो किसी कार्य, व्यवहार, संविदा, प्रक्रिया आदि का सूचक हो और जिसके द्वारा कोई अधिकार या दायित्व, उत्पन्न अंतरित, परिमित, विस्तारित, निर्वापित या अभिलिखित होता हो, साधन-पत्र (इन्स्ट्रूमेंट); व्याकरण में वह कारक जिसके द्वारा कर्ता कोई क्रिया सिद्ध करता है (इसका चिह्न 'से' है); गणित में वह संख्या जिसका पूरा-पूरा वर्गमूल न निकल सके; साधन; इंद्रियाँ जो बाहरी और भीतरी मिलाकर 11 होती हैं; शरीर; *वि.* (यौगिक शब्दों के अंत में) करनेवाला, कर्ता, जैसे मंगलकरण; पुं. कर्ण।
करणिक पुं. {सं.} वह जो किसी का कोई काम करता हो, कार्यकर्ता; किसी कार्यालय में लिखा-पढ़ी का काम करनेवाला कर्मचारी (क्लर्क); राज का वह उपकरण जिससे सीमेंट आदि लगता है।
करणी *स्त्री.* {सं.} वह संख्या जिसका पूरा वर्गमूल न निकले।
करणी चिह्न पुं. वर्गमूल का सूचक चिह्न।
करणीय *वि.* {सं.} करने योग्य।
करतब पुं. {सं. कर्तव्य} {*वि.* करतबी} कार्य, काम; कला, हुनर; करामात; जादू।
करतरी *स्त्री.* कर्तरी।
करतल पुं. {सं.} {*वि.* करतली} हाथ की हथेली।
करतलध्वनि *स्त्री.* {सं.} ताली, थपोड़ी।
करतार पुं. {सं. कर्तार} ईश्वर; पुं. करताल।
करतारी *स्त्री.* {हिं. करतार} कर्तार या ईश्वर की लीला; *स्त्री.* करताली।
करताल पुं. {सं.} दोनों हथेलियों के परस्पर आघात का शब्द, ताली बजाना; ताल देने का एक प्रकार का बाजा; झाँझ, मजीरा।
करताली *स्त्री.* {सं. कर + ताल} दोनों हाथों से तालियाँ बजाने की क्रिया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करतूत *स्त्री.* {सं. कर्तृत्व} कर्म, करनी, काम; कला, हुनर।

करतूती *वि.* {हिं. करतूत} करतूत करनेवाला; *स्त्री.* = करतूत।

करद[1] *वि.* {सं.} किसी प्रकार का कर या राजस्व देनेवाला; अधीनस्थ।

करद[2] *स्त्री.* {फा. कार्द} चाकू, छुरी।

करदम *पुं.* {सं. कर्दम} कीचड़, पंक।

करदा *पुं.* {हिं. गर्द} बिक्री की वस्तु में मिला हुआ कूड़ा-करकट; दाम में वह कमी जो ऐसे कूड़े-करकट के कारण की जाए, कटौती।

करधनी *स्त्री.* {सं. किंकिणी} कमर में पहनने का एक गहना।

करनधार *पुं.* {सं.} कर्णधार।

करनफूल *पुं.* {सं. कर्ण + हिं. फूल} कान का एक गहना, तरौना, काँप।

करनवेध *पुं.* {सं.} कर्णवेध संस्कार जिसमें बालक का कान बींधा जाता है।

करना[1] *स.* {सं. करण} क्रिया को आरंभ से समाप्ति की ओर ले जाना, निपटाना, भुगताना, संपादित करना; पकाकर तैयार करना; भाड़े पर सवारी ठहराना; रोशनी बुझाना; एक रूप से दूसरे रूप में लाना, बनाना।

पद करके = के रूप में, जैसे हम आपको बड़ा करके मानते हैं।

कोई वस्तु पोतना, जैसे रंग करना।

करना[2] *पुं.* {सं. कर्ण} सुदर्शन नामक पौधा, जिसमें सफेद-लाल फूल लगते हैं; इस पौधे का फूल; *पुं.* करनी।

करनाटक *पुं.* {सं. कर्णाटक} दक्षिण भारत का एक राज्य।

करनाटकी *पुं.* {सं. कर्णाटकी} करनाटक राज्य का निवासी; कसरत दिखानेवाला मनुष्य; जादूगर; नृत्य या संगीत जो कर्नाटक की विशेषता है; कर्नाटक की भाषा, कन्नड़।

करनाल *पुं.* {सं. करनाय} सिंघा, नरसिंहा, भोंपा; एक प्रकार की तोप।

कर-निर्धारण *पुं.* {सं.} आय, बिक्री आदि पर कर निर्धारित करना।

करनी *स्त्री.* {हिं. करण} कार्य, कर्म, करतब; करतूत; अंत्येष्टि-कर्म; मृतक-संस्कार; दीवार पर गारा लगाने का एक औजार, कन्नी।

करपर[1] *स्त्री.* {सं. कर्पर} खोपड़ी; खपरैल।

करपर[2] *वि.* {सं. कृपण} कंजूस।

करपल्लवी *स्त्री.* {सं.} उँगलियों के संकेत से शब्द या भाव प्रकट करना।

करपिचकी *स्त्री.* {सं. कर + हिं. पिचकी} हथेलियों से पिचकारी की तरह पानी का छींटा छोड़ने की मुद्रा या कार्य।

करबरना *अ.* {अनु.} कुलबुलाना; पक्षियों का कलरव करना, चहकना।

करबला *पुं.* {अ.} कर्बला; वह स्थान जहाँ इमाम हुसैन शहीद हुए।

करबूस *पुं.* {?} घोड़े के जीन में लगी वह रस्सी या तस्मा जिसमें हथियार लटकाते हैं।

करभ *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* करभी} हथेली के पीछे का भाग; ऊँट का बच्चा; हाथी का बच्चा; कमर।

करभोरु *पुं.* {सं.} हाथी की सूँड़ के समान जाँघ जिसकी हो; *वि.* सुंदर जाँघोंवाली (स्त्री)।

करम[1] *पुं.* {सं. कर्म} कर्म, काम; कर्म का फल, भाग्य, किस्मत।

मुहा. करम फूटना = भाग्य मंद होना, हानि होना।

करम[2] *पुं.* {अ.} मेहरबानी, कृपा, दया।

करमकल्ला *पुं.* {अ. करम + हिं. कल्ला} एक प्रकार की गोभी, बंदगोभी।

करमठ *वि.* {सं. कर्मठ} कर्मनिष्ठ; कर्मकांडी।

करमात *वि.* {सं. कर्म} भाग्य।

करमरी (रिन्) *पुं.* {सं.} आजीवन कारावास का बंदी।

करमाला *स्त्री.* {सं.} उँगलियों के पोर पर उँगली रखकर जप की गिनती करना।

करमाली *पुं.* {सं. करमालिन्} सूर्य।

करमिया *वि.* = करमी (कर्मी)।

करमी *वि.* {सं. कर्म} कर्म करनेवाला; कर्मठ; कर्मकांडी।

करमी-धरमी *वि.* जो नित्य नियम करता व धर्माचारी हो।

करमुक्त *वि.* {सं.} जिसपर कर न लगता हो; हाथ से छूटा।

करमुखा *वि.* कलमुँहाँ।

करमोद *पुं.* धान की एक किस्म।

कररना *अ.* {अनु.} चरमराकर टूटना; कर्कश शब्द करना।

करल *पुं.* {सं. कटाह} कड़ाही।

करवंचन *पुं.* {सं.} उचित कर से शासन को वंचित करना, कर की चोरी।

करवट[1] *स्त्री.* {सं. करवर्त्त} हाथ या पार्श्व के बल लेटने की स्थिति या मुद्रा।

मुहा. करवट बदलना या लेना = एक ओर से दूसरी ओर घूमकर लेटना, और का और हो जाना, बदल जाना; *करवट न लेना* = किसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्तव्य का ध्यान न रखना, सन्नाटा खींचना; *करवटें बदलना* = बिस्तर पर बेचैन रहना, तड़पना।

करवट² पुं. {सं. करपत्र} करवत, आरा; वे प्राचीन आरे या चक्र जिनसे कटकर लोग शुभ फल की आशा से मरते थे; करौंत।

करवत पुं. {सं. करपत्र} आरा; करौंत।

करवर *स्त्री.* {देश.} विपत्ति; आफत।

करवरना *ब.* {सं. कलरव} कलरव करना, चहकना।

करवा पुं. {सं. करक} मिट्टी, धातु आदि का एक प्रकार का टोंटीदार लोटा।

करवानक पुं. गौरेया।

करवाना *स.* {हिं.} करना का प्रे.।

करवाल पुं. {सं.} नाखून; तलवार।

करवीर पुं. {सं.} कनेर का पेड़; तलवार; श्मशान।

करवैया *वि.* {हिं.} करनेवाला।

करिश्मा पुं. {फा.} अद्‌भुत काम, चमत्कार, करामात।

करष पुं. {सं. कर्ष} खिंचाव, तनाव; मन-मुटाव, द्वेष; लड़ाई का जोश।

करषक पुं. {सं. कृषक} किसान, जोतनेवाला; खींचनेवाला।

करसंपुट पुं. {सं.} हाथ की हथेलियों की वह मुद्रा जिसमें वे पात्र या दोने के रूप में हो जाती हैं, अंजलि; दोनों हाथ जोड़ना।

करस पुं. {सं. कलश} कलसा ताँबे या पीतल का।

करसान पुं. कृषाण।

करसायल पुं. {सं. कृष्णसार} काला हिरन।

करसी *स्त्री.* {सं. करीष} उपला, कंडा; उपले की आग; उपले या कंडे की राख।

करह¹ पुं. {सं. करभ} ऊँट।

करहाट (क) पुं. {सं.} कमल की जड़, भसींड़; कमल का छत्ता; भारत का एक प्रदेश।

कराँकुल पुं. {सं. कलांकुर} जलाशयों के पास रहनेवाला कूँज नामक जलपक्षी।

करागण पुं. {सं.} कर एकत्रित करने का स्थान।

करा *स्त्री.* = कला।

कराई¹ *स्त्री.* {हिं. केराना} उर्द, अरहर आदि के ऊपर की भूसी।

कराई² *स्त्री.* {हिं. काल} कालापन; कृष्णता।

कराघात पुं. {सं.} हाथ से प्रहार, चपेट।

करात पुं. {अ. कीरात} चार जौ की एक तौल जो सोना-चाँदी और रत्न आदि तौलने के काम में आती है (कैरट)।

कराना *स.* {हिं.} करना का प्रे.; करवाना।

कराबा पुं. {अ.} शीशे का वह बड़ा बरतन जिसमें अर्क आदि रखते हैं।

करामात *स्त्री.* {अ.} कोई अद्‌भुत और अलौकिक कार्य या व्यापार जो कर दिखलाया जाए, चमत्कार (मिरैकल)।

करामाती *वि.* {हिं. करामात} करामात- संबंधी, जिसमें करामात हो; करामात या करिश्मा दिखानेवाला।

करायल *स्त्री.* कलौंजी।

करार पुं. {अ.} किसी काम या बात के संबंध में कुछ लोगों में होनेवाला निश्चय या निर्णय, ठहराव; धैर्य, तसल्ली, संतोष; आराम, चैन; वादा; प्रतिज्ञा।

करारा¹ पुं. {सं. कराल} नदी का वह ऊँचा किनारा जो जल के काटने से बना हो; टीला, ढूह।

करारा² *वि.* {हिं. कड़ा, कर्रा} कठोर, कड़ा; दृढ़चित्त; इतना तला या सेंका हुआ कि तोड़ने से या चबाते समय कुरकुर शब्द करे; तेज, तीक्ष्ण; अधिक गहरा या भारी; बहुत कड़ा, बड़ा या पूरा, जैसे करारा जवान, करारा जवाब।

कराल *वि.* {सं.} डरावना, भयानक; ऊँचा-नीचा; नोकदार।

कराव पुं. {हिं. करना} कुछ जातियों में विधवा के साथ किया जानेवाला विवाह; करावा।

कराहना *अ.* {हिं. करना + आह} मुँह से व्यथासूचक शब्द निकालना, आह-आह करना।

करिंद पुं. {सं. करीन्द्र} बड़ा हाथी; इंद्र का हाथी, ऐरावत।

करि पुं. {सं.} {*स्त्री.* करिणी} हाथी।

करिआ *वि.* = काला।

करिका *स्त्री.* {सं.} नाखून से बना घाव, खरौंच।

करिणी *स्त्री.* {सं.} हथनी।

करिया पुं. {सं. कर्णिक} नाव की पतवार; केवट, मल्लाह; ईख का एक रोग; *वि.* काला।

करिल *स्त्री.* {हिं. कोंपल} कोंपल, नया कल्ला; *वि.* काला।

करिवदन पुं. {सं.} गणेश।

करिहाँवँ पुं. = कमर।

करी¹ *स्त्री.* {सं. करि} हाथी की मादा, हथिनी।

करी² *स्त्री.* कली; कड़ी।

करीना पुं. {अ.} ढंग, तरीका, तरतीब।

करीब *क्रि. वि.* {अ.} समीप, पास, निकट; लगभग।

करील पुं. {सं. करीर} एक कँटीली झाड़ी जिसमें पत्तियाँ नहीं होतीं।

करीष पुं. {सं.} सूखा गोबर, हाथी-घोड़े की लीद, कण्डे।

करुआ *वि.* कड़ुआ; पुं. करवा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करुआना *अ.* कडुआना; कड़वा होना, कड़वा करना।
करुखी *स्त्री.* कनखी।
करुण *पुं.* {सं.} करुणा; परमेश्वर; *वि.* करुणाजनक; हृदयविदारक; करुण रस।
करुणा *स्त्री.* {सं.} मन का वह दुखद भाव जो दूसरों के कष्ट देखने से उत्पन्न होता है और जो वे कष्ट दूर करने की प्रेरणा करता है, दया, रहम; प्रिय के वियोग से होनेवाला दुख; शोक उत्पन्न होना।
करुणाकर *वि.* {सं. करुणा + आकर} दया की खान, दया करनेवाला।
करुणानिधि *वि.* {सं.} जिसका हृदय करुणा से भरा हो, बहुत बड़ा दयालु।
करुणामय *वि.* {सं.} जिसमें बहुत अधिक करुणा हो।
करुणार्द्र *वि.* {सं.} जिसका मन करुणा से द्रवित हुआ हो।
करेजा *पुं.* कलेजा।
करेणु *पुं.* {सं.} हाथी; हथनी।
करेब *स्त्री.* {अं. क्रेप} एक प्रकार का महीन रेशमी कपड़ा।
करेला *पुं.* {सं. कारुवेल्ल} एक बेल जिसके हरे कडुए फल तरकारी के काम में आते हैं।
मुहा. करेला फिर नीम चढ़ा = पहले ही बुरा फिर बुरे की संगत करे।
करेवा *पुं.* {हिं. करना} कुछ विशिष्ट जातियों में विधवा स्त्री को पत्नी के रूप में रखने की प्रथा, धरेवा; कलेवा।
करैत *पुं.* {हिं. काला} काला साँप।
करोछना *स.* = खुरचना।
करौंजी *स्त्री.* कलौंजी, मंगरैल।
करोटी *स्त्री.* {सं.} खोपड़ी; करवट।
करोड़ *वि.* {सं. कोटि} सौ लाख की संख्या, 10000000.
करोड़पति *वि.* {हिं. करोड़ + सं. पति} वह जिसके पास करोड़ों रुपए हो।
करोड़ी *पुं.* {हिं. करोड़} मुसलमानी शासनकाल का एक राजकीय पद।
करोत *स्त्री.* करवत, करौत, आए।
करोर *वि.* = करोड़।
करौंछना *स.* खुरचना।
करौंछा *वि.* {हिं. काला} कुछ-कुछ काला।
करौंदा *पुं.* {सं. करमर्द} एक कँटीला झाड़ जिसके फल छोटे और खट्टे होते हैं; उक्त झाड़ के फल।
करौट *स्त्री.* करवट।
करौत *पुं.* आरा; *स्त्री.* रखैल स्त्री।
करौला *पुं.* {हिं. रौला} हाँका करनेवाला शिकारी।
करौली *स्त्री.* {सं. करवाली} एक प्रकार की सीधी छुरी।
कर्क *पुं.* {सं.} केकड़ा; बारह राशियों में से चौथी राशि, जिसमें पुनर्वसु नक्षत्र का अंतिम चरण तथा पुष्य और आश्लेषा नक्षत्र हैं; सफेद घोड़ा; कैंसर; सुराही।
कर्कट *पुं.* {सं.} केकड़ा; घेरा; कैंसर का रोग।
कर्कटी *वि.* कैंसर के रोगवाला; *स्त्री.* ककड़ी।
कर्कर *पुं.* कुरंड; खुरदरा; हथौड़ा; शीशा।
कर्करी *स्त्री.* {सं.} सुराही; एक पौधा।
कर्कश *वि.* {सं.} {*भाव.* कर्कशता} कठोर कड़ा, जैसे कर्कश स्वर; खुरखुरा; तीव्र, प्रचंड; निर्दय; दुराचारी।
कर्कशा *वि., स्त्री.* {सं.} झगड़ालू, झगड़ा करनेवाली, लड़ाकी (स्त्री)।
कर्ज *पुं.* {*अ.* कर्ज़} ऋण, उधार।
मुहा. कर्ज उतारना = कर्ज चुकाना; *कर्ज खाना* = कर्ज लेना; उपकृत होना, वश में होना।
कर्ण *पुं.* {सं.} सुनने की इंद्रिय, कान; कुंती का सबसे बड़ा पुत्र जो बहुत दानी था।
मुहा. कर्ण का पहरा = प्रभात काल (दान-पुण्य का समय)।
नाव की पतवार; किसी समकोण त्रिभुज के समकोण के सामने की रेखा।
कर्णक *पुं.* {सं.} कर्णधार, मल्लाह, बरतन का बाहर निकला हिस्सा।
कर्णकटु *वि.* {सं.} {*भाव.* कर्णकटुता} कानों को अप्रिय लगनेवाला, जो सुनने में कर्कश लगे; कठोर शब्द या आवाज़।
कर्णधार *पुं.* {सं.} माँझी, मल्लाह; पतवार, किलवारी; वह जिसके संरक्षण में कोई काम होता हो।
कर्णभूषण *पुं.* {सं.} कान में पहनने का एक गहना।
कर्णवेध *पुं.* कनछेदन।
कर्णाटी *स्त्री.* {सं.} कर्णाट देश की स्त्री; कर्णाट देश की भाषा; शब्दालंकार की एक वृत्ति जिसमें केवल कवर्ग के अक्षर आते हैं।
कर्णिका *स्त्री.* {सं.} करनफूल; हाथ की बिचली उँगली; कलम; फूल के बीच का भाग।
कर्णिकार *पुं.* {सं.} कनकचंपा; कनैर।
कर्तन *पुं.* {सं.} काटना, कतरना; कातना (सूत आदि)।
कर्तनी *स्त्री.* {सं.} कैंची।
कर्तरी *स्त्री.* {सं.} कैंची, कतरनी; कटारी; करताल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्तव्य पुं. {सं.} करने के योग्य काम; वह काम या बात जिसे करना आवश्यक हो।

कर्तव्यता *स्त्री.* {सं.} कर्तव्य का भाव; कर्मकांड कराने की दक्षिणा।

कर्तव्याकर्तव्य पुं. {सं.} करने और न करने योग्य काम।

कर्तित *वि.* {सं.} कटा हुआ; कटवाया हुआ।

कर्ता *वि.* {सं.} करनेवाला; रचने या बनानेवाला; पुं. वह जो घर का मालिक हो और जिसकी आज्ञा से घर के सब काम होते हैं; व्याकरण के छह कारकों में से पहला जिससे क्रिया के करनेवाले का बोध होता है; कर्तरि, ईश्वर; स्रष्टा।

कर्ता-धर्ता पुं. {सं. कर्ता + अनु.} जिसे किसी कार्य में सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हों; सबकुछ करने-धरनेवाला; सर्वाधिकारी।

कर्तृक *वि.* {सं.} किया हुआ, संपादित; यह शब्दांश कर्ता के अंत में लगता है, जैसे देवकर्तृक भाग्य जिसका कर्ता है; पुं. कार्यकर्ताओं या कर्मचारियों का सारा समूह (स्टाफ)।

कर्तृका *स्त्री.* {सं.} काटनेवाली, छुरी।

कर्तृत्व पुं. {सं.} कर्ता का भाव; कर्ता का धर्म।

कर्तृ-निरीक्षक पुं. {सं.} वह जो कर्तृवर्ग या कर्मचारियों के कामों का निरीक्षण करता हो (स्टाफ इंस्पेक्टर)।

कर्तृवाचक *वि.* {सं.} कर्ता का बोध करानेवाला (व्या.)।

कर्तृवाच्य पुं. {सं.} व्याकरण में वाच्य (देखें) के दो भेदों में से एक, जो इस बात का सूचक होता है कि जो कुछ कहा गया है वह कर्ता की प्रधानता के विचार से है, 'कर्मवाच्य' का उलटा, जैसे राम ने पुस्तक पढ़ी (एक्टिव वॉयस)।

कर्दम पुं. {सं.} कीचड़; पाप।

कर्पर पुं. {सं.} कपाल, खोपड़ी; खप्पर; कछुए की खोपड़ी; एक प्रकार का शस्त्र।

कर्परी *स्त्री.* खड़िया मिट्टी।

कर्पास पुं. {सं.} कपास।

कर्बुर पुं. {सं.} सोना, स्वर्ण; धतूरा; जल; पाप; राक्षस; *वि.* रंग-बिरंगा, चितकबरा।

कर्पूर पुं. {सं.} कपूर।

कर्म पुं. {सं. कर्मन् का प्रथमा रूप} वह जो किया जाए, क्रिया, कार्य, काम; धार्मिक कृत्य; व्याकरण में वह शब्द जिस पर कर्ता की क्रिया का प्रभाव पड़े; भाग्य; उद्यम।

कर्मकांड पुं. {सं.} {*कर्ता* कर्मकांडी} धर्म-संबंधी कृत्य; वह शास्त्र जिसमें यज्ञादि कर्मों का विधान हो; किसी धर्म के वे धार्मिक और औपचारिक कृत्य जो विशेष अवसरों पर होते हैं; पूजा-पाठ व यज्ञ आदि की शास्त्रीय विधि।

कर्मकांडी पुं. {सं. कर्मकांडिन्} वह जो कर्मकांड करता हो; जो कर्मकांड में निपुण हो।

कर्मकार पुं. {सं.} लोहे या सोने का काम करनेवाला; नौकर, सेवक; कारीगर।

कर्मक्षय पुं. {सं.} पाप व पुण्यों का नाश हो जाना जिससे जीव मुक्ति का अधिकारी बनता है।

कर्मक्षेत्र पुं. {सं.} कार्य करने का स्थान; भारतवर्ष।

कर्मचारी पुं. {सं. कर्मचारिन्} किसी कार्यालय या संस्था में वेतन पर काम करनेवाला, कार्यकर्ता।

कर्मठ *वि.* {सं.} काम में चतुर; धर्म-संबंधी कृत्य करनेवाला; कर्मनिष्ठ; पुरुषार्थी।

कर्मण्य *वि.* {सं.} {*भाव.* कर्मण्यता} बहुत और अच्छा काम करनेवाला; कर्मठ।

कर्मधारय पुं. {सं.} वह समास जिसमें पहला पद विशेषण हो, जैसे कमलनयन; तत्पुरुष का एक भेद।

कर्मनिष्ठ *वि.* {सं.} संध्या, अग्निहोत्र आदि करनेवाला, क्रियावान्; अच्छी तरह कार्य करनेवाला।

कर्मप्रधान *वि.* {सं.} भौतिक पदार्थों, उनके कार्यों अथवा उनसे होनेवाली अनुभूतियों आदि से संबंध रखनेवाला (ऑब्जेक्टिव); मनुष्य को कर्म के अनुसार सुख-दुख मिलना।
उदा. कर्मप्रधान विश्व रचिराखा—तुलसी.।

कर्मभूमि *स्त्री.* {सं.} जहाँ कर्म करने पर बल दिया जाए, जैसे मर्त्यलोक, वहाँ भी भारतवर्ष की भूमि माना जाता है।

कर्मभोग पुं. {सं.} किए हुए कर्मों का फल।

कर्मयोग पुं. {सं.} चित्त शुद्ध करनेवाला शास्त्रविहित कर्म; कर्तव्य का वह पालन जो सिद्धि और विफलता में समान भाव रखकर किया जाए; कर्तव्य समझकर कर्मकरने की भावना।

कर्मयोगी पुं. {सं. कर्मयोगिन्} वह जो कर्मयोग के सिद्धांतों के अनुसार काम करे।

कर्मरेख, कर्मरेखा *स्त्री.* {सं. कर्म + रेखा} कर्म या भाग्य का लेख।

कर्मवाच्य पुं. {सं.} व्याकरण में वाच्य (देखें) के दो भेदों में से एक जो इस बात का सूचक होता है कि जो कुछ कहा गया है, वह कर्म की प्रधानता के विचार से है, 'कर्तृवाच्य' का उलटा, जैसे राम के द्वारा पुस्तक पढ़ी गई (पैसिव वॉयस)।

कर्मवाद पुं. {सं.} मीमांसा-दर्शन, जिसमें कर्म की प्रधानता है; कर्मयोग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मविपाक पुं. {सं.} पूर्वजन्म में किए हुए कर्मों का फल।

कर्मशाला *स्त्री.* {सं.} वह स्थान जहाँ बहुत से मजदूर तथा कारीगर कार्य करते हों (वर्कशाप)।

कर्मशील पुं. {सं.} {*भाव.* कर्मशीलता} वह जो फल की अभिलाषा छोड़कर काम करे, कर्मवान्; उद्योगी।

कर्महीन *वि.* {सं.} {*भाव.* हीनता} अभागा।

कर्मिष्ठ *वि.* कर्मनिष्ठ।

कर्मार पुं. {सं.} लुहार।

कर्मी *वि.* {सं. कर्मिन्} {*स्त्री.* कर्मिणी} काम करनेवाला; मजदूर।

कर्मीदल पुं. {सं.} एक साथ काम करनेवालों का दल।

कर्मेंद्रिय *स्त्री.* {सं.} वे इंद्रियाँ जिनसे काम किए जाते हैं, जैसे हाथ, पैर आदि।

कर्मोपघात पुं. {सं.} कर्म में बाधा डालना; कर्मक्षय।

कर्रा *वि.* {हिं. कड़ा} कड़ा, सख्त।

कर्ष पुं. {सं.} खिंचाव, तनाव; वैद्यक में 16 माशे की तौल; एक प्रकार का पुराना सिक्का; खेत की जोताई; वह भार या दबाव जिससे कुछ अनिष्ठ की आशंका हो (स्ट्रेन)।

कर्षक पुं. {सं.} खींचनेवाला; किसान, खेतीहर।

कर्षण पुं. {सं.} {*वि.* कर्षित, कर्षक} खींचना; खरोंचकर लकीर बनाना; जमीन जोतना।

कर्षित *वि.* {सं.} जोता गया, खींचा गया।

कर्षू *स्त्री.* {सं.} जुताई; नहर; कूँड; खुजली।

कलंक पुं. {सं.} {*वि.* कलंकित} दाग, धब्बा; चंद्रमा पर का काला धब्बा; कालिख, कजली; लांछन, बदनामी; ऐब, दोष।

कलंकित *वि.* {सं.} जिस पर कलंक लगा हो।

कलंकी[1] *वि.* {सं. कलंकित} {*स्त्री.* कलंकिनी} जिसे कलंक लगा हो, दोषी।

कलंकी[2] पुं. {सं. कल्कि} कल्कि अवतार।

कलंगी *स्त्री.* कलगी, मुर्गे की चोटी, उसकी तरह का चीरा।

कलंज पुं. {सं.} एक पक्षी जिसका मांस खाना निषिद्ध है।

कलंदर पुं. {*अ.* कलंदूर} एक प्रकार के मुसलमान फकीर; रीछ और बंदर नाचनेवाला।

कल[1] पुं. {सं.} अव्यक्त मधुर ध्वनि; *वि.* सुंदर; मधुर।

कल[2] *स्त्री.* {सं. कल्प} आरोग्य, तंदुरुस्ती; आराम, सुख।

पद कल से = चैन से; धीरे-धीरे।

कल[3] *क्रि. वि.* {सं. कल्य} आगामी दूसरा दिन, आनेवाला दिन; बीता हुआ, अंतिम दिन।

पद कल का = थोड़े दिनों का।

कल[4] *स्त्री.* {सं. कला} पार्श्व, बगल, पहलू, जैसे किसी कल चैन नहीं पड़ता; अंग, अवयव; युक्ति, ढंग; पेचों और पुरजों से बनी हुई वह वस्तु या उपकरण जिससे कोई काम लिया जाए, यंत्र; पेंच, पुर्जा।

कल[5] *वि.* {हिं.} 'काला' शब्द का संक्षिप्त रूप, जैसे कलमुँहा।

कलई *स्त्री.* {*अ.*} {*वि.* कलईदार} राँगा; राँगे आदि का वह पतला लेप जो बरतनों आदि पर उन्हें चमकाने के लिए लगाते हैं, मुलम्मा; बाहरी चमक-दमक, तड़क-भड़क।

मुहा. कलई खुलना = असली भेद खुलना, वास्तविक रूप प्रकट होना; *कलई न लगना* = युक्ति न चलना।

दीवारों पर चूने का लेप, सफेदी।

कलईदार *वि.* {*अ.* + फा.} (बरतन) जिसमें कलई लगी हो।

कलकंठ पुं. {सं.} {*स्त्री.* कलकंठी} कोयल; हंस; *वि.* मीठी ध्वनि करनेवाला।

कलक पुं. {*अ.* क़लक़} बेचैनी, घबराहट; रंज, दुख, खेद।

कलकत्ता पुं. भारत का एक महानगर, पश्चिमी बंगाल की राजधानी; वर्तमान में कोलकाता।

कलक्टर पुं. {अं.} जिलाधीश, मालगुजारी एकत्रित करनेवाला मुख्य अधिकारी।

कलकना *अ.* {हिं. कलकल} चिल्लाना, शोर करना; चीत्कार करना।

कलकल पुं. {सं.} झरनों आदि के जल के गिरने या चलने का शब्द; कोलाहल, शोर; कलह के कारण शोर।

कलगी *स्त्री.* {हिं. कलगा, मि. सं. कलिंग} कुछ पक्षियों के सुंदर पर या इस आकार के बने गुच्छे, जो टोपी, पगड़ी आदि में लगाए जाते हैं।

कलगीधारी *वि.* सिखों का एक संप्रदाय।

कलछी *स्त्री.* {सं. कर + रक्षा} बड़ी डाँड़ी का चम्मच जिससे बटलोई की दाल आदि चलाते या निकालते हैं।

कलजिब्भा *वि.* {हिं. काला + जीभ} {*स्त्री.* कलजिब्भी} (पशु) जिसकी जीभ काली हो; (मनुष्य) जिसके मुँह से निकली हुई अशुभ बातें प्रायः होकर रहें।

कलत्थना *अ.* = छटपटाना।

कलत्र पुं. {सं.} पत्नी, जोरू; पालने योग्य बच्चे तथा सेवक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलदार *वि.* {हिं. कल + दार} जिसमें कल या पेंच लगा हो; *पुं.* सरकारी रुपया; धन।

कलधौत *पुं.* {सं.} सोना; चाँदी।

कलन *पुं.* {सं.} {*वि.* कलित} उत्पन्न करना, बनाना; धारण करना; आचरण; लगाव, संबंध; गणित की क्रिया करना, हिसाब लगाना (कैलकुलेशन); ग्रहण।

कलप-बेलि *स्त्री.* {सं. कल्पवल्ली} कल्पवृक्ष की शाखा।

कलना *स्त्री.* {सं.} धारण या ग्रहण करना; विशेष बातों का ज्ञान प्राप्त करना; गणना, विचार; लेन-देन, व्यवहार।

कलप *पुं.* {सं. कल्प} कलफ; खिताब; कल्प; समर्थ, योग्य, समान।

कलपना *अ.* {सं. कल्पन} विलाप करना, बिलखना; दुखी होना; कल्पना करना; *स.* {सं. कल्पन} काटना या कतरना।

कलपाना *स.* {हिं.} कलपना का प्रे.; तड़पाना।

कल-बल[1] *पुं.* {सं. कला + बल} उपाय, दाँव-पेंच, युक्ति; कला या यंत्र के बल से।

कल-बल[2] *पुं.* {सं. कल + अनु.} शोरगुल।

कलबूत *पुं.* {सं. कल + अनु.} साँचा; वह ढाँचा जिसपर चढ़ाकर या जूता सिया या टोपी, पगड़ी आदि बनाई जाती है।

कलभ *पुं.* {सं.} हाथी या उसका बच्चा; ऊँट का बच्चा।

कलम *स्त्री.* {अ.} वह उपकरण जिसकी सहायता से, स्याही के संयोग से, कागज आदि पर लिखते हैं, लेखनी।

मुहा. कलम चलना = लिखाई होना, लेखन-शक्ति सिद्ध होना (प्रशंसार्थक); *कलम चलाना* = लिखना; *कलम तोड़ना* = अच्छी चीज लिखने की हद कर देना; *कलम फेरना* = लिखे को काट देना।

बहीखाते आदि में लिखा जानेवाला कोई मद, जैसे इसमें एक कलम छूट गई है; पेड़ की वह टहनी जो दूसरी जगह बैठाने या दूसरे पेड़ में पैबंद लगाने के लिए काटी जाए।

मुहा. कलम करना = काटना-छाँटना।

कनपटी के पास का वह स्थान जिसपर गाल की ओर कुछ दूर तक बाल रहते हैं; बालों या गिलहरी की पूँछ की बनी वह कूँची जिससे चित्रकार चित्र बनाते या रंग भरते हैं; चित्र अंकित करने की किसी विशेष स्थान या परंपरा की शैली, जैसे पहाड़ी कलम, राजस्थानी कलम; शीशे का कटा हुआ लंबा टुकड़ा जो झाड़ में लटकाया जाता है; किसी चीज का जमा हुआ छोटा टुकड़ा, रवा; वह औजार जिससे महीन चीज काटी, खोदी या नक्काशी जाए।

कलमख *पुं.* कल्मष।

कलमतराश *पुं.* {फा.} कलम बनाने का चाकू।

कलमदान *पुं.* {फा.} कलम, दवात आदि रखने का पात्र।

कलम-रोको हड़ताल *स्त्री.* किसी कार्यालय या विभाग में लिखने-पढ़नेवाले कर्मचारियों की वह हड़ताल जिसमें वे अपने स्थान पर बैठे रहकर कुछ समय के लिए लिखने-पढ़ने का काम बिल्कुल बंद कर देते हैं (पेन-डाउन स्ट्राइक); लिखा-पढ़ी।

कलमबंदी *स्त्री.* {सं.} एक पौधे में दूसरे पौधे की कलम लगाने का काम।

मुहा. कलम रोपना = पौधे लगाना।

कलमलाना *अ.* {अनु.} दाब में पड़ने के कारण अंगों का हिलना-डोलना; विकल या बेचैन होना; उद्विग्न और विचलित होना।

कलमस *पुं.* कल्मष।

कलमा *पुं.* {कल्मः.} वाक्य; वह वाक्य जो मुसलमानी धर्म का मूलमंत्र है।

मुहा. कलमा पढ़ लेना = मुसलमान हो जाना।

कलमी *वि.* {फा.} लिखा हुआ, लिखित; जो कलम लगाने से उत्पन्न हुआ हो, जैसे कलमी आम; हो कलम या रवे के रूप में हो, जैसे कलमी शोरा।

कलमी शोरा *पुं.* जमीन से निकलनेवाला सोड़े जैसा एक पदार्थ जिसकी तासीर बहुत ठंडी होती है।

कलमुँहाँ *वि.* {हिं. काला + मुँह} जिसका मुँह काला हो; कलंकित, लांछित; अभागा (गाली); जिसका मुँह देखना अशुभ हो।

कलयिता *पुं.* {सं. कलयितृ} कलन करने या हिसाब लगानेवाला, गणित करनेवाला।

कलरव *पुं.* {सं.} {*वि.* कलरवित} मधुर शब्द; कोकिल, कोयल।

कलल *पुं.* {सं.} गर्भाशय में वीर्य और रज के मिश्रण का वह बुलबुला जो बढ़कर गर्भ का रूप धारण करता है।

कलवरिया *स्त्री.* {हिं. कलवार} कलवार की दुकान, शराब बिकने की जगह।

कलविंक *पुं.* {सं.} एक पक्षी।

कलवार *पुं.* {सं. कल्यपाल} एक जाति जो शराब बनाती और बेचती है; कलार।

कलश *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* अल्पा. कलशी} घड़ा, गगरा; मंदिर आदि का शिखर या ऊपरी भाग; चोटी, सिरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलसा पुं. {सं. कलश} {स्त्री. अल्पा. कलशी} पानी रखने का बरतन, गगरा, घड़ा; मंदिर का शिखर।

कलहंस पुं. {सं.} हंस; राजहंस; श्रेष्ठ राजा; परमात्मा।

कलह पुं. {सं.} {वि. कलहकारी, कलही} विवाद, झगड़ा।

कलहांतरिता स्त्री. {सं.} वह नायिका जो नायक का अपमान करके पछताती हो।

कलहार वि. {स्त्री. कलहारी} कलही।

कलही वि. {सं. कलाहिन्} {स्त्री. कलहिनी} झगड़ालू, लड़ाका।

कलाँ वि. {फा.} बड़ा, दीर्घाकार।

कला स्त्री. {सं.} अंश, भाग; चंद्रमा या उसके प्रकाश का सोलहवाँ भाग; सूर्य या उसके प्रकार का बारहवाँ भाग; समय का एक विभाग जो तीस काष्ठा का होता है; राशि के तीसवें अंश का साठवाँ भाग; राशिचक्र के एक अंश का साठवाँ भाग; छंदशास्त्र में मात्रा; किसी कार्य को भलीभाँति करने का कौशल विशेषतः ऐसा कार्य जिसके संपादन के लिए ज्ञान के अतिरिक्त कौशल और अभ्यास की आवश्यकता हो (आर्ट)।

कलाई¹ स्त्री. {सं. कलाची} हाथ के पहुँचे का वह भाग जहाँ हथेली का जोड़ रहता हे, मणिबंध, गट्टा।

कलाई² स्त्री. {सं. कलाप} सूत का लच्छा।

कलाकंद पुं. {फा.} बरफी (मिठाई)।

कलाकार पुं. {सं.} वह जो कोई कलापूर्ण कार्य करता हो, कलाकुशल, जैसे कवि, अभिनेता आदि (आर्टिस्ट)।

कलाकृति स्त्री. {सं.} ऐसी रचना जो कलापूर्ण हो–कविता, पेंटिंग आदि।

कला-कौशल पुं. {सं.} किसी कला की निपुणता, कारीगरी; शिल्प।

कलात्मक पुं. {सं.} जिसमें कला का सुंदर प्रदर्शन हुआ हो, कलापूर्ण।

कलात्मकता स्त्री. {सं.} कलात्मक होना।

कलाधर पुं. {सं.} चंद्रमा; शिव; वह जो कलाओं का ज्ञाता हो।

कलानिधि पुं. {सं.} चंद्रमा; विभिन्न कलाओं का जानकार।

कलाप पुं. {सं.} समूह, झुंड, जैसे क्रिया-कलाप; मोर की पूँछ; तूणीर, तरकश; कमरबंद, पेटी; चंद्रमा; कलावा; व्यापार; जेवर, गहना।

कलोपक पुं. {सं.} समूह, गुच्छा चार श्लोकों का एक वर्ग जिनका परस्पर संबंध रहता है, अर्थचार में पूरा होता है।

कलापिनी स्त्री. {सं.} रात्रि, रात; मोरनी।

कलापी स्त्री. {सं. कलापिन्} {स्त्री. कलापिनी} मोर; कोकिल; वि. जिसके पास तूणीर या तरकश हो; झुंड में रहनेवाला।

कलाबत्तू पुं. {तु. कलाबतून} रेशम पर बटा हुआ सोने-चाँदी आदि का तार।

कलाबाज़ वि. {हिं. + फा} {भाव. कलाबाजी} नट की क्रिया करने या कसरत दिखानेवाला।

कलाम पुं. {अ.} वाक्य, वचन; बातचीत; उज्र, एतराज।

कलार, कलाल पुं. कलवार।

कलावंत पुं. {सं. कलावत्} गवैया; कलाबाजी करनेवाला, नट; गाने-बजाने का काम करनेवाली एक मुसलमानी जाति; वि. किसी कला का ज्ञाता, कलाकार।

कलावा पुं. {सं. कलापक} {स्त्री. अल्पा. कलाई} सूत का लच्छा; वह लाल-पीला डोरा जो विवाह आदि शुभ अवसरों पर हाथ पर बाँधते हैं; हाथी की गरदन।

कलावान, कलावान् वि. {सं.} {स्त्री. कलावती} कला का ज्ञाता, कलाकुशल।

कलिंग पुं. {सं.} कुलंग पक्षी; तरबूज; एक प्राचीन देश (उड़ीसा का भाग) जो गोदावरी और वैतरणी नदी के बीच में था; एक राग।

कलिंद पुं. {सं.} एक पर्वत; तरबूज।

कलिंदजा स्त्री. {सं.} कलिंद पर्वत से निकली यमुना।

कलिंदी स्त्री. कालिंदी।

कलि पुं. {सं.} कलह, झगड़ा; पाप; क्लेश; संग्राम, युद्ध; कलियुग; पाँसे का एक पक्ष।

कलिका स्त्री. {सं.} (फूल की) कली; अंश।

कलिकारी वि. {सं.} झगड़ालू स्त्री, कलिहारी, सत्यानाशी का पौधा।

कलिकाल पुं. {सं.} कलियुग।

कलिप्रिय पुं. {सं.} नारद, बहेड़े का वृक्ष, जुआ।

कलियुग पुं. {सं.} चार युगों में से अंतिम और वर्तमान युग जिसमें पाप और अनीति की प्रधानता मानी जाती है।

कलिसरि स्त्री. {सं.} कर्मनाशा नदी।

कलींदा पुं. {सं. कलिन्द} तरबूज।

कली¹ स्त्री. {सं. कलिका} बिना खिला हुआ फूल।

मुहा. दिल की कली खिलना = चित्त प्रसन्न होना।

कुरते आदि में लगनेवाला तिकोना टुकड़ा; हुक्के का नीचेवाला भाग; किशोरी; मांस।

कली² स्त्री. {अ. कलई या सं. कलिका} पत्थर का चूना जो दीवारों पर पोता जाता है; इस

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार चूने से दीवारों पर की जानेवाली पोताई, सफेदी।

कलीरा पुं. कौड़ी छुहारे आदि गूँथकर बना हार जो दूल्हा-दुलहिन को पहनाते हैं।

कलुआ *वि.* {*स्त्री.* कलई} मलिन, मैला; निन्दित, बुरा।

कलुष पुं. {सं.} {*वि.* कलुषित, कलुषी} मलिनता, मैल; पाप; क्रोध; कोई बुरी बात या दूषित भाव; दुर्व्यसन, दुष्कर्म।

कलुषित *वि.* {सं.} मलिन; पापी; बुरे विचारों से भरा।

कलूटा *वि.* {हिं. काला} {*स्त्री.* कलूटी} काले रंग का, बहुत काला।

कलेऊ पुं. कलेवा।

कलेजा पुं. {सं. यकृत् से कृज्ज} प्राणियों का वह अवयव जो छाती में बाईं ओर होता है और जिससे शरीर में रक्त चलता है, हृदय, दिल।

मुहा. कलेजा काँपना = बहुत डर लगना; *कलेजा थामकर बैठ या रह जाना* = दुख का वेग दबाकर रह जाना; *कलेजा धड़कना* = भय से व्याकुल होना; *कलेजा निकाल कर रखना* = अत्यंत प्रिय वस्तु या सर्वस्व दे देना; *कलेजा पक जाना* = दुख सहते-सहते तंग आ जाना; *कलेजा फटना* = मन में अत्यंत कष्ट होना; *कलेजा मुँह को आना* = बहुत घबराना या व्याकुल होना; *कलेजे पर साँप लोटना* = अत्यंत दुख होना; *कलेजा छलनी होना* = तानों को सुनकर मन दुखना; *कलेजा तर होना* = मन को शांति पहुँचना।

छाती, वक्षस्थल।

मुहा. कलेजे से लगाना = गले से लगाना, आलिंगन करना।

जीवट, साहस, हिम्मत।

कलेजी *स्त्री.* {हिं. कलेजा} बकरे आदि के कलेजे का मांस।

कलेजे का टुकड़ा *वि.* परम प्रिय।

कलेवर पुं. {सं.} शरीर, देह; डीलडौल; आयाम।

मुहा. कलेवर बदलना = एक शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण करना, जगन्नाथ जी की पुरानी मूर्ति के स्थान पर नई मूर्ति स्थापित होना।

ढाँचा।

कलेवा पुं. {सं. कल्य} जलपान, नाश्ता, ब्यालू; विवाह की एक रीति जिसमें वर ससुराल में भोजन करने जाता है, खिचड़ी।

कलोर *स्त्री.* {सं. कल्या} कल्होड़; वह गाय जो बरदाई या ब्याई न हो।

कलोल पुं. {सं. कल्लोल} {*क्रि.* कलोलना} आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा।

कलोलना *अ.* {सं. कल्लोल} कल्लोल करना।

कलौंछ *स्त्री.* {हिं. काला + औंछ (प्रत्य.)} कालापन, कालिमा; धुएँ की कालिख; कलंक; काला दाग।

कलौंजी *स्त्री.* {सं. कालाजाजी} मँगरैला; भूनी हुई मसालेदार साबुत तरकारी।

कलौंथी *स्त्री.* कुलस्थ दालों का एक भेद।

कल्क पुं. {सं.} चूर्ण, बुकनी; पीठी; गूदा; मैल, कीट; पाप; अवलेह; आसव या काढ़े का गाढ़ा भाग जो नीचे बैठ जाता है, गाद।

कल्कि पुं. {सं.} विष्णु का दसवाँ अवतार; कलि के अंत में संभल, मुरादाबद में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के यहाँ होगा।

कल्प पुं. {सं.} विधान, विधि; वेद के छह अंगों में से एक जिसमें यज्ञ आदि का विधान है; वैद्यक में शरीर या किसी अंग को फिर से नया और नीरोग करने की युक्ति, जैसे केशकल्प; काल का एक विभाग जिसमें 14 मंवन्तर या 4320000000 वर्ष होते हैं; समर्थ; *वि.* तुल्य, समान, जैसे ऋषिकल्प।

कल्पतरु पुं. {सं.} कल्पवृक्ष।

कल्पनक *वि.* {सं. कल्पना} (व्यक्ति) जिसमें कल्पनाशक्ति यथेष्ट या बहुत हो; (कार्य) जिसमें कल्पनाशक्ति का विशेष रूप से प्रयोग हुआ हो।

कल्पसूत्र पुं. {सं.} आर्य कर्मों के प्रतिपादक धर्मग्रंथ इनके 4 भेद हैं—श्रौतसूत्र; गृह्यसूत्र; धर्मसूत्र; शुल्वसूत्र।

कल्पना *वि.* {सं.} अच्छी रचना, सजावट; वह शक्ति जो मन में नई, अनोखी, अनदेखी, अनसुनी आदि बातों के स्वरूप उपस्थित करती है, उद्भावना (इमैजिनेशन); किसी वस्तु में दूसरी वस्तु का आरोप; मान लेना, अनुमान करना; किसी नई वस्तु या घटना की संभावना।

कल्पना-प्रसूत *वि.* {सं.} जो वस्तु या घटना कल्पना की उपज हो (इमेजिंड)।

कल्पनाशक्ति *स्त्री.* {सं.} नई वस्तु की सूझबूझ।

कल्पनीय *वि.* {सं.} जिसकी कल्पना करनी हो; जिसकी कल्पना की जा सकती हो, कल्पना में आने के योग्य (इमैजिनेबुल)।

कल्पलता *स्त्री.* कल्पतरु।

कल्पवास पुं. {सं.} माघ में महीने भर गंगा-तट पर रहना।

कल्पवृक्ष पुं. {सं.} वह (कल्पित) वृक्ष जिसके नीचे पहुँचने पर सभी कामनाएँ पूरी हो जाती हैं; कल्पतरु।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्पांत पुं. {सं.} कल्प का अंत जिसमें सारी सृष्टि नष्ट हो जाती है, प्रलय काल।

कल्पित *वि.* {सं.} जिसकी कल्पना की गई हो; मन में गढ़ा हुआ, मनगढ़ंत; बनावटी, नकली; ख़याली।

कल्पितार्थ पुं. {सं.} केवल तर्क के उद्देश्य से कोई बात कुछ देर के लिए मान लेना; यह सोचना या मान लेना कि यदि कहीं ऐसा हुआ (तो क्या होगा) (हाइपॉथेसिस)।

कल्मश पुं. {सं.} पाप; मैल।

कल्याण पुं. {सं.} मंगल, भलाई; संगीत में एक प्रकार का राग; सुवर्ण; पारलौकिक सुख।

कल्याण कामना *स्त्री.* {सं.} भलाई की इच्छा करना।

कल्याणी *स्त्री.* {सं.} सुमंगला, वह स्त्री जिसके घर में आने से सुख-समृद्धि हो।

कल्लर पुं. {देश.} नोनी मिट्टी; रेह; ऊसर, बंजर।

कल्ला[1] पुं. {सं. करीर} पौधे का अंकुर; नई टहनी; मनुष्य की गरदन का पिछला भाग; लालटेन या लैंप का सिरा, जिसमें बत्ती जलती है (बर्नर)।

कल्लेदराज *वि.* {फा. कल्लादराज़} {*भाव.* कल्लेदराजी} बहुत बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला, वाचाल।

कल्लोल पुं. {सं.} पानी की लहर, तरंग; आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा; हँसी-मखौल।

कल्लोलिनी *स्त्री.* {सं.} नदी।

कल्हारना स. {हिं. कड़ाह} कड़ाही में भूनना या तलना।

कवक पुं. {सं.} कुकरमुत्ता; एक काश्मीर में होनेवाला फल।

कवच पुं. {सं.} {*वि.* कवची} ऊपरी खोल या रक्षा के लिए आवरण; वह ऊपरी मोटा छिलका या आवरण जिसके अंदर या नीचे कोई फल या जीव रहता हो, जैसे बादाम या कछुए का ऊपर आवरण (शेल); लोहे की कड़ियों का वह आवरण जो लड़ाई के समय योद्धा पहनते थे, सन्नाह; नगाड़ा, डंका; तंत्र के अनुसार वे मंत्र जो अपने शरीर के अंगों की रक्षा के लिए पढ़े जाते हैं; वह मंत्र, यंत्र आदि जो लिखकर और जंतर में भरकर विपत्ति आदि से रक्षा के लिए पहने जाते हैं, जंतर, तावीज; *वि.* जिसमें किसी उग्र प्रभाव से स्वयं रक्षित रहने अथवा आवृत्त पदार्थ को रक्षित रखने की शक्ति या गुण हो, जैसे अग्निकवच, जलकवच आदि (प्रूफ)।

कवचधारी (धारिन्) पुं. {सं.} वह जिसके ऊपर कवच हो या जो कवच पहने हो।

कवन पुं. {सं.} कविता करना; *सर्व.* कौन; पानी।

कवर[1] पुं. {*स्त्री.* कवरी} केशपाश; गुच्छा।

कवर[2] पुं. {सं. कवल} कौर।

कवरी *स्त्री.* {द्रविड़ से गृहीत, सं.} चोटी, जूड़ा।

कवल पुं. {द्रविड़ से गृहित सं.} {*वि.* कवलित} कौर, ग्रास।

कवलित *वि.* {सं.} खाया हुआ, जैसे काल-कवलित; ग्रस्त।

कवायद *स्त्री.* {*अ.* कायदा का बहु.} नियम, व्याकरण; सिपाहियों की युद्ध-नियमों के अभ्यास की क्रिया।

कवि पुं. {सं.} काव्य या कविता रचनेवाला, शायर।

कविता *स्त्री.* {सं.} कवि की की हुई पद्यात्मक रचना, काव्य, शायरी (पोएटरी)।

कवित्त पुं. {सं. कवित्व} कविता, काव्य; इक्कीस अक्षरों का एक वृत्त।

कवित्व पुं. {सं.} कविता का भाव या गुण; कवि होना।

कविराज पुं. {सं.} श्रेष्ठ कवि; भाट; वैद्यों की उपाधि।

कविलास पुं. {सं.} कैलास।

कविसमय पुं. {सं.} कुछ काव्य-संबंधी मान्यताएँ।

कवींद्र पुं. {सं.} वह जो कवियों में इंद्र अर्थात् श्रेष्ठ हो।

कश पुं. {सं.} {*स्त्री.* कशा} चाबुक।

कशमकश *स्त्री.* {फा.} खींचतान।

कशा *स्त्री.* {सं.} कोड़ा।

कशाघात पुं. {सं.} कोड़े की मार।

कशिपु पुं. {सं.} तकिया, बिछौना, वस्त्र।

कशिश *स्त्री.* {फा.} आकर्षण।

कशेरूका *स्त्री.* {सं.} रीढ़ की छल्ले के आकार की हड्डियों में से कोई एक।

कश्ती *स्त्री.* किश्ती।

कश्मल पुं. {सं.} पाप; मोह; शोक; मैल।

कश्मीर पुं. {सं.} भारत के उत्तर-पश्चिम का एक प्रसिद्ध पहाड़ी राज्य जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

कश्मीरज *वि.* {सं.} केसर।

कश्मीरी *वि.* {सं. कश्मीर + हिं. ई} कश्मीर-संबंधी, कश्मीर देश का; पुं. कश्मीर देश का निवासी; *स्त्री.* कश्मीर देश की भाषा।

कश्मीरी कुंडल पुं. कानों में पहनने का एक प्रकार का कुंडल जो स्फटिक का बना होता था।

कश्यप पुं. {सं.} एक ऋषि जो देवताओं व दैत्यों के पिता थे; कछुआ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कष पुं. {सं.} सान; कसौटी (पत्थर); परीक्षा, जाँच; घिसना; रगड़ना।

कषाय *वि.* {सं.} कसैला; सुगंधित; गेरू के रंग का, गैरिक; पुं. क्रोध, लोभ आदि विकार।

कष्ट पुं. {सं.} मन या शरीर में होनेवाला वह अप्रिय अनुभव जिससे मनुष्य बचना या छुटकारा पाना चाहता है, पीड़ा, तकलीफ; संकट, मुसीबत; कठिन, मुश्किल।

कष्टकर *वि.* {सं.} तकलीफ पहुँचानेवाला, मुसीबत में डालनेवाला।

कष्ट-कल्पना *स्त्री.* {सं.} बहुत खींच-खींचकर कठिनता से बैठानेवाली युक्ति (फारपैच्ड आइडिया); खींचतान।

कष्टसाध्य *वि.* {सं.} कठिनता से होनेवाला।

कष्टसिद्ध *वि.* {सं.} जो मुश्किल से पूरा हुआ हो।

कष्टार्जित *वि.* {सं.} बहुत मुश्किल से बनाया हुआ।

कस[1] पुं. {सं. कष} कसे जाने या होने की क्रिया या भाव, कसावट; खींचतान; परीक्षा, जाँच; कसौटी; तलवार की लचक जिससे उसकी उत्तमता की परख होती है; बल, जोर; वश, काबू।
मुहा. कस का = जिसपर वश या अधिकार हो।
रोक, अवरोध; निचोड़कर निकाला हुआ; खिलना।

कस[2] *क्रि. वि.* {सं. कीदृश} कैसे; क्यों।

कसक *स्त्री.* {सं. कष} हलका या मीठा दर्द, टीस; बहुत दिनों का भीतरी द्वेष या वैर; हौसला, अभिलाषा।

कसकना *अ.* {हिं. कसक} हलका दर्द करना, सालना, टीसना।

कसकुट पुं. {हिं. काँसा} एक प्रकार की मिश्र धातु जिससे बरतन बनते हैं।

कसगर पुं. मुसलमानों की एक जाति जिनका पेशा मिट्टी का बर्तन बनाना है।

कसना[1] *स.* {सं. कर्षण} {*भाव.* कसन} बंधन दृढ़ करने के लिए डोरी आदि खींचना; बंधन खींचकर बँधी हुई वस्तु को खूब दबाना।
पद कसकर = जोर से; अच्छी तरह।
जकड़कर बाँधना; पुरजों को दृढ़ करके बैठाना; साज रखकर सवारी के लिए घोड़ा-गाड़ी आदि तैयार करना; ठूँसकर भरना; कद्दूकस पर रगड़ना; *अ.* बंधन का खिंचना जिससे वह अधिक जकड़ जाए; बँधना; खूब भर जाना।

कसना[2] *स.* {सं. कषण} परखने के लिए सोने को कसौटी पर रगड़ना; परखना, जाँचना; तलवार को लचाकर उसके लोहे की परीक्षा करना; दूध गाढ़ा करके खोया बनाना; नियंत्रण में रखना।

कसनी *स्त्री.* {हिं. कसना} स्त्रियों के पहनने की अँगिया, चोली; कसने की रस्सी; कसौटी।

कसब पुं. {*अ.*} परिश्रम, मेहनत; पेशा, रोजगार; वेश्यावृत्ति।

कसबा पुं. {*अ.* कस्बः} {*वि.* कसबाती} गाँव से बड़ी और शहर से छोटी बस्ती (टाउन)।

कसबी *स्त्री.* {*अ.* कसब} वेश्या, रंडी; व्यभिचारिणी स्त्री।

कसम *स्त्री.* {*अ.*} शपथ, सौगंध।
मुहा. कसम उतारना = शपथ का प्रभाव दूर करना, नाम मात्र के लिए कोई काम करना; *कसम खाने को* = नाम मात्र को।

कसमसाना *अ.* {अनु.} {*भाव.* कसमसाहट} उकताकर हिलना-डोलना; घबराना; हिचकना।

कसमीर पुं. कश्मीर।

कसमिया *अ.* कसम खाकर।

कसर *स्त्री.* {*अ.* कस्र} कमी, त्रुटि; द्वेष, वैर।
मुहा. कसर निकालना = बदला लेना।
टोटा, घाटा; दोष, ऐब; किसी वस्तु के सूखने या उसमें कूड़ा-करकट निकालने से होनेवाली कमी।

कसरत[1] *स्त्री.* {*अ.* कस्रत} {*वि.* कसरती} व्यायाम; *क्रि. प्र.* करना।

कसरत[2] *स्त्री.* {*अ.* कस्रत} अधिकता, ज्यादती।

कसहँड़ा पुं. {हिं. काँसा} {*स्त्री.* कसहँड़ी} काँसे का एक प्रकार का बड़ा बरतन।

कसहट्टा पुं. कसेरों का बाजार जहाँ बर्तन बनते व बिकते हैं।

कसाई[1] *स्त्री.* {हिं. कसना} कसने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

कसाई[2] पुं. {*अ.* कस्साब} {*स्त्री.* कसाइन} वधिक, बूचड़; *वि.* निर्दय, निष्ठुर, बेरहम।

कसा-कसाया *वि.* {हिं. कसना + कसाना} पहले से कसकर बाँधा हुआ।

कसाना *अ.* {हिं. काँसा} काँसे के योग से कसैला हो जाना; *स.* हिं. 'कसरा' का प्रे.।

कसार पुं. {सं. कृसर} चीनी मिला हुआ भुना आटा या सूजी, पँजीरी; जो प्रायः जच्चा के लिए बनाया जाता है।

कसाला पुं. {सं. कष} कष्ट, तकलीफ; कठिन परिश्रम, मेहनत।

कसाव पुं. {सं. कषाय} कसैलापन; कठोरता का भाव।

कसी *स्त्री.* हलकी फाल, फावड़ा; जमीन की एक माप।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कसीटना *स.* कसना।

कसीदा *पुं.* {फा. कशीद:} कपड़े पर सुई-डोरे से बेल-बूटे बनाने का काम; वह उर्दू कविता जिसमें कम से कम 15 शे'रों में किसी विषय का क्रमबद्ध विवेचन हो।

कसीस *पुं.* {सं. कासीस} एक खनिज पदार्थ जो लोहे का एक विकार है।

कसूँभ *पुं.* कुसुम (पौधा और उसका फूल)।

कसुंभा *पुं.* कसुंभे के फूल से बनी शराब जो राजस्थान में प्रचलित थी।

कसूँभी *वि.* {हिं. कसूँभ} कुसुम (पौधा) के रंग का; कुसुम (पौधा) के फूलों के रंग से रँगा हुआ।

कसूमल *वि.* {हिं. कुसुम या कसूँभ} कुसुम के रंग का, कसूँभी।

कसूर *पुं.* {अ.} अपराध; दोषी।

कसूरवार *वि.* {फा.} अपराधी; दोषी।

कसेरा *पुं.* {हिं. काँसा} काँसे, फूल आदि के बरतन बनाने और बेचनेवाला; ठठेरा।

कसेरू *पुं.* {सं. कशेरुक} एक प्रकार के मोथे की जड़ जो फल के रूप में खाई जाती है।

कसैया *पुं.* {हिं. कसना} कसने, परखने या जाँचनेवाला।

कसैला *वि.* {हिं. कसाव} जिसके स्वाद में कसाव हो, जैसे आँवला, हड़ आदि; जिसके ऊपर पीया गया पानी मीठा लगे।

कसैली *स्त्री.* {हिं. कसैला} सुपारी; कषाय, रसवाली।

कसोरा *पुं.* {हिं. काँसा + ओर (प्रत्य.)} कटोरा; मिट्टी का प्याला; शराब।

कसौटी *स्त्री.* {सं. कषपट्टी} एक प्रकार का काला पत्थर जिसपर रगड़कर सोने की उत्तमता परखते हैं; परख की कोई ऐसी बात या तत्व जिसके आधार पर किसी बात के ठीक या किसी काम के पूरे होने की जाँच हो सके (क्राइटीरिया); निकष पत्थर, जाँच, परीक्षा।

कस्तीर *पुं.* {सं.} टिन।

कस्तूरा *पुं.* कस्तूरी मृग।

कस्तूरी *स्त्री.* {सं.} एक प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य जो एक प्रकार के मृग की नाभि से निकलता है।

कस्तूरी मृग *पुं.* {सं.} बहुत ठंडे पहाड़ों पर रहनेवाला एक प्रकार का हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है।

कहँ *प्रत्य.* {सं. क:} के लिए (अवधी); *क्रि. वि.* कहीं।

कहँवा *क्रि. वि.* कहाँ।

कह[1] *वि.* {सं. क:} क्या।

कह[2] *क्रि.* {सं. कथ} कहना।

कहकहा *पुं.* बहुतों का मिल कर जोर से हँसना।

कहगिल *स्त्री.* {फा. कार = घास + गिल = मिट्टी} दीवार में लगाने का गारा।

कहत *पुं.* {अ. कह्त} दुर्भिक्ष, अकाल।

कहन *स्त्री.* {सं. कथन} कथन, उक्ति; बात; कहावत।

कहना *स.* {सं. कथन} मुँह से बात निकालना, बोलना।

पद कह-बदकर = प्रतिज्ञा करके; *कहने को* = नाम मात्र को, भविष्य में स्मरण के लिए।

मुहा. कहने की बात = वह बात जो वास्तव में न हो।

सूचना देना; नाम रखना; *पुं.* कही हुई बात, कथन।

कहनूत *स्त्री.* कहावत।

कहर *पुं.* {अ. कह्र} विपत्ति, आफत।

पद कहर का = विकट, भीषण; बहुत अधिक, अपार।

मुहा. कहर ढाना = बहुत अधिक अत्याचार करना।

कहरवा *पुं.* {हिं. कहार} पाँच मात्राओं का एक ताल; नाच या गाना जो इस ताल पर होता है।

कहरी *वि.* {अ. कह्र} कहर करने या आफत ढानेवाला।

कहल *पुं.* {देश.} उमस, ओस; ताप; कष्ट।

कहलवाना *क्रि.* दूसरे के मुख कोई बात कहाना।

कहलाना *स.* {हिं. 'कहना' का प्रे.} दूसरे के द्वारा कहने की क्रिया कराना; सँदेसा भेजना; *अ.* पुकारा जाना; कहलना।

कहवा *पुं.* {अ. कह्व:} एक पेड़ का बीज जिसका चूर्ण चाय की तरह पिया जाता है।

कहवैया *वि.* {हिं. कहना} कहनेवाला।

कहाँ *क्रि. वि.* {सं. कुह:} किस जगह, किस स्थान पर।

पद कहाँ का = न जाने किस स्थान का, असाधारण, बहुत भारी; कहीं का कहीं; *कहाँ का कहाँ* = बहुत दूर; *कहाँ की बात* = यह बात ठीक नहीं है।

कहा *पुं.* {सं. कथन} आज्ञा या उपदेश के रूप में कही हुई बात; क्या।

कहा-कही *स्त्री.* कहा-सुनी; झगड़ा।

कहानी *स्त्री.* {सं. कथनिका} मन से गढ़ा हुआ या किसी वास्तविक घटना के आधार पर प्रस्तुत किया हुआ विवरण, कथा, किस्सा, आख्यायिका; झूठी या मनगढ़न्त बात।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहार *पुं.* {सं. कं = जल + हिं. हार} एक जाति जो पानी भरने और डोली ढोने का काम करती है।

कहारा *पुं.* टोकरा।

कहावत *स्त्री.* {हिं. कहना} लोक में प्रचलित ऐसा बँधा चमत्कारपूर्ण वाक्य जिसमें कोई अनुभव या तथ्य की बात संक्षेप में कही गई हो, लोकोक्ति, मसल (प्रॉवर्ब, मैक्सिम); कही हुई बात, उक्ति; गाथा।

कहासुनी *स्त्री.* {हिं. कहना + सुनना} जबानी लड़ाई, वाद-विवाद, तकरार।

कहिया *क्रि. वि.* {सं. कुहः} कब।

कहीं *क्रि. वि.* किसी अनिश्चित या अनजाने स्थान में।

पद कहीं और = दूसरी जगह, अन्यत्र; *कहीं का* = न जाने कहाँ का; *कहीं न कहीं* = किसी न किसी स्थान पर अवश्य।

मुहा. कहीं का न रहना = किसी काम का अथवा कहीं मान्य न रहना।

नहीं, कभी नहीं, प्रश्न रूप में और निषेधार्थक, जैसे यह भी कहीं होता है; यदि, अगर जैसे कहीं वह न आया तो? बहुत अधिक, जैसे यह उससे कहीं बढ़कर है।

कही *स्त्री.* {सं. कथित} विधि, उपदेश आदि के रूप में कही हुई बात, कथन, जैसे हमारी कही मानो।

कहुँ (हूँ) *क्रि. वि.* कहीं।

कहुवा *पुं.* {सं. ककुभ} अर्जुन या सफेदे का वृक्ष।

काँइया *वि.* {हिं. काक = कौआ} चालाक, धूर्त।

काँकरी *स्त्री.* कंकड़।

मुहा. काँकरी चुनना = वियोग के कारण किसी काम में मन न लगना।

कांक्षा *स्त्री.* {*वि.* कांक्षित} आकांक्षा; चाह।

कांक्षित *वि.* {सं.} चाहा गया।

कांक्षी *वि.* {सं. कांक्षिन्} {*स्त्री.* कांक्षिणी} कांक्षा करने या चाहनेवाला।

काँख *स्त्री.* {सं. कक्ष} बाहुमूल के नीचे का गड्ढा, बगल।

काँखना *अ.* {सं. अनु} श्रम या पीड़ा से ऊँह, आह आदि शब्द करना; मलत्याग के लिए पेट की वायु नीचे दबाना।

काँखासोती *स्त्री.* {हिं. काँख + सं. श्रोत} दाहिनी बगल के नीचे से ले जाकर बाएँ कंधे पर दुपट्टा डालना।

कांगड़ा *पुं.* हिमाचल प्रदेश का एक नगर, एक जिला, प्राचीन त्रिगर्त का एक भाग।

काँगड़ी *स्त्री.* {*पुं.* काँगड़ा} (काँगड़ा, कश्मीर आदि में) आग तापने की अँगीठी; बेंत की बनी एक टोकरी।

काँगन *पुं.* कंगन।

काँगुनी *स्त्री.* {सं. कंगु} सवाँ का एक भेद।

काँच[1] *स्त्री.* {सं. कक्ष} धोती का वह छोर जो जाँघों के बीच से ले जाकर पीछे खोंसा जाता है; गुदेंद्रिय के अंदर का भाग, गुदाचक्र।

मुहा. काँच निकलना = आघात, परिश्रम आदि से दुर्दशा होना।

काँच[2] *पुं.* {सं. कांच} एक प्रसिद्ध पारदर्शक मिश्र वस्तु जो बालू, रेह आदि के योग से बनती है, शीशा; काँच।

कांचन *पुं.* {सं.} {*वि.* कांचनीय} स्वर्ण, सोना; कचनार; चंपा; धतूरा।

कांचनगिरि *पुं.* {सं.} सुमेरु पर्वत।

कांचनी *स्त्री.* वेश्या; हल्दी; गोरोचन।

काँचली *स्त्री.* केंचुली।

काँचा *वि.* {*स्त्री.* काँची} कच्चा।

कांची *स्त्री.* {सं.} मेखला, करधनी; घुँघची; हिन्दुओं की सात पुरियों में से एक, कांजीवरम्।

कांचुरी *स्त्री.* केंचुली।

कांजिक *वि.* {सं.} सिरके, काँजी आदि से संबंध रखनेवाला या इनके स्वाद का, खट्टा (एसेटिक); *पुं.* काँजी।

काँजी *स्त्री.* {सं. कांजिक} पिसी हुई राई आदि घोलकर बनाया हुआ एक प्रकार का खट्टा रस; मठा, छाछ; फटा या बिगड़ा हुआ दूध।

कांजीवरम् *पुं.* कांची।

काँजीहौद *पुं.* {अं. काइन-हाउस} सरकारी मवेशीखाना जिसमें लोगों के छूटे हुए पशुबंद करके रखे जाते हैं।

काँटवा *वि.* = कँटीला; काँटेदार।

काँटा *पुं.* {सं. कंटक} बहुत कड़ा नुकीला अंकुर, कंटक।

मुहा. काँटा निकालना = बाधा या संकट दूर होना; *(रास्ते में) काँटे बिछाना* = बाधाएँ डालना; *काँटे बोना* = बुराई या अनिष्ट करना, अड़चन डालना; *काँटे-सा खटकना* = बुरा लगना, दुखदायी होना; *काँटों पर लोटना* = कष्ट से तड़पना; *काँटों में घसीटना* = झगड़े या झंझट में फँसाना; *रास्ते का काँटा* = मनोरथ की सिद्धि में बाधक; *काँटे की बात* = मौके की या महत्वपूर्ण सच्ची बात।

इस आकार का वह अंग जो नर मोर, तीतर आदि के पंजे में निकलता है, खाँग; वे छोटी नुकीली फुंसियाँ जो जीभ में निकलती हैं; लोहे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

की बड़ी कील; मछली पकड़ने की अँकुड़ी; लोहे की अँकुड़ियों का वह गुच्छा जिससे कुएँ में गिरे हुए बरतन आदि निकालते हैं; कोई लंबी नुकीली वस्तु, जैसे साही का काँटा; लोहे का वह तराजू जिसकी डाँड़ी पर सुई लगी होती है। *पद काँटे की तौल* = उसी प्रकार ठीक, जिस प्रकार काँटे पर तौली हुई चीज तौल में ठीक होती है, न कम न अधिक, पूरा और ठीक। नाक या कान में पहनने की कील, लौंग; कुछ गहनों आदि में वह छोटी उभारदार कीलें जिनमें से हर एक कील किसी जड़े हुए नगीने को पकड़े रहती है; पंजे के आकार का वह उपकरण जिससे पाश्चात्य लोग खाना खाते हैं; गणित में गुणनफल के शुद्धाशुद्ध की जाँच की एक क्रिया।

काँठा¹ *पुं.* {सं. कंठ} गला; किनारा, तट; पार्श्व, बगल; तटवर्ती प्रदेश।

काँठा² *पुं.* {सं. काष्ठा} {*स्त्री.* काँठी} जलाने की लकड़ी, ईंधन।

कांड *पुं.* {सं.} बाँस आदि का वह अंश जो दो गाँठों के बीच में होता है, पोर; सरकंडा; वृक्षों का तना; शाखा, डाली; किसी कार्य या विषय का विभाग; बहुत बड़ा झगड़ा, बखेड़ा या कोई अशुभ घटना, जैसे आज वहाँ बहुत बड़ा कांड हो गया; प्रकरण।

काँड़ना *स.* {सं. कंडन} रौंदना, कुचलना; खूब मारना।

काँड़ली *स्त्री.* कुलफा, बिच्छू घास।

काँड़ी *स्त्री.* {सं. कांड} लकड़ी का पतला लट्ठा; धान आदि को कूटना, छिलका उतारना।

काँड़ी-कफन *पुं.* मुरदे की रथी का सामान; मुर्दे की अरथी।

कांत *पुं.* {सं.} पति, शौहर; चंद्रमा; एक प्रकार का बढ़िया लोहा, कांतिसार; *वि.* सुंदर; प्रिय।

कान्तपाषाण *पुं.* {सं.} चकमक पत्थर, बढ़िया लोहा।

कांता *स्त्री.* {सं.} सुंदर स्त्री; भार्या, पत्नी; प्रिया; बड़ी इलायची।

कांतार *पुं.* {सं.} भयानक वन; जंगली मार्ग।

कांति *स्त्री.* {सं.} दीप्ति, चमक; शोभा, छवि।

कांतिकर *वि.* {सं.} सौंदर्य बढ़ानेवाला।

कांतिमान् *वि.* {सं. कांतिमत्} {*स्त्री.* कांतिमती} कांतिवाला, दीप्तियुक्त; सुंदर।

कांतिसार *पुं.* {सं. कांत} एक प्रकार का बढ़िया लोहा।

कांथरी *स्त्री.* {सं. कंथा} गुदड़ी।

काँदना *अ.* रोना।

कांदविक *पुं.* {सं.} हलवाई।

कांदो *पुं.* {सं. कर्दम} कीचड़।

काँध *पुं.* कंधा।

काँधना *स.* {हिं. कंधा} कंधे पर उठाना। *मुहा. (किसी की) बात काँधना* = बात स्वीकृत करना, कहना मान लेना। ठानना, मचाना; किसी को कुछ समझना या उसका महत्व स्वीकृत करना।

कांधी *स्त्री.* कंधा। *मुहा. कांधी मारना* = सवार को गिराने के लिए घोड़े का झटके से गरदन घुमाना।

काँप *पुं.* {सं. कंपा} बाँस आदि की पतली लचीली तीलो; सूअर का खाँग; हाथी का दाँत; कान में पहनने का एक गहना।

काँपना *अ.* {सं. कंपन} बार-बार हिलाना, थरथराना, थर्राना।

कांपिल्ल *पुं.* {सं.} प्राचीन कापिल्य प्रदेश, कामठी नगर।

कांपिल्लक *पुं.* {सं.} कबीला एक लाल औषध जो पेट का कीड़ा मारने के काम आती है।

काँबी *स्त्री.* {?} कान में पहनने का एक प्रकार का गहना।

काँव-काँव *स्त्री.* {अनु.} कौए का शब्द; व्यर्थ की बकवाद।

काँवर *स्त्री.* {हिं. काँध + आवर (प्रत्य.) या सं. कामार्थी ?} बाँस के डंडे के दोनों सिरों पर छींकों में लटकी हुई दो दौरियाँ जिनमें यात्री गंगा जल आदि भरकर तीर्थयात्रा के लिए निकलते हैं; बहँगी।

काँवरिया *पुं.* काँवाँरथी; काँवर लाने वाला।

काँवरी *स्त्री.* काँवर; कम्बल।

काँवरूप *पुं.* कामरूप।

काँवाँरथी *पुं.* {सं. कामार्थी} वह जो किसी कामना से काँवर लेकर तीर्थयात्रा करने जाए।

काँस *पुं.* {सं. काश} एक प्रकार की लंबी घास; कास जिस पर सफेद फूल आते हैं।

काँसा¹ *पुं.* {सं. कास्य} {*वि.* काँसी} ताँबे और जस्ते या ताँबे और टीन के योग से बनी हुई एक मिश्र धातु (ब्रांज)।

काँसा² *पुं.* {फा. कास} भीख माँगने का ठीकरा।

कांस्य *वि.* {सं.} काँसे (धातु) का बना हुआ (ब्रांज)।

कांस्यक *पुं.* {सं.} पीतल।

काँस्यकार *पुं.* {सं.} काँसे के बर्तन बनानेवाला।

काँस्य-पात्र *पुं.* {सं.} काँसे का बर्तन।

कांस्य युग *पुं.* {सं.} पुरातत्व में प्रागैतिहासिक काल का वह विभाग जो प्रस्तर युग के बाद का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और लौह युग के पहले का माना जाता है और जिसमें हथियार, औजार, बरतन आदि काँसे के ही बनते थे। इसी को 'ताम्रयुग' भी कहते हैं (ब्रांज एज)।

का *परसर्ग.* {सं. प्रत्य. कः} संबंधकारक या षष्ठी का चिह्न, जैसे पुस्तक का मूल्य; हिन्दी में 'को' का एक रूप, जैसे ओका = उसको।

काई *स्त्री.* {सं. कावार} जल में होनेवाली एक प्रकार की हरी घास जो उसपर फैली रहती है; सिवार।

मुहा. काई छुड़ाना = मैल दूर करना, दरिद्रता दूर करना; *काई-सा फट जाना* = तितर-बितर हो जाना।

मल, मैल।

काउंसिल *स्त्री.* {अं.} कुछ विशिष्ट विषयों पर विचार करनेवाली सभा या समिति।

काऊ *सर्व.* {सं. कः} कोई; कुछ।

काक *पुं.* {सं.} कौआ।

काक-गोलक *पुं.* {सं.} कौए की आँख की पुतली (कहते हैं कि कौए की आँखें तो दो, पर पुतली एक ही होती है और वही दोनों आँखों में आती-जाती रहती है।

काकचेष्टा *स्त्री.* {सं.} कौए की तरह चौकन्नापन।

काकटेल *स्त्री.* {अं.} दो अलग-अलग मदिराओं का मिश्रित पेय; सभा या गोष्ठी जिसमें उक्त प्रकार की शराब चलती हो।

काकतालीय *वि.* {सं.} केवल संयोगवश होनेवाला; अकस्मात्।

काकतालीय न्याय *पुं.* {सं.} उसी प्रकार संयोगवश कोई काम हो जाना, जिस प्रकार कौए के बैठते ही ताड़ का पेड़ गिर जाए।

काकदंत-परीक्षा *स्त्री.* {सं.} व्यर्थ का कार्य करना।

काकपक्ष *पुं.* {सं.} बालों के पट्टे जो पुराने जमाने में दोनों ओर कानों के ऊपर रखे जाते थे।

काकपद *पुं.* {सं.} वह चिह्न जो छूटे हुए शब्द का स्थान जताने के लिए पंक्ति के नीचे बनाया जाता है।

काकरी *स्त्री.* काकड़ी।

काकभुशुंडि *पुं.* {सं.} एक प्राचीन ऋषि जो बाद में काकयोनि में चले गए।

काकरेजा *पुं.* {हिं. काकरेजी} काकरेजी रंग का कपड़ा।

काकली *स्त्री.* {सं.} मधुर ध्वनि, कल नाद; कोयल की कूक।

काकवंध्या *वि., स्त्री.* {सं.} स्त्री जो एक बार संतान प्रसव करके फिर प्रसव न करे, एक बाँझ।

काका *पुं.* {फा. कोका = बड़ा भाई} {*स्त्री.* काकी} बाप का भाई, चाचा।

काकातुआ *पुं.* {मला. ककातुआ} एक प्रकार का बड़ा तोता।

काकु *पुं.* {सं.} व्यंग्य, ताना; अलंकार में वक्रोक्ति का एक भेद, जिसमें शब्दों की ध्वनि से ही दूसरा अभिप्राय लिया जाता है, जैसे भला आप वहाँ क्यों जाएँगे, अर्थात् आप वहाँ नहीं जाएँगे।

काकुल *स्त्री.* {फा.} कनपटी पर लटकते हुए लंबे बाल, जुल्फ।

काकोदर *पुं.* {सं.} साँप।

काग[1] *पुं.* {सं. काक} कौआ पक्षी।

काग[2] *पुं.* {अं. कार्क} बलूत की जाति का एक बड़ा पेड़; बोतल या शीशी की डाट जो इस पेड़ की छाल से बनती है।

कागज *पुं.* {*अ.* कागज़} {*वि.* कागजी} घास, बाँस आदि सड़ाकर बनाया हुआ वह महीन पत्र जिसपर अक्षर लिखे या छापे जाते हैं।

मुहा. कागज काला करना या रँगना = व्यर्थ कुछ लिखना; *कागज की नाव* = न टिकनेवाली चीज।

लिखा हुआ प्रामाणिक लेख, लेख्य; समाचार-पत्र, अखबार।

कागज-पत्र *पुं.* लिखे हुए कागज; प्रामाणिक लेख, लेख्य।

कागजात *पुं.* {फा.} कागज़पत्र।

कागजी *वि.* {*अ.* कागज़ी} कागज-संबंधी, कागज का; कागज पर लिखा हुआ, जैसे कागजी सबूत।

मुहा. कागजी घोड़े दौड़ाना = किसी कार्य के लिए कोई विशेष प्रयत्न न करके केवल लिखा-पढ़ी या पत्र-व्यवहार करना; *कागजी पहलवान* = अंदर से शक्तिहीन मनुष्य।

फल जिसका छिलका अपेक्षाकृत पतला हो, जैसे कागजी बादाम।

कागजी नींबू *पुं.* पतले छिलकेवाला नींबू जो अपेक्षाकृत बहुत छोटा और रसदार होता है।

कागद, कागर *पुं.* कागज।

कागला *पुं.* {सं. काकलक} गले के अंदर की घाँटी, कौआ।

कागारौल *पुं.* {हिं. काग = कौआ + रोर = शोर} कौओं की तरह मचाया जानेवाला हल्ला, हुल्लड़।

काची *स्त्री.* {हिं. कच्चा} दूध रखने ही हाँड़ी; तीखुर, सिंघाड़े आदि का हलुआ।

काछ *स्त्री.* {सं. कक्ष} पेड़ू और जाँघ तथा उसके नीचे का स्थान; धोती का वह भाग जो पीछे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

खोंसा जाता है, लाँग; अभिनय के लिए नटों का वेश धारण करना; सिखों का कच्छा।
मुहा. काछ काछना = भेस बनाना।

काछना *स.* {हिं. काछ} धोती का पल्ला पीछे खोंसकर बनाना, सँवारना।

काछनी *स्त्री.* {हिं. काछना} धोती पहनने का वह ढंग जिसमें दोनो लाँगें पीछे खोंसी जाती हैं, कछनी; घाघरे की तरह का एक पहनावा।

काछा *पुं.* काछनी; काछ।

काछी *पुं.* {सं. कच्छ = जलप्राय देश} एक जाति जो तरकारी बोती और बेचती है, कोइरी।

काछू *पुं.* {सं. कच्छप} कछुआ।

काछे *क्रि. वि.* {सं. कक्ष} निकट, पास।

काज¹ *पुं.* {सं. कार्य} कार्य, काम; व्यवसाय, रोजगार; प्रयोजन, मतलब; कोई शुभ कर्म।

काज² *पुं.* {पुर्त.} पहनने के कपड़ों में वह छेद जिसमें बटन फँसाते हैं।

काजर *पुं.* काजल।

काजरी *स्त्री.* {सं. कज्जली} वह गौ जिसकी आँखों पर काला घेरा हो, कजरी।

काजल *पुं.* {सं. कज्जल} दीपक के धुएँ की कालिख जो आँखों में लगाई जाती है।
मुहा. काजल घुलाना, डालना या सारना = (आँखों में) काजल लगाना; *काजल पारना* = दीपक के धुएँ से काजल बनाना या जमाना।

काजल की कोठरी *स्त्री.* वह स्थान जहाँ जाने से कलंक लगे।

काजी *पुं.* {अ. काज़ी} न्याय की व्यवस्था करनेवाला अधिकारी (मुसल.)।

काजू *पुं.* एक फल जो केरल में उत्पन्न होता है।

काजू-भोजू *वि.* {हिं. काज + भोग} जो अधिक दिनों तक काम में न आ सके।

काट *स्त्री.* {हिं. काटना} काटने की क्रिया या भाव; काटने का ढंग, कटाव, तराश; घाव, जखम; कपट, चालबाजी; कुश्ती में पेंच का तोड़।

काँट-छाँट *स्त्री.* (लेख, शब्द, वाक्य आदि) काटकर निकालने की क्रिया; (पेड़, पौधों के अनावश्यक अंग) काटकर अलग करने की क्रिया; काट या छाँटकर निकाला हुआ अंश।

काटना *स.* {सं. कर्त्तन} धारदार शस्त्र आदि से किसी वस्तु के दो या कई खंड करना।
पद काटो तो खून नहीं = बिल्कुल सन्न या स्तब्ध हो जाना।
दाँत गड़ाकर खंड, क्षत या घाव करना; पीसकर चूर करना, पीसना; नष्ट करना; किसी वस्तु में से कोई अंश निकालना (डिडक्ट); युद्ध में मारना; समय बिताना, जैसे दिन काटना; रास्ता तै करना; अनुचित ढंग से प्राप्त करना; कलम की लकीर से लिखावट रद्द करना, मिटाना; ऐसे काम तैयार करना जो लंबाई में दूर तक चले गए हों, जैसे सड़क काटना, नहर काटना; जेलखाने में कैद भोगना; विषैले जंतु का डंक मारना, डसना, जैसे साँप या मच्छर का काटना; किसी तीक्ष्ण वस्तु का शरीर में लगकर जलन पैदा करना; एक रेखा का किसी एक स्थान पर दूसरी रेखा के ऊपर से होते हुए आगे निकल जाना; (किसी मत, विचार या कथन का) खंडन करना; कष्टकर प्रतीत होना, जैसे अब तो यह घर काटता है; दूसरे की पतंग का तागा बीच में तोड़ना।
मुहा. काटने दौड़ना = बहुत बुरा लगना, सूना और उजाड़ लगना।

काटना-छाँटना *स.* काट-छाँट देना।

काटू *पुं.* {हिं. काटना} काटनेवाला; डरावना, भयानक।

काठ *पुं.* {सं. काष्ठ} पेड़ का कोई स्थूल अंग जो कटकर सूख गया हो, लकड़ी।
पद काठ का उल्लू = बहुत बड़ा मूर्ख; *काठ की हाँड़ी* = ऐसी दिखाऊ वस्तु जिसका धोखा एक बार से अधिक न चल सके।
मुहा. (किसी को) काठ मार जाना = बहुत अधिक चकित, स्तब्ध या सुन्न हो जाना; *काठ हो जाना* = सूखकर बहुत ही कड़ा हो जाना; डर या घबराकर सन्न हो जाना, स्तब्ध होना; *काठ के साथ लोहा भी तरना* = भले के साथ बुरे का भी भला होना।
जलाने की लकड़ी, ईंधन; लकड़ी की बनी हुई बेड़ी।
मुहा. काठ मारना या काठ में पाँव देना = काठ की बेड़ी पहनाना।

काठ-कबाड़ *पुं.* टूटा-फूटा सामान।

काठा *वि.* {हिं. काठ} जिसका छिलका मोटा और कड़ा हो, कठिया, जैसे काठा बादाम।

काठिन्य *पुं.* {सं.} कठिनता; कठिनाई।

काठियावाड़ *पुं.* गुजरात का एक भाग।

काठी¹ *स्त्री.* {हिं. काठ} घोड़ों आदि की पीठ पर कसने की जीन; शरीर की गठन या बनावट; कदकाठी।

काठी² *वि.* {काठियावाड़ देश} काठियावाड़ का।

काढ़ना¹ *स.* {सं. कर्षण} अंदर से बाहर करना, निकालना; अलग करना; आवरण हटाकर दिखाना; कपड़े पर बेल-बूटे बनाना; उधार लेना; बनाना या लगाना, जैसे टीका काढ़ना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काढ़ना[2] *स.* {हिं. कड़ाही} अच्छी तरह उबालकर गाढ़ा करना, औंटाना।

काढ़ा *पुं.* {हिं. काढ़ना} ओषधियों को पानी में उबालकर बनाया हुआ रस, क्वाथ।

काण *वि.* {सं.} काना।

काणेली *स्त्री.* {सं.} रखैल, व्यभिचारिणी।

कातना *स.* {सं. कर्त्तन} चरखे, तकली आदि पर रुई या ऊन बटकर तागा बनाना।

कातन्त्र *पुं.* {सं.} एक प्राचीन व्याकरण।

कातर *वि.* {सं.} {*भाव.* कातरता} अधीर, व्याकुल; डरा हुआ, भयभीत; आर्त, दुखित।

कातर्य *पुं.* {सं.} कायरता, दीनता, कृपणता।

काता *वि.* {सं.} कता हुआ सूत।

कातिक *पुं.* {सं. कार्तिक} असौज के बाद का देशी महीना।

कातिब *पुं.* {*अ.*} दस्तावेज़ आदि लिखने वाला, लेखक।

कातिल *वि.* {*अ.*} प्राणों पर संकट लानेवाला, घातक; मार डालनेवाला, हत्यारा; बहुत उग्र या विकट; कत्ल करनेवाला।

काती *स्त्री.* {सं. कर्त्री} कैंची; चाकू, छुरी; छोटी तलवार।

कातीय *पुं.* {सं.} एक मध्ययुगीन राजपूती राजवंश; कात्यायन का शिष्य।

कात्यायन *पुं.* {सं.} पाणिनीकृत अष्टाध्यायी पर वार्तिकों का लेखक।

कादंब *पुं.* {सं.} गन्ना, हंस; कदंब वृक्ष से संबद्ध।

कात्यायनी *स्त्री.* {सं.} दुर्गा।

काथा *पुं.* कत्था।

कादंबरी *स्त्री.* {सं.} बाणभट्ट की संस्कृत गद्य कथा; गन्ने के रस से बनी शराब।

कादंबिनी *स्त्री.* {सं.} घिरे हुए बादलों की पंक्ति।

कान *पुं.* {सं. कर्ण} वह इंद्रिय जिससे शब्द सुनाई पड़ता है, श्रवण, श्रुति, श्रोत्र।

मुहा. (किसी का) कान उमेठना = दंड के रूप में किसी का कान मरोड़ना; *(अपना) कान उमेठना* = कोई काम फिर से न करने की प्रतिज्ञा करना; *कान करना* = ध्यानपूर्वक सुनना; *(किसी के) कान काटना* = मात करना, बढ़कर होना; *कान खाना या खा जाना* = बहुत शोर करना; *कान गरम करना* = (किसी का) कान उमेठना; *(बात पर) कान देना या धरना* = ध्यान से सुनना; *(किसी बात से) कान पकड़ना* = कोई काम फिर न करने की प्रतिज्ञा करना; *कान पर जूँ न रेंगना* = कुछ भी परवाह या अनुभूति न होना; *कान भरना* = किसी के विरुद्ध किसी के मन में कोई दूषित बात बैठा देना; *कानोंकान खबर न होने देना* = किसी को न बताना; *(किसी का) कान में तेल डालकर बैठना* = किसी की न सुनना; *कान में डाल देना* = सुना या जता देना; *कानोंकान खबर न होना* = किसी को जरा भी खबर न होना।

पद कान का कच्चा = जो किसी के कहने पर बिना सोचे-समझे विश्वास कर ले।

कान में पहनने का सोने का एक गहना; चारपाई का टेढ़ापन, कनेव; किसी वस्तु का ऐसा निकला हुआ कोना जो भद्दा जान पड़े; नाव की पतवार।

कानन *पुं.* {सं.} जंगल; घर; कानों में।

काना[1] *वि.* {सं. काण} {*स्त्री.* कानी} जिसकी एक आँख फूट गई हो, एकाक्ष।

काना[2] *वि.* {सं. कर्णक} (फल) जिसका कुछ भाग कीड़ों ने खा लिया हो; जिसमें किसी प्रकार का दोष या न्यूनता हो, त्रुटिपूर्ण जैसे कानी कौड़ी।

कानाफूसी *स्त्री.* {हिं. कान + फुसफुस (अनु.)} वह बात जो कान के पास धीरे से कही जाए।

कानि *स्त्री.* {?} लोक या समाज की मर्यादा का ध्यान, लोकलज्जा।

मुहा. कानि पड़ना = लोक या समाज की मर्यादा का ध्यान रखना।

वंश या कुल की अथवा स्वयं अपनी प्रतिष्ठा, इज्जत; संकोच, लिहाज।

कानी उँगली *स्त्री.* {सं. कनीनी + हिं. उँगली} हाथ या पैर की सबसे छोटी और आखिरी उँगली।

कानी कौड़ी *स्त्री.* {हिं. काना = त्रुटिपूर्ण + कौड़ी} फूटी या खराब कौड़ी; बहुत ही थोड़ा या नाम मात्र का धन, जैसे मैं तो उन्हें कानी कौड़ी भी न दूँगा।

कानीन *पुं.* {सं.} वह जो किसी कुमारी कन्या के गर्भ से पैदा हुआ हो; कर्ण, कृष्ण द्वैपायन, महर्षि व्यास।

कानून *पुं.* {*अ.*, यु. केनन} {*वि.* कानूनी} राज्य में शांति रखनेवाले नियम, राजनियम, विधि।

मुहा. कानून छाँटना = तुच्छ नियमों के आधार पर कुतर्क या हुज्जत करना।

किसी विषय के नियमों का संग्रह, विधान।

कानूनगो *पुं.* {*अ.* कानून + फा. गो} माल विभाग का वह कर्मचारी जो पटवारियों के कागज़ों की जाँच करता है।

कानूनदाँ *पुं.* {*अ.* कानून + फा. दाँ} कानून जाननेवाला, विधिज्ञ।

कान्यकुब्ज *पुं.* {सं.} एक प्राचीन प्रांत जो वर्तमान समय के कन्नौज के आसपास था; इस देश का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवासी; उक्त प्रदेश से आए हुए ब्राह्मण जिनकी एक अलग जाति बन गई है।

कान्ह पुं. {सं. कृष्ण} श्रीकृष्ण।

कान्हड़ा पुं. एक राग।

कापटिक *वि.* {सं.} कपटी।

कापथ पुं. {सं.} बुरा रास्ता, ऊबड़-खाबड़।

कापालिक पुं. {सं.} शैव मत का तांत्रिक साधु, जो खोपड़ियों की माला पहनता था।

कापाली *स्त्री.* {सं.} खोपड़ियों की माला।

कापी *स्त्री.* {अं.} नकल, प्रतिलिपि; लिखने की कोरे कागजों की पुस्तिका।

कापुरुष पुं. कायर, डरपोक।

काफिया पुं. {अ.} अन्त्यानुप्रास, तुक, जैसे काल का काफिया ताल और माल है।

मुहा. काफिया तंग करना = हैरान करना, नाकों दम करना।

काफिर *वि.* {अ.} मुसलमानों के अनुसार उनसे भिन्न धर्म माननेवाला; ईश्वर को न माननेवाला; निर्दय।

काफिला पुं. {अ.} यात्रियों का दल।

काफी[1] *वि.* {अ.} जितना अनावश्यक हो, उतना, पर्याप्त, यथेष्ट, पूरा।

काफी[2] *स्त्री.* {अं.} एक प्रसिद्ध पेय; वह चूर्ण या बीज जिससे उक्त पेय बनता है।

काबा पुं. {अ.} अरब के मक्के शहर का एक स्थान जहाँ मुसलमान हज करने जाते हैं।

काबिज *वि.* {अ. काबिज़} जिसका कब्जा या अधिकार हो; पुं. वह जो किसी जमीन पर या मकान में रहकर उसका उपभोग करता हो (अकुपेन्ट)।

काबिल *वि.* {अ.} {*भाव.* काबिलियत} योग्य, लायक; विद्वान।

काबुल पुं. {सं. कुभा} {*वि.* काबुली} अफगानिस्तान की राजधानी; काबुल नदी।

काबू पुं. {तु.} वश, अधिकार।

मुहा. काबू पाना = अपने वश में करना।

काम[1] पुं. {सं.} {*वि.* कामुक, कामी} इच्छा, मनोरथ; इंद्रियों की अपने-अपने विषयों की ओर प्रवृत्ति; सहवास या मैथुन की इच्छा; चतुर्वर्ग या चार पदार्थों में से एक; मैथुन-क्रिया।

काम[2] पुं. {सं. कर्म, प्रा. कम्म} वह जो किया जाए, व्यापार, कार्य।

मुहा. काम आना = उपयोग में आना; लड़ाई में मारा जाना; *काम करना* = प्रभाव दिखलाना। कठिन परिश्रम या कौशल का कार्य; प्रयोजन, अर्थ, मतलब।

मुहा. काम निकलना = प्रयोजन सिद्ध होना; आवश्यकता पूरी होना; *काम पड़ना* = आवश्यकता होना।

संबंध, वास्ता, सरोकार।

मुहा. किसी से काम पड़ना = किसी प्रकार का व्यवहार या संबंध होना; *काम से काम रखना* = केवल अपने कार्य, प्रयोजन, कर्तव्य आदि से संबंध रखना।

उपभोग, व्यवहार, इस्तेमाल।

मुहा. (वस्तु का) काम देना = व्यवहार में आना, उपयोगी होना; *काम में लाना* = व्यवहार करना; *काम का होना* = उपयोगी होना; *काम का न रहना* = बेकार या अनुपयोगी हो जाना।

व्यवसाय, रोजगार; अच्छी रचना, कारीगरी; बेलबूटा या नक्काशी।

कामकला *स्त्री.* {सं.} कामदेव की स्त्री, रति; संभोग, रति।

कामकाजी *वि.* {हिं. काम + काज} काम या उद्योग में लगा रहनेवाला।

कामकेलि *स्त्री.* {सं.} रतिक्रिया, संभोग।

कामक्रीड़ा *स्त्री.* {सं.} कामकेलि।

कामगार पुं. कामदार; मजदूर।

कामचलाऊ *वि.* {हिं. काम + चलाना} जिससे किसी प्रकार काम निकल सके।

कामचोर *वि.* {हिं. काम + चोर} काम से जी चुरानेवाला।

कामज *वि.* {सं.} काम या वासना से उत्पन्न।

कामतरु पुं. कल्पवृक्ष।

कामद *वि.* {सं.} {*स्त्री.* कामदा} मनोरथ पूरा करनेवाला, जैसे कामद मणि = चिंतामणि।

कामदार[1] पुं. {हिं. काम + दार (प्रत्य.)} कर्मचारी, कारिन्दा, अमला।

कामदार[2] *वि.* {फा.} (वस्त्र आदि) जिसपर कलाबत्तू आदि के बेल-बूटे बने हों, जैसे कामदार टोपी।

कामदी *स्त्री.* {अं. कामेडी} चरित्र-चित्रण का वह प्रकार जिसमें मानवीय दुर्बलताओं का इस प्रकार अंकन किया जाता है कि लोग उनपर हँसें और उनसे बचें भी।

कामदुहा *स्त्री.* {सं.} मनोरथ पूर्ण करनेवाली।

कामदेव पुं. {सं.} स्त्री-पुरुष के संयोग की प्रेरणा करनेवाला देवता या शक्ति, मदन; अतिसुंदर मनुष्य।

काम-धाम पुं. काम-काज।

कामधुक *स्त्री.* {सं.} मन की इच्छा पूरी करनेवाला।

कामधेनु *स्त्री.* {सं.} पुराणानुसार एक गाय जिससे जो कुछ माँगा जाए, वही मिलता है, सुरभि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामन *वि.* {सं.} कामुक, सर्वसाधारण।
कामना *स्त्री.* {सं.} मन की इच्छा, मनोरथ, ख्वाहिश।
कामयाब *वि.* {*भाव.* कामयाबी} सफल।
कामरिपु *पुं.* {सं.} शिव।
कामरी *स्त्री.* कंबल।
कामरूप *पुं.* {सं.} असम (आसाम) प्रदेश का एक जिला जहाँ कामाख्या देवी का स्थान है; देवता।
कामरेड *पुं.* {अं.} किसी राजनैतिक संघटन का सदस्य।
कामल *वि.* वसंत; अच्छा, बढ़िया।
कामला *पुं.* कमलबाय (रोग)।
कामली *स्त्री.* कमली।
काम-वासना *स्त्री.* {सं.} काम की इच्छा, संभोग की इच्छा।
कामशास्त्र *पुं.* {सं.} वह विद्या जिसमें स्त्री-पुरुष के परस्पर समागम आदि के व्यवहारों का वर्णन हो।
कामांध *वि.* {सं.} काम के वेग से व्याकुल या उद्विग्न।
कामाख्या *स्त्री.* {सं.} कामरूप में प्रतिष्ठित एक देवी।
कामायनी *स्त्री.* {सं.} वैवस्वत मनु की पत्नी श्रद्धा का एक नाम; उसको आधार बनाकर जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित हिन्दी काव्य।
कामारि *पुं.* {सं.} महादेव।
कामित *स्त्री.* कामना; चाहा गया।
कामिनी *स्त्री.* {सं.} कामवती स्त्री; सुंदर स्त्री; मदिरा।
कामिल *वि.* {*अ.*} पूरा, पूर्ण, समूचा; योग्य; उत्तम वस्तु।
कामी *वि.* {*स.* कामिन्} {*स्त्री.* कामिनी} कामना रखनेवाला; कामुक।
कामुक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* कामुकी} जिसे कामवासना बहुत हो, विषयी।
कामेच्छा *स्त्री.* {सं.} काम या रति की (तीव्र) इच्छा।
कामेश्वरी *स्त्री.* {सं.} कामाख्या देवी की एक मूर्ति।
कामोद्दीपक *वि.* {सं.} {*भाव.* कामोद्दीपन} जिससे स्त्री-सहवास या प्रसंग की इच्छा बढ़े।
कामोद्दीपन *पुं.* {सं.} काम वासना को भड़काना।
कामोन्माद *पुं.* {सं.} वह अवस्था जिसमें काम-वासना अत्यंत प्रबल हो उठी हो।
काम्य *वि.* {सं.} जिसकी कामना की जाए; जिससे कामना सिद्ध हो; चाहने योग्य; *पुं.* {सं.} वह धर्म-कार्य जो किसी कामना की सिद्धि के लिए किया जाए, जैसे पुत्रेष्टि यज्ञ।
काय *पुं.* {सं.} शरीर, समिति, कार्यालय।
काय-चिकित्सक *पुं.* {सं.} ओषधियों द्वारा शरीर की चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक; जो चीर फाड़ न करे दवा देकर की चिकित्सा करता है।
कायजा *पुं.* {*अ.* कायज:} घोड़े की लगाम में लगी हुई वह डोरी जो उसकी पूँछ तक बँधी रहती है।
कायदा *पुं.* {*अ.* कायद:} विधि, नियम; चाल, दस्तूर; रीति, ढंग; क्रम, व्यवस्था।
कायफल *पुं.* {सं. कट्फल} एक वृक्ष जिसकी छाल दवा के काम में आती है।
कायम *वि.* {*अ.*} दृढ़तापूर्वक ठहरा हुआ, स्थिर; स्थापित; निर्धारित, निश्चित, मुकर्रर; बना रहना।
कायर *वि.* {सं. कातर} {*भाव.* कायरता} डरपोक, भीरु।
कायल *वि.* {*अ.* कायल} जिसने तर्क-वितर्क से सिद्ध बात मान ली हो।
कायली[1] *स्त्री.* {सं. क्ष्वेलिका} मथानी।
कायली[2] *स्त्री.* {हिं. कायर} ग्लानि, लज्जा।
कायली[3] *स्त्री.* {*अ.* कायल} (तर्क में) कायल या परास्त होने का भाव।
कायस्थ *वि.* {सं.} काया में स्थित, शरीर में रहनेवाला; *पुं.* {सं.} जीवात्मा; परमात्मा; हिन्दुओं की एक जाति का नाम।
काया *स्त्री.* {सं.} काय।
कायाकल्प *पुं.* {सं.} औषध के द्वारा वृद्ध या रुग्ण शरीर को फिर से तरुण या स्वस्थ करने की क्रिया, जैसे पं. मदनमोहन मालवीय जी ने अपना कायाकल्प कराया था।
कायान्तर *पुं.* {सं.} दूसरा शरीर।
कायान्तरण *पुं.* {सं.} एक शरीर से दूसरा शरीर बदलना।
काया-पलट *पुं.* {हिं. काया + पलटना} बहुत बड़ा परिवर्तन; एक शरीर या रूप छोड़कर दूसरा शरीर या रूप धारण करना।
कायिक *वि.* {सं.} काया या शरीर-संबंधी; शरीर से किया हुआ या उत्पन्न, जैसे कायिक पाप।
कायिकी *स्त्री.* {सं.} जीवों, जंतुओं तथा वनस्पतियों की काया का अध्ययन करनेवाला विज्ञान।
कारंड (व) *पुं.* {सं.} हंस या बत्तख की जाति का एक पक्षी।
कारंधमी (मिन्) *पुं.* {सं.} लोहे आदि को सोना बनानेवाला, कीमियागर।
कार[1] *पुं.* {सं.} क्रिया, कार्य, जैसे उपकार, स्वीकार; कृयन्त शब्दांश जो कि समस्त शब्द के अंत में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगता है, जैसे चित्रकार; एक शब्द जो वर्णमाला के अक्षरों के साथ लगकर उनका स्वतंत्र बोध कराता है, जैसे ककार, मकार; एक शब्द जो अनुकृत ध्वनि के साथ लगकर उसका संज्ञावत् बोध कराता है, जैसे फूत्कार।

कार² *पुं.* {फा.} कार्य, काम।

कार³ *स्त्री.* {अं.} मोटर (गाड़ी)।

कारक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* कारिका} करनेवाला, यह संज्ञा शब्द के अंत में लगता है, जैसे हानिकारक; किसी के स्थान पर या प्रतिनिधि के रूप में काम करनेवाला (ऐक्टिंग); *पुं.* {सं.} व्याकरण में संज्ञा या सर्वनाम शब्द की वह अवस्था या रूप जिसके द्वारा किसी वाक्य में उसका क्रिया के साथ संबंध प्रकट होता है (केस); वह जो कोई क्रिया करता या कर सकता हो (एजेंट)।

कारकुन *पुं.* {फा.} इंतजाम करनेवाला, प्रबंधकर्ता; कारिंदा।

कारखाना *पुं.* {फा.} वह स्थान जहाँ व्यापार के लिए कोई वस्तु अधिक मात्रा या मान में बनती हो (फैक्टरी)।

कारचोब *पुं.* {फा.} {*वि.* कारचोबी} लकड़ी का वह चौकठा, जिस पर कपड़ा तानकर जरदोजी का काम बनाया जाता है, अड्डा; जरदोज।

कारचोबी *स्त्री.* {फा.} जरदोज़ी का काम।

कारज *पुं.* कार्य।

कारटा *पुं.* {सं. करट} कौआ।

कारण *पुं.* {सं.} वह जिसके प्रभाव से या फलस्वरूप कोई काम हो, सबब, वजह, जैसे धुएँ का कारण आग है (कॉज); वह जिसके विचार से या जिसका ध्यान रखकर कोई काम किया जाए, हेतु, निमित्त, प्रयोजन, जैसे आपसे मिलने का एक कारण था (रीजन); वह जिससे कुछ उत्पन्न या प्रकट हो, आदि, मूल, जैसे सृष्टि का कारण ब्रह्मा है; साधन; तांत्रिक उपचार या कर्म।

कारणता *स्त्री.* कारणिकता।

कारणमाला *स्त्री.* {सं.} कारणों या हेतुओं की शृंखला; साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी कारण से उत्पन्न होनेवाले कार्य से पुनः किसी अन्य कार्य के होने का वर्णन होता है।

कारण-शरीर *पुं.* {सं.} शरीर का स्थूल और सूक्ष्म से भिन्न एक अन्य रूप; पूर्वजन्म के भले-बुरे कर्म और वासना जिसके अनुसार शरीर मिलता है।

कारणा *स्त्री.* पीड़ा; नरक में धकेलनेवाली; परीक्षक; न्यायाधीश।

कारणिक *पुं.* {सं.} {*भाव.* कारणिकता} कारण-संबंधी, कारण का; कारण के रूप में होनेवाला (कॉजल)।

कारणिकता *स्त्री.* {सं.} 'कारण' या 'कारणिक' होने की अवस्था या भाव, 'कारण' और 'कार्य' में रहनेवाला संबंध या उसका स्वरूप; न्यायाधीश या परीक्षक का पद।

कारतूस *पुं.* {पुर्त. कारटूश} बारूद भरी एक नली जो बंदूकों में भरकर चलाते हैं, गोली।

कारन *पुं.* कारण।

कारनामा *पुं.* {फा.} कोई बड़ा कार्य (विशेषतः उपेक्षासूचक)।

कारनिस *स्त्री.* कँगनी।

कारनी *पुं.* {सं. कारण} कारण के रूप में होने या प्रेरणा करनेवाला, प्रेरक।

कार-परदाज *वि., पुं.* {फा.} {*भाव.* कार-परदाजी} किसी की ओर से उसका कोई काम करनेवाला, कारिन्दा; प्रबंधकर्ता; वह जो बहुत से अथवा अपने सब काम बहुत अच्छी तरह कर सकता हो, कार्यकुशल।

कारबंकल *पुं.* {अं.} एक प्रकार का विषैला फोड़ा।

कारबन *पुं.* {अं.} एक मौलिक तत्व जो हीरे, कोयले आदि में पाया जाता है।

कारबार *पुं.* {फा.} {*वि.* कारबारी} काम-काज, व्यापार; पेशा, व्यवसाय।

कारबारी *वि.* {फा.} कामकाजी; *पुं.* कारकुन, कारिंदा।

कारयिता *वि.* {सं. कारयितृ} कुछ करवाने वाला।

कारयित्री *स्त्री.* {सं.} रचने की सामर्थ्य देनेवाली।

कारवाँ *पुं.* {फा.} सार्थ, काफ़िला।

कारसाज *वि.* {फा.} {*भाव.* कारसाजी} बिगड़ा हुआ काम बनाने या ठीक तरह से कोई काम पूरा करने की युक्ति निकालनेवाला।

कारस्तानी *स्त्री.* {फा.} कारसाजी, कार्रवाई; चालबाजी।

कारा *स्त्री.* {सं.} बंधन, कैद; कारागार; पीड़ा, क्लेश; *वि., पुं.* काला।

कारागार *पुं.* {सं.} वह स्थान जिसमें दंड पाए हुए लोगों को बंद करके रखा जाता है, बंदीगृह, जेलखाना (जेल)।

कारागारिक *पुं.* {सं.} कारापाल।

कारागृह *पुं.* कारागार।

कारादंड *पुं.* {सं.} कारागार में बंद रखने का दंड, जेल की सजा।

कारापाल *पुं.* {सं.} कारा का प्रधान अधिकारी (जेलर)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारारुद्ध *वि.* {सं.} जो कारागार में बंद किया गया हो (इम्प्रिज़ंड)।
कारारोध *पुं.* {सं.} {*वि.* कारारुद्ध} कारागार में बंद करने या होने की क्रिया या भाव (इम्प्रिज़नमेंट)।
कारावास *पुं.* {सं.} कारागार में बंद होकर रहना, बंदी रहना, कैद में रहना (इम्प्रिजनमेंट)।
कारिंदा *पुं.* {फा.} किसी के अधीन रहकर उसकी ओर से उसका कोई काम करनेवाला, गुमाश्ता।
कारिका *स्त्री.* {सं.} किसी सूत्र की श्लोकबद्ध व्याख्या; करानेवाली।
कारिख *स्त्री.* कालिख।
कारिणी *वि., स्त्री.* {सं. 'कारी' का *स्त्री.*} करनेवाली (शब्दों के अंत में, जैसे प्रबंधकारिणी समिति)।
कारिता *स्त्री.* {सं.} कारी या कारक (करनेवाला) होने का भाव (यौ. के अंत में, जैसे गुणकारिता)।
कारी[1] *वि.* {सं. कारिन्} {*स्त्री.* कारिणी} करनेवाला, बनानेवाला, जैसे कार्यकारी।
कारी[2] *स्त्री.* {सं. कारिता} करने का काम, जैसे पत्रकारी, चित्रकारी आदि।
कारीगर *पुं.* {फा.} {*भाव.* कारीगरी} लकड़ी, पत्थर आदि से सुंदर वस्तुओं की रचना करनेवाला, शिल्पकार; किसी भी प्रकार के शिल्प में कुशल; *वि.* हाथ से काम बनाने में कुशल, निपुण, हुनरमंद।
कारु *पुं.* {सं.} {*भाव.* कारुता} शिल्पी, कारीगर, दस्तकार।
कारुज *वि.* {सं.} शिल्पकार की देन (कोई कृति), गेरु, फेन।
कारुणिक *वि.,* {सं.} जिसे देखकर मन में करुणा उत्पन्न हो, जैसे कारुणिक दृश्य; जिसके मन में करुणा हो, कृपालु, दयालु; कारुण्य; *पुं.* {सं.} 'करुणा' का भाव, दया, मेहरबानी।
कारुणिकता *स्त्री.* {सं.} दयालुपन।
कारुण्य *पुं.* {सं.} करुणता, दया का भाव।
कारूँ *पुं.* {*अ.*} हजरत मूसा का चचेरा भाई जो बहुत बड़ा धनी पर कंजूस था।
कारूँ का खजाना *पुं.* अनंत संपत्ति।
कारूती *स्त्री.* {*अ.*} एक प्रकार की हकीमी या यूनानी मलहम।
कारूनी *स्त्री.* {?} घोड़ों की एक जाति।
कारूरा *पुं.* {*अ.*} मूत्र, पेशाब।
कारोबार *पुं.* = कारबार।
कार्तिक *पुं.* {सं.} वह चांद्र मास जो क्वार और अगहन के बीच में पड़ता है; कातिक।
कार्तिकी *स्त्री.* {सं.} कार्तिक महीने की पूर्णमासी।
कार्तिकेय *पुं.* {सं.} शिव के पुत्र, स्कंदजी, षड़ानन।
कार्मण *पुं.* {सं.} मंत्र, तंत्र आदि का प्रयोग; कर्म से संबद्ध; कर्म करने में कुशल।
कार्मुक *पुं.* {सं.} धनुष; परिधि का एक भाग, चाप; इंद्रधनुष।
कार्य *पुं.* {सं.} वह जो कुछ किया जाए, काम, व्यापार; काम करने की अवस्था क्रिया; वह जो कारण का विकार या परिणाम हो, अथवा जिसे लक्ष्य करके कोई काम किया जाए; किसी सिद्धि के लिए होनेवाला प्रयत्न, काम; व्यवसाय, सेवा, जीविका आदि के विचार से किया जानेवाला काम; नाटक में पाँच प्रकार की अर्थ-प्रकृतियों में से एक, जो नाटक के अंतिम फल या परिणाम के रूप में होती है।
कार्यकर्ता *पुं.* {सं.} वह जो कोई काम करता हो, कोई विशेष काम करनेवाला; कर्मचारी।
कार्यकर्त्री *स्त्री.* {सं.} सेविका; किसी काम को संपन्न करनेवाली स्त्री या समिति।
कार्य-कारणभाव *पुं.* {सं.} कार्य और कारण के रूप में संबंध।
कार्यकारिणी *स्त्री.* {सं.} प्रबंध-समिति।
कार्यकारी *वि.* {सं. कार्यकारिन्} {*स्त्री.* कार्यकारिणी} विशेष रूप से कोई कार्य करनेवाला; जो किसी पदाधिकारी की अनुपस्थिति में उसके पद पर अस्थायी रूप से काम करे (एक्टिंग); प्रभावी।
कार्यकाल *पुं.* {सं.} किसी के कार्य करने की अवधि।
कार्यक्रम *पुं.* {सं.} होने या किए जानेवाले कार्यों का क्रम; इस प्रकार का क्रम बतलानेवाली कार्यों की सूची (प्रोग्राम)।
कार्यक्षम *वि.* {सं.} जिसमें कोई कार्य करने की क्षमता हो।
कार्यक्षमता *स्त्री.* {सं.} कार्यक्षम होने की अवस्था या गुण।
कार्यचिन्तन *पुं.* {सं.} उपस्थित काम के बारे में सोच विचार।
कार्यदर्शन *पुं.* {सं.} काम की देखभाल; करने योग्य काम का उपाय विचार।
कार्यदिवस *पुं.* {सं.} दिवस या दिन का उतना अंश जितने में बराबर कोई आदमी कुछ कार्य करता रहता है और जिसकी गिनती एक पूरे दिन में होती है (वर्किंग डे)।
कार्यभार *पुं.* {सं.} किसी कार्य या पद से संबंध रखनेवाला कर्तव्यों का भार, उत्तरदायित्व, किसी काम या बात की जिम्मेदारी (चार्ज)।
कार्यभारी *पुं.* {हिं. कार्यभार} वह जिसने किसी कार्य या पद से संबंध रखनेवाले कर्तव्यों के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पालन आदि का भार अपने ऊपर लिया हो (इंचार्ज)।

कार्यवाहक *वि.* = कार्यकारी; कुछ समय के लिए नियुक्त अधिकारी।

कार्यविधि *स्त्री.* {सं.} कार्य करने की विधि।

कार्यवृत्त *पुं.* {सं.} किसी बैठक या अधिवेशन में जो कुछ हुआ हो उसका विवरण (मिनट्स); हुए काम की रिपोर्ट।

कार्यवृत्त पंजी *स्त्री.* वह रजिस्टर या पंजी जिसमें कार्यवृत्त लिखते हैं (मिनट्स बुक)।

कार्य-विवरण *पुं.* {सं.} सभा-समिति आदि में जो कार्य हो चुके हों, उनका विवरण।

कार्य-समिति *स्त्री.* {सं.} किसी विशिष्ट कार्य या व्यवस्था आदि के लिए बनी हुई समिति; प्रबंध-कारिणी या कार्यकारिणी समिति।

कार्यसिद्धि *स्त्री.* {सं.} काम बनना।

कार्यहेतु *पुं.* {सं.} वह कारण या हेतु जिससे कोई कार्य या व्यवहार (मुकदमा) न्यायालय के सामने विचार के लिए रखा जाता है (कॉज ऑफ ऐक्शन)।

कार्याधिकारी *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* कार्याधिकारिणी} वह अधिकारी या कार्यकर्ता जिसपर कोई विशेष कार्य या प्रबंध करने का भार हो (फंक्शनरी)।

कार्याध्यक्ष *पुं.* {सं.} वह जो सबके ऊपर रहकर किसी कार्य या उसके प्रबंध आदि की देखरेख करता हो।

कार्यान्वयन *पुं.* {सं.} कार्यरूप में परिणत करना।

कार्यान्वित *वि.* {सं. कार्य + अन्वित} जो कार्यरूप में परिणत किया जा चुका हो; अमल में आया।

कार्यार्थी *वि.* {सं.} {*स्त्री.* कार्यार्थिनी} कार्य की सिद्धि चाहनेवाला; कोई गरज रखनेवाला; जिसका कोई काम हो।

कार्यालय *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ किसी विशेष व्यापार या कार्य की व्यवस्था करनेवाले अधिकारी बैठकर सब काम बराबर नियमित रूप से करते हों, दफ्तर (ऑफिस)।

कार्यावली *स्त्री.* {सं.} उन कार्यों की सूची जो किसी सभा-समिति में किसी एक दिन अथवा एक बैठक में होने को हों (एजेंडा)।

कार्षापण *पुं.* {सं.} एक प्रकार का पुराना सिक्का।

काल[1] *पुं.* {सं.} मिनटों, घंटों, वर्षों आदि में नापी जानेवाली दूरी या गति जिससे भूत, वर्तमान आदि का बोध होता है, समय, वक्त (टाइम)।

पद काल पाकर = कुछ दिनों के बाद।

किसी एक समय से किसी दूसरे समय तक की अवधि (पीरियड); अंतिम समय, मृत्यु; यमराज जो मृत्यु के अधिष्ठाता देवता माने जाते हैं।

मुहा. काल के गाल में जाना = मर जाना, ऐसे संकट में पड़ना, जिसमें मर जाने का डर हो।

उपयुक्त समय, अवसर, मौका; जल्दी, अकाल, दुर्भिक्ष; शिव का एक नाम; व्याकरण में वह तत्व या क्रिया का वह रूप जिससे यह सूचित होता है कि वर्णित बात या कार्य हो चुका है, हो रहा है या होगा, जैसे भूत, वर्तमान या भविष्य काल (टेंस)।

काल[2] *वि.* {हिं. काला} काले रंग का।

काल[3] *क्रि. वि.* कल।

कालक *पुं.* {सं.} तिलक का दाग; पानी का साँप; एक अन्न की जाति।

काल-कवलित *वि.* {सं.} जिसे समय निगल गया हो, मृत।

कालकूट *पुं.* {सं.} एक प्रकार का अत्यंत भयंकर विष, काला बछनाग।

काल-कोठरी *स्त्री.* {हिं. काल + कोठरी} जेलखाने की वह बहुत छोटी और अँधेरी कोठरी जिसमें अकेला कैदी रखा जाता है।

कालक्रम *पुं.* {सं.} कार्यों, घटनाओं आदि का वह क्रम जो उनके घटित होने के काल या समय के विचार से लगाया जाता है, कालानुक्रम (क्रोनालॉजी); समय की गति।

कालक्षेप *पुं.* {सं.} दिन काटना, वक्त बिताना; निर्वाह, गुजर, बसर; समय बीतना।

कालचक्र *पुं.* {सं.} समय का हेर-फेर; जमाने की गर्दिश; एक अस्त्र।

कालचिह्न *पुं.* {सं.} समय की छाप; मृत्यु के लक्षण।

कालजयी *वि.* {सं.} वह जिसपर समय का प्रभाव न पड़े, सदा के लिए महत्वपूर्ण।

कालज्ञ *पुं.* {सं.} समय का हेर-फेर जाननेवाला; ज्योतिषी; जिसे उचित समय का ज्ञान हो।

कालज्ञाता *पुं.* {सं.} कालज्ञ।

कालज्ञान *पुं.* {सं.} स्थिति और अवस्था की जानकारी; अपनी मृत्यु का समय पहले से ज्ञान लेना; जिसे उचित समय का ज्ञान हो; मौके की पहचान।

कालदोष *पुं.* {सं.} वस्तुओं, कार्यों आदि का कालक्रम निश्चित करने में वह दोष जो उन्हें अपने ठीक समय से कुछ पहले या कुछ बाद का मान लेने में होता है (एनाक्रानिज्म); समय के अनुकूल न होने का भाव; उचित समय पर न करने का दोष।

कालधर्म *पुं.* {सं.} समय का प्रभाव; मृत्यु।

कालपाश *पुं.* {सं.} मौत का फंदा।

कालपाशिक *पुं.* {सं.} मृत्युदंड देनेवाला; जल्लाद।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालपुरुष *पुं.* {सं.} ईश्वर का विराट् रूप; काल।
कालबूत *पुं.* कलबूत।
कालयापन *पुं.* {सं.} कालक्षेप, दिन काटना, गुजारा करना।
कालर *पुं.* {*अ.* कॉलर} कुर्त्तों आदि के गले में बाँधने का पट्टा; कोट या क़मीज की वह पट्टी जो गले के चारों ओर रहती है; *वि.* काला।
कालरात्रि *स्त्री.* {सं.} अँधेरी और भयावनी रात; ब्रह्मा की रात; दिवाली की रात; प्रलय की रात; नवरात्रों में सप्तमी की रात।
कालसर्प *पुं.* {सं. काल (मृत्यु) + सर्प} {*स्त्री.* कालसर्पिणी} वह साँप जिसके काटने से आदमी अवश्य और तुरंत मर जाए।
काला *वि.* {सं. काल} {*स्त्री.* काली} काजल या कोयले के रंग का, स्याह।
मुहा. (अपना) मुँह काला करना = कुकर्म, पाप या व्यभिचार करना, वहाँ से चला जाना; *(दूसरे का) मुँह काला करना* = किसी अरुचिकर या बुरी वस्तु अथवा व्यक्ति को दूर करना, कलंक का कारण होना, बदनामी का सबब होना, जैसे अपने कुकर्म से बड़ों का मुँह काला करना; *काला मुँह होना या मुँह काला होना* = कलंकित होना, बदनाम होना।
कलुषित, बुरा; भारी, प्रचंड।
मुहा. काले कोसों = बहुत दूर।
कालांतर *पुं.* {सं.} (काफी) समय बीत जाना।
काला अजार *पुं.* एक घातक ज्वर।
कालाग्नि *पुं.* {सं.} प्रलय-काल की अग्नि।
कालाजिन *पुं.* {सं.} काला मृगचर्म।
कालातिक्रमण *पुं.* {सं.} समय निकल जाना।
काला चोर *पुं.* {हिं.} बहुत भारी चोर; बुरे से बुरा आदमी।
कालातीत *वि.* {सं.} जिसका समय बीत गया हो, बीता हुआ, विगत (टाईम बार्ड); निश्चित अवधि के बाद का।
काला नाग *पुं.* {हिं. काला + नाग} काला साँप, विषधर सर्प; बहुत दुष्ट या खोटा आदमी।
कालानुक्रम *पुं.* कालक्रम।
काला पानी *पुं.* {हिं. काला + पानी} बंगाल की खाड़ी का वह अंश जहाँ का पानी अत्यंत काला है; अंडमान, निकोबार आदि द्वीप जहाँ देश-निकाले के कैदी भेजे जाते थे; देश-निकाले का दंड, द्वीपान्तर-वास का दंड; शराब, मदिरा।
कालावधि *स्त्री.* {सं.} किसी काम के लिए काल या समय के विचार से निश्चित की हुई अवधि, कोई काम पूरा करने के लिए नियत समय (लिमिटेशन, टाइम लिमिट); मियाद।
कालास्त्र *पुं.* {सं.} एक प्रकार का बाण जिसके प्रहार से शत्रु का मरना निश्चित समझा जाता था; काल या यमराज का दंड।
कालिंग *वि.* {सं.} कलिंग देश का; तरबूज।
कालिंद *पुं.* {सं.} तरबूज।
कालिंदी *स्त्री.* {सं.} कलिन्द पर्वत से निकली हुई, यमुना नदी; अफीम (बोलचाल)।
कालि *क्रि. वि.* कल।
कालिक *वि.* {सं.} किसी विशेष काल या समय से संबंध रखनेवाला, कालीन, जैसे पूर्वकालिक; समयोचित; जिसका समय नियत हो; रह-रहकर कुछ निश्चित समय पर होनेवाला (पीरिऑडिक)।
कालिकेय *पुं.* {सं.} एक असुर जाति।
कालिका *स्त्री.* {सं.} काली देवी।
कालिख *स्त्री.* {सं. कालिका} वह काला अंश जो धुएँ के जमने से बन जाता है।
मुहा. मुँह में कालिख लगना = बदनामी के कारण मुँह दिखाने लायक न रह जाना।
कालिमा *स्त्री.* {सं.} कालापन; कालिख; अँधेरा; कलंक, लांछन।
काली[1] *स्त्री.* {सं.} चंडी, कालिका; पार्वती, गिरिजा; विधवा स्त्री; उग्र स्वभाव वाली स्त्री।
काली[2] *पुं.* {सं. कालिन्} एक नाग जो यमुना में रहता था और जिसे कृष्ण ने मारा था।
काली टोपी *स्त्री.* न्यायाधीश की वह काली टोपी जिसे वह मृत्यु का दंड देते समय पहन लेता है।
काली दह *पुं.* {सं. कालिय + हिं. दह} वृंदावन में यमुना का एक दह या कुंड जिसमें काली नामक नाग रहा करता था।
कालीन[1] *वि.* {सं.} किसी विशेष काल या समय से संबंध रखनेवाला, कालिक, जैसे मध्यकालीन।
कालीन[2] *पुं.* {*अ.*} एक प्रकार का प्रसिद्ध मोटा बिछावन जिसकी बुनावट में बेल-बूटे बने रहते हैं, गलीचा।
काली मिर्च *स्त्री.* {हिं. काली + मिर्च} गोल मिर्च।
कालीय *पुं.* {सं.} काला चंदन।
काली सूची *स्त्री.* ऐसी सूची जिसमें काले कारनामे करनेवाला का नाम दर्ज हो (ब्लैकलिस्ट)।
काल्पनिक *पुं.* {सं.} कल्पना करनेवाला; *वि.* जिसकी कल्पना की गई हो पर जो वास्तव में न हो, मनगढ़ंत, कल्पित (इमैजिनरी)।
कावा *पुं.* {फा.} घोड़े को एक वृत्त में चक्कर देने की क्रिया।
मुहा. कावा काटना = वृत्त में दौड़ना, चक्कर खाना, आँख बचाकर दूसरी ओर निकल जाना; *कावा देना* = चक्कर देना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कावार *पुं.* {सं.} सेवार।
कावेर *पुं.* {सं.} केशर।
कावेरी *स्त्री.* {सं.} दक्षिण भारत की एक प्रसिद्ध नदी।
काव्य *पुं.* {सं.} वह रचना, विशेषत: पद्य की रचना, जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो जाए, कविता (पोएम); वह पुस्तक जिसमें कविता हो, काव्य का ग्रंथ।
काव्यात्मक *वि.* {सं.} काव्य के रूप में।
काव्यालंकार *पुं.* {सं.} काव्यशास्त्रीय ग्रंथ; काव्य संबंधी चमत्कारी तत्व।
काशमीर *पुं.* कशमीर।
काशिका *स्त्री.* {सं.} काशीपुरी; काशी जनपद की भाषा; आचार्य वामन द्वारा रचित एक व्याकरण ग्रंथ।
काशी *स्त्री.* {सं.} उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध पुरी या नगरी।
काशीफल *पुं.* {सं. कोशफल} कुम्हड़ा।
काश्तकार *पुं.* {फा.} {*भाव.* काश्तकारी} किसान, कृषक, खेतिहर; वह जिसने जमींदार को लगान देकर उसकी जमीन पर खेती करने का स्वत्व प्राप्त किया हो (टेनेंट)।
काश्मीर *पुं.* कशमीर।
काश्मीरी *वि., पुं., स्त्री.* कशमीरी।
काषाय *वि.* {सं.} हड़, बहेड़े आदि कसैली वस्तुओं में रँगा हुआ; गेरू में रँगा हुआ, गेरुआ; कसैले स्वाद का काढ़ा।
काष्ठ *पुं.* {सं.} काठ; ईंधन।
काष्ठा *स्त्री.* {सं.} दिशा, सीमा, घुड़दौड़ का मार्ग।
कास *पुं.* {सं.} खाँसी।
कासनी *स्त्री.* {फा.} एक पौधा जिसकी जड़, डंठल और बीज दवा के काम में आते हैं; इस पौधे का बीज; *वि.* कासनी के फूल के रंग की तरह नीला।
कासा *पुं.* {फा.} प्याला, कटोरा; दरियाई नारियल का वह बरतन जो फकीर भीख माँगने के लिए रखते हैं।
काँह *क्रि. वि.* कहँ।
काहिल *वि.* {अ.} सुस्त।
काहु *सर्व.* काहू।
काहू[1] *सर्व.* {हिं. का + हू (प्रत्य.)} किसी; किसी का।
काहू[2] *पुं.* {फा.} गोभी की तरह का एक पौधा जिसके बीज दवा के काम आते हैं।
काहे *क्रि. वि.* {सं. कथं} क्यों?
पद काहे को = किस लिए, क्यों?

किंकर *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* किंकरी} दास; राक्षसों का एक वर्ग।
किंकर्तव्य-विमूढ़ *वि.* {सं.} जिसे यह न सूझ पड़े कि अब क्या करना चाहिए, हक्का-बक्का, भौचक्का।
किंकणी *स्त्री.* {सं.} क्षुद्र-घंटिका; करधनी।
किंगरी *स्त्री.* {सं. किन्नरी} छोटी सारंगी जिसे बजाकर जोगी भीख माँगते हैं।
किंचित् *वि.* {सं.} कुछ, थोड़ा।
किंचिन्मात्र *वि.* {सं.} बहुत ही थोड़ा; *क्रि. वि.* कुछ, थोड़ा।
किंजल्क *पुं.* {सं.} कमल का केसर; कमल; *वि.* कमल के केसर के रंग का।
किंडरगार्टन *पुं.* {अं.} बाल शिक्षा की एक अंग्रेजी पद्धति।
किंतु *यो.* {सं.} पर, लेकिन, परंतु; वरन्, बल्कि।
किंपुरुष *पुं.* {सं.} किन्नर; प्राचीन काल की एक मनुष्य जाति।
किंवदंती *स्त्री.* {सं.} अफवाह, उड़ती खबर, जनरव।
किंवा *यो.* {सं.} या, अथवा।
किंशुक *पुं.* {सं.} पलाश, ढाक, टेसू।
कि[1] *सर्व.* {सं. किम्} क्या? किस प्रकार?
कि[2] *यो.* {सं. किम् से फा.} एक संयोजक शब्द जो कहना, देखना आदि क्रियाओं के बाद उनके विषय-वर्णन के पहले आता है; इतने में; या।
किचकिच *अ.* {अनु.} व्यर्थ का वादविवाद, बकवाद; झगड़ा।
किचकिचाना *अ.* {अनु.} {*भाव.* किचकिचाहट} (क्रोध से) दाँत पीसना; भरपूर बल लगाने के लिए दाँत पर दाँत रखकर दबाना।
किचरपिचर *स्त्री.* किचपिच, भीड़भाड़।
किछु *वि.* कुछ।
किटकिटाना *अ.* {अनु.} {*भाव.* किटकिट} क्रोध से दाँत पीसना; दाँत के नीचे कंकड़ी की तरह कड़ा लगना।
किटकिना *पुं.* {सं. कृतक} वह दस्तावेज जिसके द्वारा ठेकेदार अपने ठेके की चीज का ठेका दूसरे असामियों को देता है; युक्ति, तरकीब।
किट्ट *पुं.* {सं.} धातु की मैल; तेल आदि में नीचे बैठी हुई मैल।
किण *पुं.* {सं.} घट्टा, जूते, हथियार आदि से पड़ा दाग।
किण्व *पुं.* {सं.} शराब बनाने में पड़नेवाली स्पिरिट या लाहन आदि।
कित *क्रि. वि.* {सं. कुत्र} कहाँ; किस ओर, किधर; ओर, तरफ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितक *वि.* {सं. कियत्} {*स्त्री.* कितनी} किस परिणाम, मात्रा या संख्या का? (प्रश्नवाचक); अधिक, बहुत; *क्रि. वि.* किस परिणाम या मात्रा में? कहाँ तक? अधिक, बहुत, ज्यादा।

कितव *पुं.* {सं.} जुआरी, धूर्त, मक्कार।

किता *पुं.* {*अ.* कितऽ} सिलाई के लिए कपड़े की काट-छाँट, ब्योंत; ढंग, चाल; संख्या, अदद, जैसे दो किता मकान।

किताब *स्त्री.* {*अ.*} {*वि.* किताबी} पुस्तक, ग्रंथ; पंजी, बही।

किताबखाना *पुं.* {*अ.*} पुस्तकालय, किताबघर।

किताबफरोश *पुं.* {*अ.*} किताब बेचनेवाला, बुक सैलर।

किताबी *वि.* {*अ.* किताब} किताब के आकार का; किताब-संबंधी, किताब का।

किताबी कीड़ा *पुं.* वह व्यक्ति जो सदा पुस्तक पढ़ता रहता है।

कितेक *वि.* {सं. कियदेक} कितना; बहुत से; कई; कितने ही।

कितेब *स्त्री.* = किताब।

कित्ति *स्त्री.* कीर्ति।

किदारा *पुं.* केदार राग।

किधौं *यो.* {सं. किम्} अथवा, या; या तो, न जाने।

किन[1] *सर्व.* हिं. 'किस' का बहुवचन।

किन[2] *पुं.* {सं. किण} चिह्न, दाग; घट्टा; गोखरू।

किन[3] *पुं.* {सं. कणिक} {*स्त्री.* अल्पा. किनकी} अन्न का टूटा हुआ दाना।

किनारदार *वि.* {फा. किनारा + दार} (कपड़ा) जिसमें किनारा बना हो।

किनारा *पुं.* {फा.} किसी वस्तु का वह भाग जहाँ उसकी लंबाई या चौड़ाई समाप्त होती है, अंतिम सिरा; नदी या जलाशय का तट, तीर।

मुहा. किनारे लगना = (किसी कार्य का) समाप्ति पर पहुँचना, समाप्त होना।

कपड़े आदि में छोर पर का वह भाग जो भिन्न रंग या बुनावट का होता है, हाशिया; पार्श्व, बगल।

मुहा. किनारा करना, किनारा खींचना = दूर या अलग हो जाना। *किनारे न जाना* = अलग रहना, पास न जाना, बचना। *किनारे बैठना, रहना या होना* = अलग हो जाना, छोड़कर दूर हटना।

किनारी *स्त्री.* {फा. किनारा} सुनहला या रुपहला पतला गोटा; किनारा।

किनारे *क्रि. वि.* {हिं. किनारा} सीमा की ओर, सिरे पर; तट पर; अलग।

किन्नर *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* किन्नरी} एक प्रकार की देवयोनि जिसका मुख घोड़े के समान माना जाता है; गाने-बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति।

किन्नरी *स्त्री.* {सं.} किन्नर जाति की स्त्री; एक प्रकार का तँबूरा (जिसे किन्नरियाँ बजाती थीं); छोटी सारंगी, किंगरी।

किफायत *स्त्री.* {*अ.*} मितव्यय।

किफायती *वि.* {*अ.* किफायत} कम खर्च करनेवाला; कम दाम का, सस्ता।

किबला *पुं.* {सं.} पश्चिम दिशा (जिस ओर मुख करके मुसलमान नमाज पढ़ते हैं); मक्का नगर; पूज्य व्यक्ति; पिता, बाप।

किबलानुमा *पुं.* {फा.} दिग्दर्शक यंत्र।

किमपि *क्रि. वि.* {सं.} कुछ भी; किसी हद तक।

किमाम *पुं.* {*अ.* किवाम} गाढ़ा रस; अवलेह।

किमि *क्रि. वि.* {सं. किम्} कैसे।

किम्मत *स्त्री.* {*अ.* हिकमत} चतुराई, होशियारी; वीरता, बहादुरी।

कियारी *स्त्री.* {सं. केदारी} क्यारी।

कियाह *पुं.* {सं.} कुछ लाली लिए या ताड़ के पके हुए फल के रंग का घोड़ा।

किर *पुं.* {सं.} सूअर।

किरका *पुं.* कण, छोटा टुकड़ा।

किरकिरा *वि.* {सं. कर्कर} जिसमें महीन और कड़े रवे हों; कंकरवाला।

मुहा. मजा किरकिरा हो जाना = रंग में भंग हो जाना, आनंद में विघ्न पड़ना।

किरकिराना *अ.* {हिं. किरकिरा} {*भाव.* किरकिराहट} किरकिरी पड़ने की-सी पीड़ा करना; किटकिटाना।

किरकिरी *स्त्री.* {सं. कर्कर} धूल या तिनके आदि का कण जो आँख में पड़कर पीड़ा देता है; आँख में करकनेवाली वस्तु; अपमान, हेठी।

मुहा. आँख की किरकिरी = जिसे देखना न सुहाये।

किरकिल *पुं.* गिरगिट।

किरच *स्त्री.* {सं. कृति = कैंची (अस्त्र)} एक प्रकार की सीधी तलवार जो नोक के बल सीधी भोंकी जाती है; संगीन जो बंदूक के आगे लगती है; छोटा नुकीला टुकड़ा, जैसे हीरे, काँच आदि का।

किरचा *पुं.* किरच।

किरण *स्त्री.* {सं.} ज्योति की वे अति सूक्ष्म रेखाएँ जो प्रवाह के रूप में सूर्य, चन्द्र, दीपक आदि प्रज्वलित पदार्थों में से निकलकर फैलती हुई दिखाई देती हैं, रोशनी की लकीर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. किरण फूटना = सूर्योदय होना। बादले की झालर।

किरण-चित्र पुं. {सं.} किरणों की सहायता से आँखों की पुतलियों पर बननेवाला वह चिह्न जो किसी चमकीले रंगीन पदार्थ पर से सहसा दृष्टि हटा लेने पर भी कुछ समय तक बना रहता है।

किरणमाली पुं. {सं. किरणमालिन्} सूर्य।

किरन *स्त्री.* किरण।

किरना *क्रि.* कुंठित होना विमुख होना पीछे लौटना।

किरनारा *वि.* {हिं. किरन + आरा (प्रत्य.)} किरणोंवाला, किरणों से युक्त।

किरपा *स्त्री.* कृपा।

किरपान पुं. कृपाण।

किरमाल पुं. {सं. करवाल} तलवार।

किरमिच पुं. {अ. कैन्वस} एक प्रकार का मोटा विलायती कपड़ा जिससे परदे, जूते आदि बनते और जिस पर तैलचित्र अंकित होते हैं (कैन्वस)।

किरमिज पुं. {सं. कृमि + ज} {*वि.* किरमिजी} मटमैलापन लिए हुए करौंदिया रंग, हिरमिजी; इस रंग का घोड़ा।

किररााना *अ.* {अनु.} क्रोध से दाँत पीसना।

किरवान पुं. कृपाण।

किरवारा पुं. अमलतास का वृक्ष।

किराएदार पुं. {फा. किरायादार} जिसने मकान, दुकान, जमीन आदि किराए पर ली हो।

किरात पुं. {सं.} {*स्त्री.* किरातिनी, किरातिन, किराती} एक प्राचीन जंगली जाति; हिमालय का पूर्वी भाग तथा उसके आसपास का देश; नेपाल; *स्त्री.* करात (तौल)।

किरातार्जुनीय पुं. {सं.} भारवि का रचा एक महाकाव्य।

किराती *स्त्री.* {सं.} भीलनी, चँवर डुलानेवाली, आकाशगंगा।

किराना पुं. {सं. क्रयण} हल्दी, मिर्च आदि मसाले जो पंसारियों के यहाँ बिकते हैं।

किरानी पुं. {अं. क्रिश्चियन} वह जिसके माता-पिता में से एक यूरोपीय और दूसरा भारतीय हो; लिपिक; यूरेशियन।

किराया पुं. {अ.} वह दाम जो दूसरे की कोई वस्तु काम में लाने के बदले में उसके मालिक को दिया जाए, भाड़ा (रेंट)।

किराया-खरीद *स्त्री.* मकान आदि खरीदने का वह ढंग जिसमें खरीदी हुई चीज का कुछ निश्चित आंशिक मूल्य पहले चुका दिया जाता है और शेष मूल्य ब्याज सहित किश्तों में चुकाया जाता है (हायर-परचेज)।

किरावल पुं. {तु. करावल} वह सेना जो लड़ाई का मैदान ठीक करने के लिए आगे जाती है।

किरासन पुं. 'मिट्टी का तेल'।

किरिया *स्त्री.* {सं. क्रिया} शपथ, सौगंध, कसम; मृत व्यक्ति के श्राद्ध आदि कर्म।

किरिया-करम पुं. क्रियाकर्म।

किरीट पुं. {सं.} {*वि.* किरीटी} सिर पर बाँधने का एक आभूषण।

किरीटी पुं. {सं.} अर्जुन, मुकुटधारी।

किरीरा *स्त्री.* = क्रीड़ा।

किरोध पुं. = क्रोध।

किलक[1] *स्त्री.* {हिं. किलकना} बालक के किलकने या हर्षध्वनि करने की क्रिया; हर्षध्वनि, किलकार।

किलक[2] *स्त्री.* {फा. किलिक} एक प्रकार का नरकट जिसकी कलम बनती है।

किलकनि *स्त्री.* किलकारी मारना।

किलकना *अ.* = किलकारना।

किलकारना *अ.* {हिं. किलकारी} आनंद या उत्साह के समय जोर से अस्पष्ट और गंभीर शब्द करना, हर्षध्वनि करना।

किलकारी *स्त्री.* {सं. किलकिला} बहुत प्रसन्न होकर चिल्लाने की क्रिया या भाव, हर्षध्वनि।

किलकिंचित पुं. {सं.} संयोग शृंगार के ग्यारह हावों में से एक, जिसमें नायिका एकसाथ कई भाव प्रकट करती है।

किलकिल *स्त्री.* झगड़ा, शोरगुल।

किलकिला *स्त्री.* {सं.} किलकारी; पुं. प्राचीन कवियों के अनुसार एक समुद्र का नाम; समुद्र में लहरों का घोर शब्द।

किलकिलाना *अ.* {अनु.} {*भाव.* किलकिलाहट} किलकिलाना; चिल्लाना; झगड़ा करना; शोरगुल।

किलना *अ.* {सं. कीलन} कीलन होना, कीला जाना; वश में किया जाना; गति का रोका जाना; रुक जाना, प्रतिबंध।

किलनी *स्त्री.* {सं. कीट, हिं. कीड़ा} पशुओं के शरीर में चिमटनेवाला एक छोटा कीड़ा।

किलललाना *अ.* चिल्लाना।

किलवाँक पुं. {देश.} एक प्रकार का काबुली घोड़ा।

किलवारी *स्त्री.* = पतवार (नाव की)।

किलविष पुं. किल्विष।

किला पुं. {अ.} लड़ाई के समय बचाव के लिए बनाया हुआ सुदृढ़ स्थान, दुर्ग, गढ़, कोट।

मुहा. किला फतह करना = कार्य सिद्ध करना।

किलास पुं. {सं.} शरीर पर सफेद दाग पड़ने का चर्मरोग, कोढ़ का एक भेद।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किलावा पुं. {अ. कलाब:} हाथी के गले में पड़ा हुआ रस्सा या बंधन जिसमें पैर फँसाकर महावत हाथी को चलाता है; हाथी का मस्तक जिसपर महावत बैठता है।

किलेदार पुं. {अ. किला + फा. दार} {भाव. किलेदारी} किले का प्रधान अधिकारी, दुर्गपति।

किलेदारी स्त्री. किलेदार के पद पर कार्य करना।

किलेबंदी स्त्री. {फा.} लड़ाई के लिए किले या मोरचे बनाने का काम; किसी प्रकार के आक्रमण से अपनी रक्षा करने की योजना।

किलोवाट पुं. {अ.} एक हजार वाट; बिजली के खर्च का परिमाण।

किल्लत स्त्री. {अ.} कमी; तंगी; कठिनता।

किल्ला पुं. खूँटा।

किल्ली स्त्री. {हिं. कीला} कीला, खूँटी, मेख; सिटकिनी, बिल्ली; कल या पेंच चलाने की मुठिया।

मुहा. किसी की किल्ली किसी के हाथ में होना = किसी का वश किसी पर होना; *किल्ली घुमाना या ऐंठना* = युक्ति लगाना; किसी ओर घुमाना; कार्य के लिए प्रेरित करना।

किल्विष पुं. {सं.} {वि. किल्विषी} पाप; अपराध, दोष, रोग।

किवाँच पुं. काँछ।

किवाड़ पुं. {सं. कपाट} {स्त्री. किवाड़ी} लकड़ी का पल्ला जो दरवाजा बंद करने के लिए चौखट में जड़ा रहता है, पट, कपाट।

किशमिश स्त्री. {फा.} {वि. किशमिशी} सुखाया हुआ छोटा बेदाना, अंगूर।

किशमिशी वि. किशमिश के रंग का।

किशलय पुं. {सं.} नया निकला हुआ कोमल पत्ता, कल्ला।

किशोर पुं. {सं.} {स्त्री. किशोरी} ग्यारह से पन्द्रह वर्ष तक की अवस्था का बालक; पुत्र, बेटा।

किशोरी स्त्री. {सं.} वय:संधि में स्थित कन्या, छोरी, छोकरी।

किश्त स्त्री. {फा.} शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे के घात में पड़ना, शह; लगान; किराये, ब्याज आदि का अंश।

किश्तवार पुं. जम्मू के निकट एक स्थान।

किश्ती स्त्री. {फा. कश्ती} नौका, नाव; पान, मिठाई आदि रखने की एक प्रकार की लंबी थाली; शतरंज में हाथी या रुख नाम का मुहरा।

किश्तीनुमा वि. {फा.} जो देखने में किश्ती या नाव की तरह लंबोतरा और दोनों सिरों पर नुकीला हो, जैसे किश्तीनुमा टोपी = एक प्रकार की पुरानी लंबी टोपी (वैसी ही, जैसी आजकल गांधी टोपी होती है)।

किष्किंध पुं. {सं.} मैसूर के आसपास के प्रदेश का प्राचीन नाम।

किष्किंधा स्त्री. {सं.} किष्किंध देश की एक पर्वत श्रेणी; रामायण में वर्णित किष्किंधा नगरी।

किस सर्व. {सं. कस्य} 'कौन' का वह रूप जो विभक्ति लगने पर उसे प्राप्त होता है।

किसनई स्त्री. किसानी।

किसबत स्त्री. {अ.} वह थैली जिसमें नाई अपने उस्तरे, कैंची आदि रखते हैं।

किसमी पुं. {अ. कसबी} श्रमजीवी जो मेहनत-मजदूरी करे।

किसलय पुं. किशलय; नई कोंपल।

किसान पुं. {सं. कृषाण} कृषि या खेती करनेवाला, खेतिहर।

किसानी स्त्री. {हिं. किसान} किसान का काम, खेती-बारी।

किसुन पुं. = कृष्ण।

किस्त स्त्री. {अ.} कई बार करके ऋण या देना चुकाने का ढंग, खंडी; ऋण या देने का वह भाग जो इस प्रकार दिया जाए (इनस्टॉलमेंट)।

किस्तबंदी स्त्री. {फा.} थोड़ा-थोड़ा करके देन अदा करने का बाँधा हुआ ढंग।

किस्तवार क्रि. वि. {फा.} किस्त के ढंग से, किस्त करके; अंशों में बाँट कर।

किस्ती वि. {अ.} किस्त-संबंधी, किस्त का; स्त्री. रुपए उधार देने और लेने की एक रीति जिसमें उधार दिए हुए रुपये ब्याज समेत कुछ नियत किस्तों में वसूल किए जाते हैं।

किस्म स्त्री. {अ.} प्रकार, भाँति, तरह; ढंग, तर्ज।

किस्मत स्त्री. {अ.} भाग्य।

मुहा. किस्मत आजमाना = कोई काम हाथ में लेकर देखना कि उसमें सफलता होती है या नहीं; *किस्मत चमकना या जागना* = भाग्य प्रबल होना, बहुत भाग्यवान होना; *किस्मत फूटना* = भाग्य मंद हो जाना; *किस्मत का धनी होना* = भाग्यशाली होना।

किस्सा पुं. {अ.} कहानी; वृत्तान्त, हाल; झगड़ा-बखेड़ा।

पद किस्सा कोतह यह कि = सारांश यह कि; *किस्सा-कहानी* = तरह-तरह की बातें।

किहिं सर्व. {सं. क:} किसका; किसको, किसे।

कींगरी स्त्री. किंगरी (बीना); हड्डियों का ढाँचा, सूख कर ठठरी होना।

कीक पुं. {अनु.} चीत्कार, चीख।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कीकट पुं. {सं.} मगध देश का प्राचीन वैदिक नाम; इस देश का निवासी; घोड़ा।
कीकना अ. {अनु.} की-की करके चिल्लाना, चीत्कार करना।
कीकर पुं. {सं. किकराल} बबूल।
कीकस पुं. {सं.} हड्डी।
कीका पुं. {सं. केकाण} घोड़ा।
कीकान पुं. {सं. केकाण (देश)} पश्चिमोत्तर का केकाण देश; इस देश का घोड़ा; घोड़ा।
कीच पुं. कीचड़।
कीचक पुं. {सं.} बाँस; महाभारत का एक पात्र, राजा विराट का साला जिसे भीम ने मारा था।
कीचड़ पुं. {हिं. कीच + ड़ (प्रत्य.)} पानी में मिली हुई धूल या मिट्टी, कर्दम, पंक; किसी चीज का गाढ़ा मल, जैसे आँखों का कीचड़, तेल का कीचड़।
कीट पुं. {सं.} कीड़ा-मकोड़ा; जमी हुई मेल; कीटभृंग न्याय-कीड़े व भौंरे का एक रूप होना, दो वस्तुओं का एक रूप होना।
कीटभोजी (भिन्) पुं. {सं.} कीड़े-मकोड़े खाकर पेट भरनेवाला जीव या जंतु (इनसेक्टिवोरस)।
कीटविज्ञान {सं.} वह विज्ञान जिसमें कीड़े-मकोड़ों की जीवनचर्या आदि का विचार होता है (एंटामॉलोजी)।
कीटाणु पुं. {सं. कीट + अणु} केवल सूक्ष्मदर्शक यंत्र से दिखाई देनेवाले वे बहुत छोटे-छोटे कीड़े जो हवा या खाने-पीने की चीजों में मिले रहते और अनेक प्रकार के रोगों के मूल कारण माने जाते हैं (जर्म्स)।
कीड़ा पुं. {सं. कीट, प्रा. कीड़} जूँ, खटमल, फतिंगा आदि जैसे क्षुद्र जीव; साँप।
कीड़ी स्त्री. चूँटी।
कीदहुँ यो. किधौं।
कीना पुं. {फा.} द्वेष, वैर।
कीनाश पुं. {सं.} यमराज; कंजूस; क्षुद्र व्यक्ति।
कीनिया वि. {फा. कीना} जिसके मन में वैर हो।
कीप स्त्री. {अ. कीफ} वह चोंगी जिसे तंग मुँह के बरतन पर रखकर द्रव पदार्थ डालते हैं, छुच्छी।
कीमत स्त्री. {अ.} मूल्य; महत्व।
कीमती वि. {अ.} अधिक कीमत या दाम का, बहुमूल्य।
कीमा पुं. {अ.} बहुत छोटे-छोटे टुकड़ों में कटा हुआ गोश्त।
कीमिया स्त्री. {अ.} रासायनिक क्रिया, रसायन; जिसमें कृत्रिम सोना बनने की क्रिया होती है।
कीमियागर पुं. {अ. + फा.} {भाव. कीमियागरी} रसायन तैयार करनेवाला; लोहे, तांबे आदि को सोने में बदलनेवाला।
कीर पुं. {सं.} तोता; काश्मीर राज्य; वहाँ के निवासी; मांस।
कीरक पुं. {सं.} प्राप्त होना, प्राप्त करनेवाला; एक बुद्ध।
कीरति स्त्री. कीर्ति।
कीरतिकुमारी स्त्री. राधा।
कीरतिदा स्त्री. {सं.} यशोदा।
कीर्ण वि. {सं.} बिखरा या फैला हुआ।
कीर्णक पुं. {सं.} मुक्तक पद्य।
कीर्तन पुं. {सं.} गुणों या यश का वर्णन; ईश्वर या उसके अवतारों के संबंध का भजन और कथा आदि।
कीर्ति स्त्री. {सं.} पुण्य; ख्याति, बड़ाई, यश; वह अच्छा या बड़ा काम जिससे किसी के बाद उसका नाम चले; प्रकाश, चमक।
कीर्तिक वि. {सं.} नाम करनेवाला।
कीर्तिदा स्त्री. {सं.} यशोदा; वि. यश प्रदान करनेवाली।
कीर्तिमान वि. {सं.} यशस्वी; पुं. कीर्ति का सूचक, उच्चतम मान; प्रतियोगिता आदि में स्थापित सर्वकालिक उच्चतम मान (रिकार्ड)।
कीर्तिस्तंभ पुं. {सं.} वह स्तंभ जो किसी की कीर्ति का स्मरण कराने के लिए बनाया जाए; वह कार्य या वस्तु जिससे किसी की कीर्ति स्थायी हो; भाला; कोहनी; शिव।
कील स्त्री. {सं.} कहीं ठोंकने या जड़ने के लिए लोहे या काठ की मेख, काँटा; वह मूढ़गर्भ जो योनि में अटक जाता है; कान या नाक में पहनने का लौंग नामक गहना; मुँहासे का कुछ उभरा हुआ मांस।
कीलक पुं. {सं.} खूँटी, कील; वह मंत्र जिससे दूसरे मंत्रों की शक्ति या प्रभाव नष्ट किया जाए; वि. कीलनेवाला।
कीलन पुं. {सं.} {वि. कीलित} बाँधना या रोकना; मंत्र का प्रभाव रोकना या नष्ट करना।
कीलना पुं. {सं. कीलन} मेख जड़ना, कील लगाना; कील ठोंककर मुँह बंद करना, जैसे तोप कीलना; किसी मंत्र या युक्ति का प्रभाव नष्ट करना; साँप को ऐसा मोहित कर देना कि वह किसी को काट न सके।
कीलाक्षर पुं. {सं. कील + अक्षर} एक बहुत प्राचीन लिपि जिसके अक्षर देखने में कील या काँटे के आकार के होते थे; लोहे की कील से खुदे अक्षर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीलाल पुं. {सं.} पानी; रक्त, लहू; अमृत; शहद; पशु; *वि.* बंधन दूर करनेवाला।

कीलित *वि.* {सं.} जिसका प्रभाव रोक दिया हो, बाँधा गया, कील ठोंकी हो।

कीली *स्त्री.* {सं. कील} चक्र के बीच की वह कील जिस पर वह घूमता है; दरवाजा बंद करने के लिए अंदर से लगाया जानेवाला डंडा, ब्योंड़ा; कील।

कीश पुं. {सं.} बंदर।

कीसा पुं. {फा.} थैली, जेब।

कुँअर पुं. कुँवर।

कुँआँ पुं. कुआँ।

कुँआरा *वि.* {सं. कुमार} {*स्त्री.* कुँआरी} जिसका ब्याह न हुआ हो, अविवाहित, बिन-ब्याहा।

कुँइया *स्त्री.* छोटा कुँआ।

कुंई *स्त्री.* कुमुदिनी।

कुंकुम पुं. {सं.} केसर; रोली।

कुंकुमा पुं. कुमकुमा, लाख का पोला गोला।

कुंचन पुं. {सं.} सिकुड़ना।

कुंचित *वि.* {सं.} घूमा हुआ, टेढ़ा; घुँघरवाला, छल्लेदार।

कुंचिका *स्त्री.* {सं.} बाँस की टहनी, काला जीरा, मछली की एक जाति।

कुंची *स्त्री.* = कुंजी (चाभी)।

कुंज पुं. {सं.} वृक्षों या लताओं के झुरमुट से मंडप की तरह ढका हुआ स्थान।

कुंजक पुं. कंचुकी।

कुंजकुटीर पुं. {सं.} लतागृह।

कुंज-गली *स्त्री.* {हिं. कुंज + गली} बगीचों में लताओं से छाई हुई पगडंडी; पतली तंग गली।

कुँजड़ा पुं. {सं. कुंज + ड़ा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* कुँजड़ी, कुँजड़िन} तरकारी बोने और बेचनेवाली एक जाति।

कुंजर पुं. {सं.} {*स्त्री.* कुंजरा, कुंजरी} हाथी; बाल; आठ की संख्या; एक नाग; पीपल; *वि.* श्रेष्ठ, जैसे नरकुंजर।

कुंजबिहारी पुं. {सं.} श्रीकृष्ण।

कुंजित *वि.* {सं.} कुंजों से युक्त; जहाँ कुंज बने हों।

कुंजी *स्त्री.* {सं. कुंचिका} चाभी, ताली।

मुहा. (किसी की) कुंजी हाथ में होना = किसी का वश में होना।

वह पुस्तक जिससे किसी दूसरी पुस्तक का अर्थ खुले, टीका।

मुहा. कुंजी मिलना = भेद पाने का साधन मिलना।

कुंठन पुं. {सं.} धारहीन करना; दूसरे का वार विफल करना; बुद्धि का काम न देना; असफलता से निराश हो जाना।

कुंठा *स्त्री.* {सं.} भोथरापन; विफलताजन्य घोर निराशा; आत्मग्लानि।

कुंठित *वि.* {सं.} जिसकी धार चोखी या तीक्ष्ण न हो, कुंद, गुठला; मद्धिम या धीमा पड़ा हुआ, मंद; विफलताओं से निराश।

कुंड पुं. {सं.} चौड़े मुँह का मिट्टी का गहरा और बड़ा बरतन, कुंडा; छोटा तालाब; खोदा हुआ वह गड्ढा अथवा धातु आदि का बना हुआ वह पात्र, जिसमें आग जलाकर हवन करते हैं; सधवा स्त्री का जारज लड़का; कूँड।

कुंडल पुं. {सं.} कान में पहनने का एक गहना; वह वलय जो कनफटे साधु कानों में पहनते हैं; रस्सी आदि का गोल घेरा, मंडल, जैसे साँप का कुंडल; गोल घेरे या चक्कर के रूप में लपेटी हुई रस्सी, तार आदि का वह रूप जिसमें एक के ऊपर एक छल्ले से बनते चले जाते हैं (कॉयल); वह मंडल जो बदली में चंद्रमा या सूर्य के चारों ओर दिखाई देता है (हैलो)।

कुंडलिका *स्त्री.* {सं.} गोल लकीर, जलेबी।

कुंडलित *वि.* {सं.} (रस्सी, तार आदि) जो इस प्रकार घेरे या चक्कर के रूप में लपेटा गया हो कि एक के ऊपर एक छल्ले से पड़े हों (कॉयल्ड)।

कुंडलिनी *स्त्री.* {सं.} शरीर में मूल शक्ति का सूक्ष्म अंग जो कुंडल के आकार में मूलाधार में सुषुम्ना नाड़ी के नीचे माना गया है; यह सर्पिणी के आकार की होती है; इसके जागने पर आंतरिक शक्तियाँ भी जाग्रत होती हैं (यह शक्ति कुंडल पिंडों और ब्रह्मांड दोनों का आधार है)।

कुंडलिया *स्त्री.* {सं. कुंडलिका} दोहे और रोले के योग से बननेवाला एक छंद।

कुंडली *स्त्री.* {सं.} कुंडलिनी; जन्मकाल में ग्रहों की स्थिति करनेवाला वह चक्र जिसमें बारह घर होते हैं (ज्योतिष); गेंडुरी; साँप के गोलाकार बैठने की मुद्रा; वह पत्र जिसमें ऐसी ही कुंडली बनी होती है; जलेबी।

कुंडा[1] पुं. {सं. कुंड} {*स्त्री.* अल्पा. कुंडी} मिट्टी का चौड़े मुँह का बड़ा बरतन, बड़ा मटका।

कुंडा[2] पुं. {सं. कुंडल} दरवाजे की चौखट में लगा हुआ कोंढ़ा जिसमें साँकल फँसाकर ताला लगाया जाता है।

कुंडिनपुर पुं. {सं.} विदर्भ की राजधानी जहाँ के राजा भीष्मक की पुत्री रुक्मिणी थी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंत पुं. {सं.} भाला, बरछी।

कुंतल पुं. {सं.} सिर के घुँघराले बाल, केश; एक देश जो कोंकण और बरार के बीच में था; बहुरूपिया।

कुंतलन पुं. {सं.} बातों को घुँघराला बनाना।

कुंतिभोज पुं. {सं.} एक यादव राजा जिसने कुंती को गोद लिया था।

कुंती[1] *स्त्री.* {सं.} युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम की माता, पृथा।

कुंती[2] पुं. {सं. कुंत} भालाधारी।

कुंद[1] पुं. {सं.} जूही की तरह का एक फूल; कनेर का पेड़; कमल।

कुंद[2] *वि.* {फा.} कुंठित, गुठला; मंद।

कुंदन पुं. {सं. कुंद} बढ़िया सोने का पतला पत्तर जिसे लगाकर नगीने जड़ते हैं; बढ़िया सोना; *वि.* कुंदन की तरह चोखा; नीरोग।

कुंदा[1] पुं. {फा., मिलाओ सं. स्कंध} लकड़ी का बड़ा टुकड़ा, लक्कड़; लकड़ी का वह टुकड़ा जिसपर रख कर बढ़ई लकड़ी गढ़ते या कुंदीगर कपड़े की कुंदी करते हैं; बंदूक का पिछला चौड़ा भाग; दस्ता, मूठ, बेंट, लकड़ी की बड़ी मुँगरी; कुश्ती में एक दाँव।

कुंदा[2] पुं. {सं. स्कंद} डैना, पंख।

कुंदीगर पुं. {हिं. कुंदी + गर (प्रत्य.)} कपड़ों की कुंदी करनेवाला।

कुंदुर पुं. {सं.} एक प्रकार का पीला गोंद।

कुंभ पुं. {सं.} मिट्टी का घड़ा; हाथी के सिर के दोनों ओर का ऊपरी भाग; मस्तक, सिर; ज्योतिष में, ग्यारहवीं राशि जिसमें धनिष्ठा का उत्तरार्द्ध, पूरा शतभिषा और पूर्व भाद्रपद के प्रथम तीन पाद हैं। एक पर्व जो प्रति बारहवें वर्ष पड़ता है।

कुंभक पुं. {सं.} प्राणायाम में साँस लेकर वायु को शरीर में रोकना।

कुंभकर्ण पुं. {सं.} घड़े के से चौड़े कानवाला; रावण का छोटा भाई; मेवाड़ के पराक्रमी नरेश जो राणा कुंभा के नाम से भी प्रसिद्ध थे।

कुंभकार पुं. {सं.} कुम्हार।

कुंभी *स्त्री.* {सं.} वेश्या।

कुंभज पुं. {सं.} अगस्त्य मुनि जो घटयोनि भी कहलाते हैं।

कुंभिल पुं. {सं.} चोर।

कुंभी (भिन्) पुं. {सं.} हाथी; जिसके पास घड़ा हो।

कुंभीनस पुं. {सं.} साँप, रावण।

कुंभीपाक पुं. {सं.} एक नरक।

कुंभीर पुं. {सं.} नक्र या नाक नामक जलजंतु; नाका।

कुँवर पुं. {सं. कुमार} {*स्त्री.* कुँवरी} लड़का, बालक; पुत्र, बेटा; राजा का लड़का, राजपुत्र।

कुँवरेटा पुं. {हिं. कुँवर} (बड़े आदमियों का) छोटा लड़का।

कुँहकुँह पुं. कुंकुम।

कु *उप.* {सं.} एक उपसर्ग जो संज्ञा के पहले लगकर उसके अर्थ में 'नीच', 'कुत्सित' आदि का भाव बढ़ाता है, जैसे कुमार्ग, कुलक्षण।

कुअंक पुं. {सं. कु + अंक} दूषित अंक; दुर्भाग्य, बदकिस्मती।

कुआँ पुं. {सं. कूप} जमीन में खोदा हुआ गड्ढा जिसमें से पीने तथा सिंचाई के लिए पानी निकालते हैं।

मुहा. (किसी के लिए) कुआँ खोदना = किसी को हानि पहुँचाने का प्रयास करना; *(अपने लिए) कुआँ खोदना* = रोजी कमाना; *कुएँ में गिरना* = विपत्ति में पड़ना; *कुएँ में बाँस डालना* = बहुत खोज, ढूँढ़ करना; *कुएँ में भाँग पड़ी होना* = सबकी बुद्धि भ्रमित होना; *कुएँ में ईंट डालना* = ऐसा प्रयत्न करना जिस की सफलता निश्चित न हो।

कुआर पुं. आश्विन।

कुइयाँ[1] *स्त्री.* {हिं. कुआँ} छोटा कुआँ।

कुदयाँ[2] *स्त्री.* = कुमुदिनी।

कुई *स्त्री.* {सं. कुव} कुमुदिनी।

कुकड़ी *स्त्री.* {सं. कुक्कुटी} तकले पर लपेटा हुआ कच्चे सूत का लच्छा; मुर्गी, मक्की, छल्ली।

कुकनुस पुं. {फा., यू. कुकनू} एक कल्पित पक्षी जिसके संबंध में कहा जाता है कि इसके गाने पर आग निकलती है जो इसे भस्म कर देती है।

कुकरा पुं. {*स्त्री.* कुकरी} कुत्ता; (कुकरे) आँखों का एक रोग जिसमें पलकों में खाज होती है।

कुकर्म पुं. {सं.} {*वि.* कुकर्मी} बुरा काम; व्यभिचार आदि।

कुकर्मी *वि.* {सं. कुकर्मिन्} बुरा काम करनेवाला; पापी।

कुकुरमुत्ता पुं. {हिं. कुक्कुर + मूत} एक प्रकार की बदबूदार खुमी। (वनस्पति); मश्लूम की एक जाति।

कुकुही *स्त्री.* {सं. कुक्कुभ} बनमुर्गी।

कुक्कुट पुं. {सं.} मुर्गा, मुर्ग।

कुक्कुर पुं. {सं.} {*स्त्री.* कुक्कुरी} कुत्ता।

कुक्ष पुं. {सं.} पेट, उदर।

कुक्षि *स्त्री.* {सं.} पेट; कोख।

कुक्षिज *वि.* {सं.} कोख का जाया।

कुक्षिभर *वि.* {सं.} केवल पेट भरनेवाला।

कुक्षिशूल पुं. {सं.} पेटदर्द।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुखेत पुं. {सं. कुक्षेत्र} बुरा स्थान; बुरी कोख, बुरा कुल।
कुख्यात *वि.* {सं.} {*भाव.* कुख्याति} बदनाम।
कुगति *स्त्री.* {सं.} बुरी गति, दुर्दशा।
कुगहनि *स्त्री.* {सं. कु + ग्रहण} अनुचित आग्रह या हठ।
कुघात पुं. {हिं. कु + घात} अनुपयुक्त अवसर, बेमौका; बुरी तरह से किया हुआ घात; कपटपूर्वक की गई चोट।
कुच पुं. {सं.} स्तन, छाती।
कुचतट पुं. {सं.} स्तनों का किनारा।
कुचयुग पुं. {सं.} दोनों स्तन।
कुचकुचाना *स.* {अनु. कुचकुच} लगातार कोंचना; बार-बार नुकीली चीज गड़ाना या धँसाना।
कुचक्र पुं. {सं.} षड्यंत्र।
कुचक्री पुं. {सं. कुचक्रिन्} कुचक्र रचनेवाला, षड्यंत्रकारी।
कुचलना *स.* {अनु.} बार-बार ऐसी दाब या चोट पहुँचाना कि विकृत हो जाए।
मुहा. सिर कुचलना = पूरी तरह से पराजित करना।
पैरों से रौंदना।
कुचला पुं. {सं. कच्चीर} एक वृक्ष के विषैले बीज जो औषध के काम में आते हैं।
कुचाल *स्त्री.* {सं. कु + हिं. चाल} {*वि.* कुचाली} बुरा आचरण या चाल-चलन; पाजीपन, शरारत।
कुचाली *वि.* {हिं. कुचाल} बुरे चाल-चलन या आचरणवाला; दुष्ट, पाजी।
कुचील *वि.* {सं. कुचैल} जो मैले वस्त्र पहने हो, मैला-कुचैला।
कुचेष्टा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* कुचेष्ट} हानि पहुँचाने का यत्न, बुरी चाल; चेहरे का बुरा भाव।
कुचेष्टित *वि.* {सं.} बुरा आचरण, करनेवाला।
पुं. {सं.} अनुचित कार्य।
कुचैला *वि.* {सं. कुचैल} {*स्त्री.* कुचैली} मैले कपड़ोंवाला; मैला।
मुहा. मैला-कुचैला = गंदा रहनेवाला।
कुच्छि *स्त्री.* कुक्षि।
कुच्छित *वि.* कुत्सित।
कुछ[1] *वि.* {सं. किंचित्} थोड़ी संख्या या मात्रा का, जरा, थोड़ा-सा।
पद कुछ-कुछ = थोड़ा; *कुछ-न-कुछ* = थोड़ा-बहुत।
गण्य, मान्य, प्रतिष्ठित।
मुहा. (अपने को) कुछ लगाना = (अपने को) बड़ा या श्रेष्ठ समझना; *(स्वयं) कुछ हो जाना* = किसी योग्य हो जाना।
कुछ[2] *सर्व.* {सं. कश्चित्} कोई (वस्तु)।
पद कुछ का कुछ = और का और उलटा।
मुहा. कुछ कहना = कड़ी बात कहना; *कुछ कर देना* = जादू-टोना कर देना; *(किसी को) कुछ हो जाना* = कोई रोग या भूत-प्रेत की बाधा हो जाना; *कुछ हो* = चाहो जो हो; *कुछ न समझना* = किसी को कुछ महत्व न देना; कोई बात समझ में न आना।
बड़ी या अच्छी बात; सार वस्तु, काम की वस्तु।
कुजंत्र पुं. {सं. कुयंत्र} बुरा या दुष्ट अभिचार, टोटका, टोना।
कुजंभ पुं. {सं.} टेढ़े-मेढ़े दाँतवाला।
कुज पुं. {सं.} मंगल ग्रह; पृथ्वी पर जन्मा।
कुजन्मा *वि.* {सं.} अशुभ जन्मवाला।
कुजाति *स्त्री.* {सं.} बुरी या छोटी जाति; पुं. छोटी जाति का आदमी; पतित या अधम पुरुष; जाति से निकाला हुआ व्यक्ति।
कुजोग पुं. {सं. कुयोग} बुरा मेल; बुरा अवसर।
कुजझटिका *स्त्री.* {सं.} धुंध, कोहरा।
कुटंक पुं. {सं.} छत, छप्पर।
कुट[1] पुं. {सं.} {*स्त्री.* कुटी} घर, गृह; कोट गढ़; कलश।
कुट[2] पुं. {सं. कुट्ट = करना} कूटकर बनाया हुआ खंड, जैसे तिलकुट।
कुटकी *स्त्री.* {सं. कटु + कीट} उड़नेवाला कोई छोटा कीड़ा; एक पौधा जिसकी जड़ ज्वर की दवा के रूप में प्रयुक्त होती है, कड़वी।
कुटनपन पुं. {सं. कुट्टनी} कुटनी का कोम; झगड़ा लगाने का काम।
कुटना पुं. {हिं. कुटनी} {*स्त्री.* कुटनी} स्त्रियों को बहकाकर उन्हें परपुरुष से मिलानेवाला, दलाल; दो आदमियों में झगड़ा करानेवाला।
कुटनी *स्त्री.* {सं. कुट्टनी} स्त्रियों को बहकाकर उन्हें परपुरुष से मिलानेवाली स्त्री, दूती; झगड़ा करानेवाली स्त्री; चुगलखोर स्त्री।
कुटप पुं. {सं.} घर के पास की बगीची, किचन गार्डन।
कुटाई *स्त्री.* {हिं. कूटना} कूटने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक; पिटाई।
कुटिया *स्त्री.* {सं. कुटी} झोंपड़ी, कुटी।
कुटिल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* कुटिला, *भाव.* कुटिलता} वक्र, टेढ़ा; घूमा या बल खाया हुआ; छल्लेदार, घुँघराला; कपटी, छली।
कुटिलता *स्त्री.* {सं.} टेढ़ापन; छल, कपट।
कुटिलाई *स्त्री.* कुटिलता।
कुटी, कुटीर *स्त्री.* {सं.} घास-फूस से बना छोटा घर, कुटिया, झोंपड़ी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुटीर-उद्योग पुं. {सं.} ऐसे उद्योग-धंधे जो लोग अपने घर में बैठकर करते हैं और जिनके लिए बड़े-बड़े कल-कारखानों में नहीं जाना पड़ता, जैसे दीया-सलाई, साबुन, खिलौने आदि बनाना (कॉटेज इंडस्ट्री)।

कुटुंब पुं. {सं.} एकसाथ रहनेवाले परिवार के लोग, परिवार, कुनबा (फैमिली)।

कुटुम पुं. कुटुंब।

कुटेव *स्त्री.* {सं. कु + हिं. टेक} खराब या बुरी आदत।

कुटौनी *स्त्री.* {हिं. कूटना} धान कूटने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

कुट्टक *वि.* {सं.} कूटने पीसनेवाला।

कुट्टनी *स्त्री.* कुटनी, दलालन, दूती।

कुट्टमित पुं. {सं.} संयोग के समय स्त्रियों की बनावटी दुखसूचक चेष्टा जो हावों में मानी गई है।

कुट्टा *वि.* {सं. कुट्टन} (पक्षी) जिसके पर काट दिए गए हों।

कुट्टाक *वि.* {सं.} कूटने या फोड़नेवाला।

कुट्टार पुं. {सं.} पर्वत, संभोग, कंबल।

कुट्टिम पुं. {सं.} कूटकर बना पक्का फर्श, अनार, झोपड़ी।

कुट्टी *स्त्री.* {हिं. काटना} चारे के छोटे-छोटे टुकड़े; कूटा और सड़ाया हुआ कागज जिससे टोकरियाँ बनती हैं; लड़कों का एक शब्द जिसका प्रयोग वे मित्रता तोड़ने के समय करते हैं।

कुठला पुं. {सं. कोष्ठ} {*स्त्री.* अल्पा. कुठली} अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन।

कुठाँव *स्त्री.* {सं. कु + हिं. ठाँव} बुरा ठौर, बुरी जगह।

मुहा. कुठाँव मारना = ऐसे स्थान पर मारना, जहाँ बहुत कष्ट हो।

कुठार पुं. {सं.} {*स्त्री.* कुठारी} कुल्हाड़ी; परशु, फारसा; *वि.* नाशक (*यौ.* कं अंत में; जैसे कुल-कुठार)।

कुठाराघात पुं. {सं.} कुल्हाड़ी का आघात; ऐसा आघात जिससे कोई चीज पूरी तरह से नष्ट हो जाए; जड़ काटना।

कुठारिक पुं. {सं.} लकड़हारा; कुल्हाड़ा चलाने वाला।

कुठाली *स्त्री.* {सं. कु + स्थाली} मिट्टी की घरिया जिसमें सोना-चाँदी गलाते हैं।

कुठौर पुं. {सं. कु + हिं. ठौर} कुठाँव, बुरी जगह; बेमौका।

कुड़क *स्त्री.* {फा. कुटक} वह मुर्गी जिसने अंडे देना बंद कर दिया हो।

कुडमल पुं. {सं. कुड्मल} कली।

कुड़व पुं. {सं.} अन्न नापने का एक पुराना मान।

कुड़ा पुं. {सं. कुष्ठ, प्रा. कुंट्ठ} इंद्रजव नामक पौधे के बीज, कोरैया जो कि जुलाब बंद करने के काम आता है।

कुडौल *वि.* {सं. कु. + हिं. डौल} बेढंगा, भद्दा, भोंडा।

कुढंग पुं. {सं. कु + हिं. ढंग} बुरा ढंग, कुचाल, बुरी रीति; *वि.* कुढंगा; कुढंगी।

कुढंगा *वि.* {हिं. कुढंग} {*स्त्री.* कुढंगी} जो काम करने का ढंग न जानता हो बेशऊर, उजड्ड; बेढंगा, भद्दा।

कुढ़ना *अ.* {सं. क्रुद्ध} मन-ही-मन दुख करना, खीजना या चिढ़ना; डाह करना, जलना।

कुढब *वि.* {कु + हिं. ढब} बुरे ढंग का, बेढब; कठिन, दुस्तर; अच्छे, लक्षण न होना; पुं. बुरा ढब, खराब आदत।

कुढर *वि.* {हिं. कु + ढर = ढलना} जो ठीक तरह से न ढला हो; भद्दा, भोंडा।

कुढ़ाना *स.* {हिं. कुढ़ना} ऐसा काम करना जिससे कोई कुढ़े, दुखी करना।

कुणप पुं. {सं.} लाश, मृतदेह, भाला।

कुतका पुं. {हिं. गतका} गतका; मोटा डंडा, सोंटा।

कुतरन *स्त्री.* कुतरा हुआ, कुतरने का काम।

कुतरना *स.* {सं. कर्त्तन} किसी चीज में से दाँतों से छोटा टुकड़ा काट लेना; बीच ही में से कुछ अंश उड़ा लेना।

कुतर्क पुं. {सं.} {*वि.* कुतर्की} बुरा तर्क, बेढंगी दलील, वितंडा।

कुतर्की पुं. {सं. कुतर्किन्} व्यर्थ तर्क करनेवाला, बकवादी, वितंडावादी।

कुतवार (ल) पुं. कोतवाल।

कुतुप पुं. {सं.} घी या तेल रखने के लिए बना चमड़े का कुप्पा।

कुतिया *स्त्री.* हिं. 'कुत्ता' का *स्त्री.*।

कुतुब पुं. {सं.} ध्रुव तारा।

कुतुबनुमा पुं. {*अ.*} दिग्दर्शक यंत्र।

कुतुबमीनार *स्त्री.* दिल्ली के दक्षिण में महरौली के पास बना विशाल स्तंभ जो कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा बनवायी गई कही जाती है।

कुतू *स्त्री.* {सं.} तेल रखने की छोटी कुप्पी।

कुतूहल पुं. {सं.} {*वि.* कुतूहली} कोई वस्तु या बात देखने या सुनने की प्रबल इच्छा, विनोदपूर्ण उत्कंठा; क्रीड़ा, कौतुक, खिलवाड़; आश्चर्य, अचम्भा।

कुतूहली *वि.* {सं.} जानकारी की इच्छा रखनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुत्ता *पुं.* {सं. कुक्कुर} {*स्त्री.* कुत्ती, कुतिया} भेड़िए, गीदड़ आदि की जाति का एक प्रसिद्ध पशु जो घर की रखवाली के लिए पाला जाता है, श्वान, कूकुर।

मुहा. क्या कुत्ते से काटा है? क्या पागल हुए हैं? कुत्ते की मौत मरना = बहुत बुरी तरह से मरना।

लपटौवाँ नामक घास; वह पुरजा जो किसी चक्कर को पीछे की ओर घूमने से रोकता है; लकड़ी का वह टुकड़ा जिसके नीचे गिरा देने पर दरवाजा नहीं खुल सकता, बिल्ली; बंदूक का घोड़ा; नीच और तुच्छ मनुष्य; दर-दर भटकनेवाला बुरी नीयत का मनुष्य।

कुत्ताघसीट *वि.* व्यर्थ के झंझट मोल लेनेवाला; बुरे काम करनेवाला।

कुत्सा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* कुत्सित} निंदा।

कुत्सित *वि.* {सं.} नीच, अधम; निंदित. गर्हित; बुरा, खराब।

कुभी *क्रि. वि.* {सं. कुन्न} कहाँ, किधर।

कुदकना *अ.* कूदना; ऊपर को उछलना।

कुदरत *स्त्री.* {*अ.*} {*वि.* कुदरती} शक्ति, अधिकार, प्रभुत्व; प्रकृति, निःसर्ग; ईश्वरीय शक्ति; रचना।

कुदरती *वि.* प्राकृतिक।

कुदर्शन *वि.* {सं.} जो देखने में अच्छा न हो, कुरूप, बदसूरत; मनहूस वस्तु दिखाई देना।

कुदाँई *वि.* {हिं. कुदाँव} बुरे ढंग से दाँव-घात करनेवाला, विश्वासघाती।

कुदाँव *पुं.* {सं. कु + हिं. दाँव} बुरा दाँव, कुघात; विश्वासघात, दगा, धोखा; संकट की स्थिति; बुरा या विकट स्थान; मर्मस्थान।

कुदान *पुं.* {सं.} (लेनेवाले के लिए) ग्रहण आदि पर किया गया दान; बुरा दान, जैसे शय्यादान, गजदान आदि; कुपात्र, अयोग्य आदि को दिया जानेवाला दान।

कुदाना *स.* {हिं. 'कूदना' का प्रे.} किसी को कूदने में प्रवृत्त करना।

कुदाम *पुं.* {सं. कु + हिं. दाम} खोटा सिक्का।

कुदाल *स्त्री.* {सं. कुद्दाल} {*स्त्री.* अल्पा. कुदाली} मिट्टी खोदने और खेत गोड़ने का एक औजार।

कुदाली *स्त्री.* {सं.} छोटा कुदाल।

कुदिन *पुं.* {सं.} विपत्ति का समय, बुरे दिन; वह दिन जिसमें ऋतुविरुद्ध या कष्ट देनेवाली घटनाएँ हों।

कुदृष्टि *स्त्री.* {सं.} बुरी नजर, पापदृष्टि, बदनिगाह।

कुदेव *पुं.* {सं. कु = बुरा + देव} राक्षस।

कुद्मल *पुं.* {सं.} फूल की कली।

कुद्रव *पुं.* {सं.} कोदों, मंडवा।

कुद्रव्य *पुं.* {सं.} बुरे काम से अर्जित धन; निंदित पदार्थ।

कुधर *पुं.* {सं. कुध्र} पहाड़, पर्वत; शेषनाग; पृथ्वी धारण करनेवाला।

कुनकुना *वि.* {सं. कदुष्ण} थोड़ा, गरम, गुनगुना (तरल पदार्थ)।

कुनबा *पुं.* {सं. कुटुंब} कुटुंब, परिवार।

कुनबी *पुं.* कुर्मी।

कुनह *स्त्री.* {फा. कीनः} {*वि.* कुनही} मन में होनेवाली शत्रुता, द्वेष, मोनोमालिन्य।

कुनाई *स्त्री.* {हिं. कुनना} किसी वस्तु को खरादते या खुरचने पर निकलनेवाला चूरा, बुरादा; कुनने या खरादने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

कुनाम *पुं.* {सं.} बदनामी, अपयश; *वि.* बदनाम, अपयशी।

कुनित *वि.* क्वणित।

कुनैन *स्त्री.* {*अ.* किनाइन} सिनकोना नामक पेड़ की छाल का सत जो शीतज्वर के लिए उपकारी माना जाता है।

कुपंथ *पुं.* {सं. कुपथ} {*वि.* कुपंथी} बुरा मार्ग; निषिद्ध आचरण, कुचाल; बुरा मत, कुत्सित सिद्धांत।

कुपच *पुं.* {सं.} अजीर्ण, बदहजमी।

कुपढ़ *वि.* {सं. कु + हिं. पढ़ना} अनपढ़; थोड़ा, पढ़ा पर ज्ञानरहित।

कुपथ *पुं.* {सं.} बुरा रास्ता; निषिद्ध आचरण, बुरी चाल।

कुपथगामी *वि.* {सं. कुपथगामिन्} निषिद्ध आचरण वाला।

कुपथ्य *पुं.* {सं.} वह आहार-विहार जो स्वास्थ्य को खराब करे, बदपरहेजी।

कुपाठ *पुं.* {सं.} दुष्टता का परामर्श या शिक्षा बुरी सलाह।

कुपात्र *वि., पुं.* {*भाव.* कुपात्रता} बुरा या अयोग्य पात्र, अनाधिकारी; नालायक; जिसे दान देना शास्त्रों में निषिद्ध हो।

कुपार *पुं.* {सं. अकूपार} समुद्र।

कुपित *(स्त्री. कुपिता) वि.* {सं.} जिसे कोप हुआ हो, क्रुद्ध; अप्रसन्न, नाराज।

कुपिनी *स्त्री.* {सं.} मछली पकड़ने का एक विशेष प्रकार का जाल।

कुपुत्र *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* कुपुत्री} वह पुत्र जो कुपथगामी हो, दुष्ट पुत्र, कपूत; वह जिसका पुत्र नालायक हो।

कुपुष्ट *(स्त्री. कुपुष्टा) वि.* {सं.} जिस का भली प्रकार पोषण न हुआ हो।

कुपोषण *पुं.* {सं.} सही पोषण न होना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कुपोषित *वि.* {सं.} कुपुष्ट।

कुप्पा *पुं.* {सं. कूपक} {*स्त्री.* अल्पा. कुप्पी} घड़े के आकार या चमड़े का वह बरतन जिसमें घी, तेल आदि रखते हैं।

मुहा. फूलकर कुप्पा होना या हो जाना = फूल जाना; बहुत मोटा हो जाना; बहुत प्रसन्न होना।

कुप्रथा *स्त्री.* {सं.} खराब प्रथा; बुरी या समय के विपरीत रीति-रिवाज।

कुप्रबंध *पुं.* {सं. कु + प्रबंध} बुरा या खराब प्रबंध, बद-इंतजामी (मिस-मैनेजमेंट)।

कुप्रबंधक *वि.* जो प्रबंध या व्यवस्था ठीक न रखता हो।

कुप्रयोग *पुं.* {सं.} किसी वस्तु, पद, अधिकार आदि का अनुचित या बुरा प्रयोग (एब्यूज)।

कुफल *पुं.* {सं.} किसी बात या काम का होनेवाला बुरा फल या परिणाम।

कुफेन *स्त्री.* काबुल नदी का पुराना नाम।

कुफ्र *पुं.* {*अ.*} मुसलमानी मत से भिन्न अन्य मत; मुसलमानी धर्म के विरुद्ध बात।

कुबंड[1] *पुं.* {सं. कोदंड} धनुष।

कुबंड[2] *वि.* {हिं. कूबड़} टूटे-फूटे अंगोंवाला, विकृतांग।

कुबजा *स्त्री.* = कुब्जा।

कुबड़ा *पुं.* {सं. कुब्ज} {*भाव.* कुबड़ापन, *स्त्री.* कुबड़ी} वह जिसकी पीठ फूली, टेढ़ी या झुकी हुई हो; *वि.* झुका हुआ, टेढ़ा।

कुबड़ी *स्त्री.* {हिं. कुबड़ा} कबरी; वह मोटी छड़ी जिसका सिरा झुका हो।

कुबत *स्त्री.* {सं. कु + हिं. बात} बुरी बात; निंदा; बुरी चाल।

कुबरी *स्त्री.* कुब्जा।

कुबाक *पुं.* कुवाच्य; जिसके मुँह से बुरा वचन निकलता हो।

कुबानि *स्त्री.* {सं. कु + हिं. बानि} बुरी बान या आदत, बुरी लत, कुटेव।

कुबानी *स्त्री.* {सं. कु + वाणी} बुरी या अशुभ बात; दुर्वचन।

कुबुज *वि.* = कुबड़ा; *पुं.* कुब्जक।

कुबुद्धि *वि.* {सं.} दुर्बुद्धि, मूर्ख; *स्त्री.* बुरी बुद्धि, खराब, अक्ल; मूर्खता, बेवकूफी; बुरी सलाह।

कुबुधि *स्त्री.* = कुबुद्धि।

कुबेला *स्त्री.* {सं. कुवेला} बुरा समय, अनुपयुक्त समय।

कुब्ज *वि.* {सं.} {*स्त्री.* कुब्जा} जिसकी पीठ टेढ़ी हो, कुबड़ा।

कुब्जक *पुं.* {सं.} कुबड़ा; सफेद गुलाब (फूल); जो पेड़ तिरछा या टेढ़ा हो।

कुब्जा *स्त्री.* {सं.} कुबड़ी स्त्री; कंस की एक कुबड़ी दासी जो कृष्णचन्द्र से प्रेम रखती थी, कुबरी।

कुब्जिका *स्त्री.* {सं.} आठ वर्ष की कन्या।

कुभा *स्त्री.* {सं.} काबुल नदी।

कुभार्या *स्त्री.* {सं.} कर्कशा, दुष्ट पत्नी।

कुभाव *पुं.* {सं.} बुरा या दुष्ट भाव।

कुभृत्य *पुं.* {सं.} दुष्ट, बेईमान नौकर।

कुभृत्या *स्त्री.* {सं.} बुरी नौकरी।

कुमंत्रित *वि.* {सं.} जिसे गलत मंत्रणा दी गई हो।

कुमक *स्त्री.* {तु.} सहायता, मदद; सैनिक कार्यों के लिए या सैनिकों आदि के रूप में मिलनेवाली सहायता; कुमुक।

कुमकुम *पुं.* {सं. कुंकुम} केसर; रोली; *पुं.* कुमकुमा।

कुमकुमा *पुं.* {तु. कुमकुमः} लाख का बना वह पोला गोला जिसमें अबीर या गुलाल भरकर एक दूसरे पर फेंकते हैं; एक प्रकार का तंग मुँह का लोटा; काँच का बना हुआ पोला छोटा गोला; रोली।

कुमार *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* कुमारी} {*भाव.* कौमार्य} पाँच वर्ष की अवस्था का बालक; युवावस्था या उससे कुछ पहले की अवस्था का पुरुष; पुत्र, बेटा; युवराज; सनक, सनन्दन, सनत और सनतकुमार आदि कई ऋषि जो सदा बालक ही रहते हैं; कार्तिकेय; एक ग्रह जिसका उपद्रव बालकों पर होता है; *वि.* बिना ब्याहा, कुँवारा।

कुमारतंत्र *पुं.* {सं.} बच्चों के रोगों के निदान और चिकित्सा का शास्त्र, बालतंत्र; आयुर्वेद के आठ तंत्रों में एक आयुर्वेद का एक तंत्र।

कुमारभृत्य *पुं.* {सं.} गर्भिणी को सुख से प्रसव कराने की विद्या; गर्भिणी और नवप्रसूत बालकों के रोगों की चिकित्सा।

कुमारामात्य *पुं.* {सं.} प्राचीन भारतीय राज्यों में वह अधिकारी जो किसी मंत्री या दंडनायक के अधीन और उसके सहायक के रूप में रहकर काम करता था। (इस पद पर प्रायः राज-परिवार के लोग रखे जाते थे; इसीलिए इसमें 'अमात्य' के पहले 'कुमार' लगता था)।

कुमारी *स्त्री.* {सं.} बारह वर्ष तक की अवस्था की कन्या; घीकुवार; पार्वती; दुर्गा; एक अंतरीप जो भारतवर्ष के दक्षिण में है; *वि. स्त्री.* बिना ब्याही, कुँआरी।

कुमारी द्वीप *पुं.* {सं.} भारतवर्ष।

कुमारी-पूजन *पुं.* {सं.} वह देवी पूजा जिसमें कुमारी बालिकाओं का पूजन करके उन्हें भोजन का जलपान कराया जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमार्ग पुं. {सं.} {*वि.* कुमार्गी} बुरा मार्ग, बुरी राह; अधर्म; बुरा चलन।

कुमार्गी *वि.* {सं. कुमार्गिन्} {*स्त्री.* कुमार्गिनी} बदचलन, कुचाली; अधर्मी, धर्महीन; जो विपरीत मार्ग पर चले जिस से हानि हो।

कुमुद पुं. {सं.} कुईं, कोका; लाल कमल; चाँदी; विष्णु; रात को खिलनेवाला कमल।

कुमुद्वती *स्त्री.* {सं.} कुमुदिनी।

कुमुदिनी *स्त्री.* {सं.} सफेद कमल का पौधा, कुईं, कोई; कुमुद की बेल।

कुमेदान पुं. {*अ.* कुम्मः + फा. दान} मुसलमानी शासनकाल में एक सैनिक पद, जैसे शाही में अब्बा कुमेदान थे।

कुमेरिया पुं. एक तरह का हाथी।

कुमोद पुं. कुमुद; पृथ्वी को आनन्दित करनेवाला।

कुमोदिनी *स्त्री.* कुमुदिनी।

कुम्मैत पुं. {तु. कुमैत} घोड़े का रंग, जो कुछ कालापन किए लाल होता है लाखी; इस रंग का घोड़ा, कुरंग, हाँसल, हिनाई।

मुहा. आठों गाँठ कुम्मैत = अत्यंत चतुर, छँटा हुआ, चालाक, धूर्त।

कुम्हड़ा पुं. {सं. कूष्मांड} एक बेल जिसके फलों की तरकारी होती है; कद्दू, पेठा।

पद कुम्हड़े की बतिया = कुम्हड़े का छोटा कच्चा फल; अशक्त और निर्बल मनुष्य।

कुम्हरा पुं. = कुम्हरा।

कुम्हरौटी *स्त्री.* कुम्हारों द्वारा प्रयुक्त एक चिकनी मिट्टी।

कुम्हलाना *अ.* {सं. कु + म्लान} पौधे का हरापन जाता रहना, मुरझाना; सूखने पर होना; कान्ति का मलिन पड़ना, प्रभाहीन होना; दुबला पड़ना।

कुम्हार पुं. {सं. कुंभहार} {*स्त्री.* कुम्हारिन्} मिट्टी के बरतन बनानेवाला।

कुम्हारी *स्त्री.* {हिं. कुम्हरा} कुम्हार का धंधा, मिट्टी के बरतन बनाने का काम।

कुयश पुं. {सं. कु + यश} अपयश, बदनामी।

कुरंग¹ पुं. {सं.} {*स्त्री.* कुरंगी} बादामी या तामड़े रंग का हिरन; हिरन; एक छंद।

कुरंग² पुं. {सं. कु + हिं. रंग} बुरा ढंग या लक्षण।

वि. बदरंग।

कुरंग³ पुं. कुम्मैत (घोड़ा)।

कुरंड पुं. {सं. कुरुविंद} एक खनिज पदार्थ जिसका चूर्ण लाख आदि में मिलाकर हथियार तेज करने की सान बनाते हैं।

कुरका *स्त्री.* {सं.} सल्लकी, सलई।

कुरकी *स्त्री.* कुर्की।

कुरकुरा *वि.* {अनु. कुरकुर} {*स्त्री.* कुरकुरी} जिसे तोड़ने पर कुरकुर शब्द हो, खरा और करारा; जो चाबने में सरल हो।

कुरता पुं. {तु.} {*स्त्री.* कुरती} धड़ और कमर को ढकनेवाला; एक पहनावा जो सिर डालकर पहना जाता है।

कुरबक पुं. {सं.} कुरैया, एक फूल।

कुरबान *वि.* {*अ.* कुर्बान} निछावर।

मुहा. कुरबान होना = न्यौछावर होना, जीवन में भेंट करना।

कुरबानी *स्त्री.* {*अ.* कुर्बानी} बलिदान।

कुरमी पुं. कुर्मी।

कुररी *स्त्री.* टिटिहरी।

कुरलना *अ.* {सं. कलरव} मधुर स्वर से पक्षियों का बोलना।

कुरला *स्त्री.* {हिं. कुरलना} क्रीड़ा।

कुरलाई *स्त्री.* {हिं. कुरलना} पक्षियों के बोलने का शब्द, कलरव, चहक; पानी का कुल्ला।

कुरव पुं. {सं. कु + रव} बुरा या अशुभ शब्द; कुरबक पुष्प; *वि.* बुरी बोली बोलनेवाला।

कुरवा पुं. अनाज नापने का एक पात्र।

कुरवारना *स.* {सं. कर्तन} बार-बार या थोड़ा-थोड़ा करके या रह-रहकर खोदना, जैसे पक्षियों का चोंच से फल कुतरवाना; कुरेदना; खुरचना।

कुरविद पुं. कुरुविंद।

कुरसी *स्त्री.* {*अ.* कुर्सी} एक प्रकार की ऊँची चौकी जिसमें पीठ के सहारे के लिए पटरी लगी रहती है; वह चबूतरा जिस पर इमारत बनाई जाती है; पीढ़ी, पुश्त; अधिकार, पद।

मुहा. कुरसी देना = इज्जत देना; *कुरसी को सलाम करना* = अधिकार को मान देना।

कुरसीनामा पुं. वंशवृक्ष।

कुरान पुं. {*अ.*} मुसलमानों का प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथ।

कुराय *स्त्री.* {सं. कु + फा. राह} जमीन में पड़ा हुआ गड्ढा; बुरी सलाह।

कुराह *स्त्री.* {सं. कु + फा. राह} {*वि.* कुराही} कुमार्ग, बुरी राह; बुरी चाल, खोटा आचरण।

कुराहर पुं. कोलाहल।

कुरियाल *स्त्री.* {सं. कल्लोत} चिड़ियों का मौज में बैठकर पंख खुजलाना।

मुहा. कुरियाल में आना = चिड़ियों का आनंद में होना; मौज में आना।

कुरिहार पुं. कोलाहल।

कुरी¹ *स्त्री.* {हिं. कूरा} छोटा धुस या टीला; खंड, टुकड़ा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुरी² *स्त्री.* {सं. कुल} वंश, घराना; मकान, घर; ढेर, समूह, राशि।

कुरीर *पुं.* {सं.} संभोग-क्रिया; स्त्रियों का सिर पर पहनने का एक वस्त्र।

कुरीति *स्त्री.* {सं.} बुरी रीति, कुप्रथा; बुरी चाल; अनुचित कार्य।

कुरु *पुं.* {सं.} वैदिक आर्यों का एक कुल; हिमालय के पश्चिम और दक्षिण का एक प्रदेश; एक राजा जिसके वंश में पाण्डु और धृतराष्ट्र हुए थे।

कुरुई *स्त्री.* {सं. कुडव} बाँस या मूँज की बनी हुइ छोटी डलिया, मौनी।

कुरुक्षेत्र *पुं.* {सं.} एक बहुत प्राचीन तीर्थ जो अम्बाला और दिल्ली के बीच में है। (महाभारत का युद्ध यहीं हुआ था); झगड़े का स्थान।

कुरुम *पुं.* {सं. कूर्म} कछुवा।

कुरुमा *पुं.* बारीक टुकड़े किया गोश्त; कोरमा।

कुरुविंद *पुं.* {सं.} माणिक नामक रत्न; दर्पण, शीशा।

कुरूप *वि.* {सं.} {*स्त्री.* कुरूपा, *भाव.* कुरूपता} बुरी शकल का, बदसूरत; बैडौल, बेढंगा।

कुरेदना *स.* {सं. कर्तन} खुरचना, खरोचना, करोदना; खोदना; राशि या ढेर को इधर-उधर चलाना।

कुरेर *स्त्री.* कुलेल।

कुरैना *स.* कुरवना।

कुरैया *स्त्री.* {सं. कुटज} सुंदर फूलोंवाला एक पेड़ जिसके बीज 'इंद्रजौ' कहलाते हैं।

कुरौना *स.* {हिं. कूरा = ढेर} ढेर लगाना।

कुर्क *वि.* {तु. कुर्क} {*भाव.* कुर्की} (माल) जिसकी कुर्की हुई हो, जब्त; ऋण आदि की वसूली के लिए ऋणी की संपत्ति को बलात् बेचना या अधिकार में लेना।

कुर्क अमीन *पुं.* {तु. तुर्क + फा. अमीन} वह सरकारी कर्मचारी जो जायदाद कुर्क करता है।

कुर्की *स्त्री.* {तु. कुर्क} कर्जदार का ऋण या अपराधी का जुरमाना वसूल करने के लिए राज्य द्वारा होनेवाला किसी की संपत्ति पर अधिकार, आसंजन (एटैचमेंट)।

कुर्चिका *स्त्री.* {सं.} कूची; चित्र बनाने का ब्रश; मलाई; छोटी दाढ़ी।

कुर्मी *पुं.* {सं. कूर्मि} तरकारियाँ आदि बोनेवाली एक जाति, कुनबी; गृहस्थ।

कुर्राना *अ.* {सं. कलरव} पक्षियों का चहचहाना।

कुलंग *पुं.* {फा.} मटमैले रंग का एक पक्षी; मुर्गा।

कुल¹ *पुं.* {सं.} एक ही पूर्वपुरुष से उत्पन्न व्यक्तियों का वर्ग या समूह, वंश, घराना, खानदान; जाति; समूह, समुदाय, झुंड; घर, मकान; वाममार्ग, कौलधर्म; श्रेणी, जनपद।

कुल² *वि.* {अ.} समस्त, सब, सारा।

पद कुल जमा = सब मिलाकर; केवल, मात्र।

कुलक *पुं.* {सं.} एक ही प्रकार की, एक साथ काम में आनेवाली या एक दूसरी से संबद्ध वस्तुओं का समूह, जैसे एक ही ग्रंथमाला के सब ग्रंथों का कुलक; 2-4 से अधिक पद्यों में समाप्त होनेवाला वाक्य; कारीगरों के वर्ग का मुख्य; ऐसा गद्य जिसमें समस्त पद न हों।

कुलकना *अ.* {हिं. किलकना} प्रसन्न होकर उछलना।

कुलकर्ता *पुं.* {सं.} वंश को आगे चलानेवाला।

कुलकलंक *पुं.* {सं.} अपने वंश की कीर्ति में धब्बा लगानेवाला।

कुलकानि *स्त्री.* {सं. कुल + हिं. कानि = मर्यादा} कुल की मर्यादा, कुल की लज्जा।

कुलकुलाना *अ.* {अनु.} कुलकुल शब्द होना।

मुहा. आँतें कुलकुलाना = भूख लगना।

कुलक्रम *पुं.* {सं.} वंश-परंपरा।

कुलक्षण *पुं.* {सं.} बुरा लक्षण; कुचाल, बदचलनी; बुरे आचरण वाला, मनहूस; *वि.* {*स्त्री.* कुलक्षणा, कुलक्षणी} बुरे लक्षणवाला।

कुलक्षय *पुं.* {सं.} वंशनाश।

कुलच्छन *पुं., वि.* कुलक्षण।

कुलज *वि.* {सं.} अच्छे कुल में उत्पन्न, कुलीन।

कुलट *वि.* {सं.} {*स्त्री.* कुलटा} व्यभिचारी, बदचलन; औरस के अतिरिक्त और प्रकार का पुत्र, जैसे क्षेत्रज दत्तक आदि।

कुलटा *वि., स्त्री.* {सं.} अनेक पुरुषों से अनुचित संबंध रखनेवाली, छिनाल, बदचलन स्त्री; वह परकीया नायिका जो कई पुरुषों से प्रेम रखती हो।

कुलतंतु *पुं.* {सं.} वंश को आगे चलानेवाला।

कुलतंत्र *पुं.* {सं.} प्राचीनकाल की वह शासन-प्रणाली जिसमें किसी विशिष्ट कुल के नायक ही राज्य के शासन का सब काम करते थे, सरदार-तंत्र; वह राज्य जिसमें उक्त प्रकार का शासन हो (एरिस्टोक्रेसी; उक्त दोनों अर्थों के लिए)।

कुलतारन *वि.* {सं. कुल + हिं. तारना} {*स्त्री.* कुलतारनी} कुल को तारने या उसका यश बढ़ानेवाला; कुल का उद्धारक।

कुलतिथि पक्ष की 4, 8, 12 या 14 वीं तिथि।

कुलदेवता *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* कुलदेवी} वह देवता जिसकी पूजा किसी कुल में परंपरा से होती आई हो; कुल का इष्ट देव।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलधर्म पुं. {सं.} किसी परिवार में प्रचलित नियम या परंपरा, कुल की रीति।

कुलपति पुं. {सं.} घर का मालिक; वह अध्यापक जो विद्यार्थियों का भरण-पोषण करता हुआ उन्हें शिक्षा दे; वह ऋषि जो दस हजार ब्रह्मचारियों को अन्न और शिक्षा दे; किसी विश्वविद्यालय का उपप्रधान सर्वोच्च अधिकारी (वाइस चांसलर)।

कुलपर्वत पुं. {सं.} भारत के 7 पर्वत—महेन्द्र, मलय, सह्य, शक्ति, ऋक्ष, विंध्य, परियाय।

कुलपूज्य *वि.* {सं.} जिसका मान कुल-परंपरा से होता आया हो; अपने कुल का सबसे बड़ा।

कुलफा पुं. {फा. खुर्फ:} एक प्रकार का साग, बड़ी जाति की अमलोनी।

कुलफी *स्त्री.* {हिं. कुलफ} टीन का वह चोंगा जिसमें दूध आदि भरकर बर्फ की तरह जमाते हैं; इस प्रकार जमा हुआ दूध या शरबत; धातु का वह टुकड़ा जो किसी चीज में घूमने अथवा उसे घुमाने के लिए पेंच से कसा जाता हो।

कुलबुलाना *अ.* {अनु. कुलबुल} {*भाव.* कुलबुली, कुलबुलाहट} बहुत से छोटे-छोटे जीवों का एक साथ मिलकर हिलना, डोलना, इधर-उधर रेंगना; चंचल होना, आकुल होना।

कुलबुली *स्त्री.* {अनु.} कुलबुनाने की क्रिया या भाव; मन में होनेवाली किसी बात की आतुरता या चंचलता।

कुलबोरन *वि.* {सं. कुल + हिं. बोरना} वंश की मर्यादा नष्ट करनेवाली।
उदा. 'चली कुल बोरन गंगा न्हाय' **-कबीर**।

कुलवंत *वि.* {*स्त्री.* कुलवंती} कुलीन।

कुलवधू *स्त्री.* {सं.} अच्छे कुल या घर की और मर्यादा से रहनेवाली स्त्री।

कुलह *स्त्री.* {फा. कुलाह} पठान लोग जो पगड़ी के नीचे टोपी पहनते हैं; शिकारी चिड़ियों की आँखों पर बाँधी जानेवाली पट्टी या ढक्कन, अँधियारी।

कुलही *स्त्री.* {फा. कुलाह} बच्चों के पहनने की टोपी; कनटोप।

कुलांगार पुं. {सं.} कुल को कलंकित करनेवाला।

कुलाचार पुं. {सं.} वह आचार या रीति-व्यवहार जो किसी वंश या कुल में बहुत दिनों से होता आया हो।

कुलाबा पुं. {*अ.*} लोहे का वह छल्ला जिसके द्वारा चौखट से किवाड़ जकड़ा रहता है, पायजा; नाली जिसमें होकर पानी निकलता है, मोरी; नहर या नदी में से निकाली गई नाली।

कुलाय पुं. {सं.} पक्षियों का घोंसला।

कुलाल पुं. {सं.} {*स्त्री.* कुलाली} मिट्टी के बरतन बनानेवाला, कुम्हार।

कुलाह *स्त्री.* {फा.} कुलह।

कुलाहल पुं. कोलाहल।

कुलिंग पुं. {सं.} चिड़िया, पक्षी।

कुलिंद पुं. {सं.} प्राचीन भारत का एक प्रदेश।

कुलिक पुं. {सं.} शिल्पकार, दस्तकार, कारीगर; अच्छे कुल में उत्पन्न पुरुष; कुल का प्रधान पुरुष; एक वर्ग के कारीगर।

कुलिश पुं. {सं.} हीरा; वज्र, बिजली, गाज; कुठार।

कुलिशपाणि पुं. {सं.} इंद्र।

कुली पुं. {तु.} बोझ ढोनेवाला, मजदूर।

कुली-कबारी पुं. छोटे दरजे के लोग।

कुलीन *वि.* {सं.} {*भाव.* कुलीनता} उत्तम कुल में उत्पन्न, अच्छे वंश या घराने का, खानदानी।

कुलीनतंत्र पुं. {सं.} एक राज्य प्रणाली जिसमें शासन उच्च कुल के व्यक्तियों के ही हाथ में रहता है।

कुलुफ पुं. {*अ.* कुफ्ल} ताला।

कुलेल *स्त्री.* {सं. कल्लोल} {क्रि. कुलेलना} प्रसन्न होकर की जानेवाली उछल-कूद, क्रीड़ा, कलोल।

कुल्या *स्त्री.* {सं.} नहर; नाली; नदी।

कुल्ला[1] पुं. {सं. कवल} {*स्त्री.* कुल्ली} मुँह साफ करने के लिए उसमें पानी लेकर फेंकने की क्रिया, गरारा।

कुल्ला[2] पुं. {फा. काकुल} बालों की लट, जुल्फ, काकुल।

कुल्ला[3] पुं. कुलाह।

कुल्ली *स्त्री.* {सं. कवल} मुँह साफ करने के लिए उसमें पानी लेकर फेंकने की क्रिया, कुल्ला।

कुल्हड़ पुं. {सं. कुल्हर} {*स्त्री.* कुल्हिया} मिट्टी का छोटा गोल पात्र, पुरवा, चुक्कड़; सकोरा।

कुल्हाड़ा पुं. {सं. कुठार} {*स्त्री.* अल्पा. कुल्हाड़ी} पेड़ काटने और लकड़ी चीरने का एक औजार।

कुल्हाड़ी *स्त्री.* हिं. 'कुल्हाड़ा' का अल्पा.।
मुहा. कुल्हाड़ी मारना = अपनी हानि स्वयं करना।

कुल्हिया *स्त्री.* {हिं. कुल्हड़} छोटा पुरवा या कुल्हड़, चुक्कड़; छोटी हँडिया।
मुहा. कुल्हिया में गुड़ फोड़ना = इस प्रकार कोई कार्य करना, जिसमें किसी को कुछ भी खबर न हो।

कुवलय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* कुवलयिनी} नीली कोई, कोका; रात को खिलनेवाला नीलकमल; भूमंडल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुवलयापीड़ कंस का हाथी जिसे कृष्ण ने मारा था।

कुवाच्य *वि.* {सं.} जो कहने योग्य न हो, गंदा, बुरा (कथन); *पुं.* दुर्वचन गाली।

कुविंद *पुं.* {सं.} जुलाहा।

कुविचार *पुं.* {सं.} बुरा, विचार।

कुबेर *पुं.* {सं.} यक्षों के राजा जो इंद्र की निधियों के भंडारी माने जाते हैं; टेढ़े-मेढ़े कुरूप शरीरवाला।

कुवेल *स्त्री.* कुसमय, बेमौके।

कुश *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* कुशा, कुशी} काँस की तरह की एक घास जिसका यज्ञों में उपयोग होता था; जल, पानी; श्री रामचन्द्र जी के एक पुत्र का नाम; हल की फाल, कुसी।

कुशस्थली *स्त्री.* {सं.} द्वारिका नगरी।

कुशल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* कुशला, *भाव.* कुशलता} चतुर, दक्ष, प्रवीण (एफीशिएंट); श्रेष्ठ, अच्छा, भला; पुण्यशील; क्षेम, मंगल, खैरियत; दक्ष।

कुशलक्षेम *पुं.* {सं.} राजी-खुशी, खैर- आफियत।

कुशलता *स्त्री.* {सं.} चतुराई, चालाकी; योग्यता, प्रवीणता; मंगल, खैरियत; किसी काम में दक्षता।

कुशल-मंगल *पुं.* {सं.} राजी-खुशी।

कुशलात *स्त्री.* = कुशलता।

कुशा *स्त्री.* कुश; दाभ।

कुशाग्र *वि.* {सं.} कुश की नोक की तरह तीखा, तीव्र, तेज, जैसे कुशाग्र बुद्धि।

कुशासन[1] *पुं.* {सं. कुश + आसन} कुश का बना हुआ आसन।

कुशासन[2] *पुं.* {सं. कु + शासन} बुरा शासन।

कुशील *वि.* {सं.} जिसका स्वभाव या चलन अच्छा न हो।

कुशीलव *पुं.* {सं.} कवि; नट।

कुशेशय *पुं.* {सं.} कमल।

कुश्ता *पुं.* {फा. कुश्तः} धातुओं को रासायनिक क्रिया से फूँककर बनाया हुआ चूर्ण, भस्म।

कुश्ती *स्त्री.* {फा.} दो आदमियों का एक दूसरे को बलपूर्वक पछाड़ने या पटकने के लिए लड़ना, मल्लयुद्ध।

मुहा. कुश्ती मारना = कुश्ती में दूसरे को पछाड़ना; *कुश्ती खाना* = कुश्ती में हार जाना।

कुष्ठ *पुं.* {सं.} कोढ़ (रोग)।

कुष्ठी *वि.* = कोढ़ी।

कुष्मांड *पुं.* {सं.} कुम्हड़ा।

कुसंग *पुं.* कुसंगति; बुरे लोगों की संगत।

कुसंस्कार *पुं.* {सं.} बुरा संस्कार (जिससे चित्त में बुरी बातें आती हैं), बुरी वासना; बुरा असर।

कुसमय *पुं.* {सं.} बुरा, समय, खराब वक्त; वह समय जो किसी कार्य के लिए ठीक न हो, अनुपयुक्त अवसर; नियत से आगे या पीछे का समय।

कुसल *वि.* कुशल।

कुसलई *स्त्री.* कुशलता।

कुसलात *पुं.* {सं. कुशल} कुशल-क्षेप, खैरियत, कल्याण।

कुसली *स्त्री.* {हिं. कसैला} आम आदि फलों की बड़ी गुठली; गोझा या पिराक नामक पकवान; *वि.* कुशला।

कुसवाहा *पुं.* हिन्दुओं की एक जाति।

कुसाइत *स्त्री.* {सं. कु + *अ.* साअत} बुरी साइत या मुहूर्त; अनुपयुक्त समय।

कुसी *पुं.* {सं. कुशी} हल की फाल।

कुसीद *पुं.* {सं.} सूद, ब्याज।

कुसीदजीकी *पुं.* {सं.} साहूकार।

कुसुंभ *पुं.* {सं.} कुसुम, बर्रे; केसर, कुमकुम।

कुसुंभा *पुं.* {सं. कुसुंभ} कुसुम का रंग; अफीम और भाँग के योग से बना हुआ एक मादक द्रव्य। (इसका प्रचार राजस्थान में है)।

कुसुंभी *वि.* {सं. कुसुंभ} कुसुम (फूलं) के रंग का लाल।

कुसुंभी राग *पुं.* {सं.} साहित्यशास्त्र में वर्णित प्रेम का एक रूप जो कि चटकीला गहरा होता है।

कुसुम[1] *पुं.* {सं.} {*वि.* कुसुमित} फूल, पुष्प; वह गद्य जिसमें छोटे-छोटे वाक्य हों; स्त्रियों का रज।

कुसुम[2] *पुं.* {सं. कुसुंभ} एक पौधा जिसमें पीले फूल लगते हैं और जिसके बीजों से तेल निकलता है, बर्रे; आँखों में पड़ा फूला; स्त्री का रज।

कुसुमपुर *पुं.* {सं.} पटना का प्राचीन नाम।

कुसुमबाण *पुं.* {सं.} कामदेव।

कुसुमशर *पुं.* {सं.} कामदेव।

कुसुमांजलि *स्त्री.* {सं.} हाथ की अँजुली में फूल भरकर देवता पर चढ़ाना, पुष्पांजलि।

कुसुमाकर *पुं.* {सं.} वसन्त ऋतु; फुलवारी, बगीचा; फूलों का भंडार।

कुसुमायुध *पुं.* {सं.} कामदेव।

कुसुमित *वि.* {सं.} पुष्पित।

कुसेस *पुं.* {सं. कुशेशय} कमल।

कुहक[1] *पुं.* {सं.} माया, धोखा, जाल, फरेब; धूर्त, मक्कार; मुर्गे की बाँग; इंद्रजाल जाननेवाला, जादूगर; हावभाव।

कुहक[2] *स्त्री.* {सं. कुहुक} कोयल का मधुर शब्द।

कुहकना *अ.* {सं. कुहुक} कोयल का मधुर शब्द में बोलना, पीकना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुहकुहाना *अ.* कुहकना।

कुहर *पुं.* {सं.} छेद, सुराख जैसे कर्णकुहर; गले का छेद; मैथुन; एकांत।

कुहरा *पुं.* धुंध।

कुहराम *पुं.* {*अ.* कह्र + आम} विलाप, रोना-पीटना।

कुहाना *अ.* रूठना; छलना।

कुहा *स्त्री.* {सं.} कड़वी; कटुकी।

कुहारा *पुं.* कुल्हाड़ा।

कुहासा *पुं.* कोहरा।

कुही[1] *स्त्री.* {सं. कुधि} एक प्रकार की शिकारी चिड़िया।

कुही[2] *पुं.* {फा. कोही = पहाड़ी} घोड़े की एक जाति, टाँगन; क्रोधी।

कुहुँवा *पुं.* पहुँचा (कलाई)।

कुहुक *पुं.* कुहक; कूहक।

कुहुकना *अ.* कुहकना।

कुहुक-बान *पुं.* {हिं. कुहकना + बाण} एक प्रकार का बाण जिसके चलते समय शब्द निकलता है।

कुहू *स्त्री.* {सं.} अमावस्या की रात; मोर या कोयल की बोली।

कुहेडिका *स्त्री.* {सं.} कुहरा।

कुहौ-कुहौ *स्त्री.* कुहू-कुहू की पुकार।

कूँच *स्त्री.* घोड़ा-नस; ताने का सूत साफ करने का ब्रश।

कूँचना *स.* कुचलना।

कूँचा *पुं.* {सं. कूर्च} {*स्त्री.* कूँची} झाड़ू।

कूँची *स्त्री.* {हिं. कूँचा} छोटा कूँचा या झाड़ू; कूटी हुई मूँज का वह गुच्छा जिससे चीजों की मैल साफ करते या दीवारों पर रंग लगाते हैं; चित्रकार की रंग भरने की कलम।

मुहा. कूँची फेरना = साफ करना, मिटा देना।

कूँज *स्त्री.* {सं. क्रौंच} जलाशयों के किनारे रहनेवाला एक प्रकार का पक्षी, करौंकुल।

कुँजी *स्त्री.* = कुंजी।

कूँड *पुं.* {सं कुंड} लोहे की वह ऊँची टोपी जो लड़ाई के समय योद्धा लोग पहनते थे, खोद; सिंचाई के लिए कुएँ से पानी निकालने का एक प्रकार का डोल; जुताई में हल की फाल से बननेवाली लकीर; शिस्त्राण, हैल्मेट।

कूँड़ा *पुं.* {सं. कुंड} {*स्त्री.* कूँड़ा} पानी रखने का काठ या मिट्टी का गहरा बरतन; गमला; रोशनी करने की शीशे की बड़ी हाँड़ी; पानी जमा करने के लिए बड़ा पात्र।

मुहा. कूँड़ा कर देना = बहुत बड़ी हानि करना।

कूँड़ी *स्त्री.* {हिं. कूँड़ा} पत्थर की प्याली, पथरी; छोटी नाँद।

कूँदना *स.* कुनना।

कूआँ *पुं.* = कुआँ।

कूई *स्त्री.* = कुई।

कूक[1] *स्त्री.* {सं. कूजन} लंबी सुरीली ध्वनि; मोर या कोयल की बोली।

कूक[2] *स्त्री.* {हिं. कुंजी} घड़ी, बाजे आदि में कुंजी देने की क्रिया या भाव।

कूकना[1] *अ.* {सं. कूजन} कोयल, मोर आदि का बोलना।

कूकना[2] *स.* {हिं. कुंजी} घड़ी या बाजे में कुंजी देना।

कूकर *पुं.* कुत्ता।

कूका *पुं.* सिखों का एक संप्रदाय।

कूकुर *पुं.* {*स्त्री.* कूकुरी} कुत्ता।

कूख *स्त्री.* कोख।

कूच *पुं.* {तु.} कहीं से यात्रा आरंभ करना, प्रस्थान, रवानगी; कुमारी के स्तन।

मुहा. कूच कर जाना = मर जाना; *(किसी के) दवता कूच कर जाना* = भय से स्तब्ध हो जाना; *कूच बोलना* = प्रस्थान करना।

पुं. = क्रौंच (पक्षी)।

कूचा *पुं.* {फा.} छोटा रास्ता, गली; मुहल्ला; *पुं.* कूँचा; *पुं.* = क्रौंच (पक्षी)।

कूचिका *स्त्री.* {सं.} कूँची।

कूज *स्त्री.* {हिं. कूजना} ध्वनि; *पुं.* कूजा (गुलाब)।

कूजन *पुं.* {सं.} {*वि.* कूजित} (पक्षियों का) मधुर शब्द करना; पक्षियों की चहचह।

कूजा[1] *पुं.* {फा. कूज:} मिट्टी का पुरवा, कुल्हड़; मिट्टी के पुरवे में जमाई हुई मिश्री।

कूजा[2] *पुं.* {सं. कुब्जक} एक प्रकार का सफेद गुलाब।

कूजित *वि.* {सं.} बोला या कहा हुआ, ध्वनित, गूँजा हुआ या ध्वनिपूर्ण; पक्षियों के मधुर शब्दों से युक्त (स्थान); पक्षियों की चहचह।

कूट[1] *पुं.* {द्रविड़ से गृहीत, सं.} {*भाव.* कूटता} पहाड़ की ऊँची चोटी, शृंग, जैसे चित्रकूट; जानवर का सींग; राशि, ढेर, जैसे अन्नकूट; छल, धोखा; गुप्त रहस्य; वह पद जिसमें श्लिष्ट शब्दों का प्रयोग हो और इसीलिए जिसका अर्थ जल्दी सब लोगों की समझ में न आए, जैसे सूर के कूट; वह हास्य या व्यंग्य जिसका अर्थ गूढ़ हो।

कूट[2] *वि.* {सं.} झूठा, मिथ्यावादी; धोखा देनेवाला, कपटी, छली; कृत्रिम, बनावटी, नकली, जाली, जैसे कूटमुद्रा; प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य।

कूट[3] *स्त्री.* {हिं. कूटना} कूटने, पीटने आदि की क्रिया या भाव।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूटकर्म पुं. {सं.} गुप्त चाल, धोखा।

कूटना स. {सं. कुट्टन} {*भाव.* कूट, कूटन} कोई चीज तोड़ने, पीसने आदि के लिए उस पर बार-बार किसी बड़ी और भारी चीज से आघात करना, जैसे धान कूटना।

मुहा. कूट-कूटकर भरना = खूब कसकर भरना, ठसाठस भरना।

मारना, पीटना; सिल, चक्की आदि में टाँकी से छोटे-छोटे गड्ढे करके उसे खुरदुरा करना।

कूटतुला *स्त्री.* {सं.} ऐसी तराजू जिससे कम तोलना संभव हो।

कूटनीति *स्त्री.* {सं.} व्यक्तियों अथवा राष्ट्रों के पारस्परिक व्यवहार में दाँव-पेंच की नीति का चाल, छिपी हुई चाल (डिप्लोमेसी)।

कूटप्रश्न पुं. {सं.} पहेली।

कूटभाषा *स्त्री.* {सं.} गुप्तचरों ऐयारों की भाषा जिसे वे ही समझते हैं (कोड लैंग्वेज)।

कूटमुद्रा *स्त्री.* {सं.} खोटा या जाली सिक्का।

कूटयुद्ध पुं. {सं.} वह लड़ाई जिसमें शत्रु को धोखा दिया जाए; नकली लड़ाई।

कूटयोग पुं. {सं.} जाली नुस्खा, बनावटी या दिखावे का मेल।

कूटलिपि *स्त्री.* {सं.} ऐसी सांकेतिक लिपि जिसे हर कोई पढ़ सके।

कूटशब्द पुं. {सं.} सांकेतिक शब्द (कोड वर्ड्स)।

कूटयोजना *स्त्री.* {सं.} षड्यंत्र।

कूटसाक्षी (क्षिन्) पुं. {सं.} झूठा, गवाह।

कूटस्थ *वि.* {सं.} कूट या ऊँचाई पर का, सबसे ऊपर का; अटल; अविनाशी; छिपा हुआ, गुप्त।

कूटागार पुं. {सं.} गुप्त भवन, तहखाना।

कूड़ा पुं. {सं. कूट, प्रा. कूड़ = ढेर} जमीन पर पड़ी हुई धूल और टूटी-फूटी या रद्दी चीजें जिन्हें साफ करने की लिए झाड़ देते हैं, कतवार; बिल्कुल रद्दी और निकम्मी चीजें; कुरैया जिसका दवा के रूप में प्रयोग होता है।

कूड़ा-करकट पुं. बिल्कुल रद्दी और निकम्मी चीज।

कूड़ाखाना पुं. {हिं. कूड़ा + फा. खाना} वह स्थान जहाँ कूड़ा फेंका जाता है।

कूढ़ *वि.* {हिं. कूह, पा. कूध} नासमझ, मूढ़ बेवकूफ, कूर, सर्वथा अपढ़।

कूणित पुं. {सं.} मूँदना, बंद करना, *वि.* मुँदी हुई (आँख)।

कूत *स्त्री.* {हिं. कूतना} कोई चीज देखकर अनुमान या अंदाज से यह समझना कि यह इतनी अथवा इतने मूल्य की होगी, तखमीना (एप्रेजमेंट)।

कूतना स. {हिं. कूत} अनुमान करना, अंदाज लगाना; बिना गिने, नापे या तौले संख्या, मूल्य, मात्रा आदि का अनुमान करना।

कूदना अ. {सं. स्कुदन} पृथ्वी पर से वेगपूर्वक उछलकर शरीर को किसी ओर गिराना, उछलना, फाँदना।

मुहा. किसी के बल पर कूदना = किसी का सहारा पाकर बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना।

जान-बूझकर ऊपर से नीचे को गिरना; अचानक कहीं आ पहुँचना या बीच में आ पड़ना; स. उल्लंघन करना, लाँघना।

कूद-फाँद *स्त्री.* कूदना और उछलना; व्यर्थ का प्रयत्न।

कूनना स. कुनना; काँखना, कराहना, कुनमनाना।

कूप पुं. {सं.} कुआँ छेद, सुराख, जैसे रोमकूप; गहरा गड्ढा; पुं. कुप्पा।

कूपन पुं. {अ.} कागज धातु आदि का वह छपा टुकड़ा जो इस बात का सूचक होता है कि इसके स्वामी को अमुक वस्तु इतनी मात्रा में प्राप्त करने का अधिकार है।

कूपक पुं. {सं.} जहाज का मस्तूल, नाव की पतवार; नदी के बीच में निकली चट्टान।

कूपमंडूक पुं. {सं.} वह जो कुएँ में रहनेवाले मेंढक की तरह बहुत ही छोटे क्षेत्र में रहता और बाहरी जगत् का कुछ भी ज्ञान न रखता हो; बहुत थोड़ी जानकारी रखनेवाला।

कूबड़ पुं. {सं. कूबर} पीठ का टेढ़ापन या उभाड़ जो एक प्रकार का रोग है; किसी चीज का उभारदार टेढ़ापन।

कूबरी *स्त्री.* कुब्जा।

कूबा *वि.* = कुबड़ा; पुं. दुपलिया छाजन के लिए खपरैल के मकान में दोनों दीवालों पर रखी जानेवाली टेढ़ी लकड़ी का आधार जिस पर बँड़ेर (धरनें) टिकाते हैं।

कूर *वि.* {सं. क्रूर} {*भाव.* कूरता, कूरपन} दयारहित, निर्दय; भयंकर, डरावना; दुष्ट, नीच; अकर्मण्य, निकम्मा; मूर्ख, जड़, बेवकूफ; भात।

कूरा पुं. {सं. कूट} {*स्त्री.* कूरी} ढेर, राशि; भाग, अंश, हिस्सा; कूड़ा।

कूर्म पुं. {सं.} कच्छप या कछुआ नामक जंतु; विष्णु का दूसरा अवतार जो कछुए के रूप में हुआ था।

कूर्मपृष्ठ पुं. {सं.} कछुए की पीठ।

कूर्मीस्तन्य पुं. {सं.} कछुवी का दूध; पु. खरहे के सींग के समान।

कूल पुं. {सं.} नदी या जलाशय का किनारा, तट, तीर; नहर; तालाब; किसी बात की सीमा, सिरा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हद या किनारा; कुलाबा, गूल; *क्रि. वि.* समीप, पास, निकट।

कूलंकषा *स्त्री.* {सं.} किनारे को काटती उफनती बरसाती नदी।

कूलवती, कूलिनी *स्त्री.* {सं.} नदी।

कूल्टू पुं. कूटू।

कूल्हा पुं. {सं. क्रोड़} कमर या पेड़ू के दोनों ओर निकली हुई हड्डियाँ; नितंब।

कूवत *स्त्री.* {अ.} शक्ति, बल, ताकत।

कूष्मांड पुं. {सं.} कुम्हड़ा; पेठा।

कृच्छ्र पुं. {सं.} कष्ट, दुख; पाप; मूत्रकृच्छ्र रोग; वह व्रत जिसमें पंचगव्य खाकर दूसरे दिन उपवास किया जाता है; *वि.* कष्टसाध्य, मुश्किल, कठिन।

कृच्छ्रजीवी *वि.* {सं.} जो मनुष्य बड़ी तंगी मुश्किलों में जीता है।

कृत *वि.* {सं.} किया हुआ, संपादित, जैसे तुलसीकृत रामायण; (कार्य) जो किया जा चुका हो, पूरा किया हुआ (डन); बनाया हुआ, रचित; जो स्वाभविक न हो।

कृतक *वि.* {सं.} नकली, बनावटी।

कृतकार्य *वि.* {सं.} {*भाव.* कृतकार्यता} जिसका कार्य सिद्ध हो चुका हो, अपना कार्य अच्छी तरह पूरा कर लेनेवाला, सफल-मनोरथ, कृतार्थ।

कृतकृत्य *वि.* {सं.} कार्य सम्पन्न होने पर जो अत्यंत प्रसन्न हो।

कृतघ्न *वि.* {सं.} {*भाव.* कृतघ्नता} अपने साथ किया हुआ उपकार न माननेवाला, अकृतज्ञ; जिसे अब और कुछ करने को न रहा हो।

कृतज्ञ *वि.* {सं.} {*भाव.* कृतज्ञता} अपने साथ किया हुआ उपकार माननेवाला, एहसान माननेवाला।

कृतयुग पुं. {सं.} सतयुग।

कृतविद्य पुं. {सं.} जिसे किसी विद्या का बहुत अच्छा ज्ञान हो, पंडित; जो विद्या पढ़ चुका हो।

कृतसंकल्प *वि.* {सं.} जिसने कोई काम करने का संकल्प कर रखा हो।

कृतांत पुं. {सं.} यम, धर्मराज; मृत्यु; पाप; देवता।

कृतान्तविद्, कृतान्तवेत्ता पुं. {सं.} ज्योतिषी।

कृताकृत पुं. {सं.} किया व न किया; कर्म।

कृतागम पुं. {सं.} जो सब शास्त्र पढ़ चुका हो।

कृतार्थ *वि.* {सं.} जो अपना कार्य हो जाने के कारण प्रसन्न तथा संतुष्ट हो।

कृतास्त्र *वि.* {सं.} जो शस्त्रास्त्र संचालन में कुशल हो।

कृति *स्त्री.* {सं.} किया हुआ काम, कार्य; चित्र, ग्रंथ, वस्तु आदि के रूप में बनाई हुई वस्तु; कोई अच्छा या बड़ा काम; इंद्रजाल, जादू; रचना।

कृती पुं. {सं.} वह जिसने कोई बहुत अच्छा काम या बड़ा काम किया हो, कृति करनेवाला; कुशल या दक्ष व्यक्ति; साधु; पुण्यात्मा; कृतकृत्य।

कृत्ति *स्त्री.* {सं.} हिरन का चमड़ा, मृगचर्म; चमड़ा, खाल।

कृत्तिवास पुं. {सं.} महादेव।

कृत्य पुं. {सं.} वह जो कुछ किया जाए, कार्य, काम (ऐक्ट); वह कार्य जो धार्मिक दृष्टि से आवश्यक और कर्तव्य हो, जैसे यज्ञ, संध्या आदि; वह कार्य जो किसी पर पर रहनेवाले अधिकारी के कर्तव्य के अंतर्गत हो; विशेष रूप से होनेवाला कोई बड़ा या महत्वपूर्ण काम (फंक्शन; अंतिम दोनां अर्थों के लिए)।

कृत्या *स्त्री.* {सं.} मंत्र-तंत्र द्वारा उत्पन्न की गई एक भयंकर राक्षसी जो शत्रुओं को नष्ट करनेवाली मानी गई है; मंत्र-तंत्र द्वारा किए जानेवाले घातक कर्म; दुष्टा और कर्कशा स्त्री।

कृत्याकृत्य पुं. {सं.} करने योग्य व न करने योग्य कर्म।

कृत्रिम *वि.* {सं.} {*भाव.* कृत्रिमता} जो असली न हो, बनावटी, नकली (आर्टिफिशल); बनाया गया।

कृत्रिम पुत्र पुं. {सं.} पुत्र के रूप में माना गया।

कृत्रिम भूमि *स्त्री.* {सं.} तख्ते आदि पर मिट्टी डालकर बनाई भूमि।

कृदंत पुं. {सं.} संस्कृत व्याकरण में वह शब्द जो धातु में कृत्प्रत्यय लगाने से बने; क्रिया से बना हुआ विशेषण।

कृपण *वि.* {सं.} {*भाव.* कृपणता} कंजूस, सूम; नीच।

कृपा *स्त्री.* {सं.} बिना किसी प्रतिफल की आशा के होनेवाली हृदय की कोमल वृत्ति, उदारता, दया की भावना या प्रेरणा से दूसरे की भलाई, रक्षा, उन्नति आदि करने की वृत्ति, अनुग्रह, दया, मेहरबानी।

कृपाकर *वि.* {सं.} कृपा करनेवाला, कृपालु; *क्रि. वि.* {सं. + हिं.} कृपापूर्वक।

कृपाचार्य पुं. {सं.} कौरव-पांडवों के गुरु व महाभारत के योद्धा।

कृपाण पुं. {सं.} तलवार; कटार।

कृपापात्र पुं. {सं.} वह जो कृपा प्राप्त करने का अधिकारी हो।

कृपालु *वि.* {सं.} {*भाव.* कृपालुता} कृपा करनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कृमि पुं. {सं.} {वि. कृमिज} छोटा कीड़ा, कीट; हिरमजी कीड़ा या मिट्टी, किरमिजी; लाह, लाख।

कृमिनाशक वि. {सं.} कीड़े नष्ट करनेवाली दवा (पैस्टिसाइड)।

कृश वि. {सं.} {भाव. कृशता} दुबला-पतला, क्षीण; अल्प, सूक्ष्म; छोटा।

कृशानु पुं. {सं.} अग्नि।

कृषक पुं. {सं.} किसान, खेतिहर, काश्तकार; हल की फाल।

कृषाण पुं. {सं.} कृषक।

कृषि स्त्री. {सं.} {वि. कृष्य} खेतों में अनाज आदि बोने और उनमें पैदावार करने का काम, खेती (एग्रिकलचर)।

कृषिकर्म पुं. {सं.} खेती-बारी।

कृषित वि. {सं.} (खेत) जो जोता-बोया गया हो।

कृषिवर्ष पुं. {सं.} वर्ष का वह मान जो कृषि-संबंधी कार्यों और फसल के विचार से स्थिर होता है (एग्रिकल्चरल ईयर)।

कृष्ट वि. {सं.} जो जोता-बोया गया हो।

कृष्ण वि. {सं.} {स्त्री. कृष्णा} काले रंग का, श्याम, काला; नीला; बुरा और निंदनीय, जैसे कृष्ण-कर्म; पुं. यदुवंशी वसुदेव के पुत्र जो विष्णु के मुख्य अवतारों में हैं; अथर्ववेद के अंतर्गत एक उपनिषद्; वेदव्यास; अर्जुन; अँधेरा पक्ष।

कृष्णकर्मा वि. {सं.} पापी।

कृष्णचन्द्र पुं. {सं.} श्रीकृष्ण।

कृष्णमुख पुं. {सं.} काला मुँह; वि. कलमुँहा।

कृष्णसार पुं. {सं.} काले रंग का हिरन।

कृष्णसूची स्त्री. = काली सूची।

कृष्णा स्त्री. {सं.} द्रौपदी; दक्षिण देश की एक नदी; काली दाख; काली (देवी)।

कृष्णाभिसारिका स्त्री. {सं.} वह अभिसारिका नायिका जो अँधेरी रात में प्रेमी से मिलने के लिए उसके पास संकेत-स्थान में जाए।

कृष्णीकरण पुं. {सं.} बाल आदि काले करना।

कृष्य वि. {सं.} खेती करने योग्य (जमीन)।

केंचुआ पुं. {सं. किंचिलिक} सूत की तरह का एक बरसाती कीड़ा जो एक बित्ता लंबा होता है; केंचुए के आकार का एक सफेद कीड़ा जो पेट से मल के साथ निकलता है।

केंचुली स्त्री. {सं. कंचुक} सर्प आदि के शरीर पर का वह झिल्लीदारी चमड़ा जो हर साल गिर या उतर जाता है।

मुहा. केंचुली बदलना = पुराना रूप छोड़कर नया रूप धारण करना (व्यंग्य)।

केंद्र पुं. {सं.} किसी वृत्त या परिधि के ठीक बीचोंबीच का बिंदु, नाभि; वह मूल या मुख्य स्थान जहाँ से चारों ओर दूर-दूर तक फैले हुए कार्यों का संचालन या प्रबंध होता है; बीच या मध्य (सेंटर; उक्त सभी अर्थों में)।

केंद्रस्थान पुं. {सं.} जन्मकुंडली में 1, 4, 7, 10 व 12 वाँ स्थान।

केंद्रस्थ वि. {सं.} जन्मकुंडली में 1, 4, 7, 10 या बारहवें घर में स्थित ग्रह।

केंद्रित वि. {सं.} एक ही केंद्र में इकट्ठा किया हुआ, एक जगह लाया या आया हुआ।

केंद्रीकरण पुं. {सं.} चीजों, शक्तियों, आदि को किसी एक केन्द्र में लाकर इकट्ठा करना (सेंट्रलाइजेशन)।

केंद्रीभूत वि. {सं.} जो किसी एक स्थान पर एकत्र हो।

केंद्रीय वि. {सं.} केंद्र से संबंध रखनेवाला, केंद्र या मध्य भाग का; किसी राज्य या राष्ट्र के केन्द्र या राजधानी से संबंध रखनेवाला, जैसे केंद्रीय शासन (सेंट्रल)।

केंद्रीय सरकार पुं. {सं. + फा.} किसी राज्य या राष्ट्र की वह सर्वप्रधान सरकार या शासन-सत्ता जिसका प्रमुख स्थान उसकी राजधानी में होता है और जो वहाँ से सारे देश का शासन या व्यवस्था करती है (सेन्ट्रल गवर्नमेंट)।

केंद्रोन्मुख वि. {सं.} केन्द्र की ओर बढ़ता हुआ।

के *विभ., परसर्ग* {हिं. का} संबंधसूचक 'का' विभक्ति का वह रूप जो उसे संबंधवान में विभक्ति लगने से प्राप्त होता है, जैसे राम के घर पर; धारणकर्ता का सूचक परसर्ग, जैसे राम के लड़का है।

केउ *सर्व.* {हिं. के + उ} कोई।

केउर पुं. केयूर।

केक पुं. {अ.} मैदे, चीनी और अंडे के योग से बननेवाली मिठाई।

केका स्त्री. {सं.} मोर की बोली।

केकड़ा पुं. {सं. कर्कट} पानी में रहनेवाला एक छोटा जंतु जिसके आठ पैर और दो पंजे होते हैं।

केकड़े की चाल पुं. तिरछी चाल।

केकय पुं. {सं.} उत्तर भारत के एक प्रदेश का प्राचीन नाम; केकय देश का राजा या निवासी; दशरथ के श्वसुर और कैकेयी के पिता।

केकयी स्त्री. कैकेयी।

केकर पुं. {सं.} भैंगा, टेढ़ी नजरवाला।

केकी पुं. {सं. केकिन्} मोर, मयूर।

केत पुं. {सं.} घर, भवन, मकान; स्थान, जगह; ध्वजा; चिह्न; पुं. = केतकी (केवड़ा)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केतक[1] पुं. {सं.} केवड़ा।
केतक[2] *वि.* {सं. कति + एक} कितने; बहुत; बहुत-कुछ; कितने ही।
केतकी *स्त्री.* केवड़ा।
केतन पुं. {सं.} किसी को बुलाना, आह्वान, निमंत्रण; ध्वजा; पहचान का चिह्न; घर, भवन, मकान; स्थान, जगह।
केता *वि.* {*स्त्री.* केती} कितना।
केतिक *वि.* कितना, कितने।
केतु पुं. {सं.} ज्ञान; दीप्ति, चमक; ध्वजा, पताका; निशान, चिह्न; पुराणानुसार एक राक्षस का कबंध जो नौ ग्रहों में माना जाता है; एक प्रकार का तारा जिसके साथ प्रकाश की एक पूँछ-सी दिखाई देती है, पुच्छल तारा (कॉमेट)।
केतो *वि.* कितना।
केदार पुं. {सं.} खेत, क्यारी; उत्तराखण्ड में स्थित केदारनाथ का शिवलिंग।
केदारखण्ड पुं. {सं.} उत्तरी हिमालय का एक तीर्थ।
केन पुं. {सं.} एक प्रसिद्ध उपनिषद् का नाम।
केनना पुं. कीनना।
केना पुं. {हिं. कीनना} खरीदने की क्रिया या भाव, खरीद; पुं. पोई (वनस्पति)।
केम पुं. कदम्ब।
केमद्रुम पुं. {सं.} जन्मकुंडली में पड़नेवाला एक योग जो धन के नाश का सूचक होता है (ज्यो.)।
केयूर पुं. {सं.} बाँह में पहनने का आभूषण, अंगद, भुजबंद।
केर *प्रत्य.* {सं. कृत} {*स्त्री.* केरी} संबंधसूचक विभक्ति का (अवधी)।
केरल पुं. {सं.} (भारत) एक राज्य जो दक्षिण में है।
केरली *वि.* केरल-संबंधी।
केरा[1] पुं. केला।
केरा[2] *प्रत्य.* {*स्त्री.* केरी} केर।
केराव पुं. {सं. कलाय} मटर।
केरि *प्रत्य.* केरी; *स्त्री.* केलि।
केरी *स्त्री.* {देश.} आम का कच्चा और छोटा नया फल, अँबिया।
केरोसिन आयल पुं. {*अ.*} मिट्टी का तेल।
केल *स्त्री.* = केलि।
केला पुं. {सं. कदल, प्रा. कयल} एक प्रसिद्ध पेड़ जिसके पत्ते एक मीटर तक लंबे और फल लंबे, गूदेदार तथा मीठे होते हैं।
केलासन पुं. एक चमकदार वस्त्र जिसके जम्पर बनते हैं।
केलि *स्त्री.* {सं.} खेल, क्रीड़ा; रति, मैथुन, स्त्रीप्रसंग; हँसी-ठट्ठा, दिल्लगी।
केलिकला *स्त्री.* {सं.} स्त्रीप्रसंग, समागम; रति-कौशल।
केवट पुं. {सं. कैवत} एक जाति जो नाव खेने का काम करती है, मल्लाह; निषाद।
केवड़ई *वि.* {हिं. केवड़ा} जिसमें केवड़ा पड़ा हो; जैसे खेड़ी आदि; केवड़े के रंग का।
केवड़ा पुं. {सं. केविका} सफेद केतकी का पौधा; इस पौधे का प्रसिद्ध, सुगंधित, काँटेदार फूल।
केवल *वि.* {सं.} एकमात्र, अकेला; शुद्ध, पवित्र; उत्कृष्ट, उत्तम; जिसमें और किसी चीज या बात का मेल या योग न हो; अद्वैती; *क्रि. वि.* मात्र, सिर्फ; पुं. {*वि.* केवली} केवलज्ञानी।
केवलज्ञानी पुं. {सं.} वह साधु जिसे विशुद्ध ज्ञान प्राप्त हुआ हो; जैन तीर्थंकर।
केवली पुं. केवलज्ञानी।
केवाँच *स्त्री.* कौंछ।
केवा पुं. {सं. कुव = कमल} कमल; केतकी, केवड़ा।
केश पुं. {सं.} सिर के बाल; रश्मि, किरण; विश्व; विष्णु; सूर्य; पानी का स्वामी वरुण।
केशक पुं. {सं.} केशों का शृंगार करनेवाला।
केशकीट पुं. {सं.} जूँ।
केशट पुं. {सं.} विष्णु, बकरा, खटमल, जूँ।
केशपाश पुं. {सं.} बालों की लट।
केशर पुं. केसर।
केशरी पुं. केसरी।
केशलुंचन पुं. {सं.} बाल नोचना, जैन साधुओं का एक कर्म।
केशव पुं. {सं.} विष्णु; कृष्णचन्द्र; ब्रह्मा, परमेश्वर।
केशिनी *स्त्री.* {सं.} सुकेशी, सुंदर केशवाली।
केशी पुं. {सं. केशिन्} एक असुर जिसे कृष्ण ने मारा था; घोड़ा; वह घोड़े के रूप में गया था; *वि.* {*स्त्री.* केशिनी} किरण या प्रकाशवाला; अच्छे बालोंवाला।
केस पुं. = केश।
केसर पुं. {सं.} वे पतले सींके या सूत जो फूलों के बीच में होते हैं; ठंडे देशों में होनेवाला एक पौधा जिसके सींके उत्कृष्ट सुगंध के लिए प्रसिद्ध हैं, कुंकुम, जाफरान; घोड़े, सिंह आदि जानवरों की गरदन पर के बाल, अयाल; नागकेसर।
केसरिया *वि.* {सं. केसर + हिं. इया (प्रत्य.)} केसर के रंग का, पीला जर्द; जिसमें केसर मिला या पड़ा हो; केसर जैसा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केसरिया बाना पुं. केसरिया वस्त्र जिसे राजपूत युद्ध में पहनकर लड़ते थे; यह बलिदान का वेष माना जाता है।

केसरी पुं. {सं. केसरिन्} सिंह; घोड़ा; नागकेसर; हनुमान जी के पिता का नाम।

केसू पुं. टेसू।

केहरी पुं. केसरी।

केहा पुं. {सं. केका} मोर, मयूर; पुं. खेहा।

केहि *वि.* {हिं. के + हि} किसको, किसे (अवधी)।

केहूँ *क्रि. वि.* {सं. कथम्} किसी प्रकार, किसी भाँति, किसी तरह।

केहू *सर्व.* {हिं. के} कोई।

कैंचा[1] *वि.* {हिं. काना + ऐंचा = कनैंचा} ऐंचा-ताना, भैंगा।

कैंचा[2] पुं. {तु. कैंची} बड़ी कैंची।

कैंची *स्त्री.* {तु. कैंची} बाल, कपड़े आदि कतरने का एक प्रसिद्ध औजार, कतरनी; वे दो सीधी तीलियाँ या और वस्तुएँ जो कैंची की तरह एक दूसरी के ऊपर तिरछी रखी या जड़ी हों।

मुहा. कैंची की तरह जीभ चलना = बहुत बातून होना।

कैंड़ा पुं. {सं. कांड} वह यंत्र जिससे किसी चीज का नक्शा ठीक किया जाता है; नापने का पात्र, पैमाना, मान, नपना; कोई काम अच्छी तरह करने का ढंग, ढब; नवीन पेड़, विकासोन्मुख छोटा पेड़; महत्वपूर्ण।

मुहा. कैंड़े का आदमी होना = महत्वपूर्ण या उपयोगी होना।

कै[1] *वि.* {सं. कति, प्र. कह} कितना, किस कदर; कई अनेक; या, वा, अथवा।

कै[2] *स्त्री.* {अ. कै} वमन, उलटी।

कैकस पुं. {सं.} {*स्त्री.* कैकसी} राक्षस; हड्डियों का ढेर; हड्डी का।

कैकैयी *स्त्री.* {सं.} केकय गोत्र या देश में उत्पन्न स्त्री; राजा दशरथ की वह रानी जो भरत की माता थी तथा जिसने रामचन्द्र को वनवास दिलवाया था।

कैटभ पुं. {सं.} एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था; यह विष्णु के कान के मैल से पैदा हुआ था।

कैटभा *स्त्री.* {सं.} दुर्गा।

कैटभारि पुं. {सं.} विष्णु।

कैतव पुं. {सं.} धोखा, छल, कपट; जुआ, द्यूत; वैदूर्यमणि, लहसुनियाँ; *वि.* धोखेबाज, छली; धूर्त, मक्कार; जुआरी; धतूरा।

कैतवक पुं. {सं.} जुए में किया जानेवाला छल।

कैतवापह्नुति *स्त्री.* {सं.} वह अपह्नुति अलंकार, जिसमें वास्तविक विषय का गोपन या निषेध स्पष्ट रूप से न करके किसी बहाने से किया जाता है।

कैथ पुं. {सं. कपित्थ} एक कँटीला पेड़ जिसमें बेल के आकार के कसैले और बेस्वाद फल लगते हैं।

कैथी *स्त्री.* {हिं. कायस्थ} बिहार में प्रचलित एक पुरानी लिपि जिसमें शीर्ष रेखा नहीं होती; यह नागरी लिपि का ही एक भेद है।

कैद *स्त्री.* {अ.} {पुं. कैदी} बंधन; अवरोध; अपराधी को दंड देने के लिए बंद स्थान में रखना, कारावास।

मुहा. कैद काटना या भोगना = कैद में दिन बिताना।

वह शर्त या प्रतिबंध जिसके पूरे होने पर ही कोई बात या काम हो।

कैदक *स्त्री.* {अ.} कागज की वह पट्टी जिसमें बाँधकर कागज-पत्र रखे जाते हैं।

कैदखाना पुं. {फा.} वह स्थान जहाँ कैदी रखे जाते हैं, कारागार, बंदीगृह, जेलखाना।

कैद-तनहाई *स्त्री.* {अ. + फा.} वह कैद जिसमें कैदी को तंग कोठरी में अकेले रखा जाता है।

कैदी *वि.* {अ.} जो कैद में हो; पुं. वह जिसे कैद की सजा की गई हो, बंदी।

कैधों *यो.* {हिं. कै + धौं} या, अथवा।

कैफ पुं. {अ.} नशा, मस्ती, समाचार।

कैफियत *स्त्री.* {अ. कैफियत} विवरण, हाल, वर्णन।

मुहा. कैफियत तलब करना = कोई भूल या अनुचित कार्य होने पर उसके कारण आदि का विवरण माँगना या कारण पूछना; कोई विलक्षण या सुखद घटना; आनंद।

कैबा *स्त्री. क्रि. वि.* {हिं. कै = कई + बार} कितनी बार; कई बार।

कैर पुं. करील (पौधा); कच्ची अंबी।

कैरट पुं. {अ.} करात (तौल) सोने की चीज में विशुद्ध सोने का मान। (सोना 24 कैरट का माना जाता है, यदि कोई चीज 20 कैरट की कही जाए, तो इसका अर्थ यह होगा कि उसमें 20 हिस्सा सोना और 4 हिस्सा मेल है)।

कैरव पुं. {सं.} {*स्त्री.* कैरवी} कुमुद; सफेद कमल, रात को खिलनेवाला सफेद कमल; शत्रु।

कैरा पुं. {सं. कैरव} {*स्त्री.* कैरी} भूरा रंग; वह सफेदी जिसमें लाली की झलक या आभा हो; वह बैल जिसके चमड़े पर लाली झलकती हो,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोकन; *वि.* कैरे रंग का; जिसकी आँखें भूरी हों, कंजा।

कैल *पुं.* {सं.} क्रीड़ा, आमोद-प्रमोद, केलियों का समूह।

कैलास *पुं.* {सं.} हिमालय की एक चोटी जो तिब्बत में है और जिस पर शिव का निवास माना जाता है।

कैलासनाथ, कैलासपति *पुं.* {सं.} शिव।

कैलासवास *पुं.* {सं.} मरण, मृत्यु।

कैवर्त *पुं.* {सं.} केवट, मल्लाह।

कैवर्तक *पुं.* {सं.} कैवर्त।

कैवल्य *पुं.* {सं.} 'केवल' का भाव, शुद्धता।

कैवल्यज्ञान *पुं.* {सं.} संशय व भ्रम-रहित ज्ञान।

कैशिकी *स्त्री.* {सं.} नाटक की एक वृत्ति जिसमें नृत्य, गीत तथा भोग-विलास आदि के वर्णन होते हैं। यह करुण, हास्य और शृंगार रसों के लिए उपयुक्त होती है और इससे स्त्रियों के कार्यों या व्यापारों में मधुरता आती है।

कैस *पुं.* {अ.} मजनूँ का एक नाम।

कैसर *पुं.* {लै. सीजर} सम्राट; जर्मनी के सम्राट की उपाधि।

कैसा *वि.* {सं. कीदृश} {*स्त्री.* कैसी} किस प्रकार का, किसी ढंग का, किसी रूप या गुण का; (निषेधार्थक, प्रश्न में) किसी प्रकार का नहीं, जैसे जब काम ही नहीं किया, तब वेतन कैसा? सदृश, समान, जैसा।

कैसे *क्रि. वि.* {हिं. कैसा} किस प्रकार से, किस ढंग से; किसी लिए, क्यों।

कैसो *वि.* कैसा।

कैहूँ *क्रि. वि.* {हिं. कै = कैसे + हूँ (प्रत्य.)} किसी तरह, किसी प्रकार।

कोंचना *स.* {सं. कुंच्} नुकीली चीज चुभाना, गड़ाना, धँसाना; आँवला आदि को मुरब्बा आदि बनाने को छेदना।

कोंचा *पुं.* {हिं. कोंचना} बहेलियों का वह लंबा छड़ जिसके सिरे पर वे चिड़ियाँ फँसाने के लिए लासा लगाते हैं; ज्वार-बाजरे आदि की मोटी रोटी या लिट्टी; एक जल पक्षी; खोंचा; *पुं.* क्रौंच (पक्षी)।

कोंछना *स.* {हिं. काँछ} (स्त्रियों का) आँचल या कोने में कोई चीज बाँध या रखकर कमर में खोंसना।

कोंछी *स्त्री.* नीवी, साड़ी का किनारा जो ऊपर खोंसा जाता है।

कोंढ़ा *पुं.* {सं. कुंडल} {*स्त्री.* अल्पा. कोंढ़ी} धातु का वह छल्ला या कड़ा जिसमें कोई वस्तु अटकाई जाए।

कोंप *स्त्री.* कोंपल।

कोंपर *पुं.* {हिं. कोंपल} छोटा अधपका या डाल का पका हुआ आम।

कोंपल *स्त्री.* {सं. कोमल या कुपल्लव} नई और मुलायम पत्ती, अंकुर, कल्ला।

कोंवरा *वि.* {*स्त्री.* कोंवरी} कोमल।

कोंहड़ा *पुं.* कुम्हड़ा।

कोंहड़ौरी *स्त्री.* कुम्हड़ौरी; कोहड़े को मिलाकर बनी बड़िया।

कोंहार *पुं.* = कुम्हार।

को *परसर्ग.* {सं. कः} कर्म और संप्रदान का सूचक परसर्ग, जैसे 'बैल को हटाओ' में 'को'; संबंध सूचक जैसे—ताको या वाको; *सर्व.* = कौन।

कोआ *पुं.* {सं. कोश या हिं. कोसा} रेशम के कीड़े का कोश या घर, कुसियारी; टसर नामक रेशम का कीड़ा; महुए का पका फल, गोलैंदा; कटहल का पका बीज; आँख का डेला; आँख का कोना।

कोइरी *पुं.* काछी (जाति); *स्त्री.* कुसली।

कोइली *स्त्री.* {हिं. कोयल} काले दागवाला वह कच्चा आम जिसमें एक विशेष प्रकार की सुगंध होती है; आम की गुठली।

कोई *सर्व., वि.* {सं. कोपि} ऐसा (मनुष्य या पदार्थ) जो अज्ञात हो, न जाने कौन-सा।

पद *कोई न कोई* = एक नहीं तो दूसरा, यह न सही, तो वह।

बहुतों में से चाहे जो, अविशिष्ट वस्तु या व्यक्ति; एक भी; कुछ या थोड़ा।

क्रि. वि. लगभग, करीब-करीब, जैसे कोई सौ आदमी गए थे।

कोउक *स.* कोई, कोई भी।

कोउ (ऊ) *सर्व.* कोई; कोई भी।

कोक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* कोकी} चकवा पक्षी, चक्रवाक; मेंडक; जंगली खजूर; विष्णु।

कोकई *वि.* {तु. कोक} ऐसा नीला (रंग) जिसमें गुलाबी (रंग) की झलक हो।

कोकनद *पुं.* {सं.} लाल कमल।

कोकबंधु *पुं.* {सं.} सूर्य।

कोकशास्त्र *पुं.* {सं.} कोक देव का लिखा रति विज्ञान का ग्रंथ।

कोका *पुं.* {सं. कोक} {*स्त्री.* कोकी} चकवा; नाक में पहनी जानेवाली सोने की कील; *स्त्री.* कोकाबेली।

कोकाबेली *स्त्री.* {सं. कोकनद + हिं. बेल} नीली कुमुदिनी।

कोकामुख *पुं.* {सं.} एक प्राचीन तीर्थ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कोकिल, कोकिला *स्त्री.* {सं.} कोयल।
कोकिलकंठी *स्त्री.* {सं.} मधुर आवाजवाली स्त्री।
कोकिलाक्ष *पुं.* {सं.} तालमखाना।
कोकी *स्त्री.* {सं.} मादा चकवा।
कोकेन *स्त्री.* {अ.} कोका नामक वृक्ष की पत्तियों से बना एक मादक पदार्थ जिसे लगाने से शरीर सुन्न हो जाता है।
कोको *स्त्री.* {अनु.} एक कल्पित जीव का नाम, जिसका प्रयोग बच्चों को बहकाने के लिए होता है, जैसे जल्दी खा लो, नहीं तो कोको ले जाएगी; गुदा, योनि।
कोकोजेम *पुं.* मूंगफली के तेल से बना रासायनिक घी।
कोख *स्त्री.* {सं. कुक्षि} उदर, जठर, पेट; पेट के दोनों तरफ का स्थान; गर्भाशय।
मुहा. कोख ठंडी होना = स्त्री का संतान प्रसव करके सुखी होना; *कोख उजड़ जाना* = संतान मर जाना; गर्भ गिर जाना; *कोख बंद होना* = बंध्या होना; *कोख या कोख-माँग से ठंडी या भरी रहना* = बालक, या बालक और पति का सुख भोगते रहना (आसीस); *कोख बाँधना* = किसी नारी की संतान न होने देने के लिए जादू-टोना करना।
कोखजली *वि.* {*स्त्री.*} जिसकी संतान मर गई हो या हो-होकर मर जाती हो; एक गाली।
कोच *पुं.* {*अ.*} एक प्रकार की चौपहिया घोड़ा-गाड़ी; गद्देदार बढ़िया पलंग, बेंच या कुरसी।
कोचकी *पुं.* {?} एक रंग जो लाली लिए भूरा होता है; *स्त्री.* इस रंग की जनानी साड़ी।
कोचना *पुं.* {हिं. कोंचना} नुकीले काँटोंवाला एक यंत्र जिससे अचार-मुरब्बे आदि के लिए फल कोंचे जाते हैं; कोंचने की क्रिया; *स.* कोंचना।
कोच-बकस *पुं.* {*अ.* कोच + बॉक्स} घोड़ा-गाड़ी आदि में वह ऊँचा स्थान जहाँ हाँकनेवाला बैठता है।
कोचवान *पुं.* {*अ.* कोचमैन} घोड़ा-गाड़ी हाँकने वाला।
कोचीन *पुं.* दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध नगर।
कोजागर *पुं.* {सं.} आश्विन मास की पूर्णिमा, शरद पूनो (जागने की रात)।
कोट[1] *पुं.* {सं.} दुर्ग, गढ़, किला; शहर-पनाह।
कोट[2] *पुं.* {सं. कोटि} समूह, यूथ।
कोटपाल *पुं.* {सं.} दुर्ग की रक्षा करनेवाला, किलेदार; दुर्गपति।
कोटर *पुं.* {सं.} पेड़ का खोखला भाग; दुर्ग के आसपास का वह वन जो रक्षा के लिए लगाते हैं; बाणासुर की माता; नग्न स्त्री।
कोटा *पुं.* {*अ.*} संपूर्ण का वह भाग या अंश जो किसी के देने या पावने आदि के जिम्मे पड़े; किसी के लिए निश्चित किया हुआ हिस्सा जो उसे दिया जाए या उससे लिया जाए, यथांश।
कोटि *स्त्री.* {सं.} धनुष का सिरा; अस्त्र की नोक या धार; एक तरह की चीजों या व्यक्तियों की वह श्रेणी य विभाग जो क्रमिक उत्तमता या श्रेष्ठता के विचार से किया गया हो, वर्ग, श्रेणी, दर्जा (ग्रेड); किसी वाद-विवाद का पूर्व पक्ष; उत्कृष्टता, उत्तमता; सीमा; समूह, जत्था; *वि.* {स.} सौ लाख, करोड़।
कोटिच्युत *वि.* {सं.} जो अपनी कोटि (ग्रेड) से नीचेवाली कोटि में भेज दिया गया हो (डिग्रेडेड); श्रेणी से बाहर।
कोटिबद्ध *वि.* {सं.} जो कोटियों में विभक्त हो (ग्रेडेड)।
कोटिर *पुं.* {सं.} सींग के रूप में बँधा जटाजूट; इंद्र; नेवला।
कोटिशः *क्रि. वि.* {सं.} अनेक प्रकार से, बहुत तरह से; करोड़ों; दर्जे के अनुसार; *वि.* बहुत अधिक, अनेकानेक।
कोटीर *पुं.* {सं.} जटाओं का बना मुकुट।
कोटू *पुं.* कुटू।
कोठ *पुं.* {हिं. कोठी} वह स्थान जहाँ बहुत-से बाँस घेरा बाँधकर उगते हैं, बाँसों की कोठी।
कोठरी *स्त्री.* {हिं. कोठा} चारों ओर दीवारों से घिरा और छाया हुआ छोटा कमरा।
कोठा *पुं.* {सं. कोष्ठक} बड़ी कोठरी; भंडार; मकान में छत के ऊपर का कमरा, अटारी; उदर, पेट।
मुहा. कोठा बिगड़ना = अपच आदि रोग होना; *कोठा साफ होना* = साफ दस्त होना।
गर्भाशय; घिरा हुआ छोटा स्थान, खाना, घर।
कोठार *पुं.* {हिं. कोठा} भंडार।
कोठारी *पुं.* {हिं. कोठार + ई (प्रत्य.)} वह अधिकारी जो भंडार का प्रबंध करता हो, भंडारी।
कोठी[1] *स्त्री.* {हिं. कोठा} बड़ा और पक्का मकान, हवेली; मकान जिसमें रुपयों का लेन-देन या कोई कारोबार होता हो, बड़ी दुकान; आढ़त की दुकान; बंगला; अनाज रखने का कुठला; कुएँ की दीवार या पुल के खंभे में पानी के नीचे जमीन तक होनेवाली ईंट-पत्थर की जुड़ाई।
मुहा. कोठी चलना = व्यवसाय का फलना-फूलना।
कोठी[2] *स्त्री.* {सं. कोटि = समूह} एक जगह मंडलाकार उगे हुए बाँसों का समूह।
कोठीवाल *पुं.* {हिं. कोठी + वाला (प्रत्य.)} महाजन, साहूकार, बड़ा व्यापारी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोठीवाली *स्त्री.* {हिं. कोठी} कोठी चलाने का काम; महाजनों में प्रचलित एक प्रकार की लिपि।

कोठेवाली *स्त्री.* वेश्या।

मुहा. कोठे पर जाना = वेश्यागमन करना।

कोड़ना *स.* {सं. कुंड} खेत की मिट्टी खोदकर उलटना; खोदना।

कोड़ा *पुं.* {सं. कवर} वह बटे हुए सूत या चमड़े की डोर जिससे जानवरों को चलाने के समय मारते हैं, चाबुक; अपराधियों को जिससे पीटा जाता है, कशा; उत्तेजक मर्मस्पर्शी बात।

कोड़ाई *स्त्री.* {हिं. कोड़ना} कोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

कोड़ी *स्त्री.* {अ. स्कोर} एक परिमाण, बीस का समूह, बीसी।

कोढ़ *पुं.* {सं. कुष्ट} {*वि.* कोढ़ी} रक्त और त्वचा का एक प्रसिद्ध रोग जिसमें अंग गलने लगते हैं।

मुहा. कोढ़ चूना या टपकना = कोढ़ के कारण अंगों का गल-गलकर गिरना; *कोढ़ में खाज* = दुख पर दुख।

कोढ़ग्रस्त *वि.* {सं.} जिसे कोढ़ का रोग हो गया हो।

कोढ़ी *पुं.* {हिं. कोढ़} {*स्त्री.* कोढ़िन} वह जिसे कोढ़ रोग हुआ हो, कुष्ठी; कामचोर या आलसी व्यक्ति; मैला-कुचैला रहनेवाला।

कोण *पुं.* {सं.} भिन्न दिशाओं से आकार एक स्थान पर मिलनेवाली रेखाओं या धरातलों के बीच का स्थान, कोना (ऐंगिल); दो दिशाओं के बीच की दिशा, विदिशा, यथा अग्नि, नैऋत्य, ईशान और वायव्य; ढोल पीटने का डंडा; तलवार की धार।

कोणिक, कोणीय *वि.* {सं. कोणीय} कोण-संबंधी।

कोतल *पुं.* {फा.} बिना सवार का कसा हुआ सजा-सजाया घोड़ा; राजा की सवारी का घोड़ा।

कोतवाल *पुं.* {सं. कोटपाल} पुलिस का एक प्रधान कर्मचारी, पुलिस का इंस्पेक्टर; पंडितों की सभा, बिरादरी अथवा साधुओं की बैठक, भोजन आदि का निमंत्रण देनेवाला व्यक्ति।

कोतवाली *स्त्री.* {हिं. कोतवाल} कोतवाल का पद या काम; वह स्थान जहाँ पुलिस के कोतवाल का कार्यालय रहता है।

कोताह *वि.* {फा.} छोटा; कम, थोड़ा।

कोताही *स्त्री.* {फा.} त्रुटि, कमी; प्रमाद, लापरवाही।

कोथला *पुं.* बड़ा थैला।

कोथली *स्त्री.* छोटी थैली, गठरी।

कोदंड *पुं.* {सं.} धनुष, कमान; धनु राशि (ज्यो.)।

कोदंडधारी *वि.* {सं.} धनुष धारण करनेवाला; शिव।

कोद *स्त्री.* {सं. कोण} दिशा; ओर, तरफ; कोना।

कोदों *पुं.* {सं. कोद्रव} एक प्रसिद्ध मोटा अन्न जो प्रायः सारे भारत में होता है; मंडवा।

मुहा. कोदों देकर पढ़ना या सीखना = अधूरी या बेढंगी शिक्षा पाना; *छाती पर कोदों दलना* = किसी को दिखलाकर कोई ऐसा काम करना जो उसे बहुत बुरा लगे।

कोना *पुं.* {सं. कोण} किसी बिंदु पर मिलती हुई या एक दूसरी को काटती हुई दो दिशाओं के बीच का स्थान, अंतराल; वह स्थान जहाँ दो सिरे मिलते हों, अंतराल; एकांत स्थान।

मुहा. कोना झाँकना = भय या लज्जा से मुँह छिपाना, बगलें झाँकना; *कोने में बैठना* = एकांत में छिपना।

कोनियाँ *स्त्री.* {हिं. कोना} दीवार के कोने पर चीजें रखने की पटरी या पटिया; चित्र या मूर्ति आदि के चारों कोनों का अलंकरण।

कोप *पुं.* {सं.} {*वि.* कुपित} क्रोध।

कोपन *वि.* कोपी।

कोपना *अ.* {सं. कोप} क्रोध करनेवाली स्त्री।

कोपभवन *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ कोई मनुष्य रूठकर जा रहे।

कोपल *स्त्री.* कोंपल।

कोपित *वि.* {सं.} जिसे क्रोध दिलाया गया हो।

कोपी *वि.* {सं. कोपिन्} कोप करनेवाला, क्रोधी।

कोपीन *पुं.* लंगोट।

कोफता *पुं.* {फा.} कीमे या पिसी हुई सब्जी की तली हुई टिकिया; उक्त की सब्जी।

कोफ्त *स्त्री.* {फा.} मानसिक कष्ट, कुढ़न।

कोबिद *पुं.* {सं.} विद्वान, ज्ञाता।

कोमल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* कोमला} {*भाव.* कोमलता} मुलायम, नरम; जो क्रोधी या निर्दय स्वभाव का न हो; सुकुमार, नाजुक; अपरिपक्व, कच्चा; सुंदर मनोहर; वह स्वर जो साधारण से कुछ नीचा हो (संगीत)।

कोमलता *स्त्री.* {सं.} 'कोमल' होने का भाव, नरमी; मधुरता; नजाकत।

कोमलांग *वि.* {सं.} कोमल अँगोंवाला।

कोमला *स्त्री.* {सं.} वह वृत्ति या अक्षर-योजना जिसमें कोमल पद हों।

कोय *सर्व.* कोई।

कोयर *पुं.* {हिं. कोंपल} हरा चारा।

कोयल *स्त्री.* {सं. कोकिल} बहुत सुंदर बोलनेवाला काले रंग का एक पक्षी; पिक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोयला पुं. {सं. कोकिल = अंगारा} लकड़ी का बुझा हुआ काला टुकड़ा जो आग जलाने के काम आता है; इसी प्रकार का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ, पत्थर का कोयला।

कोया पुं. कोआ।

कोर *स्त्री.* {सं. कोण} किनारा, सिरा; कोना।

मुहा. कोर दबना = किसी प्रकार के दबाव या वश में होना; द्वेष, वैर, वैमनस्य; दोष, ऐब, खराबी; हथियार की धार, बाढ़; करोड़ों।

कोरक पुं. {सं.} कली; फूल या कली के आधार के रूप में हरी पत्तियाँ, फूल की कटोरी; कमल की नाल; शीतल चीनी।

कोर-कसर *स्त्री.* {हिं. कोर + फा. कसर} दोष और त्रुटि, ऐब और कमी।

कोरना *स.* {हिं. कौर + ना (प्रत्य.)} लकड़ी आदि में कोर या किनारा निकालना; गढ़-छीलकर ठीक करना; खोलना, खरोंचना; मूली, खीरा आदि को कद्दूकश में रगड़कर लच्छे निकालना।

कोरम पुं. {अ.} सभा, समिति आदि को आरंभ करने के लिए आवश्यक सदस्यों की उपस्थिति।

कोरमा पुं. {तु.} भुना हुआ मांस।

कोरा[1] *वि.* {सं. कर्बुर?} {*स्त्री.* कोरी} जो काम में न लाया गया हो, नया।

पद कोरी धार या बाढ़ = हथियार की वह धार जिस पर अभी सान चढ़ी हुई हो।

(कपड़ा या मिट्टी का बरतन) जो धोया न गया हो, जिस पर पानी न पड़ा हो; जिस पर कुछ लिखा या चित्रित न हो; जो रँगा न हो, सादा; वह कपड़ा जिस का कलफ न उतरा हो।

पद कोरा जवाब = स्पष्ट शब्दों में अस्वीकृति।

रहित, विहीन; दोषों आदि से रहित, बेदाग; मूर्ख या अपढ़; धनहीन, दरिद्र; *क्रि. वि.* केवल, सिर्फ।

कोरा[2] पुं. {सं. क्रोड़} गोद, उछंग।

कोरि *वि.* कोटि।

कोरित *वि.* अंकुर के रूप में फूटा, कद्दूकश आदि से छिला हुआ।

कोरिया पुं. एक जंगली जाति, एशिया का एक देश।

कोरी पुं. कोली।

कोरैया पुं. 'इंद्रजव'; कूड़ा।

कोर्ट-कचहरी *स्त्री.* = न्यायालय।

कोल पुं. {सं.} सूअर, शूकर; गोद, उत्संग; बेर, बदरी फल; काली मिर्च; एक जंगली जाति; चर्परा, काली मिर्च, सोंठ, पीपल, चित्रक ये सब कोल कहलाते हैं।

कोलक पुं. काली मिर्च, अखरोट, शीतल चीनी।

कोला *स्त्री.* {सं.} बेर।

कोलाहल पुं. {सं.} शोर, हौरा।

कोली[1] *स्त्री.* {सं. क्रोड} गोद।

कोली[2] पुं. {?} हिंदू जुलाहा, कोरी।

कोल्हू पुं. {हिं. कूल्हा ?} बीजों का तेल या गन्ने का रस निकालने का यंत्र।

पद कोल्हू का बैल = बहुत कठिन परिश्रम करनेवाला; *कोल्हू में डालकर पेरना* = बहुत अधिक कष्ट पहुँचाना।

कोविद *वि.* {सं.} {*स्त्री.* कोविदा} पंडित, विद्वान।

कोविदार पुं. {सं.} कचनार।

कोश पुं. {सं.} अंड, अंडा; अंडकोश; डिब्बा, गोलक; फूल की कली; मुँदे पुष्प का गर्भ; आवरण, गिलाफ; वेदांत के अनुसार अन्नमय आदि पाँच सम्पुट जो मनुष्यों के शरीर के अंदर होते हैं (सैल); संचित धन; वह ग्रंथ जिसमें किसी विशेष क्रम से बहुत से शब्द और उनके अलग-अलग अर्थ या पर्याय हों (डिक्शनरी, लेक्सिकन); रेशम का कोआ, कुसियारी; कोषाणु; तलवार की म्यान।

कोशकार पुं. {सं.} म्यान, तलवारों आदि को बनानेवाला; शब्दों का क्रमानुसार संग्रह करके उनके अर्थ बतानेवाला, शब्दकोश बनानेवाला (लेक्सिकोग्राफर); रेशम का कीड़ा।

कोशपाल पुं. {सं.} खजाने का रक्षक या अधिकारी।

कोशल पुं. {सं.} एक प्रदेश, यह विदर्भ की ओर महाकोशल तथा उत्तर में सरयू के तट के समीप है जो उत्तर कोशल कहलाता था।

कोशागार पुं. {सं.} वह स्थान जहाँ कोश या बहुत-सा धन रहता हो, खजाना (ट्रेज़री)।

कोशिका *स्त्री.* {सं.} जीवित पौधों या प्राणियों की सूक्ष्मतम इकाई; गिलांस।

कोशिश *स्त्री.* {फा.} प्रयत्न, चेष्टा।

कोष पुं. {सं.} कोश; खजाना; कोषाणु।

कोषाणु पुं. {सं.} बहुत ही सूक्ष्म कणों या छोटे-छोटे कोषों के रूप में वह मूल तत्व जिससे जीव-जंतुओं के शरीर और खनिज पदार्थ आदि बने होते हैं (सेल)।

कोषाध्यक्ष पुं. {सं.} वह जिसके पास कोष रहता हो, खजानची (ट्रेज़रर); वह जिसके पास आय-व्यय का हिसाब और रोकड़ आदि रहती हो, रोकड़िया।

कोष्ठ पुं. {सं.} पेट का भीतरी भाग; शरीर के अंदर का वह भाग जिसमें कोई विशेष शक्ति हो, जैसे पक्वाशय या आमाशय; कोठरी; वह स्थान जहाँ अन्न रखा जाता है, गोला; कोश, भंडार खजाना; प्राकार, शहर-पनाह; एक विशेष

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार की खुली अलमारी जिसमें कागज-पत्र अलग-अलग रखने के लिए कबूतर के दरबे की तरह के बहुत से छोटे-छोटे खाने बने रहते हैं (पिजन-होल); कोष्ठक।

कोष्ठक *पुं.* {सं.} दीवार, लकीर आदि से घिरा हुआ स्थान, खाना, कोठा; वह चक्र जिसमें बहुत-से खाने या घर हों, सारिणी; लिखने में एक प्रकार के चिह्नों का जोड़ा जिसके अंदर केवल व्याख्या या सूचना के रूप में कुछ लिखा जाता है, कंडिका, जैसे [ ], ( ) (ब्रैकेट)।

कोष्ठबद्धता *स्त्री.* {सं.} पेट में मल का रुकना, दस्त न होना, कब्जियत।

कोष्ठस्थ *वि.* {सं.} जो कोष्ठ में रहे।

कोष्ठागार *पुं.* {सं.} भंडार, खजाने के लिए नियत मकान या कक्ष।

कोष्ठाग्नि *स्त्री.* {सं.} पाचन शक्ति।

कोस *पुं.* {सं. क्रोश} दूरी की एक नाप जो आजकल लगभग तीन किलोमीटर की होती है।

मुहा. कालें कोसों = बहुत दूर; *कोसों दूर रहना* = बहुत दूर या अलग रहना।

कोसना *स.* {सं. क्रोशण} शाप के रूप में गालियाँ देना, बुरा मनाना।

मुहा. पानी पी-पीकर कोसना = बहुत अधिक कोसना।

कोसना-काटना *स.* शाप और गालियाँ देना।

कोसला *स्त्री.* अवध, कोसल देश की राजधानी।

कोसा *पुं.* {सं. कोश} एक प्रकार का रेशम; कवोष्ण, थोड़ा गर्म; *पुं.* कसोरा।

कोह[1] *पुं.* {फा.} पर्वत, पहाड़।

कोह[2] *पुं.* {सं. क्रोध} क्रोध, गुस्सा।

कोहनी *स्त्री.* {सं. कफोणि} बाँह के बीच का वह जोड़ जहाँ से हाथ और कलाई मुड़कर ऊपर उठती है।

कोहनूर *पुं.* {फा. कोह + *अ.* नूर} भारत का एक बड़ा प्रसिद्ध हीरा।

कोहबर *पुं.* {सं. कोष्ठवर} वह स्थान जहाँ विवाह के समय कुल-देवता स्थापित किए जाते हैं, ओवरी, नीचे की गर्भ-कोठरी।

कोहरा *पुं.* {सं. कुहेड़ी} ओले के वे सूक्ष्म कण जो वातावरण में भाप के रूप में जम जाते हैं।

कोहराम *पुं.* कुहराम।

कोहान *पुं.* {फा.} ऊँट की पीठ का कूबड़, डिल्ला।

कोहाना *अ.* {हिं. कोह} रूठना, मान करना; क्रोध करना।

कोहिस्तान *पुं.* {फा.} पहाड़ी प्रदेश।

कोही *वि.* {फा. कोह} पहाड़ का, पहाड़ी।

कौं *विभ.* = को (ब्रज)।

कौंछ *स्त्री.* {सं. कच्छ} एक बेल जिसकी पत्तियों से शरीर में खाज फैलती है, केवाँच।

कौंडिन्य *पुं.* {सं.} एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

कौंतल *वि.* {सं.} कुंतल देश का।

कौंतेय *पुं.* {सं.} कुंती का पुत्र; कर्ण, युधिष्ठिर, भीम या अर्जुन।

कौंध *स्त्री.* {हिं. कौंधना} कौंधने की क्रिया या भाव; बिजली की चमक; प्रकाश की चमक।

कौंधना *अ.* {सं. कनन = चमकना + अंध} बिजली का चमकना।

कौंसिल *स्त्री.* {*अ.*} विधान-परिषद; सभा।

कौ *क्रि. वि.* = कब, जैसे कौलौं = कब तक (ब्रज.)।

कौआ *पुं.* {सं. ककुत्, प्रा. कउअ = गले के अंदर की घाँटी} एक काला पक्षी जो अपने कर्कश स्वर, गंदी प्रकृति और चालाकी के लिए प्रसिद्ध है, काक।

मुहा. कौआ उड़ाना = कहीं बैठे हुए कौए को उड़ाकर किसी प्रिय के आने या न आने का शकुन देखना; *कौए उड़ाना* = व्यर्थ के और तुच्छ काम करना।

पद कौआ-गुहार या कौआ-रोर = बहुत अधिक बकबक; बहुत शोर।

बहुत धूर्त मनुष्य, काइयाँ; छाजन की वह लकड़ी जो बँडेरी के सहारे के लिए लगाई जाती है; गले के अंदर का लटकता हुआ मांस का टुकड़ा, घाँटी, लंगर; एक तरह की मछली।

कौआठोठी *स्त्री.* एक बेल जिसका फल कौए की चोंच की शक्ल का होता है, यह च्यवनप्राश आदि में काम आता है।

कौवारोरी *स्त्री.* कौओं की काँव-काँव।

कौटिल्य *पुं.* {सं.} कुटिलता, टेढ़ापन; कपट; चाणक्य का एक नाम; कूटनीति बरतना।

कौटुंबिक *वि.* {सं.} कुटुंब-संबंधी; गृहस्थ।

कौड़ा[1] *पुं.* {सं. कपर्दक} बड़ी कौड़ी।

कौड़ा[2] *पुं.* {सं. कंड} तापने के लिए जलाई हुई आग, अलाव।

कौड़ियाला *वि.* {हिं. कौड़ी} कौड़ी के रंग का, लीला और गुलाबी, कोकई; *पुं.* एक प्रकार का जहरीला साँप; एक पौधा जिसमें छोटे फूल लगते हैं; कौड़िल्ला पक्षी।

कौड़ी *स्त्री.* {सं. कपर्दिका} {*वि.* कौड़िया} घोंघे की तरह का एक कीड़ा जो अस्थिकोश में रहता है; उक्त अस्थिकोश जो सबसे कम मूल्य के सिक्के के रूप में चलता था, वराटिका।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. *कौड़ी काम का न होना* = निकम्मा या निकृष्ट होना; *कौड़ी के तीन होना* = बहुत सस्ता होना; तुच्छ होना; *कौड़ी-कौड़ी जोड़ना* = बहुत कष्ट से थोड़ा-थोड़ा करके धन इकट्ठा करना; *कौड़ी-कौड़ी का हिसाब करना* = एक-एक पैसा चुकाना।

पद *कौड़ी या दो कौड़ी का* = बहुत ही तुच्छ, हीन या निकृष्ट; *कौड़ी भर* = बहुत थोड़ा।

धन, द्रव्य; वह कर जो सम्राट अपने अधीनस्थ राजाओं से लेता था; जंघे, काँख या गले की गिल्टी को कभी-कभी सूज जाती है; कटार की नोक।

कौणप *पुं.* {सं.} लाश से संबद्ध; राक्षस; मुर्दखोर।

कौणिक *वि.* {सं.} जिसमें कोण या नोक हो, नुकीला (ऐंग्युलर)।

कौतिक, कौतिय *पुं.* कौतुक।

कौतुक *पुं.* {सं.} {*वि.* कौतुकी} कुतूहल; आश्चर्य, अचंभा; विनोद, दिल्लगी; आनंद, प्रसन्नता; खेल-तमाशा; केवल मनोविनोद के लिए किया जानेवाला काम या बात, क्रीड़ा, खेल।

कौतुकी *वि.* {सं. कौतुकिन्} कौतुक करनेवाला, विनोदशील; विवाह-संबंध स्थिर करानेवाला; खेल-तमाशा करनेवाला।

कौतूहल *पुं.* कुतूहल।

कौथ *स्त्री.* कौन सी तिथि?

कौध *स्त्री.* {हिं. कौन} कौन तिथि?; क्या संबंध? क्या वास्ता?

कौन *सर्व.* {सं. को जनः} एक प्रश्नवाचक सर्वनाम जो अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु की जिज्ञासा करता है।

मुहा. *कौन होता है?* = क्या अधिकार रखता है?

कौफीन *पुं.* {सं.} संन्यासियों आदि के पहनने की लँगोटी, चीर; कौपीन।

कौमार *पुं.* {सं.} **कौ** *पुं.* {*स्त्री.* कौमारी} कुमार होने की अवस्था या भाव; जन्म से 16 वर्ष तक की अवस्था; कुमार।

कौमारभृत्य *पुं.* कुमारभृत्य।

कौमारव्रत *पुं.* {सं.} सदा कुँआरे रहने का व्रत या संकल्प; कुमार कार्तिकेय द्वारा लिया संकल्प।

कौमार्य *पुं.* {सं.} 'कुमार' होने की अवस्था या भाव, कुमारता।

मुहा. *कौमार्य भंग करना* = किसी पुरुष का किसी कुमारी कन्या से अथवा किसी स्त्री का किसी कुँआरे पुरुष से पहले-पहल संभोग करना जिससे उसका कौमार्य नष्ट हो।

कौमी *वि.* {*अ.* कौम} कौम का, जातीय; राष्ट्र-संबंधी, राष्ट्रीय।

कौमुदी *स्त्री.* {सं.} चंद्रमा का प्रकाश, ज्योत्स्ना, चाँदनी; कार्तिकी पूर्णिमा।

कौमोदकी *स्त्री.* {सं.} विष्णु की गदा।

कौर *पुं.* {सं. कवल} उतना भोजन, जितना एक बार मुँह में डाला जाए, ग्रास, गस्सा, निवाला।

मुहा. *मुँह का कौर छीनना* = किसी को मिलता हुआ अंश छीन लेना।

कौरव *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* कौरवी} कुरु राजा की संतान, कुरु का वंशज; कुरु का; *वि.* कुरु-संबंधी।

कौरव्य *पुं.* {सं.} कौरव।

कौरा *पुं.* {सं. क्रोड़} क्रौड़, गोद; कुत्ते के लिए दिया खाना।

मुहा. *कौरे लगना* = किसी बात सुनने को छिपकर बैठना।

कौल[1] *पुं.* {*अ.*} वादा, प्रतिज्ञा।

कौल[2] *वि.* {सं.} उत्तम कुल या वंश का; वाममार्गी; कौल मत, वाममार्ग।

मुहा. *कौल का पक्का* = वायदा निभानेवाला।

कौला *पुं.* {हिं. कमला} कमला नींबू, नारंगी या संतरा।

कौलाचार *पुं.* {सं.} वाममार्ग *वि.* वाममार्ग का आचरण करनेवाला।

कौलिक *पुं.* {सं.} जुलाहा।

कौवाल *पुं.* {*अ.* कव्वाल} कव्वाली गानेवाला।

कौवाली *स्त्री.* {*अ.* कवाल = बाँसुरी} एक प्रकार का ईश्वरीय प्रेम-संबंधी मुसलमानी गीत, कव्वाली; इसकी धुन में गाई जानेवाली गजल।

कौशल *पुं.* {सं.} कोई काम बहुत अच्छी तरह से करने का ढंग, कुशलता, निपुणता (एफीशिएंसी); कोशल देश का निवासी; दक्षता।

कौशल-बाध *पुं.* {सं.} कार्यालयों की या राजकीय सेवा में उन्नति के मार्ग में वह बंधन जो अपना काम कुशलतापूर्वक करने पर दूर होता है (एफीशिएंसी बार)।

कौशल्या *स्त्री.* {सं.} राजा दशरथ की सबसे बड़ी स्त्री और रामचन्द्र की माता।

कौशांबी *स्त्री.* {सं.} कुश के पुत्र कौशाम्बी की राजधानी।

कौशिक *पुं.* {सं.} इंद्र; कुशिक राजा के पुत्र, गाधि; विश्वामित्र; नेवला, उल्लू।

कौशिकी *स्त्री.* {सं.} चंडिका; कैशिकी (वृत्ति); एक नदी।

कौषिक *वि.* {सं.} रेशम का, रेशमी; रेशम की तरह चिकना और कोमल।

कौषेय *वि.* {सं.} रेशम का, रेशमी; *पुं.* रेशमी पकड़ा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौस्तुभ *पुं.* {सं.} समुद्र से निकला एक रत्न जो विष्णु अपने वक्षस्थल पर पहने रहते हैं।

कौस्तुभधारी *पुं.* {सं.} विष्णु।

कौस्तुभवक्ष *पुं.* {सं.} विष्णु।

क्या *सर्व.* {सं. किम्} अभिप्रेत वस्तु की जिज्ञासा का सूचक शब्द, कौन-सी वस्तु या बात?

मुहा. क्या कहना या क्या खूब! = धन्य! वाह-वाह! बहुत अच्छा है! *क्या जाता है!* = क्या हानि है! कुछ हर्ज नहीं; *क्या जानें* = कुछ नहीं जानते, ज्ञात नहीं, मालूम नहीं; *क्या पड़ी है?* = क्या आवश्यकता है? कुछ जरूरत नहीं; *और क्या* = हाँ, ऐसा ही है।

क्रि. वि. क्यों? किसलिए?

निपा. वाक्यों को प्रश्नसूचक बनानेवाला शब्द।

क्यारी *स्त्री.* {सं. केदार} खेतों, बगीचों आदि में थोड़ी-थोड़ी दूर पर मेड़ों से बनाए हुए वे विभाग जिसमें पौधे बोए या लगाए जाते हैं; इसी प्रकार का वह विभाग जिसमें नमक बनाने के लिए समुद्र का पानी भरते हैं।

क्यूरी *स्त्री.* {अ.} मैडम क्यूरी जिसने रेडियम का आविष्कार किया; रेडियम की सक्रियता का एक माप।

क्यों *क्रि. वि.* {सं. किम्} (किसी बात के कारण की जिज्ञासा करने का शब्द) किस वास्ते? किस लिए?

यौ. क्योंकि = इसलिए कि; *क्योंकर* = किसी प्रकार? कैसे? *क्यों नहीं!* = ऐसा ही है, ठीक है; निस्संदेह, जरूर; कभी नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता; किस तरह? किस प्रकार?

क्रंदन *पुं.* {सं.} रोना, विलाप; चीख-पुकार करना।

क्रंदित *पुं.* {सं.} चीख-पुकार का शब्द।

क्रतु *पुं.* {सं.} निश्चय, संकल्प; इच्छा; विवेक; यज्ञ; कर्म; इंद्रिय।

क्रतु-पुरुष *पुं.* {सं.} विष्णु।

क्रम *पुं.* {सं.} पैर रखने या डग भरने की क्रिया; वस्तुओं या कार्यों के आगे-पीछे होने की योजना, सिलसिला, तरतीब (ऑर्डर); उचित रूप से काम करने का ढंग।

मुहा. क्रम-क्रम से = धीरे-धीरे; सिलसिलेवार; वेदपाठ की प्रणाली; वह काव्यालंकार जिसमें कही हुई बातों या वस्तुओं का क्रम से वर्णन किया जाता है; तैयारी; *पुं.* कर्म (जैसे मन-क्रम-बचन)।

क्रमक *वि.* {सं.} क्रम से बढ़नेवाला।

क्रमण *वि.* {सं.} आगे बढ़नेवाला, चलने वाला *पुं.* चलना, बढ़ना।

क्रम-परिवर्तन *पुं.* {सं.} क्रम में आगे से पीछे या पीछे से आगे होना, विपर्यय (ट्रांस्पोजीशन)।

क्रमबद्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* क्रमबद्धता} क्रम से लगा हुआ।

क्रमभंग *पुं.* {सं.} क्रम को तोड़ना, बारी का निर्वाह न करना।

क्रमशः *क्रि. वि.* {सं.} क्रम से, सिलसिलेवार; धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके।

क्रमसंख्या *स्त्री.* {सं.} एक क्रम से लिखे जानेवाले नामों, बातों या चीजों के पहले क्रम से लिखी जानेवाली संख्या (सीरियल नम्बर); अनुक्रम सूचक संख्या, क्रमांक।

क्रमागत *वि.* {सं.} जो क्रम-क्रम से आया या बना हो; जो क्रम से बराबर होता आया हो परंपरागत; जिसका क्रम न टूटे, धारावाहिक।

क्रमानुसार *क्रि. वि.* {सं.} क्रम के अनुसार, क्रम-क्रम से।

क्रमिक *वि.* {सं.} क्रमयुक्त; परंपरागत; क्रम-क्रम से होनेवाला, जैसे क्रमिक मान।

क्रमुक *पुं.* {सं.} सुपारी।

क्रमेलक *पुं.* {सं., युना. क्रमेलस} ऊँट।

क्रय *पुं.* {सं.} मोल लेना या खरीदना।

क्रयण *पुं.* {सं.} क्रय।

क्रयमूल्य *पुं.* {सं.} वह मूल्य जिस पर कोई चीज खरीदी गई हो (कॉस्ट प्राइस)।

क्रय-विक्रय *पुं.* चीजें खरीदने और बेचने का काम।

क्रयशक्ति *स्त्री.* {सं.} किसी समाज या राष्ट्र का वह आर्थिक बल या सामर्थ्य जिसमें वह जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यक वस्तुएँ खरीदता है (परचेजिंग पावर)।

क्रय्य *वि.* {सं.} खरीदने योग्य।

क्रयिक *वि.* {सं.} खरीदनेवाला।

क्रयी *पुं.* {सं. क्रयिन्} क्रयिक।

क्रव्य *पुं.* {सं.} कच्चा मांस।

क्रव्याद *पुं.* {सं.} राक्षस, कच्चा मांस खानेवाला।

क्रांत *वि.* {सं.} दबा या ढका हुआ; जिस पर आक्रमण हुआ हो; दबाया या दबोचा हुआ, अभिभूत; अपनी सीमा, मर्यादा आदि से आगे बढ़ा हुआ; लाँघा गया; बीता हुआ।

क्रांति *स्त्री.* {सं.} गति, चाल; क्रांतिवृत्त; वह बहुत भारी परिवर्तन या फेर-फार जिससे किसी स्थिति का स्वरूप बिल्कुल बदलकर और का और हो जाए, उलट-फेर (रिवोल्यूशन); ग्रहों का एकराशि से दूसरी राशि में जाना।

क्रांतिकारी *पुं.* {सं. क्रांतिकारिन्} {*स्त्री.* क्रांतिकारिणी} किसी प्रकार की क्रांति या बहुत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बड़ा और आमूल परिवर्तन करने या चाहनेवाला (रिवोल्यूशनरी); *वि.* क्रांति लानेवाला।

क्रांतिवादी (दिन्) *पुं.* {सं.} वह जो किसी अथवा सब बातों में क्रांति या बहुत बड़ा और आमूल परिवर्तन करने का पक्षपाती हो (रिवोल्यूशनिस्ट)।

क्रांतिवृत्त *पुं.* {सं.} वह वृत्त जिस पर सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ जान पड़ता है (एक्लिप्टिक); सूर्य की भ्रमण कक्षा।

क्रास *पुं.* {अ.} क्रूस; शूली का चिह्न।

क्रियमाण *वि.* {सं.} जो किया जा रहा हो; जो कार्यरूप में चल या हो रहा हो; *पुं.* इस समय किए जानेवाले कर्म जिनका फल आगे मिलेगा।

क्रिया *स्त्री.* {सं.} किसी काम का होना या किया जाना, कर्म; प्रयत्न, चेष्टा; हिलना-डोलना, गति, हरकत; कार्य का अनुष्ठान या आरंभ; व्याकरण में शब्द का वह भेद जिससे किसी व्यापार का होना या किया जाना सूचित होता है, जैसे खाना, तोड़ना आदि; स्नान, पूजन आदि नित्यकर्म; मृतक के श्राद्ध आदि कर्म।

क्रियाकर्म *पुं.* {सं.} मृतक की अंत्येष्टि।

क्रियाकलाप *पुं.* {सं.} किसी व्यक्ति संस्था के द्वारा किये जानेवाले काम।

क्रियार्थक संज्ञा *स्त्री.* {सं.} व्याकरण में वह संज्ञा जो किसी क्रिया या कार्य का भी अर्थ देती हो, जैसे करना, कहना, खाना, सोना आदि (वर्बल नाउन)।

क्रिया-विशेषण *पुं.* {सं.} व्याकरण में वह शब्द जिससे किसी विशेष प्रकार या रीति से कार्य होने का बोध होता है, जैसे ऐसे, जल्दी, अचानक आदि।

क्रियाशील *वि.* {सं.} {*भाव.* क्रियाशीलता} सक्रिय; सक्रियतापूर्वक काम करनेवाला, फुर्तीला।

क्रीट *पुं.* किरीट; यूरोप का एक उपद्वीप।

क्रीड़न *पुं.* {सं.} क्रीड़ा करना, खेलना-कूदना; क्रीड़ा, आमोद-प्रमोद।

क्रीड़ांगन *पुं.* {सं.} खेलने का अहाता।

क्रीड़ास्थल *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ किसी ने क्रीड़ाएँ की हों, जैसे मथुरा भगवान कृष्णचन्द्र का क्रीड़ास्थल है; वह स्थान जहाँ तरह-तरह के खेल होते हों, खेलने की जगह (प्ले-ग्राउंड)।

क्रीत *वि.* {सं.} मोल लिया हुआ, खरीदा हुआ; *पुं.* {सं.} किसी से मोल लेकर अपना बनाया हुआ पुत्र; मोल लिया हुआ दास, गुलाम।

क्रीतक *पुं.* {सं.} खरीदा हुआ पुत्र।

क्रुद्ध *वि.* {सं.} जिसे क्रोध हुआ हो, क्रोध से भरा हुआ।

क्रूर *वि.* {सं.} {*भाव.* क्रूरता} दूसरे को कष्ट पहुँचाकर संतुष्ट या सुखी होनेवाला, परपीड़क; निर्दय, निष्ठुर; कठिन; तीक्ष्ण।

क्रेता *पुं.* {सं.} कोई चीज मोल लेने या खरीदनेवाला, खरीदार (परचेज़र)।

क्रेय *वि.* {सं.} खरीदने योग्य, मोल की वस्तु।

क्रोड़ *पुं.* {सं.} आलिंगन के समय दोनों बाहों के बीच का भाग; गोद।

क्रोड़पत्र *पुं.* {सं.} वह अलग छपा हुआ पत्र जो समाचारपत्रों या मासिक पत्रों आदि के साथ बँटता है, अतिरिक्त पत्र (सप्लिमेंट)।

क्रोध *पुं.* {सं.} चित्त का वह उग्र भाव जो कष्ट या हानि पहुँचानेवाले अथवा अनुचित काम करनेवाले के प्रति होता है, कोप, रोष, गुस्सा।

क्रोधित *वि.* {सं. क्रोध} कुपित, क्रुद्ध, क्रोधी; जिसे क्रोध दिलाया हो।

क्रोधी *वि.* {सं. क्रोधिन्} {*स्त्री.* क्रोधिनी} स्वभाव से ही अधिक क्रोध करनेवाला, गुस्सावर।

क्रोशिया *पुं.* {अ. क्रॉचेट} लोहे आदि की वह तीली या सलाई जिसकी सहायता से गंजी, मोजे, रूमाल आदि केवल हाथों से (करघे पर नहीं) बुने जाते हैं।

क्रौंच *पुं.* {सं.} करौंकुल नामक पक्षी; हिमालय की एक चोटी; पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक; एक प्रकार का अस्त्र।

क्रौंचरन्ध्र *पुं.* {सं.} उत्तरी हिमालय में दर्रा नीतमानी की घाटी।

क्लांत *वि.* {सं.} थका हुआ; उदास, मुरझाया हुआ।

क्लांति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* क्लांत} थकावट; उदासी।

क्लासिकी *वि.* {अ. क्लासिक} शास्त्रीय; उच्चकोटि का; श्रेण्य साहित्य।

क्लिष्ट *वि.* {सं.} {*भाव.* क्लिष्टता} क्लेशयुक्त, दुख से पीड़ित, दुखी; सताया गया, कष्टों का मारा; बेमेल या पूर्वापर-विरुद्ध (बात); कठिन, मुश्किल; जिसका अर्थ कठिनता से निकले।

क्लिष्टत्व *पुं.* {सं.} क्लिष्ट का भाव, क्लिष्टता; काव्य का वह दोष जिससे उसका भाव जल्दी समझ में नहीं आता।

क्लीब *वि., पुं.* {सं.} {*भाव.* क्लीवता} नपुंसक, नामर्द; डरपोक।

क्लेद *पुं.* {सं.} गीलापन; पसीना।

क्लेदक *वि.* {सं.} भिगोनेवाला।

क्लेदन *पुं.* {सं.} भिगोना; पसीना देना।

क्लेश *पुं.* {सं.} दुख, कष्ट; व्यथा, वेदना; झगड़ा।

क्लेशकर *वि.* {सं.} क्लेश उत्पन्न करनेवाला, संतापदायक; सतानेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्लेशक्षम *वि.* {सं.} जो कष्ट पहुँचा सकता हो।
क्लोम *पुं.* {सं.} फेफड़ा।
क्वण *पुं.* {सं.} घुँघरू का शब्द; वीणा की झंकार।
क्वणित *वि.* {सं.} शब्द करता हुआ; गुंजार करता हुआ; बजता हुआ।
क्वथन *पुं.* {सं.} तरल पदार्थ को आग पर चढ़ाकर चलाना और गाढ़ा करना; काढ़ना, खौलाना।
क्वथनांक *पुं.* {सं.} वह तापमान जिस पर कोई द्रव खौलने लगता है।
क्वाँरा *पुं., वि.* क्वारा; अविवाहित।
क्वाथ *पुं.* {सं.} ओषधियों को पानी में उबालकर निकाला हुआ गाढ़ा रस, काढ़ा, जाशान्दा।
क्वारपन *पुं.* {हिं. क्वारा + पन (प्रत्य.)} क्वारा होने का भाव, कुमारता।
क्वारा *पुं., वि.* {सं. कुमार} {*स्त्री.* क्वारी} क्वारा।
क्विंटल *पुं.* {*अ.*} सौ किलो का परिमाप, तौल या बटखरा।
क्वैला *पुं.* कोयला।
क्ष क् और ष के संयोग से बना हुआ एक संयुक्त वर्णचिह्न।
क्षंतव्य *वि.* क्षम्य।
क्षण *पुं.* {सं.} {*वि.* क्षणिक} काल या समय का सबसे छोटा मान, पल का चौथाई भाग; काल; अवसर, मौका; चैन, आराम।
क्षणदा *स्त्री.* {सं.} रात; आराम देनेवाली।
क्षणभंगुर *वि.* {सं.} {*भाव.* क्षणभंगुरता} शीघ्र या क्षण भर में नष्ट हो जानेवाला; अनित्य।
क्षणिक *वि.* {सं.} {*भाव.* क्षणिकता} क्षणभर ठहरनेवाला; क्षणभंगुर, अनित्य; नाशवान।
क्षत *वि.* {सं.} जिसे क्षति या आघात पहुँचा हो, घायल।
क्षतचिह्न *पुं.* {सं.} घाव का निशान; कटा-फटा।
क्षतज *वि.* {सं.} क्षत से उत्पन्न, जैसे क्षतज ज्वर; *पुं.* रक्त, रुधिर, खून।
क्षतविक्षत *वि.* {सं.} जिसे बहुत चोटें लगी हों, लहू-लुहान।
क्षति *स्त्री.* {सं.} हानि, नुकसान; क्षय, नाश; वह घाटा या हानि जो किसी को किसी कार्य में हो (डैमेज); घाव।
क्षतिपूर्ति *स्त्री.* {सं.} किसी की क्षति या हानि पूरी करके उसे फिर ज्यों-का-त्यों करने का काम; उक्त काम के लिए या बदले में दिया जानेवाला धन (डैमेजेज़)।
क्षत्र *पुं.* {सं.} बल; राष्ट्र; धन; शरीर; जल; {*स्त्री.* क्षत्राणी} क्षत्रिय; राजपूत।
क्षत्रधर्म *पुं.* {सं.} क्षत्रियों के काम, यथा अध्ययन, दान, प्रजापालन आदि; रक्षा।
क्षत्रप *पुं.* {सं. या पुरानी फा.} ईरान के प्राचीन मांडलिक राजाओं की उपाधि, जो भारत के शक राजाओं ने धारण की थी।
क्षत्रपति *पुं.* {सं.} राजा।
क्षत्रबंधु *पुं.* {सं.} क्षत्रियकुल में उत्पन्न।
क्षत्रिय *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* क्षत्रिया, क्षत्राणी, *भाव.* क्षत्रियत्व} हिंदुओं के चार वर्णों में दूसरा, इस वर्ण के लोगों का काम देश का शासन और शत्रुओं से उसकी रक्षा करना था।
क्षपण *पुं.* {सं.} नष्ट करना, हानि पहुँचाना, बौद्ध भिक्षु।
क्षपणक *वि.* {सं.} निर्लज्ज; *पुं.* {सं.} नंगा रहनेवाला जैन यति; बौद्ध संन्यासी।
क्षपा *स्त्री.* {सं.} रात, रात्रि।
क्षपाकर *पुं.* {सं.} चंद्रमा।
क्षपित *वि.* {सं.} नष्ट किया गया, बिताया गया।
क्षम *वि.* {सं.} जिसमें कोई काम करने की शक्ति या योग्यता हो, योग्य, समर्थ (यौगिक में; जैसे कार्यक्षम); (कैपेबुल); *पुं.* {सं.} शक्ति, बल।
क्षमता *स्त्री.* {सं.} सामर्थ्य, शक्ति; (एबिलिटी); योग्यता, विशेषत: कोई काम करने या कुछ धारण करने की योग्यता या शक्ति (कैपेसिटी)।
क्षमा *स्त्री.* {सं.} चित्त की वह वृत्ति जिससे मनुष्य दूसरे द्वारा पहुँचाया हुआ कष्ट सह लेता है और उसके प्रतिकार या दंड की इच्छा नहीं करता, क्षांति, माफी; सहिष्णुता, सहनशीलता; पृथ्वी; दुर्गा; *वि.* समर्थ, योग्य।
क्षमातल *पुं.* {सं.} धरती।
क्षमापन *पुं.* {सं.} माफी दिलवाना, माफ करवाना।
क्षमा-याचना *स्त्री.* {सं.} यह कहना कि मुझे या हमें क्षमा कर दिया जाए, अपनी भूल या गलती के लिए दंड न देने के लिए कहना।
क्षमावान *वि.* क्षमा-शक्ति रखनेवाला।
क्षम्य *वि.* {सं.} क्षमा किए जाने के योग्य, जो क्षमा किया जा सके, क्षंतव्य।
क्षय *पुं.* {सं.} {*भाव.* क्षयित्व} {*वि.* क्षयिष्णु} धीरे-धीरे घटना या नष्ट होना, ह्रास; अपचय, नाश; क्षय नामक रोग; अंत, समाप्ति।
क्षयकाल *पुं.* {सं.} विनाश का समय; प्रलय।
क्षयतिथि *स्त्री.* {सं.} लुप्त मानी जानेवाली तिथि।
क्षयमास *पुं.* {सं.} बहुत दिनों पर पड़नेवाला एक चांद्र मास, जिसमें दो संक्रांतियाँ होती हैं और जिसके तीन मास पहले और तीन मास पीछे, एक-एक मलमास भी पड़ता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क्षयिष्णु *वि.* {सं.} नष्ट होना जिसका स्वभाव हो।

क्षयी'(यिन्) *वि.* {सं.} क्षीण होनेवाला; जिसे क्षय रोग हो; पुं. चंद्रमा।

क्षर *वि.* {सं.} नाशवान, नष्ट होनेवाला; टपकने वाला; घटनेवाला; पुं. {सं.} जल; मेघ; जीवात्मा; शरीर; अज्ञान।

क्षरण पुं. {सं.} रस-रसकर चूना, स्राव होना, रसना; क्षीण होना।

क्षांत *वि.* {सं.} क्षमा करनेवाला।

क्षात्र *वि.* {सं.} क्षत्रिय धर्म से संबंध रखनेवाला।

क्षाम *वि.* {सं.} {*स्त्री.* क्षामा} क्षीण; दुबला-पतला, कृश; कम।

क्षार पुं. {सं.} {*वि.* क्षारीय} दाहक या जारक ओषधियों अथवा खनिज पदार्थों से रासायनिक प्रक्रिया द्वारा तैयार की हुई राख का नमक जो ओषधि के रूप में काम आता है, खार (एलकली); शोरा; सोहागा; भस्म, राख; सोड़ा।

क्षारोद पुं. {सं.} वे वनस्पतियाँ, जीव-जंतुओं के अंग या दूसरे पदार्थ जिनमें क्षार का अंश हो। (अल्कलॉयड); खारे पानी वाला समुद्र।

क्षिति *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी; वासस्थान, जगह; क्षय।

क्षितिज पुं. {सं.} मंगल ग्रह; वृक्ष, पेड़; दृष्टि की पहुँच की अंतिम सीमा पर का वह गोलाकार स्थान जहाँ आकाश और पृथ्वी दोनों मिले हुए जान पड़ते हैं; (होराइजन); *वि.* भूमिज।

क्षितिपति पुं. {सं.} राजा।

क्षिप्त *वि.* {सं.} फेंका हुआ; छोड़ा या त्यागा-हुआ; तिरस्कृत, अपमानित; पतित; उचटा हुआ या चंचल (चित्त); पागल।

क्षिप्र *क्रि. वि.* {सं.} शीघ्र, जल्दी; तत्काल, तुरंत; फेंकनेवाला; *वि.* {सं.} तेज, जल्द, चंचल।

क्षीण *वि.* {सं.} {*भाव.* क्षीणता} दुबला-पतला; सूक्ष्म क्षयशील; घटा हुआ।

क्षीणक रोग पुं. {सं.} वह रोग जिसमें शरीर दिन पर दिन क्षीण होता या गलता जाता है (वेस्टिंग डिजीज़)।

क्षीबक *वि.* {सं.} पागल, उन्मत्त, घमंडी।

क्षीर पुं. {सं.} दूध; द्रव या तरल पदार्थ; जल, पानी; पेड़ों का रस या दूध; खीर।

क्षीरज *वि.* {सं.} दूध से उत्पन्न पदार्थ।

क्षीरधि पुं. {सं.} समुद्र; दूध का समुद्र।

क्षीरसार पुं. {सं.} मक्खन।

क्षीरपायी *वि.* {सं.} दूध पीनेवाला।

क्षीरमुख *वि.* {सं.} दुधमुँहा बच्चा।

क्षीरसागर पुं. {सं.} सात समुद्रों में से एक, जो दूध का माना जाता है।

क्षीरोद-तनय पुं. {सं.} चंद्रमा।

क्षीरोद-तनया *स्त्री.* {सं.} लक्ष्मी।

क्षुण्ण *वि.* {सं.} अभ्यस्त; टुकड़े-टुकड़े या चूर्ण किया हुआ; जिसका कोई अंश टूट या कट गया हो, खंडित।

क्षुद्र *वि.* {सं.} {*भाव.* क्षुद्रता} कृपण, कंजूस; अधम, नीच; छोटा या थोड़ा; दरिद्र; मामूली, नाचीज।

क्षुद्रक पुं. {सं.} एक प्राचीन प्रदेश; वहाँ की निवासी एक जाति।

क्षुद्र-प्रकृति *वि.* {सं.} ओछे या तुच्छ स्वभाववाला, नीच प्रकृति का।

क्षुद्राशय *वि.* {सं.} नीचे प्रकृतिवाला, कमीना, 'महाशय' का उलटा; ओछे विचारों का।

क्षुधा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* क्षुधित} भोजन करने की इच्छा, भूख; लालसा।

क्षुधानाश पुं. {सं.} भूख का न लगना।

क्षुधित *वि.* {सं.} भूखा।

क्षुप पुं. {सं.} छोटी डालियोंवाला छोटा वृक्ष, पौधा, झाड़ी।

क्षुब्ध *वि.* {सं.} जिसे क्षोभ हुआ हो; चंचल, चपल; व्याकुल, विकल; कुपित, कुद्ध।

क्षुर पुं. {सं.} छुरा; उस्तरा; पशुओं के पाँव का खुर।

क्षेत्र पुं. {सं.} खेत; भूमि का बड़ा या लंबा-चौड़ा टुकड़ा, भूखंड (ट्रैक्ट); प्रदेश; स्थान; रेखाओं या सीमा आदि से घिरा हुआ स्थान; प्राकृतिक, भौगोलिक, राजनीतिक आदि विचारों से कोई ऐसा भूभाग जिसमें कोई विशेषता हो अथवा लाई या मानी गई हो (ज़ोन); धार्मिक या पुण्यस्थान, तीर्थ; शरीर, पत्नी।

क्षेत्रगणित पुं. {सं.} क्षेत्रों को नापकर उनका क्षेत्रफल निकालने का गणित।

क्षेत्रज *वि.* {सं.} जो क्षेत्र में या क्षेत्र से उत्पन्न हो; किसी की पत्नी में दूसरे पुरुष से उत्पन्न संतान।

क्षेत्रज्ञ पुं. {सं.} जीवात्मा; परमात्मा; खेतिहर, किसान।

क्षेत्रपति पुं. {सं.} क्षेत्र या भूमि का वह स्वामी जिसे वह भूमि जोतने-बाने आदि का अधिकार होता है (लैण्ड-होल्डर)।

क्षेत्रपाल पुं. {सं.} खेत का रखवाला; किसी स्थान का प्रधान प्रबंधकर्ता, भूमियाँ; एक देवता।

क्षेत्रफल पुं. {सं.} किसी भूमि, स्थान या पदार्थ का वर्गात्मक परिमाण जो, उसकी लंबाई-चौड़ाई के घात या गुणन से जाना जाता है, वर्गफल (एरिया); भूमि का नाप।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्रमिति *स्त्री.* {सं.} गणित की वह शाखा या अंग जिसमें रेखाओं की लंबाई, धरातल का क्षेत्रफल और ठोस पदार्थों का घनफल निकालने के नियमों का विवेचन होता है (मेंसुरेशन)।

क्षेत्रिक *वि.* {सं.} क्षेत्र-संबंधी; खेत या कृषि से संबंध रखनेवाला (एग्रेरियन)।

क्षेत्रिय *पुं.* {सं.} हड्डियों में बैठा रोग, तपेदिक; मानसिक रोग, काम; शरीर के भीतर बैठा रोग; परपुरुष से संतान उत्पन्न करनेवाली स्त्री का पति।

क्षेत्री *पुं.* {सं. क्षेत्रिन्} खेत का मालिक; नियोग करनेवाली स्त्री का विवाहित पति; स्वामी।

क्षेपक *वि.* {सं.} फेंकनेवाला; ऊपर से बाद में मिलाया हुआ; *पुं.* ग्रंथों आदि में ऊपर से या बाद में मिलाया हुआ वह अंश जो उसके मूल कर्ता की रचना न हो; प्रक्षिप्त अंश।

क्षेपण *पुं.* {सं.} फेंकना; गिराना; चिताना, गुजारना; फटकारना; प्रहार करने का साधन।

क्षेमंकरी *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार की चील; एक देवी का नाम; एक चिड़िया जिसका दर्शन मृत्यु के समय शुभ माना जाता है।

क्षेम *पुं.* {सं.} संकट, हानि, घटी, नाश आदि से किसी वस्तु को बचाना, रक्षा, सुरक्षा (सेफ्टी); कुशल-मंगल; सुख, आनंद; मुक्ति।

क्षोणि *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी।

झोणिप *पुं.* {सं.} राजा।

क्षोभ *पुं.* {सं.} {*वि.* क्षुब्ध, क्षुभित} क्षुब्ध होने की अवस्था या भाव; खलबली; व्याकुलता; भय, डर; रंज, शोक; क्रोध; मन की अशांति।

क्षोभित *वि.* जिसे क्षोभ दिलाया गया हो।

क्षोभी *वि.* {सं. क्षोभिन्} क्षोभवाला।

क्षौम *पुं.* {सं.} रेशमी कपड़ा, वस्त्र।

क्षौर *पुं.* {सं.} हजामत।

ख

ख देवनागरी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अंतर्गत कवर्ग का दूसरा अक्षर, संज्ञा के रूप में, खाली स्थान, आकाश, स्वर्ग, बिंदु, ब्रह्म, शब्द आदि का वाचक।

खंख *वि.* {सं. कंक} रिक्त, खाली; उजाड़, वीरान; निर्धन, दरिद्र।

खँखरा *पुं.* {?} चावल आदि पकाने का ताँबे का बड़ा देग; झीना।

खंग *पुं.* {सं.} तलवार; गैंडा।

खंगना *अ.* {सं. क्षय} कम होना।

खँगहा *वि.* {हिं. खाँगा} खाँसी का रोगी।

खँगालना *स.* {सं. क्षालन} बरतन, कपड़ा आदि को पानी में डुबाकर निकालना जिससे साबुन का अंश निकल जाए; सबकुछ उड़ा ले जाना, एकदम खाली या रिक्त कर देना।

खँगैल *वि.* {हिं. खाँग} जिसे खाँग या दाँत निकले हों।

खँचना *अ.* {हिं.} खाँचना का अ.।

खँचाना *स.* खाँचना; खींचना।

खँचिया *स्त्री.* खाँची।

खंज[1] *पुं.* {सं.} एक रोग, जिसमें मनुष्य के पैर जकड़ जाते हैं; *वि.* लँगड़ा।

खंज[2] *पुं.* {सं. खंजन} खंजन पक्षी।

खंजन *पुं.* {सं.} एक प्रसिद्ध पक्षी जो शरत् और शीतकाल में दिखाई देता है, खँड़रिच, ममोला; खँडरिच के रंग का घोड़ा।

खंजन नयनी *स्त्री.* खंजन के से चंचल नेत्रवाली।

खंजर *पुं.* {फा.} कटार।

खंजरी *स्त्री.* {अ.} डफली की तरह का एक छोटा बाजा।

खंड *पुं.* {सं.} काटकर अलग किया हुआ भाग, टुकड़ा; कुछ विशेष कार्यों के लिए व्यवस्थित रूप से किया हुआ विभाग (डिवीजन); भारतीय आचार्यों के अनुसार पृथ्वी के नौ विभाग, जो इस प्रकार हैं, भरत, इलावृत, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रमा और कुश; नौ की संख्या का सूचक शब्द; खाँड़, कच्ची चीनी; विधि-विधान में कोई धारा या उपधारा का कोई स्वतंत्र अंश (क्लॉज); *वि.* खंडित; छोटा; *पुं.* खाँड़ा।

खंडक *वि.* {सं.} खंड या टुकड़े करनेवाला; किसी मत या सिद्धांत का खंडन करनेवाला; एक छंद; बगैर नाखून का।

खंडकाव्य *पुं.* {सं.} वह छोटा प्रबंधकाव्य जिसमें कोई पूरी घटना विस्तार से वर्णित हो।

खंडग्रहण *पुं.* {सं.} वह अवस्था जब ग्रहण सूर्य, चंद्रमा आदि के कुछ अंश पर ही लगता है।

खंडन *पुं.* {सं.} {*वि.* खंडनीय, खंडित} तोड़ने-फोड़ने या काटने का काम, छेदन; किसी की कही हुई कोई बात गलत ठहराना, काटना, 'मंडन' का उलटा (कंट्राडिक्शन); अपने ऊपर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगाए हुए अभियोग आदि अथवा ऐसी ही किसी और बात के संबंध में यह कहना कि यह झूठ है (रेफ्यूटेशन)।

खंडन खंड खाद्य पुं. {सं.} श्री हर्ष द्वारा रचित एक वेदांत का ग्रंथ।

खंडना स. {सं. खंडन} खंड या टुकड़े करना, तोड़ना; बात काटना।

खंडनी स्त्री. {सं. खंडन} मालगुजारी या कर की किस्त, खंडी।

खंडनीय वि. {सं.} खंडन के योग्य; जिसे काटना हो; जिसे गलत सिद्ध करना हो।

खंडपाल पुं. {सं.} हलवाई।

खँडपूरी स्त्री. {हिं. खाँड + पूरी} एक प्रकार की भरी हुई मीठी पूरी।

खंडप्रलय पुं. {सं.} वह प्रलय जो एक चतुर्युगी बीत जाने पर होता है।

खँडबरा पुं. {हिं. खाँड + बरा} मीठा बड़ा (पकवान); खँड़ौरा।

खँडरा पुं. {सं. खंड + हिं. बरा} बेसन का एक प्रकार का चौकोर बड़ा।

खँडरिच पुं. {सं. खंजरीट} खंजन।

खंडवर्षा स्त्री. {सं.} ऐसी वर्षा जो किसी नगर या स्थान के कुछ भागों में हो और कुछ में न हो।

खँडवानी स्त्री. {हिं. खाँड़ + पानी} पानी में खाँड घोलकर बनाया हुआ रस, शरबत; बरातियों को जलपान या शरबत भेजने की रसम।

खंडशः क्रि. {सं.} खंड-खंड करके; टुकड़ों के रूप में; अलग-अलग भाग करके।

खँडसाल स्त्री. {सं. खंड + शाल} खांड या शक्कर बनाने का कारखाना।

खँडहर पुं. {सं. खंड + हिं. धर} टूटे या गिरे हुए मकान का बचा हुआ अंश; उजड़े भवन या दुर्ग का ढाँचा, ध्वंसावशेष।

खंडिका स्त्री. {सं.} कुछ निश्चित समयों पर थोड़ा-थोड़ा करके दिया जानेवाला देन का अंश, किस्त (इंस्टॉलमेंट)।

खंडिकोपाध्याय पुं. {सं.} छात्रों को पढ़ाने वाला, स्कूल का शिक्षक।

खंडित वि. {सं.} टूटा हुआ, भग्न; जो पूरा न हो, अपूर्ण।

खंडिता स्त्री. {सं.} वह नायिका जिसका नायक रात को किसी अन्य स्त्री के पास रहकर सवेरे उसके पास आए।

खंडिनी स्त्री. {सं.} पृथ्वी।

खंडी स्त्री. {सं. खंडिका} राजकर; चौथ नाम का कर जो मरहठे वसूल करते थे।

खंता पुं. {सं. खनित्र} {स्त्री. अल्पा. खंती} कुदाल; फावड़ा; खोदा जानेवाला मिट्टी का गड्ढा, खोदने का साधन।

खंती स्त्री. {सं. खं + तृ (प्रत्य.)} जमीन खोदने का फावड़ा, कुदाल; एक जाति जो प्रायः जमीन खोदने का काम करती है, खाती।

खंदक स्त्री. खाई।

खंदा वि. {सं. खंतृ} खोदनेवाला।

खँधवाना स. {?} खाली कराना।

खंधा पुं. {सं. खंड} खंडिका, खंडी, किस्त।

खंधार[1] पुं. {सं. स्कंधावार} स्कंधावार, छावनी; डेरा, खेमा; एक छंद।

खँधार[2] पुं. {सं. खंडपाल} सामंत, सरदार।

खंभ पुं. खंभा।

खंभा पुं. {सं. स्कंभ या स्तंभ} {स्त्री. खँमिया} पत्थर, लकड़ी आदि का वह गोल चौकोर ऊँचा खड़ा टुकड़ा या इस आकार की कोई बनावट जिसके सहारे छत या कोई दूसरी ऊँची भारी चीज रहती है, स्तंभ (कॉलम); आश्रय; आधार; खंबा।

खंभात पुं. गुजरात का एक नगर, खंभात की खाड़ी।

खँभार पुं. {सं. क्षोभ, प्रा. खोभ} आशंका, भय; घबराहट, व्याकुलता; चिंता; शोक, रंज।

खँभिया स्त्री. {हिं. खंभ} छोटा खंभा।

खकखट पुं. पंजाब की प्राचीन योद्धा जाति; वि. ठोस, स्त्री. खड़िया।

खक्खा पुं. {अनु.} जोर की हँसी, अट्टहास; अनुभवी पुरुष; बड़ा हाथी।

खखार पुं. {अनु.} वह कफ जो खखारने से निकले।

खखारना अ. {अनु.} गले से शब्द करते हुए थूक या कफ बाहर करना।

खखेटना स. {हिं. खदेड़ना} दबाना; भगाना; घायल करना।

खग पुं. {सं.} पक्षी, चिड़िया; गंधर्व; बाण, तीर; ग्रह, तारे आदि; सूर्य; चंद्रमा; आकाशगामी।

खगति पुं. {सं.} वायु; ग्रह; पक्षी।

खगना अ. {हिं. खाँग = काँटा} धँसना; चित्त में बैठना या जमना; लग जाना, लीन होना; चिह्नित या अंकित होना; रुकना; कसा जाना; स. बाँधना; कसना।

खगनाथ पुं. {सं.} सूर्य; गरुड़; पक्षियों का नाथ।

खगपति वि. {सं.} पक्षीराज गरुड़।

खगहा पुं. {सं. खग} गरुड़; बाज; गैंडा।

खगेश पुं. {सं.} गरुड़।

खगोल पुं. {सं.} आकाशमंडल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खगोल विद्या *स्त्री.* {सं.} आकाश के ग्रहों, नक्षत्रों आदि की गतिविधि का विवेचन करनेवाली विद्या, ज्योतिषशास्त्र (एस्ट्रॉनोमी)।

खग्ग *पुं.* {सं. खड्ग} तलवार।

खग्रास *पुं.* {सं.} वह ग्रहण जिसमें सूर्य या चंद्र का पूरा बिंब ढक जाए।

खचक *वि.* {सं.} खचन या जड़ने का काम करनेवाला।

खचन *पुं.* {सं.} {*वि.* खचित} बाँधना, जड़ना; अंकित करना।

खचना *अ.* {सं. खचन} जड़ा जाना; अंकित या चित्रित होना; बहुत भरना; अटकना, फँसना; *स.* जड़ना; अंकित करना।

खचरा *वि.* {हिं. खच्चर} वर्णसंकर, दोगला; दुष्ट, पाजी; बकझक करनेवाला।

खचाखच *क्रि. वि.* {अनु.} कसकर भरा हुआ, ठसाठस।

खचित *वि.* {सं.} खींचा या अंकित किया हुआ, चित्रित या लिखित; जड़ा हुआ।

खचिया *स्त्री.* टोकरी, छोटी मंची।

खच्चर *पुं.* {देश.} गधे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न एक प्रसिद्ध पशु।

खज *वि.* खाद्य; आकाश में उत्पन्न; मथानी; कर्छी।

खजक *पुं.* {सं.} मथानी; कलछा।

खजला *पुं.* खाजा।

खजहजा *पुं.* {सं. खाद्यान्न} उत्तम खाद्य पदार्थ या खाने के फल।

खजा *स्त्री.* {सं.} मथानी, कलछी।

खजानची *पुं.* {फा. खज़ांची} खजाने का अधिकारी, कोषाध्यक्ष (ट्रेज़रर); वह जिसके पास रोकड़ और आय-व्यय का हिसाब रहता हो (कैशियर)।

खजाना *पुं.* {अ. खज़ानः} धन आदि का कोश; वह स्थान जहाँ किसी स्थान, विभाग या राज्य की आय का धन रहता है, और जहाँ से व्यय करने के लिए धन निकलता है (ट्रेज़री); वह स्थान जहाँ कोई वस्तु व्यय, उपयोग आदि के लिए संचित करके रखी जाती हो, जैसे लालटेन के नीचेवाला भाग, जिसमें तेल रहता हे, उसका 'खजाना' कहलाता है; राजस्व कर।

खजुराहो *पुं.* मध्यप्रदेश का एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल।

खजूर *स्त्री.* {सं. खर्जूर} ताड़ की तरह का एक पेड़, जिसके फल खाए जाते हैं; एक प्रकार की मिठाई।

खजूरी *वि.* {हिं. खजूर} खजूर-संबंधी, खजूर का; तीन लड़ों में गूँथा हुआ, जैसे खजूरी चोटी।

खट¹ *पुं.* {अनु.} अंधा कुआँ; बलगम; टकराने, टूटने या ठोंकने-पीटने का शब्द; झोपड़ी।

पद खट से = तुरंत, तत्काल।

खटक *स्त्री.* {अनु.} खटकने की क्रिया या भाव; मन में होनेवाली वेदना, खेद आदि; खटका, आशंका; शादियों का दलाल; कमानेवाला।

खटकना *अ.* {अनु.} 'खटखट' शब्द होना; रह-रहकर हलकी पीड़ा होना; ठीक न जान पड़ना, बुरा मालूम होना, खलना; झगड़ा होना; अनिष्ट की आशंका होना; मन में संभावना होना।

खटका *पुं.* {हिं. खटकना} बार-बार होनेवाला 'खटखट' शब्द; आपत्ति, अनिष्ट आदि का भय या डर, आशंका; चिंता, फिक्र; वह पेंच या कमारी, जिसके घुमाने, दबाने आदि से कोई काम होता हो, जैसे बंदूक का खटका, जिसे दबाते ही आवाज होती या गोली चलती है; पेड़ में बँधा हुआ वह बाँस, जिसे खड़खड़ाकर चिड़ियाँ उड़ाते हैं; संगीत में किसी स्वर के उच्चारण के बाद उससे कुछ ही नीचे के स्वर पर होते हुए फिर ऊँचे स्वर की ओर बढ़ाव जो बहुत कलापूर्ण और सुंदर होता है।

खटकाना *स.* {हिं.} 'खटकना' का स.; बजाना, खड़खड़ाना।

खटकीड़ा *पुं.* खटमल।

खटखट *स्त्री.* {अनु.} ठोंकने-पीटने आदि के शब्द का अनुकरण; झंझट; बखेड़ा; लड़ाई-झगड़ा।

खटखटाना *स.* {अनु.} 'खटखट' शब्द करना, खड़खड़ाना; दरवाजा पीटना, कुंडी बजाना।

खटना *स.* {?} धन कमाना; *अ.* काम में लगा रहना; परिश्रम करना।

खटपट *स्त्री.* {अनु.} अनबन, झगड़ा।

खटमल *पुं.* {हिं. खाट + मल = मैल} एक कीड़ा जो मैली खाटों, कुरसियों आदि में रहता है, खटकीड़ा।

खटमीठा *वि.* {हिं. खट्टा + मीठा} कुछ खट्टा और कुछ मीठा।

खटराग *पुं.* {सं. षट्राग} झगड़ा, बखेड़ा; झंझट का या; टेढ़ा-मेढ़ा काम; किसी बात की रट।

खटाई *स्त्री.* {हिं. खट्टा} खट्टापन, तुर्शी; खट्टी चीज।

मुहा. खटाई में डालना = अनिश्चित अवस्था में रखना, कुछ निर्णय न करना; *खटाई में पड़ना* = कार्य पूरा होने में बाधा खड़ी होना।

खटाना¹ *अ.* {सं. स्कब्ध} निर्वाह होना, निभना; ठहरना; जाँच में पूरा उतरना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खटाना² *स.* {हिं. खटना} परिश्रम कराना; आर्थिक लाभ कराना।

खटाव *पुं.* निर्वाह, गुजर-बसर।

खटास¹ *पुं.* {सं. खट्वास} गंधबिलाव।

खटास² *स्त्री.* {हिं. खट्टा} खट्टापन; संबंधों में कड़वापन।

खटिक *स्त्री.* {सं. खट्टिक} {*स्त्री.* खटकिन} तरकारी बेचनेवाली एक जाति।

खटिया *स्त्री.* खाट।

खटीक *पुं.* सूअर मारनेवाले कमाई; एक वृक्ष।

खटोला *पुं.* {हिं. खाट + ओला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* अल्पा. खटोली} छोटी खाट।

खट्टा *वि.* {सं. कटु} कच्चे आम, इमली आदि के स्वाद का, तुर्श, अम्ल।

मुहा. जी खट्टा होना = चित्त विरक्त होना, मन फिर जाना।

पुं. नींबू की तरह का एक बहुत खट्टा फल, गलगल।

खट्टाश *पुं.* {सं.} गंध बिलाव।

खट्टू *पुं.* {हिं. खटना} कमानेवाला।

खड़ंजा *पुं.* {हिं. खड़ा + अंग} पक्का फर्श बनाने के लिए रोड़ी आदि बिछाने का सामान।

खड़खड़ाना *अ.* {अनु.} {*भाव.* खड़खड़ाहट} खड़खड़ शब्द होना; *स.* खड़खड़ शब्द उत्पन्न करना, जैसे किवाड़ खड़खड़ाना।

खड़खड़ाहट *स्त्री.* खड़खड़ का शब्द, पेड़ टूटने या वस्तुओं के गिरने की आवाज।

खड़खड़िया *स्त्री.* {अनु.} पालकी।

खड़ग *पुं.* खड्ग।

खड़गी *वि.* {सं. खड्गिन} जो तलवार लिए हो, तलवारवाला; गैंडा।

खड़बड़ाना *अ.* {अनु.} {*भाव.* खड़बड़, खड़बड़ी} विचलित होना, घबराना; सिलसिला टूटना; *स.* कुछ उलट-पुलटकर खड़बड़ शब्द करना; उलटफेर करना; घबरा देना।

खड़बड़ाहट *स्त्री.* स्थिति में उलटफेर, अस्त-व्यस्त होना।

खड़ा *वि.* {सं. खदति} ऊपर की ओर सीधा उठा हुआ, जैसे झंडा खड़ा करना; जो टाँगें सीधी करके उनके आधार पर शरीर ऊँचा किए हुए हो, दंडायमान; ठहरा या टिका हुआ, स्थिर; प्रस्तुत, तैयार; (घर, दीवार आदि) निर्मित, बना हुआ; जो अभी उखाड़ा या काटा न गया न हो, जैसे खड़ी फसल; समूचा।

मुहा. मकान खड़ा करना = मकान बनाना, झगड़ा खड़ा करना, विवाद उत्पन्न करना।

खड़ाका *पुं.* तमाशा, झंझट, खड़खड़ का शब्द।

खड़ाऊँ *स्त्री.* {सं. काष्ठ पादू} काठ के तल्ले का खुला जूता, पादुका; लकड़ी की बनी चट्टी।

खड़िया *स्त्री.* {सं. खटिका} एक प्रकार की सफेद मिट्टी।

खड़ी फसल *स्त्री.* {हिं. खड़ी + फसल} खेत की वह फसल या उपज जो तैयार तो हो गई हो, पर अभी खेत में से काटी न गई हो (स्टैण्डिंग क्रॉप)।

खड़ी बोली *स्त्री.* {हिं. खड़ी (खरी ?) + बोली} वर्तमान हिन्दी का वह पूर्व रूप जिसमें संस्कृत के शब्द मिलाकर वर्तमान हिन्दी भाषा और फारसी तथा अरबी के शब्द मिलाकर उर्दू भाषा बनाई गई है, ठेठ हिन्दी।

खड़े-खड़े *क्रि. वि.* चटपट, बिना विश्राम किए या बातचीत में समय गँवाए; कुछ ही समय में।

खड्ग *पुं.* {सं.} एक प्रकार की तलवार, खाँड़ा; गैंड़ा।

खड्गकोश *पुं.* {सं.} म्यान जिसमें तलवार रहती है।

खड्गदान *पुं.* {सं.} युद्ध में खड्ग या तलवार चलाना।

खड्ड *पुं.* {सं. खात} गड्ढा।

खत¹ *पुं.* {सं. क्षत} घाव, जख्म।

खत² *पुं.* {अ.} पत्र, चिट्ठी; रेखा, लकीर; ललाट के ऊपरी बाल; *पुं.* खाता।

खतना *पुं.* {अ. खतन:} लिंग के अगले भाग का ऊपरी चमड़ा काटने की मुसलमानी रस्म, सुन्नत, मुसलमानी।

खतम *वि.* {अ. ख़त्म} (काम) जिसका अंत हो गया हो, समाप्त।

मुहा. खतम करना = मार डालना; *खतम हो जाना* = मिटना, मरना, बरबाद होना।

खतमा *पुं.* {अ. खुतब:} प्रशंसा, तारीफ; खुतबा।

खतरा *पुं.* {अ.} डर, भय; आशंका, खटका।

खतरेटा *पुं.* खत्री (उपेक्षासूचक)।

खता *स्त्री.* {अ.} कसूर, अपराध; धोखा; भूल, गलती।

खतावार *वि.* {अ.} दोषी, अपराधी।

खतियाना *स.* {अ. खत = लकीर} अलग-अलग खातों या मदों में हिसाब लिखना।

खतौनी *स्त्री.* {हिं. खतियाना} वह बही जिसमें सब मदों के अलग-अलग खाते हों, खाता; खतियाने का काम; भूमि की नापजोख, कब्जा जिसमें लिखा रहता है।

खत्ता *पुं.* {सं. खाता} {*स्त्री.* खत्ती} गड्ढा; अन्न रखने का स्थान; बखार; जिसमें पहले अन्न के व्यापारी अन्न रखते थे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खत्ती *स्त्री.* तख्ते आदि लगाकर बनाई बखार।

खत्म *वि.* खतम।

खत्री *पुं.* {सं. क्षत्रिय} {*स्त्री.* खत्रानि, खतरानी} पंजाब के क्षत्रियों की एक जाति; जो व्यापारी होती है।

खदान *स्त्री.* खान; खोदने का कार्य।

खदिर *पुं.* {सं.} खैर की लकड़ी जिससे कत्था निकलता है।

खदेड़ना *स.* {हिं. खनना} डरा-धमकाकर हटाना, दूर करना।

खद्दड़, खद्दर *पुं.* {?} हाथ के काते हुए सूत का हाथ से बुना कपड़ा, खादी; मोटा कपड़ा।

खद्योत *पुं.* {सं.} जुगनूँ।

खन *पुं.* = क्षण; = खंड।

खनक[1] *पुं.* {सं.} जमीन खोदनेवाला।

खनक[2] *स्त्री.* {अनु.} धातुखंडों के टकराने या बजने की क्रिया या शब्द।

खनकना *अ.* {अनु.} धातुखंडों के टकराने से खनखन शब्द होना।

खनन *पुं.* {सं.} खानों में से कोयला या खनिज पदार्थ निकालने की क्रिया या भाव।

खनि *स्त्री.* {सं.} खान।

खनिज *वि.* {सं.} खान में से खोदकर निकाला हुआ (मिनरल)।

खनिज विज्ञान *पुं.* {सं.} वह विज्ञान जिसमें खानों का पता लगाने, उनमें से चीजें निकालने और खनिज पदार्थों के स्वरूप आदि का विवेचन होता है।

खनित्र *पुं.* {सं.} खोदने का साधन गैंती, फावड़ा आदि।

खपची *स्त्री.* {तु. कमची} बाँस की पतली तीली, कमठी।

खपड़ा *पुं.* {सं. खर्पर} मिट्टी का पका टुकड़ा जो छप्पर छाने के काम आता है।

खपत *स्त्री.* {हिं. खपना} खपने की क्रिया या भाव; खर्च होना; समाई, गुंजाइश; माल की कटती या बिक्री।

खपना *अ.* {सं. क्षेपण} {*भाव.* खपत} काम में आना या लगना; गुजारा होना, निभना; नष्ट होना; बहुत परिश्रम करना।

खपरा *पुं.* = खपड़ा; ईंट की भाँति पका मिट्टी का छाजन।

खपरैल *स्त्री.* {हिं. खपड़ा} खपड़े से छाई हुई छाजन।

खपाना *स.* {सं. क्षेपण} किसी प्रकार काम में जाना या लगाना; नष्ट करना; समाप्त करना; तंग करना; खर्च करना।

खपची *स्त्री.* बाँस की पतली फट्टी जो पट्टी के नीचे बाँधी जाती है।

खपुष्प *पुं.* आकाशकुसुम; जो वस्तु होती ही न हो।

खप्पर *पुं.* {सं. खर्पर} तसले के आकार का कोई पात्र; भिक्षापात्र; मरे हुए प्राणी की खोपड़ी।

खफा *वि.* {अ.} {*भाव.* खफगी} अप्रसन्न, नाराज, रुष्ट; क्रुद्ध।

खबर *स्त्री.* {अ. खब्र} समाचार, वृत्तांत।

मुहा. खबर उड़ना = चर्चा फैलना, अफवाह होना।

ज्ञान, जानकारी; भेजा हुआ समाचार, सूचना; सुधि, होश।

खबरदार *वि.* {फा.} सावधान।

मुहा. खबरदार करना = सचेत करना, चेतावनी देना।

खबरदारी *स्त्री.* {फा.} सावधानी।

खबीस *वि., पुं.* {अ.} पुराना दुष्ट; भयंकर।

खब्त *पुं.* {अ.} {*वि.* खब्ती} सनक, झक्क; एक प्रकार का पागलपन।

खभरना *स.* {हिं. भरना} मिलाना; उथल-पुथल मचाना।

खम *पुं.* {फा.} टेढ़ापन, झुकाव।

मुहा. खम खाना = टेढ़ा होना, झुकना; *खम ठोंककर* = दृढ़तापूर्वक; *वि.* टेढ़ा।

खमीर *पुं.* {अ.} गूँधे हुए आटे या फल आदि का सड़ाव।

खमीरा *वि.* {अ.} {*स्त्री.* खमीरी} खमीर उठाकर बनाया या खमीर मिलाकर बनाया हुआ।

खय *स्त्री.* क्षय; घटना, मिटना।

खयना *अ.* = क्षीण होना; *स.* = क्षीण करना।

खयानत *स्त्री.* {अ.} धरोहर या अमानत में से कुछ दबा रखना; बेईमानी करना।

खयाल *पुं.* {अ. ख्याल} {*वि.* खयाली} मन की वृत्ति या प्रवृत्ति, ध्यान; स्मृति, याद।

मुहा. ख्याल से उतरना = याद न रहना।

मत, विचार; किसी राग या रागिनी के समस्त शास्त्रीय लक्षणों से युक्त कोई गेय पद या गीत जो गाए जाने की गति के विचार से तीन प्रकार का (विलंबित, मध्य और द्रुत) होता है।

खयाली *वि.* {अ.} केवल विचारों से संबद्ध।

मुहा. ख्याली पुलाव पकाना = विचारों में रमा रहना।

खर *पुं.* {सं.} गधा; खच्चर; तृण, तिनका; कठोर, जवान; *वि.* {सं.} कड़ा, सख्त; तेज, तीक्ष्ण; अशुभ, जैसे खर मास; तेज धारवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खरक पुं. {सं. खड्} चौपायों को रखने का घेरा, बाड़ा; पशुओं के चरने का स्थान, चारागाह; *स्त्री.* खटक।

खरका पुं. {हिं. खर} तिनका; पुं. खरक।

खरकना पुं. खड़कना।

खरखौकी *स्त्री.* {हिं. खर + खाना} आग।

खरग पुं. खड्ग।

खरगोश पुं. {फा.} चूहे की तरह का, पर उससे बड़ा, एक प्रसिद्ध जंतु, खरहा।

खरच पुं. खर्च।

खरचना *स.* {फा. खर्च} धन व्यय करना, खर्च करना; किसी वस्तु को व्यवहार या उपयोग में लाना।

खरची *स्त्री.* खर्च चलाने के लिए परिवारजनों को दी जानेवाली रकम।

खरतल *वि.* {हिं. खरा} खरा, स्पष्टवादी; शुद्ध हृदयवाला; साफ, स्पष्ट; प्रचंड, उग्र; जिसका फर्श कड़ा हो।

खरदिमाग *वि.* {फा. + अ.} {*भाव.* खरदिमागी} (ऐसा मूर्ख) जो बहुत समझाने पर भी न समझे और मूर्खता करता चले।

खरधार *वि.* {सं.} तेज धारवाला।

खरब पुं. {सं. खर्व} सौ अरब की संख्या।

खरबूजा पुं. {फा. खर्पज:} एक प्रसिद्ध गोल फल।

खरभर पुं. {अनु.} {*क्रि.* खभरना} शोरगुल; हलचल।

खरभरना *अ.* {हिं. खरभर} क्षुब्ध होना; घबराना।

खरमस्ती *स्त्री.* {फा.} हँसी में किया जानेवाला पाजीपन।

खरमास पुं. {सं.} पूस और चैत के महीने जिनमें विवाह आदि शुभ कार्य वर्जित हैं।

खरमिटाव पुं. जलपान।

खरल पुं. {सं. खल} पत्थर या लोहे की वह कूँड़ी जिसमें चीजें कूटी जाती हैं, खल।

खरसा पुं. {सं. षड्स} एक प्रकार का पकवान; खुजली।

खरसान *स्त्री.* {हिं. खर + सान} हथियार तेज करने की एक प्रकार का सान।

खरसैला *वि.* खरसा रोग से ग्रस्त पशु।

खरहरना *स.* {हिं. खरहरा} घोड़े का शरीर रगड़ना।

खरहरा पुं. {हिं. खरहरना} {*स्त्री.* अल्पा. खरहरी} अरहर के डंठलों का झाड़ू; झँखरा; घोड़े के रोएँ साफ करने की दाँतेदार कंघी या बुरुश।

खरहा पुं. खरगोश।

खरांशु पुं. {सं.} सूर्य।

खरा *वि.* {सं. खर = तीक्ष्ण} अच्छा बढ़िया; बिना मिलावट का, विशुद्ध; सेंककर करारा किया हुआ; जिसमें किसी प्रकार की बेईमानी या धोखा न हो; नगद (दाम)।

मुहा. रुपए खरे होना = रुपए मिलना या मिलने का निश्चय होना।

साफ कहनेवाला, स्पष्ट वक्ता।

खराई *स्त्री.* {देश.} सवेरे जलपान न करने के कारण तबीयत खराब होना।

खराद *स्त्री.* {फा. खर्राद} लकड़ी, धातु आदि की सतह चिकनी करने का एक यंत्र; खरादने का भाव या काम।

मुहा. खराद पर रखना या चढ़ाना = सुधारना।

खरादना *स.* {हिं. खराद} खराद पर चढ़ाकर साफ और सुडौल करना; काट-छाँटकर ठीक करना।

खरादी पुं. {हिं. खराद} खराद का काम करनेवाला, खरादनेवाला।

खरापन पुं. अच्छाई, शुद्धता।

खराबी *स्त्री.* विकृत होना, बिगाड़, दूषित होना।

खरायँध *स्त्री.* {सं. क्षार + गंध} मूत्र या क्षार की-सी दुर्गंध।

खरारि पुं. {सं.} रामचंद्र।

खरिया *स्त्री.* {हिं. खर + इया (प्रत्य.)} घास-भूसा बाँधने की जाली; साधुओं की झोली; जो कि कंधे के आगे पीछे लटकी रहती है; *स्त्री.* खड़िया।

खरियान (हान) पुं. खलियान।

खरियाना *स.* {हिं. खरिया = झोली} झोली या थैले में भरना; झोली में से गिराना या उलटना।

खरी *स्त्री.* खली।

खरी-खोटी *स्त्री.* {हिं. खरा + खोटा} कुछ बिगड़कर कही जानेवाली कटु बातें।

खरीता पुं. {अ.} {*स्त्री.* अल्पा. खरीती} थैली; जेब, खीसा; वह बड़ा लिफाफा जिसमें राजकीय अज्ञातपत्र आदि भेजे जाते हैं।

खरीद *स्त्री.* {फा.} मोल लेने की क्रिया या भाव, क्रय; खरीदी हुई चीज; क्रय करना।

खरीदार पुं. {फा.} मोल लेनेवाला, ग्राहक; चाहनेवाला।

खरीदारी *स्त्री.* खरीद करने का काम।

खरीफ *स्त्री.* {अ.} असाढ़ से अगहन तक में काटी जानेवाली फसल।

खरैंटी *स्त्री.* एक पौधा जिसकी जड़ व बीज दवा के काम आते हैं; बरियाए।

खरोंट पुं. {हिं. खरोंटना} खरोंटने से पड़नेवाला निशान; खरोंच।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खरोंटना *स.* {सं. क्षुरण} नाखून गड़ाकर शरीर में घाव करना; खरोचना।

खरोष्ट्री *स्त्री.* {सं.} एक प्राचीन लिपि जो दाहिने से बाएँ को लिखी जाती थी, गांधार लिपि।

खर्ग *पुं.* खड्ग।

खर्च *पुं.* {अ.} किसी काम में किसी वस्तु का लगना या लगाना, व्यय, खपत; वह धन जो किसी काम में लगाया जाए।

खर्चीला *वि.* {अ. खर्च + हिं. ईला (प्रत्य.)} बहुत खर्च करनेवाला।

खर्पर *पुं.* खप्पर; एक धातु; खपरैल; घड़े का टूटा हिस्सा।

खर्रा *पुं.* {अनु.} कोई लंबा कागज जिसपर कोई लेख या विवरण लिख हो (स्केल, रोल); एक रोग जिसमें पीठ पर फुंसियाँ निकलती हैं।

खर्राट *वि.* बूढ़ा अनुभवी व्यक्ति।

खर्राटा *पुं.* {अनु.} वह शब्द जो सोते समय किसी के नाक से निकलता है।

मुहा. खर्राटा भरना या लेना = बेसुध होकर सोना।

खर्व[1] *वि.* {सं.} जिसका अंग टूटा हो, जो अपूर्ण हो; छोटा, लघु; वामन, बौना; नाटा।

खर्व[2] *पुं.* {सं.} सौ अरब की संख्या, खरब।

खर्वट *पुं.* {सं.} पहाड़ के नीचे बसा छोटा गाँव।

खल[1] *वि.* {सं.} {*भाव.* खलता} क्रूर; नीच, अधम; दुष्ट।

खलक *पुं.* {अ.} सृष्टि के प्राणी या लोग; दुनिया, संसार; घड़ा।

खलकत *स्त्री.* {अ.} संसार के सब लोग; जनसमूह, भीड़।

खलड़ी *स्त्री.* खाल।

खलति *पुं.* गंजा, खल्वाट।

खलनायक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* खलनायिका} फिल्म, कहानी, उपन्यास आदि के नायक का प्रमुख प्रतिद्वंद्वी; वह व्यक्ति जो दुष्टों का नेता हो।

खलबलाना *अ.* {हिं. खलबल} खलबल शब्द करना; खौलना; हिलना-डोलना; *स.* खलबली मचाना।

खलबली *स्त्री.* {हिं. खलबल} हलचल; घबराहट, व्याकुलता; अशांति।

खलल *पुं.* {अ.} विघ्न, बाधा।

खलाना[1] *स.* {हिं. खाली} खाली करना; गड्ढा करना; तल नीचे धँसाना, पिचकाना।

मुहा. पेट खलाना = पेट के अंतर्गत मुहा.।

खलाना[2] *स.* {हिं. खाल} मरे हुए पशु की खाल या चमड़ा उतारना।

खलासी[1] *पुं.* {फा.} जहाज पर के छोटे-मोटे काम करनेवाला कर्मचारी।

खलासी[2] *स्त्री.* {हिं. खलास} मुक्ति, छुटकारा, छुट्टी।

खलित *वि.* {सं. स्खलित} चलायमान, चंचल; गिरा हुआ।

खलिन *पुं.* लगाम का काँटा।

खलियान, खलिहान *पुं.* {सं. खल + धान} वह स्थान जहाँ फसल काटकर रखी जाती है।

मुहा. खलियान करना = किसी चीज का ढेर लगाना।

खलियाना *स.* {हिं. खाली} खाली करना; *स.* खलाना।

खली *स्त्री.* {सं. खल} तेल निकल जाने पर तिलहन की बची हुई सीठी।

ख़लीज़ *स्त्री.* खाड़ी।

खलीता *पुं.* खरीता।

खलीफा *पुं.* {अ.} अध्यक्ष, अधिकारी; कोई बूढ़ा व्यक्ति; खुर्राट; दरजी; हज्जाम, नाई; टर्की में अतीत में प्रधान शासक, धर्मगुरु।

खल्लड़ *पुं.* {सं. खल्ल} चमड़े की मशक या थैला; चमड़ा; खरल; खाल।

खल्वाट *पुं.* {सं.} गंज रोग, जिसमें सिर के बाल झड़ जाते हैं; *वि.* जिसके बाल झड़ गए हों, गंजा।

खवा *पुं.* {सं. स्कंध} कंधा।

खवाना *स.* खिलाना।

खवारा *वि.* बुरा, खोटा।

ख़वास *पुं.* {अ. ख्वास} {*स्त्री.* खवासिन, *भाव.* खवासी} राजा या रईस का खास खिदमतगार; राजमहल का कर्मचारी।

खवासी *स्त्री.* {हिं. खवास} खवास का काम या पद।

खस[1] *पुं.* {सं.} गढ़वाल प्रदेश का प्राचीन नाम; इस प्रदेश में रहनेवाली एक प्राचीन जाति।

ख़स[2] *स्त्री.* {फा. खस} गाँडर नामक घास की प्रसिद्ध सुगंधित जड़।

खसकना *अ.* {अनु.} धीरे-धीरे किसी ओर बढ़ना, सरकना।

खसकाना *स.* {हिं. खसकना} धीरे-धीरे किसी ओर बढ़ाना, सरकाना; गुप्त रूप से कोई चीज हटाना।

खसखस *स्त्री.* {सं. खस्खस} पोस्ते का दाना।

खसखसा[1] *वि.* {अनु.} भुरभुरा।

खसखसा[2] *वि.* {हिं. खसखस} बहुत छोटा।

खसखाना *पुं.* {फा.} खस की टट्टियों से घिरा हुआ घर या कोठरी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खसबो *स्त्री.* खुशबू, सुगंध।

खसम *वि.* {सं.} आकाश के समान, जो अपने अस्तित्व को विलीन कर दे (कबीर)।

खसम *पुं.* {अ. ख़स्म} पति, खाविंद; स्वामी, मालिक।

खसरा[1] *पुं.* {अ.} पटवारी का वह कागज जिसमें खेत का नंबर, रकबा आदि लिखे रहते हैं; हिसाब का कच्चा चिट्ठा।

खसरा[2] *पुं.* {फा. खारिश} एक प्रकार की खुजली; बच्चों को निकलनेवाली छोटी माता।

खसिया *वि.* {अ. खस्सी} जिसके अंडकोश निकाल लिए गए हों, बधिया; नपुंसक, हिजड़ा।

खसी *पुं.* {अ. खस्सी} बधिया किया गया बकरा।

खसीस *वि.* {सं.} कंजूस, कृपण।

खसोट *स्त्री.* {हिं. खसोटना} उखाड़ने या नोचने की क्रिया; उचकने या छीनने की क्रिया, जैसे नोच-खसोट।

खसोटना *स.* {सं. कृष्ट} झटके से उखाड़ना, नोचना; छीनना।

खस्ता *वि.* {फा. ख़स्त:} बहुत थोड़े दबाव से टूट जानेवाला, भुरभुरा।

खस्वस्तिक *पुं.* {सं.} वह कल्पित बिंदु, जो सिर के ऊपर आकाश में माना जाता है, शीर्षबिंदु (ज़ेनिथ)।

खस्सी *पुं.* {अ.} बकरा।

खाँग[1] *पुं.* {सं. खड्ग} काँटा, कंटक; वह काँटा जो तीतर आदि पक्षियों के पैरों में निकलता है; गैंडे के मुँह पर का सींग; जंगली सूअर का बड़ा दाँत; खाँसी।

खाँग[2] *पुं.* {हिं. खाँचना} त्रुटि, कमी।

खाँगना *अ.* {?} कमी या कसर करना; खाँसना, लंगड़ा होना।

खाँच *स्त्री.* {हिं. खाँचना} संधि, जोड़; खींचकर बनाया हुआ चिह्न, निशान; *पुं.* खाँचा।

खाँचना *स.* {सं. कर्षण} {*वि.* खँचैया} अंकित करना, चिह्न बनाना; खींचना; जल्दी-जल्दी लिखना।

खाँचा *पुं.* {हिं. खाँचना} {*स्त्री.* खाँची} बड़ा टोकरा, झाबा।

खाँची *स्त्री.* खंचिया, कोटी टोकरी।

खाँड़ना *स.* {सं. खंड = टुकड़ा} कुचल-कुचलकर खाना, चबाना; खंडना।

खाँडर *पुं.* {सं. खंड} छोटा टुकड़ा; पकवान आदि के रूप में बने हुए अलग-अलग छोटे टुकड़े।

खांडव *पुं.* {सं.} वह वन जिसे अर्जुन ने जलाया था और वहाँ इंद्रप्रस्थ नगर बसाया गया।

खाँड़ा[1] *पुं.* {सं. खड्ग} खड्ग (अस्त्र)।

खाँड़ा[2] *पुं.* {सं. खंड} भाग, टुकड़ा।

खाँद *पुं.* जानवरों के पैरों के निशान।

खाँदना *स.* {सं. खादन} खाना।

खाँवाँ *पुं.* {सं. स्कंधक = कंधे के बराबर ऊँची दीवार} मिट्टी की चहारदीवारी; चौड़ी खाई।

खाँसी *स्त्री.* {सं. काश, कास} अधिक खाँसने का रोग, काश रोग; खाँसने का शब्द या भाव।

खाई *स्त्री.* {सं. खानि} वह छोटी नहर जो किले आदि के चारों ओर रक्षा के लिए खोदी जाती है, खंदक; वह गड्ढा जिसमें सैनिक बैठ तथा छिपकर बंदूक चलाते हैं; वर्षा के कारण मार्ग में बनी खंदक।

खाऊ *वि.* {हिं. खाना} बहुत खानेवाला, पेटू; दूसरे का धन या अंश हड़पनेवाला।

ख़ाक *स्त्री.* {फा. ख़ाक} मिट्टी; धूल; राख।

मुहा. ख़ाक उड़ाना = आवारागर्दी करना; *(किसी चीज पर) ख़ाक डालना* = (किसी चीज को) उपेक्ष्य समझकर छोड़ देना।

ख़ाकसार *वि.* {फा.} {*भाव.* खाकसारी} धूल में मिला हुआ; तुच्छ, अकिंचन (नम्रतासूचक); *पुं.* मुसलमानों का एक आधुनिक संघटन या दल जो अपने आपको लोकसेवक कहता है; इस दल का सदस्य।

खाका *पुं.* {फा. ख़ाक:} चित्र, नकशे आदि का डौल, ढाँचा; कच्चा चिट्ठा; मसौदा, आलेख (एक ड्राफ्ट)।

ख़ाकसी *स्त्री.* {फा.} एक वनस्पति का दाना जो दवा के काम आता है; खूबकलाँ।

खाकी *वि.* {फा. ख़ाकी} मिट्टी के रंग का, भूरा; बिना सींची हुई (भूमि); *स्त्री.* भूरे रंग के कपड़े की सैनिकों की वर्दी।

खाख *स्त्री.* राख, धूल।

खाखरा *पुं.* {?} पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा।

खाज *स्त्री.* {सं. खर्जु} खुजली।

मुहा. कोढ़ में खाज = दुख में दुख बढ़ानेवाली बात।

खाजा *पुं.* {सं. खाद्य, प्रा. खज्ज} भक्ष्य या खाद्य पदार्थ; एक प्रकार की मिठाई; एक वृक्ष।

खाजी *स्त्री.* खाजा।

खाट *स्त्री.* {सं. खट्वा} चारपाई।

मुहा. खाट तोड़ना = खाट पर पड़ा रहना; *खाट पकड़ना* = बीमार पड़ना; *खाट खड़ी करना* = किसी को मुश्किल में डालना।

खाड़ *पुं.* {सं. खात} गड्ढा, गर्त।

खाड़व *पुं.* एक राग, गुड़ व खट्टे को मिलाकर बना एक खाद्य पदार्थ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाड़ी *स्त्री.* {हिं. खाड़} समुद्र का वह छोटा भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो, उपसागर।

खात *पुं.* {सं.} खोदना, खोदाई; तालाब; कुआँ; गड्ढा; खाद के लिए कूड़ा-करकट इकट्ठा करने का गड्ढा; खाड़ी; खाई।

ख़ातमा *पुं.* {फा. खात्मः} अंत।

खाता[1] *पुं.* {हिं. खतियाना} किसी व्यक्ति, कार्य, विभाग आदि के लेन-देन या आय-व्यय का अलग लेखा (एकाउंट); भूमि-कर, कृषि आदि के क्षेत्रों या विभागों में प्रत्येक आसामी या क्षेत्रपति का वह अलग लेखा जिसमें उसके पास रहनेवाले खेतों आदि की नाप-जोख आदि का विवरण रहता है (होल्डिंग); खाता-बही।

खाता[2] *पुं.* {सं. खात} तालाब; अनाज भरकर रखने का खत्ता।

खाता-बही *स्त्री.* {हिं. खाता + बही} वह बही जिसमें लोगों या मदों के अलग-अलग खाते या हिसाब रखते हैं (लेज़र)।

ख़ातिर *स्त्री.* {अ.} आदर, सम्मान।

खातिरजमा *स्त्री.* {अ. + फा.} संतोष, इतमीनान, तसल्ली, यकीन।

खातिरदारी *स्त्री.* {फा.} आए हुए का सम्मान तथा सत्कार, आवभगत।

खाती[1] *स्त्री.* {सं. खात} खोदी हुई भूमि, गड्ढा; बढ़ई।

खाती[2] *पुं.* {सं. ख्या + तृ (प्रत्य.)} एक जाति जो प्रायः जमीन खोदने का काम करती है, खंती।

खातून *स्त्री.* {अ.} कुलीन महिला।

खातेदार *पुं.* {हिं. खाता + फा. दार} वह आसामी या खेतिहर जिसके नाम पर कोई जमीन जोतने-बोने के लिए चढ़ी हो (टेंयोर होल्डर)।

खाद[1] *स्त्री.* {सं. खात, प्रा. खाद} वे सड़े-गले पदार्थ जो खेत की उपज बढ़ाने के लिए उसमें डाले जाते हैं, पाँस।

खाद[2] *वि.* जो खाया जा सकता हो या खाने के योग्य हो, खाद्य।

खादन *पुं.* {सं.} {*वि.* खादित, खाद्य} भक्षण, भोजन, खाना।

खादर *पुं.* {हिं. खात} नीची जमीन, 'बाँगर' का उलटा, कछार।

खादित *वि.* {सं.} खाया हुआ।

खादिम *पुं.* {अ.} नौकर, सेवक।

खादिर *वि.* {सं.} खेर का, कत्था।

खादी *स्त्री.* खद्दर।

खाद्य *वि.* {सं.} खाने योग्य; *पुं.* खाने की वस्तु, भोजन।

खाद्यान्न *पुं.* {सं.} वे अन्न जो खाने के काम में आते हैं, जैसे गेहूँ, चना, चावल, मूँग आदि (फुड ग्रेंस)।

खाद्योज *पुं.* {सं.} खाद्य पदार्थों में पाए जानेवाले पोषक तत्व विटामिन, प्रोटीन आदि।

खाधु *पुं.* {सं. खाद्य} भोज्य पदार्थ।

खाधुक *वि.* {सं. खादक} बहुत खानेवाला।

खाधू *वि.* {सं.} खाधुक।

खान[1] *स्त्री.* {सं. खानिः} वह स्थान जहाँ से धातुएँ आदि खोदकर निकाली जाती हैं, आकर, खदान; वह स्थान जहाँ कोई वस्तु अधिकता से होती हो।

खान[2] *पुं.* {तु. ख़ान} सरदार; पठानों की उपाधि।

खानखाना *पुं.* मुसलमान नवाबों की उपाधि जैसे–अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना।

खानगी *वि.* {फा.} घर-संबंधी, घर-गृहस्थी का घरेलू; अपना, निज का; आपस का; *स्त्री.* कसब करनेवाली, कसबी।

ख़ानदान *पुं.* {फा.} वंश, कुल।

ख़ानदानी *वि.* {फा.} ऊँचे वंश या कुल का; वंश-परंपरागत, पैतृक।

खानपान *पुं.* {सं.} अन्न-पानी, आबदाना; खाना-पीना; भोजन सामग्री, खुराक; खाने-पीने का ढंग; साथ बैठकर खाने-पीने का संबंध या व्यवहार।

खानम *स्त्री.* {तु.} खान की पत्नी।

खाना[1] *स.* {सं. खादन} भोजन करना।

मुहा. खाना-कमाना = काम-धंधा करके जीविका उपार्जित करना; *खाना पका जाना या डालना* = खर्च कर डालना, उड़ा डालना; *खाना न पचना* = चैन न पड़ना, जी न मानना; हजम न होना। हिंसक जंतुओं का शिकार पकड़ना और भक्षण करना; विषैले कीड़ों का काटना, डसना; तंग करना, कष्ट देना; उड़ा देना, न रहने देना; बेईमानी से लेना, हड़प जाना; रिश्वत आदि लेना; (आघात, प्रहार आदि) सहना, बर्दाश्त करना; *पुं.* भोजन।

खाना[2] *पुं.* {फा.} घर, मकान; स्थान, जगह, जैसे डाकखाना, दवाखाना; किसी चीज के रखने का घर (केस); सारिणी, क्षेत्र घर आदि में बना हुआ विभाग, कोष्ठक।

खाना-तलाशी *स्त्री.* {फा.} कोई खोई या चुराई हुई चीज किसी के घर ढूँढ़ना।

खानापुरी, खानापूरी *स्त्री.* {फा. खाना + पूर = पूर्ण} किसी चक्र या सारिणी के कोठों में यथास्थान संख्या, विवरण आदि लिखना, नकशा भरना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खानाबदोश *वि.* {फा.} {*भाव.* खानाबदोशी} जिसका घरबार न हो, इधर-उधर घूमनेवाला।

खानि *स्त्री.* {सं. खानिः} खान; ओर, तरफ; प्रकार, तरह।

खानिक *वि.* {हिं. खान} खान से निकलनेवाला, खनिज (मिनरल)।

खापगा *स्त्री.* {सं.} आकाशगंगा।

खापट *स्त्री.* मिट्टी वाली लमीन।

खाम[1] *वि.* {सं. क्षाम} कटा-फटा या टूटा-फूटा, क्षीण; खंभा।

खाम[2] *वि.* {फा.} कच्चा; जिसे अनुभव न हो।

खामना *स.* {सं. स्कंभन} गीली मिट्टी आदि से पात्र का मुँह बंद करना; अंदर चिट्ठी रखकर लिफाफा बंद करना।

खामी *स्त्री.* {फा.} कमी, त्रुटि।

खामोश *वि.* {फा.} चुप, मौन।

खामोशी *स्त्री.* {फा.} मौन, चुप्पी।

खार[1] *पुं.* {सं. क्षार} सज्जी; नोना; रेह; धूल, राख; विशेष क्षार।

खार[2] *पुं.* {हिं. खाल = स्थान} बरसाती नाला, खाल (व्रज.)।

ख़ार[3] *पुं.* {फा. खार} काँटा, कंटक; खाँग; डाह, जलन; मन में दबा रहनेवाला द्वेष।

मुहा. खार खाना = मन में वैर रखना; द्वेषभाव से हानि पहुँचाने की घात में रहना।

खारना *स.* {हिं. खार} कुछ विशिष्ट खारे पदार्थों के घोल में कपड़ा या और कोई पदार्थ डालकर धोना।

खारा[1] *पुं.* {सं. क्षार} {*स्त्री.* खारी, *भाव.* खारापन} क्षार या नमक के स्वाद का; अरुचिकर, अप्रिय।

खारा[2] *पुं.* {सं. क्षारक} एक प्रकार का धारीदार कपड़ा; घास बाँधने का जाल; टोकरा, खाँचा; सरकंडे की बनी एक प्रकार की चौकी।

खारिज *वि.* {अ.} बाहर किया या निकाला हुआ, बहिष्कृत; भिन्न, अलग; (अभियोग) जिसकी सुनवाई करने से इंकार किया गया हो, या जो ठीक न माना गया हो (डिस्मिस्ड)।

खारी *स्त्री.* {हिं. खारा} एक प्रकार का क्षार या नमक; *वि.* क्षारयुक्त, जिसमें खार हो; एक पुराना तोल।

खाल[1] *स्त्री.* {सं. क्षाल} शरीर का ऊपरी आवरण, चमड़ा, त्वचा।

मुहा. खाल उधेड़ना या खींचना = बहुत मारना, पीटना या कड़ा दंड देना।

धौंकनी; मृत शरीर।

खाल[2] *स्त्री.* {सं. खात} नीची भूमि जिसमें बरसात का पानी जमा हो जाता हो; कोई गड्ढा या नीचा स्थान; खाड़ी; खाली जगह; बरसाती नाला, खार; पशुओं के चरने की जगह, मुख्यतः ऐसी जगह जिसके बीच में कोई छोटा ताल भी हो (कुमाऊँ) कश्मीर में इसी को 'मर्ग' कहते हैं; जमा पानी।

खालसा *वि.* {अ. खालिस = शुद्ध} जिसपर केवल एक का अधिकार हो; राज्य का, सरकारी; *पुं.* सिक्खों का एक संप्रदाय।

खालसा-पंथ *पुं.* {सं.} गुरु गोविन्द सिंह द्वारा प्रवर्तित सिक्खों का संप्रदाय।

खाला[1] *वि.* {हिं. खाल} {*स्त्री.* खाली} नीचा, निम्नभूमि जहाँ कभी नाला भी बहता हो।

खाला[2] *स्त्री.* {अ. खालः} मौसी, मासी।

खालिक *पुं.* {अ. ख़लिस} सृष्टिकर्ता; ख़लक को बनानेवाला, ईश्वर।

खालिस *वि.* {अ. ख़ालिस} जिसमें कोई दूसरी वस्तु न मिली हो, बेमेल, विशुद्ध।

खालिसाना *अ.* निःस्वार्थ भाव से।

खाली *वि.* {अ. खाली} जिसमें अंदर का स्थान, शून्य हो, भरा न हो, रीता, रिक्त; जिसमें कोई विशेष वस्तु न हो; रहित, विहीन; जिसे कुछ काम न हो; (वस्तु) जो व्यवहार में न हो, जिसका काम न हो; व्यर्थ, निष्फल, जैसे निशाना या बात खाली जाना।

खालू *पुं.* {हिं. खाला} खाला (मौसी) का पति, मौसा।

खाविंद *पुं.* {फा.} पति; मालिक।

खास *वि.* {अ.} विशेष, मुख्य, प्रधान, 'आम' का उलटा; निज का, आत्मीय; ठेंठ, विशुद्ध; *क्रि. वि.* विशेषतः, प्रधानतः।

खासा *पुं.* {सं.} राजा का भोजन, राजभोग; राजा की सवारी का घोड़ा या हाथी; एक प्रकार का सूती कपड़ा अच्छा, बढ़िया; सुडौल, सुंदर; भरपूर, पूरा।

खासियत *स्त्री.* {अ.} स्वभाव, प्रकृति; गुण; विशेषता; विशेष पहचान।

खिंचना *अ.* {सं. कर्षण} किसी ओर ताना या घसीटा जाना, तनना; आकृष्ट होना, प्रवृत्त होना; काम में आना, लगना, खपना; भभके से अरक, शराब आदि तैयार होना; प्रभाव, गुण आदि निकल जाना, जैसे दर्द खिंचना; अंकित या चित्रित होना; अनुराग या संबंध कम होना; माल कहीं जाना या खपना।

खिंचवाना *स.* {हिं.} 'खींचना' का प्रे.।

खिंचाव *पुं.* {हिं. खींचना} खींच; आकर्षण।

खिंडाना *स.* {सं. क्षिप्त} बिखरना।

खिचड़वार *पुं.* {हिं. खिचड़ी + वार} मकर संक्रांति।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिचड़ी *स्त्री.* {सं. कृसर} एक में मिला या पका हुआ चावल और दाल; घिचपिच।
मुहा. खिचड़ी पकाना = गुप्त रूप से सलाह करना; *ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना* = सबसे अलग होकर कोई कार्य करना या मत रखना।
विवाह के बाद की एक रस्म जिसमें वर और उसके भाई-बंधु लड़कीवाले के यहाँ जाकर कच्ची रसोई खाते हैं; एक ही में मिले हुए कई प्रकार के पदार्थ; *वि.* मिला-जुला, जैसे खिचड़ी बाल, खिचड़ी दाढ़ी।

खिजमत *स्त्री.* खिदमत।

खिज़र, खिज्र *पुं.* {अ.} मुसलमानों के एक पैगंबर।

खिझना *अ.* खीजना।

खिझौना *वि.* {हिं. खिझना} {*स्त्री.* खिझौनी} खिझाने या दिक करनेवाला; जिसे चिढ़ाने की आदत हो।

खिड़की *स्त्री.* {सं. खटक्किका} दीवार में छोटे दरवाजे की तरह की बनावट, दरीचा, झरोखा।

खिड़कीदार *वि.* खिड़कीवाला मकान।

खिड़की-बंद *वि.* {हिं. + फा.} (मकान) जो पूरा किराए पर लिया गया हो और जिसमें कोई दूसरा किराएदार न हो।

खिताब *पुं.* {अ.} पदवी, उपाधि।

खिताबी *वि.* {अ.} जिसे कोई खिताब न मिला हो।

खिदमत *स्त्री.* {फा.} सेवा, टहल।

खिदमती *वि.* {अ.} सेवादार, जिसमें सेवा की भावना हो; खिदमत के बदले मिली संपत्ति।

खिदमतगार *पुं.* {फा.} छोटी-मोटी सेवाएँ करनेवाला, सेवक, टहलुआ।

खिन *पुं.* = क्षण।

खिन्न *वि.* {सं.} {*भाव.* खिन्नता} उदासीन; चिंतित; अप्रसन्न; दुखी।

खिराज *पुं.* {अ.} राजस्व, कर।

खिरिना *स.* {अनु.} अनाज छानना; खुरचना।

खिरौरी *स्त्री.* {हिं. खैर = कत्था} खैर या कत्था पकाकर उसकी बनाई हुई टिकिया।

खिलअत *स्त्री.* {अ.} राजा या बड़े आदमी की ओर से मिलनेवाले सम्मानसूचक कपड़े; उपहार।

खिलकत *स्त्री.* {अ.} सृष्टि; भीड़।

खिलखिलाना *अ.* {अनु.} खिलखिल शब्द करके हँसना, जोर से हँसना।

खिलना *अ.* {सं. स्खलन} कली के फूल के रूप में होना, फूल विकसित होना; प्रसन्न होना; शोभित होना, अच्छा या सुंदर लगना; बीच से फटना, दरार पड़ना।

खिलवत *स्त्री.* {अ.} एकांत स्थान।

खिलवाड़ *पुं.* {हिं. खेल + वाड़} खेल, क्रीड़ा; मन-बहलाव, दिल्लगी; तुच्छ अथवा बहुत ही साधारण रूप से किया हुआ काम।

खिलाई[1] *स्त्री.* {हिं. खाना} खाने या खिलाने का काम, भाव या नेग।

खिलाई[2] *स्त्री.* {हिं. खेलना (खेल)} बच्चों को खेलानेवाली दाई।

खिलाड़ी *पुं.* {हिं. खेल} {*स्त्री.* खिलाड़िन्} खेलनेवाला; प्रतियोगिता आदि के खेलों में किसी पक्ष या दल की ओर से खेलने के लिए सम्मिलित होनेवाला (प्लेयर); कुश्ती लड़ने, पटा-बनेठी खेलने आदि का काम करनेवाला, बाजीगर।
मुहा. पक्का खिलाड़ी होना = बहुत होशियार या अनुभवी होना।

खिलाना[1] *स.* {हिं. खाना} भोजन कराना।

खिलाना[2] *स.* {हिं.} 'खेलना' का प्रे.।

खिलाफ[1] *वि.* {फा.} {*भाव.* खिलाफत} विरुद्ध, प्रतिकूल, उलटा।

खिलाफ[2] *परसर्ग* की तुलना में; के मुकाबले में, के सामने।

खिलाफ़त *स्त्री.* {अ.} खलीफा का पद; विद्रोह किसी वचन या प्रतिज्ञा के विरुद्ध आचरण।

खिलौना *पुं.* {हिं. खेल + औना (प्रत्य.)} बच्चों के खेलने की चीज, जैसे मूर्ति, लट्टू, चरखी आदि; खेलने का साधन।
मुहा. हाथ का खिलौना होना = दूसरे के बस में होकर काम करना।

खिल्ली *स्त्री.* {हिं. खिलना} ऐसी हँसी की बात जिससे किसी को नीचा देखना पड़े, दिल्लगी; *क्रि. प्र.* = उड़ाना।

खिल्य *पुं.* {सं.} खारा नमक; परिशिष्ट; सूक्ष्म।

खितना *अ.* = चमकना।

खिसकना *अ.* {?} बैठे-बैठे अपनी जगह से जरा आगे बढ़ना या इधर-उधर होना (जिससे दूसरे को बैठने की जगह मिल सके)।

खिसकाना *स.* {हिं. खिसकना} किसी वस्तु को जोर लगाकर अपने स्थान से कुछ हटाना-बढ़ाना।

खिसियाना *अ.* {हिं. खीस = दाँत} लज्जित होना, शरमाना; नाराज होना, बिगड़ना।

खींच *स्त्री.* {हिं. 'खींचना' का भाव} माँग; आकर्षण; बलात् निकट लाना।

खींचतान *स्त्री.* {हिं. खींचना + तानना} कुछ पाने के लिए विभिन्न पक्षों का उसे अपनी-अपनी ओर खींचना; जबरदस्ती किया जानेवाला (अर्थ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का) विस्तार; अपनी दृष्टि से बलात् निष्कर्ष निकालना; अपनी दृष्टि से बलात् अर्थ निकालना।

खींचना *स.* {हिं. खींचना + तानना} बलपूर्वक अपनी तरफ लाना।

मुहा. हाथ खींचना = देना या और कोई काम रोकना।

कोश आदि में से अस्त्र बाहर निकालना; सोखना, चूसना; भभके से अर्क, शराब आदि बनाना; किसी वस्तु का गुण या प्रभाव निकाल देना; लकीरों से आकार या रूप बनाना; वर्णन करना।

खीज *स्त्री.* {हिं. खीजना} खीजने का भाव; चिढ़; खिजानेवाली बात।

खीजना *अ.* {सं. खिद्यते, प्रा. खिज्जइ} दुखी होकर क्रोध करना, झुँझलाना, खिजलाना।

खीझ *स्त्री.* खीज।

खीन *वि.* {सं. क्षीण} क्षीण।

खीर *स्त्री.* {सं. क्षीर} दूध; दूध में पकाए हुए चावल।

खील *स्त्री.* {हिं. खिलना} भूना हुआ धान, लावा।

खीस[1] *स्त्री.* {फा. खीस = हल की फाल} नुकीला, लंबा दाँत, जैसे जंगली सूअर की खीस या खाँग; खुले हुए और बाहर से दिखाई देनेवाले दाँत।

मुहा. खीस या खीसें निकालना = कोई भूल हो जाने पर या असमर्थ होने पर भी निर्लज्जतापूर्वक हँसना।

लज्जा, शरम; गौ, भैंस आदि के बच्चा देने पर पहले-पहल कई दिनों तक निकलनेवाला दूध जो पीने के योग्य नहीं होता, पेउस।

खीस[2] *वि.* {सं. कृश} नष्ट, बरबाद।

खीस[3] *स्त्री.* {हिं. खीज} अप्रसन्नता, नाराजगी; क्रोध, गुस्सा; खीझना, क्षोभ।

खीसा *पुं.* {फा. कीसः} {*स्त्री.* अल्पा. खीसी} थैला; जेब।

खुँटाना *पुं.* तुड़वाना।

खुँडला *पुं.* झोपड़ी।

खुंदाना *स.* {सं. क्षुण्ण} (घोड़ा) कुदाना।

खुंभी *स्त्री.* {सं. कुंभ} कान में पहनने का एक गहना; बरसात में भूमि में उगने वाली अरबी की तरह की छतरी।

खुआर *वि.* = ख्वार।

खुआरी *स्त्री.* ख्वारी।

खुखड़ी *स्त्री.* {देश.} तकुए पर चढ़ाकर लपेटा हुआ सूत, कुकड़ी; नेपाली छुरा; खुखरी।

खुगीर *पुं.* {फा.} वह ऊनी कपड़ा जो घोड़ों के चारजामे के नीचे रखा जाता है, नमदा; चारजामा, जीन।

खुचरी *पुं.* बात-बात में खुचर-खुचर करनेवाला।

खुजलाना *स.* {सं. खर्जु} खुजली मिटाने के लिए नाखूनों से अंग रगड़ना, सहलाना; दूसरे से खुजवाना; *अ.* खुजली मालूम होना।

खुजली *स्त्री.* {हिं. खुजलाना} वह स्थिति जिसमें खुजलाने को जी चाहे, एक रोग जिसमें शरीर बहुत खुजलाता है; किसी अंग में खाज़ उठना।

खुजाना *स., अ.* खुजलाना।

खुटकना *स.* {सं. खुड्} ऊपर से तोड़ना या नोचना।

खुटका *पुं.* खुटक।

खुटचाल *स्त्री.* {हिं. खोटी + चाल} {*वि.* खुटचाली} दुष्टता, पाजीपन; खराब चाल-चलन।

खुटना *अ.* {सं. खुज्} खुलना; *अ.* समाप्त होना, खतम होना; कम होना, घटना।

खुटपन *पुं.* {हिं. खोटा} खोटापन; शरारतीपन।

खुटला *पुं.* {देश.} कान में पहनने का एक प्रकार का गहना।

खुट्टी *स्त्री.* {हिं. खुट से अनु.} रेवड़ी नाम की प्रसिद्ध छोटी मिठाई; कुट्टी, बच्चों का खेल में मित्रता तोड़ने का सूचक शब्द।

खुड्डी *स्त्री.* {हिं. गड्ढा} पाखाने में पैर रखने का पावदान; पाखाना फिरने का गड्ढा।

खुतकना *अ.* = खुअना (समाप्त होना)।

खुतबा *पुं.* {अ. खुतबः} तारीफ, प्रशंसा; नए राजा के गद्दी पर बैठने की घोषणा; इमाम द्वारा नमाज़ के बाद दिया गया धर्मोपदेश।

मुहा. किसी के नाम का खुतबा पढ़ा जाना = किसी के सिंहासनासीन होने की घोषणा होना।

खुद *क्रि. वि.* {फा.} स्वयं, आप।

खुदकाश्त *स्त्री.* {फा.} वह जमीन जिसका मालिक उसे स्वयं जोते।

खुदकुशी *स्त्री.* आत्महत्या (सुसाइड)।

खुदगरज *वि.* स्वार्थी।

खुदपरश्त *वि.* {अ.} स्वार्थी, जो अपने आपको ही सबकुछ समझे।

खुदबखुद *क्रि. वि.* {फा.} आप-से-आप।

खुदमुख्तार *वि.* {फा.} जिसपर किसी का शासन न हो, स्वतंत्र।

खुदरा *पुं.* {सं. क्षुद्र} छोटी और साधारण वस्तु; फुटकर चीजें; विक्रय का वह प्रकार जिसमें थोड़ी-थोड़ी करके या एक-एक करके चीजें बेची जाती हैं, 'थोक' का उलटा; *वि.* जो छोटे-छोटे टुकड़ों या अंशों के रूप में हो, जैसे खुदरा सौदा, खुदरा नोट; थोड़ा-थोड़ा करके (इकट्ठा नहीं) बिकनेवाला, 'थोक' का उलटा (रिटेल)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुदवाना *स.* {हिं.} खोदना का प्रे.।

खुदा *पुं.* {फा.} ईश्वर।

खुदाई[1] *स्त्री.* {हिं. खोदना} खोदे जाने की क्रिया, भाव या मजदूरी; जमीन की मिट्टी निकालकर उसमें गड्ढे आदि करने का काम, जैसे नींव की खुदाई, या सारनाथ, नालंदा आदि की खुदाई (एक्सकैशन)।

खुदाई[2] *वि.* {फा.} ईश्वरीय; ईश्वर का भाव; *स्त्री.* ईश्वरता; सृष्टि।

खुदाई खिदमतगार *पुं.* {फा.} विभाजन से पूर्व, पश्चिमी सीमाप्रांत का लाल कुर्तीदल; उक्त संस्था का सदस्य।

खुदापरस्त *वि.* {फा.} ईश्वर का भक्त।

खुदाबंद *पुं.* {फा.} ईश्वर; हुजूर, सरकार।

खुदाव *पुं.* {हिं. खोदना} खोदे जाने की किया या भाव; खोदकर बनाए हुए बेल-बूटे, नक्काशी।

खुदी *स्त्री.* {फा.} अपने आपको कुछ समझना, अहंभाव; अहंकार (इगो)।

खुद्दी *स्त्री.* {सं. क्षुद्र} अन्न के बहुत छोटे टुकड़े।

खुनस *स्त्री.* {सं. खिन्न -मनस्} {*वि.* खुनसी, *क्रि.* खुनसाना} क्रोध, गुस्सा; मन में रंजिश।

खुफिया *वि.* {फा.} गुप्त, छिपा हुआ।

खुफिया पुलिस *स्त्री.* {फा. खुफिया + अं. पुलीस} सरकारी जासूस, भेदिया।

खुबना *क्रि.* खुभना, चुभना।

खुबानी *स्त्री.* {?} एक प्रसिद्ध फल (एप्रिकॉट)।

खुभना *अ.* चुभना।

खुभाना *स.* {अनु.} कोई बड़ी चीज जोर से दबाते या गड़ाते हुए धँसाना, जैसे–बरछी खुभाना।

खुभी *स्त्री.* {हिं. खुभना} कान में पहनने का फूल।

खुमान *वि.* {सं. आयुष्मान्} बड़ी आयुवाला, दीर्घजीवी (आशीर्वाद); गुजरात व महाराष्ट्र में प्राचीन शासकों की उपाधि; तु. खुमान रासो।

खुमारी *स्त्री.* {अ. खुमार} मद, नशा; नशा उतरने के समय की या रातभर जागने से होनेवाली थकावट।

खुमी *स्त्री.* {अ. कुमः} एक उद्भिज्ज वर्ग जिसके अंतर्गत ढिंगरी, गुच्छी, कुकुरमुत्ता आदि वनस्पतियाँ हैं; खुंभी।

खुरंड *पुं.* {सं. क्षुर} सूखे घाव पर जमनेवाली पपड़ी।

खुर *पुं.* {सं. क्षुर} सींगवाले चौपायों के पैर का निचला भाग, जो बीच से फटा होता है; छुरा; नाखून।

खुरक *स्त्री.* = खुजली।

खुरखुर *स्त्री.* सोते समय साँस से हुई आवाज।

खुरखुरा *वि.* खुरदरा।

खुरखुराहट *स्त्री.* शरीर में खुजली उठना; नाक की घरघराहट।

खुरचन *स्त्री.* {हिं. खुरचना} खुरचकर निकाली हुई वस्तु; एक प्रकार की गाढ़ी रबड़ी।

खुरचना *अ.* {सं. क्षुरण} किसी जमी हुई वस्तु को छीलकर अलग करना।

खुरचनी *स्त्री.* {हिं. खुरचना} खुरचने का उपकरण।

खुरचाल *स्त्री.* खुटचाल।

खुरजी *स्त्री.* {फा.} घोड़े, बैल आदि पर सामान लादने का थैला।

खुरदरा *वि.* {हिं. खुर + दर (अनु.)} जिसका ऊपरी तल जगह-जगह ऊँचा-नीचा हो, जो चिकना न हो; चुभनेवाला।

खुरपका *पुं.* {हिं. खुर + पकना} खुर पकने का रोग।

खुरपा *पुं.* {सं. क्षुरप्र} {*स्त्री.* अल्पा. खुरपी} घास छीलने का एक औजार।

खुरमा *पुं.* {अ. खुर्मः} छुहारा; एक प्रकार की मिठाई।

खुराक *स्त्री.* {फा.} भोजन, खाना; (औषध की) मात्रा; आहार की मात्रा।

खुराकी *स्त्री.* {फा.} वह धन जो खुराक के लिए दिया जाए, भोजन-व्यय।

खुराफ़ात *स्त्री.* {अ.} बेहूदी और वाहियात बात; झगड़ा, बखेड़ा; शरारत।

खुरासान *पुं.* {फा.} {*वि.* खुरासानी} ईरान का एक नगर और उसके आसपास का प्रदेश।

खुरासानी *वि.* {फा.} खुरासन नगर या उसके आसपास के प्रदेश का; *पुं.* खुरासान का निवासी; *स्त्री.* खुरासान की भाषा; खुरासान की बनी, पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

खुरुक *स्त्री.* {हिं. खुटका} आशंका; खाज।

खुर्राट *वि.* {देश.} बूढ़ा; अनुभवी, तजरुबेकार; चालाक।

खुर्राटा *पुं.* सोते समय नाक से निकलने वाली आवाज।

खुलना *अ.* {सं. खुड्, खुल = भेदन} सामने का अवरोध या ऊपर का आवरण हटना, बंद न रहना, जैसे किवाड़ या संदूक खुलना; दरार होना, फटना; बाँधने या जोड़नेवाली वस्तु का हटना; प्रचलित होना, चलना, जैसे सड़क या नहर खुलना; नित्य का कार्य आरंभ होना; किसी सवारी का रवाना हो जाना; गुप्त या गूढ़ बात प्रकट होना।

पद खुले आम, खुले खजाने, खुले मैदान = सबके सामने, छिपाकर नहीं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने मन की बात या भेद कहना; घोषित होना; जैसे भाव खुलना, परीक्षा परिणाम खुलना आदि।

खुलवाना *पुं.* {हिं. 'खोलना' का प्रे.} किसी को कुछ खोलने में प्रवृत्त करना।

खुला *वि.* {हिं. खुलना} जो बँधा या ढका न हो; जिसमें कोई रुकावट न हो, अवरोधहीन; स्पष्ट, प्रकट, जाहिर; जो तंग न हो, विस्तृत, सावकाश।
मुहा. खुला हाथ होना = खर्चीला होना; *खुलादिल* = उदार स्वभाव का।

खुलाई *स्त्री.* {हिं. खोलना} खोलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

खुलासा[1] *पुं.* {अ.} सारांश।

खुलासा[2] *वि.* {हिं. खुलना} खुला हुआ; अवरोधरहित; साफ, स्पष्ट।

खुलेआम *क्रि. वि.* {हिं. खुलना} सबके सामने, सार्वजनिक रूप से।

खुल्ल *वि.* {सं.} छोटा, क्षुद्र शुल्ल।

खुल्लमखुल्ला *क्रि. वि.* {हिं. खुलना} प्रकट रूप से, खुलेआम।

खुश *वि.* {फा.} प्रसन्न, आनंदित; (यौगिक के आरंभ में) अच्छा, जैसे–खुशकिस्मत।

खुशक *वि.* {फा.} सूखा हुआ, जिसमें रस न हो; सूखी प्रकृति का।

खुशकिस्मत *वि.* {फा.} {*भाव.* खुशकिस्मती} भाग्यवान।

खुशखबरी *स्त्री.* {फा.} प्रसन्न करनेवाला या शुभ समाचार, अच्छी खबर।

खुशबू *स्त्री.* {फा.} सुगंध।

खुशबूदार *वि.* जिसमें सुगंध आती हो।

खुशामद *स्त्री.* {फा.} {*वि.* खुशामदी} किसी को प्रसन्न करने के लिए झूठी प्रशंसा करना, चापलूसी।

खुशामदी *वि.* {फा.} खुशामद करनेवाला, चापलूस।

खुशाल *वि.* {फा. खुशहाल} सब प्रकार से संपन्न और सुखी, सुसंपन्न; सब तरह से भरा हुआ, पूरित, पूर्ण।

खुशी *स्त्री.* {फा.} प्रसन्नता।
मुहा. खुशी का सौदा होना = अपनी इच्छा पर काम का निर्भर होना।

खुश्क *वि.* {फा. मि. सं. शुष्क} {*भाव.* खुश्की} जो तर न हो, सूखा, शुष्क; जिसमें रसिकता न हो, रूखा; (वेतन) जिसके साथ भोजन न हो।

खुश्की *स्त्री.* {फा.} शुष्कता; नीरसता; स्थल या भूमि, 'तरी' का विपरीत।

खुसिया *पुं.* {अ. खुसिय:} अंडकोश।

खुस्याल *वि.* खुसाल।

खुही *स्त्री.* {सं. खोलक ?} वर्षा आदि से बचने के लिए सिर पर ओढ़ने के लिए एक विशेष प्रकार से लपेटी हुई चादर, घुग्घी।

खूँट[1] *पुं.* {सं. खंड} छोर, सिरा; कोना; ओर, तरफ; भाग, हिस्सा; दिशा।
मुहा. चारों खूँट घूमना = सब दिशाओं में चक्कर लगाना।

खूँट[2] *स्त्री.* {हिं. खुटना = समाप्त होना} कोई ऐसी कमी या त्रुटि जिसकी पूर्ति करना आवश्यक हो।

खूँट[3] *स्त्री.* {?} कान में पहनने का एक गहना।

खूँटा *पुं.* {सं. क्षोड} पशु या खेमे की रस्सी आदि बाँधने के लिए गड़ी लकड़ी; सहारा, बल।
मुहा. खूँटा गाड़ना = जम जाना, अड्डा बना लेना।

खूँटी *स्त्री.* {हिं. खूँट} छोटा खूँटा; दीवार में लगी वह छोटी पतली गोल, लकड़ी जिसपर चीजें टाँगते हैं; पौधों का वह अंश जो फसल काट लेने पर खेत में रह जाता है; हजामत के बाद मुँड़े हुए बालों के बचे हुए अंकुर; सीमा, हद।
मुहा. खूँटी कसना = सारंगी आदि के तार कसना।

खूँदना *अ.* {सं. खुंदन = तोड़ना} {*भाव.* खूँद} चंचल घोड़ों का पैर उठाकर जमीन पर पटकना; पैरों से रौंदकर खराब करना; अव्यवस्थित या तितर-बितर करना; उछलना या कूदना।

खूटना *अ.* {सं. खुंडन} छेड़ना, रोक-टोक करना; खुटना; कम होना, खुल जाना।

खूटा *वि.* {हिं. खोट} जिसमें किसी प्रकार की न्यूनता या कमी हो; खोटा।

खून *पुं.* {फा.} रक्त, लहू।
मुहा. खून उबलना या खौलना = बहुत क्रोध होना; *खून का पानी करना या खून पानी एक करना* = बहुत अधिक शारीरिक परिश्रम या प्रयत्न करना; *सिर पर खून सवार होना* = किसी को मार डालने या कोई अनिष्ट करने पर उद्यत होना; *खून पीना* = मार डालना; बहुत तंग करना, सताना; *खून बहाना* = किसी को मार-काटकर उसका खून गिराना, रक्तपात करना; *खून सफेद हो जाना* = मोह-ममता बिल्कुल न रह जाना, अधिक भयभीत हो जाना।
वध, हत्या, कतल।

खून-खराबी *स्त्री.* {हिं.} मारकाट।

खूनी *पुं.* {फा.} खून करने या मार डालनेवाला, हत्यारा, घातक; अत्याचारी; *वि.* खून-संबंधी, जैसे खूनी बवासीर।

खूबसूरत *वि.* {फा.} सुंदर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खूबसूरती *स्त्री.* {फा.} सुंदरता।

खूबी *स्त्री.* {फा.} भलाई, अच्छाई, अच्छापन; गुण, विशेषता (मैरिट)।

खूसट *पुं.* {सं. कौशिक} उल्लू पक्षी; *वि.* शुष्कहृदय, अरसिक; मूर्ख; अत्यधिक चिड़चिड़ा बुड्ढा।

खेचर *पुं.* {सं.} वह जो आसमान में चले या उड़े, आकाशचारी, जैसे पक्षी, विमान, वायु, राक्षस आदि, ग्रहगण।

खेट *पुं.* {सं.} वन के पास बसा छोटा गाँव; झोपड़ा; बलगम; आकाशचारी; ग्रह; गदा।

खेटक *पुं.* {सं. आखेट} शिकार।

खेटकी *पुं.* {सं. आखेट} शिकारी; वधिक, हत्यारा।

खेड़ा *पुं.* {सं. खेटक} छोटा गाँव; छोटा कच्चा घर; शिकार करने योग्य पशुओं को घेरना।

खेड़ी *स्त्री.* {देश.} वह मांसखंड जो जरायुज जीवों के तुरंत के जन्मे बच्चों की नाल के दूसरे सिरे पर लगा रहता है; छोटी बस्ती।

खेत *पुं.* {सं. क्षेत्र} अनाज पैदा करने के लिए जोतने-बोने की जमीन; खेत में खड़ी हुई फसल; किसी चीज के, विशेषतः पशुओं आदि के उत्पन्न होने का प्रदेश; समतल भूमि, चौरस मैदान।

मुहा. खेत करना = भूमि समतल करना, चंद्रमा का उदित होकर प्रकाश फैलाना।

समरभूमि।

मुहा. खेत आना या रहना = युद्ध में मारा जाना; *खेत रखना* = समर में विजय प्राप्त करना; *खेत छोड़ना* = युद्धभूमि से पीठ दिखाकर भागना।

तलवार का फल।

खेतघर *पुं.* खेत में बना हुआ घर (फार्म हाउस)।

खेती *स्त्री.* {हिं. खेत + ई (प्रत्य.)} खेत में अनाज बोने और उपजाने का काम, कृषि, किसानी; खेत में बोई हुई फसल।

खेतीबारी *स्त्री.* खेती।

खेद *पुं.* {सं.} {*वि.* खेदित, खिन्न} किसी उचित, आवश्यक या प्रिय बात के न होने पर मन में होनेवाला दुख, रंज; शिथिलता, थकावट; निर्धनता।

खेदना *स.* खदेड़ना।

खेदा *पुं.* {हिं. खेदना} पशुओं को मारना या पकड़ने के लिए घेरकर एक स्थान पर लाना; शिकार, आखेट।

खेना *स.* {सं. क्षेपण} डाँड़ों से नाव चलाना; समय बिताना या काटना।

खेप *स्त्री.* {सं. क्षेप} उतनी वस्तु, जितनी एक बार में लाद या ढोकर ले जाई जाए; ढोनेवाले व्यक्ति, गाड़ी आदि की एक बार की यात्रा।

खेपना *स.* {सं. क्षेपण} बिताना (समय)।

खेम *पुं.* क्षेम।

खेमा *पुं.* {सं.} तंबू, डेरा; रावटी, शिविर।

खेरा *पुं.* खेड़ा।

खेरी *स्त्री.* बंगाल में होनेवाली गेहूँ की एक किस्म।

खेल *पुं.* {सं. केलि} मन बहलाने या व्यायाम के लिए उछल-कूद, दौड़-धूप या और कोई मनोरंजक कृत्य, जिसमें हार-जीत भी होती है, क्रीड़ा।

मुहा. खेल खेलाना = व्यर्थ की बातों या काम में फँसाए रखना; *खेल-खेल में* = खेलते हुए ही; *खेल समझना* = किसी काम को आसान मानना।

बहुत हल्का या तुच्छ काम; अभिनय, तमाशा, स्वाँग, करतब आदि; अद्‌भुत या विचित्र लीला।

खेलक *पुं.* खिलाड़ी।

खेलना *अ.* {सं. केलि, केलिन} {प्रे. खेलाना} मन बहलाने या व्यायाम के लिए इधर-उधर उछलना, कूदना आदि, क्रीड़ा करना।

मुहा. जान या जी पर खेलना = ऐसा काम करना जिसमें मृत्यु का भय हो।

स. ऐसा काम करना जो खेल के रूप में हो, जैसे गेंद खेलना; किसी वस्तु के संयोग से कोई क्रिया या कार्य करना, जैसे *तलवार खेलना* = तलवार चलाना, *पानी खेलना* = ऐसा काम करना, जिसमें हाथ-पैर बहुत भींगे; नाटक या अभिनय करना।

खेलनी *स्त्री.* चौपड़ या शतरंज में गोट या मोहरा।

खेलभूमि *स्त्री.* {हिं. खेल + सं. भूमि} वह स्थान जो खिलाड़ियों के खेलने के लिए हो, खिलाड़ियों के खेलने की जगह (प्ले ग्राउंड)।

खेलवाड़ *पुं.* = खिलवाड़; खेल, हँसी-मजाक।

खेला *पुं.* खेल; सट्टा।

खेलाड़ी *वि.* खिलाड़ी।

खेलाना *स.* {हिं.} मारने से पहले शत्रु को शौर्य प्रदर्शन का अवसर देना जिससे हँसी आती है।

खेलीखायी *स्त्री.* पुरुष समागम का सुख ले चुकी स्त्री।

खेलौना *पुं.* खिलौना।

खेदक *पुं.* {सं. क्षेपक} मल्लाह; खेदा देनेवाला।

खेवट *पुं.* {हिं. खेत + वट (प्रत्य.)} पटवारी का वह कागज जिसमें पट्टीदार का हिस्सा लिखा रहता है; मल्लाह, माँझी।

खेवटिया *पुं.* = खेवट।

खेवनहार *पुं.* {हिं. खेवना = खेना + हारा (प्रत्य.)} वह जो नाव खेता या चलाता हो, माँझी, मल्लाह; वह जो किसी को संकट आदि से पार करता हो, विकट कार्य के निर्वाह में सहायक होनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेवना *स.* खेना।

खेवरना *स.* {हिं. खौर} खौर या चंदन का टीका लगाना; स्त्रियों का चंदन, केसर आदि से अपना मुँह चित्रित करना।

खेवा *पुं.* {हिं. खेना} {*भाव.* खेवाई} नाव का किराया; नाव द्वारा नदी पार करने का काम; बोझ से लदी नाव; धार्मिक मत या मार्ग; बार, दफा।

खेवैया *पुं.* नाव खेनेवाला, मल्लाह।

खेसर *पुं.* खच्चर।

खेसारी *स्त्री.* {सं. कृसर} एक प्रकार का मटर, दुबिया मटर, लतरी; केसरी दाल जिसे खाने से मनुष्य लुंज हो जाता है।

खेह *स्त्री.* {सं. क्षार} धूल, राख।

मुहा. खेह खाना = धूल फाँकना, व्यर्थ समय खोना, दुर्दशाग्रस्त होना।

खैंचना *स.* खींचना।

खैना *अ.* खयाना (क्षीण होना)।

खैनी *स्त्री.* {हिं. खाना} खाने का तम्बाकू या सुरती का पत्ता जो मलकर चूने के साथ खाया जाता है।

खैबर *पुं.* पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच का एक दर्रा जो खैबर पास भी कहा जाता है; प्राचीनकाल में उधर से भारत आने का यही मार्ग था।

खैर[1] *पुं.* {सं. खदिर} एक प्रकार का बबूल, कथकीकर; इस वृक्ष की लकड़ी का सत्त, कत्था।

ख़ैर[2] *स्त्री.* {फा. ख़ैर} कुशल, क्षेम; *विस्मयादि.* कुछ चिंता नहीं, कुछ परवाह नहीं; अस्तु, अच्छा।

ख़ैरख़ाह *वि.* {फा.} {*भाव.* ख़ैरख़ाही} भलाई चाहनेवाला, शुभचिंतक।

ख़ैरभैर *पुं.* {अनु.} हो-हल्ला; हलचल; खलबली।

खैरा *वि.* {हिं. खैर} खैर के रंग का, कत्थई।

ख़ैरात *स्त्री.* {अ.} {*वि.* ख़ैराती} दान।

ख़ैरियत *स्त्री.* {फा.} कुशल-क्षेम, राजी-खुशी; भलाई, कल्याण।

खैलर *स्त्री.* मथानी।

खैला *पुं.* मथानी।

खोंगाह *पुं.* {सं. खुंगाह} छोटा या काले रंग का घोड़ा।

खोंच *स्त्री.* {सं. कुंच} नुकीली चीज से छिलने का आघात, खरोंच; काँटे आदि में फँसकर कपड़े का फट जाना; झोली; छिलन।

खोंचा *पुं.* {सं. कुंचन} बहेलियों का चिड़िया फँसाने का लंबा बाँस।

खोंची *स्त्री.* {हिं. खींचा} जमीन या मकान आदि का किसी ओर निकला या बढ़ा पतला लंबा टुकड़ा; भिखारी देने के लिए रखा अन्न।

खोंटना *स.* {सं. खुड} {*भाव.* खोंट} किसी वस्तु का ऊपरी भाग तोड़ना।

खोंडर *पुं.* {सं. कोटर} पेड़ का भीतरी खोखला भाग या गड्ढा।

खोंडा *वि.* {सं. खुंड} जिसका कोई अंग-भंग हो; अर्थात् जिसके दो-चार दाँत टूट गए हों।

खोंप (न) *स्त्री.* {हिं. खोंपना} खोंपने या चुभाने के कारण फटा हुआ अंश, चीर, दरार; खोंच।

खोंपना *स.* {अनु.} जोर से गड़ाना, चुभाना या धँसाना।

खोंपा *पुं.* {तमिल कोप्पु, मि. सं. कोष} स्त्रियों के सिर के बालों का बँधा हुआ जूड़ा, गोलाकार बँधी वेणी।

खोंसना *स.* {सं. कोश + ना (प्रत्य.)} किसी वस्तु को स्थिर रखने के लिए उसका कुछ भाग दूसरी वस्तु में घुसेड़ देना, अटकाना, लगाना।

खोई *स्त्री.* {सं. क्षोद} रस निकल जाने पर बची हुई गन्ने के टुकड़ों की सीठी; भुने हुए धान आदि की खील, लावा; एक प्रकार के दाने जिनसे लड्डू आदि बनते हैं; कम्बल की घोघी।

खोई *वि.* {हिं. खोना} सट्टे आदि में होनेवाली हानि, जैसे आज खोई है तो कल कमाई होगी।

खोखला *वि.* {हिं. सुक्ख + ला (प्रत्य.)} जिसके अंदर कुछ न हो, पोला; वृक्ष का कोटर।

खोखा *वि.* {हिं. खुक्ख} वह कागज जिस पर हुंडी लिखी जाती है; वह हुंडी जिसका रुपया चुका दिया गया हो।

खोज *स्त्री.* {सं. क्षोद्य, प्रा. खोज्ज = पैर का चिह्न} पैरों का वह निशान जो चलने से मिट्टी या जमीन पर बनता है।

मुहा. खबर लेना-सुध-बुध लेना या पूछ-ताछ करना।

मुहा. खोज मिटाना = वे चिह्न या लक्षण नष्ट करना जिनसे किसी बात या घटना का पता चल सकता हो; गाड़ी के पहिए की लीक अथवा पैर आदि के चिह्न।

खोजना *स.* ढूँढ़ना, पता लगाना।

ख़ोजा *पुं.* {फा. ख्वाज:} वह नपुंसक जो मुसलमानी महलों में सेवक की भाँति रहता था; माननीय व्यक्ति, सरदार; गुजराती मुसलमानों की एक जाति।

खोजी *वि.* {हिं. खोज} वह जो पैरों के चिह्न देखकर चोरों, अपराधियों, जंगली जानवरों आदि का पता लगाता हो; ढूँढ़ने या खोजनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोट *स्त्री.* {हिं. खोज} दोष, ऐब, बुराई; किसी उत्तम वस्तु में निकृष्ट वस्तु की मिलावट।

खोटा *वि.* {सं. क्षुद्र} {*स्त्री.* खोटी} जिसमें ऐब हो, बुरा, 'खरा' का उलटा।

मुहा. खोटी-खरी सुनाना = डाँटना -फटकारना।

खोटाई *स्त्री.* {हिं. खोटा + ई (प्रत्य.)} बुराई; दुष्टता; छल, कपट; दोष, ऐब।

खोड़ *स्त्री.* {हिं. खोट} भूत-प्रेत आदि की बाधा; देव-कोप।

खोद *पुं.* {फा. खोद} युद्ध में पहनने का लोहे का टोप, कूँड, शिरस्त्राण।

खोदना *स.* {सं. क्षुद्र, प्रा. खुद् = भेदना} ऊपर की मिट्टी आदि हटाकर गहरा गड्ढा करना, खनना; इस प्रकार मिट्टी हटाकर कोई चीज उखाड़ना या गिराना; किसी कड़ी चीज में धारदार पदार्थ से बेल-बूटे बनाना, नक्काशी करना; उँगली, छड़ी आदि से दबाना, गड़ाना; छेड़-छाड़ करना।

मुहा. खोद-खोदकर पूछना = एक-एक बात पूछना।

खोद-विनोद *पुं.* विशेष रूप से पूछी जानेवाली छोटी-छोटी बातें।

खोना *स.* {सं. क्षेपण} अपने पास की वस्तु असावधानी से निकल जाने देना, गँवाना; नष्ट करना, बिगाड़ना।

अ. पास की वस्तु का असावधानी से कहीं छूट, रह या निकल जाना।

खोन्चा *पुं.* {फा. ख्वान्चः} बड़ी परात या थाल, जिसमें रखकर फेरीवाले मिठाई आदि बेचते हैं।

खोपड़ा *पुं.* {सं. खर्पर} खोपड़ी; सिर; गरी का गोला; नारियल की गरी, नारियल का गोला, भीख माँगने का पात्र।

खोपड़ी *स्त्री.* {हिं. खोपड़ा} सिर की हड्डी, कपाल; सिर।

मुहा. अन्धी या औंधी खोपड़ी का = नासमझ, मूर्ख; *खोपड़ी खा या चाट जाना* = बहुत बातें करके दिक करना; *खोपड़ी गंजी होना* = मार या व्यय आदि के कारण परेशान होना ; गोलाकार और बहुत कड़ा ऊपरी आवरण, जैसे नारियल की खोपड़ी या कछुए की खोपड़ी।

खोपना *स्त्री.* {हिं. खोंपना} छप्पर का कोना।

खोपा *पुं.* {सं. खर्पर, हिं. खोपड़ा} छप्पर का कोना; स्त्रियों की गुथी हुई चोटी की तिकोनी बनावट, जूड़ा; नारियल की गरी का गोला।

खोभरा *पुं.* {हिं. खुभना} रास्ते में पड़नेवाली वह उभरी हुई चीज, जो चुभती हो या जिससे ठोकर लगती हो; कूड़ा-करकट।

खोभार *पुं.* {?} कूड़ा-करकट फेंकने का गड्ढा।

खोम *पुं.* {अ. क़ौम} समूह।

खोया *पुं.* {सं. क्षोद} दूध को गाढ़ा करने से बना ठोस रूप जिससे मिठाई बनाते हैं जिसे मावा-खोवा भी कहते हैं।

खोर[1] *स्त्री.* {हिं. खर} तंग गली, कूचा; चौपायों पशुओं को चारा देने की नाँद।

खोर[2] *स्त्री.* {हिं. खोट} खराब, बुरा; निकम्मा, बेकाम।

खोर[3] *वि.* {फा. खर} एक विशेषण जो शब्दों के अंत में प्रत्यय के रूप में लगकर ये अर्थ देता है—खानेवाला, जैसे आदमखोर = नरभक्षी; लेकर अपने उपयोग में लानेवाला, जैसे—रिश्वतखोर = घूस लेनेवाला; निर्लज्जतापूर्वक सहन करनेवाला, जैसे—जूताखोर; किसी के प्रभाव से बहुत कुछ रक्षित रखनेवाला, जैसे—गर्दखोर, मैलखोर आदि।

खोरना *अ.* {सं. क्षालन} स्नान करना, नहाना।

खोरा *पुं.* {सं. खोलक या फा. आबखोरा} {*स्त्री.* अल्पा. खोरिया} कटोरा; *वि.* खोंड़ा।

खोरि[1] *स्त्री.* {हिं. खुर} तंग गली।

खोरि[2] *स्त्री.* {सं. खोट या खोर} ऐब, दोष; बुराई।

खोरिया *स्त्री.* {हिं. खोरा} छोटी कटोरी; माथे पर लगाने के चमकीले बुंदे (स्त्रियाँ)।

खोल *पुं.* {सं. खोल = कोश} आवरण, गिलाफ; कीड़ों का वह ऊपरी चमड़ा जिसे समय-समय पर वे बदला करते हैं; मोटी चादर।

खोलना *स.* {सं. क्षुड्} ढकने, बाँधने, जोड़ने या रोकनेवाली वस्तु हटाना; दरार या छेद करना; कोई क्रम चलाना या जारी करना; सड़क, नहर आदि चलती करना; व्यापार या दैनिक कार्य आरंभ करना; गुप्त या गूढ़ बात प्रकट या स्पष्ट कर देना।

खोली *स्त्री.* {हिं. खोल} आवरण, गिलाफ, जैसे—तकिए की खोली; छोटा कमरा, कोठरी।

खोब *पुं.* {हिं. खोना} खोने या गँवाने की क्रिया या भाव; क्षति, हानि।

खोह *स्त्री.* {सं. गोह} गुफा, कंदरा।

खोही *स्त्री.* {सं. खोलक} पत्तों की छतरी; घोघी।

खौं *स्त्री.* {सं. खन्} अन्न रखने का गड्ढा, खाती या खत्ती।

खौंखोरना *अ., स.* = खिजलाना।

खौंट *स्त्री.* {हिं. खोंटना} खोटने की क्रिया या भाव; खरोंट।

खौफ़ *पुं.* {अ.} {वि. खौफ़नाक} डर, भय, भीति, दहशत।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खौर पुं. {सं. क्षौर या क्षुर} {क्रि. खौरना} चन्दन का तिलक, टीका; स्त्रियों के सिर का एक गहना।
खौरना (हिन्दी *क्रि. स.*) खौर लगाना, चंदन का तिलक लगाना, नष्ट करना।
खौरहा *वि.* {हिं. खौरा + हा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* खौरही} जिसके बाल झड़ गए हों; (पशु) जिसे खौरा रोग हुआ हो।
खौरा पुं. {सं. क्षौर, या फा. बालखोरा} पशुओं की एक प्रकार की खुजली, जिसमें उनके बाल झड़ जाते हैं; *वि.* जिसे खौरा रोग हुआ हो।
खौरी *स्त्री.* खोरि।
खौलना *अ.* उबलना।
खौलाना *स.* = उबालना।
ख्यात *वि.* {सं.} प्रसिद्ध।
ख्यात *स्त्री.* {सं. ख्याति} वह कविता जिसमें किसी की वीरता, कीर्ति आदि का वर्णन हो।
ख्याति *स्त्री.* {सं.} प्रसिद्धि, शोहरत (रेपुटेशन); अच्छा काम करने से होनेवाली बड़ाई, कीर्ति, यश, प्रशंसा, प्रकाश, ज्ञान, प्रसिद्धि।
ख्यापन पुं. {सं.} प्रकट या प्रकाशित करने की क्रिया, शोहरत।
ख्याल पुं. {हिं. खेल} खेल; दिल्लगी; पुं. ख्याल।
ख्याली *वि.* {हिं} वाल्यित, फर्जी।
ख्रिष्टान पुं. ईसाई।
ख्रिष्टीय *वि.* ख्रिस्तीय।
ख्रिस्तान पुं. = ईसाई।
ख्वाजा पुं. {फा.} मालिक; सरदार; ऊँचे दरजे का मुसलमान फकीर; रनिवास का नपुंसक भृत्य, खोजा।
ख्वाब पुं. {फा.} सपना, स्वप्न।
ख्वार *वि.* {फा.} {भाव. ख्वारी} खराब; बरबाद; तिरस्कृत।
ख्वारी *स्त्री.* {फा.} ख्वार या बरबाद होने की क्रिया या भाव, खराबी; दुर्दशा।
ख्वाह *योज.* {फा.} या, अथवा।
ख्वाहमख्वाह *क्रि. वि.* {फा.} कोई चाहे या न चाहे, जबर्दस्ती; अवश्य।
ख्वाहिश *स्त्री.* {फा.} इच्छा।

ग गा

ग देवनगरी वर्णमाला में कवर्ग का तीसरा वर्ण जो अल्पप्राण तथा घोष है और जिसका उच्चारण–स्थान कंठ है। प्रत्यय रूप में इसके अर्थ होते हैं–गानेवाला; जैसे सामग; जानेवाला; जैसे–निम्नग; संगीत में यह 'गन्धार' (स्वर) का संक्षिप्त रूप और सूचक माना जाता है।
गंग *स्त्री.* गंगा; {पुं.} भक्तिकाल के एक प्रसिद्ध कवि।
गंगबरार पुं. दरिया-बरार।
गंगा *स्त्री.* {सं.} भारतवर्ष की एक प्रधान और प्रसिद्ध नदी।
गंगागति *स्त्री.* {सं.} मृत्यु; गंगा में अंत्येष्टि क्रिया।
गंगा-जमुनी *वि.* {हिं. गंगा + जमुना} मिला-जुला, दुरंगा; जिसमें दो या कई धातुएँ, वस्तुएँ या रंग मिले हों।
गंगाजल पुं. {सं.} गंगा का जल।
गंगाजली *स्त्री.* {सं. गंगाजल} वह सुराही या बरतन जिसमें यात्री गंगाजल ले आते हैं।
गंगाधर पुं. {सं.} शिव, महादेव।
गंगापुत्र पुं. {सं.} भीष्म; एक प्रकार के ब्राह्मण जो नदियों के तट पर बैठकर दान लेते हैं।
गंगायात्रा पुं. {सं.} मरते हुए मनुष्य को नदी के तट पर मरने के लिए ले जाना; मृत्यु, मौत।
गंगालाभ पुं. {सं.} मृत्यु।
गंगावतरण पु. {सं.} गंगा का स्वर्ग से पृथ्वी पर आना, एक काव्य।
गंगासागर पुं. {सं. गंगा + सागर} एक तीर्थ जो उस स्थान पर है, जहाँ गंगा समुद्र में मिलती है; एक प्रकार की बड़ी झारी।
गंगोझ पुं. {सं. गंगोदक} गंगाजल।
गंगोदक पुं. {सं.} गंगाजल।
गंगोलिया पुं. {हिं.} एक प्रकार का नींबू।
गँगौटी *स्त्री.* {हिं. गंगा + मिट्टी} गंगा के किनारे की मिट्टी।
गंज[1] पुं. {सं. कंज या खंज} सिर के बाल झड़ने का रोग, खल्वाट।
गंज[2] पुं. {फा.} खजाना, कोष; ढेर, राशि; समूह, झुंड; अनाज की मंडी; हाट, बाजार।
गंजन पुं. {सं.} अवज्ञा, तिरस्कार; पीड़ा, कष्ट; नाश; *वि.* मारने या नष्ट करनेवाला।
गंजना *स.* {सं. गंजन} अवज्ञा करना, निरादर करना; चूर-चूर करना; नष्ट करना; पूरी तरह से परास्त करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंजा पुं. {सं. खंज या कंज} वह जिसके सिर के बाल झड़ गए हों।

गँजाना स. हिं. 'गाँजना' का प्रे.।

गँजिया स्त्री. {हिं.} घसियारे की घास भरने की जालीदार थैली।

गंजी[1] स्त्री. {हिं. गंज} ढेर, समूह; शकरकंद, कंदा।

गंजी[2] स्त्री. {?} बनियान।

गंजीफा पुं. {फा.} एक खेल जो आठ रंग के 96 पत्तों से खेला जाता है; ताश।

गँजेड़ी वि. {हिं. गाँजा + एड़ी (प्रत्य.)} गाँजा पीनेवाला।

गँठजोड़ा पुं. {हिं. गाँठ + जोड़ना} धार्मिक कृत्य के समय एक रीति जिसमें पति और पत्नी के दुपट्टों को परस्पर बाँध देते हैं; दो चीजों या व्यक्तियों का प्रायः बना रहनेवाला साथ।

गंड पुं. {सं.} कपोल, गाल; कनपटी; गंडा, जो गले में पहना जाता है; फोड़ा; चिह्न या निशान; गोल मंडलाकार चिह्न या लकीर, गंडा; गाँठ; गिलटी।

गंडक स्त्री. {सं.} गंगा में मिलनेवाली उत्तर भारत की एक नदी।

गँडदार पुं. {सं. गंड या गँड़ासा + फा. दार (प्रत्य.)} महावत, हाथीवान।

गंडमाला स्त्री. कंठमाला (रोग)।

गंडस्थल पुं. {सं.} कनपटी।

गंडा[1] पुं. {सं. गंडक} गाँठ; गिनने में चार का समूह; मंत्र पढ़कर गाँठ लगाया हुआ वह धागा जो रोग या प्रेतबाधा दूर करने के लिए गले या हाथ में बाँधते हैं।

गंडा[2] पुं. {सं. गंड = चिह्न} आड़ी लकीरों की पंक्ति; तोते आदि पक्षियों के गले की रंगीन धारी, कंठी, हँसली।

गँड़ासा पुं. {हिं. गेंडी + सं. असि} {स्त्री. अल्पा. गँड़ासी} चौपायों का चारा या घास काटने का उपकरण।

गँडेरी स्त्री. {सं. कांड या गंड} ईख या गन्ने का छोटा टुकड़ा।

गंदगी स्त्री. {फा.} गंदा होने का भाव, मैलापन, मलिनता; अपवित्रता, अशुद्धता; विष्ठा, मल।

गंदना पुं. {सं. गंधन} लहसुन या प्याज की तरह का एक कंद।

गंदा वि. {फा. गंदः} {स्त्री. गंदी} मैला, मलिन; अशुद्ध; घृणित।

गंदी बस्ती स्त्री. वह स्थान जहाँ गरीब लोग रहते हों और जहाँ सफाई आदि का प्रबंध न हो।

गँदीला पुं. {हिं.} एक प्रकार की घास।

गंदुम पुं. {फा.} गेहूँ।

गंदुमी वि. {फा. गंदुम = गेहूँ} गेहूँ या उसके आटे का बना हुआ; गेहूँ के रंग का, गेहुँआ।

गंध स्त्री. {सं.} वायु में मिले हुए किसी वस्तु के सूक्ष्म कणों का प्रसार, जिसका ज्ञान या अनुभव नाक से होता है, बास, महक, सुगंध; वह सुगंधित द्रव्य जो शरीर में लगाया जाता है; सूक्ष्म अंश, लेश; बहुत ही सूक्ष्म रूप से किसी बात का पता, जैसे–देखो! इस बात की गंध न लगने पाए।

गंधक स्त्री. {सं.} {वि. गंधकी} एक जलनेवाला पीला खनिज पदार्थ।

गंधकारी वि. {सं. गंधकारिन्} गंध उत्पन्न करनेवाला।

गंधकी वि. {हिं. गंधक} गंधक के रंग का, हलका पीला।

गंधद्रव्य पुं. {सं.} वह चीज जिससे अच्छी गंध निकलती हो और जिसका उपयोग दूसरी वस्तुओं को सुगंधित करने के लिए होता है, जैसे–कस्तूरी, केसर, चंदन आदि।

गंध मार्जार पुं. {सं.} गंधविलाव।

गंधविलाव पुं. {सं.} नेवले से कुछ बड़ा एक मांसभक्षी पशु।

गंधर्व पुं. {सं.} {स्त्री. गंधर्वी, हिं. स्त्री. गंधर्विन} देवताओं की एक कोटि जो गाने में निपुण है; प्रेतात्मा; एक जाति जिसकी कन्याओं का काम नाचना-गाना है।

गंधर्वनगर पुं. {सं.} मिथ्या या काल्पनिक नगर; मिथ्या ज्ञान; चंद्रमा के किनारे का मंडल जो हलकी बदली में दिखाई पड़ता है।

गंधवह पुं. {सं.} वायु; चंदन; वि. गंध ले जाने या पहुँचानेवाला; सुगंधित, खुशबूदार।

गंध-सफेदा पुं. सफेदा (वृक्ष) (यूक्लिप्टस)।

गंधहारक वि. {सं.} गंध दूर करनेवाला।

गंधा वि. स्त्री. {सं.} गंधवाली (यौगिक शब्दों के अंत में; जैसे मत्स्यगंधा)।

गंधाना अ. {हिं. गंध + बिरोजा} चीड़ नामक वृक्ष का गोंद।

गंधाबिरोजा पुं. {हिं. गंध + बिरोजा} चीड़ नामक वृक्ष का गोंद।

गंधिया वि. {सं. गंध + हिं. इया (प्रत्य.)} जिससे गंध निकलती हो।

गंधी पुं. {सं. गंधिन्} {स्त्री. गंधिनी, गंधिन} सुगंधित तेल आदि बेचनेवाला, अत्तार; गँधिया घास, गाँधी; गँधिया कीड़ा।

गँधीला वि. {हिं. गंध} अप्रिय या बुरी गंधवाला, बदबूदार।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंभीर *वि.* {सं.} {*भाव.* गंभीरता, गांभीर्य} बहुत गहरा; घना; जिसका अर्थ कठिन हो, गूढ़, जटिल; जिसका निराकरण, उपचार, प्रतिकार या शमन सहज में न हो सके, विकट, भारी (सीरिअस); शांत, धीर।

गँव *स्त्री.* {सं. गम्य} घात, दाँव; मतलब, प्रयोजन; अवसर, मौका।

पद गँव से = अच्छे ढंग या युक्ति से; धीरे से, चुपके से।

गँवई *वि.* {सं. ग्रामेयिक, प्रा. गाँवेइअ} ग्राम या गाँव-संबंधी, गाँव का; *पुं.* गाँव का रहनेवाला, देहाती।

गँवर-मसला *पुं.* {हिं. गँवार + *अ.* मसल} ग्रामीण कहावत या उक्ति, देहातियों में प्रचलित कहावत।

गँवाना *स.* खोना।

गँवार *वि.* {हिं. गाँव + आर (प्रत्य.)} ग्रामीण, देहाती; असभ्य; बेवकूफ, मूर्ख।

गँवारी *स्त्री.* {हिं. गँवार} गँवारपन, मूर्खता, बेवकूफी; गँवार स्त्री; *वि.* ग्राम्य, गाँव का; गँवारों का-सा; जिसमें शिष्टता, शालीनता आदि का अभाव हो, भद्दा।

गँवारू *वि.* गाँव का, मोटी रहन-सहन का।

गंस[1] *पुं.* {सं. ग्रंथि} द्वेष, बैर; चुभनेवाली बात, ताना।

गंस[2] *स्त्री.* {सं. कषा} तीर की नोक।

गँसना *स.* {सं. ग्रंथन} कसना, जकड़ना; बुनावट में सूतों को खूब आसपास सटाना; *अ.* बुनावट का ठस होना; कसा या जकड़ा जाना।

गँसीला *वि.* {हिं. गंस} {*स्त्री.* गँसीली} तीर के समान नोकदार।

गँह *पुं.* {हिं.} पकड़ना, ग्रहण।

गइंद *पुं.* गयंद।

गइनाही *स्त्री.* {सं. ज्ञान} जानकारी।

गइयर *स्त्री.* नीलगाय।

गई-बहोर *वि.* {हिं. गया + बहुरना} खोई हुई वस्तु वापस दिलानेवाला अथवा बिगड़ा हुआ काम बनानेवाला।

गऊ *स्त्री.* {सं. गो} गाय, गौ।

गगन *पुं.* {सं.} आकाश, आसमान।

गगनगढ़ *पुं.* {सं. गगन + हिं. गढ़} बहुत ऊँचा महल या इमारत।

गगनचुंबी *वि.* {सं. गगनचुंबिन्} इतना ऊँचा जो आकाश को चूमता या छूता जान पड़े, बहुत ऊँचा।

गगनधूल *स्त्री.* {सं. गगन + हिं. धूल} एक प्रकार का कुकुरमुत्ता; केतकी के फूल की धूल।

गगनभेड़ *स्त्री.* {हिं. गगन + भेड़} जलाशयों के पास रहनेवाली कराकुल या कूँज नामक चिड़िया।

गगनभेदी *वि.* {सं. गगनभेदिन्} (स्वर या शब्द) जो आकाश को फाड़ता या आकाश में गूँजता-सा जान पड़े; 'गगनचुंबी'।

गगन-वाटिका *स्त्री.* {सं.} वैसी ही असंभव बात, जैसी आकाश में वाटिका या बाग-बगीचे के होने की होती है, आकाशकुसुम।

गगनस्पर्शी *वि.* गगनचुंबी।

गगरा *पुं.* {सं. गर्गर} {*स्त्री.* अल्पा. गगरी} धातु का बड़ा घड़ा, कलसा।

गच *स्त्री.* {चीनी कचु, तुर्की गज} किसी नरम वस्तु में किसी कड़ी या पैनी वस्तु के धँसने का शब्द; चूने-सुर्खी से बनी जमीन, पक्का फर्श।

गचकारी *स्त्री.* {हिं. गच + फा. कारी} गच का काम, चूने-सुर्खी का काम।

गचना *स.* {अनु. गच} बहुत कसकर भरना; गाँसना।

गछना *अ.* {सं. गच्छ} जाना, चलना; *स.* चलाना, निभाना; अपने जिम्मे लेना, अपने ऊपर लेना।

गज[1] *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* गजी} हाथी; आठ की संख्या का सूचक शब्द (आठ दिग्गजों के कारण)।

गज[2] *पुं.* {फा. गज़} लंबाई नापने की एक नाप जो कपड़ों के लिए सोलह गिरह या तीन फुट और लकड़ी के लिए दो फुट की होती है; इस नाप का लोहे या लकड़ी की छड़; लोहे या लकड़ी का वह छड़ जिससे पुराने ढंग की बंदूक या तोप भरी जाती थी; एक प्रकार का तीर।

गजक *स्त्री.* {फा. कज़क} वह चीज जो शराब पीने के समय खाई जाती है, चाट, जैसे कबाब आदि; तिल, दाल आदि की बनी हुई एक प्रकार की पपड़ी; जलपान।

गजकर्ण *पुं.* {सं.} एक असुर का नाम, एक प्रकार का पलाश।

गजकर्णी *स्त्री.* {सं.} गजपीपल।

गजकुसुम *पुं.* {सं.} नागकेसर।

गजक्रीड़ित *पुं.* {सं.} एक प्रकार का नाच।

गजगति *स्त्री.* {सं.} हाथी की-सी मंद और मस्त चाल।

गजगती *स्त्री.* {फा. गज़ + सं. गत} गज से नापकर कपड़े की होनेवाली बिक्री (पूरे थान की बिक्री से भिन्न)।

गजगा *पुं.* {सं. गज} हाथियों का एक प्रकार का गहना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गजगामिनी *वि. स्त्री.* {सं.} हाथी के समान मंद गति से चलनेवाली स्त्री।

गजगाह *पुं.* झूल (हाथी की)।

गजगौन *पुं.* {सं. गजगमन} हाथी की-सी मस्त चाल।

गजगौहर *पुं.* = गजमुक्ता।

गजट *पुं.* {अं. गज़ट} सरकारी पत्र या प्रपत्र।

गजदंत *पुं.* {सं.} {*वि.* गजदंती} हाथी का दाँत; दीवार में गड़ी खूँटी; दाँत के ऊपर निकला हुआ दाँत; गणेश।

गजदान *पुं.* {सं.} हाथी का मद।

गजनवी *वि.* {फा.} गजनी नगर-संबंधी; *पुं.* गजनी नगर का निवासी।

गजनाल *स्त्री.* {सं.} वह बड़ी तोप जिसे हाथी खींचते थे।

गजपति *पुं.* {सं.} बहुत बड़ा हाथी।

गजब *पुं.* {*अ.* गज़ब} कोप, गुस्सा; विपत्ति, आफत; अँधेरे, अन्याय; विलक्षण बात।

पद *गजब का* = बहुत विलक्षण।

गजबाँक (बाग) *पुं.* {सं. गज + बाँक या बाग} हाथी का अंकुश।

गजमणि *पुं.* = गजमुक्ता।

गजमुक्ता *स्त्री.* {सं.} वह कल्पित मोती जिसका हाथी के मस्तक से निकलना प्रसिद्ध है, गजमणि।

गजमोती *पुं.* गजमणि।

गजर *पुं.* {सं. गर्जन, हिं. गरज} पहर-पहर पर घंटा बजने का शब्द; बहुत सवेरे के समय घंटा बजना।

गजरदम *क्रि. वि.* {हिं. गजर + फा. दम} प्रभात के समय, बहुत सवेरे, तड़के।

गजरा *पुं.* {हिं. गज} फूलों की बड़ी माला; एक गहना जो कलाई पर पहना जाता है।

गजराज *पुं.* {सं.} बड़ा हाथी।

गज़ल *स्त्री.* {फा. गज़ल} फारसी, उर्दू तथा हिन्दी में एक प्रकार का पद्य।

गजबदन *पुं.* {सं.} गणेश।

गजवान *पुं.* {हिं. गज + वान} महावत, हाथीवान।

गजशाला *स्त्री.* {सं.} हाथियों के बाँधने का स्थान, फीलखाना।

गजा *पुं.* {फा. गज़} नगाड़ा बजाने का डंडा।

गजानन *पुं.* {सं.} गणेश।

गजी[1] *स्त्री.* {फा. गज़} एक प्रकार का मोटा देशी कपड़ा, गाढ़ा।

गजी[2] *स्त्री.* {सं.} हाथी की मादा, हथिनी।

गजेंद्र *पुं.* {सं.} बड़ा हाथी।

गज्जूह *पुं.* {सं. गज + व्यूह} हाथियों का झुंड।

गझिन *वि.* {हिं. गछना} सघन, घना; ठस बुनावट का।

गटकना *स.* {गट से अनु.} निगलना; हड़पना।

गटकीला *वि.* {हिं. गटकना} गटकने या निगलनेवाला

गटगट *स्त्री.* {अनु.} निगलने या घोंटने के समय गले में होनेवाला शब्द।

गटना *अ.* {सं. ग्रंथन} किसी से लगा, मिला या बँधा होना; *स.* किसी से युक्त या संबद्ध करना, मिलाना या लगाना।

गटपट *स्त्री.* {अनु.} बहुत अधिक मेल, घनिष्ठता; सहवास, संभोग।

गट्टा *पुं.* {सं. ग्रंथ, प्रा. गंट, हिं. गाँठ} हथेली और पहुँचे के बीच का जोड़, कलाई; एक प्रकार की मिठाई।

गट्ठर *पुं.* {हिं. गाँठ} बड़ी गठरी।

गट्ठा *पुं.* {हिं. गाँठ} {*स्त्री. अल्पा.* गट्ठी, गठिया} घास, लकड़ी आदि का बोझ; बड़ी गठरी, गट्ठर।

गठन *स्त्री.* {सं. घटन} बनावट।

गठना *अ.* {सं. ग्रंथन} वस्तुओं का मिलकर एक होना, जुड़ना, सटना।

पद गठा बदन = हृष्टपुष्ट शरीर।

कोई गुप्त विचार या कुचक्र होना; अनुकूल या ठीक होना, सधना; बहुत मेल-मिलाप होना।

गठरी *स्त्री.* {हिं. गट्ठर} कपड़े में गाँठ लगाकर बाँधा हुआ सामान, बड़ी पोटली; माल, रकम, धन।

मुहा. गठरी मारना = अनुचित रूप से किसी का धन ले लेना।

गठवाना *स.* {हिं. गाँठना} गठाना; सिलवाना; जोड़ लगवाना।

गठा *पुं.* = गट्ठा।

गठित *वि.* {हिं. गठना} गठा हुआ (अशुद्ध रूप)।

गठिया *स्त्री.* {हिं. गाँठ} बोझ लादने का बोरा या थैला; बड़ी गठरी; एक रोग जिसमें जोड़ों में सूजन और पीड़ा होती है।

गठियाना *स.* {हिं. गाँठ} गाँठ लगाना; गाँठ में बाँधना।

गठिवन *पुं.* {हिं.} नीले रंग के फल का वृक्ष, एक सुगंधित फूलवाला पौधा।

गठीला[1] *वि.* {हिं. गाँठ + इला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* गठीली} जिसमें बहुत-सी गाँठें हों।

गठीला[2] *वि.* {हिं. गठना} गठा हुआ, चुस्त; मजबूत, दृढ़।

गठौत *स्त्री.* {हिं. गठना} मेल-मिलाप, मित्रता; मिलकर पक्की की हुई गुप्त बात, अभिसंधि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गडंग पुं. {सं. गर्व} {*वि.* गर्डगिया} घमंड, शेखी; आत्मश्लाघा, अपनी बड़ाई, डींग।

गड़ंत *स्त्री.* {हिं.} टोटका गाड़ने का काम।

गड़कना *अ.* {*अ.* गर्क} डूबना; *अ.* गरजना।

गड़गड़ *स्त्री.* {हिं.} बादल गरजने या गाड़ी के चलने का शब्द, पेट में वायु का शब्द।

गड़गड़ा पुं. {अनु.} बड़ा हुक्का।

गड़गड़ाना *अ.* {हिं. गड़गड़} {*भाव.* गड़गड़ाहट} गड़गड़ शब्द होना।

स. गड़गड़ शब्द उत्पन्न करना।

गड़गड़ाहट *स्त्री.* {गड़गड़ से अनु.} रह-रहकर गड़गड़ होने का शब्द या भाव, गरज, जैसे—बादलों की गड़गड़ाहट।

गड़दार पुं. {हिं. गँड़ासा + फा. दार} वह नौकर जो मस्त हाथी के साथ उसे सँभाले रखने के लिए भाला लेकर चलता है; महावत।

गड़ना *अ.* {सं. गर्त} धँसना, चुभना; खुरखुरा लगना; दर्द करना, दुखना; मिट्टी के नीचे दबना, दफन होना।

मुहा. *गड़े मुरदे उखाड़ना* = दबी-दबाई या पुरानी बातें उठाना; *मारे शर्म के गड़ जाना* = बहुत लज्जित होने के कारण मुँह न दिखा सकना।

गड़पना *स.* {अनु.} निगलना; अनुचित रूप से दबा बैठना।

गड़प्पा पुं. {हिं. गाड़} गड्ढा; धोखा खाने का स्थान।

गड़बड़ *वि.* {हिं. गड्ढा + बड़ = ऊँचा} {*वि.* गड़बड़िया} ऊँचा-नीचा; अव्यवस्थित; खराब, बुरा; पुं. कुप्रबंध, अव्यवस्था।

गड़बड़-झाला, गड़बड़-घोटाला पुं. अव्यवस्था, उपद्रव।

गड़बड़ाना *अ.* {हिं. गड़बड़} भूल करना, चूक जाना, भ्रम में पड़ना; क्रम भ्रष्ट होना, अव्यवस्थित होना।

स. गड़बड़ी या चक्कर में डालना; भ्रम में डालना, भुलवाना; गड़बड़ी या खराबी करना।

गड़बड़ी *स्त्री.* 'गड़बड़'।

गड़रिया पुं. {सं. गड्डरिक} {*स्त्री.* गड़ेरिन} भेड़-बकरी पालनेवाली एक जाति।

गड़हा पुं. {*स्त्री. अल्पा.* गड़ही} गड्ढा।

गड़ा पुं. {सं. गण} ढेर, राशि।

गड़ाना *स.* {हिं. गड़ना} चुभाना।

स. हिं. 'गाड़ना' का प्रे.।

गड़ायत *वि.* {हिं. गड़ना} गड़ने या चुभनेवाला।

गड़ारी *स्त्री.* {हिं. गीड़ = गड्ढा या सं. गंड} अर्द्धवृत्ताकार गड्ढा जो कुछ दूर तक चला गया हो; गोल घेरा या गहरी लकीर; आसपास रहनेवाली आड़ी रेखाओं की शृंखला, गंड़ा, जैसे रुपये की गड़ारी; लकड़ी या धातु का मंडलाकार टुकड़ा जो छड़ आदि में पहनाया रहता है और जिसके सहारे कोई चीज खींचते, चढ़ाते या उतारते हैं, घिरनी, जैसे कुएँ की गड़ारी (पुली)।

गडुआ पुं. {हिं. गेरना} टोंटीदार लोटा।

गडुई *स्त्री.* {हिं. गडुआ} पानी रखने का टोंटीदार छोटा बरतन, झारी।

गडौना पुं. {?} एक प्रकार का पान।

गड्ड पुं. {सं. गण} {*स्त्री.* गड्डी} एक पर एक रखी हुई एक-सी वस्तुओं की राशि, ढेर; लागत, मूल्य आदि के विचार से एक साथ रहनेवाली छोटी-बड़ी या कई तरह की चीजों का समूह।

मुहा. गड्ड में = छोटी-बड़ी या सब तरह की चीजें एक साथ लेने पर (मूल्य, भाव आदि के विचार से)।

गड्डमड्ड पुं. {हिं. गड्ड} बेमेल वस्तुओं की मिलावट, घाल-मेल; *वि.* बेसिलसिले रखा हुआ; अंडबंड।

गड्ढा पुं. {सं. गर्त, प्रा. गड्ड} गहरा या कम तल या स्थान, गड़हा।

मुहा. *किसी के लिए गड्ढा खोदना* = किसी के अनिष्ट का उपाय करना।

गढ़ंत *वि.* {हिं. गढ़ना} कल्पित, बनावटी (बात), जैसे—मनगढ़ंत; *स्त्री.* गढ़ने की क्रिया या भाव।

गढ़ पुं. {सं. गढ़ = खाई} {*स्त्री. अल्पा.* गढ़ी} खाई; क़िला, दुर्ग।

मुहा. गढ़ जीतना या तोड़ना = किला जीतना; बहुत कठिन काम पूरा करना।

गढ़न *स्त्री.* {हिं. गढ़ना} गढ़ने की क्रिया; बनावट, गठन।

गढ़ना *स.* {सं. घटन} काट-छाँटकर चीज बनाना, रचना; सुडौल करना, सँवारना; बात बनाना; मारना, पीटना।

गढ़ना-छीलना *स.* काट-छाँटकर ठीक करना।

गढ़पति पुं. {हिं. गढ़ + सं. पति} किलेदार; राजा, सरदार।

गढ़ाई *स्त्री.* {हिं. गढ़ना} गढ़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

गढ़ाना *स.* हिं. 'गढ़ना' का प्रे.।

गढ़िया *वि.* {हिं. गढ़ना} गढ़नेवाला।

गढ़ी *स्त्री.* {हिं. गढ़} छोटा किला।

गढ़ीश पुं. {हिं. गढ़ + सं. ईश} गढ़ का स्वामी।

गढ़ैया *वि.* {हिं. गढ़ना} गढ़नेवाला।

गण पुं. {सं.} समूह, झुंड, जैसे लेखकगण; ऐसे मनुष्यों का समुदाय जिनमें किसी विषय में समानता हो; शिव के पार्षद; दूत; सेवक;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुचरों का दल; वस्तुओं, जीवों आदि का वह बड़ा विभाग; छंदशास्त्र में लघु-गुरु के विचार से तीन-तीन मात्राओं के आठ समूह या वर्ग, यथा—यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण और सगण।

गणक पुं. {सं.} गणना करने या गिननेवाला; ज्योतिषी।

गणतंत्र पुं. {सं.} {*वि.* गणतंत्री} वह शासन-प्रणाली जिसमें जनता ही अपने प्रतिनिधि और प्रधान शासक चुनती है।

गणतंत्री *वि.* {सं. गणतंत्र} गणतंत्र-संबंधी; जो गणतंत्र के सिद्धांतों के अनुसार हो।

गणन पुं. {सं.} {*वि.* गणित} गणना, गिनना।

गणना *स्त्री.* {सं.} संख्या, गिनती, हिसाब लगाकर यह देखना कि कुल कितना हुआ है (कैलकुलेशन, कम्प्यूटेशन); इस प्रकार लगाया हुआ हिसाब या तैयार किया हुआ लेखा; गिने जाने की क्रिया या भाव, गिनती, जैसे—आपकी गणना बहुत बड़े पंडितों में है; मनुष्यगणना, पशुगणना, गृहगणना आदि (सेंसस)।

गणनायक पुं. {सं.} गणेश।

गणनायिका *स्त्री.* {सं.} भगवती, दुर्गा।

गणनीय *वि.* {सं.} {*भाव.* गणनीयता} जो गिना जा सके; जो गिना जाने को हो।

गणपति पुं. {सं.} गणेश।

गणराज्य पुं. {सं.} वह राज्य जिसमें गणतंत्री शासन-प्रणाली हो।

गणशः *क्रि. वि.* {सं.} गणों या समूहों में; एक-एक गण करके।

गणिका *स्त्री.* {सं.} वेश्या, रंडी।

गणित पुं. {सं} {*वि.* गणितिक} वह शास्त्र जिसमें संख्या, परिमाण आदि निश्चित करने के उपायों का विचार होता है, हिसाब; (यह तीन प्रकार होता है—पाटीगणित, बीजगणित और रेखागणित)।

गणित्र पुं. {सं.} गणना करनेवाला यंत्र।

गणेश पुं. {सं.} हिन्दुओं के एक प्रधान देवता जिनका शरीर मनुष्य का-सा और सिर हाथी का-सा माना गया है।

गण्य *वि.* {सं.} गिनने के योग्य; प्रतिष्ठित।

गत[1] *वि.* {सं.} {*स्त्री.* गता} बीता हुआ; मरा हुआ; (शब्द के आरंभ में) रहित, हीन, जैसे—गतवैभव; (प्रत्यय रूप में) संबंधी, जैसे जातिगत, व्यक्तिगत; किसी में आया, मिला या लगा हुआ, जैसे अंतर्गत।

गत[2] *स्त्री.* {सं. गति} अवस्था, दशा।

मुहा. गत बनाना = दुर्दशा करना।

रूप, वेष; प्रयोग, उपयोग; दुर्दशा; बाजों के कुछ बँधे हुए बोल।

गतका पुं. {सं. गदा} पैंतरा खेलने का वह डंडा जिसके ऊपर चमड़ा मढ़ा रहता है; वह खेल जो फरी और गतके से खेला जाता है।

गतागत पुं. {सं.} आने और जाने की क्रिया या भाव, गमनागमन, आवाजाही; एक शब्दालंकार; *वि.* गया और आया हुआ।

गतानुगतिक *वि.* {सं.} पुराना आदर्श देखकर उसी के अनुसार चलनेवाला; अनुकरण करनेवाला।

गति *स्त्री.* {सं.} किसी स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया, चाल, गमन; हिलना-डोलना, हरकत; अवस्था, दशा; बाना, वेष; प्रवेश, पैठ; प्रयत्न की हद, अंतिम उपाय; सहारा, अवलंब; लीला, माया; ढंग, रीति; मृत्यु के उपरांत जीवात्मा को प्राप्त होनेवाली अवस्था; मृतक का क्रियाकर्म; मोक्ष, मुक्ति।

गतिकी *स्त्री.* {सं.} {*वि.* गतिकीय} वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि वस्तुओं या तत्वों में गति अथवा आगे-पीछे हटने-बढ़ने की शक्ति कहाँ से, कैसे और कितनी आती है (डायनामिक्स)।

गतिमान *वि.* {सं.} जो गति में हो।

गतिज *वि.* {सं.} गति से उत्पन्न।

गतिज ऊर्जा *स्त्री.* {सं.} गति से उत्पन्न ऊर्जा।

गतिरोध पुं. {सं.} गति अवरुद्ध होने की स्थिति; वह स्थिति जब समस्या का समाधान वार्ता द्वारा न निकला हो।

गतिविधि *स्त्री.* {सं.} चेष्टा; किसी की चाल-ढाल या कार्यों आदि का रंग-ढंग।

गतिशील *वि.* {सं.} {*भाव.* गतिशीलता} जिसमें गति हो, चलने-फिरनेवाला; जो स्वयं चलकर दूसरे को भी चलाता हो।

गत्ता पुं. {देश.} कागज की दफ्ती।

गत्ता-बक्स पुं. गत्ते का बना बक्स।

गत्ताल-खाता पुं. {सं. गर्त + हिं. खाता} डूबी हुई रकम का लेखा, बट्टा-खाता।

गत्यवरोध पुं. {सं. गति + अवरोध} किसी बात, विशेषतः झगड़े आदि के निपटारे की बातचीत में बाधा पड़ना, जिच (डेडलॉक)।

गथ पुं. {सं. ग्रंथ} पूँजी, जमा; माल; झुंड।

गथना *स.* {सं. ग्रंथन} एक में जोड़ना, गूँथना; बात बनाना।

गदकारा *वि.* {अनु. गत + कारा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* गदकारी} मुलायम और दब जानेवाला, गुलगुला।

गदना *स.* {सं. गदन} कहना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गदर पुं. {अ.} खलबली, हलचल; बलवा, बगावत, विद्रोह।

गदरा पुं. {हिं.} हरी मटरफली, हरा चना आदि के दाने।

गदराना अ. {फा. गदा = मांस} फल आदि का पकने पर होना; जवानी के समय अंगों का भरना; आँखों में कीचड़ आना।

गदहपचीसी स्त्री. {हिं. गदहा + पचीसी} 16 से 25 वर्ष तक की अवस्था जिसमें मनुष्य को अनुभव कम रहता है।

गदा[1] स्त्री. {सं.} एक प्राचीन अस्त्र जिसमें एक डंडे में बड़ा लट्टू लगा रहता था।

गदा[2] पुं. {फा.} फकीर; दरिद्र व्यक्ति।

गदाई वि. {फा. गदा} तुच्छ, नीच; वाहियात।

गदाधर पुं. {सं.} विष्णु, नारायण।

गदेला पुं. {हिं. गद्दा} मोटा गद्दा।

गद्‌गद वि. {सं.} हर्ष, प्रेम आदि के आवेश से पूर्ण; हर्ष, प्रेम आदि के आवेग से रुँधा हुआ, अस्पष्ट और असम्बद्ध (स्वर); बहुत अधिक प्रसन्न।

गद्द पुं. {अनु.} अजीर्ण के कारण होनेवाला पेट का भारीपन।

गद्दर वि. {हिं.} अपक्व, अधपका; पु. गद्दा।

गद्दा पुं. {हिं. गद्द से अनु.} रुई, पयाल आदि से भरा हुआ मोटा और गुदगुदा बिछौना, भारी तोशक।

गद्दार वि. {अ.} विद्रोही, विश्वासघाती।

गद्दारी स्त्री. {अ.} विद्रोह, विश्वासघात।

गद्दी[1] स्त्री. {हिं. गद्दा का स्त्री. और अल्पा.} छोटा गद्दा; घोड़े, ऊँट आदि की जीन; व्यवसायी, दुकान के मालिक आदि के बैठने का स्थान; कोठी या बड़ी दुकान; बड़ा पद; राजा के पहले-पहल सिंहासन पर बैठने का कृत्य और उत्सव, राज्याभिषेक।

गद्दी[2] पुं. {सं. गड्डरिक} भेड़ चरानेवाला, गड़ेरिया।

गद्दीनशीन वि. {हिं. गद्दी + फा. नशीन} {भाव. गद्दीनशीनी} सिंहासन पर बैठा हुआ, जिसे राज्याधिकार मिला हो; किसी का उत्तराधिकारी।

गद्य पुं. {सं.} वह लेख जिसमें मात्रा और वर्ण की संख्या, क्रम आदि का विचार न होता हो, 'पद्य' का उलटा (प्रोज)।

गधा पुं. {सं. गर्दभ} घोड़े की तरह का, पर उससे छोटा एक प्रसिद्ध चौपाया।

मुहा. गधे पर चढ़ाना = बहुत बेइज्जत करना; *गधे का हल चलाना* = पूरी तरह से नष्ट या ध्वस्त करना।

मूर्ख, बेवकूफ।

गन स्त्री. {अं.} बंदूक; पुं. गण।

गनक पुं. {सं. गणक} ज्योतिषी।

गनगनाना अ. {अनु. गनगन} जाड़े से काँपना; (शरीर का) रोमांचित होना।

गनगौर स्त्री. {सं. गण + गौरी} चैत्र शुक्ला तृतीया (इस दिन स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा करती हैं)।

गनना स. गिनना; स्त्री. गणना करना।

गनाना अ. {हिं. गिनना} गिना जाना, गिनती में आना।

गनाल स्त्री. {सं. घननाल} पुरानी चाल की एक प्रकार की बड़ी तोप।

गनिका स्त्री. {हिं.} गणिका, वेश्या।

गनी[1] स्त्री. {हिं. गिनना} गिनती।

गनी[2] वि. {अ. ग़नी} बहुत अधिक सम्पन्न, मालदार; बहुत बड़ा दाता और उदार।

गनीम पुं. {अ.} डाकू, लुटेरा; शत्रु, दुश्मन (विशेषतः सैनिक और आक्रमणकारी)।

गनीमत स्त्री. {अ.} मुफ्त का माल; विकट अवस्था में भी होनेवाली संतोष की बात।

गन्ना पुं. {सं. कांड} ईख, ऊख।

गप[1] स्त्री. {सं. कल्प} {वि. गप्पी} इधर-उधर की बात, असत्य बात; केवल मन को बहलाने की बात, बकवाद; झूठी खबर, झूठी बड़ाई, डींग।

गप[2] पुं. {अनु.} झट से निगलने की क्रिया या शब्द; किसी मुलायम वस्तु में घुसने का शब्द।

गपकना स. {अनु. गप + हिं. करना} चटपट खा जाना।

गपना स. {हिं. गप} गप हाँकना।

गप-शप स्त्री. इधर-उधर की बात, बकवाद।

गपोड़ा पुं. {हिं. गप} मिथ्या बात, कपोल- कल्पना, गप।

गप्पी वि. {हिं. गप} बढ़-बढ़कर व्यर्थ की बातें करनेवाला, गप मारनेवाला।

गफ़ वि. {अ. ग़फ्स} घनी बुनावट का, गाढ़ा। (कपड़ा)

गफ़लत स्त्री. {अ.} असावधानी, लापरवाही; चेत या सुध का अभाव, बेखबरी; भूल, चूक।

गबन पुं. {अ.} दूसरे का धन अनुचित रूप से काम में लाना।

गबरू वि. {फा. खूबरू} उभड़ती जवानी का, पट्ठा; भोला-भाला; पुं. दूल्हा, पति।

गब्ब पुं. गर्व (अभिमान)।

गब्बर वि. {सं. गर्व, पा. गब्ब} घमंडी, अहंकारी; जल्दी काम न करने या उत्तर न देनेवाला, मट्ठर; बहुमूल्य, कीमती; धनी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गब्बी *वि.* {सं. गर्विन्} अभिमानी, घमंडी।

गभस्ति[1] *पुं.* {सं.} किरण; सूर्य; बाँह, हाथ।

गभस्ति[2] *स्त्री.* अग्नि की स्त्री, स्वाहा का एक नाम।

गभस्तिमान् *पुं.* {सं} सूर्य।

गभुआर *वि.* {सं. गर्भ + हिं. आर (प्रत्य.)} गर्भ का, जन्म के समय का (जैसे सिर के बाल); जिसका मुंडन न हुआ हो; अनजान।

गम[1] *स्त्री.* {सं. गम्य} (किसी वस्तु या विषय में) प्रवेश, पहुँच, गति।

गम[2] *पुं.* {*अ.* ग़म} दुख; शोक।

मुहा. गम खाना = क्षमा करना, जाने देना, ध्यान न देना।

चिंता, फिक्र।

गमक[1] *पुं.* {सं.} जानेवाला; बतलानेवाला, बोधक, सूचक।

गमक[2] *स्त्री.* {अनु. गमगम} संगीत में एक श्रुति या स्वर से दूसरी श्रुति या स्वर पर जाने का ढंग; तबले की गंभीर आवाज; सुगंध; गंध, महक।

गमकना *अ.* {हिं. गमक} महकना।

ग़मख़ोर *वि.* {फा. ग़मख़्वार} {*संज्ञा* ग़मख़ोरी} सहिष्णु, सहनशील।

गमत *पुं.* {सं.} मार्ग, व्यवसाय।

गमथ *पुं.* {सं.} पथिक, बटोही।

गमन *पुं.* {सं.} {*वि.* गम्य} जाना, रवाना होना, प्रस्थान; संभोग, जैसे–वेश्यागमन।

गमनकाल *पुं.* {सं.} जाने, भेजने अथवा कहीं पहुँचने में लगनेवाला समय।

गमना[1] *अ.* {सं. गमन} जाना; चलना।

गमना[2] *अ.* {*अ.* गम} सोच या चिंता करना; रंज करना; ध्यान देना।

गमनागमन *पुं.* {सं.} जाना और आना; एक स्थान से दूसरे स्थान पर आने-जाने की क्रिया, भाव या साधन, यातायात (कम्युनिकेशन)।

गमला *पुं.* {?} फूलों के पौधे लगाने का पात्र; पाखाना फिरने का पात्र।

गमाना *स.* गँवाना, खोना।

ग़मी *स्त्री.* {*अ.* ग़म} वह शोक जो किसी आत्मीय के मरने पर मनाते हैं, शोक; मृत्यु, मरनी।

गम्य *वि.* {सं.} जाने योग्य; प्राप्य, लभ्य, सरल, सहज।

गयंद *पुं.* {सं. गजेन्द्र} बड़ा हाथी।

गय *पुं.* {सं. गज} हाथी।

गयण (न) *पुं.* {सं. गगन} आकाश, आसमान।

गया[1] *पुं.* {सं.} बिहार का एक प्रसिद्ध तीर्थ, जहाँ हिन्दू पिंडदान करते हैं।

गया[2] *अ.* {सं. गम} जाना क्रिया का भूतकालिक एक वचन रूप।

मुहा. गई करना = ध्यान न देना।

गया-गुजरा, गया-बीता *वि.* दुर्दशा को पहुँचा हुआ; निकृष्ट।

गर[1] *पुं.* {सं.} रोग, बीमारी।

गर[2] *पुं.* {हिं. गल} गला, गरदन।

गर[3] *प्रत्य.* {फा.} करने या बनानेवाला, जैसे–कारीगर, सिकलीगर।

गरक *वि.* {*अ.* ग़र्क} {*भाव.* गरकी} डूबा हुआ, निमग्न; नष्ट, बरबाद।

गरकी *स्त्री.* {*अ.* ग़र्क} डूबने की क्रिया या भाव; पानी की बाढ़।

गरगज *पुं.* {हिं. गढ़ + गज} किले का बुर्ज; वह ऊँची भूमि जहाँ से शत्रु का पता लगाया जाता है; फाँसी की टिकठी; *वि.* बहुत बड़ा, विशाल।

गरज[1] *स्त्री.* {सं. गर्जन} बहुत गंभीर शब्द, जैसे–बादल या सिंह का।

गरज[2] *स्त्री.* {*अ.*} आशय, प्रयोजन, मतलब; आवश्यकता; इच्छा; स्वार्थ।

पद गरज यह कि = इतना होने पर भी, आखिरकार; मतलब यह कि।

गरजना *अ.* {सं. गर्जन} गंभीर और घोर शब्द करना; मोती का चटकना, तड़कना या फूटना; *वि.* गरजनेवाला।

गरजमंद *वि.* {फा.} {*भाव.* गरजमंदी} जिसे गरज या आवश्यकता हो; इच्छुक, चाहने वाला।

गरजू *वि.* {हिं. गरजना} गरजनेवाला, चलना; *वि.* गरजमंद।

गरट्टना *अ.* {हिं. गरट्ट} झुंड में होकर चलना।

गरदन *स्त्री.* {फा. गर्दन} धड़ और सिर को जोड़नेवाला अंग, गला।

मुहा. गरदन उठाना = विरोध करना; हानि पहुँचना; सर्वनाश करना; *गरदन मारना* = सिर काटकर जान से मार डालना; *गरदन में हाथ देना या डालना* = पकड़कर बाहर निकाल देना।

बरतनों आदि में मुँह के नीचे का भाग।

गरदनियाँ *स्त्री.* {हिं. गरदन} कमीज, कुरते, कोट आदि में गले के चारों ओर रहनेवाला अंश; गले में पहनने की हँसुली या कंठी; घोड़े की पीठ और गरदन पर डाला जानेवाला कपड़ा।

गरदा *पुं.* {फा. गर्द} धूल, गुबार।

गरदान *वि.* {फा.} घूम-फिरकर एक ही जगह पर आनेवाला; *पुं.* शब्दों का रूप साधन; वह कबूतर जो घूम-फिरकर पुनः अपने स्थान पर आ जाता हो; फेर, चक्कर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरदानना *स.* {फा. गरदान} शब्दों के रूप-साधना; उद्धरणी करना; किसी को कुछ समझना या मानना।

गरना *अ.* {हिं. 'गारना' का *अ.*} गारा या निचोड़ा जाना, निचुड़ना; किसी चीज के निकल जाने पर उससे रहित होना।

गरनाल *स्त्री.* {हिं. गर + नली} बहुत चौड़े मुँह की तोप, घननाल।

गरब *पुं.* {सं. गर्व} हाथी का मद।

गरबई *स्त्री.* गर्व।

गरब-गहेला *वि.* {सं. गर्व = अभिमान + सं. गृहीत, प्रा. गहिल्ल} {*स्त्री.* गरब-गहेली} बहुत गर्व या अभिमान करनेवाला।

गरवना *अ.* {सं. गर्व} गर्व करना।

गरबीला *वि.* {सं. गर्व} घमंडी।

गरभ *पुं.* गर्भ।

गरभाना *अ.* {सं. गर्भ} गर्भवती होना; धान, गेहूँ आदि में बाल लगना।

गरम *वि.* {फा. गर्म} जलता हुआ, तप्त, उष्ण; क्रुद्ध।

मुहा. मिजाज गरम होना = क्रोध आना; पागल होना।

तीव्र, प्रचंड, विकट; गरमी पैदा करने या बढ़नेवाला।

गरम कपड़ा *पुं.* ऊनी कपड़ा।

गरम मसाला *पुं.* धनिया, लौंग, इलायची, जीरा, मिर्च आदि मसालों का मिश्रण।

गरमागरम *वि.* {फा. गर्म} बहुत गरम; ताजा।

गरमागरमी *स्त्री.* {हिं. गरम} मुस्तैदी; आवेशपूर्ण कहासुनी।

गरमाना *अ.* {हिं. गरम} गरम या उष्ण होना; उमंग में आना, मस्त होना; क्रोध या आवेश में आना; परिश्रम करने पर शरीर का ठीक तरह से काम करना, जैसे–गला गरमाना।

स. गरम करना, तपाना; किसी में किसी प्रकार की गरमी, आवेश आदि लाना।

गरमाहट *स्त्री.* {हिं. गरम + आहट (प्रत्य.)} 'गरम' होने का भाव; साधारण या हलका ताप।

गरमी *स्त्री.* {फा. गर्मी} उष्णता, ताप; जलन; तेजी, उग्रता, प्रचंडता।

मुहा. गरमी निकालना = गर्व दूर करना।

गररराना *अ.* {अनु.} गरजना।

गररी *स्त्री.* {हिं.} सिरोही पक्षी।

गरल *पुं.* {सं.} विष, जहर।

गरवा *वि.* {सं. गुरु} भारी; महान्।

गरसना *स.* = ग्रसना।

गरह *पुं.* = ग्रह।

गरहन *पुं.* = ग्रहण।

गराँव *पुं.* {हिं. गर = गला} वह रस्सी जो चौपायों के गले में बाँधी जाती है, पगहा।

गराज[1] *स्त्री.* {सं गर्जन} गरजन की क्रिया या भाव, गरज।

गराज[2] *पुं.* {अं. गैरेज} मोटरों, गाड़ियों आदि के रहने का स्थान, गाड़ी = खाना (गैरेज)।

गराना *स.* {हिं. 'गारना' का प्रे.} किसी को मारने में प्रवृत्त करना।

गरारा[1] *वि.* {सं. गर्व + आरा (प्रत्य.)} गर्वयुक्त; मस्ती में इधर-उधर घूमता या इठलाता हुआ; प्रबल, प्रचंड।

गरारा[2] *पुं.* {*अ.* गरगरा} कुल्ला; कुल्ला करने के पानी में मिलाई जानेवाली दवा।

गरारा[3] *पुं.* {हिं. घेरा} पायजामे की ढीली मोहरी; बड़ा थैला।

गरास *पुं.* {हिं.} ग्रास, कवर।

गरावना *स.* = गलाना।

गरिमा *स्त्री.* {सं. गरिमन्} गुरुत्व, भारीपन; महिमा, महत्व, गौरव; घमंड, अहंकार; आत्मश्लाघा, शेखी; आठ सिद्धियों में से एक।

गरियाना *अ.* = गालियाँ देना।

गरियार *वि.* {हिं. गड़ना = एक जगह रुक जाना} (चौपाया) जो चलने में धीमा हो, सुस्त, मट्ठर।

गरिष्ठ *वि.* {सं.} बहुत गुरु, बहुत भारी; (भोजन या खाद्य पदार्थ) जो जल्दी न पचे।

गरी *स्त्री.* {सं. गुलिका} नारियल के फल के अंदर का मुलायम गूदा; बीज के अंदर की गिरी, मींगी।

गरीब *वि.* {*अ.* ग़रीब} नम्र; दीनहीन; दरिद्र, निर्धन।

गरीबाना *अ. वि.* गरीब व्यक्ति की भाँति।

गरीबनिवाज *वि.* {फा. ग़रीब + निवाज़} गरीबों पर दया करनेवाला, दयालु।

गरीबपरवर *वि.* {फा. गरीब + परवर} गरीबों को पालनेवाला, दीन-प्रतिपालक।

गरीबी *स्त्री.* {*अ.* ग़रीब} दीनता, नम्रता; दरिद्रता, निर्धनता।

गरीयस *वि.* {सं.} {*स्त्री.* गरीयसी} बहुत भारी, गुरु; महान्।

गरु *वि.* {सं. गरु} {*स्त्री.* गरुई, *भाव.* गरुआई} भारी, वजनी; गौरवशाली; जिसका स्वभाव गंभीर हो, शांत, धीर।

गरुआई *स्त्री.* {हिं.} गुरुता, भारीपन।

गरुआना *अ.* {सं. गुरु} भारी होना; *स.* ऊपर भार रखकर भारी करना या बनाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरुड़ *पुं.* {सं.} एक प्रकार का पक्षी जो सब पक्षियों का राजा और विष्णु का वाहन माना जाता है।

गरुड़गामी *पुं.* विष्णु, श्रीकृष्ण।

गरुड़ध्वज *पुं.* विष्णु, एक प्रकार स्तंभ जिसके माथे पर गरुड़ बना हो।

गरुड़पाश *पुं.* एक प्रकार का फंदा।

गरुड़पुराण *पुं.* अठारह पुराणों में सत्रहवाँ पुराण।

गरुड़सिंह *पुं.* {सं.} वह कल्पित आकृति, जिसका अगला भाग गरुड़ के समान तथा पिछला सिंह के समान हो।

गरुता *स्त्री.* = गुरुता।

गरुवाई *स्त्री.* = गुरुता।

गरु *वि.* = गुरु (भारी)।

ग़रूर *पुं.* {अ. ग़रूर} घमंड, अभिमान।

गरूरत *स्त्री.* = गरूर।

गरूरी *वि.* {अ. ग़रूर} घमंडी; *स्त्री.* अभिमान, घमंड।

गरेरना *क्रि. स.* {हिं.} घेरना, रोकना, छेंकना।

गरेठा *वि.* = टेढ़ा।

गरेबान *पुं.* {सं. ग्रीवा से फा.} कुरते, अंगे आदि का वह भाग जो गरदन के चारों ओर रहता है, गला।

गरेरा[1] *पुं.* = घेरा।

गरेरा[2] *वि.* {*स्त्री.* गरेरी} जिसमें घुमाव-फिराव हो, चक्करदार।

गरेरी *स्त्री.* = गराड़ी।

गरोह *पुं.* {फा.} झुंड, जत्था, दल।

गर्ज *स्त्री.* गरज।

गर्जक *वि.* {सं.} गरजने या जोर से बोलनेवाला; *पुं.* एक प्रकार का यंत्र जिसकी सहायता से कही हुई बात कुछ जोर से और अधिक दूर तक सुनाई पड़ती है (लाउडस्पीकर)।

गर्जन *पुं.* {सं.} घोर शब्द करना, गरजना।

गर्जमान *वि.* {सं.} गरजनेवाला।

गर्त *पुं.* {सं.} गड्ढा; दरार।

ग़र्द *स्त्री.* {फा.} धूल, मिट्टी।

ग़र्दखोर *वि.* {फा. गर्दखोर} जो गर्द या धूल पड़ने से जल्दी मैला न हो; *पुं.* पैर पोंछने का टाट आदि।

गर्द-गुबार *पुं.* {फा.} धूल-मिट्टी।

गर्दन *स्त्री.* = गरदन।

गर्दभ *पुं.* {सं.} गधा।

गर्दिश *स्त्री.* {फा.} घुमाव, चक्कर; विपत्ति, आफत।

गर्भ *पुं.* {सं.} पेट के अंदर की कोठरी; आँगन; मंदिर में वह कोठरी जिसमें मूर्ति रहती है।

गर्भनाल *स्त्री.* {सं.} फूलों के अंदर की वह पतली नाल जिसके सिर पर गर्भ केसर रहता है।

गर्भपात *पुं.* {सं} गर्भ के बच्चे की पूरी बाढ़ से पहले पेट में से निकल जाना, गर्भ गिरना।

गर्भवती *वि. स्त्री.* {सं.} जिसके पेट में बच्चा हो, गर्भिणी।

गर्भविज्ञान *पुं.* {सं.} वह विज्ञान जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि गर्भ में कलल किस प्रकार उत्पन्न होता है और उसकी वृद्धि या विकास किस प्रकार होता है (एम्ब्रायॉलॉजी)।

गर्भस्थ *वि.* {सं.} जो गर्भ में हो।

गर्भस्राव *पुं.* {सं.} चार महीने से कम का गर्भ गिरना।

गर्भांक *पुं.* {सं.} नाटक में किसी दूसरे नाटक का दृश्य; नाटक के अंक में का कोई दृश्य।

गर्भाधान *पुं.* {सं.} गर्भ ठहरना, गर्भधारण; गर्भधारण के समय का संस्कार।

गर्भावधि *स्त्री.* {सं.} गर्भ में रहने की अवधि (गेस्टेशन पीरियड)।

गर्भाशय *पुं.* {सं.} {*वि.* गर्भाशयी} स्त्रियों के पेट का वह स्थान जिसमें गर्भ या बच्चा रहता है।

गर्भिणी *स्त्री.* {सं.} गर्भवती।

गर्भित *वि.* {सं.} किसी के अंदर भरा या पड़ा हुआ।

गर्भीला *वि.* {सं. गर्भ + ईला (प्रत्य.)} (रत्न) जिसके अंदर से आभा निकलती हो।

गर्रा *पुं.* {देश.} लाख का रंग; इस रंग का घोड़ा; इस रंग का कबूतर; गर्व।

गर्व *पुं.* {सं.} अहंकार, घमंड, शेखी।

गर्वाना *अ.* {सं. गर्व} गर्व करना।

गर्विणी *वि. स्त्री.* {सं.} घमंड करनेवाली।

गर्वित *वि.* {सं.} गर्वयुक्त, अभिमानी।

गर्विता *वि. स्त्री.* {सं.} वह नायिका जिसे अपने रूप, गुण आदि का घमंड हो।

गर्विष्ठ *वि.* {सं.} जिसे गर्व या अभिमान हो, घमंडी।

गर्वीला *वि.* {सं. गर्व + इला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* गर्वीली} घमंडी, अभिमानी।

गर्हण *पुं.* {सं.} {*वि.* गर्हणीय, गर्हित} निंदा, शिकायत।

गर्हणीय *वि.* {सं.} निंदनीय, निंदा करने योग्य।

गर्हित *वि.* {सं.} बहुत अधिक दूषित, निंदनीय और घृणित, बहुत बुरा, खराब।

गलंश *पुं.* {हिं.} वह संपत्ति जिसका स्वामी मर गया हो और उसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गल पुं. {सं.} गला, कंठ।

गलकंबल पुं. {सं.} गौ के गले के नीचे की झालर।

गलका पुं. {हिं. गलना} एक प्रकार का फोड़ा जो हाथ की उँगलियों में होता है; एक प्रकार का चाबुक।

गलकोड़ा पुं. {हिं.} एक प्रकार का कोड़ा।

गलगंज पुं. {हिं. गाल + गाँजना} {क्रि. गलगंजना} शोरगुल, हल्ला।

गलगल *स्त्री.* {देश.} मैना की तरह की एक चिड़िया, सिरगोटी; एक प्रकार का बहुत बड़ा नींबू।

गलगला *वि.* {हिं. गीला} भीगा हुआ, तर।

गलगलाना *अ.* {हिं. गाल + गाजना} डींग मारना; हर्षित होना; भिगोना, निचोड़ना।

गलगाजना {हिं. *क्रि. अ.*} आनंद से गरजना, गाल बजाना।

गलगुथना *वि.* {हिं. गाल} जिसका बदन खूब भरा हो और गाल खूब फूले हों।

गलग्रह पुं. {सं.} आई हुई वह विपत्ति जो कठिनता से टले।

गलजँदड़ा पुं. {सं. गल + यंत्र, पं. जंदरा} पीछा न छोड़नेवाला व्यक्ति, पदार्थ आदि; चोट लगे हुए हाथ को सहारा देने के लिए गले से बँधी हुई पट्टी।

गलजोड़, गलजोत *स्त्री.* {हिं.} दोनों बैलों के गले में बाँधनेवाली रस्सी, गले का हार।

गलझंप पुं. {हिं. गला + झाँपना} हाथी के पैर की लोहे की जंजीर।

गलतंग *वि.* {हि.} अचेत, बेसुध।

गलतंस पुं. {सं. गलित + वंश} नि:संतान व्यक्ति की संपत्ति, लावारिस जायदाद या माल।

गलत *वि.* {*अ.*} {सं. गलती} अशुद्ध; असत्य, मिथ्या।

गल-तकिया पुं. {हिं. गाल + तकिया} गालों के नीचे रखने का तकिया।

गलतफहमी *स्त्री.* {फा.} गलत समझ, भ्रम।

गलतान[1] *वि.* {फा. गल्ताँ} लुढ़कता या लड़खड़ाता हुआ।

गलतान[2] पुं. {?} एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

गलती *स्त्री.* {*अ.* गलत + हिं. ई (प्रत्य.)} भूल, चूक; अशुद्धि।

गलथना पुं. {सं. गलस्तन} वे झूठे थन जो कुछ बकरियों के गले में होते हैं।

गलन[1] पुं. {सं.} गिरना; गलना।

गलन[2] *स्त्री.* {हिं. गलना} कड़ाके की सर्दी जिसमें हाथ-पैर गलते से प्रतीत होते हैं।

गलना *अ.* {सं. गरण} किसी चीज का घनत्व घटना, द्रव या कोमल होना; बहुत जीर्ण होना; शरीर क्षीण होना; सर्दी से हाथ-पैर ठिठुरना; बेकाम होना।

गलफड़ा पुं. {हिं. गाल + फटना} जलजंतुओं का वह अवयव जिससे वे पानी में साँस लेते हैं; गाल का चमड़ा।

गलफाँसी *स्त्री.* {हिं. गला + फाँसी} गले की फाँसी; कष्टदायक बात।

गलफूट *स्त्री.* {हिं.} बड़बड़ाने का स्वर।

गलबल पुं. {हिं.} कोलाहल, खलबली।

गलबहियाँ (बाँही) *स्त्री.* {हिं. गला + बाँह} गले में बाँहें डालना, आलिंगन, गले लगाना।

गलमँदरी *स्त्री.* {हिं. गाल + मूँछ} शिव के पूजन के समय गाल बजाना, गुलमुद्रा।

गलमुच्छ, गलमुच्छा पुं. {हिं. गाल + मूँछ} गालों तक बढ़ी हुई मूँछें, गलगुच्छा।

गलमेखला *स्त्री.* {सं.} गले का हार।

गलवाना *स.* {हिं.} 'गलाना' का प्रे.।

गलशुंडी *स्त्री.* {सं.} जीभ की जड़ के पास की छोटी घंटी, जीभी, कौआ; एक रोग जिसमें तालु की जड़ सूज जाती है।

गलसुआ पुं. एक रोग जिसमें गले की ग्रंथियाँ सूज जाती हैं।

गलसुई *स्त्री.* {हिं. गाल + सं. सूची (तकिया) से हिं. सुई} गालों के नीचे रखा जानेवाला छोटा गोल तकिया।

गलस्तन पुं. {सं.} गलथना।

गलही *स्त्री.* {हिं. गला} नाव का अगला उठा कोना।

गला पुं. {सं. गल} सिर को धड़ से जोड़नेवाला अंग, कंठ, गरदन।

मुहा. *गला काटना* = धड़ से सिर अलग करना; बहुत हानि पहुँचाना; सूरन आदि का गले में जलन उत्पन्न करना; *गला घुटना* = साँस रुकना; *गला घोंटना* = जोर से गला दबाना; जबरदस्ती करना; *गला छूटना* = छुटकारा या मुक्ति मिलना; *गला दबाना* = अनुचित दबाव डालना; *गले का हार होना* = अत्यंत प्रिय होना; *(बात) गले के नीचे या गले में उतरना* = मन में बैठना, मन में जँचना; *गले पड़ना* = इच्छा के विरुद्ध प्राप्त होना; *गले बाँधना या मढ़ना* = किसी की इच्छा के विरुद्ध उसे देना; *गले लगाना* = छाती से लगाकर मिलना।

गले की नली जिससे शब्द निकलता और भोजन अंदर जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. *गला फाड़ना* = बहुत जोर से चिल्लाना; *गला मारना* = बोलना या गाना आरंभ करने पर कुछ देर बाद स्वर का तेज होना।
कंठ का स्वर; बरतन के मुँह के नीचे का भाग।

गलाना *स.* {हिं.} 'गलना' का सं. पिघलाना, रुपये खर्च करना।

गलित *वि.* {सं.} गिरा हुआ, च्युत; गला हुआ; अत्यंत जीर्ण और खंडित; चुआ हुआ; बहुत पका या सड़ा हुआ।

गलित कुष्ट *पुं.* {सं.} वह कोढ़ जिसमें अंग गल-गलकर गिरने लगते हैं।

गलितयौवना *स्त्री.* {सं.} वह स्त्री जिसका यौवन ढल गया हो।

गलिया *स्त्री.* {हिं.} चक्की का छेद जिसमें पीसने के लिए अन्न डाला जाता है।

गलियारा *पुं.* {हिं. गली} गली की तरह का छोटा तंग रास्ता; किसी राज्य या देश में से होकर जानेवाला पतला रास्ता जिस पर आने-जाने आदि का विशिष्ट और एकांत अधिकार किसी पराए राज्य या देश को प्राप्त हो (कॉरिडोर)।

गली *स्त्री.* {सं. गल} बस्ती का तंग रास्ता, कूचा।
मुहा. *गली-गली मारे फिरना* = इधर-उधर व्यर्थ घूमना या भटकना; चारों ओर अधिकता से मिलना।

गलीचा *पुं.* {*अ.* गलीच:} कालीन नामक मोटा बिछौना।

ग़लीज़ *वि.* {*अ.* ग़लीज़} गंदा, मैला; अपवित्र।

गलीत *वि.* {*अ.* गलीज़} मैला-कुचैला।

गलेबाज *पुं.* {हिं. गला + फा. बाज़} {*भाव.* गलेबाजी} वह जो बहुत बढ़-चढ़कर बातें करता हो; पक्के गाने गानेवाला गवैया जिसके संगीत में रस अपेक्षाकृत कम हो।

गलेबाजी *स्त्री.* {हिं. गला + बाजी} बहुत बढ़-बढ़कर बातें बनाना, डींग हाँकना; पक्का गाना गाते समय तानें आदि लेना।

गल्प *स्त्री.* {सं. जल्प या कल्प} मिथ्या प्रलाप, गप्प; छोटी कहानी।

गल्ला[1] *पुं.* {फा. गल्ल:} (पशुओं का) झुंड।

गल्ला[2] *पुं.* {*अ.* गल्ल:} अन्न, अनाज; वह संदूक जिसमें दुकान की रोज की बिक्री के रुपये रहते हैं, गोलक।

गवँ *स्त्री.* {हिं.} आश्रय, घात, अवसर।

गल्हाना *अ.* {सं. गल्प} बात करना।

गवन *पुं.* {सं. गमन} गमन, आना; गति, चाल; गौना (रस्म)।

गवनचार *पुं.* {हिं. गवन + चार} वधू का पहले-पहल वर के घर जाना, गौना।

गवनना *अं.* {सं. गमन} जाना।

गवना *अ.* {सं. गमन } जाना।

गवय *पुं.* {सं.} नीलगाय।

गवल *पुं.* {सं.} जंगली भैंसा, अरना।

गवाँना *क्रि. स.* {हिं.} नष्ट करना, खोना।

गवर्नर *पुं.* {अं.} किसी राज्य का सर्वप्रधान अधिकारी और शासक, राज्यपाल; किसी प्रदेश या प्रांत या सर्वप्रधान अधिकारी और शासक, प्रांतपति।

गवर्नर-जनरल *पुं.* {अं.} किसी देश का वह सर्वप्रधान अधिकारी और शासक जिसके अधीन कई गर्वनर या प्रांतपति हों।

गवाक्ष *पुं.* {सं.} छोटी खिड़की।

गवाना *स.* {हिं.} 'गाना' का प्रे.; *स.* = गँवाना।

गवारा *वि.* {फा.} अंगीकार करने योग्य; सह्य।

गवास[1] *स्त्री.* {हिं. गाना} गाने की इच्छा।

गवास[2] *पुं.* {सं. गवाशन} कसाई।

गवाह *पुं.* {फा.} {*भाव.* गवाही} वह मनुष्य जिसने कोई घटना स्वयं देखी हो; वह जो किसी विवाद के विषय में अपनी जानकारी बतलाए, साक्षी (विटनेस)।

गवाही *स्त्री.* {फा.} किसी के सामने यह कहना कि हाँ, ऐसा ही हुआ है, गवाह का कथन या बयान, साक्षी, साक्ष्य (एविडेंस)।

गविष्ठ *वि.* {सं.} स्वर्गस्थित; *पुं.* सूर्य।

गवीश *पुं.* {सं.} साँड, विष्णु।

गवेजा *पुं.* {?} वार्त्तालाप, बातचीत।

गवेषणा *स्त्री.* {सं.} खोज, अन्वेषण; किसी विषय का अच्छी तरह अनुशीलन करके उसके संबंध में नई बातों या तथ्यों का पता लगाना (रिसर्च)।

गवेषी *वि.* {सं. गवेषिन्} {*स्त्री.* गवेषणी} खोजनेवाला।

गवेसना *स.* {सं. गवेषणा} ढूँढ़ना; *स्त्री.* गवेषण।

गवेषी *वि.* {सं. गवेषण} गवेषणा या छानबीन करनेवाला।

गवैया *वि.* {हिं. गाना} गायक, गानेवाला।

गव्य *वि.* {सं.} जो गाय से उत्पन्न या प्राप्त हो, जैसे दूध, दही, घी आदि; *पुं.* गायों का झुंड; पंचगव्य।

गश *पुं.* {*अ.* गशी से फा.} मूर्छा; बेहोशी।

गश्त *पुं.* {फा.} टहलना, घूमना, भ्रमण; पहरा देने के लिए चक्कर लगाना, पहरा।

गश्ती *वि.* {फा.} घूमनेवाला; चलता-फिरता हुआ; कुछ विशेष प्रकार के लोगों के पास पहुँचनेवाला (पत्र या चिट्ठी आदि); *वि. स्त्री.* व्यभिचारिणी, कुलटा।

गश्ती चिट्ठी *स्त्री.* = परिपत्र।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गसीला *वि.* {हिं. गसना} {*स्त्री.* गसीली} जकड़ा, गठा या गुँथा हुआ; (कपड़ा) जिसके सूत खूब सटे या मिले हों, गफ़।

गस्सा *पुं.* {सं. ग्रास} ग्रास, कौर।

गह *स्त्री.* {सं. ग्रह} पकड़ने की क्रिया या भाव, पकड़; हथियार आदि की मूठ; दस्ता।

गहकना *अ.* {सं. गर्ध + क} चाह या लालसा से भरना, ललकना; उमंग में आना।

गहगड्ड *वि.* {सं. गर = गहरा + गड्ड = ढेर} गहरा, घोर (नशा)।

गहगह *वि.* {सं. गद्गद} उमंग से भरा हुआ, प्रफुल्लित, प्रसन्न; धूम-धामवाला।

गहगहा *वि.* {हिं.} आनंद से भरा हुआ।

गहगहाना *अ.* {हिं. गहगहा} आनंद से फूलना, बहुत प्रसन्न होना।

गहगहे *क्रि.वि.* {हिं. गहगहा} बहुत प्रसन्नता से; धूम से।

गहडोरना *स.* {देश.} पानी मथकर गंदा करना।

गहन[1] *वि.* {सं.} {*भाव.* गहनता} गंभीर; दुरूह, कठिन; दुर्गम, दुर्भेद्य; निविड़, घना; *पुं.* गहराई, थाह; दुर्गम स्थान; वन में का गुप्त स्थान।

गहन[2] *पुं.* {सं. ग्रहण} ग्रहण, उपराग; लेना, पकड़ना; कलंक; कष्ट, विपत्ति; बंधक, रेहन।

गहन[3] *स्त्री.* {हिं. गहना = पकड़ना} गहने या पकड़ने की क्रिया या भाव, पकड़; हठ, जिद।

गहनता *स्त्री.* {सं.} गहन, दुर्गम या गंभीर होने का भाव।

गहना[1] *पुं.* {सं. गहन + क} आभूषण, जेवर; रेहन, बंधक।

मुहा. गहने रखना = रेहन या बंधक रखना।

गहना[2] *स.* {सं. ग्रहण} पकड़ना।

गहनी *स्त्री.* {हिं.} पशुओं के दाँत हिलने का रोग।

गहबर *वि.* {सं. गह्वर} दुर्गम, विषय; व्याकुल, उद्विग्न; मनोवेग से विकल; आँसुओं से भरा हुआ (नेत्र)।

गहबरन *स्त्री.* {हिं. गहबरना} व्याकुलता, घबराहट।

गहबरना *अ.* {सं. गह्वर} घबराना, व्याकुल होना; करुणा आदि से जी भर आना।

गहभरना *स.* {हिं. भरना} अच्छी तरह भरना।

गहमह *स्त्री.* {अनु.} चहल-पहल, रौनक।

गहर[1] *स्त्री.* {?} देर, विलंब।

गहर[2] *वि.* {सं. गह्वर} दुर्गम; गूढ़।

गहरना[1] *अ.* {हिं. गहर = देर} देर लगाना, विलंब करना।

गहरना[2] *अ.* {सं. गहर} झगड़ना; कुढ़ना।

गहरा *वि.* {सं. गंभीर} {*भाव.* गहराई} (पानी) जिसकी थाह बहुत नीचे हो, गंभीर।

पद *गहरा पेट* = ऐसा हृदय जिसमें सब बातें छिप जाएँ।

जिसका विस्तार नीचे की ओर अधिक हो; बहुत अधिक, ज्यादा।

पद *गहरा असामी* = बड़ा या मालदार आदमी; *गहरे लोग* = चतुर लोग, धूर्त लोग; *गहरा हाथ* = भारी आघात; भारी रकम।

भारी, विकट; गाढ़ा।

मुहा. गहरी घुटना या छनना = खूब गाढ़ी भंग छनना; बहुत मित्रता या घनिष्ठता होना।

गहराई *स्त्री.* {हिं. गहरा + ई (प्रत्य.)} 'गहरा' होने का भाव, गहरापन।

गहराना *अ.* {हिं. गहरा} गहरा होना।

गहराव *पुं.* = गहराई।

गहवाना *स.* {हिं.} 'गहना' का प्रे.।

गहवारा *पुं.* {हिं. गहना = पकड़ना} पालना; झूला।

गहाई *स्त्री.* {हिं. गहना} गहने का भाव, पकड़।

गहाना *स.* {हिं.} 'गहना' का प्रे.।

गहासना *स.* = ग्रसना।

गहिर *वि.* {सं. गंभीर} गहरा।

गहीला *वि.* {*स्त्री.* गहीली} गहेला।

गहेलरा *वि.* = गहेला।

गहेला *वि.* {सं. गृहीत, प्रा. गहिल्ल} {*स्त्री.* गहेली} कोई चीज ग्रहण या धारण करनेवाला, जैसे गरब-गहेला; हठी, जिद्दी; घमंडी; पागल; गँवार।

गहैया *वि.* {हिं. गहना + ऐया (प्रत्य.)} पकड़नेवाला; स्वीकार करनेवाला।

गह्वर *पुं.* {सं.} अँधेरी जगह; विवर, बिल; विषम स्थान; गुफा; कुंज, लतागृह; जंगल; *वि.* दुर्गम; विषम; गुप्त।

गांग *पुं.* {सं.} गंगा-संबंधी, गंगा का।

गांगेय *पुं.* {सं.} भीष्म; कार्तिकेय; *वि.* गंगा संबंधी, गंगा का; गंगा से उत्पन्न या निकला हुआ।

गाँछना *क्रि. स.* {हिं.} गाँथना, गूँथना।

गाँज *पुं.* {फा. गंज} राशि, ढेर।

गाँजना *स.* {हिं. गाँज, फा. गंज} राशि या ढेर लगाना।

गाँजा *पुं.* {फा. गंजा} भाँग की तरह का एक पौधा जिसकी कलियों का धुआँ नशे के लिए पीते हैं।

गाँठ *स्त्री.* {सं. ग्रंथि, प्रा. गंठि} {*वि.* गँठीला} रस्सी, कपड़े आदि में विशेष प्रकार से फेरा देकर बनाया हुआ बंधन, गिरह।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. हृदय की गाँठ खोलना = भीतरी इच्छा या बात प्रकट करना; *गाँठ जोड़ना* = गठबंधन करना; *मन में गाँठ पड़ना* = मनमुटाव होना।
कपड़े के पल्ले में रुपया आदि लपेटकर लगाया हुआ बंधन।
पद गाँठ का = पल्ले का, पास का; *गाँठ का पूरा* = धनी।
मुहा. गाँठ में बाँधना = बात सदा स्मरण रखना।
कहीं भेजने के लिए एक में बाँधकर रखी हुई चीजों का समूह, जैसे दो गाँठ कपड़ा, चार गाँठ रुई; अंग का जोड़; शरीर में रक्तविकार आदि के कारण होनेवाला कोई गोल कड़ा उभार; बाँस आदि का पोर; कुछ विशेष प्रकार की वनस्पतियों में वह उपयोगी गोल और कड़ा अंश जो जमीन के अंदर होता है, जैसे प्याज की गाँठ, हलदी की गाँठ (बल्ब); जड़; बोझ, गट्ठा।

गाँठकाट *पुं.* {हिं.} गिरहकट, ठग, चोर।

गाँठगोभी *स्त्री.* {हिं. गाँठ + गोभी} गोभी की एक जाति जिसकी जड़ में बड़ी गोल गाँठें होती हैं।

गाँठदार *वि.* {हिं.} जिसमें बहुत-सी गाँठें हैं।

गाँठना *स.* {सं. गंथन, पा. गंठन} गाँठ लगाना, जोड़ना; मिलाना, सटाना; गूँथना; क्रम लगाना; अपने अनुकूल या वश में करना।
मुहा. मतलब गाँठना = काम निकालना, अपना प्रयोजन सिद्ध करना, स्वार्थ सिद्ध करना।
वार रोकना।

गाँठी *स्त्री.* = गाँठ।

गाँडर *स्त्री.* {सं. गंडाली} गंडदूर्वा नाम की घास; गाडर।

गाँड़ा *पुं.* {हिं.} किसी वृक्ष की अर्थात् गन्ने की कटी हुई गंडेरी जो कोल्हू में पेरने हेतु या खेत में बोने के लिए डाली जाती है।

गांडीव *पुं.* {सं.} अर्जुन का धनुष।

गाँडू *वि. पुं.* {हिं.} गुदा मैथुन करने- करवानेवाला, कायर, नीच, डरपोक।

गाँधना *स.* {सं. ग्रंथन} गूँथना।

गांधर्व *वि.* {सं.} गंधर्व-संबंधी।

गांधर्व विवाह *पुं.* {सं.} वह विवाह जो वर और कन्या स्वेच्छा से कर लेते हैं।

गांधर्व वेद *पुं.* {सं.} सामवेद का उपवेद; संगीतशास्त्र।

गांधार *पुं.* {सं.} {*वि.* गांधारी} सिंधु नदी के पश्चिम का देश; इस देश का निवासी; संगीत के सात स्वरों में से तीसरा स्वर।

गांधारी *स्त्री.* {सं.} गांधार देश की स्त्री; दुर्योधन की माता का नाम; संगीत में एक रागिनी; हठयोग में दाहिनी आँख की एक नाड़ी।

गाँधी *स्त्री.* {सं. गान्धिक} गँधिया कीड़ा; गँधिया घास; गंधी; गुजराती वैश्यों की एक जाति।

गांधी टोपी *स्त्री.* {(महात्मा) गांधी + टोपी} पुरानी तरह की एक प्रकार की किश्तीनुमा या लम्बोतरी टोपी (महात्मा गांधी ने भारत में आकर रहने पर इसी प्रकार की टोपी पहनना आरंभ किया था जिससे अब उसका यही नाम चल पड़ा है)।

गांधीवाद *पुं.* {स} गांधी जी का यह सिद्धांत कि अपने अधिकारों की प्राप्ति या उद्देश्य की सिद्धि के लिए उत्तम साधन अपनाने चाहिए, अहिंसा, सत्याग्रह और अहयोग की नीति।

गांभीर्य *पुं.* {सं.} 'गंभीर' का भाव।

गाँव *पुं.* {सं. ग्राम} बहुत छोटी बस्ती, खेड़ा; गाँव के लोग।

गाँव-पंचायत *स्त्री.* स्वतंत्र भारत में गाँवों के चुने हुए प्रतिनिधियों का वह दल जो साधारण झगड़ों और मुकदमों के फैसलों और सफाई, स्वास्थ्य आदि की व्यवस्था करता है।

गाँव-सभा *स्त्री.* {हिं. गाँव + सं. सभा} गाँववालों के चुने हुए लोगों की वह सभा या समिति जो गाँव के स्थानिक कार्यों की व्यवस्था करती है।

गाँस *स्त्री.* {हिं. गाँसना} गँसने या गाँसने की क्रिया, अवस्था या भाव; ईर्ष्या, द्वेष; कपट; भेद, रहस्य; गाँठ; तीर या बरछी का फल; अंकुश; शासन; संकट।

गाँसना *स.* {सं. ग्रंथन} गूँथना; सालना, छेदना; (ताने में) सूत कसना, जिससे बुनावट ठस हो; वश या शासन में रखना; तेजी से पकड़ना, दबोचना; कसकर भरना, ठूँसना।

गाँसी *स्त्री.* {हिं. गाँस} तीर आदि का फल; हथियार की नोक; गाँठ, गिरह; कपट; मनोमालिन्य।

गाइ (ई) *स्त्री.* {सं. गावी} गाय।

गाउन *पुं.* {अं.} एक विशेष प्रकार का पहनावा जो वकीलों, डॉक्टरों, विद्वानों आदि के लिए अलग-अलग बनावट का नियत है।

गाऊ घप्प *वि.* {हिं.} दूसरे की वस्तु या धन अपनानेवाला।

गाकरी *स्त्री.* {?} लिट्टी, बाटी; रोटी।

गागरी *स्त्री.* {हिं.} घड़ा, गगरी।

गाच *पुं.* {हिं.} महीन जालीदार कपड़ा जिसपर रेशम के बेल-बूटे कढ़े हों।

गाछ *पुं.* {सं. गच्छ} पेड़, वृक्ष।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाछी *स्त्री.* {हिं.} खजूर की कोमल पत्ती।

गाज[1] *स्त्री.* {सं. गर्ज} गर्जन; बिजली की कड़क; बिजली, वज्र।

मुहा. गाज पड़ना = बिजली गिरना; आफत आना; नाश होना।

गाज[2] *पुं.* {अनु. गजगज} फेन, झाग।

गाजना *अ.* {सं. गर्जन, पा. गज्जन} हुँकार करना, गरजना; प्रसन्न होना।

गाजर *स्त्री.* {फा. गज़र} एक पौधा जिसका कंद मीठा होता है।

गाजर-मूली *स्त्री.* तुच्छ वस्तु।

गाजा-बाजा *पुं.* बाजा-गाजा।

गाजी *पुं.* {अ.} मुसलमानों में वह वीर पुरुष जो धर्म के लिए युद्ध करे या प्राण दे; बहादुर, वीर।

गाटा *पुं.* {देश.} भूमि या खेत का वह टुकड़ा जो पूरी ईकाई के रूप में माना जाता है (प्लॉट)।

गाड़ *स्त्री.* {सं. गर्त} गड्ढा जिसमें अन्न रखा जाता है।

गाड़ना *स.* {हिं. गाड़} गड्ढा खोदकर उसमें कोई चीज मिट्टी से ढकना, दफनाना; लंबी चीज का एक सिरा गड्ढे में जमाकर उसे खड़ा करना; धँसाना; छिपाना।

गाडर *स्त्री.* {सं. गडुरी} भेड़।

गाड़ा[1] *पुं.* {सं. शकट} बड़ी बैलगाड़ी, छकड़ा।

गाड़ा[2] *पुं.* {सं. गर्त, प्रा. गड्ड} वह गड्ढा जिसमें छिपकर शत्रु का पता लेते हैं।

गाड़ी *स्त्री.* {प्रा. गाड्डा} एक जगह से दूसरी जगह सामान या आदमियों को पहुँचानेवाला यान।

गाड़ीखाना *पुं.* {हिं. + फा.} वह स्थान जिसमें गाड़ी या गाड़ियाँ रखी जाती हों।

गाड़ीवान *पुं.* {हिं. गाड़ी + वान (प्रत्य.)} गाड़ी हाँकनेवाला।

गाढ़ *वि.* {सं.} {*भाव.* गाढ़ता} अधिक, बहुत; दृढ़, मजबूत; घना; गाढ़ा; बहुत गहरना; विकट, संकट।

गाढ़ा[1] *वि.* {सं. गाढ़} {*भाव.* गाढ़ापन} जिसमें जल के साथ कोई चूर्ण मिला हो; घना, ठस, मोटा (कपड़ा आदि); घनिष्ठ, गहरा; कठिन, विकट, जैसे गाढ़े दिन; जिसमें कठिन परिश्रम हुआ हो, जैसे गाढ़ी कमाई; *पुं.* संकट, विपत्ति।

पद गाढ़े का साथी = विपत्ति के समय सहायक होने और उससे बचानेवाला।

कठिन परिश्रम।

पद गाढ़े की कमाई = मेहनत से कमाया हुआ धन।

एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा, गजी; मस्त हाथी।

गाढ़े *क्रि. वि.* {हिं. गाढ़ा} दृढ़ता से, जोर से; अच्छी तरह।

गाणपत *वि. पुं.* {सं.} गणपति-सबंधी, गणेश का उपासक।

गाणिक्य *पुं.* {सं.} वेश्याओं का झुंड।

गात *पुं.* {सं. गात्र} शरीर, देह।

गाता *पुं.* {सं. गातृ} गानेवाला; *पुं.* गत्ता।

गाती *स्त्री.* {सं. गात्री} वह चादर जो गले में बाँधते हैं; चादर ओढ़ने का एक विशेष ढंग।

गात्र *पुं.* {सं.} देह, शरीर।

गाथ *पुं.* {सं. गाथा} यश, कीर्ति; प्रशंसा, तारीफ।

गाथक *पुं.* {सं.} गायक, गानेवाला।

गाथना *स.* {हिं. गथना} अच्छी तरह पकड़ना; कसना, जकड़ना।

गाथा *स्त्री.* {सं.} स्तुति, प्रशंसा; प्राकृत भाषा का एक प्रसिद्ध छंद; कथा, वृत्तांत; छोटे-छोटे पद्यों में बहुत ही सीधे-सादे ढंग से और विस्तारपूर्वक कही हुई वह प्रभावोत्पादक कथा जिसमें प्रायः सत्य घटनाओं का वर्णन होता है (बैलड)।

गाथिका *स्त्री.* {सं.} स्तुति के निमित्त श्लोक।

गाथी *वि.* {सं.} सामवेद गानेवाला।

गाद *स्त्री.* {सं. गाध} तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाढ़ी मैल, तलछट; तेल की कीट।

गाददड़ *वि.* {हिं.} डरपोक, कायर, सुस्त; *पुं.* गीदड़, सियार, मेढ़ा।

गादर *वि.* {हिं.} आलसी, भीरु, डरपोक।

गादा *पुं.* {सं. गाध = दलदल} खेत में का अधपका अन्न, बिना पकी फसल।

गादी *स्त्री.* {हिं. गद्दी} एक प्रकार का पकवान; गद्दी।

गादुर *पुं.* {हिं.} चमगादड़।

गाध[1] *पुं.* {सं.} स्थान, जगह; जल के नीचे का स्थल, थाह।

गाध[2] *वि.* {*स्त्री.* गाधा} कम गहरा; थोड़ा, स्वल्प; नदी का बहाव।

गाधि *पुं.* {सं.} विश्वामित्र के पिता का नाम।

गान *पुं.* {सं.} {*वि.* गेय} गाने की क्रिया, गाना; गाने की चीज, गीत।

गाना *स.* {सं. गान} ताल और स्वर के नियम के अनुसार या आलाप के साथ ध्वनि निकालना; मधुर ध्वनि करना; विस्तार से कहना।

मुहा. अपनी ही गाना = अपनी ही बात कहते जाना।

स्तुति करना, प्रशंसा करना; *पुं.* गाने की क्रिया; गीत।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाफिल *वि.* {*अ.*} {*भाव.* गफ़लत} बेसुध, बेखबर; असावधान।

गाभ *पुं.* {सं. गर्भ, पा. गब्भ} पशुओं का गर्भ; किसी चीज का मध्य भाग; 'गाभा'।

गाभा *पुं.* {सं. गर्भ} नया निकला हुआ नरम पत्ता, कल्ला, कोंपल; केले आदि के डंठल के अंदर का कोमल भाग; कच्चा अनाज; खड़ी खेती।

गाभिन *वि. स्त्री.* {सं. गार्भिणी} गर्भिणी। (चौपायों के लिए)

गाम *पुं.* {सं. ग्राम} गाँव।

गामी *वि.* {सं. गामिन्} {*स्त्री.* गामिनी} चलनेवाला, जैसे शीघ्रगामी; संभोग करनेवाला, जैसे वेश्यागामी।

गाय *स्त्री.* {सं. गो} सींगवाला एक प्रसिद्ध मादा पशु जो अपने दूध के लिए प्रसिद्ध है; सीधा मनुष्य।

गायक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* गायिका, गायिनी} गानेवाला, गवैया।

गायकवाड़ *पुं.* {म.} बड़ोदा-नरेश की उपाधि।

गायकी[1] *स्त्री.* {सं. गायक} गानेवाली स्त्री।

गायकी[2] *स्त्री.* {सं. गायन} गायन-विद्या का पूरा ज्ञान; गायन-विद्या के नियमों के अनुसार ठीक तरह से गाना; गायन-विद्या।

गाय-गोठ *स्त्री.* = गोशाला।

गायताल *पुं.* {हिं.} निकृष्ट पदार्थ।

गायत्री *स्त्री.* {सं.} एक वैदिक मंत्र जो हिन्दू-धर्म में सबसे अधिक पवित्र माना जाता है; दुर्गा; गंगा।

गायन *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* गायिनी} गाने की क्रिया या भाव; गाना, गीत।

गायब *वि.* {*अ.* गायब} लुप्त, अंतर्धान।

गार *पुं.* {*अ.*} गहरा गड्ढा; गुफा, कंदरा।

गारत *वि.* {*अ.*} नष्ट, बरबाद।

गारद *स्त्री.* {अं. गार्ड} सिपाहियों का वह दल जो रक्षा के लिए नियत होता है; पहरा, चौकी।

गारना[1] *स.* {सं. गालन} निचोड़ना; पानी के साथ घिसना, जैसे चंदन गारना; निकालना; त्यागना।

गारना[2] *स.* {सं. गल} गलाना।

मुहा. तन या शरीर गारना = तप करके शरीर को कष्ट देना, तप करना।

नष्ट या बरबाद करना; परिश्रम आदि के द्वारा (शरीर को) क्षीण करना।

गारा *पुं.* {हिं. गारना} मिट्टी, चूने आदि का वह लेप जिससे ईंटों की जोड़ाई होती है, ईंटें जोड़ने का मसाला; *वि.* गीला, तर; खिन्न और उदासीन।

मुहा. जी गारा करना = किसी की ओर से खिन्न और उदासीन होना।

गारी *स्त्री.* {हिं.} दुर्वचन, गाली, स्त्रियों द्वारा विवाह में गाया जानेवाला लोकगीत।

गारु *वि.* {सं. गुरु} भारी।

गारुड़ *पुं.* {सं.} साँप के काटने पर चढ़ा हुआ विष उतारने का मंत्र या विद्या; स्वर्ण, सोना।

गारुड़ी *पुं.* {सं. गारुड़िन्} मंत्र से साँप का विष उतारनेवाला।

गारो (रौ) *पुं.* {सं. गौरव, प्रा. गारव} अहंकार, घमंड; गौरव।

गार्ग *वि.* {हिं.} गर्ग संबंधी।

गार्गी *स्त्री.* {सं.} गर्ग गोत्र में उत्पन्न एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी स्त्री, दुर्गा, याज्ञवल्क्य की स्त्री।

गार्हपत्याग्नि *स्त्री.* {सं.} वह प्रधान अग्नि जिसकी रक्षा शास्त्रानुसार अपने घर में प्रत्येक गृहस्थ को करनी चाहिए।

गार्हस्थ *पुं.* {सं.} गृहस्थाश्रम।

गाल[1] *पुं.* {सं. गड, गल्ल} मुँह के दोनों ओर ठुड्डी और कनपटी के बीच का कोमल अंग, गंड, कपोल।

मुहा. गाल फुलाना = रूठना; *गाल बजाना या मारना* = डींग हाँकना।

बकवाद करने की लत।

मुहा. गाल करना = बढ़-चढ़कर या उद्दंडतापूर्वक बातें करना।

मध्य, बीच; कौर, ग्रास।

गाल[2] *स्त्री.* {हिं. गाली} कलंक, लांछन; दुर्वचन, गाली।

गालक *वि. पुं.* {सं. गल} गलानेवाला।

गाल-गूल *पुं.* {अनु.} व्यर्थ की बातें, गपशप।

गालन *पुं.* {सं.} {*वि.* गालित} गलाने की क्रिया या भाव; किसी तरल पदार्थ को किसी वस्तु में इस प्रकार इस पार से उस पार निकालना कि उसमें की मैल आदि बीच में रुककर निकल जाए (फिल्टरेशन)।

गालनमसूरी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का पकवान।

गालव *पुं.* {सं.} लोहा का वृक्ष, एक ऋषि का नाम।

गाला *पुं.* {हिं. गाल} धुनी हुई रुई का वह पहल जो चरखे पर कातने के लिए बनाया जाता है, पूनी।

पद रुई का गाला = बहुत उज्ज्वल।

उद्दंडतापूर्ण बात; ग्रास; व्यर्थ और भद्दी बात या ऐसी बातें करने की आदत।

गालिम *वि.* {*अ.* गालिब} जिसने किसी को दबा लिया हो।

गाली *स्त्री.* {सं. गालि} निंदा या कलंक की बात, दुर्वचन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. गाली खाना = दुर्वचन या गालियाँ सुनना; *गाल देना* = दुर्वचन कहना।
कलंकपूर्ण आरोप।

गाली-गलौज़ *स्त्री.* {हिं. गाली + गलौज (अनु.)} परस्पर गाली देना।

गाली-गुफ्ता *पुं.* गाली-गलौज़।

गालू *वि.* {हिं. गाल} गाल बजाने या व्यर्थ बकवाद करनेवाला, बकवादी।

गाल्हना *अ.* {सहिं. गाल} बातें करना, बोलना।

गाव *पुं.* {सं. गो से फा.} गाय।

गावकुशी *स्त्री.* {फा.} गोवध।

गावतकिया *पुं.* {फा.} बड़ा और लंबा तकिया, मसनद।

गावदी *वि.* {हिं. गाय + दी (प्रत्य.)} कुंठित बुद्धि का; अबोध, नासमझ।

गावदुम *वि.* {फा.} जो ऊपर से गौ की पूँछ की तरह पतला होता आया हो।

गावपछाड़ *पुं.* {हिं.} मल्लयुद्ध की एक युक्ति।

गारु *पुं.* {हिं.} दु:ख, संकट।

गासिया *पुं.* {अ. गाशिय:} जीनपोश।

गाह *पुं.* {सं. ग्राह} ग्राहक, गाहक; पकड़, घात; ग्राह।

गाहक[1] *पुं.* {सं.} अवगाहन करनेवाला।

गाहक[2] *पुं.* {सं. ग्राहक} मोल लेनेवाला, खरीदार, क्रेता।
मुहा. जी या प्राण का गाहक होना = किसी के प्राण लेने पर उतारू होना।
कदर करनेवाला, चाहनेवाला।

गाहकताई *स्त्री.* {सं. ग्राहकता} गुण-ग्राहकता, कदरदानी।

गाहकी *स्त्री.* {हिं. गाहक} गाहक या ग्राहक होने की क्रिया या भाव; ग्राहक के हाथ होनेवाली बिक्री; ग्राहक, गाहक।

गाहन *पुं.* {सं.} {*वि.* गहित} गोता लगाना, स्नान करना।

गाहना *स.* {सं. अवगाहन} डूबकर थाह लेना; मथना, बिलोना; धान आदि के डंठल झाड़ना जिसमें दाने नीचे गिर जाएँ, ओसाना; गड़बड़ा देना।

गाहा *स्त्री.* {सं. गाथा} गाथा; आर्या छंद का एक नाम।

गहित *स्त्री.* {सं.} गाहन किया हुआ, निमज्जित।

गाहू *स्त्री.* {हिं.} उपगीति छंद का नाम।

गाही *स्त्री.* {हिं. गहना = ग्रहण करना} फल आदि गिनने का पाँच-पाँच का एक मान।

गाहे-गाहे *अव्य.* {अ.} कभी-कभी।

गिंजना *अ.* {हिं. गींजना} किसी चीज (विशेषत: कपड़े) का उलटे-पुलटे जाने से खराब हो जाना, गींजा जाना।

गिंजाई[1] *स्त्री.* {सं. गृंजन} एक प्रकार का बरसाती कीड़ा।

गिंजाई[2] *स्त्री.* {हिं. गींजना} गींजने की क्रिया या भाव।

गिंदौड़ा *पुं.* {हिं. गेंद} मोटी रोटी के आकार में ढाली हुई चीनी।

गिआन *पुं.* = ज्ञान।

गिउ *पुं.* {सं. ग्रीवा} गला, गरदन।

गिचपिच *वि.* {अनु.} जो स्पष्ट या ठीक क्रम से न हो।

गिजगिजा *वि.* {अनु.} ऐसा गीला और मुलायम जो खाने में अच्छा न लगे।

गिजा *स्त्री.* {अ.} भोजन, खुराक।

गिटकिरी *स्त्री.* {अनु.} गाने में तान लेते समय विशेष प्रकार से स्वर कँपाना।

गिटपिट *स्त्री.* {अनु.} निरर्थक शब्द; अंग्रेज़ी भाषा (उपेक्षासूचक)।
मुहा. गिटपिट करना = टूटी-फूटी या साधारण भाषा बोलना।

गिट्टक, गिट्टिक *स्त्री.* {सं. किट्टक} चिलम के छेद पर रखने का कंकड़, गिट्टी; धातु आदि का छोटा और मोटा टुकड़ा।

गिट्टा *वि.* {हिं.} कंकर, रोड़ा।

गिट्टी *स्त्री.* {सं. किट्टक} पत्थर के वे छोटे टुकड़े जो प्राय: सड़क कूटने में काम आते हैं; चिलम की गिट्टक।

गिड़गिड़ाना *अ.* {अनु.} {भाव. गिड़गिड़ाहट} अत्यंत नम्र होकर कोई बात करना या प्रार्थना करना।

गिड़गिड़ाहट *स्त्री.* {हिं. गिड़गिड़ाना} गिड़गिड़ाने का भाव।

गिड्डा *वि.* {हिं.} नाटा, ठेंगना।

गिद्ध *पुं.* {सं. गृध} एक प्रसिद्ध मांसाहारी बड़ा पक्षी।

गिधना *अ.* {?} हिलना-मिलना, परचना।

गिनती *स्त्री.* {सहिं. गिनना + ती (प्रत्य.)} गिनने की क्रिया या भाव, गणना।
पद गिनती में आना या होना = कुछ महत्व को समझा जाना; *गिनती गिनने के लिए* = नाम मात्र को।
संख्या, तादाद।
पद गिनती के = बहुत थोड़े।
उपस्थिति की जाँच, हाजिरी; एक सौ तक की अंकमाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिनना *स.* {सं. गणन} गिनती करना, संख्या जानना।
मुहा. दिन गिनना = आशा में समय बिताना; किसी प्रकार समय बिताना।
गणित करना, हिसाब लगाना; कुछ महत्व का समझना।

गिनवाना *स.* = गिनाना।

गिनाना *स.* {हिं.} 'गिनना' का प्रे.; *अ.* गिनती में आना, गिना जाना।

गिनी *स्त्री.* {अं.} सोने का एक आंग्ल सिक्का।

गियाह *पुं.* {?} एक तरह का घोड़ा।

गिर *पुं.* {सं. गिरि} पहाड़; गिरि।

गिरई *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार की मछली।

गिरगिट *पुं.* {सं. गलगति} छिपकली की जाति का एक जंतु जो दिन में दो बार रंग बदलता है।
मुहा. गिरगिट की तरह रंग बदलना = वृत्ति, व्यवहार, आचरण आदि जल्दी-जल्दी बदलते रहना।

गिरजा *पुं.* {पुर्त. इग्रिजिया} ईसाइयों का प्रार्थना-मंदिर।

गिरदा *पुं.* {फा. गिर्द} चक्कर; तकिया; काठ की थाली; ढाल, फरी; वह जो दूसरों को अपने जाल या चक्कर में फँसाता हो।

गिरदान *पुं.* = गिरगिट।

गिरना *अ.* {सं. गलन} ऊपर से, बीच में आधार न रहने के कारण, नीचे आ जाना; जमीन पर पड़ या लेट जाना; अवनति या घटाव पर होना, बुरी दशा में होना; किसी जलधारा का किसी बड़े जलाशय में जा मिलना; शक्ति या मूल्य आदि का कम या मंद होना; बहुत चाव या तेजी से आगे बढ़ना, टूट पड़ना; किसी ऐसे रोग का होना जिसका वेग ऊपर से नीचे को आता हुआ माना जाता है, जैसे फालिज गिरना; लड़ाई में मारा जाना।

गिरनार *पुं.* {सं. गिरि + नार = नगर} {*वि.* गिरनारी} गुजरात में रैवतक नाम का पर्वत जो जैनियों का तीर्थ है।

गिरनारी *वि.* {हिं.} गिरनार पर्वतवासी।

गिरफ्त *स्त्री.* {फा.} पकड़; दोष या भूल का पता लगाने का ढंग।

गिरफ्तार *वि.* {फा.} पकड़ा हुआ; जो राज्य की ओर से किसी अभियोग आदि के विचार के लिए पकड़ा गया हो।

गिरफ्तारी *स्त्री.* {फा.} गिरफ्तार होने की अवस्था या भाव; कोई अभियोग लगने या अपराध करने पर उसके विचार के लिए राज्य द्वारा किसी को पकड़ने की क्रिया, अवस्था या भाव (अरेस्ट)।

गिरबान *पुं.* {फा. गिरीबान} गरदन, गला; गरेबान।

गिरमिट[1] *पुं.* {अं. गिलमेट} {लकड़ी में छेद करने का} बड़ा बरमा।

गिरमिट[2] *पुं.* {अं. एग्रीमेंट = इकरारनामा} इकरारनामा, शर्तनामा; स्वीकृति की प्रतिज्ञा, इकरार।

गिरवान *पुं.* {फा.गिरीबान} कुरते आदि में गले का भाग; गरदन, गला।

गिरवाना *स.* {हिं.} गिरना का प्रे.।

गिरवी *वि.* {फा.} गिरों रखा हुआ, बंधक, रेहन।

गिरवीदार *पुं.* {फा.} वह व्यक्ति जिसके यहाँ कोई वस्तु बंधक रखी हो।

गिरह *स्त्री.* {फा.} गाँठ, ग्रंथि; जेब, खीसा, खरीता; दो पैरों के बीच का संधि-स्थान, गाँठ; एक गज का सोलहवाँ भाग; कलैया, कलाबाजी।

गिरहकट *वि.* {फा. गिरह + हिं. काटना} जेब या गाँठ में बँधा हुआ माल काट लेनेवाला।

गिरहबाज *पुं.* {फा.} एक प्रकार का कबूतर जो उड़ते-उड़ते उलटकर कलैया खा जाता हो।

गिरहर *वि.* {हिं.} गिरनेवाला।

गिरही *पुं.* {हिं.} गृहस्थ, घर, मकान।

गिराँ *वि.* {फा. गराँ} बहुमूल्य; महँगा; भारी; अप्रिय।

गिरा *स्त्री.* {सं.} वाणी; बोलने की शक्ति; जिह्वा; सरस्वती।

गिराना *स.* {हिं. गिराना का *स.*} खड़ा न रहने देकर जमीन पर या नीचे डाल देना; बल, महत्व आदि कम करना, अवनत करना, घटाना; प्रवाह को ढाल की ओर ले जाना; लड़ाई में मार डालना।

गिरानी *स्त्री.* {फा.} महँगी; अकाल; कमी; पेट का भारीपन।

गिरापति *पुं.* {सं.} ब्रह्मा।

गिरापितु *पुं.* {सं. गिरा + पितृ} सरस्वती के पिता, ब्रह्मा।

गिरा बाजार *पुं.* ऐसा बाजार जिसमें ग्राहक न हों।

गिरावट *स्त्री.* {हिं. गिरना} गिरने की क्रिया, भाव या ढंग; मूल्य, माँग आदि में होनेवाली कमी।

गिरासना *क्रि. स.* {हिं.} ग्रसना, कष्ट देना।

गिरि *पुं.* {सं.} पहाड़; दशनामा संप्रदाय के एक प्रकार के संन्यासी; परिव्राजकों की एक उपाधि।

गिरिका *स्त्री.* {सं.} छोटी पहाड़ी।

गिरिजा *स्त्री.* {सं.} पार्वती; गंगा।

गिरिताल *पुं.* {सं.} पहाड़ों में स्थित जलाशय।

गिरिधर *पुं.* {सं.} श्रीकृष्ण।

गिरिनाथ *पुं.* {सं.} हिमालय पर्वत; गोवर्धन पर्वत।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गिरिपथ पुं. {सं.} पर्वतों के बीच का तंग रास्ता, दर्रा; पहाड़ी रास्ता।
गिरिराज पुं. {सं.} बड़ा पर्वत; हिमालय; गोवर्धन पर्वत; सुमेरु पर्वत।
गिरिव्रज पुं. {सं.} केकय देश की राजधानी; जरासंध की राजधानी, जिसे बाद में राजगृह कहते थे।
गिरसंकट पुं. {सं.} दो पहाड़ों के बीच का सँकरा मार्ग, दर्रा।
गिरिसुत पुं. {सं.} मैनाक पर्वत।
गिरिसुता *स्त्री.* {सं.} पार्वती।
गिरींद्र पुं. {सं.} बड़ा पर्वत; हिमालय; शिव।
गिरी *स्त्री.* {हिं. गरी} बीज के अंदर का गूदा।
गिरीश पुं. {सं.} शिव; हिमालय पर्वत; सुमेरु पर्वत; गोवर्धन पर्वत; बड़ा पहाड़।
गिरैया *वि.* {हिं. गिराना + ऐया (प्रत्य.)} गिरानेवाला; *स्त्री.* गेराँव (पगहा)।
गिरों *स्त्री.* {फा.} रेहन, बंधक, गिरवी।
गिर्द *क्रि. वि.* {फा.} आसपास; चारों ओर।
गिर्दावर पुं. {फा.} घूमने या दौरा करनेवाला कर्मचारी; घूम-घूमकर काम की जाँच करनेवाला कर्मचारी।
गिल *स्त्री.* {फा.} मिट्टी; गारा।
गिलकार पुं. {फा.} गारे से दीवारों पर पलस्तर करने और बेल-बूटे आदि बनाने का काम।
गिलकारी *स्त्री.* {फा.} गारा लगाने या पलस्तर करने और बेल-बूटे आदि बनाने का काम।
गिलगिली पुं. {देश.} घोड़ों की एक जाति।
गिलट पुं. {अं. गिल्ड} किसी धातु पर सोना, चाँदी आदि चढ़ाने का काम; चाँदी-सी सफेद पर बहुत हलकी और कम मूल्य की एक धातु।
गिलटी *स्त्री.* {सं. गिल्ड} शरीर के अंदर की वह छोटी गोल गाँठ जो रक्त के कुछ तत्व खींचकर शरीर के किसी भाग में पहुँचाती या शरीर के बाहर निकालती है (ग्लैंड); वह रोग जिसमें ऐसी गाँठें सूज जाती हैं।
गिलन पुं. {सं.} {*वि.* गिलित} निगलना, लीलना।
गिलना *स.* {सं. गिलन} निगलना; मन में छिपाकर रखना।
गिलबिलाना *क्रि. अ.* {हिं.} अस्पष्ट वचन बोलना।
गिलम *स्त्री.* {फा. गिलीम = कम्बल} नरम और चिकना ऊनी कालीन; मोटा मुलायम गद्दा या बिछौना; *वि.* कोमल, नरम, मुलायम।
गिलमिल *स्त्री.* {अनु.} पुरानी चाल का एक प्रकार का कपड़ा।
गिलहरा पुं. {हिं.} एक प्रकार का धारीदार मोटा वस्त्र।
गिलहरी पुं. {फा.} चूहे की तरह का, सफेद और काली धारियोंवाला तथा मोटी रोएँदार पूँछवाला एक जंतु जो पेड़ों पर रहता है।
गिला पुं. {फा.} उलाहना; शिकायत, निंदा।
गिलान *स्त्री.* ग्लानि, घृणा।
गिलाफ़ पुं. {अ.} लिहाफ आदि की खोल; बड़ी रजाई, लिहाफ; कोश, म्यान।
गिलावा पुं. {फा.} गारा।
गिलास पुं. {अ. ग्लास} पानी पीने का एक गोल लंबोतरा बरतन।
गिलिम *स्त्री.* {हिं.} गिलम।
गिलोय *स्त्री.* {फा.} नुरुच।
गिलौरी *स्त्री.* {देश} पान का बीड़ा; बीड़े की तरह बनी हुई मिठाई।
गिलौरीदान पुं. {हिं.} पान रखनेवाला डिब्बा, पानदान।
गिल्टी *स्त्री.* = गिलटी।
गींजना *स.* {हिं. मींजना} किसी कोमल पदार्थ, विशेषत: कपड़े आदि को इस प्रकार मलना कि वह खराब हो जाए।
गी *स्त्री.* {सं.} वाणी, बोलने की शक्ति, सरस्वती देवी।
गीड (र) *स्त्री.* {सं. कीट} आँखों से निकलनेवाला कीचड़ या मल।
गीत पुं. {सं.} वह वाक्य, पद या छंद जो गाया जाता है, गाना (लिरिक)।
मुहा. (किसी के) गीत गाना = बड़ाई करना; *(अपना ही) गीत गाना* = (अपनी ही) बात कहते जाना; *वि.* गाया हुआ, गान के रूप में आया या लाया हुआ।
गीतकार पुं. {सं.} वह कवि जो गाने के लिए गीत लिखता हो (लिरिक पोएट)।
गीत-गोविन्द पुं. {सं.} जयदेव कवि द्वारा रचित एक गीति-काव्य।
गीता *स्त्री.* {सं.} ज्ञानमय उपदेश; भगवद्गीता; वृत्तांत, कथा।
गीति *स्त्री.* {सं.} गान, गीत।
गीतिका *स्त्री.* {सं.} एक मात्रिक छंद; गीत, गाना।
गीतिकाव्य पुं. {सं.} वह काव्य-ग्रंथ जिसमें गाने योग्य गीत हों (लिरिकल पोयम)।
गीविज्ञ *वि.* {सं.} गीत जाननेवाला; संगीज्ञ।
गीतिनाट्य पुं. {सं.} अभिनय जो मुख्यत: गीतों के सहारे होता हो (ओपेरा)।
गीतिरूपक पुं. {सं.} वह रूपक जिसमें गद्य कम और पद्य अधिक हो।
गीथा *स्त्री.* {स.} वाक्य, गीत, गान।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीदड़ पुं. {सं. गृध, फा. गीदी} कुत्ते की तरह का एक जंगली पशु, सियार, शृंगाल; *वि.* डरपोक, कायर।

गीदी *वि.* {सं.} डरपोक, कायर।

गीध पुं. {हिं.} गृध्र, गिद्ध।

गीधना *अ.* {सं. गृध्र = लुब्ध} गिद्ध की तरह किसी काम, बात या चीज के पीछे पड़ना; बहुत ही बुरी तरह से लोभ करना; एक बार कोई लाभ उठाकर सदा उसकी इच्छा रखना, परचना।

गीर *प्रत्य.* {फा.} {*भाव.* गीरी} एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अंत में लगकर उन्हें धारण या ग्रहण करनेवाले का अर्थ देता है, जैसे राहगीर (रास्ता चलनेवाला)।

गीरथ पुं. {सं.} बृहस्पति, जीवात्मा।

गीरी *प्रत्य.* {फा.} प्रत्यय के रूप में यह कुछ शब्दों के अंत में लगकर उन्हें भाववाचक संज्ञा का रूप देता है।

गीर्वाण पुं. {सं.} देवता, सुर।

गीर्ण *वि.* {सं.} वर्णन या स्तुति किया हुआ।

गीर्देवी *स्त्री.* {सं.} सरस्वती, शारदा।

गीर्पति पुं. {सं.} बृहस्पति, पंडित, विद्वान्।

गीर्वाण कुसुम पुं. लवंग, लौंग।

गीला *वि.* {हिं. गलना} {*स्त्री.* गीली, *भाव.* गीलापन} भीगा हुआ, तर।

गीलापन पुं. {हिं.} तरी, भीगापन।

गीव *स्त्री.* {हिं.} ग्रीवा, गरदन।

गीष्पति *स्त्री.* {हिं.} बृहस्पति, पंडित, विद्वान्।

गुँगुआना *क्रि. अ.* {हिं.} अस्पष्ट बोलना, गूँगूँ करना, धुआँ देना, अच्छी तरह न जलना।

गुंगी *स्त्री.* {हिं.} दोमुँहा साँप।

गुंज *स्त्री.* {सं. गुंजन} भौंरों के भनभनाने का शब्द, गुंजार; आनंद-ध्वनि, कलरव; गुंजा।

गुंजन पुं. {सं.} भौंरों, की गूँज, भनभनाहट; कोमल मधुर ध्वनि।

गुंजना *अ.* {सं. गुंज} भौंरों का भनभनाना; मधुर ध्वनि का निकलना, गुंजरना।

गुंजरना *अ.* {हिं. गुंजार} गुंजार करना; शब्द करना; गरजना।

गुंजा *स्त्री.* {सं.} घुँघुची।

गुंजाइश *स्त्री.* {फा.} अटने या समाने की जगह, अवकाश, समाई; सुभीता।

गुंजान *वि.* {फा.} घना, सघन।

गुंजायमान *वि.* {फा.} गूँजता हुआ; गूँज से युक्त, गुंजित।

गुंजार *स्त्री.* {सं. गुंजन} भौंरों की गूँज।

गुंजारना पुं. {हिं.} गुंजन, गूँजना।

गुंजारित *वि.* {हिं.} गुंजनपूर्ण।

गुंजियाँ *स्त्री.* {हिं.} स्त्रियों के कान में पहिनने का आभूषण, पकवान।

गुंजित *वि.* {सं.} भौंरों आदि के गुंजार से युक्त; किसी प्रकार की गूँज से युक्त।

गुंठा *वि.* {हिं. गठना} गठा हुआ; छोटे आकार का; नाटा; पुं. छोटे आकार का एक प्रकार का घोड़ा।

गुंड *वि.* {हिं.} पीसा हुआ; पुं. मल्हार राग का एक भेद।

गुंडई *स्त्री.* {हिं. गुंडा + ई (प्रत्य.)} अकारण लोगों से झगड़ना या उन्हें मारना-पीटना।

गुँडली *स्त्री.* {सं. कुंडली} फेटा, कुंडली; गेंडरी, इँडुरी।

गुंडा पुं. {सं. गुंडक} {*स्त्री.* गुंडी, *भाव.* गुंडई, गुंडापन} अकारण लोगों से लड़ने या उन्हें मारने-पीटनेवाला, बदमाश; छैला।

गुंडापन पुं. {हिं. गुंडा + पन (प्रत्य.)} गुंडा होने का भाव, गुंडई; गुंडों का-सा आचरण या व्यवहार।

गुँथना *अ.* {सं. गुत्स = गुच्छा} (तागों, बालों की लटों आदि का) उलझना; मोटे टाँकों से सिलना।

गुँदला पुं. {हिं.} मोथा नाम की घास।

गुँधना *अ.* {सं. गुध} गूँधा या माँड़ा जाना।

गुँधवाना *स.* {हिं.} गूँधना का प्रे.।

गुँधाई *स्त्री.* {हिं.} गूँधना का भाव।

गुँधावट *स्त्री.* {हिं.} गूँधने का भाव या ढंग।

गुंफ पुं. {सं.} {*वि.* गुंफित} उलझन, फँसाव; गुच्छा; दाढ़ी, गल-मुच्छा।

गुंफन[1] पुं. {सं.} {*वि.* गुंफित} गूँथना; गुँथा हुआ रूप।

गुंफन[2] पुं. उलझन, गुत्थमगुत्था होना; सजाना।

गुंबज, गुंबद पुं. {फा. गुंबद} गोल, ऊँची और उभरी हुई छत।

गुंफित *वि.* {सं.} उलझा हुआ।

गुंबा पुं. {हिं.} मस्तक पर चोट लगने से सूजन आना, गुल्मा।

गुंभी *स्त्री.* {सं. गुंफ} अंकुर, गाभ।

गुग्गुल पुं. {सं.} एक पेड़ जिसका गोंद सुगंध के लिए जलाते हैं, गूगल।

गुच्ची *स्त्री.* {हिं.} सौ पान का गुच्छा।

गुच्ची *स्त्री.* {हिं.} लड़कों का गुल्ली-डंडा खेलने समय भूमि में खोदा हुआ छोटा गड्ढा।

गुच्चीपारा *स्त्री.* {हिं.} लड़कों का कौड़ी फेंकने का गड्ढा।

गुच्छ पुं. {सं.} {*वि.* गुच्छा} गुच्छा; वह पौधा जिसमें केवल पत्तियाँ या पतली टहनियाँ फैलें, झाड़; मोर की पूँछ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुच्छा पुं. {सं.} एक लगे या बँधे हुए पत्तों, फलों या फूलों का समूह; एक में लगी या बँधी हुई छोटा वस्तुओं का समूह, जैसे तालियों का गुच्छा; फुँदना, झब्बा।

गुच्छी *स्त्री.* {सं. गुच्छ} करंज, कंजा; एक प्रकार की खुमी, जिसकी तरकारी बनती है।

गुच्छीय *वि.* {सं.} गुच्छों में लगनेवाला।

गुजर पुं. {फा. गुज़र} निकास, गति; पैठ, पहुँच, प्रवेश; निर्वाह।

गुजरना *अ.* {फा. गुज़र + हिं. ना (प्रत्य.)} (समय) बीतना या कटना।

मुहा. किसी पर गुजरना = किसी पर (संकट या विपत्ति) पड़ना।

किसी स्थान से होकर आना या जाना।

मुहा. गुजर जाना = मर जाना।

निर्वाह होना, निभना।

गुजर-बसर पुं. {फा.} निर्वाह, गुजारा, कालक्षेप।

गुजरात पुं. {सं. गुर्जर} {*वि.* गुजराती} भारत का एक दक्षिण-पश्चिमी राज्य।

गुजराती *वि.* {हिं. गुजरात} गुजरात-संबंधी, गुजरात का; पुं. गुजरात का निवासी; *स्त्री.* गुजरात की भाषा।

गुजरान पुं. {हिं.} निर्वाह, जीविका।

गुजरिया *स्त्री.* {हिं.} गूजर जाति की स्त्री, गूजरी।

गुजरी *स्त्री.* {हिं. गूजर} कलाई में पहनने की एक प्रकार की पहुँची; कनकटी भेड़; गूजरी।

गुजरेटा पुं. {हिं. गूज़र} {*स्त्री.* गुजरेटी} गूजर जाति का लड़का।

गुज़ारा पुं. {फा. गुज़ारा} निर्वाह; वह वृत्ति जो जीवन-निर्वाह के लिए मिलती हो; महसूल चुकाने का स्थान।

गुज़ारिश *स्त्री.* {फा. गुज़ारिश} निवेदन, प्रार्थना।

गुजारी *स्त्री.* {?} गले में पहनने का एक प्रकार का हार (गहना)।

गुज्झना *अ.* {सं. गुह्य} छिपना।

गुझरौट पुं. {सं. गुह्य + आवर्त} कपड़े की सिकुड़न, शिकन, सिलवट; स्त्रियों की नाभि के आसपास का भाग।

गुझिया *स्त्री.* {सं. गुह्यक} एक प्रकार का पकवान, कुसली, पिराक; खोए की एक मिठाई।

गुटकना¹ *अ.* {अनु.} कबूतर की तरह गुटरगूँ करना।

गुटकना² *स.* {हिं. गटकना} निगलना; खा जाना।

गुटका पुं. {सं. गुटिका} गुटिका; साधारण से अपेक्षाकृत छोटे आकार की पुस्तक जो प्रायः जेब में रखी जा सकती हो, जैसे गुटका रामायण; लट्टू; गुपचुप नाम की मिठाई।

गुटकाना *क्रि. स.* {हिं.} तबला बजाना।

गुटरगूँ *स्त्री.* {अनु.} कबूतरों की बोली।

गुटिका *स्त्री.* {सं.} गोली; एक प्रकार की सिद्धि जिसमें एक गोली मुँह में रखने से मनुष्य दिखाई नहीं देता।

गुट्ट पुं. {सं. गोष्ठ} समूह; दल।

गुट्टा पुं. {हिं.} लोहे की बनी हुई गोटी।

गुट्ठल *वि.* {हिं. गुठली} (फल) जिसमें बड़ी गुठली हो; जड़, मूर्ख; गुठली के आकार का; पुं. किसी वस्तु के इकट्ठे होने से बँधी हुई गाँठ, गुलथी; गिलटी।

गुट्ठी *स्त्री.* {सं. गोष्ठ} मोटी गाँठ।

गुठला¹ पुं. {हिं. गुठली} बड़ी गुठली; बड़ी गुठली की तरह कोई गोल कड़ी चीज, जैसे शरीर में मांस का गुठला।

गुठला² पुं. {सं. अंगुस्थल, प्रा. अंगुट्ठल} अँगूठे में पहनने का एक प्रकार का गहना।

गुठला³ *वि.* {सं. कुंठ} जिसकी धार खराब हो गई हो, कुंठित, भोथरा।

गुठली *स्त्री.* {सं. गुटिका} ऐसे फल का बीज, जिसमें एक ही बड़ा चीज होता हो, जैसे आम की गुठली।

गुठाना *अ.* {हिं. गुठली} गुठली-सी बँध जाना; निकम्मा हो जाना।

गुड़ंबा पुं. {हिं. गुड़ + आँब} शीरे में उबाला हुआ कच्चा आम।

गुड़ पुं. {सं. गुड} ईख, खजूर आदि का रस पकाकर जमाई हुई बट्टी या भेली।

मुहा.–कुल्हिया में गुड़ फोड़ना = गुप्त रीति से कोई ऐसा कार्य या सलाह करना जो बिना किसी भय के प्रकाश्य रूप में भी किया जा सकता हो।

गुडकरी *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार की रागिनी।

गुड़गुड़ पुं. {हिं.} जल में नली आदि द्वारा वायु प्रवेश होने का शब्द।

गुड़गुड़ाना *अ.* {अनु.} {*भाव.* गुड़गुड़ाहट} गुड़गुड़ शब्द होना; *स.* गुड़गुड़ शब्द करना; हुक्का पीना।

गुड़गुड़ाहट *स्त्री.* {हिं. गुड़गुड़ + आहट (प्रत्य.)} गुड़गुड़ शब्द होने की क्रिया या भाव, गुड़गुड़ी।

गुड़गुड़ी *स्त्री.* {हिं. गुड़गुड़ाना} एक प्रकार का हुक्का, फरशी; गुड़गुड़ाहट।

गुड़धानी¹ *स्त्री.* {हिं. गुड़ + धान} भुने हुए गेहूँ को गुड़ में पागकर बाँधा गया लड्डू।

गुड़धानी² *स्त्री.* **{हिं. गुड़ +धानियाँ} गुड़ के साथ मिलाया हुआ धनिया जो कुछ विशिष्ट अवसरों पर खाया जाता है।**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुड़रू पुं. {सं. गरुड़} एक प्रकार का पक्षी।

गुड़हल पुं. {हिं. गुड़ + हर} अड़हुल का पेड़ या फूल, जपा।

गुड़ाकू पुं. {हिं. गुड़ + तमाकू} गुड़ मिला हुआ पीने का तंबाकू; एक प्रकार का मंजन।

गुड़ाकेश पुं. {सं.} शिव; अर्जुन।

गुड़िया *स्त्री.* {हिं. गुड्डा} कपड़े की वह पुतली जिससे लड़कियाँ खेलती हैं।

पद गुड़ियों का खेल = सहज काम।

गुड़िला पुं. {सं. गुड्, हिं. गुड्डा का पुराना रूप} मनुष्य की आकृति का पुतला; गुड्डी।

गुड़ूची *स्त्री.* {सं.} गुरुच, गिलोय।

गुड्डा[1] पुं. {सं. गुड् = खेलने की गोली} कपड़े का बना हुआ पुतला।

मुहा.–किसी के नाम का गुड्डा बाँधना = किसी की निंदा करते फिरना।

गुड्डा[2] पुं. {हिं. गुड्डी} बड़ी पतंग।

गुड्डी[1] *स्त्री.* {सं. कुड्डक = कौड़िल्ला पक्षी} कागज का वह प्रसिद्ध खिलौना जो हवा में उड़ाया जाता है, पतंग, कनकौआ।

गुड्डी[2] *स्त्री.* {सं. गुटिका} घुटने की हड्डी; एक प्रकार का छोटा हुक्का।

गुड्डू पुं. {हिं.} एक प्रकार का धूल में रहनेवाला कीड़ा, गुड़रू।

गुढ़ पुं. {सं. गूढ़} छिपकर रहने का स्थान।

गुढ़ना *अ.* {सं. गूढ़} छिपना, गूढ़ अर्थ समझना, जैसे पढ़ना-गुढ़ना।

गुढ़ा पुं. {सं. गूढ़} छिपने की जगह, गुप्त स्थान।

गुढ़ासी पुं. {सं. गूढ़ाशय} गुप्तचर, भेदिया; दुष्ट उद्देश्य से लोगों में उपद्रव या लड़ाई-झगड़ा करानेवाला।

गुढ़ी *स्त्री.* {सं. गुढ} गाँठ, गुत्थी।

गुण[1] पुं. {सं.} किसी वस्तु में पाई जानेवाली विशेष बात या तत्व जिसके द्वारा वह दूसरी वस्तु से अलग मानी जाए, धर्म (प्रॉपर्टी); उक्त प्रकार की वह अच्छी बात या विशेषता जिसके कारण कोई व्यक्ति या पदार्थ औरों की अपेक्षा अच्छा माना जाता है, अच्छापन, खूबी।

मुहा. गुण गाना = प्रशंसा करना; *गुण मानना* = एहसान मानना।

प्रकृति के अंतर्गत मानी जानेवाली तीन प्रकार की वृत्तियाँ या भाव जो मनुष्यों, जीव-जंतुओं, वनस्पतियों आदि में पाई जाती हैं, यथा–सत्व, रज और तम; (उक्त वृत्तियों के आधार पर) तीन की संख्या का सूचक शब्द; निपुणता, प्रवीणता; कला या विद्या, हुनर; किसी प्रकार की क्रिया या विशेषता आदि के फलस्वरूप पड़नेवाला प्रभाव, असर (एफेक्ट); विशेषता (क्वालिटी); प्रकृति; डोरी।

गुण[2] *प्रत्य.* एक प्रत्यय जो संख्यावाचक शब्दों के आगे लगकर उतनी ही बार और होना सूचित करता है, गुना, जैसे त्रिगुण, चतुर्गुण आदि।

गुणक पुं. वह अंक जिससे किसी अंक को गुणा करते हैं।

गुणकारक *वि.* {सं.} गुण या फायदा करनेवाला, लाभदायक।

गुणगौरी *वि.* {सं.} पतिव्रता; सुहागिन; स्त्रियों का एक व्रत।

गुणग्राहक पुं. {सं.} गुणों या गुणियों का आदर करनेवाला, कदरदान।

गुणज्ञ *वि.* {सं.} अच्छी बातों या गुणों को पहचानने या, उनकी परख करनेवाला, गुणों का पारखी; गुणी।

गुणता *स्त्री.* {सं.} गुण-संबंधी विशिष्टता (क्वालिटी)।

गुण-दोष पुं. {सं.} किसी वस्तु के गुण या अच्छी बातें और दोष या बुरी बातें, भले और बुरे दोनों पक्ष या अंग (मेरिट्स)।

गुणन पुं. {सं.} {*वि.* गुण्य, गुणनीय, गुणित} गणित में एक संख्या को दूसरी संख्या से गुणा करना, जरब देना; गिनना; अनुमान करना; उद्धरणी करना, रटना; मनन करना, सोचना।

गुणनखंड पुं. {सं.} दी हुई संख्या को विभाजित करनेवाली संख्या (फैक्टर)।

गुणनफल पुं. {सं.} वह संख्या जो एक संख्या को दूसरी से गुणा करने से निकले (प्रॉडक्ट)।

गुणना *स.* {सं. गुणन} गुणा करना; गुणना।

गुणनिधान *वि.* {सं.} जिसमें बहुत से गुण हों।

गुणवंत *वि.* {सं.} गुणवान।

गुणवत्ता पुं. {सं.} गुण-संबंधी विशिष्टता।

गुणवाचक *वि.* {सं.} वह जो गुणों का वर्णन करे; व्याकरण में वह शब्द, जिससे द्रव्य का गुण सूचित हो, विशेषण।

गुणवान, गुणवान् *वि.* {सं. गुणवत्} {*स्त्री.* गुणवती} गुणवाला, गुणी।

गुणांक पुं. {सं.} वह राशि जिससे दूसरी राशि को गुणा किया जाए (को-एफिशंट)।

गुणा पुं. {सं. गुणन} {*वि.* गुण्य, गुणित} गणित में जोड़ की एक संक्षिप्त रीति, जिसमें कोई संख्या एक बार में ही कई गुनी कर ली जाती है, जरब।

गुणाकर *वि.* {सं.} जिसमें बहुत-से गुण हों, गुणनिधान।

गुणाख्यान पुं. {सं.} गुण-कीर्तन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुणाढ्य *वि.* {सं.} गुणायुक्त, गुणवान।
गुणातीत *वि.* {सं.} सुख-दुःख से रंजित, जीवन्मुक्त।
गुणानुवाद *पुं.* {सं.} गुणों का वर्णन।
गुणित *पुं.* {सं.} गुणा किया हुआ।
गुणी *वि.* {सं.} गुणवाला, जिसमें कोई या कई गुण हों; *पुं.* कला-कुशल, हुनरमंद; झाड़-फूँक करनेवाला, ओझा।
गुणीभूत व्यंग्य *पुं.* {सं.} वह काव्य जिसमें व्यंग्यार्थ वाच्यार्थ से कम या समान हो, अधिक न हो।
गुणेश्वर *पुं.* {सं.} गुण के अधिपति, परमेश्वर।
गुण्यांक *पुं.* {सं.} वह अंक जो गुणा किया जाए।
गुत्थमगुत्था *पुं.* {हिं. गुथना} उलझाव, फँसाव; हाथाबाँही।
गुत्थी *स्त्री.* {हिं. गुथना} एक में गुथने से बनी हुई गाँठ, उलझन; समस्या, उलझन।
मुहा. *गुत्थी या गुत्थियाँ सुलझाना* = जटिल समस्याओं की मीमांसा करना, कठिनाइयों से बचने का मार्ग निकालना।
गुथना *अ.* {सं. गुत्सन} कई वस्तुओं का एक में उलझ जाना; भद्दी तरह से सिया जाना; किसी से लड़ने के लिए उससे लिपट जाना।
गुथवाँ *वि.* {हिं. गूथना} गूँथकर बनाया हुआ।
गुथवाना *क्रि. स.* {हिं.} गूँथने का काम दूसरे से करवाना।
गुद *स्त्री.* {सं.} गुदा; *पुं.* = गूदा।
गुदकारा *वि.* {हिं. गूदा या गूदर} गूदेदार; गुदगुदा।
गुदगुदा *अ.* {हिं. गुदा} गूदेदार; मांस से भरा हुआ; मुलायम।
गुदगुदाना *अ.* {हिं. गुदगुदा} हँसाने या छेड़ने के लिए किसी का तलवा, बगल आदि सहलाना, गुदगुदी करना; विनोद या परिहास के लिए छेड़ना; किसी के मन में किसी बात की वासना या उत्कंठा उत्पन्न करना।
गुदगुदाहट *स्त्री.* {हिं.} काँख, पेट आदि मांसल स्थानों पर अँगुली द्वारा सहलाने से उत्पन्न सुरसुराहट या मंद खुजली, आह्लाद, उत्कंठा, उमंग आदि।
गुदगुदी *स्त्री.* {हिं. गुदगुदाना} वह मधुर अनुभव जो बगल आदि कोमल अंगों को छूने या सहलाने से होता है; उत्कंठा, उमंग; मन का उल्लास।
गुदग्रह *पुं.* {सं.} कोष्ठबद्धता का रोग।
गुदड़िया *पुं.* {हिं.} गुदड़ी पहनने या ओढ़नेवाला।
गुदड़ी *स्त्री.* {हिं. गूदड़} फटे-पुराने टुकड़ों को जोड़कर बनाया हुआ बिछौना या ओढ़ना, कंथा।
पद *गुदड़ी में का लाल* = तुच्छ स्थान में उत्तम वस्तु।
कपड़ों के फटे-पुराने टुकड़े या चिथड़े, गूदड़।
गुदड़ी बाजार *पुं.* {हिं. गुदड़ी + फा. बाजार} वह बाजार जिसमें पुरानी या टूटी-फूटी चीजें बिकती हैं।
गुदना *अ.* {हिं. गोदना} गोदा जाना; *पुं.* गोदना।
गुदर *स्त्री.* {फा. गुज़र} गुजर; निवेदन, प्रार्थना; निवेदन आदि के लिए किसी की सेवा में होनेवाली उपस्थिति, हाजिरी।
गुदभ्रंश *पुं.* {सं.} गुदा से काँच निकलने का रोग।
गुदमा *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का नरम मोटा कंबल।
गुदरना *पुं.* {स} किसी के सामने उपस्थित या पेश होना; गुजरना।
गुदराना *स.* {फा. गुज़रान} पेश करना, सामने रखना; निवेदन करना।
गुदरैन *स्त्री.* {हिं. गुदराना} पढ़ा हुआ पाठ सुनाना; परीक्षा।
गुदस्तंभ *पुं.* {सं.} कठिनता से मल निकलनेवाला रोग।
गुदांकुर *पुं.* {स} अर्श रोग।
गुदा *स्त्री.* {सं.} मलद्वार।
गुदाना *स.* {हिं. गोदना का प्रे.} गोदने का काम करना।
गुदार *वि.* {हिं. गूदा} गूदेदार।
गुदारना *स.* {फा. गुजर, हिं. गुदरना} उपेक्षा करना, ध्यान न देना; निवेदन करना, सेवा में उपस्थित करना; बिताना, गुजारना।
गुदारा *पुं.* {फा. गुजारा} नाव से नदी पार करने का काम, उतारा।
मुहा. *गुदारे लगना* = नाव का किनारे पहुँचना; किसी काम की समाप्ति या अंत होना।
गुदुरी *स्त्री.* {हिं.} मटर की फली, मटर की फसल को नष्ट करनेवाला कीड़ा।
गुहा *पुं.* {हिं.} फल आदि के भीतर का गूदा।
गुनकारी *वि.* {हिं.} गुणकारक।
गुनगुना *पुं.* {हिं.} कुनकुना, थोड़ा गरम पदार्थ।
गुद्दी *स्त्री.* {हिं. गूदा} बीज के अंदर का गूदा, गिरी; सिर का पिछला भाग।
गुनगुनाना *अ.* {अनु.} गुनगुन शब्द करना; नाक में बोलना; बहुत धीरे-धीरे अस्पष्ट स्वर में गाना।
गुनना *स.* {सं. गुणन} गुणा करना, जरब देना; गिनना; उद्धरणी करना, रटना; सोचना; किसी को कुछ महत्व का समझना, मानना, जैसे वह तुम्हें क्यों गुनता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुनवान *वि.* {*स्त्री.* गुनवती} = गुणवान।

गुना[1] *पुं.* {सं. गुणन} प्रत्यय की तरह का एक शब्द जो किसी संख्या के अंत में लगकर उसका उतनी ही बार और होना सूचित करता है, जैसे सातगुना; गुणा (गणित)।

गुना[2] *पुं.* {?} एक प्रकार का मीठा पकवान।

गुनावन *स्त्री.* {हिं. गुनना} मन में कुछ सोचने की क्रिया या भाव।

गुनह *पुं.* = गुनाह।

गुनाह *पुं.* {फा.} पाप, पातक; कसूर, अपराध।

गुनाहगार *वि.* {फा.} पापी; दोषी, अपराधी।

गुनिया *वि.* {हिं. गुणी} गुणवान; राजगीर का समकोण नापने का यंत्र, गुनिया; *पुं.* नाव की रस्सी खींचनेवाला मल्लाह।

गुपचुप[1] *पुं.* {सं. गुप + चुप} गुप्त रीति से, चुपचाप।

गुपचुप[2] *पुं.* {स} एक प्रकार की मिठाई, जो मुख में रखते ही गल जाती है; *अव्य.* चुपचाप, गुप्त रीति से।

गुपाल *पुं.* गोपाल।

गुपुत *वि.* = गुप्त।

गुप्त *वि.* {सं.} {*भाव.* गुप्तता} गूढ़, रक्षित, छिपा हुआ; जिसे जानना कठिन हो।

गुप्तचर *पुं.* {सं.} गुप्त रूप से किसी बात का पता लगानेवाला दूत, भेदिया, जासूस।

गुप्तदान *पुं.* {सं.} वह दान जिसे देते समय केवल दाता जाने, दूसरों को पता न लगे।

गुप्ता *स्त्री.* {सं.} प्रेम-संबंध छिपानेवाली नायिका; रखैली, रखनी।

गुप्ति *स्त्री.* {सं. गुप्त} वह छड़ी जिसके अंदर किरच या पतली तलवार जो छड़ी के भीतर छिपी रहती है।

गुगुफा *पुं.* {हिं.} फुँदना, झब्बा, फूलों का गुच्छा।

गुफा *स्त्री.* {सं. गुहा} जमीन या पहाड़ के नीचे या अंदर विस्तृत और अँधेरी खली जगह जिसमें प्रायः पशु आदि रहते हों, कंदरा, गुहा।

गुफावासी *वि.* {सं. गुहावासिन्} गुफा में रहनेवाला।

गुबरैला *पुं.* {हिं. गोबर + ऐला (प्रत्य.)} गोबर आदि में रहनेवाला एक कीड़ा।

गुबार *पुं.* {*अ.*} गर्द, धूल; मन में दबा हुआ क्रोध, दुख, द्वेष आदि।

मुहा. निकालना = द्वेष आदि के कारण बदला चुकाना।

गुब्बारा *पुं.* {फा. गुबार} कागज, रबर आदि का वह थैला जिसे धुआँ या हवा भरकर आकाश में उड़ाते हैं।

गुम *वि.* {फा.} छिपा हुआ, गुप्त; अप्रसिद्ध; खोया हुआ; गायब; लापता।

गुमकना *क्रि. अ.* {हिं.} भीतर ही भीतर गूँजना।

गुमजी *स्त्री.* {हिं.} छोटा गुंबद।

गुमटा *पुं.* {सं. गुम्बा + टा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* अल्पा. गुमटी} वह सूजन जो सिर पर चोट लगने से होती है; गुल्मा।

गुमटी *स्त्री.* {हिं. गुमटा} मकान के ऊपरी भाग में सीढ़ी आदि के ऊपर की छत; चौकीदार के रहने का छोटा कमरा; टीन, लकड़ी आदि की बनी अस्थायी दुकान।

गुमना *अ.* {फा. गुम} खो जाना, गुम होना; तुरंत हो जाना।

गुमनाम *वि.* {फा.} अप्रसिद्ध, अज्ञात; जिसमें या जिसका नाम न हो; जिसपर लेखक का नाम न हो, गुमनाम चिट्ठी।

गुमर *पुं.* {फा. गुमान} घमंड, शेखी; मन का गुब्बार; कानाफूसी।

गुमराह *वि.* {फा.} {*भाव.* गुमराही} रास्ता भूला हुआ; कुमार्ग पर चलनेवाला।

गुमान *पुं.* {फा.} अनुमान, कल्पना; किसी विषय में मन में होनेवाला बुरा संदेह; घमंड, अभिमान।

गुमानी *वि.* {हिं. गुमान} घमंडी।

गुमाश्ता *पुं.* {फा.} किसी की ओर से माल खरीदने और बेचने के लिए नियुक्त मनुष्य एजेन्ट।

गुम्मट *पुं.* {फा.} गुम्बद।

गुर *पुं.* {सं. गुरुमंत्र} वह उपाय जिसमें कोई काम तुरंत हो जाए, युक्ति; मूल मंत्र, भेद, लीन की संख्या।

गुरगा *पुं.* {सं. गुरुग} {*स्त्री.* गुरगी} चेला; नौकर; जासूस; अनुचर; अनुगामी; टहलुआ; भेदिया।

गुरगाबी *पुं.* {फा.} एक प्रकार का मुंडा जूता।

गुरचना *अ.* {अनु.} किसी चीज में बल या सिकुड़न पड़ना; उलझना।

गुरची *स्त्री.* {हिं. गुरचना} सिकुड़न, बल; उलझन; बटन।

गुरचों *स्त्री.* {अनु.} दूसरों से छिपाकर आपस में बहुत धीरे-धीरे होनेवाली बातचीत; कानाफूसी।

गुरझ (न) *स्त्री.* {सं. अवरुंधन, पुं. हिं. उरझन} पेच की बात, उलझन; ग्रंथि, गाँठ।

गुरझना *अ.* = उलझना।

गुरझाना *स.* = उलझाना।

गुरदा *पुं.* {फा. गुर्दः} रीढ़दार जीवों का एक भीतरी अंग जो कलेजे के पास होता है; साहस, हिम्मत; मध्य युग की एक तरह की छोटी तोप।

गुरमुख *वि.* गुरुमुख।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरमुखी *स्त्री.* {सं. गुरु + मुख + ई (प्रत्य.)} सिक्खों के पाँचवें गुरु अर्जुन देव की चलाई हुई एक लिपि जो पंजाब में प्रचलित है और जो देवनागरी का एक रूपान्तर ही है।

गुरम्मर *पुं.* {हिं. गड़ + आम} आम का वह वृक्ष जिसके फल मीठे होते हों; गुड़ंबा।

गुरदी *पुं.* {हिं. गर्व} घमंडी।

गुरसी *स्त्री.* {हिं.} अँगीठी।

गुरसुन *पुं.* {हिं.} सुनार की एक प्रकार की छेनी।

गुराई *स्त्री.* = गोरापन।

गुराब *पुं.* {देश.} तोप लादने की गाड़ी; एक मस्तूल की नाव; चारा काटने का एक शस्त्र।

गुरिद *पुं.* गदा; अस्त्र।

गुरिया *स्त्री.* {सं. गुटिका} माला में का दाना या मनका; चौकोर या गोल कटा हुआ छोटा टुकड़ा; मछली के मांस की बोटी या टुकड़ा।

गुरीरा *वि.* {हिं. गुड़ + ईरा (प्रत्य.)} गुड़ का-सा मीठा; उत्तम, बढ़िया।

गुरु *वि.* {सं.} {*स्त्री.* गुर्वी, *भाव.* गुरुत्व} बड़े आकार का; भारी वजनी; देर से पचनेवाला (भोजन); *पुं.* {*स्त्री.* गुरुआनी} बृहस्पति नामक आचार्य; बृहस्पति नामक ग्रह; बृहस्पतिवार; किसी मंत्र का उपदेष्टा; विद्या या कला सिखानेवाला, उस्ताद; दो मात्राओंवाला या दीर्घ अक्षर जिसका संकेत या चिह्न 'ऽ' है (पिंगल)।

गुरुआई *स्त्री.* {सं. गुरु + हिं. आई (प्रत्य.)} गुरु का पद या काम; धूर्तता, चालाकी।

गुरुआइन, गुरुआनी *स्त्री.* {सं. गुरु + आनी (प्रत्य.)} गुरु की स्त्री; पढ़ानेवाली स्त्री।

गुरुकुल *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ गुरु विद्यार्थियों को अपने पास रखकर शिक्षा देता हो; वह आधुनिक संस्था, जिसमें विद्यार्थियों को प्राचीन भारतीय ढंग से और ब्रह्मचर्यपूर्वक रखकर शिक्षा दी जाती है; गुरु का घराना या वंश।

गुरुकोप *पुं.* {हिं.} अत्यंत कोप।

गुरुकम *पुं.* {सं.} एक-दूसरे को उपदेश देना।

गुरु-गंधर्व *पुं.* {सं.} ताल के छः भेदों में से एक।

गुरुघंटाल *पुं.* {हिं.} धूर्त व्यक्ति; बहुत बड़ा चालाक।

गुरुघ्न *पुं.* {हिं.} गुरु की हत्या करनेवाला मनुष्य।

गुरुच *स्त्री.* {सं. गुडूची} एक प्रकार की कड़वी बेल जो दवा के काम में आती है, गिलोय।

गुरुजन *पुं.* {सं.} माता, पिता, गुरु आदि बड़े लोग।

गुरुडम *पुं.* {सं. गुरु + अं. डम (प्रत्य.)} स्वयं गुरु बनकर दूसरों से अपनी पूजा कराना।

गुरुतम *वि.* {सं.} अधिक भारी।

गुरुतल्प *पुं.* {सं.} गुरु का बिस्तर, गुरु की माया।

गुरुता *स्त्री.* {सं.} गुरुत्व; गुरुआई, गुरुपन।

गुरुताई *स्त्री.* = गुरुता।

गुरुतोमर *पुं.* {सं.} एक प्रकार का छंद।

गुरुत्व *पुं.* {सं.} गुरु या भारी होने का भाव, भारीपन (ग्रैविटी); वजन, बोझ; गुरु या शिक्षक होने का भाव; महत्व, बड़प्पन।

गुरुत्वलंब *पुं.* {सं.} किसी पदार्थ के गुरुत्व केन्द्र से सीधे नीचे की ओर खींची हुई रेखा।

गुरुत्वाकर्षण *पुं.* {सं.} पृथ्वी की वह शक्ति जिसके द्वारा सभी वस्तुएँ उसी की ओर खिंचकर आती हैं (ग्रैविटेशन)।

गुरु-दक्षिणा *स्त्री.* {सं.} वह दक्षिणा जो विद्या पढ़ लेने पर गुरु को दी जाती है; (गुरु पूर्णिमा के अवसर पर) गुरु को दी जानेवाली दक्षिणा।

गुरुदेव *पुं.* {सं.} वह गुरु जिसके पास दीक्षा लेने के लिए कोई जाता है।

गुरुद्वारा *पुं.* {सं. गुरु + द्वार} सिक्खों का धर्मस्थान या मंदिर।

गुरुपूजा *स्त्री.* {सं.} गुरु अथवा मंत्र देनेवाले का पूजन।

गुरु-भाई *पुं.* {सं. गुरु + हिं. भाई} एक ही गुरु के शिष्य।

गुरुमंत्र *पुं.* {सं.} वह मंत्र जो गुरु किसी को अपना शिष्य बनाने के समय देता है।

गुरुभाई *पुं.* {हिं.} एक ही गुरु के चेले।

गुरुभाव *पुं.* {सं.} गंभीर अभिप्राय, गुरुत्व।

गुरुमुख *वि.* {सं. गुरु + मुख} जिसने गुरु से धार्मिक दृष्टि से दीक्षा ली हो।

गुरुमुखी *स्त्री.* गुरमुखी।

गुरुरत्न *पुं.* {सं.} पुखराज नाम का रत्न।

गुरुवला *स्त्री.* {सं.} संकीर्ण राग का एक भेद।

गुरुवार *पुं.* {सं.} बृहस्पति का दिन, बृहस्पतिवार।

गुरुस *पुं.* {सं. गुरु} अध्यापक; धूर्त।

गुरू *पुं.* {सं. गुरु} अध्यापक, गुरु; धूर्त व्यक्ति।

गुरेरना *स.* {सं. गुरु = बड़ा + हेरना} क्रोध से देखना, घूरना।

गुरेरा *पुं.* {हिं. गुरेरना} किसी को गुरेरने या क्रोधपूर्वक देखने की क्रिया या भाव; साक्षात्कार।

गुर्थनी *स्त्री.* {हिं.} गेहूँ व चना मिला हुआ अन्न।

गुरेरा-गुरेरी *स्त्री.* एक-दूसरे को क्रोधपूर्वक देखना।

गुर्ज *पुं.* {फा.} गदा नामक अस्त्र; मोटा डंडा या सोंटा।

गुर्जबर्दार *पुं.* {फा.} गदाधारी योद्धा।

गुर्जर *पुं.* {सं.} गुजरात देश; इस देश का निवासी; गूजर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुर्जरी *स्त्री.* {सं.} गुजरात देश की स्त्री; गुर्जर जाति की स्त्री; संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

गुर्दा *पुं.* {हिं.} शरीर के अंदर रीढ़ के दोनों ओर अवस्थित अंग जिनका काम आहार से पेशाब को अलग करना और खून से बेकार नत्रजनीय द्रव्य को निकालकर उसे साफ करना है, गुरदा, वृक्क।

गुर्राना *अ.* {अनु.} {*भाव.* गुर्राहट} कुत्ते आदि का गुरगुर शब्द करना; क्रोध में आकर कर्कश स्वर से बोलना।

गुर्राहट *स्त्री.* {हिं. गुर्राना} गुर्राने की क्रिया या भाव।

गुर्विणी *वि.* {सं.} गर्भवती।

गुर्वी *स्त्री.* {सं.} गुरु की पत्नी; *वि. स्त्री.* बड़ी या भारी; गौरवशाली; गर्भवती।

गुल[1] *पुं.* {फा.} गुलाब का फूल; फूल, पुष्प।
मुहा. गुल खिलना = विलक्षण घटना होना; नया बखेड़ा खड़ा होना।
पशुओं के शरीर पर फूल के आकार का दाग; वह गड्ढा जो हँसते समय कुछ लोगों के गालों में पड़ता और सौंदर्यवर्धक माना जाता है; गरम धातु से दागने से शरीर पर पड़नेवाला चिह्न, दाग़, छाप; दीए की बत्ती का जला हुआ अंश।
मुहा. (चिराग) गुल करना = बुझाना, तमाकू का जला हुआ अंश, जट्टा।

गुल[2] *पुं.* {*अ.* गुल} शोर, हल्ला।

गुलकंद *पुं.* **{फा.} चीनी मिलाकर धूप में सिझाई हुई गुलाब के फूलों की पंखुड़ियाँ जो दस्तावर होती हैं।**

गुलकारी *स्त्री.* {फा.} बेल-बूटे का काम।

गुल-गपाड़ा *पुं.* {*अ.* गुल + हिं. गप्प} चिल्लाहट, शोरगुल, बहुत अधिक हल्ला-गुल्ला।

गुलगुला *पुं.* {हिं. गोल} एक प्रकार का मीठा पकवान; *वि.* गुदगुदा।

गुलगुलाना *स.* {हिं. गुलगुल} गूदेदार चीज को बार-बार दबाकर मुलायम करना।

गुलगुल *वि.* {हिं.} घुला हुआ, बहुत नरम।

गुलगुली *स्त्री.* {हिं.} गुदगुदी।

गुलगोथना *पुं.* {हिं.} गाल फूला हुआ मनुष्य।

गुलचा *पुं.* {*अ.* गुल या हिं. गाल} प्रेमपूर्वक गालों पर धीरे से किया हुआ हाथ का आघात।

गुलचाना *स.* {हिं. गुलचा + ना (प्रत्य.)} गुलचा मारना या लगाना।

गुलछर्रा *पुं.* {हिं. गुल + छर्रा?} स्वच्छंदता-पूर्वक और अनुचित रीति से किया जानेवाला भोगविलास।

गुलजार *पुं.* {फा. गुलज़ार} बाग, फूलों का बगीचा, वाटिका; *वि.* हरा-भरा; आनंद और शोभा से युक्त; अच्छी तरह से बसा हुआ और रौनकवाला; चहल-पहल युक्त।

गुलझटी *स्त्री.* {हिं.} तागे आदि का लपेटना जो सिकुड़कर गोली के आकार का हो जाता है, सिकुड़न।

गुलझरी *स्त्री.* {हिं.} उलझन, सिकुड़न, बाल।

गुलता *पुं.* {हिं.} गुलेल से छोड़ी जानेवाली मिट्टी की गोली।

गुलथी *स्त्री.* {हिं. गोल + सं. अस्थि} किसी तरल पदार्थ के गाढ़े होकर जमने से बनी हुई गुठली; मांस की जमी हुई गाँठ।

गुलदस्ता *पुं.* {फा.} सुंदर फूलों और पत्तियों का बना गुच्छा।

गुलदाउदी *स्त्री.* {फा. गुल + दाउदी} एक सुंदर फूलोंवाला पौधा।

गुलदान *पुं.* {फा.} फूलों का गुच्छा रखने का पात्र।

गुलदार *वि.* {फा.} एक प्रकार का पौधा तथा उसका फूल।

गुलदुपहरिया *स्त्री.* {फा. गुल + हिं. दुपहरिया} एक छोटा पौधा जिसमें सफेद सुगंधित फूल लगते हैं।

गुलनार *पुं.* {फा.} अनार का फूल; इस फूल का-सा गहरा लाल रंग।

गुलबकावली *स्त्री.* {फा. गुल + सं. बकावली} हलदी की तरह का एक पौधा जिसमें सफेद सुंदर फूल होते हैं।

गुलबदन *पुं.* {फा.} एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

गुलमेहंदी *स्त्री.* {फा. गुल + हिं. मेहंदी} अच्छे फूलोंवाला एक प्रकार का पौधा।

गुलमेख *स्त्री.* {फा.} बड़े गोल सिरवाली कील, फुलिया।

गुललाला *पुं.* 'गुल्लाला'।

गुलशन *पुं.* {फा.} वाटिका, फूलों का बाग।

गुलशब्बो *स्त्री.* {फा.} रजनीगंधा का पौधा या फूल, सुगंधिराज।

गुलाब *पुं.* {फा.} एक प्रसिद्ध कँटीला पौधा जिसमें सुंदर सुगंधित फूल लगते हैं।

गुलाब-जल *पुं.* {फा. गुलाब + सं. जल} गुलाब के फूलों का अरक।

गुलाब-जामुन *पुं.* {फा. गुलाब + हिं. जामुन} एक प्रकार की मिठाई; एक पेड़ जिसका स्वादिष्ट फल कुछ चटपटा होता है।

गुलाबपाश *पुं.* {फा.} वह पात्र जिसमें गुलाब-जल भरकर लोगों पर छिड़कते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुलाब-बाड़ी *स्त्री.* {हिं. गुलाब + बाड़ी = क्यारी} आनंद-मंगल का वह उत्सव जिसमें आसपास के स्थान और चीजें गुलाब के फूलों से सजाई गई हों।

गुलाबी *वि.* {फा.} गुलाब के रंग का; गुलाबी जाड़ा, गुलाबी नशा।

गुलाम *पुं.* {अ.} मोल लिया हुआ दास; साधारण सेवक, नौकर।

गुलामी *स्त्री.* {अ. गुलाम + ई (प्रत्य.)} दासत्व; सेवा, नौकरी; पराधीनता।

गुलिस्ताँ *पुं.* {फा.} बाग, वाटिका।

गुलू *पुं.* {देश} एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसका गोंद 'कतीरा' कहलाता है।

गुलूबंद *पुं.* {फा.} सिर पर या गले में लपेटने की एक लंबी पट्टी; गले में पहनने का गहना।

गुलेल *स्त्री.* {फा. गुलूल} वह छोटा उपकरण जिससे मिट्टी की गोलियाँ चलाई जाती हैं।

गुल्फ *पुं.* {सं.} एड़ी पर की गाँठ।

गुल्म *पुं.* {सं.} ऐसा पौधा जो एक जड़ से कई तनों के रूप में निकले, जैसे ईख, बाँस आदि; सेना की वह टुकड़ी जिसमें 9 हाथी, 9 रथ, 29 घोड़े और 45 पैदल होते थे; पेट का एक रोग।

गुल्ला[1] *पुं.* {अ. गुल} शोर, हल्ला।

गुल्ला[2] *पुं.* {हिं.} गुलेल में फेंकने की मिट्टी की गोली, एक तरह की मिठाई, रसगुल्ला, ईख की गँड़ेरी, रस्सी का फंदा।

गुल्लाला *पुं.* {फा. गुलेलाल:} एक पौधा जिसमें लाल फूल होते हैं।

गुल्ली *स्त्री.* {सं. गुलिका = गुठली} गुठली; महुए की गुठली; काठ या धातु आदि का गोल लंबोतरा टुकड़ा; केवड़े का फूल, छोटा गोल पासा, ईख की गँड़ेरी।

गुल्ली-डंडा *पुं.* {सं. गुल्ली = डंडा} लड़कों का एक प्रसिद्ध खेल जो गुल्ली और डंडे से खेला जाता है।

गुवाक *पुं.* {सं.} सुपारी या उसका वृक्ष।

गुवार *पुं.* = ग्वाला।

गुष्टि *स्त्री.* = गोष्ठी।

गुसाँई *पुं.* गोसाईं, गोस्वामी।

गुसा *पुं.* गुस्सा, क्रोध, शेष।

गुस्ताख़ *वि.* {फा.} {*भाव.* गुस्ताख़ी} बड़ों का संकोच न करनेवाला, धृष्ट, अशालीन, उद्दंड, अशिष्ट।

गुस्ताख़ी *स्त्री.* {फा.} गुस्ताख़ या उद्दंड होने की दशा या भाव, उद्दंडता; धृष्टतापूर्वक किया हुआ ऐसा काम या बात जो बड़ों के सामने न करने योग्य हो, उद्दंडता।

गुस्ल *पुं.* {अ.} स्नान, नहाना।

गुस्लखाना *पुं.* {अ. गुस्ल + फा. खान:} नहाने का कमरा, स्नानागार।

गुस्सा *पुं.* {अ. गुस्स:} {*वि.* गुस्सावार, गुस्सैल} क्रोध, कोप।

मुहा. गुस्सा उतरना या निकलना = क्रोध शांत होना (किसी पर); *गुस्सा चढ़ना* = क्रोध का आवेश होना।

गुस्सैल *वि.* {हिं. गुस्सा + ऐल (प्रत्य.)} जल्दी क्रोध करनेवाला, क्रोधी।

गुह[1] *पुं.* {सं.} कार्तिकेय; घोड़ा; विष्णु; राम का मित्र एक निषाद; गुफा; हृदय; कंदरा, माया।

गुह[2] *पुं.* {सं. गू:} गू, मैला, मल।

गुहड़ा *पुं.* {हिं.} चौपायों का एक रोग।

गुहना *क्रि. स.* {हिं.} गूथना।

गुहरना *स.* = पुकारना।

गुहराना *स.* = पुकारना, चिल्लाकर पुकारना या बुलाना।

गुहवाना *स.* {हिं.} गुहना (गूथना) का प्रे., गुँथवाना।

गुहांजनी *स्त्री.* {सं. गुह्य + अंजन} आँख की पलक पर होनेवाली फुंसी, बिलनी।

गुहा *स्त्री.* {सं.} गुफा, कंदरा; छेद, गड्ढा; हृदय।

गुहाई *स्त्री.* {हिं. गुहना} गुहना या गूथने की क्रिया, ढंग, भाव या मजदूरी।

गुहाचर *पुं.* {सं.} ब्रह्म, परमात्मा।

गुहामुख *पुं.* कंदरा का द्वार।

गुहार *स्त्री.* रक्षा के लिए पुकार, दुहाई।

गुहाल *पुं.* {हिं.} गोशाला, गाय रखने का घर।

गुहाशय *पुं.* {सं.} परमात्मा, प्राण।

गुहारना *पुं.* {हिं. गुहार} रक्षा के लिए पुकार मचाना, दुहाई देना।

गुहिन *पुं.* {सं.} वन, जंगल।

गुहेरा[1] *पुं.* {सं. गौधेरक} गोह नामक जंतु।

गुहेरा[2] *पुं.* {हिं. गुहना = पिरोना} डोरों से गहने आदि गूथनेवाला, पटवा।

गुहेरी *स्त्री.* {सं. गौधेरिका} आँख की पलक पर होनेवाली फुंसी, बिलनी।

गुह्य *वि.* {सं.} छिपा हुआ, गुप्त; गोपनीय, छिपाने योग्य; जिसका तात्पर्य सहज में न खुले, गूढ़।

गुह्यश्वरी *स्त्री.* {सं.} काली, आद्या, विद्या।

गूँगा *वि.* {फा. गुंग} {*स्त्री.* गूँगी} जिसमें बोलने की शक्ति न हो, मूक, जिसके मुख से शब्द न निकले।

मुहा. गूँगे का गुड़ = वह सुखद अनुभव, जिसका शब्दों में वर्णन न हो सके।

गूँगी *स्त्री.* {हिं.} बोल न सकनेवाली स्त्री, एक प्रकार की बिछिया, दोमुँहा साँप।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गूँज *वि.* {सं. गूँज} भौरों के गूँजने का शब्द, गुंजार; प्रतिध्वनि; खेलने के लट्टू में की कील; नथ या बाली में लपेटा हुआ पतला तार; छोटे-छोटे छल्लों के रूप में लपेटा या घुमाया हुआ तार या ऐसी ही और कोई चीज।

गूँजना *अ.* {सं. गुंजन} भौंरों का मधुर ध्वनि करना, गुंजारना; प्रतिध्वनि से व्याप्त होना या भरना।

गूँठ *पुं.* {हिं.} पहाड़ी टट्टू।

गूँधना *स.* {सं. गुध = क्रीड़ा} {*भाव.* गुँधाई, गुँधावट} पानी में आटा मिलाकर हाथों से दबाना या मलना, माँड़ना।

गूजर *पुं.* {सं. गुर्जर} {*स्त्री.* गूजरी, गुजरिया} अहीरों की एक जाति, ग्वाला।

गूजरी *स्त्री.* {सं. गूर्जरी} गूजर जाति की स्त्री, ग्वालिन; एक प्रकार का गहना, गुप्त; गुजरात की स्त्री; पैर में पहनने का आभूषण; एक रागिनी का नाम।

गूजी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का काला कीड़ा।

गूझा *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का पकवान, बड़ी गुझिया, गूदा, फल के भीतर का तंतु।

गूढ़ *वि.* {सं.} {*भाव.* गुढ़ता} छिपा हुआ; जिसमें कुछ विशेष अभिप्राय छिपा हो, गहरे या गंभीर आशयवाला; जिसका आशय समझना कठिन हो; कठिन; एक अलंकार, गुप्तांग, रहस्य।

गूढ़गेह *पुं.* {सं. गूढ़ + हिं. गेह} मकान के अंदर का छिपा हुआ कमरा, तहखाना; मंत्रणा-गृह; यज्ञशाला।

गूढ़पुरुष *पुं.* {सं.} जासूस, गुप्तचर, भेदिया।

गूढ़ाशय *पुं.* = गूढ़पुरुष।

गूढ़ोक्ति *स्त्री.* {सं.} गूढ़ कथन या बात; किसी को सुनाकर किसी और से कही हुई कोई गुप्त बात।

गूथ *पुं.* {सं.} विष्ठा, मैला।

गूथना *स.* {सं. गुम्फन} तागे आदि में एक ही तरह की बहुत-सी चीजें पिरोना।

गूदड़ *पुं.* {सं. क्षुद्र, हिं. खूद} फटा-पुराना कपड़ा, चिथड़ा।

गूदा *पुं.* {*अ.* गुद्दः} {*स्त्री.* गूदी} फल के अंदर का कोमल खाद्य अंश; खोपड़ी का सार भाग, भेजा; मींगी, गिरी।

गूदेदार *वि.* {हिं. + फा.} जिसमें (खूब) गूदा हो।

गून *स्त्री.* {हिं.} नाव खींचने की रस्सी।

गूना *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का पकवान, एक प्रकार का सुनहरा रंग।

गूनी *स्त्री.* {हिं.} गोनी।

गूमा *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का पौधा- द्रोणपुष्पी।

गूरा *पुं.* {हिं.} गुल्ला, ढेला।

गूलर *पुं.* {सं. उदुंबर} बरगद जाति का एक पेड़ जिसके फल के अंदर छोटे-छोटे कीड़े होते हैं; इस पेड़ का फल, उदुंबर, ऊमर।

पद गूलर का फूल = दुर्लभ व्यक्ति या पदार्थ।

गूलू *पुं.* गूलर (वृक्ष)।

गूह *पुं.* {सं. गुह्य} मैला, विष्टा।

गृध्र *पुं.* {सं.} गिद्ध पक्षी, जटायु; *वि.* लोभी।

गृध्रसी *स्त्री.* {सं.} एक वात रोग जिसमें कमर, पीठ तथा जाँघ में पीड़ा होना।

गृह *पुं.* {सं.} घर, कुटुंब, वंश, कलत्र, भार्या।

गृष्टि *स्त्री.* {सं.} पहली बार तुरंत ब्याई हुई गाय।

गृहउद्योग *पुं.* {सं.} घर में फुरसत के समय हाथ से किए जानेवाले छोटे-मोटे उद्योग-धंधे।

गृह-कलह *पुं.* {सं.} घर का विरोध या कलह या झगड़ा।

गृहजात *पुं.* {सं.} दासीपुत्र, घर की दासी से उत्पन्न पुत्र।

गृहपति *पुं.* {सं.} घर का मालिक; अग्नि; मंत्री; धर्म।

गृहपत्नी *स्त्री.* {सं.} गृहस्वामिनी, गृहिणी।

गृहपशु *पुं.* {सं.} कुक्कुर।

गृहप्रवेश *पुं.* {सं.} शुभ दिन और शुभ बेला में होनेवाले नए घर में प्रवेश हेतु होमादि।

गृहपरता *स्त्री.* {सं.} घर तथा घरवालों के प्रति होनेवाली आसक्ति।

गृहमंत्री *पुं.* {सं.} वह मंत्री जो देश को भीतरी बातों की व्यवस्था करता हो (होम मिनिस्टर)।

गृहयुद्ध *पुं.* {सं.} घर का झगड़ा; देश के अंदर की या देशवासियों की आपसी लड़ाई (सिविल वार)।

गृहरक्षक *पुं.* {सं.} एक प्रकार का अर्धसैनिक संगठन जो स्वतंत्र भारत में स्थानीय शांति और सुरक्षा के उद्देश्य से बनाया गया है; इस संघटन का कोई सिपाही या अधिकारी (होम गार्ड)।

गृहसंन्यास *पुं.* {सं.} घर के अंदर ही रहकर सब काम करने और घर के बाहर न निकलने की प्रतिज्ञा या व्रत, जिसकी गिनती एक प्रकार के संन्यास में होती है।

गृहस्थ *पुं.* {सं.} गृहस्थाश्रम में रहनेवाला व्यक्ति, ज्येष्ठाश्रमी; घर-बार या बाल-बच्चोंवाला; किसान; खेतिहर।

गृहस्थाश्रम *पुं.* {सं.} चार आश्रमों में से दूसरा आश्रम जिसमें लोग विवाह करके घर का काम-काज देखते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृहस्थी *स्त्री.* {सं. गृहस्थ - हिं. ई (प्रत्य.)} गृहस्थाश्रम; घर के काम-धंधे; परिवार; घर का सामान; खेती-बारी।

गृहिणी *स्त्री.* {सं.} घर की मालकिन; पत्नी; भार्या।

गृही *पुं.* {सं. गृहिन्} {*स्त्री.* गृहिणी} गृहस्थ, गृहस्थाश्रमी; यात्री (भडुरों की बोली)

गृहीत *वि.* {सं.} {*स्त्री.* गृहीता} जो ग्रहण किया गया हो, स्वीकृत; लिया, पकड़ा या रखा हुआ; जिस पर किसी उग्र मनोविकार आदि का पूरा प्रभाव पड़ चुका हो, जैसे गर्व-गृहीत; जिस पर भूत-प्रेत आदि की बाधा हो, भूतबाधा से ग्रस्त।

गृह्य *वि.* {सं.} गृह-संबंधी, घर का, विनीत, वश्य, घर में उत्पन्न।

गृह्यसूत्र *पुं.* {सं.} विवाह आदि संस्कारों की वैदिक पद्धति।

गेंगटा *पुं.* {हिं.} कर्कट, केंकड़ा।

गेंडना *क्रि.* {सं.} अन्न रखने हेतु मेड़ बनाना, घेरना, कुल्हाड़ी से काटना।

गेंडली *स्त्री.* {हिं.} कुंडली, फेंटा गेंडुरी।

गेंडुआ *पुं.* {हिं.} तकिया, सिरहाना, बड़ा गेंद।

गेंडुरी *स्त्री.* {हिं.} बड़ा रखने का मेडरा, बिडवा, फेंटा, कुंडली, सर्पों का वर्तुलाकार बैठना।

गेंद *पुं.* {सं. गेंडक, कंदुक} कपड़े, चमड़े आदि का वह गोला जिससे लड़के खेलते हैं, कन्दुक।

गेंद-तड़ी *स्त्री.* {हिं. गेंद + तड़} एक खेल जिसमें लड़के एक-दूसरे को गेंद से मारते हैं।

गेंद-बल्ला *पुं.* {हिं. गेंद + बल्ला} गेंद और बल्ले से खेला जानेवाला एक प्रकार का विलायती खेल (क्रिकेट)।

गेंदवा *पुं.* {हिं.} तकिया, सिरहाना, गेंडुवा।

गेंदा *पुं.* {हिं. गेंद} पीले रंग का एक फूल; इस फूल का पौधा।

गेंदुआ *पुं.* {सं. गेंडुक} गोल तकिया; गेंद।

गेंदुर *पुं.* {हिं.} चमगादड़।

गेड़ना *स.* {सं. गंड = चिह्न या हिं. गंडा} लकीर आदि से घेरना; स्थान आदि की परिक्रमा करना, चारों ओर घूमना; खेत की मेंड़ बनाना; रहट चलाना।

गेय *वि.* {सं.} गाने के योग्य, जो गाया जा सके, जैसे गेय पद।

गेर *पुं.* गला।

गेरना *स.* {हिं. 'गिराना' का पुराना रूप} गिराना; डालना; (गले आदि में ऊपर से डालकर) पहनना।

गेराँव *पुं.* {हिं.} गाय-बैलों को बाँधनेवाले पगहे का वह भाग जो गले में रहता है।

गेरुआ *वि.* {हिं. गेरू + आ (प्रत्य.)} मटमैले लाल रंग का; गेरू से रँगा हुआ, गैरिक, जोगिया।

गेरुई *वि.* = गेरुआ।

गेरू *पुं.* {सं. गवेरुक} खान से निकली एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी, गिरमाटी, गैरिक।

गेह *पुं.* {सं. गृह} घर, गृह, मकान।

गेहनी *स्त्री.* गृहिणी, घरनी, भार्या, पत्नी।

गेही *पुं.* {*स्त्री.* गेहिनी} गृहस्थ।

गेहुँअन *पुं.* {हिं. गेहूँ} गेहूँ के रंग का एक बहुत जहरीला साँप।

गेहुँआ *वि.* {हिं. गेहूँ} गेहूँ के रंग का, बदामी।

गेहूँ *पुं.* {सं. गोधूम} एक प्रसिद्ध अनाज जिसके आटे की रोटी बनती है।

गैंड़ *पुं.* = गैंड़ा।

गैड़ा *पुं.* {सं. गंडक} भैंसे के आकार का कड़ी खालवाला एक जंगली पशु जिसकी नाक पर सींग होता है।

गैंती *स्त्री.* {हिं.} भूमि खोदने का एक अस्त्र, लकड़ी के दस्तेवाली कुदाल जिसके एक ओर नुकीली व दूसरी ओर से मोटी होती है।

गैन *पुं.* {सं. गमन} गैल, मार्ग।

गैना *पुं.* {हिं.} छोटा नाटा बैल।

गैनी *स्त्री.* {हिं. गैन (गमन) + ई (प्रत्य.)} {यौगिक शब्दों के अंत में} चलनेवाली, गामिनी; *स्त्री.* खंती।

गैब *पुं.* {*अ.* गैब} वह जो प्रत्यक्ष या सामने न हो, परोक्ष।

गैबर *पुं.* {सं. गजवर} बड़ा हाथी; एक प्रकार की चिड़िया।

ग़ैबी *वि.* {*अ.* ग़ैब} छिपा हुआ, गुप्त; अजनबी, अपरिचित; ईश्वर या अप्रत्यक्ष शक्ति की ओर का; बिना जान-पहचान का; अज्ञात।

गैया *स्त्री.* {सं. गविका, प्रा. गाइआ} गाय, गौ, गऊ।

ग़ैर *वि.* {*अ.* गैर} अन्य, दूसरा; अपने कुटुंब या समाज से बाहर का, पराया; अभाव या निषेधसूचक शब्द, जैसे गैरहाज़िर।

गैरजरूरी *वि.* {*अ.*} जो आवश्यक न हो, अनावश्यक।

ग़ैरमुनासिब *वि.* {*अ.*} अनुचित।

ग़ैरजिम्मेदार *वि.* {*अ.* + फा.} {*भाव.* गैरजिम्मेदारी} अपनी जिम्मेदारी या उत्तरदायित्व न समझने वाला।

ग़ैरत *स्त्री.* {*अ.* गैरत} लज्जा, शर्म।

ग़ैरदखीलकार *पुं.* {*अ.* + फा.} वह असामी या खेतिहर जिसे दखीलकारीवाले अधिकार प्राप्त न हों (नॉन्-अकुपेंसी टेनेंट)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग़ैरमनकूला *वि.* {अ.} (संपत्ति) जिसे एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर न ले जा सकें, स्थावर, अचल।

ग़ैरमामूली *वि.* {अ.} असाधारण।

ग़ैरहाजिर *वि.* {अ.} अनुपस्थित।

गैरिक *पुं.* {सं.} गेरू; सोना; सुवर्ण; *वि.* गेरु के रंग का; गेरु से रँगा हुआ।

गैल *स्त्री.* {हिं. गली} छोटा रास्ता, मार्ग, गली।

गैरेय *पुं.* {सं.} शिलाजतु, शिलाजीत।

गैलड़ *पुं.* {हिं.} स्त्री के पहले पति का पुत्र जिसको लेकर वह दूसरे पति के पास जाए।

गैला, गैलारा *पुं.* {हिं.} गाड़ी के पहिये की लीक।

गैस *स्त्री.* {अ.} वायु की तरह का बहुत ही फैलनेवाला भौतिक तत्व जिसके संयोग से जल, वायु आदि तत्व बने हैं।

गोंजिया *स्त्री.* गोभी (घास)।

गोंइँठा *पुं.* {हिं.} जलाने का गोबर का सुखाया हुआ गोल-चिपटा टुकड़ा, उपला, गोहरा।

गोंइँड़ *पुं.* {हिं.} गाँव की बस्ती के आसपास की भूमि, गाँव की सीमा।

गोइँया *पुं.* {हिं.} साथ रहनेवाला, साथी, सहचर।

गोंइँ *स्त्री.* {हिं.} बैलों की जोड़ी।

गोंऊ *वि.* {हिं.} चुराने या छिपानेवाला।

गोंछ *स्त्री.* {हिं.} गलमुच्छा, मोंछ।

गोंठ *स्त्री.* {सं. गोष्ठ} धोती की लपेट जो कमर पर पड़ती है।

गोंठना[1] *स.* {सं. गुंठन} किसी अस्त्र की नोक या धार कुंठित करना; गुझिया या मालपुए की कोर मोड़ना।

गोंठना[2] *स.* {सं. गोंड} चारों ओर से घूमना।

गोंड़ *पुं.* {सं. गोंड} एक जंगली जाति जो मध्य प्रदेश में पाई जाती है।

गोंड़रा *पुं.* {सं. कुंडल} {*स्त्री.* गोंड़री} चरसे का मँड़रा; गोल आकार की कोई वस्तु, मँड़ना; गोल घेरा।

गोंड़री *स्त्री.* {हिं.} मँडरा, इँडुरी।

गोंड़ा *पुं.* {हिं.} घेरा हुआ स्थान, बाड़ा, गाँव, बड़ी चौड़ी सड़क, एक जिला।

गोंद *पुं.* {सं. कुंदुरु या हिं. गूदा} पेड़ों के तने से निकला हुआ चिपचिपा या लसदार स्राव, निर्यास।

गोंददानी *स्त्री.* वह बरतन जिसमें गोंद भिगोकर रखते हैं।

गोंद-पँजीरी *स्त्री.* {हिं. गोंद + पँजीरी} गोंद मिली हुई पँजीरी जो प्रसूता स्त्रियों को खिलाई जाती है।

गोंदयाग *पुं.* {हिं.} गोंद-चीनी के संयोग से बनी एक मिठाई।

गोंदरा *पुं.* {हिं.} कोमल घास या पुआल से बनी मोटी चटाई।

गोंदरी *स्त्री.* {सं. गुंद्रा} पानी में होनेवाली एक घास; इस घास की बनी चटाई।

गोंदा *पुं.* {हिं.} गूँथा हुआ सत्तू।

गोंदीला *वि.* {हिं.} जिस वृक्ष से गोंद निकलता हो।

गोंदी *वि.* {हिं. गोंद} गोंद-संबंधी।

गो[1] *स्त्री.* {सं.} गाय, गौ; किरण; वृष राशि; इंद्रिय; वाणी; सरस्वती; आँख, दृष्टि; बिजली; पृथ्वी; दिशा; माता; बकरी, भैंस आदि दूध देनेवाले पशु; जीभ, जबान; *पुं.* बैल; नंदी नामक शिवगण; घोड़ा; सूर्य; चंद्रमा; बाण, तीर।

गो[2] *यो.* {फा.} यद्यपि।

गोइंदा *पुं.* {फा.} गुप्तचर, जासूस।

गोइन *पुं.* {?} एक प्रकार का हिरन।

गोइयाँ *पुं.* {हिं. गोहन} सखा, साथी, सहचर; *स्त्री.* सखी, सहेली।

गोई *स्त्री.* {हिं. गोती} हल, गाड़ी आदि में जीती जानेवाली बैलों की जोड़ी।

गोऊ *वि.* {हिं. गोना + ऊ (प्रत्य.)} छिपानेवाला।

गोकंकट *पुं.* {सं.} गोखरू का पौधा।

गोकर्ण *वि.* {सं.} गौ के-से कानोंवाला; *पुं.* मालाबार का एक शैव-क्षेत्र; यहाँ की शिवमूर्ति।

गोकर्णी *स्त्री.* {सं.} मूर्वालता।

गोकिल *पुं.* मूसल, लांगल, हल।

गोकुल *पुं.* {सं.} गौओं का झुंड गौओं का समूह; गोशाला; मथुरा के पूर्व-दक्षिण का एक प्राचीन गाँव।

गोकोस *पुं.* {हिं.} उतनी दूरी जहाँ तक गाय के बोलने का शब्द सुनाई पड़े।

गोकि *अव्य.* {हिं.} यद्यपि।

गोक्षुर *पुं.* {सं.} गोखरू नामक पौधा उसका फल।

गोखग *पुं.* {हिं.} थलचर, पशु, जानवर।

गोखरू *पुं.* {सं. गोक्षुर} एक छोटी झाड़ी जिसमें छोटे कँटीले फल लगते हैं; धातु के वे लोग कँटीले टुकड़े जो प्रायः हाथियों को पकड़ने के लिए उनके रास्ते में बिछाए जाते हैं; गोटे और बादलें के तारों से बना कपड़ों पर लगाने का एक साज; कड़े के आकार का हाथ का एक गहना।

गोखा *पुं.* {स} झरोखा, मोखा।

गोगृष्टि *स्त्री.* {सं.} केवल एक बार की ब्याई हुई गाय।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोग्रास पुं. {सं.} पके हुए अन्न का वह थोड़ा-सा अंश जो भोजन या श्राद्ध आदि के समय गौ के लिए निकाला जाता है।
गोघातक पुं. {सं.} गाय की हत्या करनेवाला कसाई।
गोचंदन पुं. {सं.} एक प्रकार का चंदन।
गोचंदना स्त्री. {सं.} एक प्रकार की जहरीली जोंक।
गोचना क्रि.स. {हिं.} रोकना, छेंकना; पुं. गेहूँ मिला हुआ चना।
गोचनी स्त्री. {हिं.} महीन छेद करनेवाला यंत्र।
गोचर[1] पुं. {सं.} वह जिसका ज्ञान इंद्रियों से हो सके।
गोचर[2] पुं. {सं.} चरागाह।
गोचर[3] वि. पु. {सं.} इंद्रियों द्वारा शेष (विषय), ज्ञान-विषय, चरागाह।
गोचरभूमि स्त्री. {सं.} वह भूमि जो गौओं के चरने के लिए खाली छोड़ दी गई हो (पास्चर लैंड)।
गोचरी स्त्री. {हिं.} भिक्षावृत्ति, भीख माँगने का व्यवसाय।
गोज पुं. {फा.} अपान वायु, पाद।
गोजई स्त्री. {हिं. गेहूँ +जौ} एक में मिला हुआ गेहूँ और जौ।
गोजर पुं. {सं. खर्जु} कनखजूरा।
गोजी पुं. {सं. गवाजन} बड़ी लाठी, लट्ठ।
गोजल पुं. {सं.} गाय का मूत्र, गोमूत्र।
गोजला पुं. {सं.} तंदुल, चावल, धार; चरवाहे का चौपायों को हाँकनेवाला डंडा।
गोजित पुं. {सं.} पृथ्वी को जप करनेवाला।
गोजी स्त्री. {हिं.} गाय हाँकने की छड़ी, बड़ी लाठी, लट्ठ।
गोझनवट स्त्री. {देश.} अंचल, साड़ी का वह भाग जो सिर और पीठ पर रहता है; पल्ला।
गोझा[1] पुं. {हिं.} एक प्रकार का पकवान, गुझिया, खलीता।
गोझा[2] पुं. {सं. गुह्यक} {स्त्री. अल्पा. गुझिया} गुझिया, एक कँटीली घास, गुज्झा; जोंक।
गोट[1] स्त्री. {सं. गोष्ठ} वह पट्टी जो कपड़े के किनारे पर लगाई जाती है, मगजी; किसी प्रकार का लगा हुआ किनारा।
गोट[2] स्त्री. {सं. गोष्ठी} चौपड़ आदि खेलने का मोहरा, नरद, गोटी।
गोटा पुं. {हिं. गोट} बादले का वह पतला फीता जो कपड़ों पर लगाया जाता है; धनिया; गरी या नारियल का गोला; कतरकर एक में मिलाई हुई इलायची, सुपारी और खरबूजे या बादाम की गिरी; सूखा हुआ मल, कंडी; पुं. गोला।
गोटी स्त्री. {सं. गुटिका} पत्थर या मिट्टी का वह छोटा टुकड़ा जिससे लड़के खेलते हैं; चौपड़ खेलने का मोहरा, नरद; गोटियों का एक प्रकार का खेल; लाभ का योग।
गोठ स्त्री. {सं. गोष्ठ} गोशाला; गोष्ठी; श्राद्ध; सैर।
गोठिल वि. {हिं.} कुंठित, कुंद, जिसकी धार पैनी न हो।
गोठड़ी, गोठरी स्त्री. = गोष्ठी।
गोड़ पुं. {सं. गम, गो} पैर, पाँव-भरना, पाँव में महावर लगाना; लगना; पाँव छूना।
गोड़इत पुं. {हिं. गोईंड़ + ऐत (प्रत्य.)} गाँव में पहरा देनेवाला चौकीदार।
गोड़ना स. कोड़ना; मिट्टी खोदकर या उलट-पुलटकर पोली करना।
गोड़ली पुं. {हिं.} नाचने में प्रवीण पुरुष।
गोड़साँकरा पुं. {हिं.} स्त्रियों के पैर का एक आभूषण।
गोड़ा पुं. {हिं. गोड़} पलंग आदि का पाया; घोड़िया।
गोड़ाई स्त्री. {हिं. गोड़ना} गोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
गोड़ाना स. गोड़ने का काम दूसरे से कराना।
गोड़ापाई स्त्री. {हिं. गोड़ + पाई = जुलाहों का ढाँचा} बार-बार आना-जाना।
गोड़ारी स्त्री. {हिं. गोड़ = पैर + आरी (प्रत्य.)} पलँग का वह सिरा जिधर पैर रहता है; पैताना; जूता।
गोड़िब पुं. {सं.} शृगाल, सियार, गीदड़।
गोड़िया स्त्री. {हिं.} उपाय करनेवाला; स्त्री. छोटा पाया या गोड़ा।
गोड़ी स्त्री. {हिं.} लाभ, बकरे आदि के पैर की नली।
गोण पुं. {सं.} वृषभ, बैल।
गोणी स्त्री. {सं.} बोरा, मोटा वस्त्र, टाट।
गोत पुं. {सं. गोत्र} कुल, वंश, खानदान; समूह, जत्था, दल।
गोतना स. {हिं. गोता} गोता देना, डुबोना; नीचे की तरफ ले जाना; अ. नीचे की तरफ झुकना; निद्रा, तन्द्रा आदि के वश में होना।
गोतमी स्त्री. {सं.} गोतम की पत्नी अहल्या।
गोता पुं. {अ. गोत:} डुबकी।
मुहा. गोता खाना = धोखे मे आना, छल में फँसना; *गोता मारना* = डुबकी लगाना; बीच में अनुपस्थित रहना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोताखोर पुं. {अ. गोत: + फा. खोर} पानी में डुबकी लगाकर चीजें ढूँढ़नेवाला; डुबकनी नाव।

गोतिया पुं. गोती।

गोती पुं. {सं. गोत्रीय} अपने ही गोत्र या कुल का कोई दूसरा व्यक्ति जिसके साथ घनिष्ठ पारिवारिक और अशौच आदि का संबंध हो, गोत्रीय, भाई-बंद।

गोत्र पुं. {सं.} संतान; नाम; राजा का छत्र; दल, जत्था; वंश; हिन्दू कुल या वंश की वह विशिष्ट संज्ञा जो किसी मूल पुरुष या गुरु के नाम पर होती है।

गोत्रोच्चार पुं. {सं.} विवाह के समय वर और वधू के वंश, गोत्र और पूर्वजों आदि का दिया जानेवाला परिचय।

गोद *स्त्री.* {सं. क्रोड़} जाँघों के ऊपर का वह भाग जिसपर बच्चों आदि को दोनों हाथों से घेरकर बैठाते हैं, उछंग, क्रोड़।

पद गोद का बच्चा = बहुत छोटा बच्चा जो गोद में ही रहता हो।

मुहा. गोद पसारना = कुछ माँगने के लिए दीनतापूर्वक पल्ला फैलाना; *गोद बैठाना या लेना* = किसी को अपना दत्तक पुत्र बनाना; *गोद भरना* = सौभाग्यवती स्त्री के आँचल में मंगलकामना से नारियल, मिठाई आदि रखने की रस्म पूरी करना; *गोद भरी होना* = स्त्री के आगे बाल-बच्चे होना, संतानवती होना।

गोदनशीन पुं. {हिं.} वह जिसे किसी ने गोद लिया हो, दत्तक।

गोदनशीनी *स्त्री.* {सं.} दत्तक बनना, दत्तक ग्रहण।

गोदनहार पुं. {सं.} शीतला का टीका लगानेवाला।

गोदनहारी *स्त्री.* {हिं. गोदना + हारी (प्रत्य.)} गोदना गोदने का व्यवसाय करनेवाली स्त्री।

गोदना *स.* {सं. खुद् = भेदना} चुभाना, गड़ाना; उत्तेजित करना, उकसाना; चुभती या लगती हुई बात कहना, ताना देना; पुं. तिल के आकार का वह नीला चिह्न या व फूल-पत्ते जो शरीर में सुइयों से पाछकर बनाए जाते हैं (टैटू)।

गोदनी *स्त्री.* {हिं.} गोदना गोदने की सूई।

गोदा पुं. {हिं.} वड़, पीपल या पाकर का पका फल; *स्त्री.* {हिं.} गोदावरी नदी।

गोदान पुं. {सं.} विधिवत् संकल्प करके ब्राह्मण को गौ दान करने की क्रिया; मुंडन-संस्कार।

गोदाम पुं. {अ. गोडाउन} वह स्थान जहाँ बिक्री का बहुत-सा माल इकट्ठा करके रखा जाता हो (गोडाउन)।

गोदी *स्त्री.* {?} वह स्थान जहाँ पर जलयानों पर माल चढ़ाया तथा उतारा जाता है; *स्त्री.* = गोद।

गोदी-मजदूर पुं. {स} वह मजदूर जो जलयानों पर माल चढ़ाने-उतारने का काम करता हो।

गोध *स्त्री.* {सं.} गोह नामक सरीसृप।

गोधन[1] पुं. {सं.} गौएँ; गौ रूपी संपत्ति; एक प्रकार का तीर।

गोधन[2] पुं. {सं. गोवर्धन} गोवर्धन पर्वत।

गोधर पुं. {सं.} पर्वत, पहाड़।

गोधना पुं. {सं. गोधन} भाई-दूज के दिन का एक कृत्य जिसमें स्त्रियाँ गोबर से मनुष्य की आकृति बनाकर उसे मूसल से मारती हैं।

गोधिका *स्त्री.* {सं.} गिरगिट (जन्तु)।

गोधूम पुं. {सं.} गेहूँ।

गोधूलि *स्त्री.* {सं.} संध्या का वह समय जब चरकर लौटनेवाली गौओं के खुरों से धूल उड़ती है।

गोधूलिक *वि.* {सं.} गोधूलि-संबंधी।

गोन[1] *स्त्री.* {सं. गोणी} वह दोहरा बोरा जो बैलों की पीठ पर लादा जाता है।

गोन[2] *स्त्री.* {सं. गुण} वह रस्सी जो नाव खींचने के लिए मस्तूल में बाँधते हैं।

गोनरखा पुं. {सं. गुण-रक्षक} बड़ी नाव का वह मस्तूल जिसमें रस्सी बाँधकर उसे खींचते हैं; नाव के मस्तूल में रस्सी बाँधकर खींचनेवाला मल्लाह या मजदूर।

गोना *स.* {सं. गोपन} छिपाना, गुप्त रखना।

गोनी *स्त्री.* {हिं.} टाट का थैला, बोरा, पटुआ, सन।

गोप[1] पुं. {सं.} गौ का रक्षक; ग्वाला, अहीर; गोशाला का अध्यक्ष; राजा; गाँव का मुखिया।

गोप[2] पुं. {सं. गुंफ} गले में पहनने का एक गहना।

गोपक पुं. {सं.} गोप, ग्वाला, रक्षक।

गोपति पुं. {सं.} शिव; विष्णु; श्रीकृष्ण; ग्वाला, गोप; राजा; सूर्य।

गोपद पुं. {सं.} गाय के खुर का चिह्न।

गोपन पुं. {सं.} छिपाव, दुराव; छिपाना, लुकाना; रक्षा।

गोपना *स.* {सं. गोपन} छिपाना।

गोपनीय *वि.* {सं.} {*भाव.* गोपनीयता} छिपाने के लायक।

गोपा *स्त्री.* {सं.} श्यामालता, गाय पालनेवाली ग्वालिन।

गोपांगना पुं. {सं.} गोपी।

गोपाल पुं. {सं.} गौ का पालक; अहीर, ग्वाला; श्रीकृष्ण।

गोपिका *स्त्री.* {सं.} गोपी।

गोपित *वि.* {सं.} गुप्त, छिपाया हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोपित्त पुं. {सं.} गोरोचन नामक गंध-द्रव्य।
गोपिया *स्त्री.* {हिं.} ढेलवाँस।
गोपी *स्त्री.* {सं.} ग्वालिनी, गोपपत्नी; ब्रज की गोप जाति की कोई स्त्री (श्रीकृष्ण के समय की सब गोपियाँ उनकी प्रेमिकाएँ मानी जाती हैं)।
गोपीचंदन पुं. {सं.} एक प्रकार की पीली मिट्टी।
गोपीता *स्त्री.* = गोपी।
गोपुर पुं. {सं.} नगर या किले का बड़ा फाटक; फाटक; स्वर्ग।
गोपेंद्र पुं. {सं.} श्रीकृष्ण।
गोप्ता *वि.* {सं. गोप्तृ} रक्षा करनेवाला, रक्षक।
गोप्य *वि.* {सं.} {*भाव.* गोप्यता} गुप्त रखने योग्य, छिपाने योग्य, गोपनीय (सीक्रेट)।
गोफन पुं. {सं. गोफण} छींकें की तरह का जाल जिसमें ढेले आदि भरकर शत्रुओं पर चलाते हैं, ढेलवाँस, फन्नी।
गोबर पुं. {फा. गो (गाय) + *अ.* बअर मेंगनी} गौ का मल या विष्टा।
गोबर-गणेश *वि.* {हिं. + गोबर + सं. गणेश} भद्दा, बदसूरत; मूर्ख, बेवकूफ।
गोबरी *स्त्री.* {हिं. गोबर + ई (प्रत्य.)} गोबर से की जानेवाली लिपाई।
गोभ पुं. {हिं.} अंकुर।
गोभा *स्त्री.* {?} लहर; पुं. गाभा।
गोभी *स्त्री.* {सं. गोजिह्वा} एक प्रकार की घास, गोंजिआ, बनगोभी; एक प्रकार की वनस्पति का बहुत बड़ा फूल जो तरकारी के रूप में खाया जाता है, फूल गोभी।
गोम पुं. {हिं.} घोड़ों की एक भौंरी।
गोमय पुं. {सं.} गोबर।
गोमांस पुं. {सं.} गाय का मांस (बीफ)।
गोमती *स्त्री.* {सं.} उत्तर प्रदेश की नदी, वासिष्ठी।
गोमुख पुं. {सं.} गौ का मुँह;
पद गोमुख नाहर या व्याघ्र = देखने में सीधा, पर वास्तव में क्रूर (व्यक्ति)।
गो के मुँह के आकार का शंख; नरसिंहा नाम का बाजा; एक तीर्थ का नाम जहाँ से गंगा जी निकलती हैं। *वि.* गौ के मुँह की तरह कुछ नीचे लटकता हुआ।
गोमुखी (खिन्) *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार की थैली जिसमें हाथ डालकर माला फेरते हैं, जपमाली, जपगुथली।
गोमूत्रिका *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार का चित्रकाव्य जो लहरिएदार रेखा के रूप में होता है; चित्रण आदि में लहरदार बेल, बैल-मुतनी, बरध-मुतान।
गोमृग पुं. {सं.} गवय, नीलगाय।
गोमेद (क) पुं. {सं.} एक प्रसिद्ध मणि या रत्न, राहु नामक रत्न।
गोमेध पुं. {सं.} एक प्रकार का प्राचीन यज्ञ जिसमें गौ के मांस से हवन किया जाता था।
गोयंदा पुं. {फा.} जासूस, भेदिया।
गोया *यो.* {फा.} मानो, जैसे।
गोर[1] *स्त्री.* {फा.} कब्र।
गोर[2] *वि.* {सं. गौर} गोरा (रंग)।
गोरख-धंधा पुं. {गोरखनाथ के नाम पर} कई तारों, कड़ियों या लकड़ी के टुकड़ों का वह समूह या रचना जिन्हें जोड़ने या अलग करने के लिए विशेष युक्ति या बुद्धिबल की आवश्यकता होती है; बहुत उलझन की कोई बात या काम जिसे समझना या करना कठिन हो।
गोरखनाथ पुं. {सं. गोरक्षनाथ} एक प्रसिद्ध प्राचीन हठयोगी अवधूत जिन्होंने अपना एक प्रसिद्ध संप्रदाय चलाया था।
गोरख-पंथ पुं. {सं. गोरखनाथ + पंथ} गोरखनाथ का चलाया हुआ एक साधु संप्रदाय।
गोरख-पंथी पुं. {हिं. गोरख-पंथ} गोरख-पंथ का अनुयायी साधु।
गोरंखर पुं. {फा.} गधे की जाति का एक जंगली पशु।
गोरखा पुं. {हिं. गोरख} नेपाल के अंतर्गत एक प्रदेश; इस देश का निवासी।
गोरज पुं. {सं.} गौ के खुरों से उड़नेवाली धूल।
गोरटा *वि.* = गोरा।
गोरमदाइन *स्त्री.* {?} इंद्रधनुष (बुंदेल.)।
गोरस पुं. {सं.} गौ का दूध; दही; मट्ठा, छाछ; इंद्रियों का सुख।
गोरसी *स्त्री.* {सं. गोरस + हिं. ई (प्रत्य.)} दूध गरम करने की मिट्टी की एक प्रकार की छोटी अँगीठी, बोरसी।
गोरा *वि.* {सं. गौर} जिसका रंग साफ हो; पुं. यूरोप या अमेरिका का निवासी जिसके शरीर का वर्ण बहुत गौर या सफेद होता है, फिरंगी।
गोराई *स्त्री.* {हिं. गोरा + ई (प्रत्य.)} गोरापन; सुंदरता, सौंदर्य।
गोराटी *स्त्री.* {सं.} सारिका, पक्षी, मैना।
गोरा पत्थर पुं. {हिं. गोरा (गौर) + पत्थर} एक प्रकार का पत्थर जो साबुन की तरह मुलायम और चिकना होता है, घीया-पत्थर (सोप स्टोन)।
गोरिला पुं. {*अ.*} बहुत बड़े आकार का एक प्रकार का वनमानुस।
गोरिल्ला-युद्ध पुं. किसी संघटन के स्वयंसेवकों द्वारा चलाया जानेवाला अनियमित युद्ध।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोरी *स्त्री.* {सं. गौरी} सुंदर और गोरे रंग की स्त्री।

गोरू *पुं.* {सं. गो} सींगवाला पशु, चौपाया, मवेशी (कैटिल)।

गोरू-चोर *पुं.* {हिं. गोरू + चोर} वह जो दूसरों की गौएँ, भैंसें आदि चुराता हो।

गोरोचन *पुं.* {सं.} एक पीला सुगंधित द्रव्य जो गौ के पित्ताशय में से निकलता है।

गोलंदाज़ *पुं.* {फा.} {*संज्ञा* गोलंदाजी} तोप में गोला रखकर चलानेवाला, तोपची।

गोलंदाज़ी *स्त्री.* {फा.} तोप में गोला भरकर चलाने का कार्य।

गोलंबर *पुं.* {हिं. गोल + अंबर} गुंबद; गुंबद के आकार का कोई अर्धगोलाकार पदार्थ या रचना; गोलाई; कलबूत, कालिब।

गोल[1] *वि.* {सं.} वृत्त या चक्र के आकार का; ऐसे घनात्मक आकार का जिसके तल का प्रत्येक बिंदु उसके अंदर के मध्य बिंदु से समान दूरी पर हो, गेंद आदि के आकार का, सर्ववर्तुल।

पद गोल बात = ऐसी अस्पष्ट बात जिसके कई अर्थ हों या हो सकते हों।

मुहा. गोल करना = कोई चीज कहीं से चुपके से हटा देना, गायब करना; *गोल रहना* = बिल्कुल चुप रहना; *गोल होना* = कहीं से चुपचाप हट जाना, खिसक जाना।

पुं. मंडलाकार क्षेत्र, वृत्त; गोलाकार पिंड, गोला (स्फियर)।

गोल[2] *पुं.* {*अ.* गोल} मंडली, झुंड।

गोल[3] *पुं.* {*अ.*} लक्ष्य या उद्देश्य; खेल के मैदान में दोनों ओर बना हुआ वह स्थान जहाँ बाजी जीतने के लिए गेंद आदि को पहुँचा देना किसी पक्ष के खिलाड़ियों को अभीष्ट होता है।

गोलक *पुं.* {सं.} गोलोक; गोल पिंड; विधवा का जारज पुत्र; मिट्टी का बड़ा कुंडा; आँख का डेला; आँख की पुतली; गुंबद। *स्त्री.* वह संदूक या थैली जिसमें धन संग्रह किया जाए, गल्ला, गुल्लक; वह कोश जिसमें बिक्री, चंदे, आय आदि का धन रखा जाए (पूल)।

गोलकीपर *पुं.* {*अ.*} गोली, गोल-रक्षक।

गोल-गप्पा *पुं.* {हिं. गोल + अनु. गप} एक प्रकार की छोटी करारी फुलकी।

गोलदार *पुं.* {हिं.} क्रय-विक्रय करनेवाला।

गोल-माल *पुं.* गड़बड़ी, अव्यवस्था।

गोल मिर्च *स्त्री.* काली मिर्च।

गोल मेज *स्त्री.* {हिं. गोल + फा. मेज} वह गोल मेज (या मेजों का मंडलाकार विन्यास) जिसके चारों ओर बैठकर कुछ लोग पूर्ण समानता के भाव से कुछ विचार करें, जैसे गोल मेज कान्फरेंस।

गोलयंत्र *पुं.* {सं.} ग्रह-नक्षत्र आदि की गति जानने का यंत्र विशेष।

गोलयोग *पुं.* {सं.} ज्योतिष में एक राशि में छह या सात ग्रहों का इकट्ठा होना जो अशुभ माना जाता है; अव्यवस्था, गड़बड़ी, गोलमाल।

गोलविद्या *स्त्री.* {सं.} ज्योति विद्या, ज्योतिष शास्त्र का एक अंग।

गोला *पुं.* {हिं. गोल} वृत्त या पिंड की तरह की बड़ी गोल चीज; लोहे, बारूद आदि का वह गोल पिंड जो तोपों में भरकर शत्रुओं पर फेंकते हैं; वायु-गोला (रोग); जंगली कबूतर; गरी का गोला; वह बाजार जहाँ अनाज या किराने की बड़ी दुकानें हों; लकड़ी का लंबा लट्ठा; सूत आदि की लपेटी हुई गोल पिंडी।

गोलाई *स्त्री.* {हिं. गोल + आई (प्रत्य.)} गोल होने का भाव, गोलापन।

गोलाकार *वि.* {सं.} जिसका आकार गोल हो, गोल शक्लवाला।

गोलाधार *वि.* {हिं.} मूसलाधार।

गोला-बारूद *पुं.* {हिं. गोला + फा. बारूद} युद्ध में काम आनेवाले विस्फोटक पदार्थ।

गोलार्ध *पुं.* {सं. गोलार्द्ध} भूगोल में पृथ्वी का कोई आधा भाग जो उसे एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक बीचोंबीच काटने से बनता है। इनमें एक पूर्वी और दूसरा पश्चिमी गोलार्ध कहलाता है।

गोलियाना *क्रि. स.* {हिं.} किसी वस्तु को गोल बनाना।

गोलित *वि.* {हिं. गोल} गोल किया या बनाया हुआ।

गोली[1] *स्त्री.* {हिं. गोला का अल्पा.} छोटा गोला का पिंड, वटिका; औषध की वटिका, बटी; मिट्टी, काँच आदि का छोटा गोल पिंड जिससे लड़के खेलते हैं; सीसे आदि की ढली हुई गोली जो बंदूक में भरकर किसी को मारने के लिए चलाई जाती है।

गोली[2] *पुं.* {अं. गोल + हिं. ई (प्रत्य.)} गोल-रक्षक, गोलकीपर।

गोलीयन *पुं.* {हिं. गोली} गोलियाँ बनाने का कार्य।

गोलोक *पुं.* {सं.} कृष्ण का निवास स्थान जो सब लोकों से ऊपर माना गया है।

गोलीकेश *पुं.* {सं.} श्री कृष्णचन्द्र।

गोवत्स *पुं.* {सं.} गाय का बछड़ा।

गोवना *क्रि.स.* {हिं.} छिपाना, ढकना।

गोवर्धन *पुं.* {सं.} वृंदावन का एक पवित्र पर्वत।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोविंद पुं. {सं.} श्रीकृष्ण।
गोश पुं. {फा.} कान।
गोविट् स्त्री. {सं.} गोमा, गोबर।
गोविसर्ग पुं. {सं.} प्रातःकाल, तड़का।
गोशवारा पुं. {फा.} कान का बाला, कुंडल; वह बड़ा मोती जो सीप में एक ही हो; तुर्रा, कलगी, सिर-पेच; जोड़, योग; वह संक्षिप्त लेखा जिसमें हर मद का आय-व्यय अलग-अलग दिखलाया गया हो।
गोशा पुं. {फा.} कोना; एकांत स्थान; नोक; धनुष का कोटि।
गोशाला स्त्री. {सं.} गौओं के रहने का स्थान, गोष्ठ; वह स्थान जहाँ गौएँ रखी जाती हैं और उनका दूध, मक्खन, घी आदि बेचा जाता है।
गोश्त पुं. {फा.} मांस।
गोष्ठ पुं. {सं.} गोशाला; परामर्श, दल, मंडली।
गोष्ठी स्त्री. {सं.} सभा, मंडली; बातचीत; परामर्श, सलाह।
गोष्पद पुं. {सं.} गौ के खुर का बना गड्ढा, गोपद।
गोसा पुं. {हिं.} गोइंठा, उपला।
गोसाईं पुं. {सं. गोस्वामी} गौओं का स्वामी; ईश्वर; संन्यासियों का एक भेद; विरक्त साधु; मालिक, प्रभु।
गोसैयाँ पुं. {स} गोसाईं, मालिक, प्रभु, ईश्वर।
गोस्तना पुं. {सं.} अंगूर का गुच्छा, चार लड़ियोंवाला हार।
गोस्तनी स्त्री. {सं.} द्राक्षा, दाख, मुनक्का।
गोस्थान पुं. {सं.} गौ के रहने का स्थान।
गोस्वामी (मिन्) पुं. {सं.} जितेन्द्रिय; वैष्णव संप्रदाय में आचार्यों के वंशधरों या उनकी गद्दी का अधिकारी।
गोह स्त्री. {सं. गोधा} छिपकली की तरह का परंतु उससे बड़ा एक विषैला जंगली जानवर।
गोहन पुं. {सं. गोधन} संग रहनेवाला, साथी; संग, साथ।
गोहनियाँ पुं. {हिं.} संगी, साथी।
गोहर पुं. {हिं.} बिसखोपड़ा नामक जंतु जो सर्प और गोह से पैदा होता है।
गोहरा पुं. {सं. गो + ईल्ल या गोहल्ल} {स्त्री. अल्पा. गोहरी} सुखाया हुआ गोबर, कंडा, उपला।
गोहराना अ. {सं.} पुकारना।
गोहार स्त्री. {सं. गो + हार (हरण)} रक्षा या सहायता के लिए चिल्लाना, पुकार, दुहाई; हल्ला-गुल्ला, शोर।
गोहारि (री) स्त्री. {हिं.} गोहार, हानिपूर्ति के लिए दिया हुआ धन।
गोही स्त्री. {सं. गोपन} दुराव, छिपाव; छिपी हुई बात, गुप्त वार्ता।
गौं स्त्री. {सं. गम, प्रा. गँव} प्रयोजन सिद्ध होने का अवसर, सुयोग, मौका; प्रयोजन, मतलब; गरज, स्वार्थ।
पद गौं का यार = मतलबी, स्वार्थी।
मुहा. गौं निकलना = काम निकलना, स्वार्थ निकलना; *गौं पड़ना* = गरज होना।
ढंग, ढब, तर्ज; तरह, प्रकार।
उदा. भोग करौ जोइ गौं–सूर।
पार्श्व, पक्ष।
गौंटा पुं. {हिं.} छोटा गाँव या बस्ती।
गौ स्त्री. {सं.} गाय, गऊ।
गौख स्त्री. {सं. गवाक्ष} छोटी खिड़की; दालान या बरामदा; आला, ताक, ताखा।
गौखा पुं. गोख।
गौगा पुं. {अ.} शोर, गुल-गपाड़ा, हल्ला; जनश्रुति, अफवाह।
गौचरी स्त्री. {हिं. गौ +चरना} किसी स्थान पर गौएँ चराने का कर।
गौड़ पुं. {सं.} बंग देश का एक प्राचीन विभाग; ब्राह्मणों का एक वर्ग; राजपूतों की एक शाखा।
गौड़ी स्त्री. {सं.} गुड़ से बनी शराब; काव्य में एक रीति या वृत्ति जिसमें संयुक्त अक्षर और समास अधिक आते हैं।
गौड़ीय, गौड़िया वि. {सं.} गौड़ देश का।
गौण वि. {सं.} {भाव. गौणता} मुख्य से कम महत्व का, अप्रधान (सेकेंडरी); साधारण।
गौणी स्त्री. {सं.} विविध प्रकार की लक्षणाओं में से एक जिसमें केवल एक वस्तु का गुण लेकर दूसरे में आरोपित किया जाता है। *वि. स्त्री.* अप्रधान, साधारण।
गौतम पुं. {सं.} गौतम ऋषि के वंशज ऋषि; न्यायशास्त्र के आचार्य एक प्रसिद्ध ऋषि; बुद्धदेव।
गौतमी स्त्री. {सं.} अहल्या जो गौतम ऋषि की पत्नी थी; गोदावरी नदी; दुर्गा।
गौन पुं. {स} गमन, गौना।
गौनई स्त्री. {हिं.} गायन, गीता।
गौनहाई वि. {हिं.} जिसका गौना हाल में हुआ हो।
गौनहर[1] स्त्री. {हिं. गौना + हर (प्रत्य.)} वह स्त्री जो वधू के साथ उसकी ससुराल जाती है।
गौनहर[2] स्त्री. {हिं. गाना + हर (प्रत्य.)} गाने का पेशा करनेवाली स्त्री।
गौना पुं. {सं. गमन} विवाह के बाद की एक रस्म जिसमें वधू को वर पहली बार अपने घर लाता है, वधूप्रवेश।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौर¹ *वि.* {सं.} {*भाव.* गौरता} गोरा; सफेद रंग का। *पुं.* लाल रंग; पीला रंग; चंद्रमा; सोना; केसर; विवाह-मंडप में गोबर का बना शिवलिंग।

गौर² *पुं.* {*अ.* गौर} सोच-विचार, चिंतन; ख्याल।

गौरता *स्त्री.* {सं.} गोराई, गोरापन।

गौरव *पुं.* {सं.} {*वि.* गौरवान्वित} गुरु या भारी होने का भाव, भारीपन; बड़प्पन, महत्व; सम्मान, इज्जत।

गौरवान्वित *वि.* {सं.} गौरव या महिमा से युक्त; मान्य, सम्मानित।

गौरवित *वि.* {सं.} पूज्य, आदरणीय।

गौरा¹ *पुं.* देखें 'गौरेया' (पक्षी); गोरोचन।

गौरा² *स्त्री.* {सं.} गोरे रंग की स्त्री, पार्वती, हरिद्रा, हलदी, एक रागिनी का नाम।

गौरिया *स्त्री.* {?} एक काला जलपक्षी; मिट्टी का छोटा हुक्का।

गौरी *स्त्री.* {सं.} गोरे रंग की स्त्री; पार्वती, गिरिजा; आठ वर्ष की कन्या; तुलसी; सफेद गौ; चमेली।

गौरीकांत *पुं.* {सं.} महादेव, शंकर।

गौरीचंदन *पुं.* {सं.} लाल चंदन।

गौरीशंकर *पुं.* {सं.} शिवजी; हिमालय पर्वत की एक ऊँची चोटी।

गौरीश *पुं.* {सं.} शिवशंकर।

गौल्य *पुं.* {सं.} मीठापन, एक तरह की मदिरा।

गौहर *पुं.* {फा.} मोती।

ग्याति *स्त्री.* {सं.} जाति या ज्ञाती।

ग्यान *पुं.* {सं.} ज्ञान।

ग्यारस *स्त्री.* {हिं.. ग्यारह} चान्द्र मास के किसी पक्ष की ग्यारहवीं तिथि, एकादशी।

ग्रंथ *पुं.* {सं.} पुस्तक, किताब; गाँठ लगाना, ग्रंथन।

ग्रंथकर्ता, ग्रंथकार *पुं.* {सं.} ग्रंथ की रचना करनेवाला, लेखक।

ग्रंथकरण *पुं.* {सं.} ग्रंथ की रचना।

ग्रंथचुंबन *पुं.* {सं.} पुस्तक का सामान्य रूप से किया गया अध्ययन।

ग्रंथन *पुं.* {सं.} गोंद लगाकर चिपकाना; गोंद लगाकर जोड़ना या बाँधना; गूँथना।

ग्रंथना *स.* गूँथना।

ग्रंथसाहब *पुं.* {हिं. ग्रंथ + साहब} सिक्खों की धार्मिक पुस्तक।

ग्रंथालय *पुं.* {सं.} पुस्तकालय।

ग्रंथि *स्त्री.* {सं.} {*वि.* ग्रंथित} गाँठ; शरीर की गाँठ के रूप में होनेवाला वह अवयव जो शरीर के लिए उपयोगी रस उत्पन्न करता हो (ग्लैंड); बंधन; मायाजाल।

ग्रंथिछेदक *पुं.* {सं.} गाँठ काटनेवाला, गिरहकट।

ग्रंथित *वि.* {सं.} जिसमें गाँठ लगी या लगाई गई हो; किसी के साथ गूँथा हुआ।

ग्रंथित्व *पुं.* {सं.} गूँथने की क्रिया।

ग्रंथिपर्ण *पुं.* {सं.} गठियन नामक पौधा।

ग्रंथिकर्ल *पुं.* {सं.} कपित्थ, कैथ का पेड़।

ग्रंथिबंधन *पुं.* {सं.} गँठबंधन।

ग्रंथिमत *वि.* {सं.} ग्रंथियुक्त, गाँठदार।

ग्रंथिल *वि.* {सं.} गाँठदार, गँठीला।

ग्रंथिला *स्त्री.* {सं.} गाडर दूब।

ग्रंस *पुं.* {हिं.} छल, छिद्र, ग्रंथि।

ग्रथन *पुं.* {सं.} गूँथना, ग्रंथन।

ग्रथित *वि.* = ग्रंथित।

ग्रंथी *पुं.* {ग्रंथ साहब} वह जो ग्रंथ साहब का पाठ गुरुद्वारे में करता हो।

ग्रसन *पुं.* {सं.} निगलना; पकड़ना; ग्रहण।

ग्रसना *स.* {सं.} बुरी तरह से पकड़ना; सताना।

ग्रस्त *वि.* {सं.} {*भाव.* ग्रस्तता} पकड़ा हुआ; पीड़ित; खाया हुआ।

ग्रस्तास्त *पुं.* {सं.} ग्रहण के समय चंद्रमा या सूर्य का बिना मोक्ष हुए अस्त होने का भाव।

ग्रस्तोदय *पुं.* {सं.} चंद्रमा या सूर्य का ग्रहण लगे रहने की अवस्था में उदित होने का भाव।

ग्रस्थ *वि.* {सं.} ग्रसन के योग्य।

ग्रह *पुं.* {सं.} वह पिंड जो सूर्य की परिक्रमा करता हो, जैसे पृथ्वी, बुध आदि।
पद अच्छे ग्रह = अच्छा या सुख का समय; *बुरे ग्रह* = संकट या दुख के दिन।
ग्रहों की संख्या के आधार पर नौ की संख्या का सूचक शब्द; ग्रहण करना, लेना; चंद्रमा या सूर्य का ग्रहण; छोटे बच्चों को होनेवाले कुछ विशिष्ट रोग जो अलग-अलग नामों से प्रसिद्ध हैं; कोई कष्टदायक बात या अवांछित व्यक्ति।

ग्रहण *पुं.* {सं.} कोई चीज लेने, पकड़ने या अंगीकार करने की क्रिया या भाव; मान्य, स्वीकृत या अपने अंतर्गत करने की क्रिया या भाव, स्वीकार (एडमिशन); सूर्य, चंद्रमा या दूसरे ज्योति-पिंड के प्रकाश की वह रुकावट जो उस पिंड के सामने किसी दूसरे पिंड के आ जाने से होती है।

ग्रह कक्षा *स्त्री.* {सं.} वह वृत्ताकार पथ जिस पर ग्रह भ्रमण करता है।

ग्रहचिंतक *पुं.* {सं.} दैवज्ञ, ज्योतिषी।

ग्रहणी *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार का रोग जिसमें खाया हुआ अन्न नहीं पचता और ज्यों का त्यों निकल जाता है; अतिसार रोग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रहदशा *स्त्री.* {सं.} ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली या बुरी अवस्था; अभाग्य।
ग्रहणीय *वि.* {सं.} ग्रहण करने योग्य।
ग्रहदोष पुं. {सं.} ग्रह विशेष का ध्यान रखना।
ग्रहनायक पुं. {सं.} सूर्य, शनैश्चर, मदार का वृक्ष।
ग्रहपति पुं. {सं.} सूर्य, शनि, गृह का स्वामी, चंद्र।
ग्रहवेध पुं. {सं.} वेध करके ग्रहों की स्थिति, गति आदि जानना।
गृहाधीश पुं. {सं.} सूर्य।
गृहीत्व *वि.* {सं.} ग्राह्य, ग्रहण करने योग्य।
ग्रहीत *वि.* {सं.} गृहीत।
ग्राम पुं. {सं.} गाँव, बस्ती, आबादी; समूह, शिव; संगीत में सात स्वरों का समूह, सप्तक।
ग्रामज *वि.* {सं.} गाँव में उत्पन्न।
ग्रामणी पुं. {सं.} गाँव का मालिक; प्रधान, मुखिया।
ग्रामदेवता पुं. {सं.} किसी ग्राम में पूजा जाने वाला और वहाँ का अधिष्ठाता या रक्षक माना जाने वाला प्रधान देवता।
ग्राम-पंचायत *स्त्री.* {हिं.} गाँव के छोटे-मोटे झगड़े निपटाने हेतु।
ग्रामवासी पुं. {सं.} गाँव का रहनेवाला, देहाती।
ग्रामस्थ *वि.* {सं.} ग्रामवासी, देहाती।
ग्रामिक *वि.* {सं.} ग्राम संबंधी, गाँव का।
ग्राम-सुधार पुं. {सं.} गाँवों की सामाजिक, आर्थिक, नैतिक और शुचिता-संबंधी अवस्था सुधारने का काम।
ग्रामी *वि.* {सं.} ग्राम्य; ग्रामीण।
ग्रामीण *वि.* {सं.} गाँव में रहनेवाला, देहाती; *वि.* देहात-संबंधी, देहात का।
ग्रामोन्नति *स्त्री.* {देश.} ग्राम-सुधार।
ग्राम्य *वि.* {सं.} गाँव या देहात से संबंध रखनेवाला। (रूरल); ग्रामीण, देहाती; प्रकृत, ठेठ; जो सुनने, देखने आदि में भद्दा जान पड़े, अश्लील, अशिष्ट।
ग्राव पुं. {सं.} पत्थर; ओला; पहाड़।
ग्रास पुं. {सं.} {*वि.* ग्रस्त, कर्ता ग्रासक} उतना भोजन, जितना एक बार मुँह में डाला जाए, कौर, निवाला; पकड़ने की क्रिया; ग्रहण, उपराग।
ग्रासना *स.* {देश.} ग्रसना, पकड़ना, धरना, सलाना।
ग्राह पुं. {सं.} मगर, घड़ियाल; ग्रहण, उपराग; पकड़ना, लेना।
ग्राहक पुं. {सं.} ग्रहण करनेवाला; खरीदनेवाला, खरीददार; लेने का इच्छुक, चाहनेवाला।
ग्राहना पुं. {सं. ग्रहण} ग्रहण करना, लेना।
ग्राही *वि.* {सं. ग्राहिन्} {*स्त्री.* ग्राहिणी} ग्रहण या स्वीकार करनेवाला; मल रोगनेवाला (खाद्य पदार्थ या औषध)।
ग्राह्य *वि.* {सं.} {*भाव.* ग्राह्यता} जो ग्रहण किया या लिया जा सकता हो, लेने योग्य (रिसीवेबुल); जो नियमानुसार विचार आदि के लिए लिया जा सकता हो; जो ठीक होने के कारण माना जा सकता हो (एडमिसिबुल)।
ग्रीज *स्त्री.* {अं. ग्रीज} एक प्रकार का चिकना पदार्थ जो मशीन के घूमनेवाले पुर्जों में उन्हें सुचारु रूप से चलाने के लिए डाला जाता है।
ग्रीजन पुं. {अं. ग्रीजिंग} ग्रीज देना या डालना।
ग्रीवा *स्त्री.* {सं.} गर्दन, गला।
ग्रीष्म *स्त्री.* {सं.} {*वि.* ग्रीष्मी, ग्रीष्मीय} गरमी की ऋतु, जेठ-आषाढ़ के दिन; उष्णता, गरमी।
ग्रीष्मावकाश पुं. {सं.} कुछ विशिष्ट गरम स्थानों या प्रदेशों में कड़ी गरमी के समय लगातार कुछ दिनों तक होनेवाली छुट्टी, गरमियों की छुट्टी (समर वेकेशन)।
ग्रुप, ग्रूप पुं. {अं. ग्रूप} समूह, दल।
गेह पुं. गेह।
गेही पुं. गृहस्थ।
ग्रैवेयक पुं. {सं.} गले का गहना, हार, माला, हँसली।
ग्रैष्म *वि.* {सं.} ग्रीष्म-संबंधी, गरमी की ऋतु का फल-वस्त्र।
ग्लपन पुं. {सं.} ग्लानि, निंदा, शिथिलता।
ग्लपित *वि.* {सं.} लज्जित, कलांत।
ग्लहन पुं. {सं.} द्यूतक्रीड़ा, जुए का खेल।
ग्लान *वि.* {सं.} रोगी, थका हुआ।
ग्लानि *स्त्री.* {सं.} शारीरिक या मानसिक शिथिलता; अपनी दशा या दोष आदि देखकर मन में होनेवाला खेद; पश्चात्ताप।
ग्लेजन पुं. {अं. ग्लेजिंग} चिकना बनाने का कार्य।
ग्लोब पुं. {अं.} वह गोला जिसपर संपूर्ण पृथ्वी का नक्शा बना हो।
ग्लोबी *वि.* {अं. ग्लोब} ग्लोब-संबंधी।
ग्वार *स्त्री.* {सं. गोराणी} एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी और बीजों की दाल बनती है, कोरी, खुरथी।
ग्वारपाठा पुं. {सं.} घीकुआँर।
ग्वारिन *स्त्री.* {हिं.} गोप की स्त्री, ग्वालिन।
ग्वाल पुं. {सं. गो + पाल, प्रा. गोवाल} {*स्त्री.* ग्वालिन} अहीर।
ग्वाल-गीत पुं. {सं.} वे गीत जो ग्वाले और चरवाहे गौएँ, भैंसें, बकरियाँ आदि चराने के समय गाते हैं (पैस्चोरल पोइट्री)।
ग्वालककड़ी *स्त्री.* {हिं.} एक तरह की जंगली चिचड़ा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्वाला पुं. {सं. ग्वाल} दूध-दही बेचनेवाली एक जाति, अहीर।
ग्वालिन *स्त्री.* {हिं. ग्वाला} ग्वाले की स्त्री, ग्वाल जाति की स्त्री; ग्वार की फली।
ग्वैंठना *स.* {सं. गुंठन, हिं. गुमेठना} मरोड़ना, ऐंठना, घुमाना; गाँठना।
ग्वैंड़ा पुं. {सं.} गोइँठा, गाँव के समीप की भूमि।
ग्वैंड़े *अव्य.* {हिं.} निकट, पास, समीप।

घ

घ देवनागरी वर्णमाला में कवर्ग का चौथा व्यंजन जो घोष तथा महाप्राण है तथा जिसका उच्चारण कंठ से होता है।
घँघरा पुं. {हिं.} घघरा।
घँघरी *स्त्री.* {हिं.} घघरी।
घँघोना *स.* घँघोलना।
घँघोलना पुं. {हिं. घन + घोलना} पानी में हिलाकर घोलना या मिलाना; पानी को हिलाकर मैला करना।
घंट पुं. {सं. घट} वह घड़ा जो मृतक की क्रिया में पीपल के पेड़ में बाँधा जाता है; घंटा।
घंटा पुं. {सं.} {*स्त्री.* अल्पा. घंटी} धातु का एक प्रसिद्ध बाजा, घड़ियाल; घड़ियाल बजाकर दी जानेवाली समय की सूचना; दिन-रात का चौबीसवाँ भाग, साठ मिनट का समय।
घंटाकरन पुं. {हिं.} एक तरह की घास।
घंटा-घर पुं. {हिं. घंटा + घर} वह मीनार जिस पर लगी हुई घड़ी चारों ओर से दूर तक दिखाई देती हो और जिसके घंटे का शब्द दूर तक सुनाई दे (क्लॉक टावर)।
घंटिका *स्त्री.* {सं.} छोटा घंटा; घुँघरू; कमर में पहनने की करधनी; छुद्र-घटिका।
घंटी[1] *स्त्री.* {सं. घंटिका} पीतल या फूल की छोटी लुटिया।
घंटी[2] *स्त्री.* {सं. घंटा} छोटा घंटा; घंटी बजने का शब्द; गरदन की वह हड्डी जो कुछ आगे निकली रहती है; गले के अंदर मांस की वह छोटी पिंडी जो जीभ की जड़ के पास होती है, कौआ।
घई[1] *स्त्री.* {?} पानी का चक्कर, भँवर; थूनी, टेक।
घई[2] *वि.* {सं. गंभीर} बहुत गहरा।
घघरबेल *स्त्री.* {हि.} एक प्रकार की बेल-लता।
घघरा पुं. {देश.} घाघरा, स्त्रियों का लहँगा।
घघरी *स्त्री.* {हि.} छोटा घघरा या लहँगा।
घट[1] पुं. {सं.} घड़ा; शरीर; मन या हृदय।
मुहा. घट में बसना या बैठना = मन में बसना, ध्यान पर चढ़ा रहना।
शीशे की हाँड़ी जो प्रकाश के लिए छत में लटकाई जाती है।
घट[2] *वि.* {हिं. घटना} घटा हुआ, कम।
घटक पुं. {सं.} बीच में पड़नेवाला, मध्यस्थ; वह बात या तत्व जो किसी परिणाम में सहायक हुआ हो, कारक; विवाह-संबंध ठीक करानेवाला, बरेखिया; दलाल; काम पूरा करनेवाला चतुर व्यक्ति।
घटकर्ण पुं. {सं.} कुंभकर्ण।
घटका पुं. {'घट' शब्द से अनु.} मरने के समय से कुछ पहले गले में होनेवाला घरघर शब्द या घरघराहट जो प्रायः गले में कफ़ रुकने के कारण होती है।
घट-घाट *वि.* {हिं. घटना} किसी की अपेक्षा थोड़ा, हलका या कम, घटकर।
घटती *स्त्री.* {हिं. घटना} कमी, न्यूनता।
पद घटती से = अंकित या नियत मूल्य से कम मूल्य पर (बिलो पार)।
हीनता; *वि.* जिसमें कुछ घटी, कमी या न्यूनता हो, जैसे घटती का आय-व्ययक = वह आय-व्ययक जिसमें आय की अपेक्षा व्यय अधिक दिखाया गया हो (डेफिशिट)।
घटन पुं. {सं.} {*वि.* घटनीय, घटित} भिन्न-भिन्न तत्वों का एक में मिलकर किसी एक वस्तु का रूप धारण करना (कम्पोजीशन); बना या गढ़कर तैयार करने की क्रिया या भाव, गढ़ा जाना; उपस्थित होना।
घटना[1] *अ.* {सं. घटन} होना; ठीक बैठना, लगना; ठीक उतरना।
घटना[2] *अ.* {हिं. कटना} कम होना, थोड़ा होना; पूरा न रह जाना।
घटना[3] *स्त्री.* {सं.} कोई विलक्षण या विकट बात जो हो जाए, वाक्या, वारदात (एक्सिडेंट)।
घटनास्थल पुं. {सं.} वह स्थल या स्थान जहाँ कोई घटना हुई हो (प्लेस ऑफ अकरेंस)।
घटनीय *वि.* {सं.} घटित होने योग्य।
घट-बढ़ *स्त्री.* {हिं. घटना + बढ़ना} कुछ घटा और कुछ बढ़ाकर किसी वस्तु या बात का रूप

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ बदलने की क्रिया या भाव, परिवर्तन (वेरिएशन); किसी प्रकार होनेवाली कमी-बेशी, न्यूनाधिकता।

घटबढ़, घटयोनि पुं. {सं.} अगस्त्य मुनि जो कुम्भज के नाम से प्रसिद्ध हैं।

घटवाई पुं. {हिं. घाट + वाई} घाट का कर लेनेवाला; *स्त्री.* घाट से पार उतारने की मजदूरी या कर।

घटवादन पुं. {सं.} संगीत में मिट्टी का घड़ा औंधा करके उसे तबले की तरह बजाने की क्रिया।

घटवाना *क्रि. स.* {हिं.} कम कराना, घटाने का काम कराना।

घटवार (ल) पुं. {हिं. घाट + पाल या वाला} घाट का महसूल लेनेवाला; वह जो घाट पर रहकर नावों के आर-पार जाने का प्रबंध करता हो; मल्लाह; घाटिया, गंगापुत्र।

घटवाही *स्त्री.* घट्टकर।

घटवैया *वि.* {हिं. घटाना} घटानेवाला; पुं. घटवार।

घट-स्थापन पुं. {सं.} मंगलकार्य के पहले जल से भरा घड़ा पूजन के स्थान पर रखना; नवरात्र का पहला दिन।

घटहा पु. {हिं.} घाट का ठेकेदार, घाट पर चलनेवाली नाव।

घटा *स्त्री.* {सं.} मेघों का घना समूह, उमड़े हुए बादल, मेघमाला।

घटाई *स्त्री.* {हिं. घटना + ई (प्रत्य.)} हीनता; अप्रतिष्ठा, बेइज्जती।

घटाकाश पुं. {सं.} न्याय या तर्क में, घड़े के अंदर का आकाश या खाली स्थान।

घटाटोप पुं. {सं.} घनघोर घटा; गाड़ी या पालकी को ढकने का परदा, ओहार।

घटाना[1] *स.* {हिं. घटना} गुरुत्व मान आदि कम करना, क्षीण करना (एबेट); अधिक मान, संख्या आदि में से छोटा मान, संख्या आदि निकालकर अलग करना, बाकी निकालना (डिडक्ट); प्रतिष्ठा कम करना।

घटाना[2] *स.* {सं. घटन} घटित करना; अर्थ आदि के विचार से ठीक या पूरा उतारना।

घटाव पुं. {हिं. घटना} थोड़े या कम होने का भाव, न्यूनता, कमी; अवनति; नदी के पानी का उतार।

घटावना *स.* {सं.} घटाना।

घटिका *स्त्री.* {सं.} छोटा घड़ा या नाँद; घटी यंत्र, घड़ी; एक घड़ी या 24 मिनट का समय।

घटिकायंत्र पुं. {सं.} समय बतानेवाला यंत्र।

घटित *वि.* {सं.} जो घटना के रूप में हुआ हो; रचित, निर्मित, अर्थ आदि के विचार से ठीक या पूरा उतरा हुआ।

घटितक *वि.* {सं.} जिसके होने की संभावना हो।

घटिताई *स्त्री.* {हिं. घटी} न्यूनता, कमी।

घटिया *वि.* {हिं. घट + इया (प्रत्य.)} जो बढ़िया न हो, अपेक्षाकृत खराब या सस्ता; तुच्छ।

घटिहा *स्त्री.* {हिं.} व्यभिचारी, लंपट, दुष्ट, नीच, छली।

घटी[1] *स्त्री.* {सं.} चौबीस मिनट का समय, घड़ी; समयसूचक यंत्र, घड़ी।

घटी[2] *स्त्री.* {हिं. घटना} कमी, न्यूनता; हानि, नुकसान, घाटा; मूल्य या महत्व आदि में होनेवाली कमी (डिप्रिसिएशन)।

घटूका पुं. {सं.} घटोत्कच।

घटोत्कच पुं. {सं.} हिडिंबा राक्षसी से उत्पन्न भीमसेन का पुत्र।

घटोद्भव पुं. {सं.} अगस्त्य मुनि।

घटोर पुं. {हिं.} मेढ़ा, भेड़ा।

घटौती *स्त्री.* {हिं. घटना} घटाने की क्रिया या भाव; घटाई जानेवाली रकम, छूट।

घट्ट पुं. {सं.} नदी आदि का घाट।

घट्टकर पुं. {सं.} वह कर जो किसी घाट पर नदी पार करनेवालों से लिया जाता है (फेरी टोल)।

घट्टा[1] पुं. {सं. घट्ट} शरीर पर उभड़ा हुआ चेतनाशून्य मांसल भाग जो किसी वस्तु की रगड़ से पड़ जाता है।

घट्टा[2] पुं. = घट्टा।

घड़घड़ पुं. {हिं.} बादल गरजने या गाड़ी के चलने का शब्द; बादल की गरज।

घड़घड़ाना *अ.* {अनु.} {*भाव.* घड़घड़ाहट} घड़घड़ शब्द होना; *स.* घड़घड़ शब्द उत्पन्न करना।

घड़घड़ाहट *स्त्री.* {अनु. घड़घड़ + आहट (प्रत्य.)} बार-बार घड़घड़ शब्द होने की क्रिया या भाव।

घड़नई *स्त्री.* {हिं. घड़ा + नैया (नाव)} बाँसों में घड़े बाँधकर बनाया हुआ ढाँचा, जिस पर छोटी नदियाँ पार करते हैं।

घड़ना *स.* गढ़ना।

घड़नैल पुं. {हिं.} बाँस में घड़े बाँधकर बनाया हुआ ढाँचा; जिस पर चढ़कर नदी पार करते हैं।

घड़ा पुं. {सं. घट} पानी भरने का धातु या मिट्टी का बरतन, बड़ी गगरी।

मुहा. घड़ों पानी पड़ जाना = अत्यंत लज्जित होना, लज्जा के मारे गड़ जाना।

पद चिकना घड़ा = वह जिस पर डाँट-फटकार आदि का कोई प्रभाव न पड़ता हो, निर्लज्ज।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घड़ाना *स.* गढ़ाना।

घड़िया *स्त्री.* घरिया।

घड़ियाल[1] *पुं.* {सं. घटिकालि} वह बड़ा घंटा जो पूजा करते समय या समय की सूचना देने के लिए बजाया जाता है।

घड़ियाल[2] *पुं.* {?} एक प्रसिद्ध बड़ा और हिंसक जलजंतु, ग्राह।

घड़ियाली[1] *पुं.* {हिं. घड़ियाल} घड़ियाल या घंटा बजानेवाला।

घड़ियाली[2] *वि.* {हिं. घड़ियाल} घड़ियाल-संबंधी।

घड़ियाली आँसू *पुं.* {बहु.} नकली आँसू।

घड़िला *पुं.* घड़ोला।

घड़ी[1] *स्त्री.* {सं. घटी} दिन-रात का 60वाँ भाग, 24 मिनट का समय;
पद घड़ी-घड़ी = क्षण-क्षण भर।
मुहा. घड़ियाँ गिनना = उत्सुकतापूर्वक आसरा देखना; मरने के निकट होना।
समय; अवसर; वह यंत्र जिससे घंटे और मिनट के हिसाब से समय का पता लग.ता है।

घड़ी[2] *स्त्री.* {हिं. घड़ना} कपड़ों आदि की लगाई जानेवाली तह।

घड़ी-दीया *पुं.* {हिं. घड़ी + दिया = दीपक} वह घड़ा और दिया जो किसी के मरने पर घर में रखा जाता है।

घड़ीसाज *पुं.* {हिं. घड़ी + फा. साज़} {*भाव.* घड़ीसाजी} घड़ी मरम्मत करनेवाला।

घड़ोला *पुं.* {हिं. घड़ा} छोटा घड़ा।

घड़ौंची *स्त्री.* {हिं. घड़ा +आँची (प्रत्य.)} वह चौकी या ढाँचा जिस पर पानी का घड़ा रखा जाता है।

घतिया *वि.* {हिं. घात + इया (प्रत्य.)} विश्वासघात करनेवाला, धोखेबाज।

घतियाना *स.* {हिं. घात} अपने घात या दाँव में लाना, मतलब पर चढ़ाना; चुरा या छिपाकर लेना।

घन *पुं.* {सं.} ऐसी ठोस आकृति जिसके छह वर्गफल हों; किसी संख्या का तीसरा घात; हथौड़ा; बादल; *वि.* घना, गझिन; गठा या भरा हुआ, ठोस; दृढ़, मजबूत; बहुत अधिक, ज्यादा।

घनक *स्त्री.* {अनु.} गड़गड़ाहट, गरज।

घनकना *अ.* {अनु.} गरजना।

घनकारा *वि.* {हिं. घनक} गरजनेवाला।

घनकाल *पुं.* {सं.} वर्षा ऋतु।

घनकोदंड़ *पुं.* {सं.} इंद्रधनुष।

घनक्षेत्र *पुं.* {सं.} लंबाई-चौड़ाई तथा ऊँचाई का गुणनफल।

घनगरज *स्त्री.* {सं. घन + गर्जन} बादल की गरज; एक प्रकार की तोप।

घनघनाना *अ.* {अनु.} {*भाव.* घनघनाहट} घंटे की-सी ध्वनि निकलना।

घनघोर *पुं.* {सं. घन + घोर} भीषण ध्वनि; बादल की गरज; *वि.* बहुत घना या गहरा, जैसे घनघोर घटा; भीषण, विकट।

घनचक्कर *पुं.* {सं. घन + हिं. चक्कर} चंचल बुद्धिवाला; मूर्ख; वह जो व्यर्थ इधर-उधर फिरता हो, आवारा।

घनज्वाला *स्त्री.* {सं.} बिजली की चमक।

घनता *स्त्री.* {सं.} 'घना' होने का भाव, घनापन; लंबाई, चौड़ाई और मोटाई के सम्मिलित रूप का भाव; ठोसपन।

घनताल *पुं.* {हिं.} झाँझ।

घनतिमिर *पुं.* {सं.} गहरा अंधकार।

घननाद *पुं.* {सं.} गरज, रावण का ज्येष्ठ पुत्र, मेघनाद।

घनपति *पुं.* {सं.} मेघों के स्वामी, इंद्र।

घनप्रिय *पुं.* {सं.} मयूर, मोर।

घनत्व *पुं.* {सं.} घनता, घनापन, ठोसपन, सघनता।

घनफल *पुं.* {सं.} लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (गहराई या ऊँचाई) तीनों के मान का गुणनफल; वह गुणनफल जो किसी संख्या को उसी संख्या से दो बार गुणा करने पर निकलता है।

घनबान *पुं.* {हिं. घन + बान} एक प्रकार का बाण, जिसके प्रयोग से बादल छा जाते थे (कल्पित)।

घनबेला *पुं.* एक प्रकार का बेला (पौधा और फूल)।

घनबेली *स्त्री.* घनबेला।

घनमूल *पुं.* {सं.} गणित में किसी घन (राशि) का मूल अंक, जैसे 64 का घनमूल 4 होगा।

घनरस *पुं.* {सं.} जल, पानी, कपूर।

घनवर्धन *पुं.* {सं.} {*वि.* घनवर्धनीय, *भाव.* घनवर्धनीयता} धातुओं आदि को पीटकर बढ़ाना।

घनसागर *पुं.* = घनसार (कपूर)।

घनश्याम *पुं.* {सं.} काले बादल; श्रीकृष्ण।

घनसार *पुं.* {सं.} कपूर।

घना *वि.* {सं. घन} {*स्त्री.* घनी, *भाव.* घनापन} जिसके अवयव या अंश पास-पास या सटे हों, सघन; पास-पास बसा हुआ; बहुत पास का, घनिष्ठ; बहुत अधिक।

घनाक्षरी *स्त्री.* {सं.} कवित्त नामक छंद।

घनाघन *पुं.* {हिं.} बरसनेवाला बादल।

घनात्मक *वि.* {सं.} जिसकी लंबाई, चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या गहराई) समान हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घनाली *स्त्री.* {सं. घन + अवली} बादलों की पंक्ति या समूह।

घनिष्ठ *वि.* {सं.} {*भाव.* घनिष्ठता} घना; निकट का, अंतरंग।

घनिष्ठता *स्त्री.* {सं.} घनिष्ठ होने का भाव या दशा, गहरी मित्रता।

घनीभाव, घनीभवन *पुं.* {सं.} धन होने का भाव या अवस्था, जनना।

घनीभूत *वि.* {सं.} धन या ठोस बना होना।

घन *वि.* {हिं.} अनेक, बहुत।

घने *वि.* {सं. घन} बहुत-से, अनेक।

घनेरा *वि.* {हिं. घना} {*स्त्री.* घनेरी} बहुत, अधिक; घना।

घपला *पुं.* {अनु.} {*भाव.* घपलेबाजी} बिना क्रम की मिलावट; जान-बूझकर या मनमाने ढंग से उत्पन्न की जानेवाली अथवा अपटुता के कारण होनेवाली गड़बड़ी, गोलमाल (बंग्लिंग)।

घनेरा *वि.* {हिं.} अत्यधिक, अतिशय, बहुत।

घनेरे *वि.* {हिं.} अगणित, अत्यंत, बहुत।

घनोपल *पुं.* {सं.} ओला, बनौरी।

घपची *स्त्री.* {हिं.} दोनों हाथों से कसकर पकड़ना।

घपला *पुं.* {हिं.} गड़बड़, गोलमाल।

घपुआ *वि.* {हिं.} मूर्ख, लंठ।

घप्पू *वि.* {हिं.} मूर्ख, उल्लू।

घपलेबाजी *स्त्री.* {हिं. फा.} घपला या गड़बड़ी उत्पन्न करने की क्रिया या भाव (बंग्लिंग)।

घबराना *अ.* {सं. गह्वर या हिं. गड़बड़ाना} भय या दुख से मन चंचल होना, व्याकुल होना; भौचक्का होना, किंकर्तव्य-विमूढ़ होना; उतावली में होना; मन न लगना; *स.* व्याकुल या अधीर करना; भौचक्का करना; हैरान करना।

घबराहट *स्त्री.* {हिं. घबराना + आहट (प्रत्य.)} व्याकुलता, उद्विग्नता; किंकर्तव्य- विमूढ़ता; उतावली, जल्दी।

घमंका *पुं.* {हिं.} घूँसा, मुक्का।

घमंड *पुं.* {?} किसी विषय या कार्य में अपने को औरों से बढ़कर समझना, अभिमान, शेखी, अहंकार; किसी का भरोसा।

घमंडी *वि.* {हिं. घमंड} घमंड या अभिमान करनेवाला, अभिमानी।

घम *पुं.* {हिं.} कोमल वस्तु पर कड़ा आघात पड़ने का शब्द।

घमकना *अ.* {अनु. घम} 'घमघम' का-सा गंभीर शब्द होना, घहराना; *स.* घूँसा मारना।

घमका *पुं.* {हिं.} गदा या घूँसे का शब्द, आघात का शब्द।

घमघमा *पुं.* {हिं. घाम = धूप} ऐसा समय (विशेषत: वर्षा के बाद या जाड़े के दिनों में) जबकि खूब धूप निकली हो।

घमघमाना *अ.* {अनु.} 'घमघम' शब्द होना; धूप निकलना; *स.* घम घम करके मारना।

घमड़ *स्त्री.* 'घुमड़'।

घमड़ना *स.* {?} सजाना। *अ.* घुमड़ना।

घमर *पुं.* {अनु.} नगाड़े, ढोल आदि का घोर शब्द, गंभीर तान।

घमरौल *स्त्री.* {हिं.} ऊधम, गड़बड़, उपद्रव।

घमस *स्त्री.* {अनु.} किसी चीज के बचने का शब्द; ऊमस।

घमसान *वि.* 'घमासान'।

घमाका *पुं.* {अनु. घम} गदा या घूँसे का प्रहार; भारी आघात का शब्द।

घमाना *क्रि. अ. स.* {हिं.} घाम लेना, धूप में बैठना या डालना।

घमाघम *स्त्री.* {अनु. घम} 'घमघम' की ध्वनि, धूमधाम, चहल-पहल। *क्रि. वि.* 'घमघम' शब्द के साथ।

घमाना *अ.* {हिं. घाम = धूप} धूप तापने के लिए सूर्य के सामने बैठना; घाम या धूप से गरमा जाना, जैसे कपड़ा घमा गया है।

घमायल *वि.* {हिं.} धूप में पका हुआ (फल)।

घमासान *वि.* {अनु.} बहुत गहरा या भीषण, जैसे घमासान युद्ध।

घमाह *पुं.* {हिं.} धूप या घाम खाया हुआ।

घमोई, घमोय *स्त्री.* भड़भाँड़।

घमोय *पुं.* {हिं.} एक कटीले पत्तों का पौधा, भड़भाँड़, सत्यानाशी।

घमौरी *स्त्री.* पित्ती।

घर *पुं.* {सं. गृह} {*वि.* घराऊ, घरू, घरेलू} मनुष्यों का छाया हुआ वह स्थान, जो दीवारों से घेरकर बनाया जाता है, आवास, मकान।

मुहा. *घर करना* = घर बनाकर कहीं बस जाना, समाने या अटने की जगह निकालना, घुसना, धँसना; *मन में घर करना* = बहुत पसंद आना, अत्यंत प्रिय होना; *घर डालना* = किसी के घर कलह या दुख फैलाना, कुल में कलंक लगाना (किसी स्त्री का किसी पुरुष के); *घर बैठना* = किसी की पत्नी बनकर रहना, किसी को पति बनाना; ***पद*** *घर का* = निज का, अपना, आपस का, संबंधियों या आत्मीय जनों के बीच का; *घर के बाढ़े* = घर में डींग मारनेवाला; *घर से* = पास से, पल्ले से, पल्ली।

कहा. *घर का न घाट का* = बेठिकाने का, निकम्मा, आवारा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्मभूमि, स्वदेश; घराना, वंश, कुल; कोठरी, कमरा; रेखाओं आदि से घिरा हुआ स्थान, कोठा, खाना; कोई वस्तु रखने का डिब्बा, कोश. खाना (केस); अटने या समाने की जगह; मूल कारण, जैसे रोग का घर खाँसी; गृहस्थी।

घर-गृहस्थ पुं. { हिं. + सं.} वह जिसके घर में पत्नी, बाल-बच्चे और परिवार के लोग हों (मर्यादा का सूचक)।

घर-गृहस्थी *स्त्री.* {हिं. घर + गृहस्थी} घर और उसमें की सब सामग्री।

घरऊ *वि.* {हिं.} घर का, अपना।

घर गयी *स्त्री.* {हिं.} जिसका घर बरबाद हो गया हो, निगोड़ी।

घरघराना *अ.* {अनु.} कफ के कारण साँस लेते समय गले से घरघर शब्द निकलना।

घर-घराना पुं. {हिं. घर + घराना} कुल, वंश और उसकी मर्यादा आदि, जैसे ब्याह के पहले किसी का घर-घराना देखना; पुं. रंग-ढंग, चाल-ढाल; ढब, ढंग; ठौर-ठिकाना, घर-बार; स्थिति, हैसियत।

घरघराहट *स्त्री.* {हिं.} घरघर शब्द।

घर-घाट पुं. {हिं.} तौर तरीका, रहन-सहन, कुल मर्यादा।

घर-घालक (लन) *वि.* {हिं. घर + घालना} {*स्त्री.* घर-घालिनी} अपना या दूसरों का घर बिगाड़नेवाला; कुल में दाग लगानेवाला।

घर-घेरा पुं. घर-गृहस्थी।

घर-जँवाई पुं. {हिं.} वह दामाद जो अपनी ससुराल में ही रहे।

घर-जाया पुं. {हिं. घर + जाया = पैदा} गृहजात दास, घर का गुलाम।

घर-जुगत पुं. {हिं.} घर-गृहस्थी का चतुर प्रबंध।

घर झँकनी *स्त्री.* {हिं.} वह स्त्री जो दूसरों के घर में आती-जाती हो।

घरणि *स्त्री.* घरनी।

घरदारी *स्त्री.* {हिं. घर + फा. दारी} गृहस्थी के सब काम-धन्धे।

घरदासी *स्त्री.* घरनी।

घर-द्वार पुं. घर-बार।

घरनाल *स्त्री.* {हिं. घड़ा + नाली} एक प्रकार की पुरानी तोप, रहकला।

घरनी *स्त्री.* {सं. गृहिणी, प्रा. घरणी} पत्नी, भार्या, गृहिणी।

घर-पत्ती *स्त्री.* {हिं.} प्रत्येक घर से चंदा लेना, बेहरी, अंशदान।

घर-फोरा पुं {हिं. घर + फोड़ना} {*स्त्री.* घर-फोरी} दूसरों के परिवार में कलह फैलानेवाला, घर में लड़ाई करानेवाला।

घरफोड़नी, घरफोरी *वि. स्त्री.* {हिं.} घर-घर में झगड़ा करानेवाली।

घर-बसा पुं. {हिं. घर + बसना} {*स्त्री.* घर-बसी} पति; उपपति।

घर-बार पुं. {हिं. घर + बार = द्वार} {*वि.* घर-बारी} निवासस्थान; घर का सामान और परिवार, गृहस्थी।

घर-बारी पुं. {हिं. घर + बार} बाल-बच्चोंवाला, गृहस्थ, कुटुम्बी।

घरमना *अ.* {सं. घर्म + हिं. ना (प्रत्य.)} प्रवाह के रूप में गिरना, बहना।

घरवात पुं. {हिं. घर + वात (प्रत्य.)} घर-गृहस्थी का सामान।

घरवाला पुं. {हिं. घर + वाला} {*स्त्री.* घरवाली} घर का मालिक; पति, स्वामी।

घरसा पुं. {सं. घर्ष} रगड़, घिस्सा।

घरहाई *वि. स्त्री.* {हिं. घर + सं. घाती, हिं. घाई} घर में फूट डालनेवाली; लोगों की अपकीर्ति फैलानेवाली।

घरहाया पुं. {हिं. घर + घात} {*स्त्री.* घरहाई} घर में फूट डालनेवाला।

घरा पुं. {*स्त्री.* अल्पा. घरी} घड़ा।

घराती पुं. {हिं. घर + आती (प्रत्य.)} विवाह में कन्या-पक्ष के लोग।

घराना पुं. {हिं. घर + आना} खानदान, वंश, कुल।

घरिया *स्त्री.* {सं. घटिका} मिट्टी का प्याला; वह पात्र जिसमें रखकर सोना, चाँदी आदि धातुएँ गलाते हैं।

घरियाना पुं. {हिं. घरी = तह} कपड़े, कागज आदि की तह लगाना।

घरी *स्त्री.* {?} तह, परत; *स्त्री.* घड़ी (कालमान)।

घरीक *क्रि.वि.* {हिं. घड़ी + एक} घड़ी भर, थोड़ी देखकर।

घरुआ पुं. {हिं.} गृहस्थी का उचित प्रबंध।

घरू *वि.* {हिं. घर + ऊ (प्रत्य.)} घर से संबंध रखनेवाला, घरेलू, घर का।

घरेलू *वि.* {हिं. घर + एलू (प्रत्य.)} पालतू, घर का, निज का, घरू; घर का बना हुआ या घर में होनेवाला।

घरैया पुं. {हिं. घर} घर या कुटुंब का आदमी, अति घनिष्ठ। *वि.* घरू या घरेलू; छोटे बच्चों के खेलने का।

घरो पुं. {हिं.} घड़ा, कलश।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घरौंदा/घरौंधा पुं. {हिं. घर + आँदा} कागज, मिट्टी आदि का छोटा घर, जिससे बच्चे खेलते हैं; नन्हा-सा घर, छोटा घर।

घघर पुं. {सं.} घड़घड़ाहट का शब्द।

घर्म पुं. {सं.} धूप, घाम, आतप-बिंदु, पसीना।

घर्रा पुं. {अनु.} गले की घरघराहट जो कफ़ के कारण होती है; (जेल में) कोल्हू पेरने या कुएँ से चरसा खींचने का कठिन काम।

घर्राटा पुं. {सं.} खर्राटा।

घर्षण पुं. {सं.} किसी वस्तु के एक पार्श्व या अंग से दूसरी वस्तु के किसी पार्श्व या अंग का रगड़ खाना, रगड़, घिस्सा (फ्रिक्शन)।

घर्षणी *स्त्री.* {सं.} हरिद्रा, हलदी।

घर्षित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* घर्षिता} रगड़ा हुआ, रगड़ खाया हुआ।

घलना *अ.* {हिं. 'घालना' का *अ.*} रखा या डाला जाना; फेंका जाना; तीर गोली आदि का छूटना; (अस्त्र) फेंका या चलाया जाना; मारपीट होना।

घलाघल *स्त्री.* {हिं. घलना} आपस में होनेवाली मारपीट।

घलाघली *स्त्री.* {हिं. घालना} मार-काट, खून-खराबी।

घलुआ पुं. {हिं. घाल} खरीदने में तौल से कुछ अधिक मिली हुई वस्तु।

घवरि *स्त्री.* {सं.} घौद फलों का गुच्छा।

घसखुदा पुं. {हिं. घास + खोदना} घसियारा; अनाड़ी या मूर्ख व्यक्ति।

घसना *अ.* {सं.} घिसना, रगड़ना।

घसिटना *अ.* {हिं. घसीटना} घसीटा जाना।

घसियारा पुं. {हिं. घास} {*स्त्री.* घसियारी, घसियारिन} घास छील या खोदकर बेचनेवाला।

घसीट *स्त्री.* {हिं. घसीटना} घसीटने की क्रिया या भाव; जल्दी-जल्दी लिखने का भाव; जल्दी में लिखा हुआ अस्पष्ट लेख।

घसीटना *स.* {सं. घृष्ट + हिं. ना (प्रत्य.)} किसी वस्तु को इस प्रकार खींचना कि वह भूमि से रगड़ खाती हुई आए; जल्दी-जल्दी लिखकर चलता करना; किसी को किसी काम में जबरदस्ती शामिल करना।

घस्सा पुं. {हिं.} घिस्सा देना, रगड़ना।

घहनना *अ.* {अनु.} घंटे आदि से ध्वनि निकलना, घहरना।

घहनाना *क्रि.अ.* {हिं.} घंटे आदि का टनटन करना, घहराना।

घहरना *अ.* {अनु.} गरजने का-सा शब्द करना।

घहराना *अ.* {अनु.} {*भाव.* घहरात} घहरना; भारी आवाज के साथ गिरना; टूट पड़ना।

घहरारा पुं. {हिं. घहराना} घोर शब्द, गंभीर ध्वनि, गरज; *वि.* {*स्त्री.* घहरारी} घोर शब्द करनेवाला।

घाँ *स्त्री.* {सं. ख, या घाट = ओर ?} दिशा, दिक्, ओर, तरफ।

घाँघरा पुं. घाघरा, लहँगा।

घाँटी[1] *स्त्री.* {सं. घंटिका, प्रा. घंटिआ} गले की अंदर की घंटी, कौआ; गला।

घाँटी[2] *वि.* {हिं. घटना} अपेक्षाकृत कम, घटकर।

घाँटी[3] पुं. एक भजन जो चैत्र मास में गाया जाता है।

घाँह *स्त्री.* {हिं. घाँ} ओर, तरफ।

घा *स्त्री.* घाँ, और।

घाइ पुं., *स्त्री.* घाव।

घाइल *वि.* घायल, आहत।

घाईं *स्त्री.* {हिं. घाँ} ओर, तरफ; जोड़, संधि; बार, दफा; पानी में का भँवर; *स्त्री.* घाई।

घाई *स्त्री.* {सं. गभस्ति = उँगली} दो उँगलियों के बीच की जगह; *स्त्री.* अंटी; घाव; प्रहार, चोट।

घाउ पुं. {हिं.} घाव।

घाऊ पुं. घाव (क्षत)

घाऊघप *वि.* {हिं. खाउ + गप (पं. गपना = निगलना)} चुपचाप दूसरों का माल हजम करनेवाला, चुपके से अपना काम साधनेवाला।

घाघ पुं. सयाना; एक प्रसिद्ध अनुभवी और चतुर व्यक्ति, जिसकी कहावतें उत्तरी भारत में प्रसिद्ध हैं; भारी चालाक व्यक्ति।

घाघरा[1] पुं. {सं. घर्घर = क्षुद्र घंटिका} {*स्त्री.* अल्पा. घाघरी} स्त्रियों का कमर में पहनने का चुन्नटदार और घेरदार पहनावा जिससे नीचे का अंग ढका रहता है, बड़ा लहँगा।

घाघरा[2] *स्त्री.* {सं. घर्घर} सरयू नदी।

घाघस *स्त्री.* {देशज} एक प्रकार की मुर्गी।

घाघी *स्त्री.* मछली पकड़ने का बड़ा जाल।

घाट[1] पुं. {सं. घट्ट} नदी या जलाशय के किनारे का वह स्थान जहाँ लोग पानी भरते, नहाते या नाव पर चढ़ते हैं।

मुहा. घाट-घाट का पानी पीना = तरह-तरह के काम करना, तरह-तरह की चीजों का स्वाद लेना, जगह-जगह की सैर करना।

चढ़ाव-उतार का पहाड़ी मार्ग; किसी चीज की बनावट में वह अंश जिसमें कुछ चढ़ाव-उतार या गोल रेखा का-सा रूप हो; पहाड़, जैसे पूर्वी या पश्चिमी घाट; ओर, तरफ, दिशा; रंग-ढंग, चाल-ढाल; तलवार की धार।

घाट[2] *स्त्री.* {हिं. घटना} घटने या घटकर होने की क्रिया या भाव, न्यूनता, कमी; *वि.* थोड़ा; घटिया; किसी की तुलना में हलका या कम।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घाटना *अ.* घटना।

घाटवाल *पुं.* घाटिया।

घाटा *पुं.* {हिं. घटना} घटने की क्रिया या भाव; घटी, हानि, धाटबंदी।

घाटारोह *पुं.* {हिं. घाट + सं. रोध} घाट से जाने न देना, घाट रोकना।

घाटि[1] *वि.* {हिं. घटना} कम मान का, घटकर।

घाटि[2] *स्त्री.* {सं. घात} नीच कर्म; पाप।

घाटिया *पुं.* {हिं. घाट} घाटों पर बैठकर दान लेनेवाला ब्राह्मण, गंगापुत्र।

घाटी *स्त्री.* {हिं. घाट} दो पर्वतों के बीच का तंग रास्ता, दर्रा; दो पहाड़ों के बीच का प्रदेश, जैसे–गंगा घाटी।

घात *पुं.* {सं.} {*वि.* घाती} प्रहार, चोट; वध, हत्या; अहित, बुराई; (गणित में) किसी संख्या से गुणा करने पर निकलने वाला गुणनफल।

मुहा. घात पर चढ़ना = अभिप्राय साधन के अनुकूल होना, हत्थे चढ़ना; *घात लगाना* = युक्ति लगाना।

पद घात में = मुफ्त में, प्राप्य के अतिरिक्त, यों ही, व्यर्थ।

आक्रमण करने या किसी के विरुद्ध कोई कार्य करने के लिए अनुकूल अवसर की खोज, ताक।

मुहा. घात लगाना = कार्यसिद्धि का उपयुक्त अवसर देखते रहना।

दाँव-पेंच, छल; रंग-ढंग, तौर-तरीका।

घातक *वि.* {सं.} जो घात करे, घात करनेवाला; (प्रहार या आघात) जिसके कारण या द्वारा कोई मर सकता हो या मर जाए, जैसे घातक रोग, घातक प्रहार (फैटल); *पुं.* वह जो किसी को मार डाले, हत्यारा।

घातन *पुं.* {सं.} वध करना, जान से मारना; *वि.* वध करनेवाला।

घातकी *पुं.* {सं.} घातका, हत्यारा।

घातिनी *वि.* {हिं.} घाती का; *स्त्री.* हत्यारी, वध करनेवाली।

घातिया *पुं. वि.* घातक।

घाती *वि.* {सं. घातिन्} {*स्त्री.* घातिनी} घातक; नाश करनेवाला; धोखेबाज, छली; मारनेवाला; संहारक।

घातुक *वि.* {सं.} हिंसक, क्रूर, हत्यारा।

घात्य *वि.* {सं.} घात करने योग्य, बध्य।

घान[1] *पुं.* {सं. घन = समूह} जितना एक बार कोल्हू में डालकर पेरा या चक्की में डालकर पीसा जाए, उतना अंश; जितना एक बार में बनाया या पकाया जाए, उतना अंश।

घान[2] *पुं.* {हिं. घन} प्रहार, चोट, आघात, बड़ा हथौड़ा।

घाना *स.* {सं. घात} मारना, नाश करना।

घानी *स्त्री.* घान, समूह, ढेर।

घाम *स्त्री.* {सं. घर्म} धूप, सूर्यातप; कष्ट, विपत्ति।

मुहा. घाम बचाना या बराना = कष्टदायक बात से बचना।

घामड़, घामर *वि.* {हिं. घाम} घाम या धूप से व्याकुल (चौपाया); मूर्ख, आलसी।

घामरी *स्त्री.* {हिं. घामड़} विकलता, बेचैनी; प्रेम के कारण होनेवाली विह्वलता।

घाय *पुं.* घाव।

घायक *वि.* घातक, नाश करनेवाला, मारनेवाला।

घार *स्त्री.* {हिं.} पानी के बहाव से कटकर बना हुआ मार्ग।

घायल *वि.* {हिं. घाय} जिसे घाव लगा हो, आहत, जख्मी, चुटैल।

घाल, घाला *पुं.* {हिं. घलना} किसी चीज के खरीदने-बेचने के बाद, उसी में की थोड़ी-सी वह और चीज को बिना मूल्य ली या दी जाती है, घलुआ।

मुहा. घाल न गिनना = कुछ भी न समझना या गिनना, तुच्छ समझना।

घालक *पुं.* {हिं. घालना} {*स्त्री.* घालिका, घालिनी, *भाव.* घालकता} मारने या नाश करनेवाला।

घालना *स.* {सं. घटन} किसी वस्तु के ऊपर-भीतर रखना, डालना; फेंकना, चलाना; बिगाड़ना, नष्ट करना; मार डालना।

घाल-मेल *पुं.* {हिं. घालना + मेल} भिन्न प्रकार की वस्तुओं की मिलावट, गड्डमड्ड, मेल-जोल।

घाव *पुं.* {सं. घात, प्रा. घाअ} शरीर पर का कटा या चिरा हुआ स्थान; वार, आघात; चोट, क्षत, जख्म।

मुहा. घाव पर नमक या नोन छिड़कना = दुख देना; *घाव पूजना या भरना* = घाव का अच्छा होना।

घाव-पत्ता *पुं.* {हिं. घाव + पत्ता} एक लता जिसके पत्ते घाव, फोड़े आदि पर बाँधे जाते हैं।

घावरिया *पुं.* {हिं. घाव + ?} घावों की चिकित्सा करनेवाला।

घास *स्त्री.* {सं.} वे प्रसिद्ध छोटे उद्भिज्ज जो चौपाए चरते हैं, भूमि पर उगनेवाला तृण।

मुहा. घास काटना, खोदना या छीलना = तुच्छ काम करना; व्यर्थ का काम करना।

घास-पात, घास-फूस *पुं.* तृण और वनस्पति; कूड़ा-करकट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घास-भूसा पुं. पशुओं का चारा; व्यर्थ की और रद्दी चीज।

घासलेट पुं. {अ. गैस + लाइट} {वि. घासलेटी} मिट्टी का तेल; तुच्छ, निंदनीय या अग्राह्य पदार्थ।

घासलेटी वि. {हिं. घासलेट + ई (प्रत्य.)} तुच्छ, निंदनीय और निम्न कोटि का; अश्लील, गन्दा, निकृष्ट।

घासस्थली स्त्री. {सं.} घास से भरा मैदान।

घासाहारी (हारिन्) वि. {सं.} घास खानेवाला, घास-भक्षक।

घाह स्त्री. घाई; घाहा।

घिआँडा पुं. {हिं.} अँगुलियों की संधि; घी रखने का पात्र।

घिग्घी स्त्री. {अनु.} लगातार रोने से साँस की रुकावट, हिचकी; भय के कारण बोलने में रुकावट।

घिघियाना अ. {हिं. घिग्घी} करुण स्वर से प्रार्थना करना, गिड़गिड़ाना।

घिचपिच स्त्री. {सं. घृष्ट-पिष्ट} थोड़े स्थान में बहुत सी वस्तुओं का जमाव; वि. गिचपिच, अस्पष्ट।

घिचपिचाना क्र.अ. {हिं.} सिटपिटाना, आगापीछा करना।

घिन स्त्री. घृणा, अरुचि, जी मिचलाना।

घिनाना अ. {हिं. घिन} घृणा करना।

घिनावना वि. {हिं.} घृणित, घिनौना।

घिनौना वि. {हिं. घिन} {स्त्री. घिनौनी} जिसे देखने से मन में घृणा उत्पन्न हो।

घिन्नी स्त्री. धरनी; गिन्नी।

घिय पुं. घी।

घियातरोई, घियातोरई स्त्री. {हिं.} एक प्रकार की लता जिसके फलों की तरकारी बनती है; नेनुआँ, सतपुतिया।

घिरत पुं. घृत (घी)।

घिरना अ. {सं. ग्रहण} सब ओर से घेरा या रोका जाना, आवृत्त होना; चारों ओर से एक साथ आना।

घिरनी स्त्री. {सं. घूर्णन} गराड़ी, चरखी; चक्कर, फेरा।

घिराई स्त्री. {हिं. घिरना} घिरने या घेरने की क्रिया या भाव; पशुओं को (घेरकर) चराने की मजदूरी।

घिराव पुं. {हिं. घेरना} घेरने या घिरने की क्रिया या भाव; घेरा।

घिरित पुं. घृत।

घिर्राना स. घसीटना; अ. गिड़गिड़ाना।

घिसकना क्रि. स. {हिं.} सरकना, खिसकना।

घिसघिस स्त्री. {हिं. घिसना} कार्य में शिथिलता या अनुचित विलंब, व्यर्थ का अनिश्चय।

घिसटना क्रि. स. {हिं.} घसीटा जाना।

घिसन स्त्री. {हिं.} रगड़, घिसने का कार्य।

घिसना स. {सं. घर्षण} एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर दबाकर शीघ्रता से चलाना या फिराना, रगड़ना; अ. रगड़ खाकर कम होना, छीजना।

घिसपिस स्त्री. {हिं. घिसना + पिसना} बहुत अधिक मेल-जोल या पारस्परिक-संबंध।

घिसवाना स. {हिं.} घिसना का प्रे.; घिसने का काम दूसरे से करवाना, रगड़वाना।

घिसाई स्त्री. {हिं. घिसना} घिसने या घिसाने की क्रिया, भाव या मजदूरी; दैनिक उपयोग के कारण वस्तु की कीमत में होनेवाली कमी।

घिसिर-पिसिर स्त्री. {हिं.} घिसपिस।

घिस्सा पुं. {हिं. घिसना} रगड़; धक्का, टक्कर; कोहनी और कलाई से गरदन पर किया जानेवाला आघात, कुंदा, रद्दा (पहलवान)।

घींचना क्रि. स. {हिं.} खींचना, ऐंचना।

घी पुं. {सं. घृत, प्रा. घीअ} दूध का वह प्रसिद्ध चिकना सार जो भोजन का मुख्य अंग है, तपाया हुआ मक्खन, घृत।

मुहा. घी के दीए जलाना = मनोरथ सफल होना, आनंदमंगल होना; *पाँचों उँगलियाँ घी में होना* = खूब सुख-चैन का अवसर मिलना, खूब लाभ होना।

घीकुँआर पुं. {सं. घृतकुमारी} ग्वारपाठा, गोंडपट्ठा।

घीन वि. = घृणित; स्त्री. घृणा।

घीया स्त्री. {हिं. घी} एक बेल के फल जिसकी तरकारी बनती है, कद्दू।

घीयाकश पुं. कद्दूकश।

घीयातोरी स्त्री. {हिं. घीया + तोरी} एक प्रकार की तोरी या फली जिसकी तरकारी बनती है।

घीया-पत्थर पुं. गोरा-पत्थर।

घीव पुं. = घी (घृत)।

घुँगची स्त्री. घुँघची, गूँजा, गुंजिका, काँची।

घुँघची स्त्री. {सं. गुंजा-चिंचिका या कन्नड़ गुरु-गुंजि} एक प्रकार की बेल जिसके बीज लाल होते हैं, गुंजा।

घुँघनी स्त्री. {अनु.} भिगोकर तला हुआ चना, मटर या और कोई अन्न।

घुँघराला वि. {हिं. घुमरना + वाला} {स्त्री. घुँघराली} (बाल) घूमा हुआ और बल खाया हुआ, छल्लेदार।

घुँघरू पुं. {अनु. घुनघुन} पीतल की वह पोली गुरिया जो हिलने से घुनघुन बजती है; ऐसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरियों की लड़ी, चौरासी, मंजीर; ऐसी गुरियों का बना हुआ पैर का गहना।

घुँघुवारा *वि.* घुँघराला।

घुंडी *स्त्री.* {सं. ग्रंथि} कपड़े को गोल बटन; पहनने के कपड़ों के सिरे पर की गाँठ; कोई गोल गाँठ।

घुंडीदार *वि.* {हिं. + फा.} जिसमें घुंडी लगी हो।

घुइयाँ *स्त्री.* अरबी या अरुई (कंद)।

घुग्घी *स्त्री.* {देश.} सिर पर चादर आदि ओढ़ने का एक प्रकार; इस प्रकार ओढ़ने का वस्त्र, पंडुक या पेडु की नामक पक्षी।

घुग्घू *पुं.* {सं. घूक} उल्लू पक्षी, घुग्घू परिंदा।

घुघुआ *पुं.* = घुग्घू।

घुघुआना *अ.* {हिं. घुग्घू} उल्लू का बोलना; बिल्ली का गुर्राना।

घुटकना *स.* {हिं. घूँट + करना} घूँट-घूँट करके पीना; निगलना।

घुटकी *स्त्री.* {हिं.} गले की वह नली जिसके द्वारा पेट में खाना-पानी जाता है, आसन्न मृत्यु के समय गले में से निकलनेवाला घरघर शब्द, घुटका।

मुहा. घुटकी लगना = प्राण का कंठगत होना।

घुटना[1] *पुं.* {सं. घुंटक} टाँग और जाँघ के बीच की गाँठ।

घुटना[2] *अ.* {हिं. घोटना} साँस रुकना;

मुहा. घुट-घुटकर मरना = साँस रुकने के कारण साँसत से मरना।

उलझकर कड़ा पड़ जाना, फँसना; गाँठ का बंधन का दृढ़ होना।

पद घुटा हुआ = बहुत बड़ा धूर्त या चालाक।

घिसकर चिकना होना; पिसकर महीन होना; आपस में बहुत घनिष्ठता या मेल-जोल होना।

स. बाँधने, पकड़ने आदि के लिए अच्छी तरह कसना, बंधन कड़ा करना, जैसे घुटकर बाँधना या पकड़ना।

घुटन्ना *पुं.* {हिं. घुटना} घुटने तक का।

घुटरूँ *पुं.* घुटना।

घुटवाना *स.* {हिं.} घोटना का प्रे., बाल मुँड़वाना।

घुटाई *स्त्री.* {हिं. घुटना} घोटने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

घुटाना *स.* {हिं.} घोटना का प्रे., घोटने का काम करना।

घुटरुअन *क्रि. वि.* {हिं. घुटना} घुटनों के बल (चलना, विशेषत: बच्चों का)।

घुट्टी *स्त्री.* {हिं. घूँट} छोटे बच्चों को दी जानेवाली जनम-घूँटी, विशेष; जनम-घूँटी।

मुहा. घुट्टी में पड़ना = स्वभाव में होना।

घुड़कना *स.* {अनु. घुरघुर} जोर से बोलकर डराना, कड़ककर डाँटना, घुड़की देना, डाँट-डपट, डपटना।

घुड़की *स्त्री.* {हिं. घुड़कना} घुड़कने की क्रिया या भाव; डाँट-डपट, फटकार।

घुड़चढ़ा *पुं.* घुड़सवार, अश्वारोही।

घुड़चढ़ी *स्त्री.* {हिं. घोड़ा + चढ़ना} विवाह की वह रीति जिसमें दूल्हा घोड़े पर चढ़कर ब्याहने जाता है; घुड़नाल; निम्न कोटि की वेश्या जो प्राय: घोड़े पर चढ़कर गाँव-देहातों में नाचने-गाने जाती हो।

घुड़दौड़ *स्त्री.* {हिं. घोड़ा + दौड़} घोड़ों की वह दौड़ जिसके लिए हार-जीत की बाजी लगती हो।

घुड़नाल *स्त्री.* {हिं. घोड़ा + नाल} एक प्रकार की तोप जो घोड़ों पर चलती थी।

घुड़बहल *स्त्री.* {हिं.} वह रथ जिसमें घोड़े जुते रहते हैं।

घुड़मक्खी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार की मक्खी जो घोड़ों को काटती है।

घुड़मुँहाँ *पुं.* {हिं. वि.} लंबे, भद्दे मुखवाला (मनुष्य)।

घुड़सवार *पुं.* {हिं. घोड़ा + फा. सवार} {*भाव.* घुड़सवारी} वह जो घोड़े पर सवार हो।

घुड़सवारी *स्त्री.* {हिं. घोड़ा + सवारी} घोड़े पर सवार होने की क्रिया या भाव।

घुड़साल *स्त्री.* {हिं. घोड़ा + सं. शाला} अश्वशाला, अस्तबल।

घुड़िया *स्त्री.* घोड़िया।

घुणाक्षर-न्याय[1] *पुं.* {सं.} घुन के कारण लकड़ी आदि पर बने हुए अक्षरों के समान चिह्नों का दृष्टांत; अनजान में ही कोई काम हो या बन जाना।

घुणाक्षर-न्याय[2] *पुं.* {सं.} ऐसी रचना जो अनजान में वैसे ही हो जाए जैसे—घुन के खाते-खाते लकड़ी में अक्षर की भाँति आकृतियाँ बन जाती हैं।

घुन *पुं.* {सं. घुण} एक छोटा कीड़ा जो अनाज, लकड़ी आदि में लगता है।

मुहा. घुन लगना = अंदर ही अंदर किसी वस्तु का क्षीण होना।

घुनना *अ.* {हिं. घुन} लकड़ी आदि में घुन लगना; दोष आदि के कारण अंदर ही अंदर क्षीण होना, अंदर से छीजना।

घुन्ना *वि.* {अनु. घुनघुनाना} {*स्त्री.* घुन्नी} क्रोध, द्वेष आदि भाव मन में ही रखनेवाला, चुप्पा।

घुन्नी *स्त्री.* {हिं. *वि.*} मन का आवेग मन में रखनेवाली, चुप्पी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

घुप *वि.* {हिं.} गहरा अंधकार।

घुमंडना *अ.* घुमड़ना, बादलों का मँडराना।

घुमक्कड़ *वि.* {अनु. घूमना} बहुत घूमनेवाला (व्यक्ति)।

घुमची *स्त्री.* {हिं.} गुंजा, घुँघची।

घुमटा *पुं.* {हिं. घूमना} सिर का चक्कर, सिर घूमना।

घुमड़ *स्त्री.* {हिं. घुमड़ना} बादलों की घेर-घार।

घुमड़ना *अ.* {हिं. घूम + अटना} (बादलों का) घिरना, उमड़ना, छा जाना।

घुमड़ी *स्त्री.* {हिं. घूमना} सिर में आनेवाला चक्कर, घुमटा।

घुमड़ना *क्रि. अ.* {हिं.} बादलों का इकट्ठा होना, मेघों का छा जाना।

घुमड़ा, घुमरा *स्त्री.* {हिं.} चक्कर की तरह घूमना, सिर में चक्कर आना।

घुमरी *स्त्री.* घुमड़ी, भँवर, चक्कर आना, घुमड़ी।

घुमाना *स.* {हिं. घूमना} घूमने में प्रवृत्त करना, चारों ओर फिराना; टहलाना, सैर कराना; मोड़ना; प्रवृत्त करना; टहलाना; मरोड़ना, ऐंठना।

घुमाव *पुं.* {हिं. घुमाना} {*वि.* घुमावदार} चक्कर, घूमने का काम का मार्ग, मोड़।

घुमाव-फिराव *पुं.* {हिं. घुमाना + फिराना} (रास्ते, रेखा आदि का) टेढ़े-मेढ़े घुमाते हुए या चक्कर लगाते हुए आगे बढ़ना।

मुहा. घुमाव-फिराव की बात = पेचीली या हेर-फेर की बात।

घुरका *पुं.* {हिं.} चौपायों का एक रोग।

घुरघुरा *पुं.* {हिं.} झींगुर।

घुरघुराना *अ.* {अनु. घुरघुर} गले से घुरघुर शब्द निकलना।

घुमावदार *वि.* {हिं.} जिसमें घुमाव हो, चक्करदार।

घुरना[1] *अ.* घुलना।

घुरना[2] *अ.* {सं. घोर} शब्द होना; *स.* शब्द उत्पन्न करना।

घुरना[3] *अ.* {सं. घर्णन्} घूमना; (आँख) झपकना।

घुर-बिनिया *स्त्री.* {हिं. घूना + बीनना} कूड़े में से दाने चुनने या गली-कूचों में टूटी-फूटी चीजें चुनने का काम।

घुरमना *अ.* घूमना।

घुराना *स.* घुलाना; घुमाना; *वि.* भार आना।

घुर्मित *वि.* {सं. घूर्णित} घूमता हुआ; चक्कर खाता हुआ।

घुलना *अ.* {सं. घूर्णन, प्रा. घुलन} किसी द्रव वस्तु में अच्छी तरह मिल जाना, हल होना।

मुहा. घुल-मिलकर बातें करना = खूब मिल-जुलकर बातें करना।

पिघलना; पककर पिलपिला होना; रोग या चिंता से दुर्बल होना।

मुहा. घुल-मिलकर मरना = बहुत दिनों तक रोग आदि का कष्ट भोगकर मरना।

घुलवाना *स.* {हिं.} घोलना का प्रे.; *क्रि. स.* गलवाना, द्रवित करना, आँखों में सुरमा लगवाना, क्षीण कराना।

घुलाना *स.* {हिं. घुलना} पिघलाना; शरीर से दुर्बल करना; यंत्रणा देना; गरमी या दाब पहुँचाकर नरम करना।

घुलावट *स्त्री.* {हिं. घुलना} घुलने या घुलाने की क्रिया या भाव।

घुसड़ना *अ.* = घुसना।

घुसना *अ.* {सं. कुश = आलिंगन; अथवा घर्षण} प्रवेश करना, अंदर जाना; धँसना; बिना अधिकार के कहीं पहुँचना; बात की तह तक पहुँचना।

घुसपैठ *स्त्री.* {हिं. घुसना + पैठना} पहुँच, गति, प्रवेश; अनधिकार-प्रवेश।

घुसवाना *क्रि.स.* {हिं.} घुसाने का कार्य दूसरे से कराना।

घुसपैठिया *पुं.* {हिं. घुसपैठ} घुसपैठ करनेवाला; अनधिकारिक रूप से दूसरे देश में घुस जानेवाला।

घुसाना *स.* {हिं. घुसना} अंदर घुसेड़ना, पैठाना; चुभाना, धँसाना।

घुसेड़ना *स.* = घुसाना; धँसाना, पैठाना।

घूँघट *पुं.* {*स.* गुंठक} साड़ी का वह खिंचा हुआ भाग जो मुँह ढके रहता है; ओट, परदा; सेना का अचानक दाहिने-बाएँ घूम पड़ना।

घूँघर *पुं.* {हिं. घुमरना} बालों में पड़े हुए छल्ले या मरोड़; *पुं.* घूँघट; कुंचित या कुचन।

घूँघरवाले *वि.* घुँघराले, लच्छेदार, झबरीले।

घूँघरी *स्त्री.* (हिं.) घुँघरू, क्षुद्रघंटिका।

घूँट *पुं.* {अनु. घुटघुट} उतना द्रव पदार्थ, जितना एक बार गले के नीचे उतारा जाए।

घूँटना *स.* {हिं. घूँट} द्रव पदार्थ गले के नीचे उतारना, पीना।

घूँटा *पुं.* घुटना।

घूँटी *स्त्री.* घुट्टी; छोटे बच्चों की पाचन-क्रिया ठीक करने हेतु औषध जो उनको नित्यप्रति पिलाई जाती है।

घूँसा *पुं.* {हिं. घिस्सा} मारने के लिए तानी हुई मुट्ठी, मुक्का।

घूआ *पुं.* {देश.} {*स्त्री.* अल्पा. घूई} काँस, मूँज आदि के फूल; कपास, सेमले आदि के फूलों में से निकलनेवाला अंश।

घूक *पुं.* {हिं.} उल्लू, घुग्घू पक्षी।

घूका *पुं.* {हिं.} सँकरे मुँह की डलिया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घूगात *पुं.* {हिं.} ऊँचा बुर्ज।
घूघ *पुं.* {हिं.} लोहे या पीतल का टोप जो कड़ाई में सिर पर चोटादि से बचने हेतु।
घूघी *स्त्री.* {हिं.} जेब, खरीता, पेंड़की।
घूमता-फिरता *वि.* जो बराबर घूमता रहता हो।
घूमते-फिरते *क्रि.वि.* घूमते रहने के समय।
घूमना *अ.* {सं. घूर्णन} चारों ओर फिरना, चक्कर खाना; किसी ओर मुड़ना;
मुहा. (किसी पर) घूम पड़ना = किसी पर सहसा क्रोध प्रकट करना।
व्यायाम, वायुसेवन आदि के लिए चलना, टहलना; यात्रा करना; गोलाई में मुड़ना; उन्मत्त या मतवाला होना।
घूमना-फिरना *अ.* इधर-उधर आते-जाते रहना; मौज-मस्ती के लिए भ्रमण करना।
घूमनी *स्त्री.* {हिं.} सिर का चक्कर।
घूमरा *वि.* {हिं. घूमना} घूमने या चक्कर लगानेवाला; मतवाला, मस्त, मत्त।
घूर *पुं.* {सं. कूट, हिं. कूरा} कूड़े-करकट का ढेर, कतवार।
घूरना[1] *अ.* {सं. घूर्णन} बुरे भाव से आँखें गड़ाकर देखना।
घूरना[2] *अ.* = घूमना।
घूरा[1] *पुं.* घूर कूड़ा-कर्कट फेंकने का स्थान।
घूरा[2] *पुं.* {अनु.} बँधी हुई हथेली से किया।
घूर्णन *पुं.* {सं.} किसी काया या पिंड का अपनी धुरी पर घूमना।
घूस[1] *स्त्री.* {देश.} चूहे की तरह का, पर उससे बड़ा एक जंतु।
घूस[2] *स्त्री.* {हिं. घुसना} अपने अनुकूल कार्य कराने के लिए अनुचित रीति से दिया जानेवाला द्रव्य, रिश्वत, उत्कोच; किसी के अनुकूल कार्य करने के लिए लिया जानेवाला धन, रिश्वत।
घूसखोर *पुं.* {हिं. + फा.} घूस खानेवाला।
घृणा *स्त्री.* {सं.} बुरी बात या चीज को देखकर उससे दूर रहने की इच्छा या भावना, घिन, नफ़रत।
घृणित *वि.* {सं.} घृणा करने योग्य।
घृत *पुं.* {सं.} घी।
घृतकुमारी *स्त्री.* {सं.} घीकुआर, ग्वारपाठा।
घृतपूर *पुं.* {सं.} घेवर नामक पकवान।
घृताची *स्त्री.* {सं.} स्वर्ग की एक अप्सरा का नाम।
घेंघ, घेंघा *पुं.* {हिं.} भिगोए हुए चने और चावल मिश्रित पदार्थ।
घेंघा *पुं.* = घेघा।
घेंड़ी *स्त्री.* {हिं. घी + हंडी, सं. घृत-हंडिका} वह हंडी या मिट्टी का बरतन जिसमें घी रखा जाता है।
घेघा *पुं.* {देश.} गले की नली जिससे खाना-पानी पेट में जाता है; गला सूजने का एक रोग।
घेर *पुं.* {हिं. घेरना} घेरने की क्रिया या भाव; घेरा, मंडल; परिधि।
घेर-घार *स्त्री.* {हिं. घेरना} घेरने की क्रिया या भाव; विस्तार, घेरा; किसी को चारों ओर से बहुत दबाव डालकर कोई काम करने के लिए विवश करना; खुशामद मिली हुई विनती।
घेरना *स.* {हिं. घिरना} चारों ओर से रोकना, छेंकना या घेरे में लेना; बहुत आग्रह या खुशामद करना।
घेरा *पुं.* {हिं. घेरना} किसी चीज को चारों ओर से घेरनेवाली कोई रेखा या और कोई चीज, परिधि; सीमा या परिधि का मान; घेरनेवाली चीज, (जैसे दीवार, रेखा आदि); दीवार, बाढ़ आदि से चारों ओर से घिरा हुआ स्थान, अहाता (एन्क्लोज़र); सेना का किसी दुर्ग आदि का घेरना या उसका मार्ग बंद करना।
घेराव *पुं.* {हिं. घेरना} किसी अधिकारी से अपनी बात मनवाने के लिए कर्मचारियों या विद्यार्थियों आदि द्वारा उसे घेरना (जिससे कहीं आ-जा न पाए और न कोई काम ही कर पाए)।
घेलौना *पुं.* {हिं.} घेलुआ, घाल।
घेरेबंदी *स्त्री.* {हिं. घेरा + फा. बंदी} किसी को चारों ओर से घेर लेने की क्रिया या योजना (जिससे वह निकल न भागने पाए)।
घेवर *पुं.* {हिं.} एक प्रकार की बढ़िया मिठाई जिसमें बहुत घी लगता है।
घैया[1] *स्त्री.* {हिं. घी या सं. घात} गौ के थन से निकलती हुई दूध की धार जो मुँह लगाकर पी जाए; ताजे दूहे हुए दूध के ऊपर से मक्खन उठाने की क्रिया।
घैया[2] *स्त्री.* {हिं. घाई या घा} ओर, तरफ।
घैर *पुं.* {देश.} अपयश, बदनामी; चुगली, शिकायत।
घैला *पुं.* {सं. घट}{*स्त्री.* अल्पा. घैली} मिट्टी का घड़ा, कलश, गगरा।
घोंघ *पुं.* {हिं.} एक प्रकार की चिड़िया।
घोंघा *पुं.* {देश.} {*स्त्री.* घोंघी} शंख की तरह का एक कीड़ा, शंबुक; *वि.* मूर्ख।
घोंघा-बसंत *वि.* परम मूर्ख।
घोंघी *स्त्री.* {देश.} पत्तों का बना हुआ छाता; कौड़ी (दलाल)।
घोंची *स्त्री.* {हिं.} वह गाय जिसके सींग मुड़कर कान में जाकर मिल जाते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

घोंच पुं. {हिं.} मूर्ख, जड़बुद्धि।
घोंचुआ पुं. = घोंसला; नीड़।
घोंट पुं. {हिं.} घोंटने का काम, घूँट, एक प्रकार का वृक्ष।
घोंटना स. घूँटना, घोटना।
घोंपना स. {अनु.} जोर से गड़ाना, धँसाना या चुभाना।
घोंसला पुं. {सं. कुशालय या कुलाय?} घास-फूस से बना हुआ पक्षी का घर, नीड़।
घोंसुआ पुं. 'घोंसला'।
घोखना स. {सं. घुष्} रटना, दोहराना।
घोट, घोटक पुं. {सं.} अश्व, घोड़ा।
घोटना स. {सं. घृष्ट} {प्रे. घुटाना, घुटवाना} रगड़ना, माँजना; महीन पीसना; रगड़कर मिलना, हल करना; अभ्यास करना, मश्क करना; (गला) इस प्रकार दबाना कि साँस रुक जाए; उस्तरे से बाल साफ करना, जैसे–दाढ़ी घोटना; पुं. {स्त्री. घोटनी} घोटने का औजार, घोटा।
घोटनी स्त्री. {हिं.} घोटने की कोई छोटी वस्तु।
घोटवाना क्रि.स. {हिं.} घोटने का काम दूसरे से करना, रगड़वाना, चमकवाना, सिर या दाढ़ी के बाल मुड़वाना।
घोटू वि. {हिं.} घोटने वाला।
घोटा पुं. {हिं. घोटना} घोटने की क्रिया या भाव; वह डंडा या और कोई उपकरण जिससे कोई चीज घोटी जाए।
घोटाई स्त्री. {हिं. घोटना + आई (प्रत्य.)} घोटने का काम, भाव या मजदूरी।
घोटाला पुं. {देश.} घपला, गड़बड़ी।
घोड़राई स्त्री. {हिं.} बड़े-बड़े दाने की राई।
घोड़साल स्त्री. घुड़साल; घोड़ा बाँधने का स्थान।
घोड़ा पुं. {सं. घोटक, प्रा. घोडा} {स्त्री. घोड़ी} एक प्रसिद्ध चौपाया जो गाड़ी खींचने और सवारी के काम में आता है, अश्व।
मुहा. घोड़ा कसना = घोड़े पर जीन कसना; *घोड़ा डालना या फेंकना* = वेग से घोड़ा दौड़ाना; *घोड़ा निकालना* = घोड़े को सिखलाकर सवारी के योग्य बनाना; *घोड़ा बेचकर सोना* = बेफिक्र होकर सोना।
बंदूक का वह खटका जिसे दबाने से गोली चलती है; दीवार से बाहर निकला हुआ पत्थर का वह टुकड़ा जो ऊपर भार सँभालने के लिए लगाया जाता है; शतरंज का एक मोहरा।
घोड़ा-गाड़ी स्त्री. {हिं. घोड़ा + गाड़ी} वह गाड़ी, जिसे घोड़ा या घोड़े खींचते हैं।
घोड़ा-नस स्त्री. {हिं. घोड़ा + नस} एड़ी के पीछे की मोटी नस, कूँच पै।
घोड़ावच पुं. {हिं.} खुरासानी बच।
घोड़िया स्त्री. {हिं. घोड़ी + इया (प्रत्य.)} छज्जे का भार सँभालने वाला पत्थर, विशेष, छोटा घोड़ा।
घोड़ी स्त्री. {हिं. घोड़ा} घोड़े की मादा; विवाह के समय वर का घोड़ी पर चढ़कर कन्या पक्ष के यहाँ जाना; इस अवसर पर वरपक्ष की ओर से गाए जानेवाले गीत।
घोर वि. {सं.} भयंकर, विकराल; सघन; दुर्गम, कठिन; बहुत अधिक; गंभीर और भयानक; पुं. गर्जना, ध्वनि।
घोरना अ. {सं. घोर} भारी शब्द करना, गरजना।
घोरा पुं. = घोड़ा।
घोरिया पुं. {हिं.} घोड़िया।
घोरिला' पुं. {हिं. घोड़ा} लड़कों के खेलने का काठ आदि का घोड़ा।
घोल पुं. {हिं. घोलना} वह पानी जिसमें कोई चीज घोली गई हो; मठा, छाछ।
घोलना स. {हिं. घुलना} पानी या अन्य द्रव पदार्थ में चूर्ण आदि अच्छी तरह मिलाना, हल करना।
घोष पुं. {सं.} अहीरों की बस्ती; अहीर; गोशाला; शब्द, नाद; जोर से की हुई पुकार, चिल्लाहट या घोर शब्द, गर्जन, गरज; किसी विशेष सिद्धांत, पक्ष या दल की वह पुकार या पद, जो लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए होता है; नारा (स्लोगन); वि. (वर्ण) जिसका उच्चारण करते समय स्वरतंत्रियाँ झंकृत होती हों।
घोषणा स्त्री. {सं.} उच्च स्वर से दी हुई सूचना; सार्वजनिक रूप से निकली हुई राजाज्ञा आदि (प्रोक्लेमेशन); मुनादी, डुग्गी; ध्वनि, आवाज।
घोषणा-पत्र पुं. {सं.} वह पत्र जिसमें सर्वसाधारण के सूचनार्थ राजाज्ञा आदि लिखी हो; राजनीतिक दल के कार्यक्रमों का सूचक-पत्र।
घोसना क्रि. स. {हिं.} घोषित करना, उच्चारण करना।
घोसी पुं. {सं. घोष} अहीर, ग्वाला।
घौद पुं. {देश.} एक डंठल में एक साथ फलनेवाले बहुत से फलों का गुच्छा, जैसे केलों का घौद।
घौर पुं. 'घौद' फलों का गुच्छा।
घ्राण पुं. {सं.} {वि. घ्रेय} सूँघने की इंद्रिय, नाक; सूँघने की शक्ति; सुगंध।
घ्राणेन्द्रिय पुं. {सं.} नाक।
घ्रात वि. {सं.} सूँघा हुआ।
घ्रातव्य वि. {सं.} सूँघने लायक।
घ्राता वि. {सं.} सूँघनेवाला।
घ्रेय वि. {सं.} सूँघने योग्य।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

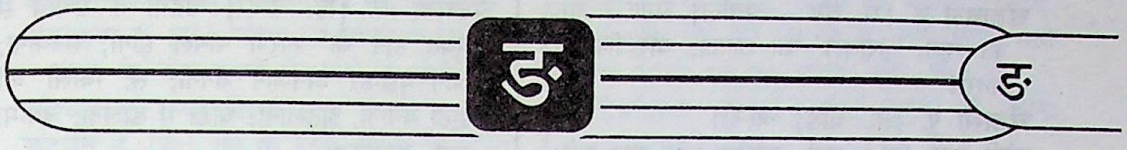

ङ देवनागरी वर्णमाला में कंठ और नासिका से उच्चारित होनेवाला कवर्ग का अंतिम व्यंजन वर्ण।

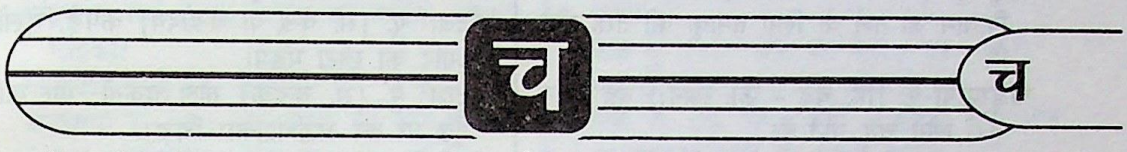

च देवनागरी वर्णमाला का छठा तथा चवर्ग का पहला व्यंजन वर्ण, जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।

चंक *पुं.* {सं. चक्र} सारा, पूरा, सब, पूर्ण, समूचा।

चंक्रमण *पुं.* {सं.} टहलना, बारंबार, घूमना।

चंग[1] *स्त्री.* {फा.} डफ की तरह का एक बाजा; गंजोफ का एक रंग।

चंग[2] *स्त्री.* {सं. चं = चंद्रमा} पतंग, गुड्डी।

मुहा. चंग चढ़ना या उमहना = वैभव या प्रताप की वृद्धि होना, खूब बढ़ती होना; *चंग पर चढ़ाना* = किसी का मन बढ़ाकर उसे अपने अनुकूल करना।

निंदा या कलंकपूर्ण चर्चा, बदनामी।

चंगना *स.* {हिं. चंगा या फा. तंग} कष्ट देना, पीड़ित करना; कसना; खींचना।

चंगवाई *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का वात राग जिसमें हाथ-पाँव जकड़ जाते हैं।

चंगा *वि.* {प्रा. चंग} {*स्त्री.* चंगी} स्वस्थ, नीरोग; अच्छा, बढ़िया, आरोग्य।

चंगुल *पुं.* {हिं. चौ = चार + अंगुल} पक्षियों या पशुओं का मुड़ा हुआ पंजा; हाथ के पंजे की वह मुद्रा, जो उँगलियों से कोई वस्तु पकड़ने के समय होती है, बकोटा।

मुहा. चंगुल में फँसना = वश में आना।

चंगेरी, चंगरी *स्त्री.* {सं. चंगोरिक} बाँस की छोटी टोकरी या डलिया, डगरी; वह टोकरी जिसमें बच्चों को सुलाकर पालने की तरह झुलाते हैं।

चंचरी *स्त्री.* {सं.} भ्रमर की मादा, भौंरी, भ्रमरी; एक प्रकार का वर्णवृत्त; छब्बीस मात्राओं के एक छंद का नाम; होली में गाया जानेवाला चाँचर नामक गीत।

चंचरीक *पुं.* {सं.} भौंरा, भंवरा, भ्रमर।

चंचल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* चंचला, *भाव.* चंचलता} जो स्थिर न रहकर हिलता-डुलता रहे, चलायमान, अस्थिर, हिलता-डोलता; एकाग्र न रहनेवाला, अव्यवस्थित; घबराया हुआ, उद्विग्न; नटखट; चुलबुला।

चंचलता *स्त्री.* {सं.} अस्थिरता; चपलता; नटखटी, शरारत।

चंचला *स्त्री.* लक्ष्मी; बिजली।

चंचलाई *स्त्री.* = चंचलता।

चंचलाहट *स्त्री.* {हिं.} चंचलता, चपलता।

चंचा *स्त्री.* {हिं.} पक्षियों को डराने हेतु खेतों में रखा हुआ घास, फूँस, काली हांड़ी का पुतला, डरावा।

चंचु *पुं.* {सं.} चेंच नाम का साग; मृग, हिरन; *स्त्री.* पक्षी की चोंच।

चँचोरना *क्रि.स.* {हिं.} दाँतों से दबाकर चूसना, निचोरना।

चंचुप्रवेश *पुं.* {सं.} किसी विषय का बहुत थोड़ा विशेषतः आरंभिक ज्ञान।

चंट *वि.* {सं. चंड} चालाक, धूर्त।

चंड *वि.* {सं., *स्त्री.* चंडा; *भाव.* चंडता } तेज, तीक्ष्ण; उग्र, प्रखर; जिसे दबाना कठिन हो, दुर्दमनीय; कठोर, कठिन; उद्धत; क्रोधी; *पुं.* ताप, गरमी, एक दैत्य जिसे दुर्गा माता ने मारा था।

चंडकर *पुं.* {सं.} सूर्य।

चंडांशु *पुं.* {सं.} सूर्य।

चंड-मुंड *पुं.* {सं.} वे राक्षसों के नाम जो दुर्गा देवी के हाथों मारे गए थे।

चँड़ाई *स्त्री.* {सं. चंड = तेज + हिं. आई (प्रत्य.)} शीघ्रता, जल्दी; प्रबलता; ऊधम, उपद्रव; अत्याचार।

चंडाल *पुं.* चांडाल, खपच, डोम।

चंडालिका *स्त्री.* {सं.} प्राचीनकाल की एक प्रकार की वीणा; दुर्गा का एक नाम।

चंडालिनी *स्त्री.* {सं.} चंडाल की स्त्री; दुष्टा या पापिनी स्त्री।

चंडालपन *पुं.* {हिं.} अधमता, नीचता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंडावल पुं. {सं. चंड + अवलि} सेना के पीछे का भाग, 'हरावल' का उलटा; वीर सिपाही; संतरी।

चँडासा पुं. {हिं. चाँड} जल्दी।

चंडी *स्त्री.* {सं.} दुर्गा; कर्कशा और दुष्ट स्त्री।

चंडीश पुं. {सं.} शिव, महादेव।

चंडू पुं. {सं. चंड = तीक्ष्ण} अफीम का वह किवाम जो नशे के लिए तमाकू की तरह पीते हैं।

चंडूखाना पुं. {हिं. चंडू + फा. खान:} वह स्थान जहाँ लोग चंडू पीते हैं।

मुहा. चंडूखाने की गप = नशेबाजों की झूठी बकवाद, बिल्कुल झूठी बात।

चंडूबाज पुं. {हिं. चंडू + फा. बाज़ (प्रत्य.)} चंडू पीनेवाला।

चंडूल पुं. {देश.} खाकी रंग की एक छोटी चिड़िया; परम मूर्ख।

चंडोल पुं. {सं. चन्द्र + दोल} एक प्रकार की पालकी।

चंद[1] पुं. {सं. चंद्र} चाँद, कपूर।

चंद[2] *वि.* {फा.} थोड़े से, कुछ, दो-चार।

चंदक पुं. {सं. चन्द्र} चंद्रमा, चाँद; मछली; एक अर्धचंद्रकार गहना जो माथे पर पहना जाता है; नथ में गड़ा हुआ छोटा नग; *स्त्री.* चाँदनी; माथे पर पहनने का एक गहना; गहनों में चंद्रमा या पान के आकार की बनावट।

चंदन पुं. {सं.} एक पेड़ जिसके हीर की लकड़ी सुगंधित होती है, श्रीखंड, संदल (सैंडल); उक्त वृक्ष की लकड़ी का टुकड़ा जिसे घिसकर शरीर पर लेप लगाते हैं; पानी से उक्त लकड़ी को घिसकर तैयार किया हुआ लेप।

मुहा. किसी के मुँह पर चंदन पोतना = किसी की कीर्ति पर कलंक लगाना, कालिख पोतना (व्यंग्य)।

चंदनगिरि पुं. {सं.} मलयाचल।

चंदनपुष्प पुं. {सं.} चंदन का फूल।

चंदनसार पुं. {सं.} पानी में रगड़ा हुआ चंदन जिसे लोग माथे तथा शरीर पर लगाते हैं।

चंदनहार पुं. = चंद्रहार।

चंदनी *वि.* {हिं. चंदन + ई (प्रत्य.)} चंदन-संबंधी, चंदन का; चंदन का बना हुआ; चंदन के रंग का, कुछ-कुछ लाली लिए हुए भूरा।

चँदनौता पुं. {हिं. चन्द्र} एक प्रकार का लहँगा।

चंदबान पुं. {सं. चंद्रबाण} एक प्रकार का बाण जिसके सिरे पर चंद्रमा के आकार का लोहा लगा रहता था।

चंदर पुं. = चंद्र, चंद्रमा।

चँदराना *अ.* {हिं. चन्दर} चंद्रमा के प्रभाव से युक्त होने के कारण पागल होना, सनकना; जान-बूझकर अनजान बनना; *स.* किसी को झूठा बनाना, झुठलाना; धोखे में डालना, चकमा देना, बहकाना।

चँदला *वि.* {हिं. चाँद + खोपड़ी} जिसके सिर या चाँद के बाल उड़ गए हों, गंजा।

चँदवा[1] पुं. {सं. चन्द्र या चन्द्रोदय} कपड़े, फूलो आदि का छोटा मंडप।

चँदवा[2] पुं. {सं. चन्द्रक} गोल चकती; मोर की पूँछ पर का अर्द्धचंद्राकार चिन्ह।

चंदसिरि *स्त्री.* {सं. चन्द्र + श्री} एक बड़ा गहना जो हाथियों के मस्तक पर पहनाया जाता है।

चंदा[1] पुं. {चंद्र या चन्द्र} चंद्रमा; पीतल आदि की गोल चद्दर या टुकड़ा।

चंदा[2] पुं. {फा. चंद = कई एक} थोड़ी-थोड़ी करके दान रूप में कई आदमियों से ली हुई आर्थिक सहायता; किसी पत्र-पत्रिका आदि का वार्षिक मूल्य; किसी संस्था को उसके सदस्यों से नियत समय पर नियमित रूप से मिलनेवाला धन (सब्सक्रिप्शन); किसी प्रकार का बीमा कराने पर उसके लिए निर्धारित समय पर दिया जानेवाला धन (प्रीमियम)।

चंदा मामा पुं. {हिं. चंदा = चन्द्रमा + मामा} बच्चों का एक प्रिय शब्द जो उनके लिए चंद्रमा का वाचक होता है।

चंदावत पुं. {हिं.} क्षत्रियों की एक जाति।

चंदावती *स्त्री.* {हिं.} एक रागिनी का नाम।

चंदिनी *स्त्री.* {हिं.} चंद्रिका, चाँदनी, उजेली, चाँदनीवाली रात।

चंदिया *स्त्री.* {हिं.} कपाल का मध्य भाग, खोपड़ी।

चंदिर *स्त्री.* {हिं.} चंद्रमा; गज, हाथी।

चंदेरी *स्त्री.* {हिं.} ग्वालियर राज्य के एक नरवार जिले का एक प्राचीन नगर।

चंदेरीपति पुं. {हिं.} चंदेरी का राजा शिशुपाल।

चंद्र पुं. {सं.} चंद्रमा; साहित्य में एक की संख्या का सूचक शब्द; मोर की पूँछ पर का चंद्राकार चिह्न; कपूर; जल; सोना, सुवर्ण; सानुनासिक वर्ण के ऊपर लगाई जानेवाली बिंदी।

चंद्रक पुं. {सं.} चंद्रमा; चंद्रिका, चाँदनी; मोर के पर की चंद्रिका।

चंद्रकला *स्त्री.* {सं.} चंद्रमंडल का सोलहवाँ अंश; चंद्रमा की ज्योति; माथे पर पहनने का एक गहना।

चंद्रकांत पुं. {सं.} एक कल्पित रत्न जिसके विषय में कहा जाता है कि वह चंद्रमा के सामने रखने पर पसीजता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद्रकांता *स्त्री.* {सं.} चंद्रमा की स्त्री; रात्रि, रात।
चंद्रग्रहण *पुं.* {सं.} चंद्रमा का ग्रहण जो सूर्य और चंद्रमा के बीच पृथ्वी के आने से होता है।
चंद्रचूड़ *पुं.* {सं.} शिव।
चंद्रधनु *पुं.* {सं.} रात के समय चंद्रमा के प्रकाश में दिखाई देनेवाला इंद्रधनुष।
चंद्रधर *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।
चंद्रप्रभा *स्त्री.* {सं.} चंद्रमा की ज्योति, चाँदनी, चंद्रिका।
चन्द्रबंधु *पुं.* {सं.} कुमुद।
चंद्रबाण *पुं.* {सं.} एक प्रकार का बाण जिसका फल अर्द्धचंद्राकार होता था।
चंद्रबिंब *पुं.* {सं.} चंद्रमा का मंडल।
चंद्रभागा *स्त्री.* {सं.} चनाब नदी का पुराना नाम।
चंद्रभाल *पुं.* {सं.} शिव, शंकर, महादेव।
चंद्रमणि *पुं.* {सं.} चंद्रकांत मणि।
चंद्रमा *पुं.* {सं. चंद्रमस्} रात को प्रकाश देनेवाला वह उपग्रह जो सूर्य के प्रकाश के प्रतिबिंब से चमकता है, चाँद।
चंद्रमुखी *वि. पुं.* {सं. चन्द्रमुखिन्} चंद्रमा के समान सुंदर मुखवाला, परम रूपवान; *वि. स्त्री.* {सं. चंद्रमुख + हिं. ई (प्रत्य.)} चंद्रमा के समान सुंदर मुखवाली, परम रूपवती।
चंद्रमौलि *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।
चंद्ररेखा (लेखा) *स्त्री.* {सं.} चंद्रमा की कला या किरण; द्वितीया का चंद्रमा।
चंद्रवंश *पुं.* {सं.} क्षत्रियों के दो आदि कुलों में से एक (दूसरा सूर्यवंश है)।
चंद्रवदन *वि.* {सं.} {*स्त्री.* चंद्रवदनी} चंद्रमा के समान सुंदर मुखवाला, परम रूपवान।
चंद्रवार *पुं.* {सं.} सोमवार।
चंद्रबिंदु *पुं.* {सं.} स्वर के अनुनासिक होने का चिह्न।
चंद्रशाला *स्त्री.* {सं.} चाँदनी, चंद्रमा का प्रकाश; घर के ऊपर की कोठरी जिसमें बैठकर चाँदनी का आनंद लेते हैं, अटारी।
चंद्रशेखर *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।
चंद्रसुत *पुं.* {सं.} बुध।
चंद्रहार *पुं.* {सं.} एक प्रकार की माला या हार, नौलखा हार; एक प्रकार की आतिशबाजी।
चंद्रहास *पुं.* {सं.} चंद्रमा का प्रकाश; खड्ग, तलवार।
चंद्रा *स्त्री.* {सं.} मरने के समय आँखों की वह अवस्था, जब टकटकी बँध जाती है।
चंद्रातप *पुं.* {सं.} चाँदनी, चंद्रिका; चँदवा।
चंद्रार्क *पुं.* {सं.} चंद्र और सूर्य; चाँदी और ताँबे या सोने के योग से बनी एक मिश्रित धातु।
चंद्रिका *स्त्री.* {सं.} चंद्रमा का प्रकाश, चाँदनी, कौमुदी; मोर की पूँछ पर का गोल चिह्न; माथे पर पहनने का एक गहना, बेंदी, बेंदा।
चंद्रिकोत्सव *पुं.* {सं.} शरद पूर्णिमा को मनाया जानेवाला उत्सव।
चंद्रोदय *पुं.* {सं.} चंद्रमा का उदय होना।
चंपई *वि.* {हिं. चंपा} चंपा के फूल के रंग का, पीला।
चंपक *पुं.* {सं.} चंपा का फूल; चंपा-केला।
चंपत *वि.* {देश.} गायब, अंतर्ध्यान।
चँपना *अ.* {सं. चंप्} बोझ से दबना; गुण, बल या उपकार आदि के सामने दबना।
चंपा *पुं.* {सं. चंपक} एक पेड़ जिसमें हलके पीले रंग के सुगंधित फूल लगते हैं; एक पुरी जो अंगदेश की राजधानी थी; एक प्रकार का बढ़िया केला; एक प्रकार का घोड़ा।
चंपाकली *स्त्री.* {हिं. चंपा + कली} गले में पहनने का एक गहना।
चंपारण्य *पुं.* {सं.} वह भूभाग जिसे आजकल चंपारन कहते हैं।
चंपी *स्त्री.* मुक्की।
चंपू *पुं.* {सं.} गद्य-पद्य मिश्रित काव्य।
चंबल[1] *स्त्री.* {सं. चर्मण्वती} मध्य भारत की एक नदी; पानी की बाढ़; सिंचाई हेतु नहर का पानी ऊपर चढ़ाने के लिए एक लकड़ी का प्रयोग।
चंबल[2] *पुं.* {हिं.} भिक्षा माँगने का खप्पर।
चंदली *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का छोटा प्याला।
चंबी *स्त्री.* {हिं.} चिपाड़, पट्टी, कतरन।
चंबू *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का धान, एक प्रकार की झारी-गड़ूवा टोंटीदार पात्र।
चँवर *पुं.* {सं. चामर} {*स्त्री.* अल्पा. चँवरी} सुरागाय की पूँछ के बालों का गुच्छा जो डंडी में बाँधकर राजाओं या देव-मूर्तियों के ऊपर डुलाया जाता है।
मुहा. चँवर डुलाना या ढुलाना = मूर्तियों, राजाओं आदि के सिर के ऊपर और इधर-उधर चँवर हिलाना।
घोड़ों आदि के सिर पर लगाई जानेवाली कलगी; झालर।
चँवरढार *पुं.* {हिं. चँवर + ढारना} चँवर डुलानेवाला सेवक।
चउरिंदी *वि.* {सं. चुरींद्रिय} जिसे चार इंद्रियाँ हों, चार इंद्रियोंवाला।
चउहट्ट *पुं.* = चौहट्टा
चउहा *वि.* {हिं. चौ = चार + हा (प्रत्य.)} चार या चारों प्रकार का; *क्रि. वि.* चार या चारों प्रकार से; चहूँधा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चऊ {हिं.} उपसर्ग 'चौ' के अर्थ में कुछ शब्दों में प्रयुक्त; यथा–चउक-चौक, चऊथा-चौथा, चउपाई-चौपाई आदि।

चऊर *पुं.* {हिं.} चमर, मोरछल।

चक[1] *पुं.* {सं. चक्र} चक्रवाक, चकवा पक्षी; चक्र नामक अस्त्र; पहिया; छोटा गाँव।

चक[2] *वि.* {हिं. चकाचक} भरपूर, यथेष्ट।

चक[3] *वि.* {सं.} चकपकाया हुआ, चकित।

चकई[1] *स्त्री.* {हिं. चकवा} मादा चकवा, मादा सुरखाब।

चकई[2] *स्त्री.* {सं. चक्र} गड़ारी के आकार का एक खिलौना, जिसे लपेटे हुए सूत की सहायता से घुमाते हैं, लट्टू।

चकवक *वि.* {हिं.} भौंचक्का, घबड़ाया हुआ।

चकवकाना *क्रि. अ.* {हिं.} भीग जाना।

चकचकाना *अ.* {अनु.} द्रव पदार्थ का रिसकर ऊपर या बाहर आना; भीगना।

चकचाना *अ.* चौंधियाना।

चकचकी *स्त्री.* {हिं.} करताल नामक बाजा!

चकचाल *स्त्री.* {सं. चक + हिं. चाल} चक्कर, फेरा।

चकचाव *पुं.* {अनु.} चकाचौंध।

चकचून, चकचूर *वि.* {सं. चक्र + चूर्ण} चूर किया हुआ, चकनाचूर।

चकचूरना *स.* {हिं. चकचूर} चूर-चूर करना, चकनाचूर करना।

चकचोह *स्त्री.* {अनु.}{*वि.* चकचोही} हँसी-ठट्ठा, चुहल।

चकचौंध *स्त्री.* 'चकाचौंध'।

चकचौंधना *अ.* {सं. चक्षु + अंध} चकाचौंध होना; *स.* चकाचौंध उत्पन्न करना।

चकचौंह *स्त्री.* 'चकाचौंध'।

चकचौंहना *वि.* {हिं. चकाचौंध} चकाचौंध उत्पन्न करनेवाला; देखने योग्य, सुंदर।

चकडोर *स्त्री.* {हिं. चक + डोर} चकई नाम का खिलौना।

चकती *स्त्री.* {सं. चक्रवत्} चमड़े, कपड़े आदि का गोल या चौकोर छोटा टुकड़ा; पैबंद, थिगली। *मुहा. बादल में चकती लगाना* = असंभव कार्य करने का प्रयत्न करना।

चकत्ता[1] *पुं.* {सं. चक्र + वर्त} रक्तविकार आदि के कारण शरीर पर पड़नेवाला गोल दाग या सूजन, ददोरा।

चकत्ता[2] *पुं.* {तु चग़ताई} तातार अमीर चगताई खाँ, जिसके वंश में बाबर, अकबर आदि हुए थे; चकताई वंश का पुरुष; बहुत बड़ा राजा, महाराज, बादशाह।

चकना *अ.* {सं. चक = भ्रांत} चकित या भौचक्का होना; चौंकना; चकपकाना।

चकनाचूर *वि.* {हिं. चक = भरपूर + चूर} जो बिल्कुल टुकड़े-टुकड़े हो गया हो चूर-चूर; बहुत थका हुआ।

चकपक *वि.* {हिं. चकपकाना} चकित, स्तंभित।

चकफेरी *स्त्री.* {हिं. चक + फेरा} किसी चीज के चारों ओर घूमने की क्रिया या भाव; परिक्रमा, भँवरी।

चकबंदी *स्त्री.* {हिं. चक + फा. बंदी} भूमि को कई भागों या चकों में बाँटना; आस-पास के कई खेतों को एक में मिलाकर उनका एक चक बनाना।

चकबक *वि.* 'चकपक'।

चकमक *पुं.* {तु.} एक प्रकार का पत्थर, जिसपर चोट पड़ने से आग निकलती है।

चकमा *पुं.* {सं. चक्र = भ्रांत} भुलावा, धोखा, छल।

चकर *पुं.* चकवा, चक्रवाक, चक्कर।

चकरवा *पुं.* {हिं.} कठिन अवस्था, चक्कर, असमंजस, बखेड़ा, झगड़ा।

चकरा *वि.* {सं. चक्र} {*स्त्री.* चकरी} चौड़ा, विस्तृत; *पुं.* चक्कर; चकला।

चकराना *अ.* {सं. चक्र} (सिर का) चक्कर खाना या घूमना; चक्कर या धोखे में पड़ना, भ्रांत होना; चकपकाना, चकित होना; *स.* चकित करना।

चकरानी *स्त्री.* {हिं.} दासी, नौकरानी।

चकरी *स्त्री.* {सं. चक्री} एक प्रकार की छोटी चक्की; चकई (खिलौना)।

चकलई *स्त्री.* = चौड़ाई।

चकला *पुं.* {सं. चक्र, हिं. चक + ला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* अल्पा. चकली} पत्थर या काठ का वह गोल पटरा, जिसपर रोटी, पूरी आदि बेलते हैं; भूखंड, इलाका; वेश्याओं का बाजार।

चकलाना *क्रि.स.* {हिं.} चौड़ा करना।

चकली *स्त्री.* {हिं.} गड़ारी, घिरनी, छोटा चकला।

चकलेदार *पुं.* {हिं. चकला} किसी भूखंड या चकले का कर संग्रह करनेवाला।

चकल्लस *स्त्री.* {अनु. चक} झगड़ा-बखेड़ा, झंझट; चार मित्रों में होनेवाला हास-परिहास।

चकवँड़ *पुं.* {सं. चक्रमर्द} एक प्रकार का जंगली बरसाती पौधा।

चकवा *पुं.* {सं. चक्रवात} {*स्त्री.* चकवी, चकई} एक जलपक्षी जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह रात को अपने जोड़े से दूर हो जाता है, सुरखाब।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चकवाना *अ.* चपकाना।
चकवार *पुं.* कछुआ।
चकवाह *पुं.* चकवा।
चकवै *पुं.* चक्रवती (राजा); चकोर।
चकहा *पुं.* पहिया; चक्का।
चका *पुं.* {सं. चक्र} चक्का, चाक; पहिया; चकवा पक्षी।
चकाचक *वि.* {अनु.} चटकीला; मजेदार; बहुत अधिक; बहुत बढ़िया।
चकाचौंध *स्त्री.* {सं. चक् = चमकना + चौ = चारों ओर + अंध} बहुत तेज चमक से आँखों में होनेवाली झपक, तिलमिली।
चकाना *अ.* 'चकपकाना'।
चकाबू *पुं.* चक्रव्यूह; भूल-भूलैया।
चकासना *अ.* चमकना।
चकित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* चकिता} चकपकाया हुआ, विस्मित, हक्का-बक्का; घबराया हुआ; सशंकित।
चकिताई *स्त्री.* {हिं. चकित} चकित होने की क्रिया या भाव, आश्चर्य।
चकुला *पुं.* {देश.} चिड़िया का बच्चा, चेंटुआ।
चकृत *वि.* चकित।
चकेंड़ी *स्त्री.* {सं. चक्रभाण्डिका, प्रा. चक्कहंडिया} मिट्टी की वह हाँड़ी जिसमें पानी भरकर कुंहार अपने चाक के पास रखे रहते हैं।
चकेढ *पुं.* {हिं.} कुंम्हार का चाक घुमाने का डंडा।
चकेवा *पुं.* चकवा।
चकेवै *पुं.* चकवै।
चकैया *वि.* {हिं. चाक या चकई} चाक या चकई की तरह गोल; *स्त्री.* चकई।
चकोट *स्त्री.* {हिं. चकोटना} चकोटने की क्रिया या भाव; चकोटने से होनेवाला क्षत या घाव।
चकोटना *स.* {हिं. चिकोटी} चुटकी या चिकोटी काटना।
चकोतरा *पुं.* {सं. चक्र = गोला} एक प्रकार का बड़ा नींबू।
चकोर *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* चकोरी, चकोरिया} एक प्रकार का तीतर जो चंद्रमा का प्रेमी और अंगार खानेवाला माना जाता है।
चकोरी *स्त्री.* {हिं.} मादा चकोर।
चकोह *पुं.* {हिं.} पानी का भँवर।
चकौंथ *पुं.* {हिं.} ऋण के बदले में पशु देना।
चकौंध *स्त्री.* चकाचौंध।
चक्क *पुं.* {सं. चक्र} चक्रवाक पक्षी; कुम्हार का चाक; दिशा, ओर; चक।
चक्कर *पुं* {सं. चक्र} पहिए की तरह (घूमनेवाली) कोई गोल वस्तु चाक; गोल घेरा, मंडल; गोलाई में घूमना, परिक्रमा, फेरा; पहिए की तरह अक्ष पर घूमना।
मुहा. चक्कर काटना = चारों ओर घूमना, मँडराना; *चक्कर खाना* = पहिए की तरह घूमना, भटकना, हैरान होना।
रास्ते का घुमाव-फिराव; हैरानी; बखेड़ा, झंझट।
मुहा. किसी के चक्कर में आना या पड़ना = किसी के धोखे में फँसना।
सिर घूमना, घुमटा।
चक्कवई *वि.* चक्रवर्ती राजा।
चक्कस *पुं.* {हिं.} बुलबुल या श्येन पक्षी के बैठने का अड्डा।
चक्की *स्त्री.* {सं. चक्री} आटा आदि पीसने का पत्थर का यंत्र, जाँता।
मुहा. चक्की पीसना = कठोर परिश्रम का काम करना।
चक्कू *पुं.* = चाकू।
चक्खी *स्त्री.* {हिं. चखना} चखने या थोड़ा खाने के लिए कोई चटपटी और स्वादिष्ट चीज, चाट।
चक्र *पुं.* {सं.} {*वि.* चक्रीय} कोई ऐसी गोल (वर्तुल) चीज जो प्रायः घूमती रहती हो या घूमते रहने के लिए बनाई गई हो, जैसे गाड़ी का पहिया, आटा पीसने की चक्की या कुम्हार का चाक जिसपर मिट्टी के बरतन बनते हैं; फेरा, चक्कर; उतना समय जितने में कुछ विशिष्ट घटनाएँ किसी क्रम से होती हैं और फिर उतने ही समय में जिनकी पुनरावृत्ति होती है (साइकिल); प्राचीनकाल का एक प्रकार का अस्त्र जो छोटे पहिए के आकार का होता था; योग के अनुसार शरीर में के सात पद्म या विशिष्ट स्थान जो आधुनिक विज्ञान के अनुसार कुछ विशिष्ट जीवन-रक्षिणी गिल्टियों के आसपास पड़ते हैं। इनके नाम हैं—विशुद्ध, अनाहत, मणिपुर, मूलाधार, आज्ञा, स्वाधिष्ठान और सहस्रार; कुछ विशेष प्रकार या वर्ग के लोगों का दल या मंडली; चुपचाप एक जगह बैठकर गुप्त या अदृश्य रूप से की जानेवाली कार्रवाई, जैसे यह सारा चक्र आपका ही चलाया हुआ है; बंदूक से गोली चलाने की क्रिया (संख्या के विचार से), जैसे पुलिस ने चार एक गोलियाँ चलाईं (राउण्ड); धातु का एक विशेष आकार का टुकड़ा जो प्रायः सैनिकों को कोई अच्छा या वीरतापूर्ण काम करने पर पदक या तमगे के रूप में दिया जाता है, जैसे वीरचक्र, महावीर चक्र (क्रास)।
चक्रक्रम *पुं.* {सं.} कुछ कार्यों या बातों के बार-बार या रह-रहकर होने का वैसा ही क्रम,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसा चक्र के घूमते रहने से होता है, चक्र की तरह बार-बार घूमकर आनेवाला क्रम।

चक्रगुच्छ पुं. {सं.} अशोक का वृक्ष।

चक्रगोरता पुं. {सं.} राज्य रक्षक।

चक्रचर पुं. {सं.} टोली, कुम्हार।

चक्रदंड पुं. {सं.} एक प्रकार का व्यायाम।

चक्रदंती *स्त्री.* {सं.} जमालगोटा।

चक्रदंष्ट्र पुं. {सं.} शूकर, सूअर।

चक्रधर पुं. {सं.} विष्णु; श्रीकृष्ण।

चक्रपाणि पुं. {सं.} विष्णु।

चक्रपूजा *स्त्री.* {सं.} तांत्रिकों की एक प्रकार की पूजा।

चक्रबंध पुं. {सं.} चक्र के आकार का एक प्रकार का चित्रकाव्य।

चक्रवर्ती *वि.* {सं. चक्रवर्तिन्} {*स्त्री.* चक्रवर्तिनी} वह राजा जिसका राज्य बहुत दूर-दूर तक चारों तरफ फैला हो।

चक्रवाक पुं. {सं.} चकवा पक्षी।

चक्रवात पुं. {सं.} बवंडर।

चक्रवाल पुं. {सं.} मंडल, घेरा।

चक्रवृत्ति *स्त्री.* {सं.} एक वर्णवृत्त नामक।

चक्रांकित *वि.* {सं.} चक्र का चिह्न, छापा या दागा हुआ।

चक्रांत पुं. {सं.} गुप्त मंत्रणा, षड्यंत्र।

चक्रांश पुं. {सं.} राशिचक्र का 360वाँ अंश।

चक्राकार *वि.* {सं.} मंडलाकार, गोल।

चक्रारट पुं. {सं.} बाजीगर, मदारी, साँप का विष उतारनेवाला।

चक्रिक पुं. {सं.} चक्र धारनेवाला।

चक्रिका *स्त्री.* {सं.} घुटने की गोल हड्डी।

चक्रित *वि.* चकित।

चक्री पुं. {सं. चक्रिन्} वह जो चक्र धारण करे; विष्णु; चक्रवाक, चकवा; चक्रवर्ती राजा।

चक्रीय *वि.* {सं.} चक्र-संबंधी, चक्र का; चक्र की तरह घूम-घूम या रह-रहकर बार-बार होनेवाला (साइक्लिक)।

चक्षु पुं. {चक्षुस्} आँख, नेत्र।

चक्षुरिंद्रिय *स्त्री.* {सं.} नेत्र, आँख।

चख पुं. {सं. चक्षुस्} आँख।

चखचख *स्त्री.* {अनु.} तकरार, कलह।

चखचौंध *स्त्री.* चकाचौंध।

चखना *स.* {सं. चष} थोड़ा खाकर स्वाद देखना।

चखाचखी *स्त्री.* {हिं. चख = झगड़ा} लाग-डाँट, प्रतियोगिता; चखचख।

चखाना *स.* {हिं. 'चखना' का प्रे.} स्वाद का परिचय कराना।

चखु पुं. चक्षु।

चखोड़ा पुं. डिठौना।

चगड़ *वि.* {देश.} चतुर, चालाक।

चगताई पुं. {तु.} तुर्कों की एक प्रसिद्ध जाति।

चगर पुं. {?} बाज की तरह की एक शिकारी चिड़िया।

चचा पुं. चाचा।

चचिया *वि.* {हिं. चाचा} संबंध में चाचा के स्थान पर पड़नेवाला, जैसे चचिया ससुर।

चचींड़ा पुं. {सं. चिचिंडा} एक लता और उसमें लगनेवाला ककड़ी की तरह का फल जिसकी तरकारी बनाते हैं।

चची *स्त्री.* {हिं.} चाचा की स्त्री, चाची।

चचेरा *वि.* {हिं. चाचा} चाचा से उत्पन्न, जैसे चचेरा भाई; चाचा के विचार से संबद्ध, जैसे चचेरी सास।

चचोड़ना *स.* {अनु.} दाँत से नोचकर या खींचकर खाना।

चचोड़वाना *क्रि. स.* {हिं.} दबाकर चूसने देना।

चट[1] *क्रि.वि.* {सं. चटुल =चंचल} जल्दी से, झट, तुरंत।

चट[2] *स्त्री.* {अनु.} शीशे, हड्डी आदि के टूटने का शब्द।

चट[3] *वि.* {चाटना} चाट-पोंछकर खाया हुआ।

मुहा. चटकर जाना = सब खा जाना।

चटक[1] पुं. {सं.} गौरेया, चिड़ा (पक्षी)।

चटक[2] *स्त्री.* {सं. चटुल = सुन्दर} चटकीलापन, चमक-दमक; शोभा, छटा; *वि.* चटकीला; फुर्तीला।

चटक[3] *स्त्री.* {सं. चटुल} तेजी, फुरती।

चटक[4] *वि.* {हिं. चाटना} चटपटा, चटकारा।

चटकदार *वि.* चटकीला।

चटकई *स्त्री.* {हिं.} शीघ्रता, तीव्रता।

चटकना[1] *अ.* {अनु. चटपट} चटपट शब्द करते हुए टूटना, चिटकना।

चटकना[2] पुं. {अनु. चट} तमाचा, थप्पड़।

चटकनी *स्त्री.* {हिं.} किवाड़ बंद करने की सिटकनी।

चटक-मटक *स्त्री.* {हिं. चटक + मटक} बनाव-सिंगार; नाज-नखरा।

चटकवाही *स्त्री.* {हिं.} जल्दी।

चटकाई *स्त्री.* {हिं. चटक} चटकीलापन।

चटकाना *स.* {अनु. चट} किसी वस्तु को चटकने में प्रवृत्त करना, तोड़ना; ऐसा करना जिसमें चटपट शब्द हो।

मुहा. जूतियाँ चटकाना = व्यर्थ इधर-उधर मारा-मारा फिरना।

अलग या दूर करना; चिढ़ाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चटकारा *वि.* चटपटा, चटकीला।
चटकारी *स्त्री.* {हिं.} चुटकी।
चटकाली *स्त्री.* {सं. चटक + आलि} चिड़ियों की पंक्ति या समूह।
चटकाहट *स्त्री.* {सं.} चटकने या टूटने का शब्द।
चटकी *स्त्री.* {हिं.} बुलबुल की तरह की चिड़िया।
चटकीला *वि.* {हिं. चटक + ईला (प्रत्य.)} {*भाव.* चटकीपन} जिसका रंग तेज हो, शोख, भड़कीला; चमकीला, चमकदार; चटपटा।
चटकोरा *पुं.* {देश.} एक प्रकार का खिलौना।
चटखना *अ. पुं.* चटकना।
चटचट *स्त्री.* {अनु.} किसी चीज के चटकने आदि के कारण होनेवाला शब्द।
चटचटा *वि.* चटचट शब्द करनेवाला।
चटचटाना *अ.* {सं. चट =भेदन} चटचट करते हुए टूटना, फूटना या जलना।
चटचेटक *पुं.* {सं. चेटक} इंद्रजाल।
चटनी *स्त्री.* {हिं. चाटना} वह चीज जो चाटकर खाई जाए, अवलेह; भोजन के साथ चाटने की गोली चटपटी वस्तु।
चटपट *क्रि. वि.* {अनु.} तुरंत।
चटपटा *वि.* {हिं. चाट} {*स्त्री.* चटपटी} मिर्च, मसाले आदि से युक्त और खाने में मजेदार।
चटपटाना *अ.* छटपटाना।
चटपटी *स्त्री.* {हिं. चटपट} {*वि.* चटपटिया} उतावली, व्यग्रता; व्याकुलता, घबराहट।
चट्टी *स्त्री.* (हिं.) एक मोटा अन्न।
चटवाना *पुं.* {सं.} चाटना का प्रे.।
चटशाला *स्त्री.* चटसार।
चटसार *स्त्री.* {हिं. चट्टा = चेला + सार = शाला} पाठशाला, विद्यालय।
चटाई[1] *स्त्री.* {सं. चट = चटाई} फूस, सींक आदि का बना हुआ बिछावन।
चटाई[2] *स्त्री.* {हिं. चाटना} चाटने या चटाने की क्रिया या भाव।
चटाक *पुं.* {हिं. चटकना अनु.} मारने, गिरने, टूटने आदि के कारण होनेवाला (चट) शब्द; *क्रि. वि.* चट शब्द उत्पन्न करते हुए; चटपट, तुरंत।
चटाक-पटाक *क्रि. वि.* चटपट, तुरंत।
चटाना *स.* {हिं. चाटना का प्रे.} चाटने में प्रवृत्त करना; थोड़ा-थोड़ा खिलाना; घूस या रिश्वत के रूप में किसी को कुछ देना; छुरी, तलवार आदि की धार तेज करना।
चटापटी *स्त्री.* {हिं. चटपट} शीघ्रता; महामारी आदि, जिसमें लोग चटपट मर जाते हैं।
चटावन *पुं.* {हिं. चटाना} अन्नप्राशन।
चटिक *क्रि. वि.* {हिं. चट} चटपट।
चटियल *वि.* {देश.} (मैदान) जिसमें पेड़-पौधे न हों, निचाट।
चटिया *पुं.* {हिं. चटशाला} किसी की चटशाला में पढ़ा हुआ, चेला, शिष्य।
चटी *स्त्री.* चटसार; *स्त्री.* चट्टी।
चटुल *वि.* {सं.} चंचल, चपल; सुंदर; मधुरभाषी।
चटुला *स्त्री.* {सं.} बिजली; प्राचीनकाल का स्त्रियों का एक प्रकार का केश- विन्यास।
चटोरा *वि.* {हिं. चाट + ओरा (प्रत्य.)} {*भाव.* चटोरापन} जिसे स्वादिष्ट चीजें खाने की लत हो, स्वादलोलुप।
चट्ट *वि.* {हिं. चाटना} खा-पीकर समाप्त किया हुआ; जिसका कुछ भी अंश न बच रहा हो; *क्रि. वि.* चट।
चट्टा[1] *पुं.* {देश.} चटियल मैदान; चकत्ता, ददोरा; एक पर एक रखी हुई ईंटों की पंक्तियों की समूह।
चट्टा[2] *पुं.* {सं. चटक} दास, चेला।
चट्टान *स्त्री.* {हिं. चट्टा} पहाड़ी भूमि में पत्थर का चिपटा बड़ा टुकड़ा; भारी और बड़ा पत्थर।
चट्टानी *वि.* {हि. चट्टान} चट्टानों से भरा।
चट्टा-बट्टा *पुं.* {हिं. चट्ट + बट्टा = गोल} बच्चों के खेलने का लकड़ी का बना खरल और मूसल; वे गोले आदि जो बाजीगर झोले में से निकालकर तमाशे में दिखाते हैं।
मुहा. एक ही थैली के चट्टे-बट्टे = एक ही तरह के लोग; *चट्टे-बट्टे लड़ाना* = झगड़ा या लड़ाई कराना।
चट्टी[1] *स्त्री.* {देश.} टिकान, पड़ाव।
चट्टी[2] *स्त्री.* {हिं. चपटा या अनु. चटचट} खुली एड़ी का एक प्रकार का जूता जिसमें पंजे के ऊपर चमड़ा रहता है, स्लीपर।
चट्टू[1] *वि.* {हिं. चाट} चटोरा।
चट्टू[2] *पुं.* {अनु.} पत्थर का बड़ा खरल।
चड्ढा *वि.* {हिं.} मूर्ख; *पुं.* जाँघ का ऊपरी भाग।
चड्ढी *स्त्री.* {हिं. चढ़ना} एक खेल जिसमें लड़के एक दूसरे की पीठ पर चढ़कर कुछ दूर तक चलते हैं।
चढ़त *स्त्री.* {हिं. चढ़ना} देवता पर चढ़ाई हुई वस्तु या धन।
चढ़ती जवानी *स्त्री.* वह उमर जब जवानी चढ़ रही हो।
चढ़न *स्त्री.* = चढ़त।
चढ़ना *अ.* {सं. उच्चलन} ऊपर की ओर जाना, चढ़ाई या ऊँचाई की तरफ जाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. *चढ़ बनना* = सफलता मिलने या बात रह जाने के कारण डींग हाँकने का अवसर मिलना। ऊपर की ओर अग्रसर होना; ऊपर से मढ़ा जाना; उन्नति करना; (नदी या पानी का) तल ऊँचा होना या बढ़ना; धावा या चढ़ाई होना; महँगा होना, दाम या भाव बढ़ना; बाजों आदि के कसे होने के कारण उनका सुर ऊँचा होना; देवता आदि की भेंट दिया जाना; सवार होना; संवत्, मास, नक्षत्र आदि आरंभ होना; खाते आदि में लिखा जाना, टँकना, दर्ज होना; पकने के लिए चूल्हे पर रखा जाना; देन, भार आदि के रूप में किसी के ऊपर होना या आना।

चढ़वाना *स.* {हिं. 'चढ़ाना' का प्रे.} चढ़ने या चढ़ाने का काम दूसरे से कराना।

चढ़ाई *स्त्री.* {हिं. चढ़ना} चढ़ने की क्रिया या भाव; ऊँचाई की ओर जानेवाली भूमि; धावा, आक्रमण; देवता को भेंट चढ़ाने की क्रिया।

चढ़ा-ऊपरी *स्त्री.* {हिं. चढ़ना + ऊपर} किसी को पीछे करके आप उससे आगे बढ़ने का प्रयत्न, प्रतियोगिता, लाग-डाँट, होड़।

चढ़ाना *स.* {हिं. 'चढ़ना' का *स.*} चढ़ाई या ऊपर की ओर ले जाना; भेंट के रूप में देना; पीना; मद, मर्यादा, वर्ग आदि में बढ़ाना; खाते, हिसाब आदि में लिखना; देन, भार आदि के रूप में किसी के ऊपर बैठाना या रखना, जैसे सवारी या माल चढ़ाना; किसी में कुछ अभिमान उत्पन्न करना, बढ़ाना।

चढ़ा-चढ़ी *स्त्री.* {हिं.} चढ़ा ऊपरी, लागडाट।

चढ़ानी *स्त्री.* {हिं.} ऊपर की ओर उठता हुआ तल।

चढ़ाव *पुं.* {हिं. चढ़ना} चढ़ने या चढ़ाने की क्रिया या भाव; तेजी, महँगी; वृद्धि, बढ़ती; वह दिशा जिधर से जल की धारा बहकर आती हो, 'बहाव' का उलटा; चढ़ावा।

चढ़ावा *पुं.* {हिं. चढ़ना} विवाह के दिन दूल्हे की ओर से दुल्हन के लिए दिए जानेवाले गहने; देवता पर चढ़ाई जानेवाली सामग्री, पुजापा।

चढ़त *पुं.* {हिं.} चढ़नेवाला, सवार होनेवाला।

चढ़ैया *वि.* {हिं. चढ़ान + ऐया (प्रत्य.)} चढ़ने या चढ़ानेवाला।

चणक *पुं.* {सं.} चना।

चतर *पुं.* छत्र।

चतुःसीमा *स्त्री.* {सं.} किसी भवन या क्षेत्र आदि के चारों ओर की सीमा, चौहद्दी (एब्बटल)।

चतुरंग *वि.* {सं.} जिसके चार अंग हों; *पुं.* {सं.} सेना के ये चार अंग-हाथी, घोड़े, रथ और पैदल; चतुरंगिणी सेना; शतरंज।

चतुरंगिणी *स्त्री.* {सं.} हाथी, घोड़े, रथ और पैदल इन चार अंगोंवाली सेना, अक्षौहिणी।

चतुर *वि.* {सं.} {*स्त्री.* चतुरा} {*भाव.* चतुरता, चतुराई} बुद्धिमान; व्यवहार-कुशल; निपुण, दक्ष; धूर्त, चालाक।

चतुरई *स्त्री.* = चतुराई।

चतुरता *स्त्री.* {सं.} चतुराई, प्रवीणता।

चतुरनीक *पुं.* {हिं.} चतुरानन, ब्रह्मा।

चतुरपन *पुं.* {हिं.} चतुराई, चतुरता।

चतुरा *वि.* चतुर।

चतुराई *स्त्री.* {हिं. चतुर + आई (प्रत्य.)} चतुरता; चालाकी, धूर्तता।

चतुरात्मा *पुं.* {सं.} ईश्वर, विष्णु।

चतुरानन *पुं.* {सं.} ब्रह्मा जिसके चार मुँह माने जाते हैं।

चतुरापन *पुं.* {हिं.} निपुणता, चतुराई।

चतुराश्रम *पुं.* {सं.} चारों आश्रम ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और संन्यास।

चतुरिंदिय *पुं.* {सं.} चार इंद्रियों वाले जीव।

चतुर्गुण *वि.* {सं.} चौगुणा, चार गुणोंवाला।

चतुर्णवति *स्त्री.* {सं.} चौरानवें की संख्या।

चतुर्थ *वि.* {सं.} चौथा।

चतुर्थांश *पुं.* {सं.} चौथाई।

चतुर्थी *स्त्री.* {सं.} किसी पक्ष की चौथी तिथि, चौथ।

चतुर्दत्त *पुं.* {सं.} ऐरावत, हाथी।

चतुर्दश *पुं.* {सं.} चौदह; *वि.* चौदहवाँ।

चतुर्दशी *स्त्री.* {सं.} किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि, चौदस।

चतुर्दिक, चतुर्दिश *क्रि. वि.* {सं.} चारों ओर।

चतुर्दोल *पुं.* {सं.} चार कहारों से ढोयी जानेवाली सवारी।

चतुर्बाहु *पुं.* {सं.} शिव महादेव, विष्णु।

चतुर्धाम *पुं.* {सं.} चारों धाम-द्वारिका, रामेश्वर, पुरी और बदरिकाश्रम।

चतुर्भद्र *वि.* {सं.} धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-इन चारों का समुदाय।

चतुर्भुज *वि.* {सं.} {*स्त्री.* चतुर्भुजा} जिसकी या जिसमें चार भुजाएँ हों, चार भुजाओं वाला; *पुं.* विष्णु; चार भुजाओंवाला क्षेत्र।

चतर्भुजी *वि.* चतुर्भुज।

चतुर्मास *पुं.* = चातुर्मास।

चतुर्मुख *पुं.* {सं.} ब्रह्मा; *क्रि. वि.* चारों ओर।

चतुर्युग *पुं.* {सं.} चारों युग-सत्य, द्वापर, त्रेता और कलि।

चतुर्युगी *स्त्री.* {सं.} चारों युगों का समूह या समय, 4320000 वर्ष का समय, चौकड़ी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्वर्ग पुं. {सं.} अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष ये चारों पदार्थ।

चतुर्वर्ण पुं. {सं.} चारों वर्ण-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

चतुर्वाही पुं. {सं.} चार घोड़ों की गाड़ी, चौकड़ी।

चतुर्विंश *वि.* {सं.} चौबीसवाँ।

चतुर्विंशत्वि *स्त्री.* {सं.} चौबीस।

चतुर्वेदी पुं. {सं. चतुर्वेदिन्} चारों वेदों का ज्ञाता; ब्राह्मणों का एक वर्ग।

चतुष्कल *वि.* {सं.} जिसमें चार कलाएँ या मात्राएँ हों।

चतुष्कोण *वि.* {सं.} चौकोर।

चतुष्टय पुं. {सं.} चार चीजों का समूह।

चतुष्टोम पुं. {सं.} अश्वमेध यज्ञ का एक अंग।

चतुष्पथ पुं. {सं.} चौराहा।

चतुष्पद पुं. {सं.} चौपाया; *वि.* चार पदोंवाला।

चतुष्पदी *स्त्री.* {सं.} चार पदोंवाली कविता का गीत; चौपाई नामक छंद।

चतुष्पाठी *स्त्री.* {सं.} विद्यार्थियों के पढ़ने का स्थान, पाठशाला।

चतुस्पाणि *वि.पुं.* {सं.} चार हाथवाले (नारायण)।

चतुष्फल *वि.* {सं.} चौपहला।

चतुस्सोमा *स्त्री.* {सं.} चौहद्दी, चारों ओर की सीमा।

चतुष्पाद पुं. {सं.} चौपाया।

चत्वर पुं. {सं.} चौराहा; चबूतरा, वेदी; कोई चौकोर घिरा हुआ स्थान (स्क्वेयर)।

चत्वाल पुं. {सं.} होमकुंड, वेदी, चत्वर।

चदरा पुं. = चादर।

चदिर पुं. {सं.} चंद्रमा, कपूर, सर्प, हाथी।

चद्दर *स्त्री.* {फा. चादर} किसी धातु का लंबा-चौड़ा चौकोर पत्तर; एक प्रकार की छोटी तोप; चादर।

चनक पुं. चना (अन्न)।

चनकट पुं. {?} थप्पड़, तमाचा।

चनकना *अ.* चटकना।

चनन पुं. 'चंदन'।

चनवर पुं. {हिं.} ग्रास, कवर।

चनसित पुं. {सं.} महान्, श्रेष्ठ।

चना पुं. {सं. चणक} एक प्रसिद्ध अन्न, बूट, छोला।

मुहा. नाकों चने चबवाना = बहुत तंग या परेशान करना; *लोहे के चने चबाना* = बहुत कठिन काम करना।

चनाखार पुं. {हिं.} चने की पत्तियों और डंठल से निकाला हुआ क्षार।

चनार पुं. {हिं.} एक बड़ा पहाड़ी वृक्ष जिसकी लकड़ी घर बनाने के काम में आती है।

चनियारी पुं. {हिं.} सुंदर परोंवाला एक जलपक्षी।

चनोरी *स्त्री.* {हिं.} सफेद रोएँ की भेड़।

चपकन *स्त्री.* {हिं. चपकना} एक प्रकार का अंगा, अँगरखा; किवाड़, संदूक आदि में लोहे, पीतल आदि का वह दोहरा साज जिसमें ताला लगाकर वह बंद किया जाता है।

चपकना *अ.* चिपकना।

चपट पुं. {हिं.} तमाचा, चपत।

चपकुलिश *स्त्री.* {तु.} झंझट; असमंजस; भीड़भाड़।

चपटना *अ.* चिपकना; चिमटना।

चपटा *वि.* = चिपटा।

चपटी *स्त्री.* {?} योनि (बाजारू)।

चपटी नत्थी *स्त्री.* गत्ते की बनी वह साधारण नत्थी या दफ्ती, जिसपर कागज की नत्थियाँ रखकर बाँधी जाती हैं (फ्लैट फाइल); ताली, थपोड़ी।

चपड़गट्टू *वि.* {हिं.} आपदग्रस्त।

चपड़-चपड़ *स्त्री.* {अनु.} बिल्ली, कुत्ते आदि का पानी आदि पीते समय होनेवाला शब्द।

मुहा. चपड़-चपड़ करना = बढ़-बढ़कर बोलना।

चपड़ा पुं. {हिं. चपटा} साफ की हुई लाख का पत्तर; एक प्रकार का लाल फतिंगा।

चपड़ी *स्त्री.* {हिं.} पट्टिया।

चपत *स्त्री.* {सं. चर्पट} तमाचा, थप्पड़; आर्थिक हानि।

चपना *अ.* चँपना, दबना, कुचल जाना, लज्जित होना, सिर नीचा होना; नष्ट होना, चौपट होना।

चपनी *स्त्री.* {हिं. चपना} कोई चीज ढकने का छोटा कटोरा, कटोरी; दरियाई नारियल का कमंडल।

चपरगट्टू *वि.* {हिं. चौफेर + गटपट} चारों ओर से पकड़कर दबाया हुआ; विपत्ति का मारा, अभागा।

चपरना[1] *स.* {अनु. चपचप} चुपड़ना; परस्पर मिलाना।

चपरना[2] *अ.* {सं. चपल} जल्दी मचाना; चुपके से हट जाना, खिसक जाना।

चपरार *अव्य.* {हिं.} तुरंत, झटपट; *वि.* झूठा।

चपरास *स्त्री.* {हिं.} पेरी या पंरतले में लगाने की पट्टी, मुलम्मा करने की कलम, मलखम का एक व्यायाम, आरी का दाहिने-बायें झुकाव।

चपरासी[1] पु. {हिं. चपरासी} चौकीदार, अरदली आदि का बिल्ला।

चपरासी[2] पुं. {फा. चप = बायाँ + रास्त = दाहिना} वह नौकर जो चपरास लगाता हो; कार्यालय के कागज-पत्र आदि लाने ले जानेवाला नौकर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चपरि *क्रि. वि.* {सं. चपल} चटपट, एकदम से; जल्दी से।

चपरी *स्त्री.* {हिं.} एक कदन्न, खंसारी।

चपल *वि.* {सं.} {*भाव.* चपलता} स्थिर या शांत न रहनेवाला; फुरतीला; चंचल, चुलबुला; उतावला, जल्दबाज; चालाक।

चपलत्व *पुं.* {सं.} चपलता, चंचलता।

चपलता *स्त्री.* {सं.} 'चपल' का भाव; चंचलता; तेजी; धृष्टता, ढिठाई।

चपला *स्त्री.* {सं.} लक्ष्मी; बिजली; दुश्चरित्रा स्त्री; जीभ, जिह्वा; मदिरा, भाँग; आर्या छंद का एक भेद; *वि.* चपल का *स्त्री.*।

चपलाई *स्त्री.* = चपलता, चंचलता।

चपलाना *अ.* {सं. चपल} चलना; हिलना-डोलना; *स.* चलाना; हिलाना।

चपली *स्त्री.* =चप्पल।

चपवाना *क्रि.स.* {हिं.} दबवाना।

चपाट *पुं.* {हिं.} चौरस तल्ले का जूता जिसकी एड़ी उठी न हो।

चपाक *क्रि. वि.* चटपट।

चपाती *स्त्री.* {हिं. चर्पटी} पतली रोटी।

चपाना *स.* {हिं. चपना} किसी को चपने में प्रवृत्त करना; लज्जित या शर्मिन्दा करना।

चपेट *स्त्री.* {सं. चर्पट} थप्पड़; धक्का; झोंका; संकट।

चपेटना *स.* {हिं. चपेट} दबाना, दबोचना; फटकार बताना, डाँटना।

चपेटा *पुं.* चपेट।

चपेड़ *स्त्री.* {सं. चर्पट} थप्पड़, तमाचा।

चपेरना *स.* = चाँपना।

चपौटी *स्त्री.* {हिं.} सिर में चिपकी हुई छोटी टोपी।

चपौर *पुं.* {हिं.} चपाट जूता।

चप्पड़ *पुं.* 'चिप्पड़'।

चप्पन *पुं.* {हिं.} नीची बाटी का छोटा कटोरा।

चप्पल *स्त्री.* {चपचप से अनु.} खुली एड़ी का एक प्रकार का जूता, जिसके ऊपर चमड़े की पट्टियाँ लगी रहती हैं।

चप्पा *पुं.* {सं. चतुष्पाद} थोड़ा या छोटा भाग; छोटा भूखंड; चौड़ा टुकड़ा, चिप्पड़।

चप्पी *स्त्री.* {हिं.} हाथ-पैर दबाने की सेवा।

चप्पू *पुं.* {हिं. चाँपना} नाव का वह डाँड़, जो पतवार का भी काम देता है, किलवारी।

चबक *स्त्री.* {हिं.} पीड़ा, टीस; *वि.* डरपोक।

चबकना *क्रि. अ.* {हिं.} टीसना, चिलकना।

चबवाना *क्रि. स.* {हिं.} चबाने का काम कराना।

चबड़-चबड़ *स्त्री.* {अनु.} दाँतों से कड़ी चीज चबाने पर होनेवाला शब्द; फूहड़ ढंग से बोलने का शब्द।

चबर-चबर *स्त्री.* = चबड़-चबड़।

चबाना *स.* {सं. चर्वण} दाँतों से कुचलना या कुचलकर खाना;

मुहा. चबा-चबाकर बातें करना = रुक-रुककर एक-एक शब्द बोलना, मठार-मठारकर बातें करना।

दाँतों से काटना या दरदराना।

चबाव (न) *पुं.* चबाव।

चबारा *पुं.* {हिं.} घर के ऊपर का कमरा, चौबारा।

चबूतरा *पुं.* {सं. चत्वर} बैठने के लिए चौरस और ऊँची जगह, चौंतरा।

चबेना *पुं.* {हिं. चबाना} भुना हुआ अनाज जो चबाकर खाया जाता है, चर्वण।

चबेनी *स्त्री.* चबेना।

चब्भो *स्त्री.* {?} किसी को पानी में दिया जानेवाला गोता।

चभड़-चभड़ *स्त्री.* = चबड़-चबड़; खाना खाते समय मुख से निकलने का शब्द।

चभाना *स.* {हिं. चाभना} भोजन करना; खिलाना।

चभोक *वि.* {हिं.} मूर्ख, निर्बुद्धि।

चभोरना *स.* {हिं. चुभकी} डुबाना; तरल पदार्थ से तर करना; गोता देना।

चमक *स्त्री.* {चम से अनु.} प्रकाश, रोशनी; कांति, आभा; कमर या पीठ में अचानक उठा हुआ दर्द, चिलक; झलक, लुचक, ज्योति।

चमक-चाँदनी *स्त्री.* {हिं.} बनी-ठनी दुश्चरित्रा स्त्री।

चमकताई *स्त्री.* चमक।

चमक-दमक *स्त्री.* {हिं. चमक + दमक} दीप्ति, आभा; तड़क-भड़क।

चमकदार *वि.* चमकीला।

चमकना *अ.* {हिं. चमक} कांति या आभा से युक्त होना, जगमगाना, दमकना; उन्नति करना; वृद्धि पर होना; चौंकना, भड़कना; उँगलियाँ आदि हिलाकर स्त्रियों की तरह मटकना; झटका लगने से अचानक कहीं दर्द होना।

चमकनी *वि. स्त्री.* {हिं.} जल्दी से चिढ़ जानेवाली।

चमकवाना *क्रि. स.* {हिं.} चमकाने का काम दूसरे से कराना।

चमकाना *स.* {हिं. चमकना} 'चमकना' का *स.*; घोड़े को तेजी से बढ़ाना; उँगलियाँ आदि हिलाकर चिढ़ाना या नकल उतारना, मटकाना, दमकना, जगमगाना, भड़कीला, प्रसिद्ध होना, उन्नति करना, भड़क उठना, जल्दी से निकल भागना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमकारा *वि.* चमकीला।
चमकारी *स्त्री.* चमक।
चमकी *स्त्री.* {हिं. चमक} रुपहले या सुनहले पत्तरों के छोटे गोल टुकड़े, सितारे, तारे।
चमकीला *वि.* {हिं. चमक + ईला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* चमकीली} जिसमें चमक हो, चमकनेवाला, चमकदार।
चमकौअल *स्त्री.* {हिं. चमकना} स्त्रियों की तरह उँगलियाँ चमकाने की क्रिया या भाव, मटकौवल।
चमगादड़ *वि.* {सं. चर्मचटक} एक प्रकार का उड़नेवाला प्रसिद्ध जंतु, जिसके पैर जालदार होते हैं।
चमचम *स्त्री.* {देश.} छेने की एक बँगला मिठाई; *वि.* चमाचम।
चमचमाना *अ.* 'चमकना'; प्रकाशित होना; *स.* चमकाना, चमक लाना; झलकना।
चमचा *पुं.* {तु. चम्चः} चम्मच; खुशामदी व्यक्ति।
चमचिच्चड़ *वि.* {हिं.} किलनी की तरह चमड़े में चिपटनेवाली, पीछा न छोड़नेवाला।
चमची *स्त्री.* {हिं.} छोटा चम्मच, आचमनी।
चमजुई, जोई *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार की बहुत छोटी किलनी, चिमटनेवाली वस्तु।
चमड़ा *पुं.* {सं. चर्म} प्राणियों के शरीर का ऊपरी आवरण, चर्म, त्वचा।
मुहा. चमड़ा उधेड़ना या खींचना = शरीर से चमड़ा खींचकर अलग करना; बहुत कड़ा दंड देना।
मृत पशुओं की उतारी हुई खाल जिससे जूते आदि बनते हैं; छाल, छिलका।
चमड़ी *स्त्री.* चमड़ा।
चमत्कार *पुं.* {सं.} {*वि.* चमत्कारी, चमत्कृत} कोई ऐसा आश्चर्यजनक कार्य या व्यापार जो साधारणतः देखने में न आता हो और जो अलौकिक और असंभव-सा समझा जाता हो, आश्चर्य का विषय या वैचित्र घटना, करामात (मिराकिल); अनूठापन, विचित्रता।
चमत्कारक *वि.* {सं.} आश्चर्यजनक, अनूठा।
चमत्कारी *वि.* {सं. चमत्कार} चमत्कार दिखानेवाला; जिसमें कोई चमत्कार या करामात हो।
चमत्कृत *वि.* {सं.} चकित, विस्मत।
चमत्कृति *स्त्री.* {सं.} चमत्कार; आश्चर्य।
चमन *पुं.* {फा.} हरी क्यारी; बगीचा, फुलवारी।
चमर *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* चमरी} सुरागाय; चँवर।
चमरशिखा *स्त्री.* {हिं.} घोड़े की कलगी।
चमरस *पुं.* {हिं.} चमड़े या त्वचा पर रगड़ से उत्पन्न घाव।
चमरा *पुं.* चमार; चमड़ा।
चमरी *स्त्री.* चमार; सुरागाय।
चमरौर *पुं.* {हिं.} कृषिफल का अंश जो चमारों को मजदूरी में दिया जाता है।
चमरौरी *स्त्री.* {हिं.} चमार की बस्ती या गाँव।
चमरौधा *पुं.* {हिं.} चमौवा।
चमला *पुं.* {हिं.} भीख माँगने का खप्पर।
चमस *पुं.* {सं.} लकड़ी का चम्मच के आकार का एक यज्ञपात्र, चम्मच, उर्द का आटा, धुआँस, एक ऋषि का नाम।
चमसा *पुं.* {हिं.} चमचा, चम्मच।
चमाऊ *पुं.* {हिं.} चामर, चँवर, चमर।
चमाक *पुं.* {हिं.} प्रकाश, चमक।
चमाचम *वि.* {अनु.} खूब चमकता हुआ।
चमार *वि.* {सं. चर्मकार} {*स्त्री.* चमारिन, चमारी} .एक जाति जो चमड़े की चीजें बनाती है; एक जाति जो गलियों में झाड़ू देती है।
चमारी *स्त्री.* {हिं. चमार} चमार जाति की स्त्री; चमार का काम।
चमार चौदस *पुं.* {हिं.} चमारों का उत्सव।
चमारिन, चमाइन *स्त्री.* {हिं.} चमार की स्त्री।
चमीकर *पुं.* {सं.} सोने की खान।
चमू *स्त्री.* {सं.} सेना, फौज; वह सेना जिसमें 729 हाथी, 729 रथ, 2187 सवार और 3645 पैदल हों।
चमेली *स्त्री.* {सं. चम्पकवेलि} सुगंधित फूलोंवाला एक पौधा; इस पौधे का सफेद छोटा फूल।
चमोटा *पुं.* {हिं. चाम + ओटा (प्रत्य.)} चमड़े का वह टुकड़ा जिसपर नाई छुरे की धार तेज करते हैं।
चमोटी *स्त्री.* {हिं. चाम + आटी (प्रत्य.)} चाबुक, कोड़ा; पतली छड़ी, कमची, बेंत; चमोटा।
चमौवा *पुं.* {हिं. चाम} एक तरह का भद्दा देशी जूता।
चम्मच *पुं.* {तु. चम्चः} एक प्रकार की छोटी हलकी कलछी, चमचा।
चय *पुं.* {सं.} समूह, राशि; टीला, ढूह; गढ़, किला; चहार-दीवारी; चबूतरा।
चयन *पुं.* {सं.} संग्रह, संचय; चुनने का काम, चुनाई; यज्ञ के लिए अग्नि का एक संस्कार।
चयनक *पुं.* {सं.} कुछ चुने हुए व्यक्तियों का वह वर्ग या समूह, जिसमें से किसी विशेष कार्य के लिए कोई या कुछ व्यक्ति फिर से चुने या नियत किए जाते हैं।
चयना *स.* {सं. चयन} चयन करना, चुनना।
चयनिका *स्त्री.* {सं.} चुनी हुई वस्तुओं या बातों का संग्रह; पत्र, पत्रिकाओं आदि का वह विभाग

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसमें दूसरों से ली हुई अच्छी बातें रहती हैं (पाठकों की दृष्टि में इस अंश का विशेष महत्व होता है)।

चयनीय *वि.* {सं.} चुनने योग्य।

चयित *वि.* {सं.} चुना हुआ।

चर *पुं.* {सं.} राजा या राज्य की ओर से नियुक्त वह मनुष्य, जो घूम-घूमकर भीतरी बातों का पता लगाता हो, भेदिया, जासूस; विशेष कार्य के लिए भेजा हुआ आदमी, दूत; नदी के किनारे की भूमि; नदियों के बीच का टापू, रेता; *वि.* {सं.} चलनेवाला, जैसे गुप्तचर, जलचर; जो इधर-उधर हटाया जा सके, जंगम, चल।

चरई *स्त्री.* {सं. चारिका} जुलाहों की परिभाषा में वह स्थान जहाँ ताने के सूत छोटे तागों से बाँधे जाते हैं; *स्त्री.* चरनी।

चरक *पुं.* {सं.} गुप्तचर, भेदिया, दूत, आयुर्वेद के एक प्रधान आचार्य, पथिक, बटोही, भिक्षुक।

चरक संहिता *स्त्री.* {सं.} चरक मुनि का बनाया हुआ चिकित्सा-ग्रंथ।

चरकटा *पुं.* {हिं. चारा + काटना} वह जो जानवरों के लिए चारा, घास आदि काटने का काम करता हो।

चरकना *अ.* तड़कना।

चरका *पुं.* {फा. चरकः} हलका घाव या जख्म; हानि; धोखा, छल।

चरह *पुं.* {हिं.} लकड़ी जिसमें चीर न हो।

चरख *पुं.* {फा. चर्ख़} घूमनेवाला गोल चक्कर; खराद; ढेलवाँस; वह गाड़ी जिसपर तोप चढ़ी रहती है; चरग।

चरखपूजा *स्त्री.* {हिं.} चैत्र की संक्रांति को की जानेवाली एक पूजा।

चरखा *पुं.* {फा. चर्ख़} घूमनेवाला बड़ा गोल चक्कर; सूत कातने का लकड़ी का एक प्रसिद्ध यंत्र; कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र; गाड़ी का वह ढाँचा जिसमें जोतकर नया घोड़ा निकाला जाता है, खड़खड़िया, झंझट का काम।

चरखी *स्त्री.* {हिं. चरखा का *स्त्री.* अल्पा.} घूमनेवाली कोई गोल वस्तु, छोटा चरखा; कपास ओटने का यंत्र, ओटनी, कुएँ से पानी खींचने की गड़ारी।

चरखुला *पुं.* चरखा (सूत कातने का)

चरग *पुं.* {फा. चरग} एक शिकारी चिड़िया, चरख; लकड़बग्घा।

चरचना[1] *स.* {सं. चर्चन} शरीर में चंदन आदि का लेप करना; ताड़ना, भाँपना, लखना; अनुमान करना।

चरचना[2] *स.* {?} पहचानना।

चरचरा *वि.* = चरपरा।

चरचराना *अ.* {अनु. चरचर} चरचर शब्द के साथ टूटना; शरीर के अंग का तनाव या रगड़ से दर्द करना, चर्राना; *स.* चरचर शब्द करते हुए तोड़ना।

चरचराहट *स्त्री.* {हिं.} शब्द निकलते हुए किसी पदार्थ का टूटना, चर्राना।

चरचा *स्त्री.* चर्चा।

चरचारी *पुं.* {हिं. चरचा} चर्चा करनेवाला; निंदक।

चरजना *अ.* {सं. चर्चन} भुलावा या धोखा देना, बहकाना; अंदाज लगाना, अनुमान करना।

चरण *पुं.* {सं.} पग, पैर; बड़ों का संग; पद्य या श्लोक का कोई पद; चौथाई भाग; आचरण; सूर्य आदि की किरण; चलना; भक्षण करना, खाना।

चरणगत *वि.* {सं.} एक-एक चरण के रूप में होनेवाला।

चरणाक्ष *पुं.* {सं.} अक्षपाद, गौतम।

चरणानुग *वि.* {सं.} अनुगामी, शरणागत।

चरणदासी *स्त्री.* {सं. चरण + दासी} जोरू, पत्नी; जूता।

चरण-पादुका *स्त्री.* {सं.} खड़ाऊँ, पाँवड़ी; पूजन के लिए बनाया हुआ चरणचिह्न।

चरणपीठ *पुं.* = चरण-पादुका।

चरणसेवा *स्त्री.* {सं. चरण + सेवा} पैर दबाना; बड़ों की सेवा।

चरणामृत *पुं.* {सं.} पूज्य व्यक्ति के चरणों की धोवन; दूध, दही, घी, चीनी और शहद का वह मिश्रण, जिसमें किसी देवमूर्ति को स्नान कराया गया हो या उसके चरण धोए गए हों।

चरणायुध *पुं.* {सं.} अरुणशिखा, मुर्गा।

चरणारविंद *पुं.* {सं.} चरणकमल।

चरणार्थ *वि.* {सं.} किसी पदार्थ का आठवाँ भाग, श्लोक के पद का आधा भाग।

चरणोदक *पुं.* {सं.} चरणामृत।

चरत *पुं.* {हिं. चरना} भक्षण करने का काम, 'उपवास' का उलटा।

चरता *स्त्री.* {हिं.} चलने का भाव, पृथ्वी, भूमि।

चरती *पुं.* {हिं.} वह जो व्रत के दिन उपवास न करता हो।

चरथ *वि.* {सं.} चलनेवाला, जंगम।

चरन *पुं.* चरण।

चरना[1] *स.* {सं. चर = चलना} पशुओं का खेत में उगी हुई घास आदि खाना।

चरना[2] *अ.* {सं. चर} घूमना-फिरना, विचरण करना, चलना; आचरण करना।

चरनि *स्त्री.* {सं. चर = गमन} चाल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरनी *स्त्री.* {हिं. चरना} चरी, चरागाह; वह नाँद जिसमें पशुओं को चारा दिया जाता है; पशुओं का चारा।

चरपट *वि.* {?} उचक्का; धूर्त; पुं. चर्पट।

चरपरा *वि.* {अनु.} {*स्त्री.* चरपरी} तीक्ष्ण स्वादवाला, झालदार, तीता।

चरपराहट *स्त्री.* {हिं. चरपरा} स्वाद की तीक्ष्णता, चरपरापन, झाल; डाह, ईर्ष्या (क्व.)।

चरफराना *अ.* तड़फना।

चरबाँक *वि.* {सं. चार्वाक} चतुर, चालाक; उद्धत, उद्दंड।

चरबा पुं. {फा. चरब:} लेखे आदि का लिखा हुआ पूर्व रूप, खाका; प्रतिलिपि, नकल।

चरबी *स्त्री.* {फा.} वह चिकना, लसीला और सफेद पदार्थ जो कुछ प्राणियों के शरीर में पाया जाता है, मेद, वसा।

मुहा. चरबी चढ़ना या छाना = बहुत मोटा होना; मद में अंधा होना।

चरम *वि.* {सं.} पराकाष्ठा या हद तक पहुँचा हुआ; अंतिम; सबसे आगे या ऊपर का; अंत का।

चरम प्रत्यय पुं. {सं.} विभक्ति।

चरमकाल पुं. {सं.} अंतकाल, मृत्यु।

चरमगिरि पुं. {सं.} अस्ताचल।

चरमर पुं. {अनु.} कड़ी या चिमड़ी वस्तु के दबने या मुड़ने का शब्द।

चरमराना *अ., स.* {अनु.} चरमर शब्द होना या करना।

चरमराहट *स्त्री.* {हिं. चरमराना} चरमराने की अवस्था या भाव।

चरराशि *स्त्री.* {सं.} फलित ज्योतिष में मेष, कर्क, तुला और मकर राशि का नाम।

चरमवती *स्त्री.* चर्मण्वती।

चरवाई *स्त्री.* {हिं. चराना} चराने का काम, भाव या मजदूरी।

चरवारा पुं. = चरवाहा।

चरवाहा पुं. {हिं. चरना + वाहा = वाहक} गौ, भैंस आदि चरानेवाला; चौपायों का सेवक।

चरवाही *स्त्री.* चरवाहे का काम।

चरवैया *वि.* {हिं. चरना + वैया (प्रत्य.)} चरानेवाला; चरनेवाला।

चरस *स्त्री.* {सं. चर्म} चमड़े का बहुत बड़ा थैला जिससे खेत सींचने के लिए कुएँ से पानी निकाला जाता है, चरसा, मोट; भूमि की एक नाप जो 2100 हाथ की होती है; गाँजे के पेड़ का गोंद या चेप, जिसका धुआँ तमाकू की तरह पीने से नशा होता है।

चरसा पुं. {हिं. चरस} चरस, मोट; भैंस, बैल आदि का चमड़ा; इसका बना हुआ गोट।

चरसी पुं. {सं. चरस + ई (प्रत्य.)} वह जो चरस पीता हो; चरस द्वारा खेत सींचने वाला।

चराई *स्त्री.* {हिं. चरना} पशुओं के चरने या चराने का काम; पशुओं के चरने का मैदान, चरनी, चरी।

चराऊ *स्त्री.* {हिं.} वह स्थान जहाँ पशु जाते हैं, चरागाह।

चराग पुं. {हिं.} चिराग, दीपक।

चरागाह पुं. {फा.} घास का मैदान जहाँ मवेशियाँ चराई जाती हैं।

चराचर *वि.* {सं.} चर और अचर, चेतन और जड़; पुं. जगत, संसार।

चराना *स.* {हिं. चरना} {प्रे. चरवाना} पशुओं को चरने के लिए अवसर देना।

चराव पुं. {हिं.} चरनी, चरागाह।

चरावर *स्त्री.* बकवाद।

चरिंदा पुं. {फा.} चरनेवाला पशु।

चरित पुं. {सं.} आचरण; कार्य; किसी के जीवन की विशेष घटनाओं का वर्णन, जीवनकथा, जीवनी।

चरितव्य *वि.* {सं.} आचरण करने योग्य।

चरितनायक पुं. {सं.} वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का किसी काव्य, नाटक आदि में वर्णन हो।

चरितार्थ *वि.* {सं.} {*भाव.* चरितार्थता} कृतकृत्य; ठीक उतरनेवाला, सार्थक।

चरितार्थी *वि.* {सं.} सफलता की कामना करनेवाला।

चरितावली *स्त्री.* {सं.} बहुत चरितों या जीवनियों का संग्रह।

चरित्तर पुं. {सं. चरित्र} बुरा चरित्र; छलपूर्ण आचरण।

चरित्र पुं. {सं.} स्वभाव; जीवन में किए जानेवाला कार्य या आचरण; इस प्रकार के कार्यों या आचरणों का स्वरूप जो किसी की योग्यता, मनुष्यत्व आदि का सूचक होता है (कैरेक्टर); करनी, करतूत; चरित।

चरिष्णु *वि.* {सं.} चलनेवाला, चर, जंगम।

चरित्रनायक पुं. चरितनायक।

चरित्र-पंजी *स्त्री.* आचरण-पंजी।

चरित्रवान, चरित्रवान् *वि.* {सं.} {*स्त्री.* चरित्रवती} सदाचारी, अच्छे चरित्रवाला।

चरी *स्त्री.* {हिं. चरना} चरागाह; चारे के लिए ज्वार के हरे पेड़।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरू पुं. {सं.} {वि. चरव्य} हवन के लिए पकाया हुआ अन्न, हविष्यान्न; ऐसा अन्न पकाने का पात्र।
चरुआ पुं. {हिं.} चौड़े मुख का मिट्टी का बरतन।
चरुका पुं. {हिं.} एक प्रकार का धान।
चरुपात्र पुं. {सं.} चरु पकाने या रखने का पात्र।
चरुव्रण पुं. {सं.} एक प्रकार का पकवान।
चरुस्थाली स्त्री. {सं.} चरु रखने का पात्र।
चरेर, चरेरा वि. {हिं.} कर्कश, कड़ा, सूखा, खुरदरा।
चरेरू पुं. {हिं. चरना + एरू (प्रत्य.)} चरनेवाला जानवर, गौ, भैंस, बकरी आदि।
चरैया पुं. {हिं. चरना} चरनेवाला; चरानेवाला।
चर्च पुं. {अ.} गिरजाघर।
चर्चक पुं. {सं.} चर्चा करनेवाला।
चर्चन पुं. {सं.} चर्चा; लेपन, पोतना, जैसे अंग में चंदन का चर्चन।
चर्चर वि. {सं.} गमनशील, चलनेवाला।
चर्चरी स्त्री. {सं.} चाचर; करतल-ध्वनि; फाग, होली, हथेली पीटना, चर्चरिका, सामूहिक गान।
चर्चरीक पुं. {सं.} महाकाल भैरव।
चर्चिका स्त्री. {सं.} वर्णन, चर्चा, एक देवी।
चर्चा[1] स्त्री. {सं.} किसी विषय की बातचीत, जिक्र, वर्णन; किसी प्रकार का कथन या उल्लेख (मेंशन); जनश्रुति अफवाह।
चर्चा[2] स्त्री. {सं. चर्चन} लेपन।
चर्चित वि. {सं.} लगाया या पोता हुआ, लेपित, जैसे चन्दन चर्चित मस्तक; जिसकी चर्चा, कथन या उल्लेख हुआ हो (मेंशंड)।
चर्पट पुं. {सं.} तमाचा, थप्पड़, खुली हुई हथेली।
चर्भट पुं. {सं.} ककड़ी।
चर्भरी स्त्री. {सं.} चर्चरी गीत, चर्चा, आमोद-प्रमोद।
चर्म पुं. {सं.} चमड़ा; ढाल (अस्त्र)।
चर्मकशा (षा) स्त्री. {सं.} एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य, एक प्रकार का थूहर।
चर्मकार पुं. {सं.} {भाव. चर्मकारी} चमड़े का काम करनेवाली जाति, चमार।
चर्मकार्य पुं. {सं.} चमड़े की सिलाई का काम।
चर्मकील स्त्री. {सं.} बवासीर नामक रोग।
चर्मग्रीव पुं. {सं.} शिव का एक अनुचर।
चर्मचक्षु पुं. {सं.} नेत्र, आँख, 'ज्ञानचक्षु' का विपर्याय।
चर्मचटका स्त्री. {सं.} चमगादड़।
चर्मचित्रक पुं. {सं.} कुष्ठ रोग, फूल, कोढ़।
चर्मज पुं. {सं.} रक्त, लोहू, रोग।
चर्मतरंग पुं. {सं.} चमड़े पर पड़ी हुई झुर्री।
चर्मण्वती स्त्री. {सं.} चंबल नदी।
चर्मदंड पुं. {सं.} चमड़े का कोड़ा।
चर्मदृष्टि स्त्री. {सं.} आँख 'ज्ञानदृष्टि' का विपर्याय।
चर्मदेहा स्त्री. {सं.} एक प्रकार का मुँह से बजानेवाला बाजा।
चर्मद्रुम पुं. {सं.} भोजपत्र का वृक्ष।
चर्मनालिका स्त्री. {सं.} चर्मदंड।
चर्मपत्रा स्त्री. {सं.} चर्मचटका।
चर्मपादुका स्त्री. {सं.} चमड़े का जूता।
चर्मपीड़िका स्त्री. {सं.} एक प्रकार का शीतल रोग।
चर्या स्त्री. {सं.} कार्य (ऐक्शन); आचरण; रहन-सहन; प्रतिदिन का कार्यक्रम; वृत्ति; सेवा।
चर्राना अ. {अनु.} टूटने के समय लकड़ी आदि में चरचर शब्द होना; सूखने, सिकुड़ने या तनने से (चमड़ी) में दर्द होना; सूखने या सिकुड़ने के कारण चिटकना या फटना; इच्छा प्रबल होना, जैसे शौक चर्राना।
चर्री स्त्री. {हिं. चर्राना} लगती या चुभती हुई बात, व्यंग्यपूर्ण उक्ति।
मुहा. चर्री छोड़ना = व्यंग्यपूर्ण या लगती हुई बात कहना।
चर्वण पुं. {सं.} {वि. चर्व्य} चबाना; चबाने के लिए भूना हुआ दाना, चबेना।
चर्वित वि. {सं.} चबाया हुआ।
चर्वितचर्वण पुं. {सं.} किया हुआ काम या कही हुई बात फिर से करना या कहना, पिष्टपेषण।
चर्वित वि. {सं.} दाँतों से चबाया हुआ।
चर्व्य वि. {सं.} चबाने योग्य।
चर्षणि पुं. {सं.} मनुष्य, नर, आदमी।
चर्षणी स्त्री. {सं.} कुलटा स्त्री।
चलंता वि. {हिं.} चलता हुआ, चलनेवाला।
चल वि. {सं.} {भाव. चलता} चल, अस्थिर; चलता हुआ; (संपत्ति आदि) जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सके, जंगम, जैसे गहने, कपड़े, कपड़े आदि (मूवेबुल); पुं. {सं.} पारा; शिव; विष्णु।
चलक पुं. {सं.} माल, असबाब (गुड्स)।
चलचलाव पुं. = चलाचली।
चलकेतु पुं. {सं.} एक प्रकार का पुच्छल तारा।
चलचंचु पुं. {सं.} चकोर पक्षी।
चलचलाव पुं. {हिं.} यात्रा, प्रस्थान, मृत्यु-यात्रा।
चलचाल वि. {हिं.} अस्थिर, चंचल।
चलचित्र पुं. {सं.} वे चित्र जो परदे पर जीवित मनुष्यों की भाँति काम करते हुए दिखाए जाते हैं (सिनेमा)।
चलचूक स्त्री. {सं. चल = चंचल + चूक} धोखा, छल, कपट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलता¹ *वि.* {हिं. चलना}{*स्त्री.* चलती} चलता हुआ; गतियुक्त।
मुहा. चलता करना = रवाना करना, भेजना; कोई काम जैसे-तैसे निपटाना। *चलता बनना* = चल देना।
जिसका क्रम बराबर चलता रहे, चालू, जारी (रनिंग); प्रचलित, जैसे चलता खाता (करेंट); काम चलाने या करने योग्य; चालाक।

चलता² *पुं.* {देश.} एक बड़ा पेड़ जिसमें बेल के से गोल फल लगते हैं; कवच।

चलता खाता *पुं.* {हिं. चलता + खाता} बैंक आदि का वह खाता जिसमें लेन-देन बराबर जारी रहे और जब कोई चाहे, तब रुपए जमा कर सके या ले सके (करेंट एकाउन्ट)।

चलता गाना *पुं.* {हिं. चलता = साधारण + गाना} गजल, दादरा या इसी तरह का कोई और गाना जो राग-रागिनियों के क्षेत्र के बाहर हो, 'पक्का गाना' का विपर्याय।

चलती¹ *स्त्री.* मान-मर्यादा, अधिकार।

चलती² *स्त्री.* {चलना} किसी की आज्ञा या महत्व सब जगह माना जाना, अधिकार या प्रभुत्व चलना।

चलतू *वि.* {हिं.} चलता।

चलती भाषा *स्त्री.* ऐसी भाषा जिसे साधारण आदमी भी समझ तथा बोल लेता हो।

चलदल *पुं.* {सं.} पीपल।

चलद्रव्य *पुं.* {सं.} माल, असबाब।

चलन¹ *पुं.* {हिं. चलना} चलने का भाव, चाल; प्रथा, रिवाज; बराबर होता रहनेवाला व्यवहार या आचरण, प्रचलन; प्रचार।

चलन² *पुं.* {सं.} गति, चाल; कंपन; पैर।

चलन-कलन *पुं.* {सं.} गणित ज्योतिष में वह गणना जिससे दिन और रात का मान स्थिर किया जाता या उनके घटने-बढ़ने का हिसाब लगाया जाता है।

चलनसार *वि.* {हिं. चलन + सार (प्रत्य.)} व्यवहार में प्रचलित, चलता हुआ, टिकाऊ।

चलना *अ.* {सं. चलन} पैर उठाते हुए एक जगह से दूसरी जगह जाना, गमन करना; हिलना-डोलना।
मुहा. पेट चलना = दस्त आना; निर्वाह होना; *बस चलना* = शक्ति का काम करना; *मन चलना* = इच्छा या लालसा होना; *चल बसना* = मर जाना; *चलता रहना* = जारी रहना; *अपने चलते* = भरसक, यथाशक्ति; *चलते हुए बैल को आर लगाना* = ठीक तरह से काम करनेवाले को बीच में इस प्रकार छेड़ना कि उस काम में और भी बाधा हो।
सपरना, निभना; उन्नति पर होना; आगे बढ़ना; आरम्भ होना, छिड़ना; जारी रहना; बराबर काम देना, टिकना; लेन-देन में काम करना; प्रचलित या जारी होना; उपयोग में आना; तीर, गोली, लाठी आदि का प्रयोग या प्रहार होना; पढ़ा जाना, बाँचा जाना; उपाय या युक्ति लगाना; आचरण या व्यवहार होना।
{सं.} ताश, चौसर, शतरंज आदि खेलों में पत्ता या मोहरा सामने रखना या आगे बढ़ना।

चलनिका *स्त्री.* {हिं.} स्त्रियों का घाघरा।

चलनौस *पुं.* {हिं.} चोकर, चालन।

चलनी *स्त्री.* छाननी।

चलपत्र *पुं.* {सं.} पीपल; कागज के रूप में नित्य चलनेवाला वह धन, जो सिक्के की जगह काम में आता है (करेंसी नोट)।

चलवंत *पुं.* {सं.} पैदल सिपाही।

चलवाँक *वि.* {हिं.} शीघ्रगामी, तेज गति से चलनेवाला।

चलवाना *स.* {हिं. 'चलना' का प्रे.} किसी को चलने में प्रवृत्त करना।

चल-विचल *वि.* {सं. चल + विचल} अस्त-व्यस्त, उखड़ा-पुखड़ा, बेठिकाने का; अस्थिर, डाँवाडोल।

चलवैया *वि.* {हिं. चलना} चलने या चलानेवाला।

चल-संपत्ति *स्त्री.* {सं.} ऐसी संपत्ति जो उठाकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाई जा सके (मूवेबुल प्रॉपर्टी)।

चला *स्त्री.* {सं.} बिजली, भूमि, पृथ्वी, लक्ष्मी, पिप्पली; {पुं.} व्यवहार, प्रचार, रीति, अधिकार।

चलाऊ *वि.* {हिं. चलना} चलने या चलाने लायक; टिकाऊ।

चलाक *वि.* चालाक, दक्ष, पटु।

चलाका *पुं.* {ह} विद्युत्, बिजली।

चलाकी *स्त्री.* {हिं.} दक्षता, चालाक।

चलाकान *स्त्री.* {सं. चला} बिजली।

चलाचल¹ *स्त्री.* {हिं. चलन} चलाचली; गति, चाल।

चलाचल² *वि.* {सं.} चल और अचल दोनों; चंचल, चपल।

चलाचली *स्त्री.* {हिं. चलना} प्रस्थान या चलने की तैयारी; प्रस्थान; मरने का समय निकट होना।

चलातंक *पुं.* {सं.} कम्पवायु, वायु-रोग।

चलान *स्त्री.* {हिं. चलाना} {*वि.* चलानी} माल या सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजने या भेजे जाने का कार्य; अपराधी का पकड़ा जाकर न्याय के लिए भेजा जाना; बाहर से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया हुआ अथवा बाहर भेजा जानेवाला माल; (किसी की सूचना के लिए) भेजी हुई चीजों की सूची या धन का विवरण, रवन्ना।

चलाना *स.* {हिं. चलना} {प्रे. चलवाना} चलने में प्रवृत्त करना, ऐसा करना कि चले।

मुहा. *किसी की चलाना* = किसी की बात कहना; *मुँह चलाना* = खाना; *हाथ चलाना* = मारना; कुछ करना।

व्यवहार या आचरण कराना; कार्य आदि की ऐसी व्यवस्था कि वह अच्छी तरह से आगे बढ़ता रहे (कंडक्ट); अस्त्र-शस्त्र आदि व्यवहार में लाना, जैसे लाठी या गोली चलाना।

चलानी *वि.* {हिं. चलान} चलान-संबंधी, चलान का, जैसे चलानी मुकदमा; *स्त्री.* बिक्री के लिए माल बाहर भेजने का काम, चलान का व्यवसाय।

चलायमान *वि.* {सं.} चलता हुआ; चंचल; विचलित।

चलाव *पुं.* {हिं.} स्वर्ग को चलनेवाला, चलने का भाव, प्रयाण, अंतिम यात्रा।

चलावना *स.* = चलाना।

चलावा *पुं.* {हिं. चलना} रीति, रस्म, रिवाज; द्विरागमन, गौना; गाँवों में संक्रामक रोग फैलने के समय का एक प्रकार का उतारा।

चलित *वि.* {सं.} जो चलता या चल रहा हो, चलायमान; जिसका प्रचलन या व्यवहार हो (करेंट); जो इस समय हो या होता हो, जैसे चलित प्रथा।

चलिष्णु *वि.* {सं.} चलने को तैयार, गमनशील।

चलैया *वि.* {हिं.} चलनेवाला।

चलौना *पुं.* {हिं.} चरखा चलाने का डंडा, दूध चलाने का करछा।

चलौवा *पुं.* {हिं.} चलावा, उतारा करना।

चवकी *स्त्री.* {हिं.} चौकी।

चवन्नी *स्त्री.* {हिं. चार + आना} चार आने मूल्य का पुराना सिक्का।

चवर्ग *पुं.* {सं.} चवर्ग के व्यंजन-च, छ, ज, झ, और ञ।

चवा *स्त्री.* {सं. चौ + बाई = वायु} चारों ओर से एक साथ बहनेवाली हवा।

चवाई *पुं.* {हिं. चलाव} {*स्त्री.* चवाइन} बदनामी फैलानेवाला, निंदक।

चवाव *पुं.* {हिं. चौ + बाई = वायु} चारों ओर फैली हुई चर्चा, अफवाह; बदनामी; निंदा, चुगली।

चवैया *स्त्री.* चवाव।

चश्म *स्त्री.* {फा.} नेत्र, आँख।

चश्मदीद *वि.* {फा.} आँखों से देखा हुआ; जिसने कोई घटना देखी हो।

चश्मदीद गवाह *पुं.* प्रत्यक्षदर्शी गवाह या साक्षी।

चश्मपोशी *स्त्री.* {फा.} अनदेखी।

चश्मा *पुं.* {फा. चश्म} ऐनक; पानी का सोता या नाला।

चष *पुं.* {सं. चक्षु} आँख, नेत्र।

चषक *पुं.* {सं.} मद्य पीने का प्याला; मधु, शहद।

चषण *पुं.* {सं.} भोजन, वध करना, क्षय, नाश।

चषचोल *पुं.* {हिं. चष + चोल = वस्त्र} आँख की पलक।

चसक *स्त्री.* {हिं.} हलकी पीड़ा, मगजी के आगे लगाने वाली पतली गोट।

चसकना *क्रि. अ.* {हिं.} मंद या धीमी पीड़ा होना, टीसना, चसका लगना।

चसका *पुं.* {हिं.} दुर्व्यसन, लत लगना, चाल।

चसना *अ.* {हिं. चाशनी} दो चीजों का एक में सटना, लगना, चिपकना; मरना; कपड़े का खिंच या दबकर जरा-सा फट जाना।

चसम *स्त्री.* चश्म।

चस्पाँ *वि.* {फा.} चिपका हुआ।

चस्म *स्त्री.* चस्म।

चसमा *पुं.* {हिं.} चश्मा।

चह[1] *पुं.* {सं. चय} नाव पर चढ़ने के लिए बना हुआ चबूतरा; नदी पर बना पीपे आदि का अस्थायी पुल।

चह[2] *स्त्री.* {फा. चाह} गड्ढा।

चहक *स्त्री.* {हिं. चहकना} पक्षियों का कलरव, चहचह।

चहकना *अ.* {अनु.} पक्षियों का आनंदित होकर मधुर शब्द करना; प्रसन्न होकर खूब बोलना।

चहकार *स्त्री.* = चहक।

चहकारा *वि.* {हिं.} मधुर ध्वनि करनेवाला, चहकनेवाला।

चहचहाना *अ.* {अनु.} चिड़ियों का चहचह शब्द करना, चहकना।

चहटा *पुं.* {हिं.} पंक, कीचड़, चहला।

चहना *स.* चाहना।

चहनि *स्त्री.* {हिं. चाहना = देखना} देखने की क्रिया या भाव; दृष्टि; चाह।

चहनना *क्रि. स.* {हिं.} पैर से कुचलना, रौंदना।

चहना *क्रि. स.* {हिं.} चाहना।

चहनि *स्त्री.* {हिं.} चाह, अभिलाषा, इच्छा।

चहबच्चा *पुं.* {फा. चाह = कुआँ + बच्चा} पानी जमा करने का छोटा तहखाना।

चहर *स्त्री.* चहल।

चहरना *अ.* {हिं. चहल} आनंदित होना, प्रसन्न होना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चहर-पहर *स्त्री.* {हिं.} चहल-पहल।

चहराना *क्रि.अ.* {हिं.} तड़कना, फटना, चटकना, प्रसन्न होना।

चहल *स्त्री.* {अनु. चहचह} आनंद की धूम, आनंदोत्सव; चहल-पहल; पक्षियों के कलरव और क्रीड़ा के समान जल्दी ही समाप्त हो जानेवाली बात या काम; *स्त्री.* चहला।

चहल-कदमी *स.* {हिं. चहल + फा. कदम} धीरे-धीरे टहलना या घूमना।

चहलकदमी *स्त्री.* {हिं.} अनेक मनुष्यों के आने-जाने की धूम; खुशी की धूम।

चहलना *स.* {हिं. चहल} पैरों से बार-बार रौंदना।

चहल-पहल *स्त्री.* {अनु.} आनंद की भीड़-भाड़, धूम-धाम; रौनक।

चहला *पुं.* {सं. चिकिल} कीचड़।

चहली *स्त्री.* {हिं.} कुएँ से पानी खींचने की गड़ारी।

चहवारा *वि.* {हिं. चहचह + (अनु.) वार (प्रत्य.)} चहचहानेवाला (पक्षी)।

चहार-दीवारी *स्त्री.* {फा.} किसी मकान या बड़े मैदान के चारों ओर बनी हुई दीवार, घेरा, प्राचीर।

चहारुम *पुं.* {फा.} चौथाई, चतुर्थांश।

चहीचहा *पुं.* {हिं. चाहना = देखना} एक दूसरे को देखने की क्रिया।

चहुँ *वि.* {हिं. चार} चारों ओर।

चहुँकना *अ.* = चौंकना।

चहू *वि.* चहुँ।

चहूँधा *क्रि. वि.* {हिं. चारों + धा = ओर} चारों ओर, सब तरफ।

चहूँटना *अ.* {हिं. चिमटना} सटना, लगना, मिलना।

चहेटना *स.* {?} गारना, निचोड़ना,; खदेड़ना, भगाना।

चहेता *वि.* {हिं. चाहता + एता (प्रत्य.)} {*स्त्री.* चहेती} जिसे चाहा जाए, प्यारा प्रिय।

चहेती *स्त्री.* {हिं.} प्रियतम, प्यारी।

चहेल *स्त्री.* {हिं.} चहला, कीचड़, दलदल।

चहोरना *अ.* {देश.} पौधा रोपना या बैठाना; सहेजना; अच्छी तरह से कोई काम करना।

चहोरा *पुं.* {हिं.} जड़हन, धान।

चाँई *पुं.* {देश.} ठग, उचक्का; चालाक, धूर्त।

चाँक *पुं.* {हिं.} खलिहान में अन्न के ढेर पर चिन्ह लगाने की क्रिया, सीमा बाँधना, हद बाँधना।

चाँगेरी *स्त्री.* {हिं.} खट्टी लोनी का शाक।

चाँकना *स.* चाकना।

चाँगला *वि.* {हिं. चंगा} {*स्त्री.* चाँगली} अच्छा, बढ़िया; हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ, तन्दुरुस्त; धूर्त, चालाक, सयाना।

चाँचर (रि) *स्त्री.* चाचर।

चाँचु *पुं.* चोंच, चंचु।

चाँटा *पुं.* {अनु.} थप्पड़; *पुं.* चूँटा।

चाँटी *स्त्री.* {अनु.} तबले के किनारे पर तर्जनी उँगली से किया जानेवाला आघात; *स्त्री.* चूँटी।

चाँड़ *वि.* {सं. चंड़} प्रबल, बलवान; उद्धत, उद्दंड; श्रेष्ठ; प्रचंड; *स्त्री.* {सं. चंड = प्रबल} भार सँभालने के लिए नीचे लगाया जानेवाला खम्भा, टेक, थूनी; अत्यंत आवश्यकता; प्रबल इच्छा।

मुहा. चाँड़ सरना = इच्छा या आवश्यकता पूरी होना।

चाँड़ना *स.* {?} खोदकर गिराना; कसकर दबाना; उखाड़ना; उजाड़ना।

चांडाल *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* चांडाली, चांडालिन} एक छोटी जाति, डोम, श्वपच; पतित मनुष्य (गाली)।

चांडाली *स्त्री.* {सं.} चांडाल की स्त्री, डोमिन।

चाँडिला *वि.* चाँड।

चाँद *पुं.* {सं. चन्द्र} चंद्रमा।

पद चाँद का टुकड़ा = अत्यंत सुंदर।

मुहा. किधर चाँद निकला है? = आज आप बहुत दिनों पर कैसे दिखाई पड़े? इतने दिनों तक आप कहाँ थे? *चाँद पर थूकना* = ऐसे व्यक्ति की निंदा करना जिससे लांछन लगाने या निंदा करनेवाला ही बुरा समझा जाए।

दूज के चाँद के आकार का गहना; वह काला दाग जिस पर अभ्यास के लिए निशाना लगाया जाता है; *स्त्री.* खोपड़ी का बिचला भाग।

मुहा. चाँद गंजी होना = बहुत मार पड़ना।

चाँद-तारा *पुं.* एक प्रकार का बूटीदार पतला कपड़ा, महीन मलमल, एक प्रकार की पतंग।

चाँदना *पुं.* {हिं. चाँद} प्रकाश, उजाला; चाँदनी।

चाँदनी[1] *स्त्री.* {हिं. चाँद} चंद्रमा का प्रकाश, चाँद का उजाला, चंद्रिका।

पद चार दिन की चाँदनी = थोड़े दिनों का सुख या आनंद।

चाँदनी[2] *स्त्री.* {हिं. चंदनी = चंदन के रंग का} बिछाने या ऊपर तानने की चादर; (नूरजहाँ ने एक बार चंदन के रंग का फर्श बनवाया था, जो फर्श-ए-चंदनी कहलाता था। इसी में के चंदनी शब्द से यह चाँदनी शब्द बना है)।

चाँदवाला *पुं.* {हिं. चाँद = चंद्रमा + बाला} कान में पहनने का एक प्रकार का चंद्राकार बाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाँदमारी *स्त्री.* {हिं. चाँद = चंद्रमा + मारना} किसी तल पर बने हुए बिंदुओं पर गोली चलाने या निशाना लगाने का अभ्यास।

चाँदा *पुं.* {हिं.} वह निर्धारित स्थान जहाँ से भूमि की नाप की जाती है, छप्पर का पारवा।

चाँदी *स्त्री.* {हिं. चाँद} एक सफेद चमकीली धातु जिसके सिक्के, गहने, बरतन आदि बनते हैं, रजत।

मुहा. चाँदी काटना = खूब रुपए पैदा करना; *चाँदी होना* = बहुत लाभ होना।

पद चाँदी का जूता = घूस, रिश्वत।

चांद्र *वि.* {सं.} चंद्रमा-संबंधी; जो चंद्रमा के विचार से हो, जैसे चांद्रमास।

चांद्रमास *पुं.* {सं.} उतने दिन जितने चंद्रमा को पृथ्वी की एक बार परिक्रमा करने में लगते हैं, पूर्णिमा से पूर्णिमा तक का महीना।

चांद्र-वत्सर *पुं.* {सं.} चंद्रमा की गति-अनुसार माना जाने वाला वर्ण।

चांद्र-वर्तिक *वि.* {सं.} चांद्रायण व्रत-संबंधी।

चांद्रायण *पुं.* {सं.} महीने भर का एक व्रत जिसमें चंद्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार भोजन के कौर घटाने-बढ़ाने पड़ते हैं।

चाँप[1] *स्त्री.* {हिं. चपना} चाप; बलवान की प्रेरणा या दबाव।

चाँप[2] *पुं.* {हिं. चंपा} चम्पा का फूल, दबाव, प्रेरणा।

चाँपना *स.* {सं. चपन} दबाना।

चाँयचाँय *पुं.* {हिं.} व्यर्थ की बकबक।

चाँवचाँव *पुं.* {हिं.} उपर्युक्त।

चाइ *पुं.* {हिं.} चाव।

चाउ *पुं.* {हिं.} उपर्युक्त।

चाऊर *पुं.* {हिं.} चावल-संबंधी।

चाई (उ) *पुं.* चाव।

चाए[1] *क्रि. वि.* {हिं. चाव} चाव या चाह से।

चाए[2] *स्त्री.* = चाय।

चाक[1] *पुं.* {सं. चक्र} कील पर घूमनेवाला वह चक्राकार पत्थर जिस पर कुम्हार बरतन बनाते हैं, कुलालचक्र; पहिया; गराड़ी; मंडलाकार रेखा।

चाक[2] *पुं.* {फा.} दरार, चीर।

चाक[3] *वि.* {तु.} दृढ़, मजबूत; हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा।

चाकचक *वि.* = मजबूत।

चाकचक्य *पुं.* {सं.} चमक-दमक, उज्ज्वलता; सुंदरता।

चाक-चौबंद *वि.* {तु. चाक + हिं. चौबंद} हृष्ट-पुष्ट; चालाक और फुर्तीला।

चाकना *स.* {हिं. चाक} चारों ओर रेखा खींचकर किसी वस्तु को घेरना, हद बनाना; खलियान में अनाज की राशि पर मिट्टी आदि से छापा लगाना, जिसमें से कोई कुछ निकाले तो पता चल जाए; पहचान के लिए किसी चीज पर निशान लगाना।

चाकरनी *स्त्री.* {हिं.} नौकरानी, दासी।

चाकर *पुं.* {फा.} {*स्त्री.* चाकरानी; *भाव.* चाकरी} भृत्य, सेवक, नौकर।

चाकरी *स्त्री.* {फा.} सेवा, टहल; नौकरी।

चाकसू *पुं.* {सं. चाक्षुष} निर्मली नामक पौधा या उसके बीज जिनका चूर्ण आँखों में डाला जाता है।

चाका *पुं.* {हिं.} चाक, चीनी का बड़ा बतासा।

चाकी *स्त्री.* {सं. चक्र} बिजली; *स्त्री.* चक्की।

चाकू *पुं.* {तु.} छुरी।

चाक्रायण *पुं.* {सं.} चक्राऋषि का वंशज।

चाक्रिक *पुं.* {सं.} स्तुतिगायक, बंदी, भाट, तेली, गाड़ीवान, कुम्हार; *वि.* चक्राकार, चक्र-संबंधी।

चाक्षुष *वि.* {सं.} चक्षु-संबंधी; जिसका ज्ञान नेत्रों से हो, दिखाई देनेवाला, दृश्य (विजुअल); *पुं.* न्याय में ऐसा प्रमाण जिसकी सत्यता आँखों की सहायता से जानी जा सकती हो या जानी गई हो।

चाखना *सं. चखना।*

चाखुर[1] *स्त्री.* {देश.} खेतों आदि को निराकर निकाली हुई घास।

चाखुर[2] *स्त्री.* {सं. चिकुर} गिलहरी।

चाचर (री) *स्त्री.* {सं. चर्चरी} होली का एक गीत, चर्चरी; होली में होनेवाला खेल-तमाशा; हल्ला-गुल्ला।

चाचरी *स्त्री.* {सं. चर्चरी} योगशास्त्र के अनुसार एक प्रकार की मुद्रा।

चाचा *पुं.* {सं. तात} {*स्त्री.* चाची} पिता का छोटा भाई, काका।

चाट *स्त्री.* {हिं. चाटना} चटपटी चीज खाने की प्रबल इच्छा; एक बार किसी वस्तु का स्वाद पाकर फिर उसे पाने की चाह, चसका शौक, लालसा; प्रबल इच्छा; लत, आदत; खाने की चटपटी और नमकीन चीजें, जैसे सेव, दालमोठ, कचालू, दही-बड़ा आदि।

चाटक *पुं.* {सं. चेटक} जादू, इंद्रजाल।

चाटना *स.* {अनु. चटचट} जीभ से रगड़कर या उठाकर खाना; पोंछकर खा लेना; (प्यार से) किसी वस्तु पर जीभ फेरना; कीड़ों का कागज, कपड़े आदि खा जाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाटु पुं. {सं.} मीठी बात, प्रिय वार्ता, झूठी प्रशंसा-वटु; पुं. भांड, विदूषक।
चाटुकार पुं. {सं.} खुशामदी।
चाटुकारिता स्त्री. {सं.} खुशामद।
चाटुकारी स्त्री. = खुशामद।
चाड़ स्त्री. चाँड़।
चाड़ी स्त्री. {हिं.} पीठ पीछे निंदा।
चाढ़ा वि. {हिं. चाँड़} {स्त्री. चाढ़ी} प्यारा, प्रिय।
चाणक्य पुं. {सं.} राजनीति के एक प्रसिद्ध आचार्य और सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के मंत्री, कौटिल्य।
चाणूर पुं. {सं.} कंस का योद्धा जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था।
चातक पुं. {सं.} {स्त्री. चातकी} पपीहा नामक पक्षी।
चातकानंदन पुं. {सं.} वर्षाकाल, मेघ।
चातर पुं. {हिं.} मछली पकड़ने का बड़ा जाल, षड्यंत्र।
चातुर वि. = चतुर।
चातुरी स्त्री. {हिं.} चतुर होने की क्रिया या भाव, चतुरता; चालाकी, होशियारी; धूर्तता।
चातुरिक पुं. {सं.} सारथी, रथ हाँकनेवाला।
चातुर्मास पुं. {सं.} वर्षा के चार मास; वि. चारमास में होनेवाला।
चातुर्मासी स्त्री. {सं.} पौर्णमासी।
चातुर्मासिक वि. {सं.} चार महीने में (या पर) होनेवाला (यज्ञ, कर्म आदि)।
चातुर्मास्य पुं. {सं.} चौमासे या वर्षाकाल में किया जानेवाला एक व्रत, यज्ञ करना।
चातुर्य पुं. {सं.} चतुरता।
चातुर्वर्ण्य पुं. {सं.} ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चारों वर्ण।
चात्र पुं. {सं.} खैर की लकड़ी।
चादर स्त्री. {फा.} बिछाने या ओढ़ने का लम्बा-चौड़ा कपड़ा; हलका ओढ़ना, दुपट्टा; किसी पहाड़ या चट्टान से गिरनेवाली पानी की चौड़ी धारा; पवित्र स्थान पर चढ़ाए जानेवाले फल (मुसल.); चद्दर।
चान पुं. = चंद्रमा।
चानक क्रि. वि. अचानक।
चानन पुं. चंदन; चाँदना।
चानस पुं. {हिं.} ताश का एक खेल।
चाना अ. {हिं. चाव + ना (प्रत्य.)} चाव या उमंग में आना।
चाप[1] पुं. {सं.} धनुष, कमान; वृत्त की परिधि का कोई भाग। (आर्क); मेहराब।
चाप[2] स्त्री. {हिं. चापना = दबाना} चापने की क्रिया या भाव, दबाव, दाब; पैर की आहट।
चाप-गरीद पुं. {हिं.} खेत की लंबाई की नाप।
चापट वि. चौपट; चिपटा; चाकर; भूसी।
चापना स्त्री. {सं. चाप} दबाना, दाबना।
चापल वि. चपल, अस्थिरता, चंचलता।
चापल्य, चापलता पुं. स्त्री. {सं.} चंचलता।
चापलूस वि. {फा.} खुशामदी।
चापलूसी स्त्री. {फा.} खुशामद।
चापाकार वि. {सं.} चाप के आकार का।
चाब[1] स्त्री. {हिं. चावना} चबानेवाला चौखूँटे दाँत, दाढ़, चौभड़।
चाब[2] स्त्री. चव्य एक पौधा जिसकी जड़-डाल औषधि में प्रयुक्त होती है।
चाबना स. {सं. चर्वण} चबाना, खूब भोजन करना, भर-पेट खाना।
चाबी स्त्री. {हिं. चाप} कुंजी, ताली।
चाबुक पुं. {फा.} कोड़ा; तीव्र प्रेरणा।
चाबुक-सवार पुं. {फा.} {भाव. चाबुक-सवारी} घोड़े को चाल सिखानेवाला।
चाभना पुं. {हिं. चाबना} खाना।
चाभा पुं. {हिं.} बैलों की जीभ का एक रोग जिसके होने पर उनसे कुछ भी खाया नहीं जाता।
चाभी स्त्री. चाबी।
चाम पुं. {सं. चर्म} चमड़ा, खाल।
चामचोरी स्त्री. {हिं.} गुप्त रूप से परस्त्री-गमन।
चामर पुं. चँवर, मोरछल।
चामरपुष्प पुं. {सं.} सुपारी का पेड़, आम, केतकी।
चामरी स्त्री. {सं.} सुरा गाय।
चामीकर पुं. {सं.} सोना, सुवर्ण; धतूरा।
चामुंडा पुं. {सं.} एक देवी जिसने चंड, मुंड आदि दैत्यों का नाश किया था।
चाय स्त्री. {चीनी चा} एक पौधा जिसकी पत्तियाँ उबलते हुए पानी में डालकर चीनी और दूध मिलाकर एक गरम पेय बनाते हैं; उक्त पौधे की पत्तियों से इस प्रकार बनाया हुआ प्रसिद्ध पेय पदार्थ; किसी वनस्पति से उक्त प्रकार से बनाया हुआ पेय पदार्थ, जैसे तुलसी की चाय, चोकर की चाय; पुं. चाव।
चाय-पानी पुं. = जलपान।
चायक पुं. {हिं. चाव} चाहनेवाला।
चार[1] वि. {सं. चतुः} तीन से एक अधिक, दो का दूना।
मुहा. चार चाँद *लगना* = सौंदर्य या प्रतिष्ठा बहुत बढ़ जाना; *चारों फूटना* = धर्मचक्षुओं तथा ज्ञानचक्षुओं का नाश होना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार² पुं. {सं.} गति, चाल, गमन; कारागार; गुप्तचर, जासूस; दास, सेवक; रीति, रसम; ढब, ढंग।

चार-आइना पुं. {फा.} एक प्रकार का कवच या बख्तर।

चारक पुं. {सं.} चरवाहा, चालाक, सहचर, साथी, जासूस।

चारकान पुं. {हिं.} चौसर या पासे का दाँव।

चारकर्म पुं. {सं.} भेदिए, गुप्तचर या जासूस का काम, जासूसी (एस्पाएँयनेज)।

चारखाना पुं. {फा.} वह कपड़ा जिसमें धारियों से चौखूँटे घर बने हों।

चारजामा पुं. {फा.} घोड़े का जीन।

चारण पुं. {सं.} राजाओं और बड़े आदमियों के यश और कीर्ति का वर्णन करनेवाला, भाट, बंदीजन (बोर्ड); राजपूतों की एक जाति।

चारदीवारी *स्त्री.* {फा.} चहारदीवारी; शहरपनाह, प्राचीर।

चारन पुं. चारण।

चारना *स.* {सं. चारण} चराना।

चारपाई *स्त्री.* {हिं. चार + पाया} छोटा पलंग, खाट, खटिया।

मुहा. चारपाई धरना, पकड़ना या चारपाई से लगना = चारपाई से न उठ सकना, बहुत बीमार होना।

चारबाग पुं. {फा.} चौकोर बाग या बगीचा; एक प्रकार का चौकोर रूमाल जो कंधों पर फैलाकर ओढ़ा जाता था।

चारयारी *स्त्री.* {हिं. चार + फा. यार} चार मित्रों की गोष्ठी; सुन्नी मुसलमानों का एक वर्ग।

चारा¹ पुं. {हिं. चरना} पशुओं के खाने की घास, डंठल आदि; किसी जंगली हिंसक पशु के शिकार के लिए बँधा हुआ पशु (भेड़ बकरी आदि)।

मुहा. चारा फेंकना = किसी को फँसाने के लिए लोभ दिखना।

चारा² पुं. {फा.} उपाय, तदबीर।

चाराजोई *स्त्री.* {फा.} फरियाद।

चारिणी *स्त्री.* {सं. चारण} चारण जाति की स्त्री; *वि.* चारी का *स्त्री.*।

चारित *वि.* {सं.} चलाया हुआ।

चारित्र पुं. {सं.} कुल की रीति; चरित्र; व्यवहार।

चारित्र्य पुं. {सं.} चरित्र।

चारी *वि.* {सं. चारिन्} {*स्त्री.* चारिणी} चलनेवाला; आचरण करनेवाला; पुं. पैदल सिपाही।

चारु *वि.* {सं.} {*भाव.* चारुता} सुंदर, मनोहर; पुं. बृहस्पति, कृष्णपुत्र का नाम, केसर, ककुभ।

चारुक पुं. {सं.} सापत का बीज।

चारुता *स्त्री.* {सं.} मनोहरता, सुंदरता।

चारुधारा *स्त्री.* {सं.} इंद्र-पत्नी, शची।

चारुनालक पुं. {सं.} लाल कमल, कोकनद।

चारुनेत्र पुं. {सं.} हरिन; *वि.* सुंदर नेत्र।

चारुफल *स्त्री.* {सं.} अंगूर की लता।

चारुरावा *स्त्री.* {सं.} इंद्र की पत्नी, शची।

चारुहासिनी *वि. स्त्री.* {सं.} सुंदर हँसी हँसनेवाली, मनोहर मुस्कानवाली।

चार्जन पुं. {अं. चार्जिंग} बिजली के आवेश से युक्त करना।

चार्ट पुं. {अं.} वह रेखाचित्र जो विभिन्न स्थितियों या सूचनाओं को अंकित करने के लिए चार खानेदार कागज पर बनाया जाए।

चार्वाक पुं. {सं.} प्रसिद्ध नास्तिक तार्किक; इनका चलाया हुआ मत या दर्शन जिसमें ईश्वर का अस्तित्व नहीं माना जाता।

चाल *स्त्री.* {हिं. चलना} चलने की क्रिया, गति; चलने का ढंग: आचरण, बरताव, व्यवहार; रीति-रिवाज, प्रथा, परिपाटी; युक्ति, तरकीब; छल, धूर्तता; प्रकार, तरह; शतरंज, ताश, चौसर आदि के खेल में, पत्ता या मोहरा दाँव पर रखने या आगे बढ़ाने का काम; चलने का शब्द, आहट।

चालक *वि.* {सं.} चलानेवाला, जैसे वायुयान या मोटर का चालक।

चाल-चालन पुं. {हिं. चाल + चलन} आचरण, व्यवहार (कैरेक्टर)।

चाल-ढाल *स्त्री.* {हिं. चाल + ढाल} आचरण, व्यवहार; रंग-ढंग।

चालन¹ पुं. {सं.} कोई चीज चलाने की क्रिया या भाव, चलाना।

चालन² पुं. {हिं. चालना} भूसी या चोकर जो कोई चीज छानने से निकलता है; *स्त्री.* = चलनी।

चालना¹ *स.* {सं. चालन} चलाना; (बहू) बिदा कराके अपने घर ले आना; *अ.* चलना।

चालना² *स.* {हिं. चलनी} चलनी या छाननी में रखकर छानना।

चालबाज *वि.* {हिं. चाल + फा. बाज़} {*भाव.* चालबाजी} धूर्त, छली, कपटी, धोखा देने वाला।

चालबाजी *स्त्री.* {हिं. चालबाज} धूर्तता, चालाकी, छल-कपट।

चाला पुं. {हिं. चाल} प्रस्थान, कूच; नई बहू का पहले-पहल ससुराल से मैके आना; यात्रा का मुहूर्त; उतारा या टोटका एक गाँव से दूसरे गाँव में ले जाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चालाक *वि.* {फा.} चतुर, दक्ष, होशियार; धूर्त; चालबाज।
चालाकी *स्त्री.* {फा.} चतुराई, दक्षता; धूर्तता, चालबाजी।
चालान *पुं.* चालान।
चालानदार *पुं.* {हिं.} जमादार जो चालान के साथ भेजा जाता है।
चालिया *वि.* चालबाज, धूर्त, छली।
चाली *वि.* {हिं. चाल} चालबाज; चंचल; नटखट।
चालीस *वि.* {सं. चत्वारिंशत्} जो गिनती में तीस से दस अधिक हो, बीस का दूना; *पुं.* बीस की दूनी संख्या या अंक।
चालीसा *पुं.* {हिं. चालीस} चालीस पद्यों आदि का संग्रह या समूह, जैसे हनुमान चालीसा; *पुं.* मृतक कर्म में चालीसवाँ दिन का कृत्य।
चालू *वि.* {हिं. चलना} जो चल रहा हो या वर्तमान हो (सबसिस्टिंग); जिसका चलन रुका न हो, प्रचलित, चलता हुआ (करेंट); (विधि या व्यवहार) जो प्रयोग या कार्य रूप में लाया जा रहा हो (इन ऑपरेशन)।
चाल्हा *स्त्री.* चेल्हवा (मछली)।
चाल्ही *स्त्री.* {हिं.} नाव में मल्लाह का स्थान।
चाव *पुं.* {हिं. चाह} अभिलाषा, वासना; प्रेम, अनुराग; शौक, चाह, उमंग, उत्साह; इच्छा, दुलार।
चावना *स.* चाहना।
चावड़ी *स्त्री.* {हिं.} यात्रियों के ठहरने का स्थान चट्टी, पड़ाव।
चावल *पुं.* {सं. तंडुल} एक प्रसिद्ध अन्न जो भूसी से उतारा हुआ धान है, तंडुल; भात; चावल के आकार के दाने; एक रत्ती की तौल।
चाशनी *स्त्री.* {फा.} आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा और लसीला किया हुआ चीनी, मिसरी, गुड़ आदि का रस; चस्का, मजा; सोने का वह नमूना, जो मिलान के लिए सुनार को सोना देनेवाला ग्राहक अपने पास रखता है।
चाष *पुं.* {सं.} नीलकंठ पक्षी; चाहा पक्षी; नेत्र, आँख।
चास *स्त्री.* {हिं.} खेती।
चासना *क्रि.स.* {हिं.} खेत जोतना।
चासनी *स्त्री.* {हिं.} चाशनी।
चासा *पुं.* {देश.} हलवाहा; खेतिहर; किसान।
चाह[1] *स्त्री.* {सं. इच्छा} इच्छा, अभिलाषा; प्रेम, प्रीत; पूछ, आदर, कदर; आवश्यकता, जरूरत।
चाह[2] *स्त्री.* {हिं. चाह + आहट} खबर, समाचार; टोह, आहट; गुप्त भेद, मर्म।
चाहक *पुं.* {हिं. चाहना} चाह करने या चाहनेवाला; प्रेमी।
चाहत *स्त्री.* {हिं. चाह} प्रेम, चाह।
चाहना *स.* {हिं. चाह} इच्छा या अभिलाषा करना; प्रेम करना; माँगना; देखना; ढूँढ़ना; *स्त्री.* चाह।
चाहा *पुं.* {सं. चाष} बगुले की तरह का एक जलपक्षी।
चाहि *क्रि. वि.* {सं. चैव = और भी} अपेक्षाकृत, तुलना में।
चाहिए *क्रियापद* {हिं. चाहना} उचित है; आवश्यक है।
चाही[1] *वि. स्त्री* {हिं. चाह} चहेती, प्यारी।
चाही[2] *वि.* {फा. चाह = कुआँ} कुएँ से सींची जानेवाली (जमीन)।
चाहे *योज.* {हिं. चाहना} यदि इच्छा हो; यदि उचित हो; अथवा या मन में आए।
चिंआँ *वि.* {हिं.} इमली का बीज।
चिंआँसी *वि.* {हिं.} छोटी-सी, नन्हीं-सी।
चिंऊँटा *पुं.* {हिं.} चींटा।
चिउँटी *स्त्री.* च्यूँटी।
चिउड़ा, चिउरा *पुं.* {हिं.} धान को कूटकर बना हुआ चिपटा चावल, चिड़वा, चूड़ा।
चिउली *स्त्री.* {हिं.} महुए की जाति का एक जंगली वृक्ष, चिकनी सुपारी।
चिक *स्त्री.* {हिं.} बाँस आदि की पतली तीलियों का बना परदा; *पुं.* कसाई।
चिकट *वि.* {हिं.} मैल जमा हुआ, बहुत मैला।
चिकटना *क्रि. अ.* {हिं.} जमी हुई मैल के कारण लसीला होना।
चिकन *पुं.* {फा.} उभड़े हुए कशीदेवाला महीन सूती वस्त्र; *स्त्री.* चिकन काढ़ने का काम।
चिकना *कि.* {हिं.} चिक्कण, जो सूखा न हो, जिस पर से पैर फिसल जाए, स्निग्ध तेल लगा हुआ, स्वच्छ, साफ-सुथरा, अनुरागी, प्रेमी; *पुं.* स्निग्ध, यथा–तेल, घी, चरणी आदि।
चिंघाड़ना *अ.* {सं. चीत्कार} {*भाव.* चिंघाड़} चीखना, चिल्लाना; हाथी का बोलना या चिल्लाना।
चिंचिनी *स्त्री.* {सं. तिंतिड़ी} {सं. तिंतिड़ी} इमली का पेड़ या फल।
चिंज *पुं.* {सं. चिरंजीव} {*स्त्री.* चिंजी} लड़का; पुत्र, बेटा।
चिंड *पुं.* {?} नाच का एक प्रकार।
चिंतक *वि.* {सं.} {*भाव.* चिंतकता} चिंतन करनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिंतन पुं. {सं.} {स्त्री. चिंतना} बार-बार होनेवाला स्मरण, ध्यान, भावना; विचार गौर।

चिंतना पुं. {सं. चिंतन} किसी का चिंतन या ध्यान करना; चिंता या फिक्र करना; सोचना।

चिंतनीय वि. {सं.} चिन्तन या चिन्ता करने योग्य; जिसका ठीक होना अभी मान्य न हो।

चिंतवन पुं. चिंतन।

चिंता स्त्री. {सं.} चिंतन; किसी विषय या कार्य की सिद्धि के संबंध में मन में बार-बार होनेवाला विचार, सोच।

चिंतामणि पुं. {सं.} सब मनोरथ सिद्ध करनेवाला एक कल्पित रत्न; ब्रह्मा; परमेश्वर; सरस्वती का एक मंत्र जो लड़के की जीभ पर इसलिए लिखा जाता है कि उसे विद्या आए।

चिंतित वि. {सं.} {स्त्री. चिंतिता} जिसे चिंता हो, चिंतायुक्त।

चिंत्य वि. चिंतनीय।

चिंदी स्त्री. {देश.} बहुत छोटा टुकड़ा।

चिंघरना स. = चीथना।

चिंपाजी पुं. {अ.} एक प्रकार का वनमानुस।

चिउँटी स्त्री. चयूँटी।

चिउड़ा पुं. चिड़वा।

चिक स्त्री. {तु. चिक्} चिलमन; पुं. पशुओं को मारकर उनका मांस बेचनेवाला, जिसकी दुकान के आगे चिक पड़ी रहती है, कसाई।

चिकटना अ. {हिं. चिक्कट या चिकट} बहुत मैल से चिपचिपा होना।

चिकन स्त्री. {फा.} एक प्रकार का बूटीदार सूती कपड़ा।

चिकना वि. {सं. चिक्कण} {स्त्री. चिकनी; भाव. चिकनाई, चिकनापन, चिकनाहट} जो खुरदरा न हो, साफ और बराबर; जिसमें तेल लगा या मिला हो; कृत्रिम व्यवहार करनेवाला, खुशामदी; स्नेही, प्रेमी; धनवान, सम्पन्न; हृष्ट-पुष्ट और स्वस्थ; पुं. तेल, घी आदि चिकने पदार्थ।

चिकनाई स्त्री. {हिं. चिकना} चिकनाहट; चिकना पदार्थ, जैसे घी, तेल।

चिकना घड़ा वि. निर्लज्ज, बेहया।

चिकनाना स. {हिं. चिकना + आना (प्रत्य.)} चिकना करना या बनाना; मीठी-मीठी या खुशामद की बातें कहकर किसी को प्रसन्न करना; कोई बिगड़ी हुई बात बनाने या संभालने के लिए इधर-उधर की या बनावटी बातें करना।

चिकनापन पुं. = चिकनाहट।

चिकनाहट स्त्री. {हिं. चिकना + हट (प्रत्य.)} 'चिकना' होने का भाव या दशा, चिकनापन, चिकनाई।

चिकनिया वि. {हिं. चिकना} छैला, बाँका, रंगीला।

चिकनी बात स्त्री. खुशामद-भरी बात।

चिकनी सुपारी स्त्री. {सं. चिक्कणी} एक प्रकार की उबाली हुई सुपारी।

चिकर पुं. {?} एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

चिकरना अ. चिंघाड़ना।

चिकवा पुं. माँस बेचने वाला, 'चिक' (कसाई)।

चिकार पुं. = चिंघाड़, चीत्कार।

चिकारा पुं. {हिं. चिकार} {स्त्री. अल्पा चिकारी} सारंगी की तरह का एक बाजा; हिरन की तरह का एक जानवर।

चिकारी स्त्री. = चीत्कार, छोटा चिकारा, एक प्रकार का छोटा कीड़ा।

चिकित्सक पुं. {सं.} रोग का इलाज या चिकित्सा करनेवाला, वैद्य, हकीम, डाक्टर।

चिकित्सन वि. {सं. चिकित्सा} चिकित्सा या चिकित्सक से संबंध रखनेवाला, जैसे चिकित्सन अधिकारी, चिकित्सन प्रमाणपत्र (मेडिकल)।

चिकित्सन प्रमाणक पुं. {सं.} वह प्रमाण-पत्र जो अस्वस्थता, वयस्कता आदि सिद्ध करने के लिए किसी चिकित्सक से प्राप्त किया जाता है (मेडिकल सर्टिफिकेट)।

चिकित्सन-वैचारिक विज्ञान पुं. {सं.} वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें चिकित्सा-संबंधी मूल सिद्धांतों या तत्त्वों का विवेचन हो (मेडिकल ज्यूरिसप्रूडेंस)।

चिकित्सा स्त्री. {सं.} {वि. चिकित्सक, चिकित्स्य} रोग दूर करने की युक्ति या प्रक्रिया, इलाज।

चिकित्सा अधिकारी पुं. {सं.} वह अधिकारी जो किसी राजकीय विभाग या नगरपालिका आदि में लोगों की चिकित्सा की व्यवस्था करता हो (मेडिकल ऑफिसर)।

चिकित्सालय पुं. {सं.} वह स्थान जहाँ रोगियों की चिकित्सा या दवा होती हो, दवाखाना, अस्पताल (हॉस्पिटल)।

चिकित्सावकाश पुं. {सं.} वह अवकाश या छुट्टी, जो किसी रोगी कर्मचारी को चिकित्सा कराने के लिए मिलती है (मेडिकल लीव)।

चिकित्स्य पुं. {सं.} (रोग या रोगी) जो चिकित्सा करने से अच्छा हो सके; जिसकी चिकित्सा या उपाय हो सके।

चिकुटी स्त्री. चुटकी।

चिकुर पुं. {सं.} केश, बाल; पर्वत; रेंगनेवाले जन्तु, छछूंदर, गिलहरी सरीसृप; वि. चपल, चंचल।

चिकोटी स्त्री. चुटकी।

चिक्क-चाक वि. {अनु.} चमक-दमक वाला, चमकीला, चटकीला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिक्कट *वि.* 'चिकट', गर्द की जमी हुई मैल।
चिक्कण *वि.* {सं.} चिकना।
चिक्करना *अ.* चिघांड़ना।
चिक्कार *पुं.* = चिंघाड़।
चिचड़ा *पुं.* {देश.} एक जंगली पौधा जो दवा के काम में आता है, अपामार्ग, लटजीरा।
चिचड़ी *स्त्री.* किलनी।
चिचान *पुं.* {सं. सचान} बाज पक्षी।
चिचुकना *अ.* चुचुकना।
चिचोड़ना *स.* चचोड़ना।
चिजारा *पुं.* मेमार या राज।
चिट *स्त्री.* {सं. चोरी} कागज का कम चौड़ा और अधिक लम्बा टुकड़ा, जिस पर कोई बात या लेख लिखा जाए; कपड़े की ऐसी ही धज्जी।
चिटकना *अ.* {अनु.} {सं. चिटकाना} चिट शब्द करके टूटना; जगह-जगह से फटना; लकड़ी का जलते समय चिट-चिट करना; चिढ़ना; कली का फूटकर खिलना।
चिटकाना *अ.* {हिं. क्रि.} किसी सूखे पदार्थ को तोड़ना, खिजलाना, चिढाना।
चिटनवीस *पुं.* {हिं} चिट्ठी-पत्री, लिपीक।
चिट्टा[1] *वि.* {सं. सित्} सफेद, श्वेत।
चिट्टा[2] *पुं.* {?} झूठा बढ़ावा, उत्तेजना देना।
मुहा. चिट्ठा लड़ाना = ऐसी बात कहना जिससे दो आदमियों में झगड़ा हो।
चिट्ठा *पुं.* {हिं. चिट} आय-व्यय का हिसाब, लेखा; वर्ष भर की लाभ-हानि का पत्रक, फर्द; सिलसिलेवार सूची या विवरण; मजदूरी या वेतन में बाँटा जानेवाला धन।
चिट्ठी *स्त्री.* {हिं. चिट} वह कागज जिस पर किसी के जानने के लिए कोई बात या समाचार लिखा हो, पत्र, खत; पुरजा, रुक्का।
मुहा. किसी को अपनी चिट्ठी पर चढ़ाना = किसी को कुछ गिनना या समझना, किसी को कुछ महत्त्व का समझना।
वह कागज जिससे कोई काम करने या माल पाने, लाने या ले जाने का अधिकार मिले।
चिट्ठी-पत्री *स्त्री.* {हिं. चिट्ठी + सं. पत्र} किसी के यहाँ पत्र जाना और उसके यहाँ से उत्तर आना, पत्र-व्यवहार; इस प्रकार भेजे हुए पत्र और उनके उत्तर।
चिट्ठीरसाँ *पुं.* डाकिया।
चिड़चिड़ा *वि.* {हिं. चिड़चिड़ाना} जरा-सी बात में चिढ़ने या अप्रसन्न हो जानेवाला।
चिड़चिड़ाना *अ.* {अनु.} {*भाव.* चिड़चिड़ाहट} जरा-जरा-सी बातों पर बिगड़ पड़ना, चिढ़ना, झुँझलाना।
चिड़वा *पुं.* {सं. चिविट} हरे धान को भून और कूटकर बनाया हुआ चिपटा दाना, चिउड़ा।
चिड़ा *पुं.* {सं. चटक} गौरा पक्षी।
चिड़िया *स्त्री.* {सं. चटक} पंख और चोंचवाला द्विपद, पक्षी, पखेरू।
चिड़ियाखाना *पुं.* {हिं. चिड़िया + फा. ख़ाना} वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पशु-पक्षी देखने के लिए रखे जाते हैं।
चिड़िहार *पुं.* बहेलिया, व्याध।
चिड़ीमार *पुं.* बहेलिया।
चिड़ौला *पुं.* {हिं. चिड़ा + औला (प्रत्य.)} चिड़िया का छोटा बच्चा।
चिढ़ *स्त्री.* {हिं. चिढ़ना} चिढ़ने की अवस्था या भाव; वह वस्तु, बात या शब्द जिससे कोई चिढ़े।
चिढ़ना *अ.* {हिं. चिड़चिड़ाना} {*भाव.* चिढ़} अप्रसन्न होना, बिगड़ना; द्वेष रखना, कुढ़ना, झल्लाना।
चिढ़ाना *स.* {हिं. चिढ़ना} जान-बूझकर ऐसा काम करना कि कोई चिढ़े, कुढ़ाना, खिझाना, मुँह बनाना।
चित् *स्त्री.* {सं.} चैतन्य, ज्ञान, चेतना, अग्नि।
चित[1] *पुं.* {सं. चित्त} चित्त, मन।
चित[2] *वि.* {सं. चित = ढेर किया हुआ} पीठ के बल लेटा हुआ, 'पट' का उलटा; ढका हुआ।
चितउन *स्त्री.* चितवन।
चितकबरा *वि.* {सं. चित्र + कुर्बर} {*स्त्री.* चितकबरी} भिन्न-भिन्न रंगों के धब्बोंवाला, रंगबिरंगा।
चितचोर *पुं.* {हिं. चित + चोर} चित्त चुरानेवाला, प्यारा, प्रिय।
चितपट *पुं.* {हिं.} मल्लयुद्ध।
चितभंग *पुं.* {हिं.} ध्यान न लगना, उदासी, मतिभ्रम।
चितरनहार *पुं.* {हिं.} चित्रण करनेवाला।
चितरना *स.* {सं. चित्र} चित्रित या अंकित करना, चीतना; लगाना, जैसे काजल चितरना।
चितरनारी *स्त्री.* = चित्रशाला।
चितला *वि.* = चितकबरा।
चितवन *स्त्री.* {हिं. चेतना} ताकने या देखने का भाव या ढंग, अवलोकन, दृष्टि।
चितवना *पुं.* {हिं. चेतना} देखना।
चिता *स्त्री.* {सं. चित्या} चुनी हुई लकड़ियों का वह ढेर जिस पर मुरदा जलाते हैं।
चिताना *स.* चेताना।
चितारना[1] *स.* चितरना।
चितारना[2] *स.* {सं. चित्त} ध्यान में लाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चितावनी *स्त्री.* चेतावनी।

चिति *स्त्री.* {सं.} चिता; समूह, ढेर; चुनना, चयन; चैतन्य; ज्ञान; दुर्गा।

चितेरा *पुं.* चित्रकार; *वि.* = चित्रित

चितैला *पुं.* = चित्रकार।

चितौनी *स्त्री.* चितवन।

चित्त *पुं.* {सं.} अन्तःकरण, मन, दिल।

मुहा. चित्त चढ़ना = चित्त पर चढ़ना; *चित्त चुराना* = मन मोहना; *चित्त देना* = ध्यान देना; *चित्त पर चढ़ना* = मन में ध्यान बना रहना; याद आना; *चित्त बँटना* = चित्त एकाग्र न रहना; *चित्त में जमना या बैठना* = भूल जाना; समझ में आना; *चित्त से उतरना* = भूल जाना।

चित्तविक्षेप *पुं.* {सं.} चित्त की चंचलता या अस्थिरता, जो मन के एकाग्र होने में बाधक होती है।

चित्तविभ्रम *पुं.* {सं.} भ्रांति, भ्रम, धोखा; उन्माद।

चित्तवृत्ति *स्त्री.* {सं.} चित्त की वह अवस्था, जिसके अनुसार मनुष्य कोई विचार या काम करता है।

चित्ती[1] *स्त्री.* {सं. चित्र} छोटा धब्बा।

चित्ती[2] *स्त्री.* {हिं. चित} जुआ खेलने की एक प्रकार की चिपटी कौड़ी।

चित्तौर *पुं.* {सं. चित्रकूट} राजपूताने का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर।

चित्र *पुं.* {सं.} {*वि.* चित्रित, चित्रीय} चंदन आदि का तिलक; रेखाओं या रंगों से बनी हुई किसी वस्तु की आकृति, तस्वीर (पिक्चर); किसी वस्तु की वह प्रतिकृति जो किसी कथन, विवेचन, विवरण आदि को स्पष्ट करने के लिए उपस्थित की जाए (इलस्ट्रेशन); किसी वस्तु की ज्यों-की-त्यों तैयार की हुई प्रतिकृति (फोटो); सजीव और विस्तृत वर्णन।

मुहा. चित्र उतारना या खींचना = ऐसा वर्णन करना कि सब बातें चित्र के दृश्य की तरह सामने आ जाएँ।

काव्य का एक भेद, जिसमें व्यंग्य का चमत्कार नहीं रहता; काव्य में वह रचना जिसमें विशेष क्रम से लिखे पद्य के अक्षरों से घोड़े, रथ, कमल आदि के आकार बन जाते हैं; आकाश; एक प्रकार का कोढ़; चित्रगुप्त; *वि.* अद्‌भुत, विचित्र; रंग-बिरंगा।

चित्रक *पुं.* {सं.} चित्रकार; चीता, बाघ; चीता नामक ओषधि।

चित्रकला *स्त्री.* {सं.} चित्र बनाने की विद्या या कला।

चित्रकार *पुं.* {सं.} चित्र बनानेवाला, चितेरा।

चित्रकारी *स्त्री.* {हिं. चित्रकार} चित्र बनाने की कला; बनाए हुए चित्र।

चित्रकाव्य *पुं.* {सं.} ऐसा काव्य जिसके अक्षर किसी विशेष क्रम से लगाने पर किसी वस्तु का चित्र बन जाता है।

चित्रकूट *पुं.* {सं.} एक प्रसिद्ध पर्वत, जिस पर बनवास में राम और सीता बहुत दिनों तक रहे थे; चित्तौर।

चित्रगुप्त *पुं.* {सं.} वह देवता जो प्राणियों के पाप-पुण्य का लेखा-जोखा रखता है।

चित्रण *पुं.* {सं.} किसी सम अथवा असम तल पर रंगों से आकृति बनाकर उसमें लंबाई, चौड़ाई और गोलाई, रूप आदि दिखलाना, चित्र अंकित करना, तसवीर बनाना; सजीव वर्णन।

चित्रना *स.* {सं. चित्र + हिं. ना (प्रत्य.)} चित्रित करना; रंग भरना; बेल-बूटे बनाना; शोभा के लिए स्त्रियों के मुख पर सितारों, चंदन, केसर आदि से बेल-बूटे बनाना।

चित्रपट *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* चित्रपटी} वह कपड़ा, कागज आदि जिस पर चित्र बनाए जाते हैं; चित्राधार।

चित्रलिपि *स्त्री.* {सं.} लिपि का वह प्रकार जिसमें किसी वस्तु या भाव का सूचक चित्र-सा बना दिया जाता है, जैसे चीन की प्राचीन लिपियाँ।

चित्रवंत *पुं.* = चित्रकार।

चित्र-विचित्र *वि.* {सं.} रंग-बिरंगा, कई रंगों का; बेल-बूटेदार; अनेक प्रकार का, तरह-तरह का।

चित्रसारना *स.* चित्रना।

चित्रसारी *स्त्री.* {सं. चित्र + शाला} चित्रशाला; सजा हुआ शयनगृह, विलास भवन, रंग-महल; चित्रकारी।

चित्रस्थ *वि.* {सं.} चित्र में अंकित किया हुआ; चित्र में अंकित व्यक्ति के समान निस्तब्ध या निश्चल।

चित्रा *स्त्री.* {सं.} सत्ताईस नक्षत्रों में से एक; ककड़ी या खीरा।

चित्राक्ष *वि.* {तु.} सुन्दर नेत्रों वाला।

चित्राक्षी *स्त्री.* {सं.} सारिका, मैना।

चित्राटीर *पुं.* {सं.} चंद्रमा, शिव के एक अनुचर का नाम।

चित्रायुध *पुं.* {सं.} विलक्षण अस्त्र।

चित्रावसु *स्त्री.* {सं.} नक्षत्रों से मंडित रात्रि।

चित्रिक *पुं.* {सं.} चैत का महीना।

चित्राधार *पुं.* {सं.} वह पुस्तक जिसमें अनेक प्रकार के चित्र रखे जाते हैं, चित्रसंग्रह (एल्बम); चित्रपट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रिणी *स्त्री.* {सं.} कामशास्त्र में स्त्रियों के चार भेदों में से एक।
चित्रित *वि.* {सं.} चित्र में खींचा हुआ; बेल-बूटों, चित्तियों या धारियों से युक्त; वर्णित; अंकित।
चित्री *वि.* {सं.} चित्रयुक्त।
चित्रीकरण *पुं.* {सं.} चित्रण करने की कला, चित्रित करना।
चित्रीश *पुं.* {सं.} चंद्र, चंद्रमा।
चित्य *वि.* {सं.} पूजा, इकट्ठा करने योग्य।
चित्रोपम *वि.* {सं.} (वर्णन) जो चित्र के समान सजीव हो उठा हो।
चिथड़ा *पुं.* {सं. चीर्ण या चीर} फटा-पुराना कपड़ा।
चिथाड़ना *पुं.* {सं.} चीरना, फाड़ना; डाँटना, डपटना।
चिदात्मा *पुं.* {सं.} ब्रह्म।
चिदानंद *पुं.* {सं.} ब्रह्म।
चिदाभास *पुं.* {सं.} अन्तःकरण पर का ब्रह्म का आभास या प्रतिबिम्ब।
चिद्रूप *पुं.* {सं.} ज्ञानस्वरूप परमात्मा।
चिद्विलास *पुं.* {सं.} चैतन्य स्वरूप ईश्वर की माया।
चिनगारी *स्त्री.* {सं. चूर्ण, हिं. चून + अंगार} आग का छोटा कण या टुकड़ा, अग्निकण।
मुहा. *आँखों से चिनगारियाँ छूटना* = क्रोध से आँखें लाल होना।
चिनगी *स्त्री.* {हिं. चिनगारी} चिनगारी; *पुं.* वह लड़का जो नटों के साथ बाँस पर चढ़ता और तरह-तरह के खेल दिखाता है।
चिनाना *स.* चिनवाना, चुनवाना, ईंटों को जोड़ना।
चिनिया *वि.* {हिं. चीनी} चीनी के रंग का; चीन का; *पुं.* एक प्रकार का रेशा या नकली रेशम।
चिनिया बादाम *पुं.* मूँगफली।
चिनिया बेगम *स्त्री.* अफीम।
चिन्मय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* चिन्मयी} ज्ञानमय, चेतनायुक्त; *पुं.* परमेश्वर।
चिन्न *पुं.* {सं.} चणक, चना।
चिन्ह *पुं.* चिह्न।
चिन्हाना *क्रि. स.* {हिं.} परिचित कराना, पहचानना, लक्षण बनाना।
चिन्हानी *स्त्री.* {हिं. चिह्न} याद दिलानेवाली वस्तु; स्मारक; *पुं.* परिचित।
चिन्हार *वि.* {हिं.} परिचित, जान-पहचान का।
चिन्हारी *स्त्री.* {हिं.} परिचय।
चिपकना *अ.* {अनु. चिपचिप} गोंद आदि लसीली चीजों से दो वस्तुओं का आपस में जुड़ना; लिपटना, चिपटना।
चिपकाना *स.* {हिं. चिपकना} लसीली वस्तु से जोड़ना; गले लगाना, सटाना, चिमटाना, लिपटाना, आलिंगन करना।
चिपचिपा *वि.* {अनु. चिपचिप} चिपकने वाला, लसीला।
चिपचिपाना *अ.* {हिं. चिपचिप} छूने से चिपचिपा मालूम होना, रसदार, लसीला।
चिपटना *अ.* चिमटना, चिपकना, सटना।
चिपटा *वि.* {सं. चिपिट} {*स्त्री.* चिपटी} जिसकी सतह उठी हुई न हो, दबा हुआ, स्तर बराबर फैला हो।
चिपटाना *क्रि. स.* {हिं.} चिपकाना, सटाना, लिपटाना, आलिंगन करना।
चिपड़ी *स्त्री.* उपला।
चिप्पड़ *पुं.* चप्पड़।
चिप्पी *स्त्री.* {सं. चिपकना} कागज का वह छोटा टुकड़ा, जो किसी वस्तु पर चिपकाया जाए।
चिबुक *पुं.* {सं.} ठोड़ी।
चिमटना *अ.* {हिं. चिमटना} चिकपना; कसकर लिपटना; पीछा या पिंड न छोड़ना।
चिमटा *पुं.* {हिं. चिमटना} {*स्त्री.* अल्पा. चिमटी} दबाकर पकड़ने या उठानेवाला फैले मुँह का एक औजार; उक्त जैसा एक प्रकार का वाद्य।
चिमटी *स्त्री.* {हिं.} छोटा चिमटा, सुनारों का तार मोड़ने का यंत्र।
चिमटाना *स.* हिं. 'चिमटना' का *स.*; सटाना, लिपटाना, चिपकाना।
चिमड़ा *वि.* चीमड़।
चिमनी *स्त्री.* {अं.} मकान का धुआँ निकालनेवाला छेद या नल; लैम्प या लालटेन पर का शीशा।
चिमिकना *अ.* = चमकना।
चिरंजीव *वि.* {सं.} बहुत दिनों तक जीवित रहनेवाला, चिरजीवी; *विस्मयादि.* यह आशीर्वाद कि बहुत दिनों तक जीते रहो; *पुं.* पुत्र, बेटा।
चिरंटी *स्त्री.* {हिं.} पिता के घर रहनेवाली अधिक उम्र की कन्या, युवती।
चिरंतन *वि.* {सं.} पुराना, प्राचीन।
चिर *वि.* {सं.} दीर्घ, बहुत (समय); *क्रि. वि.* बहुत दिनों तक।
चिरकना *क्रि. अ.* {हिं.} कई बार में थोड़ा-थोड़ा करके मल निकलना।
चिरई *स्त्री.* चिड़िया, पक्षी।
चिरकांक्षित *वि.* {सं.} जिसकी चाह बहुत दिनों से मन में हो।
चिरकारी *वि.* {सं.} दीर्घसूत्री, सब कामों में देर करनेवाला।
चिरकाल *पुं.* {सं.} दीर्घकाल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिरकालिक (कालीन) *वि.* {सं.} बहुत दिनों का, पुराना।
चिरकुट *पुं.* चिथड़ा, फटा-पुराना कपड़ा।
चिरगा *पुं.* {?} कुछ लाली लिए हरे रंग का घोड़ा।
चिरचिटा *पुं.* {हिं.} चिचड़ा, अपामार्ग।
चिरजीवक *वि.* {सं.} चिरजीवी, अमर होना।
चिरजीवन *पुं.* {सं.} सदा बना रहनेवाला जीवन, अमर जीवन; *वि.* चिरजीवी।
चिरजीवी *वि.* {सं.} अधिक दिनों तक जीनेवाला, दीर्घायु; अमर।
चिरता *पुं.* चिलता (कवच)।
चिरना[1] *अ.* {सं. चीर्ण} सीध में फटना।
चिरना[2] *अ.* {हिं. चीरना} चीरा जाना।
चिरनिद्रा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* चिरनिद्रित} मृत्यु, मौत।
चिरपरिचित *वि.* {सं.} जिससे बहुत दिनों का परिचय हो; जाना-बूझा या समझा हुआ।
चिरपाकी *पुं.* {सं.} कपित्थ, कैथ।
चिरपुष्प *पुं.* {सं.} मौलसिरी, बकुल।
चिरपोसित *वि.* {सं.} चिरकोक्षित।
चिरमिटी *स्त्री.* {देश.} घुँघची।
चिरमी *स्त्री.* {देश.} घुँघची।
चिरवाना *स.* हिं. 'चीरना' का प्रे.; फड़वाना।
चिर-विरह *पुं.* {सं.} चिरकाल से बना विरह।
चिर-विस्मृत *वि.* {सं.} बहुत दिनों का भूला हुआ।
चिर-वैर *पुं.* {सं.} पुरानी दुश्मनी।
चिर-शत्रु *पुं.* {सं.} पुराना शत्रु।
चिर-शांति *स्त्री.* {सं.} स्थायी शांति।
चिर-संगी *पुं.* {सं.} सदा का साथी।
चिरस्थायी *वि.* {सं. चिरस्थायिन्} {*भाव.* चिरस्थायित्व} बहुत दिनों तक बना रहनेवाला।
चिरहँटा *पुं.* बहेलिया।
चिराई *स्त्री.* {हिं. चीरना} चीरने का भाव, काम या मजदूरी।
चिराक *पुं.* चिराग।
चिराग *पुं.* {फा.} दीपक, दीया।
चिरागदान *पुं.* {फा.} दीयट।
चिरातन *वि.* चिरंतन।
चिराना[1] *स.* {हिं. चीरना का प्रे.} चीरने का काम दूसरे से कराना; *अ.* चिरना।
चिराना[2] *वि.* {सं. चिरंतन} पुराना; टूटा-फूटा, जीर्ण।
चिरायँध *स्त्री.* {सं. चर्म + गंध} चमड़ा, बाल, मांस आदि के जलने की दुर्गंध।
चिरायता *पुं.* {सं. चिरतिक्त या चिरात्} दवा के काम में आनेवाला एक बहुत कड़वा पौधा।
चिरायु *वि.* {सं.} बड़ी आयुवाला।
चिरिहार *पुं.* बहेलिया।
चिरी *स्त्री.* चिड़िया।
चिरु *पुं.* {सं.} कंधे और बाँह का जोड़, मोढ़ा।
चिरौंजी *स्त्री.* {सं. चार + बीज} पयाल नामक वृक्ष के बीजों की गिरी।
चिरौरी *स्त्री.* {अनु.} दीनतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना।
चिलक *स्त्री.* {हिं. चिकना} चमक, कान्ति; हड्डी या नस में अचानक उठनेवाला दर्द, चमक; *पुं.* = तिलक (पौधा)।
चिलकाना *क्रि. स.* {हिं.} चमकाना, माँजकर सफेद करना।
चिलकई *स्त्री.* = चमक।
चिलकना *अ.* {हिं. चिल्ली = बिजली, या अनु.} रह-रहकर चमकना; चिलक (दर्द) होना।
चिलकाई *स्त्री.* {हिं. चिलक + आई (प्रत्य.)} चमचमाहट, चमक; उतार-चढ़ाव; उत्तेजना।
चिलकाना *स.* {हिं. चिलक} चमकाना।
चिलगोजा *पुं.* {फा.} एक प्रकार का मेवा, जो चीड़ या सनोवर का फल है।
चिलचिल *पुं.* {हिं.} अभ्रक, अवरख।
चिलचिलाना[1] *अ.* चिलकना।
चिलचिलाना[2] *स.* {अनु.} चमकाना।
चिलड़ा *पुं.* {देश.} चिल्ला या उलटा नामक पकवान।
चिलता *पुं.* {?} एक प्रकार का बख्तर या कवच।
चिलबिल *पुं.* {सं. चिलबिल्व} एक प्रकार का बड़ा जंगली वृक्ष; एक प्रकार का बरसाती पौधा।
चिलबिला (ल्ला) *वि.* {सं. चल + बल} {*स्त्री.* चिलबिली (ल्ली)} चंचल, चपल।
चिलम *स्त्री.* {सं. चिलमिलिका से फा.} मिट्टी की एक तरह की नलीदार कटोरी जिस पर तम्बाकू रखकर उसका धुआँ पीते हैं।
चिलमची *स्त्री.* {तु. चिलपचा से फा.} चौड़े मुँह का वह बरतन, जिसमें हाथ-मुँह धोते हैं।
चिलमन *स्त्री.* चिक।
चिलमिलिका *स्त्री.* {सं.} गले में पहनने वाला गहना, जुगनू, बिजली।
चिलमीलिका *स्त्री.* {सं.} खद्योत, जुगनू, बिजली होना।
चिलवाँस *पुं.* {?} चिड़ियाँ फँसाने का फंदा।
चिलिग *स्त्री.* चिलक।
चिल्लड़ *पुं.* {सं. चिल = वस्त्र} जूँ के आकार का एक सफेद कीड़ा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिल्लपों *स्त्री.* {हिं. चिल्लाना + (अनु.) पों} चिल्लाहट, शोर।

चिल्ला[1] *पुं.* {फा.} चालीस दिनों का समय।
मुहा. चिल्ले का जाड़ा = कड़ी सर्दी जो प्रायः 40 दिनों तक रहती है।

चिल्ला[2] *पुं.* {देश.} चने, मूँग आदि की घी में सिकी रोटी उलटा; धनुष की डोरी, पर्तचिका।

चिल्लाना *अ.* {हिं. चीत्कार} {*भाव.* चिल्लाहट, प्रे. चिल्लवाना} विपत्ति, क्रोध, आवेश आदि के समय जोर से बोलना, शोर या हल्ला करना।

चिल्लाहट *स्त्री.* {हिं. चिल्लाना} चिल्लाने की क्रिया या भाव।

चिल्लिका *स्त्री.* {सं.} झिल्ली या झींगुर नाम का कीड़ा; धूप।

चिल्ली *स्त्री.* {सं.} झिल्ली (कीड़ा); *स्त्री.* बिजली।

चिल्ही *स्त्री.* {हिं.} चील नामक पक्षी।

चिवि *पुं.* {सं.} चिबुक, ठोड़ी।

चिवुक *पुं.* {सं.} ठुड्डी, ठोड़ी।

चिहुँकना *अ.* चौंकना।

चिहुँटना *स.* {हिं. चिमटना} चुटकी काटना; चिपटना, लिपटना।

चिहुँटी *स्त्री.* चुटकी।

चिहुर *पुं.* {सं. चिकुर} केश, बाल।

चिह्न *पुं.* {सं.} दिखाई देने या समझ में आनेवाला ऐसा लक्षण, जिससे कोई चीज पहचानी जा सके या किसी बात का कुछ प्रमाण मिले, निशान (मार्क); कोई ऐसी छोटी बात जो किसी दूसरी बड़ी बात या घटना की सूचक हो, संकेत (साइन); किसी चीज या बात का पता देनेवाला कोई तत्व; किसी चीज की पहचान के लिए उस पर लगाया हुआ अंक या निशान; किसी चीज के संपर्क, संघर्ष या दाब से पड़ा हुआ निशान, छाप, जैसे चरणचिह्न (इम्प्रेशन); पताका, झंडा।

चिह्नांकन *पुं.* {सं.} चिह्न बनाने या लगाने का काम।

चिह्नित *वि.* {सं.} चिह्न किया हुआ; जिस पर चिह्न या निशान लगा हो (मार्क्ड)।

चींचपड़ *स्त्री.* {अनु.} विरोध में बहुत दबते हुए कहे हुए शब्द।

चींटवा *पुं.* च्यूँटा।

चींटी *स्त्री.* च्यूँटी।

चींतना *स.* चित्रना।

चींथना *स.* {सं. चीर्ण} नोचकर फाड़ना।

चीक *स्त्री.* चिल्लाहट।

चीकट *पुं.* {हिं. कीचड़} तेल की मैल; लसदार मिट्टी; *वि.* चिकट।

चीकना *अ.* {सं. चीत्कार} जोर से चिल्लाकर बोलना, चिल्लाना।

चीकर *पुं.* {हिं.} नहाने का हौज।

चीकू *पुं.* {देश.} महोगनी नामक वृक्ष का गूदेदार मीठा फल जो खाया जाता है।

चीख *स्त्री.* चिल्लाहट।

चीखना *स.* चखना; *अ.* चीकना, जोर से चीखना।

चीखर (ल) *पुं.* कीचड़।

चीखल *पुं.* {हिं.} कीच, कीचड़।

चीठ *स्त्री.* {हिं.} कीट, मैल।

चीज *स्त्री.* {फा. चीज} पदार्थ, वस्तु, द्रव्य; अलंकार, गहना; गीत, विलक्षण या महत्त्व की वस्तु या बात।

चीठी *स्त्री.* चिट्ठी।

चीड़ *पुं.* {सं. चीड़ा} एक बहुत ऊँचा और लंबा पेड़ जिसके गोंद से गंधाबिरोजा निकलता है।

चीड़ा *पुं.* {?} काँच की बनी हुई छोटी गुरिया या मनका।

चीत *पुं.* {सं. चित्रा} चित्रा नक्षत्र; *स्त्री.* = चेतना।

चीढ़ *पुं.* {हिं.} बिरोजा वाला वृक्ष, चीड़।

चीतना[1] *अ.* {हिं. चेतना} मन में सोचना, जैसे किसी का बुरा चीतना; चेतना।

चीतना[2] *स.* {सं. चित्र} चित्र या बेल-बूटे बनाना।

चीतर *पुं.* चीतल; चित्र।

चीतल *पुं.* {हिं. चित्ती} एक प्रकार का हिरन; एक प्रकार का बड़ा साँप; सिक्का।

चीता[1] *पुं.* {सं. चित्रक} एक प्रसिद्ध हिंसक जंगली पशु, ओषधि के काम का एक पेड़।

चीता[2] *वि.* {हिं. चेतना} मन में सोचा हुआ।

चीत्कार *पुं.* {सं.} चिल्लाहट, शोर।

चीत्कारी *वि.* चीत्कार करनेवाला।

चीथड़ा *पुं.* चिथड़ा।

चीथना *स.* {सं. चीर्ण} फाड़कर टुकड़े-टुकड़े करना, फाड़ना।

चीन *पुं.* {सं.} झंडा, पताका; तागा; एक प्रकार का रेशमी कपड़ा; एशिया का एक प्रसिद्ध देश।

चीनक *पुं.* {सं.} चेना या कँगनी नामक अन्न, चीनी कपूर।

चीनना *क्रि. स.* {हिं.} चीन्हना, पहचानना।

चीनपिष्ट *पुं.* {सं.} सिंदूर, सेंदुर।

चीनांशुक *पुं.* {सं.} चीन देश की लाल बनात; एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, जो पहले चीन से आता था।

चीना *वि.* {सं. चीन} चीन देश का।

चीनी *स्त्री.* {चीन (देश) + ई (प्रत्य.)} सफेद चूर्ण के रूप में मिठास का सार, जो ईख या खजूर आदि के रस से बनता है, शक्कर; *वि.*

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीन देश का; पुं. चीन देख का निवासी; *स्त्री.* चीन देश की भाषा।

चीनी मिट्टी *स्त्री.* {हिं. चीनी (*वि.*) + मिट्टी} एक प्रकार की सफेद मिट्टी जिसके बरतन, खिलौने आदि बनते हैं।

चीन्हना *स.* पहचानना।

चीप *पुं.* चिप्पड़; चेप।

चीमड़ *वि.* {हिं. चमड़ा} जो बिना टूटे खींचा, मोड़ा या झुकाया जा सके।

चीयाँ *पुं.* {सं. चिंचा} इमली का बीज।

चीर[1] *पुं.* {सं.} वस्त्र, कपड़ा; पेड़ की छाल; चिथड़ा, लत्ता; मुनियों या बौद्ध भिक्षुओं का वस्त्र।

चीर[2] *स्त्री.* {हिं. चीरना} चीरने की क्रिया या भाव; चीरने से बनी हुई दरार।

चीरक *पुं.* {सं.} लेख्य (डाकुमेंट); मुट्ठे की तरह लपेटा हुआ लम्बा कागज (रोल, स्क्रोल)।

चीरपर्ण *वि.* {सं.} साल का वृक्ष।

चीरघर *पुं.* वह स्थान जहाँ आकस्मिक दुर्घटनाओं से मरनेवालों के शव चीर-फाड़ करके मृत्यु का कारण जानने के लिए भेजे जाते हैं (मॉर्ट्युअरी)।

चीरचरम *पुं.* बाघंबर।

चीरना *स.* {सं. चीर्ण} तेज धारवाले हथियार से बीच में से काटना; फाड़ना।

मुहा. माल या रुपया चीरना = अनुचित रूप से धन प्राप्त करना।

चीर-फाड़ *स्त्री.* {हिं. चीरना + फाड़ना} चीरने-फाड़ने का काम या भाव; अंगों या फोड़ों को चीरने का काम या भाव, अस्त्र-चिकित्सा (ऑपरेशन)।

चीरा *पुं.* {हिं. चोरी} एक प्रकार का धारीदार रंगीन कपड़ा जिसकी पगड़ी बनती है; चीरकर बनाया हुआ क्षत या घाव।

चीरिका *स्त्री.* {सं.} झींगुर, झिल्ली।

चीरी *स्त्री.* चिड़िया।

चीर्ण *वि.* {सं.} फटा या चिरा हुआ।

चील *स्त्री.* {सं. चिल्ल} गिद्ध की जाति की एक बड़ी चिड़िया।

चील-झपट्टा *पुं.* {हिं. चील + झपटना} चील की तरह झपटकर किसी से कोई चीज छीन या ले लेने की क्रिया या भाव।

चीलर *पुं.* चिल्लड़।

चीवर *पुं.* {सं.} संन्यासियों या भिक्षुओं के पहनने का कपड़ा।

चुंगल *पुं.* चंगुल।

चुंगी *स्त्री.* {सं. शुल्क, प्रा. शुंक} चुटकी या चंगुल भर चीज; शहर में आनेवाली बाहरी माल पर लगनेवाला महसूल।

चुँघाना *स.* {हिं. चुसाना} चुसाना, चुसाकर पिलाना।

चुंच, चुंचरी *स्त्री.* {हिं.} चंचु, चोंच।

चुंटा *पुं.* {हिं.} छोटा कुआ, कुइया।

चुंडित *पुं.* {हिं. चुंदी} चुंदीवाला।

चुंदरी *स्त्री.* चूनरी।

चुंदी *स्त्री.* {सं. चूड़ा} बालों का वह गुच्छा, जो हिन्दू लोग सिर के ऊपरी मध्य भाग में रखते हैं, शिखा, चोटी।

चुंधा *वि.* {हिं. चौ = चार + अंध} {*स्त्री.* चुंधी} अंधा; छोटी आँखोंवाला।

चुंधियाना *अ.* चौंधियाना।

चुंबक *पुं.* {सं.} {*भाव.* चुम्बकत्व} वह जो चुंबन करे; ग्रंथों को केवल इधर-उधर से उलटने-पलटनेवाला; वह पत्थर या धातु जो लोहे को अपनी ओर खींचता है।

चुंबकत्व *पुं.* {सं.} चुंबक का गुण या भाव; आकर्षण-शक्ति।

चुंबकीय *वि.* {सं.} चुंबक-सम्बन्धी।

चुंबन *पुं.* {सं.} {*वि.* चुंबकीय, चुंबित} चूमने की क्रिया; चुम्मा, बोसा; स्पर्श।

चुंबना *स.* = चूमना।

चुंबी *वि.* {सं. चुम्बिन्} चूमनेवाला; छूने या स्पर्श करनेवाला।

चुआना *अ.* चूना।

चुआना *स.* हिं. चूना का सं.।

चुकंदर *पुं.* {फा.} गाजर की तरह का एक कन्द।

चुक *पुं.* चूक।

चुकता *वि.* {हिं. चुकना} (हिसाब या ऋण) जो चुका दिया गया हो, निश्शेष, अदा।

चुकना *अ.* {सं. च्युत्कृत} समाप्त होना, बाकी न रहना; दिया जाना, चुकता होना; तै होना, निपटना; कूकना; समाप्ति सूचक संयोज्य क्रिया, जैसे खा चुकना।

चुकरी *स्त्री.* {हिं.} रेवंद चीनी।

चुकाना *स.* {हिं. चुकना} चुकता कर देना, बाकी न रखना; तै करना, निपटारा करना।

चुकाव *पुं.* {हिं. चुकना} चुकने या चुकाए जाने की क्रिया या भाव।

चुकिया *स्त्री.* {हिं.} छोटा-कुल्हड़, पुरवा।

चुक्कार *पुं.* {हिं.} शेर की चिंघाड़, गरजन।

चुक्की *स्त्री.* {हिं.} छल-कपट।

चुक्षा *स्त्री.* {हिं.} हत्या, हिंसा।

चुक्कड़ *पुं.* {सं. चषक} मिट्टी का छोटा बरतन, कुल्हड़, पुरवा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुखाना *अ.* सं. चोखाना।

चुगत *स्त्री.* {हिं. चुगना} चुगने की क्रिया या भाव।

चुगना *स.* {फा. चुंग} चिड़ियों का चोंच से दाने या चारा उठाकर खाना।

चुगलखोर *पुं.* {फा. चुग़लखोर} चुगली खाने या शिकायत करनेवाला, लुतरा।

चुगद *पुं.* {फा.} मूर्ख व्यक्ति।

चुगल *पुं.* {फा.} निंदा, पीठ पीछे शिकायत।

चुगली *स्त्री.* {फा. चुग़ली} झगड़ा लगानेवाली किसी की वह बात जो उसके परोक्ष में किसी से कही जाती है, शिकायत।

चुगा *पुं.* {हिं. चुगना} चिड़ियों के चुगने का चारा।

चुगाना *स.* हिं. 'चुगना' का सं.।

चुगुल *पुं.* चुगलखोर।

चुचकारना *पुं.* चुमकारना।

चुचाना *अ.* चूना।

चुचकना *अ.* {सं. चुव्यते} ऐसा सूखना कि झुर्रियाँ पड़ जाएँ।

चुटकना *स.* {हिं. चुटकी} चुटकी से तोड़ना; साँप का काटना।

चुटकी *स्त्री.* {अनु. चुटचुट} पकड़ने के लिए अँगूठे और तर्जनी का योग।

मुहा. चुटकी बजाना = एक विशेष प्रकार से अँगूठे को बीच की उँगली पर छटकाकर शब्द निकालना; चुटकी बजाते = बात की बात में, तुरन्त; चुटकियों में उड़ाना = बहुत सहज समझना। पद चुटकी भर = जरा-सा। चुटकियों में = बहुत शीघ्र।

चुटकी बजने का शब्द; चुटकी भर अन्न, थोड़ा अन्न।

मुहा. चुटकी माँगना = भिक्षा माँगना।

अँगूठे और तर्जनी से किसी के शरीर का चमड़ा पकड़कर दबाना जिससे उसे कुछ पीड़ा हो, चिकोटी।

मुहा. चुटकी भरना या काटना = अँगूठे और तर्जनी से चमड़ी को दबाकर पीड़ित करना; चुभती हुई बात कहना; चुटकी लेना = हँसी उड़ाना; चुभती हुई बात कहना।

चुटकुला *पुं.* {हिं. चोट + कला} चमत्कार पूर्ण हँसी की या छोटी मजेदार बात।

मुहा. चुटकुला छोड़ना = ऐसी बात कहना जिससे झगड़ा खड़ा हो।

दवा का छोटा और गुणकारी नुस्खा, लटका।

चुटफुट *स्त्री.* {अनु.} फुटकर वस्तु।

चुटिया *स्त्री.* {हिं. चोटी} शिखा, चोटी।

चुटीला *वि.* {हिं. चोट} जिसे चोट लगी हो, घायल।

चुटैल *वि.* {हिं. चोट} घायल; चोट करनेवाला।

चुड़िहार *पुं.* {हिं. चूड़ी + हारा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* चुड़िहारिन} चूड़ियों का व्यवसायी।

चुड़ैल *स्त्री.* {सं. चूड़ा + ऐल (प्रत्य.)} भूतनी, डायन; कुरूपा स्त्री; क्रूर और लड़ाकी स्त्री।

चुदक्कड़ *वि.* {हिं.} अत्यंतकामी, अधिक स्त्री-प्रसंग करनेवाला।

चुदना *स्त्री.* {हिं.} स्त्री का पुरुष से संभोग करना।

चुदवाई *स्त्री.* {हिं.} मैथुन, इसके लिए धन देना।

चुदवास *स्त्री.* {हिं.} मैथुन की कामना।

चुदवासी *स्त्री.* {हिं.} मैथुन कराने की इच्छा करनेवाली स्त्री।

चुदवाया *पुं.* {हिं.} स्त्री-प्रसंग करनेवाला कामुक।

चुदाई *स्त्री.* {हिं.} स्त्री-प्रसंग, मैथुन।

चुनचुनाना *अ.* {अनु.} {*भाव.* चुनचुनाहट} कुछ जलन लिए हुए खुजली होना।

चुनट *स्त्री.* चुनन।

चुनन *स्त्री.* {हिं. चुनना} कपड़े आदि में बनाई हुई सिलवट।

चुनना *स.* {सं. चयन} छोटी-छोटी चीजें हाथ से उठाकर इकट्ठी करना, जैसे फूल चुनना; बहुत-सी चीजों में से कुछ अच्छी चीजें पसन्द करके अलग करना, छाँटना; कुछ लोगों में से किसी को अपना प्रतिनिधि बनाने के लिए कहना, निर्वाचित करना; अच्छी चीज में से खराब या कूड़ा-करकट छाँटकर अलग करना, जैसे दाल या चावल चुनना; सजाकर या एक पर एक करके ठीक तरह से रखना, जैसे मेज पर खाना या दीवार की ईंटें चुनना।

मुहा. किसी को दीवार में चुनना = किसी के प्राण लेने के लिए उसे खड़ा करके उसके चारों ओर दीवार उठाना।

कपड़े में छोटी-छोटी तह लगाना या उसे सुन्दर बनाने के लिए उसमें जगह-जगह बल या सिकुड़न डालना।

चुनरी *स्त्री.* {हिं. चुनना} चूनरी; चुन्नी (रत्न)।

चुनवाँ *वि.* {हिं.} चुना हुआ, बढ़िया।

चुनवाना *क्रि. स.* {हिं.} चुनने का काम दूसरे से कराना।

चुनाना *क्रि. स.* {हिं.} बिनाना, छँटवाना, दीवार में चुनवाना।

चुनाई *स्त्री.* {हिं. चुनना}

चुनाव *पुं.* {हिं. चुनना} चुनने की क्रिया या भाव (सेलेक्शन); किसी कार्य के लिए किसी व्यक्ति को चुनना, निर्वाचन (इलेक्शन)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. *चुनाव लड़ना* = किसी चुनाव या निर्वाचन में स्वयं खड़े होकर या किसी उम्मीदवार की ओर से किसी दूसरे उम्मीदवार को हराने का प्रयत्न करना।

वह वस्तु या व्यक्ति जिसे काम के लिए चुना जाए, जैसे आपका यह चुनाव कुछ अच्छा नहीं हुआ।

चुनाव-याचिका *स्त्री.* {अनियमितता या धाँधली के कारण} चुनाव को अवैध घोषित करने के लिए दिया जानेवाला प्रार्थना-पत्र।

चुनिंदा *वि.* {हिं. चुनना + इंदा (प्रत्य.)} चुना हुआ; बढ़िया।

चुनी *स्त्री.* चुन्नी।

चुनौटी *स्त्री.* चूनेदानी।

चुनौती *स्त्री.* {हिं. चुनना} शत्रु या प्रतिद्वन्द्वी को दी जानेवाली ललकार; किसी से यह कहना कि तुममें शक्ति हो, तो अमुक काम कर दिखलाओ या अमुक बात सिद्ध करो, आह्वान (चैलेंज)।

चुन्नी *स्त्री.* {सं. चूर्ण} मानिक आदि का बहुत छोटा टुकड़ा, बहुत छोटा रत्न, रत्नकण; अनाज या लकड़ी का चूरा; चमकी, सितारा।

चुप *वि.* {सं. चूप्} जो कुछ न बोले, अवाक्, मौन।

चुपका *वि.* {हिं. चुप} मौन।

मुहा. *चुपके से* = बिना कुछ कहे-सुने; गुप्त रूप से, चुपचाप।

चुपचाप *क्रि. वि* बिना कुछ कहे-सुने, शांत भाव से; छिपे-छिपे; चेष्टा या प्रयत्न से रहित; निर्विरोध।

चुपड़ना *स.* {हिं. चिपचिपा} लेप करना; इधर-उधर की बातों से दोष या भूल छिपाना; चिकनी-चुपड़ी बातें कहना।

चुपना *अ.* = चुप होना।

चुपाना *अ.* {हिं. चुप} चुप होना; *स.* किसी को चुप कराना।

चुप्पा *वि.* {हिं. चुप} {*स्त्री.* चुप्पी} प्रायः चुप रहने और कम बोलनेवाला।

चुप्पी *स्त्री.* {हिं. चुप} मौन।

चुभना *अ.* {अनु.} {सं. चुभाना} नुकीली वस्तु का नरम स्तर में घुसना, गड़ना, धँसना; खटकना, बुरा लगना; मन में बैठना।

चुभकना *क्रि. अ.* {हिं.} पानी में डूबना-उतराना, गोता खाना।

चुभकी *स्त्री.* {हिं.} डुबकी, गोता।

चुभलाना *स.* {अनु.} मुँह में रखकर घुलाना या इधर-उधर करना।

चुभाना *स.* हिं. 'चुभना'।

चुभीली *वि.* {हिं.} चुभनेवाला।

चुमकार *स्त्री.* {हिं. चूमना + कार} चूमने का-सा प्यार का शब्द, पुचकार।

चुमकारना *स.* {हिं. चुमकार} प्रेमपूर्वक चूमने का-सा शब्द करना, पुचकारना, दुलारना।

चुम्मा *पुं.* 'चुंबन'; बोसा लेना।

चुर[1] *पुं.* {देश.} जंगली पशुओं की माँद, विवर।

चुर[2] *वि.* {सं. प्रचुर} बहुत, अधिक।

चुरकना *क्रि. अ.* {हिं.} चिड़ियों का चहचहाना, चेंचें करना, चूर होना।

चुरकी *स्त्री.* {हिं.} चोटी, चुटिया, शिखा।

चुरकुस *वि.* {हिं. चूर} तोड़-फोड़कर टुकड़े-टुकड़े किया हुआ, चकनाचूर।

चुरना *अ.* {सं. चूर = जलना, पकना} पानी में उबलकर पकना, सीझना; गुप्त मंत्रणा होना।

चुरमुरा *वि.* {अनु.} चुरमुर शब्द करके सहज में टूटनेवाला।

चुरमुराना *अ.* {अनु.} चुरमुर शब्द करके टूटना; *स.* चुरमुर शब्द करके तोड़ना।

चुराना[1] *स.* {सं. चूर् = चोरी करना} {प्रे. चुरवाना} दूसरे की चीज छिपकर लेना, चोरी करना।

मुहा. *चित्त चुराना* = मन मोहित करना; जी चुराना = मन न लगाना।

आड़ में करना, छिपाना।

मुहा. *आँखें चुराना* = सामने न आना।

चुराना[2] *स.* {हिं. चुरना} उबालना, पकाना।

चुरी *स्त्री.* चूड़ी।

चुरुट *पुं.* {सं. शेरूट} पत्तों में लपेटा हुआ तंबाकू का चूरा जिसका धुआँ पीते हैं (सिगार)।

चुरू *पुं.* चुल्लू।

चुल *स्त्री.* {सं. चल = चंचल} अंग के सहलाए जाने की इच्छा, खुजली; कोई काम करने की प्रबल वासना।

चुलचुलाना *अ.* {हिं. चुल} चुलचुली या हलकी खुजली होना।

चुलचुली *स्त्री.* चुल।

चुलबुल *स्त्री.* {हिं.} चंचलता, चपलता।

चुलबुला *वि.* {सं. चल + बल} {*स्त्री.* चुलबुली} {*भाव.* चुलबुलाहट} चंचल, चपल; नटखट।

चुलबुली *स्त्री.* {हिं.} खुजलाहट, चुल।

चुलबुलाना *अ.* {हिं. चुलबुल} {*भाव.* चुलबुलाहट} चंचल होना, चपलता करना।

चुलाना *स.* चुआना।

चुलूक *पुं.* {हिं.} चुल्लू।

चुल्लू *पुं.* {सं. चुलुक} कुछ लेने या पीने के लिए गहरी की हुई हथेली, अंजुली।

मुहा. *चुल्लू भर पानी में डूब मरना* = लज्जा के मारे गड़ जाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुवना *अ.* चूना; *वि.* जो चूता हो, चूनेवाला।
चुवाना *स.* चुआना।
चुसकी *स्त्री.* {हिं. चूसना} सुरककर पीने की क्रिया, सुरक, घूँट।
चुसना *अ.* {हिं. चूसना} चूसा जाना; सार या रस से हीन किया जाना; धन देते-देते निर्धन हो जाना; चिचोड़ा जाना, निचोड़ा जाना, खंखल होना, शक्तिहीन होना।
चुसनी *स्त्री.* {हिं. चूसना} (बच्चों का) मुँह में डालकर चूसने का खिलौना; छोटे बच्चों को दूध पिलाने की शीशी।
चुसवाना *क्रि.अ.* {हिं.} चूसने का काम दूसरे से कराना।
चुसाई *स्त्री.* {हिं.} चूसने वाली क्रिया या भाव।
चुसाना *क्रि. अ.* {हिं.} चूसने का काम कराना, चूसने देना।
चुसौवल *पुं.* {हिं.} चूसने की क्रिया।
चुसाना *स.* हिं. 'चूसना' का प्रे.।
चुस्त *वि.* {फा.} कसा हुआ, तंग; फुरतीला; दृढ़, मजबूत।
चुस्ती *वि.* {फा.} फुरती, तेजी; कसावट, 'ढीलापन' का विपर्याय; दृढ़ता, मजबूती।
चुहचुहा *वि.* {हिं. चुहचुहाना} {*स्त्री.* चुहचुही} = चुहचुहाता।
चुहचुहाता *वि.* {हिं. चुहचहाना} सरस, मजेदार; चटकीला।
चुहचुहाना *अ.* {अनु.} रिसना; चटकीला होना; चहचहाना।
चुहट *स्त्री.* {हिं. चुहटना} चुहटने की क्रिया या भाव; कसक, पीड़ा।
चुहटना *अ.* चिटमटना।
चुहड़ा *पुं.* {देश.} भंगी, मेहतर; श्वपच, चांडाल।
चुहना *पुं. स.* = चूसना; दाँतों से दबाकर रस चूसना।
चुहल *स्त्री.* {अनु. चुहचुह = चिड़ियों की बोली} हँसी, ठिठोली।
चुहलबाज *वि.* {हिं. चुहल + फा. बाज़} दिल्लगीबाज, विनोदशील, विनोदी।
चुहिया *स्त्री.* {हिं. चूहा} 'चूहा' का *स्त्री.* और अल्पा. रूप।
चुहुँटना *स.* {अनु.} चिकोटी काटना; परेशान या तंग करना; *अ.* चिमटना।
चुहुँटनी *स्त्री.* {देश.} गुंजा, घुँघची।
चुहुल *वि. स्त्री.* चुहल।
चूँ *स्त्री.* {अनु.} छोटी चिड़ियों की बोली; बहुत धीमा शब्द।
मुहा. चूँ करना = नाममात्र का प्रतिवाद करना।
चूँकि *क्रि. वि.* {फा.} क्योंकि।
चूक[1] *स्त्री.* {हिं. चूकना} भूलने या चूकने की क्रिया या भाव (स्लिप); भूल या चूक से छूटी हुई बात या काम (ओमिशन)।
चूक[2] *पुं.* {सं.} खट्टे फलों के रस से बना हुआ एक बहुत खट्टा साग; *वि.* बहुत अधिक खट्टा।
चूकना *अ.* {सं. च्यवति} भूल करना; लक्ष्य से विचलित होना; अवसर खो देना।
चूका *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का खट्टा शाक।
चूखना *स.* = चूसना।
चूची *स्त्री.* {सं. चूचुक} स्तन, कुच; कुच के ऊपर की घुंडी; स्त्री की छाती; **-पीता** *वि.* बहुत छोटा, माँ का दूध पीनेवाला बच्चा; **-पीना** स्तनपान करना; **-मलना** स्त्री का स्तन मर्दन करना।
चूचुक *पुं.* {सं.} चूची, स्तन, कुच।
चूजा *पुं.* {फा. चूज़ा} मुर्गी का बच्चा।
चूडांत *वि.* {सं.} चरम सीमा का; *क्रि. वि.* अत्यंत सीमा जहाँ तक कोई बात हो या पहुँच सकती हो, पराकाष्ठा (क्लाईमेक्स)।
चूड़ा *स्त्री.* {सं.} शिखा, चोटी; मोर की कलगी; घुँघची; चूड़ाकरण संस्कार; *पुं.* {सं.} हाथ में पहनने का कड़ा; हाथी-दाँत की एक प्रकार की चूड़ियाँ।
चूड़ाकर्म *पुं.* {सं.} मुंडन संस्कार।
चूड़पाश *पुं.* {सं.} स्त्रियों के सिर के बालों का जूड़ा; प्राचीन काल की स्त्रियों का एक प्रकार का केश-विन्यास।
चूड़ामणि *पुं.* {सं.} सिर का एक गहना, सीसफूल; सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति या वस्तु।
चूड़ी *स्त्री.* {हिं. चूड़ा} कोई वृत्ताकार वस्तु; घेरा, छल्ला; स्त्रियों, मुख्यतः सुहागिन स्त्रियों के हाथ का गहना;
मुहा. चूड़ियाँ ठंडी करना = स्त्रियों का नई चूड़ियाँ पहनने के लिए पुरानी चूड़ियाँ तोड़ना; *चूड़ियाँ पहनना* = स्त्रियों की तरह कायर बनना। ग्रामोफोन बाजे का वह तवा जिसमें, गाना भरा रहता है (रेकार्ड)।
चूड़ीदार *वि.* {हिं. चूड़ी + फा. दार} जिसमें चूड़ियाँ, छल्ले या घेरे पड़े हों।
चूड़ीदार पाजामा *पुं.* तंग मोहरी का एक प्रकार का पाजामा।
चूतड़ *पुं.* {हिं. चूत + तल} पीठ की ओर का, कमर और जाँघ के बीच का मांसल भाग, नितंब।
चूत *पुं.* {सं.} आम का वृक्ष; *स्त्री.* {हिं.} भग, योनि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूतक पुं. {सं.} आम का वृक्ष।
चूतिया वि. {हिं.} मूर्ख, फूहड़।
चून पुं. {सं. चूर्ण} चूर्ण, चूरा; आटा।
चूनरी स्त्री. {हिं. चुनना} स्त्रियों के पहनने या ओढ़ने का वह रंगीन कपड़ा, जिसमें छोटी-छोटी बुंदकियाँ होती हैं।
चूना[1] पुं. {सं. चूर्ण} पत्थर, कंकड़, शंख, मोती आदि पदार्थों को फूँककर बनाया जानेवाला एक प्रकार का सफेद क्षार।
मुहा. चूना लगाना = किसी को नुकसान पहुँचाना।
चूना[2] अ. {सं. च्यवन} बूँद-बूँद गिरना, टपकना; अचानक ऊपर से नीचे गिरना; किसी चीज में ऐसा छेद हो जाना जिसमें से कोई द्रव पदार्थ टपके; गर्भपात होना।
चूनी स्त्री. चुन्नी।
चूनेदानी स्त्री. {हिं. चूना + फा. दान} चूना रखने की डिबिया, चुनौटी।
चूमना स. {सं. चुंबन} होंठों से किसी का कोई अंग स्पर्श करना, चुम्मा लेना।
चूमा पुं. चुंबन, चुम्मा-चाटी; स्त्री. प्रेम से चूमने की क्रिया।
चूर पुं. चूर्ण; किसी पदार्थ के टुकड़े करना, महीन करना, चूर्ण करना; वि. थका हुआ, शिथिल।
चूरणि स्त्री. चूर्णी।
चूरन पुं. चूर्ण।
चूरना स. {सं. चूर्णन} चूर या छोटे टुकड़े करना; तोड़ना।
चूरमा पुं. {सं. चूर्ण} घी और चीनी मिला हुआ रोटी या बाटी का चूर।
चूरा पुं. {सं. चूर्ण} चूर्ण; बुरादा; पुं. चूड़ा।
चूर्ण पुं. {सं.} किसी पदार्थ के टूटे या पिसे हुए बारीक टुकड़े, चूरा, बुकनी; पाचक दवा की बुकनी, चूरन; वि. चूर, टूटा-फूटा।
चूर्णन पुं. {सं.} चूर्ण करना या बनाना।
चूर्णकार पुं. {सं.} चूर्ण करनेवाला, आटा पीसने वाला।
चूर्णकुंतल पुं. {सं.} अलक, लट।
चूर्णखंड पुं. {सं.} कंकड़।
चूर्णा स्त्री. {सं.} आर्याछंद का एक भेद।
चूर्णि स्त्री. {सं.} कौड़ी, कपर्दक।
चूर्णिका स्त्री. {सं.} कठिन पदों की व्याख्या अथवा कठिन शब्दों के अर्थ बतानेवाली पुस्तक।
चूर्णित वि. {सं.} चूर किया हुआ।
चूर्णी स्त्री. {सं. चूर्णि} भाष्य, व्याख्या, टीका आदि जिनसे कठिन बातें सहज में समझी जा सकें; चूर्ण।
चूल[1] पुं. {सं.} शिखा; बाल।
चूल[2] स्त्री. {देश.} दूसरी लकड़ी के छेद में बैठाने के लिए किसी लकड़ी का पतला सिरा।
चूल्क पुं. {सं.} हाथी की कनपटी।
चूल्दान पुं. {हिं.} पाकशाला, रसोईघर।
चूलिक पुं. {सं.} पूरी, लूची।
चूल्हा पुं. {सं. चूल्लि} आग का वह पात्र जिस पर भोजन पकाते हैं।
मुहा. चूल्हा जलाना या फूँकना = भोजन बनाना।
पद. चूल्हे में जाए या चूल्हे छोड़ भाड़ में जाए = दुर्दशा भोगने को ही उससे भी बढ़कर दुर्दशा भोगे (उपेक्षा और तिरस्कार का सूचक)।
चूषण पुं. {सं.} चूसना; चूसने की क्रिया।
चूष्य वि. {सं.} चूसने योग्य।
चूसना स. {सं. चूषण} कोई चीज मुँह से दबाकर उसका रस पीना; धीरे-धीरे अनुचित रूप से किसी से रुपए वसूल करना।
चूहड़ा पुं. {?} {स्त्री. चूहड़ी} भंगी या मेहतर, चांडाल, श्वपच।
चूहा पुं. {अनु. चू + हा (प्रत्य.)} {स्त्री. अल्पा. चूही, चुहिया} एक छोटा जन्तु जो घरों, खेतों या बिलों में रहता और अन्न आदि खाता है, मूस।
चूहादंती स्त्री. {हिं. चूहा + दाँत} स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की पहुँची।
चूहादान पुं. चूहादानी।
चूहेदानी स्त्री. {हिं. चूहा + फा. दान} चूहों को फँसाने का एक प्रकार का पिंजरा।
चेंगड़ा पुं. {हिं.} छोटा बच्चा।
चेंच पुं. {हिं.} बरसाती शाक, पटुआ की एक किस्म।
चेंचर वि. {हिं.} बकवास करनेवाला।
चेंचरा पुं. {हिं.} चातक पक्षी का बच्चा।
चेंचला पुं. {हिं.} एक तरह का पकवान।
चेंचें स्त्री. {अनु.} चिड़िया-बच्चों आदि के बोलने का शब्द, चींचीं, बकवास, बकबक।
चेंटुआ पुं. {?} चिड़िया का बच्चा।
चेंप स्त्री. {हिं.} चीं-चपड़, बेकार की बकवास।
चेंपें स्त्री. {अनु.} चिल्लाहट।
चेफ पुं. ईख का छिलका।
चेक पुं. {अं.} आड़ी और बेड़ी पड़ी हुई धारियाँ, चारखाना; वह कागज जिस पर किसी बैंक के नाम यह लिखा रहता है, कि अमुक व्यक्ति को हमारे खाते में से इतना धन दे दो; यह देखना कि कोई काम ठीक तरह से या नियमपूर्वक हुआ है या नहीं।
चेचक स्त्री. {फा.} शीतला रोग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेट पुं. {सं.}{*स्त्री.* चेटी या चेटिका} दास; पति; कुटना; भाँड़।

चेटक पुं. {सं.} {*स्त्री.* चेटकी} दास; दूत; जादू, माया।

चेटकनी *स्त्री.* = चेटी।

चेटका *स्त्री.* {सं. चित्या} चिता; श्मशान, मरघट।

चेटकी पुं. {सं.} जादूगर; कौतुक करनेवाला, कौतुकी; *स्त्री.* 'चेटक' का *स्त्री.*।

चेटिया पुं. {सं. चेटक} चेला, शिष्य; दास।

चेटी *स्त्री.* {सं.} दासी।

चेत पुं. {सं. चेतस्} चेतन, होश; ज्ञान, बोध; सावधानी, चौकसी; स्मृति, सुध, ख्याल।

चेतक *वि.* {सं.} चेतना उत्पन्न करनेवाला; चेतानेवाला; पुं. वह अधिकारी जो किसी सभा-समिति के सदस्यों को यह स्मरण दिलाता है कि अमुक कार्य के संबंध में मत देने के लिए आपकी उपस्थिति आवश्यक है, सचेतक (ह्विप); पुं. राना प्रताप के घोड़े का नाम।

चेतकी *स्त्री.* {सं.} हरितकी, छोटी हर्रे, चमेली का पौधा।

चेतता *स्त्री.* चेतना।

चेतन *वि.* {सं.} जिसमें चतना या ज्ञान हो, चेतनायुक्त (एनिमेट); पुं. आत्मा; प्राणी; ईश्वर।

चेतनता *स्त्री.* {सं.} चेतन का धर्म, चैतन्य, संज्ञा, होश।

चेतना[1] *स्त्री.* {सं.} बुद्धि; बोध करने की वृत्ति या शक्ति; चेतनता।

चेतना[2] *अ.* {हिं. चेत + ना (प्रत्य.)} ध्यान देना; सावधान होना; होश में आना।

चेतवनि *स्त्री.* चेतावनी; चितवन।

चेता *वि.* {सं.} जिसे चेतना या ज्ञान हो; चित्तवाला (यौ. के अन्त में, जैसे दृढ़चेता)।

चेताना *स.* {हिं. चेतना} सावधान या होशियार करना; स्मरण या याद कराना; उपदेश करना; (आग) जलाना या सुलगाना।

चेतावनी *स्त्री.* {हिं. चेतना} चेताने या सावधान करने के लिए कही जानेवाली बात; उपदेश, शिक्षा।

चेतिका *स्त्री.* {सं. चिति} चिता, श्मशान।

चेदि पुं. {सं.} एक प्राचीन देश।

चेदिराज पुं. {सं.} शिशुपाल।

चेप पुं. लासा।

चेरा पुं. {सं. चेटक} {*स्त्री.* चेरी; *भाव.* चेराई} सेवक, दास; चेला।

चेरी *स्त्री.* {हिं. चेरा} चेरा का *स्त्री.*, चेली, शिष्या; दासी, सेविका।

चेला पुं. {सं. चेटक} {*स्त्री.* चेलिन, चेली} दीक्षित शिष्य; वह जिसे कुछ सिखाया गया हो, शिष्य।

चेल्हवा *स्त्री.* {?} एक प्रकार की मछली।

चेल्हा *स्त्री.* चेल्हवा।

चेष्टा *स्त्री.* {सं.} अंगों की गति; मन का भाव प्रकट करनेवाली अंगों की स्थिति, मुद्रा; प्रयत्न, कोशिश; कार्य; परिश्रम; इच्छा।

चेहरई *स्त्री.* {हिं. चेहरा} चित्र या मूर्ति आदि में चेहरे की रंगत या बनावट।

चेहरा पुं. {फा. चेहर:} गले के ऊपर के अंग का अगला भाग, मुख, बदन (फेस)।
मुहा. चेहरा उतरना = चेहरे का रंग फीका पड़ना; *चेहरा होना* = सेना में भरती होना।
किसी चीज का अगला भाग, आगा; मुख की आकृति का साँचा जो स्वाँग बनाने के लिए चेहने पर पहना जाता है।

चेहराशाही पुं. नकद रुपया, प्रचलित रुपया।

चै पुं. {सं.} चय।

चैत पुं. {सं. चैत्र} वर्ष का पहला हिन्दी महीना (भारतीय)।

चैतन्य पुं. {सं.} चेतन आत्मा; ज्ञान, चेतना; ब्रह्म; ईश्वर; बंगाल के एक प्रसिद्ध वैष्णव महात्मा; *वि.* जो होश में हो, सचेत।

चैती *स्त्री.* {हिं. चैत + ई (प्रत्य.)} चैत में कटनेवाली फसल; चैत-बैसाख में गाया जानेवाला एक चलता गाना; *वि.* चैत-संबंधी, चैत का।

चैत्य पुं. {सं.} घर, मकान; देव-मन्दिर; यज्ञशाला; किसी देवी-देवता के नाम पर बना हुआ चबूतरा, बुद्ध की मूर्ति; बौद्धमठ, विहार; चिंता।

चैत्र पुं. {सं.} चैत का महीना; बौद्ध भिक्षु; यज्ञभूमि; मंदिर।

चैन पुं. {सं. चनस्} आराम, सुख।
मुहा. चैन उड़ाना = मौज करना।

चैल पुं. {सं.} कपड़ा, वस्त्र।

चैला पुं. {हिं. छीलना} {*स्त्री.* अल्पा. चैली} चलाने के लिए चीरी हुई लकड़ी।

चोंक *स्त्री.* {देश.} चूमने पर दाँत लगने से पड़नेवाला निशान।

चोंगा पुं. {?} कुछ रखने के लिए कागज, टीन आदि का लिफाफा या डिब्बा।

चोंच *स्त्री.* {सं. चंचु} पक्षी का मुँह।
मुहा. दो-दो चोंचें होना = साधारण कहासुनी होना।

चोंटना पुं. {हिं. चिकोटी} नोचना, खसोटना।

चोंथ पुं. {अनु.} एक बार में गिरा हुआ गोबर।

चोंथना पुं. {अनु.} नोचना, खसोटना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोंधर *वि.* {हिं. चौंधियाना} बहुत छोटी आँखोंवाला; जिसे कम दिखाई दे; मूर्ख।

चोंहका *पुं.* {सं. चूषण} वह थोड़ा सा दूध, जो गौ, भैंस आदि दुहने के पहले उसके बच्चे को चुसाया जाता है।

चोआ *पुं.* {हिं. चुआना} कई सुगंधित वस्तुओं का एक प्रकार का सार या रस; किसी वस्तु का वह थोड़ा सा अंश जो बाद में, ऊपर या अलग से लगाया, रखा या दिया जाए; चोटा।

चोई *स्त्री.* {हिं.} मछली के शरीर पर के कड़े; दाल का छिलका।

चोक *पुं.* {सं.} भडभाँड की जड़।

चोकर *पुं.* {हिं. चुन = आटा + कराई = छिलका} पिसे हुए गेहूँ, जौ आदि को छानने पर निकलनेवाला छिलका, भूसी।

चोका *पुं.* {सं. चूषण} चूसने की क्रिया, चूसना; स्तन, छाती (विशेषतः वह छाती जिसमें दूध भरा हो)।

चोख[1] *पुं.* {हिं. चोखा} चोखापन, तेजी; वेग, फुर्ती; तीव्रता; *वि.* चोखा।

चोख[2] *पुं.* {सं. चक्षु} आँख, नेत्र।

चोखना *स.* = चूसना, चूसकर स्तन पीना।

चोखा *वि.* {सं. चोक्ष} शुद्ध, बेमिलावट का; उत्तम; पैना, धारदार; *पुं.* नमक-मिर्च के साथ मसला हुआ, उबला या भूना हुआ बैंगन, आलू आदि, भरता।

चोखाना *स.* {सं. चूषण} गौ, भैंस आदि दुहने से पहले उसके बच्चे को उसका स्तन इसलिए चुसाना कि दूध स्तन में उतर आए; गौ, भैंस आदि दुहाना; *अ.* गौ, भैंस आदि का दुहा जाना; चूसा जाना।

चोगा *पुं.* {तु.} घुटनों तक लटकता हुआ एक प्रकार का पहनावा, लबादा।

चोगान *पुं.* चौगान।

चोचला *पुं.* {अनु.} जवानी या उमंग की चेष्टा, हावभाव; नखरा, अपने अंगों की गति या चेष्टा करना।

चोज *पुं.* {सं. चोद्य?} चमत्कारपूर्ण और विनोदात्मक उक्ति, सुभाषित; हँसी-ठट्टा; व्यंग्यपूर्ण उपहास; प्रसन्नता के समय किया जानेवाला कोई विनोदपूर्ण कार्य।

चोट /*स्त्री.* {सं. चुट} किसी वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु के वेगपूर्वक आकर गिरने से होनेवाला परिणाम जो बहुधा अनिष्ट या हानि करता है, आघात; इस क्रिया से होनेवाली हानि या अनिष्ट; इस क्रिया से शरीर पर होनेवाला चिह्न या घाव, जख्म (इंजरी); आक्रमण के समय होनेवाला हथियार का वार; जीव-जंतुओं के द्वारा किसी पर होनेवाला आक्रमण, जैसे शेर या साँप का चोट करना; किसी को हानि पहुँचाने के लिए चली जानेवाली चाल; चुभती हुई बातों की बौछार, व्यंग्य, ताना; बार, दफा, जैसे आज तीन चोंट भोजन हुआ है।

चोटा *पुं.* {हिं. चोआ} राब का छाना हुआ पसेव, चोआ।

चोटियाना *स.* {सं. चोटी} चोटी पकड़ना; वश में करना।

चोटी *स्त्री.* {सं. चूड़ा} शिखा, चुंदी।

मुहा. चोटी दबना = किसी से दबने के कारण लाचार होना; *(किसी की) चोटी हाथ में होना* = (किसी का) अपने वश में होना, जैसे उनकी चोटी हमारे हाथ में है (अर्थात् वे सब प्रकार से हमारे वश में है)।

एक में गुँथे हुए स्त्रियों के सिर के बाल; सिर के बाल बाँधने का डोरा; जूड़े में पहनने का एक गहना; मुर्गे आदि के सिर पर के उठे हुए बाल, कलगी; ऊपरी भाग, शिखर।

पद चोटी का = सर्वोत्तम।

चोट्टा *पुं.* {हिं. चोर} {*स्त्री.* चोट्टी} चोर।

चोड़ *पुं.* चोल, उपरीय वस्त्र।

चोड़ी *स्त्री.* {हिं.} साड़ी, वस्त्र।

चोदना *स्त्री.* {सं.} विधि वाक्य प्रेरणा।

चोदाई *स्त्री.* {हिं.} स्त्री के साथ संभोग, मैथुन।

चोदास *स्त्री.* {हिं.} मैथुन की इच्छा।

चोदासा *वि.* {हिं.} संभोग की अधिक इच्छा होना।

चोप *पुं.* {हिं. चाव} चाह, इच्छा; चाव, शौक; उत्साह, उमंग; चेप; *स्त्री.* चोब।

चोपना *अ.* {हिं. चोप} रीझना, मुग्ध होना।

चोपी *वि.* {हिं. चोप} चोप से युक्त।

चोब *स्त्री.* {फा.} शामियाने का बड़ा खंभा; नगाड़ा बजाने की लकड़ी; सोने या चाँदी से मढ़ा सोंटा।

चोबचीनी *स्त्री.* {हिं.} लता की जड़।

चोबदार *पुं.* {फा.} चोब रखेनवाला, नौकर, आसाबरदार; द्वारपाल।

चोर *पुं.* {सं. चौर} चोरी करनेवाला, तस्कर; मन का संदेह, खटका।

मुहा. मन में चोर बैठना = सन्देह होना; मन में दुर्भाव आना।

घाव का अंदर ही अंदर बढ़नेवाला विकार; संधि, दरज; खेल में दूसरों को दाँव देनेवाला व्यक्ति, जिसे दंडस्वरूप कोई काम करना पड़ता है; *वि.* आंतरिक भावों को छिपानेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोरकट *पुं.* {हिं. चोर} उचक्का।

चोरटा *पुं.* चोट्टा।

चोर-दरवाजा *पुं.* {हिं. चोर + दरवाजा} मकान के पीछे की ओर का गुप्त द्वार; ऐसा गौण और छिपा हुआ मार्ग या साधन जो सार्वजनिक और प्रमुख मार्ग या साधन से भिन्न हो और जिसके द्वारा किसी का गुप्त रूप से छलपूर्वक कहीं प्रवेश हो (बैकडोर)।

चोरना *स.* चुराना।

चोर-बाजार *पुं.* {हिं. चोर + बाजार} {*भाव.* चोर-बाजारी} वह बाजार या क्रय-विक्रय का स्थान, जिसमें चोरी की चीजें अपेक्षाकृत बहुत अधिक या बहुत कम मूल्य पर बिकती हैं; आजकल ऐसा स्थान जहाँ नियंत्रित वस्तुएँ उचित से बहुत अधिक मूल्य पर बिकती हैं।

चोर-बाजारी *स्त्री.* {हिं. चोर + बाजार} चोरी से कोई चीज बहुत अधिक या बहुत कम मूल्य पर खरीदना या बेचना; आजकल नियंत्रित मूल्य से बहुत अधिक मूल्य पर कोई वस्तु चुराकर या छिपाकर बेचना।

चोर-महल *पुं.* {हिं. चोर + महल} राजा या रईस की रखैली का महल।

चोर-मिहीचनी *स्त्री.* = आँख-मिचौली।

चोर-सीढ़ी *स्त्री.* {हिं.} छिपी सीढ़ी।

चोरा-चोरी *क्रि. वि* {हिं. चोरी} छिपे-छिपे, चुपके-चुपके, चोरी से।

चोरी *स्त्री.* {हिं. चोर} छिपकर दूसरे की वस्तु लेने की क्रिया या भाव।

पद चोरी-चमारी = बहुत ही छोटे और निन्दनीय काम।

किसी से कोई बात गुप्त रखना या छिपाना; *स्त्री.* चोली।

चोल *पुं.* {सं.} दक्षिण का एक प्राचीन देश; इस देश का निवासी; बड़ी चोली; ढीला कुरता, चोला; कवच, बकतर।

चोलसुपारी *स्त्री.* {हिं.} चिकनी सुपारी।

चोलना *पुं.* चोला।

चोला *पुं.* {सं. चोल} साधुओं-फकीरों का ढीला-ढाला और लम्बा पहनावा; नए जनमे हुए बालक को पहले-पहल कपड़े पहनाने की रसम; शरीर, देह।

मुहा. चोला छोड़ना या बदलना = शरीर त्याग करना, मरना (साधु)।

चोली *स्त्री.* {सं. चोल} अँगिया की तरह का स्त्रियों का एक पहनावा।

पद चोली दामन का साथ = बहुत अधिक या गहरा संग-साथ।

चोषक *वि.* {सं.} चूसनेवाला।

चोवा *पुं.* चोआ।

चोषण *पुं.* {सं.} {*वि.* चोष्य} चूसना, चूसने की क्रिया।

चोषना *क्रि. स.* {हिं.} चूसना, दूध पीना।

चोष्य *वि.* {सं.} चूसने योग्य।

चौंकना *अ.* {?} {*भाव.* चौंक} भय आदि से अचानक काँप उठना; चौकन्ना या खबरदार होना; चकित होना, भौचक्का होना; शंकित होना, भड़कना।

चौंध *स्त्री.* {सं. चक् = चमकना} चमक।

चौंधना *अ.* {हिं. चौंध} इस प्रकार चमकना कि किसी की आँखों के आगे चकाचौंध हो।

चौंधियाना *अ.* {हिं. चौंध} तेज चमक के सामने आँखें झिलमिलाना, चकाचौंध होना; आँख से सूझना।

चौंधी *स्त्री.* चकाचौंध।

चौंर *पुं.* चँवर।

चौंराना *स.* {हिं. चँवर} चँवर डुलाना, चँवर करना; झाड़ू देना।

चौंरी *स्त्री.* {हिं. चोर} चँवर; चोटी बाँधने की डोरी, चोटी; सफेद पूँछवाली गाय; सुरागाय; मक्खी भगाने हेतु छड़ी में बँधा हुआ घोड़े की पूँछ के बालों का गुच्छा।

चौ *वि.* {सं. चतुः} चार (संख्या) (केवल यौगिक में, जैसे चौपहल); *पुं.* मोती तौलने की एक तौल।

चौअर *वि.* चौहरा।

चौआ *पुं.* {हिं. चौ = चार} हाथ की चार उँगलियों का समूह; हाथ की उँगलियों की पंक्ति पर लपेटा हुआ तागा; चार अंगुल की नाप; *पुं.* चौपाया।

चौआना *अ.* {हिं. चौंकना} चकपकाना, चकित होना, चौकना, भौंचक्का होना, विस्मित होना, सकपकाना, व्यग्र होना, घबड़ाना।

चौक *पुं.* {सं. चतुष्क, प्रा. चउक्क} चौकोर खुली भूमि; घर के बीच में चौकोर खुला स्थान, आँगन, सहन; नगर या बस्ती के प्रायः मध्य का वह खुला, बड़ा और चौकोर स्थान जहाँ से चारों ओर रास्ते जाते हों; चौखूँटा चबूतरा, बड़ी वेदी; पूजा के लिए या मंगल अवसरों पर आटे, अबीर आदि की लकीरों से बना चौकोर चित्रण।

मुहा. चौक पूरना = जमीन पर उक्त प्रकार का चित्रण या अंकन करना।

चौहट्टा; चौसर खेलने की बिसात; सामने के चार दाँतों की पंक्ति।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौकड़ *वि.* {हिं.} उत्तम, बढ़िया, अच्छा।

चौकड़ा *पुं.* {हिं.} कान में पहनने की बाली जिसमें दो मोती होते हैं, उपज की बँटाई जिसमें स्वामी को चौथा भाग मिलता है।

चौकड़ी[1] *स्त्री.* {हिं. चौ = चार + सं. कला = अंग} हिरन का चारों पैर एक साथ उठाते हुए दौड़ना, छलाँग।

मुहा. चौकड़ी भूल जाना = घबरा जाना।

चार आदमियों का गुट, मंडली; एक प्रकार का गहना; चार युगों का समूह, चतुर्युगी; जाँघें और घुटने जमीन पर टेककर बैठने की एक मुद्रा, पालथी।

चौकड़ी[2] *स्त्री.* {हिं. चौ + घोड़ा} वह गाड़ी जिसमें चार घोड़े जुते हों।

चौकन्ना *वि.* {हिं. चौ = चारों ओर + कान} सावधान, चौंका हुआ, सशंकित; सजग, सचेत, चौकस।

चौकस *वि.* {हिं. चौ = चार + कस = कसा हुआ} सावधान; ठीक, दुरुस्त।

चौकसी *स्त्री.* {हिं. चौकस} सावधानी; रखवाली।

चौका *पुं.* {सं. चतुष्क} पत्थर का चौकोर टुकड़ा, चौखूँटी सिल; रोटी बेलने का चकला; अगले चार दाँतों की पंक्ति; सीसफूल; हिन्दुओं की रसोई का स्थान; सफाई के लिए धरती पर मिट्टी या गोबर का लेप।

मुहा. चौका देना, फेरना या लगाना = चौपट करना।

एक ही तरह की चार चीजों का समूह, जैसे अँगोछा का चौका।

चौका-बरतन *पुं.* रसोई बन चुकने पर चौका साफ करने और बरतन आदि साफ करने की क्रिया या भाव।

चौकिया सोहागा *पुं.* {हिं} छोटे-छोटे टुकड़ोंवाला स्वच्छ किया हुआ सोहागा जो ओषधियों में प्रयुक्त होता है।

चौकी *स्त्री.* {सं. चतुष्की} चार पायों का चौकोर आसन, छोटा तख्त; मंदिर में मंडप का प्रवेशद्वार; पड़ाव, टिकान; वह स्थान जहाँ रक्षा के लिए कुछ सिपाही रहते हों; वह स्थान जहाँ बाहर से आनेवाले माल पर कर, चुंगी आदि लेने के लिए कुछ लोग रहते हों (आउटपोस्ट; अंतिम दोनों अर्थों के लिए); पहरा; देवता या पीर आदि को चढ़ाई जानेवाली भेंट; गले का एक गहना।

चौकी-घर *पुं.* {हिं. चौकी = पहरा + घर} वह स्थान या छोटा-सा घर जिसमें चौकीदार खड़ा होकर पहरा देता है (स्टैंड-पोस्ट)।

चौकीदार *पुं.* {हिं. चौकी + फा. दार} पहरा देनेवाला।

चौकीदारी *स्त्री.* {हिं. चौकीदार} चौकीदार का काम या पद; चौकीदार रखने के लिए लगनेवाला चंदा या कर।

चौकोना *वि.* {सं. चतुष्कोण} चार कोनोंवाला, चौखूँटा।

चौकोर *वि.* {सं. चतुष्कोण} जिसके चारों कोने या पार्श्व बराबर हों (स्क्वेयर)।

चौखंड *वि.* {हिं.} चार खंडों का चार आँगन या चौक का मकान।

चौखट *स्त्री.* {हिं. चौ = चार + काठ} चार लकड़ियों का वह ढाँचा, जिसमें किवाड़ जड़े रहते हैं; देहली, डेहरी।

चौखटा *पुं.* {हिं. चौखट} चित्र या शीशा जड़ने का चौकीदार ढाँचा (फ्रेम)।

चौखना *वि.* {हिं.} चार खंडों का।

चौखा *पुं.* {हिं.} वह स्थान जहाँ चार गाँवों की सीमाएँ मिलती हैं।

चौखानि *पुं.* {हिं. चौ = चार + खानि = जाति} चार प्रकार के जीव-अंडज, पिंडज, स्वदेज और उद्भिज।

चौखूँटा *वि.* चौकोना।

चौगड्डा *पुं.* चौराहा।

चौगान *पुं.* {फा.} गेंद-बल्ले का एक खेल; यह खेल खेलने का मैदान; किसी प्रकार की प्रतियोगिता का स्थान; नगाड़ा बजाने की लकड़ी।

चौगिर्द *क्रि. वि.* = चारों तरफ।

चौगुना *वि.* {सं. चतुर्गुण} {*स्त्री.* चौगुनी} जितना हो, उतना ही चार बार और, चतुर्गुण।

चौगोड़ा *पुं.* {हिं. चौ = चार + गोड़ = पैर} वह जिसके चार पैर हों; अर्थात् चौपाया, पशु; खरगोश नामक जन्तु; चौघड़िया।

चौगोशिया *वि.* {हिं. चौ = चार फा. गोशा = कोना} जिसमें चार कोने हों; *स्त्री.* पुरानी चाल की एक प्रकार की अर्द्धगोलाकार टोपी जो चार तिकोने टुकड़ों को जोड़कर बनाई जाती थी; *पुं.* तुर्की घोड़ा।

चौघड़ *पुं.* {हिं. चौ = चार + दाढ़} चौड़ा और चिपटा चबानेवाला दाँत, चौभर।

चौघड़ा *पुं.* {हिं. चौ = चार + घर = खाना} पान-इलायची रखने का चार खानों का डिब्बा; तरकारियाँ या मसाले रखने का चार खानों का बरतन; पत्ते में बँधे हुए चार बीड़े पान।

चौघड़िया *स्त्री.* {हिं. चौगोड़ा} वह छोटी और ऊँची चौकी जिसके चार पैर या पाए हों।

चौघड़ी *वि.* {हिं.} चार तहों या पंखोंवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौघर *पुं.* {हिं. चौ = चार + घर} घोड़े की सरपट चाल, पोइया।

चौघोड़ी *स्त्री.* {हिं.} चार घोड़ों की गाड़ी या रथ।

चौचंद *पुं.* {हिं. चौथ + चंद} कलंकसूचक चर्चा, बदनामी, निन्दा; शोर, हल्ला।

चौजुगी *स्त्री.* {हिं.} चार युगों का काल।

चौचंदहाई *वि. स्त्री.* {हिं. चौचंद + हाई (प्रत्य.)} वह जो सबकी निन्दा करती फिरती हो।

चौड़ *पुं.* {सं.} चौल-संस्कार, मुंडन।

चौड़ा *वि.* {सं. चतुष्पदक, प्रा. चउवड़ा} {*स्त्री.* चौड़ी} जिसमें चौड़ाई हो; विस्तृत।

चौड़ाई *स्त्री.* {हिं. चौड़ा + ई (प्रत्य.)} लंबाई से कम या थोड़ा और उसका उलटा विस्तार, अर्ज।

चौड़ान *स्त्री.* चौड़ाई; लंबाई से विपरीत दिशा का फैलाव, पाट।

चौड़ाना *क्रि. स.* {हिं.} चौड़ा करना, फैलाना।

चौड़ोल *पुं.* {हिं.} एक बाजा, चौघड़ा।

चौतनी *पुं.* {हिं. चौ = चार + तनी = बंद} चार बन्दोंवाली बच्चों की टोपी।

चौतग्गी *वि.* {हिं.} चार तागा मिलाकर बटा हुआ डोरा।

चौतनियाँ *स्त्री.* {हिं.} बच्चों की टोपी जिसमें चार बंद लगे होते हैं, अंगिया, चोली।

चौतरफा *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का तंबू (अव्य.) चारों ओर, चतुर्दिक।

चौतहा *पुं.* {हिं.} चार तहोंवाला।

चौतही *स्त्री.* {हिं.} चार तह करके बिछाने की मोटी चाँदनी।

चौताल *पुं.* {हिं. चौ + ताल} मृदंग का एक ताल; होली में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत; एक प्रकार का ताल (संगीत)।

चौतारा *पुं.* {हिं.} एक बाजा जिसमें चार तार लगे होते हैं।

चौताला *स्त्री.* {हिं.} चार तालवाला।

चौताली *स्त्री.* {हिं.} कपास की डोंड़ी जिसमें से रुई निकलती है।

चौथ *स्त्री.* {सं. चतुर्थी} चतुर्थी, चौथी तिथि।
पद चौथ का चाँद = भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी का चन्द्रमा, जिसे देखने से झूठा कलंक लगना माना जाता है।

चौथपन *पुं.* = बुढ़ापा

चौथा *वि.* {सं. चतुर्थ} तीसरे के बाद का।

चौथाई *पुं.* {हिं. चौथा + ई (प्रत्य.)} चौथा, भाग, चतुर्थांश।

चौथिया *पुं.* {हिं.} चौथे दिन आनेवाला स्वर; *वि.* चौथाई का हकदार।

चौथी *स्त्री.* {हिं. चौथा} विवाह के चौथे दिन वर-कन्या के कंगन खोलने की रसम; जमींदार को मिलनेवाला फसल का चौथाई अंश।

चौथैया *पुं.* {हिं.} चतुर्थांश, चौथा भाग।

चौदंता *वि.* {हिं. चौ + दाँत} चार दाँतोंवाला; उद्दंड, उद्धत।

चौदाँत *पुं.* {हिं. चौ = चार + दाँत} दो हाथियों की लड़ाई।

चौदानी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार की बाली कान में पहनने हेतु।

चौधराई *स्त्री.* {हिं. चौधरी} चौधरी का काम, भाव या पद।

चौधरी *पुं.* {सं. चतुर + धर} {*भाव.* चौधराहट} {*स्त्री.* चौधरानी} किसी समाज, बिरादरी या मंडली का मुखिया या प्रधान जो प्रायः झगड़े आदि निपटाता और विकट अवसरों पर लोगों को उनके कर्तव्य आदि बताता है।

चौधा *पुं.* {हिं.} कुएँ की जगत पर का ढाल, पाँदर।

चौपई *स्त्री.* {हिं.} एक छंद जिसके हर चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं।

चौपरवा *पुं.* {हिं.} चहार दीवारी।

चौपग *पुं.* {हिं.} चारों पैरों वाला प्राणी, चौपाया।

चौपट *क्रि.वि.* {हिं. चौ = चार + पट = किवाड़} चारों ओर से (खुला हुआ); *वि.* नष्ट-भ्रष्ट।

चौपटा *वि.* {हिं. चौपट} चौपट करनेवाला।

चौपड़ *स्त्री.* {सं. चतुस्सारि} चौसर नामक खेल जो बिसात पर गोटियों से खेला जाता है।
मुहा. चौपड़ मढ़ना = चौपड़ खेलने के लिए बिसात बिछाना।

चौपथ *पुं.* {सं. चतुष्पथ} चौराहा।

चौपद *पुं.* चौपाया।

चौपहरा *वि.* {हिं.} चार पहरों का।

चौपहल *वि.* {हिं. चौ + फा. पहलू} चार पहल या पार्श्ववाला, वर्गात्मक।

चौपहिया *वि.* {हिं. चौ = चार + पहिया} (गाड़ी) जिसके नीचे चार पहिए लगे हों।

चौपाई *स्त्री.* {सं. चतुष्पदी} सोलह मात्राओं का एक प्रसिद्ध छन्द।

चौपाया *पुं.* {सं. चतुष्पद} चार पैरों वाला पशु, जैसे गौ, घोड़ा, बकरी।

चौपाल *पुं.* {हिं. चौबार} चारों ओर से खुली हुई बैठक; दालान; एक प्रकार की पालकी।

चौपुरा *पुं.* {हिं.} वह बड़ा कुआँ जिस पर चार पुर एक साथ चल सकें।

चौपेंजी *पुं.* {हिं. चौ = चार + अं. पेज} (पुस्तकों आदि की छपाई में) जिसे कागज के पूरे ताव

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या तख्ते को दो बार मोड़कर चार पेजों या पृष्ठों का रूप दिया गया हो (क्वारटो)।

चौबगला पुं. {हिं. चौ = चार + अ. बगल} कुरते में दाहिने-बाएँ दोनों ओर लगाई जानेवाली वे दो-दो कलियाँ या कपड़े की पट्टियाँ, जो बगल से नीचे की ओर होती हैं।

चौबारी *स्त्री.* {हिं.} चार बैलों की गाड़ी।

चौबाइन *स्त्री.* {हिं.} चौबे की स्त्री।

चौबाई *स्त्री.* {हिं.} चारों ओर बहनेवाली हवा, किंवदंती।

चौबारा पुं. {हिं. चौ + बार} छत के ऊपर का कमरा।

चौबोला पुं. {सं. चौ + बोल} एक प्रकार का मात्रिक छन्द।

चौमसिया[1] *वि.* {हिं. चौ + मास} चौमासे में होनेवाला, वर्षाकालीन।

चौमसिया[2] *स्त्री.* {हिं. चौ + माशा} चार माशे का बटखरा।

चौमासा पुं. {सं. चातुर्मास} वर्षा के चार महीने-आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन; वर्षा ऋतु-संबंधी गीत या कविता; किसी स्त्री के गर्भवती होने के चौथे महीने का कृत्य या उत्सव; *वि.* हर चार महीनों पर अथवा चौथे महीने होनेवाला।

चौमासी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का चौमासे का गाना।

चौमुखा *वि.* {हिं. चौ = चार + मुख} {*स्त्री.* चौमुखी} जिसके चारों ओर चार मुख हों।

मुहा. चौमुखा दीया जलाना = दिवाला निकालना, दिवालिया बनना।

चौमुहानी *स्त्री.* {हिं. चौ = चार + फा. मुहाना} वह स्थान जहाँ चारों ओर से आकर चार रास्ते मिलते हों, चौराहा, चौरास्ता, चतुष्पथ।

चौमेंड़ा पुं. {हिं.} चार सीमाएँ मिलने का स्थान।

चौरंग पुं. {हिं. चौ = चार + रंग} तलवार चलाने का एक ढंग।

चौरंगा *वि.* {हिं. चौ = चार + रंग} जिसमें चार रंग हों, चार रंगोंवाला।

चौर पुं. {सं.} दूसरों का माल चुरानेवाला।

चौरस *वि.* {हिं. चौ = चार + (एक) रस = समान} जो ऊँचा-नीचा न हो, समतल, बराबर; चौपहल।

चौरसा पुं. {हिं.} चार रुपए भर का बाट।

चौरसी *स्त्री.* {हिं.} चौरस करने का उपकरण।

चौरहा पुं. {हिं.} चतुष्पथ।

चौरसाना *स.* {हिं. चौरस} चौरस या समतल करना।

चौरस्ता पुं. चौमुहानी।

चौरा पुं. {सं. चतुर्} {*स्त्री.* अल्पा. चौरी} चबूतरा, वेदी; किसी देवता, सती, मृत, महात्मा या भूत-प्रेत आदि के नाम पर बना हुआ चबूतरा; चौपाल; चौबारा।

चौराई *स्त्री.* चौलाई।

चौरासी *वि.* {सं. चतुरशीति} अस्सी और चार की संख्या; जीवों की योनियाँ जो चौरासी लाख मानी गई हैं।

मुहा. चौरासी में पड़ना या भरमना = बार-बार अनेक योनियों में जन्म लेना और मरना।

वे घुँघरू जो नाचते समय पैरों में बाँधे जाते हैं।

चौराहा पुं. चौमुहानी।

चौरिदी *वि.* चउरिंदी।

चौरेठा पुं. {हिं. चावल + पीठा} पीसा हुआ चावल।

चौर्य पुं. {सं.} चोरी।

चौलाई *स्त्री.* {सं. तंडुलीय} एक प्रकार का साग।

चौवर *वि.* चौहरा।

चौवा पुं. चौआ।

चौसर[1] *स्त्री.* {सं. चतुस्सारि} बिसात पर चार रंगों की चार-चार गोटियों से खेला जानेवाला एक खेल, चौपड़।

चौसर[2] पुं. {सं. चतुरसृक} चार लड़ों का हार।

चौहट्ट-चौहट्टा पुं. {हिं. चौ = चार + हाट} वह चौकोर बाजार जिसमें चारों ओर दुकानें हों, चौक; चौमुहानी।

चौहत्तर *वि.पुं.* {हिं.} (सत्तर और चार की संख्या 74)।

चौहद्दी *स्त्री.* {हिं. चौ = चार + हद} किसी मकान या जमीन के चारों ओर के मकानों या जमीनों आदि का विस्तार या विवरण।

चौहरा *वि.* {हिं. चौ = चार + हरा (प्रत्य.)} जिसमें चार परतें या तहें हों; चौगुना।

चौहैं *क्रि. वि* {हिं. चौ} चारों ओर।

च्युत *वि.* {सं.} {*भाव.* च्युति} गिरा या झड़ा हुआ; भ्रष्ट; अपनी जगह से हटा या गिरा हुआ; विमुख, पराङ्मुख।

च्यूँटा पुं. {हिं. चिमटना} च्यूँटी की जाति का, पर उससे बड़ा एक कीड़ा।

च्यूँटी *स्त्री.* {हिं. चिमटना} एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा, चींटी, पिपीलिका।

मुहा. च्यूँटी की चाल चलना = बहुत धीमी चाल से चलना; *च्यूँटी के पर निकलना* = मृत्यु या विनाश का समय पास आना।

च्यूड़ा पुं. {हिं.} चिड़वा, चूड़ा।

च्योना पुं. {हिं.} घरिया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGan

छ

छ देवनागरी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा तालव्य व्यंजन।

छंग पुं. 'उछंग', उत्संग, गोद, अंक।

छंगुली *स्त्री.* {हिं. छोटी + उँगली} सबसे छोटी उँगली, कनिष्ठिका।

छँटना *अ.* {सं. चटन} काटा या छाँटा जाना, छिन्न होना; चुनकर अलग कर लिया जाना।
पद छँटा हुआ = चालाक, धूर्त।
दूषित अंश निकलना, साफ होना; (मोटाई या आकार) कम होना, क्षीण होना।

छँटनी *स्त्री.* {हिं. छाँटना + ई (प्रत्य.)} छाँटने की क्रिया या भाव, छँटाई (रिडक्शन); निकालने या हटाने के लिए छाँटने का काम; विशेषत: कार्यालय के कर्मचारियों को (रिट्रेंचमेंट)।

छँटवाना *स.* हिं. 'छाँटना' का प्रे. छँटवाना।

छँटाई *स्त्री.* {हिं. छाँटना} छाँटने या चुनकर अलग करने का काम, भाव या मजदूरी।

छँटैल *वि.* {हिं. छँटना} छाँटा या चुना हुआ; धूर्त, चालाक।

छँड़ना *स.* {हिं. छोड़ना} त्यागना; अन्न कूटना, छाँटना।

छँड़ाना *स.* {हिं. छुड़ाना} छुड़ाना; छीन लेना; *स.* हिं. 'छाँड़ना' का प्रे.।

छंद[1] पुं. {सं. छंदस्} वेद; वर्ण, मात्रा आदि की गिनती के विचार से होनेवाली वाक्य रचना, पद्य; अभिलाषा, इच्छा; मनमाना आचरण।

छंद[2] पुं. {सं. छंदक} हाथ का एक गहना।

छंदशास्त्र, छंद:शास्त्र पुं. {सं.} वह शास्त्र जिसमें छंदों, वृत्तों आदि की रचना के नियमों और सिद्धांतों का विवेचन होता है, पिंगल (प्रोसोडी)।

छंदोबद्ध *वि.* {सं.} छंद के रूप में बँधा या रचा हुआ।

छंदोभंग पुं. {सं.} छंद रचना में नियम-पालन की वह त्रुटि जिससे उसमें ठीक गति का अभाव होता है।

छ: *वि.* {सं. षड्, प्रा. छ} पाँच और एक, छह।

छक *स्त्री.* {हिं.} तृप्ति।

छकड़ा पुं. {सं. शकट} बोझ लादने की बैलगाड़ी।

छकड़िया *स्त्री.* {हिं.} छ: कहारों द्वारा ढोने की पालकी।

छकड़ी *स्त्री.* {हिं.} छ: का समूह, जिसके छ: अवयव हों।

छकना[1] *अ.* {सं. चकन} {*भाव.* छाक} खा-पीकर तृप्त होना, अघाना; नशे में चूर होना।

छकना[2] *अ.* {सं. चक्र = भ्रांत} चकराना; धोखा खाना; परेशान होना।

छकाना *स.* हिं. छकना का *स.*।

छकीला *वि.* {हिं. छकना} छका हुआ, तृप्त; मस्त, मत्त।

छकौहाँ *वि.* {हिं. छकना} छकाने या तृप्त करेनवाला; पूरी तरह से छका हुआ, तृप्त।

छक्करा पुं. {हिं. छक्का-पंजा या छल} छल-कपट, दाँव-पेंच।

छक्का पुं. {सं. षट्} छह का समूह; छह अवयवोंवाली वस्तु; जुए का वह दाँव जिसमें छह कौड़ियाँ चित्त पड़ें; धूर्तता, चालाकी; साहस।
मुहा. छक्के छूटना = चालाकी या उपाय न सूझना या न चलना।

छक्का-पंजा पुं. = छल-कपट।

छगन पुं. {सं. छगट = एक छोटी मछली} छोटा बालक (प्यार का शब्द)।

छछिया *स्त्री.* {हिं. छाछ} छाछ पीने या रखने का एक प्रकार का छोटा बरतन।

छछूँदर पुं. {सं. छछुंदरी} चूहे की तरह का एक जन्तु; एक प्रकार की आतिशबाजी।

छजना *अ.* {सं. सज्जा} शोभा देना, सजना; ठीक जँचना।

छज्जा पुं. {हिं. छाजन या छाना} कोठे या पाटन का दीवार से बाहर निकला हुआ भाग; ओलती, ओरी; टोपी के किनारे का निकला हुआ भाग।

छटक पुं. {हिं.} रुद्रलाल को एक भेद।

छटकना *अ.* {अनु. या हिं. छूटना} भार या धक्के से किसी वस्तु का वेग से दूर जाना; दूर या अलग रहना; बंधन से निकल जाना; कूदना।

छटका पुं. {हिं.} मछली फँसाने का गढ्ढा।

छटकाना *स.* हिं. 'छटकना' का *स.*।

छटपट पुं. {हिं.} पीड़ा के कारण पैर पटकना; *वि.* चंचल, चपल।

छटपटाना *अ.* {अनु.} पीड़ा से हाथ-पैर पटकना या फेंकना, तड़फड़ाना; बेचैन होना, व्याकुल होना।

छटपटी *स्त्री.* {अनु.} बेचैनी; प्रबल उत्कंठा, आकुलता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छटाँक *स्त्री.* {हिं. छक + टाँक} एक तौल, जो एक सेर का सोलहवाँ भाग होती थी।

छटा *स्त्री.* {सं.} शोभा, सौंदर्य; बिजली, प्रकाश, प्रभा, *वि.* 'छठा', झलग, छवि, सौंदर्य।

छटाफल *पुं.* {सं.} ताड़ या सुपारी का वृक्ष।

छटाभा *स्त्री.* {सं.} बिजली की चमक।

छटल *वि.* {हिं.} छँटा हुआ, चतुर, चालाक।

छठ *स्त्री.* {सं. षष्ठी} पक्ष की छठी तिथि।

छठा *वि.* {हिं. छह} गिनती में छह के स्थान पर पड़नेवाला।

पद छठै-छमासे = बहुत दिनों के अंतर पर, कभी-कभी।

छठी *स्त्री.* {सं. षष्ठी} बालक के जन्म से छठे दिन होनेवाला कृत्य।

मुहा. छठी का दूध याद आना = शेखी या हेकड़ी भूल जाना; बहुत दुख या कष्ट का अनुभव करना।

छड़ *पुं.* {सं. शर} {*स्त्री.* अल्पा. छड़ी} धातु, लकड़ी आदि का लम्बा पतला टुकड़ा।

छड़ना *क्रि. स.* {हिं.} अन्न की भूसी अलग करके ओखल में रखकर मूसल से कूटना, छाँटना।

छड़ा *पुं.* {हिं. छड़} पैर का एक गहना, अकेला।

छड़िया *पुं.* {हिं. छड़ी} दरबान, द्वारपाल, ड्योढ़ीदार।

छड़ी *स्त्री.* {हिं. छड़} हाथ में लेकर चलने की सीधी पतली लकड़ी; पीरों की मजार पर चढ़नेवाली झंडी।

छत[1] *स्त्री.* {हिं. छत्र} चूने, कंकड़ आदि से बनी हुई घर की छाजन, पाटन; ऊपर का ढका भाग।

छत[2] *क्रि.वि* {सं. सत्} रहते हुए, आछत; *पुं.* क्षत।

छतगीर *स्त्री.* {हिं. छत + फा. गीर} छत पर तानी जानेवाली चाँदनी।

छतना *पुं.* {हिं. छाता} बड़े पत्तों से बना हुआ छाता।

छतनार *वि.* {हिं. छाता या छतना} {*स्त्री.* छतनारी} (वृक्ष) जिसकी शाखाएँ छितरी या फैली हुई हों।

छतरी *स्त्री.* {सं. छत्र} छाता; एक प्रकार का बहुत बड़ा छाता, जिसके सहारे आजकल सैनिक लोग हवाई जहाजों से जमीन पर उतरते हैं (पैराशूट); मंडप; समाधि का मंडप (कैनोपी); कबूतरों के बैठने के लिए बाँस की पट्टियों का अट्टर; खुमी।

छतरी-फौज *पुं.* छतरियों के सहारे हवाई जहाजों से उतरनेवाली सेना।

छतिया *स्त्री.* {हिं.} वक्षस्थल, औरतों की छाती।

छतियाना *स.* {हिं. छाता} छाती के पास ले आना; छाती से लगाना, बंदूक तानना।

छतीसा *वि.* {हिं. छत्तीस} {*स्त्री.* छतीसी} चतुर, चालाक; धूर्त।

छत्तरा *पुं.* छत्र; क्षेत्र।

छत्ता *पुं.* {सं. छत्र} छाता, छतरी; रास्ते के ऊपर की छत या पटाव; मधुमक्खी आदि का घर; छतनारी चीज; कमल का बीजकोश।

छत्तेदार *वि.* {हिं. छत्ता + फा. दार (प्रत्य.)} जिस पर पटाव या छत हो; मधुमक्खी के छत्ते के आकार का।

छत्र *पुं.* {सं.} राजचिह्न के रूप में राजाओं पर लगाया जानेवाला बड़ा छाता।

छत्रक *पुं.* {सं.} खुमी, कुमुरमुत्ता; तालमखाने की जाति का एक पौधा; मंदिर; मंडप; शहद की मक्खियों का छत्ता।

छत्रांग *पुं.* {सं.} गोदंती, हरताल।

छात्रा, छात्राक *स्त्री.* {सं.} छत्रक, धनिया, मंजीठ।

छत्रछाँह *स्त्री.* = छत्रछाया।

छत्रछाया *स्त्री.* {सं.} छत्र की छाया; शरण।

छत्रधनी *पुं.* छत्रधारी।

छत्रधर *पुं.* {सं.} वह जो राजाओं पर छत्र लगता हो।

छत्रधारी *वि.* {सं. छत्रधारिन्} छत्र धारण करनेवाला, जैसे छत्रधारी राजा।

छत्रपति *पुं.* {सं.} राजा।

छत्रपन *पुं.* क्षत्रियत्व।

छत्रबंध *पुं.* {सं.} एक प्रकार का चित्रकाव्य जिसमें कविता के अक्षर एक विशिष्ठ प्रकार से सजाने पर छत्र या छाता बन जाता है।

छत्रबंधु *पुं.* {सं.} वह जो क्षत्रियों में नीच माना जाता हो।

छत्रभंग *पुं.* {सं.} राजा का नाश या मृत्यु; ज्योतिष का एक याग जो राजा का नाशक माना गया है; अराजकता।

छत्री *वि.* {सं. छत्रिन्} छत्रयुक्त; *पुं.* क्षत्रिय।

छद *पुं.* {सं.} आवरण; चिड़िया का पंख; पत्ता।

छदाम *पुं.* {हिं. छह + दाम} पैसे का चौथाई भाग।

छद्म *पुं.* {सं. छद्मन} छिपाव, गोपन; ब्याज, बहाना; कपट।

छद्मी *वि.* {सं. छद्मिन्} {*स्त्री.* छद्मिनी} कृत्रिम वेशवाला; छली, कपटी।

छन *पुं.* क्षण।

छनक[1] *पुं.* {अनु.} छनछन शब्द।

छनक[2] *पुं.* {हिं. छन + एक} एक क्षण, क्षण भर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

छनकना *अ.* {अनु. छनछन} छनछन शब्द करना; *अ.* {अनु.} चौंकन्ना होकर भागना।

छनक-मनक *स्त्री.* {अनु.} गहनों की झनकार; सजधज; ठसक; चोचला।

छनछनाना *अ.* {अनु.} तपी हुई कड़ाही या तवे पर अथवा खौलते हुए घी में तरल पदार्थ पड़ने से छनछन शब्द होना; छनछन बजना; क्रोध से तिलमिलाना।

छनछबि *स्त्री.* {सं. क्षण + छवि} बिजली।

छनदा *स्त्री.* क्षणदा।

छनना *अ.* {सं. क्षरण} किसी चूर्ण या तरल पदार्थ का कपड़े आदि में से इस प्रकार गिरना कि मैल या सीठी ऊपर रह जाए।

मुहा. गहरी छनना = खूब मेल-जोल होना, गाढ़ी मैत्री होना।

लड़ाई होना, कड़ाही में से पूरी, पकवान आदि निकलना।

छनभंग *वि.* {हिं.} क्षणभर में नष्ट होना।

छनिक[1] *वि.* क्षणिक।

छनिक[2] *पुं.* {हिं. छन + एक} क्षण भर।

छन्न *पुं.* {अनु.} तपी हुई चीज पर पानी आदि पड़ने का शब्द; झनकार।

छनमति *वि.* {हिं.} मूर्ख, अज्ञानी।

छन्ना *पुं.* {हिं. छानना} वह कपड़ा जिसमें कोई चीज छानी जाए, साफी।

छप *स्त्री.* {अनु.} पानी पर किसी चीज के गिरने का शब्द; जोर से छींटा पड़ने का शब्द।

छपका *पुं.* {अनु.} पानी का छींटा; सिर पर पहनने का एक गहना।

छपछपाना *अ.* {अनु.} छपछप शब्द होना; *स.* छपछप शब्द उत्पन्न करना।

छपद *पुं.* {षट्पद} भौंरा, भँवरा, भ्रमर।

छपन[1] *वि.* {हिं. छिपना} छिपा हुआ।

छपन[2] *पुं.* {सं. क्षपण} नाश।

छपना *अ.* {हिं. चपना = दबना} छापे के यंत्र या ठप्पे आदि से छापा जाना, मुद्रित होना; चिह्नित या अंकित होना; *अ.* छिपाना।

छपरखट *स्त्री.* {हिं. छप्पर + खाट} मसहरीदार पलंग।

छपरी *स्त्री.* {हिं. छप्पर} झोंपड़ी।

छपवाना *स.* छपाना।

छपा *स्त्री.* क्षपा (रात) रात्रि, हलदी।

छपाई *स्त्री.* {हिं. छापना} किसी चीज पर अंकित चिह्न, रेखाएँ आदि (स्याही, रंग आदि की सहायता से) दाब पहुँचाकर ज्यों-की-त्यों दूसरी वस्तु पर उतारना, छापने की क्रिया या भाव, मुद्रण (प्रिंटिंग); छापने की मजदूरी।

छपाकर *पुं.* क्षपाकर।

छपाका *पुं.* {अनु.} पानी पर जोर से गिरने का शब्द; छपका।

छपाना *स.* हिं. 'छापना' का प्रे.। छापने का काम करना; *स.* छिपाना, छापाखाने में मुद्रित कराना; *अ.* छिपना, शीतला का टीका लगवाना।

छप्पन *पुं. वि.* {हिं.} पचास और छः (की संख्या), 56.

छप्पय *पुं.* {सं. षट्पद} एक मात्रिक छंद जिसमें छह चरण होते हैं।

छप्पर *पुं.* {हिं. छोपना} घर की फूस आदि की छाजन, छान।

मुहा. छप्पर फाड़कर देना = अनायास या अकस्मात् देना।

छप्परबंद *पुं.* {हिं. फा.} वह जो छप्पर छाकर उसके नीचे रहता हो; वह जो छप्पर छाने का काम करता हो।

छब-तखत *स्त्री.* {हिं. छवि + *अ.* तकती} शरीर की सुंदर बनावट।

छबना *अ.* {हिं. छवि} छवि से युक्त होना, सुंदर होना या लगाना।

छबि *स्त्री.* छवि।

छबिकारी *वि.* {हिं. छबि + कारी} सुंदरता बढ़ानेवाला।

छबिमान *वि.* छबीला।

छबीला *वि.* {हिं. छबि + ईला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* छबीली} छविवाला, सुंदर।

छम *स्त्री.* {अनु.} घुँघरू का शब्द।

छमक *स्त्री.* {हिं.} ठसक, ठाठबाट।

छमकना *अ.* {हिं. छमछम (अनु.)} घुँघरुओं या गहनों की झनकार होना; चमकना।

छमछम *स्त्री.* {अनु.} छम; पानी बरसने का शब्द; *क्रि. वि.* छमछम शब्द के साथ; चमकते हुए।

छमछमाना *अ.* {अनु.} छमछम शब्द उत्पन्न करना; चमकना।

छमता *स्त्री.* क्षमता।

छमना *स.* {सं. क्षमन्} क्षमा करना।

छमा *स्त्री.* = क्षमा।

छमाछम *क्रि.* {*वि.* अनु.} जोर से छमछम शब्द करते हुए।

छमासी[1] *स्त्री.* {हिं. छह +मास} मृत्यु के छह महीने बाद होनेवाला श्राद्ध।

छमासी[2] *स्त्री.* {हिं. छह + माशा} छह माशे की तौल या बटखरा।

छमुख *पुं.* षडानन।

छय *पुं.* क्षय।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

d by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छयना *अ.* {हिं. छय} क्षीण होना, छीजना; *अ.* छाना।

छर *वि.* {सं. क्षर} भारी, जैसे छर भार = बहुत भारी बोझ; *पुं.* छल्ला; क्षर।

छरकना *अ.* छिटकना; छलकना; *स.* छिटकाना।

छरछंद *पुं.* छलछंद।

छरछर *पुं.* {हिं.} कणों के बेग से निकलने का शब्द, लचीली-पतली लकड़ी के पटकने का शब्द।

छरछराना *अ.* {सं. क्षार} {*भाव.* छरछराहट} घाव पर नमक आदि लगने से जलन या चुनचुनी होना।

छरद *स्त्री.* {सं. छर्दि} वमन, कै।

छरन *वि.* {*पुं.* हिं. छरना = छलना} {*स्त्री.* छरनि} छलनेवाला।

उदा. कपटु बटु बलि छरन।

छरना *अ.* {सं. क्षरण} चूना, टपकना; *स.* छलना।

छरबर *पुं.* छल-बल।

छरपुरी *स्त्री.* {हिं.} छड़ीला, एक सुगंधित द्रव्य।

छरभार *पुं.* {सं. सार + भार} कार्य का भार; झंझट, बखेड़ा; भारी बोझ।

छरहरा *वि.* {हिं. उड़ + हरा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* छरहरी} दुबला-पतला और हलका; तेज, फुरतीला।

छरा *पुं.* {?} माला या हार का लड़; इजारबंद।

छरिंदा *वि.* छरीदा।

छरी *स्त्री.* छड़ी; अप्सरा; *वि.* = छली।

छरीदा *वि.* {*अ.* जरीद:} अकेला; (यात्री) जिसके पास बोझ या असबाब न हो।

छर्दन *पुं.* {सं.} वमन, कै करना।

छर्दि *स्त्री.* {सं.} वमन, कै, उलटी।

छरुभारू *पुं.* छरभार।

छर्रा *पुं.* {अनु. छरछर} कंकड़ी या कण; बंदूक की छोटी गोली।

छल *पुं.* {सं.} कपट का व्यवहार, धोखा; वह काम जो किसी को धोखे में डालकर कोई स्वार्थ साधने के लिए किया जाए, जाल (फ्रॉड); मिस, बहाना; धूर्तता; कपट; *वि.* छलपूर्वक बना या बनाया हुआ, नकली, जैसे छल ज्ञानी = कपट रूप से बना हुआ ज्ञानी।

छलक *स्त्री.* {हिं. छलकना} छलकने की क्रिया या भाव।

छलकना *अ.* {सं. क्षर् + क} बरतन हिलने से किसी तरह पदार्थ का उछलकर बाहर गिरना; भरे होने के कारण उमड़ना।

छलकाना *क्रि.स.* {हिं.} भरे हुए पात्र से द्रव-पदार्थ को हिलाकर बाहर गिराना।

छल-कपट *पुं.* {सं.} चालबाजी और धूर्तता का व्यवहार, धोखेबाजी।

छलकाना *स.* हिं. 'छलकना' का *स.*।

छलछंद *पुं.* {हिं. छल + छंद} {*वि.* छलछंदी} धूर्तता, चालबाजी।

छलछलाना *अ.* {अनु.} भर जाने के कारण पानी आदि थोड़ा-थोड़ा करके गिरना या गिरने को होना।

छलछिद्र *पुं.* {सं.} धूर्तता, धोखेबाजी।

छलना[1] *स.* {सं. छलन} धोखे या भुलावे में डालना; मोहित करना।

छलना[2] *स्त्री.* {सं.} धोखा, छल।

छलनी *स्त्री.* {सं. क्षरण} आटा आदि चालने का एक उपकरण, चलनी।

मुहा. छलनी हो जाना = बहुत जीर्ण हो जाना; *कलेजा छलनी हो जाना* = दुख सहते-सहते हृदय जर्जर हो जाना।

छल-बल *पुं.* {सं. छल + बल} काम निकालने के लिए किया जानेवाला कपटपूर्ण व्यवहार और बलप्रयोग।

छलमलना *अ.* = छलकना।

छलमलाना *अ.* = छलकना; *स.* = छलकना।

छलहाया *वि.* {*स्त्री.* छलहाई} छली।

छलहायी *वि. स्त्री.* {हिं.} धूर्त, छली कपटी, धोखेबाज।

छलाँग *स्त्री.* {हिं. उछल + अंग} उछलकर कहीं पहुँचना, कुदान, फलाँग।

छलाँगना *क्रि. अ.* {हिं.} कूदकर आगे बढ़ना, फलाँग मारना।

छला *पुं.* छल्ला।

छलाई *स्त्री.* छल, कपट।

छलावरण *पुं.* {सं.} {*वि.* छलावृत्त} युद्धक्षेत्र में अपनी तोपों, मोरचों आदि को शत्रु की दृष्टि से बचाने के लिए वृक्षों की डालियों, पत्तियों आदि से ढकना; वास्तविक रूप या बात छिपाने के लिए ऊपर से उसे कोई ऐसा रूप देना जिससे देखनेवाले धोखे में पड़ जाएँ (कैमोफ्लेज)।

छलावा *पुं.* {हिं. छल} भूत-प्रेत आदि की वह छाया, जो एक बार सामने आकर अदृश्य हो जाती है; दलदलों या जंगलों में रह-रहकर दिखाई पड़नेवाला प्रकाश, अगिया बैताल, उल्कामुख प्रेत; इंद्रजाल या जादू।

छलिक *पुं.* {हिं.} नाट्यशास्त्र में नाट्य का एक भेद।

छलिया *वि.* {सं. छलिन्} छल करनेवाला, कपटी, धोखेबाज।

छली *वि.* छलिया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छलौरी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का अँगुलियों का रोग।

छल्ला *पुं.* {सं. छल्ली = लता} मुँदरी; मंडलाकार वस्तु, कड़ा, वलय।

छल्ली *स्त्री.* {हिं.} छाल, छोटा छल्ला, संतति।

छल्लेदार *वि.* {हिं. छल्ला + फा. दार} मंडलाकार चिह्न या घेरेवाला।

छवना *पुं.* छौना।

छवा *पुं.* {देश.} पैर का टखना या एड़ी।

छवाई *स्त्री.* {हिं. छाना} छाने या छवाने का काम, भाव या मजदूरी।

छवाना *स.* हिं. 'छाना' का प्रे.।

छवि *स्त्री.* {सं.} {*वि.* छबीला} शोभा, सौंदर्य; कांति, प्रभा।

छवी *स्त्री.* {?} एक प्रकार का बड़ा चाकू या छोटी कृपाण, जो सिक्ख लोग अपने पास रखते हैं।

छवैया *पुं.* {हिं.} छप्पर छानेवाला।

छह *वि., पुं.* {सं. षड्} पाँच और एक छः।

छहरना *अ.* {सं. क्षरण} बिखरना, छितराना।

छहराना *अ.* छहरना; *स.* बिखराना, छितराना।

छहरीला *वि.* {हिं. छरहरा} {*स्त्री.* छहरीली} छितराने या बिखेरनेवाला।

छहियाँ *पुं.* {ह} छाँह।

छाँउँ *स्त्री.* छाँह।

छाँक *पुं.* {हिं.} खंड, टुकड़ा।

छाँकना *क्रि. स.* {हिं.} डाल, टहनी आदि काटना, छाँटना।

छाँगुर *पुं.* {हिं. छह + अंगुल} वह जिसके हाथ में छह उँगलियाँ हों।

छाँछ *स्त्री.* छाछ।

छाँट[1] *स्त्री.* {हिं. छाँटना} छाँटने या चुनकर अलग करने की क्रिया या ढंग; छाँटकर अलग की हुई निकम्मी वस्तु।

छाँट[2] *स्त्री.* {सं. छर्दि} वमन, कै; *स्त्री.* काटने-छाँटने की क्रिया, छाँटने का ढंग, कतरन, अन्न की भूसी।

छाँटन *स्त्री.* {हिं.} अलग की हुई बेकार चीज, कतरन।

छाँटना *स.* {सं. खंडन} काटकर अलग करना; किसी वस्तु को किसी विशेष आकार में लाने के लिए काटना या कतरना; अनाज में से कन या भूसी कूट या फटककर अलग करना; अच्छी या काम की चीजें चुनना, दूर या अलग करना; साफ करना; अनावश्यक रूप से अपनी योग्यता दिखाना, जानकारी बघारना; उलटी, वमन या कै करना।

छाँटा *पुं.* {हिं. छाँटना} छाँटने की क्रिया या भाव; किसी को छल से अलग या दूर करना।

मुहा. छाँटा देना = किसी को छलपूर्वक संग-साथ से अलग करना।

छाँड़ना *स.* {हिं. छाँटना} सूप में अनाज आदि रखकर फटकना; वमन करना, कै करना।

छाँदना *स.* {सं. छंदन} बाँधना, रस्सी से कसना; पशु के पिछले पैर सटाकर इसलिए बाँधना कि वह भाग न सके।

छाँदा *पुं.* {हिं. छाँदना} वह भोजन, जो ज्योनार आदि में से अपने घर लाया जाए परोसा; हिस्सा, भाग।

छांदोग्य *पुं.* {सं.} दस उपनिषदों में से एक।

छाँव *स्त्री.* छाँह।

छाँवड़ा *पुं.* {सं. शावक} {*स्त्री.* छाँवड़ी छौड़ी} जानवर का बच्चा, छौना; छोटा बच्चा, बालक।

छाँस *स्त्री.* {हिं.} भूसी, कूड़ा-करकट।

छाँह *स्त्री.* {सं. छाया} वह स्थान जहाँ धूप या प्रकाश आने में रुकावट हो, छाया; ऊपर से छाया हुआ स्थान; रक्षा का स्थान, शरण, परछाईं।

मुहा. छाँह न छूना = पास तक न जाना; *छाँह बचाना* = बहुत दूर रहना।

प्रतिबिम्ब; भूत-प्रेत का प्रभाव।

छाँहगीर *पुं.* {हिं.} राजछत्र, दर्पण, आईना।

छाई *स्त्री.* {हिं.} राख, खाद।

छाक *स्त्री.* {हिं. छकना} छकने या तृप्त होने की क्रिया या भाव, इच्छा की पूर्ति, तृप्ति; दुपहर का कलेवा; शराब पीने के समय खाई जानेवाली चटपटी चीज, गजक; नशा; मस्ती।

छाकना *अ.* छकना खा-पीकर तृप्त होना, अघाना, अफराना, मद्य पीकर मस्त होना, चकित होना।

छाग *पुं.* {सं.} बकरा।

छागर *पुं.* = छागल (बकरा)।

छागण *पुं.* {सं.} मोहरी या उपले की आग।

छागल[1] *पुं.* {सं.} बकरा।

छागल[2] *स्त्री.* {हिं. साँकल} पैर का एक गहना।

छाछ *स्त्री.* {सं. छच्छिका} मक्खन निकाला हुआ पनीला दही या दूध, मट्ठा।

छाज[1] *पुं.* {सं. छाद} अनाज फटकने का सींकों का बना एक उपकरण, सूप; छप्पर; छज्जा।

छाज[2] *पुं.* {हिं. छजना} छजने या सजने की क्रिया या भाव; किसी को छलने या ठगने के लिए बनाया जानेवाला रूप, स्वाँग; सजावट, सज्जा, साज।

छाजन *पुं.* {सं. छादन} वस्त्र, कपड़ा; *स्त्री.* छाने का काम, छवाई; छप्पर; छाया के लिए ऊपर की बनावट; *स्त्री.* छजना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ed by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाजना *अ.* छजना।

छाजा *पुं.* {हिं.} छज्जा, छाजन।

छात *स्त्री.* = छत; *पुं.* = छत्र।

छाता *पुं.* {सं. छत्र} वर्षा या धूप से बचने के लिए पत्तों या कपड़े का बना हुआ एक प्रसिद्ध आच्छादन; छतरी; जलाशय में पानी पर छाए हुए-पत्तों का समूह।

छाती *स्त्री.* {सं. छादिन्} पेट और गरदन के बीच की हड्डी की ठठरियों की बनावट, वक्षस्थल, सीना।

मुहा. छाती पत्थर की करना = हृदय कठोर करना; *छाती पर मूँग या कोदों दलना* = किसी को दिखाकर उसका जी दुखानेवाला काम करना; *छाती पर पत्थर रखना* = दुख सहने के लिए जी कड़ा करना; *छाती पर साँप लोटना या फिरना* = कलेजा दहल जाना; ईर्ष्या से व्यथित होना; *छाती पीटना* = बहुत दुखी होकर छाती पर आघात करना; *छाती फटना* = बहुत अधिक दुख से हार्दिक कष्ट होना; *छाती लगाना* = गले लगाना।

हृदय, मन, जी।

मुहा. छाती जलना = शोक, ईर्ष्या या दबाए हुए क्रोध से हृदय में संताप होना; *छाती ठंडी होना* = मन को शान्ति मिलना; स्तन; हिम्मत, साहस।

छात्र *सं.* {*स्त्री.* छात्रा} शिष्य; विद्यार्थी, चेला।

छात्रक *पुं.* {सं.} छात्र, मधु-छत्र में संचित मधु-भंडार।

छात्रवशन *पुं.* {सं.} ताजा मक्खन।

छात्रा *स्त्री.* {सं.} कन्या छात्र।

छात्रवृत्ति *स्त्री.* {सं.} विद्यार्थी को सहायतार्थ मिलनेवाली वृत्ति या धन (स्कॉलरशिप)।

छात्रालय *पुं.* छात्रावास।

छात्रावास *पुं.* {सं.} विद्यार्थियों या छात्रों के रहने का स्थान। (बोर्डिंग हाउस)।

छादन *पुं.* {सं.} {*वि.* छादित} छाने या ढकने का काम; वह जिससे कुछ छाया या ढका जाए, आवरण, आच्छादन; छिपाव; कपड़ा।

छाद्मिक *वि.* {सं.} वह जिसमें छद्मवेश धारण किया या भेष बदला हो; बहुरूपिया; ढोंगी, मक्कार।

छादी *वि.* {सं.} आच्छादन करनेवाला।

छानगीर *पुं.* {हिं.} छानेवाला।

छान[1] *स्त्री.* {सं. छादन} छप्पर।

छान[2] *स्त्री.* {हिं. छानना} छानने की क्रिया या भाव।

छानना *स.* {सं. चालन या क्षरण} चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े आदि से पार निकालना, जिससे उसका कूड़ा-करकट या मोटा अंश ऊपर रह जाए; कोई चीज ढूँढ़ने के लिए सब जगह या सब चीजें अच्छी तरह देखना-भालना, जैसे सारा घर या शहर छानना; भेदकर पार करना; नशा पीना, जैसे शराब छानना; *पुं.* छादन।

छाननी *स्त्री.* {हिं. छानना} वह गोल जालीदार पात्र जिसमें आटा छानते हैं, चलनी, छलनी।

छान-बीन *स्त्री.* {हिं. छानना + बीनना} बच्छी तरह की जाने-वाली जाँच-पड़ताल, गहरी खोज।

छान-फाटक, छान-बिछान *स्त्री.* {हिं.} छान-फटक; छानबीन।

छाना *स.* {सं. छादन} ढकना, आच्छादित करना; छाया के लिए ऊपर से कोई वस्तु तानना या फैलाना; *अ.* फैलना, पसरना; डेरा डालकर या जमकर कहीं रहना।

छानी *स्त्री.* {हिं. छाना} घास-फूस की छाजन, छप्पर।

छाने-छाने *अव्य.* {हिं.} गुप्त रूप से।

छाप *स्त्री.* {हिं. छापना} छापने से पड़ा हुआ चिह्न, मुद्रा, अंक; किसी बात के विशेष प्रभावशाली होने या ठीक जान पड़ने के कारण मन पर पड़नेवाला उसका प्रभाव; (इंप्रेशन, अंतिम दोनों अर्थों के लिए); वैष्णवों के अंगों पर गरम धातु से अंकित शंख, चक्र आदि के चिह्न, मुद्रा; ठप्पेदार अँगूठी; कविता के अंत में रहनेवाला कवि का उपनाम; निशान, चिह्न; कर्ता की विशेषता के कारण उसकी कृति में दिखाई देनेवाली विशेषता या उसका सूचक चिह्न।

छापना *स.* {सं. क्षिप्यते} स्याही आदि की सहायता से एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर दबाकर इसकी आकृति उतारना; ठप्पे से निशान डालना; मोहर से अंकित करना; छापे की कल से अक्षर या चित्र अंकित करना, मुद्रित करना, मुद्रण करना।

छापा *पुं.* {हिं. छापना} वह साँचा जिस पर स्याही या रंग लगाकर उस पर खुदे चिह्न या आकार वस्तु पर छापते या उतारते हैं, ठप्पा; मोहर, मुद्रा; ठप्पे या मोहर पर अंकित चिह्न या अक्षर; मंगल अवसरों पर हलदी आदि से (दीवार, कपड़े आदि पर) छापा हुआ पंजे का चिह्न; बेखबर लोगों पर होनेवाला आक्रमण; अवैध वस्तुओं को पकड़ने के लिए पुलिस तथा सरकारी विभागों द्वारा की जानेवाली अचानक जाँच-पड़ताल या ली जानेवाली तलाशी।

छापाखाना *पुं.* {हिं. छापा + फा. ख़ाना} वह स्थान जहाँ पुस्तकें आदि छापी जाती हैं, मुद्रणालय (प्रिंटिंग प्रेस)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छापामार पुं. {हिं. छापा = अचानक आक्रमण + मार (प्रत्य.)} वह जो आक्रमण करता हो, छापा मारनेवाला विशेषत: सैनिक या हवाई जहाज; *वि.* छापा मारनेवाला।

छाबड़ी *स्त्री.* {देश.} वह दौरी या थाल जिसमें खाने-पीने की चीजें रखकर बेची जाती हैं।

छाम *वि.* क्षाम, दुर्बल, कृपा।

छायल *स्त्री.* {?} एक प्रकार की जनानी कुरती।

छाया *स्त्री.* {?} सूर्य या किसी प्रकाशमान वस्तु के बीच में किसी दूसरी वस्तु के आ जाने से होनेवाला आपेक्षिक अंधकार; ऐसा स्थान, जहाँ ऊपर या सामने से आनेवाला ताप या प्रकाश न पड़ता हो, छाँह; उक्त प्रकार से बीच में आ पड़नेवाले पदार्थ की वह छाया, जो आकार-प्रकार में उस पदार्थ के बहुत-कुछ अनुरूप होती है; प्राय: किसी के पीछे या साथ लगा रहनेवाला व्यक्ति या पदार्थ; ऐसी तत्वहीन या निस्सार बात या पदार्थ जो किसी वास्तविक और महत्वपूर्ण बात या पदार्थ के अनुरूप हो या उसके समान जान पड़े; व्यर्थ की, निकम्मी और भ्रामक प्रतिकृति; किसी बात या पदार्थ का बहुत ही क्षीण या नाम-मात्र का अवशेष, जो उस मूल बात या पदार्थ का बहुत ही सामान्य आभास देता हो (शैडो, उक्त सभी अर्थों के लिए); भूत-प्रेत या उसके कारण होनेवाली बाधा, रोग आदि; किसी वस्तु के अनुकरण पर बनी हुई और कुछ-कुछ वैसी ही जान पड़नेवाली, पर कम महत्व की वस्तु, प्रतिकृति, अनुहार; छाँह।

छायाचित्र पुं. {सं.} वह चित्र जो किसी वस्तु की छाया या प्रतिबिंब मात्र पड़ने से एक विशेष प्रकार के शीशे पर उतर आता और उस शीशे पर से छापा जाता है (फोटो); रजतपट।

छाया-चित्रण पुं. {सं.} वह कला या क्रिया जिससे किसी वस्तु की छाया या प्रतिबिम्ब मात्र से उसका चित्र एक विशेष प्रकार के शीशे पर से एक विशेष प्रकार के कागज पर छापा जाता है (फोटोग्राफी)।

छायापथ पुं. {सं.} आकाशगंगा।

छायाभ *वि.* {सं. छाया + भा (प्रत्य.)} छाया-युक्त; जिस पर छाया पड़ी हो।

छायावाद पुं. {सं.} वह सिद्धांत जिसके अनुसार अव्यक्त या अज्ञात को विषय या लक्ष्य बनाकर उसके प्रति प्रणय, विरह आदि के भाव प्रकट करते हैं; रहस्यवाद।

छायावादी *वि.* {सं.} छायावाद-संबंधी, छायावाद का; पुं. छायावाद का सिद्धांत मानने या उसके अनुसार कविता करनेवाला।

छार पुं. {सं.} जली हुई वनस्पतियों या धातुओं की राख का नमक, क्षार; खारा नमक; खारा पदार्थ; भस्म, राख।

मुहा. छार खार करना = नष्ट-भ्रष्ट करना।

धूल, गर्द।

छारना *स.* {सं. क्षारण} भस्म करना, जलाना; चौपट या नष्ट करना, बरबाद करना।

छाल *स्त्री.* {सं. छल्ल} पेड़ों के धड़ आदि का ऊपरी आवरण, वल्कल; पुं. चिट्ठी या पत्र (जो पहले छाल पर लिखा जाता था)।

छालक *वि.* {सं. क्षालक} {*स्त्री.* छालिका} धोने या धोकर साफ करनेवाला।

उदा. त्रिपथ गासि पुण्य राशि पाप छलिका -तुलसी।

छाला पुं. {हिं. छाल} ऊपरी छाल या चमड़ा, जैसे मृगछाला; जलने आदि से चमड़े का जल-भरा उभार, फफोला।

छालित *वि.* {सं. प्रक्षालित} धोया हुआ।

छालिया *स्त्री.* {ह} सुपारी।

छाली *स्त्री.* {हिं.} कटी हुई सुपारी का चिपटा टुकड़ा, सुपारी का फल।

छाँद *स्त्री.* {हिं.} छाँह, छाया, शरण।

छावनी *स्त्री.* {हिं. छाना} छप्पर; डेरा, पड़ाव; सैनिकों का पड़ाव; सैनिकों के पड़ाव के आसपास की बस्ती, जिसकी व्यवस्था कुछ अलग नियमों के अनुसार होती है (कैंटूमेंट)।

छावर पुं. {हिं.} मछलियों के बच्चों का झुंड।

छावरा पुं. छौना, पशु का छोटा बच्चा।

छावा पुं. {सं. शावक} बच्चा; पुत्र, बेटा।

छासठ *वि.* {हिं.} गिनती में साठ और छः; पुं. वह संख्या 66 बनी।

छिऊँका पुं. {हिं.} एक प्रकार का छोटा चींटा।

छिँउँकी *स्त्री.* {हिं. चूँटी} एक प्रकार की चूँटी; एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा; चिकोटी।

छिंछ *स्त्री.* {अनु.} छींटा।

छि:छि: *विस्मयादि.* {अनु.} घृणा, तिरस्कार आदि का सूचक शब्द।

छिउल पुं. {?} पलाश, ढाक, टेसू।

छिकना *अ.* {हिं. छेंकना} छेंका या घेरा जाना, घिरना; काटा या मिटाया जाना।

छिकनी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार की घास जिसके घुंडी के आकार के फूलों को सूँघने से बहुत छींक आती है, नकछिकनी।

छिकरा पुं. {हिं.} हरिन जाति का एक पशु।

छिक्का *स्त्री.* {सं.} छींक।

छिगनी *स्त्री.* {सं. क्षुद्र + अंगुली} सबसे छोटी उँगली, कनिष्ठिका।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ed by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छिच्छ *स्त्री.* छाँटा।
छिछकारना *पुं.* {ह} छिड़कना।
छिछड़ा *पुं.* छीछड़ा।
छिछला *वि.* {सं. उच्छल} {*स्त्री.* छिछली; *भाव.* छिछलापन} कम गहरा, उथला।
छिछिल *वि.* छिछला।
छिछोरपन, छिछोरापन *पुं.* {हिं.} क्षुद्रता, ओछापान, नीचता।
छिछोरा *वि.* {हिं. छिछला} {*स्त्री.* छिछोरी; *भाव.* छिछोरापन, छिछोरपन} क्षुद्र, ओछा।
छिटक *पुं.* {हिं.} पालकी के ओहार का द्वार के सामने का भाग।
छिटकना *अ.* {सं. क्षिप्ति} इधर-उधर फैलना, बिखरना।
छिटकाना *स.* चारों ओर फैलाना, बिखेरना।
छिटकी *स्त्री.* {हिं.} छींट, छींटा।
छिटनी *स्त्री.* {हिं.} बाँस की छोटी टोकरी, डलिया।
छिटवा *पुं.* {हिं.} बड़ी टोकरी, टोकरा।
छिड़कना *स.* {हिं. छींटा + करना} पानी आदि के छींटे डालना।
छिड़काई *स्त्री.* {हिं.} छिड़कने का काम, पारिश्रमिक।
छिड़का *पुं.* छिड़काव।
छिड़काव *पुं.* {हिं. छिड़कना} पानी आदि छिड़कने की क्रिया या भाव।
छिड़ना *अ.* {हिं. छेड़ना} किसी बात या कार्य का आरंभ होना, शुरू होना, जैसे चर्चा छिड़ना, लड़ाई छिड़ना।
छितनी *स्त्री.* {?} छोटी छिछली टोकरी।
छितराना *अ.* {सं. क्षिप्त + करण} बिखरना, फैलना; *स.* बिखराना, फैलाना; दूर-दूर या विरल करना; तितर-बितर करना।
छितराव *पुं.* {हिं.} छितराने की क्रिया या भाव।
छिति *स्त्री.* {हिं.} छिति, भूमि, पृथ्वी, एक का अंक-कांत-(पुं.) भूपति, राजा;-रूह; *पुं.* छितिरूह, वृक्ष, पेड़।
छितिपाल *पुं.* {सं. क्षिति + पाल} राजा।
छितीस *पुं.* {सं. क्षितीश} राजा।
छिदना *अ.* {हिं. छेदना} छेदा जाना; घायल होना; चुभना।
छिदाना *स.* हिं. 'छेदना' का प्रे.।
छिदरा *वि.* {हिं.} छितराया हुआ, बिरला, झीना, फटा हुआ, जर्जर।
छिद्र *पुं.* {सं.} {*वि.* छिद्रित} छेद, सराख; गड्ढा, विवर, बिल; दोष, ऐब।
छिद्रान्वेषण *पुं.* {सं.} {*वि.* छिद्रान्वेषी} किसी व्यक्ति या बात के दोष ढूँढ़ना, खुचुर निकालना।
छिद्रान्वेषी *पुं.* {सं. छिद्रान्वेषिन्} {*स्त्री.* छिद्रान्वेषिणी} दूसरों के दोष ढूँढ़नेवाला।
छिद्रोक्षर *पुं.* {सं.} एक प्रकार का पेट का रोग।
छिन *पुं.* क्षण।
छिनक *क्रि. वि* {हिं. छिन + एक} क्षण भर, थोड़ी देर।
छिनकना *स.* {हिं. छिड़कना} जोर से साँस निकालकर नाक साफ करना।
छिनछबि *स्त्री.* बिजली।
छिनना *अ.* हिं. छिनना का *अ.*।
छिनभंग *वि.* क्षणभंगुर।
छिनरा *वि.* = छिनाल।
छिनाना *स.* छिनवाना।
छिनाल, छिनार *पुं.* {हिं. सं. छिन्ना + नारी} व्यभिचारिणी, कुलटा; व्यभिचारी।
छिनालपन, छिनालपना *पुं.* {हिं.} अवैध संबंध, संभोग, छिनाला, छिनाल, व्याभिचार।
छिनाला *पुं.* {हिं. छिनाल} स्त्री-पुरुष का अनुचित सहवास, व्यभिचार।
छिन्न *वि.* {सं.} कटा हुआ, खंडित कटकर अलग किया हुआ।
छिन्नमस्ता *वि.* {सं.} जिसका मस्तक कटा हो; *स्त्री.* दस महाविद्यालयों में एक देवी।
छिन्नवण *पुं.* {सं.} किसी शस्त्र से कटा हुआ घाव।
छिन्ना *स्त्री.* {सं.} पुंश्चली, छिनाल।
छिन्न-भिन्न *वि.* {सं.} कटा हुआ, टूटा-फूटा; तितर-बितर; नष्ट-भ्रष्ट।
छिपकली *स्त्री.* {हिं. चिपकना} एक रेंगनेवाला जन्तु, जो प्रायः दीवारों पर दिखाई देता है, गृह-गोधिका, बिस्तुइया।
छिपछिप *अव्य.* {हिं.} गुप्त रीति से, छिपकर, चुपचाप।
छिपना *अ.* {सं. क्षपयति} आड़ में होना, दिखाई न पड़ना।
छिपाना *हिं.* {सं. छिपना} {*भाव.* छिपाव} आँख से ओझल करना; दूसरों की दृष्टि से बचाना, प्रकट न करना, गुप्त करना (कंसील)।
छिपाव *पुं.* {हिं. छिपाना} छिपने या छिपाने की क्रिया या भाव।
छिपा रुस्तम *पुं.* {हिं.} वह व्यक्ति जो गुणों से पूर्ण हो, परन्तु विख्यात न हो, छिपा गुण।
छिपाव *पुं.* {हिं. छिपाना} छिपने या छिपाने की क्रिया या भाव।
छिपे-छिपे *अव्य.* {हिं.} छिप-छिपकर।
छिपिया *स्त्री.* {हिं. छीपा} छोटा छीपा या डलिया; *पुं.* छीपी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छिप्र *क्रि. वि.* क्षिप्र।

छिमा *स्त्री.* क्षमा।

छिया *स्त्री.* {सं.} घृणित वस्तु; मल, गूह।

छियालिस, छियालीस *वि. पुं.* {हिं.} चालीस और छः, यह संख्या, 46.

छियासी *वि. पुं.* {हिं.} अस्सी और छः, यह संख्या, 86.

छिरकना *स.* छिड़कना।

छिरना *अ.* छिलना।

छिरियाना *अ.* छिटकना; *स.* छिड़कना।

छिरेथ *पुं.* {हिं.} एक प्रकार की लता जिसका रस जल में डालने से वह जम जाता है, छिलहिंड।

छिलक *पुं.* = तिलक (पौधा)।

छिलका *पुं.* {हिं. छाल} फल आदि का आवरण; ऊपरी परत।

छिलन *स्त्री.* {हिं. छिलना} छिलने की क्रिया या भाव; शरीर के चमड़े का ऊपर से छिल जाना, खरोंच (ऐब्रेजन)।

छिलना *अ.* {हिं. छीलना} छिलका अलग होना; ऊपरी चमड़ा निकलना, उधेड़ना, खरौंचा।

छिलवा *वि.* {हिं.} ईख की पत्तियाँ को छीलकर अलग करना।

छिलवाना *क्रि. स.* {हिं.} छीलने का काम दूसरे से कराना।

छिलाव, छिलावट *स्त्री.* {हिं.} छीलने का काम या भाव, छिलाई।

छिलौरी *स्त्री.* {हिं.} शरीर पर का छोटा छाला।

छिहत्तर *वि. पुं.* {हिं.} सत्तर और छः, यह संख्या, 76.

छिहरना *क्रि. अ.* {हिं.} छितराना, फैलना।

छिहाना *क्रि. अ.* {हिं.} ढेर लगाना, गाँजना।

छिहानी *स्त्री.* {?} श्मशान, मरघट।

छींक *स्त्री.* {सं. छींका} एक शारीरिक व्यापार जिसमें नाक की वायु बहुत जोर से और कुछ शब्द करती हुई निकलती है।

छींकना *अ.* {हिं. छींक} छींक निकालना।

छींका *पुं.* {सं. शिक्य} रस्सियों या तारों का वह जाल, जो खाने-पीने की चीजें रखने के लिए छत में या दीवार से लटकाया जाता है, सिकहर; बैलों के मुँह पर बाँधा जानेवाला जाल; रस्सियों का बना हुआ झूलनेवाला पुल, झूला।

छींट *स्त्री.* {सं. क्षिप्त} महीन बूँद, जलकण; रंगीन बेल-बूटेदार कपड़ा।

छींटना *स.* छितराना।

छींटा *पुं.* {सं. क्षिप्त, प्रा. छिप्त} द्रव पदार्थ की छिटकी हुई बूँदें, जलकण, सीकर; हलकी वृष्टि; बूँद की तरह का चिह्न या दाग; मदक या चंडू की एक मात्रा; व्यंग्यपूर्ण उक्ति।

छींबी *स्त्री.* {सं. शिंबी} मटर की फली; गौ या बकरी के स्तनों में से कोई वह अंश, जो फली की तरह नीचे लटका रहता है।

छी *विस्मयादि.* {अनु.} घृणासूचक शब्द।

मुहा. छी-छी करना = अरुचि या घृणा करना।

छीआना *स.* = छूना।

छीछड़ा *पुं.* {सं. तुच्छ, या हिं. छी?} खाए जानेवाले मांस का छोटा और निकम्मा टुकड़ा।

छीछालेदर *स्त्री.* {हिं. छी-छी} दुर्दशा, दुर्गति।

छीजन *स्त्री.* {हिं. छीजना} छीजने की क्रिया या भाव; वह अंश जो छीजने के कारण कम हो (वेस्टेज)।

छीजना *अ.* {सं. क्षयण} {*भाव.* छीज} रगड़ खाने या काम में आने से कम होना।

छीति *स्त्री.* {सं. क्षति} हानि, घाटा; बुराई, खराबी।

छीटा *पुं.* {हिं.} बाँस का टोकरा, खाँचा, झाबा, मछली पकड़ने का एक उपकरण जो बाँस या सरपत के डंठल का बनाया जाता है।

छीतना *क्रि.स.* {हिं.} बिच्छू, बर्रे आदि का डंक मारना।

छीती *स्त्री.* {हिं.} क्षति, हानि, बुराई।

छीदा *वि.* {हिं.} झंझरा, अनेक छेदोंवाला।

छीन *वि.* क्षीण।

छीनना *स.* {सं. छिन्न + ना (प्रत्य.)} काटना; जबरदस्ती लेना, हरण करना।

छीनाछीनी *स्त्री.* = छीनाझपटी।

छीनाझपटी *स्त्री.* {हिं. छिनना + झपटना} छीनकर लेने की क्रिया या भाव।

छीप *वि.* {सं. क्षिप्र} वेगवान, तेज; *स्त्री.* = छाप।

छीपना *क्रि.स.* {हिं.} बंसी से मछली को फँसाकर जल से बाहर फेंकना।

छीपा *पुं.* {?} {*स्त्री.* अल्पा. छीपी} बाँस आदि का बड़ा डला; थाली; *पुं.* छीपी।

छीपी *पुं.* {हिं. छापा} {*स्त्री.* छीपिन} कपड़ों पर बेल-बूटे आदि छपानेवाला।

छीबर *स्त्री.* {हिं.} वह वस्त्र जिस पर बेलबूटे छपे हों।

छीमी *स्त्री.* {हिं.} मटर आदि की फली।

छीर *पुं.* {हिं. छोर} कपड़े की लंबाईवाले सिरे का किनारा।

छीरज *पुं.* {हिं. क्षीरज} चंद्रमा, दधि, दही।

छीरधि *पुं.* {हिं.} क्षीरसागर, दूध का समुद्र।

छीरप¹ *पुं.* {हिं.} बालक, बच्चा।

छीरप² *पुं.* {सं. क्षीरप} दूध-पीता बच्चा; *वि.* दूध पीनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

D by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छीरफन पुं. {हिं.} दूध की मलाई।
छीलक पुं. {हिं.} छिलका।
छीलना अ. {हिं. छाल} छिलका उतारना; खुरचकर अलग करना।
छीलर पुं. {हिं. छिछला} पानी भरा हुआ छोटा गड्ढा, तलैया।
छीवना स. = छूना।
छुँगनी स्त्री. = छँगुली।
छुँगली स्त्री. {हिं. छुँगुली} एक प्रकार की घुँघरूदार अँगूठी।
छुआई स्त्री. {हिं.} छुआने की क्रिया, लेश, स्पर्श।
छुआछूत स्त्री. {हिं.} अस्पृश्य का स्पर्श, छूत का विचार, छूतछात।
छुईमुई स्त्री. {हिं.} एक छोटा कँटीला पौधा, लज्जालू, लज्जावती, बहुत ही लजालू दाना।
छुआना स. छुलाना।
छुगुनूँ वि. घुँघरू।
छुच्छा वि. छूँछा।
छुच्छी स्त्री. {हिं. छूछा} पतली नली।
छुच्छू वि. {हिं. छूछा} मूर्ख और फलतः तुच्छ।
छुछमछली स्त्री. {हिं.} अंडे से फूटा हुआ मेंढक का बच्चा जिसका आकार मछली-सा होता है।
छुछहँड़ {हिं. स्त्री.} छूछी हाँड़ी।
छुछआना क्रि.अ. {हिं.} व्यर्थ इधर-उधर घूमना, बनावटी प्रेम दिखलाना।
छुट क्रि. वि. {हिं. छूटना} छोड़कर, सिवा, अतिरिक्त।
छुटकाना स. {हिं. छूटना} अलग करना, छोड़ना; साथ न लेना; मुक्त करना।
छुटकारा पुं. {हिं. छूटना} बंधन से मुक्ति, रिहाई; छुट्टी, चिंता से निस्तार।
छुटपन पुं. {हिं. छोटा + पन (प्रत्य.)} छोटाई, लघुता; बचपन।
छुट्टा वि. {हिं. छूटना} {स्त्री. छुट्टी} जो बँधा न हो, खुला (पशु); एकाकी, अकेला; सब प्रकार के बंधनों से रहित, स्वतंत्र; फुटकर।
छुट्टी स्त्री. {हिं. छूटना} छूटने या छोड़े जाने की क्रिया या भाव, छुटकारा; काम कर चुकने पर मिलनेवाला खाली समय, अवकाश, फुर्सत; काम बंद रहने का वह दिन जिसमें नियमित रूप से लोग काम पर उपस्थित नहीं रहते, तातील (हॉलीडे); काम से मिलनेवाला वह अवकाश जो किसी विशेष कारण से अधिकारियों से प्राप्त किया जाता है, अवकाश, रुखसत (लीव); कहीं से चलने या जाने की अथवा इसी प्रकार के और किसी काम की अनुमति या आज्ञा।
छुड़वाना स. {हिं. छोड़ना} किसी को कुछ छोड़ने में प्रवृत्त करना।
छुड़ाना स. {हिं. छोड़ना} बंधन या उलझन से निकालना; दूसरे के अधिकार से अलग करना; (धब्बा) मिटाना, साफ करना; नौकरी से हटाना, बर्खास्त करना; (आदत) दूर करना; किसी को कुछ देते समय उसमें कमी करना।
छुड़ौती स्त्री. {हिं.} बंधन से मुक्त करने के लिए दिया हुआ धन।
छुत् स्त्री. {हिं.} क्षुधा, भूख।
छुतिहर पुं. {हिं.} वह पात्र जो अशौच से अशुद्ध हो गया हो।
छुतिहा, छुतहा वि. {हिं.} अस्पृश्य, दूषित, कलंकित, स्पर्शज।
छुत स्त्री. {सं. क्षुत} भूख।
छुतहा वि. संक्रामक; छुतिहा।
छुतिहा वि. {हिं. छूत + हा (प्रत्य.)} छूतवाला; अस्पृश्य।
छुद्र वि. क्षुद्र।
छुद्रघट पुं. क्षुद्रघंटिका।
क्षुद्रावालि स्त्री. क्षुद्रघंटिका।
छुधा स्त्री. क्षुधा।
छुप पुं. क्षुप।
छुपना पुं. छिपना।
छुबुक पुं. {हिं.} चिबुक, ठुड्डी।
छुभित वि. {सं. क्षुमित} क्षुब्ध।
छभिराना अ. स. {हिं. क्षोभ} क्षुब्ध होना या करना; विचलित होना या करना।
छुरधार स्त्री. {सं. क्षुरधार} छुरे की धार।
छुरहँड़ी स्त्री. {सं. क्षुर-भांडिक} वह पात्र या आधान जिसमें नाई उस्तरा, कैंची आदि औजार रखते हैं, किसबत।
छुरा पुं. {सं. क्षुर} {स्त्री. अल्पा. छुरी} बड़ी छुरी; उस्तरा।
छुरी स्त्री. {हिं. छुरा} काटने या चीरने आदि का एक छोटा औजार, चाकू।
छुरेबाजी स्त्री. {हिं.} छुरे की लड़ाई।
छुलछुलाना अ. {अनु.} थोड़ा-थोड़ा करके मूतना।
छुलाना स. {हिं. छूना} 'छूना' का प्रेरणार्थक रूप, स्पर्श करना।
छुवाना स. छुलाना।
छुवाव पुं. {हिं.} संसर्ग, संबंध, लगाव।
छुहना अ. {हिं. छूना} छुआ जाना; स. छूना।
छुहारा पुं. {सं. क्षुत + हारा (प्रत्य.)} एक प्रकार की खजूर, खुरमा; पिंडखजूर।
छूँछा वि. छूछा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

छू पुं. {अनु.} मंत्र पढ़कर फूँक मारने शब्द।
मुहा. छू-*मंतर होना* = गायब होना।

छूआछूत *स्त्री.* {हिं. छूना + छूत} अस्पृश्य को न छूने या उससे बचने का विचार या प्रथा।

छूई-मुई *स्त्री.* {हिं. छूना + मूना = मरना} लजालू या लज्जावती नाम का पौधा।

छूछा *वि.* {सं. तुच्छ} {*स्त्री.* छूछी} खाली, रिक्त; निस्सार; निर्धन।

छूछू *वि.* {हिं.} मूर्ख, बेवकूफ।

छूट *स्त्री.* {हिं. छूटना} छूटने की क्रिया या भाव, छुटकारा; असावधानता के कारण कार्य के किसी अंग पर ध्यान न जाने या उसके छूट अथवा रह जाने का भाव, चूक (ओमिशन); वह अनुमति जो किसी को विशेष अवस्था में कोई कार्य करने अथवा अपना कर्तव्य अथवा दायित्व पूरा करने के लिए मिले (एग्जेम्पशन); किसी प्राप्य धन का पूरा अथवा कुछ अंश छोड़ दिया जाना, पूरा या बाकी रुपया न लिया जाना (एबेटमेंट, रेमिशन, रिबेट); मूल्य, पारिश्रमिक आदि लेने के समय कुछ विशेष अवस्थाओं में या कारण से होनेवाली कमी या रियायत (डिस्काउंट); किसी बात या कार्य की स्वतंत्रता; दयापूर्वक की जानेवाली कोई रियायत (कंसेशन); गाली-गलौज की या गंदी दिल्लगी।

छूटना *अ.* {सं. छुट} किसी वस्तु का बंधन आदि से अलग या मुक्त होना।
मुहा. शरीर *छूटना* = मृत्यु होना।
बंधन खुलना; साफ होना, मिटना, जैसे कपड़े का दाग या धब्बा छूटना; मुक्त होना; चलनेवाली चीज का चलना आरंभ होना, जैसे--गाड़ी छूटना, आतिशबाजी छूटना; अलग होना, बिछुड़ना; पीछे रह जाना; अस्त्र का चलना; बंद होना।
मुहा. नाड़ी *छूटना* = नाड़ी की गति बंद हो जाना (मरने का लक्षण)।
व्रत, नियम आदि भंग होना; तेजी से निकलना; रिस-रिसकर (पानी) निकलना; कण या छींटे निकलकर फैलना, जैसे फुहारा या आतिशबाजी छूटना; भूल से रह जाना; काम या नौकरी से हटाया जाना।

छूटा *स्त्री.* {हिं. छूटना} एक प्रकार की बरछी।

छूत *स्त्री.* {हिं. छूना} छूने की क्रिया या भाव; ऐसा निषिद्ध संसर्ग जिससे रोग आदि का संचार होता है; गंदी वस्तु का संसर्ग।
पद छूत *का रोग* = रोगी के संसर्ग से फैलनेवाला रोग, संक्रामक रोग।
अपवित्र वस्तु छूने का दोष; अस्पृश्यता; भूत-प्रेत का प्रभाव।

छूना *अ.* {सं. छूप} एक वस्तु का दूसरी से सटना या लगना, स्पर्श होना; *स.* किसी वस्तु से अपना कोई अंग सटाना या लगाना, स्पर्श करना।
मुहा. आकाश *छूना* = बहुत ऊँचा होना।
उँगली या हाथ लगाना; दान के लिए कोई वस्तु स्पर्श करना; दौड़ या खेल की बाजी में जा पकड़ना; लेप करना, पोतना।

छेंकन *स्त्री.* {हिं. छेंकना} छेंकन की क्रिया या भाव; मकान आदि बनाने के समय नींव आदि खोदकर यह निश्चित करना कि कहाँ-कहाँ और किस तरह से कोठरियाँ, दीवारें, दालान आदि रहेंगे।

छेंकना *स.* {सं. छंद} स्थान घेरना; जाने से रोकना, न जाने देना; लकीरों से घेरना; काटना, मिटाना, जैसे किसी के नाम लिखी हुई रकम छेंकना।

छेक पुं. {हिं.} छिद्र, छेद, विभाग, कटाव।

छेकानुप्रास पुं. {सं.} एक प्रकार का अनुप्रास जिसमें एक ही चरण में दो या अधिक वर्णों की आवृत्ति कुछ अंतर पर होती है।

छेकोक्ति *स्त्री.* {सं.} ऐसी बात या कथन जिसके अंतदर कुछ और अर्थ भी छिपा हो।

छेटा *स्त्री.* {हिं.} बाधा, अवरोध, रुकावट।

छेड़ *स्त्री.* {हिं. छेद?} छेड़ने की क्रिया या भाव; किसी को कुढ़ाने या चिढ़ानेवाली बात, चुटकी; रगड़ा-झगड़ा; किसी कार्य का आरंभ।

छेड़खानी *स्त्री.* {हिं. छेड़} किसी को तंग करने के लिए छेड़ने की क्रिया या भाव, छेड़छाड़।

छेड़-छाड़ *स्त्री.* = छेड़खानी।

छेड़ना *स.* {हिं. छेदना} खोद-खाद करना, खोंचना; तंग करना; विरोधी को चिढ़ाना; मजाक करना, चुटकी लेना; (बात या कार्य) आरंभ करना, ठानना; बाजा बजाने के लिए उसमें वे स्वर निकालना, आरंभ करना।

छेड़वाना *स.* हिं. 'छेड़ना' का प्रे.।

छेत पुं. {सं. छेद} अलग होने की क्रिया या भाव, पार्थक्य, अलगाव; वियोग, विच्छेद।

छेति *स्त्री.* {सं. छेदन} बाधा।

छेडा पुं. {हिं.} रस्सी, साँट।

छेत्र पुं. क्षेत्र।

छेद[1] पुं. {सं.} छेदन, काटना; विनाश।

छेद[2] पुं. {सं. छिद्र} सुराख, छिद्र; बिल, विवर; दोष, दूषण।

छेदक *वि.* {सं.} छेद करनेवाला; विभाजक, छेद।

छेदन पुं. {सं.} काटने या चुभाने की क्रिया, चीरफाड़, नाश, विध्वंस।

छेदना *स.* {सं. छेदन} छेद करना, सुराख करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

D by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छेदा पुं. {हिं.} घुन नामक कीड़ा।

छेना पुं. {सं. छेदन} फाड़ा हुआ दूध, जिसका पानी निकाल लिया गया हो।

छेनी *स्त्री.* {हिं. छेना} पत्थर आदि काटने का लोहे का एक औजार, टाँकी।

छेम पुं. = क्षेम।

छेरा पुं. = छोरा, बच्चा, बालक।

छेरी *स्त्री.* {सं. छेलका} बकरी, अजा।

छेव पुं. {हिं.} वार, चोट, घाव, आनेवाली आपत्ति।

छेवन पुं. {हिं.} कुम्हार का डोरा जिससे वह चाक पर के बरतन काटता है।

छेवना[1] *स्त्री.* {हिं. छेना} ताड़ी।

छेवना[2] *स.* {हिं. छेदना} काटना, छिन्न करना; चिन्ह लगाना।

छेवना[3] *स.* {सं. क्षेपण} फेंकना; डालना।

छेवना[4] *अ.* {?} झेलना, सहना।

छेवर पुं. {हिं.} वल्कल, छिलका, त्वचा, छान, चमड़ा।

छेवा पुं. {हिं.} छीलने या काटने का काम, घाव, छेद।

छेह पुं. {हिं.} खंडन, नाश, नाचक एक भेद; *स्त्री.* राख।

छै पुं. {हिं.} छः {पुं.} छह।

छैना[1] पुं. {?} करताल या जोड़ी की तरह का एक बाजा; झाँझ।

छैना[2] *अ.* {सं. क्षय} क्षीण होना; नष्ट होना; *स.* क्षीण करना; नष्ट करना।

छैया पुं. {हिं. छावना} बच्चों के लिए प्यारा नाम।

छैल पुं. छैल; हठ।

छैल-चिकनिया पुं. छैला।

छैल-छबीला पुं. छैला।

छैला पुं. {सं. छवि + हिं. ऐला (प्रत्य.)} बना-ठना सुंदर आदमी, बाँका।

छैलाना *अ.* {हिं. छैल} लड़कों का कोई चीज लेने के लिए हठ करना।

छोंड़ा पुं. {सं. क्ष्वे} मथानी।

छोआ पुं. खोई।

छो पुं. {हिं.} छोह, प्रीति, दया, क्षोभ।

छोई *स्त्री.* {?} खोई; निस्सार वस्तु।

छोकरा पुं. {सं. शावक} {*स्त्री.* छोकरी} लड़का, बालक।

छोकरी *स्त्री.* {हिं.} लड़की, बेटी।

छोकला पुं. {हिं.} वल्कल, छिलका।

छोटफन्नी *स्त्री.* {हिं.} छोटे मुँह की गगरी।

छोटभैया पुं. {हिं.} पद में छोटा मनुष्य, कम हैसियत का आदमी।

छोटा *वि.* {सं. क्षुद्र} {*स्त्री.* छोटी; *भाव.* छुटाई, छोटाई} लंबाई, विस्तार या डील-डौल में कम; अवस्था या उम्र में कम; पद या प्रतिष्ठा में घटकर; तुच्छ, हीन; ओछा, क्षुद्र।

छोटा-मोटा *वि.* साधारण।

छोटी इलायची *स्त्री.* एक प्रकार की इलायची जो छोटी और सफेद होती है, गुजराती इलायची।

छोड़-चिट्ठी *स्त्री.* {हिं.} नाता या संबंध-विच्छेद करना।

छोटी हाजिरी *स्त्री.* यूरोपियनों आदि का सवेरे का जलपान।

छोड़ना *स.* {सं. छोरण} अपनी पकड़ से अलग या बंधन से मुक्त करना; अपना अधिकार, प्रभुत्व या स्वामित्व हटा लेना, परित्याग करना; ग्रहण न करना, न लेना; कहीं से प्रस्थान करना, स्थान से हटना; चलनेवाली चीज की गति में लाना, जैसे गाड़ी छोड़ना, आतिशबाजी छोड़ना; किसी का पीछा करने के लिए किसी को लगाना, जैसे किसी आदमी पर जासूस छोड़ना; किसी को पीछे रखकर आप आगे बढ़ना; वेग से बाहर निकालना या गिराना; पद, कार्य या कर्तव्य से अलग या विरत होना; रोग या व्याधि का किसी के शरीर से हट जाना; बचाकर रखना।

पद को छोड़कर = के अतिरिक्त, के सिवा।

अभियोग आदि से मुक्त करना (डिस्चार्ज); कारागार या बंधन से मुक्त करना (डिस्चार्ज)।

छोनिप पुं. क्षोणिप।

छोनी *स्त्री.* क्षोणी, भूपति, राजा, नृपति।

छोप *स्त्री.* {हिं. छोपना} छोपने की क्रिया भाव; वह अंश जो ऊपर से छोपकर लगाया जाए, छोपकर चढ़ाई हुई तह या स्तर।

छोपा पुं. {हिं.} पाल के चारों कोनों पर की रस्सियाँ जो इसे ऊपर चढ़ाती हैं।

छोपाई *स्त्री.* {हिं.} छोपने की क्रिया या पारिश्रमिक।

छोपना *स.* {सं. क्षपण} अधिक मात्रा में गीली वस्तु किसी दूसरी वस्तु पर रखना, गाढ़ा लेप करना, थोपना; धर दबाना, दबोचना; ढकना।

छोभ पुं. {हिं.} क्षोभ, चित्त की खलबली।

छोभन पुं. = क्षोभ।

छोभना *अ.* {सं. क्षोभ} क्षुब्ध होना; *स.* क्षुब्ध करना।

छोभित *वि.* क्षोभित।

छोम *वि.* {सं. क्षोम} चिकना; कोमल, मुलायम।

छोर पुं. {हिं. ओर का अनु.} चौड़ाई का अंतिम भाग, किनारा, सिरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद आरे-छोरे = आदि और अंत।
अंतिम सीमा, सिरा; नोक।

छोरना *स.* {सं. छोरण} खोलना; छीनना।

छोरा *पुं.* {सं. शावक} {*स्त्री.* छोरी} छोकरा, लड़का।

छोराछोरी *स्त्री.* {हिं. छोरना} छीना-झपटी, छीना-छीनी।

छोरी *स्त्री.* {हिं.} लड़की, छोकरी।

छोल *स्त्री.* {हिं.} छिल जाने का निशान, घाव।

छोलदारी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का छोटा खेमा या तंबू।

छोलना *स.* = छीलना; *पुं.* वह औजार जिससे कोई चीज छीली जाए।

छोला *पुं.* {हिं.} ईख छीलनेवाला, चना।

छोह *पुं.* {सं. क्षोभ} प्रेम, स्नेह; दया, अनुग्रह।

छोहना *अ.* {हिं. छोह} विचलित या क्षुब्ध होना; प्रेमपूर्वक दया करना।

छोहरा *पुं.* {*स्त्री.* छोहरी} छोरा, बालक, लड़का।

छोहाना *अ.* छोहना, प्रेम दिखलाना, अनुग्रह करना, दया दिखलाना।

छोहिनी *स्त्री.* अक्षौहिणी।

छोही *वि.* {हिं. छोह} प्रेमपूर्वक दया रखनेवाला, अनुरागी, प्रेमी, स्नेही, अनुरागी।

छौंक *स्त्री.* {अनु.} बघार, तड़का।

छौंकना[1] *स.* {अनु. छाँवछाँव} सुगंधित या सोंधा करने के लिए हींग, मिर्च आदि से मिला हुआ कड़कड़ाता घी दाल आदि में डालना; बघारना।

छौंकना[2] *अ.* {सं. चतुष्क} वार करने के लिए झपटना।

छौंड़ा[1] *पुं.* छोकरा।

छौंड़ा[2] *पुं.* {सं. चुंडा} अनाज रखने का गड्ढा, खत्ता।

छौना *पुं.* {सं. शावक} {*स्त्री.* छौनी} पशु का बच्चा, जैसे–मृगछौना; बालक, बच्चा।

छौलदारी *स्त्री.* {देश.} एक प्रकार का छोटा तंबू या खेमा।

ज

ज देवनागरी वर्णमाला का एक व्यंजन वर्ण जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है। छंदशास्त्र में यह जगण का सूचक या संक्षिप्त रूप माना जाता है। प्रत्यय रूप में यह शब्दों के अन्त में लगकर 'में उत्पन्न' या 'से उत्पन्न' का अर्थ देता है, जैसे देशज, जलज आदि।

जंक्शन *पुं.* {अं.} वह स्टेशन जहाँ दो या अधिक रेल लाइनें मिली हों।

जंग[1] *स्त्री.* {फा.} {*वि.* जंगी} युद्ध।

जंग[2] *पुं.* {फा. ज़ंग} लोहे का मोर्चा।

जंगम *वि.* {सं.} चलने-फिरनेवाला, चर; जो एक जगह से दूसरी जगह लाया या पहुँचाया जा सके, चल, जैसे जंगम संपत्ति; *पुं.* दाक्षिणात्य लिंगायत शैव संप्रदाय के एक प्रकार के आचार्य।

जँगरा *पुं.* {हिं.} मूँग, मटर, उरद इत्यादि के डंठल जो दाना निकाल लेने पर बच जाते हैं।

जँगरैत *वि.* {हिं.} परिश्रमी, मेहनती।

जंगल *पुं.* {सं.} {*वि.* जंगली} वह स्थान जहाँ बहुत दूर तक पेड़, क्षुप आदि आप-से-आप उगे हों, वन (फॉरेस्ट)।

जँगला *पुं.* {पुर्त. जेंगिला} वह खिड़की या दरवाजा, जिसमें लोहे के छड़ लगे हों।

जंगली *वि.* {सं. जंगल} जंगल-संबंधी, जंगल का, जाँगलू, वन्य; जंगल में होने या मिलनेवाला; आप-से-आप उगनेवाला (पौधा); जंगल में रहनेवाला, जैसे–जंगली जाति, जंगली हाथी; (प्रदेश या स्थान) जिसमें जंगल हों, जैसे जंगली द्वीप।

जंगा *पुं.* {हिं.} घुँघरू का दाना।

जंगार *पुं.* {फा.} {*वि.* जंगारी} तूतिया।

जंगारी *वि.* {हिं.} नीले रंग का, नीला रंग।

जंगाल *पुं.* जंगार।

जंगी *वि.* {फा.} लड़ाई से संबंध रखनेवाला, जैसे–जंगी तैयारी; सेना-संबंधी, फौजी, सैनिक; बहुत बड़ा, दीर्घकाय।

जंगीकानून *पुं.* फौजी कानून।

जंगी जहाज *पुं.* {हिं. जंगी + जहाज} जलयुद्ध में काम आनेवाला वह बहुत बड़ा जहाज, जिसपर बहुत-सी तोपें लगी रहती हैं, युद्धपोत।

जंघा *स्त्री.* {सं.} जाँघ, रान।

जंघार *स्त्री.* {हिं.} जाँघ का फोड़ा।

जंघारा *पुं.* {हिं.} राजपूतों की एक जाति।

जँचना *अ.* {हिं. जाँचना} जाँचा जाना; अच्छा लगना; जान पड़ना, प्रतीत होना।

जंजल *वि.* जर्जर।

जंजाल *पुं.* {हिं. जग + जाल} झंझट, बखेड़ा; उलझन; पानी का भँवर; पुराने ढंग की एक प्रकार की बड़ी पलीतेदार बंदूक, चौड़े मुँह की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रकार की तोप; मछलियाँ पकड़ने का बहुत बड़ा जाल।

जंजालिया, जंजाली *वि.* {हिं.} उपद्रवी, झगड़ालू, बखेड़िया।

जंजीर *स्त्री.* {फा.} कड़ियों की लड़ी; बेड़ी; किवाड़ की कुंडी, सिकड़ी।

जँजीरी *स्त्री.* {फा. जंजीर} गले में पहनने की सिकड़ी; हथेली के पिछले भाग पर पहना जानेवाला एक प्रकार का गहना, जेवर।

जंतर *पुं.* {सं. यंत्र} कल, यंत्र; तांत्रिक यंत्र; गले आदि में पहनने का धातु का यह छोटा आधान जिसके अंदर कोई तांत्रिक यंत्र या टोटके की वस्तु भरी रहती है।

जंतर-मंतर *पुं.* {हिं. यंत्र + मंत्र} यंत्र-मंत्र, टोना-टोटका, जादू-टोना; वेधशाला।

जंतरी *स्त्री.* {सं. यंत्र} छोटा जंता, जिससे सोतार तार खींचते हैं; पंचांग, तिथिपत्र; जादूगर; बाजा-बजानेवाला, वादक।

जँतसर *पुं.* {हिं. जाँता} वह गीत जो स्त्रियाँ चक्की पीसते समय गाती हैं।

जँतसार *स्त्री.* {हिं. जाँता} वह स्थान जहाँ जाँता या चक्की गड़ी रहती हैं।

जंता[1] *पुं.* {सं. यंत्र} {*स्त्री.* अल्पा. जंती, जंतरी} यंत्र, कल; सुनारों आदि का तार खींचने का एक औजार।

जंता[2] *वि.* {सं. यंतृ = यंता} दंड देनेवाला।

जंती *स्त्री.* जननी।

जंतु *पुं.* {सं.} जन्म लेनेवाला; जीव, प्राणी; पशु, जानवर।

जंतुघ्न *वि.* {सं.} कीड़ों का नाश करनेवाला, जंतुनाशक।

जंतुविज्ञान *पुं.* {सं.} वह विज्ञान जिसमें जंतुओं या प्राणियों की उत्पत्ति, विकास, स्वरूप और विभागों आदि का विवेचन होता है (जूलॉजी)।

जँतैत *पुं.* {हिं. जाँता} जाँता या चक्की पीसनेवाला।

जंत्र *पुं.* यंत्र, कल, यंत्र।

जंत्रना *स.* {हिं. जंत्र} ताला बंद करना; बाँध या रोक रखना; *स्त्री.* यंत्रणा।

जंत्र-मंत्र *पुं.* जंतर-मंतर।

जंत्रित *वि.* {सं. यंत्रित} यंत्रित; बंद किया या बँधा हुआ; जो किसी के वश में हो, अधीन।

जंत्री[1] *स्त्री.* जंतरी।

जंत्री[2] *पुं.* {सं. यंत्रिन्} बाजा बजानेवाला।

जंद *पुं.* {फा. जंद, मि. सं. छंद} पारसियों का प्रसिद्ध धर्मग्रंथ; वह भाषा जिसमें यह धर्मग्रंथ है।

जंदरा *पुं.* {सं. यंत्र} दरवाजे में बंद करने का ताला; बड़ी चक्की, जाँता।

जंबाल *पुं.* {हिं.} पंक, कीचड़, केवड़ा।

जँबाला *स्त्री.* {हिं.} केतकी का फूल।

जँबालिनी *स्त्री.* {हिं.} नदी।

जंपना *स.* {सं. जल्पन} बोलना।

जंबु *पुं.* {सं.} जामुन (फल)।

जंबुक *पुं.* {सं.} बड़ा जामुन, फरेंदा; शृगाल, गीदड़।

जंबूद्वीप *पुं.* {सं.} पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक, जिसमें भारतवर्ष है।

जंबू *पुं.* {सं.} जामुन (फल)।

जंबूर *पुं.* जंबूरा।

जंबूरची *पुं.* {फा.} तोपची।

जंबूरा *पुं.* {फा. जंबूर = भौंरा} वह गाड़ी जिस पर तोप लादी जाती है; एक प्रकार की छोटी तोप; भँवरकली; संड़सी या चिमटी की तरह का एक बड़ा औजार जिससे कोई जमी या गड़ी हुई चीज घुमाई या निकाली जाती है।

जंभ *पुं.* {सं.} दाढ़, चौभड़; जबड़ा; जँभाई; एक दैत्य का नाम; जँबीरी नीबू।

जँभाई *स्त्री.* {सं. जृंभा} निद्रा या आलस्य के कारण होनेवाली मुँह के खुलने की एक स्वाभाविक क्रिया, उबासी।

जँभाना *अ.* {सं. जृंभा} जँभाई लेना।

जँभारि *पुं.* {हिं.} इंद्र, विष्णु, वज्र, अग्नि।

जई *स्त्री.* {हिं. जौं} जौ की तरह का एक पौधा; जौ का छोटा अंकुर जो मंगलद्रव्य माना जाता है; वह फूल जिसमें कली के रूप में फल का मूल रूप भी हो, जैसे कुम्हड़े की जई; *वि.* जयी।

जईफ *वि.* {अं.} बूढ़ा, अशक्त।

जईफी *स्त्री.* {अं.} वृद्धावस्था, अशक्यता।

जऊ *योज.* यद्यपि।

जकंद *स्त्री.* {फा.} छलांग।

जकंदना *अ.* {फा. जकंद} कूदना, उछलना; टूट पड़ना।

जक[1] *पुं.* {सं. यक्ष} यक्ष; कंजूस, कृपण।

जक[2] *स्त्री.* {हिं. झक} {*वि.* जक्की} जिद, हठ, अड़; धुन, रट।

जक[3] *स्त्री.* {सं. चक् (तृप्त होना)} चैन, आराम।

जक[4] *स्त्री.* {अं. ज़क} हार, पराजय; हानि, घाटा; लज्जा।

जकड़ *स्त्री.* {हिं. जकड़ना} जकड़ने की क्रिया या भाव; जकड़े जाने की दशा या स्थिति।

जकड़ना *स.* {सं. युक्त + कारण} {*भाव.* जकड़} कसकर बाँधना या पकड़ना; *अ.* तनाव, सूजन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai a ngotri

आदि के कारण अंगों का हिल-डुल न सकना।

जकड़बंद *वि.* {जकड़ना + बंद} चारों ओर से अच्छी तरह बँधा हुआ।

जकना *अ.* {हिं. जक या चक} भौंचक्का होना; व्यर्थ बकना; रटना।

जकाजक *पुं.* {अनु.} घोर युद्ध, जोरों की लड़ाई; *क्रि. वि.* खूब जोरों से, वेगपूर्वक।

जकात *स्त्री.* {*अ.* ज़कात} दान, खैरात; कर, महसूल।

जकित *वि.* चकित।

जखम *पुं.* {फा. ज़ख्म} क्षत, घाव; मानसिक कष्ट या आघात।

मुहा. जखम हरा हो आना = पिछला कष्ट फिर याद आना।

जखमी *वि.* {फा. ज़ख्मी} घायल।

जखीरा, जखेड़ा *पुं.* {*अ.* ज़खीर:} वह स्थान जहाँ एक ही प्रकार की बहुत-सी चीजें हों; ढेर, समूह; वह स्थान जहाँ पेड़-पौधे और बीज बिकते हों।

जग[1] *पुं.* {सं. जगत्} संसार, दुनिया; संसार के लोग।

जग[2] *वि.* {हिं. जागना} जगा हुआ, जागृत, *उदा.* अग जग रूप भूप सीताबरु–तुलसी।

पुं. यज्ञ।

जगच्चक्षु *पुं.* {सं.} सूर्यनारायण।

जगजग *वि.* = चमकीला।

जगजगाना *अ.* जगमगाना।

जगड्वाल *पुं.* {सं.} व्यर्थ का आयोजन या आडंबर।

जगण *पुं.* {सं.} पिंगल में एक गण जिसमें मध्य का अक्षर गुरु और आदि तथा अंत के अक्षर लघु होते हैं, जैसे रमेश (लिखने में इसका सांकेतिक रूप यह है ।ऽ।)।

जगत[1] *पुं.* {सं.} संसार, दुनिया।

जगत[2] *स्त्री.* {सं. जगति} कुएँ के ऊपर का चबूतरा।

जगतसेठ *पुं.* {हिं. जगत + सेठ} बहुत बड़ा महाजन या सेठ।

जगती *स्त्री.* {सं.} संसार, दुनिया; पृथ्वी; जीवन।

जगदंत *पुं.* {सं. जगत् + अंत} वह जो जगत् का अंत या नाश करता हो; यमराज; शिव, महादेव।

जगदंतक *पुं.* {सं.} मृत्यु, यम।

जगदंबा *स्त्री.* जगदंबिका।

जगदंबिका *स्त्री.* {सं.} जगत् की माता; दुर्गा।

जगदात्मा *पुं.* {सं. जगदात्} ईश्वर।

जगदाधार *पुं.* {सं.} ईश्वर।

जगदीश *पुं.* {सं.} परमेश्वर।

जगद्गुरु *पुं.* {सं.} परमेश्वर; अनेक देशों में अत्यंत पूज्य और मान्य व्यक्ति।

जगद्धात्री *स्त्री.* {सं.} दुर्गा, सरस्वती, काली, लक्ष्मी।

जगद्वंद्य *वि.* {सं.} जिसकी वंदना सारा जगत करे, संसार भर में पूज्य।

जगद्यानी *पुं.* {सं.} शिव, महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, परमेश्वर।

जगद्वहा *पुं.* {सं.} पृथ्वी, भूमि।

जगद्विनाश *पुं.* {सं.} प्रलयकाल।

जगना *अ.* {सं. जागरण} नींद छोड़कर उठना, जागना; सचेत या सावधान होना; देवी, देवता आदि का अपना प्रभाव दिखाना; उत्तेजित होना; (आग का) अच्छी तरह जलना; जगमगाना, चमकना।

जगन्नाथ *पुं.* {सं.} ईश्वर; पुरी (उड़ीसा) के एक प्रसिद्ध देवता।

जगन्नियंता *पुं.* {सं. जगन्नियंतृ} ईश्वर, परमात्मा।

जगबंद *वि.* जगद्वंद्य।

जगमग *वि.* {हिं. जगमगाना} जो प्रकाश पड़ने पर चमकता हो; चमकीला; जहाँ बहुत से दीपक या चमकते हुए पदार्थ हों।

जगमगाना *अ.* {सं. झगझगायते} {*भाव.* जगमगाहट} प्रकाश से खूब चमकना, झलकना।

जगमोहन *पुं.* सभामंडप।

जगरन *पुं.* जागरण।

जगह *स्त्री.* {फा. जायगाह} स्थान, स्थल; मौका, अवसर; पद, ओहदा।

जगात *पुं.* जकात, दान, कर।

जगाना *स.* {हिं. जागना} हिं. 'जागना' का प्रे. सोए हुए को उठने में प्रवृत्त करना; होश या चेत में लाना; (आग) सुलगाना; ऐसा साधन करना कि यंत्र-मंत्र अपना प्रभाव दिखलाए।

जगार *स्त्री.* {हिं.} जागरण, जागृति।

जगीत *स्त्री.* जगत्, संसार।

जगीला *वि.* {हिं. जागना} जागने के कारण थका और आलस्य से भरा हुआ, उनींदा।

जग्य *पुं.* यज्ञ।

जघन *पुं.* {सं.} पेड़ू; चूतड़।

जघन्य *वि.* {सं.} बहुत बुरा या निंदनीय, गर्हित।

जच्चा *स्त्री.* {फा. जच्चः} प्रसूता स्त्री।

जच्चा-खाना *पुं.* {फा. जच्चः खानः} सूतिकागृह, सौरी।

जच्छ *पुं.* यज्ञ।

जज *पुं.* {अं.} किसी प्रकार का निर्णय करनेवाला, निर्णायक; न्याय-विभाग का वह अधिकारी जो

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राय: जिले भर के मुकदमे सुनता या उन पर पुनर्विचार करता है।

जजमान पुं. यजमान।

जजाती पुं. = ययाति।

जजिया पुं. {अ. जज़िया} दंड; मुसलमानी राज्यकाल में अन्य धर्मवालों पर लगनेवाला एक प्रकार का कर।

जजी स्त्री. {अं. जज} जज का पद या काम; जज की कचहरी।

जज्ञ पुं. यज्ञ।

जज्ञेय पुं. = यज्ञेश।

जटना[1] स. {हिं. जाट या सं. जटन?} धोखा देकर अधिक मूल्य या कोई वस्तु लेना, ठगना।

जटना[2] स. {सं. जटन} जड़ना।

जटल स्त्री. {सं. जटिल} व्यर्थ की बकवाद, गप्प।

मुहा. जटल काफ़िए उड़ाना या मिलाना = बे-सिर-पैर की और व्यर्थ बातें करना।

जटा स्त्री. {सं.} लट के रूप में गुथे हुए सिर के बहुत बड़े-बड़े बाल; वृक्षों की जड़ के पतले सूत, झकरा; जूट, पटसन।

जटाचीर पुं. {सं.} शिव, महादेव।

जटाजूट पुं. {सं.} जटा या लंबे बालों का समूह; शिव की जटा।

जटाधर पुं. {सं.} शिव।

जटाधारी (धारिन्) वि. {सं.} जिसके सिर पर जटा हो; पुं. शिव, महादेव।

जटाना अ. {हिं. जटना} ठगा जाना।

जटामाली पुं. {सं.} शिव, महादेव।

जटामासी स्त्री. {सं. जटामांसी} एक सुगंधित वनस्पति, बालछड़।

जटायु पुं. {सं.} वह गिद्ध जो रावण से सीताहरण हेतु लड़ा था।

जटाल वि. {सं.} जटाधारी; पुं. बड़ का वृक्ष।

जटित वि. {सं.} जड़ा हुआ।

जटिल वि. {सं.} {भाव. जटिलता} जटाओं से युक्त, जटावाला; जिसमें बहुत हेर-फेर या पेच हों और जो इसीलिए जल्दी समझ में न आए, दुरूह, दुर्बोध, पेचीदा (इंट्रिकेट, कॉम्प्लेक्स)।

जटिलता स्त्री. {सं.} कठिनाई, दुर्बोधता, उलझन।

जटिला स्त्री. {सं.} ब्रह्मचारिणी, पिप्पली।

जटी स्त्री. {सं.} जटामासी।

जठर पुं. {सं.} पेट का भीतरी भाग, एक देश का नाम, शरीर; वि. वृद्ध, बूढ़ा; कठिन।

जठर-अगिनी स्त्री. जठराग्नि।

जठराग्नि स्त्री. {सं.} पेट में की अन्न पचानेवाली गर्मी।

जठरामय पुं. {सं.} अतिसार, जलोदर रोग।

जठल पुं. {सं.} वैदिककाल का एक जल पात्र।

जठेरा वि. {हिं.} जेठा, उम्र में बड़ा।

जड़[1] वि. {सं.} जिसमें चेतनता न हो, चेतनारहित; चेष्टाहीन, स्तब्ध; वह जिसमें बहुत ही थोड़ी बुद्धि हो, बहुत बड़ा मूर्ख (ईडियट); ठंडा।

जड़[2] स्त्री. {सं. जटा} वृक्षों आदि का जमीन के अंदर रहनेवाला वह भाग जिसके द्वारा उन्हें जल और आहार मिलता है, मूल, सोर; नींव, बुनियाद।

मुहा. जड़ उखाड़ना या खोदना = ऐसा नष्ट करना कि फिर जल्दी से उभड़ न सके; अपकार या अहित करना; *जड़ जमना* = चल या बढ़ सकने की स्थिति में होना।

कारण, सबब; आधार, आश्रय।

जड़कना अ. {हिं. जड़} जड़ या स्तब्ध हो जाना।

जड़ता स्त्री. {सं.} जड़ का भाव, चेतनता का विपरीत भाव, अचेतनता; बहुत अधिक मूर्ख या जड़ होने का भाव (ईडिएसी); चेष्टा न करने या स्तब्ध रहने की दशा, जो साहित्य में एक संचारी भाव है।

जड़त्व पुं. जड़ता।

जड़ना स. {सं. जटन} एक चीज को दूसरी चीज में इस प्रकार बैठाना कि वह जल्दी उखड़ या निकल न सके (फासेन); प्रहार करना, मारना; ठोंकना; चुगली खाना।

जड़भरत पुं. {सं.} अंगिरस गोत्र के एक ब्राह्मण जो जड़वत् रहते थे।

जड़वाना स. {हिं.} 'जड़ना' का प्रे.।

जड़हन पुं. {सं. जाड्यधान्य} वह धान जो पहले एक जगह बोया और तब वहाँ से उखाड़कर दूसरी जगह रोपा जाता हो, शालि।

जड़ाई स्त्री. {हिं. जड़ना} जड़ने का काम, भाव या मजदूरी।

जड़ाऊ वि. {हिं. जड़ना} जिसपर नगीने या रत्न जड़े हों।

जड़ाना[1] अ. जड़वाना।

जड़ाना[2] अ. {हिं. जाड़ा} सर्दी खाना।

जड़ाव पुं. {हिं. जड़ना} जड़ने की क्रिया या भाव; ऐसा काम या चीज, जिस पर दूसरी छोटी चीजें जड़ी हुई हों, जड़ाऊ काम।

जड़ावर पुं. {हिं. जाड़ा} जाड़े में पहनने के गर्म कपड़े।

जड़ित वि. {सं. जटित} अच्छी तरह बैठाया या जड़ा हुआ; जिसमें नगीने जड़े हों; अच्छी तरह बँधा या जकड़ा हुआ।

जड़िमा स्त्री. {सं.} जड़ता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जड़िया पुं. {हिं. जड़ना} गहनों पर नगीने जड़ने का काम करनेवाला।

जड़ी *स्त्री.* {हिं. जड़} वनस्पति की वह जड़, जो ओषधि के काम में आती हो।

जड़ीभूत *वि.* {सं.} जो बिल्कुल जड़ के समान हो गया हो, सुन्न।

जड़ैया पुं. जूड़ी।

जत *वि.* {सं. यत्} जितना, जिस मात्रा का।

जतन पुं. यत्न।

जतलाना *स.* जताना, पहले से सूचना देना।

जताना *स.* {सं. ज्ञप्त} बतलाना, परिचित कराना; पहले से सूचना देना।

जति पुं. = यति (जितेन्द्रिय या साधु), संन्यासी; *स्त्री.* = यति (कविता की)।

जती पुं. यति, साधु।

जतु पुं. {सं.} गोंद, लाह (लाख), शिलाजीत।

जतुक पुं. {सं.} हींग, लाक्षा, शरीर पर का धब्बा, लक्षण।

जुतुका *स्त्री.* {सं.} पर्पटी नामक लता, चमगादड़।

जतुगृह पुं. {सं.} जल्दी से जल जानेवाला घास-फूस का बना हुआ घर।

जतुपुत्रक पुं. {सं.} शतरंज का मोहरा, चौसर की गोटी।

जतुमुख पुं. {सं.} एक प्रकार का धान।

जतुरस पुं. {सं.} लाह (लाख) का बना हुआ रंग।

जतेक *क्रि. वि.* जितना।

जत्त पुं. जगत; यति (जितेंद्रिय या साधु)।

जत्था पुं. {सं. यूथ} मनुष्यों का झुंड, दल।

जथा *क्रि. वि.* यथा।

जद *अव्य.* {हिं.} जब, जब कभी, यदि, अगर।

जदपि *योज.* यद्यपि।

जदवार *स्त्री.* {*अ.*} निर्विषी नामक औषधि।

जदि *क्रि. वि.* जब; *योज.* यदि।

जदु पुं. यदु।

जदुपति पुं. यदुपति।

जदुपुर पुं. {सं. यदुपुर} मथुरा नगरी।

जदुराई (राय) पुं. {सं. यदुराज} श्रीकृष्ण।

जद्द *वि.* {*अ.* ज़्यादः} ज्यादा।

जद्द-बद्द पुं. {फा. जद} प्रचंड, प्रबल, न कहने योग्य वाला।

जदपि *योज.* यद्यपि।

जद्दी *वि.* {*अ.* जद} बाप-दादा के समय का; *वि.* बहुत बड़ा या भारी।

जन पुं. {सं.} लोक, लोग; प्रजा; सेवक, दास, अनुयायी, अनुचर; समूह, समुदाय; सात लोकों में से पाँचवाँ लोक; *निपा.* जनि।

जनक पुं. {सं.} जन्मदाता; पिता, बाप; सीता के पिता।

जनकजा *स्त्री.* {सं.} सीता।

जनकौर पुं. {सं. जनक + पुर} जनकपुर; राजा जनक के परिवार के लोग।

जनखा *वि.* {फा. ज़नख:} हिजड़ा, नपुंसक, स्त्रैण।

जनगणना *स्त्री.* मनुष्य-गणना।

जनचक्षु पुं. {सं.} सूर्य, भास्कर।

जनजाति *स्त्री.* {सं.} कुछ विशिष्ट स्थानों में पाए जानेवाले ऐसे लोगों का समूह या वर्ग, जो साधारणत: एक ही पूर्वज के वंशज होते हैं और जो सभ्यता, संस्कृति आदि के विचार से आसपास के निवासियों से बिल्कुल भिन्न और कुछ निम्न स्तर पर होते हैं (ट्राइब)।

जनतंत्र पुं. {सं.} जनता का शासन; वह देश जिसमें जनता का शासन हो।

जनतंत्री *वि.* {सं.} जनतंत्र-संबंधी।

जनतंत्रीकरण पुं. लोकतंत्रीकरण।

जनता *स्त्री.* {सं.} जन का भाव; जनसमूह; किसी देश या स्थान के सब या बहुत से निवासी, सर्वसाधारण (पब्लिक)।

जनन पुं. {सं.} उत्पत्ति, उद्भव; जन्म; आविर्भाव; पिता।

जनना *स.* {सं. जनन} जन्म देना, उत्पन्न करना; गर्भ से उत्पन्न या बाहर करना, ब्याना।

जननाशौच पुं. {सं.} जन्म होने पर अशुचि, सूतक, अशौच।

जननि *स्त्री.* जननी।

जननी *स्त्री.* {सं.} उत्पन्न करनेवाली (स्त्री या वस्तु); माता, माँ।

जननेंद्रिय *स्त्री.* {सं.} वह इन्द्रिय जिससे प्राणी संतान उत्पन्न करते हैं, जैसे पुरुष जाति का लिंग या शिश्न और स्त्री जाति की भग या योनि।

जनपद पुं. {सं.} बसा हुआ स्थान, बस्ती, आबादी; जिला।

जनपद कल्याणी *स्त्री.* {हिं.} वेश्या, गणिका।

जनपाल, जनपालक पुं. {सं.} मनुष्यों का पालक।

जनप्रिय *वि.* {सं.} जिससे सब लोग प्रेम रखते हों, सर्वप्रिय।

जनम पुं. {सं. जन्म} सारा जीवनकाल, जिन्दगी।

मुहा. जनम हारना = व्यर्थ सारा जीवन बिताना; जन्म भर किसी का दास होकर रहने की प्रतिज्ञा करना।

जनम-घुट्टी (घूँटी) *स्त्री.* {हिं. जनम + घूँटी} पौष्टिक ओषधियों का बना हुआ वह पेय

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थ जो बच्चों को जन्म के समय से एक दो वर्ष तक पिलाया जाता है।

मुहा. (किसी बात का) जनम-घूँटी में पड़ना = जन्म से ही (किसी बात का) अभ्यास या चस्का होना।

जनमत *पुं.* {सं.} लोगों का मत।

जनमना *अ.* {सं. जन्म} जन्म लेना।

जनम-सँघाती *पुं.* {हिं. जन्म + संघाती} **वह जो जन्म से ही साथ रहा हो; वह जो जन्म भर साथ रहे।**

जनमाना *स.* {सं. जन्म} जन्म देने या प्रसव करने में सहायता देना।

जनयात्रा *स्त्री.* {सं.} बहुत लोगों का मिलकर प्रदर्शन के लिए निकलना, जलूस, शोभायात्रा।

जनयिता *पुं.* {सं. जनयितृ} पिता।

जनयित्री *स्त्री.* {सं.} माता, जननी।

जनरव *पुं.* {सं.} किंवदन्ती, अफवाह; बदनामी; कोलाहल, शोर।

जनलोक *पुं.* {सं.} पुराणानुसार सात लोकों में से एक।

जनवाई *स्त्री.* जनाई।

जनवाद *पुं.* {सं.} {*वि.* जनवादी} यह सिद्धांत कि राजनीतिक, सामाजिक आदि कार्यों में सब लोगों के अधिकार, कर्तव्य, उत्तरदायित्व आदि बराबर और एक-से हैं (डेमोक्रेसी); लोकतंत्र।

जनवादिक *वि.* {सं.} **जनवाद-संबंधी, जनवाद का (डिमोक्रेटिव)।**

जनवादी *पुं.* {सं. जनवादिन्} वह जो जनवाद के सिद्धांत को मानता हो (डेमोक्रेट); *वि.* = जनवादिक।

जनवाना *स.* जनाना।

जनवासा *पुं.* {सं. जन + वास} सब लोगों के ठहरने या टिकने का स्थान; बरातियों के ठहरने का स्थान।

जनश्रुति *स्त्री.* {सं.} लोक में प्रचलित खबर, अफवाह, किंवदन्ती, प्रवाद (ह्यूमर)।

जनसंख्या *स्त्री.* {सं.} किसी नगर या देश में बसनेवाले मनुष्यों की गिनती या तायदाद, आबादी (पापुलेशन)।

जनसेवक *पुं.* {सं.} वह, जो जन-साधारण या जनता की सेवा के काम करता हो; लोकसेवक (पब्लिक-सर्वेन्ट)।

जनसेवा *स्त्री.* {सं.} ऐसे काम जो जन-साधारण या जनता के उपकार या हित के लिए हों (पब्लिक सर्विस)।

जनस्थान *पुं.* {सं.} मनुष्यों का निवासस्थान; दंडकारण्य का एक पुराना प्रदेश।

जनसंख्या *स्त्री.* {सं.} नगर, देश की निवासियों की गणना।

जनांत *वि. पुं.* {सं.} जिसकी सीमा निश्चित हो, यम।

जनांतिक *पुं.* {सं.} संकेत द्वारा वार्तालाप।

जना[1] *पुं.* {सं. जन} {*स्त्री.* जनी} मनुष्य, आदमी।

जना[2] *वि.* {सं. जन्म} {*स्त्री.* जनी} किसी से जनमा हुआ (व्यक्ति), जैसे राम-जना; *पुं.* जन्म, उत्पत्ति, पैदाइश।

जनाई *स्त्री.* {हिं. जनना} बच्चा जनाने का काम करनेवाली स्त्री, दाई; बच्चा जनाने का पारिश्रमिक।

जनाऊ *पुं.* जनाव।

जनाजा *पुं.* {*अ.* जनाज़ा} अरथी या वह सन्दूक जिसमें लाश रखकर गाड़ने के लिए ले जाते हैं।

जनानखाना *पुं.* {फा.} घर का वह भाग जिसमें स्त्रियाँ रहती हैं, अंत:पुर।

जनाना[1] *स.* {हिं. जनना} बच्चा जनाने का काम कराना, संतान प्रसव कराना।

जनाना[2] *स.* {हिं. जानना का प्रे.} किसी को जानने में प्रवृत्त करना, जताना।

जनाना[3] *वि.* {फा.} {*स्त्री.* जनानी; *भाव.* जनानापन} स्त्रियों का, स्त्री-संबंधी; स्त्रियों का-सा; *पुं.* हिजड़ा, जनखा; अंत:पुर, जनानखाना; पत्नी, जोरू।

जनाब *पुं.* {*अ.*} महाशय, महोदय।

जनार्दन *पुं.* {सं.} विष्णु।

जनाव *पुं.* {हिं. जनाना = जानकारी कराना} जानकारी या परिचय कराने की क्रिया या भाव।

जनावनी *स्त्री.* सुनावनी।

जनाश्रय *पुं.* {सं.} धर्मशाला; सराय; घर, मकान।

जनाशन *पुं.* {सं.} मनुष्य-भक्षक, भेड़िया।

जनि *स्त्री.* {सं.} उत्पत्ति, जन्म; नारी, स्त्री; माता; पत्नी; *निपा.* मत, नहीं, न।

जनित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* जनिता} जिसने जन्म लिया हो, जनमा हुआ, उत्पन्न; किसी के कारण होनेवाला या किसी से उद्‌भूत, जैसे-रोगजनित दुर्बलता।

जनित्री *स्त्री.* {सं.} माता, माँ; उत्पन्न करने वाली।

जनिया *स्त्री.* जानी (प्रेमी या प्रेमिका के लिए सम्बोधन)।

जनी *पुं.* {*अ.*} सबको उत्पन्न करनेवाली प्रकृति; जन्म देनेवाली माता; दासी, अनुचरी; स्त्री; बेटी।

जनु *क्रि. वि.* {हिं. जानना} मानो (उत्प्रेक्षावाचक)।

जनून *पुं.* {*अ.*} पागलपन, उन्माद।

जनेऊ *पुं.* {सं. यज्ञ} यज्ञोपवीत, ब्रह्मसूत्र; यज्ञोपवीत संस्कार।

जनता *पुं.* {हिं.} पिता, बाप।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनेत *स्त्री.* बरात, वरयात्रा।
जनेद *पुं.* जनेऊ।
जनेश *पुं.* {सं.} ईश्वर, राजा।
जनेस *पुं.* = जनेश।
जनैया *वि.* {हिं. जानना + ऐया (प्रत्य.)} जाननेवाला, जानकार।
जनौ *क्रि. वि.* {हिं. जानना} मानो, जनेऊ।
जन्म *पुं.* {सं.} गर्भ से निकलकर जीवन धारण करना, उत्पत्ति, पैदाइश; अस्तित्व में आना, आविर्भाव; सारा जीवन, जिंदगी, जैसे अगला या पिछला जन्म; आयु, जीवनकाल, जैसे जन्म-भर (मुहावरों के लिए 'जनम')।
जन्मकुंडली *स्त्री.* {सं.} वह चक्र जिसमें किसी के जन्म के समय के ग्रहों की स्थिति लिखी रहती है (फलित ज्योतिष)।
जन्मजात *वि.* {सं.} जो किसी के जन्म लेने के समय से ही उसके साथ उत्पन्न या लगा हो।
जन्मदिन *पुं.* {सं.} किसी के जन्म लेने का दिन, जो प्रायः उत्सव के रूप में मनाया जाता है, वर्षगाँठ।
जन्मना[1] *क्रि. वि.* {सं.} जन्म से, जैसे जन्मना जाति मानना।
जन्मना[2] *अ.* {सं. जन्म} जन्म लेना, जनमना; अस्तित्व में आना, आविर्भूत होना।
जन्मपत्री *स्त्री.* {सं.} वह पत्र या खर्रा जिसमें किसी के जीवनकाल के ग्रहों की स्थितियाँ और उनके फलों आदि का उल्लेख रहता है।
जन्म-प्रमाणक *पुं.* {सं.} इस बात का प्रमाणपत्र कि अमुक व्यक्ति का जन्म अमुक तिथि को हुआ था (बर्थ सर्टिफिकेट)।
जन्मभूमि *स्त्री.* {सं.} वह स्थान (या देश) जहाँ किसी का जन्म हुआ हो।
जन्मसिद्ध *वि.* {सं.} जिसकी सिद्धि जन्म से ही हो, जन्म मात्र से प्राप्त, जैसे जन्मसिद्ध अधिकार।
जन्मांतर *पुं.* {सं.} दूसरा जन्म।
जन्मा *पुं.* {सं. जन्मन्} वह जिसका जन्म हुआ हो (समस्त पदों के अन्त में; जैसे अग्रजन्मा); *वि.* जो पैदा हुआ हो, उत्पन्न।
जन्माधिप *पुं.* {सं.} जन्मलग्न का स्वामी, शिव।
जन्माना *स.* {हिं. जन्मना} उत्पन्न करना, जन्म देना; जनमाना।
जन्माष्टमी *स्त्री.* {सं.} भाद्रपक्ष कृष्ण अष्टमी जो भगवान कृष्णचन्द्र का जन्मदिन और पर्व है।
जन्मास्पद *पुं.* {सं.} जन्मस्थान, जन्मभूमि।
जन्मेजय *पुं.* {सं.} परीक्षित के पुत्र एक प्रसिद्ध राजा, जिन्होंने नागयज्ञ किया था।
जन्मोत्सव *पुं.* {सं.} किसी के जन्म के समय या जन्मदिन पर होनेवाला उत्सव।
जन्य *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* जन्या} साधारण मनुष्य; राष्ट्र; पुत्र, बेटा; पिता; जन्म; *वि.* जन-संबंधी; राष्ट्रीय, जातीय; जो किसी से उत्पन्न हुआ हो, उद्भूत, जैसे रोगजन्य दुर्बलता।
जन्या *स्त्री.* {सं.} प्रीति, प्रेम, वधू की सखी-सहेली।
जन्हु *पुं.* जह्नु।
जप *पुं.* {सं.} किसी मंत्र, नाम या वाक्य का बार-बार किया जानेवाला उच्चारण।
जप-तप *पुं.* {सं. जप + तप} पूजा, जप और पाठ आदि, पूजा-पाठ।
जपना *पुं.* {सं. जपन} कोई नाम, वाक्य, या शब्द बार-बार कुछ देर तक कहना या रटना, जप करना; अनुचित रूप से दूसरे की चीज ले लेना।
जपनी *स्त्री.* {हिं. जपना} जपमाला; गोमुखी।
जपनीय *वि.* {सं.} जप करने योग्य।
जपमाला *स्त्री.* {सं.} वह माला जिसे हाथ में रखकर जप करते हैं।
जपा[1] *स्त्री.* {सं.} जवा, अड़हुल।
जपा[2] *पुं.* {सं.} जपनेवाला।
जपिया *वि.* {हिं. जप} जपने या जप करनेवाला।
जप्त *वि.* जब्त।
जफील *स्त्री.* {अ.} {क्रि. जफीलना} सीटी।
जब *क्रि. वि.* {सं. यावत्} जिस समय।
पद जब जब = जब कभी कुछ हो, जिस जिस समय कोई बात हो; *जब तब* = कभी-कभी।
मुहा. जब देखो, तब = प्रायः, अक्सर।
जबड़ा *पुं.* {सं. जंभ} मुँह में ऊपर-नीचे की वे हड्डियाँ जिनमें दाँत उगे होते हैं, कल्ला।
जबर *वि.* {अ. ज़बर} बलवान, पक्का, दृढ़।
जबरई *स्त्री.* = जबरदस्ती।
जबरदस्त *वि.* {फा.} {भाव. जबरदस्ती} बलवान; दृढ़, मजबूत।
जबरदस्ती *स्त्री.* {फा.} जबरदस्त या बलवान होने की दशा या भाव; बलप्रयोग; अत्याचार, जुल्म; *क्रि. वि.* बल का प्रयोग करते हुए, बलपूर्वक।
जबरन *अव्य.* {फा.} बलप्रयोग करके।
जबरा *वि.* {हिं.} शक्तिमान, बली; *पुं.* एक प्रकार का अन्न रखने का पात्र।
जबह *पुं.* {अ. ज़ब्ह} पशु या पक्षी का गला काटकर प्राण लेने की क्रिया।
जबहा *पुं.* {?} जीवट, साहस।
जबान *स्त्री.* {फा. ज़बान} जीभ, जिह्वा।
पद बेजबान = बहुत सीधा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. *जबान खींच लेना* = ऐसा कठोर दंड देना कि दंडित व्यक्ति बोलने योग्य न रह जाए; *जबान पर आना* = मुँह से निकलना; *जबान में लगाम न होना* = सोच-समझकर बोलने का ज्ञान न होना; *दबी जबान से बोलना या कहना* = अस्पष्ट रूप से या धीरे से बोलना; विशेष 'जीभ' के मुहा.।

बात, बोल; प्रतिज्ञा; भाषा।

जबानदराज *वि.* {फा.} {*भाव.* जबानदराजी} बढ़-चढ़कर अनुचित बातें कहनेवाला, बातचीत करने में उद्दंड।

जबानबंदी *स्त्री.* {फा.} किसी घटना के संबंध में लिखा जानेवाला इजहार या गवाही; मौन, चुप्पी; चुप रहने या न बोलने की आज्ञा।

जबानी *वि.* {हिं. जबान} जो केवल जबान से कहा गया हो, मौखिक; जो कहा तो गया हो, पर लिखित न हो।

जब्त *वि.* {*अ.* ज़ब्त} किसी अपराध में राज्य के द्वारा हरण किया हुआ, सरकार द्वारा छीना हुआ, जैसे मकान जब्त होना (कॉफिस्केटिड)।

जब्ती *स्त्री.* {*अ.* ज़ब्ती} जब्त होने की क्रिया या भाव (कंफिस्केशन)।

जबाला *स्त्री.* {सं.} सत्यकाम, जाबाल ऋषि की माता का नाम।

जब्र *पुं.* {*अ.*} ज्यादती, सख्ती।

जभन *पुं.* {सं.} स्त्री-प्रसंग, मैथुन।

जभी *क्रि.वि.* {हिं. जब + ही (प्रत्य.)} जिस समय ही; ज्यों ही।

जम *पुं.* यम।

जमकात *पुं.* जमकातर।

जमकातर[1] *पुं.* {सं. यम + कातर} पानी का भँवर।

जमकातर[2] *पुं.* {सं. यम + कर्त्तरी} यम का खाँड़ा; खाँड़ा।

जमघंट *पुं.* यमघंट।

जमघट *पुं.* {हिं. जमना + घट्ट} मनुष्यों की भीड़-भाड़, जमावड़ा।

जमडाढ़ *स्त्री.* {सं. यम + डाढ़} कटारी की तरह का एक हथियार।

जमदग्नि *पुं.* {सं.} एक वैदिक ऋषि का नाम।

जमधर *पुं.* जमडाढ़।

जमन *पुं.* यवन।

जमना[1] *अ.* {*अ.* जम्द} तरल पदार्थ का ठोस या गाढ़ा हो जाना, जैसे दही जमना; अच्छी तरह बैठना। स्थिर या निश्चल होना; एकत्र या इकट्ठा होना, जमा होना; हाथ से काम करने का पूरा अभ्यास होना; मानव समाज के सामने होनेवाले काम का अच्छी तरह सम्पन्न होना, जैसे गाना जमना; काम का अच्छी तरह चलने योग्य होना।

जमना[2] *अ.* {सं. जन्म + ना (प्रत्य.)} उगना, उपजना, जैसे बाल जमना; *स्त्री.* यमुना।

जमनिका[1] *स्त्री.* {सं. यवनिका} यवनिका, परदा; कोई; मैल।

जम्पीका *स्त्री.* {हिं.} जवनिका, परदा।

जमवट *स्त्री.* {हिं. जमना} काठ का वह चक्कर, जो कुआँ बनाने के समय उसके तल में रखा जाता है।

जमवार *पुं.* {सं. यमद्वार} यम का द्वार अथवा न्यायसभा।

जमा *वि.* {*अ.*} संग्रह किया हुआ, एकत्र, इकट्ठा; किसी प्रकार के देन के रूप में कहीं दिया हुआ (डिपॉजिटेड); किसी खाते में आय-पक्ष में लिखा हुआ (धन या पदार्थ); *स्त्री.* {*अ.*} मूलधन, पूँजी; पास का धन, रुपया-पैसा; भूमिकर, लगान; खाते का वह अंग या पक्ष जिसमें कहीं से आया हुआ धन या माल लिखा जाता है, 'खर्च' का विपरीत पक्ष।

जमाई[1] *पुं.* {सं. जामातृ} दामाद।

जमाई[2] *स्त्री.* {हिं. जमना} जमने या जमाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जमा-खर्च *पुं.* {फा. जमा + खर्च} आय और व्यय; किसी के यहाँ से आई हुई रकम जमा करके उसके नाम पड़ी हुई रकम का हिसाब पूरा करना।

जमात *स्त्री.* {*अ.* जमाअत} मनुष्यों का समूह; कक्षा, श्रेणी, दरजा।

जमादार *पुं.* {फा.} {*भाव.* जमादारी} सिपाहियों आदि का सरदार।

जमाजथा *स्त्री.* {हिं.} धन-सम्पत्ति।

जमानत *स्त्री.* {*अ.* ज़मानत} किसी व्यक्ति या कार्य की वह जिम्मेदारी जो जबानी, कुछ लिखकर अथवा कुछ रुपए जमा करके अपने ऊपर ली जाती है, जामिनी (सिक्योरिटी)।

जमानती *वि.* {*अ.*} जमानत से संबद्ध, जमानत के योग्य।

जमानतनामा *पुं.* {*अ.* + फा.} वह कागज जो किसी की जमानत करते समय लिखा जाता है।

जमाना[1] *स.* हिं. 'जमना' का *स.*।

जमाना[2] *पुं.* {फा. ज़मान:} समय, काल, वक्त; बहुत अधिक समय, मुद्दत; प्रताप या गौरव के दिन, जैसे आजकल आपका जमाना है; संसार, जगत, दुनिया।

पद जमाने भर का = जितना अधिक मिल या हो सके, उतना सब।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमाबंदी *स्त्री.* {फा.} पटवारी का वह खाता, जिसमें असामियों के लगान की रकमें लिखी रहती हैं।

जमामार *वि.* {हिं. जमा + मारना} दूसरों का माल दबा रखनेवाला।

जमालगोटा *पुं.* {सं. जयपाल} एक पौधा जिसके बीज अत्यन्त रेचक होते हैं।

जमाव *पुं.* {हिं. जमाना} जमा या इकट्ठा होने की क्रिया या भाव; जमने या जमाने की क्रिया या भाव; जमावड़ा।

जमावट *स्त्री.* {हिं. जमना} {*वि.* जमावटी} जमने या जमाने की क्रिया, अवस्था या भाव।

जमावटी *वि.* जमौआ।

जमावड़ा *पुं.* {हिं. जमना = एकत्र होना} बहुत से लोगों का एक जगह इकट्ठा होना, भीड़।

जमीकंद *पुं.* सूरन।

जमींदार *पुं.* {फा. ज़मींदार} वह जो अंग्रेजी शासन में जमीन का मालिक होता और उसे किसानों को लगान पर जोतने-बोने के लिए देता था।

जमींदारी *स्त्री.* {फा. ज़मींदार} जमींदार की जमीन; जमींदार का पद; जमींदार होकर जमीनें दूसरों को लगान पर देने की प्रथा, जिसका स्वाधीन भारत में अन्त हो गया है।

जमी *स्त्री.* = यमी।

जमीन *स्त्री.* {फा. ज़मीन} पृथ्वी (ग्रह); (जल से भिन्न) पृथ्वी का वह ऊपरी भाग, जिस पर हम लोग रहते हैं, भूमि, धरती।

मुहा. *जमीन-आसमान एक करना* = बड़े-बड़े प्रयत्न करना; *जमीन आसमान का फरक* = बहुत अधिक अन्तर; *जमीन देखना* = कुश्ती में पटका जाना; नीचा देखना।

वह आधार जिस पर बेल-बूटे आदि बने हों; वह वस्तु जिसका उपयोग किसी द्रव्य के प्रस्तुत करने में आधार रूप से हुआ हो; चित्र बनाने के लिए मसाले से तैयार की हुई सतह या तल।

मुहा. *जमीन बाँधना* = अस्तर या मसाला लगाकर चित्र के लिए सतह तैयार करना।

आधारपृष्ठ; डौल, उपक्रम।

जमुहाना *अ.* जँभना।

जमूरक *पुं.* {फा. जंबूरक} एक प्रकार की छोटी तोप।

जमोग *पुं.* {हिं. जमोगना} जमोगने अर्थात् स्वीकार करने या कराने की क्रिया।

जमोगना *पुं.* {सं. समायोग} आय-व्यय की जाँच करना; भार या देन से मुक्त होने के लिए दूसरे को वह भार या देन सौंपकर उससे स्वीकृति लेना, सरेखना (एसाइंमेंट)।

जमौआ *वि.* {हिं. जमाना} बुनकर नहीं, बल्कि सूत या रोएँ जमाकर बनाया हुआ, जैसे जमौआ कम्बल या बनात।

जम्हाना *अ.* जँभाना।

जयंत *वि.* {सं.} {*स्त्री.* जयंती} विजयी; बहुत रूपिया; *पुं.* {सं.} रुद्र; इंद्र के पुत्र उपेन्द्र का एक नाम; स्कन्द, कार्तिकेय।

जयंती *स्त्री.* {सं.} दुर्गा; पार्वती; ध्वजा, पताका; किसी महापुरुष या संस्था की जन्मतिथि अथवा किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के आरम्भ होने की वार्षिक तिथि पर होनेवाला उत्सव (जुबिली); कालमान के विचार से जयंतियाँ कई प्रकार की होती हैं, जैसे रजत जयंती, स्वर्ण जयंती, हीरक जयंती आदि; जैत नामक बड़ा पेड़; 'जई'।

जय *स्त्री.* {सं.} युद्ध, विवाद आदि में विपक्षियों का पराभव, जीत।

मुहा. *जय बोलना या मनाना* = विजय या समृद्धि की कामना करना।

पुं. विष्णु के एक पार्षद का नाम; महाभारत नामक महाकाव्य का पुराना नाम।

जयक *वि.* {सं.} जयकर्त्ता

जयजयकार *पुं.* {सं.} किसी की जय मनाने का घोष।

जयकरी *स्त्री.* {सं.} चौपाई नामक छंद।

जयजीव *पुं.* {हिं. जय + जीओ = जीवित रहो} एक प्रकार का अभिवादन, जिसका अर्थ है-जय हो और जीते रहो।

जयति पद *स.* जय हो (मंगलकामना)।

जयदुर्गा *स्त्री.* {सं.} दुर्गा की एक मूर्ति का नाम।

जयदेव *पुं.* {सं.} 'गीत गोविन्द' आदि के रचयिता प्रसिद्ध कवि।

जयद्रथ *पुं.* {सं.} महाभारत के समय का एक प्रसिद्ध राजा, जो दुर्योधन का बहनोई था।

जयना *स.* = जीतना।

जयपत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जो हारा हुआ पुरुष अपनी हार के प्रमाणस्वरूप विजयी को लिखकर देता है, विजयपत्र; आज्ञप्ति।

जयफर *पुं.* जायफल।

जयमाल *स्त्री.* = जयमाला।

जयमाला *स्त्री.* {सं. जयमाल्य} किसी के विजयी होने पर उसे पहनाई जानेवाली माला; वह माला जो विवाह या स्वयंवर के समय कन्या अपने भावी पति को पहनाती है; माला पहनाने का उक्त अवसर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयश्री *स्त्री.* {सं.} विजयलक्ष्मी, विजय, एक रागिनी का नाम।

जयस्तंभ *पुं.* {सं.} युद्ध में किसी की विजय के चिह्न या स्मारक के रूप में बनाया हुआ स्तम्भ, धरहरा।

जया *स्त्री.* {सं.} दुर्गा; पार्वती; हरी दूब; पताका, ध्वजा; *वि.* जय दिलानेवाली।

जयावती *स्त्री.* {सं.} एक संकट रागिनी।

जयी *वि.* {सं. जयिन्} विजयी।

जर[1] *पुं.* {सं.} जरा, बुढ़ापा।

जर[2] *पुं.* = ज्वर।

जर[3] *पुं.* {फा. ज़र} सोना, स्वर्ण; धन, दौलत।

जरकटी *स्त्री.* {देश.} एक तरह की शिकारी चिड़िया।

जरकस, जरकसी *वि.* {फा. ज़रकश} (कपड़ा) जिस पर सुनहले या रुपहले तार आदि लगे हों या उनके बेल-बूटे बने हों।

जरखरीद *वि.* {फा. ज़रख़रीद} धन से खरीदा हुआ।

जरठ *वि.* {सं.} कठोर, कड़ा; वृद्ध, बुड्ढा; जीर्ण, पुराना।

जरत् *वि.* {सं.} {*स्त्री.* जरती} बुड्ढा, वृद्ध; पुराना, प्राचीन।

जरतई *स्त्री.* {हिं. जरना = जलना} जलन; ईर्ष्या, डाह।

जरतार *पुं.* जरी, सोने-चांदी का काम।

जरतुश्त *पुं.* जरदुश्त।

जरण *पुं.* {सं.} हिंगु, हींग।

जरणा *स्त्री.* {सं.} हींग, जीरा, बुढ़ापा।

जरद *वि.* {फा. ज़र्द:} पीला, पीत। (रंग)।

जरदा *पुं.* {फा. ज़र्द:} चावलों से बननेवाला एक व्यंजन; पान के साथ खाने की सुगन्धित सुरती; पीले रंग का घोड़ा।

जरदी *स्त्री.* {फा. ज़र्दी} पीलापन; अंडे के अंदर का पीला गूदा।

जरदुश्त *पुं.* पारसी धर्म के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध महापुरुष।

जरदोज *पुं.* {फा. ज़रदोज} जरदोजी का काम करनेवाला।

जरदोजी *स्त्री.* {फा. ज़रदोजी} कपड़े पर सलमे-सितारे आदि से किया हुआ काम।

जरन *स्त्री.* जलन।

जरना *अ.* जलना; *स.* जड़ना।

जरनि *स्त्री.* जलन।

जरब *स्त्री.* {अ. ज़र्ब} आघात, चोट।

मुहा. (किसी को) जरब देना = नीचा दिखाना।

गुणा; (गणित); क्रि. प्र. देना।

जरबफ्त *पुं.* {फा.} वह रेशमी कपड़ा, जिसमें जरी या कलाबत्तू के बेल-बूटे बने हों।

जरबाफ *पुं.* जरदोज।

जरबाफी *वि.* जरदोजी।

जरबीला *वि.* {फा. जरब} जिसमें चमक-दमक हो, भड़कीला।

जरमन *पुं.* जरमनी देश का निवासी; *स्त्री.* जरमनी देश की भाषा; *वि.* जरमनी देश का।

जरमन सिलवर *पुं.* {अ.} एक प्रसिद्ध मिश्र धातु, जिसके बरतन बनते हैं।

जरमनी *पुं.* मध्य यूरोप का एक प्रसिद्ध देश।

जरमुँहा *वि.* {हिं.} {*स्त्री.* जरमुँही} अधिक ईर्ष्या करनेवाला, जलनेवाला।

जरर *पुं.* {अ.} हानि, क्षति; आघात।

जरल *स्त्री.* जलन।

जरवारा *वि.* {फ़ा. ज़र = हिं. वाला} धनी, सम्पन्न।

जरा[1] *स्त्री.* {सं.} बुढ़ापा।

जरा[2] *वि.* {अ. ज़र:} थोड़ा, कम।

जराऊ *वि.* जड़ाऊ।

जरांकुश *पुं.* {हिं.} एक प्रकार की सुगंधित घास।

जरावुर *वि.* {सं.} जीर्ण, पुराना, बहुत दिनों का।

जराभीस *पुं.* {सं.} कामदेव; *वि.* वृद्धावस्था से डरनेवाला।

जराग्रस्त *वि.* {सं.} वृद्ध, बुड्ढा।

जराना *स.* = जलाना।

जरायु *पुं.* {सं.} वह झिल्ली, जिसमें गर्भ से उत्पन्न होनेवाला बच्चा बँधा रहता है, आँवल, खेड़ी, उल्व; गर्भाशय।

जरायुज *पुं.* {सं.} वह प्राणी जो जरायु में लिपटा हुआ गर्भ से उत्पन्न हो (पिंडज का एक भेद)।

जराव *पुं.* = जड़ाव; *वि.* = जड़ाव; *पुं.* = जलाव।

जरासंध *पुं.* {सं.} मगध का एक राजा, जिसे भीम ने मारा था।

जरित *वि.* = जटित।

जरिमा *स्त्री.* {सं.} बुढ़ापा।

जरिया[1] *पुं.* {अ. ज़रीअ} संबंध, लगाव; सबब, हेतु; साधन।

जरिया[2] *वि.* {हिं. जलना} जो जलाकर बनाया गया हो, जैसे जरिया नमक; *पुं.* जड़िया।

जरी *स्त्री.* {फा. ज़री} बादले से बुना हुआ ताश नामक कपड़ा; सोने के वे तार, जिनसे कपड़ों पर बेल-बूटे बनाते हैं; *स्त्री.* = चड़ी।

जरीब *स्त्री.* {फा.} भूमि नापने जी जंजीर।

जरूर *क्रि. वि.* {अ. ज़रूर} अवश्य।

जरूरत *स्त्री.* {अ. ज़रूरत} आवश्यकता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai a ngotri

जरूरी *वि.* {अ. ज़रूर से फा.} जो जरूर होने को हो; जिसकी जरूरत या आवश्यकता हो, आवश्यक।

जरौट *वि.* {हिं. जड़ना} जड़ाऊ।

जर्जर *वि.* {सं.} जो पुराना होने के कारण काम का न रह गया हो, जीर्ण; टूटा-फूटा, खंडित, वृद्ध, बुड्ढा।

जर्जरित *वि.* जर्जर।

जर्द *वि.* {फा. ज़र्द} पीला, पीत।

जर्दा *पुं.* जरदा।

जर्दी *स्त्री.* {फा. ज़र्दी} पीलापन।

जर्राह *पुं.* {अ.} {भाव. जर्राही} फोड़ों आदि की चीर-फाड़ करनेवाला चिकित्सक, अस्त्र - चिकित्सक।

जलंधर *पुं.* {सं.} एक राक्षस जो समुद्र से उत्पन्न हुआ था और जिसे विष्णु ने मारा था; *पुं.* जलोदर (रोग)।

जल *पुं.* {सं.} पानी।

जलई *स्त्री.* {हिं.} दोनों ओर मुड़ा हुआ काँटा।

जलक *पुं.* {सं.} शंख, कपर्दक, कौड़ी।

जलकरंक *पुं.* {सं.} नारियल, कमल शंख, मेघ।

जलकांत *पुं.* {सं.} जल के देवता वरुण।

जल-अलि *पुं.* जल-भौंरा।

जलकर *पुं.* {हिं. चल + कर} जलाशयों में होनेवाले पदार्थ जैसे मछली, कमल-गट्टा आदि; ऐसे पदार्थों पर लगनेवाला कर; जल के उपयोग पर लगनेवाला कर।

जलकल *स्त्री.* {सं. जल + हिं. कल} नगर के सब घरों में नल या कल के द्वारा पानी पहुँचाने की व्यवस्था करनेवाला विभाग (वाटर वर्क्स); घर-घर पानी पहुँचानेवाली कल का नल।

चलकवच *वि.* {सं.} (पदार्थ) जो जल में भीगने या रहने पर भी उसके प्रभाव से बचा रहता हो, जलसह (वाटरप्रूफ)।

जलकुंभी *स्त्री.* {सं.} जलाशयों में होनेवाली एक प्रकार की वनस्पति।

जलकुकुही *स्त्री.* {हिं. जल + कुमुदिनी} जल में होनेवाला एक प्रकार का पौधा।

जलक्रीड़ा *स्त्री.* {सं.} वे क्रीड़ाएँ या खेल जो जलाशय में किए जाते हैं।

जलकेतु *पुं.* {सं.} पश्चिम दिशा में उदय होनेवाला एक पुच्छल तारा।

जलखई *स्त्री.* = जलपान।

जलखग *पुं.* {सं.} डाल के किनारे रहनेवाला पक्षी।

जलखावा *पुं.* = जलपान।

जल-घड़ी *स्त्री.* {हिं. जल + घड़ी} एक प्राचीन यन्त्र जिसमें नाँद में भरे हुए जल में एक छोटे छेदवाली कटोरी रहती थी; और उस कटोरी में भरनेवाले जल के परिमाण से समय का ज्ञान होता था।

जलचर *पुं.* {सं.} {स्त्री. जलचरी} जल में रहनेवाला जंतु।

जलचारी *पुं.* जलचर।

जलजंतु *पुं.* {सं.} जल में रहनेवाला जंतु।

जलज *वि.* {सं.} जो जल में या जल से उत्पन्न हो; *पुं.* {सं.} कमल; शंख; मछली; जलजंतु; मोती।

जल-जमाव *पुं.* {सं. जल + हिं. जमना} किसी निचले स्थान पर बाढ़, वर्षा आदि का पानी जमा होने की अवस्था या भाव।

जलजात *वि. पुं.* जलज।

जलजान *पुं.* = जलयान।

जलजावलि *स्त्री.* {सं. जलज + अवलि} एक प्रकार की मोतियों की माला।

जल-डमरूमध्य *पुं.* {सं.} भूगोल में जल की वह पतली प्रणाली या धारा, जो दो बड़े समुद्रों या खाड़ियों के मध्य में हो और उन्हें मिलाती हो।

जलडिंब *पुं.* {सं.} शंबूक, घोंघा।

जलतरंग *पुं.* {सं.} जल से भरी कटोरियों पर आघात करके बजाया जानेवाला बाजा।

जलताल *पुं.* {सं.} सलई का वृक्ष।

जलतोरी *स्त्री.* = मछली। (परिहास और व्यंग्य)।

जलत्रास *पुं.* जलातंक।

जलद *वि.* {सं.} जल देनेवाला; *पुं.* {सं.} मेघ, बादल; वंशज, जो पितरों को तर्पण के द्वारा जल देता है।

जलदस्यु *पुं.* {सं.} समुद्र में रहकर जहाजों और समुद्री यात्रियों को लूटनेवाला डाकू, समुद्री डाकू।

जलदागम *पुं.* {सं.} वर्षा ऋतु का आगमन या आरम्भ; आकाश में बादलों का घिरना।

जलद्वार *पुं.* {सं.} नदी, नहर आदि में बनाया हुआ द्वार जिससे धारा को नियन्त्रित किया जाता है (वाटरगेट)।

जलधर *पुं.* {सं.} बादल; समुद्र।

जलधरी *स्त्री.* {सं.} वह अर्घा या आधान जिसमें शिवलिंग स्थापित रहता है, जलहरी।

जलधि *पुं.* {सं.} समुद्र, चार की संख्या, चंद्र, चंद्रमा।

जलन *स्त्री.* {हिं. जलना} जलने में होनेवाली पीड़ा या कष्ट, डाह; ईर्ष्या के कारण होनेवाला मानसिक कष्ट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलना *अ.* {सं. ज्वलन} आग के संपर्क से अंगारे या लपट के रूप में होना, दग्ध होना, बलना; आग पर रखे जाने के कारण भाप आदि के रूप में होना; अग्नि के स्पर्श से किसी अंग का पीड़ित होना, झुलसना।

मुहा. *जले पर नमक छिड़कना* = दुखी को और दुख देना।

ईर्ष्या, द्वेष आदि के कारण मन में बहुत दुखी होना।

मुहा. *जली-कटी सुनाना* = डाह या क्रोध आदि के कारण कड़वी बातें कहना।

जलनाथ *पुं.* {सं.} इंद्र; वरुण; समुद्र।

जलनिधि *पुं.* {सं.} सागर, समुद्र।

जलपक *वि.* = जल्पक।

जलपक्षी *पुं.* {सं. जलपक्षिन्} जल, जलाशय, समुद्र आदि के आसपास रहनेवाला पक्षी।

जलपति *पुं.* {सं.} जल के देवता, वरुण।

जलपना *अ.* {सं. जल्पन} लम्बी-चौड़ी बातें करना; बकवाद करना।

जलपान *पुं.* {सं.} पूरे भोजन से पहले किया जानेवाला थोड़ा और हलका भोजन, कलेवा, नाश्ता।

जलपाटल *स.* {हिं.} कज्जल, काजल।

जलपीपल *स्त्री.* {हिं.} मत्स्यगंधा नामक ओषधि।

जलपूर *पुं.* {सं.} जल से भरी नदी।

जलपूर्ति *स्त्री.* {सं.} नगर, मुहल्ले आदि में जल की की जानेवाली पूर्ति (वाटर सप्लाई)।

जल-प्रदूषण *पुं.* {सं.} जल का प्रदूषित हो जाना।

जलप्रपात *पुं.* प्रपात, पानी गिरने का प्रवाह।

जलप्रिय *पुं.* {सं.} चातक पक्षी, पपीहा, मछली।

जलप्रवाह *पुं.* {सं.} पानी का बहाव, कोई चीज नदी में डालकर बहाना, भसान।

जलप्रांगण *पुं.* {सं.} किसी समुद्रतट पर के देश के तट से मिला हुआ समुद्र का वह अंश, जो उसके अधिकार और अधिकार-क्षेत्र में माना जाता है। विशेषतः साधारण तट से तीन मील तक का समुद्र इसके अंतर्गत आता है (टेरिटोरियल वाटर्स)।

जलप्लावन *पुं.* {सं.} पानी की बाढ़; एक प्रकार का प्रलय ('प्रलय')।

जलभीति *स्त्री.* {सं.} जल देखकर लगनेवाला डर।

जलभीरु *वि.* {सं.} जल से डरनेवाला।

जलभौंरा *पुं.* {हिं. जल + भौंरा} पानी पर चलनेवाला एक प्रकार का काला कीड़ा, भौंतुआ।

जलमार्ग *पुं.* {सं.} नदियों, नहरों आदि के रूप में बना हुआ, मार्ग या रास्ता (वाटरवेज)।

जलमानस *पुं.* {सं.} परीकु नामक जल जंतु, जो आधा मानव, आधा मछली।

जलमूर्ति *पुं.* {सं.} शिव महादेव।

जलयात्रा *स्त्री.* {सं.} नदी या समुद्र से की जानेवाली यात्रा।

जलयान *पुं.* {सं.} जल में चलनेवाला यान या सवारी, जैसे नाव या जहाज (वेसेल)।

जलरुह *पुं.* {सं.} कमल।

जलवाना *स.* हिं. 'जलाना' का प्रे.।

जलवायु *पुं.* {सं.} किसी स्थान की वह प्राकृतिक स्थिति जिसका प्राणियों आदि के विकास और स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है, हवा-पानी।

जलविहार *पुं.* {सं.} नदी, तालाब आदि में नाव पर घूमना या सैर करना; जलक्रीड़ा।

जलशायी *पुं.* {सं. जलशायिन्} विष्णु।

जलशाला *स्त्री.* {सं.} वह स्थान जहाँ जलीय पौधों तथा जीवों को पाला-पोसा जाता है।

जलसंत्रास *पुं.* {सं.} जलभीति।

जल-समाधि *स्त्री.* {सं.} जल में डूबकर प्राण देना; किसी वस्तु का जल में डूबकर नष्ट होना।

जलसा *पुं.* {अ. जल्सः} खाने-पीने या गाने-बजाने का समारोह; सभा-समिति आदि का बड़ा अधिवेशन, बैठक।

जलसाईं *पुं.* {हिं. जलाना} वह स्थान जहाँ मुर्दे जलाए जाते हैं, श्मशान, मरघट।

जलसेना *स्त्री.* {सं.} समुद्र में रहकर जहाजों पर से लड़नेवाली फौज (नेवी)।

जलस्तंभ *पुं.* {सं.} एक प्राकृतिक घटना जिसमें जलाशय या समुद्र का जल कुछ समय के लिए ऊपर उठकर स्तंभ का रूप धारण कर लेता है, सूँड़ी।

जलस्तम्भन *पुं.* {सं.} मन्त्रों द्वारा जल का प्रवाह या वर्षा आदि रोकने का कार्य।

जलपुव *पुं.* {हिं.} कमल, मोती।

जलहर *वि.* जलहन; *पुं.* जलधर।

जलहरी *स्त्री.* जलधरी।

जलहल *वि.* {हिं. जल} जल से भरा हुआ, जलमय; *पुं.* = जलाशय।

जलांक *पुं.* {सं.} {*वि.* जलांकित} कागज की बनावट में जल की सहायता से एक विशिष्ट प्रकार से बनाया हुआ चिह्न या अंकन जो कागज को प्रकाश में खड़ा करने पर दिखाई देता है (वाटर मार्क)।

जलांकन *पुं.* {सं.} {*वि.* जलांकित} कागज बनाते समय जल की सहायता से एक विशिष्ट प्रक्रिया से उसमें जलांक या कुछ अक्षर, चिह्न आदि बनाना (वाटर मार्किंग)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलांकित *वि.* {सं.} (कागज) जिस पर जलांक बना हो (वार्डर मार्क्ड)।

जलांजलि *स्त्री.* {सं.} मृतक के उद्देश्य से दी जानेवाली जल की अंजलि।

जलाऊ *वि.* {हिं. जलाना + आऊ (प्रत्य.)} जलाने के योग्य, जैसे जलाऊ लकड़ी।

जलाक *स्त्री.* {हिं. जलाना} (जलानेवाली) गरम हवा, लू।

जलाकर *पुं.* {सं.} समुद्र, नदी, जलाशय।

जलाका *स्त्री.* {सं.} जोंक, जलौका।

जलाकाश *पुं.* {सं.} बादल और ताराओं सहित जल में प्रतिबिंबित आकाश।

जलातंक *पुं.* {सं.} जल से लगनेवाला वह डर, जो कुत्ते आदि के काटने पर होता है।

जलाद *पुं.* जल्लाद।

जलाना *स.* {हिं. 'जलना' का *स.*} आग के संयोग से किसी वस्तु को जलने में प्रवृत्त करना, प्रज्ज्वलित करना, सुलगाना; आग पर रखकर भाप आदि के रूप में लाना या उड़ाना; किसी के मन में सन्ताप या ईर्ष्या उत्पन्न करना।

जलापा *पुं.* {हिं. जलाना} ईर्ष्या, जलन।

जलाभाव *पुं.* {सं.} जल का अभाव।

जलाल *पुं.* {अ.} प्रकाश; तेज।

जलाव *पुं.* {हिं. जलना} जलने की क्रिया या भाव; जलने के कारण कम होनेवाला अंश।

जलावन *पुं.* {हिं. जलाना} ईंधन; किसी वस्तु का वह अंश जो जलाए जाने पर कम हो जाता है।

जलावतरण *पुं.* {सं.} जल में उतरना; नए जहाज का तैयार होने पर पहले-पहल पानी या समुद्र में उतरना या पहुँचना।

जलावर्त *पुं.* {सं.} पानी का भँवर, नाल; एक प्रकार का मेघ।

जलाशय *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ पानी जमा होकर ठहरा या बना रहता हो, जैसे झील, नदी आदि।

जलाहल *वि.* {हिं. जलाजल} जलमय।

जलीय *वि.* {सं.} जल-संबंधी, जल का; जल या पानी में होनेवाला; जिसमें पानी या उसका कुछ अंश हो।

जलूस *पुं.* {फा. जुलूस} बहुत से लोगों का किसी सवारी के साथ या प्रदर्शन के लिए निकलना, जनयात्रा, शोभायात्रा।

जलेंद्र *पुं.* {सं.} जलदेवता; महासागर।

जलेबी *स्त्री.* {फा. ज़लीबिया} एक प्रकार की मिठाई; गोल घेरा, कुंडली।

जलोदर *पुं.* {सं.} एक रोग, जिसमें पेट के भीतरी भाग में पानी भरने से वह फूल जाता है।

जलौका *स्त्री.* {सं.} जोंक नामक जन्तु।

जल्द *क्रि. वि.* जल्दी।

जल्दबाज *वि.* {फा. जल्दबाज़} {*भाव.* जल्दबाजी} हर काम में बहुत जल्दी मचानेवाला।

जल्दबाजी *स्त्री.* {फा. जल्दबाज़ी} बहुत जल्दी काम करने की क्रिया जो अनुचित समझी जाती है।

जल्दी *स्त्री.* {अ.} शीघ्रता; *क्रि. वि.* {अ. जल्द} शीघ्र, चटपट; तेजी या फुरती से।

जल्प *पुं.* {सं.} कथन, कहना; व्यर्थ बहुत बोलना, बकवाद, प्रलाप।

जल्पक *वि.* {सं.} जल्पना करने या व्यर्थ बहुत बोलनेवाला, बकवादी, वाचाल।

जल्पना *अ.* {सं. जल्पन} व्यर्थ बकबक करना, जलपना, डींग मारना।

जल्पित *वि.* {सं.} कहा हुआ, कथित।

जल्लाद *पुं.* {अ.} प्राणदंड पाए हुए अपराधियों को मार डालनेवाला पुरुष, वधिक; क्रूर व्यक्ति।

जव *पुं.* जौ; जवा।

जवन *पुं.* यवन; *सर्व.* जो।

जवनिका *स्त्री.* यवनिका।

जवा[1] *स्त्री.* जपा।

जवा[2] *पुं.* {सं. यव} लहसुन का दाना।

जवाई *स्त्री.* {हिं. जाना} जाने की क्रिया या भाव, गमन।

जवाइन *स्त्री.* {हिं.} अजवाइन।

जवाखार *पुं.* {हिं.} यवक्षार, जैसे निकला हुआ क्षार।

जवादि *पुं.* {हिं.} एक सुगंधित पदार्थ।

जवाधिक *वि.* {सं.} बहुत तेज दौड़नेवाला।

जवान *वि.* {फा.} युवा, तरुण; वीर, बहादुर; *पुं.* पुरुष, आदमी; सिपाही।

जवानी *स्त्री.* {फा.} जवान होने की दशा, भाव या काल, यौवन।

जवाब *पुं.* {अ.} कोई प्रश्न होने पर उसके समाधान के लिए कही जानेवाली बात, उत्तर; किसी काम का बदला चुकाने के लिए किया जानेवाला काम; मुकाबले या बराबरी की चीज, जोड़; एक ओर रखी हुई किसी चीज के सामने रखी जानेवाली उसी तरह की दूसरी चीज; नौकरी से अलग किया जाना।

मुहा. जवाब तलब करना = आधिकारिक रूप से किसी से पूछना कि ऐसा क्यों हुआ।

जवाबदार *वि.* जवाबदेह।

जवाबदावा *पुं.* {अ.} वह पत्र या लेख जो वादी के अभियोगों के उत्तर में प्रतिवादी न्यायालय में देता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाबदेह *वि.* {फा.} {*भाव.* जवाबदेही} उत्तरदाता, जिम्मेदार।

जवाबी *वि.* {फा.} जवाब का, जैसे जवाबी कार्ड: जिसका जवाब देना हो; जो किसी के जवाब में हो।

जवार *स्त्री.* जुवार।

जवारा *पुं.* {हिं. जौ} जौ के नए निकले हुए अंकुर।

जवारी *स्त्री.* {हिं. जौ} एक प्रकार की माला जो जौ, छुहारे, मोती आदि गूँथकर बनाई जाती है; सींग, हाथी-दाँत आदि का वह टुकड़ा जिस पर सितार, बीन आदि के तार टिके रहते हैं।

जवारीदार गला *पुं.* ऐसा गला जिससे कुछ बोलने या गाने के समय कोई स्वर निकलने पर उसी के साथ-साथ उसी स्वर का बहुत मीन या हलकी रेखा भी छाया के रूप में सुनाई पड़ती है (संगीत में स्वर का एक प्रकार सौंदर्य)।

जवाल *पुं.* {*अ.* ज़वाल} अवनति, पतन; जंजाल, आफत, झंझट।

जवास *पुं.* जवासा।

जवासा *पुं.* {*स.* यवासक} एक प्रकार का कँटीला पौधा, जो वर्षा में जलकर सूख जाता है और जिसका उपयोग औषधि आदि में होता है।

जवाहर *पुं.* {*अ.*} रत्न, मणि।

जवाहरात *पुं.* {*अ.*} 'जवाहर' का बहु.।

जवाहरी *पुं.* जौहरी।

जवाहिर *पुं.* जवाहर।

जवैया *वि.* {हिं. जाना} जानेवाला।

जशन *पुं.* {फा.} नाच-रंग आदि का बहुत बड़ा समारोह या जलसा।

जस *क्रि. वि.* {सं. यथा} जैसा; *पुं.* यश।

जसोदा, जसोवै *स्त्री.* यशोदा।

जस्ता *पुं.* {सं. जसद} मटमैले रंग की एक प्रसिद्ध धातु।

जहँ *क्रि. वि.* जहाँ।

जहक *पुं.* {सं.} काल, समय; *वि.* निर्मोह।

जहकना *क्रि. अ.* {हिं.} बहकना, अंड-संड बकना।

जहँड़ना *अ.* {सं. जहन} घाटा उठाना; धोखे में आना या ठगा जाना।

जहँड़ाना *अ.* जहँड़ना; *स.* धोखा देना, ठगना।

जहतिया *पुं.* {हिं. जगत} जगात या कर उगाहने वाला।

जहदजहल्लक्षणा *स्त्री.* {सं.} लक्षणा का वह प्रकार जिसमें वक्ता के शब्दों के कई अर्थों में से केवल एक अर्थ या भाव ग्रहण किया जाता है।

जहद्दम *पुं.* जहन्नुम।

जहना *अ.* {सं. जहन} त्यागना, छोड़ना; नष्ट करना।

जहन्नुम *पुं.* {*अ.*} नरक, दोजख, अँधेरा कुआँ।

जहमत *स्त्री.* {*अ.* ज़हमत} विपत्ति, मुसीबत; झंझट, बखेड़ा।

जहर *स्त्री.* {*अ.* ज़हर} विष, गरल; अति अप्रिय।

मुहा. जहर उगलना = लगती हुई और बहुत कटु बात कहना; *(कोई चीज या काम) जहर कर देना* = बहुत अधिक कटु, अप्रिय या असम्भव कर देना, जैसे लड़ाई-झगड़ा करके खाना-पीना जहर कर देना; *जहर का घूँट पीकर रह जाना* = बहुत अधिक क्रोध होने पर भी चुप रह जाना। बहुत अधिक अप्रिय बात या काम; *वि.* मार डालनेवाला, घातक; बहुत हानि पहुँचानेवाला (खाद्य पदार्थ); *पुं.* जौहर।

जहर का बुझा *वि.* बहुत अधिक दुष्ट या पाजी।

जहरबाद *पुं.* {फा. ज़हरबाद} एक तरह का जहरीला बड़ा फोड़ा।

जहर-मोहरा *पुं.* {फा. जहरमुहर:} एक काला पत्थर जिसमें शरीर में से साँप का विष सोखने का गुण माना जाता है।

जहरी *वि.* {हिं. जहर} जिसमें जहर हो, विषैला; जहर उगलनेवाला।

जहरीला *वि.* {हिं. जहर + ईला (प्रत्य.)} जिसमें जहर हो; (जंतु) जिसके दंश या डंक में जहर हो।

जहाँ *क्रि. वि.* {सं. यत्र} जिस स्थान पर, जिस जगह।

पद जहाँ का तहाँ = जिस जगह था या हो, उसी जगह पर; *जहाँ-तहाँ* = इधर-उधर।

जहाँगीरी *स्त्री.* {फा.} हाथ में पहनने का एक जड़ाऊ गहना।

जहाँपनाह *पुं.* {फा.} संसार को शरण देनेवाला (बादशाहों के लिए सम्बोधन)।

जहाज *पुं.* {*अ.* ज़हाज} {*वि.* जहाजी} समुद्र में चलनेवाली बड़ी नाव।

जहाजी *वि.* {*अ.* जहाज़} जहाज-संबंधी, जहाज का, जैसे जहाजी कौआ; *पुं.* वह जो जहाज पर नौकरी करता हो, लशकरी; जहाज पर यात्रा करनेवाला; *स्त्री.* एक प्रकार की पुरानी चाल की तलवार।

जहाजी कौआ *पुं.* {हिं. जहाजी + कौआ} जहाज पर ही रहनेवाला कौआ जो समुद्र पर चारों ओर घूम-फिरकर फिर उसी जहाज पर आ जाता है; बहुत बड़ा धूर्त या चालाक।

जहाजी-बेड़ा *पुं.* एक साथ चलनेवाली समुद्री जहाजों का समूह।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाजी सुपारी *स्त्री.* {हिं. जहाजी + सुपारी} विदेशों से (जहाज पर) आनेवाली एक प्रकार की सुपारी, जो साधारण सुपारी से प्रायः दूनी बड़ी और चिपटी होती है।

जहाद *पुं.* {अ. जिहाद} मुसलमानों का वह धर्मयुद्ध, जो इस्लाम का प्रचार या रक्षा करने के लिए किया जाता हो।

जहादी *वि.* {जहाद} जहाद-संबंधी, जहाद का; *पुं.* वह जो इस्लाम का प्रचार करने अथवा उसकी रक्षा के लिए युद्ध या जहाद करता हो।

जहान *पुं.* {फा.} संसार, जगत्।

जहिया *क्रि. वि.* {सं. यद्} जिस दिन।

जहीं *क्रि.वि.* {सं.} जहाँ ही; *क्रि. वि.* 'ज्यों ही'।

जहेज *पुं.* दहेज।

जह्नु *पुं.* {सं.} विष्णु; एक राजर्षि जिन्होंने गंगा को पीकर काने से निकाला था (इसी से गंगा का नाम जाह्नवी पड़ा है)।

जह्नुतनया *स्त्री.* {सं.} गंगा, भागीरथी।

जाँ *स्त्री.* {हिं.} माँ, माता, देवर की स्त्री, देवरानी।

जाँग *पुं.* {देश.} घोड़ों की एक जाति।

जाँगड़ा *पुं.* {हिं.} बंदी, भार, मृद-यशगान कर्ता।

जाँगर *पुं.* {हिं. जान या जाँघ} शरीर का बल, बूता; *पुं.* जाँगरा।

जाँगरा *पुं.* {?} भाट, चारण।

जाँगी *पुं.* {हिं.} नगाड़ा।

जांगल *पुं.* {सं.} ऊसर देश; *वि.* जंगल-संबंधी, जंगली।

जाँगलू *वि.* जंगली।

जाँघ *स्त्री.* {सं. जंघा} कमर के नीचे और घुटनों के ऊपर का अंग, रान।

मुहा. अपनी जाँघ उघाड़ना = अपनी बदनामी या कलंक की बात आप प्रकट करना।

जाँघा *पुं.* {हिं.} हल, कुएँ पर गढ़ा खंभा।

जाँघिया *पुं.* {हिं. जाँघ + इया (प्रत्य.)} जाँघों में पहनने का घुटनों तक का एक पहनावा, कच्छा।

जाँघिल *वि.* {हिं. जाँघ} जिसका पैर, चलने में, लचकता हो (पशु)।

जाँघिला *पुं.* {देश.} एक प्रकार की चिड़िया।

जाँच *स्त्री.* {हिं.जाँचना} जाँचने की क्रिया का भाव; यह देखना कि कोई काम ठीक तरह से हुआ है या नहीं (चैक); घटना आदि के कारणों का वास्तविक स्वरूप अथवा तथ्यों का पता लगाने का कार्य, अनुसंधान (एन्क्वायरी); किसी घटना या विषय के मूल कारणों रहस्यों का पता लगाना, छान-बीन (इनवेस्टिगेशन)।

जाँच-आयोग *पुं.* {हिं. + सं.} किसी दुर्घटना या घोटाले की जाँच करनेवाला आयोग।

जाँचक[1] *पुं.* याचक।

जाँचक[2] *पुं.* {हिं. जाँच} जाँच, परीक्षा या आलोचना करनेवाला।

जाँच-घर *पुं.* किसी बड़े कार्यालय से संबद्ध वह स्थान, जहाँ उस कार्यालय से संबंध रखनेवाली बातों का (पूछने पर) पता चलता है, पूछताछ कार्यालय (एंक्वायरी ऑफिस)।

जाँचना *स.* {सं. याचन} यह देखना कि कोई काम ठीक हुआ है या नहीं; परखना; माँगना।

जाँच-पड़ताल *स्त्री.* तथ्यों का पता लगाने के लिए किया जानेवाला अनुसंधान-कार्य।

जाँझ *स्त्री.* {सं. झंझा} वह वर्षा जिसके साथ तेज हवा भी हो।

जाँत *पुं.* = जाँता (बड़ी चक्की)।

जांतव *वि.* {सं. जान्तव} जंतु-संबंधी, जीव-जंतुओं का; जीव-जंतुओं से उत्पन्न होने या मिलनेवाला, जैसे जांतव विष।

जाँता *पुं.* {सं. यंत्र} आटा पीसने की बड़ी चक्की।

जाँब *पुं.* जामुन।

जांबवान *पुं.* {सं.} सुग्रीव का मंत्री जो राम की ओर से रावण से लड़ा था।

जाँबाज *वि.* {फा. जाँबाज़} जान तक देने को तैयार रहनेवाला, जान की बाजी तक लगानेवाला।

जाँबाजी *स्त्री.* {फा. जाँबाज़ी} जान की लगाई जानेवाली बाजी, प्राण न्योछावर करना।

जाँवत *क्रि. वि.* यावत्।

जाँवर *पुं.* {हिं. जाना} जाना।

जा[1] *स्त्री.* {सं.} माता, माँ; देवर की स्त्री, देवरानी।

जा[2] *सर्व.* {हिं. जो} जिस।

जा[3] *वि.* {फा.} मुनासिब, उचित।

जाइ[1] *वि.* {हिं. जाना} व्यर्थ, वृथा।

जाइ[2] *वि.* {अ. जाए} उचित, वाजिब।

जाई *स्त्री.* {हिं. 'जाया' का *स्त्री.*} बेटी, पुत्री।

जाउनि *स्त्री.* जामुन।

जाउर *पुं.* {हिं. *स्त्री.*} खीर।

जाक[1] *पुं.* {सं. यक्ष} यक्ष।

जाक[2] *स्त्री.* {हिं. जकना} जकने की क्रिया या भाव।

जाकड़ *पुं.* {हिं. जाकर} इस शर्त पर कोई चीज ले आना कि यदि यह पसंद न होगी तो फेर दी जाएगी, 'पक्का' का उलटा; उक्त प्रकार से ली या दी हुई कोई चीज।

जाकेट *स्त्री.* {हिं. जैकेट} एक प्रकार की सदरी।

जाखिनी *स्त्री.* यक्षिणी।

जाग[1] *पुं.* {सं. यज्ञ} यज्ञ।

जाग[2] *स्त्री.* {हिं. जगह} जगह, स्थान।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाग³ *स्त्री.* {हिं. जागना} जागने की क्रिया, भाव या दशा; जागरण।

जागना *क्रि. अ.* {हिं.} निद्रा त्यागना, सोकर उठना।

जागता *वि.* {हिं. जागना} अपनी महिमा, महत्व या प्रभाव तुरन्त और प्रत्यक्ष दिखानेवाला, जैसे जागता जादू, जागती ज्योति; प्रकाशमान।

जागतिक *वि.* {सं.} जगत् या संसार से संबंध रखनेवाला, संसार का, जैसे जागतिक स्थिति।

जागना *अ.* {सं. जागरण} नींद त्यागना; निद्रारहित रहना, जाग्रत होना; सजग या सावधान होना; उदित होना; प्रसिद्ध या विख्यात होना; जलना।

जागरण *पुं.* {सं.} जागना; किसी उत्सव या पर्व पर रातभर जागना, जागा; किसी वर्ग या जाति की वह अवस्था जिसमें वह गिरी हुई दशा से निकलकर उन्नत होने का प्रयत्न करती है।

जागरित *वि.* {सं.} जो जागता या होश में हो; जो गिरी हुई दशा से निकलकर उन्नति का प्रयत्न कर रहा हो।

जागरी *वि.* {सं.} जागरिता।

जागरूक *वि. पुं.* {सं.} वह जो जाग्रत अवस्था में हो; रखवाला, पहरेदार।

जागरूप *वि.* {हिं. जागना + रूप} जो बिल्कुल स्पष्ट और प्रत्यक्ष हो।

जागर्ति *स्त्री.* {सं.} जागरण जागृति; चेतनता।

जागा *पुं.* जागरण, स्थान।

जागी *पुं.* {सं. याजी} भाट, बंदी।

जागीर *स्त्री.* {फा.} {*वि.* जागीरी} राज्य की ओर से मिली हुई भूमि या प्रदेश।

जागीरदार *पुं.* {फा.} वह जो जागीर का मालिक हो।

जागृत *वि.* जाग्रत।

जाग्रत *वि.* {सं.} जो जाग रहा है, जागता हुआ; (शक्ति, गुण आदि) जो अपना काम कर रहा हो, निष्क्रिय न हो, 'सुप्त' का उलटा; *पुं.* वह अवस्था जिसमें सब बातों का परिज्ञान होता या रहता है।

जागृति *स्त्री.* {सं. जाग्रत} जागरण, जगाने की क्रिया।

जाचक *पुं.* {भाव. जाचकता} याचक, भिक्षुक, भिखारी।

जाचन *पुं.* {सं. याचन} माँगने की क्रिया या भाव, याचना; *पुं.* = याचक।

जाचना¹ *सं.* {सं. याचन} माँगना, याचना।

जाचना² *स्त्री.* = यातना, जैसे भैरवी जाचना।

जाजिम *स्त्री.* {तु. जाजम} फर्श पर बिछाने की छपी हुई चादर।

जाज्वल्य (मान) *वि.* {सं.} प्रज्ज्वलित, दीप्तिमान; तेजस्वी।

जाट *पुं.* {?} भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध जाति।

जाठ *पुं.* {सं. यष्टि} वह लट्ठा जो कोल्हू की कूँड़ी के बीच में लगा रहता है; तालाब के बीच में पड़ा हुआ लट्ठा।

जाठर *वि.* {सं.} जठर-संबंधी, जठर का; जठर से उत्पन्न; *पुं.* जठर, पेट; भूख।

जाड़ *पुं.* {सं. जाड्य} जड़ता; *पुं.* = जाड़ा।

जाड़ा *पुं.* {सं. जड़} वह ऋतु जिसमें बहुत सरदी पड़ती है, शीतकाल; सरदी, शीत, ठंड।

जाड्य *पुं.* {सं.} जड़ता।

जात¹ *पुं.* {सं.} जन्म; पुत्र, बेटा; जीव, प्राणी।

जात² *वि.* {*स्त्री.* जाता} उत्पन्न, जनमा हुआ, जैसे नवजात; जनन या प्रसव से संबंध रखनेवाला, जैसे जात पीर = प्रसव की पीड़ा; व्यक्त, प्रकट।

जात³ *स्त्री.* {अ. ज़ात} शरीर; व्यक्तित्व।

जातक *पुं.* {सं.} बच्चा, महात्मा बुद्ध के पूर्वजन्मों-संबंधी कथा।

जातकर्म *पुं.* {सं.} बालक के जन्म के समय होनेवाला संस्कार।

जातकोप *वि.* {सं.} जो क्रुद्ध हो गया हो।

जातना *स्त्री.* यातना।

जात-पाँत *स्त्री.* {सं. जाति + पंक्ति} जाति और उपजाति के विभाग।

जातबल *वि.* {सं.} शक्तिमान।

जातवेदस् *पुं.* {सं.} अग्नि, सूर्य, परमेश्वर।

जातवेश्म *पुं.* {सं.} जिस घर में बालक का जन्म हो; सौरी।

जातश्रम *वि.* {सं.} विश्रांत, थका हुआ।

जातरूप *पुं.* {सं.} स्वर्ण, सोना (धातु)।

जातांध *वि.* {सं.} जन्म का अंधा।

जाति *स्त्री.* {सं.} जन्म, पैदाइश; हिन्दुओं का वह सामाजिक विभाग, जो पहले कर्मानुसार था, पर अब जन्मानुसार माना जाने लगा है (कास्ट); देशभेद या वंश-परम्परा के विचार से किया हुआ मानव समाज का विभाग (रेस); पदार्थों या जीव-जंतुओं के धर्म, आकृति आदि की समानता के विचार से किया हुआ विभाग, कोटि, वर्ग (जेन्स)।

जातिकोश *पुं.* {सं.} जातीफल, जायफल।

जातिच्युत *वि.* {सं.} जाति से निकाला हुआ, जाति-बहिष्कृत।

जाति-पाँति *स्त्री.* जात-पाँत।

जाती¹ *स्त्री.* {सं.} चमेली की जाति का एक पौधा और फूल, जाही।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातीं² *वि.* {*अ.* ज़ाती} व्यक्तिगत; अपना, निज का।

जातीय *वि.* {सं.} जाति संबंधी; सारी जाति या राष्ट्र का (नेशनल)।

जातीयता *स्त्री.* {सं.} 'जातीय' का भाव; अपनी जाति, राष्ट्र या देश की उन्नति, महत्व और कल्याण की प्रबल कामना का भाव।

जातीय समस्या *स्त्री.* {सं.} विभिन्न जातियों के पारस्परिक विरोध के कारण खड़ी होनेवाली समस्या।

जातुज *पुं.* {सं.} दोहद, गर्भिणी स्त्री की इच्छा।

जातुधान *पुं.* {सं.} {*वि.* जातुधानी} राक्षस।

जातुधानी *वि.* {सं. जातुधान} राक्षसों का-सा, राक्षसी।

जाद *वि.* {फा. ज़ाद} किसी से उत्पन्न, किसी का जनमा हुआ, जात (यौ. के अंत में, जैसे आदमजात, परीजाद आदि)।

जादव *पुं.* यादव।

जादवराय *पुं.* {सं. यादवराय} श्रीकृष्णचन्द्र।

जादा *वि.* {फा. ज़ादा} संतान के रूप में (किसी से) उत्पन्न, जात, जैसे साहबजादा; *वि.* ज्यादा।

जादू *पुं.* {पहलवी याषत् से फा., मि. सं. यातु} ऐसा आश्चर्यजनक काम जिसे लोग अलौकिक और अमानवीय समझें, इंद्रजाल, तिलस्म; वह अद्‌भुत खेल या कृत्य जिसका रहस्य दर्शकों की समझ में न आए (मैजिक); टोना, टोटका; दूसरे को मोहित करने की शक्ति, मोहिनी।

जादूगर *पुं.* {फा.} {*भाव.* जादूगरी, *स्त्री.* जादूगरनी} वह जो जादू के खेल करता हो।

जादूगरी *स्त्री.* {फा.} जादूगर का काम या कृति; जादूगर का दिखलाया हुआ खेल; वह अद्‌भुत काम जो जादू का-सा जान पड़े।

जादौ *पुं.* यादव, श्रीकृष्ण।

जादौराय *पुं.* = जादवराय।

जान¹ *स्त्री.* {सं. ज्ञान} ज्ञान, जानकारी, परिचय; ख्याल अनुमान; *वि.* ज्ञानवान, ज्ञानी; सुजान, चतुर।

जान² *पुं.* यान।

जान³ *स्त्री.* {फा.} प्राण, जीवन।

मुहा. जान के लाले पड़ना = प्राण बचना कठिन होना; *जान खाना* = तंग या दिक करना; *जान छुड़ाना या बचाना* = किसी झंझट से अपना पीछा छुड़ाना; *(किसी पर) जान देना* = (किसी से) इतना प्रेम करना कि उसके बिना रहा न जाए; *जान निकलना* = मरना; भय या चिंता से प्राण सूखना; *जान पर खेलना* = अपना जीवन भारी संकट में डालना; *जान से जाना* = मरना।

पद जान जोखिम या जोखों = ऐसा काम जिसमें जान जाने का डर हो।

बल, शक्ति, बूता, सामर्थ्य।

मुहा. जान में जान आना = विपत्ति से छुटकारा मिलने पर निश्चिंतता होना।

सार, तत्व; शोभा बढ़ानेवाली वस्तु।

मुहा. जाना आना = शोभा बढ़ना।

जानकार *वि.* {हिं. जानना + कार (प्रत्य.)} {*भाव.* जानकारी} जाननेवाला, ज्ञाता; विज्ञ, चतुर।

जानकारी *स्त्री.* {हिं. जानकार} जानकार का ज्ञान।

जानकी *स्त्री.* {सं.} सीता।

जानकी जीवन *पुं.* {सं.} रामचन्द्र।

जानदार *वि.* {फा.} जिसमें ज्ञान हो; प्रबल, बलवान।

जाननहार *वि.* = जाननेवाला।

जानना *स.* {सं. ज्ञान} ज्ञान प्राप्त करना, अभिज्ञ या परिचित होना, मालूम करना; सूचना या खबर रखना; अनुमान करना, समझना।

जानपद *वि.* {सं.} जनपद-संबंधी, जनपद का, जैसे जानपद न्यायालय; सारे देश से संबंध रखनेवाला परन्तु सैनिक और धार्मिक क्षेत्रों से भिन्न, जैसे जानपद सेवा (सिविल सर्विस), जानपद विधि (सिविल लॉ) (सिविल); *पुं.* जनपद का निवासी; देश।

जानपदिक *वि.* {सं.} जनपद संबंधी।

जानपदी *स्त्री.* {हिं.} वृत्ति, एक अप्सरा का नाम।

जानपना *पुं.* {हिं.} जानकारी, चतुराई।

जानपनी *स्त्री.* {हिं.} चतुराई, बुद्धिमानी।

जान-पहचान *स्त्री.* {हिं. जानना + पहचानना} परिचय।

जान-बीमा *पुं.* {फा. + *अ.*} संविदा या ठेके के रूप में होनेवाली वह व्यवस्था जिसमें बीमा करानेवाली को कुछ निश्चित अवधि तक समय-समय पर किस्त के रूप में कुछ धन देना पड़ता है और बीमा करनेवाला उस व्यक्ति के मरने पर उसके उत्तराधिकारियों को अथवा उसके जीवित रहने पर स्वयं उसे नियत धन और उसके लाभ का कुछ अंश देता है (लाइफ इंश्योरेंस)।

जान-बूझकर *क्रि. वि.* अच्छी तरह जानते और समझते हुए, संकल्पपूर्वक।

जानमनि *पुं.* {जान + मणि} ज्ञानियों में श्रेष्ठ, बहुत बड़ा ज्ञानी।

जान-माल *पुं.* {फा. + *अ.*} प्राणी और संपत्ति।

जानराय *पुं.* जानमनि।

जानवर *पुं.* {फा.} प्राणी, जीव; पशु, हैवान।

जानशीन *पुं.* {फा.} उत्तराधिकारी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानहार *वि.* जाननेवाला; जानेवाला।

जानहु *क्रि. वि.* {हिं. जानना} मानो।

जाना[1] *अ.* {सं. यान + जाना} एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचने के लिए चलना, गमन करना; प्रस्थान करना।

मुहा. जा पड़ना या पहुँचना = संयोगवश या यों ही कहीं जाकर उपस्थित होना; *जाने दो* = ध्यान मत दो; *किसी बात पर जाना* = किसी बात के अनुसार कुछ अनुमान या निश्चय करना; किसी बात पर ध्यान देना; *जा लेना* = आगे बढ़कर किसी के पास पहुँचना या साथ होना।

किसी वस्तु का अधिकार से निकलना; गायब या गुम होना, खोना; बीतना, गुजरना; नष्ट होना; निकलना या बहना, जैसे खून जाना।

जाना[2] *स.* {सं. जनन} प्रसव करके उत्पन्न करना, जन्म देना।

जानि *वि.* = जानकार।

जानी *वि.* {फा.} जान से संबंध रखनेवाला, जान का।

जानीदुश्मन *पुं.* जान लेने को तैयार दुश्मन।

जानी दोस्त *पुं.* गहरा दोस्त।

जानु[1] *पुं.* {सं.} जाँघ और पिंडली के बीच का भाग, घुटना।

जानु[2] *पुं.* {फा. जानू} जाँघ, रान।

जानो *क्रि.वि.* {हिं. जानना} मानो, जैसे।

जाप्य *वि.* {सं.} जपने योग्य।

जाप *पुं.* जप।

जापक *वि.* {सं.} जप करने या जपनेवाला।

जापा *पुं.* {सं. जनन् + हिं. आपा (प्रत्य.)} प्रसूतिकागृह, सौरी।

जापी *पुं.* {सं.} जपनेवाला।

जाफ *स्त्री.* {अ. जोफ़} बेहोशी, मूर्च्छा; चक्कर, घुमटा; वृद्धावस्था, बुढ़ापा। (उर्दू में 'जोफ' पुलिंग होने पर भी हिन्दी में जाफ स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है)।

जाफत *स्त्री.* {फा. ज़ियाफ़त} भोज, दावत।

जाफरान *पुं.* {अ. जाफ़रान} {*वि.* जाफरानी} केसर नामक प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य।

जाबालि *पुं.* {सं.} राजा दशरथ के गुरु, एक प्रसिद्ध ऋषि।

जाब्ता *पुं.* {अ.} नियम, विधान।

जाब्ता दीवानी *पुं.* आर्थिक व्यवहार या लेन-देन से संबंध रखनेवाला विधान।

जाब्ता फौजदारी *पुं.* दंडनीय अपराधों से संबंध रखनेवाला विधान।

जाम[1] *पुं.* {सं. याम} पहर, प्रहर।

जाम[2] *पुं.* {फा.} प्याला, कटोरा (विशेषत: शराब पीने का); एक प्रकार का बढ़िया फल।

जाम[3] *वि.* {अ. जैस, मि. हिं. जमना} अधिकता, दबाव आदि के कारण रुका हुआ; जिसमें चलने के लिए अवकाश न हो, जैसे रास्ता जाम होना; मैल आदि के कारण अपने स्थान पर दृढ़तापूर्वक जमा, ठहरा या रुका हुआ।

जामगी *स्त्री.* {अ.} वह पलीता जिसे जलाकर तोप या बंदूक चलाते थे।

जामदग्न्य *पुं.* {सं.} जमदग्नि-पुत्र—परशुराम।

जामदानी *स्त्री.* {फा. जाम:दानी} एक प्रकार का फूलदार कपड़ा।

जामन *पुं.* {अ. ज़ामिन} दूध जमाकर दही बनाने के लिए उसमें डाला जानेवाला थोड़ा दही या खट्टा पदार्थ।

जामना *अ.* जमना।

जामनी *स्त्री.* {सं. यामिनी} रात।

जामा *पुं.* {फा.} पहनावा, पोशाक; चुन्नटदार घेरे का एक विशेष प्रकार का पहनावा; शरीर।

मुहा. जामे से बाहर होना = आपे से बाहर होना, बहुत क्रोध करना।

जामाता *पुं.* {सं. जामतृ} दामाद, कन्या का पति, जमाई।

जामिक *पुं.* {सं. यामिक} पहरेदार।

जामिन *पुं.* {अ.} जमानत करनेवाला।

जामिनदार *पुं.* {अ.} जमानत करनेवाला, प्रतिभू।

जामिनी *स्त्री.* यामिनी: *स्त्री.* जमानत।

जामी *स्त्री.* जमीन।

जामुन *पुं.* {सं. जंबु} {*वि.* जामुनी} एक सदाबहार पेड़ जिसके फल बैंगनी या काले होते हैं।

जामुनी *वि.* {हिं. जामुन} जामुन के रंग, कालापन लिए बैंगनी।

जामेवार *पुं.* {फा. जाम: + वार} एक प्रकार का दुशाला जिसमें सब जगह बेल-बूटे बने रहते हैं; इसी प्रकार की छींट।

जामेय *पुं.* {सं.} भानजा, बहिन का बेटा।

जायँ *वि.* जाय।

जाय *क्रि. वि.* {फा. जा} वृथा, व्यर्थ; *वि.* उचित, वाजिब, ठीक।

जायक *पुं.* {सं.} पीला चंदन।

जायका *पुं.* {अ. ज़ायका} स्वाद विशेषत: खाने-पीने की चीजों का।

जायकेदार स्वादिष्ट, मजेदार।

जायज *वि.* {अ. जायजा} उचित, मुनासिब।

जायजा *वि.* {अ. जायज़ा} जाँच-पड़ताल; हाजिरी।

जायद फसल *स्त्री.* {फा.} वर्ष की दो प्रमुख फसलों के बीच में उगाई जानेवाली फसल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायदाद *स्त्री.* {फा.} भूमि, धन या सामान आदि जिनका कुछ मूल्य हो, सम्पत्ति।

जायपत्री *स्त्री.* जावित्री।

जायफल *पुं.* {सं. जातिफल} एक सुगंधित फल जो ओषधि और मसाले के काम में आता है।

जायसी *वि. जायस* {गाँव} का रहनेवाला; *पुं.* मध्य युग के हिन्दी के प्रसिद्ध कवि मलिक मुहम्मद जायसी जो जायस में रहते थे और जिनकी प्रसिद्ध रचना 'पद्मावत' है।

जाया[1] *स्त्री.* {सं.} पत्नी, जोरू।

जाया[2] *पुं.* {सं. जनन, हिं. जाना = जन्म देना} {*स्त्री.* जाई} वह जो प्रसव करके उत्पन्न किया गया हो; पुत्र, बेटा।

जार *पुं.* {सं.} परस्त्री के अनुचित संबंध रखनेवाला पुरुष; उपपति, यार।

जारक *वि.* {सं.} पाचन करनेवाला।

जारकर्म *पुं.* {सं.} व्यभिचार, छिनाला।

जारज *पुं.* {सं.} किसी स्त्री के उपपति से उत्पन्न संतान।

जारज योग *पुं.* {सं.} फलित ज्योतिष में एक योग जिसमें उत्पन्न होनेवाला बालक अपने पिता से नहीं, बल्कि अपनी माता के किसी दूसरे प्रेमी से उत्पन्न माना जाता है।

जारण *पुं.* {सं.} जलाना।

जारन *स्त्री.* {हिं. जारना = जलाना} जलाने की क्रिया या भाव; *पुं.* जलाने की लकड़ी, जलावन, ईंधन।

जारना *स.* जलाना।

जारिणी *स्त्री.* {सं.} दुश्चरित्रा स्त्री।

जारित *वि.* {सं.} शुद्ध किया हुआ; शोषित।

जारी[1] *वि.* {अ.} बहता हुआ, प्रवाहित; चलता हुआ, प्रचलित।

जारी[2] *स्त्री.* {सं. जार} छिनाला।

जालंधर *पुं.* {सं.} एक ऋषि; एक राक्षस।

जालंधरी विद्या *स्त्री.* {जालंधर (राक्षस) + विद्या.} इंद्रजाल, जादू।

जाल[1] *पुं.* {सं.} एक में बुने या गुँथे हुए बहुत से डोरों का समूह; तार या सूत आदि का वह पट जिसका व्यवहार मछलियों और चिड़ियों आदि को फँसाने के लिए होता है; किसी को फँसाने या वश में करने का षड्यंत्र; समूह; एक प्रकार की तोप।

जाल[2] *पुं.* {अ. जअल, मि. सं. जाल} किसी को फँसाने के लिए चली हुई चाल या झूठी कार्रवाई, फरेब।

जालक *पुं.* {सं.} गवाक्ष, झरोखा।

जालकारक *पुं.* {सं.} जाल बनानेवाला।

जालदार *वि.* {सं. जाल + हिं. दार} जिसमें जाल की तरह बहुत-से छोटे-छोटे छेद हों।

जालना *स.* = जलाना।

जालबंद *पुं.* {हिं.} एक प्रकार के गलीचे में बेलवाली जालदार।

जालरंध्र *पुं.* {सं.} छोटी खिड़की झरोखा।

जालसाज *पुं.* {अ. जअल + फा. साज़} {*भाव.* जालसाजी} धोखा देने के लिए किसी प्रकार की झूठी कार्रवाई करनेवाला।

जालसाजी *स्त्री.* {अ. जअल + फा. साज़ी} धोखा देने के लिए किसी प्रकार की झूठी कार्रवाई या लेख तैयार करना।

जाला *पुं.* {सं. जाल} मकड़ी का जाल जिसमें वह कीड़े-मकोड़ों को फँसाती है; आँख का एक रोग जिसमें पुतली के आगे झिल्ली सी पड़ जाती है; घास-भूसा बाँधने का जाल; पानी रखने का मिट्टी का बड़ा घड़ा; *स्त्री.* ज्वाला।

जालिक *पुं.* {सं.} घीवर, मछुआ, मकड़ी आदि।

जालिम *वि.* {अ. ज़ालिम} जुल्म करनेवाला।

जालिया *वि.* जालसाज।

जाली[1] *स्त्री.* {हिं. जाल} किसी चीज में बने हुए बहुत से छोटे-छोटे छेदों का समूह; एक प्रकार का कपड़ा जिसमें बहुत से छोटे-छोटे छेद होते हैं; कच्चे आम के अंदर का तंतुजाल।

जाली[2] *वि.* {अ. जअल} नकली, बनावटी।

जावक *पुं.* महावर।

जावत *क्रि. वि.* यावत्।

जावन्य *पुं.* {सं.} तेज गति से।

जावर *पुं.* {?} ऊख के रस में पकाई हुई, एक प्रकार की खीर।

जावित्री *स्त्री.* {सं. जातिपत्री} जायफल के ऊपर का सुगंधित छिलका।

जाषिनी *स्त्री.* = यक्षिणी।

जासु *सर्व.* {हिं. जो} जिसको।

जासू *पुं.* {हिं.} अफीम और पान के पत्ते से बना मादक द्रव्य।

जासूस *पुं.* {अ.} {*भाव.* जासूसी} गुप्त रूप से किसी बात या अपराध का पता लगानेवाला, भेदिया, गुप्तचर।

जासूसी *स्त्री.* {अ.} जासूस का काम या भाव; *वि.* जासूस-संबंधी।

जाहक *पुं.* {सं.} घोंघा, जौंक, गिरगिट।

जाहिर *वि.* {अ. ज़ाहिर} प्रकट, स्पष्ट, खुला हुआ; विदित, जाना हुआ; प्रसिद्ध मशहूर।

जाहिरा *क्रि. वि.* {अ. ज़ाहिरा} देखने में, प्रकट रूप में, प्रत्यक्ष में।

जाहिरी *वि.* {अ.} जो जाहिर हो, प्रकट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digi Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाहिल *वि.* {अ.} मूर्ख, नासमझ; अनपढ़, अशिक्षित।

जाही *स्त्री.* {सं. जति} चमेली की तरह का एक सुगंधित पौधा और उसका फूल।

जाह्नवी *स्त्री.* {सं.} जह्नु ऋषि से उत्पन्न, गंगा नदी।

जिंद *स्त्री.* जिंदगी; *पुं.* जिन (प्रेत)।

जिंदा *वि.* {सं. ज़िंदा} जीवित, जीता हुआ।

जिंदगानी *स्त्री.* जिंदगी।

जिंदगी *स्त्री.* {फा. ज़िंदगी} जीवन; जीवनकाल। *मुहा. जिंदगी के दिन पूरे करना* = जैसे-तैसे या बहुत कष्ट से जीवन बिताना।

जिंदादिल *वि.* {फा.} {*संज्ञा* जिंदादिली} सदा प्रसन्न रहने और हँसने-हँसानेवाला।

जिंवाना *स.* जिमाना।

जिंस *स्त्री.* जिंस (जिंस के यौगिक तथा विकारों के लिए जिंस के यौगिक तथा विकार)।

जिअरा *पुं.* जियरा।

जिआना *स.* जिलाना।

जिउ *पुं.* जीव; जीवन।

जिउकिया *पुं.* {हिं. जीविका} जीविका के लिए कोई काम करनेवाला; वे पहाड़ी लोग, जो जंगलों से चीजें लाकर नगरों में बेचते हैं।

जिउतिया *स्त्री.* जिताष्टमी।

जिक्र *पुं.* {अ. ज़िक्र} चर्चा।

जिगर *पुं.* {फा., मि. सं. यकृत} {*वि.* जिगरी} कलेजा; चित्त, मन; साहस, हिम्मत।

जिगरा *पुं.* {हिं. जिगर} साहस, हिम्मत।

जिगरी *वि.* {फा.} आंतरिक, दिली; अत्यंत घनिष्ठ, अभिन्न हृदय।

जिगीषा *स्त्री.* {सं.} जीतने की इच्छा; उद्योग, प्रयत्न।

जिच (च्च) *स्त्री.* {?} बेबसी, मजबूरी; शतरंज के खेल में वह अवस्था, जिसमें किसी एक पक्ष को कोई मोहरा चलने की जगह न मिले; पारस्परिक विवाद में वह अवस्था, जिसमें दोनों पक्ष अपनी शर्तों पर अड़े रहें और समझौते या निपटारे का कोई मार्ग दिखाई न दे (डेड लॉक); *वि.* विवश, मजबूर, बेबस।

जिचीविषु *वि.* {सं.} जीने की इच्छा करनेवाला।

जिज्ञासन *पुं.* {सं.} जानने की इच्छा, पूछताछ।

जिज्ञासा *स्त्री.* {सं.} कोई बात जानने की इच्छा; पूछताछ।

जिज्ञासावश *क्रि. वि.* {सं.} जिज्ञासा की पूर्ति के लिए।

जिज्ञासु *वि.* {सं.} जिज्ञासा करने या जानने की इच्छा रखनेवाला।

जिठानी *स्त्री.* {हिं.} पति के बड़े भाई की स्त्री जेठानी।

जित् *वि.* {सं.} जीतनेवाला, जेता।

जितना *वि.* {हिं. जिस + तना (प्रत्य.)} {*स्त्री.* जितनी} जिस मात्रा या परिणाम का; *क्रि. वि.* जिस मात्रा या परिणाम में; *स.* = जीतना।

जितवार (वैया) *वि.* {हिं. जीतना} जीतनेवाला।

जिताऊ *वि.* {हिं. जिताना} जितानेवाला।

जितात्मा *वि.* जितेंद्रिय।

जिताना *स.* हिं. 'जीताना' का प्रे.।

जिताष्टमी *स्त्री.* {सं.} आश्विन कृष्ण अष्टमी (इस दिन स्त्रियाँ) अपनी संतान के जीवित रहने की कामना से व्रत और पूजन करती हैं)।

जितेंद्रिय *वि.* {सं.} जिसने अपनी इंद्रियों को वश में कर लिया हो।

जिते *वि.* {बहु.} = जितने।

जितै *क्रि.वि.* {सं. यंत्र} जिधर।

जितैया *वि.* {हिं. जीतना} जीतनेवाला।

जितौ *वि., क्रि. वि.* जितना।

जिद *स्त्री.* {अ. ज़िद} {*वि.* जिद्दी} हठ, अड़, दुराग्रह।

जिद्दी *वि.* {फा.} जिद करनेवाला, हठी, दुराग्रही।

जिधर *क्रि. वि.* {हिं. जिस + धर (प्रत्य.)} जिस ओर, जिस तरफ।

जिन[1] *पुं.* {सं.} विष्णु; बुद्ध; जैनों के तीर्थंकर।

जिन[2] *वि., सर्व.* {सं. यानि} 'जिस' का बहु.।

जिन[3] *पुं.* {अ.} भूत, प्रेत।

जिना *पुं.* {अ. ज़िना} व्यभिचार।

जिनि *निपा.* {हिं. जनि} मत, नहीं।

जिनिस *स्त्री.* जिंस।

जिन्नी *पुं.* {अ. जिन} वह जिसने जिन को वश में कर रखा हो।

जिन्स *स्त्री.* {फा.} {*वि.* जिंसी} प्रकार, तरह; चीज, वस्तु (काइंड); सामग्री, सामान; गेहूँ, चावल आदि अनाज।

जिन्सवार *पुं.* {फा.} पटवारियों का वह कागज, जिसमें वे खेतों में बोई हुई फसलों का विवरण लिखते हैं।

जिन्सी *वि.* {फा.} जिंस-संबंधी, जिंस का; जिंस या चावल, गेहूँ आदि अनाजों के रूप में होनेवाला, जैसे जिंसी लगान (इन काइंड)।

जिन्सी लगान *पुं.* {फा. + हिं.} खेत का वह लगान जो रुपए-पैसे के रूप में नहीं, बल्कि गेहूँ, चावल आदि पैदावरों के रूप में हो।

जिन्ह *सर्व.* जिन।

जिप्सी *पुं.* **{ईजिप्ट मिस्र देश के नाम से} भारतीय मूल से उत्पन्न एक यायावर जाति जो पहले**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिस्र देश में रहती थी और जो अब संसार के अनेक भागों में फैल गई है; इस जाति का कोई व्यक्ति।

जिबह पुं. जबह।

जिब्भा *स्त्री.* जिह्वा।

जिमनास्टिक पुं. {अ. जिमनास्टिक्स} शारीरिक क्षमता तथा स्फूर्ति-संबंधी व्यायाम।

जिमाना स. {हिं. 'जीमना' ता स.} भोजन कराना, खिलाना।

जिमि *क्रि. वि.* जैसे, जिस प्रकार।

जिमी *स्त्री.* = जमीन (पृथ्वी)।

जिम्मा पुं. {अ.} किसी कार्य विषय या बात का लिया जानेवाला भार, दायित्वपूर्ण प्रतिज्ञा, जवाबदेही; सुपुर्दगी, देखरेख, संरक्षा।

जिम्मी पुं. {अ.} इस्लामी राज्य में वह प्रजा जो मुसलमान न हो और जिसके जिम्मे कुछ विशिष्ट हीन कर्तव्य तथा कर लगे हों।

जिम्मेदार (वार) पुं. {फा.} उत्तरदायी।

जिय पुं. {सं. जीव} मन, चित्त।

जियबधा पुं. {सं. जीव + वध} हत्यारा।

जियरा पुं. {हिं. जीव} जी, हृदय, मन।

जियाजंतु पुं. जीवजन्तु।

जियान पुं. {अ.} घाटा, टोटा; हानि, नुकसान।

जियाना स. जिलाना।

जियारी *स्त्री.* {हिं. जीना} जीवन, जिंदगी; जीविका; वृत्ति, साहस।

जिरगा पुं. {फा. जिर्ग:} झुंड, गिरोह; मंडली, दल; पठानों आदि में कई वर्गों या दलों के लोगों की सभा।

जिरह[1] *स्त्री.* {अ. जरह या जुरह} हुज्जत, तकरार; किसी की कही हुई बातों की सत्यता की जाँच के लिए की जानेवाली पूछताछ।

जिरह[2] *स्त्री.* {फा. जिरह} लोहे की कड़ियों से बना हुआ कवच, वर्म, बख्तर।

जिरही *वि.* {हिं. जिरह} जो जिरह पहने हो, कवचधारी।

जिराफा पुं. जुराफा।

जिला[1] *स्त्री.* {अ.} माँजकर या रोगन आदि चढ़ाकर चमकाने का काम।

मुहा. जिला देना = माँजकर चमकाना। चमक-दमक।

जिला[2] पुं. {अ. ज़िलअ} प्रांत, प्रदेश; किसी प्रांत का वह विभाग जो एक कलक्टर या डिप्टी-कमिश्नर के अधीन हो (डिस्ट्रिक); किसी क्षेत्र या इलाके का छोटा विभाग।

जिला-जज पुं. {अ. जिला + अं. जज} न्याय विभाग का वह अधिकारी जिसे जिले भर की दीवानी और फौजदारी मुकदमों की अपीलें सुनने का अधिकार होता है (डिस्ट्रिक्ट जज)।

जिलाना पुं. {हिं. 'जीना' का स.} जीवित रहने में सहायता करना; पालना, पोसना; मृत शरीर में जान डालना।

जिला बोर्ड पुं. {अ. जिला + अं. बोर्ड} किसी जिले के चुने हुए प्रतिनिधियों का वह बोर्ड या संस्था जिसके जिम्मे जिले भर के देहातों की शिक्षा, स्वास्थ्य, वास्तु, यातायात आदि की व्यवस्था रहती है (डिस्ट्रिक्ट बोर्ड)।

जिलाह पुं. {अ. जल्लाद} अत्याचारी।

जिलेदार पुं. {अ.} जमींदार का वह कर्मचारी जो किसी जिले या इलाके में कर या लगान उगाहता है।

जिल्द *स्त्री.* {अ.} {वि. जिल्दी} खाल, चमड़ा, त्वचा; वह दफ्ती जो किसी किताब के ऊपर-नीचे उसकी रक्षा के लिए मढ़ी जाती है; पुस्तक की एक प्रति; पुस्तक का भाग, खंड।

जिल्दबंद पुं. {फा.} किताबों की जिल्द बाँधनेवाला।

जिल्लत *स्त्री.* {अ. ज़िल्लत} अपमान, बेइज्जती; दुर्दशा, दुर्गति।

जिल्होर पुं. {हिं.} अगहनिया धान।

जिव पुं. = जीव।

जिवन पुं. = जीवन।

जिवाना स. जिलाना; जिमाना।

जिवारा *वि.* ज्यारा।

जिष्णु *वि.* {सं.} सदा जीतनेवाला, परम विजयी; पुं. विष्णु; कृष्ण; इंद्र; सूर्य, अर्जुन।

जिस *वि.* {सं. य: या यस्} 'जो' का वह रूप जो उसे विभक्ति युक्त विशेष्य के पहले रहने पर प्राप्त होता है, जैसे जिस स्थान पर; *सर्व.* 'जो' का वह रूप जो उसमें विभक्ति लगने पर होता है।

जिस्ता पुं. जस्ता (धातु); दस्ता (कागज का)।

जिस्म पुं. {फा.} शरीर, देह, बदन।

जिह *स्त्री.* {फा. जद, सं. ज्या} धनुष की डोरी, पर्तांचिका, चिल्ला, रोदा।

जिहाद पुं. जहाद; मुसलमानों का अन्य जाति के विरुद्ध युद्ध।

जिहादी *वि.* {सं.} जिहाद का जिहाद हेतु, जिहाद संबंधी, जिहाद करनेवाला।

जिह्वा *स्त्री.* {सं.} जीभ, जबान।

जिह्वाग्र *वि.* {सं.} जो जीभ की नोक पर हो, कंठस्थ (बात या पाठ)।

जिह्वामूलीय *वि.* {सं.} (वर्ण) जिसका उच्चारण जिह्वा मूल से किया जाता है।

जींगन पुं. जुगनूँ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी पुं. {सं. जीव} मन, दिल।
मुहा. जी अच्छा होना = शरीर स्वस्थ या नीरोग होना; *(किसी पर) जी आना* = किसी पर प्रेम होना; *(किसी के) जी को जी न समझना* = (किसी के) कष्टों आदि की कुछ भी परवाह न करना; *जी खट्टा होना* = मन में विरक्ति होना; *जी खोलकर* = बिना किसी संकोच के, दिल खोलकर; *जी चलना* = जी चाहना, इच्छा होना; *जी चुराना* = कुछ करने से भागना; *जी छोटा करना* = हताश होना; उदारता छोड़ना, कंजूसी करना; *जी दुखना* = मन में कष्ट होना; *जी निढाल होना* = श्रम, चिंता आदि के कारण चित्त ठिकाने न रहना; *जी पर आ बनना* = प्राणों पर संकट आना; *जी पर खेलना* = ऐसा काम करना, जिसमें मरने तक का डर हो; *जी बहलना* = चिंता से छूटकर प्रसन्न होना; *(किसी की ओर से) जी बुरा होना* = किसी के प्रति मन में खिन्नता या दुर्भाव होना; *जी मिचलाना* = उलटी या कै मालूम होना; *जी में आना* = मन में विचार उत्पन्न होना; (किसी को) प्रसन्न करने के लिए कोई प्रिय या अनुकूल काम करना; *जी लगना* = कोई काम अच्छा लगने पर मन का उसमें प्रवृत्त और लीन होना; *जी से* = मन लगाकर, ध्यान देकर; *जी से जाना* = मर जाना।
हिम्मत, साहस; संकल्प, विचार।
निपा. {सं. जित् या श्री (युत)} कुछ कहने या बुलाए जाने पर उत्तर में कहा जानेवाला एक आदरसूचक शब्द; नाम के साथ लगनेवाला सम्मानसूचक शब्द; बड़े के कथन, प्रश्न या संबोधन के उत्तर में संक्षिप्त प्रतिसंबोधन के रूप में कहा जानेवाला शब्द।

जीअ पुं. जी और जीव।

जीअन पुं. जीवन।

जीगन पुं. जुगनूँ, खद्योत।

जीजा पुं. {हिं. जीजी} बड़ी बहन का पति।

जीत *स्त्री.* {सं. जिति} जीतने की क्रिया या भाव, लड़ाई में शत्रु या विपक्षी को दबाकर प्राप्त की जानेवाली सफलता, जय, विजय, फतह; ऐसी प्रतियोगिता में मिलनेवाली सफलता, जिसमें दो या अधिक विरुद्ध पक्ष हों; लाभ, फायदा।

जीतना *स.* {हिं. जीत + ना (प्रत्य.)} लड़ाई में शत्रु या विपक्षी के विरुद्ध सफल होना, विजय पाना; प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करना।

जीता *वि.* {हिं. जीना} जिसमें जीवन या जान हो, जीवित; तौल या नाप में उचित से थोड़ा अधिक या बढ़ा हुआ।

जीन *स्त्री.* {फा.} घोड़े की पीठ पर रखने की गद्दी, चारजामा; एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा; *वि.* जीर्ण।

जीनपोश पुं. {फा.} वह कपड़ा, जो घोड़े की जीन के ऊपर रखा जाता है।

जीनसवारी *स्त्री.* {फा.} घोड़े की पीठ पर जीन रखकर की जानेवाली सवारी।

जीना[1] *अ.* {सं. जीवन} जीवित रहकर जीवन बिताना, जिंदा रहना।
मुहा. जीना भारी हो जाना = जीवन कष्टकर होना।
अभीष्ट वस्तु पाकर बहुत प्रसन्न होना।

जीना[2] *वि.* जीर्ण; झीना।

जीना[3] पुं. {फा. ज़ीन} सीढ़ी।

जीभ *स्त्री.* {सं. जिह्वा} मुँह के अंदर का वह लंबा-चिपटा मांसपिंड जिससे रसों का आस्वादन और शब्दों का उच्चारण होता है, रसना, जबान।
मुहा. जीभ चलना = भिन्न-भिन्न वस्तुओं का स्वाद लेने की इच्छा होना; मुँह से बहुत बढ़-बढ़कर बातें निकलना, वाचालता होना; *जीभ निकालना* = दंड देने के लिए जीभ उखाड़ लेना; *जीभ पकड़ना* = बोलने न देना, बोलने से रोकना; *जीभ हिलाना* = मुँह से कुछ कहना; जीभ के नीचे जीभ होना = झूठ बोलने की आदत होना।
जीभ के आकार की कोई लंबी वस्तु।

जीभी *स्त्री.* {हिं. जीभ} धातु या लिपिस्टिक का वह पतला धनुषाकार पत्तर जिससे जीभ छीलकर साफ करते हैं; कलम के आगे लगनेवाला धातु का विशेष आकार का वह टुकड़ा जिससे लिखा जाता है (निब)।

जीमना *स.* {सं. जेमन} भोजन करना।

जीमूत पुं. {सं.} पर्वत, बादल, इंद्र; सूर्य।

जीय पुं. जी।

जीयट पुं. जीवट।

जीयति *स्त्री.* {हिं. जीना} जीवन।

जीर[1] पुं. {फा. जिरह} जरह, कवच।

जीर[2] *वि.* {सं. जीर्ण} जीर्ण, पुराना।

जीरन *वि.* जीर्ण।

जीरना *अ.* {सं. जीर्ण} जीर्ण या पुराना होना; कुम्हलाना, मुरझाना; फटना।

जीरा पुं. {सं. जीरक} एक पौधा जिसके सुगंधित छोटे फूल सुखाकर मसाले के काम में लाए जाते हैं; इस आकार की कोई छोटी, महीन, लंबी चीज; फूलों का केसर।

जीर्ण *वि.* {सं.} {*भाव.* जीर्णता} बुढ़ापे के कारण दुर्बल, क्षीण; टूटा-फूटा और पुराना; बहुत दिनों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पुराना, जैसे जीर्ण ज्वर; पेट में अच्छी तरह पचा हुआ, हज़म।

जीर्णता *स्त्री.* {सं.} शारीरिक दुर्बलता; बुढ़ापा।

जीर्णशीर्ण *वि.* {सं.} फटा-पुराना।

जीर्णावस्था *स्त्री.* {सं.} जर्जर स्थिति।

जीर्णोद्धार *पुं.* {सं.} टूटी-फूटी पुरानी वस्तु, मुख्यत: भवन आदि का फिर से उद्धार, सुधार या मरम्मत।

जीला *वि.* झीना, महीन, पतला।

जीलानी *पुं.* {अ.} लाल रंग।

जीवंत *पुं.* जीवित।

जीव *पुं.* {सं.} प्राणियों का वह चेतन तत्व जिससे वे जीवित रहते हैं, प्राण, जान; जीवात्मा, आत्मा; प्राणी, जीवधारी।

जीव-जंतु *पुं.* {सं.} पशु-पक्षी और कीड़े-मकोड़े आदि।

जीवट *पुं.* {सं. जीवथ} हृदय की दृढ़ता, साहस, हिम्मत।

जीवत *वि.* जीवित।

जीवदया *स्त्री.* {सं.} जीवों या प्राणियों पर उनके जीवन की रक्षा के विचार से की जानेवाली दया।

जीवदान *पुं.* {सं.} अपने वश में आए हुए शत्रु या अपराधी को बिना उसके प्राण लिए छोड़ देना, प्राणदान; किसी मरते हुए प्राणी की रक्षा करके उसे मरने से बचाना।

जीवधन *पुं.* {सं.} जीवों और पशुओं के रूप में संपत्ति; जीवनधन।

जीवधातु *स्त्री.* {सं.} कुछ विशिष्ट रासायनिक तत्वों से बना हुआ वह पारदर्शक स्वच्छ तत्व या धातु जिसमें जीवनी शक्ति होती है और जो जीवन-जंतुओं, वनस्पतियों आदि के भौतिक स्वरूप का मूल आधार है (प्रोटोप्लाज्म)।

जीवधारी (रिन्) *पुं.* {सं.} प्राणी, जानवर।

जीवन *पुं.* {सं.} {*वि.* जीवित} जीवित रहने का भाव, प्राण-धारण; जन्म से मृत्यु तक का समय, जिंदगी; जीवित रखनेवाली वस्तु, जैसे हवा, पानी अन्न आदि।

जीवनक्रम *पुं.* {सं.} नित्य किए जानेवाले कार्यों का क्रम।

जीवनचरित *पुं.* {सं.} सारे जीवन में किसी के किए हुए कार्यों आदि का वर्णन, जिंदगी भर का हाल (बायोग्राफी)।

जीवनदायी *वि.* {सं. जीवनदायिन्} जीवन देनेवाला।

जीवनधन *पुं.* {सं.} सबसे प्रिय वस्तु या व्यक्ति; *वि.* प्राणप्रिया।

जीवनधार *वि.* {हिं.} जीवरक्षक।

जीवन-नौका *स्त्री.* {सं. जीवन = हिं. नौका} वह छोटी नौका, जो बड़े जहाजों पर इसलिए रखी रहती है कि जब जहाज डूबने लगे, तब लोग उस पर सवार होकर अपनी जान बचा सकें (लाइफ बोट)।

जीवन-प्रमाणक *पुं.* {सं.} इस बात का प्रमाणपत्र कि अमुक व्यक्ति अमुक दिन या तिथि तक जीवित था, अथवा इस समय जीवित है (लाइफ सर्टिफिकेट)।

जीवन-बूटी *स्त्री.* {सं. जीवन + हिं. बूटी} एक पौधा या बूटी जिसके संबंध में कहा जाता है कि यह मरे हुए आदमी को जिला देती है, संजीवनी।

जीवनमुक्त *वि.* {सं.} बार-बार जन्म लेने (तथा मरने) से जिसे छुटकारा मिल गया हो।

जीवपति *स्त्री.* {सं.} सधवा, सुहागवती, सुहागिन, सौभाग्यवती।

जीवप्रभार *वि.* {हिं.} आत्मा।

जीवनमुक्ति *स्त्री.* {सं.} जीवनमुक्त होने की अवस्था या भाव।

जीवनमूरि *स्त्री.* जीवन-बूटी।

जीवनयापन *पुं.* {सं.} जीवन बिताने की क्रिया।

जीवनवृत्त *पुं.* जीवनचरित; जीवनी।

जीवनवृत्ति *स्त्री.* {सं.} जीवन-निर्वाह के लिए मिलने या दी जानेवाली वृत्ति (लिविंग एलाउएंस)।

जीवनसंग्राम *पुं.* जीवन-संघर्ष।

जीवन-संघर्ष *पुं.* {सं.} प्रतिकूल और विकट परिस्थितियों में रहकर अथवा प्रबल शक्तियों का सामना करते हुए अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए किया जानेवाला बहुत बड़ा प्रयत्न (स्ट्रगल फॉर एक्जिस्टेंस)।

जीवना *अ.* = जीवित रहना।

जीवनाघात *पुं.* {सं.} विष, गरल।

जीवांन *स्त्री.* {हिं.} संजीवनी बूटी, प्राणाधार।

जीवनी *स्त्री.* {सं. जीवन} जीवन, जिंदगी; 'जीवन-चरित'; *वि.* जीवन-संबंधी, जैसे जीवनी शक्ति; जीवन देनेवाली।

जीवनी शक्ति *स्त्री.* {सं.} जीवित रहने की शक्ति।

जीवनोपाय *पुं.* {सं.} जीविका।

जीवनोपयोगी *वि.* {सं. जीवनोपयोगिन्} जीवन के लिए उपयोगी।

जीवरा *वि.* {हिं. जीव} जीव, प्राणी।

जीवरी *पुं.* जीवन।

जीवलोक *पुं.* {सं.} भूलोक, मृत्युलोक, पृथ्वी।

जीवविज्ञान *पुं.* {सं.} वह विज्ञान जिसमें जीव-जन्तुओं और वनस्पतियों आदि की उत्पत्ति,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरूप, विकास और विभागों आदि का विवेचन होता है (बायॅलोजी)।

जीवहत्या *स्त्री.* {सं.} प्राणियों का वध, मार डालना।

जीवांतक *वि.* {सं.} जीवों या जीवन का अन्त या नाश करनेवाला।

जीवाणु *पुं.* {सं.} सेंद्रिय जीवों का वह मूल और बहुत सूक्ष्म रूप जो विकसित होकर एक नए जीव का रूप धारण करता है; जीवयुक्त अणु जो प्रायः अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं।

जीवात्मा *पुं.* {सं.} वह तत्व जो प्राणियों की चेतन वृत्ति या जीवन का मूल कारण है; जीव, आत्मा।

जीवाधान *पुं.* {सं.} शरीर, देह।

जीवाधार *पुं.* {सं.} हृदय, आत्मा का स्थान।

जीवानुज *पुं.* {सं.} गर्गाचार्य मुनि।

जीवावशेष *पुं.* {सं.} बहुत प्राचीन काल के जीव-जंतुओं, वनस्पतियों आदि के वे अवशिष्ट रूप, जो जमीन खोदने पर उसके भीतरी स्तरों में दबे हुए मिलते हैं (फॉसिल)।

जीवाश्म *पुं.* जीवावशेष।

जीविका *स्त्री.* {सं.} वह काम जो जीवन के निर्वाह के लिए किया जाए, जीवनोपाय, रोजी, वृत्ति।

जीविकोपार्जन *पुं.* {सं.} जीविका चलाने के लिए धन अर्जित करने का कार्य।

जीवित *वि.* {सं.} जीता हुआ, जिंदा।

जीवितेश *पुं.* {सं.} ईश्वर; स्वामी, पति।

जीवी *वि.* {सं. जीविन्} जीवनवाला, प्राणधारी; किसी जीविका से पेट भरनेवाला, जैसे श्रमजीवी।

जीवीय *वि.* {सं.} जीव-संबंधी।

जीवेतर *वि.* {सं.} जीव से भिन्न।

जीवेश *पुं.* {सं.} जीवों का स्वामी, ईश्वर, परमात्मा; प्रियतम।

जीह, जीहा *स्त्री.* जीभ।

जुंबिश *स्त्री.* {फा.} हिलना-डुलना, गति।

जु *वि., क्रि. वि.* जो।

जुआ[1] *पुं.* {सं. युग} गाड़ी के आगे की वह लकड़ी जो बैलों के कंधे पर रहती है; चक्की में की वह लकड़ी जिसे पकड़कर वह चलाई जाती है।

जुआ[2] *पुं.* {सं. द्युत, प्रा. जुआ} वह खेल जिसमें हारनेवाले को कुछ धन देना पड़ता है और वह धन जीतनेवाले को मिलता है, हार-जीत का खेल, द्युत (गैम्बलिंग)।

जुआ-घर *पुं.* {हिं. जुआ + घर} वह स्थान जहाँ बैठकर लोग जुआ खेलते हों, द्युतशाला, जुआखाना।

जुआ-चोर *पुं.* {हिं. जुआ + चोर} भारी धूर्त और ठग।

जुआ-चोरी *स्त्री.* {हिं. जुआ-चोर} बहुत बड़ी धूर्तता या छल, विशेषतः किसी का धन हड़पने के लिए।

जुआठा *पुं.* {?} गाय, भैंस आदि के मुँह पर बाँधी जानेवाली जाली।

जुआरा *पुं.* {हिं.} एक जोड़ी बैल से एक दिन में जोती जानेवाली जमीन।

जुआरी *पुं.* {हिं. जुआ} वह जो प्रायः जुआ खेलता हो, जुआ खेलनेवाला (गैम्बलर)।

जुआल *स्त्री.* = ज्वाला; *पुं.* ज्वाल।

जुई *स्त्री.* {हिं.} छोटी जूँ; सेम-मटर आदि में लगने वाला छोटा कीड़ा।

जुकाम *पुं.* {अ. ज़ुकाम} एक प्रसिद्ध रोग जिसमें नाक तथा मुँह से कफ़ या पानी निकलता है, प्रतिश्याय, सरदी (कोल्ड)।

मुहा. मेंढकी को भी जुकाम होना = छोटे मनुष्य को भी बड़ा काम करने का साहस करना या बड़ों की बराबरी करना।

जुक्ति *स्त्री.* युक्त।

जुग *पुं.* {सं. युग्म} जोड़ा, युग्म; चौसर के खेल में दो गोटियों का एक ही घर में आकर बैठना; *पुं.* युग।

जुगजुग *क्रि. वि.* {सं. युग} अनेक युगों तक, बहुत दिनों तक, चिरकाल तक।

जुगजुगी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

जुगजुगाना *अ.* {हिं. जगना} रह-रहकर थोड़ा-थोड़ा चमकना, टिमटिमाना; नया जीवन पाकर हीन दशा से कुछ अच्छी दशा में आना, उभरना।

जुगत *स्त्री.* {सं. युक्ति} कोई विकट काम ठीक तरह से पूरा करने की युक्ति, उपाय।

जुगती *पुं.* {हिं. जुगत} अनेक प्रकार की युक्तियाँ निकालने या लगानेवाला; चालाक; *स्त्री.* जुगत (युक्ति)।

जुगनी *स्त्री.* जुगनूँ।

जुगनूँ *पुं.* {हिं. जुगजुगाना} एक बरसाती छोटा कीड़ा जिसका पिछला भाग रात को खूब चमकता है, खद्योत, पटबीजना; पान के आकार का गले का एक गहना, रामनामी।

जुगम *वि.* युग्म।

जुगल *वि.* युगल।

जुगवना *स.* {सं. योग + अवना (प्रत्य.)} संचित या इकट्ठा करना; सँभालकर रखना।

जुगाना *स.* जुगवना।

जुगालना *अ.* {सं. उद्गिलन} चौपायों का जुगाली या पागुर करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुगाली *स्त्री.* {हिं. जुगालना} सींगवाले चौपायों की वह चर्या जिसमें वे निगले हुए चारे को गले से थोड़ा-थोड़ा निकालकर फिर से चबाते हैं, पागुर।

जुगुत *स्त्री.* जुगत; युक्ति, उपाय।

जुगुप्सा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* जुगुप्सित} निंदा, बुराई; अश्रद्धा; घृणा।

जुगुप्सु *वि.* {सं.} निंदक, बुराई करनेवाला।

जुगुल *वि.* {हिं.} युग्म, जोड़ा।

जुज *पुं.* {फा. जुज़, मि. सं. युज्} अंग, अंश; कागज की वह शीट जिस पर फार्म छापा जाता है।

जुजबंदी *स्त्री.* {फा. जुज़ + बंदी} पुस्तकों की एक प्रकार की सिलाई जिसमें एक-एक फार्म को बारी-बारी से सिया जाता है।

जुझवाना *पुं.* {हिं.} 'जूझना' का प्रे., लड़ा देना।

जुझाऊ *वि.* {हिं. जूझ + आऊ (प्रत्य.)} जुझार; लड़ाई में काम आनेवाला, युद्ध-संबंधी, सैनिक।

जुझारू *वि.* {हिं. जूझना + आरू प्रत्य.)} जूझने या लड़नेवाला, लड़ाका; वीर और योद्धा, बहादुर।

जुट *पुं.* {सं. युक्त} जोड़ा, गुट।

जुटना *अ.* {सं. युक्त + ना (प्रत्य.)} चीजों का इस प्रकार मिलना कि उनका कोई अंग या तल दूसरी वस्तु के किसी अंग या तल से दृढ़तापूर्वक लग जाए, संबद्ध या संश्लिष्ट होना, जुड़ना; लिपटना, गुँथना; संभोग करना; एकत्र होना, इकट्ठा होना; कार्य में अध्यवसाय या दृढ़तापूर्वक लगना; मिलना।

जुटाना *स.* हिं. 'जुटना' का सं. भिड़ाना।

जुटाव *पुं.* {हिं. जुटना} जुटने की क्रिया या भाव, जमावड़ा।

जुठारना *स.* {हिं. जूठा} जूठा या उच्छिष्ट करना।

जुठिहारा *पुं.* {हिं. जूठा} {*स्त्री.* जुठिहारी} दूसरों का जूठा खानेवाला।

जुड़ना *अ.* {हिं. जुटना} कुछ वस्तुओं का इस प्रकार परस्पर मिलना या सटना कि एक का अंग या तल दूसरी के साथ दृढ़तापूर्वक लग जाए, संबद्ध होना; इकट्ठा होना; एकत्र होना; प्राप्त होना, मिलना; जुतना।

जुड़पित्ती *स्त्री.* {हिं. जुड़ + पित्ती} एक प्रकार का रोग जिसमें सारे शरीर में बड़े-बड़े चकत्ते पड़े जाते हैं और उनमें बहुत खुजली तथा जलन होती है।

जुड़वाँ *वि.* {हिं. जुड़ना} गर्भकाल से ही एक में सटे या जुड़े हुए, यमल (छोटे बच्चे)।

जुड़वाना *स.* {हिं. जुड़ी} शीतल या ठंडा करना; शांत और सुखी करना।

जुड़ाई[1] *स्त्री.* जोड़ाई।

जुड़ाई[2] *स्त्री.* {हिं. जुड़ाना = ठंडा होना} ठंडे होने की क्रिया या भाव, शीतलता, ठंडक।

जुड़ाना[1] *स्त्री.* {हिं. जूड़ी} ठंडा होना; शांत होना; तृप्त होना; *सं.* ठंडा करना, शीतल करना; शांत करना; संतुष्ट या तृप्त करना।

जुड़ाना[2] *स.* {हिं. 'जोड़ना' का प्रे.} जोड़ने का काम दूसरे से कराना; फलित ज्योतिष के अनुसार योग और फल का मिलान कराना, जैसे जन्मपत्री जुड़ाना = वर और कन्या की जन्मपत्रियों का मिलान कराके यह जानना कि दोनों का वैवाहिक संबंध या संयोग कैसा होगा।

जुड़ाव *पुं.* {हिं. जुड़ना + आव (प्रत्य.)} जुड़ने की क्रिया या भाव।

जुड़ावना *अ.* = जुड़ाना; *स.* = जुड़वाना।

जुत *वि.* युक्त या युत।

जुतना *अ.* {हिं. युक्त} बैल, घोड़े आदि पशुओं का हल, गाड़ी आदि में लगना, जोता जाना, नधना; किसी काम में परिश्रमपूर्वक लगना।

जुतवाना *स.* हिं. 'जोतना' का प्रे.।

जुताई *स्त्री.* {हिं. जोतना} जोतने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जुतियाना *सं.* {हि. जूता + इयाना (प्रत्य.)} जूते से मारना।। अत्यंत अनादर करना।

जुदा *वि.* {फा.} पृथक्, अलग; भिन्न, निराला।

जुदाई *स्त्री.* {फा.} जुदा होने का भाव; विछोह, वियोग।

जुदेन *वि.* = जुदा (भिन्न)।

जुद्ध *पुं.* युद्ध।

जुनब्बा *स्त्री.* {?} एक प्रकार की तलवार।

जुन्हाई *स्त्री.* {सं. ज्योत्सना, प्रा. जोन्हा} चाँदनी, चंद्रिका।

जुन्हैया *स्त्री.* जुन्हाई।

जुपना *अ.* {हिं. जुड़ना} (दीपक का) बुझना।

जुबली *स्त्री.* जयन्ती।

जुबान *स्त्री.* = जबान।

जुमकना *अ.* {हिं. जमना} दृढ़तापूर्वक किसी जगह खड़े रहना, डटना।

जुमला *वि.* {फा. जुम्लः} सब, कुल; *पुं.* वाक्य।

जुमा *पुं.* {अ. जुम्अः} शुक्रवार।

जुमिल *पुं.* {?} एक प्रकार का घोड़ा।

जुमेरात *स्त्री.* {अ. जुम् अः + हिं. रात} गुरुवार, बृहस्पतिवार।

जुम्मा *पुं.* = जुमा।

जुर *पुं.* = ज्वर।

जुरझना *अ., स.* = झुलसना।

जुरना *अ.* जुड़ना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुरमाना पुं. {फा. जुर्मान:} वह दंड जिसमें अपराधी से कुछ धन लिया जाए, अर्थदंड (फाइन)।

जुरा *स्त्री.* = जरा (बुढ़ापा)।

जुराना *अ.* जुड़ाना।

जुराफा पुं. {अ. जुर्राफ़} एक जंगली पशु जिसकी टाँगें और गर्दन ऊँट की-सी लंबी होती है।

जुरूर *क्रि. वि.* = जरूर।

जुर्म पुं. {अ.} अपराध।

जुर्रत *स्त्री.* {अ. जुरअत} साहस।

जुर्रा पुं. {फा.} नर बाज जो प्राय: पक्षियों का शिकार करने के लिए पाला जाता है।

जुर्राब *स्त्री.* {तु.} मोजा, पायताबा।

जुल पुं. {सं. छल या अ. जुल्लाब का संक्षिप रूप?} धोखा, दमबुत्ता।

जुलकरन पुं. {अ. जुल्कनैन} एक उपाधि जो पहले-पहल अपने मूल रूप में सिकन्दर के नाम के साथ लगाई गई थी और बाद में विकृत रूप में कुछ भारतीय बादशाहों, नवाबों आदि के नाम के साथ लगने लगी थी।

जुलकरनैन पुं. {अ. जुल्कनैंन} यूनान के प्रसिद्ध विजयी बादशाह सिकन्दर की एक उपाधि (विशेष जुलकरन)।

जुलना *अ.* 'मिलना' की अनुकरणवाची क्रिया।

जुलाई *स्त्री.* {अं.} अंग्रेज़ी वर्ष का सातवाँ महीना।

जुलाब पुं. {अ. जुल्लाब} दस्त लाने की ओषधि।

जुलाहा पुं. {फा. जौलाह} {*स्त्री.* जुलाहिन} कपड़ा बुननेवाला, तंतुवाय, तंतुकार।

जुलूस पुं. {अ.} बहुत से लोगों का किसी समारोह के सिलसिले में गाने-बजाने आदि के साथ चलना, शोभा-यात्रा।

जुलोक पुं. {हिं.} द्युलोक, बैकुण्ठ।

जुल्फ *स्त्री.* {फा. जुल्फ़} सिर के वे लंबे बाल जो पीछे या इधर-उधर लटके रहते हैं, पट्टा, कुल्ला।

जुल्फी *स्त्री.* जुल्फ।

जुल्म पुं. {अ. जुल्म} {*वि.* जुल्मी} अत्याचार।

मुहा. जुल्म ढाना = अत्याचार करना; अद्‌भुत काम कर दिखाना।

जुल्मी *वि.* {अ. जुल्मी} जुल्म करनेवाला अत्याचारी; बहुत ही उग्र, प्रबल या विकट, गजब का।

जुल्लाब पुं. जुलाब।

जुव पुं. = युवक।

जुवती *स्त्री.* = युवती।

जुवा पुं. युवा; जुआ।

जुषाण पुं. {सं.} यज्ञ संबंधी मंत्र।

जुष्ट पुं. {सं.} उच्छिष्ट, जूठन; *वि.* सेवा किया हुआ, प्रसन्न।

जुहाना *स.* {सं. यूथ} एकत्र करना, संचित करना; इमारत के काम में लकड़ी, पत्थर आदि यथास्थान बैठाना; चित्र में प्रभाव या रमणीयता लाने के लिए आकृतियों को यथास्थान बैठाना, संयोजन।

जुहार *स्त्री.* {सं. अवहार} क्षत्रियों में प्रचलित एक प्रकार का अभिवादन; अभिवादन, प्रणाम।

जुहारना *अ.* {हिं. जुहार} जुहार या अभिवादन करना

जुही *स्त्री.* जूही, एक प्रकार का पौधा जिसमें बरसात में सुगंधित फूल लगते हैं।

जुहु पुं. {सं.} प्राचीन दिशा, पूर्व दिशा।

जुहुराण पुं. {सं.} चंद्रमा; *वि.* कपट-व्यवहार रखनेवाला।

जुहूवान् पुं. {सं.} यज्ञ की अग्नि।

जूदन पुं. {हिं.} बन्दर, वानर।

जूँ *स्त्री.* {सं. यूका} सिर के बालों में होनेवाला एक छोटा स्वेदज कीड़ा।

मुहा. कानों पर जूँ तक न रेंगना = किसी पर किसी घटना का कुछ भी प्रभाव न पड़ना।

जू *निपा.* {सं. (श्री) युक्त} एक आदरसूचक शब्द जो ब्रज, बुंदेलखंड आदि में बड़ों के नाम के साथ लगता है, जी; *वि.* = जो; *क्रि. वि.* = ज्यों (जैसे)।

जूमुँहा *वि.* {हिं.} धूर्त मनुष्य जो दिखने में सीधा-सादा भला आदमी जान पड़े।

जू *स्त्री.* {सं.} आकाश, सरस्वती, गमन, गीता।

जूआ पुं. = जुआ।

जूजू पुं. {अनु.} बच्चों को डराने के लिए एक कल्पित जीव, हौआ।

जूझ *स्त्री.* {सं. युद्ध} लड़ाई, झगड़ा।

जूझना *अ.* {सं. युध्य} लड़ना, लड़कर मर जाना।

जूट[1] पुं. {सं.} जटा की गाँठ, जूड़ा; लट, जटा।

जूट[2] पुं. {अ.} पटसन।

जूठन *स्त्री.* {हिं. जूठा} किसी के खाने-पीने से बची हुई वस्तु, उच्छिष्ट भोजन; वह पदार्थ जो एक-दो बार पहले काम में लाया जा चुका हो।

जूठा *वि.* {सं. जुष्ठ} {*स्त्री.* जूठी, क्रि. जुठारना} किसी के खाने से बचा हुआ, उच्छिष्ट; जिसका किसी ने पहले उपभोग कर लिया हो, भुक्त; पुं. जूठन।

जूड़ *वि.* {हिं.} ठंडा, प्रसन्न।

जूड़ा पुं. {सं. जूट} सिर के बालों को लपेटकर उनकी बाँधी हुई गाँठ; चोटी, कलगी।

जूड़ी *स्त्री.* {हिं. जूड़ = जाड़ा} जाड़ा देकर आनेवाला ज्वर (मलेरिया)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जूत *वि.* {सं.} बीता हुआ, खींचा हुआ, दिया हुआ।

जूता *पुं.* {सं. युक्त} चमड़े आदि का वह उपकरण जो ठोकर, काँटों आदि से बचने के लिए पैरों में पहना जाता है, पादत्राण।

मुहा. (किसी का) जूता उठाना = किसी की तुच्छ सेवा करना; खुशामद करना; *जूता उछलना या चलना* = मार-पीट होना, झगड़ा होना; *जूता खाना* = जूतों की मार सहना; तिरस्कृत या अपमानित होना; *जूतों दाल बँटना* = आपस में लड़ाई-झगड़ा होना।

जूताखोर *पुं.* {हिं. जूता + फा. खोर = खानेवाला} यह बहुत बड़ा निर्लज्ज जो बराबर घुड़कियाँ, झिड़कियाँ सहकर भी बुरी बातें या आदतें न छोड़ता हो।

जूताचोर *पुं.* जूते चुरानेवाला व्यक्ति।

जूती *स्त्री.* {हिं. जूता} स्त्रियों का जूता; जूता।

मुहा. जूतियाँ चटकाना = व्यर्थ इधर-उधर मारा-मारा फिरना।

जूती-पैजार *स्त्री.* {हिं. जूती + पैजार} जूतों की मार-पीट; बहुत ही भद्दी तरह की लड़ाई।

जूथ *पुं.* यूथ।

जून[1] *पुं.* {सं. द्युवन} समय, काल।

जून[2] *पुं.* {सं. जूर्ण} तृण, घास।

जूप *पुं.* {सं. द्यूत} जुआ, द्युत।

जूमना *अ.* {*अ.* जमा} इकट्ठा होना।

जूर *पुं.* {*अ.* जुरना} जोड़, संचय; ढेर, राशि।

जूरना *स.* {हिं. जूरी = पूला या गड्डी} एक पर एक रखकर गड्डी या थाक लगाना; *स.* जोड़ना।

जूरा *पुं.* जूड़ा।

जूरी[1] *स्त्री.* {हिं. जुरना} घास या पत्तों का पूला, जुट्टी; एक प्रकार का पकवान।

जूरी[2] *पुं.* {*अ.* ज्यूरी} एक प्रकार के परामर्शदाता जो जज के साथ बैठकर मुकदमा सुनते हैं।

जूस[1] *पुं.* {सं. जूष} पकी हुई दाल या उबाली हुई चीज का रस, रसा।

जूस[2] *पुं.* {फा. जुफ्त} युग्म या सम संख्य, जैसे दो, चार, दस आदि।

जूसी *स्त्री.* {हिं. जूस} ईख के पके हुए रस की गाढ़ी तल-छट, चोटा।

जूह[1] *पुं.* यूथ।

जूहर *पुं.* जौहर।

जूही *स्त्री.* {सं. यूथी} एक प्रसिद्ध पौधा जिसके फूल चमेली से मिलते हुए होते हैं।

जृंभ *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* जृंभा, *वि.* जृंभक} जँभाई; आलस्य; उबासी।

जृंभक *वि.* {सं.} जंभाई लेनेवाला; *पुं.* एक अस्त्र जिसके विषय में कहा जाता है कि इसके चलने पर शत्रु जँभाई लेने लगते या सो जाते थे।

जेंउँ *क्रि. वि.* ज्यों।

जेंगना *पुं.* जुगनूँ।

जेंना *स.* जेंवना।

जेंवन *पुं.* {सं. जेमन} भोजन करना, खाना; खाने की चीजें; ज्योनार।

जेंवना *स.* {सं. जेमन} भोजन करना, खाना; अनुचित रूप से दूसरों का धन या वस्तु ले लेना।

जेंवा *पुं.* {हिं. जेंवना} जेंवने या भोजन करने की क्रिया या भाव; भोजन के साथ मिलनेवाली दक्षिणा; पका हुआ भोजन; ज्योनार।

जेंवाना *स.* {हिं. जेंवना} भोजन कराना, खिलाना।

जे *सर्व.* {सं. ये} 'जो' का बहु.।

जेइ, जेउ *सर्व.* 'जो'; जिसने।

जेट *स्त्री.* {हिं.} समूह, ढेर, मिट्टी का पात्र, रोटियों की तह।

जेटी *स्त्री.* {*अ.*} वह स्थान जहाँ जहाजों पर माल चढ़ता या उन पर से उतरता है; बंदरगाह।

जेठ *पुं.* {सं. ज्येष्ठ} वैशाख और आसाढ़ के बीच का महीना, ज्येष्ठ; {*स्त्री.* जेठानी} पति का बड़ा भाई, भसुर।

जेठरा *वि.* {सं. जेठरी} जेठा।

जेठा *वि.* {सं. ज्येष्ठ} {*स्त्री.* जेठी} अग्रज, बड़ा; सबसे अच्छा।

जेठाई *स्त्री.* {हिं. जेठा} 'जेठा' या 'बड़ा' होने का भाव; महत्त्व, बड़प्पन।

जेठानी *स्त्री.* {हिं. जेठ} पति के बड़े भाई की स्त्री।

जेठी *वि.* {हिं. जेठ} जेठ मास का या जेठ में होनेवाला, जैसे-जेठी धान, जेठी कपास; *स्त्री.* जेठ मास का शेषांश जिसमें अगली फसल के लिए जमीन जोती जाती है।

जेठी मधु *स्त्री.* {सं. यष्टिमधु} मुलेठी।

जेता[1] *पुं.* {सं. जेतृ} जीतनेवाला, विजयी।

जेता[2] *वि.* {*स्त्री.* जेती} जितना।

जेतिक *क्रि. वि.* {सं. यः} जितना, जयशील, विजयी, जीतनेवाला; *पुं.* विष्णु।

जेते *वि.* {सं. यः} जितने।

जेतो *वि.* {सं.} उच्च कुल में उत्पन्न; अभिजात; जो बनावटी न हो, असली, सच्चा (जेनुइन)।

जेपी *पुं.* जयप्रकाश नारायण के लिए प्रयुक्त संकेताक्षर।

जेब *पुं.* {फा.} पहनने के कपड़ों में लगी वह छोटी थैली जिसमें चीजें रखते हैं, खीसा, खरीता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेबकट पुं. {फा. जेब + हिं. काटना} वह जो दूसरों के जेब काटकर रुपए-पैसे निकालता हो, गिरहकट।

जेबखर्च पुं. {फा.} खास अपने खर्च के लिए मिलनेवाला धन।

जेबघड़ी *स्त्री.* {फा. जेब + घड़ी} वह छोटी घड़ी जो जेब में रखी जाती है।

जेबरा पुं. {अ.} घोड़े या गधे से मिलता-जुलता एक जंगली पशु।

ज़ेबी *वि.* {फा.} जो जेब में रखा जा सके; जिसका आकार-प्रकार नियमित या साधारण से बहुत छोटा हो।

जेय *वि.* {सं.} जीतने योग्य।

जेर[1] *स्त्री.* आँवल (खेड़ी)।

जेर[2] *वि.* {फा. ज़ेर} {*संज्ञा* जेरबारी} परास्त, पराजित; जो बहुत दबाया या तंग किया गया हो।

जेरी *स्त्री.* = आँवल (खेड़ी), वह झिल्ली जिसमें गर्भ पलता-पुष्ट होता रहता है।

जेल पुं. {अ.} वह जगह जहाँ राज्य द्वारा दंडित अपराधी कुछ समय के लिए बंद रखे जाते हैं, कारागार, बंदीगृह।

जेलखाना पुं. जेल।

जेलर पुं. {अं.} जेल का अधिकारी।

जेलाटिन पुं. {अं.} सरेस की तरह का एक पदार्थ जो मांस, हड्डी और खाल से निकाला जाता है।

जेवनार *स्त्री.* ज्योनार, बहुत से मनुष्यों का एक साथ बैठकर भोजन करना, पंगत, भोज, दावत।

जेवर पुं. {फा. ज़ेवर} गहना, आभूषण।

जेवरी *स्त्री.* {सं. ज्या + वटी} रस्सी

जेह *स्त्री.* {फा. जिह = चिल्ला} धनुष की डोरी में वह अंश जो आँख के पास लाया जाता है और जो निशाने की सीध में रखा जाता है, चिल्ला।

जेहड़ *स्त्री.* {हिं.} पानी से भरे हुए अनेक घड़े जो ऊपर नीचे रखे रहते हैं।

ज़ेहन पुं. {अ. ज़ेहन} {*वि.* जहीन} बुद्धि, समझ; मेधा, दिमाग।

जेहर *स्त्री.* {?} पाजेब (जेवर)।

जेहि *सर्व.* {सं. यस्} जिसको, जिसे; जिससे।

जै[1] *स्त्री.* जय।

जै[2] *वि.* {सं. यावत्} जितने।

जैजैकार *स्त्री.* जयजयकार।

जैत *स्त्री.* {सं. जयति} विजय।

जैतपत्र पुं. {सं. जयति + पत्र} जयपत्र।

जैतवार पुं. {हिं. जैत + वार (वाला)} जीतनेवाला, विजयी, विजेता।

जैतून पुं. {अ.} एक सदाबहार पेड़ जिसके फल दवा के काम में आते हैं।

जैत्र *वि.* {सं.} विजयी, जीतनेवाला; पुं. पारा।

जैत्री *स्त्री.* {सं.} जातीकोष, जावित्री।

जैन पुं. {सं.} भारत का एक अनीश्वरवादी धर्म-संप्रदाय, जिसमें अहिंसा परम धर्म माना जाता है; जैनी; *वि.* जैनियों का।

जैनी पुं. {सं. जैन} जैन मतावलंबी।

जैनु पुं. {हिं. जेंवना} भोजन

जैन्य *वि.* {सं.} जैन-संबंधी।

जैनेतर *वि.* {सं.} जैनियों से भिन्न।

जैमाल *स्त्री.* जयमाला।

जैमिनी पुं. {सं.} एक प्रसिद्ध ऋषि और आचार्य जो पूर्वमीमांसा के कर्ता और प्रवर्तक हैं।

जैव *वि.* {सं.} जीव या जीवन-संबंधी; जीवों या उनके शारीरिक अंगों से संबंध रखनेवाला; जिसमें जीवनी शक्ति और शारीरिक अंग या इंद्रियाँ हों (ऑर्गेनिक)।

जैविक *वि.* {सं.} जैविकी-संबंधी।

जैविकी *स्त्री.* {सं.} विज्ञान की वह शाखा जिसमें जीवों का अध्ययन किया जाता है।

जैस *वि.* जैसा।

जैसा *वि.* {सं. यादृश} {*स्त्री.* जैसी} जिस प्रकार का, जिस तरह का।

पद *जैसे का तैसा* = ज्यों-का-त्यों, जैसा पहले था, वैसा ही।

जितना (केवल विशेषण के साथ); समान, सदृश, तुल्य; *क्रि. वि.* जिस परिमाण का, जितना।

जैसे *क्रि. वि.* {हिं. जैसा} जिस तरह, जिस प्रकार।

जैसे-तैसे *क्रि. वि.* किसी प्रकार; कुछ कठिनता से।

जैसो *वि., क्रि. वि.* जैसा।

जों *क्रि. वि.* ज्यों।

जोंक *स्त्री.* {सं. जलौका} पानी में रहनेवाला एक लंबा कीड़ा जो जीवों के शरीर में लगकर उनका खून चूसता है; वह जो अपना मतलब निकालने के लिए पीछे पड़ जाए।

जोंकी *स्त्री.* {हिं. जोंक} लोहे की एक प्रकार की अँकुड़ी जो पत्थर या लकड़ी के दो टुकड़ों को जोड़ने या एक साथ रखने के लिए लगाई जाती है।

जोंधरी *स्त्री.* {सं. जोंतालिका} छोटी ज्वार; बाजरा (क्व.)।

जोंधैया *स्त्री.* जुन्हाई।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो *सर्व.* {सं. यः} एक संबंधवाचक सर्वनाम जिसका प्रयोग पहले कही हुई किसी बात अथवा पहले आई हुई संज्ञा, सर्वनाम या पद के संबंध में कुछ और कहने से पहले किया जाता है, जैसे वह किताब जो आप ले गये थे, लौटा दीजिए।
योजक {सं. यद्} जदि, अगर।
जोअना *स.* जोवना।
जोइ *स्त्री.* {सं. जाया} जोरू; *सर्व.* जो।
जोइनि *स्त्री.* {सं. योनि} योनि (पशु); आकर, खान।
जोइसी *पुं.* = ज्योतिषी।
जोखना *स.* {सं. जोषण = जाँचना} तौलना, वजन करना।
जोखा *पुं.* {हिं. जोखना} जोखने या नापने-तौलने की क्रिया या भाव।
जोखिउँ *स्त्री.* जोखिम।
जोखिता *स्त्री.* योषिता।
जोखिम *स्त्री.* {सं. जोषण} संकट या विपत्ति की संभावनावाली स्थिति।
मुहा. जोखिम उठाना या सहना = ऐसा काम करना, जिसमें अनिष्ट की संभावना हो।
कोई ऐसा पदार्थ या कार्य, जिसके कारण भारी विपत्ति आ सकती हो।
जोखों *स्त्री.* जोखिम।
जोगंधर *पुं.* {सं. योगंधर} शत्रु के चलाए हुए अस्त्र से अपना बचाव करने की एक प्राचीन युक्ति।
जोग *पुं.* योग।
जोग, के संबंध सू. {सं. योग्य} को, के, निकट, के वास्ते, जैसे भइया जोग प्रमाण (पुरानी हिन्दी)।
जोगड़ा *पुं.* {हिं. जोग + ड़ा (प्रत्य.)} बना हुआ योगी, पाखंडी; बहुत साधारण योगी या साधु।
जोगवना *स.* {सं. योग + हिं. वना (प्रत्य.)} यत्न से रखना; संचित या एकत्र करना; ध्यान रखना; आदर करना; जाने देना, ध्यान न देना; पूरा करना।
जोगवाट *पुं.* जोगौटा।
जोगानल *पुं.* {सं. योगानल} योगशक्ति के द्वारा उत्पन्न की जानेवाली अग्नि।
जोगिंद *पुं.* योगींद्र।
जोगिन *स्त्री.* {सं. योगिनी} 'जोगी' की स्त्री; साधुनी; पिशाचली।
जोगिनी *स्त्री.* योगिनी।
जोगिया *वि.* {हिं. जोगी} जोगी-संबंधी, जोगी का; गेरू के रंग में रँगा हुआ, गैरिक; *पुं.* एक प्रकार का रंग।
जोगी *पुं.* {सं. योगी} {*स्त्री.* जोगिन} एक प्रकार के साधु, जो सारंगी पर भजन गाकर भीख माँगते हैं; योगी।
जोगीड़ा *पुं.* {हिं. योगी + ड़ा (प्रत्य.)} एक प्रकार का चलता गाना; गाने-बजाने वालों का विशेष प्रकार का दल।
जोगू *वि.* {हिं.} स्तुति करनेवाला।
जोगेश्वर *पुं.* योगीश्वर।
जोगौटा *पुं.* {सं. योगपट्ट, प्रा. जोगपट्ट} वह चादर जो योगी लोग योग साधने के समय सिर से पैर तक ओढ़ते हैं।
जोजन *पुं.* योजन।
जोट *पुं.* {सं. योटक} दो चीजों का जोड़ा या जोड़ी; साथी।
जोटा *पुं.* {सं. योटक} जोड़ा, युग; प्रतिपक्षी।
जोटिंग *पुं.* {सं.} शिव।
जोटी *स्त्री.* जोड़ी, बराबरी का कार्य।
जोड़ *पुं.* {सं. योग} कई संख्याओं को जोड़ने की क्रिया (ऐडिशन); कई संख्याओं को जोड़ने से निकलनेवाली संख्या, योग (टोटल); दो या अधिक अंगों, टुकड़ों, पुरजों या पदार्थों के जुड़ने का चिह्न या स्थान, संधि (जाएँण्ट); वह टुकड़ा जो किसी चीज में जुड़ा या लगा हो; एक ही तरह की अथवा साथ-साथ काम में आनेवाली दो चीजें, जोड़ा; बराबरी, समानता; वह जो किसी की बराबरी का हो, जोड़ा (मैच); वे दो व्यक्ति या दल जो किसी प्रतियोगिता में सम्मिलित हों (मैच); एक बार में पहनने के सब कपड़ों का समूह, पूरी पोशाक; दाँव-पेंच।
जोड़-तोड़ *पुं.* {हिं. जोड़ना + तोड़ना} दाँव-पेंच, छल-कपट; विशेष युक्ति का उपाय, तरकीब।
जोड़ती *स्त्री.* जोड़।
जोड़न *स्त्री.* जामन।
जोड़ना *स.* {हिं. जोड़ = बाँधना या सं. युक्त} दो वस्तुओं को किसी प्रकार मिलाकर एक करना; किसी प्रकार का संबंध स्थापित करना; वस्तुएँ या सामग्री क्रम से रखना या लगाना; संचित या एकत्र करना, इकट्ठा करना, जैसे धन जोड़ना, कुनबा जोड़ना, संख्याओं का योगफल निकालना, जोड़ लगाना; वाक्यों या पदों की योजना करना; भद्दी कविता या तुकबंदी करना; (दीया या आग) जलाना।
जोड़वाँ *वि.* {हिं.} एक साथ ही उत्पन्न, एक ही माता के दो बच्चे, यमज, जुड़वाँ।
जोड़-फल *पुं.* {हिं. + सं.} कुल योग।
जोड़वाना *स.* हिं. 'जोड़ना' का प्रे.।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ा पुं. {सं. जकुट या युतक} {स्त्री. जोड़ी} एक ही तरह की दो चीजें; जूते, उपानह; एक आदमी के पहनने के सब कपड़े, पूरी पोशाक; स्त्री और पुरुष या नर और मादा का युग्म; वह जो बराबरी का हो, जोड़।

जोड़ाई *स्त्री.* {हिं. जोड़ना + आई (प्रत्य.)} जोड़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी; दीवार आदि बनाने में ईंटों पर ईंटें रखने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

जोड़ी *स्त्री.* {हिं. जोड़ा} एक ही तरह की दो चीजें, जोड़ा; दो घोड़ों या दो बैलों का युग्म।
मुहा. जोड़ी मिलाना = बराबरी की चीज लाकर सामने रखना; तुलना करना; उपमा देना।
कसरत या व्यायाम करने के दोनों मुग्दर; मँजीरा।

जोड़ीदार पुं. {हिं. + फा.} वह जो हमेशा किसी के साथ रहता हो।

जोत *स्त्री.* {हिं. जोतना} चमड़े का वह तस्मा या मोटी रस्सी, जो एक ओर जोते जानेवाले जानवर के गले और दूसरी ओर खींची जानेवाली चीज में बँधी रहती है; वह रस्सी जिसमें तराजू के पल्ले बँधे रहते हैं; किसी की वह भूमि, जिस पर जोतने-बोनेवाले को कुछ विशिष्ट अधिकार मिल गए हों (होल्डिंग); *स्त्री.* ज्योति।

जोतदार पुं. {हिं. + फा.} दूसरे का खेत जोतने-बोनेवाला व्यक्ति।

जोतना *स.* {सं. योजना या युक्त} गाड़ी, कोल्हू, हल आदि चलाने के लिए उनके आगे घोड़े, बैल आदि बाँधना; जबरदस्ती किसी काम में लगाना; खेत में कुछ बोने से पहले हल चलाना।

जोता पुं. {हिं. जोतना} बहुत बड़ा शहतीर; वह जो हल जोतता हो; जोत।

जोताई *स्त्री.* {हिं. जोतना + आई (प्रत्य.)} जोतने का काम, भाव या मजदूरी।

जोति *स्त्री.* ज्योति।

जोतिक *क्रि. वि.* = जैसा।

जोती *स्त्री.* {हिं. जोतना} जोतने-बोने योग्य भूमि। घोड़े की लगाम, तराजू के पल्ले की रस्सी।

जोता *स.* (हि. क्रि.) देखना।

जोधा पुं. = योद्धा।

जोनि *स्त्री.* = योनि।

जोन्ह (न्हाई) *स्त्री.* जुन्हाई।

जोन्हैया *स्त्री.* जुन्हाई।

जोपै *योज.* {हिं. जो + पर} यदि, अगर; यद्यपि, अगरचे।

जोबन पुं. {सं. यौवन} युवावस्था, यौवनकाल; युवावस्था का सौंदर्य (विशेषत: स्त्रियों का); स्तन (विशेषत: युवती स्त्रियों का); किसी वस्तु का ऊपर से दिखाई पड़नेवाला सौंदर्य या शोभा, यौवन, रौनक, बहार।

जोम पुं. {अ. ज़ोम} उमंग, उत्साह; जोश, आवेश; अभिमान, शेखी।

जोय[1] *स्त्री.* {सं. जाया} पत्नी, जोरू; स्त्री, औरत।

जोय[2] *सर्व.* जो; जिस।

जोयना *स.* जलाना।

जोयसी पुं. ज्योतिषी।

जोर पुं. {फा. ज़ोर} बल, शक्ति।
मुहा. (किसी बात पर) जोर देना = किसी बात को बहुत आवश्यक या महत्वपूर्ण ठहराना; *जोर करना, माना या लगाना* = पूरा प्रयत्न करना।
प्रबलता, तेजी; उन्नति, बढ़ती।
मुहा. जोरों पर होना = पूरे बल पर या बहुत प्रबल होना; खूब उन्नत होना।
वश, अधिकार; वेग; भरोसा, आसरा; व्यायाम, कसरत; पुं. = जोड़।

जोर-जुल्म पुं. {फा. ज़ोर-जुल्म} घोर अत्याचार।

जोरई *स्त्री.* {हिं.} बहुत भारी लंबी धरण, मनुष्यों द्वारा ढोने की क्रिया, एक प्रकार का कीड़ा, जो फसल की पत्तियों को खा जाता है।

जोरदार *वि.* {फा. ज़ोरदार} जिसमें बहुत जोर या बल हो, जोरवाला, बलवान।

जोरना *स.* जोड़ना।

जोर-शोर पुं. {फा. ज़ोर-शोर} बहुत अधिक प्रबलता, तीव्रता या तेजी।

जोरा पुं. = जोड़ा।

जोराजोरी *स्त्री., क्रि. वि.* जबरदस्ती।

जोरावर *वि.* {फा. ज़ोरावर} {*संज्ञा* जोरावरी} शक्तिशाली, बलवान, ताकतवर।

जोरी[1] *स्त्री.* जोड़ी।

जोरी[2] *स्त्री.* {फा. ज़ोर} जबरदस्ती।

जोरू *स्त्री.* {हिं. जोड़ा} स्त्री, पत्नी।

जोलहा पुं. जुलाहा।

जोला पुं. {हिं. जोड़?} गाँठ।

जोलाहल *स्त्री.* ज्वाला।

जोलाहा पुं. = जुलाहा।

जोली *स्त्री.* {हिं. जोड़ी} बराबरी।

जोवना *स.* जोहना।

जोश पुं. {फा.} उफान, उबाल; चित्त की प्रबल वृत्ति, मनोवेग; सगे-संबंधियों में होनेवाले रक्तसंबंध की उत्कट भावना या आवेश।
पद खून का जोश = प्रेम का वह आवेश जो अपने सगे-संबंधी के लिए हो।

जोशन पुं. {फा.} भुजाओं पर पहनने का एक गहना; जिरह-बख्तर।

जोशी पुं. जोषी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोशीला *वि.* {फा. जोश + हिं. ईला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* जोशीली} जिसमें खूब जोश हो, आवेशपूर्ण, जोशवाला।

जोषिता *स्त्री.* {सं.} स्त्री, नारी।

जोषी *पुं.* {सं. ज्योतिषी} गुजराती, महाराष्ट्री और पहाड़ी ब्राह्मणों में एक जाति; ज्योतिषी (क्व.)।

जोह *स्त्री.* {हिं. जोहना} जोहने की क्रिया या भाव; खोज, तलाश; प्रतीक्षा, इंतजार; कृपादृष्टि।

जोहड़ *पुं.* जौहड़।

जोहन *स्त्री.* जोह, प्रतीक्षा, खोज।

जोहना *स.* {सं. जुषण = सेवन} देखना, ताकना; पता लगाना ढूँढ़ना; प्रतीक्षा करना, रास्ता देखना।

जोहर *पुं.* जौहड़।

जोहार *स्त्री.* जुहार, प्रणाम, नमस्कार; *पुं.* जौहर।

जोहारना *अ.* जुहारना, जुहार करना।

जौं *योज.* {सं. यदि} यदि, जो; *क्रि. वि.* 'ज्यों'।

जौंकना *अ.* = जलपना; *हि. क्रि. स.* क्रोधित होकर चिल्लाया।

जौंरा-भौंरा *पुं.* {हिं. भुँइहरा} राजमहलों, किलों आदि में खजाना रखने का तहखाना या तलघर।

जौरे *क्रि. वि.* {फा. जवार} पास, निकट।

जौ[1] *पुं.* {सं. यव} गेहूँ की तरह का एक पौधा जिसके दानों का आटा बनता है; छह राई की एक तौल।

जौ[2] *योज.* {सं. यद्} यदि, अगर; *क्रि. वि.* जब।

जौक *पुं.* {तु. जूक} झुंड, जत्था; सेना, फौज।

जौख *पुं.* {हिं.} सेना, जत्था, पक्षी-समूह।

जौगढवा *पुं.* {हिं.} अगहनिया धान।

जौअना *पुं.* {हिं.} चना मिला हुआ जौ।

जौजा *स्त्री.* {अ.} जोरू, पत्नी।

जौतुक *पुं.* {हिं.} दहेज, यौतुक।

जौवति *स्त्री.* {हिं.} युवती।

जौरा *पुं.* {हिं.} नाऊ-वारी आदि को उनके काम के बदले दिया जानेवाला अन्न।

जौन *सर्व. वि.* {सं. यः} जौ; *पुं.* यवन।

जौपै *योज.* {हिं. जौ + पै} यदि।

जौबति *स्त्री.* युवती।

जौहड़ *पुं.* {पहलवी आबे जोहर = पवित्र जल?} वह गड्ढा जिसमें बरसात का जल भर जाता है; छोटा ताल।

जौहर[1] *पुं.* {फा. गौहर का अरबी रूप} रत्न, बहुमूल्य पत्थर, सार वस्तु, सारांश, तत्व; धारदार हथियार की चमक, ओप, मानी; विशेषता; खूबी; उत्तमता, श्रेष्ठता।

जौहर[2] *पुं.* {हिं. जीवहर} राजपूतों की एक प्रथा जिसमें अपने नगर या गढ़ का पतन निश्चित होने पर स्त्रियाँ और बच्चे दहकती हुई चिता में जल मरते थे; सम्मान की रक्षा के लिए होनेवाली आत्महत्या।

जौहर[3] *पुं.* जौहड़।

जौहरी *पुं.* {फा.} रत्न परखने या बेचनेवाला, रत्नपारखी या रत्नों का विक्रेता; किसी वस्तु के गुण-दोष परखनेवाला, पारखी।

ज्ञ ज् और ञ को योग से बना हुआ एक संयुक्तवर्ण जो अब एक स्वतंत्र वर्ण या अक्षर के रूप में माना जाता है; हिन्दी में इसका उच्चारण 'ग्यँ', मराठी में 'द्न्य' और गुजराती में 'ज्ञ' होता है; प्रत्यय के रूप में यह शब्दों के अंत में लगकर ज्ञाता या जाननेवाले का अर्थ देता है, जैसे बहुज्ञ, विशेषज्ञ।

ज्ञक *वि.* {सं.} ज्ञाता, जाननेवाला।

ज्ञपित *वि.* {सं.} जाना हुआ, देखा हुआ।

ज्ञप्त *वि.* {स.} जाना हुआ।

ज्ञप्ति *स्त्री.* {सं.} किसी को कोई बात जतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव; वह बात जो किसी को जतलाई या बतलाई जाए (इन्फॉरमेशन); जानकारी; बुद्धि।

ज्ञा *स्त्री.* {सं.} जानकारी (कविता में) आज्ञा।

ज्ञात *वि.* {सं.} जाना हुआ, विदित।

ज्ञातयौवना *स्त्री.* {सं.} वह मुग्धा नायिका, जो यह समझती हो कि मेरा पूर्ण यौवनकाल आ गया है।

ज्ञातव्य *वि.* {सं.} जो जाना जा सके, ज्ञेय, बोधगम्य; जिसे जानना हो, जानने योग्य (विषय या बात); जो दूसरों को जतलाया जाने को हो।

ज्ञातक *वि.* {सं.} विदित, जाना हुआ।

ज्ञाता *वि.* {सं. ज्ञातृ} {*स्त्री.* ज्ञात्री} ज्ञान रखनेवाला, जानकार।

ज्ञाति *स्त्री.* जाति, एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य, बांधव, गोती, सपिंड।

ज्ञातित्व *पुं.* {सं.} जाति का धर्म, कर्म या व्यवहार।

ज्ञातिभेद *पुं.* {सं.} जाति से विच्छेद, आपस की फूट।

ज्ञातृत्व *पुं.* {सं.} जानकारी; विज्ञता।

ज्ञान *पुं.* {सं.} {*वि.* ज्ञानीय, ज्ञात, ज्ञातव्य} वस्तुओं और विषयों की वह जानकारी, जो मन या विवेक को होती है, बोध, जानकारी (नॉलेज); यथार्थ बात या तत्त्व की पूरी जानकारी, तत्वज्ञान।

ज्ञानयोग *पुं.* {सं.} ज्ञान द्वारा मोक्ष प्राप्त करने का उपाय या साधन।

ज्ञानराशि *स्त्री.* {सं.} ज्ञान का भंडार।

ज्ञानवान, ज्ञानवान् *वि.* {सं.} ज्ञानी, ज्ञान-प्राप्त।

ज्ञानवृद्ध *पुं.* {सं.} वह जो अपने से बहुत अधिक ज्ञान या पांडित्य से पूर्ण हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानी *वि.* {सं. ज्ञानिन्} जिसे ज्ञान हो, ज्ञानवान; ब्रह्मज्ञानी।

ज्ञानेन्द्रिय *स्त्री.* {सं.} वे पाँच इंद्रियाँ, जिनसे विषयों का ज्ञान होता है, यथा-आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा।

ज्ञानोदय *पुं.* {सं.} ज्ञान की उत्पत्ति।

ज्ञापक *वि.* {सं.} जतानेवाला, सूचक।

ज्ञापन *पुं.* {सं.} {*वि.* ज्ञापित, ज्ञाप्य} जताने या बताने का कार्य या भाव।

ज्ञापित *वि.* {सं.} जताया हुआ, सूचित, बनवाया हुआ।

ज्ञेय *वि.* {सं.} जानने योग्य; जो जाना जा सके; ज्ञातव्य, ज्ञान योग्य।

ज्या *स्त्री.* {सं.} धनुष की डोरी; किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक की रेखा; पृथ्वी।

ज्यादती *स्त्री.* {फा. ज़्यादती} अधिकता, बहुतायत; अत्याचार, जबरदस्ती।

ज्यादा *वि.* {फा. ज़्यादा} अधिक, बहुत।

ज्यान *पुं.* {फा. जियान} हानि, नुकसान; घाटा, टोटा।

ज्याना *स.* जिलाना, जीवित करना।

ज्यामिति *स्त्री.* {सं.} गणित का वह अंग जिसमें पिंडों की नाप-जोख, रेखा, कोण, तल आदि का विवेचन होता है, रेखागणित (ज्यामेट्री)।

ज्यामितिक *वि.* {सं.} ज्यामितीय।

ज्यामितीय *वि.* {सं.} ज्यामिति-संबंधी।

ज्यारना *अ.* जिलाना।

ज्यारा *वि.* {हिं. जिलाना} {*स्त्री.* ज्यारी} जीवन देने या जिलानेवाला।

ज्यावना *स.* जिलाना।

ज्यूँ *क्रि. वि.* ज्यों।

ज्येष्ठ *वि.* {सं.} {*भाव.* ज्येष्ठता, *स्त्री.* ज्येष्ठा} बड़ा, जेठा; वृद्ध, बड़ा-बूढ़ा; पद, मर्यादा, वय आदि में किसी से बड़ा या बढ़कर (सीनियर); *पुं.* जेठ का महीना; परमेश्वर।

ज्येष्ठतम *वि., पुं.* {सं.} सबसे बड़ा, इंद्र।

ज्येष्ठता *स्त्री.* {सं.} ज्येष्ठ होने का भाव; पद, मर्यादा, वय आदि में किसी से बड़े या ज्येष्ठ होने की क्रिया या भाव (सीनियॉरिटी)।

ज्येष्ठा *स्त्री.* {सं.} अठारहवाँ नक्षत्र, जो तीन तारों का है; अपने पति की सबसे अधिक प्यारी स्त्री; सपत्नियों में जो सबसे पहले ब्याहकर आई हो; मध्यमा उँगली; *वि. स्त्री.* बड़ी।

ज्येष्ठामलक *पुं.* {सं.} निंबवृक्ष, नीम का पेड़।

ज्येष्ठाश्रम *पुं.* {सं.} उत्तमाश्रम, गृहस्थ।

ज्यों *क्रि. वि.* {सं. यथा} जिस प्रकार, जैसे, जिस तरह या ढंग से।

पद **ज्यों-त्यों** = किसी न किसी प्रकार। जिस क्षण, जिस समय।

पद **ज्यों-ज्यों** = जिस क्रम से; जिस मात्रा में, जितना।

क्रि. वि. मानो, जैसे।

ज्योतिःशास्त्र *पुं.* {सं.} सूर्यादिग्रह, ज्योतिष-ज्ञान।

ज्योतिशिखा *स्त्री.* {सं.} विषम वर्णग्रहों का भेद।

ज्योतिशिखा *स्त्री.* {सं.} प्रकाश की लपट लौ; अग्नि; सूर्य; दृष्ट; परमात्मा।

ज्योतिक *पुं.* = ज्योतिषी।

ज्योतित *वि.* {सं. ज्योति} ज्योति से भरा हुआ, प्रकाशमान, चमकता हुआ।

ज्योतिर्मय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* ज्योतिर्मयी} प्रकाशमय, जगमगाता या चमकता हुआ।

ज्योतिर्मान *वि.* ज्योतिर्मय।

ज्योतिरीश *पुं.* {सं.} सूर्य, परमेश्वर।

ज्योतिर्लिंग *पुं.* {सं.} शिव; शिव के प्रधान लिंग जो बारह हैं।

ज्योतिर्विद, ज्योतिर्विद् *पुं.* {सं.} ज्योतिषी।

ज्योतिष *पुं.* {सं.} वह विद्या जिससे ग्रहों, नक्षत्रों आदि की दूरी, गति आदि जानी जाती है; यह गणित (एस्ट्रॉनोमी) और फलित (एस्ट्रॉलोजी) दो प्रकार का होता है।

ज्योतिषी *पुं.* {सं. ज्योतिषिन्} ज्योतिषशास्त्र विशेषतः फलित ज्योतिष का ज्ञाता, दैवज्ञ।

ज्योतिष्मान *वि.* {सं. ज्योतिष्मान्} {*स्त्री.* ज्योतिष्मती} चमकता हुआ, प्रकाशमान; *पुं.* सूर्य का एक नाम।

ज्योतिरथ *पुं.* {सं.} ध्रुव नक्षत्र।

ज्योतिरस *पुं.* {सं.} एक प्रकार का रत्न।

ज्योत्स्ना *स्त्री.* {सं.} चंद्रमा का प्रकाश, चाँदनी; चादनी रात।

ज्योत्स्नात *वि.* {सं.} चाँदनी में नहाया हुआ।

ज्योनार *स्त्री.* {जेमन = खाना} बहुत से लोगों का साथ बैठकर होनेवाला भोजन, भोज, दावत; पका हुआ भोजन, रसोई।

ज्योरी *स्त्री.* {सं. जीवा} रस्सी।

ज्योहित, ज्योहर *पुं.* आत्महत्या; 'जौहर' (राजपूतों की एक रस्म)।

ज्यौ *पुं.* जीव; जी (मन)।

ज्यौतिष *वि.* {सं.} ज्योतिष-संबंधी।

ज्योत्सन *वि.* {सं.} दीप्त, जगमगाता हुआ।

ज्वर *पुं.* {सं.} शरीर की अस्वस्थता का सूचक ताप, बुखार।

ज्वरनाशक *वि.* {सं.} ज्वर को दूर करनेवाला।

ज्वरा *स्त्री.* {सं. जरा} मृत्यु।

ज्वर्रा *पुं.* 'जुर्रा' (पक्षी)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chen... eGangotri

ज्वरार्त *वि.* {सं.} ज्वर से पीड़ित।
ज्वरित *वि.* {सं.} ज्वर से ग्रस्त।
ज्वलंत *वि.* {सं.} प्रकाशमान, चमकता हुआ; अत्यंत स्पष्ट।
ज्वलन *पुं.* {सं.} जलने की क्रिया या भाव; जलन, दाह; अग्नि, आग।
ज्वलिनी *स्त्री.* {सं.} मुर्वा नामक लता।
ज्वलनशील *वि.* {सं.} जो सहज ही जल सके।
ज्वलनशीलता *स्त्री.* {सं.} ज्वलनशील होने की अवस्था, गुण या भाव।
ज्वलित *वि.* {सं.} जलता हुआ; चमकता हुआ; उज्ज्वल, स्वच्छ।
ज्वार *स्त्री.* {सं. यवनाल} एक प्रकार का पौधा जिसके दानों की गिनती अनाजों में होती है; समुद्र के जल का खूब लहराते हुए आगे बढ़ना या ऊपर उठना, 'भाटा' का उलटा; *स्त्री.* ज्वाला।
ज्वार-भाटा *पुं.* {हिं. ज्वार + भाटा} समुद्र के जल का खूब लहराते हुए आगे बढ़ना और पीछे हटना, जो चन्द्रमा और सूर्य के आकर्षण से होता है। इसके चढ़ाव को 'ज्वार' और उतार को 'भाटा' कहते हैं।
ज्वालक *वि.* {सं.} प्रज्ज्वलित करने या जलानेवाला; *पुं.* दीपक या लैम्प का वह भाग जो बत्ती के जलनेवाले अंश के नीचे रहता है और जिसके कारण दीपशिखा नीचे के तेल तक नहीं पहुँचने पाती (बर्नर)।
ज्वाल *पुं.* {सं.} अग्निशिखा, अग्नि की लौ, आँच, दीप्ति, प्रकाश।
ज्वाला *स्त्री.* {सं.} अग्निशिखा, लपट; विष आदि की जलन या गरमी; बहुत अधिक गरमी, ताप।
ज्वालादेवी *स्त्री.* {सं.} शारदा-पीठ में स्थित एक देवी, (इनका स्थान कांगड़ा जिले के अंदर डेरा इस्माइल में विद्यमान है)।
ज्वालामुखी (पर्वत) *पुं.* {सं.} वह पर्वत, जिसकी चोटी के गड्ढे में से धुआँ, राख या आग बराबर अथवा समय-समय पर निकला करती हो (वॉल्केनो)।
ज्वालावक्त्र *पुं.* {सं.} महादेव, शिव।
ज्वाली *पुं.* {सं.} शिव, महादेव, दीप्ति, चमक, तेज।
ज्वालेश्वर *पुं.* {सं.} एक प्राचीन तीर्थ-विशेष।

झ

झ देवनागरी वर्णमाला का नवाँ व्यंजन और चवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।
झंकना *अ.* झीखना।
झंकार *स्त्री.* झनकार।
झंकारना *अ., स.* झनकारना।
झंकृत *वि.* {सं.} जिसमें झनकार हुई हो।
झंकृति *स्त्री.* झनकार।
झंखना *अ.* झीखना।
झंखाड़ *पुं.* {हिं. झाड़ का अनु.} घनी या काँटेदार झाड़ी या पौधा; व्यर्थ की और रद्दी चीजों का समूह।
झंगुली *स्त्री.* झग्गा।
झंझट *स्त्री.* {अनु.} बखेड़ा, प्रपंच, टंटा।
झंझर *स्त्री.* {सं. अलिंजर} पानी रखने का मिट्टी का एक प्रकार का छोटा बरतन; सुराही।
झंझरा *वि.* {अनु.} {*स्त्री.* झँझरी} जिसमें बहुत से छोटे-छोटे छेद हों।
झँझरी *स्त्री.* {हिं. झरझर से अनु.} लकड़ी, लोहे आदि में बनाए हुए बहुत-से छोटे-छोटे छेदों का समूह, जाली; झरोखा।
झंझा *स्त्री.* {हिं. झंझरा} वह तेज आँधी जिसके साथ पानी भी बरसता हो।
झंझानिल, झंझावात *पुं.* झंझा।
झंझी *वि. स्त्री.* {हिं. झंझरा} जिसमें बहुत से छेद हों, बेकार, जैसे-झंझी कौड़ी।
झँझोड़ना *स.* {सं. झंझन} कोई चीज झटके से इस तरह हिलाना कि वह टूट-फूट जाए, झकझोरना, नष्ट करना।
झंडा *पुं.* {सं. जयंत} {*स्त्री.* अल्पा. झंडी} वह तिकोना या चौकोर कपड़ा जिसका एक सिरा डंडे में लगा रहता है और जिसका व्यवहार सत्ता, संकेत या उत्सव आदि सूचित करने के लिए होता है, पताका, निशान, ध्वजा।
मुहा. झंडा गाड़ना या फहराना = किसी स्थान पर अपना अधिकार करके चिह्नस्वरूप वहाँ झंडा लगाना; *(किसी के) झंडे के नीचे आना* = अधीनता में आकर अनुयायी बनना।
झंडाभिवादन *पुं.* {हिं. झंडा + सं. अभिवादन} झंडे के आगे सिर झुकाकर उसका अभिवादन और सम्मान करना।
झंडी *स्त्री.* {हिं. झंडा} छोटा झंडा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झँडूला *वि.* {हिं. झंड + ऊला (प्रत्य.)} (बालक) जिसका अभी मुंडन-संस्कार न हुआ हो; घनी पत्तियोंवाला, सघन (वृक्ष)।

झंडोत्तोलन *पुं.* {हिं. झंडा + सं. उत्तोलन} झंडा फहराने की क्रिया या रस्म।

झंप[1] *पुं.* {सं.} उछाल, फलाँग, कुदान-कूदना।

झंप[2] *पुं.* {देश.} घोड़ों के गले का एक गहना।

झँपकना *अ.* झँपना।

झँपना *अ.* {सं. झंप} आड़ में होना, छिपना; उछलना, कूदना; एकदम से जा पहुँचना; टूट पड़ना; झेंपना।

झंपान *पुं.* {सं. झंप} पहाड़ी सवारी के लिए एक प्रकार की खटोली, झप्पान।

झंपित *वि.* {सं. झंप} ढका या छिपा हुआ।

झँपोला *पुं.* {सं. झाँपा} {*स्त्री.* अल्पा. झँपोली} छोटा झाँपा या झाबा, टोकरी।

झंब *पुं.* {देश.} गुच्छा।

झँवकार *वि.* {हिं. झाँवला} झाँवले रंग का, कुछ-कुछ काला।

झँवराना *अ.* {हिं. झाँवला} कुछ काला पड़ना; कुम्हलाना; फीका या मंद पड़ना।

झँवाना *अ.* {हिं. झाँवाँ} झाँवें के रंग का या कुछ काला हो जाना; आग का मंद होकर बुझने को होना; कुम्हलाना, मुरझाना, फीका या मंद होना; *स.* झाँवें के रंग का या कुछ काला कर देना; चमक या आभा घटाना; झाँवें से रगड़ना या रगड़वाना।

झँवैला *वि.* {हिं. झाँवा + ऐला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* झँवैली} झाँवे से रगड़ा हुआ (पैर आदि)।

झँसना *स.* {अनु.} सिर या तलुए आदि पर कोई चिकना पदार्थ रगड़ना; धोखे से धन आदि ले लेना।

झई *स्त्री.* झाईं।

झक *स्त्री.* {अनु.} पागलों की-सी धुन, सनक, खब्त; *वि.* चमकीला, उज्ज्वल।

झकझक *स्त्री.* {अनु.} व्यर्थ की कहासुनी, हुज्जत, तकरार; बकवाद, बकबक, किचकिच।

झकझका *वि.* {हिं.} चमकीला, चमकदार।

झकझकाहट *स्त्री.* {हिं.} जगमगाहट, चमकीलापन।

झकझोर *स्त्री.* {अनु.} झूलने या बार-बार हिलने-डोलने की क्रिया या भाव; झटका।

झकझोरना *स.* झँझोड़ना।

झकझोरा *स.* {अनु.} झटका।

झकझोलना *सं.* {अनु.} जोर-जोर से झटके देना, झँझोड़ना; *अ.* बार-बार हिलना; काँपना।

झकना *अ.* {हिं. झक} झकझक या बकवाद करना।

झका *वि.* {अनु.} चमकीला।

झकाझक *वि.* {अनु.} खूब साफ और चमकता हुआ, उज्ज्वल।

झकुराना *अ.* {हिं. झकोरा} झकोरा लेना, झूमना।

झकोर *स्त्री.* {अनु.} हवा का झोंका; झटका, धक्का; लहर।

झकोरना *अ.* {अनु.} हवा का झोंका मारना।

झकोरा *पुं.* {अनु.} हवा का झोंका।

झक्क *वि.* = झक।

झक्कड़ *पुं.* {अनु.} तेज आँधी; *वि.* झक्की।

झक्की *वि.* {हिं. झक} जिसे कुछ झक या सनक हो, सनकी।

झक्खना *अ.* झीखना।

झख *स्त्री.* {हिं. झीखना} झीखने की क्रिया।

मुहा. झख मारना = व्यर्थ के कामों में समय नष्ट करना।

झखना *अ.* झीखना।

झखमारी *स्त्री.* {हिं. झख + मारना} इख मारने की क्रिया या भाव।

झखी *स्त्री.* {झष} मछली।

झगड़ना *अ.* {अनु.} झगड़ा करना; वाद-विवाद करना, लड़ना, लड़ाई करना।

झगड़ा *पुं.* {हिं. झकझक से अनु.} किसी बात पर होनेवाली कहा-सुनी या विवाद, लड़ाई, हुज्जत, तकरार।

झगड़ालू *वि.* {हिं. झगड़ा} बात-बात पर झगड़नेवाला, कलहप्रिय, लड़ाका।

झगड़ू *वि.* झगड़ालू।

झगर *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का पक्षी।

झगरा *पुं.* = झगड़ा।

झगरी *वि. स्त्री.* झगड़ालू।

झगरू *वि.* झगड़ालू।

झगा *पुं.* {तु. चुगा} बच्चों के पहनने का एक प्रकार का कुरता।

झगुली *स्त्री.* झगा।

झग्गर *पुं.* {हिं.} काँटिया, कुएँ में गिरी वस्तु निकालने हेतु साधन।

झज्झर *स्त्री.* झंझर।

झझक *स्त्री.* {हिं. झझकना} झिझकने की क्रिया या भाव; झुँझलाहट; रह-रहकर होनेवाला पागलपन का हलका दौरा।

झझकन *स्त्री.* झझक।

झझकना *अ.* {अनु.} डर या चौंककर अकस्मात् रुक जाना, ठिठकना; भड़कना, झुँझलाना।

झझकाना *क्रि. स.* {हिं.} झुँझलाना, खिजलाना, चौंकाना, भयभीत करके किसी काम को रोक देना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झझकारना *स.* {अनु.} {*भाव.* झझकार} डाँटना; दुरदुराना; झपटना।

झट *क्रि. वि.* {सं. झटिति} तत्काल, उसी समय, तुरंत, झटपट।

झटकना *स.* {हिं. झट} इस प्रकार झोंके से हिलाना कि गिर पड़े, जोर से झटका या झोंका देना; धोखा देकर या जबरदस्ती किसी से कुछ न लेना, ऐंठना; *अ.* रोग या चिंता से क्षीण होना।

झटका *पुं.* {अनु.} झटकने की क्रिया या भाव; हलका धक्का, झोंका, मांस खाने के लिए पशु-पक्षी काटने का वह प्रकार जिसमें उसे हथियार के एक ही वार से काट डाला जाता है; विपत्ति, रोग, शोक आदि का आघात; कुश्ती की एक युक्ति।

झटकारना *स.* झटकना, जमी हुई धूल को झटका देना।

झटपट *क्रि. वि.* {हिं. झट + अनु. पट} बहुत शीघ्र, तुरंत, तत्काल।

झटिति *क्रि.वि.* {सं.} झट, चटपट, बिना समझे-बूझे।

झड़ *स्त्री.* झड़ी, ताले के भीतर का खटका, जो चाबी से हटता और ताले को खोलता है।

झड़कना *स.* झिड़कना।

झड़झड़ाना *स.* झिड़कना, झँझोड़ना।

झड़न *स्त्री.* {सं. झड़ना} झड़ने की क्रिया या भाव; झड़ी हुई चीज।

झड़ना *अ.* {सं. क्षरण} किसी चीज के छोटे-छोटे अंगों या अंशों का कटकर या टूटकर गिरना; झाड़ा या साफ किया जाना।

झड़प *स्त्री.* {अनु.} थोड़ी कहा-सुनी, सामान्य झगड़ा या तकरार; आवेश, मुठभेड़, क्रोध।

झड़पना *अ.* {हिं. झपटना} वेग से किसी पर आक्रमण करना; लड़ना, झगड़ना; *अ.* झटकना, लड़ना, झगड़ना, किसी से कुछ छीनना।

झड़बेरी *स्त्री.* {हिं. झाड़ + बेर} जंगली बेर।

झड़वाना *स.* {हिं.} 'झाड़ना' का प्रे.।

झड़ाई *स्त्री.* {हिं.} झाड़ने की क्रिया।

झड़ाक *पुं.* {हिं.} तुरंत।

झड़ाका *पुं.* {अनु.} मुठभेड़, झड़प; *क्रि. वि.* झट से, चटपट।

झड़ाझड *क्रि. वि.* {अनु.} लगातार, अविरल।

झड़ी *स्त्री.* {हिं. झड़ना} किसी चीज से लगातार कुछ झड़ने की क्रिया; कुछ समय तक लगातार होनेवाली वर्षा; लगातार बहुत-सी बातें कहते जाना या चीजें रखते जाना; लगातार होती रहनेवाली कोई क्रिया।

झन *स्त्री.* {हिं.} किसी धातु-खंड को आघात करने से उत्पन्न शब्द।

झनक *स्त्री.* {अनु.} झनझन शब्द।

झनकना *अ.* {अनु.} झनकार का शब्द करना; क्रोध आदि में हाथ-पैर पटकना; झीखना।

झनक-मनक *स्त्री.* {हिं.} आभूषण आदि का मधुर शब्द।

झनकवात *स्त्री.* {हिं. झनक + सं. वात} एक प्रकार का वातरोग।

झनकवाह *वि.* {हिं. झनकना} झनकनेवाला।

झनकार *स्त्री.* {सं. झंकार} झनझन शब्द, झनझनाहट; झींगुर आदि छोटे कीड़ों के बोलने के शब्द।

झनझकारना *अ., स.* {अनु.} झनझन शब्द होना या करना।

झनझन *स्त्री.* {अनु.} छैने के बजने का शब्द।

झनझनाना *अ., स.* झनझन शब्द होना या करना।

झनस *पुं.* {?} एक प्रकार का बाजा।

झनाझन *स्त्री.* {अनु.} झंकार का शब्द; *क्रि. वि.* झनझन शब्द के साथ।

झनिया *वि.* झीना।

झन्नाटा *पुं.* {हिं. झनझन} जोर से होनेवाला झनझन शब्द।

झन्नाटेदार *वि.* झनझन शब्द करनेवाला; खूब तेज (दौड़नेवाला)।

झन्नाहट *स्त्री.* {हिं. झनझनाना + आहट (प्रत्य.)} झनझनाने की क्रिया या भाव।

झप *क्रि. वि.* {सं. झंप} जल्दी से, शीघ्रता से, तुरंत।

झपक *स्त्री.* {हिं. झपकना} पलक गिरने भर का समय; झपकी।

झपकना *अ.* {अनु.} पलक का गिरना; झपकी लेना, ऊँघना।

झपका *पुं.* {हिं.} हवा का झोंका, वायु का वेग।

झपकाना *स.* {अनु.} पलक गिराना।

झपकी *स्त्री.* {हिं. झपकना} हलकी नींद; आँख झपकने की क्रिया या भाव।

झपकौंहाँ *वि.* {हिं. झपकना} {*स्त्री.* झपकौंहीं} नींद या नशे से झपकता हुआ (नेत्र)।

झपट *स्त्री.* {सं. झंप} झपटने की क्रिया या भाव; झड़प।

झपटना *अ.* {सं. झंप} आक्रमण करने या चलने के लिए तेजी से आगे बढ़ना।

झपटान *स्त्री.* {हिं. झपटना} झपटने की क्रिया या भाव, झपट।

झपटाना *स.* {हिं.} 'झपटना' का प्रे.।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झपटानी पुं. {हिं. झपटना} एक प्रकार का लड़ाई का हवाई जहाज, जो झपटकर शत्रुओं के हवाई जहाजों पर आक्रमण करता है।
झपट्टा पुं. झपट।
झपड़ियाना *स.* {हिं. झापड़} एक पर एक झापड़ मारते चलना।
झपताल पुं. {सं. झंप + ताल} संगीत में एक प्रकार का ताल।
झपना *अ.* {अनु.} (पलकों का) गिरना, आँखें झपकना; झुकना; झेंपना; हैरान या परेशान होना, जैसे लपना-झपना; पुं. {*स्त्री.* अल्पा. झपनी} किसी चीज के ऊपर का आवरण, ढकना।
झपनी *स्त्री.* {हिं. झाँपना} झाँपे, पिटारी आदि के ऊपर का ढकना।
झपलैया' *स्त्री.* झँपोला।
झपाका पुं. {हिं. झप} शीघ्रता; *क्रि. वि.* झट से, चटपट।
झपाटा पुं. {हिं. झपट} झपट, चपेट।
झपाना *स.* {हिं. झपना} झपका या मुँदा हुआ; नशे या नींद से झपकता हुआ (नेत्र); लज्जित।
झपिया *स्त्री.* {हिं.} स्त्रियों के गले में पहनने वाला एक आभूषण।
झपेट *स्त्री.* झपट।
झपेटना *स.* {अनु.} आक्रमण करके दबा लेना, दबोचना; झिड़कना।
झपेटा पुं. {अनु.} चपेट, झपट; भूत, प्रेत आदि की बाधा; झिड़की।
झप्पान पुं. झपान; चार आदमियों द्वारा ढोनेवाली एक प्रकार की पहाड़ी डोली।
झबझबी *स्त्री.* {हिं.} कान में पहननेवाला एक प्रकार का आभूषण।
झबरा *वि.* {अनु.} {*स्त्री.* झबरी} बहुत लम्बे-लम्बे बिखरे हुए बालोंवाला।
झबरीला *वि.* झबरा; जिसके बाल बिखरे हुए तथा लम्बे हों।
झबा पुं. झब्बा।
झबार पुं. = झगड़ा, लड़ाई, बखेड़ा, टंटा।
झबिया *स्त्री.* {हिं. झब्बा} छोटा झब्बा या फुँदना।
झबूका पुं. {?} एकदम से चौंक उठने की क्रिया या भाव।
झब्बा पुं. {अनु.} तारों या सूतों आदि का गुच्छा या फुँदना, जो कपड़ों या गहनों में शोभा के लिए लगाते हैं।
झमक *स्त्री.* {अनु.} 'चमक' का अनुकरण; प्रकाश, उजाला; झमझम-शब्द; नखरे या ठसक की चाल।
झमकना *अ.* {हिं. झमक} रह-रहकर चमकना; झमझम शब्द या झनकार होना; लड़ाई में हथियारों का चमकना और खनकना।
झमकाना *स.* {हिं. झमकना का *स.*} चमकाना; गहने या हथियार आदि दिखाने के लिए बजाना और चमकाना।
झमकार *वि.* {हिं. झमझम} बरसनेवाला (बादल)।
झमकीला *वि.* {हिं. झमकना} चमकीला; चंचल।
झमझम *स्त्री.* {अनु.} घुँघरू आदि के बजने का शब्द, छमछम; पानी बरसने का शब्द; *क्रि. वि.* झमझम शब्द के साथ; चमक-दमक के साथ, झमाझम।
झमझमाना *अ.* {अनु. झमझम} झमझम शब्द करना।
झमना *अ.* {अनु.} झुकना; दबना।
झमरना *अ.* {अनु.} मिलकर एक जगह होना, इकट्ठा या एकत्र होना।
झमा पुं. झाँवाँ।
झमाका पुं. {अनु.} पानी बरसने या गहनों के बजने का झमझम शब्द; ठसक, नखरा।
झमाझम *क्रि. वि.* {अनु.} कांति या चमक-दमक के साथ।
झमाट पुं. {हिं.} एक में गुँथे हुए अनेक झाड़, झुरमुट।
झमाना *अ.* झँवाना।
झमार पुं. {?} हवा, वर्षा आदि का हलका झोंका।
झमेला पुं. {अनु. झाँवझाँव} बखेड़ा, झंझट, झगड़ा; भीड़-भाड़।
झमेलिया पुं. {हिं. झमेला + इया (प्रत्य.)} झमेला करनेवाला, झगड़ालु।
झर *स्त्री.* {सं.} पानी का झरना, सोता; समूह; लगातार वृद्धि, झड़ी; *स्त्री.* झाल; झलक।
झरक *स्त्री.* = झलक।
झरकना *अ.* झलकना; झिड़कना।
झरझर *स्त्री.* {अनु.} जल के बहने या बरसने अथवा हवा के चलने का शब्द।
झरझराना *स.* {हिं. झरझर} झरझर शब्द के साथ गिराना; झड़झड़ाना।
झरन *स्त्री.* {हिं. झरना} झरने की क्रिया या भाव; झड़न।
झरना¹ *अ.* {सं. क्षरण} झड़ना; ऊँची जगह से पानी या और कोई चीज लगातार गिरना।
झरना² पुं. {सं. झर} ऊँचे स्थान से गिरनेवाला जलप्रवाह; लगातार बहनेवाली पानी की छोटी धारा, सोता, चश्मा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झरना[3] *पुं.* {सं. क्षरण} अनाज छानने की एक प्रकार की छलनी; लम्बी डंडी की झँझरीदार चिपटी कलछी, पौना।

झरना[4] *वि.* {*स्त्री.* झरनी} झरनेवाला।

झरप *स्त्री.* {अनु.} झोंका, झकोर; वेग, तेजी; चिक, चिलमन; झड़प।

झरपना *अ.* {अनु.} बौछार मारना; झड़पना।

झरबेर झरबेरी *स्त्री.* {हिं.} जंगली बेर।

झरसना *अ. स.* {हिं.} झुलसना।

झरहरना *अ.* {अनु.} झरझर शब्द करना।

झरहराना *स.* झरझराना।

झरा *पुं.* {हिं.} पानी से भरे हुए खेत में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का धान।

झराझर *क्रि. वि.* {अनु.} झरझर शब्द के साथ; लगातार, बराबर; वेगपूर्वक, जोर या तेजी से।

झरि *क्रि. वि.* {हिं. झार} बिल्कुल; *वि.* पूरे या सब, कुल।

झरिफ *पुं.* {सं. झरप} चिलमन चिक।

झरी *स्त्री.* {हिं. झरना} पानी का झरना, सोता; वह दैनिक कर, जो किसी बाजार में सौदा रखकर बेचनेवालों से लिया जाता है; झड़ी।

झरुआ *पुं.* {हिं.} एक प्रकार की घास।

झरोखा *पुं.* {अनु. झरझर + गौखा} वायु और प्रकाश आने के लिए दीवारों में बनी हुई जालीदार छोटी खिड़की, गवाक्ष।

झर्झर *पुं.* {सं.} डिडिम, डमरू, बड़ा, ढोल, लोहे का झरना, झाँझ।

झर्झरक *पुं.* {सं.} कलियुग।

झर्झरा *स्त्री.* {सं.} वेश्या, रंडी, पानी का शब्द।

झर्झरिका *स्त्री.* {सं.} तारादेवी।

झर्झरी *स्त्री.* {सं.} झाँझ, नामक बाजा।

झर्झरीक *पुं.* {सं.} शरीर, देह, देश, चित्र।

झरोखेदार *वि.* जिसमें झरोखे हों।

झल *स्त्री.* {सं. ज्वल = ताप} दाह, जलन; उत्कट इच्छा, उग्र कामना; क्रोध, गुस्सा।

झलक *स्त्री.* {सं. झल्लिका} चमक, दमक, आभा; आकृति का आभास या प्रतिबिम्ब; बहुत थोड़े समय के लिए या एक बार जरा-सा होनेवाला सामना या दर्शन; वह प्रधान रंगत या आभा, जो किसी समूचे चित्र में व्याप्त हो।

झलकना *अ.* {सं. झल्लिका} चमकना; कुछ-कुछ प्रकट होना, आभास होना।

झलकनि *स्त्री.* झलक।

झलका *पुं.* फफोला।

झलकाना *स.* {हिं.} झलकना का स.।

झलझल *स्त्री.* {हिं. झलकना} चमक; *क्रि. वि.* रह रह-कर चमकत हुए प्रकाश के साथ।

झलझलाना *अ.* = चमकना; *स.* = चमकाना।

झलझाहट *स्त्री.* {हिं. झलझलाना + आहट (प्रत्य.)} झलझलाने की क्रिया या भाव।

झलना *स.* {हिं. झलझल} हवा करने के लिए पंखा या और कोई चीज हिलाना; *अ.* इधर-उधर हिलाना; झेलना; *अ.* हिं. 'झलना' का *अ.* रूप।

झलमल *पुं.* {सं. ज्वल = दीप्ति} अँधेरे में रह-रहकर होनेवाला हलका या सूक्ष्म प्रकाश; चमक-दमक; *क्रि. वि.* झलझल।

झलमलाना *अ.* {हिं. झलमल} रह-रहकर चमकना, चमचमाना; प्रकाश का हिलना-डोलना; *स.* प्रकाश को हिलाना-डुलाना।

झलरा *पुं.* झालर।

झलरी *स्त्री.* {हिं.} हुडुक नाम का बाजा, झाँझ।

झलराना *अ.* {हिं. झालर} झालर के रूप में या यों ही फैलकर छाना; *स.* झालर के रूप में लगाना या बनाना, झालर का रूप देना।

झला *पुं.* {हिं. झड़} हलकी वर्षा, झड़ी; झालर; पंखा; समूह; {हिं. *स्त्री.*} कन्या, बेटी, धूप, घाम।

झलाई *स्त्री.* {हिं. झालना} झालने की क्रिया, भाव तथा पारिश्रमिक।

झलाईगर *पुं.* {हिं. + फा.} झालने का काम करनेवाला कारीगर।

झलाऊ *वि.* {हिं. झलना या झोल} ढीला-ढाला और लहराता हुआ, झोलदार (कपड़ा)।

झलाझल *वि.* {अनु.} चमकता हुआ; *पुं.* एक प्रकार का चमकीला कपड़ा।

झलाबोर *पुं.* {हिं. झलमल} कलाबत्तू का बुना हुआ साड़ी या दुपट्टे का चौड़ा आँचल; कारचोबी; *वि.* चमकीला।

झलामल *वि.* {अनु.} चमकनेवाला, चमकीला; *स्त्री.* चमक, दीप्ति।

झल्ल *स्त्री.* {अनु.} पागलपन।

झल्ला[1] *पुं.* {हिं. झल्लाना} {*स्त्री.* अल्पार्थक झल्ली} बड़ा टोकरा, झाबा; वर्षा, वृष्टि; बौछार।

झल्ला[2] *वि.* {हिं. झल} {*स्त्री.* झल्ली} पागल; मूर्ख।

झल्लिका *स्त्री.* {हिं.} शरीर पोंछने का अंगोछा, तौलिया, शरीर की मैल को उबटन लगाने से निकले, झिल्ली, दीप्ति।

झल्लाना *अ.* {हिं. झल} क्रुद्ध या खिन्न होकर बोलना, खिजलाना, झुँझलाना।

झवा *पुं.* जाँवाँ।

झष *पुं.* {सं.} मछली; मगर; *स्त्री.* झख।

झषकेतु *पुं.* {सं.} कामदेव, मदन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झहनना *अ.* {अनु.} सन्नाटे में आना; रोएँ खड़े होना, रोमांच होना; झनझन शब्द होना।

झहरना *अ.* {अनु.} झरझर शब्द होना; शिथिल या ढीला होना; झल्लाना; हिलना।

झहराना *अ.* झहरना; *स.* हिं. झहरना का *स.*।

झाँई *स्त्री.* {सं. छाया} परछाईं, छाया; अंधकार, अँधेरा; धोखा, छल।

मुहा. झाँई देना या बताना = इधर-उधर की बातें कहकर धोखा देना।

रक्तविकार से पड़नेवाले हलके काले धब्बे; किसी प्रकार की काली छाया या हलका दाग; आभा, झलक।

झाँक *स्त्री.* {हिं झाँकना} झाँकने की क्रिया या भाव, जैसे ताक-झाँक; झलक।

झाँकना *अ.* {सं. अध्यक्ष, प्रा. अज्झक्ख} आड़ में से या इधर-उधर से कुछ झुक या छिपकर देखना।

झाँकनी *स्त्री.* झाँकी।

झाँका *पुं.* झरोखा।

झाँकी *स्त्री.* {हिं. झाँकना} झाँकने की क्रिया या भाव; दर्शन, अवलोकन; दृश्य; झरोखा।

झाँखना *अ.* झीखना।

झाँखर *पुं.* झंखाड़।

झाँझ *स्त्री.* {झनझन से अनु.} मँजीरे की तरह के गोलाकार पीतल के टुकड़ों का जोड़ा, जो पूजन आदि के समय बजाया जाता है, छैना; क्रोध, गुस्सा; पाजीपन, शरारत; झाँझन।

झाँझड़ी-झाँझन *स्त्री.* {अनु.} पैर में पहनने का एक गहना, पैजनी, पायल।

झाँझर *स्त्री.* {अनु.} झाँझन, पायल, पैजनी; छलनी।

झाँझिया *पुं.* {हिं. झाँझ} झाँझ या छैना बजानेवाला।

झाँझी *स्त्री.* {हिं. झँझरी} एक उत्सव जिसमें झँझरीदार हाँड़ी में दीप जलाते हैं।

झाँट *स्त्री.* गुप्तांग के ऊपर के बाल।

झाँप *स्त्री.* {हिं. झाँपना} वह जिससे कोई चीज ढँकी जाए, ऊपरी आवरण; झपकी; कान का एक गहना।

झाँपना¹ *स.* {उत्थापन} आवृत्त करना, आड़ में करना, ढकना; दबोचना; *अ.* झेंपना, लजाना, शरमाना।

झाँपना² *क्रि. स.* {हिं.} आवरण डालना, ढकना, पकड़कर दबा लेना।

झाँपा *पुं.* {हिं. झाँपना} {*स्त्री.* अल्पा. झाँपी} टोकरा, दौरा।

झाँपी *स्त्री.* {हिं.} ढकने की डलिया या टोकरी, मूँज की बनी हुई टोकरी।

झाँव-झाँव *स्त्री.* {अनु.} बकवाद, बकबक; हुज्जत।

झाँवना *स.* झँवाना।

झाँवरा *वि.* झाँवला।

झाँवला *वि.* {सं. श्यामल} झाँवें के रंग का, कुछ-कुछ काला; मुरझाया या कुम्हलाया हुआ; मैला, मलिन; मंद, धीमा।

झाँव *स्त्री.* {हिं. छाँव = छाया} झलक; आँख से किया हुआ संकेत, कनखी।

झाँवाँ *पुं.* {सं. झामक} जली हुई ईंट, जिससे रगड़कर पैर साफ करते हैं।

झाँसना *स.* झँसना; धोखा देना, ठगना, स्त्री को व्यभिचार में प्रवृत्त करना।

झाँसा *पुं.* {सं. अध्यास} बहकाने की चाल, धोखा, दम-बुत्ता।

झाँसू *पुं.* (हिं.) छल करने वाला।

झाँसापट्टी *स्त्री.* बातें बनाकर दिया जानेवाला धोखा।

झा *पुं.* {सं. अध्यास} मैथिल ब्राह्मणों की उपाधि, ओझा; गुजराती ब्राह्मणों में एक वर्ग की उपाधि।

झाऊ *पुं.* {सं. झावुक} एक प्रसिद्ध पौधा।

झाग *पुं.* {हिं. गाज} फेन, गाज।

झागड़ *पुं.* झगड़ा, तकरार।

झाझ *पुं.* = जहाज।

झाट *पुं.* {सं.} लतागृह, ऐसा स्थान जो घनी लताओं से घिरा हो, झाड़ी।

झाटल *पुं.* {सं.} मोरवा नामक वृक्ष।

झाड़¹ *पुं.* {सं. झाट} वह छोटा पेड़ जिसकी डालियाँ जमीन के बहुत पास से निकलकर चारों ओर फैलती हैं; इस आकार का रोशनी करने का शीशे का वह उपकरण, जो छत में लटकाया या जमीन पर रखा जाता है।

झाड़² *स्त्री.* {हिं. झाड़ना} झाड़ने की क्रिया या भाव; फटकार, डाँट-डपट; मंत्र पढ़कर झाड़ने या फूँकने की क्रिया।

झाड़खंड *पुं.* {हिं. झाड़ + खंड} जंगल, वन।

झाड़-झंखाड़ *पुं.* {हिं. झाड़ + झंखाड़} काँटेदार या व्यर्थ के पेड़-पौधों का समूह; निकम्मी और टूटी-फूटी चीजें।

झाड़दार *वि.* {हिं. झाड़ + फा. दार (प्रत्य.)} घनी डालियों या शाखाओं वाला (वृक्ष); कँटीला।

झाड़न *स्त्री.* {हिं. झाड़ना} वह जो झाड़ने पर निकले, गर्द, धूल, कूड़ा; वह कपड़ा जिससे चीजें झाड़ी या साफ की जाती हैं (डस्टर)।

झाड़ना¹ *स.* {सं. शरण या शायन} ऊपर पड़ी हुई चीज झटके से हटाना या गिराना; दूर करना, हटाना; अपनी योग्यता दिखलाने के लिए गढ़-गढ़कर बातें करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झाड़ना[2] *स.* {सं. शरण} किसी चीज पर पड़ी हुई धूल हटाने के लिए उसे उठाकर झटका देना या उस पर झाड़ू देना; किसी चीज पर पड़ी या लगी हुई कोई दूसरी चीज झटके से गिराना, झटकारना; किसी से धन ऐंठना, झटकना; रोग या प्रेतबाधा दूर करने के लिए मंत्र पढ़कर फूँकना; फटकारना, डाँटना; प्रहार करने के लिए चलाना, जैसे हाथ झाड़ना, तलवार झाड़ना।

झाड़-फानूस *पुं.* {हिं. झाड़ + फा. फानूस} शीशे के झाड़, हाँड़ियाँ आदि जो छत में रोशनी और शोभा के लिए टाँगे जाते हैं।

झाड़-फूँक *स्त्री.* {हिं. झाड़ना + फूँकना} रोग या भूत प्रेत आदि की बाधा दूर करने के लिए मंत्र पढ़कर झाड़ना-फूँकना।

झाड़-बुहार *स्त्री.* {हिं.} परिष्कार, शुद्धता, सफाई।

झाड़ा *पुं.* {हिं. झाड़ना} झाड़-फूँक; तलाशी; मल, गुह; पाखना फिरने की जगह, टट्टी।

झाड़ी *स्त्री.* {हिं. झाड़} छोटा झाड़ या पौधा; छोटे पेड़ों का समूह।

झाड़ू *पुं.* {हिं. झाड़न} लम्बी सींकों या रेशों आदि की बना हुआ वह उपकरण, जिससे जमीन या फर्श झाड़ते हैं, कूचा, बुहारी।

मुहा. झाड़ू फिरना = कुछ न बचना। *झाड़ू मारना* = बहुत ही अवज्ञा या तिरस्कारपूर्वक दूर हटाना।

पुच्छल तारा, धूमकेतु।

झापड़ *पुं.* {सं. चपट} थप्पड़, तमाचा।

झाबर *पुं.* दलदली जमीन।

झाबा *पुं.* {हिं. झाँपनी} टोकरा, खाँचा; झब्बा।

झाम *पुं.* {देश.} {*वि.* झामी} झब्बा, गुच्छा; डाँट-फटकार; धोखा, छल।

झामर *पुं.* झूमर।

झामरा *वि.* {हिं. झाँवल} मैला।

झामा *पुं.* झाँवा।

झामी *पुं.* {हिं. झाँवाँ = झाँसा} चकमा या धोखा देनेवाला, चालबाज, धूर्त।

झायँ-झायँ *स्त्री.* {हिं.} झनझन शब्द, झनकार, सुनसान स्थान में वायु का शब्द होना।

झार[1] *वि.* {सं. सर्व} एक मात्र, निपट, केवल; समस्त कुल, सब।

मुहा. झार-झार = बहुत अधिक।

पुं. समूह, झुंड।

झार[2] *पुं.* {?} प्रयत्न, कोशिश; *स्त्री.* झाल।

झारखंड *पुं.* {हिं. झाड़ + खंड} गोंड़वाने के अंतर्गत एक प्राचीन प्रदेश, जो वैद्यनाथ से जगन्नाथपुरी तक था; जंगल।

झारझांस *स्त्री.* {हिं.} उष्णता, गरमी।

झारा *पुं.* {हिं.} अन्न को स्वच्छ करने की पवली चलनी, झरना।

झारना *स.* झाड़ना।

झारी *स्त्री.* {हिं. झरना} पानी रखने का एक प्रकार का लम्बा टोंटीदार बरतन; *वि.* झार।

झाल[1] *पुं.* {सं. झल्लक} झाँझ (बाजा)।

झाल[2] *स्त्री.* {सं. झाला} चरपराहट, तीतापन; तरंग, लहर; वर्षा की झड़ी; ज्वाला, जलन, ताप; ईर्ष्या, डाह; अंधकार।

झाल[3] *स्त्री.* {हिं. झड़} वर्षा की झड़ी; बादलों के कारण होनेवाला अँधेरा।

झालना *स.* {?} धातु की चीजों को टाँका लगाकर जोड़ना; पीने की चीज ठंडी करने के लिए बरफ में रखना।

झालर[1] *स्त्री.* {सं. झल्लरी} किसी चीज के किनाने पर शोभा के लिए बनाया या लगाया हुआ लटकनेवाला किनारा; इस आकर की लटकती हुई कोई चीज; झाँझ।

झालर[2] *पुं.* {?} एक प्रकार का पकवान।

झालरना *स.* झलराना।

झाला *पुं.* {सं. झल्ला} कान में पहनने का एक आभूषण; मकड़ी द्वारा बुना गया जाल, जाला।

झालि *स्त्री.* {हिं.} वर्षा की झड़ी, एक प्रकार की काँजी।

झाँव-झाँव *पुं.* {हिं.} कलह, बकवाद।

झाव *पुं.* {सं.} झाऊ नामक पौधा।

झिगुल *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का वृक्ष जिसके पत्तों से लाल रंग बनता है।

झिंगाक *पुं.* {सं.} कर्कटी, ककड़ी।

झिंगिनी *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार का जंगली बड़ा वृक्ष।

झिंझिया *स्त्री.* {हिं.} अनेक छोटे-छोटे छिद्रों वाली हँडिया जिसमें दीपक रखकर लड़कियाँ कुवार (असौज) के महीने में गीत गाती हुई घूमती-फिरती हैं।

झिंगुली *स्त्री.* छोटा झग्गा।

झिक्का *पुं.* {?} जोरों की लड़ाई, विकट युद्ध।

झिझक *स्त्री.* {अनु.} झिझकने की क्रिया या भाव; कोई काम करने में भय आदि के कारण होनेवाला संकोच।

मुहा. झिझक खुलना = एक बार कुछ कर चुकने पर उसके विषय में भय या संकोच दूर होना।

झिझकना *अ.* झझकना।

झिझकारना *स.* झझकारना; झटकना; झिड़कना।

झिड़कना *स.* {अनु.} अवज्ञा या तिरस्कार पूर्वक बिगड़कर कड़ी बात कहना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झिड़की *स्त्री.* {हिं. झिड़कना} झिड़ककर कही हुई बात, डाँट, फटकार।

झिन *वि.* झीना।

झिनवा *पुं.* {?} एक प्रकार का धान या उसका चावल।

झिपना *अ.* झेंपना।

झिपाना *सं. हिं.* झेंपना का *स.*।

झिरना *अ.* झरना।

झिरी *स्त्री.* {हिं. झरना} वह छोटा छेद, जिसमें से कोई चीज किलती रहे; पानी का छोटा सोता; पाला, तुषार।

झिलना *अ.* {?} जबरदस्ती अंदर घुसना या धँसना; तृप्त होना, अघाना; झेला या सहा जाना।

झिलम *स्त्री.* {हिं. झिलमिला} लोहे की वह टोपी, जो युद्ध के समय सिर और मुँह पर पहनी जाती थी, खोद।

झिलमा *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का धान।

झिलमिल *स्त्री.* {अनु.} हिलता हुआ प्रकाश; एक प्रकार का बढ़िया और मुलायम कपड़ा; झिलम; *वि.* रह-रहकर चमकता हुआ।

झिलमिला *वि.* {अनु.} चमकता हुआ; जो बहुत स्पष्ट न हो।

झिलमिलाना *अ.* {अनु.} {*भाव.* झिलमिलाहट} रह-रहकर चमकना; प्रकाश का रह-रहकर हिलना; *सं.* किसी चीज को हिलाकर बार-बार चमकाना; हिलना।

झिलमिली *स्त्री.* {हिं. झिलमिल} बेड़ी तीलियों या पटरियों की बनावट, जो किवाड़ों में हवा या प्रकाश आने के लिए लगी रहती है, खड़खड़िया; चिक, चिलमन।

झिलाना *सं. हिं.* 'झेलना' का प्रे.।

झिल्लड़ *वि.* {हिं. झिल्ली} पतला और झँझरा, 'गफ' का उलटा।

झिल्ली[1] *स्त्री.* {सं.} झींगुर।

झिल्ली[2] *स्त्री.* {सं. चैल} ऊपर की ऐसी पतली तह, जिसके नीचे की चीज दिखाई दे।

झिल्लीदार *वि.* {हिं.} जिसके ऊपर की तह बहुत पतली हो, जिस पर झिल्ली हो।

झींकना *अ.* झींखना।

झींका *पुं.* {देश.} उतना अन्न जितना एक बार चक्की में पीसने के लिए डाला जाए।

झींख *स्त्री.* = झीख।

झींखना *अ.* = झीखना।

झींगा मछली *स्त्री.* नदियों में मिलनेवाली एक प्रकार की मछली।

झींगुर *पुं.* {अनु. झींझीं} एक छोटा बरसाती कीड़ा, जो बहुत तेज झींझीं शब्द करता है।

झींसी *स्त्री.* {अनु. या हिं. झीना} छोटी-छोटी बूँदों की वर्षा, फुहार।

झीख *स्त्री.* {हिं. खीज} खीझने की क्रिया या भाव, कुढ़न।

झीखना *अ.* {हिं. खीजना} पछताना और कुढ़ना; अपना दुखड़ा रोना।

झीझा *वि.* {हिं. झीना} मंद, धीमा।

झीना *पुं.* {सं. क्षीण} बहुत महीन, झिल्लड़, बारीक (कपड़ा); जिसमें पास-पास बहुत से छेद हों, झँझरा; दुबला, दुर्बल।

झीनासारी *पुं.* {?} एक प्रकार का धान या उसका चावल।

झील[1] *स्त्री.* {सं. क्षीर} लंबा-चौड़ा प्राकृतिक जलाशय या तालाब, सर।

झील[2] *स्त्री.* {?} झोंका, झटका।

झीलर *पुं.* {हिं. झील} बरसाती पानी का प्राकृतिक गड्ढा या छोटी झील (पांड)।

झीवर *पुं.* {सं. धीवर} मल्लाह।

झुँझलाना *अ.* {अनु.} खिझलाना, चिड़चिड़ाना।

झुँझलाहट *स्त्री.* झुँझलाने की क्रिया या भाव।

झुंड *पुं.* {सं. यूथ} बहुत से मनुष्यों, पशुओं आदि का समूह, वृंद, गिरोह।

झुंडी *स्त्री.* {हिं.} पौधों को काट लेने के बाद बची हुई खूँटी।

झुकना *अ.* {सं. अध्युक्त} ऊपरी भाग का नीचे की ओर कुछ लटक आना, निहुरना, नवना; किसी पदार्थ के एक या दोनों सिरों का किसी ओर दबना; मन का किसी ओर प्रवृत्त होना; नम्र या विनीत होना; बिगड़ना; हार मानना; किसी के ऊपर क्रुद्ध या नाराज होना, बिगड़ना।

झुकरना क्रि. *अ.* {हिं.} क्रुद्ध होना, खिजलाना, चिढ़ना।

झुकराना *अ.* {हिं. झोंका} झोंका खाना।

झुकाई *स्त्री.* {हिं.} झुकाने का कार्य या पारिश्रमिक।

झुकाना *सं.* {हिं. झुकना} किसी खड़ी चीज को झुकने में प्रवृत्त करना, नवाना; प्रवृत्त करना; नम्र करना, विनीत बनाना; हार मनवाना।

झुकामुखी *स्त्री.* झुटपुटा।

झुकार *पुं.* हवा का झोंका या झकोरा।

झुकाव *पुं.* {हिं. झुकना} झुकने की क्रिया या भाव; किसी ओर कुछ झुके हुए या प्रवृत्त होने का भाव, नति (इनक्लिनेशन); किसी बात या वस्तु की ओर मन के प्रवृत्ति होने का भाव, प्रवृत्ति (टेंडेंसी)।

झुगिया *स्त्री.* झोंपड़ी।

झुग्गी *स्त्री.* 'झोंपड़ी'।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झुटपुटा *पुं.* {अनु.} ऐसा समय जबकि कुछ अँधेरा और कुछ प्रकाश हो।

झुटुंग *वि.* {हिं. झोंटा} बड़े और बिखरे हुए बालोंवाला; *पुं.* भूत-प्रेत।

झुठकाना *पुं* {हिं. झूठ} झूठी बातें कहकर बहकाना या विश्वास दिलाना।

झुठलाना *स.* {हिं. झूठ} सच्चे को झूठा ठहराना या बनाना; झूठ कहकर धोखा देना, फुसलाना।

झुठाई *स्त्री.* {हिं. झूठ} झूठापन।

झुठाना *स.* {हिं. झूठ + आना (प्रत्य.)} झूठा ठहराना।

झुनक *स्त्री.* {अनु.} {*क्रि.* झुनकना, झुनकाना} नूपुर का शब्द।

झुनझुन *पुं.* {अनु.} घुँघरू आदि के बजने का शब्द।

झुनझुना *पुं.* {झुनझुन से अनु.} बच्चों का वह खिलौना, जिसे हिलाने से झुनझुन शब्द होता है, घुनघुना।

झुनझुनाना *अ.* {अनु.} झुनझुन शब्द होना; *स.* झुनझुन शब्द उत्पन्न होना।

झुनझुनियाँ *स्त्री.* {हिं.} किसी पदार्थ के सूखने से कम होनेवाला अंश।

झुनझुनी *स्त्री.* {हिं. झुनझुनाना} हाथ या पैर में रक्त का संचार रुकने से होनेवाली सनसनाहट; एक प्रकार का रोग जिसमें ऐसी सनसनाहट होती है।

झुबझुबी *स्त्री.* {देश.} कान में पहनने का एक गहना।

झुमका *पुं.* {हिं. झूमना} कान में पहनने का एक प्रसिद्ध गहना।

झुमाना *स.* *हिं.* 'झूमना' का स.।

झुरझुरी *अ.* {हिं. झूरा या चूर} सूचना, खुश्क होना; किसी व्यक्ति या बात के लिए बहुत अधिक दुखी होना, मन ही मन अफसोस करना।

झुरमुट *पुं.* {सं. झुंट = झाड़ी} पास-पास उगे हुए कई झाड़ या क्षुप; बहुत से लोगों का समूह, गिरोह; कपड़े से शरीर को चारों ओर से ढक लेने की क्रिया।

झुरवन *स्त्री.* {हिं.} किसी पदार्थ के सूखने से कम होनेवाला अंश।

झुरसना *अ., स.* झुलसना।

झुराना *स.* {हिं. झुरना} सुखाना; *अ.* सूखना, झुरना।

झुरावन *स्त्री.* {हिं.} किसी वस्तु को सुखाने के कारण उसमें होनेवाली कमी।

झुर्री *स्त्री.* {हिं. झुरना} शरीर के चमड़े पर होनेवाली सिकुड़न, शिकन।

झुलना *पुं.* {हिं.} स्त्रियों के पहनने का ढीला कुरता, पालना, झूला।

झुलनी *स्त्री.* {हिं. झूलना} मोतियों का वह गुच्छा, जो स्त्रियाँ नथ में लगाती हैं।

झुलसन *स्त्री.* {हिं. झुलसना} झुलसने की क्रिया या भाव; शरीर झुलसानेवाली गरमी।

झुलसना *अ.* {सं. ज्वल + अंश} अधिक गरमी या जलने के कारण किसी चीज के ऊपरी भाग का सूख या जलकर काला पड़ना; *स.* ऊपरी तल इस प्रकार थोड़ा जलाना कि उसका रंग काला हो जाए, झाँसना, अधजला करना।

झुलाना *स.* {सं. झूलना} किसी को झूलने में प्रवृत्त करना; कुछ देने या करने के लिए किसी को आसरे में रखना और बार-बार दौड़ना।

झुलावना *स.* झुलाना।

झुल्ला *पुं.* {देश.} एक प्रकार का कुरता।

झुंक *पुं.* झोंका।

झुंलना *अ.* झीखना।

झुँझल *स्त्री.* झुँझलाहट।

झुँसना *क्रि. अ. स.* {हिं.} झुलसना, किसी पदार्थ के ऊपरी भाग को आधा जला देना।

झूझ *पुं.* {हिं.} युद्ध।

झूक *पुं.* झोंका।

झूकना *अ.* {हिं. झुकना या झोंकना} किसी चीज में झोंका, डाला या गिराया जाना, पड़ना; *स.* झोंकना।

झूठ *पुं.* {सं. जुष्ट, प्रा. जुट्ठ} कोई बात जैसी हो, उसके विपरीत रूप में बनाकर कहना, 'सच' का उलटा।

मुहा. झूठ-सच कहना या लगाना = झूठी शिकायत करना।

झूठ-मूठ *क्रि. वि.* {हिं. झूठ + मूठ (अनु.)} बिना किसी आधार के; यों ही, व्यर्थ।

झूठा *वि.* {हिं. झूठ} जो सच्चा, ठीक या वास्तविक न हो, मिथ्या, असत्य; झूठ बोलनेवाला, मिथ्यावादी; केवल रूप, रंग आदि में असली चीज के समान, नकली, बनावटी; (पुरजे या अंग आदि) बिगड़ जाने के कारण ठीक काम न देनेवाला (फॉल्स, उक्त सभी अर्थों के लिए); *वि.* जुठा।

झूठों *क्रि. वि.* झूठ-मूठ।

झूम *स्त्री.* {हिं.} झूमने की क्रिया, झपकी लेना।

झूमक *पुं.* {हिं. झूमना} एक प्रकार का गीत जो फागुन में स्त्रियाँ झूम-झूमकर नाचती हुई गाती हैं, झूमर; इस गीत के साथ होनेवाला नाच; गुच्छा; छोटे झुमकों या गुच्छों की वह पंक्ति,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो साड़ी आदि में सिर पर पड़नेवाले भाग में टँकी रहती है; झुमका।

झूमक साड़ी *स्त्री.* {हिं. झूमक + साड़ी} वह साड़ी जिसमें झूमक या मोती आदि की झालर लगी हो।

झूमड़ *पुं.* झूमर।

झूमना *अ.* {सं. झंप} {*भाव.* झूम} बार-बार आगे-पीछे, नीचे-ऊपर या इधर-उधर हिलना, झोंके खाना; मस्ती या नशे में सिर और धड़ आगे-पीछे और इधर-उधर हिलाना।

झूमर *पुं.* {हिं. झूमना} सिर पर पहनने का एक गहना; झुमका; झूमक नाम का गीत और नाच; एक प्रकार का काठ का खिलौना, एक ही तरह की कई चीजों का एक स्थान पर एकत्र होना।

झूर *वि.* झूरा, जलन, दुःख, दाह, परिताप।

झूरा *वि.* {सं. ज्वर?} {*स्त्री.* झूरी} सूखा, खुश्क; फीका, नीरस; *पुं.* वर्षा का अभाव, अवर्षण, सूखा; सूखी जमीन, स्थल।

झूरै *क्रि. वि.* {हिं. झूरा} झूठ-मूठ, यों ही; व्यर्थ, बेफायदा।

झूल *स्त्री.* {हिं. झूलना} शोभा के लिए चौपायों की पीठ पर डाला जानेवाला कपड़ा; झूला।

झूलदंड *पुं.* {हिं.} वर्षा ऋतु में श्रावण शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक होनेवाला एक उत्सव, जिसमें मूर्तियाँ झूले पर बैठाकर झुलाई जाती हैं।

झूलन *पुं.* {हिं. झूलना} वर्षा ऋतु का वह उत्सव, जिसमें मूर्तियाँ झूले पर बैठाकर झुलाई जाती हैं, हिंडोला।

झूलना *अ.* {सं. दोलन} लटकी हुई चीज का बार-बार आगे-पीछे या इधर-उधर झोंके से दूर तक हिलना; झूले पर बैठकर पेंग लेना; किसी बात या काम की आशा में बराबर कहीं आते-जाते रहना; *वि.* झूलनेवाला, जो झूलता हो, जैसे झूलना पुल, झूलना बिस्तर; *पुं.* झूला।

झूला *पुं.* {सं. दोला} पेड़ या छत आदि में लटकाई हुई रस्सियाँ या रस्से जिन पर बैठकर झूलते हैं, हिंडोला; बड़े रस्सों आदि का बना हुआ झूलनेवाला पुल; एक प्रकार का बिस्तर जिसके दोनों सिरे दोनों ओर ऊँची जगहों में बँधे रहते हैं; झूलन।

झलि *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार की सुपारी।

झूली *स्त्री.* {हिं.} वह चादर जिससे हवा करके अनाज ओसाया जाता है।

झेंपना *अ.* {हिं. झिपना} लज्जित होना, शरमाना।

झेर *स्त्री.* {फा. देर} विलम्ब, देर; बखेड़ा, झंझट; झिल।

झेरना *स.* {हिं. झेलना} तैरने आदि में हाथ-पैर से पानी हटाना; हलका झटका या झोंका खाना।

झेल[1] *स्त्री.* {हिं. झेलना} झेलने की क्रिया या भाव; हल्का धक्का या झोंका; पानी की लहर या हिलोर; लहर के कारण किनारे पर होनेवाला आघात।

झेल[2] *स्त्री.* {फा. देर} विलम्ब, देर।

झेलना *स.* {सं. क्ष्वेल} अपने ऊपर लेना, सहना, बरदाश्त करना; तैरते समय हाथों-पैरों से पानी हटाना; ढकेलना; *अ.* पानी में उतरना, हेलना।

झेलाझेली *स्त्री.* {हिं. झेलना} खींच-तान; जीव के बार-बार शरीर में आने और उसमें से निकलकर जाने की क्रिया या भाव, आवागमन।

झोंक *स्त्री.* {हिं. झुकना} झुकाव, प्रवृत्ति; बोझ, भार; प्रबल या तीव्र गति, वेग, तेजी।

झोंकना *स.* {हिं. झोंक} कोई वस्तु जलाने के लिए आग में फेंकना।

मुहा. भाड़ झोंकना = व्यर्थ के और निकम्मे काम करना।

जबरदस्ती आगे की ओर या संकट की स्थिति में ढकेलना, बुरी जगह की ओर धक्का देकर बढ़ाना; किसी काम में अंधाधुंध खर्च करना।

झोंकवा *स्त्री.* {हिं.} भट्ठी या भाड़ में ईंधन झोंकनेवाला।

झोंकवाई *क्रि. स.* {हिं.} झोंकने की क्रिया या वेतन।

झोंकवाना *पुं.* {हिं.} झोंकने का काम किसी और से कराना।

झोंका *पुं.* {हिं. झोंक} झटका, धक्का, रेला, जैसे हवा का झोंका; वर्षा के पानी का हवा के साथ किसी ओर जाना; इधर से उधर झुकने या हिलने की क्रिया।

झोंकी *स्त्री.* {हिं. झोंक} उत्तरदायित्व, जवाबदेही; जोखिम।

झोंझ *स्त्री.* {देश.} पक्षियों का घोंसला; कुछ पक्षियों के गले का नीचे लटकता हुआ मांस या थैली; कोलाहल, हल्ला, शोर।

झोंझल *स्त्री.* झुँझलाहट।

झोंझा *स्त्री.* {हिं.} बया पक्षी का घोंसला।

झोंझों *स्त्री.* {अनु.} कहा-सुनी, नोक-झोंक।

झोंटा[1] *पुं.* {सं. जूट} {*स्त्री.* अल्पा. झोंटी} सिर के बड़े-बड़े बालों का समूह।

झोंटा[2] *पुं.* {हिं. झोंका} झूले की पेंग।

झोंटाझोंटी *स्त्री.* {हिं. झोंटा} आपस में एक दूसरे का झोंटा पकड़कर होनेवाली लड़ाई।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झोंटी *स्त्री.* हिं. 'झोंटा' का *स्त्री.* अल्पा.।
झोंपड़ा *पुं.* बड़ी झोंपड़ी।
झोंपड़ी *स्त्री.* {हिं. छोपना} घास, फूस आदि का वह छोटा घर, जो गाँवों या जंगलों में कच्ची मिट्टी की छोटी दीवारें उठाकर बनाते हैं, कुटी, पर्णशाला।
झोटिंग *वि.* झुटुंग; *पुं.* भूत, प्रेत या पिशाच।
झोंड़ *पुं.* {हिं.} गुल्म, सुपारी का वृक्ष।
झोरना *सं.* {सं. दोलन} झटका देते हुए कोई चीज इस प्रकार हिलाना कि उस पर पड़ी या लगी हुई दूसरी चीजें गिर जाएँ।
झोरा *पुं.* झोला।
झोरी[1] *स्त्री.* झोली।
झोरी[2] *स्त्री.* {?} एक प्रकार की रोटी।
झोल[1] *पुं.* {हिं. झाल} तरकारी आदि का गाढ़ा रस, शोरबा; चावलों का माँड़, पीच; धातु पर किया हुआ मुलम्मा; झंझट, बखेड़े या धोखे की बात; निस्सार या तत्त्वहीन बात; भस्म, राख।
झोल[2] *पुं.* {हिं. झूलना} कपड़े का वह अंश, जो ढीला होने के कारण झूल या लटक जाए, 'तनाव' या 'कसाव' का उलटा; शिथिलता, ढिलाई; दोष, ऐब; त्रुटि, कमी; पल्ला, आँचल; परदा; ओट, आड़।
झोल[3] *पुं.* {हिं. झिल्ली} थैली के आकार की वह झिल्ली, जिसमें गर्भ से निकलने के समय बच्चे या अंडे बंद रहते हैं; गर्भ।
झोल[4] *पुं.* {सं. ज्वाल} राख, भस्म; दाह, जलन।
झोलदार *वि.* {हिं. झोल + फा. दार} जिसमें झोल या रसा हो; जिस पर गिलट या मुलम्मा हुआ हो; इधर-उधर लटकता और लहराता हुआ, ढीला-ढाला (कपड़ा)।
झोलना *क्रि. स.* (हिं.) जलाना, दाह करना।
झोला[1] *पुं.* {हिं. दोलना} झोंका, झटका; आघात, धक्का; हिलोर, लहर; बाधा, अड़चन; असमंजस, दुविधा; चंचलता।
झोला[2] *पुं.* {हिं. झूलना} {*स्त्री.* अल्पा. झोली} कपड़े, टाट आदि की बड़ी झोली, थैला; साधुओं का ढीला कुरता, चोला; एक वात रोग जिसमें कोई अंग विशेषत: हाथ निर्जीव होकर झूलने लगता और बेकाम हो जाता है, लकवा; पाले, लू आदि के कारण पेड़ों के कुम्हला या सूख जाने का रोग।
झोली[1] *स्त्री.* {हिं. झूलना} चीजें रखने की कपड़े की थैली; घास बाँधने का जाला; मोट, चरसा, पुर; झूला।
झोली[2] *स्त्री.* {सं. ज्वाल} राख, भस्म।
मुहा. झोली बुझाना = सब काम हो चुकने पर पीछे उसे करने का ढोंग रचना; निराश होकर या व्यर्थ बैठना।
झौंद *पुं.* {हिं.} उदर, पेट।
झौंर *पुं.* {सं. युग्म} झुंड, समूह; फलों या फलों का गुच्छा; एक प्रकार का गहना, झब्बा।
झौंरना *अ.* {अनु.} गूँजना, गुंजारना; *स.* झौरना।
झौंरा *पुं.* {?} झुंड, दल।
झौंराना[1] *अ.* {हिं. झूमना} इधर-उधर हिलना, झूमना; *स.* {हिं. झूमना} किसी को हिलने या झूमने में प्रवृत्त करना।
झौंराना[2] *अ.* {हिं. झाँवला} रंग काला पड़ जाना; मुरझाना, कुम्हलाना; *स.* रंगत में कुछ कालापन लाना; मुरझाने में प्रवृत्त करना।
झौंसना *स.* झुलसना।
झौआ *पुं.* {हिं. झाबा} खँचिया।
झौर *पुं.* {अनु. झाँवझाँव} हुज्जत, तकरार; डाँट-फटकार; वाद-विवाद, कहासुनी।
झौरना *स.* {हिं. झपटना} दबाने के लिए झपटकर पकड़ना, छोप लेना।
झौरा *पुं.* {हिं.} झंझट, बखेड़ा।
झौरे *क्रि. वि.* {हिं. धौरे} समीप, पास, निकट; साथ, संग।
झौलना *स.* {सं. ज्वाल} जलाना।
झौवा *पुं.* {हिं.} खँचिया, रहट की बनी हुई दौरी।
झौहाना *अ.* {अनु.} बहुत क्रोध से बिगड़कर कुछ कहना; डाँटना, चिड़चिड़ाना, गुर्राना।

ञ

ञ

ञ देवनागरी वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन जो चवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान तालु और नासिका है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ट

ट देवनागरी वर्णमाला में ग्यारहवाँ व्यंजन और टवर्ग का पहला वर्ण, जिसका उच्चारण मूर्धा से होता है।

टंक¹ *पुं.* {सं} चार माशे की एक पुरानी तौल; सिक्का; पत्थर गढ़ने की टाँकी, छेनी; कुल्हाड़ी; सुहागा।

टंक² *पुं.* {अं. टैंक} तालाब; पानी रखने का बड़ा हौज या खजाना; लोहे की एक प्रकार की बख्तरदार गाड़ी, जिस पर तोपें चढ़ी रहती हैं (यह ऊबड़-खाबड़ जमीन पर भी चल सकता है और पहाड़ियों पर भी चढ़ या उन पर से उतर सकता है)।

टंकक *पुं.* {सं.} वह जो टंकण-यंत्र पर टंकण का काम करता हो (टाइपिस्ट); चाँदी का सिक्का।

टंकण *पुं.* {सं.} सुहागा; धातु की चीज में टाँका या जोड़ लगाना; घोड़े की एक जाति; टंकण-यंत्र पर उसकी सहायता से कुछ लिखने या मुद्रित करने का काम (टाइप राइटिंग); धातु के टुकड़ों पर ठप्पे आदि की सहायता से छाप लगाकर सिक्के बनाने की क्रिया या भाव (कॉयनेज)।

टंकण-यंत्र *पुं.* {सं.} एक प्रसिद्ध, यंत्र जिसकी सहायता से थोड़ी संख्या में पत्र, सूचनाएँ आदि प्रायः उसी प्रकार छापी हाती हैं, जिस प्रकार छापे के यंत्र से छपती हैं (टाइप राइटर)।

टँकना *अ.* {सं. टंकण} टाँका जाना; सीकर अटाकाया जाना, सिलना; लिखा जाना, दर्ज किया जाना; सिल, चक्की आदि का खुरदुरा किया जाना, कुटना।

टंकशाला *स्त्री.* {सं.} टकसाल।

टंका *पुं.* {सं. टंक} एक तोले की तौल; ताँबे का एक पुराना सिक्का।

टँकाई *स्त्री.* {हिं. टाँकना} टाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

टँकाना *स.* {हिं. टाँकना} टाँकों से जुड़वाना या सिलवाना; याद रखने के लिए लिखवाना।

टंकार *स्त्री.* {सं.} {*क्रि.* टंकारना} टनटन शब्द जो कसे हुए डोरे या तार आदि पर उँगली का आघात करने से होता है; धातु के टुकड़े पर आघात लगने का शब्द, टनाका, झनकार।

टंकारना *स.* {सं. टंकार} धनुष की डोरी खींचकर उससे शब्द उत्पन्न करना।

टंकी *स्त्री.* {सं. टंक = गड्ढा या अं. टैंक} पानी रखने का छोटा कुंड या बड़ा बरतन, टाँका।

टँकुआ *वि.* {हिं. टाँकना} जिस पर कुछ टाँका गया हो, जैसे टँकुआ साड़ी।

टंको (कौ) री *स्त्री.* {हिं.} सोना-चाँदी तौलने का छोटा तराजू, काँटा।

टंकोर *पुं.* टंकार।

टँगड़ी *स्त्री.* {हिं.} घुटने से लेकर एड़ी तक का भाग, टाँग।

टँगना *अ.* {सं. टंगण} टाँगा या लटकाया जाना; *पुं.* दोनों ओर दो जगहों पर बँधी हुई वह रस्सी, जिस पर कपड़े टाँगे जाते हैं, अलगनी; इस काम के लिए कुछ इसी प्रकार का बना हुआ काठ का ढाँचा।

टँगाना *स.* हिं. 'टाँगना' का प्रे.; *अ.* = टाँगना।

टँगारी *स्त्री.* {सं. टंग} कुल्हाड़ी, छोटा टाँगा।

टंच¹ *वि.* {सं. चंड} सूम, कंजूस; कठोर-हृदय, निष्ठुर; धूर्त।

टंच² *वि.* {हिं. टिन} तैयार, मुस्तैद, कृषण।

टंट-घंट *पुं.* {अनु. टनटन + घंट} घड़ी, घंटा आदि (बजाकर पूजा करने का मिथ्या प्रपंच); रद्दी सामान; काठ-कबाड़।

टंटा *पुं.* {अनु. टनटन} व्यर्थ की झंझट, खटराग; उपद्रव, उत्पात; झगड़ा, लड़ाई।

टंडेल *पुं.* {अं. टेंडर} मजदूरों का सरदार।

टई *स्त्री.* टही; टहल; युक्ति।

टक *स्त्री.* {सं. टक या त्राटक} बिना पलक गिराए देर तक देखना; स्थिर दृष्टि।

मुहा. टकटक देखना = चकित होकर कुछ देर तक देखते रहना; *टक लगाना* = आसरा देखते रहना, प्रतीक्षा करते रहना।

टकटका *पुं.* टकटकी, स्थिर दृष्टि।

टकटकाना *स.* {हिं. टक} देर तक इस प्रकार देखना कि पलक न गिरे, स्थिर दृष्टि से देखना; टकटक शब्द करना।

टकटकी *स्त्री.* {हिं टक} देर तक इस प्रकार देखना कि पलक न गिरे, स्थिर दृष्टि; निर्निमेष दृष्टि।

टकटोरना¹ *स.* टटोलना।

टकटोरना² *स.* {हिं. टकटकी} टकटकी लगाकर देखना; ढूँढ़ना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टकटोहन *पुं.* {हिं} उँगलियों से छूकर या टटोलना, देखना।

टकराना *अ.* {हिं. टक्कर} जोर से भिड़ना; टक्करें खाना, मारे-मारे फिरना, व्यर्थ घूमना; *स.* एक चीज पर दूसरी चीज जोर से मारना, टक्कर देना।

टकसार *स्त्री.* टकसाल।

टकसरा *पुं.* एक प्रकार का बाँस।

टकसाल *स्त्री.* {सं. टंकशाला} वह स्थान, जहाँ सिक्के ढलते हैं।

पद टकसाल बाहर = (वाक्य या प्रयोग) जिसका व्यवहार शिष्टसम्मत या सर्वमान्य न हो।

टकसाली *वि.* {हिं टकसाल} टकसाल का, टकसाल-संबंधी; खरा, चोखा; विशेषज्ञों या शिष्टों द्वारा माना हुआ, शिष्टसम्मत, प्रामाणिक; जँचा हुआ, बिल्कुल ठीक; *पुं.* टकसाल का अधिकारी।

टकहाई *स्त्री. वि.* {हिं.} वेश्याओं में निकृष्ट।

टका *पुं.* {सं. टंक} चाँदी का एक पुराना सिक्का; उन्नीसवीं शताब्दी का ताँबे का एक भारतीय सिक्का, जो दो पैसों के बराबर होता था, अधन्नी; रुपया-पैसा।

टकासी *स्त्री.* {हिं. टका} टके या दो पैसे फी रुपए सूद पर ऋण लेने या देने का व्यवहार।

टकाही *स्त्री.* {हिं. टका} बहुत ही निम्न कोटि की वेश्या या दुश्चरित्रा स्त्री।

टकी *स्त्री.* टकटकी।

टकुआ *पुं.* तकला।

टकातोप *स्त्री.* {हिं.} जल जहाज पर लगी हुई तोप।

टकार *पुं.* {सं.} 'ट' अक्षर का स्वरूप।

टकुली *स्त्री.* {हिं.} पत्थर काटने की टाँकी, छेनी, बेलबूटे बनाने या नक्काशी करने का यंत्र-विशेष।

टकैत *वि.* {हिं.} जिसके पास अपार धन-संपत्ति हो।

टकोर *स्त्री.* {सं. टकोर} {*क्रि.* टकोरना} हलकी चोट या आघात, ठेस; नगाड़े का शब्द; धनुष की डोरी खींचने का शब्द, टंकार; दबा कर गरम पोटली से किसी अंग पर किया जानेवाला सेंक (फोमेंटेशन)।

टकोरना *क्रि. स.* {हिं.} ठोकर लगाना, हलकी चोट लगाना, बजाना-मारना।

टकोरा *पुं.* {हिं.} डंके की चोट (नगाड़े पर) आघात।

टकोरी *स्त्री.* {हिं.} आघात मारना, टक्कर।

टकौरी *स्त्री.* {हिं.} वह छोटा तराजू (काँटा) जिससे सोना-चाँदी तौला जाता है।

टक्कर *स्त्री.* {अनु. ठक} दो वस्तुओं के वेगपूर्वक एक दूसरी से भिड़ने से होनेवाला आघात, कड़ी ठोकर।

मुहा. टक्कर खाना = जोर से टकराना; मारा-मारा फिरना।

मुकाबला, सामना।

मुहा. टक्कर मारना = मुकाबला करना, भिड़ना; समान या तुल्य होना; *(किसी से) टक्कर लेना* = योग्यता, प्रतिद्वंद्विता आदि में किसी के सामने होकर उससे लड़ना या मुकाबला करना।

पशुओं या मनुष्यों का एक दूसरे के सिर पर अपना सिर जोर से मारना।

मुहा. टक्कर मारना = व्यर्थ का बहुत अधिक प्रयत्न करना।

घाटा, हानि।

टक्कर का *वि.* बराबरी का।

टखना *पुं.* {सं. टंक} एड़ी के ऊपर और पिंडली के नीचे की गाँठ, गुल्फ।

टग *स्त्री.* टकटकी।

टगण *पुं.* {सं.} छह मात्राओं का एक गण।

टगर *पुं.* {सं.} टंकण, क्षार, सुहागा, विलास, क्रीड़ा; *वि.* ऐंचाताना।

टगरा *वि.* {हिं.} भेंगा, ऐंचाताना।

टघरना *अ.* पिघलना।

टघराना *क्रि. स.* {हिं.} पिघलाना।

टचटच *अव्य.* {हिं.} धायँ-धायँ करते हुए।

टचनी *स्त्री.* {हिं.} कसेरे की नक्काशी करने की टाँकी।

टटका *वि.* {*स्त्री.* टटका} ताजा; कोरा, नया।

टटल-बटल *वि.* {हिं.} अस्तव्यस्त, ऊट-पटाँग।

टटाना *क्रि. अ.* {हिं.} सूखकर कड़ा हो जाना।

टटावली *स्त्री.* {हिं.} टिटिहरी, कुटरी।

टटीबा *पुं.* {हिं.} चक्कर, घिरनी।

टटीरी *स्त्री.* {हिं.} टिटिहरी, कुटरी।

टटुई *स्त्री.* {हिं.} मादा टट्टू, छोटे कद की घोड़ी।

टटोला *स्त्री.* {हिं.} टटोलने का काम।

टटकाई *स्त्री.* {हिं. टटका} ताजापन।

टटोना *स.* टटोलना।

टटोलना *स.* {सं. त्वक् + तोलन} {*भाव.* टटोल} मालूम करने के लिए उँगलियों से छूना या दबाना; ढूँढ़ने के लिए इधर-उधर हाथ फैलाना या दौड़ाना; बातचीत करके किसी के मन का भाव जानना, थाह लेना।

टटोहना *स.* टटोलना।

टट्टनी *स्त्री.* {सं.} छिपकली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टट्टर पुं. {सं. स्थाता?} ओट या रक्षा के लिए बाँस की पट्टियाँ जोड़कर बनाया हुआ ढाँचा या परदा।

टट्टी स्त्री. {टट्टर} बाँस की पट्टियों का बना हुआ छोआ और हलका टट्टर।

मुहा. टट्टी की आड़ (या ओट) से शिकार खेलना = किसी की आड़ में रहकर औरों के साथ कोई चाल चलना; छिपकर बुरा काम करना।

चिक, चिलमन; पतली दीवार; पाखाना; बाँस की पट्टियों का वह परदा या छाजन जिस पर बेलें चढ़ाई जाती हैं, जैसे अंगूर की टट्टी।

टट्टुर पुं. {सं.} तुरही बजाने का शब्द।

टट्टू पुं. {अनु.} छोटा घोड़ा, टाँगन।

टड़िया स्त्री. {हिं.} बाँह पर पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण।

टन[1] पुं. {अनु.} घड़ी या घंटे का शब्द।

टन[2] पुं. {अं.} 100 किलोग्राम का तौल या बटखरा।

टनकना अ. {अनु. टनटन} टनटन, बजना; धूप या गरमी लगने के कारण सिर में दर्द होना।

टनकार स्त्री. = टनटन (शब्द)।

टनटन स्त्री. {अनु.} घंटे का शब्द।

टनटनाना स. {हिं. टनाटन} धातु के टुकड़े पर कोई चीज मारकर 'टनटन' शब्द उत्पन्न करना; अ. 'टनटन' शब्द होना।

टनमन पुं. {हिं.} तंत्र-मंत्र, जादू-टोना।

टनमना वि. {हिं.} स्वस्थ, चंगा, जो तंदुरुस्त हो।

टना पुं. {हिं.} योनि, भग, योनि के बीच की उमड़ी हुई मांस की ग्रंथि।

टनाका पुं. {हिं.} घंटा बजने का शब्द।

टनभार पुं. {अं. टन + हिं. भार} टनों में बताया जानेवाला भार।

टनाटन स्त्री. {अनु.} लगातार होनेवाला 'टनटन' शब्द; वि. बिल्कुल ठीक दशा में और दृढ़; क्रि. वि. 'टनटन' शब्द के साथ।

टन्न वि. {?} नशे में धुत।

टप[1] पुं. {हिं. टोप} किसी चीज के ऊपर का छाजन, जैसे गाड़ी का टप।

टप[2] पुं. {अं. टब} पानी रखने का एक बड़ा खुला बरतन, टाँका; कान में पहनने का फूल।

टप[3] स्त्री. {अनु.} बूँद-बूँद करके गिरने या टपकने का शब्द; अचानक ऊपर से गिरने का शब्द।

टपक स्त्री. {हिं. टपकना} टपकने की क्रिया या भाव; बूँद-बूँद गिरने का शब्द; रह-रहकर होनेवाला दर्द।

टपकना अ. {अनु. टपटप} बूँद-बूँद करके गिरना, चूना, रिसना; ऊपर से सहसा आकर गिरना या पड़ना; कोई भाव प्रकट होना, जाहिर होना, झलकना; रह-रहकर दर्द करना, चिलकना, टीस मारना।

टपका पुं. {हिं. टपकना} बूँद-बूँद करके गिरने का भाव, रिसाव; टपकी हुई वस्तु; पककर अपने आप गिरा हुआ फल; टपक।

टपकाटपकी स्त्री. {हिं. टपकना} बार-बार या रह-रहकर टपकने की क्रिया या भाव; बहुत थोड़ी या हलकी वर्षा, बूँदाबाँदी।

टपकाना स. {हिं. टपकना} बूँद-बूँद करके गिराना, चुआना। भबके से अर्क खींचना, चुआना।

टपकाव पुं. {हिं.} टपकाने की क्रिया।

टपटप स्त्री. {अनु.} बूँदों के गिरने का शब्द; क्रि. वि. = टपाटप।

टपना अ. {हिं. तपना} व्यर्थ आसरे में रहकर कष्ट उठाना; स. किसी चीज को पार करके आगे बढ़ना, लाँघना; कूदना, फाँदना।

टपमाल पुं. {हिं.} जहाजों पर काम में आनेवाला लोहे का बड़ा घन।

टपरना स. {अनु.} दीवार, फर्श आदि की दराज भरने से पहले उसे कुछ खोदकर चौड़ी या बड़ी करना, जिसमें मसाला अच्छी तरह भरा जा सके।

टपरी स्त्री. = झोंपड़ी।

टपाटप क्रि. वि. {अनु.} लगातार टपटप शब्द के साथ (गिरना); जल्दी-जल्दी; झटपट।

टपाना[1] स. {हिं. टपना} व्यर्थ आसरे में रखकर कष्ट देना।

टपाना[2] स. {हिं. टापना} पार कराना, फँदाना।

टप्पर पुं. {हिं.} छाजना, छप्पर।

टप्पा पुं. {हिं टाप} उतनी दूरी जितनी कोई फेंकी हुई वस्तु पार करे; उछाल, फलाँग; दो स्थानों के बीच में पड़नेवाला बड़ा मैदान; जमीन का छोटा टुकड़ा; अंतर, फर्क; एक प्रकार का पक्का गाना, जिसमें गले से स्वरों के बहुत छोटे-छोटे टुकड़े या दाने एक विशेष प्रकार से निकाले जाते हैं।

टप्पैत वि. {हिं. टप्पा} टप्पे (गाने) से संबंध रखनेवाला, जैसे टप्पैत गला; टप्पा गानेवाला।

टब पुं. {अं.} पानी रखने का एक प्रकार का बड़ा बरतन; टप।

टमकी स्त्री. {हिं.} छोटा नगाड़ा, डुगडुगी।

टमटम स्त्री. {अं. टेंडम} ऊँचे पहियों की एक प्रकार की हलकी घोड़ा-गाड़ी।

टमटी स्त्री. {हिं.} एक प्रकार का पात्र।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टमाटर पुं. {अं. टोमैटो} एक प्रकार का खट्टा विलायती बैंगन।

टर *स्त्री.* {अनु.} कर्कश या कर्णकटु शब्द, कड़ुवी बोली; मेंढक की बोली; अविनीत आचरण या चेष्टा, उद्दंडता; हठ, जिद, टेक।

टरकना *अ.* टलना।

टरकाना *स.* {अनु.} इधर-उधर की बातें करके किसी को हटाना, टालना।

टरकुल *वि.* अति सामान्य।

टरगी *स्त्री.* {हिं} एक प्रकार की घास।

टरटर *स्त्री.* {अनु.} तोते का शब्द।

मुहा. टरटर करना या लगाना = ढिठाई से या व्यर्थ बहुत बोलते चलना।

टरटराना *अ.* {हिं. टर} टरटर शब्द करना।

टरना *स.* टलना।

टरनि *स्त्री.* {हिं.} टरने का ढंग या भाव।

टर्रा *वि.* {अनु. टरटर} {*भाव.* टर्रापन} अविनीत भाव से कठोर उत्तर देनेवाला, टर्रानेवाला, उद्धत, उद्दंड।

टर्राना *अ.* {अनु. टरटर} टरटर करना; अविनीत भाव से कठोर उत्तर देना।

टर्रापन पुं. {हिं.} कटुवादिता, बात करने में धृष्टता।

टर्रू पुं. {हिं.} चिढ़कर बोलनेवाला, मेंढक, एक प्रकार का खिलौना।

टलन पुं. {सं.} व्यग्रता।

टलना *अ.* {सं. त्वर्} सामने से हटना, खिसकना; जगह से हटना।

मुहा. अपनी बात से टलना = प्रतिज्ञा पूरी न करना, कहकर मुकरना।

(किसी कार्य के लिए) निश्चित समय से और आगे का समय स्थिर होना, स्थगित होना; (किसी बात का) अन्यथा सिद्ध होना; (किसी आदेश या अनुरोध का) न माना जाना, उल्लंघन होना; समय बीतना; छोड़कर अलग होना।

टममल *वि.* {हिं.} हिलता हुआ।

टलहा *वि.* {हिं.} खोटा सिक्का।

टलाटली *स्त्री.* टाल-मटोल।

टल्लो *स्त्री.* {?} छोटी टहनी।

टवर्ग पुं. {सं.} ट, ठ, ड और ण इन पाँच वर्णों का वर्ग।

टवाई *स्त्री.* {हिं.} व्यर्थ की घुमाई।

टस *स्त्री.* {अनु.} किसी भारी चीज के खिसकने या टसकने का शब्द या भाव।

मुहा. टस से मस न होना = भारी चीज का अपने स्थान से न हिलना; अपना हठ न छोड़ना, बात पर अड़े रहना।

टसक *स्त्री.* {अनु.} टीस, कसक।

टसकना *अ.* {हिं. टसक} टलना, खिसकना; रह-रहकर दर्द करना, टीसना; हठ छोड़ना।

टसकाना *स.* {हिं. टसकना} किसी को अपने स्थान से हिलाना या हटाना, खिसकाना।

टसर पुं. {सं. त्रसर} एक प्रकार का घटिया मोटा रेशम।

टसुआ पुं. {हिं. अँसुआ} आँसू।

टहकन *स्त्री.* {हिं. टहकना} टहकने की क्रिया या भाव।

टहकना *अ.* {अनु.} रह-रहकर दर्द करना, कसकना; पिघलना; टकटक शब्द करना।

टहना पुं. {हिं.} वृक्ष की मोटी शाखा, डाल।

टहनी *स्त्री.* {सं. तनुः} वृक्ष की पतली या छोटी शाखा, डाली।

टहल *स्त्री.* {हिं. टहलना} छोटी और हीन सेवा, खिदमत; काम-धंधा, चाकरी।

टहलना *अ.* {सं. त्सर् = धीरे-धीरे चलना} व्यायाम या मन-बहलाव के लिए धीरे-धीरे चलना, घूमना-फिरना।

मुहा. टहल जाना = खिसक जाना।

टहलनी *स्त्री.* {हिं. टहल} दासी।

टहलाना *स.* {हिं. टहलना} धीरे-धीरे चलाना; सैर कराना, घुमाना-फिराना।

टहलुआ पुं. {हिं टहल} {*स्त्री.* टहलुई, टहलनी} सेवक, दास।

टहलुई *स्त्री.* {हिं.} दासी, नौकरानी, लौंडी।

टटलू पुं. {हिं.} नौकर-चाकर, सेवक।

टही *स्त्री.* {?} काम निकालने की युक्ति; *क्रि. प्र.* बैठाना।

टहूका पुं. {हिं.} पहेली, चुटकुला।

टहोका पुं. {हिं. ठोकर} हाथ या पैर ये दिया हुआ धक्का, झटका।

टाँक¹ *स्त्री.* {सं. टंक} तीन या चार माशे की एक तौल। (जौहरी); कूत, अंदाज।

टाँक² *स्त्री.* {हिं टाँकना} टाँके जाने की क्रिया या भाव; कलम की नोक।

टाँकना *स.* {सं. टंकन} सुई-डोरे आदि से कोई छोटी चीज किसी बड़ी चीज के साथ जोड़ना या लगाना, सीकर अटकाना; सिल-चक्की आदि में छोटे गड्ढे करके उन्हें खुरदुरा करना, रेहना; कोई बात याद रखने के लिए लिख लेना; खाते आदि में लिखना या चढ़ाना; भोजन करना, खाना; अनुचित रूप से ले लेना, हड़पना।

टाँका¹ पुं. {हिं. टाँकना} वह चीज जो दो चीजों को जोड़कर एक करती हो; धातु जोड़ने का मसाला; सिलाई, सीवन; टँकी हुई चकती या टुकड़ा, थिगली, पैबंद।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टाँका² पुं. {सं. टंक} {स्त्री. अल्पा. टाँकी} पानी रखने का छोटा कुंड या बड़ा बरतन।

टाँकी *स्त्री.* {सं. टंक} पत्थर गढ़ने या काटने की छेनी।

टाँग *स्त्री.* {सं. टंग} कमर के नीचेवाले दोनों अंग जिनसे प्राणी चलते या दौड़ते हैं, चलने का अवयव।

मुहा. टाँग अड़ाना = व्यर्थ किसी काम में दखल देना, विघ्न टालना; *टाँग तले से (या नीचे से) निकलना* = हार मानना।

टाँगन पुं. {सं. तुरंगम्} छोटा घोड़ा, टट्टू।

टाँगना *स.* {हिं. टँगना} एक वस्तु किसी दूसरी वस्तु पर इस प्रकार रखना कि उसका सब या बहुत-सा भाग नीचे लटकता रहे, लटकाना; फाँसी पर चढ़ाना।

टाँगा पुं. {हिं. टँगना} दो पहियों की एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी।

टाँगी *स्त्री.* {हिं. टाँगा} कुल्हाड़ी।

टाँगु (गु) न *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का गरीबों के खाने का अन्न।

टाँच (न) *स्त्री.* {हिं. टाँकी} टाँचने की क्रिया या भाव; दूसरे का काम बिगाड़ने वाली बात या कथन, भाँजी।

टाँचना *स.* {हिं. टाँकना} टाँका लगाना, टाँकना; ठीक करने के लिए काटना या छीलना; काटकर कुछ अंश निकाल देना, जैसे सौ रुपए आपने बीच में टाँच लिए; *अ.* बहुत प्रसन्न होकर या फूले-फूले फिरना।

टाँची *स्त्री.* {हिं.} कपड़े की लंबी-पतली थैली जिसमें रुपए रखकर लोग कमर में बाँधते हैं।

टाँट पुं. {हिं.} कपाल, खोपड़ी।

टाँठ, टाँठा *वि.* {ह} कठोर दृढ़, हृष्ट-पुष्ट।

टाँड़¹ *स्त्री.* {सं. स्थाणु} लकड़ी के खम्भों पर बनाई हुई वह पाटन, जिस पर चीजें रखते हैं। (रैक); पाटन, परछत्ती, मचान जिस पर बैठकर किसान अपने खेत की रखवाली करता है; ढेर, राशि, घरों की पंक्ति।

टाँड़² पुं. {सं. ताड़} बाँह पर पहनने का एक गहना।

टाँड़ा पुं. {हिं. टाँड़ = समूह} व्यापार की वस्तुओं से लदे हुए पशुओं का झुंड, जो व्यापारी लेकर चलते हैं, बरदी; वह माल जो इस प्रकार एक जगह से दूसरी जगह जाता है; बिक्री के माल की खेप; कुटुम्ब, परिवार।

टाँड़ी *स्त्री.* {हिं.} शलभ, टिड्डी।

टाँयटाँय *स्त्री.* {अनु.} कर्कश शब्द, टेंटे; व्यर्थ की बकवाद।

पद टाँयटाँय फिस = बातें बहुत, पर काम या फल कुछ भी नहीं।

टाइप पुं. {अं.} छापने के लिए सीसे के ढले हुए अक्षर।

टाकू पुं. {हिं.} टेकुआ, तकला।

टाइपराइटर पुं. टंकण-यंत्र।

टाइम पुं. {अं.} समय।

टाइम-टेबुल पुं. {अं.} समय-सारिणी।

टाई *स्त्री.* {अं.} नेकटाई।

टाउन पुं. {अं.} कसबा, नगर।

टाउनहाल पुं. {अं.} नगर के मध्य का वह सार्वजनिक हाल, जिसमें गोष्ठियाँ, सभाएँ आदि होती हों।

टाट पुं. {सं. तंतु} सन या पटुए की डोरियों का बना हुआ मोटा कपड़ा, जिससे बोरे, परदे, बिछावन आदि बनते हैं; साथ बैठनेवाली बिरादरी या उसका विभाग; कोठीवाल या महाजन की गद्दी।

मुहा. टाट उलटना = दिवाला मारना।

टाट की वह थैली, जिसमें एक हजार रुपए आते हैं; महाजनी बोल-चाल में एक हजार रुपए, जैसे इस मुकदमे में चार टाट लग गए।

टाटर पुं. {हिं.} टट्टर, टट्टी, मस्तक की हड्डी, कपाल-खोपड़ी।

टाटिका *स्त्री.* = टट्टी।

उदा. बिरचि हरिभगति को वेष बर टाटिका –तुलसी।

टान *स्त्री.* {सं. तान} तानने कि क्रिया या भाव; आकर्षण; छापे के यंत्र में कागज हर बार छापे जाने का भाव, जैसे हजार टान, दो हजार टान।

टानना *स.* {सं. तान} तानना; खींचना; छापे के यंत्र में कागज लगाकर कुछ छापना।

टाप *स्त्री.* {सं. स्थापन} घोड़े के पैर का वह भाग, जो जमीन पर पड़ता है, सुम, खुर; घोड़े के पैरों के जमीन पर पड़ने का शब्द; टापा।

टापना *अ.* {हिं. टाप + ना (प्रत्य.)} घोड़ों का खड़े-खड़े पैर पटकना, खूँद करना; टपना।

टापा पुं. {सं स्थापन} लंबा-चौड़ा मैदान, टप्पा; उछाल; किसी वस्तु को ढककर या बंद करके रखने का टोकरा या झाबा।

टापू पुं. {हिं. टप्पा} चारों ओर जल से घिरा हुआ स्थल या जमीन, द्वीप।

टाबर पुं. {पंजाबी टब्बर} बालक, लड़का, छोकरा; परिवार, कुटुम्ब।

टामक पुं. {हिं.} डुग्गी, डुगडुगी।

टामन पुं. {हिं.} तंत्र-मंत्र, टोटका।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टार पुं. {सं.} तुरंग, घोड़ा, कुटना; पुं. {हिं.} राशि, ढेर; *स्त्री.* टाल।

टारन *वि.* {हिं. टालना का पुराना रूप, टारना} टालने, हटाने या दूर करनेवाला।

टारना *स.* टालना।

टाल[1] *स्त्री.* {सं. अट्टाल} ऊँचा, ढेर, राशि, अटाला; लकड़ी, भूसे आदि की दुकान।

टाल[2] *स्त्री.* {हिं. टालना} टालने का भाव।

टाल[3] पुं. {सं. टार} स्त्री और पुरुष का समागम करानेवाला दलाल, कुटना।

टाल-टूल *स्त्री.* टाल-मटोल।

टालना *स.* {हिं. टलना} हटाना, दूर करना; न रहने देना, मिटाना; किसी कार्य के लिए आगे का समय स्थिर करना, स्थगित या मुलतवी करना; (आदेश या अनुरोध) न मानना; बहाना करके पीछा छुड़ाना; हिलाना।

टाल-मटोल *स्त्री.* {हिं. टालना} केवल टालने के लिए किया जानेवाला बहाना।

टाला *वि.* {?} आधा (दलाल)।

टाली *स्त्री.* {देश.} गाय, बैल आदि के गले में बाँधने की घंटी; चंचल जवान गाय या बछिया।

टाहली पुं. टहलुआ।

टिंडा-टिंडा पुं. {हिं.} एक प्रकार की लता, जिसके फलों की तरकारी बनती है।

टिंडर पुं. {हिं.} रहट में लगी हुई बालटी।

टिंडी *स्त्री.* {हिं.} हल की मूठ, जौता घुमाने की मूठ।

टिक पुं. {हिं.} टिक्कर, लिट्टी।

टिकट[1] पुं. {अं.} कागज, गत्ते आदि का वह छोटा टुकड़ा, जो कोई विशेष कार्य करने का अधिकार पाने के लिए मूल्य देने पर मिलता है, जैसे तमाशे का टिकट, रेल का टिकट, डाक का टिकट; कागज का वह छोटा टुकड़ा, जो किसी वस्तु पर उसके परिचय के लिए लगाया जाता है, चिप्पी।

टिकट[2] पुं. {अं. टैक्स} किसी प्रकार का कर या महसूल।

टिकट-घर पुं. वह स्थान, जहाँ टिकट बिकते हों।

टिकट-बाबू पुं. टिकट बेचनेवाला कर्मचारी।

टिकटिक *स्त्री.* {हिं.} घोड़ा हाँकते समय मुख से किया जानेवाला शब्द, घड़ी के चलने में उत्पन्न शब्द।

टिकटी *स्त्री.* {सं. त्रिकाष्ठ} वह ढाँचा जिससे अपराधियों के हाथ-पैर बाँधकर उनके शरीर पर बेंत या कोड़े लगाए जाते हैं या उनके गले में फाँसी का फंदा लगाया जाता है; अरथी, जिस पर शव लेकर चलते हैं।

टिकड़ा पुं. {हिं. टिकिया} {*स्त्री.* अल्पा. टिकड़ी} वह चिपटा गोल टुकड़ा, जो किसी चीज में, विशेषत: गहनों में लगाया जाता है; अंगारों पर सेंकी हुई रोटी।

टिकड़ी *स्त्री.* {हिं.} छोटा टिकड़ा।

टिकना *अ.* {सं. टीकते} कुछ समय के लिए रुकना या ठहरना; कुछ दिनों तक काम देना, स्थित रहना, बना या अड़ा रहना।

टिकरी *स्त्री.* {हिं. टिकिया} एक प्रकार का नमकीन पकवान; टिकिया।

टिकली *स्त्री.* {हिं. टिकिया} छोटी टिकिया; पन्नी, काँच या धातु की बहुत छोटी बिन्दी; जो स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं।

टिकस पुं. टिकट, टैक्स।

टिकसार[1] *वि.* टिकाऊ।

टिकाऊ *वि.* {हिं. टिकना} टिकने या कुछ दिनों तक काम देनेवाला, मजबूत (ड्यूरेबुल)।

टिकान *स्त्री.* {हिं. टिकना} टिकने या ठहरने कि क्रिया या भाव; टिकने का स्थान, पड़ाव।

टिकाना *स.* {हिं. टिकना} टिकने या ठहरने के लिए जगह देना, ठहराता; टेकाना।

टिकाव पुं. {हिं. टिकना} स्थिति, ठहराव; स्थिरता, स्थायित्व।

टिकिया *स्त्री.* {सं. वटिका} गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा, जैसे रंग या दवा की टिकिया; कोयले की बुकनी से बना हुआ वह गोल टुकड़ा, जिसे सुलगाकर तंबाकू पीते हैं; इस आकार की एक मिठाई।

टिकुरा पुं. {हिं.} टीला, भीटा।

टिकुरी *स्त्री.* {हिं.} सूत कातने की फिरकी, तकली।

टिकुली *स्त्री.* टिकली।

टिकैत पुं. {हिं. टिका + ऐत (प्रत्य.)} राजा का उत्तराधिकारी, कुमार, युवराज; अधिष्ठाता; सरकार।

टिकोरा पुं. {हिं. टिकिया} आम का छोटा, कच्चा फल।

टिक्कड़ पुं. {हिं. टिकिया} बड़ी टिकिया; सेंकी हुई मोटी रोटी।

टिक्की[1] *स्त्री.* {हिं. टिकिया} छोटा टिक्कड़।

टिक्की[2] *स्त्री.* {हिं. टीका} माथे पर लगाने की बिन्दी; ताश पर की बूटी।

टिखटी *स्त्री.* टिकठी।

टिघलना *अ.* पिघलना।

टिघलाना *क्रि. स.* {हिं.} गलाना, पिघलाना।

टिचन *वि.* {अं. अटेन्शन} तैयार, प्रस्तुत; उद्यत; मुस्तैद; ठीक, दुरुस्त।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिटकारना *स.* {अनु.} {*भाव.* टिटकारी} 'टिकटिक' करके हाँकना।

टिटिंबा *पुं.* {?} व्यर्थ का बखेड़ा।

टिटिहरी *स्त्री.* {सं. टिट्टिभ} पानी के पास रहनेवाली एक छोटी चिड़िया, कुररी।

टिट्टिभ *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* टिट्टिभी} टिटिहरी, कुररी; टिड्डी।

टिड्डा *पुं.* {सं. टिट्टिभ} एक प्रकार का छोटा काला फतिंगा।

टिड्डी *स्त्री.* {सं. टिट्टिभ} एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा, जो दल बाँधकर चलता और पेड़-पौधों की पत्तियाँ या खेतों की पैदावार खा जाता है (लोकस्ट)।

टिड्डी-दल *पुं.* {हिं. टिड्डी + सं. दल} मनुष्यों, जीव-जंतुओं आदि का बहुत बड़ा दल या समूह।

टिपका *पुं.* टपका, पानी की बूँद।

टिपटिप *स्त्री.* {अनु.} टाइपराइटर के चलने से होनेवाला शब्द; बूँद-बूँद पानी गिरने का शब्द।

टिपकना *स्त्री.* {हिं.} धीरे-धीरे प्रहार करवाना, पिटवाना, दबवाना, टीपने का काम दूसरे से करवाना।

टिपाई *स्त्री.* {हिं. टीपना} टीपने की क्रिया, भाव या मजदूरी; चित्रकला में आकृतियों आदि की आरंभिक रूपरेखा अंकित करना।

टिपारा *पुं.* {हिं. तीन + फा. पारः = टुकड़ा} मुकुट के आकार की एक प्रकार की तिकोनी टोपी।

टिपुर *पुं.* {हिं.} अभिमान, घमंड, पाखंड।

टिप्पणी *स्त्री.* {सं.} गूढ़ वाक्य आदि का विस्तृत और स्पष्ट अर्थ बतानेवाला छोटा लेख; घटना आदि का संक्षिप्त विवरण या उसके संबंध में संपादक का विचार जो समाचार-पत्र में प्रकाशित होता है; किसी व्यक्ति विषय या कार्य के संबंध में प्रकट किया जानेवाला संक्षिप्त विचार।

टिप्पन *पुं.* {सं.} टीका, व्याख्या, टिप्पणी; जन्मकुंडली; जन्मपत्री।

टिप्पनी *स्त्री.* {सं.} व्याख्या, टीका।

टिप्पी *स्त्री.* {हिं.} वह चिह्न जो उँगली में रंग पोतकर बनाया जाता है, ताश की बूटी।

टिबरी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार की चिड़िया।

टिप्पस *स्त्री.* {देश.} विकट परिस्थिति में अपना काम निकालने के लिए लगाई जानेवाली कोई सहज युक्ति।

मुहा. टिप्पस भिड़ाना या लगाना = उक्त प्रकार की कोई युक्ति या उपाय करना।

टिफन *पुं.* {अं.} दोपहर का वह भोजन जो विद्यार्थी स्कूल या कर्मचारी दफ्तर ले जाते हैं।

टिमटिमाना *अ.* {सं. तिम = ठंडा होना} (दीपक का) मंद रूप से जलना, थोड़ा प्रकाश देना; बुझने पर हो-होकर फिर जल उठना।

टिर *स्त्री.* टर।

टिर्राना *अ.* टर्राना।

टिलटिलाना *क्रि. अ.* {हिं.} पतला दस्त आना।

टिलक *पुं.* {हिं.} लकड़ी का टेढ़ा-मेढ़ा गँठीला टुकड़ा।

टिल्ला *पुं.* {हिं} धक्का, ढोकर, चोटा।

टिल्लेनवीसी *स्त्री.* {हिं.} नीच सेवा, बेकार का काम।

टिसुआ *पुं.* {हिं.} अश्रु, आँसू।

टिहुक *स्त्री.* {हिं.} चमक।

टिहुकना *क्रि. अ.* {हिं.} ठिठकना, चौंकना, रूठना।

टिहुनी *स्त्री.* {हिं.} घुटना, कोहनी।

टीक *स्त्री.* {सं. तिलक} गले में पहनने का एक गहना; माथे पर पहनने का गहना।

टीकना *स.* {हिं टीका} टीका या तिलक लगाना; चिह्न या रेखा बनाना।

टीका[1] *पुं.* {सं टंकित} चंदन, केसर आदि से मस्तक या बाँहों पर संप्रदायसूचक संकेत के लिए लगाया जानेवाला चिह्न, तिलक; कन्यापक्ष के लोगों का वर के मस्तक पर तिलक लगाकर विवाह निश्चित करना, तिलक; शिरोमणि, श्रेष्ठ पुरुष; वह जो किसी से सब बातों में बढ़ा-चढ़ा हो, जैसे पतितों का टीका = सबसे बढ़कर पतित; राजसिंहासन या गद्दी पर बैठने के समय होनेवाला धार्मिक कृत्य, राजतिलक; राज्य का उत्तराधिकारी, युवराज; किसी रोग को रोकने के लिए उस रोग का चेप या रस शरीर में सुई के द्वारा प्रविष्ट करने की क्रिया।

टीका[2] *स्त्री.* {सं.} गूढ़ लेखों, काव्यों आदि के अर्थ स्पष्ट करनेवाला वाक्य, पद या ग्रंथ, व्याख्या, तिलक। (कॉमेंटरी); किसी विषय की चर्चा छिड़ने पर उसके गुण-दोष के संबंध में प्रकट किया जानेवाला मत (कॉमेंट)।

टीकाकार *पुं.* {सं.} किसी गूढ़ ग्रंथ का अर्थ या आशय बतलाने के लिए उसकी टीका लिखनेवाला (कॉमेंटेटर)।

टीका-टिप्पणी *स्त्री.* {सं.} कोई प्रसंग छिड़ने या बात सामने आने पर उसके गुण-दोष आदि के संबंध में प्रकट किया जानेवाला विचार या मत (कमेंट)।

टीकी *स्त्री.* {हिं. टीका} सिर के बालों की छोटी चोटी; माथे पर लगाई जानेवाली छोटी बिंदी, छोटा टीका या बिंदी।

टीड़ी *स्त्री.* टिड्डी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Found... Chennai and eGangotri

टीन पुं. {अं. टिन} राँगा; राँगे की कलई की हुई लोहे की पतली चद्दर; इस चद्दर का बना हुआ डिब्बा।

टीप स्त्री. {हिं. टीपना} टीपने की क्रिया या भाव, टिपाई; दबाव, दाब; गच कूटने का काम; गाने में खींची हुई लंबी तान। विशेष 'पुकार'।

मुहा. टीप लगाना = संगीत में टीप लगाते हुए गाना।

स्मरण के लिए किसी बात को झटपट लिख लेने की क्रिया, टाँक लेने का काम; सूचना, व्याख्या या आलोचना के रूप में लिखी हुई कोई बात (नोट); दस्तावेज; इमारत के काम में ईंट-पत्थर के जोड़ों में मसाला भरने का काम; जन्मपत्री।

टीप-टाप स्त्री. {हिं. टाप} बनावटी सिंगार; आडंबर।

टीपन स्त्री. {हिं. टीपन} जन्मपत्री; गाँठ, टाँका, पट्ठा।

टीपना[1] स. {सं टेपन} दबाना, चाँपना, जैसे किसी का गला टीपना; धीरे-धीरे ठोंकना या दबाना; चित्र बनाने से पहले उसकी रेखाएँ खींचना, रेखाकर्म, खतकशी (स्केचिंग); इमारत के काम में ईंटों या पत्थरों के संधि-स्थानों पर मसाला लगाकर उन्हें बंद करना।

टीपना[2] स. {सं. टिप्पनी} याद रखने के लिए लिख या टाँक लेना, टाँकना।

टीबा पुं. टीला; भीटा, छोटी पहाड़ी।

टीम-टाम स्त्री. {अनु.} बनाव-सिंगार।

टीला पुं. {सं. अष्टीला} मिट्टी-पत्थर का कुछ उभरा हुआ भूभाग, ढूह, भीटा; मिट्टी का ऊँचा ढेर, धुस; छोटी पहाड़ी।

टीस स्त्री. {अनु.} {क्रि. टीसना} रह-रहकर उठनेवाला दर्द, कसक होना।

टीसना अ. {हिं. टीस} रह-रहकर पीड़ा देना, कसकना।

टुँगना क्रि. अ. {हिं.} कोमल पत्तियाँ दाँत से कुतरकर खाना, कुतरना।

टुंच वि. {हिं.} क्षुद्र, नीच, तुच्छ।

टुंटा स्त्री. {हिं.} बिना हाथ का, लूला।

टुइयाँ स्त्री. {हिं.} छोटी जाति का सुग्गा, सुग्गी (वि.) नाटा, बौना, ठिगना।

टुंडा वि. {सं. तुंड} (वृक्ष) जिसकी डाल या टहनी कट गई हो, ठूँठ; जिसका हाथ कटा हो, लूला, लुंजा जिसका कोई अंग खंडित हो।

टुक पुं. {सं. स्तोक} थोड़ा, जरा, तनिक।

टुकड़-गदाई पुं. {हिं. टुकड़ा + फा. गदा} भिखारी, भिखमंगा; वि. तुच्छ; दरिद्र, कंगाल; स्त्री. टुकड़े या भीख माँगने का काम।

टुकड़गदा पुं. {हिं.} घर-घर रोटी माँगने वाला।

टुकड़तोड़ पुं. {हिं. टुकड़ा + तोड़ना} दूसरों का दिया हुआ अन्न खाकर रहनेवाला (तुच्छ व्यक्ति)।

टुकड़ा पुं. {सं. स्तोक} {स्त्री. अल्पा. टुकड़ी} किसी वस्तु का वह भाग, जो उससे कट-छँटकर अलग हो गया हो, खंड; चिह्न आदि के द्वारा विभक्त अंश, भाग; रोटी का तोड़ा हुआ अंश या खंड।

मुहा. दूसरों के टुकड़े तोड़ना = दूसरों के दिए हुए भोजन पर निर्वाह करना। *टुकड़ा माँगना* = भीख माँगना।

टुकड़ी स्त्री. {हिं. टुकड़ा} छोटा टुकड़ा, खंड, जैसे मिठाई की टुकड़ी; दल, जत्था; किसी विशेष प्रकार के कार्य करनेवालों का स्वतंत्र व छोटा दल, जैसे वैज्ञानिकों या अन्वेषकों की टुकड़ी।

टुक्का पुं. {हिं. टूक} टुकड़ा, खंड; किसी चीज का बहुत थोड़ा अंश।

मुहा. टुक्का-सा जवाब देना = साफ इनकार करना, कोरा जवाब देना; *टुक्का-सा मुँह लेकर रह जाना* = लज्जित होकर रह जाना।

टुघलाना क्रि. स. {हिं.} मुख में रखकर धीरे-धीरे कुचलना, चुमलाना, पागुर करना।

टुच्चा वि. {सं. तुच्छ} ओछा; अपूर्ण या खंडित और भद्दा।

टुटनी स्त्री. {हिं.} पतली नली, छोटी टोटी।

टुटपुँजिया वि. {हिं. टूटी + पूँजी} जिसके पास बहुत थोड़ी पूँजी हो।

टुटरूँ पुं. {अनु.} छोटी पंडुकी।

टुटरूँ (टूँ) पेंडुकी की बोली।

टुटरूँटूँ स्त्री. {अनु.} पंडुकी या फाख्ता के बोलने का शब्द; वि. अकेला; दुबला-पतला।

टुनका पुं. {हिं.} एक प्रकार का मूत्र-रोग।

टुनकी स्त्री. {हिं.} एक परदार कीड़ा, जो धान की फसल को हानि पहुँचाता है।

टुनगा पुं. {सं. तनु + अग्र = अगला} टहनी का सिरा; टहनी।

टुनगी स्त्री. {हिं.} टहनी का अगला भाग जिसकी पत्तियाँ छोटी और कोमल होती हैं, फुनगी।

टुनि (न) हाई स्त्री. {हिं.} टोना करनेवाली स्त्री।

टुन्ना पुं. {हिं.} वृक्ष का वह डंठल, जिसमें फल लगता है।

टुपकना क्रि. स. {हिं.} धीरे-से काटना, चुगली खाना।

टुम्मा पुं. {हिं.} वह रसीद, जो रुपया मिलने पर लिखी जाती है।

टुर्रा पुं. {हिं.} कण, टुकड़ा, दाना, डली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूँ *स्त्री.* {हिं.} गुदा से वायु निकलने वाला शब्द।

टुनटुन *स्त्री.* {अनु.} घंटी के बजने का शब्द।

टुनहाया *स.* = टोनहा।

टुँगना *स.* {हिं. टुनगा} थोड़ा-थोड़ा काटकर खाना।

टूँड़ *पुं.* {सं. तुंड} {*स्त्री.* अल्पा. टूँड़ी} कीड़ों के मुँह पर की वे पतली नालियाँ जिन्हें गड़ाकर वे कुछ खाते या चूसते हैं; अनाज की बाल में दाने के कोश के सिरे पर निकला हुआ नुकीला अंश; ढोंढ़ी, नाभि। किसी वस्तु की दूर तक निकली हुई नोक।

टूक *पुं.* टुकड़ा।

टूट *स्त्री.* {हिं. टूटना का *भाव.*} टूटकर अलग निकला हुआ खंड, टूटन, टुकड़ा; भूल, त्रुटि; टोटा, घाटा; न्यूनता, कमी।

टूटना *अ.* {त्रुटि} कई टुकड़े होना, खंडित होना, भग्न होना; किसी अंग के जोड़ का उखड़ जाना; लगातार चलनेवाली क्रिया का क्रम रुकना; किसी ओर एकबारगी बेग से बढ़ना; एकबारगी बहुत-सा आ पड़ना; अचानक धावा करना; पृथक् या अलग होना; दुर्बल, क्षीण या अशक्त होना; वैभव, गुण-योग्यता आदि में ह्रास या बहुत कमी होना; युद्ध में किले का शत्रु के हाथ में जाना; घाटा या कमी होना; शरीर में ऐंठन या तनाव लिए हुए पीड़ा होना।

टूट-फूट *स्त्री.* {हिं. टूटना + फूटना} टूटे या फूटे हुए होने की अवस्था या भाव।

टूटा *वि.* {हिं.} खंडित, भग्न, शिथिल, दुर्बल, निर्धन।

टूठना *अ.* {सं. तुष्ट} संतुष्ट होना; *स.* संतुष्ट या तृप्त करना।

टूठनि *स्त्री.* {हिं. टूटना} संतोष, तुष्टि।

टूम *स्त्री.* {अनु.} गहना, आभूषण।

टूमना *क्रि. स.* {हिं.} धक्का देना, ताना मारना।

टूसा *पुं.* {हिं.} खंड, नुकुली कली।

टूसी *स्त्री.* {हिं.} छोटा टूसा या कली।

टें *स्त्री.* {अनु.} तोते की बोली।

मुहा. टें होना या बोलना = चटपट मर जाना।

टेंकिका *स्त्री.* {हिं.} ताल का एक भेद।

टेंगरा *पुं.* {हिं.} एक प्रकार की मछली।

टेंघुना *पुं.* {हिं.} घुटना।

टेंघुनी *स्त्री.* {हिं.} घुटने पर की चक्की।

टेंट *स्त्री.* {देश.} धोती की वह घुमावदार ऐंठन, जो कमर पर पड़ती है।

टेंटर *पुं.* 'ढेंढर'; आँख के ढेले पर चोट।

टेंटी[1] *स्त्री.* {देश.} करील नामक पौधा या उसका फल।

टेंटी[2] *पुं.* {हिं. टेंटें (अनु.)} जड़तापूर्वक टेंटें करनेवाला, टर्रा; *वि.* चंचल, चपल।

टेंटें *स्त्री.* {अनु.} तोते की बोली; व्यर्थ की बकवाद।

टेंडर *पुं.* {अं.} व्यय का अनुमानित ब्योरा जो प्रस्ताव के रूप में हो, निविदा।

टेक *स्त्री.* {हिं. टिकना} भारी वस्तु को टिकाए रखने के लिए उसके नीचे लगाई हुई लकड़ी, चाँड़, थूनी, थम्भ; ढासना, सहारा; आश्रय, अवलंब; ऊँचा टीला; मन में ठानी हुई बात, संकल्प; हठ, जिद।

मुहा. टेक निभना या रहना = प्रतिज्ञा या जिद पूरी होना। *टेक पकड़ना या गहना* = हठ करना, अड़ना।

गीत का पहला पद, स्थायी।

टेकना *स.* {टेक} सहारे के लिए किसी वस्तु पर भार रखना, सहारा लेना या ढासना लगा लेना; ठहराना या रखना।

मुहा. (किसी के आगे) माथा टेकना = प्रणाम करना; अधीनता प्रकट करना।

सहारे के लिए पकड़ना, हाथ का सहारा लेना; ग्रहण करना, पकड़ना या लेना; हठ करना; बीच में रोकना या पकड़ना; (वार या आघात) रोकना या सहना; ग्रहण करना, लेना या पकड़ना।

टेकरा *पुं.* {हिं. टेक} {*स्त्री.* अल्पा. टेकरी} ऊँचा टीला; छोटी पहाड़ी।

टेकला *स्त्री.* {हिं. टेक} धुन, रट।

टेकान *स्त्री.* {हिं. टेकना} ऊपर की वस्तु सँभालने के लिए उसके नीचे लगाई हुई लकड़ी, टेक, चाँड़; वह स्थान जहाँ बोझ ढोनेवाले बोझ रखकर सुस्ताते हैं; वह स्थान जहाँ से जुआरियों को जुए के अड्डे का पता मिलता है।

टेकाना *स.* हिं. 'टेकना' का प्रे.।

टेकानी *स्त्री.* {हिं.} वह लोहे की कील, जो गाड़ी के पहिए को धुरे में रोकने के लिए लगाई जाती है-किल्ली।

टेकी *पुं.* {हिं. टेक} अपनी टेक या हठ पर अड़ा रहनेवाला, हठी, जिद्दी।

टेकुआ *पुं.* तकला।

टेकुरी *स्त्री.* तकली।

टेघरना *क्रि. अ.* {हिं.} गलना, पिघलना।

टेटका *पुं.* {सं. टाटंक} कान में पहनने का एक गहना।

टेढ़ *स्त्री.* {हिं. टेढ़ा} टेढ़ापन, वक्रता; *वि.* टेढ़ा।

टेढ़-बिड़ंगा *वि.* {हिं. टेढ़ा + बेढंगा} टेढ़ा।

टेढ़ा *वि.* {सं. टेटक} {*स्त्री.* टेढ़ी} जो बीच में इधर-उधर झुका या घूमा हो, जो सीधा न हो,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वक्र, कुटिल; जो समानांतर या सीधा न हो, तिरछा; कठिन, मुश्किल।
पद टेढ़ी खीर = मुश्किल काम।
बात-बात में लड़ जानेवाला, उद्धत।
मुहा. टेढ़ा पड़ना या होना = उग्र रूप धारण करना, बिगड़ना; अकड़ना, टर्राना। टेढ़ी-सीधी सुनाना = भला-बुरा कहना, कटु बातें कहना।

टेढ़ाई *स्त्री.* = टेढ़ापन।

टेढ़ापन *पुं.* {हिं. टेढ़ा + पन} टेढ़े होने का भाव, वक्रता।

टेढ़े *क्रि. वि.* {हिं. टेढ़ा} घुमाव-फिराव के साथ, सीधी तरह से नहीं।

टेना *स.* {देश.} तेज करने के लिए पत्थर आदि पर हथियार रगड़ना; मूँछ के बालों को खड़ा और तना रखने के लिए उमेठना।

टेनिस *पुं.* {अं.} एक अंग्रेज़ी खेल, जो दो जनों से खेला जाता है।

टेनी *स्त्री.* {हिं.} छोटी अँगुली।

टेबुल *पुं.* {अं.} एक प्रकार की बड़ी ऊँची चौकी, मेज; सारिणी, जैसे टाइम टेबुल।

टेबुल फैन *पुं.* {अं.} मेज पर रखकर चलाया जानेवाला बिजली का पंखा।

टेम *स्त्री.* {हिं. टिमटिमाना} दीप-शिखा, दीए की लौ, लाट।

टेर *स्त्री.* {हिं. टेरना} गाने में ऊँचा स्वर, तान, टीप; बुलाने का ऊँचा शब्द, पुकार।

टेरक *पुं.* {सं.} ऐंचाताना, भेंगा।

टेरना[1] *स.* {त्वरते} ऊँचे स्वर से गाना; पुकारना।

टेरना[2] *स.* {सं. तीरण = तै करना} (कष्ट का समय) बिताना, व्यतीत करना।

टेरवा *पुं.* {हिं.} तुक्के की नली।

टेलीप्रिंटर *पुं.* {अं.} वह यंत्र जिससे तार से भेजे गए समाचार टाइप पर स्वयं छपते रहते हैं।

टेलीग्राम *पुं.* {अं.} तार भेजने की यंत्र-व्यवस्था।

टेलीफोन *पुं.* {अं.} वह उपकरण जिसके द्वारा एक स्थान पर कही हुई बात बहुत दूर के दूसरे स्थान पर सुनाई देती है, दूरभाष।

टेलीविजन *पुं.* {अं.} सैकड़ों मील दूरी पर रहनेवाली चीज या व्यक्ति को यंत्र द्वारा परदे पर प्रत्यक्ष दिखलानेवाला यंत्र-विशेष।

टेव *स्त्री.* {हिं. टेक} आदत, बान।

टेवकी *स्त्री.* {हिं.} नाव का ऊपरी छोटा पाल।

टेवना *स.* टेना।

टेवा *पुं.* {सं. टिप्पन} जन्मकुंडली।

टेसू *पुं.* {सं. किंशुक} पलाश, ढाक; शारदीय नवरात्र का एक उत्सव, जिसमें लड़के गाते हुए घूमते हैं; इस उत्सव पर गाया जानेवाला गीत।

टैंक *पुं.* {अं.} पानी, तेल आदि की बड़ी टंकी; बड़ी तोप-गाड़ी।

टैंकमार *वि.* {हिं. टैंक + मारना} टैंक पर प्रहार करनेवाला।

टैक्स *पुं.* {अं.} कर, महसूल।

टैक्सी *स्त्री.* {अं.} किराए पर चलने वाली कार।

टैन *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार की घास, जो चमड़ा सिझाने के काम में आती है।

टौक *पुं.* {हिं.} रोक, विघ्न।

टोंक (ना) *पुं.* {हिं.} किनारा, सिरा, नोक।

टोंग *पुं.* {हिं.} एक प्रकार की झाड़ी जिसके रेशों से रस्सी बनाई जाती है।

टोंच *स्त्री.* {हिं. टोंचना} सिलाई; सिलाई का टाँका।

टोंचना *स.* {सं. टंकन या अनु.} सिलाई करना, सीना; गड़ाना, चुभाना।

टोंटा *पुं.* {सं. तुंड} {*स्त्री.* अल्पा. टोंटी} पानी आदि ढालने के लिए बरतन में लगा हुआ नल; कारतूस।

टोंटी *स्त्री.* {हिं. टोंटा} किसी पात्र या नल में आगे की ओर लगा हुआ वह छोटा मुँह, जिसमें से होकर कोई तरल पदार्थ गिरता हो, जैसे झारी की टोंटी, कल की टोंटी।

टोआ *पुं.* {हिं.} गर्त, गड्ढा।

टोइयाँ *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का छोटा सुग्गा, जिसकी ठोर पीला तथा कंठ बैंगनी रंग का होता है।

टोई *स्त्री.* {हिं.} अँगुली की पोर।

टोक *स्त्री.* {सं. स्तोक} टोकने की क्रिया या भाव; किसी के टोकने से लगनेवाली नजर या होनेवाला अनिष्ट परिणाम; उक्त प्रकार से कही हुई कोई ऐसी बात, जो किसी काम में बाधक होने या नजर लगानेवाली मानी जाती है (स्त्रियाँ)।
मुहा. टेक लगना = किसी के टोकने का अनिष्ट प्रभाव पड़ना।

टोकन *पुं.* {अं.} वह चिह्नित संकेत, जिसे देने पर किसी चीज को प्राप्त किया जा सकता हो।

टोकना[1] *स.* {हिं. टोक} किसी के कोई काम करने पर उसे कुछ कहकर रोकना या उससे कुछ पूछताछ करना।

टोकना[2] *पुं.* {?} {*स्त्री.* टोकनी} टोकरा, झाबा; एक प्रकार का हंडा (बरतन)।

टोकनी *स्त्री.* {हिं.} टोकरी, डलिया, पानी रखने का बर्तन-पात्र, बटलोई, ढेगची।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टोकरा पुं. {?} {स्त्री. अल्पा. टोकरी} बाँस या पतली टहनियों का बना हुआ गोल और गहरा बरतन, डला, झाबा।

टोकरी स्त्री. हिं. 'टोकरा' का अल्पा.।

टोकवा पुं. {हिं.} नटखट बालक।

टोकसी स्त्री. {हिं.} नारियल की आधी खोपड़ी।

टोका पुं. {सं. स्तोक} सिरा, छोर, जैसे डोरे या तागे का टोका; कपड़े आदि का कोना या पल्ला; नोक।

टोकारा पुं. {हिं. टोक} वह बात, जो किसी को कुछ चेताने या स्मरण दिलाने के लिए रोक या टोककर कही जाए।

टोट स्त्री. {हिं. टूटना = कम होना} कमी, त्रुटि; अभाव।

टोटकहाया स्त्री. {हिं. टोटका} {स्त्री. टोटकहाई} टोटका, टोना या जादू करनेवाला।

टोटका पुं. {सं. त्रोटक} दैवी बाधा दूर करने के लिए वह प्रयोग, जो किसी अलौकिक शक्ति या भूत-प्रेत पर विश्वास करके किया जाए, टोना।

टोटा[1] पुं. {सं. तुंड} बचा या कटा हुआ खंड, टुकड़ा।

टोटा[2] पुं. {हिं. टूटना} घाटा, हानि; कमी, त्रुटि; अभाव।

टोड पुं. {सं. तुंड} उदर, पेट।

टोडिक पुं. {हिं. टोड} वह जिसे सदा पेट भरने की चिंता रहे, पेटू।

टोडिस वि. {?} उपद्रवी, नटखट, शरारती।

टोडी पुं. {अं.} नीच और तुच्छ वृत्ति का मनुष्य, कमीना और खुशामदी।

टोड़ी स्त्री. {?} प्रातःकाल के समय गाई जानेवाली एक रागिनी।

टोडी-बच्चा पुं. (ब्रिटिश भारत में) सरकारी अफसरों की खुशामदी।

टोनहा, टोन्हाया पुं. {हिं. टोना} {स्त्री. टोनहाई} टोना या जादू करनेवाला।

टोना पुं. {सं. तंत्र} टोटका, जादू; विवाह का एक प्रकार का गीत; स. = टटोलना।

टोप[1] पुं. {हिं. तोपना = ढाँकना} बड़ी टोपी; शिरस्त्राण, खोद।

टोप[2] पुं. {अनु. टप} बूँद।

टोपान पुं. {हिं.} टोकरा, खाँचा।

टोपा[1] पुं. {हिं. टोप} बड़ी टोपी।

टोपा[2] पुं. {हिं. तोपन} टोकरा।

टोपा[3] पुं. {हिं. तोपना} सिलाई का टाँका, डोभ।

टोपी स्त्री. {हिं. तोपना} सिर पर पहना जानेवाला सिला हुआ परिधान; इस आकार की कोई गोल और गहरी चीज; इस आकार का धातु का वह गहरा ढक्कन जिसे बंदूक पर चढ़ाकर घोड़ा गिराने से आग पैदा होती है; वह थैली जो शिकारी जानवर के मुँह पर चढ़ाई रहती है।

टोरना स. {सं. त्रुट} तोड़ना।

मुहा. आँख टोरना = लज्जाजनक बात से दृष्टि हटाना या नीची करना।

टोभ पुं. {हिं.} टाँका।

टोर स्त्री. {हिं.} शोरे की मिट्टी का पानी, कटारी।

टोरा पुं. {हिं.} जुलाहे की रेशम तौलनेवाली तराजू।

टोर्रा पुं. {हिं.} छिलका सहित अरहर का खड़ा दाना, जो दाल में रह जाता है।

टोरी स्त्री. टोली।

टोल[1] स्त्री. {सं. तोलिका} मंडली, जत्था, झुंड; चटसार, पाठशाला।

टोल[2] पुं. {अं.} वह कर जो किसी विशेष सुभीते के लिए यात्रियों आदि पर लगता है।

टोलना स. टटोलना।

टोला पुं. {सं. तोलिका = घेरा, बाड़ा} {स्त्री. टोली} आदमियों की बड़ी बस्ती या नगर का एक भाग, मुहल्ला, पाड़ा।

टोली स्त्री. {सं. तोलिका} छोटा मोहल्ला, नगर या बस्ती का छोटा भाग; समूह, जत्था।

टोवना स. टोना (स्पर्श करना)।

टोह स्त्री. {हिं. टटोलना} टटोल, खोज, ढूँढ़; खबर, पता।

टोहना अ. {हिं. टोह} टोह या थाह लेना, खोजना; स. टटोलना।

टोहिया पुं. वि. {हिं.} ढूँढ़नेवाला, भेदिया, जासूस।

टोही स्त्री. {हिं. टोह} टोह लेने या पता लगानेवाला।

टौर पुं. {?} घात, दाँव।

टौरना स. {हिं. टेरना} जाँच करना, परखना।

ट्रंक पुं. {अं.} लोहे की चादर का बना हुआ बड़ा संदूक।

ट्रंककाल पुं. {अं.} एक नगर से दूसरे नगर किया जानेवाला फोन।

ट्रक पुं. {अं.} माल ढोनेवाली मोटर गाड़ी।

ट्राम स्त्री. {अं.} (रेल की तरह) लोहे की पटरियों पर बिजली से चलनेवाली एक प्रकार की लंबी गाड़ी, जो प्रायः बड़े-बड़े नगरों में चलती है।

ट्रामवे स्त्री. = ट्राम।

ट्रे स्त्री. {अं.} थाली की तरह का छिछला पात्र।

ट्रेन स्त्री. {अं.} रेलगाड़ी, लौहपथ-गामिनी।

ट्रैफिक पुं. {अं.} यातायात।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठ देवनागरी वर्णमाला के व्यंजनों में, बारहवाँ और टवर्ग का दूसरा व्यंजन, जिसका उच्चारण मूर्धा से होता है।

ठंठ *वि.* {सं. स्थाणु} ठूँठ (पेड़)।

ठंठार *पुं.* {हिं.} रिक्त, छूंछा, खाली।

ठंठपाल *वि.* {हिं.} निर्धन, धनहीन।

ठंड *स्त्री.* {हिं. ठंडा} शीत, सरदी।

ठंडक *स्त्री.* {हिं. ठंडा} शीत, सरदी, जाड़ा; ताप या जलन का विपरीत तत्व, तरी; संतोष, तृप्ति।

ठंडा *वि.* {?} {*स्त्री.* ठंडी} जिसमें ठंडक हो, सर्द, शीतल।

पद ठंडी साँस = दुख से भरी लंबी साँस, शोकोच्छ्वास, आह।

जो जलता या दहकता हुआ न हो, बुझा हुआ; जिसके स्वभाव में क्रोध या आवेश न हो, धीर, शांत।

मुहा. ठंडा करना = क्रोध शांत करना; ढाढस या तसल्ली देना।

जिसमें उग्रता या भीषणता न हो, जैसे ठंडा युद्ध; जिसमें उत्साह न हो; सुस्त, धीमा; जिसमें पुंसत्व न हो या कम हो; मरा हुआ, मृत।

मुहा. ठंडा होना = मर जाना।

ठंडाई *स्त्री.* {हिं. ठंडा} वे मसाले जिनसे शरीर की गरमी शांत होती और ठंडक आती है; पिसी हुई भाँग।

ठंडा-गुलम्मा *पुं.* {हिं.} धातु को बिना तपाए हुए उस पर सोना-चाँदी (का पानी) चढ़ाना।

ठंडा युद्ध *पुं.* {हिं. ठंडा + सं. युद्ध} अंदर ही अंदर की जानेवाली ऐसी कार्रवाई, जो प्रत्यक्ष रूप से युद्ध का रूप धारण न करने पर भी युद्ध के मुख्य उद्देश्य सफल या सिद्ध करती हो।

ठंडे-ठंडे *क्रि. वि.* बिना विरोध या प्रतिक्रिया किए, चुपचाप।

ठक *स्त्री.* {अनु.} ठोंकने का शब्द; *वि.* सन्नाटे में आया हुआ, भौचक्का।

ठक-ठक *स्त्री.* {अनु.} ठोंकने का शब्द।

ठकठकाना *क्रि. अ. स.* {हिं.} ठोंकना, पीटना, ठकठक करना।

ठकठौआ (वा) *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का करताल-जिसको बजाकर भिखमंगे भीख माँगते हैं।

ठकुरसुहाती *स्त्री.* {हिं. ठाकुर + सुहाना} लल्लो-चप्पो, खुशामदी।

ठकुराइत *स्त्री.* {हिं. ठाकुर + आइत (प्रत्य.)} ठाकुर होने का भाव; राज्य और उससे संबंध रखनेवाला अधिकार या वैभव; बड़ों के प्रति होनेवाली श्रद्धा या प्रीति; ठकुराई।

ठकुराई *स्त्री.* {हिं. ठाकुर} ठाकुर का अधिकार, पद या भाव; सरदारी, प्रधानता; वह प्रदेश जो किसी ठाकुर या सरदार के अधिकार में हो; बड़प्पन; महत्व; *पुं.* ठाकुर या राजपूत क्षत्रिय।

ठकुरानी *स्त्री.* {हिं. ठाकुर} ठाकुर की स्त्री; रानी, स्वामिनी।

ठकुरायत *स्त्री.* प्रभुत्व, आधिपत्य, सरदारी, अधिकार।

ठक्कुर *पुं.* {हिं.} देवप्रतिमा, देव-मूर्ति, मैथिल-गुजराती ब्राह्मणों की एक उपाधि।

ठक्कर *स्त्री.* टक्कर।

ठग *पुं.* {सं. स्थग} {*स्त्री.* ठगनी; *भाव.* ठगी} वह जो छल और धूर्तता से दूसरों का माल ले लेता हो; धूर्त।

ठगण *पुं.* {सं.} पिंगल में 5 मात्राओं का एक गण।

ठगना *स.* {हिं. ठग} धोखा देकर माल ले लेना; धोखा देना।

पद ठगा-सा = चकित, भौचक्का।

सौदा बेचने में अधिक दाम लेना, या रद्दी चीज देना; *अ.* धोखा, किसी के चक्कर में आना; चकित होना, दंग रह जाना।

ठगनी *स्त्री.* ठगिनि।

ठगपना *पुं.* {हिं. ठग + पन} ठगने का भाव या काम, धूर्तता।

ठगमूरी *स्त्री.* {हिं. ठग + मूरि} वह नशीली चीज, जो किसी को बेहोश करके उसका माल लूटने के लिए ठग उसे खिलाते थे।

ठगमोदक *पुं.* ठगलाडू।

ठगाठगी *स्त्री.* {हिं.} धूर्तता, ठगपना।

ठगयारीमूरि *स्त्री.* ठगमूरि।

ठगलाडू *पुं.* {हिं. ठग + लड्डू} ठगों का वह लड्डू, जिसमें नशीली या बेहोश करनेवाली चीज मिली रहती थी।

ठगवाइ *स्त्री.* ठगपन।

ठगवाना *क्रि. स.* {हिं.} किसी दूसरे से अन्य को धोखा दिलवाना।

ठगविद्या *स्त्री.* = धूर्तता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठगाना *अ.* {हिं. ठगना} ठगा जाना; धोखे में आ-जाना।

ठगाई *स्त्री.* {हिं.} ठगपन, ठगी।

ठगिन, ठगिनी *स्त्री.* {हिं. ठग} धोखा देकर लूटनेवाली स्त्री, लुटेरिन; ठग की स्त्री; कुटनी।

ठगिया *पुं.* ठग, धूर्त, छली, वंचक।

ठगी *स्त्री.* {हिं. ठग} धोखा देकर दूसरों का माल लूटने का काम या भाव; धूर्तता।

ठगोरी *स्त्री.* {हिं ठग + मूरि} ठगने की विद्या; सुध-बुध भुलानेवाली बात या शक्ति।

उदा. जानहु लाई काहु ठगोरी—**जायसी**।

मुहा. (किसी पर) ठगोरी डालना = मोहित करके अथवा और किसी प्रकार अपने वश में कर लेना; टोना, जादू।

ठगौरी *स्त्री.* ठगोरी।

ठटकारी *स्त्री.* {हिं. ठाठ} वह टट्टी, जिसकी आड़ से शिकार किया जाता है।

ठट्ठा *पुं.* {सं. अट्टहास} परिहास, हँसी-दिल्लगी।

ठठ *पुं.* {सं. स्थाता} बहुत सी वस्तुओं या व्यक्तियों का समूह; ठाठ।

ठठई *स्त्री.* ठट्टा; हँसी, परिहास, दिल्लगी, उपहास।

ठठकना *अ.* ठिठकना; सहसा चलते-चलते रुक जाना।

ठठकीला *वि.* {हिं. ठाठ} ठाठदार।

ठठकान *स्त्री.* {हिं.} रुकावट, अवरोध।

ठठना[1] *स.* {हिं. ठाठ} ठहराना, निश्चित करना; सजाना; *अ.* खड़ा रहना, अड़ना, डटना; ठाठ बनना, सुसज्जित होना।

ठठना[2] *स.* {हिं. ठठ = समूह} समूह या दल बनाना।

ठठनि *स्त्री.* {हिं. ठठना} बनावट, रचना; ठाठ, सजावट।

ठठरा *पुं.* {हिं.} ठट्टर, ओट।

ठठरी *स्त्री.* {हिं. ठाठ} किसी के शरीर की हड्डियों का ढाँचा; किसी वस्तु का ढाँचा; मुरदा ले चलने की अरथी, रथी।

ठठाना[1] *स.* {अनु. ठक} मारना, पीटना।

ठठाना[2] *अ.* {सं. अट्टहास} जोर से हँसना।

ठठेरा *पुं.* {अनु. ठकठक} {*स्त्री.* ठठेरिन} बरतन बनानेवाला, कसेरा।

पद ठठेरे की बिल्ली = ठठेरे की बिल्ली का-सा मनुष्य जो कोई विकट बात देखकर न डरे; *ठठेरे-ठठेरे बदलौअल* = जैसे के साथ तैसा व्यवहार।

ठठेरिन *स्त्री.* {हिं.} ठठेरे की स्त्री।

ठठेरी *स्त्री.* {हिं. ठठेरा} ठठेरे की स्त्री; ठठेरे का काम; *वि.* ठठेरों का।

ठठेरी-बाजार *पुं.* कसेरों का बाजार।

ठठोल *पुं.* {हिं. ठट्ठा} दिल्लगीबाज, मसखरा; ठठोली।

ठठोली *स्त्री.* {हिं. ठट्ठा} हँसी, दिल्लगी।

ठट्ठा *पुं.* = ठट्ठा।

ठड़ा *वि.* खड़ा।

ठड़िया *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का नैचा।

ठड्डा *पुं.* {हिं.} पीठ की रीढ़ या हड्डी, पतंग।

ठठिया *स्त्री.* {हिं.} काठ की ऊँची ओखली जिसमें खड़ा होकर धान कूटा जाता है।

ठढ़ियाना *क्रि. अ.* {हिं.} खड़ा होना।

ठन *स्त्री.* {अनु.} धातु पर आघात पड़ने या उसके बजने का शब्द।

ठनक *स्त्री.* {अनु. ठनठन} चमड़े से मढ़े हुए बाजे पर आघात पड़ने का शब्द; टीस, कसक।

ठनकना *अ.* {अनु. ठनठन} ठनठन शब्द होना;

मुहा. तबला ठनकना = नाच-गाना होना। हलकी-पीड़ा होना, टीस मारना; *माथा ठनकना* = कुछ खटका या संदेह होना।

ठनकार *स्त्री.* {अनु.} ठनठन शब्द।

ठनगन *स्त्री.* {अनु. ठनठन} मंगल अवसरों पर नेगियों का अधिक पाने के लिए आग्रह या हठ।

ठनठन गोपाल *पुं.* {अनु. ठनठन + गोपाल} निस्सार वस्तु; निर्धन मनुष्य।

ठनठनाना *स.* {अनु.} ठनठन शब्द उत्पन्न करना, बजाना; *अ.* ठनठन शब्द होना।

ठनना *अ.* {हिं. ठानना} (किसी कार्य का) तत्परता से आरंभ किया जाना, अनुष्ठित होना, छिड़ना; (मन में) ठहरना, पक्का होना; उद्यत या तैयार होना।

ठनाका *पुं.* {हिं.} ठनकार, ठनठन का शब्द।

ठनाठन *क्रि. वि.* {अनु. ठनठन} ठनठन शब्द के साथ।

ठप *वि.* {अनु.} (कार्य या व्यापार) जो चलता-चलता किसी कारण से रुक या बंद हो गया हो, जैसे महँगाई के कारण व्यापार या हड़ताल के कारण यातायात ठप हो जाना।

ठपका *पुं.* {हिं.} ठोकर, आघात, धक्का।

ठप्पा *पुं.* {सं. स्थापन} लकड़ी या धातु का वह खंड, जिस पर कोई आकृति या बेल-बूटे आदि खुदे हों और उसे किसी दूसरी वस्तु पर रखकर दबाने से आकृतियाँ उतर या बन जाएँ, साँचा; साँचे के द्वारा बनाए हुए बेल-बूटे आदि, छापा।

ठमकना *अ.* {सं. स्तंभ} {*भाव.* ठमक} चलते-चलते ठहर जाना, ठिठकना, कुछ रुकना।

ठमकाना (कारना) *स.* {हिं. ठमकना} चलते हुए को रोकना, ठहराना, ढोल आदि बजाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठयऊ पुं. ठौर (स्थान)।

ठयना¹ स. {सं. अनुष्ठान} ठानना; पूरी तरह से करना; निश्चित करना; आकार रूप, अस्तित्व आदि देना, बनाना।

ठयना² स. {सं. स्थापन} स्थापित करना, बैठाना, ठहराना; प्रयुक्त करना; अ. स्थित होना, बैठना, जमना; काम में आना, प्रयुक्त होना; ठनना।

ठरन स्त्री. {हिं.} ठिठुरना, अधिक जाड़े में काँपना।

ठरना अ. {सं. स्तब्ध} सरदी से अकड़ना या सूत्र होना; बहुत अधिक सरदी पड़ना या लगना।

ठर्रा पुं. {देश.} बहुत मोटा सूत; महुए की निकृष्ट शराब।

ठलाना क्रि. स. {हिं.} गिराना।

ठवन स्त्री. {सं. स्थापन} बैठने का भाव, स्थिति; बैठने या खड़े होने का ढंग, मुद्रा (पोज, पोस्चर)।

ठवना स. ठयना।

ठवनि स्त्री. ठवन।

ठवर पुं. ठौर, स्थान, जगह।

ठस वि. {सं. स्थास्नु} ठोस, कड़ा; (कपड़ा) जिसकी बुनावट घनी हो, गफ़; दृढ़, मजबूत; भारी, वजनी; सुस्त, आलसी; (रुपया), जिसकी झनकार ठीक न हो; कृपण, कंजूस।

ठसक स्त्री. {हिं. ठस} गर्वपूर्ण चेष्टा; नखरा; ठाट-बाट, शान।

ठसका पुं. {अनु.} सूखी खाँसी जिसमें कफ़ न निकले; ठोकर, धक्का।

ठसाठस क्रि. वि. {ठस} खूब कसकर भरा हुआ, खचाखच।

ठस्सा पुं. {देश.} ठसक; घमंड; ठाठ-बाट।

ठहना¹ अ. {अनु.} घोड़ों का हिनहिनाना; शब्द करना, बजना; ठहरना, रुकना।

ठहना² स. {सं. संस्था} बनाना, सँवारना; रक्षा करना, बचाना, जैसे किसी की लाज ठहना।

ठहर पुं. {सं. स्थल} स्थान, जगह; रसोई का स्थान, चौका।

ठहनाना क्रि. अ. {हिं.} हिनहिनाना, ढोलक-तबले आदि का बजना।

ठहरना अ. {सं. स्थावर} चलते-चलते कुछ रुकना, थमना; डेरा डालना, टिकना; एक स्थान पर बना रहना, स्थित रहना; जल्दी खराब या नष्ट न होना, टिकाऊ होना, चलना; घुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने पर पानी का थिराना; धैर्य रखना।

मुहा. किसी बात का ठहरना = किसी बात का पक्का होना, जैसे वह हमारा मित्र ठहरा (बोलचाल)।

ठहराना स. {हिं. ठहरना} {भाव. ठहराई, ठहराव} चलने से रोकना, गति बंद करना; डेरा देना, टिकाना; अड़ाना, टिकाना; इधर-उधर न जाने देना; पक्का करना, तै करना।

ठहराव पुं. {हिं. ठहरना} ठहरने की क्रिया या भाव; गति का अभाव, स्थिरता; कोई बात ठहरने या निश्चित होने का भाव, समझौता (एग्रिमेंट)।

ठहरौनी स्त्री. {हिं. ठहरना} विवाह में टीके, दहेज आदि के लेन-देन का निश्चय या करार।

ठहाका पुं. {अनु.} ज़ोर की हँसी, अट्टहास।

ठाँ पुं. ठाँव।

ठाँई स्त्री. {हिं. ठाँव} स्थान, जगह।

ठाँउँ पुं. ठाँय, ठिकाना, ठाँव।

ठाँठ वि. {अनु. ठनठन} जिसका रस सूख गया हो, नीरस; (गाय या भैंस) जो दूध न देती हो।

ठाँय¹ स्त्री. {सं. स्थान} स्थान, जगह; क्रि. वि. समीप, निकट, पास।

ठाँय² स्त्री. {अनु.} बंदूक छूटने का शब्द।

ठाँयठाँय स्त्री. {अनु.} बंदूक चलने का शब्द; कहा-सुनी, बक-झक, झगड़ा।

ठाँव पुं. {सं. स्थान} स्थान, जगह; ठिकाना।

ठाँसना स. ठूँसना, दबा-दबाकर भरना; अ. ठन-ठन शब्द करते हुए खाँसना।

ठाँह पुं. = जगह।

ठाँउँ पुं. = ठाँव।

ठाकुर पुं. {सं. ठक्कुर} {स्त्री. ठकुराइन, ठकुरानी} देवता, देवमूर्ति; ईश्वर, भगवान; पूज्य व्यक्ति; किसी प्रदेश का अधिपति या नायक, सरदार; जमींदार; क्षत्रियों की उपाधि; नाइयों की उपाधि।

ठाकुर-द्वारा पुं. {हिं. ठाकुर + द्वारा} मंदिर, देवस्थान।

ठाकुर-बाड़ी स्त्री. ठाकुर-द्वारा।

ठाकुरी स्त्री. {हिं. ठाकुर} स्वामित्व, आधिपत्य; शासन; ठकुराई।

ठाठ¹ पुं. {सं. स्थातृ} लकड़ी या बाँस की पट्टियों का बना हुआ ढाँचा; किसी वस्तु के मूल अंगों और पार्श्वों का वह समूह, जिसके आधार पर शेष रचना होती है, ढड्ढा (फ्रेम); शृंगार, सजावट।

मुहा. ठाठ पर रह जाना = उद्देश्य सिद्ध करने में विफल होकर ज्यों-का-त्यों रह जाना; *ठाठ बदलना* = वेष बदलना, झूठ-मूठ अधिकार या बड़प्पन जताना, रंग बाँधना।

आडंबर, तड़क-भड़क; ढंग, शैली; आयोजन, तैयारी; सामान, सामग्री।

ठाठ² पुं. {हिं. ठठ} समूह, झुंड; बहुतायत, अधिकता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठाठना *स.* {हिं. ठाठ} निर्मित करना, रचना, बनाना; अनुष्ठान या आयोजन करना, ठानना; सजाना; *अ.* ठाठ या वेष बनाना।

ठाठ-बाट *पुं.* {हिं. ठाठ} सजावट, सज-धज; तड़क-भड़क, आडंबर।

ठाठर *पुं.* {हिं. ठाठ} टट्टर, टट्टी; ठठरी, पंजर; ढाँचा; कबूतरों आदि के बैठने की छतरी; ठाट-बाट।

ठाड़ा *वि.* {सं. स्थातृ} {*स्त्री. ठाढ़ी*} खड़ा; समूचा, साबुत, पूरा।

ठाढ़ेश्वरी *पुं.* {हिं. ठाढ़ा} एक प्रकार के साधु जो आध्यात्मिक साधना के लिए बराबर खड़े ही रहते हैं, कभी बैठते या लेटते नहीं।

ठादर *पुं.* {हिं.} राढ़, झगड़ा।

ठान *स्त्री.* {हिं.} किसी कार्य का आरंभ, छिड़ा हुआ काम, किसी काम को स्थिर करना, पक्का करना।

ठानना *स.* {सं. अनुष्ठान} {*भाव.* ठान} कार्य तत्परता के साथ आरंभ करना, अनुष्ठित करना, छेड़ना; पक्का करना, ठहराना; दृढ़ संकल्प करना।

ठाना *स.* {सं. अनुष्ठान} ठानना; स्थापित करना, रखना।

ठाम *पुं.* {सं. स्थान} स्थान, जगह; ठवन, मुद्रा।

ठार *पुं.* {सं. स्तब्ध} कड़ा जाड़ा, गहरी सरदी; पाला, हिम।

ठाल *स्त्री.* {हिं.} अवकाश, छुट्टी।

ठाला *पुं.* {हिं.} रोजगार का न चलना या आमदनी का न होना; किसी वस्तु या बात का पास में बिल्कुल न होना, अभाव; *वि.* जिसे कुछ काम-धंधा न हो, निठल्ला।

ठाली *वि.* {हिं. निठल्ला} जिसे कुछ काम न हो, निठल्ला; खाली, रिक्त।

ठावना *स.* ठाना।

ठाह[1] *स्त्री.* {हिं. ठहना} ठहने की क्रिया या भाव; संगीत में बहुत ठहर-ठहरकर अर्थात् अपेक्षाकृत अधिक समय लगाकर कुछ गाने या बजाने की क्रिया या भाव, विलंबित।

ठाह[2] *स्त्री.* {हिं. ठाहना} दृढ़ निश्चय, पक्का विचार।

ठाहना *स.* {हिं. ठहरना} संकल्प करना, मन में विचार पक्का करना।

ठाहर *पुं.* ठिकाना।

ठिंगना *वि.* {हिं. हेठ + अंग} {*स्त्री.* ठिंगनी} = ठिगना।

ठिक[1] *वि.* ठीक।

ठिक[2] *स्त्री.* {हिं. टिकना} स्थिरता, ठहराव।

ठिकठान *पुं.* ठौर-ठिकाना।

ठिकठैना *पुं.* {हिं. ठीक ठयना} व्यवस्था, प्रबंध, आयोजन।

ठिकरा *पुं.* ठीकरा।

ठिकना *क्रि. अ.* {हिं.} रुकना, अड़ना, ठहरना।

ठिकरौर *स्त्री.* {हिं.} वह स्थान जहाँ टूटे खपड़ों का बहुत-सा ढेर पड़ा हो।

ठिकाना[1] *पुं.* {हिं.} स्थान, जगह; रहने या ठहरने की जगह, निवास-स्थान।

मुहा. ठिकाने आना = बहुत सोच-विचार के बाद यथार्थ निर्णय पर पहुँचना; *ठिकाने की बात* = ठीक उचित या समझदारी की बात; *ठिकाने पहुँचाना या लगाना* = नष्ट कर देना, न रहने देना, समाप्त करना।

निर्वाह या आश्रय का स्थान; निश्चित अस्तित्व या स्थिति, स्थिरता, ठहराव; प्रबंध, आयोजन, बंदोबस्त; सीमा, अंत, हद; जागीर।

ठिकाना[2] *स.* {हिं. टिकाना} अपने पास रख, छिपा या ठहरा लेना (दलाल)।

ठिकानेदार *पुं.* {हिं. ठिकाना + फा. दार} वह जिसे रियासत की ओर से ठिकाना या जागीर मिली हो।

ठिगना *वि.* {हिं. हेठ + अंग} छोटे कद का, नाटा।

ठिठकना *अ.* {सं. स्थित + करण} चलते-चलते अचानक रुक जाना; स्तंभित होना।

ठिठोलियन *वि.* {हिं.} मसखरा, उपहासी।

ठिठोली *स्त्री.* {हिं.} हँसी।

ठिठरना *अ.* {हिं. स्थित} सर्दी से ऐंठना या सिकुड़ना।

ठिनकना *अ.* {अनु.} (बच्चों का) रुक-रुककर रोना।

ठिर *स्त्री.* {हिं.} गहरी, ठंड, पाला।

ठिरना *अ.* ठरना।

ठिलना *अ.* {हिं. ठेलना का *अ.*} ठेला या ढकेला जाना; घुसना, धँसना।

ठिल्ली *स्त्री.* {हिं.} ठिलिया, छोटी गगरी।

ठिलिया *स्त्री.* {सं. स्थाली} मिट्टी का छोटा घड़ा, गगरी।

ठिलुआ *वि.* {हिं. निठल्ला} निठल्ला।

ठिल्ला *पुं.* {हिं. ठिलिया} मिट्टी का घड़ा।

ठिहार *वि.* {हिं.} विश्वसनीय, विश्वास योग्य।

ठिहारी *स्त्री.* {हिं.} ठहरौनी, ठहराव, निश्चय।

ठीक *पुं.* {टीक्} जैसा हो या होना चाहिए, वैसा ही, यथार्थ, प्रामाणिक; उपयुक्त, उचित, मुनासिब; शुद्ध; दुरुस्त; जो किसी स्थान पर अच्छी तरह बैठे या जमे; सीधे रास्ते पर आया हुआ; ठहराया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

या निश्चित किया हुआ, स्थिर, पक्का; *क्रि. वि.* जैसे चाहिए, वैसे, उचित रूप या प्रकार से; *पुं.* पक्की बात; निश्चय; स्थिर प्रबंध।

ठीक-ठाक *पुं.* {हिं. ठीक} निश्चित प्रबंध, पक्का बंदोबस्त या आयोजन; निश्चय, ठहराव, पक्की बात; *वि.* अच्छी तरह दुरुस्त या तैयार।

ठीकरा *पुं.* {हिं. टुकड़ा} {*स्त्री.* अल्पा. ठीकरी} मिट्टी के बरतन का टुकड़ा, भीख माँगने का बरतन, भिक्षापात्र; तुच्छ वस्तु।

ठीकरी *स्त्री.* {हिं.} टूटे हुए मिट्टी के बर्तन का छोटा टुकड़ा, योनि का उभड़ा हुआ तल, उपस्थ, तुच्छ पदार्थ।

ठीका *पुं.* {हिं. ठीक} कुछ धन आदि के बदले में किसी का कोई काम पूरा करने का जिम्मा लेना (कंट्रैक्ट); कुछ काल के लिए कोई चीज इस शर्त पर दूसरे के सुपुर्द करना कि वह आमदनी वसूल करके बराबर मालिक को देता रहेगा, इजारा।

ठीका-पत्र *पुं.* {हिं. ठीका + सं. पत्र} वह पत्र या लेख्य, जिसमें किसी ठीके के संबंध की ऐसी बातें या शर्तें लिखी हों, जिनका पालन दोनों पक्षों के लिए आवश्यक हो, संविदा-पत्र (कंट्रैक्ट डीड)।

ठीकुरी *स्त्री.* {हिं.} परदा।

ठीकेदार *पुं.* {हिं. ठीका + फा. दार} वह जिसने कोई काम करने का ठेका लिया हो, ठेका लेनेवाला (कंट्रैक्टर)।

ठीलना *स.* ठेलना, ढकेलना।

ठीवन *पुं.* {सं. ष्ठीवन} थूक, खखार।

ठीहा *पुं.* {सं. स्था} लकड़ी का वह कुंदा, जिस पर लोहार, बढ़ई आदि कोई चीज पीटते, छीलते या गढ़ते हैं; बैठने के लिए कुछ ऊँचा स्थान, गद्दी; हद, सीमा।

ठुंठ *पुं.* ठूँठ, वृक्ष, स्तंभ, कटे हाथवाला मनुष्य, लूला।

ठुकना *अ.* {अनु.} ठोंका जाना; आर्थिक हानि या नुकसान होना।

ठुकराना *स.* {हिं. ठोकर} ठोकर लगाना, पैर के पंजे से आघात करना; तुच्छ समझकर दूर हटाना।

ठुकवाना *स. क्रि.* {हिं.} पिटवाना, दूसरे से मार खिलवाना, गढ़वाना, धँसवाना।

ठुकवाँ *पुं.* {हिं. ठोकना} ठोककर तैयार किया जानेवाला।

ठुड्डी *स्त्री.* ठोढ़ी, चिबुक, ठोड़ी।

ठुड्ढी *स्त्री.* {हिं. ठड़ी} वह भुना हुआ दाना जो फूटकर खिला न हो, ठुर्री, जैसे मकई, कमलगट्टे आदि की ठुड्डी।

ठुनक *स्त्री.* टुनटुन शब्द; बच्चों की सिसकी।

ठुनकना *अ.* टुनटुन करना; ठुनकाना, ठिनकना।

ठुनठुन *स्त्री.* {अनु.} बच्चों के रोने का शब्द।

ठुमक *वि.* {हिं.} पैर पटकते हुए बच्चों की चाल।

ठुमकना *अ.* {अनु.} {*भाव.* ठुमक} बच्चों का उमंग में थोड़ी-थोड़ी दूर पर पैर पटकते हुए चलना; नाच में पैर पटककर चलना, जिसमें घुँघरू बजें।

ठुमका *वि.* {हिं.} छोटे डील-डौल का नाच-ठिगना व्यक्ति।

ठुमकी *स्त्री.* {अनु.} ठुमकने या रुक-रुककर चलने की क्रिया या भाव, ठिठक, रुकावट।

ठुमरी *स्त्री.* {देश.} एक प्रकार का चलता गाना, जिसमें एक स्थायी और एक ही अन्तरा होता है।

ठुर्री *स्त्री.* {हिं. ठड़ा = खड़ा} वह भूना दाना, जो भूनने पर भी खिला न हो, ठुड्डी।

ठुसकना *क्रि. अ.* {हिं.} ठिनककर रोना, धीरे-से बोलना।

ठुसकी *स्त्री.* {हिं.} अपान-वायु का धीरे से निकलना, धीरे-से पादना।

ठुसना *अ.* {हिं. ठूँसना} कसकर भरा या ठूसा जाना।

ठुसाना *स.* {हिं. ठूँसाना} कसकर भरवाना; पेट भरकर खिलाना (व्यंग्य)।

ठूँठ *पुं.* {सं. स्थाणु} वह पेड़ जिसकी डालें, पत्तियाँ आदि न रह गई हों, सूखा पेड़; जिसका हाथ कटा हो।

ठूँठा *वि.* {सं. स्थाणु} बिना पत्तियों और टहनियों का (पेड़); कटे हुए हाथवाला, लूला; रिक्त, खाली।

ठूसना *स.* {हिं. ठस} खूब कसकर भरना; घुसेड़ना घुसाना। खूब पेट भरकर खाना।

ठेंऊना *पुं.* {हिं.} ठेहुना, घटना।

ठेंगा *पुं.* {हिं. अँगूठा} अँगूठा।

मुहा. ठेंगा दिखाना = आशा में रखकर भी अन्त में उपेक्षापूर्वक निराश करना।

पद ठेंगे से = बला से (उपेक्षासूचक)।

ठेंठी *स्त्री.* {देश.} कान की मैल; कोई चीज बन्द करने के लिए उसपर लगाई हुई डाट।

ठेक *स्त्री.* {हिं. टिकना} सहारे के लिए नीचे लगाई जानेवाली चीज, टेक, चाँड़; पेंदा, तल; घोड़ों की एक चाल; अनाज रखने के लिए टट्टियों आदि से घेरकर बनाया हुआ स्थान।

ठेकना *स.* {हिं. टेक} टेक या सहारा लगाना; *अं.* टिकना, ठहरना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठेका पुं. {हिं. टिकना} सहारे की वस्तु, ठेक; ठहरने या रुकने की जगह, अड्डा; तबला, या ढोल बजाने का वह प्रकार, जिसमें केवल ताल दिया जाता है; तबले के साथ बजाया जानेवाला बाँयाँ; सखुन-तकिया; ठोकर, धक्का।

ठेगना स. {हिं. टेकना} टेकना, सहारा लेना; सहारा लगाना; मना करना, रोकना।

ठघा पुं. {हिं.} सहारा, थूनी, चाँड़।

ठेछना स. = ठेगना; अ. टिकना।

ठेठ वि. {देश.} निपट, निरा, बिल्कुल; जिसमें कुछ मेल-जोल न हो, खालिस; जिसमें किसी प्रकार की बनावट या कृत्रिमता न हो; शुद्ध, निर्मल; स्त्री. वह बोली जिसमें लिखने-पढ़ने की भाषा के शब्दों का मेल न हो, केवल बोल-चाल के शब्द हों, सीधी-सादी बोली, जैसे ठेठ हिन्दी, ठेठ मराठी।

ठेपी स्त्री. {हिं.} बोतल, शीशी।

ठेठर पुं. थिएटर।

ठेल स्त्री. {हिं. ठेलना} ठेलने की क्रिया या भाव।

ठेल-ठाल स्त्री. ठेल।

ठेलना स. {सं. त्वरयति} धक्का देकर आगे बढ़ाना, ढकेलना; अपना, भार या दायित्व दूसरे पर रखना; अ. बलप्रयोग या जबरदस्ती करना, उदा. ताही पैं ठगावै ठेली जाही को ठगतु है—केशव।

ठेलमठेल स्त्री. भीड़-भाड़ के कारण एक दूसरे को ठेलने की क्रिया या भाव।

ठेला पुं. {हिं. ठेलना} ठेलने की क्रिया या भाव; वह छोटी गाड़ी, जिस पर चीजें रखकर हाथ से ठेलते या ढकेलते हुए, एक स्थान से दूसरे स्थान पहुँचाते हैं; धक्का, टक्कर; भीड़-भाड़।

ठेलाठेल-ठेलाठेली स्त्री. {हिं.} भीड़ में मनुष्यों की धक्कम-धक्का।

ठेवका पुं. {हिं.} खेत में सींचनेवाली दौरी का पानी गिराना।

ठेवकी स्त्री. {हिं.} ओट, गिरने से रोकने हेतु वस्तु।

ठेवना पुं. {हिं.} जानु, घुटना।

ठेस स्त्री. {हिं. ठस} हलका आघात, साधारण धक्के की चोट।

ठैन स्त्री. {सं. स्थान} स्थान, जगह; स्त्री. ठवनि।

ठोंक स्त्री. {हिं. ठोंकना} ठोंकने की क्रिया या भाव; अन्न के दानों, फलों आदि पर, कीड़े-मकोड़ों के दंश या पक्षियों की चोंच से लगा हुआ आघात या उसका चिह्न।

ठोंकना स. {अनु. ठकठक} अन्दर धँसाने के लिए जोर से ऊपर चोट लगाना।

पद *ठोंकना-पीटना* = मारना-पीटना; किसी चीज को ठीक करने के लिए उस पर आघात करना; *ठोंकना-बजाना* = कोई चीज लेने से पहले उसे अच्छी तरह जाँचना, परखना; बातचीत पक्की करने से पहले उसके सब अंगों पर विचार करके, उसके संबंध में निश्चय करना; प्रकार करना, मारना-पीटना; नालिश, अरजी आदि दाखिल करना, दायर करना; काठ में डालना, बेड़ियों से जकड़ना (दंड)।

ठोंक-पीट स्त्री. {हिं. ठोंकना + पीटना} ठोंकने, पीटने या मारने की क्रिया या भाव।

ठौंर[1] पुं. {देश.} एक प्रकार की मीठी मठरी (पकवान)।

ठौंर[2] पुं. {सं. तुंड} पक्षियों की चोंच, चंचु; कीड़े-मकोड़ों का वह अंग, जिससे वे काटते या आघात करते हैं।

ठोंग स्त्री. {सं. तुंड} चोंच या उसकी मार; उँगली की ठोकर।

ठोंगा पुं. {देश.} कागज का बना हुआ एक खास तरह का दोना या पात्र।

ठोंठा पुं. {हिं.} ज्वार, बाजरा तथा ईंख की उपज को हानि पहुँचानेवाला कीड़ा।

ठोंठी स्त्री. {हिं.} फली, बोड़ी, हरे चने के दाने का कोष।

ठो निपा. {हिं. ठौर} एक शब्द जो संख्यावाचक शब्दों में लगता है, संख्या अदद, जैसे—चार ठो आम (पूरब)।

ठोक स्त्री. ठोंक।

ठोकना स. = ठोंकना।

ठोकर स्त्री. {हिं. ठोकना} वह आघात जो चलने में कंकड़, पत्थर आदि के धक्के से पैर में लगता है।

मुहा. ठोकर लेना = चलते समय ठोकर खाना। वह उभरा हुआ पत्थर या कंकड़ जिससे पैर में चोट लगे; पैर या पहने हुए जूते के अगले भाग से किसी पर किया जानेवाला आघात; किसी प्रकार का भारी या कड़ा आघात, धक्का।

मुहा. ठोकर या ठोकरें खाना = किसी भूल के कारण या दुर्दशा में पड़कर दुख सहना।

ठोकरा वि. {हिं.} कठिन, कड़ा।

ठोकवा पुं. {हिं.} चीनी, गुड़ आदि की बनी हुई मोटी पूड़ी।

ठोट वि. {हिं.} रिक्त, पोला।

ठोठरा वि. {हिं.} निःसत्व, नीरस, मूर्ख।

ठोढ़ी स्त्री. {सं. तुंड} ओठों के नीचे का गोलाई लिए हुए उभरा हुआ भाग, ठुड्डी, चिबुक, दाढ़ी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठोली[1] *स्त्री.* ठठोली।
ठोली[2] *स्त्री.* {देश.} रखेली, उपपत्नी।
ठोस *वि.* {हिं. ठस} जो पोला या खोखला न हो; दृढ़, मजबूत।
ठोसा *पुं.* ठेंगा।
ठोहना *स.* {हिं. ढूँढ़ना} टोह या पता लगाना, खोजना, ढूँढ़ना।
ठोहर *पुं.* {हिं.} अकाल, महँगी।
ठौनि *स्त्री.* ठवन।
ठौर *पुं.* {सं. स्थावर} जगह, स्थान।
मुहा. ठौर रखना = मार गिराना; *ठौर रहना* = जहाँ का तहाँ पड़ा रहना; मर जाना।
मौका, अवसर।
ठौर-कुठौर *क्रि. वि* बुरे ठिकाने, अनुपयुक्त स्थान पर।
ठौर-ठिकाना *पुं.* रक्षित रूप से रहने का कोई साधारण स्थान; (बात में) दृढ़ता या निश्चय।

ड

ड देवनागरी वर्णमाला में व्यंजनों का तेरहवाँ और टवर्ग का तीसरा वर्ण जिसका उच्चारण स्थान मूर्धा है। इसके दो रूप और उच्चारण हैं; जैसे-डंडा में के दोनों ड, और जैसे-गड़बड़ के दोनों ड़।
डंक *पुं.* {सं. दंश} बिच्छू, मधुमक्खी आदि कीड़ों के पीछे का जहरीला काँटा, जिसे वे जीवों के शरीर में धँसाकर जहर पहुँचाते हैं; कीड़े-मकोड़ों के मुँह पर का वह लम्बा, पतला अंग जिसे वे किसी चीज में का रस चूसने के लिए गड़ाते हैं; कलम की जीभी (निब); *पुं.* डंका।
डंकना *अ.* {अनु.} गरजना।
डंका *पुं.* {सं. ढक्का} एक प्रकार का बड़ा नगाड़ा।
मुहा. डंके की चोट कहना = खुल्लम- खुल्ला और सबके सामने कहना, सबको सुनाकर कहना।
डंका-निशान *पुं.* {हिं. डंका + निशान = झंडा} राजाओं की सवारी के आगे बजनेवाला डंका और उसके साथ चलनेवाला झंडा।
डंकिनी *स्त्री.* डाकिनी।
डंकिनी बंदोबस्त *पुं.* 'दवामी बंदोबस्त'।
डंकी *स्त्री.* {हिं.} मलखंभ का एक व्यायाम।
डंकुर *पुं.* {हिं.} प्राचीन समय का एक बाजा।
डंख *पुं.* ढंख।
डंगर *पुं.* {देश.} चौपाया, पशु।
डँगरी *स्त्री.* = ककड़ी; = चुड़ैल।
डँगवारा *पुं.* {हिं. डंगर} किसानों में होनेवाली पारस्परिक हल-बैल आदि की सहायता या लेन-देन का व्यवहार।
डंगोरी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार की कड़ी।
डंटैया *वि.* {हिं.} डाँटने या घुड़कनेवाला।
डंगूज्वर *पुं.* {अ. डेंगू} एक प्रकार का ज्वर, जिसमें शरीर पर चकत्ते निकल आते हैं।
डंठल *पुं.* {सं. दंड} छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा।
डंठी *स्त्री.* {सं. दंड} डंठल; किसी चीज में लगा हुआ कोई लंबा अंश।
डंड *पुं.* {सं. दंड} डंडा, सोंटा; बाहुदंड, बाँह; हाथ-पैर के पंजों के बल की जानेवाली एक प्रकार की कसरत।
मुहा. डंड पेलना = आनंद करना।
दंड, सजा; अर्थदंड, जुरमाना; किसी प्रकार की आर्थिक हानि, (अपराध या विवशता के कारण) नुकसान।
मुहा. डंड भरना = किसी की आर्थिक हानि की पूर्ति करना।
डंडक *पुं.* = दंडकारण्य।
डंडना *स.* {सं. दंड} दंडित करना, दंड देना।
डंडवत *पुं.* {हिं.} दंडवत्।
डँडवा *पुं.* {मेरुदंड में का दंड} कमर, कटि।
डँडवी *पुं.* करद; कर देनेवाला।
डँडहरा *पुं.* {हिं. डंडा + हरा} दरवाजे को खुलने से रोकने के लिए लगाया जानेवाला डंडा।
डंडा *पुं.* {सं. दंड} {*स्त्री.* अल्पा. डंडी} लकड़ी या बाँस का सीधा लम्बा टुकड़ा; मोटी और बड़ी छड़ी, सोंटा, लाठी। लकड़ी, बाँस आदि की सीढ़ी में पैर रखने का आधार; किसी चीज का लम्बोतरा टुकड़ा।
डंडाकरन *पुं.* दंडकारण्य।
डंडाल *पुं.* {हिं.} दुंदुभी, नगाड़ा।
डंडा-डोली *स्त्री.* {हिं.} डोली-डंडा।
डँड़िया[1] *स्त्री.* {हिं. डाँडी = रेखा} वह साड़ी जिसके बीच में गोटे टाँककर लकीरें या डंडियाँ बनाई गई हों; गेहूँ के पौधे की सींकोंवाली बाल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डँड़िया² पुं. {हिं. डाँड} कर उगाहनेवाला; *स्त्री.* एक प्रकार की साड़ी जिसमें गोट सिलकर लम्बी, लकीरों जैसी बनी हुई हो।

डंडी¹ *स्त्री.* {हिं. डंडा} छोटी लम्बी पतली लकड़ी; किसी वस्तु का वह लम्बा पतला अंग, जो मुट्ठी में पकड़ा जाता है, दस्ता, हत्था, मुठिया; तराजू की वह लकड़ी जिसमें पलड़े बँधे रहते हैं, डाँडी; वह लम्बा डंठल जिसमें फूल या फल लगते हैं, नाल; झप्पान नाम की पहाड़ी सवारी जिसे आदमी उठाकर ले चलते हैं।

डंडी² *वि.* {सं. द्वंद्व} चुगलखोर; पुं. दंडी (साधु)।

डंडीर *स्त्री.* {हिं.} सीधी रेखा या लकीर।

डँडोरना *स.* {अनु.} ढूँढ़ना, खोजना; उलट-पुलट करना।

डंफना *अ.* {अनु.} जोर से चिल्लाना; जोर-जोर से रोना।

डंबर पुं. {सं.} आडम्बर; विस्तार; एक प्रकार का चँदवा।

पद अंबर डंबर = वह लाली जो संध्या समय आकाश में दिखाई देती है; *मेघ-डंबर* = बड़ा शामियाना, दल-बादल।

डंबर पुं. {हिं.} ढकोसला, आडम्बर, एक प्रकार का चँदवा।

डंवरुआ पुं. {हिं.} एक प्रकार का वात रोग, गठिया।

डंवरू पुं. {हिं.} डगरू।

डंस पुं. {सं. देश} एक प्रकार का बड़ा मच्छर, डाँस; दंश।

डक¹ पुं. {अ.} एक प्रकार का टाट जिससे जहाजों के पाल बनते हैं; एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

डक² पुं. {डेक} जहाज की ऊपरी छत।

डकरना *अ.* {अनु.} बैल या भैंसे का बोलना; डकार लेना।

डकरा पुं. {हिं.} काली मिट्टी।

डकार पुं. {अनु.} पेट भरे होने का सूचक वह शारीरिक व्यापार, जिसमें पेट की वायु कुछ शब्द करती हुई गले से निकलती है।

मुहा. डकार तक न लेना = किसी का धन चुपचाप हजम कर जाना।

शेर आदि की गरज, दहाड़।

डकारना *अ.* {हिं. डकार + ना} पेट की वायु शब्दपूर्वक मुँह से निकालना, डकार लेना; शेर आदि का दहाड़ना; *स.* किसी का माल लेकर पचा जाना।

डकैत पुं. {हिं.} डाका डालनेवाला, डाकू।

डकैती *स्त्री.* डकैत का धंधा; डाका।

डकौत पुं. {हिं.} ढोंगी ज्योतिषी, 'शनि' का दान लेनेवाला।

डग पुं. {सं. दघ् = लाँघना} एक जगह से पैर उठाकर दूसरी जगह रखना, फाल, कदम।

मुहा. डग भरना या मारना = क़दम बढ़ाना, लम्बे पैर रखना।

उतनी दूरी, जितनी पर एक जगह से दूसरी जगह पैर पड़ता है, पग, पैड़।

डगडगाना *अ.* डगमगाना।

डगण पुं. {सं.} पिंगल में चार मात्राओं का एक गण।

डगना *अ.* {हिं. डग} हिलना, खिसकना; भूल करना, चूकना; डगडगाना, लड़खड़ाना; डिगना।

डगमग *वि.* {हिं. डग + मग} लड़खड़ाता हुआ; विचलित।

डगमगाना *अ.* {हिं. डगमग} चलने में कभी इस ओर कभी उस ओर झुकना, लड़खड़ाना; विचलित होना, दृढ़ न रहना; *स.* इस प्रकार हिलाना कि इधर-उधर झूलने या लटकने लगे; दृढ़ न रहने देना।

डगमगाहट *स्त्री.* डगमग होने की अवस्था या भाव।

डगर *स्त्री.* {हिं. डग} मार्ग, रास्ता।

डगरना *अ.* {हिं. डगर} (डगर में या डग भरते हुए) चलना।

डगरा पुं. {देश.} बाँस की पतली पट्टियों का बना हुआ छिछला पात्र।

डगाना *स.* डिगाना।

डग्गर पुं. {हिं.} एक प्रकार का हिंस्र पशु।

डटना¹ *अ.* {हिं. डाट} {स. डटाना} जमकर खड़ा होना, अपनी जगह पर अड़ना या ठहरा रहना।

डटना² *स.* {सं. दृष्टि या हिं. डीठ} देखना।

डटाना *क्रि. स.* {हिं.} डटने को प्रेरित करना, खड़ा करना, जमाना।

डट्टा पुं. 'डाट'; हुक्के का नाचा, काग, ठप्पा, साँचा।

डडा पुं. {?} बाँह पर पहनने का एक गहना।

डड्ढार *वि.* {हिं. डाढी} बड़ी दाढ़ीवाला; वीर, बहादुर।

डढ़न *स्त्री.* {सं. दग्ध} जलन।

डढ़ना *अ.* {सं. दग्ध} जलना, झुलसना।

डढारा *वि.* {हिं. डाढ़} जिसकी दाढ़ी के बाल बहुत लम्बे हों; वह जिसे दाढ़ी हो।

डढ़ियल *वि.* दढ़ियल।

डढ़ना *स.* {सं. दग्ध} जलाना।

डढ्योरा *वि.* 'दढ़ियल', दाढ़ीवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ड

डपट[1] *स्त्री.* {सं. दर्प} {*क्रि.* डपटना} डाँटने या डपटने की क्रिया या भाव; डाँट, झिड़की घुड़की।

डपट[2] *स्त्री.* {हिं. रपट} घोड़े की तेज चाल।

डपटना *स.* {हिं. डपट} डाँटना, घुड़कना।

डपेट *स्त्री.* डपट।

डपेटना *स.* डपटना, डँटना।

डपोरशंख *पुं.* {सं. दर्पवत्, प्रा. दप्पुल, दप्पडल + सं. शंख} जो कहे बहुत, पर करे कुछ भी न, डींग मारनेवाला; बड़े डील-डौल का, परम मूर्ख।

डफ *स्त्री.* {अ. दफ़} चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बड़ा बाजा, चंग (ब्रज में इस शब्द का प्रयोग *स्त्री.* में होता है)।

डफली *स्त्री.* {हिं. डफ} छोटा जफ।

कहा. अपनी अपनी डफली अपना अपना राग = वह स्थिति जिसमें सब लोग अपनी-अपनी बात कहते हैं और एक का मत दूसरे से नहीं मिलता।

डफार *स्त्री.* {हिं.} चिल्लाना, रोने का शब्द।

डफारना *अ.* {?} चिल्लाना; जोर-जोर से रोना।

डफाली *पुं.* {हिं. डफ} डफ, ताशा, ढोल आदि बजानेवाला।

डब *पुं.* {हिं.} थैला, जेब।

डबकना[1] *अ.* {हिं. डब} पीड़ा करना, टीस मारना।

डबकना[2] *अ.* {हिं. डबडबाना} (आँखों में) आँसू आना।

डबकौंहाँ *वि.* {हिं. डबकना} {*स्त्री.* डबकौंही} आँसू भरा हुआ, डबडबाया हुआ (नेत्र)।

डबडबाना *अ.* {अनु.} आँसुओं से (आँखें) भर आना, अश्रुपूर्ण होना।

डबरा *पुं.* {सं. दभ्र} {*स्त्री.* डबरी} पानी का छिछला गड्ढा।

डबरी *स्त्री.* {हिं.} छोटा गड्ढा।

डबल *वि.* {अ. डबल} दोहरा; मोटा, बड़ा या भारी; *पुं.* एक पैसेवाला ब्रिटिश काल का सिक्का, पैसा।

डबला *पुं.* {हिं.} कुल्हड़, मिट्टी का छोटा पात्र।

डबल क्राउन *पुं.* 30 इंच लम्बे और 20 इंच चौड़े कागज का नाप।

डबल-रोटी *स्त्री.* पाव रोटी।

डबी *स्त्री.* डब्बी।

डबोना *स.* डुबाना।

डब्बा *पुं.* {फा. दब्ब:} ढक्कनदार छोटा गहरा बरतन, सम्पुट; रेलगाड़ी का खाना।

डब्बू *पुं.* {हिं. डब्बा} खाने की चीजें रखने का एक प्रकार का डब्बा।

डमकना *अ.* {अनु. डभडभ} पानी में डूबना-उतराना, डुबकियाँ लेना; आँखों में जल भर आना; डभडभ शब्द करते हुए चुरना।

डभकौंहाँ *वि.* डबकौंहाँ।

डभकौरी *स्त्री.* उड़द की पीठी की बड़ी (बरी)।

डमडम *पुं.* {अनु.} डमरू के बजने का शब्द।

डमरू *पुं.* {सं. डमरु} चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा, जो बीच में पतला और दोनों सिरों पर मोटा होता है।

डमरुका *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार का तंगोक्त आसन।

डमरूमध्य *पुं.* {सं. डमरू + मध्य} वह तंग या पतला भाग, जो दो बड़े खंडों के बीच में हो और दोनों को मिलाता हो, इसके दो भेद हैं—जल-डमरूमध्य और स्थल-डमरूमध्य।

डयन *पुं.* {सं.} उड़ान; पंख; *पुं.* पालकी, डोली।

डर *पुं.* {सं. दर} अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न होनेवाला भाव, भय, भीति, खौफ; अनिष्ट की संभावना की मन में होनेवाली कल्पना, आशंका।

डरना[1] *अ.* {हिं. डर} अनिष्ट या हानि की आशंका से आकुल होना, भयतीत होना; आशंका करना।

मुहा. डर जाना = भयभीत होना।

डरना[2] *अ.* {हिं. डलना} डलना; कहीं पड़े रहना।

डरपना *अ.* = डरना, भयभीत होना।

डरपाना *स.* = डराना।

डरपोक *वि.* {हिं. डरना + पोंकना} बहुत डरनेवाला, भीरु, कायर।

डरवाना *स.* हिं. 'डराना' का प्रे.।

डरा *पुं.* {*स्त्री.* अल्पा. डरी} डला।

डराना *स.* {हिं. डरना} किसी के मन में डर उत्पन्न करना, भयभीत करना।

डरावना *वि.* {हिं. डर} {*स्त्री.* डरावनी} जिसे देखने से डर लगे, भयानक, भयंकर; *स.* डराना।

डरील, डरीला *वि.* {हिं.} जिसमें शाखाएँ हों, डालवाल।

डरैला *वि.* {हिं.} डरावना, भयंकर।

डरावा *पुं.* {हिं. डराना} डराने के लिए कही हुई बात।

डल[1] *पुं.* {सं. दल} टुकड़ा, खंड।

डल[2] *स्त्री.* {सं. तल} झील।

डलना *अ.* {हिं. डालना} डाला या उँड़ेला जाना, पड़ना।

डला[1] *पुं.* {सं. दल} {*स्त्री.* अल्पा. डली} मोटा बड़ा टुकड़ा, खंड; बड़ी, डली, ढेला, जैसे नमक का डला।

डला[2] *पुं.* {सं. डलक} {*स्त्री.* डलिया} बड़ी डलिया, टोकरा, दौरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डलिया *स्त्री.* {हिं. डला} छोटा डला, टोकरी, दौरी; एक प्रकार की तश्तरी।

डली *स्त्री.* {हिं. डला} छोटा टुकड़ा या खंड; कटी हुई सुपारी; *स्त्री.* डलिया।

डल्लक *पुं.* {सं.} बेंत, बाँस आदि का बना हुआ पात्र, डला।

डवरा *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का बड़ा कटोरा।

डवा *पुं.* थैला।

डसना *स.* {सं. दंशन} {*भाव.* डसन} विषवाले कीड़े का दाँत से काटना; डंक मारना।

डसाना¹ *पुं.* {हिं.} डसना का प्रे.।

डसाना² *स.* {हिं. डासन} (बिछौना) बिछाना।
उदा. जागे पुनि न डसैहों–तुलसी।

डहकना¹ *स.* {हिं. ठगना?} धोखा देना, ठगना; ललचाकर न देना; *अ.* धोखा खाना।

डहकना² *अ.* {हिं. दहाढ़, धाड़} बिलखना, विलाप करना; दहाड़ मारना।

डहकना³ *पुं.* {हिं.} छितराना, फैलाना।

डहकाना *अ.* {हिं. जहकना} धोखे में आकर पास का धन गँवाना, ठगा जाना; *स.* धोखा देकर किसी की चीज ले लेना, ठगना, जटना; कोई वस्तु दिखाकर या ललचाकर भी न देना।

डहडहा *वि.* {अनु.} {*स्त्री.* डहडही} {*भाव.* डहडहाट} जो सूखा या मुरझाया न हो, हरा-भरा, ताजा; प्रसन्न आनंदित; तुरंत का, ताजा।

डहडहाना *अ.* {हिं. डहडहा} पेड़-पौधों का हरा-भरा या ताजा होना; प्रसन्न या आनंदित होना।

डहडहाव *पुं.* {हिं.} प्रसन्नता, प्रफुल्लता।

डहन *पुं.* {सं. उड्डयन} पंख, पर; डैना।

डहना *अ..* {सं. दहन} जलना, भस्म होना; द्वेष करना, बुरा मानना; *स.* जलाना, भस्म करना; संतप्त करना, कष्ट पहुँचाना।

डहर *पुं.* {हिं. डगर} रास्ता, मार्ग, पथ; आकाशगंगा।

डहरना *पुं.* {हिं. डहर} चलना, फिरना।

डहार *पुं.* {हिं. डाहना} डाहने या संतप्त करनेवाला।

डाँक¹ *स्त्री.* {हिं. दमक} तांबे या चाँदी का वह बहुत पतला पत्तर, जो नगीनों के नीचे उनकी चमक बढ़ाने के लिए लगाया जाता है।

डाँक² *स्त्री.* {हिं. डाँकना} कै, वमन; *स्त्री.* डाक; *पुं.* डंका।

डाँकना¹ *स.* लाँघना।

डाँकना² *अ.* {हिं. डाँक} वमन करना, कै करना।

डाँग *पुं.* {सं. टंक = पहाड़ का किनारा और चोटी} जंगल, वन; *स्त्री.* बड़ा डंडा या लाठी; *पुं.* डंका।

डाँगर *पुं.* {देश.} पशु, चौपाया; मूर्ख।

डाँट *स्त्री.* {सं. दांति} डाँटने या डपटने की क्रिया या भाव; डाँट या कड़ककर कही हुई बात, डपट; दबाव।

डाँट-डपट *स्त्री.* {हिं. डाँटना + डपटना} क्रोधपूर्वक और डाँटकर कही जानेवाली बात।

डाँटना *स.* {हिं. डाँट} डराने के लिए क्रोधपूर्वक जोर से बोलना, घुड़कना।

डाँट-फटकार *स्त्री.* = डाँट-डपट।

डाँड़ *पुं.* {सं. दंड} सीधी लकड़ी, डंडा; गदका; नाव खेने की पतवार, चप्पू; ऊँची मेड़; सीमा, हद; अर्थदंड, जुरमाना; कर्तव्य, प्रतिज्ञा या निश्चय का पालन न कर सकने के बदले में दिया जानेवाला धन, हरजाना (पेनैलिटी)।

डाँड़ना *स.* {हिं. डाँड़} अर्थदंड से दंडित करना, जुरमाना करना; डाँड़ या हरजाना लेना; दंड देना; डाँटना।

डाँडा *पुं.* {हिं.} बाजरे आदि की खूँटी, जो फसल काटने के बाद खेत में रह जाती है।

डाँड़ा *पुं.* {हिं.} नाव खेने का पटना लगा हुआ बाँस का डंडा; सीमा, हद।

डाँड़ा-गेंड़ा *पुं.* {हिं.} आपस की अति समीपता, लगाव, मेंड।

डाँड़ी *स्त्री.* {हिं. डाँड़} डंडी; हिंडोले में की वे चारों लकड़ियाँ या डोरी की लड़ें, जिनपर बैठने की पट्टी रखी जाती है; डाँड़ खेनेवाला आदमी; लीक, मर्यादा; डंडे में बँधी हुई झोली के आकार की पहाड़ी सवारी, झप्पान।

डाँवरा *पुं.* {हिं.} पुत्र, बेटा, लड़का।

डाँवरी *स्त्री.* {हिं.} पुत्री, कंथा, लड़की।

डाँवरू *पुं.* {हिं.} बाघ का बच्चा।

डाँवाडोल *वि.* {हिं. डोलना} अपना ठीक या एक स्थिति में न रहनेवाला, जो कभी इधर होता हो और कभी उधर, अस्थिर।

डाँस *पुं.* {सं. दंश} बड़ा मच्छर; एक प्रकार की मक्खी।

डाइन *स्त्री.* {सं. डाकिनी} भूतनी, चुड़ैल; वह स्त्री जिसकी कुदृष्टि के प्रभाव से बच्चे मर जाते या बीमार पड़ जाते हों, टोनहाई; कुरूपा और डरावनी स्त्री।

डाइनमो *पुं.* {अं.} एक उपकरण, जो किसी ऊर्जा को बिजली में बदल देता हो।

डाक¹ *पुं.* {हिं. डाँकना} सवारी का ऐसा प्रबंध, जिसमें हर पड़ाव पर बराबर जानवर या यान आदि बदले जाते हों;
मुहा. डाक बैठाना या लगाना = शीघ्र यात्रा पूरी करने के लिए स्थान-स्थान पर सवारी बदलने की व्यवस्था करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य की ओर से, चिट्ठियों, पार्सलों आदि के आने-जाने की व्यवस्था; कागज-पत्र आदि, जो इस प्रकार कहीं से भेजे जाएँ या आएँ (पोस्ट)।

डाक[2] *स्त्री.* {अनु.} वमन, कै।

डाक[3] *पुं.* {बँग.} नीलाम की बोली, विशेष; बोली।

डाकखाना *पुं.* डाक-घर।

डाक-गाड़ी *स्त्री.* वह रेलगाड़ी, जो साधारण गाड़ियों से बहुत तेज चलती है और जिसमें डाक जाती है।

डाक-घर *पुं.* {हिं. डाक + घर} वह सरकारी दफ्तर, जहाँ से लोग चिट्ठी-पत्री आदि भेजते हैं और जहाँ से चिट्ठियाँ आदि बाँटी जाती हैं (पोस्ट ऑफिस)।

डाक-चौकी *स्त्री.* {हिं. डाक + चौकी} प्राचीनकाल में मार्ग में पड़नेवाला वह स्थान, जहाँ यात्रा के घोड़े, हरकारे या सवारियाँ बदली जाती थीं।

डाकना[1] *अ.* {हिं. डाक} कै करना।

डाकना[2] *स.* {हिं. डाक + ना} फाँदना, लाँघना।

डाक-बँगला *पुं.* {हिं. डाक + बँगला} वह मकान, जो सरकार की ओर से परदेसियों या सरकारी अधिकारियों के ठहरने के लिए बना हो।

डाकर *पुं.* {पश्तो डाग = सूखी कड़ी भूमि} नदी किनारे की वह भूमि, जिसपर बरसात में नदी में बहकर आई हुई चिकनी मिट्टी जम जाती है, कड़ी तथा उपजाऊ भूमि।

डाक-व्यय *पुं.* {हिं. + सं.} डाक से कोई पत्र या वस्तु भेजने पर होनेवाला व्यय।

डाका *पुं.* {हिं. डाकना या सं. दस्यु} माल-असबाब लूटने के लिए दल बाँधकर किया जानेवाला धावा, बटमारी।

डाकजनी *स्त्री.* {हिं. डाका + फा. ज़नी} डाका मारने का काम, बटमारी।

डाकिन *स्त्री.* डाकिनी, काली के एक गण का नाम।

डाकिनी *स्त्री.* {सं.} डायन, चुड़ैल।

डाकू *पुं.* {हिं. डाक या सं. दस्यु} डाका डालनेवाला, डकैत।

डाकोर *पुं.* {सं. ठक्कुर} ठाकुर, देवता; विष्णु भगवान (गुजरात)।

डॉक्टर *पुं.* {अं.} {*स्त्री.* डाक्टरनी, डाक्टरानी} किसी विषय का बहुत बड़ा विद्वान या पंडित; वह जिसे अंग्रेज़ी ढंग से चिकित्सा करने की शिक्षा मिली हो और चिकित्सा करने का अधिकार प्राप्त हो; एक प्रकार की उपाधि, जो विद्वानों को कोई उच्च शोध करने पर अथवा यों ही उनके सम्मानार्थ दी जाती है।

डाक्टरी *स्त्री.* {अं. डॉक्टर} डॉक्टर का काम, पद, भाव या उपाधि।

डाग *स्त्री.* {?} डुग्गी, ढोल आदि बजाने की लकड़ी।

डागा *पुं.* बड़ी डाग।

डागुर *पुं.* {हिं.} जाटों की एक जाति।

डाट *स्त्री.* {सं. दाँति} वह वस्तु जो बोझ सँभालने के लिए उसके नीचे लगाई जाए, टेक, चाँड़; छेद बंद करने की वस्तु; बोतल, शीशी आदि का मुँह बंद करने की वस्तु, काग, डट्टा; मेहराब को रोके रखने के लिए ईंटों की जोड़ाई; *स्त्री.* डाँट।

डाटना *स.* {हिं. डाट} एक वस्तु को दूसरी वस्तु पर कसकर बैठाना; टेक या चाँड़ लगाना; छेद या मुँह बंद करना, कसकर या ठूँसकर भरना; खूब पेटभर खाना; ठाठ से कपड़े गहने आदि पहनना; *अ.* डटकर सामने बैठना; ठाट या वेष बनाना; *स.* डाँटना।

डाढ़ *स्त्री.* {सं. द्रष्टा} चबाने का चौड़ा दाँत, चौभड़, दाड़।

डाढ़ना *स.* {सं. दग्ध} भस्म करना, जलाना; संतप्त या दुखी करना।

डाढ़ा[1] *स्त्री.* {सं. दग्ध} दावानल, वन की आग; आग; ताप।

डाढ़ा[2] *पुं.* {हिं. दाढ़ी} बहुत बड़ी दाढ़ी।

डाढ़ी *स्त्री.* दाढ़ी, चिबुक, ठुड्डी।

डाव *पुं.* {हिं.} कच्चा नारियल, परतला।

डाबर *पुं.* {सं. दभ्र} वह नीची जमीन या छोटा गड्ढा, जिसमें बरसाती पानी ठहरा रहे; वह बरतन जिसमें हाथ-मुँह धोते हैं, चिलमची; मैला या गँदला पानी।

डाभ *पुं.* {सं. दर्भ} एक प्रकार का कुश; आम की मंजरी या बौर; कच्चा नारियल जिसके अंदर का पानी पिया जाता है।

डामर[1] *पुं.* {सं.} शिव द्वारा प्रणीत माना जानेवाला एक तंत्र; हलचल; धूम; आडंबर; चमत्कार।

डामर[2] *पुं.* {देश.} साल वृक्ष का गोंद, राल; एक प्रकार की मधुमक्खी, जो राल बनाती है।

डामल *पुं.* {अ. दायमुल हब्स} उम्र भर के लिए कैद; देश-निकाला।

डामाडोल *वि.* डावाँडोल।

डायन *स्त्री.* डाइन, कुरूपा, भयंकर स्त्री, पिशाचनी।

डायरी *स्त्री.* = दैनिकी।

डार[1] *स्त्री.* डाल, शाखा; फानूस की खूँटी, जो दीवार में लगाई जाती है।

डार[2] *स्त्री.* {हिं. डलक} डलिया, चँगेरी, टोकरी।

डारना *स.* डालना, फेंकना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डारा पुं. {हिं. डाल} वह रस्सी या लकड़ी, जिसपर कपड़े लटकाए जाते हैं।

डारी *स्त्री.* डाल।

डाल[1] *स्त्री.* {सं. दारु} पेड़ के धड़ में की वह लंबी लकड़ी, जिसमें पत्तियाँ और कल्ले निकलते हैं, शाखा, शाख; शीशे के गिलास लगाने के लिए दीवार में लगी हुई एक प्रकार की खूँटी; तलवार का फल; डंडी, डाँडी।

डाल[2] *स्त्री.* {हिं. डला} वे कपड़े और गहने जो डलिया में रखकर विवाह के समय वर की ओर से वधू को दिए जाते हैं।

डालना *स.* {सं. तलन} किसी चीज में गिराना या छोड़ना;

मुहा. डाल रखना = रख छोड़ना, शेर्क रखना। एक वस्तु या पात्र में ऊपर से कोई वस्तु गिराना, छोड़ना; मिलाना; प्रविष्ट करना, घुसाना; फैलाना, बिछाना; शरीर पर धारण करना, पहनना; गर्भपात करना (चौपायों के लिए); कै करना, वमन करना; (स्त्री को) पत्नी की तरह घर में रखना।

डालर पुं. {अं. डॉलर} अमेरिकी मुद्रा, जो साधारणत: भारत के बयालीस रुपयों के बराबर का होता है।

डाला पुं. बड़ी डाली।

डाली *स्त्री.* {हिं. डला} डलिया, चँगेरी; फल, फूल और मेवे जो डलिया में सजाकर किसी बड़े के पास उसके सम्मानार्थ भेजे जाते हैं; दाँई हुई फसल का अनाज अलग करना, ओसाना, बरसाना;

मुहा. डाला देना = उक्त प्रकार से भूसे से अनाज अलग करना, ओसाना, बरसाना

डावरा पुं. {सं. डिंब} बेटा।

डास पुं. {हिं.} चमार का चमड़ा साफ करने का यंत्र।

डासन पुं. {सं. डाभ = दर्भ + आसन} बिछौना।

डासना *स.* {हिं. डासन} बिछौना; पुं. बिछौना; *स्त्री.* = डसना।

डासनी *स्त्री.* {हिं.} चारपाई, पलँग, खाट।

डाहना *स.* {सं. दाहन} किसी के मन में ईर्ष्या या डाह उत्पन्न करना, जलाना; कष्ट पहुँचाना, पीड़ित करना।

डाही *वि.* {हिं. डाह} डाह या ईर्ष्या करनेवाला।

डिंगर पुं. {सं.} मोटा आदमी; दुष्ट या पंजाबी व्यक्ति; दास, गुलाम।

डिंगल[1] *वि.* {सं. डिंगर} नीच, बुरा, दूषित, अधम।

डिंगल[2] *स्त्री.* {सं. पिंगल का अनु.} राजपूताने की वह भाषा, जिसमें भाट और चारण काव्य और वंशावलियाँ लिखते थे।

डिंडिम पुं. {तमिल तरांणु से सं.} प्राचीनकाल का एक प्रकार का ढोल; डुगडुगी, डुग्गी।

डिंब पुं. {सं.} जीव-जंतुओं में स्त्री जाति का वह जीवाणु, जो पुरुष जाति के वीर्य के संयोग से अथवा यों ही आपसे आप बढ़कर नए जीव या प्राणी का रूप धारण करता है (ओवम); अंडा; कीड़े का बच्चा; रोना-धोना; बावेला, दंगा, फसाद।

डिंबाणु पुं. डिंब।

डिंबाशय पुं. {सं.} स्त्री जाति के जीवों में वह भीतरी अंग, जिसमें डिंब रहता या उत्पन्न होता है।

डिंभ[1] पुं. {सं.} छोटा बच्चा; मूर्ख, अज्ञान या अबोध व्यक्ति।

डिंभ[2] पुं. {सं. दंभ} आडंबर, पाखंड; अभिमान, घमंड।

डिक्री *स्त्री.* डिगरी।

डिगना *अ.* {हिं. डग} अपनी जगह से टलना, खिसकना; निश्चय या विचार पर दृढ़ न रहना, विचलित होना; हिलना।

डिगरी[1] *स्त्री.* {अं.} विश्वविद्यालय की परीक्षा की पदवी; अंश, कला।

डिगरी[2] *स्त्री.* {अं. डिक्री} दीवानी अदालत का वह फैसला, जिसमें वादी को कोई अधिकार मिलता है, जयपत्र (डिक्री)।

डिगरीदार *वि.* {हिं. डिगरी + फा. दार} वह जिसके पक्ष में डिगरी या अधिकार का निर्णय हुआ हो।

डिगाना हिं. डिगना का *स.*; जगह से हटाना, खिसकाना, सरकाना, विचलित करना।

डिठार, डिठियार *वि.* {हिं. डीठ = दृष्टि} जिसे दिखाई दे, दृष्टिवाला।

डिठौना पुं. {हिं. डीठ} वह काला टीका, जो बच्चों को नजर से बचाने के लिए लगाया जाता है।

डिठौरा पुं. डिठौना।

डिढ़ *वि.* दृढ़।

डिढ्या *स्त्री.* {देश.} अत्यंत लालच, परम लोभ या लालसा।

डिप्लोमा पुं. {अं.} किसी विषय में प्रशिक्षण प्राप्त करने का उपाधिपत्र।

डिबिया *स्त्री.* {हिं. डिब्बा} छोटा डिब्बा या संपुट।

डिब्बा पुं. {फा. दब्बः} ढक्कनदार छोटा गहरा टिन का पात्र।

डिब्बाबंदी *स्त्री.* डिब्बों में सामग्री बंद करने की क्रिया या भाव।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation [illegible] and eGangotri

डिभगना *स.* {देश.} मोहित करना; छलना।

डिम *पुं.* {सं.} वह नाटक जिसमें इंद्रजाल, युद्ध आदि के दृश्य हों।

डिमडिम *स्त्री.* {अनु.} डुग्गी का शब्द।

डिमडिमी *स्त्री.* {सं. डिंडिम} डुग्गी।

डिल *पुं.* {हिं.} मोया, घास, ऊन की लच्छी।

डिल्ला *पुं.* {हिं. टीला} बैल के कंधे पर का उठा हुआ कूबड़, कूजा, ककुत्थ।

डिश *स्त्री.* {अं.} प्लेट; व्यंजन।

डींग *स्त्री.* {सं. डीन} शेखी से बहुत बढ़कर कही जानेवाली बात, सीट।

डीजल *पुं.* {अं.} ऊर्जा उत्पन्न करनेवाला तेल।

डीजल इंजन *पुं.* {अं.} डीजल से चलनेवाला इंजन।

डीठ *स्त्री.* {सं. दृष्टि} दृष्टि, नजर, निगाह; देखने की शक्ति; ज्ञान, समझ; बुरी नजर।

डीठना *अ.* {हिं. डीठ} दिखाई देना; *स.* देखना; नजर लगाना।

डीठबंध *पुं.* इंद्रजाल नामक ग्रंथ।

डीठमूठि *स्त्री.* {हिं. डीठि +मूठ} टोना, जादू।

डील *पुं.* {देश.} प्राणियों के शरीर की ऊँचाई, चौड़ाई, मोटाई आदि का कद, उठान; व्यक्ति, प्राणी, मनुष्य।

डील-डौल {हिं. डील + डौल} देह की लंबाई-चौड़ाई।

डीली *स्त्री.* = दिल्ली (नगर)।

डीह *पुं.* {फा. देह} छोटा गाँव; ग्राम-देवता; गाँव के समीप का ऊँचा टीला।

डुंड *पुं.* डुगडुगी (डौंडी); पेड़ की सूखी शाखा, ठूँठ।

डुक *पुं.* = मुक्का (घूँसा)।

डुकियाना *क्रि. स.* {हिं.} घूँसा मारना, मुक्का लगाना।

डुगडुगी *स्त्री.* {अनु.} चमड़ा मढ़ा हुआ एक छोटा बाजा, जिसे बजाकर किसी बात की घोषणा की जाती है, डुग्गी, डौंडी।

डुग्गी *स्त्री.* डुगडुगी।

डुगडुगाना *क्रि. स.* {हिं.} नगाड़ा, नाशा आदि लकड़ी से बजाना।

डुप्लिकेटर *पुं.* {अं.} अनुलिपि तैयार करनेवाला यंत्र।

डुबकनी *स्त्री.* {हिं. डुबकी} पानी के अंदर डूबकर चलनेवाली एक प्रकार की नाव।

डुबकी *स्त्री.* {हिं. डूबना} पानी में डूबने की क्रिया या भाव, गोता; पीठी की बनी हुई बिना तली बरी।

डुबाना *स.* {हिं. डूबना} पानी या किसी द्रव पदार्थ में समूचा डालना, गोता देना; चौपट या नष्ट करना।

मुहा. नाम डुबाना = नाम या मर्यादा नष्ट करना; *लुटिया डुबाना* = महत्व या प्रतिष्ठा नष्ट करना, काम बिगाड़ना।

डुबाव *पुं.* {हिं. डूबना} पानी की डूबने भर की गहराई।

डुबोना *स.* डुबाना।

डुब्बा *पुं.* पनडुब्बा।

डुभकौरी *स्त्री.* {हिं. डुबकी + बरी} पीठी की बिना तली बरी।

डुलना *अ.* डोलना।

डुलाना *स.* {हिं. डोलना} डोलने में प्रवृत्त करना, चलना; हटाना।

डुलि *स्त्री.* {सं.} कच्छपी, कछुई, कछवी।

डुलिका *स्त्री.* {सं.} खंजन के प्रकार का एक पक्षी।

डुली *स्त्री.* {सं.} साग-निशेष, बथुआ।

डूँगर *पुं.* {सं. तुंग} टीला; छोटी पहाड़ी; आबादी, बस्ती।

डूँगा *पुं.* डूँगर, चम्मच, चमचा, टीला।

डूँडा *वि. पुं.* {हिं.} एक सींगवाला बैल।

डूबना *अ.* {अनु. डुबडुब} पानी या और किसी तरल पदार्थ में पूरा समाना, गोता खाना।

मुहा. चुल्लू भर पानी में डूब मरना = लज्जा के मारे मुँह दिखाने योग्य न रहना; *जी डूबना* = चित्त व्याकुल होना, हृदय की धड़कन बंद होती जान पड़ना।

सूर्य, चंद्रमा आदि ग्रहों या नक्षत्रों का अस्त होना; चौपट होना, नष्ट होना; लीन या तन्मय होना, लिप्त होना।

मुहा. नाड़ी डूबना = नाड़ी बंद होने से पहले रुक-रुककर चलना; *नाम डूबना* = प्रतिष्ठा नष्ट होना।

व्यवसाय में लगाया या ऋण स्वरूप दिया हुआ धन नष्ट होना।

डेंड़सी *स्त्री.* {सं. टिंडिश} ककड़ी की तरह की एक तरकारी, टिंडा।

डेड़हा *पुं.* {सं. डुंडुभ} पानी में रहनेवाला साँप, जिसमें विष नहीं होता।

डेढ़ *वि.* {सं. अध्यर्द्ध} पूरा एक और उसका आधा।

मुहा. डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग पकाना = अपना तुच्छ या अमान्य विचार या कार्य सबसे अलग रखना या चलाना।

डेढ़ा *वि.* ड्योढ़ा, डेढ़ गुणा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेढ़ी *स्त्री.* {हिं.} अँजुली में लिए गए बीज का आधा और देना।

डेमरेज *पुं.* {अं.} बंदरगाह या रेल के मालगोदाम में पड़े रहनेवाले माल का किराए के रूप में लिया जानेवाला हरजाना, जो माल छुड़ानेवाले को देना पड़ता है।

डेरा[1] *पुं.* {हिं. डालनाया ठहरना} थोड़े समय के लिए रहने का स्थान या व्यवस्था, टिकान, पड़ाव;

मुहा. डेरा डालना = स्थायी रूप से निवास करना, टिकना, ठहरना, कहीं जमकर बैठ जाना। खेमा, तंबू; नाचने-गानेवालों का दल; वेश्या का घर; मकान, घर (पूरब)।

डेरा[2] *वि.* {सं. डहर?} {*स्त्री.* डेरी} बाँया, वाम, 'दाहिना' का विपर्याय।

डेराना *अ.* डरना; *स.* डराना।

डेल *पुं.* {हिं. डला} बड़ी डलिया, झाबा; वह झाबा जिसमें बहेलिए फँसाई हुई चिड़ियाँ बंद करके रखते हैं।

डेला *पुं.* {सं. दल} आँख में का वह सफेद उभरा हुआ भाग, जिसमें पुतली रहती है; कोया; डला; ढेला।

डेली *स्त्री.* {हिं.} बाँस की बनी हुई डलिया।

डेवढ़ *वि.* {हिं. डेवढ़ा} डेढ़ गुना, ड्योढ़ा; *पुं.* सिलसिला, क्रम, तार; विकट अवस्था में भी काम निकालने या ठीक करने की व्यवस्था।

डेवढ़ना *क्रि. अ. स.* {हिं.} रोटी का आँच पर फूलना, कपड़े की तह लगाना, हिसाब बंद करना।

डेवढ़ा *वि., पुं* ड्योढ़ा।

डेहरी *स्त्री.* {?} अन्न रखने का एक प्रकार का छोटा बरतन; दहलीज।

डैगना *पुं.* {हिं.} नटखट चौपायों के गले में बाँधने का लकड़ी का टुकड़ा।

डैना *पुं.* {सं. डयन} चिड़ियों के एक ओर के परों का समूह, पक्ष।

डोंगर *पुं.* {सं. तुग} {*स्त्री.* अल्पा. डोंगरी} पहाड़ी; टीला।

डोंगा *पुं.* {सं. द्रोण} बड़ी नाव।

डोंगी *स्त्री.* {सं. द्रोणी} छोटी नाव।

डोंडी *स्त्री.* {हिं. तुंड} पोस्ते का फल, जिसमें से अफीम निकलती है।

डोकी *स्त्री.* {हिं. डोका} काठ की कटोरी।

डोडा *पुं.* {सं. तुंड} कपास, सेमल आदि का बीज, जिसके चारों ओर रुई लिपटी रहती है; पोस्ते की फली।

डोब *पुं.* डुबकी।

डोभ *पुं.* {हिं. डुबाना} सिलाई का टाँका।

डोम *पुं.* {सं. डम} {*स्त्री.* डोमिन, डोमिनी} एक प्रसिद्ध जाति, जो श्मशान पर शव को आग देती और टोकरियाँ आदि बनाकर बेचती है; उक्त जाति का व्यक्ति; ढाढ़ी, मीरासी।

डोमकौआ *पुं.* {हिं. डोम (डोम जाति) + कौआ} एक प्रकार का बड़ा कौआ।

डोमड़ा *पुं.* डोम, नीच जाति का मानव, जो श्मशान में रहता है।

डोमनी *स्त्री.* {हिं. डोम} डोम जाति की स्त्री; ढाढ़ी या मीरासी की स्त्री, जो गाने-बजाने का काम करती है।

डोर *स्त्री.* {सं.} पतला तागा, डोरा।

मुहा. डोर पर लगाना = प्रयोजन सिद्धि को अनुकूल करना, ढब पर लाना; *(किसी की) डोर लगना* = किसी के पीछे-पीछे चलना; अनुयायी बनना, अनुकरण करना; सहारा, आसरा।

डोरना *क्रि. अ.* {हिं.} हाथ पकड़कर ले चलना।

डोरा *पुं.* {सं. डोरक} रुई, रेशम, ऊन आदि को बटकर बनाया हुआ मोटा सूत या तागा, धागा; धारी, लकीर; आँखों की वे महीन लाल नसें, जो नशे या यौवन की उमंग में दिखाई देने लगती हैं; तलवार की धार; तपे हुए घी की धार; स्नेहसूत्र, प्रेम का बंधन।

मुहा. किसी पर डोरे डालना = किसी को अपने प्रेमपाश में फँसाने का प्रयत्न करना। काजल या सुरमे की रेखा।

डोरिया *पुं.* {हिं. डोरा} एक प्रकार का कपड़ा, जिसमें कुछ मोटे सूतों की या रंगीन धारियाँ होती हैं।

डोरिहार *पुं.* पटवा, जो रेशम के सूत में गहने गूँथता है।

डोरी *स्त्री.* {हिं; डोरा} रस्सी, रज्जु।

मुहा. डोरी ढीली छोड़ना = नियंत्रण या देख-रेख कम करना।

डोरे *क्रि. वि.* {हिं. डोर} साथ-साथ, संग-संग।

डोल[1] *पुं.* {सं. दोल} हिलने-डोलने की क्रिया या भाव; हलचल; पानी रखने या भरने का लोहे का बरतन; हिंडोला, झूला; डोली, पालकी।

डोल[2] *वि.* {हिं. डोलना} चंचल।

डोलक *पुं.* {सं.} ताल देने का एक प्रकार का प्राचीन बाजा।

डोलची *स्त्री.* {हिं. डोल} छोटा डोल।

डोलना *अ.* {सं. दोलन} गति में होना, हिलना; चलना, फिरना; (चित्त) विचलित होना, डिगना।

डोला *पुं.* {सं. दोल} {*स्त्री.* डोली} स्त्रियों के बैठने की बड़ी डोली, जिसे कहार ढोते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. *डोला देना* = किसी राजा या सरदार को भेंट की तरह अपनी लड़की देना; कन्या को वर के घर इसलिए भेजना कि वहीं उसका ब्याह हो।

झूले का झोंका, पेंग।

डोलाना *स.* {हिं. डोलना} डोलने में प्रवृत्त करना, चलाना।

डोली *स्त्री.* {हिं. डोला} एक प्रकार की सवारी, जो कहार कन्धे पर लेकर चलते हैं; वह पालकी जिसमें बैठकर दुल्हन ससुराल जाती है; विवाह के उपरान्त कन्या की विदाई।

डोली-डंडा *पुं.* {हिं. डोली + डंडा} लड़कों का एक खेल, जिसमें दो लड़के आपस में बाँहें मिलाकर और उन पर किसी लड़के को बैठाकर ले चलते हैं।

डौंड़ी *स्त्री.* {हिं. डुग्गी} डुगडुगी; घोषणा, मुनादी।

डौर *पुं.* = डौल।

डौंरा *पुं.* {हिं.} खेत में उगनेवाली एक तरह की घास।

डौआ *पुं.* {हिं.} काठ का बना हुआ बड़ा कलछा या चम्मच।

डौल *पुं.* {?} ढाँचा, ढड्ढा; प्रारंभिक रूप।

मुहा. *डौल पर लाना* = काट-छाँटकर सुडौल या दुरुस्त करना।

बनावट का ढंग, रचना-प्रकार; तरह, प्रकार; युक्ति, उपाय।

मुहा. *डौल बाँधना या लगाना* = उपाय करना, युक्ति बैठाना।

डौलियाना *स.* {हिं. डौल} फुसलाकर अपने अनुकूल करना; गढ़कर दुरुस्त करना।

ड्योढ़ा *वि.* {हिं. डेढ़} जितना हो, उसका आधा और, डेढ़ गुना; *पुं.* अंकों की डेढ़ गुनी संख्या का पहाड़ा।

ड्योढ़ी *स्त्री.* {सं. देहली} फाटक, दरवाजा; मकान में घुसने का स्थान, द्वार।

ड्योढ़ीदार *पुं.* {हिं. ड्योढी + फा. दार} ड्योढ़ी पर रहनेवाला पहरेदार, द्वारपाल, दरबान।

ड्राफ्ट *पुं.* {अं.} बैंक की एक शाखा का दूसरी शाखा के नाम लिखा हुआ आदेशपत्र कि अमुक व्यक्ति को अमुक मात्रा में रुपया दिया जाए।

ड्राफ्ट्समैन *पुं.* {अं.} मकान आदि का नक्शा बनानेवाला व्यक्ति।

ढ

ढ देवनागरी वर्णमाला का चौदहवाँ और टवर्ग का चौथा व्यंजन वर्ण। इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है। इसके दो रूप होते हैं–(क) जैसे 'ढकना' में का 'ढ'; और (ख) बढ़ना में का 'ढ़'।

ढँकना *स.* ढाँकना।

ढंख *पुं.* {सं. आषाढ़क} ढाक या पलास का पौधा; ढाक या पलास का जंगल।

ढंग *पुं.* {सं. दिग्} कोई काम करने की प्रणाली या शैली, ढब, रीति (मेथड, मोड़); कोई काम करने का प्रकार, तरह (वे, मैनर); रचना, बनावट; युक्ति, उपाय।

मुहा. *ढंग पर चढ़ाना या लाना* = अभिप्राय-साधन के अनुकूल करना।

चाल-चलन, आचरण; लक्षण।

ढँगलाना *स.* लुढ़काना।

ढंगी *वि.* {हिं. ढंग} चालबाज, धूर्त; चतुर, चालाक; ढोंगी।

ढँढोरना *स.* ढूँढ़ना।

ढँढोरा *पुं.* {अनु. ढम + ढोल} घोषणा करने का ढोल, डुगडुगी, डौंडी; ढोल बजाकर की जानेवाली घोषणा।

ढँढोरिया *पुं.* {हिं. डँढोरा} ढँढोरा पीटने या मुनादी करनेवाला।

ढँपना *अ.* ढकना, वह वस्तु जिससे कोई वस्तु ढँकी जाती है।

ढई *स्त्री.* {हिं.} किसी घर पर जाकर जब तक अपना काम पूरा न हो, तब तक धरना देना।

ढकना *पुं.* {सं. ढक = छिपना} {*स्त्री.* अल्पा. ढकनी} ढाँकने की वस्तु, ढक्कन; *अ.* किसी वस्तु के नीचे या आड़ में होने पर दिखाई न देना, छिपना; *स.* ढाँकना।

ढकनी *स्त्री.* {हिं. ढकना} ढाँकने की वस्तु, ढक्कन।

ढका *पुं.* {सं. ढक्का} बड़ा ढोल।

ढकेलना *स.* {हिं. धक्का} धक्के से या ठेलकर आगे गिराना या बढ़ाना।

ढकोसना *क्रि. स.* {हिं.} बड़े-बड़े घूँट करके पीना।

ढकोसला *पुं.* {हिं. ढंग + सं. कौशल} प्रयोजन सिद्ध करने के लिए बनाया हुआ झूठा रूप, आडंबर।

ढक्कन *पुं.* {सं.} ढाँकने की वस्तु ढकना।

ढक्का *पुं.* {सं.} बड़ा ढोल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by A naj Foundation Chennai and eGangotri

ढक्कारी *स्त्री.* {सं.} तारादेवी।
ढक्की *स्त्री.* {सं.} पहाड़ की ढालवाँ भूमि।
ढगण *पुं.* {सं.} तीन मात्राओं का एक गण (पिंगल)।
ढचर *पुं.* {हिं. ढाँचा ?} झंझट, बखेड़ा; आडंबर, ढकोसला।
ढड्ढा *पुं.* {हिं.} कान तक ढाँपने वाला, मुरेठा।
ढड्ढा[1] *वि.* {देश.} आवश्यकता से अधिक बड़ा और बेढंगा।
ढड्ढा[2] *पुं.* {हिं. ठाट} ढाँचा; झूठा ठाट-बाट, आडंबर।
ढड्ढो *स्त्री.* {हिं. ढड्ढा} बुढ़िया (व्यंग्य)।
ढप *पुं.* {हिं.} लकड़ी बजाने का चमड़ा मढ़ा हुआ बाजा, डफ।
ढप्पू *पुं.* {हिं.} अत्यंत दीर्घ, बहुत बड़ा।
ढपना *पुं.* ढकना; *अ.* ढका होना।
ढपोरशंख *पुं.* डपोरशंख।
ढब *पुं.* {सं. धव = गति} कोई काम करने की विशेष प्रक्रिया, ढंग, रीति, तरीका; प्रकार, तरह; बनावट, गढ़न; युक्ति, उपाय, तदबीर।
मुहा. ढब पर चढ़ाना, लगाना या लाना = किसी को इस प्रकार फुसलाना कि उससे कुछ काम निकले।
प्रकृति, स्वभाव; आदत, बान।
ढबैला *वि.* {हिं.} कीचड़ मिला हुआ, गँदला।
ढमक *स्त्री.* {अनु.} ढमढम शब्द।
ढमकना *अ.* ढमढम शब्द करना।
ढमढम *स्त्री.* {अनु.} ढोलक के बजने का शब्द।
ढयना *अ.* ढहना।
ढरक *स्त्री.* {हिं. ढरकना} ढरकने की क्रिया या भाव; दयालुता; ढरनि।
ढरकना *अ.* {हिं. ढार या ढाल} ढलकना; लेटना।
ढरका *पुं.* {हिं. ढरकना} बाँस की वह नली, जिससे चौपायों को दवा पिलाते हैं।
ढरकाना *स्त्री.* {हिं. ढरकना} करघे का वह अंग, जिससे बाने का सूत इधर-उधर आता-जाता है।
ढरकी *स्त्री.* {हिं. ढरकना} करघे का वह किश्तीनुमा उपकरण, जिससे बाने का सूत इधर-उधर आता-जाता है।
ढरकौंहाँ *वि.* {हिं. ढरकना} ढरकने का ढलनेवाला।
ढरना *अ.* ढलना।
ढरनि *स्त्री.* {हिं. ढरना} ढलने या गिरने की क्रिया या भाव; हिलने-डोलने की क्रिया, गति; चित्त की प्रवृत्ति, झुकाव; दयालुता, अनुग्रह।
ढरहरना *अ.* {हिं. ढलना का पुराना रूप} ढाला या उँड़ेला जाना; ढलना; पूरी तरह से भरा जाना।
ढरहरा *वि.* ढरारा; ढालुवाँ।
ढरहरी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का पकवान, पकौड़ी।
ढरारा *वि.* {हिं. ढार या ढाल} {*स्त्री.* ढरारी} शीघ्र ढलने, लुढ़कने या प्रवृत्त होनेवाला; ढालुआँ।
ढरिआना *अ.* {हिं. ढारना} ढालना, गिराना या बहाना; आँसू बहाना।
ढर्रा *पुं.* {हिं. ढरना} काम करने की बँधी हुई शैली, ढंग, पद्धति, तरीका; आचरण, चाल-चलन।
ढलकना *अ.* {हिं. ढाल} द्रव पदार्थ का आधार से नीचे की ओर जाना, ढलना; लुढ़कना; (किसी पर) अनुरक्त या कृपालु होना।
ढलका *पुं.* {हिं. ढलकना} आँखों से पानी ढलने या बहने का रोग।
ढलकाना *स.* {हिं. ढलकाना} ढलकने में प्रवृत्त करना, ढरकाना, बहाना, गिराना, लुढ़काना।
ढलना *अ.* {हिं. ढाल} द्रव पदार्थ का नीचे की ओर आना, बहना; विगत होना, बीत जाना, जैसे जोबन ढलना; उतार पर होना।
मुहा. दिन ढलना = संध्या होना; *सूरज या चाँद ढलना* = सूर्य या चन्द्रमा का डूबने के समीप होना।
उँड़ेला या लुढ़काया जाना; किसी ओर आकृष्ट या प्रवृत्त होना; किसी पर प्रसन्न होना, रीझना; साँचे में ढाला जाना।
ढलमल *वि.* {हिं.} शिथिल।
ढलवाँ *वि.* {हिं. ढालना} जिसमें ढाल या नीचे की ओर उतार हो; साँचे में ढालकर बनाया हुआ।
ढलवाना *स.* हिं. ढालना का प्रे.।
ढलाई *स्त्री.* {हिं. ढलना} ढालने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
ढलुवाँ *वि.* {हिं.} ढालकर बनाया हुआ।
ढलाना *स.* ढलवाना।
ढलैत *पुं.* {हिं. ढाल} ढाल रखनेवाला सिपाही।
ढवरी *स्त्री.* {हिं. ढलना} लौ, लगन, धुन।
ढहना *अ.* {ध्वंसन} (मकान आदि का) गिर पड़ना, ध्वस्त होना; नष्ट होना; मिट जाना।
ढहरना *अ.* ढलना।
ढहवाना *क्रि. स.* {हिं.} मकान आदि को गिराना।
ढहाना *स.* {सं. ध्वंसन} किसी से ढाने का काम कराना, ध्वस्त कराना।
ढाँक *पुं.* {हिं.} मल्लयुद्ध की एक युक्ति।
ढाँकना *स.* {सं. ढक = छिपाना} ऊपर से कोई वस्तु रखकर (किसी वस्तु का) ओट में करना, ढकना।
ढाँख *पुं.* ढाक (पलाश)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढाँचा *पुं.* {सं. स्थाता} कोई चीज बनाने के पहले उसके अंगों को जोड़कर तैयार किया हुआ पूर्व रूप, ठाठ, डौल; इस प्रकार जोड़े हुए खंड कि उनके बीज में कोई वस्तु जमाई या लगाई जा सके (फ्रेम); पंजर, ठठरी, गढ़न, बनावट।

ढाँढा *पुं.* {पश्तो} छोटा कुआँ।

ढाँपना *स.* ढाँकना।

ढाँसना *अ.* {अनु.} सूखी खाँसी खाँसना।

ढाँसी *स्त्री.* {ढाँसना} सूखी खाँसी।

ढाई *वि.* {सं. अर्द्धद्वितीय, पुं. हिं. अढ़ाई} दो और आधा।

ढाक[1] *पुं.* {सं. आषाढ़क} पलाश का पेड़।
मुहा. ढाक के तीन पात = सदा एक-सा या ज्यों-का-त्यों (व्यंग्य)।

ढाक[2] *पुं.* {सं. ढक्का} लड़ाई का ढोल।

ढाटा (ढा) *पुं.* {हिं.} दाढ़ी बाँधने की कपड़े की पट्टी।

ढाड़ *स्त्री.* {अनु.} चिंघाड़; दहाड़; चिल्लाहट।

ढाढ़स *पुं.* ढारस, धैर्य, दृढ़ता।

ढाढ़ी *पुं.* {देश.} {*स्त्री.* ढाढ़िन} मुसलमान गायकों का एक वर्ग।

ढाढ़ौन *पुं.* {हिं.} जलसिरस का वृक्ष।

ढाबर *वि.* {हिं.} मटमैला।

ढावा *पुं.* {हिं.} ओलती, जाल, रोटी का दुकान।

ढामक *पुं.* {हिं.} नगाड़ा, ढोल आदि का शब्द।

ढामना *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का साँप।

ढामरा *स्त्री.* {सं.} मादा हंस, हंसी।

ढाना *स.* {हिं. ढाहना} दीवार, मकान आदि तोड़कर गिराना; गिराना।

ढार *स्त्री.* {सं. धार} 'ढालुआँ' होने का भाव, ढाल, उतार; पथ, मार्ग; ढाँचा; रचना, बनावट; ढरनि; स्त्री = ढाल (तलवार का वा रोकने की)।

ढारना *स.* ढालना।

ढारस *पुं.* {सं. धृष् या दाढर्य} सांत्वना, आश्वासन; साहस, हिम्मत।

ढाल[1] *स्त्री.* {सं.} तलवार आदि का अथवा और किसी प्रकार का वार रोकने का एक प्रसिद्ध उपकरण, चर्म, फलक।

ढाल[2] *स्त्री.* {सं. धार} वह जगह, जो बराबर नीची जोती चली गई हो, उतार; ढंग, तरीका, प्रकार।

ढाल[3] *स्त्री.* {हिं. ढालना} ढालने की क्रिया या भाव।

ढालना *स.* {सं. धार} पानी का कोई तरल पदार्थ नीचे गिराना, उँड़ेलना; शराब पीना; बेचना; कोई चीज बनाने के लिए उसकी सामग्री साँचे में डालना।

ढालवाँ, ढालुआँ *वि.* {हिं. ढाल} {*स्त्री.* ढालवीं, ढालुई} जो बराबर नीचा होता गया हो; जिसमें ढाल हो, ढालू (स्थान); जो साँचे में ढालकर बनाया गया हो।

ढालिया *पुं.* {हिं.} साँचे में ढालकर पात्र आदि बनानेवाला, कसेरा।

ढालू *वि.* ढालवाँ।

ढासना *पुं.* {सं. धारण + आसन} वह चीज, जिस पर पीठ का सहारा लगाया जाए, सहारा, टेक।

ढाहना *स.* ढाना, ध्वस्त।

ढिंढोरना *क्रि. स.* {हिं.} अनुसंधान करना, खोजना।

ढिंढोरा *पुं.* {सं. डिंडम + रव} वह ढोल जिसे बजाकर किसी बात की घोषणा की जाती है, डुगडुगिया, डुग्गी; घोषणा, मुनादी।

ढिग *क्रि. वि.* {सं. दिक्} पास, निकट; *स्त्री.* निकटतम, सामीप्य; किनारा।

ढिठाई *स्त्री.* {हिं. ढीठ} ढीठ होने की अवस्था या भाव, धृष्टता; अनुचित साहस।

ढिबरी[1] *स्त्री.* {हिं. डिब्बी} मिट्टी का तेल जलाने के लिए डिबिया के आकार का दीपक।

ढिबरी[2] *स्त्री.* {हिं. ढपना} कसे जानेवाले पेंच के दूसरे सिरे पर लगाया जानेवाला लोहे का छल्ला।

ढिलाई *स्त्री.* {हिं. ढीला} ढीला होने का भाव; शिथिलता, सुस्ती।

ढिल्लड़ *वि.* {हिं.} मठ्ठर, आलसी।

ढिसरना *अ.* {सं. ध्वसन} फिसल या सरक पड़ना; प्रवृत्त होना, झुकना।

ढींगर *पुं.* {सं. डिंगर} हट्टा-कट्टा आदमी; पति; उपपति, यार।

ढींढ, ढींढ़ा *पुं.* {हिं.} निकला हुआ पेट, गर्भ।

ढीच *स्त्री.* {हिं.} कूबड़।

ढींढ़ा *पुं.* {सं. ढुंडि = लंबोदर गणेश} निकला हुआ पेट; गर्भ, हमला।

ढीठ *वि.* {सं. धृष्ट} बड़ों का उचित आदर या संकोच न करनेवाला, धृष्ट, बेअदब, शोख; अनुचित या आवश्यकता से अधिक साहस करनेवाला; निडर, निर्भय।

ढीठक *वि.* = ढीठ, धृष्ठ।

ढीमा *पुं.* {हिं.} ढेला, ढोंक।

ढील *स्त्री.* {देश.} सिर के बालों का कीड़ा जूँ; *स्त्री.* ढिलाई, शिथिलता; *वि.* ढीला।

ढीलना *स.* {हिं. ढीला} ढील करना; बंधन से अलग करना, छोड़ देना; (रस्सी या डोर) इस प्रकार ढीली करना, जिसमें वह बराबर आगे की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर बढ़ती जाए; नियंत्रण कम करना, थोड़ी स्वतंत्रता देना।

ढीला *वि.* {सं. शिथिल} जो कसा या तना हुआ न हो; जो दृढ़ता से बँधा, जकड़ा या लगा न हो; जो बहुत गाढ़ा न हो, गीला; जो अपने संकल्प या कर्तव्य पर स्थिर न रहे; धीमा, मंद; सुस्त, आलसी।

ढीलापन *पुं.* {हिं. ढीला + पन (प्रत्य.)} ढीला होने का भाव, शिथिलता।

ढोह *पुं.* {हिं.} ऊँचा टीला, भीटा।

ढुंढ़ *पुं.* {हिं.} टग, चोर, उचक्का।

ढुंढ़ा *स्त्री.* {सं.} हिरण्यकश्यप की बहिन का नाम जो राक्षसी।

ढुंढिराज *पुं.* {सं.} गजानन, गणेश।

ढुढ़वाना *स.* हिं. 'ढूँढ़ना' का प्रे.।

ढुंढिराज *पुं.* {सं.} गणेश।

ढुकना *अ.* {देश.} घुसना, प्रवेश करना (विशेषत: झुक या छिपकर); अचानक धावा करना, टूट पड़ना; टोह लेने के लिए आड़ में छिपना, कहीं छिपकर पता लेना; किसी के पास पहुँचना।

ढुकाना *स.* हिं. 'ढुकना' का प्रे.।

ढुटौना *पुं.* ढोटा।

ढूर *क्रि. वि.* धुर (ठिकाने तक)।

ढुरकना *अ.* ढुलकना।

ढुरना *अ.* {हिं.} किसी ओर मुड़ाना या ढुलकना; कभी इधर और कभी उधर होना; प्रवृत्त होना, झुकना; अनुकूल या प्रसन्न होना।

ढुराना *क्रि. स.* {हिं.} ढरकाना, लुढ़काना, हिलाना।

ढुलकना *अ.* {हिं. ढाल} बराबर नीचे-ऊपर चक्कर खाते हुए नीचे गिरना, लुढ़कना; किसी पर अनुरक्त या प्रसन्न होना।

ढुलकाना *स.* हिं. ढुलकना का *स.*; सरकाना, लुढ़काना।

ढुलना[1] *अ.* {हिं. ढाल} ढुलकना।

ढुलना[2] *अ.* {हिं. ढोना} ढोया जाना।

ढुलवाई *स्त्री.* {हिं.} ढोने का काम दूसरे से कराना।

ढुलवाना *स.* हिं. 'ढोना' का प्रे.।

ढुलाई *स्त्री.* {हिं. ढोना} ढोने या ढुलाने का काम, भाव या मजदूरी।

ढुलाना[1] *स.* {हिं. ढुलना} लुढ़काना, गिराना; प्रवृत्त करना, झुकाना; अनुकूल करना, प्रसन्न करना; इधर-उधर घुमाना, जैसे चँवर ढुलाना।

ढुलाना[2] *स.* {हिं. ढोना} ढोने का काम दूसरों से कराना।

ढूँका *पुं.* {हिं.} कुछ सुनने या देखने के लिए छिपने का काम।

ढूँढ़-खोज *स्त्री.* ढूँढ़ने या खोजने की क्रिया या भाव, तलाश, अनुसंधान।

ढूँढ़ना *स.* {सं. ढुंढन} यह देखना कि कोई व्यक्ति या वस्तु कहाँ है, पता लगाना, तलाश करना, खोजना।

ढूकना *अ.* ढुकना।

ढूका *पुं.* {हिं.} घासपात, डंठल आदि के बोझ का मान।

ढूसो *पुं.* {हिं.} मल्लयुद्ध की एक युक्ति।

ढूह *पुं.* {सं. स्तूप} ढेर, अटाला; टीला, भीटा।

ढेंक *स्त्री.* {सं. ढेक} पानी के किनारे रहनेवाली एक प्रकार की चिड़िया।

ढेंकली *स्त्री.* {हिं. ढेक (चिड़िया)} सिंचाई के लिए कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र।

ढेंढर *पुं.* {देश.} आँख के डेले पर का उभरा या निकला हुआ मांस (रोग)।

ढेंढ़वा *पुं.* {हिं.} लंगूर, काले मुँहवाला बंदर।

ढेंढ़ा *पुं.* {हिं.} चूहा, नेवला आदि मरे हुए जंतुओं की खानेवाली एक प्रकार की नीच जाति, मूढ़, मूर्ख, कपास आदि का डोंड़ा।

ढेंढ़ी *स्त्री.* डोडा।

ढेंपी *स्त्री.* = ढेपनी, टहनी से लगा हुआ फल।

ढेपनी *स्त्री.* {हिं. ढेप} पत्ते या फल का वह भाग, जिससे वह टहनी से जुड़ा रहता है, ढेंपी; स्तन के ऊपर का काला गोल दाना।

ढेर *पुं.* {हिं. धरना?} एक जगह रखी हुई बहुत सी वस्तुओं का कुछ ऊँचा समूह, राशि, अटाला।

मुहा. ढेर करना = मार डालना; *ढेर हो रहना या जाना* = मरकर अथवा बहुत शिथिल होकर गिर पड़ना।

वि. बहुत, अधिक, ज्यादा।

ढेरी *स्त्री.* {हिं. ढेर} ढेर, राशि, समूह।

ढेलवाँस *स्त्री.* {हिं. ढेला + सं. पाश} रस्सी का वह फंदा जिसमें ढेले भरकर चारों ओर फेंकते हैं, गोफना।

ढेला[1] *पुं.* {सं. दल} मिट्टी, ईंट, कंकड़ आदि का छोटा कड़ा टुकड़ा, चक्का; टुकड़ा, डला।

ढेला[2] *पुं.* {?} एक प्रकार का धान या उसका चावल।

ढेलेदार *वि.* {हिं. ढेला + फा. दार} ढेलों के रूप में होनेवाला।

ढेवा *पुं.* {हिं. ढोना?} उतना बोझ जितना एक बार में ढोया जाए, खेप; गीली मिट्टी का वह ढेर, जो कच्ची दीवार बनाते समय उस पर डाला जाता है।

ढैंचा *पुं.* {हिं.} एक पौधा जिसकी छाल से रस्सी बनाई जाती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and e

ढैया पुं. {हिं. ढाई} ढाई सेर का बटखरा; ढाई गुने का पहाड़ा।

ढोंका पुं. {?} पत्थर या और किसी चीज का बड़ा अनगढ़ टुकड़ा।

ढोंग पुं. {हिं. ढंग} ढकोसला, पाखंड।

ढोंगी *वि.* {हिं. ढोंग} ढोंग रचनेवाला, पाखंडी।

ढोंढ़ पुं. {सं. तुंड} कपास, पोस्ते आदि का डोडा; कली।

ढोंढ़ी *स्त्री.* {हिं. ढोंढ़} नाभि; *स्त्री.* ढोढ़।

ढोका *स्त्री.* {हिं. ढुकना = झुकना} प्रणाम, नमस्कार।

ढोटा पुं. {हिं. ढोटी का पुं.} पुत्र, बेटा।
उदा. देखत छोट खोट नृप ढोटा—तुलसी।
बालक, लड़का।

ढोटी पुं. {सं. दुहितृ} पुत्री, बेटी; लड़की, बाला।

ढोना *स.* {सं. वोढ़} सिर या पीठ पर बोझ लादकर ले जाना, भार ले चलना; कहीं से संपत्ति आदि उठा ले जाना; विपत्ति, कष्ट आदि में निर्वाह करना, दिन बिताना।

ढोर पुं. {हिं. ढुरना} चौपाया, पशु।

ढोरी पुं. {हिं.} ढालने की क्रिया, धुन, लगन, रट।

ढोरना *स.* {हिं. ढारना} ढरकाना, ढालना; लुढ़काना; डुलाना (चँवर आदि); (अपने या किसी के) पीछे या साथ चलने में प्रवृत्त करना, पीछे लगाना; *अ.* जमीन पर लोटना या लुढ़कना; किसी का अनुयायी बनकर उसके साथ या पीछे चलना।

ढोल पुं. {सं.} एक प्रकार का लम्बोतरा बाजा जिसके दोनों सिरों पर चमड़ा मढ़ा होता है; कान के अन्दर का परदा।

ढोलक *स्त्री.* {सं. ढोल} छोटा ढोल।

ढोलकिया पुं. {हिं. ढोलक} ढोलक बजाने वाला।

ढोलकी *स्त्री.* ढोलक, छोटी।

ढोलन पुं. {हिं. ढोला} पति, वर, दूल्हा।

ढोलना पुं. {हिं. ढोल} ढोलक के आकार का छोटा जंतर; *स.* ढालना; डोलाना।

ढोलनी *स्त्री.* {हिं.} बच्चों का छोटा झूला, पालना।

ढोला पुं. {हिं. ढोल} सड़े हुए फल आदि में का एक प्रकार का छोटा कीड़ा; हद या निशान; पिंड, शरीर, देह; प्रियतम; गति; एक प्रकार का गीत।

ढोलिनी *स्त्री.* {हिं.} ढोल बजानेवाली स्त्री।

ढोली *स्त्री.* {हिं. ढोल} 200 पानों की गड्डी।

ढोवा *स्त्री.* {हिं. ढोना} ढोए जाने की क्रिया या भाव, ढोवाई, ढुलाई; दूसरों का माल अनुचित रूप से बहुत अधिक मात्रा में उठा ले जाना; वे पदार्थ जो मंगल अवसरों पर राजा या सरदार को भेंट करते हैं।

ढोहना *स.* ढोना; ढूँढ़ना।

ढौंचा पुं. {सं. अर्द्ध + हिं. चार} साढ़े चार का पहाड़ा।

ढौर पुं. = ढंग।

ढौरना *स.* {हिं. ढाल} इधर-उधर घुमाना, जैसे चँवर ढौरना।

ढौरी *स्त्री.* {हिं. ढरना} ढंग, तरीका।

ढौंसना *क्रि. अ.* {हिं.} आनंद ध्वनि करना।

ढाँकन पुं. {सं.} भेंट, घूस आदि।

ण

ण देवनागरी वर्णमाला का पंद्रहवाँ व्यंजन, जिसका उच्चारण स्थान मूर्धा है। कविता में यह 'णगण' का सूचक चिह्न या संक्षिप्त रूप माना जाता है।

णगण पुं. {सं.} दो मात्राओं के एक गण।

त

त देवनागरी वर्णमाला का सोलहवाँ और तवर्ग का पहला वर्ण, जिसका उच्चारण स्थान दंत है। छंदशास्त्र में यह तगण का संक्षिप्त रूप माना जाता है; और कविता में क्रिया-विशेषण के रूप में यह 'तो' का अर्थ देता है।

तंक पुं. {सं.} भय, डर, आतंक, टाँकी।

तंकन पुं. {सं.} कष्टमय जीवनयापन।

तंग[1] *वि.* {फा.} जितना खुला या चौड़ा होना चाहिए, उससे कम, सँकरा; सिकुड़ा हुआ, संकुचित; चुस्त, कसा; विकल, परेशान।
मुहा. तंग करना = सताना, दुख देना; *हाथ तंग होना* = रुपए-पैसे की कमी होना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तंग² पुं. {फा. तंग = तस्मा, या बंद} घोड़ों की जीन कसने का तस्मा।
तंगनजरी स्त्री. {फा. तंगनजरी} संकीर्ण दृष्टिकोण।
तगा पुं. {हिं.} एक प्रकार का वृक्ष।
तंगी स्त्री. {फा.} तंग होने का भाव; संकीर्णता, सँकरापन; आर्थिक कष्ट; न्यूनता, कमी।
तंजेब स्त्री. {फा.} एक प्रकार की महीन और बढ़िया मलमल।
तंड पुं. {हिं.} नृत्य, नाच।
तंडुल पुं. {सं.} चावल।
तंत¹ पुं. तंतु; तत्व; तंत्र।
तंत² स्त्री. {हिं. तुरंत} आतुरता।
तंत³ वि. {?} जो तौल में ठीक हो।
तंतु पुं. {सं.} सूत, तागा, डोरा; संतान, औलाद; विस्तार, फैलाव; ताँत।
तंतुवाय पुं. {सं.} जुलाहा।
तंत्र पुं. {सं.} तंतु, ताँत; सूत; कुटुम्ब का भरण-पोषण; झाड़ने-फूँकने का मंत्र या शास्त्र; राज्य या और किसी कार्य का प्रबंध; देश के राज्य का शासन की कोई प्रणाली, जैसे प्रजातंत्र, गणतंत्र आदि; अधीनता, परवशता; हिन्दुओं का उपासना संबंधी एक शास्त्र जो शिव का चलाया हुआ माना जाता है और जिसके सिद्धांत गुप्त रखे जाते हैं।
तंत्रकार पुं. {सं.} बाजा बजानेवाला।
तंत्री¹ स्त्री. {सं.} सितार आदि बाजों में लगा हुआ तार; तारों की सहायता से बजनेवाला बाजा; शरीर की नस; रस्सी; वि. जिसमें तार लगे हों, तंत्र-संबंधी।
तंत्री² पुं. {सं. तंत्रिन्} बृहस्पति; वह जो बाजा बजाता हो।
तंदुरुस्त वि. {फा.} {भाव. तंदुरुस्ती} तंदुरुस्त होने की अवस्था या भाव, स्वास्थ्य।
तंदुल पुं. तंडुल।
तंदूर पुं. {फा. तनूर} रोटी पकाने की मिट्टी की एक प्रकार की बड़ी भट्ठी।
तंदूरी पुं. {हिं.} एक प्रकार का उत्तम महीन रेशम; (वि.) तंदूर में बनाई हुई रोटी।
तंदेही स्त्री. {फा. तनदिही} परिश्रम, मेहनत; प्रयत्न, कोशिश, ताकीद; तल्लीनता।
तंद्रा स्त्री. {सं.} वह अवस्था जो पूरी नींद आने के आरंभ में होती है, ऊँघ; हलकी बेहोशी।
तंद्रालु वि. {हिं.} ऊँघनेवाला।
तंद्रिल वि. {सं.} जो ऊँघ रहा हो।
तंद्रालस पुं. {सं. तद्रा + आलस्य} तंद्रा या ऊँघ के कारण होनेवाला आलस्य।
तंबा पुं. {हिं.} एक प्रकार का चौड़ी मोहरीवाला पायजामा।
तंबाकू पुं. तमाकू।
तँबिया पुं. {हिं. ताँबा} ताँबे, पीतल आदि का छोटा तसला।
तंबीह स्त्री. {अ.} नसीहत, शिक्षा; ताकीद, चेतावनी।
तंबू पुं. {हिं. तनना} कपड़े, टाट आदि का बना हुआ बड़ा खेमा, शामियाना।
तंबूर पुं. {फा.} एक प्रकार का छोटा ढोल।
तंबूरची पुं. {फा.} तम्बूर नामक ढोल बजानेवाला।
तंबूरा पुं. {हिं. तानपूरा} सितार की तरह का, पर उससे कुछ बड़ा एक बाजा, तानपूरा।
तंबूल पुं. तांबूल।
तँबोली पुं. तमोली, पान बेचनेवाला मनुष्य।
तंभ (न) पुं. {सं. स्तंभ} शृंगार रस में स्तंभ नामक भाव।
तँवाई स्त्री. {सं. ताप, हिं. ताव} ताप, दाह, जलन।
तँवार पुं. {सं. ताप, पु. हिं. ताँवर} ताप, गर्मी; मूर्छा, बेहोशी।
तः प्रत्य. {सं.} एक संस्कृत प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर ये अर्थ देता है—रूप से; जैसे साधारणतः; के अनुसार; जैसे नियमतः।
तई¹ प्रत्य. {हिं. ते} से।
तई² प्रत्य. {प्रा. हुंतो} प्रति, को; से।
तई³ क्रि. वि {सं. तावद्} लिए, वास्ते।
तई⁴ स्त्री. {हिं. तवा} छोटा तवा, छिछला तवा-कड़ाही।
तउ क्रि. वि तब; त्यों, तोभी।
तऊ क्रि. वि {हिं. तब + ऊ (प्रत्य.)} तो भी, तथापि, तिसपर भी।
तक¹ निपा. {सं. अंत + क} किसी बात या कार्य की सीमा अथवा अवधि सूचित करनेवाला एक निपात, पर्यंत।
तक² स्त्री. {हिं. ताकना} ताकने की क्रिया या भाव, तकाई; लगातार या एकटक देखने की क्रिया, टकटकी।
तकड़ी स्त्री. {हिं.} रेत में पैदा होनेवाली घास।
तकदमा पुं. {अ. तखमीना} तखमीना, अंदाज, कूत।
तक़दीर स्त्री. {अ. तक़्दीर} भाग्य, किस्मत।
तकदीरवर वि. {अ. तक़्दीर + फा. वर (प्रत्य.)} भाग्यवान।
तकना अ. {हिं. ताकना} दृष्टिपात करना, देखना; शरण लेना; स. आश्रय, सहायता आदि के लिए किसी की ओर देखना; आसरा देखना, प्रतीक्षा करना; पुं. बहुत ताकनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGang

तकनीक *स्त्री.* {अं. टेक्नॉलोजी} अधिक मात्रा में शीघ्रतापूर्वक उत्पादन करने की प्रक्रिया।

तकनीकी *वि.* तकनीक-संबंधी।

तक़ब्बर *पुं.* {अ. तकब्बुर} {*वि.* तकब्बरी} अभिमान, घमंड।

तकमा *पुं.* तमगा; तुकमा।

तक़रार *स्त्री.* {अ. तक्रार} हुज्जत, विवाद।

तकरारी *वि.* {अ.} तकरार करनेवाला।

तकरीर *स्त्री.* {अ. तक्रीर} बातचीत; वक्तृता, भाषण।

तकला *पुं.* {सं. तर्कु} {*स्त्री.* अल्पा. तकली} चरखे में लोहे की वह सलाई, जिस पर कता हुआ सूत लिपटता है, टेकुआ; रस्सी बटने का एक उपकरण।

तकली *स्त्री.* {हिं. तकला} सूत कातने का एक छोटा-सा यंत्र, जिसमें कात के एक लट्टू में छोटा-सा तकला लगा रहता है।

तकलीफ *स्त्री.* {अ. तक्लीफ} कष्ट, क्लेश, दुख; विपत्ति, संकट।

तकलीफ़देह *वि.* {फा. तकलीफ़देह} कष्टदायक।

तकल्लुफ *वि.* {अ.} शिष्टाचार।

तकसीम *स्त्री.* {अ. तक्सीम} बाँटने की क्रिया या भाव, भाग, बँटाई।

तकसीर *स्त्री.* {तक्सीर.} अपराध, कसूर।

तकाई *स्त्री.* {हिं. ताकना} ताकने या देखने की क्रिया या भाव।

तकाजा *पुं.* तगादा, पावना, माँगना, अनुरोध।

तकाना *स.* हिं. 'ताकना' का प्रे. देखना, बतलाना।

तकाव *पुं.* {हिं. ताकना} ताकने या तकाने की क्रिया या भाव।

तकावी *स्त्री.* {अ.} वह धन जो खेतिहरों को बीज, चारा आदि खरीदने के लिए सरकार की ओर से उधार दिया जाता है।

तकिया *पुं.* {फा.} रुई आदि से भरा हुआ वह थैला, जो लेटने या सोने के समय सिर के नीचे रखते हैं, बालिश; रोक या सहारे के लिए लगाई जानेवाली पत्थर की पटिया, मुतक्का; विश्राम करने का स्थान; आश्रय, सहारा, आसरा; मुसलमान फकीर या पीर के रहने का स्थान।

तकिल *वि.* {सं.} धूर्त, चालाक।

तकिला *स्त्री.* {सं.} औषध, दवा।

तकियाकलाम *पुं.* सखुनतकिया।

तकुआ *पुं.* तकला।

तक्कर *वि.* तगड़ा।

तक्कोल *पुं.* {सं.} एक प्रकार का वृक्ष।

तक्र *पुं.* {सं.} मट्ठा, छाछ।

तक्ष *पुं.* {सं.} रामचन्द्र के भाई भरत के ज्येष्ठ पुत्र का नाम, एक नाम।

तक्षक *पुं.* {सं.} एक नाग, जिसने राजा परीक्षित को काटा था; भारत की एक प्राचीन अनार्य जाति; साँप, सर्प; बढ़ई।

तक्षण *पुं.* {सं.} लकड़ी, पत्थर आदि गढ़कर मूर्तियाँ आदि बनाना।

तक्षशिला *स्त्री.* {सं.} भारत के पुत्र तक्ष की राजधानी जो रावलपिंडी के पास खोदकर निकाली गई है।

तखमीना *पुं.* {अ.} (व्यय आदि का) अंदाज, अनुमान, अटकल।

तख़ल्लुस *पुं.* {अ.} उपनाम।

तख़्त *पुं.* {फा.} राजसिंहासन; तख्तों की बनी हुई बड़ी चौकी।

तख़्तपोश *पुं.* {फा.} तख्त या चौकी पर बिछाने की चादर।

तख़्तबंदी *स्त्री.* {फा.} तख्तों की बनी हुई दीवार।

तख़्ता *पुं.* {फा. तख्तः} लकड़ी का अधिक लम्बा और कम चौड़ा टुकड़ा, पल्ला।

मुहा. तख्ता उलटना या पलटना = बना-बनाया काम बिगड़ना या बिगाड़ना; व्यवस्था आदि का स्वरूप बिल्कुल बदल जाना या बदल देना; *तख्ता हो जाना* = आकड़ जाना।

अरथी, टिकठी; कागज का ताव (शीट)।

तख़्तापलट *वि.* {हिं.} जो तख़्ता पलटना चाहता हो।

तख़्ती *स्त्री.* {हिं. तख्ता} छोटा तख्ता; काठ की वह पटरी जिस पर लड़कों को लिखना सिखाते हैं, पटिया।

तगड़ा *वि.* {हिं. तन + कड़ा} {*स्त्री.* तकड़ी} सबल, बलवान, मजबूत; अच्छा और बड़ा।

तगण *पुं.* {सं.} पहले दो गुरु और तब एक लघु वर्ण (ऽ ऽ ।) का समूह या गण, जैसे दायाद।

तगदमा *पुं.* तकदमा।

तगमा *पुं.* तमगा।

तगला *पुं.* सरकंडे की दो हाथ की छड़ी जिससे जुलाहे साँधी मिलते हैं।

तगाई *स्त्री.* {हिं. तागना} तागने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तगादा *पुं.* {अ. तकाजः} किसी ने अपना प्राप्य धन पाने या आवश्यक कार्य करने के लिए फिर से कहना या स्मरण कराना।

तगाना *स.* हिं. 'तागना' का प्रे.।

तगार *पुं.* {फा तगार.} {*स्त्री.* अल्पा. तगारी} उखली गाड़ने का गड्ढा; वह स्थान जहाँ इमारत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए चूना, गारा आदि साना जाता है; बड़ा तसला।

तगारी *स्त्री.* {हिं.} छोटा तगार।

तगीर *पुं.* {अ. तगय्युर} परिवर्तन।

तचना *अ.* {हिं. तपना} गरम होना, तपना; जलना; दुखी या संतप्त होना।

तचा *स्त्री.* त्वचा।

तचाना *सं.* {हिं. तपाना} तपाना, गरम करना; सन्तप्त या दु:खी करना।

तचित *वि.* {हिं. तचना} तपा हुआ, तप्त; दु:खी, सन्तप्त।

तच्छक *पुं.* तक्षक।

तच्छिन *क्रि. वि* तत्क्षण, तत्काल।

तज *पुं.* {सं. त्वच} दारचीनी की तरह का एक सदाबहार पेड़, जिसके पत्ते 'तेजपत्ता' कहलाते हैं; इस पेड़ की सुगन्धित छाल या लकड़ी।

तजन[1] *पुं.* {सं. त्यजन} त्याग, परित्याग की क्रिया।

तजन[2] *पुं.* {सं. तजीन? मि. फा. ताजियाना} कोड़ा, चाबुक।

तजना *स.* {सं. त्यजन} त्यागना, छोड़ना।

तज़रबा *पुं.* {अ. तजरुबा} अनुभव; प्रयोग।

तज़रबाकार *पुं.* = अनुभवी।

तज़वीज *स्त्री.* {अ. तज्वीज} सम्मति, राय; फैसला, निर्णय; बन्दोबस्त; प्रस्ताव।

तज़वीजसानी *स्त्री.* {अ. तज्वीन + सानी (दूसरा)} एक बार निर्णय हो जाने पर कुछ विशिष्ट कारणों से किसी अभियोग की फिर से होनेवाली सुनवाई।

तज्जनित *वि.* {सं.} उससे उत्पन्न।

तज्जन्य *वि.* {सं.} उससे उत्पन्न; उससे लगा हुआ।

तज्ञ *वि.* {सं.} तत्वज्ञ, ज्ञानी।

तटंक *पुं.* ताटंक, कान में पहननेवाला एक प्रकार का गहना, कर्णफूल।

तट *पुं.* {सं.} प्रदेश; क्षेत्र, किनारा तीर, कूल, शिव, महादेव; *क्रि. वि.* पास, निकट।

तटग *पुं.* {सं.} तड़ाग, सरोवर; *वि.* तट की ओर जानेवाला।

तटनी *स्त्री.* {सं. तटिनी} नदी, सरिता।

तटबंध *पुं.* {सं.} नदी, नहर आदि के तट पर बनाई हुई दीवार।

तटवर्ती *वि.* {सं. तटवासिन्} तट पर स्थित।

तटवासी *पुं.* {सं. तटवासिन्} तट पर रहनेवाला।

तटस्थ *वि.* {सं.} {*भाव.* तटस्थता} तट या किनारे रहनेवाला; पास रहनेवाला; परस्पर विरोधी पक्षों से अलग रहनेवाला, उदासीन, निरपेक्ष (न्यूट्रल)।

तटस्थता *स्त्री.* {सं.} तटस्थ होने या विरोधी दलों के लड़ाई-झगड़े से दूर रहने की दशा या भाव (न्यूट्रैलिटी)।

तटस्थीकरण *पुं.* {सं. तटस्थ + करण} तटस्थ या अलग करने की क्रिया या भाव; किसी वस्तु का कोई गुण हटाकर उस गुण का फल या प्रभाव नष्ट करने की क्रिया या भाव (न्यूट्रलाइजेशन)।

तटाक *पुं.* {सं.} सरोवर, तडाग, तालाब।

तटाघात *क्रि. अ.* {हिं.} पशुओं का सींगों से भूमि खोदना।

तटिनी *स्त्री.* {सं.} नदी।

तटी *स्त्री.* {सं.} नदी।

तड़[1] *पुं.* {सं. तट} एक ही जाति या समाज के अलग-अलग विभाग।

तड़[2] *पुं.* {अनु.} कोई चीज पटकने या मारने से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

तड़क *स्त्री.* {हिं. तड़कना} तड़कने की क्रिया या भाव; तड़कने के कारण पड़नेवाला चिह्न।

तड़कना *अ.* {अनु. तड़} 'तड़' शब्द के साथ फटना, फूटना या टूटना, चटकना; किसी चीज का सूखकर फट जाना; तड़का लगाना, छौंकना।

तड़क-भड़क *स्त्री.* {अनु.} ठाट-बाट।

तड़का *पुं.* {हिं. तड़कना} सबेरा, सुबह, प्रात:काल; छौंक, बघार।

तड़काना *स.* हिं. 'तड़कना' का प्रे.।

तड़तड़ाना *अ., स.* {अनु.} तड़तड़ शब्द होना या करना।

तड़प *स्त्री.* {हिं. तड़पना} तड़पने की क्रिया या भाव; चमक, आभा।

तड़पन *स्त्री.* {हिं. तड़पना} तड़पने की अवस्था या भाव।

तड़पना *अ.* {अनु.} अधिक पीड़ा के कारण छटपटाना; गरजना।

तड़पाना *स.* {हिं. तड़पना} ऐसा काम करना जिसमें कोई तड़पे।

तड़बंदी *स्त्री.* दलबंदी।

तड़ाक *स्त्री.* {अनु.} तड़कने का शब्द; *क्रि. वि.* 'तड़' या 'तड़ाक' शब्द के साथ; जल्दी से, चटपट, तुरन्त।

तड़ाका *पुं.* {अनु.} 'तड़' शब्द; *क्रि. वि.* चटपट, तुरन्त।

तडाग, तड़ाग *पुं.* {सं.} तालाब, सरोवर।

तड़ागना *अ.* {अनु.} डींग हाँकना; हाथ-पैर हिलाना, प्रयत्न करना।

तड़ातड़ *क्रि. वि.* {अनु.} तड़तड़ शब्द के साथ; जल्दी-जल्दी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तड़ाना *स.* {हिं. ताड़ना} अनजान बनकर इस तरह कोई काम करना जिसमें लोग ताड़ें या देखें।

तड़ावा पुं. {हिं. तड़ाना} केवल तड़ाने या दिखाने के लिए धारण किया हुआ रूप।

तड़ि *स्त्री.* {सं.} आघात, चोट; *वि.* चोट पहुँचानेवाला।

तड़ित *स्त्री.* {सं. तडित्} बिजली।

तड़ित-झंझा पुं. {सं. तडित् + हिं.} ऐसा तूफान, जिसमें बिजली की चमक भी हो।

तडिदगर्भ पुं. {सं.} मेघ, बादल।

तडिन्मय *वि.* {स.} बिजली का स्वरूप का।

तड़ी *स्त्री.* {तड़ से अनु.} चपत, धौल; धोखा, छल (दलाल)।

तत् पुं. {सं.} ब्रह्म, परमात्मा; वायु, हवा।

सर्व. उस, जैसे तत्काल।

तत[1] पुं. {सं.} वायु; विस्तार; पिता; पुत्र; वह बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे हों, जैसे बीन, सितार, सारंगी आदि।

तत[2] *वि.* {सं. तप्त} तपा हुआ, गरम; पुं. तत्त्व।

ततकार पुं. {अनु.} नृत्य या नाच के बोल।

ततखन *क्रि. वि.* तत्क्षण।

ततताथेई *स्त्री.* {हिं.} नाचने का शब्द या बोल।

ततपत्री *स्त्री.* {सं.} केले का पेड़।

ततबाउ पुं. 'तंतुवाय'।

ततबीर *स्त्री.* तदबीर।

ततरी *स्त्री.* {हिं.} एक फलवाला वृक्ष।

ततसार *स्त्री.* {सं. तत्त्वशाला} कोई चीज तपाने की जगह।

ततार्ई *स्त्री.* {हिं. तत्ता} गरमी; तेजी; उग्रता, प्रचंडता।

ततारना *क्रि. स.* {हिं.} गरम पानी से धोना, तपाकर धोना।

तति *स्त्री.* {सं.} श्रेणी, पंक्ति, ताँता, समूह, विस्तार।

ततु पुं. तत्त्व।

ततुवाऊ पुं. तंतुवाय।

ततैया *स्त्री.* {हिं.} हड्डा, भिड़, बर्रे; *वि.* तीव्र, कष्ट देने वाला।

तत् *अव्य.* {सं.} हेतु, लिये; (सर्व.) वह, उस; पुं. पर ब्रह्म या परमात्मा का एक नाग, वायु, हवा।

ततोधिक *वि.* {सं.} उनसे बढ़कर।

तत्काल *क्रि. वि.* {सं.} उसी समय तुरन्त, फौरन।

तत्कालधी *वि.* {सं.} उपस्थित बुद्धिवाला।

तत्कालिक *वि.* तात्कालिक।

तत्कालीन *वि.* {सं.} उस समय का।

तत्क्षण *क्रि. वि.* {सं.} उसी समय।

तत्त पुं. तत्व।

तत्ता *वि.* {सं. तप्त} गरम, उष्ण।

तत्ताथेई *स्त्री.* {अनु.} नाचने में पैरों के जमीन पर पड़ने का शब्द।

तत्तुल्य *वि.* {सं.} उसके समान।

तत्तोथंबो पुं. {हिं. तत्ता = गरम + थामना} दम-दिलासा, बहलावा; बीच-बचाव।

तत्त्व पुं. {सं.} वास्तविक या मौलिक बात, गुण या आधार, असलियत; जगत् का मूल कारण। (सांख्य में 25 तत्व माने गये हैं) (मैटर); पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पाँचो भूत। (एलिमेंट); ब्रह्म; मुख्य और महत्वपूर्ण बात, गुण या अंश, सार वस्तु या भाग (मैटर, सब्स्टेन्स)।

तत्त्वज्ञ पुं. {सं.} तत्व या यथार्थता जानने वाला, तत्वज्ञानी; ब्रह्मज्ञानी; दार्शनिक।

तत्त्वज्ञान पुं. {सं.} ब्रह्म, आत्मा और ईश्वर आदि के संबंध का सच्चा और ठीक ज्ञान; ब्रह्मज्ञान।

तत्त्वज्ञानी पुं. तत्वज्ञ।

तत्त्वतः *क्रि. वि.* {सं.} महत्वपूर्ण गुण या तत्व के विचार से (सब्स्टेंशली)।

तत्त्वदर्श पुं. *वि.* {सं.} (वह) जिसको तत्त्वज्ञान प्राप्त हुआ हो।

तत्त्वदर्शी पुं. तत्वज्ञ।

तत्त्वदीपन पुं. {सं.} तत्वज्ञान का संचार।

तत्त्वदृष्टि *स्त्री.* {सं.} वह दृष्टि जो तत्त्वज्ञान प्राप्ति में सहायक हो।

तत्त्वनिरूपण पुं. {सं.} तत्व का निर्णय।

तत्त्वप्रकाश पुं. {सं.} तत्वज्ञान की ज्योति।

तत्त्वबोधिनी *स्त्री.* {हिं.} वह साधना जिसके द्वारा तत्वज्ञान प्राप्त हो।

तत्त्वभाव पुं. {सं.} प्रकृति स्वभाव।

तत्त्वभाषी पुं. {सं.} यथार्थवादी, स्पष्ट रूप से कहनेवाला।

तत्त्ववाद पुं. {सं.} दर्शन शास्त्र संबंधी विचार।

तत्त्ववादी पुं. {सं.} यथार्थवादी, वह जो तत्त्वज्ञान को जानता हो और उसका समर्थन करता हो।

तत्त्वमसी *पद.* {सं.} वेदान्त का एक प्रसिद्ध पद, जिसका अर्थ है–तू वही अर्थात् ब्रह्म है।

तत्त्वविद्या *स्त्री.* {सं.} दर्शनशास्त्र।

तत्त्ववेत्ता पुं. तत्त्वज्ञ।

तत्त्वशास्त्र पुं. दर्शनशास्त्र।

तत्त्वात्मक *वि.* {सं.} तत्व के रूप में होनेवाला।

तत्त्वान्वेषी पुं. {सं. तत्त्वान्वेषिन्} तत्व का अन्वेषण करनेवाला।

तत्त्वावधान पुं. {सं.} किसी काम की ऊपर से होनेवाली देख-रेख।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्पर *वि.* {सं.} {संज्ञा तत्परता} उद्यत, मुस्तैद, सन्नद्ध; चतुर।

तत्परायण *वि.* {सं.} काम में लगा हुआ, काम में तत्पर।

तत्पुरुष *पुं.* {सं.} वह समास, जिसमें पहले पद में कर्ता कारक तो होता ही नहीं, और शेष कारकों की विभक्तियाँ लुप्त होती हैं और अंतिम पद का अर्थ प्रधान होता है, जैसे नभचर।

तत्पूर्व *वि.* {सं.} सर्वप्रथम, सबसे पहला।

तत्र *क्रि. वि.* {सं.} उस जगह, वहाँ।

तत्रापि *अव्य.* {सं.} तथापि, तो भी।

तत्व *पुं.* = तत्व।

तत्संबंधी *वि.* {सं.} उससे (अर्थात् पहले कहे या बतलाए हुए से) संबंध रखनेवाला (कनेक्टेड देयर विद)।

तत्सम *पुं.* {सं.} किसी भाषा का विशेषत: संस्कृत का वह शब्द, जिसका व्यवहार दूसरी अथवा देशी भाषाओं में उसके मूल रूप में या ज्यों-का-त्यों हो, जैसे सूर्य, पृथ्वी, समय आदि।

तत्सामयिक *वि.* {सं.} उस समय का।

तथा *योज.* {सं.} और, व; इसी तरह, ऐसे ही।

तथाकथित *वि.* {सं.} जो कोई काम करनेवाला या कुछ होनेवाला, कहा तो जाए, पर जिसके संबंध में उस कार्य के कर्ता होने अथवा स्वयं उसके वैसे होने का कोई पुष्ट प्रमाण न हो या जिसके वास्तविक कर्ता आदि होने में किसी प्रकार का संदेह आदि या आपत्ति हो, यों ही अथवा केवल कहा जाने या कहलानेवाला, परंतु सर्वमान्य नहीं (सो-कॉल्ड)।

तथाकथ्य *वि.* तथाकथित।

तथागत *पुं.* {सं.} गौतम बुद्ध।

तथापि *क्रि. वि.* {सं.} तो भी, फिर भी।

तथास्तु *पद* {सं.} ऐसा ही हो, एवमस्तु।

तथैव[1] *क्रि. वि.* {सं.} वैसे ही, उसी प्रकार; जो ऊपर या पहले है, वही यहाँ भी (डिट्टो)।

तथैव[2] *अव्य.* {सं.} उस तरह, वैसे ही।

तथोक्त *वि.* तथाकथित।

तथ्य *वि.* {सं.} सच्चाई, यथार्थता; कोई ऐसी बात जो किसी विशेष अवस्था में वस्तुत: हुई हो; कोई ऐसी बात जिसकी अनुभूति या ज्ञान किसी विशेष अवस्था में या कोई काम करते समय हुआ हो (फैक्ट, उक्त सभी अर्थों के लिए)।

तथ्यक *वि.* {सं.} तथ्य-संबंधी, तथ्य का।

तथ्यक साध्या *स्त्री.* {सं.} वह साध्या जो वास्तविक घटनाओं या तथ्यों से संबंध रखती हो (ईश्यू ऑफ फैक्ट्स)।

तथ्यान्वेषी (षिन्) *पुं.* {सं.} तथ्यों का अन्वेषण करनेवाला।

तदंत *वि.* {सं.} उस प्रकार समाप्त; *पुं.* अभिप्राय।

तदनंतर *क्रि. वि.* {सं.} उसके बाद।

तद् *वि.* {सं.} वह (यौगिक के आरंभ में), जैसे तद्गत, तदंतर।

तदंतर, तदनन्तर *क्रि. वि.* {सं.} उसे उपरांत, उसे बाद।

तदंश *पुं.* {सं.} उसका भाग या हिस्सा।

तदनुकूल *वि.* {सं.} उसके अनुकूल या अनुसार।

तदनुरूप *वि.* {सं.} (जैसा पहले कोई हो) उसके अनुरूप, सदृश या समान; (पहलेवाले से) मेल मिलाने या मेल खानेवाला (कॉरेस्पांडिंग)।

तदनुसार *वि. क्रि. वि.* {सं.} जो हो या हुआ हो, उसके अनुसार, पहलेवाले के मुताबिक।

तदन्य *वि.* {सं.} उससे भिन्न या पृथक्।

तदपि *क्रि. वि.* {सं.} तो भी, तथापि।

तदबीर *स्त्री.* {अ. तद्बीर} काम पूरा या ठीक करने का उपाय, युक्ति, तरकीब।

तदर्थ *क्रि. वि.* {सं.} उसके लिए; *वि.* (उसी या) किसी विशेष काम के लिए बना हुआ, जैसे तदर्थ समिति (ऐड हॉक)।

तदर्थ समिति *स्त्री.* {सं.} किसी विशेष कार्य के लिए बनी हुई समिति (ऐड हॉक कमिटी)।

तदर्थीय *वि.* {सं.} (वह शब्द या पद) जो किसी दूसरी भाषा के शब्द का अर्थ सूचित करने के लिए उसके अनुकरण पर बना हो, जैसे 'रजतपट' अंग्रेज़ी के 'सिलवर स्क्रीन' का तदर्थीय है।

तदनुसार *क्रि. वि.* {सं.} उसके अनुसार।

तदाकार *वि.* {सं.} उसी आकार या रूप का, तद्रूप; तन्मय, तल्लीन।

तदारुक *पुं.* {अ.} अभियुक्त आदि की खोज; दुर्घटना की जाँच। दुर्घटना रोकने के लिए पहले से किया जानेवाला प्रबन्ध या उपाय।

तदाकार *वि.* {सं.} तद्रूप, तन्मय, तल्लीन।

तदानीं *अव्य.* {सं.} उस समय, तब।

तदामुख *पुं.* {सं.} आरंभ, शुरू।

तदीय *सर्व.* {सं.} {*भाव.* तदीयता} उससे संबंध रहनेवाला; उसका।

तदुपरांत *क्रि. वि* {सं.} उसके बाद।

तदुपरि *अव्य.* {सं.} उससे ऊपर।

तद्गत *वि.* {सं.} उससे संबंध रखनेवाला; उसके अंतर्गत, उसमें व्याप्त।

तद्गुण *पुं.* {सं.} वह अर्थालंकार जिसमें किसी एक वस्तु का अपना गुण त्यागकर पास के किसी दूसरे उत्तम पदार्थ का गुण ग्रहण करने का वर्णन हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तद्धन *वि.* {सं.} कृपण, कंजूस।

तद्धित *पुं.* {सं.} व्याकरण में वह प्रत्यय, जिसे संज्ञा के अंत में लगाकर भाववाचक संज्ञा या विशेषण बनाते हैं, जैसे–'मित्रता' में का 'ता' या 'पाश्चात्य' में का 'त्य'।

तद्भव *पुं.* {सं.} किसी भाषा (विशेषत: संस्कृत) का वह शब्द जिसका रूप दूसरी अथवा देशी भाषाओं में कुछ बदल या बिगड़ गया हो, अपभ्रंश रूप, जैसे-संस्कृत 'सूत्र' से बना हुआ हिन्दी 'सूत' या अंग्रेज़ी 'लैन्टर्न' से बना हिं. 'लालटेन' तद्भव है।

तथपि *योज.* = तथापि।

तद्यपि *अव्य.* {हिं.} तथापि, तो भी।

तद्रूप *वि.* {सं.} {*भाव.* तद्रूपता} किसी के रूप के समान, सदृश।

तद्वत् *वि.* {सं.} उसी के समान।

तद्वत्ता *स्त्री.* {सं.} तद्वत् होने की अवस्था का भाव।

तन *पुं.* {सं. तनु} शरीर, देह।

मुहा. तन कसना = तपस्या, कष्टसहन आदि के द्वारा अपने आपको सहनशील बनाना; *तन को लगना* = मन में पूरी चिंता या ध्यान होना; (खाद्य पदार्थ का) पचकर शरीर को पुष्ट करना; *तन देना* = मन लगाना; *क्रि. वि.* तरफ, ओर; *वि.* तनिक, थोड़ा-सा।

तनक *वि.* = तनिक।

तनकीह *स्त्री.* {अ. तन्कीह} जाँच, तहकीकात; किसी मुकदमे की वे मूल बातें जिसका विचार और निर्णय करना आवश्यक हो।

तनखाह *स्त्री.* {फा. तनख्वाह} वेतन।

तनखैया *पुं.* सिख पंथ में, धर्म-विरोधी कार्य करनेवाला घोषित अपराधी।

तनगना *अ.* तिनकना।

तनजेब *पुं. स्त्री.* {हिं.} तंजेब।

तनज्जुल *वि.* {अ.} {*भाव.* तनज्जुली} नीचे आया हुआ, अवनत; पद या महत्व से उतारा या घटाया हुआ।

तनतनाना *अ.* {अनु.} क्रोध दिखलाना, बिगड़ना।

तनत्राण *पुं.* तनुत्राण कवच।

तनना *अ.* {सं. तन्} खिंचाव आदि के कारण अपने पूरे विस्तार तक पहुँचना; ताना जाना; अकड़कर सीधा खड़ा होना; अभिमानपूर्वक रुष्ट होना।

तनपात *पुं.* तनुपात।

तनय *पुं.* {सं.} बेटा, पुत्र।

तनया *पुं.* {सं.} बेटी, पुत्री।

तनरुह *पुं.* तनूरुह।

तनवाना *स.* हिं. 'तानना' का प्रे.।

तनसुख *पुं.* {सं. तन + सुख} पुरानी चाल का एक प्रकार का कपड़ा।

तनहा *वि.* {फा.} {*भाव.* तनहाई} जिसके साथ और कोई न हो, अकेला, एकाकी; *क्रि. वि.* बिना किसी साथी के, अकेले।

तनहाई *स्त्री.* {फा.} तनहा या अकेले होने का भाव, अकेलापन; एकान्त स्थान।

तना *पुं.* {सं. तनु} वृक्ष का वह नीचेवाला भाग जिसमें डालियाँ नहीं होतीं, पेड़ का धड़।

तनाई *स्त्री.* {हिं. तानना} तानने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तनाउ *वि.* तनाव।

तनाकु *क्रि. वि.* तनिक।

तनाजा *पुं.* {अ. तनाजा} झगड़ा, संघर्ष।

तनाना *स.* तनवाना।

तनाब *स्त्री.* {अ.} खेमे आदि खींचकर बाँधने की रस्सी।

तनाव *पुं.* {हिं. तनना} तनने की क्रिया या भाव; भय, चिंता आदि के कारण मस्तिष्क की नसों का तन जाना जिससे विकलता बढ़ जाती है।

तनावपूर्ण *वि.* {हिं. + सं.} तनाव से भरा।

तनावग्रस्त *वि.* {हिं. + सं.} तनाव से विकल।

तनि (क) *वि.* {सं. तनु = अल्प} थोड़ा, कम; छोटा; *क्रि. वि.* बहुत थोड़ा, जरा, टुक।

तनिका *स्त्री.* {सं.} किसी वस्तु को बाँधने की रस्सी।

तनिमा *स्त्री.* {सं.} शरीर का दुबलापन, कृशता।

तनिया *स्त्री.* {हिं. तनी} लँगोटी, कौपीन; कछनी, काछा; स्त्रियों के पहनने की चोली या कुरती; तनी।

तनिष्ठ *वि.* {सं.} अति दुर्बल।

तनी *स्त्री.* {हिं. तानना} डोरी की तरह बटा हुआ वह कपड़ा जो पहनने के कपड़ों में उनके पल्ले बाँधने के लिए लगाया जाता है, बंद, बंधन; तनिया; *वि.* तनिक।

तनु[1] *वि.* {सं.} {*भाव.* तनुता} दुबला-पतला; थोड़ा, कम; कोमल, नाजुक; सुन्दर, बढ़िया।

तनु[2] *स्त्री.* {सं.} शरीर; स्त्री; *क्रि. वि.* ओर, तरफ।

उदा. चितै जानकी लखन तनु–तुलसी।

तनुक *क्रि. वि.* तनिक।

तनुकरण *पुं.* {सं.} द्रव को पतला करना।

तनुकारी *वि.* {सं. तनुकारिन्} द्रव को पतला करनेवाला।

तनुज *पुं.* {सं.} बेटा, पुत्र।

तनुजा *स्त्री.* {सं.} पुत्री, बेटी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तनुत्राण पुं. {सं.} कवच, बखतर।
तनुता *स्त्री* {सं.} कृशता, दुर्बलता, लघुता, छोटाई।
तनुधारी (धारिन्) *वि.* {सं.} शरीरधारी।
तनुपत्र पुं. {सं.} इंगुदी का वृक्ष; *वि.* जिसमें बहुत कम पत्ते हों।
तनुपात पुं. {सं.} मृत्यु, मौत।
तनबीज *वि.* {सं.} जिसके बीज छोटे हों।
तनुभाव पु. {स.} दुबल, मनुष्य,
तनुरस पुं. {सं.} धमं, पसीना।
तनुल *वि.* {सं.} विस्तृत, फैल हुआ।
तनुवार पुं. {सं.} कवच, बख्तर।
तनुव्रण पुं. {सं.} बल्मीक रोग।
तनुहृद पुं. {सं.} मलद्वार, गुदा।
तनूकृत *वि.* {सं.} छोटा किया हुआ।
तनूज पुं. तनुज।
तनूजा *स्त्री.* {सं. तनुजा} पुत्री, बेटा।
तनूनप पुं. {सं.} घृत, घी।
तनूबल पुं. {सं.} शरीर का बल।
तनुरुह पुं. {सं.} रोम, रोआँ; पुत्र, बेटा।
तनेना *वि.* {हिं. तनना} {*स्त्री.* तनेनी} तननेवाला; टेढ़ा, तिरछा; क्रुद्ध, नाराज।
तनैया[1] *स्त्री.* {सं. तनया} बेटी।
तनैया[2] *वि.* {हिं. तानना} ताननेवाला।
तनोज पुं. {सं. तनूज} रोम, रोआँ; पुत्र बेटा।
तनोरुह पुं. तनुरुह।
तन्मय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* तन्मयी, भाव. तन्मयता} किसी काम में बहुत मग्न या लगा हुआ, दत्तचित्त, लवलीन।
तन्मात्र पुं. {सं.} पंचभूतों का आदि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप; ये पाँच हैं–शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध।
तन्मात्रा *स्त्री.* तन्मात्र।
तन्यक *वि.* {सं. तन्य} जो खींचने पर लंबा हो सके या बढ़ जाए (इलैस्टिक); (धातु) जिसका तार खींचा जा सके।
तन्यता *स्त्री.* {सं.} वस्तुओं का वह गुण, जिससे वे खिंचने पर बड़ी हो जाती और फिर ज्यों-की-त्यों हो जाती हैं। (इलैस्टिसिटी); धातुओं आदि का वह गुण, जिससे उनके तार खींचे जाते हैं।
तन्वंग *वि.* {सं. तनु + अंग} {*स्त्री.* तन्वंगी} दुबले-पतले अंगोंवाला।
तन्वंगी *स्त्री वि* {सं.} सकमार अंगोंवाली।
तन्वी *स्त्री. वि.* {सं.} दुबली या कोमल अंगोंवाली, कृशाङ्गी।
तप[1] पुं. {सं. तपस्.} वे कष्टकर धार्मिक कार्य, जो चित्त को भोगविलास से हटाने के लिए किए जाएँ, तपस्या; शरीर या इंद्रियों को वश में रखना।
तप[2] पुं. {सं.} ताप, गरमी; ग्रीष्मऋतु; ज्वर, बुखार।
तपकना *अ.* {हिं. टपकना} धड़कना, उछलना; चमकना; टपकना।
तपती *स्त्री.* {सं.} सूर्य की कन्या का नाम।
तपन[1] पुं. {सं.} तपने की क्रिया या भाव, ताप; सूर्य; धूप; वह शारीरिक व्यापार जो नायक के वियोग में नायिका में होते हैं।
तपन[2] *स्त्री.* {हिं. तपना} गरमी, ताप।
तपनक पुं. {सं.} एक प्रकार का धान।
तपनकर पुं. {सं.} सूर्य की किरण।
तपच्छद पुं. {सं.} मदार का पेड़।
तपन-तनय पुं. {सं.} सूर्य के पुत्र–यम, शनि, सुग्रीव।
तपन-तनया *स्त्री.* {सं.} शमी वृक्ष, यमुना नदी।
तपन-मणि पुं. {सं.} सूर्यकांत मणि।
तपनांशु पुं. {सं.} सूर्य की किरण।
तपना[1] *अ.* {सं. तपन} अधिक गरमी के कारण खूब गरम होना, तप्त होना; प्रभुत्व या अधिकार दिखाना; बुरे कामों में बहुत अधिक खर्च करना।
तपना[2] 'अ. {सं. तप} तपस्या करना।
तपरितु *स्त्री.* {हिं. तपना = ऋतु} गरमी का मौसम।
तपश्चरण पुं. तपश्चर्या।
तपश्चर्या *स्त्री.* {सं.} तपस्या।
तपस पुं. तपस्या।
तपसा *स्त्री.* {सं. तपस्या} तपस्या, तप; तापती नदी।
तपसी पुं. = तपस्वी।
तपस्या *स्त्री.* {सं.} तप करने की क्रिया या भाव; विशेष तप।
तपस्विनी *स्त्री.* {सं.} तपस्या करनेवाली स्त्री; तपस्वी की स्त्री।
तपस्वी पुं. {सं. तपस्विन्} {*स्त्री.* तपस्विनी} तपस्या करनेवाला।
तपस्वीपत्र पुं. {सं.} दौने का पौधा।
तपा पुं. = तपस्वी।
तपाक पुं. {फा.} आवेश, जोश; वेग, तेजी।
तपात्यय पुं. {सं.} वर्षाकाल, बरसात।
तपाकर पुं. {सं.} सूर्य; बहुत बड़ा तपस्वी।
तपाना स. {हिं. तपना} गरम करना, तप्त करना; आग पर रखकर पकाना; दुख देना।
तपावंत पुं. तपस्वी।
तपित *वि.* {सं.} तपा हुआ, गरम।
तपिया पुं. तपस्वी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तपिश *स्त्री.* {फा.} गरमी, तपन।
तपी *पुं.* {हिं. तप} तपस्वी, ऋषि; सूर्य।
तपेदिक *पुं.* {फा. तपे दिक} क्षय (रोग)।
तपोधन *पुं.* {सं.} बहुत बड़ा तपस्वी; तपोरत।
तपोधना *स्त्री.* {सं.} गोरखगुण्डी।
तपोबल *पुं.* {सं.} तप का प्रभाव या शक्ति।
तपोभूमि *स्त्री.* = तपोवन।
तपोमय *पुं.* {सं.} तपवाला, परमेश्वर।
तपोमयी *स्त्री.* {सं.} तपस्विनी स्त्री।
तपोवन *पुं.* {सं.} वह वन, जो तपस्वियों के रहने या तपस्या करने के योग्य हो।
तपौनी *स्त्री.* {हिं.} ठगों की एक रस्म।
तप्त *वि.* {सं.} तपाया या तपा हुआ, गरम, उष्ण; जिसमें आवेश, उग्रता या गरमागरमी हो (हीटेड); दुखित, पीड़ित।
तप्तकुंड *पुं.* {सं.} वह कुंड जिसका पानी गरम हो।
तप्तमुद्रा *पुं.* {सं.} शंख, चक्र आदि के वे छापे, जो वैष्णव लोग अपने अंगों पर दगवाते हैं।
तफरीह *स्त्री.* {अ. तफ़्रीह} खुशी, प्रसन्नता; मन-बहलाव, दिल्लगी, हँसी।
तफसील *स्त्री.* {अ. तफ्सील} विस्तृत वर्णन या विवरण; टीका, व्याख्या।
तब *क्रि. वि.* {सं. तदा} उस समय, उस वक्त; इस कारण से, इस वजह से।
तबक *पुं.* {अ.} तल; परत, तह; चाँदी, सोने के पत्तरों को पीटकर बनाया हुआ बहुत पतला वरक; एक प्रकार की चौड़ी थाली।
तबकगर *पुं.* {अ. तबक + फा. गर} सोने, चाँदी के पत्तर कूटकर तबक बनानेवाला, तबकिया।
तबका *पुं.* {अ. तबकः} भूमि का खंड या विभाग; तल; आदमियों का समूह।
तबकिया *पुं.* तबकगर।
तबदील *पुं.* {सं.} {*संज्ञा* तबदीली} बदला हुआ, परिवर्तित; एक स्थान या पद से हटाकर दूसरे स्थान पर भेजा हुआ।
तबर *पुं.* {फा.} कुल्हाड़ी।
तबल *पुं.* {अ.} बहुत बड़ा ढोल; नगाड़ा।
तबलची *पुं.* {अ. तबलः + तु. ची (प्रत्य.)} वह जो तबला बजाता हो, तबलिया।
तबला *पुं.* {तबलः} ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा (इसमें दो बाजे एक साथ बजे हैं, जिनमें से एक तबला और दूसरा बाँया कहलाता है)।
तबलिया *पुं.* तबलची, तबला बजानेवाला।
तबादला *पुं.* {अ. तबादुल = बदलना} चीजों का बदला जाना, परिवर्तन; किसी कर्मचारी का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना, अंतरण।
तबाशीर *पुं.* {सं. तवक्षीर} बंसलोचन।
तबाह *पुं.* {फा.} {*संज्ञा* तबाही} पूरी तरह से चौपट, नष्ट, बरबाद।
तबाही *स्त्री.* {फा.} नाश, बरबादी।
तबीयत *स्त्री.* {अ. तबीअत} चित्त, मन।
मुहा. (किसी पर) तबीयत आना = (किसी पर) प्रेम होना, अनुराग होना; *तबीयत फड़क उठना* = किसी बात से चित्त बहुत प्रसन्न होना; *तबीयत लगना* = मन को अच्छा लगना; ध्यान लगा रहना; किसी से अनुराग या प्रेम होना; बुद्धि; समझ, ज्ञान।
तबीयतदार *वि.* {अ. तबीअत + फा. दार} समझदार; भावुक, रसिक।
तबेला *पुं.* {अ. तवेल} घोड़ों, एक्कों, गाड़ियों आदि के रहने की जगह, अस्तबल।
मुहा. तबेले में लत्ती चलना = आपस में लड़ाई-झगड़ा होना।
तब्बर *पुं.* टाबर; तबर।
तभी *क्रि. वि.* {हिं. तब + ही} उसी समय; इसी कारण।
तमंचा *पुं.* {फा.} छोटी बंदूक, पिस्तौल; वह पत्थर जो दरवाजे के बगल में खड़े बल में लगाया जाता है।
तम[1] *पुं.* {सं. तमस्} {*भाव.* तमता} अन्धकार, अँधेरा; राहु; पाप; क्रोध; अज्ञान; कालिख, कालिमा; नरक; मोह; तमोगुण।
तम[2] *प्रत्य.* एक प्रत्यय जो विशेषण के अंत में लगकर 'सबसे बढ़कर' का अर्थ देता है, जैसे श्रेष्ठतम।
तमक *स्त्री.* {?} जोश, आवेश, उद्वेग; तेजी तीव्रता; क्रोध।
तमकना *अ.* {हिं. तमक} क्रोध का आवेश दिखलाना; तमतमाना।
तमकश्वास *पुं.* {सं.} श्वास का एक भयंकर रोग, जिसमें कण्ठ रुद्ध हो जाता है।
तमका *पुं.* {हिं. तमक} आवेश, जोश।
तमगा *पुं.* {तु.} पदक; सोने-चाँदी का।
तमचर *पुं.* {सं. तमीचर} राक्षस।
तमचुर *पुं.* {सं. ताम्रचूड़} मुरगा (पक्षी)।
तमचोर *पुं.* तमचुर।
तमत *वि.* {सं.} इच्छुक, प्यासा।
तमच्छन *वि.* तमाच्छन्न।
तमतमाना *अ.* {सं. ताम्र} धूप या क्रोध आदि के कारण (चेहरा) लाल होना।
तमन्ना *स्त्री.* {अ.} कामना, इच्छा।
तमयी *स्त्री.* {सं. तम + मयी} राते।
तमस *पुं.* {सं.} अंधकार; पाप; तमसा नदी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमसा *स्त्री.* {सं.} टौंस नदी।
तमस्क *वि.* {सं.} तमः स्वरूप।
तमस्काँड *पुं.* {सं.} घना अंधकार।
तमस्निति *स्त्री.* {सं.} तमिस्र, अंधकार।
तमस्वती *स्त्री.* {सं.} रात्रि, रात, हलदी।
तमस्विनी *स्त्री.* {सं.} अँधेरी रात।
तमस्वी *वि.* {सं. तमस्विन्} अंधकारपूर्ण।
तमस्सुक *पुं.* {अ.} वह कागज जो ऋण लेनेवाला उसके संबंध में महाजन को लिखकर देता है, दस्तावेज।
तमहाया *वि.* {सं. तम + हाया (प्रत्य.)} तम या अंधकार से भरा हुआ, अँधेरा; तमोगुण से युक्त।
तमा[1] *पुं.* {सं. तमस्} राहु; *स्त्री.* रात, रात्रि, रजनी।
तमा[2] *स्त्री.* {अ. तमअ} लोभ, लालच।
तमाकू *पुं.* {पुर्त. टुबैको} एक प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते अनेक रूपों में नशे के लिए काम में लाए जाते हैं, सुरती; इन पत्तों से बना एक विशेष प्रकार का कुछ गीला पदार्थ, जिसे चिलम पर रख और सुलगाकर उसका धुआँ पीते हैं; सुरती।
तमाचा *पुं.* {फा. तपान्चः} पूरी हथेली से गाल पर किया जानेवाला आघात, थप्पड़, झापड़।
तमाचारी *पुं.* {सं.} निशाचर, राक्षस।
तमाच्छन्न *वि.* {सं.} तम या अंधकार से घिरा या भरा हुआ।
तमाच्छादित *वि.* तमाच्छन्न।
तमादी *स्त्री.* {अ.} किसी बात की विधिविहित अवधि या मियाद गुजर जाना; *वि.* विधि, नियम आदि के द्वारा जिसकी अवधि समाप्त हो चुकी हो, अवधिबाधित (बार्ड बाइ लिमिटेशन)।
तमाम *वि.* {अ.} पूरा, संपूर्ण, कुल; समाप्त, खत्म।
तमामी *स्त्री.* {हिं.} तमाम होने का भाव-स्थिति, समाप्त।
तमारि *पुं.* {हिं. तम + अरि} सूर्य; *स्त्री.* तमादी।
तमाल *पुं.* {सं.} एक बहुत ऊँचा सुन्दर सदाबहार वृक्ष; तेजपत्ता; एक प्रकार की तलवार; तमाकू।
तमाली *स्त्री.* {हिं.} वरुण वृक्ष, मंजीठ।
तमाशबीन *पुं.* {अ. तमाशः + फा. बीन} {*भाव.* तमाशबीनी} तमाशा देखनेवाला; वेश्यागामी, ऐय्याश।
तमाशा *पुं.* {अ.} वह खेल या कार्य जिसे देखने से मन प्रसन्न हो; अद्‌भुत व्यापार, अनोखी बात; बहुत ही बेढंगी, अनियमित और हास्यास्पद बात या चीज, जैसे सभा क्या है, तमाशा है (फार्स); पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।
तमासा *पुं.* तमाशा।
तमिल *पुं.* {?} दक्षिण भारत की एक जाति; इस जाति का सदस्य।
स्त्री. उक्त जाति की भाषा।
तमिलनाडु *पुं.* दक्षिण भारत का एक राज्य।
तमिनाथ *पुं.* {सं.} निशानाथ, चंद्रमा।
तमिस्र *पुं.* {सं.} अंधकार, अँधेरा; क्रोध, गुस्सा; *वि.* {*स्त्री.* तमिस्रा} अंधकारपूर्ण।
तमिस्रा *स्त्री.* {सं.} काली या अँधेरी रात।
तमी *स्त्री.* {सं.} रात, रात्रि, हलदी।
तमीचर *पुं.* {सं.} राक्षस।
तमीज *स्त्री.* {अ. तमीज} भले और बुरे का ज्ञान या परख, विवेक; ज्ञान, बुद्धि।
तमीपति, तमीश *पुं.* {सं.} चन्द्रमा; निशाकर।
तमेस *वि.* {सं.} ग्लानियुक्त, लज्जावाला।
तमोग *पुं.* {सं.} राहु ग्रह।
तमोगामी *वि.* {सं.} अंधकार में जानेवाला।
तमोज्योति *पुं.* {सं.} खद्योत, जुगनू।
तमोगुण *पुं.* {सं.} {*वि.* तमोगुणी} प्रकृति के तीन गुणों में से अंतिम, जो दूषित तथा निकृष्ट माना गया है।
तमोर *पुं.* {सं. तांबूल} पान।
तमोरि *पुं.* {सं.} सूर्य, भानु।
तमोरी *पुं.* तमोली।
तमोल *पुं.* {सं. तांबूल} पान का बीड़ा।
तमोली *पुं.* {सं. तांबूल} सादे पान या पान के लगे हुए बीड़े बेचनेवाला, पनवाड़ी।
तमोहर *वि.* {सं.} तम या अंधकार दूर करनेवाला; *पुं.* सूर्य; चन्द्रमा।
तमोहारी *पुं.* {सं.} सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, ज्ञान।
तय *वि.* 'तै'; पूरा किया हुआ।
तयना *अ.* तपना; *स.* तपाना।
तयार (य्यार) *वि.* तैयार।
तरंग *स्त्री.* {सं.} पानी की लहर, हिलोर; प्राकृतिक अथवा कृत्रिम कारणों से उत्पन्न होनेवाली किसी वस्तु की लहर, जो किसी शरीर या वातावरण में दौड़ती है, जैसे संगीत में स्वरों की लहर (वेव); लकड़ी, धातु आदि के विशिष्ट आकार के टुकड़ों अथवा सब स्वर उत्पन्न करनेवाले एक ही तरह के दूसरे साधनों के द्वारा बाजे के रूप में संगीत उत्पन्न करने की क्रिया, जैसे जलतरंग, तबला-तरंग, घुँघरू-तरंग आदि; चित्त की उमंग, मन की मौज (ह्विम)।
तरंगवती *स्त्री.* {सं.} नदी।
तरंगायित *वि.* {सं.} जिसमें तरंगें उठती हों, तरंगित; तरंगों की तरह का लहरिएदार, लहरदार।
तरंगावलि *स्त्री.* {सं.} तरंगों की पंक्ति।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरंगिणी *वि.* {सं.} तरंगवाली, जिसमें तरंगें हों; *स्त्री.* नदी।

तरंगित *वि.* {सं.} जिसमें तरंगें हों या उठ रही हों, हिलोरें मारता या लहराता हुआ; नीचे-ऊपर उठता हुआ।

तरंगी *वि.* {सं. तरंगिन्} {*स्त्री.* तरंगिणी} जिसमें तरंगें हों; मनमौजी, मौजी (हिंदुस्तानी)।

तर[1] *वि.* {फा.} भीगा हुआ, गीला; शीतल, ठंडा; जो सूखा न हो, हरा; मालदार, धनवान, जैसे तर असामी।

तर[2] *क्रि. वि.* {सं. तल} तले, नीचे।
उदा. प्रभु तरु तर कपि डार पर–तुलसी।

तर[3] *प्रत्य.* {सं.} एक प्रत्यय जो गुणवाचक शब्दों के अंत में आकर दूसरों की अपेक्षा उनका आधिक्य या विशेषता सूचित करता है, जैसे अधिकतर, कोमलतर।

तरई *स्त्री.* = तारा (नक्षत्र)।

तरक[1] *पुं.* {अ.} परित्याग।

तरक[2] *पुं.* {हिं. तर = नीचे} लेख का कोई पृष्ठ समाप्त होने पर उसके नीचे लिखा जानेवाला वह शब्द, जिससे बादवाला पृष्ठ आरंभ होता है; *स्त्री.* तड़क; *पुं.* तर्क।

तरकना[1] *अ.* तड़कना।

तरकना[2] *अ.* {सं. तर्क} तर्क करना, बहस करना; मन में सोच-विचार करना।

तरकना[3] *अ.* {अनु.} उछलना, कूदना।

तरकश *पुं.* {फा.} तीर रखने का चोंगा, भाथा, तूणीर।

तरकस *पुं.* तरकश।

तरकसी *स्त्री.* = छोटा तरकश।

तरका *पुं.* {अ. तर्कः} मरे हुए व्यक्ति की वह सम्पत्ति, जो उसके उत्तराधिकारी को मिलती है।

तरकारी *स्त्री.* {फा. तरः = सब्जी + कारी} डंठल, फल, कन्द आदि जिन्हें पकाकर रोटी, चावल आदि के साथ खाते हैं, भाजी, सब्जी; पकाया हुआ मांस (पंजाबी)।

तरकी *स्त्री.* {सं. तांडकी} कान में पहनने का एक प्रकार का फूल (गहना)।

तरकीब *स्त्री.* {अ. तर्कीब} बनावट, रचना; रचना-प्रणाली; युक्ति, उपाय; ढंग, ढब।

तरक्की *स्त्री.* {अ. तरक्की} वृद्धि; उन्नति।

तरक्षु *पुं.* {सं.} व्याघ्र-विशेष, लकड़बग्घा।

तरखा *पुं.* {सं. तरंग} नदी आदि के पानी का तेज बहाव।

तरखान *पुं.* {सं. तक्षण} बढ़ई।

तरगुलिया *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का चावल रखने का छिछला बरतन।

तरचरवी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का सुंदर पत्तियोंवाला पौधा।

तरछत *क्रि. वि.* {हिं. तर = तले} नीचे की ओर से, नीचे से।

तरछा *पुं.* {हिं.} वह स्थान जहाँ तेली गोबर जमा करता है।

तरछाना *अ.* {हिं. तिरछा} तिरछी नजर से देखना; आँख से इशारा करना।

तरजन *पुं.* तर्जन।

तरजना *अ.* {स. तर्जन} डाँटना, डपटना, बिगड़ना।

तरजनी[1] *स्त्री.* तर्जनी; अँगूठे के पास की अँगुली।

तरजनी[2] *स्त्री.* {सं. तर्जन} भय, डर।

तरजीला *वि.* {सं. तर्जन} क्रोधपूर्ण; उग्र, प्रचंड।

तरजुई *स्त्री.* {हिं.} छोटा तराजू, काँटा।

तरजुमा *पुं.* {अ.} अनुवाद, उलथा।

तरजुमान *पुं.* {अ.} अनुवादक।

तरजुमानी *स्त्री.* {अ. + फा.} अनुवाद करने की क्रिया या भाव; अनुवाद, उलथा।

तरजौंहाँ *वि.* तरजीला।

तरण *पुं.* {सं.} तरना; तैरना; पार जाना।

तरणिजा *स्त्री.* {सं.} यमुना।

तरणि-जनूजा *स्त्री.* {सं.} यमुना नदी।

तरणी *स्त्री.* {सं.} नौका, नाव, तरणि।

तरतराता *वि.* घी से तर (पकवान)।

तरतराना *अ.* {अनु.} तड़तड़ शब्द करना, तड़तड़ाना; घी आदि में बिल्कुल तर करना।

तरतीब *स्त्री.* {अ.} वस्तुओं का उपयुक्त स्थानों पर लगाया हुआ क्रम, सिलसिला।

तरद्दुद *पुं.* {अ.} सोच, फिक्र; चिंता; अन्देशा, खटका।

तरन[1] *पुं.* तरण; तरौना।

तरन[2] *पुं.* {सं. तरणी} नाव; बेड़ा; उद्धार, निस्तार।

तरनतार *पुं.* {सं. तरण} निस्तार, मोक्ष, मुक्ति; *वि.* = तरनतारन।

तरनतारन *पुं.* {सं. तरण + हिं. तारना} उद्धार, निस्तार; भवसागर से पार करनेवाला (ईश्वर)।

तरना *स.* {सं. तरण} तैरना; तैरकर या नाव आदि से पार करना; *अ.* मुक्त होना, सद्गति प्राप्त करना; *अ.* तलना।

तरनि *स्त्री.* {सं. तरणि} नाव, नौका; वह ऊँचा मोढ़ा, जिस पर खांचा रखा जाता है, तन्नी।

तरपट *पुं.* {?} अंतर, भेद, फरक।

तरपना[1] *अ.* तड़पना।

तरपना[2] *स.* {सं. तर्पण} तर्पण करना।

तर-पर *क्रि. वि.* {हिं. तर = तले + पर} नीचे ऊपर; एक के बाद दूसरा।

तरपीला *वि.* {हिं. तरफ} चमकदार।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरपू पुं. {हिं.} एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष।

तरफ स्त्री. {अ. तरफ} ओर, दिशा; पार्श्व, बगल; पक्ष।

तरफदार वि. {अ. तरफ + फा. दार} {संज्ञा तरफदारी} पक्ष में रहनेवाला, हिमायती।

तरब पुं. {हिं.} सारंगी के तार, जो ताँत के नीचे लगे रहते हैं।

तरफराना अ. तड़पना।

तर-बतर वि. {फा.} भीगा हुआ, आर्द्र।

तरबहना पुं. {हिं.} देवी-देवता की मूर्ति को स्नान कराने का पात्र-विशेष।

तरबूज पुं. {फा. तरबुज} एक प्रकार की बेल, जिसके बड़े गोल फल खाने के काम में आते हैं, कलींदा, हिन्दवाना।

तरमीम स्त्री. {अ.} संशोधन, सुधार-कार्य।

तरबोना अ. {हिं. तर} तर करना, भिगाना।

तररराना अ. {अनु.} मिरोड़ना, ऐंठना।

तरल वि. {सं.} {भाव. तरलता} हिलता-डोलता, चलायमान; क्षणभंगुर; चचंल; पानी की तरह बहनेवाला, द्रव; चमकीला; कोमल, मंद।

तरला स्त्री. {सं.} मदिरा, मधुमक्खी।

तरलाई स्त्री. = तरलता।

तरवन पुं. {हिं. तरौना} कान में पहनने की तरकी या फूल (गहना)।

तरवर पुं. तरुवर।

तरवरिया वि. {हिं. तलवार} तलवार चलानेवाला।

तरवार स्त्री. तलवार; पुं. तरुवर।

तरस पुं. {सं. त्रस} दया, रहम।

मुहा. (किसी पर) तरस खाना = दयार्द्र होना, रहम करना।

तरसना[1] अ. {सं. तर्षण} बिल्कुल न पाने के कारण किसी वस्तु के लिए लालायित या विकल रहना।

तरसना[2] स. {सं. त्रसन} त्रस्त या पीड़ित करना, कष्ट देना।

तरसान पुं. {सं.} नौका, नाव।

तरसाना[1] स. {हिं. 'तरसना' काम स.} ऐसा काम करना जिसमें कोई तरसे।

तरसाना[2] स. {सं. त्रसन} त्रस्त या पीड़ित करना, कष्ट पहुँचाना।

तरसौंहाँ वि. {हिं. तरसना} तरसनेवाला।

तरस्वी वि. {सं.} शूरवीर, बहादुर, लड़ाका।

तरह स्त्री. {अ.} प्रकार, भाँति, किस्म; (विशेष प्रकार); अलंकारिक रचना-प्रकार, बनावट और रूप-रंग; प्रणाली, रीति, ढंग; युक्ति, उपाय।

मुहा. तरह देना = खयाल न करना, जाने देना।

तरहटी स्त्री. {हिं.} पहाड़ की तराई, नीची भूमि।

तरहदार वि. {फा.} {संज्ञा तरहदारी} सुंदर बनावट का, सजीला; शौकीन।

तरहर (हारि) क्रि. वि. {हिं. तर + हर (प्रत्य.)} तले, नीचे; वि. नीचे का; निकृष्ट, बुरा।

तरहुँड़ क्रि. वि तरहर।

तरहेल वि. {हिं. तर + हेल (प्रत्य.)} अधीन; वश में आया हुआ; क्रि. वि. नीचे।

तराइन स्त्री. {सं. तारक} आकाश के तारे, नक्षत्र आदि।

तराई स्त्री. {हिं. तर = नीच} पहाड़ के नीचे का मैदान या प्रदेश; नीची भूमि; स्त्री. = तारा (नक्षत्र)।

तराजू पुं. {फा. तराजू} चीज तौलने का वह प्रसिद्ध उपकरण, जिसमें एक डाँड़ी के दोनों सिरों पर दो पल्ले लटकते हैं, तुला; काँटा।

तराटक पुं. त्राटिका।

तराना पुं. {फा. तरानः} एक प्रकार का चलता गाना जिसमें सितार, नाच आदि के बोल हाते हैं, जैसे ता नूम त ना ना दे रा ना; गीत, गान।

तराप स्त्री. {अनु.} बन्दूक, तोप आदि का तड़ाक शब्द।

तरापा पुं. {हिं.} त्राहि-त्राहि, कुहराम, हाहाकार।

तराबोर वि. {फा. तर + हिं. बोरना} पूरी तरह से भींगा हुआ, तर-बतर।

तराभर स्त्री. {अनु.} जल्दी-जल्दी होनेवाली कार्रवाई; धूम।

तरायला वि. {हिं. तर?} तरल; चपल, चंचल।

तरार पुं. {सं. तरतर से अनु.} उछाल, छलाँग; कुछ देर तक बराबर गिरती रहनेवाली पतली धार।

तरालु पुं. {सं.} एक प्रकार की नाव।

तरावट स्त्री. {फा. तर + आवट (प्रत्य.)} तर होने का भाव, गीलापन, नमी, ठंडक, शीतलता; शरीर की गरमी शान्त करनेवाले आहार आदि; स्निग्ध भोजन।

तराश स्त्री. {फा.} काटने का ढंग या भाव, काट; बनावट, रचना-प्रकार।

तराशना स. {फा.} काटना, कतरना।

तरास पुं. त्रास।

तरासना स. {सं. त्रसन} त्रास, भय या कष्ट देना; स. तराशना।

तराही क्रि. वि. {हिं. तले} नीचे।

तरीक पुं. {सं.} मल्लाह, केवट, माँझी।

तरिका स्त्री. {सं. तड़ित्} बिजली।

तरित वि. {सं.} नौका, नाव।

तरिता स्त्री. {सं.} कानी अँगुली, गाँजा, लहसुन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

तरियाना¹ *स.* {हिं. तरे = नीचे} नीचे कर देना, तह में या नीचे बैठा देना; ढाँकना; *अ.* तले बैठ जाना, तह में जमना।

तरियाना² *स.* {फा. तर} तर या गीला करना, जैसे मसाला रखने से पहले जमीन तरियाना।

तरिवन *पुं.* तरवन।

तरिवर *पुं.* 'तरुवर'।

तरी¹ *स्त्री.* {सं.} नाव, नौका।

तरी² *स्त्री.* {फा. तर} गीलापन, आर्द्रता, नमी; ठंडक, शीतलता।

तरी³ *स्त्री.* {हिं. तर = तले} वह नीची भूमि, जहाँ बरसाती पानी जमा होकर जमीन में समाता हो, कछार, तराई, तलहटी; *स्त्री.* तरवन।

तरीका *पुं.* {अ. तरीक:} ढंग, विधि, रीति; चाल, व्यवहार, उपाय, तदबीर।

तरषि *पुं.* {सं.} सूखा गोबर, समुद्र, स्वर्ग, सामर्थ्य।

तरीनि *स्त्री.* {हिं. तर = तले} पहाड़ के नीचे का भाग, तलहटी। (बुन्देल.)।

उदा. फूटे हैं सुंगध घट श्रवन तरीनि में; केशव।

तरु *पुं.* {सं.} वृक्ष, पेड़।

तरीषी *स्त्री.* {सं.} इंद्र की कथा का नाम।

तरुजीवन *पुं.* {सं.} वृक्ष का मूल, पेड़ की जड़।

तरुण *वि.* {सं.} {*स्त्री.* तरुणी} {*भाव.* तरुणता} जिसने अभी बाल्यावस्था पार की हो, युवा, जवान; नया, नूतन।

तरुणदास *पुं.* {सं.} विधारा की लता।

तरुणसूर्य *पुं.* {सं.} दोपहर का सूर्य।

तरुणाई *स्त्री.* {सं. तरुण} युवावस्था, जवानी।

तरुणाना *अ.* {सं. तरुण} तरुण होना, जवानी पर आना।

तरुणिमा *स्त्री.* {सं.} तरुण होने की दशा या भाव, तारुण्य, यौवन।

तरुणी *स्त्री.* {सं.} जवान स्त्री, युवती; जमालगोटा।

तरुन *पुं.* तरुण।

तरुनाई *स्त्री.* तरुणाई।

तरुनापा *पुं.* तरुणाई।

तरुबाँही *स्त्री.* {सं. तरु + हिं. बाँह} पेड़ की भुजा, शाखा, डाल।

तरुरोपण *पुं.* {सं.} वृक्ष लगाने की क्रिया; वह विद्या जिसमें वृक्ष लगाने, बढ़ाने और उनकी रक्षा करने की कला सिखाई जाती है (आरबोरीकल्चर)।

तरुवर *पुं.* {सं.} श्रेष्ठ या बड़ा वृक्ष।

तरुतूलिका *स्त्री.* {सं.} चमगादड़।

तरुत्र *वि.* {सं.} तारक, तारनेवाला।

तरुनख *पुं.* {सं.} वृक्ष का काँटा।

तरुशायी *पुं.* {सं.} पक्षी, चिड़िया।

तरेंदा *पुं.* {हिं. तरना} पानी पर तैरनेवाला, काठ, बाँस आदि का बना हुआ बेड़ा।

तरे *क्रि. वि.* {सं. तल} नीचे, तले।

तरेटी *स्त्री.* तोरी।

तरेरना *स.* {फा. तरीर = सावधान करनेवाला} क्रोध या असन्तोष की दृष्टि से देखना।

तरेनी *स्त्री.* {हिं.} हल में घीस लगाने का पच्चड़।

तरेरा *पुं.* {अ. तरार:} लगातार डाली जानेवाली पानी की धार; जल की लहरों का आघात, थपेड़ा।

तरैया¹ *स्त्री.* {हिं. तारा} तारा, नक्षत्र।

तरैया² *वि.* {हिं. तरना} तरनेवाला; तारनेवाला

तरोई *स्त्री.* तोरी।

तरोवर *पुं.* तरुवर।

तरौंछ *स्त्री.* तलछट।

तरौंटा *पुं.* {हिं.} चक्की का निचला चरक।

तरौंता *पुं.* {हिं.} छाजन के नीचे लगाने की लकड़ी।

तरौंस *पुं.* {हिं. तर + औंस (प्रत्य.)} तट, तीर, किनारा।

तरौना *पुं.* {सं. तालपर्ण, प्रा. तालउन्न} कान में पहनने का तरवन नाम का गहना, जो ताड़ के पत्ते की तरह गोल और फाँकदार होता है।

तर्क¹ *पुं.* {सं.} किसी वस्तु के विषय में अज्ञात तत्व को कारण या उपपत्ति के विचार से निश्चित करने की क्रिया, हेतुपूर्ण, विवेचन, दलील; चमत्कारपूर्ण युक्ति।

तर्क² *पुं.* {अ.} परित्याग, छोड़ना।

तर्कना *अ.* {सं. तर्क} तर्क या बहस करना; *अ.* तरकना।

तर्क-वितर्क *पुं.* {सं.} यह सोचना कि यह होगा या यह नहीं होगा, ऊहापोह, सोच-विचार; वादविवाद, बहस (डिस्कशन)।

तर्कश *पुं.* तरकश।

तर्कशास्त्र *पुं.* {सं.} तर्क या विवेचना करने के नियम और सिद्धान्तों के खंडन-मंडन का ढंग बतानेवाला शास्त्र (लॉजिक); न्यायशास्त्र।

तर्कसंगत *वि.* {सं.} जो तर्क करने पर या तर्क के अनुसार ठीक हो; तर्क-वितर्क करने पर उसके परिणाम के रूप में निकलने या ठीक सिद्ध होनेवाला (लॉजिकल); जो युक्ति या बुद्धि के अनुसार ठीक हो (रीजनेबुल)।

तर्कसिद्ध *वि.* {सं.} जो तर्क की दृष्टि से बिल्कुल ठीक हो।

तर्काभास *पुं.* {सं.} ऐसा तर्क जो वास्तव में ठीक न हो, यों ही देखने पर ठीक-सा जान पड़े।

तर्किण *पुं.* {सं.} चकवँड़ का पौधा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तर्किल *वि.* {सं.} आलोचित, संभावित, विचारा हुआ।

तर्की पुं. {सं. तर्किन्} {*स्त्री.* तर्किनी} तर्क करनेवाला।

तर्क्य *वि.* {सं.} जिसके संबंध में कुछ तर्क या सोच-विचार करने की जगह हो, विचारणीय, चिंतनीय।

तर्कुल पुं. {हिं.} ताड़ का वृक्ष।

तर्क्षु पुं. {सं.} तेंदुआ, चीता, बाघ।

तर्ज्य पुं. {सं.} यवक्षार, जवाक्षार।

तर्ज पुं. {अ. तर्ज} प्रकार, तरह; शैली, ढंग; रचना-प्रकार, बनावट।

तर्जन पुं. {सं. तर्जन} {*वि.* तर्जित} क्रोधपूर्वक या बिगड़ते हुए कुछ कहना; डाँटना, डपटना; डराना, धमकाना; क्रोध; फटकार।

पद गर्जन-तर्जन = क्रोधपूर्वक जोर से बोलना या बिगड़ना।

तर्जना *अ.* {सं.} डाँटना, डपटना; धमकाना।

तर्जनी *स्त्री.* {सं. तर्ज्जनी} अँगूठे के बादवाली उँगली।

तर्जुमा पुं. = तरजुमा।

तर्जुबयाँ पुं. {फा.} बयान करने का ढंग, वर्णन-प्रणाली।

तर्ण पुं. {सं.} एक प्रकार का धान, बछवा।

तर्णक पुं. {सं.} तुरव का जनमा हुआ गाय का बछड़ा।

तर्णि पुं. {सं.} सूर्य, लव, बेड़ा।

तर्पण पुं. {सं. {*वि.* तर्पित}} किसी को तृप्त या संतुष्ट करना; हिन्दू कर्मकांड का वह कृत्य जिसमें देवों, ऋषियों और पितरों को तृप्त करने के लिए उनके नाम से जल दिया जाता है।

तर्ष पुं. तृष्णा, समुद्र, सूर्य, अभिलाषा, चाह।

तर्षण पुं. {सं.} प्यास, अभिलाषा, इच्छा।

तर्षित *वि.* {सं.} अभिलषित, चाहा हुआ, प्यासा।

तर्हि *अव्य.* {सं.} उस समय, तब।

तल पुं. {सं.} नीचे का भाग, पेंदा, तला; जलाशय के नीचे की भूमि; किसी के नीचे पड़नेवाला स्थान; पैर का तलवा; हथेली; किसी वस्तु का ऊपरी या बाहरी फैलाव, सतह; सात पातालों में से पहला।

तलक *निपा.* {हिं.} तक का पुराना रूप, तक, पर्यन्त।

तलकर पुं. {हिं. ताल + कर} ताल या तालाब में होनेवाली वस्तुओं पर लगनेवाला कर।

तलकीट *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का वृक्ष।

तलगू *स्त्री.* {हिं.} तैलंग देश की भाषा।

तलगृह पुं. {सं.} तहखाना।

तलघर पुं. {सं. तलगृह} जमीन के नीचे बनी हुई कोठरी, भुँइधरा, तहखाना।

तलछट *स्त्री.* {हिं. तल + छँटना} तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई मैल, तलौंछ।

तलताल पुं. {सं.} हथेली से बजाने का एक प्रकार का बाजा।

तलत्र, तलत्राण पुं. {सं.} चमड़े का बना हुआ दस्ताना।

तलना *स.* {सं. तरण} गरम घी या तेल में डालकर पकाना।

तलप पुं. तल्प।

तलपट पुं. {सं.} वह पट या फलक, जिसमें आय और व्यय का संक्षिप्त विवरण रहता है, तुलापत्र, आय-व्ययफलक (बैलेंस शीट।)।

तलपद पुं. {सं. तल + पद} असल चीज या बात, मूल, जड़; मूलधन, पूँजी।

तलफना *अ.* तड़फाना।

तलब *स्त्री.* {अ.} खोज, तलाश; पाने की इच्छा, चाह; आवश्यकता; बुलावा, बुलाहट; वेतन, तनखाह।

तलबगार *वि.* {फा.} चाहनेवाला।

तलबाना पुं. {फा.} गवाहों को तलब करने के लिए अदालत में जमा किया जानेवाला व्यय।

तलबी *स्त्री.* {अ.} बुलाहट, बुलावा; माँग।

तलबेली *स्त्री.* {हिं. तलफना} बहुत अधिक उत्कंठा छटपटी।

तलमलाना *अ.* तिलमिलाना।

तलमलाहट *स्त्री.* {हिं.} व्याकुलता, बेचैनी।

तललोक पुं. {सं.} पाताल।

तलमार्ग पुं. {सं.} जमीन के नीचे होनेवाली सड़क या रेलपथ।

तलवा पुं. {सं. तल} पैर के नीचे की ओर का वह भाग, जो चलने में पृथ्वी पर पड़ता है।

मुहा. (किसी के) तलवे चाटना = बहुत खुशामद करना; *(किसी के) तलवे धो-धोकर पीना* = बहुत सेवा-सुश्रूषा या आदर-सत्कार करना।

तलवार *स्त्री.* {सं. तरवारि} एक प्रसिद्ध धारदार हथियार, असि।

मुहा. तलवारों की छाँह में = ऐसे स्थान में, जहाँ अपने ऊपर तलवारें ही तलवारें दिखाई देती हों; *तलवार खींचना* = वार करने के लिए म्यान से तलवार निकालना।

तलवार का खेत पुं. लड़ाई का मैदान।

तलवार का घाट पुं. तलवार में वह स्थान, जहाँ से वह कुछ टेढ़ी होने लगती है।

तलवार का पानी पुं. तलवार की चमक, जो उसके अच्छे होने की सूचक है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

तलवारिया *पुं.* {हिं. तलवार} वह जो अच्छी तरह तलवार चलाना जानता हो।

तलवारी *वि.* {हिं. तलवार} तलवार-संबंधी, तलवार का, जैसे तलवारी हाथ।

तलस्पर्शी *वि.* {सं. तलस्पर्शिन्} तल को स्पर्श करनेवाला।

तलहटी *स्त्री.* तराई।

तला *पुं.* {सं. तल} नीचे का भाग, पेंदा; जूते के नीचे का चमड़ा।

तलाई[1] *स्त्री.* तलैया।

तलाई[2] *स्त्री.* {हिं. तलना} तलने या तलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तलाक *पुं.* {अ. तलाक} विधि या नियम के अनुसार पति-पत्नी का संबंध-विच्छेद।

तलातल *पुं.* {सं.} सात पातालों में से एक।

तलामली *स्त्री.* तलबेली।

तलाव *पुं.* तालाब; ताल।

तलाश *स्त्री.* {तु.} कोई चीज पाने या देखने के लिए पता लगाना कि वह कहाँ है और कैसी है, अनुसंधान, खोज (सर्च); आवश्यकता पूरी करने के लिए होनेवाली खोज।

तलाशना *स.* ढूँढ़ना।

तलाशी *स्त्री.* {फा.} खोई या छिपाई हुई वस्तु को पाने के लिए किसी के शरीर या घर आदि की जाँच-पड़ताल (सर्च)।

मुहा. तलाशी लेना = खोई या छिपाई हुई वस्तु ढूँढ़ने के लिए संदिग्ध व्यक्ति के घर जाकर जाँच-पड़ताल करना।

तलिन *पुं.* {सं.} शय्या, पलँग; *वि.* थोड़ा, कम, शुद्ध, निर्बल।

तलिम *पुं.* {सं.} शय्या, खड्ग, चँदवा।

तलिया *स्त्री.* {हिं.} समुद्र की थाह।

तली *स्त्री.* {सं. तल} नीचे की जगह या भाग, पेंदी, तल; तल-छट; हाथ की हथेली; तलवार।

तलीय *वि.* {सं.} तल, पेंदे या नीचे के भाग से संबंध रखनेवाला; ऊपरी अंश निकाल, हटा या बाँट देने पर बाद में या नीचे बच रहनेवाला, जैसे तलीय अधिकार = वह अधिकार जो प्रान्तीय शासनों को बाँट देने के बाद सुरक्षा, कार्य-संचालन की सुविधा आदि के विचार से बाँटनेवाला अथवा केंद्रीय शासन अपने हाथ में बचा रखता है (रेसिडुअरी)।

तलुआ *पुं.* तलवा।

तले *क्रि. वि.* {सं. तल} नीचे।

तलुन *पुं.* {सं.} वायु, हवा, युवा मनुष्य।

तलुनी *स्त्री.* {सं.} युवती, स्त्री।

तले-ऊपर *क्रि. वि* नीचे और ऊपर।

पद तले-ऊपर का = (जन्म के विचार से) ठीक एक के बाद दूसरा।

तलेक्षण *पुं.* {सं.} शूकर, सूअर।

तलेटी *स्त्री.* तराई।

तलैया *स्त्री.* {हिं. ताल} छोटा ताल।

तलौंछ *स्त्री.* तल-छट।

तलोदरी *स्त्री.* {सं.} भार्या, पत्नी।

तलोदा *स्त्री.* {हिं.} नदी, दरिया।

तल्प *पुं.* {सं.} शय्या, सेज; बिछौना, बिस्तर।

तल्ला *पुं.* {सं. तल} पहनने के दोहरे कपड़े के नीचे का अस्तर, भितल्ला, परत; ऊपर-नीचे के विचार से मकान के खंड, मंजिल; जूते के नीचे का वह चमड़ा, जिस पर तलवा रहता है; निकटता, सामीप्य।

तल्लिका *स्त्री.* {सं.} कुंजी, ताली।

तल्ली *स्त्री.* {सं.} नौका, नाव, युवती, वरुण की स्त्री; *वि.* तल्लीन।

तल्लीन *वि.* {सं.} {भाव. तल्लीनता} किसी विषय या कार्य में लीन, निमग्न।

तव *सर्व.* {सं.} तुम्हारा।

तवक्का *पुं.* {हिं.} भरोसा।

तवक्षीर *पुं.* {सं., मि. फा. तबाशीर} तबाशीर, तीखुर; बंसलोचन।

तवज्जोह *स्त्री.* {अ.} किसी बात की ओर दिया जानेवाला ध्यान, रुख; कृपादृष्टि।

तवना *अ.* {*स.* तपन} तपना, गरम होना; दुख आदि से पीड़ित होना; प्रताप या तेज दिखलाना; गुस्से से लाल होना।

तवनी *स्त्री.* {हिं.} छोटा तवा।

तवर्ग *पुं.* {सं.} त, थ, द, ध और न इन पाँच ध्वनियों या वर्णों का वर्ग।

तवा *पुं.* {सं. तपाक} {*स्त्री.* अल्पा. तवी. तौनी} लोहे का वह प्रसिद्ध गोल बरतन जिस पर रोटी पकाई जाती है।

मुहा. तवे पर की बूँद होना = इतनी कम मात्रा में किसी वस्तु का होना कि क्षण में समाप्त हो जाए।

तवारवीर *पुं.* {हिं.} वंशलोचन।

तवाई *स्त्री.* {हिं. ताव = ताप} ताप, गरमी; गरम हवा, लू।

तवाना *सं.* = तपाना।

तवायफ़ *स्त्री.* {ऊ.} वेश्या, रंडी।

तवारीख *स्त्री.* {अ.} इतिहास।

तवारीख़ी *वि.* {अ.} तवारीख़-संबंधी, ऐतिहासिक।

तवालत *स्त्री.* {अ.} लम्बाई; अधिकता; झंझट।

तविष *पुं.* {सं.} स्वर्ग, समुद्र, व्यक्ति, सोना; *वि.* बलवान, बड़ा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तविषी *स्त्री.* {सं.} देवकथा, भूमि, नदी।

तवेला *पुं.* तबेला।

तशरीफ *स्त्री.* {अ. तशरीफ} महत्व, बड़प्पन; सम्मानित व्यक्तित्व।

मुहा. तशरीफ रखना = विराजना; *तशरीफ लाना* = पदार्पण करना, पधारना।

तश्त *पुं.* {फा.} बड़ा थाल।

तश्तरी *स्त्री.* {फा.} छोटी छिछली थाली के आकार का छिछला हलका बरतन, रिकाबी।

तष्ट *वि.* {सं.} दो टुकड़े किया हुआ, छीला हुआ, पीटा हुआ।

तष्टा[1] *पुं.* {सं.} छील या गढ़कर ठीक करनेवाला, विश्वकर्मा।

तष्टा[2] *पुं.* {फा. तश्त} {*स्त्री.* अल्पा. तष्ठी} ताँबे की छोटी तश्तरी।

तस *वि.* {सं. तादृश} तैसा, वैसा।

तसगर *पुं.* {हिं.} जुलाहे की ताने में लगाने की लकड़ी।

तसदीक *स्त्री.* {सं. तस्दीक} सचाई; प्रमाणों के आधार पर होनेवाली सचाई की परीक्षा या निश्चय; गवाही।

तसदीह *स्त्री.* {अ. तस्दीअ} सिर का दर्द; कष्ट, दुख।

तसबीह *स्त्री.* {अ. तस्बीह} वह माला जिससे मुसलमान जाप करते हैं।

तसमई *स्त्री.* {?} खीर।

तसमा *पुं.* {फा. तस्म:} कोई चीज बाँधने के लिए चमड़े या कपड़े का फीता।

तसला *पुं.* {देश.} {*स्त्री.* तसली} एक प्रकार का बड़ा और गहरा बरतन जिसमें 'मसाला' राज करीगर को दिया जाता है।

तसलीम *स्त्री.* {अ. तस्लीम} सलाम, अभिवादन; मान्यता, स्वीकृति।

तसल्ली *स्त्री.* {अ.} ढाढ़स, सांत्वना, आश्वासन।

तसवीर *स्त्री.* {अ. तस्वीर} चित्र; *वि.* चित्र के समान सुन्दर, मनोहर।

तसू *पुं.* {सं. त्रि + शूक} इमारती काम के लिए प्राय: डेढ़ इंच की एक नाप।

तस्कर *पुं.* {सं.} {*भाव.* तस्करता} विदेशों से चोरी-छिपे माल मँगाकर बेचने का व्यवसाय; चोरी; चोर की स्त्री; चोर स्त्री।

तस्थु *वि.* {सं.} एक स्थान पर रहनेवाला।

तस्मात् *क्रि. वि* {सं.} इसलिए।

तस्य *सर्व.* {सं.} उसका।

तस्सू *पुं.* तसू।

तहँ *क्रि. वि* = तहाँ (वहाँ)।

तहँ, तहँवाँ *क्रि. वि.* तहाँ।

तह *स्त्री.* {फा.} किसी वस्तु पर पड़ा हुआ उसी या किसी दूसरी वस्तु का मोटा विस्तार, परत।

मुहा. तह करना या लगाना = फैली हुई वस्तु मोड़कर समेटना; *तहकर रखो* = अपने पास रहने दो, हमें नहीं चाहिए; *(किसी चीज की) तह देना* = हलका पुट या रंग देना।

नीचे का विस्तार, तल, पेंदा।

मुहा. तह मोड़ना = झगड़े का मूल नष्ट कर देना; *(किसी बात की) तह तक पहुँचना* = वास्तविक बात जान लेना।

जलाशय के नीचे की जमीन, तल, सतह; *तह तोड़ना* = कुएँ का सब पानी निकाल देना।

महीन परत, वरक, झिल्ली।

तरईं *क्रि. वि.* {हिं. तहाँ} उसी जगह, वहीं।

तहकीकात *स्त्री.* {अ. तहकीक का बहु.} किसी विषय या घटना की मूल बातों का पता लगाना, अनुसंधान जाँच।

तहखाना *पुं.* तल-घर।

तहबंद *पुं.* {फा.} लुंगी।

तहत *वि.* {अ.} अधीन; के तहत = के अधीन।

तहदरज *वि.* {फा.} (कपड़ा या और कोई चीज) जिसकी तह तक न खुली हो, बिल्कुल नया।

तहना[1] *अ.* तपना।

तहना[2] *अ.* {हिं. तेह} बहुत क्रोध करना।

तहमत *स्त्री.* लुंगी।

तहरी *स्त्री.* {देश.} पेठे की बरी; मटर और चावल की खिचड़ी।

तहरीर *स्त्री.* {अ.} {*वि.* तहरीरी} लिखावट, लिखाई; लेखन-शैली; लिखी हुई बात या कागज, लेख्य; (अदालत के मुंशियों आदि का) लिखने का पारिश्रमिक, लिखाई।

तहरीरी *वि.* {अ.} लिखा हुआ, लिपिबद्ध।

तहलका *पुं.* {अ.} बरबादी, नाश; खलबली, हलचल।

तहवील *स्त्री.* {अ.} खजाना, कोश।

तहस-नहस *वि.* {देश.} पूरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट।

तहसील *स्त्री.* {अ.} लोगों से रुपए वसूल करने की क्रिया या भाव, वसूली, उगाही; वह धन, जो वसूल करने से इकट्ठा हो; तहसीलदार की कचहरी।

तहसीलदार *पुं.* {अ. तहसील + फा. दार} कर उगाहनेवाला अधिकारी; तहसील का वह प्रधान अधिकारी, जो जमींदारों से सरकारी मालगुजारी वसूल करता और माल के छोटे मुकदमे सुनता है।

तहसीलदारी *स्त्री.* {फा.} तहसीलदार का काम या पद।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGang

तहसीलना *स.* {अ. तहसील} कर, लगान, चंदा आदि उगाहना या वसूल करना।

तहाँ *क्रि. वि.* वहाँ।

तहाना *स.* {हिं. तह} तह करना या लगाना।

तहिया *क्रि. वि.* {सं. तद्} उस दिन (जहिया का संबंध पूरक)।

तहियाना *स.* तहाना।

तहियो *क्रि. वि.* {सं. तद्} तो भी, तिस पर भी, तब भी, तथापि।

तहीं *क्रि. वि.* {हिं. तहाँ} उसी जगह।

ताँई *क्रि. वि.* ताई।

ताँगा *पुं.* ताँगा।

ताँगी *स्त्री.* {फा. तंग = बन्द} किसी चीज को कसकर बाँधनेवाली डोरी या तस्मा, बन्द, जैसे चोली की ताँगी।

तांडव *पुं.* {सं.} शिव का नृत्य; पुरुषों का नृत्य; वह नाच जिसमें बहुत उछल-कूद हो।

ताँत *स्त्री.* {सं. तंतु} पशुओं की अँतड़ियों या पुट्ठों को काटकर बनाया हुआ तागा; धनुष की डोरी; जुलाहों की राछ; तंतु।

ताँता *पुं.* {सं. तति = श्रेणी} पंक्ति, कतार।

मुहा. ताँता लगना = एक के बाद एक लगातार आता या होता चलना।

ताँती[1] *स्त्री.* ताँता।

ताँती[2] *पुं.* {हिं. ताँत} कपड़ा बुननेवाला, जुलाहा।

तांत्रिक *वि.* {सं.} तंत्र-संबंधी, तंत्र का; *पुं.* तंत्रशास्त्र का जानने और प्रयोग करनेवाला।

ताँबा *पुं.* {सं. ताम्र} लाल रंग की एक प्रसिद्ध धातु, जिससे बरतन आदि बनते हैं।

ताँबिया, ताँबी *स्त्री.* {हिं.} एक छोटा पात्र जिसका मुँह चौड़ा होता है; ताँबे की करछी।

तांबूल *पुं.* {सं.} पान; पान का बीड़ा।

ताँवर *पुं.* = ताप।

ताँवरना *अ.* {हिं. ताँवर} गरम होना, तपना; क्रोध आदि के आवेश में आना।

ताँवरा *पुं.* {सं. ताप} ताप, जलन; जाड़ा देकर आनेवाला बुखार, जूड़ी।

ताँवरी *स्त्री.* {हिं.} ताप, जूड़ी, मूर्च्छा।

ताँसना *स.* {सं. त्रास} डाँटना; धमकाना; सताना।

ता[1] *प्रत्य.* {सं.} एक भाववाचक प्रत्यय जो विशेषण और संज्ञा के अंत में लगता है, जैसे उत्तमता या विशेषता में का 'ता'।

ता[2] *सर्व.* {सं. तद्} उस; उसे।

ता[3] *क्रि. वि.* {फा.} तक, पर्यन्त।

ताई *क्रि. वि.* {सं. तावत्} तक, पर्यन्त; पास, समीप, निकट; (किसी के) प्रति, को; लिए, वास्ते।

ताईद *स्त्री.* {अ.} अनुमोदन, समर्थन।

ताउ *पुं.* ताव।

ताऊ *पुं.* {सं. तात} पिता बड़ा भाई, ताया।

पद बछिया के ताऊ = परम मूर्ख व्यक्ति।

ताऊन *पुं.* {अ.} प्लेग नामक रोग।

ताऊस *पुं.* {अ.} मोर, मयूर।

ताक[1] *स्त्री.* {हिं. ताकना} ताकने की क्रिया या भाव, अवलोकन; टकटकी; अवसर की घात।

मुहा. ताक में रहना या ताक लगाना = किसी व्यक्ति या अवसर की प्रतीक्षा में रहना। खोज, तलाश।

ताक[2] *पुं.* {अ. ताक} (दीवार में का) आला, ताखा।

मुहा. ताक पर रखना = अनावश्यक या व्यर्थ समझकर अलग करना।

वि. जो बिना खंडित हुए दो सम भागों में न बँट सके, 'जूस' का उलटा, विषम, जैसे पाँच, सात, नौ आदि; अद्वितीय, अनुपम, बेजोड़।

ताक-झाँक *स्त्री.* {हिं. ताकना + झाँकना} कुछ जानने या देखने के लिए रह-रहकर ताकने-झाँकने की क्रिया; छिपकर देखने की क्रिया।

ताकत *स्त्री.* {अ.} जोर, बल; शक्ति, सामर्थ्य।

ताकतवर *वि.* {फा.} शक्तिशाली, बलिष्ठ; समर्थ।

ताकना *स.* {सं. तर्कण} अवलोकन करना, देखना (विशेषतः कुछ बुरे भाव या विचार से); मन में सोचना, विचार करना, जैसे किसी का बुरा ताकना; समझ जाना, ताड़ना; पहले से देखकर स्थिर करना, तजवीज करना; देख-रेख या रखवाली करना; अवसर की प्रतीक्षा या घात में रहना।

ताकि *यो.* {फा.} इसलिए कि, जिसमें।

ताकीद *स्त्री.* {अ.} किसी काम या बात के लिए जोर देकर कहना; अच्छी तरह चेताकर कही जानेवाली बात।

ताख *पुं.* {हिं.} ताक, ताखा।

ताखा[1] *पुं.* {?} गत्ते पर लपेटा हुआ कपड़े का थान।

ताखा[2] *पुं.* {अ. ताक} आला, ताक (दीवार में का)।

ताग *स्त्री.* {हिं. तागना} तागने की क्रिया या भाव; *पुं.* तागा।

तागड़ी *स्त्री.* करधनी।

तागना *स.* {हिं. तागा} तागे से दूर-दूर मोटी सिलाई करना।

तागपाट *पुं.* {हिं.} रेशम के तागे में पिरोया हुआ गहना जो विवाह में वधू को पहनाया जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digi Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तागा पुं. {पहलवी ताक = रेखा, मि. सं. तार्गव} रुई, रेशम, ऊन आदि का वह लम्बा रूप, जो बटने से तैयार होता है, डोरा, धागा।

ताछन पुं. {सं. तक्षण} शत्रु के आक्रमण से बचने और उस पर वार करने के लिए बगल से होते हुए आगे बढ़ना, कावा।

तांछना अ. {हिं. ताछना} वार करने के लिए बगल से होकर आगे बढ़ना।

ताज पुं. {फा.} राजमुकुट; मोर, मुरगे आदि के सिर पर की चोटी, शिखा; आगरा का ताजमहल नामक प्रसिद्ध मकबरा।

ताजक पुं. {फा.} एक ईरानी जाति।

ताजगी स्त्री. {फा. ताजगी} ताजापन; प्रफुल्लतापूर्ण स्वस्थता।

ताजदार पुं. {फा.} बादशाह।

ताजन पुं. {फा. ताजियान:} कोड़ा।

ताजपोशी स्त्री. {फा.} राजसिंहासन पर बैठकर राजमुकुट धारण करने का कृत्य।

ताजा वि. {फा. ताज:} {स्त्री. ताजी} {भाव. ताजापन, ताजगी} जो अभी बनकर तैयार हुआ हो, बिल्कुल नया; जो सूखा या कुम्हलाया न हो, हरा-भरा; (फल, फूल आदि) जो अभी पेड़ से तोड़ा गया हो; जो थका-माँदा न हो, स्वस्थ और प्रसन्न; जो अभी व्यवहार में आने को हो, बिल्कुल नया।

ताजिया पुं. {फा.} मकबरे के आकार का बनाया हुआ वह छोटा मंडप, जो मुहर्रम में शीया मुसलमान दस दिन तक रखकर गाड़ते हैं।

ताजी वि. {फा.} अरब देश का; पुं. अरब देश का घोड़ा; एक प्रकार का शिकारी कुत्ता।

ताजीर स्त्री. {अ.} {वि. ताजीरी} दंड।

ताजीरात पुं. {अ.} आपराधिक दंडों से संबंध रखनेवाले कानूनों का संग्रह।

ताजीरी वि. {अ.} दंड के रूप में लगाया या बैठाया हुआ, जैसे ताजीरी कर, ताजीरी पुलिस।

ताजीरी कर पुं. {अ. + सं.} वह कर जो किसी स्थान पर दंडस्वरूप पुलिस नियत होने पर उसका खर्च निकालने के लिए लगता है।

ताजीरी पुलिस स्त्री. {अ. ताजीरी + अं. पुलिस} पुलिस के सिपाहियों के वे दस्ते, जो किसी ऐसे स्थान में दंडस्वरूप रखे जाते हैं, जहाँ कोई विशेष उपद्रव होता है और जिनका खर्च उस स्थान के निवासियों से लिया जाता है।

ताज्जुब पुं. {सं. तअज्जुब} आश्चर्य, विस्मय, अचम्भा।

ताटक पुं. {सं.} कान में पहनने का कर्णफूल, तरकी।

ताटस्थ्य पुं. {सं.} तटस्थता।

ताड़ंक पुं. {सं.} कान का एक गहना, ताकी।

ताड़ पुं. {सं.} एक बड़ा और प्रसिद्ध पेड़, जो खम्भे के रूप में सीधा ऊपर बढ़ता है और जिसके सिरे पर बड़े-बड़े पत्ते होते हैं; ताड़न, प्रहार।

ताड़क वि. {सं.} प्रहार करनेवाला, ताड़न करनेवाला।

ताड़का स्त्री. {सं.} एक राक्षसी जिसे रामचन्द्र जी ने मारा था।

ताड़कापन पुं. {सं.} विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

ताड़कारि पुं. {सं.} ताड़का के शत्रु-श्री राम।

ताड़केय पुं. {सं.} ताड़का का पुत्र, मारीच।

ताड़न पुं. ताड़ना, आघात, प्रहार आदि।

ताड़ना[1] स्त्री. {सं.} प्रहार, मार, डाँट, डपट; दंड, सजा; उत्पीड़न, कष्ट देना; दोषी, अपराधी आदि को विशेष दंड न देकर उसे कार्य के संबंध में रोष या असंतोष प्रकट करते हुए उसे भविष्य में सचेत रखने के लिए कही जानेवाली बात, झिड़की (रेप्रिमाड)।

ताड़ना[2] स. {सं. ताड़न} मारना, पीटना; डाँटना-डपटना; कष्ट पहुँचाना।

ताड़ना[3] स. {हिं. तर्कण} छिपी हुई बात लक्षणों से समझ लेना, भाँपना, लखना।

ताड़नी स्त्री. {सं.} कोड़ा, चाबुक।

ताड़पत्र पुं. {सं.} कर्णफूल, ताड़ का पत्ता।

ताड़बाज वि. {हिं.} छिपी हुई बात को समझ जानेवाला, ताड़नेवाला।

ताड़ित वि. {सं.} जिसे ताड़ना की या दी गई हो।

ताड़ी स्त्री. {हिं. ताड़} ताड़ के डंठलों का नशीला रस, जो मद्य की तरह पिया जाता है, नीरा।

तात पुं. {सं.} पिता, बाप; पूज्य या मान्य व्यक्ति; भाई या मित्र और विशेषत: छोटों के लिए व्यहृत एक प्रेमपूर्ण संबोधन; वि. ताता।

तातंगु पुं. {सं.} पितृव्य, चाचा।

तातन पुं. {सं.} खंजन पक्षी।

तातल वि. {सं.} पिता तुल्य, पिता-संबंधी, वेगवान्, तप्त।

तातपर्य पुं. = तात्पर्य।

ताता वि. {सं. तप्त} {स्त्री. तप्ती} तपा हुआ, गरम।

तातथेई स्त्री. तत्ताथेई।

तातार पुं. {फा.} मध्य एशिया का एक देश, जो फारस के उत्तर में है।

तातारी वि. {फा.} तातार देश का; पुं. तातार देश का निवासी; स्त्री. तातार देश की भाषा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

तातील *स्त्री.* {अ.} छुट्टी का दिन।

तात्कालिक *वि.* {स.} तत्काल या तुरंत का; उस समय का।

तात्त्विक *वि.* {सं.} तत्व या मूल सिद्धांत-संबंधी जैसे तात्त्विक मतभेद (फंडामेंटल); तत्त्वज्ञानयुक्त; यथार्थ, वास्तविक; किसी महत्वपूर्ण गुण या तत्त्व से युक्त। (सबस्टेंशल)।

तात्पर्य *पुं.* {सं.} आशय, अभिप्राय।

तादात्म्य *पुं.* {सं.} एक वस्तु का दूसरी वस्तु में मिलकर उसके साथ एक हो जाना; देश-समझकर यह कहना कि यह वही है, पहचानना (आईडेंटिफिकेशन)।

तादाद *स्त्री.* {अ.} संख्या, गिनती, अदद।

तादृश *वि.* {सं.} {*स्त्री.* तादृशी} उस तरह का, उसके समान, वैसा।

तादृशी *स्त्री.* {सं. *वि.*} उसी के समान, बँसी।

ताधर्म्य *पुं.* {सं.} तुल्य, धर्म, समानगुण।

तान *स्त्री.* {सं.} तानने की क्रिया या भाव, खींच; संगीत में स्वरों का कलापूर्ण विस्तार।
मुहा. तान उड़ाना या लड़ाना = तान लेते हुए गीत गाना; *(किसी पर) तान तोड़ना* = किसी पर सारा दोष मढ़ना या गुस्सा उतारना।

तानता *स्त्री.* {सं.} वह गुस्सा या शक्ति जिसमें वस्तुएँ या उनके अंग आपस में दृढ़तापूर्वक सटे, जुड़े या मिले रहते हैं (टेनैसिटी)।

तान-तरंग *स्त्री.* {सं.} लय की लहर।

तानना *स.* {सं. तान} कसने के लिए जोर से अपनी ओर या ऊपर खींचना; खींचकर फैलाना।
मुहा. तानकर सोना = निश्चिंत हो जाना।
ऊपर फैलाकर बाँधना; मारने के लिए हाथ या हथियार उठाना।

तानपूरा *पुं.* {सं. तान + हिं. पूरना} सितार की तरह का, पर उससे बड़ा, एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा, तम्बूरा।

तान-बान *पुं.* ताना-बाना।

तानसेन *पुं.* अकबर के समय का एक अति प्रसिद्ध गवैया, यह पहले कट्टर हिन्दू थे पर बाद में मुसलमान हो गये।

ताना[1] *पुं.* {हिं. तानना} कपड़े की बुनावट में लंबाई के बल के सूत।

ताना[2] *स.* {हिं. ताप + ना (प्रत्य.)} तपाना, गरम करना; (सोना आदि धातुएँ) तपाकर परीक्षा करना; जाँचना, परखना।

ताना[3] *पुं.* {अ. तानः} आक्षेपपूर्ण बात, बोली-ठोली, व्यंग्य।

ताना-पाई *स्त्री.* {हिं. ताना + पाई} व्यर्थ, बार-बार आना-जाना।

ताना-पाही *स्त्री.* = ताना-पाई।

ताना-बाना *पुं.* {हिं. ताना + बाना} कपड़े की बुनावट में लंबाई और चौड़ाई के बल बुने हुए सूत।

तानारीरी *स्त्री.* {हिं. तान + अनु रीरी} साधारण गाना।

तानाशाह *पुं.* {अ. तानः + फा. शाह} {*भाव.* तानाशाही} वह जो अपने अधिकारों का बहुत मनमाना दुरुपयोग करे।

तानाशाही *स्त्री.* अधिकारों का मनमाना उपयोग; वह राज्य-व्यवस्था, जिसमें सारा अधिकार एक ही आदमी के हाथ में हो।

तानी *स्त्री.* {हिं. ताना} कपड़े की बुनावट में करघे में लंबाई के बल लगे हुए या लगनेवाले सूत।

ताप *पुं.* {सं.} {*वि.* तापक} वह प्राकृतिक, विद्युत या अग्नि से उत्पन्न होनेवाली शक्ति जिसके प्रभाव से चीजें गरम होकर पिघलने या भाप के रूप में हो जाती हैं और जिसका अनुभव गरमी या जलन के रूप में होता है, 'शीत' का विरोधी भाव या तत्त्व, उष्णता, गरमी (हीट); आँच, लपट; ज्वर, बुखार; शारीरिक, मानसिक आदि कष्ट, दुख; (हमारे यहाँ यह तीन प्रकार का माना गया है—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक)।

तापक *वि.* {सं.} ताप उत्पन्न करने या गरमी लानेवाला; संतप्त करने या कष्ट पहुँचानेवाला; *पुं.* बिजली की सहायता से काम करनेवाला एक उपकरण जिससे कमरे, कोठरियाँ आदि गरम की जाती हैं (हीटर)।

तापक्रम *पुं.* {सं.} किसी विशिष्ट स्थान या पदार्थ का वह ताप, जो विशेष अवस्थाओं में घटता-बढ़ता रहता है।

तापक्रम-यंत्र *पुं.* {सं.} वह यंत्र जिससे किसी स्थान या पदार्थ के घटने या बढ़नेवाले तापक्रम का पता चलता है (बैरोमीटर)।

तापचालक *पुं.* {सं.} वह पदार्थ जिसमें ताप एक सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक पहुँचता या उसमें व्याप्त होता हो, जैसे धातु।

तापचालकता *स्त्री.* {सं.} पदार्थों का वह गुण, जिससे गरमी या ताप उनके एक सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक पहुँचता या उसमें व्याप्त होता है।

तापतरंग *स्त्री.* {सं.} ग्रीष्म ऋतु में ताप या गरमी की वह तरंग, जो कुछ विशिष्ट प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न होकर किसी दिशा में बढ़ती है और जिसके कारण कुछ दिनों के लिए गरमी साधारण से बहुत अधिक हो जाती है (हीट वेव)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताप-तिल्ली *स्त्री.* {हिं. ताप = ज्वर + तिल्ली} तिल्ली बढने और सूजने का रोग।

तापती *स्त्री.* {सं.} सूर्य की कन्या ताप्ती; भारत की एक पवित्र नदी।

तापत्य *पुं.* {सं.} तापती के वंशज कुरु।

तापत्रय *पुं.* {सं.} आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक ये तीनों ताप या कष्ट।

तापन *पुं.* {सं.} ताप देनेवाला; सूर्य; कामदेव के पाँच बाणों में से एक; शत्रु को पीड़ित करनेवाला एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग।

तापना *अ.* {सं. तापन} आग की आँच से अपना शरीर गरम करना; *स.* आग पर रखकर गरम करना या तपना; जलाना; (धन) नष्ट करना।

तापनीय *स्त्री.* {सं.} एक उपनिषद् का नाम; *वि.* सुवर्णमय, गरम होने योग्य।

तापमान *पुं.* {सं.} किसी पदार्थ अथवा शरीर में की गरमी या सरदी की वह स्थिति, जो कुछ विशेष प्रकार से नापी जाती है, जैसे वातावरण का तापमान या शरीर का तापमान।

तापमापी *पुं.* {सं. तापमापिन्} ज्वर के समय शरीर का ताप नापने का एक विशेष प्रकार का यंत्र (थर्मामीटर)।

तापश्चित *स्त्री.* {सं.} यज्ञ की अग्नि का एक भेद, एक यज्ञ का नाम।

तापरुज *पुं.* {सं.} तमालपत्र, तेजपत्ता।

तापरुवरु *पुं.* {सं.} हिंगाट का वृक्ष।

तापसपत्री *स्त्री.* {सं.} दमनक, दौना।

तापसप्रिय *पुं.* {सं.} चिरौंजी का वृक्ष।

तापसप्रिया *स्त्री.* {सं.} द्राक्षा, मुनक्का।

तापस *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* तापसी} तप करनेवाला, तपस्वी।

तापसी *स्त्री.* {सं.} तपस्या करनेवाली स्त्री; तपस्वी की स्त्री।

तापाघात *पुं.* {सं.} धूप में चलने-फिरने से होनेवाला रोग (सनस्ट्रोक)।

तापित *वि.* {सं.} जो तपाया गया हो; जिसे कष्ट दिया गया हो; ताप से उत्पन्न होनेवाला (थर्मल)।

तापी *वि.* {सं. तापिन्} ताप देने या तपानेवाला।

ताफ्ता *पुं.* {फा.} एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

ताब *स्त्री.* {फा.} ताप, गरमी; चमक, आभा, दीप्ति; कोई काम करने की शक्ति, सामर्थ्य, ताकत।

ताबड़-तोड़ *क्रि. वि.* {अनु.} लगातार, निरन्तर; तुरंत, तत्काल।

ताबूत *पुं.* {अ.} वह संदूक जिसमें लाश रखकर गाढ़ी जाती है।

ताबे *वि.* {अ. ताब्अ} वशीभूत, अधीन; आज्ञा माननेवाला।

ताबेदार *वि.* {अ. ताब्अ + फा. दार} {*संज्ञा* ताबेदारी} आज्ञाकारी; सेवक, नौकर।

ताप[1] *पुं.* {सं.} दोष, विकार; व्याकुलता, बेचैनी; दुख, क्लेश; इच्छा, वासना; थकावट; *वि.* भीषण, डरावना; व्याकुल।

ताम[2] *पुं.* {सं. तमस्} क्रोध; अँधेरा।

तामजान, तामजाम *पुं.* {?} एक प्रकार की छोटी खुली पालकी।

तामड़ा *वि.* {हिं. ताँबा} ताँबे के रंग का, कुछ लाली हुए भूरा।

तामर *पुं.* {सं.} जल, घृत, घी।

तामरस *पुं.* {सं.} कमल, सोना, ताँबा; धतूरा।

तामरानी *स्त्री.* {सं.} पद्मिनी, कमलिनी।

तामलकी *स्त्री.* {सं.} भुई, आँवला।

तामलूक *पुं.* {हिं.} ताम्रलिप्त, वंगदेश के एक प्रांत का नाम।

तामलेट *पुं.* {अ. टंबलर} लोहे, टीन आदि का ऐसा बरतन, जिस पर चीनी मिट्टी की तरह का चमकीला रोगन किया रहता है।

तामस *वि.* {सं.} {*स्त्री.* तामसी} तमोगुण से युक्त, तमोगुणवाला; *पुं.* साँप; दुर्जन; क्रोध; अपकार; अज्ञान, मोह।

तामसिक *पुं.* {सं.} तमोगुण का भाव; *वि.* तामसी।

तामसी *वि. स्त्री.* {सं.} तमोगुणवाली; *वि.* तामस।

तामिल *पुं.* {देश.} दक्षिण भारत की एक जाति; *स्त्री.* उक्त जाति के लोगों की भाषा, तमिल।

तामिस्र *पुं.* {सं.} एक नरक का नाम; क्रोध; द्वेष।

तामीर *स्त्री.* {अ.} {बहु. तामीरात} इमारत बनाने का काम।

तामील *वि.* {अ.} (आज्ञा) जिसका पालन हुआ हो; (सूचना, आदेश आदि) जो यथास्थान पहुँचाया या उद्दिष्ट व्यक्ति को दे दिया गया हो (सर्व्ड); *स्त्री.* तामीली।

तामीली *स्त्री.* {अ.} (आज्ञा का) पालन, निष्पादन; (एग्जीक्यूशन); (सूचना आदि का) अभीष्ट स्थान पर पहुँचाया जाना (सर्विस)।

तामोर *पुं.* तांबूल (पान)।

ताम्र *पुं.* {सं.} ताँबा।

ताम्रचूड़ *पुं.* {सं.} मुर्गा।

ताम्रपट *पुं.* ताम्रपत्र।

ताम्रपत्र *पुं.* {सं.} ताँबे की चद्दर का वह टुकड़ा, जिस पर प्राचीन काल में दानपत्र आदि लिखे जाते थे (कापर-प्लेट)।

ताम्रपर्णी *स्त्री.* {सं.} बावली, तालाब; मदरास की एक छोटी नदी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and e

ताम्रयुग पुं. {सं.} पुरातत्व के अनुसार किसी देश या जाति के इतिहास का वह समय, जब वह पहले-पहल ताँबे आदि धातुओं का व्यवहार करने लगी थी। यह युग प्रस्तरयुग के बाद और लौहयुग के पहले पड़ता है, इसे कांस्ययुग भी कहते हैं (ब्रांज एज)।

ताम्रलिप्त पुं. {सं.} मेदिनीपुर (बंगाल) जिले का तमलूक नामक स्थान।

ताम्रलेख पुं. ताम्रपत्र।

ताय पुं. ताप; सर्व. ताहि।

तायना स. {हिं. ताप} तपाना।

तायफा पुं. {हिं. तायफा} वेश्या और उसके समाजियों की मंडली; *स्त्री.* गाने-बजानेवाली वेश्या।

ताया पुं. {सं. तात} {*स्त्री.* ताई} पिता का बड़ा भाई, बड़ा चाचा।

तार[1] पुं. {सं.} रूपा, चाँदी; धातु को खींचकर बनाया हुआ तंतु, धातु-तंतु; उक्त स्वरूप का वह तन्तु जिसके द्वारा बिजली की सहायता से समाचार भेजे जाते हैं (टेलिग्राफ); इस प्रकार भेजा या आया हुआ समाचार (टेलिग्राम); सूत, तागा।

मुहा. तार-तार करना = कपड़ा नोचकर उसके टुकड़े-टुकड़े करना।

अखंड परंपरा, सिलसिला, क्रम; कार्यसिद्धि काय योग या सुविधा; संगीत में एक ऊँचा सप्तक, जिसे उच्च भी कहते हैं।

तार[2] *वि.* {सं.} निर्मल, स्वच्छ।

तार[3] पुं. {सं. ताल} करताल (बाजा)।

तार[4] पुं. {सं. तल} तल, सतह।

तार[5] पुं. {सं. तल्ल} तालाब।

तार[6] पुं. {हिं. ताड़} ताडंगी या तरकी नाम का गहना।

तार[7] पुं. तारा; ताल।

तारक पुं. {सं.} नक्षत्र, तारा; छापे आदि में आकाश के तारे की तरह का एक चिह्न जो प्रायः पाद-टिप्पणी के संकेत या शब्दसूची आदि में किसी शब्द की कोई विशेषता सूचित करने के लिए लगाया जाता है; आँख की पुतली; तारकासुर; ओं रामाय नमः का मंत्र; *वि.* तारने या पार लगानेवाला।

तारकचिह्न पुं. तारक।

तारकश पुं. {हिं. तार + फा. कश} {*भाव.* तारकशी} धातु के तार खींचने या बनानेवाला कारीगर।

तारका *स्त्री.* {सं.} नक्षत्र, तारा; आँख की पुतली; *स्त्री.* ताड़का।

तारकासुर पुं. {सं.} एक असुर, जिसे कार्तिकेय ने मारा था।

तारकेश पुं. {सं. तारका + ईश} चन्द्रमा।

तारकेश्वर पुं. {सं.} शिव।

तालकोल पुं. 'अलकतरा'।

तार-घर पुं. {हिं. तार + घर} वह स्थान जहाँ से तार द्वारा समाचार भेजे जाते हैं।

तार-घाट पुं. {हिं. तार + घाट} मतलब निकलने का सुभीता या अवसर।

तारण पुं. {सं.} पार उतारने का काम; उद्धार, निस्तार; *वि.* तारनेवाला।

तारणि *स्त्री.* {सं.} नौका, नाव।

तारणी *स्त्री.* {सं.} तारणि कश्यप की एक पत्नी का नाम।

तारतम्य पुं. {सं.} {*वि.* तारतम्यिक} एक-दूसरे की तुलना में कमी-बेशी का विचार, न्यूनाधिक्य; कमी-बेशी, ऊँच-नीच, महत्व, अधिकार आदि के विचार से लगाया जानेवाला क्रम; (ऑर्डर ऑफ प्रिफरेंस); गुण, परिमाण आदि का पारस्परिक मिलान।

तार-तोड़ पुं. {हिं. तार} कारचोबी का काम।

तारन पुं. तारण, छत या छाजन का ढालुआँ भाग।

तारना स. {सं. तारण} पर लगाना, पार करना; डूबते हुए को बचाना; सांसारिक कष्टों से मुक्त करना, सद्गति या मोक्ष देना।

तारनाद पुं. {सं.} उच्चनाद।

तारपीन पुं. {अ. टरपेंटाइन} चीड़ के वृक्ष से निकला हुआ तेल, जो औषध आदि के काम में आता है।

तारपुष्प पुं. {सं.} कुन्द का पुष्प।

तारबर्की *स्त्री.* {हिं.} वह तार जिसके द्वारा बिजली की सहायता से समाचार भेजा जाता है।

तारमाक्षिक पुं. {सं.} चाँदी के योग से बनी एक उप-धातु।

तारयिता पुं. {सं.} उद्धार करनेवाला तारनेवाला।

तारल्य पुं. {सं.} तरलता, द्रवत्व; चंचलता, चपलता।

तारहीन *वि.* {हिं. तान + हीन} जिसमें तार न हो, बिना तार का; (समाचार) जो तारहीन प्रणाली से आए या जाए; पुं. विद्युत की सहायता से समाचार भेजने की एक प्रणाली या प्रक्रिया जिसमें समाचार भेजनेवाले और पानेवाले स्थानों में तार का संबंध नहीं रहता (वायरलेस)।

तारा पुं. {सं.} नक्षत्र, सितारा।

मुहा. आकाश के तारे तोड़ लाना = बहुत ही कठिन काम कर दिखाना; *तारा टूटना* = आकाश से चमकता हुआ पिंड पृथ्वी पर गिरना, उल्कापात होना; *तारा डूबना* = शुक्र का अस्त होना; तारों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की छाँह में = बहुत सबेरे, तड़के; *तारे गिनना* = चिंता या वियोग में जागकर रात काटना।
आँख की पुतली; भाग्य, किस्मत; *स्त्री.* {सं.} दस महाविद्याओं में से एक।
बृहस्पति की स्त्री, जिसे चंद्रमा ने रख लिया था और जिससे बुध का जन्म हुआ था; बालि नामक वानर की स्त्री; *पुं.* ताला।

तारकूट *पुं.* {सं.} फलित ज्योतिष में विवाह स्थिर करने के लिए वर और कन्या के शुभाशुभफल को सूचित करनेवाला एक योग।

ताराक्ष *पुं.* {सं.} एक दैत्य का नाम।

ताराग्रह *पुं.* {सं.} मंगल, बुध, शुक्र, गुरु और शनैश्चर ग्रह।

ताराचक्र *पुं.* {सं.} एक तंत्रोक्त चक्रभेद।

तारादेवी *स्त्री.* {सं.} एक महाविद्या का नाम।

ताराधिप *पुं.* {सं.} चंद्रमा; शिव; वृहस्पति; बालि नामक वानर।

ताराधीश *पुं.* ताराधिप।

तारापथ *पुं.* {सं.} आकाश।

तारामंडल *पुं.* {सं.} तारों या नक्षत्रों का समूह।

ताराभ *पुं.* {सं.} पारद, पारा।

ताराभ्र *पुं.* {सं.} कर्पूर, कपूर।

तारामृण *पुं.* {सं.} मृगशिरा नक्षत्र।

तारायण *पुं.* {सं.} आकाश, आसमान।

तारिका *वि. स्त्री.* {सं.} तारनेवाली; *स्त्री.* तारादेवी।

तारी *स्त्री.* {अ. तारी = बेहोशी} ईश्वर के ध्यान में तन्मय हो जाना, समाधि; टकटकी; ताली; ताड़ी।

तारीक *वि.* {फा.} {संज्ञा तारीकी} काला, स्याह; धुँधला, अँधेरा।

तारीख *स्त्री.* {फा.} {*वि.* तारीखी} महीने का हर एक दिन (24 घंटों का), तिथि; वह तिथि जिसमें कोई विशेष घटना हुई हो; नियत तिथि।
मुहा. तारीख डालना = तारीख या दिन नियत करना।

तारीफ *स्त्री.* {अ. तारीफ} किसी बात या चीज के लक्षण, स्वरूप, गुण, विशेषता आदि बतलानेवाला कथन, परिभाषा; वर्णन, विवरण; प्रशंसा; विशेषता, मुख्य गुण।

तारुण्य *पुं.* {सं.} जवानी।

तारू *पुं.* = तालु।

तारी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का पक्षी; समाधि-स्थान।

तारुण्य *पुं.* {सं.} युवावस्था, यौवन, जवानी।

तारेश *पुं.* {हिं. तार + ईश} चंद्रमा।

तार्किक *पुं.* {सं.} तर्कशास्त्र का जाननेवाला; तत्त्ववेत्ता, दार्शनिक।

ताल¹ *पुं.* {सं.} करतल, हथेली; करतल ध्वनि, ताली; नाचने-गाने में उसके समय का परिमाण ठीक रखने का एक साधन; जाँघ या बाँह पर जोर से हथेली मारकर उत्पन्न किया जानेवाला शब्द (पहलवान)।
मुहा. ताल ठोंकना = लड़ने के लिए ललकारना।
मँजीरा, झाँझ; चश्मे में लगा पत्थर या काँच का टुकड़ा (लेंस); ताड़ का पेड़; ताला।

ताल² *पुं.* {सं.} तल्ल तालाब।

तालकी *स्त्री.* {सं.} तालरस, ताड़ी।

तालगर्भ *पुं.* {सं.} ताड़ का गूदा।

तालजटा *स्त्री.* {सं.} ताड़ की जटा।

तालपत्र *पुं.* {सं.} ताड़ वृक्ष का पत्ता, जिसका व्यवहार प्राचीन काल में ग्रंथ आदि लिखने के लिए, कागज की तरह, होता था।

ताल-बैताल *पुं.* {ताल + बैताल} दो कल्पित यक्ष, जिनके विषय में कहा जाता है कि राजा विक्रमादित्य ने इन्हें सिद्ध करके वश में किया था।

तालमखाना *पुं.* {हिं. ताल + मखाना} एक पौधा जिसके गोल या चिपटे सफेद बीज खाए जाते हैं।

तालमूली *स्त्री.* {सं.} मूसली।

तालमेल *पुं.* {हिं. ताल + मेल} ताल और स्वर का सामंजस्य; उपयुक्त और ठीक संयोग या मेल।

तालव्य *वि.* {सं.} तालु-संबंधी; *पुं.* तालु से उच्चारण किया जानेवाला वर्ण जैसे इ, ई, च, छ, या श आदि (पैलेटल)।

ताला *पुं.* {सं. तलक} धातु का वह यंत्र, जो किवाड़, संदूक आदि बंद करने के लिए कुंडी में लगाया जाता है; लोहे का वह तवा, जो योद्धा लोग युद्ध के समय छाती पर पहनते थे।

तालाब *पुं.* {सं. तल्ल} पानी का बड़ा कुंड, सरोवर, पोखरा।

तालबेली *स्त्री.* तलबेली।

तालिका *स्त्री.* {सं.} ताली, कुंजी; सूची, फेहरिस्त (लिस्ट); व्यक्तियों की नामावली (रोल)।

तालिम *स्त्री.* {सं. तल्प} बिछौना।

ताली¹ *स्त्री.* {हिं. ताला} ताले के साथ का वह उपकरण, जिससे वह खोला और बंद किया जाता है, कुंजी, चाबी; ताड़ का मद या रस, ताड़ी, नीरा।

ताली² *स्त्री.* {सं. ताल} शब्द उत्पन्न करने के लिए हथेलियों को एक दूसरी पर मारने की क्रिया, करतलध्वनि, थपोड़ी; इस प्रकार हथेलियाँ मारने से उत्पन्न शब्द, करतलध्वनि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताली³ *स्त्री.* {हिं. ताल} छोटा ताल, तलैया।
तालीयक *पुं.* {सं.} करताल, मंजीरा।
तालीम *स्त्री.* {अ.} शिक्षा।
तालु *पुं.* {सं.} तालू। (पैलेट)।
तालका *प.* ताल्लका।
तालू *पुं.* {सं. तालु} **मुँह के अंदर का ऊपरी अंग या भाग जिसके नीचे जीभ रहती है, तालु (पैलेट)।**
मुहा. तालू में दाँत जमना = दुर्दशा या विनाश के दिन निकट होना; *तालु से जीभ न लगना* = चुपचाप न रहा जाना, बराबर कुछ न कुछ बोलते जाना।
ताल्लुक *पुं.* {अ. तअल्लुक} संबंध, लगाव, वास्ता।
ताल्लुका *पुं.* {अ. तअल्लुकः} बहुत से गाँवों का समूह, बड़ा इलाका।
ताल्लुकेदार *पुं.* {अ. तअल्लुकः + फा. दार} किसी ताल्लुके का जमींदार; अवध में एक विशेष प्रकार के जमींदार जिन्हें कुछ विशिष्ट अधिकार होते थे।
ताव¹ *पुं.* {सं. ताप} कोई चीज तपाने या पकाने के लिए पहुँचाई जानेवाली गर्मी।
***मुहा. ताव खाना* = क्रोध से गरम होना; *ताव देना* = तपाना, गरम करना; मूँछों पर ताव देना = विजय, अभिमान आदि आदि के कारण मूँछों पर हाथ फेरना।**
अधिकार मिश्रित क्रोध का आवेश।
मुहा. ताव दिखाना = अभिमानपूर्वक क्रोध प्रकट करना।
शेखी या ऐंठ की झोंक।
मुहा. ताव दिखाना = ऐसी ऐंठ या क्रोध दिखाना, जिससे लड़ाई या झगड़ा हो सके।
ऐसी इच्छा जिसमें उतावलापन अधिक हो।
मुहा. ताव चढ़ना = प्रबल इच्छा या प्रवृत्ति होना।
ताव² *प.* {देश.} कागज का तख्ता (शीट)।
तावबंद *पुं.* **{हिं.} रसायन द्रव्य जिसके प्रयोग करने से चाँदी के खोटपन का पता नहीं चलता।**
तावत् *क्रि. वि.* {सं.} उतनी देर तक, तब तक; उतनी दूर तक, वहाँ तक।
तावना *स.* {सं. तापन} तपाना, गरम करना; दुख या कष्ट पहुँचाना।
तावर *पुं.* ताँवर; धनुष की डोरी, चिल्ला।
तावरी *स्त्री.* {सं. ताप} ताप, गरमी; धूप, घाम; बुखार, ज्वर; गरमी के कारण सिर में आनेवाला चक्कर; ईर्ष्या, जलन।
तावान *पुं.* {फा.} किसी क्षति की पूर्ति के लिए दिया जानेवाला धन, दंड, डाँड़।
ताविष *पुं.* {सं.} स्वर्ग, समुद्र।
ताविषी *स्त्री.* {सं.} देवकन्या, पृथ्वी, नदी।
तावीज *पुं.* {अ. तअवीज} वह यंत्र, मंत्र या कवच, जो किसी सम्पुट में बंद करके पहना जाए; धातु का वह सम्पुट, जिसमें लिखित यंत्र आदि भरकर गले में या बाँह पर पहनते हैं, जंतर।
ताविषी *स्त्री.* {सं.} इंद्र की कथा का नाम।
ताश *पुं.* {अ. तास} एक प्रकार का जरदोजी का कपड़ा; खेलने के लिए मोटे कागज के 52 चौखूँटे छपे टुकड़े, जिन पर रंगों की बूटियाँ या तसवीरें बनी रहती हैं; वह छोटी दफ्ती, जिस पर कपड़े सीने का तागा लपेटा रहता है।
ताशा *पुं.* {अ. तास} चमड़ा मढ़ा हुआ एक प्रकार का बाजा।
तास *पुं.* = ताश।
तासीर *स्त्री.* {अ.} प्रभाव, असर; किसी वस्तु के गुण की सूचक प्रकृति।
तासु *सर्व.* {सं. तस्य} उसका।
तासों *सर्व.* {हिं. तासु} उससे।
ताहम *क्रि. वि.* {फा.} तो भी, तिस पर भी।
ताहि *सर्व.* {हिं. ता} उसको, उसे।
ताहीं *क्रि. वि.* ताई या तई।
ताहूँ *क्रि. वि.* {हिं. ता + हूँ (प्रत्य.)} तो भी, तिसपर भी।
तिआह *पुं.* {हिं. ति = तीन + विवाह} तीसरा विवाह; वह जिसका तीसरा ब्याह हुआ हो या होने को हो।
तिउरी *स्त्री.* = तेवर या त्योरी।
तिकड़म *पुं.* {सं. त्रि + क्रम?} {कर्ता-तिकड़मी} गहरी और गुप्त युक्ति या चाल।
तिकड़मी *पुं.* {हिं. तिकड़म} तरह-तरह की चालें चलकर अपना काम निकालने वाला, चालबाज।
तिकतिक *स्त्री.* {अनु.} घोड़ों, गधों को बागे बढ़ने का आदेश देने के लिए मुँह से किया जानेवाला शब्द।
तिकोना *वि.* {सं. त्रिकोण} जिसमें तीन कोने हों, तीन कोनोंवाला; *पुं.* समोसा नामक पकवान।
तिकोनिया *वि.* तिकोना।
तिक्का *पुं.* {फा. तिकः} मांस को बोटी; ताश का पत्ता जिसमें तीन बूटियाँ रहती हैं।
तिक्ख *वि.* {सं. तीक्ष्ण} तीखा; चोखा, तेज; तीव्रबुद्धि, चालाक।
तिक्त *वि.* {सं.} {*भाव.* तिक्तता} नीम या चिरायते के-से स्वादवाला, तीता।
तिक्ष *वि.* तीक्ष्ण, तीखा, चोखा।
तिक्षता *स्त्री.* = तीक्ष्णता, तीखापन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिखटी *स्त्री.* टिकठी।

तिखारना *अ.* {सं. त्रि + हिं. आखर = आक्षर} जोर देने के लिए कोई बात कई बार कहना, ताकीद करना।

तिखूँटा *वि.* तिकोना।

तिगना *स.* {देश.} देखना (दलाल)।

तिगुना *वि.* {सं. त्रिगुण} {*स्त्री.* तिगुनी} जितना हो, उसका तीन गुना।

तिच्छन *वि.* तीक्ष्ण, तीखा, तेज।

तिजरा *पुं.* {हिं. तीन (दिन) + ज्वर} हर तीसरे दिन आने वाला ज्वर, तिजारी।

तिजहरी *स्त्री.* {हिं. तीन + पहर} दिन का तीसरा पहर।

तिजारत *स्त्री.* {अ.} {*वि.* तिजारती} वाणिज्य, व्यापार, रोजगार।

तिजारी *स्त्री.* {हिं. तीजा = तीसरा} हर तीसरे दिन आनेवाला ज्वर।

तिजोरी *स्त्री.* {देश.} लोहे का वह संदूक या छोटी अलमारी, जिसमें रुपए आदि रखे जाते हैं (सेफ)।

तिड़ी *स्त्री.* {हिं. तीन} ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ होती हैं; *वि.* जो चुपचाप धीरे से गायब हो गया हो।

तिड़ी-बिड़ी *वि.* तितर-बितर।

तित *क्रि. वि.* {सं. तत्र} वहाँ, उस जगह; उधर, उस ओर।

तितऊ *पुं.* {सं.} छलनी, छाता।

तितना *क्रि. वि* उतना।

तितर-बितर *वि.* {हिं. तिधर + अनु.} जो यथास्थान या क्रम से न हो, छितराया या बिखरा हुआ; अस्त-व्यस्त।

तितरोखी *स्त्री.* {हिं.} एक छोटा पक्षी।

तितली *स्त्री.* {हिं. तीतर?} एक उड़नेवाला सुन्दर पतिंगा, जो फूलों पर मँडराता है; एक प्रकार की घास।

तितलौकी *स्त्री.* {हिं. तीता + लौआ} कड़वा कद्दू।

तितारा *पुं.* {हिं. त्रि + तार} सितार की तरह का तीन तारोंवाला एक बाजा।

तितिक्षा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* तितिक्षु} सरदी-गरमी या शारीरिक कष्ट सहने की शक्ति, सहिष्णुता; क्षमा, क्षान्ति; मर्षण।

तिते *वि.* {सं. तति} उतने, उतनी संख्या के।

तितो *वि.* {हिं.} उतना।

तितेक *वि.* {हिं. तिते + एक} उतना।

तिथि *स्त्री.* {सं.} चांद्र मास के किसी पक्ष का कोई दिन, जिसका नाम संख्या के विचार से होता है, मिती (प्रतिपदा से अमावस या पूर्णिमा तक 15 तिथियाँ होती हैं)।

तिथिपत्र *पुं.* {सं.} वह पुस्तिका जिससे यह जाना जाता है कि किस दिन कौन तिथि या तारीख होगी, पंचांग, पत्रा (एलमैनक)।

तिदरा *वि.* {हिं. तीन + फा. दर} तीन दरोंवाला।

तिन[1] *सर्व.* {सं. तेन} तिस का बहु.।

तिन[2] *'पुं.* {सं. तृण} जिनका, तृण।

तिनउर *पुं.* {सं. तृण + उर या ओर (प्रत्य.)} तिनकों का ढेर, तृनसमूह।

तिनकना *अ.* {अनु.} कुछ नाराज होना, चिड़चिड़ाना, चिढ़ना।

तिनका *पुं.* {सं. तृण} सूखी घासी आदि का टुकड़ा, तृण।

पद तिनके का सहारा = बहुत थोड़ा या नाम मात्र का सहारा।

मुहा. दाँतों में तिनका पकड़ना या लेना = क्षमा या कृपा के लिए गौ की तरह दीनता प्रकट करना; *तिनका तोड़ना* = किसी के मरने पर उसका शव जलाकर तिनका तोड़ना, जो सब प्रकार के संबंध टूटने का सूचक होता है; किसी से पूरी तरह से सब प्रकार से संबंध तोड़ना; बच्चे को नजर से बचाने के लिए टोटका करना; *तिनके को पहाड़ बनाना* = जरा-सी बात को बहुत बढ़ाना।

तिनका-तोड़ *पुं.* {हिं. तिनका + तोड़ना} पारस्परिक संबंध इस प्रकार टूटना कि फिर स्थापित न हो सके; (मृतक की दाहक्रिया के उपरांत उसके नाम पर जो तिनका तोड़ा जाता है, उसी से यह प्रयोग चला है)।

तिनगना *अ.* तिनकना।

तिनपहला *वि.* {हिं. तीन + पहल} जिसमें तीन पहल या पार्श्व हों।

तिनूका *पुं.* तिनका, तृण।

तिन्नी *स्त्री.* {सं. तृण} एक प्रकार का जंगली धान।

तिन्ह *सर्व.* तिन।

तिपति *स्त्री.* तृप्ति।

तिपाई *स्त्री.* {हिं. तीन + पाया} तीन पायों की छोटी ऊँची चौकी।

तिपाड़ *पुं.* {हिं.} तीन किनारे वाली वस्तु।

तिबारा[1] *क्रि. वि.* {हिं. तीन + बार} तीसरी बार।

तिबारा[2] *पुं.* {हिं. तीन + बार = दरवाजा} वह कोठरी जिसमें तीन दरवाजे हों।

तिबासी *वि.* {हिं. तीन + बासी} तीन दिनों का बासी। (खाद्य पदार्थ)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

तिब्बत पुं. {हिं.} हिमालय पर्वत के उत्तर में एक देश का नाम।

तिमंजिला *वि.* {हिं. तीन + अ. मंजिल} {*स्त्री.* तिमंजिली} तीन खंडों का, तीन मरातिब का (मकान)।

तिमिंगिल पुं. {सं.} एक प्रकार का बहुत बड़ा समुद्री स्तनपायी जंतु, जो बहुत-कुछ मछली के आकार का होता है, प्रायः इसकी चर्बी और हड्डियों के लिए इसका शिकार किया जाता है; कोई बहुत बड़ी मछली (व्हेल)।

तिमि *क्रि. वि.* {सं. तद् + इमि} उस प्रकार, उस तरह, वैसे।

तिमिर पुं. {सं.} अंधकार, अँधेरा; आँखों से धुँधला दिखाई देना।

तिमिरारि पुं. {सं.} सूर्य।

तिमिरारी *स्त्री.* {सं. मिमिराली} अंधकार।

तिय *स्त्री.* {सं. स्त्री} स्त्री, औरत; पत्नी, जोरू।

तियल पुं. {हिं.} स्त्रियों का एक पहनावा।

तिया *स्त्री.* = स्त्री।

तिरक पुं. {सं. त्रिक} रीढ़ के नीचे का वह स्थान, जहाँ दोनों कूल्हों की हड्डियाँ मिलती हैं; दोनों टाँगों के ऊपरवाले जोड़ का स्थान; हाथी के शरीर का वह पिछला भाग, जहाँ से दुम निकलती है।

तिरकना *अ.* {?} बाल सफेद होना; *अ.* तड़कना।

तिरखूँटा *वि.* तिकोना।

तिरगुन पुं. *वि.* त्रिगुण।

तिरछई *स्त्री.* तिरछापन।

तिरछा *वि.* {सं. तिरश्चीन} {*क्रि.* तिरछाना} जो सीधा नहीं, बल्कि इधर-उधर हट-बढ़कर हो; जिसमें टेढ़ापन या वक्रता हो, टेढ़ा, वक्र।

तिरछी चितवन *स्त्री.* बिना सिर फेरे हुए बगल की ओर देखना (प्रेम, क्रोध आदि का सूचक)।

तिरछौंहाँ *वि.* {हिं. तिरछा + औहाँ (प्रत्य.)} जो कुछ तिरछा हो।

तिरना *अ.* {सं. तरण} पानी पर तैरना या उतराना; पार होना; भवसागर से पार या आवागमन से मुक्त होना।

तिरप पुं. {सं. त्रि} नृत्य में तिहाई आने पर तीन बार पैर पटकना।

तिरपट *वि.* {देश.} तिरछा, टेढ़ा; मुश्किल, कठिन, विकट।

तिरपाई *स्त्री.* तिपाई।

तिरपाल पुं. {अ. टरपोलिन} रोगन किया हुआ एक प्रकार का टाट, जो धूप और वर्षा से रक्षा के लिए चीजों के ऊपर डाला या ताना जाता है।

तिरपित *वि.* तृप्त।

तिरबेनी *स्त्री.* त्रिवेणी।

तिरमिरा पुं. {सं. तिमिर} {*क्रि.* तिरमिराना} आँखों का एक रोग, जिसमें कभी अँधेरा और कभी उजाला दिखाई देता है; तेज रोशनी में नजर न ठहरना, चकाचौंध।

तिरमिराना *अ.* {हिं. तिरमिरा} प्रकाश या चमक के सामने (आँखों का) चौंधियाना।

तिरमुहानी *स्त्री.* {हिं. तीन + मुहाना} वह स्थान, जहाँ तीन रास्ते मिलते हों।

तिरलोक पुं. त्रिलोक।

तिरविक्रम पुं. त्रिविक्रम।

तिरवाहाँ पुं. {सं. तीर = किनारा} नदी का किनारा।

तिरस्कार पुं. {सं.} {*वि.* तिरस्कृत} अनादर अपमान; डाँट-डपट, फटकार; अनादर या उपेक्षापूर्वक त्याग।

तिरस्कृत *वि.* {सं.} {*स्त्री.* तिरस्कृता} जिसका तिरस्कार हुआ हो, अनादृत।

तिरहुत पुं. बिहार के मिथिला प्रदेश के आस-पास के भूभाग को पुराना नाम।

तिरानवें *वि.* {हिं.} नब्बे और तीन की संख्या 93.

तिराना *स.* {हिं. तिरना} पानी पर तैराना; पार करना; उबारना, उद्धार करना; *अ.* तिरना।

तिरासी *वि.* {हिं.} अस्सी और तीन की संख्या 83.

तिराहा पुं. तिरमुहानी।

तिराही *क्रि. वि* = नीचे।

तिरिन पुं. तृण।

तिरियक पुं. तिर्यक।

तिरिया *स्त्री.* {सं. स्त्री} स्त्री, औरत।

तिरिया-चरित्तर पुं. स्त्रियों की स्वाभाविक धूर्तता या कपट, जिसे पुरुष जल्दी नहीं समझ सकता।

तिरीछा *वि.* तिरछा।

तिरोधान पुं. {सं.} अन्तर्धान।

तिरोभाव पुं. {सं.} अन्तर्धान, अदर्शन, गोपन, छिपाव।

तिरोहित *वि.* {सं.} छिपा हुआ, अंतर्हित; गायब, लुप्त।

तिरीछा *वि.* तिरछा।

तिर्पित *वि.* = तृप्त।

तिर्यक् *वि.* {सं.} तिरछा, टेढ़ा; पुं. पशु, पक्षी आदि जीव।

तिर्यग्गति *स्त्री.* {सं.} तिरछी या ढेड़ी चाल; पशु योनि में जन्म लेना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिर्यग्योनि *स्त्री.* {सं.} पशु, पक्षी आदि जीव या उनकी दशा।

तिलंगा *पुं.* {सं. तैलंग} भारतीय सैनिक, देशी सिपाही।

तिलंगाना *पुं.* {सं. तैलंग} तैलंग देश।

तिलंगी¹ *वि.* {सं. तैलंग} तिलंगाने का निवासी।

तिलंगी² *स्त्री.* {हिं. तीन + लंग} आकाश में उड़ने की गुड्डी, पतंग।

तिल *पुं.* {सं.} एक प्रसिद्ध पौधा जिसके दानों से तैल निकलता है।

मुहा. तिल का ताड़ करना या बनाना = जरा-सी बात को बहुत बढ़ा देना; *तिल-तिल करके* = थोड़ा-थोड़ा करके; *तिल धरने की जगह न होना* = जरा-सी आड़ के पीछे होनेवाली कोई बहुत बड़ी बात या काम।

शरीर में होनेवाला काले रंग का बहुत छोटा प्राकृतिक चिह्न या काला दाग; उक्त चिह्न के आकार का गोदना; आँख की पुतली के बीच की बिन्दी।

तिलक *पुं.* {सं.} चंदन, केसर आदि से मस्तक, बाहु आदि पर लगाया जानेवाला साम्प्रदायिक चिह्न, टीका; राज्याभिषेक, राजगद्दी; विवाह पक्का करने की एक रीति जिसमें भावी वर के मस्तक पर टीका लगाकर उसे कुछ दिया जाता है, टीका; माथे पर पहनने का एक गहना, टीका; ग्रंथ की अर्थसूचक व्याख्या, टीका; बसंत ऋतु में फूलनेवाला एक प्रकार का पौधा; *वि.* उत्तम, श्रेष्ठ; शोभा, कीर्ति आदि बढ़ानेवाला, जैसे रघुकुल तिलक।

तिलक कामोद *पुं.* {सं.} संगीत में एक प्रकार का राग।

तिलकट *पुं.* {सं.} तिल का चूर्ण।

तिलकना *अ.* फिसलना, ताल आदि की मिट्टी का सूखकर फटना।

तिलक-मुद्रा *स्त्री.* {सं.} चंदन आदि का टीका और शंख, चक्र आदि के छापे या मुद्राएँ, जो धार्मिक लोग अपने अंगों पर लगाते हैं।

तिलकरण *पुं.* {सं.} कश्मीर के राजा का नाम।

तिलकुट *पुं.* {हिं. तिल} कुट हुए तिलों की मीठी टिकिया या पट्टी।

तिलचटा *पुं.* {हिं. तेल + चाटना} एक प्रकार का झींगुर, चपड़ा।

तिल-चावला *पुं.* {हिं. तिल + चावल} काला और सफेद मिला हुआ।

तिलछना *अ.* {अनु.} विकल होना, छटपटाना, बेचैन रहना।

तिलज *पुं.* {सं.} तिल का तैल।

तिलजटा *स्त्री.* {सं.} तिल की मंजरी।

तिलठी *स्त्री.* {हिं. तिल + यष्टि} तिल के पेड़ का वह डंठल, जिसमें से तिल झाड़ लिया गया हो।

तिलड़ी *स्त्री.* {हिं. तीन + लड़} तीन लड़ों की माला या हार।

तिलतैल *पुं.* {सं.} तिल्ली का तैल।

तिलनी *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार का धान।

तिलमिल *स्त्री.* {हिं. तिरमिर} चकाचौंध, तिरमिराहट।

तिलमिलाना *अ.* {अनु.} अचानक कष्ट या पीड़ा होने से विकल होना।

तिलस्म *पुं.* {यू. टेलिस्मन} {*वि.* तिलस्मी} जादू, इंद्रजाल; अद्‌भुत या अलौकिक व्यापार, करामात, चमत्कार।

तिलांजलि *स्त्री.* {सं.} किसी के मरने पर अँजुली में जल और तिल लेकर उसके नाम से छोड़ना; सदा के लिए परित्याग करने का संकल्प।

तिलरम *पुं.* {सं.} तिल का तैल।

तिलवट *पुं.* {हिं.} तिलपट्टी, तिलपपड़ी।

तिलवा *पुं.* {हिं.} तिल का लड्डू।

तिलस्नेह *पुं.* {सं.} तिल का तैल।

तिला *पुं.* {अ.} वह औषध-मिश्रित तेल, जिसका व्यवहार पुंसत्व की शक्ति बढ़ाने के लिए (पुरुषेंद्रिय पर मालिश के रूप) में होता है।

तिलाक *पुं.* तलाक, विवाह-विच्छेद।

तिलाम *पुं.* {अ. मुलाम से अनु.} गुलाम का गुलाम, दासानुदास, परम तुच्छ शक्ति या सेवक।

तिलेदानी *स्त्री.* {हिं. तिल्ला + फा. दानी} सिलाई के लिए सुई-तागा आदि रखने की थैली।

तिलोत्तमा *स्त्री.* {सं.} पुराणानुसार एक परम रूपवती अप्सरा।

तिलोदक *पुं.* तिलांजलि।

तिलोना *वि.* तिलौना।

तिलौंछना *स.* {हिं. तेल + औंछना} थोड़ा सा तेल लगाकर चिकना करना।

तिलौंछा *वि.* {हिं. तेल + औंछना} जिसमें तेल का मेल, स्वाद, गंध या रंगत हो।

तिलौरी *स्त्री.* {हिं. तेल + बरी} वह बरी जिसमें तिल भी मिला हो; *स्त्री.* तेलिया मैना।

तिल्ला *पुं.* {अ. तिला} कलाबत्तू, बादले आदि का काम; दुपट्टे, साड़ी आदि का बादले या कलाबत्तू का आँचल।

तिल्लाना *पुं.* तराना।

तिल्ली¹ *स्त्री.* {सं. तिलक} पेट के भीतरी भाग का वह छोटा अवयव, जो पसलियों के नीचे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाईं ओर होता है, प्लीहा; इस अंग के सूजने का रोग।

तिल्ली² *स्त्री.* {सं. तिल} तिल नाम का बीज।

तिल्लेदार *वि.* (कपड़ा) जिसमें बादले या कलाबत्तू का काम हो।

तिवई *स्त्री.* = स्त्री।

तिवान *पुं.* {?} चिन्ता, फिक्र।

तिवारी *पुं.* त्रिपाठी।

तिष्टना *स.* {सं. सृष्टि} बनाना, रचना।

तिष्ठना *अ.* {सं. तिष्ठ} ठहरना, रुकना; बैठना।

तिष्यन *वि.* तीक्ष्ण, तेज।

तिस *सर्व.* {सं. तस्मिन्} 'ता' का एक रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है।

तिसना *स्त्री.* तृष्णा।

तिस पर *क्रि. वि.* इतना होने पर भी।

तिसरैत *पुं.* {हिं. तीसरा} परस्पर विरोधी पक्षों से अलग, तीसरा मनुष्य, तटस्थ; तीसरे हिस्से का मालिक।

तिसारा *अ.* {सं. तृषा} प्यासा होना।

तिसार *पुं.* अतिसार।

तिहाई *स्त्री.* {सं. त्रि + भाग} तीसरा भाग या हिस्सा, तृतीयांश; संगीत में सम पर का और उसके ठीक पहलेवाले दो ताल या उनके खंड।

तिहानी *स्त्री.* {हिं.} वह लकड़ी जिस पर चूड़िहारे चूड़ियाँ बनाते हैं।

तिहायत *पुं.* तिसरैत।

तिहारा (रो) *सर्व.* {*स्त्री.* तिहारी} तुम्हारा।

तिहान *पुं.* {हिं.} रोष, क्रोध, गुस्सा।

तिहिं *सर्व.* तेहि।

तिहूँ *वि.* {हिं. तीन} तीनों।

तिहैया *पुं.* {हिं.} तीसरा भाग।

ती *स्त्री.* {सं. स्त्री} औरत; जोरू, पत्नी।

तीक्ष्ण *वि.* {सं.} {*भाव.* तीक्ष्णता} तेज नोक या धारवाला; प्रखर, तीव्र, तेज; उग्र, प्रचंड; जिसका स्वाद तीखा या चरपरा हो; सुनने में अप्रिय, कर्णकटु; जो सहा न जा सके।

तीक्ष्णबुद्धि *वि.* {सं.} जिसकी बुद्धि बहुत तीव्र या तेज हो।

तीक्ष्णा *स्त्री.* {सं.} केवांच, जोंक, मिर्च, तारादेवी।

तीक्ष्णाग्र *वि.* {सं.} जिसका सिर तीक्ष्ण हो।

तीखन *वि.* तीक्ष्ण।

तीखा *वि.* {सं. तीक्ष्ण} तेज धारवाला, तीक्ष्ण; तीव्र, प्रखर, तेज; जिसका स्वाद बहुत चरपरा हो; सुनने में अप्रिय, कटु; अच्छा, बढ़िया।

तीखुर *पुं.* {सं. तवक्षीर} एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ के सत्त का व्यवहार पकवान आदि बनाने में होता है।

तीज *स्त्री.* {सं. तृतीया} चांद्रमास के किसी पक्ष की तीसरी तिथि; हरतालिका।

तीजा *पुं.* {हिं. तीन} मुसलमानों में किसी के मरने पर तीसरे दिन का कृत्य; *वि.* तीसरा।

तीतर *पुं.* {सं. तित्तिर} एक प्रसिद्ध पक्षी, जो लड़ाने के लिए पाला जाता है।

मुहा. *आधा तीतर आधा बटेर* = कुछ एक प्रकार का और कुछ दूसरे प्रकार का, भद्देपन से मिला-जुला।

तीता *वि.* {सं. विक्त} तीखे और चरपरे स्वादवाला, तिक्त; कड़ुआ, कटु।

तीतुरी *स्त्री.* तितली।

तीतुल *पुं.* तीतर।

तीन *वि.* {सं. त्रीणि} दो और एक; *पुं.* दो और एक के जोड़ की सूचक संख्या।

मुहा. *तीन पाँच करना* = घुमाव-फिराव या चालाकी की बातें करना; *तीन तेरह होना* = तितर-बिहर या छिन्न-भिन्न होना, अलग-अलग होना।

कहा. *न तीन में न तेरह में* = जो किसी गिनती में न हो।

तीनों *वि.* सभी तीन।

तीनों *सर्व.* तीनों व्यक्ति या वस्तुएँ।

तीय *स्त्री.* {सं. स्त्री} स्त्री, औरत।

तीरंदाज *पुं.* {फा. तीरंदाज} {*भाव.* तीरंदाजी} तीर चलानेवाला।

तीरदांजी *स्त्री.* {फा.} तीर चलाने की विद्या या क्रिया।

तीर¹ *पुं.* {सं.} नदी का किनारा, कूल, तट; स्थान, गृह; *क्रि. वि.* पास, निकट।

तीर² *पुं.* {फा.} बाण, शर।

तीरण *पुं.* {हिं.} करंज की लता।

तीरथ *पुं.* तीर्थ।

तीरवर्ती *वि.* {सं.} तट या किनारे पर होनेवाला; पास रहनेवाला, पार्श्ववर्ती।

तीर्थंकर *पुं.* {सं.} जैनियों के 24 उपास्य देवता, जो सब देवताओं से श्रेष्ठ और मुक्तिदाता माने जाते हैं।

तीर्थ *पुं.* {सं.} वह पवित्र स्थान, जहाँ लोग धर्म भाव से पूजा, दर्शन या उपासना के लिए जाते हैं; कोई पवित्र स्थान; शास्त्र; यज्ञ; संन्यासियों का एक भेद; *वि.* तारने या मोक्ष प्रदान करनेवाला।

तीर्थयात्रा *स्त्री.* {सं.} तीर्थ स्थानों में धार्मिक फल प्राप्त करने के लिए जाना।

तीर्थयात्री *पुं.* {सं. तीर्थयात्रिन्} तीर्थयात्रा पर निकला हुआ व्यक्ति।

तीर्थराज *पुं.* {सं.} प्रयाग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीर्थाटन पुं. {सं.} तीर्थयात्रा।

तीलरवा पुं. {हिं.} एक पक्षी।

तीला पुं. {फा. तीर} {अल्पा. तीली} बड़ा या लम्बा तिनका, सींक।

तीली *स्त्री.* {हिं. तीला} छोटा तीला; सलाई के आकार की वे लंबी सींकें जिनसे पिंजरे बनते हैं; मोजे, गंजी आदि बुनने की सलाई, क्रोशिया।

तीव *स्त्री.* {सं. स्त्री} स्त्री, औरत।

तीवर पुं. {सं.} समुद्र; व्याध, शिकारी; मछुआ।

तीवरी *स्त्री.* {सं.} व्याध-पत्नी।

तीव्र *वि.* {सं.} {*भाव.* तीव्रता} अतिशय, अत्यन्त; तीक्ष्ण, तीखा, तेज; कटु, कड़ुआ; न सहने योग्य, असह्य; द्रुत गतिवाला, वेगवाला, वेगवान, तेज; कुछ ऊँचा और अपने स्थान से बढ़ा या चढ़ा हुआ (स्वर)।

तीव्रा *स्त्री.* {सं.} कुटकी, राई, तुलसी।

तीव्रानंद पुं. {सं.} शिव, महादेव।

तीस *वि.* {हिं.} बीस और दस की संख्या 30.

तीव्रगामी *वि.* {सं. तीव्रगामीन्} तीव्र गति से चलनेवाला।

तीव्रता *स्त्री.* {सं.} तीव्र होने की अवस्था, गुण या भाव, तेजी।

तीसरा *वि.* {हिं. तीन} गिनती या क्रम में तीन के स्थान पर पड़नेवाला; जिसका प्रस्तुत विषय या विवाद से कोई संबंध न हो, तटस्थ।

तीसी *स्त्री.* अलसी।

तुंग *वि.* {सं.} {भाव. तुंगता} उन्नत, ऊँचा; उग्र प्रचंड; प्रधान, मुख्य; प्रधान, मुख्य; पुं. पर्वत, पहाड़।

तुंगक पुं. {सं.} एक तीर्थ का नाम।

तुंगनाथ पुं. {सं.} हिमालय पर स्थित एक शिवलिंग।

तुंगता *स्त्री.* {सं.} ऊँचाई।

तुंड पुं. {सं.} मुख, मुँह; चंचु, चोंच; कुछ आगे निकलना हुआ मुँह, थूथन; शिव, महादेव।

तुंडि *स्त्री.* {सं.} मुँह; चोंच; नाभि।

तुंडी *वि.* {सं. तुंडिन्} आगे निकले हुए मुँह, चोंच या थूथनवाला; पुं. गणेश।

तुद[1] पुं. {सं.} पेट, उदर।

तुंद[2] *वि.* {फा.} तेज, प्रचंड, विकट।

तुंदिल *वि.* {सं.} तोंदवाला।

तुंदेल *वि.* {सं. तुंदिल} जिसकी तोंद बड़ी हो, बड़े पेटवाला।

तुंबा पुं. तूँबा।

तुंबर पुं. {सं.} विंध्य पर्वत पर रहनेवाली एक जाति।

तुंबुरु पुं. {सं.} धनिया; एक प्रकार के पौधे का बीज, जो धनिए के आकार का होता है।

तुअना *अ.* {हिं. चूना} चूना, टपकना; खड़ा न रह सकना, गिर पड़ना; (गर्भ) गिरना।

तुअर पुं. तूअर, अरहर, आढ़की।

तुई *स्त्री.* {हिं.} कपड़े पर बनी हुई एक बल।

तुक *स्त्री.* {हिं. टूक} किसी कविता या गीत का कोई चरण या पद, कड़ी; पद्य के अंतिम अक्षरों की ध्वनि-संबंधी एकता या मेल, अन्त्यानुप्रास, काफिया।

मुहा. तुक जोड़ना = भद्दी या बहुत साधारण कविता करना।

दो बातों या कार्यों का पारस्परिक सामंजस्य; किसी बात की उपयुक्तता या संगति, जैसे आखिर इस विरोध में क्या तुक है?

तुकबंदी *स्त्री.* {हिं. तुक + फा. बंदी} काव्य के गुणों से रहित और केवल तुक जोड़कर साधारण कविता रचने का काम; भद्दी या साधारण कविता जिसमें काव्य के गुण न हों।

तुकमा पुं. {फा. तुक्मः} वह फंदा, जिसमें पहनने के कपड़ों की घुंडी फँसाई जाती है।

तुकांत पुं. {हिं. तुक + सं. कार} 'तू' का प्रयोग, जो अपमानजनक या अशिष्टता सूचक माना जाता है।

तुकारना *स.* {हिं. तुकार} तूतू करके बुलाना, अशिष्ट सम्बोधन करना।

तुक्कल *स्त्री.* {फा. तुकः} बड़ी पतंग या गुड्डी।

तुक्का पुं. {फा. तुकः} वह तीर जिसमें गाँसी या फल न हो (इसका प्रयोग केवल निशाना साधने में होता है)।

तुख पुं. {सं.} छिलका, भूसी, अंडे की ऊपर का छिलका।

तुखार पुं. {सं.} हिमालय के उत्तर-पश्चिम का एक प्राचीन देश; (यहाँ के घोड़े बहुत अच्छे होते थे।); इस देश का निवासी; इस देश का घोड़ा; पुं. तुषार।

तुचा *स्त्री.* त्वचा।

तुचार *वि.* {हिं.} तीखा, पैना।

तुच्छ *वि.* {सं.} {*भाव.* तुच्छता} हीन, क्षुद्र, हेय; ओछा; नीच; अल्प, थोड़ा।

तुच्छा *स्त्री.* {सं.} नील का पौधा, तूतिया।

तुच्छातितुच्छ *वि.* {सं.} बहुत ही तुच्छ, अत्यन्त हेय या क्षुद्र।

तुझ *सर्व.* {सं. तुभ्यम्} 'तू' शब्द का वह रूप, जो उसे प्रथमा और षष्ठी के सिवा दूसरी विभक्तियाँ लगने से पहले प्राप्त होता है।

तुझे *सर्व.* {हिं. तुझ} 'तू' का कर्म और सम्प्रदान कारकों का रूप, तुझको।

तुट *वि.* {सं. त्रुट} बहुत थोड़ा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुट्टना *स.* {सं. तुष्ट} तुष्ट या प्रसन्न करना, राजी करना।

तुड़वाना *स.* {हिं. 'तोड़ना' का प्रे.} {*भाव.* तुड़ाई} दूसरे से तोड़ने का काम कराना, तुड़ाना; संबंध छोड़कर अलग होना; बड़े सिक्के को उतने ही मूल्य के छोटे-छोटे सिक्कों से बदलना, भुनाना।

तुड़ाना *स.* = तुड़वाना।

तुतरा *वि.* तोतला।

तुतराना *अ.* तुतलाना।

तुतरौंहाँ *वि.* तोतला।

तुतलाना *अ.* {हिं. तोता} (तोते की तरह) शब्दों और वर्णों का रुक-रुककर अधूरा और अस्पष्ट उच्चारण करना, जैसे बच्चों का तुतलाना।

तुत्थ *पुं.* {सं.} तूतिया।

तुन *पुं.* {सं. तुन्न} एक बड़ा पेड़, जिसके फूलों से बसन्ती रंग निकलता है।

तुनक *वि.* {फा.} दुर्बल, कमजोर; कोमल, नाजुक।

तुनकमिजाज *वि.* {फा. तुनकमिजाज} {भाव. तुनकमिजाजी} बात-बात पर रूठने या बिगड़ने वाला।

तुनतुन *स्त्री.* {अनु.} सितार का शब्द।

तुन्नवाय *पुं.* {सं.} कपड़ा सीनेवाला, दर्जी।

तुनीर *पुं.* तूणीर।

तुपक *स्त्री.* {तु. तोप} छोटी तोप; बंदूक, कड़ाबीन।

तुफंग *स्त्री.* {तु. तोप} हवाई बंदूक; वह नली जिसमें मिट्टी की गोलियाँ भरकर फूँक के जोर से चलाते हैं।

तुभना *अ.* {सं. स्तोभन} स्तब्ध होना, चकित रह जाना।

तुम *सर्व.* {सं. त्वम्} 'तू' शब्द का बहुवचन रूप, जिसका व्यवहार सम्बोधित पुरुष के लिए होता है।

तुमड़ी *स्त्री.* तूँबी।

तुमरा *सर्व.* तुम्हारा।

तुमुर (ो) *पुं.* तुमुल।

तुमुल *पुं.* {सं.} सेना या युद्ध का कोलाहल या धूम; सेना की गहरी मुठभेड़, घोर, युद्ध।

तुम्ह *सर्व.* = तुम।

तुम्हारा *सर्व.* {हिं. तुम} 'तुम' का संबंधकारक का रूप।

तुम्हें *सर्व.* {हिं. तुम} कर्म और सम्प्रदान में 'तुम' का विभक्तियुक्त रूप, तुमको।

तुरंग *पुं.* {सं. तुरग} घोड़ा; चित्त; सात की संख्या।

तुरंगप्रिय *पुं.* {सं.} यव, जौ।

तुरंगमशाला *स्त्री.* {सं.} अश्वशाला।

तुरंगमेध *पुं.* {सं.} अश्वमेघ-यक्ष।

तुरंगारि *पुं.* {सं.} करवीर, कनेर का वृक्ष।

तुरंगी *वि.* {सं.} अश्वारोही; *स्त्री.* असगंध, घोड़ी।

तुरंज *पुं.* {फा.} चकोतरा नींबू; बिजौरा नींबू।

तुरंत *क्रि. वि.* {सं. तुर} जल्दी से, अत्यन्त शीघ्र, चटपट; उसी समय, तत्काल (एट वन्स)।

तुर *क्रि. वि.* {सं. त्वरा} जल्दी से, शीघ्र; *स्त्री.* शीघ्रता, जल्दी।

तुरई *स्त्री.* तोरी।

तुरकटा *पुं.* {फा. तुर्क} मुसलमान (उपेक्षासूचक)।

तुरकाना *पुं.* {फा. तुर्क} तुर्कों का देश, तुर्किस्तान; तुर्कों का मुहल्ला या बस्ती; मुसलमान; *वि.* तुर्कों का-सा।

तुरकिन *स्त्री.* {फा. तुर्क} तुर्क जाति की स्त्री; मुसलमान स्त्री।

तुरकी *वि.* {फा.} तुर्क देश का; *स्त्री.* {फा.} तुर्किस्तान की भाषा।

तुरगानन *पुं.* {सं.} एक किन्नर जाति-विशेष।

तुरग *पुं.* {सं.} घोड़ा।

तुरत *क्रि. वि.* {सं. तुर} तुरन्त, चटपट।

तुरत-फुरत *क्रि. वि.* बहुत जल्दी।

तुरपन *स्त्री.* {हिं. तुरपना} तुरपे या सिए जाने की क्रिया या भाव; सीवन।

तुरपना *स.* {हिं. तोपा} तोपे लगाना, सिलाई करना।

तुरपनी *स्त्री.* {हिं. तुरपना} सुई।

तुरय *पुं.* {सं. तुरग} घोड़ा।

तुरया *पुं.* {हिं. अव्य.} शीघ्रता से।

तुरसिला *वि.* {हिं.} पैना, तीखा।

तुरही *स्त्री.* {सं. तूर} फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का लंबा बाजा।

तुरा {सं. तुरग} घोड़ा; *पुं. स्त्री.* त्वरा; तुरही।

तुराई[1] *स्त्री.* {सं. तूलिका} गद्दा; दुलाई।

तुराई[2] *स्त्री.* {सं. त्वरा} शीघ्रता, जल्दी।

तुराना *अ.* {सं. तुर} आतुर होना, जल्दी मचाना; *स.* तुड़ाना।

तुरावती *वि. स्त्री.* {सं. त्वरावती} वेगवूर्पक चलने या बहनेवाली।

तुरस *वि.* = तुर्श।

तुरसि *स्त्री.* {सं. त्वरा} वेग, तेजी; जल्दबाजी; फरती।

तुरसी *स्त्री.* = तुर्शी।

तुरित *वि.* त्वरित; *क्रि. वि.* = तुरंत।

तुरिया' *स्त्री.* = 'तुरीय'; *वि.* तुरीय।

तुरी *स्त्री.* तुरीय, फूलों का गुच्छा, मोती की लड़ी।

तुरीय *वि.* {सं.} चतुर्थ, चौथा; *स्त्री.* वाणी का वह रूप या अवस्था, जब वह मुँह में आकर उच्चरित होती है, बैखरी; प्राणियों की चार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवस्थाओं में से अंतिम अवस्था जो मोक्ष है (वेदांत); पुं. निर्गुण ब्रह्म।

तुरीयक *वि.* {सं.} चतुर्थ, चौथा।

तुरुक *पुं.* {*स्त्री.* तुरुकिन, तुरुकी} = तर्क।

तुरुष्क *पुं.* {सं.} तुर्क जाति, तुर्किस्तान का रहनेवाला मनुष्य; तुर्किस्तान देश; इस देश का घोड़ा।

तुरुप *पुं.* {हिं.} ताश का खेल-विशेष जिसमें एक रंग-प्रधान मान लिया जाता है।

तुर्क *पुं.* {सं. तुरुष्क} तुर्किस्तान का निवासी; मुसलमान।

तुर्कमान *पुं.* {फा. तुर्क} तुर्क जाति का मनुष्य; तुर्की घोड़ा।

तुर्की *वि.* {फा. तुर्क} तुर्किस्तान का; *स्त्री.* तुर्किस्तान की भाषा; तुर्किस्तान का घोड़ा; तुर्कों का-सा अभिमान या अक्खड़पन।

तुर्रा *पुं.* {अ.} वह पर या कलगी जो पगड़ी में लड़ाई जाती है, गोशवारा।

मुहा. *तुर्रा यह कि* = तिसपर विशेषता यह कि।

फूलों का वह गुच्छा, जो दूल्हे के कान के पास लटकता रहता है; पक्षियों के सिर पर की कलगी या चोटी।

तुर्श *वि.* {भाव. तुर्शी} {*संज्ञा.* तुर्शी} खट्टा।

तुर्शी *स्त्री.* {फा.} खट्टापन, खटाई; व्यवहार, बातचीत आदि में दिखाई जानेवाली कटुता।

तुल *वि.* तुल्य बराबर।

तुलना[1] *स्त्री.* {सं.} कई वस्तुओं के गुण, मान आदि के एक दूसरे से कम या अधिक अथवा अच्छी या बुरी होने का विचार, मिलान, तारतम्य; सादृश्य, समानता; उपमा।

तुलना[2] *अ.* {सं. तुल} तराजू पर तौला जाना; तौला या मान में बराबर उतना; आधार पर इस प्रकार जमकर खड़ा होना या ठहरना कि कोई भाग किसी ओर झुका न रहे; नियमित होना, बँधना; गाड़ी के पहियों का औंगा जाना; उद्यत होना; किसी से युक्त होना।

तुलनात्मक *वि.* {सं.} तुलना के विचार से होने या किया जानेवाला।

तुलवाना *स.* {हिं. तौलाना} {*संज्ञा* तुलवाई} तौल या वजन कराना; गाड़ी के पहियों में तेल दिलाना, औंगवाना।

तुलनीय *वि.* {सं.} तुलना के योग्य।

तुलसी *स्त्री.* {सं.} पवित्र माना जानेवाला एक छोटा पौधा, जिसकी पत्तियों में गंध होती है।

तुलसीदल *पुं.* {सं.} तुलसी के पौधे की पत्तियाँ, जो देवताओं पर चढ़ाई जाती हैं।

तुलसीवन *पुं.* = वृन्दावन।

तुला *स्त्री.* {सं.} तुलना, मिलान; गुरुत्व या भार नापने का यंत्र, तराजू, काँटा; मान, तौल; बारह राशियों में से सातवीं राशि।

तुलाई *स्त्री.* {सं. तुलपटी} तौलने का काम, भाव या मजदूरी; तूलने या औंगने का भाव या मजदूरी; *स्त्री.* दुलाई।

तुलादान *पुं.* {सं.} सोलह महादानों में से एक, जिसमें किसी मनुष्य की तौल के बराबर अन्न या दूसरे पदार्थ दान किए जाते हैं।

तुलाना[1] *अ.* {हिं. तुलना} आ पहुँचना; पूरा उतरना; नष्ट हो जाना, न रह जाना।

तुलाना[2] *अ.* {सं. तुल्य} किसी के तुल्य या समान होना, बराबर होना; *स.* तुलवाना।

तुलावा *पुं.* {हिं.} वह लकड़ी जिसके द्वारा पहिया निकाला जाता है।

तुलि *स्त्री.* {हिं.} जुलाहे की कूंची, चित्रकार की कूची।

तुलिका *स्त्री.* {सं.} खंजन पक्षी।

तुलित *वि.* {सं.} परिमित, बराबर, तुला हुआ।

तुलिनी *स्त्री.* {सं.} शाल्मली, सेमल का पेड़।

तुलापत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जिसमें आय, व्यय, बचत, लाभ आदि का लेखा लिखा रहता है, तलपट। (बैलेन्स शीट)।

तुल्य *वि.* {सं.} {*भाव.* तुल्यता} समान, बराबर; सदृश्य, अनुरूप।

तुल्ययोगिता *स्त्री.* {सं.} एक अलंकार जिसमें बहुत से उपमेयों का एक ही धर्म बतलाया जाता है।

तुल्यरूप *वि.* {सं.} रूप में तुल्य।

तुव *सर्व.* तव।

तुवरिका *स्त्री.* {सं.} गोचीचंदन, अरहर।

तुवरी *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार का धान, अरहर।

तुष *पुं.* {सं.} अन्न का छिलका, भूसी: अंडे का ऊपरी छिलका।

तुषानल *पुं.* {सं.} भूसी या घास-फूस की आग, जिसमें लोग प्रायश्चित्त करने के लिए जल मरते थे।

तुषार *पुं.* {सं.} हवा में मिली हुई भाप जो जमकर पृथ्वी पर गिरती है, पाला; हिम, बरफ; तुखार।

तुषाररेखा *स्त्री.* {सं.} पर्वतों पर की वह कल्पित रेखा, जिसके ऊपरी भाग पर बरफ बराबर जमा रहता है, कभी गलता नहीं, और नीचे के भाग का बरफ गरमी के दिनों में गल जाता है (स्नो-लाइन)।

तुषारोद्रि *पुं.* {सं.} हिमालय पर्वत।

तुषिन *पुं.* {सं.} एक प्रकार के गणदेवता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुष्ट *वि.* {सं.} {भाव. तुष्टता} जिसका तोष या तृप्ति हो चुकी हो, तुप्त; प्रसन्न, खुश।

तुष्टना *अ.* {सं. तुष्ट} तुष्ट या प्रसन्न होना।

तुष्टि *स्त्री.* {सं.} किसी विषय या कार्य के ठीक तरह से होने पर मन में होनेवाली प्रसन्नता और सन्तोष, परितोष; किसी बात या काम से अच्छी तरह जी भर जाना, तृप्ति।

तुष्टु *पुं.* {सं.} कान में पहननेवाला गहना।

तुष्य *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।

तुस *पुं.* {सं.} तुष, भूसा।

तुसी¹ *स्त्री.* {सं. तुष} भूसी।

तुसी² *सर्व. वि.* {पं.} आप।

तुहिं *सर्व.* {हिं. तू} तुझको।

तुहिन *पुं.* {सं.} पाला, कुहरा, तुषार; हिम, बरफ; चाँदनी, ज्योत्स्ना; ठंडक, शीत।

तुहिनांशु *पुं.* {सं.} चंद्रमा।

तुहिनाचल *पुं.* {सं.} हिमालय।

तूँ *सर्व.* तू।

तूँबा *पुं.* {सं. तंबुक} {*स्त्री.* अल्पा. तूँबी} कड़ुआ गोल कद्दू, तितलौकी; कद्दू को खोखली करके बनाया हुआ वह पात्र, जो साधु जल के लिए अपने साथ रखते हैं, तुम्बा।

तूँबी *स्त्री.* {हिं.} सूखे कद्दू का बनाया हुआ जलपात्र।

तूँबा-फेरी *स्त्री.* इधर की चीज उधर करना या एक की चीज दूसरे को देना।

तू *सर्व.* {सं. त्वम्} मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम।

मुहा. तू-तुकार या तूतू-मैंमैं करना = अशिष्ट शब्दों में झगड़ा करना।

तूअर *पुं.* {सं. तूवरी} अरहर का पौधा और उसके दाने या बीज।

तूख *पुं.* {हिं.} तिनका, सींक का टुकड़ा।

तूखना *स.* {सं. तोषण} तुष्ट या प्रसन्न करना।

तूटना *अ.* टूटना।

तूठना *अ.* {सं. तुष्ट} संतुष्ट होना, तृप्त होना; प्रसन्न होना।

तूण *पुं.* {सं.} तूणीर।

तूणी *स्त्री.* {सं.} वून नामक वृक्ष, तरकश, वात रोग।

तूणक *पुं.* {सं.} एक प्रकार का छंद।

तूणीर *पुं.* {सं.} तीर रखने का चोंगा, तरकश, भाथा।

तूत *पुं.* = शहतूत।

तूतिया *पुं.* नीलाथोथा।

तूती *स्त्री.* {फा.} छोटी जाति का तोता; एक छोटी चिड़िया, जो बहुत सुन्दर बोली बोलती है; मुँह से बजाने का एक छोटा बाजा।

मुहा. किसी की तूती बोलना = किसी की खूब चलती होना या प्रभाव जमना।

कहा. नक्कारखाने में तूती की आवाज = भीड़-भाड़ या बहुत बड़े लोगों के सामने कही हुई ऐसी बात, जिस पर किसी का ध्यान न जाए।

तुदा *पुं.* {फा.} राशि, ढेर; सीमा का चिह्न, हदबन्दी; मिट्टी का वह दूह, जिस पर निशाना साधते हैं।

तून *पुं.* {सं. तुन्न} तुन का पेड़, तूल नाम का लाल कपड़ा; *पुं.* तूण (तूणीर)।

तूफान *पुं.* {अ., चीनी ताईफून} समुद्रतल पर चलनेवाली बहुत तेज आँधी; वह तेज आँधी जिसमें खूब धूल उड़े और पानी बरसे; विपत्ति, आफत; हल्ला-गुल्ला; झगड़ा, बखेड़ा; झूठा दोषारोपण या अभियोग, तोहमत।

तूफानी *वि.* {फा.} बखेड़ा करनेवाली, उपद्रवी; झूठा अभियोग या कलंक लगानेवाला; उग्र, प्रचंड; तूफान की तरह तेज, जैसे तूफानी दौरा।

तूमड़ी *स्त्री.* {हिं. तूँबा} छोटा तूँबा; तूँबी का बना हुआ सँपेरों का एक प्रकार का बाजा।

तूमतड़ाक *स्त्री.* {अ. तुमार + अनु. तड़ाक} तड़क-भड़क, शान-शौकत, ठसक।

तूमना *स.* {सं. स्तोम} रुई के रेशे या हल अलग-अलग करना; धज्जी-धज्जी करना; हाथ से मसलना।

तूमरी *स्त्री.* तूँबी।

तूमार *पुं.* {अ.} साधारण बात का व्यर्थ विस्तार, बात का बतंगड़।

तूय *पुं.* {सं.} जल, पानी, जल्दी, शीघ्रता।

तूया *स्त्री.* {हिं.} काफी सरसों।

तूर¹ *पुं.* {सं.} नगाड़ा; तुरही।

तूर² *पुं.* {अ.} मध्य एशिया का एक प्रसिद्ध पहाड़ जिस पर हजरत मूसा को ईश्वरीय प्रकाश दिखाई पड़ा था।

तूरज *पुं.* तूर्य।

तूरण(न) *क्रि. वि.* {सं. तूर्ण} चट-पट, तुरन्त; शीघ्र, जल्दी।

तूरना *स.* = तोड़ना।

तूरा *पुं.* तूरही।

तूर्त *अव्य.* {सं.} शीघ्र, जल्दी।

तूर्ण *क्रि. वि.* {सं.} शीघ्र, जल्दी।

तूर्य *पुं.* {सं.} तुरही; नगाड़ा।

तूल¹ *पुं.* {सं.} आकाश; कपास, सेमल आदि के डोडों के अंदर का घुआ, रुई।

तूल² *पुं.* {हिं. तून} चटकीले लाल रंग का सूती कपड़ा; गहरा लाल रंग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तूल[2] *वि.* {सं. तूल्य} तुल्य, समान।

तूल[4] *पुं.* {अ.} लम्बाई, विस्तार।

मुहा. तूल खींचना या पकड़ना = किसी बात का बहुत बढ़ जाना।

पद तूल कलाम = लंबी चौड़ी बातें; कहा-सुनी; *तुल-तबील* = लंबा चौड़ा।

तूलना *स.* {हिं. तुलना} पहिए की धुरी में तेल या चिकना देना, औंगना।

तूलमतूल *क्रि. वि* {अ. तूल = लंबाई} लंबाई के बल; आमने-सामने।

तूलिका *स्त्री.* {सं.} चित्र अंकित करने की कलम या कूँची।

तूली *स्त्री.* तूलिका, नील का पौधा, जलाहे की कूँची।

तुष्णी *वि.* {हिं.} मौन, चुप।

तुष्णीक *वि.* {सं.} मौन साधनेवाला।

तूस[1] *पुं.* {सं. तुष} भूसी; भूसा।

तूस[2] *पुं.* {सं. दूष्य, तिब्बती थोश} एक प्रकार का बढ़िया ऊन, जिससे दुशाले बनते हैं, पशम, पशमीना; इस ऊन का बना कपड़ा, विशेषत: चादर।

तूसना *अ., स.* {सं. तुष्ट} संतुष्ट, तृप्त या प्रसन्न होना या करना।

तृखा *स्त्री.* तृषा।

तृजग *वि.* तिर्यक्।

तृण *पुं.* {सं.} वह उद्भिज जिसमें हीर या काठ नहीं होता, जैसे घास, सरपत आदि।

मुहा. (मुँह या दाँतों) तृण गहना या पकड़ना = गौ की तरह हीनता या दीनता प्रकट करना; *तृण तोड़ना* = कोई सुन्दर वस्तु या प्राणी देखकर उसे नजर से बचाने के लिए टोटके के रूप में तिनका तोड़ने की प्रक्रिया करना।

तृणगंधा *स्त्री.* {सं.} शालपर्णी वृक्ष।

तृणचर *पुं.* {सं.} गोमेदक मणि।

तृणजलौंका *स्त्री.* {सं.} एक तरह की जौंक।

तृणमय *वि.* {सं.} घास का बना हुआ।

तृणवत् *वि.* {सं.} अत्यन्त तुच्छ, कुछ भी नहीं।

तृतीय *वि.* {सं.} तीसरा।

तृतीयांश *पुं.* {सं.} तीसरा भाग।

तृतीया *स्त्री.* {सं.} चंद्र मास के किसी पक्ष की तीसरी तिथि, तीज; व्याकरण में करण कारक।

तृन *पुं.* तृण।

तृपति *स्त्री.* तृप्ति।

तृप्त *वि.* {सं.} जिसकी इच्छा या वासना पूरी हो चुकी हो, अघाया हुआ।

तृप्ति *स्त्री.* {सं.} इच्छा या वासना पूरी होने पर मिलनेवाली शांति, संतोष या आनंद।

तृषा *स्त्री.* {सं.} प्यास; इच्छा, अभिलाषा: लोभ, लालच।

तृषित *वि.* {सं.} प्यासा; अभिलाषी, इच्छुक; ललचाया हुआ।

तृष्ण *वि.* {सं.} जिसे तृषा लगी हो, प्यासा; किसी प्रकार की अभिलाषा या कामना रखनेवाला।

तृष्णा *स्त्री.* {सं.} कोई वस्तु पाने के लिए आकुल करनेवाली इच्छा, वासना; लोभ, लालच; प्यास।

तृस्ना *स्त्री.* = तृष्णा।

तें *विभ.* परसर्ग; {सं. तस्} देखो।

तेंदुआ *पुं.* {देश.} चीते की तरह का एक हिंसक पशु।

तेंदू *पुं.* {सं. तिंदुका} मझोले आकार का एक वृक्ष जिसकी लकड़ी आबनूस कहलाती है।

ते[1] विभ. परसर्ग से।

ते[2] *सर्व.* {सं. ते} वे लोग।

तेइ *सर्व.* = उसे। (व्रज)

तेउ *पुं.* {सं. तेजस्, हिं. तेज} तेज; अग्नि, आग।

तेऊ *पुं.* {हिं. ते = वे + ऊ = भी} वे भी।

तेखना *अ.* {हिं. तेहा} क्रुद्ध होना।

तेग *स्त्री.* {अ.} तलवार।

तेगा *पुं.* {अ. तेग} खड्ग।

तेज[1] *पुं.* {सं. तेजस्} दीप्ति, कान्ति, चमक, आभा; पराक्रम, बल; वीर्य; सार भाग, तत्व; ताप, गरमी; तेजी, प्रखरता; प्रताप, रोब-दाब; पाँच महाभूतों में से तीसरा, जिसमें ताप और प्रकाश होता है, अग्नि।

तेज[2] *वि.* {फा. तेज} तीक्ष्ण धारवाला, जिसकी धार पैनी हो; जल्दी चलनेवाला; चटपट काम करनेवाला, फुरतीला; तीक्ष्ण, तीता, झालदार; भाव या दर में बढ़ा हुआ, महँगा; उग्र, प्रचंड; तुरंत अधिक प्रभाव दिखलानेवाला; प्रखर या तीव्र बुद्धिवाला।

तेजक़दमी *स्त्री.* {फा.} तेज क़दम बढ़ाना।

तेजपत्ता *पुं.* {सं. तेजपत्र} दालचीनी की जाति के एक पेड़ का पत्ता, जो तरकारियों में मसाले की तरह डाला जाता है।

तेजवान, तेजवान् *वि.* {सं. तेजोवान्} जिसमें तेज हो, तेजस्वी; वीर्यवान; बलवान।

तेजस् *पुं.* तेज।

तेजसी *वि.* {हिं.} तेजयुक्त, तेजस्वी।

तेजस्विनी *स्त्री.* {सं.} मालकंगनी।

तेजस्वी *वि.* {सं. तेजस्विन्} {भाव. तेजस्विता} जिसमें तेज हो, तेज से युक्त; प्रतापी।

तेजाब *पुं.* {फा. तेजाब} {*वि.* तेजाबी} क्षार का वह तरल और अम्ल सार, जो द्रावक होता है (एसिड)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGang

तेजाबी *वि.* {फा. तेजाब} तेजाब-संबंधी; तेजाब की सहायता से बनाया या ठीक किया हुआ; *पुं.* वह सोना, जो पुराने गहनों को गलाकर और तेजाब की सहायता से अच्छी तरह साफ करके तैयार किया जाता है।

तेजायतन *पुं.* {सं. तेज + आयतन} तेज का भंडार. परम तेजस्वी; **उदा.** घोर तेजायतन घोर राशी–तुलसी।

तेजी *स्त्री.* {फा. तेजी} तेज होने का भाव; तीव्रता, प्रखरता; उग्रता, प्रचण्डता; शीघ्रता, जल्दी; भाव या दर का तेज होना, महँगी, 'मंदी' का उलटा।

तेजोदीप्त *वि.* {सं.} तेजपूर्ण, तेजोमय।

तेजोमय *वि.* {सं.} बहुत आभा, कान्ति, तेज या ज्योतिवाला।

तेजोहत *वि.* {सं.} जिसका तेज नष्ट हो गया हो, श्रीहत।

तेता *वि. पुं.* {*स्त्री.* तेती} उतना।

तेजोधातु *पुं.* {सं.} पित्त।

तेजोवीज *पुं.* {सं.} मज्जा।

तेजोमात्रा *पुं.* {सं.} चमकीला भाग।

तेजोराशि *स्त्री.* {सं.} तेज का समूह।

तेजोवृक्ष *पुं.* {सं.} अरणीवृक्ष।

तेतिक *वि.* {हिं. तेता} उतना।

तेतो *वि.* उतना।

तेपि *सर्व.* तेऊ।

तेन *पुं.* {सं.} गाने का एक अंग।

तेमनी *स्त्री.* {सं.} चूल्हा।

तेमरू *पुं.* {हिं.} तेंदू का पेड़, अखनूस।

तेरस *स्त्री.* {सं. त्रयोदशी} किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि, त्रयोदशी।

तेरह *वि.* {सं. त्रयोदश} दस और तीन; *पुं.* दस और तीन का जोड़।

मुहा. तीन तेरह होना = नष्ट-भ्रष्ट या छिन्न-छिन्न होना; *तेरह बाइस करना* = इधर-उधर की बात करना, बहानेबाजी करना।

तेरहीं *स्त्री.* {हिं. तेरह} किसी के मरने के दिन से तेरहवाँ दिन जिसमें पिंडदान होता है और ब्राह्मण-भोजन कराके घर के लोग शुद्ध होते हैं।

तेरा *सर्व.* {सं. तव} {*स्त्री.* तेरी} मध्यम पुरुष एक वचन सर्वनाम 'तू' का संबंधकारक रूप।

तेरुस *पुं.* त्योरस; *स्त्री.* तेरस।

तेल *पुं.* {सं. तैल} बीजों आदि से निकाला जानेवाला अथवा आपसे आप निकलने वाला प्रसिद्ध चिकना तरल पदार्थ, चिकना, रोगन; विवाह से पहले एक रीति, जिसमें वर और वधू को हलदी मिलाकर तेल लगाया जाता है।

मुहा. तेल उठना या चढ़ना = विवाह से पहले उक्त रस्म होना।

किसी पशु की चरबी जिसका उपयोग प्रायः औषध के रूप में होता है, जैसे मछली का तेल, साँड़ का तेल।

तेलुगु *स्त्री.* {सं. त्रिकलिंग} तैलंग देश की भाषा।

तेलहन *पुं.* {हिं. तेल} वे बीज जिनसे तेल निकलता है, जैसे सरसों, तिल।

तेलहा *वि.* {हिं. तेल} {*स्त्री.* तेलही} जिसमें तेल हो या लगा हो; तेल के योग से बना या पका हुआ, वैसे तेलही पूरी।

तेलिया *वि.* {हिं. तेल} तेल की तरह काला, चिकना और चमकीला; *पुं.* काला रंग; इस रंग का घोड़ा; सींगिया नामक विष।

तेलिया-कत्था *पुं.* {हिं.} खैर कत्था।

तेलिया पखान *पुं.* {हिं. तेलिया + पाषाण} एक प्रकार का चिकना पत्थर।

तेलिया मैना *स्त्री.* एक प्रकार की मैना (चिड़िया)।

तेलिया सुहागा *पुं.* {हिं.} चिकना सुहागा।

तेली *पुं.* {हिं. तेल} {*स्त्री.* तेलिन} एक जाति जो तिल, सरसों आदि पेरकर तेल निकालने का काम करती है।

मुहा. तेली का बैल = हर समय काम में जुता रहनेवाला व्यक्ति।

तेलौना *वि.* {हिं. तेल + औना (प्रत्य.)} जिसमें तेल हो, लगा हो या तेल से युक्त, स्निग्ध; जिसमें सुगंधित तेल या फुलेल लगा हो।

तेवन *पुं.* {सं. अंतेवन} घर या महल के सामने का छोटा बाग, नजर-बाग; आमोद-प्रमोद का स्थान या वन; क्रीड़ा मनोविनोद।

तेवर[1] *पुं.* {सं. त्रिकुटी, पु. हिं. तिउरी} देखने का ढंग, दृष्टि, चितवन।

मुहा. तेवर चढ़ना = दृष्टि का क्रोधपूर्ण होना। *तेवर बदलना या बिगड़ना* = व्यवहार में क्रोध या उदासीनता प्रकट करना; भौंह, भृकुटी।

तेवर[2] *पुं.* {हिं. तीन} स्त्रियों के पहनने के तीन कपड़ों (साड़ी, ओढ़नी और चोली) का समूह।

तेवरसी *स्त्री.* {हिं.} ककड़ी, खीरा, फूट।

तेवान *पुं.* {?} चिंता, फिक्र; सोच, विचार।

तेवाना *अ.* {?} चिंता या फिक्र करना; विचार करना, सोचना।

तेह *पुं.* {हिं. तेखना} क्रोध, रोष, गुस्सा; घूमंड; तेजी, प्रचंडता; तीखापन, तीव्रता।

तेहरा *वि.* {सं. त्रि + सर} तीन परतों या लपेटों का; जो एक साथ तीन हों; तिगुना (क्व.)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेहराना *स.* {हिं. तेहरा} कोई काम दोहराने के बाद फिर तीसरी बार करना, देखना या जाँचना।

तेहवार *पुं.* त्योहार।

तेहा *पुं.* {हिं. तेह} क्रोध, गुस्सा; अहंकार, घमंड; उग्रता, तेजी।

तेहि *सर्व.* {सं. ते} उसको, उसे।

तेही *वि.* {हिं. तेह + ई (प्रत्य.)} गुस्सा करनेवाला, क्रोधी; अभिमानी, घमंडी; उग्र स्वभाववाला।

तैं[1] *सर्व.* {सं. त्वम्} तू; तूने। (व्रज)।

तैं[2] *विभ.* {हिं. ते} से। (व्रज)।

तै[1] *क्रि. वि.* {सं. तत्} उतना।

तै[2] *पुं.* {अ.} निपटारा, फैसला; *वि.* जिसका निपटारा या फैसला हो चुका हो, निपटा हुआ, निर्णीत; जो पूरा हो चुका हो; ठहराया या पक्का किया हुआ, निश्चित।

तै-तमाम *वि.* {अ.} जिसका निपटारा हो चुका हो, जो पूरा या निष्पन्न हो चुका हो।

तैखानी *पुं.* {हिं.} तहखाना।

तैग्म्य *पुं.* {सं.} तीक्ष्णता।

तैजसी *स्त्री.* {सं.} गजपिघली।

तैतल *पुं.* {हिं.} एक ऋषि।

तैतिर *पुं.* {सं.} तीतर पक्षी, गैंडा।

तैना *स.* तपाना; *अ.* तपना।

तैनात *वि.* {अ. तअय्युन} {संज्ञा तैनाती} किसी काम पर लगाया या नियत किया हुआ, नियुक्त मुकर्रर।

तैयार *वि.* {अ.} जो काम में आने के योग्य और ठीक हो गया हो, दुरुस्त, लैस।

मुहा. हाथ तैयार होना = किसी काम में हाथ का अभ्यस्त और कुशल होना।

उद्यत, तत्पर, मुस्तैद; प्रस्तुत; उपस्थित, मौजूद; हृष्टपुष्ट।

तैयारी *स्त्री.* {अ. तैयार + हिं. ई (प्रत्य.)} तैयार होने की क्रिया या भाव दुरुस्ती; तत्परता, मुस्तैदी। शरीर की पुष्टता, मोटाई; किसी बड़े काम के लिए प्रबंध आदि के रूप में पहले से होनेवाले काम; सजावट।

तैयो *क्रि. वि.* {सं. तद्यपि} तिसपर भी, तो भी।

तैरना *अ.* {सं. तरण} पानी पर उतराना; हाथ, पैर आदि हिलाकर पानी में उतराते हुए आगे-पीदे होना, तरना, पैरना।

तैराई *स्त्री.* {हिं. तैरना + आई (प्रत्य.)} बहुत अच्छी तरह तैरनेवाला।

तैराक *वि., पु.* {हिं. तैरना + आक (प्रत्य.)} बहुत अच्छी तरह तैरनेवाला।

तैराकी *स्त्री.* {हिं. तैराक + ई} तैरने की कला या विद्या; तैरने का कार्य।

तैराना *स.* {हिं. तैरना का प्रे.} दूसरे को तैरने में प्रवृत्त करना; घुसाना, जैसे पेट में कटार तैराना।

तैलंग *पुं.* {सं. त्रिकलिंग} दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश।

तैलंगी *पुं.* {हिं. तैलंग + ई (प्रत्य.)} तैलंग देश का निवासी; *स्त्री.* तैलंग देश की भाषा।

तैल *पुं.* {सं.} {*भाव.* तैलत्व} तेल।

तैलचित्र *पुं.* {सं.} मोटे कपड़े पर तेल मिले हुए रंगों की सहायता से बना हुआ चित्र जो बहुत स्थायी होता है (ऑयल पेंटिंग)।

तैलपट *पुं.* {सं.} तेल के योग से बना हुआ एक प्रकार का कपड़ा जिसमें से पानी नहीं रिसता।

तैसा *वि.* {सं. तादृश} उस प्रकार या तरह का, 'वैसा' का पुराना रूप।

तैसे *क्रि. वि.* वैसे।

तों *क्रि. वि.* त्यों।

तोंअर *पुं.* तोमर।

तोंद *स्त्री.* {सं. तुंड} फूले हुए पेट का आगे बढ़ा या निकला हुआ भाग।

तोंदल *वि.* {हिं. तोंद + ल (प्रत्य.)} जिसका पेट आगे निकला हो, तोंदवाला।

तोंदी *स्त्री.* {सं. तुंड} नाभी, ढोंढ़ी।

तोर *पुं.* तोमर।

तोंहका *सर्व.* = तुम्हें।

तो[1] *निपा.* {सं. तु} एक निपात जिसका प्रयोग किसी शब्द या बात पर जोर देने या ऐकान्तिकता प्रकट करने के लिए अथवा कभी-कभी यों ही होता है, जैसे--मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरों न कोई-मीरा।

तो[2] *क्रि. वि.* {सं. तद्} उस दशा में, तब।

तो[3] *सर्व.* {सं. तव} तुझ; (व्रज); तेरा।

तो[4] *अ.* {हिं. हतो = था} था (क्व.)।

तोइ *पुं.* {सं. तोय} पानी, जल।

तोई *स्त्री.* {देश.} मगजी, गोट।

तोख *पुं.* तोष।

तोटक *पुं.* {सं.} एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार-चार सगण होते हैं।

तोड़ *पुं.* {हिं. तोड़ना} तोड़ने की क्रिया या भाव; नदी आदि के जल का तेज बहाव, तरखा; प्रभाव, वार या दाँव से बचने के लिए की हुई युक्ति, प्रतिकार, मारक; *क्रि. वि.* बार, दफा, जैसे आज चार तोड़ पानी बरसा।

तोड़क *वि.* {हिं. तोड़ना} तोड़नेवाला।

तोड़ना *स.* {सं. तोडन} आघात या झटके से किसी पदार्थ के खंड या टुकड़े करना, अंग को मूल वस्तु से जुदा करना; किसी वस्तु का कोई अंग खंडित, भग्न या बेकाम करना; खेत में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

पहले-पहल हल चलाना; क्षीण, दुर्बल या अशक्त करना; वैभव, गुण, योग्यता आदि कम करना या घटाना; संघठन, व्यवस्था, स्वरूप आदि नष्ट-भ्रष्ट करना; निश्चय, आज्ञा, नियम आदि का उल्लंघन करना।

तोड़-फोड़ पुं. {हिं. तोड़ना : फोड़ना} किसी चीज को तोड़-फोड़कर नष्ट करने की क्रिया या भाव; ध्वंसन।

तोड़र पुं. {हिं. तोड़ा} हाथ या पैर में पहनने का तोड़ा नामक गहना।

तोड़वाना स. तुड़वाना।

तोड़ा[1] पुं. {हिं. तोड़ना} सोने, चाँदी आदि की लच्छेदार और चौड़ी जंजीर जो हाथों, पैरों या गले में पहनी जाती है; रुपए रखने की टाट की वह थैली, जिसमें 1000 आते हैं।

मुहा. तोड़े उलटना या गिनना = बहुत धन देना।

घाटा, टोटा, कमी; किसी चीज का आवश्यकता से कम होना, ऊनता, घटती (डेफिसिट); नाच का कुछ विशेष प्रकार का कोई टुकड़ा या विभाग।

तोड़ा[2] पुं. {सं. तुंड या हिं. टोटा} तोड़ेदार बन्दूक छोड़ने की नारियल की जटा की रस्सी।

तोड़ेदार बंदूक *स्त्री.* पुरानी चाल की वह बन्दूक जो तोड़ा या पलीता लगाकर छोड़ी जाती थी।

तोण पुं. {सं. तूण} तरकश।

तोत पुं. {फा. तोद:} ढेर, राशि।

तोतई *वि.* {हिं. तोता + ई (प्रत्य.)} तोते के रंग का-सा, धानी।

तोतक पुं. {हिं. तोता} पपीहा।

तोतरंगी *स्त्री.* {हिं.} चिड़िया।

तोतराना *अ.* तुतलाना।

तोतला *वि.* {हिं. तुतलाना} तुतलाकर या अस्पष्ट बोलनेवाला।

तोता पुं. {फा. तूती} हरे या लाल रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी, जो आदमियों की बोली की नकल करता और इसीलिए पाला जाता है, शुक, कीर, सूआ, सुग्गा।

मुहा. हाथों के तोते उड़ जाना = भारी अनिष्ट के कारण बहुत घबरा जाना; *तोते की तरह आँखें फेरना या बदलना* = बहुत बेमुरौवत होना; *तोता पालना* = जान-बूझकर कोई दुर्व्यसन या रोग अपने पीछे लगाना या बढ़ाना।

तोताचश्म पुं. {फा.} तोते की तरह आँखें फेर लेनेवाला, बेमुरौवत।

तोतापरी पुं. एक प्रकार का आम (फल)।

तोतारटंत *स्त्री.* तोते की तरह रटी हुई बात, कहने की क्रिया या भाव।

तोत्र पुं. {सं.} जानवरों को हाँकने हेतु चाबुक-घड़ी।

तोद पुं. {सं.} कष्ट; पीड़ा, वेदना।

तोदन पुं. {सं.} चाबुक, कोड़ा; व्यथा, कष्ट; पीड़ा, दर्द।

तोप *स्त्री.* {तु.} एक प्रसिद्ध आधुनिक अस्त्र जिसमें गोला रखकर युद्ध के समय शत्रुओं पर छोड़ा जाता है।

मुहा. तोप कीलना = तोप की नली इस प्रकार बंद करना कि वह गोला न छोड़ सके; *तोप की सलामी उतारना* = किसी मान्य अधिकारी के आने अथवा किसी महत्वपूर्ण घटना के समय तोप में खाली बारूद भरकर तुमुल शब्द करना।

तोपखाना पुं. {तु. तोप + फा. खान:} वह स्थान जहाँ तोपें रहती हैं; युद्ध के लिए प्रस्तुत तोपों का समूह।

तोपची पुं. {अ. तोप + ची (प्रत्य.)} तोप चलानेवाला, गोलंदाज।

तोपना स. ढकना; तुपाई करना।

तोपा पुं. {देश.} एक टाँके में होनेवाली या टाँके भर की सिलाई।

तोबड़ा पुं. {फा. तोबर:} चमड़े या टाट की वह थैली, जिसमें दाना भरकर घोड़े को खिलाने के लिए उसके मुँह पर बाँधते हैं।

मुहा. किसी के मुँह पर तोबड़ा चढ़ाना = किसी को बोलने से रोकना।

थोबड़ा, थूथन।

तोबा *स्त्री.* {अ. तौब:} भविष्य में कोई बुरा या अनुचित काम न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा।

मुहा. तोबा-तिल्ला करना या मचाना = रोते, चिल्लाते या दीनता दिखलाते हुए रक्षा की प्रार्थना करना; तोबा बुलवाना = पूर्ण रूप से परास्त करना; भविष्य में कोई काम न करने की पक्की प्रतिज्ञा करना।

तोम पुं. {सं. स्तोम} समूह, ढेर।

तोमर पुं. {सं.} एक प्रकार का पुराना अस्त्र जिसमें लकड़ी के डंडे में लोहे का बड़ा फल लगा रहता था; एक प्रकार का छंद; एक प्राचीन देश; इस देश का निवासी; क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।

तोय पुं. {सं.} जल, पानी।

तोयात्मा पुं. {सं.} परमेश्वर।

तोयाधार पुं. {सं.} जलाशय, तालाब।

तोयेश पुं. {सं.} शतभिषा नक्षत्र।

तोयधर पुं. {सं.} मेघ, बादल।

तोयधि पुं. {सं.} समुद्र।

तोयनिधि पुं. {सं.} समुद्र।

तोर पुं. तोड़; *वि.* तेरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोरई *स्त्री.* तोरी।

तोरण *पुं.* {सं.} घर या नगर का बाहरी बड़ा फाटक; सजावट के लिए खम्भें और दीवारों में लटकाई जानेवाली मालाएँ, पत्तियाँ आदि, बन्दनवार।

तोरन *पुं.* तोरण।

तोरना *स.* तोड़ना।

तोरा *सर्व.* तेरा; *पुं.* = तुर्रा (कलगी)।

तोराना *स.* तुड़ाना।

तोरावान *वि.* {सं. त्वरावत्} {*स्त्री.* तोरावती} वेगवान, तेज।

तोरिया *स्त्री.* {हिं.} गोटा आदि, सरसों, गाय, भैंस जिसका बच्चा मर गया हो।

तोरी *स्त्री.* {सं. तूर} एक प्रकार की बेल जिसके फलों की तरकारी बनती है; उक्त बेल का फल।

पद *जल-तोरी* = मछली (परिहास में)।

तोल *स्त्री.* तौल; *वि.* तुल्य।

तोलक *पुं.* {सं.} एक तोला।

तोलन *पुं.* {सं.} वजन करना, तौलना; ऊपर उठाना।

तोलना *पुं.* {सं. तोलक} बारह माशे की तौल; इस तौल का बाट।

तोला *पुं.* {हिं.} बारह माशे का तौल।

तोशक *स्त्री.* {तु.} बिछाने का रुईदार हलका गद्दा।

तोशदान *पुं.* {फा. तोश:दान} वह थैली जिसमें यात्रा के समय जलपान आदि आवश्यक चीजें रहती हैं; सिपाहियों की कारतूस रखने की थैली।

तोशा *पुं.* {फा. तोश:} वह खाद्य पदार्थ, जो यात्री मार्ग के लिए अपने साथ रखता है, पाथेय।

तोशाखाना *पुं.* {फा. तोश: या तु. तोशक + फा. खाना} वह स्थान जहाँ राजाओं या अमीरों के पहनने के कपड़े, गहने आदि रहते हैं।

तोष *पुं.* {सं.} {*वि.* तोषक, तोषित, तुष्ट} अघाने या मन भरने का भाव; असंतोष, कष्ट, हानि आदि का प्रतिकार हो जाने पर मन में होनेवाली तुष्टि, तृप्ति (सोलेस); प्रसन्नता, आनंद।

तोषक *वि.* {सं.} सन्तुष्ट करनेवाला।

तोषण *वि.* {सं.} {*वि.* तुष्ट, तोषणीय और तोषित} तृप्ति, सन्तोष; सन्तुष्ट या प्रसन्न करनेवाला (यौ. शब्दों के अन्त में)।

तोषणिक *पुं.* {सं.} वह धन जो किसी को तुष्ट करने के लिए दिया जाए; *वि.* तोष-संबंधी।

तोषन *पुं., वि.* तोषण।

तोषना *अ., स.* {सं. तोष} सन्तुष्ट होना/करना।

तोस *पुं.* तोष।

तोसक *पुं.* {हिं.} रुईदार गद्दा।

तोसा *पुं.* तोशा।

तोसागार *पुं.* तोशाखाना।

तोहफा *पुं.* {सं. तोहफा} सौगात, उपहार; *वि.* {*भाव.* तोहफगी} बढ़िया।

तोहमत *स्त्री.* {अ.} झूठ-मूठ लगाया हुआ दोष, झूठा अभियोग या कलंक।

तोहरा *सर्व.* {हिं.} तुम्हारा।

तोहीं *सर्व.* {हिं. तू या} तुझको, तुझे।

तौंकना *अ.* तौंसना।

तौंस *स्त्री.* {हिं. ताप + ऊमस} गरमी, ताप; ऊमस।

तौंसना *अ.* {हिं. तौंस} {भाव. तौंस} गरमी से झुलसना; ऊमस होना।

तौं[1] *क्रि. वि.* तो।

तौ[2] *अ.* {हिं. हतो} था।

तौ[3] *वि.* {सं. तव} तेरा या तुम्हारा।

तौ[4] *निपा.* {हिं. तो} हाँ, ठीक है।

तौक *पुं.* {अ.} वह भारी गोल पटरी, जो अपराधी या पागल के गले में उसे कहीं भागने से रोकने के लिए पहनाई जाती थी; इस आकार का गले में पहनने का एक गहना; इस आकार का वह प्राकृतिक चिह्न, जो कुछ पक्षियों के गले में होता है, हँसुली।

तौन *सर्व.* {सं. ते} वह।

तौनी *स्त्री.* {हिं. तवा का *स्त्री.* अल्पा.} रोटी पकाने का छोटा तवा, तई, तवी।

तौबा *स्त्री.* तोबा।

तौर *पुं.* {अ.} ढंग, तरीका; प्रकार, भाँति, तरह; चाल-चलन।

तौर-तरीका *पुं.* {अ.} चाल-चलन; रंग-ढंग।

तौरि *स्त्री.* {हिं. ताँवरि} सिर में आनेवाला चक्कर, घुमटा।

तौरेत *स्त्री.* {इब्र.} हजरत मूसा कृत यहूदियों का प्रधान धर्मग्रंथ।

तौल *स्त्री.* {सं. तोलन} किसी पदार्थ के गुरुत्व या भारीपन का परिमाण, भार का मान, वजन (वेट); तौलने की क्रिया या भाव; बटखरों के मान के विचार से तौलने की नियत प्रणाली या मानक, जैसे छोटी या बड़ी तौल, कच्ची या पक्की तौल; महत्व, गम्भीरता आदि की थाह।

तौलना *स.* {सं. तोलन} {प्रे. तौलाना} तराजू, काँटे आदि पर रखकर किसी वस्तु के गुरुत्व या भारीपन का परिमाण जानना, वजन करना; अस्त्र आदि चलाने के लिए हाथ में लेकर ठीक स्थिति में लाना, साधना; तुलना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

करके कमी और अधिकता, जानना, मिलान करना; तूलना।

तौलवाना *स.* हिं. 'तौलना' का प्रे.।

तौला *पुं.* {हिं. तौलना} अनाज आदि तौलनेवाला, बया।

तौलाई *स्त्री.* {हिं. तौलना} तौलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

तौलना *स.* = तौलवाना।

तौलिक *पुं.* {सं.} चित्रकार रंगसाज।

तौलिया *पुं.* {अ. टॉवेल} एक विशेष प्रकार का मोटा अँगोछा।

तौहीन *स्त्री.* {अ.} अपमान।

तौषार *पुं.* {सं.} पाला, तुषार।

तौसना *क्रि.* {हिं. अ. सं.} गरमी से व्याकुल होना।

तौहीनी *स्त्री.* {अ.} अनादर, अपमान।

त्यक्त *वि.* {सं.} जिसका त्याग किया गया हो, छोड़ा या त्यागा हुआ।

त्यजन *पुं.* {सं.} {*वि.* त्यक्त त्यजनीय} त्यागने या छोड़ने का काम, तजना, त्याग।

त्याग *पुं.* {सं.} किसी पदार्थ पर से अपना स्वत्व हटा लेने अथवा उसे अपने अधिकार से निकालने की क्रिया या भाव, उत्सर्ग; कोई काम या संबंध छोड़ने की क्रिया; वैराग्य आदि के कारण सांसारिक भोगों और पदार्थों आदि को छोड़ने की क्रिया या भाव; किसी अच्छे काम के लिए अपना सुख, लाभ आदि छोड़ने की क्रिया या भाव (सैक्रिफाइस)।

त्यागना *स.* {सं. त्याग} छोड़ना, तजना।

त्यागपत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जो अपने कार्य या पद से अलग होते समय उसके त्याग के प्रमाणस्वरूप लिखकर दिया जाता है, इस्तीफा (रेजिग्नेशन)।

त्यागी *वि.* {सं. त्यागिन्} सांसारिक सुखों को छोड़नेवाला; अपने स्वार्थ या हित का त्याग करनेवाला (विशेषत: किसी अच्छे काम के लिए)।

त्याजना *स.* त्यागना।

त्याज्य *वि.* {सं.} त्यागने या छोड़ने योग्य।

त्यूँ *क्रि. वि.* त्यों।

त्यों *क्रि. वि.* {सं. तथैव} उस प्रकार, उस तरह; उसी समय; *पुं.* ओर, तरफ।

उदा. हरि त्यों टुक डीठि पसारत ही...-**केशव**।

यो. और, तथा।

त्योरस *पुं.* {हिं. ति = तीन + बरस} पिछले दो वर्षों से पहले का तीसरा वर्ष; आनेवाला तीसरा बरस।

त्योराना *अ.* {?} सिर में चक्कर आना।

त्योरी *स्त्री.* {सं. त्रिकुटी, पु. हिं. तिउरी} देखने का ढंग या भाव, अवलोकन, दृष्टि, निगाह।

मुहा. त्योरी चढ़ाना या बदलना = आँखों से क्रोध और अप्रसन्नता प्रकट करना।

त्योहार *पुं.* {सं. तिथि + वार} कोई बड़ा धार्मिक या जातीय उत्सव मनाने का दिन, पर्व।

त्योहारी *स्त्री.* {हिं. त्योहार} वह धन, जो किसी त्योहार के दिन छोटों या आश्रितों को दिया जाता है।

त्यौ *क्रि. वि.* त्यों।

त्यौनार *पुं.* {हिं. तेवर} ढंग, तर्ज।

त्यौनारा *वि.* {हिं. त्योनार} जिसका रंग-ढंग या तर्ज अच्छा हो, बढ़िया।

त्यौर *पुं.* त्यौरी।

त्र त् और र के योग से बना हुआ एक संयुक्त वर्ण जो अब स्वतंत्र अक्षर या वर्ण के रूप में माना जाता है, कुछ शब्दों के अंत में प्रत्यय के रूप में लगकर यह 'एक स्थान पर' (किया या लाया हुआ आदि) का अर्थ देता है, जैसे एकत्र, सर्वत्र।

त्रय *वि.* {सं.} तीन; तीसरा।

त्रयताप *पुं.* {सं.} आधिदैविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक कष्ट।

त्रयी *स्त्री.* {सं.} तीन वस्तुओं का समूह, जैसे वेदत्रयी, देवत्रयी।

त्रयोदशी *स्त्री.* {सं.} चान्द्र मास के किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि, तेरस।

त्रसन *पुं.* {सं.} त्रस्त करने की क्रिया या भाव, भय, डर।

त्रसना *अ.* {सं. त्रसन} भय से काँप उठना, बहुत डरना; कष्ट पाना; *स.* डराना; कष्ट देना।

त्रसरेणु *स्त्री.* {सं.} वायु में भरे हुए वे बहुत सूक्ष्म कण, जो प्राय: छेद में से आनेवाली धूम में उड़ते हुए दिखाई देते हैं (पुराणों के अनुसार यह सूर्य की पत्नी है)।

त्रसरैनि *स्त्री.* = त्रसरेणु।

त्रसाना *स.* {हिं. त्रसना} डराना।

त्रसित *वि.* त्रस्त।

त्रस्त *वि.* {सं.} भयभीत, डरा हुआ; जिसे कष्ट पहुँचा हो, पीड़ित; घबराया हुआ, व्याकुल।

त्राटक *पुं.* {सं.} एक क्रिया जिसमें किसी बिंदु पर दृष्टि जमायी जाती है।

त्राण *पुं.* {सं.} {*वि.* त्राता} रक्षा, बचाव; वह वस्तु जिसके द्वारा रक्षा हो; कवच, बकतर।

त्राता (र) *पुं.* {सं. त्रातृ} रक्षक।

त्रास *पुं.* {सं.} डर, भय; कष्ट, तकलीफ।

त्रासक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* त्रासिका} डरानेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रासना *स.* {सं. त्रासन} डराना; कष्ट पहुँचाना।
त्रासमान *वि.* {सं. त्रास + मान (प्रत्य.)} डरा हुआ, भयभीत।
त्रासित *वि.* त्रस्त।
त्राहि *पद* {सं.} रक्षा करो, बचाओ।
त्रिंबक *पुं.* त्र्यंबक।
त्रि *वि.* {सं.} तीन, जैसे त्रिकाल।
त्रिक *पुं.* {सं.} तीन चीजों का समूह या वर्ग; वह स्थान जहाँ से तीन चीजें तीन ओर से आकर मिलती हों; कमर के बीच का वह स्थान, जहाँ कूल्हे की दोनों हड्डियाँ रीढ़ के अंतिम सिरे से मिलती हैं; कमर, कटि।
त्रिकाल *पुं.* {सं.} भूत, वर्तमान और भविष्य की सब बातें जानता हो, सर्वज्ञ।
त्रिकालज्ञ *पुं.* {सं.} वह जो भूत, वर्तमान और भविष्य की सब बातें जानता हो, सर्वज्ञ।
त्रिकालदर्शी *पुं.* {सं. त्रिकालदर्शिन्} त्रिकालज्ञ।
त्रिकुटी *स्त्री.* {सं. त्रिकूट} भौंहों के बीच का ऊपरी भाग।
त्रिकूट *पुं.* {सं.} हठयोग के अनुसार शरीर के अंदर का एक चक्र, जिसका स्थान दोनों भौंहों के मध्य माना गया है, एक पर्वत।
त्रिकोण *पुं.* {सं.} ऐसा क्षेत्र जिसके तीन कोने हों, त्रिभुज क्षेत्र; तीन कोनोंवाली कोई चीज।
त्रिकोणमिति *स्त्री.* {सं.} गणित की वह प्रक्रिया या अंग, जिसमें त्रिभुज के कोण, बाहु, वर्ग।
त्रिकोणीय *वि.* {सं.} तीन कोणोंवाला।
त्रिखा *स्त्री.* तृषा।
त्रिगर्त्त *पुं.* {सं.} जालन्धर और काँगड़े के आस-पास के क्षेत्र का पुराना नाम।
त्रिगुण *पुं.* {सं.} सत्व, रज और तम प्रकृति के तीनों गुण; *वि.* तीन गुना, तिगुना।
त्रिजग *पुं.* तिर्यक्; त्रिलोक।
त्रिजामा *स्त्री.* रात्रि।
त्रिज्या *स्त्री.* {सं.} वृत्त के केंद्र से परिधि तक की रेखा, जो व्यास की आधी होती है।
त्रिण *पुं.* तृण।
त्रिताप *पुं.* {सं.} दैहिक, दैविक और भौतिक ताप का कष्ट।
त्रिदेव *पुं.* {सं.} ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनों देवता।
त्रिदोष *पुं.* {सं.} वात, पित्त और कफ के तीनों दोष; सन्निपात रोग जिसमें उक्त तीनों दोष बनते हैं।
त्रिदोषना *अ.* {सं. त्रिदोष} वात, पित्त और कफ के प्रकोप में पड़ना; काम, क्रोध और लोभ के फेर में फँसना।
त्रिधा *क्रि. वि* {सं.} तीन प्रकार से; *वि.* तीन प्रकार का।
त्रिन *पुं.* तृण।
त्रिनयन *पुं.* {सं.} महादेव।
त्रिपथगा *स्त्री.* {सं.} गंगा।
त्रिपाठी *पुं.* त्रिवेदी, ब्राह्मणों की एक जाति।
त्रिपाद *पुं.* {सं.} तिपाई।
त्रिपिटक *पुं.* {सं.} भगवान बुद्ध के उपदेशों का तीन खंडों (सूत्तपिटक, विनयपिटक और अभिधम्म पिटक) का वह संग्रह जो बौद्धों का प्रधान धर्मग्रंथ है।
त्रिपिताना *अ., स* {सं. तृप्त + आना (प्रत्य.)} तृप्त या संतुष्ट होना या करना।
त्रिपुंड *पुं.* {सं. त्रिपुंड} भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का वह तिलक, जो शैव लोग माथे पर लगाते हैं।
त्रिपुटक *पुं.* {सं.} त्रिभुज।
त्रिपुटी *स्त्री.* {सं.} खेसारी, छोटी इलायची।
त्रिपुट *पुं.* {सं.} मयदानव निर्मित तीन नगर, वाणासुर नामक दैत्य।
त्रिपुरारि *पुं.* {सं.} शिव।
त्रिफला *स्त्री.* {सं.} आँवले, हड़ और बहेड़े का समूह।
त्रिबली *स्त्री.* {सं.} पेट के ऊपर दिखाई पड़ने वाले तीन बल या रेखाएँ (सौंदर्य सूचक)।
त्रिबेनी *स्त्री.* त्रिवेणी।
त्रिभंग *पुं.* {सं.} खड़े होने की वह मुद्रा जिसमें टाँग, कमर और गरदन तीनों अंग कुछ-कुछ टेढ़े रहते हैं।
त्रिभुज *पुं.* {सं.} तीन भुजाओं या रेखाओं से घिरा हुआ धरातल या क्षेत्र (ट्रैंगिल)।
त्रिभुजाकार *वि.* {सं.} तीन भुजाओंवाला, त्रिभुज के आकार का।
त्रिभुजीय *वि.* {सं.} त्रिभुज-संबंधी।
त्रिभुवन *पुं.* {सं.} स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक।
त्रिमात्रिक *वि.* {सं.} तीन मात्राओंवाला, प्लुत।
त्रिमास *पुं.* {सं.} {*वि.* त्रैमासिक} तीन महीनों का समय; वर्ष के तीन-तीन महीनों के चार विभागों में कोई एक, जैसे यह चंदा इस वर्ष के तीसरे त्रिमास का है (क्वार्टर)।
त्रिमुखा *स्त्री.* {सं.} माया देवी।
त्रिमूर्ति *स्त्री.* {सं.} ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीनों देवता।
त्रिय (त्रिया) *स्त्री.* {सं. स्त्री} औरत।
पद त्रिया चरित्र = 'तिरिया' के अंतर्गत 'तिरिया चरित्तर'।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eG

त्रियना *अ.* {सं. तरण} पानी के ऊपर ठहरना, तैरना; तैरकर पार होना।

त्रियामा *स्त्री.* {सं.} रात्रि, रात।

त्रिलोक *पुं.* {सं.} स्वर्ग, मर्त्य और पाताल से तीनों लोक।

त्रिलोकी *स्त्री.* त्रिलोक।

त्रिलोचन *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।

त्रिवर्ग *पुं.* {सं.} अर्थ, धर्म और काम का वर्ग या समूह; सत्व, रज और तम ये तीनों गुण; ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीनों जातियाँ या वर्ण।

त्रिवर्ण *पुं.* {सं.} तीन प्रधान रंग-काला, लाल, पीला।

त्रिवणी *स्त्री.* {सं.} जंगली कपास।

त्रिवर्त्मका *स्त्री.* {सं.} त्रिपथगा, गंगा।

त्रिपल्ली *स्त्री.* {सं.} इंदीवर, नीलकमल।

त्रिवाचा *स्त्री.* {सं.} तीन बार कोई बात कहने की क्रिया।

कहा. त्रिवाचा बाँधना = तीन बार कोई बात कहकर अपना अडिग निश्चय जतलाना।

त्रिविक्रम *पुं.* {सं.} विष्णु का वामन नामक अवतार।

त्रिविध *वि.* {सं.} तीन प्रकार का; *क्रि. वि.* तीन प्रकार से।

त्रिवेणी *स्त्री.* {सं.} **वह स्थान जहाँ तीन नदियाँ मिलती हों; गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम जो प्रयाग में है; इड़ा, पिंगला और सुषुम्णा इन तीनों नाडियों का संगम-स्थान (हठयोग)।**

त्रिवेदी[1] *पुं.* {सं.} ऋक्, यजुः और साम इन तीनों वेदों का ज्ञाता; ब्राह्मणों का एक भेद, तिवारी, त्रिपाठी।

त्रिवेदी[2] *स्त्री.* {सं. त्रिपदी} तिरपाई, तिपाई; छोटी चौकी।

त्रिशत *वि. पुं.* {सं.} तीन सौ।

त्रिशंकु *पुं.* {सं.} एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा, जिन्होंने इसी शरीर से स्वर्ग जाने के लिए यज्ञ किया था, पर जो देवताओं के विरोध के कारण बीच आकाश में ही रोक दिए गए थे।

त्रिशिख *पुं.* {सं.} त्रिशूल, किरीट, रावण के पुत्र का नाम।

त्रिशूल *पुं.* {सं.} एक अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल होते हैं (शिवजी का अस्त्र); त्रिताप।

त्रिशित *वि.* तृषित।

त्रिसंध्या *स्त्री.* {सं.} प्रातः, मध्याह्न और सायं ये तीनों संधिकाल।

त्रिसर्ग *पुं.* {सं.} सत्त्व, रज और तम–ये तीनों गुण, सृष्टि।

त्रिसुगंधि *पुं.* {सं.} दालचीनी, इलायची व तेजपात।

त्रिस्कंध *पुं.* {सं.} ज्योतिष शास्त्र।

त्रिस्तनी *स्त्री.* {सं.} एक राक्षसी जिसके तीन स्तन थे, गायत्री।

त्रिस्थली *स्त्री.* {सं.} गया, काशी व प्रयाग।

त्रिस्थान *पुं.* {सं.} तीनों लोकों का वासी।

त्रिस्नान *पुं.* {सं.} सवेरे, दोपहर व संध्या–तीनों समय का स्नान।

त्रिस्रोतसी *स्त्री.* {सं.} जिस नदी से तीन स्रोत हों।

त्रिस्रोता *स्त्री.* {सं.} गंगा नदी।

त्रिसना *पुं.* तृष्णा।

त्रुटि *स्त्री.* {सं.} ऐसा अभाव जिससे कोई बात या कार्य अधूरा रहे या ठीक और उपयुक्त न माना जाए, कमी, न्यूनता (डिफेक्ट); भूल, चूक।

त्रुटित *वि.* {सं.} कटा या टूटा हुआ; आहत, घायल; त्रुटिपूर्ण।

त्रेता *पुं.* {सं.} चार युगों में से दूसरा, जो 1296000 वर्षों माना गया है।

त्रै *वि.* {सं. त्रय} तीन।

त्रैकालिक *वि.* {सं.} भूत, भविष्य और वर्तमान तीनों कालों में या सदा होनेवाला; प्रातः, मध्याह्न और सायं तीनों कालों में होनेवाला।

त्रैमासिक *वि.* {सं.} हर तीन महीने पर या हर तीसरे महीने होनेवाला (क्वार्टली)।

त्रैराशिक *पुं.* {सं.} गणित की वह प्रक्रिया, जिसमें तीन ज्ञात राशियों की सहायता से चौथी राशि का मान जाना जाता है।

त्रैलोक्य *पुं.* त्रिलोक–स्वर्ग, धरती व पाताल।

त्रैवार्षिक *वि.* {सं.} हर तीन वर्षों पर होनेवाला; तीन वर्षों का (ट्रीनियल)।

त्रैविद्य *पुं.* {सं.} तीनों वेदों का ज्ञाता।

त्रोटक *पुं.* {सं.} नाटक का एक भेद जिसमें 5, 7, 8 या 9 अंक होते हैं।

त्रोटकी *स्त्री.* {सं.} एक रागिनी का नाम।

त्र्यंबक *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।

त्र्यधिपति *पुं.* {सं.} तीनों लोकों के स्वामी–विष्णु, कृष्ण।

त्र्यधीश *पुं.* {सं.} कृष्ण, विष्णु।

त्र्यब्द *पुं.* {सं.} तीन वर्ष का काल।

त्र्यवि *पुं.* {सं.} अठरह महीने का पशु।

त्र्यह *पुं.* {सं.} तीन दिन का काल।

त्वक् *पुं.* {सं.} छाल; चमड़ा, खाल; पाँच ज्ञानेन्द्रियों में से एक, जो सारे शरीर के ऊपरी भाग पर फैली हुई है।

त्वकचना *अ.* {सं. त्वचा} वृद्धावस्था के कारण शरीर का चमड़ा झूलना।

त्वग्गंध *पुं.* {सं.} नारंगी, नींबू।

त्वचा *स्त्री.* {सं.} शरीर पर का चमड़ा; छाल, वल्कल; साँप की केंचुली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वचीय *वि.* {सं.} त्वचा-संबंधी।
त्वदीय *सर्व.* {सं.} तुम्हारा।
त्वरक *वि.* {सं.} गति बढ़ानेवाला।
त्वरा *स्त्री.* {सं.} शीघ्रता, जल्दी।
त्वरित *वि.* {सं.} जल्दी चलने, जाने या पहुँचने वाला; जिसका जल्दी पहुँचना या जिसके संबंध में जल्दी कार्रवाई होना आवश्यक हो; *क्रि. वि.* शीघ्रतापूर्वक।
त्वलग *पुं.* {सं.} जलसर्प।
त्वष्टा *पुं.* {सं.} विश्वकर्मा, शिव, बढ़ई।
त्वेष *पुं.* {सं. त्वेषस्} उत्साह, उमंग; भाव का आवेग, आवेश।

थ

थ देवनागरी वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजन वर्ण और तवर्ग का दूसरा वर्ण, जिसका उच्चारण स्थान दन्त है।
थंडिल *पुं.* {सं. स्थंडिल} यज्ञ की वेदी।
थंबा (भ) *पुं.* {सं. स्तंभ} {*स्त्री.* थंभी} खम्भा, स्तंभ; सहारा, टेक।
थंभन *पुं.* स्तंभन।
थँभना *अ.* = थमना (रुकना)।
थंभा *पुं.* {सं. स्तंभ} खंभा।
थंभित *वि.* {सं. स्तंभित} रुका या ठहरा हुआ; अचल, स्थिर; स्तंभित, चकित।
थकन *स्त्री.* थकावट।
थकना *अ.* {सं. स्थगित} परिश्रम करते-करते इतना शिथिल होना कि फिर और परिश्रम न हो सके, क्लांत होना; ऊबना; बुढ़ापे के कारण अशक्त होना; मोहित होना।
थकाथक *क्रि. वि.* {अनु.} थकथक शब्द करते हुए; लगातार, निरंतर।
थकान *स्त्री.* थकावट।
थकाना *स.* हिं. थकना का *स.*।
थका-माँदा *वि.* {हिं. थकना + माँदा} जो थक कर चूर हो गया हो, श्रान्त।
थकावट *स्त्री.* {हिं. थकना} थकने का शारीरिक परिणाम या भाव, शिथिलता, थकान।
थकित *वि.* {हिं. थकना} थका हुआ, श्रान्त, शिथिल; मोहित, मुग्ध।
थकौंहाँ *वि.* {हिं. थकना} {*स्त्री.* थकौंही} थका हुआ, शिथिल।
थक्कर *पुं.* {हिं. थक्का} किसी चीज का जमा हुआ पिंड, थक्का; समूह झुंड।
थक्का *पुं.* {सं. स्था = कृ} {*स्त्री.* थक्की, थकिया} जमी हुई गाढ़ी चीज की मोटी तह या दल, जैसे खून का थक्का।
थगित *वि.* {हिं. थकित} ठहरा या रुका हुआ; शिथिल, ढीला; मन्द, धीमा।
थति *स्त्री.* थाती।
थन *पुं.* {सं. स्तन} चौपायों विशेषत: दूध देनेवाले चौपायों का स्तन।
थनु *पुं.* = स्थाणु।
थनुसुत *पुं.* {सं. स्थाणु + सुत} शिव के पुत्र, गणेश और कार्तिकेय।
थनैत *पुं.* {हिं. थान} गाँव का मुखिया; गाँव का लगान वसूल करनेवाला कर्मचारी; थाँगी।
थपक *स्त्री.* थपकी; वह आघात जो प्रेम से किसी के शरीर पर किया जाय।
थपकना *स.* {अनु. थपथप} प्यार से या आराम से पहुँचाने के लिए किसी के शरीर पर धीरे-धीरे हथेली से आघात करना; शाबाशी देना।
थपका *पुं.* थक्का; थपकी।
थपकी *स्त्री.* {हिं. थपकना} थपकने की क्रिया या भाव।
थपथप *स्त्री.* {अनु.} थापने का शब्द।
थपथपाना *स.* {हिं. थपथप} थपकी देना।
थपथपी *स्त्री.* थपकी।
थपन *पुं.* स्थापन।
थपना *स.* {सं. स्थापन} स्थापित करना, बैठाना, जमाना; थोपना; *अ.* स्थापित होना, जमना।
थपेड़ना *स.* {हिं. थपेड़ा} थपेड़ा लगाना।
थपेड़ा *पुं.* {हिं. थपथप} थप्पड़; आघात; धक्का, टक्कर।
थपोड़ी *स्त्री.* ताली (करतल-ध्वनि)।
थप्पड़ *पुं.* {अनु. थपथप} हथेली के द्वारा जोर से किया जानेवाला आघात, तमाचा, झापड़; भारी आघात, भारी धक्का।
थप्पन *वि.* {हिं. थापना} थापने या स्थापित करनेवाला।
थम *पुं.* स्तंभ।
थमकारी *वि.* {सं. स्तंभन} स्तंभन करने या रोकनेवाला।
थमना *अ.* {सं. स्तम्भन} चलते-चलते रुकना, ठहरना; प्रचलित या चलता न रहना, बंद हो जाना; धीरज धरना, सब्र करके ठहरा रहना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थमाव पुं. {हिं. थमना} थमने की अवस्था या भाव।

थर[1] *स्त्री.* {सं. स्तर} तह, परत।

थर[2] पुं. {सं. स्थल} थल; हिंसक पशु की माँद।

थरकना *अ.* थर्राना।

थरकौंहाँ *वि.* {हिं. थकरना} काँपता या हिलता हुआ।

थरथर *स्त्री.* {अनु.} काँपने की अवस्था या भाव; *क्रि. वि.* डर से काँपते हुए।

थरथराना *अ.* {अनु. थरथर} डर से काँपना; काँपना, हिलना; *स.* थरथर करके काँपने, हिलने आदि में प्रवृत्त करना।

थरथराहट *स्त्री.* {अनु. थरथर} थरथराने की क्रिया या भाव।

थरथरी *स्त्री.* = कँपकँपी।

थरसना *अ.* {सं. त्रसन} त्रस्त या पीड़ित होना, कष्ट भोगना।

थरिया *स्त्री.* = थाली।

थरी *स्त्री.* {सं. स्थली} शेरों आदि की माँद; गुफा।

थरु पुं. {सं. स्थल} जगह।

थर्राना *अ.* {अनु. थरथर} डर से काँपना; भयभीत होना, दहलना।

थल पुं. {सं. स्थल} स्थान, जगह; जल से रहित भूमि; स्थल का मार्ग; शेर, चीते आदि जंगली पशुओं की माँद।

थलकना *अ.* {सं. स्थूल} भारी चीज का कुछ ऊपर-नीचे हिलना; मोटाई के कारण शरीर के माँस का हिला।

थलचर पुं. {सं. स्थलचर} पृथ्वी पर या स्थल में रहनेवाला जीव।

थलज पुं. {हिं. थल} वह जो स्थल में उत्पन्न हो, जैसे पेड़, पौधे आदि; गुलाब।

थलथलाना *अ.* {हिं. थलकना} मोटे शरीर के माँस का झूलकर या ऊपर-नीचे हिलना, थलकना।

थलपति पुं. {सं. स्थल + पति} राजा।

थलरुह *वि.* {सं. स्थलरुह} स्थल पर उत्पन्न होनेवाला जीव, वृक्ष आदि।

थली *स्त्री.* {सं. स्थली} स्थान, जगह; जल के नीचे की भूमि; ठहरने या बैठने का स्थान।

थवई पुं. {सं. स्थपति} मकान बनानेवाला कारीगर, राज, राजगीर।

थसर *वि.* = शिथिल।

थसरना *अ.* = शिथिल होना।

थहना *स.* {हिं. थाह} थाह लेना।

थहरना *अ.* {अनु. थरथर} दुर्बलता, भय आदि से काँपना; थर्राना।

थहाना *स.* {हिं. थाह} गहराई, गुण आदि की थाह लेना या पता लगाना।

थाँग *स्त्री.* {सं. स्थान} चोरों या डाकुओं के छिपकर रहने का स्थान; खोज, तलाश।

थाँगी पुं. {हिं. थाँग} चोरी का माल खरीदने या अपने पास रखनेवाला आदमी; चोरों का सरदार; जासूस, भेदिया।

थाँवला पुं. थाला।

था *अ.* {सं. भूतः} 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप।

थाक पुं. {सं. स्था} गाँव की हद; एक पर एक रखी हुई चीजों का ढेर।

थाकना *अ.* थकना।

थात *वि.* स्थित।

थाती *स्त्री.* {सं. स्थाता} कठिन समय पर काम आने के लिए बचाकर रखा हुआ धन; जमा पूँजी; धरोहर, अमानत।

थान पुं. {सं. स्थान} जगह, स्थान; निवास स्थान, डेरा।

मुहा. (कहीं) थान करना = जम या अड़कर बैठ जाना।

घोड़ों या चौपायों के बाँधे जाने का स्थान; कुछ निश्चित लंबाई का कपड़े, गोटे आदि का पूरा टुकड़ा; संख्या, अदद, जैसे चार थान मोती।

थाना पुं. {सं. स्थान} टिकने या बैठने का स्थान, अड्डा; पुलिस की बड़ी चौकी (पुलिस स्टेशन)।

थानसुत पुं. {सं. स्थानु + सुत} गणेशजी।

थानेदार पुं. {हिं. थाना + फा. दार} थाने का प्रधान अधिकारी।

थानैत[1] पुं. {हिं. थाना + ऐत (प्रत्य.)} चौकी या अड्डे का प्रधान।

थानैत[2] पुं. {सं. स्थान} ग्राम देवता।

थाप *स्त्री.* {सं. स्थापन} तबले, मृदंग आदि पर पूरे पंजे से किया जानेवाला आघात; थप्पड़; छाप; गुण, प्रधानता आदि की धाक; शपथ।

थापन पुं. {सं. स्थापन} स्थापित करने, जमाने या बैठाने की क्रिया या भाव।

थापना[1] *स.* {सं. स्थापन} स्थापित करने, जमाने या बैठाना या लगाना। (प्रायः पूजा, सम्मान आदि के विचार से), जैसे देवी थापना; हाथ से पीट सा साँचे से दबाकर कोई चीज बनाना, जैसे कंडे थापना।

थापना[2] *स्त्री.* {सं. स्थापना} स्थापन, प्रतिष्ठा; नवरात्र में दुर्गा-पूजा के लिए घट-स्थापन।

थापर पुं. थप्पड़।

थापा पुं. {हिं. थाप} दीवारों आदि पर लगाई जीनेवाली पंजे की छाप; खलियान में अनाज

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

के ढेर पर मिट्टी आदि से लगाया हुआ चिह्न; वह साँचा जिससे कोई चिह्न अंकित किया जाए, छापा; ढेर, राशि।

थापी *स्त्री.* {हिं. थापना} वह चिपटी मुँगरी जिससे राज-मजदूर गच पीटकर उसका मसाला अच्छी तरह अपने स्थान पर जमाते हैं; प्रशंसा, आशीर्वाद आदि के रूप में किसी की पीठ ठोंकने की क्रिया का भाव।

थामना *स.* {सं. स्तंभन} पकड़ना; गिरती या चलती हुई चीज को रोकना; सहारा देना, सँभालना; अपने ऊपर कार्य का भार लेना।

थायी *वि.* स्थायी।

थारा *वि.* = तुम्हारा।

थाल *पुं.* {हिं. थाली} बड़ी थाली।

थाला *पुं.* {सं. स्थालक} किसी पेड़ या पौधे के चारों ओर का वह घेरदार गड्ढा जिसमें उसे सींचने के लिए पानी डाला जाता है; थाँवला, आल-बात; ईंट, मिट्टी आदि का वह छोटा गोल चबूतरा जो वृक्ष की जड़ के चारों ओर बनाया जाता है; शरीर में फोड़े, फुन्सी आदि के चारों ओर कुछ दूर तक होनेवाली सूजन।

थालिका *स्त्री.* {सं. स्थालिका} वृक्ष के नीचे का थाला थाँवला, उदा. भजन भव-सार, भक्ति कल्प थालिका।-तुलसी।

थाली *स्त्री.* भोजन करने का एक प्रसिद्ध छिछला बरतन, बड़ी गोल तश्तरी।

मुहा. किसी के आगे की थाली खींचना = किसी के निश्चित लाभ में बाधक होना; *थाली का बैंगन* = लाभ और हानि देखकर कभी इस पक्ष में और कभी उस पक्ष में हो जानेवाला आदमी।

थावर *वि.* स्थावर।

थाह *स्त्री.* {सं. स्था} गहराई, ज्ञान, महत्व आदि की सीमा (ज्ञान प्राप्त करने की दृष्टि से) जैसे नदी की थाह, किसी के पांडित्य की थाह आदि; गहराई, ज्ञान, महत्व आदि का पता या परिचय; सीमा, हद।

थाहना *स.* {हिं. थाह} थाह लेना, गहराई का पता लगाना।

थाहरा *वि.* {हिं. थाह} छिछला, कम गहरा।

थिएटर *पुं.* {अं.} किसी प्रकार का रंगमंच, विशेषत: नाटक आदि के अभिनय का रंगमंच, रंगशाला।

थिगली *स्त्री.* {हिं. टिकली} कपड़े, चमड़े आदि का छेद बन्द करने के लिए ऊपर से लगाया जानेवाला टुकड़ा चकती, पैबन्द।

मुहा. बादल में थिगली लगाना = अत्यन्त कठिन काम करना।

थित *वि.* स्थित।

थिति *स्त्री.* स्थिति।

थिर *वि.* स्थिर।

थिरक *स्त्री.* {हिं.} नृत्य-कला।

थिरकना *अ.* {सं. अस्थिर + करण} {*भाव.* थिरक} नाचने के समय पैर बार-बार, रह-रहकर और धीरे-धीरे उठाना और पटकना।

थिरकौंहाँ[1] *वि.* {हिं. थिरकना} थिरकने या बार-बार ऊपर उठने और नीचे गिरनेवाला।

थिरकौंहाँ[2] *वि.* {हिं. स्थिर} ठहरा हुआ, स्थिर।

थिरजीह *स्त्री.* {सं. स्थिरजिह्व} मछली।

थिरता (ई) *स्त्री.* {सं. स्थिरता} ठहराव; स्थायित्व; शांति।

थिर-थानी *वि.* {सं. स्थिर + स्थान} एक जगह जमकर रहनेवाला।

थिरना *अ.* {सं. स्थिर} पानी आदि का हिलना-डोलना बन्द होना; स्थिर होना; निथरना।

थिरा *स्त्री.* {सं. स्थिरा} पृथ्वी; स्थिरा।

थिराना *स.* {हिं. थिरना} हिलते-डोलते हुए जल को स्थिर होने देना; स्थिर करना; निथारना।

थीता *पुं.* {सं. स्थित} स्थिरता; शान्ति; आराम, चैन, सुख।

थीथी *स्त्री.* {सं. स्थिति} स्थिरता; दृढ़ता; स्थिति, अवस्था; धैर्य, धीरज।

थीर *वि.* थिर, स्थिर।

थीरा *वि.* थिर।

थुकना *वि.* {हिं. थूकना} जिसे थूकते रहने की आदत पड़ी हो।

थुकाना *स.* {हिं. थूकना का प्रे.} किसी को थूकने में प्रवृत्त करना; उगलवाना; किसी की बहुत निंदा करना।

थुक्का-फजीहत *स्त्री.* {हिं. थूक + अ. फ़ज़ीहत} बहुत निकृष्ट कोटि का लड़ाई-झगड़ा।

थुड़ी *स्त्री.* {अनु. थूथू} घृणा और तिरस्कारपूर्वक थूकने का शब्द; धिक्कार, लानत।

मुहा. थुड़ी-थुड़ी करना = बहुत घृणा प्रकट करते हुए धिक्कारना।

थुथकार *स्त्री.* {हिं. थूक} थूकने की क्रिया।

थुथकारना *स.* थुड़ी-थुड़ी करना, परम घृणा प्रकट करना।

थुथाना *क्रि. अ.* {हिं.} अप्रसन्न होना।

थुनेर *पुं.* {हिं.} एक वृक्ष-गठियन।

थुन्नी *स्त्री.* {हिं.} स्तंभ, खंभा, चाँड़।

थुरना *क्रि. स.* {हिं.} मारना, पीटना।

थुरहथा *वि.* {हिं. थोड़ा + हाथ} {*स्त्री.* थुरहथी} हाथ छोटे होने के कारण जिसकी हथेली में थोड़ी चीज आए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदा. कन दैबो सौंप्यो ससुर बहु थुरहनि जान-बिहारी।

कम खर्च करनेवाला, मितव्ययी, कंजूस।

थुलमा पुं. {?} एक प्रकार का कंबल।

थू *विस्मयादि.* {अनु.} थूकने का शब्द; घृणा या तिरस्कार का शब्द, छी।

थूक *स्त्री.* {अनु. थूथू} वह गाढ़ा, लसीला सफेद रस, जो मुँह से निकलता है, खखार, लार।

मुहा. थूकों सत्तू सानना = बहुत किफायत से कोई बड़ा काम करने चलना।

थूकना *अ.* {हिं. थूक} मुँह से थूक निकाल कर बाहर फेंकना।

मुहा. किसी (व्यक्ति या वस्तु) पर न थूकना = अत्यंत तुच्छ या घृणित समझकर दूर रहना; *थूककर चाटना* = कहकर मुकर जाना अथवा देकर लौटा लेना; भविष्य में कोई अनुचित काम न करने की प्रतिज्ञा करना; *स.* मुँह में रखी हुई वस्तु बाहर गिराना, उगलना।

थूथन पुं. {देश.} कुछ लम्बा और मोटा आगे निकलना हुआ मुँह, जैसे सूअर का थूथन।

थून पुं. {सं. स्थूण} खम्भा, स्तंभ; चाड़।

थूनी *स्त्री.* {सं. स्थूणा} किसी बोझ को गिरने से रोकने के लिए उसके नीचे लगाया जानेवाला खम्भा, चाँड़, टेक।

थूरना *स.* {सं. थूवर्ण} कूटना; मारना, पीटना; कसकर भरना।

थूल *वि.* {सं. स्थूल} जो स्पष्ट दिखाई दे, 'सूक्ष्म' का उलटा; मोटा और भारी; भद्दा।

थूला *वि.* {हिं.} हृष्ट-पुष्ट।

थूली *स्त्री.* {हिं.} दलकर अलग हुआ अन्न–दलिया, सूजी।

थूहर पुं. {सं. स्थूण} एक छोटा पेड़ जिसके डंठल डंडे के आकार के होते हैं, सेंहुड़।

थूहा पुं. {हिं.} ऊँची भमि, टीला, राशि का ढेर।

थेवर *वि.* {हिं.} श्रांत, थका हुआ।

थेई-थेई *स्त्री.* {अनु.} थिरक-थिरककर नाचने की मुद्रा; नाच के बोल।

थेगली *स्त्री.* थिगली।

थेथर *वि.* {देश.} {भाव. थेथराई} लस्त-पस्त, बहुत थका हुआ; परेशान।

थैला पुं. {सं. स्थल} {*स्त्री.* अल्पा. थैली} कपड़े आदि का एक प्रकार का झोला जिसमें चीजें रखी जाती हैं, बड़ा बटुआ, झोला।

थैली *स्त्री.* {हिं. थैला} छोटा थैला; वह धन (मुख्यत: चन्दे से इकट्ठा किया हुआ) जो प्राय: थैली में रखकर किसी बड़े आदमी को उसके शुभागमन पर अथवा किसी महत्वपूर्ण अवसर पर, किसी अच्छे काम में लगाने के लिए भेंट किया जाता है (पर्स)।

थोक पुं. {सं. स्तोमक} ढेर, राशि; दल, झुंड; एक साथ बहुत-सा या इकट्ठा माल खरीदने या बेचने का काम 'खुदरा' का उलटा (होल सेल); भारी वस्तु, कुल या पूरी चीज।

थोड़ा *वि.* {सं. स्तोक} {*स्त्री.* थोड़ी} मात्रा या परिमाण में उचित या आवश्यक से कम या घटकर, न्यून, अल्प, कम; *क्रि. वि.* जरा, तनिक।

थोड़ा-बहुत *वि.* न बहुत थोड़ा और न पूरा, कुछ।

थोय *स्त्री.* {हिं.} पोलापन, तोंद।

थोथा *वि.* {देश.} {*स्त्री.* थोथी} जिसमें कुछ सार या तत्व न हो; खोखला, पोला; व्यर्थ का; जिसकी धार तेज न हो, कुंठित।

थोथी *स्त्री.* {हिं.} एक तरह की घास।

थोपना *स.* {सं. स्थापन} गीली वस्तु का पिंड ऊपर से डाल, रख या जमा देना, मोटा लेप चढ़ाना; दोष मत्थे मढ़ना, झूठा अभियोग लगाना।

थोबड़ा पुं. तोबड़ा, पशुओं का थूथन।

थोर *वि.* थोड़ा।

थोरिक *वि.* {हिं. थोड़ा} थोड़ा-सा; अल्प मात्रा में।

थौंद *स्त्री.* तोंद।

थ्यावस *स्त्री.* {?} स्थिरता; धैर्य; धीरज; दृढ़ता।

द

द देवनागरी वर्णमाला का अठारहवाँ व्यंजन और तवर्ग का तीसरा वर्ण इसका उच्चारण दन्त मूल में जिह्वा के अगले भाग के स्पर्श से होता है। शब्दों के अन्त में लगकर यह 'देनेवाला' का अर्थ देता है, जैसे करद, जलद आदि।

दंग *वि.* {फा.} विस्मित, चकित।

दंगई *वि.* {फा. दंगा} दंगा करनेवाला, उपद्रवी; प्रचंड, विकट; *स्त्री.* दंगा।

दंगल पुं. {फा.} बराबर के पहलवानों की वह कुश्ती, जो जोड़ बदकर लड़ी जाए और जिसमें जीतनेवाले को कुछ ईनाम मिले; किसी प्रकार के कौशल की प्रतियोगिता; *वि.* बहुत बड़ा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दंगली *वि.* {फा. दंगल} दंगल-संबंधी।

दंगा *पुं.* {फा. दंगल} बहुत से लोगों को ऐसा झगड़ा जिसमें मार-पीट भी हो, उपद्रव।

दंगैत *पुं.* {हिं.} उपद्रवी, लड़ाका।

दंड *पुं.* {सं.} डंडा, सोंटा, लाठी; डंडे की तरह की कोई चीज, जैसे भुजदंड; किसी चीज में लगी हुई लम्बी लकड़ी; दंडवत्; अपराधी को उसके अपराध के फलस्वरूप पहुँचाई हुई पीड़ा या आर्थिक हानि, सजा; हरजाने के रूप में दिया जानेवाला धन, हरजाना (पेनैलिटी)।

मुहा. दंड *भरना* = दूसरे का नुकसान धन देकर पूरा करना; दंड *सहना* = हानि या घाटा सहना।

दमन, शमन; एक प्रकार का व्यायाम जो पंजों के बल औंधे लेटकर किया जाता है; साठ पल या चौबीस मिनट का समय, घड़ी।

दंड-कंदक *पुं.* {सं.} भूमि-केंद्र।

दंडक *पुं.* {सं.} डंडा; दंड देनेवाला पुरुष, शासक; वह छंद (क) जिसमें वर्णों की संख्या 26 से अधिक हो अथवा (ख) जिसके प्रत्येक चरण में 32 से अधिक मात्राएँ हों।

दंडकर्ता *वि.* {सं.} दंड देनेवाला।

दंडकला *पुं.* {सं.} एक छंद।

दंडकाक *पुं.* {सं.} काला कौवा।

दंडकी *स्त्री.* {सं.} ढोलक।

दंडगौरी *स्त्री.* {सं.} अप्सरा।

दंडढक्का *स्त्री.* {सं.} नगाड़ा।

दंडकवन *पुं.* दंडकारण्य।

दंडकारण्य *पुं.* {सं.} विंध्य पर्वत से गोदावरी के किनारे तक फैला हुआ एक प्राचीन वन।

दंडधर *पुं.* {सं.} यमराज; शासनकर्ता; संन्यासी; चोबदार; दंडनायक।

दंडना *स.* {सं. दंडन} दंड देना।

दंडनायक *पुं.* {सं.} सेनापति; दंडविधान करने या अपराधियों को दंड देनेवाला एक प्राचीन अधिकारी।

दंडनीति *स्त्री.* {सं.} दंड देकर शासन या वश में रखने की नीति।

दंडनीय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* दंडनीया} (व्यक्ति) जो दंडित होने के योग्य हो, जिसे दंड देना उचित हो; (कार्य या अपराध) जिसके लिए किसी को दंड दिया जाना उचित हो या दिया जा सकता हो (पनिशेबुल)।

दंडपाणि *पुं.* {सं.} यमराज; भैरव की एक मूर्ति।

दंडपाल *पुं.* {सं.} दरबान।

दंड-प्रणाम *पुं.* {सं.} दंडवत्, सादर अभिवादन।

दंडमान *वि.* दंडनीय।

दंडवत् *पुं.* {सं.} दंड के समान सीधे पृथ्वी पर लेटकर किया जानेवला नमस्कार, साष्टांग प्रणाम; प्रणाम।

दंडवासी *पुं.* {सं.} गाँव का मुखिया।

दंडविधान *पुं.* दंडविधि; दंडसंहिता।

दंडविधि *स्त्री.* {सं.} वह नियम या विधान जिसमें अपराधों के लिए दंडों का विवेचन या विधान होता है।

दंडसंहिता *स्त्री.* {सं.} वह ग्रंथ जिसमें किसी देश के अपराधों के लिए दिए जानेवाले दंडों का विधान हो (पेनल कोड)।

दंडकारन *पुं.* दंडकारण्य।

दंडाकार *वि.* {सं.} डंडे के आकारवाला।

दंडात्मक *वि.* {सं.} दंड के रूप में होनेवाला।

दंडाधिकारी *पुं.* {सं.} वह राजकीय अधिकारी जिसे अपराधिक अभियोगों का विचार करने और अपराधियों को दंड देने का अधिकार होता है (मेजिस्ट्रेट)।

दंडायमान *वि.* {सं.} खड़ा, डंडों की भांति खड़ा हो।

दंडित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* दंडिता} जिसे दंड मिला हो, सजा पाया हुआ।

दंडी *पुं.* {सं. दंडिन्} वह जो दंड धारण करता हो; एक विशेष प्रकार के संन्यासी, जो सदा हाथ में दंड रखे हैं।

दंड्य *वि.* दंडनीय, दंड पाने योग्य।

दंत *पुं.* {सं.} दाँत; बत्तीस की संख्या।

दंतकथा *स्त्री.* {सं.} वह बात जो परम्परा से लोग सुनते चले आए हों, पर जिसके ठीक होने का कोई प्रमाण न हो।

दंतकार *पुं.* {सं.} दाँत बनाने तथा लगानेवाला डॉक्टर (डेंटिस्ट)।

दंतचक्र *पुं.* {सं.} दाँतेदार चक्र।

दंतधावन *पुं.* {सं.} दाँ और मुँह धोना या साफ करना; दातुन।

दंतबीज *पुं.* {सं.} अनार।

दंतमूलीय *वि.* {सं.} दाँतों के मूल से उच्चरित होनेवाला (वर्ण), जैसे तवर्ग (पोस्ट डेंटल)।

दँतार *वि.* {हिं. दाँत} बड़े-बड़े दाँतों वाला।

दंतायुध *पुं.* {सं.} सूअर, शूकर।

दंतीदंत *पुं.* {सं.} हाथी के दाँत।

दंतिका *स्त्री.* {सं.} जमालगोटा।

दँतिया *स्त्री.* {हिं. दाँत} छोटा दाँत।

दँतुरिया *स्त्री.* दँतिया।

दँतुला *वि.* {सं. दंतुल} जिसके दाँत बड़े हों।

दंद *पुं.* द्वंद्व; दाँत।

दंदन *वि.* {सं. द्वंद्व} {*स्त्री.* दंदनी} दमन करनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दंदाना पुं. {फा.} {*वि.* दंदानेदार} दाँत की तरह उभरी हुई सींकों या दानों की पंक्ति, देसी कंघी या आरे में की।

दंपति (ती) पुं. {सं.} पति और पत्नी का जोड़ा।

दंपा *स्त्री.* {हिं. दमकना} बिजली।

दंभ पुं. {सं.} {*वि.* दंभी} महत्व दिखाने या प्रयोजन सिद्ध करने के लिए अपने आपको बहुत बड़ा समझने के कारण होनेवाला अभिमान।

दंभान पुं. दंभ।

दंभी *वि.* {सं. दंभिन्} {*स्त्री.* दंभिनी} जिसे दम्भ हो; पाखंडी, ढकोसलेबाज; अभिमानी, घमंडी।

दँवरी *स्त्री.* {सं. दमन, हिं. दाँवना} फसल की बालों से दाने निकलवाने का काम जो प्रायः बैलों से लिया जाता है।

दँवारि *स्त्री.* दावानल।

दंश पुं. {सं.} वह घाव जो दाँत काटने या लगने से हुआ हो, दन्तक्षत; दाँत काटने या गड़ाने की क्रिया; विषैले जंतुओं का डंक।

दंशक पुं. {सं.} दाँत से काटनेवाला; डसनेवाला।

दंशन पुं. {सं.} {*वि.* दंशित, दंशी} दाँत से काटना; डंक मारना, डसना।

दंशना *स.* दंशन।

दंष्ट्र पुं. {सं.} दाँत।

दंस पुं. दंश।

दंसना *स्त्री* {सं.} कर्म, काम।

दंसु पुं. {सं.} अलौकिक शक्ति।

दइत पुं. दैत्य।

दई[1] पुं. {सं. दैव} ईश्वर, विधाता।

मुहा. *दई का खोया या दई का मारा* = जिस पर ईश्वर का कोप हो, अभागा, कम्बख्त; दई-दई = हे देव (रक्षा के लिए ईश्वर से की जानेवाली पुकार)।

दैवी संयोग; अदृष्ट, प्रारब्ध, भाग्य।

दई[2] *वि.* {सं. दया} दया करनेवाला, दयालु।

उदा. 'निराधार को आधार दीबन्धु दई।' -तुलसी।

दई-मारा *वि.* {हिं. दई + मारना} {*स्त्री.* दई-मारी} जिस पर दैव या ईश्वर का कोप हो; अभागा, कम्बख्त।

दए *स.* {सं. दान} ब्रजभाषा में 'देना' क्रिया का बहु. भूतकालिक रूप, दिए।

दक पुं. {सं.} उदक, जल, पानी।

दकार पुं. {सं.} तवर्ग का तीसरा अक्षर 'द'।

दकन पुं. {सं. दक्षिण} दक्षिण भारत।

दकनी पुं. {हिं. दकन} दक्षिण भारत का निवासी; *स्त्री.* दक्षिण भारत की भाषा; उर्दू भाषा का पुराना नाम; *वि.* दक्षिण भारत का।

दकियानूस पुं. {यू. से. अ.} फारस और अरब का एक बहुत पुराना बादशाह, जो अपने अत्याचारों के लिए प्रसिद्ध है; *वि.* = दकियानूसी।

दकियानूसी *वि.* {अ.} बहुत ही पुराना और प्रायः रद्दी तथा निकम्मा; बहुत ही पुराने और संकीर्ण विचारोंवाला।

दक्खिन पुं. {सं. दक्षिण} {*वि.* दक्खिनी} उत्तर के सामने की दिशा; दकन।

दक्खिनी *वि.* {हिं. दक्खिन} दक्खिन का; पुं. दक्षिण का निवासी; *स्त्री.* दक्षिण में बोली जानेवाली हिन्दी का एक रूप।

दकोदर पुं. {सं.} पेट-रोग।

दक्ष *वि.* {सं.} {*भाव.* दक्षता} कोई काम करने में निपुण, कुशल। (एडेप्ट); चतुर, होशियार; दक्षिण, दाहिना; पुं. एक प्रजापति जिनसे देवता उत्पन्न हुए थे।

दक्षकन्या *स्त्री.* {सं.} शिवजी की पहली पत्नी, सती।

दक्षसुता *स्त्री.* {सं.} सती।

दक्षिण *वि.* {सं.} 'बाँया' का उलटा, दाहिना; जो किसी की कार्यसिद्धि में अनुकूल या सहायक हो; निपुण, दक्ष; चतुर; पुं. उत्तर के सामने की दिशा (साउथ); वह नायक जो अपनी सब नायिकाओं पर एक-सा प्रेम रखता हो।

दक्षिणकालिका *स्त्री.* {सं.} कालिका देवी।

दक्षिणवीर पुं. {सं.} दाहिना किनारा।

दक्षिण-दिक् *स्त्री.* {सं.} रथ के दाहिने ओर का घोड़ा।

दक्षिणपूर्वक पुं. {सं.} अग्निकोण।

दक्षिणपंथ पुं. = दक्षिणमार्ग।

दक्षिणपंथी पुं. = दक्षिणमार्गी।

दक्षिणमार्ग पुं. {सं.} {*वि.* दक्षिणमार्गी} वैदिक धर्म या मार्ग जिसके विपरीत होने के कारण तांत्रिक मत या धर्म 'वाममार्ग' कहलाया; परवर्ती तांत्रिक मत के अनुसार एक प्रकार का आचार जो वैदिक, वैष्णव और शैव मार्गों की अपेक्षा अच्छा, परंतु वाममार्ग से निम्न कोटि का बताया गया है; आधुनिक राजनीति में वह मार्ग या पक्ष, जो साधारण और वैधानिक रीति तथा शांत उपायों से विकास चाहता हो और उग्र उपायों से क्रांनित करने का विरोधी हो (राइटविंग)।

दक्षिणमार्गी *वि.*, पुं. {सं. दक्षिमार्गिन्} दक्षिण मार्ग का अनुयायी।

दक्षिणा *स्त्री.* {सं.} दक्षिण दिशा; वह धन जो किसी दान की हुई चीज के साथ ब्राह्मणों को दिया जाता है; भेंट के रूप में नगद दिया जानेवाला धन; वह नायिका जो नायक के अन्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियों से संबंध रखने पर भी उससे पूरी प्रीति रखती और सद्व्यवहार करती हो।

दक्षिणाचल पुं. {सं.} मलयपर्वत, मलयाचल।

दक्षिणापथ पुं. {सं.} विन्ध्य पर्वत के दक्षिण की ओर का प्रदेश।

दक्षिणायन *वि.* {सं.} भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर होनेवाला, जैसे दक्षिणायन सूर्य; पुं. सूर्य का कर्क रेखा से दक्षिण मकर रेखा की ओर जाना या खिसकना, जो 21 जून से 22 दिसम्बर तक होता है।

दक्षिणावर्त *वि.* {सं.} जिसका मुख या प्रवृत्ति दाहिनी ओर हो; जो परिभ्रमण करने या घूमने में दाहिनी ओर से आगे बढ़ता हो, 'वामावर्त' का उलटा (काउंटर-क्लॉकवाइज़)।

दक्षिणी *वि.* {सं. दक्षिणीय} दक्षिण का।

दक्षेस पुं. दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघटन का संक्षिप्त रूप (सार्क)।

दखमा पुं. {हिं.} पारसियों का शव रखने का स्थान।

दखलंदाज पुं. {फा.} दखल देनेवाला, हस्तक्षेप करनेवाला।

दखलंदाजी *स्त्री.* {फा.} हस्तक्षेप।

दखल पुं. {अ. दख्ल} अधिकार, कब्जा; हस्तक्षेप; पहुँच, प्रवेश।

दखलदिहानी *स्त्री.* {अ. + फा.} अदालत से किसी को किसी संपत्ति पर अधिकार, कब्जा या दखल दिलाने का काम (डिलेवरी ऑफ पज़ेशन)।

दखिन पुं. दक्षिण।

दखील *वि.* {अ. दखील} जिसका दखल या कब्जा हो, अधिकार रखनेवाला।

दखीलकार पुं. {अ. दखील + फा. कार} {*भाव.* दखीलकारी} वह किसान जिसे किसी जमींदार का खेत कम-से-कम बारह वर्षों तक जोतने-बोने के कारण उस पर सदा के लिए अधिकार मिल गया हो।

दखीलकारी *स्त्री.* {फा. दखीलकार} दखीलकार का कार्य, भाव या पद; दखीलकार को मिले हुए अधिकार। (ऑकुपेंसी राइट)

दगड़ पुं. {सं. द्रगड} बड़ा ढोल।

दगदगा पुं. {अ.} डर, भय; संदेह।

दगदगी *स्त्री.* दगदगा।

दगध पुं. दाह; *वि.* दग्ध।

दगधना *अ.* {सं. दग्ध} जलना; *स.* जलाना; दुख देना।

दगना *अ.* {सं. दग्ध + हिं. ना (प्रत्य.)} दागा या चिह्नित किया जाना, अंकित होना; दागा या दग्ध किया जाना; (बंदूक, तोप आदि का) दागा या छोड़ा जाना, छूटना, चलना; झुलस जाना; कलंकित होना; किसी नए या विशेष नाम से प्रसिद्ध होना; *स.* दागना।

दगल, दगला पुं. {?} रुईदार अँगरखा; मोटा और भारी लबादा।

दगवाना *स.* हिं. दागना का प्रे.।

दगहा[1] *वि.* {हिं. दाग} जिसमें या जिसपर दाग हो, दागवाला।

दगहा[2] *वि.* {हिं. दाह = प्रेतकर्म + हा (प्रत्य.)} जिने मृतक का दाहकर्म किया हो और जो अभी श्राद्ध आदि करके शुद्ध न हुआ हो।

दगहा[3] *वि.* {सं. दग्ध} दग्ध किया या जलाया हुआ; दागा हुआ, चिह्न लगाया हुआ।

दगा *स्त्री.* {अ. दगा} छल-कपट, धोखा।

दगादार *वि.* दगेबाज।

दगेबाज *वि.* {फा. दगाबाज} {*भाव.* दगेबाजी} धोखा देनेवाला, धोखेबाज, छली।

दगैल *वि.* {अ. दाग + एल (प्रत्य.)} जिसमें या जिस पर दाग हो, दागदार; जो कारागार का दंड भोग चुका हो।

दग्ध *वि.* {सं.} जला या जलाया हुआ; जिसे कष्ट पहुँचा हो, पीड़ित।

दग्धा *स्त्री.* {सं.} सूर्य के अस्त होने की दिशा, पश्चिम दिशा, अशुभ तिथियाँ, राशिभेदयुक्त कुछ तिथियों के नाम; यथा–रविवार की द्वादशी, सोमवार की एकादशी आदि।

दग्धाक्षर पुं. {सं.} छंदशास्त्र में झ, ह, र, भ और ष ये पाँचों अक्षर जिसका छंद के आरंभ में रखना अशुभ माना जाता है।

दग्धित *वि.* दग्ध।

दचक *स्त्री.* {हिं. दचकना} दचकने की क्रिया या भाव।

दचकना *अ.* {अनु.} {*भाव.* दचक} झटका, ठेस या हलकी ठोकर खाना; कुछ दब जाना; *स.* हलका धक्का लगाना, झटका देना; दबाना।

दचका पुं. दचक।

दच्छना *स्त्री.* दक्षिणा।

दच्छिन *वि.* दक्षिण।

दढ़ना *अ.* {सं. दहन} जलना।

दढ़ियल *वि.* {हिं. दाढ़ी + इयल (प्रत्य.)} जिसे दाढ़ी हो, दाढ़ीवाला।

दतना *अ.* {?} मग्न या लीन होना।

दतवन *स्त्री.* दतुअन।

दतुअन (वन) *स्त्री.* {सं. दन्तधावन} नीम, बबूल आदि की वह छोटी टहनी, जिससे दाँत साफ करते हैं, दातुन; दाँत साफ करने की क्रिया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दतौन *स्त्री.* दतुअन।

दत्त *पुं.* {सं.} दत्तात्रेय; दान; दत्तक; *वि.* {*स्त्री.* दत्ता} जो दिया जा चुका हो, दिया हुआ; जिसका कर, देन परिव्यय आदि चुका दिया गया हो, चुकता किया हुआ (पेड)।

दत्तक *पुं.* {सं.} वह जो अपना पुत्र न होने पर भी शास्त्र या विधि के अनुसार अपना पुत्र बना लिया गया हो, गोद लिया हुआ लड़का, मुतबन्ना (एडॉप्टेड सन)।

दत्तकग्रहण *पुं.* {सं.} किसी लड़के को लेकर अपना दत्तक पुत्र बनाने की क्रिया या विधान (एडॉप्शन)।

दत्तकग्राही *वि.* {सं. दत्तकग्राहिन्} जो किसी लड़के को गोद लेकर अपना लड़का बनाए, उत्तक लेनेवाला (एडॉप्टिव)।

दत्तप्राण *वि.* {सं.} जिसने अपने प्राण उत्सर्ग किए हों।

दत्तवर *वि.* {सं.} जिसे ईश्वरीय वरदान या महानता प्राप्त हो।

दत्तहस्त *वि.* {*स.*} जिसे अभयदान या सहारा दिया गया हो।

दत्तात्रेय *पुं.* {सं.} एक ऋषि जो विष्णु के अवतार माने जाते हैं।

दत्तय *पुं.* {सं.} इंद्र।

दत्तचित्त *वि.* {सं.} जिसका किसी काम में खूब जी लगा हो।

दत्तविधान *पुं.* {सं.} किसी लड़के को दत्तक के रूप में अपना लड़का बनाना, गोद लेना।

दत्ता *पुं.* दत्तात्रेय।

दत्तात्रेय *पुं.* {सं.} एक प्रसिद्ध पौराणिक महात्मा, जिनकी गिनती चौबीस अवतारों में होती है।

ददिऔरा *पुं.* ददिहाल।

ददिहाल *पुं.* {हिं. दाद + सं. आलय} दादा का वंश; दादा का घर।

ददोरा *पुं.* {हिं. दाद} किसी जंतु के काटने या रक्तविकार आदि के कारण चमड़े पर होनेवाली थोड़ी सूजन, चकत्ता।

दद्रु *पुं.* {सं.} दाद रोग।

दध *पुं.* दधि।

दधि[1] *पुं.* {सं.} दही; कपड़ा।

दधि[2] *पुं.* {सं. उदधि} समुद्र, सागर।

दधिक *पुं.* {सं.} सलई का पेड़।

दधिका *पुं.* {सं.} अश्व, घोड़ा।

दधिकाँदो *पुं.* {सं. दधि + हिं. काँदो = कीचड़} जन्माष्टमी के बाद होनेवाला एक उत्सव जिसमें हलदी मिला हुआ दही लोग एक दूसरे पर छिड़कते हैं।

दधिसुत *पुं.* {सं. उदधि + सुत} चंद्रमा।

दनदन *स्त्री.* {अनु.} गोलियाँ चलने का शब्द।

दनदनाना *अ.* {अनु.} दनदन शब्द करना; आनन्द करना; निश्शंक होकर कोई काम करना।

दनादन *क्रि. वि.* {अनु.} दनदन शब्द के साथ; लगातार, निरंतर।

दनुज *पुं.* {सं.} {*भाव.* दनुजता, दनुजत्व} असुर, राक्षस।

दनुष *पुं.* {सं.} रावण।

दपट *स्त्री.* {हिं. डपट} डाँटने या डपटने की क्रिया या भाव, डपट।

दपटना *अ.* {हिं. डप्ट} डाँटना।

दपु *पुं.* दर्प, अहंकार, घमंड।

दपेट *स्त्री.* दपट।

दफन *पुं.* {अ. दफ्न} कोई चीज विशेषत: मृत शरीर जमीन में गाड़ना।

दफनाना *स.* {अ. दफ्न + हिं. आना (प्रत्य.)} दफन करना, गाड़ना (विशेषत: मृत शरीर)।

दफा *स्त्री.* {अ. दफ्अ:} बार, मरतबा; विधान आदि का वह कोई एक अंश जिसमें किसी एक अपराध, विषय या कार्य के संबंध में कोई बात कही गई या कोई विधान किया हो गया, धारा।

मुहा. दफा लगाना = अभियुक्त पर किसी दफा के नियम घटाते हुए, अधिकारी का यह निश्चय करना कि अभियुक्त इस दफा के अनुसार दंडित हो सकता है।

वि. दूर किया या हटाया हुआ, तिरस्कृत।

दफ्तर *पुं.* {फा. दफ़्तर} कार्यालय; सविस्तर वृत्तान्त, चिट्ठा।

दफ्तरी *पुं.* {फा. दफ़्तरी} किसी दफ्तर के कागज आदि सँभालकर रखनेवाला कर्मचारी; किताबों की जिल्द बाँधनेवाला, जिल्दसाज, जिल्दबन्द।

दफ्ती *स्त्री.* {अ. दफ्तीन} कागज की परतों को जोड़कर बनाया हुआ मोटा वरक, पतला गत्ता।

दबंग *वि.* {हिं. दबाव या दबाना} प्रभावशाली, दबाववाला।

दब *वि.* {हिं. दबना} किसी की तुलना में कम या घटिया; *पुं.* दबाव।

दबक *स्त्री.* {हिं.} छिपने का भाव, दबने की क्रिया, सिकुड़न।

दबकगर[1] *पुं.* {हिं.} धातु का तार बनाने वाला।

दबकगर[2] *वि.* {फा. तबकगर} धातु के पत्तर पीटकर तबक या परत बनाना।

दबकना[1] *अ.* {हिं. दबना} भय, संकोच, लज्जा आदि के कारण छिपना; लुकना, छिपना।

दबकना[2] *स.* {फा. तबक} धातु का पत्तर पीटकर बड़ा करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दबकनी *स्त्री.* {हिं.} भावी का छिद्र जिसने हवा भीतर जाती है।

दबकाना *स.* {हिं. दबकना} आड़ में करना, छिपाना।

दबकिया *पुं.* दबकगर।

दबदबा *पुं.* {अ.} आतंक, रोब-दाब।

दबना *अ.* {हिं. दबाना} भारी चीज के नीचे आना या होना, बोझ के नीचे पड़ना; किसी ओर से बहुत जोर पड़ने पर अपने स्थान से पीछे हटना; ऊपरी तल का कुछ नीचा हो जाना; किसी के दबाव में पड़कर उसके इच्छानुसार काम करने के लिए विवश होना; किसी के सामने हलका ठहरना; किसी बात का जहाँ-का-तहाँ रह जाना और उस पर कोई कार्रवाई न होना; अपनी चीज या प्राप्य धन का किसी दूसरे के अधिकार में चला या रह जाना; बात-चीत या झगड़े में धीमा या मंद पड़ना; संकोच करना।

मुहा. दबी जबान से कहना = बहुत ही धीरे से, दृढ़ता छोड़कर या संकोचपूर्वक कोई बात कहना, डरते-डरते और दबते हुए कुछ करना।

दबाना *स.* {सं. दमन} {*भा.* दाब, दबाव} ऊपर से इस प्रकार भार रखना, जिसमें कोई चीज नीचे की ओर धँसे या इधर-उधर हट न सके; किसी पर किसी ओर से इस प्रकार जोर पहुँचाना कि उसे पीछे हटना पड़े; किसी पर ऐसा जोर पहुँचाना कि वह कुछ कर न सके; मुकाबले में मंद या हलका कर देना; किसी बात को बढ़ने न देना; जमीन में गाड़ना; उभरते हुए वेग, विरोध आदि का दमन करना, शान्त करना; अपने हाथ में आई हुई किसी दूसरे की चीज अपने पास रोक रखना।

दबाव *पुं.* {हिं. दबाना} दबाने की क्रिया या भाव, चाँप।

दबीज *वि.* {फा.} मोटा, माढ़ा, मजबूत, गफ़, ठस।

दबैल *वि.* {हिं. दबना + ऐल (प्रत्य.)} जिस पर किसी का प्रभाव या दबाव हो; बहुत दबने या डरनेवाला; किसी के उपकार, आतंक आदि से दबा हुआ।

दबोचना *स.* {हिं. दबाना} किसी को झट से पकड़कर दबा लेना, धर दबाना; छिपाना।

दबोरना *स.* = दबाना।

दब्बू *वि.* {हिं. दबना} स्वभाव से दुर्बल, दूसरों से दब जानेवाला।

दमंकना *अ.* = दमकना।

दम[1] *पुं.* {सं.} वह दंड जो दमन करने के लिए दिया जाता है, सजा; इंद्रियों को वश में रखना और उन्हें बुरे मार्ग पर न लगने देना।

दम[2] *पुं.* {फा.} मांस, श्वास।

मुहा. दम अटकना = मरने के समय साँस रुकना; *दम खींचना* = चुप रह जाना, कुछ न बोलना; साँस ऊपर चढ़ाना; *दम घुटना* = हवा की कमी के कारण साँस लेने में कष्ट होना; *दम तोड़ना* = मरने के समय अंतिम साँस लेना; *दम फूलना* = अधिक परिश्रम या दमे के रोग आदि के कारण साँस का जोर-जोर से चलना; *दम भरना* = किसी के प्रेम, मित्रता आदि का पूरा भरोसा रखकर अभिमानपूर्वक उसकी चर्चा करना; परिश्रम के कारण इतना अधिक थक जाना कि और अधिक परिश्रम न हो सके; *दम मारना* = न बोलना, कुछ न कहना; *दम लेना* = विश्राम करना, सुस्ताना; *दम साधना* = श्वास की गति रोकना; आवश्यकता होने पर भी चुप रहना, मौन रहना; नशे आदि के लिए मुँह से धुआँ खींचने की क्रिया।

मुहा. दम मारना या लगाना = गाँजे का धुआँ खींचना या पीना।

उतना समय, जितना एक बार साँस लेने में लगता है, पल।

पद दम के दम = क्षण भर, थोड़ी देर; *दम पर दम* = बहुत ही थोड़े-थोड़े समय पर।

प्राण, जान, जी।

मुहा. नाक में दम आना = बहुत तंग या परेशान होना; *दम निकलना* = मृत्यु होना, मरना; *दम सूखना* = बहुत डर के कारण साँस लेने तक का साहस न होना, प्राण सूखना।

किसी व्यक्ति या पदार्थ की व जीवनी-शक्ति जिससे वह अपना अस्तित्व बनाए रखता और काम चलाता है; व्यक्ति का अस्तित्व, व्यक्तित्व।

मुहा. (किसी का) दम गनीमत होना = (किसी के) अस्तित्व या जीवित रहने के कारण कुछ-न-कुछ उपयोगिता या लाभ होता रहना।

किसी बरतन में कोई चीज रखकर और उसका मुँह बंद करके उसे आग पर पकाना; धोखा, छल, कपट।

मुहा. दम देना = बहकाना, धोखा देना।

एक प्रकार का पुराना हथियार।

दमक *स्त्री.* चमक, दम करनेवाला, शासक कर्त्ता; *स्त्री.* {हिं.} द्युति, चमकाहट।

दमकना *अ.* = चमकना, चमकाना।

दमकल *स्त्री.* {हिं. दम + कल} वह यंत्र जिसके द्वारा कोई तरल पदार्थ हवा के दबाव से, ऊपर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा और किसी ओर झोंके से फेंका जाता है; वह यंत्र जिसकी सहायता से पानी डालकर लगी हुई आग बुझाई जाती है; कुएँ से पानी निकालने का एक प्रकार का यंत्र; दमकला।

दमकला पुं. {हिं. दमकल} एक प्रकार का बड़ा पात्र जिसमें लगी हुई पिचकारी से जनसमूह पर गुलाब-जल या रंग छिड़का जाता है; दमकल; दम-चूल्हा।

दमखम पुं. {फा.} दृढ़ता, मजबूती; जीवनी-शक्ति, प्राण; तलवार की धार, घाट और लचीलापन; मूर्ति की सुन्दर और सुडौल गढ़न; गोलाई लिए लगातार चलनेवाली वे रेखाएँ जिनसे कोई चित्र जानदार मालूम होता है।

दमघोंटू *वि.* {हिं. दम + घोटना} दम घोटनेवाला।

दम-चूल्हा *वि.* {हिं. दम + चूल्हा} एक प्रकार का लोहे का गोल चूल्हा।

दम-झाँसा पुं. दम-बुत्ता।

दम चूल्हा पुं. {हिं.} एक प्रकार का लोहे का बना-चूल्हा जिसके बीच में जाली होती है और बगल में धुआँ जाने का छेद होता है।

दमड़ी *स्त्री.* {सं. द्रम्म + हिं. ड़ी (प्रत्य.)} पैसे का आठवाँ भाग।

मुहा. दमड़ी का पूत = बहुत ही हीन और अयोग्य व्यक्ति।

दमदमा पुं. {फा.} मोरचा, धुस।

दमदार *वि.* {फा.} जिसमें पूरा दम या जीवनी-शक्ति हो; मजबूत।

दम-दिलासा पुं. दम-बुत्ता।

दमन पुं. {सं.} दबाने या रोकने की क्रिया, निग्रह, जैसे इन्द्रियों या वासनाओं का दमन; विरोध, उपद्रव, विद्रोह आदि को बल का प्रयोग करके दबाना (रिप्रेशन); दंड, सजा; *स्त्री.* दमयंती।

दमनक पुं. {सं.} एक प्रकार पौधा दौना, एक छंद विशेष जिसमें छः अक्षर होते हैं।

दमनकारी *वि.* {सं. दमनकारिन्} दमन करनेवाला, पीड़क।

दमनशील *वि.* {*भाव.* दमनशीलता} जिसकी प्रकृति दमन करने की हो।

दमना *अ.* {हिं. दम + ना (प्रत्य.)} अधिक परिश्रम के कारण दम भर जाना, साँस फूलना।

दमनी *स्त्री.* {सं.} अग्निदमनी नामक पौधा; *स्त्री.* {हिं.} संकोच, लज्जा।

दमनीय *वि.* {सं.} जिसका दमन किया जा सके; जिसका दमन करना आवश्यक हो।

दम-पट्टी *स्त्री.* दम-बुत्ता।

दमबाज *वि.* {फा. दम + बाज} {भाव. दमबाजी} दम-बुत्ता या चकमा देनेवाला, फुसलानेवाला; गाँजा, चरस आदि पीनेवाला, गाँजे का दम लगानेवाला।

दम-बुत्ता पुं. {हिं. दम} केवल फुसलाने या शांत रखने के लिए कही जानेवाली झूठी बात।

दमयंती *स्त्री.* {सं.} विदर्भ के राजा भीमसेन की कन्या, जो नल को ब्याही थी।

दमरी *स्त्री.* दमड़ी।

दमशील *वि.* {सं.} इन्द्रियों को वश में रखनेवाला; दमनशील।

दमा पुं. {फा. दमः} एक प्रसिद्ध रोग जिसमें साँस बहुत कष्टपूर्वक और कुछ जोर से चलता है।

दमाद पुं. {सं. जामातृ} कन्या का पति, जँवाई, जामाता।

दमामा पुं. {फा.} नगाड़ा, डंका।

दमरि *स्त्री.* = *स्त्री.* दावाग्नि (दावानल)।

दमावति *स्त्री.* दमयंती।

दमैया *वि.* दमनशील।

दयंत पुं. दैत्य।

दया *स्त्री.* {सं.} वह मनोवेग, जो दूसरे का दुख देखकर वह दुख दूर करने की प्रेरणा करता है, करुणा, रहम।

दयादृष्टि *स्त्री.* {सं.} दया की दृष्टि, मेहरबानी की नजर।

दयानत *स्त्री.* {अ.} सत्यनिष्ठा, ईमानदारी।

दयानतदार *वि.* {*भाव.* दयानतदारी} = ईमानदार।

दयाना *अ.* {हिं. दया + ना (प्रत्य.)} दया करना, कृपालु होना।

दयानिधान पुं. दयानिधि।

दयानिधि पुं. {सं.} बहुत दयालु पुरुष; ईश्वर।

दयापर *वि.* = दयालु।

दयापात्र पुं. {सं.} वह जो दया किए जाने के योग्य हो अथवा जिसपर दया करना उचित या आवश्यक हो।

दयामय पुं. {सं.} दया से पूर्ण, दयालु; ईश्वर।

दयार पुं. {अ.} प्रांत, प्रदेश; आसपास का स्थान।

दयार्द्र *वि.* {सं.} {*भाव.* दयार्द्रता} दयापूर्ण, दयालु।

दयाल *वि.* दयालु।

दयालु *वि.* {सं.} {*भाव.* दयालुता} बहुत दया करनेवाला, दयाशील।

दयावंत *वि.* दयालु।

दयावना *वि.* {हिं. दया} {*स्त्री.* दयावनी} दया के योग्य, दयनीय; *अ.* दया या कृपा करना।

दयावान, दयावान् *वि.* {सं.} {*स्त्री.* दयावती} जिसके मन में दया हो, दयालु।

दयासागर पुं. दयानिधि, अत्यंत दयालु मनुष्य।

दयो *स.* {सं. दान} व्रज. में 'देना' क्रिया का एक वचन भूतकालिक रूप, दिया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर¹ पुं. {सं.} शंख; गड्ढा, दरार; गुफा, कन्दरा; फाड़ने की क्रिया या भाव, विदारण; पुं. दल; डर।

दर² पुं. {फा.} द्वार, दरवाजा; जगह, स्थान; मकान के अंदर का विभाग; मकान की मंजिल, खंड; राजद्वार या राजसभा।

मुहा. दर-दर *मारा फिरना* = दुर्दशाग्रस्त होकर इधर-उधर घूमना।

दर³ *स्त्री.* {फा.} वह निश्चित या स्थिर मूल्य या पारिश्रमिक जिस पर कोई चीज बिकती या कोई काम होता हो, भाव, निर्ख (रेट); प्रतिष्ठा, आदर।

दर⁴ *स्त्री.* {सं. दारु} ईख, ऊख।

दरक¹ *स्त्री.* {हिं. दरकना} दरकने की क्रिया या भाव; सन्धि, दरज।

दरक² *वि.* {सं.} डरपोक, कायर।

दरकच *स्त्री.* {हिं.} रगड़ लग जाने से चोट या चोट लगने से कुचल जाने से लगी हुई चोट।

दरकन *स्त्री.* = दरक।

दरकना *अ.* {सं. दर = फाड़ना} दाब पड़ने या आघात लगने से फटना, चिरना।

मुहा. दरक-दरककर *रोना* = फूट-फूटकर रोना, बहुत अधिक विलाप करना।

दरका पुं. {हिं. दरकना} दरक, दरार; ऐसी चोट या धक्का जिससे कोई चीज दरक या फट जाए।

दरकाना *क्रि.* {अ. सं. हिं.} फटना, फाड़ना।

दरकार *वि.* {फा.} जिसकी जरूरत हो, आवश्यक; अभिलषित।

दरकारी *स्त्री.* {फा. दरकार} आवश्यकता।

दरकिनार *क्रि. वि.* {फा.} बिल्कुल अलग, एक किनारे, दूर।

दरकिराएदार पुं. {फा. दर + किराएदार} वह जो किसी किराएदार का किराएदार हो।

दरखत पुं. दरख्त, पेड़, वृक्ष।

दरखास्त *स्त्री.* {फा. दरख्वास्त} निवेदन, प्रार्थना; प्रार्थनापत्र।

दरखास्ती *वि.* {फा. दरख्वास्त} दरखास्त से संबंध रखनेवाला, जैसे दरखास्ती कागज।

दरख्त पुं. {फा. दरख्त} वृक्ष, पेड़।

दरगाह *स्त्री.* {फा.} किसी सिद्ध पुरुष का समाधि-स्थान, मकबरा (मुसल.)।

दरज *स्त्री.* = दरार।

दरजन पुं. {अ. डजन} गिनती में बारह का समूह।

दरजा पुं. {फा. दरज:} ऊँचे-नीचे या छोटे-बड़े क्रम के विचार से नियत स्थान, श्रेणी, वर्ग; इस प्रकार किया हुआ विभाग; पद, ओहदा।

दरजी पुं. {फा. दर्ज़ी} {*स्त्री.* दरजिन} वह जो कपड़े सीने का व्यवसाय करता हो।

दरण पुं. {सं.} दलने या पीसने की क्रिया या भाव; ध्वंस, विनाश।

दरद पुं. {फा. दर्द} पीड़ा, व्यथा; दया, करुणा; पुं. कश्मीर के पश्चिम का एक प्राचीन देश; एक प्राचीन म्लेच्छ जाति जो उक्त देश में रहती थी।

दर-दर *क्रि. वि.* {फा. दर} द्वार-द्वार, लोगों के दरवाजे-दरवाजे।

दरदरा *वि.* {सं. दरण = दलना} {*क्रि.* दरदराना, *स्त्री.* दरदरी} जिसके कण या रवे महीन न हों, कुछ मोटे हों।

दरदवंत (द) *वि.* {फा. दर्दमंद} दूसरों का कष्ट समझनेवाला, कृपालु; पीड़ित, दुखी।

दरदीला *वि.* {हिं. दरद + ईला} जो दूसरे का दर्द समझता हो।

दरन *वि., पुं.* दलन।

दरना *स.* दलना।

दरप पुं. दर्प।

दरपन पुं. दर्पण।

दरपना *अ.* {सं. दर्पण} दर्प या क्रोध करना; घमंड करना।

दरबंदी *स्त्री.* {फा.} अलग-अलग दर या विभाग बनाना; चीजों की दर या भाव निश्चित करना।

दरब पुं. {सं. द्रव्य} धन, दौलत।

दरबर *स्त्री.* {अनु.} आतुरता, उतावली।

दरबा पुं. {फा. दर} पक्षियों के रहने के लिए काठ का बना हुआ खानेदार घर।

दरबान पुं. {फा., मि. सं. द्वारपाल} ड्योढ़ीदार, द्वारपाल।

दरबानी *स्त्री.* {फा. दरबान} दरबान का पद या काम।

दरबार पुं. {फा.} {*वि.* दरबारी} वह स्थान, जहाँ राजा-महाराजा अपने सरदारों या मुसाहबों के साथ बैठते हैं; राजसभा; महाराज, राजा (रियासतों में)।

दरबार-आम पुं. {फा.} सार्वजनिक राजसभा।

दरबार-खास पुं. {फा.} राजा का निजी या विशिष्ट सभा-भवन।

दरबारदारी *स्त्री.* {फा.} किसी बड़े आदमी के यहाँ प्राय: जाकर बैठना और उसे प्रसन्न करनेवाली बातें या काम करना।

दरबारविलासी पुं. दरबान।

दरबारी पुं. {फा.} किसी के दरबार में प्राय: जाकर बैठनेवाला आदमी; *वि.* दरबार का; दरबार के योग्य।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरबी *स्त्री.* {सं. दर्वी} कलछी।
दरभ *पुं.* {?} दर्भ, बंदर।
दरमाहा *पुं.* {फा.} मासिक वेतन।
दरमियान *पुं.* {फा.} मध्य, बीच; *क्रि. वि.* बीच या मध्य में।
दरमियानी *वि.* {फा.} बीच का।
दररना *स.* दोरना।
दरलोहा *पुं.* {दर? हिं. लोहा} अस्त्र-शस्त्र, हथियार।
दरवाजा *पुं.* {फा. दरवाजा} द्वार, फाटक; किवाड़, कपाट; वह चौखटा जिसमें किवाड़े जड़े रहते हैं।
दरवी *स्त्री.* {सं. दर्वी} कलछी, पौनी; साँप का फन।
दरवेश *पुं.* {फा.} साधु, फकीर; मुसलमान त्यागी भिक्षुओं का एक संप्रदाय।
दरशन *पुं.* दर्शन।
दरशनी *स्त्री.* {सं. दर्शन} दर्पण।
दरशनी हुंडी *स्त्री.* दर्शनी हुंडी।
दरशाना *अ., स.* दरसाना।
दरस *पुं.* {सं. दर्श} देखादेखी, दर्शन, दीदार; भेंट, मुलाकात; छवि, शोभा।
दरसन *पुं.* = दर्शन।
दरसना *अ.* {सं. दर्शन} दिखाई देना; *स.* देखना।
दरसनियाँ *पुं.* {सं. दर्शन} वह जो शीतला आदि की शांति के लिए पूजा और उपचार करता हो।
दरसनी *स्त्री.* {सं. दर्शन} दर्पण।
दरसान *पुं.* {हिं.} प्रकाश, चमक।
दरसाना *स.* {सं. दर्शन} दिखलाना; कुछ-कुछ प्रकट करना, झलकाना; *अ.* दिखाई देना।
दराई *स्त्री.* {हिं.} मजदूरी।
दराँती *स्त्री.* {सं. दात्र} हँसिया की तरह का एक औजार जो घास, वनस्पति, फसल आदि काटने के काम में आता है।
दराज[1] *वि.* {फा. दराज़} बहुत; लंबा।
दराज[2] *स्त्री.* {अं. ड्रॉअर} टेबुल या मेज में लगा हुआ, वह खाना जो बाहर खींचा या खोला जा सकता हो।
दरार *स्त्री.* {सं. दर} किसी चीज के फटने पर बीच में पड़नेवाली खाली जगह, संधि, दराज।
दरि *स्त्री.* {सं.} मुहा, कन्दरा।
दरितू *वि.* {सं.} भयभीत, डरपोक।
दरिद्र *वि.* {सं.} {*स्त्री.* दरिद्रा} जिसके पास कुछ भी धन-संपत्ति न हो, बहुत गरीब, निर्धन।
दरिद्रता *स्त्री.* {सं.} निर्धनता, गरीबी।
दरिद्र-नारायण *पुं.* {सं.} दरिद्रों और दीन-दुखियों के रूप में रहने या माने जानेवाले नारायण या ईश्वर।
दरिद्री *वि.* दरिद्र।
दरिया *पुं.* {फा.} नदी; समुद्र।
दरियाई[1] *वि.* {फा.} दरिया नदी-संबंधी; नदी के पास या किनारे का; समुद्र-संबंधी।
दरियाई[2] *स्त्री.* {फा. दाराई} एक प्रकार का पतला रेशमी कपड़ा।
दरियाई घोड़ा *पुं.* गैंड़े की तरह का एक जानवर, जो जलाशयों के पास रहता है।
दरियाई नारियल *पुं.* एक प्रकार का बड़ा नारियल जिसके खोपड़े का पात्र या कमंडल बनता है।
दरियादिल *पुं.* {हिं.} उदार, दानी, दाता।
दरियाफ्त *वि.* {फा. दरियाफ़्त} जिसके संबंध की बातें जान ली गई हों, ज्ञात, मालूम; *पुं.* पूछकर कुछ जानने की क्रिया या भाव।
दरियाबरार *पुं.* {फा.} किसी नदी की धारा पीछे हट जाने से निकली हुई भूमि।
दरियाबुर्द *पुं.* {फा.} वह भूमि जिसे कोई नदी काट ले गई हो।
दरियाव *पुं.* {फा. दरिया} नदी; समुद्र।
दरियाशिकस्त *पुं.* {फा.} वह भूमि जो किसी नदी की धार या बाढ़ के कारण कटकर उसके साथ बह गई हो।
दरी[1] *स्त्री.* {सं.} गुफा, खोह; वह पहाड़ी नीचा स्थान जहाँ कोई नदी या नाला गिरता हो।
दरी[2] *स्त्री.* {सं. स्तर} मोटे सूतों का बुना हुआ एक प्रकार का बिछौना, शतरंजी।
दरीखाना *पुं.* {हिं. दरी + फा. खानाः} बड़े आदमियों के मकान में वह बड़ा कमरा या बैठक जिसमें आने-जानेवाले लोग बैठते हैं।
दरीचा *पुं.* {फा. दरीचः} {*स्त्री.* अल्पा. दरीची} खिड़की, झरोखा।
दरीबा *पुं.* {?} वह बाजार जिसमें पान बिकते हों।
दरेक *पुं.* {हिं.} बकाइन का पेड़।
दरेरना *स.* {सं. दरण} रगड़ना; मोटा या दरदरा पीसना।
दरेरा *पुं.* {हिं. दरेरना} दरेरने या रगड़ने की क्रिया या भाव; ददेरे जाने के कारण पड़नेवाला दबाव, चाप, दाब।
उदा. 'मन को दुसह दरेरो'—**तुलसी**।
बहाव का जोर, पानी का तोड़, तरखा।
दरेस *स्त्री.* {अं. ड्रेस} एक प्रकार का फूलदार महीन कपड़ा; पोशाक; *वि.* बना-बनाया, तैयार।
दरेसी *स्त्री.* {हिं. दरेस} ऊबड़-खाबड़ जमीन समतल या बराबर करना।
दरैया *पुं.* {सं. दरण} दलनेवाला; घातक, विनाशक।
दरोग *पुं.* {अ. दरोग़} झूठ, असत्य।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरोगहल्फी *स्त्री.* {अ. दरोग़हल्फ़ी} न्यायालय के सामने सच बोलने की कसम खाकर या हलफ लेकर भी झूठ बोलना।

दरोगा *पुं.* दारोगा।

दर्ज *वि.* {फा.} बही, रजिस्टर आदि में लिखा हुआ; *स्त्री.* दरज।

दर्द *पुं.* {फा.} पीड़ा, व्यथा; दुख, तकलीफ, कष्ट; किसी का कष्ट देखकर मन में उत्पन्न होनेवाली दया।

दर्दनाक *वि.* {फा.} करुणाजनक।

दर्दमंद *वि.* {फा.} {*भाव.* दर्दमंदी} पीड़ित, दुखी; दयावान।

दर्दी *वि.* दर्दमंद।

दर्दुर *पुं.* मेंढक।

दर्दुरा *स्त्री.* {सं.} चंडिका, दुर्गा।

दर्प *पुं.* {सं.} {*वि.* दर्पित} घमंड, अभिमान, गर्व; अहंकार मिला हुआ क्रोध, मान; उद्दंडता, अक्खड़पन; आतंक, रोब।

दर्पण *पुं.* {सं.} वह शीशा जिसमें मुँह देखते हैं, आईना।

दर्पी *पुं.* {सं. दर्पिन्} दर्प से भरा हुआ, अभिमानी, घमंडी।

दर्ब *पुं.* {सं. द्रव्य} द्रव्य, धन; धातु (सोना, चाँदी आदि)।

दर्भ *पुं.* {सं.} कुश, डाभ।

दर्भपत्र *पुं.* {सं.} काश, काँस।

दर्भपुष्प *पुं.* {सं.} एक प्रकार का सर्प।

दर्भमूल *पुं.* {सं.} कुश की जड़।

दर्भर *पुं.* {सं.} लवा नामक पक्षी।

दर्रा *पुं.* {फा.} दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता, घाटी।

दर्श *पुं.* {सं.} दर्शन; अमावस्या तिथि; अमावस्या के दिन होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

दर्शक *पुं.* {सं.} दिखानेवाला; वह जो कहीं उपस्थित होकर कोई काम होता हुआ देखता हो, देखनेवाला।

दर्शन *पुं.* {सं.} नेत्रों के द्वारा होनेवाला बोध या ज्ञान, साक्षात्कार; किसी देवता, देवमूर्ति या बड़े व्यक्ति से होनेवाला साक्षात्कार (श्रद्धा, भक्ति और नम्रतासूचक); दिखाई पड़नेवाला आकार या रूप; दर्शनशास्त्र; विचारधारा।

दर्शनपथ *पुं.* {सं.} दृष्टिपथ।

दर्शनशास्त्र *पुं.* {सं.} वह विद्या या शास्त्र जिसमें प्रकृति, आत्मा, परमात्मा और जीवन के अंतिम लक्ष्य आदि का विवेचन होता है, तत्वज्ञान (फिलॉसफी)।

दर्शनार्थ *क्रि. वि.* {सं.} दर्शन करने के लिए।

दर्शनीय *वि.* {सं.} दर्शन करने या देखने योग्य; सुंदर, मनोहर।

दर्शनी हुंडी *स्त्री.* {सं. दर्शन} वह हुंडी जिसे देखते ही उसमें लिखा हुआ धन चुका देना आवश्यक हो (ऐसी हुंडी प्रायः किसी से अपना पावना प्राप्त करने के लिए उसके नाम भेजी जाती है)।

दर्शाना *स.* दरसाना, दिखलाना।

दर्शित *वि.* {सं.} जो दिखलाया गया हो, दिखलाया हुआ; *पुं.* वे पत्र, लेख्य या वस्तुएँ, जो किसी पक्ष की ओर से प्रमाण के रूप में न्यायालय में उपस्थित की जाएँ (एग्ज़िबिट)।

दर्शी *वि.* {सं., दर्शिन्} देखनेवाला।

दल *पुं.* {सं.} किसी वस्तु का वह खंड जो उसी प्रकार के दूसरे खंड से जुड़ा हो, पर जरा-सा दबाव पड़ने से अलग हो जाए, जैसे दाल के दो दल; पौधों का पत्ता, पत्र; फूल की पंखुड़ी, जैसे कमल के दल; समूह, झुंड, गिरोह; किसी एक कार्य या उद्देश्य की सिद्धि के लिए बना हुआ लोगों का गुट (पार्टी); सेना, फौज; परत की तरह फैली हुई किसी लंबी चीज की मोटाई; भुना हुआ मैदा, जो कुछ विशेष प्रकार के पकवान बनाने के काम में आता है, जैसे दल का लड्डू।

दलक, दलकन *स्त्री.* {हिं. दलकना} दलकने की क्रिया या भाव; आघात; थरथराहट, धमक; रह-रहकर होनेवाली पीड़ा, टीस।

दलकना[1] *अ.* {सं. दलन} फटना, चिरना; थर्राना, काँपना; चौंकना; उद्विग्न या विकल होना।

दलकना[2] *स.* {सं. दर} डराना।

दलकपाट *पुं.* {सं.} पंखुड़ियों का वह कोण जिसके भीतर कली होती है।

दलकीज *पुं.* {सं.} कुंद का पौधा, चमेली की लता।

दलकोमल *पुं.* {सं.} पद्म, कमल।

दलदल *स्त्री.* {सं. दलाढ्य} {*वि.* दलदली} वह गीली जमीन जिसपर खड़े होने से पैर नीचे धँसता हो।

मुहा. *दलदल में फँसना* = झंझट या बखेड़े में पड़ना।

दलदार *वि.* {हिं. दल + फा. दार} मोटे दल, तह या परतवाला।

दलन *पुं.* {सं.} {*वि.* दलनीय, दलित} दलने की क्रिया या भाव; संहार; *वि.* संहार या नाश करनेवाला (यौ. के अंत में; जैसे दुष्टदलन)।

दलना *स.* {सं. दलन} चक्की आदि में पीसकर छोटे-छोटे टुकड़े करना, मोटा चूर्ण करना; रौंदना,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुचलना; मसलना, मींड़ना; नष्ट या ध्वस्त करना।

दलपति पुं. {सं.} मुखिया, सरदार; सेनापति।

दलबंदी *स्त्री.* {हिं. दल + फा. बंदी} किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए लोगों का अपने अलग-अलग दल बनाना।

दल-बदल पुं. {सं. दल + हिं. बदलना} एक दल छोड़कर दूसरे दल में मिलने की क्रिया या भाव।

दल-बदलू पुं. {हिं. दल-बदल} दल-बदल करनेवाला, एक दल छोड़कर जो दूसरे में जा मिला हो।

दल-बल पुं. {सं.} लाव-लश्कर, फौज; संगी-साथी, नौकर-चाकर और अनुयायी आदि।

दल-बादल पुं. {हिं. दल + बादल} भारी सेना; बहुत बड़ा शामियाना।

दलमलना *स.* {सं. दलन + मलन} मसलना; कुचलना; नष्ट करना।

दलवाल पुं. दलपति, सेनापति।

दलवैया *वि.* {हिं. दलना} दलन या नाश करनेवाला; दलने या चूर्ण करनेवाला।

दलहन पुं. {सं. दलधान्य} वह अन्न जिसकी दाल बनती है, जैसे अरहर, मूँग आदि।

दलाई *स्त्री.* {हिं. दलना + आई} दलने की क्रिया, भाव अथवा पारिश्रमिक।

दलाल[1] पुं. दालान, औसारा।

दलाल[2] पुं. {अ. दल्लाल} {*भाव.* दलाली} वह जो लोगों को सौदा खरीदने या बेचने में, कुछ पारिश्रमिक लेकर, सहायता देता हो; कुटना।

दलामल पुं. {सं.} भरुआ का पौधा, मैनफल का वृक्ष।

दलाली *स्त्री.* {अ. दल्लाली} दलाल का काम; दलाल का पारिश्रमिक।

दलि *स्त्री.* {सं.} ढेला।

दलित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* दलिता} मसला, रौंदा या कुचला हुआ; नष्ट किया हुआ; दरिद्र और पीड़ित।

दलित वर्ग पुं. {सं.} समाज का वह वर्ग, जो सबसे नीचा माना गया हो या दुखी और दरिद्र हो और जिसे उच्च वर्ग के लोग उठने न देते हों, जैसे भारत की छोटी या अछूत मानी जानेवाली जातियों का वर्ग (डिस्प्रेस्ड क्लास)।

दलिया पुं. {हिं. दलना} मोटा या दरदरा पीसा हुआ अन्न।

दली *वि.* {हिं. दल} दलवाला; पत्तोवाला।

दलीय *स्त्री.* {सं.} दल-संबंधी, जैसे दलीय विवाद।

दलील *स्त्री.* {अ.} तर्क; सोच-विचार, युक्ति, बहस।

दलेल *स्त्री.* {अं. ड्रिल} सिपाहियों की वह कवायद या कठिन कार्य जो उन्हें मिलनेवाले दंड के रूप में करना पड़े।

दलैया पुं. {हिं. दलना} दलनेवाला।

दवँगना पुं. {?} वर्षा ऋतु में होनेवाली पहली वर्षा।

दव पुं. {सं.} वन, जंगल; जंगल में आप-से-आप लगनेवाली आग, दावाग्नि, दावानल।

दवन पुं. {सं. दमन} नाश।

दवना[1] पुं. दौना।

दवना[2] *अ.* {सं. दव} जलना; *स.* जलाना।

दवनी *स्त्री.* {हिं. दवना} फसल के सूखे डंठलों को बैलों से रौंदवाकर उनमें से दाने निकालने का काम, दँवरी।

दवरि *स्त्री.* दँवरी।

दवा *स्त्री.* {फा.} रोग दूर करनेवाली ओषधि या औषध; रोग दूर करने का उपाय, चिकित्सा, इलाज; ठीक या दुरुस्त करने की तरकीब; *स्त्री.* दव या दावानल।

दवाई *स्त्री.* दवा।

दवाखाना पुं. {फा. दवाखान:} औषधालय।

दवागि *स्त्री.* दावानल।

दवाग्नि *स्त्री.* दावानल।

दवात *स्त्री.* {अ. दावात} शीशे का वह छोटा बरतन जिसमें लिखने की स्याही रहती है, मसिपत्र।

दवामी *वि.* {अ.} जो सदा के लिए हो, स्थायी (परमानेंट)।

दवामी काश्तकार पुं. {अ. + फा.} वह काश्तकार जिसे जमींदार से सदा के लिए काश्तकारी का अधिकार मिल गया हो (परमानेन्ट टेन्योर होल्डर)।

दवामी पट्टी पुं. {अ. + हि.} किसी चीज के विषय में लिखा हुआ वह पट्टा जिसमें उसके भोग का सदा के लिए अधिकार दे दिया जाता है, इस्तमरारी पट्टा (परमानेंट लीज़)।

दवामी बंदोबस्त पुं. {अ. + फा.} खेती की जमीन का वह बंदोबस्त जिसमें कुछ दिन पहले सरकारी मालगुजारी सदा के लिए स्थिर कर दी गई थी (परमानेंट सेटेलमेंट)।

दश *वि., पुं.* {सं.} पाँच की दूनी संख्या 10, दस।

दशकंठ पुं. {सं.} रावण।

दवारी *स्त्री.* दावानल, वनाग्नि।

दशकंधर पुं. {सं.} रावण।

दशक पुं. {सं.} दस वस्तुओं, वर्षों आदि का समूह; सन्, संवत् आदि में हर एक इकाई से दहाई तक के दस-दस वर्षों के समूह (डीकेड)।

दशगात्र पुं. {सं.} किसी के मरने से दस दिनों तक होनेवाला पिंडदान आदि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशन पुं. {सं.} दाँत; कवच।

दशना *वि. स्त्री.* {सं.} दशन या दाँतोंवाली (यौ. के अंत में)।

दशनांशु पुं. {सं.} दाँतों की चमक।

दशनाम पुं. {सं.} संन्यासियों के ये दस भेद-तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी।

दशनामी पुं. {हिं. दश + नाम} संन्यासियों का दशनाम वर्ग जो शंकराचार्य के शिष्यों से चला है; *वि.* दशनाम-संबंधी।

दशनावरण पुं. {सं.} होंठ, जिससे दाँत ढके रहते हैं।

दशनावली *स्त्री.* {सं.} दाँतों की पंक्ति।

दशभुज *स्त्री.* {सं.} दस भुजाओंवाली आकृति।

दशभुजा *स्त्री.* {सं.} दुर्गा।

दशम् *वि.* {सं.} गिनती में दस के स्थान पर पड़नेवाला, दसवाँ।

दशम् अवस्था *स्त्री.* {सं.} मनुष्य जीवन में मानी जानेवाली दस अवस्थाओं में से अंतिम अर्थात् मृत्यु।

दशम् दशा *स्त्री.* {सं.} वियोगी की अंतिम दशा जिसमें वह प्राण त्यागता है।

दशमलव पुं. {सं.} गणित में इकाई से कम मान अथवा इकाई का कोई अंश सूचित करनेवाले वे अंक (भिन्न) जिनको भाग देनेवाला अंक (हर) 10 या उसका दस गुना, सौ गुना, हजार गुना आदि (कोई अंक) हो, जैसे 3.7 का अर्थ होगा–पूरे तीन और एक के दस भागों में से सात भाग, या 4.84 का अर्थ होगा पूरे चार और एक के सौ भागों में से चौरासी भाग (डेसिमल)।

दशमिक *वि.* {सं.} दसवें से संबंध रखनेवाला (डेसमिल)।

दशमिक प्रणाली *स्त्री.* {सं.} सिक्के, तौल आदि का मान स्थिर करने की वह पद्धति जिसमें हर मान अपने निकटस्थ बड़े मान का दसवाँ भाग और निकटस्थ छोटे मान का दस गुना होता है; जैसे यदि दस पैसे का एक आना और दस आने का एक रुपया या दस तोले की एक छटाँक और दस छटाँक का एक सेर माना जाए तो यह दशमिक प्रणाली के अनुसार होगा (डेसिमल सिस्टम)।

दशमी *स्त्री.* {सं.} चान्द्र मास के किसी प्रक्ष की दसवीं तिथि।

दशमुख पुं. {सं.} रावण।

दशरथ पुं. {सं.} अयोध्या के सुप्रसिद्ध रघुवंशी राजा जो राम, लक्ष्मण आदि के पिता थे।

दशशीश पुं. {सं. दशशीर्ष} रावण।

दशहरा पुं. {सं.} ज्येष्ठ शुक्ला दशमी, गंगा दशहरा; विजयदशमी।

दशांग पुं. {सं.} देवपूजन के समय जलाने का एक प्रकार का सुगंधित धूप।

दशा *स्त्री.* {सं.} अवस्था, हालत; कोई ऐसी विशेष अवस्था, जिसमें कोई विशेष बात हुई हो, हो सकती हो या होने को हो (केस); साहित्य में रस के अंतर्गत विरही या विरहिणी की अवस्था; मनुष्य के जीवन में अलग-अलग ग्रहों के निश्चित भोगकाल (फलित ज्योतिष); दीपक की बत्ती।

उदा. 'ज्योति बड़ावत दशा उनारि'–**केशव**।

दशानन पुं. {सं.} रावण।

दशानिक पुं. {सं.} दंती वृक्ष, जमालगोटा।

दशार्ण पुं. {सं.} विन्ध्य पर्वत के पूर्व-दक्षिण का एक प्राचीन प्रदेश; उक्त प्रदेश का निवासी।

दशाह[1] पुं. {सं.} दस दिनों का समय; किसी के मरने के दिन से दसवाँ दिन, जिसमें कुछ विशेष कृत्य होते हैं।

दशाह[2] पुं. {सं.} राजा वृष्णि का पौत्र–विष्णु।

दशेर पुं. {सं.} हिंसक जीव।

दशेसक पुं. {सं.} मरुदेश, मारवाड़।

दशी *स्त्री.* दशक।

दस *वि.* {सं. दश} जो गिनती में नौ से एक अधिक हो, आठ और दो का योग।

दसखत पुं. दस्तखत।

दसन पुं. दशन।

दसना *अ.* {हिं. डासना} बिछाया जाना, बिछना; *स.* = बिछाना; पुं. बिछौना, बिस्तर।

दसमाथ पुं. = रावण।

दसमी *स्त्री.* दशमी।

दसमौलि पुं. {सं. दश + मौलि = सिर} रावण।

दसवाँ *वि.* {हिं. दस} गिनती में दस के स्थान पर पड़नेवाला, दशम; पुं. किसी की मृत्यु के दसवें दिन होनेवाला कृत्य।

दसस्यंदन पुं. = दशरथ (राजा)।

दसा *स्त्री.* दशा।

दसाना *स.* {हिं. डासना} बिछाना।

दसों *सर्व.* सभी दस चीजें या व्यक्ति।

दसो *वि.* सभी दस।

दसौंधी पुं. {सं. दास + बंदी = भाट} चारणों या भाटों की एक जाति, ब्रह्मभट्ट।

दस्तंदाज *वि.* {फा. दस्तंदाज़} हस्तक्षेप करनेवाला।

दस्तंदाजी *स्त्री.* {फा. दस्तंदाज़ी} हस्तक्षेप।

दस्त पुं. {फा., मि. सं. हस्त} हाथ; पतला पाखाना।

दस्तक *स्त्री.* {फा.} बुलाने के लिए हाथ से दरवाजे का कुंडा खटखटाने की क्रिया; मालगुजारी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसूल करने या माल ले जाने का परवाना; कर या प्राप्य के रूप में लिया जानेवाला धन; महसूल।

मुहा. *दस्तक माफ करना* = किसी को उसके उत्तरदायित्व या भार से मुक्त करना, क्षमा करना।

दस्तकार *पुं.* {फा.} कारीगर, शिल्पी।

दस्तकारी *स्त्री.* {फा.} {कर्ता दस्तकार} हाथ की कारीगरी, शिल्प।

दस्तखत *पुं.* {हिं.} हस्ताक्षर।

दस्तखती *वि.* {फा.} हस्ताक्षरयुक्त।

दस्तबरदार *वि.* {फा.} {*भाव.* दस्तबरदारी} जिसने किसी वस्तु पर से अपना अधिकार या स्वत्व छोड़ दिया हो।

दस्तरखान *पुं.* {फा. दस्तरख्वान} वह कपड़ा जो भोजन करने के समय थालियाँ, कटोरियाँ आदि रखने के लिए बिछाया जाता है।

दस्ता *पुं.* {फा. दस्तः} औजार, हथियार आदि का वह अंग जो हाथ से पकड़ा जाता है, मूठ, बेंट; वर्दी पहने हुए सैनिकों, सिपाहियों आदि का छोटा दल (स्कवाड्रन); कागज के चौबीस या पचीस तावों की गड्डी।

दस्ताना *पुं.* {फा. दस्तानः} हाथ की उँगलियों या हथेली में पहनने का कपड़े, चमड़े आदि का आवरण; पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

दस्तावर *वि.* {फा.} जिसे खाने या पीने से दस्त आएँ, दस्त लानेवाला, विरेचक।

दस्तावेज *स्त्री.* {फा. दस्तावेज़} वह कागज जिसपर कुछ लोगों के पारस्परिक व्यवहार या लेन-देन की शर्तें लिखी हों और जिसपर उन लोगों के दस्तखत हों, व्यवहार-संबंधी लेख्य।

दस्ती *वि.* {फा. दस्त = हाथ} हाथ में रहनेवाला, जैसे दस्ती छड़ी, दस्ती मशाल; किसी आदमी के हाथ में आने या जानेवाला, जैसे दस्ती वारंट; *क्रि. वि.* अपने हाथ से या किसी व्यक्ति के द्वारा; *स्त्री.* हाथ में लेकर चलने की बत्ती।

दस्तूर *पुं.* {फा.} रिवाज, चाल, प्रथा; नियम, विधि, कायदा।

दस्तूरी *स्त्री.* {फा. दस्तूर} वह वस्तु या धन, जो मालिक का सौदा खरीदने पर नौकर को दुकानदार से पुरस्कार के रूप में मिले।

दस्यु *पुं.* {सं.} {*भाव.* दस्युता} डाकू, चोर; असुर, राक्षस; अनार्य, म्लेच्छ; दास, गुलाम।

दह[1] *पुं.* {सं. ह्रद} नदी में वह स्थान जहाँ आस-पास की अपेक्षा पानी बहुत अधिक गहरा हो, पाल; कुंड, हौज।

दह[2] *स्त्री.* {सं. दहन} ज्वाला, लपट।

दह[3] *वि.* = दस (संख्या)।

दहक *स्त्री.* {हिं.} आग के दहकने की क्रिया, धधक, क्रिया, ज्वाला, लपट, लज्जा।

दहकना *अ.* {सं. दहन} लपट फेंकते हुए जलना, धधकना; उत्तम होना, तपना; सन्तप्त होना, बहुत दुखी होना।

दहकाना *स.* {हिं. दहकना} आग अच्छी तरह सुलगाना, धधकाना; क्रोध दिलाना, भड़काना।

दहन *पुं.* {सं.} {*वि.* दहनीय} जलने की क्रिया या भाव, दाह; आग।

दहना[1] *अ.* {सं. दहन} जलना, भस्म होना; क्रोध से संतप्त होना; *स.* जलाना, भस्म करना; क्रोध दिलाना, भड़काना।

दहना[2] *अ.* {हिं. दह} धँसना, नीचे बैठना; *वि.* दाहिना।

दहनाराति *पुं.* {सं.} जल, पानी।

दहपटना *स.* {देश.} {*भाव.* दहपट} ध्वस्त या नष्ट करना, न रहने देना; कुचलना, रौंदना।

दहर *पुं.* दह।

दहरना *अ.* दहलना; *स.* दहलाना।

दहरौरा *पुं.* {हिं. दही + बड़ा} दही में पड़ा हुआ बड़ा; एक प्रकार का नमकीन गुलगुला।

दहल *स्त्री.* {हिं. दहलना} दहलने की क्रिया या भाव।

दहलना *अ.* {सं. दर = डर + ल + ना (प्रत्य.)} {*भाव.* दहल} डरकर थम जाना, भय से स्तंभित होकर रुक जाना।

दहला *पुं.* {हिं. दह = दस} ताश या गंजीफे का वह पत्ता, जिस पर दस बूटियाँ होती हैं।

दहलाना *स.* {हिं. दहलना} ऐसा डराना कि कोई काम करने से आदमी रुक जाए।

दहलीज *स्त्री.* {फा.} द्वार के चौखट में नीचेवाली लकड़ी या पत्थर, देहली।

दहशत *स्त्री.* {फा.} डर, भय।

दहाई *स्त्री.* {फा. दह = दस} दस का मान या भाव; कई अंक लिखने के समय स्थानों की गिनती के विचार से दूसरा स्थान, जिस पर लिखे हुए अंक से उसके दस गुने अंक का बोध होता है।

दहाड़ *स्त्री.* {अनु.} {*क्रि.* दहाड़ना} शेर आदि का घोर शब्द, गरज; चिल्लाकर रोने की आवाज, आर्तनाद।

दहाड़ना *अ.* {अनु.} घोर शब्द करना, गरजना; चिल्लाकर रोना।

दहाना *पुं.* {फा. दहानः} चौड़ा मुँह; वह स्थान जहाँ एक नदी दूसरी नदी या समुद्र में मिलती है, मुहाना।

दहिना *वि.* दाहिना, अपसक, बायाँ का उलटा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दही पुं. {सं. दधि} खटाई के योग से जमाया हुआ दूध।
मुहा. दही-दही करना = सबसे कहते फिरना कि यह ले लो, यह ले लो।

दहुँ *योज.* {सं. अथवा} अथवा या कदाचित्, शायद।

दहेंड़ी *स्त्री.* {हिं. दही + हंडी, सं. दधिहंडिका} दही जमाने का मिट्टी का बरतन या हाँडी।
उदा. अहे दहेंड़ी जनी धरै, जनी तू ले ही उतार–बिहारी।

दहेज पुं. {अ. जहेज़} वह धन, वस्त्र और गहने आदि जो विवाह के समय कन्यापक्ष से वरपक्ष को मिलते हैं, दायजा, यौतुक।

दहेला *वि.* {हिं. दहन + ऐला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* दहेली} जला हुआ, दग्ध; संतप्त, दुखी; भीगा हुआ, गीला।

दह्य *वि.* {सं.} जो जल सकता हो, जलने योग्य (कम्बसचिबुल)।

दह्यमान *वि.* {सं.} जलता हुआ, जो जल रहा हो।

दह्यो पुं. दही।

दाँ[1] पुं. {सं. दाच् (प्रत्य.) जैसे एकदा} दफा, बार, बारी।

दाँ[2] पुं. {फा.} ज्ञाता, जाननेवाला (यौ. के अंत में; जैसे कानूनदाँ)।

दाईं *वि. स्त्री.* {हिं.} दाहिनी।

दाँकना *अ.* {हिं. जाकना} पुकारना; गरजना।

दाँग[1] पुं. {हिं. डंका} नगाड़ा, धौंसा।

दाँग[2] पुं. {हिं. डूँगर} छोटी पहाड़ी, टीला।

दाँगी *स्त्री.* {हिं.} जुलाहों की कंघी में लगी हुई लकड़ी।

दाँज *स्त्री.* {सं. उदाहार्य} बराबरी।

दाँड़ना *स.* {सं. दंड} दंड या सजा देना; जुरमाना करना।

दाँडिक पुं. {हिं.} घातक।

दाँत पुं. {सं. दंत} जीवों के मुँह, तालु, गले आदि में अंकुर के रूप में निकली हुई वह हड्डी या हड्डियों के ऊपर-नीचे की वे पंक्तियाँ जिनसे वे कुछ खाते, किसी को काटते या जमीन खोदते हैं, दंत, रद, दशन।
मुहा. दाँत काटी रोटी होना = अत्यंत घनिष्ठ मित्रता होना; *दाँत खट्टे करना* = प्रतिद्वंद्विता या लड़ाई में बहुत परेशान करना; *दाँत किटकिटाना या पीसना* = (क्रोध में) दाँत पर दाँत रखकर इस प्रकार गड़ाना कि जान पड़े कि यह खा जाएगा; *दाँत बजना* = सरदी से दाँतों के हिलने या काँपने के कारण उनके टकराने का शब्द होना; *दाँत बैठ जाना* = दाँतों की पंक्तियों का परस्पर इस प्रकार सट जाना कि मुँह न खुल सके; *दाँत लगाना या गड़ाना* = कोई चीज पाने की ताक में रहना; *दाँत तले उँगली दबाना* = परम चकित होना, दंग रह जाना; *दाँतों में तिनका लेना* = दया के लिए गौ की तरह दीन बनकर विनती करना।
(किसी वस्तु पर) दाँतों की तरह निकली या उभरी हुई कोई वस्तु या पंक्ति, दाँता।

दांत *वि.* {सं.} जिसका दमन हुआ हो, दबाया हुआ; इंद्रियों को वश में रखनेवाला, संयमी।

दाँतली *स्त्री.* {हिं.} काग, डट्टा।

दाँता पुं. {हिं. दाँत} दाँतों की तरह का उभरा हुआ कोई भाग, जैसे आरी के दाँते, किसी यंत्र में लगे हुए पहिए के दाँते।

दाँताकिटकिट *स्त्री.* {हिं. दाँत + किटकिट (अनु.)} नित्य या बराबर होती रहनेवाली कहा-सुनी या झगड़ा।

दांति *स्त्री.* {सं.} इंद्रियनिग्रह, इंद्रियों का दमन; विनयशीलता।

दाँती[1] *स्त्री.* {सं. दात्री} हँसिया, विशेष दराँती।

दाँती[2] *स्त्री.* {हिं. दाँत} दाँतों की पंक्ति, दन्तावलि; छोटा दाँत; दर्रा।

दाँतेदार *वि.* {हिं. दाँता + फा. दार} जिसमें दाँते बने हों।

दाँना *स.* {सं. दमन} फसल के डंठलों में से दाने अलग करना।

दांपत्य *वि.* {सं.} दंपति या पति-पत्नी से संबंध रखनेवाला, जैसे दांपत्य प्रेम।

दाँभ *वि.* {सं.} ढोंगी, कपटी।

दांभिक *वि.* {सं.} दंभ करने या अपने को बड़ा समझने वाला; आडंबर रचनेवाला, पाखंडी; अभिमानी।

दाँव पुं. {सं. द्रव्य (जुए में लगाया जानेवाला धन)} बार, दफा, मरतबा; कोई कार्य करने या खेल खेलने का वह अवसर या पारी, जो सब खेलाड़ियों को बारी-बारी से मिलती है, पारी।
मुहा. दाँव लगाना = अनुकूल अवसर मिलना; *दाँव लेना* = बदला लेना।
कुश्ती में विपक्षी को हराने या दबाने के लिए काम में लाई जानेवाली युक्ति, चाल, पेंच; पाँसे, जुए की कौड़ियों आदि का इस प्रकार पड़ना जिससे जीत हो; वह धन जो ऐसे खेलों के समय हार-जीत के लिए खिलाड़ी सामने रखते हैं; स्थान, ठौर, जगह; कार्यसाधन की युक्ति, चाल।
मुहा. दाँव पर चढ़ना = ऐसी विवश स्थिति में होना कि दूसरा अपना मतलब निकाल सके।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाँवनी *स्त्री.* {हिं.} गहना, दामिनी।
दाँवरी *स्त्री.* {सं. दाम} रस्सी, डोरी।
दा *वि.* {हिं.} 'का' विभक्ति का पंजाबी रूप।
दाइ *पुं.* दाय; दाँव।
दाइज *पुं.* दहेज।
दाईं[1] *वि. स्त्री.* {हिं. दायाँ} दाहिनी।
दाईं[2] *स्त्री.* {सं. दाक्} दफा, बार।
दाई *स्त्री.* {सं. धात्री, मि. फा. दायः} दूसरे के बच्चे को अपना दूध पिलाने या उसकी देखरेख करनेवाली स्त्री, धाय; प्रसूता का उपचार और सेवा-सुश्रूषा करनेवाली स्त्री; दासी, मजदूरनी; *वि.* दायी।
दाउँ *पुं.* दाँव।
दाउ *पुं.* दाँव (बाजी)।
दाऊ *पुं.* {सं. देव} बड़ा भाई; कृष्ण के बड़े भाई, बलदेव।
दाऊदखानी *पुं.* {दाऊदखाँ} एक प्रकार का धान या उसका चावल।
दाक्षायण *वि.* {सं.} दक्ष-संबंधी।
दाक्षायणी *स्त्री.* {सं.} दक्ष कन्या, सती; दुर्गा।
दाक्षिणात्य *वि.* {सं.} दक्षिण का; *पुं.* भारतवर्ष का वह विभाग जो विन्ध्याचल के दक्षिण है, दक्षिण भारत; इस भाग का निवासी।
दाक्षिण्य *पुं.* {सं.} दक्षिण (अनुकूल, कुशल, प्रसन्न आदि) होने का भाव; दूसरे को अनुकूल या प्रसन्न करने की शक्ति; कौशल, दक्षता; *वि.* दक्षिण का; दक्षिण भारत-संबंधी।
दाक *पुं.* {सं.} दाता, यजमान।
दाख *स्त्री.* {सं. द्राक्षा} अंगूर; मुनक्का; किशमिश।
दाखिल *वि.* {फा. दाखिल} घुसा या पैठा हुआ, प्रविष्ट; दिया या जमा किया हुआ; पहुँचा या आया हुआ; किसी विशेष उद्देश्य से नियत स्थान पर पहुँचाया, भेजा या दिया हुआ।
दाखिल-खारिज *पुं.* {फा.} सरकारी कागजों पर किसी संपत्ति के पुराने मालिक की जगह नए मालिक का नाम चढ़ना।
दाखिल-दफ्तर *वि.* {फा.} बिना विचार के दफ्तर में डाल रखा हुआ (कागज)।
दाखिला *पुं.* {फा.} प्रवेश।
दाग[1] *पुं.* {सं. दग्ध} जलाने का काम, दाह; मुरदा जलाने की क्रिया; जलन, दाह; जले होने का चिह्न।
दाग[2] *पुं.* {फा. दाग़} {*वि.* दागी} धब्बा, चित्ती (विशेषतः किसी वस्तु के दूषित होने के कारण दिखाई देनेवाला धब्बा); निशान, चिह्न, अंक; फलों आदि पर पड़ा हुआ सड़ने या दबने का चिह्न; ऐब, दोष; जले होने का चिह्न।
दागदार *वि.* {फा. दाग़दार} जिस पर या जिसमें दाग या धब्बा हो।
दागना *स.* {हिं. दाग} किसी प्रकार का दाग या चिह्न लगाना, अंकित या चिह्नित करना, निशान लगाना; तपे हुए लोहे, तेजाब या दवा आदि से किसी अंग को इतना जलाना कि उस पर दाग पड़ जाए; दाग या कलंक लगाना, कलंकित करना; कष्ट या दुख पहुँचाना, जलाना; तोप, बंदूक आदि छोड़ना।
दागबेल *स्त्री.* {फा. दाग़ + बेल} भूमि पर के वे चिह्न, जो सड़कें बनाने, नींव खोदने आदि से पहले सीमा या विस्तार सूचित करने के लिए बनाए जाते हैं।
दागर *वि.* {हिं. दागना ?} नष्ट करनेवाला, नाशक।
दागी *वि.* {फा. दाग़} जिसपर किसी प्रकार का दाग या धब्बा हो; कलंकित; लांछित; जिसको जेल की सजा मिल चुकी हो।
दाघ *पुं.* {सं.} गरमी, ताप।
दाजना, दाझना *अ.* {सं. दाहन} जलना; सन्तप्त या दुखी होना; ईर्ष्या या डाह करना; *स.* जलाना; बहुत कष्ट देना।
दाझन *स्त्री.* {हिं.} दाजन, जलन।
दाझजना *क्रि. अ. स.* {हिं.} जलना।
दाटना *अ.* {?} प्रतीत होना; जान पड़ना; *स.* डाटना।
दाड़िम *पुं.* {सं.} अनार (वृक्ष और फल)।
दाढ़ *स्त्री.* {सं. दाढक} जबड़े के अंदर के बड़े चौड़े दाँत, चौभर; *स्त्री.* दहाड़।
दाढ़ना *स.* {सं. दाहन} जलाना; संतप्त या दुखी करना; किसी के मन में ईर्ष्या उत्पन्न करना, जलाना।
दाढ़ा[1] *पुं.* डाढ़ा।
दाढ़ा[2] *पुं.* {हिं. दाह} वन की आग, दावानल; आग; जलन।
दाढ़ा[3] *पुं.* {हिं. दाढ़ी} बहुत बड़ी दाढ़ी।
दाढ़ी *स्त्री.* {हिं. दाढ़} ओंठ के नीचे का उभरा हुआ गोल भागी, चिबुक, ठोढ़ी; इस स्थान पर उगनेवाले बाल, श्मश्रु।
दात *पुं.* {सं. दातव्य} दान, दानवीर; *पुं.* दाता।
दातव्य *वि.* {सं.} दिए जाने के योग्य; जो दिया जाने को हो; दान-संबंधी, दान का; *पुं.* दान; वह धन जो दिया जाने को हो; वह धन जो देना या चुकाना आवश्यक या अनिवार्य हो, जैसे कर या महसूल (ड्यू)।
दाता *पुं.* {सं.} वह जो प्रायः दान देता हो, दानशील; देनेवाला, जैसे सुखदाता।
दातापन *पुं.* {हिं.} दाता, दानशीलता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दातार पुं. {सं. दाता का बहु.} दाता।

दाती *स्त्री.* {सं. दात्री} देनेवाली।

दातुन *स्त्री.* दतुअन।

दातुरी *स्त्री.* = दातृत्व।

दातृत्व पुं. {सं.} 'दाता' का भाव, दानशीलता।

दात्र पुं. {हिं.} फसल आदि काटने का दराँती या हँसिया नाम का औजार।

दात्री *स्त्री.* {सं.} देनेवाली; *स्त्री.* दराँती।

दाद¹ *स्त्री.* {सं. दद्रु} एक प्रसिद्ध चर्म रोग जिसमें बहुत खुजली होती है।

दाद² *स्त्री.* {फा.} न्याय, इंसाफ।

मुहा. दाद देना = किसी अच्छे काम की न्यायदृष्टि से प्रशंसा करना।

दादनी *स्त्री.* {फा.} वह रकम जो चुकानी हो, दातव्य, देना; वह रकम जो पेशगी दी जाए, अग्रिम।

दादरा पुं. {?} एक प्रकार का चलता गाना।

दादा पुं. {सं. तात} {*स्त्री.* दादी} पिता का पिता, पितामह, आजा; बड़ा भाई; बड़ों के लिए आदरसूचक शब्द।

दाति *स्त्री.* {फा. दाद} न्याय।

दादी *वि. स्त्री.* {सं. दाता} देनेवाली; पिता की माता।

दादुर पुं. {सं. दर्दुर} मेंढक, भेक।

दादूदयाल पुं. अहमदाबाद के एक साधु जो अकबर के समय हुए थे और जिनके नाम पर एक पंथ चला आ रहा है।

दादूपंथी पुं. {दादूदयाल + पंथी} दादूदयाल के चलाए हुए पंथ का अनुयायी।

दाध *स्त्री.* {हिं. दाधना} जलन, दाह।

दाधना *स.* {सं. दग्ध} जलाना।

दाधीची पु. {सं.} दधिचि वंश के ऋषि।

दान¹ पुं. {सं.} देने का कार्य, देना; वह धर्मार्थ कृत्य जिसमें श्रद्धा या दयापूर्वक किसी को धन आदि दिया जाता है, खैरात; वह वस्तु जो इस प्रकार या और किसी रूप में किसी को सदा के लिए दी जाए (गिफ्ट); कर, महसूल, चुंगी आदि; प्राचीन राजनीति में धन-संपत्ति देकर शत्रु या विरोधी को दबाने और अपना काम निकालने की नीति; हाथी का मद; मस्ती।

दान² पुं. {सं. आधान से फा.} {*स्त्री.* अल्पा. दानी} एक शब्द जो कुछ विशिष्ट शब्दों के अंत में लगकर आधान या पात्र का अर्थ देता है, जैसे नमकदान, पानदान आदि।

दानपत्र पुं. {सं.} वह लेख या पत्र जिसमें कोई संपत्ति किसी को सदा के लिए दे दिए जाने का उल्लेख हो।

दानप्रतिष्ठा *स्त्री.* दक्षिणा।

दानलेख पुं. {सं.} वह लेख जिसमें किसी किए हुए दान का उल्लेख हो।

दानव पुं. {सं.} {*स्त्री.* दानवी} कश्यप के वे पुत्र जो उनकी दनु नाम की पत्नी से उत्पन्न हुए थे और जो देवताओं के घोर शत्रु थे, असुर, राक्षस।

दानवारि¹ पुं. {सं. दान + वारि} वह जो दानवों का शत्रु और नाश करनेवाला हो।

दानवी *वि.* {सं. दानवीय} दानव का; *स्त्री.* दानव जाति की स्त्री, राक्षसी।

दानवीर पुं. {सं.} वह जो प्रायः बहुत अधिक दान देता हो, बहुत बड़ा दानी।

दानशील *वि.* {सं.} {*भाव.* दानशीलता} दान करनेवाला, दानी।

दाना¹ पुं. {फा. दानः} अनाज का बीज या कण।

मुहा. दाने-दाने को तरसना या मोहताज होना = दरिद्रता आदि के कारण भोजन का बहुत अधिक कष्ट सहना।

अनाज, अन्न; सूखा भुना हुआ अन्न, चबेना; फल या उसका छोटा बीज; कोई छोटी गोल वस्तु, जैसे मोती, अनार या घुँघरू का दाना; उक्त प्रकार की वस्तुओं की संख्या का सूचक शब्द, अदद, जैसे चार दाना आम; रवा, कण; कोई छोटा गोल उभार; गाने, विशेषतः टप्पा गाने के समय किसी स्वर का बहुत ही छोटे-छोटे खंडों में गले से निकलनेवाला रूप।

दाना² *वि.* {फा.} बुद्धिमान, समझदार।

दानाई *स्त्री.* {फा.} समझदारी।

दानादेश पुं. {सं.} वह पत्र या आदेश, जिसके अनुसार किसी को कुछ दिया या कोई देन चुकाया जाता है, देयादेश (पेमेंट आर्डर)।

दानापन पुं. {फा. + हिं.} समझदारी।

दाना-पानी पुं. {फा. दाना = हिं. पानी} खान-पान, अन्नजल (किसी स्थान पर रहने या किसी से जीविका प्राप्त होने के विचार से)।

मुहा. दाना-पानी उठना = दूसरी जगह जाने का संयोग होना; *दाना-पानी छोड़ना* = अन्नजल ग्रहण न करना।

दानी¹ *वि.* {सं. दानिन्} {*स्त्री.* दानिनी} बहुत दान करनेवाला, उदार, दाता।

दानी² पुं. {सं. दानीय} कर उगाहनेवाला।

दानी³ पुं. {हिं. दान} दान या भिक्षा लेनेवाला।

दानी⁴ *स्त्री.* {सं. आधान से फा.} एक शब्द, जो कुछ विशिष्ट शब्दों के अंत में लगकर आधान या पात्र का अर्थ देता है, जैसे चूहेदानी, सुरमेदानी, बालूदानी आदि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाबना स. {हिं. 'दबाना' का पुराना रूप} दबाना; गाड़ना; परास्त करना, हराना; नष्ट-भ्रष्ट करना।

दाबा पुं. {हिं. दबाना} कलम लगाने के लिए पौधे की टहनी जमीन में गाड़ने की क्रिया।

दाभ पुं. {सं. दर्भ} कुश, डाभ।

दाभी वि. {सं.} अनिष्टकारक, हानि पहुँचानेवाला।

दाम[1] पुं. {सं. दामन्} रस्सी, डोरी; गले में पहनने की माला या हार; समूह।

दाम[2] पुं. {फा.} जाल, फन्दा, पाश।

दाम[3] पुं. {सं. द्रम्भ} एक प्रकार का बहुत छोटा पुराना सिक्का;

मुहा. दाम-दाम भर देना = पाई-पाई चुका देना। वह धन जो बेची हुई वस्तु के बदले में बेचनेवाले को मिलता है, मूल्य कीमत (प्राइस)।

मुहा. दाम खड़ा करना = कुछ बेचकर रुपए लेना; *दाम चुकाना* = मूल्य दे देना; मूल्य ठहराना; *दाम भरना* = किसी चीज के खोने या टूट-फूट जाने पर दंडस्वरूप उसका दाम देना। धन, रुपया-पैसा; सिक्का।

मुहा. चाम के दाम चलाना = अधिकार पाकर उसका मनमाना और अनुचित उपयोग करना।

दाम[4] पुं. {सं. दामन्} राजनीति में शत्रु-पक्ष के लोगों को धन द्वारा वश में करना।

दामक पुं. {सं.} बागडोर, लगाम।

दामन पुं. {फा.} गले में या वक्षःस्थल पर पहने जानेवाले कपड़ों में कमर से नीचे का भाग, पल्ला; पहाड़ के नीचे की भूमि।

दामनी स्त्री. {सं.} रस्सी, डोर।

दामर स्त्री. {सं. दामन्} रस्सी।

दामा[1] स्त्री. {सं. दाव} दावानल।

दामा[2] स्त्री. {देश.} काले रंग की एक चिड़िया।

दामाद पुं. दमाद, जामाता।

दामिन (नि) स्त्री. {हिं.} दामिनी।

दामिनी स्त्री. {सं.} बिजली, विद्युत; दावनी (गहना)।

दामी वि. {हिं. दाम} अधिक मूल्य का, कीमती।

दामोदर पुं. {सं.} श्रीकृष्ण; विष्णु।

दावँ पुं. दाँव।

दाय[1] पुं. {सं.} वह धन जो किसी को दिया जाने को हो, दातव्य; दान, दहेज आदि के रूप में दिया जानेवाला धन; वह पैतृक या किसी संबंधी का धन जो उत्तराधिकारियों में बँटता या बँट सकता हो; दान।

दाय[2] पुं. {सं. दायित्व} जिम्मेदारी, दायित्व; जवाबदेही, उत्तरदायित्व, जैसे जमदाय = यमराज के सामने उपस्थित होनेवाला लेखा या दिया जानेवाला उत्तर; पुं. दाँव; दाव।

दायक पुं. {सं.} {स्त्री. दायिका} देनेवाला, दाता (यौ. के अंत में; जैसे सुखदायक)।

दायज पुं. दहेज, यौतुक।

दायबंधु पुं. {सं.} भ्राता, भाई।

दायभाग पुं. {सं.} पैतृक धन संपत्ति का पुत्रों, पौत्रों या दूसरे उत्तराधिकारी संबंधियों में बँट जाने की व्यवस्था (हिन्दू धर्मशास्त्र का एक प्रधान विषय)।

दायपुल्हब्स पुं. {अ.} जन्म-भर कैद में रहने की सजा, काला पानी।

दायर पुं. {फा.} चलता, जारी; न्यायालय में उपस्थित किया हुआ (अभियोग)।

दायरा पुं. {हिं.} कुंडल, मंडल; वृत्त, घेरा।

दायाँ वि. दाहिना।

दाया[1] स्त्री. दया।

दाया[2] स्त्री. {फा.} दाई, धाय।

दायागत वि. {सं.} जो अंश या बँटे में मिला हो।

दायाद पुं. {सं.} {स्त्री. दायादा} वह व्यक्ति जो दायभाग के नियमों के अनुसार किसी की संपत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी हो, सपिंड कुटुंबी।

दायित्व पुं. {सं.} किसी बात या काम के लिए उत्तरदायी होने का भाव, जिम्मेदारी (ऑब्लिगेशन); किसी देने के देनदार होने का भाव।

दायी वि. {सं. दायिन्} {स्त्री. दायिनी} दायक देनेवाला जैसे सुखदायी; जिस पर किसी प्रकार का दायित्व या भार हो (लायबुल)।

दार[1] स्त्री. {सं.} पत्नी, भार्या, जोरू।

दार[2] प्रत्य. {फा.} वाला।

दारकर्म पुं. {सं.} विवाह।

दारग्रहण पुं. {सं.} विवाह, पत्नीग्रहण।

दारचीनी स्त्री. {सं. दारु - चीन (देश)} एक प्रकार का वृक्ष जिसकी सुगंधित छाल दवा और मसाले के काम आती है।

दारण पुं. {सं.} {वि. दारित} चीरने-फाड़ने का काम, शस्त्र-चिकित्सा; इस काम में आनेवाला औजार।

दारना स. {सं. दारण} फाड़ना; नष्ट करना।

दारपरिग्रह पुं. {सं.} पुरुष का विवाह।

दारमदार पुं. {फा. दारोमदार} आश्रय, उहराव; किसी कार्य या बात का किसी दूसरे कार्य या बात पर अवलंबन।

दारा स्त्री. {सं. दार} पत्नी, भार्या।

दारि स्त्री. दाल, दार; वि. फाड़क।

दारिउँ पुं. दाड़िम।

दारिका स्त्री. {सं.} पुत्री; औरत; कठपुतली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दारिद पुं. {सं. दारिद्रय} दरिद्रता।
दारिद्रय पुं. {सं.} दरिद्रता, निर्धनता।
दारिम पुं. दाड़िम, अनार।
दारी *स्त्री.* {सं. दारिका} दासी, लौंडी।
दारीजार पुं. {हिं. दारी + सं. जार} दासी या लौंडी का पति या पुत्र (गाली)।
दारु पुं. {सं.} काठ, लकड़ी; बढ़ई; कारीगर, शिल्पी।
दारुका *स्त्री.* {सं.} कठपुतली।
दारुण *वि.* {सं.} भयंकर, भीषण, घोर; कठिन, प्रचंड, विकट; (रोग) जो बहुत बढ़ गया हो और सहज में अच्छा न हो सकता हो (सीरियस)।
दारुन *वि.* दारुण।
दारुयोषित *स्त्री.* {सं.} कठपुतली।
दारुफल पुं. {सं.} पिस्ता नामक मेवा।
दारुब्रह्म पुं. {सं.} जगन्नाथ।
दारुभूषा *स्त्री.* {सं.} एक विष।
दारुहलदी *स्त्री.* {सं. दारुहरिद्रा} एक पौधा जिसकी जड़ और डंठल दवा के काम में आते हैं।
दारू *स्त्री.* {फा.} दवा, औषध; मद्य, शराब; बारूद।
दारोगा पुं. {फा.} किसी काम की ऊपर से देख-भाल रखने या प्रबंध करनेवाला व्यक्ति; थाने का प्रधान अधिकारी, थानेदार।
दार्म *वि.* {सं.} कुशसंबंधी।
दारयो पुं. {हिं.} दाड़िम, अनार।
दार्यों, दार्यौं पुं. दाड़िम।
दार्यौं, दार्यौं पुं. = दाड़िम (अनार नामक फल)।
दार्शनिक पुं. {सं.} दर्शनशास्त्र का ज्ञाता, तत्वज्ञानी; *वि.* दर्शनशास्त्र का।
दार्वी *स्त्री.* {सं.} वनगोभी, देवदार, दारूहलदी।
दाल *स्त्री.* {सं. दालि} दले हुए अरहर, मूँग आदि अन्न, जो सालन की तरह पकाकर खाए जाते हैं; रोटी, भात आदि के साथ खाने के लिए उक्त अन्नों का उबाला या पकाया हुआ रूप। *मुहा. (किसी की) दाल गलना* = (किसी का) प्रयोजन सिद्ध होना, मतलब निकलना; *दाल में कुछ काला होना* = कुछ खटक या संदेह की जगह होना; *जूतियों दाल बँटना* = आपस में खूब लड़ाई-झगड़ा होना।
दाल के आकार की कोई गोल, चिपटी चीज; चेचक, फुन्सी आदि के अच्छे हो जाने पर उनके ऊपर का वह गोल चमड़ा जो सूखकर गिर जाता है, खुरंड।
दालचीनी *स्त्री.* दारचीनी।
दाल-दलिया पुं. रूखा-सूखा भोजन।
दालमोठ *स्त्री.* {हिं. दाल + मोट = एक कदम} घी आदि में तली हुई दाल या उसके साथ मिले हुए कुछ और पदार्थ।
दाल-रोटी *स्त्री.* सामान्य भोजन।
दालान पुं. {फा.} कमरे का वह सामनेवाला लंबा भाग जो ऊपर से छाया और सामने से खुला हो; बरामदा।
दालिद पुं. दरिद्रता।
दालिम पुं. दाड़िम।
दावँ पुं. दाँव।
दाव[1] पुं. {सं.} वन, जंगल; वन की आग; आग; जलन।
दाव[2] पुं. {सं. दात्र} बड़े डंठल आदि काटने का एक प्रकार का औजार; पुं. दाँव।
दावत *स्त्री.* {अ. दअवत} ज्योनार, भोज; निमंत्रण, बुलावा।
दावना[1] *स.* दाँना।
दावना[2] *स.* {सं. दमन} दमन करना।
दावनी *स्त्री.* {सं. दामिनी} माथे पर पहनने का एक प्रकार का गहना।
दावरा पुं. {हिं.} धन नामक वृक्ष।
दावसु पुं. {सं.} अंगिरा के पुत्र का नाम।
दावा पुं. {अ. दअवा} यह कहना कि अमुक वस्तु के अधिकारी हम हैं, किसी चीज पर अपना हक बतलाना, मताग्रह, अध्यर्थन (क्लेम); स्वत्व, हक; संपत्ति या अधिकार की रक्षा या प्राप्ति के लिए चलाया हुआ मुकदमा; नालिश, अभियोग; वश, जोर, जैसे उनपर हमारा इतना दावा है कि हम उनसे जो चाहें, वह करा लें; दृढ़तापूर्वक कुछ कहना; *स्त्री.* दावानल।
दावाग्नि *स्त्री.* दावानल।
दावात *स्त्री.* दवात।
दावानल पुं. {सं.} वन में वृक्ष की रगड़ से आप-से-आप लगनेवाली आग।
दावेदार पुं. {अ. दावा + फा. दार} दावा करनेवाला, अपना हक जतानेवाला।
दाशमिक *वि.* {सं.} दशम संबंधी, 'दशम' का; जिसका संबंध प्रत्येक दस या उसके घात से हो; दशमलव के अनुसार दस या उसके घात से संबंध रखनेवाला; विशेष दशमलव।
दाशरथि पुं. {सं.} दशरथ के पुत्र, श्री रामचंद्र आदि।
दाशू *वि.* {सं.} दाता, दान देनेवाला।
दाशेयी *स्त्री.* {सं.} व्यास की माता सत्यवती।
दास पुं. {सं.} {*स्त्री.* दासी} {*भाव.* दासता} अपनी सेवा कराने के लिए मूल्य देकर लिया हुआ व्यक्ति, गुलाम (स्लेव); दूसरे की सेवा करनेवाला,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवक, चाकर, नौकर; दूसरे के अधीन या वश में रहनेवाला; एक उपाधि जो शूद्रों के नामों के पीछे लगती थी; पुं. डासन।

दासता *स्त्री.* {सं.} 'दास' होने की अवस्था या भाव; सेवा कराने के लिए मूल्य देकर किसी को खरीदने और बेचने की प्रथा, गुलामी (स्लेवरी)।

दासन *पुं.* डासन।

दासपन *पुं.* = दासता।

दासप्रथा *स्त्री.* {सं.} व्यक्ति को दास बनाकर रखने की प्रथा।

दासा *पुं.* {सं. दासी = वेदी} दीवार से सटाकर बनाया हुआ पुश्ता या चबूतरा; वह तख्ता या पत्थर जो दरवाजे के चौखट के ऊपर रहता है।

दासानुदास *पुं.* {सं.} सेवक का सेवक, अत्यंत तुच्छ सेवक (नम्रतासूचक)।

दासी *स्त्री.* {सं.} सेवा करनेवाली स्त्री, मजदूरनी, लौंड़ी।

दासेय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* दासेयी} दास से उतपन्न, दास या गुलाम का वंशज।

दासेर *पुं.* {सं.} दास, धींवर।

दासेरक *पुं.* {सं.} दासीपुत्र, ऊँट।

दास्तान *स्त्री.* {फा.} वृत्तान्त, हाल; कहानी, किस्सा; वर्णन।

दास्य *पुं.* {सं.} दासता, सेवा; भक्ति के नौ भेदों में से एक, जिसमें उपासक अपने उपास्य देवता को स्वामी और अपने आपको दास समझता है।

दाह *पुं.* {सं.} जलाने की क्रिया या भाव; शव जलाने या मुरदा फूँकने का काम; जलन, ताप; अत्यंत दुख, संताप; डाह, ईर्ष्या।

दाहक *वि.* {सं.} {*भाव.* दाहकता} जलानेवाला; जलन पैदा करनेवाला।

दाहकर्म *पुं.* दाह।

दाहन *पुं.* {सं.} जलाना।

दाहना *स.* {सं. दाहन} भस्म करना, जलाना; बहुत दुख पहुँचाना; *वि.* दाहिना।

दाहिं *स्त्री.* = दाईं।

दाहिना *वि.* {सं. दक्षिण} {*स्त्री.* दाहिनी} शरीर के उस पार्श्व का, जिसके अंग में अपेक्षाकृत अधिक शक्ति होती है और जिससे मनुष्य अधिकतर काम लेता है; 'बायाँ' का उलटा, दक्षिण;

मुहा. (किसी का) दाहिना हाथ होना = बहुत बड़ा सहायक, होना।

दाहिने हाथ की ओर पड़नेवाला, जैसे मकान का दाहिना, अनुकूल, प्रसन्न।

दाहिनावर्त *वि.* दक्षिणावर्त।

दाहिने *क्रि. वि.* {हिं. दाहिना} दाहिने हाथ की तरफ, दाहिनी ओर।

दाहिने-बाएँ *क्रि. वि.* इधर-उधर, दोनों ओर।

दाही *वि.* दाहक, भस्म करनेवाला।

दिअना *पुं.* {सं. दीपक} दीया, चिराग।

उदा. 'सबके महल में दिअना जरतु हैं, हमरी झोंपड़िया प्रभु कीन्ह अंधेरा'—गीत।

दिअली *स्त्री.* {हिं. 'दीया' का *स्त्री.* अल्पा.} मिट्टी का बहुत छोटा दीया।

दिआ *पुं.* दीया।

दिआना *स.* दिलाना।

दिउली *स्त्री.* दाल; दिअली।

दिक् *स्त्री.* {सं.} दिशा, ओर।

दिक *वि.* {अ.} जिसे बहुत कष्ट पहुँचा हो, पीड़ित; हैरान, परेशान; अस्वस्थ, बीमार; *पुं.* क्षय रोग, तपेदिक।

दिक्कत *स्त्री.* {अ.} 'दिक' का भाव, परेशानी; तकलीफ; कठिनता।

दिक्करी *पुं.* दिग्गज।

दिक्चन *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का गन्ना।

दिक्पाल *पुं.* {सं.} दिशा का स्वामी, जैसे उत्तर के कुबेर, दक्षिण के यम आदि।

दिक्शूल *पुं.* {सं.} कुछ विशिष्ट दिनों में विशिष्ट दिशाओं में काल का वास, जो यात्रा के लिए अशुभ माना जाता है (फलित ज्योतिष)।

दिक्सूचक *पुं.* {सं.} दिशा का ज्ञान करानेवाला एक उपकरण (कम्पास)।

दिखना *अ.* {हिं. देखना} दिखाई देना।

दिखराना *स.* दिखलाना।

दिखरावनी *स्त्री.* {हिं. दिखलाना} दिखाने की क्रिया या भाव या पुरस्कार।

दिखलाई *स्त्री.* {हिं. दिखलाना} दिखाने की क्रिया, भाव, पारिश्रमिक या पुरस्कार; वह धन, जो देखने या दिखाने के बदले में दिया जाए।

दिखलाना *स.* हिं. 'देखना' का प्रे.।

दिखहार *पुं.* = देखनेवाला।

दिखाई *स्त्री.* दिखलाई।

दिखाऊ *वि.* दिखौआ।

दिखादिखी *स्त्री.* देखादेखी।

दिखाना *स.* हिं. देखना का प्रे.।

दिखाव *पुं.* {हिं. देखना} देखने की क्रिया या भाव; दृश्य, नजारा।

दिखावट *स्त्री.* {हिं. दिखाना} ऊपर से दिखाई देनेवाला रूप-रंग, ऊपरी बनावट; दिखौआ ठाट-बाट, ऊपरी तड़क-भड़क।

दिखावटी *वि.* {हिं. दिखावट} जो केवल रूप-रंग आकार-प्रकार आदि के विचार से दिखाने के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए हो, दिखौआ; जो नाम-मात्र के लिए प्रतीक के रूप में या औपचारिक रूप में हो, जैसे दिखावटी मालगुजारी, दिखावटी बैनामा आदि।

दिखावा पुं. {हिं. दिखना} केवल ऊपर से दिखलाने के लिए किया हुआ काम; ऊपरी तड़क-भड़क, आडंबर।

दिखैया पुं. {हिं. देखना + ऐया} देखने या दिखानेवाला।

दिखौआ *वि.* {हिं. दिखाना} जो देखने भर को हो, पर काम का या सारयुक्त न हो।

दिगंगना *स्त्री.* {सं.} दिशा-रूपिणी स्त्री।

दिगंत[1] पुं. {सं.} दिशा का छोर या अंत; क्षितिज; सब दिशाएँ।

दिगंत[2] पुं. {सं. दृक् + अंत} आँख का कोना।

दिगंतर पुं. {सं.} दो दिशाओं के बीच की दिशा, कोण।

दिगंबर पुं. {सं.} {*भाव.* दिगंबरता} शिव, महादेव; नंगा रहनेवाला जैन यति।

दिगंश पुं. {सं.} क्षितिज वृत का 360वाँ भाग या अंश।

दिगांगना *स्त्री.* = दिगंगना।

दिग्कन्या *स्त्री.* {सं.} दिशा का वह रूप जिसमें उसे कन्या या लड़की मानते हैं।

दिग्गज पुं. {सं.} पुराणानुसार वे आठों हाथी जो आठों दिशाओं में पृथ्वी को दबाए रखते और उनकी रक्षा करते हैं; *वि.* बहुत बड़ा या भारी।

दिग्ध *वि.* दीर्घ।

दिग्दंत पुं. = दिग्गज।

दिग्दर्शक *वि.* {सं.} दिशा बतानेवाला; पुं घड़ी के आकार का यंत्र जिससे दिशाओं का पता चलता है, कुतुबनुमा, दिक्सूचक।

दिग्दर्शन पुं. {सं.} वह जो उदाहरणस्वरूप उपस्थित किया जाए, नमूना; नमूना दिखाने या स्वरूप का सारधारणा परिचय कराने का काम।

दिग्दाह पुं. {सं.} एक अशुभ दैवी घटना जिसमें संध्या समय दिशाएँ लाल हो जाती और जलती हुई जान पड़ती हैं।

दिग्देवता पुं. = दिक्पाल।

दिग्पति पुं. = दिक्पाल।

दिग्पाल पुं. = दिक्पाल।

दिग्भ्रम पुं. {सं.} दिशाओं के संबंध में भ्रम होना, दिशा भूल जाना।

दिग्भ्रांत *वि.* {सं.} जिसे दिशा का भ्रम हो रहा हो, भ्रमित।

दिग्मंडल पुं. {सं.} दिशाओं का समूह, सब दिशाएँ।

दिग्वधू *स्त्री.* {सं.} दिशा का वह रूप जिसमें उसे वधू या सुहागिन स्त्री मानते हैं।

दिग्विजय *स्त्री.* {सं.} प्राचीनकाल के राजाओं की, अपना महत्व दिखलाने के लिए दूसरे देशों में अपनी सेनाएँ ले जाकर युद्ध करना और उन्हें जीतना; अपने गुणों के द्वारा आसपास के देशों में अपना महत्व स्थापित करना।

दिग्विजयी *वि.* {सं.} {*स्त्री.* दिग्विजयिनी} जिसने दिग्विजय की हो।

दिग्शूल पुं. दिक्शूल।

दिच्छित पुं., *वि.* दीक्षित।

दिज पुं. = द्विज

दिजराग पुं. = द्विजराज।

दिठवन *स्त्री.* देवोत्थान।

दिठादिठी *स्त्री.* देखादेखी।

दिठाना *अ.* {हिं. दीठ} बुरी नजर लगना।

दिठियार *वि.* {हिं. दीठ + आर (प्रत्य.)} जिसे दिखाई देता हो; समझदार, बुद्धिमान; जो दिखाई देता हो।

दिठौना पुं. {हिं. दीठ = दृष्टि + औना (प्रत्य.)} वह काली बिंदी जो बालकों को नजर से बचाने के लिए उनके माथे, गाल आदि पर लगाई जाती है।

दिढ़ *वि.* दृढ़।

दिढ़ाना *स.* {सं. दृढ़ + आना (प्रत्य.)} दृढ़ या मजबूत करना; निश्चित करना, पक्का करना; दृढ़ या पक्का होना।

दिढ़ाव पुं. = दृढ़ता।

दित *वि.* {सं.} चीरा हुआ, फाड़ा हुआ।

दिति *स्त्री.* {सं.} कश्यप ऋषि की पत्नी जो दैत्यों की माता थी।

दितिसुत पुं. {सं.} दैत्य, राक्षस।

दित्सा *स्त्री.* {सं.} देने की इच्छा; वह व्यवस्था जिसके अनुसार कोई व्यक्ति यह निश्चय करता है कि मेरे मरने पर मेरी संपत्ति अमुक-अमुक व्यक्तियों को इस प्रकार दी या बाँटी जाए, वसीयत (विल)।

दित्साक्रोड़ पुं. {सं.} दित्सापत्र या वसीयतानामे के अंत में लिखा हुआ परिशिष्ट रूप में कोई संक्षिप्त लेख या टिप्पणी जो किसी प्रकार की व्यवस्था या स्पष्टीकरण के रूप में होती है; दित्सापत्र का वह अंश जिसमें उक्त प्रकार का लेख होता है (क्रोडिसिल)।

दित्सापत्र पुं. {सं.} वह पत्र या लेख जिसमें कोई व्यक्ति यह लिखता है कि मेरी संपत्ति अमुक-अमुक व्यक्तियों को इस प्रकार मिले, वसीयतनामा (विल)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिदार पुं. दीदार।

दिन पुं. {सं.} सूर्य निकलने से उसके अस्त होने तक का समय;

मुहा. दिन को तारे दिखाई देना = इतना कष्ट पहुँचना कि बुद्धि ठिकाने न रहे; *दिन को दिन, रात को रात न समझना* = कोई काम करते समय अपने विश्राम का ध्यान छोड़ देना; *दिन छिपना या डूबना* = सूर्य अस्त होना; *दिन ढलना* = संध्या का समय निकट आना; *दिन दहाड़े* = ठीक दिन के समय; *दिन दूना, रात चौगुना होना या बढ़ना* = बहुत जल्दी-जल्दी और बराबर बढ़ते रहना।

एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय, आठ पहर या चौबीस घंटों का समय;

पद दिन-दिन या दिन-पर-दिन = नित्य प्रति, सदा, हर रोज।

समय, काल, वक्त;

मुहा. दिन काटना या पूरे करना = किसी प्रकार कष्ट का समय बिताना; *दिन गिड़ना* = संकट या अवनति के दिन आना।

नियत, उपयुक्त या उचित समय।

मुहा. दिन धरना = दिन निश्चत करना।

उतना समय जितने में कोई विशेष कार्य या बात हो, जैसे जाड़े के दिन, छुट्टी के दिन।

मुहा. दिन चढ़ना = गर्भकाल का आरंभ होना; *दिन फिरना* = विपत्ति या दरिद्रता के दिनों के बाद सुख या संपन्नता के दिन आना।

दिनअर पुं. = दिनकर (सूर्य)।

दिनकंत पुं. {सं. दिन+ कांत} सूर्य।

दिनकर पुं. {सं.} सूर्य

दिनकार पुं. = दिनकर (सूर्य)

दिनचर्या *स्त्री.* {सं.} नित्य दिन भर में किया जानेवाला काम-धंधा।

दिनदानी पुं. {सं. दिन + दानी} नित्य बहुत दान करनेवाला, बड़ा दानी।

दिननाथ पुं. = सूर्य।

दिनपत्र पुं. {सं.} वह पत्र या पत्रसमूह जिसमें दिन या वार, तिथियाँ और तारीखें आदि दी रहती हैं (कैलेंडर)।

दिनमणि पुं. {सं.} सूर्य।

दिनमान पुं. {सं.} सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय या दिन भर का मान।

दिन-रात *क्रि. वि.* सदा, हर समय।

दिनांक पुं. {सं. दिन + अंक} गिनती के विचार से महीने का कोई दिन, तारीख, जैसे दिनांक 9 चैत्र संवत् 2006.

दिनांत पुं. {सं.} संध्या।

दिनांध पुं. दिवांध।

दिनाई *स्त्री.* {सं. दिन + हिं. आना} वह जहरीली चीज, जिसके खाने से तुरंत मृत्यु हो जाए; मृत्यु का दिन या समय पास लानेवाली चीज या बात; *स्त्री.* = दाद (रोग)।

दिनातीत *वि.* {सं.} आजकल की रुचि या प्रचलन के विचार से पिछड़ा हुआ, जिसका अब प्रचलन या उपयोगिता न रह गई हो (आउट-ऑफ-डेट)।

दिनाधीश पुं. {सं.} सूर्य, मदार का वृक्ष।

दिनार्ध पुं. {सं.} मध्याह्न, दोपहर।

दिनाप्त *वि.* {सं.} आजकल की रुचि, उपयोगिता या प्रचलन के अनुसार, ठीक (अप-टू-डेट)।

दिनार पुं. दीनार।

दिनिआ पुं. {सं. दिनकर} सूर्य।

दिनियर पुं. {सं. दिनकर} सूर्य।

दिनोदिन *क्रि. वि.* दिन-प्रतिदिन, एक-एक दिन पर।

दिनौंधी *स्त्री.* {हिं. दिन + अंध} दिन के समय न दिखाई देने का रोग।

दिपति *स्त्री.* {सं. दीप्ति} चमक।

दिपाना *अ.* दिपना; *स.* {हिं. दिपना} दीप्त करना, चमकाना।

दिब पुं. दिव्य।

दिमाक पुं. दिमाग।

दिमाग पुं. {अ. दिमाग़} सिर के अंदर का गूदा, मस्तिष्क, भेजा;

मुहा. दिमाग खाना या चाटना = व्यर्थ की बातें करके तंग करना; *दिमाग खाली करना* = ऐसा काम करना जिसमें मानसिक शक्ति क्षीण हो, मगजपच्ची करना।

मानसिक शक्ति, बुद्धि, समझ;

मुहा. दिमाग लड़ाना = अच्छी तरह सोचना-समझना।

अभिमान, घमंड, शेखी।

दिमागचट *वि.* {हिं. दिमाग + चाटना} बक-बककर सिर खानेवाला, बकवादी।

दिमागदार *वि.* {अ. दिमाग़ + फा. दार} अच्छी मानसिक शक्तिवाला, बहुत समझदार; घमंडी।

दिमागी *वि.* {अ. दिमाग़ी} दिमाग-संबंधी, दिमाग का; दिमागदार।

दिमात[1] *वि.* {सं. द्विमातृ} जिसकी दो माताएँ हों।

दिमात[2] *वि.* {सं. द्विमात्रा} जिसमें दो मात्राएँ हों।

दिमान पुं. = दीवान।

दिमाना पुं., *वि.* दीवाना।

दियना पुं. = दीया (दीपक)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दियरा पुं. {हिं. दीया + रीया (प्रत्य.)} एक प्रकार का पकवान; दीया।

दियारा[1] पुं. {फा. दयार = प्रदेश} नदी के पास की जमीन, कछार, खादर; छोटा भू-भाग।

दियारा[2] पुं. {सं. दिवाकर} मृगतृष्णा; रात के समय मैदान में दिखाई पड़नेवाला लुक, छलावा।

दिरद पुं. द्विरद।

दिरमान पुं. {फा. दरमान} औषधि, दवा; इलाज, चिकित्सा।

दिरमानी पुं. {हिं. दिरमान} चिकित्सा या इलाज करनेवाला, चिकित्सक।

दिरानी *स्त्री.* {हिं.} देवरानी।

दिरिपक पुं. {हिं.} कंदुक, गेंद।

दिल पुं. {हिं.} कलेजा, हृदय; मन, चित्त;

मुहा. दिल कड़ा करना = हिम्मत या साहस करना; *दिल का गवाही देना* = मन का किसी काम के लिए अनुकूल या सम्मत होना; *दिल के फफोल फोड़ना* = भली-बुरी बातें कहकर मन का क्रोध या दुख कम करना; *दिल जमना* = किसी काम में ध्यान या जी लगना, संतोष होना, जी भरा; *दिल ठिकाने होना* = मन में शांति, संतोष या धैर्य होना, चित्त स्थिर होना; *दिल देना* = किसी से प्रेम करना. *दिल बुझना* = मन में उत्साह या उमंग न रह जाना; *दिल में फरक आना* = पहले का-सा सद्‌भाव न रह जाना, मन-मुटाव होना; *दिल से दूर करना* = भुला देना, ध्यान छोड़ देना।

साहस, हिम्मत; प्रवृत्ति, इच्छा।

दिलगरी *स्त्री.* दिलगीरी।

दिलगीर *वि.* {फा.} जिसे मन में कोई दुख या कष्ट हो, दुखी।

दिलगीर *स्त्री.* {फा.} मन में होनेवाला दुख या कष्ट।

दिलचला पुं. मनचला।

दिलचस्प *वि.* {फा.} {*भाव.* दिलचस्पी} जिसमें दिल लगे, मनोरंजक।

दिलचस्पी *स्त्री.* {फा.} किसी चीज में होनेवाला वह गुण या बात जो मन को आकृष्ट करे; किसी वस्तु या बात के प्रति मन में होनेवाला, अनुराग।

दिलजमई *स्त्री.* {फा. दिल + अ. जमअ: + हिं. ई (प्रत्य.)} किसी विषय में मन का संदेह दूर हो जाना, इत्मीनान, तसल्ली।

दिलजला *वि.* {फा. दिल + हिं. जलना} जिसे बहुत मानसिक कष्ट पहुँचा हो।

दिलदार *वि.* {फा.} {*भाव.* दिलदारी} उदार, दाता; रसिक; प्रेमी; प्रिय।

दिलबर *वि.* {फा.} प्यारा, प्रिय।

दिल-बहलाव पु. {फा. + हिं.} दिल बहलाने का काम; दिल बहलाने की क्रिया या भाव।

दिलाना *स.* देना का प्रे.।

दिलासा पुं. {फा. दिल + हिं. आस} आश्वासन, ढारस, तसल्ली।

पद दम-दिलासा = तसल्ली, धैर्य, धोखे या चकमे की बात।

दिली *वि.* {फा. दिल} हृदय या दिल-संबंधी, हार्दिक; बहुत घनिष्ठ।

दिलेर *वि.* {फा.} {*भाव.* दिलेरी} बहादुर, वीर; साहसी, हिम्मती।

दिलेरपन पुं. दिलेरी।

दिलेरी *स्त्री.* {फा.} दिलेर होने की अवस्था या भाव; साहस, हिम्मत; बहादुरी, वीरता।

दिल्लगी *स्त्री.* {फा. दिल + हिं. लगना} दिल लगने या लगाने की क्रिया या भाव; केवल मन बहलाने या हँसने-हँसाने की बात, परिहास, ठट्ठा, मजाक।

मुहा. दिल्लगी उड़ाना = (किसी को) अमान्य या तुच्छ ठहराने के लिए (उसके संबंध में) हँसी की बातें कहना, उपहास करना।

दिल्लगीबाज पुं. {हिं. दिल्लगी + फा. बाज} हँसी-दिल्लगी करनेवाला, ठिठोल।

दिल्ला पुं. {देश.} किवाड़ के पल्ले में के वे चौकोर टुकड़े, जो शोभा के लिए लगाए जाते हैं, दिलहा।

दिव पुं. {हिं.} स्वर्ग; आकाश; दिन।

दिवक्ष पुं. {हिं.} दीया।

दिवरानी पुं. {हिं.} देवरानी।

दिवला पुं. दीया।

दिवस पुं. {हिं.} दिन, रोज।

दिवसांतर पुं. {सं.} दूसरा दिन।

दिवसेश्वर पुं. {सं.} सूर्य, दिनकर।

दिवस्पृश पुं. {सं.} विष्णु जिन्होंने वामन अवतार में स्वर्ग को पैर से छुआ था।

दिवस्पति पुं. {सं.} सूर्य।

दिवांध *वि.* {सं.} जिसे दिन में दिखाई न देता हो; पुं. दिन में भी न दिखाई देने का रोग, उल्लू।

दिवा पुं. {सं.} दिन, दिवस।

दिवाकर पुं. {सं.} सूर्य।

दिवाकरसुत पुं. {सं.} सूर्य के पुत्र—शनि, यम, कर्ण और सुग्रीव।

दिवाकीर्ति पुं. {सं.} नापित, नाई, चाण्डाल, उल्लू।

दिवाचर पुं. {सं.} पक्षी, चिड़िया, चाण्डाल।

दिवाचारी पुं. {सं.} दिन में चलनेवाला (प्राणी)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवानाथ पुं. {हिं.} सूर्य।
दिवानीश पुं. {हिं.} रात-दिन।
दिवापृष्ठ पुं. {हिं.} सूर्य, दिवाकर।
दिवप्रदीप पुं. {हिं.} नीच पुरुष।
दिवान पुं. दीवान।
दिवाना पुं. दीवाना; *स.* दिलाना।
दिवाभिसारिका *स्त्री.* {सं.} दिन के समय अपने प्रेमी से मिलने के लिए संकेतास्थल पर जानेवाली नायिका।
दिवाभीत पुं. {सं.} उल्लू, सफेद, कमल, चोर।
दिवाभर्गित *वि.* {सं.} जिसको दिन में बाहर निकलने में भय हो।
दिवामणि पुं. {सं.} सूर्य, अर्कवृक्ष।
दिवामध्य पुं. {सं.} मध्याह्न, दोपहर।
दिवाल *वि.* {हिं. देना + वाल (प्रत्य.)} जो देता हो, देनेवाला; *स्त्री.* दीवार।
दिवाला पुं. {हिं. दीया + बालना} वह आर्थिक हीन अवस्था जिसमें ऋण चुकाने के लिए पास में कुछ भी न रह जाए;
मुहा. दिवाला निकालना या मारना = ऋण चुकाने में असमर्थता प्रकट करना।
कोई चीज या गुण बिल्कुल न रह जाना, जैसे बुद्धि का दिवाला।
दिवालिया *वि.* {हिं. दिवाला + इया (प्रत्य.)} जिसके पास ऋण चुकाने के लिए कुछ भी न रह गया हो।
दिवालियापन पुं. दिवालिया होने की अवस्था या भाव।
दिवाली *स्त्री.* दीवाली।
दिवालोक पुं. {सं.} दिन का प्रकाश।
दिवास्वप्न पुं. {सं.} दिन के समय, जागते रहने पर भी, स्वप्न देखने के समान, तरह-तरह की असंभव कल्पनाएँ करना, हवाई किले बनाना, मन के लड्डू खाना (डे-ड्रीम)।
दिवैया *वि.* {हिं. देना} देनेवाला।
दिव्य *वि.* {सं.} {*स्त्री.* दिव्या} स्वर्ग अथवा आकाश से संबंध रखनेवाला; अलौकिक; खूब साफ, सुंदर, चमकीला या बढ़िया; पुं. तीन प्रकार के नायकों में से वह जो स्वर्ग में रहनेवाला या अलौकिक हो, जैसे राम, कृष्ण आदि; एक प्रकार की पुरानी परीक्षा जिससे किसी मनुष्य के दोषी या निर्दोष होने का निर्णय किया जाता था; शपथ, सौगंध, कसम।
दिव्यदृष्टि *स्त्री.* {सं.} वह अलौकिक दृष्टि जिससे गुप्त पदार्थ या अदृश्य तत्व आदि दिखाई दें; ज्ञानदृष्टि; बहुत दूर के या छिपे हुए पदार्थों या बातों को देखने और समझने की शक्ति जो कुछ विशिष्ट व्यक्तियों या विशिष्ट अवस्थाओं में होनेवाली मानी जाती है (क्लेयरवाएंस)।
दिव्यपुरुष पुं. {सं.} वह व्यक्ति जो लौकिक न हो, बल्कि जिसके स्वर्गीय होने की कल्पना की गई हो, जैसे देवी, देवता, यक्ष, गंधर्व आदि।
दिव्यांगना *स्त्री.* {सं.} किसी देवता की स्त्री; अप्सरा।
दिवांशु पुं. {सं.} अप्सरा।
दिव्या *स्त्री.* {सं.} तीन प्रकार की नायिकाओं में से वह जो स्वर्ग में रहनेवाली या अलौकिक हो, जैसे राधा।
दिवादिक *स्त्री.* {सं.} वह नायक जिसमें देवताओं के भी गुण हों।
दिव्याश्रम पुं. {सं.} पुण्याश्रम, पवित्र आश्रम।
दिव्याश्रन पुं. {सं.} तंत्र के अनुसार एक प्रकार का अस्त्र।
दिव्योदक पुं. {सं.} वर्षा का पानी।
दिव्योसधि पुं. {सं.} मनसिल।
दिव्यालोक पुं. {सं.} स्वर्ग।
दिव्यास्त्र पुं. {सं.} देवता का दिया हुआ या मंत्र से चलनेवाला अस्त्र।
दिश *स्त्री.* {सं.} दिशा, दिक्।
दिशा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* दिश्य} नियत या वर्ण्य स्थान के इधर-उधर का शेष विस्तार, ओर, तरफ; क्षितिज वृत्त के चार कल्पित (पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण) विभागों में से किसी ओर का विस्तार; (हर दो दिशाओं के बीच के चारों कोणों की भी चार दिशाएँ तथा इनके सिवा, सिर के ऊपर की और पैर के नीचे की ये दो दिशाएँ और मानी जाती हैं); उक्त के आधार पर दस की संख्या।
दिशा-निर्धारण पुं. {सं.} कार्य करने की पद्धति निर्धारित करना।
दिशाबोधक *वि.* {सं.} दिशा का बोध करानेवाला।
दिशाभ्रम पुं. दिग्भ्रम।
दिशाशूल पुं. दिक्शूल।
दिशि पुं. दिशा।
दिशोदंड पुं. {सं.} अनादर द्वारा दण्ड।
दिश्य *वि.* {सं.} दिशा-संबंधी; *वि.* निर्दिष्ट।
दिष्टबंधक पुं. दृष्टबंधक; वह बंधक जिसमें महाजन को केवल रुपये का सूद मिलता है और बंधक रखी हुई वस्तु पर अधिकार नहीं प्राप्त होता।
दिष्टांत पुं. {सं.} मरण, मृत्यु, मौत।
दिष्टि *स्त्री.* दृष्टि।
दिष्णु *वि.* {सं.} दाता, देनेवाला।
दिसंतर पुं. {हिं.} परदेश; *क्रि. वि.* बहुत दूर तक।
दिस *स्त्री.* दिशा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिसना *अ.* दिखना।

दिस *स्त्री.* {सं. दिशा = ओर} मलत्याग।

दिसावर *पुं.* {सं. देशांतर} {*वि.* दिसावरी} दूसरा देश, परदेश, विदेश।

दिसि *स्त्री.* दिशा।

दिसिप *पुं.* दिक्पाल।

दिसिराज *पुं.* दिक्पाल।

दिसैया *वि.* {हिं. दिसना} देखने या दिखानेवाला।

दिस्ता *पुं.* दस्ता।

दिहंदा *वि.* {फा.} देनेवाला (यौ. के अंत में, जैसे राहदिहंदा)।

दिहल *स.* {पू. हिं. में 'देना' क्रिया का भूतकालिक रूप} दिया।

उदा. 'हमहिं दिहल करि कुटिल करमचँद' –तुलसी।

दिहाड़ा *पुं.* दिन।

दिहाड़ी *स्त्री.* {हिं. दिहाड़ा} दिन, दिवस; काम का दिन; एक दिन की काम करने की मजदूरी।

दीक *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का वृक्ष।

दीक्षक *पुं.* {सं.} दीक्षा देनेवाला, गुरु; शिक्षक।

दीक्षांत *पुं.* {सं.} वह अवभृथ यज्ञ या स्नान, जो किसी यज्ञ के अंत में उसकी त्रुटियों या दोषों की शांति के लिए हो; किसी महाविद्यालय की पढ़ाई का सफलतापूर्ण अंत।

दीक्षांत भाषण *पुं.* {सं.} किसी बड़े विद्वान् का वह भाषण, जो किसी विश्वविद्यालय के उत्तीर्ण छात्रों के समक्ष उन्हें उपाधि या प्रमाणपत्र आदि देने के समय होता है (कांवोकेशन एड्रेस)।

दीक्षा *स्त्री.* {सं.} यज्ञों का संकल्पपूर्वक अनुष्ठान, यजन; गुरु या आचार्य का मंत्रोपदेश।

दीक्षागुरु *पुं.* {सं.} वह गुरु जिससे किसी मंत्र का उपदेश या दीक्षा मिली हो।

दीक्षार्थी (र्थिन्) *पुं.* {सं.} वह जो दीक्षा लेना चाहता हो।

दीक्षित *वि.* {सं.} जिसने संकल्प करके या आरंभ किया हो; जिसने गुरु से दीक्षा या मंत्र लिया हो; *पुं.* ब्राह्मणों की एक जाति।

दीक्षितायनी *स्त्री.* {सं.} दीक्षित की पत्नी।

दीक्ष्य *वि.* {सं.} दीक्षा के योग्य।

दीखना *अ.* {हिं. देखना} दिखाई देना।

दीघी *स्त्री.* {सं. दीर्घिका} तालाब।

दीच्छा *स्त्री.* दीक्षा।

दीठ *स्त्री.* {सं. दृष्टि} दृष्टि, नजर, निगाह;

मुहा. दीठ मिलाना = किसी के सामने होकर उसे देखना।

किसी अच्छी वस्तु पर ऐसी बुरी दृष्टि लगना, जिसका बुरा प्रभाव पड़े, नजर।

मुहा. दीठ उतारना या झाड़ना = किसी उपचार से बुरी दृष्टि का प्रभाव नष्ट करना; *दीठ जलाना* = बुरी दृष्टि का प्रभाव दूर करने के लिए राई-नोन आदि आग में डालना।

देख-भाल; परख, पहचान; कृपादृष्टि; आशा की भावना।

दीठबंदी *स्त्री.* {हिं. दीठ + बंद} जादू।

दीठवंत *वि.* {सं. दृष्टि + वंत} जिसे दिखाई दे, सुझाखा; ज्ञानी।

दीता *स.* {फा. दीद:} हिं. 'देना' क्रिया का स्थानिक भूतकालिक रूप जो 'दिया' का वाचक है।

दीति *स्त्री.* {सं.} दीप्ति, प्रकाश।

दीदा *पुं.* {फा. दीद:} दृष्टि, नजर; आँख, नेत्र।

मुहा. दीदा लगना = किसी काम में मन लगना।

दीदार *पुं.* {फा.} दर्शन, देखादेखी।

दीदी *स्त्री.* {पु. हिं. दादा = बड़ा भाई} बड़ी बहन।

दीदिव *पुं.* {सं.} स्वर्ग, बृहस्पति, अन्न, खाने की वस्तु।

दीन[1] *वि.* {सं.} {*स्त्री.* दीना, *भाव.* दीनता} दरिद्र, गरीब; दुखी; सन्तप्त; नम्र, विनीत।

दीन[2] *पुं.* {अ.} मत, मजहब।

दीनता *स्त्री.* {सं.} दीन होने की अवस्था या भाव; गरीबी; नम्रता।

दीनताई *स्त्री.* दीनता।

दीनदयालु *वि.* {सं.} दीनों पर दया करनेवाला।

दीन-दुनिया *स्त्री.* {अ. दीन + दुनिया} यह लोक और परलोक।

दीनबंधु *पुं.* {सं.} दीन-दुखियों का सहायक और मित्र; ईश्वर।

दीना *स्त्री.* {सं.} मूसा, चुहिया।

दीनानाथ *पुं.* {सं. दीन + नाथ} दीनों का नाथ या रक्षक; ईश्वर।

दीनार *पुं.* {सं.} स्वर्णमुद्रा, मोहर।

दीपंकर *पुं.* {सं.} बुद्ध का एक अवतार।

दीप *पुं.* {सं.} दीया, चिराग; *पुं.* द्वीप।

दीपक *पुं.* {सं.} दीया, चिराग; एक अर्थालंकार जिसमें वर्णित वस्तु का एक ही धर्म कहा जाता है अथवा कई उपमान क्रियाओं का एक ही कर्ता होता है; छह रागों में से दूसरा राग; *वि.* {सं.} {*स्त्री.* दीपिका} प्रकाश या उजाला करनेवाला; पाचन शक्ति बढ़ानेवाला, उत्तेजक।

दीपकर *पुं.* {सं.} वह जिसका काम दीपक जलाना हो, दीया जलानेवाला।

दीपकाल *पुं.* {सं.} संध्या समय, दीप जलाने का समय।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीप-ज्वालक पुं. दीपकर।

दीपति *स्त्री.* दीप्ति।

दीपदान पुं. {सं.} देवता के सामने दीपक जलाना; मरते हुए व्यक्ति से आटे के जलते हुए दीए का दान या संकल्प कराना।

दीपन पुं. {सं.} {*वि.* दीप्ति, दीप्य} प्रकाश करने के लिए जलाना, प्रकाशन; भूख तेज करना; मन में आवेग उत्पन्न करना, उत्तेजन; *वि.* पाचन शक्ति बढ़ानेवाला; उत्तेजना उत्पन्न करनेवाला।

दीपना *अ.* {सं. दीपन} चमकना; *स.* चमकाना।

दीपनी *स्त्री.* {सं.} मेथी, अजवाइन, माथा, ककड़ी।

दीपपुण्य पुं. {सं.} चंपा का फूल।

दीपमालिका *स्त्री.* {सं.} दीवाली।

दीपशिखा *स्त्री.* {सं.} दीए की लौ।

दीपस्तंभ पुं. {सं.} वह स्तंभ जिसके ऊपर या चारों ओर रखकर दीपक जलाए जाते हों; समुद्र में जहाजों को रात के समय रास्ता दिखाने या उन्हें चट्टानों आदि से बचाने के लिए बना हुआ उक्त प्रकार का स्तंभ (लाइट हाउस)।

दीपावली *स्त्री.* दीवाली, दीपों की पंक्ति।

दीपिका *स्त्री.* {सं.} छोटा दीया; किसी ग्रंथ का अर्थ बतलानेवाली पुस्तक; *वि. स्त्री.* प्रकाश फैलानेवाली।

दीपित *वि.* दीप्त, प्रकाशित, प्रज्वलित, उत्तेजित।

दीप्त *वि.* {सं.} जलता हुआ; चमकता हुआ, चमकीला।

दीप्तांग *वि.* {सं.} जिसका अंग चमकता हो; पुं. मयूर, मोर।

दीप्तांशु पुं. {सं.} सूर्य, अर्क-वक्ष।

दीप्ता *स्त्री.* {सं.} ज्योतिष्मती लता।

दीप्ताग्नि पुं. {सं.} अगस्त्य मुनि।

दीप्ति पुं. {हिं.} प्रकाश, उजाला; चमक, द्युति; शोभा, छवि।

दीप्तिमान *वि.* दीप्त, प्रज्वलित, चमकता हुआ।

दीबोई *स्त्री.* {हिं. देना} देने की क्रिया या भाव। *उदा.* 'दीनदयाल दीबोई भावै, भाचक सदा सोहाहीं'—तुलसी।

दीपक *स्त्री.* {फा.} च्यूँटी की तरह का एक सफेद कीड़ा जो लकड़ी, कागज आदि में लगकर उन्हें खा जाता है, बल्मीकि।

दीयट *स्त्री.* {हिं. दीया} लकड़ी या धातु का वह आधार, जिसपर रखकर दीया जलाते हैं।

दीयर *स्त्री.* {?} नदी के किनारे की उपजाऊ भूमि।

दीया पुं. {सं. दीपक} प्रकाश करने के लिए किसी आधार में रखकर जलाई जानेवाली बत्ती, दीपक, चिराग।

मुहा. दीया ठंडा करना या बढ़ाना = दीया बुझाना।

{अल्पा. दियली} छोटा कसोरा।

दीया-सलाई *स्त्री.* {हिं.} लकड़ी की वह छोटी पतली तीली, जिसका एक सिरा गंधक आदि मसाले लगे रहने के कारण रगड़ने से जल उठता है।

दीरघ *वि.* दीर्घ।

दीर्घ *वि.* {सं.} विस्तृत, लंबा; बड़ा, विशाल; पुं. 'ह्रस्व' का उलटा, जैसे 'अ' का दीर्घ 'आ' या 'उ' का दीर्घ 'ऊ' है।

दीर्घकाय *वि.* {सं.} बड़े डील-डौलवाला, बहुत बड़ा।

दीर्घकालिक *वि.* {सं.} दीर्घकालीन।

दीर्घकालीन *वि.* {सं.} दीर्घकाल तक चलनेवाला।

दीर्घजीवी *वि.* {सं. दीर्घजीविन्} जो बहुत दिनों तक जीता रहे।

दीर्घसूत्र पुं. {सं.} एक प्रकार का प्राचीन यज्ञ जो बहुत दिनों तक चलता था।

दीर्घसूत्रता *स्त्री.* {सं.} हर काम में आवश्यक या उचित से अधिक समय लगाने की वृत्ति, हर काम धीरे-धीरे और बहुत देर में करना; कार्यालयों, विशेषत: सरकारी कार्यालयों में व्यर्थ की और पेचीली कार्रवाइयों के कारण होनेवाली बहुत देर (रेड टेप)।

दीर्घसूत्री (त्रिन्) *वि.* {सं.} {*भाव.* दीर्घ सूत्रता} हर काम में बहुत देर लगानेवाला।

दीर्घा *स्त्री.* {सं.} आने-जाने के लिए कोई लंबा और ऊपर से छाया हुआ मार्ग; किसी भवन के अंदर कुछ ऊँचाई पर दर्शकों आदि के बैठने के लिए बना हुआ स्थान (गैलरी)।

दीर्घायु *वि.* दीर्घजीवी।

दीर्घारण्य पुं. {सं.} निविड़ वन, घना जंगल।

दीर्घालर्क पुं. {सं.} सफेद मंदार का वृक्ष।

दीर्घास्थ पुं. {सं.} शिव के एक अनुचर का नाम, हाथी, पश्चिमोत्तर प्रदेश।

दीर्घाहन पुं. {सं.} ग्रीष्मकाल।

दीर्घिका *स्त्री.* {सं.} छोटा तालाब, बावली।

दीर्घित *वि.* {सं.} जिसे दीर्घ रूप दिया गया हो।

दीर्घीकरण पुं. {सं.} दीर्घ रूप देने की क्रिया या भाव।

दीर्ण *वि.* {सं.} विदीर्ण; टूटा हुआ, भग्न।

दीवट पुं. दीयट।

दीवा पुं. दीया।

दीवान पुं. {फा.} वह स्थान जहाँ राजा का दरबार लगता हो, राजसभा; राज्य का मंत्री, वजीर; किसी शायर की सब गजलों का संग्रह।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दीवानखाना पुं. {फा.} वह कमरा जिसमें बड़े आदमी बैठकर लोगों से मिलते और बातें करते हैं, बैठक।

दीवाना *वि.* {फा.} {*स्त्री.* दीवानी} पागल, विक्षिप्त।

दीवानी *स्त्री.* {फा.} दीवान का पद या कार्य; दीवानी न्यायालय।

दीवानी अधिकरण पुं. = दीवानी न्यायालय।

दीवानी न्यायालय पुं. {फा. + सं.} वह न्यायालय जिसमें संपत्ति या अर्थ-संबंधी व्यवहारों या मुकदमों का विचार और निर्णय होता है (सिविल कोर्ट)।

दीवाने-आम पुं. {फा. + अ.} वह दरबार जिसमें साधारणत: सब लोग राजा के सामने जा सकते हों।

दीवाने-खास पुं. {फा. + अ.} वह दरबार जिसमें राजा अपने मंत्रियों या मुख्य सरदारों के साथ बैठकर परामर्श करता है, खास दरबार।

दीवार *स्त्री.* {फा.} पत्थर, ईंट, मिट्टी आदि के द्वारा खड़ा किया हुआ वह परदा जिससे कोई स्थान घेरकर कोठरी या मकान आदि बनाते हैं, भीत; किसी वस्तु का कुछ ऊपर उठा हुआ घेरा।

दीवारगीर पुं. {फा.} दीया आदि रखने का दीवार में लगा आधार।

दीवारी *वि.* {फा. दीवार + ई (प्रत्य.)} दीवारों से घिरा हुआ, जैसे दीवारी नगर।

दीवाल *स्त्री.* दीवार।

दीवाली *स्त्री.* {सं. दीपावली} कार्तिक की अमावस्या का एक प्रसिद्ध उत्सव, जिसमें रात को बहुत से दीपक जलाकर लक्ष्मी का पूजन किया जाता और प्राय: जुआ खेला जाता है।

दीवि पुं. {सं.} नीलकंठ नामक पक्षी।

दीसना *अ.* {सं. दृश् = देखना} दिखाई देना, दृष्टिगोचर होना।

दीह *वि.* {सं. दीर्घ} लंबा और बड़ा; बहुत ऊँचा; पुं. चहारदीवारी, परकोटा।

दुंका पुं. {हिं.} छोटा कण, दाना।

दुंद[1] पुं. {सं. द्वंद्व} द्वंद्व; उत्पात, उपद्रव; झगड़ा-बखेड़ा।

दुंद[2] पुं. {सं. दुंदुभि} नगाड़ा, डंका।

दुंदभ[1] पुं. {सं. दुंदुभि} नगाड़ा।

दुंदभ[2] पुं. {सं. द्वंद्व} बार-बार जन्म लेने और मरने का कष्ट।

दुंदुभि *स्त्री.* {सं.} नगाड़ा, धौंसा।

दुंदुह पुं. {सं. डुंडुभ} पानी में रहनेवाला साँप, डेड़हा।

दुंबा पुं. {फा. दुम्बाल:} एक प्रकार का मेढ़ा, जिसकी दुम बहुत भारी और मोटी होती है।

दु:ख पुं. {सं.} मन की वह अप्रिय और कष्ट देनेवाली अवस्था या बात, जिससे छुटकारा पाने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, 'सुख' का उलटा, दुख, तकलीफ, कष्ट, क्लेश;

मुहा. दु:*ख बाँटना* = किसी के संकट के समय उसका साथ देना; दु:*ख भरना* = दु:ख सहना, कष्ट भोगना।

संकट, आपत्ति; मानसिक कष्ट, खेद, रंज; पीड़ा, दर्द; रोग।

दु:खाकर पुं. {सं.} दु:ख की खानरूपी संसार; *वि.* कष्ट पहुँचानेवाला।

दु:खद (दायक) *वि.* {सं.} {*स्त्री.* दु:खदायिका} दु:ख या कष्ट देनेवाला।

दु:खदायी *वि.* दु:खद।

दु:खवाद पुं. {सं.} {*वि.* दु:खवादी} निराशावाद।

दु:खांत *वि.* {सं.} जिसका अंत दु:खपूर्ण हो; जिसके अंत का वर्णन दु:खपूर्ण हो, जैसे दु:खांत कहानी; पुं. दुख की समाप्ति; दुख की पराकाष्ठा या हद।

दु:खाचार *वि.* {सं.} दु:स्वभाव, दु:शासन।

दुखायतन पुं. {सं.} कष्टमय संसार।

दु:खार्त *वि.* {सं.} दुखपीड़ित, कष्ट से व्याकुल।

दु:खित *वि.* {सं.} जिसे दुख पहुँचा हो, दुखी।

दु:खी *वि.* दु:खित।

दु:शील *वि.* {सं.} {*भाव.* दु:शीलता} बुरे शील या स्वभाववाला।

दु:सह *वि.* {सं.} जिसे सहन करना बहुत कठिन हो, दुस्सह।

दु:साध्य *वि.* {सं.} जिसका साधन कठिन हो; बहुत कठिनता से होनेवाला; जिसका उपाय या प्रतिकार करना कठिन हो, दुस्साध्य।

दु:साहस पुं. {सं.} {*वि.* दु:साहसी} व्यर्थ का, बुरा या अनुचित साहस, दुस्साहस; ढिठाई, धृष्टता।

दु:साहसिक *वि.* {सं.} जिसके लिए साहस करना बुरा हो।

दु:साहसी *वि.* {सं.} व्यर्थ का साहस करनेवाला।

दु:सुप्त *वि.* {सं.} बुरे सपने से युक्त।

दु:स्त्री *स्त्री.* {सं.} दुष्ट स्त्री।

दु:स्थ *वि.* {सं.} मूर्ख, लोभी, दरिद्र।

दु:स्थिति *स्त्री.* {सं.} दुर्दशा, बुरी अवस्था।

दु:स्फोर पुं. {सं.} एक प्राचीन शस्त्र।

दु *वि.* {हिं. दो} 'दो' का संक्षिप्त रूप, जो समास बनाने में शब्द के पहले लगता है, जैसे–दुविधा, दुचिता। उप. दुप।

दअन पुं. दुवन।

दुअन्नी *स्त्री.* {सं. दो + आना} दो आने का सिक्का।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुआ *स्त्री.* {अ.} ईश्वर से की जानेवाली प्रार्थना; आशीर्वाद।
मुहा. दुआ *लगना* = आशीर्वाद फलदायक होना।
दुआबा *पुं.* दोआवा।
दुआल *स्त्री.* दुवाल।
दुआह *पुं.* {हिं. दो + विवाह} पहली स्त्री मर जाने पर पुरुष का होनेवाला दूसरा विवाह।
दुइ *वि.* दो।
दुइज[1] *स्त्री.* दूज।
दुइज[2] *पुं.* {हिं. द्विज} अपने को ईश्वर से अलग समझना, उसका अंश समझना; दुजायगी।
दुऊ *वि.* दोनों।
दुऔ *वि.* = दोनों।
टुकड़ा *पुं.* {हिं. टु + कड़ा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* टुकड़ी} एक साथ या एक में लगी हुई दो वस्तुएँ, जोड़ा; एक पैसे का चौथाई भाग, छदाम।
टुकड़ी *स्त्री.* {हिं. दो} दो रुपए; धोतियों आदि का जोड़ा (दलाल)।
टुकना *अ.* {देश.} लुकना, छिपना।
दुकान *स्त्री.* {फा.} वह स्थान जहाँ बिक्री की चीजें रहती और बिकती हैं, माल बिकने का स्थान, हट्ट।
मुहा. दुकान *बढ़ाना* = दुकान बंद करना; दुकान *लगाना* = दुकान का सामान सजाकर बिक्री के लिए रखना; इधर-उधर फैली बहुत-सी चीजें।
दुकानदार *पुं.* {फा.} {*भाव.* दुकानदारी} दुकान पर बैठकर चीजें बेचनेवाला, दुकानवाला; वह जिसने धन कमाने के लिए परोपकारी होने का ढोंग रचा रखा हो।
दुकानदारी *स्त्री.* {फा. दुकानदार} दुकानदार का काम या भाव; चीजों का दाम बहुत बढ़ाकर कहना; किसी को अपने जाल में फँसाने या ठगने के लिए तरह-तरह की बातें करना।
दुकाल *पुं.* अकाल, दुष्काल, दुर्भिक्ष।
दुकुल्ली *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का चमड़ा मढ़ा हुआ प्राचीन बाजा।
दुकूल *पुं.* {सं.} वस्त्र, कपड़ा; स्त्रियों के पहनने की साड़ी।
दुकूलिनी *स्त्री.* {सं.} नदी।
दुकेला *पुं.* {हिं. दुक्का} {*स्त्री.* दुकेली} जिसके साथ कोई एक और साथी हो।
दुकेले *अव्य.* {हिं.} दूसरे व्यक्ति के साथ लिए हुए।
दुक्कड़ *पुं.* {हिं. दो + कूँड़} शहनाई के साथ बजनेवाले दो (चमड़े से मढ़े) बाजों का जोड़ा; एक बँधी हुई दो बड़ी नावों का जोड़ा।
दुक्का *वि.* {सं. द्विक्} {*स्त्री.* दुक्की} जो एक साथ दो हों।
पद इक्का-दुक्का = 'दुकेला' के अंतर्गत 'अकेला-दुकेला'।
दुक्की *स्त्री.* {हिं. दो} ताश हा वह पत्ता जिसपर दो बूटियाँ होती हैं।
दुख *पुं.* दुःख (अब 'दुख' ही अधिक प्रचलित है)।
दुखड़ा *पुं.* {हिं. दुख + ड़ा (प्रत्य.)} किसी के दुख या कष्ट का वर्णन;
मुहा. दुखड़ा *रोना* = अपना दुख दीनतापूर्वक किसी से कहना।
विपत्ति, संकट, आफत।
दुःखदाई *वि.* {हिं.} दुःखदाई, कष्ट देनेवाला।
दुखदानि *वि.* दुःखद।
दुख-दुंद *पुं.* {सं. दुःखद्वंद्व} दुख और विपत्ति अथवा उनसे होनेवाला सन्ताप।
दुखना *अ.* {हिं. दुख} (शरीर के किसी अंग का) दर्द करना, पीड़ा होना।
दुखहाया *वि.* {हिं. दुख + हाया (प्रत्य.)} {*स्त्री.* दुखदाई} जिसे बहुत दुख पहुँचा हो, परम दुखी।
दुखाना *स.* {हिं. दुख} दुखी करना या दुख होना, कष्ट पहुँचाना;
मुहा. जी दुखाना = किसी को मानसिक कष्ट पहुँचाना।
किसी का मर्मस्थान या पका घाव आदि छूना, जिससे उसे पीड़ा हो; *अ.* दुखना।
दुखिया *वि.* = दुखी।
दुखी *वि.* {सं. दुःखिन्} जिसे दुख या कष्ट पहुँचा हो, दुख में पड़ा हुआ; जिसके मन में खेद हुआ हो, खिन्न; रोगी, बीमार।
दुःखोला *वि.* {हिं.} दुखपूर्ण, जो दुख भोगता हो।
दुखौंहाँ *वि.* {हिं. दुख + औहाँ (प्रत्य.)} {*स्त्री.* दुखौंहीं} दुख देनेवाला।
दुग *वि.* {सं. द्विक्} दो।
दुगई *स्त्री.* {?} मकान के आगे का उसारा, दालान।
उदा. 'अति अद्‌भुत थम्मन की दुगई'—**केशव (बुन्देल.)**।
दुगदा *वि.* = दुर्गम।
दुगदुगी *स्त्री.* धुकधुकी; गरदन के नीचे और छाती के ऊपर का गहरा भाग, गले में पहनने का एक गहना।
दुगना *वि.* देना, द्विगुण।
दुगम *वि.* दुर्गम।
दुगुण *वि.* दूना।
दुग्ध *पुं.* {सं.} दूध।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुग्धि, दुग्धी *स्त्री.* {सं.} दुद्ध नामक घास; *वि.* दूधवाला, जिसमें दूध हो।
दुग्धिका *स्त्री.* {सं.} दुद्धी नाम की घास, खिरनी।
दुग्विनिका *स्त्री.* {सं.} लाल अपामार्ग, चिचड़ा।
दुग्धचूर्ण *पुं.* {सं.} रासायनिक प्रक्रिया से दूध का बनाया हुआ चूर्ण।
दुग्धिल *वि.* {सं. दुग्ध + धवल} दूध की तरह सफेद।
दुघड़िया *पुं.* दोघड़िया (मुहूर्त)।
दुघरी *स्त्री.* = दुघड़िया।
दुचंद *वि.* {फा. दोचंद} दूना, दुगना।
दुचितई (ताई) *स्त्री.* {हिं. दुचिता} चित्त की अस्थिरता दुविधा।
उदा. 'जब आनि मई सबको दुचिताई' –केशव; खटका, आशंका।
दुचित्ता *वि.* {हिं. दो + चित्त} {*स्त्री.* दुचित्ती, *भाव.* दुचित्तापन} जिसका चित्त दो बातों में लगा हो, जो दुविधा या चिंता में हो; संदेह में पड़ा हुआ।
दुचित्ती *स्त्री.* दो तरफ चित्त के लगे होने की अवस्था या भाव।
दुज *पुं.* 'द्विज' ('दुज' के यौ. के लिए 'द्विज' के यौ.)।
दुजड़ *स्त्री.* {हिं.} तलवार, खड्ग।
दुजड़ी *स्त्री.* {हिं.} कटार।
दुजाति *पुं.* {हिं.} द्विज।
दुजायगी *स्त्री.* {हिं. दो + जायगाह} किसी को अपना न समझकर, पराया भिन्न या गैर समझना, औरों से किया जानेवाला भेदभाव।
दुटूक *वि.* {हिं. दो + टूक} दो टुकड़ों या खंडों में बँटा हुआ।
दुत *विस्मयादि.* {अनु.} एक शब्द जो किसी को घृणा या उपेक्षापूर्वक दूर हटाने के लिए कहा जाता है; *स्त्री.* = द्युति।
दुतकारना *स.* {हिं. दुत} {*भाव.* दुतकार} दुत-दुत कहकर किसी को अपने पास से तिरस्कारपूर्वक हटाना; धिक्कारना।
दुताबी *स्त्री.* {हिं. दो + फा. ताब} पुराना चाल की एक प्रकार की (कदाचित् दुधारी) तलवार।
दुति *स्त्री.* द्युति, आभा, चमक।
दुतिया *स्त्री.* द्वितीया, पक्ष की द्वितीया तिथि, दूज।
दुतिवंत *वि.* {हिं. दुति + वंत (प्रत्य.)} चमकीला; सुंदर।
दुदलाना *स.* दुतकारना।
दुदिला *वि.* दुचिता; जो दुविधा में पड़ा हो, दुचिता, व्यग्र, घबड़ाया हुआ।
दुद्धी *स्त्री.* {हिं. दूध} खड़िया मिट्टी; सफेद मिट्टी, सरिबा लता, जंगली नील।
दुधमुँहाँ *वि.* {हिं. दूध + मुँह} जिसके दूध के दाँत न टूटे हों; (बच्चा) जो अभी माता के दूध से ही पलता हो, बहुत छोटा।
दुधार *वि. स्त्री.* {हिं. दूध + आर (प्रत्य.)} जो दूध देती हो, दूध देनेवाली (गौ, भैंस आदि)।
दुधारा *वि.* {हिं. दो + धार} (शस्त्र) जिसमें दोनो ओर धार हो; *पुं.* एक प्रकार का खाँड़ा।
दुधारी (रू) *वि. स्त्री.* दुधार।
दुधिया *वि. पुं.* दूधिया, दूध मिला हुआ।
दुनना *स.* {?} कुचलना; नष्ट करना।
दुनरना, दुनरवना *अ.* {हिं. दो + नवना = झुकना} लचकर दोहरा-सा हो जाना; *स.* लचाकर दोहरा-सा करना।
दुनाली *वि. स्त्री.* {हिं. दो + नाल} दो नालियों या नलोंवाली, जैसे दुनाली बंदूक।
दुनियाँ *स्त्री.* {अ. दुनिया} संसार, जगत्।
मुहा. दुनियाँ के परदे पर = सारे संसार में; *दुनियाँ की हवा लगना* = सांसारिक अनुभव ज्ञान होना; सांसारिक छल-कपट या दुर्व्यसनों में लगना; *दुनिया भर का* बहुत-सा।
संसार के लोग, जनता।
दुनियाँदार *पुं.* {फा. दुनियादार} {*भाव.* दुनियाँदारी} सांसारिक झगड़ों में पड़ा हुआ मनुष्य, गृहस्थ; युक्ति से अपना काम निकालनेवाला मनुष्य; व्यवहारकुशल व्यक्ति।
दुनियाई *वि.* {हिं. दुनियाँ + ई (प्रत्य.)} दुनिया या संसार से संबंध रखनेवाला, सांसारिक।
दुनी *स्त्री.* दुनियाँ, संसार।
दुपटा *पुं.* दुपट्टा, दो पाटों की चादर।
दुपटी *स्त्री.* {हिं. दो + पट} चादर; छोटा दुपट्टा।
दुपट्टा *पुं.* {हिं. दो + पाट} {अल्पा. दुपट्टी} ओढ़ने का कपड़ा, चादर।
मुहा. दुपट्टा तानकर सोना = निश्चिंत हो जाना।
दुपट्टी *स्त्री.* दुपट्टा।
दुपद *वि., पुं.* द्विपद।
दुपहर *स्त्री.* दोपहर।
दुपहरिया *स्त्री.* {हिं. दो + पहर} दिन का मध्य भाग, मध्याह्न, दोपहर; एक छोटा फूलदार पौधा।
दुपहिया *वि.* {हिं. दो + पहिया} दो पहियोंवाला।
दुफसली *वि.* {हिं. दो + अ. फसल} रबी और खरीफ दोनों फसलों में होनेवाला अन्न या ऐसा ही और कोई पदार्थ; *स्त्री.* दुविधा की बात।
दुबला *वि.* {सं. दुर्बल} {*स्त्री.* दुबली} {*भाव.* दुबलापन} हल्के और पतले बदनवाला, कृश; अशक्त, निर्बल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुबाइन *स्त्री.* {हिं.} दूबे की स्त्री।

दुबागा *पुं.* {हिं.} सन की मोटी रस्सी।

दुबाह *पुं.* {हिं. दुबाह} दोनों हाथों से एक साथ दो तलवारें चलाने की क्रिया या भाव।

दुबाहना *स.* {हिं. दुबाह } दोनो हाथों से साथ-साथ दो तलवारें चलाना।

दुबिधा *स्त्री.* दुविधा।

दुभाषिया *पुं.* {सं. द्विभाषिन्} दो भाषाएँ जाननेवाला वह मनुष्य जो उन भाषाओं में बातचीत करनेवाले दो मनुष्यों को एक दूसरे की बात समझाता है (इंटरप्रेटर)।

दुमंजिला *वि.* {फा. दुमंजिल + हिं. आ (प्रत्य.)} {*स्त्री.* दुमंजिली} दो मरातिब या दो खंड का (मकान)।

दुम *स्त्री.* {फा.} पूँछ, पुच्छ।

मुहा. दुम *दबाकर भागना* = डरकर चुपचाप भागना; दुम *हिलाना* = दीनतापूर्वक प्रसन्नता या अधीनता प्रकट करना।

पूँछ की तरह पीछे लगी हुई वस्तु या व्यक्ति; किसी काम का अंतिम और सूक्ष्म अंश।

दुमची *स्त्री.* {फा.} घोड़े के साज में का वह दोहरा तसमा, जो उसकी पूँछ या दुम के नीचे दबा रहता है।

दुमट *स्त्री.* {सं.} चिकनी मिट्टी जो फसल के लिए अधिक उपयुक्त मानी जाती है।

दुमटी *वि.* दुमट-संबंधी।

दुमदार *वि.* {फा.} दुम या पूँछवाला; जिसके पीछे पूँछ जैसी कोई चीज लगी हो, जैसे दुमदार सितारा।

दुमन (दुमना) *वि.* दुचिता, अप्रसन्न, खिन्न।

दुमहिलाऊ *वि.* {हिं. दुम + हिलाना} दुम हिलानेवाला, आज्ञाकारी।

दुमाता *वि.* {सं. दुर्मातृ} बुरी या दुष्ट माता; सौतेली माँ, विमाता।

दुमाहा *वि.* {हिं. दो + माह} हर दो महीने में या पर होनेवाला।

दुमुँहाँ *वि.* दोमुँहाँ।

दुरंगा *वि.* {हिं. दो + रंग} {*स्त्री.* दुरंगी} जिसमें दो रंग हों; दो तरह का; दोहरी चाल चलनेवाला।

दुरंगी *स्त्री.* {हिं. दुरंगा} दो रंग या प्रकार का होने का भाव, दोरंगापन; कभी इस पक्ष में और कभी उस पक्ष में हो जाना, दोनों तरफ रहना या चलना; कभी एक प्रकार का और कभी दूसरे प्रकार का व्यवहार या आचरण करना।

दुरंत *वि.* {सं.} बहुत बड़ा या भारी; दुस्तर, कठिन; घोरे, भीषण; जिसका अंत या परिणाम बुरा हो; दुष्ट, पाजी।

दुरंतर *वि.* {सं. दुरंत} दुर्गम, कठिन।

दुरंधा *वि.* {सं. द्विरंध्र} दो छेदोंवाला; आर-पार छेदा हुआ।

दुर् *उप.* {सं.} दूषण या निषेध का सूचक एक उपसर्ग, जैसे दुर्दशा, दुराग्रह।

दुर[1] *विस्मयादि.* {हिं. दूर} दूर हो का संक्षिप्त रूप (तिरस्कारसूचक)।

मुहा. दूर-दूर *करना* = तिरस्कारपूर्वक कुत्ते की तरह हटाना या भगाना।

दुर[2] *पुं.* {फा.} नथ या नाक में पहना जानेवाला मोती का लटकन, लोलक; कान में पहनने की छोटी बाली।

दुरक्ष *पुं.* {सं.} पासा, चाँपड़, बुरी दृष्टि।

दुरजन *पुं.* दुर्जन।

दुरथल *पुं.* {सं. दुः + स्थल} बुरी जगह।

दुरदाम *वि.* दुर्दम्य, कष्टसाध्य।

दुरदाल *पुं.* {सं. द्विरद} हाथी, हस्ती।

दुरदुराना *स.* {हिं. दुरदुर} तिरस्कारपूर्वक 'दुरदुर' कहकर हटाना।

दुरदृष्ट *पुं.* {सं.} दर्भाग्य, अभाग्य; अभागा व्यक्ति; पाप, दुष्कर्म।

दुरद्यान *स्त्री.* {सं.} बुरा भोजन।

दुरधिष्ठित *वि.* {सं.} जो धीरे-धीरे किया जाए।

दुरधीत *वि.* {सं.} जो ठीक तरह से याद न किया हो, पढ़कर जिसका मर्म न समझा गया हो।

दुरध्यय *वि.* {सं.} अध्ययन करने में अशक्य।

दुरध्व *पुं.* {सं.} कुपथ, कुमार्ग।

दुरना *अ.* {हिं. दूर} सामने से दूर होना; छिपना।

दुरपदी *स्त्री.* = द्रौपदी।

दुरभिसंधि *स्त्री.* {सं.} दुष्ट अभिप्राय से गुट बाँधकर की हुई सलाह।

दुरभेद *पुं.* {सं. दुर्भाव} बुरा भाव; मन-मुटाव, मनोमालिन्य।

दुरमति *स्त्री., वि* = दुर्मति।

दुरमुस *पुं.* {सं. दुर (उप.) मुस = कूटना} कंकड़ या मिट्टी पीटकर सड़कर बनाने का एक उपकरण।

दुरलभ *वि.* दुर्लभ।

दुरवस्था *स्त्री.* {सं.} बुरी दशा, बुरा हाल; दुख, कष्ट आदि की दशा।

दुरागीन *पुं.* {हिं.} वधू का दूसरी बार ससुराल को जाना, द्विरागमन।

दुराग्रह *पुं.* {सं.} {*वि.* दुराग्रही} किसी व्यर्थ की या अनुचित बात के लिए अड़ना, अनुचित हठ; अपने मत के ठीक न सिद्ध होने पर भी उस पर अड़े रहना।

दुराचरण *पुं.* दुराचार।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुराचार पुं. {सं.} {*वि.* दुराचारी} दुष्ट आचरण, बुरा चाल-चलन, बदचलनी।

दुराचारी *वि.* {सं. दुराचारिन्} बुरे आचरण या चाल - चलनवाला, बदचलन।

दुराज पुं. {सं. दुर् + राज्य} अत्याचारपूर्ण और बुरा राज्य या शासन।

दुराजी *वि.* {सं. द्विराज्य} दो राजाओं का, जिसमें दो राजा हों (देश); पुं. दराज।

दुरात्मा *वि.* {सं. दुरात्मन्} दुष्ट और नीच प्रकृति का, नीचाशय।

दुरादुरी *स्त्री.* {हिं. दुरना = छिपना} छिपाव, गोपन।

दुराधर पुं. {सं.} धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

दुराधर्ष *वि.* {सं.} जिसका दमन करना कठिन हो; प्रचंड, उग्र; पुं. सफेद सरसों, विष्णु।

दुराधि *वि.* {सं.} क्लेशजनक।

दुराधी *वि.* {सं.} दुष्ट प्रकृति या आचरण का।

दुराना[1] *अ.* {हिं. दूर} दूर होना, टलना; छिपना; *स.* दूर करना, हटाना; छोड़ना, त्यागना; छिपाना।

दुराना[2] *स.* {?} (हाथ, आँख आदि अंग) नचाना, मटकाना।

दुराप *वि.* {सं.} जिसे पाना कठिन हो, दुष्प्राय।

दुरापूर *वि.* {सं.} जो कठिनता से पूरा किया जा सके।

दुराराध्य *वि.* {सं.} आराधना के द्वारा जिसे प्रसन्न करना बहुत कठिन हो।

दुराव पुं. {हिं. दुराना + आव (प्रत्य.)} किसी से कोई बात गुप्त रखने या छिपाने का भाव।

दुरावह *वि.* {सं.} जिसका जाना कठिन हो।

दुरावस्था *स्त्री.* {सं. दुरावस्था} बुरी अवस्था; दुर्गति।

दुराशय पुं. {सं.} {*भाव.* दुराशयता} दुष्ट आशय या उद्देश्य; *वि.* बुरे आशय या उद्देश्यवाला, खोटा, नीच।

दुराशा *स्त्री.* {सं.} वह आशा जो पूरी न हो सके, व्यर्थ की आशा।

दुराहा *वि.* {सं.} अभागा, दो रास्तों का मेल।

दुरित पुं. {सं.} पाप, पातक; *वि.* {*स्त्री.* दुरिता} पापी, पातकी।

दुरिसारी *वि.* {सं.} पाप का नाश करनेवाली।

दुरियाना *स.* {हिं. दूर} दूर करना।

दुरुत्साहक पुं. {सं.} वह जो किसी को किसी अनुचित या नियमविरुद्ध कार्य में या किसी दुष्ट उद्देश्य से प्रवृत्त करे या लगाए (एबेटर)।

दुरुत्साहन पुं. {सं.} किसी को किसी अनुचित या विधिविरुद्ध कार्य के लिए या किसी दुष्ट उद्देश्य से उत्साहित या प्रवृत्त करना, बुरे काम के लिए उकसाना (एबेटमेंट)।

दुरुत्साहित *वि.* {सं.} जिसे किसी से किसी अनुचित कार्य के लिए प्रोत्साहन मिला हो।

दुरुपयोग पुं. {सं.} किसी चीज का अनुचित या बुरे ढंग से किया जानेवाला उपयोग, वह उपयोग जो ठीक या अच्छा न हो (एब्यूज)।

दुरुम पुं. {हिं.} पतले दाने का गेहूँ।

दुरुस्त *वि.* {फा.} {*भाव.* दुरुस्ती} जो अच्छी या ठीक दशा में हो, जो टूटा-फूटा या खराब न हो, ठीक; जिसमें दोष या त्रुटि न हो; उचित।

दुरुस्ती *स्त्री.* {फा.} दुरुस्त या ठीक होने अथवा किए जाने की क्रिया या भाव, संशोधन।

दुरूह *वि.* {सं.} {*भाव.* दुरूहता} जल्दी समझ में न आनेवाला, कठिन।

दुरोक *वि.* {सं.} जो स्थान रहने योग्य न हो।

दुरोदर पुं. {सं.} पग, दाँव, जुआ, पासा; पुं. जुआ खेलनेवाला।

दुरोह पुं. {सं.} नागकेसर का वृक्ष।

दुर्गंध *स्त्री.* {सं.} बुरी गंध या महक, बदबू।

दुर्गंधक *वि.* {सं.} बदबू करनेवाला।

दुर्ग *वि.* {सं.} दुर्गम; पुं. विशेष प्रकार का वह बड़ा और दृढ़ भवन, जिसमें राजा और सिपाही आदि रहते हैं, गढ़, कोट, किला।

दुर्गत *स्त्री.* दुर्गति, दुर्दशाग्रस्त।

दुर्गतरणी *स्त्री.* {सं.} एक देवी का नाम।

दुर्गति *स्त्री.* {सं.} बुरी गति, दुर्दशा।

दुर्गपति पुं. {सं.} दुर्ग या गढ़ का स्वामी या प्रधान अधिकारी, किलेदार।

दुर्गपाल पुं. {सं.} दुर्ग या गढ़ का रक्षक, किलेदार।

दुर्गपुष्पी *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार का वृक्ष।

दुर्गरक्षक पुं. {सं.} गढ़पति, किलेदार।

दुर्गम पुं. {सं.} {*भाव.* दुर्गमता} (स्थान) जहाँ पहुँचना कठिन हो, औघट; जिसे जानना या समझना कठिन हो, दुर्ज्ञेय; कठिन, विकट।

दुर्गलंघन पुं. {सं.} उष्ट्र, ऊँट।

दुर्गसंचार पुं. {सं.} गढ़ का मार्ग।

दुर्गा *स्त्री.* {सं.} देवी का एक रूप (यह आदि शक्ति मानी जाती है); एक देवी जिसका अनेक असुरों को मारना प्रसिद्ध है (काली, भवानी, चंडी आदि इसकी के रूप हैं); नौ वर्ष की कन्या।

दुर्गसंस्कार पुं. {सं.} गढ़ की मरम्मत।

दुर्गा माहात्म्य पुं. {सं.} देवी-माहात्म्य, भगवती की महिमा।

दुर्गावती *स्त्री.* {सं.} चित्तौड़ के राणा सांगा की कन्या का नाम, गोंडवाना की रानी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्गाष्टमी *स्त्री.* {सं.} आश्विन और चैत्र के शुक्ल पक्ष की अष्टमी।

दुर्गुण *पुं.* {सं.} {*वि.* दुर्गणी} बुरा गुण, दोष, ऐब।

दुर्गोत्सव *पुं.* {सं.} नवरात्र में होनेवाला दुर्गापूजा का उत्सव।

दुर्घट *वि.* {सं.} जिसका होना कठिन हो।

दुर्घटना *स्त्री.* {सं.} ऐसी आकस्मिक बात जिसमें कष्ट या शोक हो, अशुभ और बुरी घटना, वारदात (एक्सिडेंट)।

दुर्घटनाभिमुखी *वि.* {सं. दुर्घटनाभिमुखिन्} जो दुर्घटना की ओर बढ़ रहा हो।

दुर्घात *पुं.* {सं.} बुरी तरह से किया जानेवाला घात या प्रहार; बुरी तरह से किया जानेवाला छल, धोखेबाजी।

दुर्जन *पुं.* {सं.} {*भाव.* दुर्जनता} दुष्ट या खोटा आदमी, खल।

दुर्जय *वि.* {सं.} जो जल्दी जीता न जा सके।

दुर्जेय *वि.* दुर्जय।

दुर्ज्ञेय *वि.* {सं.} जिसे सरलता से जाना न जा सके।

दुर्दम *वि.* दुर्दमनीय; *पुं.* वसुदेव के एक पुत्र का नाम जो रोहिणी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

दुर्दमनीय *वि.* {सं.} जिसका दमन करना या जिसे दबाना बहुत कठिन हो।

दुर्दम्य *वि.* दुर्दमनीय; जो शीघ्र जीता न जा सके; *पुं.* गाय का बछड़ा।

दुर्दर *वि.* दुर्द्धर।

दुर्दशा *स्त्री.* {सं.} बुरी दशा या अवस्था, दुर्गति।

दुर्दांत *वि.* {सं.} जिसे दबाना बहुत कठिन हो, दुर्दमनीय।

दुर्दिन *पुं.* {सं.} बुरे दिन, ऐसा दिन जिसमें बादल छाए हों और पानी बरसता हो, मेघाच्छन्न दिन; दुर्दशा, दुख ओर कष्ट के दिन।

दुर्दिवस *पुं.* {सं.} दुर्दिन, बरसात का दिन।

दुर्दुरूढ़ *वि.* {सं.} नास्तिक।

दुर्द्यूत *पुं.* {सं.} कपट द्यूत, दल से जुआ खेलना।

दुर्द्रुम *पुं.* {सं.} पलाण्डु, प्याज।

दुर्दैव *पुं.* {सं.} दुर्भाग्य।

दुर्द्धर *वि.* {सं.} जिसे पकड़ना कठिन हो; प्रबल, प्रचंड।

दुर्धर्ष *वि.* {सं.} जिसे वश में करना कठिन हो, प्रबल।

दुर्नम्य *वि.* {सं.} जिसे झुकाना संभव न हो।

दुर्नाम *पुं.* {सं. दुर्नामन्} बदनामी, कलंक; गाली।

दुर्नामती *पुं.* {सं.} सूरन, जमीकन्द, अर्शनाशक कथ्य।

दुर्नाम्नी *स्त्री.* {सं.} शक्ति, सीप।

दुर्निवार *वि.* दुर्निवार्य।

दुर्निवार्य *वि.* {सं.} जो जल्दी रोका या हटाया न जा सके; जिसका होना प्रायः निश्चित हो।

दुर्नीति *स्त्री.* {सं.} बुरी नीति; अन्याय; बुरा आचरण।

दुर्बल *वि.* {सं.} {*भाव.* दुर्बलता} जिसमें बल न हो, कमजोर; दुबला।

दुर्बला *स्त्री.* {सं.} जलसिसि का पेड़।

दुर्बाल *वि.* {सं.} गंजा, खल्वाट; *पुं.* घुँघराले बाल।

दुर्बुध *वि.* {सं.} बुरे चित्त का, दुष्ट।

दुर्बलकाय *वि.* {सं.} दुर्बल शरीरवाला।

दुर्बलता *स्त्री.* {सं.} बल न होना, कमजोरी; कृशता, दुबलापन; कोई ऐसा दोष जो किसी व्यक्ति में विशेष रूप से और प्रायः स्वाभाविक हो।

दुर्बोध *वि.* {सं.} {*भाव.* दुर्बोधता} जो जल्दी समझ में न आए, कठिन।

दुर्भग *वि.* {सं.} बुरे भाग्य का, अभागा।

दुर्भाग्य *पुं.* {सं.} मंद या बुरा भाग्य, खोटी किस्मत।

दुर्भाग्यवश *वि.* {सं.} भाग्य का मारा।

दुर्भाव *पुं.* {सं.} बुरा भाव; भीतरी वैर या द्वेष।

दुर्भावना *स्त्री.* {सं.} बुरी भावना; खटका, आशंका।

दुर्भाषा *स्त्री.* {सं.} बुरी बातें; गाली-गलौज, दुर्वाच्य।

दुर्भिक्ष *पुं.* {सं.} ऐसा समय जिसमें अन्न बहुत कठिनता से मिले, अकाल।

दुर्भेद्य *वि.* {सं.} जो जल्दी भेदा न जा सके; जिसे पार करना बहुत कठिन हो; जिसे तोड़-फोड़कर अधिकार में करना कठिन हो, जैसे दुर्भेद्य दुर्ग।

दुर्भेद्यता *स्त्री.* {सं.} दुर्भेद्य होने की अवस्था या भाव।

दुर्मद *वि.* {सं.} घमंडी; मदमत्त।

दुर्मना *स्त्री.* {सं.} शतावरी, सतावर जड़ी।

दुर्मर *वि.* {सं.} जो सहज में न मरे, जिसका मरना कठिन हो; जो उन्नति, सुधार अथवा उदार विचारों का घोर विरोधी है (डाई-हार्ड)।

दुर्योग *पुं.* {सं.} दुर्भाग्यसूचक योग।

दुर्योधन *पुं.* {सं.} कुरुवंशीय राजा धृतराष्ट्र का सबसे बड़ा पुत्र।

दुर्रा *पुं.* {फा. दुर्रः} कोड़ा, चाबुक।

दुर्लंघ्य *वि.* {सं.} जिसे जल्दी या सहज में लाँघ न सकें।

दुर्लक्ष्य *पुं.* {सं.} वह जो कठिनता से देखा जा सके; बुरा लक्ष्य या उद्देश्य।

दुर्लविका *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार का छंद।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्लभ *वि.* {सं.} {*भाव.* दुर्लभता} जिसे पाना सहज न हो, जो जल्दी न मिले, दुष्प्राप्य; जो कभी-कभी, कहीं-कहीं या बहुत कम मिलता हो (रेयर); अनोखा, बहुत विलक्षण और बढ़िया।

दुर्लभा *स्त्री.* {सं.} सफेद भटकटैया, लाल जवासा।

दुर्ललित *वि.* {सं.} जिसका रंग-ढंग अच्छा न हो; बुरा, खराब।

दुर्लेख्य *पुं.* {सं.} वह लेख या विलेख जो विधिक व्यवहार में नियम विरुद्ध या अप्रमाणिक माना जाए (इनवैलिड डीड)।

दुर्वचन *पुं.* {सं.} गाली।

दुर्वह *वि.* {सं.} जिसे वहन करना कठिन हो।

दुर्वाद *पुं.* {सं.} दुर्वचन, गाली; अपवाद, बदनामी।

दुर्वासा *पुं.* {सं.} महर्षि अत्रि के अति क्रोधी पुत्र।

दुर्विनियोग *पुं.* {सं.} धन का अनुचित विनियोग।

दुर्विनीत *वि.* {सं.} जो विनीत या नम्र न हो, अशिष्ट, अक्खड़।

दुर्विपाक *पुं.* {सं.} अशुभ और दु:खद घटना, दुर्घटना (ट्रेजेडी); बुरा परिणाम या फल।

दुर्विवाह *पुं.* {सं.} निंदित स्त्री से विवाह करना।

दुर्विधर *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।

दुर्वृत्त *वि.* {सं.} {*भाव.* दुर्वृत्ति} दुश्चरित्र, दुराचारी।

दुर्वृत्तफलक *पुं.* {सं.} वह पत्र या फलक जिस पर किसी दुर्वृत्त या दुश्चरित्र व्यक्ति के किए हुए अपराधों आदि का लेखा लिखा रहता है (हिस्ट्री शीट)।

दुर्व्यवस्था *स्त्री.* {सं.} कुप्रबंध, बुरी व्यवस्था।

दुर्व्यवहार *पुं.* {सं.} बुरा या अनुचित व्यवहार, बुरा बरताव।

दुर्व्यसन *पुं.* {सं.} {*वि.* दुर्व्यसनी} किसी बुरी और हानिकारक बात की आदत, बुरा व्यसन, लत।

दुर्व्यसनी *वि.* {सं.} जिसको बुरी लत लगी हो।

दुर्वत *वि.* {सं.} दुष्ट मनोरथ, बुरा आशय।

दुर्हण *वि.* {सं.} जिसको मारना कठिन हो।

दुर्हल *वि.* {सं.} कुरुप।

दुर्हित *पुं.* {सं.} शत्रु, बैरी।

दुलकना *स.* दुलखना।

दुलकी *स्त्री.* {हिं. दलकना} घोड़े की एक चाल जिसमें वह हर पैर अलग-अलग उठाकर उछलता हुआ दौड़ता है।

दुलखना *स.* {हिं. दो + लक्षण} कोई बात दोबारा कहना या बतलाना; अ. कहकर मुकरना।

दुलड़ी *स्त्री.* {हिं. दो + लड़} दो लड़ी की माला या हार।

दुलत्ती *स्त्री.* {हिं. दो + लात} घोड़े आदि चौपायों का पिछले दोनों पैर उठाकर किसी को मारना, पुश्तक।

दुलदुल *पुं.* {अ.} वह खच्चरी जो असकन्दरिया (मिस्र) के हाकिम ने मुहम्मद साहब को भेंट की थी। (लोग इसे भूल से घोड़ा समझते और मुहर्रम में इसका जुलूस निकालते हैं)।

दुलना *अ.* डुलना।

दुलरा *वि.* {*स्त्री.*} दुलारा।

दुलराना *अ.* {हिं. दुलार} बच्चों का दुलार या लाड़ करना; दुलारे का-सा व्यवहार या आचरण करना।

स. बच्चों से दुलार या लाड़ करना।

दुलहन *स्त्री.* {हिं. दुलहा} नई ब्याही हुई स्त्री, नववधू।

दुलहा *पुं.* {सं. दुर्लभ} वह जिसका ब्याह तुरन्त होने को हो या हुआ हो, वर; पति, स्वामी।

दुलही *स्त्री.* दुलहन।

दुलहेटा *पुं.* {हिं. दुलारा + बेटा} लाड़ला या दुलारा लड़का; दुलहा।

दुलाई *स्त्री.* {सं. तूल} ओढ़ने की रुईदार चादर, हलकी रजाई; दुलहा।

दुलार *पुं.* {हिं. दुलारना} बच्चों को प्रसन्न करने की प्रेमपूर्ण चेष्टा, लाड़।

दुलारना *स.* {सं. दुर्लाल} दुलार करना, लाड़ करना, प्रेम दिखलाना।

दुलारा *वि.* {हिं. दुलार} {*स्त्री.* दुलारी} जिसका बहुत दुलार हो, लाड़ला।

दुलारी *स्त्री.* {हिं. दुलार} छोटे दानोंवाली एक प्रकार की माता (रोग); प्रिय कन्या, लाड़ली बेटी।

दुलीचा (लैचा) *पुं.* गलीचा।

दुलोही *स्त्री.* {हिं. दो + लोहा} एक प्रकार की तलवार।

दुल्ल *पुं.* {सं.} रेशम।

दुल्हा *पुं.* = दुलहा।

दुल्हिन *स्त्री.* = दुल्हन।

दुव *वि.* {सं. दुर्मनस्} दुष्ट, दुर्जन; शत्रु, दुश्मन; राक्षस; *वि.* बुरा, खराब।

दुवाज *पुं.* {?} एक प्रकार का घोड़ा।

दुवादास *वि.* द्वादश, बारह।

दुवादसबानी *वि.* {सं. द्वादश = सूर्य + वर्ण} बारह बानी का, खरा (विशेषत: स्वर्ण या सोना)।

दुवाल *स्त्री.* {फा.} रिकाब में का चमड़ा या तस्मा।

दुवाली¹ *स्त्री.* {देश.} वह घोंटा जिससे घोंटकर कपड़ो पर चमक लाते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुवाली² *स्त्री.* {फा. दुवाल} कमर में तलवार आदि लटकाने का चमड़े का परतला।

दुविधा *स्त्री.* {सं. द्विविधा} उपस्थित दो बातों में से कोई बात स्थिर न कर सकने की क्रिया या भाव; मन का अनिश्चय या अस्थिरता; संशय, संदेह; असमंजस, आगा-पीछा; आशंका, खटका।

दुवो *वि.* {हिं. दुव + दो} दोनों।

दुशवार *वि.* {फा. दुश्वार} {*भाव.* दुश्वारी} कठिन, दुरूह।

दुशवारी *स्त्री.* {फा. दुश्वारी} कठिनाई; विपत्ति।

दुशाला *पुं.* {सं. द्विशाट} एक प्रकार की ऊनी (प्रायः दोहरी) चादर जिसके किनारों पर बेल-बूटे बने रहते हैं।

दुश्चक्र *पुं.* {सं.} किसी दुष्ट उद्देश्य से चली जानेवाली छिपी हुई चाल, षड्यंत्र; ऐसा बुरा चक्र या क्षेत्र जिसके दोष बराबर बढ़ते ही चलें और जिसके निकल सकना बहुत कठिन हो (विशस सर्किल)।

दुश्क्रम *पुं.* {सं.} गोखुर, गोखरू।

दुश्चरित्र *वि.* {सं.} {*स्त्री.* दुश्चरित्रा} बुरे या निन्दनीय चरित्रवाला, बदलचन।

दुश्चिंतन *पुं.* {सं.} दूषित बातों पर विचार करते रहना।

दुश्चिंता *स्त्री.* {सं.} बुरी या विकट चिंता।

दुश्चेष्टा *स्त्री.* {सं.} कुचेष्टा, बुरा काम।

दुश्च्यवन *पुं.* {सं.} इंद्र का नाम।

दुश्च्याव *पुं.* {सं.} शिव, महादेव; *वि.* जो सहज में हटाया ना जा सके।

दुश्मन *पुं.* {फा.} शत्रु, वैरी।

दुष्कर *वि.* {सं.} जिसे करना कठिन हो, दुसाध्य।

दुष्कर्म *पुं.* {सं.} बुरा या अनुचित काम।

दुष्कीर्ति *स्त्री.* {सं.} बदनामी, अपयश।

दुष्ट *वि.* {सं.} {*स्त्री.* दुष्टा} {*भाव.* दुष्टता} जिसमें दोष हो, दूषित, दोषग्रस्त; बुरे स्वभाववाला, दुर्जन।

दुष्टात्मा *वि.* {सं.} जिसका अन्तः करण बुरा हो, दुराशय।

दुष्पवन *पुं.* {सं.} अपशब्द।

दुष्पद *वि.* {सं.} दुःख से प्राप्त।

दुष्पार *वि.* {सं.} जिसे पार करना कठिन हो; जिसका पार, थाह या अंत पाना कठिन हो।

दुष्प्रचार *पुं.* {सं.} गलत बातों का प्रचार।

दुष्प्रभाव *पुं.* {सं.} बुरा प्रभाव।

दुष्प्रयोग *पुं.* दुरुपयोग।

दुष्प्रवृत्ति *स्त्री.* {सं.} बुरी या दूषित प्रवृत्ति; *वि.* दुष्ट या बुरी प्रवृत्तिवाला।

दुष्प्राप *वि.* {सं.} **दुर्लभ, जो कठिनता से प्राप्त हो।**

दुष्प्राप्य *वि.* {सं.} जो सहज में न मिल सके, जिसे देखना सहज न हो।

दुष्प्रेरण *पुं.* {सं.} उकसावा।

दुष्प्रेरित *वि.* {सं.} उकसाया हुआ।

दुसराना *स.* दोहराना।

दुसरिह *वि.* {हिं. दूसरा} साथी, संगी; प्रतिद्वन्द्वी।

दुसह *वि.* दुसह, असह्य।

दुसार¹ *पुं.* {हिं. दो + सालना} आर-पार किया हुआ छेद।

क्रि. वि. इस पार से उस पार तक।

दुसार² *वि.* {सं. दुःशल्य} बहुत कष्ट देनेवाला।

दुसाहा *पुं.* {हिं.} वह खेत जिसमें दो बार खेती हो।

दुसूती *स्त्री.* {हिं. दो + सूत} दोहरे सूतों का मोटा कपड़ा।

दुसेजा *पुं.* {हिं. दो + सेज} बड़ा पलँग।

दुस्कर *वि.* = दुष्कर।

दुस्तर *वि.* {सं.} {*भाव.* दुस्तरता} जिसे पार करना कठिन हो; विकट, कठिन।

दुस्तर्क्य *वि.* {सं.} जिसके संबंध में तर्क करना कठिन हो; जिसे तर्क से सिद्ध करना कठिन हो।

दुस्पर्शा *स्त्री.* {सं.} आकाशवल्ली लता, भटकटैया।

दुस्सह *वि.* {सं.} जिसे सहन करना कठिन हो।

दुस्साध्य *वि.* {सं.} जिसका साधन बड़ी कठिनाई से होता हो।

दुस्सेवा *स्त्री.* {सं.} ऐसी सेवा जो वास्तव में सेवित को हानि पहुँचानेवाली या उसका अपकार करनेवाली हो (डिस्सरविस)।

दुहता *पुं.* दोहता, दोहित, नाती।

दुहत्थड़ *क्रि. वि.* {हिं. दो + हाथ} दोनों हाथों से (मारना); *पुं.* दोनों हाथों से होनेवाला प्रहार।

दुहत्था *वि.* {हिं.} दोनो हाथों से किया जानेवाला जिसमें दो मुँह हो।

दुहत्थी *स्त्री.* {हिं.} **मलखंभ** का व्यायाम।

दुहना *स.* {सं.} गौ, भैंस आदि के स्तन से दूध निकालना। ('दूध' और 'दूहा जानेवाला पशु', दानों के लिए); सत्त या सार खींचना; खूब धन वसूल करना।

दुहनी *स्त्री.* {हिं.} वह पात्र जिसमें गाय, भैंस आदि का दूध दुहा जाता है।

दुहाई¹ *स्त्री.* {सं. द्वि + आह्वान} उच्च स्वर से या चिल्लाकर सबको दी जानेवाली सूचना, मुनादी, घोषणा; अपनी रक्षा के लिए किसी को चिल्लाकर बुलाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. दुहाई देना = अपने बचाव के लिए किसी को पुकारना।

शपथ, कसम, सौगंध।

दुहाई[2] *स्त्री.* {हिं. दुहना} गाय, भैंस आदि दुहने का काम, भाव या मजदूरी।

दुहाग *पुं.* {सं. दुर्भाग्य} {*वि.* दुहागी} दुर्भाग्य; वैधव्य, रँड़ापा।

दुहागिन *स्त्री.* {हिं. दुहाग} विधवा, 'सुहागिन' का उलटा।

दुहागिल *वि.* {हिं. दुहाग} अभागा; अनाथ; सुनसान, सूना, निर्जन।

दुहाना *स.* हिं. 'दुहना' का प्रे.।

दुहावनी *स्त्री.* {हिं. दुहना} दूध दुहने की मजदूरी, दुहाई।

दुहिता *स्त्री.* {सं. दुहितृ} बेटी, पुत्री।

दुहुँधा *क्रि. वि.* {हिं. दु = दो + धा = ओर} दोनों ओर से।

दुहूँ *वि.* {हिं. दो} दोनों।

दुहेल *पुं.* {सं. दुर्हेल} दुख, विपत्ति।

दुहेला *वि.* {सं. दुर्हेल} {*स्त्री.* दुहेली} दुखदायी; दुस्साध्य, कठिन; जिसके मन में दुख हो, दुखी; दुःखमय, दुःखपूर्ण।

दुहैया *वि.* {हिं. दुहना} गो, भैंस आदि दुहनेवाला।

दुहोतरा *वि.* {सं. दु या द्वि + उत्तर} दो अधिक, उपद्रव करना।

दूँदना *अ.* {हिं. दुंद} लड़ाई-झगड़ा या उपद्रव करना।

दूँदि *स्त्री.* दुंद।

दू *वि.* = दो।

दूआ *पुं.* {हिं. दो} जुएँ आदि के खेलों में दो से संबंध रखनेवाला दाँव; ताश का वह पत्ता जिस पर दो बूटियाँ होती हैं, दुक्की; *वि.* = दूसरा।

दूइज *स्त्री.* 'दूज', किसी पक्ष की दूसरी तिथि दूज।

दूक *वि.* {सं. द्वैक} दो-एक, कुछ।

दूकान *पुं.* 'दुकान'।

दूखना[1] *स.* {सं. दूषण + हिं. ना (प्रत्य.)} दोष या ऐब लगाना।

दूखना[2] *अ.* {?} नष्ट होना।

दूज *स्त्री.* {सं. द्वितीया} चांद्रमास के किसी पक्ष की दूसरी तिथि, द्वितीया।

मुहा. दूज का चाँद होना = बहुत दिनों पर मिलना या दिखाई देना।

दूजा *वि.* {सं. द्वितीय} दूसरा।

दूत *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* दूती} {*भाव.* दूतता} वह जो कोई विशेष कार्य करने या सँदेशा पहुँचाने के लिए कहीं भेजा जाए, बसीठ; प्रेमी और प्रेमिका का सँदेशा एक दूसरे तक पहुँचानेवाला मनुष्य; इधर की बातें उधर लगाकर आपस में लड़ाई-झगड़ा करानेवाला।

दूतकर्म *पुं.* {सं.} दूत का काम।

दूतपन *पुं.* 'दूतता', दूत का काम।

दूतमंडल *पुं.* {सं.} किसी काम के लिए भेजे हुए दूतों का समूह या दल।

दूतसंवाद *पुं.* {सं.} दूत द्वारा भेजा हुआ संवाद।

दूतायन *पुं.* दूतावास।

दूतावास *पुं.* {सं.} किसी नगर का वह स्थान जहाँ दूसरे राष्ट्र या राज्य का दूत और उसके साथी, कर्मचारी आदि रहते हों (लीगेशन)।

दूतिका *स्त्री.* दूती, कुटनी।

दूती *स्त्री.* {सं.} प्रेमी और प्रेमिका का समाचार एक दूसरे तक पहुँचानेवाली स्त्री, कुटनी।

दूध *पुं.* {सं. दुग्ध} वह प्रसिद्ध सफेद तरल पदार्थ जो स्तनपायी जीवों की मादा के स्तनों से निकलता है और जो उनके छोटे बच्चे पीते हैं, पय, दुग्ध।

मुहा. दूध का दूध और पानी का पानी होना = ऐसा न्याय होना जिसमें किसी पक्ष के साथ तनिक भी अन्याय न हो; दूध की मक्खी की तरह निकालकर फेंक देना = किसी को तुच्छ या पराया समझकर बिल्कुल अलग कर देना; दूध के दाँत न टूटना = बहुत छोटा या बच्चा होना, सयाना न होना; दूध फटना या बिगड़ना = खटाई आदि पड़ने या किसी और प्राकृतिक कारण से दूध का जल अलग और सारा भाग अलग हो जाना; (छाती में) दूध भर आना = बच्चे के प्रेम से माता के स्तनों में दूध उतर जाना।

कहा. दूधों नहाओ पूतों फलो = धन, संतान आदि की यथेष्ट वृद्धि हो (आशीर्वाद या शुभ कामना)।

अनाज के हरे बीज या पौधों की पत्तियों और डंठलों का वह सफेद रस, जो उन्हें तोड़ने पर निकलता है।

दूधा *पुं.* {हिं.} अगहनिया धान, अनाज के कच्चे दाने का रस।

दूधाभावी *स्त्री.* विवाह की एक रीति जिसमें वर कन्या को तथा कन्या वर को दूध और भात खिलाती है।

दूध-छुड़ाई *स्त्री.* बालक का स्तनपान छुड़ाने की क्रिया या भाव।

दूध-पिलाई *स्त्री.* {हिं. दूध + पिलाना} दूध पिलानेवाली दाई; दूध पिलाने के बदले में मिलनेवाला धन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूध-पूत पुं. {हिं. दूध + पूत} धन और सन्तति।

दूध-भाई पुं. {हिं. दूध + भाई} {स्त्री. दूध-बहन} पारस्परिक संबंध के विचार से ऐसे बालकों में से आपस में हर एक, जो एक स्त्री का दूध पीकर पले हों, पर अलग-अलग माता-पिता से उत्पन्न हों।

दूधमुख *वि.* 'दुधमुँहाँ'।

दूधिया *वि.* {हिं. दूध + इया (प्रत्य.)} जिसमें दूध मिला हो या जो दूध से बना हो; जिसमें दूध होता हो; दूध के रंग का, सफेद; पुं. एक प्रकार का सफेद रत्न; एक प्रकार का सफेद, मुलायम और चिकना पत्थर, जिसकी कटोरियाँ बनती है; दुद्धी नाम की घास; खड़िया मिट्टी।

दून[1] *स्त्री.* {हिं. दूना} दूना होने का भाव।
मुहा. दून की लेना या हाँकना = बढ़कर बातें करना, शेखी हाँकना।
संगीत में गाने की गति का अपेक्षाकृत कुछ बढ़ या तेज हो जाना।

दून[2] पुं. {देश.} तराई, घाटी।

दूनर *वि.* {सं. द्विनम्र} जो लचककर दोहरा हो गया हो।

दूना *वि.* {सं.} {स्त्री. दूनी} जितना हो, उतना ही और, दुगुना।

दूनी *स्त्री.* = दुनियाँ।
वि. हिं. 'दूना' का स्त्री. दोनों।

दूनौं दोनों।

दूब *स्त्री.* {सं. दूर्वा} एक बहुत प्रसिद्ध घास, जो हरी और सफेद दो प्रकार की होती है; दूर्वा।

दूबदू *क्रि. वि.* {हिं. दो या फा. रूबरू} आमने-सामने मुकाबले में।

दूबरा *वि.* {स्त्री. दूबरी} दुबला।

दूबस्थली *स्त्री.* {सं.} दूब से भरा मैदान।

दूभर *वि.* {सं.} कठिनता से सहा जानेवाला; दुःसाहय।

दूमना *अ.* {सं. द्रुम} हिलना, डोलना।

दूरगंम *वि.* बहुत दूर तक जानेवाला।

दूमा पुं. {हिं.} चमड़े का छोटा थैला जिसमें पहाड़ी लोग चाय की पत्ती रखते हैं।

दूर *क्रि. वि* {सं.} {भाव. दूरता, दूरी} विस्तार, काल, संबंध आदि के विचार से बहुत अंतर पर, 'पास' या 'निकट' का उलटा।
मुहा. दूर करना = अलग करना, हटाना; न रहने देना, नष्ट करना; *दूर भागना या रहना* = बहुत बचकर और अलग रहना; *पद दूर की बात* = बहुत बारीक और समझदारी की बात; कठिन बात।
वि. जो अंतर या फासले पर हो।

दूरक *वि.* {सं.} जो दूर हो।

दूरग *वि.* {सं.} बहुत; पुं. ऊँट, गधा।

दूरगत, दूरगागी *वि.* {सं.} जो बहुत दूर तक चला गया हो।

दूरजम पुं. {सं.} वैदूर्यगणि।

दूरता *स्त्री.* {सं.} दूर होने का भाव, अंतर, दूरी, फासला।

दूरदर्शक *वि., पुं.* {सं.} दूर तक की बात देखने या समझनेवाला; दूरदर्शन देखनेवाला।

दूरदर्शन पुं. {सं.} वह व्यवस्था जिसमें घर बैठे उपकरणों से अन्यत्र घटित होते हुए दृश्य देखे जाते हैं; वह उपकरण जिससे दूर घटित होनेवाले दृश्य दिखाई पड़ते हैं (टेलीविजन)।

दूरदर्शिता *स्त्री.* {सं.} दूर की बात सोचने या समझने का गुण।

दूरदर्शी (शिन्) *वि.* {सं.} {भाव. दूरदर्शिता} भविष्य में बहुत दूर तक की बातें देखने या सोचनेवाला, अग्रशोची।

दूरपूर्व पुं. {सं.} एशिया का पूर्वी भाग जिसमें जापान, कोरिया, चीन आदि देश हैं।

दूरबीन *स्त्री.* {फा.} वह प्रसिद्ध यंत्र जिससे दूर की चीजें पास, साफ और बड़ी दिखाई देती हैं।

दूरमुद्रक पुं. {सं.} टेलिप्रिंटर।

दूरवर्ती *वि.* {सं.} दूर का, जो दूर हो।

दूरसंचार पुं. {सं.} तार, बेंतार, फोन आदि द्वारा दूर-दूर संदेश भेजने तथा प्राप्त करने की व्यवस्था।

दूरस्थ *वि.* {सं.} दूर का, जो दूर हो।

दूरागत *वि.* {सं.} दूर से आया हुआ।

दूरापत पुं. {सं.} वह अस्त्र जो दूर से फेंककर मारा जाता हो।

दूरी *स्त्री.* {सं. दूर + हिं. ई (प्रत्य.)} दूर होने की अवस्था या भाव; दो वस्तुओं के बीच का स्थान, अंतर, फासला (डिस्टेंस)।

दूर्वा *स्त्री.* {सं.} दूब।

दूलन पुं. दोलन।

दूलह पुं. दूलहा, पति, स्वामी।

दूलिका *स्त्री.* {सं.} नील का पौधा।

दूवा पुं. {हिं.} आशीर्वाद।

दूलित *वि.* दोलित।

दूष्य पुं. {सं.} तंबू।

दूषक *वि.* {सं.} दूसरों पर दोष लगाने और उनकी निन्दा करनेवाला; दोष उत्पन्न करनेवाला (पदार्थ)।

दूषण पुं. {सं.} {वि. दूषणीय} अवगुण, दोष, ऐब, बुराई; दोष या ऐब लगाना।

दूषणारि पुं. {सं.} प्रभु राम ने खादूषण को मारा था।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूषना *स.* {सं. दूषण} दोष लगाना।
दूषि *स्त्री.* {सं.} आँख का मैल।
दूषित *वि.* {सं.} जिसमें दोष हो, दोषयुक्त; बुरा, खराब।
दूसीविष *पुं.* {सं.} शरीर में एक प्रकार का विष जो पोषक धातुओं को दूषित करता है।
दूष्य *वि.* {सं.} जिसमें दोष लगाया या निकाला जा सके; निंदनीय।
दूसना *स.* दूषना।
दूसरा *वि.* {हिं. दो} क्रम में पहले के बाद पड़नेवाला, द्वितीय; जिसका प्रस्तुत विषय या बात से कोई संबंध न हो, अन्य, अपर, कोई और (अदर)।
दूहा *पुं.* दोहा।
दृक् *पुं.* {सं.} घिद्र, छेद, नेत्र।
दृक्कर्ण *पुं.* {सं.} सर्प, साँप।
दृक्काण *पुं.* {सं.} ज्योतिषी के अनुसार एक राशि का तीसरा भाग जो दश अंशों का होता है।
दृक्पथ *पुं.* {सं.} दृष्टिपथ।
दृक्पात *पुं.* {सं.} दृष्टिपात।
दृगंचल *पुं.* {सं.} पलक; कटाक्ष, चितवन।
उदा. चंचल चारु दृगंचल सों-**केशव**।
दृगंबु *पुं.* {सं.} आँसू।
दृग *पुं.* {सं. दृक्} आँख; दृष्टि; दो की संख्या।
दृगंचल *पुं.* {सं.} आँख की पलक।
दृग-मिचाव *पुं.* आँख-मिचौली।
दृग्गोचर *वि.* {सं.} जो आँख से दिखाई दे।
दृग्वृत्त *पुं.* {सं.} क्षितिज।
दृढ़ *वि.* {सं.} {भाव. दृढ़ता} अच्छी तरह बँधा या मिला हुआ, प्रगाढ़; पुष्ट, मजबूत; कड़ा, ठोस; बलवान; हृष्टपुष्ट; जो जल्दी खराब न हो, स्थायी; निश्चित, ध्रुव, पक्का।
दृढ़चेता *वि.* {सं. दृढ़चेतस} पक्के विचारोंवाला।
दृढ़ता *स्त्री.* {सं.} दृढ़ या पक्के होने का भाव; अपने विचार, प्रतिज्ञा आदि पर जमे रहने का भाव।
दृढ़प्रतिज्ञ *वि.* {सं.} अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला।
दृढ़ांग *वि.* {सं.} जिसके अंग पुष्ट हों, हट्टा-कट्टा।
दृढ़ा *स्त्री.* {सं.} मूसली।
दृढ़ाई *स्त्री.* = दृढ़ता।
दृढ़ाना *स.* {सं. दृढ़} दृढ़ या पक्का करना।
अ. दृढ़ या पक्का होना।
दृढ़ायन *पुं.* {सं.} दृढ़ य। पक्का करने का कार्य; किसी की कही हुई बात, किए हुए काम अथवा किसी की नियुक्ति आदि को पक्का या ठीक ठहराना (कनफर्मेशन)।
दृढ़ाव *पुं.* = दृढ़ता।
दृढ़ीभवन *पुं.* {सं.} दृढ़ करने की क्रिया या भाव।
दृढ़ीभूत *वि.* {सं.} दृढ़ किया हुआ।
दृप्त *वि.* {सं.} उग्र, प्रचंड; प्रज्वलित; तेजयुक्त; अभिमानी।
दृप्ति *स्त्री.* {सं.} चमक, आभा; तेजस्विता; प्रकाश, रोशनी; अभिमान, गर्व; उग्रता, प्रचंडता।
दृश्य *वि.* {सं.} जो देखने में आ सके, जिसे देख सकें, चाक्षुष (विजुअल); देखने योग्य, दर्शनीय; सुंदर; *पुं.* वह पदार्थ, घटना या स्थल आदि जो आँखों के सामने हो, दिखाई देनेवाली चीजें या घटना (व्यू); कोई प्राकृतिक या अंकित स्थल या घटना, विशेषत: देखने योग्य (सीनरी); नाटक के किसी अंक का वह भाग जो एक बार में एक साथ सामने आता है और जिसमें किसी एक घटना का अभिनय होता है (सीन); वह काव्य जिसका अभिनय हो, नाटक; दृश्य जगत।
दृश्य जगत *पुं.* यह जगत जो हमें प्रत्यक्ष अपने सामने दिखई देता है, वास्तविक जगत (फिनामेनल वर्ल्ड)।
दृश्य-श्रव्य *वि.* {सं.} देखने और सुनने से संबद्ध।
दृश्यांकन *पुं.* {सं.} दृश्य को अंकित करने का कार्य।
दृश्यादृश्य *वि.* {सं.} भौतिक और आध्यात्मिक।
दृश्वन *वि.* {सं.} दर्शक, देखनेवाला।
दृषद् *स्त्री.* {सं.} पहाड़ की चट्टान, पत्थर, सिल।
दृषद्वत् *वि.* {सं.} शिलायुक्त।
दृष्ट *वि.* {सं.} देखा हुआ; जाना हुआ, ज्ञात; गोचर, प्रत्यक्ष।
दृष्टकूट *पुं.* {सं.} पहेली; वह कविता जिसका अर्थ शब्दों के वाच्यार्थ से नहीं, बल्कि प्रसंग या रूढ़ अर्थों से निकालता हो।
दृष्टमान *वि.* {सं. दृश्यमान} प्रकट।
दृष्टवाद *वि.* {सं.} वह दार्शनिक सिद्धांत जो केवल प्रत्यक्ष को मानता है।
दृष्टव्य *वि.* {सं.} देखने योग्य; *पुं.* वह बात जो विशेष रूप से देखने या जानने योग्य हो अथवा जिसकी ओर विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट किया जाए।
दृष्टांत *पुं.* {सं.} उदाहरण; एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय और उसके साधारण धर्म का वर्णन करके उसको तुलना में उपमान और उसके धर्म का वर्णन होता है।
दृष्टार्थ *पुं.* {सं.} वह शब्द जिसका अर्थ स्पष्ट हो या समझ में आए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृष्टि *स्त्री.* {सं.} वह वृत्ति या शक्ति जिससे मनुष्य या जीव सब चीजें देखते हैं; आँख की पुतली की सीध में किसी वस्तु के होने की स्थिति, नजर, निगाह; आँख का वह व्यापार, जिससे वस्तुओं के रूप, रंग आदि का ज्ञान होता है।
मुहा. (किसी से) दृष्टि जुड़ना = देखा-देखी या सामाना होना; *(किसी से) दृष्टि जोड़ना* = आँखें मिलाना, सामना करना; *दृष्टि मिलाना* = 'दृष्टि जोड़ना'; *दृष्टि रखना* = ध्यान या देख-रेख रखना।
किसी वस्तु को देखने या किसी विषय पर विचार करने की वृत्ति या ढंग, जैसे हमारी दृष्टि में यह अनुचित है (व्यू); परख, पहचान; कृपादृष्टि; आशा की दृष्टि, आशा, उम्मीद।

दृष्टिक *वि.* {सं.} दृष्टि-संबंधी।

दृष्टिकोण *पुं.* {सं.} वह अंग या कोण जिससे कोई बात सोची-समझी जाए। (एंगिल ऑफ विज़न); किसी विषय में किसी के विचार या दृष्टि से निश्चित किया हुआ मत (व्यू-पॉइन्ट)।

दृष्टिक्रम *पुं.* {सं.} चित्रों आदि में वह अभिव्यक्ति जिससे दर्शक को यथाक्रम प्रत्येक वस्तु अपने उपयुक्त स्थान पर और ठीक मान में दिखाई दे, मुनासिबत (पर्सपेक्टिव)।

दृष्टिगत *वि.* {सं.} जो दिखाई पड़ता हो।

दृष्टिगोचर *वि.* {सं.} जो देखने में आए।

दृष्टिदोष *पुं.* {सं.} दृष्टि में होनेवाली कमी या खरबी; पढ़ने में होनेवाली भूल।

दृष्टि-परंपरा *स्त्री.* दृष्टिक्रम।

दृष्टिपात *पुं.* {सं.} देखना।

दृष्टिबंध *पुं.* {सं.} इंद्रजाल, जादू।

दृष्टिबंधक *पुं.* {सं. + हिं.} कोई चीज बंधक या रेहन रखने का वह प्रकार जिसमें रुपये देनेवाले को सिर्फ सूद मिलता है, संपत्ति की आय या देख-रेख से उसका कोई संबंध नहीं होता (सिम्पुल मॉर्ट्गेज)।

दृष्टिमांद्य *पुं.* {सं.} आँखों से कम दिखाई देने की अवस्था या रोग।

दृष्टिवंत *वि.* {सं. दृष्टि + हिं. वंत (प्रत्य.)} जिसे दृष्टि हो; ज्ञानी, ज्ञानवान।

दृष्टिसंपन्न *वि.* {सं.} जिसे दृष्टि हो।

दे *स्त्री.* {हिं.} स्त्रियों हेतु प्रयोगित आदरसूचक शब्द।

देई *स्त्री.* {हिं.} स्त्रियों के लिए आदरसूचक, शब्द, देवी।

देख *स्त्री.* {हिं. देखना} देखने की क्रिया या भाव, (यौ. में; जैसे देख-रेख)।

देखन *स्त्री.* देख।

देखनहारा *पुं.* {हिं. देखना} {*स्त्री.* देखनहारी} देखनेवाला।

देखना *स.* {सं. दृश्} आँखों से किसी व्यक्ति या पदार्थ के रूप-रंग और आकार-प्रकार आदि का ज्ञान प्राप्त करना, अवलोकन करना।
मुहा. देखते-देखते = तुरन्त, चटपट; *देखते रह जाना* = चकित होकर चुपचाप रह जाना; *देखना-सुनना* = जानकारी प्राप्त करना, पता लगाना; *देखा जाएगा* = जो कुछ होगा, वह समझ लिया जाएगा (उपेक्षा)।
जाँच या निरीक्षण करना; ढूँढ़ना, पता लगाना; परीक्षा करना, आजमाना, परखना; देखभाल या निगरानी करना; अनुभव करना, भोगना; ग्रन्थ, पत्र आदि पढ़ना।

देख-भाल *स्त्री.* {हिं. देखना + भालना} जाँच-पड़ताल; देख-रेख, निगरानी।

देखराना *स.* दिखलाना।

देखरावना *स.* दिखलाना।

देख-रेख *स्त्री.* {हिं. देखना + सं. प्रेक्षण} देख-भाल; निरीक्षण, निगरानी।

देखादेखी *स्त्री.* {हिं. देखना} एक दूसरे को देखने की क्रिया, दशा या भाव, साक्षात्कार; *क्रि. वि.* दूसरे को कुछ करते देखकर उसी के अनुकरण पर (कोई काम करना)।

देखावना *स.* दिखाना।

देग *पुं.* {फा. देग़} दाल, चावल आदि पकाने का चौड़े मुँह का बड़ा बरतन; *पुं.* बाज पक्षी।

देगचा *पुं.* {फा. देग़चः} {*स्त्री.* अल्पा. देगची} छोटा देग।

देगची *स्त्री.* {फा.} बहुत छोटा देग।

देदीप्यमान *वि.* {सं.} चमकता हुआ।

देन *स्त्री.* {हिं. देना} देने की क्रिया भाव, दान; किसी की दी हुई या किसी से मिली हुई वस्तु, प्रदत्त या प्राप्त वस्तु, जैसे ईश्वरीय देन (गिफ्ट); किसी प्रकार का देन चुकाने का भार, देयता (लायबिलिटी; अंतिम दोनों अर्थों के लिए)।

देनदार *पुं.* {हिं. देना + फा. दार} ऋणी, कर्जदार; वह जिसके जिम्मे कुछ देन या देना बाकी हो (लायबुल)।

देन-लेन *पुं.* {हिं. देना + सेना} कुछ लेने और देने का व्यवहार।

देना *स.* {सं. दान} अपने अधिकार से दूसरे के अधिकार में पहुँचाना, दान करना (कांफर); हवाले करना, सौंपना (डेलिवर); सूचना, लेख आदि के रूप में या यों ही लिखकर यथास्थान रखना या पहुँचाना, जैसे मासिकपत्र में लेख

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देना; अनुभव कराना, भोगना, जैसे कष्ट देना; अपने में से उत्पन्न करके या निकालकर किसी को लाभ पहुँचाना; प्रहार करना, मारना; किसी प्रकार पूरा करना, रखना, लगाना, डालना आदि (संयोज्य क्रिया के रूप में), जैसे रख देना, खपा देना, मिटा देना; पुं. उधार लिया हुआ रुपया, कर्ज।

देमान पुं. दीवान।

देय *वि.* {सं.} जो दिया जा सके; जो बाकी होने के कारण दिया जाने को हो, जैसे किसी पर कुछ देय रखना; (धन) जो दिया जाने को हो (पेएबुल); (वस्तु) जो किसी दूसरे को दी जा सकती हो (अलीनिएबुल)।

देयक पुं. {सं. देय + क (प्रत्य.)} वह पत्र, जिसमें किसी के नाम, विशेषत: बैंक के नाम यह लिखा हो कि अमुक व्यक्ति को हमारे खाते में से इतने रुपये दे दो (चेक)।

देयादेश पुं. {सं.} किसी को कुछ धन देने के संबंध में दिया जानेवाला आदेश, यह आज्ञा कि अमुक व्यक्ति को इतना धन दे दिया जाए, धनादेश (पे-आर्डर या पेमेंट-आर्डर)।

देयासी *वि.* {?} {*स्त्री.* देयासि} झाड़-फूँक करनेवाला, ओझा।

देर *स्त्री.* {फा.} जितना समय लगना चाहिए, उससे अधिक समय, अतिकाल, विलंब; समय, वक्त, जैसे यह काम कितनी देर में होगा?

देव[1] पुं. {सं.} {*स्त्री.* देवी} देवता; पूज्य व्यक्ति; बड़ों के लिए आदरसूचक संबोधन।

देव[2] पुं. {फा.} दैत्य, राक्षस।

देवऋण पुं. {सं.} देवताओं के ऋण से मुक्त होने के लिए किए जानेवाले यज्ञादि धार्मिक कृत्य।

देवऋषि पुं. 'देवर्षि, जारद, अन्नि, मरीचि आदि।

देवक पुं. {सं.} श्रीकृष्ण के नाना का नाम जो देवकी के पिता थे।

देवकन्या *स्त्री.* {सं.} देवता की कन्या या पुत्री।

देवकली *स्त्री.* {सं.} एक रागिनी।

देवकाष्ठ पुं. {सं.} **देवदारु।**

देवकिरी *स्त्री.* {सं.} **एक रागिनी का नाम।**

देवकार्य पुं. {सं.} देवताओं को प्रसन्न करने के लिए किए जानेवाले होम, पूजा आदि धार्मिक कार्य।

देवकी *स्त्री.* {सं.} वसुदेव की स्त्री जिसके गर्भ से श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था।

देवकीनन्दन पुं. {सं.} श्रीकृष्ण।

देवकीय *वि.* {सं.} देवता-संबंधी, देवता का।

देवकुल्या *स्त्री.* {सं.} गंगा नदी।

देवकुसुम पुं. {सं.} लवंग, लौंग।

देवकेसर पुं. {सं.} एक प्रकार का पुन्नाग।

देवक्षत्र पुं. {सं.} यज्ञ।

देवगज पुं. {सं.} इंद्रदेव का हाथी, ऐरावत।

देवगायक पुं. {सं.} गंधर्व।

देवगिरा *स्त्री.* {सं.} देववाणी, संस्कृत।

देवगुरु पुं. {सं.} देवताओं के गुरु, बृहस्पति।

देवठान पुं. देवोत्थान।

देवता पुं. {सं.} स्वर्ग में रहनेवाले वे अमर प्राणी, जो पूज्य माने जाते हैं, सुर।

देवतात पुं. {सं.} देवताओं के पिता-कश्यप।

देवतानुक्रम पुं. {सं.} देवताओं के उद्देश्य।

देवतायन पुं. {सं.} देव गृह, ठाकुरद्वारा।

देवत्त *वि.* {सं.} देवता-अर्पण।

देवत्व पुं. {सं.} 'देवता' का गुण या भाव।

देवदार पुं. {सं. देवदारु} एक बहुत बड़ा पेड़ जिससे अलकतरा और तारपीन की तरह का तेल निकलता है।

देवदासी *स्त्री.* {सं.} किसी देवता के नाम पर उत्सर्ग की हुई या उसके मंदिर में रहनेवाली दासी या नर्तकी (दक्षिण भारत)।

देवदूत पुं. {सं.} वह जो देवता या ईश्वर की ओर से कोई संदेह लेकर आनेवाला माना जाता हो, पैगम्बर (प्रॉफेट)।

देवधरा पुं. {सं. देवगृह} देवालय (मंदिर)।

देवधुनि *स्त्री.* {सं.} गंगा नदी।

देवनदी *स्त्री.* {सं.} गंगा, सरस्वती और हजवृती।

देवना *स्त्री.* {सं.} क्रीड़ा, खेल, सेवा।

देवनागरी *स्त्री.* {सं.} भारत की राष्ट्रलिपि, जिसमें संस्कृत तथा हिन्दी, मराठी, राजस्थानी आदि अनेक देशी भाषाएँ लिखी जाती हैं। इसके जिस रूप में ऋ, ऌ और ॡ स्वर नहीं होते, वह हिंदी वर्णमाला कहलाती है (बंगला, गुजराती, गुरुमुखी आदि लिपियाँ इसी की रूपांतर हैं)।

देवपथ पुं. {सं.} आकाश।

देवपुरी *स्त्री.* {सं.} अमरावती।

देवभाषा *स्त्री.* {सं.} संस्कृत भाषा।

देवमंदिर पुं. {सं.} देवता का मंदिर, देवालय।

देवमानव पुं. {सं.} ऐसा मनुष्य जिसमें देवताओं जैसे गुण हों।

देवयज्ञ पुं. {सं.} पंच महायज्ञों में से एक जिसमें होम आदि कृत्य किए जाते हैं।

देवयान पुं. {सं.} वह मार्ग जिससे जीवात्मा ब्रह्मलोक को जाता है।

देवयोनी *स्त्री.* {सं.} स्वर्ग, अन्तरिक्ष आदि में रहनेवाले वे जीव, जो देवताओं के समान माने जाते हैं, जैसे अप्सरा, यक्ष, किन्नर आदि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवर पुं. {सं.} {*स्त्री.* देवरानी} स्त्री के पति का छोटा भाई।
देवरा पुं. {सं.} छोटा देवता, देवर।
देवर पुं. {सं.} इंद्र।
देवरानी *स्त्री.* {हिं. देवर} पति के छोटे भाई अर्थात् देवर की स्त्री।
देवराज पुं. {सं.} इंद्र।
देवर्षि पुं. {सं.} नारद, अत्रि, मरीचि, भृगु आदि जो ऋषि होने पर भी देवता माने जाते हैं।
देवल[1] पुं. {सं. देवालय} देवमंदिर, पुजारी।
देवल[2] पुं. {?} एक प्रकार का धान या उसका चावल।
देवलोक पुं. {सं.} स्वर्ग, सात लोक।
देववधू *स्त्री.* {सं.} देवी; अप्सरा।
देववाणी *स्त्री.* {सं.} देवता या ईश्वर के मुँह से निकली हुई बात; ऐसी बात जो देवता या ईश्वर की कही हुई मानी जाए; आकाशवाणी (ओरेकल); संस्कृत भाषा जो देवताओं की भाषा मानी गई है।
देववाद पुं. {सं.} देवताओं की सत्ता स्वीकार करने का सिद्धांत।
देववाहन पुं. {सं.} देववाहन, अग्नि।
देवविद्या *स्त्री.* {सं.} निरुक्त विद्या।
देववृक्ष पुं. {सं.} मदार-वृक्ष, गुग्गुल।
देवशेष पुं. {सं.} अनंत-नाग।
देवसभा *स्त्री.* {सं.} देवताओं की सभा या समाज।
देवस्थान *स्त्री.* {सं.} देवमंदिर।
देवांगना *स्त्री.* {सं.} देवता की स्त्री; अप्सरा।
देवानीक पुं. {सं.} देवताओं की सेना।
देवायुस् पुं. {सं.} देव-जीवन-काल।
देवाराधन पुं. {सं.} देव-पूजा।
देवार्पण पुं. {सं.} देवता के निमित्त किसी वस्तु का अर्पण, दान या उत्सर्ग।
देवाल[1] पुं. {सं.} चरु, हवि।
देवाल[2] *वि.* {हिं. देना} देनेवाला; बेचनेवाला।
देवालय पुं. {सं.} स्वर्ग; वह स्थान जहाँ देवता की मूर्ति हो, मंदिर।
देवासुर *वि.* {सं.} जिसका संबंध देवताओं और असुरों से हो।
देवासुर संग्राम पुं. {सं.} देवताओं और असुरों के बीच का संग्राम जो समुद्र-मंथन के समय हुआ था।
देवाह्वय पुं. {सं.} देवदार का वृक्ष।
देविया पुं. {सं.} धतूरे का पेड़।
देविल *वि.* {सं.} धार्मिक।
देवी *स्त्री.* {सं.} देवता की स्त्री; प्राचीन भारत में वह रानी जिसका राजा के साथ अभिषेक होता था, पटरानी; सदाचारिणी स्त्री; स्त्रियों के नाम के साथ लगनेवाली एक आदरसूचक उपाधि।
देवेन्द्र पुं. {सं.} इंद्र।
देवैया *वि.* {हिं. देना} देनेवाला।
देवोत्तर पुं. {सं.} देवता को चढ़ाया हुआ धन या संपत्ति।
देवोत्थान पुं. {सं.} कार्तिक शुक्ला एकादशी को विष्णु का सोकर उठना, जो एक पर्व माना जाता है।
देश पुं. {सं.} पृथ्वी का वह विशिष्ट विभाग जिसमें अनेक प्रान्त, नगर आदि हों, मुल्क; एक राजा या शासक के अधीन अथवा एक शासन-पद्धति के अंतर्गत रहनेवाला भूभाग, राष्ट्र; स्थान, जगह।
देशक *वि.* {सं.} उपदेशक।
देशकार पुं. {सं.} एक संपूर्ण जाति का राग।
देशज *वि.* {सं.} देश में उत्पन्न; (शब्द) जो किसी दूसरी भाषा से न निकला हो, बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोल-चाल से बना गया हो।
देश-निकाला पुं. {सं. देश. + हिं. निकाला} देश से निकाले जाने का दंड, निर्वासन।
देशबंधु पुं. {सं.} देशवासी, जो भाई के समान होता है, हमवतन।
देशभक्त पुं. {सं.} {भाव. देशभक्ति} जो अपने देश की सच्चे हृदय से उन्नति और कल्याण चाहता और उसकी सिद्धि के लिए प्रयत्न करता हो (पेट्रिऑट)।
देशभक्ति *स्त्री.* {सं.} अपने देश का कल्याण और उन्नति चाहने तथा उसके लिए प्रयत्न करते रहने की वृत्ति (पेट्रिऑटिज्म)।
देशभाषा *स्त्री.* {सं.} किसी देश या प्रदेश की भाषा, जैसे बंगला या पंजाबी।
देशव्यापी *वि.* {सं. + हिं.} पूरे देश में व्याप्त।
देशांतर पुं. {सं.} दूसरा देश, विदेश, परदेश; पृथ्वी के मानचित्र पर उत्तर-दक्षिण खींची हुई एक सर्वमान्य मध्यरेखा से पूर्व या पश्चिम के देशों या स्थानों की दूरी, लंबांश (लंबाई)।
देशाका, देशाखी *स्त्री.* {सं.} एक रागिनी-विशेष।
देशाचर पुं. {सं.} वह आचार या रीति-व्यवहार जो किसी देश में बहुत दिनों से होता आया हो।
देशाटन पुं. {सं.} दूर-दूर के देशों की यात्रा या भ्रमण।
देशी *वि.* {सं. देशीय} देश का, देश-संबंधी; अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ, स्वदेश का, जैसे देशी कपड़ा; पुं. संगीत में एक प्रकार का राग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशीकरण पुं. किसी विदेशी वस्तु, विचार या शब्द को ऐसा रूप देना कि वह देशी प्रतीत हो।
देशीय *वि.* देशी, देशका, स्वदेशी।
देशी राज्य पुं. वे अनेक छोटे-बड़े राज्य को ब्रिटिश शासनकाल में सारे भारत में जगह-जगह राजाओं-महाराजाओं के अधीन थे और जिनका बाद में स्वतंत्र भारत में विलय हो गया, रियासत।
देश्य *वि.* {सं.} देश-संबंधी, देश का; जो अपने ही देश में हो या उत्पन्न हुआ हो, देशी, जैसे देश्य भाषा।
देसंतर पुं. = देशांतर।
देष्ठ *वि.* {सं.} अवि दानी, बहुत दान-पुण्यकर्ता।
देस पुं. देश।
देसावर पुं. दिसावर, परदेश, विदेश।
देह *स्त्री.* {सं.} शरीर, बदन, तन, जीवन, मूर्ति।
देह-चटुलता *स्त्री.* {सं.} शारीरिक चंचलता।
देहत्याग पुं. {सं.} मृत्यु, मौत।
देहधारण पुं. {सं.} शरीर की रक्षा और पालन; जन्म।
देहधारी पुं. {सं. देहधारिन्} {*स्त्री.* देहधारिणी} वह जिसने देह या शरीर धारण किया हो, शरीरी।
देहपात पुं. {सं.} मृत्यु, मौत।
देहरा[1] पुं. {हिं. देव + घर} देवालय।
देहरा[2] पुं. {हिं. देह} मनुष्य का शरीर।
देहरी *स्त्री.* देहली, दहलीज।
देहला *स्त्री.* {सं.} मद्य, शराब।
देहली *स्त्री.* {सं.} दरवाजे में चौखट के नीचे की लकड़ी या पत्थर, देहलीज।
देहली-दीपक पुं. {सं.} देहली पर रखा हुआ दीपक जो अंदर और बाहर दोनों ओर प्रकाश फैलाता है; एक अर्थालंकार जिसमें बीच के किसी शब्द का अर्थ आगे और पीछे दोनों ओर अथवा दोनों ओर के पदों में लगता है, जैसे 'रहे बाँस न बजे बाँसुरी' में का 'न' जो 'रहे बाँस' और 'बजे बाँसुरी' दोनों के साथ लगता है।
देहली-दीपक न्याय पुं. {सं.} (देहली पर रखे हुए दीपक की तरह) दोनों तरफ लगनेवाला शब्द या बात।
देहवान, देहवान् *वि.* {सं.} शरीरधारी।
देहांत पुं. {सं.} मृत्यु, मौत।
देहात पुं. {फा. देह (गाँव) का बहु.} {*वि.* देहाती} गाँव, ग्राम।
देहाती *वि.* {फा. देहात} गाँव का; गाँव में रहनेवाला, ग्रामीण।
देहातीत पुं. {सं.} वह ज्ञानी जिसको शरीर की ममता न हो।
देहात्मवाद पुं. {सं.} {*वि.* देहात्मवादी} देह या शरीर को ही आत्मा मानने का सिद्धांत। (इसमें भौतिक बातों की ही प्रधानता मानी जाती है, अध्यात्म को कोई महत्व नहीं दिया जाता)।
देहावरण पुं. {सं.} चिड़ियों का पंख, वस्त्र।
देहावसान पुं. {सं.} मृत्यु।
देही पुं. {सं. देहिन्} आत्मा; शरीरधारी, प्राणी; *स्त्री.* देह।
दैं *विभ.* {अनु.} से; (किसी क्रिया के प्रकार का सूचक) जैसे-चपाक दैं।
दैअ पुं. दैव।
दैआ *स्त्री.* दैया।
दैतेय पुं. {सं.} दिति की संतान, दैत्य।
दैत्य पुं. {सं.} असुर, राक्षस; लंबा-चौड़ा या असाधारण बलवाला मनुष्य।
दैत्यारि पुं. {सं.} विष्णु, इंद्र।
दैनंदिनी *स्त्री.* 'दैनिकी', प्रतिदिन की, दिनचर्चा पुस्तिका।
दैन *वि.* = दायक (यौगिक के अंत में; जैसे सुखदेन), (सं. पुं.) दीन, दीनता।
दैनदिन *वि.* {सं.} नित्य का; *क्रि. वि.* प्रतिदिन; दिनोंदिन।
दैनिक *वि.* {सं.} प्रतिदिन से संबंध रखनेवाला, नित्य या रोज का, जैसे दैनिक कार्यक्रम; प्रतिदिन या नित्य होनेवाला; पुं. दैनिक पत्र।
दैनिक पत्र पुं. {सं.} वह समाचार पत्र जो नियमित रूप से नित्य प्रकाशित होता हो, हर रोज छपनेवाला अखबार।
दैनिकी *स्त्री.* {सं. दैनिक} वह पुस्तिका, जिसमें नित्य दिन भर के लिए हुए कार्य आदि लिखे जाते हैं (डायरी)।
दैन्य पुं. {सं.} दीन का भाव, दीनता; वियोग, दुख आदि से चित्त का बहुत नम्र हो जाना, जो काव्य में एक संचारी भाव माना गया है, कातरता।
दैया[1] पुं. {हिं. दैव} दैव, ईश्वर।
दैया[2] *स्त्री.* {हिं. दाई} माता, माँ।
दैव *वि.* {सं.} देवता-संबंधी; देवता या ईश्वर का किया हुआ; पुं. प्रारब्ध, भाग्य; होनेवाली बात, होनहार; ईश्वर; आकाश।
मुहा. दैव बरसना = पानी बरसना।
दैवकृत *वि.* {सं.} ईश्वर का किया हुआ (मनुष्य का नहीं), दैवी।
दैवगति *स्त्री.* {सं.} ईश्वरी बात या घटना; भाग्य।
दैवज्ञ पुं. {सं.} फलित ज्योतिष का ज्ञात, ज्योतिषी।
दैवचिंतक पुं. {सं.} दैवज्ञ, ज्योतिषी।
दैवज्ञा *स्त्री.* {सं.} ज्योतिषी की स्त्री।
दैवतंत्र *वि.* {सं.} भाग्य के अधीन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैवत्य *पुं.* {सं.} देवत्व।
दैवपर *वि.* {सं.} भाग्य पर भरोसा करनेवाला।
दैवयुग *पुं.* {सं.} मनुष्यों के चार युगों के बराबर एक युग, दिव्य युग।
दैवत *वि.* {सं.} देवता-संबंधी; देवता या ईश्वर का किया हुआ।
दैवयोग *पुं.* {सं.} संयोग, इत्तफाक।
दैववश (वशात्) *क्रि. वि.* {सं.} संयोग से, दैवयोग से, अकस्मात्।
दैववाणी *स्त्री.* {सं.} आकाशवाणी; संस्कृत भाषा।
दैववाद *पुं.* {सं.} {*वि.* दैववादी} यह सिद्धांत कि जो कुछ होता है, वह सब ईश्वर की प्रेरणा से ही होता है, नियतिवाद; यह सिद्धांत कि सब बातें भाग्य से ही होती है।
दैववादी *पुं.* {सं. दैववादिन्} दैव को ही प्रधान कर्ता माननेवाला; भाग्य के भरोसे रहनेवाला; *वि.* दैववाद-संबंधी।
दैवविवाह *पुं.* {सं.} हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार आठ प्रकार के विवाहों में से वह, जिसमें यज्ञ करनेवाला पुरोहित को अपनी कन्या देता है।
दैवागत *वि.* {सं.} देवता या ईश्वर के कारण होनेवाला, दैवी; आकस्मिक।
दैवात् *क्रि. वि.* {सं.} अकस्मात्, दैवयोग से, अचानक।
दैविक *वि.* दैवी।
दैवी *वि.* {सं.} देवता-संबंधी; देवताओं का किया हुआ; प्रारब्ध या संयोग से होनेवाला; अचानक और आप-से-आप होनेवाला, आकस्मिक।
दैवेच्छा *स्त्री.* {सं.} ईश्वर की इच्छा, प्रभु की मर्जी।
दैवोयान *पुं.* {सं.} देवताओं का बगीचा।
दैव्य *पुं.* {सं.} देवता, भाग्य, नसीब; *वि.* देव-संबंधी।
दैशिक *वि.* {सं.} देश-संबंधी, शारीरिक; देह से उत्पन्न।
दो *वि.* {सं. द्वि} एक और एक या योग।
मुहा. दो दिन का = थोड़े दिनों का।
दोआब *पुं.* {फा.} किसी दो का वह भाग, जो दो नदियों के बीच में पड़ता हो।
दोउ (ऊ) *वि.* {सं. द्वौ} दोनों।
दो-एक *वि.* कुछ, थोड़े।
दोख *पुं.* = दोष।
दोखना *स.* {हिं. दोष} दोष लगाना।
दोखिल *वि.* = दोषपूर्ण।
दोखी *पुं.* = दोषी।
दोगंडी *वि.* {हिं.} उपद्रवी, उत्पाती।
दोगला *पुं.* {सं. दोगलः} {*स्त्री.* दोगली} वह जो अपनी माता के उपपति से उत्पन्न हुआ हो, जारज; वह जीव जिसके माता-पिता भिन्न-भिन्न वर्गों या जातियों के हों।
दो-घड़िया (मुहूर्त) *पुं.* {हिं. दो + घड़ी} फलित ज्योतिष में एक प्रकार का मुहूर्त जो बहुत जल्दी होने पर तुरंत निकाला जाता है।
मुहा. दो-घड़िया साधना = तुरंत उक्त प्रकार का मुहूर्त निकालकर उसके अनुसार कार्य करना।
दोच (न) *स्त्री.* {हिं. दबोचना} दुविधा, असमंजस; दबाव; दुख; कष्ट।
दोचना *स.* {हिं. दोच} दबाव डालना; किसी काम को करने के लिए आग्रह करना।
दोचित्ता *वि.* {हिं. दो + चित्त} {*भाव. स्त्री.* दोचित्ती} जिसका मन दो तरह की बातों में लगा हो, उद्विग्नचित्त।
दांज *स्त्री.* {हिं.} किसी पक्ष की दूसरी तिथि, द्वितीया, दूज।
दोजख *पुं.* {फा. दोजख़} {*वि.* दोजख़ी} नरक।
दोजखी *पुं.* {फा. दोजख़ी} बहुत बड़ा पानी जो दोजख या नरक में जाने को हो, नारकी।
दोतरफा *वि.* {फा. दुतर्फः} दोनों ओर होने या लगनेवाला; *क्रि. वि.* दोनों तरफ से।
दोतल्ला *वि.* {हिं. दो +तल} दो तल्ले या खंड का, दो मंजिला (मकान)।
दोतारा *पुं.* {हिं. दो +तार} (धातु का) दो तारों का एक प्रकार का बाजा।
दोदरी *स्त्री.* {हिं.} सदाबहार वृक्ष।
दोदलक *पुं.* {हिं.} चने की दाल या शाक।
दोदिन *पुं.* {हिं.} रीढ़ की जाति का वृक्ष।
दोध *पुं.* {सं.} गोप, ग्वाला, अहीर।
दोधार *पुं.* {हिं.} भाला-बरछा।
दोधारा *वि.* {हिं. दो + धार} {*स्त्री.* दोधारी} (शस्त्र) जिसमें दोनों ओर से धारें हों।
दोधी *स्त्री.* {हिं. दूध} एक प्रकार का पौष्टिक पेय पदार्थ जो बादाम, कमलगट्टे, खसखस आदि को पीसकर दूध में उबालने से बनता है।
दोन *पुं.* {हिं. दून} तराई, दून; दो नदियों के बीच का प्रदेश, दोआबा।
दोनली *वि.* {हिं. दो + नल} जिसमें दो नलियाँ हों जैसे दोनली बंदूक।
दोना *पुं.* {सं. द्रोण} {*स्त्री.* दोनी} पत्तों का बना, कटोरे के आकार का पात्र।
दोनों[1] *सर्व.* दोनों व्यक्ति या वस्तुएँ।
दोनों[2] *वि.* {हिं. दो} ऐसे दो, जिनमें से कोई छोड़ा न जा सके, उभय।
दोपल्ला *पुं.* {हिं. दो + पल्ला} {*स्त्री.* दोपल्ली} जिसमें दो पल्ले हों; *स्त्री.* एक प्रकार की हलकी टोपी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोपहर पुं. {हिं. दो + पहर} वह समय जब सूर्य मध्य आकाश में पहुँचता है, दुपहर मध्याह्न।

दोपीठा *वि.* {हिं. दो + पीठ} 'दोरुखा'; दोनों ओर से छपा या लिखा हुआ (कागज)।

दोफसली *वि.* {हिं. दो + फसल} रबी और खरीफ दोनों फसलों से संबंध रखनेवाला; जो दोनों ओर लग सके और संदिग्ध हो, जैसे दो-फसली बात।

दोफुटा पुं. {सं. दो + अं. फुट} दो फुट का नापने का गज।

दोबल पुं. {?} दोष, अपराध।

दोबा पुं. दुविधा।

दोबारा *क्रि. वि.* {फा. दुबारः} एक बार हो चुकने पर फिर दूसरी बार, एक बार और।

दोमंजिला *वि.* दोतल्ला।

दोमुँहाँ *वि.* {हिं. दो + मुँह} जिसके दो मुँह हों, जैसे दोमुँहाँ साँप। दोहरी चाल चलनेवाला, कपटी।

दोय *वि.* दो; दोनों।

दोयरी *स्त्री.* {हिं.} पहाड़ी वृक्ष।

दोयल पुं. {हिं.} बया पक्षी।

दोरंगा *वि.* {हिं. दो + रंग} {*स्त्री.* दोरंगी} दो रंगोंवाला; जो दोनो ओर लग या चल सके।

दोरसा *वि.* {हिं. दो + रस} दो प्रकार के रस या स्वादवाला।

पद दोरसे दिन = गर्भावस्था के दिन; दो ऋतुओं के बीच के दिन।

दोराहा पुं. {हिं.} वह स्थान जहाँ से दो ओर दो मार्ग जाते हों।

दोर्ज्या पुं. {सं.} भुज के आकार की ज्या।

दोर्मूल पुं. {सं.} कक्ष, काँख।

दोरी *स्त्री.* = डोरी (रस्सी)।

दोरुख़ा *वि.* {फा. दुरुखः} {*स्त्री.* दोरुखी} जिसके दोनो ओर समान रंग या बेल-बूटे हों; जिसके एक ओर एक रंग और दूसरी ओर दूसरा रंग हो।

दोल पुं. दोला, हिंडोला, झूला, डोली।

दोलत्ती *स्त्री.* दुलत्ती।

दोलन पुं. {सं.} इधर से उधर और उधर से इधर झूलते रहने की अवस्था या भाव।

दोला *स्त्री.* {सं.} {*वि.* दोलित} हिंडोला, झूला; डोली या चंडोल।

दोलित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* दोलिता} हिलता या झूलता हुआ।

दोलोत्सव पुं. {सं.} वैष्णवों का एक उत्सव जो फाल्गुन की पूर्णिमा को बनाया जाता है।

दोश पुं. {हिं.} एक प्रकार की लाह जो रंग बनाने हेतु आती है।

दोष[1] पुं. {सं.} {*वि.* दूषित, दूष्य, दूषणीय} वह बात जिसके कारण कोई व्यक्ति या वस्तु खराब समझी जाए अवगुण, बुराई, खराबी (फॉल्ट)।

मुहा. दोष लगाना = किसी के संबंध में यह कहना कि उसमें अमुक दोष है।

कोई ऐसी बात या अभाव जिसके कारण कोई वस्तु पूरी तरह से उपयोगी न हो, अपूर्णता, त्रुटि, कमी (डिफेक्ट); किसी पर लगाया हुआ अभियोग; अपराध, कसूर; पाप, पातक, शरीर में के वात, पित्त और कफ, जिसके बिगड़ने से राग उत्पन्न होते हैं।

दोष[2] 'पुं. {सं. द्वेष} द्वेष, वैर।

दोषन पुं. {सं. दूषण} दोष।

दोषना *स.* {सं. दूषण + हिं. ना (प्रत्य.)} दोष लगाना; अपराध लगाना।

दोषा *स्त्री.* {सं.} रात्रि, रात, बाहु।

दोषाक्षर पुं. {सं.} अभियोग, अपराध।

दोषमार्जन पुं. {सं.} दोषों को दूर करने की क्रिया या भाव।

दोषारोपण पुं. {सं. दोष + आरोपण} {*वि.* दोषारोपित} किसी पर कोई दोष लगाना, यह कहना कि इसने अमुक दोष या अपराध किया है।

दोषिन *स्त्री.* {हिं. दोषी} अपराधिनी; पाप करनेवाली स्त्री; दुष्ट स्वभाववाली स्त्री।

दोषिल *वि.* दूषित।

दोषी पुं. {सं. दोषिन्} जिसमें दोष हो; अपराधी, कसूरवार; पापी; अभियुक्त।

दोस पुं. दोष।

दोसदारी *स्त्री.* दोस्ती, मित्रता।

दोस्त पुं. {फा.} {*भाव.* दोस्ती} मित्र, स्नेही।

दोस्ताना पुं. {फा.} मित्रता; *वि.* दोस्ती का, मित्रता का।

दोस्ती *स्त्री.* {फा.} दोस्तों या मित्रों में होनेवाला पारस्परिक संबंध, मित्रता।

दोस्ती रोटी पुं. वह रोटी या पराँठा जो दो अलग-अलग पेड़े बेलकर और तब दोनों एक साथ सटाकर पकाते हैं।

दोह पुं. द्रोह, दूध-दोहन, दोहन-क्रिया।

दोहग पुं. = दुर्भाग्य।

दोहता पुं. {सं. दौहित्र} {*स्त्री.* दोहती} लड़की का लडका, नाती।

दोहत्थड़ *वि.* {हिं. दो + हाथ} दोनों हाथों से छाती पीटना।

दोहद *स्त्री.* {सं.} गर्भवती स्त्री की इच्छा या वासना; गर्भावस्था; गर्भ के लक्षण या चिह्न; वह प्राचीन भारतीय विश्वास कि सुंदर स्त्री के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पर्श से प्रियंगु, पान की पीक थूकने से मौलिसिरी, पैरों के आघात से अशोक, देखने से तिलक, मधुर गान से आम, और नाचने से कचनार आदि वृक्ष खूब फूलते हैं।

दोहदवती *स्त्री.* {सं.} गर्भवती।

दोहन *पुं.* {सं.} गाय, भैंस आदि का दूध दुहना; दोहनी।

दोहना *स.* {सं. दूषण} दोष लगाना; तुच्छ ठहराना; *स.* दुहना।

दोहनी *स्त्री.* {सं.} वह बरतन जिसमें दूध दुहते हैं; दूध दुहने का काम।

दोहर *स्त्री.* {हिं. दो + घड़ी = तह} दो पल्लों या परतों की एक प्रकार की चादर।

दोहरना *अ.* {हिं. दोहरा} दोहराना; दोहरा करना।

दोहरा *वि.* {हिं. दो + हरा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* दोहरी} जिसमें दो पल्ले, परतें या तहें हों; दो बार या दूसरी बार का; *पुं.* दोहा नाम का छंद।

दोहराई *स्त्री.* {हिं. दोहराना} दोहराने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

दोहराना *स.* {हिं. दोहरा} कोई बात या काम दूसरी बार कहना या करना, पुनरावृत्ति करना (रिपीट); किसी किए हुए काम को जाँचने के लिए फिर से अच्छी तरह देखना; कपड़े कागज आदि की दो तहें करना, दोहरा करना।

दोहरीपट *स्त्री.* {हिं.} मल्लयुद्ध की युक्ति।

दोहलवती *स्त्री.* {हिं.} गर्भवती स्त्री।

दोहली *स्त्री.* {सं.} अशोक, वृक्ष, मदार का पेड़।

दोहा *पुं.* {हिं. दो + हा (प्रत्य.)} दो चरणों का एक प्रसिद्ध हिन्दी छंद (इसके चरण के खंडों को उलट देने से सोरठा हो जाता है)।

दोहाई *स्त्री.* दुहाई।

दोहाग *पुं.* दुहाग, दुर्भाग्य, अभण्य।

दोहिला *वि.* {*स्त्री.* दोहिली} = कठिन।

दोही *स्त्री.* दुहाई, दूहनेवाला; *पुं.* ग्वाला।

दौं *निपा.* धौं; दैं।

दौंकना *अ.* दमकना, बमकना।

दौंचना *स.* दोचना; दबाव डालकर लेना।

दौरी *स्त्री.* दँवरी, बैलों को बाँधनेवाली रस्सी, झुंड।

दौ *स्त्री.* {सं. दव} जंगल की आग; वन या जंगल; संताप, कष्ट; दाह, जलन।

दौकल *पुं.* {सं.} कपड़े से ढँका हुआ रथ।

दौग्ध *वि.* {सं.} दूध से बना हुआ।

दौड़ *स्त्री.* {हिं. दौड़ना} दौड़ने की क्रिया या भाव।

मुहा. दौड़ मारना या लगाना = दौड़ते हुए जाना; लंबी यात्रा करना।

धावा चढ़ाई, प्रयत्न में इधर-उधर घूमना; दौड़ने की प्रतियोगिता; गति, बुद्धि, उद्योग आदि की सीमा, पहुँच; विस्तार, लंबाई; अपराधियों को छापा मारकर पकड़ने के लिए सिपाहियों को दौड़ते हुए कहीं जाना।

दौड़-धूप *स्त्री.* {हिं. दौड़ + धपना} वह प्रयत्न जिसमें इधर-उधर दौड़ना पड़े।

दौड़ना *अ.* {सं. धोरण} बहुत जल्दी-जल्दी पैर उठाकर चलना।

मुहा. चढ़ दौड़ना = धावा या चढ़ाई करना; *दौड़-दौड़कर जाना* = बार-बार किसी के पास जाना।

प्रयत्न में इधर-उधर आना-जाना; फैलना, व्याप्त होना, जैसे बिजली दौड़ना।

दौड़हा *पुं.* हरकारा।

दौड़ाई *स्त्री.* {हिं. दौड़ना} दौड़ने की क्रिया या भाव; लम्बाई, विस्तार।

दौड़ादौड़ *अव्य.* {हिं.} अविश्रांत।

दौड़ादौड़ी *स्त्री.* {*स्त्री.*} अनेक मनुष्यों का दौड़ना, व्यग्रता, दौड़-धूप।

दौड़ान *स्त्री.* {हिं.} दौड़ने की क्रिया, वेग, कम, फेरा।

दौड़ाना *स.* {हिं. दौड़ना का *स.*} दूसरे को दौड़ने में प्रवृत्त करना; किसी को जल्दी या बार-बार कहीं भेजना; कोई चीज एक जगह से दूसरी जगह तक खींच या तानकर ले जाना, जैसे रस्सी या तार दौड़ाना।

दौत्य *पुं.* {सं.} दूत का काम।

दौन *पुं.* दमन।

दौना¹ *पुं.* {सं. दमनक} एक पौधा जिसकी पत्तियों से तेज गंध निकलती है।

दोना² *स.* {सं. दमन} दमन करना; *पुं.* दोना।

दौर *पुं.* {अ.} चक्कर, भ्रमण, फेरा; उन्नति, वैभव या प्रताप के दिन; बारी, पारी; दौरा।

दौरना *अ.* दौड़ना।

दौरा¹ *पुं.* {अ. दौर} चक्कर, भ्रमण; अधिकारी को अपने अधिक्षेत्र में जाँच-पड़ताल के लिए अनेक स्थानों पर जाना।

मुहा. (मुकदमा) दौरा सुपुर्द करना = विचार के लिए सेशन जज के न्यायालय में भेजना; *दौरे पर जाना* = अधिकारी का अपने अधिक्षेत्र में जाँच-पड़ताल या निरीक्षण के लिए जाना; बीच-बीच में आते-जाते रहना, फेरा; उस रोग का प्रकट होना जो समय-समय पर या रह-रहकर होता हो।

दौरा² *पुं.* {सं. द्रोण} बाँस की पट्टियों का बना टीकरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दौरा जज पुं. {हिं. दौरा + अं. जज} सत्र न्यायालय का प्रधान अधिकारी या विचारक।
दौरात्म्य पुं. {सं.} दुरात्मा होने का भाव, दुर्जनता।
दौरान पुं. {फा.} दौरा, चक्र; दो घटनाओं के बीच का समय।
दौरी *स्त्री.* {हिं. दौरा} छोटी टोकरी।
दौर्ग्य *वि.* {सं.} दुर्ग-संबंधी।
दौर्ग्रह पुं. {सं.} अश्वमेघ-यज्ञ।
दौर्जना पुं. {सं.} दुर्जनता, दुष्टता, बुरा व्यवहार।
दौर्य पुं. {सं.} दूरी, अंतर।
दौर्वीण पुं. {सं.} एक उप पुराण का नाम।
दौर्बल्य पुं. {सं.} दुर्बलता।
दौलत *स्त्री.* {अ.} धन, सम्पत्ति (वेल्थ)।
दौलतखाना पुं. {फा.} निवासस्थान, घर (बड़ों के लिए आदरार्थक)।
दौलतमंद *वि.* {फा.} {भाव. दौलतमंदी} धनवान, अमीर।
दौवारिक पुं. {सं.} द्वारपाल; द्वाररक्षक।
दौष्कुल *वि.* {सं.} विंदित-कुल का।
दौहिक *वि.* {सं.} प्रतिदिन दुहने योग्य।
दौहित्र पुं. {सं.} दोहता, नाती।
द्याना (वना) *स.* दिलाना।
द्यु पुं. {सं.} आकाश; स्वर्ग; सूर्यलोक।
द्युति *स्त्री.* {सं.} दीप्ति, चमक; शोभा।
द्युतिमान, द्युतिमान् *वि.* {सं. द्युतिमत्} {*स्त्री.* द्युतिमती} जिसमें चमक या आभा हो।
द्युलोक पुं. {सं.} स्वर्गलोक।
द्यूत पुं. {सं.} दाँव लगाकर खेला जानेवाला हार-जीत का खेल, जुआ।
द्युतरु पुं. {सं.} कल्पतरु।
द्युति *वि.* {सं.} चमकता हुआ।
द्युद्युनि *स्त्री.* {सं.} गंगा नदी।
द्युपुति पुं. {सं.} सूर्य, चंद्र।
द्युपथ पुं. {सं.} स्वर्ग का मार्ग।
द्यूतक्रीड़ा *स्त्री.* {सं.} हार जीत के लिए कुछ धन या दाँव लगाकर खेला जानेवाला जुआ; इस प्रकार का होनेवाला खेल।
द्यूतशाला *स्त्री.* {सं.} जुआखाना, जुए का अड्डा।
द्योतक *वि.* {सं.} प्रकाश करनेवाला; दिखलाने या बतलानेवाला, सूचक।
द्योतन पुं. {सं.} {*वि.* द्योतित} प्रकाशित करना, दिखलाना या बतलाना।
द्योहरा पुं. देवालय।
द्यौस पुं. {सं. दिवस} दिन।
द्रव *वि.* {सं.} पानी की तरह पतला, तरल; गीला; गला या पिघला हुआ; पुं. द्रव पदार्थ, तरल पदार्थ।
द्रवण पुं. {सं.} {*वि.* द्रवित} गलने, पिघलने या पसीजने की क्रिया या भाव; चित्त के कोमल होने की वृत्ति।
द्रवणशील *वि.* {सं.} {*भाव.* द्रवणशीलता} जो पिघलता या पसीजता हो।
द्रवना *अ.* {सं. द्रवण} प्रवाहित होना, बहना; पिघलना, पसीजना; दयार्द्र होना।
द्रविड़ पुं. {सं. तिरमिक या द्रामिल} दक्षिण भारत का एक देश; इस देश का निवासी; ब्राह्मणों का एक विभाग जिसके अंतर्गत आन्ध्र, कर्णाटक, गुर्जर, द्रविण और महाराष्ट्र ये पाँच वर्ग हैं।
द्रवित *वि.* द्रवीभूत।
द्रविण पुं. {सं.} धन, सोना, पराक्रम, बल।
द्रवीभाव पुं. {सं.} गलने की क्रिया।
द्रवीभूत *वि.* {सं.} जो तरल या द्रव हो गया हो; पिघला हुआ; जिसके मन में दया आ गई हो, दयार्द्र, दयालु।
द्रव्य पुं. {सं.} {*भाव.* द्रव्यता} वस्तु, पदार्थ, चीज; वह मूल तथा विशुद्ध तत्व जिसमें कोई दूसरा तत्त्व या द्रव्य न मिला हो (विशैषिक में यों नौ द्रव्य कहे गए हैं—पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा, और मन।); सामग्री, सामान; धन, दौलत; लेन-देन के लिए रुपये-पैसे या दूसरे सिक्के, नोट आदि (मनी)।
द्रष्टव्य *वि.* {सं.} देखने योग्य, दर्शनीय; जो दिखाया जाने को हो।
द्रष्टा *वि.* {सं.} देखनेवाला, दर्शक; पुं. सांख्य के अनुसार आत्मा।
द्रह पुं. {सं.} अगाधा जल का ताल।
द्राक्षशर्करा *स्त्री.* {सं.} दाख या अंगूर के रस में से निकली हुई चीनी (ग्ल्यूकोज)।
द्राक्षा *स्त्री.* {सं.} दाख, अंगूर।
द्राण *वि.* {सं.} सुरत, सोया हुआ; पुं. स्वप्न।
द्राप पुं. {सं.} कीचड़, आकाश, कौड़ी; *वि.* मूर्ख।
द्राव पुं. {सं.} गमन; क्षरण; बहने या पसीजने की क्रिया।
द्रावक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* द्राविका} ठोस चीज को पानी की तरह पतला करने, गलाने या बहानेवाला; हृदय को दयार्द्र बनानेवाला।
द्रावण पुं. {सं.} गलाने या पिघलाने की क्रिया या भाव।
द्राविड़ *वि.* {सं.} {*स्त्री.* द्राविड़ी} द्रविड़ देश का।
द्राविड़ प्राणायाम पुं. {सं.} कोई काम सीधी तरह से नहीं, बल्कि कुछ घुमा-फिराकर या उलटे ढंग से करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्राविड़ी *वि.* {सं.} द्रविड़-संबंधी।

द्रु *पुं.* {सं.} वृक्ष, शाखा, गति।

द्रुधन *पुं.* {सं.} ग्रुद्गार के आकार का एक हथियार।

द्रुण *पुं.* {सं.} धनुष, तलवार, भौरा, मधुमक्खी।

द्रुणा *स्त्री.* {सं.} धनुस की डोरी, चिल्ला।

द्रुणि *स्त्री.* {सं.} संदूक, पिटारा।

द्रुत *वि.* {सं.} द्रवीभूत, गला या पिघला हुआ; शीघ्रगामी, तेज; *पुं.* संगीत में ताल की एक मात्रा का आधा; संगीत में मध्यम से कुछ तेज लय, दून।

द्रुतगामी *वि.* {सं. द्रुतगामिन्} {*स्त्री.* द्रुतगामिनी} जल्दी या तेज चलनेवाला।

द्रुत-विलंबित *पुं.* {सं.} एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसका प्रत्येक चरण एक नगण, दो भगण और एक रगण का होता है, सुंदरी।

द्रुतमांस *पुं.* {सं.} हरिण, खाहे आदि का मांस।

द्रुति *स्त्री.* {स.} द्रव, गति।

द्रुनरव *पुं.* {सं.} कंटक, काँटा।

द्रुम *पुं.* {सं.} वृक्ष, पेड़।

द्रुमग *पुं.* {सं.} वह देश जहाँ जल कम हो।

द्रुमारि *पुं.* {सं.} हरित्त, हाथी।

द्रुमेश्वर *पुं.* {सं.} ताड़ का वृक्ष, चंद्रमा, पारिजात।

द्रोण *पुं.* {सं.} जल आदि रखने का लकड़ी का एक पुराना बरतन, कठवत; सोलह सेर की एक पुरानी तौल; पत्तों का दोना; बड़ी नाव, डोंगा; द्रोणाचार्य।

द्रोणाचार्य *पुं.* {सं.} महाभारत काल के प्रसिद्ध ब्राह्मण वीर जो भारद्वाज ऋषि के पुत्र थे।

द्रोणास *पुं.* {रसं.} एक दानव का नाम।

द्रोणिका *स्त्री.* {सं.} नील का पौधा।

द्रोणी *स्त्री.* {सं.} डोंगी, नाव; छोटा दोना; काठ का बड़ा थाल, कठवत; दो पहाड़ों के बीच की भूमि, दून; दर्रा।

द्रोह *पुं.* {सं.} {*वि.* द्रोही} दूसरे को हानि पहुँचाने की वृत्ति, वैर, द्वेष।

द्रोही *वि.* {सं.}{*स्त्री.* द्राहिणी} द्रोह करने या हानि पहुँचानेवाला।

द्रोपद *पुं.* {सं.} द्रुपद राजा का पुत्र।

द्रोपदी *स्त्री.* {सं.} राजा द्रुपद की कन्या कृष्णा, जो प्रवाद के अनुसार पाँचों पांडवों को ब्याही गई थी।

द्वंद्व *पुं.* {सं.} युग्म, मिथुन, जोड़ा; प्रतिद्वंद्वी, जोड़; दो पक्षों या आदमियों की लड़ाई, द्वन्द्वयुद्ध; झगड़ा, कलह; राग, द्वेष आदि मनोविकार; दो वस्तुओं का जोड़ा, जैसे रात-दिन या सुख-दुख आदि; कष्ट, दुख; उपद्रव, ऊधम; दुविधा।

द्वंदर *स्त्री.* {सं. द्वंद्व} झगड़ालु।

द्वंद्व *पुं.* {सं.} द्वंद; एक प्रकार का समास जिसमें दोनो पद प्रधान होते हैं और उनका अन्वय एक ही क्रिया के साथ होता है, जैसे दाल-चावल।

द्वंद्वयुद्ध *पुं.* {सं.} दो पुरुषों या दलों में होनेवाली बराबरी की लड़ाई।

द्वय *वि.* {सं.} दो, द्वंद्व, युगल।

द्वयता *स्त्री.* {सं. द्वय + ता (प्रत्य.)} दो का भाव, द्वैत; अपनेपन और परायेपन का भाव।

द्वयर्थ *वि.* {सं.} जिसके दो अर्थ हों; भ्रामक।

द्वयर्थता *स्त्री.* {सं.} दो अर्थों के निकलने से होनेवाला भ्रम।

द्वर *वि.* {सं.} विघ्न डालनेवाला।

द्वात *स्त्री.* दवात।

द्वादश *वि.* {सं.} दस ओर दो का योग, बारह; बारहवाँ।

द्वादशबानी *वि.* बारह-दानी।

द्वादशांशु *पुं.* {सं.} बृहस्पति।

द्वादशायु *पुं.* {सं.} कुक्कुर, कुत्ता।

द्वापर *पुं.* {सं.} चार युगों में से तीसरा युग, जो 864000 वर्षों का माना गया है।

द्वार *पुं.* {सं.} इधर-उधर घिरे हुए स्थान के बीच में वह खुला स्थान जिससे होकर लोग अंदर-बाहर आते-जाते हैं; घर में आने-जाने के लिए दीवार में बना हुआ थोड़ा-सा खुला स्थान, दरवाजा; इंद्रियों के मार्ग या छेद, जैसे आँख, नाक, कान, आदि; कोई काम करने का वह विधिविहित मार्ग जो उपाय साधन के अंग के रूप में हो (चैनेल)।

द्वारका *स्त्री.* {सं.} काठिवाड़ की एक प्राचीन पवित्र पुरी या नगरी।

द्वारकाधीश *पुं.* {सं.} श्रीकृष्ण।

द्वारकानाथ *पुं.* = श्रीकृष्ण।

द्वाराचार *पुं.* द्वारपूजा।

द्वारपटी *स्त्री.* {सं.} दरवाजे पर टाँगने का परदा।

द्वारपाल *पुं.* {सं.} दरबान; प्रविहारी; कुत्ता।

द्वारपिंडी *स्त्री.* {सं.} देहलीज, डयोढ़ी।

द्वारपूजा *स्त्री.* {सं.} विवाह की एक रस्म जो लड़कीवाले के द्वार पर बारात पहुँचने के समय होती है और जिसमें वर का पूजन होता है।

द्वारसमुद्र *पुं.* {सं.} कर्नाटक के प्राचीन राजाओं की राजधानी का नाम।

द्वारस्तंभ *पुं.* {सं.} द्वार पर का खंभा।

द्वारा *पुं.* {सं. द्वार} द्वार, दरवाजा।

द्वारा, के परसर्ग {सं. द्वारात्} जरिए से, साधन से।

द्वारावती *स्त्री.* {सं.} द्वारकापूरी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वारी *स्त्री.* {सं. द्वार} छोटा दरवाजा; पुं. द्वारपाल, प्रतिहार।

द्वि *वि.* {सं.} दो, द्वित्व।

द्विक *वि.* {सं.} जिसमें दो हों।

द्विकर्मक *वि.* {सं.} (क्रिया) जिसके दो कर्म हो (व्याकरण)।

द्विकल पुं. {हिं. द्वि + कला} छंदशास्त्र में दो मात्राओं का समूह या वर्ग।

द्विगु पुं. {सं.} वह कर्मधारय समास जिसमें पूर्व पद संख्यावाचक होता है।

द्विगुण *वि.* {सं.} दुगना, दूना।

द्विगुणित *वि.* {सं.} दो से गुणा किया हुआ; दूना, दुगना।

द्विगूढ़ पुं. {सं.} वह गीत जिसमें सब पद सम और सुंदर हों, संधियाँ वर्तमान हों तथा जो रस और भाव से पूर्ण रूप से युक्त हो (नाटयशास्त्र)।

द्विज *वि.* {सं.} दो बार जन्मा हुआ; पुं. {सं.} अंडज प्राणी जो पहले अंडे में आते और तब अंडे से निकलकर दोबारा जन्म लेते हैं, जैसे चिड़िया, साँप आदि; ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जिनका यज्ञोपवीत संस्कार के समय फिर से जन्म लेना माना जाता है; ब्राह्मण; चंद्रमा; दाँत, जो एक बार गिरकर फिर निकलते हैं।
उदा. नासिका चारु, सुकपोल, द्विज ब्रजदुति -तुलसी।

द्विजन्मा *वि. पुं.* = द्विज, ब्राह्मण, पक्षी, क्षत्रिय।

द्विजपति पुं. = द्विजराज।

द्विजराज पुं. {सं.} ब्राह्मण; चंद्रमा।

द्विजाति पुं. द्विजराज।

द्विजेन्द्र (जेश) पुं. द्विज।

द्वितक पुं. {सं.} किसी को दी जानेवाली पावती, रसीद, प्राप्यक या सूचना आदि की वह प्रतिलिपि जो अपने पास रखी जाती है; किसी दिए हुए लेख आदि की वह दूसरी प्रतिलिपि, जो पानेवाले को फिर से दी जाए (डुप्लिकेट)।

द्वितीय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* द्वितीय} दूसरा; पुं. पुत्र, बेटा।

द्वितीयक *वि.* {सं.} जिसका स्थान प्रमुख या सबसे पहलेवाले के बाद हो, दूसरे स्थान का।

द्वितीया *स्त्री.* {सं.} चांद्रमास के किसी पक्ष की दूसरी तिथि, दूज; *वि.* दूसरा, स्त्री, गेहिनी।

द्वित्व पुं. {सं.} दो का भाव; दोहरे होने का भाव, दोहरापन।

द्विदल *वि.* {सं.} जिसमें दो दल हों, दो पत्तोंवाला।

द्विदेह पुं. {सं.} गणेश जी।

द्विधा *क्रि. वि.* {सं.} दो प्रकार से, दो तरह से; दो भागों में।

द्विपक्षी *वि.* {सं.} दो पक्षों या पार्श्वों से संबंध रखनेवाला (बाई-लेटरल)।

द्विपत्रक पुं. {सं.} द्विदल, कमल।

द्विपथ पुं. {सं.} दो मार्ग।

द्विपद *वि.* {सं.} दो पैरोंवाला; पुं. मनुष्य।

द्विपास्थ पुं. {सं.} श्रीगणेश।

द्विबंधु पुं. {सं.} दो लोकों का बंधु, अग्नि।

द्विपार्श्विक *वि.* {सं.} दो पार्श्वोंवाला; दोनो पक्षों की ओर से होनेवाला।

द्विभाजन पुं. {सं.} दो बराबर हिस्सों में बाँटने की क्रिया या भाव।

द्विभाषी *वि.* {सं. द्विभाषिन्} जो दो भाषाएँ बोलता हो; जहाँ दो भाषाएँ बोली जाती हैं; पुं. दुभाषिया।

द्विरद पुं. {सं.} हाथी; *वि.* {*स्त्री.* द्विरदा} दो दाँतोंवाला।

द्विरसन पुं. {सं.} वह जिसकी दो रसनाएँ हो, साँप।

द्विरागमन पुं. {सं.} विवाह के बाद वधू का अपने ससुराल में दूसरी बार आना, गौना।

द्विरुक्त पुं. {सं.} दो बार या दूसरी बार कह हुआ।

द्विरुक्ति *स्त्री.* {सं.} पहले या एक बार कही हुई बात फिर से कहना; इस प्रकार कही हुई बात।

द्विरेफ पुं. {सं.} भ्रमर, भौंरा।

द्विवर्षी *वि.* {सं.} हर दो वर्षों पर होनेवाला।

द्विविध *वि.* {सं.} दो तरह का।

द्विविधा *स्त्री.* दुविधा।

द्विविम *वि.* {सं. द्वि + विमा} दो विमाओं वाला।

द्विवेदी पुं. {सं.} ब्राह्मणों की एक जाति, दूबे।

द्विशाखा (खिन्) *वि.* {सं.} दो शाखाओं वाला।

द्विषन पुं. {हिं.} शत्रु, वैरी।

द्विषा *स्त्री.* {सं.} एला, इलायची।

द्विसत्री *वि.* {सं. द्वि + सत्र} दो सत्रोंवाला।

द्विसदनी *वि.* {सं. द्वि + सदन} दो सदनोंवाला।

द्विसूत्री *वि.* {सं. द्वि + सूत्र} दो सूत्रोंवाला।

द्विस्तरी *वि.* {सं. द्वि + स्तर} दो स्तरोंवाला।

द्विहृदया *स्त्री.* {सं.} गर्भवती स्त्री।

द्वींद्रिय पुं. {सं.} वह जन्तु जिसे दो ही इंद्रियाँ हों।

द्वीप पुं. {सं.} चारों ओर जल से घिरा हुआ स्थल, टापू; पुराणानुसार, पृथ्वी के सात बड़े विभाग, यथा जम्बू द्वीप, लंका द्वीप, शाल्मलि द्वीप, कुश द्वीप, क्रौंच द्वीप।

द्वीपवती *स्त्री.* {सं.} भूमि, जमीन।

द्वीपशत्रु, द्वीपिका पुं. {सं.} सतावर बूटी।

द्वीपपुंज पुं. {सं.} समुद्र में होनेवाला बहुत से छोटे-छोटे और पास-पास के द्वीपों या टापुओं का समूह (आकीपैलेगो)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वीपवासी (सिन्) पुं. {सं.} द्वीप में रहनेवाला।
द्वीपसमूह पुं. {सं.} द्वीपपुंज।
द्वीपांतरण पुं. {सं.} किसी को एक द्वीप या देश से दूसरे द्वीप में भेजने की क्रिया या भाव; किसी बड़े या विकट अपराधी को कठोर दंड के रूप में देश के बाहर किसी द्वीप में रहने के लिए भेजना, काला पानी (ट्रांसपोर्टेशन)।
द्वेष पुं. {सं.} कोई बात मन को अप्रिय लगने की वृत्ति, चिढ़; शत्रुता, वैर।
द्वेषण पुं. {सं.} शत्रु।
द्वेषी *वि.* {सं. द्वेषिन} {*स्त्री.* द्वेषिणी} द्वेष रखने या करनेवाला; शत्रु।
द्वेष्टा *वि.* द्वेषी।
द्वै *वि.* {सं. द्वय} दो; दोनों।
द्वैक *वि.* {हिं. दो + एक} एक या दो अर्थात् बहुत थोड़े, कुछ (व्यक्ति या पदार्थ)।
द्वैज *स्त्री.* {हिं.} द्वितीय, दूज।
द्वैत पुं. {सं.} दो का भाव, युग्म, युगल; अपने और पराए का भाव, भेदभाव।
द्वैतवाद पुं. {सं.} वह दार्शनिक सिद्धांत जिसमें आत्मा और परमात्मा या जीव और ईश्वर को दो भिन्न तथ्य मानकर विचार किया जाता है; दो स्वतंत्र और भिन्न सिद्धांत एक साथ माननेवाली विचारशैली (ड्यूअलिज्म)।
द्वैतवादी *वि.* {सं.} ईश्वर व जीव में भेद माननेवाला।
द्वैध पुं. {सं.} विरोध; राजनीति में दूसरे राष्ट्रों के साथ व्यवहार करते समय मुख्य उद्देश्य छिपाकर दूसरा उद्देश्य प्रकट करना (डिप्लोमेसी)।
द्वैप *वि.* {सं.} व्याघचर्म, बाघ का चमड़ा।
द्वैपायन पुं. {सं.} वेदव्यास।
द्वैप्य *वि.* {सं.} द्वीप संबंधी।
द्वैरथ पुं. {सं.} दो रथों द्वारा होनेवाला युद्ध।
द्वैभाषिक *वि.* {सं.} (नगर या राज्य) जिसमें दो भाषाएँ बोली जाती हों।
द्वैभाषी (षिन्) *वि.* {सं.} दो भाषाओं का प्रयोग करनेवाला।
द्वैमातुर पुं. {सं.} गणेश, जरासंध।
द्वैराज्य पुं. {सं.} वह शासन-प्रणाली जिससे किसी छोटे और दुर्बल देश पर बड़े और प्रबल राज्य मिलकर शासन करते और उसे अपने सम्मिलित नियन्त्रण में रखते हैं (कांडोमीनियम)।
द्वैवार्षिक *वि.* {सं.} प्रति दो वर्षों पर होनवाला।
द्वैविध्य पुं. {सं.} भ्रम, द्विविधा।
द्वौ *वि.* {हिं. दो + ऊ} दोनों; *वि.* दव।

ध

ध देवनागरी वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन और तवर्ग का चौथा वर्ण, जिसका उच्चारण अन्तमूल से होता है, संगीत में यह 'धैवत' स्वर का संक्षिप्त रूप और सूचक माना जाता है।
धंगार पुं. {हिं.} ग्वाल, अहीर, चरवाहा, धारीदार कपड़ा।
धंधक पुं. {हिं. धंधा} संसार के काम-धंधों का झगड़ा, जंजाल।
धंधक-धोरी पुं. {हिं. धंधक + धोरी} सदा किसी न किसी काम या जंजाल में लगा या फँसा रहनेवाला, बहुधंधी।
धंधरक पुं. धंधक; काम धंधे का बखेड़ा।
धँधला पुं. {हिं. धंधा} आडम्बर, ढोंग।
धँधलाना *अ.* {हिं. धँधला} छल-कपट करना; आडंबर या ढोंग रचना।
धंधा पुं. {सं. धन-धान्य} जीविका के लिए किया जानेवाला काम, उद्योग, काम-काज; व्यवसाय, कारबार; भोजन बन जाने के बाद बरतन आदि माँजने और चूल्हा-चौका साफ करने या धोने आदि का काम।
धँधार *स्त्री.* {हिं. धुआँ} आग की लपट।
धँधारी *स्त्री.* गोरख-धंधा।
धँधोर पुं. {अनु. धाँय-धाँय = आग जलना} होली; आग की लपट।
धँवना *स.* धौंकना।
धँसन *स्त्री.* {हिं.} धँसने की क्रिया, गति, चाल।
धँसना[1] *अ.* {सं. दंशन} {*भाव.* धँसन, धँसान} ऊपर से दाब पाकर कड़ी वस्तु का अपेक्षाकृत कोमल वस्तु में घुसना, गड़ना।
मुहा. जी या मन में धँसना = मन पर प्रभाव उत्पन्न करना।
अपने लिए जगह निकालते हुए आगे या अंदर घुसना; नीचे की ओर धीरे-धीरे बैठाना या जाना।
धँसना[2] *अ.* {सं. ध्वंसन} नष्ट होना।
धँसान *स्त्री.* {हिं. धँसना} धँसने की क्रिया, भाव या ढंग; वह जगह कोई चीज धँसे।
धँसाना *स.* हिं. धँसना का *स.* गड़ाना, चुभाना, पैठाना।
धँसाव पुं. धँसान, दलदल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धक *स्त्री.* {अनु.} भय आदि से हृदय की गति तीव्र होने का भाव या शब्द।
मुहा. जी धक होना = डर, दुख आदि से जी दहल जाना; चौंक उठना।
मन की उमंग; *क्रि. वि.* अचानक, सहसा।

धकधक *स्त्री.* {अनु.} दिल के धड़कने का शब्द।
मुहा. जी धकधक करना = कलेजा धड़कना।

धकधकाना *अ.* {अनु. धक} भय, उद्वेग आदि से हृदय की गति तीव्र होना; (आग) दहकना, सुलगना।

धकधकी *स्त्री.* {अनु. धक} हृदय की धड़कन; पेट और छाती के बीच का वह गड्ढा जिसके नीचे धड़कन होती है; हृदय, कलेजा; किसी बात की आशंका या भय।

धकना *अ.* = दहकना।

धकपक *स्त्री.* {अनु.} किसी अनिश्चित या भावी बात के संबंध में मन में होनेवाली दुविधा या आशंका; *स्त्री.* कलेजे की धड़कन।

धकपकाना *अ.* {अनु. धक} जी में धकधक होना, डर या आशंका होना।

धकपेल *स्त्री.* धक्कमधक्का।

धका *पुं.* धक्का।

धकाधक *क्रि. वि.* {अनु.} बड़ी तेजी से।

धकियाना *स.* = धक्का देना।

धकेलना *स.* ढकेलना।

धकेलु *पुं.* {हिं.} धक्का देनेवाला, ढकेलने वाला।

धक्कमधक्का *पुं.* {हिं. धक्का} भीड़ में आदमियों का एक दूसरे को धक्का देना, धकापेल; ऐसी भीड़ जिसमें लोगों के शरीर एक दूसरे से धक्के खाते हों।

धक्का *पुं.* {हिं. धम, हिं. धमक} एक वस्तु का दूसरी वस्तु के साथ वेगपूर्ण स्पर्श, टक्कर; झोंका; ढकेलने की क्रिया या भाव; बहुत भीड़, कशमकश; दुख, शोक, हानि आदि का आघात; विपत्ति, संकट; हानि।

धक्काड़ *वि.* {अनु. धाक} जिसकी खूब धाक जमी हो; किसी विषय या बात में बहुत बढ़ा-चढ़; बहुत बड़ा।

धक्का-मुक्की *स्त्री.* {हिं. धक्का-मुक्की} एक दूसरे को ढकेलना और मुक्के मारना।

धगमगाना *अ.* धकपकाना।

धगड़ा *पुं.* {सं. धव = पति} {*स्त्री.* धगड़ी} स्त्री का यार, उपपति। जार।

धगा *पुं.* धागा।

धगरिन *स्त्री.* {हिं.} बच्चे की नाल काटने वाली स्त्री।

धगरी, धगबरी *वि.* {हिं.} पति की मुँहलगी, धगड़ी, कुलरा।

धचका *पुं.* {अनु.} धक्का; झटका; आघात, झोंकना।

धज *स्त्री.* {सं. ध्वज} सजावट या बनावट का सुंदर ढंग; सुंदर चाल या ढंग; बैठने-उठने का ढंग, ठवन; शोभा।

धजा *स्त्री.* ध्वजा। पताका। कपड़े की चीर।

धजी *स्त्री.* = धज्जी।

धजीला *वि.* {हिं. धज + ईला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* धजीली} अच्छी धजवाला, सजीला, सुन्दर।

धज्जी *स्त्री.* {सं. धटी} धातु, लकड़ी, कपड़े कागज आदि में से कटकर निकली हुई लंबी पतली पट्टी।
मुहा. धज्जियाँ उड़ाना = टुकड़े-टुकड़े करना; (किसी की) पूरी दुर्गति या खंडन आदि करना।

धट *पुं.* {सं.} तुला, धन का पेड़।

धटिका *पुं.* {*स्त्री.*} एक प्राचीन परिमाण-पाँच सरे के बराबर होता था, पंचेसेरा, कॉपीन, लंगोट, चीर।

धड़ंग *वि.* {हिं. धड़ + अंग} नंगा।

धड़[1] *पुं.* {सं. धर} शरीर में गले के नीचे से कमर तक का सारा भाग; पेड़ का तना।

धड़[2] *स्त्री.* {अनु.} अचानक गिरने या टकराने आदि का गंभीर शब्द।

धड़क *स्त्री.* {अनु. धड़} हृदय के उछलने की क्रिया, भाव या शब्द, हृदय का स्पंदन, धकधकी; आशंका, खटका।
पद बेधड़क = बिना भय या संकोच के।
कोई कार्य करने से पहले होनेवाली हिचक।

धड़कन *स्त्री.* {हिं. धड़क} भय, दुर्बलता आदि के कारण होनेवाला हृदय का स्पंदन, कलेजा धकधक करना।

धड़कना *अ.* {हिं. धड़क} {*भाव.* धड़कन} भय, दुर्बलता आदि के कारण हृदय का स्पंदित होना, हृदय का धकधक करना।
मुहा. कलेजा छाती, जी या दिल धड़कना = भय या आशंका से हृदय का स्पन्दन या धड़कन बढ़ जाना।

धड़का *पुं.* {अनु. धड़} हृदय या कलेजे में होनेवाली धड़क; आशंका, खटका।
मुहा. धड़का खुलना = कोई काम एक-दो बार कर चुकने पर उसके संबंध की हिचक दूर होना।
चिड़ियों को डराने के लिए खेतों में खड़ा किया हुआ पुतला आदि, धोखा।

धड़काना *स.* हिं. 'धड़कन' का *स.*।

धड़की *स्त्री.* = धड़कन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धड़धड़ाना *अ.* {अनु. धड़धड़} भारी चीज के गिरने का-सा धड़धड़ शब्द होना।
पद धड़धड़ाते हुए = बिना किसी प्रकार के भय या संकोच के, बेधड़क।
स. धड़धड़ करना।

धड़प्रतिमा *स्त्री.* {हिं. + सं.} मुंडविहीन प्रतिमा।

धड़ल्ला *पुं.* {अनु. धड़} किसी काम में दिखाई देनेवाली वह फुरती या तेजी, जिसमें कहीं कुछ भी हिचक या रुकावट न हो।
पद धड़ल्ले से = बिना रुके, तेजी से; बेधड़क।

धड़वा *पुं.* {हिं.} एक प्रकार की मैना।

धड़वाई *पुं.* {हिं.} सौदा, माल आदि तौलनेवाला।

धड़ा[1] *पुं.* {सं. धट} बँधी हुई तौल की वह चीज जिसके बराबर तराजू पर कोई चीज तौलते हैं, बाट, बटखरा; तौलने से पहले तराजू के दोनों पलड़ों की बराबर और ठीक स्थिति।
मुहा. धड़ा करना या बाँधना = कोई वस्तु तौलने से पहले आवश्यकतानुसार किसी ओर कुछ भार रखकर तराजू के दोनों पलड़ों को बराबर कर लेना।
चार सेर की एक तौल; तराजू।

धड़ा[2] *पुं.* {पं.} गुट।

धड़ाका *पुं.* {अनु. धड़} जोर से गिरने का 'धड़' शब्द, धमाका।
पद धड़ाके से = जल्दी से, चटपट।

धड़ाधड़ *क्रि. वि.* {अनु. धड़} लगातार 'धड़-धड़' शब्द के साथ; लगातार और जल्दी-जल्दी।

धड़ाम *पुं.* {अनु. धड़} ऊँचाई से कूदने या गिरने का शब्द।

धड़ी *स्त्री.* {सं. धटिका, धटी} पाँच सेर की एक तौल। (पश्चिम); मिस्सी लगाने या पान खाने से ओठों पर पड़नेवाली लकीर।

धड़ेबंदी *स्त्री.* {हिं. धड़ा + बंद} तौलने के समय धड़ा बाँधना; युद्ध के समय दोनों पक्षों का अपना सैनिक बल, शत्रु के सैनिक बल के बराबर करना; गुटबंदी।

धड़बाजी *स्त्री.* {पुं.} गुटबाजी।

धत् *विस्मयादि.* {अनु.} तिरस्कारपूर्वक हटाने या दुतकारने अथवा किसी को तुच्छ या बुरा सूचित करने का शब्द, जैसे धत् तेरे की।

धतकारना *स.* दुतकारना, धिक्कारना, दुरदुराना।

धता *वि.* {अनु. धत} दूर भगाया हुआ।
मुहा. धता करना या बताना = किसी को उपेक्षापूर्वक हटाना या भगाना।

धतिया *वि.* {हिं.} बुरे स्वभाव का, कुटेवी।

धतूरा *पुं.* {सं. धूस्तूर} एक पौधा जिसके फलों के बीज बहुत विषैले होते हैं।

धतूरी *वि.* {हिं. धतूरा} धतूरे से बना हुआ; जिसमें धतूरा मिला हो।

धधकना *अ.* {हिं. धधक} {*भाव.* धधक, *स.* धधकाना} आग की लपट के साथ जलना, दहकना; भड़कना।

धधाना *अ.* धधकना।

धनंजय *पुं.* {सं.} अग्नि, आग; अर्जुन का एक नाम; विष्णु; शरीर में रहनेवाली एक प्रकार की वायु जिससे उसका पोषण होती है।

धनंतर *पुं.* धन्वंतरि।

धन[1] *पुं.* {सं.} रुपया-पैसा, सोना-चाँदी आदि, द्रव्य, दौलत, धन-संपत्ति। (वेल्थ); वह सभी मूल्यवान सामग्री, जो किसी के पास हो और जो खरीदी और बेची जा सकती हो, संपत्ति, जायदाद; एक ही प्रकार की उपयोगी और मूल्यवान वस्तुओं आदि का वर्ग या समूह या बहुत अधिक मात्रा, जैसे गोधन, गजधन, विद्याधन; अत्यंत प्रिय व्यक्ति; गणित में जोड़ का चिह्न, 'ऋण' का उलटा; मूल, पूँजी; *वि.* महत्व आदि के विचार से जो श्रेष्ठ, मान्य या ग्राह्य हो, 'ऋण' का विपर्याय (पॉजिटिव); हिसाब-किताब, लेखे आदि में जो किसी के यहाँ से आया और उसके नाम से जमा हो, 'ऋण' का विपर्याय (क्रेडिट)।

धन[2] *स्त्री.* {सं. धन्या} युवती स्त्री का वधू; नायिका या प्रेमिका; *वि.* धन्य।

धनकर *स्त्री.* {हिं.} कड़ी मिट्टी जिसमें धान खूब होता है, धान का खेत।

धनकुट्टी *स्त्री.* {हिं.} धान कूटने का काम, धान कूटने का यंत्र, एक प्रकार का कीड़ा।

धनकुबेर *पुं.* {सं.} बहुत बड़ा धनवान, अत्यन्त धनी।

धनगर्व *पुं.* {सं.} दौलत का घमंड।

धनचिड़ि *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का पक्षी।

धनदंड *पुं.* {सं.} धनरूप में दंड, जुर्माना।

धनद *वि.* {सं.} धन देनेवाला; *पुं.* कुबेर।

धनदा *स्त्री.* {सं.} देवी का नाम, आश्विन कृष्णा एकादशी का नाम।

धनदाक्षी *स्त्री.* {सं.} लता-करंज, पाटल का वृक्ष।

धनदायिका *स्त्री.* {सं.} एक देवी का नाम।

धनदिशा *पुं.* {हिं.} उत्तर दिशा।

धनदेव *पुं.* {सं.} धन के देवता-कुबेर।

धनधान्य *पुं.* {सं.} धन और अन्न आदि, जो संपन्नता के सूचक माने गए हैं।

धनधाम *पुं.* {सं.} घर-बार और रुपया-पैसा।

धनधारी *पुं.* {सं. धन + धारिन्} कुबेर; बहुत बड़ा अमीर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनपक्ष पुं. {सं.} बही खाते आदि में वह पक्ष या अंग जिसमें आने या दूसरों से मिलनेवाले रुपये आदि लिखे जाते हैं, जमावाला पक्ष (क्रेडिट साइड); वह पक्ष जिसमें पूँजी, लाभ या उपयोगी बातों का विचार या उल्लेख हो।

धनपति पुं. {सं.} कुबेर; धनी।

धनपत्र पुं. {सं.} वह धन जो छपे हुए सरकारी पत्र या कागज के रूप में हो और जो सिक्कों की जगह चलत हो, नोट (करेंसी नोट)।

धनपाश पुं. {सं.} धन का फंदा।

धनराशि *स्त्री.* {सं.} धन का ढेर, बहुत अधिक धन; लेन-देन आदि विशेष कार्यों के लिए देय या प्राप्य नियत धन, रकम (एमाउंट, सम)।

धनवंत *वि.* धनवान।

धनवान, धनवान् *वि.* {सं.} {*स्त्री.* धनवती} धनी, सम्पन्न, अमीर।

धन-संपत्ति *स्त्री.* {सं.} रुपया-पैसा, जमीन-जायदाद आदि मूल्यवान वस्तुएँ जो खरीदी या बेची या सकती हों, दौलत (वेल्थ)।

धनसू पुं. {सं.} धन का संचय।

धनस्थान पुं. {सं.} कुंडली में लग्न से दूसरा स्थान।

धनहर पुं. {सं. *वि.*} धन चुरानेवाला, तस्कर।

धनहीन *वि.* {सं.} निर्धन, गरीब।

धनांक पुं. {सं. धन + अंक} लेन-देन आदि के लिए किसी निश्चित धनराशि का सूचक शब्द, रकम (एमाउंट)।

धना *स्त्री.* {सं. धन्या} पत्नी, वधू; पुं. धनिया।

धनाढ्य *वि.* {सं.} धनवान, अमीर, मालदार।

धनाणु पुं. {सं.} वह अणु जो सदा धनात्मक विद्युत से आविष्ट रहता है (पॉजिटिव)।

धनाना *अ.* {हिं. क्रि.} गाय का गाभिन होना।

धनात्मक *वि.* {सं.} धनवाले तत्व से युक्त; धन पक्ष से संबंध (पॉजिटिव)।

धनाभाव पुं. {सं.} धन का अभाव, धन की कमी।

धनासी *स्त्री.* {सं. धन्या + श्री} पत्नी; प्रेमिका।

धनि *स्त्री.* {सं. धन्या} पत्नी, वधू; *वि.* धन्य।

धनिक पुं. {सं.} धनी मनुष्य; पति।

धनिका *स्त्री.* {सं.} सच्चरित्रा स्त्री, वधू, धनी स्त्री।

धनिया[1] पुं. {सं. धन्या} सुगन्धित पत्तियोंवाला एक छोटा पौधा; इस पौधे के दाने जो मसाले के काम आते हैं।

धनिया[2] पुं. {?} एक प्रकार का धान या उसका चावल।

धनिया[3] *'स्त्री.* {सं. धन्या} युवती स्त्री या वधू; एक छोटा पौधा जिसके फल सुगंधित होते हैं और इसको सुखाकर गमलों में इस्तेमाल होता है।

धनिष्ठा *स्त्री.* {सं.} सत्ताईस नक्षत्रों में से तेईसवाँ नक्षत्र।

धनी[1] *वि.* {सं. धनिन्} धनवान; स्वामी, मालिक; वह जो किसी को अपने आश्रय में रखकर उसकी रक्षा करता हो, रक्षक; पुं. धनवान पुरुष; अधिपति, स्वामी, मालिक; पति।

धनी[2] *स्त्री.* {सं.} युवती स्त्री या वधू।

धनीजोग *वि.* (चेक) जिसे उसका धारक बैंक से भुनवा सके।

धनी-धोरी पुं. मालिक और रक्षक।

धनु पुं. {सं.} धनुष; बारह राशियों में से नवीं राशि, जिसके अंतर्गत मूल और पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र तथा उत्तरषाढ़ा का एक चरण आता है (सैगिटेरिअस)।

धनुआ पुं. {सं. धन्या} {*स्त्री.* धनुई} धनुष, कमान; रुई धुनने की धुनकी।

धनुक पुं. धनुष, इन्द्रधनुष।

धनुर्धर पुं. {सं.} धनुष धारण करनेवाला पुरुष; धनुष चलाने में निपुण व्यक्ति।

धनुर्धारी पुं. धनुर्धर, तीरंदाज।

धनुर्वात पुं. {सं.} एक प्रकार लकवा (रोग); धनुषटंकार।

धनुर्वादन पुं. {सं.} धनुष की डोरी की स्पंदित करना।

धनुर्विद्या *स्त्री.* {सं.} धनुष चलाने की क्रिया या कला, तीर चलाने का हुनर।

धनुर्वेद पुं. {सं.} यजुर्वेद का उपवेद, जिसमें धनुर्विद्या का विवेचन है।

धनुर्यास पुं. {सं.} सोमलता।

धनुवर्जि पुं. {सं.} भिल्लातक, भिलावाँ।

धनुर्वृक्ष पुं. {सं.} अश्वतथ, पीपल का पेड़।

धनुर्वेद पुं. {सं.} धनुर्विद्या बोधक शास्त्र।

धनुष पुं. {सं. धनुस्} बाँस या लोहे के छड़ को कुछ झुकाकर उसके दोनों सिरों के बीच डोरी बाँधकर बनाया हुआ अस्त्र, जिससे तीर चलाते हैं, कमान; दूरी की चार हाथ की एक माप।

धनुषटंकार *स्त्री.* {सं.} वह 'टन' शब्द जो धनुष पर बाण रखकर खींचने से होता है; पुं. व्रण या क्षत के विषाक्त होने के कारण होनेवाला एक भीषण और घातक रोग जिसमें रोगी की गरदन और पीठ अकड़कर धनुष के समान कुछ टेढ़ी हो जाती है (टिटनस)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनुषयज्ञ पुं. {सं.} वह यज्ञ जो राजा जनक ने सीता के स्वयंबर के लिए किया था और जिसमें रामचन्द्र ने शिव का धनुष तोड़कर सीता को प्राप्त किया था।

धनुस पुं. = धनुष; तीर चलाने का अस्त्र, कमान, बारह राशियों में से नवीं राशि, चार हाथ की एक नाप।

धनुहाई *स्त्री.* {हिं. धनु + हाई (प्रत्य.)} धनुष से होनेवाली लड़ाई।

धनुही *स्त्री.* {हिं. धनु + ही (प्रत्य.)} लड़कों के खेलने का छोटा धनुष।

धन्न *वि.* धन्य।

धन्नी *स्त्री.* {हिं.} गाय-बैल की एक जाति, घोड़े की एक जाति।

धन्नासेठ पुं. {हिं. धन + सेठ} बहुत बड़ा धनी, परम धनाढ्य। (परिहास और व्यंग्य)

धन्य *वि.* {सं.} {*स्त्री.* धन्या} साधुवाद, प्रशंसा या बड़ाई के योग्य; पुण्यवान, सुकृति।

धन्यवाद पुं. {सं.} साधुवाद, प्रशंसा; उपहार, अनुग्रह आदि के बदले में कृतज्ञता प्रकट करने का शब्द।

धन्या *स्त्री.* {सं.} पत्नी, जोरू; धाय, दाई; छोटा आँवला, धनिया, मनु की एक कन्या का नाम।

धन्वंतरि पुं. {सं.} एक देवता जो आयुर्वेद के सबसे बड़े आचार्य और देवताओं के वैद्य माने जाते हैं (कहते हैं कि समुद्र-मंथन के समय समुद्र से निकले थे)।

धन्वा पुं. {सं. धन्वन्} धनुष; कमल, चाप।

धन्वाकार *वि.* {सं.} धनुष के आकार का, आधी गोलाई के रूप में झुका हुआ।

धपना[1] *अ.* {सं. धावन, या हिं. धाप} तेजी से आगे बढ़ना, झपटना।

धपना[2] *स.* {हिं. धप्पा} मारना, पीटना, झपटना।

धप्पड़ पुं. = थप्पड़।

धप्पा पुं. {धप से अनु.} थप्पड़; धौल, धनि।

धबला पुं. {हिं.} ढीला पहनावा।

धब्बा पुं. {देश.} किसी तल पर पड़ा हुआ भद्दा चिह्न या निशान, दाग; कलंक, लांछन।

मुहा. नाम में धब्बा लगाना = कीर्ति नष्ट करनेवाला काम करना।

धमंकना *स.* {?} नष्ट करना।

धम *स्त्री.* {अनु.} भारी चीज के गिरने का शब्द, धमाका।

धमक *स्त्री.* {अनु. धम} भारी वस्तु गिरने का शब्द; चलने से पृथ्वी पर होनेवाला कंपन और शब्द; आघात आदि से होनेवाला कम्प।

धमकना *अ.* {हिं. धमक} 'धम' शब्द करते हुए गिरना, धमाका करना।

मुहा. आ धमकना = अवांछित रूप से आ पहुँचना।

(सिर) दर्द करना।

धमकाना *स.* {हिं. धमक} धमकी देते हुए डराना, भय दिखाना।

धमकी *स्त्री.* {हिं. धमकाना} दंड देने या हानि पहुँचाने का भय दिखाना।

मुहा. धमकी में आना = किसी के डराने से डरकर कोई काम कर बैठना।

धमगजर पुं. {देश.} उपद्रव, उत्पात।

धमधमाना *अ.* {अनु. धम} 'धमधम' शब्द उत्पन्न करना।

धमना *क्रि.* {हिं. सं.} धौंकना, फूँकना।

धमनी *स्त्री.* {सं.} शरीर में की वे नलियाँ जिनके द्वारा हृदय से चलकर रक्त सारे शरीर में पहुँचता या फैलता है (आर्टरी); (सुश्रुत में ये 24 कही गई हैं, पर इनकी हजारों शाखाएँ सारे शरीर में फैली हुई हैं); वह नील जिसमें से हृदय का शुद्ध रक्त निकलकर शरीर में फैलता है, नाड़ी।

धमनीय *वि.* {सं.} धमनी-संबंधी।

धमाका पुं. {अनु.} भारी वस्तु के गिरने का शब्द; बंदूक, तोप आदि छूटने का शब्द; हाथी पर से चलाई जानेवाली एक प्रका की बड़ी तोप।

धमाकेदार *वि.* धमाका उत्पन्न करनेवाला, शोरगुल से भरा।

धमा-चौकड़ी *स्त्री.* {अनु धम + हिं. चौकड़ी} उछल-कूद; उपद्रव।

धमाधम *क्रि. वि.* धमधम शब्द करते हुए; लगातार धमधम शब्द के साथ।

धमाना *स.* {?} जोर से हवा करना या भरना, धौंकना।

धमार *स्त्री.* {अनु.} उछलकूद, धमा-चौकड़ी; एक विशेष प्रकार की कला या युक्ति से साधुओं का दहकती हुई आग पर चलना; पुं. एक प्रकार का गीत।

धम्मन पुं. {हिं.} प्रकार की घास।

धम्मिल *स्त्री.* {सं.} चोटी, जूड़ा।

धरंता *वि.* {हिं.} पकड़नेवाला, धरनेवाला।

धर[1] *वि.* {सं.} रखने या धारण करनेवाला, जैसे मुरलीधर, धनुर्धर; अपने ऊपर धारण करके भार सँभालनेवाला, जैसे धरणीधर; देखरेख या रक्षा करनेवाला, रक्षक; पुं. पर्वत, पहाड़, कच्छप जो पृथ्वी को अपने ऊपर धारण किए हुए है; शरीर, बदन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर² *स्त्री.* {हिं. धरना} पकड़ने की क्रिया या भाव, जैसे धर-पकड़।

धरक *स्त्री.* धड़क।

धरका *पुं.* धड़का।

धरकार *पुं.* {?} एक अर्धसभ्य जाति तो बाँसों की टोकरियाँ आदि बनाती है।

धरणि *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी।

धरणिधर *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी को उठाए रखनेवाला कच्छप; पर्वत; विष्णु; शेषनाग।

धरणी¹ *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी।

धरणी² *पुं.* {सं. धारणा} मन की धारणा-युक्ति या वृत्ति।

धरणीधर *पुं.* {सं.} शेषनाग।

धरणीश्वर *पुं.* {सं.} शिव, विष्णु, नृप।

धरता¹ *पुं.* {हिं. धरना} किसी के रुपयों का देनदार, ऋणी; किसी कार्य का भार लेनेवाला; ऋण, कर्ज।

धरता² *वि.* {हिं. धारण} धारण करनेवाला।

धरती *स्त्री.* {सं. धरित्री} पृथ्वी।

धरधर *पुं.* धराधर।

धरधरा *पुं.* {अनु.} धड़कन।

धरन *स्त्री.* {हिं. धरना} धरने की क्रिया, भाव या ढंग; अपनी बात पर अड़े रहना, हठ, जिद, टेक; छत या पाटन का बोझ सँभालने के लिए दीवारों या खम्भों पर आड़ा रखा हुआ लम्बा मोटा शहतीर बड़ी कड़ी; गर्भाशय को धारण करनेवाली उसके नीचे की नस; गर्भाशय; हठ, जिद।

धरनहार *वि.* {हिं. धरना + हार (प्रत्य.)} धारण करनेवाला; पकड़नेवाला।

धरना *स.* {सं. धारण} {प्रे. धराना, धरवाना} पकड़ना, थमना; लेना, ग्रहण करना; स्थित या स्थापित करन, रखना।

मुहा. धरा रह जाना = काम न आना।

अधिकार या रक्षा में लेना; धारण करना, पहनना; किसी का पल्ला पकड़ना, आश्रय लेना; अपनी बात पर बड़े रहना, हठ या जिद करना; फैलनेवाली वस्तु का किसी दूरी वस्तु में लगना या उस पर अपना प्रभाव डालना, जैसे आग धरना; गिरवी, रेहन या बंधक रखना; *पुं.* किसी से अपना कोई काम कराने का निश्चय करके उसके पास या कहीं अड़कर बैठना, जैसे कोई मन्नत मानकर देवस्थान में धरना देना; किसी से अपनी कोई माँग पूरी कराने या उसे कोई अनुचित काम करने से रोकने के लिए उसके दरवाजे पर अड़कर बैठना, जैसे शराब की दुकान पर धरना देना (पिकेटिंग)।

धरनी¹ *स्त्री.* धरणी।

धरनी² *स्त्री.* {हिं. धरना} हठ, टेक।

धर-पकड़ *स्त्री.* {हिं. धरना + पकड़ना} अपराधी शत्रु आदि को पकड़ने की क्रिया या भाव।

मुहा. धर-पकड़कर = जबरदस्ती।

बीच-बचाव।

धर्म *पुं.* धर्मा।

धरमसार *स्त्री.* {सं. धर्मशाला} धर्मशाला, सदावर्त।

धरमाई *स्त्री.* {सं. धर्म + हिं. आई (प्रत्य.)} धार्मिक होने का भाव, धार्मिकता।

धरमी *वि.* {सं. धर्मिन्} धर्म का आचरण करनेवाला, धार्मिक; किसी धर्म या मत का अनुयायी।

धरषना *अ.* सं. धरसना।

धरसना *अ.* {सं. धर्षण} दब जाना; डर या सहम जाना; *स.* दबाना; अपमानित करना।

धरसनी *स्त्री.* धर्षणी।

धर-हर *पुं.* धर-पकड़; बीच-बचाव; रोक-थाम।

धरहरना *अ.* धकड़ना; धड़धड़ाना।

धरहरा *पुं.* {सं. धवलगृह} खंभे की तरह की वह बहुत ऊँची इमारत जिस पर चढ़ने के लिा अंदर से सीढ़ियाँ बनी होती हैं, धौलहर, मीनार; 'जलस्तंभ'।

धरा *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी, जमीन; संसार, दुनिया।

धराऊ *वि.* {हिं. धरना + आऊ (प्रत्य.)} जो दुर्लभ होने के कारण केवल विशेष अवसरों के लिए रखा रहे; बहुत दिनों का रखा हुआ, पुराना जैसे धराऊ माल।

धरातल *पुं.* {सं.} पृथ्वी, धरती; वह तल जिसमें केवल लंबाई-चौड़ाई हो, मोटाई आदि न हो, पृष्ठ, तल, सतह; क्षेत्रफल रकबा।

धरातलीय *वि.* {सं.} धरातल-संबंधी।

धराधर *पुं.* {सं.} शेषनाग; पर्वत, पहाड़; विष्णु।

धराधरन *पुं.* धराधर।

धराधार *पुं.* {सं.} शेषनाग।

धरापुत्र *पुं.* {सं.} मंगलग्रह।

धराशायी *वि.* {सं. धराशायिन्} {*स्त्री.* धराशायिनी} जमीन पर गिरा, पड़ा या लेटा हुआ।

धरित्री *स्त्री.* {सं.} धरती, पृथ्वी।

धरी *स्त्री.* {हिं. धार} नदी की धारा; पानी की धार; वर्षा की झड़ी; *स्त्री.* धड़ी।

धरेजा *पुं.* {हिं. धरना = रखना + एजा (प्रत्य.)} किसी स्त्री को पत्नी की तरह घर में रखने की क्रिया या प्रथा; *स्त्री.* धरेल।

धरेल (ली) *स्त्री.* {हिं. धरना} उपपत्नी, रखेली।

धरेला (ली) *पुं.* {हिं.} वह पति जिसको कोई स्त्री बिना ब्याह किए ग्रहण कर ले।

धरेवा *पुं.* करेवा (विवाह का एक प्रकार)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरैया *वि.* {सं. धारण, हिं. धरन + ऐसा (प्रत्य.)} धारण करनेवाला; धरनेवाला या पकड़नेवाला; *पुं.* शेषनाग, कच्छप आदि जो पृथ्वी को अपने ऊपर उठाए रखनेवाले माने जाते हैं।

धरोत्तम *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।

धरोहर *स्त्री.* {हिं. धरना} जरूरत पर काम आने के लिए किसी के पास रखी हुई दूसरे की वस्तु या द्रव्य, थाती, अमानत।

धर्ता *पुं.* {सं. धर्तृ} धारण करनेवाला; अपने ऊपर भार लेनेवाला।

धर्म *पुं.* {सं.} किसी वस्तु या व्यक्ति में सदा रहनेवाली उसकी मूल वृत्ति, प्रकृति, स्वभाव, मूल गुण; गुण, वृत्ति; स्वर्ग आदि शुभ फल देनेवाले कार्य; किसी जाति, वर्ग, पद आदि के लिए निश्चित किया हुआ कार्य या व्यवहार, कर्तव्य, जैसे क्षत्रिय का धर्म, सेवक का धर्म; सदाचार; पुण्य, सत्कर्म।

मुहा. धर्म कमाना = धर्म का या अच्छा काम करके उसका शुभ फल संचिंत करना; *धर्म बिगाड़ना* = धर्म भ्रष्ट करना; स्त्री का सतीत्व नष्ट करना।

परलोक, ईश्वर आदि के संबंध में विशेष प्रकार का विश्वा और उपासना की विशेष प्रणाली; मत, संप्रदाय, पंथ, मजहब (रेलिजन); नैतिक व्यवस्था, नीति, कानून, जैसे हिन्दू धर्मशास्त्र; विवेक, ईमान।

मुहा. धर्म लगती कहना = सच कहना, उचित बात कहना। *धर्म से कहना* = सच कहना।

धर्मकर्म *पुं.* {सं.} किसी धर्मग्रंथ में बलताए हुए आवश्यक कृत्य।

धर्मक्षेत्र *पुं.* {सं.} कुरुक्षेत्र, भारतवर्ष (जो धर्म कार्यों के लिए विशिष्ट क्षेत्र माना गया है)।

धर्मग्रंथ *पुं.* {सं.} वह ग्रंथ या पुस्तक जिसमें धर्म की शिक्षा हो; वह ग्रंथ जो किसी धर्म में मुख्य और उसका आधार माना जाता हो, आगम (स्क्रिप्चर)।

धर्मागम *पुं.* {सं.} धर्मशास्त्र।

धर्मचक्र *पुं.* {सं.} महात्मा बुद्ध का धर्म प्रकार जो काशी से आरंभ हुआ था।

धर्मचर्या *स्त्री.* {सं.} धर्म का आचरण और पालन।

धर्मचारी *वि.* {सं. धर्मचारिन्} {*स्त्री.* धर्मचारिणी} धर्म के अनुसार आचरण करनेवाला।

धर्मच्युत *वि.* {सं.} {*भाव.* धर्मच्युति} अपने धर्म से गिरा या हटा हुआ।

धर्मज्ञ *वि.* {सं.} धर्म जाननेवाला।

धर्मणा *क्रि. वि.* {सं.} धर्म के विचार से या के अनुसार।

धर्मतः *क्रि. वि.* धर्मणा।

धर्मध्वज *पुं.* {सं.} धर्म का आडंबर खड़ा करके स्वार्थ साधनेवाला मनुष्य।

धर्मनिरपेक्ष *वि.* {सं.} जो किसी जाति के धार्मिक नियमों से बँधा न हो।

धर्मनिरपेक्षता *स्त्री.* {सं.} धर्मनिरपेक्ष होने की अवस्था या भाव।

धर्मनिष्ठ *वि.* {सं.} {संज्ञा. धर्मनिष्ठा} धर्म में निष्ठा या श्रद्धा रखनेवाला, धार्मिक धर्मपरायण।

धर्मपत्नी *स्त्री.* {सं.} धर्म की रीति से ब्याही हुई स्त्री, विवाहिता स्त्री।

धर्मपिता *पुं.* {सं.} वह जो धार्मिक भाव से किसी का पिता बना गया हो, वास्तविक पिता न हो।

धर्मपुत्र *पुं.* {सं.} वह जो धार्मिक भाव से किसी का पिता बन गया हो, वास्तविक पिता न हो।

धर्मप्रधान *वि.* {सं.} धार्मिक नियमों पर चलनेवाला।

धर्मप्राण *वि.* {सं.} धर्म को प्राणों के समान प्रिय समझनेवाला, बहुत बड़ा धार्मिक।

धर्मबुद्धि *स्त्री.* {सं.} धर्म-अधर्म या भले-बुरे का विचार।

धर्मभीरु *वि.* {सं.} जिसे धर्म का भय हो, अधर्म से डरनेवाला।

धर्मयुद्ध *पुं.* {सं.} वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार का अधर्म या अन्याय न हो; धर्म के लिए या किसी बहुत बच्छे उद्देश्य से किया जानेवाला युद्ध (क्रूसेड)।

धर्मराज *पुं.* {सं.} धर्म का पालन करनेवाला राजा; युधिष्ठिर; यमराज; न्यायाधीश।

धर्मराय *पुं.* धर्मराज।

धर्मलिपि *स्त्री.* {सं.} वह लिपि जिसमें किसी धर्म की मुख्य धर्म पुस्तक लिखी हो, जैसे अरबी मुसलमानों की धर्मलिपि है; स्तंभों पर खुदे हुए सम्राट अशोक के प्रज्ञापन।

धर्मलुप्ता उपमा *स्त्री.* {सं.} उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें समान धर्म का कथन न हो।

धर्मवीर *पुं.* {सं.} वह जो धर्म-संबंधी कार्य करने में साहसी हो।

धर्मशाला *स्त्री.* {सं.} यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मार्थ बना हुआ मकान।

धर्मशास्त्र *पुं.* {सं.} {*वि.* धर्मशास्त्री} किसी धम्र के वे शास्त्र या ग्रंथ, जिनमें समाज के शासन और व्यवस्था से संबंध रखनेवाले नैतिक और आचारिक नियमों का उल्लेख हो; किसी धर्म के अनुयायियों की निजी विधि या नैतिक नियम जो उनके सामाजिक, जातीय और धार्मिक आचार-विचार आदि मर्यादित रखते हैं, व्यक्तिगत विधि, जैसे हिन्दू धर्मशास्त्र (पर्सनल लॉ)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मशास्त्री पुं. {सं. धर्मशास्त्रिन्} वह जो धर्मशास्त्र का ज्ञाता या पंडित हो।
धर्मशील *वि.* {सं.} {*भाव.* धर्मशीलता} जिसकी धर्म में प्रवृत्ति हो, धार्मिक।
धर्मसंकट पुं. {सं.} ऐसी स्थिति जिसमें दोनों पक्षों में से कोई भी पत्र ग्रहण करने में कुछ-न-कुछ संकट या हानि सहनी पड़े, उभयसंकट (डिप्लेम्मा)।
धर्मसभा *स्त्री.* {सं.} न्यायालय।
धर्मांध *वि.* {सं.} {*भाव.* धर्मांधता} जो धर्म के नाम पर अंधा हो रहा हो और उसके लिए बुरे से बुरा काम करे (फैनेटिक)।
धर्मांधता *स्त्री.* {सं.} धर्मांध होने की अवस्था या भाव।
धर्माचार्य पुं. {सं.} किसी धर्म का वह आचार्य या गुरु जो लोगों को उस धर्म के अनुसार चलने की शिक्षा देता हो।
धर्मात्मा *वि.* {सं. धर्मात्मन्} धर्मशील।
धर्माधर्म पुं. {सं.} पुण्य और पाप।
धर्माधिकरण पुं. {सं.} न्यायालय।
धर्माधिकारी पुं. {सं. धर्माधिकारिन्} धर्म और अधर्म की व्यवस्था देनेवाला, न्यायाधीश; किसी राजा कि ओर से दान के प्रबंध के लिए नियुक्त व्यक्ति, दानाध्यक्ष।
धर्माध्वन पुं. {सं.} न्याय का मार्ग।
धर्मानुगत *वि.* {सं.} धर्मयुक्त, धार्मिक।
धर्मानुयायी *वि.* {सं.} धर्म के अनुसार चलनेवाला।
धर्माध्यक्ष पुं. 'धर्माधिकारी'।
धर्मार्थ *क्रि. वि.* {सं.} केवल धर्म या पुण्य के विचार से, परोपकार के लिए; पुं. धर्म के विचार से कुछ करने का उद्देश्य (रेलिजस पर्पज); वह दान या कोई काम जो केवल धार्मिक दृष्टि या विचार से किया जाए।
धर्मालीक *वि.* {सं.} कपटी, पाखंडी।
धर्मावतार पुं. {सं.} साक्षात् धर्म का रूप, परम धर्मशील, अत्यंत धर्मात्मा।
धर्मावलंबी *वि.* {सं. धर्मावलंबिन्} किसी धर्म को माननेवाला।
धर्मासन पुं. {सं.} न्यायाधीश का आसन।
धर्मिष्ठ *वि.* {सं.} {*भाव.* धर्मिष्ठता} धर्मशील, धार्मिक, पुण्यात्मा।
धर्मी *वि.* {सं. धर्मिन्} {*स्त्री.* धर्मिणी} जिसमें कोई धर्म या गुण हो; धार्मिक; कोई मत य धर्म माननेवाला; पुं. गुण या धर्म का आश्रय (पदार्थ)।
धर्मेश पुं. {सं.} धर्मराज, यम।
धर्मोन्मत्त *वि.* 'धर्मांध'।
धर्मोन्माद पुं. {सं.} वैद्यक के अनुसर एक प्रकार का उन्माद या पागलपन जिसमें मनुष्य दिन-रात धर्म-संबंधी कार्यों और विचारों में मग्न रहता है; मनुष्य की वह मानसिक अवस्था जिसमें वह धर्म के नाम पर अन्धा होकर भले-बुरे का विचार छोड़ देता है (थियोमेनिया)।
धर्मोपदेशक पुं. {सं.} धर्म-संबंधी उपदेश-देनेवाला।
धर्षकारिणी *स्त्री.* {सं.} असली, व्यभिचारिणी स्त्री।
धर्षण पुं. {सं.} {*वि.* धर्षक, धर्षणीय, धर्षित} अपमान; दबोचना; आक्रमण; दबाना या दमन करना।
धर्षणी *स्त्री.* {सं.} व्यभिचारिणी, कुलटा।
धव पुं. {सं.} औषधि के काम का एक जंगली पेड़; पति, स्वामी, जैसे माधव; पुरुष, मर्द।
धवनी *स्त्री.* धौंकनी।
धवर *वि.* {सं. धवल} सफेद, उजला।
धवरी *स्त्री.* {हिं. धवरा} सफेद आय; सफेद उजला; निर्मल, सुंदर; पुं. बैल।
धवलता *स्त्री.* {हिं.} सफेदी, उजलापन।
धवलना *स.* {सं. धवल} उज्ज्वल या स्वच्छ करना, चमकाना।
धवलश्री *स्त्री.* {सं.} एक रागिनी।
धवला *वि.* {सं.} सफेद उजली; *स्त्री.* सफेद गाय।
धवलाई *स्त्री.* {सं. धवलता} सफेदी।
धवलगिरि पुं. {सं. धवल + गिरि} हिमालय पर्वत की एक प्रसिद्ध चोटी।
धवलित *वि.* {सं.} सफेद, उजला; उज्ज्वल।
धवलिमा *स्त्री.* {सं.} सफेदी; उज्ज्वलता
धवली *स्त्री.* {सं.} सफेद गाय।
धवलोत्पल पुं. {सं.} कुमुद, एक फूल का नाम।
धवाणक पुं. {सं.} वायु, हवा।
धवाना[1] *स.* {हिं. 'धाना' का प्रे.} किसी को धाने या दौड़ने में प्रवृत्त करना, दौड़ना।
धवाना[2] *अ.* {सं. ध्वनि} ध्वनि या शब्द होना; ध्वनित होना।
धस पुं. {हिं.} जलादि में प्रवेश, गोता, डुबकी, भुर-भुरी मिट्टी।
धसक[1] *स्त्री.* {अनु.} सूखी खाँसी में गले का ठनठन शब्द; सूखी खाँसी।
धसक[2] *स्त्री.* {हिं. धसकना} धसकने की क्रिया या भाव; ईर्ष्या, डाह।
धसकना *अ.* {हिं. धँसना} नीचे की ओर धँसना या बैठना; ईर्ष्या करना; डरना; दहलना।
धसना *अ.* {सं. ध्वंसन} ध्वस्त या नष्ट होना, मिटना; *स.* नष्ट करना, मिटाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धसमसना *अ.* धँसना।

धसमसाना *अ.* धँसना; *स.* = धँसाना।

धाँगड़ *पुं.* {हिं.} एक अनार्य जंगली जाति।

धाँधना *स.* {देश.} बंद करना; बहुत अधिक खा लेना।

धाँधली *स्त्री.* {हिं. धाँधना + ली (प्रत्य.)} उपद्रव, उत्पात, शरारत; बहुत अधिक जल्दी; स्वेच्छाचारिता; जबरदस्ती अपनी गलत बात आगे या ऊपर रखना।

धाँस *स्त्री.* {अनु.} सुँघनी मिर्च आदि की वायु में मिली हुई उग्र गंध।

धाँसना *क्रि.* {हिं. अ.} पशुओं का खाँसना।

धाँसी *स्त्री.* {हिं.} घोड़े की खाँसी।

धा¹ *प्रत्य.* {सं.} तरह, भाँति, जैसे बहुधा, नवधा आदि।

धा² *पुं.* {सं. धैवत} संगीत में धैवत स्वर का संकेत या सूक्ष्म रूप, ध; मृदंग, तबले आदि एक बोल।

धाई *स्त्री.* 'दाई'; धाय।

धाई *पुं.* {हिं.} धव का वृक्ष।

धाक *स्त्री.* {अनु.} रोब, आतंक।

मुहा. धाक जमना या बँधना = रोब या दबदबा होना।

ख्याति, प्रसिद्धि, शोहरत।

धाकड़ *पुं.* {हिं. धाक} जिसकी बहुत अधिक धाक बँधी हो; बहुत प्रबल या बलवान, विशेष शक्तिशाली।

धाकना *अ.* {हिं. धाक + ना (प्रत्य.)} धाक या रोब जमाना।

धाकरा *पुं.* धाकड़।

धागा *पुं.* {हिं. तागा} बटा हुआ सूत, डोरा, तागा।

धाड़ *पुं.* {हिं. धार} डाकुओं का आक्रमण; जत्था, झुंड, दल; सेना, फौज।

धाड़ी *पुं.* {हिं.} बड़ा भारी डाकू।

धाता *पुं.* {सं. धातृ} ब्रह्मा; विष्णु; महादेव; विधाता; *वि.* पालन करनेवाला, पालक; रक्षा करनेवाला, रक्षक; धारण करनेवाला, धारक।

धातु *स्त्री.* {सं.} वह अपारदर्शक चमकीला विशुद्ध खनिज द्रव्य जिससे बरतन, तार, गहने, शस्त्र आदि बनते हैं, जैसे सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा आदि; शरीर को बनाए रखनेवाले भीतरी तत्व या पदार्थ जो वैद्यक के अनुसर सात हैं–रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र; वीर्य; *पुं.* भूत, तत्व; क्रिया का मूल रूप, जैसे संस्कृत में भू, कृ, धृ आदि।

धातुपुष्ट *वि.* {सं.} (ओषधि) जिससे वीर्य बढ़े और गाढ़ा हो।

धातुमल *पुं.* {सं.} खनिज पदार्थों या धातुओं को गलाने पर उनमें से निकलनेवाली मैल (स्लैग)।

धातृका *स्त्री.* {सं. धातृ} वह जो रोगियों की सेवा-शुश्रूषा, बालकों के पालन-पोषण और प्रसूता की देख-रेख की विद्या जानती और ये सब काम करती हो, दाई (नर्स)।

धात्र *पुं. वि.* धाता।

धात्री *पुं.* {सं.} माता, माँ; बच्चे को दूध पिलाने और उसका लालन-पालन करनेवाली स्त्री, धाय, दाई; गायत्री स्वरूपिणी भगवती; गंगा; पृथ्वी; गाय, गौ।

धात्रीविद्या *स्त्री.* {सं.} स्त्री को प्रसव कराने और बच्चे पालने आदि की विद्या।

धात्वर्थ *पुं.* {सं.} किसी शब्द का धातु से निकलनेवाला मूल अर्थ।

धात्विकी *स्त्री.* {सं.} विज्ञान की वह शाखा जिसमें धातुओं के रासायनिक तत्वों का अध्ययन किया जाता है।

धात्वीय *स्त्री.* {सं.} धातु-संबंधी।

धान *पुं.* {सं. धान्य} एक पौधा जिसके बीजों में से चावल निकलते हैं, शालि; अन्न, अनाज; किसी का दिया हुआ भोजन।

धानक *पुं.* धानुक।

धानकी *पुं.* {हिं.} धनुर्धर, कामदेव।

धान-पान *वि.* {हिं. धान + पान} दुबला-पतला; कोमल, नाजुक।

धाना *अ.* {सं. धावन} दौड़ना; दौड़-धूप या प्रयत्न करना; *स.* ध्याना।

धानाचूर्ण *पुं.* {सं.} सक्तु, सत्तू।

धानी¹ *स्त्री.* {सं.} वह जिसमें कोई चीज रखी जाए; स्थान, जगह, जैसे राजधानी।

धानी² *स्त्री.* {सं. धाना} हलका हरा रंग; *वि.* हलके रंग का।

धानी³ *स्त्री.* {सं. धाना} भूना हुआ जौ या गेहूँ।

धानी⁴ *स्त्री.* धान्य।

धानुक *पुं.* {सं. धानुष्क} धनुर्धर; रुई धुननेवाला, धुनियाँ; एक अर्द्धसभ्य या जंगली जाति।

धानुष्का *स्त्री.* {सं.} अपामार्ग, चिचड़ा।

धानुष्य *पुं.* {सं.} बाँस।

धान्यारि *पुं.* {सं.} मूषक, चूहा।

धान्यास्थि *पुं.* {सं.} तुष, भूसी।

धान्य *पुं.* {सं.} धान; अन्न।

धान्यागार *पुं.* {सं.} वह भंडारगृह, जिसमें अन्न रखा जाता है।

धाप¹ *पुं.* {हिं. टप्पा} दूरी की एक अनिश्चित नाप जो प्रायः चौथाई से आधा माल तक होती है; लम्बा-चौड़ा मैदान।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धाप² *स्त्री.* {हिं. धापना} तृप्ति, संतोष।
धापना¹ *अ.* {सं. तर्पण} संतुष्ट या तृप्त होना, अघाना; *स.* संतुष्ट या तृप्त करना।
धापना² *अ.* {सं. धावन} दौड़ना।
धाबा *पुं.* {देश.} अटारी; कच्ची या पक्की रसोई बिकने का स्थान, बासा (पश्चिम)।
धा-भाई *पुं.* दूध-भाई।
धाम *पुं.* {सं. धामन्} मकान, घर; किसी चीज के रहने का स्थान, जैसे शोभाधाम; शरीर; शोभा; देवस्थान या पुण्य स्थान, पवित्र तीर्थ, जैसे काशीधाम, वैद्यनाथ धाम।
धामधा *पुं.* {सं.} पालक, रक्षक।
धामनिधि *पुं.* {सं.} भानु, सूर्य।
धामा *पुं.* {हिं.} भोजन का नौता।
धामिन *स्त्री.* {हिं. धाना = दौड़ना} एक प्रकार का साँप, जो बहुत तेज दौड़ता है।
धाय *स्त्री.* {सं. धात्री} दूसरे के बालक को दूध पिलाने और उसका पालन-पोषण करनेवाली स्त्री, धात्री, प्रदेश।
धाप्य *पुं.* {सं.} पुरोहित।
धार¹ *पुं.* {सं.} औषध के काम के लिए इकट्ठा किया हुआ वर्षा का जल; उधार, ऋण; प्रांत प्रदेश।
धार² *स्त्री.* {सं. धारा} पानी आदि के गिरने या बहने का क्रम, प्रवाह।
मुहा. धार चढ़ाना = देवी, देवता आदि पर दूध, जल आदि चढ़ाना।
पानी का सोता; जोर की वर्षा; धारदार हथियार का तेज सिरा या किनारा, बाढ़; तलवार; किनारा, सिरा; सेना, फौज; समूह; रेखा, लकीर; ओर, दिशा; पहाड़ की छोटी श्रेणी; *स्त्री.* धाड़।
धारक *वि.* {सं.} धारण करनेवाला; रोकनेवाला; उधार लेनेवाला; कोई चीज कहीं लेकर जानेवाला, जैसे इस हुंडी या चेक के रुपए धारक को दे दिए जाएँ (बेयरर)।
धारका *स्त्री.* {सं.} स्त्री की योनि।
धारण *पुं.* {सं.} थामना, रखना या अपने ऊपर लेना, पहनना; अंगीकार करना; ऋण लेना।
धारणा *स्त्री.* {सं.} धारण करने की क्रिया या भाव; मन में धारण करने, रखने, लाने आदि की शक्ति, बुद्धि समझ; किसी विषय में मन में होनेवाला कोई विचार या मत (कंसेप्शन) याद, स्मृति; योग के आठ अंगों में से एक।
धारणी *स्त्री.* {सं.} नाड़ी, श्रेणी, पंक्ति, पृथ्वी।
धारय *वि.* {सं.} धारण करनेवाला।
धिकाना *क्रि.* {हिं. सं.} आँच पर गरम करना।
धिमचा *पुं.* {हिं.} इमली।
धिषण *पुं.* {सं.} बृहस्पति, ब्रह्म, शिक्षक, गुरु।
धिषणा *स्त्री.* {सं.} बुद्धि, प्रशंसा, पत्थर, पृथ्वी।
धीरोदात्त *पुं.* {सं.} दयालु, बलवान, धीर और योद्धा नायक (साहित्य)।
धीरोद्धत *पुं.* {सं.} बहुत प्रचंड, चंचल और अपने गुणों का आप वर्णन करनेवाला नायक।
धीवर *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* धीवरी} मछली पकड़ने और बेचने का काम करनेवाली एक जाति, मछुआ, मल्लाह।
धी *स्त्री.* {सं.} बुद्धि, ज्ञान, मन, मर्म।
धीति *स्त्री.* {सं.} प्यास, आदर, आराधना।
धीरू *पुं.* {हिं.} हंस पक्षी।
धीरट *वि.* {सं.} कातर, डरपोक।
धुँगार *स्त्री.* {सं. धूम्र + आधार} {*क्रि.* धुँगारना} तड़का, छौंक।
धुंध *स्त्री.* {सं. धूम + अंध} हवा में मिली हुई धूल या भाप के कारण होनेवाला अँधेरा; हवा में उड़ती धूल; आँख का एक रोग जिसमें चीजें धुँधली दिखाई देती हैं।
धुंधकार *पुं.* {सं. दुंदुभि?} गड़गड़ाहट; गर्जना, गरज।
धुंधर *स्त्री.* {हिं. धुंध} हवा में उड़ती हुई धूल; अँधेरा।
धुँधला *वि.* {हिं. धुंध + ला (प्रत्य.)} {*क्रि.* धुँधलाना; *भाव.* धुँधलापन} कुछ-कुछ काला या अँधेरा-सा; जो साफ न दिखाई दे, अस्पष्ट।
धुँधलाई *स्त्री.* धुँधलापन।
धुँधाना *अ.* {हिं. धुंध + आना (प्रत्य.)} धुँआ देना।
धुँधुआना *अ.*, सं. धुँधाना।
धुंधुरी *स्त्री.* {हिं. धुंध} {*वि.* धुंधरित} गर्द, गुबार या धुएँ से होनेवाला अँधेरा।
धुँधुवाना *अ.*, सं. धुँधाना।
धुअ *पुं.* ध्रुव।
धुआँ *पुं.* {सं. धूम्र} किसी वस्तु के चलने से निकलनेवाली काली भाप।
धुआँधार *वि.* जोरदार।
धुआँना *अ.* {हिं. धुआँ + ना (प्रत्य.)} दूध, पकवान आदि का, धुआँ लगने के कारण, स्वाद और गंध बिगड़ जाना।
धुआँगंध *स्त्री.* {हिं. धुआँ + गंध} धुएँ की-सी गंध; *स्त्री.* अपच में आनेवाला डकार, धूम।
धुआँस *स्त्री.* {हिं. धूर + माष} उरद का आटा।
धुआ *पुं.* {?} शव, लाश।
धुकड़-पुकड़ *स्त्री.* {अनु.} भय आदि से चित्त की व्याकुलता या अस्थिरता, घबराहट; आगा-पीछा, असमंजस।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धुकधुकी *स्त्री.* {धुकधुक से अनु.} पदिक या जुगनूँ नाम का गहना; धकधकी।

धुकना[1] *अ.* {हिं. झुकना} {*स.* धुकाना} नीचे झुकना, नवना; गिर पड़ना; झपटना, टूट पड़ना।

धुकना[2] *स.* {सं. धूम + करण} धूनी देना।

धुकरना *अ.* {अनु.} शब्द करना।

धुकर-पुकर *स्त्री.* {अनु.} दिल में होनेवाली खलबली।

धुकार, धुकारी *स्त्री.* {धु से अनु.} नगाड़े का शब्द; कोई घोर शब्द।

धुक्कन *स्त्री.* {अनु.} नगाड़े का शब्द; कोई घोर शब्द।

धुक्करना *अ.* {अनु.} घोर शब्द करना।

धुज, धुजा *स्त्री.* ध्वजा।

धुजानी *स्त्री.* {सं. ध्वजा} सेना।

धुड़ंगा *वि.* {हिं. धूर + अंग} {*स्त्री.* धुड़ंगी} जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, केवल धूल हो; जिसपर धूल पड़ी हो।

धुतकार *स्त्री.* दुतकार।

धुताई *स्त्री.* + धूर्तता।

धुतारा *वि.* धूर्त।

धुधुकार *स्त्री.* {धूधू से अनु.} जोर का धूधू शब्द; घोर शब्द, गरज।

धुन[1] *स्त्री.* {हिं. धुनना} बिना आगा-पीछा सोचे बराबर काम करते रहने की प्रवृत्ति या दशा, लगन।

पद धुन का पक्का = आरंभ किए हुए काम में बराबर लगा रहनेवाला।

मन की तरंग, मौज; चिंता।

धुन[2] *स्त्री.* {सं. ध्वनि} किसी गीत के विशिष्ट स्वरक्रम या लय से गाए जाने का ढंग, किसी गाने की खास तर्ज; ध्वनि।

धुनकना *स.* धुनना।

धुनकी *स्त्री.* {सं. धनुस्} धुनियों की वह कमान जिससे वे रुई धुनते हैं; लड़कों के खेलने की छोटी कमान।

धुनना *स.* {हिं. धुनकी} {*प्रे.* धुनवाना} धुनकी की सहायता से रुई में से बिनौले अलग करना; खूब मारना-पीटना; दूसरे की बात बिना सुने बगैर अपनी बात बराबर कहते जाना।

धुनि *स्त्री.* ध्वनि; धुनी।

धुनियाँ *पुं.* {हिं. धुनना} वह जो रुई धुनने का काम करता हो, बेहना।

धुनी *स्त्री.* {सं.} नदी।

धुनेचा *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का सन।

धुपना *क्रि. अ.* {हिं.} धुलना, धोया जाना।

धुपधुप *वि.* {हिं. धूप} साफ, स्वच्छ; उज्ज्वल, चमकीला।

धुप्पस *स्त्री.* {देश.} किसी को डराने या धोखा देने के लिए किया जानेवाला कार्य, धौंस।

धुपाना *क्रि. स.* {हिं.} किसी वस्तु को धूप दिखाना।

धुमारा *वि.* {हिं.} धुएँ के रंग का।

धुमिला *वि.* धूमिल।

धुमिलाना *अ.* {हिं. धूमिल} धूमिल होना, काला पड़ना।

धुरंधर *वि.* {सं.} {*भाव.* धुरंधरता} भार उठानेवाला; जो सबमें बहुत बड़ा, मान्य व बलवान हो; श्रेष्ठ, प्रधान।

धुर[1] *पुं.* {सं. धुर} गाड़ी का धुरा, अक्ष; शीर्ष या उच्च स्थान; आरंभ, शुरू; धूर।

धुर[2] *निपा.* {सं.} बिल्कुल ठीक या ठिकाने तक।

मुहा. धुर सिर से = बिल्कुल शुरू से।

धुर[3] *वि.* {सं. ध्रुव} पक्का, दृढ़;

पद धुर का = परले सिरे का, हद दरजे का; अत्यंत, परम।

सीधे; बहुत दूर।

धुरजटी *पुं.* धूर्जटी, **शिव।**

धुरना *स.* {सं. धूर्वण} मारना, पीटना; बजाना।

धुरवा *पुं.* {सं. धुर + वाह} बादल, मेघ।

धुरा *पुं.* {सं. धुर} {*स्त्री.* अल्पा. धुरी} लोहे का वह डंडा जिसके दोनों सिरों पर गाड़ी आदि के पहिए लगे रहते हैं, अक्ष।

धुरी *स्त्री.* {हिं. धुरा} गाड़ी का धुरा।

धुरीण *वि.* {सं.} बोझ सँभालनेवाला; मुख्य, प्रधान; धुरंधर।

धुरी राष्ट्र *पुं.* {हिं. + सं. राष्ट्र} दूसरे महायुद्ध से पहले अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में जरमनी, इटली और जापान ये तीनो राष्ट्र, जिनका एक गुट बना था।

धुरीप *पुं.* {सं.} बोझ ढोनेवाला पशु; *वि.* बोझ ढोने योग्य।

धुरेटना *स.* {हिं. धूर + लपेटना} धूल से लपेटना, धूल लगाना।

धुर्रा *पुं.* {हिं. धूर} धूल, चूर्ण।

मुहा. धुर्रा करना = शीत से शरीर सुन्न होने पर सोंठ की बुकनी आदि मलना; *धुर्रे उड़ाना* = किसी वस्तु के टुकड़े कर डालना; किसी के मत का खंडन आदि करके बहुत दुर्दशा करना।

धुलना *अ.* {हिं. धोना का अ. रूप} {*प्रे.* धुलाना} पानी, साबुन आदि से साफ किया जाना, धोया जाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धुलवाना *क्रि. स.* {हिं.} धोने का काम किसी दूसरे से करवाना।

धुलिया-मिटिया *वि.* {हिं.} शांत किया हुआ।

धुलाई *स्त्री.* {हिं. धोना} धोने का काम, भाव या मजदूरी।

धुलाई-घर *पुं.* वह स्थान जहाँ कपड़े धोने की व्यवस्था हो।

धुलेंडी *स्त्री.* {हिं. धूल + उड़ाना} होली जलने के दूसरे दिन होनेवाला त्योहार (इस दिन लोग एक दूसरे पर अबीर, गुलाल आदि डालते हैं)।

धुवाँस *स्त्री.* धुआँस, उड़द का आटा जिसका पापड़ आदि बनाया जाता है।

धुस्स *पुं.* {हिं. ढूह या देश.} ढूह, टीला; नदी का बाँध, बंधा।

धुस्सा *पुं.* {सं. द्विशाट या दूर्श, पाली दूस्स} ऊन की मोटी लोई या चादर।

धूँधर *वि.* धुँधला, हवा के गर्द–धूल-मिट्टी से छाया हुआ अँधेरा; *स्त्री.* धुंध, राजा उत्तानपाद के पुत्र का नाम।

धूँधूँ, धूधू *स्त्री.* {अनु.} आग की तेज लपटों की आवाज।

धूँसना *अ.* {देश.} जोर का शब्द करना।

धू *वि.* ध्रुव।

धूई *स्त्री.* {हिं. धुआँ} धूनी।

धूकना *अ.* ढुकना।

धूजट *पुं.* {सं. धूर्जटि} शिव।

धूजना *अ.* {सं. धूत} हिलना; काँपना।

धूत[1] *वि.* {सं.} हिलता या काँपता हुआ; छोड़ा हुआ, त्यक्त; चारों ओर से रुका या घिरा हुआ।

धूत[2] *वि.* {सं. धूर्त} चालाक; दगाबाज।

धूतना *अ.* {हिं. धूर्त} चालाक; दगाबाज, ठग।

धूतना *अ.* {हिं. धूर्त} धूर्तता करना।

धूता *स्त्री.* {सं.} भार्या, स्त्री।

धूती *स्त्री.* {हिं.} चिड़िया।

धूताई *स्त्री.* = धूर्तता।

धूतुक, धूतूक *पुं.* {अनु.} तुरही; धूधू शब्द करनेवाला कोई बाजा।

धूधू *पुं.* {अनु.} आग के दहकने या जोर से जलने का शब्द।

धूनना *स.* {हिं. धूनी} कुछ जलाकर उसका धुँआ उठाना, धुआँ या धूनी देना; *स.* धुनना।

धूना *पुं.* {हिं.} गुग्गुल जाति का वृक्ष, इसमें से निकलनेवाला गोंद धूप की तरह जलाया जाता है।

धूनि *स्त्री.* {सं.} कंप, थरथराहट।

धूनी *स्त्री.* {हिं. धुआँ} गुग्गुल आदि गंधद्रव्य जलाकर निकाला हुआ धुआँ।

मुहा. धूनी देना = कोई चीज जलाकर उसका धुआँ उठाना।

साधुओं के तापने की आग।

मुहा. धूनी जगाना, रमाना या लगाना = साधुओं का आग जलाकर उसके सामने बैठना, साधु या विरक्त होना।

धूप *पुं.* {सं.} गंधद्रव्यों को जलाकर निकाला हुआ धुआँ, सुगंधित धूम; *स्त्री.* एक प्रसिद्ध मिश्रित गंधद्रव्य, जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ निकलता है; सूर्य की किरणों का विस्तार, सूर्यातप, घाम।

मुहा. धूप खाना = शरीर गरम करने के लिए धूप में बैठना; *धूप दिखाना* = धूप में रखना; *धूप में बाल सफेद करना* = बिना कुछ सीखे या अनुभव प्राप्त किए उम्र बिताना।

धूपक *पुं.* {सं.} शहतूत की लकड़ी।

धूप-घड़ी *स्त्री.* {हिं. धूप+ घड़ी} धूप की सहायता से समय का ज्ञान प्राप्त करने का एक यंत्र (इसमें एक गोल चक्कर के बीच में गड़ी हुई कील की परछाई से समय जाना जाता है)।

धूप-छाँह *स्त्री.* {हिं. धूप + छाँह} एक विशेष प्रकार से बनाया हुआ वह कपड़ा जिसमें एक ही स्थान पर कभी एक रंग दिखाई देता है, कभी दूसरा।

धूपदान *पुं.* {सं. धूप + आधान} {अल्पा. धूपदानी} धूप या गंधद्रव्य जलाने का पात्र।

धूपना[1] *अ.* {सं. धूपन} धूप या और कोई गंध द्रव्य जलाकर उसका धुआँ उठाना।

धूपना[2] *स.* सुगंधित धुएँ से वासना।

धूपना[3] *अ.* {सं. धूपन = श्रांत होना} दौड़ना, हैरान होना, जैसे दौड़ना-धूपना।

धूपपात्र *पुं.* {सं.} धूप जलाने का बरतन।

धूपबत्ती *स्त्री.* {हिं. धूप + बत्ती} धूप आदि सुगंधित मसालों से बनी हुई वह बत्ती जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ निकलता है।

धूपवृक्ष *पुं.* {सं.} सलई या गुग्गुल का वृक्ष।

धूपित *वि.* {सं.} धूप जलाकर सुगंधित किया हुआ।

धूपीला *वि.* {हिं. धूप + ईला (प्रत्य.)} धूप से भरा हुआ, जैसे धुपीला मैदान।

धूम[1] *पुं.* {सं.} धुआँ; अपच में उठनेवाला डकार, धुआँयंध; धूमकेतु।

धूम[2] *स्त्री.* {सं. धूम = धुआँ} बहुत से लोगों के इकट्ठे होकर शोर मचाने आदि का व्यापार; हलचल, आंदोलन; उपद्रव, ऊधम; ठाट-बाट,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समारोह; कोलाहल, हल्ला, शोर; प्रसिद्धि, ख्याति; *वि.* धुएँ की तरह का; जिसका कोई आधार न हो; झूठ-मूठ का और निस्सार (यौ. के आरंभ में; जैसे–धूम गयन्द = दृष्टिदोष, धोखे आदि के कारण दिखाई पड़नेवाली कोई ऐसी चीज जिसमें वास्तविकता या सार कुछ भी न हो)।

धूम-कुहासा पुं. {सं. + हिं} धुएँ और कुहासे का मिश्रित रूप।

धूमकेतु पुं. {सं.} पुच्छल तारा; अग्नि, आग।

धूम-धड़क्का पुं. धूम-धाम।

धूम-धाम *स्त्री.* {हिं. धूम + धाम (अनु.)} बहुत अधिक तैयारी, ठाठ-बाट, समारोह।

धूम-धामी[1] *वि.* {हिं. धूम} जिसमें धूम-धाम हो, धूम-धाम या आडंबर से होनेवाला।

धूम-धामी[2] *वि.* {हिं. धूम} धूम या उपद्रव मचानेवाला, नटखट, उपद्रवी।

धूमध्वज पुं. {सं.} अग्नि, आग।

धूमन पुं. {सं.} धुआँ दिखाना।

धूमपट पुं. {सं.} वास्तविक स्थिति या तथ्य छिपाने के लिए उसके सामने खड़ी की जानेवाली कोई आड़ या परदा (स्मोक-स्क्रीन)।

धूमपान पुं. {सं.} तमाकू, बीड़ी आदि (का धुआँ) पीना।

धूमपोत पुं. {सं.} धुआँकश।

धूमर *वि.* धूमिल।

धूमिल *वि.* {सं. धूमिल} धुएँ के रंग का, काला; धुँधला।

धूम्र *वि.* {सं.} धुएँ के रंग का; पुं. धूम्र (धुआँ)।

धूम्रपान पुं. धूमपान।

धूर पुं. {सं. धुर} एक बिस्वे का बीसवाँ भाग, बिस्वांसी।

धूर-धुरेटा पुं. {हिं. धूल} वह स्थान जहाँ धूल और गर्द हो; *वि.* धूल में लिपटा हुआ।

धूरा पुं. धुर्रा, धूर।

धूरि *स्त्री.* धूल।

धूर्जटि पुं. {सं.} शिव, महादेव।

धूर्त *वि.* {सं.} {*भाव.* धूर्तता} मायावी, छली; वंचक, ठग; दाँव-पेंच या चालबाजी से काम निकालनेवाला।

धूर्तक पुं. {सं.} सियार, गीदड़, जुआरी।

धूर्तजंतु पुं. {सं.} मनुष्य।

धूर्तता *स्त्री.* {सं.} चालबाजी, धोखा-धड़ी।

धूर्ता *स्त्री.* {सं.} सफेद भटकटैया।

धूर्धर पुं. {सं.} धुरंधर, बोझा ढोनेवाला।

धूल *स्त्री.* {सं. धूलि} मिट्टी, बालू आदि का बहुत महीन चूर, रज, गर्द।

मुहा. (कहीं) धूल उड़ना = बरबादी आना, रौनक न रहना; *(किसी को) धूल उड़ना* = बहुत दोष प्रकट होना, बदनामी या उपहास होना; *(किसी की) धूल उड़ाना* = बदनामी करना, हँसी उड़ाना; *धूल की रस्सी बटना* = असंभव कार्य के पीछे पड़ना, कोरी धूर्तता से काम निकालना; *धूल चाटना* = अत्यंत अधीनता दिखाना; *(किसी बात पर) धूल डालना* = उपेक्षापूर्वक छोड़ देना; *धूल फाँकना* = मारा-मारा फिरना; *धूल में मिलना* = चौपट होना; *सिर पर धूल डालना* = सिर धुनना, पछताना।

धूल के समान तुच्छ वस्तु।

मुहा. किसी के पैर की धूल होना = किसी की तुलना में अत्यंत तुच्छ होना।

धूलक पुं. {सं.} विज, गाल।

धूला पुं. {हिं.} खंड, टुकड़ा।

धूल-धूसरित *वि.* धूल से लथपथ।

धूलि *स्त्री.* {सं.} धूल, गर्द।

धूलिचित्र पुं. {सं.} वे चित्र, कोष्ठक आदि जो रंगों के चूर्ण जमीन पर भुरककर बनाए जाते हैं, साँझी।

धूसर *वि.* {सं.} धूल या मिट्टी के रंग का, मटमैला, खाकी; धूल से लिपटा या भरा हुआ।

धूसरित *वि.* धूसर।

धूसरी *स्त्री.* {सं.} एक किन्नरी का नाम।

धृक (ग) पुं. धिक्कार।

धृत *वि.* {सं.} {*स्त्री.* धृता} पकड़ा हुआ; धारण किया हुआ; ग्रहण किया हुआ; स्थिर किया हुआ।

धृति *स्त्री.* {सं.} धरने या पकड़ने की क्रिया या भाव; स्थिर रहने या होने की क्रिया या भाव, ठहराव; मन की दृढ़ता; धैर्य, धीरज।

धृती *वि.* {सं. धृतिन्} धीर, धैर्यवान।

धृषु *वि.* {सं.} दक्ष, निपुण।

धृष्ट *वि.* {सं.} निर्लज्ज, बेहया, ढीठ, उद्धत; पुं. वह नायक जो अपराध करता रहता, तिरस्कार सहता जाता और फिर भी नायिका के पीछे लगा रहता है (साहित्य)।

धृष्टा *स्त्री.* {सं.} व्यभिचारिणी स्त्री, कुलटा।

धेना *स्त्री.* {सं.} स्वाद, रस।

धेनु *स्त्री.* {सं.} थोड़े दिनों की ब्याई हुई गाय, सवत्सा गो; गाय।

धेनुमुख पुं. {सं.} नरसिंहा (बाजा)।

धेयना अ. {सं. ध्यान} ध्यान करना।

उदा. सेइ न धेइ न सुमिरि कै पद-प्रीति सुधारी–तुलसी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धेरी *स्त्री.* {सं. दुहिता} पुत्री, बेटी।
धेली *स्त्री.* {हिं. आधा} अठन्नी।
धै *स्त्री.* {हिं. दुहाई} दुहाई, शपथ, सौगंध, जैसे राम-धै।
धैर्य *पुं.* {सं.} संकट या कठिनाई के समय मन की स्थिरता, धीरता, धीरज; चित्त में उद्वेग या उतावलापन न उत्पन्न होने का भाव; शांति, सब्र।
धैवत *पुं.* {सं.} संगीत के सात स्वरों में से छठा स्वर जिसका संकेत धा या ध है।
धोंधा *पुं.* {सं. ढुंढि} बेडौल, भद्दा या बेढंगा।
धोंधा बसंत *पुं.* = निरा मूर्ख।
धोई *स्त्री.* {हिं. धोना} वह दाल, जिसका छिलका धोकर अलग कर दिया गया हो।
धोकड़ *वि.* {हिं.} हट्टा-कट्टा।
धोखा *पुं.* {सं. धूकता = धूर्तता} भ्रम में डालनेवाला मिथ्या व्यवहार, भुलावा, छल, दगा; किसी के झूठे व्यवहार से उत्पन्न भ्रम, भुलावा, भ्रांति।
मुहा. धोखा खाना = ठगा या छला जाना; *धोखा दे जाना* = असमय में मरना या नष्ट होना; *धोखा देना* = भ्रम में डालना, छलना।
भ्रम उत्पन्न करनेवाली बात या वस्तु।
पद धोखे में या धोखे से = भूल से।
अनिष्ट की संभावना, जोखिम; आशा या विश्वास के विरुद्ध होनेवाला कार्य या फल, जैसे धोखा हो गया; चिड़ियों को डराने के लिए खेत में खड़ा किया हुआ पुतला, बिजूखा; चिड़ियाँ उड़ने के लिए पेड़ में बँधी हुई लकड़ी, खटखटा; बेसन का एक प्रकार का पकवान।
धोखे की टट्टी *स्त्री.* ऐसी चीज जो दूसरों को धोखा देकर फँसाने के लिए हो।
धोखेबाज *वि.* {हिं. धोखा +फा. बाज़} {*भाव.* धोखेबाजी} दूसरों को धोखा देनेवाला, कपटी, धूर्त।
धोड *पुं.* {सं.} सर्प।
धोतर *पुं.* {हिं.} माटा वस्त्र।
धोटा *पुं.* ढोटा।
धोती *स्त्री.* {सं. धटी} कमर से घुटनों के नीचे तक (और स्त्रियों का प्रायः सारा शरीर) ढकने के लिए कमर में लपेटकर पहनने का कपड़ा।
मुहा. धोती ढीली होना = हिम्मत छूट जाना।
स्त्री. धौति।
धोना *स.* {सं. धावन} {*प्रे.* धुलाना} पानी में रगड़ और डुबाकर साफ करना, प्रक्षालित करना, पखारना।
मुहा. (किसी वस्तु से) हाथ धोना = खो या गँवा देना, वंचित होना; *हाथ धोकर पीछे पड़ जाना* = जी जान से किसी व्यक्ति या काम के पीछे लग जाना।
दूर करना, हटाना या मिटाना।
मुहा. धो बहना = न रहने देना।
धोप *स्त्री.* {सं. धूर्वा} तलवार।
धोपना *स.* = मारना-पीटना।
धोब *पुं.* {हिं. धोना} धोए जाने की क्रिया (गिनती के विचार से), जैसे इस कपड़े पर चार धोब पड़े हैं।
धोबी *पुं.* {हिं. धोना} {*स्त्री.* धोबिन} कपड़े धोने का काम करनेवाला, रजक।
मुहा. धोबी का कुत्ता = व्यर्थ इधर-उधर घूमनेवाला व्यक्ति, निकम्मा आदमी।
धोम *पुं.* {हिं.} धूम्र, धुआँ।
धोर *स्त्री.* {हिं.} निकटता, सामीप्य, पाठ।
धोरणी *स्त्री.* {सं.} परंपरा, श्रेणी।
धोरी *पुं.* {सं. धौरेय} धुरा या भार उठानेवाला; रक्षक; बैल, वृषभ; प्रधान, मुखिया; श्रेष्ठ पुरुष।
धोरे *वि.* {सं. धर} पास, निकट।
धोवन *स्त्री.* {हिं. धोना} धोने की क्रिया या भाव; कोई चीज धोने पर निकला या बचा हुआ पानी।
धोवना *पुं.* {हिं. धोना} धोवन; जल; अरक।
धोवाना *स.* {हिं. धोना} धुलाना; *अ.* धोया जाना, धुलना।
धोसा *पुं.* {हिं.} गुड़ आदि का लोंदा।
धौं *योज.* {सं. उत्साही} एक योजक जो ऐसे प्रश्नों के पहले आता है, जिनमें जिज्ञासा का भाव कम और संदेह का भाव अधिक होता है, न जाने क्या, मालूम नहीं; विकल्प या संदेहसूचक वाक्यों के पहले लगनेवाला शब्द, कि, या, अथवा; *निपा.* जोर देने के लिए 'तो', या 'भला', के अर्थ में आनेवाला शब्द; विधि, आदेश आदि में केवल जोर देने के लिए एक शब्द।
धौंकना *स.* {सं. धम् = धौकना} {*भाव.* धौंक} आग सुलगाने के लिए भाथी से हवा देना; ऊपर डालना; दंड आदि देना या लगाना।
धौंकनी *स्त्री.* {हिं. धौंकना} बाँस या धातु की बनी हुई आग सुलगाने की नली; भाथी।
धौंकी *स्त्री.* धौंकनी; भाथी।
धौंज *स्त्री.* {हिं. धौंजना} दौड़-धूप; घबराहट, उद्विग्नता।
धौंजना *अ.* {सं. ध्वंजन} दौड़-धूप करना; *स.* पैरों से रौंदना, कुचलना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धौंटा पुं. {हिं.} वह ढकना जो तेली के बैल की आँखों पर लगाया जाता है।

धौंताल *वि.* {हिं. धु + ताल} जिसे असाधारण धुन हो; फुरतीला; चालाक; साहसी; हेकड़; उपद्रवी, शरारती।

धौंस *स्त्री.* {सं. दंश} धमकी, घुड़की; धाक, रोब; झाँसा-पट्टी।

धौंसना *स.* {हिं. धौंस} धमकाना; मारना-पीटना; दमन करना।

धौंसर *वि.* धूसर; पुं. किसी चीज के ऊपर जमी हुई धूल।

धौंसा पुं. {हिं. धौंसना} बड़ा नगाड़ा, डंका; सामर्थ्य, शक्ति।

धौ-काँदव पुं. {?} एक प्रकार का धान या उसका चावल।

धौत *वि.* {सं.} धोया और साफ किया हुआ; उजला, सफेद; पुं. चाँदी, रूपा।

धौति *स्त्री.* {सं.} शुद्धि; शरीर को अंदर और बाहर से शुद्ध करने के लिए हठयोग की एक विशेष क्रिया।

धौरहर पुं. धरहरा; धौराहर।

धौरा *वि.* {सं. धवल} {*स्त्री.* धौरी} सफेद, उजला; पुं. सफेद बैल; पंडुक पक्षी।

धौराहर पुं. धरहरा; ऊँची अटारी।

धौरिय पुं. {सं. धौरेय} बैल।

धौरी *स्त्री.* {हिं. धौरा} सफेद गाय, कपिला; एक प्रकार की चिड़िया।

धौरे *क्रि. वि.* धोरे।

धौर्य पुं. {सं.} घोड़े की एक चाल।

धौल[1] *स्त्री.* {अनु.} सिर पर लगनेवाला थप्पड़; नुकसान, हानि।

पद धौल-धप्पा, धौल-थप्पड़ = धौल या थप्पड़ की मार।

धौल[2] *वि.* {सं. धवल} उजला, सफेद।

पद धौल-धूर्त = बहुत बड़ा धूर्त।

धौलहर पुं. धरहरा।

धौला *वि.* {सं. धवल} {*स्त्री.* धौली, *भाव.* धौलता, धौलाई} सफेद, उजला।

धौलाई *स्त्री.* {हिं.} उजलापन, सफेदी।

धौलागिरि पुं. धवलगिरि।

ध्यान *वि.* {सं.} ध्यान किया हुआ, चिंतित।

ध्याता *वि.* {सं. ध्यातृ} {*स्त्री.* ध्यात्री} ध्यान करने या लगानेवाला।

ध्यान पुं. {सं.} किसी बात या कार्य में मन के लीन होने की क्रिया, दशा या भाव।

मुहा. ध्यान में डूबना या मग्न होना = सब बातें भूलकर किसी एक बात पर मन में विचार करना, तल्लीन होना; *ध्यान धरना* = मन लगाना, चिंतन करना।

मानसिक अनुभूति; चित्त की ग्रहण या विचार करने की वृत्ति या शक्ति, मन।

मुहा. ध्यान में न लाना = चिंता न करना, ध्यान न देना; न विचारना।

चेतना की वृत्ति, चेत, ख्याल।

मुहा. ध्यान जमना = चित्त एकाग्र होना; *ध्यान दिलाना* = चेताना, सुझाना; *ध्यान देना* = विचार या गौर करना; *ध्यान पर चढ़ना* = ख्याल लगा या बना रहना, चित्त से न हटना; *ध्यान बँटना* = ख्याल इधर-उधर होना; *ध्यान लगना* = चित्त का प्रवृत्त या एकाग्र होना।

बोध या ज्ञान करानेवाली वृत्ति या शक्ति, समझ, बुद्धि; स्मुति, याद।

मुहा. ध्यान आना = स्मरण होना; *ध्यान पर चढ़ना* = स्मरण होना; *ध्यान रखना* = याद रखना; *ध्यान से उतरना* = याद न रहना, भूलना।

चित्त की एकाग्रता; किसी विषय, विशेषत: धार्मिक विषय या अलौकिक सत्ता का लगातार कुछ समय तक होनेवाल गंभीर मनन या चिंतन जो योग का सातवाँ तथा समाधि के पूर्व का अंग माना जाता है (मेडिटेशन)।

मुहा. ध्यान करना = परमात्मा के चिंतन के लिए चित्त एकाग्र करके बैठना; *ध्यान छूटना* = चित्त की एकाग्रता भंग होना।

ध्याननना *क्रि. स.* {हिं.} विचार करना।

ध्यानयोग पुं. {सं.} योग का वह विभाग जिसमें ध्यान ही प्रधान अंग हो, इंद्रजाल की एक क्रिया।

ध्याना *स.* {सं. ध्यान} ध्यान करना या लगाना, जैसे ईश्वर को ध्याना।

ध्यानाकर्षण *वि.* {सं.} ध्यान आकृष्ट करनेवाला, जैसे ध्यानाकर्षण प्रस्ताव।

ध्यानी *वि.* {सं. ध्यानिन्} ध्यान में लगा हुआ; समाधि लगानेवाला।

ध्याम पुं. {सं.} दौना नामक पौधा।

ध्येय *वि.* {सं.} ध्यान करने योग्य; जिसका ध्यान किया जाए; पुं. वह जिसे ध्यान में रखकर कोई काम किया जाए, उद्देश्य (ऑब्जेक्ट)।

ध्रुपद पुं. {सं. ध्रुवपद} एक प्रकार का पक्का गाना, जिसकी लय और स्वर बिल्कुल बँधे हुए

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

होते हैं और जिसमें देवताओं की स्तुति आदि होती है।

ध्रुपदिया पुं. {हिं. ध्रुपद + इया (प्रत्य.)} ध्रुपद का गवैया।

ध्रुव *वि.* {सं.} {*वि.* ध्रुवीय, *भाव.* ध्रुवता} सदा एक ही स्थान पर या एक ही अवस्था में रहनेवाला, स्थिर, अचल; जिसके ठीक या सत्य होने में कुछ भी संदेह न हो, निश्चित, पक्का; पुं. आकाश; शंकु, ध्रुपद; भगवत के एक प्रसिद्ध भक्त, जो राजा उत्तानपाद के पुत्र थे और जिनकी माता का नाम सुनीति था; उत्तर आकाश में सदा एक ही स्थान पर रहनेवाला एक तारा, जो उत्तानपाद का उक्त पुत्र माना जाता है; पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी सिरे, जिनके बीचोबीच अक्षरेखा की स्थिति मानी जाती है।

ध्रुवका *स्त्री.* {सं.} ध्रुपद।

ध्रुवकेतु पुं. {सं.} केतु तारा।

ध्रुवचरण पुं. {सं.} रुद्र ताल का एक भेद।

ध्रुवदर्शक पुं. {सं.} सप्तर्षि-मंडल; एक प्रसिद्ध यंत्र जिसकी हुई सदा उत्तरी ध्रुव की ओर रहती है और जिससे दिशाओं का ज्ञान होता है, कुतुबनुमा।

ध्रुवांत पुं. {सं.} ध्रुव का अंतिम सिरा।

ध्रुवीकरण पुं. {सं.} विभिन्न दलों के समान विचारधारावाले लोगों का एकजुट होना।

ध्रुवीय *वि.* {सं.} ध्रुव-संबंधी; ध्रुव प्रदेश का।

ध्वंस पुं. {सं.} विनाश, नाश।

ध्वंसक *वि.* {सं.} नाश करनेवाला; पुं. विध्वंसक।

ध्वंसन पुं. {सं.} {*वि.* ध्वंसनीय, ध्वंसित, ध्वस्त} ध्वंस नाश करने की क्रिया या भाव, क्षय, विनाश; कल-कारखानों, रेलों, पुलों आदि का जान-बूझकर और सार्वजनिक कामों को रोकने अथवा ऐसे दूसरे दुष्ट उद्देश्यों से किया जानेवाला विनाश, तोड़-फोड़ (सैबोटेज)।

ध्वंसात्मक *वि.* {सं.} ध्वंस करनेवाला, नाशक, जैसे ध्वंसात्मक दृष्टिकोण।

ध्वंसावशेष पुं. {सं.} किसी चीज के टूट-फूट जाने पर बचा हुआ अंश; खँडहर।

ध्वंसी *वि.* {*स्त्री.* ध्वंसिनी} ध्वंसक।

ध्वज पुं. {सं.} चिह्न, निशान; लंबे या ऊँचे डंडे के सिरे पर लगा हुआ कोई कपड़ा या कागज जो चिह्न के रूप में काम आता है, पताका, झंडा।

ध्वजा *स्त्री.* {सं. ध्वज} पताका, झंडा।

ध्वजी *वि.* {सं. ध्वजिन्} चिह्न या पताका रखनेवाला।

ध्वन पुं. {सं.} शब्द।

ध्वनि *स्त्री.* {सं.} वह जो सुनाई दे, श्रवणेंद्रिय का विषय, शब्द, आवाज (साउंड); कुछ विशेष परिस्थितियों में शब्दों की वह पुनरावृत्ति जो शब्द-तरंगों के किसी बाधक स्तर के साथ टकराने पर होती है, आवाज की गूँज; किसी घटना के बाद उसकी आलोचना आदि के रूप में किसी और स्थान पर होनेवाली चर्चात्मक प्रतिक्रिया (ईको); किसी कथन या उक्ति के वाच्यार्थ या शब्दों के साधारण अर्थ को छोड़कर उसमें छिपा हुआ गूढ़ या व्यंग्य के रूप में निकलनेवाला अर्थ या आशय, झलकता हुआ अर्थ या आशय।

ध्वनित *वि.* {सं.} जो ध्वनि या शब्द के रूप में प्रकट हुआ हो. शब्द से युक्त; झलकता हुआ, व्यंजित; बजाया हुआ, वादित।

ध्वनितरंग *स्त्री.* {सं.} हवा में चारों ओर फैलनेवाली वह तरंग जो किसी स्थान पर कोई ध्वनि या शब्द होने पर उठती है और जिसके कारण कानों को उस ध्वनि या शब्द का ज्ञान होता है (साउंड वेव)।

ध्वनिविज्ञान पुं. {सं.} वह विज्ञान जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि बोलते समय मनुष्य के गले से किस प्रकार ध्वनियाँ या शब्द उत्पन्न होते हैं और उन्हें किस प्रकार बोला या लिखा जाता है (फोनेटिक्स)।

ध्वन्य पुं. {सं.} व्यंग्यार्थ।

ध्वन्यात्मक *वि.* {सं.} ध्वनियुक्त; जिसमें व्यंग्य अर्थ प्रधान हो।

ध्वन्यार्थ पुं. {सं. ध्वन्यर्थ} शब्द की व्यंजना शक्ति से निकलनेवाला अर्थ।

ध्वन्यालेखन पुं. {सं. ध्वनि + आलेखन} आधुनिक बोलते चित्रपट में वह प्रक्रिया जिसके द्वारा पात्रों की बात-चीत या संगीत आदि की ध्वनियाँ एक विशेष यंत्र के द्वारा इस प्रकार गृहीत और अंकित की जाती हैं कि आवश्यकता पड़ने पर चित्रपट दिखाने के समय उसके साथ सुनाई जा सके।

ध्वाक्ष *स्त्री.* {सं.} शीतल चीनी।

ध्वांत पुं. {सं.} अंधकार, अँधेरा।

ध्वांचर पुं. {सं.} राक्षस, दैत्य।

ध्वानिक *वि.* {सं.} ध्वनि-संबंधी।

ध्वानिकी *स्त्री.* {सं.} विज्ञान की वह शाखा जिसमें ध्वनियों की रचना तथा गुणों पर विचार किया जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न

न देवनागरी वर्णमाला का बीसवाँ और तवर्ग का पाँचवाँ व्यंजन वर्ण, जिसका उच्चारण-स्थान दंत है। निपात के रूप में इसका व्यवहार (क) 'नहीं' या 'मत' के अर्थ में, निषेधवाचक शब्द के रूप में और (ख) प्रश्नात्मक वाक्य के अंत में 'या नहीं' के अर्थ में (जैसे–तुम मानोगे न?) होता है।

नंग पुं. {हिं. नंगा} नग्नता, नंगापन; स्त्री या पुरुष का गुप्त अंग, गुह्यअंग।

नंग-धड़ंग *वि.* {हिं. नंगा + धड़ंग (अनु.)} बिल्कुल नंगा, दिगम्बर, विवस्त्र।

नंगरवारी *स्त्री.* {हिं.} समुद्र में चलनेवाली एक मातूल की नाव।

नंगा *वि.* {हिं. नग्न} जिसके शरीर पर कोई कपड़ा न हो, वस्त्रहीन; जिसके ऊपर कोई आवरण न हो; निर्लज्ज, बेहया; लुच्चा, पाजी।

नंगाझोली *स्त्री.* {हिं. नंगा + झोरना} छिपाई हुई वस्तु ढूँढ़ने के लिए या संदेहवश किसी के कपड़े आदि उतरवाकर अथवा यों ही अच्छी तरह देखना, पहने हुए कपड़ों की तलाशी।

नंगा नाच पुं. {हिं. नंगा + नाच} बहुत ही निर्लज्जतापूर्वक और बिल्कुल मनमाने ढंग से अनेक प्रकार के अनुचित, नियमविरुद्ध कार्य करना।

नंगा-बूचा *वि.* {हिं. नंगा + बूचा = खाली} जिसके पास कुछ भी न हो, अति निर्धन।

नंगा-लुच्चा *वि.* {हिं. नंगा + लुच्चा} नीच और दुष्ट, बदमाश।

नँगियाना *स.* {हिं. नंगा} नंगा करना, शरीर पर से वस्त्र उतार लेना; कपट का आवरण हटाना; सबकुछ छीन लेना।

नँग्याना *स.* नँगियाना।

नंद पुं. {सं.} आनंद, हर्ष; परमेश्वर; पुराणानुसार नौ निधियों में से एक; विष्णु; बेटा; गोकुल के गोपों के मुखिया, वसुदेव के मित्र और श्रीकृष्ण के पालक पिता।

नंदकिशोर पुं. {सं.} श्रीकृष्ण।

नंदकुमार पुं. {सं.} श्रीकृष्ण।

नंदनंदिनी *स्त्री.* {सं.} योगमाया।

नंदन पुं. {सं.} स्वर्ग में इंद्र का उपवन; शिव; विष्णु; बेटा, जैसे नंदनंदन, मेघ, बादल; *वि.* आनंद देने या प्रसन्न करनेवाला।

नंदना[1] *अ.* {सं. नंद} आनंदित होना; *स.* आनंदित या प्रसन्न करना।

नंदना[2] *अ.* {सं. नंद = बेटा} लड़की, बेटी, दुहिता, बच्चा।

नंदनी *स्त्री.* नंदिनी।

नंदरानी *स्त्री.* = यशोदा।

नंदलाल पुं. = श्रीकृष्ण।

नंदा *स्त्री.* {सं.} दुर्गा, एक प्रकार की कामधेनु; संपत्ति, धन-दौलत; पति की बहन, ननद; *वि. स्त्री.* आनंद देनेवाली।

नंदादेवी पुं. {सं.} पश्चिमी हिमालय की एक चोटी जो पच्चीस हजार फुट ऊँची है।

नंदावत पुं. {सं.} एक तरह की मछली।

नंदि पुं. {सं.} आनंद; परमेश्वर; नंदी।

नंदित[1] *वि.* {सं.} आनंदित, प्रसन्न।

नंदित[2] पुं. {हिं. नादना} बजता हुआ।

नंदिन *स्त्री.* {सं. नंदिनी} लड़की।

नंदिनी *स्त्री.* {सं.} पुत्री, बेटी; उमा, दुर्गा; गंगा; पति की बहन, ननद; वसिष्ठ की कामधेनु, जिसकी सेवा करके राजा दिलीप ने रघु नामक पुत्र प्राप्त किया था; पत्नी, जोरू।

नंदी पुं. {सं. नंदिन्} शिव के एक प्रकार के गण; शिव का द्वारपाल, बैल; शिव के नाम पर दागकर छोड़ा हुआ बैल; गाँठों से युक्त शरीरवाला बैल (यह खेती योग्य नहीं होता); विष्णु।

नंदीगण पुं. {हिं. नंदी + गण} शिव का द्वारपाल, बैल; किसी के नाम पर दागकर छोड़ा हुआ बैल, साँड़।

नंदीमुख पुं. नांदीमुख।

नंदीवृक्ष पुं. {सं.} सुगंधित तुन का वृक्ष।

नंदीश्वर पुं. {सं.} शिव; शिव का एक गण।

नंदेऊ पुं. ननदोई, पति का जीजा।

नंदोई पुं. {हिं. ननद + ओई (प्रत्य.)} ननद का पति, पति का बहनोई।

नंबर *वि.* {अं.} संख्या, अदद, गिनती; पुं. संख्या, अंक; नंबरी गज; अंक।

नंबर एक *वि.* सर्वोत्तम।

नंबरदार पुं. {अ. नंबर + फा. दार (प्रत्य.)} गाँव का वह अधिकारी जो मालगुजारी आदि वसूल करता है; मुखिया।

नंबरवार *क्रि. वि.* {अ. नंबर + फा. वार} संख्या के क्रम से, एक एक करके, क्रमशः।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नंबरिंग मशीन *स्त्री.* {अं.} वह मशीन, जिससे दफ्तरी नंबर करते हैं।

नंबरी *वि.* {अं. नंबर + ई (प्रत्य.)} जिसपर नंबर लगा हो; नंबर-संबंधी, नंबर का, जैसे नंबरी गज; मशहूर; बहुत बड़ा, जैसे नंबरी चोर।

नंबरी गज *पुं.* {हिं. नंबरी + गज} कपड़े नापने का 36 इंच का गज।

नंबरी चोर *पुं.* {हिं. नंबर + चोर} वह बहुत बड़ा और प्रसिद्ध चोर जिसका पुलिस के अभिलेखों में विशेष रूप से उल्लेख हो।

नंबरी तह *स्त्री.* {हिं. नंबरी + तह (परत)} कपड़े के थानों की वह तह जिसमें कपड़ा प्रायः एक एक नंबर या गज की दूरी पर उलटकर एक के ऊपर दूसरी परत के रूप में लगाया जाता है, (मिलों से जो थान आते हैं, उनकी तह प्रायः इसी रूप में लगी होती है)।

नंबरी नोट *पुं.* {हिं. नंबर + अं. नोट} सौ रुपए या इससे अधिक मूल्य का सरकारी नोट जिसका कुछ दिनों पहले लेन-देन के समय बही-खातों में नबंर लिख लेने की प्रथा थी।

नंबरी सेर *पुं.* {हिं. नंबरी + सेर} अँग्रेजी शासनकाल के 80 रुपयों के बराबर की तौल।

नंस *वि.* {सं. नाश} नष्ट, बरबाद।

नई *वि.* {सं. नय} नीतिज्ञ; *स्त्री.* नदी; नया का *स्त्री.*।

नऊआ *पुं.* {हिं.} नापित, नाऊ, हज्जाम।

नउका *स्त्री.* नौका; *वि.* = नया।

नउत *वि.* {सं. नवल} नया।

नओढ़ *स्त्री.* नवोढ़ा।

नऊरंगी *स्त्री.* {हिं.} नारंगी।

नककटा *वि.* {हिं. नाक + कटना} {*स्त्री.* नककटी} जिसकी नाक कटी हो; निर्लज्ज, बेहया।

नकघिसनी *स्त्री.* {हिं. नाक + घिसना} अपराध क्षमा कराने या कोई काम कराने के लिए दीनतापूर्वक विनती करना या गिड़गिड़ाना।

नकछिकनी *स्त्री.* {हिं. नाक + छींकना} एक प्रकार का पौधा, जिसके फूल सूँघने से छींकें आती हैं।

नकटा *पुं.* {हिं. नाक + कटना} {*स्त्री.* नकटी} एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ विवाह आदि मंगल अवसरों पर गाती हैं; *वि.* नककटा।

नकटेसर *पुं.* {हिं.} एक तरह का पौधा।

नकद *वि., पुं.* नगद।

नकदी *स्त्री.* नगद।

नकना[1] *स.* {हिं. नाकना} लाँगना, फाँदना; त्यागना।

नकना[2] *अ.* {हिं. नकियाना} नाक में दम होना, हैरान होना।

नकफूल *पुं.* {हिं. नाक + फूल} नाक का एक आभूषण।

नकब *स्त्री.* सेंध।

नकबानी *स्त्री.* {हिं. नाक + बानी} नाक में दम, हैरानी, परेशानी।

नकबेसर *स्त्री.* {हिं. नाक + बेसर} छोटी नथ, बेसर।

नकल *स्त्री.* {अ.} किसी दूसरे के आकार या प्रकार के अनुसार तैयार की हुई वस्तु, अनुकृति; कोई वस्तु या कार्य देखकर उसके अनुसार वैसी ही कोई वस्तु बनाना या कार्य करना, अनुकरण; लेख आदि की अक्षरशः की या उतारी हुई प्रतिलिपि; अभिनय; हास्य रस की कोई छोटी कहानी, चुटकुला; स्वाँग।

नकलनवीस *पुं.* {अ. नकल + फा. नवीस} वह, जो दूसरों के लेखों आदि की नकल करता हो (अदालती)।

नकल-बही *स्त्री.* {हिं. नकल + बही} वह बही जिसपर चिट्ठियों और हुंडियों आदि की नकल रखी जाती है।

नकली *वि.* {अ.} नकल करके बनाया हुआ; कूट, बनावटी, जाली, झूठा।

नकवानी *स्त्री.* नकबानी।

नकशा *पुं.* नक्शा, मानचित्र।

नकसलवाद *पुं.* सत्ता को हथियाने के लिए हथियारों से काम लेने की विचारधारा।

नकसलवादी *वि.* नकसलवाद-संबंधी; *पुं.* नकसलवाद का अनुयायी।

नकसली *वि., पुं.* = नकसलवादी।

नकसरी *स्त्री.* {हिं. नाक + सं. क्षीर = जल} एक रोग जिसमें नाक से रक्त बहता है।

नकाना *अ.* नकना; *स.* नकियाना।

नकाब *स्त्री.* {अ.} चेहरा छिपाने के लिए उसपर डाला हुआ कपड़ा; स्त्रियों के मुख पर का घूँघट।

नकाबपोश *वि., पुं.* {अ.} जो नकाब पहने हो।

नकार[1] *स्त्री.* {हिं. नकारना} अस्वीकृति- सूचक शब्द या यात, नहीं; इनकार, अस्वीकृति।

नकार[2] *पुं.* {सं.} न अक्षर।

नकारना *अ.* {हिं. नहीं} किसी बात के संबंध में कहना कि यह ऐसी नहीं है, हमने ऐसा नहीं किया अथवा हम ऐसा नहीं करेंगे, 'नहीं' कहना या करना; अस्वीकृत करना।

नकारा *वि.* {हिं. न + कार्य} निकम्मा, निरर्थक।

नकारात्मक *वि.* {सं. नकार + आत्मक} (उत्तर या कथन) जिसमें कोई बात न मानी गई हो या कुछ करने से इनकार किया गया हो, 'सकरात्मक'

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विपर्याय; जिसमें 'नहीं' हो, 'नहीं' वाला (नेगेटिव)।

नकाशना *स.* {अ. नक्काशी} धातु, पत्थर आदि पर खोदकर चित्र या बेल-बूटे आदि बनाना।

नकाशी *स्त्री.* नक्काशी, धातु आदि पर खोदकर चित्रकारी करने का काम।

नकिंचन *पुं.* {सं.} दरिद्र, कंगाल।

नकियाना *अ.* {हिं. नाक} बोलते समय शब्दों का अनुनासिक उच्चारण करना; नकना; *स.* किसी की नाक में दम करना, बहुत परेशान या तंग करना।

नकीब *पुं.* {अ.} बंदीजन, भाट; कड़खैत।

नकुंच *पुं.* {सं.} मदार का पेड़।

नकुल *पुं.* {सं.} नेवला (जंतु); राजा पांडु के चौथे पुत्र, जो माद्री के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

नकुला *स्त्री.* {सं.} पार्वती।

नकेल *स्त्री.* {हिं. नाक} ऊँट, बैल आदि की नाक में पिरोई हुई रस्सी, जो लगाम का काम देती है, मुहरा।

मुहा. किसी की नकेल *हाथ में होना* = किसी व्यक्ति पर पूरा वश या नियंत्रण होना।

नक्कना *स.* {सं. लंघन} उछलकर पार जाना, लाँघना।

नक्कारखाना *पुं.* {फा. नक्कारखानः} वह स्थान जहाँ नगाड़ा बजता है, नौबतखाना।

कहा. नक्कारखाने में तूती की आवाज = बड़ों-बड़ों के सामने छोटों की न सुनी जानेवाली बात।

नक्कारा *पुं.* {फा. नक्कारः} नगाड़ा; नौबत।

नक्काल *पुं.* {अ.} किसी का अनुकरण या नकल करनेवाला; भाँड़।

नक्काश *पुं.* {अ.} नक्काशी करनेवाला।

नक्काशी *स्त्री.* {अ.} {*वि.* नक्काशीदार} धातु, काठ, पत्थर आदि पर खोदकर बेल-बूटे आदि बनाने की कला; इस प्रकार बनाए हुए बेल-बूटे।

नक्की[1] *वि.* {देश.} पक्का, दृढ़; ठीक; निश्चित।

नक्की[2] *स्त्री.* {हिं. नाक} गाने का वह ढंग, जिसमें स्वर का कुछ अंश नाक से भी निकलता है।

नक्कीमूठ *स्त्री.* {हिं. नक्की + मूठ} कौड़ियों से खेला जानेवाला एक प्रकार का जुआ।

नक्कू *वि.* {हिं. नाक} बड़ी नाकवाला; अपने आपको बहुत बड़ा समझनेवाला; सबसे अलग रहकर उलटा या बुरा काम करनेवाला।

नकताह *पुं.* {सं.} करंज का पेड़।

नक्ति *स्त्री.* {सं.} रात्रि, रात।

नक्र *पुं.* {सं.} नाक नामक जलजंतु; मगर, घड़ियाल, कुंभीर।

नक्श *वि.* {अ.} अंकित, चित्रित या लिखित; *पुं.* तस्वीर, चित्र; खोदकर या कलम से बनाए हुए बेल-बूटे; मोहर छाप; यंत्र, तावीज।

नक्शा *पुं.* {अ.} रेखाओं द्वारा आकार का निर्देश, रेखाचित्र; आकृति, गढ़न; चाल-ढाल, ढंग; अवस्था; दशा; साँचा, ठप्पा; पृथ्वी या खगोल के किसी भाग की स्थिति आदि के विचार से बनाया हुआ उसका सूचक वह चित्र, जिसमें देश, नगर, नदी, पहाड़, समुद्र आदि दिखाए गए हों; भवन आदि का उक्त प्रकार का रेखाचित्र।

नक्शानवीस *पुं.* {अ. + फा.} नक्शा बनाने या अंकित करनेवाला।

नक्शाबंद *पुं.* {अ. + फा.} वह जो धोतियों, साड़ियों आदि के बेल-बूटे के नक्शे या तर्ज तैयार करता है।

नक्शेकदम *पुं.* {अ.} (किसी के) चरणचिह्न।

नक्षत्र *पुं.* {सं.} {*वि.* नक्षत्री} चंद्रमा के मार्ग में पड़नेवाले स्थिर तारों के 27 समूह, जिनके भिन्न-भिन्न रूप या आकार मान लिए गए हैं और जिनके अलग-अलग नाम हैं (कांस्टिलेशन)।

नक्षत्रराज *पुं.* {सं.} चंद्रमा।

नक्षत्रित *पुं.* {सं.} चंद्रमा, विष्णु।

नक्षत्रिय *पुं.* {सं.} जो क्षत्रिय न हो।

नक्षत्री[1] *वि.* {सं. नक्षत्रिन्} चंद्रमा।

नक्षत्री[2] *वि.* {सं. नक्षत्र} भाग्यवान।

नख[1] *पुं.* {सं.} नाखून; एक प्रसिद्ध गंध द्रव्य; खंड, टुकड़ा।

नख[2] *स्त्री.* {फा. नख} गुड्डी उड़ाने की डोर।

नखक्षत *पुं.* {सं.} शरीर पर नाखून लगने के कारण बना हुआ चिह्न।

नखच्छत *पुं.* नखक्षत।

नख-छोलिया *पुं.* नखक्षत।

नखत (र) *पुं.* नक्षत्र।

नखता *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का पक्षी।

नखतराज *पुं.* = चंद्रमा।

नखना[1] *अ.* {हिं. नाखना} डाँका, लाँघा या पार किया जाना; *स.* लँघकर पार करना।

नखना[2] *स.* {सं. नष्ट} नष्ट करना।

जसपर्णी *स्त्री.* {सं.} वृश्चिका घास।

नखबाव *पुं.* {हिं. नख} नाखून।

नखर *पुं.* {सं.} नख, प्राचीन शास्त्र।

नखरचनी *स्त्री.* {हिं.} मेंहदी का पौधा।

नखरा *पुं.* {फा. नख़रः} किसी को रिझाने या झूठ-मूठ अपनी अस्वीकृति या सुकुमारता सूचित करने के लिए की जानेवाली स्त्रियों की अथवा स्त्रियों की-सी चेष्टा, चोचला।

नखरा-तिल्ला *पुं.* नखरा, चोचला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नखरीला *वि.* नखरेबाज।
नख़रेख *स्त्री.* {सं. नख + रेखा} शरीर में लगा हुआ नखों का चिह्न जो प्रायः संभोग का सूचक होता है, नखरौटा।
नखरेबाज *वि.* {फा. नख़रेबाज़} {*भाव.* नखरेबाजी} बहुत नखरा करनेवाला।
नखरौटा *पुं.* नखरेख।
नखलिस्तान *पुं.* {फा.} रेगिस्तान में स्थिति हरा-भरा भूभाग।
नखशंख *पुं.* {सं.} नील का पेड़।
नखशूल *पुं.* {सं.} नख-रोग।
नखशिख *पुं.* {सं.} नख से शिख तक के सब अंग; नख से शिख तक के सब अंगों का वर्णन।
नखायुध *पुं.* {सं.} शेर, चीता आदि नखों से फाड़नेवाले जानवर; नृसिंह।
नखास *पुं.* {अ. नख्खास} वह बाजार जिसमें पशु, विशेषतः घोड़े बिकते थे; बाजार।
नखियाना *स.* {सं. नख + इयाना (प्रत्य.)} नाखून गड़ाना।
नखी *स्त्री.* {सं.} नख नाक गंधद्रव्य; *पुं.* नखायुध।
नखेद *पुं.* निषेध।
नखोटना *स.* {सं. नख + ओटना (प्रत्य.)} नाखूनों से खरोचना या नोचना।
नग[1] *पुं.* {सं.} पर्वत, पहाड़; वृक्ष; सात की संख्या; साँप; सूर्य।
नग[2] *पुं.* {फा. नगीना मि. सं. नग} नगीना; अदद, संख्या।
नगज *वि.* {सं.} जो नग या पहाड़ से उत्पन्न हुआ हो, पहाड़ पर या पहाड़ से पैदा होनेवाला, जैसे शिलाजीत, गेरू आदि; *पुं.* हाथी।
नगमा *स्त्री.* {सं.} पार्वती, पाषाणभेदी लता।
नगण *पुं.* {सं.} तीन लघु अक्षरों का एक गण, जैसे कमल (पिंगल)।
नगण्य *वि.* {सं.} {*भाव.* नगण्यता} जिसकी कोई गिनती न हो, गया-बीता, दीनहीन या तुच्छ।
नगद *पुं.* {अ. नकद} वह धन जो सिक्कों के रूप में हो, रुपया, पैसा, रोक; *वि.* (रुपया) जो तैयार या सामने हो; जिसका मूल्य रुपए, पैसे आदि के रूप में दिया या चुकाया जाए, रोक; *क्रि. वि.* तुरंत दिए हुए रुपए के बदले में, 'उधार' का उलटा; *वि.* बढ़िया, अच्छा।
नगदी *क्रि. वि.* {हिं. नगद} नगद या सिक्के (रुपए, पैसे आदि) के रूप में (इन् कैश); *पुं. वि.* नगद।
नगन *वि.* नग्न, नंगा, वस्त्रहीन।
नगपति *पुं.* {सं.} हिमालय पर्वत; शिव; सुमेरु।
नगमा *पुं.* {अ. नग्मः} संगीत; राग, भावना।
नगर *पुं.* {सं.} मनुष्यों की वह बस्ती, जो गाँव और कस्बे से बहुत बड़ी होती है और उसमें सब तरह के बहुत-से लोग रहते और बाजार होते हैं, शहर (सिटी)।
नगर-कीर्तन *पुं.* {सं.} नगर की गलियों में घूम-घूमकर होनेवाला धार्मिक गाना-बजाना या कीर्तन।
नगर-नारि *स्त्री.* {सं.} वेश्या।
नगरपार्षद *पुं.* {सं.} वह जो नगरपालिका का सदस्य हो (म्युनिसिपल कमिश्नर)।
नगरपाल *पुं.* {सं.} एक प्राचीन अधिकारी जिसका काम नगर की रक्षा और व्यवस्था करना होता था।
नगरपालिका *स्त्री.* {सं. नगर + पालिका} वैधानिक आधार पर संगठित किसी नगर के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह संस्था, जो उस नगर के स्वास्थ्य, शुचिता, सड़कों, भवन-निर्माण, जल-कल आदि लोकोपकारी कार्यों की व्यवस्था करती हो (म्युनिसपैलिटी)।
नगर-बोर्ड *पुं.* {सं. नगर + अं. बोर्ड} किसी नगर के चुने हुए प्रतिनिधियों का वह निकाय या परिषद जो वहाँ की नगरपालिका के सब कामों की व्यवस्था करती हो (म्युनिसिपल बोर्ड)।
नगराई *स्त्री.* {हिं. नगर + आई (प्रत्य.)} नागरिकता; चतुराई।
नगरी *स्त्री.* {सं.} छोटा नागर, कस्बा (टाउन); *वि.* नगर; *पुं.* नागरिक।
नगरीणक *पुं.* {सं.} काक, कौआ।
नगरी क्षत्र *पुं.* {सं.} कोई नगरी और उसके आस-पास का वह क्षेत्र जिसकी लोकहित संबंधी व्यवस्थाएँ स्थानिक संस्था के अधीन हों (टाउन एरिया)।
नगला *पुं.* {सं. नगर ?} छोटी बस्ती, कस्बा, गाँव (प्रायः स्थानों के नामों के अंत में, जैसे नायक नगला)।
नगवाहन *पुं.* {सं.} शिवाजी का एक नाम।
नगवास *पुं.* नागपाश।
नगवासी *स्त्री.* नागपाश।
नगाड़ा *पुं.* {फा. नक्कारः} डुगडुगी या बाएँ की तरह का एक प्रकार का बहुत बड़ा बाजा, डंका, धौंसा।
नगाधिप *पुं.* {सं.} हिमालय पर्वत; सुमेरु पर्वत।
नगारि *पुं.* {सं.} इंद्र।
नगी *स्त्री.* {सं.} नग = पर्वत + ई (प्रत्य.) रत्न, नग; पार्वती।
नगीना, नगीनः *पुं.* {फा.} रत्न, मणि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगेंद्र, नगेश पुं. {सं.} हिमालय।
नगेसरि पुं. नागकेसर।
नग्न *वि.* {सं.} {*भाव.* नग्नता} नंगा; आवरण-रहित।
नग्ना *स्त्री.* {सं.} नंगी स्त्री, वह स्त्री जिसके स्तन उभड़े न हों।
नग्नाटक पुं. {सं.} सदा नंगा घूमनेवाला साधु।
नग्निका *स्त्री.* {सं.} वह कन्या, जो नंगी होकर घूमती हो।
नग्नवाद पुं. {सं.} नग्न रहने का सिद्धांत।
नग्नवादी (दिन्) पुं. {सं.} नग्नवाद का अनुयायी; *वि.* नग्नवाद-संबंधी।
नग्मा पुं. नगमा।
नग्र पुं. नगर।
नघना *स.* नखना।
नघुष पुं. {सं.} नहुष राजा।
नचना *अ.* {हिं. नाचना} नाचना; *वि.* {*स्त्री.* नचनी} नाचनेवाला।
नचनि *स्त्री.* {हिं. नाचना} नाच।
नचनियाँ पुं. {हिं. नाचना} नाचने का पेशा करनेवाला, नर्तक।
नचवैया पुं. {हिं. नाच} नाचने या नचानेवाला।
नचाना *स.* {हिं. 'नाचना' का प्रे.} किसी को नाचने में प्रवृत्त करना; किसी को कोई काम करने के लिए बार-बार दौड़ाना या तंग करना; कोई चीज हाथ में लेकर इधर-उधर घुमाना या हिलाना।
नचीला *वि.* {हिं. नाच + ईला (प्रत्य.)} जो नाचता या इधर-उधर हिलता-डुलता या घूमता रहे, चंचल।
नचौंहा *वि.* {हिं. नाचना + औंहाँ (प्रत्य.)} बराबर नाचता या इधर-उधर घूमता रहनेवाला।
नछत्र पुं. नक्षत्र।
नछत्री *वि.* नक्षत्री, प्रभावशाली, भाग्यवान।
नजदीक *वि.* {फा. नज़दीक} {*संज्ञा, वि.* नज़दीकी} निकट, पास, समीप।
नजर[1] *स्त्री.* {अ. नज़्र} दृष्टि, निगाह, निरीक्षण, निगरानी।
मुहा. नजर आना = दिखाई पड़ना; *नजर बाँधना* = ऐसा जादू करना कि लोगों को कुछ न कुछ दिखाई पड़े।
कृपादृष्टि; निगरानी, देख-रेख; ध्यान, ख्याल; परख, पहचान; किसी सुंदर या प्रिय मनुष्य या वस्तु पर पड़नेवाला दृष्टि का बुरा प्रभाव।
मुहा. नजर उतारना = किसी उपचार से बुरी दृष्टि का प्रभाव नष्ट करना; *नजर लगना* = बुरी दृष्टि का प्रभाव पड़ना।
नजर[2] *स्त्री.* {अ. नज़र} भेंट, उपहार; राजाओं आदि के सामने भेंट रखकर अधीनता सूचित करने की एक प्रथा।
नजरबंद *वि.* {अ. नज़्र + फा. बंद} ऐसी निगरानी में रखा हुआ कि निश्चित स्थान या सीमा से बाहर न जा सके।
नजरबाग पुं. {अ. नज़्रबाग} महलों आदि के सामने या चारों ओर का बाग।
नजरा *वि.* {अ. नज़्र} जो देखते ही अच्छी या बुरी अथवा महँगी या सस्ती चीज पहचान ले।
नजराना *स.* {हिं. नजर + आनना (प्रत्य.)} नजर या भेंट करना, उपहारस्वरूप देना; नजर लगाना।
नजराना[1] *अ.* {हिं. नजर} ऐसी बुरी नजर लगना जिससे कुछ अनिष्ट हो, नजर लगना; *स.* ऐसी बुरी दृष्टि डालना जिससे कुछ अनिष्ट हो, नजर लगाना।
नजराना[2] पुं. {अ. नज़राना} उपहार।
नजला पुं. {अ. नज़्ला} जुकाम, सरदी।
नजाकत *स्त्री.* {फा. नज़ाकत} नाजुक होने का भाव, सुकुमारता।
नजामत *स्त्री.* {अ.} नाजिम का पद, प्रबंध, इंतजाम।
नजारा पुं. {अ.} दृश्य, दृष्टि।
नजिकाना *अ.* {हिं. नजीक (नजदीक)} निकट या पास पहुँचना।
नजीक *क्रि. वि.* {सं.} निकट।
नजीर *स्त्री.* {अ. नज़ीर} उदाहरण; दृष्टांत।
नजूम पुं. {अ.} ज्योतिष विद्या।
नजूमी पुं. {अ.} ज्योतिषी।
नजूल पुं. {अ. नजूल} नगर की वह भूमि जो सरकार के अधिकार में चली गई हो, राजग।
नट पुं. {सं.} {*भाव.* नटता, *स्त्री.* नटी} नाट्य या अभिनय करनेवाला मनुष्य, नाटक का पात्र (एक्टर); एक जाति जो प्रायः गा-बजाकर, खेल-तमाशे करके या कुश्ती-कलाबाजी दिखाकर निर्वाह करती है।
नटई *स्त्री.* {देश.} गला, गरदन; गले की घंटा, घाँटी।
नट-खट *वि.* {हिं. नट + अनु. खट} पाजी दुष्ट; चालाक, धूर्त।
नटन पुं. {सं.} नृत्य नाचना; नाट्य या अभिनय करना।
नटना *अ.* {सं. नटन} नाट्य या अभिनय करना; नाचना; कहकर मुकर जाना।
नटनागर पुं. {सं.} श्रीकृष्ण का वाचक एक पद।
नटनि[1] *स्त्री.* {सं. नर्तन} नृत्य, नाच।
नटनि[2] *स्त्री.* {हिं. नटना} इनकार, अस्वीकृति।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नटनी *स्त्री.* {सं. नट + नी (प्रत्य.)} नट की या नट जाति की स्त्री।

नटराज *पुं.* {सं.} महादेव, शिव।

नटवना *अ.* {सं. नटन} नाट्य या अभिनय करना; नृत्य करना, नाचना।

नटवर *पुं.* {सं.} नाट्यकला का अच्छा ज्ञाता; श्रीकृष्ण।

नटसंज्ञक *पुं.* {सं.} गोंदती हरताल।

नटसार *स्त्री.* नाट्यशाला।

नटसारी *स्त्री.* {हिं. नट} नट का काम।

नटासल *स्त्री.* {सं. नष्टशल्य} शरीर में पड़े हुए काँटे या तीर की गाँसी का वह भाग, जो टूटकर शरीर में रह गया हो; कसक।

नटिन *स्त्री.* {सं.} नट जाति की स्त्री; अभिनेत्री, पात्री; नर्तकी।

नटेश *पुं.* {सं.} महादेव।

नटैया *स्त्री.* नटई; एक रागिनी का नाम।

नठना *अ.* {सं. नष्ट} नष्ट होना; *स.* नष्ट करना।

नडह *वि.* {सं.} सुंदर ललित, चमक- दमकवाला।

नढ़ना *स.* {हिं. नाथना} गूँथना, पिरोना; बाँधना; कसना।

नत *वि.* {सं.} झुका हुआ; टेढ़ा हुआ।

नतन *पुं.* {सं.} नत होने या झुकने की क्रिया या भाव, झुकाव।

नतपाल *वि.* {सं.} अपने सामने आकर झुकनेवालों की रक्षा और पालन करनेवाला।

नतपुर *पुं.* {सं.} नादियाद प्रांत।

नतबहू *स्त्री.* {हिं. नाती + बहू} नाती की स्त्री।

नतम *वि.* {हिं.} बाँका।

नतमस्तक *वि.* {सं.} जिसका सिर किसी के आगे झुका हो (अधीनता या आदर का सूचक)।

नतमाथ *वि.* {सं. नत + हिं. माथा} जिसका सिर झुका हो, नतमस्तक; विनीत, नम्र।

नतर (रु) *क्रि. वि.* {हिं. न + तो} नहीं तो, अन्यथा।

नति *स्त्री.* {सं.} 'नत' होने की दशा; झुकाव, प्रवृत्ति (इनक्लिनेशन); प्रणाम; विनय, नम्रता।

नतिनी *स्त्री.* {हिं.} लड़की की लड़की।

नतीजा *पुं.* {फा.} परिणाम, फल।

नतीजतन *क्रि. वि.* {अ.} परिणामतः।

नतुवा *यो.* {सं.} नहीं तो क्या?

नतैत *पुं.* {अ. नाता} नातेदार, संबंधी, रिश्तेदार।

नतैती *स्त्री.* {हिं. नतैत} रिश्तेदारी, संबंध।

नतोदर *वि.* {सं.} जिसका मध्य भाग या तल कुछ नीचे या अंदर की ओर हो (कांकेव)।

नत्थी *स्त्री.* {हिं. नाथना} कागज आदि के कई टुकड़ों को एक साथ मिलाकर नाथना या फाँसना; इस प्रकार नाथे हुए कागजों आदि का समूह, मिसिल (फाइल)।

नत्थीकरण *पुं.* {हिं. + सं.} नत्थी करने की क्रिया या भाव।

नत्वर्थक *वि.* {सं.} जिसमें किसी वस्तु या बात का अस्तित्व न माना गया हो; जिसमें कोई प्रस्ताव या सुझाव मान्य न किया गया हो (नेगेटिव)।

नथ *स्त्री.* {हिं. नाथना} नाक में पहनने का एक प्रसिद्ध गहना, लोंग।

नथना[1] *पुं.* {सं. नस्त} नाक का अगला भाग, जिसमें दोनो छेद होते हैं।

मुहा. नथना फुलाना = रुष्ट होना।

नथना[2] *अ.* {हिं. 'नाथना' का अ. रूप} किसी के साथ नत्थी होना या नाथा जाना; छेदा जाना।

नथिया *स्त्री.* = नथ।

नद *पुं.* {सं.} वह बड़ी नदी जिसका नाम पुंलिंगवाची हो, जैसे सोन, ब्रह्मपुत्र, सिन्धु आदि।

नदनदीति *पुं.* {सं.} समुद्र, सागर।

नदना *अ.* {सं. नदन = शब्द करना} पशुओं का-सा शब्द करना; रँभाना, बँबाना; शब्द करना, बजना; घोर शब्द करना, गरजना।

नदवान *पुं.* {?} क्षत्रियों की एक शाखा का नाम।

नदान *वि.* {हिं.} नादान, अनभिज्ञ।

नदारद *वि.* {फा.} जो सामने या प्रस्तुत न हो, लुप्त, गायब।

नदि *पुं.* {सं.} स्तुति, प्रशंसा।

नदी *स्त्री.* {सं.} जल का वह प्राकृतिक प्रवाह जो किसी पर्वत, झील आदि से निकलकर निश्चित मार्ग से होता हुआ समुद्र या किसी दूसरी नदी में गिरता है, दरिया।

कहा. नदी नाव संयोग = इत्तफाक से होनेवाली भेंट या मिलाप।

किसी तरल पदार्थ का प्रवाह, जैसे खून की नदी।

नदीश *पुं.* {सं.} समुद्र।

नद्दना *अ.* नदना।

नद्ध *वि.* {सं.} बद्ध, बँधा हुआ।

नद्धि *स्त्री.* {सं.} बंधन, रस्सी।

नद्धी *स्त्री.* {सं.} चमड़े की डोरी, ताँत।

नधना *अ.* {सं. नद्ध + ना (प्रत्य.)} बैल का हल, गाड़ी आदि के आगे बँधना, जतना; संयुक्त या संबद्ध होना, जुड़ना; कार्य का आरंभ होना।

ननकारना *अ.* {हिं. न + करना} इनकार या अस्वीकार करना।

ननद (दी) *स्त्री.* ननदोई।

ननसार *स्त्री.* ननिहाल, नाना का घर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ननहर पुं. = ननिहाल।

ननिआउर पुं. ननिहाल।

ननिहाल पुं. {हिं. नन्हा + (प्रत्य.)} नाना का घर; छोटापन, छोटाई; प्रतिष्ठा, हेठी।

नन्हैया *वि.* नन्हा।

नपना *अ.* {हिं. नापना} नापा जाना; पुं. नापने का बर्तन, नापने का पात्र।

नपाई *स्त्री.* {हिं. नाप + आई (प्रत्य.)} नापने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

नपाक *वि.* {फा. नापाक} {*भाव.* नपाकी} अपवित्र।

नपाकी *स्त्री.* {फा. नापकी} अपवित्रता; *वि.* नपाक।

नपाना *स.* {हिं. नापना} नापने का काम दूसरे से करना।

नपुंसक पुं. {सं.} {*भाव.* नपुंसकता} वह पुरुष, जिसमें स्त्री संभोग की शक्ति न हो या बहुत ही कम हो (इंपोटेंट); हिजड़ा।

नपुंसकता *स्त्री.* {सं.} नपुंसक होने की अवस्था या भाव; पुरुषों का एक रोग जिसमें वे स्त्री-संभोग और संतान उत्पन्न करने के योग्य नहीं रह जाते (इंपोटेंसी)।

नपुआ पुं. {हिं.} नापने की वस्तु।

नप्ता पुं. {सं.} लड़की या लड़के का लड़का, नाती या पोता।

नप्त्री *स्त्री.* {सं.} पोती, नातिन।

नपुत्री *वि.* निपुत्री।

नफर पुं. {फा. नफ़्र} सेवक; व्यक्ति।

नफरत *स्त्री.* {अ. नफ़रत} घृणा।

नफरी *स्त्री.* {फा. नफ़री} किसी मजदूर या कारीगर की दिन भर की मजदूरी या काम, दिहाड़ी।

नफा पुं. {अ. नफा} लाभ, फायदा।

नफासत *स्त्री.* {अ. नफासत} नफीस होने की अवस्था या भाव; सौंदर्य।

नफीरी *स्त्री.* {फा. नफीरी} तुरही।

नफीस *वि.* {अ. नफीस} {*भाव.* नफासत} अच्छा, बढ़िया, सुंदर।

नबी पुं. {अ.} वह जिसे लोग ईश्वर का दूत मानते हों, पैगम्बर, रसूल।

नबेड़ना *स.* {संज्ञा नबेड़ा} निबेड़ना।

नब्ज़ *स्त्री.* {अ. नब्ज़} कलाई की नाड़ी।

नब्ब *वि.* {हिं.} जो गिनती में अस्सी और दस के बराबर हो, (पुं.) यह संख्या 90 है।

नभ पुं. {सं. नभस्} आकाश; जल; मेघ, बादल; वर्षा।

नभकेतन पुं. {सं.} सूर्य, भास्कर।

नभःप्राण पुं. {सं.} पवन, हवा।

नभगामी पुं. {सं. नभोगामिन्} सूर्य, चंद्र या तारा; देवता; पक्षी; *वि.* आकाश में चलनेवाला।

नभचर पुं. नभगासी।

नभधुज पुं. {सं. नभःध्वज} मेघ।

नभवार पुं. {सं. नभ + बाल = व्योमकेश} शिव, महोदव।

नभोवाणी पुं. आकाशवाणी; रेडियो।

नभःसद पुं. {सं.} देवता, चिड़िया, पक्षी।

नभःस्थल पुं. {सं.} शिव, महादेव।

नभःस्थित पुं. {सं.} एक नरक का नाम।

नभस्य पुं. {सं.} भाद्रपद मास।

नम *वि.* {फा.} {भाव नमी.} भींगा हुआ, गीला, तर।

नमक पुं. {फा.} भोज्य पदार्थों में एक विशेष स्वाद उत्पन्न करने के लिए, थोड़ी मात्रा में डाला जानेवाला एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ, लवण, नोन।

मुहा. नमक अदा करना = अपने मालिक के उपकार का अच्छा बदला चुकाना; *(किसी का) नमक खाना* = किसी के दिए हुए अन्न से पेट भरना; *कटे या जले पर नमक छिड़कना* = अत्यंत दुखी को और दुख देना; *नमक फूटकर निकलना* = कृतघ्नता का बुरा फल या दंड मिलना; *नमक-मिर्च मिलाना* = किसी बात में अपनी ओर से भी कुछ मिलाना या बढ़ाना। सलोनापन, लावण्य।

नमकहराम पुं. {फा. नमक + अ. हराम} {*भाव.* नमकहरामी} किसी का दिया हुआ अन्न खाकर उससे द्रोह करनेवाला, कृतघ्न।

नमकहलाल पुं. {फा. नमक + अ. हलाल} {*भाव.* नमकहलाली} स्वामी या अन्नदाता का कार्य या सेवा, ईमानदारी से करनेवाला, स्वामिभक्त।

नमकीन *वि.* {फा.} नमक मिला हुआ या नमक के स्वादवाला; खूबसूरत; पुं. नमक डालकर बनाया हुआ पकवान।

नमदा पुं. {फा. नम्दा} एक प्रकार का ऊनी कंबल, जो ऊन जमाकर बनाया जाता है।

नमन पुं. {सं.} नमस्कार करते हुए झुकना; झुकना; नमस्कार।

नमना *अ.* {सं. नमन} झुकना; प्रणाम करना।

नमनीय *वि.* {सं.} जिसके आगे झुककर नमस्कार किया जाए, पूजनीय; जो झुक सके या झुकाया जा सके, लचीला (फ्लेक्सिबुल)।

नमनीयता *स्त्री.* {सं.} नमनीय या लचीला होने की अवस्था; भाव, लचीलापन (फ्लेक्सिबिलिटी)।

नमस्कार *स्त्री.* {सं.} झुककर आदरपूर्वक अभिवादन करना, प्रणाम।

नमस्कारी *स्त्री.* {सं.} घास, लजालू।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमस्कारना सं. = नमस्कार करना।
नमस्य *वि.* {सं.} पूज्य, आदरणीय।
नमस्ते *पद.* {सं.} आपको नमस्कार है; *स्त्री.* = नमस्कार।
नमस्या *स्त्री.* {सं.} पूजा।
नमाज *स्त्री.* {फा. नमाज़ी, मि. सं. नमन} मुसलमानों की ईश्वर-प्रार्थना।
नमाजी *पुं.* {फा. जमाज़ी} नमाज पढ़नेवाला।
नमाना *स.* {सं. नमन} झुकाना; झुका या दबाकर अपने अधीन करना।
नमामि *पद* {सं.} मैं नमस्कार करता हूँ।
नमित *वि.* {सं.} झुका हुआ।
नमी[1] *स्त्री.* {फा.} गीलापन, तरी।
नमी[2] *वि.* {सं. नमन} झुकनेवाला; जो झुक सकता हो।
नमूना *पुं.* {फा.} किसी पदार्थ के प्रकार या गुण या परिचय कराने के लिए उसमें से निकाला हुआ थोड़ा अंश, बानगी; वह जिससे उसी प्रकार का वर्ग के दूसरे पदार्थों, बातों आदि का पता चल सके, उदाहरण (एग्जाम्पुल); वह जिसे देखकर उसके अनुसार वैसा ही कुछ और बनाया जाए, आदर्श, विशेष प्रतिमान; ढाँचा।
नम्य *वि.* {सं.} जो झुक सके या झुकाया जाने को हो।
नम्र *वि.* {सं.} {*भाव.* नम्रता} जो सबसे झुककर या विनयपूर्वक व्यवहार करे, विनीत; झुका हुआ।
नम्रता *पुं.* {सं.} वह गुण, जिसके कारण मनुष्य सबके सामने झुककर, छोटा बनकर और विनयपूर्वक रहता है और कभी किसी से कठोर या उद्दंड व्यवहार नहीं करता (ह्यूमिलिटी)।
नय[1] *पुं.* {सं.} नीति; नम्रता।
नय[2] *स्त्री.* {सं. नद} नदी, दरिया।
नयक *वि.* {सं.} नीति, न्याय में कुशल विष्णु।
नयकारी *पुं.* {सं. नृत्यकारी} नाचनेवाला, नचनियाँ।
नयन *पुं.* {सं.} आँख; ले जाना।
नयनगोचर *वि.* {सं.} आँखों से दिखाई देनेवाला।
नयनपट *पुं.* {सं.} आँख की पलक।
नयना *अ.* {सं. नमन} नम्र होना, विनयपूर्ण व्यवहार करना; झुकना; *पुं.* = नयन।
नयनागर *वि.* {सं.} नीतिकुशल, नीतिज्ञ।
नयनापांग *पुं.* {सं.} आँख की कोर।
नयनी *स्त्री.* {सं.} आँख की पुतली; *वि. स्त्री.* आँखोंवाली, जैसे, मृगनयनी।
नयनूँ *पुं.* {सं. नवनीत} मक्खन; एक प्रकार की बूटीदार मलमल।
नयर *पुं.* {सं. नगर} नगर।
नयवाद *पुं.* {सं.} एक प्रकार का दार्शनिक वाद या सिद्धांत, जिसके अनुसार यह माना जाता है कि आत्मा एक भी है और अनेक भी।
नयशील *वि.* {सं.} नीतिज्ञ; विनीत, नम्र।
नयणोषध *पुं.* {सं.} पीला, कसीस।
नयवर्त्म *पुं.* {सं.} नीति मार्ग, न्याय का मार्ग।
नयविशारद *पुं.* {सं.} नीतिशास्त्र, नीतिकुशल।
नयशास्त्र *पुं.* {सं.} नीतिशास्त्र।
नयसार *पुं.* {सं.} नीतिसूत्र।
नया *वि.* {सं. नव, मि. फा. नौ} थोड़े समय का, नवीन, हाल का।
मुहा. नया करना = ऋतु का कोई फल या अनाज, उस ऋतु में पहले-पहल खाना; *नया पुराना करना* = पुराना देन चुकाकर नया हिसाब चलाना (महाजनी); पुराने के स्थान पर नया लाकर रखना।
जिसका पता हाल में चला हो; पुराने के स्थान पर आनेवाला; जिससे अभी तक काम न लिया गया हो; अनुभवहीन; नौसिखिआ।
नर *पुं.* {सं.} {*भाव.* नरता, नरत्व} विष्णु; शिव; अर्जुन; पुरुष, मर्द; सेवक; कपूर; *वि.* पुरुष जाति का (प्राणी), मादा का उलटा; औरों की अपेक्षा बहुत अच्छा और प्रबल, जैसे माल की बिक्री के लिए यह नर महीना है; *पुं.* नरकट।
नरकंत *पुं.* {सं. नरकांत} राजा, नृप।
नरई *स्त्री.* {हिं.} गेहूँ के पौधे का डंठल, जलवाली घास।
नरक *पुं.* {सं.} धार्मिक विचारों के अनुसार वह स्थान, जहाँ पापियों या दुराचारियों की आत्माएँ दंड भोगने के लिए भेजी जाती हैं, दोजख, जहन्नुम (हेल्ल); बहुत ही गंदा या कष्टदायक स्थान; नरकासुर।
नरकगामी *वि.* {सं. नरकगामिन्} जो अपने पापों के कारण नरक में गया हो या जाने को हो।
नरकट *पुं.* {सं. नलकट} बेंत की तरह का एक प्रसिद्ध पौधा, जिसके डंठलों से कलमें, चटाइयाँ आदि बनती हैं।
नरकांतक *पुं.* {सं.} श्रीकृष्ण।
नरकारि *पुं.* {सं.} विष्णु; रामचन्द्र।
नरकासुर *पुं.* {सं.} एक प्रसिद्ध पौराणिक असुर, जिसे विष्णु ने मारा था।
नरकुल *पुं.* नरकट।
नरकेहरी *पुं.* नृसिंह।
नरकौतुक *पुं.* {सं.} मदारी का खेल।
नरगण *पुं.* {सं.} फलित-ज्योतिष में नक्षत्रों का गण।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरगिस *स्त्री.* {फा.} एक पौधा जिसमें सफेद रंग के फूल लगते हैं (उर्दू कवि इन फूलों से आँखों की उपमा देते हैं)।

नरजना[1] *अ.* {फा. नाराज़} नाराज या अप्रसन्न होना।

नरजना[2] *स.* {?} कोई चीज नापना या तौलना।

नरजी *पुं.* {?} वह जो अनाज आदि तौलने का काम करता हो, बया।

नरद[1] *स्त्री.* {फा. नर्द} चौसर खेलने की गोटी।

नरद[2] *स्त्री.* {सं. नर्द} ध्वनि, नाद।

नरदमा *पुं.* {फा. नाबदान} मैले पानी का नल, पनाला।

नरदारा *पुं.* {हिं.} नपुंसक, हिजड़ा; *वि.* डरपोक, कायर।

नरदेव *पुं.* {सं.} ब्राह्मण; राजा, नृप।

नरनाथ *पुं.* {सं.} राजा; नरश्रेष्ठ, नृप।

नरनारि *स्त्री.* {सं.} द्रौपदी।

नरनाह *पुं.* नरनाथ, राजा।

नरनाहर *पुं.* 'नृसिंह'।

नरपति *पुं.* {सं.} राजा, नृप।

नरपिशाच *पुं.* {सं.} मनुष्य होने पर भी पिशाचों के से काम करनेवाला।

नरपुर *पुं.* {सं.} भूलोक, मनुष्य-लोक।

नरभक्षी *पुं.* {सं.} आदमखोर राक्षस।

नरभूमि *स्त्री.* {सं.} भारतवर्ष।

नरम *वि.* {फा. नर्म, मि. सं. नम्र} {*भाव.* नरमी} नर्म, मुलायम; लचीला; 'तेज' का उलटा, मन्दा; धीमा, सुस्त, आलसी; जल्दी पचनेवाला, लघुपाक; जिसमें पौरुष या पुंसत्व कम हो।

नरमद *वि., पुं.* नर्मद।

नरमा *स्त्री.* {हिं. नरम} एक प्रकार की कपास, देव-कापस; सेमर की रुई; कान के नीचे का लटकता हुआ भाग, लोल; *पुं.* एक प्रकार का रंगीन कपड़ा।

नरमाई *स्त्री.* {हिं.} कोमलता।

नरमाना *अ.* {हिं. नरम} कोमल, मुलायम या नरम पड़ना; व्यवहार में उग्रता छोड़कर नम्र होना; *स.* नरम या मुलायम करना।

नरमाहट *स्त्री.* नरमी।

नरमाला *स्त्री.* {सं.} नरमुंड की माला।

नरमावड़ी *स्त्री.* {हिं.} वन-कपास, मृदुता।

नरमी *स्त्री.* {फा. नर्म} नरम होने की क्रिया या भाव, कोमलता।

नरमेध *पुं.* {सं.} प्राचीन काल में मनुष्य के मांस की आहुति से होनेवाला एक यज्ञ; मनुष्यों का संहार।

नरलोक *पुं.* {सं.} संसार, जगत्।

नरवध *पुं.* {सं.} किसी मनुष्य को जानबूझकर या किसी उद्देश्य से मार डालना (मर्डर)।

नरवाहन *पुं.* {सं.} वह सवारी, जिसे मनुष्य उठाकर या खींचकर ले चलते हों, जैसे पालकी, रिक्शा आदि।

नरसंहार *पुं.* {सं.} लोगों का सामूहिक वध।

नरसल *पुं.* नरकट।

नरसिंघ *पुं.* नृसिंह।

नरसर *पुं.* {सं.} नौसादर।

नरसिंघा *पुं.* {हिं. नर = बड़ा + सिंघा = सींग} तुरही की तरह का एक बड़ा बाजा।

नरसिंह *पुं.* नृसिंह, नरश्रेष्ठ, विष्णु।

नरहत्या *स्त्री.* {सं.} मनुष्य की साधारण चोट से होनेवाली वह मृत्यु, जिसमें मारने या चोट पहुँचानेवाले का उद्देश्य यह न हो कि वह मर जाए (होमीसाइड)।

नरहर *स्त्री.* {हिं.} पैर की पिंडली के ऊपर की हड्डी।

नरांग *पुं.* {सं.} नाभि, ढोंढ़ी।

नरहरि *पुं.* {सं.} नृसिंह भगवान, जो चौथे अवतार माने जाते हैं।

नरा *पुं.* {हिं.} नरकट की छोटी नली।

नराच *पुं.* {सं. नाराच} तीर, बाण।

नराज *वि.* नाराज।

नराजना *अ. स.* {फा. नाराज़} अप्रसन्न या नाराज होना या करना।

नराट *पुं.* {सं. नरराट्} राजा, नृप।

नराधिप *पुं.* {सं.} राजा।

नरिंद *पुं.* {सं. नरेंद्र} राजा।

नरियर *पुं.* नारियल।

नरियरी *स्त्री.* नरेली।

नरियाना *अ.* {देश.} चिल्लाना।

नरी[1] *स्त्री.* {फा.} सिझाया हुआ मुलायम चमड़ा; करघे की वह नली जिस पर सूत लपेटा रहता है, नार।

नरी[2] *स्त्री.* {सं. नालक।} नली, नाली।

नरी[3] *स्त्री.* {सं. नर} स्त्री, नारी।

नरेंद्र *पुं.* {सं.} राजा, नृप।

नरेंद्रमंडल *पुं.* {सं.} अंग्रेज़ी शासन में भारत की देशी रियासतों के राजाओं की वह संस्था, जो देशी रियासतों की समुचित व्यवस्था और हित रक्षा के लिए बनी थी (चेम्बर ऑफ प्रिंसेज़)।

नरेबी *स्त्री.* {हिं.} एक वृक्ष जिसकी छाल से खाकी रंग बनता है।

नरेली *स्त्री.* {हिं. नारियल} नारियल की खोपड़ी; नारियल की खोपड़ी से बना हुआ हुक्का।

नरेश *पुं.* {सं.} राजा, नृप।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरोत्तम पुं. {सं.} ईश्वर।
नर्क पुं. नरक।
नकुटक पुं. {सं.} घ्राणेंद्रिय, नासिका, नाक।
नर्तक *स्त्री.* {सं.} {*स्त्री.* नर्तकी} नाचने या नृत्य करनेवाला, नचनियाँ।
नर्तकी *स्त्री.* {सं.} नाचनेवाली स्त्री; वेश्या; हस्विनी।
नर्तन पुं. {सं.} नृत्य; नाच।
नर्तना *अ.* {सं. नर्तन} नाचना।
नर्तनागार पुं. {सं.} नर्तनशाला।
नर्तित *वि.* {सं.} नृत्य करता हुआ, नाचता हुआ।
नर्द *स्त्री.* {फा.} चौसर की गोटी।
नर्दन *स्त्री.* {सं.} भीषण ध्वनि, गरज।
नर्दबान पुं. {हिं.} लकड़ी की बनी हुई सीढ़ी, निसेनी।
नर्दा पुं. {हिं.} गंदा पानी बहनेवाली नाली।
नर्मद् पुं. {सं.} जार, यार, चिड़क, चूचुक, स्तनाग्र, स्त्री-प्रसंग।
नर्मरा *स्त्री.* {सं.} गुफा, खोह, पात्र, भार्या, धौंकनी।
नर्म पुं. {सं. नर्मन्} परिहास, हँसी-ठट्टा; साहित्य में नायक का हँसी-ठट्टा करनेवाला सखा; *वि.* नरम।
नर्मद पुं. {सं.} मसखरा; भाँड़; *वि.* नरम।
नर्मदेश्वर पुं. {सं.} नर्मदा नदी से निकलनेवाला अंडाकार शिवलिंग।
नर्मसचिव पुं. {सं.} विदूषक।
नर्स *स्त्री.* {सं.} धात्री, धाय।
नर्सरी *स्त्री.* {अ.} छोटे बच्चों का स्कूल, जिसमें अंग्रेज़ी रंग-ढंग की शिक्षा दी जाती है; पौधशाला।
नल[1] पुं. {सं.} नरकट; कलम; निषध देश का राजा वीरसेन के पुत्र, जिनका विवाह विदर्भ के राजा भीमसेन की कन्या दमयंती से हुआ था; राम की सेना का एक वानर जिसने समुद्र पर पुल बाँधा था।
नल[2] पुं. {सं. लाल} पोली गोल लम्बी चीज; गंदगी और मैला आदि बहने का मार्ग; धातु की वह नली, जिससे शहरों में घर-घर नहाने-धोने, पीने आदि का पानी पहुँचता है, पानी की कल; पेड़ू में की वह नाड़ी जिससे पेशाव उतरता है।
नलका *स्त्री.* {हिं.} नली, नाल।
नलकूप पुं. {हिं. नल + सं. कूप} खेतों, मैदानों आदि में जमीन के अंदर से पानी निकालने का वह नल, जिसका दूसरा सिरा जमीन के अंदर उस गहराई तक पहुँचा रहता है, जहाँ जल होता है (ट्यूब वेल)।
नलाना *क्रि.* {क्रि. अ.} खेत निराना, खेत से घास निकालना।
नलिका *स्त्री.* {सं.} नल के आकार की कोई चीज, चोंगा, नली, एक प्रकार का गंधद्रव्य; प्राचीन काल का नाल नाम का अस्त्र, नाल; तरकश।
नलिन पुं. {सं.} कमल; जल; सारस; नीली कुमुदिनी।
नलिनी *स्त्री.* {सं.} कमलिनी, कमल, वह प्रदेश जहाँ कमल बहुत हों; नलिका नामक गंधद्रव्य; नदी।
नलिनीखंड पुं. {सं.} पद्मिनी-समूह।
नलिनीरुह पुं. {सं.} कमल की नाल; पुं. ब्रह्मा, मैनसिल।
नली *स्त्री.* {हिं. 'नल' का *स्त्री.* अल्पा.} छोटा या पतला नल, चोंगा; नल के आकार की पोल हड्डी, जिसके अंदर मज्जा होती है; घुटने के नीचे, आगे की ओर की हड्डी, पैर की पिंडली का अगला भाग; बंदूक का वह अगला भाग जिसमें होकर गोली निकलती है।
नलुआ पुं. {हिं. नल} छोटा नल; बाँस की छोटी पोर।
नव[1] *वि.* {सं.} {*भाव.* नवता} नवीन, नूतन, नया) बिल्कुल नए सिरे से या पहले-पहल बना हुआ (ओरिजनल)।
नव[2] *वि.* {सं. नवम्} आठ और एक, नौ।
नवक पुं. {सं.} एक ही तरह की नौ चीजों का समूह; *वि.* नया; अनोखा।
नवकारिका *वि.* {सं.} नवविवाहिता स्त्री।
नवकलिका *स्त्री.* {सं.} नई कली; युवती।
नवकलेवर पुं. {सं.} जगन्नाथ पुरी में, ठीक, अधिमास के बाद पड़ने तथा रथयात्रा के समय होनेवाला वह विशेष उत्सव, जिसमें उनकी पुरानी मूर्ति की जगह नई मूर्ति स्थापित की जाती है।
नवखंड पुं. {सं.} पृथ्वी के ये नौ खंड-भरत, किंपुरुष, भद्र, हरि, हिरण्य, केतुमाल, इलावृत्त, कुश और रम्य।
नवग्रह पुं. {सं.} सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये नौ ग्रह।
नवछावरि *स्त्री.* न्योछावर।
नवजागरण पुं. {सं.} फिर से सजग होने की अवस्था या भाव।
नवजात *वि.* {सं.} जिसने अभी या कुछ ही समय पहले जन्म लिया हो, हाल का जन्मा हुआ।
नवत पुं. {सं.} हाथी की झूल, रेशमी वस्त्र।
नवदंपति पुं. {सं.} नवविवाहित पति-पत्नी।
नवदल पुं. {सं.} नया पत्ता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवदुर्गा *स्त्री.* {सं.} नौ दुर्गाएँ जिनका नवरात्र में पूजन होता है, यथा–शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदा।

नवदोला *स्त्री.* {सं.} नया हिंडोला।

नवद्वार *पुं.* {सं.} नया द्वार।

नवधनिक *पुं.* {सं.} नया रईस।

नवधा भक्ति *स्त्री.* {सं.} भक्ति के नौ प्रकार जो ये हैं–श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन।

नवधातु *पुं.* {सं.} नौ प्रकार की धातु।

नवना *स्त्री.* {सं. नमन} नवने या झुकने की क्रिया या भाव; नम्रता, विनय।

नवनिर्वाचित *वि.* {सं.} जो अभी हाल में निर्वाचित हुआ हो।

नवनीत *पुं.* {सं.} मक्खन।

नवप्रसूत *वि.* {सं.} जो अभी जन्मा हो, नवजात।

नवपदी *स्त्री.* {सं.} चौपाई नामक छंद।

नवफलिका *स्त्री.* {सं.} नवयौवना, नवयुवती।

नवम *वि.* {सं.} संख्या के क्रम में नवाँ।

नवमल्लिका *स्त्री.* {सं.} चमेली।

नवमी *स्त्री.* {सं.} चांद्र मास के किसी पक्ष की नवी तिथि।

नवयुग *पुं.* {सं.} नया युग।

नवयुवक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* नवयुवती} तरुण, जवान।

नवयौवना *स्त्री.* {सं.} वह स्त्री जिसने अभी यौवनकाल में प्रवेश किया हो, नौजवान औरत।

नवरंग *वि.* {हिं.} रूपवान, सुंदर, नये ढंग का।

नवरत्न *पुं.* {सं.} मोती, पन्ना, माणिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लहसुनियाँ, पद्मराग और नीलम ये नौ रत्न; गले में पहनने का उक्त नौ रत्नों का हार; एक प्रकार की चटनी।

नवरस *पुं.* {सं.} काव्य के ये नौ रस- शृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्‌भुत और शांत।

नवरात्र *पुं.* {सं.} चैत्र सुदी प्रतिपदा से नवमी तक और अश्विन सुदी प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन, जिनमें नवदुर्गा का व्रत और पूजन होता है। (इनमें से पहला वासन्ती और दूसरा शारदीय नवरात्र कहलाता है)।

नवल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* नवला} नवीन, नया; सुंदर; जवान, युवा।

नवलकिशोर *पुं.* {सं.} श्रीकृष्णचंद्र।

नवलक्षण *पुं.* {सं.} वेदांत के अनुसार ब्रह्म को प्रमाणित करने के नौ लक्षण, यथा-विश्व की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय आदि।

नवला *स्त्री.* {सं.} नवयुवती, तरुणी।

नवविवाहित *वि.* {सं.} जिसका अभी नया-नया विवाह हुआ हो।

नववर्ष *पुं.* {सं.} नया वर्ष, नई वर्षा।

नवशिक्षित *पुं.* {सं.} वह जिसने हाल में कुछ पढ़ना-लिखना सीख हो, नौसिखिआ; वह जिसे आधुनिक ढंग की शिक्षा मिली हो।

नवसत *पुं.* {सं. नव + सत = सप्त} (नव और सात) सोलहशृंगार।

नवससि *पुं.* {सं. नवशशि} द्वितीया का चंद्रमा, नया चाँद।

नवाइ[1] *स्त्री.* {हिं. नवना} नवने या विनीत होने की क्रिया या भाव।

नवाइ[2] *स्त्री.* {सं. नव} नया, नवीन।

नवागत *वि.* {सं.} नया आया हुआ।

नवाज *वि.* {फा. नावज़} कृपा करनेवाला (यौ. के अंत में; जैसे गरीबनवाज)।

नवाजना *स.* {फा. नवाज़} कृपा करना।

नवाड़ा *पुं.* {देश.} एक प्रकार की छोटी नाव; नाव को बीच धारा में ले जाकर चक्कर देने की जलक्रीड़ा, नावर।

नवाना *स.* {सं. नवन} झुकाना; विनीत या नम्र करना।

नवान्न *पुं.* {सं.} नया उपजा हुआ अनाज।

नवाब *पुं.* {अ. नव्वाब} मुगल बादशाहों का वह प्रतिनिधि, जो किसी प्रदेश के शासन के लिए नियुक्त होता था; एक उपाधि जो आजकल कुछ रईस मुसलमान अपने नाम के साथ लगाते हैं; *वि.* खूब ठाठ-बाट से रहने और खूब खर्च करनेवाला।

नवाबी *स्त्री.* {हिं.} नवाब का पद या काम; नवाबों का शासनकाल; नवाबों की-सी अमीरी।

नवाभ्युत्थान *पुं.* विद्या तथा कला-कौशल में होनेवाला, नवीन विकास।

नवार *स्त्री.* {हिं.} बड़ी नाव।

नवासा *पुं.* {हिं.} नाती।

नवासिका *स्त्री.* {सं.} वर्णवृत्त।

नवासी *वि.* {हिं.} अस्सी और नौ की संख्या, 89.

नवाह *वि.* {सं.} नौ दिनों तक चलता रहनेवाला या नौ दिनों में पूरा होनेवाला, जैसे नवाह पाठ।

नवि *स्त्री.* {हिं.} गाय दुहते समय बछड़े का गला बाँधने की रस्सी।

नविका *स्त्री.* {सं.} जिसमें नौ शब्द हों।

नवीकरण *पुं.* {सं.} फिर से नए रूप में लाना, नया रूप देना; जिसकी अवधि बीत चुकी हो,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे फिर से आगे के लिए वैध या नियमित करना (रिन्यूअल)।

नवीकृत *वि.* {सं.} जिसका नवीकरण हुआ हो।

नवीन *वि.* {सं.} {*भाव.* नवीनता} जिसे बने, निकले या प्रस्तुत हुए थोड़े ही दिन हुए हों, बहुत ही थोड़े दिनों का, हाल का, नया; जो पहले-पहल या मूल रूप में बना हो (ओरिजिनल) अपूर्व, विचित्र।

नवीनता *स्त्री.* {हिं.} नयापन।

नवीनीकरण *पुं.* {सं.} नवीकरण।

नवीनीकृत *वि.* {सं.} नवीकृत।

नवीस *पुं.* {फा.} लिखनेवाला, लेखक, जैसे अरजीनवीस।

नवेद *वि.* {सं. निवेदन} निमंत्रण।

नवेला *वि.* {सं. नवल} {*स्त्री.* नवली} नया; जवान।

नवो, नवों *वि. सर्व.* सभी नौ।

नवोढ़ा *स्त्री.* {सं.} नई ब्याही हुई स्त्री, वधू; युवा स्त्री; साहित्य में मुग्धा के अंतर्गत वह ज्ञातयौवना नायिका, जो लज्जा और भय से नायक के पास जाती हो।

नवोत्थान *पुं.* {सं.} नए सिरे से या फिर से होनेवाला उत्थान; किसी देश में विद्याओं या कला-कौशल आदि का नए ढंग से होनेवाला आरंभ या उत्थान।

नवोत्थित *वि.* {सं.} जिसका अभी हाल में उत्थान हुआ हो।

नवोदित *वि.* {सं.} जो अभी हाल में उत्पन्न हुआ या अस्तित्व में आया हो।

नव्य *वि.* {सं.} {*भाव.* नव्यता} नया।

नशना *अ.* = नष्ट होना।

नशा *पुं.* {अ. नशः} वह मानसिक अवस्था जो शराब, भाँग आदि मादक पदार्थों का सेवन करने से होती है।

मुहा. नशा जमाना = अच्छी तरह नशा चढ़ना; *नशा हिरन होना* = किसी अप्रिय घटना के कारण नशा या अभिमान बिल्कुल दूर हो जाना। नशा लानेवाली चीज, मादक द्रव्य; धन, विद्या, अधिकार आदि का अभिमान, घमंड।

मुहा. नशा उतारना = घमंड दूर करना।

नशाखोर *पुं.* नशेबाज।

नशाना *अ., स.* {सं. नाश} नष्ट होना या करना।

नशा-पानी *पुं.* नशे का सामान।

नशाबंदी *स्त्री.* = नशेबंदी।

नशावन *वि.* नाशक, नष्ट करनेवाला।

नशीन *वि.* {फा.} {*भाव.* नशीनी} बैठनेवाला, जैसे गद्दीनशीन।

नशीनी *स्त्री.* {फा.} बैठने की क्रिया या भाव।

नशीला *वि.* {फा. नशः = ईला (प्रत्य.)} जिससे नशा होता हो, मादक; जिस पर नशे का प्रभाव हो।

नशेबंदी *स्त्री.* {अ. नशः + फा. बंदी} नशा करने पर होनेवाली कानूनी रोक।

नशेबाज *पुं.* {अ. नशः + फा. बाज} वह जो प्रायः नित्य किसी नशे का सेवन करता हो।

नशेबाजी *स्त्री.* {हिं. नशेबाज़} नशा करने की आदत; नशे का सेवन।

नशोहर *वि.* {हिं.} नाश करनेवाला।

नश्तर *पुं.* {फा.} फोड़े चीरने का बहुत तेज छोटा चाकू।

नश्वर *वि.* {सं.} {भाव. नश्वरता} जो जल्दी नष्ट हो जाए, नष्ट हो जानेवाला (मॉर्टल)।

नषत *पुं.* नक्षत्र।

नष्ट *वि.* {सं.} {भाव. नष्टता} जिसका नाश हो गया हो; जो दिखाई न दे; अधम, नीच; निष्फल, व्यर्थ।

नष्टभ्रष्ट *वि.* {सं.} जो पूरी तरह से रद्दी या बरबाद हो गया हो।

नष्टा *स्त्री.* {सं.} बदचलन स्त्री, कुलटा।

नष्टासु *वि.* {सं.} मृत तरा हुआ।

नसंक *वि.* 'निश्शंक', निर्भय।

नस *स्त्री.* {सं. स्नायु} शरीर में तंतु के रूप की वह नली, जो पेशी को किसी कड़े स्थान से जोड़ती है; कोई शरीर-तंतु या रक्त-वाहिनी नली।

मुहा. नस चढ़ना या नस पर नस चढ़ना = किसी नस का अपनी जगह से कुछ हट या बल खा जाना। *नस नस में* = सारे शरीर में। *नस-नस फड़क उठना* = बहुत अधिक प्रसन्नता होना। *नस ढीली होना* = तेजी या शेखी दूर होना, पहले की-सी शान न रह जाना।

नसकटा *पुं.* {हिं.} नपुंसक, हिजड़ा।

नसतरंग *पुं.* {हिं. नस + तरंग} पुरानी चाल का शहनाई की तरह का एक बाजा।

नसना[1] *अ.* = नष्ट होना।

नसना[2] *अ.* {हिं. नटना} भागना।

नसल *स्त्री.* {अ. नस्ल} वंश, कुल।

नसवार *स्त्री.* सुँघनी, नस्य।

नसा *स्त्री.* {सं.} नसिका, नाक।

नसाना *स.* {हिं. नसना का प्रे.} भगाना; (कष्ट आदि) दूर या नष्ट करना; *अ.* दूर या नष्ट होना।

नसावन *वि.* {हिं. नसाना} नसाने या भगानेवाला; (कष्ट आदि) दूर या नष्ट करनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नसीब *पुं.* {अ.} भाग्य, तकदीर।
नसी *स्त्री.* {हिं.} हाल के प्यार का अगला भाग।
नसीनी *स्त्री.* {हिं.} निसेनी, सीढ़ी।
नसीपूजा *पुं.* {हिं.} बुआई हो जाने पर हल की की जानेवाली पूजा।
नसीबवर *वि.* {सं.} भाग्यवान।
नसीहत *स्त्री.* {अ.} अच्छा और भलाई का उपदेश, सीख; बुरे काम से मिलनेवाली अच्छी शिक्षा।
नसेनी *स्त्री.* {सं. श्रेणी} सीढ़ी।
नस्तित *वि.* {सं.} नस्ती या नत्थी में लगाया हुआ, नत्थी किया हुआ (फाइल्ड)।
नस्ती *स्त्री.* नत्थी, नाथ, नकेल।
नस्य *पुं.* {सं.} सुँघनी, नास, नासिका-द्वार, नाक में सूँघने का चूर्ण।
नहँ *पुं.* नाखून, नाव।
नहछू *पुं.* {सं. नख + क्षौर} विवाह से पहले की एक रीति, जिसमें वर की हजामत बनती है, नाखून काटे जाते हैं और उसे मेहंदी लगाई जाती है।
नहना *स.* नाधना, जोतना, कापम में लगाना।
नहर *स्तर.* {फा.} सिंचाई, यात्रा आदि के लिए छोटी नदी के रूप में तैयार किया हुआ कृत्रिम जलमार्ग, कुल्या।
नहरनी *स्त्री.* {सं. नखहरणी} नाखून काटने का एक प्रसिद्ध औजार।
नहरी *वि.* {हिं.} नहर से खींचा जानेवाला।
नहरुआ *पुं.* {देश.} एक रोग जिसमें घाव में से सूत की तरह का लंबा सफेद कीड़ा निकलता है।
नहला *पुं.* {हिं.} ताश का नहला पत्ता, नक्काशी करने का औजार।
नहलाई *स्त्री.* {हिं.} नहलाने की क्रिया या मजदूरी।
नहलाना *स.* हिं. नहाना का *स.*।
नहवाना *स.* नहलाना, स्नान करना।
नहाँ *पुं.* {हिं.} पहिए के बीच का छिद्र, घर के आगे का आँगन।
नहान *पुं.* {सं. स्नान} शरीर साफ करने के लिए उसे जल से धोना, स्नान करना; स्नान का पर्व।
नहाना *अ.* {सं. स्नान} शरीर साफ करने के लिए उसे जल से धोना, स्नान करना।
मुहा. दूधों नहाओ, पूतों फलो = दूध के अंतर्गत मुहा ।
तरल पदार्थ से सारे शरीर का तर होना।
नहानी *स्त्री.* {हिं.} स्त्री का रजस्वला होना।
नहार *वि.* {फा., मि. सं. निराहार} जिसने सबेरे से कुछ खाया न हो, बासी मुँह।
नहारी *स्त्री.* जलपान, कलेवा।
नहारू *पुं.* = नाहर (सिंह)।
नहिं *अव्य.* {हिं.} कभी नहीं।
नहिक *वि.* {सं. नहि + क (प्रत्य.)} अस्वीकृत करने या न माननेवाला, 'नहीं' कहने या करनेवाला, नकारात्मक; जिसमें किसी विशेष वस्तु का अभाव हो, किसी विशिष्ट वस्तु, तत्व या बात से रहित; जो किसी तत्व या बात का अवरोधक, बाधक या मारक हो; (प्रतिकृति या मूर्ति) जिसमें मूल की छाया के स्थान पर प्रकाश और प्रकाश के स्थान पर छाया हो (साहित्य का विपर्याय; अपोज़िट, उक्त सभी अर्थों के लिए); *पुं.* वह कथन या बात जिसमें कोई दूसरी बात न मानी गई हो या कुछ इनकार किया गया हो, असम्मतिसूचक बात; किसी विषय, निश्चय आदि का वह अंग या पक्ष, जिसमें उसके सहिक या सकारात्मक पक्ष का खंडन या विरोध हो; किसी की वह प्रतिकृति या मूर्ति, जिसमें मूल की छाया के स्थान पर प्रकाश और प्रकाश के स्थान पर छाया हो; छायाचित्र में वह शीशा जिस पर किसी वस्तु का उलटा प्रतिबिंब या आकृति अंकित होती है और जिससे कागज पर उसकी सहिक प्रतियाँ छापी जाती हैं। (सहिक का विपर्याय; नेगेटिव, उक्त सभी अर्थों के लिए)।
नहीं *निपा.* {सं. नहिं} निषेध या अस्वीकृति सूचित करनेवाला एक शब्द।
पद नहीं तो = यदि ऐसा न हो तो।
नहुष *पुं.* {सं.} विष्णु, एक नाग, चंद्रवंशी राजा-अम्बरीष के पुत्र और ययाति के पिता।
नहूस *वि.* {अ.} मनहूस, अशुभ।
नहूसत *स्त्री.* {अ.} मनहूस होने का भाव, मनहूसी।
नाँ *निपा.* नहीं, अस्वीकृति, निषेध-सूचक शब्द।
नाँउ *पुं.* नाम।
नाँगा *वि.* नंगा, नग्न।
नाँघना *स.* लाँघना।
नाँठना *अ.* = नष्ट होना।
नाँद *स्त्री.* {सं. नंदक} मिट्टी का वह बड़ा बरतन, जिसमें पशुओं को चारा दिया या पानी पिलाया जाता है।
नाँदना[1] *अ.* {सं. नाद} शब्द करना; छींकना।
नाँदना[2] *अ.* {सं. नंदन} आनंदित या प्रसन्न होना; बुझने से पहले दीपक का भभकना।
नांदी *स्त्री.* {सं.} अभ्युदय, समृद्धि; वह आशीर्वादात्मक पद्य, जो सूत्रधार नाटक के आरंभ करने के पहले पढ़ता है, मंगलाचरण।
नांदीमुख *पुं.* {सं.} एक मांगलिक श्राद्ध, जो विवाह आदि मंगल अवसरों से पहले होता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाँयँ पुं. नाम; *निपात.* नहीं।
नाँवँ पुं. नाम।
नाँह पुं. {सं. नाथ} स्वामी; *निपा.* नहीं।
ना *निपा.* {सं. न} नहीं, न; विभ. {*स्त्री.* नी} हिं. 'का' विभक्ति का स्थानिक रूप (राज. और गूज.)।
नाइन *स्त्री.* {हिं. नाई} नाई की स्त्री।
नाइब पुं. नायब।
नाईं *स्त्री.* {सं. न्याय} समान दशा।
पद की नाईं = की तरह; की तरह।
नाई पुं. {सं. नापित} वह जो हजामत बनाने का काम करता हो, हज्जाम।
नाउँ पुं. नाम।
नाउन *स्त्री.* नाइन।
नाउत पुं. {हिं.} भूत-प्रेत झाड़नेवाला, ओझा।
नाउम्मीद *वि.* {फा.} {*भाव.* नाउम्मीदी} निराश; हताश।
नाउम्मेदी *स्त्री.* {फा.} निराशा, हताशा।
नाऊ पुं. नाई, नापित।
नाकंद *वि.* {फा. ना + कंद:} बिना निकाला हुआ (घोड़ा); अल्हड़।
नाक[1] *स्त्री.* {सं. नक्र} होंठों से ऊपर की सूँघने और साँस लेने की इंद्रिय, नासिका।
मुहा. नाक का बाल होना = सदा साथ रहकर घनिष्ठ मित्र या सखा होना; *नाक घिसना* = (किसी के आगे) नाक रगड़ना; *नाक-भौं चढ़ाना या सिकोड़ना* = अरुचि या अप्रसन्नता प्रकट करना; *नाम में दम करना* = बहुत तंग करना या सताना; *(किसी के आगे) नाक रगड़ना* = गिड़गिड़ाकर विनती करना; अपना अपराध मानकर दीनतापूर्वक भविष्य में अपराध न करने की प्रतिज्ञा करना; *नाकों चने चबवाना* = बहुत तंग करना, हैरान करना।
सिर की नसों आदि का मल जो नाक से निकलता है, रेंट, नेटा; प्रतिष्ठा या शोभा बढ़ानेवाली वस्तु; प्रतिष्ठा, मान, इज्जत।
मुहा. नाक कटना = अप्रतिष्ठा या बेइज्जती होना; *नाक रख लेना* = प्रतिष्ठा की रक्षा कर लेना।
नाक[2] पुं. {सं. नक्र} मगर की तरह का एक जलजंतु।
नाक[3] पुं. {सं.} स्वर्ग; आकाश; इंद्र; पुं. नाका।
नाकड़ा पुं. {हिं. नाक} नाक का एक रोग जिसमें वह पक जाती है।
नाकदर *वि.* {फा.} जो कदर करना न जानता हो।
नाकना *स.* {सं. लंघन} लाँघना।
उदा. सूरनि नाकति ज्यों अहि देखि। –केशव।
आगे बढ़ जाना, मात करना।
नाका पुं. {हिं. नाकना} रास्ते का सिरा, मुहाना; नगर, दुर्ग, क्षेत्र आदि का प्रवेशद्वार।
मुहा. नाका छेंकना = आने-जाने का रास्ता रोकना।
वह स्थान जहाँ पहरा देने या कर उगाहने के लिए सिपाही रहते हों, चौकी; सुई में का छेद।
नाकापगा *स्त्री.* {सं.} स्वर्ग की नदी, मंदाकिनी।
नाकामयाब *वि.* {फा.} विफल, असफल, विफल-मनोरथ।
नाकामयाबी *स्त्री.* {फा.} विफलता।
नाकामी *स्त्री.* = नाकामयाबी।
नाकी पुं. {सं.} देवता।
नाकु पुं. {सं.} एक ऋषि का नाम, पर्वत, पहाड़, टीला, भीटा।
नाकुल पुं. {सं.} मार्ग, रास्ता, सेमर का मूसल।
नाकुली *स्त्री.* {सं.} सर्पगंधा नामक जड़ी, सफेद भटकटैया।
नाकेबंदी *स्त्री.* {हिं. नाका + फा. बंदी} शत्रु, अपराधी आदि को घेरने या पकड़ने के लिए किसी स्थान के आने-जाने के मार्ग रोकना (ब्लॉकेड)।
नाकेदार पुं. {हिं. नाका + फा. दार} नाके पर रहनेवाला पहरेदार या अधिकारी।
नाकौकस पुं. {सं.} स्वर्गवासी, देवता।
नाखत्र *वि.* {सं.} नक्षत्र-संबंधी, नक्षत्र या नक्षत्रों का।
नाक्षत्रिक *वि.* {सं.} नक्षत्र-संबंधी।
नाखना *स.* {सं. नष्ट} नष्ट करना; फेंकना; डालना; (शस्त्र) चलाना; रखना; *स.* लाँघना।
नाखुश *वि.* {फा.} अप्रसन्न।
नाखुशी *स्त्री.* {फा.} अप्रसन्नता।
नाखून पुं. {फा. नाखुन मि. सं. नख} उँगलियों के सिरे पर होनेवाली हड्डी की-सी बढ़ी वस्तु, नख।
नाखूनी *वि.* नाखून के आकार का, पतला, जैसे धोती की नाखूनी किनारा।
नाग पुं. {सं.} {*स्त्री.* नागिन} साँप, विशेषतः फनवाला साँप।
मुहा. नाग से खेलना = ऐसा कार्य करना जिसमें प्राण जाने का भय हो।
कद्रु से उत्पन्न कश्यप के वंशज, जिनका निवास पाताल में माना गया है, इनके ये आठ कुल माने गए हैं–वासुकि, तक्षक, कुलक, कर्कोटक, पद्म, संखचूड़ महापद्म और धनंजय; हिमालय में रहनेवाली एक प्राचीन जाति; हाथी; राँगा;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीसा (धातु); पान, ताम्बूल; बादल; आठ की संख्या।

नागकन्या *स्त्री.* {सं.} नाग जाति की कन्या जो बहुत सुंदर मानी जाती है।

नागकेसर *पुं.* {सं. नागकेशर} एक पेड़ जिसके सूखे फूल औषधि, मसाले और रंग बनाने के काम में आते हैं।

नागझाग *पुं.* अफीम, नशीली वस्तु।

नागनग *पुं.* {सं.} गजमुक्ता।

नागना *अ.* {हिं. नागा} नागा करना, अंतर डालना।

नागपाश *पुं.* {सं.} वह फंदा जो नाग किसी से लिपटकर उसे बाँधने या फँसाने के लिए बनाता है; वह विकट संकट जिससे सहज में छुटकारा न हो; वरुण के अस्त्र का नाम; शत्रुओं को बाँधने का एक प्राचीन अस्त्र।

नागफनी *स्त्री.* {हिं. नाग + फन} थूहर की जाति का एक काँटेदार पौधा।

नागफाँस *पुं.* नागपाश।

नागबंध *पुं.* {सं.} किसी चीज को लपेटकर बाँधने का वह विशेष प्रकार, जो प्रायः वैसा ही होता है, जैसा नाग का किसी जीव, जंतु या वृक्ष आदि को अपने शरीर से लपेटने का होता है।

नागबेल *स्त्री.* {सं. नागवल्ली} पान।

नागयज्ञ *पुं.* {सं.} महाभारत के अनुसार एक प्रसिद्ध यज्ञ, जिसमें जिरनमेजय ने नागों (सर्पों या नागजाति) का पूर्ण विनाश किया था।

नागर *वि.* {सं.} नगर से संबंध रखनेवाला। (अर्बन); नगर-निवासियों से संबंध रखनेवाला, जैसे नागर अधिकार। (सिविल); नगरपालिका या नगर परिषद् से संबंध रखनेवाला, जैसे नागर निधि। (म्युनिसिपल); चतुर, होशियार; *पुं.* {*स्त्री.* नागरी, नागरि, भाव. नागरता} नगर का निवासी; वह जो चतुर, सभ्य और शिष्ट हो, भला आदमी।

नागरनट *पुं.* नटनागर।

नागरमोथा *पुं.* {सं. नागरमुस्ता} एक प्रकार की घास, जिसकी जड़ दवा के काम आती है।

नागर युद्ध *पुं.* {सं.} वह आपसी युद्ध या लड़ाई, जो किसी राष्ट्र के नागरिकों में होती है, गृहयुद्ध (सिविल वार)।

नागर-विवाह *पुं.* {सं.} वह विवाह जो धार्मिक बंधनों से रहित होता और विशुद्ध नागरिक की हैसियत से किया जाता है (सिविल मैरिज)।

नागराज *पुं.* {सं.} शेषनाग; ऐरावत।

नागरिक *वि.* {सं.} {*भाव.* नागरिकता} नगर-संबंधी, नगर का; नगर में रहनेवाला, शहरी; चतुर, सभ्य; *पुं.* किसी राष्ट्र या देश का वासी।

नागरिकता *स्त्री.* {सं.} 'नागरिक' होने की अवस्था या भाव; किसी स्थान, देश या राज्य के नागरिक होने पर प्राप्त होनेवाली सामाजिक स्थिति और राजनीतिक अधिकार।

नागरिकशास्त्र *पुं.* {सं.} वह शास्त्र जिसमें व्यक्ति, समाज और देश के हित के विचार से संस्कृति, परिस्थितियों और आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए वास्तविक, उत्तम और सद्जीवन व्यतीत करने का विवेचन होता है (सिविक्स)।

नागरी *स्त्री.* {सं.} नगर की रहनेवाली चतुर स्त्री; स्त्री, औरत; पशुओं आदि की मादा, जैसे, नाग नागरी = हथिनी; देवनागरी लिपि; हिंदी भाषा।

नागरीट *पुं.* {सं. *वि.*} लंपट, व्यभिचारी, दोगला।

नागरुक *पुं.* {सं.} नागरंग, नारंगी।

नागरेयक *वि.* {सं.} नगर-संबंधी, नगर का।

नागर्य *पुं.* {सं.} जुए की रस्सी जिससे बैल का कंधा बाँधा जाता है।

नागांगना *स्त्री.* {सं.} नाग की स्त्री।

नागांजना *पुं.* {सं.} हस्तिनी, हथिनी।

नागांतक *पुं.* {सं.} गरुड़, मोर, सिंह।

नागलोक *पुं.* {सं.} पाताल।

नागवल्ली *स्त्री.* {सं.} पान।

नागवार *वि.* {फा.} न रुचनेवाला, अप्रिय।

नागा[1] *पुं.* {सं. नग्न} एक प्रसिद्ध शैव संप्रदाय; इस संप्रदाय के साधु जो प्रायः नंगे रहते हैं।

नागा[2] *पुं.* {सं. नागः} आसाम के पूर्व की एक जनजाति।

नागा[3] *पुं.* {अ. नागः} नियत समय पर होते रहनेवाले काम का किसी बार न होना; वह दिन जिसमें किसी ने काम न किया हो या काम पर उपस्थित न हुआ हो।

नागरस्थ *पुं.* {सं.} नागकेशर।

नागाधिप *पुं.* {सं.} हाथी का अधिपति।

नागानन *पुं.* {सं.} गजानन, श्रीगणेश।

नागार्जुनी *स्त्री.* {सं.} दूधिया गाय।

नागालाव *पुं.* {सं.} गोलकद्दू।

नागाशन *पुं.* {सं.} गरुड़, मोर, शेर।

नागिन *स्त्री.* {हिं. नाग} नाग या साँप की मादा; पीठ की एक प्रकार की लम्बी भौंरी या रोमराजी (अशुभ); वह स्त्री जिसकी पीठ पर उक्त प्रकार की भौंरी या लक्षण हो (कहते हैं कि ऐसी स्त्री जल्दी विधवा हो जाती है)।

नागीय *पुं.* {सं.} नागकेशर।

नागुला *पुं.* {हिं.} नकुल, नेवला।

नागेंद्र *पुं.* {सं.} शेष, वासुकि आदि बड़े नाग; हाथियों का राजा, ऐरावत; बहुत बड़ा हाथी, गजेन्द्र।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागेसर पुं. नागकेसर।

नागेसरी *वि.* {हिं.} नागकेशर के रंग का, पीला।

नागोद पुं. {सं.} छाती पर पहननेवाला लोहे का कवच।

नागोदर पुं. {सं.} गर्भिणी के गर्भ का उपद्रव।

नागौर पुं. {हिं.} बीकानेर राज्य के पास का एक स्थान, जो गाय-बैलों के लिए बड़ा प्रसिद्ध है।

नागौरी *वि.* {हिं. नागौर (नगर)} नागौर का (बैल या बछड़ा जो अच्छा समझा जाता है)।

नाच पुं. {सं. नाट्य} नाचने की क्रिया या भाव।

मुहा. नाच काछना = नाचने को तैयार होना; *नाच दिखाना* = विलक्षण आचरण करना; *नाच नचाना* = जैसे चाहना, वैसा काम कराना; हैरान या तंग करना; *नाच नाचना* = भ्रमवश या दिखावे के लिए या व्यर्थ तरह-तरह के काम करना।

उदा. नाच्यौ नाच लच्छ चौरासी—**सूर**।

नाचने का उत्सव या जलसा।

नाच-कूद *स्त्री.* {हिं. नाच + कूदना} नाच-तमाशा; योग्यता, शौर्य आदि प्रकट करने का निरर्थक प्रयत्न।

नाच-घर पुं. नृत्यशाला।

नाचना *अ.* {हिं. नाच} प्रसन्न होकर उछलना-कूदना; संगीत के साथ ताल स्वर के अनुसार हावभाव दिखाते हुए उछलना, घूमना और इसी प्रकार की दूसरी चेष्टाएँ करना, नृत्य करना; चक्कर लगाना, मँडराना।

मुहा. सिर पर नाचना = घेरना, ग्रसन; बहुत पास आना; *आँख के सामने नाचना* = प्रत्यक्ष के समान प्रतीत होना।

प्रयत्न में दौड़ना-धूपना; क्रोध में उछलना-कूदना।

नाच-रंग पुं. {हिं. नाच + रंग} संगीत या गाने-नाचने का जलसा।

नाचिकेत पुं. {सं.} अग्नि, उद्दालक ऋषि।

नाज[1] पुं. {फा. नाज़} नखरा।

मुहा. नाज उठाना = चोंचले सहना।

नाज[2] पुं. {हिं. अनाज} गेहूँ, चावल आदि अनाज, अन्न।

नाजनीं पुं. {फा. *स्त्री.*} सुंदरी स्त्री।

नाजबरदारी *स्त्री.* {फा. नाज़बरदारी} नाज उठाना, चोचले सहना।

नाजायज़ *वि.* {अ. नाजायज़} जो जायज या वैध न हो, अवैध; अनुचित नामुनासिब।

नाजिम पुं. {अ. नाज़िम} मुसलमानी राज्यकाल का वह प्रधान कर्मचारी, जो किसी देश का प्रबंध करता था; आजकल किसी न्यायालय-संबंधी कार्यालय प्रबन्धकर्ता।

नाज़िर पुं. {अ. नाज़िर} निरीक्षक, देखभाल करनेवाला; न्यायालय के लिपिकों का अधिकारी; वेश्याओं का दलाल।

नाजिल *अ.* {*वि.*} नीचे उतरनेवाला, गुजरनेवाला।

नाजी पुं. {अ. नात्सी} जरमनी का एक बहुत बलवान दल, जो अपने आपको राष्ट्रीय साम्यवादी कहता था और जिसका पराभव दूसरे महायुद्ध में हुआ था; इस दल का सदस्य।

नाजुक *वि.* {फा. नाजुक} कोमल, सुकुमार; पतला, महीन; सूक्ष्म; गूढ़। जरा से आघात से टूट-फूट जानेवाला; जिसमें हानि या अनिष्ट का डर हो, जोखिम का।

नाजुक-मिजाज *वि.* जो कुछ भी कष्ट न सह सके।

नाजी *वि. स्त्री.* {हिं. नाज} दुलारी; प्रियतमा; कोमलांगी।

नाट पुं. {सं.} नृत्य, नाच, एक राग।

नाटक पुं. {सं.} रंगमंच पर अभिनेताओं का हावभाव, वेश और कथोपकथन द्वारा घटनाओं का प्रदर्शन, अभिनय; वह ग्रंथ जिसमें इस प्रकार दिखाया जानेवाला चरित्र या घटना हो, दृश्यकाव्य।

नाटकिया पुं. नट।

नाटकी पुं. {हिं.} नाटक करके अपनी जीविका चलानेवाला।

नाटकीय *वि.* {सं.} नाटक-संबंधी; नाटक या नटों की तरह का।

नाटना *अ.* नटना।

नाटा *वि.* {सं. नत = नीचा} {*स्त्री.* नाटी} छोटे डील या कद का, कम ऊँचा।

नाटिका *स्त्री.* {सं.} चार अंकों का एक प्रकार का दृश्यकाव्य।

नाटिल *वि.* {सं.} जिसका अभिनय हुआ हो।

नाटिवक पुं. {सं.} वह जो अभिनय करता हो।

नाटर पुं. {सं.} नटी की संतान।

नाट्य पुं. {सं.} नटों का एक नृत्य, गीत, वाद्य और अभिनय आदि, अभिनय; स्वाँग।

नाट्यकार पुं. {सं.} नट; वह जो नाटक खिलता हो।

नाट्यमंदिर पुं. {सं.} नाट्यशाला।

नाट्यशाला *स्त्री.* {सं.} वह स्थान जहाँ नाटकों का अभिनय होता हो।

नाट्यशास्त्र पुं. {सं.} नृत्य, गीत अभिनय आदि की विद्या या शास्त्र।

नाठ पुं. {सं. नष्ट} {*क्रि.* नाठना} नाश, ध्वंस; अभाव।

नाठा पुं. {हिं.} वह जिसका उत्तराधिकारी न हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाठना¹ *स.* {सं. नष्ट} नष्ट करना; *अ.* नष्ट होना।

नाठना² *अ.* {हिं. नाटना} भागना।

नाठा *वि.* = नष्ट।

नाड़ *स्त्री.* {सं. नाल} ग्रीवा, गर्दन।

नाड़ा *पुं.* {सं. नाड़ी} घाघरा, पाजामा आदि बाँधने की डोरी, इज़ारबंद, नीबी; वह मांगलिक लाल सूत, जो देवताओं पर चढ़ाया या हाथ में बाँधा जाता है, मौली।

मुहा. नाड़ा बाँधना = किसी अच्छे उस्ताद का कारीगर का किसी को अपनी विद्या या कला सिखाने के लिए अपना शिष्य बनाना।

पेट के अंदर की वह नली, जिससे होकर मल आँतों की ओर जाता है।

मुहा. नाड़ा उखड़ना = पेट के उक्त अंग में कुछ विकार होना जिससे दस्त आने लगते हैं; *नाड़ा बैठाना* = मालिश आदि प्रक्रियाओं से उखड़ा हुआ नाड़ा फिर ठीक स्थान पर लाना (लोक में प्रचलित विश्वास)।

नाडिंघम *पुं.* {सं.} स्वर्णकार, सुनार; *वि.* भयंकर।

नाडिक *स्त्री.* {सं.} एक शाक, घटिका, दंड।

नाडिकेल *पुं.* {सं.} नारिकेल, नारियल।

नाड़िया *पुं.* {हिं.} चिकित्सक, वैद्य।

नाड़ी *स्त्री.* {सं. नाड़ी} नली; शरीर के अंदर की वे नलियाँ, जिनमें से होकर रक्त बहता है, धमनी।

मुहा. नाड़ी चलना = कलाई की नाड़ी में स्पंदन या गति होना; *(जीवन का लक्षण) नाड़ी छूटना* = नाड़ी का न चलना; मृत्यु हो जाना; *नाड़ी देखना* = कलाई की नाड़ी पर हाथ रखकर रोग का पता लगाना।

हठयोग में अनुभूति और श्वास-प्रश्वास संबंधी नालियाँ; काल का एक मान, जो छह क्षण का होता है; डोरी, रस्सी (क्व.)।

नाड़ी मंडल *पुं.* विषुवत् रेखा।

नाड़ीव्रण *पुं.* {सं.} शरीर में होनेवाला नासूर नाम का घाव। (साइंस)

नाणक *पुं.* {सं.} मुद्रा, धातु।

नात¹ *पुं.* {सं. ज्ञाति} नाता, संबंध; नातेदार।

नात² *स्त्री.* {अ. नअत} प्रशंसा, स्तुति; इसलाम के प्रवर्तक मुहम्मद साहब की प्रशंसा या प्रस्तुति का गीत का कविता (मुसल.)।

नातरि *योज.* नातरु, नहीं तो।

नातरु *योज.* {हिं. न + तो + अरु} नहीं, तो, अन्यथा।

नाता *पुं.* {सं. ज्ञाति} मनुष्यों का वह पारस्परिक संबंधी जो एक ही कुल में जन्म लेने या विवाह आदि करने से होता है; जाति-संबंध; संबंध, रिश्ता।

नातिदीर्घ *वि.* {सं.} जो अधिक लम्बा न हो।

नातिन *स्त्री.* {हिं.} लड़की की लड़की।

नाती *पुं.* {सं. नृप्तृ} {*स्त्री.* नतिनी, नातिन} लड़की का लड़का, दोहता।

नाते, के संबंधसूचक {हिं. नाता} संबंध से, जैसे मित्र के नाते; के वास्ते, के लिए।

नातेदार *वि.* {हिं. नाता + फा. दार} {भाव. नातेदारी} संबंधी, रिश्तेदार।

नात्सी *पुं.* नाजी।

नाथ¹ *पुं.* {सं.} प्रभु, स्वामी, मालिक; पति; गोरखपंथी साधुओं की उपाधि।

नाथ² *स्त्री.* {हिं. नाथना} नाथने की क्रिया या भाव; बैन, भैंस आदि की नाक में नाथने की रस्सी, नकेल; *स्त्री.* = नथ (नाक में पहनने की)।

नाथत्व *पुं.* {सं.} प्रभुता, प्रभुत्व।

नाथना *स.* {सं. नाथ} {*भाव.* नाथ, नथाई} बैल, भैंस आदि को वश में रखने के लिए उनकी नाक छेदकर उसमें रस्सी पिरोना, नकेल डालना; पिरोना; नत्थी करना।

नाथद्वारा *पुं.* {सं.} उदयपुर राज्य में श्रीनाथ जी की मूर्ति स्थापित है।

नाथविद *वि.* {सं.} शरण देनेवाला।

नाथहरि *पुं.* {सं.} पशु, चौपाया।

नाद *पुं.* {सं.} शब्द, आवाज; वर्णों के उच्चारण में वह प्रयत्न, जिसमें कंठ को न तो बहुत फैलाकर और न बहुत सिकोड़कर वायु या ध्वनि निकालनी पड़ती है; संगीत।

नादज *वि.* {सं.} नाद से उत्पन्न।

नाटना *स्त्री.* {सं.} शब्द का गुण।

नादपुराण *पुं.* {सं.} एक उपपुराण।

नादना¹ *स.* {सं. नदन} बजाना; *अ.* बजना; गरजन।

नादना² *अ.* {सं. नंदन} प्रफुल्लित होना।

नादली *स्त्री.* हौलदिली।

नादविद्या *स्त्री.* = संगीतशास्त्र।

नादान *वि.* {फा.} {*भाव.* नादानी} नासमझ, मूर्ख।

नादित *वि.* {सं.} जिसमें नाद या शब्द होता हो, शब्दित।

नादिर *वि.* {फा.} अद्‌भुत, अनोखा।

नादिरशाही *स्त्री.* {नादिरशाह} मनमानी आज्ञाएँ प्रचलित करना; भारी अँधेर या अत्याचार; *वि.* बहुत कठोर या विकट (आज्ञा, कार्य आदि)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नादिहंद *वि.* {फा.} ऋण न चुकानेवाला, जिससे पावना जल्दी वसूल न हो।

नादी *वि.* {सं. नादिन्} {*स्त्री.* नादिनी} शब्द करनेवाला; बजनेवाला।

नदिय *पुं.* {सं.} सेंधा नमक; *वि.* नदी-संबंधी।

नादेयी *स्त्री.* {सं.} नारंगी, अड़हुल, नागरमोया, वैजयंती।

नादौट *स्त्री.* {?} पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

नाध *स्त्री.* {हिं. नाथना} नाधने की क्रिया या भाव; किसी बड़े कार्य का आयोजन और आरंभ।
मुहा. नाध नाधना = कोई बड़ा काम ठानना।

नाधना *स.* {हिं. नाथना} बैल, घोड़े आदि को सवारी आदि खींचने के लिए उसके आगे बाँधना, जोतना; लगाना; गूँथना, पिरोना; आरंभ करना, ठानना; नाथना।

नाधा *पुं.* {हिं.} नारी, नाली जिसमें से सिंचाई का पानी जाता है।

नान *पुं.* {फा.} रोटी; खामीरी रोटी (उर्दू में इसका प्रयोग प्रायः स्त्रीलिंग में होता है)।

नानक *पुं.* एक प्रसिद्ध पंजाबी महात्मा, जो सिक्ख संप्रदाय के संस्थापक और सिक्खों के आदि गुरु थे।

नानकपंथी *पुं.* {हिं.} गुरु नानक के संप्रदाय का सिक्ख।

नानकीन *पुं.* {हिं.} मटमैले रंग का का सूती कपड़ा।

नानस *स्त्री.* {हिं.} सास की माता।

नानसरा *पुं.* {हिं.} पति या पत्नी का नाना।

नानखताई *स्त्री.* {फा.} एक प्रकार की सोंधी मीठी टिकिया।

नानबाई *पुं.* {फा. नानबा} रोटियाँ पकाकर बेचनेवाला (मुसल.)।

नाना[1] *वि.* {सं.} अनेक प्रकार के, तरह-तरह के; अनेक बहुत।

नाना[2] *पुं.* {देश.} {*स्त्री.* नानी} माता का पिता, मातामह।

नाना[3] *स.* {सं. नमन} नवाना (झुकाना); डालना या घुसाना, प्रविष्ट करना।

नाना[4] *पुं.* {अ.} पुदीना।

नानिहाल *पुं.* {हिं. नाना} नाना-नानी का घर।

नानी *स्त्री.* {देश.} माता की माता।
मुहा. नानी याद आना या मर जाना = संकट या विपत्ति-सी आ जाना।

ना-नुकर *पुं.* {हिं. ना} इनकार।

नानुसारी *वि.* {हिं. न + अनुसारी} अनुसरण न करनेवाला।
उदा. दानवारि सुखद, जनकजा तनानुसारी। –केशव।

नान्हा *वि.* नन्हा।

नाप *स्त्री.* {हिं. नापना} किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई आदि जिसका विचार किसी निर्दिष्ट लंबाई के आधार पर या तुलना में होता है, परिणाम, माप, (मेजर डाइमेंशंस); वह क्रिया जिससे किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई आदि जानी या स्थिर की जाती है, नापने का काम। (मेजरमेंट); वह निर्दिष्ट लंबाई जिसे एक मानकर किसी वस्तु की लंबाई-चौड़ाई या विस्तार स्थिर किया जाता है, मान; निर्दिष्ट लंबाईवाली वह वस्तु, जिससे इस प्रकार का विस्तार स्थिर किया जाता है, जैसे गज, फुट आदि।

नाप-जोख *स्त्री.* {हिं. नाप + जोख} किसी चीज को नापने-जोखने की क्रिया या भाव।

नाप-तौल *स्त्री.* {हिं. नाप + तौल} किसी चीज को नापने या तौलने की क्रिया या भाव।

नापना *स.* {सं. मापन} लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई आदि का हिसाब लगाना, मापना।
मुहा. गरदन नापना = धक्का देकर हटाना या बाहर निकालना। *सिर नापना* = सिर काटना। किसी बात की गहराई या थाह का या किसी व्यक्ति की जानकारी आदि का पता लगाना।

नापसंद *वि.* {फा.} जो पसंद न हो।

नापसंदी *स्त्री.* {फा. + हिं. ई (प्रत्य.)} नापसन्द होने की अवस्था या भाव।

नापाक *वि.* {फा.} {*भाव.* नापाकी} अपवित्र; मैला-कुचैला।

नापास *वि.* {फा. ना + पैदा} जो पैदा न हुआ हो; विनष्ट; अप्राप्य; दुर्लभ।

नापैद *वि.* {फा. ना + पैद} जो पैदा न हुआ हो; विनष्ट; अप्राप्त; दुर्लभ।

नाफा *पुं.* {फा. नाफः} कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी-मृगों की नाभि में होती है।

नाबदान *पुं.* {फा.} {*वि.* नाबदानी} मल, मूत्र और गंदे पानी की नाली, पनाला (गटर)।

नाबदानी *वि.* {फा.} नाबदान-संबंधी, नाबदान का; नाबदान या पनाले के सामन अस्पृश्य, गंदा और त्याज्य, पनालिया, जैसे नाबदानी पत्र; *स्त्री.* नाबदान।

नाबदानी पत्र *पुं.* पनालिया पत्र।

नाबालिग *वि.* {अ. + फा.} {*भाव.* नाबालिगी} जो अभी पूरा जवान न हुआ हो, अवयस्क।

नाबूद *वि.* {फा.} नष्ट, ध्वस्त।

नाभ *स्त्री.* = नाभि, चंद्रमा का प्रकाश।

नाभक *पुं.* {सं.} हरीतकी, हर्रे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाभस पुं. {सं.} फलित ज्योतिष का एक योग।

नाभाक पुं. {सं.} एक ऋषि का नाम।

नाभाग पुं. {सं.} वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम।

नाभादास पुं. {सं.} भक्तमाल के रचयिता प्रसिद्ध कवि।

नाभि *स्त्री.* {सं.} {*वि.* नाभिक} पहिए का मध्य भाग, चक्रमध्य; जरायुज जंतुओं के पेट पर का मध्य का वह गड्ढ़, जहाँ गर्भावस्था में जरायुनाल रहता है; ढोंढ़ी; पृथ्वी के भीतरी मध्य भाग का कल्पित अंश; बीच में रहनेवाला वह भाग या वस्तु जिसके चारों ओर दूसरे भाग, अंग या वस्तुएँ आकर इकट्ठी होती या मिलती हैं, समष्टि या घन पदार्थ का केंद्र (न्यूक्लिअस)।

नाभील पुं. {सं.} स्त्रियों की कमर के नीचे का भाग, तोंद का उभरा हुआ भाग।

नाभ्य *वि.* {सं.} नाभि-संबंधी; पुं. शिव, महादेव।

नामंजूर *वि.* {फा. + अ. मंजूर} {*भाव.* नामंजूरी} जो मंजूर न हो, अस्वीकार।

नाम पुं. {सं. नामन्} {*वि.* नामी} वह शब्द जिससे किसी वस्तु, व्यक्ति आदि का बोध हो या वह पुकारा जाए, संज्ञा, आख्या (नेम)।

मुहा. नाम उछलना = लोक में बहुत बदनामी या निंदा होना; *नाम उछालना* = बदनामी करना; *नाम का, नाम के लिए या नाम को* = बहुत थोड़ा; दिखाने भर को, काम के लिए नहीं; *नाम चढ़ना* = किसी नामावली में नाम लिखा जाना; *नाम चलना* = लोक में नाम का स्मरण या यश बना रहना; *नाम जपना* = बार-बार नाम लेना; *(किसी का) नाम धरना* = बदनाम करना; दोष निकालना; *नाम न लेना* = दूर या अलग रहना; *नाम निकल जाना* = प्रसिद्ध या बदनाम हो जाना; *किसी के नाम पर* = किसी को अर्पित करके, किसी के निमित्त; किसी की ओर से; *(किसी के) नाम पर बैठना* = किसी के भरोसे संतोष करके चुपचाप बैठे रहना; *नाम बिकना* = प्रसिद्धि के कारण आदर या पूछ होना; नाम तक बाकी न रहना; *(किसी का) नाम लगाना* = दोष मढ़ना, अपनाध लगाना; *नाम लेना* = नाम जपना; गुण गाना, प्रशंसा करना; *(किसी के) नाम से काँपना* = नाम सुनते ही डर जाना।

यश या कीर्ति की सूचक प्रसिद्धि।

मुहा. नाम कमाना = प्रसिद्धि प्राप्त करना; *नाम को मरना* = यश या कीर्ति पाने के लिए प्रयत्न करना; यह ध्यान रखना कि बदनामी न हो; *नाम जगाना* = अच्छी कीर्ति प्राप्त करना; *नाम डुबाना* = यश और कीर्ति की चर्चा होती रहना, यश बना रहना।

बही-खाते का वह विभाग या अंश जिसमें किसी को दिया हुआ धन या माल लिखा होता है।

मुहा. नाम डालना = खाते में यह लिखना कि अमुक व्यक्ति को इतना धन या माल दिया गया।

नामक *वि.* {सं.} नाम से प्रसिद्ध नामवाला।

नामकरण पुं. {सं.} किसी का नाम निश्चित करना, नाम रखना या स्थिर करना; हिन्दुओं के सोलह संस्कारों में से एक, जिसमें बालक का नाम रखा या स्थिर किया जाता है।

नामकीर्तन पुं. {सं.} ईश्वर के नाम का जप, भगवान का भजन।

नामकोश पुं. {सं.} वह कोश जिसमें नामवाचक संज्ञाओं के विवरण रहते हैं जैसे स्थल-नामकोश, ऐतिहासिक नामकोश।

नाम-चढ़ाई *स्त्री.* {हिं. नाम + चढ़ना} वह क्रिया जिसमें संपत्ति आदि के स्वामित्व पर से एक व्यक्ति का नाम हटाकर दूसरे का नाम चढ़ाया जाता है, दाखिल-खारिज (म्यूटेशन)।

नामजद *वि.* {फा. नामज़द} {*भाव.* नामज़दगी} जिसका नाम किसी बात के लिए निश्चित किया या चुना गया हो, नामांकित; प्रसिद्ध, मशहूर।

नामजदगी *स्त्री.* {फा. नामज़दगी} कोई काम करने के लिए या किसी चुनाव आदि में खेड़े होने के लिए किसी का नाम निश्चित किया जाना।

नामजोग *वि.* {चेक} जिसका रुपया बैंक से वही, व्यक्ति ले सकता है, जिसका उस पर नाम लिखा हो।

नामतः *क्रि. वि.* {सं.} नाम अथवा नाम के उल्लेख से, नाम से (बाई नेम)।

नामदार *वि.* नामवर।

नामदेव पुं. {सं.} गुजरात के एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त।

नामधराई *स्त्री.* बदनामी।

नाम-धाम पुं. {हिं. नाम + धाम} नाम और रहने का पता-ठिकाना।

नामधारी (रिन्) *वि.* {सं.} नामक।

नामन पुं. {सं.} नामकरण करना; किसी स्वीकृति के लिए प्रस्तुत करना (नामिनेशन)।

नामनिवेश पुं. {सं.} किसी विशेष कार्य के लिए किसी बही या नामावली में किसी का नाम लिखा जाना (एन्रोलमेंट)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम-निशान पुं. {फा.} चिह्न।

नामपट्ट पुं. {सं.} वह पट्ट, तख्ता आदि जिस पर किसी व्यक्ति, दुकान या संस्था आदि का नाम लिखा रहता है (साइन बोर्ड)।

नामराशि पुं. {सं.} एक दूसरे के विचार से ऐसे दो व्यक्ति, जो एक ही नाम के हों, जैसे वे हमारे नामराशि हैं, अर्थात् उनका भी वही नाम है, जो हमारा है।

नामरासी पुं. नामराशि।

नामर्द *वि.* {फा.} नपुसंक; डरपोक, कायर।

नामर्दी *स्त्री.* {फा.} नामर्द होने की अवस्था या भाव; नपुंसकता नामक रोग; कायरता, भीरुता।

नाम-लिखाई *स्त्री.* {हिं. नाम+लिखना} किसी पंजी, तालिका आदि में नाम लिखा जाना (एन्रोलमेंट); वह धन जो इस प्रकार नाम लिखने के लिए शुल्क के रूप में लिया या दिया जाता है।

नामलेवा पुं. {हिं. नाम + लेना} नाम लेने या स्मरण करनेवाला; संतति, औलाद।

नामवर *वि.* {फा.} {*भाव.* नामवरी} प्रसिद्ध, मशहूर।

नामशेष *वि.* {सं.} जिसका केवल नाम रह गया हो; नष्ट, ध्वस्त; मरा हुआ, मृत।

नाम-हँसाई *स्त्री.* {हिं. नाम + हँसना} लोकनिंदा, बदनामी।

नामांक पुं. {सं.} किसी सूची में आए हुए बहुत से नामों में प्रत्येक नाम के साथ लगा हुआ उसका क्रमांक (रोल नंबर)।

नामांकन पुं. {सं.} {*वि.* नामांकित} किसी कार्य विशेषत: किसी निर्वाचन में सम्मिलित होने के लिए किसी का नाम लिखा जाना, नामजदगी (नॉमिनेशन)।

नामांकित *वि.* {सं.} जिस पर नाम लिखा या खुदा हो; जिसका किसी काम या पद के लिए नाम लिखा गया हो, नामजद (नॉमिनेटेड); प्रसिद्ध, मशहूर।

नामा *वि.* {सं.} नामधारी, नामवाला; पुं. नामदेव भक्त।

नामापराध पुं. {सं.} भगवान् के नाम लेते समय अज्ञान से हो जानेवाली दस चूकें।

नामालूम *वि.* {फा.} जो मालूम न हो, अविदित, अज्ञान।

नामांतर पुं. {सं.} एक ही वस्तु या व्यक्ति का दूसरा नाम, पर्याय।

नामांतरण पुं. {सं.} किसी संपत्ति पर चढ़े हुए एक नाम को हटाकर उसकी जगह दूसरा नाम लिखा या चढ़ाया जाना, दाखिल-खारिज।

नामाकूल *वि.* {फा. अ.} अनुचित; अशिष्ट।

नामावली *स्त्री.* {सं.} एक ही व्यक्ति या वस्तु के बहुत से नामों अथवा बहुत से व्यक्तियों या वस्तुओं के अलग-अलग नामों की सूची या तालिका; वह कपड़ा जिस पर राम, कृष्ण आदि नाम छपे रहते हैं।

नामिक *वि.* {सं.} जो केवल नाम के लिए या संकेत के रूप में हो, और जिसका वास्तविक स्थिति या तथ्य से कोई विशेष संबंध न हो, नाम भर का (नॉमिनल)।

नामित *वि.* {सं.} जिसका नामन हुआ हो।

नामी *वि.* {हिं. नाम} नामधारी, नामवाला; प्रसिद्ध, मशहूर।

नामुनासिब *वि.* {फा. अ.} अनुचित।

नामुमकिन *वि.* {फा. अ.} असंभव।

नामुराद *वि.* {फा.} विफल-मनोरथ, विफल।

नामूसी *स्त्री.* = बदनामी।

नामौजूद *वि.* {फा.} अनुपस्थित।

नामौजूदगी *स्त्री.* {फा.} अनुपस्थिति।

नायँ पुं. = नाम।
निपा. = नहीं।

नायक पुं. {सं.} {*स्त्री.* नायिका} लोगों को अपनी आज्ञा के अनुसार चलानेवाला आदमी, नेता, अगुआ; अधिपति, स्वामी, मालिक; किसी दल या समुदाय का प्रधान, सरदार; साहित्य में वह पुरुष, विशेषत: रूप-यौवनवाला पुरुष, जिसका चरित्र किसी काव्य या नाटक में मुख्य रूप से आया हो (हीरो)।

नायका *स्त्री.* {सं. नायिका} वह वृद्धा स्त्री, जो किसी वेश्या को अपने पास रखकर उससे पेशा कराती हो; कुटनी, दूती; नायिका।

नायकाधिप पुं. {सं.} नृप, राजा।

नायकी *स्त्री.* {सं.} एक राग का नाम—कान्हड़ा; पुं. राग जिसमें सब कोमल स्वर लगते हैं।

नायन *स्त्री.* {सं. नाई} नाई की स्त्री।

नायब पुं {अ.} किसी की ओर से काम करनेवाला, मुख्तार; सहायक, सहकारी।

नायाब *वि.* {फा.} जो जल्दी न मिले, अप्राप्य या दुष्प्राप्य: बहुत बढ़िया।

नायिका *स्त्री.* {सं.} रूप-गुण से युक्त युवा स्त्री, जोशृंगार रस का आलंबन हो या किसी काव्य, नाटक आदि में जिसका चरित्र मुख्य रूप से दिखाया गया हो (हीरोइन)।

नारंगी *स्त्री.* {सं. नागरंग, अ. नारंज} नींबू की जाति का एक पेड़ जिसके फल मीठे, सुगंधित ओर रसीले होते हैं; *वि.* पीलापन लिए कुछ लाल रंग का।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नार[1] *स्त्री.* {सं. नाल} गरदन, ग्रीवा; जुलाहों की ढरकी, नाल।

नार[2] *पुं.* {सं. नारः} जल, पानी।

नार[3] *पुं.* {सं. नारं} समूह, झुंड; आगार, भंडार।

नार[4] *पुं.* {हिं. नाल} आँवल नाल, नाल।

मुहा. नार छीनना = नाल में नाल काटना।

बहुत छोटा रस्सा; इजारबेद, नाड़ा, नाला; *स्त्री.* नारी।

नारकी *वि.* {सं. नारकिन्} नरक में जाने योग्य, बहुत बड़ा पापी; नरक में रहनेवाला।

नारकीट *पुं.* {सं.} कीड़ा, अधम पुरुष जो दूसरे को आशा देकर निराश करता हो।

नारद *पुं.* {सं.} ब्रह्मा के पुत्र, एक प्रसिद्ध हरिभक्त देवर्षि (कुछ लोगों का मत है कि नारद किसी व्यक्ति का नाम नहीं, बल्कि साधुओं के एक संप्रदाय का नाम था); लोगों में झगड़ा करानेवाला व्यक्ति; *वि.* जल देनेवाला; वंशज।

नारदा *स्त्री.* {सं.} ईख की जड़।

नारदीय *वि.* {सं.} नारद-संबंधी।

नारना *क्रि.* {हिं. सं.} थाह लगाना, पता लगाना।

नारा *पुं.* {सं. नअरः} किसी विशेष सिद्धांत, पक्ष या दल का वह घोष, जो लेगों को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए होता है, घोष (स्लोगन); *पुं.* नाड़ा, नाला।

नाराच *पुं.* {सं.} लोहे का बाण।

नाराची *स्त्री.* {सं.} रत्न तौलने का छोटा काँटा।

नाराज *वि.* {फा. नाराज़} {*भाव.* नाराजगी, नाराजी} अप्रसन्न, रुष्ट, खफा।

नाराजगी *स्त्री.* {फा.} अप्रसन्नता, रोष।

नाराजी *स्त्री.* नाराजगी; *वि.* जो राजी या सम्मत न हो।

नारायण *पुं.* {सं.} विष्णु; भगवान, ईश्वर।

नारायणी *स्त्री.* {सं.} दुर्गा; लक्ष्मी; गंगा; *वि.* नारायण-संबंधी, नारायण का, जैसे नारायणी, माया।

नाराशंस *पुं.* {सं.} पितरों को सोमपान अर्पण करने का चमचा, वेद-मंत्र जिनमें में मनुष्यों की प्रशंसा की हुई, प्रशस्ति।

नाराशंसी *वि.* {सं.} स्तुति-संबंधी; *स्त्री.* मनुष्यों की प्रशंसा।

नारि[1] *स्त्री.* नारी।

नारि[2] *स्त्री.* {सं. नारं} समूह, झुंड; आगार, भंडार।

उदा. अति उच्च अगारनि बनी पगारनि जनु चिंतामणि नारि–**केशव।**

नारियल *पुं.* {सं. नारिकेल} खजूर की जाति का एक पेड़, जिसके बड़े गोल फलों में मीठी गिरी होती है; उक्त फल की खोपड़ी का बना हुआ हुक्का।

नारी *स्त्री.* {सं.} {*भाव.* नारीत्व} स्त्री, औरत; *स्त्री.* नाड़ी; नाली।

नारिकेट *पुं.* {सं.} नारियल।

नारिकेलोदक *पुं.* {सं.} नारियल का पानी।

नारियल *पुं.* {हिं.} खजूर की जाति का वृक्ष-जिसकी गरी मीठी होती है। नारियल के गोले का हुक्का।

नारियली *स्त्री.* {हिं.} नारियल का खोपड़ा, नारियल का हुक्का, नारियल की ताड़ी।

नारीच *पुं.* {सं.} एक प्रकार का शाक।

नारीतरंयक *पुं.* {सं.} व्यभिचारी मनुष्य, स्त्रियों के चित्त को चंचल करनेवाला मनुष्य।

नारीत्व *पुं.* {सं.} उन गुणों का समाहार जो नारी की गरिमा के द्योतक हैं।

नारीदूषण *पुं.* {सं.} स्त्रियों के छः दूषणीय कार्य, यथा-सुरापान, दुर्जन-संसर्ग, पति-विरह, भ्रमण, अन्य गृह में वास तथा अधिक सोना।

नारीयान *पुं.* {सं.} स्त्रियों को प्रिय हो; *स्त्री.* मल्लिका, चमेली।

नासेतुद *पुं.* {सं. *वि.*} जिसके शरीर पर आघात न लग सके।

नारू *पुं.* {देश.} जूँ, ढील; नहरुआ नामक रोग।

नारेबाज *पुं.* {हिं. नारा + फा. बाज़} वह जो नारे लगाता हो।

नारेबाजी *स्त्री.* नारे लगाने का काम; किसी के विरोध में नारे लगाना।

नार्मल *वि.* {सं.} सामान्य।

नालंब *वि.* {सं. निरवलंब} {*स्त्री.* नालंबा} जिसका कोई अवलम्ब या सहारा न हो, असहाय।

नाल[1] *स्त्री.* {सं.} कमल, कुमुद आदि फूलों की पोली लम्बी डंडी; पौधे का डंठल, कांड; गेहूँ, जौ आदि की बाल, जिसमें दाने होते हैं; नली, जैसे बंदूक की; सुनारों की फुकनी; रस्सी के आकार की वह नली जो एक ओर गर्भ के बच्चे की नाभि से और दूसरी और गर्भाशय से मिली होती है, आँवल नाल, नारा।

मुहा. नाल काटना = बच्चा उत्पन्न होने पर नाल काटकर उसे माता के शरीर से अलग करना; *(किसी की कहीं) नाल गड़ी होना* = किसी का किसी स्थान से ऐसा घनिष्ठ संबंध या अनुराग होना कि वह जल्दी वहाँ से हट न सके।

मोटे कागज, बाँस आदि की वह पतली नली जिसके अंदर चरखियों आदि में जलनेवाला मसाला भरा रहता है (आतिशबाजी)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाल[2] *स्त्री.* {अ. न्आल्} वह अर्द्धचंद्राकार लोहा, जो घोड़ों की टाप के नीचे या जूतों की ऐड़ी में जड़ा जाता है; पत्थर का वह भारी कुंडलाकार टुकड़ा, जो कसरत करनेवाले उठाते हैं; लकड़ी का वह चक्कर, जो कुएँ की नींव में रखा जाता है और जिसके ऊपर उसकी जुड़ाई होती है; वह रुपया जो जुए के अड्डे का मालिक जीतनेवाले से अपने अंश के रूप में लेता है।

नालक *पुं.* {सं.} उड़द।

नालकी *स्त्री.* {सं. नाल = डंडा या डंडी} एक प्रकार की मेहराबदार छाजनवाली पालकी।

नालबंद *पुं.* {अ. + फा.} जूते की एड़ी या घोड़े के पैरों में नाल जड़नेवाला।

नाला *पुं.* {सं. नाल} {*स्त्री.* अल्पा. नाली} वह प्रणाली या जलमार्ग जिसमें वर्षा का पानी बहता है, प्रणाली; गंदे जल के बहने का मार्ग या प्रणाली।

नालायक *वि.* {फा. + अ.} अयोग्य

नालायकी *स्त्री.* {हिं. नालायक + ई (प्रत्य.)} अयोग्यता।

नालि *स्त्री.* {सं.} कमल की डंडी, नाड़ी, शिरा।

नालिनी *स्त्री.* {सं.} नाक का छेद।

नालिश *स्त्री.* {फा.} न्यायालय में या किसी बड़े के सामने किसी के विरुद्ध होनेवाली फरियाद, अभियोग।

नाली *स्त्री.* {हिं. नाला} जल बहने का छोटा नाला; गंदा पानी बहने की मोरी (ड्रेन); गहरी लकीर; पतला नल, पानी।

नालीय *पुं.* {सं.} कदंब का वृक्ष।

नालौर *वि.* {हिं.} कहकर मुकर जानेवाला।

नावँ *पुं.* नाम।

नाव *स्त्री.* {सं. नौका} जल में चलनेवाली, लकड़ी, लोहे आदि की बनी सवारी, जलयान, नौका, किश्ती।

नावक *पुं.* {फा.} बाण, तीर; *पुं.* नाविक।

नावना *स.* {सं. नामन} झुकाना, नवाना; डालना।

नावर *स्त्री.* {हिं. नाव} नाव, नौका; नाव को नदी के बीच में ले जाकर चक्कर देना (जलविहार)।

नावाधिकरण *पुं.* {सं.} किसी राज्य की सामुद्रिक शक्ति और नाविक विभाग के प्रधान अधिकारियों का वर्ग अथवा उनका प्रधान कार्यालय।

नाविक *पुं.* {सं.} मल्लाह, केवट; जहाज चलाने या जहाज पर काम करनेवाला व्यक्ति।

नावी *पुं.* {सं.} नौका, जहाज आदि चलानेवाला, नाविक।

नावोपजीवी *पुं.* {सं.} वह जो नाव आदि चलाकर अपनी जीविका चलाता है।

नाव्य *वि.* {सं.} (नदी, जलाशय आदि) जिसमें नावें, जहाज आदि चल सकते हों, नौतरणीय।

नाश *पुं.* {सं.} अस्तित्व न रह जाना, ध्वंस, बरबादी।

नाशक *वि.* {सं.} नाश करनेवाला; वध करनेवाला; दूर करने या हटानेवाला।

नाशन *पुं.* {सं.} नाश करना; *वि.* {*स्त्री.* नाशिनी} नाश करनेवाला।

नाशना *स.* = नाश करना।

नाशपाती *स्त्री.* {तु.} सेब की तरह का एक प्रसिद्ध बढ़िया फल।

नाशामय, नाशवान *वि.* नश्वर।

नाशी *वि.* {सं. नाशिन्} {*स्त्री.* नाशिनी} नाशक; नश्वर।

नाशुकरा *वि.* {फा. ना + अ. शुक्र} अकृतज्ञ, कृतघ्न।

नाश्ता *पुं.* {फा.} जलपान।

नाश्य *वि.* {सं.} नाश होने योग्य।

नास *स्त्री.* {सं. नासा} नाक से सूँघी जानेवाली दवा, सुँघनी।

नासत्य *पुं.* {सं.} अश्विनी कुमार।

नासना *स.* {सं. नाशन} नष्ट करना; मार डालना; *अ.* नष्ट होना।

नासमझ *वि.* {फा. + हिं. समझ} {*भाव.* नासमझी} जिसे समझ न हो, मूर्ख।

नासमझी *स्त्री.* {हिं.} नासमझ होने का भाव, बेवकूफी।

नासा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* नास्य} नाक; नाक का छेद, नथना।

नासाग्र *पुं.* {सं.} नाक का अगला भाग।

नासापुट *पुं.* {सं.} नाक की झिल्ली, नथना।

नासालु *पुं.* {सं.} कायफल का वृक्ष।

नासावंश *पुं.* {सं.} नाक की हड्डी।

नासाखत *पुं.* नकघिसनी।

नासागुहा *स्त्री.* {सं.} नाक का छेद।

नासिका *स्त्री.* {सं.} नाक।

नासिकाछेदन *पुं.* {सं.} नकछेदन।

नासीय *वि.* {सं.} नासिका-संबंधी।

नासीर *पुं.* {सं.} सेना का अगला भाग।

नासूर *पुं.* {सं.} शरीर में कुछ दूर तक अंदर गया हुआ वह छोटा घाव, जिससे बराबर मवाद निकला करता हो, नाड़ीव्रण (साइनस)।

नास्तिक *पुं.* {सं.} {*भाव.* नास्तिकता} ईश्वर, परलोक आदि को न माननेवाला (एथिइस्ट)।

नास्तिकता *स्त्री.* {सं.} वह अवस्था या सिद्धांत जिसमें मनुष्य ईश्वर, मत-मतांतर, लोक-परलोक आदि का अस्तित्व नहीं मानता (एथीइज्म)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाह पुं. नाथ, बंधन, किनारा; नाभि, पहिए के मध्य का छिद्र।

नाहक *क्रि. वि.* {फा.} वृथा, व्यर्थ।

नाहर पुं. {सं. नरहरि} शेर।

नाहरू पुं. नहरुआ, नाहर।

नाहिनै *निपा.* {हिं. नाही} नहीं (है); कदापि नहीं, कभी नहीं।

नाहीं *निपा.* नहीं; कदापि नहीं, कभी नहीं।

नित *क्रि. वि.* नित्य।

निंद *वि.* निंदनीय।

निंदक *वि.* {सं.} निंदा करनेवाला।

निंदना *स.* = निंदा करना।

निंदनीय *वि.* {सं.} जिसकी निंदा करना उचित हो, निंदा के योग्य, बुरा, खराब।

निंदरना *स.* निंदना।

निंदरिया *स्त्री.* नींद।

निंदा *स्त्री.* {सं.} किसी की वास्तविक या उचित बुराई या दोष बतलाना; अपकीर्ति, बदनामी।

निंदाई *स्त्री.* निराई, निराने का शुल्क।

निंदात्मक *वि.* {सं.} निंदा के रूप में होनेवाला।

निंदाना *स.* निराना।

निंदासा *वि.* {हिं. नींद} जिसे नींद आ रही हो, उनींदा।

निंदित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* निंदिता} जिसकी निंदा होती हो; दूषित, बुरा, बदनाम।

निंदिया *स्त्री.* नींद; निद्रा।

निंद्य *वि.* निंदनीय, निंदा करने योग्य।

निंबू पुं. नींबू। कागजी नीबू।

निःकारण *वि.* {सं.} कारण-शून्य, अनिमित्त।

निःकासन पुं. {सं.} बहिष्कार, अपसरण।

निःक्षत्र *वि.* {सं.} क्षत्रिय रहित।

निःक्षिप्त *वि.* {सं.} प्रक्षिप्त, फेंका हुआ।

निःप्रयोजन *वि.* {सं.} व्यर्थ, बेकार।

निःशंक *वि.* {सं.} निडर, निर्भय।

निःशब्द *वि.* {सं.} जहाँ या जिसमें शब्द न हो; जो शब्द न करे।

निःशुल्क *वि.* {सं.} जिस पर या जिससे शुल्क न लिया जाए, बिना शुल्क का।

निःशेष *वि.* {सं.} जो बच न रहा हो, समाप्त, खत्म।

निःश्रेयस पुं. {सं.} सब प्रकार के कष्टों या दुखों का अभाव; मोक्ष, मुक्ति; कल्याण, मंगल।

निःश्वास पुं. {सं.} नाक से साँस बाहर निकलना; नाक से निकली हुई वायु।

पद दीर्घ निःश्वास = गहरी या ठंडी साँस।

निःसंकोच *क्रि. वि.* {सं.} संकोच के बिना, बेधड़क।

निःसंग *वि.* {सं.} बिना संपर्क या लगाव का; किसी से संबंध न रखनेवाला, निर्लिप्त; जिसके साथ कोई और न हो, अकेला।

निःसंतान पुं. {सं.} जिसे संतान या बाल-बच्चा न हो।

निःसंदेह *वि.* {सं.} जिसमें कुछ भी संदेह न हो, संदेहरहित।

क्रि. वि. किसी प्रकार के संदेह के बिना।

निःसत्त्व *वि.* {सं.} जिसमें कुछ भी सत्त्व या सार न हो, निस्सार।

निःसरण पुं. {सं.} {*वि.* निःसृत} निकलना; निकलने का मार्ग, निकास।

निःसार *वि.* निःसत्व।

निःसारण पुं. {सं.} कहीं से कुछ बाहर निकालना; वनस्पतियों की गाँठों या शरीर की गिल्टियों का अपने अंदर से कोई तत्व या तरल अंश बाहर निकालना, जो अंगों को विशुद्ध और ठीक दशा में रखने या ठीक तरह से चलाने के लिए आवश्यक होता है; इस प्रकार निकलनेवाला कोई पदार्थ (सीक्रेशन)।

निःसीम *वि.* {सं.} जिसकी सीमा न हो, बेहद; बहुत बड़ा या अधिक।

निःस्पंद *वि.* {सं.} जिसमें किसी प्रकार का स्पंदन न हो, निश्चल।

निःस्पृह *वि.* {सं.} जिसे कोई स्पृहा या आकांक्षा न हो; जिसे कुछ लेने या पाने की इच्छा न हो, निर्लोभ।

निःस्वन *वि.* निःशब्द; पुं. ध्वनि, शब्द।

निःस्वार्थ *वि.* {सं.} जो अपने लाभ या स्वार्थ का ध्यान न रखता हो; (काम या बात) जो अपने लाभ या स्वार्थ के लिए न हो।

नि *उप.* {सं.} एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर अर्थ-संबंधी ये विशेषताएँ उत्पन्न करता है—झुंड या समूह; जैसे निकर, अधोभाव; जैसे निपतित, अत्यंत; जैसे निग्रह, आदेश; जैसे निदेश।

निअर *क्रि. वि.* {सं. निकट} निकट, पास; *वि.* समान, तुल्य।

निआरना *स.* {हिं. निअर} पास पहुँचना।

नियाउ पुं. न्याय।

निआथी *स्त्री.* {सं. निः + अर्थ} धनहीनता, दरिद्रता, गरीबी; *वि.* निआरथी।

निआन पुं. {सं. निदान} अंत में; *क्रि. वि.* अंत में, आखिर।

निआना *वि.* न्यारा।

निआरथी *वि.* {हिं. नि + अर्थ} निर्धन।

निउ *वि.* = निज।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकंदन पुं. {सं. नि + कंदन = नाश} नाश, विनाश; मार डालना, वध।

निकंदना स. = नष्ट करना।

निकट वि. {सं.} {भाव. निकटता} पास का, समीप का; (संबंध) जिसमें अधिक अंतर न हो; क्रि. वि. पास, समीप, नजदीक।

निकटपूर्व पुं. {सं.} यूरोपवालों की दृष्टि से एशिया महाद्वीप का पश्चिमी भाग।

निकटवर्ती वि. निकटस्थ।

निकटस्थ वि. {सं.} दूरी, संबंध आदि के विचार से, पास का।

निकती स्त्री. {हिं.} छोटा तराजू या काँटा।

निकम्मा वि. {सं. निष्कर्म्म} {स्त्री. निकम्मी} जो कोई काम न करता हो; जो किसी काम का न हो, निरर्थक।

निकर[1] पुं. {सं.} समूह, झुंड; राशि, ढेर; निधि, कोश।

निकर[2] पुं. {अ.} एक प्रकार का अंग्रेजी जाँघिया, आधा पायजामा।

निकरना अ. निकलना।

निकर्तन पुं. {सं.} काटने की क्रिया।

निकमी वि. {हिं.} जो काम-धंधा न करता हो, आलसी।

निकर्षण पुं. {सं.} घर के बाहर का मैदान, पड़ोस।

निकलंक (की) वि. {सं. निष्कलंक} दोषरहित।

निकल स्त्री. {अ.} सफेद रंग की एक प्रसिद्ध धातु, जिससे सिक्के आदि बनते हैं।

निकलना अ. {हिं. निकालना} बाहर आना, निर्गत होना।

मुहा. निकल जाना = आगे बढ़ या चला जाना; पास में न रह जाना; कम हो जाना; पहुँच या पकड़ से बाहर होना; *(स्त्री का) निकल जाना* = (स्त्री का) पर-पुरुष के साथ अनुचित संबंध करके घर से चली जाना।

मिली, सटी या लगी हुई चीज अलग होना; एक ओर से दूसरी ओर चला जाना, पार होना; प्रस्थान करना, जाना; उदय होना; अपने उद्गम स्थान से प्रादुर्भूत, निर्गत या प्रकाशित होना, जैसे नदी निकलना, आज्ञा निकलना, पुस्तक निकलना आदि; किसी ओर को बढ़ा हुआ होना; स्पष्ट होना, प्रकट होना, जैसे अर्थ निकलना; सिद्ध या पूरा होना, सरना, जैसे मतलब या काम निकलना; किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर प्राप्त होना; मुक्त होना, छूटना; आविष्कृत होना; शरीर पर उत्पन्न होना; कहकर नहीं करना, मुकरना; माल की खपत या बिक्री होना, बिकना; हिसाब होने पर कुछ धन किसी के जिम्मे ठहरना; पास से जाता रहना, हाथ में न रह जाना; व्यतीत होना, बीतना, गुजरना; घोड़े बैल आदि का गाड़ी या सवारी लेकर चलना, सीखना आदि।

निकलवाना स. हिं. निकलवाना का प्रे.।

निकष पुं. {सं.} कसौटी का पत्थर; तलवार की म्यान।

निकषण पुं. {सं.} घिसने की क्रिया।

निकसना अ. निकलना।

निकाई स्त्री. {हिं. नीक = सुंदर या भला} नीक या अच्छे होने का भाव, अच्छापन; सुंदरता; भलाई; पुं. निकाय।

निकाज वि. {हिं. नि + काज (कार्य)} निकम्मा; रद्दी; क्रि. वि. व्यर्थ, बेफायदा।

निकाना स. निराना।

निकाम[1] वि. निकम्मा; निष्काम; क्रि. वि. व्यर्थ, बेफायदा।

निकाम[2] वि. {?} प्रचुर, बहुत अधिक।

निकाय पुं. {सं.} समूह, झुंड; कोई विशेष कार्य करने के लिए बना हुआ कुछ व्यक्तियों का संघटित समूह, संघात (बॉडी); ढेर, राशि; घर, मकान।

निकारना स. निकालना।

निकारण पुं. {सं.} मारण, वध।

निकाल पुं. {हिं.} निकास, मल्लयुद्ध की एक युक्ति।

निकालना स. {सं. निष्कासन} अंदर से बाहर करना या लाना, निर्गत करना; मिली, सटी या लगी हुई चीज अलग करना; किसी से आगे बढ़ा ले जाना; गमन कराना, चलाना या ले जाना; आगे की ओर बढ़ाना; निश्चित करना, ठहराना, जैसे अर्थ निकालना; सबके सामने उपस्थित करना या रखना; स्पष्ट करना, खोलना; आरंभ करना, चलाना, छेड़ना; स्थान, स्वामित्व, अधिकार, पद आदि से अलग करना; घटना, कम करना; नौकरी से छुड़ाना या हटाना; दूर करना, हटाना; बेचकर अलग करना; निभाना, बिताना; किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर निश्चित करना, हल करना; जारी करना, प्रचलित करना; आविष्कृत करना, ईजाद करना; निस्तार या उद्धार करना; प्रकाशित करना; रकम जिम्मे ठहराना, किसी पर ऋण या देना निश्चित करना; ढूँढ़कर सामने रखना, बरामद करना; पशु या व्यक्ति को कोई काम करने की शिक्षा देकर आगे बढ़ाना; कपड़े पर सुई से बेल-बूटे बनाना।

निकाला पुं. {हिं. निकालना} निकालने की क्रिया या भाव; कहीं निकाले जाने का दंड, निष्कासन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकाश पुं. {सं.} आकृति, रूप; समानता, बराबरी; समीपता, निकटता; क्षितिज।

निकास[1] पुं. {हिं. निकासना} निकलने या निकालने की क्रिया या भाव; निकलने के लिए खुला स्थान या मार्ग; बाहर का खुला स्थान, मैदान; उद्‌गम, मूलस्थान; रक्षा या बचत का उपाय; आमदनी का रास्ता; आय, आदमी; निकासी।

निकास[2] पुं. {सं. निकाश} समानता, बराबरी, *उदा.* सनीर जीमूत निकाश सोभहिं–**केशव**।

निकासना स. निकालना।

निकासी *स्त्री.* {हिं. निकास} निकलने या निकालने की क्रिया या भाव (इश्यू); यात्रा के लिए निकलना, प्रस्थान, रवानगी; वह अधिकार व पत्र जिसके अनुसार कोई व्यक्ति या वस्तु कहीं से निकलकर बाहर जा सके (ट्रांज़िट पास); आय, आमदनी; किसी संपत्ति से लाभ या आय के रूप में प्राप्त होनेवाला धन, जैसे जमींदारी की निकासी; लाभ, मुनाफा; बिक्री के लिए माल बाहर जाना, लदाई, भरती; माल की बिक्री, खपत।

निकाह पुं. {सं.} मुसलमानी विधि के अनुसार होनेवाला विवाह।

निकिष्ट *वि.* निकृष्ट।

निकुंच पुं. {सं.} लकुट, बड़हर।

निकुंचक पुं. {सं.} प्राचीन परिमाण–प्रायः आठ तोले के बराबर।

निकुंचित *वि.* {सं.} संकुचित, सिकुड़ा हुआ।

निकुंज पुं. {सं.} घनी लताओं से छाया या घिरा हुआ स्थान, लतामंडप।

निकुंगी *स्त्री.* {सं.} कुंभकरण की कन्या।

निकुरंब पुं. {सं.} समुदाय, समूह, झुंड।

निकुही *स्त्री.* {हिं.} पक्षी का नाम।

निकृत *वि.* {सं.} निकाला हुआ, लांछिता।

निकृतन पुं. {सं.} गंधक।

निकृति *स्त्री.* {सं.} तिरस्कार, अपकार, शठता।

निकृती *वि.* {सं.} दुष्ट, शठ, नीच।

निकृत *वि.* {सं.} जड़ से काढ़ा हुआ।

निकृत्या *स्त्री.* {सं.} दुष्टता, नीचता।

निकृष्ट *वि.* {सं.} {भाव. निकृष्टता} खराब, बुरा।

निकेत (न) पुं. {सं.} घर, मकान; स्थान, जगह; आगार, भंडार।

निक्षिप्ति *वि.* {सं.} फेंका हुआ; छोड़ा हुआ, त्यक्त; भेजा हुआ (कंसाइंड); जमा किया हुआ, कहीं रखा हुआ (डिपॉजिटेड)।

निक्षिप्तक पुं. {सं.} वह वस्तु जो कहीं भेजी जाए (कंसाइनमेंट); वह धन, जो किसी खाते या कोश में जमा किया, डाला या रखा जाए।

निक्षिप्त *स्त्री.* निक्षेप।

निक्षिप्ती पुं. {सं. निक्षिप्त} वह जिसके नाम कोई वस्तु (विशेषतः पोट, पारसल आदि) भेजी गई हो (कंसाइनी)।

निक्षेप पुं. {सं.} फेंकने, डालने, चलाने, छोड़ने आदि की क्रिया या भाव; भेजने की क्रिया या भाव; वह वस्तु जो भेजी जाए; कहीं धन जमा करने की क्रिया या भाव; वह धन जो कहीं जमा किया जाए; अमानत, धरोहर, थाती।

निक्षेपण पुं. {सं.} {*वि.* निक्षिप्त, निक्षेप्य} फेंकना, डालना; चलाना; छोड़ना, त्यागना; निक्षेप।

निखंग पुं. निषंग।

निखटक *क्रि. वि.* {हिं. नि = नहीं + खटका = आशंका} बिना किसी संकोच, भय या आशंका के, बेखटक, बेधड़क।

निखट्टू *वि.* {हिं. उप. नि = नहीं + खटना = कसाना} जो कुछ कमाता न हो।

निखंड *वि.* {हिं.} ठीक मध्य में, सटीक।

निखरचे *क्रि. वि.* {हिं. नि + खरच} बिना किसी प्रकार का ऊपरी खर्च जोड़े या मिलाए हुए, जैसे यह माल आपका मन निखरचे मिलेगा (अर्थात् इसकी ढुलाई, धारदाना, दलाली आदि आपके जिम्मे होगी)।

निखरना अ. {सं. निक्षरण} मैल छूट जाने पर साफ या निर्मल होना; रंगत का खुलना या साफ होना।

निखरी *स्त्री.* {हिं. निखरना} पक्की या घी में पकी हुई रसोई, सखरी का उलटा।

निखवख *वि.* {सं. न्यक्ष = सब} पूरा, सब; *क्रि. वि.* पूरा, बिल्कुल।

निखात *वि.* {सं.} रखा हुआ, गाड़ा हुआ।

निखाद पुं. {हिं. निखरना} निखरने की क्रिया या भाव; निर्मलता, स्वच्छता।

निखारना स. हिं. निखरना का स.।

निखालिस *वि.* खालिस।

निखिद्ध *वि.* निषिद्ध।

निखिल *वि.* {सं.} संपूर्ण, सारा, पूरा।

निखुटना अ. {?} समाप्त होना।

निखेद पुं. = निषेध।

निखेधना स. = निषेध करना, मना करना।

निखोट *वि.* {हिं. उप. नि + खोट} जिसमें कोई खोटाई या दोष न हो, निर्दोष; स्पष्ट या खुला हुआ; क्रि. *वि.* बिना संकोच के, बेधड़क।

निखोटना स. {हिं. नख} नाखून से नोचना, तोड़ना या काटना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निगंदना *स.* {फा. निगंदः = बखिया} रुई भरे हुए कपड़े में दूर-दूर पर मोटी और लम्बी सिलाई करना।

निगंध *वि.* {सं. निगंध} गंधहीन।

निगड *स्त्री.* {सं.} हाथी के पैर में बाँधने का सिक्कड़, आँदू; बेड़ी।

निगति *पुं.* {हिं. नि + सं. गीत} वह जिसे मरने पर अच्छी गति प्राप्त न हो; अर्थात् पापी।
उदा. निगति सदा गति सुनये–केशव।

निगद (न) *पुं.* {सं.} {*वि.* निगदित} भाषण, कथन।

निगदित *वि.* {सं.} भाषित, कहा हुआ।

निगम *पुं.* {सं.} मार्ग, रास्ता; वेद; हाट, बाजार; मेला; व्यापार, रोजगार, व्यापारियों का संघ; निश्चय; वह अदृश्य और स्थायी संस्था जिसे विधि के द्वारा शरीर अथवा शरीरधारी का रूप प्राप्त हुआ हो (कारपोरेशन)।

निगमी *पुं.* {सं.} वेद जाननेवाला।

निगमन *पुं.* {सं.} {*वि.* निगमि, निगमीकृत} न्याय में वह कथन, जो कोई प्रतिज्ञा सिद्ध कर चुकने पर उस प्रतिज्ञा के फिर से उल्लेख के रूप में होता है, सिद्ध की हुई बात के संबंध में अंतिम कथन; किसी संस्था को निगम का रूप देने की क्रिया या भाव, विशेष निगम।

निगमित *वि.* {सं.} संस्था जिसे निगम का रूप दिया गया हो (इंकारपोरेटेड)।

निगमीकरण *पुं.* {सं.} {*वि.* निगमीकृत, निगमित} किसी संस्था को निगम का रूप देना (इंकॉरपेरेशन)।

निगमीकृत *वि.* = निगमित।

निगर *वि., पुं.* निकर, भोजन।

निगरना *स.* निगलना।

निगराना *क्रि.* {हिं. सं.} निर्णय करना, निबटाना, स्पष्ट करना।

निगरानी *स्त्री.* {फा.} निरीक्षण, देखरेख।

निगरु *वि.* {सं. नि + गुरु} हलका, जो भारी न हो।

निगलना *स.* {सं. निगरण} मुँह में रखकर गले के नीचे उतार लेना, लीलना; दूसरे का धन दबा लेना।

निगह *स्त्री.* निगाह, दृष्टि, नजर, चौकसी।

निगहबान *पुं.* {फा.} रक्षक, प्रतिपालक।

निगाली *स्त्री.* {देश.} हुक्के की वह (काठ की) नली जिससे धुआँ खींचते हैं।

निगाह *स्त्री.* {फा.} दृष्टि, नजर; देखने का ढंग, चितवन; कृपादृष्टि; परख, पहचान।

निगिभ *वि.* {सं. निगुह्य} बहुत प्यारा; गोपनीय।

निगु *पुं.* {सं.} मन, अंतःकरण, भूल।

निगूहक *वि.* {सं.} छिपानेवाला।

निगूहन *पुं.* {सं.} गोपना, छिपाव।

निगृहीत *वि.* {सं.} जिसका निग्रह हुआ हो, विशेष निग्रह।

निगोड़ा *वि.* {हिं. निगुरा} {*स्त्री.* निगोड़ी} जिसके ऊपर या आगे-पीछे न हो; अभागा; दुष्ट, बुरा (स्त्रियाँ)।

निगोद *वि.* {सं. निगूढ़} बीच में छिपा हुआ।

निग्रंथन *पुं.* {सं.} मारण, वध।

निग्रह *पुं.* {सं.} {*वि.* निगृहीत} रोकने की क्रिया या साधन, रोक, अवरोध; किसी प्रकार की रोकथाम, नियंत्रण या दमन, जैसे संताननिग्रह (कंट्रोल); दंड; उत्पीड़न, सताना; बंधन।

निग्रहना *स.* {सं. निग्रहण} पकड़ना; रोकना; दंड देना।

निग्रही *वि.* {सं. निग्रहिन्} रोकने या दबानेवाला; दमन करनेवाला; दंड देनेवाला।

निघंट *पुं.* {सं.} निघंटु, सूची-पत्र।

निघंटिका *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार का कंद।

निघंटु *पुं.* {सं.} वैदिक शब्दों का कोश; शब्दसंग्रह।

निघट *वि.* {हिं. नि (उपसर्ग) + घटना} न घटनेवाला, ज्यों-का-त्यों बना रहनेवाला; घटित न होनेवाला, जो अस्तित्व में न आए।

निघटना *अ.* {हिं. नि = नहीं + घर + घाट} जिसका कहीं घर-घाट या ठौर-ठिकाना न हो; निर्लज्ज, बेहया; ढीठ; उद्दंड।

निघरा *वि.* {हिं.} जिसके घर-वर न हो।

निघर्ष *पुं.* {सं.} घिसना, रगड़।

निघस *पुं.* {सं.} आहार, भोजन।

निघात *पुं.* {सं.} प्रहार, चोट।

निघाति *स्त्री.* {सं.} लुहार की निहाई।

निचय *पुं.* {सं.} समूह, राशि; निश्चय; संचय; किसी विशेष कार्य के लिए इकट्ठा या जमा किया जानेवाला धन (फंड)।

निचयन *पुं.* {सं.} किसी विशेष कार्य के लिए धन जमा करने की क्रिया या भाव; किसी के हिसाब या खाते में उसकी ओर से या उसके लिए कुछ धन जमा करना या बढ़ाना (फंडिंग)।

निचर *वि.* = निश्चल।

निचल *वि.* निश्चल।

निचला[1] *वि.* {हिं. नीचे + ला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* निचली} नीचे का, नीचेवाला।

निचला[2] *वि.* {सं. निश्चल} स्थिर, शांत।

निचाई[1] *स्त्री.* {हिं. नीचा} नीचापन, नीचे की ओर का विस्तार।

निचाई[2] *स्त्री.* {हिं. नीच} नीचता, कमीनापन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निचान *स्त्री.* निचाई।
निचीकी *स्त्री.* {सं.} अच्छी गाय।
निचिर *पुं.* {सं.} चिरकाल।
निचित *वि.* = निश्चित।
निचीता *वि.* = निश्चिंत।
निचुड़ना *अ.* हिं. निचोड़ना का अ.।
निचुंकन *पुं.* {सं.} गरज, घड़घड़ाहट।
निचेय *वि.* {सं.} संग्रह करने योग्य।
निचै *पुं.* निचय।
निचोड़ *पुं.* {हिं. निचोड़ना} निचोड़ने की क्रिया या भाव; निचोड़ने पर निकलनेवाला अंश; सार, सत; कथन या मत का सारांश।
निचोड़ना *स.* {सं. निश्च्योतति} गीली या रसदार चीज को दबाकर उसका पानी या रस निकालना, गारना। किसी चीज का सार भाग निकालना; अधिकतर धन हरण कर लेना।
निचोना *स.* निचोड़ना।
निचील *पुं.* {सं.} ऊपर से ढकने की चीज, आच्छादन; वस्त्र, कपड़ा।
निचोवना *स.* निचोड़ना।
निचौंहाँ *वि.* {सं. नीचोन्मुख} {*स्त्री.* निचौंहीं} नीचे झुका हुआ, नत।
निचौहैं *क्रि. वि.* {हिं. निचौंहाँ} नीचे की ओर।
निछत्र *वि.* {सं. निरछत्र} बिना छत्र का; बिना राजचिह्न का।
निछद्दम *पुं.* {सं. निः + छद्म या देश?} ऐसा एकांत स्थान जहाँ कोई पराया न हो; पूरी निश्चिंतता और अवकाश का समय।
निछल *वि.* {सं. निश्छल} छलहीन।
निछावर *स्त्री.* {सं. न्यासावर्त, मि. अ. निसार} किसी की मंगलकामना से कोई वस्तु उसके सिर के ऊपर से घुमाकर दान करने या कहीं रख आने का उपचार या टोटका, वाराफेरा; वह धन या वस्तु जो इस प्रकार घुमाकर दी या छोड़ी जाए, उतारा।
निछोह *वि.* {हिं. नि + छोह} जिसे किसी के प्रति छोह या प्रेम न हो; निर्दय, निष्ठुर।
निज *वि.* {सं.} अपना, स्वकीय; मुख्य, प्रधान; ठीक, यथार्थ; *क्रि. वि.* निश्चित रूप से; विशेष रूप से, मुख्यतः।
निजकारी *स्त्री.* {हिं.} बँटाई की फसल।
निजकृत *वि.* {सं.} स्वयं किया हुआ।
निजता *स्त्री.* {सं.} अपनापन।
निजत्व *पुं.* {सं.} अपनापन।
निजवर्ती *वि.* {सं.} (किसी व्यक्ति की दृष्टि से) आश्रय में या पास रहनेवाला।
उदा. पहिले निजवत्तिन देहु अबै–**केशव।**
निजस्व *पुं.* {सं.} अपनापन, निजता; मौलिकता।
निजाअ *पुं.* {अ. निज़ाअ} झगड़ा, तकरार; शत्रुता, बैर।
निजाई *वि.* {अ.} जिसके संबंध में निआज या झगड़ा हो, विवादास्पद।
निजाम *पुं.* {अ. निज़ाम} व्यवस्था, बंदोबस्त; हैदराबाद के शासकों की उपाधि।
निजि *वि.* {सं.} शुद्धियुक्त, अशुद्धि रहित।
निजी *वि.* {सं. निज} निज का, अपना; किसी एक व्यक्ति, वर्ग आदि से संबंध रखनेवाला, व्यक्तिगत (पर्सनल); जिसके स्वामित्व, अधिकार आदि से औरों का कोई संबंध न हो (प्राइवेट)।
निजी सहायक *पुं.* {सं.} वह जो किसी आदमी, विशेषतः अधिकारी के साथ रहकर उसके कार्यों में सहायता देता हो (पर्सनल असिस्टेंट)।
निजु *क्रि. वि* {?} निश्चयपूर्वक, निश्चित रूप से।
उदा. निजु ये अविकारी, सब सुखकारी। –केशव।
निजुर *स्त्री.* {सं.} हत्या, नाश।
निजू *वि.* {हिं. निज} निज का, अपना।
निजोर *वि.* {सं.} निर्बल।
निझरना *अ.* {हिं. उप. नि + झरना} अच्छी तरह झड़ना; सार भाग से रहित या वंचित होना; अपने आपको निर्दोष सिद्ध करना।
निटलाक्ष *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।
निट्ठि *क्रि. वि.* नीठि।
निठल्ला *वि.* {हिं. नि+ठाला} जिसके पास कोई काम-धन्धा न हो, खाली।
निठल्लू *वि.* निठल्ला।
निठाला *पुं.* ठाला।
निठुर *वि.* निष्ठुर।
निठुरई *स्त्री.* निष्ठुरता।
निठुराई *स्त्री.* {हिं.} निष्ठुरता, निर्दयता, क्रूरता।
निडर *वि.* {हिं. उप. नि + डर} {*भाव.* निडरपन} जिसे किसी का डर न हो, निर्भय; साहसी; दीठ।
निड़ै *क्रि. वि.* निकट।
निढाल *वि.* {हिं. नि + ढाल = गिरा हुआ} शिथिल, थका-माँदा; अशक्त।
निढिल *वि.* {हिं. नि + ढीला} कसा या तना हुआ; कड़ा, कठोर।
निण्य *अव्य.* {सं.} अंतर्निहित।
नितंत *क्रि. वि* नितांत।
नितंब *पुं.* {सं.} चूतड़ (विशेषतः स्त्रियों का); कंधा।
नितंबिनी *स्त्री.* {सं.} सुंदर नितम्बोंवाली **स्त्री।**
नित *क्रि. वि* नित्य।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नितांत *वि.* {बंगला.} बहुत अधिक; बिल्कुल, एकदम; परम, हद हरजे का।

निति *क्रि. वि.* नित्य; प्रतिदिन।

नित्य *वि.* {सं.} {*भाव.* नित्यता} सदा ज्यों-का-त्यों बना रहनेवाला, शाश्वत, अविनाशी; *क्रि. वि.* प्रतिदिन, हर रोज; सदा हमेशा।

नित्यकर्म पुं. {सं.} नित्य का काम; प्रतिदिन आवश्यक रूप से किए जानेवाले कार्य, विशेषत: धर्मकार्य।

नित्यक्रिया *स्त्री.* नित्यकर्म।

नित्यनियम पुं. {सं.} प्रतिदिन का बँधा हुआ नियम या कायदा।

नित्यप्रति *क्रि. वि.* {सं.} प्रतिदिन, हर रोज; सदा, हमेशा।

नित्या *स्त्री.* {सं.} देवी की एक शक्ति, पार्वती, मनसा देवी।

निथंब (भ) पुं. खंभा।

निथरना *अ.* {हिं. नि + थिर + ना (प्रत्य.)} तरल पदार्थ इस प्रकार स्थिर करना कि उसमें धुली हुई चीज या मैल नीचे बैठ जाए।

निदई *वि.* निर्दय।

निदरना *स.* {हिं. निरादर} अनादर या अपमान करना; तिरस्कार करना; मात करना, दबाना।

निदर्शन पुं. {सं.} दिखाने या प्रदर्शित करने का काम या भाव; वह वस्तु या बात जो आदर्श या प्रमाण के रूप में सामने रखी जाए, उदाहरण; किसी को बतलाने या समझाने के लिए कोई बात विशद और स्पष्ट रूप से कहने की क्रिया या भाव (इलस्ट्रेशन; उक्त सभी अर्थों के लिए)।

निदर्शक *वि.* {सं.} निदर्शन करनेवाला।

निदर्शना *स्त्री.* {सं.} एक अर्थालंकार जिसमें एक बात या काम से कोई दूसरी बात या काम ठीक तरह से कर दिखलाने का वर्णन होता है।

निदलन पुं. निर्दलन।

निदहना *स.* = जलाना।

निदाघ पुं. {सं.} गरमी, ताप; धूप; ग्रीष्म ऋतु, गरमी के दिन।

निदान पुं. {सं.} कारण विशेषत: मूल या आदि कारण; चिकित्सक का यह निश्चय करना कि रोगी को कौन रोग है, रोग की पहचान (डायगनोसिस); उक्त विषय की विद्या या शास्त्र (ईटियॉलोजी); अंत, अवसान; *क्रि. वि.* अंत में, आखिर; इसलिए।

निदानगृह पुं. {सं.} निदानशाला।

निदानशाला *स्त्री.* {सं.} रोगियों के परीक्षण का स्थान (क्लीनिक)।

निदाह पुं. निदाघ।

निदिग्ध *वि.* {सं.} लेप किया हुआ।

निदिग्धा *स्त्री.* {सं.} इलायची, भटकटैया।

निदिध्यासन पुं. {सं.} फिर-फिर स्मरण करना, बार-बार ध्यान में लाना।

निदेश पुं. {सं.} शासन; आज्ञा, हुक्म; कथन, उक्ति; किसी आज्ञा, नियम, निश्चय आदि के संबंध में लगाई हुई कोई शर्त या बंधन (प्रॉविजन)।

निदेशी *वि.* {सं.} आज्ञा देनेवाला।

निदेशात्मक *वि.* {सं.} निदेश के रूप में होनेवाला।

निदेशित *वि.* {सं.} जिसका निदेश हुआ हो।

निदोष *वि.* निर्दोष।

निद्धि *स्त्री.* निधि।

निद्र पुं. {सं.} एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

निद्रा *स्त्री.* {सं.} प्राणियों की वह अवस्था, जिसमें उनकी चेतन वृत्तियाँ बीच में कुछ समय के लिए निश्चेष्ट होकर रुकी रहती हैं और उन्हें शारीरिक तथा मानसिक विश्राम मिलता है, नींद।

निद्राभाव पुं. {सं.} निद्रा-अभाव, नींद न आना।

निद्रायमाण *वि.* {सं.} जो नींद में हो, सोता हुआ।

निद्रालु पुं. {सं.} जिसे नींद आ रही हो।

निद्रित *वि.* {सं.} सोया हुआ।

निधड़क *क्रि. वि.* बेधड़क।

निधन पुं. {सं.} विनाश; मृत्यु, मौत (श्रेष्ठ या आदरणीय व्यक्तियों के लिए) (डिमाइज); *वि.* निर्धन।

निधान पुं. {सं.} आधार, आश्रय; निधि, कोश; वह जिसमें किसी गुण की परिपूर्णता हो, जैसे दयानिधान।

निधि *स्त्री.* {सं.} गड़ा हुआ खजाना; कुबेर के ये नौ रत्न-पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कन्द, नील और बर्च्च; नौ की संख्या का सूचक शब्द; वह धन जो किसी विशेष कार्य के लिए अलग रखा या जमा कर दिया जाए (एंडाउमेंट); संस्था आदि की या किसी विशेष कार्य के लिए रक्षित वह धनराशि जिसमें से उस संस्था या कार्य के लिए व्यय भी होता हो, जैसे स्थानिक या नागर निधि (फंड); वह स्थान जहाँ इस प्रकार धन रखा जाए; समुद्र, सागर; किसी वस्तु या विषय का बहुत बड़ा आधार, आगार, घर, जैसे गुणनिधि।

निधिपाल पुं. {सं.} वह जिसकी देखरेख में कोई निधि, संपत्ति या कुछ वस्तुएँ रखी गई हों या रहती हों (कस्टोडियन)।

निनरा *वि.* न्यारा, अलग, दूर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निनाद पुं. {सं.} {*वि.* निनादित} शब्द, आवाज; जोर का शब्द।

निनादना *अ.* {सं. निनाद} निनाद या शब्द करना।

निनान *क्रि. वि.* निदान; *वि.* बुरा, निकृष्ट, घोर।

निनारा *वि.* {*स्त्री.* निनारी} न्यारा, भिन्न, अलग।

निनावाँ पुं. {देश.} मुँह के भीतरी भाग में निकलनेवाले छोटे छाले।

निन्यारा *वि.* न्यारा।

निपजना *अ.* {सं. निष्पद्यते} उत्पन्न होना, उपजना; बनना; उगना; पुष्ट या पक्का होना।

निपजी *स्त्री.* {हिं. निपजना} लाभ, मुनाफा; उपज।

निपट *निपा.* {देश.} निरा, विशुद्ध, केवल; सरासर, एक-दम से, बिल्कुल।

निपटना *अ.* {सं. निवर्त्तन} {*संज्ञा* निपटारा} निवृत्त होना, छुट्टी पाना; समाप्त या पूरा होना; निर्णीत या तै होना; खत्म होना; शौच, स्नान आदि क्रियाओं से निवृत्त होना।

निपटान पुं. {हिं. निपटना} निपटने की क्रिया या भाव; निवृत्ति, त्याग।

निपटाना *स.* {हिं. निपटना} पूरा करना, समाप्त करना; (देन, ऋण आदि) चुकाना; (काम, झगड़ा आदि) समाप्त या तै करना (डिस्पोज)।

निपटारा पुं. {हिं. निपटना} निपटने की क्रिया या भाव; किसी बात के तै या निश्चित होने की क्रिया या भाव (सेटिल्मेंट); अंत, समाप्ति; फैसला, निर्णय।

निपत्र *वि.* {सं. निष्पत्र} (वृक्ष, पौधा आदि) पत्रहीन, ठूँठा।

निपाँख *वि.* {हिं. नि + पक्ष} जिसे पंख या पर न हो; जिसके पक्ष में या सहायता के लिए कोई न हो, असहाय।

निपात[1] पुं. {सं.} पतन, गिरना; विनाश; मृत्यु; क्षय, नाश; वह उपपद जो वाक्य के अर्थ को प्रभावित करता हो।

निपात[2] *वि.* {हिं. नि + पत्ता} बिना पत्तों का (वृक्ष या पौधा)।

निपातन पुं. {सं.} {*वि.* निपातित} गिराने की क्रिया या भाव; नाश; वध करना, मार डालना।

निपातना *स.* {सं. निपातन} काटकर या यों ही नीचे गिराना; नष्ट करना; मार डालना।

निपाती[1] *वि.* {सं. निपातिन्} गिरानेवाला; मार डालनेवाला।

निपाती[2] *वि.* {हिं. नि + पाती} बिना पत्तों का (वृक्ष या पौधा)।

निपाद पुं. {सं.} नीचा प्रदेश, नीची भूमि।

निपान पुं. {सं.} तालाब, दूध दूहने का पात्र।

निपीड़ना *स.* {सं. निष्पीड़न} दबाना; कष्ट पहुँचाना।

निपुण *वि.* {सं.} {*भाव.* निपुणता} (कला या विद्या में) दक्ष, कुशल, प्रवीण।

निपुणता *स्त्री.* {सं.} किसी विषय में निपुण या कुशल होने का भाव, दक्षता।

निपुणाई *स्त्री.* = निपुणता, दक्षता।

निपुन *वि.* निपुण, दक्ष।

निपुनाई *स्त्री.* = निपुणता।

निपुरुष *वि.* = पुरुषत्वहीन।

निपूत, निपूता *वि.* {हिं. नि + पूत = पुत्र} {*स्त्री.* निपूती} जिसे पुत्र न हो, पुत्र हीन, निस्संतान (गाली)।

निपेटा *वि.* {सं. निपेटी} = भुक्खड़।

निपुर पुं. {सं.} लिंग-देह, सूक्ष्म शरीर।

निपोड़ना *क्रि.* {हिं. अ.} चुभकर इस पार से उस पार निकल जाना, खुलना, स्वच्छ होना।

निफन *वि.* {सं. निष्पन्न} पूर्ण, पूरा; *क्रि. वि.* पूरी तरह से।

निफरना[1] *अ.* {हिं. नि + फाड़ना} चुभ या धँसकर आरपार होना।

निफरना[2] *अ.* {सं. नि + स्फुट} खुलना; स्पष्ट होना।

निफल *वि.* निष्फल।

निफालन पुं. {सं.} दर्शन, दृष्टि।

निफेन पुं. {सं.} अहिफेन, अफीम।

निफोट *वि.* {हिं.} स्पष्ट, स्वच्छ।

निबंध पुं. {सं.} अच्छी तरह बाँधने की क्रिया या भाव; बंधन; किसी विषय का वह सविस्तर, विवेचन जिसमें उससे संबंध रखनेवाले अनेक मतों, विचारों, मन्तव्यों आदि का तुलनात्मक और पांडित्यपूर्ण विवेचन हो (एस्से); उक्त प्रकार का वह छोटा लेख, जो विद्यार्थी अपनी लेखनशक्ति और विवेचन-बुद्धि बिढ़ाने के लिए अभ्यास के रूप में लिखते हैं।

निबंधक पुं. {सं.} निबंधन करनेवाला; वह अधिकारी, जो लेख आदि की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए उन्हें राजकीय पंजी में प्रतिलिपि के रूप में निर्बंधित करता या लिखता है (रजिस्ट्रार, न्याय और शासन विभाग का); इसी से मिलता-जुलता वह अधिकारी, जो किसी विभाग या संस्था के सब प्रकार के लेख रखता और निर्बंधित करता है, जैसे विश्वविद्यालय या सहकारी समितियों का निबंधक, महाधिकरण या हाई कोर्ट का निबंधक (रजिस्ट्रार)।

निबंधन पुं. {सं.} {*वि.* निबंधित, निबद्ध} बाँधना; बंधन; बँधा हुआ ढंग या नियम, बंधेज; हेतु, कारण; लेखों आदि के प्रमाणिक होने के लिए

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी राजकीय पंजी में लिखा या चढ़ाया जाना, रजिस्टरी होना (रजिस्ट्रेशन)।

निबंधित *वि.* निबद्ध, बद्ध, बँधा हुआ।

निबकौरी *स्त्री.* निबौरी, नीम का फल।

निबछरा *वि.* {?} एकांत (स्थान); खाली, फुरसत का (समय)।

निबट *निपा.* निपट।

निबटना (बड़ना) *अ.* निपटना, चुकाना, पूरा होना।

निबड़ा *पुं.* {हिं.} बड़ा घड़ा।

निबद्ध *वि.* निर्बल।

निबरना *अ.* {सं. निवृत्त} अलग होना, छूटना; मुक्त होना, उद्धार पाना; एक में मिली-जुली वस्तुओं का अलग होना; अड़चन होना; समाप्त या पूरा होगा।

निबल *वि.* {सं. निर्बल} {*भाव.* निबलाई} दुर्बल, अशक्त, कमजोर।

निबलाई *स्त्री.* {हिं.} दुर्बलता।

निबहना *अ.* निभाना।

निबहुर *वि.* {हिं. नि + बहुरना} (स्थान) जहाँ से कोई लौट कर न आता हो या न आ सके।

निबहुरना *अ.* {हिं. निबहुर} कहीं जाकर वहाँ से न लौटना।

निबहुरा *वि.* {हिं. निबहुर} जाकर न लौटनेवाला (गाली)।

निबाह *पुं.* {सं. निर्वाह} निभने या निभाने की क्रिया या भाव, गुजारा; प्रथा, परम्परा आदि के अनुसार व्यवहार करके उसकी रक्षा या पालन करना; आज्ञा, कार्य आदि पूरा करना, पालन।

निबाहक *वि.* {हिं. निबाह + क (प्रत्य.)} निबाह या निर्वाह करनेवाला, निभानेवाला।

निबाहना *स.* {सं. निर्वाहण} निर्वाह या निबाह करना, निभाना; निस्तार करना, छुड़ाना।

निबुकना *अ.* {सं. निर्मुक्त} काम से छुट्टी पाना, काम पूरा करके निश्चिंत होना।

निबेड़ना *स.* {सं. निवृत्त} बंधन से छुड़ाना; चुनना, छाँटना; हटाना; निपटाना।

निबेड़ा *पुं.* {सं.} निबेड़ने, निपटाने या सुलझाने की क्रिया या भाव, निपटारा; छुटकारा, मुक्ति; बचाव, रक्षा; निर्णय, फैसला।

निबेरना *स.* निबेड़ना।

निबेहना *स.* निबेड़ना।

निबौरी (ली) *स्त्री.* {सं. निम्बवटी} नीम का फल।

निभ *पुं.* {सं.} प्रकाश; चमक; दीप्ति; चंद्रमा की चाँदनी; कपट; *वि.* तुल्य, समान।

निभना *अ.* {सं. निबहना} संबंध, व्यवहार आदि का ठीक तरह से चलता रहना, गुजारा होना; छुट्टी या छुटकारा पाना; जारी या चलता रहना; पूरा होना, भुगतान; पालन या चरितार्थ होना।

निभरम *वि.* {सं. निर्भ्रम} जिसे या जिसमें कोई भ्रम न हो, शंकारहित; *क्रि. वि.* बेखटके, बेधड़क।

निभरमा *वि.* {हिं.} जिसका विश्वास उठ गया हो।

निभरोस *वि.* {हिं.} निराश, हताश।

निभरोसी *वि.* {हिं. नि = नहीं + भरोसा} जिसे किसी का भरोसा न हो या न रह गया हो, निराश्रय।

निभाउ (उँ) *वि.* {हिं. नि + भाव} भावरहित; अच्छे भावों या गुणों से रहित, सद्‌भाव से हीन; *पुं.* निबाह।

निभागा *वि.* अभागा, हत्‌भाग।

निभाना *स.* {हिं. निभना का *स.*} संबंध, व्यवहार आदि ठीक तरह से चलाए चलना; चरितार्थ करना; बराबर पूरा करते जाना, चलाना।

निभालन *पुं.* {सं.} दर्शन, भेंट।

निभूत *वि.* {सं.} भूत, बीता हुआ।

निभूयम *पुं.* {सं.} विष्णु भगवान।

निभृत्त *वि.* {सं.} रखा हुआ; निश्चल; अटल; छिपा हुआ, गुप्त; निश्चित, स्थिर; शांत, धीर; निर्जन, एकांत; भरा हुआ।

निभ्रांत *वि.* निर्भ्रांत।

निमंत्रण *पुं.* {सं.} {*वि.* निमंत्रित} किसी कार्य के लिए या किसी अवसर पर आने के लिए किसी से आदरपूर्वक कहना, बुलावा, आह्वान, न्यौता; भोजन के लिए दिया जानेवाला न्योता; बुलावा।

निमंत्रण-पत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जिसमें यह लिखा हो कि आप अमुक समय पर हमारे यहाँ आने की कृपा करें।

निमंत्रना *स.* {सं. निमंत्रण} न्योता देना।

निमंत्रित *वि.* {सं.} जिसे निमंत्रित किया गया हो, बुलाया हुआ, आहूत।

निम *पुं.* {सं.} शंकु, शलाका।

निमकौड़ी *स्त्री.* निबौरी।

निमगारना *अ.* {?} उत्पन्न करना।

निमग्न *वि.* {सं.} {*स्त्री.* निमग्ना} डूबा हुआ, मग्न; तन्मय, लीन।

निमज्जन *पुं.* {सं.} {*वि.* निमज्जित} गोता लगाकर किया जानेवाला स्नान; किसी वस्तु को किसी तरल पदार्थ में डुबाने की क्रिया या भाव।

निमज्जना *अ.* {सं. निमज्जन} गोता लगाना; लीन होना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निमटना *अ.* निपटना।

निमता *वि.* {हिं. नि + मता = मत्त} जो उन्मत्त न हो; धीर, शांत।

निर्मम *वि.* {सं. नि + मर्म} जिसमें मर्म ममता या दया न हो, मर्मरहित।

निमाज *वि.* नवाज।

निमान *पुं.* {सं. निम्न} नीचा स्थान; जलाशय।

निमाना *वि.* {सं. निम्न} {*स्त्री.* निमानी} नीचे की ओर गया हुआ, ढालुआँ; नम्र, विनीत; दब्बू।

निमानिया *वि.* {हिं. निमानी} जो नियम, मर्यादा, विनय आदि न मानता हो, मनमानी करनेवाला।

निमानी *स्त्री.* {हिं. न मानना} नियम, मर्यादा आदि न मानने की अवस्था या भाव, मनमानी, स्वेच्छाचार।

निमि *स्त्री.* = नीम (वृक्ष)।

निमिख *पुं.* निमेष।

निमित्त *पुं.* {सं.} वह बात या कार्य जिससे कोई दूसरी बात या कार्य हो, हेतु; वह बात जिसके विचार या उद्देश्य से कोई काम या बात हो, कारण; वह जो नाम मात्र के लिए सामने आया हो, वास्तविक कर्ता न हो; उद्देश्य; *क्रि. वि.* वास्ते, लिए।

निमित्तक *वि.* {सं.} किसी हेतु से अथवा किसी के लिए होनेवाला।

निमित्त कारण *पुं.* {सं.} वह जिसकी सहायता या कर्त्तव्य से कोई काम हो या कोई वस्तु बने (न्याय)।

निमिराज *पुं.* {सं.} राजा जनक।

निमिष *पुं.* निमेष, आँख मिचकाना, परमेश्वर।

निमीलन *पुं.* {सं.} {*वि.* निमीलित} बंद करना, मूँदना; सिकोड़ना।

निमीलना *पुं.* {निमीन} बंद करना, मूँदना; सिकोड़ना।

निमीलित *वि.* {सं.} बंद किया हुआ, मरा हुआ।

निमुँहा *वि.* {हिं. नि+मुँह} बिना मुँह का; जो बहुत बोलना ना जानता हो।

निमूँद *वि.* {सं. निर्मुद्र} मुँदा हुआ।

निमेख *पुं.* निमेष।

निमेखना *स.* {हिं. निमेख} पलक गिराना या झपकाना।

निमेट *वि.* {हिं. नि + मिटना} न मिटनेवाला, अमिट।

निमेष *पुं.* {सं.} पलक गिरना या झपकना; पलक गिरने भर का समय, पल, क्षण।

निमोना *पुं.* {हिं.} पिसे हुए हरे चने का बनाया हुआ व्यंजन।

निम्न *वि.* {सं.} नीचा, नीचे का।

निम्नगा *स्त्री.* {सं.} नदी, दरिया।

निम्नतम *वि.* {सं.} सबसे नीचा।

निम्नलिखित *वि.* {सं.} नीचे लिखा हुआ (अंडरमेंशन्ड, फॉलोइंग)।

निम्नवर्ग *पुं.* {सं.} समाज का वह नीचेवाला वर्ग या श्रेणी, जो बहुत गरीब हो और प्रायः मेहनत-मजदूरी या छोटी नौकरी- चाकरी से निर्वाह करती है (लोअर क्लास)।

निम्नस्तरीय *वि.* {सं.} निम्न स्तर का।

निम्नोक्त *वि.* {सं.} नीचे कहा हुआ।

नियंता *पुं.* {सं. नियंतृ} {*स्त्री.* नियंत्री} नियम बनानेवाला; नियंत्रण या व्यवस्था करनेवाला; कार्य चलानेवाला; नियम के अनुसार चलानेवाला शासक।

नियंत्रक *पुं.* नियंता।

नियंत्रण *पुं.* {सं.} नियम या किसी प्रकार के बंधन में बाँधना, व्यवस्थित करना; अपने अधिकार में लेकर या अपनी देख-रेख में रखकर कार्य, व्यापार आदि चलाना (कंट्रोल)।

नियंत्रित *वि.* {सं.} जिस पर नियंत्रण हो, नियम से बँधा हुआ; कायदे में रखा, लाया या बाँधा हुआ।

नियत *वि.* {सं.} नियम, प्रथा, बंधन आदि के द्वारा निश्चित किया हुआ (फिक्स्ड); समझौते आदि के द्वारा ठीक किया या ठहराया हुआ, निश्चित, मुकर्रर। आज्ञा, विधान आदि के द्वारा स्थिर किया हुआ (प्रेस्क्राइब्ड); पद, कार्य आदि पर नियुक्त किया हुआ, नियोजित, नियुक्त, तैनात (पोस्टेड); *स्त्री.* = नियति; *स्त्री.* = नीयत।

नियत तिथि *स्त्री.* {सं.} वह तिथि या दिन जो कोई काम पूरा करने या कोई देन चुकाने के लिए नियत हो।

नियति *स्त्री.* {सं.} नियत होने की क्रिया या भाव बंधन; ईश्वरीय या अदृश्य शक्ति के द्वारा पहले से नियत वह बात, जो अवश्य होकर रहे, होनी; भाग्य, अदृष्ट।

नियतिवाद *पुं.* {सं.} {*वि.* नियतिवादी} यह सिद्धांत कि जो कुछ होता है, वह सब पहले से ईश्वर द्वारा नियत रहता है और किसी प्रकार टल नहीं सकता (डिटरमिनिज़्म)।

नियतेन्द्रिय *वि.* {सं.} जितेंद्रिय, इंद्रियों को वश में करनेवाला।

नियम *पुं.* {सं.} {*वि.* नियमित} व्यवहार या आचरण के विषय में नीति, विधि, धर्म आदि के द्वारा निश्चित सिद्धांत, ढंग या प्रतिबंध,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कायदा (रूल); वे निश्चित बातें, जिनके अनुसार कोई संस्था चलाई या काम किया जाता है; किसी बात का बहुत दिनों से बँधा चला आया हुआ क्रम, परम्परा, दस्तूर; योग के आठ अंगों में से एक, जिसमें पवित्रता और संतोषपूर्वक रहकर तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर का चिंतन किया जाता है; एक अर्थालंकार जिसमें किसी बात के किसी एक या विशेष स्थान में ही होने का वर्णन होता है।

नियमतः *क्रि. वि.* {सं.} नियम के अनुसार।

नियमन *पुं.* {सं.} {*वि.* नियमित} किसी विषय या कार्य को नियमों में बाँधने या नियमित करने की क्रिया या भाव, नियमबद्ध करना (रेगुलेटिंग)।

नियमबद्ध *वि.* नियमित।

नियम-विजड़ित *वि.* {सं.} नियमों से जकड़ा हुआ।

नियमानुसार *क्रि. वि.* {सं.} नियम, परिपाटी, विधि आदि के अनुसार।

नियमावली *स्त्री.* {सं.} किसी सभा, संस्था आदि के संचालन से संबंध रखनेवाले सब नियम या उनका संग्रह; किसी कार्यक्षेत्र या विभाग के कार्य-संचालन और कार्यकर्ताओं का पथ-प्रदर्शन करनेवाले नियमों आदि की पुस्तिका (मैनुअल)।

नियमित *वि.* {सं.} {*भाव.* नियमितता} नियमों से बँधा हुआ, नियमबद्ध; नियम, कायदे या कानून के अनुसार बना हुआ और उन्हीं के अनुसार कार्यरूप में परिणत होनेवाला (गवर्न्ड बाई); बराबर या ठीक समय पर होता रहनेवाला।

नियमी *वि.* {सं.} नियमों का पालन करनेवाला।

नियम्य *वि.* {सं.} नियमन करने योग्य।

नियर *क्रि. वि.* निकट।

नियराई *स्त्री.* {हिं.} सामीप्य, निकटता।

नियराना *अ.* {हिं. नियर + आना (प्रत्य.)} निकट या पास आना अथवा पहुँचना; *स.* निकट या पास पहुँचाना।

नियरे *अव्य.* {हिं.} समीप।

नियाई *वि.* न्यायी।

नियाज *स्त्री.* {फा. नियाज़} इच्छा; दीनता; बड़ों का प्रसाद; मृतक के उद्देश्य से दरिद्रों को दिया जानेवाला भोजन; (मुसल.) बड़ों से होनेवाली भेंट।

नियातन *पुं.* {सं.} निपातन, नाश करने का कार्य।

नियान *पुं.* निदान।

नियम *पुं.* {सं.} नियम।

नियामक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* नियामिका} नियम बनाने या नियमों से बाँधकर रखनेवाला; व्यवस्था या विधान करनेवाला।

नियामत *स्त्री.* न्यामत।

नियार *पुं.* {हिं. न्यारा} जौहरियों या सुनारों की दुकान का वह कूड़ा-करकट जिसमें से न्यारिए सोना या रत्न के टुकड़े आदि ढूँढ़कर निकालते हैं।

नियारा *वि.* न्यारा, पृथक्, अलग, जुक्ष।

नियारिया *पुं.* न्यारिया. सुनारों या जौहरियों की दुकान के कूड़ा-करकट में से माल निकालनेवाला, चतुर मनुष्य।

नियुक्त *वि.* {सं.} जिसकी किसी कार्य, स्थान या पद पर नियुक्ति हुई हो, किसी काम पर लगाया हुआ, तैनात, मुकर्रर (एपॉइंटेड); नियत या स्थिर किया हुआ।

नियुक्ति *स्त्री.* {सं.} नियुक्त होने की क्रिया या भाव, मुकर्ररी।

नियुत *पुं.* {सं.} लक्ष, एक लाख, दस लाख।

नियुद्ध *पुं.* {सं.} बाहु-युद्ध, मल्लयुद्ध।

नियोक्तव्य *वि.* {सं.} नियोजित करने योग्य।

नियोक्ता *पुं.* {सं. नियोक्तृ} नियोग करनेवाला; लोगों को अपने यहाँ काम पर नियुक्त करनेवाला (एम्प्लॉयर)।

नियोग *पुं.* {सं.} नियोजित करना या किसी काम में लगाना, तैनाती, मुकर्ररी; प्राचीन आर्यों की एक प्रथा, जिसके अनुसार कोई स्त्री पति के न रहने पर या अपने पति से संतान न होने पर देवर या पति के किसी गोत्रज से संतान उत्पन्न करा लेती थी; आयोग।

नियोगस्थ *वि.* {सं.} जिसका नियोग हुआ हो।

नियोगार्थ *पुं.* {सं.} नियुक्त करने का उद्देश्य।

नियोगी (गिन्) *पुं.* {सं.} वह जिसका नियोग हुआ हो।

नियोग्य *वि.* {सं.} नियोग करने योग्य।

नियोजक *पुं.* {सं.} काम में लगाने या नियुक्त करनेवाला, मुकर्रर करनेवाला।

नियोजित *वि.* {सं.} नियुक्त किया हुआ।

नियोज्य *वि.* {सं.} जो नियुक्त करने योग्य हो, नौकर, सेवक।

नियोजन *पुं.* {सं.} किसी काम में लगाने या नियुक्त करने की क्रिया या भाव, नियुक्ति, तैनाती; आयोग।

निरंकार *पुं.* निराकार।

निरंकुश *वि.* {सं.} {*भाव.* निरंकुशता} जिसके लिए कोई अंकुश या रुकावट न हो; अथवा जो कोई अंकुश या रुकावट न माने; मनमाना, आचरण करनेवाला।

निरंकुशता *स्त्री.* {सं.} निरंकुश होने की अवस्था या भाव; मनमाना आचरण।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरंग¹ *वि.* {सं. निर् + अंग} जिसे अंग न हों, अनंग; जिसका कोई एक अंग न हो।

निरंग² *वि.* {हिं. नि + रंग} जिसका कोई रंग न हो, वर्णहीन।

निरंगुल *वि.* {सं.} जिसको अँगुली न हो।

निरंजन *वि.* {सं.} बिना अंजन का काजल का, जैसे निरंजन नेत्र; दोषरहित; माया से अलग (ईश्वर); अविनाशी; पुं. परमात्मा।

निरंजनी¹ *वि.* {सं. निरंजन} निरंजन-संबंधी, निरंजन का; ईश्वर के निरंजन रूप का उपासक, जैसे निरंजनी साधु।

निरंजनी² *स्त्री.* {सं. नीरांजनी} वह आधार या पात्र जिसमें आरती के लिए दीपक जलाया जाता है, आरती।

निरंतर *वि.* {सं.} {*भाव.* निरंतरता} जिसके बीच में अंतर न पड़े, अविच्छिन्न; लगातार या बराबर होनेवाला; सदा बना रहनेवाला, नित्य, स्थायी; *क्रि. वि.* सदा, हमेशा, बिना रुके।

निर-अंतर *वि., क्रि वि.* निरंतर।

निरकार *वि.* निराकर।

निरंतरता *स्त्री.* {सं.} निरंतर होने का भाव, अविच्छिन्नता।

निरकेवल *वि.* {सं. निर् + केवल} बिना मेल का, विशुद्ध; स्वच्छ।

निरक्ष देश पुं. {सं.} भूमध्य रेखा के उत्तर तथा दक्षिण के वे देश, जहाँ दिन-रात प्रायः बराबर होते हैं।

निरक्षन पुं. निरीक्षण।

निरक्षर *वि.* {सं.} जिसने कुछ भी पढ़ा न हो, अनपढ़।

निरक्ष-सेवा *स्त्री.* {सं.} नाड़ी-मंडल, क्रांति वृत्त।

निरक्षरता *स्त्री.* {सं.} निरक्षर होने की अवस्था या भाव; ऐसी स्थिति जब देश में निरक्षर लोगों की बहुतायत हो।

निरखना *स.* देखना, ताकना।

निरग पुं. नृग वह जिसमें गुण न हो, अनाड़ी।

निरगुन *वि.* निर्गुण।

निरघात पुं. निर्घात।

निरचु *वि.* {हिं.} निश्चित, जिसने छुट्टी ली हो।

निरच्छ *वि.* {सं. निरक्षि} अन्धा।

निरजर *वि.* {हिं.} जो कभी जीर्ण या पुराना न हो।

निरजी *स्त्री.* {हिं.} संगतराश की संगमरमर काटने की महीन टाँकी।

निरजोस पुं. {सं. निर्यास} निचोड़, सार; निर्णय।

निरजोसी *वि.* {हिं.} निर्णय करनेवाला।

निरत *वि.* {सं.} किसी काम में लगा हुआ, लीन, रत; पुं. नृत्य।

निरतना *स.* = नाचना।

निरसि *स्त्री.* {सं.} अत्यंत प्रीति, लीन होने का भाव।

निरतिशय *वि.* {सं.} हद दरजे का, परम; सबसे बढ़कर।

निरव्यय *वि.* {सं.} जिसकी हद न हो, जिसका नाश न हो।

निरदई *वि.* निर्दय।

निरदोषी *वि.* निर्दोष।

निरधातु *वि.* {हिं. निर = नहीं + धातु} जिसमें कुछ भी तत्व न हो, निस्सार।

निरधार पुं. {सं. निर्धारण} निर्धारण या निश्चय करना, निश्चय; *क्रि. वि.* निश्चित रूप से।

निरधारना *स.* {सं. निर्धारण} निर्धारण या निश्चय करना; मन में समझना।

निरध्व *वि.* {सं.} जो अपना मार्ग भूल गया हो।

निरनउ पुं. = निर्णय।

निरनुक्रोश पुं. {*वि.* सं.} निर्दय, निष्ठुरता; *स्त्री.* निर्दयता।

निरनुग *वि.* {सं.} जिसके पास कोई सेवक न हो।

निरनुनासिक *वि.* {सं.} (वर्ण) जो अनुनासिक न हो, जिसमें अनुस्वार न हो।

निरनुरोध *वि.* {सं.} निष्ठुर, कृतघ्न।

निरभता *स्त्री.* {सं.} उपवास, व्रत।

निरभा *वि.* {हिं.} निराहार जिसने 'अभन' खाया हो।

निरन्वय *वि.* {सं.} संबंध रहित, निःसंतान।

निरन्न¹ पुं. = निर्णय।

निरन्न² *वि.* {सं.} अन्नरहित; जिसने कुछ खाया न हो, निराहार।

निरपख *वि.* = निष्पक्ष।

निरपना *वि.* {सं. नर + हिं. अपना} जो अपना ना हो; पराया, गैर।

निरपराध *वि.* {सं.} जिसका कोई अपराध न हो, बेकसूर, निर्दोष।

निरपवाद *वि.* {सं.} जिसमें कोई अपवाद न हो; जिसमें कोई दोष न हो, निर्दोष।

निरपेक्ष *वि.* {सं.} {भाव. निरपेक्षा, निरपेक्षता} जिसे किसी बात की अपेक्षा या कामना न हो, बेपरवाह; जो किसी पर आश्रित न हो; जो दोनों में से किसी पक्ष में न हो, अलग, तटस्थ।

निरपेक्षता *स्त्री.* {सं.} निरपेक्ष होने की अवस्था या भाव।

निरपेक्षा *स्त्री.* निरपेक्षता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरपेक्षी *वि.* {सं.} अपेक्षा न रखनेवाला।
निरबंसी *वि.* निर्वंश।
निरफल *वि.* {हिं.} निष्फल।
निरबहना *अ.* निभना।
निरबान *पुं.* = निर्वाण।
निरबेद *पुं.* निर्वेद।
निरबेरा *पुं.* निपटारा।
निरभर *वि.* {हिं. निर = नहीं + भरना} जो भरा न हो, अपूर्ण।
निरभिमान *वि.* {सं.} जिसे अभिमान न हो, अहंकाररहित।
निरभिलाष *वि.* {सं.} जिसे किसी बात की अभिलाषा न हो।
निरभ्र *वि.* {सं.} बिना बादल का; मेघ शून्य।
निरमत्सर *वि.* = निर्मत्सर।
निरमण *क्रि.* अत्यंत अनुराग, अधिक प्रेम।
निरमना *स.* {सं. निर्माण} निर्माण करना, रचना, बनाना।
उदा. रामायण जिन्ह निरमयउ–तुलसी।
निरमाना *स.* बनाना, निर्माण करना, तैयार करना।
निरमायल *पुं.* निर्माल्य।
निरमारा *वि.* = निर्मल।
निरमूलना' *स.* {सं. निर्मूलन} निर्मूल करना; नष्ट करना।
निरमोल (लक) *वि.* अनमोल, अमूल्य, बहुत बढ़िया।
निरय *पुं.* {सं.} नरक।
निरयण *पुं.* {सं.} ज्योतिष में गणना की वह रीति, जो अयनरहित होती है।
निरर्थ *वि.* निरर्थक, अर्थशून्य, निष्फल, व्यर्थ।
निरर्थक *वि.* {सं.} जिसका कोई अर्थ न हो, अर्थशून्य; बिना मतलब का, व्यर्थ; निष्फल।
निरलंकार *वि.* {हिं.} अलंकाररहित।
निरलस *वि.* {हिं.} आलस्यहीन।
निरवकाश *वि.* {सं.} जिसे अवकाश न हो।
निरवग्रह *वि.* {सं.} स्वतंत्र, बिना विघ्न या बाधा के।
निरवद्य *वि.* {सं.} अनिंद्य, विशुद्ध, निर्मल; *पुं.* परमात्मा।
निरवधि *अव्य.* {सं.} निरंतर, बराबर *वि.* असीम, अपार।
निरवयव *वि.* {सं.} अंगों से रहित, निरकार।
निरवरोध *वि.* {सं.} प्रतिबंध रहित, बिना रुकावट का।
निरवच्छिन्न *वि.* {सं.} जिसका क्रम न टूटा हो, सिलसिलेवार।
निरवद्य *वि.* {सं.} जिन्दा या दोष से रहित।
निरवधि *वि.* {सं.} जिसकी कोई अवधि न हो; असीम, अनंत; *क्रि. वि.* लगातार, निरंतर।
निरवलंब *वि.* {सं.} अवलंबहीन, आधाररहित, बिना सहारे का; जिसका कोई सहायक न हो, जिसे कहीं कोई सहारा न मिलता हो (हेल्पलेस)।
निरवाना *स.* {सं. निवारण} रोकनेवाली चीज आगे से हटाना; मुक्त करना, छुड़ाना; छोड़ना, त्यागना; गाँठ आदि खोलना या सुलझाना।
निरवाह *पुं.* निर्वाह।
निरवाहना *अ.* {सं. निर्वाह} निर्वाह करना, निभाना।
निरशन *पुं.* {सं.} भोजन न करना, लंघन, उपवास।
निरसंक *वि.* निःशंक।
निरस *वि.* नीरस।
निरसन *पुं.* {सं.} {*वि.* निरस्त} दूर करना, हटना; पहले का निश्चय या आज्ञा आदि रद करना (कैंसिलेशन); निराकरण; परिहार; नाश; वध; निकालना, बाहर करना।
निरसा *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार की घास।
निरस्त *वि.* {सं.} जिसका निरसना हुआ या किया गया हो; जो रद्द या व्यर्थ कर दिया गया हो, जैसे-कोई आज्ञा या निर्णय निरस्त करना।
निरस्त्र *वि.* {सं.} जिसके पास अस्त्र या हथियार न हो, अस्त्रहीन।
निरस्थि *वि.* {सं.} वह मांस जिसमें से हड्डी अलग कर दी गई हो।
निरस्य *वि.* {सं.} खंडनीय, परिहार करने योग्य।
निरहंकार *वि.* {सं.} अभिमानरहित।
निरहंकृत *वि.* {सं.} अहंकाररहित।
निरहंकृति *स्त्री.* {सं.} निरभिमान, निरहंकार।
निरहंमति *वि.* {सं.} अभिमानरहित।
निरस्त्रीकरण *पुं.* {सं.} {*वि.* निरस्त्रीकृत} अस्त्र-शस्त्रों से युक्त देश, राज्य या सेना के अस्त्र-शस्त्र छीनकर उसे निरस्त्र करने की क्रिया या भाव।
निरहेतु *वि.* निर्हेतु।
निरा *वि.* {सं. निरालय} {*स्त्री.* निरी} बिना मेल का, विशुद्ध, खालिस; केवल, सिर्फ; निपट, एकदम, बिल्कुल।
निराई *स्त्री.* {हिं. निराना} निराने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
निराकरण *पुं.* {सं.} {*वि.* निराकरणीय, निराकृत} अलग-अलग करना, छाँटना; सोच-समझकर ठीक निर्णय करना या परिणाम निकालना; मिटाना, रद्द करना; शमन, निवारण, परिहार; किसी की युक्ति का खंडन।
निराकरणीय *वि.* {सं.} जिसका निराकरण किया जा सके।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराकांक्षा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* निराकांक्षी} आकांक्षा या कामना का अभाव।

निराकार *वि.* {सं.} जिसका कोई आकार न हो, आकारहीन; *पुं.* ईश्वर; आकाश।

निराकारक *वि.* {सं.} निराकरण करनेवाला।

निराखर *वि.* {सं. निरक्षर} मौन; अशिक्षित, अनपढ़।

निराग *वि.* {सं.} रागशून्य, रागहीन।

निरागम *वि.* {सं.} आगमरहित।

निराचार *वि.* {सं.} आचारशून्य।

निराट *वि.* {हिं. निरा} जिसमें और किसी चीज का मेल न हो, विशुद्ध; जिसके साथ कोई न हो, अकेला; निराला (स्थान), सुनसान; *क्रि. वि.* निरा।

निराटा *वि.* {हिं. निराला} {*स्त्री.* निराटी} निराला, अनोखा।

निरादर *वि.* {सं.} आदर का अभाव या उलटा, अपमान, बेइज्जती।

निरादेश *पुं.* {सं.} चुकान का काम, भुगतान।

निराधार *वि.* {सं.} जिसका कोई आधार या जड़ न हो, निर्मूल (बेसलेस); जैसे-आपका यह आरोप निराधार है; जो प्रमाणों से सिद्ध न हो सके, अयुक्त; जिसकी जीविका या निर्वाह का सहारा न हो; जिसकी सहायता करनेवाला कोई न हो।

निरानंद *वि.* {सं.} आनंदरहित, जिसमें आनन्द न हो; *पुं.* आनंद का अभाव, दुख।

निराना *स.* {सं.} {*भाव.* निराई} पौधों के आसपास की घास निकालना, जिसमें पौधों की बाढ़ ठीक तरह से हो, नींदना, निकाना।

निरापद *वि.* {सं.} जिसमें कोई संकट या आपत्ति न हो, सुरक्षित; जिसमें हानि या अनर्थ का डर न हो।

निरापन *वि.* पराया।

निराबाध *वि.* {सं.} बाधाशून्य।

निरामय *वि.* {सं.} नीरोग, स्वस्थ।

निरामिष *वि.* {सं.} (भोजन) जिसमें मांस न मिला हो; मांस न खानेवाला (प्राणी)।

निराय *वि.* {सं.} आयरहित, बिना कर के।

निरायत *वि.* {सं.} अविस्तृत, सिकुड़ा हुआ।

निरायुध *वि.* {सं.} अस्त्रहीन, बिना अस्त्र के।

निरारा *वि.* {*स्त्री.* निरारी} = निराला।

निरालंब *वि.* {सं.} जिसको आलंबन या सहारा देनेवाला कोई न हो, निराश्रय; जिसका कोई आधार न हो, निराधार।

निराल *वि.* {हिं. निराला} बिना किसी प्रकार के मेल या मिलावट का; निरा, खालिस।

निराला *पुं.* {सं. निरालय} ऐसा स्थान जहाँ कोई मनुष्य न हो; एकांत स्थान; *वि.* {*स्त्री.* निराली} जहाँ कोई आदमी या बस्ती न हो, एकांत, निर्जन; सबसे अलग तरह का, अद्‌भुत, विलक्षण; अनूठा, अपूर्व, बहुत बढ़िया।

निरावरण *वि.* {सं.} आवरण से रहित।

निरावृत *वि.* {सं.} बिना ढका हुआ।

निराशक *वि.* {सं.} निराश करनेवाला।

निराश *वि.* {सं.} जिसे आशा न रह गई हो, नाउम्मीद।

निराशावाद *पुं.* {सं.} {*वि.* निराशावादी} संसार और उसके व्यापारों को दुःखमय मानकर सदा सब बातों के संबंध में निराश और फलतः हतोत्साहित रहने का सिद्धांत या वृत्ति, सदा यही मानना या सोचना कि अंत में सफलता का शुभ परिणाम नहीं होगा या हम सुखी नहीं हो सकते।

निराशावादी (वादिन्) *पुं.* {सं.} जो सब बातों के संबंध में निराश और हतोत्साह रहता हो (पेसिमिस्ट)।

निराशी *वि.* निराश, आशाहीन, उदासीन।

निराश्रय *वि.* {हिं.} जिसे कहीं आश्रय न मिलता हो, अशरण; असहाय।

निराश्रित *वि.* = निराश्रय।

निरास *वि.* = निराश।

निरासन *वि.* {सं.} आसनरहित।

निरासल *वि.* {हिं.} = निराश।

निरासी *वि.* {हिं. निराश} निराश; जिसमें चहल-पहल या रौनक न हो, उदास।

निराहार *वि.* {सं.} जिसने भोजन न किया हो; (व्रत आदि) जिसमें भोजन न किया जाता हो।

निरिंद्रिय *वि.* {सं.} जिसे या जिसमें कोई इंद्रिय न हो, इंद्रिय रहित (इन्-ऑर्गनिक)।

निरिच्छन *पुं.* निरीक्षण।

निरीक्षक *पुं.* {सं.} देखनेवाला; निरीक्षण या देख-रेख करनेवाला (इंस्पेक्टर)।

निरीक्षण *पुं.* {सं.} {*वि.* निरीक्षित, निरीक्ष्य} देखना, दर्शन; यह देखना कि सब बातें ठीक हैं या नहीं, देखरेख (इंस्पेक्शन); देखने की मुद्रा या ढंग, चितवन।

निरीश्वर *वि.* {सं.} जिसमें ईश्वर न हो, ईश्वररहित; *पुं.* = निरीश्वरवादी।

निरीश्वरवाद *पुं.* {सं.} {*वि.* निरीश्वरवादी} वह सिद्धांत जिसमें ईश्वर का अस्तित्त्व न माना जाता हो (एथीइज़्म)

निरीश्वरवादी *पुं.* {सं.} नास्तिक।

निरीष *पुं.* {सं.} हल का फार।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरीस *वि.* {सं. निरीश} निराश; जो बड़ों का आदर करना न जानता हो।

निरीह *वि.* {सं.} {*भाव.* निरीहता} चुपचाप पड़ा रहनेवाला; जिसे कोई अभिलाषा न हो; विरक्त उदासीन; सीधा-सीधा और निर्दोष, बेचारा।

निरीहा *स्त्री.* {सं.} निश्चेष्टा, विरक्ति।

निरुआरना *स.* निरवारना।

निरुक्त *वि.* {सं.} निश्चित रूप से कहा या बताया हुआ; निश्चित; पुं. छह वेदांगों में से एक, जिसमें वैदिक शब्दों की व्याख्या है; व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति या मूल और उसके रूपों के विकास आदि का विवेचना होता है (एटिमॉलजी)।

निरुक्ति *स्त्री.* {सं.} किसी पद या वाक्य की ऐसी व्याख्या, जिसमें व्युत्पत्ति आदि का पूरा विवेचन हो; इस बात का विवेचन कि कोई शब्द मूलतः किस भाषा का था और किस प्रकार बदलता हुआ अपने वर्तमान रूप में आया है; शब्द की व्युत्पत्ति; एक काव्यालंकार जिसमें किसी शब्द का मनमाना, परंतु युक्तिसंगत अर्थ किया जाता है।

निरुज *वि.* नीरज।

निरुत्तर *वि.* {सं.} जिसका कुछ उत्तर न हो; जो उत्तर न दे सके।

निरुत्साह *वि.* {सं.} जिसमें उत्साह न हो, उत्साहहीन।

निरुत्सुक *वि.* {सं.} जो उत्सुक न हो, जिसमें किसी बात के लिए उत्सुकता का अभाव हो।

निरुदन *पुं.* {सं.} {*वि.* निरुदित} रासायनिक तत्व या वनस्पतियों आदि में से जल या उसका अंश निकालना या सुखाना (डी-हाईड्रेशन)।

निरुद्देश्य *वि.* {सं.} जिसका कोई उद्देश्य न हो; *क्रि. वि.* बिना किसी उद्देश्य के।

निरुद्ध *वि.* {सं.} रुका या बँधा हुआ।

निरुद्यम *वि.* {सं.} {*भाव.* निरुद्यमता} जिसके हाथ में कोई उद्यम या काम न हो, निकम्मा।

निरुद्यमी *वि.* {हिं.} जो कोई उद्यम न करता हो।

निरुपक्रम *वि.* {सं.} बिना उपक्रम का।

निरुपयद *वि.* {सं.} उपपदरहित।

निरुपधि *वि.* निरुपाधि।

निरुपम *वि.* {सं.} {*स्त्री.* निरुपमा} जिसकी उपमा न हो, उपमारहित, बेजोड़।

निरुपयोगी *वि.* {सं. निर् + उपयोग + हिं. ई (प्रत्य.)} जो काम न आ सके, व्यर्थ का।

निरुपल *वि.* {सं.} बिना पत्थर का।

निरुपाधि (क) *वि.* {सं.} जो सब प्रकार की उपाधियाँ, बंधनों और बाधाओं से रहित हो, परम (एब्सोल्यूट); सांसारिक बंधनों या मायाजाल से रहित और मुक्त; जिसमें किसी प्रकार का विघ्न या बाधा न हो, निर्विघ्न; पुं. ब्रह्म।

निरुपहन *वि.* {सं.} शुभसूचक।

निरुपाय *वि.* {सं.} जो कोई उपाय न कर सकता हो; जिसका कोई उपाय न हो सके।

निरुवरना *अ.* {सं.} कठिनता या उलझन दूर होना।

निरुवार *पुं.* {सं. निवराण} {*क्रि.* निरुवारना} छुड़ाना, मोचनल; छुटकारा; सुलझाने का काम; तय करना, निपटाना; निर्णय, फैसला।

निरुष्मन् *वि.* {सं.} जो गरम न हो, शीतल।

निरूढ़ *वि.* {सं.} उत्पन्न; प्रसिद्ध, विख्यात; बिनब्याहा, कुआँरा।

निरूढ़लक्षणा *स्त्री.* {सं.} वह लक्षण जिसमें शब्द का नया माना हुआ अर्थ चल पड़ा हो और वह केवल प्रसंग या प्रयोजनार्थ ही लिया जाता हो।

निरूपक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* निरूपिका, निरूपिणी} निरूपण करनेवाला।

निरूपण *पुं.* {सं.} {*वि.* निरूपित, निरूप्य} सोच-समझकर किया जानेवाला विचार या निर्णय; कोई विचार या मत, अच्छी तरह किसी के सामने रखने की क्रिया या भाव।

निरूपना *अ.* = निरूपण करना।

निरेक *वि.* {सं.} परिपूर्ण, पूरा।

निरै *पुं.* {सं. नित्य} नरक, निरय।

निरैठा *पुं.* {सं. निर् + ईहा या इष्ट} मस्त।

निरोग (गी) *पुं.* नीरोग।

निरोध *पुं.* {सं.} बीच में पकड़कर रोकनेवाली चीज, अवरोध, बाधा; कोई ऐसी बात जो किसी को कुछ करने या रोकने के लिए की गई हो, रोक, रुकावट (रिस्ट्रिक्शन); घेरा; नाश; (योग में) चित्त की वृत्तियों को रोकना; परिवार-नियोजन का रबर का थैलीनुमा एक उपकरण।

निरोधक *वि.* {सं.} रोकनेवाला।

निरोधन *पुं.* {सं.} निरोध करने या रोक रखने की क्रिया या भाव; किसी अभियुक्त, सन्दिग्ध, विकट या उपद्रवी आदमी को रोके रखना कि वह भाग न सके अथवा कोई अनिष्ट न कर सके।

निरोधी *वि.* निरोधक, प्रतिबंध।

निर्ख *पुं.* {फा.} भाव, दर।

निर्खनामा *पुं.* {फा.} वह पत्र जिसपर सब चीजों के निर्ख या भाव लिखे हों।

निर्खबंदी *स्त्री.* {फा.} चीजों के भाव या दर निश्चित करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्गंध *वि.* {सं.} {*भाव.* निर्गंधता} जिसमें कोई गन्ध न हो, गंध-रहित।
निर्गंधन *पुं.* {सं.} मारण।
निर्गत *वि.* {सं.} {*स्त्री.* निर्गता} निकला या आया हुआ।
निर्गम *पुं.* {सं.} {*वि.* निर्गमित} बाहर निकलने की क्रिया या भाव, निकासी; वह मार्ग जिससे कोई चीज़ बाहर निकलती हो, निकास; आज्ञा आदि का निकलना या प्रकाशित होना; किसी वस्तु विशेषत: धन आदि का किसी स्थान या देश से बहुत अधिक मात्रा में बाहर आना (ड्रेन)।
निर्गमना *अ.* {सं. निर्गमन} निकलना।
निर्गुण *वि.* {सं.} {*भाव.* निर्गुणता} सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों से परे; जिसमें कोई अच्छाई न हो, गुणरहित।
निर्गुर्णिया *वि.* {सं. निर्गुण + हिं. इया (प्रत्य.)} निर्गुण ब्रह्म की उपासना करनेवाला।
निर्गूढ़ *वि.* {सं.} जो बहुत गूढ़ या गुप्त हो।
निर्गुन *वि.* = निर्गुण।
निर्गृह *वि.* {सं.} गृहहीन।
निर्ग्रंथ *वि.* {सं.} {*भाव.* निर्ग्रंथता} जिसमें ग्रन्थि, बंधन आदि न हो; जिसका ग्रंथ से संबंध न हो, ग्रंथरहित।
निर्घंट *पुं.* {सं.} शब्द या ग्रंथ-सूचि।
निर्घात *पुं.* {सं.} विनाश, बरबादी; आँधी, तूफान; बादलों की गरज और बिजली की कड़क; भूकंप; आघात, प्रहार, मार।
निर्घिन *वि.* {सं. नि: + हिं. घिन = घृणा} परम घृणित पदार्थ या कार्य से भी घृणा न करनेवाला, बहुत ही नीच प्रवृत्तिवाला।
निर्छल *वि.* निश्छल।
निर्जन *वि.* {सं.} (स्थान) जहाँ कोई न हो, एकांत, सुनसान; *पुं.* {*वि.* निर्जित} ब्याज, लाभ आदि के रूप बढ़कर प्राप्त होनेवाला धन।
निर्जर *पुं.* {सं.} देवता, सुधा; *वि.* जरारहित, जिसे बुढ़ापा न आए।
निर्जल *वि.* {सं.} बिना जल का (स्थान); (व्रत) जिसमें जल तक पीने का विधान न हो।
निर्जरा *स्त्री.* {सं.} गुरुच, गिलोय, तालपर्णी।
निर्जलीय *वि.* {सं.} जिसमें जल न मिलाया गया हो।
निर्जित *वि.* {सं.} जो पूरी तरह से जीत लिया गया हो; किसी प्रकार प्राप्त किया हुआ।
निर्जीव *पुं.* {सं.} जीवरहित, बेजान; मुरदों का-सा अशक्त; उत्साहहीन।
निर्झर *पुं.* {सं.} पानी का झरना, सोता, चश्मा।
निर्झरी *पुं.* {सं.} पर्वत, गिरी, पहाड़; *स.* स्त्री पानी का झरना।
निर्झरिणी *स्त्री.* {सं.} नदी, दरिया; पानी का सोता, झरना।
निर्णय *पुं.* {सं.} औचित्य और अनौचित्य आदि का विचार करके यह निश्चय करना कि यह ठीक है या वास्तविक है अथवा ऐसा होना चाहिए, निपटारा; वादी और प्रतिवादी की बातें और तर्क सुनकर उनके ठीक होने या न होने के विषय में मत स्थिर करना, फैसला (डिसीजन)।
निर्णयन *पुं.* {सं.} निर्णय।
निर्णयात्मक *वि.* {सं.} निर्णय के रूप में होनेवाला।
निर्णयात्मकता *स्त्री.* {सं.} निर्णय तक पहुँचने की क्षमता।
निर्णायक *पुं.* {सं.} वह जो निर्णय या फैसला करे; *वि.* निर्णय में सहायक।
निर्णायन *पुं.* {सं.} निर्णय का कारण।
निर्णीत *वि.* {सं.} जिसका या जिसके विषय में निर्णय हो चुका हो।
निर्त *पुं.* नृत्य।
निर्दंभ *वि.* {सं.} जिसे दम्भ या अभिमान न हो, अहंकार-शून्य।
निर्दई *वि.* निर्णय।
निर्दय *वि.* {सं.} जिसके मन में दया न हो, निष्ठुर, बेरहम।
निर्दर *पुं.* {सं.} गुहा, कंदरा; *वि.* कठिन।
निर्दयता *स्त्री.* {सं.} निर्दय होने की अवस्था या भाव, बेरहमी, निष्ठुरता; कोई निष्ठुर कार्य।
निर्दयपन *पुं.* निर्दयता।
निर्दल *वि.* {सं.} जिसमें दल या पत्र हों; जिसका कोई दल या जत्था न हो; जो किसी दल में न हो, तटस्थ।
निर्दहना *स.* {सं. दहन} जलाना।
निर्दहनी *स्त्री.* {सं.} मूर्वा लता।
निर्दिग्ध *वि.* {सं.} पुष्ट, मोटा।
निर्दिष्ट *वि.* {सं.} जिसका निर्देश हुआ हो; विशेष रूप से बतालाया या नियत किया हुआ, ठहराया हुआ, विनिर्दिष्ट (स्पेसिफायड); किसी को दिया, सौंपा या सहेजा हुआ (एसाइंड); (बात या नियम) जिसके लिए कोई व्यवस्था की गई या गुंजाइश निकाली गई हो (प्रोवाइडेड)।
निर्दूषण *वि.* निर्दोष।
निर्देश *पुं.* {सं.} {*वि.* निर्दिशित, निर्दिष्ट} विशेष रूप से यह बतलाना कि यह वस्तु या कार्य है; यह कहना कि अमुक कार्य अच्छा है और यही करना चाहिए, उपदेश (प्रिसेप्ट); किसी कार्य का स्वरूप, प्रकार या विधि बतलाना; आज्ञा,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुकुम; बात, कार्य या नियम के संबंध में लगाई जानेवाली कोई शर्त, बतलाई जानेवाली कोई बात या की जानेवाली कोई व्यवस्था; किसी को कोई चीज किसी काम के लिए देना या सौंपना (एसाइंमेंट); वर्णन, वृत्तांत; नाम; अभिदेश।

निर्देशक पुं. {सं.} वह जो किसी प्रकार का निर्देश करता या कुछ बतलाता हो; आधुनिक रजतपट की कला में वह अधिकारी, जो पात्रों की वेष-भूषा, भूमिका या आचरण और दृश्यों के स्वरूप आदि निश्चित करता है (डाइरेक्टर)।

निर्देशन पुं. {सं.} निर्देश करने की क्रिया या भाव; आधुनिक रजतपट में वे सब कार्य जो उसके निर्देशक को करने पड़ते हैं; विशेष निर्देशक।

निर्देशिका *स्त्री.* {सं.} वह पुस्तक जिसमें किसी विशेष व्यापार, विभाग आदि की जानने योग्य बातें और उनसे संबंध रखनेवाले लोगों के नाम, पते आदि रहते हैं (डाइरेक्टरी)।

निर्देशित *वि.* {सं.} जिसका निर्देशन हो चुका हो।

निर्दैय *वि.* {सं.} दीनतारहिता।

निर्दोष *वि.* {सं.} {*भाव.* निर्दोषता} जिसमें कोई दोष न हो, बेऐब; निरपराध, बेकसूर।

निर्दोषी *वि.* निर्दोष।

निर्द्रव्य *वि.* {सं.} दरिद्र, धनहीन।

निद्रोह *वि.* {सं.} द्रोहरहित, मित्र जैसा।

निर्द्वंद (द्व) *वि.* {सं.} जिसका विरोध करनेवाला कोई न हो; राग, द्वेष आदि द्वन्द्वों से रहित; स्वच्छंद।

निर्धंधा *वि.* {सं. निर् + हिं. धंधा} जिसके हाथ में काम-धंधा न हो, बेरोजगार।

निर्धन *वि.* {सं.}{*भाव.* निर्धनता} जिसके पास धन न हो, धनहीन, गरीब।

निर्धार पुं. निर्धारण, ठहराना।

निर्धारक पुं. {सं.} {*स्त्री.* निर्धारिका, निर्धारिणी} वह जो किसी बात का निर्धारण या निश्चय करता हो।

निर्धारण पुं. {सं.} कोई बात ठहराना या निश्चित करना; न्याय में एक तरह के बहुत से पदार्थों में से गुण, कर्म आदि की समानता के विचार से कुछ का अलग वर्ग बनाना; यह निश्चित करना कि इसका मूल्य या महत्व क्या है, अथवा इस पर कितना कर लगना चाहिए (एसेस्मेंट)।

निर्धारना *स.* {सं. निर्धारण} निश्चित या निर्धारित करना, ठहराना।

निर्धारित *वि.* {सं.} निश्चित किया या ठहराया हुआ।

निर्धारिती पुं. {सं. निर्धारित} वह जिसके संबंध में यह निर्धारित किया जाए कि इसे इतना कर देना होगा (एसेसी)।

निर्धूत *वि.* {सं.} अच्छी तरह धुला हुआ; स्वच्छ, साफ।

निर्धूम *वि.* {सं.} जहाँ धुआँ न हो।

निर्निमित *वि.* {सं.} अकारण।

निर्निवार्य *वि.* {सं.} अनिवार्य।

निर्निमेष *वि.* {सं.} बिना पलक झपकाए, एकटक।

निर्बंध पुं. {सं.} बाधा, अड़चन; हठ, जिद; आग्रह; किसी व्यक्ति पर अथवा किसी विषय में शर्तों आदि के रूप में लगाई जानेवाली रोक, रुकावट (रिस्ट्रिक्शन)।

निर्बंधी *वि.* {सं.} आवश्यक, आग्रही।

निर्बल *वि.* {सं.} {*भाव.* निर्बलता} जिसमें बल या शक्ति न हो, कमजोर।

निर्बलता *स्त्री.* {सं.} बल या शक्ति न होने या बहुत कम होने की अवस्था या भाव (इनफर्मिटी)।

निर्बहना *अ.* {सं. निर्वाह} पार होना; अलग या दूर होना; पालन होना, निभना।

निर्बाध (धित) *वि.* {सं.} जिसमें कोई बाधा या रुकावट न हो, बाधारहित; *क्रि. वि.* बिना किसी बाधा के।

निर्बुद्धि *वि.* {सं.} मूर्ख, बेवकूफ।

निर्बोध *वि.* {सं.} जिसे अच्छे बुरे का ज्ञान न हो, अज्ञान, अनजान।

निर्भट *वि.* {सं.} दृढ़, पुष्ट।

निर्भय *वि.* {सं.} {*भाव.* निर्भयता} जिसे भय या डर न हो, निडर।

निर्भर *वि.* {सं.} भरा हुआ, पूर्ण; मिला हुआ, युक्त; किसी के आश्रय पर ठहरा या टिका हुआ, अवलंबित, आश्रित (बेस्ड)।

निर्भाग्य *वि.* {सं.} मंदभाग्य, अभागा।

निर्भीक *वि.* {सं.} {*भाव.* निर्भीकता} जिसे भय न हो, निडर।

निर्भीकता *स्त्री.* {सं.} निर्भीक होने की अवस्था या भाव, निडरपन।

निर्भ्रम *वि.* {सं.} जिसे भ्रम न हो, भ्रमरहित, शंकारहित; *क्रि. वि.* बेधड़क, बेखटके।

निर्भ्रांत *वि.* {सं.} जिसमें कोई भ्रम या संदेह न हो; जिसको कोई भ्रम या संदेह न हो।

निर्मत्सर *वि.* {सं.} जिसके मन में मत्सर या ईर्ष्या न हो।

निर्मना *स.* निर्माना।

निर्मम *वि.* {सं.} {*भाव.* निर्ममता} जिसे ममता या मोह न हो, निर्मोही; जिसको कोई वासना न हो, निष्काम; निर्दयतापूर्ण, जैसे निर्मम हत्या।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्ममता *स्त्री.* {सं.} ममता का अभाव।
निर्मर्याद *वि.* {सं.} बिना मर्यादा का।
निर्मल *वि.* {सं.} {*भाव.* निर्मलता} जिसमें किसी प्रकार का मल या दोष न हो, शुद्ध, पवित्र, निर्दोष; जिसमें किसी प्रकार की मैल या मलिनता न हो, मलरहित, साफ, स्वच्छ, जैसे निर्मल जल; जो अपने विशुद्ध रूप में हो, जैसे निर्मल आकाश।
निर्मली *स्त्री.* {सं. निर्मल} एक प्रकार का वृक्ष, जिसके बीजों के चूर्ण से गँदला पानी साफ किया जाता है, चाकसू।
निर्मा *स्त्री.* {सं.} परिमाण, मूल्य।
निर्माण *पुं.* {सं.} किसी वस्तु का बनाया जाना, बनाने का काम, रचना; वह वस्तु जो बनकर तैयार हुई हो, जैसे भवन, मेज आदि; कोई चीज बना या गढ़कर उसे कोई रूप या आकार देना।
निर्माता *पुं.* {सं.} निर्माण करने या बनानेवाला।
निर्मान *वि.* {हिं. नि + मान} बहुत अधिक, अपार।
निर्माना *स.* {सं. निर्माण} बनाना, निर्माण करना।
निर्मायक *वि.* {सं.} निर्माण करने या बनानेवाला।
निर्मायल *पुं.* निर्माल्य।
निर्माल्य *पुं.* {सं.} किसी देवता पर चढ़ा हुआ पदार्थ।
निर्मित *वि.* {सं.} जिसका निर्माण हुआ हो, बनाया हुआ, रचित।
निर्मुक्ति *स्त्री.* {सं.} बहुत से अपराधियों, विशेषतः राजनीतिक बंदियों को एक-साथ क्षमा करके छोड़ देना (एम्नेस्टी)।
निर्मुट *पुं.* {सं.} सूर्य, खपड़ा, शठ।
निर्मूल *वि.* {सं.} बिना जड़ या मूल का; जड़ से उखड़ा हुआ; जिसको कोई आधार न हो, निराधार; जो बिल्कुल नष्ट हो चुका हो, जो नाम को भी न रह गया हो।
निर्मूलन *पुं.* {सं.} निर्मूल करने की क्रिया या भाव; जड़ से उखाड़ना, नष्ट करना।
निर्मेघ *वि.* {सं.} बिना बादल का।
निर्मेध *वि.* {सं.} बुद्धिहीन।
निर्मोल *वि.* अनमोल।
निर्मोही *वि.* {सं. निर्माह} जिसे मोह या ममता न हो।
नियंत्रण *वि.* {सं.} आधारहित, उद्दंड।
निर्यात *पुं.* {सं.} वह जो कहीं से बाहर निकले; देश से माल बाहर जाने की क्रिया; देश से बाहर जानेवाला माल (एक्सपोर्ट); *वि.* (माल आदि) जो देश के बाहर भेजा गया हो, दूसरे देशों को भेजा हुआ (एक्सपोर्टेड)।
निर्यातक *पुं.* {सं.} वह जो बिक्री के लिए माल देश से बाहर भेजता हो (एक्सपोर्टर)।
निर्यात-कर *पुं.* {सं.} वह कर, जो किसी देश में वहाँ से बाहर जानेवाली वस्तुओं या माल पर लगता है।
निर्यातन *पुं.* {सं.} बदला लेना; मार डालना; निर्यात करने का काम।
निर्याता *पुं.* {सं.} कृषक, किसान।
निर्यास *पुं.* {सं.} वृक्षों या पौधों में से निकलनेवाला रस।
गोंद; बहना या झरना, क्षरण।
निर्युक्तिक *वि.* {सं.} जिसमें युक्तियों, कारणों आदि का अभाव हो; जो युक्ति के आधार पर न हो, युक्तिरहित।
निर्योग्य *वि.* {सं.} योग्यता से रहित, अयोग्य।
निर्लक्ष्य *वि.* {सं.} लक्ष्यहीन, जो दृष्टि पर न पड़े।
निर्लज्ज *वि.* {सं.} {*भाव.* निर्लज्जता} जिसे लज्जा न हो, बेशर्म, बेहया।
निर्लज्जता *स्त्री.* {सं.} निर्लज्ज या लज्जाहीन होने की अवस्था या भाव, बेशर्मी।
निर्लिप्त *वि.* {सं.} जो किसी विषय में लिप्त या आसक्त न हो।
निर्लुंच *पुं.* {सं.} लूट-मार करने का काम।
निर्लुंठन *पुं.* {सं.} अपहरण, लूटना।
निर्लेखन *पुं.* {सं.} किसी वस्तु पर का मैल खुरचना।
निर्लेप *वि.* निर्लिप।
निर्लोभ *वि.* {सं.} जिसे लोभ न हो।
निर्वंश *वि.* {सं.} {*भाव.* निर्वंशता} जिसका वंश या परिवार नष्ट हो गया हो, जिसके वंश में कोई न रह गया हो।
निर्वचन *पुं.* {सं.} निश्चित रूप से कोई बात कहना, निरूपण; इस बात का विवेचन कि कोई शब्द कैसे बना और मूलतः कहाँ का है अथवा कहाँ से आया है, निरुक्ति, व्युत्पत्ति; *वि.* चुप।
निर्वर *वि.* {सं.} निर्लज्ज, निर्भय।
निर्वसन *वि.* {सं.} निर्वस्त्र, नग्न, नंगा।
निर्वसना *स्त्री.* {सं.} निर्वस्त्र स्त्री।
निर्वस्त्र *वि.* {सं.} नग्न, नंगा।
निर्वस्त्रा *स्त्री.* {सं.} निर्वस्त्र स्त्री।
निर्वहण *पुं.* निर्वाह।
निर्वहना *अ.* निभना।
निर्वाक *वि.* {सं. निर्वाक्} मौन, चुप।
निर्वाच्य *वि.* {सं.} निर्वचनीय।
निर्वाचक *पुं.* {सं.} वह जो निर्वाचन करे या चुने, चुननेवाला (इलेक्टर)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्वाचक सूची *स्त्री.* {सं.} वह सूची जिसमें निर्वाचकों के नाम, पते, क्रमांक आदि लिखे रहते हैं (इलेक्टरल रोल)।

निर्वाचन *पुं.* {सं.} किसी काम के लिए बहुतों में से एक या कुछ को प्रतिनिधि के रूप में चुनना।

निर्वाचन अधिकारी *पुं.* {सं.} वह अधिकारी, जो किसी निर्वाचन की देख-रेख और व्यवस्था के लिए नियुक्त हो और उसका परिणाम बतलाता हो (रिटर्निंग ऑफिसर)।

निर्वाचन-क्षेत्र *पुं.* {सं.} वह स्थान या क्षेत्र जिसमें से प्रतिनिधि चुना या चुने जाते हों।

निर्वाचित *वि.* {सं.} चुना हुआ।

निर्वाण *पुं.* {सं.} {*वि.* निर्वाणी} बुझना, ठंडा होना; न रह जाना, समाप्ति; अस्त होना, डूबना।

निर्वाणी *वि.* {सं.} निर्वाण-संबंधी, निर्वाण का; निर्वाण का साधक या इच्छुक, जैसे निर्वाणी अखाड़ा।

निर्वात *वि.* {सं.} वायुरहित, अचंचल, स्थिर।

निर्वाद *पुं.* {सं.} अपवाद, निंदा, अवज्ञा।

निर्वाप *पुं.* निर्वापण।

निर्वापण *पुं.* {सं.} {*वि.* निर्वापित, निर्वाप्य} बुझने या बुझाने का काम; विनाश, नाश; (अधिकार या स्वत्व का) अंत या समाप्ति करना (एक्सटिंक्शन)।

निर्वापित *वि.* {सं.} बुझा हुआ; बुझाया हुआ।

निर्वास *पुं.* {हिं.} प्रवास, विदेश-यात्रा।

निर्वासक *पुं.* {सं.} वह जो निर्वासन करता हो; देश निकाला देनवाला।

निर्वासन *पुं.* {सं.} मार डालना, वध; गाँव, नगर देश आदि से दंडस्वरूप बाहर देना।

निर्वासित *वि.* {सं.} जिसे देश-निकाले का दंड मिला हो, अपने निवासस्थान से निकाला हुआ।

निर्वाह *पुं.* {सं.} क्रम या परंपरा का चलता रहना, निबाह; किसी निश्चय या प्रथा के अनुसार होनेवाला आचरण, पालन; जीवनयापन।

निर्वाहक *पुं.* {सं.} निर्वाह करनेवाला, निभानेवाला; आज्ञा का निर्वाहण या पालन करनेवाला।

निर्वाहण *वि.* {सं.} {*वि.* निर्वाहणिक, निर्वाहणीय} निर्वाह करना, निभाना; किसी की आज्ञा या निश्चय के अनुसार ठीक तरह से काम करना; कुछ समय के लिए किसी दूसरे का काम या भार अपने ऊपर लेना, अस्थायी रूप से स्थानापन्न के रूप में काम लेना।

निर्वाहण-व्यय *पुं.* {सं.} जीवनयापन के लिए होनेवाला व्यय; जीवनयापन के लिए प्राप्त होनेवाला धन।

निर्वाहना *अ.* = निभाना।

निर्विकल्प *वि.* {सं.} जिसमें विकल्प, परिवर्तन या भेद न हो (एब्सोल्यूट); स्थिर, निश्चित।

निर्विकार *वि.* {सं.} जिसमें कोई विकार या परिवर्तन न होता हो।

निर्विकास *वि.* {सं.} अस्फुट, विकासरहित।

निर्विघ्न *वि.* {सं.} जिसमें विघ्न या बाधा न हो; *क्रि. वि.* बिना विघ्न या बाधा के।

निर्विचार *वि.* {सं.} विचाररहित।

निर्विभाग *वि.* {सं.} जिसके पास कोई विभाग न हो, जैसे निर्विभाग मंत्री।

निर्विचेष्ट *वि.* {सं.} अज्ञान, मूर्ख।

निर्विमर्श *वि.* {सं.} चिंताहीन।

निर्विरोध *वि.* {सं.} जिसमें कोई विरोध, बाधा या रुकावट न हो; बिना विरोध के होनेवाला।

निर्विवाद *वि.* {सं.} जिसमें कोई विवाद या झगड़े की बात न हो, जो बिना किसी विवाद के ठीक माना जाता हो।

निर्बीज *वि.* {सं.} जिसमें कोई बीज न हो, बीजरहित; जो कारण से रहित हो; जिसका बीज तक न रह गया हो, सर्वथा नष्ट।

निर्बीजा *स्त्री.* {सं.} किशमिश।

निर्वीर *वि.* {सं.} वीरों से रहित।

निर्वीय *वि.* {सं.} वीर्यहीन, बल या तेज से रहित; अशक्त, कमजोर।

निर्वृक्षीकरण *पुं.* {सं.} वृक्षों से रहित करना।

निर्वेग *वि.* {सं.} गतिहीन, स्थिर।

निर्वेतन *वि.* {सं.} वेतनहीन।

निर्वेद *पुं.* {सं.} (अपना) अपमान; खेद, दुख; वैराग्य; मन में आशा या दृढ़ता न रह जाने के कारण होनेवाली खिन्नता और विरक्ति।

निर्वेदी *पुं.* {सं. निः + वेद} वह जो वेदों से भी परे हो, अर्थात् ब्रह्म।

निर्वैर *वि.* {सं.} वैर या द्वेष से रहित।

निर्व्यलीक *वि.* {सं.} निर्मल; निष्कपट।

निर्व्याज *वि.* {सं.} निष्कपट, छलरहित; विघ्न या बाधा से रहित; बिना कपट का।

निलजई *वि.* = निर्लज्जता।

उदा. रीझबे लायक तुलसी के निलजई—**तुलसी**।

निलज्ज *वि.* {सं.} निर्लज्ज, गृह।

निलय *पुं.* {सं.} मकान, घर; स्थान, जगह।

निलाज *वि.* = निर्लज्ज।

निलिप *पुं.* {सं.} देवता।

निलिपा *स्त्री.* {सं.} गाय, दूध दुहने का पात्र।

निलीन *वि.* {सं.} लीन, संलग्न।

निवर्त *वि.* {सं.} हटाया हुआ।

निवछरा *वि.* {सं. निवृत्त} (ऐसा समय) जिसमें बहुत काम-काज न हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवर्तक *वि.* {सं.} निवर्तन या रद्द करनेवाला, जैसे निवर्तक विधान (रिपीलिंग)।

निवर्तन *पुं.* {सं.} {*वि.* निवर्तित} वह प्रक्रिया जिसके अनुसार कोई बना हुआ विधान समाप्त कर दिया जाता है, विधान आदि का अंत करना कानून रद्द करना (रिपील)।

निवर्तमान *वि.* {सं.} जो किसी पद पर रह चुका हो (पास्ट)।

निवर्तित *वि.* {सं.} (विधान) जिसका निवर्तन हुआ हो, रद्द किया हुआ (रिपील्ड)।

निवसथ *पुं.* {सं.} गाँव, सीमा।

निवसन *पुं.* {सं.} घर, वस्त्र।

निवसना *अ.* = निवास करना।

निवाज *वि.* नवाज, अनुग्रह करनेवाला।

निवाजना *अ.* नवाजना, कृपा करना।

निवाड़ा *पुं.* नवाड़ा, छोटी नाव।

निवाना *क्रि.* {हिं. सं.} झुकाना, नीचे की ओर करना।

निवापी *पुं.* {हिं.} बोनेवाला।

निवार *स्त्री.* {फा. नवार} मोटे सूत की बुनी वह पट्टी, जिससे पलंग बुनते हैं।

निवारक *वि.* {सं.} निवारण करने या रोकनेवाला; दूर करनेवाला।

निवारण *पुं.* {सं.} रोकना; हटाना, दूर करना; निवृत्ति, छुटकारा।

निवारना *स.* {सं. निवारण} रोकना, दूर करना, हटाना; अपनी रक्षा का ध्यान रखते हुए बचकर रहना; निषेध या मना करना।

निवारी *स्त्री.* {सं. नेपाली} जूही की तरह का सफेद फूलों का एक पौधा।

निवाला *पुं.* {फा. निवाल:} भोजन का कौर, ग्रास।

निवास *पुं.* {सं.} कहीं रहने की क्रिया या भाव; रहने का स्थान; जीव-जंतु रहता या कोई विशेष वनस्पति उत्पन्न होती हो (हैबिटेट)।

निवासस्थान *पुं.* {सं.} रहने की जगह।

निवासित *वि.* {सं. निवास} निवास करनेवाला, बसा या बसाया हुआ।

निवासी *पुं.* {सं. निवासिन्} {*स्त्री.* निवासिनी} रहने या बसनेवाला, वासी।

निविड़ *वि.* {सं.} घना; घोर; गंभीर, गहरा।

निविदा *स्त्री.* {सं.} किसी कार्य या परियोजना के संचालन के लिए निश्चित व्यय का प्रस्ताव (टेंडर)।

निविष्ट *वि.* {सं.} जिसका चित्त एकाग्र हो; ठहराया या रखा हुआ, स्थापित; बाँधा हुआ; कहीं लिखा दर्ज किया या चढ़ाया हुआ (एंटर्ड)।

निविष्टि *स्त्री.* {सं.} खाते आदि में लिखने, दर्ज करने या चढ़ाने की क्रिया या भाव; इस प्रकार चढ़ी हुई बात या रकम; प्रविष्टि (एंट्री)।

निवीर्य *वि.* {सं.} वीर्यहीन, जिसमें पुरुषत्व न हो।

निवृत्त *वि.* {सं.} जो अपने कार्य या कर्त्तव्य से मुक्त हो चुका हो।

निवृत्ति *स्त्री.* {सं.} मुक्ति, प्रवृत्ति का उलटा; मोक्ष; छुटकारा; अपने कार्य या पद से अवकाश पाकर अथवा अवधि पूरी हो जाने पर सदा के लिए हट जाना (रिटायरमेंट)।

निवेद *वि.* नैवेद्य।

निवेदक *पुं.* {सं.} निवेदन करनेवाला, प्रार्थी; प्रार्थनापत्र उपस्थित करनेवाला (पेटिशनर)।

निवेदन *पुं.* {*वि.* निवेदित} नम्रतापूर्वक किसी से कुछ कहना, विनती, प्रार्थना; समर्पण।

निवेदन-पत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जिसमें कोई निवेदन या प्रार्थना लिखी हो (लेटर ऑफ रिक्वेस्ट)।

निवेदना *स.* {हिं. निवेदन} विनती या प्रार्थना करना; नैवेद्य चढ़ाना; अर्पित या भेंट करना।

निवेदित *वि.* {सं.} जोर सादर कह दिया गया हो।

निवेरना *स.* निपटाना, निबटाना, तय करना।

निवेरा *वि.* {हिं. नि + सं. वरण} चुना हुआ या छाँटा हुआ; अनोखा।

निवेश *पुं.* {सं.} {*वि.* निवेशित, निविष्ट} व्यापार, आय के उद्देश्य से पूँजी लगाने का कार्य; नगर, मुहल्ला; घर; खेमा।

निश्शंक *वि.* नि:शंक, निर्भय, निडर।

निशंग *पुं.* निषंग।

निश *स्त्री.* निशा, रात्रि।

निशांत *पुं.* {सं.} रात का अंत, अर्थात् प्रभात, तड़का; घर, पिछली रात।

निशांधकार *पुं.* {सं.} रात का अँधेरा।

निशा *स्त्री.* {सं.} रात, रजनी, रात्रि, हलदी।

निशाकर *पुं.* {सं.} चंद्रमा।

निशाखातिर *स्त्री.* {फा. निशाँ + अ. खातिर} निश्चिंतता, तसल्ली, इतमीनान।

निशाचर *पुं.* {सं.} राक्षस; गीदड़; उल्लू; साँप; भूत-प्रेत; चोर; *वि.* जो रात को बाहर निकले या चले।

निशाचरी[1] *स्त्री.* {सं.} राक्षसी; कुलटा, व्यभिचारिणी; अभिरासिका नायिका।

निशाचरी[2] *वि.* {सं. निशाचर} निशाचर-संबंधी निशाचरों का-सा, जैसे निशाचरी माया।

निशाचर्म *पुं.* {सं.} अंधकार, अँधेरा।

निशाजल *पुं.* {सं.} हिम, पाता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निशाट पुं. {सं.} उल्लू पक्षी; *वि.* निशाचर।

निशाटन पुं. {सं.} रात्रि-भ्रमण, उल्लू।

निशान पुं. {फा.} ऐसा चिह्न या लक्षण जिससे कोई चीज पहचानी जाए या जिससे किसी बात या घटना या परिचय मिले; बना हुआ या बनाया हुआ चिह्न; शरीर या किसी पदार्थ पर प्राकृतिक चिह्न या दाग; वह चिह्न जो अशिक्षित लोग अपने हस्ताक्षर के बदले में बनाते हैं; पता, ठिकाना।

मुहा. निशान देना = सम्मन आदि तामील करने के लिए यह बताना कि यही असामी है।

एक प्रकार का बहुत बड़ा झंडा, जो प्राय: राजाओं की सवारी के आगे चलता है; राजाओं की सवारी के आगे बजनेवाला डंका, नगाड़ा; लक्षण, निशाना, निशानी।

निशाना पुं. {फा. निशान:} वह जिस पर अस्त्र, शस्त्र आदि का लक्ष्य साधा या वार किया जाए, लक्ष्य बनाकर उस पर वार करने की क्रिया।

मुहा. निशाना मारना या लगाना = ताककर अस्त्र आदि का वार करना।

वह जिसे लक्ष्य करके कोई बात कही जाए।

निशानाथ पुं. {सं.} चंद्रमा, कपूर।

निशापुत्र पुं. {सं.} नक्षत्र आदि. आकाशीय पिण्ड।

निशापुष्प पुं. {सं.} कुकुद, कुई।

निशाबल पुं. {सं.} ज्योतिष-अनुसार वे राशियाँ, जो रात में अधिक बलवती होती हैं।

निशाभाग *स्त्री.* {सं.} दुग्धपुष्पी पौधा।

निशामय पुं. {सं.} शिव, महादेव।

निशामृग पुं. {सं.}शृगाल, सियार।

निशानी *स्त्री.* {फा.} स्मृतिचिह्न, यादगार; वह चिह्न जिससे कोई वस्तु पहचानी जाए, निशान।

निशापति पुं. {सं.} चंद्रमा।

निशामुख पुं. {फा.} संध्या का समय।

निशास्ता पुं. {फा.} गेहूँ या आटे का जमाया हुआ सत या गूदा; माड़ी, कलफ।

निशि *स्त्री.* {सं.} रात।

निशेश पुं. {सं.} निशा के पति या स्वामी, चंद्रमा; *वि.* नि:शेष।

निशैत पुं. {सं.} बक, बगुला।

निश्कुला *स्त्री.* {सं. *वि.*} अपने कुल से निकाली हुई।

निश्चक्षु *वि.* {सं.} नेत्रहीन, अंधा।

निश्चय पुं. {सं.} ऐसी धारणा या ज्ञान जिसमें कोई भ्रम या दुविधा न हो; विश्वास, यकीन; निर्णय; दृढ़ संकल्प या विचार, पक्का इरादा; सभा-समिति आदि में ठहराई या स्थिर की हुई बात; एक अर्थालंकार जिसमें एक बात का निषेध करके प्रकृत या यथार्थ बात के स्थापन का उल्लेख होता है।

निश्चयन पुं. {सं.} निश्चय करने की क्रिया या भाव।

निश्चयवादी (दिन्) *वि.* {सं.} निश्चय पद, दृढ़ रहनेवाला।

निश्चयात्मक *वि.* {सं.} पूरी तरह से निश्चित, ठीक, पक्का।

निश्चल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* निश्चल, *भाव.* निश्चलता} जो अपने स्थान से न हटे, स्थिर; अचल, अटल।

निश्चला *स्त्री.* {सं.} शालपर्णी, पृथ्वी।

निश्चायक *वि.* {सं.} निश्चय या प्रतीति करानेवाला; जिसके द्वारा या कारण किसी बात का निश्चित ज्ञान हो (कन्क्लूजिव)।

निश्चिंतई *स्त्री.* = निश्चिंतता।

निश्चिंतता *स्त्री.* {सं.} निश्चिंत होने की क्रिया या भाव, बेफिक्री।

निश्चित *वि.* {सं.} जिसके संबंध में निश्चय हो चुका हो, निर्णीत; जिसमें कोई परिवर्तन न हो सके, दृढ़, पक्का; जो बिल्कुल ठीक हो, और जिसके मिथ्या या अन्यत्र होने की कोई संभावना न हो, ध्रुव (डेफिनेट); जो नियम, निश्चय, आज्ञा, विधि आदि के द्वारा नियत या पक्का कर दिया गा हो (फिक्स्ड)।

निश्चितता *स्त्री.* {सं.} निश्चित होने की अवस्था या भाव।

निश्चेतक पुं. {सं.} चेतना से रहित करनेवाला।

निश्चेतन *वि.* {सं.} बेहोश; जड़।

निश्चेष्ट *वि.* {सं.} जिसमें चेष्टा या गति न हो; बेहोश, अचेत; निश्चल, स्थिर।

निश्चेष्टता *स्त्री.* {सं.} बेहोशी; अकर्मण्यता।

निश्चौर *वि.* {सं.} वह स्थान जहाँ से डाकुओं ने अपना अड्डा हटा लिया हो।

निश्छंद *वि.* {सं.} छलरहित, निष्कपट।

निश्छिद्र *वि.* {सं.} बिना छेद का, छिद्र शून्य।

निश्चै पुं. = निश्चय।

निश्छल *वि.* {सं.} {भाव. निश्छलता} जो छल-कपट न जानता हो, सरल प्रकृति का, सीधा।

निश्वास पुं. {सं.} नाक या मुँह के बाहर निकलनेवाला श्वास या साँस।

निश्शांक *वि.* नि:शंक, निर्भय, निडर।

निश्शेष *वि.* नि:शेष, जिसमें कुछ बाकी न बचा हो।

निषंग पुं. {सं.} {*वि.* निषंगी} तरकश; खड्ग; तूणीर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निषकपुत्र पुं. {सं.} निशाचर, दानव।

निषक्त पुं. {सं.} जनक, पिता।

निषाद पुं. {सं.} एक प्राचीन अनार्य जाति, जो भारत में आर्यों के आने के पहले रहती थी; एक प्राचीन देश, जो कदाचित् शृंगवेरपुर के पास था; उक्त जाति और देश की प्राचीन भाषा, जो आधुनिक भाषाविज्ञान की दृष्टि से मुंडा भाषाओं के वर्ग में गिनी जाती है; सगीत में सातवाँ और सबसे ऊँचा स्वर।

निषादी पुं. {सं. निषादिन्} हाथीवान।

निषिक्त *वि.* {सं.} जिसके अंदर या गर्भ में कोई चीज रखी या भरी गई हो जिसमें निषेचन हुआ हो (इम्प्रेग्नेटेड)।

निषिद्ध *वि.* {सं.} जिसका निषेध किया गया हो, मना किया हुआ; बुरा।

निषेक पुं. {सं.} गर्भाधान, चूना, टपकना।

निषेचन पुं. {सं.} कृत्रिम ढंग से गर्भ स्थापित करना।

निषेचित *वि.* {सं.} निषेचन द्वारा गर्भ में स्थापित किया हुआ।

निषेध पुं. {सं.} यह कहना कि अमुक काम या बात मत करो; वर्जन, मनाही; बाधा, रुकावट; न होने की अवस्था या भाव, अभाव (निगेशन)।

निषेधक *वि.* {सं.} निषेध या मना करनेवाला; (आज्ञा या कथन) जिसके द्वारा निषेध या मनाही की जाए (प्रॉहिबिटरी); प्रतिषेधक।

निषेधन पुं. {सं.} निषेध, निवारण।

निषेधात्मक *वि.* {सं.} जिसमें निषेध या मनाही की गई हो; जिसमें 'नहीं' या 'न' होने का भाव हो, नकारात्मक (निगेटिव)।

निषेधाधिकार पुं. {सं.} किसी प्रस्तावित या उद्दिष्ट कार्य को पहले से ही अमान्य या अस्वीकृत करके रोकने का अधिकार; राज्य आदि के प्रमुख अधिकारी या अधिकारियों के हाथ में रहनेवाला वह अधिकार, जिसके आधार पर किसी प्रकार का राजनीतिक कृत्य या विधायिका द्वारा स्वीकृत कोई विधान कार्यरूप में परिणित होने से रोका जा सकता हो; किसी संस्था के सदस्य या सदस्यों के हाथ में रहनेवाला उक्त प्रकार का अधिकार, जिससे कोई स्वीकृत प्रस्ताव व्यवहार में आने से रोका जा सकता है (वीटो)।

निषेवी *वि.* {सं.} सुखभोगी, अनुरक्त।

निषेव्य *वि.* {सं.} सेवनीय, सेवा करने योग्य।

निष्कंटक *वि.* {सं.} जिसमें कोई कंटक, बाधा या बखेड़ा न हो, बिना झंझट का।

निष्कंप *वि.* {सं.} जो काँपता या हिलता न हो, स्थिर।

निष्क पुं. {सं.} वैदिक काल का सोने का एक सिक्का; वैद्यक में चार मासे की तौल, टंक।

निष्कपट *वि.* {सं.} {*भाव.* निष्कपटता} छलरहित, सीधा।

निष्करुण *वि.* {सं.} करुणारहित।

निष्कर्मा *वि.* {सं.} अकर्मा, आलसी।

निष्कर्ष पुं. {सं.} सारांश, खुलासा; विचार या विवेचन के अंत में निकलनेवाला सिद्धांत, निचोड़, सार।

निष्कलंक *वि.* {सं.} जिसमें कलंक न हो, निर्दोष, बेऐब।

निष्कल्मस *वि.* {सं.} कलंकहीन, पापरहित।

निष्काम *वि.* {सं.} {*भाव.* निष्कामना} (मनुष्य) जिसके मन में कोई कामना या इच्छा न हो; बिना किसी कामना या इच्छा के किया जानेवाला (काम)।

निष्कारण *वि.* {सं.} बिना कारण का; *क्रि. वि.* बिना कारण के; व्यर्थ, वृथा, बेफायदा।

निष्कास पुं. {सं.} घर का ओसारा।

निष्कासन पुं. {सं.} {*वि.* निष्कासित} निकालना, बाहर करना; किसी को दंड आदि के रूप में किसी स्थान, क्षेत्र आदि से हटाकर बाहर या दूर करना।

निष्कीटक *वि.* {सं.} कीड़ों से रहित।

निषकीटन पुं. {सं.} कीड़ों या कीटाणुओं से रहित करना।

निष्कुह पुं. {सं.} वृक्ष का कोटर।

निष्कृत *वि.* {सं.} {*भाव.* निष्कृति} निकला हुआ; छूटा हुआ, मुक्त।

निष्क्रमण पुं. {सं.} {निष्क्रांत} बाहर निकलना।

निष्क्रय पुं. {सं.} {*वि.* निष्क्रीत} वेतन, तनखाह; विनिमय, बदला।

निष्क्रांत *वि.* {सं.} {भाव. निष्क्रांति} निकला या निकाला हुआ; मुक्त।

निष्क्रिय *वि.* {सं.} {*भाव.* निष्क्रियता} जिसमें कोई क्रिया, चेष्टा या व्यापार न हो, क्रिया या चेष्टा से रहित; जिसकी क्रिया या गति बीच में रुक गई हो (इन-ऐक्टिव)।

निष्क्रियता *स्त्री.* {सं.} निष्क्रिय होने की अवस्था या भाव।

निष्टि *स्त्री.* {सं.} महर्षि कश्यप की एक पत्नी।

निष्ठ *वि.* {सं.} ठहरा हुआ, स्थित; काम में लगा हुआ, तत्पर; किसी के प्रति निष्ठा, श्रद्धा या भक्ति रखनेवाला (लॉयल)।

निष्ठा *स्त्री.* {सं.} स्थिति, ठहराव; विश्वास, निश्चय; बड़े आदि के प्रति पूज्य बुद्धि और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भक्ति का भाव (फेथ); राज्य या शासन के प्रति प्रजा का पूज्य और श्रद्धापूर्व भाव।

निष्ठीव पुं. {सं.} थूक, खखार।

निष्ठुर *वि.* {सं.} {*भाव.* निष्ठुरता} निर्दय, बेरहम।

निष्ण, निष्णात *वि.* {सं.} किसी विषय का पूरा ज्ञाता।

निष्पंद *वि.* {सं.} स्पंदनहीन।

निष्पक्ष *वि.* {सं.} पक्षपातरहित, तटस्थ।

निष्पक्षता *स्त्री.* {सं.} निष्पक्ष होने की अवस्था या भाव।

निष्पत्ति *स्त्री.* {सं.} समाप्ति; निर्वाह; निश्चय।

निष्पन्न *वि.* {सं.} पूरा किया हुआ, समाप्त।

निष्पादन पुं. {सं.} पूरा करना, समाप्त करना।

निष्पाप *वि.* {सं.} पापरहित।

निष्प्रपंच *वि.* {सं.} प्रपंचरहित।

निष्प्रभ *वि.* {सं.} प्रभाहीन; बिना चमक का।

निष्प्रयोजन *क्रि. वि* {सं.} बिना किसी प्रयोजन के।

निष्प्राण *वि.* {सं.} जिसमें प्राण न हो; मरा हुआ।

निष्प्रीति *वि.* {सं.} प्रीति के रहित।

निष्फल *वि.* {सं.} जिसका कोई फल या परिणाम न हो, व्यर्थ, निरर्थक (एबॉर्टिव)।

निसंक, निसंकी *वि.* निःशंक।

निःसंज्ञ *वि.* {सं.} संज्ञाहीन, अंचल।

निसँठ *वि.* निर्धन, दरिद्र।

निसंस[1] पुं. नृशंस, निर्दय, क्रूर।

निसंस[2] *वि.* {हिं. नि + साँस} जिसमें साँस न हो, मृत; मृतप्राय, मुरदा-सा।

निसंना *अ.* = हाँफना।

निस *स्त्री.* = निशा, रात।

निसक *वि.* अशक्त; दुर्बल।

निसकर पुं. = निशाकर (चंद्रमा)।

निसचय पुं. = निश्चय।

निसत *वि.* निःसत्त्व, असत्य।

निसतरना *अ.* {सं. निस्तार} निस्तार या छुटकारा पाना, मुक्त होना; मुक्ति पाना।

निसदिन *क्रि. वि.* {सं. निशा + दिन} दिन और रात; सदा, हमेशा।

निसद्योस *क्रि. वि.* {सं. निशि + दिवस} रात-दिन; सदा, नित्य।

निसनेहा पुं. निर्मोही, मोहरहित।

निसबत *स्त्री.* {अ. निस्बत} संबंध, लगाव; विवाह-संबंध स्थिर करने की प्रथा, मँगनी; तुलना, मुकाबला।

निसमानी *वि.* {हिं. निस = नहीं + मन} जिसकी सुध-बुध ठिकाने न हो, विकल।

निसियाना *वि.* {हिं. + नि + सयाना} जिसकी बुद्धि ठिकाने हो।

निसरना अ. = निकलना।

निसरावन पुं. {सं. निस्सरण} ब्राह्मण को दिया जानेवाला कच्चा अन्न, सीधा।

निसर्ग पुं. {सं.} प्रकृति। (नेचर); रूप, आकृति; दान; सृष्टि।

निसवादिल *वि.* {सं. निःस्वाद} स्वादहीन।

निसवनी *स्त्री.* वह स्थान जहाँ शराब बनती हो।

निसवासर *क्रि. वि.* निसदिन।

निसस *वि.* निसाँस, मरा हुआ।

निसाँक *वि.* निःशंक।

निसाँस पुं. {सं. निः + श्वास} ठंडा साँस, दीर्घ श्वास; *वि.* जिसमें साँस न हो, निर्जीव, बेदम; मृतप्राय।

निसा *स्त्री.* निशा, संतोष, तृप्ति।

निसाथा *वि.* {हिं. नि + सात} जिसके साथ कोई न हो, अकेला।

निसान पुं. निशान, नगाड़ा, धौंसा।

निसानन पुं. {सं. निशानन} संध्या।

निसाशना पुं. {हिं.} लक्ष्य।

निसापति पुं. {हिं.} चंद्रमा।

निसाफ पुं. {सं. इंसाफ} न्याय, निर्णय।

निसार पुं. {अ.} निछावर, सदका; *वि.* निस्सार।

निसाख्य पुं. {सं.} राग का एक भेद।

निसारना स. = निकालना।

निसारा *स्त्री.* {सं.} कदली वृक्ष।

निसावरा पुं. {हिं.} एक कबूतर।

निसास (निसासी) *स्त्री.* निसाँस।

निसासी *वि.* {हिं.} जिसकी साँस न चलती हो।

निसि *स्त्री.* निशि; वर्ण-कृत; आधी रात।

निसिअर पुं. {सं. निशाकर} चंद्रमा।

निसित *वि.*, पुं. निशित।

निसिदिन *क्रि. वि.* निसदिन।

निसियर पुं. निशाकर (चंद्रमा)।

निसिवासर *क्रि. वि.* निसदिन।

निसीठा *वि.* निस्सार।

निसीठी *वि.* {हिं.} निःसार, नीरस, फीका।

निसीव पुं. {हिं.} आधी रात।

निसुंध पुं. {सं.} एक असुर।

निसील *वि.* शील से रहित, असभ्य।

निसु *स्त्री.* निशा। (निसु के यौ. के लिए निस के यौ.) रात्रि।

निसुका *वि.* {सं. निस्वक्} गरीब, निर्धन; बेचारा।

निसता *स्त्री.* {सं.} निसोथ, सोनापाठा।

निसृष्ट *वि.* {सं.} छोड़ा या निकाला हुआ; भेजा हुआ; दिया हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निसेनी *स्त्री.* सीढ़ी।
निसेष *वि.* निःशेष।
निसेस *पुं.* {सं. निशेश} चंद्रमा।
निसोग *वि.* {सं. निःशोक} जिसे शोक या दुख न हो, सोच से रहित।
निसोच *वि.* {सं. निःशोच} चिंतारहित।
निसोत *वि.* {?} {*स्त्री.* निसोती} असली, सच्चा। *उदा.* . . . कहौं सो साँच निसोतो–तुलसी।
निसोध (धु) *स्त्री.* {हिं. सुध} सुध, होश; हाल, खबर; संदेशा।
निस्तंद्र *वि.* {सं.} जिसे तंद्रा न आई या न आती हो; जागा हुआ, जाग्रत।
निस्तत्त्व *वि.* {सं.} जिसमें कोई तत्व या सा न हो, निस्सार।
निस्तब्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* निस्तब्धता} जो हिलता-डुलता न हो; जड़ के समान निश्चेष्ट।
निस्तरंग *वि.* {सं.} जिसमें तरंग या लहर न हो; शांत; जिसमें कुछ भी गति या शब्द न हो।
निस्तर *पुं.* = निस्तार।
निस्तरण *पुं.* निस्तार।
निस्तरना *अ.* {सं. निस्तार} निस्तार या छुटकारा पाना, मुक्त होना; *स.* = निस्तारना।
निस्तल *वि.* {सं.} {*भाव.* निस्तलता} जिसका तल न हो; जिसके तल की थाह न हो, बहुत गहरा; गोल, वृत्ताकार; नीचा, निम्न।
निस्तरी *वि.* {सं.} बिना नोक का।
निस्तार *पुं.* {सं.} पार होने का भाव; छुटकारा, उद्धार; काम पूरा करके उससे छुट्टी पाना।
निस्तारण *पुं.* {सं.} {*वि.* निस्तारित} निस्तार करने या छुटकारा दिलाने की क्रिया या भाव; सामने आए हुए कार्य या व्यवहार (मुकदमे) को नियमित रूप से पूरा करना अथवा उसका निराकरण करना (डिस्पोज़ल)।
निस्तारना *स.* = निस्तार करना।
निस्तेज *वि.* {सं. निस्तेजस्} जिसमें तेज न हो, तेज रहित।
निस्पंद *वि.* {सं.} {*भाव.* निस्पंदता} जो हिलता-डुलता न हो; स्थिर, निश्चल; निश्चेष्ट, स्तब्ध।
निस्पृह *वि.* {सं.} {*भाव.* निस्पृहता} जिसे किसी प्रकार का लोभ या कामना न हो, निर्लोभ।
निस्पृहा *स्त्री.* {सं.} कलिहारी पौधा।
निस्फ *वि.* {अ. निस्फ} आधा, अर्द्ध।
निस्बत *स्त्री.* = निसबत।
निस्यों *वि.* {सं. निश्चिंत} निश्चिंत, बेफिक्र, जैसे निस्यों करि = निश्चिंत होकर।
निस्व *वि.* {सं.} दरिद्र, हीन, गरीब।
निस्वन *पुं.* {सं.} ध्वनि, शब्द।
निस्संकोच *वि.* {सं.} जिसे या जिसमें संकोच या लज्जा न हो, बेधड़क; *क्रि. वि.* बिना किसी संकोच के।
निस्संग *वि.* {सं.} जो किसी से कोई संबंध न रखता हो; विषय-वासनाओं आदि से रहित; निर्जन, एकांत; अकेला।
निस्संतान *वि.* {सं.} जिसे कोई संतान या बाल-बच्चा न हो, संततिरहित।
निस्संदेह *क्रि. वि.* {सं.} बिना संदेह के; अवश्य, जरूर; *वि.* जिसमें संदेह न हो।
निस्संबल *वि.* {सं.} जिसका कोई संबल, सहारा या ठिकाना न हो।
निस्सरण *पुं.* {सं.} निकलने का मार्ग; निकलना (डिस्चार्ज)।
निस्सहाय *वि.* {सं.} जिसका कोई सहायक न हो, असहाय, निरवलम्ब (हेल्पलेस)।
निस्सार *वि.* {अ.} साररहित; जिसमें काम की बात न हो।
निस्सारण *पुं.* {सं.} निकालने की क्रिया या भाव।
निस्सीम *वि.* {सं.} जिसकी कोई सीमा न हो, असीम (एब्सोल्यूट); बहुत अधिक, बेहद।
निस्सवादु *वि.* {हिं.} जिसमें कोई स्वाद न हो।
निस्स्नेह *वि.* {सं.} जिसमें या जिसे स्नेह या प्रेम न हो।
निस्स्वार्थ *वि.* {सं.} जिसमें या जिसे अपने स्वार्थ या हित का कोई विचार न हो।
निहंग (म) *वि.* {सं. निःसंग} एकाकी, अकेला; स्त्री से संबंध न रखने और अकेला रहनेवाला; नंगा; निर्लज; *पुं.* सिक्खों का एक संप्रदाय।
निहंग-लाडला *वि.* {हिं. निहंग + लाडला} जो लाड या दुलार के कारण उद्दंड और स्वेच्छाचारी हो गया हो।
निहरकरमी *वि.* {सं. निष्कर्मी} जो कर्मों से रहित या अलिप्त हो।
निहचल *वि.* निश्चल।
निहचील *वि.* निश्चिंत; निश्चित।
निहत *वि.* {सं.} नष्ट; जो मार डाला गया हो।
निहत्था *वि.* {हिं. नि + हाथ} जिसका हाथ न हो; जिसके हाथ में कोई अस्त्र या शस्त्र न हो।
निहनना *स.* हनना।
निहपाप *वि.* निष्पाप।
निहफल *वि.* निष्फल।
निहल *पुं.* {हिं.} कछार प्रदेश।
निहाई *स्त्री.* {सं. निघाति, मि. फा. निहाली} लोहे का वह आधार जिस पर सुनार, लुहार आदि कोई चीज रखकर हथौड़े से पीटते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निहाका *स्त्री.* {हिं.} गोह, घड़ियाल।
निहानी *स्त्री.* {हिं.} नोकीली रुखानी।
निहायत *वि.* {अ.} अत्यंत, बहुत।
निहार *पुं.* {सं.} कुहरा, पाला; ओस; हिम, बर्फ।
निहारना *स.* देखना, ताकना।
निहारनि *स्त्री.* {हिं. निहारना} निहारने की क्रिया या भाव।
निहाल *वि.* {फा.} भली-भाँति संतुष्ट और प्रसन्न, पूर्णकाम।
निहालना *स.* = देखना, ताकना।
निहाली *स्त्री.* {फा.} गद्दा, तोशक; रजाई; निहाई।
निहित *वि.* {सं.} कहीं या किसी के अंदर रखा, पड़ा या छिपा हुआ।
निहीन *वि.* {सं.} पामर, नीच।
निहितार्थ *पुं.* {सं.} वाक्य का वह गूढ़ अर्थ या आशय, जो साधारणत: देखने पर न खुले, पर जो वस्तुत: महत्व रखता हो (इम्पोर्ट)।
निहुरना *अ.* {हिं. नि + होड़न} झुकना।
निहुराई *स्त्री.* {हिं. निहुरना} निहुरने या झुकने की क्रिया या भाव; *स्त्री.* निष्ठुरता।
निहुराना *स.* हिं. निहुरना का *स.*।
निहोरना *स.* {हिं. निहोरा} किसी बात के लिए प्रार्थना करना; याचना करना, मँगाना।
उदा. गाँव बसत बामदेव, मैं कबहुँ न निहोरे–**तुलसी**।
रूठे हुए को प्रसन्न करना, मनाना; निहोरा य उपकार मानना, कृतज्ञ होना; खुशामद या चापलूसी करना।
निहोरा *पुं.* {हिं. मनुहार} एहसान, कृतज्ञता; विनती, प्रार्थना; भरोसा, सहारा, आसरा; *क्रि. वि.* सहारा, आसरा।
नींद *स्त्री.* {सं. निद्रा} प्राणियों की वह अवस्था, जिसमें बीच-बीच में अथवा नित्य रात को उनकी चेतन क्रियाएँ रुक जाती हैं और शरीर तथा मस्तिष्क विश्राम करता है, सोने की अवस्था, निद्रा।
मुहा. नींद उचटना, खुलना या टूटना = नींद का अंत होना, जाग पड़ना; *नींद हराम होना* = चिंता आदि के कारण नींद तक न आना।
नींदड़ी (री) *स्त्री.* नींद।
नींदना *अ.* {हिं. नींज} नींद लेना, सोना; सं. निराना।
नीकार *पुं.* {सं.} तिरस्कार, भर्त्सना।
नीकाश *वि.* {सं.} तुल्य, समान।
नीबू *पुं.* {सं. निंबूक, अ. लेमूँ} एक छोटा पेड़ जिसके गोल, छोटे फल खट्टे होते हैं (कई प्रकार के नीबू मीठे और बड़े भी होते हैं)।
नीबू-निचोड़ *वि.* बहुत बड़ा कंजूस।
नींव *स्त्री.* {सं. नेमि, प्रा. नेइ} मकान आदि बनाने के समय उसका मूल भाग जो दीवारों की दृढ़ता के लिए जमीन खोदकर और उसमें से दीवारों की जोड़ाई आरंभ करके बनाया जाता है; किसी वस्तु या कार्य का आरंभिक भाग।
मुहा. नींव जमाना या डालना = नींव देना; *नींव देना* = गड्ढा खोदकर दीवार का मूल भाग बनाना; कारण या आधार खड़ा करना, जड़ खड़ी करना, उपक्रम करना; *नींव पड़ना* = घर की दीवार का बनना आरंभ होना; कार्य का सूत्रपात होना।
जड़, मूल; आधार।
नीक *वि.* {सं. निक्त = स्वच्छ} {*स्त्री.* नीकी} उत्तम, अच्छा, बढ़िया; *पुं.* उत्तमता, अच्छापन।
नीके *क्रि. वि.* {हिं. नीक} अच्छी तरह; भली-भाँति।
नीच *वि.* {सं.} {*भाव.* नीचता} जाति, गुण आदि में बहुत घटकर या कम; अधम, बुरा, निकृष्ट।
नीच-ऊँच *पुं.* {हिं. नीचा + ऊँचा} अच्छाई और बुराई; अच्छा और बुरा; अच्छा और बुरा परिणाम, हानि-लाभ; सुख-दुख।
नीचक *वि.* {सं.} वामन, नारा।
नीचकमाई *स्त्री.* {हिं.} खोटा काम।
नीचका *स्त्री.* {सं.} उत्तम माँ।
नीचगा *स्त्री.* {सं.} निम्नगा, नदी, नीच के साथ जानेवाली स्त्री।
नीचट *वि.* {हिं.} दृढ़, पक्का।
नीचत्व *पुं.* {सं.} नीचता।
नीचा *वि.* {सं. नीच} {*स्त्री.* नीची} जो कुछ उतार या गहराई में हो, गहरा, निम्न, 'ऊँचा' का उलटा; जो अधिक ऊपर तक न गया हो; निम्न स्तर की ओर दूर तक आया हुआ।
मुहा. नीचा दिखाना = तुच्छ ठहराना, अपमानित करना; परास्त करना, हराना; लज्जित करना; *नीचा देखना* = तुच्छ ठहरना; हारना, परास्त होना; *नीची दृष्टि करना* = लज्जा या संकोच से सिर झुकाना, सामने या ऊपर न ताकना।
झुका हुआ, नत; जो तीव्र या जोर का न हो, धीमा, मद्धिम; जाति, गुण आदि में घटकर; ओछा, क्षुद्र।
नीचाशय *वि.* {सं.} क्षुद्र, ओछा।
नीचू *क्रि. वि.* नीचे; *स्त्री.* नीची।
नीचे *क्रि. वि.* {हिं. नीचा} निम्नतल की ओर, अधोभाग में, 'ऊपर' का उलटा।
मुहा. नीचे गिरना = अवनत या पतित होना; *ऊपर से नीचे तक* = सिर से पैर तक, एक सिरे से दूसरे सिरे तक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलना में घटकर या कम; अधीनता या मातहती में।

नीज *पुं.* {हिं.} रज्जु, रस्सी।

नीजन *वि.* निर्जन।

नीजू *स्त्री.* {हिं.} पानी भरनेवाली रस्सी।

नीझर *पुं.* निर्झर।

नीठ[1] *स्त्री.* {सं. अनिष्ट} इच्छा या रुचि न होना।

नीठ[2] *स्त्री.* {सं. निष्ठा = कठिनाई} कठिनलाई; *क्रि. वि.* कठिनाई से।

नीठि *क्रि. वि.* नीठ।

उदा. तहँ साख बैठों नीठि, तब पख्यों बानर दीठि–**केशव**।

नीठो *वि.* {सं. अनष्टि, प्रा. अनिट्ट} अनिष्टकारी, बुरा; ठहरे या रहरने का स्थान।

नीड़ *पुं.* {सं.} पक्षियों का बनाया घोंसला।

नीड़क *पुं.* {सं.} घोंसले में रहनेवाला पक्षी।

नीड़ज *पुं.* {सं.} चिड़िया, पक्षी।

नीत *वि.* {सं.} स्थापित, गृहीत, प्राप्त, पाया हुआ।

नीति *स्त्री.* {सं.} ले जाने या ले चलने की क्रिया भाव; व्यवहार या बरताव का ढंग, आचार-व्यवहार; व्यवहार की वह रीति जिससे अपना हित हो और दूसरों को कष्ट या हानि न पहुँचे; जनता या समाज के हित के लिए निश्चित आचार-व्यवहार, अच्छा-व्यवहार और चलन, नय (ईथिक्स); राज्य और राष्ट्र की रक्षा तथा हित के लिए निश्चित रीति या व्यवहार, राजविद्या; कोई कार्य ठीक तरह से पूरा करने के लिए की जानेवाली युक्ति, उपाय, ढंग या प्रकार (पॉलिसी)।

नीतिज्ञ *वि.* {सं.} नीति जाननेवाला।

नीतिमत्ता *स्त्री.* {सं.} बुद्धिमानी, विवेक।

नीतिमान, नीतिमान् *वि.* {सं. नीतिमत्} {*स्त्री.* नीतिमती} नीतिपरायण; सदाचारी।

नीतिवादी *पुं.* {सं.} वह जो सब काम नीतिशास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार करना चाहता या करता हो।

नीतिशास्त्र *पुं.* {सं.} वह शास्त्र जिसमें देश, काल और पात्र का ध्यान रखकर सबके आचरण करने के नियम रहते हैं; वह शास्त्र जिसमें समाज के कल्याण के लिए आचार-व्यवहार बतलाए गए हों (ईथिक्स)।

नीथ *पुं.* {सं.} नयन, स्रोत।

नीदना *क्रि.* {हिं. अ.} शयन करना, सोना।

नीध *पुं.* {सं.} छाजन की ओरी, चंद्रमा, खेती नक्षत्र।

नीधना *वि.* निर्धन, दरिद्र।

नीप *पुं.* {?} कदम्ब का पेड़, कदम्ब।

नीपराज *पुं.* {सं.} राजकदम्ब का वृक्ष।

नीपना *स.* लीपना।

नीबी *स्त्री.* नीवि।

नीबू *पुं.* नींबू।

नीम[1] *पुं.* {सं. निंबु} एक प्रसिद्ध पेड़ जिसके सभी अंग कड़ुए होते हैं।

नीम[2] *वि.* {फा.} आधा, अर्द्ध।

नीमच *पुं.* {हिं.} एक मछली।

नीमटर *वि.* {हिं.} विद्या का जानकार।

नीमन *वि.* {हिं.} अच्छा-भला, नीरोगी।

नीमर *वि.* {हिं.} दुर्बल, बलहीन।

नीमावत *पुं.* {हिं.} वैष्णव-संप्रदाय।

नीमा *पुं.* {फा.} जामे के नीचे पहना जानेवाला एक पहनावा।

नीमास्तीन *स्त्री.* {फा. नीम + आस्तीन} आधी बाँह की कुरती या फतूही।

नीयत *स्त्री.* {अ.} मन में रहनेवाला भाव, लक्ष्य या उद्देश्य, आशय, मंशा।

मुहा. नीयत बदल जाना या नीयत में फरक आना = नियत बिगड़ना; *नीयत बाँधना* = संकल्प करना, इरादा करना; *नीयत बिगड़ना* = अच्छे संकल्प या विचार का बुरा हो जाना; *नीयत भरना* = मन भरना, तृप्ति होना; *नीयत लगी रहना* = लालसा बनी रहना।

नीर *पुं.* {सं.} {*भाव.* नीरता} पानी, जल।

मुहा. नीर ढलना = मरते समय आँखों से पानी बहना।

तरल पदार्थ या रस; छाले आदि से निकलनेवाला चेप।

नीरक्षीर *पुं.* {सं.} जल और दूध।

नीरक्षीर-विवेक *पुं.* {सं.} दूध और पानी को अलग-अलग करने का विवेक, अच्छाई और बुराई में अंतर करने की क्षमता।

नीरज *पुं.* {सं.} जल में उत्पन्न होनेवाला पदार्थ; कमल; मोती।

नीरत *वि.* {सं.} विरत।

नीरद[1] *पुं.* {सं.} बादल, मेघ; *वि.* जल देनेवाला।

नीरद[2] *वि.* {सं. निः + रद} बेदांत, अदंत।

नीरधर *पुं.* {सं.} बादल, मेघ।

नीरधि *पुं.* {सं.} समुद्र।

नीरपति *पुं.* {सं.} वरुण देवता।

नीरुह *पुं.* {सं.} पद्म, कमल।

नीरव *वि.* {सं.} {भाव. नीरवता} जिसमें किसी प्रकार का शब्द न हो, निःशब्द; जो कुछ न बोलता हो, चुप।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीरस *वि.* {सं.} जिसमें रस न हो, रसहीन; सूखा, शुष्क; जिसमें कोई आकर्षक या रुचिकर बात या तत्व न हो।

नीरसा *स्त्री.* {सं.} एक घास।

नीराजन *पुं.* {सं.} देवता की आरती।

नीराजनी *स्त्री.* {सं.} वह आधा या पात्र जिसने आरती के लिए दीपक जलाया जाता है, आरती।

नीरा[1] *स्त्री.* {सं. नीर} ताड़ के वृक्ष का वह रस जो प्रातःकाल उतारा जाता है और जो पीने में बहुत स्वादिष्ट और गुणकारी होता है।

नीरा[2] *क्रि. वि.* {हिं. नियर} समीप, पास।

नीराज *पुं.* {सं.} ऊदबिलाव, नेवला।

नीराजन *पुं.* नीरांजन।

नीराजना *अ.* {सं. नीरांजन} आरती करना; शस्त्र आदि साफ करके चमकाना।

नीरुच *वि.* {सं.} कम-चमकवाला।

नीरुज *वि.* नीरोग, स्वस्थ।

नीरे *क्रि. वि.* नियर।

नीरोग *वि.* {सं.} जिसे कोई रोग या बीमारी न हो, स्वस्थ, तंदुरुस्त।

नीरोह *वि.* {सं.} अंकुरिता।

नील *वि.* {सं.} नीले रंग का; *पुं.* नीला रंग, गहरा आसमानी रंग; एक प्रसिद्ध पौधा, जिससे नीला रंग निकलता है; इस पौधे से निकलनेवाला नीला रंग।

मुहा. नील का टीका लगाना = कलक लगाना; *आँखों में नील की सलाई फेरवाना* = आँखें फोड़वा डालना, अंधा करा देना; शरीर पर पड़ा हुआ चोट का नीले रंग का दाग; सौ अरब की संख्या; राम की सेना का एक वानर; नौ निधियों में से एक।

नीलकंठ *वि.* {सं.} जिसका कंठ नीला हो, नीले गलेवाला; *पुं.* शिव का एक नाम; मोर नामक पक्षी; एक प्रकार की चिड़िया जिसके डैने और गला नीला हो।

नीलकृष्ण *वि.* {सं.} नीलापन लिए काले रंग का।

नीलगाय *स्त्री.* {हिं. लील + गाय} एक प्रकार का बड़ा हिरन जैसा जानवर जो देखने में बहुत-कुछ गौ के समान जान पड़ता है।

नीलम *पुं.* {सं. नीलमणि से फा.} नीले रंग का एक प्रसिद्ध रत्न, नीलमणि; *स्त्री.* पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

नीलांग *पुं.* {सं.} सारस पक्षी; *वि.* नीले रंग का।

नीलांजन *पुं.* {सं.} सुरमा, तुथ्य, तूतिया।

नीलांजना *स्त्री.* {सं.} विद्युत, बिजली।

नीलांबर *पुं.* {सं.} नीले रंग का कपड़ा।

नीलांबुज *पुं.* {सं.} नीला कमल।

नीला *वि.* {सं. नील} आकाश या नील के रंग का।

मुहा. चेहरा नीला पड़ जाना = भय आदि के कारण चेहरे का रंग उतर जाना।

नीलाक्ष *पुं.* {सं.} नीली आँख का।

नीलाचल *पुं.* {सं.} जगन्नाथपुरी के पास की पहाड़ी।

नीलाथोथा *पुं.* {सं.} तूतिया।

नीलाब्ज *पुं.* {सं.} नील पद्म, नीला कमल।

नीलावती *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का चावल।

नीलासन *पुं.* {सं.} एक रतिबंध का नाम।

नीलाहट *स्त्री.* {हिं.} नीलापन।

नीलाज *वि.* = निर्लज्ज।

नीलाभ *वि.* {सं.} जिसमें नीले रंग की झलक हो, हलका नीला।

नीलाम *पुं.* {पुर्त. नीलाम} चीजें बेचने का वह ढंग जिसमें सबसे अधिक बोली बोलनेवाले (दाम लगानेवाले) आदमी के हाथ माल बेचा जाता है (ऑक्शन); उक्त प्रकार से होनेवाली चीजों की बिक्री (सेल)।

नीलिका *स्त्री.* {सं.} एक रोग जिसमें आँखें तिलमिलाती हैं; चोट आने के कारण और शरीर पर पड़ा हुआ नीला दाग या निशान, नील।

नीलिमा *स्त्री.* {सं. नीलिमन्} नीलापन; श्यामता, स्याही।

नीलोत्पल *पुं.* {सं.} नीला कमल।

नीलोफर *पुं.* {फा., मि. सं. नीलोत्पल} नीला कमल; कुई, कुमुद।

नीवँ *स्त्री.* {सं.} नींव।

नीवार *पुं.* {सं.} तिन्नी का चावल।

नीवि *स्त्री.* {सं.} कमर में लपेटी हुई धोती की वह गाँठ, जो धोती को नीचे खिसकने से रोकने के लिए बाँधी जाती है; वह डोरी, जिससे स्त्रियाँ लहँगे की गाँठ बाँधती हैं, फुबती।

नीवी *स्त्री.* नीवि; नींव।

नीसक *वि.* {सं. निःशक्त} कमजोर।

नीहार *पुं.* {सं.} कुहरा; पाला; हिम, बर्फ।

नीहारिका *स्त्री.* {सं.} आकाश में दूर तक कुहरे की तरह फैला हुआ वह प्रकाश-पुंज, जो अँधेरी रात में सफेद धारी की तरह दिखाई देता है।

नुकता *पुं.* {अ. नुकतः} बिंदु, बिंदी।

नुक्ताचीन *पुं.* {अ. + फा.} छिद्रान्वेषी।

नुक्ताचीनी *स्त्री.* {फा.} छिद्रान्वेषण, ऐब या दोष निकालना।

नुकती *स्त्री.* {फा. नखुदी} बेसन की महीन मीठी बुँदिया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नुकना *अ.* लुकना।
नुकरा *पुं.* {नुक्र:} चाँदी; सफेद रंग का घोड़ा।
नुकल *पुं.* {अ. नुक्ल} भोजन के उपरांत खाई जानेवाली मिठाई।
नुकसान *पुं.* {अ. नुकसान} हानि, क्षति।
मुहा. नुकसान उठाना = हानि सहना; *नुकसान पहुँचाना* = किसी की हानि करना; *नुकसान भरना* = किसी की क्षतिपूर्ति करना।
कमी; स्वास्थ्य में होनेवाली हानि।
नुकाई *स्त्री.* {हिं.} खुरपी से निराने का काम।
नुकाना *क्रि.* {हिं. सं.} छिपाना।
नुकीला *वि.* {हिं. नोक + ईला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* नुकीली} जिसमें नोक हो, नोकदार; बाँका-तिरछा।
नुक्कड़ *पुं.* {हिं. नोक} कोना, सिरा; मकान का गली या रास्ते पर आगे की ओर निकला हुआ सिरा या कोना।
नुक्का *पुं.* {हिं.} नोक, नुकीला भाग।
नुक्स *पुं.* {अ. नुकस} दोष. ऐब।
नुचना *अ.* हिं. नोचना का अ. रूप।
नुखरना *क्रि.* {हिं. अ.} भालु का चित लेटना।
नुचित *अ.* {सं. लुंचित} नोचा हुआ; जिसके सिर के बाल नुचे हुए हों।
नुजट *पुं.* {हिं.} संगीत की चौबीस शोभाओं में से एक।
नुत्फा *पुं.* {अ.} वीर्य, शुक्र; संतान, औलाद।
नुत *वि.* {सं.} स्तुति किया हुआ।
नुति *स्त्री.* {सं.} स्तुति, वंदना।
नुनखारा *वि.* खारा।
नुनना *स.* लुनना।
नुनाई *स्त्री.* लावण्य, सुंदरता।
नुनेरा *पुं.* नोनिया, नमक बनानेवाला।
नुनी, नूनी *स्त्री.* {हिं.} छोटी किस्म का शहतूत, पुरुष-जननेंद्रिय।
नुमाइंदा *पुं.* {फा.} {*भाव.* नुमाइंदगी} प्रतिनिधि।
नुमाइश *स्त्री.* {फा.} प्रदर्शन, दिखावा; तड़क-भड़क, ठाठ-बाट; प्रदर्शनी।
नुमाइशी *वि.* {फा. नुमाइश} देखने भर का, दिखौआ; देखने योग्य, दर्शनीय, सुंदर।
नुमाई *स्त्री.* {फा.} प्रदर्शन।
नुसखा *पुं.* {अ. नुस्ख:} वह कागज जिस पर लोगों के लिए औषधि और उसकी सेवन-विधि लिखी रहती है; व्यय का अवसर या योग।
नूत *वि.* = नूतन (नया)
नूतन *वि.* {सं.} {*भाव.* नूतना} नया, नवीन; अद्‌भुत, अनोखा।
नूतनता *स्त्री.* {सं.} नवीनता।
नून *पुं.* {सं. लवण} नमक; *वि.* न्यून।
नूना *पुं.* नोना; *वि.* नन्हा; *वि.* न्यूज।
नूपुर *पुं.* {सं.} पैरों में पहनने का पैजनी नामक गहना; घुँघरू।
नूर *पुं.* {अ.} ज्योति, प्रकाश; प्रात:काल; कांति शोभा।
मुहा. नूर बरसना = बहुत अधिक प्रभा या शोभा प्रकट होना।
नूर का पुतला *वि.* परम रूपवान।
नूह *पुं.* {अ.} ईसाइयों, मुसलमानों आदि के अनुसार एक पैगम्बर।
नृ *पुं.* {सं.} नर, मनुष्य, आदमी।
नृकेशरी *पुं.* {सं.} नृसिंह, विष्णु-अवतार।
नृघ्न *वि.* {सं.} नरघातक।
नृतक *पुं.* नर्तक, नाचनेवाला।
नृत्त *पुं.* {सं.} उच्चकोटि का और सुसंस्कृत अभिनय।
नृतना *अ.* = नाचना।
नृत्य *पुं.* {सं.} नाच, नर्तन।
नृत्यकी *स्त्री.* नर्तकी।
नृत्यशाला *स्त्री.* {सं.} वह स्थान जहाँ नृत्य या नाच होता हो, नाच-घर।
नृपति *पुं.* {सं.} राजा।
नृपरिषि *पुं.* = राजर्षि।
नृपाल *पुं.* {सं.} राजा।
नृपालय *पुं.* {सं.} राजमहल।
नृपासन *पुं.* {सं.} राज-सिंहासन।
नृपोचित *वि.* {सं.} राजा के योग्य।
नृमण *पुं.* {सं.} धन-संपत्ति।
नृमेध *पुं.* {सं.} नरमेध-यज्ञ।
नृयज्ञ *पुं.* {सं.} पाँच महायज्ञों में से एक जिसमें अतिथि-पूजन आदि कृत्य होते हैं।
नृवंश *पुं.* {सं.} आधुनिक विज्ञान में मानव जाति के अलग-अलग वंश या जातियाँ।
नृविज्ञान *पुं.* {सं.} विज्ञान की वह शाखा जिसमें मनुष्य के उद्‌भव, विकास, रचना आदि का अध्ययन किया जाता है।
नविज्ञानी *पुं.* {सं.} नृविज्ञान का अधिकारी विद्वान।
नृवेत्ता *पुं.* {सं.} नृविज्ञानी।
नृशंस *वि.* {सं.} {*भाव.* नृशंसता} क्रूर, निर्दय; अत्याचारी।
नृसिंह *पुं.* {सं.} विष्णु का चौथा अवतार जो आधे पुरुष और आधे सिंह के रूप में हुआ था; श्रेष्ठ पुरुष।
नृहन् *पुं.* {सं.} शत्रुहंता, नरघातक।
नृहरि *पुं.* {सं.} नृसिंह।
ने परसर्ग एक परसर्ग जो सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्ता का चिह्न है; हिं. 'को' का स्थानिक रूप (राज, गुज.)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेई *स्त्री.* नींव।

नेउतना *क्रि.* {हिं. सं.} निमंत्रण देना।

नेउली *स्त्री.* {हिं.} हठयोग-भेद।

नेक *वि.* {फा.} {*भाव.* नेकी} भला, अच्छा; *क्रि. वि.* तनिक।

नेकचलन *वि.* {फा. नेक + हिं. चलन} {*भाव.* नेकचलनी} अच्छे चाल-चलन वाला, सदाचारी।

नेकनाम *वि.* {फा.} {*भाव.* नेकनामी} जिसका अच्छा नाम हो, कीर्तिशाली।

नेकनीयत *वि.* {फा. नेक + अ. नीयत} {*भाव.* नेकनीयती} अच्छी नीयत या संकल्पवाला; उत्तम विचारोंवाला।

नेकी *स्त्री.* {फा.} भलाई उपकार; सज्जनता, भलमनसी।

नेकी-बदी *स्त्री.* {फा.} भलाई-बुराई, पाप-पुण्य।

नेकु *वि., क्रि. वि.* {सं. न्यक्} तनिक।

नेग[1] *पुं.* {सं. नैयमिक} विवाह आदि शुभ अवसरों पर संबंधियों और आश्रितों आदि को कुछ धन आदि देने की प्रथा; इस प्रकार दी जानेवाली वस्तु या धन; रीति, प्रथा।

नेग[2] *पुं.* {सं. निकट?} निकटता, सामीप्य; संबंध, संपर्क।

मुहा. (किसी के) नेग लगना = संबंध या संपर्क होना; किसी में लीन होना, समाना; *(किसी चीज या बात का) नेग लगना* = सार्थक या सफल होना।

नेग-चार, नेग-जोग *पुं.* नेग।

नेगटी *पुं.* {हिं. नेग} नेग या रीति का पालन करनेवाला।

नेगी *पुं.* {हिं. नेग} नेग लेने या पाने का अधिकारी; धन, संपत्ति आदि का प्रबंध करनेवाला, प्रबंधक। *उदा.* विप्र न नेगी कीजिये, मूढ न कीजै मित्त–**केशव**।

नेगी-जोगी *पुं.* {हिं.} नेग पानेवाला।

नेचरिया *पुं.* {हिं.} नास्तिक।

नेचा *पुं.* {फा. नैचः} हुक्के की नै, निगाली।

नेछावर *स्त्री.* निछावर।

नेजक *पुं.* {सं.} धोबी।

नेजा *पुं.* {फा. नैजः} भाला, बरछा।

नेजाल *पुं.* नेजा।

नेठना *अ.* नाठना।

नेड़े *क्रि. वि.* {सं. निकट} पास, समीप।

नेत[1] *पुं.* {सं. नेत्रम्} मथानी की वह रस्सी जिसे खींचने से वह चलती है।

नेत[2] *पुं.* {सं. नियति} निर्धारण, ठहराव; संकल्प, इरादा; व्यवस्था, प्रबंध।

नेत[3] *पुं.* {देश.} स्त्रियों की चादर, ओढनी।

नेत[4] *पुं.* {देश.} एक प्रकार का गहना; *स्त्री.* नीयत।

नेतक *स्त्री.* {प्रा. नेत्त} चुँदरी, चूनर।

नेतली *स्त्री.* {हिं.} पतली डोरी।

नेता[1] *पुं.* {सं. नेतृ} किसी क्षेत्र या विषय में लोगों का रास्ता दिखाने के लिए उनके आगे चलनेवाला, अगुआ, नायक, लीडर; किसी दल का कार्यकता।

नेता[2] *पुं.* {सं. नेत्रम्} मथानी की रस्सी।

नेतागिरी *स्त्री.* नेतृत्व।

नेति *पुं.* {सं.} एक संस्कृत पद जिसका अर्थ है-इति या अंत नहीं है और जिसका प्रयोग ईश्वर की महिमा के वर्णन के संबंध में होता है।।

नेती *स्त्री.* {हिं. नेता} मथानी की रस्सी, नेत।

नेती-धौती *स्त्री.* {हिं. + सं. धौति} हठयोग की एक क्रिया, जिसमें मुँह के रास्ते से पेट में कपड़ा डालकर आँतें साफ की जाती हैं, धौति।

नेतृत्व *पुं.* {सं.} नेता होने का भाव, कार्य या पद, नायकत्व, सरदारी।

नेत्र *पुं.* {सं.} आँख; दो की संख्या का सूचक शब्द; चक्षु, नयन; *पुं.* = नेत (मथानी की रस्सी)।

नेत्रजल *पुं.* {सं.} आँसू।

नेत्रज्योति *स्त्री.* {सं.} आँख की रोशनी।

नेत्रदाह *पुं.* {सं.} आँख की जलन।

नेत्र-बिंदु *पुं.* {सं. नेत्र + बिंदु} बूँद-बूँद करके आँख में डाली जानेवाली दवा (आई ड्राप)।

नेत्रीय *वि.* {सं.} नेत्र-संबंधी।

नेप *पुं.* {सं.} पुरोहित, जल।

नेपथ्य *पुं.* {सं.} अभिनय आदि में रंगमंच के परदे के पीछे का वह स्थान, जहाँ नट और नटियाँ वेष बनाती हैं।

नेपाल *पुं.* भारत के उत्तर में हिन्दू देश।

नेपाली *वि.* {हिं.} नेपाल की राष्ट्रभाषा, नेपाल-संबंधी।

नेपुर *पुं.* नुपूर।

नेफा *पुं.* {फा.} पायजामे, लहँगे, तकिए आदि में वह जगह जिसमें नाड़ा, डोरा या इजारबंद डाला जाता है।

नेब *पुं.* नायब।

नेम *पुं.* {सं. नियम} बँधी हुई या बराबर होती रहनेवाली बात, नियम; रीति, दस्तूर; धार्मिक क्रियाओं का पालन।

नेम-धरम *पुं.* पूजा-पाठ, देवदर्शन, व्रत आदि धार्मिक कृत्य।

नेमत *स्त्री.* न्यामत।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेमि *स्त्री.* {सं.} पहिए का चक्कर; कुएँ की जगत।

नेमी *वि.* {हिं. नेम} नियम का पालन करनेवाला; नियमित रूप से पूजा-पाठ, दर्शन, जप आदि धार्मिक कृत्य करनेवाला।

नेय *वि.* {सं.} लाने योग्य।

नेरा *क्रि. वि.* {हिं. नी} {*स्त्री.* नेरी} जरा-सा भी, कुछ भी; *वि.* जो निकट हो, पास वाला।

नेरे *वि.* {हिं. नियर} निकट, पास।

नेवग *पुं.* नेग।

नेवज *पुं.* नैवद्य, भोग।

नेवतना *स.* {हिं. न्योता} किसी को न्योता देना, निर्मंत्रित करना।

नेवता *पुं.* न्योता।

नेवना *अ.* {सं. नमन} झुकना।

नेवर[1] *पुं.* {सं. नूपुर} बजनेवाले घुँघरू; पैर में पहनने की पाजेब जिसमें बजनेवाले घुँघरू लगे रहते हैं; हाथ में पहनने का जँजीरी नाम का गहना।

नेवर[2] *वि.* {सं. न + वर = श्रेष्ठ} बुरा, खराब।

नेवरना *अ.* {सं. निवारण} निवारण होना; समाप्त होना; निवृत्त होना; छूटना; *स.* निवारन।

नेवला *पुं.* {सं. नकुल} गिलहरी की तरह का एक मांसाहारी जंतु, जो साँप को खा जाता है।

नेवाना *स.* {सं. नमन} झुकाना।

नेवारना *स.* निवारना।

नेवारी *स्त्री.* {सं. नेपाली} जूही की तरह का सफेद फलोंवाला एक पौधा।

नेवी *स्त्री.* {अ.} जलसेना।

नेसुक *क्रि. वि.* {हिं. नेकु} तनिक, जरा; *वि.* थोड़ा-सा।

नेस्त *वि.* {फा.} जिसका अस्तित्व न हो या न रह गया हो।

नेस्त-नाबूद *वि.* {फा. नेस्तोनाबूद} पूरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट।

नेह *पुं.* {सं. स्नेह} स्नेह, प्रेम, मुहब्बत; तेल।

नेहरा *पुं.* = नेह (स्नेह)।

नेही *वि.* स्नेही।

नै[1] *स्त्री.* {सं. नदी} नदी।

नै[2] *स्त्री.* {फा.} बाँस की नली; हुक्के की निगाली; बाँसुरी।

नैऋत *वि., पुं.* नैर्ऋत।

नैक (कु) *वि., क्रि. वि.* = तनिक।

नैकट्य *पुं.* {सं.} निकटता।

नैकभेद *वि.* {सं.} अनेक प्रकार का।

नैकशः *अव्य.* {सं.} अनेक बार।

नैकषेय *पुं.* {सं.} राक्षस।

नैकम *वि.* {सं.} निगम-संबंधी; जो निगम के रूप में लाया हो (कॉरपोरेट); (ग्रंथ) जिसमें ब्रह्म आदि का विवेचन हो।

नैचक *पुं.* {सं. नाभिचक्र} वह गोल लकड़ी जो कुआँ बनाते समय उसके तल में जमाकर रखी जाती है, जमावट।

नैचकी *स्त्री.* {सं. नैत्यिकी = नित्य या सदा दूध देनेवाली} वह गाय जो अगली बार ब्याने के समय तक बराबर दूध देती रहे; अच्छी या बढ़िया गाय।

नैचा *पुं.* {फा. नैच:} हुक्का पीने की एक प्रकार की लचीली नली।

नैचिकी *स्त्री.* नैचकी।

नैटी *स्त्री.* {हिं.} दूधिया घास।

नैत *अ.* {?} सुअवसर, अच्छा मौका।

नैत्य *पुं.* {सं.} नित्य-कर्म।

नैतिक *वि.* {सं.} {*भाव.* नैतिकता} नीति-संबंधी, नीति का।

नैत्यिक *वि.* {सं.} नित्य होने या किया जानेवाला, नित्य का, जैसे-नैत्यिक कर्म।

नैत्रिक *वि.* {सं.} नेत्र-संबंधी, आँखों का।

नैदानिक *वि.* {सं.} निदान-संबंधी।

नैदेशिक *पुं.* {सं.} किंकर, दास।

नैद्र *वि.* {सं.} निद्रा-संबंधी।

नैन[1] *पुं.* नयन।

नैन[2] *पुं.* {सं. नय + न} अन्याय, अनीति।

नैन[3] *पुं.* {सं. नवनीत} मक्खन।

नैनपटी *स्त्री.* {सं. नयन + पद} आँखों पर बाँधी जानेवाली पट्टी।

नैना *अ.* नवना; *स.* नवाना; *पुं.* = नयन (आँखें)।

नैनूँ *पुं.* {सं. नवनीत} मक्खन।

नैपुण्य *पुं.* {सं.} निपुणता, दक्षता।

नैमय *पुं.* {सं.} व्यवसायी।

नैमेय *पुं.* {सं.} विनिमय, वस्तुओं का बदला।

नैमित्तिक *वि.* {सं.} जो किसी निमित्त से या कोई विशेष उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किया गया अथवा हुआ हो।

नैया *स्त्री.* {हिं. नाव} नाव, नौका।

नैयायिक *वि.* {सं.} न्यायशास्त्र का ज्ञाता, न्यायवेत्ता (लॉजीशियन)।

नैरंतर्य *पुं.* {सं.} निरंतरता।

नैर *पुं.* {सं. नगर} नगर, शहर; देश, जनपद।

नैराश्य *पुं.* {सं.} निराश होने का भाव, नाउम्मीदी।

नैर्ऋत *वि.* {सं.} नैर्ऋति-संबंधी; *पुं.* राक्षस; पश्चिम-दक्षिण कोण का स्वामी।

नैर्ऋति *स्त्री.* {सं.} दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा या कोण।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैर्मल्य पुं. {सं.} निर्मलता; स्वच्छता।
नैवेद्य पुं. {सं.} वह खाद्य पदार्थ, जो देवता को चढ़ाया जाता है, भोग।
नैश *वि.* {सं.} निशा-संबंधी, रात का।
नैश्चित्य पुं. {सं.} निश्चय।
नैषधीय पुं. {सं.} नल-संबंधी।
नैष्ठ्य पुं. {सं.} निठुराई, क्रूरता।
नैष्ठिक *वि.* {सं.} निष्ठा-संबंधी; निष्ठा रखनेवला; धर्म में निष्ठा रखनेवाला।
नैसर्गिक *वि.* {सं.} निसर्ग या प्रकृति-संबंधी, प्राकृतिक; स्वाभाविक (नेचुरल)।
नैसा *वि.* {सं. अनिष्ट} बुरा, खराब।
नैसिक (सुक) *वि.* {हिं. नेक} थोड़ा, जरा सा।
नैहर पुं. {सं. ज्ञातिगृह} विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके माता-पिता आदि का घर, पीहर, मायका।
नोइनी *स्त्री.* {हिं. नोवना} वह रस्सी जो गौ दुहते समय उसके पिछले पैरों में बाँधी जाती है।
नोई *स्त्री.* नोइनी।
नोक *स्त्री.* {फा.} {*वि.* नुकीला} अपेक्षाकृत बहुत पतला सिरा, अगला सूक्ष्म भाग; आगे की ओर निकला हुआ पतला भाग, सिरा या कोना।
नोक-झोंक *स्त्री.* {फा. नोक + हिं. झोंक} आपस में होनेवाली तू-तू-मैं-मैं या तानों से भरा वार्तालाप।
नोकदार *वि.* {हिं.} जिसमें नोक हो, पना, तड़क-भड़क का
नोकना *स.* {?} ललचाना।
नोकपलक *स्त्री.* {हिं.} चेहरे की बनावट।
नोकपान पुं. {हिं.} जूते की सुंदरता और पुष्टता।
नोकाझोंकी *स्त्री.* {*वि.*} वादविवाद, छेड़छाड़।
नोकी (ला) *वि.* = नुकीला।
नोकीला *वि.* {हिं.} नुकीला।
नोखा *वि.* अनोखा।
नोच *स्त्री.* {हिं. नोचना} नोचने की क्रिया या भाव।
नोच-खसोट *स्त्री.* {हिं. नोचना + खसोटना} जबरदस्ती नोच या खसोटकर लेना, छीनाझपटी।
नोचना *स.* {सं. लुंचन} लगी हुई वस्तु को झटके से तोड़कर अलग करना; नाखून या दाँतों आदि से इस प्रकार फाड़ना कि कुछ अंश निकल आए; किसी को कष्ट देकर चटपट उससे कुछ छीन लेना; पुं. बाल नोचने या उखाड़ने की चिमटी।
नोनछी *स्त्री.* {हिं.} लोती मिट्टी।
नोट पुं. {अ.} ध्यान रहने के लिए टाँकने या लिख लेने का काम; पत्र, मिट्ठी; टिप्पणी; सरकार का चलाया हुआ वह कागज जिस पर कुछ रुपयों की संख्या छपी रहती है और जो उतने रुपयों के सिक्के के रूप में चलता है।
नोटिस *स्त्री.* = सूचना।
नोण पुं. {सं.} लवण, नमक।
नोन *स्त्री.* {सं. लोण} नमक।
नोनचा पुं. {हिं. नोन} नमक मिली हुई बदाम की गिरी; नमकीन अचार।
नोनहरामी *वि.* नमकहराम।
नोना पुं. {सं. लोणक} {*स्त्री.* नोनी} वह क्षार, जो पुरानी दीवारों या खारवाली जमीन में ऊपर से निकल आता है; लोनी मिट्टी; शरीफा, सीताफल; *वि.* नमकीन; *स.* नोवना।
नोनिया पुं. {हिं. नोना} नमक बनाने या निकालनेवाली एक जाति।
नोनी *स्त्री.* {हिं.} अमलोनी का साग; *वि. स्त्री.* रूप्वती, सलोकी।
नोर (ल) *वि.* नवल।
नोवना *स.* {सं. नद्ध} गौ दुहते समय रस्सी से उसके पिछले पैर बाँधना।
नोहर *वि.* {सं. नोपलभ्य} अलभ्य, दुर्लभ; विलक्षण, अनोखा।
नौ[1] *वि.* {सं. नव} आठ और एक।
मुहा. नौ दो ग्यारह होना = चल देना।
नौ[2] *वि.* {सं.} नौका या जल-संबंधी, जैसे-नौसेना; *स्त्री.* नाव।
नौआ पुं. नाई।
नौकड़ा पुं. {हिं.} तीन आदमियों के खेलने का कौड़ी का जुआ।
नौकर्म पुं. {सं.} नाव चलाने का काम।
नौकर पुं. {फा.} {*स्त्री.* नौकरानी} वेतन आदि पर किसी का काम करनेवाला मनुष्य, वैतनिक कर्मचारी; सेवक; खिदमतगार।
नौकरशाह पुं. {फा.} ऐसा नौकर जो अपने को राजा समझता हो, नौकर होने पर भी अपने को राजा समझनेवाला; वह कर्मचारी जिसके हाथ में सत्ता हो।
नौकरशाही *स्त्री.* {फा. नौकर + शाही} वह शासन-प्रणाली जिसमें सब अधिकार बड़े-बड़े राज कर्मचारियों के हाथ में रहते हैं; राज कर्मचारियों का वह वर्ग जिसके हाथ में सत्ता हो (ब्यूरोक्रेसी)।
नौकराना पुं. {हिं. नौकर + आना (प्रत्य.)} नौकरों को मिलनेवाला वेतन, दस्तूरी आदि।
नौकरी *स्त्री.* {फा. नौकर} नौकर का काम, सेवा, टहल, खिदमत; वह पद या काम जिसके लिए वेतन मिलता हो।
नौका *स्त्री.* {सं.} नाव, किश्ती।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौका-विहार पुं. {सं.} नाव की सैर।
नौगमन पुं. नौतरण।
नौगर (गरही) *स्त्री.* नौग्रही।
नौग्रही *स्त्री.* {हिं. नौ + ग्रह} गले में पहनने का एक गहना, जिसमें नौ ग्रहों की शांति के लिए नौ प्रकार के रत्न या नग जड़े रहते हैं।
नौघाट पुं. {हिं. नाव + घाट} वह घाट जहाँ नावें बँधी रहती हैं।
नौचर *वि.* {सं.} नाव पर सैर।
नौछावर *स्त्री.* निछावर।
नौची *स्त्री.* {हिं.} रंडी की पाली हुई लड़की जिसको वह अपना व्यवसाय सिखलाती है।
नौज पद {सं. नवद्य, प्रा. नवज} ईश्वर न करे। (अनिच्छासूचक); न हो, न सही (उपेक्षासूचक; स्त्रियाँ)।
नौजवान पुं. {फा.} नवयुवक; *वि.* युवा।
नैधा *वि.* {हिं.} नवधा; पुं. नया फलों का बाग।
नौटंकी *स्त्री.* {देश.} एक प्रकार का लोक-नाट्य, जिसमें संवाद तथा संगीत की प्रधानता होती है।
नौतन *वि.* नूतन।
नौतम[1] *वि.* {सं. नवतम} बिल्कुल नया; ताजा।
नौतम[2] पुं. {हिं. नवना} नम्रता, विनय।
नौतरण पुं. {सं.} {*वि.* नौतरणीय} नदी, समुद्री आदि के मार्ग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर आना-जाना, जलयात्रा (नैविगेशन)।
नौतरणीय *वि.* {सं.} (नदी, जलाशय आदि) जिसमें नाव, जहाज आदि चल सकते हों।
नौता *वि.* {सं. नव = नया} {*स्त्री.* नौती} नवीन, नया; ताजा; *स्त्री.* = नम्रता।
नौधा *वि.* नवधा भक्ति।
नौनगा *वि.* {हिं. नौ + नग} जिसमें नौ नग हों, नौ नगों से युक्त।
नौना *अ.* नवना।
नौनी *स्त्री.* नोइनी।
नौबत *स्त्री.* {फा.} बारी, पारी; दशा, हालत; संयोग; वैभव या मंगलसूचक शहनाई आदि बाजे जो देव-मंदिरों आदि में बजते हैं।
मुहा. नौबत झड़ना या बजना = मंगल उत्सव होना; प्रताप या ऐश्वर्य की घोषणा या वृद्धि होना।
नौबतखाना पुं. {फा.} फाटक के ऊपर का वह स्थान जहाँ नौबत बजती है, नक्कारखाना।
नौबती पुं. {फा.} नौबत बजानेवाला।
नौमासा पुं. {हिं.} गर्भ का नवाँ महीना।
नौमि पद {सं. नमामि} मैं नमस्कार करता हूँ।
नौमुस्लिम *वि.* {फा. नौ + अ. मुस्लिम} जो अभी हाल में मुसलमान हुआ हो।
नौरंग[1] पुं. = औरंग (औरंगजेब)।
नौरंग[2] पुं. {हिं. नौ = नया रंग} नया रंग या आमोद-प्रमोद; पुं. = नारंगी।
नौरतन पुं. नवरत्न; *स्त्री.* एक प्रकार की चटनी।
नौरस *वि.* {हिं.} नवयुवक।
नौरूप पुं. {हिं.} नील की उपज की पहली कटाई।
नौल *वि.* नवल।
नौलखा *वि.* {हिं. नौ + लाख} जिसका मूल्य नौ लाख हो; जड़ाऊ और बहुमूल्य।
नौवासी *वि.* {हिं.} मृदु, कोमल।
नौवाह *वि.* {सं.} नान का डाँड।
नौविद्या *स्त्री.* {सं.} जहाज-विद्या।
नौशक्ति *स्त्री.* {सं.} राज्य की वह शक्ति जो उसकी नौसेना के रूप में होती है।
नौशा पुं. {फा. नौशः} दुल्हा।
नौशी *स्त्री.* दुल्हिन।
नौसत पुं. नवसत, सोलहशृंगार।
नौसर पुं. {हिं. नौ + सर = बाजी} धूर्तता, चालबाजी; जालसाजी।
नौसरा पुं. {हिं. नौ + सर = लड़ी} नौ लड़ियों का हार।
नौसरिया *वि.* {हिं. नौसर} धूर्त, चालबाज; जालसाज।
नौसादर पुं. {फा. नौशादर} एक प्रकार का तीक्ष्ण खार या नमक।
नौसिखिआ *वि.* {सं. नवशिक्षित} जिसने कोई काम अभी हाल में सीखा हो; फलतः उस काम का बहुत थोड़ा ज्ञान और अनुभव रखनेवाला।
नौसेना *स्त्री.* {सं.} {*वि.* नौसैनिक} वह सेना, जो जहाजों पर रहती और नदी या समुद्र में रहकर युद्ध करती है (नैवी)।
नौसेवा *स्त्री.* {सं.} राज्य या राष्ट्र के नौसेना विभाग में की जानेवाली सेवा या नौकरी; नौसेना विभाग में काम करनेवालों का वर्ग या समूह (नैवल सर्विस)।
नौ-सैनिक *वि.* {सं.} नौसेना या उसके विभाग से संबंध रखनेवाला (नैवल)।
नौहँड़ पुं. {सं. नव = नया + हिं. हाँड़ी} मिट्टी की हाँड़ी।
नौहेंड़ा पुं. {हिं.} पितृपक्ष, श्राद्धपक्ष।
न्यक्ष पुं. {सं.} भैंसा, जमदग्नि, परशुराम।
न्यय पुं. {सं.} अपचय, नाश।
न्यर्बुद पुं. {सं.} दस अरब की संख्या।
न्यग्रोध पुं. {सं.} वट वृक्ष।
न्यस्त *वि.* {सं.} रखा या धरा हुआ; बैठाया या जमाया हुआ, स्थापित; चुनकर सजाया हुआ;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाला हुआ, फेंका हुआ; छोड़ा हुआ, त्यक्त; न्यास के रूप में या अमानत रखा हुआ; जमा किया हुआ।

न्याउ पुं. न्याय।

न्याति *स्त्री.* {सं. ज्ञाति} जाति।

न्याना *वि.* {सं. अज्ञान} ना-समझ।

न्यामत *स्त्री.* {अ. निअमत} बहुत अच्छा, बहुमूल्य या अलभ्य पदार्थ।

न्याय पुं. {सं.} उचित या नियम के अनुकूल बात, वाजिब बात; किसी व्यवहार या मुकदमे में दोषी और निर्दोष या अधिकारी और अनधिकारी आदि का विचारपूर्वक निर्धारण; छह दर्शनों में से एक दर्शन या शास्त्र, जिसमें किसी वस्तु के यथार्थ ज्ञान के लिए मतों या विचारों का उचित विवेचन होता है (लॉजिक); वह वाक्य जिसका व्यवहार लोक में दृष्टांत के रूप में होता हो, जैसे काकतालीय न्याय।

न्यायक पुं. न्यायकर्ता, न्यायाधीश।

न्यायकर्ता पुं. {सं.} न्याय करनेवाला अधिकारी।

न्यायकारी (रिन्) *वि.* {सं.} न्याय करनेवाला।

न्यायतः *क्रि. वि.* {सं.} न्याय के अनुसार; ठीक-ठाक।

न्यायपरता *स्त्री.* {सं.} न्यायी होने का भाव, न्यायशीलता।

न्यायप्रिय *वि.* {सं.} जो सदा न्याय करता हो।

न्यायविद् पुं. {सं.} विधि का ज्ञाता।

न्यायमूर्ति पुं. {सं.} किसी प्रांत के सर्वोच्च या मुख्य अधिकरण या न्यायालय के विचारक या जज की उपाधि (जस्टिस)।

न्यायसंगत *वि.* {सं.} न्याय, औचित्य, अधिकार आदि की दृष्टि से ठीक (राइटफुल); जिसके निर्णय में पूरा-पूरा न्याय होता हो (जस्टिस)।

न्यायाधिकरण पुं. {सं.} विवादग्रस्त विषयों पर विचार करके उनका न्याय या निर्णय करनेवाला अधिकारी वर्ग अथवा न्यायालय, वैचारिक मंडल (ट्रिब्यूनल)।

न्यायाधीश पुं. {सं.} किसी प्रांत के प्रधान या सर्वोच्च अधिकरण या न्यायालय का विचारक या जज (जस्टिस)।

न्यायालय पुं. {सं.} वह जगह जहाँ सरकार की ओर से मुकदमों का न्याय होता है, अदालत, कचहरी (कोर्ट)।

न्यायालयिक *वि.* {सं.} न्यायालय-संबंधी।

न्यायिक *वि.* {सं.} न्याय-संबंधी।

न्यायी पुं. {सं. न्यायिन्} न्याय के अनुसार चलनेवाला, न्यायशील।

न्यायोचित *वि.* न्यायसंगत।

न्यारा *वि.* {सं. निर्निकट} {*स्त्री.* न्यारी} अलग, दूर, जुदा; और कोई, अन्य; निराला, अनोखा।

न्यारिया पुं. {हिं. न्यारा} जौहरियों या सुनारों के नियार (कूड़ा-करकट) को धोकर सोना-चाँदी निकालनेवाला।

न्यारे *अव्य.* {हिं.} दूर अलग, पृथक्।

न्याव पुं. = न्याय।

न्यास पुं. {सं.} {*वि.* न्यस्त} स्थापना करना, रखना; धरोहर, थाती; किसी विशेष कार्य के लिए निकाली या किसी को सौंपी हुई संपत्ति या धन (ट्रस्ट); इस प्रकार सौंपे हुए धन या संपत्ति की व्यवस्था तथा सुरक्षा करनेवाली समिति; सन्यास।

न्यास-भंग पुं. {सं.} किसी की सौंपी हुई थाती का दुरुपयोग; किसी निश्चय की शर्तों के विरुद्ध कोई काम करना (ब्रीच ऑफ ट्रस्ट)।

न्यासिक *वि.* {सं.} धरोहर रखनेवाला।

न्यासिन् *वि.* {सं.} **न्यास करनेवाला।**

न्यासी *वि.* {सं. न्यास} वह जिसे किसी विशेष कार्य के लिए कुछ धन या संपत्ति सौंपी गई हो (ट्रस्टी)।

न्यूक्लीय *वि.* = नाभिकीय।

न्यून *वि.* {सं.} {*भाव.* न्यूनता} कम थोड़ा; घटकर, हलका।

न्यूनांग *वि.* {सं.} अंगहीन, लँगड़ा।

न्यूनेंद्रिय *स्त्री.* {हिं.} जिसकी कोई इंद्रिय कम हो।

न्यूनतम *वि.* {सं.} जितना न्यून होना संभव हो, जितना कम हो सकता हो (मिनिमम)।

न्यूनपद पुं. {सं.} वाक्य में से (भूल के कारण) छूटा हुआ पद।

न्यूनाधिक *वि.* {सं.} {*भाव.* न्यूनाधिक्य} जो कुछ बातों में कहीं कुछ कम और कुछ बातों में कहीं कुछ अधिक हो; उक्त प्रकार से कम या अधिक हो सकनेवाला (मार्जिनल)।

न्योछावर *स्त्री.* निछावर।

न्योजी[1] *स्त्री.* लीची। (फल)

न्योजी[2] *स्त्री.* = नेजा (मेवा)

न्योतना *स.* {हिं. न्योता + ना (प्रत्य.)} किसी को अपने यहाँ बुलाने के लिए न्योता देना, निमंत्रित करना।

न्योतनी *स्त्री.* {सहं.} विवाहादि शुभावसर पर खाना-पीना।

न्योतहरी पुं. {हिं. न्योता} न्योते में आया हुआ आदमी, निमंत्रित व्यक्ति।

न्योता पुं. {सं. निमंत्रण} आनंद, उत्सव या मंगल कार्यों आदि में सम्मिलित होने के लिए लोगों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अपने यहाँ बुलाना, बुलावा, निमंत्रण; वह धन य सामान जो इष्ट-मित्रों या संबंधियों के यहाँ से निमंत्रण अहाने पर भेजा जाता है; भोजन के लिए ब्राह्मण को अपने यहाँ बुलाना।

न्योला *पुं.* नेवला।

न्योली *स्त्री.* {सं. नली} हठयोग में नाक में डोरी डालकर मुँह से निकालने की क्रिया।

न्वैनी *स्त्री.* नोइनी।

न्वौनी *स्त्री.* नोइनी।

न्हाना *अ.* नहाना, स्नान करना; *वि.* नन्हा।

प

प देवनागरी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों के अंतिम वर्ग का पहला वर्ण, इसका उच्चारण दोनों होठों के स्पर्श से होता है; इसलिए यह स्पर्श वर्ण है। शब्दों के अंत में यह प्रत्यय के रूप में दो अर्थ देता है; पति अथवा रक्षा या पालन करनेवाला; जैसे क्षेणिप; पीनेवाला, जैसे-मद्यप। संगीत में यह 'पंचम' (स्वर) का संक्षिप्त रूप और सूचक माना जाता है।

पंक *पुं.* {सं.} कीचड़, कीच।

पंकज *पुं.* {सं.} कमल।

पंकजासन *पुं.* {सं.} ब्रह्मा।

पंकजराग *पुं.* {सं.} पद्मराग मणि।

पंकजिनी *स्त्री.* {सं.} कमल का पौधा।

पंकरुह *पुं.* {सं.} कमल।

पंकिल *वि.* {सं.} {स्त्री. पंकिला} जिसमें कीचड़, हो; मलिन, मैला।

पंक्ति *स्त्री.* {सं.} ऐसी परंपरा जिसमें एक ही प्रकार की वस्तुएँ, व्यक्ति या जीव एक दूसरे के बाद एक सीध में हों, श्रेणी, कतार; खींची हुई सीधी रेखा, लकीर; सेना में दस-दस योद्धाओं की श्रेणी; दस की संख्या; साथ बैठकर भोजन करनेवाले लोग।

पंक्तिबद्ध *वि.* {सं.} पंक्ति या कतार में बँधा, रखा या लगाया हुआ।

पंख *पुं.* {सं. पक्ष} पर, डैना।

मुहा. पंख जमना = मृत्यु या विनाश के लक्षण प्रकट होना; बुरे रास्ते पर जाने का रंग-ढंग दिखाई पड़ना; *पंख लगना* = गति में बहुत वेग होना।

पंखुड़ी *स्त्री.* {सं. पक्ष्म} फूलों का वह रंगीन पटल, जिसके खिलने या छितराने से फूल का रूप बनता है, पुष्पदल।

पंखा *पुं.* {हिं. पंख} {स्त्री. अल्पा. पंखी} विशेष प्रकार से बनाया हुआ वह उपकरण जिससे हवा चलते हैं, बेना।

पंखी[1] *पुं.* {हिं. पंख} पक्षी, चिड़िया।

स्त्री. पतंगा, फतिंगा; पंख, पर।

पंखी[2] *स्त्री.* {हिं. पंखा} छोटा पंखा।

पँखुड़ा *पुं.* {सं. पक्ष} कंधे और बाँह का जोड़, पखौरा।

पँखुड़ी *स्त्री.* पंखड़ी।

पंखेरू *पुं.* {हिं.} पक्षी।

पंग *वि.* {सं. पंगु} जिसके हाथ-पैर कटे हों, पंगु; जो कुछ कर न सकता हो, अकर्मण्य; स्तब्ध।

पंगत (ति) *स्त्री.* {सं. पंक्ति} पंक्ति, कतार; एक साथ भोजन करनेवालों की पंक्ति या वर्ग; समाज।

पंगा *वि.* = पंगु।

पंगायत *पुं.* {हिं.} चारपाई का पैताना।

पंगी *स्त्री.* {हिं.} धान की उपज में लगनेवाला कीड़ा।

पांगु *वि.* {सं.} जो पैरों से न चल सकता हो, लँगड़ा।

पंगुल *वि.* {सं. पंगु} पंगु, लँगड़ा।

पंच *पुं.* {सं.} पाँच की संख्या या अंक; समुदाय, समाज; जनता, लोक; कुछ आदमियों का चुना हुआ वह दल, जो कोई झगड़ा या मामला निपटाने के लिए नियत हो और जिसका निर्णय साधारणतः दोनों पक्षों को मान्य होता हो, न्याय करनेवाला समाज (आरबिट्रेशन); वे लोग जो फौजदारी के मुकद्दमे सुनने के समय दौरा जज की सहायता के लिए उसके साथ बैठते हैं; खेल, साधारण विवाद आदि में हार-जीत, औचित्य-अनौचित्य आदि का निर्णय करने के लिए नियत किया हुआ व्यक्ति (अम्पायर)।

पंचक *पुं.* {सं.} एक ही प्रकार या वर्ग की पाँच चीजों का समूह।

स्त्री. धनिष्ठा से रेवती तक के पाँच नक्षत्र जो अशुभ माने जाते हैं (फलित ज्योतिष)।

पंचकन्या *स्त्री.* {सं. अहल्या} द्रौपदी, कुंती, तारा और मंदोदरी ये पाँच स्त्रियाँ जो सदा कन्या के समान मानी जाती हैं।

पंचकल्याण *पुं.* {सं.} लाल या काले रंग का वह घोड़ा, जिसका सिर और चारों पैर सफेद हों।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचकोशी *स्त्री.* {सं. पंचक्रोश} पाँच कोस के घेरे में बसी हुई काशी; किसी तीर्थस्थान की धार्मिक दृष्टि से होनेवाली परिक्रमा।

पंचगंगा *स्त्री.* {सं.} गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा, इन पाँच नदियों का समूह या संगम।

पंचगव्य *पुं.* {सं.} गौ से प्राप्त होनेवाले ये पाँच द्रव्य-दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र जो बहुत पवित्र माने जाते हैं।

पंचगौड़ *पुं.* {सं.} सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल इन पाँच प्रकार के ब्राह्मणों का वर्ग।

पंचजन्य *पुं.* {सं.} वह प्रसिद्ध शंख, जिसे श्री कृष्णचंद्र बजाया करते थे।

पंचतत्त्व *पुं.* {सं.} पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश, पंचभूत।

पंचतरु *पुं.* {सं.} स्वर्ग के ये पवित्र पाँच वृक्ष-कल्पवृक्ष, पारिजात, मंदार, संतान और हरिचंदन।

पंचत्व *पुं.* {सं.} पाँच का भाव; मृत्यु, मौत।

पंचदेव *पुं.* {सं.} आदित्य, रुद्र, विष्णु, गणेश और देवी ये पाँच देवता।

पंचद्रविड़ *पुं.* {सं.} महाराष्ट्र, तैलंग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविड़, इन पाँच प्रकार के ब्राह्मणों का वर्ग।

पंचन *पुं.* {अ. पंचिंग} (कागज आदि में) छेद करने का कार्य।

पंचनद *पुं.* {सं.} पंजाब की ये पाँच बड़ी नदियाँ, जो सिंधु में गिरती हैं-सतलज, व्यास, रावी, चनाब, और झेलम; पंजाब प्रदेश।

पंचनामा *पुं.* {हिं. पंच + फा. नामः} वह कागज, जो वादी और प्रतिवादी अपना झगड़ा निपटाने के लिए पंच चुनते समय लिखते हैं; वह कागज जिस पर पंचों ने अपना निर्णय या फैसला लिखा हो।

पंचपल्लव *पुं.* {सं.} आम, जामुन, कैथ, बिजौरा (बीजपूरक) और बेल के पत्ते।

पंचपात *पुं.* {हिं.} पंचोली पौधा।

पंचपात्र *पुं.* {सं.} पूजा के काम के लिए गिलास की तरह का एक छोटा बरतन।

पंचपीरिया *पुं.* {हिं.} मुसलिम पाँचों पीरों का पूजनकर्ता।

पंचप्राण *पुं.* {सं.} शरीर में रहनेवाले ये पाँच-अपान, उदान, प्राण, व्यान और समान।

पंचभर्तारी *स्त्री.* {हिं.} द्रौपदी।

पंचफोड़न *स्त्री.* {हिं. पाँच + फोड़ना} फोड़ने (बघारने) के काम आनेवाली राई, जीरा, मेथी, सौंफ और मंगरैल। इन पाँच वस्तुओं का मिश्रण।

पंचबान *पुं.* = पंचवाण।

पंचभूत *पुं.* पंचतत्व।

पंचभौतिक *वि.* {सं.} पाँच तत्वों से बना हुआ।

पंचम *वि.* {सं.} {*स्त्री.* पंचमी} पाँचवाँ; *पुं.* {सं.} सात स्वरों में से पाँचवाँ स्वर जो कोकिल के स्वर के अनुरूप माना गया है, इसका संक्षिप्त रूप 'प' है; रागों में तीसरा राग।

पंचमकार *पुं.* {सं.} वाममार्ग में मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।

पंचमहापातक *पुं.* {सं.} ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु की स्त्री से व्यभिचार और इन पातकों के करनेवालों का संसर्ग, ये पाँच पातक।

पंचमहायज्ञ *पुं.* {सं.} अध्यापन और संध्यावंदन, पितृतर्पण या पितृयज्ञ, होम या देवयज्ञ, बलिवैश्वदेव या भूतयज्ञ, और अतिथि-पूजन ये पाँच कृत्य जो गृहस्थों को नित्य करने चाहिए।

पंचमांग *पुं.* {सं.} आधुनिक राजनीति में भेदियों आदि का वह वर्ग जो शत्रु के राज्य में उपद्रव आदि करने के लिए और वहाँ के भेद लेते रहने के लिए तैयार किया जाता है। (फिफ्थ कॉलम) (विशेष-राज्य के पहले चार अंग स्थलसेना, जलसेना, वायुसेना और समाचार-पत्र होते हैं; यह पाँचवाँ अंग बहुत हाल में बना है।)

पंचमांगी *पुं.* {सं. पंचमांगिन्} वह जो किसी राज्य के पंचमांग में हो और उसके शत्रु-देश में रहकर अपने देश को वहाँ के भेद भेजता हो और शत्रु-देश में अशांति, उपद्रव आदि फैलाने में सहायक होता हो (फिफ्थ कॉमिस्ट)।

पंचमी *स्त्री.* {सं.} शुक्ल या कृष्ण पक्ष की पाँचवीं तिथि; द्रौपदी; व्याकरण में अपादान कारक।

पँचमेल *वि.* {हिं. पाँच + मेल} जिसमें पाँच प्रकार की चीजें मिली हों; जिसमें सब प्रकार की चीजें हों।

पँचमेवा *पुं.* {हिं. पाँच + मेवा} बादाम, छुहारा, किसमिस, चिरौंजी और गरी इन पाँच मेवों का समूह।

पँचरंग, पँचरंगा *वि.* {हिं. पाँ + रंग} पाँच रंगों का; अनेक रंगों का।

पंचरत्न *पुं.* {सं.} मूँगा, हीरा, नीलम, लाल और मोती ये पाँच रत्न।

पंचराशिक *पुं.* {सं.} गणित की एक क्रिया जिसमें चार ज्ञात राशियों की सहायता से पाँचवीं अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

पंचलड़ा *वि.* {हिं. पाँच + लड़} पाँच लड़ों का, जैसे पँचलड़ा हार।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचवाण पुं. {सं.} कामदेव के ये पाँच वाण–द्रवण, शोषण, तापन, मोहन और उन्मादन; कामदेव के पाँच पुष्पवाण–कमल, अशोक, आम्र, नवमिल्लका और नीलोत्पल; कामदेव।

पंचवर्षीय *वि.* {सं.} पाँच वर्ष का; पाँच वर्ष तक चलनेवाला।

पंचशर पुं. {सं.} कामदेव।

पंचांग पुं. {सं.} पाँच अंगोंवाली वस्तु; वृक्ष के ये पाँच अंग–जड़, छाल, पत्ती, फूल और फल (वैद्यक); वह पुस्तिका जिसमें किसी संवत् के वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण ब्योरेवार लिखे रहते हों, पत्रा; प्रणाम करने का एक प्रकार जिसमें घुटने, हाथ और माथा पृथ्वी पर टेककर आँखें देवता की ओर करके मुँह से 'प्रणाम' कहते हैं।

पंचांगी *स्त्री.* {सं.} हाथी की कमर बाँधनेवाला रस्सा।

पंचांगमास पुं. {सं.} पहली से अंतिम तिथि या तारीख तक का वह पूरा महीना, जो पंचांग में किसी महीने के अंतर्गत दिखाया जाता है।

पंचांगवर्ष पुं. {सं.} किसी पंचांग में दिखाया हुआ आदि से अंत तक पूरा वर्ष।

पंचाग्नि *स्त्री.* {सं.} अन्वाहार्य, गार्हपत्य, आवहनीय, आवसथ्य और सभ्य नाम की पाँच अग्नियाँ; एक प्रकार की तपस्या जिसमें चारों ओर आग सुलगाकर दिन में धूप में बैठा जाता है।

पंचानन *वि.* {सं.} पाँच मुँहोंवाला; पुं. शिव; सिंह।

पंचागुल *वि.* {सं.} जो पाँच अँगुल का हो; पुं. तेजपत्ता, रेंड।

पंचाक्षर पुं. {सं.} प्रणव, पाँच अक्षरों का मंत्र।

पंचाननी *स्त्री.* {सं.} शिव की पत्नी, दुर्गा।

पंचानवे *वि.* {हि.} नब्बे और पाँच की संख्या 95.

पंचामृत पुं. {सं.} दूध, दही, घी, चीनी और शहद मिलाकर देवताओं के स्नान के लिए बनाया जानेवाला वह द्रव पदार्थ, जो पवित्र मानकर पिया जाता है।

पंचायत *स्त्री.* {सं. पंचायतन} {*वि.* पंचायती} किसी विवाद या झगड़े का निपटारा करने के लिए चुने हुए लोगों का समाज या दल। (आरबिट्रेशन); एक साथ बहुत-से लोगों की बकवाद; झगड़ा, विवाद।

पंचायती *वि.* {हिं.} पंचायत संबंधी, मिला-जुला।

पंचायतन पुं. {सं.} किसी देवता और उसके साथ के चार देवताओं की मूर्तियों का समूह, जैसे शिव-पंचायतन, राम-पंचायतन।

पंचायती *वि.* {हिं. पंचायत} पंचायत-संबंधी, पंयाचत का; बहुत से या सब लोगों का मिला-जुला, साझे का।

पंचायुध पुं. {सं.} विष्णु का नाम।

पंचाल पुं. {सं.} एक प्राचीन देश जो हिमालय और चंबल के बीच गंगा के दोनों ओर था; {*भाव.* पंचाली} पंचाल देशवासी; महादेव, शिव।

पंचालिका *स्त्री.* {सं.} गुड़िया, पुतली; अभिनेत्री, नटी।

पंचाली *स्त्री.* {सं.} बच्चों के खेलने की पुतली, गड़िया; द्रौपदी; पंचाल देश की स्त्री।

पंचास्य *वि.* {सं.} पाँच मुखोंवाला, महादेव।

पंचिका *स्त्री.* {सं.} पाँच खंडों वाली पुस्तक।

पंचित *वि.* {हिं. पंचन} जिसमें छेद किए गए हों।

पंचेषु पुं. {सं.} कामदेव।

पंचौदन पुं. {सं.} एक यज्ञ का नाम।

पँचौवर *वि.* {हिं. पाँच + सं. आवर्त} जिसकी पाँच तहें की गई हों, पाँच तह या पर्त किया हुआ, पँचहरा।

पंछा पुं. {हिं. पानी + छाला} प्राणियों के शरीर से या पेड़-पौधों के अंगों से निकलनेवाला स्राव।

पंछी पुं. {सं. पक्षी} चिड़िया, पक्षी।

पंछाला पुं. {हिं.} फफोला में आया हुआ पानी।

पंज *वि.* पाँच।

पंजक पुं. {हिं. पंजा} हाथ के पंजे का वह निशान या छापा, जो प्रायः मांगलिक अवसरों पर दीवारों पर लगाया जाता है।

पँजफोड़न *स्त्री.* = पँचफोड़न।

पंजर पुं. {सं.} शरीर की हड्डियों का ढाँचा, जो शरीर के कोमल भागों को अपने ऊपर ठहराए रहता है, ठठरी, कंकाल।
शरीर, देह; पिंजड़ा।

पँजरना *अ.* पजरना।

पंजारा पुं. {हिं.} धुनियाँ।

पंजा पुं. {फा. पंजः, मि. *स.* पंचक} हाथ या पैर की पाँचों उँगलियों का समूह।
मुहा. *पंजे झाड़कर पीछे पड़ना या चिमटना* = जी-जान से लगना या तत्पर होना।
यद *पंजे में* = पकड़ या वश में।
पाँच का समूह, गाही; उँगलियों और हथेली का सम्पुट; दो व्यक्तियों में होनेवाली ऐसे सम्पुटों की बल-परीक्षा; जूते का अगला भाग, जिसमें उँगलियाँ ढकी रहती है; पाँचों उँगलियों के आकार का एक दो पल्लोंवाला उपकरण, जिससे कागज-पत्र दबाकर रखे जाते हैं; ताश का वह पत्ता जिस पर पाँच बूटियाँ होती हैं; 'पंजक'।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजिकर *स्त्री.* {सं.} पंजिका, पंचांग।

पंजी *स्त्री.* {सं.} पंचांग, पंजिका; हिसाब या विवरण लिखने की पुस्तिका, बही (रजिस्टर); गोलाई में लिपटा हुआ लम्बे कागज का मुट्ठा (रोल)।

पंजीकरण *पुं.* {सं.} पंजी, बही या रजिस्टर में लिखा जाना; पंजी में लिखकर मान्यता प्रदान करना।

पंजीकृत *वि.* {सं.} जिसका पंजीकरण हो चुका हो।

पंजीबद्ध *वि.* पंजीकृत।

पंजीयन *पुं.* {सं.} किसी लेख या लेखे का पंजी में लिखा जाना, पंजी पर चढ़ाया जाना; नाम-सूची में नाम लिखा या चढ़ाया जाना।

पँजीरी *स्त्री.* {हिं. पाँच + ईरी (प्रत्य.)} आटे को घी में भूनकर बनाया हुआ मीठा चूर्ण।

पंजेरा *पुं.* {हिं.} बरतन झालनेवाला।

पंड़रू *पुं.* {हिं.} पँड़वा।

पंड़ल *वि.* {हिं.} पीले रंग का; (*पुं.*) शरीर, पिंड।

पंडर *वि.* {सं. पांडुर} श्वेत, सफेद; पीला।

पंडव *पुं.* = पांडव।

पंडा *पुं.* {सं. पंडित} {*स्त्री.* पंडाइन} किसी तीर्थ या मंदिर में लोगों को देवदर्शन करानेवाला व्यक्ति।

पँड़वा *पुं.* {हिं.} भैंस का बच्चा।

पंडा *पुं.* {सं.} मंदिर का पुजारी, घाटिया ब्राह्मण, रसोईदार; (सं. *स्त्री.*) ज्ञान, बुद्धि, विवेक।

पंडाल *पुं.* {?} सभा के अधिवेशन या उत्सव के लिए बनाया हुआ मंडप।

पंडित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* पंडिता, पंडिताइन, पंडितानी} वह जिसे किसी विषय का बहुत अच्छा ज्ञान हो, विद्वान; कुशल, प्रवीण; *पुं.* शास्त्रज्ञ; ब्राह्मण।

पंडिताई *स्त्री.* {सं. पंडित + हिं. आई. (प्रत्य.)} विद्वता, पांडित्य; पंडित या पुरोहित का कार्य।

पंडिताऊ *वि.* {सं. पंडित + हिं. आऊ (प्रत्य.)} पंडितों-जैसा; पंडितों की तरह या ढंग का, बोझिल, जैसे पंडिताऊ हिंदी।

पंडितानी *स्त्री.* {हिं.} पंडित की स्त्री, ब्राह्मणी।

पंडुक *पुं.* {सं. पांडु} {*स्त्री.* पंडुकी} कबूतर की तरह का एक प्रसिद्ध पक्षी, पंडुकी, फाख्ता।

पंडौ *पुं.* = पांडव।

पंडौह *पुं.* {हिं.} परनाला।

पंत *पुं.* पंथ।

पँत्यारी *स्त्री.* पंक्ति।

पंथ *पुं.* {सं. पथ} मार्ग, रास्ता, राह।

मुहा. पंथ गहना = रास्ता पकड़ना, चलना; *(किसी के) पंथ लगना* = दिखाए हुए रास्ते पर चलना, अनुयायी होना; किसी को तंग करने के लिए उसके पीछे पड़ना; *पंथ सेना* = प्रतीक्षा करना, आसरा देखना;

आचार-व्यवहार का ढंग, रीति।

मुहा. पंथ गहना = आचरण आदि ग्रहण करना, नए रंग-ढंग पर चलना।

संप्रदाय, मत; पहाड़ी, महाराष्ट्री आदि कुछ ब्राह्मणों का अल्ल।

पंथकी *पुं.* पथिक।

पंथाई *पुं.* पंथी।

पंथान *पुं.* पथिक।

पंथी *पुं.* {हिं. पंथ} रास्ता चलनेवाला, राही, बटोही, पथिक; किसी संप्रदाय या पंथ का अनुयायी, जैसे नानक-पंथी, दादू-पंथी।

पंद *स्त्री.* {फा.} शिक्षा, उपदेश।

पंदरह *वि.* {हिं.} दस और पाँच की संख्या, 15.

पंप *पुं.* {*अ.*} वह नल जिसके द्वारा पानी या हवा एक तरफ से दूसरी तरफ पहुँचाई जाती है; एक प्रकार का जूता।

पंपा *स्त्री.* {सं.} दक्षिण भारत की एक प्राचीन नदी; इस नदी के किनारे का एक नगर; इस नगर के पास का एक सर या तालाब (रामायण)।

पंपाल *वि.* {हिं.} पापी।

पंपासर *पुं.* पंपा।

पँवरिया *पुं.* पौरिया।

पँवरी[1] *स्त्री.* ड्योढ़ी।

पँवरी[2] *स्त्री.* {हिं. पाँव} खड़ाऊँ, पाँवरी।

पँवाड़ा *पुं.* {सं. प्रवाद} व्यर्थ के विस्तार से कहीं हुई बात; एक प्रकार का देहाती गीत।

पँवारना *स.* = फेंकना।

पँवारी *स्त्री.* {?} लोहे में छेद करने का एक औजार।

पँसरहट्टा *पुं.* {हिं.} पंसारियों की हाट।

पंसारी *पुं.* {सं. पण्यशाली} मिर्च-मसाले आदि बेचनेवाला बनिया।

पंसासार *पुं.* {सं. पाशक + सारि (= गोटी)} पासे का खेल।

पंसेरी *हिं.* {*स्त्री.*} पाँच सेर की तौल या बाट।

पइता *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का छंद।

पउनार *पुं.* {हिं.} कमल का ढंठल।

पइठना, पइसना *अ.* पैठना।

पइसार *पुं.* {हिं. पइसना} पैठ, प्रवेश।

पउआ *पुं.* = पौआ।

पकड़ *स्त्री.* {हिं. पकड़ना} पकड़ने की क्रिया या भाव, ग्रहण; पकड़ने का ढंग; लड़ाई या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतियोगिता में एक बार आकर परस्पर गुथना; भिड़ंत, हाथापाई; वह त्रुटि या सूत्र, जिससे किसी बात के वास्तविक दोष या तथ्य का पता लगे।

पकड़-धकड़ *स्त्री.* धर-पकड़।

पकड़ना *स.* {सं. प्रकटति} कोई चीज इस प्रकार हाथ में लेना कि वह जल्दी छूट न सके, धरना, थामना, ग्रहण करना; (दोषी, अपराधी आदि को) अपने अधिकार या बंधन में लेना, गिरफ्तार करना; ढूँढ़ निकालना, पता लगाना; किसी बात में आगे बढ़े हुए के बराबर या पास हो जाना; फैलनेवाली वस्तु में लगकर उसमें अपना संचार करना अथवा उसमें संचरित होना, संबंध होने के कारण फैलना; अपने स्वभाव या वृत्ति के अंतर्गत करना; आक्रांत करना, ग्रसना, घेरना; किसी चलनेवाली चीज तक पहुँचना, जैसे रेल पकड़ना।

पकड़वाना *क्रि.* {हिं. *स.*} ग्रहण करना।

पकड़ाना *स.* हिं. पकड़ना का प्रे.।

पकना *अ.* {सं. पक्व} फल आदि का पुष्ट होकर खाने के योग्य होना; पूर्णता की अवस्था तक पहुँचना।

मुहा. बाल पकना = (वृद्धावस्था के कारण) बाल सफेद होना; आग के ऊपर पहुँचकर गलना, बनना या तैयार होना, पका होना, सीझना, जैसे रसोई पकना; (फोड़े या घाव में) मवाद आ जाना, पीव से भरना; दृढ़ या पक्का होना।

पकरना *स.* पकड़ना।

पकला *पुं.* {हिं.} फोड़ा, फुंसी।

पकवान *पुं.* {सं. पक्वान्न} घी में तला या घी से पकाया हुआ कोई खाद्य पदार्थ, जैसे मालपुआ, समोसा आदि।

पकाई *स्त्री.* {हिं. पकाना} पकाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पकाना *स.* {हिं. पकना} {प्रे. पकवाना} फल आदि को पुष्ट और तैयार करना; आग पर रखकर गलाना या तैयार करना, रींधना, सिझाना; फोड़े आदि को किसी उपचार से इस अवस्था में पहुँचाना कि उसमें मवाद आ जाए; पक्का करना।

पकावन *पुं.* पकवान।

पकौड़ा *पुं.* {हिं. पक्का + बरी, बड़ी} {*स्त्री.* अल्पा. पकौड़ी} एक पकवान जो बेसन आदि को छोटे टुकड़ों के रूप में घी या तेल में डालकर बनाया जाता है।

पकौड़ी *स्त्री.* {हिं.} छोटा आकार का पकौड़ा।

पक्करी *स्त्री.* {सं.} पाकर-वृक्ष।

पक्करस *पुं.* {हिं.} मदिरा।

पक्का *वि.* {सं. पक्व} {*स्त्री.* पक्की} अपनी पूरी बाढ़ पर आकर या पुष्ट होकर पका हुआ, पुष्ट; जो आग पर पकाया गया हो; दृढ़, मजबूत; ठहराया या ठीक किया हुआ, निश्चित; जिसमें कोई कोर-कसर या त्रुटि न रह गई हो; जिसमें से व्यय, लागत या छीजन आदि निकल चुकी हो, 'कच्चा' या 'स्थूल' का उलटा (नेट); जिसमें किसी प्रकार की कमी या रिआयत न हो सकती हो, जैसे–पक्का दाम; जिसे अभ्यास हो, अनुभवी, तजरुबेकार; कानून या विधि की दृष्टि से मान्य और प्रामाणिक; जिसका मान (नाप या तौल) प्रामाणिक हो, जैसे पक्का सेर; न टलनेवाला, अटल।

पक्का कागज *पुं.* वह कागज जिस पर लिखी हुई बात कानून या नियम से ठीक समझी जाए।

पक्का गवैया *पुं.* राग-रागनियाँ आदि गानेवाला गवैया।

पक्का गाना *पुं.* वह गाना जो राग-रागिनियों के रूप में हो, शास्त्रीय संगीत।

पक्का चिट्ठा *पुं.* आय-व्यय का दोहराया हुआ और ठीक लेखा।

पक्की निकासी *स्त्री.* किसी संपत्ति में से होनेवाली वह आय, जिसमें से व्यय आदि निकाला जा चुका हो, कुल आय में से होनेवाली बचत (नेट एसेट्स)।

पक्का रसोई *स्त्री.* घी के योग से पके या घी में तले हुए खाद्य पदार्थ।

पक्खर[1] *स्त्री.* पाखर।

पक्खर[2] *वि.* {सं. पक्व} पक्का, दृढ़।

पकूत्र *पुं.* {सं.} गार्हपत्य अग्नि।

पक्व *वि.* {सं.} {*भाव.* पक्वता} पका हुआ; पक्का, दृढ़; परिपुष्ट।

पक्वान्न *पुं.* {सं.} पका हुआ अन्न; पकवान।

पक्वाशय *पुं.* {सं.} पेट के अंदर का वह स्थान जहाँ पहुँचकर अन्न पचता है।

पक्ष *पुं.* {सं.} किसी विशेष स्थिति से दाहिने या बाएँ पड़नेवाला विस्तार, ओर पार्श्व, तरफ; किसी विषय के दो या अधिक परस्पर विरोधी तत्वों, सिद्धांतों या दलों में से कोई एक।

मुहा. पक्ष गिरना = तर्क या युक्ति से किसी पक्ष का अप्रमाणिक सिद्ध होना।

वह बात जिसे कोई करना चाहता हो और जिसका किसी ओर से विरोध होता या हो सकता हो; झगड़ा या विवाद करनेवालों में से कोई व्यक्ति या दल (पार्टी)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. (किसी का) पक्ष करना = पक्षपात करना; *(किसी का) पक्ष लेना* = (झगड़े में) किसी की ओर होना; पक्षपात करना।

न्याय या तर्क में वह वस्तु या तत्व, जिसके विषय में साध्य की प्रतिज्ञा करते हैं, जैसे–'तेल जलता है', में 'तेल' पक्ष है और उसके संबंध में साध्य 'जलता है', की प्रतिज्ञा की गई है; सहायकों या समर्थकों का दल; चिड़ियों का डैना, पंख, पर; चांद्रमास से पंद्रह-पंद्रह दिनों के दो विभागों में से कोई एक।

पक्षक पुं. {सं.} वह पक्ष जिसमें ऐसे लोग हों, जो किसी विषय में या किसी कार्य के लिए मिलकर एक हो गए हों, दल (पार्टी)।

पक्षधर पुं. पक्षपाती।

पक्षधरता *स्त्री.* {सं.} किसी के पक्ष का समर्थन।

पक्षांत पुं. {सं.} अमावस्या, पूर्णिमा।

पक्षांतर पुं. {सं.} दूसरा, पक्ष, मतांतर।

पक्षपात पुं. {सं.} औचित्य या न्याय का विचार छोड़कर किसी एक पक्ष के अनुरूप होनेवाली प्रवृत्ति या सहानुभूति और उस पक्ष का समर्थन।

पक्षपातपूर्ण *वि.* {सं.} पक्षपात का सूचक।

पक्षपाती (तिन्) पुं. {सं.} वह जो किसी के पक्ष का समर्थन या पोषण करे, तरफदार।

पक्षालु पुं. {सं.} पक्षी, चिड़िया।

पक्षावसर पुं. {सं.} पूर्णिमा, अमावस्या।

पक्षिणी *स्त्री.* {सं.} चिड़िया, मादा पक्षी।

पक्षिपति पुं. {सं.} पक्षिराज, संपाति।

पक्षिशाला *स्त्री.* {सं.} चिड़ियों के रहने का घोंसला।

पक्षाघात पुं. {सं.} एक रोग जिसमें शीर के किसी एक पार्श्व के सब अंग सुन्न और क्रियाहीन हो जाते हैं, अर्द्धांग रोग।

पक्षिराज पुं. {सं.} गरुड़ जो सब पक्षियों का राजा माना गया है।

पक्षी पुं. {सं.} चिड़िया; तरफदार; *वि.* पक्ष-संबंधी, पक्ष का।

पक्षी-विज्ञान पुं. {सं.} वह विज्ञान जिसमें पक्षियों की प्रकृति और रहन-सहन आदि का विवेचन होता है (ऑर्निकॉलाजी)।

पक्ष्म पुं. {सं.} {*वि.* पक्ष्मिल} आँख की बरौनी।

पखंड पुं. = पाखंड।

पखंडी पुं. {सं. पाखंड} वह जो कठपुतलियों का नाच दिखाता हो; *वि.* = पाखंडी।

पख *स्त्री.* {सं. पक्ष} ऊपर से व्यर्थ बढ़ाई हुई बाधक बात या शर्त, अड़ंगा; झगड़ा, बखेड़ा; दोष, त्रुटि।

पखड़ी *स्त्री.* पंखड़ी।

पखरना *क्रि.* {हिं. *स.*} धोना।

पखराना *स.* हिं. पखारना का प्रे.।

पखरी *स्त्री.* पखार, पंखड़ी।

पखरैत पुं. {हिं. पाखर + ऐत (प्रत्य.)} वह पशु जिस पर लोहे की पाखर पड़ी हो।

पखवारा पुं. {सं. पक्ष + वार} पंद्रह दिनों का समय; पक्ष।

पखा पुं. = पंख (जैसे मोरपखा)।

पखाउजन *स्त्री.* = पखावज। (मृदंग)।

पखाटा पुं. {हिं.} धनुष का कोना।

पखान पुं. पाषाण; पखाना (उपाख्यान)।

पखाना पुं. {सं. उपाख्यान} कथा, कहानी, किस्सा; कहावत, लोकोक्ति, मसल; पुं. पाखाना।

पखारना *स.* = धोना।

पखाल *स्त्री.* {सं. पय = पानी +खाल} बैल के चमड़े की बनी हुई पानी भरने की मशक; धौंकनी।

पखाली पुं. भिश्ती, भरनेवाला।

पखावज *स्त्री.* मृदंग से छोटा बाजा।

पखावजी पुं. {हिं. पखावज} पखावज या मृदंग बजानेवाला।

पखी (रा) पुं. पक्षी।

पखेरू पुं. {सं. पक्षालु} पक्षी, चिड़िया।

पखैव पुं. {हिं.} बच्चे जनने के बाद छः दिनों तक गाय या भैंस को पिलाने का मसालेदार झोल।

पखौआ पुं. {हिं.} पंख, पर।

पखौटा पुं. {हिं.} डैना, पर, छोटा पाँव।

पखौरा पुं. {हिं.} कंधे पर की हड्डी।

पग पुं. {सं. पद} पैर, पाँव।

मुहा. पग रोपना = कोई प्रतिज्ञा करके किसी जगह पैर रखना या अड़ाना।

चलने में एक जगह पैर उठाकर दूसरी जगह रखना, डग, फाल।

पद पग-पग पर = बहुत ही थोड़ी-थोड़ी दूरी या देर पर, कदम-कदम पर।

पगडंडी *स्त्री.* {हिं. पग + डंडी} जंगलों या खेतों में का वह पतला रास्ता जो लोगों के आने-जाने से बन जाता है।

पगड़ी *स्त्री.* {सं. पटक} सिर पर लपेटकर बाँधा जानेवाला प्रसिद्ध लंबा कपड़ा, पाग, साफा, उष्णीश।

मुहा. (किसी से) पगड़ी अटकना = मुकाबला होना; *पगड़ी उछालना* = बेइज्जत करना; *पगड़ी उतारना* = लूटना, ठगना; *(किसी के सिर) पगड़ी बँधना* = पद, स्थान या अधिकार मिलना; किसी बात का श्रेय या सम्मान प्राप्त होना;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(किसी के साथ) पगड़ी बदलना = भाई का नाता जोड़ना।

वह धन जो मालिक अपना मकान या दुकान किराए पर देने के समय किराए के अतिरिक्त यों ही ले लेता है, नजराना।

पगतरी *स्त्री.* {हिं. पग + तल} जूता।

पगदासी *स्त्री.* {हिं. पग + दासी} जूता; खड़ाऊँ।

पगना *अ.* {सं. पाक} किसी बात के रस या व्यक्ति के प्रेम से पूर्ण होना।

पगपान *पुं.* {सं.} पैर में पहनने का एक गहना।

पगरना *पुं.* {हिं.} नक्काशी करनेवाला का एक अस्त्र।

पगबाधा *स्त्री.* {हिं. पग + बाधा} क्रिकेट के खेल में गेंद के विकेट से लगने में पैर से पहुँचाई हुई बाधा।

पगरा[1] *पुं.* पग।

पगरा[2] *पुं.* {फा. पगाह} प्रभात, तड़का।

पगला *वि. पुं.* पागल।

पगहा *पुं.* पघा।

पगा *पुं.* {हिं.} पगड़ी, दुपट्टा।

पगाना *स.* {सं. पाक} पगने में प्रवृत्त करना।

पगार[1] *पुं.* {सं. प्राकार} चहार-दीवारी, परकोटा।

पगार[2] *पुं.* {हिं. पग + गारना} पैरों से कुचली हुई मिट्टी या गारा; वह नाला या नदी जिसमें इतना कम पानी हो कि पैदल चलकर उसे पार कर सकें।

उदा. जल कै पगार, निज दल के सिंगार, अरि . . .–केशव।

पगार[3] *पुं.* {हिं. पगड़ी} पगड़ी के ऊपर बाँधा जानेवाला एक प्रकार का आभूषण, सिरपेच।

पगारना *क्रि. स.* {हिं.} फैलाना।

पगिआना *स.* पगाना।

पगिया *स्त्री.* पगड़ी।

पगुराना *अ.* {हिं. पागुर} पागुर या जुगाली करना; जुगाली।

पघा *पुं.* {सं. प्रग्रह} गाय-भैंसों के गले में बाँधी जानेवाली मोटी रस्सी, पगहा।

पचकना *अ.* पिचकना।

पचक *पुं.* {हिं.} कट नामक गुल्म।

पचखना *हिं.* {*वि.*} पाँच खंडवाला।

पचतूरा *पुं.* {हिं.} एक बाजा।

पचड़ा *पुं.* {हिं. प्रपंच + ड़ा (प्रत्य.)} झंझट, बखेड़ा, पँवाड़ा, प्रपंच; वह गीत, जो ओझा लोग देवी आदि के सामने गाते हैं; लावनी की तरह का एक प्रकार का गीत।

पचन *पुं.* {सं.} पचने या पकने की क्रिया या भाव।

पचना *अ.* {सं. पचन} खाई हुई वस्तु का हजम होना; समाप्त या नष्ट होना; पराया माल इस प्रकार हाथ में आ जाना कि अपना हो जाए; परिश्रम करके हैरान होना।

मुहा. पच मरना = किसी काम के लिए बहुत अधिक परिश्रम करना।

एक वस्तु का दूसरी वस्तु में पूरी तरह लीन होना, समाना; खपना।

पचनागार *पुं.* {सं.} रसोईघर।

पचमेल *वि.* = पंचमेल।

पचवना *स.* पचाना; पकाना।

पचपन *वि.* {हिं.} पचास और पाँच की संख्या, 55.

पचवाई *स्त्री.* {हिं.} अन्न की बनी शराब (मदिरा)।

पचहरा *वि.* {हिं. पाँच + हरा (प्रत्य.)} पाँच परतों या तहोंवाला; पाँच बार का; पँचगुना।

पचाना *स.* {हिं. पचना} 'पचना' का सकर्मक रूप, हजम करना; समाप्त, नष्ट या क्षीण करना; पराया माल लेकर हजम कर जाना; परिश्रम कराके या कष्ट देकर किसी के शरीर, मस्तिष्क आदि का क्षय करना; एक वस्तु का दूसरी वस्तु को अपने आप में आत्मसात या लीन करना।

पचारना *स.* {सं. प्रचारण} लड़ने के लिए ललकारना।

पचास *वि.* {सं. पंचदश} चालीस से दस अधिक, पचीस का दूना; *पुं.* उक्त संख्या का सूचक अंक।

पचासा *वि.* {हिं. पचास} एक ही प्रकार की पचास वस्तुओं का समूह; पचास वर्षों की आयु या अवस्था; वह घंटा जो किसी विकट अवसर पर सब सिपाहियों को थाने में बुलाने के लिए बजाया जाता है।

पचासो, पचासों *वि.* {हिं. पचास} कई पचास; पचास से बहुत अधिक, जैसे पचासों आदमी, पचासों काम।

पचित *वि.* {सं. पचित = पचा हुआ} पचा हुआ; पच्ची किया या जड़ा हुआ।

पचीसी *स्त्री.* {हिं. पचीस} एक ही प्रकार की 25 वस्तुओं का समूह; आयु के प्रारंभिक 25 वर्ष; वह गणना जिसमें सैकड़ा पचीस गाहियों अर्थात् 125 चीजों का माना जाता है; चौसर का एक प्रकार का खेल, जो कौड़ियों से खेला जाता है; चौसर खेलने की बिसात।

पचूका *पुं.* {हिं.} पिचकारी।

पचौनी *स्त्री.* {हिं. पचना} पेट के अंदर की वह थैली, जिसमें भोजन पचता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पच्चड़, पच्चर पुं. {सं. पचित या पच्ची} लकड़ी की वह गुल्ली जो काठ की चीजों को कसने के लिए उनमें ठोकी जाती है।

पच्ची *स्त्री.* {सं. पचित} पचने या पचने की क्रिया या भाव, जैसे सिरपच्ची; जड़ाव का एक प्रकार, जिसमें जड़ी जानेवाली वस्तु अच्छी प्रकार जमकर बैठ जाती है।

पच्चीकारी *स्त्री.* {हिं. पच्ची + फा. कारी} पच्ची करने की क्रिया या भाव; पच्ची करके तैयार किया हुआ काम।

पच्छ पुं. {सं. पक्ष्म} आँखों की बरौनी या पलक; पुं. = पक्ष; = पंख (सर)।

पच्छताई *स्त्री.* = पक्षपात।

पच्छिम पुं. = पश्चिम।

पच्छिराज पुं. {सं. पक्षिराज} गरुड़।

पच्छि पुं. {*स्त्री.* पच्छिनी} पक्षी।

पच्य *वि.* {सं.} पकाने योग्य।

पछ पुं. पक्ष; पक्षपात।

पछड़ना *अ.* {हिं. पछाड़ना} पछाड़ा या पटका जाना; पिछड़ना।

पछताना *अ.* {हिं. पछतावा} अपने किए हुए किसी अनुचित कार्य के संबंध में पीछे से मन में दुखी या खिन्न होना, पश्चात्ताप करना।

पछतानि *स्त्री.* = पछतावा।

पछतावा पुं. {सं. पश्चात्ताप} पछताने की क्रिया या भाव, पश्चात्ताप।

पछना *अ.* हिं. 'पाछना' का *अ.*; पुं. पाछने का औजार; फसद।

पछमन *क्रि. वि.* {हिं. पीछे} पीछे।

पछरना *क्रि.* {हिं. सं.} लौटना, पछड़ना।

पछरा पुं. {हिं.} पछाड़।

पछलगा *वि.* पिछलगा।

पछवाँ *वि.* {सं. पश्चिम} पश्चिम का।

पछाँह पुं. {सं. पश्चिम} {*वि.* पछाँहियाँ, पछाँहीं} पच्छिम की ओर का देश; पछाँहिया, पछाँही।

पछाड़ *स्त्री.* {हिं. पछाड़ना} पछाड़ने या पछड़ने की क्रिया या भाव; बेसुध या मूर्छित होकर गिर पड़ना।

पछाड़ना[1] *स.* {हिं. पीछे} कुश्ती में विपक्षी को जमीन पर पटकना या गिराना; प्रतियोगिता में विपक्षी को हराना।

पछाड़ना[2] *स.* {सं. प्रक्षालन} कपड़ा धोते समय उसे जोर से बार-बार पटकना।

पछानना *स.* पहचानना।

पछाया पुं. {हिं.} वस्तु का पिछला भाग।

पछारना *क्रि.* {हिं. *स.*} कपड़े को पटककर धोना।

पछावर *स्त्री.* {देश.} एक प्रकार का शिखरन या शरबत; छाछ का बना हुआ एक प्रकार का पेय पदार्थ, जो भोजन के अंत में दिया जाता है।

पछावरि *स्त्री.* {हिं.} पेय, सिखरन।

पाछिआवर *स्त्री.* पछावर।

पछिला *वि.* = पिछला।

पछेत *क्रि. वि.* {हिं. पीछे} पीछे की ओर।

पछेलना *अ.* पीछे छोड़ना।

पछेली *स्त्री.* {हिं. पीछे + एली (प्रत्य.)} हाथ में पहनने का स्त्रियों का एक गहना।

पछोड़न *स्त्री.* {हिं. पछोड़ना} अनाज आदि का वह कूड़ा-करकट जो उन्हें पछोड़ने पर निकलता है।

पछोड़ना *स.* {सं. प्रच्छालन} अनाज के दानों के सूप में रखकर उन्हें फटककर साफ करना, फटकना।

पछ्यावर *स्त्री.* पछावर।

पजर पुं. {हिं.} टपकने की क्रिया।

पजरना *अ.* {हिं. पजारना} जलना।

पजारना *स.* {सं. प्रज्वलन} जलाना।

पजावा पुं. {फा. पज़ाव:} मिट्टी के बरतन या ईंट पकाने का भट्ठा, आँवाँ।

पजोखा पुं. {?} मातमपुरसी।

पटंबर पुं. {सं. पाट + अंबर} रेशमी कपड़ा, कौषेय।

पट[1] पुं. {सं.} वस्त्र, कपड़ा; वह कपड़ा, जो किसी वस्तु, स्थान, दृश्य आदि के आगे उसे लोगों की दृष्टि से बचाने के लिए डाला जाता है, फलत: कोई आड़ करनेवाली चीज, परदा, जैसे चित्रपट, धूमपट, रजतपट आदि (कर्टेन, सक्रीन); धातु आदि का वह लंबा-चौड़ा या पट्टी जिस पर चित्र या लेख अंकित होता है।

पट[2] पुं. {सं. पट्ट} दरवाजे का पल्ला।

मुहा. पट उघड़ना या खुलना = दर्शन के लिए मंदिर का दरवाजा खुलना।

सिंहासन; समतल भूमि।

पट[3] *वि.* {अनु.} भूमि पर पेट के बल लेटा हुआ, 'चित्त' का उलटा, औंधा।

मुहा. पट पड़ना = मंद पड़ना, न चलना, जैसे रोजगार पट पड़ना।

पट[4] *क्रि. वि.* 'चट' का अनुकरण, तुरंत।

पटइन *स्त्री.* {हिं. पटवा} 'पटवा' जाति की या गहने गूँथनेवाली स्त्री।

पटक पुं. {सं.} शिविर तंबू, सूती कपड़ा।

पटकन *स्त्री.* {हिं. पटकना} पटकने की क्रिया या भाव; तमाचा; छड़ी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटकना *स.* {सं. पतन + करण} जोर से झोंका देते हुए नीचे की ओर गिराना; कुश्ती में प्रतिद्वन्द्वी को जमीन पर गिराना या पछाड़ना; *अ.* मचकना; दरकना; अंकुरित होना; सामने आना।

पटकनियाँ, पटकनी *स्त्री.* पटकन, पटकान, पछाड़।

पटका *पुं.* {सं. पट्टक} वह कपड़ा जो कमर में लपेटकर बाँधते हैं, कमरबंद।

पटकान *स्त्री.* {हिं. पटकना} पटकने, पटके जाने या गिरने की क्रिया या भाव।

पटकार *पुं.* {सं.} कपड़ा बननूवाला, जुलाहा।

पटकुटी *स्त्री.* {सं.} कपड़े का घर, तंबू।

पटखनी *स्त्री.* = पटकान।

पटचित्र *पुं.* {सं.} कपड़े पर बना हुआ ऐसा चित्र जो लपेटकर रखा जा सके।

पटझोल *पुं.* {हिं. पट + झोल} आँचल।

पटतर *पुं.* {सं. पट्ट + तल} समानता, बराबरी; उपमा; *वि.* समतल, चौरस।

पटतरना *अ.* {हिं. पटतर} उपमा देना; तुलना करना।

पटतारना[1] *स.* {हिं. पटा + तारना = अंदाज लगाना} चलाने के लिए अस्त्र या शस्त्र उटाना या खींचना।

पटतारना[2] *स.* {हिं. पटतर} ऊँची-नीची जमीन को समतल या चौरस करना।

पटताल *पुं.* {हिं.} मृदंग का एक ताल।

पटद *पुं.* {सं.} कर्पास, कपास, रुई।

पटना[1] *अ.* {हिं. पट = जमीन की सतह के बराबर} गड्ढे आदि का भरकर आस-पास के तल के बराबर हो जाना; किसी स्थान में किसी वस्तु का बहुत अधिक मात्रा में इकट्ठा होना; दीवारों पर छत बनना; खेत का सींचा जाना; विचारों या स्वभाव में समानता होने के कारण मेल या निर्वाह होना, बनना; लेन-देन आदि में मूल्य या शर्तें निश्चित होना; (ऋण) चुकना।

पटना[2] *पुं.* {सं. पट्टन} बिहार प्रांत के एक शहर का नाम।

पटनी *स्त्री.* {हिं. पटना = तै होना} वह जमीन को इस्तमरारी पट्टी पर मिली हो।

पटपट *स्त्री.* {अनु.} पटाकों के बजने का शब्द; बार-बार पटकने से होनेवाला शब्द।

पटपटाना *अ.* {हिं. पटकना} भूख-प्यास या गरमी आदि से बहुत कष्ट पाना, छटपटाना; पटपट शब्द होना; खेद या दुख प्रकट करना; *स.* पटपट शब्द उत्पन्न करना।

पटपटाहट *स्त्री.* = पटापट।

पटपर *वि.* {हिं. पट} समतल, चौरस; *पुं.* लंबा-चौड़ा और उजाड़ स्थान।

पट-बंधक *पुं.* {हिं. पटना + सं. बंधक} रेहन का वह प्रकार जिसमें रेहनदार रेहन रखी हुई वस्तु की आय में से अपना सूद लेने के बाद शेष मूल ऋण के हिसाब में जमा करता चलता है।

पटवास *पुं.* {हिं.} वस्त्र को सुगंधित करने का द्रव्य, इत्र।

पटबीजना *पुं.* जुगनूँ।

पटमंडप *पुं.* {सं.} तंबू, कपड़े का घर।

पटम *पुं.* {हिं.} अतिशय भूखा।

पटमय *पुं.* {सं.} तंबू, लहँगा।

पटरा *पुं.* {सं. पटल} {*स्त्री.* अल्पा. पटरी} काठ का अधिक लंबा और कम चौड़ा चौकोर और चौरस टुकड़ा, तख्ता।

मुहा. पटरा कर देना = मार-काटकर गिरा या बिछा देना; चौपट कर देना।

काठ का पीढ़ा; हेंगा, पाटा।

पटरानी *स्त्री.* {सं. पट्ट + रानी} वह प्रधान और पहली विवाहिता रानी जो राजा के साथ पट या सिंहासन पर बैठती हो, पाटमहिषी।

पटरी *स्त्री.* {हिं. पटरा} छोटा और हलका पटरा।

मुहा. पटरी जमना या बैठना = मन मिलना, पटना।

लिखने की तख्ती, पटिया; सड़क के दोनों किनारों के वे भाग जिन पर लोग पैदल चलते हैं; सुनहले या रूपहले तारों से बना हुआ फीता, जो कपड़ों पर टाँका जाता है; हाथ में पहनने की एक प्रकार की चूड़ी; लोहे के वे लंबे समानांतर छड़ जिन पर रेल के पहिए चलते हैं।

पटल *पुं.* {सं.} {*भाव.* पटलता} छप्पर; आवरण, परदा; परत, तह; पहल, पार्श्व; आँख की भीतरी बनावट का परदा; पटरा, तख्ता; परिच्छेद, अध्याय; पंखड़ी; समूह, झुंड।

पटलक *पुं.* {सं.} राशि, समूह, ढेर, वादा।

पटलता *स्त्री.* {सं.} अधिकता।

पटली *स्त्री.* {सं.} पंक्ति।

पटलन *पुं.* {सं.} पटल जमाने या चढ़ाने का कार्य।

पटवा[1] *पुं.* {सं. चाट + वाह (प्रत्य.)} {*स्त्री.* पटइन} वह जो गहनों के मनकों या दानों आदि को सूत या रेशम में गूँथने या पिराने का काम करता हो, गुहेरा।

पटवा[2] {सं. पाट} पटसन, पाट।

पटवाद्य *पुं.* {सं.} झाँझ की तरह का बाजा।

पटवाना *क्रि.* {हिं. सं.} पाटने का काम दूसरे से कराना, छपवाना, पानी से सिंचवाना।

पटवाप *पुं.* {सं.} तंबू।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटवारी¹ पुं. {सं. पट्ट + हिं. वार} वह सरकारी अधिकारी जो गाँव की जमीन, उपज और लगान आदि का हिसाब-किताब रखता है।

पटवारी² *स्त्री.* {सं. पट + वारी (प्रत्य.)} रानियों को कपड़े और गहने पहनानेवाली दासी।

पटवास पुं. {सं.} खेमा, तंबू; स्त्रियों का लहँगा।

पटसन पुं. {सं. पाट + हिं. सन} एक प्रसिद्ध पौधा जिसके रेशे से रस्सी बोरे, टाट आदि बनते हैं; इस पौधे के रेशे, पाट, जूट।

पटह पुं. {सं. मि. तामिल परै = ढोल} दुन्दुभी, नगाड़ा।

पटहार पुं. पटवा।

पटा¹ पुं. {सं. पट्ट} लोहे की वह पट्टी जिससे लोग तलवार का वार और उसका बचाव करना सीखते हैं।

पटा² पुं. {सं. पट्ट} पीढ़ा, पटरा।

मुहा. पटा बाँधना = राजा का किसी रानी को अपनी पटरानी बनाना।

पटा³ पुं. {सं. पट} वस्त्र, कपड़ा; दुपट्टा; पगड़ी।

पटा⁴ पुं. {हिं. पटना} सौदा पटने की क्रिया या भाव; चौड़ी लकीर, धारी; पट्टा।

पटाई *स्त्री.* {हिं. पटना} पाटने या पटाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पटाक पुं. {हिं.} छोटी वस्तु के गिरने का शब्द।

पटाका पुं. {हिं. पट (अनु.)} पट या पटाक शब्द; ऐसे शब्द से छूटनेवाली गोली के आकार की एक छोटी आतिशबाजी; तमाचा, थप्पड़।

पटाखा पुं. {हिं.} पटाका।

पटाक्षेप पुं. {सं.} नाटक में एक दृश्य समाप्त होने पर (उसका सूचक) गिरनेवाला परदा; किसी घटना की समाप्ति की क्रिया या भाव, जैसे चार वर्ष बाद युद्ध का पटाक्षेप हुआ।

पटान¹ *स्त्री.* {हिं. पटाना = ऋण चुकाना} ऋण आदि चुकाने की क्रिया या भाव।

पटान² *स्त्री.* {हिं. पाटना} पाटने की क्रिया या भाव; वह अंश जो गड्ढे, छत आदि पाटकर उसके ऊपर छत या पाटन के रूप में तैयार किया जाता है।

पटाना *स.* {हिं. पट = समतल} पाटने का काम दूसरे से कराना; ऋण चुकाना; सौदा या उसका दाम ठीक करना; किसी को अपने ऊपर प्रसन्न या अपने अनुकूल करना। *अ.* शांत होकर बैठना।

पटापट *क्रि. वि.* {अनु.} लगातार पटपट शब्द के साथ।

पटापटी *स्त्री.* {अनु.} कई तरह के रंगों, बेल-बूटों, फूल-पत्तों आदि से बनी हुई कोई चीज, जैसे पटापटी की गोट या पटापटी का परदा।

उदा. बाँधी बंदनवार विविध बहु पटापटी की–रत्नाकर।

पटाव पुं. {हिं. पाटना} पाटने की क्रिया या भाव; पाटकर समतल या ऊँचा किया हुआ अंश या स्थान।

पटिया *स्त्री.* {सं. पट्टिका} पत्थर का चौकोर या लंबोतरा चौरस कटा हुआ टुकड़ा, फलक; खाट के चौखटे में बगल की लंबी लकड़ी, पट्टी।

पटी *स्त्री.* {सं. पट} कपड़े आदि की लंबी धज्जी, पट्टी; कमरबंद, पटका; सिर पर बाँधने की पगड़ी, साफा; नाटक का परदा, यवनिका।

पटीमा पुं. {हिं.} छीपियों का वह पटरा, जिस पर कपड़े को फैलाकर उसे छापते हैं।

पटीर पुं. {सं.} ऊँचाई, मेघ, बादल, वंशलोचन, मूली, चंदन।

पटीलना *स.* {हिं. पटाना} किसी को इधर-उधर की बातें समझाकर अपने अर्थसाधन के अनुकूल करना, ढंग पर लाना; ठगना, छलना।

पटु *वि.* {सं.} {*भाव.* पटुता} प्रवीण, निपुण, कुशल, दक्ष; चतुर, चालाक, होशियार।

पटुआ पुं. {सं. पाट} पटसन; पटवा; कफरेमु।

पटुआ पुं. पटका, परवल।

पटुका पुं. {हिं.} कंधे पर का वस्त्र, धारीदार वस्त्र, चादर।

पटुता *स्त्री.* {सं.} दक्षता, प्रवीणता।

पटुत्व पुं. {सं.} पटुता, दक्षता।

पटुपत्रिका *स्त्री.* {सं.} पिण्डखजूर।

पटुपर्णी *स्त्री.* {सं.} सत्यानासी, कटेरी।

पटुरूप *वि.* {सं.} बहुत चतुर या दक्ष।

पटुवा पुं. {हिं.} पटसन, जूट, शाक, करेमू।

पटे *वि.* {हिं. पटना = चुकाया जाना} (देन आदि) जो चुका दिया गया हो, चुकता किया हुआ।

पटेबाज पुं. {हिं. पटा + फा. बाज} पटा खेलनेवाला, पटैत; *वि.* व्यभिचारी और धूर्त।

पटेल पुं. {हिं. पट्टा + एल (प्रत्य.)} गुजरात, मध्य प्रदेश आदि में गाँव का नम्बरदार या मुखिया।

पटोर पुं. {हिं.} पटोल, रेशमी कपड़ा।

पटोरी *स्त्री.* {सं. पट + ओरी (प्रत्य.)} रेशमी साड़ी या धोती; रेशमी चादर।

पटोला पुं. = पटोल (वस्त्र)।

पटोलरी पुं. = पटोल।

पटोसिर पुं. {हिं. पट + सिर} सिर पर बाँधने का कपड़ा, जैसे साफा या पगड़ी (ब्रज.)।

पटौधन पुं. {हिं. पटना} ऋण आदि का परिशोध, कर्ज चुकना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटौनी *स्त्री.* {हिं. पटना} पटने या पाटने की क्रिया या भाव।

पटौहाँ *पुं.* {हिं. पटना} पटा हुआ स्थान, पाटन; पट-बंधक।

पट्ट[1] *पुं.* {सं.} पीड़ा, पाटा; पटरी, तख्ती; धातु की वह चिपटी पट्टी जिस पर राजाज्ञा या दान आदि की सनद खोदी जाती थी; काठ या धातु का वह बड़ा टुकड़ा, जिस पर नाम आदि या सूचनाएँ लिखी या लगाई जाती हैं, जैसे नामपट्ट, सूचनापट्ट आदि (बोर्ड); किसी वस्तु का ऊपरी चिपटा या चौरस भाग; ढाल; पगड़ी, दुपट्टा आदि वस्त्र; नगर; राज-सिंहासन; तलवार का वार रोकने की ढाल; पट्टा।

पट्ट[2] *वि.* {सं.} मुख्य, प्रधान जैसे पट्ट शिष्य।

पट्ट[3] *वि.* {अनु.} पट।

पट्टक *पुं.* = पट्ट।

पट्टन *पुं.* {सं.} नगर।

पट्टमहिषी *स्त्री.* {सं.} पटरानी।

पट्टदेवी *स्त्री.* {हिं.} पटरानी।

पट्टरंग *पुं.* {सं.} पतंग, बक्कम।

पट्टराज्ञी *स्त्री.* {सं.} प्रधान रानी।

पट्टा *पुं.* {सं. पट्ट} किसी स्थावर संपत्ति या भूमि के उपभोग का वह अधिकार-पत्र जो स्वामी की ओर से असामी या ठेकेदार को मिलता है। (लीज); कोई अधिकार-पत्र सनद; चमड़े आदि का वह तस्मा जो कुत्तों, बिल्लियों आदि के गले में पहनाया जाता है; पीढ़ा; पीछ या दाहिने-बाएँ गिरे और बराबर कटे हुए कुछ लंबे बाल; चमड़े का कमरबंद, पेटी; एक प्रकार की तलवार; लड़ाई के समय का पैंतरा।

पट्टिका *स्त्री.* {सं.} पठानी लोघ, चित्रपट, छोटी पटरी।

पट्टिकार *वि.* {सं.} रेशमी कपड़ा बुननेवाला।

पट्टिश *पुं.* {सं.} एक प्रकार का खाँड़ा जिसके फल के दोनों ओर धारें होती हैं।

पट्टी *स्त्री.* {सं. पट्टिका} लकड़ी की वह तख्ती या पटरी, जिस पर बच्चे लिखने का अभ्यास करते हैं, पाटी, पटिया, तख्ती; पाठ, सबक; उपदेश, शिक्षा; बुरी नीयत से दी जानेवाली सलाह; धातु, लकड़ी, कागज, कपड़े आदि की लंबी धज्जी, जैसे पलंग या खाट की पट्टी, घाव पर बाँधने की पट्टी; एक ही चीज में अथवा बीच में कुछ इधर-उधर होकर कुछ दूर तक जानेवाली कोई कम चौड़ी और अधिक लंबी वस्तु या भूभाग, जैसे दुकानों की पट्टी, जंगल या पहाड़ की पट्टी (बेल्ट); तिल, दाल आदि को चाशनी में पागकर बनाई जानेवाली एक प्रकार की मिठाई; सिर की माँग के दोनों ओर, कंघी से बैठाए हुए बाल जो देखने में पट्टी की तरह जान पड़ते हैं, पाटी, पटिया; किसी संपत्ति या उससे होनेवाली आय का भाग या अंश, हिस्सा, पत्ती।

पट्टीदार *पुं.* {हिं. पट्टी + फा. दार} वह जिसका किसी संपत्ति या आय में हिस्सा या पट्टी हो, हिस्सेदार; बराबर का अधिकारी।

पट्टीदारी *स्त्री.* {हिं.} भू-संपत्ति के अंश-विभाग, भाईचारा।

पट्टीश *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।

पट्टू *पुं.* {हिं. पट्टी} एक प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा।

पट्टेदार *पुं.* {हिं. पट्टा + फा. दार} वह जिसने पट्टा लिखाकर कोई जमीन ली हो (लीसी)।

पट्टे-पछाड़ *पुं.* {हिं.} मल्लयुद्ध की युक्ति।

पट्टैत *पुं.* {हिं.} पटैत, मूर्ख, कबूतर।

पठ्ठमान *वि.* {सं. पठ्यमान} पढ़ने योग्य।

पठ्ठा *पुं.* {सं. पुष्ट, प्रा. पुट्ठ} {*स्त्री.* पठिया} जवान, तरुण, पाठा; कुश्तीबाज, अखाड़िया; मांसपेशियों को आपस में अथवा हड्डियों के साथ जोड़नेवाले मोटे तंतु या नसें, स्नायु; लंबा और दलदार मोटा पत्ता, जैसे घीकुँआर का पट्टा; एक प्रकार का चौड़ा गोटा।

पठक *पुं.* {सं.} पाठक, पढ़नेवाला।

पठन *पुं.* {सं.} {*वि.* पठनीय} पढ़ना।

पठनीय *वि.* {सं.} पढ़ने के योग्य; पढ़े जाने के योग्य।

पठनेटा *पुं.* {हिं. पठान + एटा = बेटा (प्रत्य.)} पठान का लड़का।

पठवना *स.* = भेजना।

पठान *पुं.* {पश्तो पख्तून या पुख्ताना} {*वि. स्त्री.* पठानी} अफगानिस्तान और पश्चिमी सीमांत प्रदेश आदि में बसनेवाली एक योद्धा मुसलमान जाति।

पठन *पुं.* {सं.} अध्यापन, पढ़ना।

पठनीय *वि.* {सं.} पढ़ने योग्य।

पठनेटा *पुं.* {हिं.} पठान का पुत्र।

पठमंजरी *स्त्री.* {सं.} एक रागिनी।

पठवना *क्रि.* {हिं. सं.} भेजना।

पठाना *स.* = भेजना; पठवाना।

पठार *पुं.* {सं. पृष्ठ + घर} भूगोल में वह लंबा-चौड़ा ऊँचा मैदान, जो आस-पास की किसी ओर की जमीन से बहुत ऊँचाई पर हो (प्लेटो); एक पहाड़ी जाति।

पठावन *पुं.* {हिं. पठाना} दूत।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पठावनि (नी) *स्त्री.* {हिं. पठाना} किसी को कोई चीज या संदेशा पहुँचाने के लिए कहीं भेजने की क्रिया या भाव।

पठावर *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार की घास।

पठित *वि.* {सं.} पढ़ा हुआ, जिसे पढ़ चुके हों; जिसने कुछ पढ़ा हो, पढ़ा-लिखा, शिक्षित (अशुद्ध प्रयोग)।

पठिया *स्त्री.* {हिं. पट्ठा + इया (प्रत्य.)} जवान और तगड़ी स्त्री।

पठौनी *स्त्री.* पठावनि।

पड़छत्ती *स्त्री.* परछत्ती।

पड़त *स्त्री.* {सं.} पड़ता।

पड़ता *पुं.* {हिं. पड़ना} किसी चीज की खरीद, लागत, ढुलाई आदि पर व्यय होनेवाल धन और उसका हिसाब जिसके विचार से उसका मूल्य निश्चित होता है।

मुहा. पड़ता खाना, पड़ना या बैठना = ऐसी स्थिति होना जिसमें लागत, दाम और कुछ लाभ मिल जाए, खर्च और मुनाफा निकल आना; *पड़ता फैलाना या बैठाना* = लागत आदि का हिसाब लगाना; *पड़ते से* = फैलाने से जो हिसाब, दर या भाव आए, उसके अनुसार।

लगान की दर।

पड़ताल *स्त्री.* {सं. परितोलन} {*क्रि.* पड़तालना} किसी वस्तु या बात के ठीक होने की जाँच, अनुसंधान। (चैकिंग); पटवारी द्वारा खेतों और उन्हें जोतनेवालों के लेखे की एक प्रकार की जाँच।

पड़तालना *क्रि.* {हिं. सं.} छानबीन करना।

पड़ती *स्त्री.* {हिं. पड़ना} जोतने-बोने योग्य वह जमीन, जो कुछ समय के लिए खाली पड़ी हो, जोती-बाई न गई हो।

पड़ना *अ.* {सं. पतन} ऊँची जगह से अचानक नीचे आ गिरना, पतित होना; दुख, कष्ट, भार आदि ऊपर आना, जैसे मुसीबत पड़ना।

मुहा. किसी पर पड़ना = किसी पर विपत्ति या संकट आना; किसी पर कार्य का भार या उत्तरदायित्व आना।

ठहरना, टिकना; विश्राम के लिए लेटना या सोना, आराम करना; बीमार होकर बिस्तर पर रहना; प्राप्त होना, मिलना; आय, लाभ आदि का हिसाब ठीक बैठना, पड़ता बैठना या लागत मिलना; रास्ते में होना, मार्ग में मिलना, जैसे रास्ते में नदी पड़ना; उपस्थित होना।

मुहा. बीच में पड़ना = समझौता कराने या हस्तक्षेप करने के लिए सामने या बीच में आना।

आवश्यकता या गरज होना, जैसे हमें क्या पड़ी, जो हम बीच में बोलें।

पड़पड़ *स्त्री.* {हिं.} निरंतर पड़पड़ाने का शब्द।

पड़पड़ाना *अ.* {अनु.} पड़पड़ शब्द होना; परपराना।

पड़पोता *पुं.* परपोता, पोते का पुत्र।

पड़वा[1] *स्त्री.* प्रतिपदा प्रत्येक पक्ष की पहली तिथि।

पड़वा[2] *पुं.* {देश.} {*स्त्री.* पड़िया} भैंस का नर बच्चा।

पड़वाना *क्रि.* {हिं. सं.} गिरवाना।

पड़ा *पुं.* {हिं.} भैंस का बच्चा, पँड़वा।

पड़ाना *क्रि.* {हिं. सं.} झुकाना, गिराना।

पड़ाव *पुं.* {हिं. पड़ना = बैठना या लेटना + आव (प्रत्य.)} पैदल यात्रा के समय कहीं बीच में कुछ समय या कुछ दिनों के लिए ठहरना; वह स्थान जहाँ इस प्रकार यात्री ठहरते हैं।

पड़िया *स्त्री.* {सं. पड़वा} भैंस का मादा बच्चा।

पड़िहार *पुं.* {सं. प्रतिहार} राजपूतों की एक शाखा का नाम।

पड़ोस *पुं.* {सं. प्रतिवेश या प्रतिवास} किसी स्थान के आसपास का स्थान।

मुहा. पड़ोस करना = पड़ोस में बसना।

पड़ोसी *पुं.* {हिं. पड़ोस} {*स्त्री.* पड़ोसिन} पड़ोस में रहनेवाला।

पढ़ंत *स्त्री.* पढ़ाई; पढ़ने की क्रिया।

पढ़त *स्त्री.* {हिं. पढ़ना} पढ़ने की क्रिया या भाव, पढ़ाई; मंत्र; जादू।

पढ़ना *स.* {सं. पठन} पुस्तक या लेख आदि में लिखी हुई बातें या विषय इस प्रकार देखना कि उनका ज्ञान हो जाए; शिक्षा या ज्ञान प्राप्त करने के लिए ग्रंथ आदि कई बार देखना, अध्ययन करना; लेख के शब्दों का उच्चारण करना, बाँचना; किसी को सुनाने के लिए स्मरण शक्ति से मंत्र, कविता आदि कहना; मंत्र पढ़कर फूँकना, जादू करना; तोते, मैना आदि का मनुष्यों के सिखाए हुए शब्दों का उच्चारण करना।

पढ़नी *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का धान।

पढ़वाना *स.* हिं. पढ़ाना का प्रे.।

पढ़वैया *वि.* {हिं. पढ़ना + वैया (प्रत्य.)} पढ़ने या पढ़ानेवाला।

पढ़ाई[1] *स्त्री.* {हिं. पढ़ना + आई (प्रत्य.)} शिक्षा प्राप्त करने के लिए पढ़ने का काम, विद्याभ्यास, पठन; पढ़ने का काम, भाव या ढंग; पढ़ने के बदले में मिलनेवाला धन।

पढ़ाई[2] *स्त्री.* {हिं. पढ़ाना + आई (प्रत्य.)} पढ़ाने का काम या भाव, अध्यापन; पढ़ाने का ढंग,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापन शैली; पढ़ाने के बदले में मिलनेवाला धन।

पढ़ाना *स.* {हिं. पढ़ाना का प्रे.} किसी को पढ़ने या सीखने में प्रवृत्त करना, अध्यापन करना, शिक्षा देना; कोई कला या हुनर सिखाना; तोते, मैना, कोयल आदि पक्षियों को मनुष्यों की बोली बोलना सिखाना; शिक्षा देना, सिखाना, समझाना।

पढ़िना *स्त्री.* पहिना (मछली)।

पढ़ैया *पुं.* {हिं. पढ़ना} पढ़नेवाला; *स्त्री.* पढ़ने-पढ़ने की क्रिया या भाव।

पढ़ैला *वि.* {हिं. पढ़ना + ऐला (प्रत्य.)} पढ़ा-लिखा, शिक्षित; जो सब प्रकार से बुरी बातें सीख चुका हो, बहुत बड़ा धूर्त और दुष्ट। **उदा.** लोभी, लौंद, मुकरवा, झगरू, बड़ी पढ़ैलो लूटा–**सूर** (ब्रज.)।

पण *पुं.* {सं.} हार-जीत की वह बात या लेख जिसमें बाजी बदी या लगाई जाए; लेख्य या ठेके आदि की शर्त (टर्म, कन्डिशन); वह चीज जिसके देने का करार या शर्त हो, जैसे किराया, शुल्क, मूल्य आदि; संपत्ति, जायदाद; क्रय-विक्रय की वस्तु; व्यापार या व्यवसाय; प्राचीन काल का ताँबे का एक सिक्का।

पण-ग्रंथि *पुं.* {सं.} हाट।

पणन *पुं.* {सं.} व्यापार करने की क्रिया।

पणनीय *वि.* {सं.} खरीदने या बेचने योग्य।

पणफर *पुं.* {सं.} ज्योतिष में जन्मकुंडली का दूसरा, पाँचवाँ, आठवाँ व ग्यारहवाँ घर।

पणबंध *पुं.* {सं.} बाजी लगाना।

पणव *पुं.* {सं.} छोटा नगाड़ा, छोटा ढोल।

पणश *पुं.* {सं.} कटहल।

पणस *पुं.* {सं.} बिक्री की वस्तु।

पणि *स्त्री.* {सं.} हाट।

पणाया *स्त्री.* {सं.} किसी प्रकार का आदान-प्रदान या लेन-देन (ट्रैन्ज़ैक्शन)।

पण्य *वि.* {सं.} जो खरीदा या बेचा जा सके; *पुं.* सौदा, माल; व्यापार, रोजगार; बाजार, हाट; दुकान।

पतंग¹ *पुं.* {सं.} पक्षी, चिड़िया; शलभ, टिड्डी; भुनगा, फतिंगा; सूर्य।

पतंग² *पुं.* {सं. पत्रंग} एक प्रकार का बड़ा वृक्ष, जिससे लाल रंग निकलता है।

पतंग³ *पुं.* {सं. पतंग = उड़नेवाला} कागज का एक प्रसिद्ध खिलौना, गुड्डी, कनकौआ।

पतंगबाज *पुं.* {हिं. पतंग + फा. बाज़} {*भाव.* पतंगबाजी} वह जिसे पतंग या गुड्डी उड़ाने का व्यसन हो।

पतंगम *पुं.* {सं. पतंग} पक्षी, चिड़िया; फतिंगा, पतंगा।

पतंचिका *स्त्री.* {सं.} धनुष की डोरी या ताँत, चिल्ला।

पत¹ *पुं.* {सं. पति} पति, खसम; मालिक, स्वामी।

पत² *स्त्री.* {सं. प्रतिष्ठा} प्रतिष्ठा, इज्जत।

मुहा. पत उतारना या लेना = बेइज्जती करना। पत रखना = इज्जत बचाना।

पतछीन *वि.* {हिं. पत्ता + क्षीण} (वृक्ष) जिसके पत्ते झड़ गए हों, बिना पत्तों का।

पतझड़ *स्त्री.* {हिं. पत = पत्ता + झड़ना} वह ऋतु जिसमें प्रायः पत्तियाँ झड़ जाती और नई निकलती हैं, फागुन और चैत के महीने; अवनति-काल।

पतझड़ी *वि.* पतझड़-संबंधी।

पतझार *स्त्री.* पतझड़।

पतन *पुं.* {सं.} {*वि.* पतनशील, पतित, पतनीय} ऊपर से नीचे आने य गिरने की क्रिया या भाव, गिरना; उन्नत अवस्था, वैभव, ऊँचे पद, मर्यादा आदि से गिरकर बहुत नीचे स्तर पर आना, अवनति, अधोगति; लड़ाई के समय किले, नगर आदि का अपने हाथ से निकलकर शत्रु के सैनिकों के हाथ में चला जाना। (फॉल; उक्त तीनों अर्थों के लिए) मृत्यु; जाति से निकाला जाना।

पतना *अ.* {सं. पतन} गिरना।

पतनोन्मुखी *वि.* {सं.} जो गिरने को तो; जिसका पतन या दुर्गति समीप आ रही हो।

पतनोन्मुख *वि.* {सं. पतनोन्मुखिन्} पतनोन्मुखी।

पत-पानी *स्त्री.* = प्रतिष्ठा।

पतर¹ *वि.* {हिं. पतला} पतला, कृश।

पतर² *पुं.* {सं. पत्र} पत्ता; पत्तल।

पतला *वि.* {सं. पत्रालः} {*भाव.* पतली, पतलापन} कम घेरे, लपेट मोटाई या चौड़ाईवाला, 'मोटा' का उलटा; जिसका घेर या तल स्थूल या मोटा न हो, कृश; जो अधिक दलदार न हो, झीना, बारीक; जिसमें जल का अंश अधिक हो, अधिक तरल, 'गाढ़ा' का उलटा; जैसा या जितना होना चाहिए, उससे कम, जैसे फसल या उसका अनाज पतला होना; अशक्त, असमर्थ।

पतला हाल *पुं.* निर्धनता और विपत्ति की अवस्था।

पतलून *स्त्री.* {अं. पैंटलून} अंग्रेजी ढंग का एक प्रकार का पाजामा।

पतवार¹ *स्त्री.* {सं. पात्रपाल} नाव या जहाज का वह तिकोना पिछला अंग या उपकरण, जो आधा जल में और आधा बाहर होता है और जिसके सहारे नाव इधर-उधर घुमाई जाती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतवार² पुं. {हिं. पत्ता} पौधों, विशेषत: सरकंडे आदि की लंबी सूखी पत्तियाँ; कूड़ा-करकट, जैसे खर-पतवार।

पतई *स्त्री.* {हिं.} पत्र, पत्ती।

पतरु {सं. *वि.*} पतनशील, गिरनेवाला।

पता पुं. {हिं. प्रत्यय} ठिकाना या स्थान सूचित करनेवाली वह बात, जिससे किसी तक पहुँच या किसी को पा सकें; पत्र आदि के ऊपर लिखा हुआ किसी का नाम और रहने का स्थान आदि (एड्रेस) अनुसंधान, खोज, टोह; अभिज्ञता जानकारी; गूढ़ तत्व, रहस्य, भेद।

मुहा. पते का = वास्तव में ठीक उस स्थान का जिसका ज्ञान सब लोगों को न हो।

पद पते की बात = भेद प्रकट करने का वास्तविक स्वरूप बतलानेवाली बात।

पताई *स्त्री.* पतवार (वनस्पति)।

पताक *स्त्री.* पताका।

पताका *स्त्री.* {सं.} झंडा, ध्वजा, फरहरा (मुहावरों के लिए) झंडा के मुहा.; वह डंडा जिसमें झंडे का कपड़ा पहनाया रहता है, ध्वज; कागज आदि का वह छोटा टुकड़ा, जो किसी बड़े कागज पर उसकी ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए लगाया जाता है (फ्लैग); इस खरब की संख्या; नाटक का वह स्थल जहाँ एक पात्र कुछ सोचता रहता है और दूसरा पात्र आकर किसी और संबंध की कोई बात कहने लगता है।

पताका-वाहक पुं. {सं.} झंडा लेकर चलनेवाला।

पताकित *वि.* {सं.} जिसमें पताका लगी हो, पताका से युक्त; (कागज-पत्र) जिसमें विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट करने के लिए पताका की तरह का कागज लगा हो (फ्लेग्ड)।

पताकिनी *स्त्री.* {सं.} सेना।

पता-ठिकाना पुं. किसी वस्तु का व्यक्ति का स्थान और उसका परिचय।

पतार¹ पुं. पाताल।

पतार² पुं. {?} जंगल, वन।

पतावर पुं. {हिं.} पेड़ के सूखे पत्ते।

पतासी *स्त्री.* {हिं.} बढ़ई की रुखानी।

पतासा पुं. बताशा।

पतिंग पुं. पतंगा।

पतिंवरा *वि. स्त्री* {सं.} जो अपना पति स्वयं चुने।

पति पुं. {सं.} {*स्त्री.* पत्नी, *भात.* पतित्व} मालिक, स्वामी अधिपति; स्त्री की दृष्टि से उसका विवाहित पुरुष, दूल्हा; मर्यादा, प्रतिष्ठा।

पतिआना *अ.* पतियाना।

पतिआर पुं. {हिं. पतिआना} विश्वास; *वि.* विश्वसनीय।

पतिकामा *वि. स्त्री.* {स.} पति पाने की कामना करनेवाली (स्त्री)।

पतिघातिनी *स्त्री.* {सं.} पति को मारनेवाली स्त्री।

पतिगृह पुं. {सं.} पति का घर; ससुराल।

पतित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* पतिता, *भाव.* पतितता} नीचे गिरा या आया हुआ; नीचे की ओर झुका हुआ, नत; बहुत बड़ा पापी, महापापी, अतिपातकी; जाति से निकाला हुआ, जातिच्युत; अति नीच।

पतित-उधारन *वि.* {सं. पतित + हिं. उधारना} पतितों का उद्धार करनेवाला।

पतितपावन *वि.* {सं.} पतित को भी पावन अर्थात् अदरणीय बनानेवाला।

पतितपावी *वि. स्त्री.* पतितों को भी पवित्र करनेवाली।

पतितेस पुं. {सं. पतित + ईश} पतितों का सरदार, बहुत बड़ा पतित।

पतित्व पुं. {सं.} पति या मालिक होने का भाव, स्वामित्व, प्रभुत्व; यौवन, जवानी।

पतिनी *स्त्री.* पत्नी।

पतिदेवता *स्त्री.* {सं.} एकमात्र 'आराध्य' पति।

पतिदेवा *स्त्री.* {सं.} पतिव्रता स्त्री।

पतिधर्म पुं. {सं.} पति के प्रति स्त्री का धर्म।

पतिपारना *स.* {सं. प्रतिपालन} पालन-पोषण करना, पालना; (प्रतिज्ञा या वचन) पूरा करना, निभाना।

पतियाना *अ.* {सं. प्रत्यय} किसी की कही हुई बात ठीक मानकर उस पर विश्वास करना।

पतियार *वि.* {हिं. पतियाना} विश्वास करने योग्य, विश्वसनीय।

पतियारा पुं. {हिं. पतियाना} विश्वास।

पतियारी *स्त्री.* {हिं. पतियाना} प्रतीति, विश्वास।

पतिलोक पुं. {सं.} वह स्वर्ग जिसमें उसका पति रहता है।

पतिवती *वि.* सौभाग्यवती।

पतिव्रत पुं. {सं.} पत्नी की अपने पति पर अनन्य प्रीति और भक्ति, पातिव्रत्य।

पतिव्रता *वि.* {सं.} (स्त्री) जो अपने पति में अनन्य अनुराग रखती हो और यथाविधि उसकी पूरी सेवा करती हो, सती, साध्वी।

पतीजना *अ.* {हिं. प्रतीत} किसी पर विश्वास या ऐतबार करना।

पतीला पुं. {फा. पातित:} {*स्त्री.* अल्पा. पतीली} ताँबे या पीतल की एक प्रकार की बटलोई।

पतुकी *स्त्री.* पतीली।

पतुरिया *स्त्री.* {सं. पातिली} वेश्या।

पतरे पुं. {हिं.} पक्षी, चिड़िया, गर्त।

पतोखा पुं. {सं. पत्ता} {*स्त्री.* अल्पा. पतोखी} पत्ते का बना पात्र, दोना; पत्तों का बना छोटा छाता, घोघी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतोखी *स्त्री.* {हिं.} छाता, छतरी, एक पत्ते की बनी हुई दोनियाँ।

पतोह (हू) *स्त्री.* {सं. पुत्रवधू} बेटे की स्त्री।

पतौआ *पुं.* पत्ता, पत्र।

पत्तन *पुं.* {सं.} नगर, शहर; नगरी, कस्बा (टाउन)।

पत्तरंग *पुं.* {सं.} लाल-चंदन, बक्कम।

पत्तनक्षेत्र *पुं.* {सं.} किसी पत्तन या कस्बे और उसके आसपास का वह क्षेत्र, जो सफाई, रोशनी, आरंभिक शिक्षा आदि के लिए एक स्वतंत्र इकाई के रूप में होता है और जिसकी व्यवस्था वहाँ के कुछ निर्वाचित लोगों के हाथ में होती है। (टाउन एरिया)।

पत्तर *पुं.* {सं. पत्र} धातु को पीटकर बनाया हुआ चिपटा लम्बोतरा टुकड़ा, धातु की छोटी चादर या टुकड़ा।

पत्तल *स्त्री.* {सं. पत्र} पत्तों को जोड़कर बनाया हुआ वह बड़ा गोलाकार आधार जिस पर खाने के लिए चीजें रखते हैं।

कहा. जिस पत्तल में खाना, उसी में छेद करना = जिससे लाभ या प्राप्ति हो, उसी को हानि पहुँचाना, परम कृतघ्नता करना।

पत्तल पर रखी हुई एक आदमी के खाने भर की भोजन-सामग्री।

पत्ता *पुं.* {सं. पत्र} {*स्त्री.* पत्ती} पेड़-पौधों में होनेवाला हरे रंग का वह पतला अवश्व जो उसकी शाखाओं से निकलता है, पर्ण।

मुहा. पत्ता खड़कना = खटके या संदेह की बात होना; *पत्ता तक न हिलना* = हवा बिल्कुल बंद होना; किसी प्रकार की गति, विरोध आदि न होना।

कान में पहनने का एक गहना; मोटे कागज का खंड, जैसे ताश का पत्ता।

पत्ति *पुं.* {सं.} पैदल सिपाही, प्यादा; शूरवीर, योद्धा।

पत्तिक *पुं.* {सं.} पदाति, पैदल सिपाही।

पत्ती *स्त्री.* {हिं. पत्ता + ई (प्रत्य.)} छोटा पत्ता; साझे का अंश, भाग, हिस्सा; फूल की पंखुड़ी, दल। भाँग, भंग; लकड़ी, धातु आदि का कटा हुआ कोई छोटा टुकड़ा।

पत्तीदार *पुं.* {हिं. पत्ती + फा. दार} साझीदार, हिस्सेदार।

पत्थ *पुं.* पथ्य।

पत्थर *पुं.* {सं. प्रस्तर} {*वि.* पथरीला, *क्रि.* पथराना} पृथ्वी के स्तर में का वह कठोर प्रसिद्ध पिंड या खंड जो चूने, बालू आदि के जमने से बना होता है, प्रस्तर, शिलाखंड।

पद पत्थर का कलेजा, दिल या हृदय = ऐसा हृदय या मन जिसमें दया, करुणा आदि कोमल वृत्तियाँ न हों; *पत्थर की लकीर* = सदा-सर्वदा बनी रहनेवाली वस्तु; बिल्कुल निश्चित या पक्की बात।

मुहा. पत्थर चटाना = औजार पत्थर पर रगड़कर धार तेज करना; *पत्थर तले हाथ आना या दबना* = किसी भारी संकट में फँस जाना; *पत्थर पर दूब जमना* = अनहोनी या असंभव बात हो जाना; *पत्थर से सिर फोड़ना या मारना* = ऐसा प्रयत्न करना, जिसमें फल-सिद्धि के बदले उलटे अपनी हानि हो; सड़कों पर लगा हुआ दूरी या नाप बतानेवाला पत्थर; ओला, बिनौरी।

मुहा. पत्थर पड़ना = आकाश से ओले गिरना; चौपट या नष्ट हो जाना।

हीरा, लाल, पन्ना, आदि रत्न; कठोर और भारी अथवा गलने, पचने आदि के अयोग्य वस्तु; कुछ नहीं, बिल्कुल नहीं (तिरस्कृत अभाव का सूचक; जैसे-वह हमें पत्थर समझते हैं)।

पत्थरकला *पुं.* पथरकला।

पत्थर-पानी *पुं.* आँधी चलना और पानी बरसना, तूफान।

पत्नी *स्त्री.* {सं.} विधिपूर्वक विवाहिता स्त्री, भार्या, सहधर्मिणी, जोरू।

पत्य *पुं.* {सं.} पति होने का भाव।

पत्नीव्रत *पुं.* {सं.} अपनी विवाहिता स्त्री को छोड़कर और किसी स्त्री से संबंध न रखने का संकल्प, नियम या व्रत।

पत्नीव्रती (तिन्) *वि.* {सं.} जिसने पत्नीव्रत धारण किया हो; जोरू का गुलाम।

पत्याना *अ.* पतियाना।

पत्यारी *स्त्री.* {सं. पंक्ति} पंक्ति, पाँत।

पत्योरी *पुं.* {हिं.} घी में बनी हुई पकौड़ी।

पत्र *पुं.* {सं.} वृक्ष का पत्ता, पत्ती, पर्ण; लिखा हुआ कागज, विशेषतः वह कागज जिस पर किसी विषय की कोई महत्व की बात लिखी हो; वह कागज जिस पर किसी को भेजने के लिए कोई समाचार या विवरण लिखा हो, चिट्ठी, पत्री, खत। (लेटर) समाचार-पत्र, अखबार; समाचार-पत्रों या सामयिक पत्रों का वर्ग या समूह (प्रेस); पुस्तक या लेख का कोई पन्ना, पृष्ठ; धातु का पत्तर; पत्रक।

पत्रक *पुं.* {सं. पत्र + क (प्रत्य.)} वह पत्र जिस पर स्मृति के लिए या सूचना आदि के रूप में कोई बात लिखी हो (मेमो, नोट); *वि.* पत्र-संबंधी, पत्र का; पत्र का कागज का बना हुआ, जैसे पत्रक धन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रक धन पुं. {सं.} वह धन जो छपे हुए कागज या पत्र के रूप में हो, जैसे धनपत्र या नोट।

पत्रकार पुं. {सं.} {*भाव.* पत्रकारिता} समाचार-पत्र से जुड़ा व्यक्ति; वह जो समाचार-पत्र में बराबर लेख आदि लिखकर भेजता रहता हो (जर्नलिस्ट)।

पत्रकार सम्मेलन पुं. {सं.} समाचार-पत्रों के संवाददाताओं आदि का वह सम्मेलन जो कोई बड़ा आदमी किसी विषय पर अपना वक्तव्य देने के लिए बुलाता है (प्रेस कॉन्फरेन्स)।

पत्रकारिता *स्त्री.* {सं.} पत्रकार का काम।

पत्रांग पुं. {सं.} लाल चंदन, भोजपत्र, कमलगट्टा।

पत्रांकन पुं. {सं.} काली स्याही।

पत्रा पुं. {हिं.} तिथिपत्र, जंत्री, पंचांग।

पत्रजात पुं. {सं.} किसी विषय से संबंध रखनेवाले पत्रों आदि का समूह (पेपर्स); इस प्रकार के पत्रों की नत्थी (फाइल)।

पत्रपंजी *स्त्री.* {सं.} वह पंजी या बही जिसमें आए हुए पत्रों अथवा उनके उत्तरों का विवरण रहता है (लेटर बुक)।

पत्रपुष्प पुं. {सं.} सत्कार या पूजा की बहुत साधारण सामग्री; सामान्य पुरस्कार या तुच्छ उपहार।

पत्र-पेटी *स्त्री.* {सं. पत्र + हिं. पेटी} वह पेटी या बक्स जिसमें डाक द्वारा बाहर जानेवाले पत्र छोड़े जाते हैं; किसी की वह निजी पेटी या बक्स जिसमें लोग उसके नाम के पत्र छोड़ जाते हैं (लेटर बॉक्स)।

पत्रबंध पुं. {सं.} पत्र लिखने के कागजों की गड्डी (लेटर पैड)।

पत्रभंग पुं. {सं.} वे बेल-बूटे रेखाएँ, जो स्त्रियाँ सौंदर्य-वृद्धि के लिए माथे, गाल आदि पर बनाती हैं।

पत्रवाह पुं. {सं.} वह जिसका काम पत्र आदि लोगों के यहाँ पहुँचाना होता है; डाक विभाग का वह कर्मचारी जिसका काम घर-घर लोगों के पत्र, मनीआर्डर, पार्सल आदि पहुँचाना होता है, डाकिया (पोस्टमैन)।

पत्रवाहक पुं. {सं.} पत्र ले जानेवाला; डाकिया, हरकारा।

पत्र-व्यवहार पुं. {सं.} वह व्यवहार या संबंध जिसमें किसी को पत्र लिखे जाते हैं और उसके उत्तर आते हैं, पत्राचार, चिट्ठी-पत्री; इस प्रकार भेजे हुए पत्र और आए हुए उनके उत्तर।

पत्रा पुं. {सं. पत्र} तिथिपत्र, जंतरी, पंचांग; पृष्ठ, पन्ना, वरक।

पत्राचार पुं. {सं.} दो व्यक्तियों या पक्षों में चिट्ठियों का आना-जाना, पत्र-व्यवहार।

पत्राली *स्त्री.* {सं.} सादे और लिखे जाने वाले चिट्ठी के कागजों का समूह, जो प्रायः गड्डी के रूप में होता है (पैड)।

पत्रावली *स्त्री.* पत्राली।

पत्रिका *स्त्री.* {सं.} चिट्ठी, खत; नियत समय पर प्रकाशित होनेवाला कोई सामयिक पत्र, पत्रिका या पुस्तक (मैगजीन)।

पत्रिणी *स्त्री.* {सं.} नया अंकुर, कोंपल।

पत्रिवाह पुं. {सं.} हरकारा, डाकिया।

पत्री[1] *स्त्री.* {सं.} चिट्ठी, खत; कोई छोटा लेख या पत्रिका; जन्मपत्री।

पत्री[2] पुं. {सं. पत्रिन्} तीर, बाण।

पथ पुं. {सं.} मार्ग, रास्ता, राह; आचरण व्यवहार आदि की रीति या ढंग; पुं. पथ्य।

पथग।मी पुं. {सं. पथगामिन्} पथिक।

पथचिह्न पुं. {सं.} पथ में मार्गदर्शन के लिए बने हुए चिह्न।

पथ-प्रदर्शन पुं. मार्गदर्शन।

पथरकला पुं. {सं. पत्थर या पथरी + कल} पुरानी चाल की वह बंदूक जो चकमक पत्थर की रकड़ से आग उत्पन्न करके चलाई जाती थी, कड़ाबीन।

पथनार *स्त्री.* {हिं.} गोबर के उपले बनाने का काम।

पथरचटा पुं. {हिं.} ओषधि-पत्थरचटा।

पथरना *क्रि.* {हिं. सं.} शस्त्र को पत्थर पर रगड़कर पैना करना।

पथराना *अ.* {हिं. पत्थर + आना (प्रत्य.)} पत्थर की तरह कड़ा हो जाना; नीरस और कठोर होना; स्तब्ध हो जाना, सजीव न रहना।

पथरी *स्त्री.* {हिं. पत्थर + ई (प्रत्य.)} पत्थर की बनी छोटी गोल कटोरी; एक रोग, जिसमें मूत्राशय आदि में पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े बन या जम जाते हैं; चकमक पत्थर; कुरंड पत्थर, जिसे औजार की धार तेज करते हैं।

पथरीला *वि.* {हिं. पत्थर + ईला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* पथरीली} पत्थरों से युक्त (स्थान)।

पथरौटा पुं. {हिं. पत्थर} {*स्त्री.* अल्पा. पथरौटी} पत्थर का कटोरा।

पथिक पुं. {*स्त्री.* पथिका} मार्ग पर चलनेवाला, यात्री, मुसाफिर।

पथिका *स्त्री.* {सं.} काली द्राक्षा, मुनक्का।

पथिकार *वि.* {सं.} मार्ग बनानेवाला।

पथिकाश्रम पुं. {सं.} पथिकों के ठहरने का स्थान।

पथिन् पुं. {सं.} पथ, मार्ग।

पथिल पुं. {सं.} बोझ ढोनेवाला, पथिक, यात्री।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथ्या *स्त्री.* {सं.} हरीतकी, हर्रे।

पथी *पुं.* {सं. पथिन्} यात्री, पंथिक।

पथु *पुं.* {हिं. पथ} पथ, मार्ग।

पथेरा *पुं.* {हिं. पाथना} पाथने की काम करनेवाला; कुम्हार।

पथौरा *पुं.* {हिं. पाथना} वह स्थान जहाँ कंडे पाथे और रखे जाते हैं।

पथ्य *पुं.* {सं.} वह जल्दी पचनेवाला भोजन जो रोगी को उपवास की समाप्ति पर दिया जाता है; उपयुक्त आहार।

मुहा. पथ्य से रहना = स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए संयमपूर्वक रहना।

वि. पथ-संबंधी, पथ या मार्ग का; जो पथ की तरह काम दे सके, जिस पर चल सकें।

पथ्यावक्त्र *पुं.* {सं.} मात्राकृत का भेद।

पद *पुं.* {सं.} व्यवसाय, काम; योग्यता के अनुसार कर्मचारी या कार्यकर्ता का नियत स्थान (पोस्ट); राजकीय, सैनिक आदि सेवाओं में अधिकार का कोई ऊँचा पद, पदवी (रैंक); पैर, पाँव।

मुहा. पद टेकना = पैर जमाकर रखना; व्यक्ति या बात की उचित और वास्तविक स्थिति; वह जो औचित्य के विचार से प्राप्य हो।

उदा. अपनो पदुलै, पितु या लगि मारे–**केशव**।

किसी श्लोक या छंद का चतुर्थांश, श्लोक-पाद: कोई विशेष अर्थ रखनेवाला शब्द या शब्दसमूह (टर्म, एक्सप्रेशन); उपाधि; ईश्वरभक्ति-संबंधी गीत, भजन; दान के लिए जूते, छाते, कपड़े, आसन, बरतन आदि का समूह।

पदक *पुं.* {सं.} देवता के पैरों के बनाए हुए चिह्न जिनकी पूजा की जाती है; धातु का कुछ विशिष्ट आकार का बनाया हुआ वह छोटा टुकड़ा, जो किसी को कोई विशेष अच्छा कार्य करने पर प्रमाण और पुरस्कार रूप में अथवा सम्मानित करने के लिए दिया जाता है, तमगा।

पदग *पुं.* {सं.} पैदल यात्री, प्यादा।

पदगोत्र *पुं.* {सं.} भरद्वाज आदि चार ऋषियों का गोत्र।

पदग्रहण *पुं.* {सं.} पद पर बैठने की क्रिया या भाव।

पदग्रहण-समारोह *पुं.* {सं.} पदग्रहण के समय होनेवाला समारोह।

पदचर *पुं.* {सं.} पैदल।

पदचार (ण) *पुं.* {सं.} पैदल चलना; घूमना-फिरना, टहलना।

पदचारी *पुं.* {सं. पदचारिन्} {सं. पदचारिणी} पैदल चलनेवाला।

पदच्छेद *पुं.* {सं.} किसी वाक्य के पद, व्याकरण के विशिष्ट नियमों के अनुसार, अलग-अलग करना।

पदच्युत *वि.* {सं.} {*भाव.* पदच्युति} जो स्थान पद से हटा दिया गया हो; जो अपनी नौकरी से हटा दिया गया हो (डिस्मिस्ड)।

पदच्युति *स्त्री.* {सं.} किसी स्थान या पद से हटाए जाने की क्रिया या भाव; नौकरी से हटा दिया जाना (डिस्मिल)।

पदज *पुं.* {सं.} पैर की कोई उँगली।

पदतल *पुं.* {सं.} पैर का तलवा।

पदत्याग *पुं.* {सं.} अपना पद या अधिकार छोड़ना (ऐब्डिकेशन)।

पदत्राण *पुं.* {सं.} जूता।

पदत्री *पुं.* {सं.} पक्षी, चिड़िया।

पददलित *वि.* {सं.} पैरों से रौंदा हुआ; जो दबाकर बहुत हीन कर दिया गया हो।

पदनाम *पुं.* {सं.} वह नाम जो किसी अधिकारी के पद का होता है, जैसे मजिस्ट्रेट, तहसीलदार, निरीक्षक आदि। (ऑफिशियल टाइटिल); किसी कार्य, संस्था या व्यवहार का वह मुख्य नाम जिससे वह प्रसिद्ध हो (डेज़िग्नेशन)।

पदपंक्ति *स्त्री.* {सं.} पदश्रेणी पैर का चिह्न।

पदपद्धति *स्त्री.* {सं.} पैर के चिह्न।

पदपली *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार का नाच।

पदभार *पुं.* {सं.} किसी पद या ओहदे पर रहकर उसके सब काम करने का भार या उत्तरदायित्व (चार्ज)।

पदम *पुं.* पद्म।

पद्माकर *पुं.* {हिं.} जलाशय, तालाब।

पदमिनी *स्त्री.* पद्मिनी।

पदमुक्त *वि.* {सं.} जो अपने पद से अलग हो चुका हो।

पदमूल्क *पुं.* {सं.} पैर का तलवा।

पदमैत्री *स्त्री.* {सं.} अनुप्रास।

पदयोजना *स्त्री.* {सं.} कविता में पदों को जोड़ने या बैठाने की क्रिया या भाव।

पदरथी *पुं.* {सं.} जूता, खड़ाऊँ।

पदरिपु *पुं.* {हिं.} कंटक, काँटा।

पदवी *स्त्री.* {सं.} वह प्रतिष्ठासूचक पद (शब्दसमूह) जो राज्य अथवा किसी मान्य संस्था की ओर से किसी योग्य व्यक्ति को मिलता है, उपाधि, खिताब; (टाइटिल); राजकीय, सैनिक आदि सेवाओं में अधिकार का कोई ऊँचा पद, ओहदा, दरजा, पद (रैंक)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदाक्रांत *वि.* {सं.} पैरों तले कुचला या रौंदा हुआ।

पदाघात *पुं.* {सं.} पैर का आघात, ठोकर।

पदांत *पुं.* {सं.} पद का शेष।

पदांतर *पुं.* {सं.} दूसरा पद।

पदाति (क) *पुं.* {सं.} पैदल चलनेवाला, प्यादा; पैदल सिपाही; नौकर, सेवक।

पदातिका *पुं.* {हिं.} पैदल सेना।

पदाधिकारी (रिन्) *पुं.* {सं.} वह जो किसी पद पर नियुक्त हो और जिसे उस पद के सब अधिकार प्राप्त हों, ओहदेदार, अधिकारी।

पदाना *पुं.* {हिं. 'पादना' का प्रे.} बहुत तंग या परेशान होना।

पदारूढ़ *वि.* {सं.} पद पर बैठा हुआ।

पदार्थ *पुं.* {सं.} शब्दसमूह या पद का अर्थ; वह जिसका कुछ नाम हो और जिसका ज्ञान प्राप्त किया जा सके (सब्सटेंस); वह जिसका कोई आकार या रूप हो और जो पिंड, शरीर आदि के रूप में हो, वस्तु, चीज (ऑब्जेक्ट); किसी दर्शन में प्रतिपादित वह विषय, जिसके संबंध में यह माना जाता है कि उसका ज्ञान मुक्तिदायक होता है; पुराणानुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

पदार्थवाद *पुं.* {सं.} वह सिद्धांत जिसमें भौतिक पदार्थों को ही सब-कुछ माना जाता है और जिसमें आत्मा अथवा ईश्वर आदि नहीं माने जाते (मैटिरियलिज्म)।

पदार्थविज्ञान *पुं.* भौतिक विज्ञान।

पदार्थविद्या *पुं.* भौतिक विज्ञान।

पदार्पण *पुं.* {सं.} कहीं पैर रखने या जाने की क्रिया (बड़ों के लिए आदरसूचक)।

पदावनत *वि.* {सं.} जिसकी पदावनति हुई हो।

पदावनति *स्त्री.* {सं.} ऊँचे पद से हटाकर निचले पद पर बैठाया जाना।

पदावली *स्त्री.* {सं.} वाक्यों की श्रेणी; भजनों का संग्रह।

पदाश्रित *वि.* {सं.} शरण में आया हुआ।

पदास *स्त्री.* {हिं.} पादने का भाव या क्रिया।

पदासन *पुं.* {सं.} पादपीठ, जिस पर पैर रखा जाय।

पदासा *वि.* {हिं.} जिसे पादने की प्रवृत्ति हो।

पदिक[1] *पुं.* {सं.} पैदल सेना।

पदिक[2] *पुं.* {सं. पदक} गले में पहनने का जुगनूँ नाम का गहना; हीरा।

पदी *पुं.* {सं. पद} पैदल, प्यादा।

पदु *पुं.* {हिं.} पद।

पदुमिनी *स्त्री.* पद्मिनी।

पदेन *क्रि. वि.* {सं.} किसी पद के अथवा किसी पद पर आरूढ़ होने के अधिकार से (एक्स-ऑफिशियो, बाइ वरचु ऑफ ऑफिस)।

पदोड़ा *पुं.* {हिं.} बहुत पादनेवाला, डरपोक, कायर।

पदोन्नति *स्त्री.* {सं.} अधिकारी या कर्मचारी के पद में होनेवाली उन्नति, वर्तमान पद से ऊँचे पद पर भेजा जाना या पहुँचना (प्रोमोशन)।

पद्धड़ी *स्त्री.* {हिं.} पद्धटिका।

पद्धति *स्त्री.* {सं.} राह, पथ, मार्ग; रीति, रस्म, रिवाज; प्रणाली, विधि, ढंग।

पद्म *पुं.* {सं.} कमल का फूल या पौधा; सामुद्रिक के अनुसार पैर के तलवे का एक भाग्यसूचक चिह्न; विष्णु का एक अस्त्र; गणित में सोलहवें स्थान की संख्या (1000 नील)।

पद्मजा *स्त्री.* {सं.} लक्ष्मी (देवी)।

पद्मनाभ *पुं.* {सं.} विष्णु।

पद्मनाल *स्त्री.* {सं.} कमल का डंठल, भँसीड़।

पद्मबंध *पुं.* {सं.} एक पकार का चित्रकाव्य जिसमें अक्षरों को एक विशेष क्रम में रखने पर पद्म या कमल का चित्र-सा बन जाता है।

पद्मबीज *पुं.* {सं.} कमलगट्टा।

पद्मराग *पुं.* {सं.} मानिक, लाल।

पद्मांतर *पुं.* {सं.} कमल के पत्ते।

पद्मा *स्त्री.* {सं.} लक्ष्मी।

पद्माक्ष *पुं.* {सं.} कमलगट्टा, विष्णु।

पद्माधीश *पुं.* {सं.} विष्णु।

पद्मालय *पुं.* {सं.} ब्रह्मा।

पद्मालया *स्त्री.* {सं.} लक्ष्मी, गंगा, लवंग।

पद्माकर *पुं.* {सं.} वह तालाब या झील जिसमें कमल पैदा होते हैं।

पद्मासन *पुं.* {सं.} योगसाधन में बैठने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा।

पद्मिनी *स्त्री.* {सं.} कमलिनी; वह जलाशय जिसमें कमल हों; लक्ष्मी; कोकशास्त्र के अनुसार चार प्रकार की स्त्रियों में से एक जो सर्वोत्तम मानी गई है।

पद्य *पुं.* {सं.} नियमित मात्राओं या वर्णोंवाली कोई वाक्य-रचना या छंद, 'गद्य' का उलटा (पोएटरी); कोई लयबद्ध रचना।

पद्यात्मक *वि.* {सं.} पद्य के रूप में बना हुआ, छंदोबद्ध।

पधराना *स.* {हिं. पधारना} किसी देवता की स्थापना; किसी को आदरपूर्वक बैठाना; प्रतिष्ठित करना।

पट्ठ *पुं.* {सं.} भूलोक, रथ, मार्ग।

पधरावनी *स्त्री.* {हिं. पधारना} आदरपूर्वक लाकर अपने यहाँ बैठाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पधरना *क्रि.* {हिं. *अ.*} पूज्य व्यक्ति का नाम।

पधारना *अ.* {हिं. पग + धारना} आदरणीय व्यक्ति का आना या जाना।

पनंग *पुं.* {हिं.} सर्प, साँप।

पन[1] *पुं.* {सं. पर्वन = विशेष अवस्था} आयु के चार भागों में से कोई एक, अवस्था।

पन[2] *प्रत्य.* भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए तद्भव नामवाचक या गुणवाचक संज्ञाओं में लगनेवाला एक प्रत्यय, जैसे बचपन।

पन[3] *पुं.* {सं. प्रण} मन में किया जानेवाला संकल्प या निश्चय; प्रतिज्ञा, प्रण।

मुहा. पन रोपना = प्रतिज्ञा करना।

उदा. द्विज मुख ह्वै पन लीनों–सूर।

पन[4] *पुं.* {सं. पण्य} मूल्य, दाम।

उदा. नाहीं लोल लोचनी! बड़वा बड़े पन की–**केशव**।

पन[5] *पुं.* पानी और पान का अल्पार्थक रूप, जैसे पनबिजली, पनडब्बा।

पनकटा *पुं.* {हिं.} सिचाई का पानी ले जानेवाला।

पनकाल *पुं.* {हिं. पानी + अकाल} बहुत वर्षा के कारण पड़नेवाला अकाल।

पनकुट्टी *स्त्री.* {हिं.} पान कूटने का खरल।

पनकौवा *पुं.* {हिं.} जलपक्षी।

पनगनि *स्त्री.* {हिं.} सर्पिणी।

पनग *पुं.* {*स्त्री.* पनगिन} पन्नग।

पनघट *पुं.* {हिं. पानी + घाट} वह घाट जहाँ लोग पानी भरते हों।

पनच *स्त्री.* {सं. प्रत्यंचा} वह डोरी जिससे धनुष के दोनों सिरे बँधे रहते हैं।

पनचक्की *स्त्री.* {हिं. पानी + चक्का} पानी के बहाव के जोर से चलनेवाली चक्का या कल।

पनडब्बा *पुं.* पानदान।

पनडुब्बा *पुं.* {हिं. पानी + डूबना} पानी में गोता लगाकर तल की चीजें निकालनेवाला गोताखोर।

पनडुब्बी *स्त्री.* {हिं. पानी + डूबना} जलाशयों के पास रहनेवाली एक प्रकार की चिड़िया; पानी के अंदर डूबकर चलनेवाली एक प्रकार की आधुनिक नाव (सबमेरीन)।

पनपना *अ.* {सं. पर्णय = हरा होना} नए पौधे का पत्तों से यक्त और हरा-भरा होना; नए सिरे से अथवा फिर से तन्दुरुस्त, समर्थ या सशक्त होना।

पनबिछिया *पुं.* {हिं.} डंक मारनेवाला।

पनभरा *पुं.* पनहरा।

पनरंगा *वि.* {हिं. पानी + रंग} {*स्त्री.* पनरंगी} पानी के रंग का, कुछ मटमैलापन लिए हुए सफेद।

पनव *पुं.* प्रणव।

पनवाड़ी *पुं.* तमोली।

पनवार *स्त्री.* {सं. पर्ण} (पत्तों की बनी हुई) पत्तल; *स्त्री.* पनवारी।

पनवारी *स्त्री.* {हिं. पान + बारी} पानी के पौधों का भीटा।

पनस *पुं.* {सं.} कटहल का वृक्ष या उसका फल।

पनसारी *पुं.* पंसारी।

पनसाल[1] *स्त्री.* पौसरा।

पनसाल[2] *स्त्री.* पानी की गहराई नापने का एक उपकरण।

पनसुइया *स्त्री.* {हिं. पानी + सुई} एक प्रकार की छोटी नाव।

पनह *स्त्री.* पनाह।

पनहड़ा *पुं.* {हिं.} तमोली का पानी का पात्र।

पनहरा *पुं.* {हिं. पानी + हारा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* पनहारन, पनहारिन, पनहारी} दूसरों के घर पानी भरने का काम करनेवाला आदमी, पनभरा।

पनहा *पुं.* {सं. परिणाह} कपड़े या दीवार की चौड़ाई; गूढ़ तात्पर्य, मर्म।

पनहारा *पुं.* पनहरा, पनभरा।

पनही *स्त्री.* {सं. उपानह} पैर में पहनने का जूता, जूती।

पना[1] *पुं.* {सं. प्रपानक या पानीय} एक तरह का शरबत जो आम, इमली आदि से बनता है, पन्ना।

पना[2] *प्रत्य.* पन (जैसे पाजीपना)।

पनाला *पुं.* {सं. प्रणाली} {*स्त्री.* अल्पा. पनाली} {*वि.*, पनालिया} गंदा पानी बहने की मोरी, परनाला; नाबदान, नाला (गटर)।

पनालिया *वि.* {हिं. पनाला} पनाले के समान अस्पृश्य, गंदा और त्याज्य, जैसे पनालिया पत्र।

पनालिया-पत्र *पुं.* {हिं. पनालिया + सं. पत्र} वह पत्र जिसमें अधिकतर बातें बहुत ही अश्लील और अशिष्टतापूर्वक रहती हैं और जिसमें दूषित भाव से लोगों पर कीचड़ उछाला जाता है, बहुत ही निम्न कोटि का सामयिक पत्र या ऐसे पत्रों का वर्ग (गटर प्रेस)।

पनास *स्त्री.* {हिं. पनासना} पालन-पोषण; पोस।

पनासना *स.* {सं. पानाशन} पालन-पोषण करना, पालना-पोसना।

पनाह *स्त्री.* {फा.} रक्षा, बचाव।

मुहा. (किसी से) पनाह माँगना = किसी से डरते हुए बहुत दूर रहना।

रक्षा पाने का स्थान, शरण, आड़।

पनिच *पुं.* प्रत्यंचा।

पनियर *वि.* = पनैला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पनिया *वि.* {हिं. पानी + या (प्रत्य.)} पानी में रहनेवाला, जैसे पनिया साँप; पानी मिला हुआ, जैसे पनिया दूध।

पनिया *पुं.* {?} भेदिया, जासूस।

पनिहा *वि.* = पनिया; जल संबंधी।

पनिहार *पुं.* पनहरा।

पनी *पुं.* {हिं.} प्रतिज्ञा करनेवाला पुरुष।

पनीर *पुं.* {फा.} दूध फाड़कर उसका पानी निकाला हुआ अंश, छेना; पानी निचोड़ा हुआ दही।

पनीरी *स्त्री.* {देश.} वे छोटे पौधे जो दूसरी जगह ले जाकर रोपने के लिए लगाए जाते हैं।

पनीला *वि.* पनैला।

पनु *स्त्री.* {सं.} स्तुति, प्रशंसा।

पनैला¹ *पुं.* {हिं. पलीला = एक प्रकार का सन} एक प्रकार का रंगीन चमकीला कपड़ा, परमटा।

पनैला² *वि.* {हिं. पानी} जिसमें पानी मिला हो, पनीला; जो पानी रहता या होता हो; चमकदार; हृष्टपुष्ट।

पन्न *वि.* {सं.} गिरा हुआ, नष्ट, गत।

पन्नई *वि.* {हिं.} गहरे हरे रंग का।

पन्नग¹ *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* पन्नगी} साँप।

पन्नग² *पुं.* {हिं. पन्ना} पन्ना, मरकत (रत्न)।

पन्नगारि *पुं.* {सं.} गरुड़, जो साँपों का परम शत्रु और भक्षक माना जाता है।

पन्ना¹ *पुं.* {सं. वर्ण?} फिरोजी या हरे रंग का एक प्रसिद्ध रत्न, मरकत।

पन्ना² *पुं.* {हिं. पान} (पुस्तक का) पृष्ठ, वरक।

पन्ना³ *पुं.* पना।

पन्नी *स्त्री.* {हिं. पन्ना = पन्ना} राँगे या पीतल का पीटा हुआ पत्तर।

पन्य *वि.* {सं.} प्रशंसा करने योग्य।

पन्यारी *स्त्री.* {हिं.} सदाबहार जंगली वृक्ष।

पपड़ी *स्त्री.* {हिं. पापड़} {*क्रि.* पपड़ियाना} {*वि.* पपड़ीला} सूखकर या सिकुड़ने से जगह-जगह चिटकी हुई किसी वस्तु की पतली परत; मवाद सूख जाने से घाव के ऊपर जमी हुई परत, खुरंड; सोहन पपड़ी नाम की मिठाई।

पपी *पुं.* {सं.} सूर्च, चंद्रमा।

पपीता *पुं.* {मला. पपाया} एक प्रसिद्ध बड़ा पौधा जिसके फल खाए जाते हैं।

पपीलि *स्त्री.* {सं. पिपीलिका} चूँटी।

पपीहरा *पुं.* पपीहा।

पपीहा *पुं.* {पी पी से अनु.} वर्षा और वसंत ऋतु में सुरीली ध्वनि में बोलनेवाला एक पक्षी, चातक।

पपैया *पुं.* {हिं.} अमोला।

पपोटन *स्त्री.* {सं.} पौधे के बाँधने से फोड़े का इलाज।

पपोटा *पुं.* {सं. प्र + पट} आँख के ऊपर पलक, दृगंचल, पोटा।

पबारना *स.* = फेंकना।

पब्बय *पुं.* पवि।

पमाना *अ.* {?} डींग हाँकना।

पय *पुं.* {सं. पयस्} दूध; पानी।

पयद *पुं.* पयोद।

पयधि *पुं.* पयोधि।

पयनिधि *पुं.* पयोनिधि।

पयस्विनी *स्त्री.* {सं.} दूध देनेवाली गाय; नदी; हठयोग में बाएँ कान की नाड़ी।

पयहारी *पुं.* {सं. पयस् + आहारी} केवल दूध पीकर रहनेवाला तपस्वी या साधु।

पयान *पुं.* {सं. प्रयाण} गमन, जाना।

पयार (ल) *पुं.* {सं. पलाल} धान आदि के वे सूखे डंठल जिनमें से दाने निकाल दिए गए हों, पुआल।

पयोद *पुं.* {सं.} बादल, मेघ।

पयोधर *पुं.* {सं.} स्तन, बादल; तालाब; पहाड़।

पयोधि, पयोनिधि *पुं.* {सं.} समुद्र।

परंच {सं. परं + तु} तो भी, पर, किंतु, लेकिन, मगर।

परंतप *पुं.* {सं.} अर्जुन।

परंतु *यो.* {सं. परं + तु} तो भी, किंतु, लेकिन, मगर।

परंद *पुं.* परिंदा।

परंपरा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* पारंपरीण, *भाव.* पारंपर्य} बहुत-सी घटनाओं, बातों या कामों के एक-एक करके होने का क्रम, अनुक्रम, पूर्वापर क्रम; वह विचार, प्रथा या क्रम जो बहुत दिनों से प्रायः एक ही रूप में चला आया हो (ट्रैडिशन); किसी घटना, कार्य, पद आदि का बहुत दिनों से चला आया हुआ क्रम।

परंपरागत *वि.* {सं.} परंपरा से चला आ हुआ (ट्रैडिशनल)।

परंपराबद्ध *वि.* {सं.} परंपराओं से अच्छी तरह बँधा हुआ।

पर¹ *वि.* {सं.} {*भाव.* परता, *वि.* परकीय} अपने से भिन्न, गैर, दूसरा, अन्य, और; दूसरे का, पराया; पीछे या बाद का, किसी के उपरांत होनेवाला, जैसे परवर्ती, परलोक; इस ओर से भिन्न, दूसरी ओर का, जैसे पर-पार; वर्तमान के ठीक पहले या बाद का, जैसे परसाल; दूर, अलग; श्रेष्ठ, उत्तम; वैरी, शत्रु।

पर² *उप.* {सं. प्र} एक उपसर्ग जो संबंध या रिश्ता बतलानेवाले कुछ शब्दों के पहले लगकर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके ठीक पहले या ठीक बादवाली पीढ़ी का सूचक होता है, जैसे परदादा या परपिता।

पर[3] *प्रत्य.* {सं.} एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर; निमग्न, रत, लीन, उद्यत आदि (जैसे तत्पर, स्वार्थपर, आहार-पर आदि) और पीछे या साथ में लगा हुआ आदि अर्थ सूचित करता है। विशेष परक।

पर[4] परसर्ग. {सं. उपरि} सप्तमी या अधिकरण का चिह्न, जैसे इस पर।

पर[5] *क्रि. वि* {सं. परम्} पश्चात्, पीछे।

पर[6] *यो.* परंतु, लेकिन।

पर[7] *पुं.* {फा.} पक्षी का पंख, डैना, पक्ष।

मुहा. बेपर की उड़ना = बिल्कुल बेसिर-पैर की और मन-गढ़ंत बात करना; *पर जमना* = किसी में कोई नई अनष्टि वृत्ति उत्पन्न होना। *पर न मारना* = किसी के पास न आ सकना।

परक[1] *स्त्री.* {हिं. परकना} परकने की क्रिया या भाव।

परक[2] *प्रत्य.* {सं.} एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर; पीछे या अंत में लगा हुआ और से संबंध रखनेवाला (जैसे धर्मपरक), जैसे विष्णुपरक नामावली = ऐसी नामावली जिसके अंत में 'विष्णु' या उसका वाचक और कोई शब्द हो, अर्थ देता है।

परकटा *वि.* {फा. पर + हिं. कटना} जिसके पर या पंख कटे हों, जैसे परकटा कबूतर।

परकना *अ.* {हिं. परचना} {सं. परकाना} परचना, हिलना-मिलना; अभ्यास पड़ना, चसका लगना।

परकर्म *पुं.* {सं.} दूसरे का काम।

परकलत्र *पुं.* {सं.} दूसरे की स्त्री।

परकसना *अ.* {हिं. परकासना} जगमगाना; प्रकट होना।

परकाजी *वि.* परोपकारी।

परकार *पुं.* {फा.} {*क्रि.* परकारना} वृत्त या गोलाई खींचने का एक उपकरण; *पुं.* प्रकार।

परकार्य *पुं.* {सं.} दूसरे का कार्य।

परकाल *पुं.* परकार।

परकाला *पुं.* {फा. परगाल:} टुकड़ा, खंड; शीशे या और किसी चीज का धारदार टुकड़ा; बड़ी चिनगारी या अंगारा।

परकासना *स.* प्रकाशित करना, उजाला करना।

परकिति *स्त्री.* प्रकृति।

परकीय *वि.* {सं.} दूसरे का, पराया।

परकृति *स्त्री.* {सं.} दूसरे का किया हुआ काम।

परकीया *स्त्री.* {सं.} अपने पति के सिवा दूसरे पुरुष से भी प्रेम करनेवाली स्त्री।

परकोटा *पुं.* {सं. परिकोट} रक्षा के लिए चारों ओर बनाई हुई दीवार या घेरा; धुस, बाँध।

परख *स्त्री.* {सं. परीक्षा} गुण-दोष को ठीक-ठीक जाँच (टेस्ट); गुण-दोष का ठीक-ठीक पता लगानेवाली दृष्टि, पहचान।

परखना[1] *स.* {सं. परीक्षण} {प्रे. परखाना} गुण-दोष जानने के लिए पूरी जाँच करना, सूक्ष्म परीक्षा करना; अच्छे और बुरे की पहचान करना।

परखना[2] *स.* {हिं. परेखना} प्रतीक्षा करना।

परखवैया *पुं.* {हिं.} परखनेवाला, जाँचनेवाला।

परखाई *स्त्री.* {हिं.} परखने का काम।

परखी *स्त्री.* {हिं. परखना} लोहे का एक छोटा, पतला, लम्बा उपकरण जिसकी सहायता से बंद बोरे में से नमूने के तौर पर गेहूँ, चावल आदि निकालते हैं; *पुं.* पारखी।

परखैया *पुं.* = परखनेवाली।

परगटना *अ.* {हिं. प्रगट} प्रकट होना; *स.* प्रकट करना।

परगना *पुं.* {फा., मि. सं. परिगण = घर} किसी जिले का वह भूभाग जिसमें बहुत से गाँव हों।

परगसना *अ.* परकसना।

परगाछा *पुं.* {हिं. पर + गाछ} दसरे पेड़ों पर उगने या आश्रित रहनेवाले एक प्रकार के छोटे पौधे या वनस्पतियाँ।

पीरगाड़ *वि.* {हिं.} कठिन, गहरा।

परगास *पुं.* प्रकाश।

परचत *स्त्री.* परिचय, जान-पहचान।

परचना *अ.* {सं. परिचयन} {*स.* परचना} हिलना-मिलना, धड़का खुलना; चसका लगना।

परचा[1] *पुं.* {फा.} कागज का टुकड़ा; पत्र, चिट्ठी; परीक्षा का प्रश्न पत्र; समाचार-पत्र आदि का कोई अंक; कोई छोटा विज्ञापन या सूचना-पत्र।

परचा[2] *पुं.* {सं. परिचय} परिचय; परख, जाँच।

परचाना *क्रि.* {हिं. सं.} आकर्षित करना, मन को हटाना।

परचाव *पुं.* {हिं. परचना + आव (प्रत्य.)} परचने की क्रिया या भाव; हेल-मेल, मेल-जोल।

परचून *पुं.* {सं. पर + चूर्ण} आटा, दाल, मसाले आदि वस्तुएँ, जो बनिए के यहाँ बिकती हैं; खुदरा; *वि.* खुदरा।

परचूनियाँ *वि.* {हिं. परचून} वह जो फुटकर, खुदरा या थोड़ा-खोड़ा करके माल या सौदा बेचता हो (रिटेलर)।

परचै *पुं.* = परिचय।

परछत्ती *स्त्री.* {हिं. पर + छत} सामान रखने के लिए घर के अंदर दीवार से लगाकर हुई पाटन, टाँड़।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परछन *स्त्री.* {सं. परि + अर्चन} {*क्रि.* परछना} विवाह की एक रीति जिसमें स्त्रियाँ द्वार पर वर के आने के समय उसके ऊपर मूसल, बट्टा आदि घुमाती हैं।

परछाँई *स्त्री.* {सं. प्रतिच्छया} प्रकाश के सामने आने से पीछे की ओर अथवा पीछे की ओर प्रकाश होने पर आगे की ओर पड़ी हुई किसी वस्तु की आकृति के अनुरूप छाया।

मुहा. किसी की परछाँई से डरना या भागना = किसी के पास जाने तक से डरना।

जल, दर्पण आदि में दिखाई पड़नेवाला किसी वस्तु का प्रतिबिम्ब, अक्स।

परछालना *स.* {सं. प्रक्षालन} धोना।

परजंक *पुं.* पर्यंक (पलंग)।

परज *पुं.* {हिं.} एक राग का नाम, कोयल।

परजन *पुं.* परिजन।

परजन्य *पुं.* पर्जन्य।

परजरना, परजलना *अ.* {सं. प्रज्ज्वलन} प्रज्ज्वलित होना, सुलगना, दहकना।

परजरा *वि.* = प्रज्ज्वलित।

परजा *स्त्री.* {सं. पर + जाति} दूसरी जाति; *वि.* दूसरी जाति का; *स्त्री.* = प्रजा।

परजाता *पुं.* {सं. पारिजात} एक प्रकार वृक्ष, जिसमें पीली डंठीवाले छोटे सफेद फूल लगते हैं, पारिजात।

परजाति *स्त्री.* {सं.} दूसरी जाति।

परजाय *पुं.* पर्याय।

परजारना *स.* = प्रज्ज्वलित करना।

परजालना *स.* = प्रज्ज्वलित करना।

परजित *वि.* {सं.} शत्रु द्वारा पराजित।

परजीवी *पुं.* {सं. परजीविन्} वह जो दूसरों के सहारे रहकर जीवन बिताता हो; कुछ विशिष्ट प्रकार की वनस्पतियाँ या कीड़े-मकोड़े जो दूसरे वृक्षों और जीव-जंतुओं के शरीर पर रहकर और उनका खून चूसकर पलते हैं, जैसे आकाश-बेल, पिप्सू आदि (पैरासाइट)।

परजौट *पुं.* {हिं. परजा + औत (प्रत्य.)} {*वि.* परजौटी} घर आदि बनाने के लिए वार्षिक कर या पदेन पर जमींदार से जमीन लेने की व्यवस्था।

परणना *स.* {सं. परिणयन} ब्याहना।

परतंत्र *वि.* {सं.} {*भाव.* परतंत्रता} पराधीन, परवश।

परतः *क्रि. वि* {सं. परतस्} दूसरे से; पश्चात्, पीछे; और, आगे, परे।

परत *स्त्री.* {सं. पत्र} सतह पर फैली हुई वस्तु की मोटाई, स्तर, तह; कपड़े आदि को लपेटने या मोड़ने पर बननेवाला उसका हर भाग या मोड़, तह।

परतच्छ *वि.* = प्रत्यक्ष।

परतर *वि.* {सं.} {*भाव.* परतरता} बाद या पीछे का।

परतला *वि.* {सं. परतिन} {*स्त्री.* अल्पा. परतली} कंधे से कमर तक तिरछी पहनी जानेवाली चमड़े या कपड़े की चौड़ी गोलाकार पट्टी।

परता *पुं.* पड़ता (*स्त्री.*) श्रेष्ठता।

परताल *स्त्री.* पड़ताल।

परचिंता *स्त्री.* पर्तचिका।

परतिग्या *स्त्री.* प्रतिज्ञा।

परती *स्त्री.* {हिं. परत} एक में लगे हुए बहुत से कागजों या उनके छोटे टुकड़ों की गड्डी, पत्राली, जैसे चिट्ठी के कागजों की परती (पैड); *स्त्री.* पड़ती।

परतीछा *स्त्री.* = प्रतीक्षा, इंतजार।

परतीति *स्त्री.* = प्रतीति।

परतेजना *स.* = छोड़ना।

परत्व *पुं.* {सं.} 'पर' का भाव, परता।

परतोली *स्त्री.* {हिं.} गली।

परथन *पुं.* पलेथन।

परदनी[1] *स्त्री.* {सं. परिधान} धोती।

परदनी[2] *स्त्री.* {सं. प्रदान} दान-दक्षिणा।

परदा *पुं.* {फा. पर्दः} आड़ करने के लिए लटकाया-हुआ कपड़ा, चिक आदि, पट (कर्टेन)।

मुहा. परदा खोलना = छिपी हुई बात या रहस्य प्रकट करना। *परदा डालना* = छिपाना। *आँखों पर परदा पड़ना* = साफ बात भी दिखाई न देना।

आड़ करनेवाली कोई वस्तु, व्यवधान; विभाग या आड़ करने के लिए उठाई गई मकान, बाग आदि की दीवार; आड़, ओट; दुराव, छिपाव; स्त्रियों के बाहर निकलकर लोगों के सामने न होने की प्रथा।

मुहा. परदा करना = स्त्री का परदे में रहना और सर-पुरुष के सामने न होना।

मर्यादा, इज्ज़त, लाज।

परदाज *पुं.* {फा. पर्दाज़} {*भाव.* परदाजी} सजाना; चित्र आदि के चारों ओर बेल-बूटे बनाना; चित्रों में अभीष्ट रंगत लाने के लिए पास-पास महीन बिंदु लगाना।

परदादा *पुं.* {हिं. पर + हिं. दादा} {*स्त्री.* परदादी} दादा का बाप, प्रपितामह।

परदानशीन *वि.* {फा. पर्दः नशीं} पदरे में रहनेवाली और पराए मरदों के सामने न आनेवाली (स्त्री)।

परदार *स्त्री.* {सं.} दूसरे की भार्या या पत्नी, परस्त्री।

परदिवस *पुं.* {सं.} आज से दूसरा दिन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परदेवता *स्त्री.* {सं.} इष्ट देवता।

परदाफाश *पुं.* {फा. पर्दःफाश} परदे को हटाना; रहस्य का उद्‌घाटन।

परदुखकातर *वि.* {सं.} दूसरे के दुख से दुखी।

परदेश *पुं.* {सं.} {*वि.* परदेशी} अपने देश से भिन्न, दूसरा देश, विदेश।

परदेस *पुं.* = परदेश।

परदेसी *वि., पुं.* परदेश से आया हुआ।

परधान *वि.* प्रधान; *पुं.* परिधान।

परधाम *पुं.* {सं.} बैकुंठ धाम।

परन *पुं.* प्रण; पर्ण।

परनपुटी *स्त्री.* {सं. पर्ण + पुट} पत्तों का बना हुआ दोना।

परनसाला *स्त्री.* {सं. पर्णशाला} झोंपड़ी, कुटी।

परनाला *पुं.* पनाला।

परिन[1] *स्त्री.* {हिं. पड़ना} अभ्यास, आदत, बान।
उदा. राखौं हरकि उतै को धावै, उनकी बैसी परिन परी री–**सूर**।

परिन[2] *स्त्री.* {हिं. आ पड़ना} अचानक आ या टूट पड़ना, आक्रमण, चढ़ाई, धावा।
उदा. अहे, परनि परि प्रेम की, परहथ पारिन प्रान–**बिहारी**।

परनोत *स्त्री.* प्रणाम।

परपंच *पुं.* प्रपंच।

परपट *वि., पुं.* पटपर।

परपरा *वि.* {अनु.} जो परपराता हो; परपर शब्द करके टूटनेवाला।

परपराना *अ.* {अनु.} {*भाव.* परपराहट} मिर्च आदि कड़वी चीजों का जीभ से या मुँह में लगकर एक प्रकार का तीव्र संवेदन उत्पन्न करना, चुनचुनाना।

परपार *पुं.* {सं.} दूसरी ओर का तट।

परपीड़क *पुं.* {सं.} दूसरों को दुख देनेवाला; पराई पीड़ा या कष्ट समझनेवाला।
उदा. ऐसे प्रभु पर-पीरक–**सूर** (क्व.)।

परपुरुष *पुं.* {सं.} स्त्रियों के लिए अपने पति के अतिरिक्त दूसरा पुरुष।

परपुष्ट *पुं.* {सं.} कोकिल, कोयल।

परपुष्टा *स्त्री.* {सं.} पराश्रया, वेश्या, रंडी।

परपूठा *पुं.* {सं. परिपुष्ट} पक्का।

परपोता *पुं.* {सं. प्रपौत्र} पोते का लड़का, पुत्र के पुत्र का बेटा।

परब *पुं.* = पर्व।

परबत *पुं.* = पर्वत, पहाड़।

परबल *वि.* = प्रबल।

परबस *वि.* {हिं. पर + वश} दूसरे के वश में पड़ा हुआ, परतंत्र, पराधीन।

परबसताई *स्त्री.* = पराधीनता।

परबाल *पुं.* परवाल; प्रवाल।

परबीन *वि.* प्रवाल।

परबोधना *स.* {सं. प्रबोधन} जगाना; ज्ञान या उपदेश करना; दिलासा या तसल्ली देना।

परब्रह्म *पुं.* {सं.} निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म जो जगत से परे है।

परभाई *पुं.* प्रभाव।

परभाग *पुं.* {सं.} बचा हुआ अंश, अंतिम भाग।

परभुक्त *वि.* {सं.} दूसरे के द्वारा भोगा हुआ।

परभुक्ता *स्त्री.* {सं.} (वह स्त्री) जो परपुरुष से संभोग करा चुकी हो।

परभृत *पुं.* {सं.} कार्तिकेय; कोयल।

परम *वि.* {सं.} {*स्त्री.* परमा} जिससे आगे या अधिक और कुछ न हो; सबसे बढ़कर, उत्कृष्ट; प्रधान, मुख्य; आद्य, आदिम; अत्यंत।

परमा *स्त्री.* {हिं.} शोभा, छवि।

परम आज्ञा *स्त्री.* {सं.} ऐसी आज्ञा, जो अंतिम हो और जिसमें किसी प्रकार का परिवर्तन या फेर-बदल न हो सकता हो (एब्सोल्यूट ऑर्डर)।

परमक *वि.* {सं.} चरम सीमा का, परले सिरे का।

परमगति *स्त्री.* {सं.} मोक्ष, मुक्ति।

परमटा *पुं.* पनैला।

परम तत्व *पुं.* {सं.} वह मूल तत्व जिससे सारे विश्व की सृष्टि य विकास हुआ है; ईश्वर, ब्रह्म।

परमधाम *पुं.* {सं.} बैकुंठ।

परमपद *पुं.* {सं.} मोक्ष, मुक्ति।

परमपुरुष *पुं.* {सं.} परमात्मा।

परम सत्ता *स्त्री.* {सं.} वह सत्ता या शक्ति जो सबसे बढ़कर हो और जिसके ऊपर और कोई सत्ता या शक्ति न हो (एब्सोल्यूट पॉवर)।

परमसत्ताधारी *पुं.* {सं.} वह जिसे परम या सबसे बढ़कर सत्ता या अधिकार प्राप्त हो (सॉवरेन)।

परमहंस *पुं.* {सं.} ज्ञान की परमावस्था तक पहुँचा हुआ संन्यासी; परमात्मा।

परमाणु *पुं.* {सं.} किसी तत्व का वह अत्यंत सूक्ष्म भाग जिसके बिना किसी विशिष्ट वैज्ञानिक या वैद्युतिक प्रक्रिया के और विभाग या खंड हो ही न सकते हों (एटम)।

परमाणु-ऊर्जा *स्त्री.* {सं.} परमाणुओं के विखंडन से उत्पन्न ऊर्जा (एटामिक एनर्जी)।

परमाणुवाद *पुं.* {सं.} {*वि.* परमाणुवादी} यह दार्शनिक सिद्धांत कि संसार के सब पदार्थ परमाणुओं के संयोग से या घनीभूत होने से बने हैं (एटमिज़्म)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमाणुवादी पुं. {सं. परमाणुवादिन्} परमाणुवाद का सिद्धांत माननेवाला (एटोमिस्ट); *वि.* परमाणुवाद-संबंधी।

परमाणविक *वि.* {सं.} परमाणु-संबंधी।

परमात्मा पुं. {सं. परमात्मन्} ईश्वर।

परमानंद पुं. {सं.} ब्रह्म के साक्षात् या ज्ञान का सुख, ब्रह्मानंद; परब्रह्म।

परमान पुं. प्रमाण।

परमानना *स.* {सं. प्रमाण} किसी वस्तु या बात को प्रमाण के रूप में मानना, प्रामाणिक समझना; स्वीकृत करना।

परमायु *स्त्री.* {सं. परमायुस्} मनुष्य के जीवनकाल की चमरसीमा जो 100 वर्ष मानी जाती है।

परमारथ पुं. = परमार्थ।

परमार्थ पुं. {सं.} {*वि.* परमार्थी.} सबसे बढ़कर वस्तु या सत्ता; परोपकार; मोक्ष, मुक्ति।

परमार्थपरायण *वि.* {सं.} परमार्थ में लगा रहनेवाला।

परमावश्यक *वि.* {सं.} जो परम आवश्यक हो।

परमिट पुं. {सं.} कोई विशेष कार्य करने या कोई वस्तु प्राप्त करने के लिए मिलनेवाला आज्ञापत्र या अधिकार-पत्र, अनुज्ञा-पत्र।

परमिति *स्त्री.* {सं. परिमिति} चरम सीमा, अंतिम मर्यादा या हद; परिमिति।

परमुख *वि.* {सं. पराङ्मुख} विमुख; प्रतिकूल आचरण करनेवाला।

परमेश, परमेश्वर पुं. {सं.} सृष्टि का स्वामी, ईश्वर परमात्मा।

परमेश्वरी *वि.* {सं.} ईश्वरीय; *स्त्री.* शक्ति या दुर्गा का एक नाम।

परमेष्ट *वि.* {सं. परम + इष्ट} जो परम इष्ट या प्रिय हो।

परमेष्टी पुं. {सं. परमेष्ठिन्} ब्रह्मा, शिव, विष्णु आदि देवता; अग्नि, जल वायु आदि तत्व, भूत; प्राचीन काल का एक प्रकार का यज्ञ।

परमेसरी *स्त्री.* = परमेश्वरी।

परमोक पुं. {सं. परिमोक्ष} मोक्ष मुक्ति, छुटकारा; स्वतंत्रता।

परमैश्वर्य पुं. {सं.} विपुल ऐश्वर्य।

परमोद पुं. प्रमोद।

परमोदना *स.* {सं. प्रबोध} परबोधना; मीठी-मीठी बातें करके अपनी ओर मिलाना।

परराष्ट्र पुं. {सं.} अपने राष्ट्र से भिन्न दूसरा राष्ट्र।

परराष्ट्रीय *वि.* {सं.} राजनीतिक क्षेत्र में अपने राष्ट्र से भिन्न, दूसरे या बाहरी राष्ट्रों से संबंध रखनेवाला (फॉरेन)।

परलउ (लय) पुं. प्रलय।

परलय *स्त्री.* {हिं. सं.} प्रलय, सृष्टि का अंत।

परला *वि.* {सं. पर = उधर} {*स्त्री.* परली} उस ओर का, उधर का 'उरला' का विपर्याय।

मुहा. पहले दरजे या सिरे का = हद दरजे का, अत्यंत।

परलै *स्त्री.* प्रलय।

परलोक पुं. {सं.} शरीर छोड़ने पर आत्मा को प्राप्त होनेवाला स्थान या लोक, जैसे, स्वर्ग, बैकुंठ आदि।

परलोकवास पुं. {सं.} मृत्यु।

परलोकवासी (सिन्) पुं. {सं.} मरा हुआ, मृत।

परवरिश *स्त्री.* {फा.} पालन-पोषण।

परवर्ती (तिन्) *वि.* {सं.} बादवाला।

परवश *वि.* {सं.} {*भाव.* परवशता} पराधीन, परतंत्र।

परवेश्य *वि.* परवश, पराधीन।

परवा *स्त्री.* {फा. पर्वा} चिंता, फिक्र; (किसी के) महत्व आदि का ध्यान; *स्त्री.* प्रतिपदा।

परवान पुं. प्रमाण, सीमा, अवधि।

परवानगी *स्त्री.* {फा.} अनुमति।

परवानना *स.* परमानना, उचित समझना।

परवाना पुं. {फा. पर्वान:} आज्ञापत्र; फतिंगा, पतंगा; बरी, चूना आदि नापने का एक बड़ा मान या पात्र।

परवाल पुं. {हिं. पर = दूसरा + बाल = रोयाँ} आँख की पलक के अंदर का वह बाल जिससे आँख में बहुत पीड़ा होती है; पुं. प्रवाल।

परवास पुं. प्रवास, ढपना।

परवासी *वि.* {सं.} दूसरे के घर में बसनेवाला।

परवाह *स्त्री.* परवा; पुं. गवाह।

परवी *स्त्री.* {*वि.*} पर्वकाल।

परवेश पुं. परिवेश।

परश पुं. {सं.} पारस पत्थर, स्पर्शमणि।

परशु पुं. {सं.} युद्ध में काम आनेवाली एक प्रकार की कुल्हाड़ी, तबर।

परसंग पुं. = प्रसंग।

परस[1] पुं. {सं. स्पर्श} {*क्रि.* परसना} छूने की क्रिया या भाव, स्पर्श।

परस[2] पुं. {सं. परश} पारस पत्थर।

परसना *स.* {सं. स्पर्श} छूना।

उदा. कर्दम काम कटॅ परसी-सी—**केशव**।

स. परोसना।

परस-पखान पुं. पारस (पत्थर)।

परसमनि पुं. = स्पर्शमणि (पारस पत्थर)।

पर साल *क्रि. वि.* {सं. पर + फा. साल} पिछले वर्ष; अगले साल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परसाल *स्त्री.* {सं. प्रशाला} बड़ी कोठरी, कमरा।
परसिया *स्त्री.* {हिं.} हँसिया।
परसु *पुं.* {हिं.} परशु।
परसिद्ध *वि.* = प्रसिद्ध।
परसेद *पुं.* प्रस्वेद।
परसों *क्रि. वि* {सं. परश्वः} बीते हुए कल से पहलेवाला दिन; आगामी कल के बादवाला दिन।
परसोतम *पुं.* पुरुषोत्तम।
परसौंहाँ *वि.* {सं. स्पर्श} छूनेवाला।
परस्पर *क्रि. वि.* {सं.} एक दूसरे के साथ, आपस में; *वि.* = पारस्परिक।
परस्परता *स्त्री.* = पारस्परिकता।
परस्परोपमा *पुं.* उपमेयोपमा, अर्थालंकार।
परस्व *पुं.* {सं.} 'पराया' होने का भाव, परायापन, 'निजस्व' का उलटा; पराधीनता परतंत्रता।
परहरना *पुं.* = त्यागना, छोड़ना।
परहारी *पुं.* {हिं.} जगन्नाथ जी का पुजारी।
परहित *पुं.* {सं.} दूसरे का कल्याण।
परहेज *पुं.* {फा. परहेज़} {परहेजगार.} खाने, पीने आदि का संयम; दोषों, पापों या बुराइयों से दूर रहना।
परहेलना *स.* {सं. प्रहेलन} अनादर या तिरस्कार करना, अवज्ञा करना।
परांग *पुं.* {सं.} शरीर का पिछला भाग।
परांगव *पुं.* {सं.} समुद्र।
पराँचा *पुं.* {हिं.} पटरी, पाटन।
पराँठा *पुं.* {हिं. पलटना} वह चपाती, जो घी लगाकर तवे पर सेंकी जाती है, परौंठा।
परा *स्त्री.* {सं.} चार प्रकार की वाणियों में पहली, जो नाद स्वरूप मानी जाती है; परमार्थ का ज्ञान करानेवाली विद्या, ब्रह्मविद्या।
पराकाष्ठा *स्त्री.* {सं.} वह अंतिम सीमा जहाँ तक कोई बात हो या पहुँच सकती हो, चरम सीमा, चूड़ांत (क्लाइमैक्स)।
पराक्रम *पुं.* {सं.} {*वि.* पराक्रमी} बल, शक्ति; पुरुषार्थ।
पराग *पुं.* {सं.} फूलों के लंबे केसर पर जमी हुई धूल या रज, पुष्परज; नलहाने के पहले शरीर में मलने का एक सुगंधित चूर्ण; चंदन; उपराग।
परागकेसर *पुं.* {सं.} फूलों के बीच का केसर या सींका।
परागना *अ.* {सं. उपराग} अनुरक्त होना।
पराङ्मुख *वि.* {सं.} {*भाव.* पराङ्मुखता} मुँह फेरे हुआ, विमुख; उदासीन; विरुद्ध।
पराजय *स्त्री.* {सं.} हार जाने की अवस्था या भाव।
पराजय *स्त्री.* {सं.} पराभव, हार।
पराजित *वि.* {सं.} हारा हुआ।
पराण *पुं.* {सं.} प्राण।
पराधि *पुं.* {सं.} दूसरे का दुःख-व्यथा।
परात *स्त्री.* {सं. पात्र} बड़ी थाली।
परात्पर *वि.* {सं.} सर्वश्रेष्ठ; *पुं.* परमात्मा; विष्णु।
पराधीन *वि.* {सं.} {*भाव.* पराधीनता} जो दूसरे के अधीन हो, परतंत्र, परवश।
परानंद *पुं.* परमानंद।
परान *पुं.* प्राण।
पराना *अ.* {सं. पलायन} बहुत जल्दी कहीं से हट जाना, भागना; *स.* दूर करना, भगाना; नष्ट करना, हटाना।
परान्न *पुं.* {सं.} पराया या दूसरे का दिया हुआ अन्न या भोजन।
पराभव *पुं.* {सं.} पराजय, हार; तिरस्कार, मानभंग; दूसरे को दबाकर अपने अधीन करना (सबजुगेशन)।
पराभूत *वि.* {सं.} पराजित, हारा हुआ; तिरस्कृत।
परामर्श *पुं.* {सं.} किसी विषय का विवेचन; आपस में मिलकर यह सोचना या किसी से मिलकर या जानना कि क्या ठीक है अथवा क्या होना चाहिए, सलाह, मंत्रणा (कंसल्टशन)।
परामर्शदाता *पुं.* {सं. दातृ} परामर्श देनेवाला व्यक्ति।
परामर्शदात्री (त्रिन्) *वि. स्त्री.* {सं.} परामर्श देनेवाली।
परामर्शालय *पुं.* {सं. परामर्श + आलय} वह स्थान या कमरा, जिसमें बैठकर कोई दूसरों को किसी विशेष विषय में परामर्श देता हो, जैसे किसी डॉक्टर या वकील का परामर्शालय (कंसल्टिंग रूम)।
परामर्शी *वि.* {सं.} परामर्श देनेवाला; परामर्श-संबंधी।
परायण *वि.* {सं.} {*भाव.* परायणता, *स्त्री.* परायणा} गया हुआ; लगा हुआ, प्रवृत्त; किसी विषय या बात पर दृढ़तापूर्वक आरूढ़ या स्थिर, जैसे आदर्शपरायण, सत्यपरायण।
परायत्त *वि.* {सं.} पराधीन, परवश।
पराया *वि.* {सं. पर} {*स्त्री.* पराई} दूसरे का, अन्य का, अपना नहीं।
मुहा. पराये गुलाल की होली खेलना = दूसरे के धन या सामग्री से सुखभोग या आनंद करना।
जो आत्मीय न हो, दूसरा गैर।
परायु *पुं.* {सं.} ब्रह्मा।
परार (रा) *वि.* पराया।
परार्थ *पुं.* {सं.} {*भाव.* परार्थता} दूसरे का उपकार या भलाई, परोपकार; *वि.* जो दूसरे के लिए हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परार्थवाद पुं. {सं.} {*वि.* परार्थवादी.} यह सिद्धांत कि मनुष्य को सदा दूसरों की भलाई के काम करते रहना चाहिए (एल्टुइज़्म)।

परालब्ध *स्त्री.* प्रारब्ध।

पराव[1] पुं. {हिं. परान = भागना} भागने की क्रिया या भाव।

पराव[2] पुं. {हिं. पर = पराया} परायापन; दुराव, छिपाव।

परावर्तन पुं. {सं.} {*वि.* परावर्तित, परावृत} फिर अपने स्थान पर आना, लौटना; उलटकर फिर ज्यों-का-त्यों होना (रिवर्शन)।

परावर्ती *वि.* {सं.} लौटकर फिर अपने स्थान पर आनेवाला; फिर से ज्यों-का-त्यों हो जानेवाला।

परावलंबी (बिन्) *वि.* {सं.} जो दूसरों पर अवलम्बित हो।

परावृत्त *वि.* {सं.} {*भाव.* परावृत्ति} लौटा या लौटाया हुआ; बदला हुआ, परिवर्तित; भागा हुआ।

पराश्रित *वि.* {सं.} जो दूसरों पर आश्रित हो।

परासन पुं. {सं.} **मारना, वध, उत्तम आसन।**

परासी *स्त्री.* {सं.} एक रागिनी।

परास्त *वि.* {सं.} हारा हुआ, पराजित।

पराह्न पुं. {सं.} दोपहर के बाद का समय, तीसरा पहर, अपराह्न।

परिंद (दा) पुं. {फा. परिन्द} पक्षी, चिड़िया।

परि उप. {सं.} एक संस्कृत उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उनमें ये अर्थ बढ़ाता है : चारों ओर, जैसे-परिक्रमण; अच्छी तरह, जैसे परिपूर्ण; अतिशय, जैसी परिवर्धन; पूर्णता, जैसे परित्याग; दूषण, जैसे परिहास।

परीक *स्त्री.* {सं.} खोटी चाँदी।

परिकर पुं. {सं.} पर्यक, पलँग; परिवार; समूह, झुंड; अनुचरवर्ग; कमरबंद, पटका।

परिकलक पुं. {सं.} वह जो परिकलन करता हो, हिसाब लगाने या लेखा ठीक करनेवाला; एक प्रकार का यंत्र, जिसकी सहायता से कुछ बड़े हिसाब बहुत सहज में और थोड़े समय में लगाए जाते हैं; वह पुस्तक जिसमें अनेक प्रकार के लगे हुए हिसाबों के बहुत से कोष्ठक होते हैं (कैलकुलेटर)।

परिकलन पुं. {सं.} {*वि.* परिकलित} गिनने या हिसाब लगाने का काम, गणना करना (कैलकुलेशन)।

परिकल्पना *स्त्री.* {सं.} {*वि.* परिकल्पित} जिस बात की बहुत-कुछ संभावना हो, उसे पहले की मान लेना या उसकी कल्पना कर लेना; केवल तर्क के लिए कोई बात मान लेना; ऐसी बात मान लेना जो अभी प्रमाणित न हुई हो, पर हो सकती हो (हाइपॉथेसिस); कुछ विशिष्ट आधारों पर कोई बात ठीक मान लेना (प्रिज़मपशन)।

परिकल्पित *वि.* {सं.} जो अभी हुआ तो न हो, पर संभव होने के कारण जिसकी कल्पना पहले से की जाए (हाईपॉथेटिक); जो केवल तर्क के लिए मान लिया गया हो; जो कुछ विशिष्ट आधारों पर ठीक मान लिया हो (प्रिज़्यूम्ड)।

परिकीर्ण *वि.* {सं.} विस्तृत, फैला हुआ।

परिकृश *वि.* {सं.} अति दुर्बल।

परिक्रम पुं. {सं.} किसी काम की जाँच या निरीक्षण के लिए जगह-जगह जाना या घूमना, दौरा (टूर)।

परिक्रमण पुं. {सं.} किसी काम की देख-रेख के लिए जगह-जगह जाना, दौरा करना; परिक्रमा।

परिक्रमा *स्त्री.* {सं. परिक्रम} किसी स्थान के, विशेषत: देवता या पवित्र स्थान के चारों ओर घूमना; मंदिर तथा तीर्थ के चारों ओर घूमने के लिए बना हुआ मार्ग।

परिक्षेत्र पुं. {सं.} नगर का कोई विशिष्ट विभाग (सेक्टर)।

परिक्षेत्रिक *वि.* {सं.} परिक्षेत्र-संबंधी।

परिखना *अ.* = प्रतीक्षा करना, आरूप देखना; *स.* = परखना।

परिखा *स्त्री.* {सं.} खंदक, खाई।

परिखावन *स्त्री.* परख; परीक्षा।

परिगण पुं. {सं.} गृह, घर।

परिगणन पुं. {सं.} गणना करना, गिनना।

परिगणित *वि.* {सं.} {*संज्ञा.* परिगणन} जो गिनती में आया हो, गिना या गिनाया हुआ; जिसका उल्लेख या गणना किसी अनुसूची आदि में की गई हो, जैसे परिगणित जातियाँ या जनजातियाँ।

परिगत *वि.* {सं.} चारों ओर से घिरा या घेरा हुआ; बीता हुआ, व्यतीत, गत; मरा हुआ, मृत; जाना हुआ, ज्ञात।

परिगह पुं. {सं. परिग्रह} परिवार के लोग, बाल-बच्चे।

परिगहना *स.* = परिग्रहण करना।

परिगृहीत *वि.* {सं.} ग्रहण किया हुआ, स्वीकृत; मिला हुआ, प्राप्त।

परिगृह्या *स्त्री.* {सं.} धर्मपत्नी, विवाहिता स्त्री।

परिग्रह पुं. {सं.} {*वि.* परिग्रह्य, परिगृहीत} दान लेना, प्रतिग्रह; पाना; आदरपूर्वक लेना; धन आदि का संग्रह; विवाह; पत्नी; परिवार, बाल-बच्चे।

परिग्रहण पुं. {सं.} ग्रहण या स्वीकृत करने अथवा लेने की क्रिया या भाव।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिघ पुं. {सं.} दरवाजा बंद करने की अर्गला, ब्योंड़ा; आड़ या रुकावट के लिए खड़ी की हुई कोई चीज, बाढ़। (बेरियर); वह डंडा जिसके सिरे पर लोहा जड़ा हो, लोहाँगी; तीर; भाला; घोड़ा; फाटक; घर; पानी का घड़ा।

परिघात पु. {सं.} हनन, हत्या।

परिघाती *वि.* {सं.} हत्या करनेवाला

परिचना *अ.* = परचना।

परिचय पुं. {सं.} जानकारी, अभिज्ञता; पहचान, लक्षण; किसी व्यक्ति के नाम, धन, गुण, कर्म आदि से संबंध रखनेवाली सब या कुछ बातें जो किसी को बतलाई जाएँ (इंट्रोडक्शन); जान-पहचान।

परिचय-पत्र पुं. {सं.} वह पत्र जिसमें किसी व्यक्ति का संक्षिप्त परिचय लिखा हो; किसी वस्तु या संस्था से संबंध रखनेवाला वह पत्रक या पुस्तिका, जिसमें उस वस्तु की सब बातों या संस्था के उद्देश्यों, कार्यक्षेत्रों और कार्य-प्रणालियों आदिका परिचय या विवरण दिया हो (मैमोरेंडम)।

परिचर पुं. {सं.} {*स्त्री.* परिचरी} सेवक; रोगी की सेवा करनेवाला।

परिचरी *स्त्री.* {सं.} दासी, टहलनी।

परिचर्या *स्त्री.* {सं.} सेवा, टहल; रोगी की सेवा-सुश्रूषा।

परिचायक पुं. {सं.} किसी बात या व्यक्ति का परिचय करानेवाला (तथ्य या वस्तु); सूचित करानेवाला, सूचक।

परिचार पुं. {सं.} सेवा, टहल, छोटे बच्चों, गर्भवती स्त्रियों, रोगियों आदि की वह देखरेख और सेवा-सुश्रूषा, जो उन्हें पुष्ट और नीरोग करने के लिए की जाती है (नर्सिंग)।

परिचारक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* परिचारिका} रोगियों का परिचार या सेवा-सुश्रूषा करनेवाला; पुं. नौकर, सेवक।

परिचारण पुं. {सं.} सेवा, टहल, खिदमत, संग करना।

परिचारना *स.* {सं. परिचारण} सेवा या टहल करना।

परिचारिका *स्त्री.* {सं.} दासी।

परिचारी *वि.* {हिं.} सेवक।

परिचालक पुं. {सं.} परिचालन करने या चलानेवाला (कंडक्टर)।

परिचालन पुं. {सं.} {*वि.* परिचालित} चलाना; किसी कार्य के चलते रहने की व्यवस्था करना; हिलाना।

परिचालित *वि.* {सं.} चलाया हुआ, हिलाया हुआ।

परिचित *वि.* {सं.} जाना हुआ, ज्ञात; जिसका या जिसे परिचय हो; जिससे जान-पहचान हो।

परिचिति *स्त्री.* {सं.} अभिज्ञता, जानकारी।

परिचुंबन पुं. {सं.} गाढ़चुंबन।

परिच्छद पुं. {सं.} ऊपर से ढकने का कपड़ा, आच्छादन; पहनने के पूरे कपड़े पहनावा, पोशाक (ड्रेस) एक ही तरह के वे कपड़े जो किसी विशेष वर्ग या दल के सब लोगों के पहनने के लिए निर्धारित होते हैं, वर्दी जैसे सैनिकों का परिच्छद (यूनिफॉर्म)।

परिच्छन्न *वि.* {सं.} ढका या छिपा हुआ; जो कपड़े पहने हो; स्वच्छ।

परिच्छा *स्त्री.* = परीक्षा।

परिच्छिन्न *वि.* {सं.} परिमित, सीमित; बँटा हुआ, विभक्त।

परिच्छेद *वि.* {सं.} किसी चीज के अलग-अलग खंड या विभाग करना, विभाजन; क्षेत्रों, विभागों, कर्तव्यों आदि के अलग-अलग विभाग करके उनकी सीमाएँ, विस्तार आदि निश्चित या स्थिर करना (डिमार्केशन); ग्रंथ का अध्याय, प्रकरण।

परिच्युति *स्त्री.* {सं.} पतन, गिरना।

परिछिन्न *वि.* = प्रच्छन्न।

परिजन पुं. {सं.} आश्रित लोग; परिवार; साथ रहनेवाले लोग या सेवक।

परिजीवन पुं. {सं. परि + जीवन} {*वि.* परिजीवित, परिजीवी} अपने वर्ग, परिवार या साथ के दूसरे व्यक्तियों, वस्तुओं आदि के न रह जाने पर भी प्राप्त होनेवाला दीर्घकालिक जीवन, साधारणतः नियत काल के अधिक चलनेवाला जीवन।

परिजीवित *वि.* {सं. परिजीवन} (व्यक्ति) जो अपने वर्ग, परिवार या साथ के दूसरे व्यक्तियों आदि के न रह जाने पर भी जीवित ही बचा हो।

परिजीवी पुं. {सं. परिजीवन} वह जो अपने वर्ग, परिवार या साथ के दूसरों की अपेक्षा अधिक समय तक जीता या बचा रहे (सरवाइवर)।

परिज्ञात *वि.* {सं.} अच्छी तरह जाना हुआ।

परिज्ञान पुं. {सं.} {*वि.* परिज्ञात} पूरा ज्ञान।

परिणत *वि.* {सं.} {*भाव.* परिणति} एक रूप से दूसरे रूप में आया हुआ, रूपांतरित; पका या पचा हुआ।

परिणति *स्त्री.* {सं.} रूप में परिवर्तन होना, रूपांतरण परिपाक; प्रौढ़ता, पुष्टि; समाप्ति, अंत।

परिणय पुं. {सं.} {*वि.* परिणीत} विवाह।

परिणय-सूत्र पुं. {सं.} वैवाहिक बंधन।

परिणाम पुं. {सं.} बदलने का भाव या कार्य; विकार, रूपांतर; विकास, वृद्धि; समाप्त होना,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीतना; किसी कार्य के अंत में उसके फलस्वरूप होनेवाला कार्य या बात, नतीजा. फल (रिज़ल्ट); किसी कार्य का क्रियात्मक रूप से पड़नेवाला प्रभाव (एफेक्ट); किसी कार्य के फलस्वरूप क्रियात्मक रूप से होनेवाला कोई प्रभाव (कांसीक्वेंस); बहुत सी बातों का सुन-समझकर निकाला हुआ निष्कर्ष, नतीजा (कंक्लूज़न)।

परिणामदर्शी *वि.* {सं. परिणामदर्शिन्} जो पहले से ही किसी बात का परिणाम जान या समझ लेता हो; फल या परिणाम का ध्यान रखकर कार्य करनेवाला, दूरदर्शी।

परिणामस्वरूप *क्रि. वि.* {सं.} फलस्वरूप।

परिणामात्मक *वि.* {सं.} परिणाम के रूप में होनेवाला।

परिणामी *वि.* {सं. परिणामिन्} जिसका परिणाम या अंत होता हो। परिणाम-संबंधी; परिणामदर्शी।

परिणायक *पुं.* {सं.} सेनापति, नेता, पति।

परिणाह *पुं.* {सं.} विस्तार, फैलाव, चौड़ाई।

परिणीता *वि.* {सं.} भार्या।

परिणेता *पुं.* {हिं.} स्वामी, पति।

परितः *अव्य.* {सं.} चारों ओर पूर्ण रूप से।

परितच्छ *पुं.* {हिं.} प्रत्यक्ष रूप से।

परिणीत *वि.* {सं.} विवाहित, ब्याहा हुआ; समाप्त, पूर्ण।

परितप्त *वि.* {सं.} तपा हुआ, उत्तम; जिसे दुख पहुँचा हो, पीड़ित; परिताप करने या पछतानेवाला।

परिताप *पुं.* {सं.} {कर्ता परितापी, *वि.* परितप्त} गरमी, आँच; दुख, क्लेश; शोक; पश्चात्ताप, पछतावा।

परितापना *अ.* {सं. परिताप} परिताप या पश्चाताप करना।

परितापी *वि.* {सं. परिताप} परिताप करनेवाला।

परितुष्ट *वि.* {सं.} {*भाव.* परितुष्टि} परम संतुष्ट; प्रसन्न, खुश।

परितृप्त *वि.* {सं.} {*भाव.* परितृप्ति} जिसका अच्छी तरह परितोष हो गया हो, भली भाँति तृप्त।

परितृप्ति *स्त्री.* {सं.} परितृप्त होने की क्रिया या भाव, अच्छी तरह तृप्त होना।

परितोष *पुं.* {सं.} {*वि.* परितुष्ट} किसी काम या बात के ठीक तरह से होने पर प्रसन्नता और संतोष होना, वह सुख जो मन के अनुसार काम होने पर होता है, तुष्टि, संतोष (सैटिस्फैक्शन); प्रसन्नता, खुशी।

परितोषण *पुं.* {सं.} किसी का परितोष करने की क्रिया या भाव, पूरी तरह से संतुष्ट करना या होना; वह धन जो किसी को संतुष्ट करने या उसका परितोष करने के लिए दिया गया हो (ग्रैटिफिकेशन)।

परितोषद *वि.* {सं.} परितोष देने या संतुष्ट करनेवाला, जिससे परितोष हो।

परितोस *पुं.* = परितोष।

परित्यक्त *वि.* {सं.} {*स्त्री.* परित्यक्ता} त्यागा, छोड़ा या अलग किया हुआ (अबैंडंड)।

परित्याग *पुं.* {सं.} {*वि.* परित्यागी, परित्यक्त, परित्याज्य} छोड़ देना, त्याग देना; अपना अधिकार या स्वत्व सदा के लिए और पूरी तरह से छोड़ना, जैसे पद या राज्य का परित्याग; किसी वस्तु या प्राणी से सदा के लिए संबंध तोड़ लेना, जैसे पत्नी या शिशु का परित्याग।

परित्यागना *स.* {सं. परित्याग} छोड़ देना, त्यागना।

परित्यागी (गिन्) *पुं.* {सं.} वह जिसने किसी व्यक्ति, संपत्ति या वस्तु का परित्याग कर दिया हो, त्याग या छोड़ देनेवाला।

परित्याज्य *वि.* {सं.} छोड़ देने योग्य।

परित्रस्त *वि.* {सं.} भयभीत, डरा हुआ।

परित्रात *वि.* {सं.} जिसकी रक्षा हुई हो।

परित्राण *पुं.* {सं.} कष्ट, हानि आदि से किया जानेवाला बचाव, रक्षा (प्रोटेक्शन)।

परित्राता *पुं.* {सं. परित्रातृ} परित्राण या रक्षा करनेवाला।

परिदर *पुं.* {सं.} दाँत का रोग।

परिदर्शन *पुं.* {सं.} घूमकर देखना; देखरेख करना, निरीक्षण; न्यायालय में किसी व्यवहार या मुकदमे की होनेवाली सुनवाई (ट्रायल)।

परिदिष्ट *वि.* {सं.} काटकर टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

परिदान *पुं.* {सं.} वापस करना, लौटा देना।

परिदाय *पुं.* {सं.} सुगंधि।

परिदाह *पुं.* {सं.} शोक, संताप।

परिदेवक *पुं.* {सं.} विलाप करनेवाला।

परिधन *पुं.* {सं. परिधान} कमर और जाँघों पर पहनने का कपड़ा, धोती आदि।

परिधान *पुं.* {सं.} वस्त्र, कपड़ा; पहनने के कपड़े, पोशाक; पहनावा।

परिधि *पुं.* {सं.} वृत्त को घेरनेवाली गोल रेखा या उसकी लंबाई की नाप (सरकम्फरेंस); नियत या नियमित और प्रायः गोलाकार वह मार्ग जिस पर कोई चीज चलती, घूमती या चक्कर लगाती हो, कक्षा; प्रायः गोलाकार माना जानेवाला कोई ऐसा वास्तविक या कल्पित घेरा, जो दूसरे बाहरी क्षेत्रों से अलग हो; कुछ विशेष लोगों या कार्यों का स्वतंत्र क्षेत्र, वृत्त (सर्किल); परिधान; परिवेश।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिधिक, परिधीय *वि.* {सं.} परिधि-संबंधी, परिधि का; जिसका कार्यक्षेत्र किसी विशेष परिधि में हो, जैसे परिधिक निरीक्षक।

परिपंच *पुं.* = प्रपंच।

परिपक्व *वि.* {सं.} {*भाव.* परिपक्वता} अच्छी तरह पका या पचा हुआ; पूरी तरह से विकसित, प्रौढ़; बहुदर्शी, अनुभवी; निपुण, कुशल, प्रवीण।

परिपत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जिसमें किसी संस्था या दल के उद्देश्य, विचार, कार्य-प्रणाली या संघटन के मूल नियम अथवा किसी विषय पर विचार य सम्मतियाँ आदि की गई हों (मैमोरेंडम); विचार, सूचना आदि के लिए बहुत से संबद्ध लोगों के पास भेजा जानेवाला पत्र (सर्कुलर)।

परिपाक *पुं.* {सं.} पकना या पकाया जाना; पचना; प्रौढ़ता पूर्णता, जैसे साहित्य में रस का परिपाक: परिपाक; परिणाम, फल, जैसे कर्म या परिपाक; निपुणता, दक्षता।

परिपाटी *स्त्री.* {सं.} क्रम, सिलसिला; चली आई हुई प्रणाली या शैली; पद्धति, रीति।

परिपालन *पुं.* {सं.} {*वि.* परिपाल्य, परिपालित} रक्षा करना, बचाना; रक्षा, बचाव।

परिपुष्ट *वि.* {सं.} जिसका भली भाँति पोषण हुआ हो; पूर्ण रूप से पुष्ट।

परिपूत *वि.* {सं.} पवित्र; साफ किया हुआ और विशुद्ध।

परिपूरक *वि.* {सं.} परिपूर्ण करनेवाला।

परिपूर्ण *वि.* {सं.} {*वि.* परिपूरक, परिपूरित, *भाव.* परिपूर्णता} अच्छी तरह भरा हुआ; पूर्ण रूप से तृप्त; समाप्त किया हुआ।

परिपूर्णतः *क्रि. वि.* {सं.} पूरी तरह से।

परिपूर्णवादी (दिन्) *वि. पुं.* {सं.} जो हर चीज को परिपूर्ण बनाना या देखना चाहता हो।

परिपूर्णता *स्त्री.* {सं.} संपूर्णता।

परिपूर्णत्व *पुं.* {सं.} परिपूर्णता।

परिपूर्ति *स्त्री.* {सं.} परिपूर्ण होने की क्रिया।

परिपृच्छक *पुं.* {सं.} पूछनेवाला।

परिपेलव *वि.* {सं.} अति सुकुमार।

परिपोट *पुं.* {सं.} कान का एक रोग।

परिपोषण *पुं.* {सं.} पालन-पोषण।

परिप्रश्न *पुं.* {सं.} कोई बात जानने के लिए किया जानेवाला प्रश्न, पूछताछ (एंक्वायरी)।

परिप्रेक्ष्य *पुं.* {सं.} उन परिस्थितियों का समाहार जिसमें कोई घटना घटी हो।

परिप्लव *पुं.* {सं.} तैरना; बाढ़; अत्याचार।

परिप्लावित *वि.* परिप्लुत।

परिप्लुत *वि.* {सं.} प्लावित, डूबा हुआ; भीगा हुआ, गीला, तर।

परिबद्ध *वि.* {सं.} चारों ओर से बँधा हुआ।

परिबर्हण *पुं.* {सं.} राजा का छत्र।

परिबोध *पुं.* {सं.} सामान्यज्ञान।

परिभक्षण *पुं.* {सं.} सारा चटकर जाना।

परिभावना *स्त्री.* {सं.} चिंता, फिक्र; साहित्य में कुतूहल सूचित करनेवाली वह बात जिससे उत्सुकता बढ़े।

परिभाषा *स्त्री.* {सं. *वि.* परिभाषित, परिभाष्य} किसी शब्द या पद का अर्थ या भाव प्रकट करनेवाला स्पष्ट कथन, व्याख्या (डेफिनेशन); वह शब्द जो किसी शास्त्र या विज्ञान में किसी एक कार्य, विचार या अर्थ का सूचक मान लिया गया हो, पारिभाषिक पद (टेकनिकल टर्म); किसी शब्द की वह व्याख्या या स्पष्टकीण, जिससे उसकी विशेषता और व्याप्ति पूरी तरह से निश्चित या स्पष्ट हो।

परिभाषित *वि.* {सं.} जिसकी परिभाषा या व्याख्या की गई हो (डिफाइंड)।

परिभ्रमण *पुं.* {सं.} घूमना-फिरना; चारों ओर घूमना, चक्कर लगाना; एक ही वृत्त में या उसकी परिधि पर बार-बार घूमना (रोटेशन)।

परिभ्रमी (मिन्) *वि.* {सं.} चारों और घूमनेवाला।

परिमंद *वि.* {सं.} बहुत थका हुआ।

परिमर *पुं.* {सं.} वायु, हवा।

परिमर्श *पुं.* {सं.} परामर्श, विचार।

परिमर्ष *पुं.* {सं.} ईर्ष्या, डाह, कुढ़न।

परिमल *पुं.* {सं.} सुवास, सुगंध।

परिमाण *पुं.* {सं.} {*वि.* परिमित, परिमेय} भार, विस्तार, घनत्व आदि का मान, नाप या तौल, मात्रा (क्वांटिटी)।

परिमाप *पुं.* {सं.} {*वि.* परिमापक} नापने की क्रिया या भाव; यह पदार्थ जिससे दूसरे पदार्थों का माप किया जाए, मानदंड, मानक।

परिमार्जन *पुं.* {सं.} {*वि.* परिमार्जित, परिमृज्य} माँज या धोकर साफ या ठीक करना; दोष, त्रुटियाँ आदि दूर करके ठीक करना।

परिमार्जित *वि.* {सं.} जिसका परिमार्जन हुआ हो; सुधारा या सुधरा हुआ, प्रशस्त।

परिमित *वि.* {सं.} {*भाव.* परिमिति, *वि.* परिमेय} जिसकी नाप-तौल की गई हो; जिसकी सीमा, संख्या या विस्तार नियत हो, सीमित (लिमिटेड); जो न अधिक हो न कम, ठीक या उचित मात्रा में होनेवाला; थोड़ा कम, जैसे हमारा ज्ञान बहुत परिमित है।

परिमिति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* परिमित} परिमित या सीमित होने की दशा या भाव (लिमिटेशन); किसी चीज की नाप, तौल, सीमा आदि: किसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्र को घेरनेवाली रेखाएँ या उनका परिमाण; मान-मर्यादा, प्रतिष्ठा।

परिमिलन पुं. {सं.} अच्छी तरह मिलना।

परिमुख *वि.* {सं.} मुख के चारों ओर।

परिमुक्त *वि.* {सं.} पूर्णतः मुक्त।

परिमूढ़ *वि.* {सं.} व्याकुल, विचलित।

परिमृष्ट *वि.* {सं.} पकड़ा हुआ।

परिमेय *वि.* {सं.} जो नापा या तौला जा सके; जिसे नापना या तौलना हो।

परिमोष पुं. {सं.} स्तेय, चोरी।

परिमोहन पुं. {सं.} वशीकरण।

परिया पुं. {तमिल परैयान} दक्षिण भारत की एक दलित जाति; अछूत, अस्पृश्य।

परियात्रा *स्त्री.* परियान।

परियान पुं. {सं.} {*वि.* परियात} अपना देश छोड़कर स्थायी रूप से दूसरे देश में जाना।

परियोजना *स्त्री.* {सं.} विकास की दृष्टि से बनाई हुई बड़ी योजना।

परियुद्धक पुं. {सं.} युद्धकाल में वह राष्ट्र या देश, जो किसी युद्ध में सम्मिलित होकर अपने हित या उन्नति के उद्देश्य से किसी दूसरे देश या राष्ट्र से लड़ रहा हो (बेलिगरेंट)।

परिरंभ पुं. {सं.} {*वि.* परिरंभ्य, परिरंभित, *क्रि.* परिभना} गले या छाती से लगाकर मिलना, आलिंगन।

परिरक्षण पुं. {सं.} {*वि.* परिरक्षक} अच्छी तरह सँभाल या बचाकर रखने की क्रिया या भाव (प्रिजर्वेशन)।

परिरूप पुं. {सं.} किसी होनेवाले कार्य के स्वरूप आदि के संबंध में पहले से की जानेवाली कल्पना; किसी कलात्मक कृति, रचना, सजावट आदि के संबंध की वह मूल कल्पना या रूपरेखा, जिसके अनुसार उसका बाकी सारा काम पूरा होता है, नमूना; किसी वस्तु की बनावट आदि का कलात्मक और सुंदर ढंग या प्रकार, तर्ज। (डिजाइन; उक्त सभी अर्थों के लिए)।

परिरूपक पुं. {सं.} वह जो किसी वस्तु का परिरूप प्रस्तुत करता हो (डिज़ाइनर)।

परिलक्षित *वि.* {सं.} जो स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा हो।

परिलुप्त *वि.* {सं.} नष्ट प्रायः।

परिलेख पुं. {सं.} चित्र का ढाँचा, रेखाचित्र, खाका; चित्र, तस्वीर; चित्र अंकित करने की कूँची या कलम; उल्लेख वर्णन; बड़े अधिकारियों के पास भेजा जानेवाला विवरण (रिटर्न)।

परिलेखना *स.* {सं. परिलेखन} कुछ महत्व का समझना या मानना।

परिवंचन पुं. {सं.} धोखा, छल।

परिवर्जन पुं. {सं.} {*वि.* परिवर्जनीय, परिवर्जित} मना करना, रोकना।

परिवर्तक *वि.* {सं.} घूमने-फिरने या चक्कर खानेवाला; घुमाने-फिराने या चक्कर देनेवाला; परिवर्तन करने या बदलनेवाला।

परिवर्तन पुं. {सं.} {कर्ता परिवर्तक, *वि.* परिवर्तनीय, परिवर्तित, परिवर्ती} घुमाव, चक्कर; कुछ घटा-बढ़ाकर रूप बदलना, एक रूप से दूसरे रूप में लाना, उलट-फेर (चेंज, आल्टरेशन, वेरिएशन); उपयोगिता आदि की दृष्टि से कोई नई बात बढ़ाना या कुछ अंशों का नया रूप देना, सुधारना (मॉडिफिकेशन); एक चीज के बदले में दूसरी चीज लेना या देना, विनिमय, तबादला, जैसे समाचार-पत्रों या पुस्तकों का परिवर्तन (एक्सचेंज); एक को छोड़कर उसकी जगह दूसरा ग्रहण करना, जैसे जलवायु का परिवर्तन; किसी की पसंद या सुविधा की चीज उसे देकर उससे उसके बदले में अपनी पसंद या सुविधा की चीज लेना, जैसे नोटों का रुपयों में या रुपए का रेजगारी में परिवर्तन।

परिवर्तनीय *वि.* {सं.} बदलने योग्य।

परिवर्तित *वि.* {सं.} बदला हुआ, जो बदले में मिला हो।

परिवर्तनकारी (रिन्) *वि.* {सं.} परिवर्तन करने या लानेवाला।

परिवर्तनशील *वि.* {सं.} जिसमें परिवर्तन स्वाभाविक रूप से होता हो।

परिवर्तनशीलता *स्त्री.* {सं.} परिवर्तनशील होने की अवस्था या भाव।

परिवर्धन पुं. {सं.} {*वि.* परिवर्धित} संख्या, गुण, तथ्य आदि में विशेष वृद्धि करने की क्रिया या भाव, परिवृद्धि, बढ़ाना (एडिशन); आकार, मान, विस्तार आदि बढ़ाने की क्रिया या भाव (एन्लॉर्जमेंट)।

परिवर्धित *वि.* {सं.} बढ़ाया हुआ।

परिवसथ पुं. {सं.} ग्राम, गाँव।

परिवहन पुं. {सं.} कोई चीज एक जगह से दूसरी जगह उठाकर ले जाना, वहन; समुद्री या हवाई जहाज आदि चलाना (नैविगेशन)।

परिवा *स्त्री.* प्रतिपदा।

परिवाद पुं. {सं.} निंदा, अपवाद; अधिकारियों के सामने की जानेवाली किसी की शिकायत (कम्प्लेंट)।

परिवार पुं. {सं.} आवरण; म्यान, कोष; घर के लोग, कुटुम्ब; वंश, खानदान; बाल-बच्चे; एक तरह की वस्तुओं का वर्ग, कुल, जाति (फैमिली);

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी राजा या रईस के पास रहने और उसके साथ चलनेवाले लोग।

परिवारी पुं. {हिं.} कुटुम्ब।

परिवार-नियोजन पुं. {सं.} कृत्रिम उपायों से परिवार में बच्चों का जन्म रोकना।

परिवारवाद पुं. {सं.} सामाजिक हितों की उपेक्षा कर पारिवारिक हितों के संवर्धन की नीति।

परिवीक्षा *स्त्री.* {सं.} जाँच।

परिवृत्ति पुं. {सं.} {*वि.* परिवृत्त} घुमाव, चक्कर; घेरा, वेष्टन; विनिमय; समाप्ति, अन्य; दोहराने या फिर से करने की क्रिया या भाव; किसी के किए हुए काम को देखकर उसके अनुसार वैसा ही और कोई काम करना; साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक वस्तु देकर उसे बदले में दूरी वस्तु लेने का वर्णन होता है।

परिवृद्धि *स्त्री.* = परिवर्धन।

परिवेद पुं. {सं.} परिज्ञान, पूर्वज्ञान।

परिवेश पुं. {सं.} (हलकी बदली में दिखाई देनेवाला) सूर्य या चंद्रमा के चारों ओर का घेरा, मंडल; प्रभामंडल; आस-पास का स्थान या वातावरण।

परिवेष (ण) पुं. {सं.} {*वि.* परिवेष्य} भोजन परोसना; घेरा, परिधि; सूर्य या चंद्रमा के चारों ओर का मंडप, प्राचीर; परकोटा।

परिवेष्टन पुं. {सं.} {*वि.* परिवेष्टित} चारों ओर से घेरना; आच्छादन; परिधि, घेरा।

परिव्यय पुं. {सं.} मूल्य; शुल्क; पारिश्रमिक; भाड़े आदि के रूप में होनेवाला वह व्यय जो किसी से लिया या किसी को दिया जाए (चार्ज); किसी चीज के बनने में लगनेवाला धन, लागत (कॉस्ट)।

परिव्ययनीय *वि.* {सं.} जो परिव्यय के रूप में किसी से लिया या किसी को दिया जा सके (चार्जेबुल)।

परिव्रज्या *स्त्री.* {सं.} इधर-उधर घूमना; तपस्या; संसार से विरक्त होकर भिक्षुक की तरह जीवन बिताना।

परिव्राज (क) पुं. {सं.} सदा भ्रमण करता रहनेवाला संन्यासी; संन्यासी, यती; परमहंस।

परिशयन पुं. {सं.} कुछ पशुओं और जीव-जंतुओं की वह निष्क्रिय अवस्था जिसमें वे जाड़े के दिनों में बिना कुछ खाए-पिए चुपचाप एक जगह पड़े रहत हैं (हाइबरनेशन)।

परिशमित *वि.* {सं.} शमन किया हुआ।

परिशिष्ट *वि.* {सं.} बचा हुआ; पुं. {सं.} पुस्तक, लेख आदि का वह अंतिम भाग जिसमें वे आवश्यक या उपयोगी बातें रहती हैं, जो पहले अपने स्थान पर न आ सकी हों (एपेंडिक्स); अनुसूची (शेड्यूल)।

परिशीलन पुं. {सं.} {*वि.* परिशीलित} खूब सोचते-समझते हुए पढ़ना, मननपूर्वक क्रिया जानेवाला अध्ययन।

परिशुद्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* परिशुद्धता} बिल्कुल ठीक और पूरा, जिसमें कुछ भी कमी-बेशी या भूल आदि न हो (एक्योरेट)।

परिशुद्धि *स्त्री.* {सं.} पाप से छुटकारा पाना।

परिशुष्क *वि.* {सं.} बहुत सूखा हुआ।

परिशोध (न) पुं. {सं.} {*वि.* परिशुद्ध, परिशोधनीय, परिशोधित} पूरी तरह साफ या शुद्ध करना; लिया हुआ धन या ऋण चुकाना (रि-पेमेंट); किसी प्रकार का देन चुकाना (डिस्चार्ज)।

परिश्रम पुं. {सं.} ऐसा काम जिसे करते-करते थकावट आने लगे, आयास, श्रम, मेहनत (लेबर); थकावट।

परिश्रमी *वि.* {सं. परिश्रमिन्} बहुत परिश्रम करनेवाला, मेहनती।

परिश्रांत *वि.* {सं.} थका हुआ।

परिषद् *स्त्री.* {सं.} विद्वान ब्राह्मणों की वह सर्वमान्य सभा, जिसे प्राचीन काल में राजा किसी विषय पर व्यवस्था देने के लिए बुलाता था; सभा, समाज; चुने हुए या नियुक्त किए हुए सदस्यों की सभा (काउंसिल)।

परिषद पुं. {सं.} परिषद् सदस्य, सभासद; मुसाहब; राज्य के मंत्रियों या परामर्शदाताओं की वह सभा जिसकी सहायता से राज्य का सर्वप्रधान अधिकारी (राष्ट्रपति, राज्यपाल, महाप्रशासक आदि) शासन संबधी सब कार्य करता है।

परिष्करण पुं. {सं.} स्वच्छ या शुद्ध करना; दोष या त्रुटियाँ दूर करके ठीक करना।

परिष्कार पुं. {सं.} संस्कार, शुद्धि; भूलें, त्रुटियाँ आदि दूर करके ठीक या अच्छा करने की क्रिया या भाव, परिष्करण (मॉडिफिशन); स्वच्छता, सफाई; सजावट, सिंगार।

परिष्कृत *वि.* {सं.} जिसका परिष्करण हुआ हो; सुधारा हुआ; साफ या शुद्ध किया हआ; सँवरा या सजा हुआ; सँवारा या सजाया हुआ।

परिष्क्रिया *स्त्री.* {सं.} शुद्ध करना, माँजना, धोना।

परिष्टवन पुं. {सं.} प्रशंसा, स्तुति करना।

परिष्टोम पुं. {सं.} हाथी की पीठ पर की झूल।

परिष्वंग पुं. {सं.} आलिंगन-बद्ध, गले मिलना।

परिसंख्या *स्त्री.* {सं.} गिनती, परिगणना।

परिसंख्या *स्त्री.* {सं.} गणना, गिनती; एक अर्थालंकार जिसमें कोई बात वैसी ही किसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी बात को व्यंग्य या वाच्य से वर्जित करने के अभिप्राय से कही जाती है; साहित्य में एक अलंकार जिसमें साधारणत: कुछ स्थानों में पाई जानेवाली बातों के संबंध में यह कहा जाता है कि अब वे वहाँ नहीं रह गईं, केवल अमुक एक जगह में रह गई हैं, जैसे राम राज्य की प्रशंसा करते समय यह कहना कि उसमें कुटिलता और कहीं नहीं रह गई थी, केवल स्त्रियों के नयनों में दिखाई देती थी।

परिसंख्यान *पुं.* अनुसूची।

परिसंघ *पुं.* {सं.} राज्यों, राष्ट्रों, संघों आदि का ऐसा संघटन, जो एक दूसरे की सहायता करने और कुछ विशिष्ट कार्यों के लिए सबको एक में रखने के लिए होता है (कॉनफेडरेशन)।

परिसंपदा *स्त्री.* {सं.} वह पूँजी जो संपत्ति आदि के रूप में हो अथवा वह धन जो कारोबार में लगा हो और जल्दी डूबनेवाला न हो (एसेट्स)।

परिसंवाद *पुं.* {सं.} विशेषज्ञों में किसी विषय पर होनेवाला विचार-विमर्श।

परिसमाप्त *वि.* {सं.} पूर्णरूप से समाप्त।

परिसमाप्ति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* परिसमाप्त} किसी चलते हुए काम का समाप्त या पूरा होना (टरमिनेशन)।

परिसर *पुं.* {सं.} किसी भवन या संस्थान के आसपास की जमीन; मैदान; पड़ोस; स्थिति।

परिसिद्धक *पुं.* {सं.} अपराधियों में से वह जो सरकार की ओर मिल गया हो और उसका साक्षी बनकर दूसरे अपराधियों का अपराध सिद्ध या प्रमाणित करने में उसे सहायता दे, सरकारी गवाह (एप्रूवर)।

परिसिद्धि *स्त्री.* {सं.} {*वि.* परिसिद्ध} अपराधियों में से किसी का सरकार की ओर मिलकर और उसका गवाह बनकर दूसरे अपराधियों के अपराध सिद्ध करना।

परिसीमन *पुं.* {सं.} किसी प्रदेश या स्थान की सीमा निश्चित या स्थिर करना, हद बाँधना।

परिसीमा *स्त्री.* {सं. परि + सीमा} किसी विषय या बात की अंतिम या चरम सीमा (एक्स्ट्रीम)।

परिसीमित *वि.* {सं.} जिसकी सीमा निश्चित कर दी गई हो, सीमित; (व्यापार या व्यवसाय) जिसकी पूँजी, हिस्सेदारी आदि कुछ विशिष्ट नियमों या सीमाओं के अंदर रखी गई हो (लिमिटेड)।

परिसेवन *पुं.* सेवा।

परिसेवा *स्त्री.* = सेवा।

परिसोधना *स.* {सं. परिशोधन} अच्छी तरह साफ, शुद्ध या ठीक करना।

परिस्तान *पुं.* {फा.} परियों का कल्पित देश; वह स्थान जहाँ सुंदर मनुष्यों, विशेषत: स्त्रियों का जमघट हो।

परिस्थिति *स्त्री.* {सं.} किसी घटना, कार्य आदि के आसपास या चारों ओर की वास्तविक या तर्कसंगत स्थिति या अवस्था, वे बातें या अवस्थाएँ, जो किसी व्यक्ति या घटना के चारों ओर होती या रहती हैं (सर्कम्स्टैंसेज)।

परिस्फुट *वि.* {सं.} अत्यंत स्पष्ट; व्यक्त, प्रकाशित; खूब मिला हुआ।

परिहत *वि.* {सं.} मृत, मरा हुआ।

परिहँस *पुं.* {सं. परिहास} किसी को तुच्छ समझकर उसकी हँसी उड़ाना; ईर्ष्या, डाह।

परिहर *पुं.* {हिं.} परिहार।

परिहरण *पुं.* {सं.} परिवर्जन, त्याग देना।

परिहरण *पुं.* {सं.} {*वि.* परिहरणीय, परिहृत, *क्रि.* परिहरना} जबरदस्ती या बलपूर्वक लेना, छीन लेना; परित्याग, छोड़ना; दोष, अनष्टि आदि दूर करना।

परिहरना *स.* {सं. परिहरण} त्यागना, छोड़ना; दूर करना, हटाना।

परिहस *पुं.* {सं. परिहास} हँसी-ठट्ठा, माजक; नाम-हँसाई, उपहास; अपने उपहास के भय से मन में होनेवाली चिंता या खेद।

परिहरना *स.* = प्रहार करना।

परिहार *पुं.* {सं.} {*वि.* परिहारक, परिहारी} दोष, अनष्टि आदि दूर करना; दोष दूर करने का उपाय, उपचार; परित्याग, छोड़ना; युद्ध में जीता या लूटा हुआ धन आदि (बूटी); कर या लगान की माफी, छूट।

परिहारना *स.* परिहरना।

परिहार्य *वि.* {सं.} जिसका परिहार को सके या किया जाना उचित हो।

परिहास *पुं.* {सं.} हँसी, दिल्लगी; ईर्ष्या, डाह; निंदा, उपहास।

परिहित *वि.* {सं.} पहना हुआ, ऊपर डाला हुआ।

परी *स्त्री.* {फा.} फारस की अनुश्रुति के अनुसार काफ पर्वत पर बसनेवाली परों से युक्त कल्पित परम सुंदर स्त्री; परम रूपवती स्त्री।

परीक्षक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* परीक्षिका} वह जो परीक्षा करता या लेता हो, इम्तहान करने या लेनेवाला (इग्ज़ामिनर)।

परीक्षण *पुं.* {सं.} परीक्षा लेने, परखने या जाँच करने का काम; किसी वस्तु या व्यक्ति की इस बात की जाँच की उससे ठीक तरह से काम निकल सकता है या नहीं या वह जैसा होना चाहिए, वैसा है या नहीं; परीक्षा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षणिक *वि.* {सं.} परीक्षण-संबंधी, परीक्षण का; *पुं.* वह (कर्मचारी) जो परीक्षण के लिए पहले अस्थायी रूप से रखा गया हो (प्रोबेशनरी)।

परीक्षा *स्त्री.* {सं.} योग्यता, विशेषता, सामर्थ्य, गुण आदि जानने के लिए अच्छी तरह से देखने या परखने की क्रिया या भाव, समीक्षा, इम्तहान (इग्ज़ामिनेशन); वह प्रयोग जो किसी वस्तु के गुण, दोष आदि का अनुभव करने के लिए हो, आजमाइश (एक्सिपेरिमेंट); वह प्रक्रिया जिससे प्राचीन न्यायालय किसी अभियुक्त अथवा साक्षी के सच्चे या झूठे होने का पता लगाते थे, दिव्य; जाँच-पड़ताल, देखभाल।

परीक्षात्मक *वि.* {सं.} परीक्षा के रूप में होनेवाला।

परीक्षालय *पुं.* {सं. परीक्षा + आलय} वह कमरा या भवन जिसमें किसी प्रकार की परीक्षा ली जाती है (इग्ज़ामिनेशन रूम या हॉल)।

परीक्षित *वि.* {सं.} जिसकी परीक्षा या जाँच की गई हो या हो चुकी हो; *पुं.* अर्जुन के पोते और अभिमन्यु के पुत्र, एक प्रसिद्ध राजा।

परीक्षिती *पुं.* {सं. परीक्षित} वह जो परीक्षा देने को हो या जिसकी परीक्षा ली जाए, परीक्षा देनेवाला (एग्ज़ामिनी)।

परीक्ष्य *वि.* {सं.} जिसकी परीक्षा लेनी हो।

परीख *स्त्री.* परख; परीक्षा।

परीखना *स.* = परखना।

परीछत *पुं.* = परीक्षित।

परीछना *क्रि.* {हिं. सं.} परीक्षा देना।

परीछा *स्त्री.* = परीक्षा।

परीत *पुं.* = **प्रेत, घिरा।**

परीतोष *पुं.* {सं.} परितोस, संतोष।

परीत्त *वि.* {सं.} संकीर्ण, संकुचित।

परीभाव *पुं.* {सं.} परिभाव, अनादर।

परीरंभ *पुं.* {सं.} परिरंभ, आलिंगन।

परीसना *स.* = स्पर्श करना।

परु[1] *क्रि. वि.* {सं. परश्व} परसों।

परु[2] *क्रि. वि.* {हिं. पर} बीता हुआ पिछला वर्ष, पर साल; आनेवाला वर्ष, पर साल।

परुख *वि.* {*भाव.* परुखाई} परुष।

परुष *वि.* {सं.} {*स्त्री.* परुष; *भाव.* परुषता} कठोर, कड़ा; कटु, अप्रिय (वचन आदि); निष्ठुर, निर्दय।

परुषा *स्त्री.* {सं.} साहित्य में वह वृत्ति या शब्द-योजना जिसमें टवर्गीय, द्वित्व और संयुक्त वर्ण, रेफ और श, ष आदि कठोर वर्ण तथा लंबे-लंबे समास आते और रचना में ओज गुण उत्पन्न होता है, वह वीर रस के लिए उपयुक्त होती है।

परूसना *स.* परोसना।

परे *क्रि. वि.* {सं. पर} उस ओर, उधर; दूर, अलग; ऊपर; आगे, बाद।

परेखना[1] *स.* = परखना।

परेखना[2] *अ.* {सं. प्रतीक्षा} प्रतीक्षा करना, राह देखना।

परेखना[3] *अ.* {?} पश्चात्ताप करना, पछताना।

परेखा[1] *पुं.* {सं. परीक्षा} परीक्षा, जाँच; विश्वास, प्रतीति।

परेखा[2] *पुं.* {हिं. परेखना} पश्चात्ताप, पछतावा; चिंता, फिक्र।

परेग *स्त्री.* {*अ.* पेग} छोटी कील, कँटिया।

परेड *स्त्री.* {*अ.*} सैनिकों की कवायद।

परेता *पुं.* {सं. परितः} तीलियों का बना हुआ वह उपकरण, जिस पर जुलाहे सूत लपेटते हैं; वह उपकरण जिस पर पतंग उड़ाने की डोरी लपेटी जाती है।

परेर *पुं.* {हिं.} आकाश।

परेली *पुं.* {हिं.} तांडव नृत्य।

परेवा *पुं.* {सं. पारावत} {*स्त्री.* परेई} पंडुक पक्षी, पेंडुकी; कबूतर; *पुं.* पत्रवाहक।

परेश *पुं.* {सं.} ईश्वर, विष्णु, ब्रह्मा।

परेशान *वि.* {फा. परीशाँ} {*भाव.* परेशानी} बेचैन, व्यग्र, उद्विग्न।

परेशानी *स्त्री.* {फा. परीशानी} परेशान करनेवाली बात; बेचैनी; दुख, तकनीफ, कष्ट।

परेषक *पुं.* {सं.} भेजनेवाला।

परेषण *पुं.* {सं.} भेजने काम।

परों *क्रि. वि.* परसों।

परो *क्रि. वि.* परे।

परोक्ष *पुं.* {सं.} अनुपस्थिति, गैर-हाजिरी; अभाव; आड़, ओट; *वि.* जो सामने या प्रत्यक्ष न हो, आँखों से ओझल; जो सीधी और साफ तरह से या सामने न होकर घुमाव-फिराव से या दूसरे द्वार हो, अप्रत्यक्ष (इन्-डाइरेक्ट)।

परोक्ष-कर *पुं.* {सं.} वह कर जो किसी को, विशेषतः उपभोक्ता को स्वयं प्रत्यक्ष रूप से नहीं, बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से दूसरे के द्वारा देना पड़े, जैसे उत्पादन शुल्क और आयात-निर्यात कर (इन्डाइरेक्ट टैक्स)।

परोजन *पुं.* {सं. प्रयोजन} घर-गृहस्थों से संबंध रखनेवाला कोई ऐसा काम जिसमें संबंधियों और इष्ट-मित्रों की उपस्थिति आवश्यक हो; प्रयोजन।

परोट *पुं.* {सं.} घी में पकाई हुई पूरी।

परोढ़ा *स्त्री.* {सं.} दूसरे की पत्नी।

परोना *स.* पिरोना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परोपकार पुं. {सं.} {*वि.* परोकपकारी; *भाव.* परोपकारिता} दूसरों के उपकार या भलाई का काम।

परोपकारवाद पुं. परार्थवाद।

परोपकारी (रिन्) *वि.* {सं.} परोपकार करनेवाला, दूसरों की भलाई करनेवाला।

परोरना पुं. {?} मंत्र पढ़कर फूँकना।

परोल पुं. पेरोल।

परोसना स. {सं. परिवेषण} थाली या पत्तल में खाना लगाना; खिलाने के लिए भोजन की सामग्री ला-लाकर खाने वाले के सामने रखना।

परोसा पुं. {हिं. परोसना} वह भोजन जो किसी के घर भेजा जाता है।

परोहन पुं. {सं. प्ररोहण} वह पशु जिस पर कोई सवार हो या जिस कुछ लादा जाए।

परौठा पुं. पराँठा।

पर्जक पुं. पर्यंक।

पर्जनी *स्त्री.* {सं.} दारुहलदी, दारुहरिद्रा।

पर्जन्य पुं. {सं.} बादल, मेघ।

पर्ण पुं. {सं.} पेड़ का पत्ता, पत्र; पुस्तक, पंजी आदि का कोई पृष्ठ; कागज का वह टुकड़ा या परत जिसमें से वैसा ही दूसरा टुकड़ा या परत प्रतिलिपि के रूप में काटकर अलग करते हैं (फॉयल)।

पर्णकार पुं. {सं.} पान बेचनेवाला, तमोली।

पर्णकुटी, पर्णशाला *स्त्री.* {सं.} झोपड़ी।

पर्णखंड पुं. {सं.} पुष्पहीन वनस्पति।

पर्णनाल पुं. {सं.} पत्तों का डंठल।

पर्णमणि पुं. {सं.} पान की जड़, कुलंजन।

पर्णलता *स्त्री.* {सं.} पान की लता।

पर्णवी पुं. {सं.} खग, पक्षी।

पर्णास पुं. {सं.} तुलसी।

पर्दनी *स्त्री.* {हिं.} धोती।

पर्पटी *स्त्री.* {सं.} गोपीचंदन; पपड़ी; स्वर्णपर्पटी नामक ओषधि।

पर्यंक पुं. {सं.} पलंग, बड़ी खाट।

पर्यंत *निपा.* {सं.} तक।

पर्यटक पुं. {सं.} घूमना-फिरना।

पर्यटन-स्थल पुं. {सं.} वह स्थान जहाँ घूमने-फिरने के उद्देश्य से लोग जाते हों।

पर्यवलोचन पुं. {सं.} {*वि.* पर्यवलोचक} पूरे काम को आदि से अंत तक सरसरी तौर पर समझने, देखने या जाँचने की क्रिया या भाव, पर्यालोचन (सर्वे)।

पर्यवसान पुं. {सं.} {*वि.* पर्यवसित} अंत, समाप्ति; समावेश; ठीक-ठीक अर्थ निश्चित करना।

पर्यवेक्षक पुं. {सं.} देख-भाल या निगरानी करनेवाला (सुपरवाइज़र); किसी व्यवहार, बात या काम को ध्यान से देखनेवाला (ऑबज़र्वर)।

पर्यवेक्षण पुं. {सं.} {*वि.* पर्यवेक्षित} अच्छी तरह देखना, निरीक्षण; किसी काम की देखभाल या निगरानी (सुपरविज़न); कोई काम या बात ध्यान से देखते रहना (ऑबज़रवेशन)।

पर्यसन पुं. {सं.} {*वि.* पर्यस्त} दूर करना, हटाना; फेंकना; नष्ट करना; रद्द करना।

पर्याप्त *वि.* {सं.} जितना चाहिए उतना या जितना होना चाहिए उतना, यथेष्ट, काफी (सफीशियेंट)।

पर्याप्ततः *क्रि. वि.* {सं.} पूर्ण रूप से, पूरी तरह से (सफीशेंटली)।

पर्याय पुं. {सं.} एक शब्द के विचार से, उसके अर्थ का सूचक दूसरा शब्द, समानार्थक, जैसे 'जल' का पर्याय 'वारि' है (सिनॉनेम); अनुक्रम, सिलसिला; साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का पर्याय या अनुक्रम से अनेक वस्तुओं का एक ही के आश्रित होना वर्णित होता है।

पर्यायवाची (वाचिन्) *वि.* {सं.} जो पर्याय के रूप में हो (सिनॉनिम)।

पर्यायोक्ति *स्त्री.* {सं.} साहित्य में एक अलंकार जिसमें कोई बात सीधी तरह से न कहकर कुछ घुमाव-फिराव से पर अधिक चमत्कारिक और विलक्षण रूप से कही जाती है, जैसे नायक से बिछुड़ने के समय रोती हुई नायिका का अपने आँसुओं से यह कहना कि जरा ठहरो, और मेरे प्राण भी अपने साथ लेते जाओ।

पर्यालोकन पुं. = पर्यालोचन।

पर्यालोचन पुं. {सं.} किसी वस्तु के गुण-दोष या सब अंगों के स्थूल स्वरूप जानने के लिए उसे अच्छी तरह से देखना (सर्वे); समीक्षा।

पर्यालोचना *स्त्री.* = पर्यालोचन।

पर्यानर्व पुं. {सं.} लौटना।

पर्यास पुं. {सं.} हनन, वध, नाश।

पर्युत्थान पुं. {सं.} खड़ा होना, उठना।

पर्युपासन पुं. {सं.} सेवा।

पर्व पुं. {सं. पर्वत} धर्मकार्य या उत्सव आदि करने का समय, पुण्यकाल; चातुर्मास्य; अवसर; बड़ा उत्सव; ग्रंथ का विभाग का खंड।

पर्वणी *स्त्री.* {सं.} पूर्णिमा।

पर्वत पुं. {सं.} पहाड़; दसनामी संन्यासियों का एक भेद।

पर्वतमाला *स्त्री.* {सं.} एक सीध में बहुत दूर तक चले-चलनेवाला पर्वत या पहाड़ (रेंज)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्वतराज पुं. {सं.} बहुत बड़ा पहाड़; पर्वतों का राजा, हिमालय।

पर्वतारि पुं. {सं. पर्वत + अरि} इंद्र।

पर्वतारोहण पुं. {सं.} पर्वत पर चढ़ने की क्रिया या भाव।

पर्वतारोही (हिन्) पुं. {सं.} पर्वत पर चढ़ने वाला।

पर्वतीय *वि.* {सं.} पहाड़ी, पहाड़-संबंधी; पहाड़ पर रहने या होनेवाला।

पर्वरिश *स्त्री.* {फा.} पालन-पोषण।

परहेज पुं. परहेज।

पलंका *स्त्री.* {हिं. लंका का अनु.} लंका से भी आगे और दूर का स्थान।

उदा. लंका छोड़ पलंका जाए।

कहा. पुं. पलंग।

पलंग पुं. {सं. पर्यंक} {*स्त्री.* अल्पा. पलँगड़ी} बड़ी चारपाई, पर्यंक।

पलँगड़ी पुं. {हिं. पलंग} छोटा पलंग।

पल[1] पुं. {सं.} समय का एक सूक्ष्म विभाग जो 24 सेकेंड के बराबर होता है; तराजू, तुला; एक पुरानी तौल या मान।

पल[2] पुं. {फा. पलक} आँख की पलक।

पलई *स्त्री.* {हिं.} पतली टहनी।

पलक *स्त्री.* {फा.} आँख के ऊपर का चमड़े का परदा जिसके गिरने से वह बंद होती है।

मुहा. पलक झपकते = बहुत थोड़े समय में; *पलक पाना* = पलक झपकना; पलकें बिछाना = किसी का प्रेमपूर्वक स्वागत करना; उत्कंठा के साथ प्रतीक्षा करना; *पलक मारना* = आँखों से संकेत करना; *पलक लगना* = नींद आना, झपकी लगना; *पलक से पलक न लगना* = नींद न आना।

पलक नवाज *वि.* {हिं.} अति उदार।

पलका पुं. पलंग; पल्ला।

पलखन पुं. {हिं.} परकर का पेड़।

पलटन *स्त्री.* {*अ.* प्लैटून} सेना; सैनिकों का दल; समुदाय, झुंड।

पलटना *अ.* {सं. प्रलोठन} उलट जाना; अवस्था या दशा बदलना; स्वरूप बिल्कुल बदल जाना, पहला रूप न रहना और उसकी जगह दूसरा रूप प्राप्त होना; लौटना, वापस होना; *स.* उलटा या औंधा करना; अवनत को उन्नत या उन्नत को अवनत दशा में लाना उलटना; बार-बार उलटना, फेरना; पहले की अवस्था या रूप बदलकर नई अवस्था या रूप में लाना, बदलना; एक बात से मुकरकर दूसरी बात कहना; लौटना, वापस करना, फेरना।

पलटनिया पुं. {हिं. पलटन} पलटन का सिपाही, सैनिक।

पलटा पुं. {हिं. पलटना} पलटने की क्रिया या भाव विपरीत दशा में होनेवाला परिवर्तन।

मुहा. पलटा खाना = दशा का बिल्कुल बदल जाना।

बदला, प्रतिफल; गाने में तान के आरोही स्वरों के बाद थोड़े से स्वरों का जल्दी-जल्दी हेर-फेरकर अवरोही रूप में उच्चारण करना।

पलटाना *स.* {हिं. पलटना} उलटाना; लौटाना।

पलटाव पुं. {हिं. पलटा} पलटे या उलटे जाने की क्रिया या भाव।

पलटे *क्रि. वि.* {हिं. पलटा} बदले में।

पलड़ा पुं. {सं. पलल} तराजू का पल्ला; विरोधियों में से कोई पक्ष।

पलवा पुं. {हिं.} कलैया मारना।

पलद *वि.* {सं.} पदार्थ जिसे खाने से मांस वृद्धि होती है।

पलथी *स्त्री.* {सं. पर्यस्त} दाहिने पैर का पंजा बाईं पिंडली के नीचे और बाएँ पैर का पंजा दाहिनी पिंडली के नीचे दबाकर बैठने की स्थिति या मुद्रा।

पलना *अ.* {सं. पालन} पाला-पोसा जाना।

पलनाना *स.* पलानना।

पलप्रिय पुं. {सं.} मांस खानेवाला।

पलभक्षी पुं. {हिं.} मांसाहारी।

पलभरता *स्त्री.* {सं. पल + हिं. भर} पल भर का जीवनकाल; क्षणभंगुरता।

पल मारते *क्रि. वि.* तुरंत।

पलल पुं. {सं.} मांस, कीचड़, तिलकुट।

पललाशय पुं. {सं.} गलगंड, घेंघा।

पलन पुं. {सं.} मछली मारने का झावा।

पलवा पुं. {सं. पल्लव} अँजुली।

पलस्तर पुं. {*अ.* प्लास्टर} दीवारों आदि पर लगाया जानेवाला चूने आदि के गारे का मोटा लेप।

मुहा. पलस्तर ढीला होना या बिगड़ना = परिश्रम, हानि आदि के कारण शिथिल होना।

शरीर के रुग्ण अंग पर लगाया जानेवाला औषधि का मोटा लेप (प्लास्टर)।

पलहना *अ.* पलुहना।

पलहा पुं. {सं. पल्लव} कोंपल।

पला पुं. पल्ला; पलड़ा।

पलान पुं. {सं. पाल्याण, मि. फा. पलाम} लादने या चढ़ने के लिए घोड़े आदि की पीठ पर कसी जानेवाली गद्दी, चारजामा, जीन।

मुहा. पलान लेना = घोड़े पर जीन कसना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पलानना *स.* {हिं. पलान + ना (प्रत्य.)} घोड़े आदि पर पलान कसना; चलने या चढ़ाई की तैयारी करना।

पलाना *अ.* = भागना।

पलानी *स्त्री.* {हिं.} पैर की अँगुलियों का गहना।

पलायक *पुं.* {सं.} अपना पद, स्थान या उत्तरदायित्व छोड़कर या दंड के भय से भाग जानेवाला।

पलायन *पुं.* {सं.} {*वि.* पलायित} भाग खड़े होने की क्रिया या भाव, भागना; अपना स्थान, कार्य पद या उत्तरदायित्व छोड़कर अथवा दंड आदि से बचने के लिए भागना (एब्सकांडिंग)।

पलायमान *वि.* {सं.} भागता हुआ।

पलायित *वि.* {सं.} भागा हुआ।

पलायी *वि.* {सं.} भग्गू।

पलायनता *स्त्री.* = पलायन।

पलाश *पुं.* {सं.} पलास या ढाक पौधा, टेसू; पत्र, पत्ता; राक्षस।

पलाशन *पुं.* {सं.} सारिका, मैना।

पलास[1] *पुं.* {सं. पलाश} एक प्रसिद्ध पौधा जिसमें लाल फूल लगते हैं, ढाक, टेसू, केस; एक मांसाहारी पक्षी।

पलास[2] *पुं.* {*अ.* प्लायर्स} जम्बूरे की तरह का लोहे का एक औजार जिससे जुड़े हुए काँटे आदि खींचकर निकाले जाते हैं (प्लायर्स)।

पलिका *पुं.* {सं. पर्यंक} पलंग।

पलिती *वि.* {हिं.} पके बालवाला।

पली *स्त्री.* {सं. पलिघ} बड़े बरतन में से तेल, आदि निकालने की एक प्रकार की छोटी कलछी।

मुहा. पली पली जोड़ना = थोड़ा-थोड़ा करके इकट्ठा या जमा करना।

पलीत *पुं.* {हिं.} भूत, प्रेत, पिशाच।

पलीती *पुं.* {हिं.} छोटा पलीता।

पलीता *पुं.* {फा. फलीत:} {*स्त्री.* अल्पा. पलीती} कोई मंत्र लिखकर जलाने के लिए बत्ती की तरह लपेटा हुआ कागज; बंदूक या तोप की रंजक में आग लगाने की बत्ती; पटाखों आदि में लगा रहनेवाला डोरा जिसे सुलगाने से पटाखा चलता है; कपड़ा लपेटकर बनाई हुई जलाने की बत्ती।

मुहा. पलीता लगाना = ऐसे बात कहना जिससे झगड़ा खड़ा हो।

पलीद *वि.* {फा.} अपवित्र; नीच।

पलुआ *वि.* {हिं. पालना} पाला हुआ, पाला-पोसा; पालतू।

पलुहना *अ.* {सं. पल्लवन} {सं. पलुहाना} पल्लवित होना, हरा-भरा होना; हीन दशा से निकलकर अच्छी दशा में आने लगना, पनपना।

पलुहाना *स.* {हिं. पलुहना} किसी को पल्लवित करना; *अ.* पलुहना।

पलेड़ना *स.* = ढकेलना।

पलेथन *पुं.* {सं. परिस्तरण} बेलने के समय आटे के पेड़े या लोई में लगाया जानेवाला सूखा आटा, परथन।

मुहा. पलेथन निकालना = खूब मारना; तंग करना।

हानि होने पर साथ में होनेवाला आवश्यक व्यय।

पलोटना[1] *स.* {सं. प्रलोठन} (पैर) दबाना; सेवा करना।

पलोटना[2] *अ.* {हिं. लोटना} तड़पते हुए इधर-उधर लोटना।

पलोवना *स.* पलोटना।

पलोसना *स.* {हिं. परसना} धोना; मीठी-मीठी बातें करके फुसलाना।

पलो *पुं.* = पल्लव।

पल्ल *पुं.* {सं.} पलाल, पुआल।

पल्लवाद *पुं.* {सं.} हरिण, हिरन।

पल्लवास्त्र *पुं.* {सं.} कामदेव।

पल्लविक *वि.* {सं.} कामुक, लंपट।

पल्लव *पुं.* {सं.} नया निकला हुआ कोमल पत्ता, कोंपल; हाथ में पहनने का कड़ा या कंकण।

पल्लवग्राही (हिन्) *वि.* {सं.} केवल ऊपर-ऊपर से थोड़ा ज्ञान प्राप्त करनेवाला।

पल्लवन *पुं.* {सं.} {*वि.* पल्लवित} (पौधों का) पल्लव उत्पन्न करना या निकालना; किसी बात या विषय का विस्तार करना।

पल्लवना *अ.* {सं. पल्लव} पल्लवित होना, पत्तों से युक्त होना; पनपना।

पल्लवित *वि.* {सं.} नए पत्तों से युक्त, हरा-भरा; लंबा-चौड़ा; जिसे रोमांच हुआ हो, कंटकित।

पल्ला[1] *पुं.* {सं. पटल} कपड़े का छोर या सिरा, आँचल।

मुहा. पल्ला छूटना = पीछा छूटना, छुटकारा मिलना; *पल्ले पड़ना* = प्राप्त होना, मिलना; *(अपने) पल्ले बाँधना* = कोई बात अपने मन में अच्छी तरह या ध्यानपूर्वक रखना; *(किसी के) पल्ले बाँधना* = जिम्मे लगाना;

दुपल्ली टोपी का आधा भाग; धोती, किवाड़ों आदि की जोड़ी में से कोई एक; पहल; दूरी।

पल्ला[2] *पुं.* {फा. पल्ल:} तराजू का पलड़ा; दो विरोधी पक्षों में से कोई एक।

मुहा. पल्ला भारी होना = पक्ष बलवान या प्रबल होना; *वि.* परला।

पल्ली *स्त्री.* {सं.} छोटा गाँव।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पल्ली पुरोहित पुं. गाँव का ईसाई पुरोहित।

पल्लू पुं. {हिं. पल्ला} आँचल, छोर, दामन; चौड़ी गोट, पट्ठा।

पल्ले क्रि. वि. {हिं. पल्ला} अधिकार या पास में; गाँठ में।

पल्लेदार पुं. {हिं. पल्ला + फा. दार} अनाज ढोनेवाला मजदूर; अनाज तौलनेवाला आदमी, बया; वि. अपेक्षाकृत भारी, जोर का, जैसे पल्लेदार आवाज = ऊँची आवाज जो दूर तक सुनाई दे।

पवई स्त्री. {हिं.} चिड़िया।

पवन पुं. {सं.} वायु, हवा (इस शब्द अथवा इसके वाचक दूसरे शब्दों में सुत, पुत्र, कुमार आदि शब्द लगने से उनका अर्थ 'हनुमान' होता है); वायु की वह अवस्था या रूप जब वह एक दिशा से दूसरी दिशा में बहती हो, चलती हुई हवा (हमारे यहाँ इसके 49 भेद माने गए हैं, जिनके अलग-अलग नाम हैं) (विंड); श्वास, साँस; प्राणवायु; वि. पावन।

पवनकुमार पुं. {सं.} हनुमान।

पवनचक्की स्त्री. {सं. पवन + हिं. चक्की} हवा के जोर से चलनेवाली चक्की (विंड मिल)।

पवनसुत पुं. {सं.} हनुमान।

पवनी स्त्री. पौनी, नाई, वारी, लुहार।

पवनेष्ट पुं. {सं.} बकायन, नीबू का पेड़।

पवमान पुं. {सं.} पवन, वायु, हवा; गार्हपत्य अग्नि; वि. पवित्र करनेवाला।

पवर्ग पुं. {सं.} प, फ, ब, भ और म वर्णों का समूह।

पवर्गीय वि. {सं.} पवर्ग-संबंधी।

पवार पुं. {हिं.} परमार क्षत्रियों की शाखा।

पवाड़ स्त्री. {हिं.} चकतँड़।

पवारना स. = फेंकना।

पवि पुं. {सं.} वज्र; बिजली।

पविताई स्त्री. = पवित्रता।

पवित्र वि. {सं.} {भाव. पवित्रता} जो गंदा या मैला न हो, निर्मल, साफ।

पवित्रता स्त्री. {सं.} स्वच्छता, शुद्धि।

पवित्री स्त्री. {सं. पवित्र} कर्मकांड में, अनामिका में पहनने का कुश का छल्ला।

पवित्रीकरण पुं. {सं.} किसी अपवित्र वस्तु को पवित्र या शुद्ध करना, शुद्धिकरण।

पवेरना क्रि. {हिं. सं.} छींटकर बोना।

पशम स्त्री. {फा. पश्म} बढ़िया मुलायम ऊन जिससे पशमीने आदि बनते हैं; बहुत तुच्छ वस्तु।

पशमीना पुं. {फा. पश्मीन:} पशम; पशम का बना हुआ बढ़िया कपड़ा।

पशवा वि. {सं.} पशु-संबंधी।

पशु पुं. {सं.} {भाव. पशुता} चार पैरों से चलनेवाला बड़ा जंतु, चौपाया, जानवर, जैसे घोड़ा, गौ, कुत्ता, हिरन आदि। (ऐनिमल); गौ, भैंस, घोड़े आदि ऐसे जानवर जो पाले जाते हैं और जिनका मनुष्यों के लिए विशेष उपयोग होता हो।

पशु-आहार पुं. {सं.} पशुओं के खाने के लिए बनाया हुआ आहार।

पशुचर पुं. {सं.} पशुओं के चरने की घास आदि; पशुचर भूमि (पासच्योर)।

पशुचर-भूमि स्त्री. = गोचरभूमि।

पशुचारण पुं. {सं.} पशुओं को चराने का काम।

पशु-चिकित्सा स्त्री. {सं.} {वि. पशु-चिकित्सक} वह शास्त्र जिसमें पशुओं रोगों की चिकित्सा का वर्णन होता है।

पशु-चोर पुं. वह जो दूसरों के पशु चुराता हो; गारू-चोर।

पशुपतास्त्र पुं. {सं.} महादेव का विशेष अस्त्र।

पशुपति पुं. {सं.} शिव, महादेव।

पशुपाल पुं. {सं.} जो पशुओं का पालन-पोषण करता हो; अहीर, ग्वाला।

पशुपालन पुं. {सं.} पशुओं के पालन-पोषण और उनकी नस्ल सुधारने की विद्या या कला (ऐनिमल हस्बेंडरी)।

पशुमैथुन पुं. {सं.} नर और मादा पशुओं का परस्पर संभोग या मैथुन; मनुष्य का बकरी, गधी आदि मादा पशुओं के साथ संभोग।

पशुवत, पशुवत् वि. {सं.} पशुओं जैसा।

पशुशाला स्त्री. {सं.} पालतू पशुओं को रखने का स्थान।

पश्च वि. {सं.} पिछला।

पश्चगति स्त्री. {सं.} पीछे जाने की अवस्था या भाव।

पश्चात, पश्चात् क्रि. वि {सं.} पीछे, अनन्तर, बाद, फिर।

पश्चात्ताप पुं. {सं.} किए हुए अनुचित या बुरे काम से मन में होनेवाला खेद या ग्लानि, अनुताप, पछतावा।

पश्चात्तापी वि. {सं.} पछतावा करनेवाला।

पश्चानुताप पुं. {सं.} पछतावा।

पश्चिम पुं. {सं.} सूर्य के अस्त होने की दिशा, पश्चिम (वेस्ट)।

पश्चार्ध वि. {सं.} शेषार्ध, उत्तरार्द्ध।

पश्चिम स्त्री. {सं.} सूर्यास्त की दिशा, पश्चिम दिशा।

पश्चिमाचल पुं. {सं.} अस्ताचल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चिमी *वि.* {सं.} पश्चिम का।

पश्म *स्त्री.* पशम।

पश्यतोहर *पुं.* {सं.} वह जो देखते-देखते कोई चीज चुराकर ले ले; सुनार।

पष *पुं.* पक्ष।

पषा *पुं.* {हिं.} श्मश्रु, दाढ़ी।

पषारना *क्रि.* {हिं. सं.} धोना।

पसंगा (धा) *पुं.* पसंगा।

पसंद *वि.* {फा.} {*भाव.* पसंदगी} रुचि के अनुकूल, अच्छा जान पड़नेवाला; *स्त्री.* मन को अच्छा लगने की वृत्ति या भाव, रुचि।

पसंदीदा *वि.* {फा.} पसंद किया हुआ।

पस *पुं.* {अ.} मवाद।

पसर[1] *पुं.* {सं. प्रसर} इधर-उधर से सिकोड़ या दबाकर गहरी की हुई हथेली, आधी अंजलि; किसी चीज से भरी हुई मुट्ठी।

पसर[2] *पुं.* {सं. प्रसार} विस्तार, फैलाव; आक्रमण, चढ़ाई।

पसरना *अ.* {सं. प्रसरण} फैलना; कुछ लेट या बहुत फैलकर बैठना।

पसराना *क्रि.* {हिं. सं.} पसारने का काम दूसरे से कराना।

पसरहट्टा *पुं.* {हिं. पंसारी + हाट} वह बाजार जहाँ पंसारियों की दुकानें हों।

पसरौंहाँ *वि.* {हिं. पसरना + औंहाँ (प्रत्य.)} पसरने या फैलनेवाला।

पसली *स्त्री.* {सं. पर्शुका} मनुष्य, पशु आदि की छाती के पंजर में की आड़ी और कुछ गोलाकार हड्डी।

मुहा. पसली तोड़ना = बहुत मारना।

पसवा *पुं.* {हिं.} हलका गुलाबी रंग।

पसही *पुं.* {हिं.} तिल्ली का चावल।

पसा *पुं.* {हिं.} अंजली।

पसाई[1] *स्त्री.* {हिं. पसाना} (माँड़ आदि) पसाने की क्रिया या भाव।

पसाई[2] *स्त्री.* {सं. प्रसातिका, प्रा. पसाइआ} एक प्रकार की घास जो प्रायः तालों या जलाशयों में होती है।

पसाउ (ऊ) *पुं.* {सं. प्रसाद} कृपा, अनुग्रह; भेंट, उपहार; प्रसन्नता, खुशी; प्रसाद।

पसाना *स.* {सं. प्रस्रावण} भात पक जाने पर उसमें से माँड़ या बचा हुआ पानी निकालना।

पसार *पुं.* {सं. प्रसार} प्रसार, फैलाव; लंबाई-चौड़ाई; दालान।

पसारना *स.* {सं. प्रसारण} फैलाना।

पसारा *पुं.* पसार।

पसाव *पुं.* {हिं. पसाना} भात पसाने पर निकलने वाला जल, माँड़, पीच।

पसाहन *पुं.* {सं. प्रसाधन} अंगराग।

पसित *वि.* {सं. पायश} बँधा हुआ।

पसीजना *अ.* {सं. प्र + स्विद्} घन पदार्थ में से द्रव अंश का रिस-रिसकर बाहर निकलना, रिसना) पसीने से तर होना; मन में दबा आना।

पसीना *पुं.* {सं. प्रस्वेदन} परिश्रम अथवा गरमी के कारण शरीर से निकलनेवाला जल, प्रस्वेद, स्वेद।

पसूजना *क्रि.* {हिं. सं.} सिलाई करना।

प्रसूता *स्त्री.* {हिं.} जिस स्त्री ने हाल में बच्चा जना हो।

पसेरी *स्त्री.* {हिं. पाँच + सेर + ई (प्रत्य.)} पाँच सेर का मान या बाट, पंसेरी।

पसेव[1] *पुं.* {सं. प्रस्राव} किसी चीज के पसीजने पर उसमें निकलनेवाला तरल पदार्थ; पसाव।

पसेव[2] *पुं.* {सं. प्रस्वेद} पसीना, स्वेद।

पसोपेश *पुं.* {फा. पस व पेश} आगा-पीछा, असमंजस, दुविधा, सोच-विचार।

पस्त *वि.* {फा.} हिम्मत हारा हुआ; थका हुआ।

पस्स *पुं.* {अं.} जहाज का भंडारी।

पहँ *क्रि. वि.* {सं. पार्श्व} निकट, पास; विभ. से।

पह *स्त्री.* पौ।

पहचान *स्त्री.* {सं. प्रत्यभिज्ञान} पहचानने की क्रिया या भाव; किसी का गुण, मूल्य या योग्यता जानने की क्रिया, भाव या योग्यता, परख; लक्षण चिह्न; किसी को देखकर यह बतलाना कि यह वही है (आइडेंटिफिकेशन); जान-पहचान, परिचय।

पहचानना *स.* {हिं. पहचान} {प्रे. पहचनवाना} देखकर जान लेना कि यह कौन या क्या है; किसी वस्तु के रूप-रंग से परिचित होना; अंतर समझना या करना (डिस्टिंग्विश); योग्यता या विशेषता को जानना।

पहन *पुं.* = पाहन।

पहनना *स.* {सं. परिधान} {*भाव.* पहनाई} वस्त्र, आभूषण आदि शरीर पर धारण करना, परिधान करना।

पहनाई *स्त्री.* {हिं.} पहनने की क्रिया।

पहनाना *स.* {हिं. पहनना} किसी को कपड़े, गहने आदि पहनने में प्रवृत्त करना, धारण कराना।

पहनावा *पुं.* {हिं. पहनना} पहनने के मुख्य कपड़े, परिच्छद, पोशाक (ड्रेस); विशेष स्थान अथवा समाज में पहने जानेवाले कपड़े।

पहपट *स्त्री.* {देश.} एक प्रकार का स्त्रियों का गीत: शोरगुल, हल्ला; झगड़ा, तकरार।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहपटबाजी *स्त्री.* {हिं.} झगड़ालूपन, छल।

पहर *पुं.* {सं. प्रहर} पूरे दिन-रात का आठवाँ भाग, तीन घंटों का समय।

पहरना *स.* = पहनना।

पहरा *पुं.* {हिं. पहर} किसी वस्तु या व्यक्ति की देख-रेख या रक्षा आदि के लिए अथवा उसे निर्दिष्ट स्थान से हटने से रोकने के लिए आदमियों की नियुक्ति, रक्षा का प्रबंध, चौकसी, चौकी।

मुहा. पहरा देना = रखवाली करना; *पहरा बदलना* = पुराने के स्थान पर नया रक्षक नियुक्त करना या होना।

रखवाली; रक्षाकार्य के लिए नियुक्त व्यक्ति या दल; चौकीदार की गश्त या फेरा; समय, युग।

पहरादूत *पुं.* पहरेदार।

पहरावा *पुं.* {हिं. पहराना} पहनावा, पोशाक; पहरावनी।

पहरावनी *स्त्री.* {हिं. पहराना} पहनने के वे सब कपड़े, जो कोई बड़ा छोटे को देता है, खिलअत।

पहरी *पुं.* {सं. प्रहरी} पहरेदार; प्रहरी।

पहरेदार *पुं.* {हिं. पहरा + फा. दर (प्रत्य.)} {*भाव.* पहरेदारी} पहरा देनेवाला, चौकीदार।

पहल[1] *पुं.* {फा. पह्लू, मि. सं. पटल} घन पदार्थ के सिरों अथवा कोनों के बीच की समभूमि; बगल, पहलू; पृष्ठ, सतह; जमी हुई रुई अथवा ऊन का टुकड़ा।

पहल[2] *पुं.* {सं. पटल} तह, परत।

पहल[3] *पुं.* {हिं. पहला} किसी कार्य का अपनी ओर से आरंभ, छेड़ (इनीशिएटिव)।

पहलदार *वि.* {हिं.} जिसमें पहल हों।

पहलनी *स्त्री.* {हिं.} कोंढ़े को गोल करने की सुनारों का एक अस्त्र।

पहलवान *पुं.* {फा. पह्लवान} {*भाव.* पहलवानी} कुश्ती लड़नेवाला पुरुष, मल्ल; पहलवान और हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति।

पहलवानी *स्त्री.* {हिं. पहलवान} पहलवान का काम या धंधा, कुश्ती लड़ने का काम या धंधा।

पहला *वि.* {सं. प्रथम} {*स्त्री.* पहली} गिनती आदि में एक के स्थान पर पड़नेवाला, क्रम के विचार से आरंभ का, प्रथम; जो कुछ दिन पहले हो चुका हो, पहलेवाला (फॉर्मर)।

पहलू *पुं.* {फा. पह्लू} पार्श्व, बगल; गुण, दोष आदि की दृष्टि से किसी वस्तु के भिन्न-भिन्न अंग या पक्ष (एस्पेक्ट)।

पहले *क्रि. वि.* {हिं. पहला} आरंभ या आदि में, शुरू में; स्थित या क्रम में सबसे आगे; पुराने समय में, पूर्वकाल में, आगे (फॉर्मरली)।

पहलेज *पुं.* {हिं.} खरबूजा का लंबोतरा रूप।

पहले-पहल *क्रि. वि.* {हिं. पहले} सबसे पहले, पहली बार।

पहलौंठा *वि.* {हिं. पहल + औठा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* पहलौठी} किसी स्त्री के गर्भ से पहले-पहल उत्पन्न (लड़का)।

पहलौंठी *स्त्री.* {हिं. पहलौठा} पहले-पहल बच्चा जनना, प्रथम प्रसव।

पहाँटना *स.* {?} तेज करना।

पहाड़ *पुं.* {सं. पाषाण} {*स्त्री.* अल्पा. पहाड़ी} भूमि का बहुत ऊँचा ऊबड़-खाबड़ और प्रायः पथरीला प्राकृतिक भाग, पर्वत।

मुहा. पहाड़ टूटना = अचानक भारी विपत्ति आ पड़ना; *पहाड़ से टक्कर लेना* = बहुत बड़े बलवान से भिड़ना।

ऊँची राशि, बड़ा ढेर; बहुत भारी वस्तु; बहुत कठिन कार्य।

मुहा. पहाड़ उठाना = भारी काम अपने ऊपर ले लेना।

वि. बहुत बड़ा और भारी।

पहाड़ा *पुं.* {सं. प्रस्तार} किसी अंक के गुणन-फलों की क्रमागत सूची, जो बच्चे याद करते हैं, गुणन-सूची।

पहाड़ी *पुं.* {हिं. पहाड़ + ई (प्रत्य.)} पहाड़ का रहनेवाला, पहाड़ का; जिसमें पहाड़ हो, जैसे पहाड़ी देश; *स्त्री.* छोटा पहाड़; चित्रकला में एक विशेष प्रकार की शैली या कलम जो काँगड़े और उसके आसपास से प्रचलित हुई थी।

पहार *पुं.* = पहाड़।

पहारू *पुं.* पहरेदार।

पहिचान *स्त्री.* = पहचान।

पहिती *स्त्री.* {सं. प्रहति} खाने के लिए पकाई हुई दाल।

पहिना *स्त्री.* {सं. पाठीन} एक प्रकार की मछली।

पहियाँ *क्रि. वि.* पहँ (पास)।

पहिया *पुं.* {सं. पथ्य (पथ-संबंधी प्रा. पह्य से पहिया)} गाड़ी अथवा कल में लगा हुआ वह चक्कर, जिसके धुरी पर घूमने से गाड़ी या कल चलती है, चक्का, चक्क।

पहिरना *स.* = पहनना।

पहिराना *स.* = पहनाना।

पहिला *वि.* = पहला, प्रथम प्रसूता।

पहीति *स्त्री.* पहिती।

पहुँच *स्त्री.* {सं. प्रभूत} पहुँचने की क्रिया या भाव; किसी स्थान या बात तक पहुँचने की क्रिया या भाव; किसी स्थान या बात तक पहुँचने की शक्ति या सामर्थ्य, गति, पैठ, प्रवेश

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ऐक्सेस); किसी वस्तु या व्यक्ति के कहीं पहुँचने की सूचना; कोई बात अच्छी तरह समझने की शक्ति, पकड़; अभिज्ञता की सीमा, ज्ञान की सीमा, जानकारी हद।

पहुँचना *अ.* {हिं. पहुँच} एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान पर उपस्थित या प्रस्तुत होना।

मुहा. पहुँचा हुआ = ईश्वर के निकट पहुँचा हुआ, सिद्ध; किसी बात का अच्छा जानकार। किसी स्थान तक फैलना; एक दशा या रूप से दूसरी दशा या रूप में जाना; प्रविष्ट होना, घुसना, पैठना; अभिप्राय या आशय समझना; भेजी हुई चीज को पानेवाले को मिलना; बढ़कर किसी के बराबर या तुल्य होना।

पहुँचा *पुं.* {सं. प्रकोष्ठ} कुहनी के नीचे का भाग, कलाई, मणिबंध।

पहुँचाना *स.* {हिं. 'पहुँचना' का स.} ऐसा करना कि कोई वस्तु या व्यक्ति एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान पर आ जाए; किसी के साथ-साथ इसलिए जाना कि रास्ते में उस पर कोई संकट न आने पाए; प्रविष्ट करना; कोई चीज किसी के पास ले जाना; किसी के समान बना देना।

पहुँची *स्त्री.* {हिं.} कलाई पर पहनने का एक गहना; युद्ध में कलाई पर पहना जानेवाला एक आवरण।

पहुँड़ना *अ.* पौढ़ना; तैरना।

पहुनाई *स्त्री.* {हिं. पहुना + ई (प्रत्य.)} पाहुना होना, अतिथि के रूप में कही जाना; अतिथि सत्कार, मेहमानदारी।

पहुन्नी *स्त्री.* {हिं.} वह फन्नी जिसको बढ़ई लकड़ी चीरते समय काठ में ठोंक देते हैं।

पहुप *पुं.* पुष्प, फूल।

पहुमी *स्त्री.* {हिं.} पृथ्वी, अवनि।

पहुरी *स्त्री.* {हिं.} संगतराश की मठाने की टाँकी।

पहुमी *स्त्री.* = पृथ्वी।

पहुला *पुं.* {सं. प्रफुल्ल} एक प्रकार का फूल, किसी ने इसे सफेद गुलाब और किसी ने कुई माना है।

उदा. पहुला हारु हिय लसै, सन की बेंदी भाल–**बिहारी।**

पहूला *स्त्रीं.* {हिं.} कुमुदनी, कुई का फूल।

पहेटना *स.* {अनु.} कोई कठिन या परिश्रम का काम पूरा करना; अच्छी तरह या डटकर कोई चीज खाना।

पहेली *स्त्री.* {सं. प्रहेलिका} किसी वस्तु का विषय का ऐसा गूढ़ वर्णन, जिसके आधार पर उत्तर देने या उस वस्तु का नाम बताने में बहुत सोच-विचार करना पड़े, बुझौवल; ऐसी जटिल बात जो जल्दी किसी की समझ में न आ, जटिल समस्या, घुमाव-फिराव की बात।

मुहा. पहेली बुझाना = कोई बात इस प्रकार घुमा-फिराकर कहना कि जल्दी किसी की समझ में न आए।

पह्लव *पुं.* {सं.} प्राचीन पारसी या ईरानी; पारस देश का पुराना नाम।

पह्लवी *स्त्री.* {फा.} प्राचीन पारसी और मध्यकालीन पारसी के मध्यवर्ती काल की फारस या ईरान की भाषा, जो वहाँ सासानी शासनकाल (ई. तीसरी से पाँचवीं शती) तक प्रचलित थी। यह आर्य भाषा के परिवार की थी, और संस्कृत से कुछ मिलती-जुलती थी।

पह्विका *स्त्री.* {सं.} जलकुंभी।

पाँ, पाँइ (उ) *पुं.* = पाँव, पद, पैर।

पाऊँ *पुं.* {हिं.} पद, पाँव, पैर।

पाँक *पुं.* {सं. पंक} कीचड़।

पाँख *पुं.* {सं. पक्ष} पंख, पर; *स्त्री.* पंखुड़ी।

पाँखी *स्त्री.* {सं. पक्षी} पतिंगा; पक्षी, चिड़िया।

पाँग *पुं.* {हिं.} गंगबरार, कछार।

पाँगल *पुं.* {हिं.} उष्ट्र, ऊँट।

पाँगा *पुं.* {हिं.} समुद्र के जल से निकाला हुआ नमक।

पाँगुर *वि.* = पंगु या पंगुल।

पाँच *वि.* {सं. पंच} चार और एक।

मुहा. पाँचों उँगलियाँ में घी होना = खूब लाभ होना। *पाँचों सवारों में नाम लिखाना* = अनुचित रूप से बड़ों में अपनी भी गिनती कराना।

पुं. कुछ लोग; पंच या मुखिया लोग।

पांचजन्य *पुं.* {सं.} कृष्ण के शंख का नाम।

पाँच सितारा *वि.* श्रेष्ठ श्रेणी का, सर्वोत्तम।

पांचाल *पुं.* पंचाल; *वि.* पंचाल देश का।

पांचालिका *स्त्री.* पंचालिका।

पांचाली *स्त्री.* {सं.} गुड़िया; साहित्य में वाक्य रचना की वह शैली, जिसमें प्रायः य, र, ल, व, स, ह वर्ण आते हैं और कहीं-कहीं छोटे समासों का भी प्रयोग होता है। किसी-किसी मत से गौड़ी और वैदर्भी का सम्मिश्रण ही पांचाली है; पंचाल देश की स्त्री; द्रौपदी।

पाँजना *स.* झालना।

पाँजर *पुं.* {सं. पंजर} शरीर में बगल और कमर के बीच का भाग; पसली; पार्श्व, बगल।

पांडर *पुं.* {सं.} गेठ, पानड़ी।

पांडव *पुं.* {सं.} राजा पांडु के पाँचों पुत्र–युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव।

पांडित्य *पुं.* {सं.} 'पंडित' होने का भाव; विद्वता, पंडिताई।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांडु पुं. {सं.} {*भाव.* पांडुता} कुछ लाली लिए हुए पीला रंग; सफेद रंग; एक रोग जिसमें शरीर का रंग पीला हो जाता है, पीलिया; प्राचीन काल के एक राजा (युधिष्ठिर आदि पांडव इन्हीं के पुत्र थे)।

पांडुरंग पुं. {सं.} विष्णु का एक अवतार; एक प्रकार का साग।

पांडुर *वि.* {सं.} {*भाव.* पांडुरता} पीला; सफेद।

पांडुलिपि *स्त्री.* {सं.} पुस्तक, लेख आदि की हाथ की लिखी हुई वह प्रति जो छपने को हो। (मैनस्क्रिप्ट); पांडुलेख।

पांडुलेख पुं. {सं.} लेख्य आदि की पांडुलिपि लिखने का काम (ड्राफ्टिंग)।

पांडुलेख्य पुं. पांडुलिपि।

पांडे पुं. {हिं.} कान्यकुब्ज, सरयूपारी पंडित, रसोईया।

पाँति *स्त्री.* {सं. पंक्ति} पंक्ति, कतार; साथ में बैठकर भोजन करनेवाले लोग।

पांथ[1] *वि.* {सं.} पथिक; वियोगी।

पांथ[2] पुं. = पथ (रास्ता)।

पाँय पुं. पाँव।

पाँयचा पुं. {फा. पाएच:} पायजामे का वह भाग, जो नीचे लटकता है; पलंग या खाट का पैर की ओरवाला भाग, पैताना।

पाँव पुं. {सं. पाद} प्राणियों का वह अंग जिसके आधार पर वे खड़े होते हैं या चलते हैं।

मुहा. (किसी बात या काम में) पाँव अड़ाना = टाँग अड़ाना; *पाँव तले की मिट्टी निकल जाना* = कोई विकट बात सुनकर चकित या स्तब्ध हो जाना; *(किसी के) पाँव धरना* = किसी के पैर छूकर प्रणाम करना; दीनतापूर्वक विनय करना; *पाँव पखारना* = किसी का आदर करने के लिए उसके पैर धोना; *पाँव पड़ना* = पाँव धरना; *पाँव-पाँव चलना* = पैरों से या पैदल चलना; *पाँव फैलाना* = और अधिक पाने के लिए आग्रह या जिद करना; *पाँव रोकना* = प्रण या प्रतिज्ञा करना; *पाँव लगना* = पाँव धरना।

पाँवड़ा *स्त्री.* {हिं. पाँव} वह बिछौना, जो किसी बड़ या पूज्य आगंतुक के मार्ग में बिछाया जाता है; पैर पोंछने का बिछावन, पायंदाज।

पाँवड़ी *स्त्री.* {हिं. पाँव} खड़ाऊँ; जूता।

पाँवरी *स्त्री.* {हिं. पौरि} ड्योढ़ी; दालान; पाँवड़ी।

पांशुका *स्त्री.* {सं.} केवड़े का पौधा।

पांशुपत्र पुं. {सं.} बथुए का साग।

पाँस *स्त्री.* {सं. पांशु} {*क्रि.* पाँसना} खेत में डाली जानेवाली खाद; किसी वस्तु को सड़ाकर उठाया हुआ खमीर।

पाँसा पुं. पासा।

पाँसुरी *स्त्री.* पसली।

पाँही *क्रि. वि.* पहँ।

पा पुं. {सं. पाद से फा.} पैर, पाँव।

पाइ पुं. {सं. पाद} पैर, पाँव।

पाइट *स्त्री.* आड़ 3.

पाइतरी *स्त्री.* पाँयता, पायवना।

पाइप पुं. {अ.} वह नल, जिसके अंदर से होकर कोई चीज एक जगह से दूसरी जगह जाती हो, जैसे पानी का पाइप, गैस का पाइप आदि।

पाइल *स्त्री.* = पायल।

पाइलट पुं. {अ.} विमानचालक।

पाई[1] *स्त्री.* {सं. पाद, हिं. पाय} पैर, पाँव; घेरा बाँधकर नाचने या चलने की क्रिया, चक्कर, घूमना; पैसे के तिहाई मूल्य का एक छोटा सिक्का; किसी अंक के आगे 1/4 का मान प्रकट करनेवाली सीधी खड़ी रेखा, जैसे 2 अर्थात् सवा दो; पतली छड़ियों या बेंतों का बना हुआ जुलाहों का एक ढाँचा, जिसपर ताने के सूत फैलाकर माँजे जाते हैं।

मुहा. ताना-पाई करना = बार-बार इधर-उधर आना-जाना।

पिंगल में दीर्घ स्वर की सूचक मात्रा; लेख में पूर्ण विराम की सूचक खड़ी रेखा।

पाई[2] *स्त्री.* {हिं. पापा = कीड़ा} धान आदि में लगनेवाला एक छोटा कीड़ा।

पाई[3] *स्त्री.* {अ.} ढेर के रूप में मिले हुए छापे के अक्षर या टाइप; छापे के वे टूटे-फूटे अक्षर, जो बिल्कुल खराब हो गए हों।

पाई[4] *स्त्री.* {हिं. पाना} पाने की क्रिया भाव, जैसे भरपाई।

पाउँ पुं. = पाँव।

पाउंड पुं. {अ.} एक प्रकार की अंग्रेज़ी तौल, जो आध सेर से कुछ कम होती है; एक प्रकार का सोने का सिक्का; इंग्लैंड की मानक मुद्रा।

पाउंड-पावना पुं. {सं. पाउंड + हिं. पावना} इंग्लैंड से किसी देश के पावने या लेने की वह रकम, जो पाउंडों के रूप में होती है; पाउंडों के रूप में प्राप्य धन। (स्टर्लिंग बैलेन्स)

पाउक पुं. = पावक।

पाउडर पुं. {अ.} चूर्ण, बुकनी; वर्ण का सौंदर्य बढ़ाने के लिए चेहरे या शरीर पर लगाने का प्रसिद्ध चूर्ण।

पाक[1] पुं. {सं.} पकने या पकाने की क्रिया या भाव; रसोई; पकवान; चाशनी में मिलाकर बनाया हुआ औषध; भोजन पचने की क्रिया, पाचन; श्राद्ध में पिंडदान के लिए पकाई हुई खीर या भात।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाक² *वि.* {फा.} पवित्र, शुद्ध; पापरहित; निर्दोष; समाप्त।
मुहा. झगड़ा पाक करना = कोई बड़ा कार्य समाप्त करना; बाधा दूर करना; मार डालना।
निर्मल, शुद्ध, साफ।

पाक *पुं.* {फा. पाकिस्तान} पाकिस्तान का संक्षिप्त रूप, जैसे भारत-पाक का समझौता।

पाककला *स्त्री.* {सं.} विविध प्रकार के व्यंजन बनाने की कला।

पाकना *अ.* = पकना।

पाकफल *पुं.* {सं.} करौंदा।

पाकरिपु *पुं.* {सं.} इंद्र का नाम।

पाकर *पुं.* {सं. पर्कटी} {अल्पा. पाकरी} एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

पाकशाला *स्त्री.* {सं.} रसोई-घर।

पाकशासन *पुं.* {सं.} इंद्र।

पाकशास्त्र *पुं.* {सं.} वह शास्त्र जिसमें तरह-तरह के खाद्य पदार्थ या व्यंजन बनाने की प्रक्रियाओं या कला का विवेचन होता है।

पाकस्थली *स्त्री.* पक्वाशय, जहाँ आधार का पाचन होता है।

पाकिस्तान *पुं.* {सं. पाक + स्तान} {*वि.* पाकिस्तान} भारत के कुछ अंशों को अलग करके बनाया हुआ वह नया मुसलमानी राज्य जिसमें सिंध, पश्चिमी पंजाब, पखतूनिस्तान, बलोचिस्तान आदि प्रांत सम्मिलित हैं।

पाकिस्तानी *वि.* {फा. पाकिस्तान} पाकिस्तान संबंधी पाकिस्तान का।

पाकेट *पुं.* {*अ.*} जेब, खीसा।

पाकेटमार *पुं.* {*अ.* + हिं.} गिरहकट।

पाक्षायण *वि.* {सं.} पक्ष में हानेवाला।

पाक्षिक *वि.* {सं.} एक पक्ष या पंद्रह दिनों का या उससे संबंध रखनेवाला; हर पक्ष में या पंद्रह दिनों पर प्रकाशित होनेवाला (पत्र)।

पाखंड *पुं.* {सं. पाषंड} वेद विरुद्ध आचरण; ढोंग, आडंबर, छल, धोखा; धूर्तता, चालाकी।
मुहा. पाखंड फैलाना = किसी को ठगने के लिए आडंबर या उपाय रचना।

पाखंडी *वि.* {सं. पाषंडिन्} बनावटी धार्मिकता या सत्यशीलता दिखानेवाला, ढोंगी; धोखेबाज, धूर्त।

पाख *पुं.* {सं. पक्ष} पंद्रह दिन, पखवाड़ा; कच्चे मकानों की चौड़ाई की दीवारों के वे ऊँचे भाग, जिनपर बँड़ेर रहती है; पंख, पर।

पाखर *स्त्री.* {सं. प्रखर} युद्ध में हाथी-घोड़ों पर डाली जानेवाली लोहे की झूल।

पाखा *पुं.* {सं. पक्ष} कोना; पाख।

पाखाना *पुं.* {फा. पाख़न:} मलत्याग करने के लिए बना हुआ निश्चित स्थान, शौचगृह; मल, गुह।

पाग *स्त्री.* पगड़ी; *पुं.* पाक, चाशनी में पकाई हुई औषध।

पागना *स.* {सं. पाक} शीरे या चाशनी में कोई चीज पकाना या लपेटना।

पागल *वि.* {?} {*स्त्री.* पगली, पागलिनी, *भाव.* पागलपन} जिसके मस्तिष्क में विकार आ गया हो, जिसके दिमाग ने ठीक तरह से काम करना छोड़ दिया हो, बावला, विक्षिप्त (ल्यूनैटिक); क्रोध, प्रेम आदि के कारण आपे से बाहर; मूर्ख, बेवकूफ।

पागलखाना *पुं.* {हिं. पागल + फा. ख़ान:} वह स्थान जहाँ चिकित्सा के लिए पागल रखे जाते हैं।

पागलपन *पुं.* {हिं. पागल + पन} वह मानसिक रोग जिसमें मनुष्य की बुद्धि बेकाम हो जाती है, उन्माद, विक्षिप्तता; पागलों का-सा मूर्खतापूर्ण आचरण।

पागुर *पुं.* जुगली।

पाचक *वि.* {सं.} पचाने या पकानेवाला; *पुं.* पाचनशक्ति बढ़ानेवाली दवा।

पाचन *पुं.* {सं.} पचाना या पकाना; खाद्य पदार्थ के पचने या हजम होने की क्रिया; पाचक औषध; खट्टा रस; भोजन पचाने की शक्ति; अग्नि; *वि.* पचानेवाला (पदार्थ)।

पाचनशक्ति *स्त्री.* {सं.} वह शक्ति जिससे भोजन पचता है, हाजमा।

पाचना *स.* पचाना; पकाना।

पाचल *पुं.* {सं.} अग्नि, वायु।

पाच्छाह *पुं.* = बादशाह।

पाच्य *वि.* {सं.} जो पच जाए।

पाछ¹ *स्त्री.* {हिं. पाछना} रक्त, रस आदि निकलने के लिए जन्तु या पौधे के शरीर पर छुरी आदि से किया हुआ हलका घाव।

पाछ² *पुं.* {सं. पश्चात्} पीछा; *क्रि. वि.* पीछे।

पाछना *स.* {हिं. पंछा} रक्त या रस निकालने के लिए छुरे आदि से शरीर या पौधे पर हलका घाव करना।

पाछा *पुं.* = पीछा।

पाछिल *वि.* = पिछला।

पाछे *क्रि. वि.* = पीछे।

पाज *पुं.* {?} सेतु, पुल; आधार, जड़; ढेर, राशि; *पुं.* पाँजर; *स्त्री.* बाँध।

पाजरा *पुं.* {हिं.} पौधा जिसकी छाल से रंग निकाला जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाजामा पुं. {फा. पाएजामः} पैरों में पहना जानेवाला एक पहनावा. जिससे कमर से एड़ी तक का भाग ढका रहता है।

पाजी[1] *वि.* {फा.} {*भाव.* पाजीपन} दुष्ट, लुच्चा, शरारती।

पाजी[2] पुं. {सं. पदाति} पैदल सिपाही, प्यादा; रक्षक।

पाजीपन पुं. {फा. पाजी + हिं. पन (प्रत्य.)} पाजी होने का भाव, दुष्टता, शरारत।

पाजेब *स्त्री.* {फा. पाज़ेब} पैरों में पहनने का स्त्रियों का एक गहना, मंजीर, नूपुर।

पाटंबर पुं. {सं.} रेशमी कपड़ा।

पाट[1] पुं. {सं. पट} रेशम; रेशम का तागा; रेशमी कपड़ा; पटसन के रेशे; वस्त्र, कपड़ा।

पाट[2] पुं. {सं. पट्ट} राज-सिंहासन, राजगद्दी; चौड़ाई; पटरा, पीढ़ा; वह पत्थर जिसपर धोबी कपड़े धोते हैं; चक्की के ऊपर या नीचे के पत्थरों में से कोई एक।

पाटक *वि.* {सं.} छेदक, भेदक।

पाटन *स्त्री.* {हिं. पाटना} पाटने की क्रिया या भाव, पटाव; छत आदि, जो पाटकर बनाई जाती है।

पाटना *स.* {हिं. पाट} मिट्टी, कूड़े आदि से गड्ढा भरना; दीवारों के बीच में छाया आदि के लिए या किसी गहरे स्थान के आर-पार आधार बनाने के लिए बल्ले, धरन आदि बिछाना, पाटन या छत बनाना; ढेर लगाना।

पाटल पुं. {सं.} पाढर नाम का पेड़; गुलाब के रंग का, गुलाबी।

उदा. कर लै प्यौ पाटल बिमल, प्यारी पठए पान–**बिहारी।**

पाटला पुं. {सं. पाटल} पाढर का वृक्ष; बढ़िया और खरा सोना (धातु)।

पाटव पुं. {सं.} पटुता, कुशलता।

पाटली *स्त्री.* {सं.} कटभी वृक्ष, पटना नगर अधिन्नात्री देवी।

पाटवी *वि.* {हिं. पाट} पटरानी से उत्पन्न (राजकुमार); रेशमी (वस्त्र)।

पाटा पुं. {सं. पाटीर} वह लंबी लकड़ी जिससे जोते हुए खेत के मिट्टी के ढेले तोड़े जाते हैं; पीढ़ा; सिंहासन।

पाटी[1] *स्त्री.* {सं.} परिपाटी, शैली, रीति; जोड़, बाकी, गुणा आदि गणित के कार्य या रीतियाँ; श्रेणी, पंक्ति।

पाटी[2] *स्त्री.* {सं. पट्टिका} पलंग या खाट के चौखटे की लंबाई के बल की लकड़ी; सिर के बालों में निकली जानेवाली माँग।

मुहा. पाटी मारना = सिर के बालों में कंघी से माँग निकालना।

पाटी गणित पुं. {सं.} गणित का वह अंग या शाखा जिसमें ज्ञात अंकों या संख्याओं की सहायता से अज्ञात या उद्दिष्ट अंक या संख्याएँ जानी जाती है (एरिथमेटिक)।

पाटीर पुं. {सं.} चंदन; खेत; खेत जोतने का हल।

पाठ पुं. {सं.} पढ़ने की क्रिया या भाव, पढ़ाई; नियम या विधिपूर्वक धर्मग्रंथ पढ़ने की क्रिया या भाव; पढ़ने या पढ़ाने का विषय; एक बार में पढ़ा जानेवाला अंश, सबक।

मुहा. (किसी को) पाठ पढ़ाना = अपना स्वार्थ साधने के लिए किसी को बहकाना; *उलटा पाठ पढ़ाना* = कुछ का कुछ समझा देना।

ग्रंथ, लेख आदि के शब्दों, पदों या वाक्यों का क्रम या योजना (रीडिंग)।

पाठक पुं. {सं.} पढ़नेवाला, वाचक; पढ़ानेवाला, अध्यापक; उपाध्याय, सारस्वत।

पाठन पुं. {सं.} पढ़ाने की क्रिया या भाव, अध्यापन।

पाठना *स.* = पढ़ाना।

पाठभेद पुं. पाठांतर।

पाठमंजरी *स्त्री.* {सं.} मैना।

पाठशाला *स्त्री.* {सं.} वह स्थान जहाँ विद्यार्थी पढ़ते हैं, विद्यालय, मदरसा।

पाठांतर पुं. {सं.} एक ही पुस्तक की दो या अधिक प्रतियों के लेखों में कहीं-कहीं शब्द, पद या वाक्य में दिखाई पड़नेवाला भेद, पाठभेद।

पाठा पुं. {सं. पुष्ट} {*स्त्री.* पाठी} पट्ठा; जवान बैल, भैंसा या बकरा।

पाठावली *स्त्री.* {सं.} पाठों का समूह; किसी विषय की वह पुस्तक जिसमें विद्यार्थियों के पढ़ने योग्य पाठों का संग्रह होता है (रीडर)।

पाठी पुं. {सं. पाठिन्} पाठ करने या पढ़नेवाला, पाठक (यौ. शब्दों के अन्त में, जैसे वेदपाठी)।

पाठ्य *वि.* {सं.} पाठ-संबंधी।

पाठ्यक्रम पुं. {सं.} कोई परीक्षा पारित करने के लिए पाठ्य पुस्तकों का वह समूह या क्रम, जिसके अनुसार परीक्षार्थी को वे सब पुस्तकें पढ़नी पड़ती हैं (कोर्स); किसी संस्था द्वारा ली जानेवाली सभी परीक्षाओं के लिए निर्धारित सभी पुस्तकों की विवरणयुक्त नामावली।

पाठ्यग्रंथ पुं. = पाठ्य पुस्तक।

पाठ्य पुस्तक *स्त्री.* {सं.} वह पुस्तक जो पाठशालाओं में विद्यार्थियों को नियमित रूप से पढ़ाई जाती हो, पढ़ाई की किताब (टेक्स्ट बुक)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ्य विवरण पुं. {सं.} वह पुस्तक जिसमें विभिन्न पाठ्यक्रमों का विवरण दिया हो।

पाठ्येतर *वि.* {सं.} पाठ्य से भिन्न; पाठ्यक्रम से भिन्न।

पाड़ पुं. {हिं. पाट} धोती आदि का किनारा; मचान, पाइट; कुएँ के मुँह पर रखने की जाली, चह; बाँध, पुश्ता; फाँसी का तख्ता।

पाड़ा पुं. मुहल्ला।

पाडिनी *स्त्री.* {सं.} मिट्टी का पात्र, हाँड़ी।

पाढ़ पुं. {सं. पाटा} पाटा; वह मचान, जिसपर बैठकर किसान खेत की रखवाली करते हैं; इमारत में दीवार के सामने खड़ा किया हुआ वह ढाँचा, जिसपर बैठकर कारीगर या राज-मजदूर काम करते हैं, पाइट; धोती, साड़ी आदि का किराना, जो लंबाई के बल में अलग रंगों में बुना होता है।

पाढ़त *स्त्री.* {हिं. पढ़ना} पढ़ने की क्रिया या भाव, पाठ; शिक्षा; मंत्र पढ़कर किया जानेवाला जादू।

पाढ़र पुं. {सं. पाटल} एक प्रकार का पेड़।

पाढ़ा पुं. {देश.} एक प्रकार का हिरन, चित्रमृग; *स्त्री.* पाठा।

पाढ़ी *स्त्री.* {हिं.} सूत की लच्छी, नाव।

पाणि पुं. {सं.} हाथ।

पाणिगृहीता *वि.* {सं.} (स्त्री) जिसका पाणिग्रहण किया गया हो, विवाहिता।

पाणिग्रह पुं. {सं.} विवाह, ब्याह।

पाणिग्रहण पुं. {सं.} {*वि. स्त्री.* पाणिगृहीता} विवाह।

पात पुं. {सं.} गिरने या गिराने की क्रिया या भाव, पतन; नाश, बरबादी; मृत्यु, मौत; पत्ता।

पातक पुं. {सं.} पाप, गुनाह।

पातकी *वि.* {सं.} पापी।

पातन पुं. {सं.} गिराने की क्रिया या भाव।

पातर *वि.* {सं. पात्रट} {*स्त्री.* पातरि, पातरी} हिं. 'पतला' का पुराना रूप; जिसका दल मोटा न हो, पतला; क्षीण शरीरवाला, दुबला; बहुत ही संकीर्ण और तुच्छ स्वभाववाला; *स्त्री.* पत्तल, पाखुर।

पातशाह पुं. = बादशाह।

पाता *वि.* {सं. पदत्राता} रक्षा करनेवाला, रक्षक। *उदा.* रुद्र-अवतार संसार पता–तुलसी।

पाताबा पुं. {फा. पाताब:} जूते के भीतर का तल्ला; मोजे के ऊपर पहनने का कपड़े का खोल; पैरों में पहनने का मोजा।

पाणिभुज पुं. {सं.} उदबर, गूलर का पेड़।

पाताल पुं. {सं.} पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में सबसे नीचे का या सातवाँ लोक; पृथ्वी से नीचे का कोई लोक।

पातिव्रत (त्य) पुं. {सं.} पतिव्रता होने का भाव।

पातिसाहि पुं. = बादशाह।

पाती[1] *स्त्री.* {सं. पत्री} चिट्ठी, पत्र; वृक्ष के पत्ते।

पाती[2] *स्त्री.* {हिं. पत} प्रतिष्ठा, पत।

पातुर (री) *स्त्री.* {सं. पातिली} वेश्या; नटी।

पात्र पुं. {सं.} {*स्त्री.* पात्री, *भाव.* पात्रता} वह जिसमें कुछ रखा जा सके, आधार, बरतन; कुछ पाने या लेने के योग्य (व्यक्ति), जैसे दान का पात्र; नाटक में अभिनय करनेवाला, अभिनेता, नट (एक्टर); कथानक, उपन्यास आदि में का वह व्यक्ति जिसका कथावस्तु में कोई स्थान हो या कुछ चरित्र दिखाया गया हो; *वि.* जो किसी कार्य या पद के लिए उपयुक्त होने के कारण चुना या नियुक्त किया जा सकता हो।

पात्रशेष पुं. {सं.} खाकर छोड़ा हुआ अन्न आदि, जूठा।

पात्रता *स्त्री.* {सं.} पात्र होने की अवस्था या भाव; किसी काम के लिए चुने जाने या किसी पद पर नियुक्त होने के लिए आवश्यक योग्यता या गुण (एलिजिबिलिटी)।

पात्री *स्त्री.* {सं.} छोटा बरतन; कथानक, अभिनय आदि में स्त्री पात्र, नटी (एक्ट्रेस)।

पाथ[1] पुं. {सं.} पानी, जल।

पाथ[2] पुं. {सं. पथ} मार्ग, रास्ता; पाथेय।

पाथ[3] *स्त्री.* {हिं. पाथना} पाथने की क्रिया या भाव।

पाथना स. {सं. प्रथन} गीली मिट्टी आदि वस्तुओं को थाप-पीट या दबाकर (ईंट, खपड़े, उपले आदि के) विशेष आकार में लाना; पाथना।

पाथर पुं. पत्थर।

पाथेय पुं. {सं.} पथ या रास्ते में काम आनेवाला खाद्य पदार्थ; यात्रा की सामग्री और व्यय के लिए धन।

पाथोज पुं. {सं.} कमल, पद्म।

पाथोधि पुं. {सं.} समुद्र, सागर।

पाद[1] पुं. {सं.} पैर, पाँव; श्लोक या पद्य का चरण, पद; चतुर्थांश, चौथाई भाग; पुस्तक का प्रकरण; नीचे का भाग, तल।

पाद[2] पुं. {सं. पर्द} अधोवायु, अपान वायु।

पाद-टिप्पणी *स्त्री.* {सं.} वह टिप्पणी जो किसी ग्रंथ में पृष्ठ के नीचे सूचना, निर्देश आदि के लिए लिखी जाती है (फुटनोट)।

पादत्राण पुं. {सं.} जूता।

पादना पुं. {सं. पाद} गुदा से वायु त्याग करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पादप पुं. {सं.} वृक्ष पेड़।
पादपूरक *वि.* {सं.} कविता में पद की पूर्ति करने के लिए लगाया जानेवाला (अक्षर या शब्द)।
पादपूरण *वि.* {सं.} कविता के किसी अधूरे चरण को पूरा करना; पद या चरण पूरा करने के लिए उसमें अनावश्यक या भरती के शब्द रखना।
पादरी पुं. {पुर्त. पैड्रे} ईसाई पुरोहित जो अन्य ईसाइयों के संस्कार और उपासना कराता है।
पादशाह पुं. {फा.} बादशाह।
पादशाही *वि.* {फा.} बादशाह-संबंधी।
पादाक्रांत *वि.* {सं.} पददलित, पैर से कुचला हुआ; विजित, पराजित।
पादारघ पुं. पादार्घ।
पादुक पुं. {सं.} पैदल, पदयात्री।
पादुका *स्त्री.* {सं.} खड़ाऊँ; जूता; पैरों में पहनने का कोई उपकरण, जैसे जूता, चप्पल खड़ाऊँ आदि (फुट वियर)।
पादोदक पुं. {सं. पाद + उदक} चरणामृत।
पादोदर पुं. {सं.} सर्प, साँप।
पाद्य पुं. {सं.} पूजनीय व्यक्ति या देवता के लिए पैर धोने का जल।
पाद्यार्घ पुं. {सं.} हाथ-पैर धोने के लिए दिया जानेवाला जल; पूजा या भेंट की सामग्री; ब्राह्मण को दान रूप में दी हुई वह भूमि जिसका कर न लिया जाता हो, माफी।
पाधा पुं. उपाध्याय।
पान¹ पुं. {सं.} जल आदि द्रव पदार्थ पीना; पीने का पदार्थ, पेय द्रव्य।
पान² पुं. {सं. पर्ण} पत्ता; एक प्रसिद्ध लता, जिसके पत्तों पर कत्था, चूना आदि लगाकर और उनका बीड़ा बनाकर खाया जाता है, ताम्बूल।
मुहा. पान देना = किसी के बिदा होने के समय उसे सत्कार के रूप में पान की बीड़ा देना; *पान पाना* = किसी के यहाँ से विदा होते समय सत्कार के रूप में पान का बीड़ा पाना; *पान खाने को (कुछ धन) देना* = रिश्वत या घूस देना; पुरस्कार आदि के रूप में कुछ धन जमा करना; *पान बनाना* = पान पर कत्था, सुपारी आदि रखकर बीड़ा तैयार करना; *पान लेना* = बीड़ा उठाना या लेना।
पुस्तक का पन्ना, वरक, पृष्ठ; पुं. पाणि।
पान-इलायची *स्त्री.* {हिं.} किसी शुभ या मांगलिक अवसर पर होनेवाला वह सामाजिक आयोजन या समारोह, जिसमें पान-इलायची आदि से आए हुए लोगों का सत्कार किया जाता है।
पानकुंभ पुं. {सं.} जल का कलसा।
पानदान पुं. {हिं. पान + फा. दान (प्रत्य.)} पान, चूना, कत्था आदि रखने का डिब्बा, पनडब्बा।
पान-पत्ता पुं. सामान्य पूजा या भेंट; पान आदि सत्कार की सामग्री।
पानप *वि.* {सं.} मद्य पीनेवाला, पियक्कड़।
पान-फूल पुं. बहुत कोमल वस्तु; पान-पत्ता¹।
पानस पुं. फानूस; कटहल से बनाई हुई मदिरा।
पान-सुपाड़ी (री) *स्त्री.* पान-इलायची।
पानही *स्त्री.* पनही, जूता।
पाना¹ *स.* {सं. प्रापण} आने पर अपने पास या अधिकार में करना, प्राप्त करना; अच्छा या बुरा फल भोगना; दी या खोई चीज फिर से हाथ में लेना; पड़ी हुई वस्तु उठाना; देख या जान लेना, अनुभव करना, जैसे किसी की पीर (पीड़ा) पाना = किसी का कष्ट समझना; (संयोज्य क्रिया में) समर्थ होना, सकना, जैसे कहीं बैठ या घुस पाना; किसी के पास या निकट पहुँचना, जैसे पार पाना; बराबरी कर सकना; भोजन करना, खाना (साधु); पुं. पावना, प्राप्तव्य धन।
पाना² पुं. {सं. उपानह} एक प्रकार का जूता (बुंदेल); पुं. पना (आम आदि का); पुं. पानी।
पानागार पुं. {सं.} जहाँ बहुत-से लोग एकत्र होकर मद्य पियें, मद्य-स्थली।
पानि पुं. {सं. पाणि} हाथ।
पानिक पुं. {सं.} मदिरा विक्रेता, कलवार।
पानिप पुं. {हिं. पानी} ओप, कान्ति, द्युति, चमक; शोभा या सुंदरता; पानी, जल।
पानी¹ पुं. {सं. पानीय} नदी, कुएँ या वर्षा से मिलनेवाला वह प्रसिद्ध यौगिक द्रव या पदार्थ जो पीने, नहाने, खेत आदि सींचने के काम आता है, जल, नीर।
मुहा. पानी करना = किसी का क्रोध या आवेश शांत करना; *पानी की तरह बहाना* = अधिक खर्च करना, उड़ाना; पानी के मोल होना = बहुत सस्ता होना; *पानी देना* = सींचना; पितरों के नाम अंजलि में पानी लेकर गिराना, तर्पण करना; *पानी पढ़ना* = मंत्र पढ़कर पानी फूँकना; *पानी परोरेना* = पानी पढ़ना; *पानी पानी होना* = बहुत लज्जित होना; *पानी फूँकना* = मंत्र पढ़कर पानी पर फूँक मारना; *(किसी पर) पानी फेरना या फेर देना* = सर्वनाश कर देना; *पानी भरना* = तुलना में तुच्छ सिद्ध होना; अधीन या दास होकर रहना; दुर्दशा झेलना; *पानी में आग लगाना* = जहाँ अशांति, उपद्रव या झगड़ा न हो सकता हो, वहाँ भी अशांति उपद्रव या झगड़ा कर देना; *पानी फेंकना* = नष्ट करना; *मुँह में पानी आना* = खाने या लेने के लिए गहरा लोभ होना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीभ, आँख, घाव आदि में से रसनेवाला तरल पदार्थ; वर्षा, मेंह, वृष्टि; पानी की तरह पतली वस्तु; रस, अरक, जूस; चमक, कांति, ओप; धारदार हथियारों के फल की वह रंगत या चमक जिससे उनकी उत्तमता प्रकट होती है, आब, जौहर; मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।

मुहा. पानी उतारना = बेइज्जती करना।

वर्ष, जैसे पाँच पानी का पेड़; मुलम्मा; वीरता, बहादुरी; स्वाद में पानी की तरह फीका पदार्थ; लड़ाई या युद्ध; बार, दफा; जलवायु।

पानी[2] *पुं.* {सं. पाणि} हाथ, कर।

उदा. करहुँ प्रनाम जोरि जुग पानी–**तुलसी।**

पानी-कल *स्त्री.* जल-कल।

पानी का बुल्ला *पुं.* क्षणभंगुर वस्तु।

पानीदार *वि.* {हिं. पानी + फा. दार (प्रत्य.)} चमकदार; इज्जतदार; साहसी, प्रतिष्ठित।

पानीफल *पुं.* = सिंघाड़ा (फल)।

पानूस *पुं.* **फानूस।**

पानेवाला *पुं.* {हिं. पाना} जिसे कुछ मिले या प्राप्त हो; वह जिसे किसी प्रकार का देय कुछ धन दिया जाए (पेई)।

पानौरा *पुं.* {हिं. पान + बरा} पान के पत्ते की पकौड़ी।

पान्हर *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का सरपत।

पान्यो *पुं.* पानी।

पाप *पुं.* {सं.} इस लोक में बुरा माना जानेवाला और परलोक में अशुभ फल देनेवाला कर्म, 'धर्म' या 'पुण्य' का उलटा, पातक, गुनाह।

मुहा. पाप उदय होना = पिछले पापों का फल मिलने का योग या असर आना; *पाप कटना* = पापों का नाश होना; *पाप कमाना या बटोरना* = पाप करके फल के भागी बनाना।

अपराध, कसूर, जुर्म; पाप करने का विचार, बुरी नीयत; व्यर्थ का झंझट, बखेड़ा।

मुहा. पाप कटना = झगड़े या जंजाल से पीछा छूटना; *पाप मोल लेना* = जानबूझकर अपने सिर झंझट लेना; *पाप पड़ना* = मुश्किल हो जाना।

पापकर्म *पुं.* {सं.} पाप समझा जानेवाला काम।

पापकर्मा *वि.* पापी।

पापकल्प *वि.* {सं.} दुष्कर्मी, पापकर्म से जीविका चलानेवाला।

पापगण *पुं.* {सं.} छन्दःशास्त्र के अनुसार ठगण का भेद।

पापग्रह *पुं.* {सं.} शनि, राहु, केतु, आदि अशुभ फल देनेवाले ग्रह (फलित ज्योतिष)।

पापघ्न *वि.* {सं.} पापनाशक।

पापचेतस् *वि.* {सं.} पापबुद्धि, पापिष्ठ।

पापड़ *पुं.* {तमिल पर्पु = दाल से स. पर्पट} उर्द या मूँग के आटे की मसालेदार पतली चपाती।

मुहा. पापड़ बेलना = बहुत परिश्रम करना; दुख से दिन काटना; *बहुत से पापड़ बेलना* = बहुत तरह के काम करना।

पापदृष्टि *वि.* {सं.} अशुभ दृष्टिवाला।

पापनाशक *वि.* {सं.} पापों का नाश करनेवाला, पापनाशी।

पापनिमज्जित *वि.* {सं.} पापों में डूबा हुआ, जिसने बहुत पाप किए हों।

पापाचार *पुं.* {सं.} {*वि.* पापाचारी} पाप का आचरण, दुराचार।

पापात्मा *वि.* {सं.} पापी।

पापिष्ठ *वि.* {सं.} बहुत बड़ा पापी।

पापी *वि.* {सं. पापिन्} {*स्त्री.* पापिनी} पाप करनेवाला, अघी, पातकी; क्रूर, निर्दय।

पापपुरुष *पुं.* {सं.} तंत्र में माना हुआ एक पुरुष, जिसका शरीर पापमय होता है।

पाबंद *वि.* {फा.} {*भाव.* पाबंदी} बँधा हुआ, बद्ध; नियम, विधि आदि का नियमित रूप से पालन करनेवाला या उनके पालने के लिए विवश।

पामर *वि.* {सं.} {*भाव.* पामरता} खल, दुष्ट, कमीना; पापी; नीच।

पामरी *स्त्री.* {?} दुपट्टा।

उदा. पाट, पामरी, जीभ, पद, प्रेम, सुपुन्य विचार–**केशव।**

पायँ *पुं.* = पाँव।

पायँ-जेहरि *स्त्री.* पाजेब।

पायँता *पुं.* {सं. पाद + सं. स्थान} बिछौने या चारपाई का वह सिरा जिधर पैर रहते हैं, 'सिरहाना' का उलटा, पैताना।

पायंदाज *पुं.* {फा.} पैर पोंछने का बिछावन।

पाय *पुं.* पाँव।

पायक *पुं.* {सं. पादतिक, पायिक} दूत, हरकारा; दास, सेवक; पैदल सिपाही।

पायखाना *पुं.* {सं.} मल, गू, शौचालय।

पायजा *पुं.* पाँयता।

पायदार *वि.* {फा.} {*भाव.* पायदारी} बहुत दिनों तक काम आने या टिकनेवाला, दृढ़, मजबूत, पक्का।

पायमाल *वि.* {फा.} पैरों से रौंदा हुआ, पददलित।

पायना *क्रि. स.* {हिं.} वस्तु पर सान (धान) धरना।

पायरिया *पुं.* {अ.} दाँतों के सड़ने का रोग।

पायल *स्त्री.* {हिं. पाय + ल (प्रत्य.)} पाजेब नाम का पैर का गहना; तेज चलनेवाली हथिनी;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुं. वह बच्चा जिसके जन्म के समय पहले पैर बाहर निकले हों; बहुत तेल चलनेवाला हाथी; *वि.* पैदल।

पायस पुं. {सं.} खीर, देवदास-वृक्ष से निकला हुआ गोंद।

पायसा पुं. पड़ोस।

पाया पुं. {सं. पाद} पलंग, चौकी आदि में नीचे के वे छोटे खंभे जिनके सहारे उनका ढाँचा खड़ा रहता है, गोड़ा, पावा; खंभा, स्तंभ; पद, दरजा, ओहदा।

पायी *वि.* {सं. पायिन्} पीनेवाला (यौ. में; जैसे स्तनपायी)।

पारक *वि.* {सं.} पार करनेवाला निपुण।

पारंगत *वि.* {सं.} {*स्त्री.* पारंगता} जो पार हो चुका हो; पूर्ण पण्डित, पूरा जानकार।

पारंपरिक *वि.* {सं.} परंपरा से चला आया हुआ।

पारंपरीण *वि.* {सं.} परंपरा से चला आया हुआ, परंपरागत।

पारंपर्य्य पुं. {सं.} 'परंपरा' का क्रम या भाव; वंश-परंपरा।

पार¹ पुं. {सं.} जलाशयों में सामने या उस ओर का किनारा, दूसरी ओर का तट।

मुहा. पार उतारना = नदी के उस पार पहुँचना; कोई काम पूरा करके उससे छुट्टी पाना; *(नदी आदि) पार करना* = जलाशय आदि के इस किनारे से उस किनारे पहुँचना; *पार लगना* = नदी आदि के दूसरे किनारे पर पहुँचना; *(किसी काम से) पार लगना* = पूरा हो सकना; *पार लगाना* = उस पार या दूसरे किनारे पर पहुँचाना; संकट से उद्धार करना; काम पूरा या समाप्त करना।

सामनेवाला, दूसरा पार्श्व, दूसरी तरफ; अन्त, सिरा, छोर।

मुहा. (किसी का) पार पाना = किसी की गहराई या थाह तक पहुँचना; *(किसी से) पार पाना* = किसी के विरुद्ध सफलता प्राप्त करना या उससे जीत सकना।

क्रि. वि. परे, आगे, दूर।

पार² *वि.* {सं. पालन} पालन करनेवाला।

पार³ *वि.* {सं. पारण} पार लगानेवाला।

पारक्य *वि.* {सं.} परकीय, पराया।

पारख *स्त्री.* परख; पुं. पारखी।

पारखी पुं. {हिं. परख} परख या पहचान रखनेवाला, परखनेवाला।

पारग *वि.* {सं.} जो पार चला गया हो; अच्छा ज्ञाता, जानकार।

पारजात पुं. पारिजात, परजाता।

पारण पुं. {सं.} {*वि.* पारित} पार करने या उतरने की क्रिया या भाव; परीक्षा या जाँच में पूरा उतरना, उत्तीर्ण होना (पासिंग); रुकावट या बंधन की जगह पार करके आगे बढ़ना (पासिंग); धार्मिक व्रत या उपवास के दूसरे दिन का पहला भोजन और उक्त-संबंधी कृत्य; समाप्ति।

पारणक *वि.* {सं.} पारण करनेवाला; पुं. वह पत्र जो किसी परीक्षा आदि में उत्तीर्ण होने का सूचक हो; वह पत्र जिसे दिखलाकर कोई कहीं आ-जा सके या इसी प्रकार का और कोई काम कर सके (पास)।

पारणपत्र पुं. पारणक।

पारणा *स्त्री.* {सं.} उपवास व्रत आदि के दूसरे दिन का प्रथम भोजन।

पारतंत्र्य पुं. {सं.} परतंत्रता।

पारत्रिक *वि.* पारलौकिक, परलोक-संबंधी।

पारथ पुं. पार्थ (अर्जुन)।

पारथी पुं. {सं. पापर्द्धिक = बहेलिया} चिड़ियाँ फँसानेवाला, बहेलिया; पशुओं का शिकार करनेवाला, शिकारी, अहेरी, व्याध; हत्यारा।

पारद पुं. {सं.} पारा; फारस देश की एक प्राचीन जाति।

पारदर्शक *वि.* {सं.} {*भाव.* पारदर्शकता} जिसके सामने या बीच में रहने पर भी उस पार की चीज दिखाई पड़े, जैसे शीशा पारदर्शक होता है (ट्रांसपेअरेंट)।

पारदर्शन *वि.* {सं.} सर्वज्ञ, पारग।

पारदर्शिता *स्त्री.* {सं.} पारदर्शी होने का भाव।

पारदर्शी *वि.* {सं. पारदर्शिन्} {*स्त्री.* पारदर्शिनी} {*भाव.* पारदर्शिता} (किसी विषय में) बहुत दूर, उस पार या बाद तक की बात देखने या समझनेवाला, दूरदर्शी; पारदर्शक।

पारदाय पुं. {सं.} परस्त्री-गमन, व्यभिचार।

पारदारिक पुं. {सं.} परस्त्री से संभोग करनेवाला।

पारधी पुं. {हिं.} बहेलिया, व्याध, वधिक, हत्यारा।

पारधीपति पुं. {हिं.} कामदेव।

पारधी पुं. बहेलिया।

पारन पुं. पारण।

पारना¹ *स.* {सं. पारण} डालना, गिराना।

उदा. कौरव-सुत को पार्‌यौ ताज—**सूर**।

लेटाना; कुश्ती या लड़ाई में पछाड़ना या मार डालना; रखना या देना।

मुहा. पिंडा पारना = पिंडदान करना।

किसी के अंतर्गत करना, मिलाना; शरीर पर धारण करना, पहनना; साँचे आदि में ढालना; कोई काम स्वयं करना अथवा दूसरे से करा देना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदा. भाँवरि पारि जगत जस लीन्हों–**केशव।** कोई काम करने में प्रवृत्त या समर्थ होना, कर सकना; किसी कार्य का संपादन करना, पूरा करना।

उदा. जन-प्रहलाद प्रतिज्ञा पारी–**सूर।**

पारना² *अ.* {हिं. पार + लगना} कर सकना, करने में समर्थ होना; *स.* पालना।

पारब्रह्म *पुं.* = परब्रह्म।

पारमार्थिक *वि.* {सं.} परमार्थ-संबंधी, जिससे परमार्थ सिद्ध हो।

पारलौकिक *वि.* {सं.} परलोक-संबंधी; परलोक में शुभफल देनेवाला।

पारवत *पुं.* {सं.} पारावत, कबूतर।

पारवश्य *पुं.* {सं.} परतंत्रता, परवशता।

पारशव *पुं.* {सं.} पराई स्त्री से उत्पन्न पुरुष; एक वर्णसंकर जाति; लोहा; एक प्राचीन देश जहाँ मोती निकलते थे।

पारषद *पुं.* पार्षद।

पारस¹ *पुं.* {सं. स्पर्श} एक कल्पित पत्थर, स्पर्शमणि (कहते हैं कि यदि लोहा उससे छू जाए तो सोना हो जाता है); बहुत लाभदायक और उपयोगी वस्तु।

पारस² *पुं.* {हिं. परसना} खाने के लिए परोसा हुआ भोजन।

पारस³ *क्रि. वि.* {सं. पार्श्व} पास, निकट।

पारस⁴ *पुं.* {सं. पारस्य} अफगानिस्तान के पश्चिम का एक प्राचीन देश, फारस।

पारसनाथ *पुं.* पार्श्वनाथ।

पारसल *पुं.* {*अ.* पार्सल} किसी चीज की पोटली या गठरी (विशेषत: रेल, डाक आदि से कहीं भेजने के लिए)।

पारसव *पुं.* पारशव।

पारसी *वि.* {हिं. पारस} पारस देश का, पारस देश-संबंधी; *पुं.* पारस देश का निवासी; बम्बई और गुजरात में हजारों वर्षों से बसे हुए वे फारस के निवासी जिनके पूर्वज मुसलमानों के भय से यहाँ चले आए थे।

पारसीक *पुं.* {सं.} पारस देश; देश का निवासी; इस देश का घोड़ा।

पारस्परिक *वि.* {सं.} {*भाव.* पारस्परिकता} परस्पर होनेवाला, एक दूसरे का, आपस का; (क्रिया या कर्तव्य) जिसका पालन दोनों ओर से बराबर होता हो, जिसमें एक ओर से कोई बात होने पर दूसरी ओर से भी वैसी ही बात हो (रेसीप्रोकल)।

पारा¹ *पुं.* {सं. पारद} एक प्रसिद्ध, सफेद, बहुत वजनी और चमकीली धातु, जो साधारणत: द्रव रूप में रहती है (मर्करी)।

मुहा. *पारा पिलाना* = कोई वस्तु इतनी भारी करना कि मानो उसमें पारा भरा हो।

पारा² *पुं.* {सं. पारि} मिट्टी का बड़ा कसोरा।

पारा³ *पुं.* {सं. पार:} टुकड़ा।

पारायण *पुं.* {सं.} पूरा करने का काम, समाप्ति; नियत या नियमित समय पर होनेवाला किसी धर्मग्रंथ का आदि से अन्त तक पाठ।

पारावत *पुं.* {सं.} परेवा, पंडुक; कबूतर, कपोत; पहाड़।

पारावती *स्त्री.* {सं.} ग्वालों का गीत, लवली का फल।

पारावार *पुं.* {सं.} आर-पार, दोनो तट; सीमा, हद; समुद्र।

पारि *स्त्री.* {हिं. पार} हद, सीमा; ओर, तरफ; जलाशय का तट, किनारा।

पारिख *स्त्री.* परख; *पुं.* पारखी।

पारिजात *पुं.* {सं.} समुद्र-मंथन के समय निकला हुआ एक कल्पित वृक्ष, जो इंद्र नंदनकानन में लगा हुआ माना जाता है; परजाता, हरसिंगार।

पारिणामिक *वि.* {सं.} किसी के उपरांत और उसके परिणाम-स्वरूप होनेवाला (कांसीकेंशल)।

पारित *वि.* {सं.} जिसका पारण हो चुका हो; जो परीक्षा आदि में उत्तीर्ण या पार हो चुका हो।

पारितोषिक *पुं.* {सं.} किसी को या उसके किसी काम से परितुष्ट या प्रसन्न होकर दिया जानेवाला धन या पदार्थ, इनाम (प्राइज); कोई बहुत कठिन या अच्छा काम करने पर किसी को दिया जानेवाला धन, इनाम (रिवार्ड)।

पारिपार्श्विक *पुं.* {सं.} सेवक; पारिषद; नाटक में वह नट जो स्थापक का अनुचर होता है।

पारिभद्र *पुं.* {सं.} फरहद का पेड़, सनाई का वृक्ष, देवदास।

पारिभाव्य *वि.* {सं.} जमानत आदि के रूप में या कोई शर्त पूरी कराने के लिए लिया हुआ, जैसे पारिभाव्य धन (कॉशन मनी)।

पारिभाषिक *वि.* {सं.} परिभाषा से संबंध रखनेवाला; (शब्द) जिसका प्रयोग किसी विशेष अर्थ में होता हो (टैकनिकल)।

पारिभाषिकी *स्त्री.* {सं.} विधान आदि का वह पूरक अंग या अंश जिसमें उनके विशिष्ट शब्दों की परिभाषाएँ रहती हैं (टरमिनालोजी)।

पारिवारिक *वि.* {सं.} परिवार-संबंधी।

पारिवारिकता *स्त्री.* {सं.} परिवार बनाकर रहने की भावना या स्थिति; परिवारजन्य एकता।

पारिश्रमिक *पुं.* {सं.} वह धन जो किसी को कुछ परिश्रम करने पर उसके बदले या पारितोषिक आदि के रूप में दिया जात है (रिम्यूनरेशन)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारिषद पुं. {सं.} परिषद् में बैठनेवाला, सभासद, सभ्य; अनुयायी वर्ग, गण।

पारिस-पीपल पुं. {हिं.} भिंडी-जाति का पौधा।

पारिहार्य पुं. {सं.} वलय, हाथ का कड़ा।

पारी *स्त्री.* {सं. बार, बारी} किसी बात या कार्य के लिए वह अवसर, जो अंतर देकर क्रम से प्राप्त हो, बारी।

पारुष्य पुं. {सं.} परुष का भाव; वचन की कठोरता, बात का कड़वापन।

पार्क पुं. {अ.} उद्यान, बाग।

पार्टी *स्त्री.* {अ.} कुछ लोगों का दल; वह समारोह जिसमें लागों को बुलाकर जलपान या भोजन कराया जाता है।

पार्टीबाज पुं. {अ. फा. बाज़} नई-नई पार्टियाँ बनाने में सिद्धहस्त।

पार्टीबाजी *स्त्री.* नित नई-नई पार्टियाँ बनाने की आदत, क्रिया या भाव।

पार्धट पुं. {सं.} भस्म, राख।

पार्थ पुं. {सं.} पृथ्वीपति; (पृथा का पुत्र) अर्जुन; युधिष्ठिर; भीम; अर्जुन वृक्ष।

पार्थक्य पुं. {सं.} पृथक होने का भाव, अलगाव, भेद; वियोग।

पार्थसारथि पुं. {सं.} श्रीकृष्ण।

पार्थिव *वि.* {सं.} पृथ्वी-संबंधी; पृथ्वी से उत्पन्न; पृथ्वी से उत्पन्न वस्तुओं का बना हुआ; पुं. मिट्टी का शिवलिंग, जिसके पूजन का विशेष माहात्म्य कहा गया है।

पार्थिवी *स्त्री.* {सं.} सीता, उमा, पार्वती।

पार्लमेंट *स्त्री.* संसद।

पार्वण पुं. {सं.} एक प्रकार का श्राद्ध जो किसी पर्व के समय किया जाता है।

पार्वती *स्त्री.* {सं.} हिमालय पर्वत की कन्या और शिव की पत्नी, गौरी, भवानी, उमा, गिरिजा।

पार्वतीय *वि.* {सं.} पहाड़ का, पहाड़ी।

पार्श्व पुं. {सं.} {*वि.* पार्श्विक} किसी वस्तु या शरीर का दाहिना या बायाँ भाग, बगल; अगल-बगल की जगह, पास का स्थान।

पार्षद पुं. {सं.} पास रहनेवाला; सेवक, परिषद; मुसाहब।

पार्सल पुं. पारसल।

पार्णवी *स्त्री.* {सं.} द्रौपदी।

पाल¹ *वि.* {सं.} पालनकर्ता, पालक; कार्य, विभाग आदि का प्रधान, संचालक या अधिकारी (यौ. के अन्त में, जैसे कोटपाल, राज्यपाल आदि)।

पाल² *स्त्री.* {हिं. पालना} कृत्रिम रूप से गरमी पहुँचाकर फलों को पकाने के लिए पत्तों आदि से ढककर रखने की विधि।

पाल³ पुं. {सं. पट या पाट} वह बहुत पड़ा कपड़ा जो नाव के मस्तूल में इसलिए बाँधा जाता है कि उसपर पड़नेवाले हवा के दबाव से नाव तेजी से चले; तम्बू, शामियाना; गाड़ी या पालकी को ऊपर से ढकने का ओहार।

पाल⁴ *स्त्री.* {सं. पालि} पानी रोकनेवाला बाँध या मेड़; ऊँचा तट या किनारा।

पालक¹ *वि.* {सं.} {*स्त्री.* पालिका} पालन करनेवाला।

पालक² पुं. {सं. हिं. पालना} पाला हुआ लड़का, दत्तक पुत्र।

पालक³ पुं. {सं. पालंक} एक प्रकार का साग।

पालकी *स्त्री.* {सं. पल्यंक} बड़े संदूक की तरह की एक प्रकार की सवारी जिसे कहार कंधे पर लेकर चलते हैं, मियाना, खड़खड़िया।

पालकी गाड़ी *स्त्री.* {हिं. पालकी + गाड़ी} पालकी की आकार की छायादार घोड़ा-गाड़ी।

पालघ्न पुं. {सं.} छत्राक, खुमी।

पालट पुं. {हिं. पालना} दत्तक पुत्र।

पालतु *वि.* {हिं. पालना} पाला या पोसा हुआ (जानवर)।

पालथी *स्त्री.* पलथी।

पालन पुं. {सं.} {*वि.* पालनीय, पालित, पाल्य} भोजन, वस्त्र आदि देकर की जानेवाली जीवनरक्षा, भरण-पोषण, परवरिश (मेंटेंस); अनुकूल आचरण द्वारा किसी निश्चय निर्देश, वचन, कर्तव्य आदि के अनुसार काम करना (डिस्चार्ज, कंपलायंस); जीवों, जन्तुओं आदि को उखकर उनका वंश, सामर्थ्य या उनसे होनेवाली उपज आदि बढ़ाने का काम, जैसे तरुपालन, अश्वपालन (कल्चर)।

पालनकर्ता पुं. {सं.} पालन करनेवाला।

पालना¹ *स.* {सं. पालन} भोजन, वस्त्र आदि देकर जीवित रखना, भरण-पोषण करना, परवरिश करना; पशु, पक्षी आदि को मनोविनोद के लिए अपने पास रखकर खिलाना-पिलाना; बात, आज्ञा आदि भंग न करना, न टालना।

पालना² पुं. {सं. पल्यंक} छोटे बच्चों के लिए एक प्रकार का झूला या हिंडोला, गहवारा।

पालनीय *वि.* {सं.} पालने करने के योग्य, पाल्य।

पालल पुं. {सं.} तिलपपड़ी।

पालव पुं. पल्लव, कोमल पत्ता।

पाला¹ पुं. {सं. प्रालेय} हवा में मिले हुए भाप के अत्यंत सूक्ष्म अणु जो ठंडक के कारण पृथ्वी पर सफेद तह के रूप में जम जाते हैं, हिम।

मुहा. पाला मार जाना = पाला गिरने से पौधे या फसल नष्ट हो जाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाला³ पुं. {हिं. पल्ला} व्यवहार करने का संयोग, सम्पर्क, वास्ता, साबिका।

मुहा. (किसी से) पाला पड़ना = व्यवहार करने का संयोग होना, काम पड़ना; *(किसी से) पाले पड़ना* = वश में पड़ना या होना।

पाला⁴ पुं. {सं. पट्ट, हिं. पाड़ा} प्रधान स्थान; सीमा निर्धारित करनेवाली मेड़; कुछ खेलों में प्रत्येक पक्ष या दल के लिए नियत स्थान, जो ठीक आमने-सामने होते हैं; अनाज भरने की मिट्टी का एक बड़ा पात्र; अखाड़ा।

पालागन, पालागी *स्त्री.* {हिं. पाँव + लगना} प्रणाम, दंडवत्, नमस्कार।

पालाश *वि.* {सं.} धीत, हरे रंग।

पालाशी *स्त्री.* {सं.} खिरनी का पेड़।

पालित्य पुं. {सं.} बालों की सफेदी।

पालिनी *वि. स्त्री* {सं.} पालन करनेवाली।

पालिश *स्त्री.* {अ.} चिकनाई और चमक, ओप; वह मसाला या क्रिया जिससे किसी चीज पर खूब चमक आ जाती है।

पाली¹ *वि.* {सं. पालिन्} {*स्त्री.* पालिनी} पालन या रक्षा करनेवाला।

पाली² *स्त्री.* {सं. पालि} पंक्ति, श्रेणी, कतार; ऊपरी तल या भाग, पार्श्व, जैसे कपोल पाली = गाल का ऊपरी भाग, तल; एक प्राचीन भाषा जिसमें बौद्धों के धर्मग्रंथ लिखे हुए हैं; लोहे का वह मोटा नल, जिसमें आतिशबाज गोला रखकर छोड़ते हैं, तोप।

पाली³ *स्त्री.* {हिं. पारी} पारी, बारी; प्रतियोगिता के खेलों में किसी खिलाड़ी या खिलाड़ियों के किसी दल के खेलने की पारी, बारी; कल कारखाने आदि में कुछ निश्चित समय तक एक श्रमिक दल का काम करना जिसके बाद उतने समय तक दूसरा श्रमिक दल काम करता है।

पालू *वि.* पालतू।

पालो (लौ) पुं. = पल्लव, खेत के दूर की भूमि की सिंचाई कुएँ द्वारा।

पालीषोश पुं. {सं.} कान का रोग।

पाल्य *वि.* {सं.} पालने के योग्य।

पावँ पुं. पाँव।

पावँर *वि.* {सं. पामर} तुच्छ, क्षुद्र; नीच, दुष्ट; पुं. पाँवड़ा; *स्त्री.* पाँवड़ी।

पाव पुं. {सं. पाद} चौथाई भाग या अंश; एक सेर का चौथाई भाग, जो चार छटाँक का होता था; इतनी तौल का बटखरा; *स्त्री.* पो (पासे का दाँव)।

पावक पुं. {सं.} अग्नि, आग; तेज, कांति; सदाचार; सूर्य; *वि.* शुद्ध या पवित्र करनेवाला।

पावका *स्त्री.* {सं.} सरस्वती।

पावकात्मज पुं. {सं.} कार्तिकेय।

पावती *स्त्री.* {हिं. पावना} रुपए या और कोई चीज पाने का सूचक पत्र, रसीद।

पावदान पुं. {हिं. पाँव + फा. दान (प्रत्य.)} इक्के, गाड़ी आदि में पैर रखने के लिए बना हुआ स्थान; तारों, रेशों आदि का बना वह खंड, जिस पर पैर पोछे जाते हैं, पाँवड़ा।

पावन *वि.* {सं.} {*स्त्री.* पावनी, *भाव.* पावनता} पवित्र करनेवाला; पवित्र, शुद्ध; पुं. अग्नि; प्रायश्चित; जल; गोबर; रुद्राक्ष।

पावनता *स्त्री.* {सं.} 'पावन' होने की दशा या भाव।

पावनताई *स्त्री.* = पावनता।

पावना पुं. {हिं. पाना} वह रुपया जो दूसरे से पाना हो, प्राप्य धन, लहना; *स.* पाना।

पावनि पुं. {सं.} पवनसुत, हनुमान।

पावनी *स्त्री.* {सं.} तुलसी, गाय, गंगा; *वि. स्त्री.* पवित्र करनेवाली पवित्र शुद्ध।

पावमुहर *स्त्री.* {सं.} शाहजहाँ कालीन सोने की मुहर की जो चौथाई होती थी।

पावरोटी *स्त्री.* {पुर्त. पाउ + हिं. रोटी} एक प्रकार की मोटी, बड़ी और फूली हुई खमीरी रोटी।

पावस पुं. {सं. प्रावृष} वर्षाऋतु।

पावा पुं. पाया, गोरखपुर का एक गाँव।

पावित्र पुं. {सं.} एक प्रकार का छंद।

पाश पुं. {सं.} रस्सी, तार आदि का फंदा जिसके बीच में पड़ने से जीव बँध जाता है, और बँधन कसने से प्रायः मर भी सकता है, फंदा; किसी प्रकार का बंधन।

पाशन पुं. {सं.} बंधन।

पाशव पुं. {सं.} {*भाव.* पाशवता} पशु-संबंधी; पशुओं का-सा।

पाशविक *वि.* {सं.} {*भाव.* पाशविकता} पशुओं-जैसा; निर्दय, निर्मम।

पाशा पुं. {तु., मि. फा. पादशाह} तुर्की सरदारों की उपाधि।

पाशुपत *वि.* {सं.} पशुपति-संबंधी; पुं. पशुपति या शिव का उपासक।

पाश्चात्य *वि.* {सं.} पीछे का, पिछला; पश्चिम महादेश (यूरोप) अथवा सुदूर पश्चिम के देशों से संबंध रखनेवाला (ऑक्सिडेंटल); पश्चिमी सभ्यता, तकनीक, रुचि आदि से संबद्ध (वैस्टर्न)।

पाश्चात्यीकरण पुं. {सं. पाश्चात्य + करण} किसी देश या जाति आदि को पाश्चात्य सभ्यता के साँचे में ढालना या पाश्चात्य ढंग का बनाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाश्चात्योन्मुखी (खिन्) *वि.* {सं.} पश्चिम सभ्यता, तकनीक आदि की ओर उन्मुख।

पाषंड *पुं.* पाखंड।

पाषाण *पुं.* {सं.} {*वि.* पाषणीय} पत्थर; *वि.* {*स्त्री.* पाषाणी} पाषाण की तरह कठोर, निर्दय, हृदयहीन।

पाषाणमणि *पुं.* {सं.} पारस।

पाषाणी *वि. स्त्री.* {सं.} पत्थर की तरह कठोर हृदयवाली, अहल्या।

पासंग *पुं.* {फा.} तराजू की डंडी या तौल बराबर करने के लिए उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ कोई बोझ, पसंघा; *वि.* बहुत थोड़ा; (तुलना में) तुच्छ।

मुहा. (किसी का) पासंग भी न होना = किसी के सामने कुछ भी न होना।

पास[1] *पुं.* {सं. पार्श्व} बगल, ओर, तरफ; सामीप्य, निकटता, समीपता; अधिकार, कब्जा; *क्रि. वि.* निकट, समीप, नजदीक।

मुहा. आस-पास = अलग-बगल, समीप; लगभग, करीब, प्रायः।

मुहा. (किसी के) पास बैठना = संगत या साथ में रहना; *पास न फटकना* = निकट न जाना। अधिकार में, कब्जे में; किसी के प्रति, किसी से; *पुं.* पाश; पासा।

पास[2] *वि.* {अ.} परीक्षा आदि में सफल, उत्तीर्ण, पारित।

पास[3] *पुं.* {अ.} वह कागज जिसके द्वारा किसी को बेरोक-टोक कहीं आने-जाने का अधिकार या अनुमति हो, पारणपत्र।

पासमान *पुं.* {हिं. पास + मान (प्रत्य.)} पास रहनेवाला, पार्श्ववर्ती; सेवक, दास।

पासवर्ती *वि.* पार्श्ववर्ती।

पासा *पुं.* {सं. पाशक, प्रा. पासा} काठ या हड्डी के वे छह पहलों वाले लम्बे टुकड़े, जिनके पहलू पर बिंदियाँ बनी होती हैं और जिनसे चौसर और कई प्रकार के खेल खेलते हैं।

मुहा. (किसी का) पासा पड़ना = भाग्य अनुकूल और प्रबल होना; *पासा पलटना* = अच्छे से बुरा भाग्य होना; युक्ति या उपाय का उलटा फल होना; जो कुछ हो रहा है, उसे उलटा करना (सकर्मक में)।

पासों से खेला जानेवाला खेल या जुआ; मोटी बत्ती के आकार की गुल्ली, जैसे चाँदी या सोने का पासा।

पासासारि *स्त्री.* चौपड़।

पासि (क) *पुं.* {सं. पासा} फंदा; बंधन।

पासी[1] *पुं.* {सं. पाशिन्} जाल या फंदा डालकर चिड़ियाँ पकड़नेवाला; एक जाति, जो ताड़ के पेड़ों से ताड़ी उतारने का काम करती है।

पासी[2] *स्त्री.* {सं. पासष हिं. पास + ई (प्रत्य.)} फंदा, पाश; घोड़े के पैर बाँधने की रस्सी।

पासुरी *स्त्री.* पसली।

पाहास *पुं.* {सं.} पहरा देनेवाला, चौकीदार।

पाहाण *पुं.* {सं. पाषाण} पत्थर।

पाहिं *क्रि. वि.* {सं. पार्श्व} पास, निकट, समीप; किसी के प्रति, किसी से।

पाहि पद एक संस्कृत पद जिसका अर्थ है–'रक्षा करो' या 'बचाओ'।

पाही *स्त्री.* {सं. पाथेय} गाँव से संबद्ध, परंतु दूर की भूमि या खेत (जिस तक पहुँचने के लिए कुछ दूर तक चलना पड़े)।

पाहुना *पुं.* {सं. प्राघूर्ण} {*स्त्री.* पाहुनी} अतिथि, मेहमान; दामाद।

पाहुनी *स्त्री.* {हिं. पाहुना} रखेली।

पिंग *वि.* {सं.} पीलापन लिए हुए भूरा, तामड़ा।

पिंगजट *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।

पिंगल *वि.* {सं.} पीला, पीत; भूरापन लिए हुए लाल, तामड़ा; *पुं.* छंद शास्त्र के पहले आचार्य एक प्राचीन मुनि; छंदशास्त्र; बंदर; अग्नि; उल्लू पक्षी।

पिंगला *स्त्री.* {सं.} हठयोग और तंत्र में शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक; लक्ष्मी।

पिंजक *पुं.* {सं.} धुनिया।

पिंजड़ा *पुं.* पिंजरा।

पिंजना *पुं.* {सं. पिंजन} रुई धुनना।

पिंजर *पुं.* {सं.} शरीर के अंदर, हड्डियों की ठठरी, पंजर; पिंजरा; सोना, स्वर्ण; भूरापन लिए लाल रंग का घोड़ा।

पिंजरा *पुं.* {सं. पंजर} लोहे, बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ वह झाबा जिसमें पक्षी बंद करके रखे जाते हैं।

पिंजरापोल *पुं.* = गोशाला।

पिंजियारा *पुं.* {हिं.} रुई ओटनेवाला।

पिंड *पुं.* {सं.} गोल पदार्थ, ठोस गोला; पके हुए अन्न या उसके चूर्ण आदि का गोल लोंदा, जो श्राद्ध में पितरों के नाम पर दिया जाता है; शरीर, देह।

मुहा. पिंड छोड़ना = साथ रहकर या पीछे लगकर तंग करने से विरत होना; *(किसी के) पिंड पड़ना* = किसी काम या बात के लिए बहुत अधिक आग्रह करना, किसी के पीछे लग या पड़ जाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिंडखजूर *स्त्री.* {सं. पिंडखर्जूर} एक प्रकार की खजूर जिसके फल मीठे होते हैं।

पिंडज *पुं.* {सं.} गर्भ से शरीर या पिंड के रूप में और सजीव निकलनेवाले जन्तु जैसे आदमी, कुत्ता, घोड़ा आदि।

पिंडद *पुं.* {सं.} पिंडदान करनेवाला।

पिंडदान *पुं.* {सं.} श्राद्ध मं पितरों को पिंड देना।

पिंडर *स्त्री.* पिंडली।

पिंडरोगी *पुं.* {सं. पिंड = शरीर + रोगी} वह जिसे सदा या प्रायः कोई न कोई रोग बना रहता हो और जो कभी पूर्ण रूप से स्वस्थ न रह सकता हो।

पिंडली *स्त्री.* {सं. पिंड} घुटने के नीचे का पिछला मांसल भाग।

पिंडा *पुं.* {सं. पिंड} पिंड, *स्त्री.* हलदी।

मुहा. *पिंडा-पानी देना* = श्राद्ध और तर्पण करना; *पिंडा पारना* = पिंड-दान करना।

पिंडाश *पुं.* {सं.} भिक्षुक, भिखारी।

पिंडारी *पुं.* {देश.} दक्षिण भारत की एक मुसलमान जाति जो लूट-मार का पेशा करती थी।

पिंडिका *स्त्री.* {सं.} छोटा पिंड; पिंडली; शिव की लिंगमूर्ति।

पिंडिया *स्त्री.* {सं. पिंडिका} गुड़ या कुछ पकवानों की छोटी लम्बोतरी पिंडी; पिंडी।

पिंडी *स्त्री.* {सं. पिंड} छोटा डला या पिंड; पिंड खजूर; सूत, रस्सी आदि का गोल लच्छा; पिंडिका।

पिंडुरी *स्त्री.* पिंडली।

पिअ *वि., पुं.* प्रिय।

पिअराई *स्त्री.* {हिं. पीला} पीलापन।

पिउ *पुं.* {सं. प्रिय} पति।

पिउरी *स्त्री.* पूनी।

पिऊख *पुं.* = पीयूष।

पिक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* पिकी} कोयल; पपीहा।

पिघलना *अ.* {सं. प्र + गलन} {सं. पिघलना} घन पदार्थ का गरमी से गलकर तरल होना, द्रवीभूत होना; चित्त में दया उत्पन्न होना।

पिघलाना *क्रि. स.* {हिं.} दयाद्र करना, किसी के हित में दया उत्पन्न होना।

पिचकना *अ.* {सं. पिच्च = दबना} {सं. पिचकाना} फूले या उभरे हुए तल का दबना।

पिचकारी *स्त्री.* {हिं. पिचकना} नली के आकार का एक उपकरण जिससे तरल पदार्थ अंदर खींचे और बाहर फेंके जाते हैं; चिकित्सा-क्षेत्र में उक्त प्रकार का एक छोटा उपकरण, जिससे शरीर की नसों या रक्त में तरल दवाएँ पहुँचाई जाती हैं, वस्ति, सुई (सीरिंज) मुहावरों के लिए सुई; के मुहा.।

पिचकी *स्त्री.* पिचकारी।

पिचपिचा *वि.* {अनु.} लसदार, चिपचिपा; दबा हुआ और गुलगुला।

पिच्ची *वि.* पच्ची।

पिच्छ *पुं.* {सं.} **पक्षी** की पूँछ, लाँगुल।

पिच्छल *वि.* पिच्छिल; पिछला।

पिच्छिल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* पिच्छिला} ऐसा गीला और चिकना जिसपर पैर पड़ने से फिसले; चूड़ायुक्त (पक्षी); खट्टा, फूला हुआ और कफकारी (पदार्थ)।

पिच्छला *स्त्री.* {सं.} शीशम, सेमर, अगर, अरबी।

पिछड़ना *अ.* {हिं. पीछे} साथ से छूटकर पीछे रह जाना; प्रतियोगिता आदि में पीछे रह जाना।

पिछलगा *पुं.* {हिं. पीछे + लगना} वह जो किसी के पीछे लगा फिरे, पिछलग्गू; अनुगामी; सेवक; आश्रित व्यक्ति।

पिछलग्गू *पुं.* {हिं. पीछे + लगना} वह जो किसी का अंध अनुयायी बनकर उसके पीछे चलता हो, बिना समझे-बूझे अनुकरण करनेवाला।

पिछलत्ती *स्त्री.* {हिं. पीछा + लात} घोड़ों आदि का पिछले पैरों से मारना।

पिछला *वि.* {हिं. पीछा} {*स्त्री.* पिछली} जो पीछे की ओर हो, 'अगला' का उलटा; बाद का, परवर्ती, 'पहला' का उलटा।

पद *पिछला पहर* = दिन या रात का अंतिम पहर; *पिछली रात* = आधी रात के बाद का समय।

बीता हुआ, गत; आखिरी, अंतिम।

पिछवाई *स्त्री.* {हिं. पीछा} आसन के पीछे की ओर लटकाया जानेवाला परदा।

पिछवाड़ा *पुं.* {हिं. पीछा} घर आदि के पीछे के भाग; घर के पीछे की भूमि।

पिछाड़ी *स्त्री.* {हिं. पीछा} पीछे का भाग; वह रस्सी जिसमें घोड़े के पिछले पैर बाँधे जाते हैं।

पिछानना *स.* पहचानना।

पिछेलना *स.* {हिं. पीछे} धक्का देकर पीछे हटाना; पीछे छोड़ना।

पिछौहिं *क्रि. वि.* {सं. पीछा} पीछे की ओर; पीछे की ओर से।

पिछौरा *पुं.* {सं. पक्षपट} {*स्त्री.* पिछौरी} ओढ़ने का दुपट्टा या चादर।

पिटक *पुं.* {सं.} पिटारा; ग्रंथ का कोई भाग, खंड।

पिटका *स्त्री.* {सं.} पिटारी, फुंसी।

पिटना *पुं.* {हिं. पीटना} चूने आदि की छत पीटने का उपकरण, थापी; *अ.* {हिं. 'पीटना' का *अ.* रूप} पीटा जाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिटरी *स्त्री.* = पिटारी।

पिटाई *स्त्री.* {हिं. पीटना} पीटने या पीटे जाने का काम या भाव; पीटने की मजदूरी।

पिटाना *सं.* {हिं. 'पीटना' का प्रे.} **पीटने का** काम दूसरे से कराना, पिटवाना; किसी को इतना तंग करना कि वह झुँझला जाए; *अ.* पिटना।

पिटारा *पुं.* {सं. पिटक} {*स्त्री.* अल्पा. पिटारी} बाँस आदि की पट्टियों से बना हुआ ढकनेदार पात्र।

पिट्टक *पुं.* {सं.} दाँत का मैल।

पिट्टस *स्त्री.* {हिं. पीटना} शोक के समय जोर-जोर से छाती पीटना।

पिट्ठू *पुं.* {हिं. पीठ + ऊ (प्रत्य.)} गुप्त रूप से या पीछे से छिपकर सहायता या हिमायत करनेवाला; कुछ विशिष्ट खेलों में किसी खिलाड़ी का वह कल्पित साथी, जिसके बदले उसे फिर से खेलने का अवसर या दाँव मिलता है; पिछलगा।

पिठ *पुं.* {सं.} पीड़ा; दुःख।

पिठाली *स्त्री.* {हिं.} पीठ पर होनेवाली छोटी बहन।

पिठौरी *स्त्री.* {हिं. पीठी + बरी} पीठी की बनी हुई बरी या पकौड़ी।

पितर *पुं.* {सं. पितृ} मरे हुए पूर्वज।

पिता *पुं.* {सं. पितृ} किसी के संबंध के विचार से वह नर या पुरुष जिसे अपने वीर्य से उसे जन्म दिया हो, जनक, बाप।

पितामह *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* पितामही} पिता का पिता, दाता; भीष्म; ब्रह्मा।

पितु *पुं.* {सं.} पिता; अनाज, अन्न।

पितृ *पुं.* {सं.} {*भाव.* पितृत्व} किसी व्यक्ति के मृत बाप, दाता, परदादा आदि पूर्वज, पूर्वपुरुष (ऐन्सेस्टर); वह मृत पूर्वपुरुष जिसका प्रेतत्व छूट चुका हो; वह जो घर का बड़ा और मालिक हो तथा घर-गृहस्थी, संपत्ति आदि का सारा प्रबंध करता हो, पिता के स्थान पर माना जानेवाला परिवार का अध्यक्ष (पैट्रिआॅक); पिता।

पितृऋण *पुं.* {सं.} धर्म शास्त्रानुसार मनुष्य के तीन ऋणों में से एक; (पुत्र उत्पन्न करने से मनुष्य का एक ऋण से उद्धार होता है)।

पितृक *वि.* {सं. पितृ + क (प्रत्य.)} पिता-संबंधी, पिता का; (व्यवहार, उत्तराधिकार आदि की प्रथा) जिसमें गृहपति या पिता का पक्ष प्रधान माना जाता हो, गृहस्वामिनी या माता के पक्ष का कोई विचार न होता हो, 'मातृक' का **विपर्यय** (पेट्रिआर्कल)।

पितृगृह *पुं.* {सं.} स्त्रियों के लिए उनके माता-पिता का घर, पीहर, मायका।

पितृतर्पण *पुं.* {सं.} पितरों के उद्देश्य से किया जानेवाला तर्पण।

पितृत्व *पुं.* {सं.} पिता या पितृ होने का भाव।

पितृदेश *पुं.* {सं.} पूर्वजों का देश।

पितृपक्ष *पुं.* {सं.} आश्विन की कृष्ण प्रतिपदा से अमावस्या तक का पक्ष, जिसमें पितरों का श्राद्ध और ब्राह्मण-भोजन होता है; पिता, पितामह आदि से संबंध रखनेवाला पक्ष।

पितृ-प्रणाली *स्त्री* {सं.} वह पारिवारिक प्रणाली जिसमें पिता या घर का बड़ा (गृहस्वामी) ही घर के सब प्रबंध करता है और उसी के नाम से परिवार या वंश तथा उत्तराधिकार चलता है, 'मातृ-प्रणाली' का विपर्याय (पेट्रिआर्की)।

पितृभूमि *स्त्री.* {सं.} पितरों के रहने का स्थान; पूर्वजों का देश; पिता की जन्मभूमि।

पितृयज्ञ *पुं.* {सं.} पंच महायज्ञों में से एक जिसमें पितृतर्पण आदि कृत्य किए जाते हैं।

पितृलोक *पुं.* {सं.} वह लोक जिसमें पितर रहते हैं।

पित-विसर्जन *पुं.* {सं.} **पितृपक्ष** के अंतिम दिन अर्थात् आश्विन कृष्ण अमावस्या को समस्त पितरों का विसर्जन करने के लिए होनेवाला धार्मिक कृत्य।

पितृव्य *पुं.* {सं.} पिता का भाई, चाचा।

पितृहत्या *स्त्री.* {सं.} पिता की हत्या करना, बाप को मार डालना (पेट्रिसाइड)।

पित्त *पुं.* {सं.} शरीर के अंदर का एक तरल पदार्थ, जो यकृत में बनता है और पाचन में सहायक होता है।

पित्तघ्न *पुं.* {सं.} पित्तनाशक।

पित्ता *पुं.* {सं. पित्त} पित्ताशय; पित्त।

मुहा. *पित्ता मरना* = प्रकृति या मन में क्रोध, आवेश आदि न रह जाना; *पित्ता मारना* = दूषित मनोविकार उभड़ने न देना; धैर्यपूर्वक कठिन परिश्रम का काम करना; हिम्मत, साहस।

हिम्मत, साहस।

पित्ताविसार *पुं.* {सं.} पित्त के प्रकोप से होनेवाला अतिसार।

पित्ताशय *पुं.* {सं.} यकृत में की वह थैली जिसमें पित्त रहता है।

पित्ती *स्त्री.* {सं. पित्त + हिं. ई (प्रत्य.)} गर्मी के दिनों में पसीने के कारण होनेवाला एक रोग जिसमें शरीर में छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं, अम्हौरी, घमौरी; वे दाने जो गर्मी के दिनों में निकलते हैं, गर्मी दाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पित्तोदर पुं. {सं.} पित्त के बिगड़ने से होनेवाला उदर-रोग।

पित्तेमार वि. {हिं. पित्ता + मारना} {भाव. पित्तेमारी} (काम) जिसमें बहुत ही धैर्य या अध्यवसाय से बहुत समय तक लगे रहना पड़े।

पित्र्य वि. पैतृक।

पित्र्या स्त्री. {सं.} अमावस्या, पूर्णमासी, मघा नक्षत्र।

पिथौरा पुं. दिल्ली के महाराज पृथ्वीराज चौहान के नाम का एक रूप।

पिदड़ी स्त्री. पिद्दी।

पिद्दा पुं. पिद्दी; गुलेल के बीच की गद्दी।

पिद्दी स्त्री. {अनु.} एक प्रकार की छोटी चिड़िया; वह जो बहुत ही तुच्छ और नगण्य हो।

पिधान पुं. {सं.} आवरण, ढक्कन; तलवार की म्यान; किवाड़ा।

पिनक स्त्री. {हिं. पिनकना} किसी नशे विशेषत: अफीम के नशे में सिर का रह-रहकर आगे झुकना।

पिनकना अ. {अनु.} अफ़ीम के नशे में ऊँघना, पिनक लेना।

पिनपिनाना अ. {पिनपिन से अनु.} पिनपिन स्वर निकालते हुए रोना।

पिनाक पुं. {सं.} शिव का धनुष जो रामचंद्र जी ने तोड़ा था, अजगव; धनुष; त्रिशूल।

पिनाकी पुं. {सं.} पिनाकधारी शिव, प्राचीन बाजा।

पिन्नी स्त्री. {सं. पिंडी} चावल या गेहूँ के आटे का एक प्रकार का लड्डू।

पिन्यास पुं. {सं.} हिंगु, हींग।

पिपर पुं. = पीपल का वृक्ष।

पिपराह पुं. {हिं. पीपल + आह (प्रत्य.)} पीपल के वृक्षों का जंगल।

पिपरिहा पुं. {पिपरहा (स्थान)} राजपूतों की एक शाखा का अल्ल।

पिपासा स्त्री. {सं.} {वि. पिपासित} जल पीने की इच्छा, तृषा, प्यास।

पिपीलिका स्त्री. {सं.} चयूँटी।

पिय पुं. {सं. प्रिय} पति, स्वामी।

पियरा वि. = पीला।

पियराई स्त्री. = पीलापन।

पियराना अ. = पीला पड़ना।

पियरी स्त्री. {हिं. पियरा} पीला रंगी हुई धोती; पीलापन।

पियाज पुं. = प्याज।

पियाजी वि. = प्याजी।

पियाना स. = पिलाना।

पियाबाँसा पुं. {हिं.} कटसरैया।

पियार पुं. {सं. प्रियाल} एक वृक्ष जिसके बीजों से चिरौंजी निकलती है; पुं. = प्यार।

पियारा वि. {स्त्री. पियारी} प्यारा, प्रिय।

पियाल पुं. {?} नदी में का गहरा और विकट स्थान, दहा।

पियाला पुं. = प्याला।

पियासी पुं. {?} एक प्रकार की मछली।

पियूख, पियूष पुं. = पीयूष (अमृत)।

पिरथी स्त्री. = पृथ्वी।

पिराई स्त्री. = पीलापन।

पिराक पुं. {सं. पिष्टक} गुझिया नामक पकवान।

पिराना अ. {हिं. पीर = पीड़ा} (किसी अंग का) दर्द करना, दुखना।

पिरीत स्त्री. = प्रीत।

पिरीतना अ. {सं. प्रीति} प्रीति या प्रेम करना; (किसी पर) प्रसन्न या खुश होना।

पिरीतम पुं. प्रियतम, प्रिय।

पिरीता वि. {सं. प्रिय} प्रिय, प्यारा।

पिरोना स. {सं. प्रोत} सूत, तागे आदि में कुछ गूँथना, पोहना, जैसे माला पिरोना; सूई के छेद या नाके में तागा डालना।

पिरोहना स. पिरोना।

पिलंदा पुं. पुलिंदा।

पिलकना अ. {सं. पिच्छिल} गिरना; झूलना या लटकना।

पिलखन पुं. {हिं.} पाकर का वृक्ष।

पिलद्दा पुं. {पहलवी पलीदीह = गंदी चीज} {स्त्री. अल्पा. पिलद्दी} मल, विष्ठा, गू; बहुत बुरी तरह से कूटने-पीटने पर तैयार होनेवाली वस्तु, कचूमर।

पिलना अ. {सं. पिल = प्रेरणा} वेग से किसी ओर टूट पड़ना; दृढ़तापूर्वक प्रवृत्त होना, भिड़ जाना; रस या तेल निकालने के लिए पेरा जाना।

पिलपिला वि. {अनु.} बहुत थोड़े दबाव से दब जानेवाला (कोमल पिंड)।

पिलपिलाना स. {हिं. पिलपिला} बार-बार दबाकर पिलपिला करना जिससे रस या गूदा बाहर निकलने लगे।

पिलाई स्त्री. {हिं. पिलाना} पिलाने की क्रिया या भाव; तरल पदार्थ इस प्रकार उँड़ेलना कि वह नीचे के छेदों या संधियों में समा जाए।

पिलाना स. {हिं. पीना} पीने का काम दूसरे से कराना, पान कराना; पीने के लिए देना; अंदर भरना।

पिल्लका स्त्री. {सं.} हस्तिनी, हथिनी।

पिल्ला पुं. {तमिल} कुत्ते का बच्चा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिल्लू पुं. {सं. पीलु = कृमि} वह सफेद छोटा क्रीड़ा जो सड़े हुए फलों आदि में पड़ जाता है, ढोला।

पिव पुं. पिय।

पिवाना स. 'पिलाना'।

पिशंगी वि. {सं.} पीला।

पिशाच पुं. {सं.} {स्त्री. पिशाचिनी, पिशाची} निम्नकोटि के और वीभत्स कर्म करनेवाली एक हीन देवयोनि, भूत, प्रेत।

पिशुन {सं.} चुगलखोर।

पिष्ट वि. {सं.} पिसा या पीसा हुआ।

पिष्टपेषण पुं. {सं.} पिसे हुए को फिर से पीसना; कही हुई बात या किया हुआ काम व्यर्थ फिर-फिर कहना या करना।

पिष्टोक्ति स्त्री. {सं.} घिसी-पिटी बात।

पिसनहारी स्त्री. {हिं. पीसना + हारी (प्रत्य.)} आटा पीसनेवाली स्त्री।

पिसना अ. {हिं. पीसना} पीसा जाना, चूर्ण होना; कुचला जाना; बहुत कष्ट या हानि सहना।

पिसवाज पुं. पेशवाज; रंडियों के पहनने का घाघरा।

पिसवाना स. {हिं.} 'पीसना' का प्रे.।

पिसाई स्त्री. {हिं. पीसना} पीसने की क्रिया, भाव या मजदूरी; बहुत अधिक परिश्रम, कड़ी मेहनत।

पिसाच पुं. पिशाच।

पिसान पुं. 'आटा', महीन आटा।

पिसाना स. हिं. पिसना का प्रे.।

पिसुन पुं. पिशुन।

पिस्ता पुं. {फा. पिस्ताः} एक छोटा पेड़ जिसकी गिरी मेवों में मानी जाती है; इसके फल की गिरी।

पिस्तौल स्त्री. {अ. पिस्टल} बंदूक की तरह का एक छोटा अस्त्र, तमंचा।

पिस्सू पुं. {फा. पश्शः = मच्छर} शरीर का रक्त चूसनेवाला एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा।

पिहकना अ. {अनु.} कोयल, पपीहे आदि का चहकना या बोलना।

पिहान पुं. {हिं.} पिधान, ढपना।

पिहानी स्त्री. {पिहानी. स्थान?} एक प्रकार की तलवार।

पिहित वि. {सं.} ढका हुआ, आवृत्त; छिपा हुआ; पुं. साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी की आकृति आदि से उसका कोई गुप्त भेद जानकर कोई ऐसा कार्य करने का उल्लेख होता, जिससे सूचित हो कि वह भेद खुल गया, यह 'सूक्ष्म' अलंकार से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है।

पिहुआ पुं. {हिं.} पक्षी-विशेष।

पिहुकना अ. पिहूपिहू करना।

पिहूपिहू स्त्री. {अनु.} मोर का शब्द।

पींजना स. {सं. पिंजन} रुई धुनना।

पींजरा पुं. पिंजरा।

पींजा पुं. {हिं. पींजना} रुई धुननेवाला।

पींड पुं. {सं. पिंड} पिंड; वृक्ष का धड़, तना; खजूर।

पींडुरी स्त्री. पिंडली।

पी[1] पुं. पिंडली।

पी[2] स्त्री. {अनु.} पपीहे की बोली।

पीउ वि. {सं. प्रिय} परम प्रिय; पुं. पति।

पीक वि. {सं. पिच्च} खाए हुए पान आदि के रस की थूक।

पीकदान पुं. उगालदान।

पीकना पुं. पिहकना।

पीखग पुं. {हिं.} पपीहा।

पीच स्त्री. {सं. पिच्च} भात का माँड़।

पीचू पुं. {हिं.} करील का कँटीला पौधा।

पीछा पुं. {सं. पश्चात्} पीछे की ओर का भाग, 'आगा' का विपर्याय (रिवर्स); मनुष्य के शरीर में पीठ का भाग।

मुहा. पीछा दिखाना = पीठ दिखाकर भागना; *पीछा देना* = किसी काम में लगकर फिर पीछे हट जाना।

किसी के पीछे लगे रहने की क्रिया या भाव।

मुहा. पीछा करना = किसी काम के लिए किसी को तंग करना, गले पड़ना; किसी को पकड़ने या उसका रहस्य जानने के लिए उसके पीछे-पीछे रहना; *पीछा छुड़ाना* = पीछा करनेवाले से जान बचाना; अप्रिय या अवांछनीय संबंध का अन्त करना; *पीछा छोड़ना* = किसी व्यक्ति को तंग करने से विरत होना; हाथ में लिए काम से अलग होना; *(किसी का) पीछा लेना* = अनुयायी बनना, अनुकरण करना।

उदा. प्रभु मैं पीछों लियों तुम्हारौं—**सूर**।

कोई बात हो जाने के बाद का समय।

पीछू क्रि. वि. = पीछे।

पीछे क्रि. वि. {हिं. पीछा} पीठ की ओर, पृष्ठ भाग में या दूसरी ओर।

मुहा. (किसी के) पीछे चलना = किसी का अनुगामी बनना; अनुकरण या नकल करना; *(किसी के) पीछे छोड़ना या लगाना* = किसी का पीछा करने के लिए किसी को नियत करना; *(धन) पीछे डालना* = भविष्य के लिए बचाकर रखना; *पीछे पड़ना* = कोई काम करने पर तुल जाना; किसी काम के लिए किसी से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार-बार कहना, तंग करना; बराबर किसी की बुराई करते रहना; *पीछे लगना* = 'पीछा करना'; साथ में लगा होना; *(अपने) पीछे लगाना* = बुरी बात से संबंध स्थापित करना; *(किसी और के) पीछे लगाना* = हानिकर बात से संबंध स्थापित कराना; पीछे छोड़ना; *पीछे हटना* = वचन, कर्तव्य आदि का पालन न करना।

पीछे की ओर, कुछ दूरी पर।

मुहा. *पीछे छूटना या पड़ना* = किसी बात में किसी से घटकर होना; *(किसी को) पीछे छोड़ना* = किसी बात में किसी से आगे बढ़ जाना।

पश्चात्, उपरांत, बाद; अंत में; किसी की अनुपस्थिति या अभाव में; लिए, वास्ते, जैसे तुम्हारे पीछे मैं यह सब सहता हूँ।

पीजन पुं. {हिं.} ऊन धुनने की धुनकी।

पीजर पुं. {हिं.} पिंजड़ा।

पीटन पुं. {हिं.} पिटना।

पीटना *स.* {सं. पीड़न} हाथ से आघात लगाना, प्रहार करना, मारना।

मुहा. *छाती पीटना* = दुख या शोक से छाती पर हाथ से आघात करना।

बार-बार आघात लगाकर चिपटा या चौड़ा करना, जैसे चाँदी या सोने का पत्तर पीटना; जैसे-तैसे काम समाप्त करना या किसी से कुछ ले लेना; पुं. किसी के मरने पर, होनेवाला, शोक, मातम; कठिनता, दिक्कत।

पीठ¹ पुं. {सं.} {*स्त्री.* पीठिका} लकड़ी, पत्थर आदि का बैठने का आसन या स्थान; विद्यार्थियों के पढ़ने का स्थान; किसी वस्तु के रहने या होने की जगह, अधिष्ठान; सिंहासन; वेदी; कोई विशिष्ट पवित्र स्थान; विधानसभाओं आदि में किसी विशिष्ट दल या पक्ष के लिए बैठने का सुरक्षित स्थान, जैसे राजपीठ, विरोधपीठ (बेंच)।

पीठ² *स्त्री.* {सं. पृष्ठ} शरीर में पेट की दूसरी ओर का या पीछेवाला भाग, पृष्ठ।

मुहा. *पीठ ठोंकना* = किसी की पीठ पर हाथ रखकर उसकी प्रशंसा करना या उसे उत्साहित करना, शाबाशी देना; *पीठ दिखाना* = पीछा दिखाना; *पीठ दिखाकर जाना* = स्नेह या ममता छोड़कर दूर चले जाना; *पीठ देना* = विमुख होना, मुँह मोड़ना; भाग जाना; लेटना; *पीठ पर* = एक ही के गर्भ से किसी के जन्म लेने के बाद; *पीठ पर होना* = मदद या हिमायत पर होना; *पीठ फेरना* = प्रस्थान करना; भाग जाना; विमुख होना; अरुचि या अनिच्छा प्रकट करना; *(घोड़े या बैल आदि की) पीठ लगना* = जीन की रगड़ से पीठ पर घाव हो जाना; *पीठ लगाना* = लेटकर विश्राम करना।

पद *पीठ पर का* = जन्मक्रम विचार से अपने बड़े भाई या बड़ी बहन के बाद होनेवाला।

किसी वस्तु की बनावट का पीछेवाला भाग, पृष्ठभाग।

पीठना *स.* पीसना।

पीठ-पीछे *क्रि. वि.* किसी की अनुपस्थिति या परोक्ष में।

पीठमर्द पुं. {सं.} नायक का वह सखा, जो मीठी बातों से रुष्ट नायिका को मना सके; रुष्ट नायिका को प्रसन्न कर सकनेवाला **सहायक**।

पीठस्थविर पुं. {सं.} किसी पीठ, विशेषत: विद्यापीठ का प्रधान अधिकारी; आजकल, किसी महाविद्यालय का प्रधान प्रशासनिक अधिकारी।

पीठस्थान पुं. पीठ।

पीठा पुं. {सं. पिष्टक} एक प्रकार का पकवान।

पीठिका *स्त्री.* {सं.} आधार; आसन; छोटा पीढ़ा; परिच्छेद।

पीठि *स्त्री.* {हिं.} पीठ का हिस्सा।

पीठी *स्त्री.* {सं. पिष्टक} पानी में भिगोकर पीसी हुई दाल।

पीड़ *स्त्री.* {सं. आपीड} सिर पर बाँधा जानेवाला एक आभूषण; *स्त्री.* पीड़ा।

पीड़क पुं. {सं. पीडक} पीड़ा या कष्ट देनेवाला।

पीड़न पुं. {सं. पीडन} {*वि.* पीड़क, पीड़नीय, पीड़ित} दबाना, पेरना; दुख कष्ट देना; अत्याचार करना; अच्छी तरह पकड़ना।

पीड़नीय *वि.* {सं.} पीड़न के योग्य।

पीड़ा *स्त्री.* {सं. पीडा} वेदना, व्यथा, दर्द;कष्ट, तकलीफ; रोग, व्याधि।

पीड़ित *वि.* {सं. पीडित} जिसे पीड़ा हो; जिसे पीड़ा या कष्ट पहुँचाया गया हो, सताया हुआ; रोगी, बीमार; जोर से दबाया हुआ।

पीडुरी *स्त्री.* पिंडली।

पीढ़ा पुं. {सं. पीठक} {*स्त्री.* अल्पा. पीढ़ी} बैठने के लिए काठ का छोटा और ऊँचा आसन, पाटा।

मुहा. *(किसी को) ऊँचा पीढ़ा देना* = किसी को ऊँचे स्थान या पद पर बैठाना, सम्मानित करना।

सिंहासन।

पीढ़ी¹ *स्त्री.* {सं. पीठिका} कुल-परंपरा में किसी के बाप, दादा, परदादा अथवा बेटे, पोते, परपोते आदि के विचार से क्रमात् कोई स्थान, पुश्त; किसी विशेष समय मे होनेवाले समष्टि (जेनरेशन)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीढ़ी² *स्त्री.* {हिं. पीढ़ा} बैठने के लिए काठ आदि का बना एक प्रकार का आसन, छोटा पीढ़ा।

पीत¹ *वि.* {सं.} {*स्त्री.* पीता; *भाव.* पीतता} पीला; भूरा।

पीत² *वि.* {सं. 'पा' भूत.} पीया हुआ।

पीतकंद *पुं.* {सं.} गाजर।

पीतक *पुं.* {सं.} हरताल, अगरू, केसर, पीतल, विजयसार, मधु, पीला चंदन, सफेद जीरा, पीला लोध।

पीतकाष्ठ *पुं.* {सं.} पद्मकाष्ठ, पझाख।

पीतकेदार *पुं.* {सं.} एक प्रकार का धान।

पीतगंध *पुं.* {सं.} हरि चंदन।

पीतचोंपा *पुं.* {सं.} पलाश का फूल; टेसू।

पीतधातु *स्त्री.* गोपीचंदन।

पीतमणि *पुं.* {सं.} पुखराज।

पीतर *पुं.* = पीतल; *पुं.* = पितर।

पीतरोग *पुं.* {सं.} पीलिया, कँवल।

पीतल *पुं.* {सं. पित्तल} ताँबे और जस्ते के मेल से बनी हुई वह प्रसिद्ध पीली उपधातु, जिससे बरतन बनते हैं।

पीतांबर *पुं.* {सं.} पीला वस्त्र।

पीन *वि.* {सं.} {*भाव.* पीनता} स्थूल, मोटा।

पीनक *स्त्री.* पिनक।

पीनता *स्त्री.* {सं.} स्थूलता, मौटाई।

पीनस¹ *पुं.* {सं.} नाक का एक रोग।

पीनस² *स्त्री.* {फा. फीनस} पालकी (सवारी)।

पीना *स.* {सं. पान} तरल वस्तु मुँह में रखकर गले के नीचे उतारना, पान करना; कोई बात या मन का भाव छिपा या दबा जाना, कोई विचार या मनोविकार मन ही मन में दबा देना; शराब पीना; तमाकू, गाँजे आदि का धुआँ मुँह से खींचकर बाहर निकालना, धूम्रपान करना; सोखना।

पीनी *स्त्री.* {हिं.} तीसी, तिल आदि की खली।

पीप *स्त्री.* {सं. पूय} फोड़े आदि में से निकलनेवाला सफेद विषाक्त पदार्थ, पीब, मवाद।

पीपरपर्न *पुं.* {हिं. पीपल + पर्न = पत्ता} कान में पहनने का एक गहना, पत्ता।

पीपल¹ *पुं.* {सं. पिप्पल} एक प्रसिद्ध बड़ा वृक्ष जो हिन्दुओं में बहुत पवित्र माना जाता है।

पीपल² *स्त्री.* {सं. पिप्पली} एक लता जिसकी चरपरी कलियाँ पाचक होती हैं।

पीपा *पुं.* {?} काठ या लोहे का वह बड़ा गोल या चौकोर पात्र जिसमें घी, तेल, शराब, शीरा आदि रखे जाते हैं; एक प्रसिद्ध वैष्णव राजा, जो अपना राज्य छोड़कर विरक्त और साधु हो गए थे।

पीब *स्त्री.* पीप।

पीय *पुं.* पिय।

पीयर *वि.* पीला।

पीयूख *पुं.* पीयूष।

पीयूष *पुं.* {सं.} अमृत, सुधा; पेउस।

पीयूषवर्षण *पुं.* {सं.} अमृत की वर्षा।

पीर¹ *स्त्री.* {सं. पीड़ा} पीड़ा, दर्द; कष्ट, दुख।

मुहा. (किसी की) पीर जानना या पाना = किसी का कष्ट समझना।

पीर² *पुं.* {फा.} {*भाव.* पीरी} वृद्ध, बुड्ढा; महात्मा, सिद्ध; गुरु, आचार्य (मुसल.)।

पीरक *वि.* {सं. पीड़क} किसी को पीड़ा पहुँचाने या पीड़ित करनेवाला; दूसरे की पीड़ा या कष्ट समझने या दूर करनेवाला, सहृदय और दयालु।

उदा. ऐसे प्रभु परपीरक–**सूर**।

पीरना *स.* पेरना।

पीरमान *पुं.* {हिं.} मस्तूल पर के वे डंडे जिन पर पाल चढ़ाया जाता है।

पीरा *स्त्री.* पीड़ा; *वि.* {*स्त्री.* पीरी} पीला।

पीरी *स्त्री.* {फा.} बुढ़ापा, वृद्धावस्था; स्वयं पीर बनकर दूसरों को चेला अनुयायी बनाने का काम; अनावश्यक रूप से प्रकट की जानेवाली योग्यता, सामर्थ्य आदि।

पीरु *पुं.* {सं.} मुर्गा।

पील *पुं.* {फा. फील} हाथी।

पीलपाँव *पुं.* {फा. फीलमा} श्लीपद नामक रोग, जिसमें हाथ या पैर फूल जाता है, फीलपा।

पीलपा *पुं.* = पीलपाँव।

पीलवान *पुं.* फीलवान।

पीलसोज *पुं.* {फा. फलीतसोज़} दीया जलाने की दीयट, चिरागदान।

पीला *वि.* {सं. पीत} {*स्त्री.* पीली, *भाव.* पीलापन} हल्दी, केसर आदि के रंग का, जर्द; कांतिहीन, निस्तेज।

मुहा. पीला पड़ना = भय, चिन्ता या रोग के कारण शरीर में रक्त का अभाव सूचित होना; भय से चेहरे पर सफेदी आना।

पुं. हलदी की तरह का रंग।

पीलाम *पुं.* {हिं.} साटन का कपड़ा।

पीलिया *पुं.* {हिं. पीला} कमल रोग।

पीलू¹ *पुं.* {सं. पीलु} एक वृक्ष जिसका फल दवा के काम में आता है; पिल्लू।

पील² *पुं.* {?} संगीत में एक प्रकार का राग।

पीव *पुं.* {हिं. पिय} पिय, पति।

पीवना *स.* पीना।

पीवर *वि.* {सं.} {*स्त्री.* पीवरा, *भाव.* पीवरता} मोटा, स्थूल; भारी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीवरा *स्त्री.* {सं.} असगंध, सतावर।

पीसना *स.* {सं. पेषण} रगड़कर आटे या चूर्ण के रूप में करना; जल की सहायता से रगड़कर महीन करना; इस प्रकार दबाना या पीड़ित करना कि उभरने की शक्ति न रह जाए; विशेष परिश्रम का काम करना।

पीहर *पुं.* {सं. पितृ + हिं. घर} स्त्रियों के लिए, माता-पिता का घर, मैका।

पीहा *पुं.* {अनु.} पपीहे की बोली।

पुंगव *पुं.* {सं.} बैल, वृष; *वि.* श्रेष्ठ, उत्तम।

पुंगीफल *पुं.* {सं.} सुपारी।

पुँछार *पुं.* {हिं. पूँछ} मयूर, मोर।

पुंज *पुं.* {सं.} राशि, ढेर।

पुंजन *पुं.* {सं. पुंज} {*वि.* पुंजित} धीरे-धीरे जमा होने, बढ़ने आदि के कारण मिलकर बड़े मान या रूप में होना (अक्युम्यूलशन)।

पुंजातीय *वि.* {सं.} लिंग के विचार से पुरुष या नर जाति का (मेल)।

पुंजित *पुं.* {सं.} जो धीरे-धीरे जमा होने, बढ़ने के कारण मिलकर बड़े मान या रूप में हो गया हो (अक्युम्यूलेटेड)।

पुंजी *स्त्री.* पूँजी।

पूंजीभूत *वि.* {हिं.} राशिभूत, एकत्रित।

पुंडरीक *पुं.* {सं.} कमल; सिंह, शेर; तिलक, टीका; सफेद रंग का हाथी; अग्नि, आग।

पुंडरीकाक्ष *पुं.* {सं.} विष्णु।

पुंडरीयक *पुं.* {सं.} स्थल-कमल।

पुंलिंग *पुं.* {सं.} पुरुष का चिन्ह; वह जो पुरुष के चिन्ह या लिंग से युक्त हो (मैस्कुलिन); व्याकरण में वह शब्द जो पुरुष जाति या उससे संबंध रखनेवाले विशेषणों, क्रियाओं आदि का बोधक हो।

पुंश्चली *स्त्री.* {सं.} व्यभिचारिणी या दुश्चरित्रा स्त्री, कुलटा, छिनाल।

पुंसंतति *स्त्री.* {सं.} पुरुष या नर जाति की संतान (मेल **डिसेंडेंट**)।

पुंस *पुं.* {सं.} पुरुष, मर्द।

पुंसक *वि.* {सं.} जिसमें स्त्रीसंभोग और संतान उत्पन्न करने की शक्ति हो; जिसमें कुछ कर सकने की शक्ति हो (पोटेंट)।

पुंसत्व *पुं.* {सं.} पुरुषत्व; स्त्री के साथ संभोग करने और संतान उत्पन्न करने की शक्ति (पोटेंसी)।

पुंसवन *पुं.* {सं.} दूध; एक संस्कार जो गर्भाधान से तीसरे महीने में होता है।

पुआ *पुं.* मालपुआ।

पुआई *स्त्री.* {हिं.} सदाबहार।

पुआल *पुं.* पायल।

पुकार *स्त्री.* {हिं. पुकारना} पुकारने या बुलाने की क्रिया या भाव, टेर; रक्षा, सहायता, प्रतिकार आदि के लिए बुलाना, दुहाई; किसी वस्तु की बहुत अधिक माँग; किसी बात की बहुत अधिक चर्चा या प्रसिद्धि; संगीत में किसी स्वर को खींचकर ऊपर चढ़ाते हुए यथेष्ट ऊँचाई पर ले जाना और वहीं उसे ठहराकर कुछ देर तक उसका उच्चारण करना, टीप।

पुकारना *स.* {सं. प्रकुश = पुकारना} नाम लेकर बुलाना, आवाज देना; नाम रटना; चिल्लाकर कहना, माँगना, सुनाना या बुलाना; फरियाद करना, अभियोग लगाना।

पुक्कसी *स्त्री.* {सं.} नील का पौधा।

पुखर *पुं.* {सं. पुष्कर} तालाब, पुष्कर।

पुखराज *पुं.* {सं. पुष्पराज} एक प्रकार का पीला रत्न।

पुख्ता *वि.* {फा. पुख्तः} {*भाव.* पुख्तागी} पक्का, दृढ़, मजबूत।

पुगना *अ.* पूजना।

पुचकारना *स.* {अनु.} {*भाव.* पुचकार, पुचकारी} चूमने का शब्द करते हुए प्यार जताना, चुमकारना।

पुचकारी *स्त्री.* {हिं. पुचकारना} होंठों से निकाला हुआ चूमने का प्रेमसूचक शब्द, चुमकार।

पुचारना *क्रि. स.* {हिं.} पोतना, पुचारा देना।

पुचास *पुं.* {पुचपुच से अनु. या पुतारा} गीले कपड़े से पोंछने या पतला लेप करने का काम; हलका लेप; वह कपड़ा या धुली हुई वस्तु जिससे पोतते या पुचारा देते हैं; प्रसन्न या उत्साहित करने के लिए कही जानेवाली बात; झूठी प्रशंसा, चापलूसी, खुशामद।

पुच्छ *स्त्री.* {सं.} दुम, पूँछ; अंतिम या पिछला भाग।

पुच्छटी *स्त्री.* {सं.} अँगुली चटकाना।

पुच्छफल *पुं.* {सं.} बेर का फल या पेड़।

पुच्छमूल *पुं.* {सं.} पूँछ की जड़।

पुच्छल *वि.* {हिं. पुच्छ} पूँछवाला, दुमदार।

पुच्छल तारा *पुं.* लंबी पूँछवाला तारा।

पुछना *अ.* पोंछा जाना।

पुच्छल्ला *पुं.* {सं. पुच्छ + हिं. ला (प्रत्य.)} पूँछ की तरह पीछे लगी हुई और प्रायः अनावश्यक वस्तु; सदा पीछे लगा रहनेवाला या पीछा न छोड़नेवाला व्यक्ति।

पुछवैया *वि.* {हिं. पूछना} पूछनेवाला; देखरेख करने या खोज-खबर लेनेवाला।

पुछाना *स.* = पुछवाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुछार¹ पुं. {हिं. पूछना} पूछनेवाला; देखरेख करने या खोज-खबर लेनेवाला; महत्त्व समझकर आदर करनेवाला।

पुछार² पुं. {हिं. पूँछ = दुम} मयूर, मोर (पक्षी)।

पुजंता अ. {हिं. पूजना} पूजा जाना; सम्मानित होना; पूरा होना।

पुजना क्रि. अ. {हिं.} सम्मानित होना, पूजा जाना, पूरा होना।

पुजवना स. {हिं. पूजना} पूजन करना; पूरा करना, भरना; (कामना आदि) सफल या सिद्ध करना।

पुजवाना स. {हिं. 'पूजना' का प्रे.} {भाव. पुजाई} देवी-देवता पूजने का काम दूसरे से कराना; अपना आदर या सम्मान कराना; किसी को दबाकर उससे धन वसूल करना; अ. पूजना।

पुजापा पुं. {सं. पूजा + आपा (प्रत्य.)} देवी-देवता की पूजा-सामग्री।

पुजारी पुं. {सं. पूजा + कारी} वह जो मंदिर में देवता की पूजा करने के लिए नियुक्त हो; पूजा करनेवाला, पूजक; किसी को देवतुल्य मानकर उसकी भक्ति करनेवाला, उपासक।

पुजेरी पुं. पुजारी।

पुजैया¹ पुं. पूजक।

पुजैया² स्त्री. {हिं. पूजा} 'पूजा'; गाते-बजाते हुए कहीं पूजा करने जाना; वि. {हिं. पूजना = भरना} पूरा करने या भरनेवाला।

पुजौरा पुं. {हिं.} पूजा के समय देवता को अर्पण करने की सामग्री, पूजा।

पुट¹ पुं. {अनु.} मुलायम या तर करने अथवा हलका मेल मिलाने के लिए दिया जानेवाला छींटा; बहुत हलका मेल या रंगत, भावना, आभा।

पुट² पुं. {सं. मूलतः द्रविड़} ढकनेवाली चीज, आच्छादन; कटोरे या दोने के आकार का कोई पात्र; औषध पकाने के लिए चारों ओर से बंद किया हुआ पिंड या पात्र, सम्पुट (वैद्यक)।

पुटकित वि. {सं.} आबद्ध, बँधा हुआ।

पुटकी¹ स्त्री. {सं. पुटक} पोटली, गठरी।

पुटकी² स्त्री. {हिं. पटपटाना = मरना} आकस्मिक मृत्यु; दैवी विपत्ति।

पुटपाक पुं. {सं.} वैद्यक में भस्म तैयार करने के लिए किसी वस्तु को सम्पुट में रखकर पकाने की प्रक्रिया।

पुटभेदक पुं. {सं.} स्तरित पत्थर।

पुटरी (ली) स्त्री. पोटली।

पुटियाना स. {हिं. पुट देना} फुसलाना।

पुटी स्त्री. {सं. पुट} छोटा दोना या कटोरा; पुड़िया; कौपीन, लँगोटी।

पुटीन स्त्री. {अ.} लकड़ी के जोड़े, छेद आदि भरने का एक मसाला।

पुट्ठा पुं. {सं. पुष्ट या पृष्ठ} चूतड़ के ऊपर का भाग; पुस्तक का वह भाग जिधर सिलाई होती है।

पुठवार क्रि. वि.{हिं. पुट्ठा} पीछे; बगल में।

पुठवाल क्रि. वि. {हिं. पुट्ठा + वाला} पृष्ठरक्षक, सहायक, मददगार।

पुड़ा पुं. {हिं. पुड़िया} {स्त्री. अल्पा. पुड़ी, पुड़िया} बड़ी पुड़िया।

पुड़ी स्त्री. {हिं.} ढोल मढ़ने का चमड़ा।

पुड़वी स्त्री. = पृथ्वी।

पुढ़ाई स्त्री. = प्रौढ़ता।

पुण्य वि. {सं.} पवित्र; शुभ; पुं. धार्मिक दृष्टि से शुभ फल देनेवाला काम, धर्मकार्य; ऐसे शुभ कार्य का फल; परोपकार आदि का काम।

पुण्या स्त्री. {सं.} तुलसी।

पुण्यकाल पुं. {सं.} दान, पुण्य या पवित्र कार्य करने का समय।

पुण्यक्षेत्र पुं. {सं.} तीर्थस्थान।

पुण्यतिथि स्त्री. {सं.} पुण्य या शुभ कार्य करने के लिए कोई अच्छा दिन या तिथि; किसी महापुरुष के निधन की तिथि, जिसमें उसके गुणों और कीर्ति का वर्णन और स्मरण किया जाता है, जैसे लोकमान्य तिलक की पुण्यतिथि।

पुण्यभूमि स्त्री. {सं.} आयावर्त।

पुण्यवान, पुण्यवान् वि. {सं.} {स्त्री. पुण्यवती} पुण्य करनेवाला, धर्मात्मा।

पुण्यश्लोक वि. {सं.} {स्त्री. पुण्यश्लोका} पवित्र आचरणवाला, शुद्ध चरित्र।

पुण्यस्थान पुं. {सं.} तीर्थ स्थान।

पुण्याई स्त्री. {हिं. पुण्य} पुण्य का फल प्रभाव।

पुण्यात्मा पुं. {सं. पुण्यात्मन्} वह जो बराबर पुण्य करता रहे, धर्मात्मा।

पुण्यार्थ वि. {सं.} धार्मिक दृष्टि से किसी पुण्य कार्य अथवा यों ही किसी लोकोपकार के उद्देश्य से दान दिया हुआ, जैसे पुण्यार्थ सम्पत्ति (चैरिटेबुल); पुं. उक्त प्रकार का उद्देश्य, भावना या विचार (चैरिटेबुल पर्पज); उक्त प्रकार के उद्देश्य से दान किया हुआ धन या संपत्ति।

पुण्यार्थ निधि स्त्री. {सं.} वह निधि या धन-संपत्ति जो पक्की लिखा-पढ़ी करके किसी धार्मिक या सामाजिक लोकोपकारी कार्य के लिए दान दी गई हो (चैरिटेबुल एंडाउमेंट)।

पुण्योदय पुं. {सं.} पुण्य-कर्म का उदय।

पुतना अ. {हिं. पोतना} {सं. पोतना} पोता जाना, पुताई होना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुतरा पुं. {स्त्री. पुतरी} पुतला।

पुतरिका स्त्री. पुत्रिका।

पुतला पुं. {सं. पुत्रक} {स्त्री. पुतली} लकड़ी, घास, कपड़े आदि का बना हुआ मनुष्य का आकार।

मुहा. (किसी का) पुतला बाँधना = चारों ओर किसी की बदनामी करते फिरना; *पुतला जलाना* = दूसरे देश में मरनेवाले का पुतला बनाकर दाहकर्म करना; किसी के प्रति घृणा प्रकट करने या उसकी मृत्यु मनाने के लिए उसका पुतला बनाकर जलाना।

पुतली स्त्री. {हिं. पुतला} छोटा पुतला, गुड़िया; आँख के बीच का काला दाग।

पुतली-घर पुं. {हिं. पुतली + घर} कारखाना, विशेषत: कपड़े बुनने का बड़ा कारखाना।

पुताई स्त्री. {हिं. पोतना + आई (प्रत्य.)} पोतने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पुतारा पुं. पुचारा।

पुत्त पुं. पुत्र।

पुत्तरी स्त्री. {हिं.} पुत्री, बेटी।

पुत्तली पुं. {सं.} गुड़िया, पुतली।

पुत्तिका स्त्री. {सं.} मधुमक्खी।

पुत्रवती वि. स्त्री. {सं.} स्त्री जिसके पुत्र न हों, पुत्रावजी।

पुत्रवान, पुत्रवान् पुं. {सं.} {स्त्री. पुत्रवती} जिसके पुत्र हो, पुत्रवाला।

पुत्रिका स्त्री. {सं.} लड़की, बेटी; पुत्र के स्थान पर और उसके समान मानी हुई कन्या; गुड़िया, पुतली; कठपुतली; मूर्ति।

पुत्री स्त्री. {सं.} लड़की, बेटी।

पुत्रीय वि. {सं.} पुत्र-संबंधी।

पुत्रेष्टि पुं. {सं.} पुत्र की प्राप्ति की कामना से किया जानेवाला एक यज्ञ।

पुदीना पुं. {फा. पोदीन:} एक छोटा पौधा जिसकी सुगंधित पत्तियाँ, चटनी, मसाले आदि के काम में आती हैं।

पुद्गल पुं. {सं.} कोई ऐसा पदार्थ जिसमें रूप, रस, स्पर्श आदि हों (जैन); शरीर, बदन (बौद्ध); आत्मा।

पुन: क्रि. वि. {सं. पुनर्} फिर से, दोबारा, दूसरी बार; उपरांत, पीछे, बाद।

पुन:करण पुं. {सं.} फिर से कोई काम करना या दोहराना।

पुन:प्राप्ति स्त्री. {सं.} गई, भेजी या खोई चीज फिर से मिलना (रिकवरी)।

पुन पुं. पुण्य; क्रि. वि. पुन:।

पुनरपि क्रि. वि. {सं.} फिर से।

पुनरस्त्रीकरण पुं. {वि. पुनरस्त्रीकृत} किसी देश, राष्ट्र या सेना को अस्त्र-शस्त्र आदि से युक्त और सज्जित करना, निरस्त्रीकृत का फिर से अस्त्रीकरण करना (री-आर्मामेंट)।

पुनराख्याता (तृ) पुं. {सं.} नई आख्या या टिप्पणी करनेवाला।

पुनरागम पुं. {सं.} फिर से आना।

पुनरागमन पुं. {सं.} फिर से आना, दोबारा आना; फिर जन्म लेना।

पुनरारंभ पुं. {सं.} छोड़ा या स्थापित किया हुआ काम फिर से आरंभ करना (रिजम्पशन)।

पुनरावर्तन पुं. {सं.} {वि. पुनरावर्ती} लौटकर आना; बार-बार संसार में जन्म लेना।

पुनरावलोकन पुं. {सं.} दोबारा देखने की क्रिया या भाव।

पुनरावृत्त वि. {सं.} फिर से कहा हुआ।

पुनरावृत्ति स्त्री. {सं.} {वि. पुनरावृत्त} फिर से लौट या घूमकर आना; किया हुआ काम फिर से करना या कही हुई बात फिर से कहना, दोहराना (रिपीटीशन); फिर से या दोबारा पढ़ना।

पुनरासीन वि. {सं.} जो एक बार अपने स्थान से हटने या हटाए जाने पर फिर उसी स्थान पर आकर बैठे या लाकर बैठाया जाए (री-सीटेड)।

पुनरीक्षक पुं. {सं.} पुनरीक्षण करनेवाला।

पुनरीक्षण पुं. {सं.} {वि. पुनरीक्षित} किसी किए या देखे हुए काम को फिर से देखना (रिव्यू); न्यायालय का एक बार सुने हुए मुकदमें को, कुछ विशेष अवस्थाओं में फिर से सुनना।

पुनराहार पुं. {सं.} दुबारा भोजन।

पुनरुक्त वि. {सं.} दोबारा कहा हुआ।

पुनरुक्तवदाभास पुं. {सं.} साहित्य में एक अलंकार जिसमें ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है, जो सुनने में तो एकार्थक और फलत: पुनरुक्त से जान पड़ें, पर वास्तव में प्रसंगत: भिन्न-भिन्न अर्थ रखते हों, जैसे 'अम्बर-बास सने बसन, हरि लै चढ़े कदम्ब' में अंबर, बास और बसन देखने में तो एकार्थक ज्ञान पड़ते हैं, पर वास्तव में यहाँ उनका अर्थ है-अंबर नामक सुगंधित द्रव्य से सुगंधित किए हुए वस्त्र।

पुनरुक्ति स्त्री. {सं.} एक बार कही हुई बात फिर कहना; दोबारा कही हुई बात (रिपीटशन)।

पुनरुत्पत्ति स्त्री. {सं.} पुनर्जन्म।

पुनरुज्जीवित वि. {सं.} {संज्ञा. पुनरुज्जीवन} जिसे फिर से जीवित किया गया हो, जिसमें फिर से जान लाई गई हो (रिवाइव्ड)।

पुनरुत्थान पुं. {सं.} फिर से उठना; पतन होने के बाद फिर से उठना, उन्नति करना या समर्थ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होना; साहित्य, कला आदि में फिर से आगे बढ़ना या उन्नत होना (रिनेसांस)।

पुनरुद्धार पुं. {सं.} टूटी-फूटी या नष्ट हुई चीज को फिर से ठीक करके उसे यथावत् या उसका उद्धार करना (रिस्टोरेशन, रिनोवेशन)।

पुनर्गठन पुं. {सं. + हिं.} दोबारा किया जानेवाला गठन।

पुनर्गठित *वि.* जिसका पुनर्गठन हुआ हो।

पुनर्ग्रहण पुं. {सं.} छोड़ा हुआ कार्य या पद फिर से ग्रहण करना (रिज़म्पशन)।

पुनर्घटन पुं. {सं.} मरने के बाद फिर दूसरे शरीर में जन्म लेना, आत्मा का फिर से दूसरा शरीर धारण करना (ट्रांसमाइग्रेशन)।

पुनर्जात *वि.* {सं.} फिर से उत्पन्न।

पुनर्जीवन पुं. पुनरुज्जीवन; पुनर्जन्म।

पुनर्निर्माण पुं. {सं.} गिरे या टूटे-फूटे हुए को फिर से बनाना (री-कनस्ट्रक्शन)।

पुनर्परीक्षण पुं. {सं.} एक बार जिसकी परीक्षा ली जा चुकी हो, उसकी फिर से परीक्षा करना या लेना (री-इग्ज़ामिनेशन)।

पुनर्भू *स्त्री.* {सं.} वह विधवा जिसका विवाह पति के मरने पर दूसरे पुरुष से हुआ हो।

पुनर्मुद्रण पुं. {सं.} एक बार छपे हुए ग्रंथ, लेख, पत्रिका आदि को फिर से छापने की क्रिया या भाव; इस प्रकार छापे हुए ग्रन्थ, लेख, पत्रिका आदि।

पुनर्यज्ञ पुं. {सं.} फिर से किया हुआ यज्ञ।

पुनर्योग पुं. {सं.} दोबारा होनेवाला मिलन।

पुनर्वाद पुं. {सं.} {*वि.* पौनर्वादिक} **किसी न्यायालय से विवाद का निर्णय हो जाने पर उसके विरोध में ऊँचे न्यायालय में फिर से उस विवाद पर विचार होने के लिए की जानेवाली प्रार्थना (अपील); कोई कही हुई बात फिर ज्यों-की-त्यों या कुछ उलट-फेरकर कहना (टॉटॉलोजी)।**

पुनर्वादी (दिन्) पुं. {सं.} किसी ऊँचे न्यायालय में पुनर्वाद उपस्थित करनेवाला (एपेलेंट)।

पुनर्वास पुं. {*वि.* पुनर्वासित} पुनर्वासन।

पुनर्वासन पुं. {सं.} (उजड़े हुए लोगों को) फिर से बसाना या आबाद करना (री-हैबिलिटेशन)।

पुनर्विधान पुं. {सं.} किसी चीज का फिर से रचा या बनाया जाना, पुनर्घटन।

पुनर्विधायन पुं. {सं.} {*वि.* पुनिर्विहित} किसी बने हुए विधान को घटा या बढ़ाकर नए सिरे से विधान का रूप देना (री-एनैक्टमेंट)।

पुनर्विधायित *वि.* पुनर्विहित।

पुनर्विभाजन पुं. {सं.} एक बार जिसका विभाजन हो चुका हो, उसका फिर से विभाजन होना।

पुनर्वसु पुं. {सं.} विष्णु, शिव. **एक नक्षत्र।**

पुनर्विवाह पुं. {सं.} किसी का, विशेषतः विधवा स्त्री का फिर से होनेवाला विवाह।

पुनर्विहित *वि.* {सं.} जिसका फिर से विधान हुआ हो या किया गया हो; (पहले से बना हुआ विधान) जो फिर से घटा-बढ़ाकर ठीक किया गया और फिर से नए विधान के रूप में लाया गया हो (री-एनैक्टेड)।

पुनर्सारण पुं. {सं.} {*वि.* पुनर्सारित} दूरदर्शन, रेडियो आदि के एक आस्थान से प्रसारित होनेवाला कार्यक्रम ज्यों-का-त्यों दूसरे आस्थान से प्रसारित किया जाना (रिले)।

पुनर्स्थापित *वि.* {सं.} फिर से स्थापित किया हुआ।

पुनश्च *क्रि. वि.* {सं.} इसके बाद।

पुनि *क्रि. वि.* {सं.} इसके बाद, पुनः, दोबारा से।

पुनी[1] पुं. पुण्यात्मा, धर्मात्मा।

पुनी[2] *स्त्री.* पूर्णिमा, पूनो।

पुनी[3] *क्रि. वि.* {सं. पुनः} पुनः फिर।

पुनीत *वि.* {सं.} {*स्त्री.* पुनीता} पवित्र।

पुन्न पुं. = पुण्य।

पुन्नाग पुं. {सं.} सुलताना चंपा, श्वेत पद्म, जायफल।

पुन्नाट पुं. {सं.} चकतँड़ का पौधा।

पुन्य पुं. = पुण्य।

पुन्यता (ई) *स्त्री.* {सं. पुण्य} धर्मशीलता; पवित्रता; पुण्याई।

पुरंदर पुं. {सं.} इंद्र; विष्णु।

पुरंध्र *स्त्री.* {सं.} कुटुम्बिनी स्त्री।

पुरः *क्रि. वि.* {सं. पुरस्} आगे; पहले।

पुरजन पुं. {सं.} नागरिक।

पुरःदत्त *वि.* {सं.} पहले से दिया हुआ (शुल्क, परिव्यय आदि) (प्री-पेड)।

पुरःदान पुं. {सं.} (शुल्क, देन आदि) पहले से देना (प्री-पेमेन्ट)।

पुरःसंगी *वि.* {सं.} किसी कार्य, विषय या तथ्य में उससे पहले सहायक या संबद्ध रूप में होनेवाला।

पुरःसर *वि.* {सं.} अगुआ; साथी; मिला हुआ, युक्त।

पुर[1] पुं. {सं.} {*स्त्री.* पुरी} नगर, शहर; आगार, घर; लोक, भुवन; राशि, ढेर।

पुर[2] *क्रि. वि.* {सं. पुरः} आगे, सामने।

उदा. स्वान! निःशंक कहो पुर मेरे–**केशव।**

पुर[3] *वि.* {फा.} भरा हुआ, पूर्ण।

पुरइन *स्त्री.* {सं. पुटकिनी} कमल का पत्ता; कमल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरकायस्थ पुं. {सं.} प्राचीन भारत में किसी नगर का वह प्रधान अधिकारी जिसके पास मुख्य लेख्यों या दस्तावेजों आदि की नकल रहती थी (इसका पद प्रायः आजकल के रजिस्ट्रार के पद के समान होता था)।

पुरखा पुं. {सं. पुरुष} {*स्त्री.* पुरखी} बाप, दादा आदि पूर्वज।

मुहा. पुरखे तर जाना = (पुत्र आदि के शुभ कृत्य से) पूर्वपुरुषों को परलोक में उत्तम गति मिलना।

बड़ा-बूढ़ा और फलतः बुद्धिमान तथा मार्ग-दर्शक, जैसे हैं तो जरा-सा लड़का, पर पुरखों की तरह बातें करता है।

पुरजा पुं. {फा. पुर्ज़ः} टुकड़ा, खंड; कटा हुआ टुकड़ा, कतरन; अवयव, अंग; अंश, भाग; यन्त्र आदि का कोई महत्त्वपूर्ण अंग या अंश।

मुहा. चलता पुरजा = चालाक आदमी।

पुरट पुं. {सं.} स्वर्ण, सोना।

पुरना *अ.* {हिं. पूरा} समाप्त या पूरा होना; पूरा पड़ना, यथेष्ट होना।

पुरबला *वि.* {सं. पूर्व} पूर्व या पिछले जन्म का।

पुरबिया *वि.* {हिं. पूरब} पूरब का।

पुरबिला *वि.* पुरबला।

पुरमार्ग पुं. {सं.} नगर का मार्ग।

पुरला *स्त्री.* {सं.} दुर्गा।

पुरवट पुं. {सं. परमट} चमड़े का वह डोल जिसके द्वारा बैलों की सहायता से खेतों की सिंचाई के लिए पानी खींचा जाता है, चरसा, मोट।

पुरवना *स.* {हिं. पूरना} किसी की आशा या कामना पूरी करना; पूर्ण करना, भरना; (प्रतिज्ञा या वचन) पूरा करना।

मुहा. साथ पुरवना = अंत तक पूरा साथ देना।

अ. पूरा होना; यथेष्ट होना।

पुरवा पुं. {सं. पुटक} मिट्टी का छोटा गोल, पात्र, कुल्हड़; पुं. = पूर्वी (नक्षत्र)।

पुरवाई (वैया) *स्त्री.* {सं. पूर्व + वायु} पूरब से चलने या आनेवाली वायु।

पुरश्चरण पुं. {सं.} किसी काम के लिए पहले से उपाय सोचना और प्रबन्ध करना; तंत्रशास्त्र में मंत्र, स्तोत्र आदि का किसी अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए, नियमपूर्वक पाठ करना।

पुरसा पुं. {सं. पुरुष} साढ़े चार पाँच हाथ की ऊँचाई की एक नाप।

पुरस्कार पुं. {सं.} {*वि.* पुरस्कृत} आगे करने या लाने की क्रिया; आदर, सम्मान; किसी अच्छे काम के लिए आदरपूर्वक दिया जानेवाला धन या द्रव्य, पारितोषिक, इनाम।

पुरस्कृत *वि.* {सं.} आगे किया, रखा या बढ़ाया हुआ; आदृत, सम्मानित; जिसे पुरस्कार मिला हो।

पुरस्सर *वि.* पुरःसर।

पुरहन पुं. {सं.} विष्णु, शिव।

पुरहा पुं. {हिं.} वह मनुष्य जो कुएँ पर पुरवट छीनने के लिए नियत रहता है।

पुरांगना *स्त्री.* {सं.} नगर में रहनेवाली स्त्री, नगर-वासिनी।

पुरा¹ *वि.* {सं.} प्राचीन, पुराना; (यौ. के आरंभ में, जैसे पुराकाल, पुरातत्व)।

पुरा² पुं. {सं. पुर} छोटा गाँव।

पुराकाल पुं. {सं.} इतिहासपूर्व काल।

पुराकृत *वि.* {सं. पुरा + कृत} प्राचीन काल का बना हुआ; प्राचीन, पुराना।

पुराकल्प पुं. {सं.} प्राचीन युग, पहला कल्प।

पुराग *वि.* {सं.} पूर्वगामी।

पुराण *वि.* {सं.} प्राचीन, पुराना; पुं. मनुष्यों, देवताओं, दानवों आदि की वे कथाएँ, जो परंपरा से चली आ रही हों; हिन्दुओं के वे 18 धार्मिक आख्यान या धर्मग्रंथ जिनमें सृष्टि की उत्पत्ति, लय और प्राचीन ऋषियों तथा राजवंशों आदि के वृत्तान्त और देवी-देवताओं, तीर्थों के माहात्म्य हैं; अठारह की संख्या।

पुरातत्त्व पुं. {सं.} वह विद्या जिसमें प्राचीन काल, मुख्यतः इतिहासपूर्व काल की वस्तुओं आधार पर पुराने अज्ञात इतिहास का पता लगाया जाता है।

पुरातत्त्वज्ञ पुं. {सं.} वह जो पुरातत्त्व का अच्छा ज्ञाता हो (आर्कियालॅजिस्ट)।

पुरातत्त्वीय *वि. वि.* {सं.} पुरातत्त्व-संबंधी।

पुरातन *वि.* {सं.} प्राचीन, पुराना; पुं. विष्णु।

पुरातनता *स्त्री.* {सं.} प्राचीनता।

पुरातनपंथी *वि.*, पुं. {सं. + हिं.} पुराने विचारोंवाला, रूढ़िवादी।

पुरातनिक *वि.* {सं.} पुराना, पुरातन।

पुरातात्त्विक *वि.* {सं.} पुरातत्त्व-संबंधी।

पुरावल पुं. {सं.} तलातल, सात पातालों की नीचे की भूमि।

पुराधिप पुं. {सं.} नगर का अध्यक्ष।

पुरान *वि.* पुराना।

पुराना¹ *वि.* {सं. पुराण} {*स्त्री.* पुरानी} जिसे हुए या बने बहुत दिन हो गए हों, बहुत दिनों का, प्राचीन, पुरातन; जो बहुत दिनों का होने के कारण अच्छी या ठीक दशा में न रह गया हो,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीर्ण; जिसे बहुत दिनों का अनुभव या ज्ञान हो, परिपक्व; बहुत काल या समय का; जिसका प्रचलन उठ गया हो।

पुराना² *स.* {हिं. 'पूरना' का प्रे.} पूरा करना या कराना; पालन करना या कराना।

पुराना खुर्राट *वि.* बहुत अनुभवी।

पुराना घाघ *वि.* बहुत बड़ा चालाक।

पुरारी *पुं.* {सं.} शिव।

पुराल *पुं.* पयाल।

पुरालिपि *स्त्री.* {सं.} प्राचीनकाल में प्रचलित लिपि।

पुरालिपि शास्त्र *पुं.* {सं.} वह शास्त्र जिसमें प्राचीन काल की (सैकड़ों-हजारों वर्ष पीले की) लिपियाँ पढ़ने का विवेचन होता है (एपिग्राफी)।

पुरावना *स.* पुराना (पूरा करना)।

पुरावशेष *पुं.* {सं.} पुराकाल की वस्तुओं के अवशेष।

पुरावस्तु *स्त्री.* {सं.} पुराकाल की वस्तु।

पुरावसु *पुं.* {सं.} भीष्म।

पुराविद्, पुराविद् *पुं.* {सं.} पुराकाल का ज्ञाता।

पुरावृत्त *पुं.* {सं.} प्राचीन काल का वृत्तांत या हाल।

पुरिया *स्त्री.* {हिं. पूरना} जुलाहों की वह नीली जिस पर (कपड़ा बुनने के पहले) बाने के सूत फैलाए जाते हैं; *स्त्री.* पुड़िया; पूरी (पकवान)।

पुरि *स्त्री.* {सं.} पुरी, नदी, शरीर, राजा, संन्यासी।

पुरी *स्त्री.* {सं.} नगरी, छोटा शहर; उड़ीसा की जगन्नाथ पुरी।

पुरीष *पुं.* {सं.} विष्ठा, मल, गू।

पुरु *पुं.* {सं.} देवलोक; राक्षस; शरीर; एक प्राचीन राजा जो ययाति के पुत्र थे।

पुरुख *पुं.* पुरुष।

पुरुष *पुं.* {सं.} {*भाव.* पुरुषत्व} नर जाति का मनुष्य, मर्द; सांख्य में अकर्ता और असंग चेतन पदार्थ, जो प्रकृति से भिन्न और उसका पूरक अंग माना गया है, आत्मा; विष्णु; सूर्य; जीव; व्याकरण में सर्वनाम और उसके साथ आनेवाली क्रियाओं के रूपों का वह भेद जिससे यह जाना जाता है कि सर्वनाम या क्रियापद का प्रयोग वक्ता (कहनेवाले) के लिए हुआ है या श्रोता या संबोध्य (जिससे कहा जाए) के लिए अथवा किसी दूसरे के लिए, जैसे 'मैं' उत्तम पुरुष है, 'तुम' मध्यम पुरुष है, औरर 'वह' अन्य पुरुष; पूर्वज, पुरखा; पति, स्वामी; *वि.* नर जाति का (जीव)।

पुरुषांतर *पुं.* {सं.} अन्य पुरुष।

पुरुसाद्य *पुं.* {सं.} विष्णु, राक्षस।

पुरुसाधम *पुं.* {सं.} निकृष्ट नर, अधम मनुष्य।

पुरुषानुक्रम *पुं.* {सं.} पुरखों या पहले की पीढ़ियों से चली आयी हुई परंपरा, एक के बाद एक पीढ़ी का क्रम।

पुरुषानुक्रमिक *वि.* {सं.} जो किसी वंश में कई पीढ़ियों से बराबर चला आया हो और जिसके आगे की पीढ़ियों में भी चलते रहते की संभावना हो, आनुवंशिक (हेरिडेटरी)।

पुरुषार्थ *पुं.* {सं.} पुरुष के प्रयत्न का विषय या कार्य; पौरुष, पराक्रम; सामर्थ्य, शक्ति।

पुरुषार्थी *वि.* {सं. पुरुषार्थिन्} पुरुषार्थ करनेवाला, पौरुष रखनेवाला; उद्योगी; परिश्रमी; बलवान।

पुरुषोत्तम *पुं.* {सं.} वह जो पुरुषों में उत्तम या श्रेष्ठ हो; विष्णु; जगन्नाथ; नारायण; मलमास।

पुरुह *वि.* {सं.} प्रचुर, पर्याप्त।

पुरुहूत *पुं.* {सं.} इंद्र।

पुरेन (रैन) *स्त्री.* {सं. पुटकिनी} कमल का पत्ता; कमल।

पुरैना *स.* पूरा करना।

पुरोगम, पुरोगा *वि.* {सं.} अग्रगामी, आगे जानेवाला।

पुरोगामी *पुं.* {सं. पुरोगामिन्} {*स्त्री.* पुरोगामिनी, *भाव.* पुरोगामिता} जो सबसे आगे चलता हो, अग्रगामी; वह जो बराबर उन्नति करता हुआ आगे बढ़ाता हो; किसी विषय में उदार विचार रखने और अग्रसर रहनेवाला।

पुरोडा *पुं.* {सं.} जौ के आटे की वह टिकिया जो यज्ञ में आहुति देने के लिए पकाई जाती थी, हवि।

पुरोधा *पुं.* {सं. पुरोधस्} पुरोहित।

पुरोवात *पुं.* {सं.} पूरब से बहनेवाली हवा।

पुरोहित *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* पुरोहितानी, *भाव.* पुरोहिताई} वह ब्राह्मण जो यजमान के यहाँ कर्मकांड के सब कृत्य और संस्कार कराता है; किसी धर्म के अनुयायियों के के संस्कार और धार्मिक कृत्य करने-कराने वाला (प्रीस्ट)।

पुरौ *पुं.* पुरवट।

पुरौती *स्त्री.* पूर्ति।

पुर्जल *पुं.* {हिं.} कलाबत्तू लपेटने का यंत्र।

पुलंदा *पुं.* पुलिंदा।

पुल *पुं.* {फा.} नदियों आदि के ऊपर, उन्हें पार करने के लिए नावें पाटकर, मोटे रस्से बाँधकर या खंभों पर पटरियाँ आदि बिछाकर बनाया हुआ रास्ता और उससे संबंध रखनेवाली सारी रचना, सेतु।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. (किसी बात का) पुल बाँधना = बहुत अधिकता कर देना, झड़ी लगाना; *(किसी वस्तु का) पुल टूटना* = भरमार हो जाना, बाढ़-सी आ जाना।

पुलक पुं. {सं.} प्रेम, हर्ष आदि के आवेग से रोएँ खड़े होना, रोमांच।

पुलकना *अ.* {सं. पुलक} प्रेम, हर्ष आदि से रोएँ खड़े होना, पुलकित या गद्‌गद होना।

पुलकाई *स्त्री.* पुलक।

पुलकालि *स्त्री.* पुलकावलि।

पुलकावलि *स्त्री.* {सं.} हर्ष के कारण खड़ी या प्रफुल्ल होनेवाली रोमावली।

पुलकित *वि.* {सं.} जिसे प्रेम या हर्ष के आवेग से पुलक हुआ हो, गद्‌गद।

पुलकोद्‌गम पुं. {सं.} हर्ष, आनंद।

पुलट *स्त्री.* पलट।

पुलटिस *स्त्री.* {*अ.* पाउल्टिस} फोड़े आदि पकाने के लिए उन पर लगाकर बाँधा जानेवाला दवाओं का मोटा लेप।

पुलत्थना *स.* = पलटना (जैसे उलत्थना- पुलत्थना)।

पुलपुला *वि.* {अनु.} {*क्रि.* पुलपुलाना} इतना ढीला और मुलायम कि जरा-सा दबाने से झट दब जाए; बार-बार दबने और उभड़ने या खुलने और बन्द होनेवाला।

पुलह पुं. {सं.} ब्रह्मा के मानस पुत्र व एक प्रजापति, शिव।

पुलहना *अ.* पलुहना।

पुलाक पुं. {सं.} उबाला हुआ चावल, भात; पुलाव।

पुलाव पुं. {फा.} मांस और चावल एक में पकाकर बनाया हुआ, व्यंजन, मांसोदन।

पुलिंदा पुं. {हिं. पूला} लपेटे हुए कपड़े, कागज आदि का मुट्ठा (बंडल); छोटा पैकट या गठरी।

पुलिन पुं. {सं.} जल के हट जाने से निकली हुई जमीन, चर; तट, किनारा।

पुलिया *स्त्री.* {हिं. पुल + इया (प्रत्य.)} वह बहुत छोटा पुल, जो प्रायः छोटे नालों को पार करने के लिए सड़कों पर बनाया जाता है।

पुलिरिक पुं. {सं.} सर्प, साँप।

पुलिस *स्त्री.* {*अ.* पोलीस} प्रजा की जान और माल की रक्षा करनेवाला सिपाही या अफसर, आरक्षी; इस प्रकार के कार्यकर्ताओं का विभाग।

पुलिहोरा पुं. {हिं.} पकवान।

पुलोमजा *स्त्री.* {सं.} इंद्र की पत्नी, शची।

पुलोमही *स्त्री.* {सं.} अहिफन, अफीम।

पुल्लिंग पुं. पुल्लिंग।

पुवा पुं. मालपुआ।

पुश्त *स्त्री.* {फा.} पृष्ठ, पीठ; पिछला भाग, पीछा; वंश-परंपरा में कोई स्थान, विशेष पीढ़ी।

पुश्त-दर-पुश्त *क्रि. वि.* कई पीढ़ियों से या तक।

पुश्ता पुं. {फा.} पानी की रोक या दीवार की मजबूती के लिए ईंट, पत्थर आदि की चुनाई या बनावट, जो मोटी दीवार के रूप में होती है, बाँध; ऊँची मेंड़; पुट्ठा।

पुश्तैनी *वि.* {फा. पुश्त} कई पुश्तों या पीढ़ियों से चला आया हुआ; आगे की पीढ़ियों तक चलनेवाला।

पुष्कर पुं. {सं.} जल; जलाशय, ताल; कमल; बाण, तीर; युद्ध; सूर्य; पुराणों के अनुसार सात महाद्वीपों में से एक; राजस्थान का एक प्रसिद्ध तीर्थ, जो अजमेर के पास है।

पुष्करिका *स्त्री.* {सं.} शिश्न-रोग।

पुष्करिणी *स्त्री.* {सं.} छोटा तालाब।

पुष्कल *वि.* {सं.} बहुत, अधिक, प्रचुर; भरा-पूरा, परिपूर्ण; श्रेष्ठ, उत्तम; पवित्र, निर्मल।

पुष्ट *वि.* {सं.} {*भाव.* पुष्टता, पुष्टि} जिसका पोषण हुआ हो, पाला हुआ; मोटा-ताजा; मोटा-ताजा या बलिष्ठ करनेवाला, बलवर्धक; दृढ़, पक्का, मजबूत।

पुष्टई *स्त्री.* {सं. पुष्ट + ई (प्रत्य.)} बल तथा वीर्यवर्द्धक या पुष्टिकारक औषध, ताकत की दवा।

पुष्टि *स्त्री.* {सं.} पोषण; पुष्ट होने की दशा, बलिष्ठता; संतति की वृद्धि; दृढ़ता, मजबूती; किसी कथन या पक्ष को ठीक बतलाना, समर्थन; एक बार कही बुई बात पक्की करने के लिए फिर कहना।

पुष्टिकारक *वि.* पौष्टिक, पुष्टिदाता।

पुष्टिमार्ग पुं. {सं.} वल्लाभाचार्य का चलाया हुआ एक वैष्णव भक्तिमार्ग।

पुष्टीकरण पुं. {सं.} किसी की कही हुई बात या किए हुए काम को ठीक मानते हुए उसकी पुष्टि करना (कन्फर्मेशन)।

पुष्प पुं. {सं.} फूल, कुसुम; ऋतुमती स्त्री का रज; मांस (वाममार्गी)।

पुष्पांबुज पुं. {सं.} मकरंद।

पुष्पा *स्त्री.* {सं.} चंपा, मालिनी, सौंफ।

पुष्पक पुं. {सं.} फूल; कुबेर का विमान जो रावण ने छीन लिया था और राम ने उससे छीनकर फिर कुबेर को दे दिया था।

पुष्पज्ञ पुं. {सं.} पुष्पों का जानकार।

पुष्पपुर पुं. {सं.} उत्तर पश्चिमी पाकिस्तान, पटना का पुराना नाम।

पुष्पार्क पुं. {सं.} फूलों का अर्क।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्पवती *वि. स्त्री.* {सं.} फूलवाली, फूली हुई (लता आदि); रजस्वला (स्त्री)।
पुष्पवाटिका *स्त्री.* {सं.} फुलवारी, बाग।
पुष्पवाण *पुं.* {सं.} कामदेव।
पुष्पवृष्टि *स्त्री.* {सं.} ऊपर से होनेवाली फूलों की वर्षा (मंगल-सूचक)।
पुष्पसार *पुं.* {सं.} फूलों का सुगंधित सार, इत्र।
पुष्पांजलि *स्त्री.* {सं.} फूलों से भरी हुई अंजलि जो किसी देवता, पूज्य पुरुष अथवा स्थान पर चढ़ाई जाती है।
पुष्पागम *पुं.* {सं.} बसंत ऋतु।
पुष्पिका *स्त्री.* {सं.} ग्रंथ या अध्याय के अन्त का वह वाक्य या पद्य जिससे कहे हुए प्रसंग की समाप्ति सूचित होती है, और जिसमें प्राय: लेखक का नाम और समय भी होता है।
पुष्पित *वि.* {सं.} जिसमें पुष्प या फूल निकल आए हों, फूला हुआ।
पुष्पेषु *पुं.* {सं.} कामदेव।
पुष्पोद्यान *पुं.* {सं.} फुलवारी, बाग।
पुसकर *पुं.* पुष्कर।
पुसाना *अ.* {हिं. पोसना} हो सकना या बन पड़ना; अच्छा लगना, शोभा देना।
पुस्त *स्त्री.* पुश्त; *पुं.* शिल्पकर्म।
पुस्तक *स्त्री.* {सं.} {*स्त्री.* अल्पा. पुस्तिका} लिखी हुई या छपी हुई बहुत से पन्नोंवाली वह वस्तु जिसमें दूसरों के पढ़ने के लिए विचार, विवेचन आदि हों, पोथी, किताब।
पुस्तकाकार *वि.* {सं.} पुस्तक के रूप में या आकार का।
पुस्तकागार *पुं.* {सं.} पुस्तकालय।
पुस्तकालय *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ बहुत सी पुस्तकों का संग्रह हो (लाइब्रेरी); वह स्थान जहाँ पुस्तकें बिकती हों (बुक-डिपो)।
पुस्तक-डाक *स्त्री.* {सं. पुस्तक + हिं. डाक} वह डाक या डाक से भेजने की वह विधि, जिसके अनुसार समाचार-पत्र, छपी हुई पुस्तकें, छायाचित्र आदि कुछ विशेष रिआयती दर से भेजे जाते हैं (बुक-पोस्ट)।
पुस्तिका *स्त्री.* {सं.} छोटी पुस्तक (बुकलेट)।
पुहकर *पुं.* पुष्कर।
पुहना *अ.* {हिं.} 'पोहना' का *अ.*।
पुहाना *क्रि. स.* {हिं.} पृथ्वी, भूमि।
पुहप (हुप) *पुं.* {सं. पुष्प} फूल।
पुहुपराग *पुं.* पुखराज।
पुहुमी *स्त्री.* {सं. भूमि} पृथ्वी।
पुहुरेनू *पुं.* {सं. पुष्परेणु} पराग।
पुहुवी *स्त्री.* {सं. पृथ्वी} भूमि।
पूँगा *स्त्री.* {हिं.} सीप का कीड़ा, महुवर, सँपेरे की बीन।
पूँगी *स्त्री.* {देश.} एक प्रकार की बाँसुरी।
पूँछ *स्त्री.* {सं. पुच्छ} जंतुओं, पक्षियों आदि के शरीर का पिछला लम्बा भाग, पुच्छ, दुम; किसी पदार्थ का पिछला भाग, पुच्छला; पिछलग्गू।
पूँछड़ी *स्त्री.* {हिं.} लांगुल, पोंछ।
पूँजी *स्त्री.* {सं. पुंज} इकट्ठा किए हुए पास के रुपए, धन, जमा; उन सब वस्तुओं और संपत्ति का समूह जो पास में हो; वह धन जो किसी व्यापार में लगाया गया हो, मूलधन (प्रिंसिपल); किसी विषय में किसी की सारी योग्यता या ज्ञान।
पूँजीपति {हिं. पूँजी + सं. पति} वह जिसके पास यथेष्ट पूँजी हो; धन व्यक्ति।
पूँठ *स्त्री.* {सं. पृष्ठ} पीठ।
पूआ *पुं.* मालपुआ।
पूखन *पुं.* पोषण।
पूग *पुं.* {सं.} सुपारी का पेड़ या फल; राशि, समूह, ढेर; किसी विशेष कार्य या व्यापार के लिए बना हुआ संघ (कंपनी)।
पूगना *अ.* {हिं. पुजना} पूरा होना, भरना; नियत समय आ पहुँचना।
पूगी *स्त्री.* {सं.} सुपारी।
पूछ *स्त्री.* {हिं. पूछना} पूछने या पूछे जाने की क्रिया या भाव, जिज्ञासा; खोज, चाह, तलाश; आदर, सम्मान।
पूछताछ *स्त्री.* {हिं. पूछना + ताछना (अनु.)} कुछ जानने के लिए बार-बार पूछना, जिज्ञासा।
पूछना *स.* {सं. पृच्छण} जानने के लिए प्रश्न करना, जिज्ञासा करना, दरियाफ्त करना; खोज-खबर लेना; सत्कार या सम्मान का भाव प्रकट करना।
मुहा. बात न पूछना = तुच्छ समझकर ध्यान न देना, उपेक्षा करना।
महत्व या मूल्य जानना या समझना।
पूछरी *स्त्री.* पूँछ।
पूछाताछी *स्त्री.* पूछताछ।
पूजक *पुं.* {सं.} पूजा करनेवाला, पूजनेवाला।
पूजन *पुं.* {सं.} {*वि.* पूजक, पूजनीय, पूज्य} देवता की पूजा, सेवा आदि करना, अर्चन; आदर, सम्मान।
पूजना *स.* {सं. पूजन} देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए उनकी पूजा करना; आदर-सत्कार या सम्मान करना; घूस या रिश्वत लेना।
पूजनी *स्त्री.* {सं.} चटक मादा या गौरैया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूजनीय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* पूजनीया} जिसकी पूजा करना उचित हो, पूजने योग्य, अर्चनीय; आदरणीय, सम्मान के योग्य।

पूजबंद *पुं.* {फा.} जानवरों के मुँह पर बाँधने की जाली।

पूजमान *वि.* {हिं.} पूजनीय, पूज्य।

पूजा *स्त्री.* {सं.} वह कार्य जो ईश्वर या देवी-देवताओं को प्रसन्न या अनुकूल करने के लिए श्रद्धा-भक्तिपूर्वक किया जाए; किसी देवी-देवता पर जल, फूल आदि चढ़ाकर या उनके आगे कुछ रखकर किया जानेवाला धार्मिक कार्य, अर्चना; आदर-सत्कार, खातिर; किसी को प्रसन्न या अनुकूल करने के लिए उसे कुछ देना; दंड, सजा।

पूजार्ह *वि.* {सं.} पूजा के योग्य, पूज्य।

पूजित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* पूजिता} जिसकी पूजा की गई हो, अर्चित।

पूजी *स्त्री.* {फा. पूजबंद} घोड़े का एक प्रकार का साज जो उसके मुँह पर रहता है।

पूजेता *पुं.* {हिं.} पुजारी।

पूज्य *वि.* {सं.} {*स्त्री.* पूज्या} पूजा किए जाने के योग्य, जिसकी पूजा करना कर्तव्य हो, पूजनीय; आदर, श्रद्धा आदि के योग्य।

पूज्यपाद *वि.* {सं.} जिसके पैर पूजे जाने के योग्य हों, अत्यन्त पूज्य और मान्य।

पूज्यमान *वि.* {सं.} जो पूजा जाता हो।

पूठि *स्त्री.* {सं. पृष्ठ} पीठ।

पूड़ी *स्त्री.* पूरी।

पूत *वि.* {सं.} {*भाव.* पूतता} पवित्र, शुद्ध।

पूतना *स्त्री.* {सं.} एक राक्षसी जिसको कंस ने श्रीकृष्ण को मारने के लिए गोकुल भेजा था और जिसे, स्तन में दाँत गड़ाकर कृष्ण ने मार डाला था, बकासुर की बहन, बकी; वैद्यक के अनुसार बालकों को होनेवाले रोगों का एक वर्ग।

पूतनारि *पुं.* {सं.} श्रीकृष्ण।

पूतरा *पुं.* पुतला।

पूतनी *स्त्री.* {सं.} पुदीना।

पूतफल *पुं.* {सं.} पनस, कटहल।

पूति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* पौतिक} पवित्रता, शुचिता; दुर्गंध, बदबू; घावों, फोड़ों आदि में विषाक्त कीटाणुओं आदि के उत्पन्न होने के कारण उनका सड़ने लगना, जो प्रायः रोगी के लिए घातक सिद्ध होता है, सड़ायँध (सेप्सिस)।

पूता *वि. स्त्री.* {सं.} पवित्र शुद्ध; (*स्त्री.*) दूब।

पूती *स्त्री.* {सं. पोत = गट्ठा} गाँठ के रूप होनेवाली जड़; लहसुन की गाँठ।

पूनिउ *स्त्री.* पूर्णिमा।

पूनी *स्त्री.* {सं. पिंजिका} सूत कातने के लिए तैयार की हुई धुनी रुई की बत्ती।

पूनें (नों) *स्त्री.* पूर्णिमा।

पूप *पुं.* {सं.} मालपुआ।

पूपाली *स्त्री.* {सं.} पूआ, मालपुआ।

पूय *पुं.* {सं.} पीप, मवाद।

पूर *पुं.* {हिं. पूरना = भरना} कचौरी, समोसे, गुझिया आदि पकवानों के अंदर भरे जानेवाले मसाले; नदी आदि की बाढ़; नदी आदि की तेज धारा; समूह, झुंड; *वि.* = पूर्ण।

पूरक *वि.* {सं.} पूर्ति या पूरा करनेवाला; किसी के साथ मिलकर उसे पूर्ण स्वरूप देनेवाला (कॉम्प्लिमेंटरी); *पुं.* प्राणायाम का वह पहला अंग या क्रिया जिसमें नाक से साँस खींचते हुए अंदर ले जाते हैं; वह जो किसी वस्तु के साथ मिलकर उसे पूरा करता हो, पूर्ण बनाने या करनेवाला अंग (काम्प्लिमेंट); वह अंक जिससे गुणा किया जाता है, गुणक अंक; समायोजक।

पूरण *पुं.* {सं.} {*वि.* पूरणीय} पूरा करने या भरने की क्रिया या भाव; समाप्त करना; अंकों का गुणा करना; *वि.* पूरक।

पूरन[1] *पुं.* {हिं. पूरना = भरना} समोसे आदि पकवानों के बीच में भरा जानेवाला मसाला।

पूरन[2] *पुं.* {हिं. पूर} जलाशयों में होनेवाली पानी की बाढ़; नदी की धारा या प्रवाह; *वि* पूर्ण।

पूरनकाम *वि.* = पूर्णकाम।

पूरन परब *पुं.* पूर्णिमा।

पूरनपूरी *स्त्री.* {हिं. पूरना + पूरी} एक प्रकार की मीठी पूरी (पकवान)।

पूरना *स.* {सं. पूरण} पूरा करना, पूर्ति करना ; आच्छदित करना, ढकना; भरना; (मनोरथ) सफल या सिद्ध करना; मंगल अवसरों पर आटे, अबीर आदि से देव पूजन के लिए गोल, तिखूँटे और चौकोर क्षेत्र बनाना; बँटना, जैसे लागा पूरना; फूँककर बजाए जानेवाले बाजे में मुँह से हवा भरकर बजाना, जैसे शंख या सिंगी पूरना; *अ.* पूर्ण होना, भर जाना; पूरने का काम होना, पूरा जाना।

पूरब *पुं.* {सं. पूर्व} वह दिशा जिसमें सूर्य निकला है, पूर्व प्राची (ईस्ट); *वि., क्रि. वि.* पूर्ण।

पूरबल *पुं.* {हिं. पूरबला} पुराना समय; पूर्व जन्म।

पूरबला *वि.* {सं. पूर्व + हिं. ला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* पूरबली} प्राचीन काल का, पुराना; पूर्वजन्म का।

पूरबी *वि.* पूर्वी; *स्त्री.* बिहारी बोली का एक प्रकार का दादरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरयितव्य *वि.* {सं.} पूरा करने योग्य।

पूरा *वि.* {सं. पूर्ण} {*स्त्री.* पूरी} जो खाली न हो, भरा हुआ, परिपूर्ण; समूचा, सारा, समस्त; जिसमें कोई बुटि या कोर-कसर न हो, पूर्ण; भर-पूर, यथेष्ट, काफी।

मुहा. पूरा पाना = यथेष्ट या मनमाना फल या सुख पाना।

उदा. कबहुँ न पूरौ पयो–**सूर**।

पूरी पड़ना = आवश्यकताओं की भली भाँति पूर्ति होना, जैसे इन बातों से पूरी नहीं पड़ेगी। पूरी तरह से सम्पादित या सम्पन्न किया हुआ।

मुहा. (कोई काम) पूरा उतरना = अच्छी तरह समाप्त होना, जैसा चाहिए, वैसा होना; *(बात) पूरी उतरना* = ठीक निकलना, सत्य ठहरना; *दिन पूरे करना* = किसी प्रकार समय बिताना; *दिन पूरे होना* = अंतिम समय आना।

तुष्ट, पूर्णकाम।

पूरिका *स्त्री.* {सं.} पूरी, बरा।

पूरित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* पूरिता} पूरा किया हुआ, परिपूर्ण; गुणा किया हुआ, गुणित।

पूरिया *पुं.* {हिं.} षाड़व जाति का एक राग।

पूरी *स्त्री.* {सं. पूलिका} खौलते हुए घी में छानकर बनाया हुआ रोटी की तरह का एक प्रसिद्ध पकवान; मृदंग, तबले, ढोल आदि के मुँह पर मढ़ा हुआ गोल चमड़ा या उस पर लगी हुई गोल काली टिक्की।

पूरुष *पुं.* {सं.} पुरुष, नर, चेतन, आत्मा।

पूर्ण *वि.* {सं.} {*भाव.* पूर्णता} जो सब दृष्टियों से पूरा हो और अपने अस्तित्व, कार्य आदि के लिए किसी की अपेक्षा न रखता हो (एब्सोल्यूट); जिसमें किसी तरह की कमी या अपेक्षा न हो, सब अंगों से युक्त और पूरा (परफेक्ट); जिसकी इच्छा पूरी हो चुकी हो, तृप्त; जो किसी दूसरी चीज से भरा हुआ हो; भर-पूर, यथेष्ट, काफी; समूचा, सारा, सब, समस्त; सिद्ध सफल; (काम) जो पूरा हो चुका हो, समाप्त।

पूर्ण अधिवेशन *पुं.* {सं.} किसी दल या संस्था का वह अधिवेशन जिसमें सभी सदस्य आमन्त्रित हों।

पूर्णकाम *वि.* {सं.} जिसकी सब कामनाएँ या इच्छाएँ पूरी हो चुकी हों।

पूर्णघट *पुं.* {सं.} जल से भरा हुआ घड़ा जो मंगलसूचक माना जाता है और शुभ अवसरों पर भरकर दरवाजे आदि पर रखा जाता है।

पूर्णतः *क्रि. वि.* पूर्णतया।

पूर्णतया *क्रि. वि.* {सं.} पूरी तरह से, पूर्ण रूप से (फुल्ली); जितना हो, उस सब के विचार से।

पूर्णता *स्त्री.* {सं.} सब प्रकार से पूर्ण होने की अवस्था या भाव, पूरापन (परफेक्शन)।

पूर्णमासी *स्त्री.* पूर्णिमा।

पूर्णविराम *पुं.* {सं.} लेखों आदि में वह चिन्ह जो किसी वाक्य की समाप्ति पर उसके अन्त में लगाया जाता है; यह गोल बिन्दी (.) और खड़ी पाई (।) दो रूपों में होता है।

पूर्णाघात *पुं.* {सं.} संगीत का एक ताल।

पूर्णानंद *पुं.* {सं.} परमेश्वर, परब्रह्म।

पूर्णायु *स्त्री.* {सं. पूर्णायुस्} (मनुष्यों के लिए 100 वर्ष की) पूरी आयु; *वि.* सौ वर्ष तक जीनेवाला।

पूर्णावस्था *स्त्री.* {सं.} पूर्णता की प्राप्ति की सूचक अवस्था।

पूर्णाहुति *स्त्री.* {सं.} यज्ञ या होम समाप्त होने पर अंत में दी जानेवाली आहुति; किसी कार्य की समाप्ति के समय होनेवाला अंतिम कृत्य।

पूर्णिका *स्त्री.* {सं.} दोहरी चोंच का पक्षी।

पूर्णिमा *स्त्री.* {सं.} चांद्र मास के शुक्ल पक्ष की अंतिम तिथि, जिसमें चंद्रमा अपनी सब कलाओं से युक्त या पूरा दिखाई देता है।

पूर्णोपमा *स्त्री.* {सं.} उपमा अलंकार का वह प्रकार जिसमें उसके चारों अंग (उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म) वर्तमान रहते हैं।

पूर्ति *स्त्री.* {सं.} पूर्ण या पूरा होने अथवा करने की क्रिया या भाव, पूर्णता, पूरापन; आरंभ किए हुए कार्य की समाप्ति; किसी प्रकार की त्रुटि, अपेक्षा या कमी पूर करने की क्रिया या भाव, जैसे अभाव की पूर्ति, समस्या की पूर्ति; किसी बही, रूपक आदि के कोष्ठकों में आवश्यकता अनुसार कुछ लिखने या खाने भरने की क्रिया या भाव (इन्ट्री); किसी की आवश्यकता पूरी करने के लिए उसे चीजें देना (सप्लाई) गुणा करने की क्रिया, गुणन।

पूर्ती *वि.* {सं.} पूरा करनेवाला।

पूर्भिद्य *पुं.* {सं.} संग्राम, युद्ध।

पूर्व *पुं.* {सं.} वह दिशा जिधर सूर्य का उदय होता है, पश्चिम के सामने की दशा।

वि. जो पहले हुआ या आ चुका हो, पहले का; पहले से होनेवाला (प्रीवियस); प्राचीन, पुराना; पीछे का, पिछला; *क्रि. वि.* पहले, पेश्तर, आगे।

पूर्वक *क्रि. वि.* {सं.} सहित, के साथ, जैसे कृपापूर्वक।

पूर्वकथित *वि.* {सं.} जिसका कथन पहले हो चुका हो।

पूर्वकल्पित *वि.* {सं.} जिसकी कल्पना पहले ही कर ली गई हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वकालिक *वि.* {सं.} पूर्वकाल का, प्राचीन, पुराना; जिसकी उत्पत्ति या रचना पूर्वकाल में हुई हो।

पूर्वकालिक क्रिया *स्त्री.* {सं.} व्याकरण में किसी वाक्य की वह क्रिया, जो समापिका क्रिया से पहले और उस वाक्य के बीच में आती तथा उस क्रिया की समाप्ति की सूचक होती है, जैसे 'उठकर चलना' में 'उठकर' पूर्वकालिक क्रिया है।

पूर्वग्रह *पुं.* {सं.} पहले से किसी के विषय में बना रखी गई धारणा।

पूर्वज *पुं.* {सं.} बड़ा भाई, अग्रज; बाप, दादा, परदादा आदि जो पहले हो गए हों, पूर्वपुरुष, पुरखे (ऐंसेस्टर्स, एसेण्डेंट्स)।

पूस *पुं.* {सं. पौष} अगहन के बाद और माघ के पहले का महीना, पौष।

पृच्छक *वि.* {सं.} पूछनेवाला, प्रश्न करनेवाला; जिज्ञासु।

पृत् *स्त्री.* {सं.} सेना, युद्ध, संग्राम।

पृथक, पृथक् *वि.* {सं.} {*भाव.* पृथक्ता, पार्थक्य} भिन्न, अलग, जुदा; अपने कार्य या पद से हटाया हुआ।

पृथकता *स्त्री.* पृथक्ता।

पृथक्करण *पुं.* {सं.} पृथक् या अलग करने की क्रिया या भाव; किसी को पद या अधिकार से हटाना या अलग करना (रिमूवल)।

पृथक्कारक *वि.* {सं.} अलग करनेवाला।

पृथक्कृत *वि.* {सं.} अलग किया हुआ।

पृथक्ता *स्त्री.* {सं.} पृथक् या अलग होने का भाव, पार्थक्य, अलगाव।

पृथग्न्यास *पुं.* {सं.} {*वि.* पृथग्न्यस्त} अलग करना, लगाना, या रखना; आसपास की परिस्थिति से अलग करना; दो वस्तुओं के बीच में कोई ऐसी वस्तु लगाना जिससे एक के ताप या विद्युत का दूसरी में संचार न होने पाए।

पृथवान *पुं.* {सं.} पृथ्वी, भूमि।

पृथा *स्त्री.* {सं.} पाण्डु की पटरानी का दूसरा नाम।

पृथिवी *स्त्री.* पृथ्वी।

पृथु *वि.* {सं.} {*भाव.* पृथुता} चौड़ा, विस्तृत; विशाल महान; अगणित, असंख्य; चतुर, प्रवीण; कीर्तिशाली, यशस्वी; *पुं.* अग्नि; विष्णु।

पृथुल *वि.* {सं.} {*भाव.* पृथुलता} स्थूल, बड़ा; विशाल; विस्तृत।

पृथ्वी *स्त्री.* {सं.} {*वि.* पार्थिव} सौर जगत् का वह गृह, जिसपर हम सब लोग रहते हैं, अवनि, धरा (अर्थ); मिट्टी, पत्थर आदि का बना पृथ्वी का वह ऊपरी ठोस भाग जिसपर हम सब लोग चलते-फिरते हैं, भूमि, जमीन, धरती (अर्थ); पंचभूतों या तत्वों में से एक, जिसका प्रधान गुण गन्ध है; मिट्टी।

पृथ्वीका *स्त्री.* {सं.} बड़ी इलायची, काला, जीरा।

पृथ्वीगृह *पुं.* {सं.} गहवर, गुफा।

पृथ्वीधर *पुं.* {सं.} पर्वत, पहाड़।

पृष्ट *वि.* {सं.} पूछा हुआ।

पृष्ठ *पुं.* {सं.} पीठ; किसी वस्तु का ऊपरी तल; पीछे का भाग, पीछा (रिवर्स); पुस्तक के पन्ने के एक ओर का तल या भाग, पन्ना (पेज)।

पृष्ठपोषक *पुं.* {सं.} पीठ ठोंकनेवाला; सहायक, मददगार।

पृष्ठभूमि *स्त्री.* {सं.} पिछला भाग; वह भूमि या तल जो किसी वस्तु के पिछले भाग में हो; पहले की वे बातें या परिस्थितियाँ, जिनके आगे या सामने कोई नई विशेष बात या घटना हो और जिनके साथ मिलान करने पर उस बात या घटना का रूप स्पष्ट होता हो; मूर्ति या चित्र में वह सबसे पीछे का भाग, जो अंकित दृश्य या घटना का आश्रय होता है, पृष्ठभूमि; पीछे की ओर का वह स्थान या अवस्था जिसपर जल्दी ध्यान न जाता हो (बैक ग्राउंड; उक्त सभी अर्थों के लिए)।

पृष्ठवंश *पुं.* {सं.} {*वि.* पृष्ठवंशीय} पशुओं और मनुष्यों में पीठ की ओर गरदन से कमर तक छोटी-छोटी हड्डियों की गुरियों की लम्बी शृंखला, मेरुदंड, रीढ़ (स्पाइन)।

पृष्ठिका *स्त्री.* {सं.} पृष्ठभूमि।

पूर्वजन्म *पुं.* {सं. पूर्वजन्मन्} इस जन्म से पहले का जन्म, पिछला जन्म।

पूर्वतर *वि.* {सं.} {*भाव.* पूर्वतरता} पहला; पहले या पूर्व का।

पूर्वदत्त *वि.* {सं.} (शुल्क, कर आदि) जो पहले ही चुका दिया गया हो (प्री-पेड)।

पूर्वदिनांकित *वि.* {सं.} जिसपर पहले की तारीख पड़ी हो।

पूर्वपक्ष *पुं.* {सं.} किसी विषय के संबंध में उठाई हुई चर्चा, प्रश्न या शंका, जिसका किसी को उत्तर देना समाधान करना पड़े; मुद्दई का दावा या अभियोग।

पूर्वपद *पुं.* {सं.} किसी समस्त पद में का पहला शब्द, 'उत्तरपद' का **विपर्यय**, जैसे 'तालपर्ण' में का 'ताल'।

पूर्वपीठिका *स्त्री.* {सं.} आरंभिक स्थिति, भूमिका।

पूर्वपुरुष *पुं.* {सं.} पूर्वज, बाप, दादा, परदादा आदि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वप्रदर्शित *वि.* {सं.} जिसका प्रदर्शन पहले हो चुका हो।

पूर्वप्लावनिक *वि.* {सं.} वैवस्वत मनु अथवा हजरत नूर के समय के प्लावन से पहले का, विशेष 'प्लावन' (एन्टी-डिलूविअल)।

पूर्वरंग *पुं.* {सं.} वह संगीत जो नाटक आरंभ होने से पहले विघ्नों की शान्ति या दर्शकों को सावधान करने के लिए होता है।

पूर्वराग *पुं.* {सं.} साहित्य में किसी के गुण सुनकर या किसी चित्र अथवा स्वयं किसी को देखकर उत्पन्न होनेवाला आरंभिक प्रेम, पूर्वानुराग, प्रथम अनुराग।

पूर्वरूप *पुं.* {सं.} वह रूप जिसमें कोई वस्तु पहले रही हो; किसी वस्तु का वह रूप, जो उस वस्तु के पूर्ण रूप से प्रस्तुत होने के पहले बना हो; साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी के विनष्ट गुण, रूप, वैभव आदि के फिर से आ जाने या प्राप्त होने और उस वस्तु या व्यक्ति के फिर से अपने पुराने रूप में आ जाने का वर्णन होता है।

पूर्ववत्, पूर्ववत् *क्रि. वि.* {सं.} पहले की तरह, जैसे पहले था वैसे ही।

पूर्ववर्तिका *स्त्री.* {सं.} पूर्ववर्ती होने की अवस्था या भाव।

पूर्ववर्ती *वि.* {सं. पूर्ववर्तिन्} पहले का; जो पहले रह चुका हो।

पूर्वव्यापी (पिन्) *वि.* {सं.} जिसकी व्याप्ति पहले से मानी गई हो।

पूर्वा *पुं.* पूर्वाषाढ़ा, पूर्वदिशा।

पूर्वाग्नि *पुं.* {सं.} आवसथ्य, अग्नि।

पूर्वाचल *पुं.* {सं.} उदयाचल।

पूर्वानिल *पुं.* {सं.} पूरब से बहनेवाली वायु।

पूर्वाधिकारी *पुं.* {सं.} वह अधिकारी जो किसी पद पर उसके वर्तमान अधिकारी से पहले रहा हो; सम्पत्ति का वह स्वामी या अधिकारी जो उसके वर्तमान अधिकारी से पहले रहा हो, 'उत्ताधिकारी' का विपर्याय।

पूर्वानुराग *पुं.* **पूर्वराग, पिछला प्यार।**

पूर्वापर *क्रि. वि.* {सं.} आगे-पीछे; *वि.* आगे का और पीछे का, अगला और पिछला।

पूर्वापर्य *वि.* {सं.} पूर्वापर का भाव।

पूर्वाभास *पुं.* {सं.} पहले से होनेवाला किसी घटना का आभास।

पूर्वाभिभाषी *वि.* {सं.} पहले बोलनेवाला।

पूर्वाशी *वि.* {सं.} पहले भोजन करनेवाला।

पूर्वार्द्ध *पुं.* {सं.} आरंभ का आधा भाग, शुरू का आधा हिस्सा।

पूर्वाषाढ़ा *पुं.* {सं.} सत्ताईस नक्षत्रों में से बीसवाँ नक्षत्र, जिसमें चार तारे हैं, वर्षा का आरंभ प्रायः इसी नक्षत्र से माना जाता है।

पूर्वाह्न *पुं.* {सं.} सबेरे से दोपहर तक का समय, दिन का पहला आधा भाग।

पूर्वी *वि.* {सं.} पूर्व दिशा में संबंध रखनेवाला, पूरब का।

पूर्वेद्यु *पुं.* {सं.} प्रातःकाल, सवेरा।

पूर्वोक्त *वि.* {सं.} पहले का कहा हुआ, जिसकी चर्चा पहले की जा चुकी हो।

पूलक *पुं.* {सं.} घास का ढेर।

पूला *पुं.* {सं. पूलक} {अल्पा. पूली} सरपत, मूँज आदि का बँधा हुआ मुट्ठा।

पूलिका *स्त्री.* {सं.} छोटा पूला या मुट्ठा; पुलिंदा, पोटली।

पूष *हिं. पुं.* {सं.} शहतूत का वृक्ष, पौष मास।

पूषा *पुं.* {सं.} हठयोग में दाहिने कान की नाड़ी।

पेंग *स्त्री.* {हिं. पटेंग} झूलने के समय झूले का एक ओर से दूसरी ओर जाना।

मुहा. पेंग मारना = झूला झूलते समय इस प्रकार जोर लगाना कि उसका वेग बढ़ जाए और वह दूर तक झूले।

पेंच *पुं.* पेंच।

पेंडुकी *स्त्री.* पंडुक; गुझिया।

पेंदा *पुं.* {सं. पिंड} {*स्त्री.* अल्पा. पेंदी} किसी वस्तु का वह निचला भाग जिसके आधार पर वह ठहरी रहती है।

पेंशन *स्त्री.* {*अ.*} सेवा-निवृत्ति के उपरांत नियमित रूप से मिलनेवाला मासिक धन।

पेंशनभोगी *पुं.* {*अ.* + सं.} वह जिसे पेंशन मिलती हो।

पेंशनयाफ्ता *पुं.* = पेंशनभोगी।

पेंहटा *पुं.* कचरी।

पेउस *पुं.* पेवस।

पेखक *पुं.* प्रेक्षक।

पेखना *स.* {सं. प्रेक्षण} देखना; *पुं.* देखने की वस्तु, दृश्य; तमाशा।

पेखनि *स्त्री.* {हिं. पेखना} देखने की क्रिया या भाव।

पेग *पुं.* {*अ.*} शराब पीने की एक पाश्चात्य नाप; उक्त मात्रा की शराब।

पेच *पुं.* {फा.} घुमाव, फिराव, लपेट; उलझन, झंझट, बखेड़ा; चालबाजी, धूर्तता; कल, यंत्र; कल या यंत्र का कोई छोटा पुरजा।

मुहा. पेच घुमाना = ऐसी युक्ति करना, जिससे किसी के विचार या कार्य का स्वरूप बदल जाए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रकार की कील या काँटा जिसके अगले नुकीले भाग पर चक्करदार गड़रियाँ बनी होती हैं और जो घुमाकर जड़ा जाता है (स्क्रू); पतंग या गुड्डी लड़ने के समय दो या अधिक पतंगों या गुड्डियों का डोरों का एक दूसरी में फँस जाना; कुश्ती में प्रतिद्वन्द्वी को पछाड़ने की युक्ति या चाल; टोपी पर या पगड़ी में आगे की ओर शोभा के लिए लगाया जानेवाला एक आभूषण, कलगी, सिरपेच।

पेचक[1] *स्त्री.* {फा.} बटे हुए तागे की गोली या गुच्छी।

पेचक[2] *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* पेचिका} उल्लू।

पेचकस *स्त्री.* {फा.} वह औजार जिससे पेंच कसा और निकाला जाता है।

पेचवान *पुं.* {फा.} फरशी या बड़े हुक्के में लगाई जानेवाली बड़ी सटक; बड़ा हुक्का।

पेचिका *स्त्री.* {सं.} मादा उल्लू पक्षी।

पेचिल *पुं.* {सं.} गज, हाथी।

पेचिश *स्त्री.* {फा.} पेट में आँव होने के कारण होनेवाला मरोड़।

पेचीदा *वि.* पेचीला, टेढ़ा।

पेचीला *वि.* {फा. पेच} जिसमें पेच हों, पेचदार; जो टेढ़ा-मेढ़ा या कठिन हो, विकट, मुश्किल।

पेज[1] *स्त्री.* {सं. पेय} रबड़ी, बसौंधी।

पेज[2] *पुं.* {अ.} पुस्तक का पृष्ठ, पन्ना।

पेज[3] *स्त्री.* {?} लज्जा, शरम; प्रतिष्ठा, मर्यादा।

पेट *पुं.* {सं. पेट = थैला} शरीर में छाती के नीचे का वह अंश जिसमें पहुँचकर भोजन पचता है, उदर।

मुहा. अपना पेट काटना = जान बूझकर कम खाना, जिसमें कुछ बचत हो; *(किसी का) पेट काटना* = किसी का मिलनेवाले धन में कमी करना; *पेट का पानी न पचना* = रहा न जाना; *पेट खलाना* = पेट पर हाथ फेरकर भूखे होने का संकेत करना।

उदा. दौ कत द्वार कूकर ज्यों फिरते पेट खलाए–**तुलसी।**

मुहा. पेट चलना = दस्त आना; *पेट जलना* = बहुत भूख लगना; *पेट पालना* = जीवन निर्वाह करना; *पेट फूलना* = कोई काम करने या कोई बात कहने या सुनने के लिए बहुत उत्सुक होना; बहुत हँसने के कारण पेट में हवा-सी भर जाना; पेट में वायु का प्रकोप होना; *पेट मारकर मर जाना* = आत्मघात करना; *पेट में पाँव होना* = अत्यन्त दुष्ट या कपटी होना; *(कोई वस्तु) पेट में होना* = गुप्त रूप से पास में होना; *पेट से पाँव निकलना* = अनुचित काम करना।

गर्भ, हमल।

मुहा. पेट-गिरना = गर्भपात होना; *पेट रहना* = गर्भ रहना; *पेट से होना* = गर्भवती होना।

पद पेट की आग = संतान के प्रति होनेवाला माता का प्रेम या ममता।

अन्त:करण, मन, दिल।

मुहा. पेट में घुसना या बैठना = रहस्य जानने के लिए मेल-जोल बढ़ाना; *पेट में होना* = मन में होना।

पोली वस्तु के बीच का या खाली भाग; गुंजाइश, अवकाश, समाई।

पेटक *पुं.* {सं.} मंजूषा, पेटारा, समूह।

पेटकैयाँ *अव्य.* {हिं.} पेट के बल।

पेटल *वि.* {हिं.} बड़े पेटवाला, तोंदीला।

पेटा *पुं.* {हिं. पेट} किसी पदार्थ के बीच का भाग; किसी चीज के बीच का वह खाली भाग, जो भरा जाने को हो या जिसकी पूर्ति करना आवश्यक हो; ब्यौरा, विवरण; सीमा, हद; घेरा, वृत्त।

पेटाग्नि *स्त्री.* {हिं. पेट + अग्नि} भूख, पेट की आग।

पेटार्थी (र्थी) *वि.* पेटू, भुक्खड़।

पेटिका *स्त्री.* {सं.} संदूक, पेटी; पिटारी।

पेटी *स्त्री.* {सं. पेटिका} छोटा संदूक; छाती और पेड़ू के बीच के पेट का आगे निकला हुआ नीचेवाला भाग; अन्न के दानों का भीतरी भाग, जिसके पुष्ट होने से अन्न अधिक समय तक ठहरता है, जैसे कच्ची (या पक्की) पेटी का गेहूँ; कमर में बाँधने का चौड़ा तसमा, कमरबंद; चपरास (बेल्ट, अंतिम दोनो अर्थों के लिए)।

पेटू *वि.* {हिं. पेट} जिसे सदा पेट भरने या खाने की चिंता रहती हो, भुक्खड़।

पेट्रोल *पुं.* {अ.} मिट्टी के तेल की तरह का एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ, जो ऊर्जा का प्रमुख साधन है।

पेट्रोलियम *पुं.* {अ.} **पेट्रोल सम्बन्धी तेल।**

पेठा *पुं.* {देश.} सफेद कुम्हड़ा।

पेड़ *पुं.* {सं. पिंड} खोए की एक प्रसिद्ध गोलाकार चिपटी मिठाई; गुँधे हुए आटे की लोई जिसे बेलकर रोटी, पूरी आदि बनाते हैं।

पेड़ा *पुं.* {हिं.} खोवे और चीनी से बनी मिठाई, गूँथे हुए आटे की लोई।

पेड़ी *स्त्री.* {हिं. पेड़} पेड़ का तना, धड़, कांड; छोटा पेड़, पौधा; मनुष्य का धड़; पान का पुराना पौधा; ऐसे पौधे के पान; वह कर जो प्रति वृक्ष के हिसाब से लगता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेड़ू पुं. {हिं. पेट} मनुष्य के नाभि के नीचे और मूत्रेन्द्रिय के ऊपर का भाग, उपस्थ; गर्भाशय।

पेत्व पुं. {सं.} अमृत, घी, बकरा।

पेन पुं. {हिं.} लिसोड़े की जाति का पेड़।

पेन्शन *स्त्री.* = पेंशन।

पेन्सिल *स्त्री.* {अ.} एक तरह की कलम जिससे बिना स्याही के लिखा जाता है।

पेन्हाना[1] *स.* पहनाना।

पेन्हाना[2] *अ.* {सं. पयःस्त्रवन} दुहते समय गाय, भैंस आदि के थन में दूध उतरना।

पेम पुं. प्रेम।

पेमचा पुं. {देश.} एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

पेय *वि.* {सं.} पीने के योग्य; पुं. पीने की तरल वस्तु; जल, पानी, दूध।

पेया *स्त्री.* {सं.} चावल के माँड से बनी हुई लप्सी।

पेयूष पुं. {सं.} ब्याई हुई गाय का सात दिनों तक का दूध, पेउस, अमृत।

पेयजल पुं. {सं.} पीने का पानी।

पेरना[1] *स.* {सं. पीड़न्} कोल्हू आदि में डालकर कोई वस्तु इस प्रकार दबाना कि उसका रस या तेल निकल आए, जैसे ऊख या तल पेरना; कष्ट देना, सताना; किसी काम में अधिक देर लगाना।

पेरना[2] *स.* {सं. परिधान} पहनना।

पेरना[3] *स.* {सं. प्रेरण} प्रेरणा करना, चलाना; भेजना।

पेरली *स्त्री.* {हिं.} तांडव नृत्य।

पेरवा पुं. {हिं.} तेली।

पेराई *स्त्री.* {हिं. पेरना} कोई चीज पेरकर उसका तेल, रस निकालने की क्रिया या मजदूरी।

पेरोल पुं. {अ.} कैदी आदि का कुछ समय के लिए इस शर्त पर छोड़ा जाना कि अवधि पूरी होने पर अथवा बीच में आज्ञा मिलते ही वह तुरंत लौटकर जेल में आ जाएगा।

पेल पुं. {सं.} पुरुष का अंडकोष।

पेलना[1] *स.* {सं. पीड़न} दबाकर अंदर घुसाना, धँसाना; धक्का देना, ढकेलना; अवज्ञा करना, न मानना; त्यागना; हटाना, दूर करना; जबरदस्ती करना, बल प्रयोग करना; पेरना।

पेलना[2] *स.* {सं. प्रेरण} किसी पर आक्रमण करने के लिए हाथी, घोड़ा आदि उसके सामने छोड़ना या आगे बढ़ना।

पेलव *वि.* {सं.} मृदु, कोमल, लघु, कृश।

पेला पुं. {सं. पेलना} पेलने की क्रिया भाव; आक्रमण, धावा, चढ़ाई; अपराध, कसूर; झगड़ा।

पेलि *वि.* {सं.} गमनशील, जानेवाला।

पेय पुं. प्रेम।

पेयस पुं. {सं. पीयूष} हाल की ब्याई हुई गाय या भैंस का दूध, जो कुछ पीला होता है और पीने योग्य नहीं होता।

पेश *क्रि. वि.* {फा.} सामने, आगे; पुं. पेशकश।

पेशि *स्त्री.* {सं.} अंडा, अरहर की दाल।

पेशकब्ज *स्त्री.* {फा. पेशक़ब्ज़} एक प्रकार की छोटी तलवार या कटार।

पेशकश पुं. {फा.} भेंट, उपहार।

पेशकार पुं. {फा.} न्यायालय में हाकिम के सामने कागज-पत्र पेश करने या रखनेवाला कर्मचारी।

पेशखाना पुं. {फा.} राजाओं की यात्रा के समय वे खेमे, तम्बू आदि जो एक दिन पहले ही उद्दिष्ट स्थान पर पहुँचकर, उनके निवास के लिए लग जाते हैं।

पेशगी *स्त्री.* {फा.} निश्चित पारिश्रमिक का वह थोड़ा अंश, जो किसी को कोई काम करने के लिए पहले दे दिया जाए अगाऊ।

पेशबंदी *स्त्री.* {फा.} पहले से की हुई बचाव की युक्ति या प्रबंध।

पेशल *वि.* {सं.} कोमल, नाजुक; सुंदर, सुहावना; बहुत अच्छा, उत्तम; दक्ष, चतुर, होशियार।

पेशवा पुं. {सं.} नेता, सरदार; महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मंत्रियों की उपाधि।

पेशवाई *स्त्री.* {हिं. पेशवा + ई (प्रत्य.)} पेशवाओं का शासनकाल; पेशवा का पद या कार्य; अगवानी।

पेशवाज *स्त्री.* {फा. पेशवाज़} नर्तकियों का बड़ा घाघरा, जो वे जो नाचते समय पहनती हैं।

पेशा पुं. {फा. पेशः} {कर्ता पेशेवर} जीविका के लिए किया जानेवाला धंधा, उद्यम, व्यवसाय।

पेशाब पुं. {फा.} मूत्र, मूत।

पेशाबखाना पुं. {फा. पेशाबख़ानः} वह स्थान, जहाँ लोग पेशाब करते हों।

पेशावर पुं. {सं. पुष्पपुर} {*वि.* पेशावरी} उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान का एक प्रसिद्ध नगर; *वि.* पेशेवर।

पेशी[1] *स्त्री.* {फा.} सामने या आगे होने की क्रिया या भाव; न्यायालय अथवा अधिकारी के सामने किसी अभियोग या मुकदमे के पेश होने और सुने जाने की कार्रवाई।

पेशी[2] *स्त्री.* {सं.} शरीर के अंदर मांस की वह मांसल गुल्थी या गाँठ जिससे अंगों का संचालन होता है।

पेशीकोष पुं. {सं.} अंडकोश।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेशेवर पुं. {फा. पेश:वर} वह जो कोई पेशा या व्यवसाय करता हो; *वि. स्त्री.* व्यभिचार के द्वारा अपनी जीविका चलानेवाली।

पेश्तर *क्रि. वि.* {फा.} पहले, पूर्व।

पेषण पुं. {सं.} पीसना।

पेषणी *स्त्री.* {सं.} मसाले आदि पीसने की सिल।

पेषणीय *वि.* {सं.} पीसने योग्य।

पेस *क्रि. वि., पुं.* पेश।

पेसना *स.* {सं. पेषण} कोई छोटी चीज किसी बड़ी चीज के अंदर धँसाना या घुसाना।

पेहँटा *स्त्री.* {हिं.} कचरी नामक लता का फल।

पैं *क्रि. वि.* {हिं. पहँ} पास (व्रज)।

पैंग *स्त्री.* पेंग।

पैंजनी *स्त्री.* {हिं. पायँ + अनु. झनझन} पैरों में पहनने का झनझन बजनेवाला एक गहना, झाँझर।

पैंठ *स्त्री.* {सं. पण्य स्थान} हाट, बाजार; दुकान।

पैंड़ा पुं. {हिं. पैंड़} रास्ता, मार्ग; अनुकरण करना, घुड़सार, अस्तबल।

पैंत[1] *स्त्री.* {सं. पणकृत} दाँव, बाजी।

पैंत[2] *वि.* {देश.} सात (संख्या) (दलाल)।

पैंतरा पुं. {सं. पदांतर} वार करने या लड़ने के समय पैर जमाकर खड़े होने की मुद्रा या ढंग; चालाकी से भरी हुई चाल या युक्ति।

पैंती *स्त्री.* {हिं.} श्राद्धादि कर्म करते समय अँगुलियों में पहनने का कुश का बना छल्ला पवित्री।

पै[1] *योज., क्रि. वि.* {सं. पर} परंतु, लेकिन; अवश्य, जरूर; पीछे, बाद।

पै[2] *क्रि. वि.* {हिं. पहँ} पास, समीप, निकट; प्रति; ओर, तरफ; ही।

पै[3] *प्रत्य.* {सं. उपरि} पर, ऊपर, जैसे कापै = किस पर; द्वारा; से, (बुन्देल.)।

उदा. बिदा ह्वै चले राम पै शत्रुहंता—**केशव**।

पै[4] *स्त्री.* {सं. आपत्ति} दोष, त्रुटि, ऐब।

पै[5] *स्त्री.* पय।

पै[6] *स्त्री.* घोड़ानस।

पैकर पुं. {हिं.} कपास, रुई इकट्ठी करनेवाला।

पैकरमा *स्त्री.* परिक्रमा।

पैकरी *स्त्री.* {हिं.} पाँव में पहननेवाला गहना।

पैका पुं. {हिं.} पैसा।

पैकी पुं. {हिं.} मेले आदि में घूम-घूमकर तमाखू पिलानेवाला।

पैकार पुं. {फा.} घूम-घूमकर फुटकर सौदा बेचनेवाला छोटा व्यापारी।

पैकिंग *स्त्री.* {अ.} किसी चीज को कहीं भेजने या ले जाने के समय बक्स आदि के अंदर अथवा कागज या कपड़े आदि में अच्छी तरह मजबूती और हिफाजत से बाँधने की क्रिया या भाव।

पैगंबर पुं. {फा. पैग़म्बर} {*वि.* पैगंबरी} वह धर्माचार्य जो ईश्वर का संदेश लेकर मनुष्यों के पास आनेवाला माना जाता हो, देवदूत जैसे ईसा, मुहम्मद, मूसा आदि (प्रॉफेट)।

पैग पुं. = पग, कदम।

पैगाम पुं. {फा. पैग़ाम} किसी द्वारा विशेषत: जबानी कहलाया हुआ संदेश।

पैज *स्त्री.* {सं. प्रतिज्ञा} प्रतिज्ञा, प्रण, टेक।

मुहा. पैज सरना = प्रतिज्ञा पूरी होना।

उदा. वाकी पैज सरे—**सूर**।

पैजार *स्त्री.* {फा. पैज़ार} जूता, जोड़ा।

पैठ *स्त्री.* {सं. प्रविष्ट} पैठने या घूसने की क्रिया-भाव, प्रवेश, दखल; गति, पहुँच।

पैठना *अ.* {हिं. पैठ} {सं. पैठाना, *भाव.* पैठ} प्रविष्ट होना, प्रवेश करना।

पैठाना *स.* {हिं. पैठना या *स.*} किसी को पैठने या प्रविष्ट होने में प्रवृत्त करना, घुसाना।

पैठार पुं. {हिं. पैठ + आर (प्रत्य.)} पैठ, प्रवेश; फाटक, दरवाजा।

पैठारी *स्त्री.* पैठ।

पैड पुं. {अ.} सोख्ते या स्याहीसोख कागज की गद्दी; कोई छोटी मुलायम गद्दी, जैसे इंकपैड; छोटे कागजों की गड्डी।

पैड़ी *स्त्री.* {हिं. पैर} सीढ़ी।

पैतला *वि.* {हिं.} छिछला, कम गहरा।

पैतरा पुं. पैंतरा।

पैताना पुं. पायँता।

पैतृक *वि.* {सं.} पिता-संबंधी; बाप-दादा के समय से चला आया हुआ, पुश्तैनी, पुरखों का, जैसे पैतृक सम्पत्ति (ऐंसेस्ट्रल)।

पैत्रिक *वि.* पैतृक।

पैदल *वि.* {सं. पदाति} पैरों से चलकर कहीं जानेवाला; *क्रि. वि.* पाँव-पाँव, पैरों से; पुं. बिना किसी सवारी के पैरों से चलने की क्रिया; वह सिपाही जिसके पास घोड़ा या और कोई सवारी न हो और जो पैरों से चलकर कहीं जाता हो, पदाति; शतरंज का 'प्यादा' नाम को मोहरा।

पैदा *वि.* {फा.} उत्पन्न, जमा हुआ, प्रसूत; प्रकट, आविर्भूत, घटित; कमाया हुआ, अर्जित; *स्त्री.* आय, आमदनी; लाभ।

पैदाइश *स्त्री.* {फा.} उत्पत्ति, जन्म।

पैदाइशी *वि.* {फा.} जन्मकाल से ही होनेवाला; स्वाभाविक, प्राकृतिक।

पैदावार *स्त्री.* {फा.} अन्न आदि जो खेतों में उपजा हो, उपज, फलत।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैदावारी *स्त्री.* = पैदावार।
पैन *पुं.* {हिं.} छोटा नाला, नाली, परनाली।
पैना *वि.* {सं. पैण} {*स्त्री.* पैनी} पतली और चोखी धारवाला; नुकीला।
पैनाक *वि.* {सं.} पिनाक-संबंधी।
पैनाना *स.* {हिं. पैना} पैना बनाना या करना।
पैनी *स्त्री.* {सं. पैण} लोहे की पतली कील जो साँटे या पैने में लगी रहती है, आर, अनी।
पैमक *स्त्री.* {हिं.} कलाबत्तू की बनी हुई एक तरह की सुनहरी गोट।
पैमाइश *स्त्री.* {फा.} किसी चीज की लंबाई, चौड़ाई आदि नापने की क्रिया या भाव, नाप (मेजरमेंट); जमीनों की लंबाई-चौड़ाई जानने के लिए होनेवाली नाप-जोख (सर्वे)।
पैमाना *पुं.* {फा. पैमानः} वह चीज जिससे कुछ नापा जाए; वह पात्र जिससे कुछ नापा जाए; मद्य पीने का पात्र।
पैमाल *वि.* पमाल।
पैयाँ *स्त्री.* {हिं. पायँ} पाँव, पैर; *क्रि. वि.* पैरों के सहारे (चलना)।
पैर *पुं.* {सं. पद} वह अंग जिससे प्राणी खड़े होते और चलते-फिरते हैं, पाँव, पग।
मुहा. पैर उखड़ जाना = लड़ाई या मुकाबले में ठहरने की शक्ति या साहस न रह जाना; *पैर उठाना* = चलने के लिए कदम बढ़ाना; जल्दी-जल्दी पैर आगे रखना; *पैर छूना* = बड़ों का आदर करने के लिए उनके पैरों पर हाथ रखना, चरण स्पर्श करना; दीनतापूर्वक विनय करना; *पैर जमना* = स्थिर भाव से खड़ा होना; दृढ़ रहना, हटने या विचलित होने की अवस्था न आना; *पैर तोड़ना* = बहुत चलकर पैर थकाना; बहुत दौड़-धूप करना; *पैर तोड़कर बैठना* = कहीं न जाना, एक ही जगह रहना; हारकर बैठना; बुरे रास्ते पर पैर रखना या धरना = बुरे काम में प्रवृत्त होना; *पैर पकड़ना* = विनती करके किसी को कहीं जाने से रोकना; पैर छूना; दीनता से विनय करना; *पैरों पड़ना* = पैरों पर गिरना, साष्टांग दंडवत करना; अत्यन्त दीनता से विनय करना; *पैरों पर गिरना या पड़ना* = दंडवत् या प्रणाम करना; दीनतापूर्वक विनय करना; *पैर पसारना या फैलाना* = आराम से लेटना या सोना; आडंबर, खड़ा करना, ठाट-बाट करना; पाँव फैलाना; *पैरों चलना* = पैदल चलना; *पैर पूजना* = बहुत आदर-सत्कार करना या पूज्य मानना; *फूँककर पैर रखना* = बहुत सँभलकर कोई काम करना, बहुत सावधानी रखना; *पैर बढ़ाना* = चलने में पैर आगे रखना; सीमा से आगे बढ़ना, अतिक्रमण करना; *पैर भर जाना* = चलने की थकावट से पैर में बोझ-सा मालूम होना; *पैर भारी होना* = गर्भ रहना, हमल होना; *पैर में (या से) पैर बाँधकर रखना* = सदा अपने पास रखना, अलग न होने देना; *पैर सो जाना* = रक्त संचार रुकने से पैर सुन्न हो जाना; *(किसी के) पैर न होना* = ठहरने की शक्ति या साहस न होना, दृढ़ता न होना; *धरती पर पैर न रखना* = बहुत घमंड करना; फूले अंग न समाना; (शेष मुहा. के लिए 'टाँग' और 'पाँव' के मुहावरे)।
धूल आदि पर पड़े हुए पैरों के चिन्ह।
पैरना *अ.* {हिं. पैर} चलना, गमन करना।
पैरवी *स्त्री.* {फा.} किसी के पीछे चलना, अनुगमन; मुकदमे आदि में अपने पक्ष में समर्थन आदि के लिए की जानेवाली कार्रवाई; प्रयत्न, कोशिश।
पैरवीकार *पुं.* {फा.} पैरवी करनेवाला।
पैरा *पुं.* {हिं.} पड़े हुए चरण, पैर में पहने का कड़ा, बाट।
पैराई *स्त्री.* {हिं.} तैरने की क्रिया-कला।
पैराउ (ऊ) *पुं.* पैराव।
पैराक *पुं.* {हिं. पैरना} = तैराक।
पैराव *पुं.* {हिं. पैरना} उतना पानी, जितना चलकर नहीं, बल्कि तैरकर ही पार कर सकें।
पैराशूट *पुं.* छतरी; पौड़ी।
पैरी *स्त्री.* पीढ़ी; पैड़ी।
पैरोकार *पुं.* पैरवीकार।
पैलगी *स्त्री.* {हिं.} पालागन, प्रणाम।
पैला *पुं.* {हिं.} अन्न नापने की डलिया।
पैवंद *पुं.* {फा.} {*वि.* पैवंदी} कपड़े आदि का छेद बंद करने के लिए लगाया जानेवाला छोटा टुकड़ा, चकती, थिगली, जोड़; किसी पेड़ की वह टहनी, जो काटकर उसी जाति के दूसरे पेड़ की टहनी में बाँधी जाती है (उससे फल बढ़ते या स्वादिष्ट होते हैं)।
पैवंदी *वि.* {फा. पैवंद} जिसमें पैवंद या जोड़ लगा हो; (वृक्ष) जो पैबंद या कलम लगाकर तैयार किया गया हो ('बीजू' से भिन्न)।
पैवस्त *वि.* {फा. पैवस्तः} (द्रव पदार्थ) जो किसी के अंदर पहुँचकर सब जगह फैल या समा गया हो, समाया हुआ।
पैविलियन *स्त्री.* {*अ.*} खेल के मैदान की दर्शक-दीर्घा।
पैशाचिक *वि.* {सं.} पिशाचों का, राक्षसी; घोर और बीभत्स।
पैशुन्य *पुं.* {सं.} पिशुनता, चुगलखोरी।
पैसना *अ.* = पैठना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैसा पुं. {सं. पाद या पणांश} ताँबे का एक प्रसिद्ध सिक्का, जो एक आने का चौथा भाग होता था; निकिल का सिक्का जो रुपए का 100वाँ भाग होता है; धन।

पैसार पुं. {हिं. पैसाना} पैठ, प्रवेश।

पैसारना स. = पैठाना।

पैसेवाला पुं. {हिं.} धनी, धनवान।

पैहरा पुं. {हिं.} पकार, बनिया।

पैहारी वि. {सं. पयस् + आहारी} केवल दूध पीकर रहनेवाला (साधु)।

पों स्त्री. {हिं.} अधोवायु निकलने का शब्द।

पोंकना क्रि. अ. {हिं.} बहुत डरना, पतला शौच।

पोंगा वि. {अनु.} नासमझ, मूर्ख।

पोंछ स्त्री. {हिं.} पूँछ।

पोंछन स्त्री. {हिं. पोंछना} किसी पात्र या आधार में लगी हुई वस्तु का बचा हुआ अंश, जो पोंछने से ही निकले।

पद पेट की पोंछन = स्त्री की अंतिम संतान, जिसके बाद उसे फिर कोई संतान न हुई हो।

पोंछना पुं. {स्त्री. पोंछनी} पोंछने का कपड़ा।

पोंआना क्रि. अ. {हिं.} पोने का काम दूसरे से कराना।

पोइया स्त्री. {फा. पोय:} घोड़े की वह चाल, जिसमें वह दो पैर साथ उठाकर दौड़ता है, सरपट चाल।

पोइस स्त्री. {फा. पोय:, हिं. पोइया} सरपट दौड़; दृढ़ता और अध्यवसायपूर्वक चलते हुए आगे बढ़ना।

पोई स्त्री. {फा. पोदकी} एक बरसाती लता जिसकी पत्तियों का साग और पकौड़ियाँ बनती हैं।

पोखना स. पोसना।

पोखरा पुं. {सं. पुष्कर} {स्त्री. पुष्कर} {स्त्री. अल्पा. पोखरी} जमीन में बहुत बड़ा गड्ढा खोदकर बनाया हुआ जलाशय, तालाब; पाखाना।

पोगंड पुं. पौगंड, पाँच वर्ष से दस वर्ष तक का छोटा बच्चा।

पोच वि. {फा.} तुच्छ, क्षुद्र; हीन, निकृष्ट; बुरा, खराब; अशक्त, निर्बल।

पोची स्त्री. {हिं.} निचाई, हेठी, बुराई।

पोट स्त्री. {सं. पोट = ढेर} चीजों की वह गठरी या पोटली, जो चारों ओर से कपड़े, टाट, कागज आदि से बँधी हो, जैसे पोट डाक (पारसल); बहुत-सी चीजों का अटाला, राशि, ढेर; लहसुन की गाँठ।

पोटना स. {हिं. पेट} समेटना, बटोरना; फुसलाना, बहलाना।

पोटली स्त्री. {हिं. पोट} कपड़े का वह छोटा टुकड़ा जिसमें कोई चीज बँधी हो, छोटी गठरी, जैसे रत्नों की पोटली, औषध या ओषधि की पोटली।

पोटा¹ पुं. {सं. पुट = थैली} {स्त्री. अल्पा. पोटी} पेट की थैली; सामर्थ्य, शक्ति; समाई, औकात; आँख की ऊपरी पलक, पपोटा; उँगली का सिरा।

पोटा² पुं. {सं. पोत} चिड़िया का बच्चा।

पोटी स्त्री. {हिं. पोटा} कलेजा।

पोढ़ा वि. {सं. प्रौढ़} {स्त्री. पोढ़ी, क्रि. पोढ़ाना, भाव. पोढ़ापन} पुष्ट, मजबूत; कड़ा, कठोर; दृढ़, पक्का।

पोत¹ पुं. {सं. पोत:} पशु या पक्षी का छोटा बच्चा।

उदा. चित-चातक को पोती—**तुलसी।**

कपड़ा, वस्त्र; एक प्रकार का बूटीदार रेशमी कपड़ा; सूतों के मोटे या पतले होने के विचार से कपड़े की गफ या झीनी बुनावट; बड़ी नाव; जहाज।

पोत² स्त्री. {सं. प्रोता} माला में का छोटा-दाना; काँच की छोटी गुरिया।

पोत³ पुं. {सं. प्रवृत्ति} ढंग, ढब।

उदा. नीच हियैं हुलसे रहैं, गहे गेंद के पोत—**बिहारी।**

बारी, पारी।

पोत⁴ पुं. {फा. फ़ोत:} जमीन का लगान।

पोत⁵ पुं. {हिं. पोतना} पोतने की क्रिया या भाव, पुताई।

पोतक पुं. {सं.} किसी प्राणी या जीव का छोटा बच्चा।

पोतकी स्त्री. {सं.} पोई नाम की लता।

पोतड़ा पुं. {हिं. पोतना} छोटे बच्चे के नीचे बिछाने का कपड़े का टुकड़ा।

पोतदार पुं. {हिं. पोत + दार} खजानची; खजाने में रुपया परखनेवाला।

पोतधारी पुं. {सं.} जहाज का अध्यक्ष।

पोतन वि. {सं.} स्वच्छ, पवित्र।

पोतना स. {सं. पोतन = पवित्र} गीली वस्तु की तह चढ़ाना; कोई घोल किसी वस्तु पर इस प्रकार लगाना कि वह उस पर बैठ या जम जाए; पुं. वह कपड़ा जिससे कोई गीली चीज पोती या लगाई जाए, पोता।

पोत-परिवहन पुं. {सं.} पोतों द्वारा माल ढोने का कार्य।

पोतवाह पुं. {सं.} मल्लाह, झाँसी।

पोता¹ पुं. {सं. पौत्र} बेटे का बेटा, पौत्र।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोता² *पुं.* {फा. फोत:} पोत, लगान, भूमिकर; अंडकोष।

पोता³ *पुं.* {हिं. पोतना} गीली चीज पोतने का कपड़ा, पोतना; वह घोल जो किसी वस्तु पर पोता जाए; मिट्टी का वह लेप जो धातु के बरतनों को आग पर चढ़ाने के पहले उनके नीचे लगाया जाता है।

पोताई *स्त्री.* पुताई।

पोती¹ *स्त्री.* {हिं. पोता} पुत्र की पुत्री।

पोती² *स्त्री.* {हिं. पोतना} पोतने की क्रिया या भाव, पुताई।

पोथा *पुं.* {हिं. पोथी} बड़ी पोथी, पुस्तक या लिखे हुए कागजों का समूह।

पोथी *स्त्री.* {सं. पुस्तिका} पुस्तक, किताब।

पोदना *पुं.* {हिं.} नाटा या ठेंगा आदमी, छोटी चिड़िया।

पोद्दार *पुं.* पोतदार।

पोना *स.* {हिं. पूआ + ना (प्रत्य.)} गीले आटे की लोई उँगलियों से दबाकर रोटी के रूप में बढ़ाना; (रोटी) पकाना; *स.* पिरोना।

पोप *पुं.* {अ.} ईसाई धर्म का सबसे बड़ा प्रधान या आचार्य।

पोपला *वि.* {हिं. पुलपुला} {क्रि. पोपलाना} जिसमें दाँत न हों; जिसके मुँह में दाँत न हों; पोला।

पोप-लीला *स्त्री.* {अ. पोप + सं. लीला} पोपों और पुरोहितों की सीधे और धर्मनिष्ठ लोगों को अपने जाल में फँसानेवाली बातें या कार्य।

पोया *पुं.* {सं. पोतक} छोटा नरम पौधा; बहुत छोटा बच्चा, जैसे चिड़िया या साँप का।

पोर *स्त्री.* {सं. पर्व} उँगली की गाँठ या जोड़ जहाँ से वह झुकती या मुड़ती है; उँगली में दो गाँठों के बीच का अंश; ईख, बाँस आदि की दो गाँठों के बीच का भाग; जुए में किसी के जिम्मे बाकी पड़नेवाली रकम।

पोरा *स्त्री.* {हिं.} लकड़ी का गोल कुंदा; कुंदे की तरह मोटा मनुष्य।

पोरी *स्त्री.* {हिं.} कड़ी मिट्टी।

पोल¹ *स्त्री.* {हिं. पोला} खाली जगह; अवकाश, पोलापन; बाहरी आडंबर के अंदर की सारहीनता। *मुहा. (किसी की) पोल खुलना* = भीतरी दशा का प्रकट होना, भंडा फूटना।

पोल² *स्त्री.* {सं. प्रतोली} फाटक; आँगन।

पोला *वि.* {हिं. पोल} {*स्त्री.* पोली} जिसके अंदर का भाग खाली हो; जो कड़ा या ठोस न हो, खोखला; निस्सार, तत्वहीन।

पोलाद *पुं.* {हिं.} पक्का लोहा।

पोलिया *पुं.* पौरिया।

पोलो *पुं.* {अं.} घोड़े पर चढ़कर खेला जानेवाला चौगान (खेल)।

पोश *पुं.* {फा.} वह जिससे कोई चीज ढकी जाए, जैसे मेजपोश, तख्तपोश; सामने से हटाने का संकेत, जिसका अर्थ है—बचो, हट जाओ; *वि.* पहननेवाला, जैसे सफेदपोश।

पोशाक *स्त्री.* {फा.} पहनने के सब कपड़े, परिधान।

पोशीदा *वि.* {फा.} छिपा हुआ, गुप्त।

पोष *पुं.* {सं.} पालन-पोषण, वृद्धि।

पोषक *वि.* {सं.} पोषण करनेवाला; बढ़ानेवाला, वर्धक; पुष्टि, समर्थन या सहायता करनेवाला।

पोषक (तत्त्व) *पुं.* {सं.} प्राय: खाद्य पदार्थों में बहुत ही सूक्ष्म मात्रा में पाया जानेवाला एक प्रकार का नव-आविष्कृत तत्व, जो शरीर के अंगों की वृद्धि, स्वास्थ्य-रक्षा आदि के लिए आवश्यक और उपयोगी माना जाता है, इसके बहुत भेद होते हैं। (विटामिन)

पोषण *पुं.* {सं.} {*वि.* पोषित, पुष्ट, पोषणीय, पोष्य} किसी वस्तु में आवश्यक उपयोगी तत्व पहुँचाकर उसे पुष्ट करना, बनाए रखना या बढ़ाना; ऐसा काम करना या ऐसी सहायता देना जिससे कोई सुखपूर्वक जीवन बिता सके, पालना (मेंटेनेंस); बढ़ाना, वर्धन; समर्थन आदि के द्वारा ठीक ठहराना या पक्का करना, जैसे किसी के मन का पोषण करना।

पोषणवृत्ति *स्त्री.* {सं.} वह वृत्ति, जो किसी को भरण-पोषण या जीविका के लिए दी जाती हो (मेंटेनेंस एलाउंस)।

पोषिका *स्त्री.* {सं.} गले के अंदर की वह नली, जिससे भोजन पेट तक पहुँचता है।

पोषित *वि.* {सं.} पाला हुआ।

पोष्य *वि.* {सं.} पाले जाने के योग्य, पालनीय; पाला हुआ, जैसे पोष्यपुत्र।

पोष्यपुत्र *पुं.* {सं.} पुत्र की तरह पाला हुआ लड़का; दत्तक।

पोस *पुं.* {सं. पोषण} पालनेवाले के प्रति होनेवाला प्रेम और कृतज्ञता।

पोसन *पुं.* {हिं.} रक्षा, पालन।

पोसना *पुं.* {सं. पोषण} पालन या रक्षा करना; अपने पास अपनी रक्षा में रखना; स. पोंछना।

पोस्टर *पुं.* {अ.} दीवारों पर लगाने का विज्ञापन।

पोस्टेज *पुं.* {अ.} डाक-व्यय।

पोस्त *पुं.* {फा.} छिलका, बकला; खाल, चमड़ा; अफीम का पौधा; अफीम के पौधे का डोडा, पोस्ता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोस्ता पुं. {फा. पोस्त} एक प्रकार का पौधा, जिसके डोडों से अफीम तैयार की जाती है।

पोस्ती पुं. {फा.} नशे के लिए पोस्ते के डोड़े पीसकर पीनेवाला।

पोस्तीन पुं. {फा.} समूर आदि पशुओं की खाल का बना हुआ एक गरम पहनावा; ऐसी खाल का बना हुआ कोट या कुरता; पुस्तक की जिल्द के भीतरी भाग पर चिपकाया जानेवाला कागज़।

पोहना *स.* {सं. प्रोत} पिरोना, गूँथना; छेदना; पोतना; जड़ना; पीसना; पोना।

पोहर पुं. {हिं.} पशुओं के चरने का स्थान।

पोहा पुं. {हिं.} पशु, चौपाया।

पोहमी *स्त्री.* = पृथ्वी।

पौंचा पुं. {सं. पौंड्रक} एक प्रकार का गन्ना।

पौ[1] *स्त्री.* {सं. प्रभा, प्रा. पव, पउ} प्रातःकाल के सूर्य के प्रकाश की रेखा या मद्धिम ज्योति।
मुहा. पौ फटना = दिन निकलने लगना।

पौ[2] पुं. {सं. पाद} पैर; जड़।

पौ[3] *स्त्री.* {सं. पाद} पासे के खेल में दाँव।
मुहा. पौ बारह होना = जीत, सफलता या लाभ का योग आना।

पौ[4] *स्त्री.* {सं. प्रपा} वह स्थान जहाँ जन-साधारण को पानी पिलाया जाता है, पौसरा।

पौआ पुं. {हिं. पाव} सेर का चौथाई भाग, पाव; इस तौल या मान का बटखरा या बरतन।

पौगंड पुं. {सं.} बालक की पाँच वर्ष से दस वर्ष तक की अवस्था; *वि.* पाँच से दस वर्ष तक की अवस्थावाला बच्चा।

पौड़ना *अ.* तैरना।

पौढ़ना *अ.* {सं. प्रलोठन} लेटना।

पौढ़ाना *क्रि. स.* {हिं.} इधर से उधर लिटाना या हिलाना।

पौतिक *वि.* {सं.} पूति-संबंधी।

पौत्र पुं. {सं.} {*स्त्री.* पौत्री} लड़के का लड़का, पोता।

पौद *स्त्री.* {सं. पोत} वह छोटा पौधा, जो एक जगह से हटाकर दूसरी जगह लगाया जा सके; उपज, पैदावार।
स्त्री. पाँवड़ा।

पौधन *स्त्री.* {हिं.} वह पात्र जिसमें खाना रखकर परोसा जाता है।

पौधा पुं. {सं. पोत} उगनेवाले वृक्ष का आरम्भिक रूप, नया और छोटा पेड़; क्षुप, छोटे आकार का वृक्ष।

पौनःपुनिक *वि.* {सं.} पुनःपुनः या बार-बार होनेवाला।

पौनःपुन्य पुं. {सं.} बार-बार होते रहने की अवस्था या भाव।

पौन[1] *उभय.* {सं. पवन} हवा; प्राणवायु; प्रेत, भूत।

पौन[2] *वि.* {सं. पाद + ऊन} एक में से चौथाई, कम, तीन चौथाई।

पौनरुक्त पुं. {सं.} बार-बार कहना।

पौना[1] पुं. {सं. पाद + ऊन} पौन का पहाड़ा।

पौना[2] पुं. {हिं. पोना} {अल्पा. पौनी} एक प्रकार की कलछी।

पौनार (री) *स्त्री.* = पद्मनाल।

पौनी[1] *स्त्री.* {हिं. पावना} नाई, धोबी आदि जो मंगल अवसरों पर नेग पाते हैं।

पौनी[2] *स्त्री.* {हिं. पौना} छोटा, पोना, कलछी।

पौने *वि.* {हिं. पौन} (संख्या के विचार से) तीन चौथाई, जैसे पौने चार।

पौमान पुं. {हिं.} जलाशय, पोखरा।

पौर *वि.* {सं.} पुर या नगर-संबंधी, नगर का; *स्त्री.* पौरी।

पौरक पुं. {सं.} घर के बाहर का बगीचा।

पौरजन पुं. {सं.} नगर-निवासी, नागरिक।

पौरजानपद पुं. {सं.} प्राचीन भारतीय राज्यतंत्र में पुर या नगर और जनपद या बाकी देश के प्रतिनिधियों की सभाओं का सम्मिलित रूप (प्रायः पौर और जनपद अलग ही काम करते थे; पर कुछ विशिष्ट अवसरों पर दोनों के सम्मिलित अधिवेशन भी होते थे। इन दोनों का वही सम्मिलित रूप पौरजनपद कहलाता है)।

पौरत्व पुं. नागरिकता।

पौरव पुं. {सं.} पुरु का वंशज।

पौरवी *स्त्री.* {सं.} युधिष्ठिर की अन्य स्त्री।

पौरस्त्री *स्त्री.* {सं.} अंतःपुर में रहनेवाली स्त्री।

पौरवृद्ध पुं. {सं.} किसी पुर या नगर के वे बड़े और प्रधान प्रतिनिधि आदि, जो प्राचीन भारतीय राज्यतंत्र में नगर की व्यवस्था से संबंध रखनेवाले कुछ विशिष्ट कार्य करते थे।

पौरा पुं. {हिं. पैर} (शुभ, अशुभ आदि के विचार से) किसी का आगमन, जैसे बहू का पौरा अच्छा है।

पौराणिक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* पौराणिकी} पुराण-संबंधी; पुराना, प्राचीन; पुं. पुराण का ज्ञाता; लोगों को पुराणों की कथा सुनानेवाला, व्यास।

पौरातनिक *वि.* {सं.} पुरातन, प्राचीन।

पौरिया पुं. {हिं. पौरी} दरवाजे पर पहरा देनेवाला, द्वारपाल; मंगल अवसरों पर द्वार पर बैठकर मंगलगीत गानेवाला याचक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौरी¹ *स्त्री.* {सं. प्रतोली} ड्योढ़ी, सीढ़ी, खड़ाऊँ।

पौरी² *स्त्री.* {हिं. पैर} सीढ़ी; सीढ़ी का डंडा।

पौरुख *पुं.* = पौरुष।

पौरुष *पुं.* {सं.} 'पुरुष' का भाव, पुरुषत्व; पुरुषों के योग्य या उपयुक्त काम, पुरुषार्थ; पराक्रम, साहस; उद्योग, उद्यम।

पौरुषिक *वि.* {सं.} पुरुष-संबंधी।

पौरुषेय *पुं.* {सं.} पुरुष-संबंधी; आदमी का किया या बनाया हुआ।

पौरोहित्य *पुं.* {सं.} 'पुरोहित' का भाव, पुरोहिताई; पुरोहितों का वर्ग या समाज (प्रीस्टहुड)।

पौर्णमासी *स्त्री.* {सं.} पूर्णिमा (तिथि)।

पौर्वदेहिक *वि.* {सं.} पूर्वजन्म-संबंधी।

पौर्वात्य *वि.* {सं.} पूर्वीय या एशिया महाद्वीप के देशों से संबंध रखनेवाला, प्राच्य, 'पाश्चात्य' का विपर्याय (ओरिएण्टल)।

पौर्वापर्य *पुं.* {सं.} 'पूर्वापार' का भाव, आगे-पीछे होने की क्रिया या भाव।

पौल *स्त्री.* {सं. प्रतोली} नगर या दुर्ग का बड़ा फाटक।

पौलना *पुं.* {?} काटना।

पौलि *स्त्री.* {हिं.} फुलका, रोटी।

पौलिया *पुं.* पौरिया।

पौली *स्त्री.* {सं. प्रतोली} ड्योढ़ी।

पौलोमी *स्त्री.* {सं.} इन्द्राणी, भृगु ऋषि की पत्नी का नाम।

पौवा *पुं.* {हिं.} एक सेर का चौथाई अंश, पाव-भर दूध।

पौष *पुं.* {सं.} अगहन के बाद और माघ के पहले का महीना, पूस।

पौष्टिक *वि.* {सं.} पुष्ट करनेवाला; बल या वीर्य बढ़ानेवाला।

पौष्कल्य *पुं.* {सं.} संपूर्णता।

पौष्प *वि.* {सं.} पुष्प-संबंधी।

पौसरा (ला) *पुं.* {सं. पयःशाला} वह स्थान, जहाँ सर्वसाधारण को पानी पिलाया जाता है, सबील।

पौहारी *पुं.* {सं. पयस् = दूध + आहार} अन्न छोड़कर और केवल दूध पीकर रहनेवाला।

प्याऊ *पुं.* पौसरा।

प्याज *पुं.* {फा. प्याज़} एक प्रसिद्ध कन्द जिसकी उग्र गन्ध अप्रिय होती है।

प्याजी *वि.* {फा. प्याज़ी} पैदल सिपाही, दूत, हरकारा; शतरंज का एक मोहरा या गोटी जो सबसे छोटी मानी जाती है, प्यादा।

प्यार *पुं.* {सं. प्रिय} मुहब्बत, प्रेम।

प्यारा *वि.* {सं. प्रिय} {*स्त्री.* प्यारी} जिसे प्यार किया जाए, प्रेमपात्र, प्रिय; भला मालूम होनेवाला।

प्याला *पुं.* {फा. पियाल:} {*स्त्री.* अल्पा. प्याली} छोटा कटोरा; तोप, बंदूक आदि में वह जगह जिसमें रंजक भरी जाती है।

प्यावना *स.* = पिलाना।

प्यास *स्त्री.* {सं. पिपासा} जल पीने की प्रवृत्ति या इच्छा, तृषा, पिपासा; प्रबल वासना या कामना।

प्यासा *वि.* {हिं. प्यास} जिसे प्यास लगी हो, तृषित।

प्यूनी *स्त्री.* पूनी।

प्योंदा¹ *पुं.* {फा. पैवंद} वृक्षों आदि को काटकर लगाई जानेवाली कलम, पैवंद; थिगली।

प्योंदा² *वि.* {*स्त्री.* प्योदी} (वृक्ष) जो कलम या पैबंद लगाने से तैयार हुआ हो; ऐसे वृक्ष का (फल), जैसे प्योंदा बेर।

प्यो *पुं.* {हिं. पिय} पति, स्वामी।

प्योरी *स्त्री.* {हिं.} रुई की मोटी बत्ती।

प्योसर *पुं.* {हिं.} हाल की ब्याई हुई गाय का दूध।

प्योसरा *पुं.* पौसरा।

प्योसार *पुं.* मायका।

प्यौ *पुं.* {सं. प्रिय} पति, स्वामी; प्रियतम।

प्यौड़ी *स्त्री.* एक प्रकार की पीली मिट्टी।

प्रकंप (न) *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रकंपित} कँपकँपी, काँपना।

प्रकंपन *पुं.* {सं.} वायु, हवा, थरथराहट, एक राक्षस का नाम।

प्रकच *वि.* {सं.} जिसके बाल खड़े हों।

प्रकट *वि.* {सं.} जो सबके सामने हो, सामने आया हुआ, जाहिर; आविर्भूत; स्पष्ट, साफ।

प्रकटना *अ.* प्रगटना।

प्रकटित *वि.* {सं.} प्रकट किया हुआ।

प्रकथन *पुं.* {सं.} कही हुई बात या किए हुए काम की पुष्टि (एफरमेशन)।

प्रकर *पुं.* {सं.} समूह, खिला हुआ फूल, अधिकार।

प्रकरण *पुं.* {सं.} उत्पन्न करना; चर्चा, वर्णन, वृत्तांत; प्रसंग, विषय; ग्रंथ के अन्तर्गत उसका छोटा विभाग, अध्याय; दृश्य काव्य में रूपक का एक भेद।

प्रकरी *स्त्री.* {सं.} नाटक में किसी स्थानिक घटना की अवांतर कथा की सहायता से कथावस्तु का प्रयोजन सिद्ध करना, जो एक अर्थ प्रकृति है; वह कथावस्तु जो थोड़े समय तक चलकर रुक जाए।

प्रकर्ष *पुं.* {सं.} उत्कर्ष; अधिकता।

प्रकर्षण *पुं.* {सं.} आधिक्य, अधिकता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकला *स्त्री.* {सं.} कला (समय) का साठवाँ भाग।

प्रकश *पुं.* {सं.} पीड़ा देना, कोड़े की मार।

प्रकांड *वि.* {सं.} बहुत बड़ा।

प्रकाम *वि.* {सं.} प्रचुर, बहुत, अधिक; यथेष्ट, काफी।

प्रकाम्य *वि.* प्रकाम्य।

प्रकार *पुं.* {सं.} एक ही तरह की अथवा एक ही मूल से उत्पन्न वस्तुओं, जीवों आदि का ऐसा वर्ग, जो उसे दूसरी वस्तुओं या जीवों से अलग करता हो, तरह, किस्म, जैसे घोड़े कई प्रकार को होते हैं (काइंड); उन तत्वों, गुणों या विशेषताओं का समूह जिनसे किसी वस्तु का स्वतंत्र स्वरूप प्रकट होता है, जैसे शास्त्रों में इसके कई प्रकार बतलाए गए हैं (डेस्क्रिप्शन); कोई काम पूरा करने के लिए व्यवहार में लाई जानेवाली क्रिया या प्रक्रिया, ढंग, तरीका, जैसे यह काम इस प्रकार न होगा (मैनर); वह प्राकृतिक तत्व जिसके कारण किसी वस्तु का कोई अलग वर्ग बनता है (नेचर); *स्त्री.* प्राकार।

प्रकारता *स्त्री.* {सं.} विजय का भेद, भिन्नता।

प्रकारांतर *पुं.* {सं.} दूसरा प्रकार।

प्रकाश *पुं.* {सं.} वह शक्ति या तत्व जिसके योग से वस्तुओं का रूप आँखों का दिखाई देता है, आलोक, ज्योति; प्रकट या गोचर होना, अभिव्यक्ति; पुस्तक का खंड; धूप, घाम।

प्रकाशक *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रकाशकीय} वह जो प्रकाश करे; वह जो प्रकट करे; वह जो पुस्तकें या समाचार-पत्र छापकर बेचता या बाँटता हो (पब्लिशर)।

प्रकाशकीय *वि.* {सं.} प्रकाशक-संबंधी, प्रकाशक का, जैसे प्रकाशकीय निवेदन।

प्रकाशगृह *पुं. वि.* {सं.} वह ऊँची इमारत, विशेषत: समुद्र में बनी हुई इमारत, जहाँ से बहुत प्रबल प्रकाश निकलकर चारों ओर फैलता हो (लाइट हाउस)।

प्रकाशन *पुं.* {सं.} प्रकाशित करने का काम; वे ग्रंथ आदि जो प्रकाशित किए जाएँ, प्रकाशित पुस्तकें, पत्र आदि (पब्लिकेशन)।

प्रकाशमान *वि.* {सं.} चमकता हुआ।

प्रकाशित *वि.* {सं.} चमकता हुआ; प्रकट; जो छापकर लोगों के सामने आ गया हो।

प्रकाश्य *वि.* {सं.} प्रकट करने योग्य; सबके सामने या सबको सुनाकर कहा हुआ; *क्रि. वि.* प्रकट रूप से, सबके सामने, 'स्वागत' का विपर्याय (नाटक)।

प्रकास *पुं.* = प्रकाश।

प्रकासना *क्रि. स.* {हिं.} प्रकट करना।

प्रकीर्ण *वि.* {सं.} बिखरा हुआ; जिसमें कई तरह की वस्तुएँ मिली हों; (आय-व्यय आदि) जो किसी एक निश्चित मद में न हो, बल्कि इधर-उधर की फुटकर मदों का हो; *पुं.* प्रकीर्णक।

प्रकीर्तन *पुं.* {सं.} उच्च स्वर से चिल्लाकर कीर्तन करना।

प्रकीर्तित *वि.* {सं.} प्रशंसित, घोषित।

प्रकीर्णक *पुं.* {सं.} अध्याय; वह जिसमें तरह-तरह की चीजें मिली हों, फुटकर; *वि.* जिसमें कई चीजें या मदें या एक साथ मिली हों, फुटकर (मिसलेनिअस)।

प्रकुल *पुं.* {सं.} सुंदर शरीर।

प्रकुपित *वि.* {सं.} जिसका प्रकोप बहुत बढ़ा हुआ हो।

प्रकृत *वि.* {सं.} {*भाव.* प्रकृतता, प्रकृतत्व} असली, सच्चा; जिसमें कोई विकार न हो, जो अपने ठीक या वास्तविक रूप या स्थिति में हो, सहज, साधारण (नार्मल); प्रकृति-संबंधी या प्रकृतिजन्य; *पुं.* एक प्रकार का श्लेष अलंकार।

प्रकृति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* प्राकृतिक} वस्तु या व्यक्ति का मूल गुण, स्वभाव; मिजाज; वह मूल शक्ति जिसने अनेक रूपात्मक जगत का विकास किया है और जिसका रूप दृश्यों में दिखाई देता है, कुदरत (नेचर)।

प्रकृतिवाद *पुं.* {सं.} यह सिद्धांत कि मनुष्य को प्रकृति के नियमों के अनुसार चलना चाहिए और कृत्रिमता से दूर रहना चाहिए।

प्रकृतिवादी (दिन्) *वि.* {सं.} प्रकृतिवाद संबंधी; *पुं.* प्रकृति का भक्त।

प्रकृति-विज्ञान (शास्त्र) *पुं.* {सं.} वह विज्ञान, जिसमें प्राकृतिक बातों (जैसे वनस्पति, जीव-जन्तु, भूगर्भ आदि) का विवेचन होता है।

प्रकृतिस्थ *वि.* {सं.} जो अपनी प्राकृतिक अवस्था में हो; स्वाभाविक; जिसके होश-हवास ठिकाने हों।

प्रकृष्ट *वि.* {सं.} उत्तम, श्रेष्ठ; खिंचा हुआ; जोता हुआ (खेत)।

प्रकोट *पुं.* {सं.} परकोटा, परिखा।

प्रकोप *पुं.* {सं.} बहुत अधिक कोप; क्षोभ; बीमारी का बढ़नेवाला जोर; शरीर के वात, पित्त आदि में विकार होना जिससे रोग होते हैं।

प्रकोष्ठ *पुं.* {सं.} मुख्य द्वार के पास की कोठरी; बड़ा आँगन; बड़ा कमरा, कोठा; संसदों, विधान सभाओं आदि में वह बाहरी कमरा, जिसमें उसके सदस्य बैठकर बातचीत करते और बाहरी लोगों से मिलते-जुलते हैं (लॉबी)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रक्खर पुं. {सं.} घोड़े की पाखर, कुत्ता; *वि.* प्रचंड, बहुत तेज।

प्रक्रम पुं. {सं.} क्रम; उपक्रम।

प्रक्रिया *स्त्री.* {सं.} वह क्रिया या प्रणाली जिससे कोई वस्तु होती, बनती या निकलती हो (प्रॉसेस); किसी कृत्य, विशेषत: अभियोग आदि की सुनवाई में होनेवाले आदि से अन्त तक के सब कार्य या उनके ढंग। (प्रोसीजर); किसी कार्य की सिद्धि या पूर्ति के संबंध में वह सारी कार्रवाई जो अब तक हो चुकी हो (प्रोसीडिंग)।

प्रक्रियात्मक *वि.* {सं.} प्रक्रिया के रूप में होनेवाला।

प्रक्रोश पुं. {सं.} आक्रोश।

प्रक्ष *वि.* {सं. पृच्छक} पूछनेवाला।

प्रक्षय पुं. {सं.} नाश।

प्रक्षरण पुं. {सं.} झरना, चूना।

प्रक्षालन पुं. {सं.} {*वि.* प्रक्षालित} जल से साफ करना, धोना।

प्रक्षिप्त *वि.* {सं.} फेंका या छितराया हुआ; पीछे से किसी में मिलाया या बढ़ाया हुआ; आगे की ओर बढ़ा या निकला हुआ (प्रोजेक्टेड)।

प्रक्षेपण पुं. {सं.} फेंकना; दूर फेंकना।

प्रक्षोभण पुं. {सं.} व्यग्रता, घबराहट।

प्रक्षेपास्त्र पुं. {सं.} वह अस्त्र जिसका प्रेक्षण किया जाता हो।

प्रक्षेप्य *वि.* {सं.} फेंककर चलाया जानेवाला।

प्रखंड पुं. {सं.} {*वि.* प्राखंडिक} किसी विशेष कार्य या विभाग के लिए बनाया हुआ प्रांत का कोई खंड या भाग (डिवीज़न)।

प्रखर *वि.* {सं.} {*भाव.* प्रखरता} बहुत तीक्ष्ण या प्रचंड।

प्रख्यात *वि.* {सं.} प्रसिद्ध, मशहूर।

प्रख्यापक पुं. {सं.} वह जो किसी प्रकार का प्रख्यापन करे (डिक्लेरेटरी)।

प्रख्यापन पुं. {सं.} {*वि.* प्रख्यापनिक, प्रख्यापित} किसी को जतलाने के लिए कोई बात स्पष्ट रूप से कहना; वह लिखित वक्तव्य, जो किसी अधिकारी के सामने अपने किसी कार्य या उत्तरदायित्व के संबंध में उपस्थित किया जाए।

प्रख्यापनिक *वि.* {सं.} जिसमें किसी प्रकार का प्रख्यापन हो (डिक्लेरेटरी)।

प्रख्यापित *वि.* {सं.} जिसके संबंध में कोई प्रख्यापन हुआ हो (डिक्लेयर्ड)।

प्रगट *वि.* प्रकट।

प्रगटना *अ.* {सं. प्रकटन} {स. प्रगटाना} प्रकट होना, सामने आना।

प्रगंडी *स्त्री.* {सं.} दुर्ग की बाहरी भीत जिसपर से दूर की वस्तुएँ दिखाई पड़ती हैं।

प्रगत *वि.* {सं.} जो चला गया हो; आगे बढ़ा हुआ।

प्रगति *स्त्री.* {सं. प्र + गति} आगे की ओर बढ़ना, अग्रसर होना; उन्नति।

प्रगतिरुद्ध *वि.* {सं.} जिसकी प्रगति रुक गई हो।

प्रगतिवाद पुं. {सं.} वह सिद्धांत जिसके अनुसार समाज, साहित्य आदि को बराबर आगे की ओर बढ़ाते रहना ही हितकर माना जाता है; (आजकल साधारणत: इसका यह अर्थ समझा जाता है कि प्राचीन अथवा वर्तमान सभी बातें दूषित अथवा त्रुटिपूर्ण हैं, नई बातें ग्रहण करना ही आगे बढ़ना है)।

प्रगतिवादी (दिन्) *वि.* {सं.} प्रगतिवाद संबंधी; पुं. प्रगतिशील विचारोंवाला व्यक्ति।

प्रगतिशील *वि.* {सं.} {*भाव.* प्रगतिशीलता} जो बराबर आगे की ओर बढ़ता हो।

प्रगम पुं. {सं.} आगे बढ़ना।

प्रगर्जन पुं. {सं.} जोर का शब्द, गर्जना।

प्रगल्भ पुं. {सं.} {*भाव.* प्रगल्भता} चतुर, होशियार; प्रतिभाशाली; निर्भय निडर; उद्धत, उद्दंड।

प्रगल्भा *स्त्री.* {सं.} प्रौढ़ा नायिका।

प्रगसना *अ.* प्रगटना।

प्रगाढ़ *वि.* {सं.} बहुत गाढ़ा या गहरा; बहुत अधिक।

प्रगाढ़न पुं. {सं.} प्रगाढ़ करना या बनाना।

प्रगासना *स.* {सं. प्रकाशन} प्रकाशित या प्रकट करना; प्रज्ज्वलित करना, जलाना।

प्रग्रह पुं. {सं.} ग्रहण करने या पकड़ने का भाव ढंग, धारण; पघा।

प्रघट *वि.* = प्रकट।

प्रघट्टक *वि.* {सं. प्रकट} प्रकट करनेवाला।

प्रघण पुं. {सं.} अलिंद, बरामदा, ताँबे का पात्र।

प्रघूर्ण पुं. {सं.} अतिथि, पाहुन।

प्रघोर *वि.* {सं.} 'घोर' से भी बढ़कर अर्थात् परम घोर।

प्रचंड *वि.* {सं.} {*भाव.* प्रचंडता} बहुत तीव्र या तेज, प्रखर; भयंकर; कटोर, कड़ा; असह्य; बहुत बड़ा, विशाल, भारी।

प्रचर पुं. {सं.} मार्ग, गमन।

प्रचरण पुं. {सं.} विचरण, चलना-फिरना।

प्रचरना *अ.* {सं. प्रचार} प्रचार में आना, फैलना।

प्रचलन पुं. {सं.} {*वि.* प्रचलित} चलते या जारी रहने की क्रिया या भाव; किसी वस्तु का निरंतर व्यवहार, प्रयोग या चलन में आना, रहना या होना (करेंसी); प्रथा, रिवाज।

प्रचला *स्त्री.* {सं.} वह निद्रा जो कुछ लोगों को खड़े-खड़े या बैठे-बैठे आ जाती है, गिरगिट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचलित *वि.* {सं.} जिसका प्रचलन या चलन हो, चलता हुआ, जारी, जैसे प्रचलित सिक्का, प्रचलित प्रथा; जो इस समय चल रहा हो, जैसे प्रचलित मास या वर्ष (करेंट, एग्ज़िस्टिंग); जो प्रचलन में लाया गया हो, कार्य या व्यवहार के रूप में चलाया या लाया हुआ, जैसे आज्ञा या विधान प्रचलित करना (इन फोर्स)।

प्रचार *पुं.* {सं.} किसी वस्तु या बात का बराबर व्यवहार में आना या चलता रहना, चलन, रिवाज; कोई विषय, मत या बहत बहुत से लोगों के सामने रखना (प्रोपेगेंडा)।

प्रचारक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* प्रचारिणी, प्रचारिका} प्रचार करनेवाला।

प्रचारण *पुं.* {सं.} प्रचार करने अथवा प्रचार में होने की क्रिया या भाव, जैसे इस सूचना का सब सदस्यों में प्रचार कर दिया जाए; लोगों में प्रचार या प्रचलन के रूप में रहने की अवस्था या भाव, प्रचलन, जैसे इस पत्रिका का प्रचार आज-कल बहुत बढ़ गया है; अब इस सिक्के का प्रचारण नहीं रह गया।

प्रचारना *स.* {सं. प्रचारण} प्रचार करना, फैलाना; सामने आकर लड़ने के लिए ललकारना; आह्वान करना, बुलाना।

प्रचारित *वि.* {सं.} जिसका प्रचार किया गया हो, फैलाया हुआ; (नियम, विधान आदि) जिसे काम में लाने या जिसके अनुसार काम करने की आज्ञा दी गई हो (प्रोमल्गेटेड)।

प्रचारी *वि.* {सं.} प्रचार करनेवाला।

प्रचालन *पुं.* {सं.} परिचालन या संचालन।

प्रचुर *वि.* {सं.} {*भाव.* प्रचुरता} बहुत अधिक।

प्रचोद *पुं.* {सं.} प्रेरणा, उत्तेजना।

प्रच्छन्न *वि.* {सं.} ढका या लेपटा हुआ; छिपा हुआ, गुप्त।

प्रच्छाया *स्त्री.* {सं.} ग्रहण के समय सूर्य पर पड़नेवाली चंद्रमा की छाया अथवा चंद्रमा पर पड़नेवाली पृथ्वी की छाया (अम्ब्रा)।

प्रच्छिल *वि.* {सं.} निर्जल, जलशून्य।

प्रछालना *स.* {सं. प्रछालन} धोना।

प्रजंत *निपा.* = पर्यंत।

प्रजनन *पुं.* {सं.} संतान उत्पन्न करना; जन्म; बच्चा जनाने का काम, धात्री कर्म।

प्रजनित *वि.* {सं.} उत्पन्न किया हुआ।

प्रजरना *अ.* {सं. प्र + हिं. जरना} अच्छी तरह जलना।

प्रजा *स्त्री.* {सं.} संतान, औलाद; किसी राज्य, राष्ट्र या देश में रहनेवाला जनसमूह, रिआया, रैयत; किसी राजा के अधीन या उसके राज्य में रहनेवाले लोग (सब्जेक्ट)।

प्रजागरण *पुं.* {सं.} नींद न आना।

प्रजागरा *स्त्री.* {सं.} एक अप्सरा।

प्रजातंत्र *पुं.* {सं.} वह शासन-प्रणाली जिसमें प्रजा द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि शासन चलाते हैं।

प्रजातंत्री *वि.* = प्रजातांत्रिक।

प्रजातांत्रिक *वि.* {सं.} प्रजातंत्र-संबंधी।

प्रजापति *पुं.* {सं.} सृष्टि उत्पन्न करनेवाला, सृष्टिकर्ता; ब्रह्मा; मनु; सूर्य; घर का मालिक या बड़ा; प्रजापत्य।

प्रजारना *स.* {सं. प्र + हिं. जारना} अच्छी तरह जलाना।

प्रजावान, प्रजावान् *वि.* {सं.} {*स्त्री.* प्रजावती} जिसके आगे बाल-बच्चे हों।

प्रजुरना *अ.* {सं. प्रज्वल} प्रज्ज्वलित होना, जलना; प्रकाशित होना, चमकना।

प्रजुलित *वि.* = प्रज्वलित।

प्रजोग *पुं.* = प्रयोग।

प्रज्ञ *पुं.* {सं.} विद्वान।

प्रज्ञप्ति *स्त्री.* {सं.} जताने या सूचित करने की क्रिया भाव (इंफॉरमेशन); सूचनापत्र; सूचना; वह पत्र, जो माल के साथ में सूचना के रूप में भेजा जाता है और जिसमें भेजे हुए माल का विवरण, मूल्य आदि रहता है, बीजक।

प्रज्ञा *स्त्री.* {सं.} वह वृत्ति या मानसिक शक्ति जो सब बातें समझने-बूझने में समर्थ करती है, बुद्धि, ज्ञान, समझ (इंटलेक्ट); सरस्वती।

प्रज्ञाचक्षु *पुं.* {सं.} वह जिसके हृदय के नेत्र या मानसिक दृष्टि बहुत प्रबल हो, बहुत बड़ा विद्वान और ज्ञानी (साधारणतः अन्धे विद्वानों के लिए प्रयुक्त)।

प्रज्ञादय *पुं.* {सं.} बुद्धिमान, विद्वान।

प्रज्ञापक *पुं.* {सं.} प्रज्ञापन करनेवाला; बड़े या मोटे अक्षरों में लिखा या छपा हुआ विज्ञापन (पोस्टर)।

प्रज्ञापन *पुं.* {सं.} विशेष रूप से ज्ञात करने की क्रिया या भाव; इस प्रकार का सूचक लेख आदि।

प्रज्ञाशील *पुं.* {सं.} बुद्धिमान, समझदार; वह जिसमें सब काम अच्छी तरह समझ-बूझकर करने की शक्ति या योग्यता हो।

प्रज्ज्वलन *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रज्ज्वलित} जलने की क्रिया, जलना।

प्रज्ज्वलित *पुं.* {सं.} जलता हुआ; चमकता हुआ; बिल्कुल स्पष्ट और प्रत्यक्ष, जैसे प्रज्ज्वलित उदाहरण।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रज्ज्वलना पुं. {सं.} जलाना, दहकाना।
प्रण पुं. {सं.} दृढ़ या पक्का निश्चय, प्रतिज्ञा।
प्रणत *वि.* {सं.} झुका हुआ; झुककर प्रणाम करता हुआ; नम्र।
प्रणतपाल पुं. {सं.} दीनों या भक्तों का पालन करनेवाला।
प्रणति *स्त्री.* {सं.} प्रणाम; नम्रता; निवेदन, प्रार्थना।
प्रणमना *अ.* {सं. प्रणमन} प्रणाम करना; किसी के आगे झुकना, नम्र होना।
प्रणम्य *वि.* {सं.} जिसके आगे झुककर प्रणाम करना उचित या कर्तव्य हो।
प्रणय पुं. {सं.} प्रेमपूर्वक की हुई प्रार्थना; प्रेम; विश्वास।
प्रणयी पुं. {सं.} प्रेम करनेवाला, पति, स्वामी।
प्रणयन पुं. {सं.} रचना, बनाना।
प्रणय-निवेदन पुं. {सं.} प्रेमी से अपने प्रेम का प्रकट करना।
प्रणयिनी *स्त्री.* {सं.} प्रेमिका; पत्नी, भार्या।
प्रणयी पुं. {सं. प्रणयिन्} {*स्त्री.* प्रणयिनी} प्रणय या प्रेम करनेवाला, प्रेमी; स्वामी, पति।
प्रणव पुं. {सं.} ओंकार मंत्र; परमेश्वर।
प्रणवना' *अ.* प्रणमना।
प्रणाम पुं. {सं.} झुककर अभिवादन करना, नमस्कार, दंडवत्।
प्रणामी *स्त्री.* {सं. प्रणाम} वह धन या भेंट, जो किसी बड़े को प्रणाम करने के समय उसके सामने रखी जाए।
प्रणाल पुं. {सं.} जल निकलने का मार्ग।
प्रणाली *स्त्री.* {सं.} पानी निकलने या बहने की नली; जल के दो बड़े भागों को मिलानेवाला छोटा जलमार्ग (चैनेल); प्रथा, चाल; ढंग, रीति, तरीका; कोई काम करने या कोई चीज कहीं भेजने का उचित या नियत मार्ग या साधन (चैनेल)।
प्रणाशी *वि.* {सं.} नाश करनेवाला।
प्रणिधान पुं. {सं.} रखा जाना; समाधि (योग की); परम शक्ति; मन की एकाग्रता, ध्यान।
प्रणिधि पुं. {सं.} राज्य के किसी विशेष कार्य से कहीं भेजा जानेवाला दूत (एमिसरी); गुप्त रूप से काम करनेवाला दूत या अभिकर्ता (सीक्रेट एजेण्ट); *स्त्री.* प्रार्थना, निवेदन; मन की एकाग्रता; तत्परता।
प्रणिपात पुं. {सं.} सिर झुकाना; प्रणाम, नमस्कार।
प्रणीत *वि.* {सं.} रचित, बनाया हुआ; भेजा हुआ; लाया हुआ।
प्रणेता पुं. {सं. प्रणेतृ} {*स्त्री.* प्रणेत्री} बनानेवाला, रचयिता।
प्रतंचा *स्त्री.* प्रत्यंचा।
प्रतच्छ *वि.* प्रत्यक्ष।
प्रतति *स्त्री.* {सं.} लंबाई-चौड़ाई, विस्तार; लंबी-चौड़ी और बड़ी लता।
प्रतन *वि.* {सं.} पुरातन, पुराना।
प्रतनु *वि.* {सं.} हलके या छोटे शरीरवाला; दुबला-पतला; सूक्ष्म।
प्रताप पुं. {सं.} पौरुष, वीरता; शक्ति, वीरता आदि का ऐसा प्रभाव या आतंक जिससे विरोधी दबे रहें, इकबाल।
प्रतापी *वि.* {सं. प्रतापिन्} जिसका बहुत अधिक प्रताप हो, इकबालमंद।
प्रतारक पुं. *वि.* {सं.} ठग, धूर्त।
प्रतारणा *स्त्री.* {सं.} धोखा देना, वंचना, ठगी।
प्रतारित *वि.* {सं.} जो ठगा गया हो; जिसे धोखा दिया गया हो।
प्रतिंचा *स्त्री.* {सं. पतंचिका} धनुष की डोरी, चिल्ला।
प्रति *उप.* {सं.} एक उपसर्ग जो शब्दों के आरंभ में लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—विपरीत, जैसे प्रतिवाद; सामने, जैसे—प्रत्यक्ष; बदले में, जैसे प्रत्युपकार; हर एक, जैसे प्रतिदिन; समान, जैसे प्रतिनिधि; मुकाबले का, जैसे प्रतिद्वन्द्वी; अधीनस्थ, जैसे प्रतिसमाहर्ता; *स्त्री.* {सं.} पुस्तक या समाचार-पत्र की नकल (कॉपी); प्रतिबिम्ब, परछाई, उदा. देखत अपनी प्रति।
प्रति, के संबंधसूचक की ओर, की तरफ।
प्रति-अभिदेश पुं. प्रत्यभिदेश।
प्रतिकर पुं. {सं.} वह धन जो किसी को उसकी हानि होने पर उसके बदले में दिया जाए, हरजाना।
प्रतिकरक पुं. {सं.} प्रतिकर या हरजाने से संबंध रखनेवाला; प्रतिकर या हरजाने के रूप में दिया जानेवाला।
प्रतिक स्वत्त्व पुं. {सं. प्रति = नकल + क + स्वत्व} किसी कवि, लेखक, कलाकार आदि की कृति की प्रतियाँ छापने या प्रस्तुत करने का वह स्वत्व, जो उसके कर्ता की अनुमति के बिना औरों को प्राप्त नहीं होता (कॉपीराइट)।
प्रतिकांक्षी *वि.* {सं.} आकांक्षी।
प्रतिकामिनी *स्त्री.* {सं.} सपत्नी, सौत।
प्रतिकार पुं. {सं.} किसी कार्य का प्रभाव रोकने या कम करने के लिए अथवा उसका बदला चुकाने के लिए उसके मुकाबले में किया जानेवाला कार्य; कम करने या घटाने आदि का कार्य।
प्रतिकारक पुं. {सं.} वह जो किसी बात प्रतिकार करता हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिकूप पुं. {सं.} परिखा, खाई।

प्रतिकूल *वि.* {सं.} {*भाव.* प्रतिकूलता} जो अनुकूल न हो; विरुद्ध, विपरीत, उलटा, (कंट्रैरी); रुचि, वृत्ति, निश्चय आदि के विरुद्ध या उलटा पड़नेवाला (रिपगनेंट)।

प्रतिकृत *वि.* {सं.} जिसका बदला दिया जा चुका हो।

प्रतिकृति *स्त्री.* {सं.} किसी के अनुकरण पर बनाई हुई मूर्ति या रूप, जैसे प्रतिमा, चित्र आदि; किसी व्यक्ति की आकृति के अनुसार बना हुआ उसका चित्र (पोट्रेट); प्रतिबिम्ब, छाया; बदला, प्रतिकार।

प्रतिक्रम पुं. {सं.} चीजों या बातों का जो क्रम पहले बतलाया गया हो, उसका उलटा विपरीत क्रम।

मुहा. *प्रतिक्रम से* = बतलाए हुए क्रम के उलटे क्रम से (वाइस वर्सा)।

प्रतिक्रमात् *क्रि. वि.* {सं.} बतलाए हुए क्रम के उलटे क्रम से (वाइस वर्सा)।

प्रतिक्रिया *स्त्री.* {सं.} प्रतिकार, बदला; कोई क्रिया होने पर उसके विरोध में या परिणामस्वरूप दूसरी ओर होनेवाली क्रिया या गति (रिएक्शन)।

प्रतिक्रियावाद पुं. {सं.} यह सिद्धांत कि जो बातें चली आ रही हों, उनमें सुधार या परिवर्तन चाहनेवालों का विरोध करना चाहिए।

प्रतिक्रियावादी (दिन्) *वि.* {सं.} जो उन्नति, सुधार आदि के विरुद्ध या विपरीत चलता हो (रि-एक्शनरी)।

प्रतिक्रियाशील *वि.* {सं.} प्रतिक्रियावादी।

प्रतिक्षण *अव्य.* {सं.} बार-बार, फिर-फिर।

प्रतिक्षेप पुं. {सं.} फेंकना, रोकना।

प्रतिगत *वि.* {सं.} जो लौट आया हो।

प्रतिगामी (मिन्) पुं. {सं.} उलटा चलनेवाला, प्रगति विरोधी, प्रतिक्रियावादी।

प्रतिग्या *स्त्री.* = प्रतिज्ञा।

प्रतिग्रह पुं. {सं.} {*वि.* प्रतिग्राह्य, प्रतिग्राहक} किसी को दी हुई चीज ले लेना, दान ग्रहण स्वीकृत करना; (ब्राह्मण का) वह दान लेना, जो (उसे) विधिपूर्वक दिया जाए; पाणिग्रहण, विवाह; रक्षापूर्वक रखने के लिए मिली हुई किसी की संपत्ति; अभियुक्त या संदिग्ध व्यक्ति का अधिकारियों के हाथ में जाँच या विचार के लिए जाना (कस्टडी)।

प्रतिग्राह पुं. {सं.} प्रतिग्रह, ग्रहण करना।

प्रतिग्राही (हिन्) पुं. {सं.} वह जो दान ले।

प्रतिघात पुं. {सं.} {*वि.* प्रतिघाती} वह आघात, जो किसी दूसरे के आघात करने पर किया जाए; सामने से होनेवाला ऐसा आघात जिससे रुकावट हो।

प्रतिच्छवि *स्त्री.* {सं.} प्रतिबिंब, परछाईं, छाया; चित्र।

प्रतिच्छा *स्त्री.* = प्रतीक्षा।

प्रतिच्छाया *स्त्री.* {सं.} चित्र, तसवीर; परछाईं, प्रतिबिंब।

प्रतिच्छायित *वि.* {सं.} जिसकी परछाईं कहीं पड़ी हो; जिस पर किसी की परछाईं पड़ी हो।

प्रतिछाया *स्त्री.* प्रतिच्छाया।

प्रतिजंघा *स्त्री.* {सं.} जाँघ का अगला भाग।

प्रतिजीवन पुं. {सं.} फिर से जी जाना।

प्रतिज्ञ *वि.* {सं.} प्रतिज्ञा करनेवाला (यौ. के अन्त में, जैसे दृढ़ प्रतिज्ञ)।

प्रतिज्ञा *स्त्री.* {सं.} कुछ करने या न करने के संबंध में पक्का निश्चय, प्रण।

मुहा. *प्रतिज्ञा पारना* = प्रतिज्ञा पूरी करना।

उदा. जन प्रहलाद-प्रतिज्ञा पारी--**सूर**।

प्रतिज्ञात *वि.* {सं.} जिसके विषय में प्रतिज्ञा की गई हो।

प्रतिज्ञापत्र पुं. {सं.} वह पत्र जिस पर कोई प्रतिज्ञा लिखी हो, इकरारनामा।

प्रतितुलन पुं. {सं.} {*वि.* प्रतितुलित} किसी एक ओर पड़े हुए भार की बराबरी करने या उसका प्रभाव नष्ट करनेवाला दूसरी ओर का भार (काउंटर-बैलेंस)।

प्रतिदत्त *वि.* {सं.} लौटाया हुआ, बदले में दिया हुआ।

प्रतिदान पुं. {सं.} {*वि.* प्रतिदत्त} लौटाना, वापस करना।

प्रतिदेश पुं. {सं.} सीमा पार का देश।

प्रतिद्वंद्व पुं. {सं.} बराबरी के योद्धाओं की लड़ाई।

प्रतिद्वंद्विता *स्त्री.* {सं.} बराबरवालों की लड़ाई या विरोध, प्रतियोगिता।

प्रतिद्वंद्वी पुं. {सं. प्रतिद्वंद्विन्} {*भाव.* प्रतिद्वंद्विता} सामने आकर लड़ने या विरोध करनेवाला, प्रतिस्पर्धी (राइवल)।

प्रतिध्वनन पुं. {सं.} प्रतिध्वनि उत्पन्न करना या होना (ईकोइंग)।

प्रतिध्वनि *स्त्री.* {सं.} {*वि.* प्रतिध्वनित} वह ध्वनि या शब्द, जो अपनी उत्पत्ति के स्थान से चलकर कहीं टकराता हुआ लौटे और फिर वहीं सुनाई पड़े, प्रतिशब्द, गूँज; दूसरों के विचारों आदि का किसी दूसरे रूप में या इस प्रकार दोहराया जाना कि उससे मूल विचारों की ध्वनि या छाया निकलती हो (ईको)।

प्रतिनंदन पुं. {सं.} {*वि.* प्रतिनंदित} बधाई।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिनाद पुं. {सं.} प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि।

प्रतिनिधायन पुं. {सं.} प्रतिनिधि के रूप में किसी को कुछ लोगों को कहीं भेजना; प्रतिनिधियों का वह दल जो कहीं किसी काम के लिए जाए (डेपुटेशन)।

प्रतिनिधि पुं. {सं.} {*भाव.* प्रतिनिधित्व} प्रतिमा, प्रतिमूर्ति; किसी की ओर से कोई काम करने के लिए नियुक्त व्यक्ति; वह जिसे देखकर उसी वर्ग, जाति आदि के औरों के स्वरूप, रंग-ढंग, आचार-विचार आदि का अनुमान या कल्पना की जा सके; वह जो अपने वर्ग के औरों की जगह काम आ सके (रिप्रेजेंटेटिव)।

प्रतिनिधि-पत्र पुं. {सं.} वह पत्र जिसमें किसी व्यक्ति को अपने प्रतिनिधि के रूप में किसी सभा, समाज में उपस्थित रहकर कुछ काम करने और मुख्यत: किसी विषय पर मत या वोट देने का अधिकार दिया जाता है (प्रॉक्सी)।

प्रतिनियुक्त *वि.* {सं.} प्रतिनिधि या अधीनस्थ अधिकारी के रूप में बनाकर कहीं भेजा हुआ (व्यक्ति) (डैप्यूटेड)।

प्रतिपक्ष पुं. {सं.} दूसरा पक्ष, वह पक्ष जिससे विरोध हो।

प्रतिपक्षी (क्षिण्) पुं. {सं.} विरुद्ध पक्षवाला, विपक्षी, विरोधी।

प्रतिपत्ति *स्त्री.* {सं.} प्राप्ति, पाना; ज्ञान; अनुमान; प्रतिपादन, निरूपण; मानना, स्वीकृति (ऐक्सेप्टेंस)।

प्रतिपद *अव्य.* {सं.} पग-पग पर, स्थान-स्थान पर।

प्रतिपदा *स्त्री.* {सं.} किसी पक्ष की पहली तिथि।

प्रतिपन्न *वि.* {सं.} अवगत, ज्ञात; ग्रहण किया या माना हुआ, अंगीकृति, स्वीकृत (एक्सेप्टेड); प्रमाणित; निश्चित; भरा-पूरा; शरणागत।

प्रतिपात्र *अव्य.* {सं.} प्रत्येक मनुष्य पर।

प्रतिपरीक्षण पुं. {सं.} {*वि.* प्रतिपरीक्षित} किसी के कुछ कह चुकने पर उससे दबी-दबाई बातों का पता लगाने के लिए उससे कुछ प्रश्न करना (क्रॉस इग्ज़ामिनेशन)।

प्रतिपर्ण पुं. {सं.} दो टुकड़ोंवाली पावती या रसीद, प्रमाणपत्र आदि में का वह एक टुकड़ा, जो देनेवाले के पास रह जाता है और जिस पर किसी को दिए हुए दूसरे टुकड़े की प्रतिलिपि रहती है (काउंटर फॉयल)।

प्रतिपादन पुं. {सं.} {*वि.* प्रतिपादित} अच्छी तरह समझकर कोई बात कहना, प्रतिपत्ति; अपना मत पुष्ट करने के लिए प्रमाणपूर्वक कुछ कहना।

प्रतिपाप पुं. {सं.} किसी पापी के प्रति किया जानेवाला कठोर व्यवहार।

प्रतिपार पुं. प्रतिपाल।

प्रतिपाल (क) पुं. {सं.} {*स्त्री.* प्रतिपालिका} पालन-पोषण करनेवाला, पोषक।

प्रतिपालक अधिकरण पुं. {सं.} वह राजकीय विभाग, जो सम्पन्न विधवाओं, अल्पवयस्कों अथवा अयोग्य व्यक्तियों की सम्पत्ति की रक्षा और व्यवस्था करता है (कोर्ट ऑफ वार्ड्स)।

प्रतिपालन पुं. {सं.} {*वि.* प्रतिपालित} पालन करने की क्रिया या भाव; आज्ञा का निर्वाह, तामीली।

प्रतिपालना पुं. {सं. प्रतिपालन} पालन करना; रक्षा करना, बचाना; *स्त्री.* प्रतिपालन।

प्रतिपुरुष पुं. {सं.} किसी के अधीन रहकर अथवा यों ही किसी के स्थान पर उसकी ओर से काम करनेवाला (डेपुटी)।

प्रतिपूर्ति *स्त्री.* {सं.} किसी व्यक्ति या मद से लिया हुआ या व्यय किया हुआ धन उसे देकर उसकी पूर्ति करना (रीइम्बर्समेंट)।

प्रतिप्राप्ति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* प्रतिप्राप्त} खोई या किसी के हाथ में गई हुई चीज फिर से प्राप्त करना (रिकवरी)।

प्रतिफल पुं. {सं.} {*वि.* प्रतिफलित} परिणाम, नतीजा; परिणाम के रूप में प्राप्त होनेवाला फल, बदला (रिटर्न); बदले में मिली हुई चीज, विशेषत: धन या और कोई मूल्यवान पदार्थ (कंसिडरेशन)।

प्रतिफलित *वि.* {सं.} प्रतिबिंबित, प्रतिकृत।

प्रतिफलक पुं. {सं.} वह यंत्र जो कोई प्रतिबिंब उत्पन्न करे उसे दूसरी वस्तु या पट पर डालता हो (रिफ्लेक्टर)।

प्रतिबंध पुं. {सं.} रोक, रुकावट; विघ्न, बाधा; किसी बात या काम में लगाई हुई शर्त, पण (कंडिशन); किसी निश्चय, विधि आदि में पड़नेवाली कठिनता से बचने के लिए, निकाला हुआ मार्ग या निश्चिय किया हुआ विधान, शर्त, जैसे परंतु प्रतिबंध यह है कि . . . (प्राविज़ी)।

प्रतिबंधक पुं. *वि.* {सं.} बाधा डालनेवाला, रोकनेवाला।

प्रतिबंधित *वि.* {सं.} जिसपर प्रतिबंध लगा हो।

प्रतिबद्ध *वि.* {सं.} जो किसी शर्त से बँधा हो; जिसने अपना वचन पालने का प्रण किया हो।

प्रतिबद्धता *स्त्री.* {सं.} प्रतिबद्ध होने की अवस्था या भाव; वचनबद्धता।

प्रतिबिंब *वि.* {सं.} {*वि.* प्रतिबिंबित} किसी वस्तु के एक ओर प्रकाश होने के कारण दूसरी ओर पड़नेवाली उसकी छाया, परछाईं (शैडो); किसी वस्तु की प्राय: ज्यों-की-त्यों वह आकृति

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या प्रतिकृति जो प्रकाश की सहायता, अनुकरण अथवा और किसी कारण से उसके विपरीत पक्ष पर पड़ती या दिखाई देती है (रिफ्लेक्शन); मूर्ति, प्रतिमा; चित्र; शीश, दर्पण।

प्रतिबीज *वि.* {सं.} (बीज) जिसकी उत्पन्न करने की शक्ति नष्ट हो गई हो।

प्रतिबोधक *पुं.* {सं.} ज्ञान उत्पन्न करनेवाला।

प्रतिभट *पुं.* {सं.} बहुत बड़ा भट या योद्धा। *उदा.* प्रतिभट, विकट जहाँ, तरल लच्छ पर लच्छ–सूदन।

प्रतिभा *स्त्री.* {सं.} बुद्धि, समझ; वह विशिष्ट और असाधारण मानसिक शक्ति जिससे मनुष्य किसी काम में बहुत अधिक योग्यता के कार्य कर दिखलाता है, असाधारण बुद्धिबल (जीनिअस)।

प्रतिभाग *पुं.* {सं.} प्राचीन काल में एक प्रकार का कर।

प्रतिभाज्य *वि.* {सं.} जिसपर प्रतिभाग (शुल्क) लगता या लग सकता हो।

प्रतिभात *वि.* {सं.} चमकता हुआ, प्रकाशित, प्रदीप्त; जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो, सामने आया हुआ; प्रतीत; ज्ञात।

प्रतिभावना *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रतिभावनिक} एक ओर से दिखाई पड़नेवाली किसी भावना, व्यवहार, वृत्ति आदि के परिणामस्वरूप दूसरी ओर से दिखाई देनेवाली भावना, व्यवहार या वृत्ति (रेस्पॉन्स)।

प्रतिभावान् (शाली) *वि.* {सं.} जिसमें प्रतिभा हो, प्रतिभावाला (जीनिअस)।

प्रतिभाषा *स्त्री.* {सं.} प्रत्युत्तर, वादी का कथन।

प्रतिभास *पुं.* {सं.} छाया, लक्षण आदि के द्वारा जान पड़नेवाला अस्पष्ट रूप; स्वरूप, आकृति।

प्रतिभू *पुं.* {सं.} किसी की जमानत करनेवाला, जमानतदार, जामिन (श्योरिटी, बांड्समैन)।

प्रतिभूत *स्त्री.* {सं.} {*वि.* प्रतिभूत} वह धन, जो प्रतिभू किसी बात की जमानत के लिए जमा करता हो, जमानत की रकम; वह संपत्ति जिसके आधार पर बल पर ऋण लिया जाता है; किसी विशेष आधार या बल पर लिया या दिया हुआ ऐसा ऋण जिसका चुकता होना बिल्कुल निश्चित हो; वह लेख्य जिसमें उक्त प्रकार के ऋण से संबंध रखनेवाली सब बातें लिखी रहती हैं (सिक्योरिटी, उक्त सभी अर्थों के लिए)।

प्रतिभू-पत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जिसमें कोई प्रतिभू या जमानतदार अपने उत्तरदायित्व की स्वीकृति लिखकर देता है (बॉण्ड ऑफ श्योरिटी)।

प्रतिभोग *पुं.* {सं.} उपभोग।

प्रतिभौ *पुं.* {सं. प्रतिभा} शरीर का बल और तेज।

प्रतिमंडल *पुं.* {सं. प्रतिनिधि + मंडल} प्रतिनिधियों का दल या मंडल।

प्रतिम *वि.* {सं.} समान, सदृश।

प्रतिमा *स्त्री.* {सं.} किसी के स्वरूप के अनुसार बनाई हुई मूर्ति, चित्र आदि, अनुकृति; देवाताओं की मूर्ति; प्रतिबिम्ब, छाया; साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी मुख्य पदार्थ या व्यक्ति के न होने की दशा में उसी के समान किसी दूसरे पदार्थ या व्यक्ति की स्थापना का उल्लेख होता है।

प्रतिमान *पुं.* {सं.} प्रतिबिम्ब, परछाईं; समानता, बराबरी; तौल; तौलने का बाट, बटखरा; दृष्टांत, उदाहरण; वह वस्तु जो आदर्श रूप में बराबर वैसी ही और वस्तुएँ बनाने के लिए सामने रखी जाए (मॉडल); (छपाई आदि में) छापे जानेवाले लेखों आदि का वह नमूना जो छापने से पहले संशोधन आदि के लिए तैयार किया जाता है (प्रूफ या प्रूफ-शीट); मानक।

प्रतिमाया *स्त्री.* {सं.} माया का प्रतिरूप।

प्रतिमास *अव्य.* {सं.} हर महीने में।

प्रतिमुद्रण *पुं.* {सं. प्रति + मुद्रण} खुदी या लिखी हुई आकृति, लेख आदि पर से उसकी ठीक प्रतिलिपि उतारने या छापने की क्रिया भाव; उक्त प्रकार से ज्यों-की-त्यों उतारी या छापी हुई प्रति, जैसे शिलालेख या हस्तलिपि का प्रतिमुद्रण (फैक-सिमिली)।

प्रतिमुद्रांकन *पुं.* {सं.} जिसपर पहले मुद्रांकन हो चुका हो या मोहर लग चुकी हो उसपर बड़े अधिकारी का अपनी स्वीकृति या सहमति सूचित करने के लिए अपनी मोहर भी लगाना; उक्त प्रकार से किया हुआ मुद्रांकन या लगाई हुई मोहर (काउंटर-सील)।

प्रतिमूर्ति *स्त्री.* {सं.} किसी के अनुरूप ज्यों-की-त्यों बनी हुई मूर्ति।

प्रतियुद्ध *पुं.* {सं.} बराबरी की लड़ाई।

प्रतियोगिता *स्त्री.* {सं.} किसी काम में औरों से आगे बढ़ने का प्रयत्न, प्रतिद्वन्द्विता, चढ़ा-ऊपरी, मुकाबला; ऐसा कार्य जिसमें बहुत से लोग अलग-अलग सफल होने का प्रयत्न करें (कॉम्पिटीशन)।

प्रतियोगी (गिन्) *पुं.* {सं.} प्रतियोगिता करनेवाला; हिस्सेदार; शत्रु, वैरी; सहायक, मददगार।

प्रतिरक्षा *स्त्री.* {सं.} किसी के आक्रमण से अपनी रक्षा या बचाव के लिए अथवा अभियोग आदि का उत्तर देने के लिए किए जानेवाले कार्य या व्यवस्था, बचाव (डिफेंस)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिरुद्ध पुं. {सं.} अवरुद्ध, रुका हुआ।

प्रतिरूप पुं. {सं.} प्रतिमा, मूर्ति; तसवीर, चित्र; नमूना; (स्पेसिमेन); 'प्रतिनिधि'; *वि.* नकली या जाली, कृत्रिम, बनावटी।

प्रतिरूपक पुं. {सं.} वह जो नकली या बनावटी चीजें, विशेषत: सिक्के, नोट आदि बनाता हो।

प्रतिरोध पुं. {सं.} {*वि.* प्रतिरोधक} विरोध; रुकावट, बाधा; किसी आवेग, आक्रमण आदि को रोकने के लिए किया जानेवाला कार्य।

प्रतिरोपण पुं. {सं.} शल्यचिकित्सा में शरीर के किसी अंग को निकालकर दूसरा अंग लगाना (ट्रांस्प्लैंटेशन)।

प्रतिलंभ पुं. {सं.} लाभ, प्राप्ति।

प्रतिलिपि *स्त्री.* {सं.} {*वि.* प्रतिलिपित} लेख आदि की ज्यों-की-त्यों नकल (कॉपी)।

प्रतिलिपिक पुं. {सं.} वह जो लेखों आदि की प्रतिलिपि करता हो, नकल करनेवाला (कॉपिस्ट)।

प्रतिलिपित *वि.* {सं.} जिसकी प्रतिलिपि या नकल कर ली गई हो, प्रतिलिपि किया हुआ (कॉपीड)।

प्रतिलेखन पुं. {सं.} किसी लिखी हुई चीज की ज्यों-की-त्यों नकल उतारने या उसे फिर उसी तरह लिखने की क्रिया या भाव (ट्रांसक्रिप्शन)।

प्रतिलोम *वि.* {सं.} प्रतिकूल; नीचे से ऊपर की ओर या उलटी दिशा में जानेवाला, उलटे क्रमवाला, 'अनुलोम' का उलटा (कॉनवर्स)।

प्रतिवक्तव्य *वि.* {सं.} उत्तर देने योग्य।

प्रतिवस्तु *स्त्री.* {सं.} सदृश पदार्थ।

प्रतिवचन पुं. {सं.} उत्तर, जवाब; प्रतिध्वनि।

प्रतिवर्तन पुं. {सं.} {*वि.* प्रतिवर्तित} चक्कर काटना, फेरा लगाना, घूमना; घूमकर फिर अपने स्थान पर आना, लौटना।

प्रतिवस्तूपमा *स्त्री.* {सं.} साहित्य में उपमा अलंकार का एक भेद, जिसमें उपमेय और उपमान के साधारण या समान धर्म का अलग-अलग, परंतु एकार्थवाची शब्दों में वर्णन किया जाता है।

प्रतिवाद पुं. {सं.} वह कथन जो किसी के मत, कथन या अभियोग को मिथ्या या यथार्थ सिद्ध करने के लिए हो, विरोध।

प्रतिवादक पुं. {सं.} प्रतिवाद करनेवाला।

प्रतिवादिक *वि.* {सं.} जिसमें या जिसके द्वारा प्रतिवाद या खंडन हो, विरोधी, जैसे ये बातें एक दूसरी की प्रतिवादिक हैं (कण्ट्राडिक्टरी)।

प्रतिवादी (दिन्) पुं. {सं.} प्रतिवाद करनेवाला, प्रतिपक्षी (डिफेंडेंट)।

प्रतिवाय *वि.* {सं.} निवारण करने योग्य।

प्रतिवास पुं. {सं.} पड़ोस।

प्रतिवासी (सिन्) पुं. {सं.} पड़ोसी।

प्रतिविधान पुं. {सं.} किसी विधान के मुकाबले में किया जानेवाला विधान; प्रतिकार।

प्रतिविधि *स्त्री.* {सं.} वह विधि, कार्य या उपाय, जो किसी कार्य या घटना के फलस्वरूप होनेवाले अपकार या हानि का परिहार करने के लिए किया जाए, उपचार (रेमेडी)।

प्रतिवेश पुं. {सं.} पड़ोस; आसपास की वस्तुएँ या परिस्थिति।

प्रतिवेशी पुं. {सं. प्रतिवेशिन्} पड़ोसी।

प्रतिव्यक्ति *क्रि. वि.* {सं.} प्रति व्यक्ति के विचार से।

प्रतिशत *क्रि. वि.* {सं.} हर सौ या सैकड़े के हिसाब से, हर सौ पर, फीसदी (परसेण्ट)।

प्रतिशब्द पुं. {सं.} प्रतिध्वनि; पर्याय, समानार्थक शब्द।

प्रतिशाप पुं. {सं.} बदले में शाप देना।

प्रतिशोध पुं. {सं. प्रति + शोध} किसी बात का बदला चुकाने के लिए किया जानेवाला काम, बदला।

प्रतिश्याय पुं. {सं.} जुकाम (कोल्ड)।

प्रतिश्रव पुं. {सं.} अंगीकार, प्रतिज्ञा।

प्रतिश्रुति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* प्रतिश्रुत} प्रतिध्वनि; प्रतिरूप; मंजूरी, स्वीकृत; किसी बात या काम के लिए दिया जानेवाला वचन (प्रॉमिस); इस बात की जिम्मेदारी कि कोई चीज या बात ऐसी ही है, इससे भिन्न, विपरीत या अन्यथा नहीं है।

प्रतिश्रुति-पत्र पुं. विश्रुति-पत्र।

प्रतिषिद्ध *वि.* {सं.} जिसका प्रतिषेध किया गया हो (प्रॉहिबिटेड)।

प्रतिषेध पुं. {सं.} {*वि.* प्रतिषिद्ध, कर्ता-प्रतिषेधक} निषेध, मनाही; कोई काम बिल्कुल न करने का पूरा वर्जन या मनाही (प्रॉहिबिशन); खंडन; साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी निषिद्ध या वर्जित बात का किसी विशेष अभिप्राय से और कोई अंतर बतलाते हुए फिर से किसी नई तरह से निषेध या वर्जन किया जाता है।

प्रतिषेधक पुं. {सं.} वह जो प्रतिषेध करे (प्रॉहिबिटर); *वि.* जिसमें या जिसके द्वारा किसी प्रकार का प्रतिषेध हो (प्रॉहबिटरी)।

प्रतिषेधन पुं. {सं.} प्रतिषेध करने की क्रिया या भाव।

प्रतिष्टंभ पुं. {सं.} प्रतिबंध, रुकावट।

प्रतिष्ठा *स्त्री.* {सं.} स्थापना, रखा जाना, जैसे देवता की प्रतिमा की प्रतिष्ठा; मान-मर्यादा, गौरव; यश, कीर्ति; आदर, सत्कार, इज्जत।

प्रतिष्ठान पुं. {सं.} स्थापित या प्रतिष्ठा करना, रखना या बैठाना, जमाना; देवमूर्ति की स्थापना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिष्ठावान् *वि.* {हिं.} प्रतिष्ठावाला।

प्रतिष्ठित *वि.* {सं.} जिसकी प्रतिष्ठा हो, सम्मानित, इज्जतदार; जो स्थापित किया गया हो, रखा हुआ।

प्रतिसंस्कार *पुं.* {सं.} टूटी-फूटी चीज फिर से बनाकर ठीक करना, मरम्मत।

प्रतिसंधि *पुं.* {सं.} अनुसंधान, पुनर्जन्म।

प्रतिसम *वि.* {सं.} {*भाव.* प्रतिसाम्य} जिसके अंगों में अनुपात और सुंदरता के विचार से पारस्परिक समानता और एकरूपता हो, प्रतिसाम्य से युक्त।

प्रतिसाम्य *पुं.* {सं.} किसी कृति या रचना के आकार, बनावट, मान आदि के भिन्न-भिन्न अंगों में अनुपात और सुंदरता के विचार से होनेवाली पारस्परिक समानता और एकरूपता, भिन्न-भिन्न अंगों का ठीक और समंजित विन्यास (सिमेट्री)।

प्रतिस्त्री *स्त्री.* {सं.} परायी या दूसरी स्त्री।

प्रतिस्थान *अव्य.* {सं.} प्रत्येक स्थान।

प्रतिस्थापन *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रतिस्थापित} अपने स्थान से हटी हुई वस्तु या व्यक्ति को फिर उसी स्थान पर रखना या बैठाना (रीप्लेसमेंट)।

प्रतिस्पर्धी *पुं.* {सं. प्रतिस्पर्धिन्} प्रतिस्पर्धा या होड़ करनेवाला, प्रतिद्वन्द्वी (राइवल)।

प्रतिस्पर्धा *स्त्री.* {सं.} किसी काम में दूसरे से बढ़ जाने का प्रयत्न, प्रतियोगिता, लाग-डाँट, चढ़ा-ऊपरी, होड़ (राइवलरी)।

प्रतिहस्त *पुं.* {सं.} प्रतिनिधि।

प्रतिहस्ताक्षर *पुं.* {सं.} किसी के हस्ताक्षर के पुष्टिकरण के लिए किए जानेवाले अधिकारी के हस्ताक्षर।

प्रतिहार *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* प्रतिहारी} द्वारपाल, दरबान; प्राचीन काल का एक राजकर्मचारी, जो राजाओं को समाचार आदि सुनाता अथवा लोगों के पास राजा का संदेश ले जाता था; चोबदार, नकीब।

प्रतिहारी *स्त्री.* {सं.} वह स्त्री जो प्राचीन काल में राजाओं के यहाँ प्रतिहार के काम करती थी।

प्रतिहिंसा *स्त्री.* {सं.} मन में हिंसा का भाव रखकर बैर चुकाना या बदला लेना।

प्रतीक *पुं.* {सं.} चिन्ह, लक्षण, निशान; मुख, मुँह; आकृति, रूप सूरत; किसी के स्थान पर या बदले में रखी हुई या काम आनेवाली वस्तु, प्रतिरूप; प्रतिमा, मूर्ति; वह जो किसी समष्टि के प्रतिनिधि के रूप में और उसकी सब बातों का सूचक या प्रतिनिधि हो (सिंबल)।

प्रतीकवाद *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रतीकवाद} वर्णनों, उल्लेखों आदि में वर्णित विषयों या वस्तुओं को उनके वास्तविक रूप से भिन्न और केवल प्रतीकों के रूप में उपस्थित करने की क्रिया, भाव या सिद्धांत (सिम्बॉलिज़्म)।

प्रतीकार *पुं.* प्रतिकार, अपकार का बदला चुकाने के लिए किया हुआ अनिष्ट।

प्रतीकार्थ *वि.* {सं.} जिसका प्रयोग प्रतीक के रूप में हुआ हो।

प्रतीकी *वि.* {सं. प्रतीक + हिं. ई (प्रत्य.)} जो केवल प्रतीक या लक्षण के रूप में हो, लाक्षणिक (सिम्बॉलिक)।

प्रतीकोपासन *स्त्री.* {सं.} ब्रह्म या देवता का कोई प्रतीक बना या मानकर उसकी पूजा या उपासना करना।

प्रतीक्षण *पुं.* {सं.} आसरा देखना।

प्रतीक्षा *स्त्री.* {सं.} कोई काम होने या किसी के आने के आसरे रहना, आसरा, प्रत्याशा, इन्तजार।

प्रतीक्षा-गृह *पुं.* प्रतीक्षालय।

प्रतीक्षारत *वि.* {सं.} जो किसी की प्रतीक्षा कर रहा हो।

प्रतीक्षालय *पुं.* {सं.} वह कमरा जिसमें आगन्तुक लोग घर के मालिक या रहनेवाले से मिलने के लिए अथवा यात्री लोग रेल, हवाई जहाज आदि के आने के प्रतीक्षा में बैठते हैं (वेटिंग रूम)।

प्रतीक्ष्य *वि.* {सं.} प्रतीक्षा करने के योग्य, जिसकी प्रतीक्षा की जाए।

प्रतीक्षणीय *वि.* {सं.} प्रतीक्षा करने योग्य।

प्रतीची *स्त्री.* {सं.} पश्चिम दिशा।

प्रतीच्य *वि.* {सं.} पश्चिम का।

प्रतीत *वि.* {सं.} ज्ञात, विदित, जाना हुआ; ऊपर से देखने पर जान पड़नेवाला, जैसे ऐसा प्रतीत होता है कि वह चला गया; प्रसन्न, खुश।

प्रतीति *स्त्री.* {सं.} ज्ञान, जानकारी; विश्वास; वचन, लेन-देन आदि में मानी जानेवाली प्रामाणिकता, साख (क्रेडिट); प्रसन्नता।

प्रतीती *वि.* {सं. प्रतीत + हिं. ई (प्रत्य.)} प्रतीत या विश्वास करनेवाला; विश्वास करने के योग्य, विश्वसनीय; *स्त्री.* प्रतीति।

प्रतीप *पुं.* {सं.} आशा के विरुद्ध कोई बात होना; साहित्य में एक अलंकार जिसमें उपमान को उपमेय के रूप में मान लिया जाता है अथवा उपमेय की तुलना में उपमान को तुच्छ ठहराकर उसका तिरस्कार किया जाता है, इसके पाँच भेद माने गए हैं; *वि.* {*भाव.* प्रतीपता} प्रतिकूल, विरुद्ध; जैसा होना चाहिए, उसका उलटा, विपरीत। (पर्वर्स); विमुख।

प्रतीपग *वि.* {सं.} उल्टा आचरण करने वाला।

प्रतीपना *स्त्री.* {सं.} प्रतिकूलता, विरोध; विपरीतता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीपित *वि.* {सं.} उलटा किया हुआ, उलटाया हुआ।

प्रतीयमान *वि.* {सं.} (रूप) जो ऊपर से दिखाई देता या समझ में आता हो; जो वास्तविक से भिन्न होने पर भी देखने में बहुत-कुछ वास्तविक-सा जान पड़े, ऊपर से दिखाई पड़ने या प्रतीत होनेवाला (एपरेंट); (अर्थ) जो ध्वनि, व्यंग्य आदि के रूप में निकलता हो, अर्थ या उद्देश्य के रूप में भासित होनेवाला (पर्पर्टेड)।

प्रतीर *पुं.* {सं.} तर, किनारा।

प्रतीहार *पुं.* प्रतिहार, चौकीदार।

प्रतोद *पुं.* {सं.} किसी को कोई काम करने के लिए उत्तेजित या विवश करना; चाबुक, कोड़ा; अंकुश; चेतक।

प्रतोषना *पुं.* {सं. परितोषण} पतितुष्ट या सन्तुष्ट करना।

प्रत्न *वि.* {सं.} पुराना, प्राचीन।

प्रत्यंकन *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रत्यंकित} किसी अंकित वस्तु या आकृति की ठीक-ठीक प्रतिकृति प्रस्तुत करना, हुबहू नकल तैयार करना; किसी आकृति के ऊपर पतला कागज रखकर प्रस्तुत की हुई उसकी प्रतिकृति (ट्रेसिंग)।

प्रत्यंचा *पुं.* {सं. पतंचिका} धनुष की डोरी जिसकी सहायता से बाण छोड़ा जाता है, चिल्ला।

प्रत्यंत *वि.* {सं.} बिल्कुल सीमा पर का; अंतिम सिरे का।

प्रत्यंतर *पुं.* {सं.} किसी अंतर या विभाग के अंदर का और छोटा, अंतर या विभाग, जैसे प्रत्यंतर दशा।

प्रत्यक् *अव्य.* {हिं.} पश्चिम की ओर।

प्रत्यक्ष *वि.* {सं.} {*भाव.* प्रत्यक्षता} जो आँखों के सामने हो और साफ दिखाई दे; जिसका ज्ञान इंद्रियों से हो; जिसमें कोई घुमाव-फिराव न हो, नियम, परिपाटी आदि के विचार से सीधा; जिसमें किसी बाहरी साधन या आधार का उपयोग न हुआ हो; *पुं.* चार प्रकार के पुराणों में से वह जिसका आधार देखी या जानी हुई बातों पर होता है; *क्रि. वि.* आँखों के आगे, सामने।

प्रत्यक्षीकरण *पुं.* {सं.} इंद्रियों द्वारा ज्ञात कराने की क्रिया।

प्रत्यक्षदर्शी (र्दिन्) *पुं.* {सं.} वह जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो (आई-विटनेस)।

प्रत्यक्षवाद *पुं.* {सं.} एक प्रकार की दार्शनिक प्रणाली, जिसमें केवल प्रत्यक्ष या दृश्य बातों या तत्वों को प्रामाणिक और वास्तविक माना जाता है, और उनके मूल अदृश्य या अज्ञात कारणों का विचार नहीं किया जाता (पॉजिटिविज्म)।

प्रत्यग्र *वि.* {सं.} नूतन, नया, शोधा हुआ।

प्रत्यक्षवादी (दिन्) *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* **प्रत्यक्षवादिनी**} **वह जो केवल प्रत्यक्ष ज्ञान को प्रमाण मानता हो।**

प्रत्यनीक *पुं.* {सं.} शत्रु, दुश्मन; प्रतिपक्षी, विरोधी; साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी शत्रु या प्रतिपक्षी का कोई अपकार या अहित न कर सकने की अवस्था में उसके किसी संबंधी या साथी का अपकार या अहित करने का वर्णन होता है।

प्रत्यनुमान *पुं.* {सं.} तर्क में वह अनुमान जो किसी दूसरे के अनुमान का खंडन करते हुए किया जाए।

प्रत्यपकार *पुं.* {सं.} अपकार के बदले किया जानेवाला अपकार।

प्रत्यभिज्ञान *पुं.* {सं.} स्मृति की सहायता से होनेवाला ज्ञान; विभावन।

प्रत्यभिदेश *पुं.* {सं. प्रति + अभिदेश} {*वि.* प्रत्यभिदिष्ट} जिससे अभिदेश लेना या कुछ जानना चाहें, उसका किसी और को अभिदिष्ट करना या किसी दूसरे की ओर संकेत करना, जैसे कोश में यदि आप किसी शब्द का अर्थ ढूँढ़ें और उस शब्द के आगे किसी दूसरे शब्द की ओर संकेत किया गया हो, तो यह प्रत्यभिदेश कहलाएगा (क्रॉस रेफरेंस)।

प्रत्यमित्र *पुं.* {सं.} शत्रु।

प्रत्यय *पुं.* {सं.} विश्वास, प्रतीति; ऐतबार, साख (क्रेडिट); प्रमाण, सबूत; विचार, खयाल; बुद्धि, समझ; व्याख्या; आवश्यकता, जरूरत; प्रसिद्धि; चिन्ह, लक्षण; वे रीतियाँ जिनके द्वारा छंदों के भेद और उनकी संख्या जानी जाती हैं; व्याकरण में वे अक्षर जो किसी धातु या मूल शब्द के अन्त मे लगकर उसके अर्थ में कोई विशेषता लाते हैं, जैसे 'सरलता' में 'ता' प्रत्यय है (सफिक्स)।

प्रत्ययी *पुं. वि.* {सं.} विश्वस्त, विश्वास युक्त।

प्रत्ययपत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जिसमें लिखा रहता है कि इसे ले जानेवाले को इतना धन हमारे खाते से या ऋण दे दिया जाए (लेटर ऑफ क्रेडिट)।

प्रत्यर्पण *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रत्यर्पित} गई हुई चीज ला देना या उसके स्थान पर वैसी ही दूसरी वस्तु देना (रेस्टोरेशन)।

प्रत्यवसान *पुं.* {सं.} भोजन।

प्रत्यवहार *पुं.* {सं.} संहार, मार डालना।

प्रत्यवाय *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रत्यवायी} पाप, दुष्कर्म; विरोध; अपकार, हानि; बाधा; निराशा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्ययान्त *वि.* {सं.} (शब्द) जिसके अन्त में प्रत्यय हो।

प्रत्याक्रमण *पुं.* {सं.} किसी आक्रमण के उत्तर में किया जानेवाला आक्रमण, जवाबी हमला (काउंटर अटैक)।

प्रत्याखात *वि.* {सं.} (विषय या कथन) जिसका प्रत्याख्यान हुआ हो।

प्रत्याख्यान *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रत्याख्यात} कथन, सिद्धांत आदि का खंडन; किसी कार्य, निश्चय आदि के संबंध में की जानेवाली आपत्ति अथवा विरोध (प्रोटेस्ट)।

प्रत्यागत *वि.* {सं.} लौटकर आया हुआ।

प्रत्यागति *स्त्री.* {सं.} लौट आना।

प्रत्यागमन *पुं.* {सं.} लौट आना, वापसी; दोबारा या फिर से आना।

प्रत्यारोप *पुं.* {सं.} किसी आरोप के उत्तर में किया जानेवाला आरोप (काउंटरचार्ज)।

प्रत्यालोचन *पुं.* {सं.} किसी के किए हुए निर्णय या निर्णीत व्यवहार को फिर से देखना कि वह ठीक है या नहीं (रिव्यू); प्रत्यालोचना।

प्रत्यालोचना *स्त्री.* {सं.} किसी ग्रंथ या विषय की आलोचना का उत्तर या उस आलोचना में कही बातों की समीक्षा।

प्रत्यावर्तन *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रत्यावर्तित} लौटकर अपने स्थान पर आना, वापस आना; किसी दी हुई आज्ञा या किए हुए कार्य या निश्चय को नई आज्ञा या निर्णय नहीं के समान करना, रद्द करना (रिवोकेशन)।

प्रत्यावर्तित *वि.* {सं.} जिसका प्रत्यावर्तन हुआ हो या किया गया हो।

प्रत्याशा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* प्रत्याशित} आशा, उम्मीद।

प्रत्याहार *पुं.* {सं.} योग के आठ अंगों में से एक, जिसमें इंद्रियों को विषयों से हटाकर चित्त एकाग्र किया जाता है, इंद्रियनिग्रह; प्रतिकार; किसी काम को न होने के बराबर करना; फिर से ग्रहण या आरम्भ करना (रिज़म्प्शन)।

प्रत्युक्त *पुं.* {सं.} उत्तर दिया हुआ।

प्रत्युत *पुं.* {सं.} बल्कि, वरन्, इसके विपरीत।

प्रत्युत्तर *पुं.* {सं.} उत्तर मिलने पर दिया हुआ उसका उत्तर, जवाब का जवाब।

प्रत्युत्पन्न *वि.* {सं.} जो फिर से उत्पन्न हो; जो ठीक समय पर सामने आए।

प्रत्युत्पन्नमति *पुं.* {सं.} जो तुरंत कोई उपयुक्त बात या काम सोच ले।

प्रत्यूह *पुं.* {सं.} विघ्न, बाधा।

प्रत्यूष *पुं.* {सं.} प्रभात, तड़का।

प्रत्येक *वि.* {सं.} बहुतों में से या जितने हों, उन सब में से हर एक (एवरी)।

प्रथम *वि.* {सं.} गिनती में सबसे पहले आनेवाला, पहला; सर्वश्रेष्ठ, सबसे अच्छा; *क्रि. वि.* पहले, आगे।

प्रथम कारक *पुं.* {सं.} व्याकरण में, कर्ता कारक।

प्रथमता *स्त्री.* {सं.} 'प्रथम' का भाव या गुण; औरों की तुलना में पहला स्थान मिलने की दशा या भाव, प्राथमिकता (प्रायॉरिटी)।

प्रथम पुरुष *पुं.* {सं.} उत्तम पुरुष।

प्रथमा *स्त्री.* {सं.} व्याकरण में कर्ता कारक।

प्रथमेतर *वि.* {सं.} भिन्न, अलग।

प्रथा *स्त्री.* {सं.} बहुत दिनों से या बहुत-से लोगों में प्रचलित रीति, रिवाज, चाल।

प्रथागत *वि.* {सं.} प्रथा के रूप में प्रचलित।

प्रथित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* प्रथिता} लम्बा-चौड़ा, विस्तृत; प्रसिद्ध।

प्रद *वि.* {सं.} देनेवाला, दायक (यौगिक में, जैसे फलप्रद)।

प्रदक्षिणा *स्त्री.* {सं.} देवमूर्ति या तीर्थ के चारों ओर घूमना, परिक्रमा।

प्रदत्त *वि.* {सं.} दिया हुआ।

प्रदर *पुं.* {सं.} स्त्रियों का एक प्रकार का रोग, जिसमें उनके गर्भाशय से लसीला सफेद पानी निकलता है।

प्रदर्श *पुं.* {सं.} भेंट, आज्ञा, रूप।

प्रदर्शक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* प्रदर्शिका} दिखलानेवाला, वह जो कोई चीज दिखलाए; प्रदर्शन करनेवाला।

प्रदर्शन *पुं.* {सं.} दिखलाने का काम; जलूस, नारे आदि ऐसे काम जो किसी बात से अपना असंतोष प्रकट करने या अपने विचार प्रकट करने तथा जनता की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए सामूहिक रूप से किए जाते हैं (डिमांसट्रेशन); प्रदर्शनी।

प्रदर्शन-कक्ष *पुं.* {सं.} वह कक्ष जिसमें दुकानदार नमूने की वस्तुएँ सजाकर रखते हैं (शो-रूम)।

प्रदर्शनकारी (रिन्) *पुं.* {सं.} वह जो प्रदर्शन करता हो।

प्रदर्शनी *स्त्री.* {सं.} तरह-तरह की चीजें लोगों को दिखलाने के लिए एक जगह रखना; वह स्थान जहाँ इस प्रकार चीजें रखी जाएँ, नुमाइश।

प्रदर्शिका *स्त्री.* {सं.} वह पुस्तक, जिसमें किसी स्थान आदि के संबंध की मुख्य बातें लोगों को उनका सामान्य या विशेष ज्ञान कराने के लिए दी गई हों।

प्रदर्शित *वि.* {सं.} दिखलाया हुआ; प्रदर्शनी में रखा हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदर्शिनी *स्त्री.* प्रदर्शनी।

प्रदल *पुं.* {सं.} बाण, तीर।

प्रदव्य *पुं.* {सं.} दावानल, जंगल की आग।

प्रदाता *वि.* प्रदायक।

प्रदान *पुं.* {सं.} किसी को कुछ देने की क्रिया; वह जो दिया जाए; दिया या चुकाया जानेवाला धन या रकम (पेमेंट); सहायता, व्यय आदि के लिए स्वीकृत अथवा दिया जानेवाला धन, अनुदान (ग्रांट)।

प्रदानी *वि.* प्रदायक।

प्रदायक (दायी) *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* प्रदायिका} देनेवाला, जो दे।

प्रदाव *पुं.* {सं.} दावाग्नि, जंगल की आग।

प्रदाह *पुं.* {सं.} ज्वर, फोड़े, सूजन आदि के कारण शरीर में होनेवाली जलन, दाह।

प्रदिशा *स्त्री.* {सं.} दो दिशाओं के बीच की दिशा, कोण।

प्रदीप *पुं.* {सं.} दीपक, दीया।

प्रदीपक *पुं. वि.* {सं.} प्रकाशक, उद्दीपक।

प्रदीपिका *स्त्री.* {सं.} छोटी लालटेन, एक रागिनी।

प्रदीपन *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रदीप्त} प्रकाश या उजाला करना; उज्ज्वल करना, चमकाना।

प्रदीप्त *वि.* {सं.} प्रकाश से युक्त, उजला; चमचमाता हुआ।

प्रदीप्ति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* प्रदीप्त} उजाला, प्रकाश; चमक, आभा।

प्रदुमन *पुं.* प्रद्युम्न।

प्रदुष्ट *वि.* {सं.} बहुत बड़े दोषों से युक्त; लोभ, स्वार्थ आदि के कारण नैतिक दृष्टि से पतित (करप्ट)।

प्रदेय *वि.* {सं.} प्रदान करने के योग्य।

प्रदेश *पुं.* {सं.} किसी देश का वह विभाग जिसके निवासियों की भाषा, रहन-सहन, व्यवहार, शासन-पद्धति आदि औरों से भिन्न और स्वतंत्र हो, प्रान्त, सूबा; स्थान, जगह; अंग, अवयव।

प्रदेशकारी *पुं.* {सं.} योगियों का एक संप्रदाय।

प्रदेशवाद *पुं.* {सं.} अपने-अपने प्रदेश तथा प्रदेशवासियों के हित की रक्षा के विचार से काम करने का सिद्धांत।

प्रदोष *पुं.* {सं.} सूर्य के अस्त होने का समय, संध्या; प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी को होनेवाला एक व्रत, जिसमें संध्या समय शिव का पूजन करके भोजन किया जाता है; बहुत बड़ा दोष या अपराध।

प्रद्युम्न *पुं.* {सं.} कामदेव; श्रीकृष्ण के बड़े पुत्र का नाम।

प्रद्योत *पुं.* {सं.} किरण; दीप्ति, चमक।

प्रद्योतन *पुं.* {सं.} सूर्य, चमक।

प्रधान *वि.* {सं.} {*भाव.* प्रधानता} सबमें श्रेष्ठ या मुख्य, खास (प्रिंसिपल); *पुं.* मुखिया, सरदार; सचिव, मन्त्री; कुछ नियत काल के लिए किसी संस्था का चुना हुआ या विभाग का मुख्य या सबसे बड़ा अधिकारी, अध्यक्ष (हेड)।

प्रधान कार्यालय *पुं.* {सं.} व्यापारिक अथवा अन्य संस्थाओं का मुख्य और सबसे बड़ा कार्यालय, जहाँ से उसके सब कार्यों तथा शाखाओं का संचालन होता है (हेड ऑफिस)।

प्रधानाध्यापक *पुं.* {सं.} विद्यालय का प्रधान अध्यापक।

प्रधानाध्यापिका *स्त्री.* {सं.} प्रधान अध्यापिका।

प्रधानी *स्त्री.* {सं. प्रधान + हिं. ई (प्रत्य.)} प्रधान का पद या कार्य।

प्रन *पुं.* प्रण, संकल्प, निश्चय।

प्रनम (व)ना *क्रि. स.* {हिं.} प्रणमना।

प्रनष्ट *वि.* {सं.} पूरी तरह से नष्ट।

प्रनति *स्त्री.* प्रणति।

प्रनना' *अ.* {सं. प्रणन्} प्रणाम या नमस्कार करना; नम्र होना, झुकना; शरण में आना।

उदा. प्रनत-जन-कुमुद-बन-इन्दु-कर-जालिका-तुलसी।

प्रनवना *अ.* प्रणमना।

प्रनामी *पुं.* {सं. प्रणाम + हिं. + ई (प्रत्य.)} प्रणाम करनेवाला, जो प्रणाम करे; *स्त्री.* वह दक्षिण जो गुरु, ब्राह्मण आदि के सामने प्रणाम करने के समय रखी जाए।

प्रनाशी *वि.* {हिं.} नाश करनेवाला।

प्रनिपात *पुं.* प्रणिपात।

प्रपंच *पुं.* {सं.} संसार और उसका जंजाल; विस्तार, फैलाव; बखेड़ा, झगड़ा, झमेला; आडंबर, ढोंग; छल, कपट।

प्रपंची *वि.* {सं. प्रपंचिन्} प्रपंच रचनेवाला, ढोंगी; छली, कपटी।

प्रपक्व *वि.* {सं.} अच्छी तरह से पका हुआ।

प्रपत्ति *स्त्री.* अनन्य भक्ति।

प्रपन्न *वि.* {सं.} आया हुआ, प्राप्त; शरणागत।

प्रपात *पुं.* {सं.} वह बहुत ऊँचा स्थान, जहाँ से कोई वस्तु सीधी नीचे गिरे; पहाड़ या ऊँचे स्थान से गिरनेवाली जल की धारा, झरना, दरी।

प्रपाद *पुं.* {सं.} असमय का प्रसव।

प्रपालन *पुं.* {सं.} अच्छी तरह रक्षा करना।

प्रपितामह *पुं.* {सं.} दादा का बाप, परदादा।

प्रपुत्र *पुं.* पौत्र, बेटे का बेटा।

प्रपूर्ण *पुं.* {सं.} {*भाव.* प्रपूर्णता} अच्छी तरह भरा हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रपौत्र पुं. {सं.} {*स्त्री.* प्रपौत्री} पड़पोता, पोते का पुत्र।
प्रफुलना *अ.* {सं. प्रफुल्ल} फूलना, खिलना।
प्रफुला *स्त्री.* {सं. प्रफुल्ल} कुमुदिनी, कुईं; कमलिनी, कमल।
प्रफुलित *वि.* = प्रफुल्ल।
प्रफुल्ल *वि.* {सं.} {*भाव.* प्रफुल्लता} खिला हुआ, विकसित (फूल); जिसमें फूल लगे हों (वृक्ष); खुला हुआ; प्रसन्न।
प्रबंध पुं. {सं.} कोई काम ठीक तरह से पूरा करने की व्यवस्था, इंतजाम, बंदोबस्त (मैनेजमेंट); आयोजन, उपाय; पद्य में लिखा हुआ काव्य; कोई ऐसा लेख या निबंध, विशेषत: विश्वविद्यालयों के विचारार्थ उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों का लिखा हुआ वह लेख, जिसमें कोई नई खोज की गई हो या युक्तियों या प्रमाणों के द्वारा कोई नया सिद्धांत प्रतिपादित हो (थीसिस)।
प्रबंधक पुं. {सं.} प्रबंध या इंतजाम करनेवाला (मैनेजर)।
प्रबंधकारिणी *स्त्री.* प्रबंध-समिति।
प्रबंधकीय *वि.* {सं.} प्रबंधक-संबंधी।
प्रबंध-समिति *स्त्री.* {सं.} वह समिति जो किसी सभा, समाज या आयोजन के सब प्रबंध करती हो (मैनेजिंग कमिटी)।
प्रबल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* प्रबला} बलवान; जोर का, प्रचंड, उग्र तेज; घोर।
प्रबला *वि. स्त्री.* {सं.} बहुत बलवती, प्रचंडा।
प्रबलाकी पुं. {सं.} सर्प, साँप।
प्रबाल पुं. {सं.} 'प्रवाल', मूँगा।
प्रबुद्ध पुं. {सं.} जागा हुआ; होश में आया हुआ; ज्ञानी।
प्रबोध (न) पुं. {सं.} {*वि.* प्रबुद्ध, कर्ता प्रबोधक} नींद खुलना, जगना; यथार्थ और पूरा ज्ञान; ढाढ़स, दिलासा।
प्रबोधन पुं. {सं.} जागरण, जगाना, ज्ञान देना।
प्रबोधना *स.* {सं. प्रबोधन} जगाना; सचेत या होशियार करना; समझाना-बुझाना; सांत्वना या ढारस देना, तसल्ली देना।
प्रभंजन पुं. {सं.} बहुत अधिक तोड़-फोड़; प्रचंड वायु, आँधी।
प्रभंजन-जाया *पुं.* = हनुमान।
प्रभद्रा *स्त्री.* {सं.} प्रसारिणी लता।
प्रभव पुं. {सं.} उत्पत्ति का कारण या स्थान; जन्म; सृष्टि, संसार।
प्रभवन पुं. {सं.} उत्पत्ति, अधिष्ठान।
प्रभविष्णु पुं. {सं.} {*वि.* प्रभविष्णुता} दूसरों पर प्रभाव डालनेवाला, प्रभावशाली; बलवान।
प्रभा *स्त्री.* {सं.} आभा, चमक।
प्रभाउ पुं. प्रभाव।
प्रभाकर पुं. {सं.} सूर्य; चन्द्रमा; अग्नि; समुद्र।
प्रभात पुं. {सं.} सवेरा, तड़का।
प्रभातकर पुं. {सं.} सूर्य।
प्रभातफेरी *स्त्री.* {सं. प्रभात + हिं. फेरी} प्रचार आदि के लिए बहुत सबेरे दल बाँधकर गाते-बजाते और नारे लगाते शहर का चक्कर लगाना।
प्रभाती *स्त्री.* {सं. प्रभात} एक प्रकार का गीत, जो सवेरे गाया जाता है।
प्रभापन पुं. {सं.} उजाला करना।
प्रभामंडल पुं. {सं.} देवताओं और दिव्य पुरुषों आदि के मुख के चारों ओर का वह प्रभापूर्ण मंडल, जो चित्रों या मूर्तियों में दिखलाया जाता है, परिवेश, भूमण्डल (हैलो)।
प्रभामय *वि.* {सं.} दीप्तिमय।
प्रभाव पुं. {सं.} होना या सामने आना, प्रादुर्भाव; किसी वस्तु या बात पर किसी क्रिया का होनेवाला परिणाम या फल, असर, जैसे ओषधि का प्रभाव (एफेक्ट); किसी व्यक्ति की शक्ति, आतंक, सम्मान, अधिकार आदि का दूसरे व्यक्तियों, घटनाओं, कार्यों आदि पर होनेवाला परिणाम (इन्फ्लुएंस); सामर्थ्य, शक्ति।
प्रभावक *वि.* {सं.} प्रभाव करने, दिखलाने या डालनेवाला।
प्रभावशाली *वि.* {सं. प्रभावशालिन्} जिसका दूसरों पर यथेष्ट या बहुत प्रभाव पड़ता हो।
प्रभावन्वित *वि.* {सं. प्रभाव} जिसपर प्रभाव पड़ा हो।
प्रभावी *वि.* {सं. प्रभाव + हिं. ई (प्रत्य.)} जिसका किसी बात पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता हो, जैसे प्रभावी दिनाँक, प्रभावी साक्षी।
प्रभास पुं. {सं.} एक वस्तु का नाम।
प्रभासन पुं. {सं.} दीप्ति, ज्योति; एक प्राचीन तीर्थ, सोमतीर्थ।
प्रभासना *अ.* {सं. प्रभासन} दीप्ति, ज्योति।
प्रभु पुं. {सं.} {*भाव.* प्रभुता, प्रभुत्व} अधिपति; स्वामी, मालिक; ईश्वर, परमात्मा।
प्रभुता *स्त्री.* {सं.} प्रभु या ईश्वर होने का भाव; प्रभुत्व।
प्रभुताई *स्त्री.* = प्रभुता।
प्रभुत्व पुं. {सं.} ऐसा प्रभावपूर्ण और प्रबल अधिकार, जिसके सामने और सब लोग दबे रहें; स्वामी, राजा, शासक आदि होने की दशा या भाव; प्रभुता।
प्रभुसत्ता *स्त्री.* {सं.} देश, राज्य आदि की वह सबसे बड़ी सत्ता या अधिकार जिसके ऊपर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कोई बड़ी सत्ता या अधिकार न हो और जो अपने सभी कार्यक्षेत्रों में सब प्रकार से पूर्ण स्वतंत्र हो (सॉवरन अथॉरिटी)।

प्रभूत *वि.* {सं.} निकला हुआ; उन्नत; प्रचुर, बहुत अधिक।

प्रभृति *यो॰ज.* {सं.} इत्यादि, वगैरह।

प्रभेद *पुं.* {सं.} भेद, प्रकार, तरह।

प्रभेदक *पुं. वि.* {सं.} विभाग करनेवाला।

प्रभेव *पुं.* = प्रभेद।

प्रमंडल *पुं.* {सं.} प्रदेश का वह विभाग जिसमें कई मण्डल या जिले हों (कमिश्नरी या डिवीजन)।

प्रमत्त *वि.* {सं.} {*भाव.* प्रमत्ता} नशे में चूर, मस्त; पागल, बावला; जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो।

प्रमथ *पुं.* {सं.} शिव के एक प्रकार के गण।

प्रमथन *पुं.* {सं.} बध, हत्या, मथना, सताना।

प्रमद *पुं.* {सं.} मतवालापन; आनन्द, प्रसन्नता; *वि.* मतवाला, मत्त; मस्त, प्रसन्न।

प्रमदा *स्त्री.* {सं.} युवा स्त्री, युवती।

प्रमय *पुं.* {सं.} वध, हत्या।

प्रमर्दन *वि.* {सं.} अच्छी तरह से रगड़नेवाला; *पुं.* एक असुर का नाम।

प्रमा *स्त्री.* {सं.} शुद्ध और यथार्थ ज्ञान; माप; तौल।

प्रमाण *पुं.* {सं.} वह कथन या तत्व जिससे कोई बात सिद्धि हो, सबूत (प्रूफ); ऐसी बात जो किसी दूसरी बात के ठीक होने का निश्चय कराती हो (एविडेंस); वह कथन या तत्व जिसे सब लोक ठीक मानते हों; साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी बात का कोई प्रमाण मिलने पर उस बात के प्रत्यक्ष या सिद्ध होने का वर्णन होता है (न्यायशास्त्र में प्रमाण के जो आठ भेद कहे गए हैं, उन्हीं के अनुसार इसके भी आठ प्रकार के भेद माने गए हैं); सत्यता, सच्चाई; *निपा.* पर्यंत, तक।

प्रमाणक *पुं.* {सं.} वह पत्र जिसपर प्रमाण के रूप में कोई लेख हो, प्रमाणपत्र (सर्टिफिकेट); *वि.* प्रमाणित करनेवाला।

प्रमाणकर्ता *पुं.* {सं.} वह जो कोई बात प्रमाणित करता हो (सर्टिफायर)।

प्रमाणकुशल *वि.* {सं.} अच्छा तर्क करनेवाला।

प्रमाणता *स्त्री.* {सं.} प्रामाणिक होने का भाव।

प्रमाणना *स.* प्रमानना।

प्रमाणपत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र, जिसपर कोई बात प्रमाणित करनेवाला कोई लेख हो, प्रमाणक (सर्टिफिकेट, टेस्टिमोनिअल)।

प्रमाणिक *वि.* प्रामाणिक, जो प्रत्यक्ष प्रमाणों से सिद्ध हो।

प्रमाणित *वि.* {सं.} जो प्रमाण द्वारा ठीक सिद्ध हुआ हो, साबित (प्रूव्ड); जिसके संबंध में यह लिखा गया हो कि यह प्रमाणिक या ठीक है (सर्टिफायड); जिसके संबंध में यह लिखा गया हो कि वास्तविक है, सत्यापित (एटेस्टेड)।

प्रमाणी *स्त्री.* {सं.} प्रमाणिका छंद।

प्रमाणीकरण *पुं.* {सं.} यह लिखना कि अमुक बात या लेख ठीक और प्रामाणिक है (सर्टिफिकेशन); किसी लेख पर यह लिखना कि यह वास्तविक और सत्य है (एटैस्टेशन)।

प्रमाता *पुं.* {सं. प्रमातृ} प्रमा का ज्ञान रखनेवाला; आत्मा या चेतन पुरुष; द्रष्टा, साक्षी; *स्त्री.* {सं.} पिता की माता, दादी।

प्रमाथ *वि.* {सं.} मथन, दुःख देना; किसी स्त्री के साथ बलात्कार।

प्रमाद *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रमादी} भूल-चूक; भ्रम, भ्रान्ति, धोखा; अभिमान आदि के कारण कुछ का कुछ समझना या करना; ठीक तरह से ध्यान न देने के कारण कर्तव्यपालन या कार्य के निर्वाह में होनेवाली उक्त प्रकार की त्रुटि या भूल (नेग्लिजेंस)।

प्रमादी *वि.* {सं.} बावला, पागल।

प्रमादतः *क्रि. वि.* {सं.} प्रमाद के वश में हो या रहकर, प्रमाद के कारण (नेग्लिजेंटीली)।

प्रमान *वि.* {सं. प्रामाणिक} प्रामाणिक; निश्चित, पक्का।

उदा. या प्रमान मन मोरे–**तुलसी।**

पुं. = प्रमाण।

प्रमानना' *स.* {सं. प्रमा + हिं. ना (प्रत्य.)} प्रमाण के रूप में मानना, ठीक समझना; प्रमाणित या सिद्ध करना; स्थिर या निश्चित करना।

प्रमानी *वि.* प्रामाणिक माननीय, मानने योग्य।

प्रमित *वि.* {सं.} परिमित; ठीक या निश्चित।

प्रमीत *वि.* {सं.} जिसकी मृत्यु हो गई हो, मरा हुआ, मृत (केवल स्वाभाविक या प्रकृत रूप से मरनेवाले मनुष्यों के लिए) (डिसीज्ड)।

प्रमीति *स्त्री.* {सं.} मनुष्य का स्वाभाविक या प्रकृत रूप से मरना, साधारण मृत्यु (डिसीज)।

प्रमुक्ति *स्त्री.* {सं.} निर्वाण, मोक्ष।

प्रमुख *वि.* {सं.} प्रथम, पहला; प्रधान, मुख्य।

प्रमुद *वि.* प्रमुदित, अति आनंदित; *पुं.* प्रमोद।

प्रमुदना *अ.* {सं. प्रमोद} प्रमुदित होना, प्रसन्न होना।

प्रमुदित *वि.* {सं.} हर्षित, प्रसन्न, आनंदित।

प्रमूषित *वि.* {सं.} अपहृत, चुराया हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमेय *वि.* {सं.} जो प्रमाण का विषय हो सके; जो प्रमाणित किया जाने को हो; जो नापा जा सके।

प्रमेह *पुं.* {सं.} एक रोग जिसमें मूत्र के साथ या उसके मार्ग से शरीर की शुक्र आदि धातुएँ निकलती रहती हैं।

प्रमेही *पुं.* {सं.} प्रमेह का रोगी।

प्रमोद *पुं.* {सं.} हर्ष, आनन्द।

प्रमोही *पुं.* {सं.} मोहजनक।

प्रयंक *पुं.* पर्यंक।

प्रयंत *निपा.* पर्यंत।

प्रयत *वि.* {सं.} पवित्र, नम्र।

प्रयत्न *पुं.* {सं.} कार्य या उद्यम जो कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किया जाए, प्रयास, चेष्टा, कोशिश; वर्णों के उच्चारण में होनेवाली गले, मुख आदि की क्रिया (व्याकरण)।

प्रयत्नरत *वि.* {सं.} प्रयत्न में लगा हुआ।

प्रयत्नशील *वि.* {सं.} जो प्रयत्न कर रहा हो, प्रयत्न या कोशिश में लगा हुआ।

प्रयत्नशीलता *स्त्री.* {सं.} प्रयत्नशील होने की अवस्था या भाव।

प्रयाण *पुं.* {सं.} एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना या चलना, प्रस्थान, यात्रा (डिपार्चर); युद्धयात्रा, चढ़ाई; यह लोक छोड़कर (मरकर) स्वर्ग या परलोक जाना।

प्रयास *पुं.* {सं.} प्रयत्न, उद्योग, कोशिश; परिश्रम, मेहनत।

प्रयासरत *वि.* {सं.} प्रयास में लगा हुआ।

प्रयासी *वि.* {सं. प्रयासिन्} प्रयत्न या कोशिश करनेवाला।

प्रयुक्त *वि.* {सं.} अच्छी तरह मिलाया या जोड़ा हुआ, सम्मिलित; जिसका प्रयोग हो चुका हो या होता हो; जो काम में लाया गया हो, जिसका उपयोग हुआ हो (यूज्ड)।

प्रयुत्सु *पुं.* {सं.} योद्धा, वीर, इंद्र।

प्रयोक्ता *पुं.* {सं. प्रयोक्तृ} प्रयोग या व्यवहार करनेवाला; उपयोग या काम में लाने वाला।

प्रयोग *पुं.* {सं.} किसी काम में लगना; किसी वस्तु के कार्य में लाए जाने की क्रिया या भाव, व्यवहार, इस्तेमाल, बरता जाना; बल, अधिकार आदि का व्यवहार या उपयोग करना; कोई बात जानने या समझने के लिए अथवा परीक्षा, जाँच आदि के रूप में होनेवाला किसी क्रिया का साधन (एक्सपेरिमेंट); आज्ञा आदि के अनुसार काम करना, अनुपालन, तामील (सरविस); मारण, मोहन आदि तांत्रिक उपचार या कृत्य; नाटक, अभिनय।

प्रयोगकर्ता *पुं.* {सं.} प्रयोग करनेवाला; वैज्ञानिक प्रयोग करनेवाला।

प्रयोगशाला *स्त्री.* {सं.} वह स्थान जहाँ किसी विषय का, विशेषतः रासायनिक प्रयोग या जाँच होती हो (लेबोरेटरी)।

प्रयोगी *वि.* {सं.} प्रयोग करनेवाला।

प्रयोजक *पुं.* {सं.} प्रयोग या अनुष्ठान करनेवाला, प्रेरक।

प्रयोजन *पुं.* {सं.} काम, अर्थ; वह विचार जिसे पूरा करने के लिए कोई काम किया जाए, उद्देश्य, अभिप्राय (पर्पज); उपयोग, व्यवहार।

प्रयोजनवती (लक्षणा) *स्त्री.* {सं.} वह लक्षणा, जो प्रयोजन द्वारा वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ प्रकट करती है (साहित्य में इसके दो भेद और कई उपभेद कहे गए हैं)।

प्रयोजनीय *वि.* {सं.} प्रयोजन या काम में आनेवाला, काम का।

प्रयोज्य *वि.* {सं.} जिसका प्रयोग किया जा सकता हो या किया जाने को हो; जो अधिकार के रूप में काम में लाया जा सकता हो (एक्सरसाइजेबुल)।

प्रराध्य *वि.* {सं.} प्रशंसा के योग्य।

प्ररोह (ण) *पुं.* {सं.} आरोह, चढ़ाई; उगना, जमना।

प्ररोहण *पुं.* {सं.} उत्पत्ति, आरोह, उगना।

प्रलंब *वि.* {सं.} नीचे की तरफ का कुछ दूर तक लटकता हुआ; लम्बा; आगे निकला हुआ।

प्रलंबन *पुं.* {सं.} किसी कर्मचारी के दोष या अपराध की सूचना पाने पर उसकी ठीक जाँच होने तक के लिए उसका अपने पद से हटाया जाना, मुअत्तल होना (सस्पेंशन)।

प्रलंबित *वि.* {सं.} (कार्यकर्ता) जिसका किसी अभियोग या अपराध के कारण प्रलंबन हुआ हो, जो अंतिम निर्णय तक के लिए अपने पद से हटा दिया गया हो, मुअत्तल (सस्पेंडेड)।

प्रलंबी *वि.* {सं. प्रलंबिन्} {*स्त्री.* प्रलंबिनी} प्रलंब; सहारा लेनेवाला।

प्रलंभ *पुं.* {सं.} प्राप्ति, लाभ।

प्रलंभन *पुं.* {सं.} लाभ, छल।

प्रलयंकर *वि.* {सं.} {*स्त्री.* प्रलयंकारी} प्रलय का-सा सर्वनाश करनेवाला।

प्रलय *पुं.* {सं.} लय को प्राप्त होना, न रह जाना; संसार का प्रकृति में लीन होकर मिट जाना, जो बहुत दिनों पर होता है और जिसके बाद फिर नई सृष्टि होती है; साहित्य में शृंगार रस के अंतर्गत वह अवस्था जिसमें किसी विषय या बात में तन्मय होने के कारण तन-मन की सुधि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं रहती, यह सात्विक अनुभावों के अंतर्गत माना गया है।

प्रलयकर *वि.* {सं.} प्रलयंकर।

प्रलव *पुं.* {सं.} खंड, टुकड़ा।

प्रलवण *वि.* {सं.} फसल काटना।

प्रलाप *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रलापी} पागलों की तरह कही हुई व्यर्थ की बातें।

प्रलेख *पुं.* {सं.} वह करण या पत्र जिसमें दो पक्षों में होनेवाली संविदा या अनुबंध लिखा हो और जो निष्पादक के द्वारा हस्ताक्षरित होकर दूसरे पक्ष को दिया गया हो (डीड)।

प्रलेखक *पुं.* {सं.} वह जो लेख या दस्तावेज और प्रार्थनापत्र आदि लिखता हो, अर्जीनवीस, कातिब।

प्रलेखन *पुं.* {सं.} लेख, दस्तावेज, प्रार्थना-पत्र आदि लिखने का काम।

प्रलेप *पुं.* {सं.} अंग पर लगाई जानेवाली कोई गीली दवा, लेप।

प्रलेपक *वि.* {सं.} लेप करनेवाला; *पुं.* पुराना ज्वर।

प्रलेपन *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रलेपक, प्रलेप्य} लेप करने या लगाने की क्रिया।

प्रलोभन *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रलोभित, प्रलोभक} लोभ दिखाना, लालच देना; कोई कार्य, विशेषत: अनुचित कार्य करने के लिए मन में उत्पन्न होनेवाली वृत्ति, लोभ (टेम्प्टेशन); वह बात या कार्य जो किसी जो किसी को लुभाकर अपनी ओर खींचने या उससे कोई काम करनेवाला हो।

प्रवंचन *पुं.* प्रवंचना।

प्रवंचना *स्त्री.* {सं.} {*वि.* प्रवंचक} किसी को धोखा देने या ठगने का काम, छल, ठगपना।

प्रवंचित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* प्रवंचिता} जो ठग गया हो।

प्रवक्ता *पुं.* {सं. प्रवक्तृ} अच्छी तरह समझकर कहनेवाला; किसी संस्था या विभाग की ओर से अधिकारिक रूप में कोई बात कहनेवाला (स्पोक्समैन)।

प्रवग *पुं.* {सं.} खग, पक्षी।

प्रवचन *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रवचनीय} अच्छी तरह समझकर कहना; धर्मग्रंथ या धार्मिक, नैतिक, आदि बातों की जबानी की जानेवाली व्याख्या।

प्रवचनीय *वि.* {सं.} समझाकर कहने योग्य।

प्रवट *पुं.* {सं.} गेहूँ, गोधूम।

प्रवण *पुं.* {सं.} {*भाव.* प्रवणता} क्रमश: नीचे गई भूमि, ढाल, उतार; चौराहा; उदर, पेट; *वि.* ढालुआँ; झुका हुआ, नत; प्रवृत्त, रत; नम्र, विनीत; उदार; दक्ष, निपुण; समर्थ।

प्रवत्स्यत्पतिका *स्त्री.* {सं.} वह नायिका, जिसका पति विदेश जाने को हो और जो उसके वियोग की कल्पना से दुखी हो।

प्रवर *वि.* {सं.} औरों की अपेक्षा बड़ा, मुख्य या श्रेष्ठ; अधिकार, योग्यता आदि के विचार से ऊँचा या बड़ा माना जानेवाला, जैसे प्रवर क्षेत्रपति या स्वामी, प्रवर अधिकार या अधिकारी (सुपीरियर); *पुं.* किसी गोत्र वंश का प्रवर्तक कोई विशेष महत्त्व का मुनि; संतति; वह जो किसी विषय का विशेष रूप से ज्ञाता हो, अच्छा जानकार (एक्सपर्ट)।

प्रवर्ग *पुं.* {सं.} हवन करने की अग्नि।

प्रवरण *पुं.* {सं.} चयन।

प्रवरण-समित *स्त्री.* {सं.} किसी विषय पर विचार करके सम्मति देने के लिए उस विषय के चुने हुए विशेषज्ञों की बनाई हुई समिति।

प्रवर्तक *पुं.* {सं.} कोई काम चलानेवाला, संचालक; प्रचलित या आरंभ करनेवाला; किसी को किसी काम में, विशेषत: अनुचित या विधिविरुद्ध काम में लगाने और उसकी सहायता करनेवाला (एबेटर); कोई नया काम या बात निकालने या चलानेवाला (ओरिजिनेटर); नाटक में प्रस्तावना का वह प्रकार जिसमें सूत्रधार के वर्तमान समय का वर्णन करने पर, पात्र उसी की चर्चा करता हुआ रंगमंच पर आता है।

प्रवर्तन *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रवर्तित, प्रवर्तनीय, प्रवर्तक} कार्य आरंभ करना, काम ठानना; प्रचलित करना, चलाना; दुरुत्साहन।

प्रवर्ष *पुं.* {सं.} अति तृष्टि।

प्रवर्षण *पुं.* {सं.} वर्षा, बरसात; किष्किंधा के पास का एक पर्वत।

प्रवह *पुं.* {सं.} तेज बहाव; सात वायुओं में से एक वायु।

प्रवहमान् *वि.* {सं. प्रवहमत्} जोरों से बहता या चलता हुआ।

प्रवाद *वि.* {सं.} बातचीत; जन-साधारण में प्रचलित कोई ऐसी बात जिसका कोई पुष्ट आधार न हो, जनश्रुति, जनरव, किंवदंती, अफवाह (रयूमर); झूठी बदनामी, अपवाद; किसी को दी जानेवाली सूचना (रिपोर्ट)।

प्रवान *पुं.* = प्रमाण।

प्रवार *पुं.* {सं.} चादर, दुपट्टा।

प्रवारण *पुं.* {सं.} निषेद्य।

प्रवाल *पुं.* {सं.} मूँगा, विद्रुम; वृक्ष के नए और कोमल पत्ते, किशलय।

प्रवास *पुं.* {सं.} अपना देश छोड़कर दूसरे देश में जा बसना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवासन पुं. {सं.} देश से बाहर निकालना।
प्रवासित *वि.* {सं.} देश से निकाला हुआ।
प्रवासी *वि.* {सं. प्रवासिन्} परदेश में जाकर बसने या रहनेवाला।
प्रवाह पुं. {सं.} जल का बहाव; बहता हुआ पानी, धारा; नदी या बहते हुए पानी में कोई चीज डालकर बहाना, भसान, जैसे किसी मृत व्यक्ति की अस्थियों या देवी-देवताओं की मूर्ति का प्रवाह (एमर्शन); काम का चलना या जारी रहना; चलता हुआ क्रम, तार, सिलसिला।
प्रवाहक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* प्रवाहिका} अच्छी तरह वहन करनेवाला; जोर से चलाने या बहानेवाला।
प्रवाहित *वि.* {सं.} बहता हुआ।
प्रवाही *वि.* {सं. प्रवाहिन्} {*स्त्री.* प्रवाहिनी} बहनेवाला; तरल, द्रव।
प्रविधान पुं. {सं.} विधायिका सभा के द्वार बनाया हुआ विधान (स्टैट्यूट)।
प्रविधि *स्त्री.* {सं.} किसी विशेष विषय से संबंध रखनेवाली या किसी विशेष प्रकार की विधि, जैसे साक्ष्य प्रविधि; तकनीक।
प्रविष्ट *स्त्री.* {सं.} जिसका प्रवेश हुआ हो, घुसा हुआ।
प्रविष्टि *स्त्री.* {सं.} कोई एक रकम या बात, मद।
प्रवीण *वि.* {सं.} {*भाव.* प्रवीणता} किसी कार्य में विशेष रूप से निपुण, कुशल, दक्ष, होशियार।
प्रवीर पुं. *वि.* {सं.} बड़ा योद्धा, बहादुर।
प्रवृत्त *वि.* {सं.} किसी बात की ओर झुका हुआ; किसी काम में लगा हुआ; उद्यत, तैयार।
प्रवृत्ति *स्त्री.* {सं.} प्रवाह, बहाव; यों ही, स्वभावतः अथवा कुछ रुचि होने के कारण किसी ओर होनेवाला मन का झुकाव (टेंडेंसी); सांसारिक विषयों या भोगों का ग्रहण 'निवृत्ति' का विपर्याय।
प्रवेक्षा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* प्रवेक्षित} किसी काम या बात के होने के संबंध में पहले से की जानेवाली आशा या अनुमान (एन्टिसिपेशन)।
प्रवेश पुं. {सं.} अंदर जाना, घुसना, पैठना; किसी क्षेत्र, वर्ग आदि में उसके विशिष्ट नियम पूरे करते हुए पहुँचना या लिया जाना (एडमिशन); किसी विषय में होनेवाली विशेष जानकारी, गति, पहुँच; किसी विषय का ज्ञान; पुं. परिवेश।
प्रवेशक पुं. {सं.} प्रवेश करानेवाला; नाटक में वह स्थल, जहाँ बीच की किसी घटना का परिचय केवल बातचीत से कराया जाता है।
प्रवेशनीय *वि.* {सं.} घुसने योग्य।
प्रवेशद्वार पुं. {सं.} वह द्वार या दरवाजा या कोई ऐसा तंग, पर निश्चित मार्ग जिससे होकर किसी मकान या घिरे हुए क्षेत्र आदि में जाना पड़ता है, अंदर जाने का दरवाजा या रास्ता (एन्ट्रेंस)।
प्रवेशपत्र पुं. {सं.} वह पत्र जिसे दिखलाने पर किसी स्थान में प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त हो (पास या टिकट)।
प्रवेश-परीक्षा *स्त्री.* {सं.} किसी विद्यालय में प्रवेश के समय होनेवाली परीक्षा।
प्रवेश-शुल्क पुं. {सं.} वह शुल्क जो किसी संस्था में सम्मिलित होने या पहले-पहल नाम लिखाने के समय देना पड़ता है (एडमिशन फी); वह शुल्क जो किसी स्थान में प्रवेश करने के समय देना पड़ता है (एन्ट्रेंस फी)।
प्रवेशिका *स्त्री.* {सं.} वह पत्र या चिन्ह जिसे दिखाकर कहीं प्रवेश करने का अधिकार मिलता है (पास); प्रवेश शुल्क के रूप में दिया जानेवाला धन; निम्न वर्ग में वह अंतिम परीक्षा जिसमें उत्तीर्ण होने पर उच्च वर्ग में प्रवेश करने का अधिकार प्राप्त होता है (एन्ट्रेंस)।
प्रवेष पुं. प्रवेश; परिवेश।
प्रवेसना *अ.* {सं. प्रवेश} प्रवेश करना, घुसना, पैठना; *स.* प्रविष्ट करना, पैठाना, घुसाना।
प्रव्रजिता *स्त्री.* {सं.} जटामासी, गोरखमुंडी।
प्रव्राज पुं. {सं.} बहुत नीची भूमि।
प्रव्रज्या *स्त्री.* {सं.} संन्यास।
प्रशंस[1] *स्त्री.* प्रशंसा।
प्रशंस[2] *वि.* {सं. प्रशंस्य} प्रशंसा करने के योग्य।
प्रशंसक पुं. {सं.} प्रशंसा करनेवाला।
प्रशंसन पुं. {सं.} {*वि.* प्रशंसनीय, प्रशंसित, प्रशंस्य} प्रशंसा करना।
प्रशंसना *स.* {सं. प्रशंसन} प्रशंसा या तारीफ करना, सराहना।
प्रशंसनीय *वि.* {सं.} प्रशंसा के योग्य, बहुत अच्छा।
प्रशंसा *स्त्री.* {सं.} किसी वस्तु या वस्तु के गुणों या अच्छी बातों के संबंध में कही हुई आदरसूचक बात, कथन या विचार, कड़ाई, तारीफ।
प्रशंसित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* प्रशंसिता} जिसकी प्रशंसा की गई हो।
प्रशंसोपमा *स्त्री.* {सं.} वह उपमालंकार जिसमें उपमेय की अधिक प्रशंसा करके उपमान को प्रशंसनीय ठहराते हैं।
प्रशम पुं. {सं.} उपशमन, शांति।
प्रशमन पुं. {सं.} {*वि.* प्रशम्य} शमन, शांति; नष्ट या ध्वस्त न करना।
प्रशमित *वि.* {सं.} जिसका प्रशमन हो चुका था।
प्रशम्य *वि.* {सं.} जिसका शमन या शांति हो सके; (झगड़ा या विवाद) जिसे आपस में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निपटा लेने का अधिकार दोनों पक्षों को हो (कम्पाउंडेबुल)।

प्रशस्त *वि.* {सं.} प्रशंसनीय, अच्छा; श्रेष्ठ, उत्तम; लम्बा-चौड़ा या बड़ा, भव्य; उचित, उपयुक्त।

प्रशस्ति *स्त्री.* {सं.} प्रशंसा, स्तुति; प्राचीन काल के राजाओं के एक प्रकार के प्रख्यापन, जो चट्टानों या ताम्रपत्रों आदि पर खोदे जाते थे; प्राचीन ग्रंथों के आदि या अन्त की वे कतिपय पंक्तियाँ जिनमें पुस्तक के कर्ता, विषय, काल आदि का उल्लेख रहता है।

प्रशांत *वि.* {सं.} चंचलता-रहित, स्थिर; निश्चल वृत्तिवाला, शांत; पुं. एशिया और अमेरिका के बीच का महासागर (पैसिफिक ओशन)।

प्रशांतात्मा पुं. {सं.} शिव, महादेव, शांत स्वभाववाला।

प्रशांति *स्त्री.* {सं.} प्रशांत या निश्चल होने का भाव; पूर्ण शांति, विशेषत: किसी देश या समाज में होनेवाली पूर्ण शांति, किसी प्रकार के आंदोलन, उपद्रव आदि का अभाव (ट्रैंक्विलिटी)।

प्रशाखा *स्त्री.* {सं.} शाखा में से निकली हुई छोटी शाखा, टहनी।

प्रशासक पुं. {सं.} वह जो राज्य, संस्थान आदि का प्रशासन या प्रबंध करता हो (एडमिनिस्ट्रेटर)।

प्रशासकीय *वि.* {सं.} प्रशासन-संबंधी; प्रशासक संबंधी।

प्रशासन पुं. {सं.} {*वि.* प्रशासनिक, प्रशासनीय} राज्य के शासन पक्ष से संबंध रखनेवाले काम, राज्य के परिचालन का प्रबंध या व्यवस्था (एडमिनिस्ट्रेशन)।

प्रशासित *वि.* {सं.} प्रशासन के अंतर्गत, शिक्षिता।

प्रशासी *वि.* प्रशासनिक।

प्रशास्ता पुं. प्रकाशक।

प्रशिक्षण पुं. {सं.} {*वि.* प्रशिक्षित} किसी पेशे या कला-कौशल की क्रियात्मक रूप में दी जानेवाली शिक्षा (ट्रेनिंग)।

प्रशिक्षण महाविद्यालय पुं. {सं.} वह महाविद्यालय, जिसमें ऊँची कक्षाओं के शिक्षकों को शिक्षण-विज्ञान के सिद्धांत और शिक्षा देने की प्रणाली सिखाई जाती है।

प्रशिक्षण विद्यालय पुं. {सं.} वह विद्यालय, जिसमें देशी भाषाओं के शिक्षकों को शिक्षण विज्ञान की शिक्षा दी जाती है (नार्मल स्कूल)।

प्रश्नचिन्ह पुं. {सं.} प्रश्नवाचक वाक्य के अन्त में लगाया जानेवाला चिन्ह, ?।

प्रशिक्षणाधीन *वि.* {सं.} जो प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा हो।

प्रशिक्षा *स्त्री.* = प्रशिक्षण।

प्रशिक्षित *वि.* {सं. प्रशिक्षण} जिसे किसी प्रकार का प्रशिक्षण मिला हो, विशेष रूप से सिखाकर तैयार किया हो (ट्रेंड)।

प्रश्न पुं. {सं.} वह बात जो कुछ जानने या जाँचने के लिए कही जाए और जिसका कुछ उत्तर हो, जिज्ञासा, सवाल (क्वेश्च); पूछने की बात; विचारणीय विषय (इश्यू)।

प्रश्नदूती पुं. {सं.} पहेली, बुझौवल।

प्रश्नि *स्त्री.* {सं.} एक ऋषि, जलकुंभी।

प्रश्नक पुं. {सं.} प्रश्नकर्ता।

प्रश्नकर्ता पुं. {सं.} प्रश्न करनेवाला व्यक्ति।

प्रश्नकाल पुं. {सं.} वह नियत समय जब सांसद मन्त्रियों से प्रश्न करते हैं।

प्रश्नपत्र पुं. {सं.} वह पत्र, जिसपर परीक्षा में विद्यार्थियों के लिए किए जानेवाले प्रश्न लिखे होते हैं।

प्रश्नमाला *स्त्री.* {सं.} प्रश्नों की सूची।

प्रश्नावली *स्त्री.* {सं.} किसी विषय से संबंध रखनेवाले प्रश्नों की सूची, जो आधिकारिक रूप से किसी बात की जाँच करने या कुछ अभिमत प्राप्त करने के लिए संबद्ध लोगों के पास जाती है (क्वेश्चनेयर)।

प्रश्नोत्तर पुं. {सं.} सवाल और जवाब, प्रश्न और उत्तर, संवाद; साहित्य में वह काव्यालंकार, जिसमें कुछ प्रश्न और उसके उत्तर रहते हैं।

प्रश्नोत्तरी *स्त्री.* {सं. प्रश्नोत्तर + हिं. ई (प्रत्य.)} किसी विषय के प्रश्नों और उत्तरों का संग्रह, विशेषत: ऐसा संग्रह जिसमें कुछ प्रश्न करके और उनका उत्तर देकर किसी बात या विषय का स्वरूप स्पष्ट किया गया हो (कैटेकिज़्म)।

प्रश्रय पुं. {सं. आश्रय} आश्रय, स्थान; टेक, सहारा, आधार; महत्व।

प्रश्रयण पुं. {सं.} विनय, शिष्टाचार।

प्रश्रयी *वि.* {सं.} शांत, नम्र, विनीत।

प्रश्रुति *स्त्री.* {सं.} कोई कार्य करने के लिए की जानेवाली प्रतिज्ञा या दिया जानेवाला वचन।

प्रश्रुति-पत्र पुं. {सं.} वह पत्र जो किसी से धन उधार लेने पर उसे प्रमाणस्वरूप और माँगने पर चुका देने के वचन के रूप में लिखा जाता है (प्रोनोट)।

प्रश्वास पुं. {सं.} नथुने से बाहर निकलने वाली वायु, 'श्वास' का उलटा।

प्रष्टव्य *वि.* {सं.} पूछने योग्य; पूछने का, जो पूछना हो।

प्रष्टा पुं. {सं.} प्रश्नकर्ता।

प्रष्टि पुं. {सं.} तिहाई, तीन बैलों की गाड़ी में वह बैल, जो आगे जोता जाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसंग *पुं.* {सं.} संबंध, लगाव; विषय का लगाव या संबंध; विवेच्य विषय का स्वरूप और परंपरा (कण्टेक्स्ट); स्त्री-पुरुष का संभोग, मैथुन; बात, वार्ता, विषय; उपयुक्त संयोग, अवसर, मौका; प्रकरण, अध्याय।

प्रसंगवश *क्रि. वि.* {सं.} प्रसंग उपस्थित होने पर।

प्रसंसना *स.* = प्रशंसा करना।

प्रसन्न *वि.* {सं.} संतुष्ट, हर्षित।

प्रसन्नता *स्त्री.* {सं.} अनुग्रह, कृपा, हर्ष, आनंद।

प्रसन्नचित्त *वि.* {सं.} जिसका चित्त प्रसन्न हो; सदा प्रसन्न रहनेवाला।

प्रसन्नता *स्त्री.* {सं.} तुष्टि, संतोष; हर्ष, आनंद; कृपा, अनुग्रह।

प्रसन्नित *वि.* = प्रसन्न।

प्रसर *पुं.* {सं.} न्यायालय का वह आज्ञापत्र, जिसमें किसी व्यक्ति या वस्तु को न्यायालय में उपस्थित करने का आदेश लिखा होता है (प्रोसेस)।

प्रसरण *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रसरणीय, प्रसरति} आगे बढ़ना, या खिसकना; फैलना, बढ़ना; विस्तार।

प्रसजन *वि.* {सं.} गिराना, डालना।

प्रसव *पुं.* {सं.} बच्चा जनने की क्रिया, जनन, प्रसूति (डेलिवरी); बच्चा जनने के समय स्त्री को होनेवाला कष्ट; वह अवस्था जिसमें स्त्री बच्चा जनकर माता बनती है, मातृत्व (मेटर्निटी); जन्म, उत्पत्ति; बच्चा, संतान।

प्रसवना *स.* {सं. प्रसव} (बच्चा) उत्पन्न करना, गर्भ से सन्तान को जन्म देना।

प्रसवा, प्रसविनी *वि. स्त्री.* {सं.} प्रसव करनेवाली, जन्म देनेवाली।

प्रसहन *पुं.* {सं.} सहन, क्षमा, आलिंगन।

प्रसाद *पुं.* {सं.} प्रसन्नता, अनुग्रह, कृपा, मेहरबानी; वह खाने की वस्तु जो देवता को चढ़ाई जा चुकी हो।

मुहा. प्रसाद पाना = देवता के प्रसाद के रूप में भोजन करना।

वस्तु जो देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर भक्तों या छोटों को दें; भोजन।

प्रसादक *वि.* {सं.} निर्मल; *पुं.* प्रसाद।

प्रसादन *पुं.* {सं.} किसी को संतुष्ट करके अपने अनुकूल करना (प्रॉपिसिएशन)।

प्रसादना *स., अ.* {सं.} प्रसन्न या संतुष्ट करना या होना।

प्रसादनीय *वि.* {सं.} प्रसन्न किए जाने के योग्य।

प्रसादान्न *पुं.* {सं.} देवता का प्रसादरूप अन्न।

प्रसादी *स्त्री.* प्रसाद।

प्रसाधक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* प्रसाधिका} वह जो किसी कार्य का निर्वाह करे; सजावट का काम करनेवाला; दूसरों के शरीर या अंगों का शृंगार करनेवाला।

प्रसाधन *पुं.* {सं.} अलंकार आदि से युक्त करना, शृंगार करना, सजाना; शरीर सजाने और रूप या सौंदर्य बढ़ाने का कार्य अथवा ऐसे कार्यों के लिए आवश्यक साधन या सामग्री, शारीरिक सजावट का सामान; कार्य का संपादन; कंघी से बाल झाड़ना।

प्रसाधिका *स्त्री.* {सं.} वह दासी जो रानियों, अभिनेत्रियों आदि को गहने-कपड़े पहनाती और उनका शृंगार करती हो।

प्रसाधित *वि.* {सं.} अलंकृत, सजाया हुआ।

प्रसार *पुं.* {सं.} किसी चीज के फैले हुए होने की क्रिया, दशा या भाव, विस्तार, फैलाव, पसार; वह सीमा जहाँ तक कोई चीज गई हुई हो या कोई विषय पहुँचता है, विस्तार (एक्सटेंट); संचार; गमन; कोई बात चारों ओर फैलाना या सबको सुनाना।

प्रसारना *क्रि. वि.* {हिं.} फैलाना।

प्रसारण *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रसारित, प्रसार्य} पसारना, फैलाना; सीमा, क्षेत्र आदि में विस्तार या वृद्धि करना, बढ़ाना; किसी विषय या चर्चा का प्रचार करना; रेडियो या दूरदर्शन के द्वारा कोई बात, कविता, गीत आदि लोगों को सुनाने के लिए चारों ओर फैलाना।

प्रसारित *वि.* {सं.} जिसका प्रसारण हुआ हो।

प्रसिति *स्त्री.* {सं.} बंधन, जाल, रस्सी।

प्रसिद्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* प्रसिद्धि} जिसे सब लोग जानते हों, विख्यात, मशहूर।

प्रसिद्धि *स्त्री.* {सं.} {*वि.* प्रसिद्ध} प्रसिद्ध होने की अवस्था या भाव, ख्याति, शोहरत।

प्रसुप्त *वि.* {सं.} सोया हुआ; रुका, थमा या दबा हुआ।

प्रसुप्ति *स्त्री.* {सं.} नींद।

प्रसू *वि. स्त्री.* {सं.} जन्म देने या उत्पन्न करनेवाली, जैसे वीरप्रसू।

प्रसूका *स्त्री.* {सं.} घोड़ी, असगंध।

प्रसूचना *स्त्री.* {सं. प्र + सूचना} किसी को किसी बात की विशेष रूप से दी जानेवाली सूचना, इत्तला (रिपोर्ट)।

प्रसूत *वि.* {सं.} {*स्त्री.* प्रसूता} उत्पन्न, जात, पैदा; निकला हुआ; *पुं.* एक रोग।

प्रसूता *स्त्री.* {सं.} प्रसव करने या बच्चा जननेवाली स्त्री, जच्चा।

प्रसूति *स्त्री.* {सं.} प्रसव, जनन; उद्‌भव, उत्पत्ति।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसूतिका *स्त्री.* प्रसूता।

प्रसूतिभवन *पुं.* {सं.} वह कमरा जिसमें रहकर स्त्री बच्चा जनती है, सौरी (लेबर रूम)।

प्रसून *पुं.* {सं.} फूल; फल।

प्रसूनक *पुं.* {सं.} मुकुल, कली, फूल।

प्रसूनवाण *पुं.* {सं.} कंदर्प, कामदेव।

प्रसेक *पुं.* {सं.} सेंकना, निचोड़, पसेव।

प्रसेद *पुं.* {हिं.} प्रस्वेद, पसीना।

प्रसेद *पुं.* {सं. प्रस्वेद} पसीना।

प्रस्तर *पुं.* {सं.} पत्थर; बिछौना; चौड़ी सतह।

प्रस्तरकला *स्त्री.* {सं.} पत्थर को खोदने, गढ़ने और उसपर लेप आदि लाने की विद्या या कला।

प्रस्तरमुद्रण *पुं.* {सं.} मुद्रण या छापे की वह प्रक्रिया, जिसमें छापे जानेवाले लेख आदि एक विशेष प्रकार के कागज पर लिखकर पहले एक प्रकार के पत्थर पर उतारे और तब उस पत्थर पर से छापे जाते हैं (लीथोग्राफी)।

प्रस्तान्न *पुं.* {सं.} पुराना चावल।

प्रस्तर *पुं.* {सं.} शिला, पत्थर, मणि, समतल।

प्रस्तार *पुं.* {सं.} फैलाव, विस्तार; अधिकता; परत, तह; छंदशास्त्र में वह प्रक्रिया जिससे छंदों के भेदों की संख्याएँ और रूप जाने जाते हैं; वस्तुओं, अंकों आदि के पंक्तिबद्ध समूहों या वर्गों के क्रम या विन्यास में संगत और संभव परिवर्तन या हेर-फेर करना (परम्यूटेशन)।

प्रस्ताव *पुं.* {सं.} छिड़ी हुई चर्चा, प्रस्तुत प्रसंग; पुस्तक की भूमिका या प्रस्तावना; कोई काम करने के लिए किसी के सामने रखा जानेवाला विचार; योजना, कार्य-प्रणाली आदि के संबंध में किसी को बतलाई जानेवाली कोई बात, सुझाव (प्रोपोज़ल); वह बात जो किसी सभा या समाज में विचार या स्वीकृति के लिए उपस्थित की जाए (रिज़ोलूशन); विवाद आदि में अथवा यों ही किसी से यह कहना कि आप अमुक वस्तु या इतना धन लेकर झगड़ा निपटा लें या अमुक कार्य करें (ऑफर)।

प्रस्तावक *पुं.* {सं.} वह जो किसी सभा या समाज के सामने स्वीकृति के लिए कोई प्रस्ताव उपस्थित करे (प्रोपोज़र); जो किसी के सामने यह मन्तव्य करे कि आप अमुक वस्तु या इतना धन लेकर अमुक कार्य करें (ऑफरर)।

प्रस्तावना *स्त्री.* {सं.} आरंभ; पुस्तक की भूमिका, उपोद्घात (इन्ट्रोडक्शन); अभिनय के पहले नाटक के विषय का परिचय देने के लिए छेड़ा हुआ प्रसंग।

प्रस्तावित *वि.* {सं.} जिसके लिए या जिसके विषय में प्रस्ताव किया गया हो (प्रोपोज़्ड)।

प्रस्तावितृ *पुं.* {सं. प्रस्ताव} वह जिसके सामने कोई वस्तु या धन भेंट करने का प्रस्ताव भेंट करनेवाले की ओर से रखा जाए (ऑफरी)।

प्रस्तुत *वि.* {सं.} जिसकी स्तुति या प्रशंसा की गई हो; जो कहा गया हो, उक्त, कथित; उद्यत, तत्पर, तैयार; प्रस्ताव के रूप में या विचार, निर्णय आदि के लिए किसी के सामने रखा हुआ (प्रेजेंटेड); जो इस समय उपस्थित या वर्तमान हो, मौजूद (प्रेजेंट) बनाकर या और किसी प्रकार तैयार किया हुआ (प्रोड्यूस्ड); लिखकर या कोष्ठक आदि भरकर तैयार किया हुआ (फिल्ड); (साहित्य में विषय या व्यक्ति) जिसका वर्णन प्रत्यक्ष रूप से हो रहा हो और प्रसंगवश जिसके साथ दूसरे विषय या व्यक्ति का भी (उपमा, तुलना आदि के विचार से) गौण रूप से उल्लेख या वर्णन होता हो, इसका विपर्याय 'अप्रस्तुत' है।

प्रस्तुतालंकार *पुं.* {सं.} साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी प्रस्तुत तथ्य के विषय में कुछ कहकर उसका अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत तथ्य पर घटाया जाता है।

प्रस्तुति *स्त्री.* {सं.} प्रस्तुत करने की क्रिया या भाव; प्रस्तुत किया जानेवाला कार्यक्रम।

प्रस्तुतीकरण *पुं.* {सं.} प्रस्तुत करने की क्रिया या भाव।

प्रस्तोता *पुं.* {सं. प्रस्तोतृ} प्रस्ताव प्रस्तुत करनेवाला, प्रस्तावक।

प्रस्थ *पुं.* {सं.} विस्तार; चौड़ाई।

प्रस्थपुष्प *पुं.* {सं.} छोटे पत्तों की तुलसी, जँभीरी नींबू।

प्रस्थान *पुं.* {सं.} किसी स्थान से दूसरे स्थान को जाना या चलना, गमन, यात्रा, रवानगी (डिपार्चर); मुहूर्त पर यात्रा न करने की दशा में अपना कोई वस्त्र यात्रा की दिशा में मुहूर्त साधन के लिए रखना; प्रस्थान।

प्रस्थाना *पुं.* प्रस्थाना।

प्रस्थानित *वि.* {सं. प्रस्थान} जिसने प्रस्थान किया हो, जो चला गया हो।

प्रस्थानी *वि.* {सं. प्रस्थान} प्रस्थान करने या जानेवाला।

प्रस्थापन *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रस्थापित, प्रस्थाप्य} प्रस्थान करने या कराने की क्रिया या भाव, प्रस्थान, रवानगी; स्थित या स्थापित करने की क्रिया या भाव, स्थापन; काम में लाने के लिए यंत्रों, कल-पुर्जों आदि को यथास्थान बैठाने या लगाने की क्रिया, जैसे वैद्युत प्रस्थापन = बिजली के तार, पंखे, लट्टू आदि यथास्थान लगाना;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उक्त प्रकार से लगाए हुए कल-पुर्जे, यंत्र आदि (इंस्टालेशन; अंतिम तीनों अर्थों के लिए)।

प्रस्थापित *वि.* {सं.} स्थापित किया हुआ।

प्रस्थापी *पुं. वि.* {सं.} स्थापन करनेवाला।

प्रस्थायी *वि.* {सं.} जो भविष्य में यात्रा करनेवाला हो।

प्रस्थित *वि.* {सं.} ठहरा या टिका हुआ; दृढ़, पक्का; जिसने प्रस्थान किया हो, गया हुआ।

प्रस्थिति *स्त्री.* {सं.} पद आदि के कारण होनेवाली विशेष स्थिति; प्रस्थान, यात्रा।

प्रस्निग्ध *वि.* {सं.} तेल लगा हुआ।

प्रस्नुषा *स्त्री.* {सं.} नतोहू, पोते की स्त्री।

प्रस्फुटित *वि.* {सं.} फूटा या खुला हुआ; (फूल) खिला हुआ, विकसित।

प्रस्फुरण *पुं.* {सं.} निकलना; फूलना, खिलना; प्रकाशित होना।

प्रस्फोटन *पुं.* स्फोट।

प्रस्रव *पुं.* {सं.} झरना, बहना।

प्रस्रवण *पुं.* प्रस्त्राव।

प्रस्राव *पुं.* {सं.} जल आदि का टपकना या रिसना; पेशाब।

प्रस्रुत *वि.* {सं.} झड़ा हुआ, गिरा हुआ।

प्रस्वेद *पुं.* {सं.} पसीना।

प्रह *पुं.* = प्रातःकाल।

प्रहत *वि.* {सं.} प्रताड़ित, पीटा हुआ; *पुं.* प्रहार।

प्रहर *पुं.* {सं.} दिन रात के आठ भागों में से एक, तीन घंटे का समय, पहर।

प्रहरक *पुं.* {सं.} प्रहरी, जो घंटा बजाता हो।

प्रहरखना *अ.* {सं. प्रहर्षण} हर्षित या प्रसन्न होना।

प्रहरी *पुं.* {सं. प्रहरिन्} पहरेदार।

प्रहरण *पुं.* {सं.} मारना, फेंकना, हटाना।

प्रहर्षण *पुं.* {सं.} आनंद; साहित्य में एक अलंकार जिसमें अनायास अथवा बिना कोई विशेष प्रयत्न किए ही किसी अभीष्ट और हर्षवर्धक फल की प्राप्ति और सिद्धि का वर्णन होता है (इसके तीन भेद माने गए हैं)।

प्रहलाद *पुं.* प्रह्लाद; हरिभक्त।

प्रहसन *पुं.* {सं.} हँसी, दिल्लगी; हास्यरस-प्रधान एक प्रकार का रूपक (फोर्स)।

प्रहसित *वि.* {सं.} हँसी से भरा हुआ; जिसकी हँसी उड़ाई जाए, उपहासास्पद।

प्रहान *पुं.* {सं. प्रहाण} परित्याग; चित्त की एकाग्रता, ध्यान।

प्रहार *पुं.* {सं.} {कर्ता प्रहारक, प्रहारी} आघात, वार; मार।

प्रहारी *पुं. वि.* {सं.} प्रहार करनेवाला, नष्टकर्ता; *पुं.* एक राक्षस।

प्रहारना *स.* {सं. प्रहार} मारना, आघात करना; मारने के लिए अस्त्र आदि चलाना।

प्रहारित *वि.* {सं. प्रहार से *वि.*} जिस पर प्रहार हुआ हो।

प्रहास *पुं.* {सं.} जोर की हँसी, अट्टहास, ठहाका; किसी कृति या आकृति के कुछ अंगों को घटा-बढ़ा या अदल-बदलकर अथवा और किसी प्रकार विकृत करके उसकी हँसी उड़ाने के लिए प्रस्तुत की हुई कृति या आकृति।

प्रहेलिका *स्त्री.* {सं.} पहेली।

प्रह्लाद *पुं.* {सं.} बहुत अधिक आनंद; हिरण्यकश्यप का पुत्र, एक प्रसिद्ध ईश्वरभक्त।

प्रांग *पुं.* {सं.} छोटा नगाड़ा।

प्रांगण *पुं.* {सं.} घर का आँगन।

प्रांजल *वि.* {सं.} सरल, सीधा; स्वच्छ और शुद्ध (भाषा)।

प्रांत *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रांतीय, प्रांतिक} अंत, सीमा; किनारा, सिरा; ओर, दिशा; खंड, प्रदेश; किसी बड़े देश का कोई शासनिक विभाग।

प्रांतपति *पुं.* {सं.} राज्य के किसी प्रांत या प्रदेश का सर्वप्रधान शासक (गवर्नर)।

प्रांतर *पुं.* {सं.} वह प्रदेश जिसमें जल और वृक्ष न हों, उजाड़; जंगल, वन; वृक्ष का कोटर।

प्रांतिक, प्रांतीय *वि.* {सं.} किसी प्रांत से संबंध रखनेवाला (प्रॉविंशल)।

प्रांतीयता *स्त्री.* {सं.} प्रांतीय होने का भाव; अपने प्रांत का विशेष या अतिरिक्त पक्षपात या मोह (प्रॉविंशलिज़्म)।

प्रांतीय सरकार *स्त्री.* {सं. + फा.} किसी प्रांत की वह सरकार, जो उस प्रांत की सारी व्यवस्था करती, पर केंद्रीय सरकार के आधीन होती है (प्रविंशल गवर्नमेंट)।

प्राइवेट *वि.* {अं.} अपना, निजी; व्यक्तिगत; दूसरों से छिपाने योग्य, गोपनीय।

प्राइवेट सेक्रेटरी *पुं.* {अं.} किसी बड़े आदमी के साथ रहकर उसके पत्र-व्यवहार आदि कार्य करनेवाला।

प्रांश *वि.* {सं.} ऊँचा; विष्णु।

प्रांशु *वि.* {सं.} उच्च, उन्नत; *स्त्री.* उच्चता।

प्राकषिक *पुं.* {सं.} स्त्रियों के बीच में नाचनेवाला मनुष्य, रंडियों का दलाल।

प्राक् *वि.* {सं.} आरंभ या शुरू में होनेवाला, आरंभिक, जैसे प्राक्कथन; किसी की अपेक्षा या तुलना में पहले का, किसी से पुराना या पूर्वकाल का, जैसे प्राक् ऐतिहासिक = प्रागैतिहासिक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राकाम्य पुं. {सं.} आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक, जिससे मनुष्य जहाँ चाहे, वहाँ आ-जा सकता है; प्रचुरता, अधिकता; यथेष्टता।

प्राकार पुं. प्राचीर।

प्राकृत *वि.* {सं.} प्रकृति से उत्पन्न; निसर्ग या प्रकृति-संबंधी, स्वाभाविक।

स्त्री. बोलचाल की वह प्राचीन भाषा जिसका संस्कार करके संस्कृत बनाई गई थी और जिससे भारत की आजकल की आर्य भाषाएँ बनी हैं।

प्राकृतिक *वि.* {सं.} प्रकृति-संबंधी, प्रकृति का; स्वाभाविक, सहज (नेचुरल)।

प्राकृतिक चिकित्सा *स्त्री.* {सं.} रोगों की चिकित्सा या इलाज करने का एक ढंग जिसमें दवाओं आदि को छोड़कर केवल प्राकृतिक उपायों (जैसे उपवास, मिट्टी का लेप, आतप-स्नान आदि) से काम लिया जाता है (नेचर क्योर)।

प्राक्कथन पुं. {सं.} आरंभ में परिचय मात्र के लिए कही हुई कोई संक्षिप्त बात, भूमिका।

प्राखंडिक *वि.* {सं.} किसी प्रखंड या विशिष्ट भू-भाग से संबंध रखनेवाला (डिविजनल)।

प्राखर्य पुं. {सं.} प्रखरता, तीक्ष्णता।

प्रागल्भ्य पुं. {सं.} निर्भयता, साहस, वीरता।

प्रागुक्ति *स्त्री.* {सं.} पूर्वकथन।

प्रागैतिहासिक *वि.* {सं.} जिस समय का निश्चित और पूरा इतिहास मिलता हो, उससे पहले का, इतिहास पूर्व काल का (प्री-हिस्टॉरिक)।

प्राची *स्त्री.* {सं.} {*भाव.* प्राचीनता} पूरब का; बहुत दिनों का, पुराना।

प्राचीर *वि.* {सं.} चारों ओर से घेरनेवाली दीवार, परकोटा, चहारदीवारी।

प्राच्छित पुं. = प्रायश्चित्त।

प्राच्य *वि.* {सं.} प्राची दिशा से संबंध रखनेवाला, पूर्व दिशा का; पूर्वीय या एशिया महाद्वीप के देशों से संबंध रखनेवाला; 'पाश्चात्य' का विपर्याय, पौर्वात्य; पुराना, प्राचीन; पुं. कोशल, काशी, विदेह (बिहार और मगध) तथा अंग (दक्षिण बिहार) के प्राचीन निवासियों की संज्ञा, जो उन्हें कुरु-पंचाल तथा अन्य पश्चिमी देशों के निवासियों से प्राप्त हुई थी।

प्राच्या *स्त्री.* {सं.} कोशल, काशी, विदेह और अंग के 'प्राच्य' कहलानेवाले प्राचीन निवासियों की भाषा; इसके दो विभाग थे—पश्चिम प्राच्या और पूर्व प्राच्या। इनमें से पश्चिम प्राच्या तो बहुत अधिक प्रचलित थी, पर पूर्व प्राच्या विभाषा मात्र थी। आगे चलकर पश्चिम प्राच्या ने अर्द्धमागधी का और पूर्व प्राच्या ने मागधी का रूप धारण किया।

प्राजन पुं. {सं.} कोड़ा, चाबुक।

प्राजापत्य *वि.* {सं.} प्रजापति-संबंधी; प्रजापति से उत्पन्न।

प्राजापत्य विवाह पुं. {सं.} वह विवाह, जिसमें पिता अपनी कन्या को यह कहकर वर के हाथ में देता था कि तुम लोग मिलकर धर्म का पालन करो।

प्राजिक पुं. {सं.} श्येन, बाज, पक्षी।

प्राज्ञ *वि.* {सं.} {*स्त्री.* प्राज्ञा, प्राज्ञी} बुद्धिमान, समझदार; विद्वान।

प्राज्ञा *स्त्री.* {सं.} बुद्धिमती, विदुषी।

प्राज्य *वि.* {सं.} प्रचुर, अधिक।

प्राण पुं. *बहु.* {सं.} {*भाव.* प्राणता} वायु, हवा; शरीर की वह शक्ति जिससे मनुष्य और जीव-जंतु जीवित रहते हैं, जीवन-शक्ति, जान।

मुहा. *प्राण गले तक आना* = मरने को होना; *प्राण जाना, छूटना या निकलना* = जीवन का अंत होना, मरना; *प्राण डालना* = जीवन प्रदान करना; *प्राण देना* = मरना; *(किसी पर) प्राण देना* = किसी के लिए मरने तक को तैयार रहना; *(किसी के लिए) प्राण देना* = किसी के लिए मरने तक को तैयार रहना; किसी के लिए बहुत अधिक परिश्रम या प्रयत्न करना; *प्राण निकलना* = मृत्यु होना, मरना; मरने का-सा कष्ट होना; *प्राण लेना* = मार डालना; *प्राण हरना* = मर जाना; उत्साहहीन होना।

श्वास, साँस; बल, शक्ति; *वि.* परम प्रिय, बहुत प्यारा।

प्राण-अधार पुं. प्राणाधार।

प्राणदंड पुं. {सं.} वह दंड जिसमें किसी के प्राण ले लिए जाते हैं।

प्राणदान पुं. {सं.} किसी को मरने या मारे जाने से बचाना।

प्राणनाथ पुं. {सं.} प्रियतम; पति, स्वामी।

प्राणपति पुं. {सं.} पति, स्वामी; प्रिय व्यक्ति, प्यारा।

प्राण-पत्नी *स्त्री.* {सं.} प्राण के समान प्रिय पत्नी।

प्राण-प्यारा पुं. {हिं. प्राण + प्यारा} {*स्त्री.* प्राण-प्यारी} प्रियतम, परम प्रिय व्यक्ति; पति, स्वामी।

प्राणप्रतिष्ठा *स्त्री.* {सं.} कोई नई मूर्ति स्थापित करके उसकी पूजा करने से पहले मंत्रों द्वारा उसमें प्राणों की प्रतिष्ठा या आरोप करना।

प्राणप्रिय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* प्राणप्रिया} प्राणों के समान परम प्रिय; प्रियतम।

प्राणांत पुं. {सं.} मरण, मृत्यु।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणांतक *वि.* {सं.} प्राणों का अंत करने या मार डालनेवाला; मरने का-सा कष्ट देनेवाला।

प्राणाधार *वि.* {सं.} परम प्रिय; इतना प्यारा कि उसके बिना जीना कठिन हो; *पुं.* पति, स्वामी।

प्राणाधिक *वि.* {सं.} प्राणों से भी बढ़कर प्यारा, परम प्रिय।

प्राणाधिनाथ *पुं.* {सं.} पति, स्वामी।

प्राणायाम *पुं.* {सं.} योगशास्त्र के अनुसार श्वास और प्रश्वास की वायुओं को नियंत्रित और नियमित रूप से खींचने और बाहर निकलने की प्रक्रिया।

प्राणायामी *पुं., वि.* {सं.} प्राणायाम करनेवाला।

प्राणी *वि.* {सं. प्राणिन्} जिसमें प्राण हों, प्राणधारी; *पुं.* जंतु, जीव; मनुष्य।

प्राणीद्यूत *पुं.* {सं.} तीतर, मेढ़ा, घोड़े की दौड़ का जुआ।

प्राणीविज्ञान *पुं.* जंतुविज्ञान।

प्राणेश, प्राणेश्वर *पुं.* प्राणपति।

प्राणोपहार *पुं.* {सं.} आहार, भोजन।

प्रातः *पुं.* {सं.} सवेरा, तड़के।

प्रातःकर्म *पुं.* {सं.} प्रातःकाल किए जानेवाले कार्य, जैसे शौच, स्नान आदि।

प्रातःकाल *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रातःकालीन} दिन चढ़ने का समय, सवेरा।

प्रातःकृत्य *पुं.* प्रातःकर्म।

प्रातनाथ *पुं.* {सं.} सूर्य।

प्रातराश *पुं.* {सं.} प्रातःकाल का जलपान।

प्रातःस्मरणीय *वि.* {सं.} सवेरे उठते ही स्मरण करने के योग्य; परम श्रेष्ठ और पूज्य।

प्रात *क्रि. वि.* {सं. प्रातः} सवेरे, तड़के; *पुं.* सवेरा, प्रातःकाल।

प्रातकृत *पुं.* = प्रातःकृत्य (प्रातःकर्म)।

प्रातिकूल्य *पुं.* {सं.} प्रतिकूल या विरुद्ध होने का भाव, प्रतिकूलता; धर्मशास्त्र के अनुसार इस बात का विचार कि परस्पर प्रतिकूल अवस्थाओं में कोई काम कब और कैसे करना चाहिए, जैसे घर में अशौच होने पर शुभ या मांगलिक कार्य के समय आदि का विचार।

प्रातिज्ञ *पुं.* {सं.} आलोचना का विषय।

प्रातिपद *वि.* {सं.} प्रतिपदा-संबंधी।

प्रातिभ *वि.* {सं.} प्रतिभा-संबंधी, प्रतिभा का; प्रतिभा से उद्‌भूत, प्रतिभाजन्य।

प्रातिभागिक *वि.* {सं.} प्रतिभाग नामक शुल्क से संबंध रखनेवाला (एक्साइज़)।

प्रतिभाज्य *वि.* {सं.} जिसपर प्रतिभाग नामक शुल्क लगता हो।

प्राथमिक *वि.* {सं.} प्रथम-संबंधी; आरंभ का, प्रारंभिक; सबसे अधिक महत्व का, मुख्य; सबसे पहले होनेवाला, पहले का (प्रालिमिनरी)।

प्राथमिकता *स्त्री.* {सं.} प्राथमिक होने का भाव; किसी व्यक्ति या वस्तु को किसी कार्य के लिए औरों से पहले मिलनेवाला स्थान, अवसर आदि, प्रथमता, जैसे आजकल रेलवे में खाद्य पदार्थों को और सब चीजों से प्राथमिकता मिलती है (प्रायॉरिटी)।

प्रादुर्भाव *पुं.* {सं.} आविर्भाव, प्रकट होना।

प्रादुर्भूत *वि.* {सं.} जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो, सामने आया हुआ; उत्पन्न।

प्रादेश *पुं.* {सं.} तंत्र के अनुसार तर्जनी और अँगूठे के बीच का भाग, प्रदेश, स्थान।

प्रादेशिक *वि.* {सं.} प्रदेश-संबंधी, किसी प्रदेश का; किसी प्रदेश के भीतरी भागों से संबंध रखनेवाला, प्रदेश की सीमाओं के अंदर होने या रहनेवाला (टेरिटोरिअल)।

प्रादेशिकता *स्त्री.* प्रांतीयता।

प्रादेशिक सेना *स्त्री.* {सं.} किसी देश या प्रदेश के भीतरी भागों या उसकी सीमाओं के अंदर रहकर ही स्थानिक सुरक्षा, शांति आदि की व्यवस्था करनेवाली सेना (टेरिटोरिअल आर्मी)।

प्रादेशी *वि.* {सं.} बित्ता-भर का।

प्रादोष *वि.* {सं.} प्रदोष-संबंधी।

प्राधान्य *पुं.* {सं.} प्रधानता।

प्राधिकार *पुं.* {सं.} किसी व्यक्ति को विशेष रूप से मिलनेवाला वह अधिकार जो उसे कुछ कठिनाइयों या बाधाओं से बचाता हो (प्रिविलेज)।

प्राधिकृत *वि.* {सं.} जिसे प्राधिकार मिला हो (प्रिविलेज्ड)।

प्राध्यापक *पुं.* {सं.} बड़ा अध्यापक, विशेषतः वह अध्यापक, जो महाविद्यालय या कालेज आदि में पढ़ाता हो; किसी विषय का अच्छा विद्वान, विशेषज्ञ (प्रोफेसर)।

प्रान *पुं.* = प्राण।

प्रापक *वि.* {सं.} प्राप्त करने या पानेवाला, आदता।

प्रापण *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रापक, प्राप्य, प्राप्त} प्राप्ति, मिलना।

प्रापति *स्त्री.* = प्राप्ति।

प्रापना *स.* {सं. प्रापण} प्राप्त करना, पाना।

प्राप्त *वि.* {सं.} जो किसी प्रकार अपने अधिकार में आया या लाया गया हो, मिला या पाया हुआ (एक्वायर्ड); सामने आया हुआ, उपस्थित।

प्राप्तव्य *वि.* प्राप्य, मिलने योग्य, प्राप्य।

प्राप्ति *स्त्री.* {सं.} प्राप्त होने, हाथ में आने या मिलने की क्रिया या भाव, प्राप्त होना, मिलना;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी चीज मिलना या अवस्था आना जिसमें कुछ हित या लाभ, लाभ, फायदा; उक्त रूप में मिलनेवाला धन या और कोई चीज (गेन; उक्त तीनों अर्थों के लिए); किसी चीज के आकर पहुँचने की क्रिया या भाव, पहुँच, जैसे पत्र या उसके उत्तर की प्राप्ति; आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक जिसके प्राप्त होने पर सब कामनाओं का पूरा होना माना जाता है; नाट्यशास्त्र में रूपक या नाटक का सुखद उपसंहार।

प्राप्तिका *स्त्री.* {सं.} वह पत्र जिस पर किसी वस्तु की प्राप्ति या पहुँच का उल्लेख हो, रसीद, पावती।

प्राप्तिसम *पुं.* {सं.} न्यायदर्शन के अनुसार वह प्रत्यवस्थान जो हेतु और साध्य को ऐसी स्थिति में, जबकि दोनों प्राप्य हों।

प्राप्य *वि.* {सं.} जो प्राप्त हो सके, मिल सकने के योग्य; जो किसी से आवश्यक रूप से प्राप्त करना हो, बाकी धन या वस्तु जो किसी से लेनी हो (ड्यू)।

प्राप्यक *पुं.* {सं.} वह पत्र जिसमें किसी के जिम्मे या नाम पड़ी हुई रकम या किसी को दिए हुए माल का ब्योरा और मूल्य लिखा रहता है, बाकी या प्राप्य धन का सूचक-पत्र (बिल)।

प्राप्यक-समाहर्ता *पुं.* {सं.} वह जो प्राप्यक का बाकी धन उगाहने का काम करता हो (बिल कलेक्टर)।

प्राप्यकारी *पुं.* {सं.} वह इंद्रिय जो किसी विषय तक पहुँचकर मनुष्य को उस वस्तु का ज्ञान कराती है।

प्राबल्य *पुं.* {सं.} प्रबलता।

प्राभाविक *वि.* {सं.} प्रभाव दिखलाने या उत्पन्न करनेवाला।

प्रामंडलिक *वि.* {सं.} प्रमंडल-संबंधी।

प्रामद्य *पुं.* {सं.} उन्माद, पागलपन, अडसा।

प्रामाणिक *वि.* {सं.} {*भाव.* प्रामाणिकता} जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सिद्ध हो; प्रमाण के रूप में मानने योग्य (ऑथॉरिटेटिव); ठीक, सत्य; जिसकी साख हो, ठीक माना जानेवाला।

प्रामाण्य *पुं.* {सं.} प्रमाण का भाव, प्रमाणिकता; मान-मर्यादा।

प्रायः *क्रि. वि.* {सं.} अधिक अवसरों पर, अकसर; लगभग, करीब-करीब।

प्राय *वि.* {सं.} समान, बराबर, जैसे नष्टप्राय; लगभग, जैसे प्रायद्वीप।

प्रायणाय *पुं.* {सं.} मृत्यु, मरण।

प्रायद्वीप *पुं.* {सं. प्रायोद्वीप} तीन ओर पानी से घिरा हुआ स्थल का भाग, अंतरीप (पेनिन्सुला)।

प्रायशः *क्रि. वि.* {सं.} अकसर, प्रायः।

प्रायश्चित *पुं.* {सं.} कोई पाप करने पर उसके दोष से मुक्त होने के लिए किया जानेवाला कोई धार्मिक या अच्छा काम।

प्रायश्चित्तिक *वि.* {सं.} प्रायश्चित-संबंधी।

प्रायश्चित्ती *वि.* {सं.} प्रायश्चित करनेवाला।

प्रायिक *पुं.* {सं.} प्रायः या बहुधा होनेवाला।

प्रायिकता *स्त्री.* {सं.} प्रायिक होने की अवस्था या भाव।

प्रायोजक *पुं.* {सं.} वह जो किसी की ओर से किसी प्रकार का प्रबंध या आयोजन करने का भार उठाए; वह जिसकी ओर से दूरदर्शन पर किसी धारावाहिक या कार्यक्रम का प्रसारण हो (स्पॉन्सर)।

प्रायौगिक *वि.* {सं.} प्रयोग-संबंधी, प्रयोग का; सिद्ध या प्रमाणित करने के लिए अभी जिसका प्रयोग या परीक्षा हो रही हो (एक्सपेरिमेंटल); प्रयोग के रूप में किया जानेवाला (एप्लाएड); क्रियात्मक, व्यावहारिक, विशेष; क्रियात्मक।

प्रायौगिक विज्ञान *पुं.* {सं.} वह विज्ञान जिसकी सब बातें प्रयोग के द्वारा जानी जाती हों और प्रयोग के द्वारा ठीक सिद्ध की जा सकती हों (एक्सपेरिमेंटल साइंस)।

प्रारंभ *पुं.* {सं.} किसी काम का चलने लगना, कार्य आरंभ या शुरू होना (कमेंसेमेंट); किसी कार्य के आरंभ का अंश या भाग, आरंभ, आदि, शुरू।

प्रारंभक *पुं.* {सं.} आरंभ करना।

प्रारंभिक *वि.* {सं.} आरंभ, आदि या शुरू का, सबसे पहले होनेवाला, पहले का (प्रिलिमिनरी)।

प्रारब्ध *वि.* {सं.} आरंभ किया हुआ; *पुं.* वह कर्म जिसका फलभोग आरंभ हो चुका हो; भाग्य, किस्मत।

प्रारूप *पुं.* {सं.} प्रालेख, मसौदा।

प्रारूपी *वि.* {सं. प्रारूप} प्रारूप-संबंधी; अपनी जाति या वर्ग की विशेषताओं से युक्त।

प्रार्थना *स्त्री.* {सं.} किसी से कुछ देने या करने के लिए नम्रतापूर्वक कहना, याचना; विनय, निवेदन, विनती; *स.* प्रार्थना या विनती करना।

प्रार्थनापत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जिसमें कोई प्रार्थना लिखी हो, निवेदन-पत्र, अरजी (एप्लिकेशन)।

प्रार्थनालय *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ सामूहिक रूप से प्रार्थना की जाती है।

प्राथनीय *वि.* {सं.} प्रार्थना करने योग्य।

प्राथयिता *पुं.* {सं.} प्रार्थना करनेवाला।

प्रार्थित *वि.* {सं.} जिसके लिए प्रार्थना की गई हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थी *वि.* {सं. प्रार्थिन्} {*स्त्री.* प्रार्थिनी} प्रार्थना या निवेदन करनेवाला (एप्लिकेण्ट, पेटिशनर)।

प्रालब्ध *स्त्री.* प्रारब्ध।

प्रालंबिका *स्त्री.* {सं.} गले में पहननेवाला हार।

प्रालेख *पुं.* {सं.} लेख्य, विधान आदि का वह पूर्वरूप जो काट-छाँट या घटाने-बढ़ाने के लिए तैयार किया गया हो, मसौदा (ड्राफ्ट)।

प्रालेखक *पुं.* {सं.} वह जो लेखों के पांडुलेख या प्रालेख लिखने का काम करता हो (ड्राफ्ट्समैन)।

प्रालेखन *पुं.* {सं.} लेखों के पांडुलेख या प्रालेख लिखने का काम (ड्राफ्टिंग)।

प्रालेय *पुं.* {सं.} हिम, पाला; बरफ।

प्रावधान *पुं.* {सं.} किसी कार्य के लिए धन आदि की की जानेवाली व्यवस्था (प्राविज़न)।

प्राविट *पुं.* {सं. प्रावृट्} वर्षा ऋतु, बरसात।

प्राविधानिक *वि.* {सं.} प्राविधान-संबंधी, प्राविधान का; जिसे प्राविधान में स्थान मिला हो (स्टैट्यूटरी)।

प्रावर *पुं.* {सं.} प्राचीर।

प्रावार *पुं.* {सं.} उत्तरीय, ओढ़ना।

प्राशन *पुं.* {सं.} खाना, भोजन; चखना, जैसे अन्नप्राशन।

प्राशी *वि.* {सं.} भक्षक, खानेवाला।

प्रासंगिक *वि.* {सं.} प्रसंग-संबंधी, प्रसंग का; प्रसंगवश या संयोग से बीच में और आप-से-आप आ जाने या हो जानेवाला, आनुषंगिक; किसी प्रसंग में आकस्मिक रूप से सामने आनेवाला (व्यय आदि) (कंटिन्जेंट)।

प्रासाद *पुं.* {सं.} बड़ा और ऊँचा पक्का घर, विशाल भवन, महल।

प्रासूतिक *वि.* {सं.} प्रसूता या प्रसव से संबंध रखनेवाला (नेटल)।

प्रिथमी *स्त्री.* = पृथ्वी।

प्रियंकरी *स्त्री.* {सं.} अश्वगंधा, असगंध।

प्रियंवद *वि.* {*स्त्री.* प्रियंवदा} प्रियभाषी।

प्रिय *वि.* {सं.} जिससे प्रेम हो, प्यारा; मनोहर, सुंदर; *पुं.* {*स्त्री.* प्रिया} पति, स्वामी।

प्रियतम *वि.* {सं.} {*स्त्री.* प्रियतमा} सबसे बढ़कर प्यारा, परम प्रिय।

प्रियभाषी *वि.* {सं. प्रियभाषिन्} {*स्त्री.* प्रियभाषिणी} मीठी बातें कहनेवाला।

प्रियवर *वि.* {सं.} अति प्रिय, बहुत प्यारा (पत्रों आदि में संबोधन)।

प्रियवाद *पुं.* {सं.} मधुर वचन।

प्रियवादी *पुं.* प्रियभाषी।

प्रिया *स्त्री.* {सं.} नारी, स्त्री; पत्नी, जोरू; प्रेमिका।

प्रीव्यंक *पुं.* {हिं.} कदंब, कदम।

प्रीत *वि.* {सं.} प्रीतियुक्त; *स्त्री.* प्रीति।

प्रीतम *वि., पुं.* = प्रियतम।

प्रीति *स्त्री.* {सं.} संतोष; आनंद, प्रसन्नता; प्रेम, प्यार।

मुहा. (किसी की) प्रीति मानना = किसी के प्रेम से प्रसन्न होकर उसके साथ वैसा ही प्रेम करना।

प्रीतिभोज *पुं.* {सं.} मित्रों और बंधु-बांधवों के साथ बैठकर प्रेमपूर्वक खाना-पीना, दावत।

प्रीथि *स्त्री.* = पृथ्वी।

प्रूफ *पुं.* {अं.} प्रमाण, सबूत; छपनेवाली चीज का वह छपा हुआ नमूना जिसमें अशुद्धियाँ ठीक की जाती हैं।

प्रूफ-शोधन *पुं.* {अं. + सं.} प्रूफ संशोधित करने का काम।

प्रेक्षक *वि.* {सं.} दर्शक, देखनेवाला।

प्रेक्षण *पुं.* {सं.} देखना।

प्रेक्षा *स्त्री.* {सं.} देखना; नृत्य, अभिनय आदि देखना; दृष्टि, निगाह; प्रज्ञा, बुद्धि।

प्रेक्षागार, प्रेक्षागृह *पुं.* {सं.} मंत्रणागृह; नाट्यशाला।

प्रेक्षी *वि.* {सं.} देखनेवाला।

प्रेक्ष्य *वि.* {सं.} जो देखा जाए; जो देखने के योग्य हो, प्रेक्षणीय।

प्रेत *पुं.* {सं.} {*भाव.* प्रेतत्व} मरा हुआ मनुष्य, मृत प्राणी; वह कल्पित शरीर जो मरने के बाद मनुष्य धारण करता है; पिशाचों की तरह की एक कल्पित देवयोनि; बहुत ही कृपण, दुष्ट, स्वार्थी या धूर्त व्यक्ति।

प्रेतकर्म *पुं.* {सं.} हिन्दुओं के मृत शरीर जलाने से सपिंडी तक के सब कार्य।

प्रेतगृह *पुं.* {सं.} श्मशान।

प्रेतगेह *पुं.* प्रेतगृह।

प्रेतनी *स्त्री.* {सं. प्रेत} भूतनी, चुड़ैल।

प्रेता *स्त्री.* {सं.} पिशाची, भगवती कात्यायनी का एक नाम।

प्रेतयज्ञ *पुं.* {सं.} एक प्रकार का यज्ञ जो प्रेतयोनि प्राप्त करने के लिए किया जाता था।

प्रेतलोक *पुं.* {सं.} यमपुर।

प्रेतविद्या *स्त्री.* {सं.} मरे हुए लोगों की आत्माओं को बुलाकर उनसे संपर्क स्थापित करके बातचीत करने की विद्या।

प्रेतात्मा *स्त्री.* {सं.} मरे हुए व्यक्ति की आत्मा।

प्रेती *पुं.* {सं. प्रेत + ई (प्रत्य.)} भूत-प्रेत की उपासना करनेवाला।

प्रेम *पुं.* {सं.} वह मनोवृत्ति जो किसी को बहुत अच्छा समझकर सदा उसके साथ या पास रहने की प्रेरणा करती है, स्नेह, प्रीति, मुहब्बत; वह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पारस्परिक स्नेह और व्यवहार जो प्रायः रूप और कामवासना के कारण उत्पन्न होता है, प्रीति, प्यार, मुहब्बत।

प्रेमगर्विता *स्त्री.* {सं.} वह नायिका जिसे अपने पति के ऊपर होनेवाला प्रेम या अनुराग का अभिमान हो।

प्रेमपात्र *पुं.* {सं.} वह जिससे प्रेम किया जाए।

प्रेमवंत *वि.* {सं. प्रेम + वंत (प्रत्य.)} प्रेम से भरा हुआ; प्रेमी।

प्रेमवारि *पुं.* प्रेमाश्रु।

प्रेमा *पुं.* {सं.} स्नेही, इंद्र, वायु।

प्रेमाचार *पुं.* {सं.} प्रेमी और प्रेमिका की एक दूसरे को रिझाने के लिए की जानेवाली प्रेमपूर्ण क्रियाएँ।

प्रेमामृत *पुं.* {सं.} प्रेमरूप सुधा।

प्रेमालाप *पुं.* {सं.} प्रेमपूर्वक होनेवाली या मुहब्बत की बातचीत।

प्रेमालिंगन *पुं.* {सं.} प्रेम से गले लगाना, गले मिलना।

प्रेमाश्रु *पुं.* {सं.} प्रेम के कारण आँखों से निकलनेवाले आँसू।

प्रेमिक *पुं.* = प्रेमी।

प्रेमिका *स्त्री.* {सं.} वह स्त्री जिससे प्रेम किया जाए, प्रेयसी।

प्रेमिल *वि.* {सं.} प्यार-भरा।

प्रेमी *पुं.* {सं. प्रेमिन्} प्रेम करनेवाला।

प्रेय *वि.* {सं.} प्रिय; अभीष्ट।

प्रेयसी *स्त्री.* {सं.} प्रेमिका।

प्रेयस्ता *स्त्री.* {सं.} प्रियता।

प्रेरक *वि., पुं.* {सं.} प्रेरणा करनेवाला।

प्रेरण *पुं.* प्रेरणा।

प्रेरणा *स्त्री.* {सं.} मन में उत्पन्न होनेवाला कोई ऐसा विचार या धारणा जिसके विषय में यह माना या समझा जाता हो कि वह दैवी साधन या कृपा से उत्पन्न हुई है (इंस्पिरेशन); किसी प्रभावशाली व्यक्ति या क्षेत्र की ओर से कुछ कहने या करने के लिए होनेवाला संकेत।

प्रेरणादायक *वि.* {सं.} प्रेरणा देनेवाला।

प्रेरणार्थक क्रिया *स्त्री.* {सं.} क्रिया का वह रूप जिससे सूचित होता है कि वह क्रिया किसी की प्रेरणा से कर्ता के द्वारा हुई है, जैसे 'पढ़ाना' का प्रेरणार्थक 'पढ़वाना' है (कॉजेटिव)।

प्रेरणास्पद *वि.* {सं.} प्रेरणा देनेवाला।

प्रेरणास्रोत *पुं.* {सं.} वह जिससे प्रेरणा मिलती हो।

प्रेरना *पुं.* {सं. प्रेरणा} प्रेरणा करना।

प्रेरित *वि.* {सं.} जिसे दूसरे से प्रेरणा मिली हो।

प्रेषक *पुं.* {सं.} वह जो किसी के पास कोई चीज भेजे (सेंडर, कंसाइनर)।

प्रेषण *पुं.* {सं.} कोई चीज कहीं से किसी के पास भेजना, रवाना करना (रेमिटेंस, ट्रांसमिशन); वह वस्तु जो कहीं से किसी को भेजी जाए (रेमिटेंस कंसाइनमेंट)।

प्रेषितव्य *वि.* {सं.} भेजने योग्य।

प्रेष्य *पुं.* {सं.} दास, सेवक, दूत।

प्रेषित *पुं.* {सं.} भेजा हुआ।

प्रेषितक *पुं.* {सं.} वह वस्तु जो कहीं भेजी जाए (कंसाइन्मेंट)।

प्रेषिती *पुं.* {सं. प्रेषित} वह जिसके नाम कोई वस्तु प्रेषित की या भेजी जाए (एड्रेसी, कंसाइनी)।

प्रेस *पुं.* {अं.} छापाखाना; छापने की कला; समाचार-पत्रों का वर्ग; रुई आदि चीजें दबाने की कला।

प्रेस-विज्ञप्ति *स्त्री.* {अं. + सं.} समाचार-पत्र में प्रकाशनार्थ दी जानेवाली सामयिक सूचना।

प्रेसिडेन्ट *पुं.* {अं.} अध्यक्ष; राष्ट्रपति।

प्रोक्त *वि.* {सं.} कहा हुआ।

प्रोग्राम *पुं.* {अं.} कार्यक्रम।

प्रोत्साहन *पुं.* {सं.} {*वि.* प्रोत्साहित} कोई काम करने के लिए उत्साह बढ़ाना, हिम्मत बँधाना।

प्रोन्नति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* प्रोन्नत} वर्ग, पद, मर्यादा आदि में ऊपर चढ़ाना या उन्नत करना (प्रोमोशन)।

प्रोफेसर *पुं.* प्राध्यापक।

प्रोषित *वि.* {सं.} विदेश गया हुआ।

प्रोषित नायक (पति) *पुं.* {सं.} वह नायक या पति जो विदेश में होने के कारण अपनी पत्नी के वियोग से दुखी हो।

प्रोषितपतिका (नायिका) *स्त्री.* {सं.} वह नायिका जो अपने पति के परदेस जाने पर दुखी हो।

प्रौढ़ *वि.* {सं.} {*स्त्री.* प्रौढ़ा} {*भाव.* प्रौढ़ता} अच्छी तरह बढ़ा हुआ, पुष्ट; जो युवावस्था पार कर चला हो; पक्का; ढीठ, धृष्ट।

प्रौढ़ता *स्त्री.* {सं.} प्रौढ़ होने की अवस्था या भाव।

प्रौढ़ा *स्त्री.* {सं.} अधिक वयसवाली स्त्री; शृंगार रस में कामकला आदि अच्छी तरह जाननेवाली, तीस-चालीस वर्ष की अवस्थावाली नायिका; साहित्य में वह शब्द-योजना जिसके द्वारा रचना में प्रसाद गुण आता है।

प्रौढ़ाधीरा *स्त्री.* {सं.} वह प्रौढ़ा-नायिका जो अपने नायक में विलाससूचक चिह्न देखकर व्यंग्य रूप से क्रोध दिखलावे।

प्रौढ़ावस्था *स्त्री.* {सं.} वह स्थिति जब व्यक्ति मानसिक दृष्टि से प्रौढ़ता प्राप्त कर लेता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रौढ़ि *स्त्री.* {सं.} प्रौढ़ता, धृष्टता, वाद-विवाद करने की धृष्टता।

प्रौढ़ोक्ति *स्त्री.* {सं.} साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी कार्य या वस्तु के उत्कर्ष का कोई ऐसा कारण मान लिया जाता है जो वास्तव में उसका कारण नहीं होता, जैसे गंगातट पर रहने के कारण ही वह महात्मा हो गया था।

प्रौद्योगिकी *स्त्री.* {सं.} उद्योगों को अधिक उन्नत करने की विद्या।

प्लक्ष *पुं.* {सं.} पाकर का वृक्ष, पीपल का पेड़।

प्लक्षादेवी *स्त्री.* {सं.} सरस्वती नदी।

प्लव *पुं.* {सं.} तैरना, संतरण, बंदर, नहाना।

प्लवर्ग *पुं.* {सं.} अग्नि, जलपक्षी।

प्लॉट *पुं.* {अं.} कथावस्तु; षड्यंत्र; जमीन का बड़ा टुकड़ा।

प्लावन *पुं.* {सं.} {*वि.* प्लावित, पलावनिक} पानी की बाढ़; बहुत दिनों के अंतर पर, सारे संसार में होनेवाली पानी की वह बाढ़ जिसकी गिनती प्रलय में होती है। हिन्दुओं के अनुसार वैवस्वत मनु के समय में और ईसाइयों, मुसलमानों आदि के अनुसार हजरत नूह के समय ऐसी बाढ़ आई थी (डेल्यूज)।

प्लावनिक *वि.* {सं.} प्लावन या बाढ़ से संबंध रखनेवाला (विशेष प्लावन); (भूमि या क्षेत्र) जो प्रायः बाढ़ के समय जल में डूब जाता हो (डिल्यूविअल)।

प्लावित *वि.* {सं.} जलमग्न, डूबा हुआ।

प्लास्टिक *पुं.* {अं.} एक रासायनिक पदार्थ जिसे किसी भी रूप में ढाला जा सकता है।

प्लीहा *स्त्री.* तिल्ली, पेट की तिल्ली।

प्लुत *पुं.* {सं.} दीर्घ से भी बड़ा और तीन मात्राओं का छंद, घोड़े की टेढ़ी चाल।

प्लेग *पुं.* {अं.} महामारी; एक भीषण रोग, ताऊन।

फ

फ नागरी वर्णमाला का बाईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का दूसरा वर्ण जिसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

फंका *पुं.* {*स्त्री.* फंकी} फंकी; फाँक।

फंकी *स्त्री.* {हिं. फाँकना} फाँकने के लिए चूर्ण के रूप में कोई दवा; उतनी मात्रा जितनी एक बार में फाँकी जाए।

फंग *पुं.* {सं. बंध} फंदा; प्रेम; बंधन।

फंद *पुं.* {सं. बंध} बंधन; फंदा, जाल; छल, धोखा; दुख।

फँदना *अ.* {हिं. फंद} फंदे में फँसना; *स.* फाँदना।

फँदवार *वि.* {हिं. फंदा + वार (प्रत्य.)} फंदे में फँसानेवाला।

फंदा *पुं.* {सं. बंध} किसी को बाँधने या फँसाने के लिए बनाया हुआ रस्सी आदि का घेरा; पाश, जाल; कष्टदायक बंधन; क्रोशिए, सलाई आदि की एक बार की बुनाई।

फँदाना[1] *स.* {हिं. फंदा} फंदे या जाल में फँसाना।

फँदाना[2] *स.* {हिं. फाँदना} किसी को फाँदने में प्रवृत्त करना, कुदाना।

फँफाना *क्रि. अ.* {हिं.} हकलाना, खौलते हुए दूध, दाल आदि का ऊपर उठना।

फँसाना *अ.* {हिं. फाँस} बंधन या फंदे में इस प्रकार पड़ना कि निकलना कठिन हो; अटकना, उलझना।

फँसवार *पुं.* = फंदा।

फँसाना *स.* {हिं. फँसना} फंदे में लाना या उलझाना।

फँसिहारा *वि.* {हिं. फाँस} {*स्त्री.* फँसिहारिन} फँसानेवाला; फाँसी देने या लगानेवाला।

फँसोरी *स्त्री.* {हिं. फाँसी} फाँसी की रस्सी; जाल, फंदा।

फक *वि.* {*अ.* फ़क} स्वच्छ; सफेद; जिसका रंग बिगड़ गया हो।

फकड़ी *स्त्री.* {हिं.} दुर्गति, दुर्दशा।

फकत *वि.* {*अ.*} केवल, सिर्फ।

फकीर *पुं.* {*अ.*} {*स्त्री.* फकीरिन, फकीरनी, *भाव.* फकीरी} भीख माँगनेवाला, भिखमंगा, भिक्षुक; संसार-त्यागी, विरक्त; निर्धन, गरीब।

फकीरी *स्त्री.* {हिं.} भिखमंगापन, निर्धनता।

फक्कड़ *पुं.* {सं. पक्किका} गाली-गलौज, गंदी बातें; सदा दरिद्र परंतु मस्त रहनेवाला व्यक्ति; वाहियात और उद्दंड आदमी।

फक्कड़बाजी *स्त्री.* {हिं. फक्कड़ + फा. बाजी} गंदी और वाहियात बातें करना।

फक्कड़ाना *वि.* {हिं. फक्कड़ + आना (प्रत्य.)} फक्कड़ों जैसी तबीयतवाला, फक्कड़ों-जैसे स्वभाववाला।

फखर *पुं.* {फा. फ़ख़्र} गर्व।

फग *पुं.* फंग।

फगुआ *पुं.* फाग; होली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फगुआना *क्रि. अ.* {हिं.} फागुन के महीने में किसी के ऊपर रंग डालना।

फगुनहट *स्त्री.* {हिं. फागन} फागुन में चलनेवाली तेज हवा।

फजर *स्त्री.* {अ.} सवेरा।

फजल *पुं.* {अ. फज़ल} अनुग्रह।

फजीहत *स्त्री.* {अ. फज़ीहत} दुर्दशा।

फजील *वि.* {अ. फजूल} व्यर्थ।

फजूलखर्ची *वि.* {फा.} {भाव. फजूलखर्ची} व्यर्थ और बहुत खर्च करनेवाला, अपव्ययी।

फट *पुं.* {सं.} साँप का फन, पाखंड।

फटक *पुं.* स्फटिक।

फटकन *स्त्री.* {हिं. फटकना} फटकने की क्रिया या भाव; वह रद्दी अंश जो कोई चीज फटकने पर निकले।

फटकना[1] *स.* {अनु. फट} फटफट शब्द करना; पटकना; मारने के लिए चलाना (अस्त्र आदि); सूप में अन्न आदि रखकर उसे उछालते हुए साफ करना; रुई आदि धुनना।

फटकना[2] *अ.* {अनु.} कुछ पास जाना या पहुँचना; फड़फड़ाना।

फटकनी *स्त्री.* {हिं. फटकना} अनाज फंटकने का सूप।

फटकरना[1] *अ.* {हिं. फटकारना} फटकारा जाना।

फटकरना[2] *स.* {हिं. फटकना} फटकना।

फटका *पुं.* {अनु.} रुई धुनने की धुनकी; काव्य के रस आदि गुणों से हीन कोरी तुकबंदी; *पुं.* फाटक।

फटकाना *स.* {हिं. फटकना} फटकने का काम दूसरे से कराना; दूर करना, हटाना; फेंकना।

फटकार *स्त्री.* {हिं. फटकारना} फटकारने की क्रिया या भाव; झिड़की, भर्त्सना; फिटकार।

फटकारना *स.* {अनु.} इस प्रकार झटका मारना कि ऊपर की चीजें छितराकर गिर जाएँ; कुछ अनुचित रूप से धन प्राप्त करना; कपड़ा पटक-पटककर साफ करना; खरी और कड़ी बात कहकर चुप कराना; शस्त्र आदि चलाना।

फटकिया *पुं.* {हिं.} विष।

फटकी *स्त्री.* {हिं.} बहेलियों की चपटी टोकरी जिसमें वे चिड़ियों को बंद करते हैं।

फटन *स्त्री.* {हिं. फटना} फटने की क्रिया या भाव; फटने के कारण होनेवाला शिगाफ या दरार; (शरीर के किसी अंग में) फटने की-सी होनेवाली पीड़ा।

फटना *अ.* {हिं. 'फाड़ना' का अ. रूप} ऊपर के तल में इस प्रकार दरार पड़ना कि कुछ भाग अलग हो जाए।

मुहा. छाती फटना = दुख होना; *मन या चित्त फटना* = मन में रोष होने पर संबंध रखने को जी न चाहना।

अलग या पृथक् हो जाना; द्रव पदार्थ में सार भाग से पानी अलग हो जाना, जैसे दूध फटना; किसी बात का बहुत अधिक होना।

मुहा. फट पड़ना = अचानक आ पहुँचना या प्राप्त होना, अत्यधिक मात्रा में उपलब्ध होना।

फटफटिया *स्त्री.* {अनु. फटफट} मोटर-साइकिल।

फटहा *वि.* {हिं. फटना} फटा हुआ; गाली-गलौज बकनेवाला, लुच्चा।

फटा *वि.* {हिं. फटना} फटा हुआ।

मुहा. किसी के फटे में पैर देना = दूसरे की विपत्ति अपने ऊपर लेना; किसी के मामले में अनाधिकार दखल देना; किसी की विपत्ति और बढ़ा देना।

फटाफट *क्रि. वि.* {अनु. फटफट} तुरंत, जल्दी।

फटिक *पुं.* {सं. स्फटिक} सफेद पारदर्शी पत्थर, बिल्लौर, स्फटिक।

उदा. फटिक सिला बैठे दोउ भाई-तुलसी। संगमरमर।

फटिका *स्त्री.* {हिं.} फिटकरी।

फटेहाल *वि.* दुर्दशाग्रस्त।

फट्ठा *पुं.* {हिं.} चीरे हुए बाँस का टुकड़ा।

फड़[1] *पुं.* {सं. पण} वह जगह जहाँ दुकानदार बैठकर माल खरीदते और बेचते हैं; जुआ खेलने का स्थान या बिसात; वह स्थान जहाँ किसी प्रकार की प्रतियोगिता हो; लड़ाई का मैदान, रणक्षेत्र।

मुहा. फड़ पर आना = मुकाबले के लिए सामने आना।

फड़[2] *पुं.* {सं. पटल} तोप लादने की गाड़ी।

फड़कन *स्त्री.* {अनु.} फड़कने की क्रिया या भाव।

फड़कना *अ.* {अनु.} रह-रहकर नीचे-ऊपर या इधर-उधर हिलना, फड़फड़ाना, जैसे भुजा या आँख फड़कना;

मुहा. फड़क उठना या जाना = बहुत प्रसन्न होना; *बोटी-बोटी फड़कना* = अत्यंत चंचल होना।

कुछ करने के लिए व्यग्र होना।

फड़काना *स.* {हिं.} फड़काना, उमंग में लाना।

फड़नवीस *पुं.* {फा. फर्दनवीस} मराठों के राज्यकाल का एक बड़ा अधिकारी।

फड़फड़ *स्त्री.* {अनु.} पक्षियों के पंखों का शब्द।

फड़फड़ाना *अ.* फड़फड़ शब्द होना; *स.* फड़फड़ शब्द करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फड़फड़ाहट *स्त्री.* {हिं. फड़फड़} फड़फड़ शब्द; छटपटाहट।

फड़बाज *पुं.* {हिं. फड़ + फा. बाज़} वह जो लोगों को अपने यहाँ बैठाकर जुआ खेलाता और उसके बदले में उनसे कुछ लेता हो।

फड़िया *पुं.* {हिं. फड़} खुदरा अन्न बेचनेवाला; फड़बाज।

फण *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* अल्पा. फणी} साँप का फन; रस्सी का फंदा।

फणदार *पुं.* {सं. + फा.} साँप।

फणींद्र *पुं.* {सं.} शेषनाग; बड़ा साँप।

फणी *पुं.* {*अ.*} किसी बात के उचित या अनुचित होने के संबंध में (विशेषत: मुसलमानों के धर्मशास्त्रानुसार) दी जानेवाली व्यवस्था।

फणीश *पुं.* {सं.} शेषनाग, वासुकि।

फणी *पुं.* {सं.} सर्प, साँप।

फतह *स्त्री.* {*अ.* फ़त्ह} विजय, जीत; सफलता।

फतिंगा *पुं.* पतंगा।

फतीला *पुं.* पतीला।

फतूर *पुं.* {*अ.* फ़ुतूर} विकार, दोष; उपद्रव, उत्पात; कमी, न्यूनता; घाटा, हानि, नुकसान।

फतूरिया *वि.* {*अ.* फतूर} फतूर या बखेड़ा करनेवाला, उपद्रवी।

फतूह *स्त्री.* {*अ.* फुतूह} विजय, जीत; लड़ाई या लूट में मिला हुआ माल।

फतूही *स्त्री.* {*अ.* फुतूही} बिना बाँह की एक प्रकार की कुरती, सदरी; फतूह।

फतेह *स्त्री.* फतह।

फदकना *क्रि. अ.* {हिं.} खदबदाना।

फदका *पुं.* {हिं.} गुड़ का पाग जो बढ़ते गाढ़ा न हुआ हो।

फन[1] *पुं.* {सं. फण} कुछ साँपों के सिर का वह रूप जो उसके फैलकर पत्ते का आकार धारण करने पर होता है।

फन[2] *पुं.* {फा. फ़न} गुण, खूबी; विद्या; कला-कौशल; छल-कपट।

फनकना *क्रि. अ.* {हिं.} सनसनाते हुए हवा में हिलना।

फनधर *पुं.* {सं. फणधर} कोबरा साँप।

फनस *पुं.* {हिं.} कटहल।

फनाना *अ., स.* {?} तैयार करना या कराना।

फनिंद *पुं.* फणींद्र।

फनि *पुं.* फणी; फण।

फनिग *पुं.* {सं. फणिन्} साँप; शेषनाग; पुं. पतंगा (कीड़ा)।

फनींद *पुं.* = फणींद्र (शेषनाग)।

फनूस *पुं.* फानूस।

फन्नी *स्त्री.* पच्चर।

फफसा[1] *पुं.* {सं. फुस्फुस} फेफड़ा।

फफसा[2] *वि.* {अनु.} फूला हुआ और अंदर से पोला; (फल) जिसका स्वाद बिगड़ गया हो, बुरे स्वादवाला।

फफूँदी *स्त्री.* नीबी; भुकड़ी।

फफोर *पुं.* {हिं.} जंगली प्याज।

फफोला *पुं.* {सं. प्रस्फोट} शरीर पर पड़नेवाला छाला;

मुहा. दिल के फफोले फोड़ना = कुछ कहकर अपने मन की जलन या क्रोध शांत करना।

पानी का बुलबुला, बुदबुद।

फबकना *क्रि. अ.* {हिं.} मोटा हुआ मानव।

फबती *स्त्री.* {हिं. फबना} व्यंग्य।

मुहा. फबती उड़ाना = हँसी उड़ाना, उपहास करना; *फबती कसना* = चुभती हुई या व्यंग्यपूर्ण बात कहना।

फबन *स्त्री.* {हिं. फबना} फबने की क्रिया या भाव; शोभा, छवि।

फबना *अ.* {सं. प्रभवन} सुंदर या सुहावना लगना, खिलना।

फ़बि *स्त्री.* फबन।

फबित *वि.* {हिं. फबना = इत (प्रत्य.)} जो फब रहा हो, देखने में भला या फबता हुआ जान पड़नेवाला।

फबीला *वि.* {हिं. फबना + ईला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* फबीली} सुहावना या सुंदर दिखाई देनेवाला।

फर *पुं.* फल।

फरक *पुं.* {*अ.* फ़र्क} पार्थक्य, अलगाव; भेद, अंतर; दूरी; *क्रि. वि.* अलग, पृथक्।

फरकन *स्त्री.* फड़क।

फरकना *अ.* फड़कना।

फरकाना *स.* {हिं. फरक} अलग करना।

फरकी *स्त्री.* {हिं.} दीवार में खड़े बल जड़ने के पत्थर।

फरकौंहाँ *वि.* {हिं. फरकना (फड़कना + औंहाँ (प्रत्य.)} फड़कनेवाला या फड़कता हुआ।

फरचा *वि.* {हिं.} जो जूठा न हो, शुद्ध पवित्र।

फरचाना *क्रि. स.* {हिं.} शुद्ध करना।

फरजी *वि.* {फा. फ़र्जी} नकली, बनावटी; माना हुआ, कल्पित; पुं. शतरंज में 'वजीर' नाम का मोहरा।

फरजीमात *स्त्री.* {फा + हिं.} शतरंज के खेल में वह मात जो केवल एक फरजी और एक प्यादे की सहायता से दी जाती है।

फरद *स्त्री.* {*अ.* फ़र्द} स्मरण रखने के लिए लिखा हुआ लेखा, सूची आदि; कागज का

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तख्ता, ताव; एकसाथ काम में आनेवाली या रहनेवाली दो चीजों में से कोई एक; *वि.* जिसकी बराबरी का दूसरा न हो, बेजोड़।

फरना *अ.* फलना।

फरफंद *पुं.* {हिं. फर + फंदा} {*वि.* फरफंदी} छल-कपट; नखरा।

फरफर *पुं.* {हिं.} चिड़ियों के उड़ने से उत्पन्न शब्द।

फरमा[1] *पुं.* {अं. फ्रेम} लकड़ी, मिट्टी, मोम, धातु आदि का वह साँचा जिसमें ढालकर चीजें बनाई जाती हैं (फ्रेम)।

फरमा[2] *पुं.* {अं. फॉर्म} कागज का पूरा ताव जो एक बार में छपता है (फॉर्म)।

फरमाइश *स्त्री.* {फा. फ़र्माइश} {*वि.* फरमाइशी} कोई चीज लाने, बनाने अथवा कोई काम करने के लिए दी जानेवाली आज्ञा।

फरमाइशी *वि.* {फा. फ़र्माइशी} फरमाइश करके बनाया हुआ; बहुत अच्छा और बढ़िया।

फरमान *पुं.* {पह्लवी और पुरानी ईरानी फ्रमान मि. सं. प्रमाण से फा. फर्मान} राज्य या राजा की आज्ञा; वह पत्र जिसपर इस प्रकार की आज्ञा लिखी हो।

फरमाना *स.* {फा. फर्मान} किसी बड़े का कुछ कहना (आदरार्थक)।

फरबार *पुं.* {हिं.} खलिहान।

फरवी *पुं.* {हिं.} भुना हुआ चावल, मुरमुरा।

फरश *पुं.* {*अ.* फर्श} बैठने आदि के लिए समतल और पक्की भूमि; ऐसी भूमि पर बिछाया हुआ कपड़ा।

फरशबंद *पुं.* {फा. फर्श + बन्द} ऊँची समतल भूमि।

फरशी *स्त्री.* {फा. फर्शी} एक प्रकार का बड़ा हुक्का, गुड़गुड़ी।

फरस *पुं.* {हिं.} समतल भूमि, फर्श।

फरसा *पुं.* {सं. परशु} एक प्रकार की तेज धार की कुल्हाड़ी; फावड़ा।

फरहरना *अ.* {अनु. फरफर} फरफराना, फहराना।

फरहरा *पुं.* झंडा, पताका।

फराक[1] *पुं.* {फा. फ़राख} मैदान; *वि.* लंबा-चौड़ा, विस्तृत।

फराक[2] *पुं.* {अं. फ्रॉक} स्त्रियों और बच्चों का एक प्रकार का पहनावा।

फराख *वि.* {फा.} लंबा-चौड़ा।

फरागत *स्त्री.* {*अ.*} छुटकारा, मुक्ति; निश्चिंतता, बेफिक्री; पाखाना फिरना।

फराना *स.* फलाना।

फरामोश *वि.* {फा.} भूला हुआ, विस्मृत।

फरार *वि.* {*अ.*} भागा हुआ, गायब होना।

फराल *स्त्री.* {हिं.} विस्तार, फैलाव।

फरास *पुं.* फर्राश।

फरित *वि.* = फलित।

फरियाद *स्त्री.* {फा.} अत्याचार या दुख से बचाए जाने के लिए होनेवाली नालिश या प्रार्थना; निवेदन, प्रार्थना।

फरियादी *वि.* {फा.} फरियाद करनेवाला।

फरियाना *क्रि. अ., स.* {हिं.} धोकर साफ करना, तय करना, स्पष्ट दिखाई देना।

फरिश्ता *पुं.* {फा.} ईश्वर का दूत (मुसल.); देवता।

फरी *स्त्री.* {सं. फल} चमड़े की वह छोटी ढाल जिससे गतके का वार रोकते हैं।

फरीक *पुं.* {*अ.*} प्रतिद्वन्द्वी, विपक्षी; दो पक्षों में से कोई एक पक्ष या किसी पक्ष का आदमी (पार्टी)।

फरीक सानी *पुं.* {*अ.*} प्रतिपक्षी।

फरुही *स्त्री.* {हिं.} छोटा फावड़ा, फावड़े के आकार का एक लकड़ी का उपकरण, भूना हुआ चावल जो भीतर से पोला हो जाता है, लाई।

फरेंदा *पुं.* {हिं.} गूदेदार जामुन।

फरेंद्र *पुं.* {सं.} जामुन का वृक्ष।

फरेब *पुं.* {फा.} छल, कपट।

फरेबी *पुं.* {फा.} फरेब या छल-कपट करनेवाला, धोखेबाज, कपटी।

फरेरी *स्त्री.* {हिं. फल} जंगली फल।

फरोश *पुं.* {फा.} {*भाव.* फरोशी} बेचनेवाला (यौ. के अंत में, जैसे मेवाफरोश)।

फर्क *पुं.* फरक, दूरी।

फर्ज *पुं.* {*अ.* फ़र्ज़} कर्तव्य, कर्म; मान लेना, कल्पना करना।

फर्जी *वि.* फरद।

फर्राटा *पुं.* {अनु.} वेग, तेजी।

फर्राश *पुं.* {*अ.*} {*भाव.* फर्राशी} खेमा या तंबू गाड़ने, फर्श बिछाने, सफाई करने और दीपक जलाने आदि का काम करनेवाला, आदमी।

फर्रुखशाही *स्त्री.* {फरुखशाह (नाम)} पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

फर्श *पुं.* फरश, गलीचा, दरी।

फलंक *पुं.* {फा. फलक} आकाश; *पुं.* फलाँग।

फलंगना *अ.* फलाँगना।

फलंत *स्त्री.* {हिं. फलना + अंत (प्रत्य.)} (वृक्षों आदि के) फलने की क्रिया या भाव।

फल *पुं.* {सं.} वह वस्तु जो किसी विशिष्ट ऋतु में वृक्षों पर पैदा होती है); परिणाम, नतीजा; धर्म की दृष्टि से सुख, दुख आदि के रूप में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलनेवाला कर्म का परिणाम; शुभ कर्मों के ये चार परिणाम–अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष; फलित ज्योतिष में सुख, दुख आदि के रूप में होनेवाले ग्रहों के योग या स्थिति का परिणाम; प्रतिफल, बदला; बाण, धुरी आदि का वह धारदार भाग जिससे आघात किया जाता है; गणित की क्रिया का परिणाम-सूचक अंक।

फलक पुं. {सं.} तख्ता, पट्टी; वह लंबा-चौड़ा कागज जिसपर कोई मानचित्र, विवरण या कोष्ठक अंकित हो, फरद (शीट); परत, तबक; पत्र, पृष्ठ; हथेली।

फलकर पुं. {हिं. फल + कर} वृक्षों के फलों पर लगनेवाला कर।

फलतः *क्रि. वि.* {सं.} फल के रूप में, इसलिए, परिणामस्वरूप, जैसे वह निकृष्ट और फलतः त्याज्य है (कांसिक्वेंटली)।

फलत *स्त्री.* {हिं. फल} वृक्षों में लगनेवाले फलों का समूह, पेड़ों से फलों आदि के रूप में होनेवाली उपज।

फलद *वि.* {सं.} फल देनेवाला।

फलदान पुं. {सं. फल + दान} विवाह संबंध स्थिर करने की एक रसम (हिन्दू)।

फलना *अ.* {सं. फलन} वृक्षों का फल उत्पन्न करना, फलों से युक्त होना।

फलना-फूलना *अ.* उत्तरोत्तर समृद्ध होना।

फलवान (वान्) *वि.* {सं.} फलों से युक्त (वृक्ष); सफल।

फलश्रुति *स्त्री.* {सं.} (धार्मिक क्षेत्रों में) वह कथन या वाक्य जिसमें किसी काम के फल का उल्लेख होता है, जैसे–यज्ञ और दान करने से स्वर्ग मिलता है, रामायण या गीता का पाठ करने से मुक्ति होती है।

फलस्वरूप के *संबंधबो.* {सं.} के कारण।

फलहर पुं. फलहार।

फलहरी *स्त्री.* {हिं. फल} वृक्षों के फल।

फलहार पुं. फलाहार।

फलहारी *वि.* {हिं. फलाहार} जिसकी गिनती फलहार में हो।

फलाँग *स्त्री.* {सं. प्रलंघन} {*क्रि.* फलाँगना} एक जगह से उछलकर दूसरी जगह जाना, कुदान; एक फलाँग भर की दूरी या अंतर।

फलाँगना *क्रि. अ.* {हिं.} कूदना, फाँदना।

फलांत पुं. {सं.} फल का अंत या शेष।

फलांश पुं. {सं.} तात्पर्य, सारांश।

फला *स्त्री.* {सं.} प्रियंगु, शमी वृक्ष।

फलागम पुं. {सं.} फल आने का काल, शरद काल।

फलावन *वि.* {सं.} फल खानेवाला; पुं. शुक, तोता।

फलाना *वि.* {*अ.* फलाँ} {*स्त्री.* फलानी} कोई अनिश्चत या अकथित (वस्तु या व्यक्ति), अमुक; *स.* हिं. फलना का प्रे.।

फलाहार पुं. {सं.} केवल फल खाना; वह खाद्यपदार्थ जो केवल फलों से बना हो और जिसमें अन्न का अंश न हो।

फलाहारी पुं. {सं. फलाहारिन्} {*स्त्री.* फलाहारिणी} केवल फल खाकर निर्वाह करनेवाला; *वि.* फलहारी।

फलित *वि.* {सं.} जिसका या जिसमें फल हो या हुआ हो; फल-संबंधी, फल का।

फलित ज्योतिष पुं. {सं.} ज्योतिष का वह अंग जिसमें ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विचार होता है।

फली *स्त्री.* {सं. फल + हिं. ई. (प्रत्य.)} छोटे बीजोंवाला लंबा और चिपटा फल।

फलीता पुं. पलीता।

फलीभूत *वि.* {सं.} जिसका फल या परिणाम हो या हुआ हो।

फलोद्यान पुं. {सं.} वह उद्यान जिसमें फलों के वृक्ष हों।

फसद *स्त्री.* {*अ.* फस्द} नस में छेदकर शरीर का दूषित रक्त निकालने की क्रिया।

मुहा. फसद खुलवाना या लेना = शरीर का दूषित रक्त निकलवाना; मूर्खता या पागलपन की दवा करना।

फसल *स्त्री.* {*अ.* फ़स्ल} ऋतु, मौसम; समय, काल; खेत की उपज, फलत, पैदावार (क्रॉप)।

फसली *वि.* {*अ.* फ़स्ल} फसल या ऋतु का; पुं. अकबर का चलाया हुआ एक संवत् जिसका व्यवहार प्रायः खेती-बारी के कामों में होता है; *स्त्री.* विशूचिका, हैजा।

फसाद पुं. {*अ.*} {*वि.* और कर्ता फसादी} विकार, खराबी; उत्पात, उपद्रव; लड़ाई, हुज्जत।

फहम *स्त्री.* {*अ.*} बुद्धि, समझ।

फहरन *स्त्री.* {हिं. फहरना} फहरने की क्रिया या भाव।

फहरना *अ.* {सं. प्रसरण} {*भाव.* फहर, फहरान} वायु में उड़ना या फरफराना (झंडा आदि)।

फहरान *स्त्री.* फहरन।

फहराना *स.* {सं. प्रसारण} झंडा, कपड़ा आदि वायु में उड़ाना; *अ.* फहरना।

फहरिस्त *स्त्री.* {हिं.} सूची।

फाँक *स्त्री.* {सं. फलक} फल आदि का काटा या चीरा हुआ लम्बोतरा टुकड़ा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फाँकड़ा *वि.* {हिं.} छैल-छबीला, हृष्ट-पुष्ट।

फाँकना *स.* {हिं. फंकी} दाने या चूर्ण खाने के लिए ऊपर से उन्हें मुँह में डालना।
मुहा. धूल फाँकना = व्यर्थ इधर-उधर घूमकर दुर्दशा भोगना।

फाँका *पुं.* {हिं.} उतनी वस्तु जो एक बार फाँकी जाए।

फाँग, फाँगी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का साग।

फाँट *पुं.* {हिं. फेंटना} वनस्पतियों आदि को उबालकर निकाला हुआ रस, काढ़ा, क्वाथ।

फाँटना *स.* {हिं. फाँट} काढ़ा बनाना।

फाँटा *पुं.* {हिं.} दो दीवारों के कौने में बनी हुई कोनिया।

फाँड़ *पुं.* फाँड़ा।

फाँड़ा *पुं.* {सं. भांड ?} धोती आदि का वह अंश जो कमर पर लपेटकर बाँधा जाता है।
मुहा. के लिए फेंट।

फाँद *स्त्री.* {हिं.} उछलने का भाव, उछाल, चिड़ियों को फँसाने का फंदा।

फाँदना[1] *अ.* {सं. फणन्} {*भाव.* फाँद} उछलना (कूदना के साथ); *स.* उछलकर किसी चीज को लाँघते हुए उसके उस पार जाना।

फाँदना[2] *स.* {हिं. फंदा} फंदे में फँसाना; बाँधना या बंद करना।

फाँदा *स्त्री.* {हिं.} गट्ठर बाँधने की रस्सी।

फाँफी *स्त्री.* {हिं.} बहुत महीन झिल्ली, मलाई की पतली तह जो दूध के ऊपर पड़ जाती है।

फाँस *स्त्री.* {सं. पाश} पाश, फंदा; वह फंदा जिसमें पशु-पक्षी फँसाए जाते हैं; शरीर में चुभा हुआ लकड़ी आदि का लंबा छोटा टुकड़ा।

फाँसना *स.* = फँसाना।

फाँसी *स्त्री.* {सं. पाश} फँसाने का फंदा, पाश; रस्सी का वह फंदा जिसमें गला फँसाने से दम घुटता और आदमी मर जाता है। इस प्रकार गला घोंटकर दिया जानेवाला प्राणदंड (एग्ज़ीक्यूशन)।
मुहा. फाँसी चढ़ाना = राज्य की ओर से किसी को प्राण-दंड देने के लिए उसके गले में फंदा लगाना; किसी को खतरे में झोंकना।

फाइल *स्त्री.* {अं.} नत्थी।

फाइलेरिया *पुं.* {अं.} मच्छरों के दंश से होनेवाला एक रोग जिसमें शरीर के अंगों में सूजन आ जाती है।

फाका *पुं.* {*अ.* फ़ाक:} उपवास, व्रत।

फाकेमस्त *वि.* {फा. फ़ाक:मस्त} खाने-पीने का बहुत कष्ट उठाकर भी मस्त रहनेवाला।

फाख़्तई *वि.* {हिं.} भूरापन लिए लाल रंग का।

फाग *पुं.* {हिं. फागुन} फागुन का उत्सव जिसमें लोग एक दूसरे पर रंग डालते हैं; इस उत्सव के समय गाया जानेवाला गीत।

फागुन *पुं.* {सं. फाल्गुन} माघ के बाद और चैत्र के पहले का महीना, फाल्गुन।

फागुनी *वि.* {हिं.} फागुन-संबंधी।

फाटक *पुं.* {सं. कपाट} बड़ा दरवाजा; *पुं.* फटकन।

फाटका *पुं.* {?} सट्टा।

फाटकेबाज *पुं.* = सट्टेबाज।

फाटकेबाजी *स्त्री.* = सट्टेबाजी।

फाटना *अ.* फटना।

फाड़न *पुं.* {हिं.} दही के मक्खन की छाछ।

फाड़ना *स.* {सं. स्फाटन} {*भाव.* फाड़न} बीच से चीरकर दो भागों में करना, विदीर्ण करना, चीरना, जैसे कपड़ा या पेट फाड़ना; सन्धि या जोड़ फैलाकर खोलना, जैसे मुँह फाड़ना; किसी गाढ़े द्रव पदार्थ में ऐसा विकार उत्पन्न करना कि पानी से सार भाग अलग हो जाए, जैसे दूध फाड़ना।

फाणि *स्त्री.* {सं.} गुड़।

फाणित *पुं.* {सं.} खौलाकर गाढ़ा किया हुआ रस, शीरा।

फानूस *पुं.* {फा.} छत में टाँगने के लिए एक डंडे के चारों ओर लगे हुए शीशे के कमल या गिलास आदि जिनमें मोमबत्तियाँ जलती हैं।

फाबना *अ.* = फबना।

फायदा *पुं.* {*अ.* फाइद:} लाभ, नफा; हित, भलाई; अच्छा फल या प्रभाव (औषध आदि का)।

फायदेमंद *वि.* {फा.} लाभदायक।

फार *पुं.* फाल।

फारा *पुं.* {हिं.} कतला, फाँक, फाल।

फारखती *स्त्री.* {*अ.* फारिग + खती} इस बात का सूचक लेख कि अब हमारा कोई प्राप्य या अधिकार नहीं रह गया।

फारम[1] *पुं.* {अं. फॉर्म} प्रार्थना, विवरण आदि से संबंध रखनेवाले पत्रों आदि के वह निश्चित और विहित रूप जिनमें भिन्न-भिन्न बातों का उल्लेख करने के लिए अलग-अलग स्थान या कोष्ठक बने होते हैं, रूपक; इस प्रकार का बना, विशेषत: छपा हुआ कोई कागज (फॉर्म)।

फारम[2] *पुं.* {अं. फॉर्म} खेती-बारी की जमीन का वह बड़ा टुकड़ा या खंड जिसमें विशिष्ट रीतियों से अधिक मात्रा में चीजें बोई जाती हैं अथवा पशु आदि पालन या वर्धन के लिए रखे जाते हैं।

फारस *पुं.* पारस (देश), ईरान।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फारसी *स्त्री.* {फा.} फारस देश की भाषा जो संस्कृत परिवार की है।

फार्म पुं. फारम।

फाल[1] पुं. {सं. फल} लोहे का वह फल जो हल के नीचे लगा रहता है और जिससे जमीन खुदती या जुतती है।

फाल[2] पुं. {सं. फलक} पतले दल का कटा हुआ टुकड़ा।

फाल[3] पुं. {सं. प्लव} चलने के लिए उठाया हुआ पैर, डग; चलने में एक पैर से दूसरे पैर तक की दूरी।

फालगुप्त पुं. {सं.} बलराम का अन्य नाम।

फालतू *वि.* {हिं. फाल = टुकड़ा} आवश्यकता से अधिक, अतिरिक्त; व्यर्थ, निकम्मा।

फालना *अ.* {हिं. फाल = डग} लंबे-लंबे डग भरना।

फालूदा पुं. {फा.} गेहूँ के सत्त से बननेवाली एक प्रकार की सेवई।

फाल्गुन पुं. फागुन, अर्जुन का नाम।

फाल्गुनि पुं. {सं.} अर्जुन का अन्य नाम।

फावड़ा पुं. {सं. फाल} मिट्टी खोदने का फारसा, कुदाल।

फासला पुं. {अ.} दूरी, अंतर।

फाहा पुं. {सं. फाल} तेल, अतर, मरहम आदि में तर किया हुआ रुई या कपड़े का टुकड़ा।

फाहिशा *वि.* {अ.} छिनाल (स्त्री)।

फिकर *स्त्री.* फिक्र।

फिकरा पुं. {अ. फ़िक्र:} वाक्य; दमबुत्ता, झाँसापट्टी; व्यंग्य, फबती।

फिकैत पुं. फेकैत।

फिक्र पुं. {सं.} चिंता, सोच; ध्यान, विचार; उपाय, यत्न।

फिचकुर पुं. {हिं.} मूर्च्छा में मुँह से आनेवाला गाज।

फिट *वि.* {अं.} उपयुक्त।

फिटकार *स्त्री.* {हिं. फिट (अनु.) + कार (प्रत्य.)} धिक्कार, लानत।

फिटकिरी *स्त्री.* {सं. स्फटिका} सफेद रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो प्राय: औषध के काम आता है (एलम)।

फिटकी *स्त्री.* फुटकी।

फिटन *स्त्री.* {अं.} एक प्रकार की बड़ी और खुली घोड़ा-गाड़ी।

फिट्टा *वि.* {हिं. फिट} जिसपर फिटकार पड़ी हो; (अपमानित या लज्जित होने के कारण) श्रीहत।

फितूर पुं. फतूर।

फिना *स्त्री.* {हिं.} मृत्यु, मरण, नाश।

फिरंग पुं. {अं. फ्रांक} यूरोप का एक प्राचीन देश; गरमी या आतशक नामक रोग।

फिरंगी *वि.* {हिं. फिरंग} फिरंग देश का; फिरंग देश में रहनेवाला; *स्त्री.* विलायती तलवार; पुं. फिरंग देश का निवासी, फ्रांसीसी, यूरोप या अमेरिका का कोई निवासी, गोरा।

फिरंट *वि.* {अं. फ्रंट} विरुद्ध पक्ष में रहनेवाला, विरोधी।

फिर *क्रि. वि.* {सं.} एक बार हो जाने पर और एक बार, दोबारा, पुन:; भविष्य में किसी समय, बाद में; उस दशा में, तब।

मुहा. फिर क्या है? = तब कोई हर्ज की बात नहीं है, तब ठीक है; इसके अतिरिक्त या सिवा।

फिरका पुं. {अ. फ़िर्क:} जाति; जत्था, दल; पंथ, संप्रदाय।

फिरकी *स्त्री.* {हिं. फिरना} खूब घूमनेवाला काठ का एक गोल छोटा खिलौना, फिरहरी, भँभरी; कील के आधार पर घूमनेवाला कोई गोल टुकड़ा या चक्कर; चकई नाम का खिलौना।

फिरकैया *स्त्री.* {हिं.} चक्कर।

फिरगाना *वि.* फिरंगी।

फिरता *वि.* {हिं. फिरना} {*स्त्री.* फिरती} वापस किया या लौटाया हुआ।

फिरना *अ.* {हिं. फेरना का *अ.*} पीछे की ओर लौटकर आना, वापस होना; चक्कर खाना, घूमना; चलना, टहलना; मरोड़ा या बटा जाना; मुड़ना, घूमना।

मुहा. किसी ओर फिरना = प्रवृत्त होना; *जी फिरना* = चित विरक्त होना;

उलटा या विपरीत होना;

मुहा. सिर फिरना = बुद्धि भ्रष्ट होना, हर बात उलटी समझ में आना;

मुकरना; प्रचारित या घोषित होना, जैसे डुग्गी फिरना; किसी वस्तु पर पोता, लगाया या चढ़ाया जाना, जैसे चूना या रंग फिरना।

फिरनी *स्त्री.* {फा. फीरीनी} एक प्रकार की चावल के आटे की खीर।

फिर-फिर *क्रि. वि.* बार-बार।

फिराक पुं. {अ.} वियोग, बिछोह; चिंता, सोच; खोज।

फिराद *स्त्री.* फरियाद।

फिराना *स.* {हिं. फिरना} फिरने में प्रवृत्त करना; फेरना।

फिरि *क्रि. वि.* = फिर।

फिरिहरी *स्त्री.* {हिं.} बच्चों का नचाने का खिलौना, फिरकी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिलहाल *क्रि. वि.* {अ.} वर्तमान समय में, इस समय के लिए।

फिल्टर *पुं.* {अं.} एक उपकरण जिससे द्रव पदार्थ को निथारते हैं।

फिल्म *स्त्री.* {अं.} फोटो या छायाचित्र उतारने के लिए वह लंबा कागज या पट्टी जिसपर जेलाटिन आदि मसाले लगे होते हैं; इसी प्रकार की वह पट्टी जिसपर चलचित्र या सिनेमा के चित्र अंकित होते हैं; चलचित्र का कोई खेल या प्रदर्शन।

फिल्मकार *पुं.* {अं. + फा.} फिल्म-निर्माण में सहयोगी।

फिल्मकारी *स्त्री.* {अं. + फा.} फिल्में निर्मित करनेवाला उद्योग।

फिल्म-समारोह *पुं.* {अं. + सं.} वह समारोह जिसमें अनेक फिल्मों का प्रदर्शन होता है।

फिल्मी *वि.* {अं. फिल्म} फिल्म-संबंधी, फिल्म का।

फिल्मोत्सव *पुं.* {अं. + सं.} फिल्म-समारोह।

फिस *वि.* {अनु.} कुछ नहीं (व्यंग्य)।
पद टाँय-टाँय फिस = बहुत बातें होने पर भी अंत में कुछ फल नहीं।

फिसड्डी *वि.* {अनु. फिस} प्रतियोगिता, प्रयत्न आदि में सबसे पिछड़ा हुआ।

फिसफिसाना *क्रि. अ.* {हिं.} शिथिल होना।

फिसलन *स्त्री.* {हिं. फिसलना} ऐसी चिकनाहट जिसपर पैर फिसले।

फिसलना *अ.* {सं. प्र + सरण} गीले या चिकने लि पर पैर झट से आगे या पीछे हट जाना; लोभ से प्रवृत्त होना।

फिहरिस्त *स्त्री.* {फा.} सूची।

फी *वि.* {अ.} प्रत्येक, हर एक, जैसे फी सदी = हर सैकड़े के हिसाब से, प्रतिशत।

फीका *वि.* {सं. अपक्व} स्वाद, रस आदि के विचार से हीन या निकृष्ट; रंग, क्रांति, शोभा आदि के विचार से हीन या तुच्छ।

फीचर फिल्म *पुं.* {अं.} ऐसी फिल्म जिसके अभिनेता पेशेवर और कहानी काल्पनिक हो।

फीता *पुं.* {फा.} कोई वस्तु लपेटने, बाँधने आदि के लिए विशेष प्रकार की कपड़े की लंबी धज्जी।

फीरनी *स्त्री.* फिरनी।

फीरोजा *पुं.* {फा.} {*वि.* फीरोजी } हरापन लिए नीले रंग का रत्न।

फीरोजी *वि.* {फा.} हरापन लिए नीले रंग का।

फील *पुं.* {फा.} हाथी।

फीलवान *पुं.* {फा.} हाथीवान।

फीली *स्त्री.* = पिंडली।

फीसदी *क्रि. वि.* = प्रतिशत।

फुँकना *अ.* फुकना।

फुँकनी *स्त्री.* {हिं.} बाँस, पीतल आदि की नली जिसमें मुँह की हवा फूँककर आग को दहकाने के लिए उस पर छोड़ना।

फुँकरना *क्रि. अ.* {हिं.} मुँह से हवा छोड़ना।

फुंकार *पुं.* {हिं.} फूत्कार।

फुंदना *पुं.* {हिं. फूल + फंदा} डोरी, झालर आदि के सिरे पर शोभा के लिए बना हुआ फूल के आकार का गुच्छा, झब्बा।

फुँदिया *स्त्री.* = फुँदना।

फुंसी *स्त्री.* {सं. पनसिका} छोटा फोड़ा।

फुकन *स्त्री.* {हिं. फूँकना} फूँकने की क्रिया या भाव; जलन, दाह।

फुकना *अ.* {हिं. फूँकना} {प्रे. फुकवाना} फूँका या जलाया जाना; (धन) नष्ट या बरबाद होना); *पुं.* शरीर का वह अवयव जिसमें मूत्र रहता है; फुकनी।

फुकनी *स्त्री.* {हिं. फूँकना} वह नली जिससे फूँक मारकर आग सुलगाते हैं।

फुगना *क्रि. स.* {हिं.} खोलना।

फुट[1] *वि.* {सं. स्फुट} जोड़े या युग्म में से एक; एकाकी, अकेला; अलग।

फुट[2] *पुं.* {अं.} लंबाई आदि नापने की 12 इंच की एक नाप।

फुटकर *वि.* {सं. स्फुट + हिं. कर (प्रत्य.) विषम, फुट, अकेला; अलग, पृथक्; कई प्रकार का, मिला-जुला; थोड़ा-थोड़ा, इकट्ठा नहीं, खुदरा, थोक या इकट्ठे का विपर्याय।

फुटकल *वि.* फुटकर, विषम, अकेला, थोड़ा।

फुटकी *स्त्री.* {सं. फुटक} किसी वस्तु पर पड़ा हुआ कोई छोटा दाग या दाना, जैसे कपड़े की बुनावट में ऊपर निकला हुआ गोल सूत।

फुटबाल *पुं.* {अं.} एक खेल जिसमें बाल को पैरों से मारकर गोल किया जाता है, पाद-कंदुक।

फुटमत *पुं.* {हिं. फुट + मत} मतभेद, फूट।

फुटहारी *पुं.* {हिं. फूटना} भूनने से खिले हुए अन्न के दाने।

फुदकना *अ.* {अनु.} चिड़ियों का या चिड़ियों की तरह रह-रहकर एक जगह से दूसरी जगह उछलते हुए चलना।

फुदकी *स्त्री.* {हिं. फुदकना} फुदक-फुदक कर चलनेवाली चिड़िया।

फुन *क्रि. वि.* {सं. पुनः} फिर; और; भी।

फुप्फुस *पुं.* {सं.} फेफड़ा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुफंदी *स्त्री.* {हिं.} गाँठ जो लहँगे या साड़ी में कसी जाती है।

फुफकार *स्त्री.* {हिं. फुफकारना} फूफू शब्द; फुफकारने का शब्द।

फुफकारना *अ.* {अनु.} {*भाव.* फुफकार} क्रोध में साँप का फूफू करना, फूत्कार करना।

फुफुँदी *स्त्री.* फफूँदी।

फुफू *स्त्री.* बुआ।

फुफेरा *वि.* {हिं. फूफा} {*स्त्री.* फुफेरी} फूफा से संबद्ध जैसे फुफेरा भाई, फुफेरी सास।

फुर *वि.* {हिं. फुरना} सत्य, सच्चा; *क्रि. वि.* सचमुच, वास्तव में।

फुरती *स्त्री.* {सं. स्फूर्ति} चटपट काम करने की शक्ति या भाव, शीघ्रता, जल्दी।

फुरतीला *वि.* {हिं. फुरती} {*स्त्री.* फुरतीली} हर काम फुरती से करनेवाला, तेज।

फुरना *अ.* {सं. स्फुरण} सामने आना, प्रकट होना; चमकना; फड़कना, फड़फड़ाना; मुँह से शब्द निकलना; पूरा या ठीक उतरना।

फुरफुर *स्त्री.* {हिं.} उड़ने में पर फड़फड़ाने का शब्द।

फुरफुराना *क्रि. अ., स.* {हिं.} फुरफुर शब्द करना, कान में रुई की फुरेरी फिराना।

फुरनी दाना *पुं.* {हिं. फुरफुर से अनु. फुरनी + दाना} भुना हुआ चिड़वा जिसमें कुछ मिर्च-मसाला पड़ा हो।

फुरसत *स्त्री.* {*अ.*} काम से खाली होने का समय या भाव, अवकाश, छुट्टी; रोग में होनेवाली कमी।

फुरहरी *स्त्री.* {अनु.} चिड़ियों का पर फड़फड़ाना, फड़फड़ाहट; भय, हर्ष आदि के कारण शरीर में होनेवाला रोमांच।

फुराना *स.* {हिं. फुर} बात सच्ची करके दिखलाना, कथन पूरा उतारना; *अ.* फुरना।

फुरेरी *स्त्री.* {हिं. फुरफुराना} अतर, तेल, दवा आदि में डुबाई हुई वह सींक जिसके सिरे पर रुई लिपटी हो; रोमांच के साथ होनेवाली कँपकँपी, फुरहरी।

मुहा. फुरेरी लेना = काँपना, थरथराना; चिड़ियों का पर फड़फड़ाना।

फुरै *क्रि. वि.* = सचमुच।

फुलका *पुं.* {हिं. फूलना} हल्की, पतली और फूली हुई रोटी, चपाती; छाला।

फुलकारी *स्त्री.* {हिं. फूल + फा. कारी = काम} पुरानी चाल का एक प्रकार का दुपट्टा या ओढ़नी जिस पर हाथ से काढ़े हुए फूल और बेल-बूटे बने होते थे।

फुलचुही *स्त्री.* फुलसुँघनी।

फुलझरी *स्त्री.* {हिं. फूल + झड़ना} एक प्रकार की छोटी लम्बी आतिशबाजी; झगड़ा लगानेवाली बात।

फुलनी *स्त्री.* {सं.} ऊसर में होनेवाली घास।

फुलमनी *स्त्री.* {सं.} एक रागिनी।

फुलरा *पुं.* फुँदना।

फुलवर *स्त्री.* {हिं. फूल} एक प्रकार का रंगीन बूटीदार कपड़ा, गाच।

फुलवा *पुं.* = फूल।

फुलवाई *स्त्री.* = फुलवारी।

फुलवार *वि.* प्रफुल्ल।

फुलवारी *स्त्री.* {हिं. फूल + वारी} फूलों के पौधों का छोटा बाग, पुष्पवाटिका, उद्यान, बगीचा; कागज के बने हुए फूल और पेड़ जो बारात के साथ शोभा के लिए चलते हैं। बाल-बच्चे और परिवार के लोग।

फुलसरा *पुं.* {हिं.} काले रंग की चिड़िया।

फुलसुँघनी *स्त्री.* {हिं. फूल + सूँघना} एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

फुलहारा *पुं.* {*स्त्री.* फुलहारी} माली।

फुलाई *स्त्री.* {हिं.} फूलने की क्रिया।

फुलाना *स.* {हिं. फूलना} फूलने में प्रवृत्त करना।

मुहा. मुँह फुलाना = रोष प्रकट करनेवाली आकृति बनाना।

अ. = फूलना।

फुलायल *पुं.* = फुलेल।

फुलाव *पुं.* = फुलावट।

फुलावट *स्त्री.* {हिं. फूलना} फूलने की अवस्था, क्रिया या भाव।

फुलिंग *पुं.* = स्फुलिंग।

फुलिया *स्त्री.* {हिं. फूल} फूल के आकार का काँटा या कील।

फुलुरिया *स्त्री.* {हिं.} छोटे बच्चों के चूतड़ के नीचे बिछाने का मोटा कपड़ा आदि।

फुलेरा *पुं.* {हिं.} फूल की बनी हुई छतरी जो देवताओं की मूर्ति के ऊपर लगाई जाती है।

फुलेल {हिं. फूल + तेल} फूलों से बासा या सुगन्धित किया हुआ तेल।

फुलौरी *स्त्री.* {हिं. फूल + बरी} पीसी हुई दाल की पकौड़ी।

फुल्ल *वि.* {सं.} {*भाव.* फुल्लता} खिला या फूला हुआ, विकसित; प्रसन्न।

फुसकारना *अ.* = फुफकारना।

फुसफुसा *वि.* {अनु.} जल्दी टूट या चूर-चूर हो जानेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुसफुसाना *स.* {अनु.} बहुत ही धीमे स्वर से कान में कुछ कहना।

फुसलाना *स.* {हिं. फिसलना} मीठी-मीठी बातें कहकर सन्तुष्ट या अनुकूल करना, बहकाना (जैसे बच्चों को)।

फुहार *स्त्री.* {सं. फूत्कार} ऊपर से गिरनेवाले जल के बहुत छोटे टुकड़े, छींटे या बूँदें; हल्की वर्षा, झींसी।

फुहारा *पुं.* {हिं. फुहार} वह उपकरण जिसमें से ऊपरी दबाव के कारण जल की पतली धार या छींटे जोर से निकलकर चारों ओर गिरते हैं।

फुही *स्त्री.* फुहार।

फूँक *स्त्री.* {अनु. फूफू} फूँकने पर मुँह से निकलनेवाली हवा और शब्द; साँस, श्वास।

मुहा. फूँक निकल जाना = मर जाना।

फूँकना {हिं. फूँक} मुँह बहुत थोड़ा खुला रखकर जोर से हवा छोड़ना।

मुहा. फूँक-फूँककर पैर रखना या चलना = सावधानी से कोई काम करना।

सं. मन्त्र पढ़कर किसी पर फूँक मारना; शंख फूँककर बजाना; जलाना; व्यर्थ खर्च कर देना, धन उड़ाना।

फूँकना-तपाना *स.* व्यर्थ खर्च करके धन गँवाना।

फूँका *पु.* {हिं. फूँक} वह प्रक्रिया जिसमें बाँस की नली में तीक्ष्ण ओषधियाँ भरकर और गौ-भैंस आदि के स्तन में लगाकर, उनका सारा दूध बाहर निकाल लेने के लिए फूँकते हैं।

फूँद *पुं.* फुँदना; नीवी; झब्बा।

फूई *स्त्री.* {हिं.} फुहारा, फफूँदी।

फूक *स्त्री.* = फूँक।

फूकना *अ., स.* = फूँकना।

फूट *स्त्री.* {हिं. फूटना} फूटने की क्रिया या भाव; विरोध या वैमनस्य के कारण होनेवाला भेद; एक प्रकार की बड़ी ककड़ी।

फूटा *वि.* {हिं.} भग्न, टूटा हुआ।

फूटन *स्त्री.* {हिं. फूटना} फूटकर अलग होनेवाला अंश; जोड़ों या हड्डियों में होनेवाला दर्द।

फूटना *अ.* {सं. स्फुटन} कड़ी या ठोस वस्तु का आघात से थोड़ा टूटना; ऐसी वस्तु का फटना जिसके अंदर का भाग पोला अथवा मुलायम चीज से भरा हो; भर जाने के कारण आवरण फाड़कर निकलना, जैसे फोड़ा फूटना या शरीर में भरा हुआ मवाद फूटना।

मुहा. फूट-फूटकर रोना = बहुत अधिक रोना।

अंकुर, शाखा आदि निकलना; एक पक्ष को छोड़कर दूसरे पक्ष में हो जाना; मुँह से शब्द निकलना (व्यंग्य और तिरस्कार)।

मुहा. मुँह से कुछ फूटना = कुछ कहना या बोलना।

व्यक्त, स्पष्ट या प्रकट होना; गुप्त बात या रहस्य प्रकट हो जाना; शरीर के जोड़ों में दर्द होना; फूलना।

फूत्कार *पुं.* {सं.} मुँह से फूफू करते हुए हवा छोड़ने का शब्द, फुफकार।

फूफा *स्त्री.* {अनु.} बुआ का पति, पिता का बहनोई।

फूफी *स्त्री.* {अनु.} पिता की बहन, बुआ।

फूल[1] *पुं.* {सं. फुल्ल} पौधों में वह अंग जो गोल या लम्बी पंखुड़ियों का बना होता है और जिसमें फल उत्पन्न करने की शक्ति होती है, पुष्प, कुसुम, सुमन।

मुहा. फूल सूँघकर रहना = बहुत थोड़ा-सा भोजन करना (व्यंग्य)।

फूल के आकार के बनाए हुए बेल-बूटे; फूल के आकार का कोई गहना, जैसे कर्णफूल; कुष्ट रोग के कारण शरीर पर पड़नेवाले सफेद या लाल दाग; स्त्रियों का मासिक रज, पुष्प; वे हड्डियाँ जो शव जलाने पर बची रहती हैं; राँगे के मेल से बननेवाली एक मिश्र धातु।

फूल[2] *स्त्री.* {हिं. फूलना} फूलने की अवस्था, क्रिया या भाव, फुलावट।

उदा. मृगनैनी दृग की फरक, उर उछाह तन-फूल—**बिहारी**।

प्रसन्नता, खुशी।

उदा. फूलि-फूलि तरु फूल बढ़ावत—**केशव**।

फूलकारी *स्त्री.* {हिं.} बेल-बूटे बनाने का काम।

फूलगोभी *स्त्री.* फूलवाली गोभी।

फूलझाड़ू *स्त्री.* {हिं.} एक विशिष्ट प्रकार के सरकंडे की झाड़ू।

फूलडोल *पुं.* {हिं.} चैत्र शुक्ला एकादशी के दिन होने वाला एक उत्सव।

फूलदान *पुं.* {हिं. फूल + फा. दान (प्रत्य.)} फूलों के गुच्छे रखने का काँच, धातु, मिट्टी आदि का लम्बा बरतन, गुलदान।

फूलदार *वि.* {हिं.} जिसपर बेल-बूटे लगे हों।

फूलबिरंज *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का धान।

फूलमती *स्त्री.* {हिं.} एक देवी।

फूलना *अ.* {हिं. फूल} {प्रे. फुलाना, *भाव.* फुलाव} वृक्षों का फूलों से युक्त या पुष्पित होना; (फूल की) पंखुड़ियाँ फैलना, विकसित होना, खिलना; किसी वस्तु के अंदर का भाग हवा, जल आदि से भर जाने के कारण अधिक फैल या बढ़ जाना अथवा ऊँचा हो जाना; शरीर का कोई

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग सूजना; मोटा या स्थूल होना; घमंड करना; बहुत प्रसन्न होना।

मुहा. फूले-फूले फिरना = बहुत प्रसन्न होकर रहना या घूमना।

फूले अंग न समाना = बहुत प्रसन्न होना।

फूलना-फलना *अ.* सन्तान से सुखी और धन से सम्पन्न होना।

फूल-बत्ती *स्त्री.* देवताओं की आरती आदि के लिए बनाई जानेवाली रुई की वह बत्ती जिसके नीचे का भाग खिले हुए फूल की तरह गोलाकार होता है।

फूल-शरबत *पुं.* सुरासार।

फूल-सा *वि.* फूल के समान हल्का और सुन्दर।

फूला-फूला फिरना {हि. *क्रि. अ.*} आनंद में घूमना (गर्व के अर्थ में)।

फूली *स्त्री.* {हिं. फूलना} एक रोग जिसमें आँख की पुतली पर कुछ उभरा हुआ सफेद दाग पड़ जाता है; नाक या कान में पहनने का फूल नाम का गहना।

फूस *पुं.* {सं. तुष} सूखी लम्बी घास या डंठल आदि, सूखा तृण, खर।

फूहड़ *वि.* {अनु.} जिसे अच्छी तरह काम करने का ढंग न आता हो, बेशऊर; बेढंगा, भद्दा; (कथन या वार्तालाप) अश्लील, गन्दा।

फूही *स्त्री.* फुहार।

फेंकना *स.* {सं. प्रेषण} झोंके से दूर हटाना या डालना; असावधानी या भूल से कोई चीज कहीं छोड़ या गिरा देना; तिरस्कार पूर्वक छोड़ना; व्यर्थ धन व्यय करना।

फेकरा *वि.* {?} (सिर) जिसपर टोपी, पगड़ी आदि न हो: जिसपर कोई आवरण न हो।

फेंट[1] *स्त्री.* {सं. पेट या पेटी} कमर का घेरा या मंडल; धोती का वह भाग जो कमर पर लपेटा जाता है।

मुहा. फेंटे करना = कोई काम करने के लिए कमर कसकर तैयार होना; *फेंटे बाँधना* = फेंट करना; *फेंटे धरना या पकड़ना* = फेंट इस प्रकार पकड़ना कि आदमी भागने न पाए।

कमर में बाँधने का कपड़ा, पटका, कमरबन्द; फेरा, लपेट, घुमाव।

फेंट[2] *स्त्री.* {हिं. फेंटना} फेंटने या मिलाने की क्रिया या भाव।

फेंटना *स.* {सं. पिष्ट} {*भाव.* फेंट} द्रव पदार्थ में कुछ डालकर अच्छी तरह मिलाने के लिए घुमा-घुमाकर हिलाना; गड्डी के ताश को ऊपर-नीचे या आगे-पीछे करके अच्छी तरह मिलाना।

फेंटा *पुं.* {हिं. फेंट} फेंट; कमर का घेरा, लपेट।

फेंटी *स्त्री.* {हिं.} अटेरन पर लपेटा हुआ सूत।

फेकरना[1] *अ.* {हिं. फेंकना} (सिर) नंगा होना या खुलना।

फेकरना[2] *अ.* {अनु.} चिल्लाकर या जोर से रोना।

फेकैत *पुं.* {हिं. फेंकना} वह जो फेंकता हो; पहलवान; वह जो गदका-फरी या पटा-बनेटी खेलता हो।

फेन *पुं.* {सं.} *वि.* {फेनिल} पानी के छोटे बुलबुलों का कुछ गठा या सटा हुआ समूह, झाग।

फेना *पुं.* फेन।

फेनिल *वि.* {सं.} फेन या झाग से भरा हुआ; (पु.) बैर, मैनफल।

फेनी *स्त्री.* {सं. फेनिका} सूत के लच्छे की तरह की एक मिठाई; फेन।

फेफड़ा *पुं.* {सं. फुप्फुस + हिं. ड़ा (प्रत्य.)} छाती के अंदर का वह अवयव जिसके चलने से जीव साँस लेते हैं, फुप्फुस।

फेरंड *पुं.* {सं.} शृगाल, सियार।

फेर *पुं.* {हिं. फेरना} फिरने या फेरने का भाव; चक्कर, घुमाव।

पद निन्यानबे का फेर = निन्यानबे रुपए मिलने पर सौ रुपए पूरे करने की धुन, कुछ और धन जमा करने का चस्का।

मुहा. फेर खाना = सीधे न जाकर घूमते हुए दूरवाले रास्ते से जाना।

परिवर्तन, रद्दोबदल, हेरफेर।

पद दिनों का फेर = समय के प्रभाव से होनेवाला, विशेषत: अच्छे से बुरे रूप में होनेवाला परिवर्तन।

झंझट; भ्रम, धोखा; चालबाजी, धूर्तता; युक्ति, उपाय, ढंग; अदला-बदला, परिवर्तन, विनिमय; हानि, घाटा; अन्तर, फरक; ओर, दिशा; *क्रि. वि.* फिर, पुन:, एक बार और।

फेरना *स.* {सं. प्रेरण} किसी ओर घुमाना, मोड़ना; स्वयं या दूसरे से कोई चीज लौटाना, वापस करना; चक्कर देना, घुमाना; इधर-उधर चलाना, जैसे हाथ फेरना, घोड़ा फेरना; तह चढ़ाना, पोतना।

मुहा. (किसी चीज या बात पर) पानी फेरना = नष्ट करना।

उलट-पलट या इधर-उधर करना, जैसे पान फेरना; सबके सामने बारी-बारी से उपस्थित करना, घुमाना।

फेर-फार *पुं.* {हिं. फेर} परिवर्तन, उलट-फेर; घुमाव-फिराव, पेच, चक्कर; धूर्तता, चालबाजी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फेरव *पुं.* {सं.} सियार, राक्षस; *वि.* धूर्त।

फेरवट *स्त्री.* {सं. फेरना} फिरने का भाव, फेरा; धूर्तता, चालबाजी।

फेरवा *पुं.* {हिं.} सोने के तार से बना छल्ला।

फेरा *पुं.* {हिं. फेरना} चारों ओर घूमने की क्रिया, परिक्रमण, चक्कर; लपेटने या चक्कर लगाने में हर बार का घुमाव, लपेट; बार-बार आना-जाना; लौटकर आना; आवर्त, घेरा, मण्डल।

फेरि *क्रि. वि.* फिर, पुनः।

फेरी *स्त्री.* {सं. फेरना} फेरा; 'फेर; परिक्रमा, प्रदक्षिणा।

फेरीदार *पुं.* {हिं. फेरी + फा. दार} वह नौकर जो घूम-घूमकर अपने मालिक के लिए कर्जदारों से रुपए वसूल करता है।

फेरीवाला *पुं.* {हिं. फेरी + वाला} घूम-घूमकर सौदा बेचनेवाला व्यापारी।

फेरू *पुं.* {?} शृगाल, गीदड़ (बुन्देल.)।

फेरौरी *स्त्री.* {हिं.} छाजन से टूटी खपरैल निकालकर नयी खपरैल बिठाना।

फेल[1] *पुं.* {अ.} काम।

फेल[2] *वि.* {अं.} जो परीक्षा में पास न हुआ हो, अनुत्तीर्ण; जो समय पर ठीक और पूरा काम न दे।

फैल[1] *स्त्री.* {हिं. फैलना} हठ, दुराग्रह; वह हठ जो बच्चे रोते हुए करते हैं।

फैलना *अ.* {सं. प्रसरण} कुछ दूर तक आगे बढ़कर और अधिक स्थान घेरना; अधिक बड़ा या विस्तृत होना, पसरना; मोटा होना; वृद्धि होना; छितराना, बिखरना; प्रचलित या प्रसिद्ध होना; अधिक पाने के लिए हठ करना, मचलना।

फैलसूफ *वि.* {स. फिलसफ्अ} {भाव. फैलसूफी} फिजूलखर्च, अपव्ययी।

फैलाना *स.* {हिं. फैलना} फैलने में प्रवृत्त करना; विस्तृत करना, पसारना; इधर-उधर बिखेरना; छितराना; बढ़ती करना, बढ़ाना; प्रचलित या प्रसिद्ध करना, प्रकट करना; हिसाब या लेखा लगाकर कोई निष्कर्ष या फल निकालना, गणित करना, जैसे पड़ता फैलाना, ब्याज फैलाना।

फैलाव *पुं.* {हिं. फैलाना} विस्तार, प्रसार, फैले होने का भाव।

फैशन *पुं.* {अं.} ढंग, तर्ज; रीति, प्रथा; बनाव सिंगार, सजावट आदि का नया, अच्छा या लोकप्रिय ढंग।

फैशनपरस्त *वि.* {अं. +फा.} नए-नए फैशनों का शौकीन।

फैशनेबुल *वि.* {अं.} फैशनपरस्त।

फैसला *पुं.* {अ. फ़ैस्ला} निर्णय, निपटारा।

फैसिज्म *पुं.* {अं.} फैसिस्ट दल या संगठन और सिद्धांत।

फैसिस्ट *पुं.* {अं.} इटली के राष्ट्रवादियों का एक आधुनिक दल जो दूसरे महायुद्ध से पहले बोल्शेविकों का विरोध करने के लिए बना था; वह जो सारा अधिकार अपने (अथवा अपने नेता या दल के) ही हाथ में रखना चाहता हो, प्रजा के प्रतिनिधि रखने का विरोधी हो।

फोंक *पुं.* {सं. पुंख} तीर का पिछला सिरा जिसपर पंख लगाए जाते हैं।

फोक[1] *पुं.* सीठी।

फोक[2] *स्त्री.* {?} वेदना, पीड़ा, व्यथा।

फोक[3] *वि.* {?} दलालों की परिभाषा में, चार।

फोकट *वि.* {हिं. फोक} निस्सार।

पद फोकट में = मुफ्त में, यों ही।

फोकस *पुं.* {अं.} दूरबीन, कैमरे, चश्मे आदि से प्रतिबिम्बित होनेवाला दृश्य।

फोकला *पुं.* {सं. वल्कल} छिलका।

फोका *वि.* {हिं. फोकला} थोथा, निस्सार, तत्वहीन।

फोट *पुं.* {सं. स्फोट} फूटने की क्रिया या भाव; मुँह से निकलनेवाली मन की बात, उद्‌गार।

फोटक *वि.* फोकट।

फोटा *पुं.* टीका, बिंदी।

फोटो (ग्राफ) *पुं.* {अं.} आधुनिक वैज्ञानिक रीति से छाया के द्वारा उतारा हुआ चित्र, छायाचित्र; प्रतिबिंब।

फोटोग्राफी *स्त्री.* {अं.} आधुनिक वैज्ञानिक रीति से फोटो या छायाचित्र उतारने का काम।

फोटोस्टेट *स्त्री.* {सं.} फोटो से प्रतिलिपि तैयार करने का यंत्र; उक्त यन्त्र से तैयार की गई प्रतिलिपि।

फोड़ना *स.* {सं. स्फोटन} फूटने में प्रवृत्त करना, तोड़ना; किसी को दूसरे पक्ष से निकालकर अपनी ओर मिलाना; भेदभाव उत्पन्न करना; (भेद) खोलना, (रहस्य) प्रकट करना।

फोड़ा *पुं.* {सं. स्फोटक, *स्त्री.* अल्पा. फुड़िया} शरीर में कहीं विष एकत्र होने से उत्पन्न वह शोथ जिसमें रक्त सड़कर मवाद बन जाता है, व्रण।

फोड़िया *स्त्री.* {हिं.} छोटा फोड़ा।

फोता *पुं.* {फा.} भूमिकर; रुपए रखने की थैली; अंडकोष।

फोतेदार *पुं.* {फा.} खजांची; रोकड़िया।

फोया *पुं.* {हिं.} फाहा।

फोरना *स.* = फोड़ना।

फोरमैन *पुं.* {अं.} किसी कारखाने का प्रधान मिस्त्री।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोंकना *क्रि. अ.* {हिं.} डींग हाँकना।
फौज *स्त्री.* {अ.} सेना; झुण्ड।
फौजदार *पुं.* {फा.} सेनापति
फौजदारी *स्त्री.* {फा.} फौजदार का काम या पद, सेनापतित्व; ऐसा लड़ाई-झगड़ा जिसमें मारपीट भी हो और लोगों को चोट आए।
फौजदारी न्यायालय *पुं.* {फा. + सं.} वह न्यायालय जिसमें राज्य की ओर से आपराधिक अभियोगों पर विचार होता है और अपराधियों को दंड दिया जाता है (क्रिमिनल कोर्ट)।
फौजी *वि.* {फा.} सैनिक; सैनिक-संबंधी।
फौजी कानून *पुं.* सैनिक शासन से संबंध रखनेवाले कानून जो साधारण कानूनों से बहुत कठोर होते हैं और किसी बड़े उपद्रव या सैनिक आक्रमण आदि के समय ही साधारण नागरिकों के लिए प्रयुक्त होते हैं (मार्शल लॉ)।
फौत *स्त्री.* {अ.} मरना, गुजरना।
फौती *वि.* {अ.} मृत्यु-संबंधी।
फौलाद *पुं.* {अ.} कड़ा और पक्का लोहा।
फ्रांस *पुं.* फ्रांसीसियों की जन्मभूमि।

ब

ब नागरी वर्णमाला का तेईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का तीसरा वर्ण जो ओष्ठ्य है।
बंक[1] *वि.* {सं. वक्र, वंक} टेढ़ा, तिरछा; दुर्गम; पराक्रमी, वीर।
बंक[2] *पुं.* {सं. वंक} हँसिए की तरह का एक टेढ़ा औजार, बाँकरा।
बंक[3] *पुं.* {सं. बैंक} वह संस्था जो लोगों के रुपये अपने यहाँ जमा रखती है और उन्हें यों ही माँगने पर अथवा ऋण के रूप में देती है।
बंकट *वि.* {हिं.} वक्र, टेढ़ा।
बंकनाल *स्त्री.* {हिं.} सुनारों की महीन फूँकनी जिससे दीपक की लौ फूँककर वे महीन टाँके जोड़ते हैं।
बंकराज *पुं.* {हिं.} सर्प का नाम।
बंकवा *पुं.* {हिं.} अगहनिया धान।
बंका *वि.* {*भाव.* बंकाई} बंक।
बंकुरता *स्त्री.* = टेढ़ापन।
बंग[1] *पुं.* बंगाल।
बंग[2] *वि.* {सं. वक्र} टेढ़ा; उद्दंड; अज्ञानी।
बँगला *वि.* {*वि.* बंगाल} बंगाल देश का, बंगाल-संबंधी; *पुं.* चारों ओर से खुला हुआ वह मकान जो एक ही खंड या मंजिल का हो; ऊपरवाली छत पर बना हुआ छोटा कमरा।
बंगा *वि.* {सं. वक्र} *स्त्री.* {बंगी} टेढ़ा; लुच्चा।
बंगाल *पुं.* {सं. बंग} पूर्वी भारत का एक प्रसिद्ध राज्य।
बंगाली *पुं.* {हिं. बंगाल} बंगाल का निवासी। *स्त्री.* बंगाल की भाषा; *वि.* बंगाल का।
बंचक *पुं.* वंचक; पाखंडी।
बंचना[1] *स्त्री.* {सं. वंचना} ठगी; छल।
बंचना[2] *स.* {सं. वंचन} ठगना; धूर्तता।
बंचना[3] *स.* {सं. वाचन} पढ़ना।
बंछना *स.* {सं. वांछा} अभिलाषा या इच्छा करना।
बंछित *वि.* = वांछित।
बंजर *पुं.* ऊसर।
बंजारा *पुं.* {हिं. बनिज = वाणिज्य} वह जो बैलों, घोड़ों आदि पर माल लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाता और बेचता हो।
बंझा *वि. स्त्री.* बाँझ।
बंटन *पुं.* {हिं. बाँटना} बाँटने की क्रिया या भाव।
बँटना *अ.* {सं. वंटन} हिस्से के अनुसार कुछ मिलना या दिया जाना; कुछ हिस्सों में अलग-अलग होना।
बँटवाना *स.* हिं. 'बाँटना' का प्रे.।
बँटवारा *पुं.* {हिं. बाँटना} अलग-अलग भागों में बाँटने की क्रिया या भाव, विभाजन (पार्टिशन)।
बँटवैया *वि.* {हिं.} बाँटनेवाला।
बंटा *पुं.* {सं. वटक, *स्त्री.* अल्पा. बंटी} छोटा डिब्बा।
बँटाई *स्त्री.* {हिं. बाँटना} बाँटने का काम या भाव; खेती का वह प्रकार जिसमें खेत जोतनेवाले से जमीन का मालिक उपज का कुछ अंश लेता है।
बंटाधार *स.* {?} विनष्ट, बरबाद।
बँटाना *स.* {हिं. बँटना} बँटवाना; दूसरे का भार या कष्ट हल्का करने के लिए उसका कुछ अंश अपने ऊपर लेना।
बँटावन *वि.* {हिं. बँटाना} बँटानेवाला।
बंटी *स्त्री.* {हिं.} छोटा बंटा।
बंडल *पुं.* {अं.} पुलिन्दा।
बंडा *पुं.* {?} अरुई की जात का एक प्रसिद्ध कन्द।
बंडी *स्त्री.* {हिं. बाँडा = कटा हुआ} एक प्रकार की जाकेट, फतूही।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and otri

बँडैरी *स्त्री.* {सं. वरदंड} खपरैल की छाजन में सबसे ऊपर रहनेवाली मोटी लकड़ी या बल्ला।

बंद *पुं.* {फा., मि. सं. बंध} वह चीज जिससे कुछ बाँधा जाए, जैसे लोहे की पत्ती, फीता आदि; बाँध; शरीर के अंगों का जोड़; बन्धन; कैद; *वि.* चारों ओर से रुका हुआ; जिसके मुँह पर कोई आवरण या अवरोध हो; जो खुला न हो; जिसका चलना रुक गया हो, स्थगित; जो किसी तरह की कैद या बन्धन में हो।

बंदगी *स्त्री.* {फा.} ईश्वर की वन्दना, उपासना; सलाम, नमस्ते।

बंदगोभी *स्त्री.* करमकल्ला; पत्तागोभी।

बंदन *पुं.* {सं. बंदनीय = गोरोचन} ईंगुर, सिन्दूर; रोचन, रोली।

बंदनवार *स्त्री.* {सं. बंदनमाला} फूल-पत्तों की वह झालर जो मंगल अवसरों पर दीवारों में बाँधी जाती है, तोरण।

बंदना *अ.* {सं. वंदन} प्रणाम करना; *स्त्री.* वंदना।

बंदनी *वि.* वंदनीय।

बंदनीमाल *स्त्री* {सं. वंदनमाल} घुटनों तक लटकनेवाली लम्बी माला।

बंदर *पुं.* **{सं. वानर} वृक्षों पर रहनेवाला एक प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया, कपि, मर्कट।**

बंदरगाह *पुं.* {फा.} समुद्र के किनारे जहाज ठहरने का स्थान।

बंदर-घुड़की *स्त्री.* {हिं. बंदर + घुड़की} बन्दरों की तरह डराते हुए दी जानेवाली ऐसी धमकी जो दिखाने भर की हो, पर जो पूरी न की जाए।

बंदर-बाँट *स्त्री.* {हिं. बंदर + बाँटना} न्याय के नाम पर ऐसा बँटवारा करना जिसमें न तो वादी को ही कुछ मिले न प्रतिवादी को ही और सबकुछ बँटवारा करनेवाला किसी न किसी बहाने से अपने अधिकार में कर ले।

बंदर-भभकी *स्त्री.* बंदर-घुड़की।

बंदली *वि.* {हिं.} एक तरह का धान।

बंदवान *पुं.* बंदीवान।

बंदसाल *स्त्री.* कारागार।

बंदा[1] *पुं.* {फा. बंद} सेवक, दास।

बंदा[2] *पुं.* {सं. बंदी} बंदी, कैदी।

बंदारु *वि.* {हिं.} आदरणीय, पूजनीय।

बंदाल *पुं.* {हिं.} देवदाली, घघरबेल।

बंदि *स्त्री.* {हिं.} कारावास।

बंदिया *स्त्री.* {हिं.} स्त्रियों के सिर का गहना।

बंदिश *स्त्री.* {फा.} बँधने या बाँधने की क्रिया या भाव; पहले से किया हुआ प्रबंध; गीत, कविता आदि की शब्द-योजना।

बंदी[1] *पुं.* {सं. वंदिन्} भाट, चारण।

बंदी[2] *स्त्री.* {हिं. बेंदी} स्त्रियों का सिर पर पहनने का एक गहना।

बंदी[3] *पुं* {सं. वन्दिन्} कैदी।

बंदी[4] *स्त्री.* {सं. बंध} बंधन; कारागार, कैदखाना। **उदा.** राज-रवनि सुमिरे प्रति कारन, असुर बंदि तैं दिये छुड़ाई–सूर।

बंदी[5] *स्त्री.* {फा.} बंद होने की क्रिया या भाव, जैसे बाजार की बंदी; स्थिर या निश्चित होने की क्रिया या भाव, जैसे दरबन्दी, मेंड़बंदी।

बंदीखाना *पुं.* कारागार।

बंदीगृह *पुं.* कारागार।

बंदीछोर *पुं.* {सं. बंदी + हिं. छोड़ना} कैद या बंधन से छुड़ानेवाला।

बंदीवान *पुं.* {हिं. बंदी} कारागार का रक्षक।

बंदूक *स्त्री.* {अ.} एक प्रसिद्ध अस्त्र जिससे शत्रु पर गोली चलाई जाती है।

बंदूकची *पुं.* {फा.} बंदूक चलानेवाला सिपाही।

बंदेरा *पुं.* बंदी; बंदा।

बंदोबस्त *पुं.* {फा.} प्रबन्ध, व्यवस्था; खेत आदि नापकर उनका कर-निर्धारण करने का काम, आबंध (सेटिलमेंट); वह सरकारी विभाग जिसके अधीन यह काम रहता है।

बंध *पुं.* {सं.} बाँधनेवाला तत्व या बात, बंधन; गाँठ, गिरह; वह जिससे कोई चीज बाँधी जाए, बंद; कैद; पानी रोकने का बाँध; स्त्री-संभोग के समय की मुद्रा या आसन; योगसाधन की कोई मुद्रा या आसन; चित्रकाव्य के अंतर्गत ऐसी पद्यात्मक रचना जिससे अक्षरों के विशेष प्रकार के विन्यास से किसी तरह की आकृति या चित्र बन जाता है; विधि के अनुसार मान्य कोई ऐसा लेख्य जिसमें लिखी हुई बातें या शर्तें पूरी करने के लिए लिखनेवाला बाध्य होता है (बॉन्ड); एक प्रकार का सार्वजनिक ऋणपत्र जिसमें निश्चित समय के अंदर लिखी हुई रकम कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार चुकाने की प्रतिज्ञा होती है और जो प्रायः राज्य अथवा बड़ी-बड़ी व्यापारिक संस्थाओं द्वारा प्रचलित होता है (बॉन्ड)।

बंधक *पुं.* {सं.} बाँधनेवाला; किसी से कुछ ऋण लेकर उसके बदले कोई चीज उसके पास रखना, रेहन; बंधा।

बंधककर्त्ता *पुं.* {सं.} वह जो किसी के पास कोई चीज रेहन या बन्धक रखे (मॉर्टगेजर)।

बंधकपत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जिसपर कोई चीज बंधक रखने की शर्तें आदि लिखी होती हैं, रेहननामा (मार्टगेज डीड)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

D by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंधकी पुं. {हिं. बंधक} वह जिसके पास कोई चीज बंधक या रेहन रखी गई हो (मॉर्टगेजी); *स्त्री.* व्यभिचारिणी स्त्री, वेश्या।

बंधन पुं. {सं.} बाँधने की क्रिया या भाव; वह वस्तु जिससे कोई चीज बाँधी जाए; रुकावट, प्रतिबंध; कारागार, कैदखाना; शरीर के अंगों का सन्धिस्थान, जोड़।

बंधनकारी (रिन्) *वि.* {सं.} बंधन में डालनेवाला।

बँधना *अ.* {सं. बंधन} किसी प्रकार के बंधन में आना, बाँधा जाना; कैद होना; प्रतिज्ञा, वचन आदि प्रतिबंधों से बद्ध होना; ठीक बैठना, दुरुस्त होना; क्रम निर्धारित होना; पुं. वह जिससे कोई चीज बाँधी जाए, बंद।

बँधनि *स्त्री.* {हिं.} जिसमें कोई वस्तु बँधी हो, फँसाने की वस्तु।

बंधनी *स्त्री.* = कोष्ठक।

बँधवाना *स.* {हिं.} 'बाँधना' का प्रे.।

बंधा पुं. = बाँध।

बंधान पुं. {हिं. बँधना} लेन-देन, व्यवहार आदि की नियत या बँधी हुई प्रथा (कस्टम); ऐसी प्रथा के अनुसार दिया जानेवाला धन।

बँधाना *स.* = बँधवाना।

बंधिका *स्त्री.* {हिं.} बाँधने की डोरी।

बंधी[1] पुं. {सं. बंधिन्} बँधुआ, कैदी।

बंधी[2] *स्त्री.* {हिं. बंधना} निश्चित समय पर बराबर होता रहनेवाला कार्य, विशेषतः कोई वस्तु कहीं देना, जैसे दूध या तरकारी वालों की बन्धी।

बँधी लीक *स्त्री.* ऐसी परम्परा जिसका पालन सभी करते हों।

बंधु पुं. {सं.} {*भाव.* बन्धुता} भाई, सहायक; मित्र, दोस्त; पिंगल में एक प्रकार का छंद या वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन भागण और दो गुरु होते हैं, इसे दोधक भी कहते हैं।

बँधुआ पुं. {हिं. बँधना} कैदी, बन्दी; *वि.* किसी प्रकार के बंधन में पड़ा हुआ, बँधा हुआ।

बँधुआ मजदूर पुं. ऐसा मजदूर जिसे कुछ भी स्वतन्त्रता न प्राप्त हो, जिसे रात-दिन मालिक की सेवा में रत रहना पड़ता हो।

बंधुक पुं. {सं.} गुलदुपहरिया का फूल।

बंधुजन पुं. {सं.} आत्मीय, कुटुम्ब।

बंधेज पुं. बंधान।

बंधोदय पुं. {सं.} वह समय जब किए हुए कार्यों के फल का भोग आरम्भ होता है।

बंधुदा *स्त्री.* {सं.} वेश्या, रंडी।

बंध्यकरण पुं. {सं.} बधिया करना; बाँझ कर देना।

बंध्या *वि. स्त्री.* {सं.} (वह स्त्री या मादा) जिसे संतान न होती हो और न हो सकती हो, बाँझ।

बंध्यापुत्र पुं. {सं.} ठीक वैसी ही असंभव बात, जैसी बंध्या को पुत्र होने की है।

बंपुलिस पुं. {अनु. बं. + अं. प्लेस} नगरों में मल-त्याग के लिए बना हुआ सार्वजनिक स्थान।

बंब[1] *स्त्री.* {अनु.} युद्ध के समय वीरों का नाद; नगाड़ा, डंका।

बंब[2] पुं. {अं. बॉम्ब} बम।

बंबइया *वि.* {बम्बई} बम्बई का; बम्बई के अनुकरण पर बना हुआ।

बंबा पुं. {अनु.} बम; पानी की कल का वह अगला भाग जिसमें से पानी निकलता है; इस आकार का कोई लम्बोतरा गोल पात्र या आधार, जैसे डाक की चिट्ठियाँ डालने का बम्बा।

बंबाना *अ.* रँभाना।

बंबू पुं. {अं. या मलाया बैंबू = बाँस} चंडू पीने की बाँस की नली; लंबी मोटी नली।

बंबूकार्ट पुं. {अं. बैंबू = बाँस + कार्ट = गाड़ी} ताँगे की तरह की एक प्रकार की सवारी (पश्चिम)।

बँभनाई *स्त्री.* {हिं. बाभन} ब्राह्मणत्व।

बंस पुं. वंश; बाँस; बाँसुरी।

बंसकार पुं. = बाँसुरी।

बंसलोचन पुं. {सं. वंशलोचन} बाँस का सार भाग जो छोटे सफेद टुकड़ों के रूप में होता और औषध के काम में आता है।

बँसवाड़ी *स्त्री.* {हिं. बाँस + वाड़ी (प्रत्य.)} एक जगह उगे हुए बाँसों का झुरमुट या समूह।

बंसार पुं. {हिं.} भंडारगृह।

बंसी *स्त्री.* {सं. वंशी} वंशी, मुरली; मछली फँसाने की कँटिया।

बंसीधर पुं. = श्रीकृष्ण।

बँहगी *स्त्री.* बहँगी।

बंहिमा *स्त्री.* {सं.} बहुत अधिकता।

बँहुटा पुं. {सं.} बाँह पर पहनने का एक गहना।

बँहोलनी *स्त्री.* {हिं. बाँह} कुरते आदि की आस्तीन।

बेहोली *स्त्री.* {सं.} कुरते आदि का हाथ का भाग, आस्तीन।

बउरा *वि.* बावला; पागल।

बक पुं. {सं. वक} बगुला; अगस्त का फूल; *स्त्री.* बकवाद।

बकचक *स्त्री.* {अनु.} मध्ययुग का एक प्रकार का हथियार।

बकची *स्त्री.* {हिं.} मछली, बकुची।

बकजित पुं. {सं.} भीमसेन, श्रीकृष्ण।

बकझक *स्त्री.* {हिं.} बकवास।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and [illegible]otri

बकतर पुं. {फा.} {स्त्री. अल्पा. बकतरी} युद्ध के समय पहनने का एक प्रकार का कवच, सन्नाह।

बकता (र) वक्ता।

बकध्यान पुं. {सं. वक + ध्यान} बगुले की तरह चुपचाप शांत भाव से दुष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए बैठे रहना, बनावटी साधुभाव।

बकना स. {सं. वचन} व्यर्थ बहुत बोलना या बातें करना, प्रलाप करना।

बकबक स्त्री. बकवाद।

बकरना स. {हिं. बकना} आप ही आप कुछ कहना, बड़बड़ाना; अपना दोष आप कह देना।

बकर-बकर स्त्री. {अनु.} बकरी की तरह बराबर खाते रहने या बोलते रहने की क्रिया या भाव।

बकरम पुं {अं.} कालर, आस्तीन में लगनेवाला कड़ा कपड़ा।

बकरा पुं. {सं. वर्कार} स्त्री. {बक़री} एक प्रसिद्ध छोटा चौपाया जिसकी मादा का दूध लोग पीते हैं।

बकराना क्रि. स. {हिं.} अपराध स्वीकार करना।

बकला पुं. {सं. वल्कल} पेड़ की छाल; फलों आदि के ऊपर का छिलका।

बकली स्त्री. {हिं.} सुंदर लंबा वृक्ष।

बकवाद, बकवास स्त्री. {हिं. बकना + वाद, वि. बकवादी} व्यर्थ की बातें, बकबक।

बकवादी वि. {हिं. बकवाद} बकवाद करनेवाला, बकबक करता रहनेवाला।

बकवृत्ति स्त्री. {सं. वक + वृत्ति} बकध्यान; वि. बकध्यान लगानेवाला।

बकस पुं. {अं. बॉक्स} चीजें रखने का चौकोर सन्दूक।

बकसना स. {फा. बक्श} प्रदान करना; क्षमा करना, माफ करना।

बकसा पुं. {हिं.} जल में होनेवाली घास।

बकसीस स्त्री. {फा. बख्शिश} दान; पुरस्कार, इनाम।

बकाउ स्त्री. = गुलबकावली।

बकाना स. {हिं.} 'बकना' का प्रे.।

बकाया वि. {अ.} जो बाकी रह या बच गया हो, पीछे बचा हुआ, अवशिष्ट; पुं. वह धन जो किसी के जिम्मे बाकी रह गया हो, अवशेष (एरियर्स)।

बकारि पुं. {सं} श्रीकृष्ण, भीमसेन।

बकारी स्त्री. {सं. 'ब' (अक्षर) + कार (प्रत्य.)} मुँह से निकलनेवाला शब्द; वि. विकारी।

बकावली स्त्री. {सं.} बकुलों की पंक्ति या झुंड) 'गुल-बकावली'।

बकासुर पुं. {सं. वकासुर} एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

बकुचन स्त्री. {सं. विकुंचन} फूलों का गुच्छा; हाथ जोड़ने की मुद्रा; बिगूचन।

बकुचना अ. सिकुड़ना; संकुचित होना।

बकुरना स. बकरना।

बकुल पुं. {सं.} मौलसिरी।

बकुला पुं. बगुला।

बकेन स्त्री. {सं. वष्कयणी} वह गाय या भैंस जो गाभिन होने के बाद भी दूध देती हो।

बकेल स्त्री. {हिं.} पौधे की जड़ से बनी हुई रस्सी।

बकैयाँ क्रि.वि. {सं. वक्र + ऐयाँ (प्रत्य.)} बच्चों का घुटनों के बल (चलना)।

बकोटना स. {?} नाखूनों से नोचना।

बकोरी स्त्री. गुल-बकावली।

बक्कल पुं. {सं. वल्कल} छिलका; छाल।

बक्की वि. = बकवादी।

बक्स पुं. बकस; पेटी, संदूक।

बखत[1] पुं. {अ. वक्त} समय, काल।

बखत[2] पुं. {अ. बख्त} भाग्य, किस्मत।

बखतर पुं. बकतर।

बखतरी स्त्री. {फा. बकतर} एक प्रकार का छोटा बकतर (विशेष बकतर)।

बखरा पुं. {हिं. बखर} भाग, हिस्सा।

बखरी स्त्री. {हिं. बखार} कच्चा मकान।

बखान पुं. {सं. व्याख्यान} वर्णन करना; प्रशंसा करना; गाली देना (व्यंग्य)।

बखार पुं. {सं. प्राकार, स्त्री. अल्पा. बखारी} वह गोल घेरा या बड़ा पात्र जिसमें किसान अन्न रखते हैं।

बखारी स्त्री. {हिं.} छोटा बखार।

बखिया पुं. {फा.} क्रि. {बखियाना} एक प्रकार की महीन और मजबूत सिलाई।

मुहा. बखिया उधेड़ना = असलियत बतलाना, पोल खोलना।

बखीर स्त्री. {हिं.} मीठे रस में पकाया हुआ चावल, खीर।

बखील वि. {अ.} कंजूस, कृपण।

बखुद {फा. अव्य.} अपने से, अपने आप।

बखूबी क्रि.वि. {फा.} अच्छी तरह।

बखेड़ा पुं. {पश्तो?} {वि. बखेड़िया} झंझट; झगड़ा; कठिनता, मुश्किल।

बखेड़िया वि. {हिं. बखेड़ा + इया (प्रत्य.)} झगड़ा या बखेड़ा खड़ा करनेवाला।

बखेरना स. बिखराना।

बख्श वि. {फा.} देनेवाला, बख्शनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

D by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बख़्शाना *स.* {फा. बख़्श} प्रदान करना; क्षमा करना, माफ करना।

बख़्शावाना *स. हिं.* 'बख़्शाना' का प्रे.।

बख़्शिश *स्त्री.* {फा.} दान; पुरस्कार, इनाम।

बग *पुं.* {सं. वक} बगुला (पक्षी); जलाशयों के आसपास रहनेवाला पक्षी; *पुं. हिं.* 'बाग' (लगाम) का संक्षिप्त रूप, यौ. में पहले, जैसे बगछुट, बगमेल आदि।

बगई *स्त्री.* {हिं.} घास, कुकुरमाछी।

बगछुट, बगटुट *क्रि.वि.* {हिं. बाग + छूटना या टूटना} सरपट या बहुत वेग से (दौड़ना, भागना)।

बगड़ *स्त्री.* = बगल।

बगदना *अ.* {हिं. बिगड़ना, *स.* बगदाना} नष्ट या बर्बाद होना; भ्रम में पड़ना, भूलना।

बगदहा *वि.* {हिं. बगदना + हा (प्रत्य.)}, {*स्त्री.* बगदही} चौंकने या भड़कनेवाला।

बगदाना *स.* {हिं. बगदना} नष्ट या बरबाद करना; भ्रम में डालना, भ्रमित करना।

बगमेल *पुं.* {हिं. बाग + मेल} दूसरे के घोड़े के साथ बाग मिलाकर चलना; घुड़सवारों की पंक्ति; यात्रा, युद्ध आदि में होनेवाला लोगों का संग-साथ; बराबरी, समता; *क्रि. वि.* घोड़े की सवारी में किसी के साथ बाग मिलाए हुए; साथ-साथ।

बगर *पुं.* {सं. प्रघण} महल, प्रासाद; कोठरी; आँगन; गौएँ-भैंसें बाँधने की जगह, गोठ; *स्त्री.* बगल।

बगरना *अ.* {सं. विकिरण} चारों ओर फैलना; छितराना, बिखरना; *स.* बगराना।

बगराना *स.* {हिं. बगरना} फैलाना; बिखेरना।

बगरूरा *पुं.* बगूला।

बगल *स्त्री.* {फा.} कंधे के नीचे का गड्ढा, काँख; दाहिने-बाएँ या इधर-उधर का भाग, पार्श्व।

मुहा. बगल में दबाना या धरना = ले लेना; *बगलें झाँकना* = उत्तर न दे सकने पर इधर-उधर देखना; *बगलें बजाना* = बहुत प्रसन्नता प्रकट करना।

बगलगंध *स्त्री.* {हिं. बगल + गंध} एक रोग जिसमें बगल से बहुत दुर्गंध निकलती है।

बगलबंदी *स्त्री.* {हिं. बगल + बंद} एक प्रकार की कुरती।

बगला *पुं.* {सं. वक} *स्त्री.*{बगली.} सफेद रंग का एक बड़ा पक्षी।

बगला-भगत *पुं.* साधु बना रहनेवाला, कपटी।

बगलामुखी *स्त्री.* {हिं.} तांत्रिक देवी।

बगलियाना *क्रि. अ.* {हिं. सं.} बगल से होकर जाना।

बगली *वि.* {हिं. बगल} बगल से संबंध रखनेवाला; बगल या पास का।

बगली घूँसा *पुं.* पास या साथ रहकर धोखे से किया जानेवाला वार।

बगलेंदी *स्त्री.* {हिं. बगुला} एक प्रकार का पक्षी।

बगलौंहा *वि.* {हिं.} बगल की ओर झुका हुआ।

बगसना *स.* बख़्शाना।

बगा *पुं.* बाग; बगला; जामा।

बगाना *स.* {हिं. 'बगना' का प्रे.} टहलाना, घुमाना; *अ.* भागना।

बगार *पुं.* {हिं.} गाय बाँधने का स्थान।

बगारना *स.* {सं. विकिरण} फैलाना; छितराना; बिखेरना।

बगावत *स्त्री.* {*अ.*} विद्रोह; विप्लव।

बगावती *वि.* {*अ.* बगावत} बगावत-संबंधी; बगावत करनेवाला।

बगिया *स्त्री.* {फा.} छोटा बाग; उपवन; वाटिका।

बगीचा *पुं.* {फा. बागच} {*स्त्री.* अल्पा. बगीची} छोटा बाग, वाटिका।

बगुचा *पुं.* {फा. बगुच:} गठरी; राशि, ढेर।

बगुरदा *पुं.* {?} एक प्रकार का पुराना अस्त्र या हथियार।

बगुला *पुं.* = बगला (पक्षी)।

बगूला *पुं.* {हिं. बाउ + गोला} एक ही स्थान पर चक्कर काटनेवाली आँधी या हवा, बवंडर।

बगेरी *स्त्री.* {?} भरद्वाज या भरुही नाम की छोटी चिड़िया।

बगेदना *क्रि.वि.* {हिं.} विचलित करना।

बगैर *क्रि.वि.* {*अ.*} बिना, विहीन।

बग्घी *स्त्री.* {अं. बोगी} चार पहियों की एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी।

बघछाला *स्त्री.* बाघंबर।

बघनहाँ *पुं.* {हिं. बाघ + नहँ = नाखून} बाघ के नाखूनों के आकार का एक प्रकार का हथियार, शेर-पंजा।

बघना *पुं.* बघनहाँ।

बघार *पुं.* {हिं. बघारना} बघारने की क्रिया या भाव; वह मसाला जो दाल आदि बघारते समय घी में डाला जाता है, तड़का, छौंक।

बघारना *स.* {सं. अवधारणा} छौंकना, तड़का लगाना; योग्यता दिखाने के लिए आवश्यकता से अधिक बोलना।

बघूरा *पुं.* बगूला।

बघेरा *पुं.* {हिं.} लकड़बग्घा।

बघेली *स्त्री.* {सं.} पात्रों को खरादनेवालों का खूँटा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and e tri

बच[1] *स्त्री.* {सं. वच} ओषधि के काम में आनेवाली एक वनस्पति।

बच[2] *पुं.* {सं. वच} वचन, बात।
उदा. रखिहैं निज बच सत्य करि, अभिमानी हरिचन्द–**भारतेन्दु**।

बचका *पुं.* {देश.} एक प्रकार का पकवान जो बेसन या मैदे से बनता है।

बचकाना *वि.* {हिं. बच्चा} {*स्त्री.* बचकानी} बच्चों के योग्य; बच्चों का-सा।

बचत *स्त्री.* {हिं. बचना} बचने का भाव; बचा हुआ अंश; लाभ।

बचती *वि.* {हिं. बचत} बचत-संबंधी; बचा हुआ।

बचन *पुं.* {सं. वचन} वचन।
मुहा. बचन डालना = कुछ माँगना; *बचन बाँधना* = प्रतिज्ञा कराना; *बचन हारना* = कुछ करने का पक्का वादा करना।

बचना[1] *अ.* {सं. वंचन = न पाना} संगति, दोष, विपत्ति आदि से रक्षित, दूर या अलग रहना; काम में आने पर भी कुछ बाकी रहना; दूर या अलग रहना।

बचना[2] *स.* {सं. वचन} कहना।

बचपन *पुं.* {हिं. बच्चा + पन (प्रत्य.)} 'बच्चा' होने का भाव या दशा, लड़कपन, बाल्यावस्था।

बचवैया *पुं.* {हिं. बचाना} बचानेवाला।

बचा *पुं.* बच्चा; लड़का।

बचाऊ *वि.* {हिं. बचाना + आऊ (प्रत्य.)} बचानेवाला।

बचाना *स.* {हिं. बचना} विपत्ति, कष्ट, प्रभाव आदि से रक्षित रखना; कुछ अंश काम में आने या खर्च होने से रोक रखना; पता न लगने देना; अलग या दूर रखना।

बचाव *पुं.* {हिं. बचाना} बचने या बचाने का भाव, रक्षा, त्राण।

बचाव-पक्ष *पुं.* {हिं + सं.} वह पक्ष जो किसी के लगाए हुए आरोपों से अपने को बचाता हो।

बचावी *वि.* {हिं. बचाव} बचाव-संबंधी।

बचिया *स्त्री.* {हिं.} कशीदे में बनाई हुई छोटी-छोटी बूटियाँ।

बच्चा *पुं.* {सं. वत्स से फा. बच्च:} {*स्त्री.* बच्ची} नवजात शिशु; बालक।

बचून *पुं.* {हिं.} भालू का बच्चा।

बच्ची *स्त्री.* {हिं.} बारहमासी लता, बालिका।

बच्चों का खेल *पुं.* सहज काम।

बच्छल *वि.* वत्सल।

बच्छल *पुं.* वक्ष; सीना।

बच्छा *पुं.* बछड़ा; बेटा।

बच्छोज *पुं.* = वक्षोज (स्तन)।

बछड़ा *पुं.* {सं. वत्सरूप} {*स्त्री.* बछड़ी, बछिया} गाय का बच्चा।

बछनाग *पुं.* {सं. वत्सनाभ} एक प्रकार का विष, सींगिया, तेलिया।

बछरू *पुं.* बछड़ा; बछेड़ा।

बछल *वि.* वत्सल।

बछिया *स्त्री.* {हिं. 'बछड़ा' का *स्त्री.*} गौ का मादा जाति का बच्चा।

बछिया के ताऊ *पुं.* {बैल के समान} परम मूर्ख और निर्बुद्धि व्यक्ति।

बछेड़ा *पुं.* {सं. वत्सतरक} घोड़े का बच्चा।

बछेरू *पुं.* बछड़ा; बछेड़ा।

बजकंद *पुं.* {हिं.} जंगली लता।

बजकना *क्रि. अ.* {हिं.} सड़े हुए पदार्थ के बुलबुले, बजबजाना।

बजका *पुं.* {हिं.} बेसन की पकौड़ी जो पानी में भिगोकर दही में डाली जाती है।

बजंत्री *पुं.* बजनियाँ; बाजा बजानेवाला।

बजट *पुं.* {अं.} आय-व्यय का आनुमानिक ब्यौरा।

बजकना *क्रि.अ* {हिं.} सड़े हुए पदार्थ के बुलबुले, बजबजाना।

बजनक *पुं.* {हिं.} पिस्ते का फूल जिससे रेशम रंगा जाता है।

बजना *पुं.* {हिं. बाजा} आघात आदि के कारण शब्द होना; बाजे आदि से शब्द उत्पन्न होना; शस्त्रों का चलना; लड़ाई या मारपीट होना; प्रसिद्ध होना; हठ या जिद करना, अड़ना (क्व.)।

बजनियाँ *उभय.* {हिं. बजाना} बाजा बजानेवाला (या वाली)।

बजमारा *वि.* {हिं. वज्र + मारा} {*स्त्री.* बजमारी} जिस पर वज्र का आघात या प्रहार हुआ हो, वज्र से मारा हुआ (गाली)।

बजरंग *वि.* {हिं. वज्र + मारा} वज्र के समान दृढ़ अंगोंवाला।

बजरंगबली *पुं.* हनुमान; महावीर।

बजरबट्टू *पुं.* {हिं. बज्र + बट्टा} एक प्रकार के वृक्ष का बीज जो बच्चों को नजर से बचाने के लिए पहनाते हैं।

बजरा *पुं.* {सं. वज्रा} एक प्रकार की छायादार बड़ी नाव; *पुं.* बाजरा।

बजरागि *स्त्री.* = बिजली (वज्र)।

बजरी *स्त्री.* {सं. वज्र} कंकड़ या पत्थर के बहुत छोटे टुकड़े; ओला।

बजवैया *वि.* {हिं. बजाना} बजानेवाला।

बजा *वि.* {फा.} उचित, ठीक।

बजागि *स्त्री.* {सं. वज्राग्नि} आकाश से गिरनेवाली बिजली या उससे लगनेवाली आग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

D by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदा. सूरज, आग, बजाग-दुख, तृष्ण, पाप, बिलाप–केशव।

बजाज पुं. {फा. बज़्ज़ाज़} कपड़े बेचनेवाला, कपड़े का व्यवसायी।

बजाजा पुं. {फा. बज़्ज़ाज़} वह बाजार जिसमें बजाजों या कपड़े की दुकानें हों।

बजाजी स्त्री. {फा. बज़्ज़ाज़ी} बजाज का काम या व्यापार।

बजाना[1] स. {हिं. बाजा} आघात करके या और किसी प्रकार शब्द उत्पन्न करना; आघात पहुँचाना।

बजाना[2] स {फा. बजा} पालन करना, जैसे हुकुम बजाना।

बजार पुं. बाजार।

बजावनहार पुं. {हिं. बजाना + हार (प्रत्य.)} (बाजा) बजानेवाला।

बजावना स. = बजाना।

बज्जर पुं. वज्र।

बजूखा पुं. {हिं.} बाजू।

बज्म स्त्री. {अ. बज़्म} कवि गोष्ठी।

बज्र वि. {सं. वज्र} बहुत कठोर, खूब कड़ा।

बझना अ. {सं. बद्ध} बँधना; फँसना; झगड़ना; हठ करना।

बझाऊ वि. {हिं. बझाना + ऊ} फँसानेवाला।

बझाना स. {हिं. 'बझना' स.} किसी को बझने में प्रवृत्त करना, फँसाना।

बझाव पुं. {हिं. बझना} बंधन, फंदा; जाल।

बट[1] पुं. {सं. वट} वट; बड़ा; गोला।

बट[2] पुं. {हिं. बटना} रस्सी की ऐंठन या बल।

बट[3] पुं. {हिं. बाट} मार्ग, रास्ता।

बटई स्त्री. {हिं.} बटेर नाम की चिड़िया।

बटखरा पुं. {सं. वटक} तौलने के लिए कुछ निश्चित मान का पत्थर, लोहे आदि का टुकड़ा, बाट (वेट)।

बटन[1] पुं. {अं.} पहनने के कपड़ों में लगनेवाली चिपटी घुंडी, बुताम।

बटन[2] पुं. {हिं. बटना} बटने की क्रिया या भाव, ऐंटन; बल।

बटना स. {सं. वट = बटना} तागों, तारों आदि को एक में मिलाकर इस प्रकार मरोड़ना कि वे मिलकर रस्सी आदि के रूप में एक हो जाएँ; स. पीसना; पुं. ए. उबटन।

बटपरा पुं. बटमार (डाकू)।

बटपारी स्त्री. {हिं.} डकैती, ठगी।

बटमार पुं. {हिं. बाट + मारना} {भाव. बटमारी} रास्ते में लोगों को लूटनेवाला, डाकू।

बटमारी स्त्री. {हिं. बटमार + ई (प्रत्य.)} बटमार का काम या धंधा, लूटमार।

बटलर पुं. {अं.} प्रधान सेवक।

बटला पुं. {हिं.} देग, बड़ी बटलोई।

बटली, बटलोई स्त्री. {हिं.} देगची; चौड़े मुँह का गोल पात्र।

बटवायक पुं. {हिं.} चौकीदार।

बटवार पुं. {हिं. बाट + वाला} पहरेदार; मार्ग का कर उगाहनेवाला।

बटा[1] पुं. {सं. बटक, स्त्री. अल्पा. बटिया} गोला; गेंद; चकई नाम का खिलौना; ढेला; यात्री, पथिक।

बटा[2] पुं. {हिं. बट्टा = छीज या कमी} गणित में भिन्न का स्वरूप सूचित करने के लिए अंश और हर के बीच में लगाई जानेवाली बेड़ी पाई, जैसे 1/2 में 1 और 2 के बीच में।

बटाई स्त्री. {हिं. बटना} बटने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

बटाऊ[1] पुं. {हिं. बाट} रास्ता चलनेवाला, पथिक।

बटाऊ[2] पुं. {हिं. बाँटना} बटवाने या विभाग करानेवाला; अपना अंश या प्राप्य बटवा या अलग कराकर लेनेवाला।

बटाक वि. = बड़ा (विशाल); ऊँचा।

बटाटा पुं. {अं. पोटैटो} आलू नामक प्रसिद्ध कन्द जिसकी तरकारी बनती है।

बटाना अ. {हिं. पटाना} बंद होना; रुक जाना।

बटिया[1] स्त्री. {हिं. बटा = गोला} छोटा गोला; छोटा बट्टा।

बटिया[2] स्त्री. {हिं. बाट = रास्ता} मार्ग, रास्ता।

बटी स्त्री. {सं. वटी} गोली; 'बड़ा' नामक पकवान; स्त्री. वाटिका (बाग)।

बटुआ पुं. {सं. वर्तुल} कई खानोंवाली एक प्रकार की छोटी थैली; देगचा।

बटुक पुं. वटुक; लड़का, बच्चा।

बटुरना अ. {सं. वर्तुल} इकट्ठा या एकत्र होना; सिमटना, सिकुड़ना।

बटुला पुं. {हिं.} बड़ी बटलोई।

बटे पुं. = बटा (भिन्न में की बेड़ी पाई, यथा 2/3.

बटेर पुं. {सं. वर्तक} तीतर की तरह की एक छोटी चिड़िया।

बटेरा पुं. {हिं.} कटोरा, गहरी थाली।

बटोर पुं. {हिं.} जमघट, कूड़ा-करकट का ढेर।

बटोरन स्त्री. {हिं.} बटोरकर इकट्ठा किया हुआ ढेर।

बटोरना स. {हिं. बटुरना} बिखरी हुई वस्तुएँ एक जगह करना, समेटना; इकट्ठा या जमा करना।

बटोही पुं. {हिं. बाट} रास्ता चलनेवाला, पथिक, यात्री।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and ...otri

बट्ट पुं. {हिं.} गेंद, गोला, बाँट, बल।

बट्टा[1] पुं. {सं. वर्ति} किसी विशेष कारण से मूल्य में होनेवाली कमी (डिस्काउन्ट); दलाली, दस्तूरी; धातु आदि में मिलावट या उस मिलावट के कारण मूल्य में होनेवाली कमी; टोटा, घाटा, हानि; कलंक, दाग।

बट्टा[2] पुं. {सं. वर्तन, प. वटना = बेचकर रुपया लेना} कुछ बेचकर प्राप्त किया हुआ धन, बिक्री के रुपए।

बट्टा[3] पुं. {सं. वटक} {स्त्री. अल्पा. बट्टी, बटिया} कूटने या पीसने आदि का पत्थर, लोढ़ा; छोटा गोल डिब्बा।

बट्टा-खाता स्त्री. {हिं. बट्टा + खाता} न वसूल होनेवाली रकमों का लेखा या मद।

बट्टी स्त्री. {हिं. बट्टा} किसी चीज का गोल छोटा टुकड़ा; टिकिया; यशब या अकीक पत्थर का वह टुकड़ा जिससे रगड़कर चित्र पर सोना या चाँदी चमकाते हैं, ओपनी।

बट्ट पुं. बजरबट्टू।

बट्टू पुं. {हिं.} धारीदार चारखाना, लोबिया नाम की सब्जी।

बट्टेबाज वि. {हिं. बट्टा + फा. बाज़ {भाव. बट्टेबाज} जादूगर; धूर्त।

बड़[1] स्त्री. {अनु. बड़बड़} बकवाद; डींग; शेखी।

बड़[2] पुं. {सं. वट} बरगद का पेड़।

बड़[3] वि. {सं. वर = श्रेष्ठ} आकार, मान आदि में बड़ा या भारी।

बड़[4] वि. {हिं.} 'बड़ा' का संक्षिप्त रूप, जैसे बड़भागी = बहुत भाग्यवान।

बड़क स्त्री. {हिं. बड़} डींग, शेखी; बकवाद।

बड़कुइयाँ स्त्री. {हिं.} कच्चा कुआँ।

बड़गूजर पुं. {हिं.} राजपूतों की क्षत्रिय जाति।

बड़गुल्ला पुं. {हिं.} बगुला।

बड़दाँत पुं. {बड़ा + दाँत} आगे निकला हुआ दाँत; महत्व, बड़ाई।

बड़बड़ स्त्री. {अनु.} बकवाद।

बड़बड़ाना अ. {अनु.} बकवाद करना; धीरे-धीरे और अस्पष्ट स्वर में कुछ कहना।

बड़बोल वि. {हिं. बड़ा + बोल} {स्त्री. बड़बोली} बहुत बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला।

बड़भाग, बड़भागी वि. = भाग्यवान।

बड़रा वि. बड़ा।

बड़राना क्रि. अ. {हिं.} बर्राना, बड़बड़ करना।

बड़वामुख पुं. {सं.} महादेवजी।

बड़वार स्त्री. {हिं.} बड़ा, विशाल।

बड़वाल स्त्री. {हिं.} पहाड़ी भेड़।

बड़वासुत पुं. {पु.} अश्विनीकुमार।

बड़हंस पुं. {हिं.} संकर-राग।

बड़हंसिका स्त्री. {सं.} रागिनी का नाम।

बड़वा स्त्री. {?} घोड़ी (बुन्देल.)।

बड़वाग्नि पुं. {सं.} वह आग जो समुद्र के अंदर जलती हुई मानी जाती है।

बड़वानल पुं. बड़वाग्नि।

बड़हन पुं. {जड़हन का अनु. या हिं. बड़ा + हन (धान्यवाचक प्रत्य.)} एक प्रकार का धान और उसका चावल।

बड़हार पुं. {हिं. वर + आहार} विवाह के बाद होनेवाली बारातियों की ज्योनार।

बड़ा[1] वि. {सं. वर्द्धन} अधिक विस्तारवाला, लम्बा-चौड़ा और विशाल; अधिक अवस्था या उमर का; श्रेष्ठ; महत्वपूर्ण; क्रि.वि. बढ़कर, अधिक।

बड़ा[2] पुं. {सं. वटक} {स्त्री. अल्पा. बड़ी} उरद की पीठी की गोल टिकिया जो तलकर खाई जाती है।

बड़ाई स्त्री. {हिं. बड़ा + आई (प्रत्य.)} 'बड़ा' होने का भाव; बड़प्पन, श्रेष्ठता; महिमा, महत्व।

बड़ा घर पुं. {हिं. बड़ा + घर} ईश्वर के रहने का स्थान, स्वर्ग; कैदखाना।

बड़ा दिन पुं. {हिं. बड़ा + दिन} 25 दिसम्बर जो ईसा का जन्मदिन तथा ईसाइयों का प्रसिद्ध त्योहार है।

बड़ी स्त्री. {हिं. बड़ा} दाल, आलू आदि पीसकर सुखाई हुई छोटी टिकिया।

बड़ी इलायची स्त्री. एक प्रकार की इलायची जो अपेक्षाकृत कुछ बड़ी और काली होती है।

बड़ी माता स्त्री. चेचक।

बड़ेरा वि. बड़ा।

बड़ौना पुं. बड़ाई।

बढ़ स्त्री. बढ़ती; अधिकता।

बढ़ई पुं. {सं. वर्द्धकि, प्रा. वड्ढई} लकड़ी गढ़कर दरवाजे, मेज, चौकियाँ आदि चीजें बनानेवाला कारीगर (कार्पेन्टर)।

बढ़ती स्त्री. {हिं. बढ़ना} तौल, गिनती, मान आदि में होनेवाली अधिकता; आवश्यकता, उपभोग, व्यय आदि की पूर्ति हो चुकने पर भी कुछ बच रहने की अवस्था या भाव, बचत, बचती (सरप्लस); धनसम्पत्ति आदि की वृद्धि या उन्नति; मूल्य की वृद्धि।

बढ़ती फसल स्त्री. {हिं. बढ़ना + अ. फसल} वह फसल जो अभी खेत में बढ़ रही हो, पर अभी पूरी तैयार न हुई हो (ग्रोइडंग क्रॉप)।

बढ़ती से क्रि. वि. साधारणतः जो मूल्य निश्चित या अंकित हो, उससे कुछ अधिक मूल्य पर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़न *स्त्री.* {हिं.} वृद्धि, बढ़ती।

बढ़ना *अ.* {सं. वर्द्धन} विस्तार, मान आदि में पहले से अधिक होना; गिनती या नाप-तौल में अधिक होना; मूल्य, अधिकार, योग्यता, सामर्थ्य आदि में वृद्धि होना; किसी स्थान से आगे जाना या चलना; किसी बात में किसी से अधिक होना; (दुकान आदि का) बंद होना; (दीपक) बुझना।

बढ़नी[1] *स्त्री.* = झाड़ू।

बढ़नी[2] *स्त्री.* {हिं. बढ़ाना} अग्रिम, पेशगी।

बढ़वना *स.* {सं. वधन} बढ़ाना।

उदा. बढ़वौ बसन उमंगी–सूर।

बढ़वार *स्त्री.* {हिं. बढ़ना} बढ़ती, वृद्धि।

बढ़ा-चढ़ा *वि.* {हिं. बढ़ना-चढ़ना} उन्नत।

बढ़ाना *स.* {हिं. बढ़ना} विस्तार, मान या परिमाण में अधिक करना, वृद्धि करना (एनहांस); बढ़ने में प्रवृत्त करना; अधिक व्यापक, विस्तृत, प्रबल या उन्नत करना।

उदा. सूरदास। करुणा निधान प्रभु, जुग-जुग भक्त बढ़ाये–सूर।

आगे चलाना; (दुकान) बंद करना; (दीया) बुझाना।

बढ़ाली *स्त्री.* {हिं.} कटार, कटारी।

बढ़ार *पुं.* बड़हार।

बढ़ाव *पुं.* {हिं. बढ़ना + आव (प्रत्य.)} बढ़ने की क्रिया या भाव; नदी आदि के जल का बढ़ना, बाढ़; मूल्य आदि का बढ़ना, चढ़ना या ऊँचा होना।

बढ़ावा *पुं.* {हिं. बढ़ाव} कुछ करने के लिए किसी का मन बढ़ानेवाली बात, प्रोत्साहन, उत्तेजना।

बढ़िया *वि.* {हिं. बढ़ना} उत्तम, अच्छा।

बढ़ैया *वि.* {हिं. बढ़ना} बढ़ानेवाला; *पुं.* = बढ़ई।

बढ़ेल *स्त्री.* {हिं.} कोमल रोएँ की भेड़।

बढ़ेला *पुं.* {हिं.} जंगली सूअर।

बढ़ोत्तरी *स्त्री.* {हिं. बढ़ना} वृद्धि, अभिवृद्धि।

बणिक *पुं.* {हिं.} व्यापार या व्यवसाय करनेवाला, व्यवसायी, रोजगारी; बनिया।

बणिग्बंधु *पुं.* {सं.} नील का पौधा।

बणिग्भाव *पुं.* {सं.} वाणिज्य, दुकानदारी।

बतंगड़ *पुं.* {सं.} किसी साधारण-सी बात को दिया हुआ बहुत बड़ा या झगड़े-बखेड़े का रूप, जैसे बात का बतंगड़ बनाना।

बतकही *स्त्री.* {हिं. बात + कहना} साधारण समय बिताने या मन बहलाव के लिए होनेवाली बातचीत, वार्तालाप।

उदा. करत बतकही अनुज सन, मन सियरूप लुभान–तुलसी।

वाद-विवाद, कहा सुनी; झूठमूठ या मन से बनाकर कही जानेवाली बात।

बतबढ़ाव *पुं.* {हिं. बात + बढ़ाव} साधारण-सी या व्यर्थ की बात पर झगड़ा बढ़ाना।

बतर *वि.* बदतर; बुरा।

बतरस *पुं.* {हिं. बात + रस} {*वि.* बतरसिया} बातचीत का आनंद।

बतरान *स्त्री.* {हिं. बात} बातचीत करना; बोली।

बतरौंहाँ *वि.* {हिं. बात} {*स्त्री.* बतरौंहीं} बातचीत करने का इच्छुक, बोलने के लिए विकल।

बतलाना *स.* = बताना; दिखाना, जताना, बुझाना।

बताना *स.* {हिं. बात + ना (प्रत्य.)} परिचित कराना, जताना; ज्ञान कराना; निर्देश करना, दिखाना; नाच-गाने में अंगों की चेष्टा से भाव प्रकट करना।

बतास *स्त्री.* {सं. वात} वायु, हवा, गठिया, रोग।

बतासना *अ.* {सं. बतास} हवा चलना या बहना।

बतासा *अ.* {हिं. बतास = हवा} चीनी की चाशनी टपकाकर बनाई जानेवाली एक प्रकार की छोटी गोल मिठाई; एक प्रकार की छोटी आतिशबाजी।

बतिया *स्त्री.* {हिं. बत्ती} बत्ती के आकार का छोटा, कच्चा और लंबा फल।

बतियाना *अ.* {हिं. बात} बातें करना।

बतियार *स्त्री.* {हिं.} बातचीत।

बतीसा *पुं.* {हिं.} बत्तीस दवा व मेवों से बना लड्डू या हलवा।

बतीसी *स्त्री.* {हिं.} बत्तीस दाँत, बत्तीस चीजों का समूह।

बतू *पुं.* कलाबत्तू।

बतोला *पुं.* {हिं. बात + ओला (प्रत्य.)} इधर-उधर की या व्यर्थ की बातचीत; टाल-मटोल की बातचीत।

बतौर *क्रि. वि.* {*अ.*} तरह पर, रीति से; सदृश, समान।

बतौरी *स्त्री.* {सं. वात} शरीर में मांस का उभड़ा हुआ अंश, गुमड़ी।

बत्तक *स्त्री.* {*अ.* बत} हंस की जाति का एक प्रकार का जलपक्षी।

बत्तिस *वि.* = बत्तीस।

बत्ती *स्त्री.* {सं. वर्ति} रुई या सूत का बटा हुआ लंबा लच्छा जो दीपक में रखकर जलाते हैं; मोमबत्ती; दीपक; पतीला; सलाई के आकार की कोई वस्तु; कपड़े की वह धज्जी जो घाव में मवाद सोखने के लिए रखी जाती है।

बत्तीस *वि.* {सं. द्वित्रिंशत} तीस से दो अधिक, तीस और दो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

बत्तीसा पुं. {हिं. बत्तीस} बत्तीस मसालों का बना हुआ एक प्रकार का लड्डू; एक प्रकार की बड़ी आतिशबाजी।

बत्तीसी *स्त्री.* {हिं. बत्तीस} बत्तीस का समूह; मनुष्य के बत्तीस दाँतों का समूह।

मुहा. बत्तीसी खिलना = हँस पड़ना।

बथान पुं. {हिं.} गाय-बैल के रहने का स्थान।

बथुआ पुं. {सं. वास्तुक} एक प्रकार का साग।

बद[1] *वि.* {फा.} बुरा, खराब; दुष्ट, नीच।

बद[2] *स्त्री.* {सं. वर्ध्म = गिलटी} बाघी नामक रोग।

बद[3] *स्त्री.* {सं. वर्त्त} पलटा, बदला; पक्ष; जोखिम।

बदअमली *स्त्री.* {फा. बद + अ. अमल} राज्य का कुप्रबंध, अराजकता।

बदइंतजामी *स्त्री.* {अ. + फा.} कुप्रबंध, अराजकता।

बदकर *क्रि. वि.* {हिं.} कहकर, जान-बूझकर।

बदकरमी *वि.* = बदकार (कुकर्मी)।

बदकार *वि.* {फा.} {*भाव.* बदकारी} कुकर्मी; व्यभिचारी।

बदकिस्मत *वि.* {फा. + अ.} अभागा।

बदचलन *वि.* {फा.} दुश्चरित्र।

बदजबान *वि.* {फा. बदज़बान} {*भाव.* बदजबानी} गाली-गलौच बकनेवाला।

बदजात *वि.* {फा. + अ. ज़ात} नीच, लुच्चा; दुष्ट, पाजी।

बदतर *वि.* {फा.} किसी की अपेक्षा और भी बुरा, निकृष्टतर।

बद्दुआ *स्त्री.* शाप।

बदन पुं. {सं. वदन से फा.} शरीर, देह।

मुहा. बदन टूटना = ज्वर आने या मरने के पहले शरीर के अंगों में तनाव और ऐंठन होना; *बदन तोड़ना* = अँगड़ाई लेना; मरने से पहले बेहोशी में हाथ-पैर आदि हिलाना-डुलाना और पटकना।

बदनसीब *वि.* {फा. + अ.} अभागा।

बदना *स.* {सं. वद = कहना} {*भाव.* बदनी} वर्णन करना, कहना; मान लेना; नियत करना, ठहरना।

मुहा. बदा होना = भाग्य में लिखा होना। बाजी या शर्त लगाना; कुछ महत्व का मानना या समझना।

बदनाम *वि.* {फा.} {*भाव.* बदनामी} जिसे लोग बुरा कहते हों, कुख्यात।

बदनामी *स्त्री.* {फा.} लोकनिंदा, कुख्याति, अपवाद।

बदनी *स्त्री.* {हिं. बदना = कहना} व्यर्थ बहुत बातें कहने की क्रिया या भाव, वाचालता।

बदपरहेज *वि.* {अ. + फा.} {*भाव.* बदपरहेजी} जो खान-पान, रहन-सहन आदि में परहेज या संयम न करता हो, असंयमी।

बदपरहेजी *स्त्री.* {अ. + फा.} खान-पान, रहन-सहन आदि में परहेज या संयम का अभाव, असंयम।

बदबू *स्त्री.* {फा.} दुर्गंध।

बदबूदार *वि.* {फा.} जिसमें से बदबू आती हो, दुर्गंधयुक्त।

बदमस्त *वि.* {फा.} {*भाव.* बदमस्ती} नशे में चूर, मस्त।

बदमस्ती *स्त्री.* {फा.} बुरी तरह से मस्त या मत्त होना; इस प्रकार की अवस्था में होकर किया जानेवाला उपद्रव।

बदमाश *वि.* {फा. बद + अ. मआश = जीविका} {*भाव.* बदमाशी} बुरे कामों से जीविका चलानेवाला, दुर्वृत्त; पाजी, दुष्ट; दुराचारी।

बदमाशी *स्त्री.* {हिं. बदमाश} दुष्कर्म; पाजीपन; व्यभिचार।

बदरकी *स्त्री.* {?} पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

बदर पुं. {सं.} कपास, बिनौला, बेर, आठ माशे की तौल।

बदरबीज पुं. {सं.} बेर की गुठली।

बदरा पुं. = बादल।

बदराई *स्त्री.* {हिं.} बदली।

बदराह *वि.* {फा.} बुरे रास्ते पर चलनेवाला, कुमार्गी।

बदरि *स्त्री.* {सं.} बेर का पेड़ या फल।

बदरिकाश्रम पुं. {सं.} श्रीनगर (गढ़वाल), अलकनंदा नदी के समीप एक तीर्थ, जहाँ पर नर-नारायण तथा व्यास जी का आश्रम भी है।

बदरिया *स्त्री.* = बदली (मेघ)।

बदरी *स्त्री.* {सं.} बेर का वृक्ष या फल; *स्त्री.* = बादल; *स्त्री.* बदकरी।

बदरोब *वि.* {फा. + अ.} {*भाव.* बदरोबी} जिसका कुछ रोब न हो; तुच्छ; भद्दा।

बदरौंह *वि.* बदचलन; कुमार्गी।

बदलना *अ.* {अ. बदल} जैसा हो, उससे भिन्न प्रकार का हो जाना, परिवर्तित होना; एक की जगह दूसरा हो जाना; एक जगह से दूसरी जगह नियुक्त होना; *स.* जैसा हो, उससे भिन्न रूप देना, परिवर्तित करना; एक चीज हटाकर उसकी जगह दूसरी रखना।

मुहा. बात बदलना = पहले कुछ कहकर फिर कुछ और कहना।

एक चीज देकर दूसरी लेना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदला पुं. {हिं. बदलना} परस्पर कुछ लेने और तब कुछ देने का व्यवहार, विनिमय; किसी प्रकार की हानि या किसी स्थान की पूर्ति के लिए दी हुई या किसी के स्थान पर मिलनेवाली दूसरी वस्तु, पलटा, एवज; किसी के व्यवहार के उत्तर में दूसरे पक्ष से होनेवाला वैसा ही व्यवहार, पलटा, प्रतिकार।
मुहा. बदला लेना = किसी के बुराई करने पर उसके साथ भी वैसी ही बुराई करना।
किए हुए काम का फल, नतीजा।

बदली[1] *स्त्री.* {हिं. बादल} छाया हुआ बादल, मेघ।

बदली[2] *स्त्री.* {हिं. बदलना} बदले जाने की क्रिया या भाव; एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर की जानेवाली नियुक्ति, तबादला (ट्रांसफरेंस)।

बदलौवल *स्त्री.* {हिं. बदलना} अदल-बदल, विनिमय।

बदशकल *वि.* {फा.} भद्दा, कुरूप।

बदस्तूर *क्रि. वि.* {सं.} जैसे पहले रहा हो वैसे ही, परंपरा के अनुसार।

बदहजमी *स्त्री.* {फा. बदहज़मी} अपच, अजीर्ण।

बदहवास *वि.* {फा.} {*भाव.* बदहवासी} जिसके होश ठिकाने न हों; उद्विग्न।

बदा *वि.* {हिं. बदना} भाग्य में लिखा हुआ।
मुहा. बदा होना = भाग्य में लिखा होना, अवश्यम्भावी होना।

बदान *स्त्री.* {हिं. बदना} प्रतिस्पर्द्धा, होड़।

बदाबदी *क्रि. वि.* दृढ़तापूर्वक प्रतिज्ञा करते हुए, कह-बदकर।
उदा. बदाबदी जिउ लेत हैं, ए बदरा बदराह। —बिहारी।

बदाम पुं. बादाम।

बदामी *वि.* {हिं.} बदाम के रंग का।

बदि *स्त्री.* बदला; *क्रि. वि.* बदले में; लिए, वास्ते।

बदी[1] *स्त्री.* {?} चांद्रमास का कृष्ण पक्ष, अँधेरा पाख, जैसे जेठ बदी दूज।

बदी[2] *स्त्री.* {फा.} बुराई, खराबी।

बदूख *स्त्री.* बंदूक।

बदे *अव्य.* {हिं.} वास्ते, लिये।

बदौलत, की *संबंधबोध.* {फा. बदौलत} की कृपा या अनुग्रह के द्वारा।

बद्द *वि.* {हिं.} अपमानित।

बद्दर, बद्दल पुं. = बादल।

बद्दू पुं. {फा. बद = बुरा} अरब में रहनेवाली एक अर्द्धसभ्य जाति जो प्रायः लूटमार करके अपना निर्वाह करती थी; उक्त जाति का व्यक्ति; *वि.* = बदनाम।

बद्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* बद्धता} बाँधा या बँधा हुआ (बाउंड); संसार के बंधन में पड़ा हुआ; जिसके लिए कोई रुकावट या बंधन हो (बाउंड); निर्धारित।

बद्धकोष्ठ *वि.* {सं.} जिसे कब्ज हो।

बद्धकोष्ठता *स्त्री.* {सं.} कब्जियत।

बद्धपरिकर *वि.* {सं.} कमर कसे हुआ, उद्यत, तैयार।

बद्धांजलि *वि.* {सं.} जो हाथ जोड़े हुए, करबद्ध।

बद्धी *स्त्री.* {सं. बद्ध} डोरी या बाँधने की कोई चीज; गले का गहना।

बध पुं. {सं.} हनन, हत्या।

बधक *वि.* {सं.} वध करनेवाला; पुं. व्याध, मृत्यु।

बधना[1] *स.* {सं. वध} वध करना, मार, डालना।

बधना[2] पुं. {?} टोंटीदार लोटा (मुसल.)।

बधवा पुं. बधावा; बधाई।

बधाई *स्त्री.* {सं. वर्द्धन} वृद्धि, बढ़ती; मंगल अवसर पर होनेवाला गाना-बजाना।
मुहा. बधाई बजना = शुभ या मांगलिक अवसर पर बधाई का सूचक गाना-बजाना होना; लोक में निंदा या बदनामी होना (व्यंग्य)।
मंगलोत्सव; किसी के यहाँ कोई शुभ बात या काम होने पर शुभ कामना और आनंद प्रकट करनेवाली बातें, मुबारकवाद (कांग्रेचुलेशन)।

बधाना[1] *स.* {हिं. 'बधना' का प्रे.} बधने या हत्या करने का काम दूसरे से कराना, किसी को बधने में प्रवृत्त करना।

बधाना[2] *अ.* {हिं. बधिया} बधिया किया जाना।

बधाना[3] *स.* {सं. वर्द्धन} बढ़ाना।

बधावन *स्त्री.* = बधाई।

बधावना पुं. = बधाना।

बधावा पुं. {हिं. बधाई} बधाई; वह उपहार जो संबंधियों या मित्रों के यहाँ मंगल अवसरों पर गाजे-बाजे के साथ भेजा जाता है।

बधिक पुं. {सं. वधक} {*भाव.* बधिकता} वध करनेवाला, हत्यारा; जल्लाद; ब्याध, बहेलिया।

बधिया पुं. {हिं. बध = मारना} वह पशु जिसका अंडकोष निकाल दिया गया हो।
मुहा. बधिया बैठना = बहुत घाटा होना।

बधियाना *क्रि. स.* {हिं.} बधिया करना या बनाना।

बधियाकरण पुं. {हिं. + सं.} बधिया करना।

बधिर *वि.* {सं.} जो सुनता न हो, न सुन सकनेवाला, बहिरा।

बधिरना *अ.* {हिं. बधिर} बहिरा हो जाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बधू *स्त्री.* {हिं.} वधू, पतोहू, भार्या, पत्नी।

बधूत्सव *पुं.* {सं.} वधू का, प्रथम रजोदर्शन।

बधूरी *स्त्री.* {सं. वधू} पुत्रवधू; सुहागिन स्त्री; नई आई हुई बहू।

बधैया *स्त्री.* बधाई; पुं. बधिक; बधावा।

बन[1] *पुं.* {सं. वन} जंगल, कानन; झुंड, समूह; जल, पानी; बगीचा, बाग; कपास।

उदा. सनु सूक्यौ, बीतै बनौ, ऊखौ लई उखारि–बिहारी।

बन[2] *स्त्री.* {हिं. बनना} सज-धज, सजावट; बाना, भेस।

बनआलू *पुं.* {हिं.} जमींकंद का एक पौधा।

बनक[1] *स्त्री.* {हिं. बनना} बनावट; सज-धज; पशु-पक्षियों को फँसाने के लिए उनके सामने डाला जानेवाला चारा।

बनक[2] *वि.* {सं. वन = जंगल} बन में उत्पन्न होनेवाला, जंगली।

बनकटी *स्त्री.* {हिं.} बाँस।

बनकपास *स्त्री.* एक प्रकार की कपास।

बनकल्ला *पुं.* {हिं.} जंगली वृक्ष।

बनकोरा *पुं.* {हिं.} लोनिया-साग।

बनखंडी *स्त्री.* {हिं. बन + खंड} छोटा बन; पुं. बन में रहनेवाला।

बनगाव *पुं.* {हिं.} बड़ा हिरन।

बनगोभी *स्त्री.* {हिं. बन + गोभी} एक प्रकार की जंगली घास, गोंजिया।

बनचर *पुं.* {सं. वनचर} बन या जंगल में रहनेवाला, आदमी; जानवर।

बनज *स्त्री.* {हिं. बनना} शोभा, छवि; *पुं.* वाणिज्य; व्यवसाय।

बनजना *अ.* {हिं. बनज} व्यापार या रोजगार करना।

बनजारा *पुं.* बंजारा, टाँड़ा।

बनत *स्त्री.* {हिं. बनना} रचना, बनावट; अनुकूलता, मेल; गोटे-पट्टी की तरह की एक प्रकार की पतली पट्टी, बाँकड़ी।

बनताई *स्त्री.* {हिं. बन} वन या जंगल की सघतना और भयंकरता।

बनद *पुं.* {सं. वनद} बादल, मेघ।

बनदाम *स्त्री.* बनमाला।

बनदेवी *स्त्री.* {सं.} वन की अधिष्ठात्री देवी।

बनधातु *स्त्री.* {सं.} गेरू, रंगीन मिट्टी।

बनना *अ.* {सं. वर्णन} {*भाव.* बनत} उचित रूप प्राप्त करना, तैयार होना, रचा जाना।

मुहा. बना रहना = जीता रहना; उपस्थित या वर्तमान रहना।

काम में आने योग्य या ठीक होना; एक रूप या दशा से बदलकर दूसरे रूप या दशा में हो जाना।

मुहा. (किसी पर) बन आना = किसी का कुछ विवशता या असमंजस की दशा में पहुँचना।

पद. मर्यादा, अधिकार, स्थिति आदि में वृद्धि या अधिकता होना।

मुहा. (किसी की) बन आना = किसी का ऐसी स्थिति में पहुँचना कि खूब लाभ या उन्नति हो। अच्छी दशा में पहुँचना; हो सकना; निभाना, पटना; मूर्ख या उपहासास्पद सिद्ध होना; अधिक योग्य या गंभीर होने की झूठी मुद्रा धारण करना।

बननि *स्त्री.* {हिं. बनना} बनावट; बनाव-सिंगार।

बननिधि *पुं.* {हिं.} समुद्र।

बनपट *पुं.* {सं. वन + पट} छाल आदि से बना हुआ आच्छादन या कपड़ा।

बनबास *पुं.* {सं. वनवास} {*वि.* बनबासी} बन में जाकर बसना या रहना।

बनबिलाव *पुं.* बिल्ली की जाति का एक जंगली जानवर।

बनमानुस *पुं.* {हिं. बन + मानुस} आकृति आदि में मनुष्य से मिलता-जुलता जंगली जन्तु, जैसे गोरिल्ला, चिम्पैंजी आदि।

बनमाला *स्त्री.* {सं. वनमाला} जंगली फूलों की माला; पैरों तक लटकती फूलों और पत्तियों की माला।

बनमुरगी *स्त्री.* {हिं. बन + फा. मुर्ग} एक प्रकार की जंगली चिड़िया, कुकुही।

बनर *पुं.* {देश.} एक प्रकार का अस्त्र।

बनरखा *पुं.* {हिं. बन + रक्षा करना} जंगल की रखवाली करनेवाला; वनरक्षक।

बनरा *पुं.* {हिं. बनना} {*स्त्री.* बनरी} वर, दूल्हा; विवाह के समय गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत; *पुं.* बंदर।

बनराज *पुं.* बनराय; वृन्दावन।

बनराय *पुं.* {सं. वनराज} सिंह, शेर; बहुत बड़ा पेड़।

बनवाना *स. हिं.* 'बनाना' का प्रे.।

बनवारी *पुं.* {सं. वनमाली} श्रीकृष्ण।

बनहटी *स्त्री.* {हिं.} छोटी नाव।

बनहरदी *स्त्री.* {हिं.} दारुहलदी।

बनस्पति *स्त्री.* = वनस्पति।

बना *पुं.* {हिं. बनना} {*स्त्री.* बनी} दूल्हा, वर।

बनाइ *क्रि. वि.* {हिं. बनाकर = अच्छी तरह} अत्यन्त, निपट; अच्छी तरह, भली-भांति।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ब ed by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनाउर *स्त्री.* बाणावली।

बनात *स्त्री.* {हिं. बाना} एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

बनाती *वि.* {हिं.} बनात का बना हुआ।

बनाना *स.* {हिं. बनना} {*भाव.* बनाव} अस्तित्व में लाना, तैयार करना, रचना; ठीक दशा या रूप में लाना; एक रूप से दूसरे रूप में लाना; किसी पद, मर्यादा या अधिकार का अधिकारी करना; अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचाना; किसी को इस प्रकार मूर्ख या उपहासास्पद ठहराना कि वह जल्दी समझ न सके।

बनाफर *पुं.* {सं. वनस्फर} राजपूत क्षत्रियों की एक शाखा।

बना-बनत *स्त्री.* {हिं. बनना + बनत = बनाव} विवाह-संबंध के लिए लड़के और लड़की की जन्मपत्रियों का मिलान।

बनाम *क्रि. वि.* {फा.} के नाम, नाम पर; के विरुद्ध, जैसे-सरकार बनाम रामनंदन का अर्थ होगा-रामनंदन पर चलाया हुआ सरकार का मुकदमा; आजकल 'तुलना' में के अर्थ में प्रचलित।

बनाय *क्रि. वि.* बनाई; पूर्ण रूप से।

बनारसी *वि., पुं.* {हिं.} काशी-संबंधी, काशी-निवासी।

बनाव *पुं.* {हिं. बनाना} बनावट; सजावट; युक्ति, तदबीर, उपाय।

बनावट *स्त्री.* {हिं. बनाना} बनने या बनाने का भाव या ढंग, रचना; ऊपरी दिखावा, आडंबर; कृत्रिमता।

बनावटी *वि.* {हिं. बनावट} नकली।

बनावन *पुं.* {हिं.} बिनन-कंकड़ी, मिट्टी, छिलके आदि।

बनावरि *स्त्री.* बाणावली।

बनासपती *स्त्री.* = वनस्पति।

बनि *वि.* {हिं. बनना} सब, कुल।

बनिक *पुं.* {हिं.} वणिक्, बनिया।

बनिज *पुं.* {सं. वाणिज्य} व्यापार, रोजगार; क्रय-विक्रय की वस्तु, सौदा।

बनिजना[1] *अ.* = व्यापार करना।

बनिजना[2] *स.* {?} वश में करना।

बनिजारा *पुं.* बंजारा।

बनित *स्त्री.* भेस; वेश-भूषा, बानक।

बनिया *पुं.* {सं. वणिक्} {*स्त्री.* बनियाइन, बनैनी} व्यापार करनेवाला व्यक्ति, व्यापारी; आटा, दाल आदि बेचनेवाला, मोदी; वैश्य।

बनियाइन *स्त्री.* गंजी, बंडी-जो शरीर से चिपकी रहती है।

बनिस्बत, की *संबंधबोध.* {सं. बनिस्पत} की तुलना में, की अपेक्षाकृत।

बनिहार *पुं.* {हिं.} वह भृत्य जो खेती के लिए नियुक्त किया जाता है।

बनी[1] *स्त्री.* {हिं. वन} वनस्थली, बन का कोई भाग; वाटिका, बाग।

उदा. महादेव की-सी बनी चित्त लेखी–**केशव**।

मजदूरी, काम करने की उजरत।

उदा. बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी। आज दीन्हि विधि भली बनि पूरी–**तुलसी**।

बनी[2] *स्त्री.* {हिं. बना} दुलहिन; नायिका।

बनीनी *स्त्री.* बनैनी; बनिये की स्त्री।

बनीर *पुं.* बेंत।

बनेठी *स्त्री.* {हिं. बन + सं. यष्टि} पटेबाजों का वह डंडा जिसके सिरों पर लट्टू लगे रहते है।

बनैनी *स्त्री.* {हिं. बनिया का *स्त्री.*} बनिए की या वैश्य जाति की स्त्री, वैश्य स्त्री।

बनैला *वि.* {हिं. बन} जंगली (पशु)।

बनौटी *वि.* {हिं. बन (कपास)} कपास के रंग का; *स्त्री.* एक प्रकार का रंग जो कपास के रंग से मिलता-जुलता है।

बनौरी *स्त्री.* {हिं.} वर्षा के साथ गिरनेवाला ओला, उपल।

बनौवा *वि.* {हिं.} कृत्रिम, बनावटी।

बन्ना *पुं.* {हिं. बनना?} {*स्त्री.* बन्नी} दूल्हा, वर; विवाह के समय वरपक्ष से गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

बन्नी *स्त्री.* {हिं. बन्ना} दुल्हिन, वधू।

बप *पुं.* {सं. वप्र} बाप, पिता।

बपतिस्मा *पुं.* {*अ.* बैप्टिज़्म} ईसाइयों का वह संस्कार जो नवजात बालक या किसी विधर्मी को ईसाई बनने के समय होता है।

बपना *स.* {सं. वपन} बीज बोना।

बपु *पुं.* = वपु (शरीर)।

बपुख *पुं.* {सं. वपुस्} शरीर, देह।

बपुरा *वि.* बापुरा।

बपुवार *पुं.* = वपु (शरीर)।

बपौती *स्त्री.* {हिं. बाप} बाप से मिली हुई या बाप की संपत्ति।

बप्पा *पुं.* बाप।

बफरना *अ.* {सं. विस्फालन} अभिमान से भरकर लड़ने के लिए जोर का शब्द करना; उत्पात या उपद्रव करना।

बफारा *पुं.* {हिं. भाप} औषध मिले जल की भाप से शरीर का कोई अंग सेंकना।

बफौरी *स्त्री.* {हिं. बफारा + बरी} भाप से पकी हुई बरी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eG

बबकना *क्रि. अ.* {अ.} आवेग में आकर बकना।

बबर *पुं.* {फा.} बड़ा शेर, सिंह।

बबा *पुं.* बाबा।

बबुआ *पुं.* {हिं. बाबू} {*स्त्री.* बबुई} लड़कों के लिए प्यार का संबोधन (पूरब)।

बबुर *पुं.* = बबूल (कीकर)।

बबूल *पुं.* कीकर।

बबूला *पुं.* बगूला; बुलबुला।

बभनी *स्त्री.* {हिं.} छिपकली के आकार का सुंदर लंबी धारीदार कीड़ा।

बभु *पुं.* {सं.} अग्नि, शिव, विष्णु; *पुं.* नेवला, बंदर।

बभूत *स्त्री.* भभूत; विभूति।

बम[1] *पुं.* {अं. बॉम्ब} विस्फोटक पदार्थों का वह गोला जो शत्रुओं पर उन्हें मारने के लिए फेंका जाता है।

बम[2] *पुं.* {अनु.} शिव को प्रसन्न करने के लिए किया जानेवाला 'बम' शब्द।

मुहा. बम बोलना या बोल जाना = किसी चीज का अन्त हो जाना, कुछ न बचा रह जाना।

बम[3] *पुं.* {कनाड़ी बंबू = बाँस} एक्के, गाड़ी आदि के आगे के वे बाँस जिनमें घोड़े जोते जाते है।

बमकना *अ.* {अनु.} डींग हाँकना जोर का शब्द करना।

बमगोला *पुं.* बम (विस्फोटक गोला)।

बमना *स.* {सं. वमन} कै करना।

बमबाज *पुं.* {हिं. बम + फा. बाज़} {*भाव.* बमबाजी} शत्रुओं पर बम के गोले फेंकनेवाला व्यक्ति।

बम-भोला *पुं.* {अनु. बम + हिं. भोला (नाथ)} शिव, महादेव (जो 'बम' शब्द के उच्चारण मात्र से प्रसन्न हो जाते हैं)।

बममार *वि.* {हिं. बम + मारना} बम मारनेवाला।

बमवर्षक *पुं.* {हिं. बम + सं. वर्षक} एक प्रकार का बड़ा हवाई जहाज जो शत्रुओं पर बड़े-बड़े बम फेंकने के काम में आता है (बॉम्बर)।

बमवर्षण *पुं.* {हिं. + सं.} बमों की वर्षा।

बमवर्षा {हिं. + सं.} बमों की वर्षा।

बमीठा *पुं.* {हिं.} वल्मीक, बाँबी।

बम्हनी *स्त्री.* {हिं.} ईख-आँख का रोग।

बमूजिब *क्रि. वि.* {फा.} अनुसार।

बय *स्त्री.* {सं. वयस्} अवस्था, वय, उमर; *पुं.* बै (जुलाहों का औजार)।

बयन *पुं.* = वचन, वाणी, बात।

बयना[1] *स.* {सं. वपन} खेत में बीज बोना।

उदा. अग्रज बीज बई–**सूर**।

बयना[2] *पुं.* बैना, वर्णन करना।

बयना[3] *स.* {सं. वचन} वर्णन करना, कहना।

बयनी *स्त्री.* {हिं.} बोलनेवाली।

बयर *पुं.* = बैर।

बया[1] *पुं.* {सं. वयन = बुनना} एक प्रकार का प्रसिद्ध पक्षी।

बया[2] *पुं.* {*अ.* बाय: = अनाज तौलनेवाला} अनाज तौलने का काम करनेवाला आदमी; पक्षी-विशेष।

बयाई *स्त्री.* {हिं. बया} अनाज तौलने का कार्य, भाव या मजदूरी।

बयान *पुं.* {फा.} वर्णन, कथन; विवरण, वृत्तांत।

मुहा. बयान देना = अभियुक्त, साक्षी आदि का यह बतलाना कि मेरा वक्तव्य या पक्ष क्या है? *बयान लेना* = अभियुक्त, साक्षी आदि से यह पूछना या जानना कि उसका वक्तव्य या कथन क्या है।

बयानबाजी *स्त्री.* {फा.} बयान पर बयान देते चलने की क्रिया या भाव।

बयाना *पुं.* {*अ.* बै + बिक्री + फा. आन: (प्रत्य.)} मूल्य, पारिश्रमिक आदि का वह अंश जो कोई काम कराने या कोई चीज खरीदने की बातचीत पक्की करने के समय पहले लिया या दिया जाता है, पेशगी; *अ.* = बड़बड़ाना।

बयार *स्त्री.* {सं. वायु} हवा।

बयारि *स्त्री.* {हिं.} हवा का मंद झोंका।

बयाला *पुं.* {हिं.} दीवार में का छेद या झरोखा।

बयालि (ली) रु *पुं.* {हिं.} चालीस और दो की संख्या-42।

बयासी *वि.* {हिं.} अस्सी और दो की संख्या-82.

बरंग *पुं.* {देश.} छत पाटने की पत्थर की पटिया लकड़ी का तख्ता।

बर[1] *पुं.* {सं. वट} बरगद, बड़।

बर[2] *पुं.* {हिं. बल} रेखा, लकीर; दृढ़तापूर्वक कही हुई बात या की हुई प्रतिज्ञा।

मुहा. बर खाँचना = किसी बात में बहुत दृढ़ता दिखलाना; दृढ़तापूर्वक प्रतिज्ञा करना; हठ या जिद करना।

बर[3] *पुं.* {सं. वर्ग} कपड़े या किसी लम्बी चीज़ की चौड़ाई; किसी व्यापार में वह कोई विशेष पदार्थ जो उसी मेल के पदार्थों से अलग हो, जैसे कपड़ों में साड़ी या साफे का बर; *पुं.* वर (दूल्हा); बल (शक्ति)।

बर[4] *पुं.* {सं.} ऊपर; बाहर या सामने।

मुहा. बर आना या पाना = मुकाबले या प्रतियोगिता में सामने ठहरना।

बर[5] *वि.* {सं. वर} श्रेष्ठ; पूरा, पूर्ण।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर[6] *योज.* {सं. वर} वरन्, बल्कि।

बरई *पुं.* {निषाद भाषा का बर = पत्ता} पान उपजाने, बनाने और बेचनेवाले अर्थात् तमोली।

बरकंदाज *पुं.* {अ. + फा.} वह सिपाही जिसके पास बड़ी लाठी या तोड़ेदार बंदूक रहती है।

बरकत *स्त्री.* {अ.} {वि. बरकती} किसी चीज की वह यथेष्टता जिससे वह कम नहीं होती, यथेष्टता; लाभ, फायदा; प्रसाद, कृपा।

बरकरार *वि.* {फा.} जो अपने पद पर बना हुआ हो।

बरकरारी *स्त्री.* {फा.} बरकरार होने की अवस्था या भाव।

बरख *पुं.* {हिं.} वर्ष, साल।

बरखा *स्त्री.* = वर्षा।

बरखास्त *वि.* {फा.} जो नौकरी से हटा दिया गया हो; विसर्जित (सभा आदि)।

बरखिलाफ, के *संबंधबोध.* {फा. बरखिलाफ़} के विरुद्ध।

बरगंध *पुं.* {हिं.} सुगंधित मसाला।

बरग *पुं.* वर्ग; वरक।

बरगद *पुं.* {सं. वट, हिं. बड़} पीपल की तरह का एक प्रसिद्ध बड़ा पेड़।

बरगलाना *स.* {?} भ्रमित करना; फुसलाना।

बरच्छा *पुं.* {सं. वर + ईक्षा} विवाह-संबंध स्थिर करने के लिए कन्यापक्ष से होनेवाला वह कृत्य जिसमें तिलक से ठीक पहले वर को देखकर कन्या के लिए निश्चित और पक्का कर लिया जाता है।

बरचर *पुं.* {हिं.} देवदार नामक, वृक्ष।

बरछा *पुं.* {सं. व्रश्चन} {*स्त्री.* बरछी} भाला।

बरछैत *पुं.* {हिं. बरछा} बरछा चलाने या रखनेवाला।

बरजना *अ.* {सं. वर्जन} वर्जित या मना करना, कुछ करने से रोकना; *स.* सामने आने पर भी ग्रहण न करना, त्यागना, छोड़ना; प्रयोग या उपयोग में न लाना, बराना।

बरजनि *स्त्री.* वर्जन, रुकावट।

बरजबान *वि.* {फा.} जो जबानी याद हो, कंठस्थ।

बरजोर *क्रि. वि.* {हिं. बल + फा. ज़ोर} जबरदस्ती, बलपूर्वक।

बरट *पुं.* {सं.} एक अन्न।

बरणना *क्रि. स.* {हिं.} वर्णन करना।

बरत *स्त्री.* {सं. वर्त} रस्सी; *पुं.* व्रत।

उदा. डीठि बरत, बाँधी अटनु, चढ़ि धावन न डरात—**बिहारी।**

बरतन *पुं.* {सं. वर्तन} धातु, शीशे, मिट्टी आदि का वह आधार जिसमें खाने-पीने की चीजें रखी जाती हैं, भाँड़ा।

बरतना *अ.* {सं. वर्तन} व्यवहार या बरताव करना; *स.* काम में लाना।

बरतनी *स्त्री.* {हिं.} शब्द का वर्णक्रम, लकड़ी की लेखनी।

बरतरफ *वि.* {फा. बर + अ. तरफ} नौकरी से हटाया हुआ बरखास्त; *क्रि. वि.* किनारे, अलग।

बरताना *क्रि. स.* {हिं.} वितरण करना, बाँटना।

बरतानवी *वि.* बिरतानवी।

बरताव *पुं.* {हिं. बरतना} बरतने का ढंग या भाव, व्यवहार।

बरती *पुं.* {सं. व्रत} वह जिसने कोई व्रत लिया हो; वह जिसने व्रत या उपवास किया हो।

बरतेला *स्त्री.* {हिं.} जुलाहे के करगह के दाहिने ओर की खूँटी।

बरदवान *पुं.* {हिं.} तीव्र वायु।

बरदाना *स.* {हिं. बरधा = बैल} गौ, घोड़ी आदि से उनकी जाति के नर पशुओं से संयोग कराना, जोड़ा खिलाना; *अ.* मादा पशु का अपनी जाति के नर पशु से जोड़ा खाकर गर्भ धारण करना।

बरदार *वि.* {फा.} वहन करने या ढोनेवाला; धारण करनेवाला; पालन करने या माननेवाला (यौ. के अंत में, जैसे हुक्मबरदार)।

बरदाश्त *स्त्री.* {फा.} सहन करने की शक्ति, क्रिया या भाव, सहन।

बरधमुतान *स्त्री.* गोमूत्रिका।

बरधा *पुं.* {सं. बलिवर्द} बैल।

बरधी *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का चमड़ा।

बरधाना *स., अ.* बरदाना।

बरन *पुं.* वर्ण।

बरनना *स.* = वर्णन करना।

बरना[1] *स.* {सं. वरण} वर या वधू के रूप में ग्रहण करना, वरण करना, ब्याहना; किसी काम के लिए किसी को चुनना, वरण करना।

बरना[2] *स.* दान देना, पति या पत्नी के रूप अंगीकार करना।

बरना[3] *स.* = (तागा) बटना।

बरनि *स्त्री.* {हिं. बलना (जलना)} बरने (जलने) की क्रिया या भाव।

उदा. औंघाई सीसी सुलखि, बिरह-बरनि बिललात—**बिहारी।**

बरनेत *स्त्री.* {सं. वरण} विवाह की एक रीति।

बरपटे *वि.* {फा. बर + हिं. पटना = चुकता होना} (देन आदि) जो चुका दिया गया हो, चुकता किया या पटाया हुआ, पटे।

बरफ *स्त्री.* {फा. बर्फ़} भाप के अणुओं की वह तह जो वातावरण की ठंडक के कारण धुएँ के रूप में ऊपर से जमीन पर गिरती है; मशीनों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

आदि अथवा कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ पानी जिससे पीने के लिए जल आदि ठंडा करते हैं; कृत्रिम उपायों से जमाया हुआ दूध या फलों का रस, जैसे मलाई की बरफ; ओला।

बरफानी *वि.* {फा. बर्फानी} जिसमें या जिसपर बरफ हो (देश, पर्वत आदि)।

बरफिस्तान *पुं.* {फा. बर्फिस्तान} वह स्थान या प्रदेश जहाँ बरफ ही बरफ हो।

बरफी *स्त्री.* {फा. बर्फ} एक प्रकार की प्रसिद्ध चौकोर मिठाई।

बरफीला *वि.* बरफानी।

बरबंड *वि.* {सं. बलवंत} बलवान, शक्तिशाली; उद्दंड, उद्धत; प्रचंड, प्रखर, तेज।

बरवट *क्रि. वि.* बरबस।

बरबर *स्त्री.* {अनु.} व्यर्थ की बकवाद, बकबक।

बरबरी *स्त्री.* {हिं.} एक देश का नाम, बकरी।

बरबस *क्रि. वि.* {सं. बल = वश} बलपूर्वक, जबरदस्ती; व्यर्थ।

बरबाद *वि.* {फा.} {*भाव.* बरबादी} नष्ट, चौपट।

बरम *पुं.* = वर्म (कवच)।

बरमन *पुं.* = वर्मन या वर्मा।

बरमा *पुं.* {देश.} {*स्त्री.* अल्पा. बरमी} लकड़ी आदि में छेद करने का एक औजार।

बरमी *पुं.* {हिं. बरमा + ई (प्रत्य.)} बरमा देश का निवासी; *स्त्री.* बरमा देश की भाषा; *वि.* बरमा देश का, जैसे बरमी चावल।

बरम्हा *पुं.* = ब्रह्मा, ब्रह्मदेश।

बरम्हाना *स.* {सं. ब्रह्म} {*भाव.* बरम्हाव} (ब्राह्मण का) किसी को आशीर्वाद देना।

उदा. तोरन तूर ताल बजैं, बरम्हावत भाट न गात टाढ़ी–**केशव**।

बरराना *अ.* बर्राना।

बरवट *स्त्री.* तिल्ली (रोग)।

बरवल *पुं.* {हिं.} पहाड़ी भेड़।

बरवा, बरवै *पुं.* {देश.} एक छंद जिसमें 19 मात्राएँ होती हैं।

बरषना *क्रि. अ.* {हिं.} बरसना, वर्षा होना।

बरषा *स्त्री.* = वर्षा।

बरषासन *पुं.* {सं. वर्षाषन} वर्ष-भर की भोजन-सामग्री।

बरस *पुं.* {सं. वर्ष} वर्ष, साल।

बरस-गाँठ *स्त्री.* {हिं. बरस + गाँठ} किसी पूरे वर्ष के बाद आनेवाला जन्मदिन, सालगिरह।

बरसना *अ.* {सं. वर्षण} आकाश से जल गिरना, वर्षा होना; वर्षा के जल की तरह ऊपर या चारों ओर से अधिक मात्रा में जल आना या गिरना, जैसे फूल या रुपए बरसना।

मुहा. बरस पड़ना = बहुत क्रुद्ध होकर लगातार उलटी-सीधी बातें सुनाना।

अच्छी तरह प्रकट होना।

बरस-बियावर *वि. स्त्री.* {हिं. बरस (वर्ष) बियावर = बच्चा देनेवाली} हर साल बच्चा देनेवाली (गौ आदि)।

बरसाइत *स्त्री.* {सं. वर्षा} सावन-भादों के दिन, बहुत पानी बरसता है, वर्षा काल, वर्षा ऋतु।

बरसात *स्त्री.* {हिं.} वर्षा ऋतु, वर्षाकाल।

बरसाती *वि.* {हिं. बरसात} बरसात में होनेवाला, बरसात का; *स्त्री.* कोठियों आदि के प्रवेश-द्वार पर वह छायादार स्थान जहाँ सवारियाँ उतारने-चढ़ाने के लिए गाड़ियाँ खड़ी होती हैं; एक प्रकार के मोमजामे का कपड़ा जिसे पहन लेने पर वर्षा से शरीर नहीं भीगता; छत पर का छायादार स्थान।

बरसाना *स.* {हिं. 'बरसना' का प्रे.} जल की वर्षा करना; वर्षा के जल की तरह ऊपर या इधर-उधर लगातार बहुत सा गिराना; दाँया हुआ अन्न इस प्रकार हवा में गिराना जिससे दाने अलग और भूसा अलग हो जाए, डाली देना, ओसाना।

बरसायत *स्त्री.* {हिं.} शुभ मुहूर्त।

बरसी *स्त्री.* {हिं. बरस = वर्ष + ई (प्रत्य.)} मृतक का वार्षिक श्राद्ध।

बरसीला *वि.* = बरसनेवाला।

बरसू *पुं.* {हिं.} एक वृक्ष।

बरसोला *पुं.* {सं. वर्षोपल से वर्षोलक} चीनी खाँड़ के वे गोले जिनमें इलायची, केसर आदि मिले होते हैं और जिनका उपयोग शरबत बनाने में होता था।

बरसौंड़ी *स्त्री.* {हिं.} प्रति वर्ष लिया जानेवाला कर।

बरसौंहाँ *वि.* {हिं. बरसना + औंहाँ (प्रत्य.)} बरसने या बरसानेवाला।

बरहंटा *पुं.* {हिं.} कड़वा भंटा।

बरहा[1] *पुं.* {हिं. बहा} {अल्पा. बरही} खेत सींचने की नाली; रस्सा।

बरहा[2] *पुं.* {सं. वर्हि} मोर; मुर्गा।

बरही[1] *पुं.* = बरहा (मोर या मुर्गा)।

बरही[2] *स्त्री.* {हिं. बारह} संतान उत्पन्न होने के बारहवें दिन का प्रसूता का स्नान और तत्संबंधी उत्सव या कृत्य।

बरही[3] *क्रि. वि.* {सं. बल} बलपूर्वक, जबरदस्ती।

बरहीपीड़ *पुं.* = मोरमुकुट।

बरहीमुख *पुं.* = देवता।

बरह्माना *स.* बरम्हाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरांडल पुं. {हिं.} जहाज के मस्तूल को बाँधने का रस्सा।

बरा पुं. {सं. बटी} पीठी का बना एक प्रकार का पकवान, बड़ा; बाँह पर पहनने का एक प्रकार का गहना।

बराक पुं. {सं. वराक} शिव; युद्ध; *वि.* नीच, अधम; बेचारा।

बरात *स्त्री.* {सं. वरयात्रा} विवाह के समय वर के साथ कुछ लोगों का कन्यावालों के यहाँ जाना, बारात, जनेत।

बराती पुं. {हिं. बरात} वरपक्ष से बरात में जानेवाले लोग।

बरान-कोट पुं. {हिं.} वह ऊनी कोट जो सिपाही जाड़े या बरसात में वर्दी के ऊपर पहनते हैं।

बराना[1] *स.* {सं. वारण} {*भाव.* बराव} प्रसंग या अवसर आने पर भी कोई बात न कहना या काम न करना; रक्षा करना, बचाना; जान-बूझकर किसी को किसी काम या बात से अलग करना।

बराना[2] *स.* {सं. वरण} चुनना, छाँटना; *अ.* = बलना (जलना); *स.* बालना (जलाना)।

बराबर *वि.* {फा. बर + हिं. अनु. अवर} {*भाव.* बराबरी} समान, तुल्य, एक-सा; समतल।

मुहा. बराबर करना = न रहने देना, समाप्त कर देना।

क्रि. वि. लगातार, निरंतर; एक साथ; सदा, हमेशा।

बराबरी *स्त्री.* {हिं. बराबर + ई (प्रत्य.)} किसी के बराबर होने की क्रिया या भाव, समता, समानता (ईक्वैलिटी)।

पद बराबरी से = विनिमय आदि की दर के संबंध में अंकित, नियत या वास्तविक मूल्य पर (ऐट पार)।

तुलना; समानता, मुकाबला।

बरामद *वि.* {फा.} निकलकर सबके सामने आया हुआ (छिपा हुआ माल)।

बरामदा पुं. {फा.} मकानों में आगे या कुछ बाहर निकला हुआ छायादार छज्जा; दालान; दीर्घा।

बरामदगी *स्त्री.* {फा.} बरामद होने की क्रिया।

बरायन पुं. {हिं.} विवाह के समय वर के हाथ में पहनाने का लोहे का छल्ला।

बरायनाम *अव्य.* {फा.} नाममात्र को।

बराव पुं. {हिं.} निवारण, बचाव।

बरास पुं. {हिं.} भीमसेनी कपूर, पाल को घुमाने की रस्सी।

बराही *स्त्री.* {हिं.} पतली-सी ईंख।

बरिआत *स्त्री.* बरात।

बरिबंड *वि.* बरबंड।

बरिया *वि.* बलवान; *स्त्री.* = बारी (बार)।

बरियाइन *स्त्री.* {सं. वर + श्रेष्ठ} श्रेष्ठता; बड़प्पन, महत्व।

उदा. विरद मनौ बरियाइन छाँड़े–**सूर**।

बरियाई[1] *क्रि. वि.* {सं. बलात्} बलपूर्वक, जबरदस्ती; *स्त्री.* बलवान होने की अवस्था या भाव, शक्तिमत्ता।

बरियाई[2] *स्त्री.* {सं. = वर = श्रेष्ठ} श्रेष्ठता; बड़प्पन, महत्व।

बरियार *वि.* = बलवान।

बरिस पुं. {सं. वर्ष} वर्ष, साल।

बरी[1] *स्त्री.* {सं. वटी} छोटी गोल टिकिया, बटी; पीठी के सुखाए हुए छोटे टुकड़े।

बरी[2] *वि.* {फा.} छूटा हुआ, मुक्त; *वि.* बली।

बरीस पुं. = बरस (वर्ष)।

बरीसना *अ.* = बरसना।

बरु *क्रि. वि.* {हिं. वरन्} भले ही, चाहे; बल्कि, वरन्।

बरुनी *स्त्री.* {सं. वरण} पलकों के आगे के बाल।

बरेड़ा पुं. {सं. वरंडक} वह लकड़ी जो खपरैल या छाजन में लंबाई के बल लगी रहती है।

बरे[1] *क्रि. वि.* {सं. बल} जोर से; बलपूर्वक, जबरदस्ती; ऊँचे स्वर से।

बरे[2] *क्रि. वि.* {सं. वर्त्त} बदले में; वास्ते।

बरेखी[1] *स्त्री.* {देश.} बाँह पर पहनने का एक गहना।

बरेखी[2] *स्त्री.* {हिं. वर + देखना} विवाह-संबंध स्थिर करने के लिए वर या कन्या को देखना।

बरेजा पुं. {हिं.} पान की बाड़ी या भीटा।

बरेठा पुं. {*स्त्री.* बरेठिन} धोबी।

बरेत *स्त्री.* {सं. वरत्रा} मथानी की रस्सी।

बरेता पुं. {सं. वरत्र} कुएँ से पानी निकालने का रस्सा।

बरोक पुं. {हिं. वर + रोकना} विवाह-संबंध निश्चित होने के पहले होनेवाला बरच्छा नामक कृत्य; वह धन जो कन्यापक्ष से वरपक्ष को विवाह-संबंध स्थिर करने के समय दिया जाता है।

बरोठा पुं. {सं. द्वार} ड्योढ़ी; बैठक।

बरोधा पुं. {हिं.} वह खेत जिसकी पिछली उपज कपास रही हो।

बरोह पुं. {सं. बट + रोह = उगलनेवाला} बरगद की डालियों का वह अंश जो जमीन पर आकर जम जाता और नए वृक्ष का रूप धारण करता है, बरगद की जटा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and e... tri

बरोही *क्रि. वि.* {हिं. बल = बल या शक्ति} किसी के बल या आधार पर, सहारे; बलपूर्वक, जबरदस्ती।

बरौंछी *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का मोटा और लंबा गन्ना।

बरौंछी *स्त्री.* {हिं.} गहना साफ करने की सूअर के बालों की बनी हुई कूँची।

बरौआ *पुं.* पानी भरनेवाला, मजदूर।

बरौनी *स्त्री.* {सं. वरण} पलकों के आगे के बाल।

बरौरी *स्त्री.* = बरी (पीठ की)।

बर्णाना *स.* = वर्णन करना।

बर्तना *स.* = बरतना।

बर्द *पुं.* {हिं.} वृष, बैल।

बर्दवानी *स्त्री.* {बर्दवान (स्थान)} पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

बर्न *पुं.* वर्ण।

बर्फ *स्त्री.* बरफ।

बर्बट *पुं.* {सं.} राजमाष, बोड़ा।

बर्बर *पुं.* {सं.} आर्यों के अनुसार वर्णाश्रम धर्म न माननेवाला और असभ्य मनुष्य, जंगली आदमी; उजड्ड और मूर्ख व्यक्ति; *वि.* {*भाव.* बर्बरता} जंगली; उजड्ड।

बर्बरता *स्त्री.* {सं.} असभ्यता, अत्याचार।

बर्राना *अ.* {अनु. बरबर} व्यर्थ बकना; नींद या बेहोशी में बकना।

बरे *पुं.* {सं. वरट} भिड़ नाम का उड़नेवाला कीड़ा; कुसुम।

बलंद *वि.* {फा.} {*भाव.* बलंदी} ऊँचा।

बल[1] *पुं.* {सं.} किसी व्यक्ति या वस्तु की वह शक्ति जो दूसरे व्यक्ति या वस्तु को दबाती, वश में रखती या उसका परिचालन करती है, सामर्थ्य, ताकत, जोर; भार उठाने की शक्ति; किसी से प्राप्त होनेवाली सहायता या आश्रय, सहारा, आसरा, भरोसा; राज्य के सशस्त्र सैनिकों आदि का वह वर्ग या निकाय जिसकी सहायता से युद्ध, रक्षा, शांति-स्थापन आदि कार्य होते हैं, जैसे सैनिक बल, आरक्षी बल आदि; सेना, फौज; पार्श्व, अंग, पक्ष।

बल[2] *पुं.* {सं. वलन} ऐंठन; फेरा, लपेट।

मुहा. बल खाना = टेढ़ा होना।

टेढ़ापन; सिकुड़न; शिकन; लचक, झुकाव; कमी, घाटा।

मुहा. बल खाना = दबकर हानि सहना।

अंतर, फरक; ओर, तरफ।

बलकन *स्त्री.* {हिं. बलकना} बलकने की क्रिया या भाव; *योज.* बल्कि।

बलकना *अ.* {अनु.} उबलना; उमड़ना; आवेश में आना, उमगना।

बलकर *वि.* {सं.} जिससे बल की वृद्धि हो।

बलकल *पुं.* वल्कल।

बलकवा *पुं.* = बालक।

बलकाना *क्रि. अ.* {हिं.} अंड-बंड बकना, उबलना, खौलना।

बलकारक *वि.* {सं.} बल बढ़ानेवाला।

बलगना *अ.* बलकना।

बलकुआ *पुं.* {हिं.} एक बाँस।

बलगम *पुं.* {अ.} कफ, श्लेष्मा।

बलकृत *वि.* {सं.} शक्ति देनेवाला।

बलक्ष *वि.* {सं.} श्वेत, सफेद।

बलज *पुं.* {सं.} खेत, युद्ध, धान का ढेर।

बलजा *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी, रज्जु, रस्सी।

बलतंत्र *पुं.* {सं.} शक्ति या सेना आदि का प्रबंध, सैनिक व्यवस्था।

बलदाऊ *पुं.* बलदेव।

बलदेव *पुं.* {सं.} कृष्णचंद्र के बड़े भाई जो रोहिणी के पुत्र थे।

बलना[1] *अ.* {सं. वर्हण} जलना।

बलना[2] *स.* {हिं. बल} बल डालना, बटना।

बल-परीक्षा *स्त्री.* {सं.} बल, शक्ति या ताकत के संबंध में होनेवाली किसी प्रकार की परीक्षा या जाँच; परस्पर विरोधी दलों या वर्गों में होनेवाला वह द्वन्द्व जो एक दूसरे को दबाने या प्रतियोगी से अपनी बातें मनवाने के लिए होता है (शो-डाउन)।

बलबलाना *अ.* {अनु.} {*भाव.* बलबलाहट} ऊँट का बोलना।

बलबीर *पुं.* {हिं. बल = बलराम + बीर = भाई} बलराम के भाई श्रीकृष्ण।

बलभ *पुं.* {सं.} विषैला कीड़ा।

बलभी *स्त्री.* {सं. वर्लाभ} मकान में ऊपरवाली कोठरी, चौबारा।

बलम *पुं.* बालम, पति।

बलमीक *स्त्री.* बाँबी (दीमकों की)।

बलया *स्त्री.* {सं. वलय} हाथ में पहनने की चूड़ी (स्त्रियों की)।

बलराम *पुं.* {सं.} कृष्णचंद्र के बड़े भाई जो रोहिणी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

बलवंड *वि.* बलवान।

बलवंत *वि.* बलवान, बली।

बलवत् *वि.* {सं.} (ऐसा विधान या नियम) जिसमें प्राणों का संचार हो चुका हो और जो अपना व्यापार, कार्य या फल आरंभ करने में समर्थ हो (इन-फोर्स)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

d by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलवत्ता *स्त्री.* {सं.} बलवान होने का भाव, शक्ति-सम्पन्नता।

बलवा पुं. {फा. बल्वः} विद्रोह, विपल्व।

बलवाई पुं. {हिं. बलवा} विद्रोही।

बलवान, बलवान् *वि.* {सं.} {*स्त्री.* बलवती} जिसमें बल या शक्ति हो, मजबूत, ताकतवर।

बलशाली *वि.* = बलवान।

बला[1] *स्त्री.* {सं.} वैद्यक के अनुसार पौधों की एक जाति; पृथ्वी; लक्ष्मी।

बला[2] *स्त्री.* {*अ.*} विपत्ति, आफत; दुख, कष्ट; भूत-प्रेत या उनका बाधा।

बलाइ *स्त्री.* = बला (आफत)।

बलाक पुं. {सं.} बगला, बक, राक्षस।

बलाका *स्त्री.* {सं.} बगलों की पंक्ति।

बलाढ्य *वि.* = बलवान, शक्तिशाली।

बलात् *क्रि. वि.* {सं.} बलपूर्वक, जबरदस्ती।

बलात्कार पुं. {सं.} **किसी स्त्री के साथ किया** जानेवाला उसकी इच्छा **के विरुद्ध, बलपूर्वक** संभोग; [illegible] दुरुपयोग।

बलाधिकृत पुं. {सं.} प्राचीन भारत में किसी राज्य के सेना विभाग का प्रधान अधिकारी और राजमंत्री।

बलाय *स्त्री.* बला, आपत्ति; पुं. वरुण वृक्ष।

बलाराति पुं. {सं.} इंद्र, विष्णु।

बलालक पुं. {सं.} जल-आमला।

बलाश पुं. {सं.} क्षयरोग।

बलाह पुं. {सं. वोल्लाह} वह घोड़ा जिसकी गरदन और दुम पीली हो, बुलाह।

बलाहक पुं. {सं.} मेघ, बादल।

बलि[1] पुं. {सं.} राजकर; उपहार, भेंट; पूजा की सामग्री; नैवेद्य, भोग; किसी देवता के नाम पर मारा जानेवाला पशु।

मुहा. बलि चढ़ना = किसी देवता के नाम पर मारा जाना; किसी के लिए भारी हानि सहना; *बलि जाना* = निछावर होना।

विस्मयादि. एक प्रकार का संबोधन (विशेषत: स्त्रियों में प्रचलित, जिसका अर्थ होता है—मैं तुम पर बलि या निछावर जाऊँ)।

बलि[2] *स्त्री.* {सं. बला = छोटी बहन} सहेली।

बलित *वि.* {हिं. बलि} जिसका बलिदान न हुआ हो; मारा हुआ, हत; *वि.* वलित।

बलिदान पुं. {सं.} {*वि.* बलिदानी} देवी-देवता के उद्देश्य से बकरे आदि पशु काटकर मारना; किसी उच्च उद्देश्य के लिए प्राण देना।

बलिदानी *वि.* {सं. बलिदान} जो अपने को बलिदान करने के लिए प्रस्तुत हो, जैसे बलिदानी जत्था।

बलिपशु पुं. {सं. बलि + पशु} वह पशु जो देवता के लिए बलि चढ़ाया जाए।

बलिपुष्ट पुं. {सं.} काक, कौआ।

बलिबंधन पुं. {सं.} विष्णु।

बलिवर्द पुं. {सं.} वृष, साँड।

बलिया *वि.* {हिं. बल} बलवान।

बलिष्ठ *वि.* {सं.} बलवान।

बलिहारना *स.* {हिं. बलि} निछावर करना।

बलिहारी *स्त्री.* {सं. बलि + हारना} प्रेम, श्रद्धा आदि के कारण अपने आपको किसी के अधीन या किसी पर निछावर कर देना।

मुहा. बलिहारी जाना = निछावर होना।

बली *वि.* {सं. बलिन्} बलवान; पुं. गैंडा नामक जंगली जानवर।

बलीमुख पुं. बंदर।

बलीयस् *वि.* {सं.} {*स्त्री.* बलीयसी} बहुत अधिक बलवान।

बलु *योज.* बरु।

बलुआ *वि.* {*स्त्री.* बलुई} रेतीला।

बलूची पुं. बलोच।

बलैया *स्त्री.* {*अ.* बला} बला, विपत्ति।

मुहा. (किसी की) बलैया लेना = किसी का रोग या कष्ट अपने ऊपर लेने की कामना प्रकट करना।

बलोच पुं. {?} एक जाति जिसके नाम पर उसके देश का नाम बलोचिस्तान पड़ा है।

बलोत्कट *वि.* {सं.} अति बलवान्।

बल्कल पुं. {हिं.} बल्कल।

बल्कस पुं. {सं.} तलछट जो आसव बनाने में बैठ जाती है।

बल्लभी *स्त्री.* {हिं.} प्रिया।

बलोतरा पुं. {?} एक प्रकार का घोड़ा।

बल्कि *योज.* {फा.} अन्यथा, इसके विरुद्ध, प्रत्युत; अच्छा यह कि।

बल्देव पुं. बलदेव।

बल्मीक पुं. वाल्मीकि; वाल्मीकि।

बल्लम पुं. {सं. बल, हिं. बल्ला} सोंटा, डंडा; वह सुनहला या रुपहला डंडा जिसे चोबदार बड़े आदमियों के आगे लेकर चलते हैं; बरछा।

बल्लमटेर पुं. {?} स्वयंसेवक।

बल्लव पुं. {सं.} चरवाहा, रसोइया।

बल्ला पुं. {सं. बल} {*स्त्री.* अल्पा. बल्ली} लंबा, मोटा और बड़ा शहतीर या डंडा; गेंद खेलने का लकड़ी का डंडा।

बवंडर पुं. {सं. वायु + मंडल} चक्कर की तरह घूमती हुई हवा, चक्रवात; आँधी, तूफान।

बवधूरा पुं. वमन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

बवना *स.* बोना; *अ.* छितराना, बिखरना।

बवादा *स्त्री.* {हिं.} हलदी की तरह की जड़ी।

बवासीर *स्त्री.* {*अ.*} एक रोग जिसमें गुदेन्द्रिय में मस्से निकलते हैं, अर्श।

बसंत *पुं.* = वसंत।

बसंती *वि.* {हिं. बसंत} बसंत ऋतु का, बसन्त ऋतु में होनेवाला; पीले रंग का।

बसंदर *पुं.* {सं. वैश्नावर} अग्नि, आग।

बस[1] *क्रि. वि.* {फा.} और नहीं, और अधिक नहीं; इतना बहुत है।

मुहा. बस करना = कार्य या क्रिया रोक देना।

बस[2] *पुं.* {सं. वश} बल, जोर, ताकत।

मुहा. बस चलना = शक्ति या सामर्थ्य का ठीक तरह से पूरा काम करना।

बस[3] *स्त्री.* {*अ.*} एक प्रकार की बड़ी और लंबी मोटर गाड़ी जो प्रायः किराए के यात्रियों को नगरों में एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाती है।

बसचालक़ *पुं.* {*अ.* + सं.} बस का चालक।

बसति (ती) *स्त्री.* बस्ती।

बसना[1] *अ.* {सं. वसन} जीवन बिताने के लिए (व्यक्ति का) कहीं निवास करना, रहना; (स्थान का) निवासियों से युक्त होना, आबाद होना।

मुहा. घर बसना = घर में स्त्री और बाल-बच्चे होना।

आकर रहना, टिकना।

मुहा. मन में बसना = बहुत प्रिय होने के कारण ध्यान में बना रहना।

पुं. वह कपड़ा जिसमें कागज-पत्र, बही-खाते आदि बाँधकर रखे जाते हैं, बस्ता (कोठीवाल)।

बसना[2] *अ.* {सं. वेशन} बैठना।

बसना[3] *अ.* {हिं. वास = गंध} बास या सुगंध से युक्त होना।

बसनि *स्त्री.* {हिं. बसना} निवास; रहना; वास।

बसनी *स्त्री.* {सं. वसन} वह जालीदार लंबी थैली जो रुपए भरकर कमर में बाँधी जाती है, हिमयानी।

बस-यात्रा *स्त्री.* {*अ.* + सं.} बस में की जानेवाली यात्रा।

बस-यात्री *पुं.* बस का यात्री।

बसर *पुं.* {फा.} गुजर, निर्वाह।

बसवार *पुं.* {सं. वास = गंध} छौंक, बघार।

बसवास *पुं.* बसोवास।

बसाँधा *वि.* {हिं. बास} बसाया या बासा हुआ, सुगंधित किया हुआ।

बसा *स्त्री.* {सं. वरट} भिड़, बर्रे।

बसाना[1] *स.* {हिं. बसना} बसने या रहने के लिए जगह देना या प्रवृत्त करना; आबाद करना।

महा. घर बसाना = विवाह करके सुखपूर्वक रहने का प्रबंध करना।

रहने का स्थान देना, टिकाना, ठहराना।

उदा. सुनि कै सुक सो हृदय बसायौ–सूर।

अ. बसना, रहना।

बसाना[2] *स.* {सं. वेशन} बैठाना; रखना।

बसाना[3] *अ.* {हिं. वश} कुछ कर सकते में समर्थ होना, जोर या वश चलना।

उदा. तासों कहा बसाई–केशव।

बसाना[4] *अ.* {हिं. वास} गंध से युक्त होना; *स.* गंध, विशेषतः सुगंध से युक्त करना, जैसे फूलों से तेल बसाना।

बसिऔरा *पुं.* {हिं. बासी} वह दिन जिसमें बासी भोजन खाए जाते हैं, बासी; बासी भोजन।

बसिया *स्त्री.* = वंशी (मुरली)।

बसियाना *क्रि. अ.* {हिं.} बासी हो जाना।

बसीकत (गत) *स्त्री.* {हिं. बसना} बसने की क्रिया या भाव, रहन; बस्ती, आबादी।

बसीकरन *पुं.* = वशीकरण।

बसीठ *पुं.* {सं. अवसृष्ठ} {*भाव.* बसीठी} समाचार ले जानेवाला दूत।

बसीठी *स्त्री.* {हिं. बसीठ} बसीठ का काम, भाव या पद, दूतत्व।

बसीता *पुं.* {हिं. बसना} निवास; निवासस्थान; मनुष्यों की बस्ती; *अ.* = बसना।

बसीना *पुं.* {हिं. बसना} बसने या रहने की क्रिया या भाव, निवास।

बसुधा *स्त्री.* = वसुधा (पृथ्वी)।

बसुफीला *पुं.* {हिं.} तारक।

बसुरी *स्त्री.* {हिं.} बाँसुरी।

बसूला *पुं.* {सं. बासि} {*स्त्री.* अल्पा. बसूली} लकड़ी गढ़ने का बढ़इयों का एक औजार।

बसूली *स्त्री.* {हिं.} मेमार का बसूले का आकार का छोटा औजार।

बसेरा *पुं.* {हिं. बसना} ठहरने या टिकने को जगह।

मुहा. बसेरा देना = रहने के लिए स्थान या आश्रय देना; *बसेरा लेना* = विश्राम के लिए ठहरना या रहना।

वह जगह जहाँ पक्षी रात बिताते हैं; बसनेवाला, निवासी।

बसेरी *वि.* {हिं. बसेरा} बसेरा लेनेवाला; रहनेवाला, निवासी।

बसैया *वि.* {हिं. बसेरा} बसेरा लेनेवाला; रहनेवाला, निवासी।

बसोवास *पुं.* {हिं. बास + आवास} रहने की ठीक जगह, निवासस्थान।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

tized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बसौंधी *स्त्री.* रबड़ी।

बस्त *पुं.* {सं.} सूर्य, बकरा।

बस्ता *पुं.* {फा.} वह कपड़ा जिसमें पुस्तकें, बहियाँ आदि बाँधी जाती हैं, बेठन, बसना; इस प्रकार बाँधी हुई पुस्तकें या कागज आदि।

बस्ती *स्त्री.* {सं. वसति} वह स्थान जहाँ कुछ लोग घर बनाकर रहते हों, आबादी; रखी हुई स्त्री, उपपत्नी, रखेली।

बस्साना *अ.* {सं. वास} सड़ने आदि के कारण दुर्गंध से युक्त होना।

बहँगा *पुं.* {हिं.} बड़ी बहँगी।

बहँगी *स्त्री.* {सं. विहँगिका} बोझ ढोने के लिए वह ढाँचा, जिसमें लकड़ी के दोनों ओर बड़े छींके लटके रहते हैं, काँवर।

बहक *स्त्री.* {हिं. बहकना} बहकने की क्रिया या भाव; बेसिर-पैर की बात, ऊलजलूल बात, बकवाद।

बहकना *अ.* {हिं. बहना} उचित व्यवहार छोड़कर दूसरी ओर जा पड़ना, पथभ्रष्ट होना; ठीक रास्ते पर न जाकर भूल से दूसरी ओर जा पड़ना; किसी प्रकार के मद या आवेश में चूर होना।
मुहा. बहकी-बहकी बातें करना = पागलों की-सी या बढ़ी-चढ़ी बातें करना।

बहकाना *स.* {हिं. बहकना} ठीक रास्ते से हटाकर धोखे से दूसरी तरफ ले जाना; लक्ष्य से हटाकर इधर-उधर करना; बहलाना।

बहतोल *स्त्री.* {हिं. बहना} पानी बहने की नाली।

बहन[1] *स्त्री.* {सं. भगिनी} (भाई के लिए उसकी) माता की कन्या; चाचा, मामा, बुआ आदि की लड़की; समवयस्क स्त्री के लिए संबोधन।

बहन[2] *पुं.* {सं. वहन, हिं. बहना} झोंका।

बहना *अ.* {सं. वहन} द्रव-पदार्थ का निचले स्तर की ओर चलना, प्रवाहित होना।
मुहा. बहा फिरना या बहे फिरना = दुर्दशा भोगते हुए भटकना, मारा-मारा फिरना।
उदा. कब लगि फिरिहैं दीन बह्यौ—**सूर**।
बहती गंगा में हाथ धोना = किसी अवसर से सहज में लाभ उठाना।
पानी की धारा में पड़कर निरन्तर उसके साथ चलना; निरन्तर रस के रूप में निकलना; (हवा) चलना; दुर्दशाग्रस्त होकर इधर-उधर घूमना, मारा-मारा फिरना; कुमार्गी या आवारा होना; गर्भपात होना (चौपायों के लिए); (रुपया आदि) नष्ट हो जाना; निर्वाह होना; *स.* कोई चीज अपने ऊपर लाद या खींचकर ले चलना, ढोना; किसी प्रकार का भार अपने ऊपर लेना, वहन करना।
उदा. कबहुँक भार बहौं—**सूर**।
धारण करना।

बहनापा *पुं.* {हिं. बहन + आपा (प्रत्य.)} बहन का जोड़ा या माना हुआ संबंध।

बहनी[1] *स्त्री.* {सं. वह्नि} आग।

बहनी[2] *स्त्री.* {सं. भगिनी} बहन।

बहनु *पुं.* {सं. वाहन} सवारी।

बहनेली *स्त्री.* {हिं. बहन + एली (प्रत्य.)} वह जिसके साथ बहन का नाता लगाया जाए; बहन की तरह मानी जानेवाली कोई समवयस्क स्त्री, सखी, सहेली (स्त्रियाँ)।

बहनोई *पुं.* {हिं. बहन} बहन का पति।

बहनौता *पुं.* {हिं.} बहिन का पुत्र।

बहनौरा *पुं.* {हिं.} बहिन की ससुराल।

बहम *पुं.* {हिं.} शंका, भ्रम।

बहर *पुं.* {हिं.} समुद्र; *अव्य.* बाहर।

बहनोली *पुं.* {हिं. बहन} बहनेली।

बहबहा *पुं.* {हिं. बहना} व्यर्थ इधर-उधर मारे फिरने का भाव, आवारापन; उपद्रव, नटखटी, शरारत; *वि.* बहेतू।

बहरहाल *क्रि. वि.* {फा.} फिर भी, तो भी।

बहरा *वि.* {सं. बधिर} {*स्त्री.* बहरी} जो कान से न सुने या कम सुने।

बहराना[1] *स.* {हिं. भुलाना} बहलाना; बहकाना, फुसलाना।

बहराना[2] *पुं.* {हिं. बाहर} शहर या बस्ती का बाहरी भाग; *स.* बाहर की ओर करना या ले जाना; अलग करना।

बहरावन *पुं.* {हिं. बहलाना} बहलाने की क्रिया या भाव।

बहरियाना *स.* = बाहर करना।

बहरी *स्त्री.* {*अ.*} एक शिकारी चिड़िया; *वि.* = बाहरी।

बहरी अलंग *स्त्री.* बहरी तरफ।

बहरी तरफ *स्त्री.* {हिं. बाहरी + *अ.* तरफ} नगर के बाहर का वह एकान्त और रमणीक स्थान जहाँ लोग प्रायः सैर-सपाटे के लिए जाते हैं।

बहरू *पुं.* {हिं.} पुष्ट और सुंदर लकड़ीवाला वृक्ष।

बहल *स्त्री.* बहली।

बहलना *अ.* {हिं. बहलाना} {*भाव.* बहलाव} चिंता या दुख की बात भूलकर चित्त का दूसरी ओर लगना; मनोरंजन होना; भुलावे में आना।

बहला *स्त्री.* {सं.} बड़ी इलायची।

बहलवान *पुं.* {हिं.} बहल या बहली हाँकनेवाला।

बहलाना *स.* {हिं. भूलना} इधर-उधर की बातें करके चिन्तित या दुखी व्यक्ति का मन दूसरी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

ओर ले जाना; चित्त प्रसन्न करना; बातों में लगाकर भुलावा देना, बहकाना।

बहली *स्त्री.* {सं. वाह्याली} रथ की तरह की एक बैलगाड़ी।

बहल्ला *पुं.* {हिं. बहलना = प्रसन्न होना} आनंद; प्रेमी, प्रिय; *वि.* मन बहलानेवाला या प्रसन्न करनेवाला; सुखद।

बहल्ली *स्त्री.* {हिं.} मल्लयुद्ध की एक कला।

बहस *स्त्री.* {अ.} किसी की बातें सुनते हुए उनके उत्तर देना; तर्क-वितर्क, विवाद।

बहसना *अ.* {अ. बहस + हिं. ना (प्रत्य.)} तर्क-वितर्क या विवाद करना।

बहा *पुं.* {हिं. बहना} पानी का नाला; छोटी नहर।

बहाऊ *वि.* {हिं. बहाना + ऊ (प्रत्य.)} बहानेवाला; बहा देने योग्य; नष्ट या विकृत करनेवाला; व्यर्थ धन नष्ट करनेवाला।

बहादुर *वि.* {फा.} {*भाव.* बहादुरी} वीर, पराक्रमी; शूरवीर, योद्धा।

बहादुराना *वि.* {फा.} बहादुरों का-सा, वीरोचित, वीरतापूर्ण।

बहादुरी *स्त्री.* {फा.} वीरता, शौर्य; दिलेरी।

बहाना[1] *स.* {हिं. बहना} द्रव पदार्थ को नीचे की ओर जाने में प्रवृत्त करना, प्रवाहित करना; पानी की धारा में डाल या छोड़ देना; (हवा) चलाना; व्यर्थ व्यय करना, गँवाना, लुटाना; कम मूल्य पर बेचना।

बहाना[2] *स.* {हिं. बाहना} बाहने का काम दूसरे से कराना।

बहाना[3] *पुं.* {फा. बहान:} अपना बचाव करने या कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए कही हुई झूठी बात, मिस, हीला; नाम मात्र का कारण, तुच्छ निमित्त।

बहार *स्त्री.* {फा.} वसन्त ऋतु; आनन्द, मज़ा, मौज; रमणीयता।

बहारना *क्रि. स.* {हिं.} बुहारना।

बहारी *स्त्री.* {हिं.} बुहारी।

बहाल *वि.* {फा.} {*भाव.* बहाली} अपने स्थान पर फिर से या पूर्ववत् स्थित, पुनर्नियुक्त; भला-चंगा, स्वस्थ।

बहाला *पुं., वि.* बहल्ला।

बहाली[1] *स्त्री.* {फा.} किसी पद या स्थान पर बहाल या नियुक्त होना; फिर से अपने पद या स्थान पर नियुक्त किया जाना, पुनर्नियुक्ति।

बहाली[2] *स्त्री.* {हिं. बहलाना} बहाना, मिस।

बहाव *पुं.* {हिं. बहना + आव (प्रत्य.)} बहने की क्रिया या भाव, प्रवाह; बहता हुआ पानी; प्रबल वेग या प्रवृत्ति।

बहिः *अव्य.* {सं.} बाहर।

बहिअर *पुं.* {हिं.} स्त्री।

बहित्र *पुं.* {सं.} बहित्र, नाव।

बहिक्रम *पुं.* {सं. वय:क्रम} वय, अवस्था, उम्र।

बहिन *स्त्री.* = बहन।

बहियाँ *स्त्री.* = बाँह।

बहिया *स्त्री.* = बहाव।

बहिरंग *वि.* {सं. बहिर् + अंग} बाहर का, बाहरी, 'अंतरंग' का विपर्याय।

बहिर *वि.* = बहरा।

बहिरति *स्त्री.* बाह्यरति।

बहिर्गत *वि.* {सं.} बाहर निकला या आया हो; बाहरी।

बहिर्जगत, बहिर्जगत् *पुं.* {सं.} बाहरी या दृश्य जगत्।

बहिर्जानु *अव्य.* {सं.} दोनों हाथों को घुटनों के बाहर किये हुए।

बहिर्द्वार *पुं.* {सं.} तोरण, बाहरी द्वार।

बहिर्ध्वजा *स्त्री.* {सं.} दुर्गा देवी।

बहिर्निर्गमन *पुं.* {सं.} बाहर जाना।

बहिला *वि.* {हिं.} बंध्या, बाँझ।

बहिष्क *वि.* {सं.} जो बाहर हो।

बहिर्मुख (मुखिन्) *वि.* {सं.} जिसका मुँह बाहर की ओर हो; विमुख, विपरीत।

बहिर्रति *स्त्री.* {सं.} बाह्यरति।

बहिर्लापिका *स्त्री.* {सं.} वह पहेली जिसमें उसके उत्तर का शब्द उसकी पदयोजना में न हो, 'अंतर्लापिका' का विपर्याय।

बहिश्त *पुं.* {फा. बिहिश्त} स्वर्ग।

बहिष्करण *पुं.* {सं.} बहिष्कार।

बहिष्कार *पुं.* {*स.*} {*वि.* बहिष्कृत} बाहर करना, निकाल देना; किसी विषय में किसी से मतभेद होने पर विरोध या असंतोष प्रकट करने के लिए तब तक के लिए उससे संबंध छोड़ देना जब तक वह ठीक रास्ते पर न आ जाए (बॉयकॉट)।

बहिष्कृत *वि.* {सं.} बाहर किया या निकाला हुआ; छोड़ा या त्यागा हुआ।

बही *स्त्री.* {हिं. बँधी?} हिसाब किताब लिखने की (विशेषत: लंबी) पुस्तक।

बही-खाता *पुं.* {हिं. बही + खाता} वे सब बहियाँ जिनमें लेन-देन, क्रय-विक्रय आदि से संबंध रखनेवाले सब लेखे या हिसाब लिखे जाते हैं।

बहीर[1] *स्त्री.* {फा.} सेना के साथ चलनेवाले नौकर-चाकर, दुकानदार आदि; सेना की सामग्री।

बहीर[2] *स्त्री.* = भीड़।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहीर[3] *क्रि. वि.* = बाहर।

बहु *वि.* {सं.} अनेक, बहुत।

बहुगंध *पुं.* {सं.} दारचीनी, पातचंदन।

बहुगंधदा *स्त्री.* {सं.} कस्तूरी।

बहुगंधा *स्त्री.* {सं.} चंपा, जूही।

बहुज्ञ *वि.* {सं.} बहुत-सी बातें जाननेवाला, बड़ा जानकार।

बहुत *वि.* {सं. बहुतर} गिनती में अधिक, अनेक; मात्रा या परिमाण में अधिक; यथेष्ट, पर्याप्त, काफी।

पद बहुत अच्छा = ठीक है, ऐसा ही होगा। *बहुत करके* = संभवतः; *बहुत-कुछ* = यथेष्ट; *बहुत खूब* = बहुत अच्छा।

क्रि. वि. अधिक परिमाण में, ज्यादा।

बहुतक *वि.* = बहुतेरा।

बहुतायत *स्त्री.* {हिं. बहुत} अधिकता, प्रचुरता।

बहुतृण *पुं.* {सं.} मूँज नाम की घास।

बहुतेरा *वि.* {हिं. बहुत} {*स्त्री.* बहुतेरी} बहुत-सा, अधिक; *क्रि. वि.* अनेक प्रकार से, जैसे-मैंने उसे बहुतेरा समझाया पर वह माना नहीं।

बहुत्व *पुं.* {सं.} अधिकता, बहुतायत।

बहुदर्शी (दर्शिन्) *वि.* {सं.} जिसने बहुत-कुछ देख लिया हो, जिसे संसार की रीतियों, व्यवहारों का अच्छा अनुभव हो।

बहुधंधी *वि.* {हिं. बहु (बहुत) + धंधा} जो कई काम एकसाथ कर रहा हो।

बहुधा *क्रि. वि.* {सं.} प्रायः अक्सर।

बहुभाषी (भाषिन्) *वि.* {सं.} बहुत-सी भाषाएँ जानने, समझने तथा बोलनेवाला।

बहुभुज *पुं.* {सं.} अनेक भुजाओंवाला क्षेत्र।

बहुमत *पुं.* {सं.} किसी वर्ग या समूह के आधे से अधिक लोगों का मत; किसी वर्ग या समूह के आधे से अधिक वे लोग जिनकी समान विचारधारा हो (मेजोरिटी)।

बहुमूत्र *पुं.* {सं.} बहुत अधिक और बार-बार पशाब होने का रोग।

बहुमूल्य *वि.* {सं.} जिसका मूल्य बहुत-अधिक हो, कीमती; जिसका महत्व अत्यधिक हो, मूल्यवान।

बहुयाजी *वि.* {सं.} बहुत-से यज्ञ कराने वाला।

बहुरंगा *वि.* {हिं. बहु + रंग} अनेक रंगोंवाला, रंग-बिरंगा।

बहुरंगी *वि.* = बहुरूपिया।

बहुरना *अ.* {सं. व्याघुट, प्रा. बाहुड़ + ना (प्रत्य.)} वापस आना, लौट आना, लौटना।

बहुरि *क्रि. वि.* {हिं. बहुरना} फिर, पुनः; बाद, पीछे।

बहुरिया *स्त्री.* {सं. वधूटिका} नई बहू।

बहुरी *स्त्री.* {हिं.} भुना हुआ गेहूँ या जौ।

बहुरूपिया *पुं.* {हिं. बहु + रूप} वह जो तरह-तरह के रूप धारण कर लोगों को चकित करता हो और उनसे भिक्षा प्राप्त कर निर्वाह करता हो; भेष बदलने में माहिर।

बहुल *वि.* {सं.} अधिक, ज्यादा।

बहुलता *स्त्री.* {सं.} अधिकता; फालतूपन, व्यर्थता।

बहुवचन *पुं.* {सं.} व्याकरण में, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया का वह रूप जो दो या दो से अधिक व्यक्तियों, वस्तुओं व्यापारों आदि को सूचित करता है।

बहुवर्षी *वि.* {सं.} जिसकी अवधि या जीवनकाल अनेक वर्षों का हो।

बहुवादी *वि.* {सं.} बहुत बोलनेवाला।

बहुविद् *वि.* {सं.} बहुज्ञ।

बहुविवाह *पुं.* {सं.} एक पुरुष का कई स्त्रियों के साथ अथवा एक स्त्री का कई पुरुषों के साथ विवाह करना (पॉलिगैमी)।

बहुव्रीहि *पुं.* {सं.} व्याकरण में दो या अधिक पदों के मेल से बननेवाला समस्त पद जो किसी दूसरे पद का विशेषण होता है।

बहुशक्ति *वि.* {सं.} बहुत शक्तिशाली।

बहुशः *वि.* {सं.} बहुत, अधिक; *क्रि. वि.* प्रायः, बहुत प्रकार से।

बहुश्रुत *वि.* {सं.} {*भाव.* बहुतत्व} जिसने बहुत-सी बातें सुनी हों, अच्छा जानकार।

बहुसंख्यक *वि.* {सं.} गिनती में बहुत; जो दूसरों की अपेक्षा या तुलना में गिनती में अधिक हो।

बहू *स्त्री.* {सं. वधू} लड़के की स्त्री, पुत्रवधू; पत्नी, स्त्री; दुलहिन।

बहूपमा *स्त्री.* {सं.} अर्थालंकार जिसमें एक उपमेय के एक ही धर्म के लिए अनेक उपमान दिये जाते हैं।

बहेड़ा *पुं.* {सं. विभीतक, प्रा. बहेड़अ} एक जंगली पेड़ जिसके फल दवा के काम आते और 'त्रिफला' के अंतर्गत होते हैं।

बहेतू *वि.* {हिं. बहना} मनमाने ढंग से चारों तरफ घूमनेवाला; इधर-उधर मारा-मारा फिरनेवाला व्यक्ति; मुफ्त में या बिना परिश्रम मिलनेवाला (धन या पदार्थ)।

बहेरी *स्त्री.* बहाना (मिस, हीला)।

बहेला *वि.* {?} {*स्त्री.* बहेली} प्रिय, प्यारा।

बहेलिया *पुं.* {सं. वध + हेला} पशु-पक्षियों को फँसाने या मारने का काम करनेवाला, चिड़ीमार।

बहोर *पुं.* {हिं. बहुरना} 'बहुरना' का भाव, फेरा, चक्कर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

बहोरना *स.* {हिं. बहुरना} गए हुए को फिर पहले या पुराने स्थान पर ले आना, लौटाना।

बहोरि *क्रि. वि.* {हिं. बहोर} पुनः फिर।

बाँ *पुं.* {हिं.} गाय-बैल के बोलने का शब्द, बार, दफा।

बाँक[1] *स्त्री.* {सं. बंक} बाँह पर पहनने का एक गहना; पैरों में पहनने का एक गहना; कमान, धनुष; एक प्रकार की छुरी।

बाँक[2] *वि.* {सं. वंक} टेढ़ा; बाँका-तिरछा।

बाँकड़ी *स्त्री.* {सं. वंक} बादले या कलाबत्तू का एक प्रकार का फीता।

बाँकडोरी *स्त्री.* {हिं. बाँक + डोरी} एक प्रकार का शस्त्र।

बाँकपन *पुं.* {हिं. बाँका + पन} 'बाँका' होने का भाव; छवि, शोभा।

बाँकरा *पुं.* {सं. वंक} पुरानी चाल का एक प्रकार का हथियार, बंक।

बाँका *वि.* {सं. वंक} टेढ़ा; सुंदर और बना-ठना, छैला; बहादुर; *पुं.* वह सुंदर बालक या नवयुवक जो शोभा के लिए खूब सजाकर बरातों आदि में घोड़े पर निकाला जाता है।

बाँका-तिरछा *वि.* बहुत बना-ठना और सुंदर।

बाँकुड़ा *वि.* बाँकुरा।

बाँकुरा *वि.* {हिं. बाँका} बाँका, टेढ़ा; तेज धार का; कुशल, चतुर।

बाँग *स्त्री.* {फा.} पुकार, चिल्लाहट; लोगों को मसजिद में नमाज के समय बुलाने के लिए मुल्ला की पुकार, अजान; मुरगे का सबेरे बोलना।

बाँगर *पुं.* {हिं.} बैल, छकड़ा गाड़ी का लंबा बाँस।

बाँगा *पुं.* {हिं.} बिना ओटी हुई कपास।

बाँगड़ *पुं.* {देश.} हिसार, रोहतक और करनाल तथा इनके आसपास के जिले।

बाँगड़ू *स्त्री.* {हिं. बाँगड़} बाँगड़ प्रदेश की भाषा।

बाँगुर *पुं.* {सं. वंक + गुण = टेढ़ी रस्सी} पाश, बंधन; जाल।

उदा. तुलसिदास या बिपति बाँगुरो, तुमहिं सों बनै निबेरे–**तुलसी**।

बाँचना[1] *अ.* {हिं. 'बचना' का पुराना रूप} बाकी रहना, बचना; संकट आदि से बचना।

उदा. सुमिरत नाम द्रौपदी बाँची–**सूर**।

बाँचना[2] *स.* {सं. वाचन} पाठ करना, पढ़ना, जैसे चिट्ठी या पुस्तक बाँचना।

बाँछना *स.* {सं. वांछा} इच्छा करना, चाहना।

बांछा *स्त्री.* = वांछा।

बांछी *पुं.* {सं. वांछिन्} अभिलाषा करने या चाहनेवाला।

बाँझ *स्त्री.* {सं. बंध्या} {*भाव.* बाँझपन} वह स्त्री या स्त्री-जाति का पशु जिसे संतान होती ही न हो, बंध्या।

बाँट *स्त्री.* {हिं. बाँटना} बाँटने की क्रिया या भाव; भाग।

बाँटना *स.* {सं. वितरण} किसी चीज के कई भाग करके अलग-अलग रखना, लगाना जमाना; हिस्सा या विभाग करके लोगों को देना, वितरण करना।

बाँटा *पुं.* {हिं. बाँटना} बाँटने की क्रिया या भाव; बाँटने पर मिलनेवाला भाग, हिस्सा।

मुहा. बाँटे पड़ना = हिस्से में आना।

बाजेवालों, भाँड़ों, सपरदाइयों आदि की परिभाषा में कहीं से मिले हुए पारिश्रमिक और पुरस्कार का सब लोगों में बाँटा जानेवाला अंश या हिस्सा; *क्रि.* प्र. लगना।

बाँड़ *पुं.* {हिं.} दो नदियों के संगम के बीच की भूमि।

बाँड़ा *वि.* {देश.} बना पूँछ का, दुमकटा; असहाय, दीन।

बाँड़ी *स्त्री.* {हिं.} बिना पूँछ की गाय, छोटी लाठी।

बाँदा *वि.* {सं. वदाक} वृक्षों की शाखाओं पर फैलनेवाली एक वनस्पति।

बाँदी *स्त्री.* {फा. बंदा} लौंडी, दासी।

बाँदू *पुं.* {हिं.} बँधुआ बंदी।

बाँध *पुं.* {हिं. बाँधना} बाँधने की क्रिया या भाव; शोभा, दिखावे आदि के लिए ऊपर से बाँधी हुई चीज।

मुहा. बाँध बाँधना = आडम्बर रचना।

नदी या जलाशय का जल रोकने के लिए उसके किनारे बना हुआ, मिट्टी, पत्थर आदि का धुस्स, पुश्ता, बंद (एंबैंकमेंट); वह बंधन जो किसी बात को रोकने या उसके आगे बढ़ने पर नियंत्रण रखने के लिए लगाया जाता हो (बार)।

बाँधना *स.* {सं. बंधन} कसने या जकड़ने के लिए घेरकर रोकना; रस्सी, कपड़े आदि में लपेटकर उसमें गाँठ लगाना; पकड़कर बंद या कैद करना; नियम, निश्चय आदि द्वारा किसी सीमा में रखना, पाबन्द करना; मंत्र आदि की सहायता से कोई काम होने से रोकना; प्रेमपाश में बद्ध करना; क्रम, व्यवस्था आदि ठीक या नियत करना; नदी या जलाशय का पानी रोकने के लिए बाँध बनाना; चूर्ण आदि को पिंड के रूप में लाना, जैसे–लड्डू या गोली बाँधना; उपक्रम या योजना बनाना; अस्त्र-शस्त्र आदि धारण करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाँधनी-पौरि *स्त्री.* {हिं. बाँधना + पौरि} पशुओं को बाँधकर रखने का स्थान, बाड़ा।

बाँधनूँ *पुं.* {हिं. बाँधना} पहले से ठीक की हुई योजना या विचार, उपक्रम, मन्सूबा; मनगढंत बात।

बांधव *पुं.* {सं.} भाई, बंधु; रिश्तेदार, संबंधी।

बांधवक *वि.* {सं.} बांधव-संबंधी।

बांधवा *पुं.* {सं.} नाता-रक्त-संबंध।

बाँधुआ *वि., पुं.* बँधुआ।

बाँबी *स्त्री.* {सं. वल्मीक} दीमकों के रहने का मिट्टी का ढूह या भीटा; साँप का बिल।

बाँवना *स.* = रखना।

बाँस *पुं.* {सं. वंश} एक प्रसिद्ध लंबी, दृढ़ वनस्पति जिसके कांडों में जगह-जगह गाँठें होती हैं और जो छाजन, टोकरे आदि बनाने के काम आती है।

बाँसपूर *पुं.* {हिं. बाँस + पूरना} एक प्रकार की बढ़िया महीन मलमल, जिसका पूरा थान बाँस के एक पोर में समा जाता हो।

बाँसफल *पुं.* {हिं.} एक बारीक धान।

बाँसली *स्त्री.* = बाँसुरी।

बाँसा *पुं.* {सं. वंश = रीढ़} नथनों के ऊपर वाली नाक के बीच की हड्डी; रीढ़ की हड्डी।

बाँसी *स्त्री.* = बाँसुरी (मुरली), गेहूँ, घास।

बाँसुरी *स्त्री.* {हिं. बाँस} बाँस का बना हुआ, मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रसिद्ध बाजा, वंशी।

बाँह *स्त्री.* {सं. बाहु} भुजा, हाथ।

मुहा. बाँह गहना या पकड़ना = किसी की सहायता करने का भार लेना; किसी को अपनाना; विवाह करना; *बाँह देना* = सहारा देना।

उदा. सुख सोऊँ सुनि वचन तुम्हारे, देहु कृपा करि बाँह-सूर।

बल, शक्ति; सहायक; सहायता, मदद; भरोसा, सहारा; भुजाओं का बल बढ़ानेवाली एक प्रकार की कसरत जो दो आदमी मिलकर करते हैं; गले में पहनने के कपड़ों का वह अंश जिसमें बाँहें रहती हैं, आस्तीन।

बा[1] *पुं.* {सं. वा = जल} जल, पानी।

बा[2] *स्त्री.* {फा. बार} बार, दफा; *स्त्री.* 'बाई' (स्त्रियों का संबोधन)।

बाइ *स्त्री.* {सं. वापी} छोटा तालाब, बाबली।

उदा. अति अगाधु, अति औथरो, नदी, कूप, सरु, बाइ-नन्ददास।

बाइबिरंग *पुं.* {हिं.} विडंग नामक जड़ी।

बाइसिकल *स्त्री.* {अ.} दो पहियों की एक प्रसिद्ध गाड़ी जो पैरों से चलाते हैं, साइकिल।

बाई[1] *स्त्री.* {सं. वायु} त्रिदोषों में से वात नामक दोष, विशेष 'वात'।

मुहा. बाई चढ़ना = वायु का प्रकोप होना; आवेश या क्रोध के मारे पागल होना; *बाई पचना* = अभिमान का आवेश नष्ट हो जाना, घमंड टूटना।

बाई[2] *स्त्री.* {सं. वापी} छोटा, तालाब, बावली।

बाईस *वि.* {हिं.} बीस और दो की संख्या-22.

बाईसी *स्त्री.* {हिं.} बाईस वस्तुओं, पद्यों का समूह।

बाउ *पुं.* = वायु।

बाऊ *पुं.* {हिं.} वायु, पवन।

बाउर *वि.* {सं. वातुल} बावला, पागल।

बाएँ *क्रि. वि.* {हिं. बायाँ} बाईं ओर या तरफ।

बाक *पुं.* {सं. वाक्य} बात, वचन।

बाकचाल *वि.* वाचाल।

बाकना *अ.* बकना।

बाकला *पुं.* वल्कल।

बाका *स्त्री.* वाचा।

बाकायदे *क्रि. वि.* {फा. बाकायदा} नियमानुसार।

बाकी *वि.* {अ.} जो बच रहा हो, अवशिष्ट, शेष; जो हिसाब करने पर निकले या बचा रहे; *स्त्री.* बड़ी संख्या में से छोटी संख्या घटाने पर बची हुई संख्या; गणित में इस प्रकार घटाने की प्रक्रिया; *योज.* लेकिन, परंतु।

बाकीदार *पुं.* {अ. + फा.} वह जिसने समय पर अपना देन न चुकाया हो और इसीलिए जिसके जिम्मे कुछ पावना बाकी रह गया हो (डिफॉल्टर)।

बाकुल *पुं.* वल्कल।

बाखरि *स्त्री.* बखरी।

बाग[1] *पुं.* {अ. बाग़} वह स्थान जहाँ शोभा के लिए फूलों आदि के पेड़-पौधे लगे हुए हों, उद्यान, वाटिका (गार्डेन); वह स्थान जहाँ फलों या इमारती लकड़ी प्राप्त करने के लिए पेड़ लगाए गए हों (ग्रोव)।

बाग[2] *स्त्री.* {सं. वल्गा} घोड़े की लगाम।

मुहा. बाग मोड़ना = किसी ओर घुमाना, प्रवृत्त करना या लगाना।

बागडोर *स्त्री.* {हिं. बाग + डोर} लगाम।

बागदार *पुं.* {अ. बाग़ + फा. दार} वह जो किसी ऐसे बाग का मालिक हो, जिसके वृक्षों से फल, इमारती लकड़ी या इसी तरह की और चीजें मिलती हों (ग्रोव होल्डर)।

बागना[1] {फा. बाग} बाग में चलना-फिरना या टहलना।

बागना[2] *अ.* {सं. वाक्} बोलना।

बागबाग *वि.* {फा. बाग़बान} बहुत खुश।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGan

बागबान पुं. {फा. बाग़बान} {*भाव.* बागबानी} बगीचे में पेड़-पौधे लगाने और उनकी देखरेख करनेवाला, माली।

बागबानी *स्त्री.* {फा. बाग़बानी} बगीचों में पेड़-पौधे लगाने और उनकी देखरेख करने की विद्या या कला (गार्डेनिंग)।

बागर पुं. {हिं.} नदी-किनारे की वह ऊँची भूमि जहाँ तक बाढ़ का पानी कभी नहीं पहुँचता।

बागल पुं. बगला; बक।

बागा पुं. {देश.} अंगे की तरह का एक पुराना पहनावा, जामा।

बागान पुं. {बं.} वह बड़ा क्षेत्र जिसमें विशिष्ट प्रकार की फसल तैयार होती हो, जैसे चाय बागान, नारियल बागान।

बागी पुं. {अ.} वह जो किसी के विरुद्ध विद्रोह करे, विद्रोही।

बागीचा पुं. {फा. बागचः} छोटा बाग।

बागुर (गुल) पुं. {?} पशु-पक्षियों को फँसाने का जाल, फंदा।

बागेसरी *स्त्री.* {हिं.} सरस्वती, एक रागिनी-विशेष।

बाघंबर पुं. {सं. व्याघ्रांबर} बाघ की खाल जो ओढ़ने-बिछाने के काम आती है।

बाघ पुं. {सं. व्याघ्र} शेर नामक जन्तु।

बाघा पुं. {हिं.} चौपायों का पेट फूलने का एक रोग।

बाघी *स्त्री.* {देश.} एक प्रकार का फोड़ा जो गर्मी या आतश के रोगियों को जाँघ की संधि में होता है।

बाच *वि.* {सं. वाच्य} वर्णन करने के योग्य, अच्छा; सुंदर, बढ़िया।

बाचना *अ.* {हिं. बचना} बचना; *स.* बचाना।

बाचा *वि.* {सं. वाचा + बद्ध} जिसने कोई वचन दिया हो, प्रतिज्ञाबद्ध।

बाछा पुं. {सं. वत्स, प्रा. बच्छ} गौ का बछड़ा; बालक, लड़का।

बाज[1] पुं. {अ. बाज़} एक प्रसिद्ध बड़ी शिकारी चिड़िया; तीर के पीछे लगा हुआ पर।

बाज[2] *प्रत्य.* {फा.} एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर रखनेवाले, व्यसनी, शौकीन या कर्ता आदि का अर्थ देता है, जैसे-बहानेबाज, नशेबाज।

बाज[3] *वि.* {फा.} वंचित, रहित।

मुहा. बाज आना = जान-बूझकर वंचित या रहित होना, जैसे–हम ऐसे नफे से बाज आए; दूर रहना। बाज रखना = रोकना, मना करना।

बाज[4] *क्रि. वि.* {फा.} बिना, बगैर।

बाज[5] *वि.* {अ.} कोई-कोई, कुछ विशिष्ट।

बाज[6] पुं. {सं. वाद्य} वह यंत्र जिसपर आघात करके स्वर निकालते या ताल देते हैं, बजाने का यंत्र, जैसे-मृदंग, करताल, सितार, तबला आदि; *वि.* बाज।

बाजहर पुं. {हिं.} जहरमोहरा।

बाजा पुं. {हिं.} वाद्य-यंत्र।

बाजा-गाजा पुं. अनेक प्रकार के बाजों का समूह।

बाजाब्ता *क्रि. वि.* {फा. बा + *अ.* ज़ाब्तः} {*भाव.* बाजाब्तगी} जाब्ते या नियम के अनुसार; *वि.* जो जाब्ते या नियम के अनुकूल हो।

बाजार पुं. {फा. बाज़ार} {*वि.* बाजारी, बाजारू} वह स्थान जहाँ तरह-तरह की चीजों की दुकानें हों।

मुहा. बाजार करना = बाजार में जाकर चीजें खरीदना या बेचना; *बाजार गर्म होना* = किसी बात की बहुत अधिकता होना; *बाजार तेज होना* = सभी चीजों का मूल्य वृद्धि पर होना; *बाजार उतरना या मंदा होना* = किसी चीज का भाव या दाम घटना।

वह स्थान जहाँ किसी निश्चित समय, तिथि, वार या अवसर पर दुकानें लगती हों, हाट, पैंठ।

बाजारी *वि.* {फा.} बाजार-संबंधी, बाजार का; ऐसा साधारण, जैसा बाजार में हर जगह मिलता हो, मामूली; बाजार में रहने या बैठनेवाला, जैसे–बाजारी औरत।

बाजारू *वि.* बाजारी।

बाजि पुं. {सं. वाजिन्} घोड़ा; तीर; चिड़िया; *वि.* गमन करने या चलनेवाला।

बाजी[1] *स्त्री.* {फा. बाज़ी} ऐसी शर्त जिसमें हार-जीत होने पर कुछ धन लिया या दिया जाए, शर्त, बदान।

मुहा. बाजी मारना = किसी बात में जीतना; *बाजी ले जाना* = प्रतियोगिता में आगे बढ़ जाना या सफल होना।

आदि से अंत तक कोई ऐसा पूरा खेल जिसमें हार-जीत हो या दाँव लगा हो।

बाजी[2] पुं. {सं. वाजिन्} घोड़ा।

बाजीगर पुं. {फा.} जादूगर; कसरत के खेल दिखानेवाला, नट।

बाजीगरी *स्त्री.* {फा.} बाजीगर का काम या खेल-तमाशा।

बाजु पुं. {फा. बाज़ू} भुजा, बाँह; बाजूबंद।

बाजू पुं. {फा.} बाँह; सहायक।

बाजूबंद पुं. {फा.} बाँह पर पहनने का एक गहना, भुजबंद।

बाजूबीर पुं. बाजूबंद।

बाझ *क्रि. वि.* {फा. बाज़} बगैर, बिना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाझन *स्त्री.* {हिं. बझना = फँसना} बझने या फँसन की क्रिया या भाव; उलझन, पेंच; बखेड़ा, झंझट।

बाझना *अ.* बझना।

बाट[1] *पुं.* {सं. वाट} मार्ग, रास्ता।

मुहा. बाट करना = नया रास्ता खोलना या निकालना, मार्ग बनाना; *बाट जोहना या देखना* = प्रतीक्षा करना, आसरा देखना; *(किसी को) बाट पड़ना* = पीछे पड़ना, तंग करने के लिए किसी के काम में बाधक होना; *बाट पड़ना* = डाका पड़ना।

उदा. बाट परइ मोरि नाउ उड़ाई–तुलसी।

बाट[2] *पुं.* {सं. वटक} चीजें तौलने का बटखरा; बट्टा।

बाटकी *स्त्री.* बटलोई।

बाटना *स.* {हिं. बट्टा} पीसना, बटना; *स.* बटना।

बाटली *स्त्री.* {हिं.} जहाज पर का पाल तानने का रस्सा।

बाटिका *स्त्री.* {सं. वाटिका} छोटा बाग, बगीचा।

बाटी *स्त्री.* {सं. बटी} बड़ी गोली, पिंडी; उपलों पर सेंक कर बनाई जानेवाली एक प्रकार की गोल रोटी; *स्त्री.* कटोरी।

बाड़ *स्त्री.* बाढ़।

बाड़व *पुं.* बड़वानल।

बाड़व्य *पुं.* {सं.} ब्राह्मण-समूह।

बाड़स *पुं.* {सं.} मत्स्य, मछली।

बाड़ा *पुं.* {सं. वाट} चारों ओर से घिरा हुआ बड़ा मैदान, पशुशाला।

बाड़ी *स्त्री.* {सं. बारी} बाटिका।

बाढ़[1] *स्त्री.* {हिं. बढ़ना} बढ़ने की क्रिया या भाव, बढ़ाव वृद्धि; अधिक पानी बरसने के कारण नदी या तालाब के जल का अपनी नियत या साधारण सीमा से बढ़कर इधर-उधर फैलना, जल-प्लावन, सैलाब (फ्लड); किसी चीज, बात या काम में होनेवाली बहुत अधिकता, प्रचुरता, भरमार, जैसे–आजकल समाचार-पत्रों की बाढ़ आ गई है; बंदूक या तोप छूटना।

मुहा. बाढ़ दगना = बंदूकों या तोपों से गोलियों या गोलों का लगातार छूटना या उनके छूटने का खाली शब्द होना।

रक्षा आदि के लिए मार्ग में खड़ी की जानेवाली किसी प्रकार की रुकावट, परिधि (बेरियर)।

मुहा. बाढ़ रूँधना = काँटेदार झाड़ियों या ईंटों, मिट्टी आदि से आने-जाने का मार्ग बंद करना।

बाढ़[2] *स्त्री.* {सं. वार, हिं. बारी} तलवार, छुरी आदि शस्त्रों की धार।

बाढ़ग्रस्त *वि.* {हिं. + सं.} (क्षेत्र) जिसमें बाढ़ आई हो।

बाढ़-पीड़ित *पुं.* {हिं. + सं.} बाढ़ से जिसकी हानि हुई हो।

बाढ़कढ़ *स्त्री.* {हिं.} खड़ग, तलवार।

बाढ़ना *अ.* = बढ़ना।

बाढ़ि (ढ़ी) *स्त्री.* बाढ़।

बाढ़ी *स्त्री.* {हिं.} बढ़ाव, वृद्धि।

बाढ़ीवान *वि.* {हिं. बाढ़} शस्त्रों आदि पर बाढ़ या सान रखनेवाला।

बाण *पुं.* {सं.} तीर, शर; पाँच की संख्या।

बाणाग्र *पुं.* {सं.} बाण की नोक।

बाणधि *पुं.* {सं.} तूर्ण, तरकश।

बाणपति *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।

बाणावली *स्त्री.* {सं.} बाणों की पंक्ति।

बाणारि *पुं.* {सं.} बाणासुर के शत्रु, विष्णु।

बाणासुर *पुं.* {सं.} राजा बलि के अग्र-पुत्र।

बाणिज्य *पुं.* {सं.} व्यवसाय, रोजगार, सौदागरी, व्यापार।

बात *स्त्री.* {सं. वार्ता} कहा हुआ सार्थक वाक्य, कथन, वाणी।

मुहा. बात उठना, चलना या छिड़ना = प्रसंग या चर्चा छिड़ना; *बात उठाना* = बातचीत शुरू करना, चर्चा छेड़ना; *बात उलटना* = बात पलटना; *बात काटना* = (किसी के) बोलते समय बीच में बोल उठना; किसी बात का विरोध या खंडन करना; *बात खाली जाना* = प्रार्थना या कथन का मान्य न होना; *बात जमना या बैठना* = बात का सही महत्व लोगों की समझ में आना, उपयुक्त बात प्रतीत होना; *बात टालना* = सुनकर भी ध्यान न देना; कहना न मानना; *बात न पूछना* = कुछ भी आदर न करना; *(किसी की) बात पर जाना* = बात पर ध्यान देना; कहने पर भरोसा करना; *बात पूछना* = पता रखना, खबर लेना; आदर करना; *बात बढ़ना* = साधारण बात का झगड़े का रूप लेना; *बात बनना* = काम बनना, प्रयोजन सिद्ध होना; बोल-चाल होना; *बात बनाना* = इधर-उधर की झूठी बात कहना।

पद बात कहते = बहुत थोड़े समय में, झट। *बात का बतंगड़* = साधारण-सी बात को दिया हुआ झगड़े का रूप; *बात की बात में* = थोड़े समय में, झट, तुरंत।

घटित होनेवाली या प्रस्तुत अवस्था, परिस्थिति; संदेश, सँदेशा; वार्तालाप, बातचीत; कुछ निश्चय करने के लिए उसके संबंध की चर्चा; फँसाने या धोखा देनेवाली बात।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eG

मुहा. (किसी की) बातों में आना = कथन या व्यवहार से धोखा खाना।
वचन, वादा।
पद बात का धनी, पक्का या पूरा = अपने वचन या बात का पालन करनेवाला।
मुहा. (अपनी) बात रखना = वचन पूरा करना; अपनी बात पर अड़ा रहना; *बात हारना* = वचन का पूरा न करना; *(दूसरे की) बात रखना* = दूसरे के वचन या प्रतिज्ञा की पूर्ति में सहायक होना।
साख, प्रतीति, एतबार; मान-मर्यादा, प्रतिष्ठा, इज्जत।
मुहा. (अपनी) बात खोना = प्रतिष्ठा गँवाना, इज्जत बिगाड़ना।
उपदेश, नसीहत; रहस्य भेद; तारीफ या प्रशंसा का विषय; चमत्कारपूर्ण कथन, विलक्षण उक्ति; अभिप्राय, तात्पर्य, आशय; विशेष गुण, खूबी; कथन का सार तत्व, मर्म; कोई काम करने का उचित मार्ग, साधन या उपाय; पुं. वात।

बातकंटक पुं. {हिं.} वायु का एक रोग।

बातचीत *स्त्री.* {हिं. बात + चीत (चिंतन)} दो या कई मनुष्यों में होनेवाला कथोपकथन, वार्ता।

बातप पुं. {हिं.} हिरन।

बातफरोश पुं. {हिं.} बातून।

बातिंगन पुं. {सं.} बैंगन।

बाती *स्त्री.* बत्ती।

बातूनिया (नी) *वि.* {हिं. बात + ऊनी (प्रत्य.)} बहुत या व्यर्थ की बातें करनेवाला, बकवादी।

बाथ पुं. {?} गोद, अंक, क्रोड।

बाथु पुं. {हिं.} बथुआ का साग।

बाद¹ *क्रि. वि.* {अ.} उपरांत, पीछे; *वि.* अलग हटाया छोड़ा हुआ; दस्तूरी, छूट आदि के रूप में दाम में से कटा हुआ (धन), जैसे बाद छूट, पचीस रुपए; अतिरिक्त।

बाद² पुं. {सं. वाद} वाद-विवाद, तर्क-वितर्क।
मुहा. बाद मेलना = वाद-विवाद करना।
हुज्जत करना, तकरार करना।
मुहा. बाद मेलना = हुज्जत या झगड़े की बात पैदा करना।
शर्त, बाजी।
मुहा. बाद मेलना = शर्त लगाना, बाजी बदना।

बाद³ पुं. {सं. वात} वायु, हवा; पुं. बाद।

बादकाकुल पुं. {सं.} संगीत का ताल।

बादना अ. {सं. बाद + ना (प्रत्य.)} बकवाद करना; हुज्जत करना, झगड़ना; ललकारना।

बादर¹ पुं. बादल।

बादर² *वि.* {?} खुश।

बादरिया *स्त्री.* बदली (मेघ)।

बादल पुं. {सं. वारिद, हिं. बादर} पृथ्वी पर के जल से निकली हुई वह भाप जो घनी होकर आकाश में फैल जाती है और जिससे पानी बरसता है, मेघ, घन।
मुहा. बादल उठना, उमड़ना, घिरना या चढ़ना = बादलों का किसी ओर से समूह के रूप में आना; *बादल गरजना* = मेघों की रगड़ से आकाश में घोर शब्द होना; *बादल में चकती लगाना* = बहुत कठिन या प्रायः असंभव-सा काम कर दिखलाना; *बादल छँटना* = मेघों का इधर-उधर हट या छितरा जाना।

बादला पुं. {?} एक प्रकार का सुनहला या रुपहला चिपटा, चमकीला तार।

बादशाह पुं. {फा.} {*भाव.* बादशाहत *वि.* बादशाही} बड़ा राजा, शासक; किसी विषय या कार्य में सबसे श्रेष्ठ पुरुष; मनमाने काम करनेवाला व्यक्ति।

बादशाही *वि.* {फा.} बादशाह-संबंधी, बादशाह का; *स्त्री.* बादशाह या बादशाहों का शासनकाल।

बादहवाई *वि.* {फा. बाद + अ. हवा} बिना सिर-पैर का, ऊटपटाँग।

बादाम पुं. {फा.} एक वृक्ष जिसके प्रसिद्ध फल मेवों में गिने जाते हैं।

बादामी *वि.* {फा. बादाम + ई (प्रत्य.)} बादाम के छिलके के रंग का, हल्का पीला; बादाम के आकार का।

बादि *क्रि. वि.* {सं. वादि} व्यर्थ, फलूल।

बादित *वि.* {सं. वादन} बजाया हुआ।

बादिया पुं. {हिं.} पेच बनाने का लोहारों का एक अस्त्र।

बादिहिं *क्रि. वि.* {सं. बाद = व्यर्थ} बिना किसी सदुपयोग के, व्यर्थ ही।
उदा. जनम तौ बादिहिं गयौ सिराई—**सूर**।

बादी¹ *वि.* {सं. वाद से फा.} वायुविकार-संबंधी; शरीर में वायु का विकार उत्पन्न करने या बढ़ानेवाला; *स्त्री.* शरीर में वायु का प्रकोप।

बादी² पुं. {सं. वादी} वाद या झगड़ा करनेवाला; शत्रु, वैरी, दुश्मन।

बादीगर पुं. बाजीगर।

बादुर पुं. {देश.} चमगादड़।

बाध¹ पुं. {सं.} अड़चन, बाधा; साहित्य में किसी कथन में पाई जानेवाली वह असंगति जो उसकी शब्दावली अथवा अर्थ या आशय में तर्क-सिद्ध संबंध के अभाव के कारण आती है, जैसे आपके इस कथन में मुख्य अर्थ का बाधा है; उन्नति, प्रगति आदि के मार्ग में खड़ी की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानेवाली वह बाधा या रुकावट, जिसे पार करने के लिए विशिष्ट कार्य-दक्षता या योग्यता दिखानी पड़ती है; (बार, उक्त सभी अर्थों में); कठिनता, दिक्कत; पीड़ा, कष्ट।

बाध² पुं. {सं. बद्ध} खाट बुनने की मूँज या रस्सी, बान।

बाधक पुं. {सं.} {स्त्री. बाधिका} रुकावट डालनेवाला; कष्टदायक।

बाधन पुं. {सं.} {वि. बाधित, बाध्य} बाधा या रुकावट डालना; कष्ट देना।

बाधना स. {सं. बाधन} किसी के मार्ग में बाधा रुकावट डालना।

बाधा स्त्री. {सं.} वह बात जिससे कोई काम रुके, विघ्न, रुकावट, अड़चन; भूत-प्रेत आदि के कारण होनेवाला शारीरिक कष्ट।

बाधा-निवारण पुं. {सं.} बाधाएँ हटाने या दूर करने का कार्य।

बाधित वि. {सं.} जो रोका या दबाया गया हो; जिसके साधन में रुकावट हो; जो किसी प्रकार की बाधा, बंधेज आदि के द्वारा परिमित या सीमित किया गया हो (बार्ड); जो किसी प्रकार (जैसे भूत, प्रेत आदि) की बाधा से ग्रस्त हो; बाध्य।

बाधिर्य पुं. {सं.} बहरापन।

बाध्य वि. {सं.} {भाव. बाध्यता} जो रोका या दबाया जानेवाला हो; जो किसी बात से विवश या मजबूर हुआ हो या किया गया हो (कम्पेल्ड); जो विधि, नियम, आज्ञा आदि के द्वारा बँधा हो या कुछ करने के लिए विवश हो (बाउंड)।

बाध्यक वि. {सं.} बाधा के रूप में होनेवाला; जिसका पालन आवश्यक हो।

बाध्यता स्त्री. {सं.} किसी को बाध्य या विवश करने की बात या अवस्था। (कंपल्शन)।

बान¹ पुं. {सं. बाण} बाण, तीर; पानी की ऊँची लहर; एक प्रकार की आतिशबाजी; बाध (मँज)।

बान² स्त्री. {हिं. बनना} बनाव-सिंगार, सज-धज; अभ्यास, आदत।

बान³ पुं. {सं. वर्णन} वर्ण, रंगत; चमक; बाना नामक हथियार: स्त्री. बानो।

बानइत वि. {हिं.} बाण चलानेवाला, योद्धा, वीर।

बानक पुं. {हिं. बाना} वेष, भेस; सज-धज; सुंदर, बनावट या रूप, सजावट।

उदा. या बन की बट बानिक (बानक) या बन ही बनि आवै—**नन्ददास।**

किसी घटना के घटित होने के लिए उपयुक्त परिस्थिति, संयोग।

बानगी स्त्री. {हिं. बनना} नमूना।

बानना स. {हिं. फाना} किसी बात का बाना ग्रहण करना; किसी बात का उपक्रम करना, ठनना।

उदा. दिन उठि विषट-वासना बानत—**सूर।**

बानर पुं. बंदर।

बानबे वि. {हिं.} नब्बे और दो की संख्या-92।

बाना¹ पुं. {हिं. बनाना} पहनावा, पोशाक (विशेषत: योद्धाओं और वीरों के संबंध में); वेश-विन्यास, भेस; पद, मर्यादा आदि के कारण प्राप्त होनेवाली अवस्था, स्थिति, जैसे महाराज को अपने बाने की लाज रखने के लिए ऐसा करना पड़ा; रीति, चाल; व्यापार में कुछ विशिष्ट प्रकार की वस्तुओं का समूह या वर्ग, जैसे बिसात बाना।

बाना² पुं. {सं. बाण} तलवार की तरह का एक दुधारा हथियार; भाले की तरह का एक हथियार।

बाना³ पुं. {सं. वयन = बुनना} बुनावट विशेषत: कपड़े की बुनावट में टेढ़े बल में लगनेवाले सूत, भरनी; वह महीन रेशमी डोरा जिससे कपड़े सिए या पतंग उड़ाते हैं।

बाना⁴ स. {सं. व्यापन} सिकुड़नेवाली वस्तु का (अपना) मुँह या छेद फैलाना, जैसे— मुँह बाना; बालों में कंघी करना।

बानावरी स्त्री. {हिं. बान = तीर} बाण या तीर चलाने की कला या विद्या।

बानि स्त्री. बानी; बान।

बानिक पुं. बानक।

बानिज पुं. = वाणिज्य।

बानिन स्त्री. {हिं.} बनियाइन, बनिये का स्त्री।

बानिया पुं. {हिं.} बनिया, व्यापारी।

बानिनि स्त्री. {हिं. बनियाँ} बनिया जाति की स्त्री, बनियाइन।

बानी¹ स्त्री. {सं. वाणी} मुँह से निकलनेवाला सार्थक शब्द या बात, वचन; मनौती, मन्नत; सरस्वती; साधु-महात्मा का उपदेश, जैसे— दादूदयाल की बानी, कबीर की बानी।

बानी² स्त्री. {सं. वाण} बाना नामक हथियार।

बानी³ स्त्री. {सं. वर्ण} चमक, आभा, कान्ति; प्रकार, तरह।

उदा. शिक्षा क्षिप कह्यौ बरणि, छप्प बारह बानि—**केशव।**

पुं. बनिया; स्त्री. वाणिज्य।

बानीर पुं. बेंत।

बानैत¹ पुं. {हिं. बाण या बाना = बनेठी} पटा या बाना फेरने वाला; तीर चलाने वाला; योद्धा, सैनिक।

बानैत² पुं. {हिं. बाना } किसी प्रकार का भेस या बाना धारण करनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and e... tri

बानो *स्त्री.* {फा.} भले घर की स्त्री का वाचक शब्द या संबोधन, महिला, जैसे–जमीला बानो।

बाप *पुं.* {सं. बाप = बीज बोनेवाला} पिता, जनक।

बाप-दादा *पुं.* पूर्वज, पूर्वपुरुष।

बापी *स्त्री.* {हिं.} बावली।

बापुरा *वि.* {सं. बर्बर = तुच्छ} {*स्त्री.* बापुरी} बेचारा, दीनहीन।

बापू *पुं.* बाप; बाबू; महात्मा गांधी।

बाफता *पुं.* {फा. वाफ्त:} एक प्रकार का बूटीदार रेशमी कपड़ा।

बाबत *क्रि. वि.* {*अ.*} संबंध में; विषय में।

बाबरी *स्त्री.* {हिं.} सिर के लंबे बाल।

बाबा *पुं.* {तु.} पिता; पिता का पिता, दादा; साधु-संन्यासियों या बूढ़ों के लिए आदरसूचक शब्द; लड़कों के लिए प्यार का संबोधन।

बाबी *स्त्री.* {हिं. बाबा = साधु} साधु की स्त्री; लड़कियों के लिए प्यार का संबोधन।

बाबुना *पुं.* {हिं.} पीले रंग की चिड़िया।

बाबुल *पुं.* {हिं. बाबू} पिता; बाबू।

बाबू *पुं.* {हिं. बाबा} बड़े आदमियों, शिक्षितों, भले आदमियों और बड़ों के लिए आदरसूचक शब्द; पिता के लिए संबोधन।

बाभन *पुं.* ब्राह्मण; भूमिहार।

बाम *स्त्री.* {सं. वामा} औरत, स्त्री; *वि.* वाम।

बामन *पुं.* = ब्राह्मण।

बायँ *वि.* {हिं.} बायाँ, खाली, चूका हुआ।

बाय[1] *स्त्री.* {सं. वायु} हवा; बाई।

बाय[2] *स्त्री.* बाबली (जल की)।

बायक *पुं.* {सं. वाचक} कहने या बतलानेवाला; पढ़नेवाला; दूत।

बायकाट *पुं.* {*अ.*} बहिष्कार।

बायन[1] *पुं.* {सं. वायन} वह मिठाई आदि जो मंगल अवसरों पर इष्टमित्रों के यहाँ भेजी जाती है; उपहार।

बायन[2] *पुं.* {फा. बयान:} बयाना, पेशगी।

मुहा. बायन देना = छेड़-छाड़ करना।

बायहब *पुं.* = वायव्य (कोण)।

बायबी *वि.* {सं. वायवीय} बाहरी; अपरिचित; नया आया हुआ; अजनबी।

बायला *वि.* {हिं. बाय = बात + ला (प्रत्य.)} बात का प्रकोप उत्पन्न करने वाला; जिसे वायु का प्रकोप हो; *पुं.* बायबी।

बायस *पुं.* {सं.} कौआ।

बायाँ *वि.* {सं. वाम} {*स्त्री.* बाई} शरीर के उस भाग का जो किसी के पूरब की तरफ मुँह करके खड़े होने पर उत्तर की ओर हो, 'दाहिना' का उलटा।

मुहा. बायाँ देना = किनारे से निकल जाना, बचा जाना; छोड़ देना।

उलटा, विपरीत; अहित, अपकार या हानि करनेवाला, विरोधी या शत्रु; *पुं.* तबले के साथ बाएँ हाथ से बजाया जानेवाला वाद्य, डुग्गी।

बायें *क्रि. वि.* बाएँ।

बारंबार *क्रि. वि.* = बार-बार।

बार[1] *पुं.* {सं. वार} द्वार, दरवाजा; आश्रय, स्थान, ठोर-ठिकाना; राजसभा, दरबार।

बार[2] *स्त्री.* {सं.} काल, समय; देर, बिलंब; दफा, मरतबा।

बार[3] *पुं.* {फा., मि. सं. भार} बोझ, भार; *स्त्री.* बाढ़; और बारी; *पुं.* बाल; बालक; वार।

बारक *क्रि. वि.* {हिं. बार = दफा + एक} एक बार, एक दफा।

उदा. बारक कहियो कृपालु तुलसिदास मेरो –**तुलसी**।

स्त्री. बैरक।

बारकीर *पुं.* {सं.} जोंक।

बारगह (गाह) *स्त्री.* {फा. बारगाह} ड्योढ़ी; डेरा, खेमा; ऐश्वर्य।

बारज़ा *पुं.* {हिं. बार = द्वार} छज्जा; बरामदा; कोठा।

बारता *स्त्री.* वार्ता।

बारतिय *स्त्री.* = वेश्या।

बारतुंडी *स्त्री.* {हिं.} आलू का पेड़।

बारदाना *पुं.* {फा.} वह संदूक, लकड़ियाँ, बंद, टाट आदि जिनमें व्यापार की चीजें बाँधकर कहीं भेजी जाती हैं।

बारन *पुं.* {सं. वारण:} हाथी; गजेन्द्र।

उदा. तज्यौ मनौ तारन-बिरदु बारक बारनु तारि–**बिहारी**।

पुं. वारण।

बारना[1] *अ.* {सं. वारण} मना करना।

बारना[2] *स.* {हिं. बलना} बालना, जलाना।

बार-बधू *स्त्री.* = वेश्या।

बारमुखी *स्त्री.* {हिं.} वेश्या, रंडी।

बाखा *स्त्री.* {हिं.} एक रागिनी।

बारबरदार *पुं.* {फा.} {*भाव.* बार-बरदारी} सामान या बोझ ढोनेवाला।

बारह *वि.* {सं. द्वादश} {*वि.* बारहवाँ} जो संख्या में दस और दो हो।

मुहा. बारह बाट करना या घालना = तितर-बितर या नष्ट-भ्रष्ट करना।

बारहखड़ी *स्त्री.* {हिं. बारह + अक्षरी} देवनागरी वर्णमाला में प्रत्येक व्यंजन के साथ अ, आ, इ,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ई आदि बारह स्वरों को मात्रा के रूप में लगाकर, बोलने या लिखने की प्रक्रिया।

बारहठ पुं. {?} राजपूताने के चारणों का एक भेद या वर्ग।

बारहदरी *स्त्री.* {हिं. बारह + फा. दर} वह बैठक जिसमें चारों ओर बारह दर या दरवाजे हों।

बारह-पत्थर पुं. {हिं.} सीमा, सिवान, छावनी।

बारहबाट *वि.* {हिं. बारह + बाट = मार्ग} छिन्न-भिन्न, तितर-बितर, नष्ट-भ्रष्ट।

बारहबान पुं. {हिं.} उत्तम सोना।

बारहबाना *वि.* {हिं.} चमकता हुआ, खरा।

बारहबानी *वि.* {सं. द्वाद्वश (आदित्य) + वर्ण} सूर्य के समान प्रकाशमान; चोखा। (सोना); निर्दोष, शुद्ध; पूरा, पक्का; *स्त्री.* सूर्य की-सी उज्ज्वल चमक।

बारह-मसिया *वि.* बारह-मासी।

बारह-मासा पुं. {हिं. बारह + मास} वह पद्य या गीत जिसमें बारह महीनों के विरह का वर्णन होता है।

बारह-मासी *वि.* {हिं. बारह + मास} सब ऋतुओं में फलने या फूलनेवाला, सदाबहार (वृक्ष); बारहों महीने होनेवाला।

बारहवाँ *वि.* {हिं.} जो बारह के स्थान में हो।

बारहसिंगा पुं. {हिं. बारह + सींग} एक प्रकार का बड़ा हिरन।

बारहाँ *वि.* {?} बहादुर, वीर।

बारहा *क्रि. वि.* {फा.} कई बार।

बारा पुं. {सं. बाल} {*स्त्री.* बारी} बालक, बच्चा; पुत्र, बेटा; *वि.* थोड़ी अवस्था का, कम उम्रवाला।

बारात *स्त्री.* = बरात।

बारानसी *स्त्री.* = वाराणसी।

बारानी *वि.* {फा.} बरसाती, वर्षा का; *स्त्री.* वह भूमि जिसमें केवल वर्षा के जल से फसल होती हो।

बाराह पुं. = बराह।

बारि *स्त्री.* = बारी।

बारिक *स्त्री.* बैरक।

बारिगर पुं. बाढ़ीवान।

बारिगह *स्त्री.* बारगह।

बारिज पुं. {सं. वारिज} कमल।

बारिधर पुं. {सं. वारिधर} बादल।

बारिश *स्त्री.* {फा.} वर्षा, वृष्टि; वर्षा, ऋतु, बरसात।

बारी[1] *स्त्री.* {सं. अवार} किनारा, तट; छोर पर का भाग, हाशिया; चारों ओर बना हुआ, बाड़ा; बरतन का ऊपरी घेरा, ओंठ; हथियार की धार, बाढ़।

बारी[2] *स्त्री.* {सं. वाट (उद्यान) से बाटी} बाग, बगीचा; बागवान, माली।

उदा. वारी, बारी आपनी सींचि सुहृदतावारि –बिहारी।

एक जाति जो दोने, पत्तल आदि बनाने का काम करती है; खेत या बाग की क्यारी; घर, मकान; खिड़की, झरोखा; बंदरगाह।

बारी[3] *स्त्री.* {हिं. बार} आगे-पीछे के क्रम से आनेवाला अवसर या मौका, पारी।

मुहा. बारी बँधना = आगे-पीछे का क्रम नियत होना; *बारी-बारी से* = क्रम से, एक के पीछे एक।

बारी[4] *स्त्री.* {हिं. बार (बाल) = छोटा} छोटी लड़की, बालिका; युवती।

बारी[5] पुं. {देश.} दोने, पत्तल आदि बनानेवाली एक जाति; *स्त्री.* = बाली।

बारीक *वि.* {फा.} {*भाव.* बारीकी} महीन, पतला; बहुत छोटा, सूक्ष्म; जिसमें कला की निपुणता और सूक्ष्मता प्रकट हो; गंभीर, गूढ़।

बारीकी *स्त्री.* {फा.} बारीक या पतले होने का भाव, पतलापन; भाव, विचार आदि की गहनता या सूक्ष्मता, जैसे-अभी आपने इस बात की बारीकी नहीं समझी।

बारीस पुं. {हिं.} समुद्र।

बारुण *स्त्री.* = वारुणी।

बारूद *स्त्री.* {तु. बारूत} एक प्रसिद्ध विस्फोटक चूर्ण जो आग लगने से भड़क उठता है और जिससे तोप-बंदूक चलती है, दारू।

बारूदखाना पुं. {हिं. बारूद + फा. खानाः} वह स्थान जहाँ गोला-बारूद रहती है।

बारे *क्रि. वि.* {फा.} अन्त को (या में)।

बारे में *क्रि. वि.* {फा. बारः + हिं. में} विषय में, संबंध में।

बारोठा पुं. बरोठा।

बार्हस्पत (त्य) *वि.* {सं.} बृहस्पति-संबंधी।

बाल[1] पुं. {सं.} {*स्त्री.* बाला} बालक, लड़का; नासमझ व्यक्ति; हाथी; *वि.* जो सयाना न हुआ हो; जो अभी निकला हो, जैसे बालसूर्य।

बाल[2] पुं. {सं.} सूत की तरह की वह पतली लंबी वस्तु जो जन्तुओं के चमड़े के ऊपर निकली रहती है, केश।

मुहा. बाल की खाल निकालना = बहुत ही छोटा, व्यर्थ या तुच्छ तर्क करना, व्यर्थ का दोष निकालना; *बाल तक बाँका न होना* = नाम को भी कष्ट या हानि न पहुँचना; *(किसी काम में) बाल न पकाना* =कोई काम करते-करते बुड्ढे हो जाना; बहुत दिनों का अनुभवी होना; *बाल-बाल*

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGan

बचना = संकट आदि से इस प्रकार बचना कि बहुत थोड़ी-सी कसर रह जाना।

बाल³ *स्त्री.* {?} जौ, गेहूँ आदि पौधों का वह अगला भाग जिसपर दाने उगते हैं; भुट्टा।

बालक *पुं.* {सं.} {*भाव.* बालकता, *स्त्री.* बालिका} मनुष्य का कम उम्र का बच्चा, लड़का; पुत्र, बेटा; अनजान या थोड़े ज्ञान का आदमी; हाथी का बच्चा।

उदा. बालक मृणलनि जो तोरि डारैं–**केशव**।

बालकता *स्त्री.* {हिं.} लड़कपन।

बालकताई *स्त्री.* बालकपन।

बालकपन *पुं.* बालपन।

बालकप्रिया *स्त्री.* {सं.} इंद्रवारुणी, केला।

बालकृष्ण *पुं.* {सं.} बाल्यावस्था के कृष्ण।

बालखोरा *पुं.* {फा.} सिर के बाल झड़ने या उड़ने का रोग, गंज।

बालगर्भिणी *स्त्री.* {सं.} वह स्त्री जिसने पहले-पहल गर्भ धारण किया हो।

बालगोविंद *पुं.* बालकृष्ण।

बालचर *पुं.* {सं.} वह बालक जिसे अनेक प्रकार की सामाजिक सेवाओं की शिक्षा मिली हो।

बालटी¹ *स्त्री.* {सं. बकेट} पानी भरने के लिए धातु की एक प्रकार की डोलची।

बालटी² *स्त्री.* {हिं.} डोलची जिसका नीचे का घेरा सँकरा और ऊपर का चौड़ा होता है।

बालटू *पुं.* {*अ.* बॉल्ट} लोहे आदि का वह पेचदार छल्ला जो किसी कसे हुए पेच के दूसरे सिर पर उसे दृढ़तापूर्वक पकड़े रहने और निकलने से रोकने के लिए कसा जाता है।

बालतंत्र *पुं.* {सं.} बालकों के पालन-पोषण की विद्या, कौमारभृत्य।

बालतनय *पुं.* {सं.} बालक, पुत्र।

बालतोड़ *पुं.* {हिं. बाल + तोड़ना} बाल टूटने से होनेवाला फोड़ा।

बालद *पुं.* {सं. बलिवर्द} बैल (पशु)।

बालधि *पुं.* {सं.} दुम, पूँछ।

बालना *स.* = जलाना।

बालपन *पुं.* {सं. बाल + हिं. पन (प्रत्य.)} बालक होने का भाव, बाल्यावस्था, लड़कपन।

बालपुष्पी *स्त्री.* {सं.} यूथिका, जूही।

बाल-बच्चे *पुं.* {सं. बाल + हिं. बच्चा} लड़के-बाले, संतान, औलाद।

बाल-बाड़ी *स्त्री.* = बालभवन।

बालबोध *पुं.* {सं.} देवनागरी लिपि।

बालब्रह्मचारी (चारिन्) *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* बाल ब्रह्मचारिणी} वह जिसने बाल्यावस्था से ही ब्रह्मचर्य का व्रत धारण किया हो।

बालभवन *पुं.* {सं.} बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया हुआ सार्वजनिक स्थल।

बालभोग *पुं.* {सं.} वह नैवेद्य जो देवताओं के आगे सवेरे रखा जाता है।

बालम *पुं.* {सं. वल्लभ} पति, स्वामी; प्रणयी, प्रेमी।

बालमखीरा *पुं.* {हिं. बाल = बड़ा + खीरा} एक प्रकार का बड़ा खीरा (फल)।

बालमुकुंद *पुं.* बालकृष्ण।

बालमूलक *पुं.* {सं.} कच्ची मूली।

बाललीला *स्त्री.* {सं.} बालकों के खेल या क्रीड़ाएँ।

बालवाटिका *स्त्री.* {सं.} बच्चों के लिए बनाया हुआ उद्यान।

बालविधवा *वि.* {सं.} (स्त्री) जो बाल्यावस्था में ही विधवा हो गई हो।

बालशशि *पुं.* = बालेंदु।

बालसुलभ *वि.* {सं.} बच्चों का-सा।

बालसूर्य *पुं.* {सं.} सवेरे निकलता हुआ सूर्य।

बालस्थान *पुं.* {सं.} शिशुत्व, लड़कपन।

बाला¹ *पुं.* {सं. वलय} बारह-तेरह वर्ष से सोलह-सत्रह वर्ष तक की कन्या, किशोरी; पत्नी, जोरू; स्त्री; कन्या।

बाला² *पुं.* {सं. वलय} हाथ में पहनने का कड़ा; कान में पहनने की बड़ी बाली।

बाला³ *वि.* {फा.} जो ऊपर हो, ऊँचा।

बाला⁴ *पुं.* {हिं. बाल} बालकों के समान अनजान; नया, नवीन; सरल, निश्छल।

बालाई *वि.* {फा.} ऊपर का, ऊपरी; साधारण या नियत से भिन्न और अतिरिक्त; *स्त्री.* मलाई।

बालाई आमदनी *स्त्री.* घूस आदि से अथवा और किसी प्रकार यों ही हो जानेवाली आय।

बालाखाना *पुं.* {फा.} मकान के ऊपर की बैठक या कमरा।

बालानशीन *पुं.* {फा.} बैठने का सबसे ऊँचा या श्रेष्ठ स्थान; वह जो सबसे ऊँचे स्थान पर बैठा हो; *वि.* सबसे अच्छा, बहुत बढ़िया।

बालापन *पुं.* बालपन।

बालार्क *पुं.* बालसूर्य।

बालि *पुं.* {सं.} किष्किन्धा का वानर राजा जो सुग्रीव का बड़ा भाई और अंगद का पिता, जो भगवान रामचंद्र के हाथ से मारा गया था।

बालिका *स्त्री.* {सं.} छोटी लड़की, कन्या; पुत्री, बेटी।

बालिग *पुं.* {*अ.*} वह जो बाल्यावस्था पार करके जवान हो चुका हो, वयस्क।

बालिश¹ *पुं.* {फा.} तकिया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालिश[2] *वि.* {सं.} {*भाव.* बालिश्य} अज्ञान, नासमझ; मूढ़, मूर्ख।

बालिश्त पुं. बित्ता।

बालिश्य पुं. {सं.} बाल्यावस्था, लड़कपन; किसी मनुष्य में ज्ञान उत्पन्न ही न होना, अथवा उत्पन्न होने पर भी बहुत कम विकसित होना, बड़े होने पर भी छोटे बालकों की तरह अबोध और कम समझ होना (एमेन्शिया)।

बालिस *वि., पुं.* बालिश।

बलिहंता पुं. {सं.} श्रीरामचंद्र।

बाली *स्त्री.* {सं. बालिका} {पुं. बाला} कान में पहनने का एक प्रसिद्ध गहना; *स्त्री.* बाल (जौ, गेहूँ आदि की)।

बालुंगी *स्त्री.* {सं.} ककड़ी।

बालु पुं. {सं.} बालू, कपूर।

बालुका *स्त्री.* {सं.} रेत, बालू।

बालू पुं. {सं. बालुका} पत्थर का वह बहुत ही महीन चूर्ण जो वर्षा के जल के साथ आकर नदियों के किनारे जम जाता या ऊसर जमीनों और रेगिस्तानों में भरा हुआ मिलता है, रेणु, रेत।

पद *बालू की भीत* = जल्दी नष्ट हो जानेवाला और अविश्वसनीय (पदार्थ)।

बालूक पुं. {सं.} 'विष'।

बालूचरा पुं. {हिं.} वह भूमि जिस पर बालू पटा हो।

बालूदानी *स्त्री.* {हिं. बालू + फा. दान (पात्र)} धातु आदि का वह छोटा पात्र जिस पर जालीदार ढकना होता है और जिसमें तुरंत के लिखे लेखों आदि की स्याही सुखाने के लिए बालू रखा जाता है।

बालूशाही *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार की विशेष मिठाई।

बालेंदु पुं. {सं.} बाल्यावस्था का अर्थात् शुक्ल पक्ष के शुरू में तीन-चार दिनों का मुख्यतः द्वितीया का चंद्रमा।

बालोपयोगी (गिन्) *वि.* {सं.} बालकों के लिए उपयोगी।

बाल्टी *स्त्री.* बालटी।

बाल्य पुं. {सं.} 'बाल' का भाव या अवस्था; लड़कपन, बचपन; *वि.* बालक का; बचपन का।

बाल्यावस्था *स्त्री.* {सं.} मनुष्यों में सोलह-सत्रह वर्ष तक की अवस्था, लड़कपन; छोटी या कम अवस्था।

बाल्हक पुं. {सं.} कुकुम, केसर।

बाल्हा *वि.* = बहेला।

बाव पुं. {सं. वायु} वायु, हवा; वायु का प्रकोप, बाई; अपान वायु, पाद।

बावड़ी *स्त्री.* {हिं.} बावली, छोटा तालाब।

बावज *स्त्री.* = बातचीत।

बावजूद *क्रि. वि.* {फा.} इतना होने पर भी, इस पर भी।

बावन *वि.* {सं. द्विपंचाशत} पचास और दो।

कहा. *बावन तोले, पाव रत्ती* = बिल्कुल ठीक और पूरा।

पुं. वामन।

बावनबीर पुं. {सं. वामन + वीर} बहुत अधिक वीर और चतुर।

बावर *वि.* बावला।

बावरची पुं. {फा.} रसोइया (मूसल.)।

बावरचीखाना पुं. {फा.} रसोइघर।

बावरा *वि.* {*स्त्री.* बावली} बावला।

बावला *वि.* {सं. वातुल} {*भाव.* बावलापन} पागल; मूर्ख।

बावली *स्त्री.* {सं. वाप + डी या ली (प्रत्य.)} वह बड़ा और चौड़ा कुआँ जिसमें नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ भी हों; छोटा गहरा तालाब।

बावाँ *वि.* बायाँ।

बाष्कल पुं. {सं.} वीर, योद्धा, चाँदी।

बाशिंदा पुं. {फा.} निवासी।

बास[1] पुं. {सं. वास} रहने की क्रिया या भाव, निवास; रहने का स्थान; गंध, महक; वस्त्र।

बास[2] *स्त्री.* {सं. वासना} वासना, इच्छा।

बास[3] *स्त्री.* {सं. वाशिः} अग्नि, आग; एक प्रकार का अस्त्र; तोप के गीले के अंदर भरी हुई छुरियाँ या तेज धारवाले दूसरे छोटे अस्त्र।

बासक पुं. {सं. वासुकि} वासुकि नाग; बहुत पुराना और बड़ा साँप।

बासन पुं. = बरतन।

बासना *स्त्री.* {सं. वास} गंध, महक; *स.* सुगंधित करना।

बासमती पुं. {हिं. बास = महक + मती (प्रत्य.)} एक प्रकार का बढ़िया चावल।

बासर पुं. = वासर।

बासा पुं. {सं. वासा} वह स्थान जहाँ पकी हुई रसोई बिकती है, ढाबा; पुं. बास।

बासी *वि.* {हिं. वास = गंध} देर का पका हुआ, 'ताजा' का उलटा (भोजन)।

कहा. *बासी कढ़ी में उबाल आना* = बहुत समय बीत जाने पर भी किसी काम के लिए उत्सुकतापूर्ण प्रयत्न होना।

कुछ समय का रखा हुआ; सूखा कुम्हलाया हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eG

मुहा. बासी मुँह = सबेरे से बिना खाए हुए, नहार।

पुं. धार्मिक दृष्टि से, कुछ विशिष्ट अवसरों पर पहले दिन का बना हुआ बासी भोजन दूसरे दिन खाना; वह दिन या पर्व जिसमें उक्त प्रकार से बासी भोजन किया जाए, बसिऔरा।

बासू पुं. = बासुकि (नाग)।

बाह पुं. {सं.} बाहु, बाँह; *हिं.* पुं. खेत की जुताई।

बाहकी *स्त्री.* {सं. बारग} पालकी ढोनेवाली स्त्री, कहारिन।

बाहड़ी *स्त्री.* {हिं.} कुंहडौरी डाली हुई खिचड़ी।

बाहन पुं. {हिं.} ऊँचा वृक्ष।

बाहना पुं. {सं. वहन} ढोना, लादना या चढ़ाकर ले आना; चलाना (हथियार); गाड़ी आदि हाँकना; धारण करना; भोग या उपभोग करना; बहाना, प्रवाहित करना; खेत जोतना; कंघी की सहायता से बाल एक तरफ करना।

बाहनी *स्त्री.* 'बाहिनी', सेना।

बाहर *क्रि. वि.* {सं. बाह्य} सीमा के उस पार, अलग, परे या आगे, 'भीतर' या 'अंदर' का उलटा।

मुहा. बाहर आना या होना = सामने आना, प्रकट होना; *बाहर करना* = निकालना या हटाना।

बाहर-बाहर *क्रि. वि.* अलग या दूर से; किसी दूसरी जगह, अन्य स्थान में; अधिकार, प्रभाव आदि से बाहर या परे।

बाहरजामी पुं. {सं. बाह्ययामी} ईश्वर के राम, कृष्ण आदि सगुण रूप।

बाहरी *वि.* {हिं. बाहर} बाहर का, बाहरवाला; पराया, गैर; बाहर या ऊपर से दिखाई देनेवाला, ऊपरी।

बाहरु पुं. {हिं.} अजगर।

बाहा पुं. {हिं.} नाव का डाँड से बँधा रस्सी का टुकड़ा।

बाहिज *क्रि. वि.* {सं. बाह्य} ऊपर से देखने में, बाह्य रूप में।

बाहिनी *स्त्री.* वाहिनी (सेना)।

बाहु *स्त्री.* {सं.} भुजा, बाँह; भुज।

बाहुज पुं. {सं.} वह जो बाहु से उत्पन्न हुआ हो; क्षत्रिय।

बाहुत्राण पुं. {सं.} युद्ध में हाथों की रक्षा के लिए पहना जानेवाला दस्ताना।

बाहुबल पुं. {सं.} बाहुओं या शरीर का वह बल जिससे मनुष्य अच्छे या बड़े काम करता है, शारीरिक शक्ति, पराक्रम।

बाहुमूल पुं. {सं.} कंधे और बाँह के बीच का जोड़।

बाहुयुद्ध पुं. {सं.} कुश्ती।

बाहुल्य पुं. {सं.} 'बहुल' का भाव, बहुतायत, अधिकता; व्यर्थता, फालतूपन।

बाह्य *वि.* {सं.} बाहर का, बाहरी; किसी निवासस्थान या घिरे हुए निवासस्थान के बाहर होनेवाला अथवा बाहरी भाग से संबंध रखनेवाला, 'आंतरिक' का विरुद्धार्थक (आउट-डोर); किसी प्रकार के क्षेत्र, परिधि, सीमा आदि के बाहर रहने या होनेवाला, 'अंतर्गत' का विरुद्धार्थक, (यौ. के अंत में) जैसे आलंबनबाह्य = आलंबन में न होकर उससे अलग या उसके बाहर रहने या होनेवाला।

बाह्यरति *स्त्री.* {सं.} आलिंगन, चुंबन आदि कार्य (स्त्री संभोग से भिन्न) जो बाहरी रति के विशेष रूप मान गए हैं; रति।

बाह्यांचल पुं. {सं. बाह्य + अंचल} किसी नगर या बस्ती के बाहरी या आसपास के स्थान (आउट-डोर)।

बाह्येंद्रिय *स्त्री.* {सं.} आँख, कान, नाक, जीभ और त्वचा ये पाँचों इंद्रियाँ जिनसे बाहरी विषयों का ज्ञान होता है।

बिंग पुं. व्यंग्य।

बिंजन पुं. व्यंजन, पंखा।

बिंद पुं. {हिं.} पानी की बूँद, वीर्य की बूँद।

बिंदा पुं. {सं. बिन्दु} 'बेंदा'।

बिंदी *स्त्री.* {सं. बिंदु} शून्य का सूचक चिह्न जो यह है-0, सुन्ना, सिफर, बिंदु; माथे पर लगाया जानेवाला छोटा गोल टीका; इस प्रकार का कोई चिह्न या पदार्थ।

बिंदु पुं. विंदु; *स्त्री.* बिंदी।

बिंदुका पुं. {हिं.} बिंदी, गोल टीका।

बिंदुली *स्त्री.* बिंदी।

बिंध पुं. विंध्याचल।

बिंधना पुं. {सं. वेधन} बीधा या छेदा जाना; फँसना, उलझना।

बिंब पुं. {सं. बिम्ब} {*वि.* बिंबित} प्रतिबिंब, छाया; प्रतिमूर्ति, प्रतिकृति; कुँदरू नामक फल; सूर्य, चंद्रमा आदि का मंडल; आभास।

बिंब-प्रतिबिंब भाव पुं. ऐसी अवस्था जिसमें दो वस्तुएँ एक दूसरी की छाया या बिंब से युक्त और उसके प्रतिबिंब के रूप में होती या जान पड़ती हैं।

बिंबा पुं. {सं. बिंब} कुँदरू (फल)।

बिंबित *वि.* {सं. बिम्बित} जिसका बिंब या छाया पड़ रही हो।

बिआना *स.* ब्याना।

बिआहना *स.* = ब्याहना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिकना *अ.* {सं. विक्रय} किसी पदार्थ का कुछ धन के बदले में दूसरे के हाथ में जाना, बेचा जाना, बिक्री होना।
मुहा. किसी के हाथ बिकना = किसी का पूरा अनुयायी या दास होना।
बिकरम *पुं.* विक्रमादित्य; विक्रम।
बिकरार *वि.* = विकराल।
बिकल *वि.* = विकल।
बिकर्म *पुं.* {हिं.} दुष्कर्म।
बिकलाई *स्त्री.* = व्याकुलता।
बिकलाना *अ.* {सं. विकल} व्याकुल या विकल होना, बेचैन होना; *स.* व्याकुल या बेचैन होना।
बिकली *स्त्री.* = विकलता।
बिकवाल *पुं.* {हिं. बेचना} बेचनेवाला।
बिकसना *अ.* विकसना।
बिकाऊ *वि.* {हिं. बिकना} जो बिकने के लिए हो, बिकनेवाला।
बिकाना *अ.* = बिकना।
बिकार *पुं.* = बिकना; *वि.* = विकराल।
बिकारी *स्त्री.* {सं. विकृत या बंक} वह टेढ़ी पाई जो अंकों आदि के आगे रुपयों की संख्या या मन, सेर आदि का मान सूचित करने के लिए लगाई जाती है।
बिकासना *स.* {सं. विकासन} विकसित करना; (फूल आदि) खिलाना।
बिकुंठ *पुं.* = बैकुंठ।
बिक्ख *पुं.* = विष।
बिक्री *स्त्री.* {सं. विक्रय} किसी चीज के बेचे जाने की क्रिया या भाव, विक्रय; बेचने से मिलनेवाला धन।
बिक्री-कर *पुं.* {हिं.} वह राजकीय कर जो ग्राहकों से उनके हाथ हुई बेची हुई चीजों पर लिया जाता है (सेल्स टैक्स)।
बिक्रेय *वि.* {हिं.} बिकाऊ, बेचने योग्य।
बिख *पुं.* {सं. विष} विष, जहर।
मुहा. बिख बोना = बहुत बड़े अनर्थ का सूत्रपात करना; बिख बोलना = बहुत ही कटु और लगती हुई बात कहना।
बिखम *वि.* = विषम।
बिखय *पुं.* = विषय।
बिखयी *वि.* = विषयी।
बिखरना *अ.* {सं. विकीर्ण} तितर-बितर होना, छितराना।
बिखराना *स.* बिखेरना।
बिखराव *पुं.* {हिं. बिखरना + आव (प्रत्य.)} बिखरे हुए होने की अवस्था या भाव।
बिखाद *पुं.* विषाद।
बिखान *पुं.* {सं. विषाण} पशु का सींग।
बिखेरना *स.* {हिं. 'बिखरना' का *स.*} इधर-उधर फैलाना, छितराना।
बिग *पुं.* {हिं.} भेड़िया।
बिगड़ना *अ.* {सं. विकार = बिगाड़} गुण, रूप आदि में विकार होना, खराब हो जाना; बनते समय किसी वस्तु में कोई ऐसी खराबी होना जिससे वह ठीक न उतरे; बुरी दशा में आना; नीतिपथ से भ्रष्ट होना, बदचलन होना; क्रुद्ध होना, नाराज होना; विरोधी होना, विद्रोह करना; (पशुओं का) क्रुद्ध होकर चलानेवाले के अधिकार से बाहर हो जाना; परस्पर विरोध या वैमनस्य होना; व्यर्थ व्यय होना।
बिगड़े दिल *वि.* {हिं. बिगड़ना + फा. दिल} उग्र या विकट स्वभाववाला; कुमार्ग पर चलनेवाला; बिगड़ैल।
बिगड़ैल *वि.* {हिं. बिगड़ना} बात-बात में बिगड़ने या लड़ पड़नेवाला।
बिगर *क्रि. वि.* बगैर।
बिगरना *अ.* = बिगड़ना।
बिगरायल *वि.* {हिं. बिगड़ना} बिगड़ा हुआ, विकृत (पूरब)।
बिगसना *अ.* विकसना।
बिगहा *पुं.* बीघा।
बिगही *स्त्री.* {हिं.} क्यारी, बरही।
बिगाड़ *पुं.* {हिं. बिगड़ना} बिगड़ने की क्रिया या भाव; खराबी, दोष; वैमनस्य, मनमुटाव।
बिगाड़ना *स.* {हिं. बिगड़ना का *स.*} किसी वस्तु के स्वाभाविक गुण या रूप में विकार उत्पन्न कर देना जिससे वह ठीक न उतरे; बुरी दशा में लाना या पहुँचाना; अनीति या बुरे मार्ग में लगाना; व्यर्थ खर्च करना।
बिगाड़ू *वि.* {हिं. बिगाड़ना + ऊ (प्रत्य.)} बिगाड़नेवाला।
बिगारना *स.* = बिगाड़ना।
बिगारी *स्त्री.* = बेगारी।
बिगास *पुं.* = विकास।
बिगिर *क्रि. वि.* = बगैर।
बिगुन *वि.* {सं. विगुण} जिसमें कोई गुण न हो, गुणहीन।
बिगुर *वि.* निगुरा।
बिगुरचन *स्त्री.* = बिगूचन।
बिगुरचना *अ.* {सं. विकुंचन} असमंजस, कठिनता या संकोच में पड़ना।
बिगुरचा *पुं.* बिगूचन।
बिगुरचिन *स्त्री.* बिगूचन।
बिगुरदा *पुं.* {देश.} एक प्रकार का पुराना हथियार।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and e... ri

बिगुल पुं. {अ.} सैनिकों को एकत्र करने के लिए बजाई जानेवाली तुरही।

बिगूचन स्त्री. {सं. विकुंचन} वह अवस्था जिसमें कर्तव्य का निश्चय न हो सके, असमंजस; कठिनता।

बिगूचना अ. {हिं. बिगूचन} अड़चन या असमंजस में पड़ना; पकड़ा या दबाया जाना; स. दबोचना।

बिगोउ पुं. {हिं. बिगोना} नाश, बरबादी; खराबी, बुराई।

बिगोना स. {सं. विगोपन} खराब करना, बिगाड़ना; दुरुपयोग करना।
उदा. इहिं राजस को, को न बिकायौ?–सूर।
छिपाना; तंग करना; बहकाना; बिताना; अ. नष्ट या खराब होना।

बिग्गाहा पुं. {हिं.} 'आर्या' छंद।

बिघटना स. {सं. विघटन} विघटित करना; विनष्ट करना; बिगाड़ना; तोड़ना-फोड़ना; अ. विघटित होना।

बिघन पुं. = विघ्न।

बिघनहरन वि. {सं. विघ्नहरण} विघ्न या बाधा दूर करनेवाला; पुं. गणेश।

बिघूरना अ. {सं. विघूरन} घूमना; बार-बार इधर-उधर चलते रहना।

बिच क्रि. वि. बीच।

बिचकना अ. {अनु.} (मुँह का) टेढ़ा होना; भड़कना, चौंकना।

बिचकाना क्रि. स. {हिं.} मुँह चिढ़ाना।

बिचच्छन वि. विचक्षण।

बिचरना अ. विचरना।

बिचलना अ. विचलना।

बिचला वि. {हिं. बीच} {स्त्री. बिचली} जो बीच में हो, मध्य का।

बिचलाना क्रि. स. {हिं.} अस्थिर करना, तितर-बितर करना।

बिचवई पुं. {हिं. बीच} बीच में पड़कर झगड़ा निपटानेवाला, मध्यस्थ; स्त्री. बीच में पड़कर झगड़ा निपटाने की क्रिया या भाव, मध्यस्थता।

बिचवानी पुं. विचवई।

बिचहुत पुं. {हिं. बीच} अंतर, फरक; दुविधा, संदेह।

बिचारना अ. विचारना।

बिचारमान वि. {हिं.} विचारने योग्य।

बिचारा वि. बेचारा।

बिचारी वि. = विचार करनेवाला।

बिचाल पुं. {सं. विचाल} अलग करना; अलगाव; अंतर, भेद।

बिचेंत वि. {सं. विचेतस्} मूर्छित, अचेत; घबराया हुआ।

बिचाँहा पुं. {हिं.} मध्यस्थ।

बिचौनी (हाँ) पुं. विचवई।

बिच्च पुं. बीच; विचवई।

बिच्छी स्त्री. बिच्छू।

बिच्छू पुं. {सं. वृश्चिक} एक प्रसिद्ध जहरीला छोटा जानवर; एक तरह की जहरीली घास।

बिच्छेप पुं. = विक्षेप।

बिछड़ना अ. {सं. विच्छेद} {भाव. बिछड़न, बिछोड़ा} अलग या जुदा होना।

बिछना अ. हिं. 'बिछाना' का अ.।

बिछलन स्त्री. फिसलन।

बिछलना अ. = फिसलना।

बिछलाना क्रि. स. {हिं.} फिसलाना।

बिछाई स्त्री. {हिं. बिछाना} बिछाने की क्रिया या भाव, जैसे सड़क पर कंकड़ की बिछाई; बिछाने के पारिश्रमिक के रूप में मिलनेवाला धन, बिछाने की मजदूरी; बिछौना।

बिछाना स. {सं. विस्तरण} {प्रे. बिछवाना} (बिस्तर या कपड़ा) जमीन पर पूरी दूरी तक फैलाना; कोई चीज या चीजें जमीन पर कुछ दूर तक फैलाना, बिखेरना, बिखराना; मारते-मारते जमीन पर गिराना या लेटाना।

बिछायत स्त्री. बिछौना।

बिछाव पुं. {हिं. बिछाना} बिछाने की क्रिया या भाव; बिछौना।

बिछावन पुं. बिछौना।

बिछावना स. = बिछाना।

बिछिआ स्त्री. {हिं. बिच्छू} पैर की उँगलियों में पहनने का घुँघरूदार छल्ला।

बिछिप्त वि. विक्षिप्त।

बिछुआ पुं. {हिं. बिच्छू} पैर की उँगलियों में पहनने की घुँघरूदार छल्ला।

बिछुड़न स्त्री. {हिं.} वियोग, बिछुड़ने का भाव।

बिछुड़ना अ. बिछड़ना।

बिछुरंता पुं. {हिं. बिछड़ना} बिछड़नेवाला; बिछड़ा हुआ।

बिछुरना अ. बिछड़ना।

बिछूक पुं. = बिच्छू।

बिछूना वि. {हिं. बिछुड़ना} बिछड़ा हुआ।

बिछेद पुं. = विच्छेद।

बिछोड़ा पुं. {हिं. बिछड़ना} बिछड़ने की क्रिया या भाव, वियोग।

बिछोह पुं. बिछोड़ा।

बिछौना पुं. {हिं. बिछाना} वे कपड़े जो सोने या बैठने के लिए बिछाए जाते हैं, बिछावन, बिस्तर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digi Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिछौलना *स.* = बिछाना।

बिजन[1], **बिजना** *पुं.* {सं. व्यजन} छोटा पंखा।

बिजन[2] *वि.* {सं. विजन} एकांत (स्थान)।

बिजयघंट *पुं.* {हिं.} मंदिर का बड़ा घंटा।

बिजयसार *पुं.* {हिं.} जंगली वृक्ष।

बिजली *स्त्री.* {सं. विद्युत} आकाश में सहसा क्षणभर के लिए दिखाई देनेवाला वह प्रकाश जो बादलों में वातावरण की उक्त शक्ति के संचार के कारण होता है, चपला (लाइटनिंग)। *मुहा. बिजली गिरना या पड़ना* = आकाश से बिजली का वेगपूर्वक, पृथ्वी की ओर आना (इसके स्पर्श से मार्ग पड़नेवाली चीजें गलकर नष्ट हो जाती हैं और मनुष्य तथा जीव प्राय: मर जाते हैं); *बिजली कड़कना* = आकाश में बिजली फैलने से मेघों में जोर का शब्द होना। कुछ विशिष्ट क्रियाओं से उत्पन्न की जानेवाली एक प्रसिद्ध शक्ति जिससे वस्तुओं में आकर्षण और अपकर्षण तथा ताप और प्रकाश होता है, विद्युत (इलेक्ट्रिसिटी); आम की गुठली के अंदर की गिरी; गले का एक गहना; कान का एक गहना; *वि.* बहुत अधिक चंचल या प्रकाशमान।

बिजली-घर *पुं.* {हिं. बिजली + घर} वह स्थान जहाँ से सारे नगर या आसपास के स्थानों में बिजली पहुँचाई जाती है।

बिजहन *वि.* {हिं. बीज + हनन} जिसका बीज तक नष्ट हो गया हो।

बिजाती *वि.* विजातीय, बहिष्कृत।

बिजान *पुं.* अनजान, अज्ञान।

बिजायठ *पुं.* {सं. विजय} बाजूबंद।

बिजुरी *स्त्री.* = बिजली।

बिजूका (खा) *पुं.* {देश.} पक्षियों आदि को डराने के लिए खेत में उलटी टाँगी हुई हाँड़ी या इसी तरह की कोई चीज; धोखा।

बिजोग *पुं.* = वियोग।

बिजोना *स.* {हिं. जोवना} अच्छी तरह देखना।

बिजोरा *वि.* {सं. वि + फा. जोर} जिसमें जोर या बल न हो, कमजोर।

बिजोहा *पुं.* {हिं.} एक छंद।

बिजौरा *वि.* {हिं. बीज + औरा (प्रत्य.)} (वृक्ष जो बीज बोने से उत्पन्न हुआ हो, बीजू (कलमी से भिन्न); *पुं.* एक प्रकार का नींबू।

बिजौरी *स्त्री.* कुम्हड़ौरी।

बिज्जु *स्त्री.* {हिं.} बिजली, विद्युत।

बिज्जुपात *पुं.* {हिं.} बिजली का गिरना।

बिज्जल *स्त्री.* = बिजली।

बिज्जुल[1] *पुं.* छिलका।

बिज्जुल[2] *स्त्री.* {सं. विद्युत्} बिजली।

बिज्जू *पुं.* {देश.} बिल्ली की तरह का एक जंगली जानवर।

बिज्जूहा *पुं.* {हिं.} एक वर्णिकवृत्त जिसके हरेक चरण में दो रगण होते हैं।

बिझरा *पुं.* {हिं.} मिला हुआ मटर, चना, गेहूँ और जौ।

बिझुकना *अ.* {हिं. झोंका} {सं. बिझुकाना} भड़कना; डरना; तनने के कारण कुछ टेढ़ा होना; चंचल होना।

बिझुकाना *क्रि. स.* {हिं.} भड़काना, डराना।

बिट *पुं.* {हिं.} पक्षियों की विष्ठा, बीट।

बिटपी *पुं.* {हिं.} वृक्ष।

बिटरना *क्रि. अ.* {हिं.} घँघोलना, मलिन होना।

बिटारना *स.* {सं. बिलोडन} {*अ.* बिटरना} घँघोलकर गंदा करना।

बिटिया *स्त्री.* बेटी।

बिठाना *स.* = बैठाना।

बिडर *वि.* {हिं. बिडरना} बिखरा या छितराया हुआ; *वि.* निडर; *वि.* = विरल।

बिडरना *अ.* {सं. विट्} {सं. बिडराना} इधर-उधर होना, बिखराना; (पशुओं का) बिचकना, बिदकना; नष्ट होना; खराब होना, बिगड़ना।

बिटवना *स.* = तोड़ना।

बिडारना *स.* {हिं. बिडरना} भयभीत करना, डराना; डराकर भगाना; *स.* बिगाड़ना।

बिड़ाल *पुं.* {सं.} बिलाव, बिल्ला, एक दैत्य।

बिढ़तो *पुं.* {हिं. बढ़ाना} लाभ, नफा।

बिढ़वना *स.* {हिं. बढ़ाना} कमाना; संचित या इकट्ठा करना।

बिढ़ाना *स.* बिढ़वना।

बित *स्त्री.* वित्त।

बितत *वि.* {सं. व्यतीत} बीता हुआ।

बिततना *अ.* {सं. व्यथित} व्याकुल होना; दुखी होकर बिलखना; *स.* सन्तप्त करना, सताना।

बितना *अ.* {हिं. बीतना} व्यतीत होना, बीतना।

बितनु *वि.* = वितनु।

बितरना *स.* = बाँटना।

बितवना *स.* = बिताना।

बिताना *स.* {सं. व्यतीत} व्यतीत करना, गुजारना, काटना।

बितावना *स.* = बिताना।

बितीतना *अ.* {सं. व्यतीत} बीतना; *स.* बिताना, गुजारना।

बितु *स्त्री.* वित्त।

बित्त *स्त्री.* {सं. वित्त} धन; सामर्थ्य, शक्ति; ऊँचाई या आकार।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eG

बित्ता पुं. {?} हाथ की उँगलियाँ पूरी फैलाने पर अँगूठे के सिरे से कनिष्ठका के सिरे तक की लंबाई, बालिश्त।

बिथकना अ. {हिं. थकना} थकना; चकित होना; मोहित होना।

बिथकाना अ. बिथकना; स. {हिं. 'बिथकना' का स.} थकाना; चकित करना, हैरान करना।

बिथरना अ. {सं. विकीर्ण} इधर-उधर छटककर गिरना, बिखरना; स. इधर-उधर बिखराना; (बीज) बोना।

उदा. बारि, बीज बिथरै–**सूर**। (ब्रज.)

बिथा स्त्री. व्यथा।

बिथारना स. {हिं. बिथरना} छितराना, बिखेरना।

बिथित वि. व्यथित।

बिथुरना अ. बिखरना।

बिथुरिन वि. {हिं. बिखरना} बिखराया या छितराया हुआ।

बिथोरना स. बिथारना।

बिद वि. {सं. विद्} जाननेवाला, ज्ञाता, जैसे जोगबिद = योग का ज्ञाता।

बिदकना अ. {सं. विदारण} {सं. बिदकाना} फटना, चिरना; घायल होना; भड़कना, बिचकना।

बिदकाना क्रि. स. {हिं.} विदीर्ण करना।

बिदर पुं. {हिं.} विदर्भ देश (बरार)।

बिदरन स्त्री. {सं. विदीर्ण} दरार, दरज; वि. फाड़ने या चीरनेवाला।

बिदरना[1] अ. {सं. विदारण} फटना।

बिदरना[2] अ. {सं. विदल} नष्ट होना।

बिदायगी स्त्री. विदाई।

बिदारना स. {सं. विदारण} चीरना-फाड़ना; नष्ट करना।

बिदीरना स. {सं. विदीर्ण} फाड़ना।

बिदुराना अ. = मुस्कराना।

बिदुरानी स्त्री. = मुस्कराहट।

बिदूषना अ. {सं. विदूषण} दोष या कलंक लगाना; खराब करना, बिगाड़ना।

बिदाई स्त्री. = विदाई।

बिदेह वि. = विदेह।

बिदोख पुं. विद्वेष।

बिदोरना स. {सं. विदारण} (मुँह या दाँत) खोलकर दिखाना।

बिर्धमना क्रि. स. {हिं.} नष्ट करना।

बिद्धत स्त्री. {अ. बिद्अत} खराबी, बुराई; कष्ट, तकलीफ; विपत्ति, आफत; अत्याचार, जुल्म; दुर्दशा, दुर्गति।

बिधँसना स. {सं. विध्वंस} विध्वंस या नाश करना।

बिध[1] स्त्री. {सं. विधि} प्रकार, तरह, भाँति; तरकीब, उपाय।

मुहा. बिध बैठना = उपाय या रास्ता निकलना। ब्रह्मा।

बिध[2] स्त्री. {सं. विधा = लाभ} जमा, खर्च का हिसाब जो अंत में मिलाया जाता है।

मुहा. बिध मिलाना = इस बात की जाँच करना कि आय और व्यय की सब मदें ठीक लिखी गई हैं या नहीं, रोकड़ मिलाना, संयोग करना।

बिधना पुं. {सं. विधि} विधाता।

बिधबंदी स्त्री. {हिं.} भूमिकर की वह रीति जिसमें उपज की कूत पर रकम दी जाती है।

बिधवपन पुं. वैधव्य, रंडापा।

बिधाँसना स. {सं. विध्वंसन} विध्वंस या नाश करना।

बिधाई पुं. विधायक; विधान करनेवाला।

बिधानी पुं. {सं. विधान} विधान करने या बनानेवाला, रचनेवाला।

बिधिबान पुं. = ब्रह्मास्त्र।

बिधुसना स. = नष्ट करना।

बिन क्रि. वि. बिना।

बिनई वि. विनयी।

बिनउ स्त्री. विनय।

बिनकार वि. {हिं. बनना} {संज्ञा. बिनकारी} जुलाहा।

बिनता स्त्री. {हिं. बिनती} विनय, नम्रता; विवशता; दीनता या हीनता।

उदा. तेरी बिनता बेरी–**घना.**।

बिनति (ती) स्त्री. {सं. विनय} प्रार्थना, निवेदन, विनय।

बिनन स्त्री. {हिं. बिनना = चुनना} बिनने या चुनने की क्रिया, भाव या ढंग; वह कूड़ा-करकट जो किसी जीच को चुनने या बिनने पर निकले।

बिनना स. {सं. वीक्षण} छोटी-छोटी चीजें एक-एक करके उठाना, चुनना; छाँटकर अलग करना।

बिनवट स्त्री. {हिं. बनेठी} पटा-बनेठी चलाने की क्रिया या खेल।

बिनवना अ. {सं. विनय} विनय या प्रार्थना करना।

बिनयना क्रि. स. {हिं.} प्रार्थना करना।

बिनवाना स. {हिं. बीनना या बुनना} बुनने या बीनने का काम दूसरे से करवाना।

बिनसना अ. {सं. विनाश} {सं. बिनासना} नष्ट होना, बरबाद होना।

बिनस्टी स्त्री. = विनाश।

बिनहना स. = बिनसना।

बिना क्रि. वि. {सं. बिना} छोड़कर, बगैर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिनाई¹ *स्त्री.* {हिं. बिनना} बीनने या चुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी; बुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी, बुनाई।
बिनाई² *स्त्री.* {अ. बिना} मूल आधार, कारण।
बिनावट *स्त्री.* = बुनावट।
बिनावन *पुं.* {सं.} *स्त्री.* {हिं. बीनना = चुनना} अनाज आदि बीनने पर निकलने वाला कूड़ा-करकट; *स्त्री.* बुनावट।
बिनास *पुं.* = विनाश।
बिनासना *स.* {सं. विनाश} बरबाद करना।
बिनाह *पुं.* = विनाश।
बिनि (नु) *क्रि. वि.* बिना।
बिनीका *पुं.* {हिं.} नये धान का पकवान जो देवता के निमित्त अर्पण किया जाता है।
बिनुआ *वि.* {हिं. बीनना} जो बीन या चुनकर इकट्ठा किया गया हो; छँटुआ।
बिनूठा *वि.* अनूठा।
बिनै *स्त्री.* = विनय।
बिनौरा *पुं.* = बिनौला।
बिनौरी *स्त्री.* {?} ओले के छोटे टुकड़े।
बिनौला *पुं.* {सं. वन = कपास + औला (प्रत्य.)} कपास का बीज।
बिपच्छ *पुं.* विपक्ष।
बिपच्छी *पुं.* विपक्षी।
बिपत, बिपद *स्त्री.* विपत्ति।
बिपर *पुं.* विप्र।
बिपरीत *वि.* = विपरीत।
बिपरीति *स्त्री.* {सं. विपरीत} विपरीत या विरुद्ध होने की अवस्था या भाव, विपरीतता।
उदा. यह विपरीत जानि तुम जन की, अंतर दै बिच रहे लुकानें—**सूर**।
बिफर *वि.* विफल।
बिफरना *अ.* {सं. विप्लवन} विद्रोही या बागी होना; नाराज होना; *अ.* बफरना।
बिबछना *अ.* {सं. विपक्ष} विरोध करना; उलझना, फँसना।
बिबरन *वि.* विवर्ण; *पुं.* विवरण।
बिबस *वि.* विवश।
बिबसना *अ.* = विवश होना।
बिबहार *पुं.* = व्यवहार।
बिबाक *वि.* बेबाक।
बिबादना *क्रि. अ.* {हिं.} विवाद करना।
बिबाहना *क्रि. स.* {हिं.} विवाह करना।
बिबि *वि.* {सं. द्वि} दो।
बिभचार *वि.* {सं. व्यभिचार} उलटा, विपरीत।
उदा. फल बिभचार न होइ, होइ सुख परम अपारा—**नन्ददास**।
पुं. = व्यभिचार।
बिभाना *अ.* {सं. विभा} चमकना।
बिभावरी *स्त्री.* {हिं.} रात्रि, रात।
बिभित्सा *स्त्री.* {हिं.} फूट डालने की इच्छा।
बिभिचारी *वि.* व्यभिचारी।
बिभोर *वि.* विभोर।
बिमन *वि.* विमन।
बिमानी *वि.* {सं. वि + मान} जिसे अभिमान न हो, निरभिमानी।
बिमुद *वि.* {सं. वि + मुद् (मोद)} दुखी या चिंतित; खिन्न, उदास।
बिमूखा *वि.* = विमुख।
बिमोहना *स.* मोहना; *अ.* मोहित होना, लुभाना।
बिय *वि.* {सं. द्वि} दो; दूसरा; अन्य, और; *पुं.* बीज।
बियन *पुं.* {सं. विजन} एकांत स्थल।
बियसार *पुं.* {हिं.} ऊँचा पहाड़ी वृक्ष।
बिया *वि.* = दूसरा; *पुं.* = बीज (बीया)।
बियाना *स.* ब्याना, पशुओं का बच्चा देना।
बियापना *स.* व्यापना।
बियाबान *पुं.* {फा.} उजाड़ जगह; जंगल; सुनसान मैदान।
बियारी, बियालू *स्त्री.* ब्यालू।
बियावर *वि. स्त्री.* {हिं. बियाना या ब्याना = बच्चा देना} ब्याने या बच्चा देनेवाली।
बियाह *पुं.* = विवाह।
बियाहता *स्त्री.* {हिं.} नववधू।
बियाहा *वि.* {*स्त्री.* बियाही} = विवाहित।
बियो *वि.* = दूसरा; *पुं.* पोता।
बिरंगा *वि.* {सं. विरंग} कई रंगों का।
बिरंचि *पुं.* {हिं.} ब्रह्मा।
बिरई *स्त्री.* {हिं. बिरवा} छोटा बिरवा; जड़ी-बूटी।
बिरख *पुं.* = वृक्ष।
बिरचना¹ *अ.* {सं. वि + रुचि} किसी की ओर से विरक्त या उदासीन होना।
उदा. बिरच्यौ किहि दोष न जानि सौं, जु गर्या मन मो तजि रोषन तैं—**घनआनंद**।
अप्रसन्न या नाराज होना।
बिरचना² *स.* {सं. विरचन} रचना, बनाना।
बिरछ *पुं.* = वृक्ष।
बिरछिक *पुं.* = वृश्चिक।
बिरझना *अ.* {सं. विरुद्ध} झगड़ना।
बिरतंत *पुं.* = वृत्तांत।
बिरता *पुं.* {सं. वृत्ति} सामर्थ्य, शक्ति।
बिरतानवी *वि.* {हिं. बिरतानिया} बिरतानिया या ब्रिटेन नामक देश से संबंध रखनेवाला, अंग्रेजी।
बिरताना *स.* बरताना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

बिरतानिया पुं. {अ. ब्रिटेन} यूरोप का ब्रिटेन नामक द्वीप जो अंग्रेजों का देश है।

बिरथा *वि.* = वृथा।

बिरद पुं. विरुद।

बिरदैत पुं. {हिं. बिरद} प्रसिद्ध वीर या योद्धा; *वि.* प्रसिद्ध, नामी, मशहूर।

बिरध *वि.* वृद्ध।

बिरधाई *स्त्री.* {सं. वृद्ध} वृद्धावस्था।

बिरधापन पुं. {हिं.} बुढ़ापा, वृद्धावस्था।

बिरमना *अ.* {सं. विलंब} बिलमना; मोहित होकर कहीं रुक रहना; देर लगाना, विलंब करना; विरक्त होकर अलग होना, छोड़ना।

उदा. अपने कृत तै हौं नहिं बिरमत–**सूर**।

बिरमाना *स.* {हिं. बिरमना} रोक रखना, ठहरना; मोहित करके रोक रखना; बिताना।

बिरला *वि.* {हिं.} कोई-कोई, इक्का-दुक्का।

बिरवा पुं. {सं. विपटक, प्रा. बिरवअ} वृक्ष, पेड़।

बिरवाई (ही) *स्त्री.* {हिं.} छोटे-छोटे पौधों का कुंज।

बिरस *वि.* {सं. विरस} जिसमें रस न हो, रसहीन; पुं. रस, प्रेम, अनुराग आदि का अभाव; अनबन, बिगाड़।

बिरसना *अ.* {सं. विलास} विलास करना, भोगना।

बिरह पुं. = विरह।

बिरहा पुं. {हिं. विरह?} एक प्रकार का गीत (पूर्वी उत्तर प्रदेश)।

बिरहागि *स्त्री.* {सं. विरह + अग्नि} विरह रूपी आग।

बिरहाना *अ.* {सं. विरह} विरह से पीड़ित होना।

बिरही पुं. विरही।

बिरहुला पुं. {पा. विरूल्हक = नाग} {*स्त्री.* बिरहुली} सर्प, साँप।

उदा. बोइनी सातो बीज बिरहुली–**कबीर**।

बिराजना *अ.* {सं. वि + रंजन} शोभित होना; बैठना (आदरसूचक)।

बिरादर पुं. {फा.} भाई, भ्राता।

बिरादरी *स्त्री.* {फा.} एक जाति के लोगों का समूह या वर्ग।

बिरान *वि.* = वीरान।

बिराना *स.* {सं. विरूपण?} हँसी उड़ाने के लिए किसी की चेष्टा आदि का अनुकरण करना, जैसे–मुँह बिराना = मुँह चिढ़ाना; *वि.* = बेगाना।

बिरियाँ *स्त्री.* {सं.} समय, बार।

बिरिया *स्त्री.* {हिं.} कान एक गहना।

बिरावना *स.* बिराना।

बिरासी *वि.* = विलासी।

बिरिख पुं. वृष; वृक्ष।

बिरिछ पुं. = वृक्ष।

बिरी *स्त्री.* बीड़ी; बीड़ा।

बिरुआ पुं. {हिं.} राजहंस।

बिरुझना *अ.* {सं. विरुद्ध} झगड़ना।

बिरुदैत पुं. विरदैत।

बिरुधाई *स्त्री.* बुढ़ापा; विरोध।

बिरोजा पुं. {हिं.} गंधा-बिरोजा।

बिरुद पुं. {हिं.} प्रशंसा।

बिरूप *वि.* {हिं.} कुरूप।

बिरोग पुं. {सं. वियोग} वियोग, विछोह; दुख, कष्ट; चिंता।

बिरोधना *अ.* {सं. विरोध} विरोध या बैर करना, (किसी को) अपना विरोधी या शत्रु बनाना।

बिलंद *वि.* {फा. बुलंद} ऊँचा; बड़ा या भारी; जो विफल हो गया हो (व्यंग्य)।

बिलंबना *अ.* बिलमना।

बिल[1] पुं. {सं. विवर} जमीन के अंदर खोदकर बनाई हुई जीव-जंतुओं के रहने की तंग छोटी जगह, विवर।

बिल[2] पुं. {अं.} पावने का वह हिसाब जिसमें प्राप्य मूल्य या पारिश्रमिक का ब्योरा रहता है; कानून का मसौदा जो स्वीकृति के लिए उपस्थित होता है।

बिलकुल *क्रि. वि.* {*अ.* बिल्कुल} पूरा-पूरा, सब; निरा, निपट।

बिलकैत पुं. {?} राजपूत क्षत्रियों की शाखा का एक अल्ल।

बिलखना *अ.* {सं. विलाप} {सं. बिलखना} बहुत रोना, विलाप करना; दुखी होना; सिकुड़ना।

बिलग *वि.* {सं. विलग} अलग, जुदा, पृथक्; निंदनीय या बुरा।

उदा. इनको बिलगु न मानिए, बोलहिं न विचारी –**तुलसी**।

पुं. अलग होने का भाव, पार्थक्य; मैत्री या संपर्क का अभाव परित्याग।

बिलगाना *अ.* {हिं. विलग} अलग या जुदा होना; *स.* अलग करना; चुनना।

बिलगाव पुं. {हिं. विलग + आव (प्रत्य.)} विलग या अलग होने की क्रिया या भाव, अलगाव, पार्थक्य।

बिलगी पुं. {हिं.} संकर-राग।

बिलच्छन *वि.* = विलक्षण।

बिलछना *अ.* {सं. लक्ष} देखकर समझ लेना, ताड़ना।

बिलटी *स्त्री.* {*अ.* बिलेट} रेल से भेजे जानेवाले माल की वह रसीद जिसे दिखलाने पर पानेवाले को वह माल मिलता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलना *अ.* {हिं. 'बेलना' का *अ.*} बेला जाना (विशेष बेलना)।

बिलनी *स्त्री.* {हिं. बिल?} मिट्टी की दीवारों पर रहनेवाली काली भौंरी; वह छोटी फुंसी जो आँख की पलक पर होती है, गुहांजनी।

बिलपना *अ.* {सं. विलाप} रोना।

बिलबिलाना *अ.* {अनु.} छोटे कीड़ों का रेंगना; बिलखना, विलाप करना।

बिलम *पुं.* विलंब; देरी।

बिलमना *अ.* {सं. विलंब} {सं. बिलमाना} विलंब या देर करना; ठहरना; किसी से प्रेम हो जाने के कारण उसके पास रुक या रह जाना।

बिलमाना *अ.* = बिलमना, अटकाना।

बिलल्ला *वि.* {अनु.} {*स्त्री.* बिलल्ली} जिसे किसी बात का कुछ भी शऊर या ढंग न हो, गावदी, मूर्ख।

बिलवाना *क्रि. स.* {हिं.} खोना, गँवाना, छिपाना।

बिलसना *अ.* {सं. विलसन} {सं. बिलसाना} शोभा देना भला या सुंदर लगना, जँचना; *स.* भोग करना, भोगना।

बिलवास *पुं.* {सं.} बिल में रहनेवाला जन्तु।

बिला *क्रि. वि.* {*अ.*} बिना, बगैर।

बिलाई *स्त्री.* बिल्ली।

बिलस्त *पुं.* {हिं.} बित्ता।

बिलाईकंद *पुं.* {हिं.} 'विदारी-कंद'।

बिलाना *अ.* {सं. विलयन} {प्रे. बिलवाना} नष्ट होना; अदृश्य होना।

बिलापना *अ.* = विलाप करना।

बिलारी *स्त्री.* बिल्ली।

बिलाव *पुं.* {हिं. बिल्ली} नर बिल्ली।

बिलावल *पुं.* {देश.} षाड़व संपूर्ण जाति का एक राग जो रात के पहले पहर में गाया जाता है।

बिलास *पुं.* {हिं.} विलास।

बिलासना *स.* {सं. विलसन} भोगना।

बिलुठना *अ.* {सं. लुंठन} (कष्ट, पीड़ा आदि से) जमीन पर लोटना।

बिलुपना *अ.* {सं. विलुप्त} नष्ट होना, न रह जाना; *स.* नष्ट करना।

बिलूर *पुं.* बिल्लौर।

बिलैया *स्त्री.* = बिल्ली।

बिलैया दंडवत *स्त्री.* भीगी बिल्ली की तरह बहुत ही झुककर और दिखावटी नम्रता दिखाते हुए किया जानेवाला नमस्कार या अभिवादन।

बिलैया भगत *पुं.* वह जो केवल दूसरों को दिखाने के लिए भला या सज्जन बना हो, पर अंदर-ही-अंदर अपना दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करता रहता है।

बिलोकना *स.* {सं. विलोकन} देखना; परीक्षा करना, जाँचना।

बिलोकनि *स्त्री.* {सं. विलोकन} देखने की क्रिया या भाव, देखना; दृष्टि, चितवन, निगाह।

बिलोचन *पुं.* {सं. लोचन} आँख।

बिलोड़ना *पुं.* {सं. बिलोडन} दूध आदि मथना; अस्त-व्यस्त करना; छिन्न-भिन्न करना, काटना।

बिलोन *वि.* {हिं.} बिना नमक का, कुरूप।

बिलोना *स.* {सं. विलोडन} दूध आदि मथना; डालना, उँड़ेलना।

बिलोरना *स.* बिलोड़ना; बिखराना।

बिलोलना *स.* = हिलाना।

बिलोवना *स.* बिलोना।

बिलौटा *पुं.* {हिं. बिल्ली + औटा (प्रत्य.)} बिल्ली का बच्चा।

बिल्कुल *क्रि. वि.* {*अ.*} पूरा-पूरा, सब; निरा, निपट।

बिल्ल *पुं.* {सं.} आलवाल, थाला।

बिल्लमूला *स्त्री.* {सं.} बाराहीकंद।

बिल्ला[1] *पुं.* {सं. विडाल} {*स्त्री.* बिल्ली} बिल्ली का नर।

बिल्ला[2] *पुं.* {सं. पटल} कपड़े की वह पतली पट्टी जो कुछ चपरासी या स्वयंसेवक आदि अपनी पहचान के लिए लगाते हैं, परतला (बैज)।

बिल्लाना *अ.* = विलाप करना।

बिल्ली *स्त्री.* {सं. विडाल, पुं. हिं. बिलार} शेर, चीते आदि की जाति का परंतु उनसे छोटा एक प्रसिद्ध पशु जो प्रायः घरों में रहता और पाला जाता है; दरवाजे में ऊपर या नीचे लगाने की एक प्रकार की सिटकनी, बिलैया।

बिल्लौर *पुं.* {सं. वैदूर्य, मि. फा. बिल्लूर} {*वि.* बिल्लौरी} एक प्रकार का पारदर्शक सफेद पत्थर, स्फटिक; बहुत साफ, मोटा और बढ़िया शीशा।

बिल्लौरी *वि.* {हिं.} बिल्लौर के समान स्वच्छ।

बिल्व *पुं.* {सं.} बेल का वृक्ष।

बिल्वपत्र *पुं.* बेल की पत्ती।

बिवरना *अ.* ब्योरना।

बिवराना *स.* {हिं. 'बिवरना' का प्रे.} बाल सुलझाना या सुलझवाना।

बिवाई *स्त्री.* {सं. विपादिका} पैरों की उँगलियों के नीचे का चमड़ा फटने का प्रसिद्ध रोग।

विषया *स्त्री.* {हिं.} विषय-वासना।

विषान *पुं.* {सं. विषाण} पशु का सींग।

विषै *पुं.* = विषय।

बिसंच *पुं.* {सं. वि + संचय} संचय का अभाव, सँभालकर न रखना; बाधा, विघ्न; भय, डर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिसंभर[1] पुं. विश्वम्भर।

बिसंभर[2] *वि.* {सं. (उप.) वि + हिं. सँभार} जो ठीक तरह से सँभाल कर न रख सके; बेखबर, असावधान; जिसे ठीक तरह से सँभालकर न रखा जाए; विसँभार।

बिसँभार *वि.* {सं. (उप.) *वि.* + हिं. सँभार} जिसे अपने शरीर की सुध-बुध न हो।

बिस पुं. {सं. विष} जहर।

पद बिस की गाँठ = बहुत बड़ा दुष्ट।

पुं. = भसींड (बुदेल.)।

बिसखापर पुं. {हिं.} गोह जाति का जन्तु, पुनर्नवाबूटी।

बिसज पुं. {सं.} पद्म, कमल।

बिसतरना *अ.* {सं. विस्तरण} विस्तार करना, फैलाना या बढ़ाना।

बिसद *वि.* विशद।

बिसन पुं. व्यसन।

बिसनी *वि.* {सं. व्यसन} व्यसनी; छैला; वेश्यागामी।

बिसपना *अ.* {?} (सूर्य आदि का) अस्त होना, डूबना।

बिसमउ पुं. विस्मय।

बिसमरना *स.* {सं. विस्मरण} भूलना।

बिसमिल *वि.* {फा. बिस्मिल} जबह किया हुआ।

बिसमौ पुं. {सं. विस्मय} विस्मय आश्चर्य; विषाद, दुख, रंज।

बिसयक पुं. {सं. विषय} देश; राज्य।

बिसरना *स.* {सं. विस्मरण} भूलना।

बिसराम पुं. = विश्राम।

बिसरामी *वि.* {सं. विश्राम} जिसे विश्राम या सुख मिले; किसी के साथ रहकर सुख भोगने वाला।

उदा. विषयिनी सँघ बिसरामी–सूर।

बिसल पुं. {सं.} अंकुर, कोंपल।

बिसवा पुं. बिस्वा; *स्त्री.* = वेश्या।

बिसवार पुं. {हिं.} हज्जाम का उस्तरा।

बिसवास पुं. = विश्वास।

बिसवासी[1] *वि.* {सं. विश्वासिन्} विश्वास करनेवाला; विश्वास करने योग्य, विश्वसनीय।

बिसारना *स.* {हिं. बिसरना} ध्यान में न रखना, भुलाना।

बिश्वासी[2] *वि.* {सं. अविश्वासिन्} जिस पर विश्वास न किया जा सके।

बिससना[1] *स.* {सं. विश्वसन} विश्वास या भरोसा करना।

बिससना[2] *वि.* {सं. विशसन} मार डालना; शरीर के अंग काटना।

बिसहना *स.* बिसाहना।

बिसहर[1] पुं. {सं. विषधर} सर्प, साँप।

बिसहर[2] *वि.* {सं. विष + हर} विष का प्रभाव नष्ट करनेवाला।

बिसाँहनी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार की चिड़िया।

बिसा पुं. बिस्वा।

बिसाख *स्त्री.* विशाखा।

बिसात *स्त्री.* {*अ.*} हैसियत, वित्त, औकात; जमा, पूँजी; सामर्थ्य, शक्ति; वह कपड़ा या दफ्ती जिस पर शतरंज या चौपड़ खेलते हैं।

बिसातबाना पुं. {हिं. बिसात + फा. बाना} बिसाती के यहाँ मिलनेवाली चीजें, जैसे–सुई, धागा, कलम, खिलौने आदि।

बिसाती पुं. {हिं. बिसात} बिसातबाने की चीजें बेचनेवाला।

बिसाना[1] *अ.* {सं. वश} वश चलना।

बिसाना[2] *अ.* {हिं. विष + ना (प्रत्य.)} विष का प्रभाव होना, जहर भरना।

बिसायँध *वि.* {सं. वसा = चरबी + गंध} जिसमें सड़ी मछली की-सी गंध हो; *स्त्री.* दुर्गंध।

बिसारना *स.* {हिं. बिसरना} याद न रखना, भूल जाना।

बिसारा *वि.* {सं. विषालु} {*स्त्री.* बिसारी} विषयुक्त, विषाक्त, जहरीला; *स्त्री.* सड़ी मछली की-सी गंध।

बिसास पुं. विश्वास; विश्वासघात।

बिसासिन (नी)[1] *स्त्री.* {सं. अविश्वसनीय} (स्त्री) जिसका विश्वास न हो।

बिसासिन (नी)[2] *स्त्री.* {सं. विश्व + आशिनी} सबको खा जानेवाली, मृत्यु।

बिसासी[1] *वि.* {सं. अविश्वासिन्} {*स्त्री.* बिसासिन, बिसासिनी} जिस पर विश्वास न किया जा सके, अविश्वसनीय; कपटी।

बिसासी[2] पुं. {सं. विश्व + आशिन्} विश्व को खानेवाला, काल।

बिसाह पुं. = विश्वास।

बिसाहना *स.* {हिं. बिसाह + ना (प्रत्य.)} खरीदना, मोल लेना; (विपत्ति, झंझट आदि) जान-बूझकर अपने ऊपर लेना या पीछे लगाना।

बिसाहनी *स्त्री.* {हिं. बिसाहना} मोल ली जानेवाली वस्तु, सौदा।

बिसाहा पुं. {हिं.} मोल ली हुई वस्तु, सौदा।

बिसिख पुं. विशिख।

बिसियिर *वि.* {सं. विषधर} जहरीला, विषैला।

बिसवा *स्त्री.* = वेश्या।

बिसुनना *क्रि. अ.* {हिं.} खाते समय किसी वस्तु का नाक में चढ़ जाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिसूरना *अ.* {सं. विसूरण = शोक} मन में खेद या दुख करना; सिसक-सिसक कर रोना; *स्त्री.* चिंता, फिक्र, सोच।
बिसेख *वि.* विशेष।
बिसेखना *स.* {सं. विशेष} विशेष महत्व देना; विशेषता बतलाना, वर्णन करना; *अ.* विशेषता से युक्त होना।
बिसेन *पुं.* {हिं.} क्षत्रियों की एक शाखा।
बिसेष *वि.* = विशेष।
विसेस *पुं.* = विशेष।
बिसेसर *पुं.* = विश्वेश्वर।
विस्तारना *क्रि. स.* {हिं.} विस्तार करना, फैलाना।
बिसैंधा *वि.* {हिं. बिसाँयध} जिसमें से बिसायँध या दुर्गंध आती हो; मांस, मछली आदि की-सी गंधवाला।
बिस्कुट *पुं.* {अं.} एक प्रकार का विलायती पकवान जो छोटी चिपटी टिकिया के आकार का होता है।
बिस्तर *पुं.* {सं. विस्तर से फा.} बिछाने के कपड़े, बिछौना, बिछावन।
बिस्तर-घाव *पुं.* शय्याव्रण।
बिस्तरना *अ.* {सं. विस्तरण} विस्तृत होना, फैलना या बढ़ना; *स.* फैलाना; किसी बात का विस्तारपूर्वक वर्णन करना।
बिस्तरबंद *पुं.* {फा.} वह डोरी या चमड़े का तस्मा या इन चीजों से युक्त कपड़े, चमड़े आदि का लंबा थैला जिसमें यात्रा के समय बिस्तर या बिछौना बाँधकर ले जाते हैं।
बिस्तरा *पुं.* बिस्तर।
बिस्तार (न) *पुं.* = विस्तार (ण)।
बिस्तारना *स.* {सं. विस्तारण} विस्तार करना, बढ़ाना।
बिस्तुइया *स्त्री.* = छिपकली।
बिस्मिल्लाह *पद* एक अरबी वाक्य का पूर्वार्द्ध जिसका अर्थ है - ईश्वर के नाम से (इसका प्रयोग कोई कार्य आरंभ करते समय या जानवर को जबह करते समय होता है)।
बिस्वांसी *स्त्री.* {हिं. बिस्वा} जमीन की नाप में एक बिस्वे का बीसवाँ भाग।
बिस्वा *पुं.* {हिं. बीसवाँ} एक बीघे का बीसवाँ भाग (जमीन की नाप)।
बिस्वास *पुं.* = विश्वास।
बिहंग *पुं.* {हिं.} पक्षी, परिंदा।
बिहंगी *वि.* {हिं. बेढंगा} कुरूप, भद्दा।
विहंडना *स.* {सं. विघटन} तोड़ना; नष्ट करना; मार डालना।
बिहँसना *अ.* = मुस्कराना, प्रफुल्ल करना।
बिहँसाना *अ.* {सं. विहसन} बिहँसना; खिलना (फूल का); *स.* हँसाना।
बिहँसौंहाँ *वि.* = हँसता हुआ।
बिहग *पुं.* विहंग।
बिहतर *वि.* {हिं.} अधिक अच्छा।
बिहद्द *वि.* बेहद।
बिहतरी *स्त्री.* {हिं.} कुशल, भलाई।
बिह्बल *वि.* {हिं.} विह्वल, व्याकुल।
बिहनी *स्त्री.* अशुभ स्त्री विशेषत: या संतानहीन।
बिहरना[1] *अ.* {सं. विहरण} विहार या सैर करना, घूमना-फिरना।
बिहरना[2] *अ.* {सं. विघटन} फटना; टूटना-फूटना।
बिहराना *अ.* = फटना; *स.* = फाड़ना।
बिहाग *पुं.* ओड़व संपूर्ण जाति का एक राग जो रात के दूसरे पहर में गाया जाता है।
बिहागड़ा *पुं.* {हिं.} संपूर्ण जाति का राग।
बिहान *पुं.* {सं. वि + अह्नि} सवेरा; आनेवाला दूसरा दिन, कल।
बिहाना[1] *स.* {सं. विहीन} छोड़ना।
बिहाना[2] *अ.* {सं. वि + अह्नि} (समय आदि) व्यतीत होना, बीतना, गुजरना।
बिहारना *अ.* {सं. विहरण} विहार या क्रीड़ा करना।
बिहाल *वि.* {फा. बेहाल} विकल, बेचैन; थका हुआ, शिथिल।
बिहिश्त *पुं.* {फा.} स्वर्ग (मुसल.)।
बिहीन, बिहून *वि.* {हिं.} विहीन, रहित, बिना।
बिहुना *क्रि. वि.* {सं. विहीन} छोड़कर, बिना बगैर।
बिहुरना *अ.* बिथुरना।
बिहून *क्रि. वि.* {हिं. विहीन} बिना, बगैर।
बिहोरना *अ.* बिछुड़ना।
बींड *पुं.* {हिं.} गेंडुरी, पिंड, पिंडी, गट्ठर।
बीड़ी *स्त्री.* {हिं.} सूत की लच्छी।
बींदना[1] *स.* चुभाना; बींधना।
बींदना[2] *अ.* {?} अनुमान करना।
बींधना *अ.* {सं. विद्ध} छेदा जाना; *स.* विद्ध करना, बेंधना, छेदना।
बी *स्त्री.* बीबी।
बीका *वि.* {सं. वक्र} टेढ़ा।
बीख *पुं.* {सं. बीखा} कदम, डग।
बीग *पुं.* {सं. वृक} भेड़िया।
बीगना *क्रि. स.* {हिं.} फेंकना, छितराना, गिराना।
बीगहारी *स्त्री.* {हिं.} बीघे के हिसाब से लगाया लगान।
बीघा *पुं.* {सं. विग्रह} जमीन, खेत आदि की बीस बिस्वे की एक नाप।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीच¹ पुं. {सं. द्वीच} किसी पदार्थ का मध्य भाग, मध्य।

मुहा. बीच खेत = खुले मैदान, सबके सामने; अवश्य, जरूर; *बीच में पड़ना* = झगड़ा निपटाने के लिए मध्यस्थ होना; *(किसी से) बीच रखना* = पराया समझना; *बीच में कूदना* = व्यर्थ हस्तक्षेप करना; *(ईश्वर आदि को) बीच में रखकर कहना* = (ईश्वर आदि की) शपथ या कसम खाना।

पद बीच-बीच में = थोड़ी-थोड़ी देर में; थोड़ी-थोड़ी दूरी पर।

दो चीजों के बीच का अंतर या स्थान; अंतर, भेद, फरक, अवकाश; अवसर, मौका; क्रि. वि. अंदर, में।

बीच² *स्त्री.* {सं. वीचि} लहर, तरंग।

बीच-बचाव पुं. {हिं. बीच + बचाव} लड़नेवालों के बीच में पहुँचकर दोनों को लड़ने-झगड़ने से बचाने की क्रिया या भाव।

बीचि *स्त्री.* {सं. वीचि} लहर, तरंग।

बीचु पुं. बीच, अंतर।

बीचोबीच *क्रि. वि.* {हिं. बीच} बिल्कुल या ठीक बीच में।

बीछना *स.* चुनना।

बीछी *स्त्री.* बिच्छू।

बीछू पुं. बिच्छू; बिछूआ (हथियार या गहना)।

बीज¹ पुं. {सं.} फूलवाले पौधों या अनाजों के वे दाने अथवा वृक्षों के फलों की वे गुठलियाँ जिनसे वैसे ही नये पौधे, अनाज या वृक्ष उत्पन्न होते हैं, बीया; प्रधान कारण, मूल, जड़।

मुहा. बीज बोना = किसी बात या कार्य का आरंभ या सूत्रपात करना, जैसे वैमनस्य का बीज बोना।

हेतु, कारण; अव्यक्त संख्यासूचक संकेत, विशेष बीजगणित; तंत्र में वह अव्यक्त ध्वनि या शब्द जिसमें किसी देवता को अनुकूल या प्रसन्न करने की शक्ति मानी जाती है; 'वीर्य'।

बीज² *स्त्री.* {सं. विद्युत्} बिजली।

उदा. आँगन बीज करत मन चोटैं। घर में अति अधार कट धौटें—**नन्ददास**।

बीजक पुं. {सं. वीजक} सूची, तालिका; वह सूची जिसमें भेजे हुए माल का ब्योरा, दर आदि लिखी हो (इन्वॉयस); गड़े हुए धन की वह सूची जो उसके साथ मिलती है; कबीरदास के पदों के एक संग्रह का नाम।

बीजगणित पुं. {सं.} गणित का वह प्रकार जिसमें अक्षरों को संख्या के स्थान पर मानकर अज्ञात मान संख्याएँ जानी जाती हैं (अलजबरा)।

बीजन पुं. पंखा।

बीजना पुं. बोना।

बीजपूर पुं. {सं. वीजपूर} बिजौरा नींबू; चकोतरा।

बीजमंत्र पुं. {सं.} किसी देवता की उपासना का मूल मंत्र; वह मूल तत्व या सिद्धांत जिससे कोई कार्य तुरंत सिद्ध हो जाए, गुर।

बीजरी *स्त्री.* बिजली।

बीजा *वि.* {सं. द्वितीय} दूसरा।

बीजाक्षर पुं. {सं.} तंत्र में किसी बीजमंत्र का पहला अक्षर।

बीजी *स्त्री.* {सं. बीज + हिं. ई (प्रत्य.)} गिरी, मींगी; गुठली।

बीजु (री) *स्त्री.* बिजली।

बीजू *वि.* {सं. बीज + हिं. ऊ (प्रत्य.)} (वृक्ष का फल) जो बीज बोने से उत्पन्न हुआ हो, (कलमी से भिन्न) जैसे बीजू आम; पुं. बिज्जू।

बीझ *वि.* {सं. विद्ध?} सघन, घना।

बीझना *अ.* बझना।

बीझा *वि.* {सं. विजन} निर्जन, एकांत।

बीट *स्त्री.* {सं. विट्} चिड़ियों की विष्ठा या मल।

बीड़ *स्त्री.* {हिं. बीड़ा} एक के ऊपर एक रखे हुए बहुत से सिक्के।

बीड़ा पुं. {सं. वीटक} पान का वह रूप जो कत्था, चूना लगाकर उसे लपेटने या तह करने पर होता है, गिलौरी।

मुहा. बीड़ा उठाना = कोई विकट काम करने का भार अपने ऊपर लेना; *बीड़ा जोड़ना या जोरना* = बीड़ा उठाना; *बीड़ा देना* = किसी आगत व्यक्ति को चलने के समय पान देना (विदाई का सूचक)।

गाने-बजानेवाले दलों आदि को किसी अवसर के लिए नियत करते समय दिया जानेवाला धन, साई।

मुहा. बीड़ा देना = पेशगी धन देकर गाने-बजाने आदि के लिए किसी को नियत करना।

बीड़िया पुं. {हिं.} बीड़ा उठानेवाला, अगुआ।

बीड़ी *स्त्री.* {हिं. बीड़ा} बीड़; होठों पर की मिस्सी की धड़ी; दाँत और होंठ रँगने का मंजन; पत्ते में लपेटा हुआ सुरती का चूर जो चुरुट आदि की तरह सुलगाकर पिया जाता है।

बीतना *अ.* {सं. व्यतीत} समय विगत होना या काटना, गुजरना; घटित होना, घटना, पड़ना, जैसे जिसपर बीते, वही जाने; समाप्त होना, खतम होना, न रह जाना, जैसे सबके भय बीते।

बीता पुं. बित्ता।

बीथित *वि.* व्यथित।

बीध *क्रि. वि.* {सं. विधि} विधिपूर्वक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीधना *अ.* {हिं. बींधना} उलझना, फँसना; आर-पार होना, छेदा जाना; युक्त होना; किसी प्रकार के प्रभाव के अधीन होना; *स.* बींधना।

बीन *स्त्री.* {सं. वीणा} सितार की तरह का एक प्रसिद्ध बड़ा बाजा, वीणा; सँपेरों के बजाने की तूमड़ी।

बीनकार *पुं.* {हिं. बीन + फा. कार} वह जो बीन बजाता हो, बीन बजानेवाला।

बीनना *स.* चुनना; बींधना; बुनना।

बीफै *पुं.* {सं. बृहस्पति, प्रा. बिहफै} बुधवार के बाद और शुक्रवार के पहले का दिन, गुरुवार।

बीबी *स्त्री.* {फा.} भले घर की स्त्री, महिला; पत्नी, जोरू।

बीभत्स *पुं.* {सं.} काव्य के नौ रसों में से एक; *वि.* पापी।

बीभत्सु *पुं.* {सं.} अर्जुन का नाम।

बीमा *पुं.* {फा. बीम = भय मि. सं. भीम} किसी प्रकार की संभावित हानि पर कुछ रकम देने की जिम्मेदारी, जो कुछ निश्चित धन एक साथ या कुछ किस्तों में लेकर उसके बदले में ली जाती है (इन्शयोरेंस); भेजा जानेवाला वह पत्र या पारसल जिसकी संभावित क्षति की पूर्ति का इस प्रकार डाकखाने ने भार लिया हो।

बीमा-पत्र *पुं.* {हिं. बीमा + सं. पत्र} वह पत्र लेख जिसमें बीमे से संबंध रखनेवाली सब बातें या शर्तें रहती हैं (पॉलिसी)।

बीमार *वि.* {फा.} जिसे कोई बीमारी हुई हो, रोगी।

बीमारी *स्त्री.* {फा.} रोग, व्याधि; झंझट; बुरी आदत।

बीय *पुं.* बीज।

बीया[1] *वि.* {सं. द्विती} दूसरा।

बीया[2] *पुं.* {सं. बीज} वृक्ष या पौधे का बीज।

बीर *पुं.* {सं. वीर} भाई, भ्राता; *वि.* बहादुर। *स्त्री.* सखी, सहेली; कान का एक गहना, तरना, बीरी; कलाई में पहनने का एक गहना; गोचर भूमि, चरागाह।

बीरउ *पुं.* बिरवा।

बीरज *पुं.* वीर्य।

बीरन *पुं.* {सं. वीर} भाई।

बीरनि *स्त्री.* {हिं.} कान में पहनने का गहना।

बीर-बहूटी *स्त्री.* {सं. वीर + वधूटी} गहरे लाल रंग का एक छोटा, सुंदर और कोमल बरसाती कीड़ा, इंद्रवधू।

बीरा *पुं.* {हिं. बीड़ा} {*स्त्री.* अल्पा. बीरी} बीड़ा; देवता के प्रसाद के रूप में मिलनेवाले फल-फूल आदि।

बीरी *स्त्री.* {हिं. बीड़ा} पान का बीड़ा; बीड़ी; बीर (गहना)।

बीरो *पुं.* {हिं. बिरवा} वृक्ष, पेड़।

बील[1] *वि.* {सं. विल} पोला, खोखला; *पुं.* नीची भूमि।

बील[2] *पुं.* {सं. बीज-मंत्र} मंत्र।

बीवी *स्त्री.* बीबी।

बीस *वि.*{सं. विंशति} जो गिनती में उन्नीस से एक अधिक हो, 20; किसी से कुछ बढ़कर या अच्छा।

बीस बिस्वे क्रि. *वि.* पूरी तरह से, निश्चित रूप से।

बीसना {हिं. क्रि. *स.*} चौसर आदि खेलने हेतु बिसात बिछाना।

बीसरना *क्रि.* {हिं. सं.} भूलना।

बीसियों *वि.* बीसों।

बीसी *स्त्री.* {हिं. बीस} बीस चीजों का समूह, कोड़ी; ज्योतिष में साठ संवत्सरों के बीस-बीस वर्षों के तीन विभागों में से कोई एक; बीस गाहियों का सैकड़ा।

बीसों *वि.*{हिं. बीस} कई बीस; बीस से बहुत अधिक, जैसे बीसों वाक्य, बीसों पुस्तकें।

बीह *वि.* = बीस।

बीहड़ *वि.* {सं. विकट} जो सरल न हो; ऊँचा-नीचा, ऊबड़-खाबड़।

बीहर *वि.* {?} अचल, स्थावर।

बुंद *स्त्री.* बूँद।

बुँदका *पुं.* {सं. विंदुक} {*स्त्री.* अल्पा. बुँदकी} कोई गोल और बड़ा दाग या धब्बा; माथे पर लगाया जानेवाला गोल टीका; बुंदा।

बुँदकी *स्त्री.* {सं. विंदु+हिं. की (प्रत्य.} छोटी गोल बिंदी धब्बा।

बुँदवान {हिं. *पुं.*} रिमझिम बरसात।

बुंदा *पुं.* {सं. विंदु} कान में पहनने का एक गहना, लोलक; माथे पर लगाने की बिंदी, टिकुली।

बुँदिया *स्त्री.* बूँदी।

बूँदीदार {हिं. *वि.*} जिस पर छोटी-छोटी बिंदियाँ बनी हैं।

बुँदेलखंड {हिं. *पुं.*} बुंदेलों का देश-उत्तर प्रदेश का पश्चिमी भाग।

बुँदेलखंडी {हिं. *वि.*} बुंदेलों की भाषा।

बुँदेला {हिं. *पुं.*} राजपूतों का भेद।

बुँदोरी *स्त्री.* {हिं. बूँदी} बुँदिया या बूँदी नाम की मिठाई।

बुआ *स्त्री.* {देश.} पिता की बहन, फूफी; बड़ी बहन (मुसल.)।

बुक {हिं. *स्त्री.*} कलफवाला कपड़ा (ऊं) पुस्तक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुकचा पुं. {तु. बुकच.} {*स्त्री.* अल्पा. बुकची} गठरी।

बुकना *स.* = भक्षना।

बुकनी *स्त्री.* {हिं. बूकना + ई (प्रत्य.)} महीन पीसा हुआ चूर्ण।

बुकपोस्ट पुं. {अं.} डाकखाने से पुस्तक, पत्रिका आदि अन्यत्र भेजने का एक ढंग।

बुकवा पुं. {हिं. बूकना} उबटन; बुक्का।

बुक्का पुं. {हिं. बूकना = पीसना} अबरक (अभ्रक) का चूरा।

बुखार पुं. {अं.} वाष्प, भाप; शरीर में होनेवाला ज्वर (रोग), ताप; दुख, क्रोध आदि का आवेग।

मुहा. जी का बुखार निकालना = मन का दुख या व्यथा कहकर प्रकट करना और इस प्रकार जी हलका करना।

बुग पुं. {हिं.} मच्छर।

बुजदिल *वि.* {फा.} {*भाव.* बुजदिली} कायर, डरपोक।

बुजुर्ग *वि.* {सं. वज्रक} (शक्तिशाली) और पहलवी बजर्ग से {फा.} {(भाव. बुजुर्गी} वृद्ध, बड़ा; पु. बहु. बाप-दादा; पूर्वज, पुरखे।

बुझना *अ.* {?} अग्नि का जलकर आप-से-आप या जल पड़ने के कारण समाप्त होना, जैसे आग बुझना; गरम चीज का पानी में पड़कर ठंडा होना; पानी से, तपाई हुई चीज का छींका जाना; उत्साह आदि मन्द पड़ना।

बुझाना[1] *स.* {हिं. बूझना का *स.*} किसी पदार्थ के आग से जलने का अंत करना, अग्नि को शीतल या शांत करना; तपी हुई चीज पानी में डालकर ठंडी करना।

बुझाना[2] *स.* {हिं बुझना का प्रे. रूप} किसी को बूझने में प्रवृत्त करना; बोध या ज्ञान कराना, समझाना; धैर्य या सान्त्वना देना, जैसे समझाना-बुझाना।

बुझौवल *स्त्री.* पहेली।

बुट *स्त्री.* बूटी।

बुटना *अ.* {?} भागना।

बुड़ना *अ.* = डूबना।

बुड़की {हिं. *स्त्री.*} डुबकी, गोता।

बुड़बुड़ाना *अ.* {अनु.} मन ही मन में कुढ़कर धीरे-धीरे कुछ बोलना, बड़-बड़ करना।

बुड़ाना *स.* = डुबाना।

बुड़ीत *वि.* {हिं. बूड़ना} (प्राप्य धन) जो डूब गया हो या वसूल न हो सकता हो।

बुड्ढा *वि.* {सं. वृद्ध} {*स्त्री.* बुढ़िया} 50 वर्ष से अधिक अवस्थावाला, वृद्ध (मनुष्यों के लिए); जो साधारणतः मानी जानेवाली पूर्ण आयु का आधे से अधिक भाग पार कर चुका हो।

बुढ़वा *वि.* = बूढ़ा।

बुढ़ाई *स्त्री.* = बुढ़ापा, वृद्धवस्था।

बुढ़ाना *अ.* {हिं. बूढ़ा} वृद्ध या बूढ़ा होना।

बुढ़ापा पुं. {हिं. बूढ़ा} बुड्ढे होने की अवस्था, वृद्धावस्था।

बुढ़िया *स्त्री.* {सं. वृद्धा} 50-60 वर्ष या इससे अधिक अवस्थावाली स्त्री, वृद्धा।

बुढ़िया का काता पु. एक प्रकार की मिठाई जो काते हुए सूत के लच्छे की तरह होती है।

बुढ़ौती *स्त्री.* बुढ़ापा, वृद्धावस्था।

बुत पुं. {फा. मि. सं. बुद्ध} मूर्ति, प्रतिमा; वह जिससे प्रेम किया जाए, प्रियतम।

बुतना *अ.* = बुझना।

बुताना *क्रि.* {हिं. सं.} बुझाना; *स.* = बुझाना।

बुताना *अ.* = बुझना।

बुत्ताना {हिं. पुं.} बहाना, धोखा देना।

बुताम पुं. {सं. बटन ?} बटन; घुंडी।

बुत्ता पुं. {देश.} धोखा, झाँसा-पट्टी; बहाना, हीला।

बुदबुद पुं. {अनु.} बुलबुलों के फटने का शब्द; पानी का बुलबुला।

बुदबुदा {हि. पुं.} बुलबुला, बुल्ला।

बुदबुदाना *अ.* {अनु.} बुदबुद शब्द होना; अस्फुट स्वर में बोलना।

बुदबुदाहट *स्त्री.* बुदबुद शब्द; अस्फुट वाणी।

बुद्ध *वि.* {सं.} जगा हुआ, जागृत; ज्ञानी; विद्वान; पु. बौद्ध धर्म के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध महात्मा जिनका जन्म ई. पू. 550 में हुआ था।

बुद्धत्व {सं. पुं.} बुद्ध का धर्म।

बुद्धि *स्त्री.* {सं.} सोचने-समझने और निश्चय करने की वृत्ति या मानसिक शक्ति, अक्ल, प्रज्ञा (इन्टलेक्ट)।

बुद्धिजीवी (जीविन्) *वि.* {सं.} वह जो केवल बुद्धिबल के जीविका उपार्जन करता हो, जैसे लेखक, चिकित्सक, प्राध्यापक आदि।

बुद्धिभ्रंश पुं. {सं.} पागलपन के अन्तर्गत एक प्रकार का मानसिक रोग जिसमें बुद्धि ठीक तरह से और पूरा काम नहीं देती (डिमेन्शिआ)।

बुद्धिमत्ता *स्त्री.* {सं.} बुद्धिमान होने का भाव, समझदारी, अक्लमंदी।

बुद्धिमान, बुद्धिमान् *वि.* {सं.} {*भाव* बुद्धिमत्ता} जिसमें बहुत बुद्धि हो, समझदार।

बुद्धिमानी *स्त्री.* बुद्धिमत्ता।

बुद्धिवंत *वि.* = बुद्धिमान।

बुद्धिवाद पुं. {सं.} {*वि.* बुद्धिवादी} यह सिद्धांत कि मनुष्य को सब बातों का ज्ञान बुद्धि के द्वारा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

zed by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही प्राप्त होता है (इंटलेकचुअलिज्म); वह सिद्धांत जिसमें केवल बुद्धि-संगत या समझ में आने वाली ही बातें मानी जाती हैं (रैशनलिज्म)।

बुद्धिशाली *वि.* बुद्धिमान।

बुद्धिहीन *वि.* {सं.} मूर्ख, बेवकूफ।

बुदबुद *पुं.* {सं.} पानी का बुलबुला, बुल्ला।

बुधंगड़ *पुं.* {हिं. बुद्धू} मूर्ख, बेवकूफ।

बुध *पुं.* {सं.} एक प्रसिद्ध ग्रह जो सूर्य के बहुत पास है (मरकरी); देवता; बुद्धिमान और विद्वान व्यक्ति।

बुधा *स्त्री.* {सं.} जटामासी।

बुधान *पुं.* {सं.} गुरु, कवि।

बुधवान *वि.* बुद्धिमान।

बुधि *स्त्री.* = बुद्धि।

बुधित *वि.* {सं.} ज्ञात, जाना हुआ।

बुधिल *वि.* {सं.} विद्वान्, पंडित।

बुधिवाही *वि.* बुद्धिमान।

बुनकर *पुं.* {हिं. बुनना} कपड़ा बुननेवाला, जुलाहा।

बुनकरी *स्त्री.* {हिं. बुनकर} कपड़े आदि बुनने का काम बिनाई।

बुनत *स्त्री.* {हिं. बुनना} बुनने की क्रिया या भाव, बुनाई।

बुनती *स्त्री.* {हिं. बुनना} बुनने की क्रिया या ढंग, बुनाई।

बुनना *स.* {सं. वयन} तागों की सहायता से करघे पर कपड़ा तैयार करना, जैसे साड़ी बुनना; हाथ या यंत्र से कुछ सूतों को ऊपर और कुछ को नीचे से निकालकर कोई चीज बनाना जैसे मोजा या गंजी बुनना।

बुना *स्त्री.* {फा. बिन्आ} मूल कारण, आधार।

बुनाई *स्त्री.* {हिं. बुनना + ई (प्रत्य.)} बुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

बुनावट *स्त्री.* {हिं. बुनना + आवट (प्रत्य.)} बुनने की क्रिया, भाव या ढंग।

बुनिया *पुं.* बुनकर।

बुनियाद *स्त्री.* {पहलवी बुन (आधार) से फा., मि., सं. बुध्न (पेंदा या तल)} जड़, मूल; नींव; असलियत, वास्तविकता।

बुबुकना *अ.* {हिं. क्रि.} ऊँचे स्वर में रोना।

बुनियादी *वि.* {फा.} बुनियाद या जड़ से संबंध रखनेवाला; बिल्कुल प्रारंभिक, आधारिक।

बुबुकारी *स्त्री.* {अनु.} जोर से रोने का शब्द।

बुभुक्षा *स्त्री.* {सं.} खाने की चाह।

बुभुक्षित *वि.* {सं.} भूखा, क्षुधित।

बुभुक्षु *वि.* {सं.} जिसको भोजन करने की इच्छा हो।

बुभूषा *स्त्री.* {सं.} यश की इच्छा।

बुयाम *पुं.* {अं. ?} चीनी मिट्टी का एक प्रकार का बड़ा पात्र।

बुरकना *स.* {अनु.} चूर्ण आदि किसी चीज पर छिड़कना, भुरभुराना।

बुरका *पुं.* {अ.} एक प्रकार का पहनावा जिससे मुसलमान स्त्रियाँ सिर से पैर तक के सब अंग ढकती हैं।

बुरकाना *स.* {हिं. कि.} छिड़कने का काम दूसरे से कराना।

बुरा *वि.* {सं. विरूप} अच्छा या उत्तम का उलटा, निकृष्ट, मंद, खराब।

बुराई *स्त्री.* {हिं. बुरा + ई (प्रत्य.)} बुरा होने का भाव, बुरापन, खराबी; अवगुण, दोष, दुर्गुण; शिकायत, निंदा; द्वेष, दुर्भाव।

बुरादा *पुं.* {फा.} लकड़ी चीरने पर निकलनेवाला उसका चूर्ण, कुनाई।

बुरा-भला *पुं.* हानि-लाभ; गाली-गलौज।

बुरुश *पुं.* {अं. ब्रश} रँगने या सफाई करने के लिए खास तरह की बनी हुई कूँची।

बुर्ज *पुं.* {अ.} किले आदि की दीवारों में वह ऊपरी भाग जिसमें बैठने के लिए थोड़ा स्थान होता है, गरगज; मीनार का ऊपरी भाग; इस आकार की इमारत की कोई बनावट।

बुर्द *वि.* {फा.} डूबा हुआ; नष्टप्राय।

बुलंद *वि.* {फा. बुलंद मि. सं. बृहत्} ऊँचा, उच्च।

बुलकारना *स.* पुचकारना।

बुलडोजर *पुं.* {अं.} एक बड़ा सचल यंत्र जिससे मकान, पेड़ आदि गिराए जाते हैं।

बुलबुल *स्त्री.* {फा.} एक प्रसिद्ध सुरीला बोलनेवाली काली छोटी चिड़िया।

बुलबुला *स्त्री.* {सं. बुद्बुद} पानी का बुल्ला, बुद्बुद।

बुलवाना *स.* {हिं.} 'बुलाना' का प्रे.।

बुलाक *स्त्री.* {तु.} नथ में का लंबोतरा या सुराहीदार मोती।

बुलाकी *पुं.* {तु. बुलाक} एक प्रकार का घोड़ा।

बुलाना *स.* {हिं. 'बोलना' का स. रूप} अपने पास आने के लिए पुकारकर कहना, आवाज देना, पुकारना; किसी को बोलने में प्रवृत्त करना।

बुलावा *पुं.* {हिं. बुलाना} बुलाने की क्रिया या भाव, निमंत्रण।

बुलाह *पुं.* {सं. बोल्लाह} वह घोड़ा जिसकी गरदन और दुम के बाल पीले हों।

बुलाहट *स्त्री.* बुलावा।

बुलौआ *पुं.* बुलावा।

बुल्लन *पुं.* {हिं.} मुख, चेहरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुल्ला पुं. बुलबुला।
बुस पुं. {सं.} अनाज के ऊपर का छिलका।
बुसना अ. {हिं. बासी} बासी हो जाना; (खाद्य पदार्थ का) बदबू छोड़ना।
बुहारना स. {सं. बहुकर} झाड़ू से जगह साफ करना, झाड़ देना।
बुहारी स्त्री. झाड़ू।
बूँद स्त्री. {सं. विंदु} गिरने के समय जल आदि तरल पदार्थों का वह थोड़ा अंश जो प्रायः छोटी गोली के समान बन जाता है, कतरा (ड्राप); पुरुष का वीर्य, शुक्र; बहुत छोटी बूटियों का एक प्रकार का कपड़ा।
बूँदा पुं. {हिं.} बड़ी टिकली, लंबोतरा मोती जो स्त्रियाँ कान या नाक में पहनती हैं।
बूँदा-बाँदी स्त्री. {हिं. बूँद} हल्की बूँदों की थोड़ी वर्षा।
बूँदी स्त्री. {हिं. बूँद + ई (प्रत्य.)} बेसन के तले हुए छोटे गोल टुकड़े; इन टुकड़ों से बना हुआ लड्डू; बरसनेवाले जल की बूँदें।
बू स्त्री. {फा.} गंध, महक; दुर्गंध।
बूआ स्त्री. {देश.} पिता की बहन, बुआ; बड़ी बहन (मुसल.)।
बूई स्त्री. {हिं.} पौधा जिसको जलाकर सज्जीखार निकाला जाता है।
बूक पुं. {हिं. बकोटा} कोई वस्तु उठाने के लिए हथेली की गहरी की हुई मुद्रा, चंगुल, बकोटा।
बूकना स. {देश.} महीन पीसना; केवल योग्यता दिखाने के लिए बातें करना, जैसे अंग्रेजी बूकना।
बूका पुं. गंगा-बरार; बुक्का।
बूकी स्त्री. बुकनी।
बूगा पुं. {हिं.} भूसा।
बूचड़ पुं. {अं. बूचर} कसाई।
बूचा वि. {?} जिसके कान कटे हुए हों, कनकटा; जो किसी अंग के न होने या कटे होने के कारण भद्दा या बुरा जान पड़े।
बूची पुं. {हिं.} वह भेड़ जिसके कान बाहर न निकले हों।
बूजना स. {?} धोखा देना।
बूझ स्त्री. {सं. बुद्धि} समझ, बुद्धि, अक्ल; बुझौवल, पहेली।
बुझना स. {सं. बुध्य} समझना, जानना; पूछना; पहेली का उत्तर निकालना।
बूट[1] पुं. {सं. विटप} चने का हरा पौधा या दाना; पेड़ या पौधा।
बूट[2] पुं. {अं.} एक प्रकार का जूता।
बूटना अ. {?} भागना।
बूटनि स्त्री. बीर-बहूटी।
बूटा पुं. {सं. विटप} छोटा वृक्ष, पौधा; कपड़ों, दीवारों आदि पर बने हुए; फूलों या वृक्षों आदि के आकार के चिह्न, बड़ी बूटी।
बूटी स्त्री. {हिं. 'बूटा' का स्त्री. अल्पा. रूप} वनस्पति, जड़ी; भाँग; छोटे; फूलों के-से वे चिन्ह जो किसी चीज पर बने होते हैं, छोटा बूटा।
बूड़ना अ. = डूबना।
बूड़ा पुं. {हिं. डूबना} जल की बाढ़; आदमी के डूबने भर का पानी।
बूढ़ स्त्री. {हिं. 'बूढ़ा' का स्त्री.} बीरबहूटी। (वज्र में बीरबहूटी को सावन की बूढ़ी कहते हैं, जिससे यह शब्द बना है।
उदा. गूढ़मानु मन क्यों रहै, भये बूढ़ रंग नैन—बिहारी।
बूढ़ना अ. = डूबना।
बूढ़ा वि. = बुड्ढा।
बुभुक्षा वि. बुड्ढा।
बूता पुं. {हिं. बित्त} कोई काम करने की शक्ति, सामर्थ्य।
बूना पुं. {हिं.} चिनार नामक वृक्ष।
बूरना अ. = डूबना।
बूरा पुं. {हिं. भूरा} भूरे रंग की कच्ची चीनी, शक्कर; साफ की हुई चीनी; बुकनी, चूर्ण।
बूरी स्त्री. {हिं.} छोटी बनस्पति।
बृच्छ पुं. = वृक्ष।
बृहत् वि. {सं.} बहुत बड़ा, विशाल।
बृहत्तर वि. {सं. बृहत् + तर (प्रत्य.)} किसी बड़े की तुलना में और अधिक बड़ा; उस रूप, प्रकार या विस्तार का जिसमें किसी मूल पदार्थ, देश आदि के अतिरिक्त उसके प्रभाव से युक्त आसपास के कुछ और पदार्थ या देश भी सम्मिलित हों, जैसे बृहत्तर भारत = भारत के अतिरिक्त श्रीलंका, बर्मा, सुमात्रा, मलाया आदि देश, जिनपर किसी समय भारत का यथेष्ट प्रभाव या बहुत-कुछ अधिकार था (ग्रेटर)।
बृहदंग पुं. {सं.} मतंगज, हाथी।
बृहदश्व पुं. {सं.} एक ऋषि।
बृहद्वर्ण पुं. {सं.} सोनामाखी।
बृहद्वल्ली स्त्री. {सं.} करेला।
बृहद् वि. {सं.} बहुत बड़ा, विशाल।
बृहस्पति पुं. {सं.} सब देवताओं के गुरु, एक प्रसिद्ध वैदिक देवता; सोर जगत का पाँचवाँ ग्रह।
बेंग पुं. {सं. भेक} मेढ़क।
बेंच स्त्री. {अं.} लकड़ी, लोहे आदि की एक प्रकार की लंबी चौकी; सरकारी न्यायालय के न्यायकर्ता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

D by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेंट (ठ) *स्त्री.* {देश.} औजारों में लगी हुई काठ की मूठ, दस्ता।

बेंठ (ट) *पुं.* {हिं.} मूठ।

बेंड़ *स्त्री.* {हिं. बेड़ा} टेक, चाँड़।

बेंड़ना *स.* बेढ़ना।

बेंड़ा *वि.* {सं. विकांड} जो सीधा खड़ा न हो सके, आड़ा, तिरछा; विकट, कठिन।

बेंत *पुं.* {सं. वेतस्} एक प्रसिद्ध लता जिसके डंठलों से छड़ियाँ और टोकरियाँ बनती और कुर्सियाँ बुनी जाती हैं (केन)।

बेंतसाज *पुं.* {हिं. + फा.} बेंत की टोकरियाँ, कुर्सियाँ आदि बनानेवाला।

बेंदा *पुं.* {सं. विंदु} माथे पर लगाने की गोल बड़ी बिन्दी, बड़ी गोल टिकली; बेंदी।

बेंदी *स्त्री.* {सं. विंदु, हिं. बिंदी} बिंदी; दावनी (गहना)।

बेंवत *स्त्री.* ब्योंत।

बे *उप.* {फा., मि. सं. वि} रहित, हीन, जैसे बेहोश, बेदम।

विसम्यादि. {हिं. हे} तिरस्कारपूर्ण संबोधन।

बेअंत *वि.* {हिं. बे + सं. अंत} जिसका कोई अन्त न हो, अनंत, बेहद।

बेअदब *वि.* {फा. बे + *अ.* अदब} {भाव. बेअदबी} जो बड़ों का आदर-सम्मान करना न जाने या न करे, उद्दंड।

बेअदबी *स्त्री.* {फा.} बेअदब का-सा बरताव।

बेअसर *वि.* {फा.} प्रभावहीन, अप्रभावी।

बेआबरू *वि.* {फा.} बेइज्जत।

बेइज्जत *वि.* {फा. बे + *अ.* इज्ज़त} {भाव. बेइज़्ज़ती} जिसकी कुछ इज्जत न हो, अप्रतिष्ठित।

बेइज्जती *स्त्री.* {फा.} अपमान, अप्रतिष्ठा।

बेईमान *वि.* {फा.} {भाव. बेईमानी} जो ईमान या धर्म का विचार न करे, अधर्मी; छल-कपट या और किसी प्रकार का अनाचार करनेवाला।

बेईमानी *स्त्री.* {फा.} बदनीयती।

बेकनाट *पुं.* {सं.} सूदखोर।

बेकदर *वि.* {फा. बेकद्र} {भाव. बेकदरी} बेइज्जत, अप्रतिष्ठित।

बेकदरा *वि.* {फा. बेकद्र} जिसकी कोई कदर या आदर न हो; जो कदर या आदर करना ना जाने; जो किसी का महत्व न मानता हो।

बेकरार *वि.* {फा.} {भाव. बेकरारी} जिसे शान्ति या चैन न हो, विकल।

बेकरारा *वि.* बेकरार; *वि.* = विकराल।

बेकरा *पुं.* {हिं.} चौपायों का रोग।

बेकरी *स्त्री.* {अं.} बिस्कुट, डबलरोटी आदि बनाने का कारखाना।

बेकल *वि.* {सं. विकल} व्याकुल।

बेकली *स्त्री.* {हिं. बेकल + ई (प्रत्य.)} घबराहट, बेचैनी, व्याकुलता; स्त्रियों का गर्भाशय-संबंधी एक रोग।

बेकसूर *वि.* {फा. + *अ.*} जिसका कोई कसूर न हो, निर्दोष, निरपराध।

बेकहा *वि.* {हिं. बे + कहना} किसी का कहना न माननेवाला, उद्धत।

बेकाम *वि.* {हिं. बे + काम} जिसे कोई काम न हो, निकम्मा; निरर्थक।

बेकायदा *वि.* {फा. बे + *अ.* कायद:} कायदे या नियम के विरुद्ध।

बेकार *वि.* {फा.} {भाव. बेकारी} निकम्मा, निठल्ला; निरर्थक, व्यर्थ; जिसके हाथ में जीविका-निर्वाह के लिए कोई काम-धंधा न हो (अनेम्पलायड)।

क्रि. वि. बिना किसी अर्थ या प्रयोजन के, व्यर्थ, बेफायदा।

बेकारी *स्त्री.* {फा.} वह अवस्था जिसमें जीविका-निर्वाह के लिए मनुष्य के हाथ में कोई काम-धंधा नहीं होता (अनेम्पलायमेंट)।

बेख *पुं.* भेष।

बेखटके *क्रि. वि.* {हिं. बे + हिं. खटका} बिना किसी संकोच के, निस्संकोच।

बेखबर *वि.* {फा. बेख़ब्र} {भाव. बेखबरी} अनजान; नावकिफ; बेहोश।

बेखुर *पुं.* {हिं.} एक चिड़िया।

बेग[1] *पुं.* वेग।

बेग[2] *पुं.* {तु.} {स्त्री. बेगम} सरदार।

बेग[3] *पुं.* {अं. बेग} एक प्रकार का थैला।

बेगड़ी *पुं.* {सं. वैकटिक = जौहरी, प्रा. बेगड़िअ} रत्न-परीक्षक, जौहरी; वह जो नगीनों आदि को काट या तराशकर उन्हें सुडौल बनाता हो, हीरा-तराश।

बेगना *क्रि. अ.* {हिं.} शीघ्रता करना।

बेगम *स्त्री.* {तु. बेग का स्त्री रूप} रानी, राजपत्नी; स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द; पत्नी, जोरू, जैसे बेगम मुहम्मद अली।

बेगर *वि.* बेघर; *क्रि. वि.* बगैर।

बेगरज *वि.* {फा. बे + *अ.* ग़रज} जिसे कोई गरज या परवाह न हो।

बेगसर *पुं.* {हिं.} खच्चर।

बेगाना *वि.* {फा.} गैर, दूसरा, पराया; अपरिचित, अनजान।

बेगार *स्त्री.* {फा.} बिना मजदूरी दिए जबरदस्ती लिया जानेवाला काम; वह काम जो मन लगाकर न किया जाए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGan

बेगारी *स्त्री.* {फा.} बेगार में काम करनेवाला आदमी; बेगार।

बेगि *क्रि. वि.* {सं. वेग} जल्दी से।

बेगुनाह *वि.* {फा.} {*भाव.* बेगुनाही} जिसने कोई गुनाह न किया हो, निरपराध, बेकसूर।

बेचक *पुं.* {हिं. बेचना} बेचनेवाला।

बेचना *स.* {सं. विक्रय} मूल्य लेकर किसी को कुछ देना, विक्रय करना।

बेचवाल *पुं.* {हिं. बेचना} बेचनेवाला।

बेचान *स्त्री.* {हिं. बेचना} बेचने की क्रिया या भाव, बेची।

बेचारा *वि.* {फा.} दीन और निस्सहाय, सम्बल रहित।

बेची *स्त्री.* {हिं. बेचना} बेचने की क्रिया या भाव, विक्रय (डिस्पोज़ल); वह लेख जो हुंडी आदि की पीठ पर उसे बेचनेवाला यह सूचित करने के लिए लिखता है कि मैंने इसे अमुक के हाथ बेच दिया।

बेचीलेख *पुं.* अनुलेख।

बेचूँ *वि.* {फा.} उपमारहित, अनुपम (ईश्वर का विशेषण)।

बेचू *वि.* {हिं. बेचना} बेचनेवाला।

बेचून *वि.* {फा. बेचूँ = अनुपम} जिसकी बराबरी का और कोई न हो, अनुपम (ईश्वर का एक विशेषण)।

बेचैन *वि.* {फा.} {*भाव.* बेचैनी} जिसे चैन न मिलता हो; व्याकुल।

बेचैनी *स्त्री.* {फा.} घबराहट, व्याकुलता।

बेजबान *वि.* {फा. बेज़बान} जिसमें बोलने की शक्ति न हो; गूँगा, मूक; जो विरोध करना न जानता हो, दीन।

बेजरूरी *वि.* {फा. बेज़रूरी} अनावश्यक।

बेजा *वि.* {फा.} अनुचित, नामुनासिब।

बेजान *वि.* {फा.} जिसमें जान न हो, निर्जीव; मुरदा, मृतक; मुरझाया या कुम्हलाया हुआ; बहुत दुर्बल या कमजोर।

बेजाब्ता *वि.* {फा. + अ.} {*भाव.* बेजाब्तगी} जाब्ते या नियम आदि के विरुद्ध।

बेजोड़ *वि.* {फा. बे + हिं. जोड़} जिसमें जोड़ न हो, अखंड; जिसकी जोड़ी का और कोई न हो, अद्वितीय (यूनीक)।

बेझ *पुं.* {सं. वेध्य} लक्ष्य।

बेझड़ा *पुं.* {हिं.} गेहूँ, जौ, चना आदि में से दो, तीन या सब मिले हुए अन्न।

बेझना *स.* {सं. वेधन} विद्ध करना, बेधना।

बेझा *पुं.* {सं. बेध} निशाना, लक्ष्य।

बेट[1] *पुं.* {सं. विष्टि} बेगार।

बेट[2] *स्त्री.* बेटा।

बेट[3] *क्रि. वि.* {?} वास्ते, लिए।

बेटकी *स्त्री.* = बेटी।

बेटला *पुं.* = बेटा।

बेटा *पुं.* {सं. बटु = बालक} {*स्त्री.* बेटी} नर संतान, पुत्र, लड़का।

बेटी *स्त्री.* {हिं. बेटा} पुत्री, लड़की।

बेटौना *पुं.* {हिं.} बेटा।

बेठन *पुं.* {सं. वेष्टन} वह कपड़ा जिसमें पुस्तकें, बहियाँ, थान आदि बाँधे जाते हैं, बस्ता।

बेठिकाना *वि.* {फा.} अज्ञात निवास।

बेठिकाने *क्रि. वि.* {फा. बे + हिं. ठिकाना} अनुपयुक्त जगह पर।

बेड़ *पुं.* {हिं. बाड़} वृक्ष के चारों ओर की मेंड़; रुपया (दलाल)।

बेड़ना *स.* बेढ़ना।

बेड़ा[1] *पुं.* {सं. बेष्ट} नदी पार करने के लिए लट्ठों आदि से बनाया हुआ ढाँचा, तिरना; बहुत सी नावों, जहाजों या हवाई जहाजों आदि का समूह या दल।

बेड़ा[2] *वि.* {सं. विकांड} जो सीधा खड़ा न रह सके; *पुं.* {हिं. बइंड} जो आँखों के समानांतर दाहिनी ओर से बाईं ओर गया हो, जो सीधे बल में न हो, बल्कि आड़े बल में हो, आड़ा; कठिन, मुश्किल, विकट; *पुं.* = आँगन।

बेड़िन (नी) *स्त्री.* {?} नट जाति की नाचने-गानेवाली स्त्री।

बेड़ी[1] *स्त्री.* {सं. वलय} लोहे के कड़ों की वह जोड़ी जो अपराधियों के पैरों में उन्हें बाँध रखने के लिए पहनाई जाती है।

बेड़ी[2] *स्त्री.* {हिं. बेड़ा} नौका, छोटी नाव।

बेडौल *वि.* {हिं. बे + डाल} भद्दी बनावट का, भद्दा; बेढंगा।

बेढंगा *वि.* {हिं. ढंग} {*भाव.* बेढंगापन} जिसका ढंग ठीक न हो; भद्दी तरह से लगाया गया, रखा या सजाया हुआ; भद्दा, कुरूप।

बेड़ *पुं.* {?} नाश, बरबादी।

बेढ़ई *स्त्री.* {सं. वेढमिका} कचौड़ी।

बेढ़न *पुं.* {हिं.} बेढ़ने के लिए बनाया हुआ घेरा।

बेढ़ना *पुं.* {सं. वेष्टन} वृक्षों आदि की रक्षा के लिए चारों ओर मेंड़ बनाकर उन्हें घेरना, रूँधना; चौपायों को घेरकर हाँक ले जाना।

बेढब *वि.* {फा. + बे हिं. ढब} जिसका ढब अच्छा या ठीक न हो; बेढंगा, भद्दा।

बेढ़ा *पुं.* {हिं. बेढ़ना} घेरा, घर के सामने तरकारी आदि बोने के लिए घेरा हुआ छोटा स्थान।

बेढ़ाना *क्रि. स.* {हिं.} घेरना, स्थान।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेणीफूल पुं. {हिं.} घेरना, घिरवाना।

बेत पुं. {हिं.} लचीली व मजबूत नरकट, बेंत।

बेतना *क्रि. अ.* {हिं.} जान पड़ना।

बेढ़िन *स्त्री.* बेढ़िन।

बेतकल्लुफ *वि.* {फा. बे + *अ.* तकल्लुफ} {*भाव.* बेतकल्लुफी} जो तकल्लुफ या बनावट न करता हो; अपने मन की बात साफ-साफ कहनेवाला।

क्रि. वि. बिना किसी तकल्लुफ के बेधड़क, निस्संकोच।

बेतमीज *वि.* {फा. बे + *अ.* तमीज} {*भाव.* बेतमीजी} जिसे तमीज या शऊर न हो, बेहूदा, उजड्ड।

बेतरह *क्रि. वि.* {फा. बे + *अ.* तरह} बुरी तरह से; असाधारण रूप से; *वि.* बहुत अधिक।

बेतहाशा *क्रि. वि.* {फा. बे + *अ.* तहाशा} बड़ी तेजी से; बहुत घबराकर और बिना सोचे-समझे।

बेताज *वि.* {फा.} बिना ताज या मुकुट का।

बेताब *वि.* {फा.} {*भाव.* बेताबी} अशक्त, दुर्बल; विकल, व्याकुल।

बेतार *वि.* {हिं. बे + तार} बिना तार का, जिसमें तार न हो।

बेतार का तार पुं. बिना तार के और केवल बिजली के द्वारा भेजा हुआ समाचार; इस प्रकार समाचार भेजने की प्रक्रिया।

बेताल[1] पुं. वेताल, एक प्रकार का भूत।

बेताल[2] *वि.* {हिं. बे + ताल} (गाना-बजाना) जिसमें ताल का ठीक और पूरा ध्यान न रहे।

बेताला *वि.* {हिं. बे + ताल} गाने-बजाने में ताल का ध्यान न रखनेवाला; बेताल।

बेतुका *वि.* {फा. बे + हिं. तुक} जिसमें कोई तुक या सामंजस्य न हो, बेमेल; बेढंगा, बेढब।

बेतुकाछंद पुं. {हिं.} अमिताक्षर छंद।

बेद[1] पुं. = वेद।

बेद[2] पुं. {फा. मि. से. वेतस्} बेंत।

बेदखल *वि.* {फा.} {*भाव.* बेदखली} जिसका दखल, कब्जा या अधिकार हटा दिया गया हो, अधिकारच्युत।

बेदखली *स्त्री.* {फा.} संपत्ति पर से किसी का दखल या अधिकार हटाया जाना, बेदखल करना।

बेदना *स्त्री.* = वेदना।

बेदम *वि.* {फा.} मृतक, निर्जीव; मृतप्राय, अधमरा; जर्जर, बोदा।

बेदर्द *वि.* {फा.} {*भाव.* बेदर्दी} जो किसी की व्यथा या कष्ट पर ध्यान न दे, कठोर हृदय।

बेदवा पुं. {सं. वेद} वेदों का ज्ञाता या पंडित (उपेक्षासूचक)।

बेदाग *वि.* {फा.} जिसमें दाग या धब्बा न हो, साफ; निरपराध, बेकसूर।

बेदाना पुं. {हिं. बिहीदाना} एक प्रकार का बढ़िया अनार; बिहीदाना नामक फल का बीज।

बेदाम *वि.* {फा.} बिना दाम का, मुफ्त; पुं. बादाम।

बेध पुं. {सं. वेध} छेद; वेध।

बेधड़क *क्रि. वि.* {फा. बे + हिं. धड़क} बिना किसी प्रकार की धड़क या संकोच के, निस्संकोच; निडर होकर; *वि.* जिसे कोई संकोच या खटका न हो, निर्द्वन्द्व; निर्भय, निडर।

बेधना *स.* {सं. वेधन} नुकीली चीज से छेदना, भेदना।

बेधर्म *वि.* {सं. विधर्म} जिसे अपने धर्म का ज्ञान न हो; जिसने अपना धर्म छोड़ दिया हो।

बेधार, बेधारा *वि.* = भोथरा।

बेधिया *वि.* {सं. बेधना} बेधने का छेदने वाला; पुं. हाथी को चलाने का अंकुश।

बेधीर *वि.* अधीर।

बेन पुं. {सं. वेणु} मुरली, बाँसुरी; बाँस; पुं. वेण।

बेनकाब *वि.* {फा.} जिसका चेहरा ढका न हो।

बेनग पुं. {हिं.} एक पहाड़ी बाँस।

बेनट *स्त्री.* {हिं.} बंदूक के अगले सिरे पर लगी हुई किर्च।

बेनसीब *वि.* = बदनसीब।

बेना पुं. {सं. वेणु} {*स्त्री.* बेनिया} बाँस का छोटा पंखा; बाँस; खस।

बेनागा *अव्य.* {हिं.} निरंतर।

बेनिया *स्त्री.* {हिं. बेना} छोटा पंखा, पंखी।

बेनी *स्त्री.* {सं. वेणी} स्त्रियों की चोटी; त्रिवेणी।

बेनु पुं. बेन; वेणु; धान।

बेनौटी पुं. {हिं.} कपास के फूल के समान रंग।

बेपरद *वि.* {फा. बे + पर्द:} {*भाव.* बेपरदगी} जिसके आगे कोई परदा या ओट न हो, अनावृत; नंगा, नग्न।

बेपरवा *वि.* {फा. बेपरवाह} {*भाव.* बेपरवाई} जिसे कोई परवा न हो, बेफिक्र; परम उदार।

बेपाइ *वि.* {हिं. बे + सं. उपाय} जिसे कोई उपाय न सूझे, हक्का-बक्का।

बेपीर *वि.* {हिं. बे = पेंदा} जिसमें पेंदा या तल न हो।

बेपेंदी का लोटा पुं. वह जिसका कोई निश्चित मत या सिद्धांत न हो।

बेफायदा *वि., क्रि. वि.* {फा.} व्यर्थ।

बेफिक्र *वि.* {फा.} {*भाव.* बेफिक्री} जिसे कोई फिक्र न हो, निश्चिंत।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेबस *वि.* {सं. विवश} {*भाव.* बेबसी} जिसका वश न चले, लाचार; पराधीन।

बेबसी *स्त्री.* {हिं.} विवशता, पराधीनता।

बेबाक *वि.* {फा.} {*भाव.* बेबाकी} (ऋण, देन आदि) चुकता किया या चुकाया हुआ।

बेबाकी *स्त्री.* {फा.} चुकती होना, पावने का बाकी न रहना।

बेब्याहा *वि.* {हिं.} अविवाहित, कुँआरा।

बेम *स्त्री.* {हिं.} जुलाहों की कंघी।

बेमन *अव्य.* {हिं.} बिना मन लगाये।

बेमालूम *अव्य.* {हिं.} बिना किसी को पता दिये हुए; *वि.* जो मालूम न पड़ता हो।

बेमेल *वि.* {फा.} जिसमें मेल न हो।

बेमियादी *वि.* {फा.} जिसकी अवधि निर्धारित न हो।

बेमुरवत *वि.* {फा.} {*भाव.* बेमुरव्वती} जो मुरव्वत न करे, तोताचश्म।

बेमौके *क्रि. वि.* {फा. बेमौका} अनुपयुक्त समय पर, गलत समय पर।

बेमौत *क्रि. वि.* {फा. + हिं.} बिना मौत के आए ही, असमय।

मुहा. बेमौत मर जाना = बहुत बड़े संकट में फँस जाना।

बेमौसम *वि.* {फा. बैमौसिम} मौसम न होने पर भी होनेवाला; जिसका मौसम न हो।

बेर[1] *पुं.* {सं. बदरी} एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष जिसके फल खाए जाते हैं; उक्त के फल।

बेर[2] *स्त्री.* {सं. बार} बार, दफा; विलंब, देर।

बेरहम *वि.* {फा. बेरह्म} {*भाव.* बेरहमी} दयाशून्य, निर्दय, निष्ठुर।

बेरा *पुं.* {सं. बेला} समय, वक्त; सवेरा, प्रातःकाल; *पुं.* बेड़ा।

बेराम *वि.* बीमार।

बेरिध *पुं.* {सं. वृद्ध} वृद्धावस्था, बुढ़ापा; *वि.* वृद्ध।

बेरियाँ *स्त्री.* {हिं. बेर} समय, वक्त।

बेरी[1] *स्त्री.* बेर; बेड़ी।

बेरी[2] *स्त्री.* {हिं. बार} बार, दफा; देर, विलंब।

बेरुख *वि.* {फा.} {*भाव.* बेरुखी} जो काम पड़ने पर रुख (मुँह) फेरकर उदासीन या अप्रसन्न हो जाए, बेमुरव्वत; अप्रसन्न, नाराज।

बेलंब *पुं.* बिलंब।

बेल[1] *पुं.* {सं. बिल्व} एक प्रसिद्ध कँटीला वृक्ष जिसके गोल फल खाए जाते हैं, श्रीफल।

बेल[2] *स्त्री.* {सं. बल्ली} बहुत ही पतली या लचीली पेड़ी और पतले डंठलों का कोमल पौधा जो दूसरे वृक्षों आदि के आधार पर ऊपर की ओर बढ़ता हो, बल्ली, लता; संतान या वंश; कपड़े आदि पर लंबाई के बल में बनी हुई फूल-पत्तियाँ; नाव खेने का डाँड़।

बेल[3] *पुं.* {फा. बेलचः} एक प्रकार की कुदाली; सीमा निश्चित करने के लिए चूने आदि से जमीन पर डाली हुई लकीरें; *पुं.* बेले का फूल।

बेलक *पुं.* {हिं.} फरसा, फावड़ा।

बेलचा *पुं.* {फा.} कुदाल, कुदारी।

बेलज्जत *वि.* {फा.} {*भाव.* बेलज्जती} जिसमें कोई लज्जत य स्वाद न हो।

बेलदार *पुं.* {फा.} फावड़ा चलानेवाला मजदूर।

बेलन *पुं.* {सं. वेलन} लंबोतरे आकार का वह भारी गोल खंड जिससे कोई स्थान समतल करते अथवा कंकड़-पत्थर कूटकर सड़कें बनाते हैं (रोलर); यंत्रों में लगा हुआ इस आकार का कोई मुख्य काम करनेवाला पुरजा (सिलेंडर); रुई धुनने की मुठिया या हत्था।

बेलना[1] *पुं.* {सं. वेलन} काठ, पीतल आदि का वह प्रसिद्ध उपकरण जिससे रोटी, पूरी आदि बेली जाती है; *स.* रोटी, पूरी आदि बनाने के लिए आटे की लोई को चकले पर रखकर बेलने की सहायता से बढ़ाकर बड़ा और पला करना।

बेलना[2] *स.* {सं. वेला = लहर} विनोद के लिए पानी के छीटें उड़ाना।

बेलना[3] *स.* {सं. विलयन} चौपट या नष्ट करना, जैसे इस साल की बरसात ने कई मकान बेल दिए।

बेलनी *स्त्री.* {हिं. बेलना} कपास ओटने की चरखी, ओटनी।

बेलपत्ती *स्त्री.* बेलपत्र।

बेलपत्र *पुं.* {सं. बिल्वपत्र} बेल (वृक्ष) के पत्ते जो शिवजी पर चढ़ाए जाते हैं।

बेलबागुरा *पुं.* {हिं.} हिरनों के पकड़ने का जाल।

बेलबूटा *पुं.* {हिं.} कागज, कपड़े आदि पर बनाए जानेवाले फूल-पत्ते।

बेलरी *स्त्री.* बेल।

बेलसना *अ.* {सं. विलास + ना (प्रत्य.)} भोग करना, सुख लेना।

बेलबूटेदार *वि.* {हिं.} जिस पर बेल-बूटे बने हों।

बेलहरी *पुं.* {हिं.} साँची पान।

बेला[1] *पुं.* {सं. विचकिल, प्रा. बिअइल्ल} चमेली की तरह का सुगंधित फूलोंवाला एक छोटा पौधा; इस पौधे का फूल।

बेला[2] *स्त्री.* {सं. वेला} तरंग, लहर; समुद्र का किनारा; *उभय.* समय, वक्त।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitiz Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेला³ पुं. {फा. बेला:} रुपए आदि रखने की थैली; डण्डी लगी हुई चमड़े की वह छोटी कुप्पी जिससे तेल आदि किसी बरतन में से निकालते हैं; कटोरा, प्याला।

बेला⁴ पुं. {अं. वायोलिन} सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा।

बेलाग *वि.* {फा. बे + हिं. लाग = संबंध} जो किसी पर टिका न हो, बिना आधार का; बिल्कुल अलग; व्यवहार में सच्चा और साफ, खरा।

बेलि *स्त्री.* {सं. बल्ली} लता, बेल।

बेलिया *स्त्री.* {हिं.} छोटी कटोरी।

बेली पुं. {सं. बल} संगी, साथी; *स्त्री.* = बेल (लता)।

बेलौस *वि.* {हिं. बे + फा. लौस} पक्षपात न करनेवाला; सच्चा, खरा।

बेल्लित *वि.* बेला हुआ।

बेवकूफ *वि.* {फा.} {*भाव.* बेवकूफी} मूर्ख, नासमझ।

बेवक्त *क्रि. वि.* {फा.} कुसमय में।

बेवजह *क्रि. वि.* {फा.} अकारण।

बेवट *स्त्री.* {?} संकट; विवशता।

बेवपार पुं. व्यापार।

बेवर पुं. {हिं.} एक प्रकार की घास।

बेवरा पुं. ब्योरा।

बेवहरना *अ.* {सं. व्यवहार} व्यवहार करना, बरताव करना, बरतना; व्यापार या रोजगार करना।

बेवहरिया पुं. {सं. व्यवहार} लेन-देन का व्यापार करनेवाला, महाजन।

बेवहार पुं. = व्यवहार।

बेवा *स्त्री.* {फा. बेव:} विधवा, राँड़।

बेवाई *स्त्री.* बिवाई।

बेवान पुं. विमान।

बेशऊर *वि.* {हिं. बे + *अ.* शऊर} {*भाव.* बेशऊरी} जिसे कोई काम करने का शऊर ना हो या ठीक ढंग न आता हो।

बेशऊरी *स्त्री.* {हिं. बेशऊर} 'बेशऊर' होने की अवस्था या भाव।

बेशक *क्रि. वि.* {फा. बे + *अ.* शक} अवश्य, निस्संदेह, जरूर।

बेशरम *वि.* {फा. बेशर्म} जिसे शरम न हो, निर्लज्ज, बेहया।

बेशरमी *स्त्री.* {फा. बेशर्म} निर्लज्जता।

बेशुमार *वि.* {फा.} जिसकी गिनती न हो सके, अगणित, असंख्य।

बेसंदर पुं. {सं. वैश्वानर} आग, अग्नि।

बेसँभर(भार) *वि.* बेसुध।

बेसँभार *वि.* {हिं.} बेसुध।

बेस¹ पुं. {सं. वेष} भेस।

बेस² पुं. {सं. वयस्} वय, अवस्था।

बेसन पुं. {देश.} चने की दाल का महीन चूर्ण या आटा।

बेसनी *स्त्री.* {हिं. बेसन} बेसन से बना हुआ एक प्रकार का पकवान; बेसन से भरी हुई रोटी या कचौरी; *वि.* बेसन से बना हुआ, जैसे बेसन का हलुआ; बेसन संबंधी, बेसन का।

बेसबरा *वि.* {फा. बे + *अ.* सब्र} जिसे सब्र या संतोष न हो; उतावला।

बेसबरी *स्त्री.* {हिं. बेसबरा} बेसबरा होने की दशा या भाव, अधीरता, आतुरता; उतावलापन।

बेसमझ *वि.* {फा. बे + हिं. समझ} {*भाव.* बेसमझी} नासमझ, मूर्ख।

बेसमझी *स्त्री.* {हिं. बेसमझ} 'बेसमझ' होने का भाव, नासमझी, मूर्खता।

बेसर¹ पुं. {सं. बेशर} खच्चर।

बेसर² पुं. {?} नाक में पहनने की नथ।

बेसवा *स्त्री.* वेश्या, रंडी।

बेसवार पुं. {हिं.} सड़ा हुआ मसाला जिससे मद्य बनाया जाता है।

बेसहारा *वि.* {फा. बे + हिं. सहारा} जिसका कोई सहारा न हो।

बेसा *स्त्री.* 'वेश्या', रंडी।

बेसारा *वि.* {हिं. बैठना} बैठाने, रखने या जमानेवाला।

बेसहना *क्रि. स.* {हिं.} मोल लेना, झगड़ा अपने ऊपर लेना।

बेसाह, बेसाहा पुं. {हिं.} माल, सौदा।

बेसाहना *स.* {सं. व्यसन} {*भाव.* बेसाहनी} मोल लेना, खरीदना; जान-बूझकर अपने सिर लेना (बैर, विरोध, संकट आदि)।

बेसी *वि., अव्य* {हिं.} अधिक।

बेसुध *वि.* {फा. बे + हिं. सुध = होश} जिसे सुध या होश न हो, अचेत, बदहवास।

बेसुधी *स्त्री.* {हिं.} अचेत अवस्था।

बेसुर, बेसुरा पुं. {फा. बे + हिं. सुर = स्वर} अपने नियत स्वर से हटा हुआ (संगीत)।

बेस्वा *स्त्री.* = वेश्या।

बेस्वाद *वि.* {हिं.} स्वादरहित, बिना स्वाद के।

बेहंगम *वि.* {सं. विहंगम} भद्दा, बेढंगा; बेढब, विकट।

बेहँसना *अ.* बिहँसना।

बेह पुं. {सं. बेध} छेद, छिद्र।

बेहट पुं. {गोंड भाषा} गाँव (प्राय: नामों के अंत में), जैसे तालबेहट।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eG

बेहड़ *वि.* = बीहड़ (विकट)।

बेहतर *वि.* {फा.} {*भाव.* बेहतरी} किसी की तुलना में अच्छा, किसी की अपेक्षा अच्छा, बढ़कर।

बेहतरी *स्त्री.* {हिं. बेहतर} भलाई, अच्छाई।

बेहतरीन *वि.* {फा.} उत्तम।

बेहद *वि.* {फा.} जिसकी हद या सीमा न हो, असीम; बहुत अधिक।

बेहना[1] *पुं.* {देश.} धुनियाँ।

बेहना[2] *स.* {सं. वेध} छेद करना, छेदना।

बेहया *वि.* {फा.} {*भाव.* बेहयाई} जिसे हया या शरम न हो, निर्लज्ज।

बेहयाई *स्त्री.* {फा.} बेहया या निर्लज्ज होने की दशा या भाव, निर्लज्जता, बेशरमी।

बेहर *वि.* {हिं. बेहरना} अलग, जुदा, पृथक्।

बेहरना *अ.* {सं. विदीर्ण} फटना।

बेहरा[1] *वि.* {सं. विघट} अलग, जुदा।

बेहरा[2] *पुं.* {अं. बेयरर} बड़े अधिकारियों का निजी चपरासी या आदमी।

बेहराना *स.* {सं. विदीर्ण} फाड़ना।

बेहरी *स्त्री.* {?} बहुत से लोगों से लिया जानेवाला थोड़ा-थोड़ा धन, चंदा।

बेहला *पुं.* {हिं.} सारंगी की तरह का अंग्रेजी बाजा।

बेहाल *वि.* {फा. बे + *अ.* हाल} {भाव. बेहाली} जिसका हाल या दशा अच्छी न हो; व्याकुल, बेचैन।

बेहिसाब *वि.* {फा. बे + *अ.* हिसाब} जिसका ठीक और पूरा हिसाब न रखा जाए; बहुत अधिक, बेहद।

बेहुनर *वि.* {फा.} जिसे कोई हुनर या विद्या न आती हो।

बेहूदगी *स्त्री.* {फा.} बेहूदा, हरकत, अशिष्टता।

बेहूदा *वि.* {फा.} {*भाव.* बेहूदगी} जिसमें शिष्टता न हो, अशिष्ट।

बेहून *क्रि. वि.* {सं. विहीन} बिना, बगैर।

बेहोश *वि.* {फा.} जिसे होश न हो, मूर्च्छित, बेसुध।

बेहोशी *स्त्री.* {फा.} मूर्च्छा, अचेतनता।

बैंक *पुं.* {अं.} वह संस्था जो मुख्य रूप से लेन-देन का काम करती हो; संग्रह-स्थल।

बैंगन *पुं.* {सं. बंगण?} एक पौधा जिसके फलों की तरकारी बनती है, भंटा।

बैंगनी, बैंजनी *वि.* {हिं. बैंगन} बैंगन की तरह लाली लिए नीले रंग का।

बैंड *पुं.* {अं.} अंग्रेजी बाजों या उनके बजानेवालों का समूह।

बैंडा *वि.* बड़ा; बेंत।

बैंत *स्त्री.* बैत; बेंत।

बै *स्त्री.* {सं. वाय} जुलाहों का कंघा या बेसर नामक औजार; *वि., क्रि. वि.* = व्यर्थ; *स्त्री.* वय (अवस्था)।

बैकना *अ.* बहकना।

बैकल *वि.* {सं. विकल} विकल; पागल, उन्मत्त।

बैकुंठ *पुं.* वैकुंठ।

बैग *पुं.* बेग (थैला)।

बैगनी *स्त्री.* {हिं.} पकवान।

बैजंती *स्त्री.* वैजयंती; विष्णु की माला।

बैजला *पुं.* {हिं.} कबड्डी जैसा खेल।

बैजीय *वि.* {सं.} बीज से संबंधी।

बैजेय *वि.* {सं.} बीज से उत्पन्न।

बैटरी *स्त्री.* {अं.} चीनी या शीशे का वह पात्र जिसमें रासायनिक प्रक्रिया द्वारा बिजली पैदा करके काम में लाई जाती है; इसी प्रकार की प्रक्रिया से तैयार किया हुआ लोहे आदि का छोटा मुँह-बंद पात्र जो रोशनी आदि करने के लिए होता है; तोपखाना।

बैठ *पुं.* {हिं.} राजकीय कर।

बैठक *स्त्री.* {हिं. बैठना} बैठने का स्थान या आसन; वह स्थान जहाँ बहुत से लोग बैठते हों, चौपाल; बैठने की मुद्रा या ढंग; मूर्ति या खंभे आदि के नीचे की चौकी, पदस्तल; सभा-समिति आदि का एक बार का अधिवेशन (सिटिंग); बैठकी।

बैठकबाज *वि.* {हिं. बैठक + फा. बाज़} {*भाव.* बैठकबाजी} केवल बातें बनाकर काम निकालने वाला, धूर्त, चालाक।

बैठका *पुं.* {हिं.} चौपाल जहाँ पर बैठकर लोग बातचीत करते हैं।

बैठकी *स्त्री.* {हिं. बैठक + ई (प्रत्य.)} एक कसरत जो बार-बार कुछ विशेष प्रकार से उठ और बैठकर की जाती है, बैठक; दीपक के लिए धातु आदि का बना हुआ आधार; वह आधा मोती जो अँगूठी आदि पर नगीने कै रूप में बैठाया या जड़ा जाता है; (नाच से भिन्न) वेश्या का वह गाना जो महफिल में बैठकर गाती है; बैठक।

बैठते-उठते *क्रि. वि.* हर समय, सदा।

बैठना *अ.* {सं. प्रतिष्ठित या उपविष्ठ} टाँगों का आश्रय छोड़कर ऐसी स्थिति में होना कि चूतड़ किसी आधार पर रहे; स्थित या आसीन होना, आसन जमाना; किसी जगह ठीक तरह से जमना; अभ्यस्त होना, जैसे-हाथ बैठना; जल आदि से धुली हुई वस्तु का नीचे तल में जा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगना; पिचकना; (कारबार) बिगड़ना; तौल में ठहरना या उतरना; लागत आना; लक्ष्य या निशाने पर लगना; पौधे का जमीन में लगाया या रोपा जाना; किसी स्त्री का किसी पुरुष के यहाँ पत्नी के रूप में जा रहना; पक्षियों का अंडे सेना; निर्वाचन आदि में उम्मीदवार का प्रतियोगिता से हट जाना, खड़ा न रहना।

बैठनी *स्त्री.* {हिं.} 'करगह' वह स्थान जहाँ पर बैठकर जुलाहे कपडा बुनते हैं।

बैठवाई *स्त्री.* {हिं.} बैठाने का शुक्ल।

बैठाना *स.* {हिं. बैठना} {प्रे. बैठवाना} किसी को बैठने में प्रवृत्त करना।

बैठावन *पुं.* {हिं. बैठाना} जुलाहों का एक औजार जिससे बाने के उभरे हुए सूत या तन्तु ठीक जगह पर बैठाए जाते हैं।

बैठे-बैठाए *क्रि. वि.* बिना कुछ किए; अचानक।

बैठे-बैठे *क्रि. वि.* एक ही स्थान पर बैठे रहकर।

बैढ़ना *स.* बेढ़ना।

बैत *स्त्री.* {अ.} छंदोबद्ध रचना, पद्य।

बैतरनी *स्त्री.* वैतरणी।

बैताल *पुं.* बेताल।

बैद *पुं.* वैद्य।

बैदई *स्त्री.* {सं. बैद्य, हिं. बैद} वैद्य का काम या पेशा, बैदगी।

बैदगी *स्त्री.* {हिं. बैद} वैद्य या चिकित्सक का काम या व्यवसाय।

बैदल *पुं.* {सं.} दाल की पीठी।

बैदाई *स्त्री.* बैदगी।

बैदेही *स्त्री.* वैदेही।

बैन *पुं.* {सं. वचन} वचन, बात।

मुहा. बैन झरना = मुँह से बात निकलना।

बैनसगाई *स्त्री.* {हिं. बैन = बचन + सगाई = एक रूपता} रचना आदि में रखा जानेवाला अनुप्रास, वर्णमैत्री।

बैना *पुं.* {सं. वायन} वह मिठाई आदि जो मंगल अवसरों पर संबंधियों और इष्ट-मित्रों के यहाँ भेजी जाती हैं; *स.* = बोना।

बैनामा *पुं.* {अ. बै + फा. नामा} वह पत्र जिसमें किसी वस्तु विशेषत: मकान या जमीन आदि के बेचने और उससे संबंध रखनेवाली शर्तों आदि का उल्लेख होता है, विक्रय-पत्र।

बैपार *पुं.* व्यापार।

बैयन *पुं.* {हिं.} बाना भरने का लकड़ी का उपकरण।

बैयर *स्त्री.* {सं. बधूवर} औरत, स्त्री।

बैयाँ *क्रि. वि.* {हिं. पैयाँ का अनु.} घुटनों के बल।

बैया *पुं.* {सं. वाय} बै, बैसर।

बैरंग *वि.* {अं. बियरिंग} डाक से भेजी जानेवाली वह चिट्ठी आदि जिसका महसूल भेजनेवाले ने न चुकाया हो; विफल।

बैर¹ *पुं.* {सं. वैर} शत्रुता, दुश्मनी; वैमनस्य, द्वेष।

बैर² *पुं.* {सं. बदरी} बेर का वृक्ष या फल।

बैरक¹ *उभय.* {तु.} सैनिक झंडा।

बैरक² *स्त्री.* {अं.} (सैनिक छावनियों आदि में) एक प्रकार का बहुत लंबा मकान जिसमें सिपाहियों के रहने के लिए छोटी-छोटी कोठरियाँ होती हैं।

बैरख *स्त्री.* बैरक; *पुं.* ध्वजा, पताका।

बैरा *पुं.* {हिं.} हल में लगा चोगा; *अ., पुं.* सेवक, चाकर।

बैराखी *स्त्री.* {हिं.} भुजा पर पहननेवाला गहना।

बैराग *पुं.* वैराग्य।

बैरागर *पुं.* {हिं. बैर? + सं. आगर?} खान (रत्नों आदि की)।

उदा. गुणमणि बैरागर, धीरज को सागर . . . –केशव।

बैरागी *पुं.* {सं. विरागी} {*स्त्री.* बैरागिन} वैष्णव साधु।

बैराना *अ.* = बौराना।

बैरिस्टर *पुं.* {अं.} {*भाव.* बैरिस्टरी} एक प्रकार के विधिज्ञ या कानूनदाँ जिनकी मर्यादा वकीलों से बढ़कर होती है।

बैरी *वि.* बैरी, शत्रु।

बैलंस *पुं.* {अं.} संतुलन।

बैल *पुं.* {सं. बलद} गौ जाति का बधिया किया हुआ वह नर चौपाया जो हलों और गाड़ियों में जोता जाता है; मूर्ख व्यक्ति।

बैल-मुतनी *स्त्री.* गोमूत्रिका।

बैलून *पुं.* {अं.} गुब्बारा।

बैसंदर *पुं.* {सं. वैश्वानर} आग, अग्नि।

बैस *पुं.* {?} राजपूत क्षत्रियों की एक शाखा का नाम; *स्त्री.* वयस या वय।

बैसना *अ.* = बैठना।

बैसर *पुं.* {सं. वाय} जुलाहों का बै या कंघा नामक औजार।

बैसवाड़ा *पुं.* {हिं. बैस + बाड़ा} {*वि.* बैसवाड़ी} अवध के दक्षिण-पश्चिम में स्थित प्रदेश।

बैसवारा *वि.* {हिं. वयस + हिं. वाला} {*स्त्री.* बैसवारी} जवान, युवक।

बैसाख *पुं.* वैशाख।

बैसाखी¹ *स्त्री.* {सं. विशाख} वह डंडा जिसे बगल के नीचे रखकर लंगड़े लोग सहारे से टेकते हुए चलते हैं; लाठी, डंडा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGan

बैसाखी² *स्त्री.* {हिं. बेसाख} बैसाख की मेष संक्रांति; उक्त अवसर पर मनाया जानेवाला त्योहार।

बैसारना *स.* = बैठाना।

बैसिक *पुं.* {सं. वैशिक} वेश्या से संभोग करनेवाला, वेश्यागामी।

बैहर¹ *वि.* {सं. वैर = भयानक} भयानक; क्रोधी।

बैहर² *स्त्री.* {सं. वायु} वायु, हवा।

बोंक *पुं.* {हिं.} लोहे का मुड़ा हुआ 'कीला' जो किवाड़ के पल्ले की चूल में लगाया जाता है।

बोंडा *पुं.* {देश.} बारूद में आग लगाने का पलीता।

बोआई *स्त्री.* {हिं. बोना} बीज बोने का काम, भाव या मजदूरी।

बोक *पुं.* {*स्त्री.* बोकी} बकरा (बुन्देल.)।

बोखार *पुं.* {हिं.} ज्वर।

बोगुमा *पुं.* {हिं.} घोड़े का रोग जिसमें उसका पेट फूल जाता है।

बोज *पुं.* {देश.} एक प्रकार का घोड़ा।

बोझ *पुं.* {?} एक में बँधा हुआ वस्तुओं का भारी ढेर, भार; भारीपन, गुरुत्व, वजन; कठिन या रुचिविरुद्ध काम; किसी काम का उत्तरदायित्व, भार; एक आदमी या पशु के एक बाार ले जाने योग्य भार।

बोझना *स.* {हिं. बोझ} बोझ लादना।

बोझल (झिल) *वि.* {हिं. बोझ} भारी बोझवाला, वजनी।

बोझा *पुं.* बोझ।

बोझाई *स्त्री.* {हिं.} लादने का काम व इसका शुल्क।

बोट *स्त्री.* {अं.} नाव, नौका।

बोटा *पुं.* {सं. वृन्त} कटा हुआ टुकड़ा।

बोटी *स्त्री.* {हिं.} मांस का छोटा टुकड़ा।

बोड़ना *स.* बोरना।

बोड़ा *पुं.* {देश.} अजगर; एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी बनती है, लोबिया।

बोड़री *स्त्री.* {हिं.} नाभि, तोंदी।

बोड़ी *स्त्री.* {?} एक प्रकार के पौधे की कली जिसकी तरकारी और अचार बनता है।

बोत *पुं.* {देश.} एक प्रकार का घोड़ा।

बोतल *स्त्री.* {अं. बॉटल} लंबी गरदनवाला काँच का एक प्रसिद्ध पात्र।

बोतलबंदी *स्त्री.* {हिं.} भरी हुई बोतल को बंद करने की क्रिया या भाव।

बोतली हरा *वि.* जिसका रंग बोतल जैसा हरा हो।

बोदर *स्त्री.* {हिं.} लचीली छड़ी।

बोदरी *स्त्री.* {देश.} खसरा नामक रोग।

बोदा *वि.* {सं. अबोध} {*भाव.* बोदापन} मूर्ख, सुस्त; जो पक्का या कड़ा न हो, कमजोर।

बोध *पुं.* {सं.} {*वि.* बोध्य, बोधव्य, कर्ता बोधक} ज्ञान, जानकारी; सांत्वना, धैर्य, तसल्ली।

बोधक *वि.* {सं.} ज्ञान करानेवाला; सूचक; वाचक; *पुं.* साहित्य में संयोगशृंगार के अंर्तगत एक हाव जिसमें प्रेमी और प्रेमिका संकेतों से एक दूसरे पर अपने मन के भाव प्रकट करते हों।

बोधगम्य *पुं.* {सं.} {*भाव.* बोधगम्यता} समझ में आने योग्य।

बोधन *पुं.* {सं.} {*वि.* बोध्य, बोधित} बोध या ज्ञान कराना; जगाना।

बोधना *स.* {सं. बोधन} समझाना; ज्ञान कराना।

बोधव्य *वि.* {सं.} जिसका बोध या ज्ञान हो सकता हो; जिसका बोध या ज्ञान आवश्यक हो; जिसे किसी बात का बोध या ज्ञान कराया जा सके या कराया जाए।

बोधिवृक्ष *पुं.* {सं.} गया के पास पीपल का वह वृक्ष जिसके नीचे बुद्ध को बोध या ज्ञान प्राप्त हुआ था।

बोधिसत्व *पुं.* {सं.} वह जो बुद्ध बनने का अधिकारी हो गया हो (महात्मा बुद्ध के पूर्वजन्मों का सूचक नाम)।

बोध्य *वि.* {सं.} जिसका बोध या ज्ञान हो सके।

बोनस *पुं.* {अं.} लाभ का वह अंश जो नियोजक कर्मचारियों में बँटता है।

बोना¹ *स.* {सं. वपन} खेत में उपजाने के लिए बीज छिड़कना या बिखेरना; किसी बात का सूत्रपात करना, अंकुर लगाना; ऐसा काम करना जिसका फल आगे चलकर मिलने को हो।

बोना² *स.* {हिं. बोरना का व्रज. रूप} पानी में बोरना, डुबाना।

उदा. करि निरजीव जमुन जल बोयौ—सूर।

बोबा *पुं.* {हिं.} स्तन, धन, गठरी, घरेलू सामग्री।

बोब्बी *स्त्री.* {हिं.} पुन्नाग जाति का सदाबहार वृक्ष।

बोप *स्त्री.* {फा. बू} गंध, महक।

बोंय *स्त्री.* {हिं.} गंध, दुर्गंध।

बोर *पुं.* {हिं. बोरना} कपड़े को रंग में बोरने या डुबाने की क्रिया या भाव।

बोरना *स.* {हिं. बूड़ना} डुबाना; कलंकित या बदनाम करके नष्ट करना (नाम, कीर्ति आदि); पानी मिले हुआ रंग में डुबाकर रँगना।

बोरसी *स्त्री.* अँगीठी।

बोरा *पुं.* {सं. पुर = पात्र} {*स्त्री.* अल्पा. बोरी} टाट का वह बड़ा थैला जिसमें अनाज आदि भरकर रखते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोरिया पुं. {फा.} चटाई; टाट आदि का साधारण बिछौना।

बोरी *स्त्री.* {हिं. बोरा} छोटा बोरा, टाट की छोटी थैली।

बोरो *स्त्री.* {हिं. बोरना} एक प्रकार का घटिया या मोटा धन।

बोर्ड पुं. {अं.} किसी स्थायी कार्य के लिए बनी हुई समिति, जैसे नगर-बोर्ड आदि; माल के मामलों का फैसला करनेवाला अधिकरण; कागज की मोटी दफ्ती; नामपट्ट।

बोर्डिंग हाउस पुं. छात्रावास।

बोल पुं. {हिं. बोलना} बोली या कही हुई बात, वाणी, वचन, उक्ति; आक्षेपपूर्ण बात, ताना व्यंग्य; गीत और बाजे के बँधे या गठे हुए शब्द, जैसे ख्याल या ठुमरी के बोल; मृदंग या सितार के बोल; दृढ़तापूर्ण कथन, प्रतिज्ञा।

बोल-चाल *स्त्री.* {हिं. बोल + अनु. चाल} बातचीत, कथोपकथन; नित्य के व्यवहार की बँधी हुई कथन-प्रणाली जो मुहावरे की तरह होने पर भी उससे कुछ भिन्न होती है।

बोलता पुं. {हिं. बोलना} आत्मा; विवेक; जीवनी-शक्ति, प्राण; *वि.* बहुत बोलनेवाला।

बोलती *स्त्री.* {हिं. बोलना} बोलने की शक्ति, वाचा।

बोलनहार पुं. बोलता।

बोलना *अ.* {सं. ब्रू, ब्रूयते} मुँह से शब्द उच्चारण करना, बात कहना; किसी चीज की आवाज निकलना, जैसे रुपया बोलना, तबला बोलना; *स.* कहना; बात पक्की करना, ठहराना; रोक-टोक करना कुछ कहकर बाधक होना; छेड़छाड़ करना; बुलाना या बुलवाना।

बोलपट पु. {हि. बोलना + पट 'मराठी से गृहीत'} वह चलचित्र जिसमें पात्रों के कथोपकथन, गीत आदि सुनाई पड़ते हों (टॉकी)।

बोलवाना {हिं. क्रि. सं.} कहवाना, उच्चारण कराना।

बोलसर पुं. {?} एक प्रकार का घोड़ा; *स्त्री.* मौलिसिरी।

बोलाचाली *स्त्री.* बोलचाल।

बोलावा पुं. {हिं.}'बुलावा', निमंत्रण।

बोली *स्त्री.* {हिं. बोलना} मुँह से निकली हुई बात या शब्द, वाणी; सार्थक शब्द या बात; नीलाम के समय चीज का चिल्लाकर दाम लगाना, डाक; किसी विशिष्ट स्थान के शब्दों का बना वह कथन-प्रकार, जिसका व्यवहार केवल बातचीत में होता है, पर प्राय: जिसका कोई साहित्य नहीं होता (डाइलेक्ट); ताना, व्यंग्य।

बोल्लाह पुं. {देश.} एक प्रकार का घोड़ा।

बोवना *स.* हिं. बोना।

बोवाई *स्त्री.* {हिं.} बोने की क्रिया।

बोवाना *स.* हिं. 'बोना' का प्रे.।

बोह *स्त्री.* {हिं. बोर} डुबकी, गोता।

बोहनी *स्त्री.* {सं. बोधन = जगाना} किसी चीज या दिन की पहली बिक्री या उससे प्राप्त होनेवाला धन।

बोहनी-बट्टा किसी दिन किसी चीज की पहले-पहल होनेवाली बिक्री और उससे मिलने वाला धन।

बोहारना *स.* बुहारना।

बोहारी *स्त्री.* {हिं.} झाड़ू।

बोहित पु. {सं. वाहित्थ} बड़ी नाव।

बौंड़ *स्त्री.* {हिं.} किसी पौधे को सहारे हेतु डोरी बाँधना।

बौंड़ी पु. {सं. वृत्त} पौधों, लताओं आदि के कच्चे फल या कलियाँ; फली, छीमी; दमड़ी, छदाम।

बौंर *स्त्री.* {सं. बेलि} बेल, लता।

बौंरना *अ.* {सं. बौंर} लता, पौधे आदि का फूलना।

बौखलाना *अ.* {?} क्रोध में आकर अंडबंड बातें कहना।

बौछार *स्त्री.* {सं. वायु + क्षरण} हवा के झोंके से आनेवाली वर्षा की झड़ी; किसी वस्तु का बहुत अधिक संख्या या मात्रा में आकर गिरना या पड़ना, झड़ी; लगातार कही जानेवाली व्यंग्यपूर्ण या कटु आलोचना की बातें, जैसे जरा सी भूल हुई और चारों ओर से बौछार होने लगी।

बौड़हा {हिं. *वि.*} पागल, सनकी, बावला।

बौता पु. {हिं.} समुद्र में तैरता हुआ संकेत।

बौड़ाना *अ.* बौराना।

बौध पु. {सं.} गौतम बुद्ध के चलाए हुए धर्म का अनुयायी। *वि.* गौतम बुद्ध या उनके चलाए हुए धर्म से संबंध रखनेवाला, जैसे बौद्धशास्त्र।

बौद्ध धर्म पु. {सं.} गौतम बुद्ध का चलाया हुआ एक प्रसिद्ध भारतीय धर्म।

बौद्ध पुं. बौद्ध; बुद्ध।

बौधा *क्रि. वि.* {सं. बहुधा} अनेक प्रकार से, तरह-तरह से।

बौना पुं. {सं. वामन}{*स्त्री.* बौनी}बहुत ठिगने या नाटे कद का मनुष्य; *वि.* छोटे कद का, नाटा।

बौनापन पु. {हिं. बौना + पन} बौना होने की अवस्था या भाव; दूसरों की तुलना में अपने को अत्यंत लघु समझने की अवस्था या भाव।

बौर पुं. {सं. मुकुल}आम की मंजरी, मौर; *वि.* बौरा {पागल}।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

बौरई *स्त्री.* {हिं. बौरा = पागल} बावलापन, पागलपन।

बौरना *अ.* {हिं. बौर} आम के पेड़ में बौर या मंजरी निकलना, मौरना।

बौरहा *वि.* बावला, सनकी।

बौरा *वि.* {सं. वातुल} {*स्त्री.* बौरी} पागल, बावला, विक्षिप्त; (खेल प्रतियोगिता) जिसमें प्रतियोगी या जोड़ पहले से निश्चित न हो बल्कि सबके एकत्र हो जाने पर लोग मनमाने ढंग से अपना प्रतियोगी या जोड़ चुन लें, जैसे बौरा दंगल।

बौराई *स्त्री.* {हिं. बौना} पागलपन।

बौराना *अ.* {हिं. बौरा} {*भाव.* बौरापन, बौराई} पागल हो जाना, सनक जाना; पागलों की तरह घूमना या भटकना; *स.* किसी को बौरा या पागल करना।

बौराह *वि.* बावला।

बौलसिरी *स्त्री.* मौलिसिरी।

बौला पु. = बै {जुलाहों का औजार}।

ब्यंग पु. {हिं.} व्यंग्य।

ब्यंजन पु. {हिं.} व्यंजन।

ब्यतीतना *स.* बिताना; *अ.* बीतना।

ब्यवहार पुं. व्यवहार।

ब्यवहारिया पुं. {हिं. व्यवहार} लोगों को रुपए उधार देनेवाला, महाजन।

ब्याज पुं. {सं. व्याज} किसी को उधार दिए हुए रुपए के बदले में उस समय तक मिलनेवाला वह कुछ निश्चित धन, जिस समय तक मूलधन चुका न दिया जाए, सूद (इन्टरेस्ट); 'व्याज'।

ब्याजू *वि.* {हिं. ब्याज} ब्याज या सूद पर दिया जानेवाला (धन)।

ब्याधा *स्त्री.* = व्याधि।

ब्याधि *स्त्री.* {हिं.} रोग।

ब्याना *स.* {हिं. क्रि.} पशुओं का बच्चा 'प्रसव' करना, गर्भ से निकालना।

व्यापना *स.* {हिं. व्यापन} व्याप्त होना, चारों ओर छाना, फैलना; प्रभाव दिखाना।

ब्यापार पु. {हिं.} व्यापार।

ब्यार *स्त्री.* = बयार (हवा)।

ब्यारी *स्त्री. ब्यालू।*

ब्याली *स्त्री.* {हिं.}सर्पिणी, नागिन।

ब्यालू पुं. {सं. विकाल = संध्या का भोजन} संध्या समय या रात के पहले पहर में किया जानेवाला भोजन, ब्यारी।

ब्याह पुं. {सं. विवाह} विवाह, शादी।

ब्याहता *वि.* {सं. विवाहित} जिसके साथ विवाह हुआ हो (विशेषत: स्त्री के लिए प्रयुक्त)।

ब्याहना *स.* {सं. विवाह + हिं. ना (प्रत्य.)} {*वि.* ब्याहता} ब्याह करके पुरुष का स्त्री को अपनी पत्नी और स्त्री का पुरुष को अपना पति बनाना; किसी का किसी के साथ ब्याह करना।

ब्याहुला *वि.* {*वि.* ब्याह} विवाह का।

ब्यूगा पु. {हिं.} चमड़े को रगड़कर कोमल करने का चमार का लकड़ी का औजार।

ब्योंचना *अ.* {सं. विकुंचन} अचानक जोर से मुड़ जाने के कारण नस का स्थान से हट जाना, जिससे पीड़ा और सूजन होती है, मुड़कना; *स.* मरोड़ना।

ब्योंड़ा पुं. {हिं. बेड़ा} वह लंबी गोलाकार लकड़ी जो दरवाजा बंद करके अंदर उसे खुलने से रोकने के लिए लगाई जाती है, अरगल।

ब्योंत *स्त्री.* {हिं. विवृत्ति} आय-व्यय आदि को व्यवस्थित रखने की क्रिया या भाव, आमदनी-खर्च का हिसाब ठीक रखना; काम पूरा करने की युक्ति, उपाय या व्यवस्था; ढब, ढंग, तरीका; साधन या सामग्री आदि की सीमा, समाई; पहनने के कपड़े बनाने के लिए कपड़े की काट-छाँट।

ब्योंतना *स.* {हिं. ब्योंत}पहनने का कपड़ा बनाने के लिए कपड़ा नापकर उसे काटना-छाँटना।

ब्योंताना *स.* {हिं. क्रि.} शरीर की नाप के अनुसार कपड़ा कटवाना।

ब्योपार पुं. व्यापार।

ब्योरन *स्त्री.* {हिं. ब्योरना} सिर के बाल सँवारकर बाँधने का ढंग।

उदा. बेईकर ब्यौरनि वहै, ब्यौरो कौन विचार —**बिहारी।**

ब्योरना *स.* {हिं. ब्योरा} {*भाव.* ब्योरन} उलझे हुए बालों या सूतों को सुलझाना; अस्पष्ट या छिपी बात साफ-साफ कहना, ब्योरेवार कोई बात बतलाना; *अ.* {किसी बात के सब अंगों पर} अच्छी तरह विचार करना, सोचना-समझना।

ब्योरा पुं. {सं. विवरण} विषय की हरएक बात का सविस्तार उल्लेख या कथन, विवरण, तफसील (डिटेल); किसी घटना आदि की मुख्य बातों का विवरण (पर्टिकुलर्स); वृत्तांत, हाल; अंतर, फर्क।

ब्यौरेबाज *वि.* {हिं. ब्योरा + फा. बाज}{*भाव.* ब्योरेबाजी} धूर्त, चालाक।

ब्योरेबाजी *स्त्री.* {हिं. ब्योरेबाज} धूर्तता, चालाकी।

ब्योरेवार *क्रि. वि.* {हिं. ब्योरा}ब्योरा बतलाते हुए, विस्तार के साथ।

ब्योहर पुं. {हिं.} रुपये का लेन-देन, व्यवहार।

ब्योहरा पुं. {हिं.} सूद पर रुपये देनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

zed by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्योहार पुं. {सं. व्यवहार} रुपए उधार देने का काम या व्यापार।

ब्योहारना स. {सं. व्यवहार} उपयोग में लाना, काम में लाना; स. व्यवहारना।

ब्योहरिया पुं. {सं. व्यवहार} सूद पर रुपया उधार देने का काम करनेवाला।

ब्योहार पुं. व्यवहार।

ब्योहारना स. {सं. व्यवहार} व्यवहार या आचरण करना, बर्ताव करना।
उदा. ऐसे जनम करम के ओछे, औछनि हूँ ब्यौहारत–सूर।

ब्यौसाइ पुं. = व्यवसाय।

ब्यौसाई पुं. =व्यवसायी।

ब्रंद पुं. वृंद।

ब्रज पुं. व्रज।

ब्रजना अ. {सं. व्रजन} चलना, जाना।

ब्रध्न {सं. पुं.} सूर्य, शिव, घोड़ा।

ब्रह्मांड पुं ब्रह्मांड।

ब्रह्म पुं. {सं. ब्रह्मन्} वह सबसे बड़ी परम और नित्य चेतन सत्ता जो जगत् का मूल कारण और सत् चित्त, आनंदस्वरूप मानी गई है; ईश्वर, परमात्मा; आत्मा; ब्राह्मण; (समास में); ब्रह्म (समास में); एक की संख्या; ब्रह्मराक्षस।

ब्रह्मचर्य पुं. {सं.} चार आश्रमों में से पहला जिसमें स्त्री संभोग आदि से बचकर केवल अध्ययन किया जाता है।

ब्रह्मचार पुं. = ब्रह्मचर्य।

ब्रह्मचारी पुं. {सं. ब्रह्मचारिन्} {*स्त्री.* ब्रह्मचारिणी} संयमपूर्वक रहकर ब्रह्मचर्य का पालन करनेवाला।

ब्रह्मज्ञान पुं. {सं.} {*वि.* ब्रह्मज्ञानी} ब्रह्म सत्ता का ज्ञान।

ब्रह्मण्य *वि.* {सं.} ब्राह्मणों से संबंध रखनेवाला; ब्रह्म से संबंध रखनेवाला; ब्राह्मणों पर श्रद्धा रखनेवाला; ब्राह्मणों के उपयुक्त या योग्य फलतः उत्तम; सभ्य और शिष्ट समाज के उपयुक्त।

ब्रह्मत्व पु. {सं.} ब्रह्म का भाव; ब्राह्मण का भाव।

ब्रह्मपद पुं. {सं.} मोक्ष, मुक्ति।

ब्रह्मपुरी *स्त्री.* {सं.} ब्राह्मणों की बस्ती; ऐसे बहुत से मकानों का समूह या मुहल्ला जो राजा-महाराजा ब्राह्मणों को एकसाथ दान करते थे; ब्रह्मलोक।

ब्रह्मभोज पुं. {सं.} ब्राह्मण-भोजन।

ब्रह्मयज्ञ पु. {सं.} पंच महायज्ञों में से एक जिसमें अध्यापन, संध्यावन्दन आदि कृत्य किए जाते हैं।

ब्रह्मराक्षस पुं. {सं.} वह ब्राह्मण जो अकाल मृत्यु से मरकर प्रेत या राक्षस हो गया हो।

ब्रह्मर्षि पुं. {सं.} ब्राह्मण ऋषि।

ब्रह्मलेख पुं. {सं.} ब्रह्मा का लिखा भाग्य का लेख जो ध्रुव माना जाता है।

ब्रह्मलोक पुं. {सं.} ब्रह्मा के रहने का लोक।

ब्रह्मवाद पुं. {सं.} {*वि.* ब्रह्मवादी} यह दार्शनिक सिद्धांत कि सारा विश्व ब्रह्म से ही निकलता है, ब्रह्म ही उसे चलाता है, और वह ब्रह्ममय है (एब्सोल्यूटिज्म)।

ब्रह्मवादी *वि.* {सं. ब्रह्मवादिन्} ब्रह्मवाद का सिद्धांत माननेवाला या उसका अनुयायी (एब्सोल्यूटिस्ट)।

ब्रह्मविद् *वि.* {सं.} ब्रह्म को जानने और समझने वाला, ब्रह्मज्ञानी।

ब्रह्मविद्या *स्त्री.* {सं.} ब्रह्म के स्वरूप और तत्वों आदि की विद्या जिसकी चर्चा उपनिषदों में है।

ब्रह्मसमाज पु. ब्राह्मसमाज।

ब्रह्मसूत्र पुं. {सं.} यज्ञोपवीत, जनेऊ।

ब्रह्महत्या *स्त्री.* {सं.} ब्राह्मण को मार डालना, जो महापातक माना गया है।

ब्रह्मांड पुं. {सं.} अनन्त लोकों या भुवनों अर्थात् तारों, ग्रहों, नक्षत्रों आदि से युक्त सम्पूर्ण विश्व; खोपड़ी के ऊपर का बीचवाला भाग।

ब्रह्मांडकी *स्त्री.* {सं.} वह विज्ञान जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि ब्रह्मांड में तारे, ग्रह आदि किस प्रकार बनते, बढ़ते और अंत में नष्ट होते हैं (कॉस्मोलॉजी)।

ब्रह्मांडीय *वि.* {सं.} ब्रह्मांड-संबंधी।

ब्रह्मा पुं. {सं.} ब्रह्म के तीन सगुण रूपों में वह पहला रूप जो सृष्टि की रचना करनेवाला माना गया है, विधाता।

ब्रह्माक्षर पुं. {सं.} प्रणव, ओंकार।

ब्रह्माणी *स्त्री.* {सं.} ब्रह्मा की पत्नी, शक्ति, सावित्री, गायत्री।

ब्रह्मादिजाता *स्त्री.* {सं.} गोदावरी।

ब्रह्माभ्यास पुं. {सं.} वेदाभ्यास।

ब्रह्मायतन पुं. {सं.} ब्रह्मलोक।

ब्रह्मानंद पुं. {सं.} ब्रह्म के ज्ञान से मिलने वाला आनंद।

ब्रह्मावर्त पुं. {सं.} सरस्वती और दृषद्वती नदियों के बीच का प्रदेश।

ब्रह्मासन पुं. {सं.} ध्यानासन, योगासन।

ब्रह्मास्त्र पुं. {सं.} मंत्र से चलनेवाला एक प्रकार का प्राचीन कल्पित अस्त्र; कभी विफल न होनेवाली युक्ति।

ब्रह्मास्य पुं. {सं.} ब्राह्मण का मुख।

ब्रह्मिष्ठा *स्त्री.* {सं.} दुर्गा।

ब्रह्मीभूत *वि.* {सं.} जो ब्रह्म में मिलकर उसके साथ एक हो गया हो; मृत, स्वर्गीय (साधु और महात्माओं के लिए)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राजीली *वि.* ब्राजील देश-संबंधी।
ब्रात *पुं.* व्रात्य।
ब्राह *पुं.* = वराह।
ब्राह्म *वि.* {सं.} ब्रह्म-संबधी; *पुं.* हिन्दुओं के आठ प्रकार के विवाहों में से वह जो आजकल प्रचलित है।
ब्राह्मण *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* ब्राह्मणी} हिन्दुओं के चार वर्णों में पहला और सबसे श्रेष्ठ वर्ण या जाति जिसका मुख्य काम पठन-पाठन, यज्ञ, ज्ञानोपदेश आदि है; उक्त जाति या वर्ण का मनुष्य; वेद के मंत्र-भाग से भिन्न भाग।
ब्राह्मणी *स्त्री.* {सं.} ब्राह्मण की स्त्री।
ब्राह्मण्य *पुं.* {सं.} ब्राह्मण का धर्म, विप्रत्व।
ब्राह्मण-भोजन *पुं.* {सं.} धार्मिक दृष्टि से ब्राह्मणों को कराया जानेवाला भोजन।
ब्राह्मणवाद *पुं.* {सं.} ब्राह्मणों को ही अधिक महत्व देने की धारणा या सिद्धांत।
ब्राह्मणवादी *वि* {सं.} ब्राह्मणवाद को माननेवाला।
ब्राह्ममुहूर्त *पुं.* {सं.} सूर्योदय से दो घड़ी पहले का समय; प्रभात, तड़का।
ब्राह्मवेला *स्त्री.* ब्राह्ममुहूर्त।
ब्राह्मसमाज *पुं.* {सं.} {*वि.* ब्राह्मसमाजी} एकमात्र ब्रह्म की उपासना करनेवाला एक आधुनिक संप्रदाय।
ब्राह्मी *स्त्री.* {सं.} दुर्गा; भारत की वह प्राचीन लिपि जिससे नागरी आदि आधुनिक लिपियाँ निकली हैं।
ब्राह्मीकंद *पुं.* {सं.} बाराहीकंद।
ब्राह्मय {सं. *वि.*} ब्रह्म संबंधी।
ब्राह्मो *पुं.* {ब्राह्मसमाज} ब्रह्म समाज का अनुयायी।
ब्रिज *पुं.* = ब्रज।
ब्रिटिश *वि.* {अं.} ग्रेट ब्रिटेन या इंग्लैंड देश का।
ब्रितानी *वि.* ब्रिटेन-संबंधी।
ब्रीड़ना *अ.* {सं. व्रीडन} लज्जित होना।
ब्रीषभ *पुं.* = वृषभ।
ब्लॉक *पुं.* {अं.} छापे के काम के लिए काठ, ताँबे, जस्ते आदि पर बना हुआ चित्रों का ठप्पा; इमारतों का वह समूह जिसके चारों ओर कुछ खाली जगह छूटी हो।
ब्लैकमेल *पुं.* {अं.} भयादोहन।
ब्वै *वि.* = बिय (दो)।
ब्वौना *स.* = बोना (बीज आदि)।

भ

भ नागरी वर्णमाला के व्यंजनों में चौबीसवाँ और पवर्ग का चौथा वर्ण, जिसका उच्चारण ओष्ठ से होता है, छंदशास्त्र में यह 'भगण' का सूचक या संक्षिप्त रूप है।
भंकार *पुं.* {सं.} विकट शब्द, भयंकर ध्वनि।
भंकारी *स्त्री.* {हिं.} भुनगा, लघु मच्छर।
भंग *पुं.* {सं.} {*वि.* भग्न} टूटने, खंडित होने या विघटित होने की क्रिया या भाव; निश्चय, प्रतीति, नियम आदि में पड़नेवाला अंतर (बीच); ध्वंस, विनाश; टेढ़े होने या झुकने की क्रिया या भाव, टेढ़ापन; *स्त्री.* भाँग।
भंगड़ *वि.* भँगेड़ी।
भंगना *अ.* {हिं. भंग} टूटना; दबना। *स.* तोड़ना; दबाना।
भँगरा *पुं.* {हिं. भाँग} भाँग के रेशों का बना हुआ कपड़ा।
भंगराज *पुं.* हिं.} कोयल की तरह की चिड़िया।
भंगार *पु.* {हिं.} कूप-पूर्व गड्ढा, कूड़ा-करकट, घासफूस।
भंगिमा *स्त्री.* {सं.} टेढ़ापन, कुटिलता; स्त्रियों के हाव-भाव या कोमल चेष्टाएँ; लहर।
भंगी[1] *वि.* {सं. भंगिन्} {*स्त्री.* भंगिनी} भंग करने या तोड़नेवाला; नष्ट करनेवाला; भंग या नष्ट हो जानेवाला।
भंगी[2] *स्त्री.* {सं. भंगिमा} पुरुषों को मोहित करने के लिए होनेवाली स्त्रियों की कोमल चेष्टाएँ, हाव-भाव, जैसे भाव भंगी।
भंगी[3] *पुं.* {सं. भक्त} {*स्त्री.* भंगिन} मैला या विष्ठा उठानेवाली एक जाति।
भंगी[4] *पुं.* {हिं. भाँग} भाँग पीनेवाला, भँगेड़ी।
भंगुर *वि.* {सं.} जल्दी भंग या नष्ट होनेवाला, नाशवान; टेढ़ा।
भँगेड़ी *वि.* {हिं. भाँग} बहुत या नित्य भाँग पीनेवाला, भंगड़।
भँगेरा *पुं.* {हिं.} भाँग की छाल का बना हुआ कपड़ा।
भँगेला *पुं.* भँगरा।
भंजक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* भंजिका} भंग करने या तोड़नेवाला।
भंजन *पुं.* {सं.} तोड़ना, भंग करना; ध्वंस, नाश; *वि.* तोड़ने, बिगाड़ने या नष्ट करनेवाला (यौ. शब्दों के अंत में, जैसे भवभय-भंजन)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digi Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भँजना¹ *अ.* {सं. भंजन} टुकड़े होना, टूटना; भुनना (सिक्का)।

भँजना² *अ.* {हिं. भाँजना} भाँजा जाना; कागज के तावों का कई परतों में मोड़ा जाता (दफ्तरी)।

भंजना³ *स.* {हिं. भंजन} तोड़ना।

भँजनी *स्त्री.* {हिं.} करघे का एक अंग जो ताने के किनारे पर लगा रहता है।

भंजनीय *वि.* {सं.} तोड़ने के योग्य।

भँजाना *स.* {हिं. क्रि.} तुड़वाना, रस्सी, बड़ी मुद्रा का छोटी मुद्रा में बदला जाना।

भँजाई *स्त्री.* {सं. भाँजना} भाँजने की क्रिया, भाव या मजदूरी। *स्त्री.* भुनाई।

भंटा *पुं.* बैंगन।

भंड¹ *पुं.* भाँड़।

भंड² *वि.* {सं.} गंदी, भद्दी या अश्लील बातें करनेवाला; धूर्त; पाखंडी।

भंडता *स्त्री.* {सं.} भाँड़ों का काम; भाँड़ों की-सी तुच्छ हँसी-दिल्लगी, ओछा परिहास।

भँड़ताल *पुं.* {हिं. भाँड़ + ताल} तालियाँ बजा-बजाकर गाया जानेवाला एक प्रकार का निम्नकोटि का गाना; इस गाने के साथ होनेवाला नाच।

भँडतिल्ला *पुं.* भँड़ताल।

भंडना *स.* {सं. भंडन} हानि पहुँचाना; बिगाड़ना; तोड़ना-फोड़ना; *स.* चारों ओर बदनामी करते फिरना।

भंडर¹ *पु.* भड्डर।

भंडर² *वि.* {सं. भंड} पाखडी; धूर्त।

भँडरिया *स्त्री.* {हिं. भंडारा} दीवारों में बना हुआ पल्लेदार ताखा या छोटी आलमारी।

भंडा *पुं.* {सं. भांड} बरतन, पात्र; भेद, रहस्य।

मुहा. भंडा फूटना = रहस्य प्रकट होना।

भँडाना *स.* भंडना।

भंडाफोड़ *वि.* {हिं. भाँडा + फूटना} रहस्य खोलनेवाला, भेद प्रकट करनेवाला।

भंडार *पुं.* {सं. भांडागार} कोष, खजाना; खाने-पीने की चीजें रखने का स्थान, कोठार; पेट, उदर; भंडारा।

भंडारा *पुं.* {हिं. भंडार} भंडार; समूह, झुंड; साधु-संतों का भोज।

भंडारी *पुं.* {हिं. भंडार} कोषाध्यक्ष; भंडार का प्रबन्ध करनेवाला अधिकारी; रसोइया।

भँडेरिया *पुं.* भड्डर।

भँडरियापन {हिं. पुं.} पाखंड, ढोंग।

भँडेहर *पुं.* {सं. भांड} छोटे-छोटे, विशेषता मिट्टी के बरतन; थोड़ी-सी जगह में भरी हुई व्यर्थ की बहुत-सी चीजें।

भँड़ैती *स्त्री.* {हिं. भाँड़} भाँड़ों का काम या पेशा; भाँड़ों की-सी खुशामद-भरी या उछल-कूद की चेष्टा या बातचीत।

भँड़ौआ *पुं.* {हिं. भाँड़} भाँड़ों के गाने का अशिष्टपूर्ण गीत या कविता; हास्यपूर्ण निम्नकोटि की कविता।

भंबूरी *स्त्री.* {हिं.} बबूल की जाति का वृक्ष।

भंभरना *क्रि.* {हिं. *अ.*} भयभीत होना, डरना।

भंभा *पुं.* {सं.} बिल, छेद।

भंभाका *स्त्री.* {हिं.} बड़ा छिद्र।

भंभाना {हिं. क्रि. *अ.*} गौ आदि पशुओं का चिल्लाना।

भँभीरी *स्त्री.* {सं. भ्रमरी} फिरकी नाम का काठ का खिलौना जो खूब चक्कर काटता है।

उदा. जिउ बावर भा फिरै भँभीरी—**जायसी।**

भँभेरी *स्त्री.* भय।

भँवन *स्त्री.* {सं. भ्रमण} भँवने या घूमने की क्रिया या भाव, भ्रमण।

भँवना *अ.* {सं. भ्रमण} घूमना; चक्कर या फेरा लगाना।

भँवर *पुं.* {सं. भ्रमर} भौंरा; नदी के बहाव में वह स्थान जहाँ पानी चक्कर की तरह घूमता है; गड्ढा, गर्त।

भँवर-कली *स्त्री.* {हिं. भँवर + कली} वह ढीली कड़ी जो कील में इस प्रकार लगी रहती है कि चारों ओर घूम सके।

भँवर-जाल *पुं.* {हिं. भ्रमर + जाल} सांसारिक झगड़े-बखेड़े, भ्रम-जाल।

भँवरा *पुं.* भौंरा।

भँवरी *स्त्री.* {हिं. भँवरा} पानी का चक्कर, भँवर; भौंरी; *स्त्री.* भाँवर।

भँवा *पुं.* {हिं. भँवना} फेरा, चक्कर।

भँवाना *पुं.* {हिं. भँवना} घुमाना, चक्कर देना; धोखे में डालना।

मुहा. भँवाकर जोतना = किसी को धोखा देकर उसे कार्य के साधने के अनुकूल बनाना।

भँवारा *वि.* {हिं. भँवना + आरा (प्रत्य.} चक्कर लगाने या घूमनेवाला।

भँवैया *वि.* {हिं. भँवाना} घुमाने या चक्कर दिलानेवाला; तरह-तरह के नाच नचाने या खेल खेलानेवाला।

भइया *पुं.* {हिं. भाई} भाई; भाई या बराबरवालों के लिए सम्बोधन; *स्त्री.* भावज।

भई¹ *पुं.* {हिं. भाई} बोलचाल में 'भाई' के लिए संबोधन, जैसे-भई, वाह! क्या बात है!

भई² *अ.* पूर्वी हिन्दी के 'भया' का *स्त्री.* रूप।

भक *अव्य.* {हिं.} आग के एकाएक जलने या धुआँ के निकलने से उत्पन्न शब्द।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भकभकाना *अ.* {अनु.} भकभक शब्द करके जलना; चमकना।

भकक्षा *स्त्री.* {सं.} नक्षत्रों की कक्षा।

भकभूरि *वि.* {सं. भेक} मूर्ख, बेवकूफ; उजड्ड।

भकसाना *क्रि. अ.* {हिं.} किसी खाद्य-पदार्थ का दुर्गंधयुक्त और खट्टा हो जाना।

भकाऊँ *पुं.* {अनु.} हौआ।

भकुआ *वि* {सं. भेक} मूर्ख।

भकुआना *अ.* {हिं. भकुआ} चकपकाना, भौचक्का होना; *स.* चकपका देना; मूर्ख बनाना।

भकुड़ा *पुं.* {हिं.} तोप में बत्ती आदि दूँसने का मोटा गज।

भकूट *स्त्री.* {सं.} ज्योतिष में एक प्रकार की राशियों का समूह।

भकोसना *स.* {सं. भक्षण} जल्दी या भद्देपन से खाना (व्यंग्य)।

भक्त *वि.* {सं.} कई भागों में बाँटा हुआ; देने के लिए बाँटा हुआ; निकाला या अलग किया हुआ; ईश्वर या देवता की भक्ति करनेवाला; किसी बड़े पर श्रद्धा रखनेवाला।

भक्तवत्सल *वि.* {सं.} {*भाव.* भक्तवत्सलता} भक्तों पर कृपा करनेवाला।

भक्ताई *स्त्री.* भक्ति।

भक्ति *स्त्री.* {सं.} अलग-अलग भाग या टुकड़े करना; भाग, विभाग; विभाग करनेवाली रेखा; देवी-देवता या ईश्वर के प्रति होनेवाला विशेष प्रेम, जो नौ प्रकार का माना गया है और इसीलिए जिसे नवधा भक्ति कहते हैं, यथा-श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन; किसी बड़े के प्रति होनेवाली श्रद्धा या आदरभाव।

भक्तिमार्ग *पुं.* {सं.} धार्मिक क्षेत्र में ईश्वर या देवता की वह उपासना जिसमें उसकी नवधा-भक्ति करके मोक्ष प्राप्त करने का प्रयत्न होता है।

भक्ष *पुं.* भक्षण; अशन।

भक्षक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* भक्षिका} खानेवाला, खादक; अपने स्वार्थ के लिए किसी का सर्वनाश करनेवाला।

भक्षण *पुं.* {सं.} {*वि.* भक्ष्य, भक्षित} भोजन करना, खाना।

भक्षणीय {सं. *वि.*} भक्षण योग्य, खाने योग्य।

भक्षना *स.* = भोजन करना।

भक्षित *वि.* {सं.} खाया हुआ।

भक्षी *वि.* भक्षक।

भक्ष्य *वि.* {सं.} जो खाया जा सके; *पुं.* आहार, भोजन।

भख *पुं.* {सं. भक्ष} भोजन।

भखना *स.* {सं. भक्षण} भोजन करना, खाना।

भगंदर *पुं.* {सं.} गुदा के भीतरी भाग में होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा।

भग *पुं.* {सं.} सूर्य; धन-संपत्ति, ऐश्वर्य; सौभाग्य; *स्त्री.* स्त्री की योनि या जननेंद्रिय।

भगण *पुं.* {सं.} खगोल में ग्रहों का 360 अंशों का पूरा चक्कर; छंद शास्त्र में एक मत जिसमें पहले एक वर्ण गुरु और तब दो वर्ण लघु होते हैं, जैसे-मानस; इसका रूप यह है-ऽ।।

भगत *वि.* {सं. भक्त} {*स्त्री.* भक्तिन} भक्त, सेवक; वह जो मांस आदि न खाता हो; भगतिया।

भगत-बछल *वि. भक्तवत्सल।*

भगति *स्त्री.* भक्ति।

भगतिया *पुं.* {हिं. भक्त} {*स्त्री.* भगतिन} गाने-बजाने का काम करनेवाली राजपूताने की एक जाति।

भगती *स्त्री.* भक्ति।

भगदड़ *स्त्री.* {हिं. भागना + दौड़ना} बहुत से लोगों का एक साथ इधर-उधर या किसी एक ओर भागना।

भगन *वि* भग्न।

भगना[1] *अ.* भागना।

भगना[2] *पुं.* भानजा।

भगर (ल) *पुं.* {देश.} {*वि.* भगरी (ली).} छल, कपट; ढोंग; जादू।

भगरना *क्रि. अ.* {हिं.} खत्ते में अन्न का सड़ने लगना।

भगल *पुं.* {हिं.} जादू, छल-कपट, इंद्रजाल।

भगली *पुं.* {हिं.} ढोंगी, छली, बाजीगर।

भगवंत *पुं.* भगवत्।

भगवत, भगवत् *पुं.* {सं.} परमेश्वर।

भगवती *स्त्री.* {सं.} देवी; दुर्गा; सरस्वती।

भगवदीय *वि.* {सं. भगवत्} भगवत्-संबंधी; भगवान का भक्त।

भगवा *पुं.* {हिं.} लंगोटा, गेरुआ रंग।

भगवान, भगवान् *वि.* {सं. भगवत्} धन-संपत्ति या ऐश्वर्यवाला; पूज्य और आदरणीय व्यक्ति।

भगाना *स.* {हिं. 'भागना' का प्रे.} किसी को कहीं से जल्दी हटने या भागने में प्रवृत्त करना; ऐसा काम करना जिससे कोई कहीं से हट या भाग जाए; स्त्री-बच्चे आदि को उसके घर से लोगों से छुड़ाकर अपने साथ कहीं ले जाना, अपनयन (एब्डक्शन); *अ.* भागना।

भगिनी *स्त्री.* {सं.} बहन।

भगीरथ *पुं.* {सं.} अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो उत्कट तपस्या करके गंगा को पृथ्वी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digit Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर लाए थे; *वि.* {भगीरथ की तपस्या की तरह का} बहुत बड़ा या भारी।

भगोड़ा *पुं.* {हिं. भागना} वह जो अपना काम, पद या कर्तव्य छोड़कर किसी डर से दूसरी जगह चला गया हो (फ्यूजीटिव); वह जो दंड भोगने के भय से कहीं भाग गया हो।

भगोल *पुं.* ख़गोल; नक्षत्र चक्र।

भगौती *स्त्री.* = भगवती।

भगौंहाँ *वि.* {हिं. भागना} भागने के लिए सदा तैयार रहनेवाला; कायर।

भग्गी *स्त्री.* भगदड़।

भग्गुल *वि.* भगोड़ा; कायर।

भग्गू *वि.* {हिं. भागना} डरकर भागनेवाला, कायर।

भग्न *वि.* {सं.} {*स्त्री.* भग्ना} टूटा हुआ।

भग्नांश *पुं.* {सं.} किसी पूरी या समूची संख्या या वस्तु का कोई भाग या अंश (फ्रैक्शन) जैसे 1/4 जो 1 का भग्नांश है।

भग्नावशेष *पुं.* {सं.} टूटी-फूटी इमारत या उजड़ी हुई बस्ती का बचा-खुचा अंश, खंडहर; किसी चीज के टूटे-फूटे और बचे हुए टुकड़े।

भग्नाश *वि.* {सं.} जिसकी आशा भंग हो गई हो, निराश।

भचक *स्त्री.* {हिं.} भचककर चलने का भाव, लँगड़ापन।

भग्नाश *वि.* {सं.} जिसकी आशा भंग हो गई हो, निराश।

भचकना[1] *अ.* {हिं. भौचक} आश्चर्य से स्तब्ध होकर रह जाना।

भचकना[2] *अ.* {अनु. भच} {*भाव.* भचक} चलने में पैर इस प्रकार लचककर पड़ना कि देखने में चलनेवाला लँगड़ाता हुआ जान पड़े।

भचक्र *पुं.* राशिचक्र।

भच्छ *पुं.* भक्ष्य।

भक्षना *पुं.* = भक्षण।

भच्छना *स.* {सं. भक्षण} खाना।

भजक {सं. *वि.*} विभाजक, भाग करनेवाला।

भजन *पुं.* {सं.} बार-बार ईश्वर या देवता का नाम लेना; वह गीत जिसमें ईश्वर या देवता के गुणों या सत्कर्मों का श्रद्धापूर्ण वर्णन हो।

भजना[1] *अ.* {सं. भजन} देवता आदि का नाम रटना, भजन करना, जपना; किसी के ध्यान में लगकर उसकी सेवा करना; भोगना; धारण या वहन करना।

भजना[2] *अ.* {सं. व्रजन, पा. वजन} भागना; प्राप्त होना, पहुँचना।

भजनानंद *पुं.* {सं.} वह आनंद जो परमेश्वर का नाम लेने से प्राप्त होता है।

भजनानंदी *पुं.* {सं. भजनानंद + ई} ईश्वर-भजन में मग्न रहनेवाला।

भजनी, भजनीक *पुं.* {हिं. भजन} भजन गानेवाला, गायक।

भजनीय {सं. *वि.*} विभाग करने योग्य, सेवा करने योग्य।

भजमान {सं.*वि.*} विभाग करनेवाला।

भजाना *स.* भगाना।

भट *पुं.* {सं.} योद्धा, सैनिक; पहलवान।

भटई *स्त्री.* {हिं. भाट} भाट का काम या भाव, भाटपन; दूसरों की झूठी प्रशंसा और खुशामद।

भटकना *अ.* {सं. भ्रम?} कुछ ढूँढ़ने के लिए या यों ही इधर-उधर भूलकर घूमते फिरना; रास्ता भूलकर इधर-उधर चला जाना; भ्रम में पड़ना।

भटकाना *स.* हिं. 'भटकना' का *स.*।

भटकैया *पुं.* {हिं. भटकना} भटकनेवाला; भटकाने वाला।

भटकौंहाँ *वि.* {हिं. भटकना} भटकानेवाला।

भटभटी *स्त्री.* {अनु.} ऐसी अवस्था जिसमें आँखों में चकाचौंध होने के कारण कुछ दिखाई न पड़े।

भट-भेरा *पुं.* {हिं. भट + भिड़ना} दो वीरों का आपस में भिड़ना, भिड़न्त; धक्का, टक्कर; रास्ते में अनायास हो जानेवाली भेंट।

भटू *स्त्री.* {सं. वधू} स्त्रियों के लिए एक आदरसूचक सम्बोधन; वधू, बहू।

भट्ट *पुं.* {सं. भट} ब्राह्मणों की एक उपाधि; भाट; योद्धा, सूर।

भट्टप्रयाग *पुं.* {सं.} गंगा और यमुना का संगम-स्थल।

भट्टारक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* भट्टारिका} ऋषि; पंडित; सूर्य; राजा; देवता; *वि.* माननीय, मान्य।

भट्टारकवार *पुं.* {सं.} आदित्यवार, रविवार।

भट्ठा *पुं.* {सं. भ्राष्ट्र} बड़ी भट्ठी; ईंटें आदि पकाने का आँवाँ।

भट्ठी *स्त्री.* {सं. भ्राष्ट्र, प्रा. भट्ठ} ईंटों आदि का बना वह बड़ा चूल्हा जिस पर कारीगर अनेक प्रकार की वस्तुएँ पकाते हैं; देशी शराब बनाने का स्थान या कारखाना; देशी शराब की दुकान।

भठियारा *पुं.* {हिं. भट्ठी} {*स्त्री.* भठियारिन, भाव. भठियारापन} सराय की देखरेख और उसमें ठहरने वालों के भोजन का प्रबंध करने वाला।

भडंबा *पुं.* {सं. विडंबन} आडंबर।

भड़क *स्त्री.* {अनु.} भड़कने की क्रिया या भाव; ऊपरी चमक-दमक।

भड़कदार *वि.* चमकीला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भड़कना *अ.* {हिं. भड़क (अनु.) ना (प्रत्य.)} तेजी से जल उठना, जैसे आग भड़कना; अचानक चौंकना, डरकर पीछे हटना (पशुओं का); अचानक कुछ उग्र रूप धारण करना (मनुष्य या उसके मनोविकार का)।

भड़काना *स. हिं.* 'भड़कना' का स.।

भड़कीला *वि* {हिं. भड़क} तड़क-भड़क या चमक-दमकवाला।

भड़भड़ *स्त्री.* {अनु.} आघात आदि से होनेवाला शब्द; व्यर्थ की बकवाद।

भड़भड़ाना *स.* {अनु.} आघात करके भड़भड़ शब्द उत्पन्न करना।

भड़भड़िया *वि.* {अनु. भड़भड़} बहुत बढ़-बढ़कर व्यर्थ की बातें करनेवाला।

भड़भाँड़ *पु.* {सं. भांडीर} एक प्रकार का कँटीला पौधा, जिसके बीजों का तेल जहरीला होता है, घमोय, सत्यानाशी।

भड़भूँजा *पु.* {हिं. भाड़ + भूँजना} भाड़ में अन्न भूनने का काम करनेवाला व्यक्ति।

भड़साईं *स्त्री.* भाड़।

भड़हर *पु.* = भाँडा (बरतन)।

भड़ार *पु.* भंडार।

भड़ाल {हिं. पु.} वीर, योद्धा।

भड़ास *स्त्री.* {अनु.} मन में छिपे हुए असंतोष या क्रोध की वह अवस्था जब उसे किसी उपयुक्त अवसर पर प्रकट किया जाता है; वह गर्मी जो पहले-पहल पानी छिड़कने पर भूमि के अंदर से निकलती है।

भड़िहा {हिं. पु.} तस्कर, चोर।

भड़िहाई *क्रि. वि.* {सं. भांडहर} चोरों की तरह लुक-छिपकर।

भड़ी *स्त्री.* {हिं. भड़काना} झूठा बढ़ावा।

भड़ुआ *पु.* {हिं. भाँड़} वेश्याओं का दलाल; सपरदाई।

भड़ेरिया *पु.* भड्डर।

भड़ैत *पु.* {हिं. भाड़ा} दूसरे के मकान में किराए पर रहनेवाला, किरायेदार।

भड़ैती *पु.* = भड़ैत।

भड़ौआ *पु.* {हिं. भाँड़} वह हास्यरसपूर्ण कविता जो भाँड़ों की तरह किसी का उपहास करने के लिए हो; किसी की कविता के अनुकरण पर बनी हुई, पर उसका उपहास करनेवाली अथवा हास्यपूर्ण कविता (पैरोडी)।

भड्डर *पु.* {सं. भद्र} एक प्रकार के ब्राह्मण जो सामुद्रिक आदि के द्वारा भविष्य बतलाकर अथवा तीर्थों में लोगों को देवदर्शन कराके जीविका चलाते हैं, भंडर।

भणन *पु.* {सं.} कथन, उक्ति।

भणना *स.* {सं. भणन} कहना।

भणित *वि.* {सं.} कहा हुआ, कथित।

भणिति *स्त्री.* {सं.} लोकोक्ति, कहावत।

भतवान *पु.* {हिं.} विवाह की रीति जिसमें कन्या-पक्ष के लोग वर-पक्ष के लोगों को कच्ची रसोई खिलाते हैं।

भतार *पु.* {सं. भर्तार} पति, खसम।

भतीजा *पु.* {सं. भ्रातृज} {*स्त्री.* भतीजी} भाई का लड़का।

भतुआ *पु.* {हिं.} सफेद कुम्हड़ा, पेठा।

भत्ता *पु.* {सं. भक्तक} वह मासिक या दैनिक व्यय जो किसी कर्मचारी को यात्रा आदि के समय अथवा कोई अतिरिक्त कार्य करने के लिए मिलता है (एलाउंस)।

भदंत *वि.* {सं. भद्र} पूज्य, मान्य; पु. बौद्ध भिक्षुक या साधु।

भदई *स्त्री.* {हिं. भादों} भादों में तैयार होनेवाली फसल।

भदभद {हिं. *वि.*} बहुत मोटा, भद्दा।

भदयल *पु.* {हिं.} मेंढक।

भदेस *वि.* भद्दा।

भदेसिल {हिं. *वि.*} भद्दा, कुरुप।

भद्द *स्त्री.* बेइज्जती।

भद्दा *वि.* {सं. भद्र} {*स्त्री.* भद्दी, *भाव.* भद्दापन} जो देखने में अच्छा न लगे, कुरूप; अश्लील।

भद्र *वि.* {सं.} {भाव. भ्रदता} सभ्य, शिष्ट, साधु।

भद्रा *स्त्री.* {सं.} गाय; दुर्गा; पृथ्वी; फलित ज्योतिष के अनुसार एक अशुभ योग।

भद्री {सं. *वि.*} भाग्यवान्।

भनक *स्त्री.* {सं. भणन} धीमा शब्द, ध्वनि; उड़ती हुई खबर।

भनकना *स.* कहना।

भनना *स.* कहना।

भनभन *स्त्री.* {अनु.} भौंरे का शब्द।

भननाना *स्त्री.* {अनु.} {*भाव.* भनभनाहट} भनभन शब्द करना, गुंजारना।

भनसाघर *पु.* = रसोईघर।

भनित *वि.* भणित।

भनीजना *स.* {सं. भणन} कहना या बोलना।

भभक *स्त्री.* {अनु.} भभकने की क्रिया या भाव; रह-रहकर आनेवाली दुर्गंध।

भभकना *अ.* {अनु.} उबलना; (आग का) जोर से जलना, भड़कना।

भभका *पु.* {हिं. भाप} अरक उतारने का एक प्रकार का घड़ा, कराबा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भभकी *स्त्री.* {हिं. भभक} झूठी धमकी या घुड़की।

भभरना *अ.* {हिं. भय} भयभीत होना, डरना; घबरा जाना; भ्रम में पड़ना; एकदम से गिर पड़ना, भहराना।

भभीरी *स्त्री.* {हिं.} झींगुर।

भभूका *पुं.* {हिं. भभक} ज्वाला।

भभूत *स्त्री.* {सं. विभूति} वह भस्म जो शैव मस्तक और भुजाओं पर लगाते हैं।

भभ्भड़ *पुं.* {हिं. भीड़} भीड़भाड़; होहल्ला, शोर।

भयंकर *वि.* {सं.} {*स्त्री.* भयंकरी, *भाव.* भयंकरता} जिसे देखने से भय या डर लगे, भयानक, डरावना; बहुत उग्र और विकट।

भय *पुं.* {सं.} विपत्ति या अनिष्ट की आशंका से मन में उत्पन्न होनेवाला विकार या भाव, डर, खौफ।

मुहा. भय खाना = डरना।

वि. हौआ।

भयप्रद *वि.* भयानक।

भयभीत *वि.* {सं.} डरा हुआ।

भयल *अ.* पूवी हिन्दी में 'होना' क्रिया का भूत. रूप।

भयहारी *वि.* {सं. भयहारिन्} भय या डर दूर करनेवाला।

भया *क्रि. अ.* {हिं.} होना क्रिया का भूतकालिक रूप, हुआ।

भयाकुल {सं. *वि.*} डर से घबराया हुआ।

भयातुर *वि.* {सं.} {*भाव.* भयातुरता} भय से विकल, डरा और घबराया हुआ।

भयादोहन *पुं.* {सं.} भय दिखाकर किसी से अनुचित लाभ प्राप्त करने की क्रिया या भाव (ब्लैकमेल)।

भयान *वि.* भयानक।

भयानक *वि.* {सं.} जिसे देखने से भय या डर लगे, भयंकर, डरावना; *पुं.* साहित्य में नौ रसों में एक जो अनिष्ट करनेवाली भयावनी और विकट घटनाओं या उनकी आशंका से मन में होनेवाले आतंक या भय से उत्पन्न होता है।

भयाना *अ.* {सं. भय} डरना; *स.* भयभीत करना, डरना।

भयारा *वि.* भयानक, डरावना।

भयावन, भयावना *वि.* {हिं. भय} {*स्त्री.* भयावनी} डरावना।

भयावह *वि.* {सं.} जिसे देखकर भय या डर लगे, भय उत्पन्न करनेवाला, भयानक; जिसके कारण कोई विकट या विपत्तिजनक घटना होने की संभावना या आशंका हो।

भयावहा *स्त्री.* {सं.} रात्रि, रात।

भय्या *पुं.* {हिं.} भैया, भाई।

भयो[1] *स्त्री.* {सं. भ्रात-जाया} छोटे भाई की स्त्री, छोटी भावज या भौजाई।

भयो[2] *अ.* पूर्वी हिन्दी में 'हुआ' का एक रूप।

भांड *पुं.* {सं.} स्वामी, मालिक, बल, कृमि।

भरंत[1] *स्त्री.* {हिं. भरना} भरने की क्रिया या भाव, भराई।

भरंत[2] *स्त्री.* {हिं. भ्रांति} संदेह।

भर[1] *वि.* {हिं. भरना} कुल, पूरा, सब; (पात्र, मान, नाप आदि के विचार से) भरा हुआ या पूरा, जैसे कटोरा भर दूध, गज भर कपड़ा।

भर[2] *क्रि. वि.* {हिं. भार} बल से, द्वारा।

भर[3] *पुं.* {सं. भार} बोझ; भराव।

भर[4] *पुं.* {सं. भरत} हिन्दुओं की एक जाति।

भरक {हिं.पुं.} पक्षी।

भरकना *अ.* भड़कना।

भरका *पुं.* {देश.} पहाड़ों या जंगलों में वह गहरा गड्ढा जिसमें चोर-डाकू छिपते हैं।

भरट *पुं.* {सं.} कुम्हार, सेवक।

भरण *पुं.* {सं.} भरने की क्रिया या भाव; पालन-पोषण; किसी के पास उसकी आवश्यकता की वस्तुएँ पहुँचाना (सप्लाई)।

भरणी *पुं.* {सं.} सत्ताईस नक्षत्रों में से दूसरा नक्षत्र।

भरणीय {सं. *वि.*} पालने-पोसने योग्य।

भरण्य *पुं.* {सं.} मूल्य, वेतन।

भरण्यु *पुं.* {सं.} मेघ, अग्नि, ईश्वर, बैल।

भरण-पोषण *पुं.* {सं.} किसी को जीवित और निश्चिन्त रखकर उसका पालन करने की क्रिया या भाव (मैन्टीनेंस, सपोर्ट)।

भरत[1] *पुं.* {सं.} रामचन्द्र के छोटे भाई जो कैकेई के गर्भ से उत्पन्न हुए थे; शकुन्तला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यंत के पुत्र, जिनके नाम पर इस देश का 'भारतवर्ष' नाम पड़ा है; नाट्यशास्त्र के प्रधान आचार्य एक प्रसिद्ध मुनि।

भरत[2] *स्त्री.* {हिं. भरना} भरने या भरे हुए होने की क्रिया या भाव, भरन, भराव।

भरत[3] *पुं.* {सं. भरद्वाज} लवा पक्षी।

भरत[4] *पुं.* {देश.} काँसा नामक धातु।

भरतखंड *पुं.* = भारतवर्ष।

भरतरी *स्त्री.* {हिं.} पृथ्वी।

भरता *पुं.* {देश.} बैंगन, आलू आदि को भूनकर बनाया जानेवाला एक प्रकार का सालन, चोखा; वह जो दबने से बिल्कुल विकृत हो गया हो।

भरताग्रज *पुं.* {सं.} श्रीरामचन्द्र।

भरतार *पुं.* {सं. भर्तृ} पति, खसम; स्वामी, मालिक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chenna Gangotri

भरती *स्त्री.* {हिं. भरना} किसी चीज में (या के) भरे जाने का काम या भाव; सेना, सेवा आदि में प्रविष्ट होने या लिए जाने का भाव (रिक्रूटमेंट); कक्षा आदि में प्रविष्ट होने या लिए जाने का भाव; केवल स्थानपूर्ति के लिए रखी या भरी हुई व्यर्थ की चीजें या बातें।

भरत्थ *पुं.* भरत।

भरथ *पुं.* {सं.} लोकपाल।

भरथरी *पुं.* भतृहरि।

भरदूल *पुं.* {सं. भरद्वाज} लवा (पक्षी)।

भरद्वाज *पुं.* {सं.} एक प्राचीन गोत्र प्रवर्तक ऋषि जो राजा दिवोदास के पुरोहित थे; बगेरी या भरदूल नामक पक्षी।

भरन[1] *स्त्री.* {हिं. भरना} भरने की क्रिया या भाव, भराव; भरनी।

भरन[2] *पुं.* {सं. भार} बोझ, भार।

भरना *स.* {सं. भरण} खाली जगह को पूरा करने के लिए उसमें कोई चीज डालना, पूर्ण करना, जैसे हवा भरना; उँड़ेलना, उलटना, डालना, जैसे पानी भरना; तोप या बंदूक में गोला, गोली, बारूद आदि रखना; ऋण चुकाना या क्षतिपूर्ति करना, चुकाना, देना; गुप्त रूप से किसी के संबंध में किसी से कुछ निंदात्मक बातें करना; निर्वाह करना, निबाहना; समय काटना या बिताना, जैसे दिन भरना; सहना, झेलना, भोगना।

उदा. तात-मरन, सिय-हरन राम बन-बपु धरि बिपति भरै—सूर।

अ. रिक्त पात्र या खाली स्थान का किसी और पदार्थ के आने से पूर्ण होना; उँड़ेला या डाला जाना; तोप या बंदूक में गोला, गोली, बारूद आदि रखा जाना; ऋण या देन का चुकाया जाना; मन का क्रोध, असंतोष या अप्रसन्नता से युक्त होना; घाव का अच्छे होने पर आना; अधिक परिश्रम के कारण किसी अंग का दर्द करने लगना; शरीर का हृष्ट-पुष्ट होना; घोड़ी आदि का गर्भवती होना।

पुं. भरने की क्रिया या भाव: रिश्वत, घूस।

भरनि *स्त्री.* {सं. भरण} पहनावा।

भरनी *स्त्री.* {हिं. भरना} करघे में की ढरकी, नार; खेत में पानी भरने की क्रिया या भाव।

भरपाई *स्त्री.* {हिं. भरना + पाना} पूरा-पूरा पावना पा जाना; इस प्रकार पूरा पा जाने पर लिखी जानेवाली रसीद।

भरपूर *वि.* {हिं. भरना + पूरा} पूरी तरह से भरा हुआ; जिसमें कोई कमी न हो, पूरा-पूरा; *क्रि. वि.* पूरी तरह से।

भरपेट {हिं. अव्य.} पेट भरकर, जी भरकर।

भरभराना *अ.* {अनु.} (शरीर के रोएँ) खड़े होना; घबराना; अचानक नीचे आ गिरना।

भरभराहट *स्त्री.* {हिं.} घबराहट।

भरभेंटा *पु.* भेंट; मुठभेड़।

भरम *पुं.* {सं. भ्रम} भ्रम, संदेह; भेद, रहस्य; आतंक, धाक।

भरमना[1] *अ.* {सं. भ्रमण} {*स.* भरमाना} भ्रम में पड़कर इधर-उधर घूमना; मारा-मारा फिरना; भटकना; किसी के धोखे में आना।

भरमना[2] *स्त्री.* {सं. भ्रम} भूल, गलती; भ्रम, धोखा।

भरम-बट्टा *पुं.* आतंक, धाक।

भरमाँहाँ *वि.* {सं. भ्रमण + हिं. आँहाँ (प्रत्य.)} भ्रम उत्पन्न करनेवाला।

भरमाना *स. हिं.* 'भरमना' का *स.*; बहकाना, हैरान होना।

भरमार *स्त्री.* {हिं. भरना + मार = अधिकता} किसी बात या चीज की बहुत अधिकता, प्रचुरता, बहुतायत, जैसे कपड़ों की भरमार।

भरराना *स.* {हिं.क्रि.*अ.*} अर्राना, टूट पड़ना।

भरमौंहाँ *वि.* {सं. भ्रमण + हिं. औहाँ (प्रत्य.)} घूमनेवाला, चक्कर खानेवाला; घुमाने या चक्कर देनेवाला।

भरल {हिं. *स्त्री.*} जंगली भेड़।

भरवाँ *वि.* {हिं. भरना} जिसे भरा गया हो, भरकर बनाया हुआ; जैसे भरवाँ टमाटर।

भरवाई *स्त्री.* {हिं.} भरवाने का वेतन।

भरवाना *स.* {भाव. भरवाई} *हिं.* 'भरना' का प्रे.।

भरसक *क्रि. वि.* {हिं. भर = पूरा + सक = शक्ति} जहाँ तक हो सके, यथाशक्ति।

भरसन *स्त्री.* भर्त्सना; डाँट-फटकार।

भरसाईं *स्त्री.* भाड़।

भरहरना *अ.* {अनु.} अस्त-व्यस्त या तितर-बितर होना।

भराई *स्त्री.* {हिं. भरना} भरने या भराने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

भरापूरा {हिं. *वि.*} किसी चीज की कमी न हो, संपन्न।

भराना *स.* भरवाना।

भराव *पुं.* {हिं. भरना + आव (प्रत्य.)} भरने का काम या भाव; भराकर तैयार किया हुआ अंश, भरत।

भरित *वि.* {सं.} भरा हुआ।

भरिया {हिं. *वि.*} भरनेवाला, ऋण चुकानेवाला।

भरिष्टा *वि.* = भ्रष्ट।

भरी *स्त्री.* {हिं. भर} दस माशे की एक तौल।

भरीन *स्त्री.* भरनी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरु पुं. {सं. भार} बोझ, भार।
भरुआ पुं. {हिं.} भड़ुआ, टसर।
भरुज पुं. {सं.} सियार।
भरुहाना स. {हिं. क्रि. अ.} गर्व करना, धोखा देना।
भरूही स्त्री. {हिं.} लेखनी बनाने की किलिक।
भरूही स्त्री. बगेरी।
भरैया वि. {सं. भरण} भरण या पालन करनेवाला, पालक; भरनेवाला।
भरोसा पुं. {सं. भर + श्रय} यह विचार कि अमुक कार्य हो जाएगा, आशा, उम्मीद; आश्रय, सहारा, अवलम्ब; दृढ़ विश्वास।
भर्ग पुं. {सं. भर्ग्य} महादेव, शिव।
भर्जित वि. {सं.} भूना हुआ।
भर्ता पुं. {सं. भर्तृ} भरण-पोषण करनेवाला; अधिपति; स्वामी, मालिक; पति।
भर्तार पुं. {भर्तृ} पति, स्वामी।
भर्तृ पुं. भर्ता; स्वामी।
भर्तृहरि पुं. {सं.} संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि जो राजा विक्रमादित्य के बड़े भाई थे।
भर्त्सना स्त्री. {सं.} किसी अनुचित काम के लिए बुरा-भला कहना, फटकार।
भर्म पुं. भ्रम।
भर्मन पुं. भ्रमण।
भर्रा पुं. {अनु.} झाँसा, दम-बुत्ता।
भर्राना अ. {अनु.} भर्रभर्र शब्द होना, जैसे आवाज का भर्राना; भरभराना।
भर्सन स्त्री. = भर्त्सना।
भलका पुं. {हिं. फल} तीर का फल, गाँसी।
भलपति पुं. {हिं. भाला + सं पति} भाला रखने या चलानेवाला सैनिक।
भलमनसत स्त्री. {हिं. भला + मनुष्य} भला मानस होने का भाव, सज्जनता, सौजन्य।
भलहिं क्रि. वि. {हिं. भला} भलीभाँति, अच्छी तरह।
भला वि. {सं. भद्र} उत्तम, श्रेष्ठ; बढ़िया, अच्छा; पुं. कुशल, भलाई; लाभ, हित;
क्रि. वि. अच्छा, खैर, अस्तु; नहीं (काकु से)।
भलाई स्त्री. {हिं. भला} 'भला' होने का भाव, भलापन; उपकार, नेकी; हित, लाभ।
भला-चंगा वि. स्वस्थ और सक्रिय।
भला-बुरा पुं. हित और अहित, लाभ और हानि।
भलु पुं. {हिं.} भला।
भल्ल पुं. {सं.} भालू, बाज, वध, हत्या।
भल्लक पुं. {सं.} भालू।
भल्लाक्ष {सं. वि.} मंददृष्टि, कम दिखाई देना।
भल्लातक पुं. {सं.} भिलावाँ वृक्ष।
भले क्रि. वि. {हिं. भला} खूब, वाह, जैसे-भले आए।
भलेरा पुं. भला।
भले ही योज. भली बात है कि।
भवंग (म) पुं. {सं. भुजंग} साँप।
भव पुं. {सं.} उत्पत्ति, जन्म; शिव; मेघ, बादल; संसार, जगत्; कामदेव; वि. शुभ; उत्पन्न; पुं. = भय।
भवकेतु पुं. {सं.} पुच्छल तारा।
भवचक्र पुं. {सं.} संसार में बार-बार जन्म लेने और मरने का क्रम, आवागमन; भवजाल।
भवचाप पुं. {सं.} शिवजी का धनुष।
भवजाल पुं. {सं. भव + जाल} संसार का जल या माया; झंझट।
भवदीय सर्व. {सं.} {स्त्री. भवदीया} आपका (पत्रों के अंत में)।
भवन[1] पुं {सं.} मकान, घर; प्रासाद, महल; ईंट, पत्थर, लकड़ी आदि की कोई ऐसी बनावट जो वास्तु के अंतर्गत आती हो, इमारत (बिल्डिंग); आश्रय या आधार का स्थान, जैसे करुणाभवन।
भवन[2] पुं. {सं. भुवन} जगत्, संसार।
भवना अ. {सं. भ्रमण} घूमना।
भवभय पुं. {सं.} बार-बार जन्म लेने और मरने या संसार में आने का भय।
भवभूप पुं. {सं.} संसार का स्वामी।
भवसागर पुं. {सं.} संसार रूपी सागर।
भवाँना स. {सं. भ्रमण} घुमाना।
भवा {सं. स्त्री.} दुर्गा, पार्वती।
भवानी स्त्री. {सं.} भव अर्थात् शिव की पत्नी, पार्वती; दुर्गा।
भवाब्धि, भवार्णव पुं. {सं.} संसार रूपी सागर।
भवितव्य वि. {सं.} जो भविष्य में अवश्य होनेवाला हो, होनहार, भावी; भाग्य में बदा।
भवितव्यता स्त्री. {सं.} भविष्य में अवश्य घटित होनेवाली बात।
भविष्य पुं. {सं. भविष्यत्} आनेवाला काल या समय।
भविष्यकथन पुं. {सं.} भविष्यवाणी।
भविष्यगुप्ता स्त्री. {सं.} वह गुप्ता नायिका जो अपने पति से मिलने को हो, पर पहले उससे यह इच्छा छिपाने का प्रयत्न करे।
भविष्यवक्ता पुं {सं.} भविष्य की बात बतानेवाला; ज्योतिषी।
भविष्यवाणी स्त्री. {सं.} आगे चलकर होनेवाली वह बात जो पहले से ही किसी ने कह दी हो।
भविष्योन्मुखी (खिन्) वि. {सं.} जो भविष्य को ध्यान में रखकर किया गया हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवीला *वि.* {हिं. भाव + ईला (प्रत्य.)} भावयुक्त, भावपूर्ण; बाँका-तिरछा।

भवेश *पुं.* {सं.} महादेव, शिव।

भव्य *वि.* {सं.} {*भाव.* भव्यता} देखने में विशाल और सुंदर, शानदार; शुभ, मंगलकारक; सत्य, सच्चा; आगे चलकर होनेवाला।

भव्यता *स्त्री.* {सं.} भव्य होने का भाव।

भव्या *स्त्री.* {सं.} उमा, पार्वती।

भष *पुं.* {सं. भक्ष्य} भोजन।

भषना *स.* {सं. भक्षण} खाना।

भसन *पुं.* {सं.} भ्रमर, भौंरा।

भसना *अ.* {बँ.} पानी पर तैरना; पानी में डूबना।

भसम *स्त्री. वि.* भस्म।

भसमा *पुं.* {हिं.} पीसा हुआ आटा।

भसान *पुं.* {बँ. भसाना} पूजा के उपरांत मूर्ति को नदी में बहाने की क्रिया, प्रवाह (एमर्शन)।

भसाना *स.* {बँ.} किसी चीज को पानी में तैरने के लिए छोड़ना; पानी में डुबाना या डालना।

भसींड *स्त्री.* {सं. विस = कमल, प्रा. भिस + अंड} कमल का डंडल जिसकी तरकारी बनती है, कमल-नाल, कमल-ककड़ी, मुरार।

भसुंड *पुं.* {सं. भुशुंड} हाथी; हाथी की सूँड़; *वि.* मोटा-ताजा।

भसुर *पुं.* {हिं. ससुर का अनु.} पति का बड़ा भाई, जेठ।

भसूचक *पुं.* {सं.} दैवज्ञ, ज्योतिषी।

भस्म *स्त्री.* {सं. भस्मन्} राख; अग्निहोत्र की राख जो शिव के भक्त मस्तक पर लगाते या शरीर पर मलते हैं; वैद्यक में औषध की तरह काम में लाने के लिए धातुओं आदि का वह रूप जो उन्हें विशिष्ट क्रियाओं से फूँकने पर प्राप्त होता है, रस, जैसे चाँदी या सोने की भस्म; *वि.* जो जलकर राख हो गया हो।

भस्मसात् *वि.* {सं.} जो जलकर राख हो गया हो।

भस्मीकरण *पुं.* {सं.} राख कर देने की क्रिया या भाव।

भस्मीभूत *वि.* {सं.} जलकर राख बना हुआ, पूरी तरह से जला हुआ।

भहराना *वि.* {अनु.} अचानक नीचे आ गिरना; टूट पड़ना।

भाँई *पुं.* {हिं.} खरादनेवाला।

भाँउँ *पुं.* {सं. भाव} अभिप्राय।

भाँउर *स्त्री.* भाँवर।

भाँग *स्त्री.* {सं. भृंगी} एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी पत्तियाँ लोग नशे के लिए पीसकर पीते हैं, भंग, विजया, बूटी।

भाँगना *अ.* {सं. भंग} टूटना; *स.* तोड़ना।

भाँज *स्त्री.* {हिं. भाँजना} भाँजने की क्रिया या भाव; वह बट्टा जो रुपए, नोट आदि भुनाने के बदले में दिया जाता है, भुनाई; कई तहों में कागज मोड़ने की क्रिया या भाव।

भाँजना *स.* {सं. भंजन} {*भाव.* भाँज} तह करना, मोड़ना; मुगदर आदि घुमाना (व्यायाम); तोड़-फोड़कर या और किसी प्रकार नष्ट करना; कागज आदि मोड़कर तह लगाना (छापाखाना)।

भांजा *पुं.* {सं. भागिनेय या हिं. बहन + जा = जाया} {*स्त्री.* भांजी} संबंध के विचार से किसी की बहन का लड़का, भगिनेय।

भाँजी *स्त्री.* {हिं. भाँजना = मोड़ना} किसी के होते हुए काम में बाधा डालने के लिए कही जानेवाली बात, चुगली।

भाँटा *पुं.* बैंगन।

भाँड़[1] *पुं.* {सं. भंड} {*भाव.* भँड़ैती} विदूषक, मसखरा; महफिलों आदि में नाच-गाकर और हास्यपूर्ण अभिनय करके जीविका चलानेवाला व्यक्ति; विनाश।

भाँड़[2] *पुं.* {सं. भांड} बरतन, भाँड़ा; भंडाफोड़, रहस्योद्घाटन; उपद्रव।

भांड *पुं.* {सं.} भाँड़ा, बरतन; व्यापार की वस्तुएँ, पण्य, द्रव्य, माल; भांडागार।

भाँड़ना *पुं.* {सं. भंड} व्यर्थ इधर-उधर घूमना; चारों ओर किसी की निंदा या बदनामी करते फिरना; *स.* बिगाड़ना; नष्ट करना।

भाँड़ा *पुं.* {सं. भांड} बरतन, पात्र।

भांडागार *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ बहुत-सी वस्तुएँ किसी उद्देश्य से रखी हों, भंडार, कोश।

भांडागारिक *पुं.* {सं.} भंडारी।

भांडार *पुं.* {सं. भांडागार} वह स्थान जहाँ तरह-तरह की बहुत-सी चीजें रखी रहती हों, भंडार; वह स्थान जहाँ बेची जानेवाली बहुत-सी चीजें इकट्ठी रहती हों (स्टॉक); खजाना, कोश; बहुत अधिक मात्रा में गुण आदि का आश्रय या आधार-स्थान, जैसे विद्या का भंडार।

भांडारिक *पुं.* {सं.} भंडारघर का मालिक, भंडारी।

भांडार-पंजी *स्त्री.* {हिं. भांडार + सं. पंजी} वह बही या पंजी जिसमें भांडार में रहनेवाली चीजों की सूची और उनके आने-जाने का लेखा रहता है (स्टॉक बुक)।

भांडारपाल *पुं.* {हिं. भांडार + सं. पाल} वह जिसकी देख-रेख में कोई भांडार रहता हो (स्टॉकिस्ट)।

भांडिनी *स्त्री.* {सं.} मंजूषा, छोटी पेटी।

भाँति *स्त्री.* {सं. भक्ति} तरह, प्रकार; रीति, ढंग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाँति, की संबंधबोध. की तरह।

भाँपना *स.* {?} दूर से देखकर समझ लेना, ताड़ना; देखना।

भाँमी *पुं.* {हिं.} चमार, चर्मकार।

भाँयँ-भाँयँ *स्त्री.* {अनु.} निर्जन स्थान या सन्नाटे में आप-से-आप होनेवाला शब्द।

भाँरी *स्त्री.* {हिं.} भाँवर।

भाँवना *स.* {सं. भ्रमण} चक्कर देना; खरादना; खूब गढ़कर सुंदरतापूर्वक बनाना।

भाँवर *स्त्री.* {सं. भ्रमण} चारों ओर घूमना, चक्कर लगाना; अग्नि की वह परिक्रमा जो विवाह होने पर वर और वधू करते हैं; *पुं.* भौंरा।

भाँवरि (री) *स्त्री.* {हिं.} चक्कर, परिक्रमा।

भाँस *स्त्री.* {?} आवाज, शब्द।

भा *स्त्री.* {सं.} दीप्ति, चमक; शोभा; किरण; बिजली; योज.= या; *अ.* = हुआ (अवधी)।

भाइ[1] *पुं.* {सं. भाव} मन का भाव या विचार।
उदा. जिहिं जिहिं भाइ करत जन सेवा–सूर।
प्रेम, प्रीति; स्वभाव; विचार।

भाइ[2] *स्त्री.* {हिं. भाँति} प्रकार, तरह।
उदा. करि सन्मान कह्यो या भाई–सूर।
चाल-ढाल; रंग-ढंग।

भाइ[3] *स्त्री.* {सं. भाव} चमक, दीप्ति।

भाइप *पुं.* भाईचारा।

भाई *पुं.* {सं. भातृ} एक ही माता-पिता से उत्पन्न व्यक्तियों में से एक के लिए दूसरा व्यक्ति, सहोदर, भ्राता; किसी वंश की किसी पीढ़ी के व्यक्ति के लिए मातृ या पितृकुल की उसी पीढ़ी का दूसरा व्यक्ति, जैसे चचेरा या मौसेरा भाई; बराबरवालों के लिए आदरसूचक संबोधन।

भाईचारगी *स्त्री.* = भाईचारा।

भाईचारा *पुं.* {हिं. भाई + चारा (प्रत्य.)} भाई के समान परम प्रिय होने का भाव और व्यवहार।

भाई-दूज *स्त्री.* {हिं. भाई + दूज} कार्तिक शुक्ल द्वितीया, जिस दिन भाई को बहन टीका लगाती है, भैया-दूज।

भाई-बंद *पुं.* {हिं. भाई + बंधु} एक ही वंश या गोत्र के लोग; भाई और मित्र-बंधु आदि।

भाई-बंधु *पुं.* = भाई-बंद।

भाई-बिरादरी *स्त्री.* {हिं. भाई + बिराबरी} जाति या समाज के लोग।

भाउ[1] *पुं.* {सं. भाव.} चित्तवृत्ति; विचार; भाव; प्रेम।

भाउ[2] *पुं.* {सं. भव} उत्पत्ति, जन्म।

भाऊ *पुं.* {सं. भव} प्रेम, स्नेह; मन की भावना, भाव; स्वभाव; दशा, अवस्था; स्वरूप, शक्ल; सत्ता; विचार; *पुं.* भाई।

भाएँ *क्रि. वि.* {सं. भाव} (किसी की) समझ में, बुद्धि के अनुसार।

भाकपा *स्त्री.* भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का संक्षिप्त रूप।

भाकर *पुं.* {सं.} सूर्य।

भाकसी *स्त्री.* भट्टी; भरसाईं।

भाक्त {सं. *वि.*} भक्त-संबंधी।

भाक्ष {सं. *वि.*} खाने योग्य वस्तु।

भाख *पुं.* {हिं.} भाषण।

भाखना {हिं. क्रि. *स.*} कहना, बोलना।

भाखर *पु.* {हिं.} पर्वत, पहाड़।

भाखना *स.* {सं. भाषण} कहना।

भाखा *स्त्री.* भाषा।

भाग *पुं.* {सं.} {*वि.* भागी} हिस्सा, खंड। (पार्ट); अंश; (पोर्शन); पार्श्व, तरफ, ओर; भाग्य, किस्मत; भाग्य का कल्पित स्थान, माथा, ललाट; सौभाग्य; गणित में किसी राशि या संख्या को कई अंशों या भागों में बाँटने की क्रिया।

भागकर *पुं.* {सं.} विभाग करनेवाला।

भागड़ *स्त्री.* भगदड़।

भागण *पुं.* = भाग्यवान।

भागद {सं. *वि.*} भाग देनेवाला।

भाग-दौड़ *स्त्री.* {हिं. भागना + दौड़ना} भगदड़, भागड़; दौड़-धूप।

भागधेय[1] *पुं.* {भागधेयं} अंश, भाग, हिस्सा; किस्मत, भाग्य; सौभाग्य; जायदाद, सम्पत्ति; आनन्द, प्रसन्नता; सुख।

भागधेय[2] *पुं.* {सं. भागधेयः} कर, राजस्व; प्रतिभाग नाम का राजकर, विशेष प्रतिभाग (एक्साइज); उत्तराधिकारी; दायाद, सपिंड।

भागना *अ.* {सं. व्रजन} {*भाव.* भागड़} संकट के स्थान से डरकर या अपने कर्तव्य आदि से विमुख होकर जल्दी से निकल जाना, पलायन करना।; कोई काम करने से डरना या बचना; दौड़ना।

भागनेय *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* भागनेयी} बहन का लड़का, भांजा।

भागफल *पुं.* {सं.} भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त होनेवाली संख्या या अंक, लब्धि, जैसे यदि 20 को 4 से भाग दें तो भागफल 5 होगा।

भागरा *पुं.* {हिं.} संकर राग।

भागवंत *वि.* भाग्यवान।

भागवत *पुं.* {सं.} अठारह पुराणों में से एक जो वेदान्त की टीका के रूप में माना जाता है; ईश्वर का भक्त; *वि.* भगवत्-संबंधी, भगवत का।

भागवती *स्त्री.* {सं.} वैष्णवी-कंठी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागवान *वि.*= भाग्यवान।

भागाभाग *स्त्री.* भगदड़।

भागिनेय *पुं.* {सं.} बहन का लड़का, भांजा।

भागी[1] *पुं.* {सं. भागिन्}, {*स्त्री.* भागिनी} हिस्सेदार, अंशी; अधिकारी, हकदार।

भागी[2] *वि.* {सं. भाग्य} भाग्यवाला (यौ. के अंत में) जैसे बड़भागी।

भागीरथ *पुं.* भगीरथ।

भागीरथी *स्त्री.* {सं.} गंगा नदी, जिसके संबंध में यह माना जाता है कि उन्हें राजा भगीरथ पृथ्वी पर लाए थे।

भागू *वि.* {हिं. भागना} भाग जानेवाला।

भाग्य *पुं.* {सं.} वह निश्चित और अटल दैवी विधान जिसके अनुसार मनुष्य के सब कार्य पहले ही से नियत किए हुए माने जाते हैं और जिसका स्थान माथा या ललाट माना गया है; तकदीर, किस्मत, नसीब; *वि.* हिस्सा।

भाग्यवान, भाग्यवान् *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* भाग्यवती} वह जिसका भाग्य अच्छा हो, सौभाग्यशाली, किस्मतवर।

भाजक *वि.* {सं.} विभाग करनेवाला।

पुं. वह अंक जिससे किसी संख्या या राशि का भाग किया जाए (गणित)।

भाजकांश *पुं.* {सं.} वह संख्या जिससे किसी राशि को भाग देने पर कुछ शेष न रहे।

भाजन *पुं.* {सं. भाजनं} {*वि.* भाजक, भाज्य} किसी चीज के टुकड़े या विभाग करने की क्रिया या भाव; गणित में भाग की क्रिया; बरतन, भाँडा; किसी बात या वस्तु के लिए उपयुक्त आधार या आश्रय, कुछ लेने या पाने के योग्य पात्र, जैसे विश्वासभाजन, कोपभाजन आदि।

भाजना *अ.* = भागना; *स.* भाँजना; भूनना; *स.* = विभक्त करना; *अ.* = विभक्त होना।

भाजित {सं. *वि.*} अलग किया हुआ।

भाजपा *स्त्री.* भारतीय जनता पार्टी का संक्षिप्त रूप।

भाजपाई *वि.* भाजपा-संबंधी; *पुं.* भाजपा का सदस्य।

भाजी *स्त्री.* {हिं. भाजना = भूनना} तरकारी, साग आदि के रूप में खाने की वनस्पतियाँ और फल; माँड़, पीच।

भाज्य *पुं.* {सं.} वह अंक जिसे भाजक अंक से भाग दिया जाता है; *वि.* विभक्त किए जाने के योग्य, जिसके भाग कर सकें (विविजिबुल)।

भाट *पुं.* {सं. भट्ट} {*स्त्री.* भाटिन} राजाओं की कीर्ति का वर्णन करनेवाला व्यक्ति या जाति, चारण, बंदी (बार्ड); खुशामदी।

भाटक *पुं.* {सं.} भाड़ा, किराया (रेन्ट)।

भाटक-अधिकारी *पुं.* {सं.} वह अधिकारी जो लोगों से भटक इकट्ठा करता हो (रेन्ट आफिसर)।

भाटक-समाहर्ता *पुं.* {सं.} वह अधिकारी जिसका काम भाटक (भाड़ा) उगाहना हो (रेन्ट कलेक्टर)।

भाटा *पुं.* {हिं. भाट} पानी का उतार; समुद्र के जल का उतार या पीछे हटना; ज्वार का उलटा।

भाटिया *पुं.* {हिं.} राजपूत-जाति।

भाट्यौ *पुं.* भटई।

भाठ *स्त्री* {हिं.} तटकर की मिट्टी।

भाठी *स्त्री.* भट्ठी।

भाड़ *पुं.* {सं. भ्राष्ट्र} भड़भूँजों की अनाज भूनने की भट्ठी।

भाड़ा *पुं.* {सं. भाटक} किसी स्थान पर रहने, किसी सवारी पर चढ़ने या कोई चीज कहीं भेजने के बदले में दिया जानेवाला कुछ निश्चित धन, किराया।

भाड़ैत *वि.* {हिं. भाड़ा, *भाव.* भाड़ैती} धन के लोभ से किसी का कोई काम कर देनेवाला (हायर्ड); *पुं.* भड़ैत।

भाड़ैती *स्त्री.* {हिं. भाड़ैत} धन के लोभ से कोई काम करना; धन का लोभ दिखाकर किसी को अपनी ओर मिलाना या किसी काम में लगाना (हायरिंग)।

भाण *पुं.* {सं.} हास्यरस का वह दृश्यकाव्य या रूपक जिसमें एक ही अंक होता है; ब्याज; बहाना, मिस।

भात *पुं.* {सं. भक्त} पानी में उबाला हुआ चावल; विवाह की एक रस्म जिसमें वर पक्षवालों को दाल-भात खिलाया जाता है।

भाति *स्त्री.* {सं.} शोभा; चमक।

भाथा *पुं.* {सं. भस्त्रा, पा. भत्था} तरकश, तूणीर, बड़ी भाथी।

भाथी *स्त्री.* {सं. भस्त्रा} भट्ठी की आग सुलगाने की धौंकनी।

भादों *पुं.* = भद्रपद; भादों का मास।

भाद्रपद *पुं.* {सं.} सावन और कुआर के बीच का महीना, भादों।

भाद्रपदा *स्त्री.* {सं.} पूर्वा भाद्रपदा तथा उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र।

भाद्रमातुर *पुं.* {सं.} सती माता का पुत्र।

भान *पुं.* {सं.} प्रकाश, रोशनी; दीप्ति, चमक; ज्ञान; ऐसा ज्ञान या अनुभव जिसका कोई पुष्ट आधार न हो, जान पड़ना, प्रतीति, आभास; कल्पित विचार या भ्रमपूर्ण धारणा; *पुं.* = भानु (सूर्य)।

भानजा *पुं.* भांजा, बहन का पुत्र।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भानजी *स्त्री.* {सं.} बहन की बेटी, कन्या।
भानना[1] *स.* {सं. भजन} काटना या तोड़ना, भंग करना; नष्ट करना।
भानना[2] *स.* {हिं. भान} समझना।
भानमती *स्त्री.* {सं. भानुमती} कामरूप की राजकुमारी, दुर्योधन की पत्नी।
भानमती का पिटारा *पुं.* ऐसा पिटारा जिसमें बहुत तरह की चीजें हों।
भानवी *स्त्री.* {सं. भानवीया} यमुना।
भाना[1] *अ.* {सं. भान = ज्ञान} भान होना, जान पड़ना, भासना।
भाना[2] *स.* {सं. भा = प्रकाश} चमकाना।
भाना[3] *स.* {सं. भंजन} तोड़ना।
भाना[4] *स.* {सं. भ्रमण} चक्कर देना, घुमाना; *अ.* चक्कर खाना, घूमना।
भानु *पुं.* {सं.} सूर्य।
भानुजा *स्त्री.* {सं.} यमुना, जो भानु (सूर्य) की कन्या मानी जाती है।
भान्जा *पुं.* {*स्त्री.* भानजी} भांजा, बहन का बेटा।
भाप *स्त्री.* {सं. वाष्प, पा. वाप्प} पानी के खौलने पर उसमें से निकलनेवाले बहुत छोटे-छोटे जलकण जो धुएँ के रूप में ऊपर उठते हुए दिखाई देते हैं, वाष्प (स्टीम); भौतिकी के अनुसार घन या द्रव पदार्थों की वह अवस्था जो उनके बहुत तपकर विलीन होने से अथवा कुछ विशिष्ट रासायनिक प्रक्रियाओं के द्वारा होती है (वेपर)।
भापना {हिं. *क्रि. स.*} भाँपना।
भाबर *पुं.* {हिं.} एक पहाड़ी घास।
भापीय *वि.* भाप संबंधी।
भाफ *स्त्री.* भाप।
भाभर *पुं.* {सं. वप्र} पहाड़ों के नीचे, तराई में का जंगल।
भाभरा *वि.* {हिं. भा =चमक} लाल।
भाभरी *स्त्री.* {हिं.} गरम राख।
भाभी *स्त्री.* {हिं. भाई} बड़े भाई की स्त्री, बड़ी भौजाई।
भामंडल *पुं.* {सं.} बहुत ही प्रकाशमान पिंडों के चारों ओर दिखाई देनेवाला प्रकाश का वलय या घेरा; देवताओं, परम तेजस्वी पुरुषों, महात्माओं आदि की आकृतियों या चित्रों में उनके मुख के चारों ओर दिखाया जानेवाला उक्त प्रकार का वलय जो उनके बहुत अधिक तेजस्वी होने का परिचायक होता है, प्रभामण्डल (हालो)।
भाम *स्त्री.* {सं. भामा} स्त्री, औरत।
भामक *पुं.* {सं.} भगिनीपति, बहनोई, जीजा।
भामता {*वि.*} भावता।
भामा *स्त्री.* {सं.} स्त्री, औरत।
भामिनी *स्त्री.* {सं.} स्त्री, औरत।
भाय *पुं.* {हिं. भाई} भाई; *पुं.* भाव, प्रकार।
भायप *पुं.* 'भाईचारा'।
भाया {हिं. *वि.*} प्रिय, प्यारा।
भारंगी *स्त्री.* {सं.} पौधा जिसकी जड़, डाल और पत्ते औषधों में प्रयुक्त होती है।
भारंड *पुं.* {सं.} पक्षी।
भार *पुं.* {सं.} {*वि.* भारित} किसी पदार्थ का वह गुरुत्व जो तौल के द्वारा जाना जाता है, बोझ; वह बोझ जो किसी अंग, यान या वाहन पर रखकर ढोया जाता है; (बर्डेन, उक्त दोनों अर्थों के लिए); किसी प्रकार का कार्य चलाने, कुछ धन चुकाने या किसी वस्तु की रक्षा आदि करने का उत्तरदायित्व (चार्ज); बंधक या रेहन पड़े रहने अथवा ऋणगस्त होने की अवस्था या भाव (इंकम्बरेंस); दो हजार पल या बीस पसेरी की एक पुरानी तौल; देखभाल।
भारकी *स्त्री.* {सं.} पालन-पोषण करने हेतु स्त्री, दाई।
भारग्रस्त *वि.* भारित।
भारत *पुं.* {सं.} भरत के गोत्र में उत्पन्न पुरुष; महाभारत का वह मूल या पूर्व रूप जो 24000 श्लोकों का था; लंबी-चौड़ी कथा, बहुत बड़ी कहानी; घोर युद्ध, भारी लड़ाई; पाकिस्तान और बंगलादेश से रहित भारतवर्ष।
भारतवर्ष *पुं.* {सं.} हमारा यह महादेश जो हिमालय से कन्याकुमारी तक और सिन्धु नद से ब्रह्मपुत्र तक फैला हुआ है, आर्यावर्त, हिन्दुस्तान।
भारतवासी (सिन्) *पुं.* {सं.} भारत का रहनेवाला, भारतीय।
भारती *स्त्री.* {सं.} वचन, वाणी; सरस्वती; नाटक में एक वृत्ति जिसके अनुसार केवल पुरुष पात्र रहते हैं और उच्च वर्ग के लोग संस्कृत में कथोपकथन करते हैं (यह प्रायः सभी रसों में काम आती है); ब्राह्मी बूटी; दशनामी संन्यासियों का एक भेद।
भारतीय *वि.* {सं.} {*भाव.* भारतीयता} भारत संबंधी, भारत का; *पुं.* भारतवर्ष का निवासी।
भारतुला *स्त्री.* {सं.} खंभे का मध्यभाग।
भातेश्वर *पुं.* {सं.} राजा भरत।
भारथ *पुं.* {सं.} भारदूल पक्षी।
भारथी *पुं.* {हिं.} योद्धा, सिपाही।
भारदंड *पुं.* {हिं.} व्यायाम।
भारधारक *पुं.* {सं.} वह जिसपर कोई कार्य करने-कराने या किसी वस्तु की रक्षा आदि करने का भार हो, भार धारण करनेवाला (चार्ज होल्डर)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारना *स.* {हिं. भार} बोझ लादना; भार डालना; दबाना।

भारवाह *वि.* {सं.} बोझ ढोनेवाला; जिस पर किसी कार्य या पद के कर्तव्यों का भार हो।

भारवाह अधिकारी *पुं.* {सं.} वह अधिकारी जिसपर किसी पद और उससे संबंध रखनेवाले कार्यों आदि का भार हो।

भारवाहक *वि.* भारवाह।

भारवाही *पुं.* {सं. भारवाहिन्} *स्त्री.* {भारवाहिनी} भार या बोझ ढोनेवाला।

भारशिव *पुं.* {सं.} एक प्राचीन शैव संप्रदाय जिसके अनुयायी सिर पर शिव की मूर्ति रखते थे।

भारा *वि.* भारी; *पुं.* = भाला।

भारिक *पुं.* {सं.} बोझ ढोनेवाला।

भारित *वि.* {सं.} जिस पर कोई भार या बोझ हो; जिस पर किसी प्रकार का ऋण या देन हो।

भारी *वि.* {हिं. भार, *भाव.* भारीपन} जिसमें या जिसका अधिक भार या बोझ हो, गुरु, बोझिल; कठिन, विकट; विशाल, बड़ा; असह्य, दूभर; सूजा या फूला हुआ; प्रबल; गम्भीर और शांत।

भारीपन *पुं.* {हिं. भारी + पन} भारी होने का भाव, गुरुत्व।

भारी-भरकम *वि.* बड़ा और भारी।

भारोपीय *वि.* {भारत + यूरोपीय} भारत और यूरोप दोनों में समान रूप से पाए जानेवाले या दोनों के समान मूल से उत्पन्न (जाति-समूह या भाषावर्ग, मुख्यतः भारतीय, पारसी, अरमनी, यूनानी, इटालियन आदि जातियों और भाषाओं के संबंध में प्रयुक्त); (इंडो-यूरोपियन)।

भार्गव *पुं.* {सं.} भृगु के वंश या गोत्र में उत्पन्न पुरुष; परशुराम; उत्तर प्रदेश में रहनेवाले ब्राह्मणों की एक जाति; *वि.* भृगु-संबंधी, भृगु का।

भार्गवी *स्त्री.* {सं.} पार्वती, लक्ष्मी।

भार्या *स्त्री.* {सं.} पत्नी, जोरू।

भाल[1] *पुं.* {सं.} कपाल, ललाट।

भाल[2] *पुं.* {हिं. भाल} भाला, बरछा; तीर का फल, गाँसी।

भाल[3] *पुं.* भालू।

भालचंद्र *पुं.* {सं.} महादेव।

भालना *स.* {?} भलीभाँति देखना; तलाश करना, ढूँढ़ना।

भालनेत्र *पुं.* {सं.} महादेव, शिव।

भालवी *पुं.* {हिं.} रीछ, भालू।

भाला *पुं.* {सं. भल्ल} बरछा।

भालाबरदार *पुं.* {हिं. भाला + फा. बरदार} बरछा लेकर चलने या बरछा चलानेवाला।

भालि (ली) *स्त्री.* {हिं. भाला} बरछी; शूल, काँटा।

भालूनाथ *पुं.* {हिं.} जामवंत।

भालू *पुं.* {सं. भल्लुक} एक प्रसिद्ध स्तनपायी हिंसक चौपाया, रीछ।

भालोद *पुं.* भारतीय लोकदल का संक्षिप्त रूप।

भावंता[1] *पुं.* भावता।

भावंता[2] *पुं.* {सं. भावी} होनहार, भावी।

भाव[1] *पुं.* {सं.} होने की क्रिया या तत्व, सत्ता, अस्तित्व, 'अभाव' का विरुद्धार्थक; मन में उत्पन्न होनेवाला कोई विचार, ख्याल; अभिप्राय, तात्पर्य, मतलब; मन का कोई विशेष विकार या वृत्ति प्रकट करनेवाली मुख या अंगों की आकृति या चेष्टा, जैसे नृत्य, गीत आदि में मन का भाव प्रकट करने के लिए होती है; किसी वस्तु, कार्य, गुण आदि की मूल प्रकृति, विशेषता आदि का सूचक और आधारभूत तत्व; प्रेम, मोहब्बत; ढंग, तरीका; प्रकार, तरह; दशा, अवस्था, हालत; ईश्वर, देवता आदि के लिए मन में होनेवाली श्रद्धा; किसी को देखकर या उसके संबंध की किसी बात का स्मरण करने पर मन में होनेवाला विकार; स्थायी भाव।

भाव[2] *पुं.* {पहलवी बहाक् (मूल्य या दर) से फा. बहा (मूल्य)} किसी चीज की बिक्री आदि का प्रचलित या निश्चित किया हुआ मूल्य, दर, निर्ख (रेट)।

भावइ {हिं. अव्य.} जो इच्छा हो।

भावई *योज.* {हिं. भाना} यदि जी चाहे तो, इच्छा हो तो।

भावक *वि.* {सं. भाव+क (प्रत्य.)} भाव, सत्ता, अस्तित्व आदि से युक्त, विशेष सहिक (पॉजिटिव); भावुक; *क्रि. वि.* थोड़ा, जरा।

भावगति *स्त्री.* {हिं.} विचार, इच्छा।

भावगम्य {सं. *वि.*} भक्तिभाव।

भावगीत *पुं.* {सं.} वह गीत जिसमें मुख्यतः मनोभावों की प्रधानता हो (मराठी में प्रचलित)।

भावचित्र *पुं.* {सं.} किसी भाव को अभिव्यक्त करनेवाला चित्र।

भावज *स्त्री.* {सं. भातृजाया} भाई की पत्नी, भाभी, भौजाई।

भावज्ञ *वि.* {सं.} {भाव. भावज्ञता} मन की प्रवृत्ति या भाव जाननेवाला।

भावता *वि.* {हिं. भावना} {*स्त्री.* भावती} जो भला लगे; प्रेमपात्र, प्रिय।

भाव-ताव *पुं.* {हिं. भाव} किसी चीज का मूल्य या भाव दर; रंग-ढंग।

भावदया *स्त्री.* {सं.} द्रवित, दयार्द्र।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावदर्शी *वि.* {सं.} भाव को समझनेवाला।

भावन *वि.* {हिं. भावन} मन को भाने या अच्छा लगनेवाला, प्रिय।

भावना *स्त्री.* {सं.} अनुभव और स्मृति से मन में उत्पन्न होनेवाला कोई विकार, ध्यान, विचार, ख्याल; साधारण विचार या कल्पना; इच्छा, चाह; कोई काम करने का विचार, उद्देश्य (इंटेशन); किसी विशेष विषय या भाव से संबंध रखनेवाले ऐसे विचार जिनसे मनुष्य की मनोवृत्ति बनती हो, धारणा (काम्प्लेक्स; चूर्ण आदि किसी तरह पदार्थ में मिलाकर घोटना, जिसमें घोटी जानेवाली वस्तु में उस तरल पदार्थ का गुण या गंध आ जाए, पुट (वैद्यक); इस प्रक्रिया से किसी चीज में आया हुआ गुण या गंध; *अ.* विचार करना, सोचना।
स. भाना।

भावनाश्रय *पुं.* {सं.} शिव।

भावनात्मक *वि.* {सं.} भावना-संबंधी; भावना के रूप में होनेवाला।

भावनि *स्त्री.* {हिं. भाना} वह बात जो मन में या जी में आए।

भावनीय *वि.* {सं.} भावना करने या सोचने-विचारने के योग्य।

भावप्रकाश *पुं.* {सं.} वैद्यक-ग्रंथ।

भावप्रवण *वि.* {भाव. भावप्रवणता} भावुक।

भावबंधन *पुं.* {सं.} प्रेमपाश में बाँधना।

भावभंगिमा *स्त्री.* {सं.} शरीर के किसी अंग की वह स्थिति जिसमें कोई भाव अभिव्यक्त होता हो, अंदाज।

भावभंगी *स्त्री.* = भावभंगिमा।

भावभक्ति *स्त्री.* {हिं.} आदर-सत्कार।

भावयिता *पुं.* {सं.} पालनेवाला।

भावर (रि) *स्त्री.* {हिं. भाना = पसंद आना} भाने या पसंद आने की क्रिया भाव; अभिरुचि, पसंद।

भावली *स्त्री.* {देश.} जमींदार और असामी में होनेवाली उपज की बँटाई।

भाववाचक *वि.* {सं.} {*भाव.* भाववाचकता} व्याकरण में किसी पदार्थ का भाव या गुण सूचित करनेवाली (संज्ञा), जैसे सज्जनता।

भावशांति *स्त्री.* {सं.} साहित्य में वह अवस्था जब मन में किसी नए विरोधी भाव के उत्पन्न होने पर पहले का कोई भाव शान्त या समाप्त हो जाता है।

भावसंधि *स्त्री.* **{सं.} साहित्य में वह अवस्था जब मन में एक साथ दो प्रबल भाव उत्पन्न होते हैं।**

भावसृष्टि *स्त्री.* {सं.} नए भाव को जन्म देना।

भावात्मक *वि.* {सं.} सकारात्मक।

भावाभास *पुं.* अनुचित रूप से भाव उत्पन्न होना।

भावाभिभूत *वि.* {सं.} जिसे किसी भाव ने अभिभूत कर लिया हो, भाव में खोया हुआ।

भाविक *पु.* {सं.} साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी बीती हुई अथवा भविष्य में होनेवाली घटना या बात का इस प्रकार उल्लेख या वर्णन होता है कि मानो वह वर्तमान काल में हो रही हो; *वि.* भावुक।

भावित *वि.* {सं.} जिसका ध्यान या विचार किया गया हो, जो सोचा गया हो; चिंतित, उद्विग्न।

भावविह्वल *वि.* {सं.} {*भाव.* भावविह्वलता} भावाभिभूत।

भावी *स्त्री.* {सं. भाविन्} भविष्यत् काल, आनेवाला समय; भविष्य में होनेवाली बात, भवितव्यता, होनी; भाग्य, तकदीर; *वि.* भविष्य में आने या होनेवाला, जैसे भावी युग।

भाव. {हिं. अव्य.} जो जी चाहे।

भावुक *वि.* {सं.} भावना करने या सोचनेवाला; जिसके मन में कोमल भावों की प्रबलता हो अथवा जिस पर कोमल भावों का जल्दी और अधिक प्रभाव पड़ता हो (सेंटीमेंटल)।

भावुकता *स्त्री.* {सं.} 'भावुक' होने की अवस्था या भाव; वह मानसिक अवस्था जिसमें मनुष्य की वृत्ति कोमल भावों के अधीन रहती हो।

भावै *योज.* {हिं. भाना} चाहे।

भावोत्सर्ग *पुं.* {सं.} बुरे भावों का त्याग।

भावोदय *पुं.* {सं.} अलंकार जिसमें किसी भाव के उदय होने की अवस्था।

भाष *पुं.* {हिं.} भाषा।

भाषक *पुं.* {सं.} वक्ता, बोलनेवाला।

भाषज्ञ *पुं.* {सं.} भाषाविज्ञ।

भाषण *पुं.* {सं.} बातचीत; बहुत से लोगों के सामने किसी विषय का सविस्तार कथन, व्याख्यान, वक्तृता।

भाषण-स्वातंत्र्य *पुं.* {सं.} राज्य या शासन की ओर से लोगों को (नीतिविरुद्ध बातों को छोड़कर) राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि विषयों पर भाषणों आदि के द्वारा अपना मत प्रकट करने के लिए मिलने वाली स्वतंत्रता।

भाषना[1] *अ.* {सं. भाषण} बोलना।

भाषना[2] *अ.* {सं. भक्षण} भोजन करना।

भाषांतर[1] *पुं.* {सं.} अनुवाद, उल्था।

भाषांतर[2] *पुं.* {सं.} {*वि.* भाषांतरित} एक भाषा के लेख का दूसरी भाषा में किया हुआ अनुवाद, उल्था।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा *स्त्री.* {सं.} मुँह से निकलनेवाली व्यक्त ध्वनियों या सार्थक शब्दों और वाक्यों का वह समूह जिसके द्वारा मन के विचार दूसरे पर प्रकट किए जाते हैं, बोली, जबान, वाणी; किसी देश के निवासियों में प्रचलित बातचीत करने का ढंग, बोली; मध्ययुगीन हिन्दी; वाणी।

भाषी *वि.* {हिं.} बोलनेवाला।

भाषाबद्ध *वि.* {सं.} भाषा के रूप में आया या लाया हुआ; साधारण देश भाषा में बना हुआ।

भाषाभाषी (षिन्) *वि., पु.* {सं.} भाषा बोलनेवाला, जैसे हिन्दी भाषाभाषी = हिन्दी बोलनेवाला (व्यक्ति)।

भाषाविज्ञान *पुं.* {सं.} वह विज्ञान जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि भाषाओं की उत्पत्ति और विकास किस प्रकार होता है और उनमें कैसा पारस्परिक संबंध होता है (लिंग्विस्टिक्स, फाइलालोजी)।

भाषाविद् *पुं.* {सं.} वह जो अपनी भाषा या कई भाषाओं का बहुत अच्छा ज्ञाता हो (लिंग्विस्टि)।

भाषासम *पुं.* {सं.} एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें केवल ऐसे शब्दों की योजना होती है, जो कई भाषाओं में समान अर्थ में चलते हों।

भाषित *वि.* {सं.} कथित, कहा हुआ।

भाषीय *वि.* {सं.} भाषा-संबंधी।

भाष्य *पुं.* {सं.} सूत्रों की व्याख्या या टीका; किसी गूढ़ या कठिन ग्रंथ या विषय की विस्तृत व्याख्या या विवेचन (कॉमेंटरी)।

भाष्यकार *पुं.* {सं.} किसी गूढ़ ग्रंथ या विषय, विशेषत: सूत्रबद्ध शास्त्रों का भाष्य या टीका करनेवाला (कमेंटेटर)।

भास *पुं.* {सं.} दीप्ति, चमक; प्रकाश; किरण; इच्छा।

भासन *पुं.* = भाषण।

भासना[1] *अ.* {सं. भास} चमकना; कुछ-कुछ मालूम होना, जान पड़ना; दिखाई देना; लीन या लिप्त होना, फँसना।

भासना[2] *अ.* {सं. भाषण} कहना।

भासमान् *वि.* {सं.} जान पड़ता हुआ।

भासित *वि.* {सं.} चमकीला; कुछ-कुछ प्रकट या व्यक्त होनेवाला।

भासुर *पुं.* {सं.} स्फटिक, बिल्लौर, वीर योद्धा।

भास्कर *पुं.* {सं.} दिन; सूर्य।

भास्कराचार्य *पुं.* {सं.} प्राचीन ज्योतिर्विद।

भास्वर *पुं.* {सं.} सूर्य, दिन; *वि.* चमकीला।

भिंग *पुं.* {सं. भृंग} भौंरा; बिलनी (कीड़ा)।

भिंजाना (जोना) सं. भिगोना।

भिंडी *स्त्री.* {हिं.} तरकारी।

भिंदिपाल *पुं.* {सं.} एक प्रकार का डंडा जो फेंककर मारा जाता था; गोफना, ढेलवाँस।

भिक्षण *पुं.* {सं.} भीख माँगना।

भिक्षा *स्त्री.* {सं.} याचन, माँगना; दीनता पूर्वक खाने आदि के लिए कुछ माँगना, भीख; माँगने पर मिलनेवाली चीज, भीख।

भिक्षार्थी *पुं.* {सं.} भिक्षुक, भिखमंगा।

भिक्षापात्र *पुं.* {सं.} वह पात्र जिसमें भिखमंगे भीख माँगते हैं।

भिक्षु *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* भिक्षुणी} भिखमंगा; बौद्ध-संन्यासी।

भिक्षुक *पुं.* {सं.} भिखमंगा।

भिखमंगा *पुं.* {हिं. भीख + माँगना} वह जो भीख माँगता हो, भिक्षुक।

भिखारिणी *स्त्री.* भिखारिन।

भिखारिन *स्त्री.* {हिं. भिखारी} भीख माँगनेवाली स्त्री भिखमंगनि।

भिखारी *पुं.* {*स्त्री.* भिखारिन} भिखमंगा।

भिगाना {*स.*} भिगोना।

भिगोना *स.* {सं. अभ्यंज} किसी चीज को पानी या तरल पदार्थ से तर करने के लिए उसमें डुबाना, भिगोना।

भिच्छा *स्त्री.* भिक्षा।

भिजवना *स.* {हिं. भिगोना} भिगोना; किसी को भिगोने में प्रवृत्त करना।

भिजवाना *स. हिं.* 'भेजना' का प्रे.।

भिजाना *स.* भिगोना; भिजवाना।

भिजोना सं. भिगोना।

भिज्ञ *वि.* {सं.} {सं. भिज्ञता} जानकार, ज्ञाता।

भिटना *पुं.* {हिं.} छोटा गोल फल।

भिटनी *स्त्री.* {हिं.} स्तन का अग्रभाग।

भिड़ंत *स्त्री.* {हिं. भिड़ना} भिड़ने की क्रिया या भाव, मुठभेड़।

भिड़ *स्त्री.* {सं. वरट} बर्रे, ततैया।

भिड़ना *अ.* {सं. भिद् या अनु. भड़?} टक्कर खाना, टकराना; मुकाबले में आकर लड़ना; साथ लगना, सटना।

भितरिया *पुं.* {हिं. भीतर} मंदिर के भीतरी भाग में रहनेवाला पुजारी); *वि.* भीतरी, अंदर का।

भितल्ला *पुं.* {हिं. भीतर + तल} दोहरे कपड़े में अंदर का पल्ला, अस्तर; *वि.* भीतर या अंदर का।

भितल्ली *स्त्री.* {हिं.} चक्की के नीचे का पाट।

भिताना *अ.* {सं. भीति} डरना; भयभीत करना; *स.* डरना।

भित्ति *स्त्री.* {सं.} दीवार; वह पदार्थ जिस पर चित्र बनाया जाता है; डर, भय।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भित्तिचित्र पुं. {सं.} दीवार पर अंकित किया हुआ चित्र।

भिद पुं. {हिं.} अंतर, प्रभेद।

भिदक पुं. {सं.} वज्र, खड्ग।

भिदना अ. {सं. भिद्} अंदर धँसना; छेदा जाना; घायल होना।

भिदा स्त्री. {सं.} धन्याक, धनिया।

भिनकना अ. {अनु.} भिनभिनाना; मन में घृणा उत्पन्न होना।

भिनसार पुं. {सं. वि + अह्नि + सार (प्रत्य.)} प्रातःकाल, सवेरा (पूरब)।

भिदुर पुं. {सं.} वज्र।

भिनही {हिं. अव्य.} प्रातःकाल, सवेरे।

भिन्न वि. {सं.} {भाव. भिन्नता} अलग पृथक्, जुदा; जिसकी चर्चा या उल्लेख हो, उसे छोड़कर कोई और दूसरा, अन्य; जिसकी चर्चा या उल्लेख हो, उससे अलग प्रकार का, और तरह का डिफरेंट; अपने वर्ग या मेल के औरों से कुछ अलग और विशेष प्रकार का (डिस्टिंक्ट); पुं. गणित में, इकाई से कुछ कम या उसका कोई भाग सूचित करनेवाली कोई संख्या (फ्रैक्शन)।

भिन्नात्मक वि. {सं.} गणित में, वह अंक या संख्या जिसमें भिन्न या इकाई का कोई भाग भी लगा हो।

भिन्नाना अ. {अनु.} (दुर्गंध आदि से) सिर चकराना; खिजलाना।

भियना अ. {सं. भीति} डरना।

भिलनी स्त्री. {हिं. भील} भील की स्त्री।

भिलावाँ पुं. {सं. भल्लातक} एक पेड़ जिसका जहरीला फल औषध के काम में आता है।

भिल्ल पुं. भील जाति।

भिश्त पुं. बिहिश्त।

भिश्ती पुं. {?} मशक में भरकर पानी ढोनेवाला व्यक्ति, सक्का, माशकी।

भिषक(ज) पुं. {सं.} वैद्य।

भिस्त पुं. {फा. बिहिश्त} मुसलमानों के अनुसार स्वर्ग।

भिस्स पुं. भसींड।

भींचना स. {हिं. खींचना} खींचना, तानना; मीचना, कसना।

भींज स्त्री. {हिं. भींजना} भींजने की क्रिया या भाव; आर्द्रता, नमी, तरी।

भींजना अ. {हिं. भीगना} भींगना; पुलकित या गद्‌गद होना; मेलमिलाप या आपसदारी पैदा करना; नहाना; अच्छी तरह किसी के अंदर समाना; किसी के योग से पूरी तरह से भरना या बढ़ना।

भींट स्त्री. {हिं. भीटा} वह जमीन जिस पर छोटे-छोटे टीले हों।

भी[1] निपा. {हिं. ही} किसी के साथ या सिवा और निश्चयपूर्वक या अवश्य, जैसे वह और भी बुरा है; तक, जैसे यहाँ हवा भी नहीं आती।

भी[2] स्त्री. {सं.} भय, डर।

भीउँ पुं. भीमसेन।

भीक वि. {सं.} भीत, डरा हुआ।

भीकर वि. {सं.} भयंकर, डरावना।

भीख स्त्री. भिक्षा।

भीखन वि. {हिं.} विकराल, भीषण।

भीखम पुं. {हिं.} भीष्म; वि. डरावना।

भीगना अ. {सं. अभ्यंज} पानी या और किसी तरल पदार्थ के संयोग से तर या मुलायम होना, आर्द्र होना।

भीचर पुं. {हिं.} वीर।

भीजना अ. = भीगना।

भीटा पुं. {देश.} टीले की तरह बनाई हुई वह ढालुआँ ऊँची जमीन जिस पर पान के पौधे लगाए जाते हैं।

भीठा पुं. {?} वह खेत जिसमें रबी की फसल होती है (पूरब)।

भीड़ स्त्री. {हिं. भिड़ना} एक स्थान पर एक ही समय में होनेवाला बहुत से आदमियों का जमाव, जनसमूह; किसी बात की अधिकता, जैसे काम की भीड़; संकट, विपत्ति, मुसीबत।

भीड़ना स. {हिं. 'भिड़ना' का स.} बंद करना; मलना।

भीड़-भड़का पुं. भीड़-भाड़।

भीड़-भाड़ स्त्री. {हिं. + भाड़ (अनु.)} एक ही स्थान पर बहुत से लोगों का जमाव, जनसमूह, भीड़।

भीड़ा वि. {हिं. भिड़ना} संकुचित, तंग।

भीत[1] स्त्री. {सं. भित्ति} दीवार; चटाई; छत, गच।

भीत[2] वि. {सं.} डरा हुआ।

भीतर क्रि. वि. {?} अंदर; पुं. अंतःकरण, हृदय; रनिवास, अन्तःपुर, जनानाखाना।

भीतरी वि. {हिं. भीतर} अंदर का; छिपा हुआ, गुप्त।

भीति[1] स्त्री. {सं.} डर, भय; कोई अनिष्ट या अप्रिय बात होने की आशंका, खटका।

भीति[2] स्त्री. {सं. भित्ति} दीवार।

भीती स्त्री. भित्ति; भीति।

भीन पुं. {हिं. विहान} सवेरा।

भीनना अ. {हिं. भीगना} किसी वस्तु से भर या युक्त हो जाना, पैवस्त होना।

भीनी वि. {हिं.} मीठी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीम पुं. {सं.} {*भाव.* भीमता} भयानक रस; शिव; भीमसेन; *वि.* {*स्त्री.* भीमा} भयानक; बहुत बड़ा।

भीमा *स्त्री.* {सं.} रोचना-द्रव्य, चाबुक, दुर्गा देवी।

भीमोत्तर पुं. {सं.} कुष्माण्ड, कुम्हार।

भीमोदरी *स्त्री.* {सं.} उमा, दुर्गा।

भीम्राथली पुं. {हिं.} घोड़ों की एक जाति।

भीमरथी पुं. {सं. भीमरथिन्} वह जो जीवन में 77 वर्ष, 7 महीने 7 दिन पार कर चुका हो (इससे अधिक अवस्थावाला मनुष्य दीर्घजीवी या दीर्घायु कहलाता है)।

भीमसेन पुं. {सं.} पाँचों पांडवों में से एक जो बहुत अधिक बलवान थे, भीम।

भीमसेनी कपूर पुं. एक प्रकार का बढ़िया कपूर, बरास।

भीर[1] *स्त्री.* {हिं. भीड़} भीड़; कष्ट, दुःख; विपत्ति, आफत।

भीर[2] *वि.* {सं. भीरु} डरा हुआ, भयभीत; डरपोक, कायर।

भीरना *अ.* {हिं. भीरु} डरना।

भीरा पुं. {हिं.} वृक्ष-विशेष।

भीरी *स्त्री.* {हिं.} अरहर की दाल।

भीरु *वि.* {सं.} {*भाव.* भीरुता} डरपोक।

भीरुक पुं. {सं.} वन, जंगल, चाँदी।

भीरुता *स्त्री.* {सं.} भीरु या डरपोक होने की अवस्था या भाव।

भीरे *क्रि. वि.* {हिं. भिड़ना} समीप, निकट, पास।

भील पुं. {सं. भिल्ल} {*स्त्री.* भिलनी} एक प्रसिद्ध जंगली जाति।

भीवँ पुं. = भीमसेन।

भीषक *वि.* {सं.} डरावना, भयंकर।

भीषज पुं. {सं. भेषज} वैद्य।

भीषण *वि.* {सं.} {*भाव.* भीषणता} भयानक, डरावना; विकट, घोर; पुं. भयानक रस।

भीष्म पुं. {सं.} गंगा के गर्भ से उत्पन्न राजा शान्तनु का पुत्र, देवव्रत, गांगेय; *वि.* भीषण, भयंकर।

भीष्म पितामह पुं. भीष्म।

भुँइ *स्त्री.* {सं. भूमि} पृथ्वी।

भुँइधरा (हरा) पुं. {सं. भूमिगृह, पुं. भुँइ + घर} जमीन के नीचे खोदकर बनाया हुआ घर या रहने का स्थान, तहखाना।

भुँकाना *स.* {हिं. भूँकना} किसी को भूँकने में प्रवृत्त करना।

भुँगल पुं. {?} युद्धक्षेत्र में बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा।

भुँजना *अ.* भुनना।

भुँजौना पुं. {हिं. भूँजना = भूनना} भूनने के बदले में लिया जानेवाला पारिश्रमिक; भूना हुआ अन्न; रुपए आदि भुनाने में लगनेवाला बट्टा, भुनाई, भाँज; *स.* भूनना।

भुँडा *वि.* {सं. रुंड का अनु.} बिना सींग का; दुष्ट, बदमाश।

भुअंग पुं. {सं. भंजुग} {*स्त्री* भुअंगिनी} साँप।

भुअ *स्त्री.* {हिं.} भ्रू, भौंह।

भुअन पुं. भुवन।

भुआल पुं. {सं. भूपाल} राजा।

भुइ *स्त्री.* {सं. भूमि} पृथ्वी।

भुइचाल (डोल) पुं. भूकंप।

भुई *स्त्री.* = भूमि।

भुक पुं. {सं. भुज्} भोजन, आहार; अग्नि, आग।

भुकड़ी *स्त्री.* {अनु.} सड़े हुए खाद्य पदार्थ पर निकलनेवाली एक बनस्पति।

भुकरायँ *स्त्री.* {हिं.} सड़ने की दुर्गंध।

भुकाना *क्रि. स.* {हिं.} बकाना।

भुकराँद (रायँध) *स्त्री.* {हिं. भुकड़ी} बनस्पतियों आदि के सड़ने की दुर्गंध।

भुकान *स्त्री.* {हिं. भूँकना} कुत्तों आदि के भूँकने या भौंकने की क्रिया या भाव।

भुक्खड़ पुं. {हिं. भूख + अड़ (प्रत्य.)} जिसे सदा भूख लगी रहती हो, पेटू; कंगाल।

भुक्त *वि.* {सं.} खाया हुआ, भक्षित; भोगा हुआ, उपयुक्त; (अधिकार-पत्र आदि) जिसका नगद धन या प्राप्य वस्तु ले ली गई हो, जो भुना लिया गया हो (कैश्ड)।

भुक्ति *स्त्री.* {सं.} भोजन, आहार; लौकिक सुखभोग; कब्जा; अधिकार-पत्र के अनुसार रुपए या और कोई चीज लेना, भुनाना।

भुखमरा *वि.* {हिं. भूख + मरना} जो भूखों मरता हो; भुक्खड़, पेटू।

भुखमरी *स्त्री.* {हिं. भूख + मरना} वह अवस्था जिसमें लोग अन्न के अभाव में भूखों मरते हों (स्टारवेशन)।

भुखाल *वि.* {हिं.} भूखा, जिसको भूख लगी हो।

भुखाना *अ.* {हिं. भूख} भूखा होना।

भुगत *स्त्री.* भुक्ति।

भुगतना *स.* {सं. भुक्ति} भोगना; *अ.* समाप्त या पूरा होना, निपटना; बीतना; चुकती होना।

भुगतान पु. {हिं. भुगतना} भुगताने की क्रिया या भाव; मूल्य, देन आदि चुकाना या देना (पेमेंट); ऋण या कर्ज चुकाना, अपाकरण (लिक्विडेशन ऑफ डेट्स)।

भुगताना *स.* {हिं. 'भुगतना' का *स.*} 'भुगतना' का सकर्मक रूप; (काम) पूरा करना, संपादन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना; बिताना; (देन आदि) चुकाना; दुःख देना या भोगवाना।

भुगती *स्त्री.* {सं. भुक्ति} खाने का भाव, भोजन; खाने-पीने की चीजें, भोजन आहार।

भुगाना *स.* भोगवाना।

भुगुती *स्त्री.* भुक्ति।

भुग्न *वि.* {सं.} वक्र, टेढ़ा, रोगी।

भुच्च (ड़) *वि.* {हिं. भूत + चढ़ना} मूर्ख।

भुजंग *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* भुजंगिनी} साँप।

भुजंगप्रयात *पुं.* {सं.} पिंगल में एक प्रकार का छंद जिसका प्रत्येक चरण चार यगणों का होता है।

भुजंगा *पुं.* {हिं. भुजंग} काले रंग की एक चिड़िया; भुजंग।

भुजंगांतक *पुं.* {सं.} मोर, गिद्ध।

भुजंगिनी, भुजंगी *स्त्री.* {सं.} साँपिन।

भुजंगरित *पुं.* {सं.} एक छंद का नाम।

भुजगेंद्र, भुजंगेश *पुं.* {सं.} शेषनाग।

भुज *पुं.* {सं.} बाहु, बाँह; हाथ; हाथी का सूँड़; वृक्ष की शाखा, डाली; ज्यामिति में किसी क्षेत्र का किनारा या किनारे की रेखा; समकोणों का पूरक कोण; दो की संख्या का सूचक शब्द।

भुजइल *पुं.* भुजंगा (पक्षी)।

भुजग *पुं.* {सं.} साँप।

भुजगाशन *पुं.* {सं.} गरुड़।

भुजगी *स्त्री.* {सं.} नागिन।

भुजवा *पुं.* {हिं.} भड़भूजा।

भुजदंड *पुं.* {सं.} बाहुरूपी दंड।

भुजपात *पुं.* भोजपत्र।

भुजपाश *पुं.* {सं.} दोनों हाथों की वह मुद्रा जिससे किसी को गले लगाते हैं।

भुजबंद *पुं.* {सं. भुजबंध} बाजूबंद।

भुजबाथ *पुं.* भुजपाश।

भुजमूल *पुं.* {सं.} कंधा, काँख।

भुजा *स्त्री.* {सं.} बाँह, हाथ।

भुजातर *पुं.* {सं.} क्रोड, गोद।

भुजागम *पुं.* {सं.} वृक्ष, पेड़।

भुजाग्र *पुं.* {सं.} कर, हाथ।

भुजामध्य *पुं.* {सं.} केहुनी।

भुजाली *स्त्री.* {हिं. भुज + आली (प्रत्य.)} एक प्रकार की बरछी।

भुजिया *पुं.* {हिं. भूँजना = भूनना} उबाले हुए धान का चावल; बिना रसे की भूनी हुई तरकारी।

भुजैल *पुं.* भुजंगा (पक्षी)।

भुट्टा *पुं.* {सं. भृष्ट, प्र. भुट्टी} मक्के, ज्वार, बाजरे आदि अनाजों की बाल।

भुठौर *पुं.* {हिं. भूड़ + ठौर} घोड़ों की एक जाति।

भुतना *पुं.* भूत।

भुतवा *पुं.* भूत।

भुथरा *पुं.* भोथरा।

भुथराई *स्त्री.* {हिं. भोथरा} भोथरा होने की दशा या भाव।

भुनगा *पुं.* {अनु.} {*स्त्री.* भुनगी} एक छोटा उड़नेवाला कीड़ा।

भुनना *अ. हिं.* 'भूनना' का *अ.*।

भुनभुनाना *अ.* {अनु.} भुनभुन शब्द करना; मन ही मन कुढ़कर बहुत धीरे-धीरे कुछ कहना, बड़बड़ाना।

भुनाई *स्त्री.* {हिं. भुनाना} भुनाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

भुनाना[1] *स.* हि. भूनना का प्रे.।

भुनाना[2] *स.* {सं. भंजन} बड़े सिक्के आदि को छोटे सिक्के आदि से बदलना; किसी आज्ञापत्र आदि में लिखी हुई चीज नियत स्थान से लेना, भुक्ति, जैसे चेक भुनाना।

भुरक *स्त्री.* {हिं. भुरकना} भुरभुरापन।

भुरका *पुं.* {हिं.} बुकनी, अबीर, बोरका।

भुरकना *अ.* {सं. भुरण, *स.* भुरकाना} सूखकर भुरभुरा हो जाना; भूलना; *स.* भुरभुराना।

भुरकाना *क्रि. स.* {हिं.} भुरभुरा करना, बहकाना।

भुरकी *स्त्री.* {हिं.} कुठिला, कुल्हड़।

भुरकुटा *पुं.* {हिं.} छोटा कीड़ा-मकोड़ा।

भुरकुन *पुं.* {हिं.} चूर्ण, चूरा।

भुरकस (कुस) *पुं.* {हिं. भुरकना} किसी वस्तु का रूप जो उसे खूब कुचलने या कूटने से प्राप्त होता है।

मुहा. भुरकस निकलना = आघात आदि से दुर्दशागस्त होना।

भुरटा *पुं.* भरट्टा।

भुरता *पुं.* भरता।

भुरत *पुं.* {हिं.} बरसाती घास।

भुरभुर *स्त्री.* {हिं.} रेतीली भूमि में होनेवाली घास।

भुरभुरा *वि.* {अनु.} जरा-सा आघात लगने पर चूर-चूर हो जानेवाला।

भुरभुराना *स.* {अनु.} (चूर्ण आदि) छिड़कना, बुरकना; भुरभुरा करना।

भुरवना *स.* {सं. भ्रमण} भ्रम में डालना; फुसलाना।

भुरहरे *क्रि. वि.* भोरहरे।

भुराई[1] *स्त्री.* {हिं. भोला} भोलापन।

भुराई[2] *स्त्री.* {हिं. भूरा} भूरापन।

भुराना *स.* भुरवना; *अ.* भूलना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुलक्कड़ *वि.* {हिं. भूलना} जिसका स्वभाव भूलने का हो, प्रायः भूलनेवाला।
भुलना *वि.* {हिं. भूलना} जल्दी भूल जानेवाला, जैसे भुलना मनुष्य या स्वभाव; *स.* = भूलना।
भुलभुला *पुं.* {हिं.} गरम राख।
भुलवाना *स.* {हिं. 'भूलना' का प्रे.} भ्रम में डालना; भुलाना।
भुलाना *स.* {हिं. 'भूलना' का प्रे.} भूलना; भ्रम में डालना; *अ. स.* 'भूलना'।
भुलावा *पुं.* {हिं. भूलना} धोखा।
भुवंग *पुं.* {सं. भुजंग} साँप।
भुवः *पुं.* {सं.} भूमि और सूर्य के बीच का लोक या आकाश, अंतरिक्ष।
भुव[1] *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी।
भुव[1] *स्त्री.* {सं. भ्रू} भौंह, भ्रू।
भुवन *पुं.* {सं.} जगत्; जल; जन, लोग; लोक, जो पुराणानुसार चौदह हैं, यथा–भू, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्य ये सात ऊपर लोक और अतल, सुतल, वितल, गभस्तिमत, महातल, रसातल और पाताल ये सात नीचे के; चौदह की संख्या; सृष्टि।
भुवनपति (पाल) *पुं.* भूपाल।
भुवर्लोक *पुं.* {सं. भूपाल} अंतरिक्ष।
भुवाल *पुं.* {सं.} राजा।
भुवि *स्त्री.* = भूमि।
भुशुंडी *स्त्री.* {सं.} एक प्राचीन अस्त्र।
भुस *पुं.* भूसा।
भुसी *स्त्री.* भूसी।
भुसौरा *पुं.* {हिं.} भूसा रखने का स्थान।
भूँकना *अ.* {अनु.} भूँभूँ या भौंभौं शब्द करना (कुत्तों का); व्यर्थ बकना।
भूँचाल *पुं.* भूकम्प।
भूँजना *स.* भूनना; *अ.* भोगना।
भूँजा *पुं.* {हिं.} भूना हुआ अन्न, चबैना।
भूँडरी *स्त्री.* {हिं.} बिना लगान की भूमि जो नाई आदि को दी गई हो।
भूँड़ *पुं.* भूर (बलुई मिट्टी या जमीन)।
भूँड़िया *वि.* {हिं.} मँगनी के हल-बैलों से खेती करनेवाला।
भूँडोल *पुं.* भूकंप।
भूँरो *पुं.* {हिं.} भ्रमर, भौंरा।
भूँसना *अ.* भूँकना।
भू[1] *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी, स्थान।
भू[2] *स्त्री.* {सं. भ्रू} भौंह।
भूकंद *पुं.* {सं.} सूरन, ओल।
भूआ[1] *स्त्री.* बूआ।
भूआ[1] *पुं. स्त्री.* {अल्पा. भूई} घूआ।
भूकंप *पुं.* {सं.} प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी के भीतरी भाग में कुछ उथल-पुथल होने से ऊपरी भाग का सहसा हिलना, भूचाल (अर्थक्वेक)।
भूकदंबा *स्त्री.* {सं.} गोरखमुंडी।
भूकर्ण *पुं.* {सं.} पृथ्वी का व्यासार्द्ध।
भूकेश *पुं.* {सं.} सिवार, बड़-वृक्ष की जटाएँ।
भूकेशा *स्त्री.* {सं.} राक्षसी।
भूकंप विज्ञान *पुं.* {सं.} वह विज्ञान जिसमें भूकंप के कारणों, गति, विधि, स्वरूपआदि का विवेचन होता है (सीस्मॉलोजी)।
भूखंड *पुं.* {सं.} पृथ्वी का कोई खंड, भाग या अंश (ट्रेक्ट); जमीन का छोटा टुकड़ा (प्लॉट)।
भूख *स्त्री.* {सं. बुभुक्षा} खाने की इच्छा, क्षुधा; (माल आदि खरीदने की) आवश्यकता, जरूरत।
भूखना *स.* {सं. भूषण} सजाना।
भूख-हड़ताल *स्त्री.* अनशन।
भूखा *वि.* {हिं. भूख} {*स्त्री.* भूखा} जिसे भूख लगी हो, क्षुधित; किसी बात का अभिलाषी, इच्छुक; दरिद्र, गरीब।
भूगर्भ *पु.* {सं.} पृथ्वी का भीतरी भाग, पृथ्वी तल के नीचे का अंश।
भूगर्भशास्त्र *पुं.* {सं.} वह शास्त्र जो यह बतलाता है कि पृथ्वी के ऊपरी और भीतरी भाग किन-किन तत्वों से बने हैं, उसके भीतरी भाग में क्या-क्या वस्तुएँ हैं और उसे अपना वर्तमान रूप किस प्रकार प्राप्त हुआ है (जियॉलोजी)।
भूगर्भित *वि.* {सं.} भूगर्भ या पृथ्वी के भीतरी भाग में होनेवाला, अन्तर्भौम (सबटेरियन)।
भूगोल *पुं.* {सं.} पृथ्वी; वह शास्त्र जिसमें पृथ्वी के ऊपरी स्वरूप और प्राकृतिक विभागों (नदियों, पहाड़ों, देशों आदि) का विवेचन या वर्णन होता है; भूगोलीय (जियोग्राफी); *वि.* {सं.} भूगोल संबंधी।
भूचर *पुं.* {सं.} भूमि पर रहनेवाले प्राणी।
भूचाल(डोल) *पुं.* भूकंप।
भूचुंगी *स्त्री.* भूशुल्क।
भूजा *पुं.* = भोग।
भूजात *पुं.* {हिं.} वृक्ष, पेड़।
भूटान *पुं.* {हिं.} नेपाल के पूर्व में स्वतंत्र राष्ट्र।
भूटानी *वि.* {हिं.} भूटान की भाषा, भूटान-संबंधी।
भूटिया बादाम *पुं.* {हिं.} मंझोले आकार का पहाड़ी वृक्ष जिसकी लकड़ी पुष्ट व फल खाने योग्य।
भूड़ *स्त्री.* {हिं.} बालू मिली मिट्टी।
भूडोल *पुं.* {हिं.} भूकंप।
भूत *पुं.* {सं.} {*भाव.* भूतत्त्व} वे मूल द्रव्य जिनसे सृष्टि की रचना हुई है, तत्व (एलिमेंट);

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सृष्टि के सभी जड़ पदार्थ और चेतन प्राणी; प्राणी, जीव; बीता हुआ समय; व्याकरण में क्रिया का वह रूप जो किसी कार्य या व्यापार के समाप्त हो चुकने का सूचक हो; मृत शरीर या उसकी आत्मा, भूतात्मा; किसी मृत व्यक्ति की आत्मा का वह कल्पित रूप जो मोक्ष या मुक्ति के अभाव में उसे प्राप्त होता है और जिसमें वह प्रायः कष्टदायक और अमांगलिक कार्य करता है, प्रेत, शैतान; *वि.* बीता हुआ, गत; मिला हुआ; समान, तुल्य; जो हो चुका हो।

भूतत्व *पुं.* {सं.} पृथ्वी-संबंधी, भूत का भाव।

भूतदया *स्त्री.* {सं.} जड़-चेतन सब पर की जानेवाली दया।

भूतनया *स्त्री.* {सं.} जानकी माता।

भूतना *पुं.* {*स्त्री.* भूतनी} भूत।

भूतनाथ *पुं.* {सं.} शिव।

भूतपूर्व *वि.* {सं.} इस समय से पहले का, वर्तमान से पूर्व का; जो पहले किसी कारण से उस पद पर रह चुका हो, पर अब किसी कारण से उस पद पर न हो, जैसे किसी संस्था का भूतपूर्व मन्त्री या किसी पत्र का भूतपूर्व-संपादक।

भूतयज्ञ *पुं.* **{सं.} पंच महायज्ञों में से एक जिसमें बलिवैश्वदेव आदि कृत्य किए जाते हैं।**

भूतपाल *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।

भूतल *पुं.* {सं.} पृथ्वी का ऊपरी तल या भाग; संसार, दुनिया।

भूतांतक *पुं.* {सं.} यम, रुद्र।

भूतवाद *पुं.* पदार्थवाद।

भूतशुद्धि *स्त्री.* {सं.} भूत से छुटकारा दिलाने के लिए किया जानेवाला कर्मकांड।

भूतागति *स्त्री.* {हिं. भूत = प्रेत + गति} भूत-प्रेत की लीला की तरह का अद्‌भुत व्यापार, बहुत ही विलक्षण काम या बात।

भूतात्मा *पुं.* {सं. भूतात्मन्} मृत शरीर या उसकी आत्मा; पार्थिव शरीर; शरीर।

भूति *स्त्री.* {सं.} वैभव, धन-संपत्ति; भस्म, राख; उत्पत्ति; वृद्धि।

भूतिनी *स्त्री.* {हिं. भूत} भूत योनि की स्त्री।

भूदेव *पुं.* {सं.} ब्राह्मण।

भूधर *पुं.* {सं.} पहाड़, पर्वत।

भूधृति *स्त्री.* {सं.} जोतने-बोने के लिए जमीन पर होनेवाला किसान का अधिकार (लैंड टेंयोर)।

भून *पुं.* भ्रूण।

भूनना *स.* {सं. भर्जन} जल की सहायता के बिना गरम करके पकाना; बहुत अधिक कष्ट देना।

भूप *पुं.* {सं.} राजा।

भूपति, भूपाल *पुं.* {सं.} राजा, नृप।

भूपद *पुं.* {सं.} वृक्ष, पेड़।

भूपदी *स्त्री.* {सं.} चमेली, मल्लिका।

भूपरिधि *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी की परिधि।

भूपार *पुं.* = भूपाल।

भूपाल *पुं.* {सं.} नृप, राजा।

भूपाली *स्त्री.* {सं.} एक रागिनी।

भूपुत्र *पुं.* {सं.} मंगल ग्रह।

भूप्रकंप *पुं.* {सं.} भूकंप।

भूपृष्ठ *वि.* {सं.} पृथ्वी का तल।

भूभल *पुं.* {?} गरम राख या धूल, ततूरी।

भूभाग *पुं.* {सं.} पृथ्वी या जमीन का कोई भाग या टुकड़ा, विशेषतः ऐसे टुकड़ा जो किसी नगर या राज्य के चारों ओर और उसके अधिक्षेत्र में हो (टेरिटरी)।

भूभागीय *वि.* {सं.} भूभाग-संबंधी।

भूभुर *स्त्री.* भूभल।

भूभुरी *स्त्री.* = भूमला।

भूमंडल *पु.* {सं.} पृथ्वी।

भूम *स्त्री.* = भूमि।

भूमध्य रेखा *स्त्री.* {सं.} भूगोल में पृथ्वी तल का ठीक मध्य सूचित करनेवाली वह कल्पित रेखा जो दोनों ध्रुवों से बराबर दूरी पर पड़ती है (ईक्वेटर)।

भूमध्यसागर *पुं.* {सं.} यूरोप और अफ्रीका के बीच का समुद्र (मेडिटरेनियन)।

भूमि *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी-तल के ऊपर का वह कठोर भाग जिस पर नदियाँ, पर्वत, आदि हैं और जिस पर लोग रहते हैं और वनस्पतियाँ उगती हैं, जमीन (लैंड); उक्त का कोई छोटा टुकड़ा जिस पर किसी का अधिकार हो या जिसमें कुछ उपज आदि हो (एस्टेट); उक्त का कोई ऐसा छोटा टुकड़ा जो खेती-बारी करने, बाग, बगीचा लगाने या घर आदि बनाने के लिए उपयुक्त हो (प्लॉट); स्थान, जगह; नींव, पेंदे, आधार आदि के रूप में वह सबसे नीचे वाला अंग जिसके ऊपर उसके और सब अंग उभार आदि बने या ठहरे हों, जैसे चित्रस की पृष्ठभूमि (बेस)।

भूमिक *वि.* भौमिक।

भूमिका *स्त्री.* {सं.} किसी ग्रंथ के आरंभ का वह वक्तव्य जिससे उस ग्रंथ की ज्ञातव्य बातों का पता चले, मुखबंध, आमुख (प्रिफेस); वह आधार जिस पर कोई दूसरी चीज खड़ी की जाए, पृष्ठभूमि (बैकग्राउंड); नाटकों आदि में किसी पात्र का अभिनय।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिज *वि.* {सं.} जो भूमि या पृथ्वी से उत्पन्न हो या होता हो भूमि से उद्‌भूत।

भूमिघर *पुं.* {सं. भूमि + घर} वह खेतिहर जिसने भूमि या खेत पर स्थायी अधिकार प्राप्त कर लिया हो।

भूमिया *पुं.* {सं. भूमि + इया (प्रत्य.)} जमींदार; ग्राम देवता।

भूमिसात *वि.* {सं. भूमि + सात् (प्रत्य.)} जो गिरकर जमीन के साथ मिल गया हो, जैसे भूकंप में मकानों का भूमिसात होना।

भूमिहार *पुं.* {सं.} बिहार और उत्तर प्रदेश में रहनेवाली एक जाति।

भूमींद्र *पुं.* {सं.} भूपति, राजा।

भूम्य *वि.* {सं.} भूमि पर होने योग्य।

भूयः {सं. अव्य.} बहुत, **अधिक, फिर से।**

भूयण *स्त्री.* {सं.} भूमि, पृथ्वी।

भूयिष्ठ *वि.* {सं.} बहुत, प्रचुर।

भूयसी *वि.* {सं.} बहुत अधिक; *क्रि. वि.* बार-बार।

भूरसी दक्षिणा *स्त्री.* {सं. भूयसी + दक्षिणा} वह दक्षिणा जो मंगल कार्य के अंत में उपस्थित ब्राह्मणों को दी जाती है।

भूर[1] *वि.* {सं. भूरि} बहुत, अधिक।

भूर[2] *पुं.* {हिं. भुरभुरा} बालू; बालू मिली हुई एक प्रकार की लाल मिट्‌टी (जिस खेत में ऐसी मिट्‌टी होती है उसमें कुछ उत्पन्न नहीं होता)।

भूर-पूर *वि. क्रि. वि.* = भरपूर।

भूरला *पुं.* {हिं.} वैश्य जाति।

भूरसी दक्षिणा *स्त्री.* भूयसी दक्षिणा।

भूरा *पुं.* {सं. बभ्रु} मिट्‌टी की तरह का या खाकी रंग; कच्ची चीनी; चीनी।
वि. मटमैले रंग का, खाकी।

भूराजस्व *पुं.* {सं.} जोती-बोई जानेवाली जमीन पर लगनेवाला सरकारी कर, लगान (लैंड रैविन्यू)।

भूरि *पुं.* {सं.} {*भाव.* भूरिता} ब्रह्मा; स्वर्ण, सोना; *वि.* बहुत; भारी।

भूरिगम *पुं.* {सं.} गदहा, गधा।

भूरिज *वि.* {सं.} झुंडरूप में उत्पन्न हो।

भूरिता *स्त्री.* {सं.} प्राचुर्य, अधिकता।

भूरुह *पुं.* {सं.} वृक्ष, पेड़।

भूरोह *पुं.* {सं.} केंचुआ।

भूल *स्त्री.* {हिं. भूलना} भूलने की अवस्था या भाव; अज्ञान, असावधानता, भ्रम आदि के कारण कुछ का कुछ समझने और उसके अनुसार कुछ करने की अवस्था या भाव, गलती (एरर); अर्थ, तथ्य, प्रक्रिया आदि ठीक तरह से न जानने या समझने और उसके फलस्वरूप कुछ कर डालने की अवस्था या भाव, अशुद्धि, गलती (मिस्टेक); पूरा ध्यान न देने या जल्दी में रहने से होनेवाली कोई त्रुटि, चूक (स्लिप); अनजान में असावधानी के कारण होनेवाला कोई अपराध या दोष, कसूर।

भूलना *स.* {सं. ह्वल} विस्मृत करना, याद न रखना; याद न रहने से खो देना; *अ.* विस्मृत होना, याद न रहना; गलती होना; आसक्त होना, लुभाना; घमंड में रहना; *वि.* भूलनेवाला, जैसे भूलना स्वभाव।

भूल-भूलैयाँ *स्त्री.* {हिं. भूल + भुलाना + ऐयाँ (प्रत्य.)} वह चक्करदार वास्तु-रचना जिसमें आदमी इस प्रकार भूल जाता है कि जल्दी ठिकाने पर नहीं पहुँच सकता, चकाबू; रेखाओं आदि से बनाई हुई इस प्रकार की आकृति।

भूल-सुधार *पुं.* {हिं.} भूल सुधारने की क्रिया या भाव।

भूलोक *पुं.* {सं.} संसार, जगत्।

भूविज्ञान *पुं.* भूगर्भशास्त्र।

भूशायी *वि.* {सं. भूशायिन्} पृथ्वी पर सोनेवाला; पृथ्वी पर गिरा, लेटा या पड़ा हुआ।

भूषण *पुं.* {सं.} अलंकार, गहना, जेवर; शोभा बढ़ानेवाली चीज।

भूषना *स.* {सं. भूषण} भूषित करना, सजाना।

भूषा *स्त्री.* {सं. भूषण} आभूषण, गहना; सजाने की क्रिया, सजावट; सजाने की सामग्री।

भूषित *वि.* {सं.} गहने पहने हुआ, अलंकृत; सजाया हुआ; सज्जित।

भूषन *पुं.* {हिं.} भूषण।

भूषना *क्रि. स.* {हिं.} अलंकृत करना, सजाना।

भूष्य *वि.* {सं.} सजाने योग्य।

भूसंस्कार *पुं.* {सं.} यज्ञ करने से पहले भूमि को स्वच्छ करने, रेखा खींचने आदि की क्रिया।

भूसंपत्ति *स्त्री.* {सं.} वह संपत्ति जो खेती-बारी, जंगल, मकान आदि के रूप में हो (एस्टेट)।

भूसना *अ.* भूँकना।

भूसा *पुं.* {सं. तुष} अनाजों के पौधों के डंठलों का महीन चूरा।

भूसी *स्त्री.* {हिं. भूसा} भूसा; दाने आदि के ऊपर का छिलका।

भूसुव *पुं.* {सं.} मंगल ग्रह, वृक्ष, पेड़, नरकासुर।

भूसुता *स्त्री.* {सं.} सीता, जानकी।

भूसुर *पुं.* {सं.} ब्राह्मण।

भूस्वर्ग *पुं.* {सं.} सुमेरु पर्वत।

भृंग *पुं.* {सं.} दारचीनी, अभ्रक, भ्रमर, भौंरा, भंगरैया।

भूस्वामी *पुं.* {सं.} वह जो किसी भूमिखंड का स्वामी हो, और वह भूमि दूसरों को लगान,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाड़े आदि पर देता हो, जमीन का मालिक (लैंड-लॉर्ड)।

भूहरा पुं. भुँइहरा।

भृंगराज पुं. {सं.} भँगरैया (बनस्पति); काले रंग की एक चिड़िया।

भृंगि पुं. {सं.} शिवजी का द्वारपाल।

भृंगी[1] पुं. {सं. भृंगिन्} शिवजी का एक गण।

भृंगी[2] स्त्री. {सं.} भृंग या भौंरे की मादा, भौंरी; बिलनी।

भृगीश पुं. {सं.} शिव, महादेव।

भृकुटी स्त्री. {सं.} भौंह।

भृगु पुं. {सं.} एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने विष्णु की छाती पर लात मारी थी; परशुराम; समुद्रतट की ऊँची ढालुआँ चट्टान, कगार (क्लिफ)।

भृगुरेखा स्त्री. {सं.} विष्णु की छाती पर का वह चिह्न जो भृगु की लात लगने से हुआ था।

भृगुवार पुं. {सं.} शुक्रवार।

भृत पुं. {सं.} दास; *वि.* भरा हुआ, पूरित; पाला-पोसा हुआ।

भृतक पुं. {सं.} वह जो वेतन लेकर काम करता हो।

भृति स्त्री. {सं.} भरने की क्रिया या भाव; सेवा, नौकरी; मजदूरी; वेतन, तनख्वाह; मूल्य, दाम; पालन करना, पालना; वह धन जो पत्नी को निर्वाह के लिए पति द्वारा त्याग जाने पर मिलता है (एलिमानी); जीविका-निर्वाह के लिए मिलनेवाला धन, वृत्ति; भत्ता।

भृत्तिका स्त्री. {सं.} वेतन।

भृत्य पुं. {सं.} नौकर, सेवक।

भेंगा पुं. {देश.} वह जिसकी आँखों की पुतलियाँ टेढ़ी-तिरछी चलती या रहती हों।

भेंट स्त्री. {हिं. भेंटना} मिलना, मुलाकात; उपहार, नजराना।

भेंटकर्ता पुं. {सं.} भेंट करनेवाला।

भेंटना अ. {हिं. भिड़ना} मुलाकात करना, मिलना; स. गले लगाना।

भेंटवार्ता स्त्री. {सं.} रेडियो, दूरदर्शन आदि पर किसी विशिष्ट व्यक्ति से कराई जानेवाली भेंट तथा वार्ता।

भेइ (उ) पुं. {सं. भेद} रहस्य, मर्म।

भेऊ पुं. {हिं.} भेद, रहस्य, गुप्त बात।

भेक पुं. मेंढक।

भेख पुं. वेष।

भेखज पुं. भेषज।

भेज स्त्री. {हिं.} जो कुछ भेजा जाए, लगाना।

भेजना स. {सं. व्रजन्} किसी को कहीं जाने के लिए चलने में प्रवृत्त करना; कोई वस्तु एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए रवाना करना, प्रेषण।

भेजवाना स. {हिं.} भेजना का प्रे.।

भेजा पुं. {?} सिर के अंदर का गूदा, मग्ज।

भेटना क्रि. स. {हिं.} भेंटना।

भेड़ स्त्री. {सं. मेष} {पुं. भेड़ा} बकरी की तरह का एक प्रसिद्ध चौपाया।

भेड़ना अ. भीड़ना (बंद करना)।

भेड़ा पुं. {हिं. भेड़} भेड़ जाति का नर, मेढ़ा, मेष।

भेड़िया पुं. {हिं. भेड़} कुत्ते की जाति का एक प्रसिद्ध जंगली हिंसक जंतु जो छोटे जानवरों को उठा ले जाता है।

भेड़िया-धसान स्त्री. भेंड़ों जैसा अंधानुकरण।

भेड़ी स्त्री. भेड़।

भेतव्य वि. {सं.} भय के योग्य।

भेद पुं. {सं.} भेदने या छेदने की क्रिया; शत्रु-पक्ष के लोगों को एक दूसरे का विरोधी बनाकर कुछ लोगों को अपनी ओर मिलाना; भीतरी छिपा हुआ हाल, रहस्य; मर्म, तात्पर्य; अंतर, फरक; प्रकार, तरह।

भेदक वि. {सं.} भेदने या छेदनेवाला; रेचक, दस्तावर (वैद्यक)।

भेदकर वि. {सं.} भेद करनेवाला।

भेदकातिशयोक्ति स्त्री. {सं.} साहित्य में अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें किसी वास्तविक उपमेय का उल्लेख करते हुए भी 'वह कुछ और ही' या 'इन सबसे अलग या और ही है' आदि कहकर उसे भिन्न या अलग ठहराया जाता है।

भेददर्शी (र्शिन्) वि. {सं.} भेद दिखलाने वाला।

भेदड़ी स्त्री. {हिं.} रबड़ी।

भेदन पुं. {सं.} {वि. भेदनीय, भेद्य, भेदक} भेदने की क्रिया या भाव; छेदना, बेधना; भेद लेने की क्रिया या भाव (एस्पॉयनेज)।

भेदना स. {सं. भेदन} बेधना, छेदना; किसी के मन का आशय जानने के लिए उसकी ओर गंभीर दृष्टि से देखना।

भेदनीय वि. {सं.} भेद करने योग्य।

भेदबुद्धि स्त्री. {सं.} वह बुद्धि या विचार जिसके अनुसार प्रायः समानता रखनेवाले मनुष्यों, पदार्थों आदि में भेदभाव किया जाता है।

भेदभाव पुं. {सं.} प्रायः समान माने जानेवाले कुछ विशिष्ट लोगों, पदार्थों आदि के प्रति अंतर या भेद का विचार या भाव रखना; कुछ लोगों के साथ एक तरह का या अच्छा और कुछ लोगों के साथ दूसरी तरह का या अनुचित व्यवहार करना (डिस्क्रिमिनेशन)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेदवादी *वि.* {सं.} द्वैत मतावलंबी।
भेदित *वि.* {सं.} भिन्न, विदारित।
भेदित्व *पुं.* {सं.} भेदने का भाव।
भेदभावपूर्ण *वि.* {सं.} पक्षपातपूर्ण।
भेदमति *स्त्री.* = भेदबुद्धि।
भेदिया *पुं.* {सं. भेद + हिं इया (प्रत्य.)} जासूस, गुप्तचर; भेद या भीतरी रहस्य जाननेवाला।
भेदी¹ *पुं.* भेदिया।
भेदी² *वि.* {सं भेदिन्.} भेदन करनेवाला, छेदनेवाला।
भेदू *पुं.* भेदिया।
भेदीसार *पुं.* {सं.} लकड़ी छेदने का बरमा।
भेद्य *वि.* {सं.} भेद करने योग्य, छेदने योग्य।
भेन *स्त्री.* {हिं.} भगिनी, बहिन।
भेना *क्रि. स.* {हिं.} भिगोना, तर करना।
भेभम *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का पतला बाँस।
भेल *पुं.* {सं.} भेलक, बेड़ा; *वि.* मूर्ख, चंचल।
भेर *पुं.* = भेरी (ढोल)।
भेरा *पुं.* बेड़ा।
भेरी *स्त्री.* {सं.} लड़ाई में बजाया जानेवाला एक प्रकार का बड़ा ढोल, ढक्का, दुंदुभी।
भेला¹ *पुं.* {हिं. भेंट} भिड़ंत, भेंट, मुलाकात।
भेला² *पुं.* भिलावाँ।
भेला³ *पुं.* {?} {*स्त्री.* अल्पा. भेली} बड़ा गोला या पिंड, जैसे गुड़ का भेला।
भेली *स्त्री.* {?} गुड़ आदि की गोल बट्टी या पिंडी।
भेद *पुं.* {सं. भेद} भेद, रहस्य; बारी, पारी।
भेव *पुं.* {हिं.} रहस्य, भेद, बारी।
भेवना *क्रि. स.* {हिं.} भिगोना, तर करना।
भेषज *पुं.* {हिं.} औषध, दवा, जल।
भेषजांग *पुं.* {सं.} औषध का अनुपान।
भेष *पुं.* वेष।
भेषज *पुं.* {सं.} औषध, दवा।
भेषना *पुं.* भेसना।
भेस *पुं.* {सं. वेष} केवल दूसरों को दिखाने के लिए बनाया हुआ बाहरी रूप-रंग और पहनावा आदि, वेष; किसी के अनुकरण पर बनाया हुआ कृत्रिम रूप और पहने हुए वस्त्र आदि।
भेसना *स.* {हिं. भेस} भेस बनाना; कपड़े पहनना।
भैंस *स्त्री.* {सं. महिष} दूध के लिए प्रसिद्ध एक मादा पशु (गाय से भिन्न)।
भैंसा *पुं.* {हिं. भैंस} भैंस का नर।
भैंसासुर *पुं.* महिषासुर।
भै *पुं.* भय।
भैचक, भैचक्क *वि.* भौचक।
भैजन *वि.* भयानक।
भैजल *पुं.* भवजाल।
भैदा *वि.* = भयदायक (भयानक)।
भैन, भैना *स्त्री.* बहन।
भैमी *स्त्री.* {सं.} दमयंती।
भैयस *पुं.* {हिं.} पैतृक संपत्ति में भाइयों का अंश।
भैया *पुं.* {हिं. भाई} भाई; बराबर वालों के लिए संबोधन का शब्द।
भैयाचारी *स्त्री.* भाईचारा।
भैरव *वि.* {सं.} भीषण शब्दवाला; भयानक, विकट; *पुं.* शिव के एक प्रकार के गण; साहित्य में भयानक रस; छह रागों में से एक (संगीत)।
भैरवी *स्त्री.* {सं.} एक देवी का नाम, चामुंडा; सवेरे गाई जानेवाली एक रागिनी; सवेरे होनेवाला संगीत; *वि.* भैरव-संबंधी, भैरव का, जैसे भैरवी यातना।
भैरवीचक्र *पुं.* {सं.} तांत्रिकों का वह मंडल जो देवी के पूजन के लिए एकत्र होता है।
भैरवी यातना *पुं.* {सं.} हिन्दुओं के विश्वास के अनुसार वह कष्ट जो प्राणियों को मरते समय भैरव देते हैं।
भैषज *पुं.* {सं.} औषध, दवा।
भैषना *क्रि. अ.* {हिं.} स्वाँग भरना।
भैषज्य *पुं.* {सं.} रोगी को औषध आदि देने का काम, चिकित्सा; औषध, दवा; *वि.* औषध या चिकित्सा-संबंधी, जैसे भेषज्य विधि विज्ञान।
भैस *पुं.* {हिं.} बनावटी रूप-रंग वेश।
भैसना *क्रि. अ.* {हिं.} वेश धारण करना।
भैंस *स्त्री.* {हिं.} गाय की जाति का पर भिन्न चौपाया अधिक दूध देनेवाला।
भैंसा *पुं.* {हिं.} भैंस का नर।
भैंसोरी *स्त्री.* {हिं.} भैंस का चमड़ा।
भैहा *पुं.* {हिं. भव} भयभीत, डरा हुआ; जो भूत-प्रेत देखकर डर गया हो या जिसपर भूत का आवेश हो।
भोंकना *स.* {भक. से अनु.} नुकीली चीज जो से धँसाना, घुसाना।
भोंड़ा *वि.* {हिं. भद्दा} {*भाव.* भोंडापन, *स्त्री.* भोंडी} नभद्दा, बदसूरत, कुरूप।
भोंदू *वि.* {हिं. बुद्धू} मूर्ख; भोला, सीधा।
भोंपा (पू) *पुं.* {भें अनु. + प (प्रत्य.)} फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा; कल-कारखानों आदि के कर्मचारियों को सचेत करने के लिए बहुत जोर से बजाई जानेवाली एक प्रकार की सीटी; उक्त सीटी बजानेवाला उपकरण।
भोंसले *पुं.* महाराष्ट्र राजवंश की उपाधि।
भो *अ.* {हिं. भया} हुआ।
भोकस¹ *पुं.* {हिं. भूख} भुक्खड़।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोकस² पुं. {?} एक प्रकार के राक्षस।

भोकार *स्त्री.* {हिं.} जोर से रोने का शब्द।

भोक्ता *वि.* {सं. भोक्तृ} {*भाव.* भोक्तृत्व} भोग करने या भोगनेवाला।

भोग पुं. {सं.} सुख-दुख आदि का अनुभव करना; देह या शरीर जो सुख, दुख आदि का अनुभव करता या उन्हें भोगता है; पाप-पुण्य का वह फल जो सुख-दुख आदि के रूप में भोगा जाता है, प्रारब्ध; राशियों में ग्रहों के रहने का समय; कोई वस्तु अपने अधिकार में करके उससे सुख या लाभ उठाना, वह स्थिति जिसमें कोई चीज अपने पास रखकर उसका सुख भोगा या उपभोग किया जाता है, अधिकार (पोजेशन); भक्षण, खाना; देवताओं के आगे रखे जानेवाले खाद्य पदार्थ, नैवेद्य; स्त्रीसंभोग, मैथुन।

भोगना *अ.* {सं. भोग} सुख-दुख आदि सहना, भुगतना।

भोगली *स्त्री.* {हिं.} छोटी नली, पुपली, नथ, जरी।

भोगबंधक पुं. {सं. योग्य + बंधक = रेहन} बंधक या रेहन का वह प्रकार जिसमें ब्याज के बदले में बँधकी को बंधक रखी हुई चीज का अधिकार या स्वामित्व अस्थायी रूप से दे दिया जाता है और वह उसकी आय आदि का उपभोग करता है; 'दृष्टबंधक' का उलटा।

भोगवना पुं. भोगना।

भोगवाना पुं. {हिं.} भोगना का प्रे.।

भोगविलास पुं. {सं.} सुखपूर्वक अच्छी- अच्छी वस्तुओं का उपभोग करना।

भोग-संपत्ति *स्त्री.* {सं.} राजाओं आदि की वह स्वतंत्र संपत्ति जो उनके व्यक्तिगत भोग के लिए होती है और जिस पर राज्य या शासन का अधिकार नहीं होता।

भोगाना *स.* भोगवाना, भोग कराना।

भोगिनी *स्त्री.* {सं.} केवल संभोग के लिए रखी हुई स्त्री, रखेली।

भोगी पुं. {सं. भागिन्} {*स्त्री.* भोगिनी} भोगनेवाला व्यक्ति; *वि.* भोगनेवाला; इंद्रियों का सुख भोगने या चाहनेवाला।

भोग्य *वि.* {सं.} भोगने या काम में लाने के योग्य।

भोग्या *स्त्री.* {सं.} रंडी।

भोज¹ पुं. {सं. भोजन} बहुत से लोगों का एकसाथ बैठकर भोजन करना, जेवनार, दावत।

भोज² पुं. {सं.} भोजकट नामक देश (आजकल का भोजपुर); मालवे के एक प्रसिद्ध परमार राजा जो संस्कृत के बहुत बड़े कवि थे।

भोजक *वि., पुं.* {सं.} भोजन करनेवाला, भोगी।

भोजदेव पुं. {सं.} राजा भोज।

भोजन पुं. {सं.} खाने की वस्तु भक्षण करना, खाना; वे चीजें जो शरीर के पोषण और वर्द्धन के लिए खाई जाती हों, खाने की सामग्री, खाद्य पदार्थ (फूड); विशेष परिस्थिति या अवस्था में खाई जानेवाली कुछ निश्चित और विशिष्ट प्रकार की वस्तुएँ, विशेषत: रुग्नावस्था में चिकित्सक द्वारा बतलाई हुई खाने की चीजें (डायट)।

भोजन-भट्ट पुं. {सं. भोजन + भट} बहुत अधिक खानेवाला।

भोजनालय पुं. {सं.} रसोई-घर; वह स्थान जहाँ पका हुआ भोजन मिले।

भोजनीय *वि.* {सं.} भोजन करने योग्य।

भोजनोपरांत *वि.* {सं.} भोजन के उपरांत।

भोजपत्र पुं. {सं. भूर्जपत्र} एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल ग्रंथ आदि लिखने के काम आती थी।

भोजपुरिया पुं. {हिं.} भोजपुर-निवासी।

भोजपुरी *स्त्री.* {हिं. भोजपुर + ई (प्रत्य.)} भोजपुरी की भाषा; *वि.* भोजपुर का, भोजपुर-संबंधी।

भोज-प्रबंध पुं. {सं.} इस नाम का एक ग्रन्थ।

भोज-प्रबंधक पुं. {सं.} भोज का प्रबंध करनेवाला।

भोजबाजी *स्त्री.* {हिं.} ऐन्द्रजालिक क्रीड़ा।

भोज-विद्या *स्त्री.* इंद्रजाल।

भोजी पुं. {सं. भोजिन्} खानेवाला (यौ. के अंत में, जैसे मांसभोजी)।

भोजू¹ पुं. भोजन।

भोजू² *वि.* {सं. भोग्य} काम में आने योग्य।

भोज्य पुं. {सं.} खाद्य पदार्थ; *वि.* खाने योग्य।

भोट पुं. {सं. बौद्ध?} भूटान देश।

भोटा *वि.* भोला।

भोटिया पुं. {हिं. भोट + इया (प्रत्य.)} भोट या भूटान देश का निवासी; *वि.* भूटान देश का।

भोटी *वि., पुं.* = भोटिया।

भोडर (ल) पुं. {देश.} अभ्रक, अबरक।

भोथरा *वि.* {अनु.} {*भाव.* भोथरापन} जिसकी धार तेज न हो, कुंठित, कुंद।

भोना *अ.* {हिं. भीनना} भींगना या भीनना; लिप्त या लीन होना; आसक्त होना; युक्त होना, मिलना; धोखे में पड़ना; *स.* भिगोना या तर करना; युक्त करना, मिलाना; लिप्त, लीन या आसक्त करना; किसी को धोखे में डालना।

भोपा पुं. {हिं.} तुरही, मूर्ख।

भोबरा पुं. {हिं.} एक घास।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chenn eGangotri

भोभी *स्त्री.* {हिं.} संबोधन का शब्द, अरे, हो।
भोमी *स्त्री.* {हिं.} पृथ्वी।
भोयन *पुं.* = भोजन।
भोर[1] *पुं.* {सं. बिभावरी} तड़का।
भोर[2] *पुं.* {सं. भ्रम} भ्रम, धोखा; *वि.* चकित, भौचक्का; *वि.* भोला।
भोरना *स.* {सं. भ्रम} भ्रम में डालना; धोखा देना, ठगना; बहकाना।
भोरहरा *पुं.* भोर।
भोरहरे *क्रि. वि.* {हिं. भोर} भोर या तड़के के समय, बहुत सवेरे।
भोरा *पुं.* {सं.} भोर. *वि.* {*स्त्री.* भोरी} भोला (सीधा)।
भोराई *स्त्री.* = भोलापन।
भोराना *स.* {हिं. भोर = भ्रम} भ्रम में डालना, भुलाना; *अ.* भ्रम या धोखे में आना।
भोरु *पुं.* {हिं.} भोर।
भोलना *स.* {हिं. भुलाना} भुलावा देना, बहकाना।
भोला *वि.* {हिं. भूलना} {*भाव.* भोलापन} सीधा-सादा, सरल।
भोलि *पुं.* {सं.} ऊँट, उष्ट्र।
भोसर *वि.* {हिं.} मूर्ख।
भोलानाथ *पुं.* {हिं. + सं.} महादेव।
भोला-भाला *वि.* भोला।
भौं *स्त्री.* भौंह।
भौंकना *अ.* भूकना।
भौंतुआ *पुं.* {हिं. भौना = घूमना} कंधे के नीचे निकलनेवाली एक प्रकार की गिल्टी; तेली का बैल, जिसे दिन भर घूमते रहना पड़ता है; जल-भौंरा; *वि.* बराबर घूमता रहनेवाला।
भौंना *अ.* {सं. भ्रमण} घूमना।
भौंर *पुं.* {सं. भ्रमर} भौंरा; भँवर; मुश्की घोड़ा।
भौंरा[1] *पुं.* {सं. भ्रमर} {*स्त्री.* भौंरी} काले रंग का एक पतंगा; बड़ी मधुमक्खी।
भौंरा[2] *पुं.* {सं. भ्रमरक, प्रा. भँउरअ} काठ का वह लट्टू (खिलौना) जिसे बच्चे डोरी की सहायता से घुमाते या नचाते हैं; हिंडोले की वह लकड़ी जिसमें झूलने के रस्से बाँधकर लटकाए जाते हैं।
भौंरा[3] *पुं.* {सं. भुँइहरा} तहखाना; अन्न रखने का गड्ढा, खात, खत्ता।
भौंराना *स.* {सं. भ्रमण} चक्कर देना, घुमाना; विवाह के समय भाँवर दिलाना; *अ.* चक्कर काटना, घूमना।
भौंराला *वि.* घुँघराला।
भौंराही *स्त्री.* {हिं. भौंरा + आही (प्रत्य.)} भौंरों के मँडराने की क्रिया या भाव।
भौंरी *स्त्री.* {सं. भ्रमण} पशुओं के शरीर पर वे चक्करदार बाल, जिनसे उनके शुभ या अशुभ लक्षणों या गुण-दोष का निर्णय करते हैं; भाँवर।
भौंह *स्त्री.* {सं. भ्रू} आँख के ऊपर की हड्डी पर के बाल, भृकुटी, भौं।
भौंहरा *पुं.* भुँइधरा; तहखाना।
भौ[1] *पुं.* {सं. भव} संसार; उत्पत्ति, जन्म।
भौ[2] *पुं.* {सं. भय} डर, भय।
भौकन *स्त्री.* {हिं. भभक} ज्वाला, आग की लपट; ताप, जलन।
भौका *पुं.* {हिं.} बड़ी दौरी, टोकरा।
भौगिया *वि.* {हिं.} संसार के सुखों को भोगनेवाला।
भौगोलिक *वि.* {सं.} भूगोल का।
भौचक *वि.* {हिं. भय + चकित} हक्का-बक्का, चकपकाया हुआ, चकित।
भौज *स्त्री.* भावज।
भौजल *पुं.* भवजाल।
भौजाई, भौजी *स्त्री.* भावज।
भौठा *पुं.* {हिं.} छोटा पहाड़, टीला।
भौत *पुं.* {सं.} वह बलि जो भोजन के पहले भूतों के उद्देश्य से दी जाती है।
भौतिक *वि.* {सं.} {*भाव.* भौतिकता} पंचभूत से संबंध रखनेवाला; पाँचों भूतों से बना हुआ, पार्थिव; शरीर-संबंधी।
भौतिकता *स्त्री.* {सं.} भौतिक वस्तुओं से सुख प्राप्त करने की विचारधारा।
भौतिक भूगोल *पुं.* {सं.} भूगोल की वह शाखा जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि पृथ्वी के किस अंश की प्राकृतिक बनावट कैसी है और उसमें कैसे-कैसे उत्पादन होते हैं।
भौतिकवाद *पुं.* पदार्थवाद।
भौतिक विज्ञान *पुं.* {सं.} वह विज्ञान जिसमें पृथ्वी, जल, वायु, प्रकाश आदि भूतों या तत्वों का विवेचन होता है, पदार्थ विज्ञान (फिजिक्स)।
भौतिक विद्या *स्त्री.* {सं.} भूतों-प्रेतों को बुलाने और दूर करने की विद्या; भौतिक विज्ञान।
भौन *पुं.* = भवन।
भौना *अ.* = घूमना।
भौम *वि.* {सं.} भूमि-संबंधी, भूमि का; भूमि या पृथ्वी से उत्पन्न; *पुं.* मंगल ग्रह।
भौमवार *पुं.* {सं.} मंगलवार।
भौमासुर *पुं.* {सं.} नरकासुर दैत्य।
भौमिक *पुं.* {सं.} भूमि का स्वामी; *वि.* भूमि-संबंधी, भूमि का।
भौमिक अधिकार *पुं.* {सं.} भूमि को जोतने-बोने आदि का वह अधिकार जो किसी को उसके स्वामी से प्राप्त होता है, भूधृति (लैंड टेंयोर)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौमिक अभिलेख पुं. {सं.} भूमि की नाप-जोख, स्वामित्व, भोग से संबंध रखनेवाले अभिलेख।

भौमी *स्त्री.* {सं.} सीता, जानकी।

भौर पुं. भौंरा; भँवर।

भौवन *वि.* {सं.} भुवन-संबंधी।

भौसा पुं. {हिं.} जनसमूह, भीड़-भाड़।

भृंगारी पुं. {हिं.} झींगुर।

भ्रंशन पुं. {सं.} अध:पतन।

भ्रत पुं. {हिं.} दास, सेवक।

भ्रद पुं. {हिं.} हाथी।

भ्रंश पुं. {सं.} नीचे गिरना, पतन; नाश, ध्वंस, बरबादी।

भ्रम[1] पुं. {सं.} किसी को कुछ और ही या दूसरा समझना, मिथ्या ज्ञान, भ्रांति, धोखा; संदेह, शक; साहित्य में भ्रांति नामक अलंकार का दूसरा नाम।

भ्रम[2] पुं. {सं. सम्भ्रम} मान, प्रतिष्ठा।

भ्रमण पुं {सं} घूमना-फिरना, चलना-फिरना, विचरण; यात्रा, सफर।

भ्रमना[1] *अ.* {सं. भ्रमण} चक्कर खाना या लगाना, घूमना।

भ्रमना[2] *अ.* {सं. भ्रम} भ्रम या संदेह में पड़ना; धोखा खाना; भूल या गलती करना।

भ्रमनि *स्त्री.* = भ्रमण।

भ्रममूलक *वि.* {सं.} जिसके मूल में भ्रम हो, भ्रम के कारण उत्पन्न।

भ्रमर पुं. {सं.} {*स्त्री.* भ्रमरी} भौंरा; उद्धव का एक-नाम।

भ्रमरावली *स्त्री.* {सं.} भौंरों की पंक्ति।

भ्रमात्मक *वि.* {सं.} जिसके मूल में भ्रम हो, भ्रममूलक; जिसके संबंध में भ्रम हो, संदिग्ध।

भ्रमाना *स.* {हिं.} भ्रमना का सं.।

भ्रमित *वि.* {सं.} भ्रम में पड़ा हुआ; घूमना या चक्कर खाता हुआ।

भ्रमीन *वि.* {सं. भ्रमण} भ्रमण करता या घूमता हुआ।

भ्रष्ट *वि.* {सं.} अपने स्थान से नीचे गिरा हुआ, पतित; बहुत बुरा या खराब, दूषित; बदचलन, दुश्चरित; नीतिपथ से गिरा हुआ, निंदनीय आचरण वाला (करप्ट)।

भ्रष्टा *स्त्री.* {सं.} कुलटा, दुश्चरित्र।

भ्रष्टाचरण पुं. भ्रष्टाचार।

भ्रष्टाचार पुं. {सं.} {*वि.* भ्रष्टाचारी} नीतिपथ से गिरा हुआ और समाज में बहुत बुरा माना जानेवाला आचरण या व्यवहार; शासनिक क्षेत्र में राज-कर्मचारियों आदि का घूस लेना, पक्षपात करना और अनुचित रूप से सरकारी या जनता का धन खा जाना आदि बातें (करप्शन)।

भ्रष्टाचारी (रिन्) *वि.* {सं.} भ्रष्टाचार से संबद्ध; पुं. भ्रष्टाचार में लिप्त व्यक्ति।

भ्रांत *वि.* {सं.} जिसे भ्रांति हुई हो, भ्रम या धोखे में पड़ा हुआ।

भ्रांतापह्नुति *स्त्री.* {सं.} साहित्य में अपह्नुति अलंकार का एक भेद जिसमें किसी को किसी एक बात या वस्तु में दूसरी बात या वस्तु की भ्रांति या भ्रम होने पर वास्तविक बात बतलाकर वह भ्रम दूर करने का उल्लेख होता है।

भ्रांति *स्त्री.* {सं.} भ्रम, धोखा; संदेह, शक; भ्रमण; पागलपन; भूल-चूक; साहित्य में एक अलंकार जिसमें उपमेय को देखकर भ्रम में उसे उपमान ही समझ लिया जाता है, जैसे पलाश के पत्तों (उपमेय) को देखकर विरहिणी नायिका का भूल से उन्हें जलते हुए अंगारे (उपमान), समझ लेना, इसे 'भ्रम' भी कहते हैं।

भ्राजन पुं. {सं.} चमक-दमक, दीपन।

भ्राजना *अ.* {सं. भ्रजन} शोभा पाना।

भ्राजमान *वि.* {हिं. भ्राजना} शोभायमान, सुशोभित।

भ्राता पुं. {सं. भ्रातृ} भाई।

भ्रातृ पुं. {सं.} सगा भाई, सहोदर भ्राता।

भ्रातृजाया *स्त्री.* {सं.} भावज।

भ्रातृत्व पुं. {सं.} भाई होने का भाव या धर्म; भाई-चारा।

भ्रातृभाव पुं. {सं.} भाई का-सा प्रेम या संबंध; दूसरों को अपने भाई समझना या उनसे भाइयों का-सा व्यवहार करना, भाई-चारा।

भ्राम पुं. भ्रम, संशययुक्त।

भ्रामक *वि.* {सं.} भ्रम उत्पन्न करनेवाला, धोखे में डालकर इधर-उधर ले जानेवाला; घुमाने वाला, चक्कर खिलानेवाला।

भ्रामर पुं. {सं.} मधु, शहद, अपस्मार-रोग।

भ्रामरी *स्त्री.* {सं.} पार्वती।

भ्राश्य पुं. {सं.} आयुध, शस्त्र।

भ्रिंगी *स्त्री., पुं.* = भृंगी।

भ्रू *स्त्री.* {सं.} भौंह।

भ्रूण पुं. {सं.} स्त्री का गर्भ; बालक की गर्भ में रहने की अवस्था, विशेषत: गर्भाधान से प्राय: चार मास तक की अवस्था (एम्ब्रायो)।

भ्रूभेदी *वि.* {सं.} भौंह चढ़ाए हुए।

भ्रूविकार पुं. {सं.} भ्रूभंग, भौं चढ़ाना।

भ्रूणहत्या *स्त्री.* {सं.} गर्भ में भ्रूण या बाल को मार डालना।

भ्रूविक्षेप पुं. {सं.} दृष्टि डालना, देखना; त्योरी चढ़ाना।

भ्वहरना *अ.* = डरना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म

म नागरी वर्णमाला का पचीसवाँ व्यंजन और पवर्ग का अंतिम वर्ण, जिसका उच्चारण होंठ और नासिका से होता है, संगीत में यह 'मध्यम' स्वर और छंदशास्त्र में 'मगण' का संक्षिप्त रूप और सूचक माना जाता है।

मंकुर पुं. {सं. मुकुर} शीशा।

मंगन पुं. {हिं. माँगना} माँगने की क्रिया या भाव; भीख माँगनेवाला, भिक्षुक, भिखमंगा।

मंगना स. = माँगना।
उदा. कहा बिदुर की जाति बरन है, आइ साग लिओ मंगी—सूर।

मँगनी स्त्री. {हिं. माँगना + ई (प्रत्य.)} किसी के माँगने पर उसे कुछ समय के लिए कोई चीज देना; अपना काम चलाने के लिए किसी से माँग कर उसकी कोई चीज (बाद में लौटा देने के लिए) लेना; इस प्रकार दी हुई चीज; वह रस्म जिसमें वर और कन्या का संबंध पक्का और तै होता है।

मंगरना स. मंगलना।

मंगल पुं. {सं.} कल्याण, भलाई; सौर जगत् का एक प्रसिद्ध ग्रह, भौम (मार्स); मंगलवार; सफेद रंग की एक कठोर धातु, जिसका उपयोग शीशे के सामान बनाने में होता है (मैंगनीज)।

मंगल कलश (घट) पुं. {सं.} मंगल अवसरों पर पूजा के लिए अथवा यों ही रखा जानेवाला पानी का घड़ा।

मंगलना स. {सं. मंगल = शुभ} प्रज्वलित करना, जलाना, जैसे दीया मंगलना, होली मंगलना।

मंगलपाठ पुं. मंगलाचरण।

मंगलपाठक पुं. {सं.} बंदीजन।

मंगलभाषित पुं. {सं.} किसी अप्रिय या अशुभ बात को प्रिय या शुभ रूप में कहने का प्रकार, जैसे 'चूड़ियाँ तोड़ना' न कहकर 'चूड़ियाँ बढ़ाना' कहना।

मंगलसूत्र पुं. {सं.} किसी देवता के प्रसाद-रूप में कलाई पर बाँधा जानेवाला डोरा या तागा; एक विशेष प्रकार की माला जो विवाहित स्त्रियाँ पहनती हैं।

मंगला स्त्री. {सं.} पार्वती, पतिव्रता स्त्री।

मंगलाचरण पुं. {सं.} वह पद्य जो शुभ कार्य के पहले मंगल की कामना से पढ़ा या कहा जाता है (प्रिल्यूड)।

मंगलामुखी स्त्री. वेश्या।

मंगलारंभ पुं. {सं.} मांगलिक कार्यारंभ।

मंगला वि. {सं.} मंगलजनक, सुंदर।

मंगल्या स्त्री. {सं.} दुर्गा, हलदी, ऋद्धि।

मंगली वि. {सं. मंगल (ग्रह)} जिसकी जन्मकुंडली के चौथे, आठवें या बारहवें स्थान में मंगल ग्रह हो (अशुभ); स्त्री. हलदी।

मँगाना स. {हिं. माँगना का प्रे.} माँगने का काम दूसरे से कराना; किसी से कोई चीज लाकर देने के लिए कहना; मँगनी कराना।

मँगारना स. मंगलना।

मँगेतर वि. {हिं. मँगनी + एतर (प्रत्य.)} जिसके साथ किसी की मँगनी हुई हो; उभय. वह जिससे किसी की मँगनी हुई हो।

मंगोल पुं. {मंगोलिया प्रदेश से} मध्य एशिया में बसनेवाली एक जाति।

मंच पुं. {सं.} खाट, खटिया; छोटी पीढ़ी, मँचिया; वह ऊँचा मंडप जिसपर बैठकर सर्वसाधारण के सामने कोई कार्य किया जाए (स्टेज, डायस); रंगमंच।

मंचकाश्रय पुं. {सं.} खटमल।

मंचन पुं. {सं. मंच} मंच पर नाटक का खेला जाना।

मंचित वि. {हिं. मंचन} (नाटक) जो मंच पर खेला गया हो।

मंछर पुं. मत्सर; मच्छर।

मंजन पुं. {सं. मज्जन} दाँत साफ करने का चूर्ण या बुकनी; मज्जन (स्नान)।

मँजना अ. {हिं. माँजना} माँजा जाना; अभ्यास होना, जैसे हाथ मँजना।

मंजरित वि. {सं. मंजरी} जिसमें मंजरी लगी हो, मंजरियों से युक्त।

मंजरी स्त्री. {सं.} नया निकला हुआ कल्ला, कोंपल; कुछ विशिष्ट पौधों के सींकों में लगे हुए बहुत-से दानों का समूह; लता।

मंजरीक पुं. {सं.} मोती, तिलक, तुलसी, बेंत।

मँजाई स्त्री. {हिं. माँजना} माँजने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

मँजाना स. {हिं.} माँजना का प्रे.।

मँजार पुं. {सं. मार्जार} {स्त्री. मार्जारी} बिल्ली का नर, बिल्ला।

मंजिका पुं. {सं.} वेश्या, रंडी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंजिफला पुं. {सं.} कदली, केला।
मंजिल *स्त्री.* {अं. मन्ज़िल} यात्रा के समय मार्ग में ठहरने का स्थान, पड़ाव; मकान का खंड, मरातिब।
मंजीर पुं. {सं.} नूपुर, घुँघरू।
मंजीरा पुं. {सं. मंजीर} संगीत में ताल देने के काम आनेवाली दो कटोरियाँ जिन्हें टकराने से शब्द होता है।
मंजु *वि.* {सं.} {*भाव.* मंजुता} सुंदर, मनोहर।
मंजुल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* मंजुला, *भाव.* मंजुलता} सुंदर, मनोहर।
मंजूर *वि.* {अ. मन्जूर} स्वीकृत।
मंजूषा *स्त्री.* {सं.} छोटा पिटारा या डिब्बा, पिटारी; हाथी का हौदा; आजकल वह चोंगा, तश्तरी आदि जिसमें रखकर अभिनंदन-पत्र आदि भेंट किए जाते हैं (कास्केट)।
मंझ *वि.* = मध्य।
मँझधार *स्त्री.* {हिं. मँझ = मध्य + धार} नदी या उसके प्रवाह का मध्य भाग; किसी काम का मध्य।
मँझरिया पुं. माँझी (केवट)।
मंझा[1] *वि.* {सं. मध्य} बीच का; पुं. मध्य, बीच।
मंझा[2] पुं. {सं. मंच} पलँग, खाट।
मंझा[3] पुं. माँझा।
मँझार (री) *क्रि. वि.* {सं. मध्य} बीच में; *स्त्री.* मध्य, बीच।
मँझोला *वि.* मझोला।
मँड़ई *स्त्री.* {सं. मंडप} झोंपड़ी, कुटी।
मँडई *स्त्री.* = मंडी (बाजार)।
मंड पुं. {सं.} अन्न आदि का रस, सार।
मंडन पुं. {सं.} शृंगार करना, सजाना; साहित्य में सखियों आदि का नायिका को गहने-कपड़े पहना कर और उसकी चोटी आदि करके सजाना; वह वस्तु जिससे किसी की शोभा या सुंदरता बढ़े; प्रमाण देकर कोई बात सिद्ध करना, 'खंडन' का उलटा।
मंडना[1] *स.* {सं. मंडन} सजाना; युक्ति से सिद्ध करना; भरना; पूरित या युक्त करना; फैलाना, बिछाना; *अ.* मंडित होना, सजना।
मंडना[2] *स.* {सं. मर्दन} पददलित करना, रौंदना।
मँडनी *स्त्री.* {सं. मृणन, हिं. माँडना} खलिहान में रखे फसल के डंठलों आदि में से अनाज के दाने अलग करने की क्रिया या भाव।
मंडप पुं. {सं.} किसी उत्सव या मंगल कार्य के लिए बाँस, फूस, कपड़े आदि से छाकर बनाया हुआ स्थान, मंच; देवमंदिर के ऊपर की गोल बनावट और उसके नीचे का स्थान।
मंडपिका *स्त्री.* {सं.} छोटा मंडप, मड़ई।
मँडरना *अ.* {सं. मंडल} चारों ओर से छाना या स्थान।
मँडराई *स्त्री.* {सं. मंडल} पक्षियों आदि के मंडल या घेरा बाँधकर उड़ने की क्रिया भाव।
मँडराना *अ.* मँडलाना।
मँडरी *स्त्री.* {हिं.} पुआल की बनी हुई चटाई।
मंडल पुं. {सं.} परिधि, चक्कर, घेरा; गोल विस्तार या कोई घिरा हुआ क्षेत्र (सर्किल); सूर्य या चंद्रमा के चारों ओर दिखाई पड़नेवाला घेरा, परिवेश; ऋग्वेद का कोई खंड; प्रांत आदि का वह विभाग या अंश जो एक विशेष अधिकारी के अधीन हो, जिला (डिस्ट्रिक्ट); एक ही प्रकार के या किसी विशेष दृष्टि से साथ रहनेवाले कुछ विशिष्ट लोगों का समाज या समुदाय (सर्किल); कटिबंध।
मंडलक पुं. {सं.} बिंब, छाया, दर्पण।
मंडल-परिषद *स्त्री.* जिला-बोर्ड।
मंडलाकार *वि.* {सं.} गोल।
मँडलाना *अ.* {सं. मंडल} किसी वस्तु के ऊपर चारों ओर घूमते हुए उड़ना; बराबर किसी के आसपास रहना।
मंडलित *वि.* {सं.} गोलाकार।
मंडली[1] *स्त्री.* {सं.} समूह, समाज; किसी विशेष कार्य, प्रदर्शन, व्यवसाय आदि के लिए बना हुआ कुछ लोगों का संघटित दल (कंपनी)।
मंडली[2] पुं. {सं. मंडलिन्} सूर्य।
मंडलीक पुं. {सं.} कई राजाओं का अधिपति।
मंडलीय *वि.* {सं.} मंडल-संबंधी।
मंडव पुं. = मंडप।
मँड़वा पुं. मंडप।
मंडा पुं. {हिं. मंडी} बड़ी मंडी या बाजार; *स्त्री.* सुरा।
मँडार पुं. {सं. मंडल ?} गड्ढा।
मंडित *वि.* {सं.} सजाया हुआ; छाया हुआ; भरा हुआ।
मंडित स्वर्ण पुं. {सं.} किसी घटिया धातु पर एक विशिष्ट प्रक्रिया से पत्तर के रूप में चढ़ाया हुआ सोना।
मँडियार पुं. {हिं.} झरबेरी-वृक्ष।
मंडी *स्त्री.* {सं. मंडप} बहुत बड़ा बाजार, भारी हाट, जैसे अनाज की मंडी।
मंडूक पुं. {सं.} मेंढक।
मंडूकी *स्त्री.* {सं.} ब्राह्मी बूटी, निर्लज्ज स्त्री।
मंत पुं. {सं. मंत्र} सलाह; मंत्र।
मंतव्य पुं. {सं.} मन में स्थिर किया हुआ कोई विचार; किसी विषय में प्रकट किया जानेवाला

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Ch[illegible] and eGangotri

मत; विचार, निश्चय आदि करनेवाली किसी सभा, समिति या लोगों के किसी निकाय का स्थिर किया हुआ कोई निश्चय या निर्णय, संकल्प; विचार के लिए उपस्थित की जानेवाली उक्त प्रकार की कोई बात, प्रस्ताव (रिजेलूशन; अंतिम दोनों अर्थों के लिए)।

मंत्र पुं. {सं.} गुप्त रखने योग्य रहस्य की बात, गुप्त परामर्श; वेद के वे वाक्य जिनके द्वारा यज्ञ आदि करने का विधान है; वे शब्द या वाक्य, जिनका इष्ट-सिद्धि या किसी देवता की प्रसन्नता के लिए जप किया जाता है; वे शब्द या वाक्य जिनका उच्चारण झाड़-फूँक करनेवाले लोग भूत, विष आदि का प्रभाव दूर करने के लिए करते हैं।

मंत्रकार पुं. {सं.} मंत्र रचनेवाला, ऋषि।

मंत्रणा *स्त्री.* {सं.} किसी को यह बतलाना कि क्या और कैसे करना चाहिए, परामर्श, सलाह (एडवाइस); आपस की सलाह से स्थिर किया हुआ मत, मंतव्य।

मंत्रदृष्टा *वि.* {सं.} वेद का मंत्र प्रकाश करनेवाला (ऋषि)।

मंत्रपूत *वि.* {सं.} मंत्र पढ़कर पवित्र किया हुआ; मंत्र पढ़कर फूँका हुआ।

मंत्रमार्जन पुं. {सं.} मंत्रों से पवित्र करना।

मंत्रालय पुं. {सं.} मंत्री का कार्यालय या विभाग।

मंत्रिणी *स्त्री.* {सं.} मंत्रणा देनेवाली स्त्री।

मंत्रित *वि.* {सं.} जिसका मंत्र से संस्कार किया गया हो, अभिमंत्रित; जिसे किसी प्रकार की मंत्रणा, परामर्श या सलाह दी गई हो (एडवाइज्ड); (कार्य या बात) जिसके संबंध में मंत्रणा या सलाह दी गई हो (एडवाइज्ड)।

मंत्रिता *स्त्री.* {सं.} मंत्री-कार्य।

मंत्रित्व पुं. {सं.} मंत्री का कार्य या पद।

मंत्रिमंडल पुं. {सं.} किसी देश, राज्य, संस्था आदि के मंत्रियों का समूह (कैबिनेट)।

मंत्री पुं. {सं. मंत्रिन्} {*स्त्री.* मंत्रिणी} परामर्श या सलाह देनेवाला; वह प्रधान अधिकारी जिसके परामर्श से राज्य के अथवा राज्य के किसी विभाग के सब काम होते हों (मिनिस्टर); किसी संस्था या सरकारी विभाग का वह अधिकारी जो नियमित रूप से उसके सब काम चलाता हो (सेक्रेटरी)।

मंत्रेला पुं. {सं.} मंत्र-तंत्र या झाड़-फूँक जाननेवाला।

मंथ पुं. {सं.} मंथन, मथानी, सूर्य की किरण।

मंथन पुं. {सं.} मथना, बिलोना; गहरी छान-बीन; मथानी।

मंथर पुं. {सं.} धीमी गतिवाला, मंद, धीमा।

मंथरा *स्त्री.* {सं.} कैकेयी की दासी।

मंथान पुं. {सं.} मंथन-दंड, मथानी, शिव, महादेव, छंद।

मंथिनी *स्त्री.* {सं.} दही मथने का पात्र।

मंद *वि.* {सं.} धीमा, सुस्त; आलसी; जड़बुद्धि, मूर्ख; दुष्ट।

मंदग *वि.* {सं.} धीरे-धीरे चलनेवाला।

मंदन *वि.* {सं. मंद} मंद या थोड़ी बुद्धिवाला, मूर्ख।

मंदबुद्धि *वि.* {सं.} जिसकी बुद्धि मंद या हीन हो, मूर्ख।

मंदर[1] पुं. {सं.} पुराणों में उल्लिखित वह प्रसिद्ध पर्वत जिससे देवों और असुरों ने समुद्र मथा था; स्वर्ग; दर्पण।

मंदर[2] पुं. {सं. मंद्र} गंभीर ध्वनि या शब्द।

मंदराचल पुं. = मंदर (पर्वत)।

मंदल पुं. = मृदंग।

मंदा *वि.* {सं. मंद} {*स्त्री.* मंदी} मंद; कम मूल्य का, सस्ता; जिसका भाव या दाम उतर या गिर गया हो; घटिया; बुरा, खराब; अशुभ।

मंदाकिनी *स्त्री.* {सं.} आकाशगंगा।

मंदाक्रांता *स्त्री.* {सं.} सत्रह अक्षरों के वर्णवृत्त का नाम।

मंदाक्ष पुं. {सं.} लज्जा।

मंदान पुं. {हिं.} जहाज का अगला भाग।

मंदानिल पुं. {सं.} मलय, मंद वायु।

मंदाग्नि *स्त्री.* {सं.} अन्न न पचने का रोग, बदहजमी, अपच।

मंदार पुं. {सं.} स्वर्ग का एक वृक्ष; आक या मदार का पेड़; स्वर्ग; हाथी; मन्दर नामक पर्वत।

मंदित *वि.* = मंद।

मंदिर पुं. {सं.} गृह, जिस घर में देवी-देवता का स्थापन-स्थान, नगर, समुद्र।

मंदिरा *स्त्री.* {सं.} मँजीरा नामक बाजा।

मंदिल पुं. मंदिर; मंदील।

मँदिलरा पुं. मंदिर; मंदिल।

मंदी *स्त्री.* {हिं. मंद} भाव कम होना, महँगी का उलटा, सस्ती; बाजार में बिक्री कम होना, तेजी का उलटा।

मंदील पुं. {सं. मुंड ?} एक प्रकार का कामदार रेशमी साफा।

मंदुरा *स्त्री.* {सं.} घुड़साल, बिछाने की चटाई।

मंदुरिक पुं. {सं.} घोड़े का साईस।

मंदोदरी *स्त्री.* {सं.} रावण की पटरानी, जो मय दानव की कन्या थी।

मंद्र *वि.* {सं.} मनोहर, सुंदर; प्रसन्न; गंभीर; धीमा (स्वर, शब्द आदि)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंशा *स्त्री.* {अ., मि. सं. मनस्} इच्छा, चाह; आशय, मतलब।

मँहगा *वि.* महँगा।

मँहगाई *स्त्री.* महँगाई।

मँहगी *स्त्री.* महँगी।

मइँ *सर्व.* मैं।

मइका *पुं.* मायका।

मइमंत *वि.* मैमंत।

मई[1] *वि.* {सं. मय का स्त्री} संस्कृत 'मयी' (प्रत्य.) का कवियों द्वारा प्रयुक्त रूप, जैसे नेहमई = स्नेहमयी।

मई[2] *पुं.* {अं. में} अंग्रेजी वर्ष का पाँचवाँ महीना।

मउगा *पुं.* = मौगा।

मउर *पुं.* {हिं.} विवाह के समय दूल्हे के सिर पर पहनाने हेतु मुकुट या मौर (मौड़)।

मउरी *स्त्री.* {सं.} छोटा मौर जो विवाह के समय कन्या के सिर पर बाँधा जाता है।

मकड़ी *स्त्री.* {सं. मर्कटक} एक प्रसिद्ध कीड़ा जो अपने शरीर से निकले हुए एक प्रकार के तंतुओं से जाला बनाकर उसमें मक्खियाँ आदि फँसाता है।

मकना *वि., पुं.* मकुना।

मकबरा *पुं.* {अ.} वह इमारत जिसमें किसी की कब्र हो, रौजा, मजार।

मकरंद *पुं.* {सं.} पुष्प रस; फूलों का केसर।

मकर[1] *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* मकरी} मगर या घड़ियाल नामक जलजंतु; मछली; बारह राशियों में से दसवीं राशि जिसमें उत्तरापाढा नक्षत्र के अंतिम तीन पाद, पूरा श्रवण नक्षत्र और धनिष्ठा के आरंभ के दो पाद हैं।

मकर[2] *पुं.* {फा.} छल, धोखा; नखरा।

मकर कुंडल *पुं.* {सं.} मगर नाम जलजंतु के आकार का कुंडल।

मकराकृत *वि.* {सं.} मकर (मगर नामक जलजंतु) या मछली के आकार का।

मकराना *पुं.* {हिं.} राजस्थान के प्रदेश का विशेष स्थान जहाँ का संगमरमर प्रसिद्ध है।

मकरालय *पुं.* {सं.} समुद्र।

मकरोड़ा *पुं.* {हिं.} ज्वार या मक्के का डंठल।

मकसद *पुं.* {अ.} उद्देश्य; अभिप्राय, तात्पर्य, मतलब।

मकसूद *वि.* {अ.} उद्दिष्ट; अभिप्रेत।

मकाई *स्त्री.* {अ.} बड़ी जौंधरी, ज्वार।

मकान *पुं.* {फा.} गृह, घर।

मकुंद *पुं.* मुकुंद।

मकु *यौज.* {सं. म} चाहे; बल्कि; कदाचित, शायद।

मकुना *पुं.* {सं. मनाक = हाथी} बिना दाँतवाला छोटा नर हाथी; *वि.* अपेक्षाकृत कम ऊँचाई का, नाटा; छोटा।

मकुल *पुं.* {सं.} बकुल, मौलसिरी।

मकोई *स्त्री.* {हिं. मकोय} एक प्रकार की जंगली छोटी मकोय (पौधा और उसका फल)।

मकोड़ा *पुं.* {हिं. कीड़ा} छोटा कीड़ा।

मकोय *स्त्री.* {सं. काकमाता} एक प्रकार का छोटा पौधा; इस पौधे के छोटे, खट्टे, गोल फल।

मकोरना *स.* मरोड़ना।

मक्कर *पुं.* {हिं.} छल, कपट।

मक्का[1] *पुं.* {देश.} ज्वार, मकई।

मक्का[2] *पुं.* एक प्रकार की घास।

मक्का[3] *पुं.* {अरब में} मुसलमानों का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान।

मक्कार *वि.* {अ.} {*भाव.* मक्कारी} धूर्त, कपटी, छली।

मक्कोल *पुं.* {सं.} खटिकन, खड़िया।

मक्खन *पुं.* {सं. मंथन} दही या दूध मथने से निकला हुआ उसका सार भाग, जिसे तपाने से घी बनता है, नवनीत, नैनूँ।

मुहा. कलेजे पर मक्खन मला जाना = छाती ठंडी होना, बहुत संतोष या तृप्ति होना।

मक्खनी *वि.* मक्खन से बना हुआ।

मक्खी *स्त्री.* {सं. मक्षिका} एक प्रसिद्ध उड़नेवाला छोटा कीड़ा जो प्रायः सब जगह पाया जाता है, मक्षिका;

मुहा. जीती मक्खी निगलना = जानबूझकर ऐसा काम करना जिसके कारण पीछे हानि हो; *मक्खी की तरह निकाल फेंकना* = त्याज्य या निकृष्ट समझकर बिल्कुल अलग कर देना।

मधुमक्खी, मुमाखी।

मक्खी चूस *पुं.* {हिं. मक्खी+ चूसना} परम कृपण, भारी कंजूस।

मक्षिका *स्त्री.* {सं.} मक्खी।

मख *पुं.* {सं.} यज्ञ, याग।

मखतूल *पुं.* {सं. महर्घ तूल} {*वि.* मखतूली} काला रेशम।

मखनिक *वि.* {हिं. मक्खन} मक्खन निकाला हुआ (दही या दूध)।

मखपाल *पुं.* {सं.} यज्ञ की रक्षा करनेवाला।

मखमल *स्त्री.* {अ.} {*वि.* मखमली} एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

मखमित्र *पुं.* {सं.} विष्णु।

मखान्न *पुं.* {सं.} यज्ञीय अन्न।

मखशाला *स्त्री.* = यज्ञशाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मखाना पुं. ताल मखाना।
मखौल पुं. {देश.} हँसी-ठट्ठा, उपहास, दिल्लगी।
मखौलिया *वि.* {हिं. मखौल} दिल्लगीबाज, हँसोड़।
मग[1] पुं. {सं. मार्ग} मार्ग, रास्ता।
मग[2] पुं. {सं. मगध} मगध देश।
मगज पुं. {*अ.* मग्ज़} मस्तिष्क; गिरी, मींगी।
मगज-पच्ची *स्त्री.* {हिं. मगज + पचाना} कुछ सोचने या करने के लिए बहुत दिमाग लड़ाना, सिर खपाना।
मगजी *स्त्री.* गोट (कपड़े की)।
मगण पुं. {सं.} छंदशास्त्र में तीन गुरु वर्णों का एक गण, जैसे जामाता।
मगदल पुं. {सं. मुद्गर} उड़द या मूँग के आटे का एक प्रकार का लड्डू।
मगदा पुं. {हिं.} मार्ग दिखलानेवाला।
मगदूर पुं. {हिं.} सामर्थ्य।
मगजूर *वि.* मकदूर।
मगध पुं. {सं.} दक्षिणी बिहार का पुराना नाम; बंदीजन।
मगन *वि.* {सं. मग्न} परम प्रसन्न, बहुत खुश; मग्न।
मगर[1] पुं. {सं. मकर} मकर।
मगर[2] *योज.* {फा.} लेकिन, परंतु, पर।
मगरमच्छ पुं. {हिं. मगर + मछली} मगर या घड़ियाल नामक जलजंतु; बहुत बड़ी मछली।
मगरिब पुं. {*अ.*} {*वि.* मगरिबी} पश्चिम दिशा, पश्चिम।
मगरिबी *वि.* {*अ.*} मगरिब या पश्चिम दिशा का, पश्चिमी; *स्त्री.* पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।
मगरूर *वि.* {*अ.*} {*भाव.* मगरूरी} अभिमानी, घमंडी।
मगसर पुं. = मार्गशीर्ष (महीना)।
मगहा पुं. {सं. मगध} मगध देश।
मगहर पुं. मगध।
मगही *वि.* {हिं. मगर} मगध देश का।
मगु पुं. {सं.} शाकद्वीपी ब्राह्मण।
मग्ग[1] पुं. {अं.} प्याले की तरह का एक पात्र।
मग्ग[2] पुं. {सं. मार्ग} रास्ता।
मग्ज पुं. {*अ.*} दिमाग, बुद्धि।
मग्न *वि.* {सं.} {*भाव.* मग्नता} डूबा हुआ; तन्मय, लीन; प्रसन्न।
मघवा पुं. {सं. मघवन्} इंद्र।
मघा पुं. {सं.} सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र।
मघोनी *स्त्री.* {सं. मघवन्} इंद्राणी।
मघौना पुं. {सं. मघवा} इंद्र।
मचकना *स., अ.* {*भाव.* मचक} मचमचाना।
मचक *स्त्री.* {हिं.} दबाव, लचक।
मचका पुं. {हिं. मचकना} धक्का; झोंका; झूले की पेंग।
मचना *अ.* {अनु.} (शोर इत्यादि) आरंभ होना; (धूम, कीर्ति आदि) छा जाना, फैलना।
मचमच *स्त्री.* {अनु.} किसी चीज के दबने या दबाए जाने पर होनेवाला शब्द।
मचमचाना *स., अ.* {अनु.} इस प्रकार दबाना या दबना कि मचमच शब्द हो।
मचरंग पुं. {हिं.} पक्षी-विशेष।
मचलना *अ.* {अनु.} {*भाव.* मचल} किसी चीज के लिए बालकों या स्त्रियों की तरह हठ करना, अड़ना।
मचला *वि.* {हिं. मचलना} बोलने के समय जान-बूझकर चुप रहनेवाला; मचलनेवाला।
मचलाई *स्त्री.* {हिं. मचलना} मचलने की क्रिया या भाव, मचल।
मचलाना *अ.* {अनु.} कै मालूम होना, (जी) मिचलाना; *स.* किसी को मचलने में प्रवृत्त करना; *अ.* मचलना।
मचना पुं. {हिं.} खाट, पलँग, पावा।
मचान *स्त्री.* {सं. मंच + आन (प्रत्य.)} शिकार खेलने या खेत की रखवाली के लिए लट्ठों पर बाँधकर बनाया हुआ ऊँचा स्थान; ऊँची बैठक, मंच।
मचाना *स.* {हिं.} मचना का *स.*।
मचिया *स्त्री.* {सं. मंच} छोटी चारपाई; पीढ़ी।
मचेरी *स्त्री.* {हिं.} बैलों के जूए के नीचे लगी लकड़ी।
मच्छ पुं. {सं. मत्स्य} बड़ी मछली।
मच्छड़ पुं. = मच्छर।
मच्छर पुं. {सं. मशक} एक प्रसिद्ध छोटा उड़नेवाला कीड़ा, इसकी मादा काटती और खून चूसती है; पुं. = मत्सर।
मच्छरता *स्त्री.* मत्सर।
मच्छरदानी *स्त्री.* मसहरी।
मच्छी *स्त्री.* = मछली।
मच्छोदरी *स्त्री.* {सं. मत्स्योदरी} वेद व्यास की माता, सत्यवती।
मछरंझा पुं. {हिं.} जलपक्षी, राम चिड़िया।
मछली *स्त्री.* {सं. मत्स्य} एक प्रसिद्ध जलजंतु जिसकी अनेक छोटी-बड़ी जातियाँ होती हैं, मीन।
मछुआ (वा) पुं {हिं. मछली} मछली पकड़नेवाला, मल्लाह।
मछेह पुं. {हिं.} मधुमक्खी का छत्ता।
मज *सर्व.* = मुझे (राज. और गुज.)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजकूरी पुं. {फा. मज़्कूरी} सम्मन और तामील करनेवाला चपरासी।
मजदूर पुं. {फा. मज़दूर} {स्त्री. मजदूरनी, मजदूरिन} दूसरों का साधारण शारीरिक श्रम का कार्य करके निर्वाह करनेवाला, मजूर, श्रमिक (लेबरर); मोटिया, बोझ ढोनेवाला।
मजदूरी स्त्री. {फा. मज़्दूरी} मजदूर का काम का भाव; मजदूर को मिलनेवाला पारिश्रमिक या धन (वेजिज)।
मजन पुं. मज्जन; मार्जन।
मजना वि. मझाना।
मजबूत वि. {अ.} {भाव. मजबूती} दृढ़, पुष्ट, पक्का; बलवान।
मजबूर वि. {अ.} {भाव. मजबूरी} विवश, लाचार।
मजबूरी स्त्री. {अ.} विवशता।
मजबूरन क्रि. वि. {अ.} लाचारी की हालत में, विवश होकर।
मजमा पुं. {अ. मज़्मा} बहुत से लोगों का एक जगह जमाव, भीड़-भाड़, जमघट।
मजमून पुं. {अ.} किसी लेख आदि का विषय; लेख।
मजलिस स्त्री. महफिल, सभा।
मजहब पुं. {अ. मज़हब} {वि. मजहबी} धार्मिक संप्रदाय, पंथ, मत।
मजा पुं. {फा. मज़:} स्वाद; आनंद, सुख।
मजाकिया वि. {अ.} मजाक करनेवाला।
मजाक पुं. {अ. मज़ाक} हँसी-ठट्ठा।
मजार पुं. {अ. मज़ार} मकबरा, समाधि; कब्र।
मजारी स्त्री. बिल्ली।
मजाल स्त्री. {अ. मज़ाल} सामर्थ्य, शक्ति।
मजिल स्त्री. मंजिल।
मजिस्ट्रेट पुं. {अं.} वह राजकीय अधिकारी जिसके सामने अपराधिक अभियोग आदि विचार और निर्णय के लिए उपस्थित किए जाते हैं और जो शासन-प्रबंध के भी कुछ कार्य करता है, दंडाधिकारी।
मजीठ स्त्री. {सं. मंजिष्ठा} एक प्रकार की लता; इस लता की जड़ और डंठलों से निकला हुआ लाल रंग।
मजीठी वि. {हिं.} लाल रंग का; स्त्री. रुई ओटने की चरखी में लगी हुई बीच की लकड़ी।
मजीर स्त्री. घौद।
मजीरा पुं. {सं. मंजीर} ताल देने के लिए काँसे की छोटी कटोरियों की जोड़ी, जोड़ी (संगीत)।
मजूर पुं. मयूर; मजदूर।
मजूरी स्त्री. मजदूरी।
मजूसा स्त्री. मंजूषा।
मजेज वि. {फा. मिज़ाज} अहंकार।
मजेजवंत वि. {हिं. मजेज = मिजाज + वंत (प्रत्य.)} बहुत ऊँचे दिमाग या स्वभाववाला; अभिमानी, घमंडी।
मजेदार वि. {फा. मज़ेदार} स्वादिष्ट; आनंददायक; बढ़िया; मनोरंजक।
मजेदारी स्त्री. {फा. मज़ेदारी} मजेदार होने की अवस्था या भाव; मजेदार बात; मनोरंजन।
मज्जन पुं. {सं.} {वि. मज्जित} स्नान, नहाना; अनुरक्त होना।
मज्जना क्रि. अ. {हिं.} नहाना, गोता लगाना।
मज्जफल पुं. {सं.} माजूफल।
मज्जर पुं. {सं.} घास।
मज्जा स्त्री. {सं.} हड्डी की नली के अंदर का गूदा।
मज्जूक पुं. {सं.} मंडूक, मेंढक।
मज्झ वि. {सं. मध्य} बीच।
मझाना स. {सं. मध्य} प्रवृष्ट होकर पार करना; बीच में होकर पार करना; अ. थाह लगाना।
मझार वि. {सं. मध्य} बीच में।
मझिया स्त्री. {हिं.} गाड़ी की पेंदी में लगी हुई लकड़ी।
मझियाना अ. {हिं. माँझी} नाव खेना।
मझियारा वि. {सं. मध्य} बीच का।
मझीला वि. मझोला।
मझु सर्व. {हिं. मैं} मैं; मेरा।
मझुआ स्त्री. {हिं.} हाथ में पहनने की एक प्रकार की चूड़ी।
मझेला पुं. {हिं.} जूते को सीलनेवाला औजार।
मझोला वि. {सं. मध्य} मझला, मध्य या बीच का; मध्यम आकार का।
मझोली स्त्री. {हिं. मझोला} एक प्रकार की बैलगाड़ी।
मट पुं. {हिं.} मटका।
मटक स्त्री. {हिं. मटकना} मटकने की क्रिया या भाव; गति, चाल।
मटकना[1] अ. {सं. मट = चलना} लचककर नखरे से चलना; नखरे से हाथ या आँखें नचाना; देखना, ताकना (क्व.)।
मटकना[2] पुं. {हिं. मटका का अल्प.} छोटा मटका; मिट्टी का पुरवा।
मटकनि स्त्री. {हिं. मिट्टी} मिट्टी का घड़ा, कमोरा, माट।
मटका पुं. {हिं.} मिट्टी का बड़ा घड़ा।
मटकाना स. {हिं. मटकना} नखरे से स्त्रियों की तरह उँगलियाँ, हाथ, आँखें आदि नचाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chenn... eGangotri

मटकी *स्त्री.* {हिं. मटका} छोटा मटका; *स्त्री.* मटक।
मटकीला *वि.* {हिं. मटकना} मटकनेवाला।
मटकौअल *स्त्री.* मटक।
मटना *पुं.* {हिं.} गन्ना।
मटमँगरा *पुं.* {हिं.} विवाह के पहले की एक रीति जिसमें किसी शुभ दिन वर या वधू की हलदी लगती और घर की स्त्रियाँ मंगल गीत गाती हैं।
मटमैला *वि.* {हिं. मिट्टी + मैल} मिट्टी के रंग का, खाकी।
मटर *पुं.* {सं. मधुर} एक प्रसिद्ध अन्न जिसकी दाल और तरकारी बनती है।
मटरगश्त *पुं.* {हिं. = मंद + फा. गश्त} सैर-सपाटा।
मटरगश्ती *स्त्री.* मटरगश्त।
मटरबोर *पुं.* {हिं.} मटर के बराबर घुँघरू।
मटराला *पुं.* {हिं.} जौ में मिला हुआ मटर।
मटलनी *स्त्री.* {हिं.} मिट्टी का कच्चा पात्र।
मटा *पुं.* {हिं.} लाल चींटा जो छत्ता बनाकर आम के पेड़ों पर रहता है।
मटराकार *वि.* {हिं. + सं.} मटर के दाने के आकार का।
मटिआना *स.* {हिं. मिट्टी} मिट्टी लगाकर माँजना; मिट्टी लगाना।
मटिआमेट *वि.* {हिं. मिट्टी + मिटना} मिट्टी में मिल जाने से मिट जानेवाला।
मटिआला *वि.* मटमैला।
मटिया *वि.* {हिं. मिट्टी} मिट्टी का बना हुआ; *स्त्री.* = मिट्टी।
मटियार *पुं.* {हिं.} खेत में चिकनी मिट्टी पड़ी हो।
मटियामेट *वि.* मटिआमेट।
मटुक *पुं.* मुकुट।
मटुका *पुं.* मटका।
मट्टी *स्त्री.* = मिट्टी।
मट्ठर *वि.* {सं. मंद?} धीरे-धीरे काम करने या चलनेवाला, सुस्त।
मट्ठा *पुं.* {सं. मंथन} मथकर मक्खन निकाल लेने पर बचा हुआ दही का पानी, मठा, छाछ।
मट्ठी *स्त्री.* {देश.} मठरी।
मठ *पुं.* {सं.} निवास स्थान; साधुओं के रहने का मकान, आश्रम।
मठधारी *पुं.* मठाधीश।
मठरी *स्त्री.* {देश.} घी में तली हुई मैदे की टिकिया।
मठा *पुं.* मट्ठा।
मठाधीश *पुं.* {सं.} मठ का महंत।
मठाध्यक्ष *पुं.* {सं.} मठ का अध्यक्ष।
मठिया *स्त्री.* {हिं. मठ} छोटा मठ; *स्त्री.* माँठी।
मठोर *स्त्री.* {हिं. मट्ठा} दही मथने और मट्ठा रखने की मटकी।
मड़ई *स्त्री.* झोपड़ी।
मड़क *स्त्री.* {अनु.} ऐसी पेचीली बात जो जल्दी समझ में न आए; भेद, रहस्य।
मड़वा *पुं.* मंडप।
मड़हा *पुं.* {हिं.} मिट्टी का बना छोटा घर, भुना हुआ चना।
मड़ा *पुं.* {हिं.} कोठरी, कुठला।
मड़ाड़ *पुं.* {हिं.} कच्चा तालाब, पोखरी।
मड़हट *पुं.* मरघट।
मड़ुआ *पुं.* {देश.} एक प्रकार का मोटा अन्न; *पुं.* मँडप।
मड़ैया *स्त्री.* = झोपड़ी।
मड़ोर *स्त्री.* {हिं.} मरोड़।
मड़ोही *स्त्री.* {हिं.} लोहे की छोटी पेंचदार कँटिया।
मढ़ *वि.* {हिं. मट्ठर} अड़कर बैठनेवाला; जल्दी अपनी जगह से न हिलनेवाला; *पुं.* = मठ।
मढ़ना *स.* {सं. मंडन} {*प्रे.* मढ़वाना, मढ़ाना} चारों ओर लगाना या लपेटना; बाजे के मुँह पर चमड़ा लगाना; पुस्तक पर चमड़ा लगाना; पुस्तक पर जिल्द लगाना; चित्र दर्पण और चौखटे में जड़ना; किसी के सिर काम या दोष थोपना; *अ.* आरंभ होना, ठनना; मचना; अस्तित्व में आना, वर्तमान होना।
मढ़वाना *क्रि. स.* {हिं.} पुस्तक पर जिल्द लगाना, ढोल, मृदंग आदि बाजों के मुँह पर चमड़ा लगाना, थोपना।
मढ़ा *पुं.* {सं. मंडप} मंडप; घेरा।
मढ़ाई *स्त्री.* {हिं. मढ़ना} मढ़ने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
मढ़ाना *क्रि. स.* {हिं.} मढ़ने का काम दूसरे से कराना।
मढ़ी *स्त्री.* {सं. मठ} छोटा-सा मठ; छोटा घर; समाधि।
मढ़ैया *पुं.* {हिं.} मढ़नेवाला।
मणि *स्त्री.* {सं.} बहुमूल्य रत्न, जवाहिर; श्रेष्ठ और परम योग्य व्यक्ति।
मणिगुण *पुं.* {सं.} 'शरन' नामक वृत्त या छंद का दूसरा नाम।
मणिधर *पुं.* {सं.} साँप।
मणिपुर *पुं.* {सं.} हठ योग में शरीर के अंदर के छह चक्रों में से एक जो नाभि के पास माना गया है, आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार इसी केंद्र से शरीर की भिन्न-भिन्न गिलटियों का पोषण और वर्द्धन होता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मणिबंध पुं. {सं.} कलाई, गट्ठा; मणिपुर।
मणीवक पुं. {सं.} पुष्प, फूल।
मतंग (ज) पुं. {सं.} हाथी; बादल।
मतंगी पुं. {सं. मतंगिन्} हाथी का सवार।
मत[1] पुं. {सं.} सम्मति, विचार, राय (ओपीनियन); धर्म, मजहब; पथ, संप्रदाय; भाव, आशय; जिस विषय में मनुष्य रस लेता या जानकारी रखता हो, उसके संबंध में उसका प्रकट किया हुआ विचार या सम्मति; निर्वाचन आदि के समय किसी व्यक्ति के पक्ष में दी जानेवाली सम्मति (वोट)।
मत[2] *क्रि. वि.* {सं. मा} न, नहीं (निषेधसूचक)।
मतदाता पुं. {सं.} वह जो प्रतिनिधि निर्वाचित करने अथवा उसके निर्वाचन के संबंध में मत (वोट) देने का अधिकारी हो (वोटर)।
मतदान पुं. {सं.} प्रतिनिधि के निर्वाचन के संबंध में मत (वोट) देने की क्रिया या भाव (वोटिंग, पोलिंग)।
मतना[1] *अ.* {सं. मति} मत स्थिर करना।
मतना[2] *अ.* {सं. मत्त} मत्त या पागल होना।
मतरिया *स्त्री.* {हिं.} माता।
मतपत्र पुं. {सं.} वह पत्र जिसपर निर्वाचित होनेवाले व्यक्तियों के नाम या विशिष्ट चिह्न रहते हैं और जिसपर अपनी ओर से कोई चिह्न लगाकर मतदाता किसी व्यक्ति के पक्ष में अपना मत (वोट) देता है (बैलट पेपर)।
मत-पेटी *स्त्री.* {सं. + हिं.} वह पेटी जिसमें निर्वाचक या मतदाता अपना मतपत्र छोड़ता या डालता है (बैलट बॉक्स)।
मत-भिन्नता *स्त्री.* मतभेद।
मतभेद पुं. {सं.} दो या अधिक व्यक्तियों या पक्षों के मत एक-से न होना, आपस में मत न मिलना।
मतलब पुं. {अ.} तात्पर्य, आशय; अर्थ, मानी; स्वार्थ; उद्देश्य; संबंध, लगाव।
मतलबी *वि.* {अ. मतलब} स्वार्थी।
मतली *स्त्री.* मिचली।
मतवाला[1] *वि.* {सं. मत्त + वाला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* मतवाली} नशे में चूर; हर्ष से उन्मत्त, मस्त; पागल।
मतवाला[2] पुं. {?} नीचे खड़े हुए शत्रुओं को मारने के लिए किले या पहाड़ पर से लुढ़काया जानेवाला भारी पत्थर; एक प्रकार का गावदुमा लंबा खिलौना।
मतवाली *स्त्री.* {हिं. मतवाला} मतवाले या मत्त होने की अवस्था या भाव, मत्तता, मद; अभिमान, घमंड।
मता पुं. {हिं.} मत; *स्त्री.* मति।
मताधिकार पुं. {सं.} निर्वाचन में मत (वोट) देने का अधिकार; मुख्यतः राजनीतिक क्षेत्रों या विषयों में (सफरेज)।
मतानुयायी (यिन्) पुं. {सं.} किसी धार्मिक संप्रदाय या किसी व्यक्ति के मत को माननेवाला, मतावलंबी।
मतानुसार *क्रि. वि.* {सं.} (किसी के) मत के अनुसार, (किसी की) राय या समझ में।
मतारी *स्त्री.* = माता।
मतावलंबी पुं. मतानुयायी।
मति[1] *स्त्री.* {सं.} बुद्धि, समझ; साहित्य में कोई अनुचित; बात हो जाने पर उसके संबंध में कोई अच्छी या नीति की बात सूझना जो एक संचारी भाव माना गया है।
मति[2] *क्रि. वि.* {हिं. मत} मत (नहीं)।
मतिभंगी *वि.* {सं. मति + भंगिन्} मति या बुद्धि भ्रष्ट करनेवाला।
मतिभ्रम पुं. {सं.} बुद्धि में होनेवाला वह विकार जिसके कारण मनुष्य कुछ का कुछ समझने या कोई निराधार बात मानने लगता है (हैल्यूसिनेशन)।
मतिमंद *वि.* {सं.} कम बुद्धि रखनेवाला, मूर्ख, बेवकूफ।
मतिमान, मतिमान् *वि.* {सं.} बुद्धिमान।
मतिमाह *वि.* मतिमान।
मती *स्त्री.* {हिं.} मति; *अव्य.* मत।
मतीरा पुं. {सं. मेट} तरबूज।
मतीश्वर पुं. {सं.} विश्वकर्मा।
मतीस पुं. {?} एक प्रकार का बाजा।
मते *क्रि. वि.* = मत (निषेध)।
मतेई *स्त्री.* विमाता।
मतैक्य पुं. {सं.} किसी विषय में सब या कुछ लोगों का विचार या मत एक होना, ऐकमत्य (यूनैनमिटी)।
मत्कुण पुं. {सं.} खटमल।
मत्त *वि.* {सं.} मतवाला, मस्त; पुं. धतूरा, कोयल।
मत्ता *प्रत्य.* {सं. मत् (मान्) + ता, सं. मान् से बननेवाला भाववाचक रूप} जैसे बुद्धिमान से बुद्धिमत्ता; *स्त्री.* मदिरा।
मत्था पुं. माथा।
मत्थे *क्रि. वि.* {हिं. माथा} मस्तक या सिर पर, जैसे किसी के मत्थे मढ़ना; आसरे या भरोसे पर।
मत्सर पुं. {सं.} {*भाव.* मत्सरता, मात्सर्य, *वि.* मत्सरी, मात्सरिक} डाह, ईर्ष्या, जलन; क्रोध, गुस्सा।
मत्सरी *वि.* {सं.} डाह करनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मत्स्य पुं. {सं.} बड़ी मछली; विष्णु का पहला अवतार; प्राचीन विराट देश का एक नाम।

मत्स्यांगना *स्त्री.* {सं.} मत्स्यनारी।

मत्स्याक्षक पुं. {सं.} सोमलता।

मत्स्याशन पुं. {सं.} मत्स्यभक्षक।

मत्स्येंद्रनाथ पुं. {हिं.} गोरखनाथ के गुरु।

मत्स्योपजीवी पुं. {सं.} धीवर, मल्लाह।

मथन पुं. {सं.} {*वि.* मथित} मथने की क्रिया या भाव, बिलोना; एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र; *वि.* मारने या नष्ट करनेवाला।

मथना *स.* {सं. मथन} मथानी या लकड़ी आदि से तरल पदार्थ तेजी से चलाना, बिलोना; नष्ट करना, ध्वंस करना; घूम-घूमकर पता लगाना, छानना; अच्छी तरह विचार करना; पुं. मथानी, रई।

मथनियाँ *स्त्री.* मथनी।

मथनी *स्त्री.* {हिं. मथना} दही मथने का बरतन; मथानी; मंथन।

मथवाह पुं. {हिं. माथा + वाह = व्यथा} सिर में होनेवाला दर्द या पीड़ा; पुं. महावत।

मथानी *स्त्री.* {हिं. मथना} दही मथने के लिए काठ का बना हुआ एक प्रकार का डंडा।

मथित *वि.* {सं.} मथा हुआ।

मथी *स्त्री.* मथानी।

मथुरा *स्त्री.* {सं.} यमुना नदी के किनारे पर बसा हुआ प्राचीन नगर, सात पुरियों में से एक।

मथुरिया *वि.* {हिं.} मथुरा का।

मथौरा पुं. {हिं.} बढ़इयों का रंदा।

मथौरी *स्त्री.* {हिं.} स्त्रियों के सिर पर पहनने का गहना।

मथूल पुं. मस्तूल।

मथौत पुं. {हिं. माथा + औत (प्रत्य.)} प्रत्येक व्यक्ति के हिसाब से लगनेवाला कर।

मथ्या पुं. माथा।

मदंध *वि.* मदांध।

मद[1] पुं. {सं.} मादक पदार्थ खाने या पीने से उत्पन्न होनेवाली मानसिक अवस्था, नशा; धन, बल, विद्या आदि का ऐसा अहंकार या घमंड जिसमें भले-बुरे का ज्ञान न रह जाता हो, जैसे धन का मद; साहित्य में वह अवस्था जिसमें अपने रूप, यौवन, सौभाग्य आदि के कारण अभिमान या गर्व प्रकट किया जाता है, अथवा नशे आदि में उलटी-सीधी बातें कही जाती हैं (इसकी गणना संचारी भावों में होती है); मत्तता, मस्ती; कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में वृक्षों के तने से निकलनेवाला एक प्रकार का तरल पदार्थ; मत्तवाले हाथियों की कनपटी से बहनेवाला गंध युक्त तरल पदार्थ, दान; आनंद, प्रसन्नता, हर्ष; मद्य, शराब; कस्तूरी; वीर्य।

मद[2] *स्त्री.* {*अ.*} विभाग, सरिश्ता; खाता; कोई एक रकम या बात; जैसे–एक मद छूट गई है; किसी लेखे या विषय-विभाग का शीर्षक (हेड)।

मदक *स्त्री.* {हिं. मद} अफीम के सत से बननेवाला एक मादक पदार्थ, जो तंबाकू की तरह पिया जाता है।

मदकची *वि.* {हिं. मदक} वह जो मदक पीता हो।

मदकद्रुम पुं. {सं.} ताड़ का पेड़।

मदकर पुं. {सं.} धतूरे का पौधा, सुरा।

मदकल *वि.* {सं.} मतवाला, मत्त।

मदकाल पुं. {सं.} वह समय जब जीव-जंतु यौनक्रिया में रत रहते हैं।

मदकारी *वि.* {सं.} नशा पैदा करनेवाला।

मदकी *वि.* {हिं.} मदक पीनेवाला।

मदखला *स्त्री.* {*अ.*} रखेली औरत।

मदगंधा *वि.* {सं.} मदिरा।

मदगर्वित *वि.* {सं.} घमंडी।

मदगल *वि.* {हिं. मदकल} मस्त।

मदजल पुं. {सं.} हाथी का मद, दान।

मदत पुं. = मदद।

मदद *स्त्री.* {*अ.*} सहायता; किसी काम पर लगाए हुए राज, मजदूर आदि।

मददगार *वि.* {*अ.* + फा.} सहायक।

मदन पुं. {सं.} कामदेव; भौंरा; मैना पक्षी; प्रेम।

मदनमस्त पुं. {सं. मदन + हिं. मस्त} चंपा की जाति का एक प्रकार का फूल।

मदन-महोत्सव पुं. वसंतोत्सव।

मदनमोहन पुं. {सं.} श्रीकृष्ण।

मदनांकुश पुं. {सं.} पुरुष का लिंग।

मदनांध *वि.* {सं.} कामांध।

मदनालय पुं. {सं.} स्त्री की योनि, भग।

मदनोत्सव पुं. वसंतोत्सव।

मदपी *वि.* {सं. मद्यप} मद्य या शराब पीनेवाला, शराबी।

मदमत्त *वि.* {सं.} मतवाला।

मदर पुं. {सं. मंडल} मँडलाने की क्रिया या भाव।

मदरसा पुं. {मदर्सः} पाठशाला, विद्यालय।

मदांध *वि.* {सं.} जो मद के कारण अंधा हो रहा हो, मदोन्मत्त।

मदाखलित *स्त्री.* {*अ.*} दखल देना, हस्तक्षेप करना; दखल जमाना।

मदानि *वि.* {?} मंगलकारक।

मदार पुं. आक (पौधा)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदारी पुं. {अ. मदार} वह जो बंदर, भालू आदि नचाकर उनका तमाशा दिखाता है, कलन्दर; लाग आदि के तमाशे दिखाने वाला, बाजीगर।

मदिर *वि.* {सं.} मत्तता उत्पन्न करनेवाला, मस्त करनेवाला; नशा लानेवाला, नशीला, मादम; मत्त, मस्त।

मदिरा *स्त्री.* {सं.} एक प्रसिद्ध तरल मादक पदार्थ जो कई प्रकार से कुछ चीजों को सड़ाकर बनाया जाता है और जिसका सेवन नैतिक दृष्टि से निंदनीय और धार्मिक दृष्टि से पाप समझा जाता है, मद्य, शराब।

मदिराभ *वि.* {सं.} मदिरा की मत्तता से भरा हुआ; मस्त मतवाला; मदिरा के रंग या गंध का।

मदिरालस पुं. {सं. मदिरा + हिं. अलस} मदिरा से उत्पन्न होनेवाला आलस्य, खुमारी।

मदी *स्त्री.* = मदिरा।

मदीय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* मदीया} मेरा।

मदीला *वि.* {हिं. मद} नशीला।

मदुकल पुं. {हिं.} दोहे का भेद।

मदुरा पुं. {सं.} काठ आदि का एक प्रकार का आभूषण जो योगी लोग हाथ में पहनते हैं।

मद्धे *अव्य.* {हिं.} संबंध में, लेख में।

मदोद्धत पुं. मदोन्मत्त।

मदोन्मत्त *वि.* {सं.} जो मद्य आदि के नशे के कारण उन्मत्त हो रहा हो; जो अधिकार आदि के कारण उन्मत्त हो गया हो; जिसे घमंड के कारण भले-बुरे का ज्ञान न हो।

मदोवै *स्त्री.* मंदोदरी।

मद्दत[1] *स्त्री.* {अ. मदद} सहायता।

मद्दत[2] *स्त्री.* {अ. मदह} प्रशंसा, तारीफ।

मद्धिम *वि.* {सं. मध्यम} मध्यम, कम अच्छा; कुछ खराब या घटकर।

मद्धे *क्रि. वि.* {सं. मध्ये} बीच में; विषय में, संबंध में लेखे या हिसाब में, बाबत (ऑन एकाउंट ऑफ)।

मद पुं. {सं.} प्राचीन जनपद जो रावी व झेलम नदी के बीच का।

मध पुं. {हिं.} मध्या; *अव्य.* में।

मधन *स्त्री.* {सं.} रागिनी।

मद्य पुं. {सं.} मदिरा, शराब।

मद्यनिषेध पुं. {सं.} शराब पीने पर लगी रोक।

मद्यप पुं. {सं.} मद्य पीनेवाला, शराबी।

मद्र पुं. {सं.} उत्तर कुरु नामक प्राचीन देश; रावी और झेलम नदियों के बीच के प्रदेश का प्राचीन नाम।

मधिम *वि.* मध्यम; मद्धिम।

मधु पुं. {सं.} शहद; मकरंद; वसंत ऋतु; चैत्र का महीना, चैत; अमृत; जल, पानी; मदिरा, शराब; मधूक, महुआ; *वि.* {सं.} मीठा; स्वादिष्ट।

मधुऋतु *स्त्री.* {सं.} वसंत ऋतु।

मधुकंठ पुं. {सं.} कोयल (पक्षी)।

मधुकर पुं. {सं.} {*स्त्री.* मधुकरी} भ्रमर, भौंरा; एक प्रकार का धान और उसका चावल।

मधुकरी *स्त्री.* {सं. मधुकर} साधु-संन्यासियों की वह भिक्षा जिसमें केवल पका हुआ भोजन लिया जाता है।

मधुचक्र पुं. {सं.} शहद की मक्खी का छत्ता।

मधुप *वि.* {सं.} मधु पीनेवाला; पुं. देवता; भौंरा।

मधुपति पुं. {सं.} श्रीकृष्ण।

मधुपर्क पुं. {सं.} देवताओं को चढ़ाने के लिए एक में मिलाया हुआ दही, घी, जल, चीनी और शहद।

मधुपुरी *स्त्री.* {सं.} मथुरा नगरी।

मधुमक्खी *स्त्री.* {सं. मधुमक्षिका} फूलों का रस चूसकर मधु एकत्र करनेवाली मक्खी, मुमाखी।

मधुमक्षिका *स्त्री.* मधुमक्खी।

मधुमास पुं. {सं.} चैत और वैशाख के महीने।

मधुमासी *स्त्री.* मधुमक्खी।

मधुमेह पुं. {सं.} बढ़ा हुआ प्रमेह रोग जिसमें मूत्र अधिक और गाढ़ा होता है।

मधुर *वि.* {सं.} {*भाव.* मधुरता, मधुराई} स्वाद में मीठा; सुनने में प्यारा; सुंदर; कोमल।

मधुरन पुं. {सं.} मधुर करने या बनाने का कार्य।

मधुरा *स्त्री.* {सं.} मथुरा नगरी; साहित्य में वह शब्द-योजना जिससे रचना में माधुर्य या मिठास आती है।

मधुराक्षर *वि.* {सं.} सुंदर अक्षर लिखनेवाला।

मधुरानन *वि.* {सं.} सुंदर मुखवाला।

मधुराना *अ.* {हिं. मधुर + आना (प्रत्य.)} मीठा होना; सुंदर होना।

मधुरान्न पुं. {सं.} मिठाई।

मधुरासव पुं. {सं.} आम्र, आम।

मधुरिका *स्त्री.* {सं.} सौंफ।

मधुरिमा *स्त्री.* {हिं.} मीठापन, मिठास, सौंदर्य।

मधुरिपु पुं. मधुसूदन।

मधुरिमा *स्त्री.* {सं.} मधुरता, मिठास; सुंदरता, सौंदर्य।

मधुरी *स्त्री.* माधुर्य।

मधुवन पुं. {सं.} व्रज का एक वन; किष्किन्धा के पास का एक वन।

मधुव्रत पुं. {सं.} भ्रमर, भौंरा।

मधुशाला *स्त्री.* {सं.} शराब बनने और बिकने का स्थान, कलवरिया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chen[illegible] eGangotri

मधुसूदन पुं. {सं.} श्रीकृष्ण।
मधूक पुं. {सं.} महुआ (पेड और फल)।
मधूकड़ी (री) स्त्री. मधुकरी, रोटी।
मध्य पुं. {सं.} बीच का भाग (सेंटर); कमर, कटि; अंतर, फरक; वि. जो बीच में हो, बीचवाला, जैसे मध्य भाग।
मध्यक पुं. {सं.} कई संख्याओं, मूल्यों या मानों आदि को एक में मिलाकर उनकी समष्टि का किया हुआ सम विभाग जो उनका मध्यम मान सूचित करता है, बराबर का पड़ता (एवरेज); वि. उक्त प्रकार के मध्यम मानवाला, न बहुत छोटा और न बहुत बड़ा, सामान्य (एवरेज)।
मध्यकालीन वि. {सं.} मध्य या बीच के समय का; मध्ययुग-संबंधी, मध्ययुग का (मेडीवल)।
मध्यगत वि. {सं.} बीच का, मध्य का।
मध्यदेश पुं. {सं.} प्राचीन भारतवर्ष का वह मध्य भाग या प्रदेश जिसकी सीमा उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विंध्याचल, पश्चिम में कुरुक्षेत्र और पूर्व में प्रयाग तक मानी जाती थी।
मध्यदेशीय वि. {सं.} मध्य देश-संबंधी।
मध्यपूर्व पुं. {सं.} यूरोपवालों की दृष्टि से एशिया का दक्षिण-पश्चिम भाग (मिडिल ईस्ट)।
मध्यप्रदेश पुं. {सं.} भारतसंघ का एक राज्य जिसकी राजधानी भोपाल है।
मध्यम वि. {सं.} मध्य का; न बहुत बड़ा, न बहुत छोटा, औसत मान का, मध्यक; मद्धिम; पुं. संगीत के सात स्वरों में से चौथा।
मध्यम पुरुष पुं. {सं.} व्याकरण में वह पुरुष जिससे बात की जाए।
मध्यमा स्त्री. {सं.} बीच की उँगली; साहित्य में वह नायिका जो अपने प्रिय का कोई अपराध या दोष देखकर पहले तो कुछ मान करती है पर उसके सामने आने पर उ[illegible]के साथ प्रेम और सम्मान का व्यवहार करती है।
मध्यमादि पुं. {सं.} संगीत में एक प्रकार का ताल।
मध्यमाहरण पुं. {सं.} बीजगणित का सूत्र।
मध्यमिक वि. {सं.} बीच का।
मध्यमिका स्त्री. {सं.} रजस्वला स्त्री।
मध्यमान पुं. {सं.} {वि. मध्यमानिक} बराबर का पड़ता, मध्यक, औसत; वि. मध्यक, मध्या।
मध्यमार्ग पुं. {सं.} बीच का रास्ता।
मध्यमार्गी (र्गिन्) पुं. {सं.} मध्य मार्ग पर चलने वाला।
मध्ययुग पुं. {सं.} प्राचीन युग और आधुनिक युग के बीच का समय; यूरोप, एशिया आदि के इतिहास में ईसवी की छठी से पंद्रहवीं शताब्दी तक का समय (मिडिल एजिज)।
मध्ययुगीन वि. {सं.} मध्य युग का।
मध्यवर्ग पुं. {सं.} समाज का वह बीचवाला वर्ग जिसके लोग न तो बहुत अधिक धनी और न बहुत दरिद्र होते हैं, और साधारणतः छोटे-मोटे व्यापार या नौकरी करके अपना निर्वाह करते हैं (मिडिल क्लास)।
मध्यवर्ती वि. {सं. मध्यवर्तिन्} {स्त्री. मध्यवर्तिनी} जो किसी वस्तु के मध्य या बीच में हो; जो दो पक्षों के बीच में रहकर उनमें संबंध स्थापित करता हो (इंटरमिडिअरी)।
मध्यस्थ वि. {सं.} जो बीच में हो; पुं. {भाव. मध्यस्थता} वह जो बीच में पड़कर किसी प्रकार का विवाद या विरोध दूर करता हो, आपस में मेल या समझौता करानेवाला (मीडिएटर); वह जो दो दलों या पक्षों के बीच में रहकर उनके पारस्परिक व्यवहार या लेन-देन में कुछ सुभीते उत्पन्न करके लाभ उठाता हो, जैसे उत्पादकों और उपभोक्ताओं में व्यापारी, अथवा राज्य और कृषकों में जमींदार आदि (मिडिल मैन)।
मध्यस्थता स्त्री. {सं.} मध्यस्थ होने की दशा या भाव; मध्यस्थ का काम या पद।
मध्या स्त्री. {सं.} साहित्य में वह नायिका जिसमें लज्जा और काम समान रूप से हो।
मध्याकार वि. {सं.} मझोले आकार का, न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा।
मध्यावकाश पुं. {सं.} कार्य, पढ़ाई, खेल आदि में, बीच में थोड़े समय के लिए होनेवाला वह अवकाश जो लोगों के सुस्ताने, जलपान आदि करने के लिए मिलता है (रिसेस)।
मध्याह्न पुं. {सं.} ठीक दोपहर।
मध्ये क्रि. वि. मद्धे।
मनःक्षेत्र पुं. {सं.} हृदय।
मध्व पुं. {सं.} शहद की मक्खी।
मध्वक्ष वि. {सं.} जिसके नेत्र में यौन प्रेम का माधुर्य हो।
मनःस्थिति स्त्री. {सं.} मनोदशा।
मनःपति पुं. {सं.} विष्णु।
मनःपूत वि. {सं.} मनचाहा; यथेष्ट; मन को प्रसन्न करनेवाला।
मनःशिल पुं. {सं.} मैनसिल।
मनःस्थर्य पुं. {सं.} मन की स्थिरता।
मन[1] पुं. {सं. मनस्} प्राणियों में अनुभव, संकल्प-विकल्प, इच्छा, विचार आदि करनेवाली शक्ति; अंतःकरण की वह वृत्ति जिससे संकल्प-विकल्प होता है; विचार, इरादा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन² पुं. {सं. मणि} मणि, रत्न।
मन³ पुं. {सं. मान} चालीस सेर की एक तौल।
मनई पुं. {सं.} मनुष्य।
मनकना अ. {अनु.} हिलना-डुलना।
मनकर वि. चमकीला।
मनकरा वि. {सं.} प्रकाशमान, चमकदार।
मनका¹ पुं. {सं. मणिका} माला का दाना।
मनका² पुं. {सं. मन्यका} गरदन के पीछे की सबसे ऊपर की हड्डी।
मनकामना स्त्री. मनोकामना।
मनकूला वि. {अ. मन्कूल:} (संपत्ति) जो स्थावर न हो, चल।
मनगढ़ंत वि. {हिं. मन + गढ़ना} जो यथार्थ न हो, केवल कल्पित हो, अपने मन.से.गढ़ा हुआ, कपोलकल्पित; स्त्री. केवल मन की कल्पना।
मनचला वि. {हिं. मन + चलना} {स्त्री. मनचली} साहसी; रसिक।
मनचाहता वि. {हिं.} मन के अनुकूल।
मनचाहा वि. {हिं. मन + चाहना} इच्छित, चाहा हुआ; यथेष्ट।
मनचीता वि. {हिं. मन + चेतना} {स्त्री. मनचीती} मन में सोचा हुआ।
मनजात पुं. = मनसिज (कामदेव)।
मनन पुं. {सं.} चिंतन, सोचना; अच्छी तरह समझकर किया जानेवाला अध्ययन या विचार।
मननशील वि. {सं. मनन + शील} जो बराबर मनन या चिंतन करता रहता हो।
मनमाना क्रि. अ. {हिं.} गूँजना।
मनपसंद वि. {सं. + फा.} प्रिय, लुभावना।
मन-बहलाव पुं. {सं. + हिं.} मन को बहलाने की क्रिया या भाव।
मनभाया वि. {हिं. मन + भाना} {स्त्री. मनभाई} जो मन को भए; प्यारा।
मनभावन वि. {हिं.} मन को अच्छा लगनेवाला।
मन-भावता (वन) वि. मनभाया।
मनमत वि. मदमत्त।
मनमति वि. {हिं.} स्वेच्छाचारी।
मनमथ पुं. मन्मथ।
मनमथारि पुं. {सं. मनमथ + अरि} मनमथ या कामदेव को भस्म करनेवाले, महादेव, शिव।
मनमानता वि. {हिं.} मनोवांछित।
मनमाना वि. {हिं. मन + मानना} {स्त्री. मनमानी} जो अच्छा लगे; यथेष्ट; जो कुछ मन में आवे।
मनमुखी वि. {हिं.} स्वेच्छाचारी।
मनमुटाव पुं. {हिं. मन + मोटा} मन में होनेवाला वैमनस्य या विराग।
मनमोदक पुं. {हिं. मन + मोदक} मन में सोची हुई सुखद, पर असंभव बात, मन के लड्डू।
मनमोहन वि. {हिं. मन + मोहन} {स्त्री. मनमोहिनी} मन को मोहनेवाला, लुभावना; प्रिय, प्यारा; पुं. श्रीकृष्ण।
मनमौजी वि. {हिं. मन + मौज} बिना किसी सोच-विचार के मनमाने काम करनेवाला, स्वेच्छाचारी, तरंगी, मौजी (विम्सिकल)।
मनरंजन वि. = मनोरंजन।
मनवांछित वि. मनोवांछित।
मनशा स्त्री. {अ.} विचार, इरादा; तात्पर्य, आशय, मतलब।
मनश्चिकित्सा स्त्री. {सं.} मन की चिकित्सा।
मनसना अ. {हिं. मानस} इच्छा करना; संकल्प या निश्चय करना; स. संकल्प पढ़कर दान करना।
मनसब पुं. {अ.} पद, ओहदा; अधिकार।
मनसबदार पुं. {अ. + फा.} {भाव. मनसबदारी} वह जो किसी मनसब पर हो, ओहदेदार; मुगल शासनकाल का एक पदाधिकारी।
मनसा स्त्री. {सं.} सपों की देवी; क्रि. वि. मन से, इच्छा या विचार से; स्त्री. मनशा।
मनसाकर वि. {हिं. मनसा + कर} मनोरथ पूरा करनेवाला।
मनसाना अ. {हिं. मनसा} उत्साह या उमंग में आना; स. हिं. मनसना का प्रे.।
मनसायन पुं. {हिं. मानुस} चहल-पहल, रौनक।
मनसि क्रि. वि. {हिं. मन} मन से, हृदय से।
मनसिज पुं. {सं.} कामदेव।
मनसुफ पुं. मुनसिफ।
मनसूख वि. {अ.} {भाव. मनसूखी} अप्रामाणित ठहराया हुआ।
मनसूबा पुं. {अ.} युक्ति, ढंग;
मुहा. मनसूबा बाँधना = युक्ति सोचना।
इरादा, विचार।
मनस्क पुं. {सं.} मनोयोग।
मनस्कांत वि. {सं.} मन के अनुकूल।
मनस्काम पुं. {सं.} मनोरथ, अभिलाषा।
मनस्ताप पुं. {सं.} मन में होनेवाला कष्ट; पश्चाताप, पछतावा।
मनस्ताल पुं. {सं.} दुर्गा देवी के सिंह का नाम।
मनस्थ वि. {सं.} अंत:करण में स्थित।
मनस्विनी स्त्री. {सं.} श्रेष्ठ विचार की स्त्री।
मनस्तोष पुं. {सं.} मन में होनेवाला संतोष; तृप्ति।
मनस्वी वि. {सं. मनस्विन्} {स्त्री. मनस्विनी, भाव. मनस्विता} बुद्धिमान; स्वाभिमानी।
मनहर वि. मनोहर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation C... and eGangotri

मनहंस पुं. {सं.} पंद्रह अक्षरों का एक वर्णकृत।
मनहरण वि. {सं.} मनोहर।
मनहार (रि) वि. मनोहारी।
मनहुँ *योज.* मानो।
मनहूस वि. {अ. मन्हूस} {भाव. मनहूसियत, मनहूसी} अशुभ; देखने में कुरूप और अप्रिय; सदा दुखी, चुप और उदास रहनेवाला।
मनहूसियत स्त्री. {अ. मन्हूस} उदास और दुखी रहने की अवस्था या भाव।
मनहूसी स्त्री. = मनहूसियत।
मना वि. {अ. मन्ही} निषिद्ध, वर्जित।
मनाक वि. {सं. मनाक्} बहुत ही थोड़ा या कम, नाम मात्र का।
मनाग वि. = मनाक।
मनागावि वि. = मनाक।
मनादी स्त्री. मुनादी।
मनाना स. {हिं. मानना का प्रे.} रूठे हुए को प्रसन्न करना; राजी करना; ईश्वर, देवता आदि से किसी काम या बात के लिए प्रार्थना करना।
मनावन पुं. {हिं. मनाना} रूठे हुए को मनाने की क्रिया या भाव।
मनाही स्त्री. {अ.} मना करने की क्रिया या भाव निषेध, रोक।
मनिका स्त्री. {हिं.} माला में पिरोया हुआ दाना।
मनिया स्त्री. {सं. माणिक्य} मनका; छोटी माला; कंठी।
मनियार वि. {हिं. मणि} उज्ज्वल, चमकदार; सुंदर, मनोहर; पुं. मनिहार।
मनियारा पुं. {सं. मणि} जौहरी; मनिहार।
मनिहार पुं. {सं. मणिकार} {स्त्री. मनिहारिन, मनिहारी} चुड़िहारा।
मनिहारिन स्त्री. {हिं.} चुड़िहारिन।
मनी[1] स्त्री. {हिं. मान} अहंकार।
मनी[2] स्त्री. {सं मणि.} मणि; वीर्य।
मनीषा स्त्री. {सं.} बुद्धि, अक्ल।
मनीषी वि. {सं. मनीषिन्} पंडित, ज्ञानी; बुद्धिमान, अक्लमंद।
मनीषित वि. {सं.} अभिलषित।
मनु पुं. {सं.} ब्रह्मा के चौदह पुत्र जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं; अंतःकरण, मन; वैवस्वत मनु; चौदह की संख्या; *योज.* {हिं. मानना} मानो, जैसे।
मनुआँ पुं. मन, मनुष्य।
मनुज पुं. {सं.} मनुष्य, आदमी।
मनुजा स्त्री. {सं.} स्त्री, नारी।
मनुजात वि. {सं.} मनुष्य से उत्पन्न।
मनुजाद पुं. {सं.} वह जो मनुष्यों को अथवा उनका मांस खाता हो।
मनुजीवित वि. {सं.} जो मनुष्य के लिए उचित हो, मनुष्य के उपयुक्त।
मनुपुत्र पुं. {सं.} मनुष्य।
मनुष पुं. {सं. मनुष्य} मनुष्य, आदमी; पति, खसम।
मनुष्य पुं. {सं.} वह द्विपद प्राणी जो अपने बुद्धिबल के कारण सब प्राणियों में श्रेष्ठ है और जिसके अंतर्गत हम, आप और सब लोग हैं, आदमी, नर।
मनुसंहिता स्त्री. {सं.} मानव धर्मशास्त्र।
मनुष्य-गणना स्त्री. {सं.} किसी स्थान या देश के निवासियों की होनेवाली गिनती (सेन्सस)।
मनुष्यता स्त्री. {सं.} 'मनुष्य' का भाव; मनुष्यों के लिए उपयुक्त या आवश्यक और अच्छे गुण, शील; शिष्टता।
मनुष्यत्व पुं. मनुष्यता।
मनुष्यभक्षी वि. = नरभक्षी।
मनुष्यलोक पुं. {सं.} यह संसार, मर्त्यलोक, जगत्।
मनुष्य-शक्ति स्त्री. {सं.} देश के वे व्यक्ति जो काम करने के योग्य हों।
मनुसा पुं. = मनुष्य।
मनुसाई स्त्री. {हिं. मनुष्य + आई} मनुष्यता, आदमीपन; पुरुषार्थ, पराक्रम।
मनुहार स्त्री. {हिं. मनुहारना} रूठे हुए को मनाना, मनावन, खुशामद; विनय, प्रार्थना; सत्कार, आदर; शांति; मनस्तोष, तृप्ति।
मनुहारना स. {सं. मनोहरति} मनाना।
मनुहारी पुं. {हिं. मन + हरना} {स्त्री. मनुहारिन्} प्रिय, प्रेमी।
मनूरी स्त्री. {अ.} मुरादाबादी कलई करने की बुकनी।
मने सर्व. = मुझे (राज. और गुज.)।
मनों *योज.* मानो।
मनोकामना स्त्री. {सं. मनःकामना} मन की इच्छा, अभिलाषा।
मनोगत वि. {सं.} मन में होने या आनेवाला; पुं. भाव।
मनोग्रंथि स्त्री. {सं.} अचेतन मन की वह स्थिति जिसके अनुरूप वह कार्य करने में प्रवृत्त होता है।
मनोगवी स्त्री. {सं.} इच्छा, अभिलाषा।
मनोज पुं. {सं.} कामदेव।
मनोजात वि. {सं.} जो मन में उत्पन्न हो।
मनोज्ञ वि. {सं.} सुंदर, मनोहर।
मनोदशा स्त्री. {सं.} मन की दशा।
मनोदाही वि. {हिं.} मन को जलानेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोदेवता पुं. {सं.} विवेक
मनोनयन पुं. {सं.} मनोनीत करना।
मनोनिग्रह पुं. {सं.} मन का निग्रह, मन को रोकना या वश में रखना।
मनोनियोग पुं. {सं.} किसी काम में अच्छी तरह मन लगाना।
मनोनीत *वि.* {सं.} मन के अनुकूल; पसंद किया या चुना हुआ; जो किसी स्थान पर नियुक्त होने के लिए चुना गया हो (डेजिगनेट)।
मनोबल पुं. {सं.} मन की शक्ति, साहस।
मनोभव पुं. {सं.} कामदेव।
मनोभाव पुं. {सं.} मन में उत्पन्न होनेवाला भाव।
मनोभावना *स्त्री.* {सं.} इच्छा, आकांक्षा।
मनोभिराम *वि.* {सं.} सुंदर, मनोहर।
मनोभय *वि.* {सं.} मन से युक्त या पूर्ण; मानसिक।
मनोभूत पुं. {सं.} चंद्रमा।
मनोमय कोश पुं. {सं.} पाँच कोशों में से वह जिसमें मन, अहंकार और कर्मेंन्द्रियाँ मानी जाती हैं (वेदांत)।
मनोमल पुं. {सं.} मन का विकार, मन के दूषित भाव, जैसे ईर्ष्या, द्वेष आदि।
मनोमालिन्य पुं. {सं.} मन-मुटाव, मन में रहनेवाला दुर्भाव, रंजिश।
मनोमुग्धकारी (रिन्) *वि.* {सं.} मन को मुग्ध करनेवाला।
मनोयोग पुं. {सं.} मन की एकाग्रता; मनोनियोग।
मनोरंजक *वि.* {सं.} {*भाव.* मनोरंजकता} मन को बहलाने या प्रसन्न रखनेवाला (कार्य या पदार्थ)।
मनोरंजन पुं. {सं.} मन को प्रसन्न करनेवाली बात या काम, मनोविनोद, दिल-बहलाव (इंटरटेनमेंट)।
मनोरथ पुं. {सं.} मन की इच्छा या अभिलाषा।
मनोरम *वि.* {सं.} {*स्त्री.* मनोरमा} मनोहर, सुंदर।
मनोरमा *स्त्री.* {सं.} सात सरस्वतियों में से एक।
मनोरा पुं. {सं. मनोहर} गोबर से बने हुए वे चित्र या मूर्तियाँ जो दीपावली के बाद दीवार पर बनाकर पूजी जाती हैं।
मनोराग पुं. {सं.} मन में उत्पन्न होनेवाला राग या वृत्ति, मानसिक भावना, प्रवृत्ति, विचार आदि।
मनोराज्य पुं. {सं.} मन-रूपी राज्य; कल्पना से खड़ा किया हुआ सुंदर सुखद स्वप्न।
मनोरा-झूमक पुं. {?} एक प्रकार का गीत।
मनोरोग पुं. {सं.} मानसिक रोग।
मनोरोगी (गिन्) पुं. {सं.} मानसिक रोगी।
मनोलय पुं. {सं.} मन का नाश।
मनोलीला *स्त्री.* {सं.} ऐसी कल्पित बात या विचार जो केवल मन में उठा हो, पर जिसका कोई वास्तविक आधार या अस्तित्व न हो (फैण्टम)।
नोलौल्य पुं. {सं.} चित्त की चंचलता।
मनोवती *स्त्री.* {सं.} एक अप्सरा का नाम।
मनोवांछा *स्त्री.* मनोकामना।
मनोवांछित *वि.* {सं.} इच्छित, चाहा हुआ।
मनोविकार पुं. {सं.} मन में उठनेवाले भाव, जैसे क्रोध, दया, प्रेम आदि।
मनोविज्ञान पुं. {सं.} {*वि.* मनोवैज्ञानिक} वह शास्त्र जिसमें चित्त की वृत्तियों या मन में उठनेवाले विचारों आदि का विवेचन होता है (साइकॉलोजी)।
मनोविनोद पुं. {सं.} मन-बहलाव।
मनोविश्लेषण पुं. {सं.} इस बात का विश्लेषण या जाँच करना कि मनुष्य का मन किन अवस्थाओं में किस प्रकार कार्य करता है।
मनोवृत्ति *स्त्री.* {सं.} मन के चलने या काम करने का ढंग; भले या बुरे कामों की ओर प्रवृत्त होने अथवा अच्छे या बुरे होने के विचार से मन की स्थिति (डिस्पोजीशन)।
मनोवेग पुं. {सं.} मनोवृत्ति; मन की वह अवस्था जिसमें वह कभी एक बात की ओर और कभी दूसरी बात की ओर प्रवृत्त होता है (मूड)।
मनोवैकल्य पुं. {सं.} वह अवस्था जिसमें ठीक और पूरी तरह से मानसिक विकास न होने के कारण मनुष्य की बुद्धि परिपक्व नहीं होती (मेंटल अफिसिएंसी)।
मनोवैज्ञानिक *वि.* {सं.} मनोविज्ञान-संबंधी; मानव स्वभाव के कारण होनेवाला; पुं. मनोविज्ञान का पंडित।
मनोसर पुं. मनोविकार।
मनोहत *वि.* {सं.} प्रतिहत, निराश।
मनोहर *वि.* {सं.} {*भाव.* मनोहरता} मन को आकर्षित करनेवाला; सुंदर।
मनोहरा *स्त्री.* {सं.} मनोहर स्त्री, एक अप्सरा।
मनोहरी *स्त्री.* {हिं.} कान में पहननेवाली छोटी बाली।
मनोहारी *वि.* मनोहर।
मनौती *स्त्री.* मन्नत।
मनौवल *स्त्री.* {हिं. मनाना} रूठे हुए को मनाने की क्रिया या भाव।
मन्नत *स्त्री.* {हिं. मानना} किसी कामना की पूर्ति के लिए मानी हुई किसी देवता की पूजा, मानता, मनौती।
मन्मथ पुं. {सं.} कामदेव; काम-वासना।
मन्यु पुं. {सं.} क्रोध; स्रोत, शोक, अहंकार, अग्नि।
मन्वंतर पुं. {सं.} इकहत्तर चतुर्युगियों का काल जो ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवाँ भाग माना गया है।
मम *सर्व.* {सं.} मेरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Ch... and eGangotri

ममता *स्त्री.* {सं.} अपने मन का भाव, ममत्व; स्नेह, प्रेम; लोभ, लालच; मोह, माया।

ममत्व *पुं.* {सं.} ममता, स्नेह, गर्व।

ममरखी *स्त्री.* {अ. मुबारक} बधाई।

ममाखी *स्त्री.* = मधुमक्खी।

ममाग्रह *पुं.* {सं. मम + आग्रह} किसी वस्तु पर अपना अधिकार जतलाते हुए यह कहना कि यह हमारी होनी और हमें मिलनी चाहिए, दावा।

ममास *पुं.* मवास।

ममिया *वि.* {हिं. मामा} संबंध में मामा के स्थान का, जैसे ममिया ससुर।

ममी *पुं.* मिस्र देश का प्रसिद्ध मृत मनुष्य का सुरक्षित प्राचीन शिव।

मनीरा *पुं.* {अ. मामीरान} एक पौधे की जड़ जो आँख के रोगों की दवा है।

ममोला *पुं.* {हिं. मन + मोल} मन का हौसला, उमंग; *वि.* पिरम प्रिय, प्रियतम।

मयंक *पुं.* {सं. मृगाङ्क} चंद्रमा।

मय *पुं.* {सं.} पुराणों में उल्लिखित एक प्रसिद्ध दानव जो बहुत बड़ा शिल्पी था; अमेरिका में रहनेवाली एक प्राचीन जाति जो सभ्यता और संस्कृति में बहुत उन्नत और प्राय; प्राचीन भारतीयों के समान ही थी; *प्रत्य.* {सं.} {*स्त्री.* मयी} एक प्रत्यय जो तद्रूप विकार और प्रचुरता का बोधक है, जैसे राममय, दुखमय, जलमय।

मयगल *पुं.* {सं. मदकल} मत्त हाथी।

मयट *पुं.* {सं.} पर्णशाला, झोपड़ी।

मयन *पुं.* {सं. मदन} कामदेव।

मयना *स्त्री.* मैना।

मयमंत *वि.* {सं. मदमत} मस्त।

मयस्सर *वि.* {अ.} प्राप्त, सुलभ।

मयसुता *स्त्री.* {सं.} मंदोदरी।

मया *स्त्री.* माया।

मयार[1] *वि.* {सं. मायालु} सबसे विशेष प्रेम या स्नेह रखनेवाला, दयालु।

मयार[2] *स्त्री.* {सं. मध्य} हिंडोले के बीचवाला डंडा जिसमें झूले या पालने की रस्सियाँ बँधी रहती हैं।

मयारी *स्त्री.* मयार।

मयूक *पुं.* {सं.} मयूर।

मयूख *पुं.* {सं.} किरण, रश्मि; दीप्ति, चमक।

मयूर *पुं.* {सं.} मोर (पक्षी)।

मरंद *पुं.* मकरंद।

मर *वि.* = मृतक।

मरक *स्त्री.* {हिं. मड़क} रहस्य, भेद; आकर्षण, खिंचाव; मन में रहनेवाला वैर या द्वेष; मन का हौसला या उमंग; *स्त्री.* मरी।

मरकट *वि.* {हिं. मरना} बहुत ही दुबला-पतला और क्षीण; *पुं.* = मर्कट (बंदर)।

मरकत *पुं.* {सं.} पन्ना (रत्न)।

मरकना *अ.* मुड़कना।

मरगज *वि.* मलगजा।

मरगजना *स.* {हिं. मलना + गींजना} मल या मसल कर विकृत या विरूपित करना।

मरगजा *पुं.* मलगजा; *वि.* मसला हुआ।

मरघ *पुं.* = मृग।

मरघट *पुं.* मसान, श्मशान।

मरचोथा *पुं.* {हिं.} तरकारी।

मरज *पुं.* {अ. मर्ज़} रोग, बीमारी।

मरजाद *स्त्री.* {सं. मर्यादा} सीमा; प्रतिष्ठा; रीति, परिपाटी।

मरजिया *वि.* {हिं. मरना + जीना} मरकर जीनेवाला; मरणासन्न; जो प्राण देने पर उतारू हो; *पुं.* पनडुब्बा, गोताखोर, जिवकिया; बहुत ही विकट स्थान पर पहुँचकर व्यापार या और कोई काम करनेवाला।

मरजी *स्त्री.* {अ. मर्ज़ी} इच्छा; कृपा; प्रसन्नता; आज्ञा, स्वीकृति।

मरण *पुं.* {सं.} मरने की अवस्था या भाव, शरीर से प्राणवायु निकल जाना, मृत्यु, मौत (साहित्य में यह एक संचारी भाव माना गया है)।

मरणांत *अव्य.* {सं.} मरण पर्यंत।

मरण-प्रमाणक *पुं.* {सं.} किसी मृत व्यक्ति से संबंध रखनेवाला वह प्रमाणपत्र जो यह सिद्ध करता है कि वह व्यक्ति सचमुच मर चुका है (डेथ सर्टिफिकेट)।

मरणासन्न *वि.* {सं.} जो मरने के बहुत समीप हो।

मरणोत्तर *वि.* {सं.} किसी की मृत्यु के उपरांत का, किसी के मरने के बाद होनेवाला (पोस्टथ्यूमस)।

मरणोपरांत *क्रि. वि.* {सं.} मृत्यु के उपरांत।

मरत *पुं.* मृत्यु।

मरतबा *पुं.* {अ. मर्तबः} पद, ओहदा; बार, दफा।

मरतबान *पुं.* {हिं.} अमृतबान।

मरताना *स.* {?} मीठी-मीठी बातें करके किसी को अपने अनुकूल करना; ग्राहक, यजमान आदि को अपने अनुकूल करके उससे कुछ धन कमाना।

मरद *पुं.* मर्द।

मरदन *पुं.* मर्दन।

मरदना *स.* {सं. मर्दन} मसलना, मलना; नष्ट करना; गूँथना।

मरदल *पुं.* मर्दल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Foundation Chennai and eGangotri

मरदानगी *स्त्री.* {फा. मर्दानगी} पौरुष; वीरता, शूरता; साहस, हिम्मत।

मरदाना *वि.* {फा. मर्दान:} पुरुष-संबंधी; पुरुषों का सा; वीरोचित।

मरन *पुं.* = मरण।

मरनसेज *स्त्री.* मृत्युशय्या।

मरना *अ.* {सं. मरण} प्राणियों की सब शारीरिक क्रियाओं का सदा के लिए अंत होना, शरीर से प्राण निकलना; मरने का-सा कष्ट उठाना; कुम्हलाना, सूखना; लज्जा, भय आदि के कारण दबना; बेकाम हो जाना; किसी मनोवेग का दबकर नहीं के समान हो जाना; खेल में, हारने पर फिर उस पारी में खेलने योग्य न रह जाना।

मरनी *स्त्री.* {हिं. मरना} मृत्यु, मौत; मृतक के लिए उसके संबंधियों द्वारा मनाया जानेवाला शोक; मृतक-संबंधी क्रियाकर्म।

मरभुखा *वि.* {हिं.} भूखों मरना, भुक्खड़।

मरपुरी *स्त्री.* {हिं. मरना + पुरी = नगरी} यमराज की पुरी, यमपुरी।

मरम *पुं.* {सं. मर्म} रहस्य, भेद; मर्म।

मरमर *पुं.* {यू.} एक प्रकार का चिकना और चमकीला पत्थर, जैसे संगमरमर।

मरमरा *पुं.* {हिं.} एक पक्षी।

मरमराना *पुं.* {सं.} मरमर शब्द होना या करना; इस प्रकार दबना या दबाना कि मरमर शब्द हो।

मरमी *पुं.* मर्मज्ञ।

मरम्मत *स्त्री.* {अ.} किसी वस्तु का टूटा-फूटा या बिगड़ा हुआ अंश ठीक करने का काम, दुरुस्ती।

मरम्मतकर्ता *पुं.* {अ. + सं.} मरम्मत का काम करनेवाला।

मरयाद *स्त्री.* = मर्यादा।

मरवट *स्त्री.* {?} वे रेखाएँ, फूल-पत्तियाँ आदि जो स्त्रियाँ अपना सौंदर्य बढ़ाने के लिए माथे और चेहरे पर बनाती हैं।

मरवा *पुं.* {हिं.} मरुआ।

मरवाना *क्रि. स.* {हिं.} वध कराना।

मरसा *पुं.* {सं. मरिष} एक साग।

मरहट[1] *पुं.* मसान।

मरहट[2] *स्त्री.* {देश.} मोठ (अन्न)।

मरहठा *पुं.* {सं. महाराष्ट्र} {*स्त्री.* मरहठिन} महाराष्ट्र देश का निवासी।

मरहठी *स्त्री.* मराठी।

मरहम *पुं.* {अ.} घाव पर लगाने के औषध का गाढ़ा, चिकना लेप।

मरहम-पट्टी *स्त्री.* {अ. मरहम + हिं. पट्टी} घाव, फोड़े-फुंसी आदि पर दवा लगाकर पट्टी बाँधने का काम (ड्रेसिंग)।

मरहला *पुं.* {अ.} पड़ाव; कठिन काम या प्रसंग, विकट समस्या।

मराठा *पुं.* मरहठा।

मराठी *स्त्री.* {सं. महाराष्ट्री} महाराष्ट्र देश की भाषा।

मरातिब *पुं.* {अ.} पद, ओहदा; उत्तरोत्तर या क्रमश: आनेवाली अवस्थाएँ; मकान का खंड, तल्ला, मंजिल; एक प्रकार का बड़ा झंडा जो मुगल बादशाहों के आगे चलता था।

मरायल *वि.* {हिं. मारना} जिसने कई बार मार खाई हो; निस्सत्व, निस्सार; शक्तिहीन; *पुं.* घाटा, टोटा, हानि।

मरायु *वि.* {सं.} मरणशील।

मराल *पुं.* {सं.} हंस; घोड़ा; हाथी।

मरिंद *पुं.* मलिंद; मकरंद।

मरीच *पुं.* {सं.} गोल मिर्च।

मरीचा *पुं.* {हिं.} बड़ा मिरचा।

मरिची *स्त्री.* = मिर्च।

मरियल *वि.* {हिं. मरना} बहुत दुर्बल।

मरी *स्त्री.* {हिं. मरना} किसी संक्रामक रोग से कुछ दिनों तक लोगों के मरने का चलनेवाला क्रम।

मरीचि (का) *स्त्री.* {सं.} प्रभा, कांति; मृगतृष्णा।

मरिचिका *स्त्री.* {सं.} मृगतृष्णा, किरण।

मरीचिमाली (लिन्) *पुं.* {सं.} सूर्य।

मरीची *पुं.* {सं. मरीचिन्} सूर्य; चंद्रमा।

मरीज *पुं.* {अ. मरीज़} {*वि.* मरीजी} जिसे कोई मरज या रोग हुआ हो, रोगी।

मरुंडा *पुं.* {हिं. मरोड़ना या सं. रुंड} भुने हुए गेहूँ आदि को गुड़ में पागकर बनाया हुआ लड्डू; *वि.* तोड़-मरोड़कर विकृत किया हुआ; *स्त्री.* ऊँचे ललाट की स्त्री।

मरु *पुं.* {सं.} {*भाव.* मरुता} मरुभूमि; मारवाड़ देश।

मरुआ *पुं.* {सं. मरुव} तुलसी की तरह का सुगंधित पत्तियोंवाला एक पौधा; हिंडोले में ऊपर की वह लकड़ी जिसमें झूले की रस्सियाँ बँधी रहती हैं।

मरुज *वि.* {सं.} मरुभूमि में होनेवाला।

मरुजाता *पुं.* {सं.} केवाँच, कौंच।

मरुत् *पुं.* {सं.} वायु; प्राण; मरुत्वान्।

मरुत्वान *पुं.* {सं. मसत्त्वत्} इंद्र; धर्म के वंशज देवताओं का एक गण; हनुमान।

मरुद्वीप *पुं.* {सं.} मरुस्थल में स्थित छोटा सजल उपजाऊ स्थान, शाद्वल (ओएसिस)।

मरुभूमि *स्त्री.* {सं.} बालू का निर्जल मैदान, रेगिस्तान, मरुस्थल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरुम पुं. मोरम।
मरुवा पुं. मयार (हिंडोले की रस्सी)।
मरुस्थल पुं. मरुभूमि।
मरू *वि.* {हिं.} कठिन, कड़ा।
मरूक पुं. {सं.} मयूर, मोर।
मरूर पुं. {हिं. मरोड़} मरोड़; पीड़ा।
मरूरा पुं. मरोड़।
मरोड़ पुं. {हिं. मरोड़ना} मरोड़ने की क्रिया या भाव; घुमाव, ऐंठन; पेट में होनेवाली ऐंठन; व्यथा, कष्ट; घमंड; क्रोध।
मरोड़ना स. {हिं. मोड़ना} बल डालना, ऐंठना; ऐंठ या घुमाकर नष्ट करना या मार डालना; पीड़ा देना, दुख पहुँचाना।
मरोड़फली *स्त्री.* {हिं.} मुर्रा नामक ओषधि।
मरोड़ा पुं. मरोड़।
मरोड़ी *स्त्री.* {हिं.} ऐंठन, घुमाव, गाँठ।
मरोर पुं. {हिं.} पछतावा, मरोड़।
मरोरना स. मरोड़ना।
मर्कट पुं. {सं.} {*स्त्री.* मर्कटी} बंदर, बानर; मकड़ा।
मर्कत पुं. मरकत (रत्न)।
मर्कर पुं. {सं.} भृंगराज, भँगरैया।
मर्ग पुं. {सं. मठ, कश्मीर मर} कश्मीर में पहाड़ के ऊपर वह छोटा मैदान जिसमें पशु चरते हों, कुमाऊँ में इसी को 'खाल' कहते हैं।
मर्तबान पुं. {हिं. अमृतवान} अचार, घी आदि रखने का चीनी मिट्टी या सादी मिट्टी का रोगनी बरतन, अमृतवान।
मर्त्य पुं. {सं.} मनुष्य; शरीर।
मर्त्यलोक पुं. {सं.} यह पृथ्वी या इस पर बसा हुआ संसार।
मर्द पुं. {फा.} मनुष्य; पुरुष, नर; साहसी और पुरुषार्थी व्यक्ति; वीर; पति, भर्ता, खसम।
मर्दन पुं. {सं.} {*वि.* मर्दित} कुचलना, रौंदना; मसलना; शरीर में तेल, उबटन आदि मलना; नाश, ध्वंस; *वि.* {*स्त्री.* मर्दना} मर्दन, नाश या संहार करनेवाला (यौ. के अंत में)।
मर्दना स. {सं. मर्दन} मर्दन करना, मलना; मसलना; नष्ट करना; मार डालना।
मर्दल पुं. {सं.} एक प्रकार का बड़ा ढोल, जिसका प्रचलन बंगाल में है।
मर्दानगी *वि.* {फा.} पुरुषत्व, बहादुरी।
मर्दाना *वि.* {फा.} पुरुष-संबंधी।
मर्दित *वि.* {सं.} जिसका मर्दन किया गया हो, रौंदा हुआ।
मर्दुमशुमारी *स्त्री.* {फा.} किसी स्थान के निवासियों की गणना या गिनती होना, जनगणना; कहीं की जनसंख्या।
मर्दुमी *स्त्री.* {फा.} पौरुष।
मर्म पुं. {सं.} स्वरूप; रहस्य, भेद; संधि-स्थान; मर्मस्थल।
मर्मर पुं. {सं.} कपड़े पत्ते आदि का शब्द।
मर्मज्ञ *वि.* {सं.} {*भाव.* मर्मज्ञता} किसी बात का मर्म, रहस्य या तत्व जाननेवाला, तत्वज्ञ।
मर्मभेदी *वि.* {सं. मर्मभेदिन्} हृदय में चुभनेवाला. हार्दिक कष्ट पहुँचानेवाला।
मर्मर[1] पुं. मरमर, कपड़े।
मर्मर[2] पुं. {अनु.} पत्तों आदि का मरमर शब्द।
मर्मरित *वि.* {अनु. मरमर} जिसमें मरमर शब्द होता हो।
मर्मवचन पुं. {सं. मर्म + वचन} वह बात जिससे सुननेवाले का हृदय दुखे।
मर्मवाक्य पुं. मर्मवचन।
मर्मविद् *वि.* {सं.} मर्मज्ञ।
मर्मस्थल पुं. {सं.} शरीर के वे कोमल अंग जिनपर चोट लगने से बहुत अधिक पीड़ा होती है और जिनसे मनुष्य मर भी सकता है, जैसे हृदय, कंठ, नाक, अण्डकोश, कपाल आदि; वह स्थल जिसपर आघात या आक्षेप होने से मनुष्य को विशेष मानसिक कष्ट हो, जैसे हृदय।
मर्मस्थान पुं. मर्मस्थल।
मर्मस्पर्शी *वि.* {सं. मर्मस्पर्शिन्} {*स्त्री.* मर्मस्पर्शिनी, *भाव.* मर्मस्पर्शिता} हृदय को स्पर्श करने, फलतः उस पर प्रभाव डालनेवाला।
मर्मांग पुं. {सं.} मर्मस्थल।
मर्मांतक, मर्मांतिक *वि.* मर्मभेदी।
मर्मी *वि.* {सं. मर्म} तत्वज्ञ, मर्मज्ञ।
मर्याद *स्त्री.* {हिं.} रीति-प्रथा, चाल, ज्योनार।
मर्यादक *वि.* {सं.} माननीय।
मर्यादा *स्त्री.* {सं.} सीमा, हद; तट, किनारा; प्रतिज्ञा; नियम; सदाचार; प्रतिष्ठा; धर्म।
मर्यादाबंध पुं. {हिं.} मर्यादा की रक्षा।
मर्यादित *वि.* {सं.} जिसकी सीमा या हद निश्चित हो; जो अपनी मर्यादा या सीमा के अंदर हो।
मर्यादी *वि.* {सं.} मर्यादापूर्ण।
मर्ष पुं. {सं.} क्रोध।
मर्षण पुं. {सं.} {*वि.* मर्षणीय, मर्षित} क्षमा, माफी; किसी प्रकार का कष्ट, अन्याय, आघात, हानि आदि धैर्यपूर्वक और चुपचाप सहने की क्रिया या भाव (सफरेंस); ऐसा अभ्यास या शक्ति जो मनुष्य को किसी असाधारण, कठिन या कष्टदायक स्थिति में समर्थ करती है; *वि.* नाशक; दूर करनेवाला।
मलंग पुं. {फा.} एक प्रकार के मुसलमान फकीर या साधु।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मल पुं. {सं.} मैल, गंदगी; विष्ठा, गूह; दोष, विकार; पाप।

मलकन *स्त्री.* {हिं. मलकना} मलकने की क्रिया या भाव।

मलकना *स्त्री.* {अनु.} हिलना, डोलना; इठलाना, इतराना; *स.* इधर-उधर आँखें नचाना या तिरछी नजर से देखना; मचमचाना।

मलकरन पुं. {हिं.} नक्काशी करने का औजार।

मलका *स्त्री.* {*अ.* मलिक:} महारानी।

मलकाना[1] *स.* {अनु.} तिरछी नजर से इधर-उधर देखना; मचमचाना।

मलकाना[2] पुं. {*अ.* मालिक, मलिक?} राजपूत मुसलमानों की एक जाति।

मलकुंड पुं. {सं.} वह कुंड जिसमें मलमूत्र एकत्र होता हो।

मलखंभ पुं. मालखंभ।

मलखाना पुं. {हिं.} पश्चिमी उत्तरप्रदेश में रहनेवाली एक राजपूत जाति जो मुसलमानी राज्य में मुसलमान बन गई थी, परंतु अब हिन्दू हो गई है।

मलगजा[1] *वि.* {हिं. मलना + गींजना} {*स्त्री.* मलगाजी} जो मल या मसलकर विकृत और विरूप कर दिया गया हो रौंदा हुआ।

मलगजा[2] पुं. {?} गाढ़े बेसन में लपेट कर तला हुआ बैंगन का टुकड़ा या फाँक।

मलघन पुं. {हिं.} कचनार।

मलघनी *स्त्री.* {सं.} नागदौना।

मलज *वि.* {सं.} मल से उत्पन्न; पुं. *पीब।*

मलझन *हिं.* {सं.} एक लता।

मलता *वि.* {हिं. मलना} घिसा हुआ (सिक्का)।

मलत्याग पुं. {सं.} टट्टी करने की क्रिया।

मलद्वार पुं. {सं.} वह इंद्रिय जिससे शरीर के भीतर का मल निकलता है; गुदा।

मलदूषित *वि.* {सं.} मलिन, मैला।

मलधात्री *स्त्री.* {सं.} बच्चों का मल-मूत्र धोनेवाली धाय।

मलना *स.* {सं. मलन} {*प्रे.* मलाना, मलवाना} हाथ से घिसना या रगड़ना; माँजना; मालिश करना; मरोड़ना, ऐंठना।

मलनाली *स्त्री.* {सं. + हिं} वह नाली जिसमें से मलमूत्र बहता हो (सीवर)।

मलनी *स्त्री.* {हिं.} कुम्हार का पात्र चिकनाने का एक उपकरण।

मलबा पुं. {सं. मल} कूड़ा-कर्कट; गिरी हुई इमारत की ईंटें, पत्थर आदि या उनका ढेर।

मलभुज पुं. {सं.} मल खानेवाला जंतु।

मलमल *स्त्री.* {सं. मलमल्लक} एक प्रकार का महीन कपड़ा।

मलमला पुं. {हिं.} कुल्फे का साग।

मलमलाना *क्रि. स.* {हिं.} आलिंगन करना, पछतावा करना।

मलमास पुं. {सं.} प्रति तीसरे वर्ष पड़नेवाला वह बढ़ा हुआ या अधिक चांद्र मास जो दो संक्रांतियों के बीच में पड़ता है; (ऐसा मास अपने नाम के दूसरे और शुद्ध मास के बीच में होता है) अधिक मास, पुरुषोत्तम।

मलय पुं. {सं. मलय (पर्वत)} मैसूर के दक्षिण और ट्रावणकोर के पूर्व का प्रदेश; मलाबार; मलाबार के निवासी; सफेद चंदन।

मलयगिरि पुं. {सं.} दक्षिण भारत का मलय पर्वत; इस पर्वत पर पैदा होनेवाला चंदन।

मलयज पुं. {सं.} चंदन; *वि.* मलय पर्वत पर या से उत्पन्न।

मलयाचल पुं. {सं.} मलय पर्वत।

मलयानिल पुं. {सं.} मलय पर्वत की ओर से आनेवाली वायु, जिसमें चंदन की सुगंध होती है; वसंत ऋतु की सुखद और सुगंधित वायु।

मलयाली *वि.* {हिं.} मलाबार देश-संबंधी; पुं. मलाबार-निवासी।

मलयुग पुं. = कलियुग।

मलरुचि *वि.* {सं.} पापमय चित्त का, पापी।

मलरोधक *वि.* {सं.} मल का रुकाव करनेवाला।

मलराना *स.* मल्हाना।

मलवा पुं. {हिं.} बरमा देश में होनेवाला एक वृक्ष।

मलवाना *क्रि. स.* {हिं.} मलने का काम दूसरे से कराना।

मलवेग पुं. {सं.} अतिसार-रोग।

मलशुद्धि *स्त्री.* {सं.} पेट की शुद्धि।

मलहम पुं. मरहम।

मलाई[1] *स्त्री.* {फा. बालाई} देर तक गरम किए हुए दूध के ऊपर जमा हुआ सार भाग, साढ़ी; सार, तत्व।

मलाई[2] *स्त्री.* {हिं. मलना} मलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

मलाट पुं. {देश.} एक प्रकार का मोटा घटिया कागज।

मलान *वि.* म्लान।

मलामत *स्त्री.* {*अ.*} डाँट-फटकार; मैल, गंदगी।

मलार पुं. मल्लार।

मलारी *स्त्री.* मल्लारी।

मलाल पुं. {*अ.*} दुख, रंज।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation C[illegible] and eGangotri

मलावरोध पुं. {सं. मल + अवरोध} वह रोग जिसमें पेट में मल रुका रहता है और जल्दी बाहर नहीं निकलता, कब्जियत (कांस्टिपेशन)।

मलाह पुं. मल्लाह।

मलाही *स्त्री.* मल्लाही।

मलिंग पुं. मलंग।

मलिंद पुं. {सं. मिलिन्द} भौंरा।

मलिक पुं. {अ.} {*स्त्री.* मलिका} राजा; सरदार।

मलिच्छ पुं. म्लेच्छ।

मलित पुं. {हिं.} सुनार का गहना स्वच्छ करने की कूँची।

मलिन *वि.* {सं.} {*स्त्री.* मलिना, *भाव.* मलिनता} मैला, गंदा; कपट-भूरा; विकारयुक्त; पापी; श्रीहीन, म्लान, उदासीन, फीका।

मलिना *स्त्री.* {सं.} रजस्वला स्त्री, लाल खाँड़।

मलिनाई *स्त्री.* {हिं.} मलिनता, मैल।

मलिनाना *क्रि. अ.* {हिं.} मैला होना।

मलिया *स्त्री.* {सं. मल्लिका} छोटे मुँह का मिट्टी का एक प्रकार का बरतन; चक्कर; एक प्रकार का खेल जिसमें जमीन पर कुछ खाने बनाकर गोटियों से खेलते हैं।

मलियामेट पुं. {हिं. मलिया (खेल) + मिटाना} सर्वनाश, बरबादी।

मलिस *स्त्री.* {हिं.} सुनारों की छेनी की तरह का औजार।

मलीदा पुं. {फा.} चूरमा; एक प्रकार का बढ़िया मुलायम ऊनी कपड़ा।

मलीन *वि.* मलिन।

मलू *स्त्री.* {हिं.} मलहन नामक पौधा।

मलूक *वि.* {अ. मलिक} सुंदर, मनोहर।

मलेच्छ पुं. म्लेच्छ।

मलेरिया पुं. {अं.} जाड़ा देकर आनेवाला बुखार, जूड़ी।

मलोलना *अ.* {हिं. मलोला} मन में दुखी होना; पछताना।

मलोला पुं. {अ. मलूल} मानसिक व्यथा, दुःख।

मल्ल पुं. {सं.} द्वंद्वयुद्ध में निपुणता के लिए प्रसिद्ध, एक प्राचीन पंजाबी जाति; पहलवान।

मल्लयुद्ध पुं. {सं.} कुश्ती।

मल्लार पुं. {सं. मल्लार = लीला या खेल} वर्षा ऋतु के समय गाया जानेवाला एक प्रसिद्ध राग।

मल्लारी *स्त्री.* {सं. मल्लार} ओडव जाति की एक रागिनी जो वर्षा ऋतु में सवेरे के समय गाई जाती है।

मल्लाह पुं. {अ.} {*स्त्री.* मल्लाहिन} एक जाति जिसका पेशा मछली मारना और नाव खेना है, केवट, माँझी।

मल्लाही *वि.* {अ. मल्लाह} मल्लाह-संबंधी, मल्लाह का; *स्त्री.* मल्लाह का कार्य, पद या भाव; एक विशेष प्रकार की तैराकी, तैरने का प्रकार; नाव का भाड़ा।

मल्लिक पुं. {सं.} भूस्वामी की उपाधि, माघ का मास।

मल्लिका *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार का बेला, मोतिया; सुमुखी नामक छंद का दूसरा नाम।

मल्लिकाक्ष पुं. {सं.} एक हंस।

मल्लिनी *स्त्री.* {सं.} माधवी लता।

मल्लु पुं. {सं.} भालू, बंदर।

मल्लू पुं. {हिं.} बंदर।

मल्व पुं. {सं.} शत्रु।

मल्हाना *स.* {सं. मल्ह = गौ का स्तन} चुमकारना, पुचकारना।

मल्हारना *स.* मल्हाना।

मवाद पुं. {अ.} (फोड़े में की) पीब; मल; गंदगी।

मवास पुं. {सं.} {*स्त्री.* अल्पा. मवासी} दुर्ग, गढ़, किला (विशेषतः पहाड़ के ऊपर बना हुआ); शरण या रक्षा का स्थान।

मवासी *स्त्री.* {हिं. मवास} छोटा गढ़; पुं. गढ़पति, किलेदार; सरदार।

मवेशी पुं. {अ. मवाशी} चौपाया।

मवेशीखाना पुं. {फा.} पशुशाला।

मशक[1] पुं. {सं.} मच्छर; शरीर के ऊपर का मसा।

मशक[2] *स्त्री.* {अ.} चमड़े का बना हुआ वह थैला जिसमें भिश्ती पानी भरकर लाते हैं, परवाल।

मशक्कत *स्त्री.* {अ. मशक़्क़त} परिश्रम, मेहनत।

मशक्कती *वि.* {अ.} मेहनती।

मशरू पुं. {अ. मशरूअ} एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।

मशहूर *वि.* {अ. मश्हूर} {*भाव.* मशहूरी} प्रसिद्ध, विख्यात।

मशाल *स्त्री.* {अ. मश्आल} डंडे में चीथड़े लपेटकर बनाई हुई जलाने की बहुत मोटी बत्ती जो हाथ में लेकर चलते हैं।

मशालची पुं. {अ. मश्आल + फा. ची} {*स्त्री.* मशालचिन} जलती हुई मशाल हाथ में लेकर चलनेवाला।

मशीन *स्त्री.* {अं. मेशीन} पेचों और पुरजों से बना हुआ वह यंत्र जिससे काम जल्दी होता हो, कल, यंत्र।

मशीनगन *स्त्री.* {अं.} वह मशीन या यंत्र जो बंदूक की तरह पर बहुत जल्दी-जल्दी गोलियाँ चलाता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मशीनी *वि.* {अं. मशीन} मशीन-संबंधी; मशीन द्वारा होनेवाला।

मश्क *पुं.* {अ.} अभ्यास; *स्त्री.* मशक (पानी भरने की)।

मष *पुं.* = यज्ञ।

मषि *स्त्री.* {सं.} काजल, सुरमा, स्याही।

मष्ट *वि.* {सं. मष्ठ} मौन, चुप।

मस *स्त्री.* {सं. श्मश्रु} मूँछें निकलने से पहले उसके स्थान पर होनेवाली रोमावली; *स्त्री.* मसि।

मसक *पुं.* {सं.} मशक, मच्छड़।

मसकत *स्त्री.* {अ. मशक्कत} परिश्रम, मेहनत।
उदा. काहे कौ हर बिरद बुलावत, बिनु मसकत को तार्‌यो–सूर।

मसकना *अ, स.* {अनु.} इस प्रकार दबना या दबाना कि टूट या फट जाए; *अ.* मसोसना।

मसकला *पुं.* {अ.} (हँसिया के आकार का) सिकलीगरों का वह औजार जिससे वे धातुएँ चमकाते हैं।

मसकली *स्त्री.* {हिं.} सिकली करने का यंत्र।

मसका *पुं.* {फा. मस्क:} नवनीत, मक्खन।

मसकीन *वि.* मिसकीन।

मसखरा *पुं.* {अ. मस्खर:} परिहास करनेवाला, हँसोड़, दिल्लगीबाज।

मसखरी *स्त्री.* {हिं. मसखरा + ई} दिल्लगी, हँसी, मजाक, परिहास।

मसजिद *स्त्री.* {फा. मस्जिद} मुसलमानों का एकत्र होकर सामूहिक रूप से नमाज पढ़ने का भवन।

मसड़ी *स्त्री.* {हिं.} चिड़िया।

मसनद *स्त्री.* {अ. मस्नद} बड़ा तकिया, गावतकिया।

मसमुंद *क्रि. वि.* {हिं. मस = मूँदना} ठेलमठेल या धक्कमधक्का करते हुए।

मसयारा *पुं.* {हिं. मशाल} मशाल; मशालची।

मसरना *स.* = मसलना।

मसरफ *पुं.* {अ. मस्रिफ़} व्यवहार, उपयोग।

मसल *स्त्री.* {अ.} कहावत, लोकोक्ति।

मसलति *स्त्री.* मसलहत।

मसलन[1] *क्रि. वि.* {अ.} मिसाल के तौर पर, उदाहरणार्थ, जैसे।

मसलन[2] *स्त्री.* {हिं. मलना} मसलने की क्रिया या भाव।

मसलना *स.* {हिं. मलना} {*भाव.* मसलन} उँगलियों से दबाते हुए रगड़ना, मलना; जोर से दबाना।

मसलहत *स्त्री.* {अ. मस्लहत} रहस्य; ऐसा गुप्त और हितकर तत्व जो सहसा समझ में न आ सके, छिपा हुआ शुभ हेतु।

मसला *पुं.* {अ. मसल} कहावत, लोकोक्ति; जटिल और विचारणीय विषय, समस्या।

मसवई *स्त्री.* {हिं.} बबूल या अन्य वृक्ष का गोंद।

मसवारा *पुं.* {हिं.} प्रसूता स्त्री का प्रसव के एक माह बाद।

मसवासी *पुं.* {हिं.} वह साधु जो एक मास से अधिक एक स्थाान में न रहे, वह स्त्री जो एक मास से अधिक किसी पुरुष के पास न रहे, गणिका।

मसविदा *पुं.* मसौदा।

मसहरी *स्त्री.* {सं. मशहरी} मच्छरों से बचने के लिए पलँग के ऊपर और चारों ओर लगाने का जालीदार कपड़ा; वह पलँग जिसमें उक्त कपड़ा लगा हो।

मसहार *पुं.* मांसाहारी।

मसा *पुं.* {सं. मांस-कील} काले रंग का उभरा हुआ मांस का वह दाना जो शरीर पर कहीं-कहीं निकलता है; बवासीर में निकलनेवाला मांस का दाना।

मसान *पुं.* {सं. श्मशान} शव जलाने का स्थान, मरघट।
मुहा. मसान जगाना = श्मशान पर बैठकर शव या किसी मंत्र की तांत्रिक सिद्धि करना।
भूत, पिशाच; युद्धक्षेत्र (क्व.)।

मसानिया *पुं.* {हिं. मसान} मसान पर रहनेवाला; डोम; *वि.* मसान-संबंधी, मसान का।

मसानी *स्त्री.* {सं. श्मशानी} डाकिनी, पिशाचिनी आदि।

मसार *पुं.* {सं.} नीलमणि, नीलम।

मसाल *स्त्री.* मशाल, मिसाल।

मसाला *पुं.* {फा. मस्अल:} साधारण सामग्री, उपकरण; किसी विशेष कार्य के लिए बनाया हुआ ओषधियों या रासायनिक द्रव्यों का मिश्रण अथवा उसका कोई अंश; भोजन को स्वादिष्ट बनानेवाले विशिष्ट पदार्थ, जैसे लौंग, मिर्च, जीरा, तेजपत्ता आदि; आतिशबाजी।

मसालेदानी *स्त्री.* वह ढक्कनदार डिब्बा जिसमें कई खाने होते हैं तथा जिसमें मसाले के काम आनेवाली चीजें रखी जाती हैं।

मसालेदार *वि.* {हिं. मसाला + फा. दार} जिसमें मसाला मिला या पड़ा हो।

मसि *स्त्री.* {सं.} स्याही, रोशनाई; काजल; कालिख।

मसिक *पुं.* {सं.} सर्प का बिल।

मसिपात्र *पुं.* {सं.} दावात।

मसियार *स्त्री.* मशाल।

मसियारा *पुं.* मशालची।

मसीत (द) *स्त्री.* मसजिद।

मसीना *पुं.* {देश.} मोटा अन्न, कदन्न।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chen[illegible] eGangotri

मसीह (हा) पुं. {अ.} {वि. मसीही} ईसाइयों के धर्मगुरु हजरत ईसा; वह जो मरे हुए को जिला सके (उर्दू कविताओं में प्रेमपात्र के लिए)।

मसीही *वि., पुं.* {अ. मसीह} ईसाई।

मसुर पुं. {सं.} मसूर।

मसू *क्रि. वि.* {हिं. मरू = मरकर} कठिनता से, मुश्किल से, जैसे-तैसे।

मसूड़ा पुं. {सं. श्मश्रु} मुँह के अंदर का वह अंग जिसमें दाँत उगे होते हैं।

मसूर पुं. {सं.} एक प्रकार की दाल।

मसूरा *स्त्री.* {सं.} वेश्या, रंडी, मसूर की बरी।

मसूरिका *स्त्री.* शीतला (रोग)।

मसूरी *स्त्री.* {सं.} मसुरि का, चेचक।

मसूसना *अ.* मसोराना।

मसृण *वि.* {सं.} ऐसा गाढ़ा तरल जिसमें चिकनापन और मुलयमियत हो (जैसे घी, चरबी, तेल आदि)।

मसेवरा पुं. {हिं. मांस} मांस के योग से बनी हुई भोजन-सामग्री।

मसोढ़ा पुं. {हिं.} सोना, चाँदी आदि गलाने की घरिया।

मसोस पुं. = अफसोस।

मसोसना पुं. {फा. अफ़्सोस} किसी मनोवेग को रोकना, जब्त करना; मन ही मन खेद या दुख करना, कुढ़ना; *स.* ऐंठना, मरोड़ना।

मसोसा पुं. {हिं. मसोसना} मन का दुख।

मसौदा पुं. {हिं. मसविदा} लेख का वह पूर्व रूप जिसमें काट-छाँट और सुधार किया जाने को हो, प्रालेख; युक्ति, तरकीब।

मस्करा पुं. मसखरा।

मस्कला पुं. मसकला।

मस्त *वि.* {सं. मत्त से फा.} {*भाव.* मस्ती} मतवाला, मदोन्मत्त; प्रसन्न और निश्चिंत, परम आनंदित; यौवन-मद से भरा हुआ।

मस्तक पुं. {सं.} मुंड, सिर, माथा।

मस्तमौला *वि.* {फा. मस्त + *अ.* मौला} जो बिना सोचे-समझे और मनमाने ढंग से काम करता हो, मनमौजी।

मस्ताना *वि.* {फा. मस्तानः} मस्तों का-सा; मस्त; *अ.* मस्त होना।

मस्तिष्क पुं. {सं.} मस्तक के अंदर का गूदा, भेजा, मगज; मस्तक में होनेवाली सोचने-समझने की शक्ति, मानसिक शक्ति, दिमाग, बुद्धि।

मस्तिष्कीय *वि.* {सं.} मस्तिष्क-संबंधी।

मस्ती *स्त्री.* {फा.} मस्त होने की क्रिया या भाव, मतवालापन; कुछ विशिष्ट पशुओं की कनपटी से बहनेवाला तरल स्राव, मद; कुछ वृक्षों, पत्थरों आदि में से होनेवाला स्राव, मद।

मस्तूरी *स्त्री.* {हिं.} धातु गलाने की भट्ठी।

मस्तूल पुं. {पुर्त.} बड़ी नावों के बीच का वह लट्ठा जिसमें पाल बँधते हैं।

मस्सा पुं. मसा।

महँ *क्रि. वि.* {सं. मध्य} मध्य।

महँई *वि.* {सं. महान्} महान, बड़ा।

महँगा *वि.* {सं. महार्घ} जिसका उचित से अधिक मूल्य हो; बहुमूल्य; जो बहुत अधिक परिश्रम या व्यय से अथवा बहुत कठिनता से प्राप्त हुआ हो, जैसे यह मंत्रित्व आपको बहुत महँगा पड़ा है।

महँगाई *स्त्री.* {हिं. महँगा} वह स्थिति जब वस्तुएँ अपेक्षाकृत महँगी हो गई हो।

महँगाई भत्ता पुं. महँगाई के कारण मिलनेवाला भत्ता।

महँगी *स्त्री.* = महँगाई।

महंत पुं. {सं. महत् = बड़ा} साधु समाज का प्रधान; मठाधीश।

महंती *स्त्री.* {हिं. महंत} महंत का भाव या पद।

महँदी *स्त्री.* {हिं.} मेंहदी।

महक *स्त्री.* {महमह से अनु.} गंध, बास।

महकना *अ.* {हिं. महक} गंध देना।

महकमा पुं. {अ. महकमः} व्यवस्था करनेवाला विभाग, सरिश्ता।

महकान *स्त्री.* महक।

महकाली *स्त्री.* {हिं.} पार्वती।

महकीला *वि.* {हिं. महक} महकनेवाला।

महज *क्रि. वि.* {अ. महज़} केवल, सिर्फ।

महजिद *स्त्री.* मसजिद।

महज्जन पुं. {सं.} महापुरुष।

महत् *वि.* {सं.} {*स्त्री.*} महान, बहुत बड़ा; पुं. ब्रह्म; महतत्व।

महत पुं. = महत्व।

महता पुं. {सं. महत्} गाँव का मुखिया, महतो, सरदार।

महताब *स्त्री.* {फा.} चाँदनी, चंद्रिका।

महताबी *स्त्री.* {फा.} नली के आकार की वह आतिशबाजी जिससे केवल रोशनी होती है; बाग के बीच का चबूतरा।

महतारी *स्त्री.* = माता।

महती *वि., स्त्री.* {सं.} बहुत बड़ी, महान।

महतु पुं. महत्व।

महतो पुं. {हिं. महता} कहार; प्रधान; सरदार; गाँव, समाज, मंडली आदि का मुखिया।

महत्कथ *वि.* {सं.} चापलूस।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्तत्त्व पुं. {सं.} सांख्य में प्रकृति का पहला विकार, बुद्धितत्व, जीवात्मा।

महत्तम *वि.* {सं.} सबसे बड़ा; पुं. सबसे बड़ा या ऊँचा वह अंक या परिमाण जो अंतिम सीमा के रूप में निश्चित या प्राप्त हो और जिससे आगे बढ़ने के लिए अवकाश या विधान न हो; किसी वस्तु का वह मान या मूल्य जिससे आगे उसका बढ़ना बंद हो जाता है और जिसमें केवल कमी या घटाव के लिए अवकाश रहता है (मैक्सीमम)।

महत्तर *वि.* {सं.} दो में से बड़ा या श्रेष्ठ, किसी से बड़ा या अच्छा।

महत्ता *स्त्री.* महत्व।

महत्त्व पुं. {सं.} महान का भाव; बड़प्पन, गुरुता; श्रेष्ठता, उत्तमता; वह गुण या तत्व जिससे किसी वस्तु की आपेक्षिक श्रेष्ठता, उपयोगिता या आदर घटता या बढ़ता हो (इम्पॉरटेंस)।

महत्त्वपूर्ण *वि.* {सं.} जिसमें कुछ विशेष महत्व हो, जिसकी उपयोगिता आदि मान्य हो और जिसका दूसरी बातों पर प्रभाव पड़ता हो (इम्पॉरटेंट, मोटिरियल)।

महत्त्वाकांक्षी *वि.* उच्चाकांक्षी।

महदाशा *स्त्री.* {सं.} ऊँची आकांक्षा।

महद्भय पुं. {सं.} अधिक भय या डर।

महना *स.* मथना।

महनीय *वि.* {सं.} {*भाव.* महनीयता} मान्य, पूज्य; महत्, महान।

महनु पुं. {हिं.} नाश करनेवाला।

महफिल *स्त्री.* {*अ.* महफ़िल} सभा, जलसा; नाच-गाने का स्थान या जलसा।

महबूब पुं. {*अ.* महबूब} {*स्त्री.* महबूबा} प्रिय, प्रेमपात्र; दोस्त मित्र।

महमंत *वि.* मदमत्त; मस्त।

महमद पुं. मुहम्मद।

महमदी *वि.*, पुं. {हिं.} मुसलमान, मुहम्मद के मत का अनुयायी।

महमह *क्रि. वि.* {अनु.} सुगंधि या खुशबू के साथ।

महमहा *वि.* {हिं. महक} सुगंधित।

महमहाना *अ.* {हिं. महमह} महक या गंध देना, गमकना।

महमानी *स्त्री.* {हिं.} पहुनई।

महमाय *स्त्री.* {हिं.} पार्वती।

महर[1] पुं. {सं. महत्} {*स्त्री.* महरि} बड़े आदमियों के लिए व्यवहृत एक आदरसूचक शब्द (ब्रज); एक प्रकार का पक्षी; महरा।

महर[2] *स्त्री.* {*अ.* मेहर} कृपा, दया।

महर[3] पुं. {*अ.*} मुसलमानों में वह धन जो विवाह के समय वर पक्ष से वधू को मिलता है।

महरम पुं. {*अ.* महम} मुसलमानों के वह पुरुष जिससे स्त्रियों के लिए परदा करने का विधान न हो; इतना घनिष्ठ परिचित जो सभी निज और भेद की बातें जानता हो, परम आत्मीय; *स्त्री.* अँगिया, चोली; अंगिया की कटोरी।

महरा पुं. {हिं. महता} {*स्त्री.* महरी, *भाव.* महराई} कहार; मुखिया; नौकर-चाकरों का सरदार।

महराई *स्त्री.* {हिं. महर} महर होने की अवस्था या भाव।

महराना पुं. {हिं. महर} महरों के रहने का स्थान।

महरि, महरी *स्त्री.* {सं. महिला} (ब्रज में) प्रतिष्ठित स्त्रियों के लिए के आदरसूचक शब्द, मालकिन, घरवाली।

महरूम *वि.* {*अ.* महम} जिसे उसका वांछित या प्राप्य न मिला हो, वंचित।

महरेटा पुं. = श्रीकृष्ण।

महरेटी *स्त्री.* = राधिका।

महर्ष *वि.* महार्घ।

महर्षि पुं. {सं. महा + ऋषि} बहुत बड़ा या श्रेष्ठ ऋषि।

महल पुं. {*अ.*} राजाओं आदि के रहने का बड़ा और बढ़िया मकान, प्रासाद; रनिवास, अंत:पुर; पत्नी।

महलती पुं. {*अ.* महल} {*स्त्री.* महलतिन} मकान का वह मालिक जो स्वयं उसमें रहकर उसके कुछ अंशों में किराएदार भी रखता हो।

महल्ल पुं. {सं.} वृद्ध मनुष्य, खोजा।

महल्ला पुं. {*अ.* महल्ल:} शहर का वह विभाग जिसमें बहुत से मकान हों।

महसूल पुं. {*अ.* महसूल} वह धन जो राज्य या सरकार किसी विशेष कार्य के लिए ले, कर (टैक्स); भाड़ा, किराया; जमीन की लगान (पुरानी हिन्दी)।

महसूली *वि.* {हिं. महसूल} जिसपर महसूल लगता हो।

महसूस *वि.* {*अ.* महसूस} जिसका ज्ञान या अनुभव हो, अनुभूत।

महाँ *क्रि. वि.* महँ।

महा[1] *वि.* {सं.} बहुत अधिक; सर्वश्रेष्ठ, सबसे बड़ा; बहुत बड़ा।

महा[2] पुं. {हिं. महना = मथना} दही मथने पर बचा हुआ तरल पदार्थ, मट्ठा।

महाउत पुं. महावत।

महाउर पुं. {हिं.} महावर।

महाकच्छ पुं. {सं.} समुद्र, वरुण।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाकरुण *वि.* {सं.} अति दयालु।
महाकांत *वि.* {सं.} बहुत सुंदर।
महाकाय *वि.* {सं.} जिसका शरीर बहुत बड़ा हो, बड़े डील-डौलवाला।
महाकाल *पुं.* {सं.} महादेव।
महाकाली *स्त्री.* {सं.} दुर्गा।
महाकाव्य *पुं.* {सं.} साहित्यशास्त्र के अनुसार वह सर्गबद्ध काव्यग्रंथ जिसमें प्रायः सभी रसों, ऋतुओं और प्राकृतिक दृश्यों आदि का वर्णन हो; बहुत बड़ा और सर्वश्रेष्ठ काव्य (एपिक)।
महाकुमार *पुं.* {सं.} युवराज।
महाक्रम *पुं.* {सं.} विष्णु, महादेव।
महाखात *पुं.* {सं.} लंबा-चौड़ा गड्ढा।
महागति *स्त्री.* {सं.} परम पद की प्राप्ति, मोक्ष।
महागद *पुं.* {सं.} कोई बड़ा रोग।
महागौरी *स्त्री.* {सं.} दुर्गा देवी।
महाघोर *वि.* {सं.} अति भयानक।
महाचित्ता *स्त्री.* {सं.} अप्सरा का नाम।
महाजन *पुं.* {सं.} श्रेष्ठ पुरुष; धनवान; रुपए-पैसे का लेन-देन करनेवाला, कोठीवाली; ऋण देनेवाला (क्रेडिटर)।
महाजनी *स्त्री.* {हिं. महाजन + ई (प्रत्य.)} रुपए के लेन-देन का व्यवसाय, कोठी वाला; महाजनों के व्यवहार की एक लिपि, मुड़िया।
महातम *पुं.* = माहात्म्य।
महात्मा *पुं.* {सं. महात्मन्} बहुत श्रेष्ठ, उच्च विचारोंवाला और सदाचारी पुरुष; बहुत बड़ा साधु या महापुरुष।
महादान *पुं.* {सं.} ग्रहण आदि के समय किया जानेवाला दान।
महादेव *पुं.* {सं.} शंकर, शिव।
महादेवी *स्त्री.* {सं.} दुर्गा; राजा की प्रधान रानी या महिषी, पटरानी।
महादेश *पुं.* {सं.} पृथ्वी के स्थल भाग के पाँच बड़े विभागों में से कोई एक, जिसमें अनेक देश होते हैं जैसे एशिया (कांटिनेंट)।
महादेशीय *वि.* {सं.} महादेश-संबंधी।
महाद्वीप *पुं.* {सं.} बड़ा द्वीप, महादेश।
महान *वि.* {सं. महान्} बहुत बड़ा।
महानगर *पुं.* {सं.} किसी प्रदेश का प्रमुख नगर।
महानगरी *स्त्री.* महानगर; *वि.* महानगर-संबंधी।
महानट *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।
महानता *स्त्री.* महत्व या महत्ता।
महानस *पुं.* {सं.} रसोईघर।
महानाटक *पुं.* {सं.} दस अंकोंवाला एक प्रकार का बहुत बड़ा नाटक।
महानिद्रा *स्त्री.* {सं.} मृत्यु।
महानियम *पुं.* {सं.} विष्णु।
महानिरय *पुं.* {सं.} एक नरक।
महानिर्वाण *पुं.* {सं.} बौद्धों के अनुसार वह उच्चकोटि का निर्वाण या परिनिर्वाण, जिससे अधिकारी अर्हत् या बुद्ध होते हैं।
महानिशा *स्त्री.* {सं.} आधी रात; कल्प के अंत में होनेवाली प्रलय की रात।
महानुभाव *पुं.* {सं.} बड़ा और आदरणीय व्यक्ति।
महानेत्र *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।
महापत्र *पुं.* {सं.} सागौन का वृक्ष।
महापातक *पुं.* {सं.} {*वि.* महापातकी} ये पाँच बहुत बड़े पाप ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु की पत्नी से व्यभिचार और इन पाप करनेवालों का साथ।
महापातर *पुं.* = महापात्र।
महापात्र *पुं.* {सं.} मृतक कर्म का दान लेनेवाला ब्राह्मण, महाब्राह्मण।
महापुरुष *पुं.* {सं.} श्रेष्ठ पुरुष।
महापूत *वि.* {सं.} अति पवित्र।
महापौर *पुं.* {सं.} नगरपालिका का प्रधान, नगर-प्रमुख।
महाप्रभु *पुं.* {सं.} एक आदरसूचक पदवी जिसका व्यवहार वल्लभाचार्य जी तथा बंगाल के प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य चैतन्य के लिए होता है।
महाप्रलय *पुं.* {सं.} वह प्रलय जिसमें सारी सृष्टि का विनाश हो जाता है।
महाप्रसाद *पुं.* {सं.} विष्णु का नैवेद्य, मांस।
महाप्रसूत *पुं.* {सं.} बड़ी संख्या।
महाप्रशासक *पुं.* {सं.} वह बड़ा प्रशासक जो पद, मर्यादा आदि में साधारण प्रशासकों से बहुत उच्च होता है (ऐडमिनिस्ट्रेटर जनरल)।
महाप्रसाद *पुं.* {सं.} जगन्नाथ जी पर चढ़ाया हुआ भात; मांस (व्यंग्य)।
महाप्रस्थान *पुं.* {सं.} मृत्यु की इच्छा से हिमालय की ओर जाना; मृत्यु।
महाप्राज्ञ *वि.* {सं.} बहुत बड़ा विद्वान।
महाप्राण *पुं.* {सं.} कोई ऐसा वर्ण जिसके उच्चारण के समय अंत में 'ह' भी होता हो (एस्पिरेटेड); नागरी वर्णमाला में प्रत्येक वर्ग के दूसरे तथा चौथे अक्षर, जैसे ख, घ, छ, झ आदि।
महाफल *पुं.* {सं.} बेल का वृक्ष, बड़ा फल।
महाबंध *पुं.* {सं.} भोग की एक क्रिया।
महाबलाधिकृत *पुं.* {सं.} गुप्तकालीन भारत में साम्राज्य का वह सर्वप्रधान अधिकारी जिसके अधीन सारी सेना होती थी और जो सैनिक राजमंत्री होता था।
महाब्राह्मण *पुं.* महापात्र।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभट पुं. {सं.} बहुत बड़ा योद्धा।
महाभाग *वि.* {सं.} भाग्यवान।
महाभागी *वि.* {सं.} भाग्यवान्।
महाभार पुं. {सं.} भारी बोझा।
महाभारत पुं. {सं.} वेदव्यास रचित वह परम प्रसिद्ध संस्कृत महाकाव्य जिसमें कौरवों और पाण्डवों के प्रसिद्ध युद्ध का वर्णन है; कौरवों और पाण्डवों का प्रसिद्ध युद्ध; बहुत बड़ा युद्ध।
महाभियोग पुं. {सं.} वह अभियोग जो बहुत बड़े अधिकारियों (राष्ट्रपति, महाप्रशासक आदि) पर कोई बहुत अनुचित या हानिकारक काम करने पर चलता है (इम्पीचमेंट)।
महाभीत *वि.* {सं.} बहुत डरपोक।
महाभीरु *वि.* {सं.} अति डरपोक।
महाभूमि *स्त्री.* {सं.} (प्राचीन भारत में) वह भूमि जिसपर किसी व्यक्ति विशेष का अधिकार न हो और जो जनसाधारण के काम आती हो (पब्लिक प्लेस)।
महाभैरव पुं. {सं.} शिव।
महाभोग *स्त्री.* {सं.} दुर्गा देवी।
महाभ्र पुं. {सं.} घन भेघ, गहरी घटा।
महामंत्र पुं. {सं.} बीजमंत्र, इष्टमंत्र।
महामंत्री (त्रिन्) पुं. {सं.} किसी राज्य का वह मंत्री जो और सब मंत्रियों में प्रधान होता है, प्रधानमंत्री (प्राइम मिनिस्टर)।
महामति *वि.* {सं.} बड़ा बुद्धिमान।
महामना *वि.* {सं. महामनस्} बहुत उच्च और उदार मनवाला, महानुभाव, जैसे महामना मालवीय जी।
महामहिम *वि.* {सं.} जिसकी महिमा बहुत अधिक हो, बहुत बड़ी महिमावाला (प्रायः बहुत बड़े-बड़े राजाओं आदि के लिए प्रयुक्त) जैसे महामहिम राज्यपाल।
महामांस पुं. {सं.} गाय या मनुष्य का मांस (परम त्याज्य)।
महामाई *स्त्री.* दुर्गा; काली।
महामात्य पुं. महामंत्री।
महामानव पुं. {सं.} महान गुणों से युक्त व्यक्ति, महापुरुष।
महामानी *वि.* {सं.} बहुत घमंडी।
महामाया *स्त्री.* {सं.} प्रकृति; दुर्गा; गंगा।
महामारी *स्त्री.* {सं. महा + हिं. मारी} वह संक्रामक भीषण रोग जिससे कुछ दिनों तक या बहुत दिनों तक बहुत-से लोग एक साथ या जल्दी मरें, वबा, मरी, जैसे प्लेग, हैजा आदि।
महामार्ग पुं. {सं.} बड़े-बड़े नगरों को जोड़नेवाला मार्ग (हाइवे)।
महामृत्यु पुं. {सं.} शिव, यम।
महायज्ञ पुं. {सं.} धर्मशास्त्र विहित वे कर्म या यज्ञ जिनके नित्य करने का विधान है और जो पाँच हैं, यथा ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ और नृयज्ञ।
महायात्रा *स्त्री.* {सं.} मृत्यु।
महायान पुं. {सं.} बौद्धों के तीन प्रधान संप्रदायों में से एक।
महायुग पुं. {सं.} सत्य, त्रेता, द्वापर तथा कलि—इन चारों युगों का समूह।
महायुद्ध पुं. {सं.} वह बहुत बड़ा युद्ध जिसमें बहुत से बड़े-बड़े देश या राष्ट्र सम्मिलित हों।
महारथ पुं. = महारथी।
महारथी पुं. {सं. महारथिन्} प्राचीन भारत में, वह बहुत बड़ा योद्धा जिसके अधीन अनेक रथी योद्धा रहते थे।
महाराज पुं. {सं.} {*स्त्री.* महारानी} बहुत बड़ा राजा; ब्राह्मण, गुरु आदि के लिए आदरसूचक संबोधन।
महाराजाधिराज पुं. {सं.} अनेक राजाओं का प्रधान महाराज।
महाराज्ञी *स्त्री.* {सं.} महारानी।
महाराणा पुं. {सं. महा + हिं. राणा} मेवाड़ के राजाओं की उपाधि।
महारात्रि *स्त्री.* {सं.} महाप्रलय की रात्रि, दुर्गा, तांत्रिकों के अनुसार ठीक आधी रात बीतने पर दो मुहुर्तों का समय, आश्विन शुक्ला अष्टमी।
महारावल पुं. {हिं.} राजपुताना, जैसलपुर और डूंगरपुर के राजवंशों की उपाधि।
महारानी *स्त्री.* {सं. महाराज्ञी} महाराज की रानी; बहुत बड़े राज्य की रानी।
महाराष्ट्र पुं. {सं.} बहुत बड़ा राष्ट्र; दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश; इस प्रदेश के निवासी।
महाराष्ट्री *स्त्री.* मराठी।
महासजा *स्त्री.* {सं.} घोर पीड़ा या दुख।
महारूप पुं. {सं.} महादेव।
महारोग पुं. {सं.} असाध्य व्याधि।
महारौद्र पुं. {सं.} शिव, महादेव।
महारौद्री *स्त्री.* {सं.} दुर्गा देवी।
महार्घ *वि.* {सं.} {*भाव.* महार्घता} बहुत अधिक मूल्य का; महँगा।
महार्थक *वि.* {सं.} अधिक मूल्य का।
महाल पुं. {सं. महल का बहु.} मुहल्ला, टोला; जमीन के बंदोबस्त के विचार से कइ गाँवों का समूह।
महालक्ष्मी *स्त्री.* {सं.} लक्ष्मी देवी की एक मूर्ति।
महालय पुं. {सं.} पितृपक्ष।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Che... and eGangotri

महालया *स्त्री.* {सं.} आश्विन कृष्ण अमावस्या जो पितृपक्ष का अंतिम और पितृ-विसर्जन का दिन होता है।

महालोभ *पुं.* {सं.} काका, कौआ।

महाबोल *वि.* {सं.} अत्यंत चंचल।

महावकी *स्त्री.* {सं.} पूतना राक्षसी का एक नाम।

महावट *स्त्री.* {हिं. माह = माघ + वट} माघ के दिनों की झड़ी या वर्षा।

उदा. नैन चुवहिँ जस महवट (महावट) नीरू–**जायसी।**

महावत *पुं.* {सं. महामात्र} हाथी चलाने या हाँकनेवाला, हाथीवान।

महावन *पुं.* {सं.} घोर जंगल।

महावर *पुं.* {सं. महावर्ण?} वह लाल रंग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियाँ पैर रँगती हैं, यावक, जावक।

महावरी *स्त्री.* {हिं. महावर} महावर में भिगोई हुई रुई जिससे पैर में महावर लगाते हैं।

उदा. फिरि-फिरि, जानि महावरी, एड़ी मीड़ंति जाइ–**बिहारी।**

महावसु *वि.* {सं.} बड़ा धनी।

महावात *पुं.* {सं.} प्रचंड वायु।

महाविद्या *स्त्री.* {सं.} तंत्र में मानी हुई दस देवियाँ जिनके नाम इस प्रकार हैं–काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका; दुर्गा।

महाविद्यालय *पुं.* {सं.} वह बड़ा और ऊँचा विद्यालय जिसमें साधारण विद्यालय (स्कूल) के अतिरिक्त उससे ऊँची, कक्षाओं के विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती हो (कॉलेज)।

महाविराग *पुं.* {सं.} महादेव, विष्णु।

महाबीज *पुं.* {सं.} चिरौंजी का वृक्ष।

महावीर *पुं.* {सं.} हनुमान जी; चौबीसवें और अंतिम जैन तीर्थंकर; *वि.* बहुत बड़ा बहादुर।

महावीर चक्र *पुं.* {सं.} स्वतंत्र भारत में केंद्रीय सरकार की ओर से बहुत अधिक वीरतापूर्ण कार्य करने पर, सैनिकों को मिलनेवाला एक प्रकार का चक्र या पदक।

महाशठ *वि.* {सं.} अति दुष्ट, बड़ा धूर्त।

महाशक्ति *स्त्री.* {सं.} अत्यंत शक्तिशाली राष्ट्र।

महाशय *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* महाशया} महान या उच्च आशय और विचारोंवाला व्यक्ति, महानुभाव, सज्जन।

महाशालीन *वि.* {सं.} अति विनीत, बड़ा नम्र।

महाश्मशान *पुं.* {सं.} काशी नगरी।

महासंघ *पुं.* {सं.} वह संघ जिसे कई संघों ने मिलकर बनाया हो, संघों का संघ।

महासंधि-विग्रहक *पुं.* {सं.} गुप्तकालीन भारत का वह उच्च अधिकारी जिसे दूसरे राज्यों से संधि और विग्रह आदि करने का अधिकार होता था।

महाश्वेता *स्त्री.* {सं.} सरस्वती, दुर्गा।

महासचिव *पुं.* {सं.} सबसे बड़ा सचिव।

महासत्य *पुं.* {सं.} यमराज।

महासर्ज *पुं.* {सं.} कटहल का पेड़।

महासुर *पुं.* {सं.} एक दानव।

महास्वर *पुं.* {सं.} उच्च स्वर।

महाहि *पुं.* {सं.} वासुकि नाग।

महिं *क्रि. वि.* महँ।

महि *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी।

महिका *स्त्री.* {सं.} हिम।

महिजा *स्त्री.* {सं.} सीताजी।

महिता *स्त्री.* {सं.} महत्व, महिमा।

महिदेव *पुं.* {सं.} ब्राह्मण।

महिधर *पुं.* {सं.} पर्वत; शेषनाग।

महिनंदिनी *स्त्री.* {सं.} जानकी।

महिपाल *पुं.* महीपाल।

महिमा *स्त्री.* {सं. महिमन्} महत्ता, बड़ाई; प्रभाव, प्रताप; आठ सिद्धियों में से एक, जिससे मनुष्य बहुत बड़ा रूप धारण कर सकता है।

महिमावान् *वि.* {सं.} महिमा या गौरववाला।

महियाँ *क्रि. वि.* {सं. मध्य} में, बीच में।

महियाउर *पुं.* {हिं. मही = मठा + चावल} मठे में पकाया हुआ चावल।

महिला *स्त्री.* {सं.} भले घर की स्त्री।

महिष *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* महिषी} भैंसा; शास्त्रानुसार अभिषिक्त राजा।

महिषाकर *वि.* {सं. महिष + आकार} भैंस के आकार का, बहुत बड़ा।

महिषी *स्त्री.* {सं.} भैंस; रानी।

महिसुता *स्त्री.* {सं.} सीताजी।

महिसुर *पुं.* = ब्राह्मण।

मही *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी; नदी।

महीतल *पुं.* {सं.} पृथ्वी, संसार।

महीन *वि.* {सं. महा + झन} थोड़ी मोटाई या पतले दलवाला, पतला, मोटा का उलटा; बारीक, झीना; कोमल, धीमा (स्वर)।

महीनकार *पुं.* {हिं. महीन + कार (प्रत्य.)} {*भाव.* महीनकारी} कला-संबंधी बहुत ही महीन काम करनेवाला।

महीना *पुं.* {सं. मास} वर्ष का एक प्रसिद्ध विभाग जो प्रायः तीस दिनों का होता है; मासिक वेतन; स्त्रियों का मासिक धर्म।

महीप, महीपति *पुं.* {सं.} राजा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीयसी *वि., स्त्री.* {सं.} महान, श्रेष्ठ।
महीयान *वि.* {सं.} विशाल; श्रेष्ठ।
महीर *स्त्री.* {हिं. मठा + खीर} मठे में पकाया हुआ चावल; तपाए हुए मक्खन की तलछट।
महीरुह *पुं.* {सं.} पेड़, वृक्ष।
महीसुर *पुं.* {सं.} ब्राह्मण।
महुँ *क्रि. वि.* महँ।
महुअ *वि.* {हिं. महुआ} महुए के रंग का।
महुअर *पुं.* {सं. मधुकर} तूँबड़ी या तूँबी नाम का एक प्रकार का बाजा; एक प्रकार का इंद्रजाल का खेल जो तूँबड़ी बजाकर खेला जाता है।
महुआ *पुं.* {सं. मधूक} एक प्रकार का वृक्ष जिसके मीठे फलों से शराब बनती है।
महुकम *वि.* {अ. मुह्कम} पक्का, दृढ़।
महुर्छा *पुं.* महोत्सव।
महूख *पुं.* {सं. मधूक} महुआ; मुलेठी; शहद।
महूम *स्त्री.* मुहिम।
उदा. दिगविजय-काज महूम की, अरि-देस-देसिनी धूम की–**पद्माकर**।
महूरत *पुं.* मुहूर्त।
महूष *पुं.* मधूख।
महेंद्र *पुं.* {सं.} विष्णु; इंद्र।
महेरा *पुं.* {हिं. महेर या मही} एक प्रकार का व्यंजन।
महेरी *स्त्री.* {हिं. महना + मथना} दही मथकर मक्खन निकालनेवाली स्त्री; *स्त्री.* महरि।
महेल *पुं.* = महल।
महेला *वि.* {?} सुंदर।
महेलिका *स्त्री.* {सं.} महिला, नारी, बड़ी इलायची।
महेश *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।
महेशानी *स्त्री.* {सं. महेश} पार्वती।
महेश्वर *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* महेश्वरी} ईश्वर; शिव।
महेषु *पुं.* {सं.} बड़ा तीर, या बाण।
महेस *पुं.* = महेश।
महेसी *स्त्री.* {सं. महेश्वरी} पार्वती।
महेसुर *पुं.* = महेश्वर।
महोख *पुं.* {सं. मधोक} खैरे या लाल रंग का एक प्रकार का पक्षी।
महोगनी *पुं.* {अ.} एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत और टिकाऊ होती है।
महोच्च *वि.* {सं.} परम या बहुत अधिक उच्च, बहुत ऊँचा।
महोच्चार *पुं.* {सं.} ऊँचा या जोर का उच्चारण।
महोच्छ, महोच्छा *पुं.* महोत्सव।
महोत्सव *पुं.* {सं.} बहुत बड़ा उत्सव।
महोती *स्त्री.* {हिं.} महुवे का फल।
महोदधि *पुं.* {सं.} समुद्र।
महोदय *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* महोदया} बड़े आदमियों के लिए एक आदरसूचक संबोधन (सर); कान्यकुब्ज देश; स्वर्ग।
महोन्मद *वि.* {सं.} अति उन्मत्त।
महोबा *पुं.* {हिं.} उत्तरप्रदेश के हमीरपुर जिले का एक विभाग।
महोला *पुं.* {अ. मुहेल} हीला, बहाना; धोखा, छल।
महौघ *पुं.* {सं.} समुद्री तूफान।
महोषध *पुं.* {सं.} लहसुन, सोंठ, अतीस, पीपल।
मह्यो *पुं.* {हिं. मही} मठा, छाछ।
माँ *स्त्री.* {सं. अम्बा या माता} माता।
माँ *क्रि. वि.* {सं. मध्य में} मध्य।
माँखना *अ.* माखना।
माँग[1] *स्त्री.* {हिं. माँगना} माँगने की क्रिया या भाव; कोई चीज मँगाने विशेषत: खरीदने के समय किसी को यह लिखना कि अमुक चीज भेज दो (आर्डर); वह बात जिसके लिए किसी से याचना, प्रार्थना या आग्रह किया जाए (डिमांड); किसी बात की चाह या आवश्यकता होने की अवस्था या भाव, जैसे आजकल बाजार में कपड़े की माँग कम है।
माँग[2] *स्त्री.* {सं. मार्ग ?} सिर पर के बालों को कंघी से विभक्त करने पर उनके बीच में बनी हुई रेखा, सीमन्त।
मुहा. माँग-कोख से सुखी रहना = सौभाग्यवती और संतानवती रहना।
माँग-टीका *पुं.* {हिं. माँग + टीका} वह माँग फूल जिसमें मोतियों की लड़ी लगी रहती है।
माँगन *पुं.* मंगन (भिक्षुक)।
माँगना *स.* {सं. मार्गण = याचना} किसी से कुछ लेने के लिए इच्छा प्रकट करना, यह कहना कि यह करो या यह दो; प्रार्थना करना; चाहना।
माँगल-गीत *पुं.* {हिं.} विवाह आदि मंगल अवसरों पर गाया जानेवाला गीत।
माँग-पत्र *पुं.* {हिं. माँग + सं. पत्र} वह पत्र जिसमें किसी प्रकार की विशेषत: आर्थिक माँग की गई हो (रिट ऑफ डिमांड); वह पत्र जिसमें कोई चीज मँगाने विशेषत: दाम देकर मँगाने के समय किसी को यह लिखा जाता है कि अमुक चीजें भेज दो (आर्डर फॉर्म)।
माँग-फूल *पुं.* {हिं. माँग + फूल} स्त्रियों के सिर पर या माँग में पहनने का एक प्रकार का गहना।
मांगलिक *वि.* {सं.} {*भाव.* मांगलिकता} मंगल करनेवाला; *पुं.* नाटक में मंगल पाठ करनेवाला पात्र।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Che[illegible]nd eGangotri

मांगल्य *वि.* {सं.} शुभ, मंगलकारक; *पुं.* मंगल का भाव।

माँगा *पुं.* {हिं. माँगना} अपने व्यवहार के लिए किसी से कोई चीज कुछ समय के लिए माँगकर लेने की क्रिया या भाव, मँगनी, जैसे माँगे के कपड़े।

माँगी *स्त्री.* {हिं.} धुनकी की लकड़ी जिसपर ताँत कसी रहती है।

माँचना *अ.* मचना।

माँचा *पुं.* माचा, मचान, खाट, मंझा।

माँज *स्त्री.* गंगबरार।

माँजना *स.* {सं. मज्जन} मैल छुड़ाने, चिकना करने या मजबूत बनाने के लिए किसी वस्तु को रगड़ना; *स.* अभ्यास करना, जैसे लिखने या चित्र बनाने में हाथ माँजना।

माँजर *स्त्री.* पंजर; *पुं.* ठठरी।

माँजा *पुं.* {देश.} पहली वर्षा से जलाशयों में होनेवाला फेन जो मछलियों के लिए मादक माना गया है।

माँझ *क्रि. वि.* {सं. मध्य} मध्य; *पुं.* अंतर, फरक।

माँझा[1] *पुं.* {सं. मध्य} नदी में का टापू; पगड़ी पर पहनने का एक प्रकार का आभूषण; वृक्ष का तना; विवाह के अवसर पर पहनने के वर और कन्या के पीले कपड़े; करघे में का वह ढाँचा जो पाई को जमीन पर गिरने से रोके रहता है।

माँझा[2] *पुं.* {हिं. माँजना} वह मसाला जो पतंग की डोर पर, उसे कड़ा और मजबूत करने के लिए लगाया जाता है।

माँझिल *वि.* {सं. मध्य} बीच का।

माँझी *पुं.* {सं. मध्य} केवट, मल्लाह; मध्यस्थ।

माँट *पुं.* {सं. मट्टक} मटका, घड़ा; कोठा, अटारी।

माँठ *पुं.* {हिं.} मटका, कुंडा।

माँठी *स्त्री.* {देश.} एक प्रकार की चूड़ी; मट्ठी या मठरी नामक पकवान।

माँड *स्त्री.* {हिं. माँडना = सामने रखना} राजस्थान में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

माँड़ *पुं.* {सं. मंड} भात पकाने पर निकलनेवाला पानी, पीच; *स्त्री.* माँड।

माँडना *स.* {सं. मंडन} आय-व्यय आदि की रकमें बही में यथास्थान लिखना; किसी के सामने उपस्थित करना या रखना।

माँड़ना[1] *स.* {सं. मंडन} मलना; गूँधना; लेप करना, पोतना; सजाना; फैलाना, बिछाना, जैसे बिछौना माँड़ना, चौपड़ माँड़ना; पूजा, सेवा आदि करना। *उदा.* भू-देव सनाढ्यन के पद माँड़ो–**केशव**। जोरों से चलाना, मचाना, ठानना, जैसे रण माँड़ना, रार (झगड़ा), माँड़ना।

माँड़ना[2] *अ.* गमन करना, चलना।

माँड़ना[3] *स.* {सं. मृणन} खलिहान में रखे हुए फसल के डंठलों आदि में से अनाज के दाने अलग करना; रौंदना; कुचलना; सामने रखना, उपस्थित करना।

मांडलिक *पुं.* {सं.} किसी मंडल या प्रांत का शासक, किसी बड़े राजा को कर देनेवाला छोटा राजा।

माँड़ *पुं.* {सं. मंडप} विवाह आदि का मंडप; अतिथिशाला।

माँड़नी *स्त्री.* {हिं.} गोट।

माँडप *वि.* {सं.} मंडप-संबंधी।

मांडवी *स्त्री.* {सं.} राजा भरत की पत्नी।

माँड़ा[1] *पुं.* {सं. मंड} एक रोग जिसमें आँख की पुतली पर झिल्ली पड़ जाती है।

माँड़ा[2] *पुं.* {सं. मंडप} मंडप।

माँड़ा[3] *पुं.* {हिं. माँड़ना} एक प्रकार की रोटी।

माँड़ी *स्त्री.* {सं. मंड} कपड़े या सूत पर लगाया जानेवाला कलफ।

माँड़ौ *पुं.* मंडप, विवाह का मंडप।

माँड्यौ *पुं.* माँडव।

माँत (ता) *वि.* {सं. मत्त} {*क्रि.* मातना} मतमत्त, मस्त।

माँथ *पुं.* {हिं.} मस्तक, सिर।

माँद[1] *वि.* {सं. मंद} श्रीहीन, उदास फीका; अपेक्षाकृत, बुरा या हल्का; मात, पराजित।

माँद[2] *स्त्री.* {देश.} हिंसक जंतुओं के रहने का गड्ढा, बिल, गुफा।

माँदगी *स्त्री.* {फा.} थकावट; बीमारी।

माँदर *पुं.* {हिं.} मृदंग।

माँदा *वि.* {फा. माँदः} थका हुआ; रोगी, बीमार।

माँद्य *पुं.* {सं.} मंद का भाव, धीमा, मद्धिम या कम प्रबल होना, मंदता, जैसे अग्निमांद्य दृष्टिमांद्य।

माँपना *अ.* मापना।

माँयँ *क्रि. वि.* {सं. मध्य} मध्य।

मांस *पुं.* {सं.} शरीर में हड्डियों और चमड़े के बीच का मुलायम और लचीला पदार्थ; कुछ पशुओं के शरीर का उक्त अंश जो कुछ लोग खाते हैं, गोश्त।

मांसाशन *पुं.* {सं.} मांस-भक्षण, मांस खाना।

मांसाशी *पुं.* {सं.} राक्षस।

मांसतंतु *पुं.* {सं.} बहुत छोटे-छोटे खंडों या तंतुओं के रूप में वह तत्व जिससे पशुओं, मनुष्यों आदि के शरीर की खाल, पट्ठे, मांस आदि बने होते हैं (टिस्यू)।

मांसपेशी *स्त्री.* {सं.} शरीर के अंदर का मांसल भाग, पट्ठा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांसभक्षी (भोजी) पुं. मांसाहारी।

मांसल *वि.* {सं.} {*भाव.* मांसलता} मांस से भरा हुआ; मोटा-ताजा, पुष्ट।

मांसाहार पुं. {सं.} मांस का भक्षण।

मांसाहारी[1] पुं., *वि* {सं.} मांसभक्षी।

मांसाहारी[2] पुं. {सं. मांसाहारिन्} मांस खानेवाला, आमिषभोजी; दूसरे जीव-जंतुओं का मांस खाकर निर्वाह करनेवाला (कारनिवोरा)।

मांसिनी *स्त्री.* {सं.} जटामासी।

मांसोपजीवी पुं. {सं.} मांस-विक्रेता।

माँह (हि) *क्रि. वि.* {सं. मध्य} मध्य, बीच में।

मा *स्त्री.* {सं.} लक्ष्मी, माता।

माइक्रो *वि.* {अं.} सूक्ष्म।

माइक्रोस्कोप पुं. {अं.} सूक्ष्मदर्शी।

माई *स्त्री.* {सं. मातृ} माता, माँ।

पद. माई का लाल = बहुत उदार, योग्य या समर्थ व्यक्ति।

बूढ़ी या बड़ी स्त्री के लिए संबोधन।

माकंद पुं. {सं.} आम का वृक्ष।

माकपा *स्त्री.* मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी का संक्षिप्त रूप।

माकूल *वि.* {अ.} उचित, वाजिब; ठीक, अच्छा, बढ़िया; तर्क में परास्त, कायल।

माख पुं. {सं. मक्ष} अप्रसन्नता; क्षोभ; पछतावा; आवेश।

माखन पुं. = मक्खन।

माखनचोर पुं. {हिं.} श्रीकृष्ण।

माखना *अ.* {हिं. माख} अप्रसन्न या नाराज होना; मन में खेद या दुख करना।

माखा पुं. {हिं. मक्खी} मक्खी का नर; बड़ी मक्खी।

माखी *स्त्री.* = मक्खी।

माखो[1] *स्त्री.* {हिं. मक्खी} शहद की मक्खी (पश्चिम)।

माखो[2] *स्त्री.* {हिं. मुख ?} लोगों में फैलनेवाली चर्चा, जनरव, जनश्रुति।

मागध पुं. {सं.} एक प्राचीन जाति जिसका काम राजाओं की विरुदावली वर्णन करना था, भाट; मगध देश का निवासी।

मागधिक *वि.* {सं.} मगध देश का।

मागधी *स्त्री.* {सं.} मगध देश में प्रचलित पुरानी प्राकृत भाषा; विशेष-प्राचीन काल में कोसल (अवध), काशी, विदेह (बिहार और मगध) तथा अंग (दक्षिण बिहार) के निवासी 'प्राच्य' और उनकी भाषा 'प्राच्या' कहलाती थी; प्राच्या के दो विभाग थे–पश्चिम प्राच्या और पूर्व प्राच्या, इनमें से पूर्व प्राच्या को हम मागधी कह सकते हैं। अर्द्ध मागधी और प्राच्या।

माघ पुं. {सं.} {*वि.* माघी} पूस के बाद और फागुन से पहले का महीना।

माघवन *वि.* {सं.} इंद्र-संबंधी।

माच पुं. मचान।

माचना *अ.* = मचना।

माचल[1] *वि.* {हिं. मचलना} मचलनेवाला, हठी; मनचला; जान-बूझकर अनजान बना रहनेवाला, मचला।

उदा. महा माचल, मारिबे कि सकुच नहिंन न मोंहि–सूर।

माचल[2] पुं. {हिं. मचला} मचले होने या जानबूझकर अनजान बने रहने की अवस्था या भाव, मचलापन।

मुहा. माचल मारना = जान-बूझकर अनजान बने रहना, मचला होना।

माचा पुं. {सं. मंच} {*अल्पा.* माची} पलँग, खाट; मचान।

माची *स्त्री.* {हिं.} जूआ जो हल जोतते समय बैलों के कंधे पर रखा जाता है।

माछ *स्त्री.* = मछली।

माछर[1] पुं. मच्छड़।

माछर[2] पुं. {सं. मत्स्य} मछली।

माछी *स्त्री.* मक्खी; मछली।

माजरा पुं. {अ.} विवरण, वृत्तांत, हाल; घटना।

माजल पुं. {सं.} चातक पक्षी, चकवा।

माजून *स्त्री.* {अ.} औषध के रूप में बनी कोई मीठी चटनी, अवलेह।

माझा पुं. {हिं.} कमर।

माट पुं. {हिं. मटका} मटका, घड़ा।

माटा पुं. {हिं. मटा} लाल च्यूँटी।

माटी *स्त्री.* = मिट्टी।

माठ पुं. = मटका (घड़ा)।

माठा पुं. {हिं.} मठा, मट्ठा, कंजूस।

माड़ना *स.* {सं. मंडन} सजाना; धारण करना, पहनना; आदर करना; *स.* माँड़ना।

माढ़ा पुं. {सं. मंडप} {*स्त्री.* अल्पा. माढ़ी} घर के ऊपर की छत पर का चौबारा; मंच; मचिया।

माणिक (क्य) पुं. मानिक।

मातंग पुं. {सं.} हाथी; चांडाल।

मात *स्त्री.* {अ.} पराजय, हार (विशेषतः खेलों प्रतियोगिताओं आदि में होनेवाली); *क्रि. प्र.* देना; *वि.* पराजित, हारा हुआ; किसी की तुलना में फीका, मंद या हीन; *स्त्री.* माता।

मातदिल *वि.* {अ. मोतदिल} न बहुत गरम, न बहुत ठंडा; शीतोष्ण।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundati... Chennai and eGangotri

मातन *स्त्री.* {*अ.*} पराजय, हार; *वि.* हारा हुआ।

मातना *अ.* {सं. मत्त} मस्त या मत्त होना; बहुत नशे में होना;

मातबर *वि.* {*अ.* मोतबिर} {*भाव. मातबरी*} विश्वसनीय।

मातम *पुं.* {*अ.*} {*वि.* मातमी} किसी के शोक में होनेवाला रोना-पीटना।

मातमपुर्सी *स्त्री.* {फा.} मृतक के संबंधियों के पास जाकर शोक व्यक्त करना तथा उन्हें सांत्वना देना।

मातलि *पुं.* {सं.} इंद्र के सारथी का नाम।

मातहत *वि.* {*अ.*} {*भाव.* मातहती} किसी की अधीनता या देख-रेख में काम करनेवाला (सबार्डिनेट); *क्रि. वि.* अधीनता में, नीचे।

मातहतदार *पुं.* {*अ.* मातहत + फा. दार} जमीन का वह मालिक जो दूसरे बड़े मालिक के अधीन हो और जिसे उस बड़े मालिक से जमीन पर मालिकों का-सा अधिकार मिला हो (अंडर-प्रोप्राइटर)।

माता[1] *स्त्री.* {सं. मातृ} जन्म देनेवाली स्त्री, जननी, माँ; कोई आदरणीय स्त्री; गौ; शीतला या चेचक नामक रोग।

माता[2] *वि.* {सं. मत्त} {*स्त्री.* माती} मतवाला।

मातामह *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* मातामही} माता का पिता, नाना।

मातु *वि. स्त्री.* = माता।

मातुल *पुं.* = मामा।

मातुला *स्त्री.* {सं.} मातुल की पत्नी, मामी, भाँग, मटर।

मातुलानी *स्त्री.* {सं.} मामी।

मातुलेय *पुं.* {सं.} मातुल-पुत्र, ममेरा भाई।

मातुलेयी *स्त्री.* {सं.} ममेरी बहन।

मातुल्य *पुं.* {सं.} मामा का घर।

मातृ *स्त्री.* {सं.} माता, माँ; मातृक प्रणाली में वह गृहस्वामिनी जिससे वंश की परंपरा चलती हो और जिसके विचार से उत्तराधिकारी की व्यवस्था होती हो (मैट्रियार्क)।

मातृक *वि.* {सं.} माता-संबंधी, माता का; (व्यवहार, उत्तराधिकार आदि की परंपरागत प्रथा) जिसमें गृहस्वामिनी या माता का पक्ष प्रधान माना जाता हो, पिता के पक्ष का विचार न होता हो, पितृक का उलटा (मैट्रिआर्कल)।

मातृक प्रणाली *स्त्री.* {सं.} कुछ भारतीय जन-जातियों में प्रचलित वह प्रणाली या व्यवस्था जिसमें वंश-परंपरा, उत्तराधिकार आदि माता या गृहस्वामिनी के विचार से चलते हैं, पिता या गृहस्वामी के विचार से नहीं (मैट्रिआर्की)।

मातृका *स्त्री.* {सं.} माता, जननी; धाय; तांत्रिकों की ब्राह्मी आदि सात देवियाँ; एक प्रकार की देवियों का वर्ग जो 16 कही गई हैं और जिनके नाम हैं—गौरी, पद्मा, शचि, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृति, तुष्टि, माता और आत्मदेवा; वर्णमाला के वे अक्षर, जिनकी तांत्रिक लोग देवी के रूप में पूजा करते हैं; वह स्त्री जो लड़कियों, दाइयों आदि के कामों की देखरेख करती हो (मेट्रन)।

मातृकुल *पुं.* {सं.} माता अथवा नाना का कुल या वंश।

मातृतंत्र *पुं.* {सं.} वह शासन-प्रणाली जिसमें सत्ता माता से पुत्री को प्राप्त होती है।

मातृत्व *पुं.* {सं.} माता होने का भाव, माँपन (मैटर्निटी)।

मातृदेश *पुं.* {सं.} विदेश में जाकर बसे हुए लोगों की दृष्टि से उनके पूर्वजों का देश या मातृभूमि, जैसे बर्मा या मलाया में रहनेवाला भारतीयों का मातृदेश भारत है (मदर-कण्ट्री)।

मातृप्रधान *वि.* {सं.} (परिवार) जिसमें माता की प्रधानता हो।

मातृभाषा *स्त्री.* {सं.} वह भाषा जो बालक बचपन में माता के पास रहकर बोलना सीखता हो, मादरी जबान (मदर-टंग)।

मातृभूमि *स्त्री.* {सं.} वह भूमि या देश जिसमें किसी का जन्म हुआ हो (मदरलैंड)।

मातृहत्या *स्त्री.* {सं.} अपनी माता की हत्या करना, माँ को मार डालना (मैट्रिसाइड)।

मात्र *निपा.* {सं.} केवल, सिर्फ, भर।

मात्रक *पुं.* {सं.} वह निश्चित मात्रा या मान जिसे एक मानकर उसी के हिसाब से उस मेल की बाकी चीजों की गिनती या कल्पना की जाए, इकाई (यूनिट); एक ही प्रकार की बहुत सी वस्तुओं के योग से बने हुए किसी समूह में की प्रत्येक वस्तु; किसी का वह अंग जो कुछ दशाओं में स्वतंत्र रूप से भी अलग एक सत्ता के रूप में माना जाता है (यूनिट)।

मात्रा *पुं.* {सं.} किसी का उतना अंश या मान जितना एक बार में लिया या काम में लाया जाए, अथवा जितना एक इकाई के रूप में अलग हो, परिमाण, मिकदार (क्वाण्टिटी); एक बार खाने भर की औषध; लेन-देन या हिसाब-किताब के काम के लिए उतना धन जितना एक बार में दिया, लिया या लिखा जा सके, धनराशि, रकम (एमाउण्ट); स्वर की सूचक वह रेखा या चिह्न जो किसी अक्षर या वर्ण में लगता है, जैसे 'कि' में 'इ' अथवा 'है'

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Foundation Chennai and eGangotri

में 'ऐ'; पिंगल में अक्षरों, मात्राओं आदि की गिनती या उनके उच्चारण में लगनेवाले समय के विचार से कोई अक्षर या वर्ण या कोई दीर्घ मात्रा (इसमें ह्रस्व मात्राओं की गिनती नहीं होती) जैसे 'किमि' दो मात्राओं और 'माता' चार मात्राओं का शब्द है।

मात्रिक *वि.* {सं.} मात्रा-संबंधी, मात्रा का; जिसमें मात्राओं की गणना या विचार हो, जैसे मात्रिक छंद; *पुं.* वह छंद जिसके चरणों का विस्तार मात्राओं की गिनती के विचार से होता है वर्णों या अक्षरों के विचार से नहीं, जैसे रोला, दोहा आदि।

मात्सर्य *पुं.* {सं.} ईर्ष्या, डाह।

मात्सिकी *स्त्री.* मीनक्षेत्र।

माथ *पुं.* माथा।

माथना *स.* मथना।

माथा *पुं.* {सं. मस्तक} सिर का ऊपरी और सामनेवाला भाग, मस्तक;

मुहा. माथा टेकना = प्रणाम करना; *माथा ठनकना* = अनिष्ट की आशंका होना; *माथे चढ़ाना या धरना* = सादर स्वीकार करना, शिरोधार्य करना; *माथे पर बल पड़ना* = आकृति से क्रोध या असंतोष के लक्षण प्रकट होना।

किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग, जैसे नाव का माथा।

माथापच्ची *स्त्री.* {हिं. माथा + पचाना} ऐसा काम जिसमें मस्तिष्क की बहुत अधिक शक्ति व्यय हो, सिरपच्ची।

माथुर *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* माथुरानी} मथुरा का निवासी; कायस्थों की एक जाति।

माथुरक *पुं.* {सं.} मथुरावासी।

माथे *क्रि. वि.* मत्थे, माथे पर, सहारे, भरोसे।

माद *पुं.* मद।

मादक *वि.* {सं.} {*भाव.* मादकता} नशा लानेवाला, नशीला।

मादन *वि.* {सं.} मादक; मस्त करनेवाला; *पुं.* कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

मादनी *स्त्री.* {सं.} विजया, भाँग।

मादयिष्णु *वि.* {सं.} आनंद देनेवाला।

मादर[1] *स्त्री.* {फा.} माँ, माता।

मादर[2] *पुं.* {सं. मर्दल} एक प्रकार का ढोल (बाजा)।

मादरजाद *वि.* {फा.} जन्म का, पैदाइशी; सहोदर या सगा (भाई); बिल्कुल नंगा।

मादरिया *स्त्री.* {फा. मादर} माता, माँ।

मादरी *वि.* {फा.} मादर या माता-संबंधी, माता का, जैसे मादरी जबान।

मादा[1] *स्त्री.* {फा.} स्त्री जाति का जीव, 'नर' का उलटा।

मादा[2] *स्त्री.* {सं. मेद} चरबी।

मादिक *स्त्री.* = मदिरा।

मादिनी *स्त्री.* {सं.} विजया, भाँग।

माद्दा *पुं.* {*अ.*} मूल तत्व; योग्यता, सामर्थ्य; मवाद, पीब।

माद्री *स्त्री.* {सं.} राजा पाण्डव की दूसरी रानी।

माद्रेय *पुं.* {सं.} नकुल और सहदेव।

माधव *पुं.* {सं.} विष्णु; वसंत ऋतु; *वि.* {*स्त्री.* माधवी, माधविका} मधु-संबंधी; मस्त करनेवाला।

माधविका *स्त्री.* {सं.} सुगंधित फूलोंवाली एक लता; एक प्रकार की शराब; दुर्गा।

माधवी *स्त्री.* माधविका।

माधवीय *वि.* {सं.} वसंत-संबंधी।

माधुरई *स्त्री.* {सं. माधुरी} मधुरता।

माधुरी *स्त्री.* {सं.} मधुर का भाव, माधुर्य; मिठास; मिठाई; शोभा, सुंदरता; शराब।

माधुर्य *पुं.* {सं.} मधुर का भाव, मधुरता; सुंदरता; मिठास; साहित्य में काव्य का वह गुण जो पाठकों को बहुत भला लगता या भाता है।

माधैया (धो) *पुं.* माधव।

माध्य *वि.* {सं.} मध्य या बीच का; मध्यक।

माध्यम *वि.* {सं.} मध्य का, बीच का; *पुं.* कार्य सिद्ध करने का उपाय या साधन; वह भाषा जिसके द्वारा शिक्षा दी जाए; वह व्यक्ति जिसके द्वारा आत्माओं से संबंध स्थापित किया जाता है (मीडियम)।

माध्याकर्षण *पुं.* {सं.} पृथ्वी के भीतरी भाग का वह आकर्षण जो सब पदार्थों को अपनी ओर खींचता रहता है और जिसके कारण पदार्थ ऊपर से नीचे या पृथ्वी पर गिरते हैं (ग्रैविटेशन)।

माध्व *पुं.* {सं.} मध्वाचार्य का चलाया हुआ वैष्णवों का एक संप्रदाय।

माध्वक *पुं.* {सं.} महुवे की मदिरा।

माध्वी *स्त्री.* {सं.} मदिरा, शराब।

मान *पुं.* {सं.} भार, तौल, नाप, मूल्य आदि परिमाण, मिकदार; नापने या तौलने का साधन, पैमाना; सीमा, महत्ता आदि सूचित करनेवाले क्रमिक विभाग जैसे इस पद के वेतन के लिए 100-5-150 है (स्केल अंतिम दोनों अर्थों के लिए); घमंड, अभिमान।

मुहा. मान मथना = गर्व चूर्ण करना।

प्रतिष्ठा, सम्मान, इज्जत;

पद मान-महत = आदर सत्कार, प्रतिष्ठा, इज्जत।

अपने प्रिय व्यक्ति के किसी दोष या अपराध के कारण होनेवाला मन का वह विकार जो उसे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रिय की ओर से कुछ समय के लिए उदासीन कर देता है, रूठना (साहित्य); सामर्थ्य, शक्ति।

मानक पुं. {सं. मान} वह निश्चित या स्थिर किया हुआ सर्वमान्य, मान या माप जिसके अनुसार किसी प्रकार की योग्यता, श्रेष्ठता, गुण आदि का अनुमान या कल्पना की जाए, मानदंड (स्टैंडर्ड)।

मानकंद पुं. {हिं.} मीठा कंद, सालममिश्री।

मानकलह पुं. {सं.} मान के कारण कलह।

मानक्रीड़ा *स्त्री.* {सं.} एक छंद का नाम।

मानकच्युत *वि.* मानक से गिरा हुआ।

मानकीकरण पुं. एक प्रकार की बहुत-सी वस्तुओं का मानक स्थिर करना, जैसे बटखरों या गजों का मानकीकरण (स्टेंडर्डाज़ेश)।

मानगृह पुं. {सं.} कोपभवन।

मानचित्र पुं. {सं.} किसी देश, प्रांत आदि का ऐसा नक्शा जिसमें नदी, पहाड़, जंगल, नगर आदि यथास्थान बतलाए गए हों (मैप); किसी स्थान का ऐसा नक्शा जिसमें उसके भिन्न-भिन्न अंग दिखाए गए हों; किसी प्रकार की सूचना या जानकारी करानेवाला ऐसा नक्शा जिसमें उसकी मुख्य-मुख्य बातें, अंगों आदि का क्रमबद्ध और यथास्थान प्रदर्शन हो, जैसे जहाजियों का मानचित्र (जिसमें समुद्र के तट, चट्टानें, गहराई, मार्ग में पड़नेवाले स्थान आदि अंकित होते हैं) (चार्ट)।

मानज पुं. {सं.} क्रोध।

मानता *स्त्री.* मन्नत, मनोती।

मानदंड पुं. मानक।

मानद *वि.* {सं.} मान या प्रतिष्ठा देने या बढ़ानेवाला।

मानदेय पुं. {सं.} वह धन जो किसी व्यक्ति को कोई काम करने पर उसके बदले में सम्मानपूर्ण पारिश्रमिक के रूप में दिया जाता है (ऑनेरियम)।

मानधन *वि.* {सं.} जो अपने मान या इज्जत को ही धन (मुख्य) समझता हो।

मानना *अ.* {सं. मानन} सहमत होना, राजी होना; प्रसन्न होना, अनुकूल होना; कल्पना करना, फर्ज करना; ठीक रास्ते पर आना; किसी के प्रति आदर का भाव रखना; महत्व समझना; *स.* किसी की कही हुई बात, दी हुई आज्ञा या किए हुए आग्रह आदि का पालन करना, अंगीकार करना, स्वीकार करना; धार्मिक दृष्टि से किसी बात पर श्रद्धा या विश्वास करना; देवता आदि की भेंट या पूजा करने का संकल्प करना, मन्नत करना; सहन करना, सहना।

उदा. उपजात दोष नैन नहिं सूझत, रवि की किरन उलूक न मानत–सूर।

माननीय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* माननीया} जिसका मान या सम्मान करना उचित और आवश्यक हो, मान्य; पुं. एक उपाधि जो कुछ विशिष्ट और उच्च राजकीय अधिकारियों और राज्य के मंत्रियों आदि के नाम के पहले लगाई जाती है (ऑनरेबुल)।

मानमय *वि.* {सं.} गर्वयुक्त, घमंडी।

मान परेखा पुं. {?} आशा, भरोसा।

मानभंग पुं. {सं.} मानहानि।

मानभाव पुं. {सं.} चोचला।

मानमंदिर पुं. {सं.} कोपभवन; वेधशाला।

मानमरोर *स्त्री.* मनमुटाव।

मानमर्दन पुं. {सं.} मान नष्ट करने की क्रिया या भाव।

मानमर्दित *वि.* {सं.} जिसका मान नष्ट हो गया हो।

मानव पुं. {सं.} मनुष्य, आदमी।

मानवता *स्त्री.* {सं.} मनुष्य होने की अवस्था, गुण या भाव, मनुष्यत्व, आदमीयत; मनुष्य में प्राकृतिक अथवा स्वाभाविक रूप से होनेवाले गुणों, भावनाओं, विशेषताओं आदि का समूह; संसार के समस्त मनुष्यों का समूह या समाज, सारी मनुष्य जाति (ह्यूमैनिटी)।

मानवतावादी (दिन्) *वि.* {सं.} मानवता का पक्षधर।

मानवती *स्त्री.* {सं.} साहित्य में वह नायिका जो अपने प्रिय के अपराध करने पर मान करे।

मानवशास्त्र पुं. {सं.} मनुष्यों की उत्पत्ति, विकास, विभेद आदि का विवेचन करनेवाला शास्त्र (एंथ्रोपालोजी)।

मानवाकार *वि.* {सं.} मानव के आकार का।

मानवी *स्त्री.* {सं.} स्त्री, औरत; *वि.* मानवीय।

मानवीकरण पुं. {सं.} किसी पदार्थ को मानव के रूप में प्रस्तुत करने का कार्य।

मानवीय *वि.* {सं.} मानव-संबंधी।

मानवेंद्र पुं. {सं.} राजा; बहुत श्रेष्ठ पुरुष।

मानवोचित *वि.* {सं.} मानव के विचार से उचित।

मानस पुं. {सं.} {*भाव.* मानसता} मन, हृदय; मान-सरोवर; कामदेव; संकल्प-विकल्प; *वि.* मन से उत्पन्न, मनोभाव; विशुद्ध मनोबल से उत्पन्न, जैसे मानसपुत्र; मन में सोचा हुआ; मन-संबंधी, मन का; मन के द्वारा होनेवाला; *क्रि. वि.* मन के द्वारा।

मानसता *स्त्री.* {सं.} मानस या मन का भाव या स्थिति; मन की वह विशेष स्थिति या वृत्ति जिसके वंशवर्ती होकर मनुष्य कोई विचार या काम करता है (मेंटैलिटी)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Foundation Chennai and eGangotri

मानसपुत्र पुं. {सं.} पुराणों के अनुसार किसी देवता का वह पुत्र जो बिना शारीरिक संभोग के, केवल मनोबल या इच्छा मात्र से उत्पन्न हुआ हो, जैसे ब्रह्मा का मानसपुत्र।

मानसपूजा *स्त्री.* {सं.} किसी देवता की मन में पूजा करना।

मानसवेग पुं. {सं.} मन में का वेग, चिंता।

मानसरोवर पुं. {सं. मानस + सरोवर} हिमालय के उत्तर की एक प्रसिद्ध और परम पवित्र मानी जानेवाली बड़ी झील; हठ योग के अनुसार शरीर के अंदर का वह शून्य स्थान जो अमृत का कुंड माना गया है, अमृतकुंड।

मानस विज्ञान पुं. {सं.} वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि मनुष्य का मन किस प्रकार अपने सब काम करता है (मेंटल साइंस)।

मानसशास्त्र पुं. {सं.} मनोविज्ञान।

मानस संतान *स्त्री.* {सं.} कल्पना-लोक की कृति।

मानससंताप पुं. {सं.} आंतरिक दु:ख।

मानससर पुं. {सं.} मानसरोवर।

मानसिक *वि.* {सं.} मन-संबंधी, मन का या मन में होनेवाला (मेंटल)।

मानसिक अनुभाव पुं. अनुभाव या हाव।

मानसिक चिकित्सालय पुं. {सं.} वह चिकित्सालय जहाँ पागलपन या इसी प्रकार के दूसरे मानसिक रोगों की चिकित्सा होती है (मेंटल हॉस्पिटल)।

मानसिकता *स्त्री.* {सं.} किसी विशिष्ट दृष्टिकोण से सोचने की स्थिति।

मानसी *स्त्री.* {सं.} विद्या देवी का नाम; *वि.* मन से उत्पन्न।

मानहन *वि.* {सं.} अप्रतिष्ठा करनेवाला।

मानहानि *स्त्री.* {सं.} {*वि.* मानहानिकर} कोई ऐसा काम या बात जिससे किसी का मान या प्रतिष्ठा घटे, अपमान, बेइज्जती, हत्तक (डिफेमेशन)।

मानहुँ *योज.* मानो।

माना[1] *स.* {सं. मान} नापना या तौलना; जाँचना; *अ.* समाना या अमाना।

उदा. बिहवल छितिधर डिम्भ शिशु फूले बपुष न मात'—**केशव**।

माना[2] पुं. {इब.} कुछ बाँसों और वृक्षों में से निकलनेवाला एक प्रकार का निर्यास जो रेचक होता है।

मानार्थ *वि.* {सं.} सम्मान प्रदर्शित करने के लिए किया जानेवाला।

मानाशाही *स्त्री.* {मानाशाह (नाम)} पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

मानिंद *वि.* {फा.} समान, तुल्य।

मानिक पुं. {सं. माणिक्य} लाल या चुन्नी नामक रत्न।

मानित *वि.* {सं.} सम्मानित, मान्य।

मानिता *स्त्री.* {सं.} गौरव, सम्मान; अभिमान, घमंड।

मानिनी *वि.* {*स्त्री.*} गर्व करनेवाली; रूठनेवाली; *स्त्री.* मान करनेवाली नायिका। (साहित्य); सुमुखी नामक छंद का दूसरा नाम।

मानी *वि.* {सं. मानिन्} {*स्त्री.* मानिनी} मान या अभिमान करनेवाला, अहंकारी, घमंडी; जिसका मान या प्रतिष्ठा हो, सम्मानित।

उदा. ऐसौ सूरदास जन हरि को, सब अधमनि मैं मानी—**सूर**।

पुं. वह नायक जो अपराध करनेवाली नायिका के प्रति मान करे।

मानीटर पुं. {अं.} कक्षानायक।

मानुष पुं. {सं.} {*स्त्री.* मानुषी} मनुष्य।

मानुषिक *वि.* {सं.} मनुष्य का।

मानुषी *वि.* {सं. मानुषीय} मनुष्य-संबंधी, मनुष्य का।

मानुष्य पुं. {सं.} मनुष्य का धर्म या भाव, मनुष्यता; मनुष्य का शरीर।

मानुस पुं. = मनुष्य।

माने पुं. {*अ.* मानी} अर्थ, मतलब।

मानो *योज.* {हिं. मानना} मान लो कि यह ऐसा है या होगा, जैसे, गोया।

मान्य *वि.* {सं.} {*स्त्री.* मान्या, *भाव.* मान्यता} मानने योग्य; माननीय; जिसे नियमानुसार मान्यता प्राप्त हुई हो (रिकाग्नाइज़्ड)।

मान्या *वि.* {सं.} पूजनीय, आदर करने योग्य।

मान्यकरण पुं. {सं.} मान्य या स्वीकार करने की क्रिया या भाव।

मान्यता *स्त्री.* {सं.} मान्य होने की अवस्था या भाव; किसी बात या सिद्धांत के माने जाने की क्रिया या भाव, माना जाना (ऐडमिशन); किसी बड़ी संस्था द्वारा दूसरी छोटी संस्था के संबंध में यह मान लिया जाना कि वह प्रामाणिक है और उसके किए हुए कार्य ठीक समझे जाएँगे; वह अवस्था जिसमें उक्त प्रकार की बात मान ली जाती और उसके अनुसार छोटी संस्था को काम करने का अधिकार मिल जाता है (रिकाग्निशन, अंतिम दोनों अर्थों के लिए)।

माप *स्त्री.* {सं.} मापने की क्रिया, भाव या नाप (मेज़रमेंट); वह मान जिससे कोई चीज नापी जाए, मान; किसी मान से मापने या नापने पर निकलनेवाला फल (मेज़र)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मापक पुं. {सं.} वह जिससे कुछ नापा जाए; वह जो नापता हो।

मापदंड पुं. {सं.} कसौटी।

मापन पुं. {सं.} मापने या नापने की क्रिया या भाव (मेज़रमेंट)।

मापना[1] *स.* {सं. मापन} किसी वस्तु के विस्तार, घनत्व आदि का मान या परिमाण निकालना, नापना।

मापना[2] *अ.* {सं. मत्त} मतवाला होना।

मापित *वि.* {सं.} मापा हुआ।

माफ *वि.* {*अ.*} क्षमा किया हुआ, क्षमित।

माफिक *वि.* {*अ.* मुआफिक} अनुकूल; अनुसार, मुताबिक।

माफिया पुं. {अं.} अपराधशील वृत्तिवाले लोगों का संघटन।

माफी *स्त्री.* {*अ.*} क्षमा; वह भूमि जिसका कर या लगान सरकार या राज्य ने माफ कर दिया हो।

माफीदार पुं. {फा.} वह जिसको माफी की जमीन मिली हो (ग्रांटी)।

माम पुं. {सं. माम्} ममता, ममत्व; प्रेम; अहंकार; कोई काम करने की शक्ति या अधिकार।

मामक *वि.* {सं.} ममतायुक्त; *सर्व.* मेरा; पुं. मामा।

मामरी *स्त्री.* {हिं.} एक वृक्ष।

मामता *स्त्री.* ममता।

मामलत *स्त्री.* मामला।

मामला पुं. {*अ.* मुआमिलः} व्यापार, काम; लेन-देन, आदान-प्रदान आदि का कार्य, व्यवहार (ट्रेंजक्शन); झगड़ा, विवाद; व्यवहार या विवाद की बात या विषय; किसी प्रकार की नालिश या मुकदमा, अभियोग (केस); स्त्री।

मामलात *स्त्री. बहु.* = मामले।

मामा[1] पुं. {अनु.} {*स्त्री.* मामी} माता का भाई।

मामा[2] *स्त्री.* {फा.} माता, माँ; रोटी पकानेवाली स्त्री (मुसल.)।

मामी *स्त्री.* {सं. मा = नहीं} अपने दोष या भूल पर ध्यान न देना।

मुहा. मामी पीना = मुकर जाना।

मामूल पुं. {*अ.*} रीति, प्रथा।

मामूली *वि.* {*अ.*} नियमित; नियत; सामान्य, साधारण।

माय *स्त्री.* माता; माया।

मायक *वि.* {सं.} मायावी।

उदा. 'सायक सम मायक नयन, रँगे त्रिबिध रंग गात'–**बिहारी**।

मायका पुं. {सं. मातृ} स्त्री के विचार से उसके माता-पिता का घर, पीहर।

मायन पुं. {सं. मातृका + आनयन} विवाह से पहले मातृका-पूजन और पितृ-निमंत्रण का कृत्य।

माया[1] *स्त्री.* {सं.} लक्ष्मी; धन, संपत्ति; कोई ऐसा कार्य या बात जो वास्तविक या सत्य न रहने पर भी सत्य और ठीक जान पड़े, जैसे वेदांतियों के मत से यह संसार माया है; किसी प्रकार की मिथ्या धारणा या विचार; किसी मिथ्या बात या रूप को सत्य या वास्तविक समझने का तथ्य या भाव, भ्रम (इंयूजन, अंतिम तीनों अर्थों के लिए); अज्ञान; छल, धोखा; इंद्रजाल, जादू (मैजिक); प्रकृति; भगवान या देवता की लीला, शक्ति या प्रेरणा; ममता, मोह।

माया[2] *स्त्री.* {सं. ममता} किसी को अपना समझने की क्रिया या भाव; दया, अनुग्रह; *स्त्री.* माता।

मायाचार पुं. {सं.} मायावी आचरण।

मायापति पुं. {सं.} ईश्वर, परमेश्वर।

मायावर्ग पुं. {सं.} वह बड़ा वर्ग जिसमें कई छोटे-छोटे वर्ग हों और उन छोटे वर्गों में से हर एक में कुछ अंक या संख्याएँ ऐसे ढंग या क्रम से दी गई हों कि खड़े, बेड़े या तिरछे बलों से जोड़ने पर उन अंकों या संख्याओं का जोड़ या योगफल एक ही जाए (मैजिक स्क्वायर)।

मायावाद पुं. {सं.} यह सिद्धांत कि केवल ब्रह्म सत्य है और जगत मिथ्या है, भ्रम के कारण जगत् सत्य प्रतीत होता है।

मायाविनी *स्त्री.* {सं.} छल-कपट करनेवाली स्त्री, एक रागिनी।

मायावी पुं. {सं. मायाविन्} {*स्त्री.* मायाविनी} चालाक, धूर्त; धोखेबाज, छली; जादूगर; *वि.* माया, जादू आदि से संबंध रखनेवाले (मैजिकल)।

मायास्त्र पुं. {सं.} प्राचीन अस्त्र।

मायिक *वि.* {सं.} माया से बना हुआ, जादू का (मैजिकल); बनावटी; माया के कारण या द्वारा उत्पन्न होने के कारण सत्य या वास्तविक जान पड़नेवाला (इल्यूजरी); मायावी।

मायुराज *वि.* {सं.} कुबेर का पुत्र।

मायूर *वि.* {सं.} मोर से संबंधित।

मायूरिक पुं. {सं.} मोर को पकड़कर बेचनेवाला।

मार[1] पुं. {सं.} कामदेव; विष, जहर।

मार[2] *स्त्री.* {हिं. मारना} मारने या पीटने की क्रिया या भाव; आघात, चोट; लक्ष्य, निशाना; मार-पीट; *स्त्री.* माला।

मारक *वि.* {सं.} मार डालनेवाला; जिससे किसी का प्रभाव दूर या नष्ट हो; प्रबल विष, वेग आदि को दबाकर उसका नाश करनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारका¹ पुं. {अं. मार्क} चिन्ह, निशान; अधिकार, स्वामित्व, विशेषता आदि का सूचक चिन्ह।

मारका² पुं. {अ.} युद्ध; बहुत बड़ी घटना।

मार-काट स्त्री. {हिं. मारना + काटना} मारने और काटने का काम या भाव, लड़ाई; युद्ध।

मारकीन पुं. {हिं.} मोटा-कोरा कपड़ा।

मारकेश पुं. {सं.} किसी की जन्मकुंडली में ग्रहों का वह योग जो उसके लिए घातक माना जाता है।

मारग पुं. {सं. मार्ग} रास्ता।

मुहा. मारग मारना = रास्ते में यात्री को लूट लेना, डाका मारना।

मारगन पुं. {सं. मार्गण} बाण, तीर; भिक्षुक।

मारजन पुं. {हिं.} मार्जन।

मारजनी स्त्री. {हिं.} मार्जनी।

मारजारक पुं. {हिं.} मार्जार, बिल्ली।

मारजार पुं. {हिं.} बिल्ली।

मारट पुं. {सं.} ईख की जड़।

मारण पुं. {सं.} मार डालना, प्राण लेना; एक तांत्रिक प्रयोग जो किसी को मार डालने के लिए होता है।

मारतौल पुं. {पुर्त. मोंर्टली} एक प्रकार का बड़ा हथौड़ा।

मारना स. {सं. मारण} चोट पहुँचाने के लिए प्रहार करना, पीटना; जीवन का अन्त कर देना, प्राण लेना; कुश्ती में विपक्षी को पछाड़ना; शस्त्र आदि चलाना, प्रहार करना।

मुहा. गोली मारना = किसी पर बंदूक की गोली चलाना; उपेक्ष्य या तुच्छ समझकर जाने देना। *(कुछ) पढ़कर मारना* = मंत्र से फूँककर (कोई चीज) किसी पर फेंकना (जादू-टोना)। आवेग या मनोविकार आदि रोकना, जैसे मन मारना; नष्ट कर देना, न रहने देना; शिकार या आखेट करना; वैद्यक या रासायनिक प्रक्रियाओं से धातु आदि फूँककर उनका भस्म तैयार करना; बिना परिश्रम के अथवा बहुत अधिक प्राप्ति करना या अनुचित रूप से दबा रखना; बल या प्रभाव घटाना।

मार-पीट स्त्री. {हिं. मारना + पीटना} वह लड़ाई जिसमें लोग मारे और पीटे जाएँ।

मार-पेच पुं. {सं. मारना + पेच} धूर्तता, चालाकी, चालबाजी।

मारवा पुं. {हिं.} एक संकट-राग।

मारफत, की *संबंधबो.* {अ.} के द्वारा, के जरिए से।

मारा वि. {हिं. मारना} जो मार डाला गया हो, निहत; जिसपर मार पड़ी हो।

मुहा. मारा-मारा फिरना = बुरी दशा में इधर-उधर घूमना, टक्करें खाना; स्त्री. ➡ माला।

मारामार क्रि. वि. {हिं. मारना} अत्यंत शीघ्रता से, बहुत जल्दी।

मारी स्त्री. महामारी।

मारीच पुं. {सं.} मायावी राक्षस जो प्रभु राम द्वारा मारा गया, कश्यप।

मारीची स्त्री. {सं.} मायादेवी का नाम।

मारीमृत वि. {सं.} जिसकी मृत्यु महामारी द्वारा हुई।

मारीष पुं. {सं.} मरसे का साग।

मारुंड पुं. {सं.} सर्प का अंडा, गोबर।

मारुति पुं. {सं.} हनुमान; भीम।

मारू पुं. {हिं. मारना} युद्ध के समय बजाया और गाया जानेवाला एक राग; वि. मारनेवाला; जान मारनेवाला; हृदयवेधक।

मारूति पुं. {सं.} हनुमान, भीम।

मारे, के *संबंधबो.* परसर्ग {हिं. मारना} की वजह से।

मार्कंडेय पुं. {सं.} मृकंडु पुत्र जो अपने तपोबल से मृत्यु को परास्त करके चिरजीवी हुए, जन्मदिन व संस्कारादि पर पूजा होती है।

मार्कट पुं. {सं.} मर्कट-संबंधी।

मार्का पुं. {हिं.} संकेत, कोई चिन्ह जो किसी बात को सूचित करे।

मार्ग पुं. {सं.} गन्तव्य स्थान तक पहुँचने के लिए बीच में पड़नेवाला वह समस्त भूभाग जिसपर होकर चलना पड़ता है, रास्ता, पथ (रूट); वे साधन, प्रकार आदि जिनका अवलंबन कोई काम ठीक या पूरा करने के लिए किया जाता हो, रास्ता।

मार्गक पुं. {सं.} अगहन का मास।

मार्गकर पुं. {सं.} वह कर जो पथिकों से किसी विशेष मार्ग पर चलने के बदले में लिया जाता है (टोल टैक्स)।

मार्गण पुं. {सं.} किसी से कुछ माँगना, याचना; ढूँढ़ना, तलाश करना; अच्छी तरह देख-भाल, छान-बीन और पूछ-ताछ करके घटनाओं आदि के कारण और वास्तविक स्वरूप का पता लगाना, अंवेषण, जाँच (इंवेस्टिगेशन); तीर, बाण।

मार्गदर्शक पुं. {सं.} मार्ग दिखानेवाला।

मार्गदर्शन पुं. {सं.} मार्ग दिखाने का कार्य।

मार्गन पुं. {सं. मार्गण} बाण, तीर।

मार्गशीर्ष पुं. {सं.} अगहन महीना।

मार्गी पुं. {सं. मार्गिन्} मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति (यौ. के अंत में, जैसे वाममार्गी); यात्री, पथिक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्जन पुं. {सं.} {*वि.* मार्जनीय, मार्जित} शुद्ध या पवित्र करना; अपने आपको पवित्र करने के लिए तीर्थ आदि का जल अपने ऊपर छिड़कना; भूल, दोष आदि का परिहार।

मार्जनी *स्त्री.* {सं.} झाड़ू।

मार्जार पुं. {सं.} {*स्त्री.* मार्जारी} बिल्ली।

मार्जित *वि.* {सं.} जिसका मार्जन हुआ हो।

मार्तंड पुं. {सं.} सूर्य।

मार्त्य *वि.* {सं.} नश्वर, मृत्यु।

मार्दव पुं. {सं.} अहंकार बिल्कुल छोड़ देना; दूसरे को दुखी देखकर दुखी होना; कोमलता; सरलता।

मार्मिक *वि.* {सं.} {*भाव.* मार्मिकता} जिसका प्रभाव मर्म पर पड़े, बहुत प्रभावशाली; मर्मज्ञ।

मार्शललॉ पुं. {अं.} फौजी कानून; फौजी कानूनों और अधिकारियों का शासन, जो बहुत कठोर होता है।

माल[1] *स्त्री.* {सं. माला} माला, हार; वह डोरी जिससे चरखे में का तकला घूमता है; पंक्ति, कतार।

माल[2] पुं. {सं. मल्ल} पहलवान।

माल[3] पुं. {अ.} संपत्ति, धन।

मुहा. माल चीरना या मारना = दूसरे की संपत्ति या धन दबा बैठना।

सामान, असबाब; क्रय-विक्रय की वस्तुएँ (गुड्स); कर के रूप में राज्य को मिलनेवाला धन या उपज का अंश; उत्तम और सुस्वादु भोजन; कोई अच्छी और बढ़िया चीज; वह द्रव्य जिससे कोई चीज बनी हो, सामग्री।

मालकंगनी *स्त्री.* {सं. कंकु} एक लता जिसके बीजों से तेल निकलता है।

मालका *स्त्री.* {सं.} माला।

मालकुंडा पुं. {हिं.} नील रखने का मटका।

मालकोश पुं. {सं.} कौशिक-राग।

मालखंभ पुं. {सं. मल्ल + हिं. खंभा} एक प्रकार का खंभा जिसपर चढ़ और उतरकर तरह-तरह की कसरतें की जाती हैं; वह कसरत जो इस प्रकार के खंभे पर की जाती है।

मालखाना पुं. {फा.} वह सरकारी या विभागीय स्थान जहाँ माल-असबाब जमा रहता हो, भंडार।

मालगाड़ी *स्त्री.* {हिं. माल + गाड़ी} वह रेलगाड़ी जो केवल माल ढोती हो।

मालगुजार पुं. {फा. मालगुज़ार} वह जो सरकार को माल-गुजारी देता हो।

मालगुजारी *स्त्री.* {फा. मालगुज़ारी} वह भूमिकर जो सरकार को जमींदार देता है, भू-राजस्व; लगान; बारह अक्षरों का एक छंद।

मालगुर्जरी *स्त्री.* {सं.} संपूर्ण जाति की रागिनी।

माल-टाल पुं. {हिं.} धन-संपत्ति।

मालविका *स्त्री.* {सं.} कार्त्तिकेय की एक अनुचरी।

मालती *स्त्री.* {सं.} एक प्रसिद्ध घनी लता और उसके फूल; चाँदनी, ज्योत्स्ना।

मालदह पुं. {हिं.} पूर्वी बिहार का प्रसिद्ध आम।

मालदही *स्त्री.* {सं.} रेशमी कपड़ा।

मालद्वीप पुं. {हिं.} सिंहल द्वीप के समीप एक द्वीपपुंज।

मालदार *वि.* {फा.} धनवान, सम्पन्न।

माल-न्यायालय पुं. {अ. माल + सं. न्यायालय} वह न्यायालय जिसमें केवल माल विभाग के अर्थात् जमीनों के लगान-संबंधी झगड़ों पर विचार किया जाता है (रेविन्यू कोर्ट)।

मालपूआ पुं. {हिं.} मीठा पकवान जो पूरी की तरह घी में पकता है।

मालपूजा पुं. {सं. पूप} एक प्रकार का प्रसिद्ध मीठा पकवान।

मालबरी *स्त्री.* {हिं.} ईख।

मालभंडारी पुं. {हिं.} जहाज।

माल-भाड़ा पुं. {हिं.} माल भेजने का भाड़ा।

माल-भत्ता पुं. {अ.} माल-असबाब।

मालव पुं. {सं.} मालवा नामक प्रदेश, जो मध्य भारत में है; इस प्रदेश का निवासी; *वि.* मालव देश-संबंधी।

माल-विभाग पुं. {अ. + सं.} राज्य या राष्ट्र का वह विभाग जिसके द्वारा जमीनों के लगान आदि की व्यवस्था होती है (रेविन्यू डिपार्टमेंट)।

मालवीय *वि.* {सं.} मालवे का; पुं. मालव देश का निवासी।

माला *स्त्री.* {सं.} एक के बाद एक बहुत-सी चीजों या घटनाओं का आना या होना, पंक्ति, अवली (चेन); एक ही प्रकार की बहुत-सी वस्तुओं का एक ही सीध में कुछ दूर तक स्थित होना (रेंज); सूत में गोलाकार पिरोए हुए फूल या मनके आदि।

मुहा. माला फेरना = किसी का नाम जपना या किसी को भजना।

समूह, झुंड; एक ही प्रकार की वस्तुओं का एक के बाद एक करके चलनेवाला क्रम, जैसे पुस्तकमाला (सीरीज)।

मालादीपक पुं. {सं.} दीपक अलंकार का वह प्रकार या भेद जिसमें किसी वस्तु के एक ही गुण या धर्म के आधार पर उत्तरोत्तर अनेक वस्तुओं का संबंध बतलाया जाता है, जैसे रस से काव्य, काव्य से वाणी, वाणी से रसिक और रसिक से सभा की शोभा बढ़ती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालामाल *वि.* {फा.} बहुत सम्पन्न या धनी।
मालिक *पुं.* {अ.} {*स्त्री.* मालिकिन} अधिपति, स्वामी, प्रभु; पति।
मालिका *स्त्री.* माला।
मालिकाना *पुं.* {फा.} स्वामी का अधिकार या स्वत्व, स्वामित्व; *वि.* मालिकों का-सा।
मालिनी *स्त्री.* {सं.} माली जाति की स्त्री, मालिन; 'सवैया' छंद का एक नाम।
मालिन्य *पुं.* = मलिनता।
मालियत *स्त्री.* {अ.} बिक्री, लागत आदि के विचार से किसी वस्तु का मूल्य; धन-संपत्ति।
मालिया *पुं.* मालगुजारी।
मालिवा *पुं.* माल्यवान।
मालिवान *पुं.* {हिं.} माल्यवान्।
मालिश *स्त्री.* {फा.} मलने की क्रिया या भाव, मलाई, मर्दन।
माली[1] *पुं.* {सं. मालिन} {*स्त्री.* मालिन, मालन, मालिनी} बाग के पौधे आदि सींचने और उनकी रक्षा, वृद्धि आदि करनेवाला व्यक्ति, बागवान।
माली[2] *वि.* {सं. माल्निन्} {*स्त्री.* मालिनी} जो माला पहने हो।
माली[3] *वि.* {फा.} माल या धन से संबंध रखनेवाला, आर्थिक।
मालीय *वि.* {सं.} माली-संबंधी, माली का।
मालु *पुं.* {सं.} वृक्ष पर चढ़नेवाली एक लता।
मालूम *वि.* {अ.} जाना हुआ, विदित।
मालूर *पुं.* {सं.} कैथ का वृक्ष।
मालेया *स्त्री.* {सं.} बड़ी इलायची।
मालोपमा *स्त्री.* {सं.} साहित्य में उपमा अलंकार का एक भेद या प्रकार जिसमें एक उपमेय के एक ही धर्मवाले अथवा भिन्न-भिन्न धर्मोंवाले अनेक उपमान बतलाए जाते हैं।
माल्य *पुं.* {सं.} फूल; माला।
माल्यवंत *पुं.* माल्यवान्।
माल्यवान् *पुं.* {सं.} एक पौराणिक पर्वत का नाम; एक राक्षस जिसकी कन्या कैकसी से रावण उत्पन्न हुआ था।
मावत *पुं.* महावत।
मावली *पुं.* {हिं.} दक्षिण भारत की पहाड़ी वीर जाति।
मावस *स्त्री.* अमावस।
मावा *पुं.* {सं. मंड} माँड़; सार; किसी वस्तु की प्रकृति; दूध को गाढ़ा कर बनाया हुआ खोया।
माविजा *पुं.* मुआवजा।
माशकी *पुं.* भिश्ती।
माशा *पुं.* {सं. माष} रत्ती का प्रसिद्ध मान या तौल।
माशी *पुं.* {हिं.} रंग जो कालापन लिये हरा होता है।
माशूक *पुं.* {अ.} {*स्त्री.* माशूका} प्रेमपात्र, प्रिय।
माष *पुं.* {सं.} उड़द; माशा; *स्त्री.* माख।
माषाद *पुं.* {सं.} कच्छप, कछुआ।
मास *पुं.* {सं.} वर्ष के बारहवें भाग (प्राय: 30 दिनों) का काल विभाग, जिसका कुछ निश्चित नाम होता है, जैसे चैत, जनवरी, रमजान, महीना (मंथ); कहीं से आरंभ करके तीस दिनों का समय, जैसे एक मास में यह काम हो जाएगा।
मासना *अ.* = मिलना; *स.* = मिलाना।
मासवृद्धि *स्त्री.* {सं.} अंडवृद्धि का रोग, गलगंड।
मासल *वि.* {हिं.} हृष्ट-पुष्ट।
मासांत *पुं.* {सं.} महीने का अन्त या समाप्ति; सौर मास की अंतिम तिथि जिसमें यात्रा तथा कुछ और विशिष्ट कार्य वर्जित होते हैं।
मासिक *वि.* {सं.} मास-संबंधी, महीने का; हर महीने में एक बार या महीने-महीने भर पर होनेवाला (मंथली); *पुं.* प्रति मास मिलनेवाला वेतन; प्रति मास प्रकाशित होनेवाला पत्र; हर महीने होनेवाला स्त्रियों का रजोधर्म, मासिक धर्म (मेंसेस)।
मासिक धर्म *पुं.* {सं.} स्त्रियों को प्रति मास होनेवाला रजस्राव, मासिक। (मेंसेस)
मासी *स्त्री.* {सं. मातृष्वसा} माँ की बहन, मौसी; *स्त्री.* = माछी (मक्खी)।
मासीय *वि.* {सं.} मासिक।
मासुरी *स्त्री.* {सं.} मासी, मौसी, चीर-फाड़ का पुराना अस्त्र।
मासूम *वि.* {अ.} निरीह।
मासूमियत *स्त्री.* {अ.} निरीहता।
माह[1] *क्रि. वि.* {सं. मध्य} बीच में।
माह[2] *पुं.* {फा.} मास, महीना।
माहत *स्त्री.* = महत्व।
माहन *पुं.* {सं.} ब्राह्मण।
माहना *अ., स.* उमाहना।
माहला *वि.* {हिं. मध्य या माँहि} {*स्त्री.* माहली} अंदर रहनेवाला; हृदय या मन में रहनेवाला; बीच का, मँझला।
माहली *पुं.* {हिं. महल} सेवक विशेषत: अन्त:पुर में रहनेवाला।
माहवार *क्रि. वि.* {फा.} प्रतिमास; *वि.* हर महीने का, मासिक।
माहवारी *वि.* {फा.} हर महीने का; *स्त्री.* स्त्रियों का मासिक धर्म।
माहाँ *क्रि. वि.* महँ।
माहाराज्य *पुं.* {सं.} महाराज का पद।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chen[illegible] eGangotri

माहाराष्ट्र *वि.* {सं.} महाराष्ट्र-संबंधी।

माहात्म्य *पुं.* {सं.} महिमा, महत्व (विशेषत: धार्मिक); आदर, मान।

माहिं *क्रि. वि.* {सं. मध्य} भीतर, अंदर; अधिकरण कारक का चिन्ह 'में' या 'पर'।

माहिला[1] *पुं.* {सं. मध्य, पु. माहिं} अंतर, फरक।

माहिला[2] *वि.* {*स्त्री.* माहिली} मध्य या बीच का; अंदर का, आंतरिक; मँझला; *पुं.* माँझी।

माहीं *क्रि. वि.* माहिं।

माही *स्त्री.* {फा.} मछली; मुगल बादशाहों के आगे चलनेवाला बड़ा झंडा जिसपर मछली बनी रहती थी।

माही-मरातिब *पुं.* {फा.} राजाओं के आगे हाथी पर चलने वाला झंडा।

माहुर *पुं.* {सं. मधुर} विष, जहर।

माहेंद्री *स्त्री.* {सं.} इंद्राणी, गाय।

माहेय *वि.* {सं.} मिट्टी का बना हुआ।

माहेश *वि.* {सं.} महेश-संबंधी।

माहेशी *स्त्री.* {सं.} दुर्गा देवी।

मिंडना *अ.* {हिं. मींडना} मींडा या मसला जाना; लगाया, सटाया या चिपकाया जाना; साथ लगना।

मिंड़ाई *स्त्री.* {हिं. मींडना} मसलने या मींजने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

मित *पुं.* = मित्र।

मिंबर *पुं.* {*अ.* मिंबर} मसजिद में वह ऊँचा चबूतरा जिसपर बैठकर मुल्ला आदि नमाज पढ़वाते, उपदेश करते या खुतबा पढ़ते हैं।

मिकदार *स्त्री.* {*अ.* मिक़्दार} परिमाण, मात्रा।

मि *पुं.* चीन देश की एक जाति।

मिआद *पुं.* {हिं.} नियत काल।

मिचकना *अ.* {हिं. मिचकाना का} आँख का मिचना या बंद होना।

मिचकाना *स.* {हिं. मिचना} बार-बार पलकें खोलना और बंद करना।

मिचकी[1] *स्त्री.* {हिं. मिचकना} आँखें मिचकाने की क्रिया या भाव; आँखों से किया हुआ संकेत, आँख का इशारा।

मिचकी[2] *स्त्री.* छलाँग, उछाल; झूले की पेंग।

मिचना *अ.* मींचना का।

मिचलाना *अ.* {हिं. मतलाना} कै आने को होना, मिचली आना।

मिचली *स्त्री.* {हिं. मिचलाना} जी मिचलाने की क्रिया, कै करने की इच्छा, मतली।

मिचौनी *स्त्री.* आँख-मिचौनी।

मिछा *वि.* मिथ्या।

मिजराब *स्त्री.* {*अ.*} सितार आदि बजाने का तार का नुकीला छल्ला।

मिजाज *पुं.* {*अ.* मिज़ाज} किसी पदार्थ का स्थायी और मूल गुण, प्रकृति, तासीर; स्वभाव, प्रकृति; मन की अवस्था तबीयत।

मुहा. मिजाज खराब होना = अप्रसन्नता, अरुचि आदि होना; अस्वस्थ या बीमार होना; *मिजाज पूछना* = तबीयत या स्वास्थ्य का हाल, पूछना।

अभिमान, घमंड, शेखी।

मुहा. मिजाज न मिलना = घमंड के कारण किसी से ठीक तरह से व्यवहार न करना।

मिजाजदार *वि.* {*अ.*} घमंडी।

मिजाजी *वि.* {*वि.*} अभिमानी।

मिटका *पुं.* {हिं.} मटका।

मिटना *अ.* {सं. मृष्ट} अंकित चिन्ह आदि नष्ट होना; न रह जाना।

मिटाना *स.* {हिं. 'मिटना' का *स.*} अंकित रेखा, दाग, चिन्ह आदि इस प्रकार रगड़ना कि वह न रह जाए, लुप्त करना; आज्ञा, निश्चय आदि रद्द करना; नष्ट या खराब करना।

मिटिया *स्त्री.* {हिं.} मिट्टी-निर्मित छोटा बरतन, मटकी।

मिटियाना *क्रि. वि.* {हिं.} मिट्टी लगाकर स्वच्छ, रगड़ना।

मिटियामहल *पुं.* {हिं.} मिट्टी का घर, झोपड़ी।

मिट्टी *स्त्री.* {सं. मृत्तिका} वह भुरभुरा पदार्थ जो पृथ्वी के ऊपरी तल पर प्राय: सब जगह पाया जाता है, धूल, खाक।

मुहा. मिट्टी करना = नष्ट या खराब करना; *मिट्टी के मोल* = बहुत सस्ता; *मिट्टी डालना* = उपेक्षापूर्वक जाने देना, किसी के दोष पर परदा डालना; *मिट्टी में मिलना* = नष्ट या चौपट होना।

शरीर, बदन।

मुहा. मिट्टी पलीत या बरबाद करना = दुर्दशा करना।

मृत शरीर, पलीत, शव, लाश; शारीरिक गठन या बनावट।

मिट्टी का घोंघा *वि.* बहुत बड़ा मूर्ख या नासमझ।

मिट्टी का तेल *पुं.* {हिं. मिट्टी + तेल} एक प्रसिद्ध खनिज तरल पदार्थ जो दीपक, लालटेन आदि जलाने के काम आता है।

मिट्ठू *पुं.* {हिं. मीठा + ऊ(प्रत्य.)} मीठा बोलनेवाला; तोता; *वि.* चुप रहनेवाला।

मिठबोला *पुं.* {हिं. मीठा + बोलना} मधुरभाषी; वह जो केवल दिखाने के लिए मीठी-मीठी बातें करता हो।

मिठलोना *पुं.* {हिं. मीठा = कम + नोन} जिसमें नमक कम या थोड़ा हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिठ *वि.* {हिं.} 'मीठा' शब्द का संक्षिप्त रूप।

मिठाई *स्त्री.* {हिं. मीठा + आई (प्रत्य.)} मीठापन, मिठास, माधुरी; विशेष प्रकार से बनी हुई खाने की मीठी चीज।

मिठाना *अ.* {हिं. मीठा} मीठा होना।

मिठोरी *स्त्री.* {हिं.} पीसे हुए उड़द या चने की बरी।

मिठास *स्त्री.* {हिं. मीठा + आस (प्रत्य.)} मीठा होने का भाव, माधुर्य।

मितंग *पुं.* हाथी।

मित *वि.* {सं.} जिसकी सीमा बँधी हो, परिमित; नियत या उचित सीमा के अंदर, जैसे मितव्यय, मिताहार; थोड़ा, कम।

मितभाषी *पुं.* {सं. मितभाषिन्} {*भाव.* मितभाषिता} कम या थोड़ा बोलनेवाला।

मितव्यय *पुं.* {सं.} {*भाव.* मितव्ययता} कम खर्च करना, किफायत।

मितव्ययी *पुं.* {सं. मितव्ययिन्} थोड़ा या कम खर्च करनेवाला।

मिताई *स्त्री.* = मित्रता।

मिताचार *पुं.* {सं.} परिमित आचार।

मितार्थ *पुं.* {सं.} परिमित अर्थ।

मितार्थक *वि.* {सं.} कम अर्थ का।

मिताहार *पुं.* {सं.} थोड़ी मात्रा में किया जानेवाला भोजन।

मिताहारी (रिन्) *पुं.* {सं.} थोड़ा भोजन करनेवाला, कम खानेवाला।

मिति *स्त्री.* {सं.} मान, परिमाण; सीमा, हद; अवधि।

मिती *स्त्री.* {सं. मिति} चांद्र मास की तिथि जो प्रत्येक पक्ष में 1 से 15 तक होती है।

मिती काटा *पुं.* {हिं. मिती + काटना} एक-एक दिन और एक-एक रकम का सूद जोड़ने का एक महाजनी सहज ढंग।

मित्त *पुं.* = मित्र।

मित्र *पुं.* {सं.} वह जो सब बातों में सहायक और शुभचिंतक हो, बंधु, सखा, दोस्त; सूर्य; भारतीय आर्यों के एक प्राचीन देवता।

मित्रता *स्त्री.* {सं.} मित्र होने का भाव या धर्म, दोस्ती।

मित्राई *स्त्री.* = मित्रता।

मिथिला *स्त्री.* {सं.} आजकल के तिरहुत प्रदेश का पुराना नाम।

मिथुन *पुं.* {सं.} स्त्री और पुरुष या वर और वधू का जोड़ा; समागम, मेल; मेष, सिंह आदि बारह राशियों में से तीसरी राशि (जेमिनी)।

मिथ्या *वि.* {सं.} {*भाव.* मिथ्यात्व} जो सत्य, तथ्य या वास्तविकता के अनुसार न हो, असत्य, झूठ; जिसका कोई उचित आश्रय या ठीक आधार न हो, जैसे मिथ्या अभिमान (फाल्स)।

मिथ्याचार *पुं.* {सं.} कपटपूर्ण व्यवहार।

मिथ्याध्यवसिति *स्त्री.* {सं.} साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी बात का मिथ्यात्व सिद्ध करने के लिए उससे भी बढ़कर किसी और मिथ्या बात का सहारा लिया जाता है, जैसे 'उनकी दानशीलता की प्रशंसा तो मैंने कई गूँगों से भी सुनी थी', में गूँगों से सुनने की चर्चा करके यह सिद्ध किया गया कि उनमें दानशीलता थी ही नहीं।

मिथ्याभास *पुं.* {सं.} जो चीज या बात वास्तव में जैसी हो, उसके विरुद्ध या उससे उलटी दिखाई पड़ना, वास्तविक स्थिति-विरुद्ध होनेवाला आभास।

मिथ्यावादी (दिन्) *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* मिथ्यावादिनी} झूठ बोलनेवाला, झूठा।

मिदुराना *अ.* {सं. मृदु} मृदु या मधुर होना, कोमल होना।

मिनकना *अ.* {मिनमिन से अनु.} बहुत ही दबकर या धीरे से कुछ बोलना, जैसे वह आकर खड़े हो जाएँगे, तब तुम मिनकोगे भी नहीं।

मिनजालिक *पुं.* {?} खरच की मद, व्यय किया जानेवाला धन या उसका खाता।

मिनट *पुं.* {अं.} एक घंटे का साठवाँ भाग, साठ सेकंड का समय।

मिमियाना *क्रि. वि.* {हिं.} में-में करना (बकरी का)।

मिरगी *स्त्री.* {हिं.} मानस-रोग।

मिरचा *पुं.* {हिं.} लाल मिर्च।

मिर्च *स्त्री.* {हिं.} काले रंग का गोल दाना, लाल मिर्च।

मिलकी *पुं.* {हिं.} जमींदार, धनाढ्य।

मिलनी *स्त्री.* {हिं.} विवाह की एक रीति जिसमें कन्या-पक्ष के लोग वर-पक्ष के लोगों से गले मिलते और उनको कुछ रुपये 'नेग' देते हैं।

मिनती *स्त्री.* विनती।

मिनमिनाना *अ.* {अनु.} धीमे स्वर से या नाक से बोलना।

मिनहा *वि.* {अ.} किसी में से काटा या घटाया हुआ, मुजरा किया हुआ।

मिनिस्टर *पुं.* {अं.} एक प्रकार का पादरी या ईसाई धर्माधिकारी; राज्य या प्रांत के शासन में किसी विभाग का मंत्री।

मिनिस्टरी *स्त्री.* {अं. मिनिस्टर} मिनिस्टर का कार्य, पद या विभाग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Ch[illegible] and eGangotri

मिनी बस *स्त्री.* {अं.} छोटे आकार की बस।

मिन्नत *स्त्री.* {अ.} विनय, विनती।

मिमियाना *अ.* {अनु.} भेड़ या बकरी का बोलना; दबी जबान से चापलूसी करना।

मियाँ *पुं.* {सं.} स्वामी, मालिक; पति, खसम; महाशय; मुसलमान।

मियाँ मिट्ठू *पुं.* {फा. + हिं.} मीठी बातें करनेवाले, मधुर भाषी।

कहा. अपने मुँह मिट्ठू बनना = आप ही अपनी प्रशंसा करना या अपने आपको बड़ा समझना।

मियाद *स्त्री.* {अ.} अवधि।

मियादी *वि.* {फा.} अवधि-संबंधी; निश्चित अवधिवाला।

मियाना *पुं.* {फा.} एक प्रकार की पालकी; *वि.* न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा, मझोले आकार का।

मिरग *पुं.* मृग।

मिरगी *स्त्री.* {सं. मृगी} एक प्रसिद्ध रोग जिसमें रोगी अचानक बेसुध होकर गिर पड़ता है, अपस्मार (एपॉप्लेक्सी)।

मिरचा *पुं.* लाल मिर्च।

मिरजई *स्त्री.* {फा. मिरज़ा} एक प्रकार की बन्ददार कुरती।

मिरजा *पुं.* {अ. मिर्ज़ा} मुसलमानों में शाहजादों आदि की एक उपाधि।

मिरदंग *पुं.* = मृदंग।

मिरदंगी *स्त्री.* {सं. मृदंग} छोटा मृदंग; एक प्रकार की आतिशबाजी जो मृदंग के आकार की होती है; एक प्रकार का शीशे का आधार, जिसमें मोमबत्ती जलती है।

मिरियास *स्त्री.* मीरास।

मिर्च *स्त्री.* {सं. मरिच} एक प्रकार की कड़ुई फली जो व्यंजनों में मसाले की तरह पड़ती है, लाल मिर्च; उक्त की तरह काम आनेवाला एक प्रसिद्ध काला, छोटा दाना, गोल मिर्च, काली मिर्च।

मिल *स्त्री.* {अं.} अनाज, गल्ले या दाने आदि पीसने की चक्की जो भाप, बिजली आदि की सहायता से चलती हो; रुई ओटने, सूत कातने और कपड़ा बुनने आदि का कारखाना।

मिलक *स्त्री.* {अ. मिल्क} जमीन-जायदाद; जागीर।

मिलकियत *स्त्री.* मिल्कियत।

मिलन *पुं.* {सं.} मिलने की क्रिया या भाव, मिलाप, भेंट।

मिलनसार *वि.* {हिं. मिलना + सार (प्रत्य.)} {*भाव.* मिलनसारी} सबसे अच्छी तरह मिलने-जुलनेवाला।

मिलना *अ.* {सं. मिलन} दो अलग-अलग पदार्थों का सम्मिलित या मिश्रित होकर एक होना; समुदाय या समूह में समा जाना; साथ लगना, सटना।

मुहा. गले मिलना = आलिंगन करना, गले लगाना।

बहुत-कुछ समान होना; सामना, भेंट या मुलाकात करना।

स. प्राप्त या हस्तगत होना।

मिलनी *स्त्री.* {हिं. मिलना} विवाह की एक रस्म जिसमें कन्या पक्ष के लोग वरपक्ष के लोगों से गले मिलकर उन्हें कुछ धन देते हैं।

मिलवना *स.* = मिलाना।

मिलवाना *स.* {हिं.} 'मिलना' का प्रे.।

मिलाई *स्त्री.* {हिं. मिलाना} मिलने या मिलाने की क्रिया या भाव; (जेल के कैदियों से) भेंट, मुलाकात।

मिला-जुला *वि.* मिश्रित; सम्मिलित।

मिलान *पुं.* {हिं. मिलाना} मिलाने की क्रिया या भाव; तुलना, मुकाबला; ठीक होने की वह जाँच जो संबद्ध वस्तुओं को मिलाकर की जाए; लोगों के पहुँचकर मिलने का उद्दिष्ट स्थान या पड़ाव।

मिलाना *स.* {सं. मिलन} {*भाव.* मिलाई, मिलावट} एक चीज में कोई दूसरी चीज या चीजें डालकर सबको एक करना, सम्मिलित या मिश्रित करना; जोड़ना; तुलना करना, मुकाबला करना; ठीक होने की जाँच करना; भेंट या परिचय कराना; अपने पक्ष में करना, साथी बनाना; बजाने से पहले बाजों के सुर ठीक करना।

मिलाप *पुं.* {हिं. मिलना + आप (प्रत्य.)} मिलने की क्रिया या भाव, मेल।

मिलाभेंटी *स्त्री.* {हिं. मिलना + भेंट} भेंट होने पर गले मिलने की क्रिया या भाव।

मिलावट *स्त्री.* {हिं. मिलाना} मिलाए जाने का भाव, मिश्रण; बढ़िया चीज में घटिया चीज का मिश्रण; वह चीज जो इस प्रकार मिलाई जाए, मेल, खोट।

मिलिंद *पुं.* {सं.} भौंरा।

मिलिक *स्त्री.* मिलक।

मिलित *वि.* {सं.} मिला हुआ, युक्त।

मिलोना *पुं.* {हिं. मिलाना} मिलाना; गौ दुहना।

मिलौनी *स्त्री.* मिलाई।

मिल्कियत *स्त्री.* {अ.} मालिक या स्वामी होने का अधिकार या भाव; वह वस्तु, संपत्ति आदि जिसपर मालिकों का-सा स्वामित्व या अधिकार हो; धन-संपत्ति, जायदाद।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल्लत¹ *स्त्री.* {हिं. मिलन} मेल-जोल, मिलाप; मिलनसारी।

मिल्लत² *स्त्री.* {अ.} धार्मिक सम्प्रदाय।

मिशन *पुं.* {अं.} किसी विशिष्ट कार्य के लिए कुछ व्यक्तियों का कहीं जाना या भेजा जाना; इस प्रकार भेजे जानेवाले लोग; ईसाई धर्म-प्रचारकों का धर्म के प्रचार के लिए कहीं जाना; उक्त का निवास स्थान।

मिशनरी *पुं.* {अ.} ईसाई धर्म-प्रचारक; *वि.* मिशन-संबंधी, मिशन का।

मिशि *स्त्री.* {सं.} मधुरिका, सौंफ, मैथी।

मिश्र *वि.* {सं.} एक में मिल या मिलाया हुआ, मिश्रित; संयुक्त; *पुं.* कुछ ब्राह्मणों के वर्ग की उपाधि।

मिश्रक *वि.* {सं.} मिश्रण करने या मिलानेवाला; *पुं.* वह जो ओषधियों आदि का मिश्रण करके औषध तैयार करते हैं, दवाएँ बनानेवाला।

मिश्रण *पुं.* {सं.} {*वि.* मिश्रित, मिश्र, मिश्रणीय} कुछ वस्तुओं को एक में मिलाने की क्रिया या भाव, मिलावट (एलॉय); वह तरल औषध जो कई ओषधियों के मेल से बना हो (मिक्सचर)।

मिश्र धातु *स्त्री.* {सं.} कई धातुओं के योग या मिश्रण से बनी हुई धातु, जैसे पीतल या जरमन-सिलवर (एलॉय)।

मिश्र वाक्य *पुं.* {सं.} ऐसा वाक्य जिसका एक उपवाक्य दूसरे उपवाक्य पर आश्रित हो (काम्प्लेक्स सेण्टेंस)।

मिश्रित *वि.* {सं.} एक में मिले हुए।

मिश्रीभूत *वि.* {सं.} मिलाया हुआ।

मिश्रीकरण *पुं.* {सं.} मिश्रित करने का कार्य।

मिश्रीदन *पुं.* {सं.} खिचड़ी।

मिष *पुं.* {सं.} छल, कपट; मिस।

मिषिका *स्त्री.* {सं.} मधुरिका, सौंफ।

मिष्ट *वि.* {सं.} मीठा, मधुर।

मिष्टभाषी *पुं.* मधुरभाषी।

मिष्टान्न *पुं.* {सं.} मिठाई।

मिष्टान्नशाला *स्त्री.* {सं.} मिठाई की दुकान या कारखाना।

मिस¹ *पुं.* {सं. मिष} बहाना, हीला; पाखंड, आडम्बर।

मिस² *वि.* {सं.} बिना ब्याही, कुमारी।

मिसकना *अ.* {अनु. या फा. मिसकीन} इस प्रकार धीरे-धीरे बोलना कि मिस-मिस-सा शब्द सुनाई पड़े, मिनमिनाना।

मिसकी *स्त्री.* मिस्की।

मिसकीन *वि.* {अ. मिस्कीन} {*भाव.* मिसकीनी} बेचारा, दीन; गरीब, निर्धन।

मिसकीनता *स्त्री.* {अ. मिस्कीन + सं. ता (प्रत्य.)} दरिद्रता, गरीबी; नम्रता, दीनता।

उदा. लाभ जोग छेम को गरीबी मिसकीनता —तुलसी।

मिसना *अ.* = मिलना; अ. हिं. मिसना का अ.।

मिसरा *पुं.* {अ. मिसर्‌अ} उर्दू-फारसी की कविता का कोई चरण या पद।

मिसरी *स्त्री.* {मिस्र देश से} मिस्र देश की भाषा; साफ करके जमाई हुई दानेदार या रवेदार चीनी; *वि.* मिस्र देश का; *पुं.* मिस्र देश का निवासी।

मिसहा *वि.* {हिं. मिस} बहानेबाज; कपटी, ढोंगी।

मिसाल *स्त्री.* {अ.} उपमा; उदाहरण; कहावत।

मिसिल *वि.* {अ.} समान, तुल्य; *स्त्री.* किसी विषय या मुकदमे से संबंध रखनेवाले सब कागज-पत्रों की नत्थी।

मिस्की *स्त्री.* {हिं. मिसकना} धीरे-धीरे बोलने या मिनमिनाने की क्रिया या भाव; गाने का वह ढंग जिसमें पूरी तरह से गला खोलकर और ऊँचे स्वर से नहीं, बल्कि बहुत धीरे से और धीमी आवाज से गाते हैं, साँसी।

मिस्कोट *पुं.* {अं. मेस} भोजन; गुप्त परामर्श।

मिस्तरी *पुं.* {अं. मास्टर} वह जो मकान, काठ, धातु आदि के सामान बनाने अथवा यंत्रों आदि की मरम्मत करने का अच्छा कारीगर हो।

मिस्ता *पुं.* {हिं.} बंजर भूमि, अन्न को दाँवने के लिए बनाई भूमि।

मिस्त्री *वि.* मिस्र देश-संबंधी; *पुं.* मिस्त्रवासी; *स्त्री.* मिसरी।

मिस्ल *वि.* मिसिल।

मिस्सा *वि.* {सं. मिश्रित} कई तरह की दालें आदि एक में पीसकर बनाया हुआ (आटा), जैसे मिस्सी रोटी।

मिस्सी *स्त्री.* {फा. मिसी = ताँबे का} एक प्रकार का प्रसिद्ध मंजन जो स्त्रियाँ दाँतों में लगाती हैं।

मिहचना *स.* मिचना।

मिहर *स्त्री.* = मेहर (कृपा)।

मिहानी *स्त्री.* मथानी।

मिहिर *पुं.* {सं.} सूर्य; चंद्रमा, विक्रम के नवरत्न।

मिहिरकुल *पुं.* {सं.} प्राचीन शाकल प्रदेश के प्रसिद्ध राजा तोरमाण के पुत्र का नाम।

मिहीं *वि.* महीन।

मींगी *स्त्री.* गिरी, गूदा।

मींजना *स.* {हिं. माँड़ना} हाथों से मलना, मसलना।

मींडक *पुं.* मेंढक।

मींडना *स.* {सं. मृण्, या मर्दन} हाथों से मलना, मसलना; कुचलना या रौंदना, मर्दन करना; माँडना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीआद *स्त्री.* मीयाद।
मीआदी *वि.* {हिं.} समय निर्धारित अवधि पर देना पड़ा।
मीआदी हुंडी *स्त्री.* {हिं.} वह हुंडी जिसका रुपया निर्धारित अवधि पर देना पड़ा।
मीच *स्त्री.* {सं. मृत्यु} मौत।
मीचना *स.* मूँदना।
मीचु *स्त्री.* {सं. मृत्यु} मौत।
मीजना *क्रि. स.* {हिं.} मसलना।
मीजान *स्त्री.* {अ.} संख्याओं का योग, जोड़।
मीटर *पुं.* {अं.} वह यंत्र जिससे नल में से गुजरने वाले पानी, बिजली के तार में से गुजरने वाली बिजली या किसी चलने वाली चीज की गति आदि नापी जाती है, मापयंत्र; लंबाई की एक नाप जो 39.37 इंचों की होती है।
मीठा *वि.* {सं. मिष्ट} {*स्त्री.* मीठी} जिसमें चीनी या शहद आदि का-सा स्वाद हो, मधुर; स्वादिष्ट; प्यारा, प्रिय; अच्छा, भला; धीमा, सुस्त; हल्का, मद्धिम, मंद; *पुं.* मिठाई; गुड़।
मीठी छुरी *स्त्री.* {हिं. मीठी + छुरी} ऊपर से मित्र बनकर अंदर-अंदर घात या द्रोह करनेवाला, विश्वासघातक।
मीड़ *स्त्री.* {सं.} मींडना।
मीत *पुं.* {सं.} मित्र, दोस्त; पति; प्रेमी।
मीन *पुं.* {सं.} {भाव. मीनता} मछली; बारह-राशियों में से अंतिम जिसमें पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र और उत्तर भाद्रपद तथा रेवती नक्षत्र हैं।
मीनकी *स्त्री.* {सं. मीन} मछलियों का पालन-पोषण या संवर्द्धन करने की क्रिया या विद्या (फिशरी)।
मीनक्षेत्र *पुं.* {सं.} वह क्षेत्र जिसमें मछलियाँ विशेष रूप से सुरक्षित रखकर पाली जाती हैं और उनकी नसल बढ़ाई जाती है; वह राजकीय विभाग जिसके अधीन मछलियों के पालन-पोषण, संवर्द्धन, क्रय-विक्रय, निर्यात आदि की व्यवस्था होती है (फिशरीज)।
मीनमार्ग *पुं.* {सं.} मोक्ष प्राप्त करने के लिए हठ-योग की साधना का मार्ग, जो उसी प्रकार गुप्त रहता है, जिस प्रकार पानी के अंदर मछली के चलने का मार्ग गुप्त रहता है।
मीन-मेख *पुं.* {सं. मीन + मेष (राशियाँ)} सोच-विचार, आगा-पीछा, असमंजस; दूसरे के किए हुए कामों में छोटे-मोटे दोष ढूँढ़ना।
मीना[1] *पुं.* {देश.} राजपूताने की एक प्रसिद्ध योद्धा जाति।
मीना[2] *पुं.* {फा.} सोने-चाँदी आदि पर किया जानेवाला एक प्रकार का रंग-बिरंगा काम; शराब रखने का कंटर।
मीनाकार *पुं.* {फा.} मीनाकारी करनेवाला कारीगर।
मीनाकारी *स्त्री.* {फा.} सोने या चाँदी पर होनेवाला मीना।
मीना बाजार *पुं.* {फा.} बहुत सुंदर और सजा हुआ बढ़िया बाजार।
मीनार *स्त्री.* {अ. मनार} बहुत ऊँचा और गोलाकार स्तंभ, लाट, धरहरा।
मीनालय *पुं.* {सं.} सागर, समुद्र।
मीमांसक *पुं.* {सं.} किसी बात की मीमांसा या विवेचन करनेवाला; मीमांसा शास्त्र का ज्ञाता।
मीमांसा *स्त्री.* {सं.} अनुमान और तर्क-वितर्क से यह निश्चय करना कि कोई बात वास्तव में कैसी है; हिंदुओं के छह दर्शनों में से पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा नामक दो दर्शन।
मीमांसित *वि.* {सं.} विचार पूर्वक मीमांसा किया हुआ।
मीमांस्य *वि.* {सं.} जिसकी मीमांसा करनी हो।
मीर *पुं.* {फा.} सरदार, नेता; मुसलमानों में सैयद जाति या वर्ग की उपाधि; वह जो प्रतियोगिता का काम सबसे पहले करे।
मीरग (गा) *पुं.* = मृग।
मीराँत *स्त्री.* मीरास।
मीरा *पुं.* {अ. मीर} प्रधान, श्रेष्ठ; सबसे आगे बढ़ा हुआ।
मीराबाई *स्त्री.* {सं.} मेवाड़ के महाराणा कुंभ की स्त्री जो कृष्ण की अनन्य उपासिका थी।
मीरास *स्त्री.* {सं.} उत्तराधिकार में मिली हुई संपत्ति, तरका।
मीरासी *पुं.* {सं. मीरास} {*स्त्री.* मीरासिन} एक मुसलमान जाति जो गाने-बजाने और भाँड़ का काम करती है।
मील *पुं.* {अ. माइल} 1760 गज की दूरी की एक नाप।
मीलन *पुं.* {सं.} {*वि.* मिलित} बंद करना, मूँदना।
मीलित *वि.* {सं.} बंद किया या मूँदा हुआ; *पुं.* साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें समान गुण और धर्मवाली कई बातों या वस्तुओं का इस रूप में उल्लेख किया जाता है कि उनमें से कोई बात या वस्तु अपनी प्रबलता के कारण दूसरी बातों या वस्तुओं को पूरी तरह से दबाकर आत्मसात कर लेती है, जैसे चंद्रमा की चाँदनी में उज्ज्वल कांतिवाली नायिका का मिलकर उसके साथ एक-सा हो जाना।
मीवर *वि.* {सं.} पूज्य, माननीय।
मुँगना *पुं.* {हिं.} सहिजन का वृक्ष।
मुँगरा *पुं.* {सं. मुद्गी} {*स्त्री.* मुँगरी} काठ का बड़ा हथौड़ा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by A[illegible]naj Foundation Chennai and eGangotri

मुँगैछी *स्त्री.* मुँगौछी।

मुँगौछी, मुँगौरी *स्त्री.* {हिं. मूँग + बरी} मूँग की बनी हुई बरी।

मुंचन *पुं.* {सं.} मोचन, परित्याग।

मुंजर *पुं.* {सं.} मृणाल, कमल की जड़।

मुंचना *अ.* {सं. मोचन} मुक्त होना।

मुंड *पुं.* {सं.} खोपड़ी, सिर; कटा हुआ सिर।

मुंडन *पुं.* {सं.} उस्तरे से सिर या और किसी अंग के बाल साफ करना, मूँड़ना; हिंदुओं के 16 संस्कारों में से एक जिसमें बालक का सिर मूँड़ा जाता है।

मुँड़ना *अ.* {सं. मुंडन} मूँड़ा जाना; लूटा या ठगा जाना।

मुंडमाला *स्त्री.* {सं.} शिव और काली के गले में रहनेवाली कटे हुए सिरों या खोपड़ियों की माला।

मुंडमाली (लिन्) *पुं.* {सं.} शिव।

मुंडमालिनी *स्त्री.* {सं.} कालिका या काली नाम की देवी।

मुंडा *पुं.* {सं. मुंडी} {*स्त्री.* मुंडी} वह जिसके सिर के बाल न हों या मुँड़े हुए हों; साधु या योगी; वह पशु जिसके सींग न निकले हों; वह जिसके ऊपरी अथवा इधर-उधर के अंग न हों; कोठीवाली या महाजनी लिपि, जिसमें मात्राएँ नहीं होतीं; एक प्रकार का जूता; *स्त्री.* भाषा-विज्ञान के अनुसार कुछ विशिष्ट अनार्य बोलियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत निषाद, शबर, उराँव आदि बोलियाँ हैं।

मुँड़ाई *स्त्री.* {हिं. मूँड़ना} मूँड़ने या मुँड़ाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

मुँड़ाना *स.* {सं. मुंडन} मुंडन कराना, जैसे सिर मुँड़ाना; *अ.* मूँड़ा जाना, मुँड़ाना; धोखे में आकर कुछ धन गँवाना; किसी की अधीनता, शिष्यता आदि ग्रहण करना।

मुंड़ासन *पुं.* {सं.} योग का एक आसन।

मुंड़ासा *पुं.* {हिं. मूड;} पगड़ी, साफा।

मुंडित *वि.* {सं.} जिसका मुंडन हुआ हो, जैसे मुंडित मस्तक।

मुंडिनी *स्त्री.* {सं.} कस्तूरी-मृग।

मुंडी[1] *स्त्री.* {सं.} गोरखमुंडी।

मुंडी[2] *स्त्री.* {हिं.} वह स्त्री जिसका सिर मूँड़ा गया हो, विधवा, राँड।

मुंडेर *स्त्री.* {हिं.} खेत की सीमा पर बँधी हुई मेड़।

मुँडेरा *पुं.* {हिं. मूँड + एरा (प्रत्य.)} छत की दीवार का ऊपरी उठा हुआ भाग।

मुँदना *अ.* {सं. मुद्रण} खुली रहनेवाली या खुली हुई वस्तु का बंद होना; छिपना।

मुँदरा *पुं.* {सं. मुद्रा} योगियों के कान का एक प्रकार का कुंडल; कान का एक आभूषण।

मुँदरी *स्त्री.* अँगूठी।

मुंशी *पुं.* मुनशी।

मुँह *पुं.* {सं. मुख} वह अंग जिससे प्राणी बोलते और भोजन करते हैं; मनुष्य का उक्त अंग।

मुहा. मुँह आना = गरमी या आतशक के रोगी के मुँह में छाले पड़ना और मुँह सूजना; मुँह खुलना बढ़-चढ़कर बोलने की आदत पड़ना; *मुँह चलना* = भोजन होना, खाया जाना; मुँह से बहुत बातें निकलना; *मुँह चिढ़ाना* = किसी का उपहास करने के लिए उसकी आकृति, हाव-भाव, कथन आदि को बिगाड़कर नकल करना; *मुँह छूना* = नाममात्र के लिए ऊपरी या मन से कहना; *मुँह-पेट चलना* = कै-दस्त का रोग या हैजा होना; *मुँह बाँधकर बैठना* = चुपचाप बैठना; *मुँह भरना* = किसी को घूस देना; *किसी का मुँह मीठा करना या कराना* = प्रसन्न होकर मिठाई खिलाना; पुरस्कार, घूस आदि देकर प्रसन्न करना; *मुँह में खून या लहू लगना* = किसी प्रकार के लाभ का चस्का लगना या चाट पड़ना; *मुँह में पानी भर आना* = कुछ पाने के लिए ललचना; *मुँह में लगाम न होना* = बिना सोचे-समझे बोलने की आदत होना; *मुँह सीना* = बोलने से रुकना; बोलने से रोकना; *मुँह से फूल झड़ना* = मुँह से बहुत मधुर या प्रिय बातें निकलना।

पद आपके मुँह में घी शक्कर = आपकी शुभ कामना पूरी हो; ईश्वर करे आपका कहना सच हो।

सिर का अगला भाग जिसमें माथा, आँखें, नाक, मुँह, कान, गाल आदि अंग होते हैं, चेहरा।

मुहा. अपना-सा मुँह लेकर रह जाना = लज्जित होकर रह जाना; *(अपना) मुँह काला करना* = व्यभिचार करना; अपनी बदनामी करना; *(दूसरे का) मुँह काला करना* = उपेक्षापूर्वक दूर करना या हटाना; *मुँह की खाना* = अपमानित या लज्जित करना; *मुँह छिपाना* = लज्जा के कारण सामने न आना; *मुँह के बल गिरना* = बहुत धोखा खाना; *(किसी का) मुँह ताकना* = आशा लगाकर किसी की ओर देखना; चकित होकर किसी की ओर देखना; *मुँह ताकना* = कुछ न कर सकने के कारण चुपचाप बैठे रहना; *मुँह धो रखना* = कुछ पाने की आशा छोड़ बैठना; *मुँह पर* = सामने; *मुँह फुलाना* = अप्रसन्नता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकट करनेवाली आकृति बनाना; *मुँह फूँकना या झुलसना* = मुँह में आग लगाना; *(किसी के) मुँह लगना* = बड़ों के सामने बढ़-बढ़कर या अनुचित बातें करना; बड़ों की बातों का उत्तर देना; *मुँह लगना* = किसी चीज का खाया जाना; किसी चीज का खाने में इतना स्वादिष्ट लगना कि उसका चस्का पड़ जाए; *(किसी को) मुँह लगाना* = कोई चीज खाना आरंभ करना; *मुँह सूखना* = भय या लज्जा से चेहरे का तेज नष्ट होना।

किसी पदार्थ का ऊपरी कुछ खुला हुआ भाग; व्यवहार या संबंध का ध्यान, मुलाहजा, मुरव्वत। *मुहा. मुँह देखने का* = जो हार्दिक न हो, केवल ऊपरी या दिखऔआ; *मुँह मुलाहजे का* = वह परिचित जिसके साथ शीलपूर्ण व्यवहार करना पड़ता हो।

सामने की या ऊपरी सतह, सामना।

मुँहअखरी *वि.* जबानी।

मुँह-काला *पुं.* {हिं. मुँह + काला} अप्रतिष्ठा, बेइज्जती; बदनामी।

मुँहचंग *पुं.* मुरचंग।

मुह-चोर *वि.* {हिं. मुँह + चोर} जो औरों के सामने जाने में हिचकता हो।

मुँह-छुट *वि.* मुँह-फट।

मुँह-जोर *वि.* {हिं. मुँह + फा. ज़ोर} बहुत अधिक बोलनेवाला, बकवादी; मुँह-फट; (घोड़ा) लगाम का संकेत न मानने या ठीक तरह से सवार के वश में न रहनेवाला।

मुँह-दिखरावनी *स्त्री.* = मुँह-दिखाई।

मुँह-दिखाई *स्त्री.* {हिं. मुँह + दिखाना} पहले-पहल ससुराल में नई वधू के आने पर एक रस्म जिसमें वरपक्ष के लोग वधू का मुँह देखते हैं, मुँह-देखनी; वह धन जो उक्त अवसर पर वधू को दिया जाता है।

मुँह-देखनी *स्त्री.* = मुँह-दिखाई।

मुँह-देखा *वि.* {हिं. मुँह + देखना} {*स्त्री.* मुँह-देखी} केवल सामना होने पर संकोचवश होनेवाला, जैसे मुँह-देखी प्रशंसा।

मुँह-फट *वि.* {हिं. मुँह + फटना} अनुचित या कटु बातें कहने में संकोच न करनेवाला।

मुँह-बोला *वि.* {हिं. मुँह-बोलना} (संबंधी) जो वास्तव में न होने पर भी मुँह से कहकर बनाया गया हो, जैसे मुँह-बोला भाई।

मुँह-माँगा *वि.* {हिं. मुँह + माँगना} मुँह से माँगा हुआ, मनोनुकूल।

मुँहाचाही *स्त्री.* {हिं. मुँह + चाहना = देखना} आपस में एक दूसरे को देखना, देखादेखी।

मुँहासा *पुं.* {हिं. मुँह} मुँह पर के वे दाने जो युवावस्था में निकलते हैं।

मुअत्तल *वि.* {*अ.*} {*भाव.* मुअत्तली} जो अपराध या अभियोग लगने पर जाँच या अंतिम निर्णय तक के लिए अपने पद से हटा दिया गया हो।

मुअत्तली *स्त्री.* {*अ.*} पदच्युत, मुअत्तल होने का भाव।

मुआफिक *वि.* {*अ.*} {*भाव.* मुआफिकत} अनुकूल; सदृश, समान।

मुआयना *पुं.* = निरीक्षण।

मुआवज़ा *पुं.* {*अ.*} बदला, पलटा; हानि आदि के बदले में मिलनेवाला धन, प्रतिकार (कम्पेंसेशन)।

मुकंद *पुं.* {सं.} कुंदरू, प्याज, साठी धान।

मुकट *पुं.* {हिं.} मुकुट।

मुकटा *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार की रेशमी धोती जो पूजन, भोजन आदि के समय पहनी जाती है।

मुकतई *स्त्री.* {सं. मुक्त} मुक्ति; छुटकारा।

मुकता[1] *वि.* {हिं. अ + मुकता = समाप्त होना} {*स्त्री.* मुकती} बहुत अधिक, यथेष्ठ (अमुकता का विकृत रूप)।

मुकता[2] *स्त्री.* {सं. मुक्त} मोती।

मुकताफल (हल) *पुं.* {सं. मुक्ताफल} मोती।

मुकताली *स्त्री.* मुक्तावली।

मुकति *स्त्री.* मुक्ति।

मुकदमा *पुं.* {*अ.* मुकद्दमः} अभियोग, अपराध, अधिकार या लेन-देन आदि से संबंध रखनेवाला वह विवाद जो न्यायालय के सामने किसी पक्ष की ओर से विचार के लिए रखा जाए, अभियोग (केस); दावा, नालिश; ग्रंथ की भूमिका।

मुकदमेबाज *पुं.* {*अ.* मुकदमा + फा. बाज (प्रत्य.)} {*भाव.* मुकदमेबाजी} वह जो प्रायः मुकदमे लड़ता रहता हो।

मुकद्दमा *पुं.* मुकदमा।

मुकना *अ.* {सं. मुक्त} मुक्त होना, छूटना; समाप्त होना, खत्म होना।

मुकम्मल *वि.* {*अ.*} पूरा किया हुआ, पूर्ण।

मुकरना *अ.* {सं. मा = नहीं + करना} कोई बात कहकर उससे इंकार करना या पीछे हटना, नटना।

मुकरनी *स्त्री.* {हिं.} मुकरी नाम की कविता; *वि.* कोई बात कहकर उससे इंकार कर जानेवाला।

मुकरबा *पुं.* मकबरा।

मुकरवा *पुं.* मुकरा।

मुकरा *पुं.* {हिं. मुकरना} वह जो कोई बात कहकर उससे फिर जाता हो, मुकरनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुकराना *स.* {सं. मुक्त} मुक्त कराना, छुड़ाना। *उदा.* ग्राह गहे गजपति मुकरायौ, हाथ चक्र ले धायौ–सूर।

मुकरानी *स्त्री.* मुकरी।

मुकरी *स्त्री.* {हिं. मुकरना + ई (प्रत्य.)} वह कविता जिसमें पहले कही हुई बात से मुकरते हुए कुछ और ही बात बनाकर कही जाए, कह-मुकरी। साहित्य में यह छेकापह्नुति अलंकार है, जैसे सगरि रैन वह मोंह सँग जागा, भोर भई तब बिछुर लागा, वाके बिछुरत फाटत हिया, कहु सखि साजन, ना सखि दिया–**खुसरो**।

मुक़र्रर *वि.* {अ.} {भाव. मुकर्ररी} निश्चित, नियत; नियुक्त।

मुकल *पुं.* {सं.} अमतलास, गुग्गुल।

मुकलाना *स.* {सं. मुक्त या मुकलित} खोलना; छोड़ना।

मुकाना *स.* {सं. मुक्त} मुक्त कराना, छुड़ाना; समाप्त या खतम करना; *अ.* मुकना।

मुकाबला *पुं.* {अ.} सामना; मुठभेड़; तुलना; मिलान; विरोध।

मुकाबिल *क्रि. वि.* {अ.} सम्मुख, सामने; *पुं.* प्रतिद्वन्द्वी; शत्रु, वैरी।

मुकाम *पुं.* {अ.} स्थान, जगह; यात्रा करते समय मार्ग में ठहरने की क्रिया या स्थान; अवसर, मौका।

मुकामी *वि.* स्थानीय या स्थानिक।

मुकाला *पुं.* मुँह-काला।

मुकित *वि.* = मुक्त।

मुकुंद *पुं.* {सं.} विष्णु, पारा, कनेर।

मुकुट *पुं.* {सं.} देवताओं, राजाओं आदि के सिर पर रहनेवाला एक प्रसिद्ध शिरोभूषण; किरीट, अवतंस।

मुकुटमणि *पुं.* {सं.} मुकुट में लगा हुआ रत्न; अत्यन्त श्रेष्ठ वस्तु या वस्तु।

मुकुटी *स्त्री.* {सं.} अँगुली मटकाना।

मुकुत *वि.* = मुक्त।

मुकुता *स्त्री.* मुक्ता।

मुकुति *स्त्री.* = मुक्ति।

मुकुर *पुं.* {सं.} शीशा, दर्पण; कली, बेर का पेड़, केला, कोरक; मुकरा।

मुकुरित *वि.* {सं.} खिला हुआ।

मुकुल *पुं.* {सं.} {*वि.* मुकुलित} कली; शरीर; आत्मा।

मुकुलाग्र *पुं.* {सं.} प्राचीनकालीन अस्त्र।

मुकुलित *वि.* {सं.} (पौधा) जिसमें कलियाँ निकली हों; कुछ खिली हुई (कली); आधा खुला और आधा बंद (फूल, नेत्र आदि)।

मुकुली *पुं.* {सं.} वह पौधा जिसमें कलियाँ निकल आई हों।

मुकुष्ठ *पुं.* {सं.} बनमूँग, मोठ।

मुकेश *पुं.* मुक्केश।

मुक्का *पुं.* {सं. मुष्टिका} {*स्त्री.* अल्पा. मुक्की} आघात या प्रहार के लिए बाँधी हुई मुट्ठी, घूँसा; *पुं.* मोखा।

मुक्की *पुं.* {हिं. मुक्का + ई (प्रत्य.)} मुक्का, घूँसा; एक प्रकार का द्वन्द्व युद्ध जिसमें एक दूसरे पर मुक्कों से प्रहार किया जाता है, मुक्केबाजी (बॉक्सिंग); बँधी हुई मुट्ठियों से किसी के शरीर पर, उसकी थकावट दूर करने के लिए, धीरे-धीरे आघात करना।

मुक्खी *पुं.* {हिं.} एक प्रकार का कबूतर।

मुक्केबाजी *स्त्री.* {हिं. मुक्का + फा. बाज़ी (प्रत्य.)} मुक्कों की लड़ाई, घूँसेबाजी, मुक्की (बॉक्सिंग)।

मुक्कैश *पुं.* {अ.} बादला; जरी का बना हुआ एक प्रकार का कपड़ा।

मुक्त *वि.* {सं.} जिसे मुक्ति मिल गई हो; बंधन से छूटा हुआ; जो अभियोग आदि चलने पर छोड़ दिया गया हो (रिलीज्ड); बंधनरहित, स्वछंद (फ्री)।

मुक्तकंठ *वि.* {सं.} बिल्कुल स्पष्ट रूप से, बिना किसी संकोच या दबाव के और कृतज्ञतापूर्वक कहा हुआ, जैसे मुक्तकंठ, प्रशंसा।

मुक्तक *पुं.* {सं.} प्रायः चार चरणों की किसी विषय पर लिखी गई स्वतः संपूर्ण रचना।

मुक्त व्यापार *पुं.* {सं.} दूसरे देशों के साथ होनेवाला ऐसा व्यापार जिसमें आयात और निर्यात-संबंधी विशेष बाधाएँ न हों (फ्री ट्रेड); वह सिद्धांत कि सरकार को व्यापार, व्यवसाय और कल-कारखानों आदि के काम में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

मुक्त स्पर्धा *स्त्री.* {सं.} ऐसी स्पर्धा जिसमें सम्मिलित होने के लिए बंधन न हो।

मुक्तहस्त *वि.* {सं.} {*भाव.* मुक्तहस्तता} जो खुले हाथों और बहुत उदारतापूर्वक दान या व्यय करता हो।

मुक्तांबर *वि.* {सं.} नग्न, नंगा।

मुक्ता *स्त्री.* {सं.} मोती।

मुक्तात्मा *पुं.* {सं.} वह पुरुष जो माया के बंधनों से मुक्त हो गया हो।

मुक्तापात *पुं.* {हिं.} झाड़ी जिसके डंठलों से चटाई बनती है।

मुक्तापुष्प *पुं.* {सं.} कुंद का फूल।

मुक्ताफल *पुं.* {सं.} मोती, मौक्तिक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ताल पुं. {सं.} मोती, कपूर, हरफा रेवड़ी।
मुक्तावली पुं. {सं.} मोतियों की माला या लड़ी।
मुक्तासन पुं. {सं.} योग साधना का एक आसन, सिद्धासन।
मुक्ताहल पुं. मुक्ताफल।
मुक्ति *स्त्री.* {सं.} बंधन आदि से छूटने की अवस्था या भाव (रिलीज); अभियोग आदि से छूटने या छोड़े जाने की क्रिया या भाव (डिस्चार्ज); दायित्व, देन आदि से छूटने की क्रिया या भाव (डिस्चार्ज); नियम, पण, भार आदि से छूटने की क्रिया या भाव (एक्जेम्पशन); धार्मिक विश्वास के अनुसार वह दशा जिसमें मनुष्य बार-बार जन्म लेने से छूट जाता है और उसकी आत्मा ईश्वर में मिल जाती है, मोक्ष।
मुक्ति-सेना *स्त्री.* {सं.} जनता के उद्धार के लिए काम करनेवाले लोगों का समूह।
मुक्ति-क्षेत्र पुं. {सं.} मुक्तिप्रद स्थान, काशी।
मुख पुं. {सं.} मुँह, आनन; मुँह; किसी पदार्थ का सामनेवाला ऊपरी खुला भाग (फेस); आदि, आरंभ; किसी वस्तु का वह भाग जो साधारणतः ऊपरी या सामनेवाला माना जाता है और जिसके विपरीत नीचे या पीछेवाला भाग होता है, सीधा, जैसे सिक्के या मुद्रा का मुख; नाटक में एक प्रकार की संधि जहाँ से अर्थों और रसों के व्यंजक बीज की उत्पत्ति या सूत्रपात होता है।
मुखचित्र पुं. {सं.} किसी पुस्तक के मुखपृष्ठ पर या बिल्कुल आरंभ में दिया हुआ चित्र।
मुखड़ा पुं. {सं. मुख} चेहरा; गीत की पहली पंक्ति।
मुखाकार पुं. {सं.} मुख के सदृश।
मुखाग्र पुं. {सं.} किसी पदार्थ का अगला भाग, ओठ; (*वि.*) कंठस्थ।
मुखतार पुं. {*अ.* मुख़्तार} {*भाव.* मुखतारी} जिसे किसी ने अपना प्रतिनिधि बनाकर कोई काम करने के लिए नियत किया हो; एक प्रकार का कानूनी सलाहकार और कार्यकर्ता, अभिकर्ता।
मुखतारनामा पुं. {*अ.* मुख़्तार + फा. नामः} वह पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को किसी की ओर से अदालती कार्रवाई करने का अधिकार मिला हो, अभिकर्ता-पत्र।
मुखतारी *स्त्री.* {*अ.* मुख़्तारी} मुखतार का काम, पेशा या भाव; एक प्रकार के कानूनी सलाहकार बनने की परीक्षा जो अब बंद हो गई है।
मुखपत्र पुं. {सं.} किसी संस्था या दल की ओर से निकलनेवाला वह सामयिक पत्र जिसमें उसके विचारों, सिद्धांतों, उद्देश्यों आदि प्रतिपादन होता है (ऑर्गन)।
मुखपृष्ठ पुं. {सं.} किसी पुस्तक में सबसे ऊपर का पृष्ठ, पहला आवरण-पृष्ठ।
मुखबंध पुं. {सं.} ग्रंथ की प्रस्तावना।
मुखबिर पुं. {*अ.* मुख़्बिर} {*भाव.* मुखबिरी} खबर देनेवाला जासूस, गोइंदा।
मुखबिरी *स्त्री.* {*अ.* मुख़्बिरी} गुप्त रूप से भेद देना, मुखबिर का काम।
मुखर *वि.* {सं.} {*स्त्री.* मुखरा, *वि.* मुखरित} अप्रिय या कटु बोलनेवाला; बहुत बोलने वाला।
मुखरित *वि.* {सं.} शब्दों या ध्वनियों से युक्त, बोलता हुआ।
मुखशुद्धि *स्त्री.* {सं.} मुँह साफ करना; भोजन के बाद पान, सुपारी आदि खाकर मुँह शुद्ध करना।
मुखसंधि *स्त्री.* नाटक की पाँच संधियों में पहली।
मुखापेक्षक *वि.* {सं.} दूसरे का मुँह ताकनेवाला।
मुखापेक्षा *स्त्री.* {सं.} दूसरे के आश्रित रहना।
मुखापेक्षी *वि., पुं.* {सं.} जो दूसरे की कृपादृष्टि के भरोसे रहता हो।
मुखारी *स्त्री.* {सं. मुख} चेहरे की बनावट, मुखाकृति, किसी वस्तु का वह ऊपरी या सामने का भाग जो रूप, आकार, प्रकार आदि का सूचक हो, जैसे छापे में सीसे के अक्षरों की मुखारी जो अक्षर के स्वतंत्र रूप या लेख-प्रकार की सूचक होती है; दतुअन।
मुखास्त्र पुं. {सं.} केवड़ा।
मुखालिफ *वि.* {*अ.*} {*भाव.* मुखालिफत} विरोधी; शत्रु; प्रतिद्वन्द्वी।
मुखिया पुं. {सं. मुख्य + इया (प्रत्य.)} नेता, सरदार; अगुआ।
मुखौटा *वि.* {सं. मुखपट} धातु आदि का बना हुआ मुख आकार का वह खंड जो देवी-देवताओं की प्रतिमाओं के मुख पर लगाया जाता है, चेहरा।
मुख्तसर *वि.* {सं.} संक्षिप्त।
मुख्य *वि.* {सं.} {*भाव.* मुख्यता} सबसे बड़ा, ऊपर या आगे रहनेवाला, प्रधान (प्रिंसिपल); जिसमें औरों की अपेक्षा बहुत अधिक विशेषता या महत्त्व हो, अधिक महत्ववाला; अपने वर्ग या विभाग में सबसे बड़ा या प्रधान (चीफ)।
मुख्यतः *क्रि. वि.* {सं.} मुख्य रूप से, खास तौर पर।
मुख्यता *स्त्री.* {सं.} मुख्य होने का भाव।
मुख्यद्वार पुं. {सं.} भवन या महल का बाहरी बड़ा दरवाजा।
मुख्यावास पुं. {सं.} वह मुख्य या प्रधान स्थान जहाँ कोई बड़ा अधिकारी नियमित रूप से रहता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो और जहाँ उसका सबसे बड़ा कार्यालय हो (हेडक्वार्टर)।

मुगदर पुं. {सं. मुद्गर} वह भारी मुँगरी का जोड़ा जिसका उपयोग व्यायाम के लिए होता है, जोड़ी।

मुगल पुं. {तु.} {*स्त्री.* मुगलानी} मंगोल देश का निवासी; तुर्कों का एक वर्ग जो तातार देश में रहता था।

मुगबन पुं. {हिं.} वनमूँग, मोठ।

मुगलई *वि.* {तु. मुगल} मुगलों की तरह का; *स्त्री.* मुगल होने का भाव, मुगलपन।

मुगलाई *वि. स्त्री.* मुगलई।

मुगलानी *स्त्री.* {हिं. मुगल} मुगल स्त्री; दासी; कपड़ों की सिलाई करनेवाली स्त्री।

मुगुध *वि.* = मुग्ध।

मुग्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* मुग्धता} जिसे मोह या भ्रम हुआ हो; आसक्त, मोहित; मूढ़, मूर्ख।

मुग्धकर *वि.* {सं.} {*स्त्री.* मुग्धकरी} मुग्ध करनेवाला, मोहक।

मुग्धा *स्त्री.* {सं.} साहित्य में वह नायिका जिसमें यौवन के लक्षण तो प्रकट होने लगे हों, पर जिसमें काम-चेष्टा उत्पन्न न हुई हो।

मुचक पुं. {सं.} लाक्षा, लाह।

मुचकंद पुं. {सं. मुचुकुंद} एक बड़ा पेड़ जिसमें सुगंधित फूल लगते हैं।

मुचुकुंद पुं. {सं.} मुचकुंद।

मुचुही *स्त्री.* {सं.} उँगली मटकाना।

मुचना[1] *अ.* {सं. मोचन} मोचन होना।

मुचना[2] *अ.* {हिं. मोच} अंग में मोच आना।

मुचलका पुं. {तु. मुचल्का} वह पत्र जिसके द्वारा कोई अनुचित काम न करने या नियत तिथि पर न्यायालय में उपस्थित होने की प्रतिज्ञा हो और प्रतिज्ञा पूरी न करने पर कुछ अर्थदण्ड देना पड़े।

मुछंदर पुं. {हिं. मूँछ} बड़ी-बड़ी मूँछोंवाला; बड़े-बड़े बालों के कारण कुरूप; मूर्ख, बुद्धू।

मुजरा पुं. {*अ.* मुज़ा} किसी रकम में से काटी हुई रकम अथवा कुछ रकम काटना; किसी बड़े के सामने पहुँचकर उसे सलाम करना, अभिवादन; वेश्या का बैठकर गाना।

मुजराई *स्त्री.* {हिं.} काटने या घटाने की क्रिया, बट्टास।

मुजरिम पुं. {*अ.* मुज़्रिम} जिसपर जुर्म लगा हो, अभियुक्त।

मुजरैत *स्त्री.* मुजरा करनेवाली, नर्तकी।

मुजावर पुं. {*अ.*} किसी पीर की कब्र, दरगाह आदि पर बैठकर पुजाने और चढ़ावा लेनेवाला।

मुझ *सर्व.* {हिं. मुझे} 'मैं' का वह रूप जो कुछ कारकों में विभक्ति या परसर्ग लगने से पहले होता है, जैसे मुझको, मुझसे।

मुझे *सर्व.* {सं. मह्यम} मुझको।

मुटमुरी *स्त्री.* {हिं.} एक प्रकार का धान।

मुटाई *स्त्री.* {हिं.} स्थूलता, मोटापन, पुष्टि।

मुटिया पुं. {हिं.} श्रमिक, मजदूर।

मुट्ठा{हिं. मूठ} घास, फूस आदि का पूला; कागजों आदि का गोल लपेटा हुआ पुलिंदा, खर्रा, दस्ता।

मुट्ठी *स्त्री.* {सं. मुष्टिका, प्रा. मुट्ठिआ} हाथ की उँगलियाँ मोड़कर हथेली पर दबाने से बननेवाली मुद्रा या रूप; उतनी वस्तु जितनी ऐसे हाथ में आए।

मुहा. मुट्ठी में = अधिकार या वश में; *मुट्ठी गरम करना* = कुछ धन देना।

बँधी हुई हथेली के बराबर लंबाई; घोड़ों की ऊँचाई की एक नाप जो दोनों मुट्ठियों और फैले हुए अँगूठों के बराबर होती है, जैसे सात मुट्ठी का घोड़ा; मुक्की।

मुठभेड़ *स्त्री.* {हिं. मूठ + भिड़ना} टक्कर, भिड़ंत; भेंट, सामना।

मुठिका *स्त्री.* मुट्ठी; मुक्का।

मुठिया *स्त्री.* बेंट।

मुठियाना *स.* {हिं. मुट्ठी} मुट्ठी में लेकर बार-बार दबाना।

मुठी *स्त्री.* मुट्ठी।

मुड़कना *अ.* मुरकना।

मुड़ना *अ.* {सं. मुरण} घूम या बल खाकर किसी ओर फिरना, सीधे न जाकर इधर-उधर या पीछे प्रवृत्त होना, घूमना; लौटना।

मुड़ला *वि.* {*स्त्री.* मुड़ली} मुंडा।

मुड़वाना *स.* {हिं. 'मूँड़ना' का प्रे.} मुंडन कराना, मुँड़ाना; किसी को मुँड़ने में प्रवृत्त करना।

मुड़िया पुं. {हिं.} जिसका सिर मूँड़ा गया हो, संन्यासी; *स्त्री.* महाजनी लिपि।

मुड़ाना *स.* मुँड़ाना।

मुतअल्लिक *वि.* {*अ.*} संबंध या लगाव रखनेवाला, संबद्ध।

मुतक्का पुं. {देश.} मुँडेरा; छोटा खंभा; मीनार, लाट।

मुतबन्ना पुं. {*अ.*} दत्तक पुत्र।

मुतलक *वि.* {*अ.*} कुछ भी, तनिक भी, जरा भी; *वि.* बिल्कुल, निपट, निरा।

मुतवल्ली पुं. {*अ.*} किसी बालक या विधवा और उसकी संपत्ति, हित आदि की रक्षा और देखरेख करनेवाला व्यक्ति, वली, संरक्षक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुतसद्दी पुं. {अ.} लेखक, मुंशी; प्रबंधकर्ता; मुनीम।

मुतसिरी स्त्री. {हिं. मोती} मोतियों की माला या कंठी।

मुताबिक क्रि. वि. {अ.} अनुसार; वि. अनुकूल।

मुतालबा पुं. पावना।

मुताह पुं. {अ. मुताअ} मुसलमानों में प्रचलित एक प्रकार का अस्थायी विवाह।

मुक्तिलाडू पुं. {हिं. मोती + लड्डू} मोतीचूर का लड्डू।

मुतेहरा पुं. {हिं. मोती + हार} कलाई पर पहनने का एक गहना।

मुत्तिय, मुत्ती स्त्री. {सं. मुक्त} मोती।

मुद पुं. {सं.} हर्ष, आनंद।

मुदकारी वि. {हिं.} हर्षकारक।

मुदगर पुं. मुगदर।

मुदति स्त्री. मुद्दत।

मुदना अ. {सं. मोद} मुदित या प्रसन्न होना।

मुदरा पुं. {हिं.} मादक पदार्थ।

मुदर्रिस पुं. {अ.} {भाव. मुदर्रिसी} अध्यापक।

मुदवंत वि. {सं. मोद} प्रसन्न, खुश।

मुदा यौज. {अ. मुद्दआ = अभिप्राय} तात्पर्य यह कि; मगर, लेकिन, परंतु।

मुदाम क्रि. वि. {फा.} सदा, हमेशा; निरंतर, लगातार; ज्यों-का-त्यों (क्व.)।

मुदामी वि. {फा.} सदा होता रहनेवाला।

मुदित वि. {सं.} प्रसन्न, खुश।

मुदिता स्त्री. {सं.} साहित्य में वह नायिका जो सब बातें या अवसर अपने अनुकूल देखकर प्रसन्न हो।

मुदिर पुं. {सं.} बादल, मेघ।

मुदीर पुं. मुदिर।

मुद्‌ग पुं. {सं.} जलवायस, मूँग।

मुद्‌गल पुं. {सं.} रोहिश घास।

मुद्‌गर पुं. {सं.} प्राचीनकाल का एक प्रकार का अस्त्र; मुदगर।

मुद्‌गवटक पुं. {सं.} मूँग का बड़ा।

मुद्दई पुं. {अ.} {स्त्री. मुद्दइया} दावा दायर करने या अभियोग उपस्थित करनेवाला, वादी; शत्रु, दुश्मन।

मुद्दत स्त्री. {अ.} {वि. मुद्दती} अवधि; बहुत दिन, अधिक समय।

मुद्दती वि. {अ.} जिसकी कोई मुद्दत या अवधि नियत हो।

मुद्दा पुं. {अ. मुद्दआ} अभिप्राय, आशय, मतलब; प्रविष्टि; क्रि. वि. तात्पर्य यह कि।

मुद्दालेह पुं. {अ. मुद्दआअलेह} वह जिसपर दीवानी दावा हो, प्रतिवादी।

मुद्ध वि. मुग्ध।

मुद्धा पुं. {देश.} पिंडली के नीचे का गाँठवाला भाग, टखना।

मुद्धी स्त्री. {देश.} रस्सी की वह गाँठ जिसके अंदर से उसका कोई सिरा इधर-उधर खिसक सके।

मुद्रक पुं. {सं.} छापनेवाला; समाचार-पत्र आदि का वह अधिकारी जिस पर उसके छापने का भार होता है और जो वैधानिक दृष्टि से उस छपी हुई वस्तु की सब बातों के लिए उत्तरदायी होता है (प्रिंटर)।

मुद्रण पुं. {सं.} {वि. मुद्रित} एक वस्तु पर बने हुए अंक या चिन्ह रंगों आदि की सहायता से अथवा और किसी प्रकार किसी दूसरी वस्तु पर अंकित करना या उतारना; ढले, खुदे या लिखे हुए अक्षरों आदि की सहायता से कागज, कपड़े आदि पर उसकी छाप लेना, छापने का काम।

मुद्रणा स्त्री. {सं.} अँगूठी।

मुद्रणयंत्र पुं. {सं.} वह यंत्र जिसकी सहायता से साधारणतः समाचारपत्र, पुस्तकें आदि छापी जाती हैं।

मुद्रण-स्वातंत्र्य पुं. {सं.} राज्य का शासन की ओर से सामयिक पत्रों आदि को मिलनेवाली वह स्वतंत्रता जिसके अनुसार वे अश्लील, हिंसात्मक, देशद्रोह से युक्त आदि कुछ नीति विरुद्ध बातों को छोड़कर शेष सब बातें दंडित होने के भय से रहित होकर छाप सकते हैं (फ्रीडम ऑफ प्रेस)।

मुद्रणाधीन वि. {सं.} जिसकी छपाई हो रही हो।

मुद्रणालय पुं. {सं.} वह स्थान जहाँ मुद्रणयंत्र की सहायता से समाचार-पत्र, पुस्तकें आदि छपती हैं, छापाखाना।

मुद्रांक पुं. {सं.} {वि. मुद्रांकित} धातु आदि का बना हुआ वह उपकरण जिसपर नाम या कुछ विशिष्ट चिन्ह उलटे खुदे रहते हैं और जिससे कागज, लाख आदि पर किसी चीज की प्रामाणिकता सूचित करने के लिए अंकित करते हैं, मोहर (सील)।

मुद्रांकन पुं. {सं.} मुद्रा या मुद्रण के द्वारा अंकित करने या छापने की क्रिया या भाव; उक्त प्रकार से अंकित की हुई या छपी हुई कोई चीज; पुस्तकों, सामयिक पत्रों आदि पर उन्हें छापनेवाले के नाम, पते आदि का उल्लेख (इम्प्रिंट)।

मुद्रांकित वि. {सं.} जिस पर मुद्रा या मोहर लगी हो।

मुद्रा स्त्री. {सं.} किसी के नाम की छाप, मोहर (सील); रुपए-पैसे आदि, सिक्का; अँगूठी,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छल्ला; छपाई के लिए सीसे के ढले हुए अक्षर (टाइप); गोरखपंथी साधुओं का कान में पहनने का स्फटिक या काठ का वलय या कुंडल; खड़े होने, बैठने आदि में शरीर के अंगों की कोई स्थिति, ठवन (पोस्चर); विष्णु के आयुधों के चिन्ह जो भक्त अपने शरीर पर अंकित कराते हैं, छाप; हठयोग में ये अंग-विन्यास खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी, और उन्मनी; साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें वर्णन से प्रकृत अर्थ तो निकलता ही है उसके सिवा कोई दूसरी बात भी सूचित होती है अथवा कोई और अर्थ भी निकलता है (यह श्लेष का एक प्रकार ही है)।

मुद्राक्षर पुं. {सं.} सीसे के ढले हुए अक्षर जो छपने के काम में आते हैं, टाइप।

मुद्रायंत्र पुं. {सं.} छापने या मुद्रण करने का यंत्र, छापे की कल।

मुद्राविज्ञान पुं. मुद्राशास्त्र।

मुद्रा-विस्फीति *स्त्री.* {सं.} कृत्रिम रूप से बढ़े हुए मुद्रा के प्रचलन या स्फीति को घटाकर कम करना या साधारण स्थिति में लाना, 'मुद्रा-स्फीति' का उलटा।

मुद्राशास्त्र पुं. {सं.} वह शास्त्र जिसमें पुराने सिक्कों के आधार पर ऐतिहासिक घटनाएँ जानने का विवेचन होता है (न्यूमिजमैटिक्स)।

मुद्रास्फीति *स्त्री.* {सं.} किसी देश में कागजी मुद्रा या नोटों आदि का अपेक्षाकृत बहुत अधिक प्रचलन होना अथवा कृत्रिम रूप से मुद्रा का मूल्य बहुत घट और वस्तुओं का मूल्य बहुत बढ़ जाता है (इंफ्लेशन)।

मुद्रिका *स्त्री.* {सं.} अँगूठी।

मुद्रित *वि.* {सं.} जिसका मुद्रण हुआ हो, छपा हुआ (प्रिंटेड); जिसपर कोई मुद्रा अंकित हुई हो, मोहर किया हुआ; चारों ओर से घिरा हुआ, वेष्ठित (सील्ड); मुँदा हुआ, मुँह-बंद।

मुधा *क्रि. वि.* {सं.} व्यर्थ, वृथा, निष्फल; *वि.* व्यर्थ का; मिथ्या, झूठा।

मुनमुना पुं. {हिं.} मैदे का बना हुआ पकवान।

मुनरा पुं. {हिं.} कान में पहनने का एक गहना।

मुनशी पुं. {अ. मुंशी} लेख आदि लिखनेवाला लेखक; पंडित, विद्वान।

मुनसरिम पुं. {अ. मुंसरिम} प्रबंध करनेवाला; कचहरी के कार्यालय का वह अधिकारी जो मिसलें या नत्थियाँ यथास्थान रखता है।

मुनसिफ पुं. {सं. मुन्सिफ़} {*भाव.* मुन्सिफी} वह जो न्याय या इंसाफ करता हो; न्याय विभाग का एक अधिकारी।

मुनहसर *वि.* {अ. मुंहसिर} अवलंबित, आश्रित।

मुनादी *स्त्री.* {अ.} ढोल आदि पीटकर की जानेवाली घोषणा, ढिंढोरा, एलान।

मुनाफा पुं. {अ. मुनाफ़ा} लाभ, नफा।

मुनारा पुं. मीनार।

मुनासिब *वि.* {अ.} {*भाव.* मुनासिबत} उचित, वाजिब।

मुनासिबत *स्त्री.* {अ.} मुनासिब होने की दशा या भाव, औचित्य; अनुदृष्टि।

मुनीं पुं. = मुनींद्र।

मुनि पुं. ऋषि।

मुनिया *स्त्री.* {हिं. रायमुनी} लाल या रायमुनी नाम की सुंदर छोटी चिड़िया।

मुनींद्र पुं. {सं.} बहुत बड़ा मुनि या ऋषि।

मुनीब पुं. मुनीम।

मुनीम पुं. {अ. मुनीब} आय-व्यय का हिसाब लिखनेवाला, लिपिक; *वि.* मुनीम-संबंधी, मुनीम का।

मुनीमी *स्त्री.* {हिं. मुनीम} मुनीम का काम या पद।

मुनीश, मुनीश्वर पुं. {सं.} मुनियों में श्रेष्ठ, बहुत बड़ा मुनि।

मुन्ना, मुन्नू पुं. {देश.} छोटों के लिए प्रेमसूचक शब्द; प्यारा बच्चा।

मुन्नू पुं. {हिं.} मुन्ना, छोटा बच्चा।

मुफलिस *वि.* {अ. मुफ़्लिस} {*भाव.* मुफलिसी} निर्धन, दरिद्र, कंगाल।

मुफलिसी *स्त्री.* {अ. मुफ़्लिसी} मुफलिस या दरिद्र होने की अवस्था या भाव, गरीबी, दरिद्रता; विधिक क्षेत्रों में वह अवस्था जब वादी या प्रतिवादी यह कहता है कि मेरे पास मुकदमा लड़ने के लिए एक पैसा भी नहीं है। ऐसा सिद्ध होने पर उसके मुकदमे से संबंध रखनेवाला उचित व्यय और वकील सरकार की ओर से मिलते हैं (पॉपरिज्म)।

मुफदि *वि.* {*वि.*} लाभकारी।

मुफस्सल *वि.* {अ.} ब्योरेवार, विस्तृत; पुं. केंद्रस्थ नगर के आस-पास के स्थान।

मुफ्त *वि.* {अ. मुफ़्त} जिससे प्राप्त करने में कुछ धन न लगे या व्यय न हो।

मुहा. मुफ्त में = बिना मूल्य दिए या कुछ व्यय किए।

मुफ्तखोर *वि.* {अ. मुफ़्त + फा. ख़ोर} {*भाव.* मुफ्तखोरी} बिना परिश्रम किए मुफ्त का माल खानेवाला।

मुफ्तखोरी *स्त्री.* {अ. + फा} मुफ्त में सभी चीजें प्राप्त करने की आदत।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुफ्ती[1] पुं. {अ.} मुसलमान धर्मशास्त्री।
स्त्री. वर्दी पहनने के अधिकारी सैनिकों, सिपाहियों अदि के सादे और साधारण कपड़े (वर्दी से भिन्न)।

मुफ्ती[2] *वि.* {अ. मुफ्त} मुफ्त का।

मुबलिग *वि.* {अ.} भेजा हुआ।

मुबारक *वि.* {अ.} जिसके कारण बरकत हो; शुभ, मंगलकारी।

मुबारकवाद पुं. बधाई।

मुबारकी *स्त्री.* बधाई।

मुमकिन *वि.* {अ. मुम्किन} जो हो सके, संभव।

मुमानियत *स्त्री.* मनाही।

मुमुक्षा *स्त्री.* {सं.} मुक्ति की अभिलाषा।

मुमुक्षता *स्त्री.* {सं.} मुमुक्षु का भाव या धर्म।

मुमुक्षु *वि.* {सं.} मुक्ति की कामना या इच्छा करनेवाला।

मुमुच्छू *वि.* मुमुक्षु।

मुमूर्षा *स्त्री.* {सं.} मरने की इच्छा।

मुमूर्षु *वि.* {सं.} जो मरने के समीप हो; मूर्च्छित।

मुर पुं. {सं.} दैत्य जिसको विष्णु ने मारा था, बेठन।

मुरई *स्त्री.* {सं.} मूली।

मुरक *स्त्री.* {हिं.} मुरकने की क्रिया या भाव।

मुरकना *अ.* {हिं. मुड़ना} {*भाव.* मुरक, *स.* मुरकाना} दबकर किसी ओर झुकना, मुड़ना; वापस आना, लौटना; किसी अंग का किसी ओर इस प्रकार मुड जाना कि उसमें पीड़ा होने लगे, मोच खाना; हिचकना; नष्ट होना।

मुरका पुं. {हिं.} बड़े-बड़े दाँतोंवाला हाथी।

मुरकी *स्त्री.* {हिं.} संगीत में किसी स्वर को बहुत कोमलता और सुंदरतापूर्वक घुमाते हुए दूसरे स्वर पर ले जाने की क्रिया; कान में पहनने की एक प्रकार की बाली।

मुरखाई *स्त्री.* मूर्खता।

मुरगा पुं. मुर्गा।

मुरगाबी *स्त्री.* = मुर्गाबी

मुरचंग पुं. {हिं. मुँह + चंग} मुँह से बजाया जानेवाला एक बाजा, मुँहचंग।

मुरचा पुं. मोरचा।

मुरछना (छाना) *अ.* {सं. मूर्छन} मूर्च्छित होना; शिथिल होना।

मुरछा *स्त्री.* = मूर्च्छा।

मुरछित *वि.* मूर्च्छित।

मुरज पुं. {सं.} पखावज, मृदंग (बाजा)।

मुरझना *अ.* कुम्हलाना।

मुरझाना *अ.* {सं. मूर्च्छन} कुम्हलाना सुस्त या उदास होना।

मुरड़ पुं. {हिं.} अभिमान, अहंकार।

मुरतंगा पुं. {हिं.} एक ऊँचा वृक्ष।

मुरदर पुं. {सं.} मुरारि, श्रीकृष्ण।

मुरदा पुं. {सं. मृत से फा. मुर्दः} मरे हुए व्यक्ति का निष्प्राण शरीर, शव; *वि.* मरा हुआ, मृत; जिसमें कुछ भी शक्ति न हो, बेदम, जिसकी क्रियात्मक या जीवनी शक्ति निकल गई हो; मुरझाया या कुम्हलाया हुआ।

मुरदाबादल पुं. इस्पंज।

मुरदार *वि.* {फा. मुर्दार} मरा हुआ, मृत; अपवित्र; अशक्त, बहुत निर्बल, बेदम; *स्त्री.* कुलटा, व्यभिचारिणी।

मुरदासन पुं. {हिं.} सीसा तथा सेंदुर का मिश्रण।

मुरधर पुं. {हिं.} मारवाड़ देश का प्राचीन नाम।

मुरना *अ.* मुड़ना।

मुरब्बा पुं. {अ. मुरब्बः} चीनी आदि की चाशनी में पकाया हुआ फलों आदि का पाक, जैसे आम का मुरब्बा।

मुरमर्दन पुं. {सं.} मुरारि, विष्णु।

मुरमुरा पुं. {अनु.} एक प्रकार का भुना हुआ चावल या ज्वार जो अंदर से पोला होता है, फरवी, लावा।

मुरमुराना *क्रि. अ.* {हिं.} चूरचूर होना।

मुररिपु पुं. {सं.} मुरारि, विष्णु।

मुररी *स्त्री.* मुर्री।

मुरलिका *स्त्री.* मुरली।

मुरली *स्त्री.* {सं.} बाँसुरी, वंशी।

मुरलीधर पुं. {सं.} श्रीकृष्ण।

मुरवा[1] पुं. = मोर (पक्षी)।

मुरवा[2] पुं. {?} एड़ी के ऊपर का चारों ओर का घेरा या वहाँ की हड्डी।

मुरवी *स्त्री.* {सं. मौर्वी} धनुष की डोरी, चिल्ला।

मुरव्वत *स्त्री.* मुरौवत।

मुरशिद पुं. {अ. मुर्शिद} गुरु; कोई बड़ा और पूज्य व्यक्ति।

मुरसुत पुं. {सं.} मुर दैत्य का पुत्र वत्सासुर।

मुरहा पुं. {सं.} श्रीकृष्ण; *वि.* मुलहा।

मुरहारी पुं. {सं.} मुर दैत्य के हंता विष्णु।

मुरा *स्त्री.* {सं.} प्रसिद्ध गंध द्रव्य।

मुराड़ा पुं. {हिं.} जलती हुई लकड़ी।

मुराद *स्त्री.* {अ.} मन की कामना या अभिलाषा, वासना।
मुहा. मुराद पाना = मनोरथ सिद्ध होना। मुराद माँगना = मनोरथ सिद्ध होने की अभिलाषा या प्रार्थना करना।
अभिप्राय, आशय, मतलब।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुरादी *वि.* {*अ.* मुराद} जिसके मन में कोई मुराद या कामना हो।

मुराना *स.* चुभलाना; मोड़ना।

मुरार *पुं.* {सं. मृणाल} कमल की नाल, भसींड।

मुरासा *पुं.* {*अ.* मुरस्सअ = जड़ाऊ} एम प्रकार का जड़ाऊ करन-फूल।

उदा. लहै मुरासा तिय-स्त्रवन, यों मुकतनु दुति पाइ–**बिहारी**।

मुरासिला *पुं.* {*अ.* मिरसिल:} पत्र, चिट्ठी, खत; राज-दरबार से भेजा जानेवाला पत्र, खरीता।

मुरारी *पुं.* {सं. मुरारि} श्रीकृष्ण।

मुरीद *पुं.* {*अ.*} शिष्य, चेला; पक्का अनुयायी और भक्त।

मुरुंडा *वि., पुं.* मुरुंडा।

मुरुख *वि.* मूर्ख।

मुरुछना *अ.* {सं. मूर्च्छा} मूर्छित या बेहोश होना; कुम्हलाना, मुरझाना।

मुरेठा *पुं.* {हिं. मूँड़} पगड़ी, साफा।

मुररना *स.* मरोड़ना।

मुरौवत *स्त्री.* {*अ.* मुरव्वत} शील, संकोच, लिहाज।

मुरौवती *वि.* संकोची, शीलवान।

मुर्ग *पुं.* {फा. मुर्ग़} मुर्गा।

मुर्ग-मुसल्लम *पुं.* {फा.} व्यंजन के रूप में प्रस्तुत पूरे का पूरा मुर्गा।

मुर्गा *पुं.* {फा.} {*स्त्री.* मुर्गी} एक प्रसिद्ध पालतू पक्षी।

मुर्गाबी *स्त्री.* {फा.} मुर्गी की जाति का एक प्रसिद्ध जलपक्षी।

मुर्गी *स्त्री.* {हिं. मुर्गा} अंडे देनेवाली प्रसिद्ध पालतू मादा पक्षी।

मुर्दनी *स्त्री.* {फा. मुर्दन = मरना} चेहरे पर दिखाई देनेवाले मृत्यु के लक्षण; शव की अंत्येष्टि क्रिया के लिए लोगों का उसके साथ जाना।

मुर्दा *पुं.* {फा. मुर्द:} मरा हुआ; दुर्बल, कमजोर।

मुर्दाबादल *पुं.* इस्पंज।

मुर्दार *वि.* {फा.} डरपोक।

मुर्दावली *स्त्री.* मुर्दनी; *वि.* मुदरे से संबंध रखनेवाली।

मुर्रा *स्त्री.* {हिं. मुड़ना} एक प्रकार की भैंस जिसके दोनों सींग कुंडल की तरह मुड़े हुए या गोलाकार होते हैं; *पुं.* एक प्रकार की छोटी आतिशबाजी; भुने हुए चावल, फरवी।

मुर्री *स्त्री.* {हिं. मरोड़ना} कपड़े, डोरे आदि का सिरा मरोड़कर लगाई हुई गाँठ; कपड़े आदि में लपेटकर उसमें डाली हुई ऐंठन या बल।

मुल[1] *योज.* {देश.} मगर, लेकिन, पर; तात्पर्य यह कि (पश्चिम)।

मुल[2] *स्त्री.* {*अ.*} शराब, मद्य।

मुलकना *अ.* {सं. पुलकित} पुलकित होना; मुस्कराना; मचकना।

मुलकाना *स.* हिं. मुलकना का *स.*।

मुलकित *वि.* {सं. पुलकित} मुस्कराता हुआ; प्रसन्न, खुश।

मुलजिम *वि.* अभियुक्त।

मुलतवी *वि.* स्थगित।

मुलतानी *वि.* {हिं.} मुलतान-संबंधी; *स्त्री.* रागिनी, चिकनी मिट्टी।

मुलमची *पुं.* {हिं.} सोना या चाँदी के गहनों पर मुलम्मा करनेवाला।

मुलहठी *स्त्री.* {हिं.} मुलेठी।

मुलना *पुं.* मौलवी।

मुलम्मा *पुं.* {सं.} किसी चीज पर रासायनिक प्रक्रिया से चढ़ाई हुई सोने, चाँदी आदि की हलकी रंगत या तह, गिलट, कलई; ऊपरी तड़क-भड़क।

मुलहा *वि.* {सं. मूल (नक्षत्र)} जो मूल नक्षत्र में पैदा हुआ हो (अशुभ); अनाथ; उपद्रवी, नटखट।

मुलाकात *स्त्री.* {*अ.*} दो या कई व्यक्तियों का आपस में मिलना, भेंट, मिलन; जान-पहचान या मेल-मिलाप।

मुलाकाती *पुं.* {*अ.* मुलाकात} वह जिससे जान-पहचान हो, परिचित; मुलाकात करने के लिए आनेवाला।

मुलाजिम *पुं.* {*अ.* मुलाज़िम} नौकर, सेवक।

मुलाजिमत *स्त्री.* {*अ.* मुलाज़िमत} नौकरी, सेवा।

मुलायम *वि.* {*अ.*} जो कड़ा न हो, सख्त का उलटा; कोमल, सुकुमार।

पद मुलायम चारा = वह जो सहज में दबाया या अधीन किया जा सके।

मुलायमितयत, मुलायमी *स्त्री.* {*अ.* मुलायम} मुलायम होने का भाव, कोमलता।

मुलुक *पुं.* {हिं.} मुल्क।

मुलाहजा *पुं.* {*अ.* मुलाहज:} निरीक्षण, देख-भाल; शील-संकोच; रिआयत।

मुलेठी *स्त्री.* {सं. मूवयष्टि} घुँघची की जड़ जो दवा के काम आती है, जेठी मधु।

मुल्क *पुं.* {*अ.*} {*वि.* मुल्की} देश; प्रांत, प्रदेश; संसार।

मुल्की *वि.* {*अ.*} देश का, मुल्क-संबंधी।

मुल्तवी *वि.* {*अ.*} आगे के लिए टाला हुआ।

मुल्ला *पुं.* मौलवी।

मुवक्किल *पुं.* {*अ.*} वह जो अपने काम के लिए वकील नियुक्त करता है।

मुवना *अ.* = मरना।

मुवाना *क्रि. अ.* {हिं.} हत्या करना, मार डालना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुशल पुं. {सं.} धान कूटने का मूसल; मूर्ख व्यक्ति।
मुशलिका पुं. {स्त्री.} मूसली।
मुशली पुं. {सं.} बलदेव।
मुशायरा पुं. {अ. मशायर:} वह समाज जिसमें बहुत से लोग मिलकर शेर या गजलें पढ़ते हैं, उर्दू कवि-सम्मेलन।
मुशाहरा पुं. {फा.} वेतन, तनख्वाह।
मुश्क[1] पुं. {फा.} कस्तूरी; गंध, बू।
मुश्क[2] स्त्री. {देश.} कंधों और कोहनी के बीच का मांसल भाग, भुजा, बाँह।
मुहा. मुश्कें कसना या बाँधना = दोनों भुजाओं को पीठ की ओर ले जाकर रस्सी से बाँधना।
मुश्क बिलाई स्त्री. मुश्क बिलाव।
मुश्क बिलाव पुं. {फा. मुश्क + हिं. बिलाव = नर बिल्ली} एक प्रकार का जंगली बिल्ला (नर बिल्ली) जिसके अंडकोष से एक प्रकार का सुगंधित तरल पदार्थ निकलता है, (फारसी में इस पदार्थ को जुबाद कहते हैं), गंध मार्जार।
मुश्किल वि. {अ.} कठिन, दुष्कर; स्त्री. कठिनता, दिक्कत; विपत्ति।
मुश्की वि. {फा.} कस्तूरी के रंग का, काला; जिसमें कस्तूरी पड़ी हो; पुं. काले रंग का घोड़ा।
मुश्त पुं. {फा.} मुट्ठी।
मुश्तरका वि. {अ. मुश्तरक:} जिसमें कई आदमी शरीक हों, जिसमें और लोग भी सम्मिलित हों, साझे का।
मुषा स्त्री. {सं.} सोने-चाँदी गलाने की धरिया।
मुषित वि. {सं.} चुराया हुआ, ठगा हुआ।
मुष्क पुं. {सं.} अंडकोष, तस्कर, चोर; वि. मांसल।
मुष्ट वि. {सं.} नष्ट किया हुआ, मसला हुआ।
मुषुर स्त्री. मुखर।
मुष्टि (का) स्त्री. {सं.} मुट्ठी; मुक्का, घूँसा।
मुष्टिका स्त्री. {सं.} मुक्का, घूँसा।
मुष्टिदेश पुं. {सं.} धनुष का वह भाग जो मुट्ठी में पकड़ा जाता है।
मुष्टिमेय वि. {सं.} मुट्ठी-भर, बहुत थोड़ा-सा।
मुष्टियुद्ध पुं. {सं.} घूँसेबाजी, मुक्कों की लड़ाई।
मुष्टियोग पुं. {सं.} हठयोग की क्रिया से रोग-शमण।
मुसकान स्त्री. = मुस्कराहट।
मुसकाना अ. = मुस्कराना।
मुसजर पुं. {अ. मुशज्जर} एक प्रकार का बूटेदार कपड़ा।
मुसना अ. {हिं. 'मूसना' का अ.} मूसा या लूटा जाना।
मुसन्ना पुं. {अ.} असल लेख की दूसरी नकल, प्रतिलिपि; रसीद आदि का वह दूसरा भाग जिसपर उसकी नकल होती है और जो रसीद देनेवाले के पास रहता है, प्रतिपर्ण।
मुसम्मात वि., स्त्री. {अ.} नाम्नी, नामधारिणी, जैसे मुसम्मात राधा; स्त्री. स्त्री, औरत।
मुसम्मी[1] वि. {अ.} नामवाला, नामक, नामधारी, जैसे मुसम्मी रामकृष्ण।
मुसम्मी[2] स्त्री. {मोजैम्बिक (अफ्रीका का एक प्रदेश)} एक प्रकार का बढ़िया मीठा नींबू।
मुसरा पुं. मूसला।
मुसलमान पुं. {फा. मुसल्मान} {स्त्री. मुसलमानी} मुहम्मद साहब के लिए चलाए हुए संप्रदाय का अनुयायी।
मुसलमानी वि. {फा.} मुसलमान का; स्त्री. सुन्नत।
मुसल्लम वि. {फा.} पूरा, अखंड।
मुसल्ला पुं. {अ.} वह दरी या चटाई जिसपर मुसलमान लोग बैठकर नमाज पढ़ते हैं; पुं. = मुसलमान (उपेक्षासूचक)।
मुसहर पुं. {हिं. मूस = चूहा + हर (प्रत्य.)} उत्तर भारत की एक जंगली जाति।
मुसाफिर पुं. {अ.} यात्री।
मुसाफिरखाना पुं. {अ. मुसाफिर + फा. ख़ान:} यात्रियों के ठहरने का स्थान, धर्मशाला, सराय; रेल के स्टेशन पर बना हुआ यात्रियों के ठहरने का स्थान, यात्रीगृह, विश्रामालय।
मुसाफिरत (फिरी) स्त्री. {अ.} यात्रा।
मुसाहब पुं. {अ.} {भाव. मुसाहबी} धनवान या राजा आदि का पार्श्ववर्ती।
मुसीका पुं. {?} वह पट्टी जिससे मुँह बाँधा जाए।
मुसीबत स्त्री. {अ.} तकलीफ, कष्ट; विपत्ति, संकट, आफत।
मुस्कराना अ. {हिं. मुस्काना} बहुत ही मंद रूप से या धीरे से हँसना।
मुस्कुराहट स्त्री. {हिं. मुस्कराना} मुस्कराने की क्रिया या भाव, मंदहास।
मुस्कान स्त्री. = मुस्कराहट।
मुस्काना अ. {सं. स्मि- स्मयते} मुस्कराना।
मुस्की स्त्री. = मुस्कराहट।
मुस्क्यान स्त्री. = मुस्कराहट।
मुस्टंडा वि. {सं. पुष्ट} मोटा-ताजा, हृष्ट-पुष्ट; पुं. बदमाश, गुंडा।
मुस्ता, मुस्तक पुं. {सं.} नागरमोथा।
मुस्ता स्त्री {सं.} मुस्तक, मोथा।
मुस्तैद वि. {अ. मुस्तअद} {भाव. मुस्तैदी} तत्पर, सन्नद्ध; अच्छी तरह और पूरा काम करनेवाला।
मुस्लिम पुं. {अ.} मुसलमान।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya S[illegible] Foundation Chennai and eGangotri

मुहकमा पुं. {अ.} विभाग, सरिश्ता।

मुहब्बत स्त्री. {अ.} प्रीति, प्रेम, स्नेह; लगन, लौ।

मुहर स्त्री. = मोहर।

मुहरबंद वि. = मोहरबंद।

मुहर्रम पुं. {अ.} अरबी वर्ष का पहला महीना जिसमें इमाम हुसेन शहीद हुए थे; इस महीने में इमाम हुसेन का शोक मनाने के दस दिन।

मुहा. मुहर्रम की पैदाइश = बहुत ही मनहूस या रोनी सूरतवाला।

मुहर्रमी वि. {अ. मुहर्रम + हिं. ई (प्रत्य.)} मुहर्रम-संबंधी, मुहर्रम का; शोकसूचक; मनहूस।

मुहर्रिर पुं. {अ.} {भाव. मुहर्रिरी} लेखक, मुनशी।

मुहल्ला पुं. {अ. मुहसिल} कर उगाहनेवाला; प्यादा, फेरीदार; कर, लगान आदि प्राप्य धन।

मुहाफिज वि. {अ.} {भाव. मुहाफिजत} हिफाजत करनेवाला, रक्षक, रखवाला।

मुहार स्त्री. {फा. महार} ऊँट की नकेल।

पद शुतुर बे-मुहार = वह जो व्यर्थ या यों ही इधर-उधर घूमता-फिरता हो।

मुहाल वि. {अ.} असंभव, नामुमकिन; कठिन, दुष्कर; पुं. महाल।

मुहावरा पुं. {अ.} किसी विशिष्ट भाषा में प्रचलित वह वाक्य-खंड या पद जिसका अर्थ लक्षणा या व्यंजना से निकलता हो, वह अर्थ जो शब्दों के प्रत्यक्ष या शाब्दिक अर्थ से भिन्न और विलक्षण हो; अभ्यास, मश्क।

मुहावरेदार वि. {अ. मुहावर: +फा. दार (प्रत्य.)} (भाषा) जिसमें मुहावरों का ठीक-ठीक प्रयोग हुआ हो।

मुहावरेदारी स्त्री. {अ. मुहावर: फा. दारी (प्रत्य.)} मुहावरों के ठीक प्रयोग का ज्ञान; मुहावरों से युक्त या अभिज्ञ होने की दशा।

मुहासिल पुं. {अ.} आय, आमदनी; लाभ, मुनाफा; उगाहने पर मिला हुआ धन (कर, चंदा आदि)।

मुहिं सर्व. मोहिं।

मुहिम स्त्री. {अ.} विकट या बड़ा काम; लड़ाई, युद्ध; फौज की चढ़ाई, अभियान।

मुहूम स्त्री. महिम।

मुहूर्त पुं. {सं.} दिन-रात का तीसवाँ भाग; निर्दिष्ट क्षण या समय; फलित ज्योतिष के अनुसार निकाला हुआ वह समय जब कोई शुभ काम किया जाए।

मुह्य वि. {सं.} {भाव. मुह्यता} मोह में पड़ा हुआ; मूर्छित, बेहोश, बेसुध।

मुह्यमान वि. मुह्य।

मूँग पुं. {सं. मुद्ग} एक प्रसिद्ध अन्न जिसकी दाल बनती है।

मूँगफली स्त्री. {हिं. भूम (भूमि) + फली} एक प्रकार का पौधा जिसका फल बादाम की तरह का, पर जमीन के अंदर होता है, चिनिया बादाम। (अंग्रेजी में इसे ग्राउंड नट कहते हैं, इसी से तदर्थीय रूप में इसे पहले भूम (भूमि) फली कहते थे, जिससे बिगड़कर भूँगफली, मूमफली और तब मूँगफली बना।

मूँगर पुं. {सं. मुद्गर} काठ का हथौड़ा, मुँगरा।

मूँगरी स्त्री. {देश.} एक प्रकार की तोप।

मूँगा पुं. {हिं. मूँग} एक प्रकार के समुद्री कीड़ों की लाल ठठरी जिसकी गिनती रत्नों में होती है, प्रवाल, विद्रुम।

मूँगिया वि. {हिं.} हरे रंग का; पुं. एक प्रकार का हरा रंग, चारखाना।

मूँछ स्त्री. {सं. श्मश्रु} ऊपरी होंठ पर के बाल जो केवल पुरुषों के होते हैं।

मुहा. मूँछें उखाड़ना = गर्व दूर करके दंड देना; *मूँछों पर ताव देना* = अभिमान से मूँछ मरोड़ना; *मूँछें नीची होना* = हार या अप्रतिष्ठा होना।

मूँछी स्त्री. {देश.} एक प्रकार की कढ़ी।

मूँज स्त्री. {सं. मुंज} एक प्रकार का तृण।

मूँठ स्त्री. मूठ।

मुड़ पुं. {सं. मुंड} सिर, माथा।

मुहा. मूँड़ मुँड़ाना = संन्यासी, त्यागी या साधु होना।

मूँड पुं. {हिं.} कपाल, सिर।

मूँडन पुं. मुंडन।

मूँड़ना स. {सं. मुंडन} उस्तरे से सिर, गाल आदि के बाल साफ करना, हजामत बनाना; धोखा देकर धन लेना, ठगना; किसी को चेला बनाना।

मूँड़ी स्त्री. मुंड़।

मूँदना स. {सं. मुद्रण} ऊपर कोई चीज डालकर छिपाना, बंद करना, ढाँकना; द्वार, मुँह आदि पर कुछ रखकर उसे बंद करना।

मूँदर स्त्री. भुँदरी।

मूक वि. {सं.} {भाव. मूकता} जो बोलता न हो, गूँगा; जो चुप हो, अवाक्; विवश, लाचार।

मूकना स. {सं. मुक्त} छोड़ना, त्यागना; मुक्त करना, छुड़ाना; (अस्त्र आदि) चलाना या फेंकना।

मूका पुं. {हिं.} दीवार के आरपार बना हुआ छेद, छोटा गोल झरोखा मोखा, घूँसा।

मुकू वि. {सं. मूक} अपना दोष जानते हुए भी चुप रहनेवाला, मचला।

उदा. मुकू, निंद, निगोड़ा, भोड़ा, कायर काम बनावे—सूर।

मूखना स. मूसना।

मूचना स. मोचना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Che[illegible]nd eGangotri

मूझना *अ.* {सं. मुर्च्छना} मूर्च्छित होना, बेसुध होना।

मूठ *स्त्री.* {सं. मुष्ठि} मुट्ठी; औजार या हथियार का वह भाग जो हाथ या मुट्ठी में पकड़ा जाता है, मुठिया, दस्ता; जादू।
मुहा. मूठ चलाना या मारना = जादू या टोना करना; *मूठ लगना* = जादू का प्रभाव या फल होना।

मूठना *अ.* {सं. मुष्ट} नष्ट होना।

मूठाली *स्त्री.* {हिं.} तलवार।

मूठि (ठी) *स्त्री.* मुट्ठी।

मूठी *स्त्री.* {हिं.} मुट्ठी।

मूड *पुं.* {अं.} मनोदशा।

मूढ़ *वि.* {सं.} {*भाव.* मूढ़ता} मूर्ख, बेवकूफ; चकित, स्तब्ध; जिसकी समझ में यह न आता हो कि अब क्या करना चाहिए।

मूढ़ा *पुं.* {सं. मंडप} {*पुं.* हिं. मंढ़ा, *स्त्री.* अल्पा. मूढी} बाँस, बेंत, बाध या रस्सी आदि से बना हुआ एक प्रकार का गोल और कुछ कम ऊँचा आसन।

मूढ़ाग्रह *पुं.* {सं. मूढ़ + आग्रह} {*वि.* मूढ़ाग्रही} मूढ़तापूर्वक किया जानेवाला आग्रह, अनुचित, हठ, दुराग्रह।

मूत *पुं.* मूत्र।

मूतना *अ.* {सं. मूत्र} पेशाब करना, मूत्र निकालना।

मूत्र *पुं.* {सं.} शरीर का वह तरल विषैला पदार्थ जो उपस्थ मार्ग या जननेन्द्रिय से निकलता है, पेशाब, मूत।

मूत्रकोश *पुं.* मूत्र एकत्र करने का स्थान।

मूत्रकृच्छ्र *पुं.* {सं.} एक रोग जिसमें बार-बार और थोड़ा-थोड़ा करके पेशाब आता है और पेशाब के साथ शरीर से शर्करा या चीनी का भी कुछ अंश निकलता है (डाइबिटीज़)।

मूत्राशय *पुं.* {सं.} नाभि के नीचे का वह भीतरी भाग जिसमें मूत्र संचित रहता है, मसाना, फुकना (ब्लैडर)।

मूना *पुं.* {हिं.} टेकुवे की पीतल या लोहे की अँकुसी।

मूर *पुं.* {सं. मूल} मूल, जड़; जड़ी-बूटी; मूल नक्षत्र; *स्त्री.* मूरि।

मूरख *वि.* मूर्ख।

मूरछना *स्त्री.* मूर्च्छना।

मूरछा *स्त्री.* = मूर्च्छा।

मूरत *स्त्री.* मूर्ति।

मूरति *स्त्री.* = मूर्ति।

मूरितिवंत *वि.* मूर्तिमान।

मूरि (री) *स्त्री.* {सं. मूल} मूल, जड़; जड़ी-बूटी।

मूर्ख *वि.* {सं.} जिसे बुद्धि न हो, या बहुत कम हो, बेवकूफ, अज्ञ, मूढ़।

मूर्खता *स्त्री.* {सं.} मूर्ख होने का भाव, नासमझी, बेवकूफी; नासमझी का काम या बात।

मूरखताई *स्त्री.* {हिं.} मूर्खता।

मूरचा *पुं.* {हिं.} मोरचा।

मूरछना *स्त्री.* {हिं.} मूर्च्छना।

मूरछा *स्त्री.* {हिं.} मूर्च्छा।

मूर्च्छन *पुं.* {सं.} संज्ञा या चेतना का लोप होना या करना; मूर्च्छित करने का मंत्र या प्रयोग।

मूर्च्छना *स्त्री.* {सं.} संगीत में, स्वर को बहुत ही कोमलतापूर्वक और सुंदर ढंग से कँपाते हुए और नियमित रूप से उतार-चढ़ाव का ध्यान रखते हुए नीचे स्वर से ऊँचे स्वर पर जाने और ऊँचे स्वर से नीचे स्वर पर आने की क्रिया, अथवा ऐसी क्रिया में गले से निकलनेवाला स्वर।

मूर्च्छा *स्त्री.* {सं.} रोग, भय, शोक आदि से उत्पन्न वह अवस्था जिसमें प्राणी निश्चेष्ट या संज्ञाहीन हो जाता है, अचेत होना, बेहोशी।

मूर्च्छित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* मूर्च्छिता} जिसे मूर्च्छा आई हो, बेहोश, अचेत; मारा या भस्म किया हुआ (पारा या और कोई रस या धातु)।

मूरत (ति) *स्त्री.* {हिं.} मूर्ति।

मूरतिवंत *वि.* {हिं.} मूर्तिमान, शरीरधारी।

मूर्त *वि.* {सं.} {*भाव.* मूर्तता} जिसका कोई प्रत्यक्ष रूप या आकार हो, साकार (कांक्रीट); ठोस।

मूर्त विधान *पुं.* {सं.} केवल कल्पना के आधार पर घटनाओं, कार्यों आदि के स्वरूप, चित्र आदि बनाने की क्रिया या भाव (इमेजरी)।

मूर्ति *स्त्री.* {सं.} शरीर, देह; आकृति, सूरत; किसी की आकृति के अनुरूप गढ़ी हुई आकृति, प्रतिमा, विग्रह; चित्र, तसवीर।

मूर्तिकला *स्त्री.* {सं.} मूर्तियाँ या प्रतिमाएँ आदि बनाने की विद्या या कला।

मूर्तिकार *पुं.* {सं.} मूर्ति बनानेवाला।

मूर्तित *वि.* {सं.} मूर्ति के रूप में लाया या बनाया हुआ।

मूर्तिपूजक *पुं.* {सं.} वह जो मूर्ति या प्रतिमा की पूजा करता हो (आइडलेटरी)।

मूर्तिपूजा *स्त्री.* {सं.} मूर्ति में ईश्वर या देवता की भावना करके उसे पूजना (आइडलेटरी)।

मूर्तिभंजक *पुं.* {सं.} वह जो मूर्तियों को व्यर्थ मानकर तोड़ता हो; मुसलमान।

मूर्तिमंत *वि.* मूर्तिमान।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्तिमान, मूर्तिमान् *वि.* {सं.} {*स्त्री.* मूर्तिमती} जो मूर्ति या शरीर के रूप में हो; साक्षात्, प्रत्यक्ष।

मूर्ध *पुं.* {हिं.} मस्तक, सिर;

मूर्धक *पुं.* {हिं.} क्षत्रिय।

मूर्धकणी *स्त्री.* {हिं.} वह वस्तु जो धूप तथा वर्षा से बचने के लिए सिर पर रखी जाय-छाता।

मूर्धा *स्त्री.* {सं.} सिर।

मूर्द्ध *पुं.* {सं. मूर्द्धन} सिर।

मूर्द्धन्य *वि.* {सं.} मूर्द्धा से संबंध रखनेवाला। (सरेब्रल); मस्तक में स्थित; सबसे अच्छा, सर्वश्रेष्ठ; *पुं.* वह वर्ण जिसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है, जैसे-ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, और ष।

मूर्द्धा *पुं.* {सं. मूर्द्धन} सिर; तालू और अलिजिह्वा के बीच का अंश जिसे जीभ का अग्र भाग ट, ठ, ड, ढ, ण, आदि का उच्चारण करते समय उलटकर छूता है।

मूर्धाभिषेक *पुं.* {सं.} अभिषेक के समय सिर पर अभिमंत्रित जल सिंचन।

मूर्वा *स्त्री.* {सं.} मरोड़फली नामक लता।

मूल *पुं.* {सं.} पृथ्वी के नीचे रहनेवाला वृक्षों आदि का वह भाग जिससे उनका पोषण और वर्द्धन होता है, जड़; खाने के योग्य मोटी जड़, जैसे सहि दुख कंद मूल फल खाई–**तुलसी**; असल जमा या धन जो किसी व्यापार आदि में लाभ के लिए लगाया जाए, मूलधन, पूँजी (प्रिंसीपल)।

मुहा. मूल पूजना = व्यापार में लगी हुई पूँजी या मूलधन निकल आना।

नींव; स्वयं ग्रंथकार का लिखा हुआ वाक्य या लेख, जिसपर टीका की जाती है; उन्नीसवाँ नक्षत्र; मूलाधार; *वि.* {सं.} किसी बात की जड़ में मुख्य आधार के रूप में रहने या होनेवाला, जैसे-मूल सिद्धांत; जिसके आधार पर आगे चलकर कुछ और परिवर्तन या विकास हो, जैसे-मूल अधिनियम; प्रधान, मुख्य, सर्वश्रेष्ठ (प्रिंसीपल)।

मूलक *वि.* {सं.} उत्पन्न करनेवाला, जनक; जो मूल में हो या जिसके मूल में कुछ हो। (यौ. के अन्त में, जैसे विवादमूलक बात); *पुं.* मूली मूरई आदि।

मूलकर्म *पुं.* प्रधान कर्म।

मूलकारण *पुं.* आदि कारण।

मूलजाति *स्त्री.* प्रधान वंश।

मूल द्रव्य *पुं.* {सं.} वे आदिम द्रव्य या भूत, जिनसे सब पदार्थ बने हैं।

मूलद्वार *पुं.* {सं.} सदर या बड़ा फाटक।

मूलधन *पुं.* {सं.} वह असल धन जो किसी के पास हो या लाभ आदि के लिए व्यापार में लगाया जाए, मूल, पूँजी (प्रिंसीपल)।

मूलपुरुष *पुं.* {सं.} किसी वंश का आदि पुरुष जिससे वह अंश चला हो।

मूलपोती *स्त्री.* छोटी पोय का साग।

मूलप्रकृति *स्त्री.* आद्य-शक्ति।

मूलबंध *पुं.* हठयोग की एक क्रिया।

मूलभद्र *पुं.* कंसराज।

मूलभूत *वि.* {सं.} किसी वस्तु के मूल या तत्व से संबंध रखनेवाला, असल।

मूलस्थान *पुं.* {सं.} पूर्वजों का निवासस्थान, प्रधान स्थान।

मूला *स्त्री.* {सं.} सतावर, मूल नक्षत्र।

मूलाधार *पुं.* {सं.} हठयोग में शरीर के भीतर के छह चक्रों में से एक जिसका स्थान गुदा और शिश्न के मध्य में है।

मूलाशी *वि.* {सं.} कंदमूल खाकर रहनेवाला।

मूलिक *वि.* {सं. मूल + हिं. इक (प्रत्य.)} घटना, अस्तित्व, क्रम आदि के विचार से पहला, जो पहले से न चला आता हो, बल्कि अभी पहली बार हुआ हो (ओरिजिनल); मौलिक।

मूलिक न्यायालय *पुं.* वह न्यायालय जिसमें कोई वाद या मुकदमा पहले-पहल विचार के लिए रखा जाए (कोर्ट ऑफ फर्स्ट इंस्टेंट)।

मूलिका *स्त्री.* {सं.} ओषधियों की जड़, जड़ी।

मूली *स्त्री.* {सं. मूलक} प्रसिद्ध पौधे की जड़ जो मीठी और चरपरी होती है।

मुहा. (किसी को) मूली-गाजर समझना = बहुत तुच्छ या हीन समझना।

मूलोच्छेदन *पुं.* {सं.} जड़ से उखाड़ फेंकने की क्रिया या भाव।

मूलोत्पाटन *पुं.* {सं.} जड़ से उखाड़ना।

मूल्य *पुं.* {सं.} कोई वस्तु खरीदने पर उसके बदले में दिया जानेवाला धन, दाम, कीमत (प्राइस); वह गुण या तत्व जिसके कारण किसी वस्तु का महत्व या मान होता है, जैसे वह चरित्र का मूल्य नहीं समझता (वैल्यू); किसी वस्तु का अनुमान से ठहराया या आँका हुआ दाम या महत्व।

मूल्यन *पुं.* {स. मूल्य + हिं. न (प्रत्य.)} किसी वस्तु का मूल्य निश्चित या स्थिर करना, दाम आँकना, मूल्यांकन (वैलुएशन)।

मूल्यवान, मूल्यवान् *वि.* {सं.} जिसका मूल्य अधिक हो, बहुत दाम का, कीमती।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Che[illegible]nd eGangotri

मूल्यांकन पुं. {सं.} कोई वस्तु देखकर अनुमान से उसका मूल्य समझना या स्थिर करना, दाम आँकना (वैलुएशन); किसी वस्तु का गुण, उपयोगिता या महत्व आँकना या समझना (एप्रिसिएशन, एस्टिमेशन)।

मूल्यानुसार क्रि. वि. {सं.} (वस्तुओं पर उनके) मूल्य के विचार अनुपात से (लगनेवाला आयात या निर्यात कर) (एड वैलोरम)।

मूष, मूषक पुं. {सं.} चूहा; वह जो चुरा-छिपाकर या जबरदस्ती दूसरों का धन ले लेता हो, मूसनेवाला।
उदा. 'कलहा, कूही, मूष रोगी अरु काँहू नैंकू न भावै'–सूर।

मूषा स्त्री. {सं.} गवाक्ष, झरोखा, गोखरू का पौधा।

मूषीकरण पुं. {सं.} घरिया में धातु गलाने की क्रिया।

मूस पुं. {हिं.} चूहा।

मूसदानी स्त्री. {हिं.} चूहा फँसाने का पिंजड़ा।

मूसना स. {सं. मूषण} किसी का माल छीन या चुरा कर ले जाना; लूटना; ठगना।

मूसर, मूसल पुं. {हिं. मुशल} धान कूटने का लंबा मोटा डंडा; एक प्रकार का पुराना अस्त्र।

मूसलचंद पुं. {हिं. मूसल} हट्टा-कट्टा, पर निकम्मा पुरुष।

मूसलधार वि. {हिं. मूसल + धार} मूसल के समान मोटी धार के रूप में होनेवाली (वर्षा)।

मूसला पुं. {हिं. मूसल} वह मोटी और सीधी जड़ जिसमें इधर-उधर शाखाएँ नहीं होतीं, 'झखरा' का उलटा।

मूसलाधार वि. = मूसलधार।

मूसली पुं. {हिं.} हलदी की जाति का पौधा जिसकी जड़ दवा के काम आती है।

मूसा[1] पुं. {सं. मूषक} चूहा।

मूसा[2] पुं. {इबरानी} यहूदियों के मूल पैगंबर का नाम।

मूसाकानी स्त्री. {हिं.} एक लता जिसके पत्ते चूहे के कान की आकार के होते हैं, यह औषधों में प्रयुक्त होती है।

मृकंडु पुं. {सं.} मार्कंडेय ऋषि के पिता।

मृग पुं. {सं.} {स्त्री. मृगी} पशु; हिरन; मृगशिरा नक्षत्र; चार प्रकार के पुरुषों में से एक (कामशास्त्र)।

मृगचर्म पुं. {सं.} हिरन की खाल जो पवित्र मानी जाती है और जिसे प्राचीन ऋषि, मुनि आदि ओढ़ते-बिछाते थे।

मृगछाला स्त्री. मृगचर्म।

मृगतृष्णा स्त्री. {सं.} जल की लहरों की वह भ्रांति जो कभी-कभी रेगिस्तान में कड़ी धूप पड़ने पर होती है, और जिसे जल समझकर मृग बहुत दूर तक व्यर्थ दौड़ता है, मृग-मरीचिका।

मृगधर पुं. {सं.} चंद्रमा।

मृगनयनी पुं. {सं.} हिरन के समान सुंदर आँखोंवाली स्त्री।

मृगनाभि पुं. {सं.} कस्तूरी।

मृगमद पुं. {सं.} कस्तूरी।

मृग-मरीचिका स्त्री. मृगतृष्णा।

मृगया स्त्री. {सं.} शिकार, आखेट।

मृगलांछन पुं. {सं.} चंद्रमा।

मृगलोचना स्त्री. {सं.} हिरन के समान नेत्रोंवाली स्त्री।

मृगवन पुं. {सं.} वह वन जिसमें मृग रहते हों।

मृगवारि पुं. {सं.} मृगतृष्णा में दिखाई देनेवाला जल; झूठी आशा दिखलानेवाली चीज या बात।

मृगशिरा पुं. {सं.} सत्ताईस नक्षत्रों में से पाँचवाँ नक्षत्र जो तीन तारों से मिलकर बना है।

मृगांक पुं. {सं.} चंद्रमा।

मृगांगंजा स्त्री. {सं.} कस्तूरी।

मृगांगना स्त्री. {सं.} हरिणी, हरनी।

मृगाधिप पुं. {सं.} सिंह, शेर।

मृगाक्षी वि. मृगलोचना, मृगनयना।

मृगिनी स्त्री. {सं.} हिरन की मादा, हरिणी, हिरनी।

मृगेंद्र पुं. {सं.} सिंह, शेर।

मृच्छकटिका वि. {सं.} मिट्टी का रथ।

मृज पुं. {सं.} मुजन नाम का बाजा।

मृज्य वि. {सं.} मार्जन योग्य।

मृड पुं. {सं.} शिव, महादेव।

मृडन पुं. आनंदित करना।

मृडानी स्त्री. {सं.} शिव की पत्नी, पार्वती।

मृणाल पुं. {द्रविड़ से गृहीत, सं.} कमल का डंठल, कमलनाल; कलम की जड़, मुरार।

मृणालिनी स्त्री. {सं.} कमलिनी।

मृण्मय वि. {सं.} {स्त्री. मृण्मयी} मिट्टी बना हुआ।

मृण्मूर्ति स्त्री. {सं.} मिट्टी की बनी हुई मूर्ति; प्राचीन और मध्य युग में कुछ विशेष प्रक्रिया से बनी हुई मिट्टी की मूर्ति मुख्यत: मुँह और सिर।

मृत वि. {सं.} {स्त्री. मृता} मरा हुआ; जिसे मरे कुछ समय हुआ हो; जिसमें जीवनी शक्ति, उपयोगिता या क्रियाशीलता, बिल्कुल न रह गई हो, जैसे मृत भाषा, मृत भंडार (डेड)।

मृतक पुं. {सं.} मरा हुआ प्राणी, मृत व्यक्ति; (डेड, डिसीज्ड); मरे हुए प्राणी का शरीर); वि. मरा हुआ, मृत, प्रमीत (डिसीज्ड)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृतककर्म पुं. {सं.} मरे हुए व्यक्ति की सद्गति के लिए किया जानेवाला कृत्य, अंत्येष्टि।

मृतांग पुं. {सं.} शव।

मृतांगार पुं. {सं.} शव का भस्म।

मृतप्राय *वि.* {सं.} जो मरा तो न हो, पर मरे हुए के समान हो, बेदम।

मृतभाषा *स्त्री.* {सं.} वह भाषा जो प्राचीन काल में कहीं प्रचलित रही हो, पर अब जिसके बोलनेवाले न रह गए हों (डेड लैंग्वेज)।

मृत-संजीवनी *स्त्री.* संजीवनी।

मृतात्मा *स्त्री.* {सं.} मृत व्यक्ति की आत्मा; मृत व्यक्ति।

मृतालक पुं. अरहर, गोपीचंदन।

मृताशन *वि.* शव खानेवाला।

मृताशौच पुं. {सं.} किसी आत्मीय के मरने पर होनेवाला अशौच।

मृति *स्त्री.* मृत्यु।

मृतोद्भव पुं. समुद्र, महासागर।

मृत्कपाल पुं. खपड़ा, जली हुई मिट्टी।

मृत्कर पुं. कुम्भकार, कोंहार।

मृत्किरा *स्त्री.* घुँघरू।

मृत्तिका *स्त्री.* {सं.} मिट्टी।

मृत्पांडु पुं. पांडुरोग जो मिट्टी खाने से उत्पन्न होता है।

मृत्पात्र पुं. मिट्टी का पात्र।

मृत्युंजय पुं. {सं.} वह जिसने मृत्यु को जीत लिया हो; शिव का एक रूप।

मृत्यु *स्त्री.* {सं.} शरीर से प्राण निकलना, मरना, मौत (डेथ)।

मृत्युकर पुं. {सं.} वह कर जो राज्य की ओर से किसी ऐसे व्यक्ति के मरने पर जो घर और संपत्ति का मालिक हो, उसके उत्तराधिकारियों से लिया जाता है (डेथ डयूटी)।

मृत्युदंड पुं. {सं.} मौत की सजा।

मृत्युलोक पुं. {सं.} यमलोक; मर्त्यलोक।

मृत्युशय्या *स्त्री.* {सं.} रोगी की शय्या या बिस्तर पर पड़े रहने की वह अवस्था जिसमें उसका मरना प्रायः निश्चित होता है।

मृत्युसंख्या *स्त्री.* {सं.} कहीं कोई दुर्घटना या लड़ाई होने अथवा भीषण संक्रामक रोग फैलने पर उसके कारण मरनेवाले लोगों की संख्या।

मृक्त *वि.* चिपचिपा।

मृत्सन *स्त्री.* {सं.} उत्तम भूमि; गीली मिट्टी जिससे बरतन बनते हैं।

मृथा *क्रि. वि.* वृथा; मृषा।

मृदंग पुं. {सं.} एक प्रकार का प्रसिद्ध पुराना बाजा (ढोल का मूल रूप)।

मृदंगी *स्त्री.* कपोती, तरोई।

मृद *स्त्री.* {सं. मृत्तिका} मिट्टी, धूल।

मृदु *वि.* {सं.} {*भाव.* मृदुता} कोमल, मुलायम, नरम; जो सुनने में और प्रिय हो; सुकुमार।

मृदुकरण पुं. {सं.} मृदु या कोमल बनाना।

मृदुत्पल पुं. {सं.} नील कमल।

मृदुल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* मृदुला, *भाव.* मृदुलता} कोमल, नरम; कोमल हृदय; दयामय, कृपालु; नाजुक, सुकुमार, कोमल।

मृदुलता *स्त्री.* {सं.} मृदुल या कोमल होने की दशा या भाव, कोमलता।

मृदुलाई *स्त्री.* = मृदुलता।

मृद्वंग पुं. कोमल शरीर।

मृध पुं. युद्ध, लड़ाई।

मृधा *अव्य.* मृषा, झूठमूठ।

मृनाल पुं. मृणाल।

मृन्मय *वि.* मिट्टी का बना हुआ।

मृष्ट *वि.* शोधित, स्वच्छ किया हुआ।

मृष्टि *स्त्री.* परिशुद्धि, शोधन।

मृषा *क्रि. वि.* {सं.} झूठमूठ, व्यर्थ; *वि.* {*भाव.* मृषात्व} असत्य, झूठ।

में *परसर्ग/विभ.* {सं. मध्य} अधिकरण कारक का चिन्ह जो शब्द के अंत में लगकर उसके अंदर होने अथवा आधार या अवस्थान का सूचक होता है, जैसे घर में।

मेंगनी *स्त्री.* {हिं. मींगी} बकरी, भेड़, चूहे आदि की विष्ठा।

मेंड़ *स्त्री.* {सं. मंडल या डाँड़ का अनु.} खेतों आदि की सीमा की सूचक मिट्टी की ऊँची रेखा या बाँध; सीमा, हद; सम्मान या गौरव की सीमा, मर्यादा।

मेंड़बंदी *स्त्री.* {हिं. मेंड़ + बाँधना} मेंड़ बनाने का काम या भाव।

मेंड़रा पुं. {सं. मंडल} {*स्त्री.* अल्पा. मेंड़री} घेरकर बनाया हुआ कोई गोल चक्कर; एँडुआ, गेंडुरी; किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा; किसी वस्तु का मंडलाकार ढाँचा, जैसे चलनी या खँजरी का मेंड़रा।

मेंडक, मेंढ़क पुं. {सं. मंडूक} एक छोटा प्रसिद्ध बरसाती जल-स्थलचारी जन्तु जो प्रायः वर्षा ऋतु में तालाबों, कुओं आदि में दिखाई पड़ता है, दर्दुर।

मेंढ़ी *स्त्री.* {सं. वेणी} माथे के ऊपरी भाग के दोनों तरफ के वे थोड़े से बाल जिन्हें कुछ स्त्रियाँ तीन लड़ों में गूँथकर जूड़े की तरफ ले जाकर बाँधती हैं; तीन लड़ियों में गूँथी हुई चोटी या बाल; घोड़ों के माथे पर की एक भौंरी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Che[illegible]d eGangotri

मेंबर पुं. सदस्य।

मेंह पुं. {सं. मेघ} आकाश से बरसनेवाला पानी, वर्षा।

मेंहरा पुं. मेंह।

मेक पुं. छाग, बकरी।

मेकल पुं. {सं.} विन्ध्य प्रदेश का वह पर्वत जिससे नर्मदा नदी निकली है।

मेकैनिक पुं. {अं. मकैनिक} मशीन की मरम्मत करनेवाला; मशीनें बनानेवाला मिस्त्री।

मेक्षण पुं. चम्मच के आकार का यज्ञपात्र।

मेख *स्त्री.* {फा.} कील, काँटा; लकड़ी का खूँटा।

मेखचू पुं. {फा.} मेख ठोंकने की हथौड़ी।

मेखड़ा *स्त्री.* बाँस के फट्टों का घेरा।

मेखल *स्त्री.* किंकणी, करधनी।

मेखला *स्त्री.* {सं.} किसी वस्तु के मध्य भाग को चारों ओर से घेरनेवाली डोरी, शृंखला, रेखा आदि; करधनी, तागड़ी, किंकिणी; मंडल, मँडरा; पर्वत का मध्य भाग; वह कपड़ा जो साधु लोग गले में डाले रहते हैं, कफनी, अलफी।

मेघ पुं. {सं.} बादल; संगीत में छह रागों में से एक।

मेघडंबर पुं. {सं.} बादल की गरज; बहुत बड़ा शामियाना।

मेघनाद पुं. {सं.} बादल की गरज; रावण का पुत्र, इंद्रजीत; मोर।

मेघराज पुं. {सं.} इंद्र।

मेघवाई *स्त्री.* {हिं. मेघ} बादलों की घटा।

मेघा पुं. मेंडक।

मेघागम पुं. {सं.} वर्षा ऋतु का आरंभ।

मेघाच्छन्न *वि.* {सं.} मेघों या बादलों से भरा या छाया हुआ (आकाश)।

मेघाडंबर पुं. मेघों का गर्जन।

मेघानंद पुं. मयूर मोर।

मेघाभ पुं. बन-जामुन।

मेघारि पुं. वायु, हवा।

मेघावर पुं. मेघवाई।

मेघवरि *स्त्री.* बादलों की घटा।

मेघावृत *वि.* {सं.} बादलों से घिरा या ढका हुआ।

मेघीना पुं. {सं. मेघ + वर्ण} नीले रंग का एक प्रकार का कपड़ा।

मेचक *वि.* {सं.} {*भाव.* मेचकता} काला, श्याम; अँधेरा; पुं. धुआँ; बादल।

मेज *स्त्री.* {फा. मेज़} लिखने-पढ़ने आदि के लिए बनी ऊँची चौकी (टेबुल)।

मेजबान पुं. {फा. मेज़बान} वह जिसके यहाँ कोई अतिथि या मेहमान आकर ठहरे; वह जो लोगों को अपने यहाँ किसी कार्य, विशेषतः भोजन, जलपान आदि के लिए निमंत्रित करे, आतिथ्य करनेवाला, मेहमानदार।

मेजबानी *स्त्री.* {फा. मेज़बानी} मेजबान का भाव या धर्म; वे खाद्य पदार्थ जो बारात आने पर पहले-पहल कन्या पक्ष से बरातियों के लिए भेजे जाते हैं।

मेजा पुं. = मंडूक, पेंडक।

मेट पुं. {अं.} मजदूरों का सरदार।

मेटक, मेटनहारा *वि.* {हिं. मेटना} मिटानेवाला।

मेटनहार पुं. दूर करनेवाला।

मेटना *स.* = मिटाना।

मेटा पुं. मटका।

मेटिया *स्त्री.* बड़े से छोटा मिट्टी का पात्र।

मेटी, मेंटुवा *स्त्री.* मेटिया।

मेड़ *स्त्री.* मेंड।

मेडन पुं. {अं.} क्रिकेट के खेल में वह ओवर जिसमें कोई रन न बना हो।

मेड़रा पुं. उमड़ा हुआ गोल किनारा, किसी वस्तु का मंडलाकार ढाँचा।

मेड़राना *अ.* मँडलाना।

मेड़िया *स्त्री.* मढ़ी।

मेढ़क पुं. मेंडक।

मेढ़ा पुं. {सं. मेढ} {*स्त्री.* मेढ़ी} भेड़ की तरह का पर उससे कुछ बड़ा एक प्रकार का चौपाया।

मेढ़ासिंगी *स्त्री.* झाड़ीदार लता जिसकी जड़ औषध के काम में आती है।

मेढ़ी *स्त्री.* मेंढ़ी, तीन लड़ियों में गूँथी हुई चोटी।

मेढ़ पुं. शिश्न, लिंग।

मेथि *स्त्री.* पशुओं को बाँधने का खूँटा।

मेथी *स्त्री.* {सं.} एक छोटा पौधा जिसकी पत्तियों का साग बनता है।

मेथौरी *स्त्री.* {हिं. मेथी + बरी} वह बरी जिसमें मेथी का साग मिला रहता है।

मेद पुं. {सं मेदस्, मेद.} चरबी; कस्तूरी; *स्त्री.* = मेदा (ओषधि)।

मेदनी *स्त्री.* {सं. मेदिनी} यात्रियों का वह दल जो झंडा लेकर किसी तीर्थ या देवस्थान को जाता है।

मेदा[1] *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार की सुगंधित जड़ जो औषध के काम में आती है।

मेदा[2] पुं. {*अ.*} पेट का वह भीतरी भाग जिसमें अन्न पचता है, पक्वाशय।

मेदिनी *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी।

मेदिनीज पुं. मंगल ग्रह।

मेदिनीपति पुं. राजा।

मेदुर *वि.* {सं.} चिकना, स्निग्ध; मोटा या गाढ़ा।

मेदोज पुं. अस्थि, हड्डी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेध पुं. {सं.} यज्ञ।
मेधा *स्त्री.* {सं.} बातें समझने और स्मरण रखने की शक्ति, धारणा-शक्ति।
मेधाविनी *स्त्री.* ब्रह्मा की पत्नी।
मेधावी *वि.* {सं.} {*स्त्री.* मेधाविनी} जिसकी मेधा या धारणा-शक्ति तीव्र हो, बुद्धिमान; पंडित, विद्वान।
मेध्य *वि.* {सं.} यज्ञ-संबंधी; पवित्र।
मेध्या *स्त्री.* लाल कमल, गोरोचन, ब्राह्मी बूटी।
मेनका *स्त्री.* एक अप्सरा।
मेनकात्मजा *स्त्री.* शकुन्तला।
मेना *स.* {हिं. मोयन} पकवान आदि में मोयन डालना; मिलाना, पार्वती की माता।
मेम *स्त्री.* {अं. मैडम} यूरोप, अमेरिका आदि पाश्चात्य देश की स्त्री; गोरी स्त्री।
मेमना पुं. {मं-में से अनु.} भेड़ का बच्चा; घोड़े की एक जाति।
मेमार पुं. {*अ.*} {*भाव.* मेमारी} मकान बनानेवाला कारीगर, राज।
मेमिष *वि.* जिसकी आँखों पर पलकें न हों।
मेय *वि.* जो नापा जा सके।
मेयना *स.* मेना।
मेर[1] पुं. मिलावट; मेल।
मेर[2] पुं. {सं.} पुराणों के अनुसार सुमेरु पर्वत के पास का एक पर्वत।
मेरक पुं. एक असुर जो विष्णु द्वारा मारा गया।
मेरवन *स्त्री.* {हिं. मेरवना} मिलाने की क्रिया या भाव, मिश्रण; मिलाई हुई चीज, मेल।
मेरवना *स.* मिलाना।
मेरा *सर्व.* {हिं. मैं} {*स्त्री.* मेरी} 'मैं' के संबंधकारक का एक रूप।
मेराउ (व)[1] पुं. मिलाव; मिलाप; मेल।
मेराउ (व)[2] *स्त्री.* {हिं. मेरा} अहंकार।
मेरी *स्त्री.* {हिं. मेरा} अहंभाव, हमता।
मेरु पुं. {सं.} हिंडोले में ऊपरवाली वह लकड़ी जिसमें हिंडोले या झूले की रस्सियाँ बँधी रहता हैं; छंदशास्त्र की वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कितने-कितने लघु-गुरु के छंद हो सकते हैं; सुमेरु; पुं. = मेल-मिलाप।
मेरुज्योति *स्त्री.* {सं.} उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों में दिखाई पड़नेवाली वह चित्र-विचित्र और नाना वर्णों की ज्योति जो वायुमंडल में व्याप्त विद्युत् के कारण उत्पन्न होती है; विशेष–उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों में छह महीनों तक दिन और छह महीनों तक रात रहती है; जब यहाँ रात रहती है, तब प्रायः समय-समय पर यह ज्योति वहाँ दिखाई देती है, इसका दृश्य बहुत ही मनोहर और आकर्षक होता है।
मेरुदंड पुं. {सं.} पृष्ठवंश, रीढ़; पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच की सीधी कल्पित रेखा।
मेरुपृष्ठ *वि.* {सं.} जिसकी पीठ या नीचे का भाग समतल भूमि पर नहीं, बल्कि अंडाकार उभरे हुए तल पर हो, भूपृष्ठ का उलटा, जैसे मेरुपृष्ठ यंत्र (तांत्रिकों का)।
मेरे *सर्व.* {हिं. मेरा} 'मेरा' का बहुवचन; 'मेरा' का वह रूप जो उसके बाद की संज्ञा में विभक्ति लगने पर होता है, जैसे मेरे भाई का।
मेल[1] पुं. {सं.} मिलने की क्रिया या भाव, समागम, मिलाप; आपस का सद्भाव, वैर-विरोध का उलटा, मैत्री, मित्रता; आपस में एक समान होना, विरुद्ध न होना, संगति, अनुरूपता (एग्रिमेंट)।
मुहा. मेल खाना, बैठना या मिलना = संगति या संयोग का ठीक और उपयुक्त होना, दो चीजों का जोड़ ठीक बैठना; *मेल बिसारना* = स्नेह या मैत्री का व्यवहार भूल जाना या छोड़ देना।
मिश्रण, मिलावट; ढंग; प्रकार, तरह।
मेल[2] *स्त्री.* {अं.} डाक; डाक-गाड़ी।
मेलक[1] पुं. {सं.} संग-साथ, पहचान; मिलान; समूह; मेला।
मेलक[2] *वि.* {हिं. मेल} मेल कराने या मिलानेवाला।
मेल-जोल पुं. {सं. मिलना + जुलना} प्रायः मिलते रहने से उत्पन्न संबंध, मेल-मिलाप, घनिष्टता।
मेलन पुं. मिलने की क्रिया, संग या साथ होना, इकट्ठा होना।
मेलना *स.* {हिं. मेल} मिश्रित करना, मिलाना; डालना; पहनाना; लगाना; फेंकना; *अ.* इकट्ठा होना, मिलना।
मेल-मिलाप पुं. {हिं.} परस्पर मिलते-जुलते रहने तथा सुसंबंध होने की अवस्था या भाव।
मेला पुं. {सं. मेलक} उत्सव, त्योहार आदि के समय होनेवाला बहुत से लोगों का जमावड़ा; भीड़।
मेलान पुं. {हिं. मेलक} ठहराव; पड़ाव, डेरा।
उदा. सागर तीन मेलान पुनि करिहैं रघुकुल नाह–केशव।
मेली *वि.* {हिं. मेल} जिससे मेल-मिलाप हो; जल्दी हिल-मिल जानेवाला, मिलनसार; संगी, साथी।
मेल्हना *अ.* {?} विकल होना; आना-कानी करके समय बिताना।
मेव पुं. {हिं.} राजपूताने की लुटेरी जाति।
मेवड़ी *स्त्री.* निर्गुंडी, सँभालू।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेवा पुं. {फा. मेवः} किशमिश, बादाम, आदि सुखाए हुए बढ़िया फल।

मेवाड़ पुं. विख्यात विस्तीर्ण प्रदेश।

मेवात पुं. राजधानी दिल्ली के दक्षिण का प्रदेश।

मेवाती पुं. मेवात प्रदेश में रहनेवाली एक जाति।

मेवाटी *स्त्री.* {फा. मेवा + हिं. बाटी} मेवे भरकर बनाया जानेवाला एक पकवान।

मेवासा पुं. {हिं. मवासा} किला, गढ़; सुरक्षित स्थान; घर।

मेवासी पुं. {हिं. मवासा} घर का मालिक; किले में रहनेवाला; *वि.* सुरक्षित और प्रबल।

मेशिका *स्त्री.* मजीठ, ओषधि।

मेष पुं. {सं.} भेड़; बारह राशियों में से पहली राशि, जिसमें छाछठ तारे इस प्रकार हैं कि इन सबके योग से मेढ़े की आकृति बन जाती है (एरीज़)।

मेषा *स्त्री.* गुजराती इलायची।

मेषी *स्त्री.* मादा भेड़, जटामासी।

मेसू पुं. {?} बेसन की बनी हुई बरफी।

मेहँदी *स्त्री.* {सं. मेन्धी} एक झाड़ी जिसकी पत्तियाँ पीसकर स्त्रियाँ हथेली या तलवे रँगने के लिए लगाती हैं।

मेह पुं. {सं.} मूत्र; प्रमेह रोग; पुं. मेघ; मेंह।

मेहतर पुं. {फा. मिहतर} {*स्त्री.* मेहतरानी} मुसलमान भंगी; मेहतर, हलालखोर।

मेहन पुं. शिश्न, लिंग, मूत्र।

मेहनत *स्त्री.* {अ.} परिश्रम।

मेहनताना पुं. पारिश्रमिक।

मेहनती *वि.* {अ. मेहनत} परिश्रमी।

मेहमान पुं. {फा. मेह्मान} अतिथि।

मेहमानी *स्त्री.* {फा. मेह्मानी} अतिथि सत्कार; मेहमान बनकर रहना; मेजबानी।

मेहर *स्त्री.* {फा. मह्} प्रेम; करुणा; कृपा, दया; *स्त्री.* मेहरी।

मेहरबान *वि.* {*वि.*} कृपालु।

मेहरबानी *स्त्री.* {फा.} दया, कृपा।

मेहरा[1] पुं. {हिं. मेहरी} स्त्रियों की-सी चेष्टा या हाव-भाव करनेवाला, जनखा।

मेहरा[2] पुं. {सं. मेघ} मेघ, बादल।

मेहराना *स.* {हिं. मेंह + राना (प्रत्य.)} वर्षा आदि होने पर नमकीन और कुरकुरे पकवानों आदि का इस प्रकार मुलायम पड़ जाना कि उनका कुरकुरापन जाता रहे।

मेहराब *स्त्री.* {अ.} द्वार आदि के ऊपर की अर्द्धमंडलाकार रचना।

मेहराबी *वि.* {अ.} मेहराब-संबंधी।

मेहरारू *स्त्री.* मेहरी।

मेहरी *स्त्री.* {सं. महिला} स्त्री औरत; पत्नी, जोरू।

मैं *सर्व.* {सं. अहम्} सर्वनाम उत्तम पुरुष में कर्ता का रूप, स्वयं, खुद; *विभ.* हिन्दी 'में' विभक्ति का व्रज. रूप।

मैंड़ *स्त्री.* मेंड़।

मै *स्त्री.* शराब, मद्य।

मैका पुं. मायका।

मैग पुं. {सं. मदकल} मस्त हाथी।

मैगर पुं. = मैगल।

मैच पुं. {अं.} प्रतिस्पर्धात्मक खेल।

मैजल *स्त्री.* {अ. मंजिल} पड़ाव, टिकान; यात्रा, प्रवास।

मैट्रन *स्त्री.* {अं.} अस्पताल की नर्सों की मुखिया, बड़ी नर्स।

मैत्र पुं. अनुराधा नक्षत्र, सूर्यलोक; *वि.* मित्र-संबंधी।

मैत्रिक *वि.* मित्र-संबंधी।

मैत्रिपूर्ण *वि.* {सं.} मित्रतापूर्ण।

मैत्री *स्त्री.* {सं.} मित्रता, दोस्ती।

मैत्रेय पुं. पराशर मुनि के एक शिष्य जिन्होंने विष्णु पुराण रचा था।

मैत्रेयी *स्त्री.* योगिराज याज्ञवल्क्य की स्त्री का नाम।

मैथिल पुं. {सं.} मिथिला का निवासी।

मैथिली *स्त्री.* {सं.} मिथिला जनपद की भाषा; जानकी।

मैथुन पुं. {सं.} स्त्री के साथ पुरुष का समागम, संभोग।

मैथुनिक *वि.* {सं.} मैथुन से संबंध रखनेवाला; स्त्रीलिंग और पुंलिंग या दोनों के पारस्परिक व्यवहार या संपर्क से संबंध रखनेवाला।

मैदा पुं. {फा. मैदः} बहुत महीन आटा।

मैदान पुं. {फा.} {*वि.* मैदानी} लंबा-चौड़ा खाली स्थान, सपाट भूमि।

मुहा. मैदान में आना = मुकाबले पर आना; *मैदान साफ होना* = मार्ग में बाधा या रुकावट न आना।

युद्धक्षेत्र, रणभूमि।

मुहा. मैदान करना = युद्ध करना; *मैदान मारना* = विजयी होना।

मैदानी *वि.* मैदान का।

मैन पुं. {सं. मदन} कामदेव, मदन; कामवासना; भोग; किसी प्रकार की वासना या इच्छा; मोम (शहद की मक्खी के छत्ते का)।

मैनफल पुं. मँझौले आकार का वृक्ष जिसके गोल फल औषधों में प्रयुक्त होते हैं।

मैनसिल पुं. मनःशिल एक धातु जो मिट्टी की तरह पीली होती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैनकामिनी *स्त्री.* {हिं. मैन = मदन + कामिनी} कामदेव की स्त्री, रति।

मैनमय *वि.* {हिं. मैन} कामासक्त।

मैनहोल *पुं.* {अं.} बंद नाली का वह मुँह जिसमें आदमी सफाई आदि के लिए उतर सकता हो।

मैना¹ *स्त्री.* {सं. मदना} काले रंग की एक प्रसिद्ध चिड़िया जो मनुष्य की-सी बोली बोलती है, सारिका।

मैना² *स्त्री.* {सं. मेनका} पुराणानुसार हिमालय की स्त्री और पार्वती की माता; *पुं.* मीना (जाति); मैन (कामदेव)।

मैनाक *पुं.* {सं.} एक पर्वत जो हिमालय का पुत्र माना जाता है।

मैनाल *पुं.* धीवर, मछुआ।

मैनावली *स्त्री.* एक वर्णवृत का नाम।

मैनी *स्त्री.* {?} वह गौ जिसके दोनों सींग नीचे की ओर झुके हों।

मैमंत *वि.* {सं. मद्मत्त} मदोन्मत्त, मतवाला; घमंडी, अभिमानी।

मैया *स्त्री.* {सं. मातृका} माता, माँ।

मैर *स्त्री.* {सं. मृदर} साँप के विष की लहर या प्रभाव।

मैरा *पुं.* वह मचान जिसपर बैठकर किसान अपनी उपज की रखवाली करते हैं।

मैल *स्त्री.* {सं. मलिन} किसी चीज पर पड़ी हुई या जमी हुई गर्द, धूल आदि।
पद हाथ पैर की मैल = तुच्छ वस्तु।
दोष, विकार।

मैलखोरा *वि.* मैल को छिपानेवाला।

मैला *वि.* {सं. मलिन} {*भाव.* मैलापन} जिसपर मैल जमी हो, मलिन, अस्वच्छ; विकारयुक्त, दूषित; *पुं.* विष्ठा, गुह; कूड़ा-कर्कट।

मैला-कुचैला *वि.* {हिं. मैला + सं. कुचैल} बहुत मैला, गंदा।

मैलाघर *पुं.* {हिं. मैला + घर} वह स्थान जहाँ गुह भरा या रखा जाता हो।

मैहर *पुं.* {सं. मातृगृह} विवाहिता स्त्री की दृष्टि या विचार से उसकी माता (और फलतः पिता) का घर, मायका, नैहर।

मैहिक *वि.* जिसको प्रमेह रोग हुआ हो।

मों *सर्व.* मैं।

मोंछ *स्त्री.* मूँछ।

मोंढ़ा *पुं.* कंधा।

मो *सर्व.* {सं. मम} मेरा; अवधी और ब्रजभाषा में 'मैं' का वह रूप जो उसे कर्ता कारक के सिवा दूसरे कारक का चिह्न लगने पर प्राप्त होता है।

मोई *स्त्री.* घी में सना हुआ आटा।

मोक *पुं.* किसी पशु का चमड़ा।

मोकना *स.* छोड़ना।

मोकल *वि.* मुक्त।

मोकला *वि.* {हिं. मोकल} लंबा-चौड़ा, विस्तृत; छुटा या खुला हुआ।

मोका *पुं.* जंगली वृक्ष, मोखा।

मोक्ष *पुं.* {सं.} बंधन से मुक्त, छुटकारा; जीव का जन्म और मरण के बंधन से छूट जाना, मुक्ति; मृत्यु।

मोख *पुं.* मोक्ष।

मोखा *पुं.* {सं. मुख} दीवार में बना हुआ छोटा छेद।

मोग *पुं.* चेचक रोग।

मोगरा *पुं.* {सं. मुद्गर} एक प्रकार का बढ़िया बड़ा बेला (फूल)।

मोगल *पुं.* मुगल।

मोगलाई *वि.* = मुगलाई।

मोगली *पुं.* जंगली वृक्ष।

मोगा *पुं.* {सं.} एक प्रकार का रेशम; इस रेशम का बना हुआ कपड़ा।

मोघ *वि.* {सं.} जो अपना प्रभाव या फल दिखला सके; जो न होने का समान हो, जिसके होने का कोई फल या महत्व न हो; रद्द या निरर्थक किया हुआ।

मोघन *पुं.* {सं.} न किए हुए के समान करने की क्रिया या भाव, रद्द या व्यर्थ करना, व्यर्थन (नलिफिकेशन)।

मोघिया *स्त्री.* चौड़ी व मोटी नरिया जो खपरैल की छाजन में लगाई जाती है।

मोच *स्त्री.* {सं. मुच} शरीर के किसी अंग के जोड़ का कुछ इधर-उधर हट जाना।

मोचक *वि.* मुक्तिकारक, छुड़ानेवाला।

मोचन *पुं.* {सं.} बंधन आदि खोलकर मुक्त करना; दूर करना, हटाना; छीन लेना; विमोचन।

मोचना¹ *स.* {सं. मोचन} बंधन, संकट आदि से मुक्त करना या कराना, बचाना या उबारना।
उदा. काटि कै अघफाँस, ज्यौं गज मोचि—सूर।

मोचना² *पुं.* {फा. मूचीन:} हज्जामों का बाल उखाड़ने का औजार या चिमटी।

मोचनी *स्त्री.* भटकटैया।

मोचरस *वि.* सेमर का गोंद।

मोचा *स्त्री.* सेमर का वृक्ष, नील का पौधा।

मोचिनी *स्त्री.* पोई का साग।

मोची¹ *वि.* {सं. मोचन} जूते आदि बनानेवाला कारीगर।

मोची² *वि.* {सं. मोचिन्} {*स्त्री.* मोचीनी} छुड़ाने वाला; दूर करनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोच्छ पुं. मोक्ष।

मोछ *स्त्री.* मूँछ; पुं. मोक्ष।

मोजा पुं. {फा. मोज:} पैरों में पहनने का पायताबा, जुर्राब; पिंडली के नीचे का भाग।

मोट *स्त्री.* {सं. मोट:, मोटम्} {हिं. मोटरी} गठरी; ढेर, राशि; पुं. चमड़े का बड़ा थैला जिससे खेत सींचते हैं, चरसा, पुर; *वि.* मोटा।

मोटक पुं. श्राद्धादि कार्य में प्रयुक्त।

मोटकी *स्त्री.* {सं.} एक रागिनी का नाम।

मोटन पुं. पीसना, आक्षेप।

मोटनक पुं. एक वर्णवृत्त का नाम।

मोटर *स्त्री.* {अं.} एक प्रकार का यंत्र जो विद्युत, पेट्रोल, कोयले आदि से चलता और दूसरे यंत्रों का संचालन करता है, चालक-यंत्र; एक प्रकार की प्रसिद्ध गाड़ी जो इस यंत्र से चलती है।

मोटरी *स्त्री.* {हिं. मोट} छोटी गठरी।

मोटा *वि.* {सं. मुष्ट} {*स्त्री.* मोटी} फूले हुए या स्थूल शरीरवाला, 'दुबला' का उलटा; दलदार, 'पतला' का उलटा; अधिक घेरे या मानवाला; सबल और संपन्न।

पद मोटा असामी = अमीर।

दरदरा; साधारण या घटिया।

मुहा. मोटे हिसाब से = अंदाज या अनुमान से; *मोटा दिखाई देना* = कम दिखाई देना।

बड़ा (राज. और गुज.)।

मोटाई *स्त्री.* {हिं. मोटा + ई (प्रत्य.)} 'मोटा' होने का भाव, मोटापन; शरारत, पाजीपन।

मोटाना *अ.* {हिं. मोटा} मोटा होना; घमंडी होना; धनी होना; *स.* दूसरे को मोटा करना।

मोटापा पुं. {हिं. मोटा} शरीर का मोटापन या स्थूलता; मोटाई।

मोटा-मोटी *क्रि. वि.* {हिं. मोटा} मोटे हिसाब से, अनुमानत:।

मोटिया पुं. {हिं. मोट = बोझ} मोट या बोझ ढोनेवाला, मजदूर; खद्दर।

मोट्टायित पुं. {सं.} साहित्य में एक हाव जिसमें प्रिय के रूप, गुण आदि की प्रशंसा सुनकर मन मुग्ध होने के कारण उसके प्रति अनुराग प्रकट किया जाता है।

मोठ *स्त्री.* {सं. मकुष्ठ} मूँग की तरह का एक मोटा अन्न।

मोठस *वि.* मौन, चुप।

मोड़ पुं. {हिं. मुड़ना} किसी ओर मुड़ने की क्रिया या भाव; रास्ते आदि का वह अंश या स्थान जहाँ से वह किसी ओर मुड़ता या घूमता है।

मोड़ना *स.* {सं. मोटन} किसी को मुड़ने में प्रवृत्त करना।

मुहा. मुँह मोड़ना = विमुख होना।

कुछ अंश उलट या समेटकर विस्तार कम करना; कुंठित करना, जैसे धार मोड़ना।

मोड़ा पुं. बालक, लड़का।

मोड़ी *स्त्री.* घसीटकर लिखने की लिपि– मराठी।

मोढ़ा पुं. मूढ़ा, कंधा।

मोतिया पुं. {हिं. मोती} एक प्रकार का बेला; एक प्रकार का सलमा; *वि.* मोती की तरह छोटे गोल दानों का: पुं. = मोती।

मोतियाबिंद पुं. {हिं. मोतिया + सं. विंदु} आँख का एक रोग जिसमें पुतली के आगे गोल झिल्ली पड़ जाती है (कैटेरैक्ट)।

मोतिया भात पुं. एक प्रकार का मीठा भात या पके हुए चावल।

मोती पुं. {सं. मौक्तिक} समुद्री सीपी से निकलने वाला एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न।

मुहा. मोती गरजना = मोती चटकना या कड़क जाना; *मोती रोलना* = बिना परिश्रम बहुत अधिक धन पाना; *मोतियों से मुँह भरना* = बहुत धन देना।

मोतीचूर पुं. {हिं. मोती + चूर} छोटी बूँदिया का लड्डू।

मोतीझिरा पुं. {हिं. मोती + झरा} छोटी शीतला का रोग।

मोतीभात पुं. {हिं. मोती + भात} एक विशेष प्रकार का भात।

मोतीसिरी *स्त्री.* {हिं. मोती + सं. श्री} मोतियों की माला।

मोथा पुं. {सं. मुश्तक} जल में होनेवाला एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ कसेरू कहलाती है।

मोद पुं. {सं.} आनंद, हर्ष, प्रसन्नता; सुगंध, महक।

मोदक पुं. {सं.} लड्डू।

मोदकी *स्त्री.* चमेली के फूल का पौधा; *वि.* आनंद देनेवाली।

मोदना *अ.* {सं. मोदन} प्रसन्न या खुश होना; सुगंध फैलना; *स.* प्रसन्न करना; सुगंधि फैलाना।

मोदनी *स्त्री.* सफेद जूही।

मोदनीय *वि.* आनंद के योग्य।

मोदाढ्या *स्त्री.* प्रसन्न रहनेवाली स्त्री।

मोदित *वि.* मुदित।

मोदिनी *स्त्री.* अजमोदा, जूही, कस्तूरी।

मोदी पुं. {सं. मोदक = लड्डू} आटा, दाल, चावल आदि बेचनेवाला बनिया।

मोदीखाना पुं. {हिं. मोदी + फा. खान:} अनाज आदि रखने का भंडार।

मोधू *वि.* {सं. मुग्ध} मूर्ख।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोन पुं. मोना।
मोना[1] स. {हिं. मोयन} भिगोना।
मोना[2] पुं. {सं. मोण} झाबा, पिटारा।
मोनिया स्त्री. छोटा मोना।
मोपला पुं. मुसलमानों की एक जाति जो मद्रास में बसी हुई है।
मोपेड स्त्री. {अं.} पेट्रोल से चलनेवाली एक प्रकार की छोटी हलकी मोटर साइकिल।
मोम पुं. {फा.} वह चिकना कोमल पदार्थ जिससे शहद की मक्खियों का छत्ता बना होता है।
मोमजामा पुं. {फा.} वह कपड़ा जिसपर मोम का रोगन चढ़ा हो।
मोमती स्त्री. {मो + मति} मेरी मति; स्त्री. ममत्व।
मोमना वि. बहुत कोमल।
मोमबत्ती स्त्री. {फा. मोम + हिं. बत्ती} मोम आदि की बत्ती जो प्रकाश के लिए जलाई जाती है।
मोमियाई स्त्री. {फा.} शिलाजीत; प्राचीन मिस्र में मृतकों के शरीर जो विशेष प्रक्रिया से सुरक्षित किए जाते थे।
मोमी वि. {फा.} मोम का बना हुआ।
मोय सर्व. = मुझे।
मोयन पुं. {हिं. मैन = मोम} गूँथे हुए आटे में डाला जानेवाला घी या तेल जिसके कारण उससे बननेवाली वस्तु खसखसी और मुलायम हो।
मोर[1] पुं. {सं. मयूर} {स्त्री. मोरनी} एक अत्यंत सुंदर प्रसिद्ध नाचनेवाला बड़ा पक्षी।
मोर[2] सर्व. {सं. मम} {स्त्री. मोरी} अवधी में मैं का संबंध कारक का रूप, मेरा।
मोरंग पुं. नेपाल देश का पूर्वी भाग।
मोरचंग पुं. मुरचंग।
मोर-चंद्रिका स्त्री. {हिं. मोर + चंद्रिका} मोरपंख पर की चंद्राकार बूटी।
मोरचा[1] पुं. {फा. मोरचः} लोहे पर चढ़नेवाला वह काला अंश जो वायु और नमी के प्रभाव से उत्पन्न होता है, जंग; शीशे, दर्पण पर जमी हुई मैल।
मोरचा[2] पुं. {फा. मोरचाल} वह गड्ढा जो किले के चारों ओर सुरक्षा के लिए खोदा जाता है; वह स्थान जहाँ से गढ़ या नगर की रक्षा की जाती है; द्वंद्व या प्रतियोगिता में होनेवाला सामना। *मुहा. मोरचा जीतना या मारना* = विजय प्राप्त करना; *मोरचा लेना* = युद्ध करना।
मोरचेबंदी स्त्री. {हिं. मोरचा + फा. बंदी} शत्रु पर आक्रमण करने या अपनी रक्षा करने के लिए मोरचा बनाने का कार्य।
मोरछड़ पुं. मोरछल।
मोरछल पुं. {हिं. मोर + छड़} मोर के परों से बना हुआ चँवर।
मोरछाँह स्त्री. मोरछल।
मोरट पुं. ईख की जड़, एक लता।
मोरन स्त्री. शिखरन।
मोरना स. {हिं. मोरन} दही मथकर मक्खन निकालना; स. = मोड़ना।
मोरनी स्त्री. {हिं. मोर} मोर पक्षी की मादा; नथ में लगनेवाला मोर के आकार का टिकड़ा।
मोरपंख पुं. {हिं. मोर + पंख} मोर का पर; मोर के पर की कलगी।
मोरपंखा पुं. = मोरपंख।
मोरम पुं. {तेलगु मोरमु, पाली मरुम्ब} एक प्रकार का पहाड़ी लाल बालू या रेत जो सड़कों आदि पर बिछाते हैं।
मोरमुकुट पुं. {हिं. मोर + मुकुट} मोर के पंखों का बना हुआ मुकुट।
मोरवा पुं. नाव की किलवारी में बाँधनेवाली रस्सी।
मोरा वि. मेरा।
मोराना स. {हिं. मोड़ना} चारों ओर घुमाना।
मोरशिखा स्त्री. जड़ी जिसकी पत्तियाँ मोर की कलगी के आकार की होती है।
मोरिया स्त्री. कोल्हू की कतरी में लगा हुआ बाँस।
मोरी स्त्री. {हिं. मोहरी} गंदा पानी बहने की नाली; स्त्री. मोरनी।
मोल पुं. {सं. मूल्य} दाम, मूल्य।
मुहा. मोल लेना = दाम देकर लेना, खरीदना (कोई अनिष्ट बात); *मोल लेना* = अपने ऊपर लेना, अपने साथ लगाना, जैसे झगड़ा मोल लेना, रोग मोल लेना।
पद मोल का लिया = खरीदा हुआ, क्रीत।
उदा. तोंसो कहत मोल को लीन्हों–**सूर**।
मोल-चाल पुं. किसी वस्तु का दाम बढ़ाकर कहना या किसी चीज का दाम घटा-बढ़ाकर तै करना।
मोलना पुं. {अ. मौलाना} मौलवी।
मोलाना स. {हिं. मोल} मूल्य या दाम पूछना या तै करना।
मोवना स. मोना।
मोष (षु) पुं. = मोक्ष।
मोषक पुं. तस्कर, चोर।
मोषण पुं. लूटना, चोरी करना, वध करना।
मोह पुं. {सं.} अज्ञान; भ्रम, भ्रांति; ईश्वर का ध्यान छोड़कर शरीर और सांसारिक पदार्थों को

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना सर्वस्व समझना; प्रेम, प्यार; चिंता, दुख, भय, विरह आदि के कारण अपनी सुध-बुध भूल जाना जो साहित्य में एक संचारी भाव माना गया है; मूर्च्छा, बेहोशी।

मोहक *वि.* {सं.} {*भाव.* मोहकता} मोह उत्पन्न करनेवाला; मोहित करने या लुभानेवाला, मनोहर।

मोहकर *पुं.* घड़े का मोहड़ा।

मोहठा *पुं.* इस अक्षर का एक वर्णवृत्त।

मोहड़ा *पुं.* किसी पात्र का मुख या खुला भाग।

मोहजनक *वि.* मोह पैदा करनेवाला।

मोहताज *वि.* {*अ.* मुहताज} दरिद्र, कंगाल; विशेष कामना रखनेवाला।

मोहन *पुं.* {सं.} मोहित करने की क्रिया या भाव; किसी को बेहोश या मूर्च्छित करने का एक तांत्रिक प्रयोग; एक अस्त्र जिससे शत्रु मूर्च्छित किया जाता था; श्रीकृष्ण; *वि.* {सं.} {*स्त्री. मोहिनी*} मोह उत्पन्न करनेवाला; मन को लुभानेवाला।

मोहनभोग *पुं.* हलुआ।

मोहनमाला *स्त्री.* {सं.} सोने के दानों से बनी माला।

मोहना *अ.* {सं. मोहन} मोहित होना, रीझना; मूर्च्छित होना; *स.* मोहित या अनुरक्त करना, लुभाना; भ्रम में डालना।

मोहनास्त्र *पुं.* प्राचीनकाल का शत्रुमारक अस्त्र।

मोहनिद्रा *स्त्री.* {सं.} वह अवस्था जिसमें किसी भ्रामक बात या दूषित प्रभाव के वश में पड़कर मनुष्य वास्तविक स्थिति भूल जाता है; मोह के कारण होनेवाला अज्ञान।

मोहनिशा *स्त्री.* मोहरात्रि।

मोहनी *स्त्री.* {सं.} भगवान का वह स्त्रीवाला रूप जो उन्होंने समुद्र मंथन के उपरांत अमृत बाँटने के समय बनाया था; वशीकरण का मंत्र या विद्या; मोहित करनेवाली शक्ति या माया।

मुहा. मोहनी डालना = मोह या माया के वश में करना; किसी को अपने ऊपर मोहित करना; *मोहनी लगना* = मोहित होना, लुभाना।

मोहनीय *वि.* मोहित करने योग्य।

मोहफिल, महफिल *स्त्री.* सभा।

मोहब्बत *स्त्री.* प्रेम, मुहब्बत।

मोहमंत्र *पुं.* मोह उत्पन्न करनेवाला मंत्र।

मोहयिता *पुं.* मोहनेवाला।

मोहर *स्त्री.* {फा. मुह्र} अक्षर, चिह्न आदि की छाप लेने या उन्हें दबाकर अंकित करने का ठप्पा; उक्त ठप्पे की छाप; अशरफी।

मोहरबंद *वि.* {हिं. मोहर + बंद} जिसे बंद करके ऊपर से मोहर लगाई गई हो।

मोहरा[1] *पुं.* {हिं. मुँह + रा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* मोहरी} मुँह या खुला भाग; सामने का भाग; सेना की अगली पंक्ति।

मुहा. मोहरा लेना = मुकाबला करना।

मोहरा[2] *पुं.* {फा. मुह्रः} शतरंज की कोई गोटी; रेशमी कपड़े घोटने का घोटना; यशब या अकीक पत्थर की वह छोटी गुल्ली जिससे रगड़कर चित्र पर का सोना या चाँदी चमकाते हैं, ओपनी; सिंगिया, विष; जहर-मोहरा।

मोहरात्रि *स्त्री.* {सं.} वह प्रलय की रात जो ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतने पर होती है; श्रीकृष्ण जन्माष्टमी।

मोहरिल *पुं.* {*अ.* मुहरिर?} वह व्यक्ति जो किसी आसामी के साथ इसलिए रख दिया जाता है कि जब तक वह ऋण न चुकाए, तब तक कहीं जा न सके।

मोहरी *स्त्री.* {हिं. मोहरा} पाजामे का वह भाग जिसमें टाँगें रहती हैं।

मोहरुख *वि.* {सं. मुमूर्ष} जो थोड़े समय में ही मरने को हो; मूर्च्छित।

मोहलत *स्त्री.* {*अ.* मुह्लत} फुरसत, अवकाश; छुट्टी; अवधि।

मोहला *पुं.* {सं. मोह} स्नेह, प्रेम; *वि.* स्नेह युक्त; स्नेही, प्रेमी।

मोहल्ला *पुं.* मुहल्ला।

मोहशास्त्र *पुं.* अविद्याजनक ग्रंथ।

मोहार *पुं.* द्वार, मोहड़ा, अगला भाग।

मोहारनी *स्त्री.* पाठशाला में बालकों का एकसाथ खड़े होकर पहाड़े पढ़ना।

मोहिं *सर्व.* {सं. मह्यम्} मुझे।

मोहित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* मोहिता} मोह या भ्रम में पड़ा हुआ, मुग्ध; लुभाया हुआ, आसक्त, लुब्ध।

मोहिनी *वि. स्त्री.* {सं.} मोहनेवाली; *स्त्री.* मोहनी।

मोही[1] *वि.* {सं. मोहिन्} मोहित करनेवाला।

मोही[2] *वि.* {सं. मोह + हिं ई (प्रत्य.)} मोह या प्रेम करनेवाला; लोभी, लालची।

मोहुक *वि.* मोह करनेवाला।

मोहेला *पुं.* एक प्रकार का चलता गाना।

मोहेली *स्त्री.* एक प्रकार की मछली।

मोहोपमा *स्त्री.* उपमा अलंकार।

मौं *विभ.* {सं. मध्य} ब्रजभाषा में अधिकरण कारक चिह्न, में।

उदा. काकैं बन हौं तरौ गुसाई, कछु न भक्तिमौं-सूर।

मौंगा *वि.* {सं. मौन} मौन, चुप।

मौंगी *स्त्री.* {हिं. मौन} चुप्पी, मौन।

मौंज *वि.* मूँज का बना हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौंजी *वि.* मूँज की बनी हुई मेखला।
मौंडा *पुं.* {सं. माणवक} {*स्त्री.* मौंडी} लड़का, बच्चा।
मौका *पुं.* {*अ.* मौक़्आ} किसी घटना के घटित होने का स्थान; अवसर, समय।
मौकापरस्त *वि.* {*अ.* + फा.} अवसरवादी।
मौकापरस्ती *स्त्री.* = अवसरवादिता।
मौकूफ *वि.* {*अ.*} {*भाव.* मौकूफी} रोका या बंद किया हुआ, स्थगित; नौकरी से हटाया हुआ, बरखास्त; रद्द किया हुआ; अवलंबित, आश्रित।
मौके-बेमौके *क्रि. वि.* उचित और अनुचित या उपयुक्त और अनुपयुक्त सभी अवसरों पर, समय-कुसमय।
मौक्तिक *पुं.* {सं.} मुक्ता, मोती; *वि.* मोतियों का; मुक्ता-संबंधी।
मौक्तिक माला (छंद) *स्त्री.* {सं.} पिंगल में एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भगण, तगण, नगण और अंत में दो गुरु होते हैं।
मौख *पुं.* वह पाप जो अभक्ष्य-भक्षण से होता है, एक तरह का मसाला।
मौस *पुं.* बहुत बढ़-चढ़कर बातें करना।
मौखरी *पुं.* उत्तर भारत का प्राचीन वंश।
मौखर्य *पुं.* = मुखरता।
मौखिक *वि.* {सं.} मुख, वाणी या उच्चारण से संबंध रखनेवाला, कंठ से निकलनेवाले शब्द का (वोकल); मुख का; मुँह से कही जा कहा या कहलाया हुआ, जबानी, लिखित से भिन्न।
मौगा *पुं.* = जनखा।
मौज *स्त्री.* {*अ.*} लहर, तरंग; मन की उमंग, तरंग।
मुहा. (किसी की) मौज पाना = इच्छा या मनोवृत्ति से अवगत होना।
सुख, आनंद, मजा।
मौजा *पुं.* {*अ.* मौज्आ} गाँव।
मौजी *वि.* {*अ.* मौज + हिं. ई (प्रत्य.)} जो जी में आए, वही करनेवाला, मनमौजी, तरंगी; सदा प्रसन्न रहने और सुखभोग करनेवाला, आनंदी।
मौजूद *वि.* {*अ.*} {*भाव.* मौजूदगी} उपस्थित; विद्यमान; जो सामने हो, प्रस्तुत, तैयार।
मौजूदगी *स्त्री.* {*अ.*} विद्यमानता; उपस्थिति।
मौजूदा *वि.* {*अ.* मौजूदः} वर्तमान काल का, इस समय का; उपस्थित।
मौजूँ *वि.* उपयुक्त।
मौड़ा *पुं.* मोड़ा।
मौत *स्त्री.* {*अ.*} मरण, मृत्यु।
मुहा. मौत सिर पर खेलना = मृत्यु या भारी संकट समीप होना; *मौत के मुँह में* = घोर संकट में।
मरने का समय या काल; मरने के समय का-सा कष्ट।
मौदक *वि.* मोदक-संबंधी।
मौद्गल *पुं.* मुद्गल ऋषि के गोत्र में उत्पन्न।
मौद्गलि *पुं.* काक, कौआ।
मौन[1] *पुं.* {सं.} मुनियों का व्रत या चर्या; चुप रहना, न बोलना, चुप्पी;
मुहा. मौन लेना या साधना = चुप रहना या चुप रहने का संकल्प करना, न बोलना; *मौन सँभारना* = मौन साधना, चुप होना।
वि. = मौनी।
मौन[2] *पुं.* {सं. मौण} बरतन।
मौनव्रत *पुं.* चुप रहने का व्रत।
मौनता *स्त्री.* चुप रहने का भाव।
मौना *पुं.* घी या तेल रखने का पात्र।
मौनित्व *पुं.* मौनी का भाव, मौन।
मौनी *वि.* {सं. मौनिन्} मौन धारण करने या चुप रहनेवाला।
मौर[1] *पुं.* {सं. मुकुट} {*स्त्री.* अल्पा. मौरी} विवाह के समय वर को पहनाया जानेवाला एक प्रकार का शिरोभूषण; शिरोमणि, प्रधान।
मौर[2] *पुं.* {सं. मुकुल} मंजरी, बौर।
मौर[3] *पुं.* {सं. मौलि} सिर; गरदन।
मौरना *स.* बौरना।
मौरिसिरी *स्त्री.* मौलसिरी।
मौरी *स्त्री.* वधू के सिर पर रखने का छोटा मौर।
मौरूसी *वि.* {*अ.*} बाप-दादा के समय से चला आया हुआ, पैतृक (धन-संपत्ति)।
मौरूसी काश्तकार *पुं.* काश्तकार के अंतर्गत।
मौर्य *पुं.* भारत का प्राचीन क्षत्रिय राजवंश-चंद्रगुप्त।
मौल *वि.* {सं.} मूल-संबंधी; मूल का; बिल्कुल आरंभिक या आदि काल से चला आनेवाला।
मौलवियाना *वि.* {*अ.* मौलवी + हिं. आना (प्रत्य.)} मौलवियों का-सा।
मौलवी *पुं.* {*अ.*} मुसलमान धर्मशास्त्र का आचार्य।
मौलसिरी *स्त्री.* {सं. मौलि + श्री} एक बड़ा सदाबहार पेड़ जिसमें छोटे सुगंधित फूल लगते हैं, बकुल।
मौला *पुं.* {*अ.*} मित्र, दोस्त; सहायक, मददगार; स्वामी, मालिक; ईश्वर।
मौलाना *पुं.* मौलवी।
मौलि *पुं.* {सं.} चोटी, सिरा; मस्तक, सिर; किरीट; जटाजूट; प्रधान सरदार, मुखिया।
मौलिक *वि.* {सं.} {*भाव.* मौलिकता} मूल या जड़ से संबंध रखनेवाला; मूलतत्व या सिद्धांत से संबंध रखनेवाला, तात्विक (फंडामेंटल);

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundati[illegible]nnai and eGangotri

असली; (ग्रंथ या विचार) जो किसी का अनुवाद, नकल या आधार पर न हो, बल्कि अपनी उद्‌भावना से निकला हो (ओरिजिनल); मूलिक।

मौलिकता *स्त्री.* {सं.} मौलिक होने की अवस्था या भाव; मौलिक गुण।

मौलिमंडल *पुं.* शिरोभूषण।

मौल्य *वि.* मूल्य-संबंधी।

मौलिमणि *पुं.* = शिरोमणि।

मौली[1] *वि.* {सं. मौलिन्} मौलि धारण करनेवाला।

मौली[2] *स्त्री.* {?} पूजा आदि के लिए रँगा हुआ सूत, नारा।

मौसर *वि.* मयस्सर।

मौसा *पुं.* {हिं. मौसी} {*स्त्री.* मौसी} माता की बहन (मौसी) का पति।

मौसाल *स्त्री.* {हिं. मौसी + सं. आलय = घर} मौसी और मौसा का घर या कुल।

मौसिम *पुं.* {*अ.*} {*वि.* मौसिमी} ऋतु; वर्षा, वायु की खुश्की और नमी तथा प्रवाह आदि के विचार से किसी स्थान के वातावरण की वह अवस्था जिसमें समय-समय पर परिवर्तन होते रहते हैं (वेदर); प्राप्ति आदि का उपयुक्त समय विशेषत: वृक्षों की फलत आदि के विचार से, जैसे अनार, आम, पपीते आदि का मौसम।

मौसिया *वि.* मौसेरा।

मौसी *स्त्री.* {सं. मातृष्वसा} {*वि.* मौसेरा} माता की बहन, मासी।

मौसेरा *वि.* {हिं. मौसी + एरा (प्रत्य.)} मौसी के संबंध का, जैसे मौसेरा भाई।

मौहूर्त *वि.* मुहुर्त-संबंधी।

म्याँवँ *स्त्री.* {अनु.} बिल्ली की बोली।

मुहा. म्याँवँ म्याँवँ करना = दीनतापूर्वक और बहुत दबकर धीरे से बोलना।

बिल्ली।

म्यों *स्त्री.* बिल्ली की बोली।

म्योंड़ी *स्त्री.* सदाबहार वृक्ष, निर्गुंडी।

म्यौं *स्त्री.* म्याँव।

म्यान *पुं.* {फा. मियान} वह खाना जिसमें तलवार, कटार आदि के फल रहते हैं।

म्याना *स.* {हिं. म्यान} म्यान में रखना; *पुं.* मियाना।

म्युनिसिपैलिटी *स्त्री.* {अं.} किसी नगर की सीमा के अंदर, स्वास्थ्य, शुचिता, लोकवास्तु आदि की व्यवस्था करनेवाली वह संस्था जो साधारणत: नागरिकों के चुने हुए प्रतिनिधियों के अधीन रहती है, नगरपालिका।

म्यूजियम *पुं.* {अं.} अजायब घर।

म्रजाद *स्त्री.* मर्यादा।

म्रितक *वि.* = मृतक।

म्रितक थान *पुं.* = श्मशान।

म्रियमाण *वि.* {सं.} मरे हुए के समान, मरा हुआ-सा।

म्लान *वि.* {सं.} {*भाव.* म्लानता} कुम्हलाया हुआ; दुर्बल; मैला, मलिन।

म्लानता *स्त्री.* {सं.} म्लान होने का भाव, मलिनता; दुर्बलता।

म्लिष्ट *वि.* जो स्पष्ट न बोलता हो।

म्लानि *स्त्री.* म्लानता।

म्लेच्छ *पुं.* {सं.} हिन्दुओं की दृष्टि से वे जातियाँ जिनमें वर्णाश्रम धर्म न हो; *वि.* नीच; पापी।

म्हा *सर्व.* मुझ।

म्हार *सर्व.* हमारा।

म्हारा *सर्व.* हमारा।

य

य नागरी वर्णमाला का छब्बीसवाँ अक्षर, जिसका उच्चारण-स्थान तालू है, छंदशास्त्र में यह यगण का संक्षिप्त रूप और सूचक माना जाता है।

यंत *पुं.* सारथी, महावत।

यंतव्य *वि.* दमन करने योग्य।

यंता *पुं.* सारथी।

यंत्र *पुं.* {सं.} {*वि.* यांत्रिक, यंत्रित} तंत्र-शास्त्र में कुछ विशिष्ट प्रकार के कोष्ठक आदि जिनमें कुछ अलौकिक शक्ति मानी जाती है; उक्त प्रकार के कोष्ठकों आदि का वह रूप जो अनिष्ट आदि से रक्षा के लिए शरीर पर धारण किया और कई प्रकार के काम में लाया जाता है, जंतर (एम्युलेट); वह उपकरण जो कोई विशेष कार्य करने या कोई वस्तु बनाने के लिए हो, कल (मशीन); बाजा, वाद्य; ताला।

यंत्रगृह *पुं.* वेधशाला, कारखाना।

यंत्रण *पुं.* रक्षण, रक्षा करना, बंधन, बाँधना, नियम।

यंत्रणा *स्त्री.* {सं.} कष्ट, तकलीफ; दर्द, पीड़ा।

यंत्रमंत्र *पुं.* {सं.} जादू-टोना।

यंत्रयुग *पुं.* {सं.} यंत्रों का युग; आधुनिक युग जिसमें अधिकतर कार्य यंत्रों द्वारा संपादित होते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यंत्रनाल पुं. कुएँ से पानी निकालने की कल।
यंत्रपेषणी *स्त्री.* पीसने की चक्की।
यंत्र प्रवाह पुं. पानी फेंकने का यंत्र, दमकल।
यंत्र मंत्र पुं. जादू-टोना।
यंत्रराज पुं. ग्रहों तथा तारों की गति जानने का यंत्र।
यंत्रविद्या *स्त्री.* {सं.} कलें या यंत्र चलाने और बनाने की विद्या (इंजीनियरिंग)।
यंत्रशाला पुं. {सं.} वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के यंत्र रखे हों या बनते हो; वेधशाला।
यंत्रसज्जित *वि.* {सं.} यंत्रों से सज्जित।
यंत्रालय पुं. {सं.} वह स्थान जहाँ कलें हों; छापाखाना।
यंत्रिका *स्त्री.* {सं.} ताला।
यंत्रित *वि.* {सं.} यंत्र के द्वारा रोका या बंद किया हुआ; ताले में बंद।
यंत्री पुं. {सं. यंत्रिन्} तंत्र-मंत्र करनेवाला, तांत्रिक; बाजा-बजानेवाला; यंत्र या मशीन की सहायता से काम करनेवाला; यांत्रिक।
यंत्रीकरण पुं. {सं.} यंत्रों से सज्जित करना, यंत्र लगाना; यंत्रों द्वारा काम करना।
यकायक *क्रि. वि.* {फा.} अचानक, सहसा।
यकार पुं. य का वर्ण।
यकीन पुं. {अ. यक़ीन} विश्वास, एतबार।
यकीनन *क्रि. वि.* {अ. यक़ीनन} निस्संदेह, निश्चय ही।
यकृत पुं. {सं.} पेट में दाहिनी ओर की वह थैली जिसकी क्रिया से भोजन पचता है, जिगर; तापतिल्ली नामक रोग।
यकोला पुं. मझोला वृक्ष जिसकी लकड़ी सफेद और पुष्ट होती है।
यक्ष पुं. {सं.} कुबेर की निधियों के रक्षक, एक प्रकार के देवता; कुबेर।
यक्षाधिपति पुं. यक्षपति, कुबेर।
यक्षामलक पुं. पिंडखजूर।
यक्षावास पुं. वटवृक्ष।
यक्षिणी *स्त्री.* {सं.} यक्ष जाति की स्त्री; कुबेर की पत्नी।
यक्षी *स्त्री.* यक्ष की पत्नी; पुं. जो यक्ष की साधना करता हो।
यक्ष्म पुं. क्षय रोग।
यक्ष्मा पुं. {सं. यक्ष्मन्} क्षय नामक रोग।
यखनी *स्त्री.* {फा. यख़्नी} उबाले हुए मांस का रसा या शोरबा।
यगण पुं. {सं.} छंद शास्त्र में एक लघु और दो गुरु मात्राओं का एक गण जिसका संक्षिप्त रूप 'य' है (।ऽऽ)।
यगूर पुं. ऊँचा पहाड़ी वृक्ष जिसकी लकड़ी काले रंग की होती है।
यग्य पुं. यज्ञ।
यच्छ पुं. यक्ष।
यज पुं. यज्ञ, अग्नि।
यजत पुं. ऋत्विक।
यजति पुं. याग।
यजत्र पुं. यज्ञ करनेवाला, अग्निहोत्री।
यजन पुं. {सं.} यज्ञ करना।
यजना पुं. {सं. यजन} यज्ञ करना; पूजा करना।
यजमान पुं. {सं.} {*भाव.* यजमानी} यज्ञ करनेवाला, यष्टा; ब्राह्मण की दृष्टि से वह व्यक्ति जो उससे अपने धार्मिक कृत्य कराता है।
यजुर्वेद पुं. {सं.} {*वि.* यजुर्वेदी} चार वेदों में से एक, जिसमें यज्ञकर्मों का विधान और विवरण है।
यजुष्पति पुं. विष्णु।
यजुष्य *वि.* यज्ञ-संबंधी।
यजुस् पुं. यजुर्वेद।
यज्ञ पुं. {सं.} प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध धार्मिक कृत्य जिसमें हवन आदि होते थे, मख, याग; कोई अच्छा और शुभ कार्य विशेषतः धार्मिक या लोकोपकार का कार्य।
यज्ञकुंड पुं. {सं.} यज्ञ या हवन करने का कुंड।
यज्ञपशु पुं. {सं.} यज्ञ में बलि चढ़ाया जानेवाला पशु।
यज्ञपात्र पुं. {सं.} यज्ञ में काम आनेवाला काठ का पात्र या बरतन।
यज्ञभूमि *स्त्री.* {सं.} वह स्थान जहाँ यज्ञ होता हो, यज्ञक्षेत्र।
यज्ञमंडप पुं. {सं.} वह मंडप जो यज्ञ करने के लिए बना हो।
यज्ञशाला *स्त्री.* {सं.} यज्ञमंडप।
यज्ञेश पुं. {सं.} यज्ञ अथवा कर्म के देवता, वृहस्पति, विष्णु।
यज्ञोपवीत पुं. {सं.} जनेऊ, यज्ञसूत्र; उपनयन संस्कार, जनेऊ।
यतः *योज.* {सं.} इस कारण से कि, जबकि ऐसी अवस्था है, चूँकि (इसका संबंध-पूरक 'अतः' है)।
यति पुं. {सं.} संन्यासी, त्यागी; ब्रह्मचारी; *स्त्री.* छंदों के चरणों में वह स्थान जहाँ पढ़ते समय कुछ विराम होता है।
यतिभंग पुं. {सं.} छंद की रचना में वह दोष जिसमें किसी चरण के विराम स्थान के अंतिम शब्द के एक-दो अक्षर कम या अधिक हों या इधर-उधर जा पड़ें।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foun Chennai and eGangotri

यतिभ्रष्ट *वि.* {सं.} (कविता) जिसमें यतिभंग दोष हो।

यती *पुं.* यति।

यतुका *स्त्री.* चकवँड़ का पौधा।

यत्किंचित् *वि.* {सं.} थोड़ा।

यत्न *पुं.* {सं.} उद्योग, कोशिश; उपाय, तदबीर; रक्षा का प्रबंध, हिफाजत।

यत्नज *वि.* {सं.} यत्न से होनेवाला।

यत्नाक्षेप *पुं.* अलंकार का एक भेद।

यत्नवान् *वि.* {सं. यत्नवत्} यत्न करनेवाला, प्रयत्नशील।

यत्र *क्रि. वि.* {सं.} जहाँ, जिस जगह।

यत्रतत्र *क्रि. वि.* {सं.} जहाँ-तहाँ, इधर-उधर; जगह-जगह।

यत्रतत्रिक *वि.* {सं.} जगह-जगह होनेवाला।

यथर्य *अव्य.* यथासमय।

यथांश[1] *अव्य.* अंश के अनुसार।

यथांश[2] *पुं.* {सं.} किसी के लिए निश्चित किया हुआ हिस्सा जो उसे दिया जाए या उससे लिया जाए (कोटा)।

यथा *योज.* {सं.} जिस प्रकार, उस तरह, जैसे; ऊपर संकेत या समष्टि रूप में कुछ बातों का उल्लेख कर चुकने पर आगे उनका नाम निर्देश करने से पहले लगनेवाला योजक; जैसे–इसके कई प्रकार है, यथा . . . (नेमली)।

यथाकार *अव्य.* आकार के अनुसार।

यथागत *अव्य.* आगत के अनुसार।

यथागम *अव्य.* आगम के अनुसार।

यथाचार *अव्य.* आचार के अनुसार।

यथात्मक *वि.* प्रकृति के अनुसार।

यथादिष्ट *वि.* जैसा कहा गया हो।

यथाक्रम *क्रि. वि.* {सं.} क्रमानुसार।

यथातथ *वि.* {सं.} जैसा हो, वैसा ही, ज्यों-का-त्यों।

यथातथ शैली *स्त्री.* {सं.} मूर्ति, चित्र, काव्य आदि की रचना की वह शैली जिसमें हर एक चीज ज्यों-की-त्यों और अपने मूल रूप में, बिना अपनी ओर से कुछ घटाए-बढ़ाए, दिखाई जाती है।

यथातथ्य *वि.* {सं.} {*भाव.* यथातथ्यता} ज्यों-का-त्यों, जैसा हो, ठीक उसी के अनुसार या वैसा ही।

यथानुक्रम *क्रि. वि.* यथाक्रम।

यथापूर्व *वि.* {सं.} जैसा पहले था, वैसा ही; ज्यों-का-त्यों।

यथायोग्य *वि.* {सं.} जैसा उचित हो, वैसा, उपयुक्त, मुनासिब।

यथारंभ *अव्य.* आरंभ के अनुसार।

यथारथ *वि.* = यथार्थ।

यथार्थ *वि.* {सं.} {*भाव.* यथार्थता} ठीक, उचित; जैसा है, वैसा; सत्य।

यथार्थतः *क्रि. वि.* {सं.} यथार्थ में, वास्तव में, सचमुच (डी फैक्टो)।

यथार्थता *स्त्री.* {सं.} यथार्थ या वास्तविक होने की अवस्था या भाव, वास्तविकता (रियेलिटी)।

यथार्थवाद *पुं.* {सं.} जो बात या पदार्थ वस्तुतः जिस रूप में हो उसे उसी रूप में मानना या ग्रहण करना; यह दार्शनिक विश्वास या सिद्धांत कि भौतिक जगत् की स्वतंत्र सत्ता या अस्तित्व है और हमें सारा ज्ञान भौतिक तत्वों से होता है (यह सिद्धांत आदर्शवाद के सिद्धांतों का उलटा या विरोधी है); साहित्य में यह सिद्धांत कि संसार में हमें जो चीजें जिन रूपों में दिखाई देती या मिलती हैं उनका ग्रहण तथा वर्णन हमें ठीक उन्हीं रूपों में करना चाहिए (रियलिज़्म, उक्त सभी अर्थों के लिए)।

यथार्थवादी (हिन्) *पुं.* {सं.} यथार्थ या सत्य कहनेवाला, सत्यवादी; साहित्य में यथार्थवाद का सिद्धांत माननेवाला (रियलिस्ट)।

यथावत् *वि.* {सं. यथा + वत्} जैसा था, वैसा ही; जैसा होना चाहिए या जैसा होता हो, वैसा, ठीक उसी तरह का, जैसे यथावत् व्यवहार = विधि, विधान या कानून के अनुसार जैसा व्यवहार या प्रक्रिया होनी चाहिए वैसा व्यवहार या प्रक्रिया; *क्रि. वि.* नियमानुसार जिस तरह होना चाहिए, उस तरह (ड्यूली)।

यथावसर *क्रि. वि.* {सं. यथा + अवसर} जब जैसा अवसर हो, अवसर के अनुसार, मौके से।

यथाविधि *क्रि. वि.* {सं.} विधि के अनुसार; जिस प्रकार होना चाहिए, ठीक उसी प्रकार, उचित रीति या ढंग से (ड्यूली)।

यथाशक्ति *क्रि. वि.* {सं.} शक्ति के अनुसार, जहाँ तक हो सके, भरसक।

यथाशक्य *क्रि. वि.* यथाशक्ति।

यथाशीघ्र *क्रि. वि.* {सं.} जितनी जल्दी हो सके।

यथासंख्य *पुं.* {सं.} 'क्रम' नामक अलंकार का दूसरा काम।

यथासाध्य *क्रि. वि.* यथाशक्ति।

यथास्थित *वि.* {सं.} जैसा है, वैसा ही रहनेवाला, जैसे यथास्थित समझौता = वह समझौता जो अब तक चली आई हुई स्थिति को उसी रूप में बनाए रखने और चलाए चलने के लिए हो (स्टैंडिस्टल एग्रिमेंट)।

यथास्थिति *स्त्री.* {सं.} वर्तमान स्थिति को बनाए रखना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथेच्छ *क्रि. वि.* {सं.} इच्छा के अनुसार, जितना या जैसा चाहिए उतना या वैसा।
यथेच्छक *वि.* मनमौजी।
यथेच्छा *अव्य.* इच्छानुसार, मनमाना।
यथेच्छाचार *पुं.* {सं.} {*वि.* यथेच्छाचारी} मनमाना काम करना, जो मन में आए, वही करना।
यथेच्छाचारी *वि.* मनमौजी।
यथेच्छित *वि.* यथेच्छ।
यथेप्सित *वि.* जो इच्छा हो वैसा।
यथेष्ट *वि.* {सं.} {*भाव.* यथेष्टता} जितना चाहिए, उतना भरपूर, पर्याप्त (सफीशेंट)।
यथेष्टतया *क्रि. वि* {सं.} जितना या जैसा चाहिए, उतना या उस प्रकार से, पर्याप्तत:।
यथोक्त *वि.* जैसा कहा गया हो।
यथोचित *वि.* {सं.} जैसा या जितना उचित हो, वैसा या उतना (प्रॉपर)।
यथोत्तर *अव्य.* उत्तर के अनुसार।
यथोदित *अव्य.* कहने के अनुसार।
यथोद्देश्य *अव्य.* अभिप्राय के अनुसार।
यथोपपाद *अव्य.* यथासंभव।
यथोपाधि *अव्य.* उपाधि के अनुसार।
यदपि *योज.* = यद्यपि।
यदा *क्रि. वि.* {सं.} जिस समय, जब।
यदा-यदा *क्रि. वि.* {सं.} कभी-कभी।
यदि *योज.* {सं.} अगर, जो।
यदुराई *पुं.* = यदुराज।
यदुराज *पुं.* {सं.} श्रीकृष्ण।
यदुवंशी *पुं.* यादव।
यदृच्छया *क्रि. वि.* {सं.} अकस्मात्; दैवसंयोग से; मनमाने ढंग से।
यद्यपि *योज.* {सं.} यदि ऐसा है ही, अगरचे, गो कि।
यम *पुं.* {सं.} यमराज; इंद्रियों को वश में रखना, निग्रह।
यमक *पुं.* {सं.} साहित्य में एक प्रकार का अनुप्रास (शब्दालंकार) जिसमें कुछ स्वर अथवा वर्ण अलग-अलग शब्दों में कई बार आते और हर बार अपने शब्द के साथ अलग-अलग अर्थ के सूचक होते हैं, जैसे–तू मोहन के उर बसी, ह्वै उरबसी समान।
यमकातर *पुं.* {सं. यम + हिं. कातर} यम का छुरा; एक प्रकार की तलवार।
यमकिंकर *पुं.* यमदूत।
यमकीट *पुं.* केंचुवा।
यमकील *पुं.* विष्णु।
यमक्षय *पुं.* मृत्यु।
यमघंट *पुं.* {सं.} दीपावली का दूसरा दिन।
यमज *पुं.* {सं.} एक साथ जनमे हुए दो बच्चों का जोड़ा, जुड़वाँ बच्चे; अश्वनी कुमार।
यमजातना *स्त्री.* यम-यातनाएँ।
यमजित *पुं.* मृत्युंजय।
यमदंड *पुं.* यमराज का डंडा।
यमदग्नि *पुं.* परशुराम के पिता।
यमदूत *पुं.* यम के दूत, कौआ।
यमदूतिका *स्त्री.* इमली।
यमदेवता *स्त्री.* भरणी नक्षत्र।
यमधार *पुं.* {सं.} दुधारी तलवार।
यमन *पुं.* = यवन।
यमनाह *पुं.* = यमराज।
यमपट *पुं.* {सं.} यमराज के यहाँ पापियों को मिलनेवाली यातानाओं के वे चित्र जो प्राचीनकाल में लोग घर-घर दिखलाकर भीख माँगते फिरते थे।
यमपुर *पुं.* {सं.} यमलोक।
यम-यातना *स्त्री.* {सं.} मृत्यु के समय होनेवाला शारीरिक और मानसिक कष्ट।
यमरथ *पुं.* यम का वाहन।
यमराज *पुं.* {सं.} मृत्यु के बाद दंडायिनी व्यवस्था करनेवाले देवता, यमराज।
यमल *पुं.* {सं.} युग्म, जोड़ा।
यमलित *वि.* {सं.} जुड़वाँ।
यमलोक *पुं.* {सं.} यमराज का लोक जहाँ मरने पर लोग जाते हैं, यमपुरी।
यमी[1] *पुं.* {सं. मनिम्} संयम करनेवाला व्यक्ति, संयमी।
यमी[2] *स्त्री.* {सं.} यम की बहन, जो पीछे यमुना नदी बन गई।
यमुना *स्त्री.* {सं.} यम की बहन, यमी; उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी।
ययाति *पुं.* {सं.} राजा नहुष का पुत्र जिसका विवाह देवयानी से हुआ था।
यव *पुं.* {सं.} जौ (अन्न); 12 सरसों या एक जौ की तौल; एक जौ या तिहाई इंच की एक नाप।
यवन *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* यवनी} यूनान देश का निवासी; मुसलमान।
यवनिका *स्त्री.* {सं.} रंगशाला का परदा।
यश *पुं.* {सं. यशस्} अच्छा काम करने के कारण होनेवाली सुख्याति, नेकनामी, कीर्ति; बड़ाई, प्रशंसा।
मुहा. यश गाना = प्रशंसा करना, एहसान मानना; *यश मानना* = कृतज्ञ होना, एहसान मानना।
यशदर *पुं.* धातु-विशेष, दस्ता।
यशब *पुं.* {फा.} एक प्रकार का हरा पत्थर जिसकी हौलदिली बनती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundat ennai and eGangotri

यशस्वी *वि.* {सं. यशस्विन्} {*स्त्री.* यशस्विनी} जिसे यश मिला हो, कीर्तिशाली।

यशी *वि.* {सं.} = यशस्वी।

यशुमति *स्त्री.* = यशोदा।

यशैषणा *स्त्री.* {सं.} यश की प्राप्ति की इच्छा।

यशोदा *स्त्री.* {सं.} नन्द की पत्नी, जिन्होंने श्रीकृष्ण को पाला था।

यशोधन *वि.* यश ही जिसका एकमात्र धन हो।

यशोधर *वि.* यशस्वी, कीर्तिमान।

यशोधरा *स्त्री.* बुद्धदेव की पत्नी।

यशोधा *वि.* कीर्तिमान, यशस्वी।

यशोभाग्य *वि.* यशभागी, कीर्तिमान।

यशोमति *स्त्री.* यशोदा।

यष्ट *पुं.* {सं.} यज्ञ करनेवाला।

यष्टि (का) *स्त्री.* {सं.} छड़ी।

यष्टी *स्त्री.* {सं. यष्टि} छड़ी।

यह *सर्व.* {सं. इदं} {*बहु.* ये} एक सर्वनाम, जिसका प्रयोग वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त निकटवर्ती सभी संज्ञाओं या बातों के लिए होता है; *वि.* दो या अधिक वस्तुओं, व्यक्तियों आदि में से वह जो वक्ता के अधिक निकट है।

यहाँ *क्रि. वि.* {सं. इह} इस स्थान पर, इस जगह।

यहि *सर्व.* {हिं. यह} पुरानी हिन्दी में 'यह' का वह रूप जो विभक्ति लगने के पूर्व प्राप्त होता है; इसको, इसे।

यहीं *क्रि. वि.* {हिं. यहाँ + ही} इसी स्थान पर, इसी जगह।

यही *वि., सर्व.* {हिं. यह + ही} 'यह ही' का संक्षिप्त रूप, निश्चित रूप से यह।

यहूद *पुं.* पश्चिमी एशिया के जुद्दा नामक प्रदेश का पुराना नाम।

यहूदी *पुं.* {यहूद (देश)} {*स्त्री.* यहूदिन} यहूद या इसराइल नामक प्रदेश में बसनेवाली एक प्राचीन जाति जो पैगम्बर इब्राहीम की अनुयायी है। आजकल इस जाति के लोग सारे संसार में फैले हुए हैं (ज्यू); *वि.* यहूद देश-संबंधी, यहूद का।

यहै *सर्व.* = यही (यह ही)।

याँ *अव्य.* यहाँ।

यांत्रिक *वि.* {सं.} यंत्र-संबंधी, यंत्र या यंत्रों का; *पुं.* वह जो यंत्रों को बनाना, चलाना या सुधारना जानता हो, यंत्रविद्या का ज्ञाता (मेकैनिक)।

यांत्रिकता *स्त्री.* {सं.} यंत्रों की आवश्यकता और उपयोग।

या *योज.* {फा.} यदि यह न हो, अथवा वा; *सर्व., वि.* ब्रज भाषा में 'यह' का कारक चिह्न लगने के पहले का रूप।

याक *पुं.* हिमालय पर्वत का जंगली बैल जिसकी पूँछ का चँवर बनता है।

याग *पुं.* {सं.} यज्ञ।

याचक *पुं.* {सं.} याचना करने या माँगनेवाला, भिखमंगा।

याचन *पुं.* याचना, प्रार्थना।

याचना *स्त्री.* {सं.} {*वि.* याच्य, याचक, याचित} कुछ पाने के लिए प्रार्थना करने की क्रिया या भाव, माँगना; *स.* माँगना; प्रार्थना करना।

याचिका *स्त्री.* {सं.} वह पत्र जिसमें किसी से कुछ याचना की गई हो, याचना-पत्र (पेटिशन)।

याचित *वि.* {सं.} माँगा हुआ।

याची *पुं.* भिक्षुक, भीख माँगनेवाला।

याज *पुं.* = यज्ञ।

याजक *पुं.* {सं.} यज्ञ करनेवाला, यष्टा।

याजन *पुं.* {सं.} यज्ञ करना।

याजी *वि.* = याजक।

याज्ञिक *पुं.* {सं.} यज्ञ करने या करानेवाला; ब्राह्मणों की एक जाति।

याज्ञिय *वि.* यज्ञ-संबंधी।

याज्य *वि.* यज्ञ करने योग्य।

याज्या *स्त्री.* गंगा।

यात *वि.* लब्ध, ज्ञात, जाना हुआ।

यातन *पुं.* पारितोषिक।

यातना *स्त्री.* {सं.} कष्ट, पीड़ा।

याता *स्त्री.* पति के भाई की स्त्री, जेठानी, देवरानी।

यातायात *पुं.* {सं.} एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर (व्यक्ति, माल आदि के) आने-जाने की क्रिया या साधन (कम्यूनिकेशन)।

यातुधान *पुं.* {सं.} {*वि.* यातुधानी} राक्षस।

यात्रा *स्त्री.* {सं.} एक स्थान से दूसरे दूरवर्ती स्थान तक जाने की क्रिया, सफर; धार्मिक उद्देश्य या भक्ति से पवित्र स्थान पर दर्शन, पूजा आदि के लिए जाना।

यात्राकार *पुं.* यात्रा करानेवाला पंडा।

यात्रावाल *पुं.* {सं. यात्रा + हिं. वाला} यात्रियों को देव-दर्शन करानेवाला पंडा।

यात्रिक *वि.* यात्रा-संबंधी।

यात्री *पुं.* {सं.} यात्रा करनेवाला, मुसाफिर; धार्मिक दृष्टि से तीर्थयात्रा करनेवाला; वह जो सैर-सपाटे के लिए देश-विदेश में घूमने के लिए चला हो, पर्यटक (टूरिस्ट)।

याद *स्त्री.* {फा.} स्मरण; स्मृति

यादगार *स्त्री.* {फा.} स्मृति चिह्न।

याददाश्त *स्त्री.* {फा.} स्मरण शक्ति; स्मरण रखने योग्य बात।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यादव पुं. {सं.} {स्त्री. यादवी} यदु का वंशज; श्रीकृष्ण।

यादृश *वि.* {सं.} जिस तरह का, जैसा।

यादृशी *वि., स्त्री.* जिस प्रकार की।

यान पुं. {सं.} वह चलनेवाला उपकरण जिसपर चढ़कर लोग एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाते हैं, सवारी (कनवेयंस); आकाशयान, विमान; शत्रु पर होनेवाली चढ़ाई, अभियान।

यान-भत्ता पुं. {सं. यान + हिं. भत्ता} वह भत्ता जो किसी को कहीं आने-जाने के लिए, सवारी के खर्च के रूप में मिले (कनवेयंस अलाउएंस)।

यानांतरण पुं. {सं.} एक यान से दूसरे यान पर जाना, सवारी बदलना।

याना पुं. {सं. सज्ञान} ज्ञानवान, सयाना।
उदा. बाहर मूढ़ सु अंतस यानो–**केशव**।

यानी, याने *योज.* {अ.} अर्थात्।

यापक पुं. {सं.} वह जिसके नाम कोई वस्तु भेजी जाए और जिसका नाम उसके ऊपर लिखा हो, भेजी हुई चीज पानेवाला (एड्रेसी)।

यापन पुं. {सं.} {*वि.* यापित, याप्य} चलाना; व्यतीत करना, बिताना।

यापना *स्त्री.* कालक्षेप, व्यवहार।

यापनीय *वि.* यापन करने योग्य।

याप्य *वि.* निंदनीय, रक्षनीय।

याब *वि.* छोटा घोड़ा, टट्टू।

याभ पुं. स्त्री-प्रसंग, मैथुन।

यापित *वि.* {सं.} बिताया या व्यतीत किया हुआ (समय)।

याम[1] पुं. {सं.} तीन घंटे का समय, पहर; काल, समय।

याम[2] *स्त्री.* {सं. यामि} रात।

यामिक *वि.* {सं.} याम या दिन से संबंध रखनेवाला; दैनिक; पुं. पहरेदार।

यामिनी *स्त्री.* {सं.} रात।

यायावर पुं. {सं.} वह जो एक जगह टिककर न रहता हो; वह जिसका कोई नियत निवासस्थान न हो और जो खानपान आदि के सुभीते के विचार से कभी कहीं और कभी कहीं रहता हो, खानाबदोश (नोमेड); संन्यासी।

यायावरता *स्त्री.* {सं.} खानाबदोशी।

यायावरी (रिन्) *वि.* {सं.} यायावर-संबंधी।

यायी *वि.* गमनशील, जानेवाला।

यार पुं. {फा.} मित्र, दोस्त; किसी स्त्री का उपपति, जार।

यारी *स्त्री.* {फा.} यार या मित्र होने का भाव, प्रेम और आपसदारी का संबंध, मित्रता; स्त्री और पुरुष का अनुचित संबंध।

यावज्जीवन *क्रि. वि.* {सं.} जब तक जीवन रहे तब तक, जीवन-भर, जन्म-भर।

याव *वि.* जौ का बना हुआ।

यावक पुं. बोरों धार, कुलाथी, उड़द।

यावच्छक्य *अव्य.* जहाँ तक बन पड़े।

यावच्छस्त्र *अव्य.* जहाँ तक शस्त्र जा सके।

यावच्छेषा *अव्य.* जितना बच गया हो।

यावच्छ्रेष्ठ *वि.* बहुत बढ़िया।

यावज्जन्म *अव्य.* जन्म-भर।

यावत् *क्रि. वि.* {सं.} जब तक, जिस समय तक; जहाँ तक; *वि.* सब, समस्त, कुल।

यावदंत *अव्य.* शेष तक।

यवदायुस *अव्य.* आजीवन।

यावदुत्तम *अव्य.* शेष सीमा तक।

यावन *वि.* यवन-संबंधी।

यावनी *वि.* {सं.} यवन-संबंधी; यवन (प्राचीन युनान) देश या जाति का; मुसलमानी।

यावनाल *वि.* जुआर, ज्वार।

यावनाली *स्त्री.* ज्वार की शक्कर।

यावास *वि.* जवासे की मदिरा।

यासु *सर्व.* जासु।

याहि *सर्व.* {हिं. या + हिं} इसको।

युजना *अ.* {सं. युजन} मिलना, युक्त होना; आध्यात्मिक दृष्टि से, जीव का कर्मों से बँधना।

युक्त *वि.* {सं.} जुड़ा या मिला हुआ, संयुक्त; साथ में लगा हुआ, सहित, सम्मिलित; युक्तिसंगत, उचित, योग्य; युक्ति या तर्क से ठीक।

युक्ति *स्त्री.* {सं.} उपाय, तरकीब, ढब; कौशल, चातुरी; तर्क, दलील; योग, मिलन; साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें किसी क्रिया या उपाय से अपनी कोई चेष्टा या रहस्य दूसरों से छिपाने का वर्णन होता है।

युक्तियुक्त *वि.* {सं.} युक्ति या तर्क के विचार से ठीक, तर्क-संगत।

युग पुं. {सं.} जोड़ा, युग्म; जुआ, जुआठा; पासे के खेल में एक घर में साथ बैठनेवाली दो गोटियाँ; बारह वर्ष का काल; इतिहास का कोई ऐसा बड़ा कालमान जिसमें बराबर एक ही प्रकार के कार्य, घटनाएँ आदि होती रही हों, जैसे प्रस्तर युग (एज); किस विशिष्ट घटना, कार्य आदि के विचार से आरंभ होकर कुछ दिनों तक चलनेवाला ऐसा काल या समय जो इस प्रकार के दूसरे कालों या समयों से अलग माना जाता हो (एरा); पुराणानुसार काल के ये चार परिमाण या विभाग–सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलि; समय, जमाना।
मुहा. **युग-युग** = बहुत दिनों तक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation ai and eGangotri

युगति *स्त्री.* = युक्ति।

युगधर्म *पुं.* {सं.} वे विशिष्ट और मुख्य बातें जो किसी युग में प्रधान रूप से होती हों, जैसे दलबंदी और स्वार्थसाधन तो आजकल के युगधर्म हैं।

युगप *पुं.* गंधर्व।

युगपत् *वि.* {सं. युग + पत्} एक ही समय में घटित होनेवाला।

युग-परिवर्तन *पुं.* {सं.} बहुत बड़ा परिवर्तन; युग का बदलना।

युगपुरुष *पुं.* {सं.} अपने समय का वह बहुत बड़ा आदमी जिसके जोड़ का उस युग में और कोई न हुआ हो।

युगबोध *पुं.* {सं.} युग की स्थिति, आवश्यकताओं आदि की जानकारी।

युगम *पुं.* युग्म।

युग्म *पुं.* युगल, द्वंद्व, जोड़ा, युग, मिथुन राशि।

युगल *पुं.* {सं.} युग्म, जोड़ा।

युगसम्मत *वि.* {सं.} युग के विचारों के अनुरूप।

युगांत *पुं.* {सं.} युग का अंत।

युगांतर *पुं.* {सं.} दूसरा युग; दूसरा समय और जमाना।

मुहा. युगांतर उपस्थित करना = पुरानी बातें हटाकर उनके स्थान पर नई बातें या नया युग चलाना।

युगानुरूप *वि.* {सं.} युग के अनुरूप।

युज्य *वि.* संयुक्त, मिला हुआ।

युग्म (क) *पुं.* {सं.} {*भाव.* युग्मता} जोड़ा, युग; द्वंद्व।

युग्मज *पुं.* यमज।

युत *वि.* {सं.} मिला हुआ, युक्त।

युतक *पुं.* संशय, संदेह, अंचल।

युति *वि.* {सं.} योग, मिलाना।

युत्पथ *पुं.* = युथप।

युत्कार *वि.* लड़ाई करनेवाला।

युद्ध *पुं.* {सं.} राज्यों या राष्ट्रों के दो पक्षों में होनेवाली सैनिक लड़ाई, संग्राम, रण।

मुहा. युद्ध माँडना = लड़ाई छेड़ना।

युद्धक *वि.* {सं.} युद्ध करनेवाला, जैसे युद्धक वायुयान; युद्ध-संबंधी।

युद्धपोत *पुं.* {सं.} लड़ाई का समुद्री जहाज (वारशिप)।

युद्धबंदी *स्त्री.* युद्ध के समय बंदी बनाए हुए विपक्षी सैनिक।

युद्धमंत्री *पुं.* {सं.} राज्य का वह मंत्री जिसके जिम्मे युद्ध का विभाग हो।

युद्धमान *वि.* {सं.} युद्ध करनेवाला।

युद्धाध्वन *पुं.* युद्ध का मार्ग।

युद्धावसान *पुं.* युद्ध का शेष।

युद्धाभ्यास *पुं.* {सं.} युद्ध का अभ्यास।

युधिष्ठिर *पुं.* {सं.} पाँचों पांडवों में सबसे ज्येष्ठ, जो बहुत धर्म-परायण थे।

युद्धोन्मत्त *वि.* युद्ध करने के लिए उतावला।

युद्धोपकरण *पुं.* युद्ध की सामग्री।

युनानी *वि.* युनान-संबंधी; *पुं.* युनान का वासी; *स्त्री.* युनान की भाषा।

युयुत्सा *स्त्री.* {सं.} युद्ध करने की इच्छा; शत्रुता, दुश्मनी।

युयुत्सु *वि.* {सं.} युद्ध करने या लड़ने की इच्छा रखनेवाला।

युवक *स्त्री.* {सं.} सोलह से पैंतीस वर्ष तक की अवस्था का पुरुष, जवान, युवा।

युवती *स्त्री.* {सं.} जवान स्त्री।

युवराज *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* युवराज्ञी} राजा का वह सबसे बड़ा लड़का जो राज्य का उत्तराधिकारी हो।

युवराज्ञी *स्त्री.* {सं.} युवराज की पत्नी।

युवरानी *स्त्री.* = युवराज्ञी।

युवा *वि.* {सं. युवन्} {*स्त्री.* युवती} युवक, जवान।

युवानपीड़िका *स्त्री.* मुहाँसा।

युवाकेंद्र *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ मनोरंजन, विचार-विमर्श आदि के उद्देश्य से युवक एकत्र होते हों।

युवावस्था *स्त्री.* {सं.} जवानी।

युवाशक्ति *स्त्री.* {सं.} किसी देश के सारे युवक।

यूँ *क्रि. वि.* यों।

यूक, यूका *पुं., स्त्री.* बालों में पड़नेवाला कीड़ा, जूँ।

यूकांड *पुं.* चीलर, लीख।

यूत *पुं.* मिश्रण, मिलावट।

यूथ *पुं.* {सं.} समूह, झुंड, गिरोह; सेना, फौज।

यूथप (ति) *पुं.* {सं.} दल का सरदार; सेनापति।

यून *पुं.* रस्सी, डोरी।

यूनान *पुं.* प्राचीन यूरोपीय देश, सभ्यता, शिल्पकला के लिए प्रसिद्ध था।

यूनानी *वि.* यूनान देश का, यूनान की भाषा।

यूनियन *पुं.* {अं.} किसी विशेष कार्य के लिए बना हुआ कोई संघटित समाज या सभा।

यूप *पुं.* {सं.} यज्ञ का वह खंभा जिसमें बलि चढ़ाया जानेवाला पशु बाँधा जाता था।

यूपा *पुं.* जुआ।

यूथ *पुं.* दाल आदि का जूस।

यूह *पुं.* यूथ।

ये *सर्व., वि* {हिं.} 'यह' का बहु.।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Foundation Chennai and eGangotri

येई *सर्व.* = यही।

येऊ *सर्व.* {हिं. ये + ऊ} यह भी।

येतो *वि.* = इतना।

येन-केन-प्रकारेण *क्रि. वि.* {सं.} जैसे-तैसे, किसी तरह से।

येहू *वि.* {हिं. यह + हू} यह भी।

यों *क्रि. वि.* {सं. एवम्} इस प्रकार, इस तरह, ऐसे।

यों ही *क्रि. वि.* {हिं. यों + ही} बिना किसी कार्य या कारण के, व्यर्थ।

योग *पुं.* {सं.} {*भाव.* योगत्व} मिलना, संयोग; कोई शुभ काल; योगफल, जोड़ (टोटल); फलित ज्योतिष में कुछ विशिष्ट काल या अवसर; चित्त को एकाग्र करने का उपाय या शास्त्र।

योगांजन *पुं.* सिद्धांजन।

योगांतर *पुं.* भिन्न-भिन्न वस्तुओं का संयोग।

योगक्षेम *पुं.* {सं.} प्राप्ति या लाभ और उसकी रक्षा; जीवन निर्वाह, गुजारा; कुशल-मंगल, खैरियत; राष्ट्र की शांति और सुव्यवस्था।

योगदर्शन *पुं.* योगशास्त्र।

योगदान *पुं.* {सं.} किसी काम में साथ देना या सहायक होना।

योगफल *पुं.* {सं.} दो या अधिक संख्याओं का जोड़ (टोटल)।

योगमाया *स्त्री.* {सं.} भगवती।

योगयति *पुं.* = योगी।

योगरूढ़ *पुं.* {सं.} {*भाव.* योगरूढ़ि} वह यौगिक शब्द जो किसी विशेष अर्थ में रूढ़ हो।

योगशास्त्र *पुं.* {सं.} पतंजलि ऋषि का दर्शन जिसमें चित्त को एकाग्र और ईश्वर में लीन करने का विधान है।

योगागम *पुं.* योगशास्त्र।

योगाचार *पुं.* योग का आचरण।

योगात्मक *वि.* {सं.} जोड़नेवाला।

योगाभ्यास *पुं.* {सं.} {*वि.* योगाभ्यासी} योगशास्त्र के अनुसार योग का साधन।

योगिनी *स्त्री.* {सं.} योग का साधन करनेवाली तपस्विनी; रण-पिशाचिनी।

योगींद्र *पुं.* {सं.} बहुत बड़ा योगी।

योगी *पुं.* {सं. योगिन्} आत्मज्ञानी; योग का साधन या अभ्यास करनेवाला।

योगेश्वर *पुं.* {सं.} श्रीकृष्ण; शिव; बहुत बड़ा योगी।

योगेश्वरी *स्त्री.* दुर्गा देवी।

योगेन्द्र *पुं.* योगियों में श्रेष्ठ, शिवजी।

योग्य *वि.* {सं.} {*भाव.* योग्यता} जिसमें कोई काम करने की शक्ति या गुण हो, किसी कार्य के लिए उपयुक्त, काबिल (एबुल); जो किसी पद, कार्य, उपयोग आदि के लिए ठीक हो, उपयुक्त (फिट); विद्या, गुण आदि के विचार से ऊँचे दरजे का और अच्छा; जिसके प्रति कुछ किया जाना उचित हो, अधिकारी, पात्र, जैसे यह विद्यार्थी सहायता पाने के योग्य है; उचित, वाजिब, जैसे यह काम आपके योग्य नहीं है।

योग्यता *स्त्री.* {सं.} वह गुण या शक्ति जिससे कोई कुछ काम करने के योग्य होता है, सामर्थ्य; किसी वस्तु में होनेवाला वह गुण जिससे लोक में उसका आदर होता है; किसी विषय या कार्य की बहुत अच्छी जानकारी, लियाकत (मेरिट, उक्त तीनों अर्थों के लिए); ज्ञान, अनुभव, शिक्षा आदि की दृष्टि से वह विशेषता या गुण जिसके आधार पर कोई किसी कार्स या पद के लिए उपयुक्त समझा जाता है।

योजक *वि.* {सं.} मिलाने या जोड़नेवाला; योजना करने या बनानेवाला; *पुं.* व्याकरण में उन शब्दों का वर्ग जो शब्दों, पदों, उपवाक्यों तथा वाक्यों को जोड़ते हैं।

योजन *पुं.* {सं.} योग; मिलाना, संयोग; किसी काम में लगाना; धन-संपत्ति आदि अपने काम में ले आना या अपना लेना (एप्रोप्रिएशन); दूरी की एक नाप जो दो से आठ कोस तक की कही गई है।

योजबल्ली *स्त्री.* मजीठ।

योजनगंधा *स्त्री.* {सं.} व्यास की माता और शांतनु की भार्या, सत्यवती।

योजना *स्त्री.* {सं.} {*वि.* योजनीय, योज्य, योजित} प्रयोग, व्यवहार; मिलना, मेल; बनावट, रचना; कोई कार्य या उद्देश्य सिद्ध करने के उपाय, साधन, व्यवस्था आदि की पहले से निश्चित की हुई रूपरेखा (प्रोजेक्ट, प्लान); उक्त प्रकार की वह रूपरेखा जो अभी कल्पना के क्षेत्र में ही हो, पूरी तरह से निश्चित न हुई हो (स्कीम)।

योत्र *पुं.* वह बंधन जो जूए को बैलों की गर्दन से जोड़ता है, जोत।

योजनाकार *पुं.* {सं.} योजना बनानेवाला।

योजनीय, योज्य *वि.* {सं.} योजन, संयोग या मिलान करने योग्य; जो कहीं प्रयुक्त हो सकता हो, योग या प्रयोग करने अथवा काम में लाने योग्य (एप्लिकेबुल)।

योद्धा *पुं.* {सं. योद्ध} वह जो युद्ध करता हो, लड़ाई में लड़नेवाला; युद्ध में लड़नेवाला सिपाही, सैनिक।

योधन *पुं.* युद्ध की सामग्री।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योध्य *वि.* युद्ध करने योग्य।

योनि *स्त्री.* {सं.} उत्पत्ति-स्थान, उद्‌गम; स्त्रियों की जननेन्द्रिय, भग; प्राणियों की जातियाँ जिनकी कुल संख्या 84 लाख कही गई हैं; देह, शरीर।

योनिज *पुं.* {सं.} जो 'योनि' से उत्पन्न हुआ हो (अंडे आदि से न हुआ हो) जिसने माता के गर्भ से शरीर और जीवित रूप में जन्म लिया हो।

योषणा *स्त्री.* असती स्त्री।

योषा *स्त्री.* नारी, स्त्री।

योषित्प्रिया *स्त्री.* हरिद्रा, हलदी।

योगपद, योगपद्य *पुं.* समकालीन।

योषिता *स्त्री.* {सं.} स्त्री, औरत।

यौं *क्रि. वि.* यों।

यौ *सर्व.* {हिं. यह} यह।

यौक्तिक *वि.* {सं.} युक्तिसंबंधी; युक्तिसंगत।

यौगिक *वि.* {सं.} योग-संबंधी, योग का; किसी के साथ मिला, लगा या सटा हुआ; *पुं.* प्रकृति और प्रत्यय से बना हुआ शब्द; दो शब्दों के मेल से बना हुआ शब्द, जैसे योगक्षेम।

यौतक (तुक) *पुं.* {सं.} विवाह के समय वर और कन्या को मिलनेवाला धन, दाइजा।

यौतुक *पुं.* विवाह काल में वर-वधू को दिया जानेवाला धन।

यौध *वि.* युद्धप्रिय; *पुं.* योद्धा।

यौद्धिक *वि.* {सं.} युद्ध-संबंधी, युद्ध का।

यौधेय *पुं.* {सं.} योद्धा; एक प्राचीन देश का नाम; इस देश में रहनेवाली एक प्राचीन योद्धा जाति।

यौन *वि.* {सं.} योनि-संबंधी; लैंगिक।

यौवत *पुं.* वह नाच जिसमें बहुत-सी नटियाँ मिलकर नाचती हैं।

यौवन *पुं.* {सं.} बाल्यावस्था और वृद्धावस्था के बीच की अवस्था; जवानी; जोबन।

यौवराज्याभिषेक *पुं.* {सं.} प्राचीनकाल का वह अभिषेक या (उत्सव) जो राजा के उत्तराधिकारी पुत्र के 'युवराज' बनाए जाने के समय होता था।

र

र नागरी वर्णमाला का सत्ताइसवाँ व्यंजन, जो अंतस्थ है तथा जिसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है।

रंक *वि.* {सं.} दरिद्र; कंजूस।

रंग *पुं.* {सं.} राँगा नामक धातु; नाचना-गाना; नृत्य या अभिनय का स्थान; रणक्षेत्र; पदार्थ का (उसके आकार से भिन्न) वह गुण जिसका ज्ञान केवल आँखों के द्वारा होता है, वर्ण; जैसे हरा, काला; वह पदार्थ जिससे कोई चीज रँगी जाती है; बदन और चेहरे की रंगत, वर्ण।

मुहा. (चेहरे का) रंग उड़ना या उतरना = भय या लज्जा से चेहरे का तेज कम होना; *रंग निखरना* = चेहरा साफ और चमकदार होना; *रंग बदलना* = क्रुद्ध होना, रूप या वेष बदलना।

युवावस्था, जवानी।

मुहा. रंग चूना या टपकना = यौवन उमड़ना।

शोभा, सौंदर्य, आतंक, धाक।

मुहा. रंग जमना = दृढ़ प्रभाव पड़ना, धाक बैठना; *रंग जमाना या बाँधना* = प्रभाव डालना; *रंग लाना* = प्रभाव या गुण दिखलाना।

प्रभुत्व, समृद्धि, मान आदि बढ़ा-चढ़ा होने की अवस्था या भाव, जैसे आजकल हर जगह आप का रंग है; क्रीड़ा, आनंद, उत्सव।

मुहा. रंग में भंग पड़ना = आनंद में बाधा होना; *रंग रचाना* = उत्सव करना।

युद्ध, लड़ाई।

मुहा. रंग मचाना = खूब युद्ध करना।

उमंग, मौज; आनंद, मजा।

मुहा. रंग जमना = खूब आनंद आना।

दशा, हालत, जैसे धीरे-धीरे रंग बदल रहा है; अनुराग, प्रेम।

मुहा. (किसी के) रंग में बाँधना = किसी पर पूरी तरह से अनुरक्त होना।

ढंग, चाल।

मुहा. रंग काछना = नया ढंग, अख्तियार करना।

भाँति, प्रकार; चौपड़ की गोटियों के दो वर्णों में से कोई एक।

मुहा. रंग मारना = बाजी जीतना।

पुं. अंगराग।

रंगई *पुं.* कपड़ा छापनेवालों की एक जाति।

रंगकर्मी (र्मिन्) *पुं.* {सं.} रंगमंच से जुड़ा व्यक्ति।

रंग-ढंग *पुं.* {सं. + हिं.} चाल-ढाल; लक्षण।

रंगत *स्त्री.* {फा.} रंग, वर्ण; दशा, अवस्था; अर्थछटा।

रंगथल *पुं.* रंगस्थल (रंगभूमि)।

रंगदार *पुं.* वह गुंडा जो जबरदस्ती धन वसूलता हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगदारी *स्त्री.* गुंडों को दिया जानेवाला धन।

रंगन *पुं.* एक वृक्ष।

रँगना *स.* {हिं. रंग + ना (प्रत्य.)} किसी चीज को घुले हुए रंग में डाल या डुबाकर रंगीन करना या उस पर रंग चढ़ाना।

मुहा. रँगे हाथ या रँगे हाथों = कोई अपराध करते हुए उसी दशा में या उसके प्रमाण सहित, जैसे रँगे हाथ पकड़े जाना।

किसी को अपने प्रेम में फँसाना; अपने अनुकूल करना; *अ.* किसी पर आसक्त होना।

रँगवाई *स्त्री.* रँगने का काम।

रँगवाना *क्रि. स.* दूसरे से रँगने का काम कराना।

रंगबाती *स्त्री.* {हिं. रंग + बत्ती} शरीर पर लगाने के लिए सुगंधित वस्तुओं की बत्ती।

रंग-बिरंगा *वि.* {हिं. रंग + बिरंग} अनेक रंगों का, चित्रित; अनेक प्रकार का, तरह-तरह का।

रंगभवन *पुं.* रंगमहल।

रंगभूमि *स्त्री.* {सं.} खेल, तमाशे या उत्सव का स्थान; नाट्यशाला; रणक्षेत्र।

रंगमौन *पुं.* = रंगमहल।

रंगमंच *पुं.* {सं.} नाट्यशाला, विशेषत: उसमें का वह स्थान जिसपर अभिनेता अभिनय करते हैं (स्टेज); रंगभूमि।

रंगमहल *पुं.* {सं. रंग + *अ.* महल} भोगविलास करने का स्थान।

रंगरली *स्त्री.* {हिं. रंग + लाना} आमोद-प्रमोद, आनंद।

रंग-रसिया *पुं.* {हिं. रंग + रसिया} भोग विलास का प्रेमी, विलासी।

रँगराता *वि.* {हिं. रंग + रत} {*स्त्री.* रँगराती} भोगविलास।

रँगरूट *पुं.* {अं. रिक्रूट} सेना या पुलिस आदि में नया भर्ती होनेवाला सिपाही; किसी काम में पहले-पहल आकर लगा हुआ व्यक्ति, नौसिखुआ।

रंगरेज *पुं.* {फा.} {*स्त्री.* रंगरेजिन} कपड़े रँगने का व्यवसाय करनेवाला।

रंगशाला *स्त्री.* रंगभूमि।

रंगसाज *पुं.* {फा.} {*भाव.* रंगसाजी} चीजों पर रंग चढ़ानेवाला; रंग बनानेवाला।

रंगस्थल *पुं.* = रंगभूमि।

रँगाई *स्त्री.* {हिं. रंग + आई (प्रत्य.)} रँगने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

रँगाना *क्रि. स.* रँगने का काम दूसरे से कराना।

रंगारंग *वि.* {हिं. रंग} अनेक रंगों का; तरह-तरह का।

रँगावट *वि.* {हिं. रंग} रँगने की क्रिया या भाव।

रंगी *वि.* {हिं. रंग + ई (प्रत्य.)} {*स्त्री.* रंगिणी, रंगिनी} रँगीला; रंगोंवाला, रंगीन।

रंगीन *वि.* {फा.} {*भाव.* रंगीनी} रँगा हुआ, रंगदार; विलासप्रिय; चमत्कारपूर्ण, मजेदार।

रंगीन-मिजाज *वि.* {फा.} मौज-मस्ती करनेवाला।

रंगीन-मिजाजी *स्त्री.* {फा.} मौज-मस्ती।

रँगीला *वि.* {हिं. रंग} रंगीन; रसिक; सुंदर।

रंगीली टोड़ी *स्त्री.* संपूर्ण जाति की रागिनी।

रंगैया *पुं.* रंगनेवाला।

रंच (क) *वि.* {सं. न्यंच} थोड़ा।

रंज *पुं.* {फा.} {*वि.* रंजीदा} दुख, खेद; शोक।

रंजक[1] *वि.* {सं.} रँगनेवाला; प्रसन्न करनेवाला (यौ. के अंत में, जैसे मनोरंजक)।

रंजक[2] *स्त्री.* {हिं. रंच = अल्प} बत्ती लगाने के लिए बंदूक की प्याली पर रखी जानेवाली बारूद।

रंजन *पुं.* {सं.} {*वि.* रंजनीय} रँगने की क्रिया या भाव; चित्त प्रसन्न करने की क्रिया; रंगों आदि से अंकित किया हुआ चित्र (पेंटिंग); *वि.* {*स्त्री.* रंजिनी} मन प्रसन्न करनेवाला।

रंजना *स.* {सं. रंजन} रँगना; किसी का मनोरंजन करना।

रंजनी *स्त्री.* हलदी, पर्पटी।

रंजित *वि.* {सं.} रँगा हुआ; जिसके शरीर अथवा ऊपरी भाग पर कोई विशेष रंग या वर्ण हो; वास्तविक रूप या वर्ण के लिए जिसका ऊपरी या बाहरी रूप कुछ बदल और बढ़ा दिया गया हो, जैसे किसी घटना का रंजित वर्णन; आनंदित, प्रसन्न; अनुरक्त।

रंजिश *स्त्री.* {फा.} किसी के प्रति मन में होनेवाली अप्रसन्नता, मनमुटाव।

रंजीदा *वि.* {फा.} {*भाव.* रंजीदगी} जिसे रंज हो, दुखित; अप्रसन्न।

रंडा *स्त्री.* {सं.} राँड़, विधवा; *पुं.* रंडुआ।

रँड़ापा *पुं.* {हिं. राँड़} राँड़ या विधवा होने का भाव या अवस्था, विधवापन, वैधव्य।

रंडी *स्त्री.* {सं. रंडा} वेश्या; विधवा।

रंडुआ (वा) *पुं.* {हिं. राँड़} वह जिसकी पत्नी मर गई हो।

रंत *वि.* रत, अनुरक्त।

रंतव्य *वि.* रमण करने योग्य।

रंता *वि.* {सं. रत} अनुरक्त, रत।

उदा. मुनि मानस रन्ता, जगत नियन्ता आदिहु अन्त न जाहि-केशव।

रंति *स्त्री.* {सं.} क्रीड़ा, केलि।

रँदना *स.* {हिं. रंदा} रंदे से छीलकर लकड़ी चिकनी और साफ करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंद पुं. घर की भीतों में वह छेद जो प्रकाश और वायु आने के लिए बनाया जाता है।

रंदा पुं. {सं. रदन} लकड़ी छीलकर चिकनी और साफ करने का औजार।

रंधक पुं. रसोई बनानेवाला, नष्ट करनेवाला।

रंधन पुं. {सं.} {*वि.* रंधित, रंधक} रसोई बनाना या पकाना।

रंध्र पुं. {सं.} छेद, छिद्र।

रंभ पुं. {सं.} भारी या घोर शब्द।

रंभण पुं. {सं.} गले लगाना, आलिंगन; रँभाना।

रँभन पुं. रंभण।

रंभना *अ.* {सं. रंभण} जोर का शब्द करना; (गाय का) रँभाना।

रंभा[1] *स्त्री.* {सं.} केला (फल); गौरी; वेश्या; एक प्रसिद्ध अप्सरा।

रंभा[2] पुं. {सं. रंभ} लोहे के मोटे छड़ का बना वह औजार जिससे दीवार खोदी जाती है।

रंभापति पुं. इंद्र।

रंभाफल पुं. कदलीफल, केला।

रंभित *वि.* शब्द किया हुआ, बजाया हुआ।

रंभोरू *स्त्री.* वह स्त्री जिसकी जाँघें केले के समान हो।

रंहस् पुं. वेग, गति, शिव।

रँभाना *अ.* {सं. रंभण} गाय का शब्द करना।

रँहचटा पुं. {हिं. रस + चाट = चस्का} लालच।
उदा. क्यों नहिं मिलवति देह सौं, नेह रँहचटी लाइ–**मतिराम**।

रँहट पुं. रहट।

रँहटा पुं. रँहटा।

रइकौ *क्रि. वि.* रंच।

रइनि *स्त्री.* {सं. रजनी} रात, रात्रि।

रई[1] *स्त्री.* {सं. रय} मथानी।

रई[2] *वि., स्त्री.* {सं. रंजन} डूबी या पगी हुई; अनुरक्त; युक्त, सहित।

रईस पुं. {*अ.*} {*भाव.* रईसी} अमीर, धनी, बड़ा आदमी।

रईसी *स्त्री.* {*अ.* रईस} रईस होने की अवस्था या भाव, अमीरी।

रउताई *स्त्री.* रवताई।

रउरे *सर्व.* {हिं. राव} आप।

रकछ पुं. पत्तों की बनी हुई पकौड़ी।

रकत पुं. रक्त।

रकबा पुं. {*अ.* रक़्बः} क्षेत्रफल।

रकम *स्त्री.* {*अ.* रक़म} धन, संपत्ति; गहना, जेवर; धन की राशि (एमाउंट); प्रकार, भाँति।

रकसाई *स्त्री.* {हिं. राकस = राक्षस} राक्षस का धर्म या स्वभाव, राक्षसपन।

रकबा पुं. क्षेत्रफल, जोत की कुल भूमि।

रकाब *स्त्री.* {फा.} सवारी के घोड़े की काठी या जीन में लटकनेवाला पावदान।
मुहा. रकाब पर पैर रखना = चलने के लिए तैयार होना।

रकाबी *स्त्री.* {फा.} तश्तरी।

रक्त पुं. {सं.} शरीर की नसों में बहनेवाला लाल रंग का प्रसिद्ध तरल पदार्थ, खून; काम करनेवालों का ऐसा समाज या वर्ग जो साधारणतः दूसरे प्रकार के कार्यकर्ताओं के समाज या वर्ग से कुछ भिन्न प्रकार का हो, जैसे अब कांग्रेस में नया रक्त लाने की आवश्यकता है; केसर; लाल कमल; सिंदूर; लाल रंग; *वि.* {सं.} रंगा हुआ; लाल।

रक्तचाप पुं. {सं.} एक प्रकार का रोग जिसमें रक्त का वेग या चाप साधारण से अधिक घट या बढ़ जाता है (ब्लडप्रेशर)।

रक्तपात पुं. {सं.} मारकाट, खून-खराबा।

रक्तरंजित *वि.* {सं.} रक्त से रँगा हुआ, खून से लथपथ।

रक्तशोधन पुं. {सं.} खून की सफाई।

रक्तस्राव पुं. {सं.} शरीर के किसी अंग के कट-फट जाने के कारण उसमें से रक्त या खून बहना (हैमरेज)।

रक्तांग पुं. मंगल ग्रह, प्रवाल, गूँगा।

रक्तांबर पुं. लाल वस्त्र, गेरुआ वस्त्र पहने हुए संन्यासी।

रक्ता *स्त्री.* लाक्षा, घुँघची, बच।

रक्ताकर पुं. प्रवाल, मूँगा।

रक्ताक्त पुं. {सं.} जिस पर रक्त या खून लगा हो, रक्तरंजित; लाल रंग का; लाली लिए हुए, लाल।

रक्तातिसार पुं. {सं. रक्त + अतिसार।} एक रोग जिसमें लहू के दस्त आते हैं।

रक्ताघरा *स्त्री.* किन्नरी।

रक्ताघार पुं. चर्म, चमड़ा।

रक्ताब्ज पुं. लाल कमल।

रक्ताभ *वि.* {सं.} लाल रंग की आभा से युक्त, जो लाली लिए हुए।

रक्तारुण *वि.* {सं.} रक्त की तरह लाल, खूनी।

रक्तालू पुं. रतालू नामक कंद।

रक्तास्राव पुं. नाक से लाल रुधिर बहना।

रक्ति *स्त्री.* अनुराग, प्रेम।

रक्तिका *स्त्री.* घुँघची, रत्ती।

रक्तिम *वि.* {सं.} लाल रंग का।

रक्तिमा *स्त्री.* {सं.} लाली, सुरखी।

रक्तोत्पल पुं. {सं. रक्त + उत्पल} लाल कमल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्तोपल पुं. {सं.} गेरू नाम की लाल मिट्टी; लाल नामक रत्न।

रक्ष[1] पुं. {सं.} रक्षक; रक्षा।

रक्ष[2] पुं. {सं. रक्षस्} राक्षस।

रक्षक पुं. {सं.} रक्षा करने या बचानेवाला; पहरेदार।

रक्षण पुं. {सं.} {वि. रक्षणीय, रक्षित} रक्षा करना; पालन-पोषण।

रक्षणीय वि. {सं.} {स्त्री. रक्षणीया} जिसकी रक्षा करना उचित हो, रक्षित रखने योग्य।

रक्षमान वि. = रक्षक।

रक्षस पुं. = राक्षस।

रक्षा स्त्री. {सं.} विपत्ति, आक्रमण, हानि, नाश आदि से बचाना, बचाव (प्रोटेक्शन); वह सूत्र या यंत्र जो बालकों को भूत-प्रेत, रोग, नजर आदि की बाधा से बचाने के लिए बाँधा जाता है।

रक्षाइद स्त्री. {हिं. रक्षा + आइद (प्रत्य.)} राक्षसपन।

रक्षाकवच पुं. रक्षा।

रक्षागृह पुं. {सं.} प्रसूतिगृह; हवाई हमलों आदि की गोला-बारी से बचने के लिए जमीन के अंदर बना हुआ सुरक्षित स्थान।

रक्षादल पुं. {सं.} रक्षियों या पुलिसवालों की तरह और उनके सहायक के रूप में काम करनेवाला एक नया राजकीय दल या संगठन (होमगार्ड)।

रक्षाबंधन पुं. {सं.} श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होनेवाला एक त्योहार जिसमें बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बाँधती है, राखी पूनो।

रक्षित वि. {सं.} {स्त्री. रक्षित} जिसकी रक्षा की गई हो; पाला-पोसा हुआ; किसी व्यक्ति या काम के लिए अलग किया हुआ (रिज़र्व्ड)।

रक्षित राज्य पुं. {सं.} वह छोटा राज्य जो किसी बड़े राज्य या साम्राज्य के संरक्षण में हो और जिसे साम्राज्य से बहुत परिमित अधिकार प्राप्त हों (प्रोटेक्टरेट)।

रक्षिता स्त्री. {सं. रक्षित} बिना विवाह किए, यों ही रखी हुई स्त्री, रखेली।

रक्षी पुं. = रक्षक।

रक्षीदल पुं. {सं. रक्षा + दल} आरक्षी (पुलिस) विभाग के साधारण सिपाहियों के वर्ग का सामूहिक नाम (कांस्टेबुलरी)।

रक्षोगण पुं. राक्षसों का समूह।

रक्षोघ्न पुं. हींग, सफेद सरसों।

रक्षोजननी स्त्री. राक्षस की माता, रात्रि, रात।

रक्षोहन वि. राक्षस-हंता।

रक्ष्य वि. रक्षणीय, रक्षा करने योग्य।

रक्ष्यमाण वि. {सं.} जिसकी रक्षा हो सके; जिसकी रक्षा होती हो।

रख स्त्री. पशुओं की चरने की भूमि।

रखना स. {सं. रक्षण} {प्रे. रखाना, रखवाना} स्थित करना, ठहराना, टिकाना, धरना; रक्षा करना, नष्ट न होने देना;

मुहा. रख लेना = रक्षा करना, बचाना। सुपुर्द करना, सौंपना; रेहन रखना, बंधक में देना; अपनी रक्षा या अपने अधिकार में लेना; नियुक्त करना; जिम्मे लगाना; मन में अनुभव या धारण करना; उपपत्नी (या उपपति) बनाना; पालना।

रखनी स्त्री. रखेली।

रखया पुं. {हिं. रक्षा} रक्षक; देख-रेख करनेवाला, रखवाला।

रख-रखाव पुं. {हिं. रखना + रखाना} दूसरों की बात और मर्यादा की रक्षा करते हुए अपनी बात और मर्यादा की भी रक्षा करना; किसी चीज या काम की देख-रेख करते हुए उसे बनाए रखने और अच्छी तरह चलाए रखने की क्रिया या भाव (मेंटेन); पालन-पोषण, भरण-पोषण।

रखला पुं. रहँकला।

रखवाई स्त्री. रखाई।

रखवाना स. {हिं.} रखना का प्रे.।

रखवार पुं. रखवाला।

रखवारी स्त्री. रखवाली।

रखवाला पुं. {हिं. रखना} रक्षा या रखवाली करनेवाला; पहरेदार।

रखवाली स्त्री. {हिं. रखना} रक्षा या देख-भाल करने की क्रिया या भाव।

रखाई स्त्री. {हिं. रखना} रक्षा करने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

रखाऊँ {हिं. रखना} बहुत दिनों का रखा हुआ, पुराना (माल या पदार्थ)।

रखाना[1] स. {हिं.} 'रखना' का प्रे.।

रखाना[2] अ. {सं. रक्षा} रखवाली या रक्षा करना।

रखाव स्त्री. {हिं. रखना} गोचर भूमि।

रखिया पुं. = रक्षक।

रखियाना स. {हिं.} पात्रों को राख से माँजना।

रखीसर पुं. {सं. ऋषीश्वर} नारद ऋषि; बहुत बड़ा ऋषि।

रखेली, रखैल स्त्री. {हिं. रखना} उपपत्नी के रूप में रखी हुई स्त्री, रक्षिता।

रखौंत पुं. पशुओं के चरने के लिए छोड़ी हुई भूमि।

रग स्त्री. {फा.} शरीर में की नस;

मुहा. रग दबना = किसी के अधीन या अधिकार में होना; *रग-रग फड़कना* = बहुत अधिक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्साह या चंचलता होना; *रग-रग में* = सारे शरीर में।

पत्तों में दिखाई पड़नेवाली नसें।

रगड़ *स्त्री.* {हिं रगड़ना.} रगड़ने की क्रिया या भाव; रगड़ा।

रगड़ना *स.* {सं. घर्षण} {प्रे. रगड़वाना।} घर्षण करना, घिसना; पीसना; किसी से बहुत परिश्रम लेना; तंग करना; *अ.* बहुत मेहनत करना।

रगड़वाना *क्रि. स.* दूसरे को रगड़ने में प्रवृत्त करना।

रगड़ा *पुं.* {हिं. रगड़ना} रगड़ने की क्रिया या भाव; बराबर चलता रहनेवाला झगड़ा।

रगड़ान *स्त्री.* रगड़ने की क्रिया।

रगवाना *क्रि. स.* शांत कराना, चुप कराना।

रगण *पुं.* {सं.} छंदशास्त्र में एक गुरु, एक लघु और एक गुरु का एक गण (ऽ।ऽ)।

रगत *पुं.* रक्त।

रगपट्ठा *पुं.* {फा. रग + हिं. पट्ठा} शरीर के अंदर की रगें और मांसपेशियाँ।

रगमगा *वि.* {सं. रंग + मग्न} आनंद, प्रेम आदि में मग्न या लीन।

रगरेशा *पुं.* {फा. रग + रेशा} नस; किसी की सूक्ष्म से सूक्ष्म बात।

रगा *पुं.* मोर।

रगाना *क्रि. अ., स.* शांत होना या करना।

रगी *स्त्री.* मोटा अन्न।

रगीला *वि.* हठी, दुष्ट।

रगेद *स्त्री.* दौड़ाने या भगाने की क्रिया।

रगेदना *पुं.* {*भाव.* रगेद} खदेड़ना।

रघु *पुं.* {सं.} अयोध्या के प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो श्री रामचन्द्र के परदादा थे।

रघुकुल *पुं.* {सं.} राजा रघु का वंश।

रघुनाथ *पुं.* {सं.} श्री रामचन्द्र।

रघुराई *पुं.* {सं. रघुराज} श्री रामचन्द्र।

रघुराज *पुं.* {सं.} श्री रामचन्द्र।

रघुवंश *पुं.* {सं.} {*वि.* रघुवंशी} महाराज रघु का वंश या खानदान।

रघुवर *पुं.* {सं.} श्री रामचन्द्र।

रघौती *स्त्री.* {सं. अर्द्धपत्रिका} बड़े व्यापारियों या आढ़तियों की ओर से छोटे दुकानदारों या व्यापारियों को भेजा जानेवाला वह पत्र जिसमें चीजों के भाव लिखे रहते हैं, भाव या दर का परिपत्र (रेट सर्क्युलर)।

रचक *पुं.* {सं.} रचना करने या बनानेवाला, रचयिता; *वि.* रंचक।

रचना[1] *स्त्री.* {सं.} रचने या बनाने की क्रिया या भाव, बनाव, निर्माण (कन्स्ट्रक्शन, बिल्डिंग); बनाने का ढंग या कौशल; वह जिसकी सृष्टि या सृजन हुआ हो, बनाई हुई या निर्मित वस्तु (क्रिएशन); साहित्यिक कृति, जैसे लिखा हुआ ग्रंथ या की हुई कविता; वाक्यों आदि की ठीक तरह से योजना करके लेख आदि तैयार करने की क्रिया या भाव (कम्पोज़ीशन)।

रचना[2] *स.* {सं. रचन} {प्रे. रचवाना} लिखना; ग्रंथ आदि लिखना; कल्पना से प्रस्तुत करना, रूप खड़ा करना; सँवारना, सजाना।

मुहा. रचि-रचि = बहुत ध्यानपूर्वक या कारीगरी से (कोई काम करना)।

रचना[3] *स.* {सं. रंजन} रँगना; *अ.* अनुरक्त होना; ठीक, उपयुक्त या सुंदर होना, जैसे हाथों में मेंहदी रचना।

रचनाकार *पुं.* {सं.} रचना प्रस्तुत करनेवाला।

रचनाकारिता *स्त्री.* {सं.} रचना प्रस्तुत करने की क्रिया या शक्ति।

रचनाकाल *पुं.* {सं.} रचना प्रस्तुत होने का सन्।

रचनात्मक *वि.* {सं.} जो किसी प्रकार की रचना या निर्माण से संबंध रखता हो और उसमें सहायक हो (क्रिएटिव); किसी देश या समाज की उन्नति और संपन्नता में सहायक होनेवाला (कन्स्ट्रक्टिव)।

रचनावली *स्त्री.* {सं.} समस्त रचनाओं का संग्रह।

रचनीय *वि.* रचना करने योग्य।

रचयिता *पुं.* {सं. रचयितृ} रचना करने या बनानेवाला।

रचाना[1] *स.* {हिं. रचना का प्रे.} अनुष्ठान करना या कराना।

रचाना[2] *अ.* {सं. रंजन} रँगना।

रचाना[3] *अ.* {सं. रंजन} हाथ-पैरों में मेंहदी, महावर आदि लगवाना।

रचवाना *क्रि. स.* रचने का काम दूसरे से कराना।

रचित *वि.* {सं.} रचा या बनाया हुआ।

रचितक *वि.* रचना करने योग्य।

रचिपचि *अव्य.* परिश्रम से।

रचौहाँ *वि.* {हिं. रचना} रचा हुआ; रँगा हुआ; अनुरक्त।

रच्छनहार *वि.* = रक्षक।

रच्छना *स.* = रक्षा करना।

रच्छा *स्त्री.* = रक्षा।

रज[1] *पुं.* {सं. रजस्} स्त्रियों की जननेन्द्रिय से प्रति मास तीन-चार दिन तक निकलनेवाला रक्त, कुसुम, ऋतु; फूलों का पराग; रजोगुण।

रज[2] *स्त्री.* {सं.} धूल, गर्द।

रज[3] *वि.* {हिं.} राज का संक्षिप्त रूप (यौ. के आरंभ में; जैसे रजबहा)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रज¹ पुं. {सं. रजक} धोबी।
रजक पुं. {सं.} {स्त्री. रजकी} धोबी।
रजगज स्त्री. {हिं. रज + गज (अनु.)} राजसी ठाठबाट।
रजतंत स्त्री. वीरता, राजकाज।
रजत स्त्री. {सं.} चाँदी, रूपा; वि. सफेद, शुक्ल; लाल।
रजत-जयंती स्त्री. {सं.} किसी व्यक्ति, संस्था आदि या किसी महत्वपूर्ण कार्य के जन्म या आरंभ होने के 25 वर्ष पूरे होने पर मनाई जानेवाली जयंती (सिल्वर जुबिली)।
रजतपट पुं. {सं. रजत + पट} वह परदा जिसपर सिनेमा के चित्र दिखाए जाते हैं (अंग्रेजी के सिलवर स्क्रीन का तदर्थीय।
रजताई स्त्री. सफेदी।
रजताकर पुं. चाँदी की खान।
रजताचल पुं. चाँदी का पहाड़।
रजताद्रि पुं. कैलाश पर्वत।
रजतोपम वि. चाँदी के सदृश।
रजधानी स्त्री. राजधानी।
रजन स्त्री. राल।
रजना अ. {सं. रंजन} रँगा जाना।
रजनी स्त्री. {सं.} रात।
रजनी-गंधा स्त्री. {सं.} एक प्रसिद्ध सुगंधित फूल जो रात को फूलता है।
रजनीचर पुं. {सं.} राक्षस।
रजनीमुख पुं. {सं.} संध्या का समय, सायंकाल।
रजपूत पुं. राजपूत।
रजबहा पुं. {सं. राज + हिं. बहना} वह प्रधान नल अथवा नहर जिससे अनेक शाखाएँ निकली हों।
रजवट स्त्री. क्षत्रियत्व, वीरता।
रजवती स्त्री. रजस्वला।
रजवाड़ा पुं. {हिं. राजा} रियासत; राजा।
रजवार पुं. {सं. राजद्वार} राजा के महल की ड्योढ़ी; राजा का दरबार।
रजस वि. अपवित्र, मैला।
रजस्वोक पुं. लाभ, लालच।
रजस्वला वि., स्त्री. {सं.} जिसका रज निकल रहा हो, ऋतुमती।
रजा स्त्री. {अ. रज़ा मि. सं. राजादेश} मरजी, इच्छा; छुट्टी; अनुमति, आज्ञा; स्वीकृति।
रजाइ स्त्री. आज्ञा; रजा।
रजाई¹ स्त्री. {?} एक प्रकार का रुईदार ओढ़ना, मोटी दुलाई, लिहाफ।
रजाई² स्त्री. {सं. रजादेश, प्रा. रजाएस} आज्ञा, आदेश, हुकुम।
रजाकार पुं. {फा.} स्वयंसेवक; दक्षिण हैदराबाद की एक मुस्लिम संस्था, उसके सदस्य और स्वयंसेवक जिन्होंने सन् 1948 में वहाँ के हिन्दुओं पर घोर अत्याचार करने और अराजकता फैलाने में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की थी।
रजामंद वि. {फा. रज़ामंद} {भाव. रजामंदी} सहमत।
रजाय स्त्री. रजा।
रजायसु स्त्री. {सं. राजादेश प्रा. रजाएस} राजा की आज्ञा।
रजिस्टर पुं. {अं.} सादे कागज की वह बड़ी बही जो किसी विशेष प्रकार का विवरण या लेखा लिखने के लिए होती है, पंजी।
रजिस्टरी स्त्री. {अं. रजिस्टर} राज्य अथवा उसके किसी विभाग के निश्चित नियमों के अनुसार किसी लेख्य या कार्य का राजकीय अथवा विभागीय रजिस्टर में चढ़ाया या लिखा जाना, जो आवश्यकता पड़ने पर, उसकी प्रामाणिकता का सूचक होता है, निबंधन (रजिस्ट्रेशन); वि. जो उक्त प्रकार से किसी राजकीय या विभागीय रजिस्टर में चढ़ाया जा चुका हो, निर्बंधित।
रजिस्टरी डाक स्त्री. डाक से कोई चीज कहीं भेजने की वह रीति जिसमें वह चीज नियमानुसार अतिरिक्त शुल्क देकर डाकखाने में निबद्ध करा दी जाती है (रजिस्टर्ड पोस्ट)।
रजिस्ट्रार पुं. {अं.} वह अधिकारी जो विधिक लेख्य आदि राजकीय पंजियों में निर्बंधित करता हो, दस्तावेजों आदि की रजिस्ट्री करनेवाला अधिकारी; विश्वविद्यालयों आदि में कार्यालय का वह सर्वप्रधान अधिकारी जिसकी देखरेख में लिखा-पढ़ी के सब काम होते हैं।
रजु स्त्री. {सं. रज्जु} रस्सी।
रजोगुण पुं. {सं.} प्रकृति के तीन गुणों में से एक जो मन को चंचल और उसमें काम, क्रोध, लोभ, द्वेष आदि विकार उत्पन्न करनेवाला माना गया है, राजस (शेष दो गुण सत् और तम हैं)।
रजोदर्शन पुं. {सं.} रजस्वला होना।
रजोधर्म पुं. {सं.} स्त्रियों का मासिक धर्म या रजप्रवाह।
रजोबल पुं. अंधकार।
रजोमेध पुं. धूलि का भेद।
रजोरस पुं. अंधकार, अँधेरा।
रजोहर पुं. रजक, धोबी।
रज्जु स्त्री. {सं.} रस्सी।
रटंत स्त्री. {हिं. रटना} रटने की क्रिया या भाव; वि. रटा हुआ।
रट, रटन स्त्री. {हिं. रटना} कोई शब्द या बात बार-बार कहने की क्रिया या भाव।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj F ion Chennai and eGangotri

रटना *स.* {अनु.} कोई बात या शब्द बार-बार कहना; कंठस्थ करने के लिए बार-बार कहना या पढ़ना; *स्त्री.* रट।

रठ *वि.* शुष्क, सूखा।

रढ़ना *स.* रटना।

रण[1] *पुं.* {सं.} युद्ध, लड़ाई।

रण[2] *पुं.* {सं. अरण्य} वन, जंगल।

रणक्षेत्र *पुं.* {सं.} लड़ाई का मैदान।

रणचंडी *स्त्री.* {सं.} रणक्षेत्र में मार-काट करानेवाली देवी।

रणछोड़ *पुं.* {हिं.} श्रीकृष्ण।

रणाजिर *पुं.* युद्धक्षेत्र।

रणातोद्य *पुं.* लड़ाई का डंका।

रणधीर *वि.* {सं.} युद्ध में धैर्यपूर्वक लड़नेवाला, अर्थात् बहुत बड़ा योद्धा या वीर।

रणन *पुं.* {सं.} {*वि.* रणित} शब्द या गुंजार करना; बजना।

रणनाद *पुं.* {सं.} युद्ध के समय होनेवाला योद्धाओं का नाद या गरज।

रणनीति *स्त्री.* {सं.} युद्ध-संबंधी नीति।

रणभूमि *स्त्री.* {सं.} लड़ाई का मैदान।

रणरोज (रोझ) *पुं.* {सं. अरण्यरोदन} वन में बैठकर व्यर्थ रोना (जिसका कोई फल नहीं होता)।

रणवीर *वि.* {सं.} युद्धक्षेत्र में वीरतापूर्वक लड़नेवाला, बहुत बड़ा वीर योद्धा।

रणस्तंभ *पुं.* {सं.} युद्ध में विजय प्राप्त करने के स्मारक के रूप में बनाया हुआ स्तंभ।

रणांगण *पुं.* {सं.} युद्धक्षेत्र, रणभूमि।

रणित *वि.* {सं.} बजता हुआ।

रत[1] *पुं.* {सं.} मैथुन; प्रीति; *वि.* {*स्त्री.* रता} अनुरक्त, आसक्त; (कार्य आदि में) लगा हुआ, लिप्त।

रत[2] *पुं.* {सं. रक्त} रक्त, खून।

रतगुरु *पुं.* पति, स्वामी।

रतजगा *पुं.* {हिं. रात + जागना} रात भर जागने की क्रिया या भाव; उत्सव, पर्व आदि के उपलक्ष में किया जानेवाला जागरण; भाद्रपद कृष्ण द्वितीया को होनेवाला एक त्योहार जिसमें गाँव, देहातों में रात भर जागकर स्त्रियाँ गाती हैं।

रतन *पुं.* = रत्न।

रतनकर (गर) *पुं.* = रत्नाकर।

रतनाई *स्त्री.* {सं. रक्त, पुं. हिं. राता = लाल} लाल, सुर्खी; *वि.* लाल, सुर्ख।

रतनाकर *पुं.* = रत्नाकर।

रतकील *पुं.* कुत्ता।

रतनागर *पुं.* = रत्नाकर।

रतनार *वि.* {सं. रत्न} {*स्त्री.* रतनारी} कुछ लाल, सुरखी लिए हुआ।

रतनारी *पुं.* {सं. रतनार} एक प्रकार का धान या उसका चावल।

रतनारीच *पुं.* कुत्ता, लंपट, व्यसनी पुरुष।

रतनीधि *पुं.* खंजन पक्षी।

रतमुँहाँ *वि.* {हिं. रत = लाल + मुँह} {*स्त्री.* रतमुँही} लाल मुँहवाला।

रतल *स्त्री.* रत्तल।

रतायनी *स्त्री.* वेश्या, रंडी।

रति *स्त्री.* {सं.} कामदेव की पत्नी जो परम रूपवती मानी गई है; मैथुन, संभोग; साहित्य में इसके दो भेद माने गए हैं—अन्तर्रति (मैथुन) और बाह्य रति (आलिंगन, चुंबन आदि); प्रीति, प्रेम (साहित्य में शृंगार-रस का स्थायी भाव); शोभा, छवि; *स्त्री.* = रती।

रतिक *क्रि. वि.* {हिं. रत्ती} थोड़ा।

रतिज *वि.* {सं. रति + ज (प्रत्य.)} रति या स्त्री संभोग से होनेवाला।

रतिज रोग *पुं.* {सं.} गर्मी, सुजाक या इसी प्रकार का जननेन्द्रिय का और कोई रोग जो रति या स्त्री-संभोग से उत्पन्न होता है (विनीरियल डिसीज़)।

रतिनाह *पुं.* {सं. रतिनाथ} कामदेव।

रतिपति *पुं.* {सं.} कामदेव।

रतिप्रीता *स्त्री.* {सं.} साहित्य में वह नायिका जिसे अपने प्रिय का चिंतन और ध्यान करना ही अच्छा लगता हो।

रतिमंदिर *पुं.* {सं.} प्रेमी और प्रेमिका के संभोग तथा क्रीड़ा का स्थान।

रतिराई *पुं.* रतिराज।

रतिराज *पुं.* {सं.} कामदेव।

रती *स्त्री.* रति; रत्ती; *क्रि. वि.* बहुत थोड़ा, जरा सा।

रतीक *क्रि. वि.* रसिक।

रतोपल *पुं.* {सं. रक्तोत्पल} लाल कमल।

रतौंधी *स्त्री.* {हिं. रात + अंधा} एक रोग जिसमें रात के समय दिखाई नहीं पड़ता।

रतौंहा *वि.* {हिं. रत} रत या अनुरक्त होनेवाला।

रत्त *पुं.* रक्त।

रत्तल *स्त्री.* {देश.} आधे सेर के लगभग का एक तौल।

रत्ती[1] *स्त्री.* {सं. रक्तिका} आठ चावल या बीस घुँघुची का तौल।

मुहा. रत्ती भर = बहुत थोड़ा, जरा-सा।

रत्ती[2] *स्त्री.* {सं.} शोभा, छवि; रति, संभोग; प्रेम, अनुराग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Founda... Chennai and eGangotri

रत्थी *स्त्री.* {सं. रथ} काठ का वह ढाँचा, तख्ता या संदूक जिसपर या जिसमें शव रखकर श्मशान तक ले जाते हैं, अरथी।

रत्न *पुं.* {सं.} बहुमूल्य चमकीले प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो आभूषणों आदि में जड़े जाते हैं, मणि, जवाह, नगीना; *वि.* सर्वश्रेष्ठ।

रत्नगर्भा *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी।

रत्नमाला *स्त्री.* {सं.} रत्नों या जवाहिरात की माला।

रत्नसू *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी।

रत्नाकर *पुं.* {सं.} समुद्र; खान।

रत्नाधिपति *पुं.* कुबेर।

रत्नाभूषण *पुं.* जड़ाऊ गहना।

रत्नालोक *पुं.* रत्न की ज्योति।

रत्नाकर *पुं.* {सं.} समुद्र; खान।

रत्नावली *स्त्री.* {सं.} मणिया या रत्नों की अवली या श्रेणी; रत्नों की माला; साहित्य में अर्थालंकार जिसमें किसी बात के प्रकृत वर्णन के साथ-साथ प्रसंगवश कुछ क्रमिक तत्वों, बातों आदि का भी यथाक्रम उल्लेख होता है।

रत्नासन *पुं.* रत्नों का आसन।

रत्नेंद्र *पुं.* श्रेष्ठ रत्न।

रत्नोत्तमा *स्त्री.* तांत्रिकों की एक देवी।

रथ *पुं.* {सं.} दो या चार पहियों की एक प्रकार की पुरानी सवारी गाड़ी; शरीर; पैर; शतरंज में, ऊँट नामक मोहरा।

रथयात्रा *स्त्री.* {सं.} आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होनेवाला जगन्नाथजी का उत्सव, जिसमें उन्हें रथ पर बैठाकर निकाला जाता है।

रथवान, रथवाह *पुं.* सारथी।

रथांग *पुं.* {सं.} रथ का पहिया; चक्र नामक अस्त्र; चकवा (पक्षी)।

रथाग्र *पुं.* श्रेष्ठ योद्धा।

रथाभ्र *पुं.* वेतस, बेंत।

रथिक *पुं.* रथी।

रथी *पुं.* {सं. रथिन्} रथ पर चढ़कर चलनेवाला; रथ पर बैठकर लड़नेवाला; बहुत बड़ा योद्धा; *वि.* रथ पर चढ़ा हुआ; *स्त्री.* रत्थी।

रथोद्धता *स्त्री.* {सं.} चार चरणों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, नगण, रगण और लघु, गुरु (र, न, र, ल, ग) होते हैं।

रथीघ *पुं.* रथ का वेग।

रद *पुं.* {सं.} दंत, दाँत; *वि.* रद्द।

रदच्छद *पुं.* {सं.} अधर, होंठ।

रदछद[1] *पुं.* {सं. रदच्छद} होंठ।

रदछद[2] *पुं.* {सं. रदक्षत} संभोग के समय अंगों पर दाँतों के गढ़ने के चिह्न।

रददान *पुं.* रति के समय दाँतों से ऐसा दबाना कि चिह्न पड़ जाए।

रदन *पुं.* {सं.} दाँत।

रदनी *वि.* दाँतवाला।

रदनच्छद *पुं.* {सं.} अधर, होंठ।

रदपट *पुं.* {सं.} होंठ।

रद्द[1] *वि.* {अ. रद} बदला हुआ, परिवर्तित; खराब या निकम्मा ठहराया हुआ।

रद्द[2] *स्त्री.* {?} वमन, कै, उल्टी।

रद्दा *पुं.* {फा. रद्दः} दीवार पर चुनी हुई ईंटों की एक पंक्ति या मिट्टी की एक तह; थाली में चुनी हुई मिठाइयों का स्तर; स्तर, तह।

रद्दी *वि.* {फा. रद} जो किसी काम में न आ सके, निकम्मा, बेकार; *स्त्री.* पुराने और व्यर्थ के कागज।

रद्दार *स्त्री.* ओढ़ने का वस्त्र, दोहर।

रद्दोबदल *पुं.* {अ.} परिवर्तन, हेर-फेर।

रन[1] *पुं.* {सं. रण} युद्ध, लड़ाई।

रन[2] *पुं.* {सं. अरण्य} जंगल, वन।

रन[3] *पुं.* {?} झील; खाड़ी।

रन[4] {अं.} क्रिकेट के खेल में विकटों के बीच एक बार दौड़ने का अंक।

रन-आऊट *वि.* {अं.} जो रन लेते समय आऊट हो गया हो।

रनकना *अ.* {सं. रणन} {स. रनकाना} घुँघरू आदि का धीमा शब्द होना।

रनछोर *पुं.* रणछोड़।

रनना *अ.* {सं. रणन} झनकार होना, बजना।

रनबंका *पुं.* {सं. रण + हिं. बाँका} योद्धा, वीर।

रनरोर *वि.* = रणधीर।

उदा. सदा अभय, जय मुदमंगलमय जो सेवक रनरोर को—तुलसी।

रनवादी *पुं.* = योद्धा।

रनवास *पुं.* {हिं. रानी + वास} रानियों के रहने का महल, अंतःपुर।

रनित *वि.* {हिं. रनना} बजता हुआ।

रनी *पुं.* = योद्धा।

रनत *पुं.* भाला, बरछा।

रपट[1] *स्त्री.* {हिं. रपटना} रपटने की क्रिया या भाव, फिसलन; दौड़।

रपट[2] *स्त्री.* {अं. रिपोर्ट} किसी घटना की वह सूचना जो थाने में लिखाई या किसी अधिकारी को दी जाती है, आख्या।

रपटना *अ.* {सं. रफन} {प्रे. रपटाना} फिसलना; तेजी से चलना।

रपटाना *क्रि. अ.* वेग से चलना, झपटना, मैथुन करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रपट्टा पुं. फिसलने की क्रिया, झपट्टा, चपेट।
रपाती *स्त्री.* तलवार।
रपटीला *वि.* {हिं. रपटना + ईला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* रपटीली} वह स्थान जिस पर पैर रपटता या फिसलता हो।
रफ *स्त्री.* {?} सुंदर ढंग, अच्छा प्रकार।
रफल[1] *स्त्री.* राइफल।
रफल[2] *स्त्री.* {*अ.* रैपर} ऊनी चादर।
रफा *वि.* {*अ.* रफ्अ} दबा हुआ या शांत; दूर किया हुआ, निवारित।
रफा-दफा *वि.* {*अ.*} जिसे छोड़ दिया गया हो।
रफू पुं. {*अ.*} फटे या कटे हुए कपड़े के छेद में बुनावट की तरह के तागे भरकर उसे बंद करना; इस प्रकार बंद किया हुआ छंद।
रफूचक्कर *वि.* चंपत।
रफ्तार *स्त्री.* {फा.} गति, चाल, वेग।
रब पुं. {*अ.*} परमेश्वर, ईश्वर।
रबड़ पुं. {सं. रबर} वट की जाति का एक वृक्ष; इस वृक्ष के दूध को सुखाकर बनाया हुआ एक प्रसिद्ध लचीला पदार्थ, जिससे बहुत सी चीजें बनती हैं।
रबड़ छंद पुं. {हिं. रबड़ + सं. छंद} कविता का ऐसा छंद जिसमें मात्राओं आदि की गिनती का कुछ विचार न हो (व्यंग्य)।
रबड़ी *स्त्री.* बसौंधी, औटाकर गाढ़ा और लच्छेदार किया हुआ दूध जिसमें चीनी मिलाई जाती है।
रबाना पुं. {देश.} एक प्रकार का डफ।
रबाब पुं. {*अ.*} सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा।
रबी *स्त्री.* {*अ.* रबीअ} वसंत ऋतु; वसंत ऋतु में काटी जानेवाली फसल।
रबील *स्त्री.* पहाड़ी चिड़िया।
रब्त पुं. {*अ.*} अभ्यास; विशेष संपर्क या संबंध, मेल-जोल।
रब्त-जब्त *स्त्री.* {*अ.*} मेल-मिलाप।
रब्ब पुं. रब।
रभस पुं. {सं.} वेग, तेजी; प्रसन्नता, आनंद; प्रेम का उत्साह, उमंग; पछतावा; खेद।
रम पुं. कामदेव, प्रेमी।
रमक *स्त्री.* {हिं. रमकना} झूले की पेंग; झोंका।
रमकना *अ.* {हिं. रमना} झूले पर बैठकर झूलना; झूमते हुए चलना।
रमचकरा पुं. बेसन की मोटी रोटी।
रमजना पुं. रामजना।
रमझल्ला पुं. झमेला।
रमठ पुं. *स्त्री.* हींग।
रमड़ना *अ.* {सं. रमण} रमण करना, रमना; किसी बात में मन लगाना; युक्त होना।
रमण पुं. {सं.} विलास, क्रीड़ा; मैथुन; विचरण, घूमना; पति; साहित्य में नायक; *वि.* सुंदर; प्रिय; विलास या क्रीड़ा करनेवाला; किसी मे रमने या किसी का सुख भोगनेवाला।
रमणी पुं. {सं.} स्त्री, विशेषत: युवती।
रमणीक *वि.* {सं.} रमणीय, सुंदर।
रमणीय *वि.* {सं.} {*भाव.* रमणीयता} सुंदर; मनोहर।
रमता *वि.* {हिं. रमना} जो बराबर घूमता-फिरता रहता हो, जैसे रमता जोगी; जो स्थिर न रहे, चंचल, जैसे रमता मन।
रमदी पुं. अगहनिया धान।
रमन पुं., *वि.* रमण।
रमना[1] *अ.* {सं. रमण} भोगविलास के लिए कहीं जाकर ठहरना या रहना; आनंद करना, मजा उड़ाना; व्याप्त होना; अनुरक्त या लीन होना; घूमना-फिरना; चल देना।
रमना[2] पुं. {सं. आराम या रमण} वह स्थान या घेरा जिसमें पाले हुए पशु चराने के लिए छोड़ दिए जाते हैं; बाग; कोई सुंदर और रमणीक स्थान।
रमनी *स्त्री.* = रमणी।
रमल पुं. {*अ.*} {*वि.* रमली} पासे फेंककर शुभाशुभ फल या भविष्य जानने और बतलाने की विद्या।
रमसरा पुं. रामशर।
रमा *स्त्री.* {सं.} लक्ष्मी (देवी)।
रमाकांत पुं. {सं.} विष्णु।
रमाना *स.* {सं. रमना का *स.* रूप} अनुरक्त या लीन करना।
रमापति पुं. {सं.} विष्णु।
रमारमण पुं. {सं.} रमा अर्थात् लक्ष्मी के स्वामी, विष्णु।
रमाश्रय पुं. विष्णु, श्रीकृष्ण।
रमेश्वर पुं. विष्णु।
रमित *वि.* {हिं. रमना} जिसका मन किसी में रमा हो, मुग्ध।
रमेसरी *स्त्री.* {सं. रामेश्वरी} लक्ष्मी।
रमैनी *स्त्री.* {हिं. रामायण} दोहे-चौपाइयों में कहे हुए कबीरदास के कुछ विशिष्ट वचन या उनका संग्रह।
रमैया पुं. {हिं. राम} राम; ईश्वर; चैतन्य आत्मा।
रम्माल पुं. {*अ.*} रमल जाननेवाला।
रम्य *वि.* {सं.} {*स्त्री.* रम्या, *भाव.* रम्यता} मनोहर, सुंदर; रमणीय।
रय पुं. {सं. रज} रज, धूल, गर्द; *क्रि. वि.* वेगपूर्वक, तेजी से।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रयि पुं. धन, ऐश्वर्य।
रयति *स्त्री.* {*अ.* रिऐयत} प्रजा, रिआया।
रयन *स्त्री.* {सं. रजनि} रात, रात्रि।
रयना[1] *स.* {सं. रंजन} रँगना; *अ.* अनुरक्त या रंजित होना; रँगा जाना; मिलना।
रयना[2] *स.* {सं. रवण} शब्द उत्पन्न करना; उच्चारण करना, कहना, बोलना।
रयवारा पुं. रजवाड़ा।
रय्यत पुं. प्रजा।
रर *स्त्री.* रट।
ररना *स.* रटना।
ररिहा पुं. {हिं. ररना} रुरूआ; हठी भिखमंगा।
रलना *अ.* {सं. ललन} मिलना; पूर्ण होना, भरना; युक्त होना।
रल-मिलकर *क्रि. वि.* मिल-जुलकर।
रलाना पुं. {हिं. रलाना का *स.*} मिश्रित करना।
रलिका *स्त्री.* रली।
रली *स्त्री.* {सं. ललन} विहार, क्रीड़ा; आनंद, प्रसन्नता।
रल्ला पुं. रेला।
रव पुं. {सं.} गुंजार, नाद; आवाज, शब्द; शोर, हल्ला; *वि.* = रवि।
रवक पुं. रेंड़ का पेड़।
रवताई *स्त्री.* {हिं. रावत} राजा या रावत होने का भाव; प्रभुत्व।
रवन पुं., *वि.* रमण।
रवना[1] *अ.* {सं. रमण} रमण या क्रीड़ा करना; रमना।
रवना[2] *अ.* {सं. रव = शब्द} शब्द करना; लोक में बोला या पुकारा जाना; प्रसिद्ध होना।
रवनि *स्त्री.* {सं. रमणी} युवती, सुंदरी; भार्या, पत्नी।
रवन्ना पुं. {फा. रवान:} वह कागज जिस पर भेजे हुए माल का ब्योरा लिखा रहता है; वह पत्र जिससे किसी रास्ते से जाने का अधिकार मिलता है (ट्रानज़िट पास)।
रवा[1] पुं. {सं. रज} बहुत छोटा टुकड़ा, कण, दाना; सूजी।
रवा[2] *वि.* {फा.} उचित; प्रचलित।
रवाबिया पुं. लाल बलुआ का पत्थर।
रवाज पुं. {फा.} प्रथा, परिपाटी।
रवादार *वि.* {फा. रवा + दार (प्रत्य.)} संबंध या लगाव रखनेवाला।
रवानगी *स्त्री.* {फा.} प्रस्थान।
रवाना *वि.* {फा.} {*भाव.* रवानगी} जो कहीं से किसी दूसरी जगह के लिए चल पड़ा हो, प्रस्थित; भेजा हुआ; *स.* = रमाना।
रवानी *स्त्री.* {फा.} चलते हुए होने की क्रिया या भाव, गति; ऐसी गति जिसमें बाधा न हो।
रविंद पुं. कमल, पद्म।
रवाब पुं. रबाब।
रवि पुं. {सं.} सूर्य।
रविमंडल पुं. {सं.} सूर्य के चारों ओर दिखाई देनेवाला लाल गोला।
रविश *स्त्री.* {फा.} गति, चाल; तरीका, ढंग; बाग की क्यारियों के बीच का छोटा मार्ग।
रविसुत पुं. {सं.} रवि या सूर्य के पुत्र, यम, शनि, कर्ण।
रवीला *वि.* {हिं. रवा} जिसमें कण या रवे हों, रवेवाला।
रवैया पुं. {फा. रविश या रवाँ} चाल-चलन; तरीका, ढंग।
रशना *स्त्री.* {सं.} करधनी; कमर में बाँधी जानेवाली पेटी, कमर-पेटी; *स्त्री.* रसना।
रशनोपमा *स्त्री.* {सं.} साहित्य में उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय क्रमश: उत्तरोत्तर उपमान होते जाते हैं और इस प्रकार उपमेयों तथा उपमानों की एक लड़ी या शृंखला बन जाती है।
रश्क पुं. {फा.} ईर्ष्या, डाह।
रश्मि *स्त्री.* {सं.} किरण; घोड़े की लगाम, बाग।
रस पुं. {सं.} वनस्पतियों अथवा उनके फूल-पत्तों आदि में रहनेवाला वह तरल पदार्थ जो दबाने, निचोड़ने आदि पर निकलता या निकल सकता है, जैसे अंगूर, ईख, जामुन आदि का रस; वृक्षों के शरीर से निकलने या पाछकर निकाला जानेवाला तरल पदार्थ, निर्यास, जैसे ताड़, शाल आदि वृक्षों में से निकला या निकाला हुआ रस; किसी चीज को उबालने पर निकलनेवाला उसका सार भाग, रसा; प्राणियों के शरीर में से निकलनेवाला कोई तरल पदार्थ, जैसे दूध, पसीना, रक्त आदि; प्राणियों, विशेषत: मनुष्यों के शरीर में खाद्य पदार्थों के पहुँचने पर उनका पहले-पहल बननेवाला वह तरल रूप जिससे आगे चलकर रक्त बनता है (वैद्यक में इसे शरीरस्थ सात धातुओं में से पहली धातु माना गया है); जल, पानी; पानी में घोला हुआ गुड़, चीनी मिसरी आदि, शरबत; वैद्यक में धातुओं आदि को फूँककर तैयार किया हुआ भस्म; शिंगरफ, हिंगुल; जहर, विष; खाने-पीने की चीज मुँह में पड़ने पर उससे जीभ को होनेवाला अनुभव या मिलनेवाला स्वाद (हमारे यहाँ वैद्यक में ये छह रस माने गए हैं—अम्ल, कटु, कषाय, तिक्त, मधुर और लवण); कार्य, विषय, व्यक्ति आदि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रति होनेवाला अनुराग, प्रीति, प्रेम, मुहब्बत; यौवनकाल में मनुष्य के मन में अनुराग या प्रेम का होनेवाला संचार;

मुहा. रस भीजना या भीनना = मनुष्य में यौवन का आरंभ होना; अनुराग या प्रेम का संचार होना।

किसी काम या बात से किसी प्रकार का संबंध होने पर उससे मिलनेवाला आनंद या उसके प्रति होनेवाली रुचि, कार्य या व्यापार के प्रति होनेवाली कुतूहलमूलक प्रवृत्ति या उससे होनेवाली सुखद अनुभूति, दिलचस्पी, जैसे इस पुस्तक में हमें कोई रस नहीं मिला, वे अब सार्वजनिक कार्यों में विशेष रस लेने लगे हैं (इंटरेस्ट); साहित्यिक क्षेत्र में कथानों, काव्यों, नाटकों आदि में रहनेवाला वह तत्व जो अनुराग, करुणा, क्रोध, रति आदि मनोभावों को जाग्रत, प्रबल तथा सक्रिय करता है; यह तत्व कवियों, लेखकों आदि की प्रतिभा, रचनाकौशल और उपयुक्त शब्दयोजना तथा वाक्य-विन्यास से उत्पन्न होता है; हमारे यहाँ के साहित्यकारों के मत से यह उक्त तत्व और अनुभाव, विभाव और संचारी की सहायता से सहृदय पाठकों के मन में रहनेवाले स्थायी भावों को परिपक्व, पुष्ट और व्यक्त करके उन्हें प्रसन्न तथा संतुष्ट करके उनके साथ एकात्मकता स्थापित करता है; इसके ये नौ प्रकार या भेद कहे गए हैं–अद्‌भुत, करुण, भयानक, वीभत्स, वीर, शांत,शृंगार और हास्य; कविता में उक्त नौ रसों के आधार पर नौ की संख्या का सूचक शब्द; अनुराग, दया आदि कोमल वृत्तियों के वश में रहने की अवस्था या भाव।

उदा. राजत अँग रस विरस अति, सरस सरस रस भेव–केशव।

मन की तरंग, मौज; उमंग, जोश; कामक्रीड़ा, केलि, विहार; गुण, तत्व, रूप, विशेषता आदि के विचार से होनेवाला वर्ग या विभाग, तरह, प्रकार, जैसे एक रस, समरस।

रसकेलि *स्त्री.* {सं.} विहार, क्रीड़ा; दिल्लगी, हँसी।

रसगुल्ला *पुं.* {हिं. रस + गोला} एक प्रकार की बँगला मिठाई।

रसग्राहिता *स्त्री.* {सं.} रस ग्रहण करने की शक्ति।

रसग्राही (हिन्) *वि.* {सं.} रस ग्रहण करनेवाला, रस लेनेवाला।

रसज्ञ *वि.* {सं.} {*भाव.* रसज्ञता} रस को जाननेवाला; काव्य या साहित्य का मर्म और गुण समझने वाला।

रसद *वि.* {सं.} रस या आनंद देनेवाला, सुखद; स्वादिष्ट।

रसना[1] *अ.* {हिं. रस + ना (प्रत्य.)} {*भाव.* रसाव} धीरे-धीरे बहना या टपकाना; किसी पदार्थ का गीला होकर जल या रस छोड़ना या टपकना; तन्मय या मग्न होना; स्वाद लेना; प्रेम में अनुरक्त होना।

रसना[2] *स्त्री.* {सं. रश} रस्सी; लगाम।

रसनेंद्रिय *स्त्री.* {सं.} जीभ, जिह्वा।

रसपान *पुं.* {सं.} रस पीने की अवस्था या भाव; आनंद लेना।

रसप्रबंध *पुं.* {सं.} नाटक; वह कविता जिसमें एक ही विषय बहुत से संबद्ध पद्यों में वर्णित हो।

रसम *स्त्री.* {*अ.* रस्म} बहुत दिनों से चली आई हुई औपचारिक प्रथा, परिपाटी; मेल-जोल या आपसदारी का संबंध।

पद राह-रसम = मेल-जोल।

रसमलाई *स्त्री.* {हिं. रस + मलाई} औटे हुए दूध में भिगोया हुआ रसगुल्ला अथवा मलाई का बना हुआ रसगुल्ला।

रसमसा *वि.* {हिं. रस + मस (अनु.)} {*स्त्री.* रसमसी} रस से भरा हुआ, रसपूर्ण, रसीला; आनंद से भरा हुआ, प्रसन्न; किसी के प्रेम में पड़ा हुआ, अनुरक्त; भला लगने या सुख देनेवाला, सुखद जैसे रसमसे दिन, रसमसी ऋतु; आर्द्र, तर, गीला; लथपथ।

रसरंग *पुं.* {सं.} प्रेमपूर्ण क्रीड़ा; रति-क्रीड़ा।

रसरा *पुं.* {सं. रशना, प्रा. रसणा} {*स्त्री.* अल्पा. रसरी} बहुत मोटी और बड़ी रस्सी, रस्सा।

रसराज *पुं.* {सं.} शृंगार रस जो साहित्य में सब रसों का राजा माना गया है; वैद्यक में, पारा, पारद।

रसरी *स्त्री.* {हिं. रस्सा} पतली और छोटी रस्सी।

उदा. रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान–**रहीम**।

रसरीति *स्त्री.* {सं.} प्रेम की रीति।

रसवंत *पुं.* = रसिक।

रसवती *वि. स्त्री.* {सं.} रस से युक्त।

रसांजन *पुं.* {सं.} रसौत; सुरमा।

रसा *पुं.* {हिं. रस} पकी हुई तरकारी में का पानीवाला अंश, झोल, शोरबा।

रसाइनी *पुं.* = रसायनिक।

रसाई *स्त्री.* {फा.} किसी तक पहुँचने की क्रिया या भाव, पहुँच।

रसाना *स.* {सं. रस} रस से युक्त या रसपूर्ण करना; प्रसन्न करना; किसी पदार्थ को रसने में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवृत्त करना; *अ.* रसयुक्त होना; आनंद लूटना।

रसापति *पुं.* नृप, राजा।

रसानुभूति *स्त्री.* {सं.} रस की अनुभूति।

रसायन *पुं.* {सं.} मनुष्य को सदा स्वस्थ और पुष्ट बनाए रखनेवाला औषध (वैद्यक); ताँबे से सोना बनाने का एक कल्पित योग; रसायनशास्त्र।

रसायनज्ञ *पुं.* {सं.} वह जो रसायनशास्त्र का ज्ञाता हो, रसायनशास्त्री।

रसायनशास्त्र *पुं.* {सं.} वह शास्त्र जिसमें पदार्थों के तत्वों तथा भिन्न-भिन्न दशाओं में उनमें होनेवाले विकारों का विवेचन होता है (कैमिस्ट्री)।

रसायनी *वि.* {सं. रसायन} रसायन-संबंधी; *पुं.* रसायनज्ञ।

रसार्णव *पुं.* रस का सागर।

रसाल *पुं.* {सं.} {*भाव.* रसालता} गन्ना; आम; *वि.* {*स्त्री.* रसाला} रस से युक्त, जिस रस में हो; रसिक, रसीला; मधुर, मीठा।

रसाला *पुं.* = रिसाला।

रसाली *पुं.* {सं. रस} भोगविलास में रस या आनंद लेनेवाला, रसिक।

रसावर (वल) *पुं.* {हिं. रस + चावल} ईख के रस में पकए हुए चावल।

रसाश *पुं.* मद्यपान।

रसास्वादन *पुं.* {सं.} रस का आनंद लेना।

रसिकेश्वर *पुं.* श्रीकृष्ण।

रसिया *पुं.* {सं. रसिक} रसिक; एक प्रकार का गाना जो फागुन में ब्रज में गाया जाता है।

रसी *पुं.* = रसिक।

रसीद *स्त्री.* {फा.} किसी चीज की प्राप्ति या पहुँच; किसी चीज के प्राप्त होने या पहुँचने के प्रमाण के रूप में लिखा हुआ पत्र, प्राप्तिका।

रसीदी *वि.* {फा. रसीद} रसीद-संबंधी।

रसीला *वि.* {हिं. रस} {*स्त्री.* रसीली, *भाव.* रसीलापन} जिसमें रस हो, रसदार; स्वादिष्ट; रसिक; बाँका, सुंदर।

रसूख *पुं.* {*अ.* रुसूख} धैर्य; अध्यवयाय; किसी के यहाँ तक होनेवाली पहुँच; विश्वास, एतबार।

रसूम *पुं.* {*अ.*} नियम, कानून; प्रचलित प्रथा या विधान के अनुसार किसी को दिया जानेवाला धन, नियत शुल्क या देय।

रसेस *पुं.* {सं. रसेश} श्रीकृष्ण।

रसोइया *पुं.* {हिं. रसोई} रसोई पकानेवाला आदमी।

रसोई *स्त्री.* {हिं. रस + ओई (प्रत्य.)} पकाई हुई खाने की चीजें;

मुहा. रसोई तपना = भोजन पकना।

रसोई-घर।

रसोई-घर *पुं.* {हिं. रसोई + घर} भोजन बनाने की जगह, पाकशाला, चौका।

रसोपल *पुं.* मौक्तिक, मोती।

रसौत *स्त्री.* {सं. रस} जमाया हुआ रस; गोंद की तरह का एक पदार्थ।

रस्ता *पुं.* = रास्ता।

रस्मी *वि.* {*अ.* रस्म} रस्म या प्रथा से संबंध रखनेवाला; जो नियमित रूप से अथवा मान्य रीति के अनुसार हो, रीतिक (फार्मल)।

रस्सी *स्त्री.* {हिं. रस्सा} रुई, सन आदि को बटकर बनाई हुई बाँधने के काम की लंबी चीज, डोरी।

रहँचटा *पुं.* {हिं. रस + चाट} आतुरतापूर्ण लालसा या उत्कंठा, चस्का।

उदा. रूप रहँचटैं लगि लग्यौ, माँगन सब जुग आनि–बिहारी।

रहँटा *पुं.* {सं. अरघट्ट} सूत कातने का चरखा।

रहट *पुं.* {सं. अरघट्ट, प्रा. अरहट्ट} कुएँ से पानी निकालने का एक प्रकार का यंत्र जिसमें काठ का एक बड़ा चक्कर होता है।

रहटा *पुं.* {हिं. रहट} सूत कातने का चरखा।

रहचह *स्त्री.* चिड़ियों का बोलना।

रहठान *पुं.* {हिं. रहना + स्थान} निवासस्थान, रहने की जगह; ठहरने या टिकने की जगह।

रहड़ू *पुं.* {सं. रथरूप, प्रा. रहरूप} हाथ से ढकेलकर ले जाई जानेवाली छोटी गाड़ी ठेला; बैलगाड़ी, छकड़ा।

रहज *पुं.* फेंकना, साथ छोड़ना।

रहतिया *वि.* {हिं. रहना + तिया (प्रत्य.)} (बिक्री का माल) जो बहुत दिनों से न बिकने के कारण यों ही पड़ा हो, रखाऊँ।

रहन-सहन *स्त्री.* {हिं. रहना + सहना} जीवन बिताने और काम करने का ढंग।

रहना *अ.* {सं. स्थैर्य} स्थित होना, ठहरना; रुकना, थमना।

मुहा. रह चलना या जाना = रुक जाना; पिछड़ जाना।

कोई होता हुआ काम बंद करके रुकना या ठहरना; विद्यमान होना; समय बिताना; नौकरी करना; जीवित रहना; जीना; उचित रूप से आचरण करना, व्यवहार आदि में मर्यादा का पालन करना।

उदा. हम जानति तुम यौं नहि रेहौं, रहिहौ गारी खाय–सूर।

बाकी बचना, छूट जाना।

रहनि *स्त्री.* {?} प्रेम, प्रीति; *स्त्री.* रहन।

रहमदिल *वि.* {*अ.* रहम + फा. दिल} जिसके दिल या मन में रहम या दया हो, दयालु।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहमान पुं. {अ. रहमान} ईश्वर का एक नाम जो उसके रहमदिल या दयालु होने का सूचक।

रहनैया पुं. {हिं. रहना} रहनेवाला।

रहसू *स्त्री.* व्यभिचारिणी।

रहस-चाव पुं. {हिं. रहस = क्रीड़ा + चाव} उत्साहपूर्वक मनाया जानेवाला आनंद-मंगल, रंगरली।

रहसना पुं. {हिं. रहस} प्रसन्न होना; आनंदित होना।

रहस्य पुं. {सं.} गुप्त भेद, छिपी हुई बात, भेद; मर्म; गूढ़ तत्व।

रहस्यवाद पुं. {सं.} वह धार्मिक वृत्ति जिसमें मनुष्य प्रत्यक्ष रूप से ईश्वर के साथ संबंध स्थापित करने का प्रयत्न करता है (मिस्टिसिज्म)।

रहस्यवादी पुं. {सं. रहस्यवादिन्} वह जो रहस्यवाद के सिद्धांतों का अनुयायी हो; *वि.* रहस्यवाद-संबंधी रहस्यवाद का।

रहस्योद्घाटन पुं. {सं.} रहस्य प्रकट करना।

रहाना *अ.* {हिं. रहना} होना; रहना; *स.* हिं. रहना का प्रेरणार्थक रूप, रखाना।

रहा-सहा *वि.* बचा-खुचा, अवशिष्ट।

रहित *वि.* {सं.} किसी वस्तु, गुण आदि से खाली या हीन, बिना, बगैर।

रहितत्व पुं. {सं.} रहित या खाली होने का भाव; नियम, बंधन, भार आदि से मुक्त या रहित किए जाने का भाव (एग्ज़ेम्शन)।

रहीम *वि.* {अ.} कृपालु, दयालु; पुं. ईश्वर का एक नाम (मुसल.)।

राँका *वि.* {सं. रंक} दरिद्र, गरीब; बहुत ही दीन, हीन और तुच्छ।

राँगा पुं. {सं. रंग} सीसे के रंग की एक प्रसिद्ध मुलायम धातु।

राँचना *अ.* रचना; चाहना, प्रेम रंग चढ़ाना।

राँजना *स.* {सं. रंजन} रंजित करना, रँगना; टाँका लगाना।

राँटी *स्त्री.* {?} टिट्टिभि, टिटिहरी (बुंदेल.)।

राँड़ *स्त्री.* {सं. रंडा} विधवा; वेश्या; रंडी।

राँध *स्त्री.* {हिं. राँधना} भोजन बनाने या राँधने की क्रिया या भाव; *वि.* परिपक्व अवस्था या बुद्धिवाला।

राँधना पुं. {सं. रंधन} भोजन पकाना।

राआ पुं. राजा।

राइ पुं. {सं. राजा} राजा; छोटा राजा; *वि.* सबसे बढ़कर, उत्तम, श्रेष्ठ।

राइफल *स्त्री.* {अं.} एक प्रकार की बंदूक जो पैदल सिपाहियों के पास रहती है।

राई[1] *स्त्री.* {सं. राजिका} एक प्रकार की छोटी सरसों।

मुहा. राई नोन उतारना = जिसे नजर लगी हो उस पर से राई और नमक उतारकर आग में डालना (टोना); *राई से पर्वत करना* = बहुत छोटे से बहुत बड़ा बनाना; *राई-काई करना* = छिन्न-भिन्न करना।

बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण।

राई[2] *स्त्री.* {सं. राज} राय, राव या राजा का पद; बहुत बड़ा पद और उसके साथ का वैभव, मान-मर्यादा आदि।

राउ पुं. {सं. रव} शब्द।

राउत पुं. = रावत; क्षत्रिय।

राउर पुं. {सं. राज + पुर} रनिवास।

राउल पुं. राजा।

राकस पुं. = राक्षस।

राका *स्त्री.* {सं.} पूर्णिमा की रात।

राक्षस पुं. {सं.} {*स्त्री.* राक्षसी} दैत्य, असुर; क्रूर और पापी व्यक्ति; एक प्रकार का विवाह जिसमें युद्ध करके कन्या छीन लाते और तब उसे पत्नी बनाते थे।

राक्षसगाह पुं. उन्माद रोग।

राक्षसपति पुं. {सं.} रावण।

राक्षसी *वि.* {सं. राक्षस} राक्षस-संबंधी, राक्षस का; राक्षसों की तरह जघन्य, भीषण या विकट, जैसे राक्षसी अत्याचार, राक्षसी उपचार।

राख *स्त्री.* {सं. क्षार} किसी चीज के बिल्कुल जल जाने पर उसका बचा हुआ अंश, भस्म।

राखी *स्त्री.* {सं. रक्षा} रक्षाबंधन के समय कलाई पर बाँधने का डोरा, रक्षा; *स्त्री.* राख।

राग पुं. {सं.} प्रिय वस्तु के प्रति होनेवाला मन का भाव या झुकाव; ईर्ष्या और द्वेष; प्रेम, अनुराग; मोह; अंगराग; रंग, विशेषत: लाल रंग; महावर; संगीत में स्वरों के विशेष प्रकार और क्रम या निश्चित योजना से बना हुआ गीत का ढाँचा (भारतीय संगीत में छह राग माने गए हैं); चार चरणों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण और गुरु (र, ज, र, ज, ग) होते हैं।

मुहा. अपना राग अलापना = अपनी ही बात कहते चलना।

रागदारी *स्त्री.* {सं. राग + फा. दारी} भारतीय संगीतशास्त्र के नियमों के अनुसार राग-रागनियाँ या पक्के गाने गाना।

रागमाला *स्त्री.* {सं.} एक ही पद या गीत में एक साथ मिले हुए अनेक रागों या उनके कुछ अंगों का समूह।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रागरंजित *वि.* {सं.} प्यार के रंग से रँगा हुआ।

रागलता *स्त्री.* कामदेव की स्त्री।

रागांध *वि.* अति क्रोधी।

रागिनी *स्त्री.* {सं.} संगीत में किसी राग की पत्नी (प्रत्येक राग की प्रायः छह रागिनियाँ मानी गई हैं)।

रागी *पुं.* {सं. रागिन्} अनुरागी, प्रेमी; राग-रागिनी गानेवाला, गवैया; *वि.* रँगा हुआ, रंजित; लाल; विषय-वासना में लिप्त।

राघव *पुं.* {सं.} रघु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति; श्री रामचन्द्र जी।

राचना *अ.* {सं. रंजन} रँगा जाना; अनुरक्त होना; लिप्त या लीन होना; प्रसन्न होना; शोभा देना।

राछ *स्त्री.* {सं. रक्ष} कारीगरों का एक औजार; जुलाहों के करघे में का वह अंग या उपकरण जिससे ताने के तागे ऊपर उठते और नीचे गिरते हैं; जलूस।

राक्षस *पुं.* = राक्षस।

राज[1] *पुं.* {सं. राज्य} राज्य, शासन (गवर्मेन्ट); राजा द्वारा शासित, राज्य; पूरा अधिकार, प्रभुत्व।
मुहा. राज रजना = बहुत अधिक सुख और अधिकार भोगना।
राज्य या शासन का काल; बड़ी जमींदारी और भू-संपत्ति (एस्टेट)।

राज[2] *वि.* {हिं. राजा} परम प्रिय और आदरणीय (किसी बड़े या प्रिय के लिए संबोधन के रूप में); ऐसी विशेष बात जो सभी को नहीं बताई जाती।

राज-काज *पुं.* {हिं.} राज्य का कार्य।

राजकीय *वि.* {सं.} राजा या राज्य से संबंध रखनेवाला।

राजकुमार *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* राजकुमारी} राजा का पुत्र।

राजग *पुं.* {सं. राज + ग = जानेवाला} नगर की वह भूमि जो किसी प्रकार राज्य को मिल गई हो और जिसकी व्यवस्था राज्य की ओर से होती हो, नजूल।

राजगद्दी *स्त्री.* {हिं. राज + गद्दी} राज सिंहासन; राज्याभिषेक।

राजगीर *पुं.* {हिं. राज + फा. गीर (प्रत्य.)} मकान बनानेवाला कारीगर, राज, थवई।

राजगृह *पुं.* {सं.} राजा का महल; बिहार में पटने के पास का एक प्राचीन स्थान।

राजतंत्र *पुं.* {सं.} वह शासन-प्रणाली जिसमें राज्य का सारा प्रबंध केवल राजा के हाथ में हो; और जिसके प्रबंध करने में प्रजा या उसके प्रतिनिधियों का कोई स्थान न हो (मानर्की)।

राजत्व *पुं.* {सं.} राज का पद, भाव या काम।

राजदंड *पुं.* {सं.} वह दंड जो राजा के पास उसके राजत्व के सूचक चिह्न के रूप में रहता है; राज्य या राजा की आज्ञा से दी जानेवाली सजा।

राजदूत *पुं.* {सं.} वह दूत जो किसी राज्य की ओर से दूसरे राज्य में भेजा या नियुक्त किया जाता है (एम्बेसडर)।

राजद्रोह *पुं.* {सं.} {*वि.* राजद्रोही} राजा या राज्य के प्रति द्रोह (सेडिशन)।

राजद्वार *पुं.* {सं.} राजा के महल की ड्योढ़ी; कचहरी।

राजधानी *स्त्री.* {सं.} किसी देश या राज्य का वह प्रधान नगर जहाँ से उसका शासन होता है और जहाँ उसके प्रमुख अधिकारी रहते तथा कार्यालय होते हैं।

राजनि *स्त्री.* {हिं. रजना} राजने की क्रिया या भाव; उपस्थिति, विद्यमानता; शोभा, छटा।

राजनीति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* राजनीतिक} राज्य की वह नीति जिसके अनुसार प्रजा का शासन और पालन तथा दूसरे राज्यों से व्यवहार होता है (पॉलिटिक्स)।

राजनीतिज्ञ *पुं.* {सं.} राजनीति का अच्छा ज्ञाता (पॉलिटीशियन)।

राजनेता (तृ) *पुं.* {सं.} राष्ट्रीय नेता।

राजपथ *पुं.* {सं.} सब लोगों के उपयोग के लिए बनी हुई बड़ी और लंबी पक्की सड़क (हाइवे)।

राजपाट *पुं.* {सं. + हिं.} राजसिंहासन।

राजपरिवार *पुं.* {सं.} राजा का परिवार, जिसमें उसके सगे-संबंधी या घर के लोग होते हैं।

राजपीठ *पुं.* {सं.} विधायिका सभाओं आदि में वे आसन जिनपर सत्ताधारी वर्ग के प्रतिनिधि बैठते हैं (ट्रेजरी बेंचेज)।

राजपुत्र *पुं.* {सं.} राजकुमार।

राजपूत *पुं.* {सं. राजपुत्र} क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वंशों की सूचक संज्ञा।

राजपूताना *पुं.* राजस्थान।

राजप्रासाद *पुं.* {सं.} राजा के रहने का महल, राजमहल।

राजबंदी *पुं.* {सं. राजबंदिन्} वह जिसे राजा या राज्य ने बिना मुकदमा चलाए किसी संदेह में कैद कर लिया हो (स्टेट प्रिजनर)।

राजभक्त *वि.* {सं.} {*भाव.* राजभक्ति} जो जो अपने राजा या राज्य के प्रति भक्ति और निष्ठा रखता हो (लॉयल)।

राजभवन *पुं.* {सं.} राज का महल; राज्यपाल का आवास।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजभाषा *स्त्री.* {सं.} किसी देश में प्रचलित वह भाषा जिसका उपयोग प्रायः सभी राजकीय कार्यों और न्यायालयों आदि में होता हो।

राजभोग *पुं.* {सं.} राज्य का सुख भोगना, राज्य करना; देवताओं के सामने प्रातःकाल रखा जानेवाला भोग।

राजमहल *पुं.* {हिं. राज + अ. महल} राजा के रहने का महल, राजप्रासाद।

राजमाता *स्त्री.* {सं.} किसी देश के राजा या शासक की माता।

राजमार्ग *पुं.* {सं.} चौड़ी सड़क।

राजमुद्रा *स्त्री.* {सं.} राजा या राज्य की वह मोहर जो राजकीय पत्रों आदि पर अंकित की जाती है (रॉयल सील); राष्ट्रमुद्रा।

राजयोग *पुं.* {सं.} पतंजलि के दर्शन में बतलाया हुआ योग; फलित ज्योतिष में ग्रहों का एक योग जिसके अनुसार मनुष्य राजा होता या राजा का-सा सुख भोगता है।

राजराजेश्वर *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* राजराजेश्वरी} अनेक राजाओं का प्रधान राजा, सम्राट।

राजरोग *पुं.* {हिं. राज + रोग} बहुत बड़ा और असाध्य रोग; क्षय रोग।

राजर्षि *पुं.* {सं.} राजवंश में उत्पन्न ऋषि।

राजलिपि *स्त्री.* {सं.} किसी देश के राजकार्यों में काम आनेवाली लिपि।

राजवंश *पुं.* {सं.} राजा का कुल, वंश या परिवार।

राजवी *पुं.* = राजा (राज.)।

राजसंपदा *वि.* {सं.} राज्य की संपत्ति।

राजस *वि.* {सं.} {*स्त्री.* राजसी} रजोगुण से उत्पन्न या युक्त, रजोगुणी; *पुं.* रजोगुण; क्रोध; राजा का पद या सिंहासन; शासन करने का अधिकार, राज्याधिकार।

उदा. इहिं राजस को के न बिगोयौ—सूर।

राजसत्तात्मक *वि.* {सं.} (वह शासन-प्रणाली) जिसमें केवल राजा की सत्ता प्रधान हो, 'प्रजा-सत्तात्मक' का उलटा।

राजसभा *पुं.* {सं.} राज्य का दरबार; राजाओं की सभा।

राजसिंहासन *पुं.* {सं.} राजा के बैठने का सिंहासन, राजगद्दी।

राजसी *वि.* {हिं. राजा} राजाओं के योग्य या राजाओं का-सा।

राजसूय *पुं.* {सं.} एक यज्ञ जो सम्राट पद के अधिकारी राजा करते थे।

राजस्थान *पुं.* {सं.} उत्तर प्रदेश के पश्चिम और पूर्वी पंजाब के दक्षिण का वह प्रदेश जो पहले राजपूताना कहलाता था।

राजस्थानी *वि.* {हिं. राजस्थान} राजस्थान या राजपूताने की भाषा।

राजस्व *पुं.* {सं.} कर, शुल्क आदि के रूप में राजा या राज्य को होनेवाली आय (रेविन्यू)।

राजा *पुं.* {सं. राजन्} {*स्त्री.* राज्ञी, रानी} किसी देश या जाति का प्रधान शासक और स्वामी।

राजाज्ञा *स्त्री.* {सं.} राजा या राज्य की आज्ञा।

राजाधिराज *पुं.* {सं.} राजाओं का राजा, बहुत बड़ा राजा।

राजावर्त *पुं.* {सं.} एक प्रकार का रत्न।

राजिंदा *पुं.* {सं. राजेन्द्र} स्वामी, पति; परमप्रिय व्यक्ति।

राजिका *स्त्री.* {सं.} सरसों की तरह का छोटा दाना, राई; राजि।

राजी *वि.* {अ.} सहमत; नीरोग, स्वस्थ; प्रसन्न, खुश; सुखी।

पद राजी-खुशी = सही सलामत; कुशल मंगल।

स्त्री. राजि।

राजीनामा *पुं.* {फा.} वह लेख जिसे प्रमाण और निश्चय के रूप में मानकर दो विरोधी पक्ष आपस में मेल करते हैं।

राजेश्वर *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* राजेश्वरी} राजाओं का राजा, महाराज।

राज्य *पुं.* {सं.} राजा का काम, शासन; एक राजा अथवा एक केंद्रीय सत्ता द्वारा शासित देश; स्वतंत्र भारत में कोई वह बड़ा भूभाग जो पहले प्रांत या प्रदेश कहलाता था पर अब जिसे बहुत-सी बातों में पूर्ण स्वतंत्रता मिल गई है, जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, उड़ीसा आदि अब राज्य हैं (स्टेट, अंतिम दोनों अर्थों के लिए)।

राज्यतंत्र *पुं.* {सं.} देश या राज्य के शासन, व्यवस्था, संघटन आदि की प्रणाली, ढंग या प्रकार जैसे हिन्दू राजतंत्र, पाश्चात्य राज्यतंत्र (पॉलिटी)।

राज्यत्याग *पुं.* {सं.} राजा का अपना राज्य त्याग या छोड़ देना (एब्डिकेशन)।

राज्यपाल *पुं.* {सं.} भारतीय संघ के किसी राज्य का प्रधान शासक।

राज्यश्री *स्त्री.* {सं.} राज्य की शोभा और वैभव।

राज्यसंघ *पुं.* {सं.} अनेक ऐसे स्वतंत्र-प्राय राज्यों का वह संघ या समूह जो बहुधा किसी एक राष्ट्र के अंग और कुछ बातों में एक प्रबल केंद्र के अधीन रहता है (फेडरेशन)।

राज्यसभा *स्त्री.* {सं.} संसद का वह सदन जिसमें राज्यों तथा विशेष हितों के प्रतिनिधि बैठते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य सरकार *स्त्री.* {सं. राज्य + फा. सरकार} स्वतंत्र भारत में किसी राज्य की सरकार जो बहुत-सी बातों में स्वतंत्र और कुछ बातों में भारत-सरकार के अधीन है (स्टेट गवर्मेन्ट)।

राज्याभिषेक *पुं.* {सं.} किसी राजा के राजगद्दी पर बैठने के समय होनेवाला औपचारिक कृत्य या उत्सव, राज्यारोहण।

राज्यारोहण *पुं.* {सं.} किसी राजा का पहले-पहल राजसिंहासन पर बैठकर राज्य का अधिकार प्राप्त करना।

राडार *पुं.* {अं.} एक उपकरण जो दूर स्थित वायुयानों की स्थिति तथा गति बतलाता है।

राणा *पुं.* {सं. राट्} राजा; नेपाल, उदयपुर आदि राज्यों के राजाओं की उपाधि।

रात *स्त्री.* {सं. रात्रि} सूर्यास्त से सूर्योदय तक का समय, रात्रि, निशा;

पद रात-दिन = सदा, हमेशा।

वि. = राता (लाल)।

रातना *अ.* {हिं. राता} रंग जाना।

राता *वि.* {सं. रक्त} {*स्त्री.* राती, *क्रि.* रातना} लाल रंग का, अरुण; रँगा हुआ, रंजित; किसी के प्रेम में अनुरक्त; किसी कार्य में लगा हुआ, रत।

मुहा. मुख राता होना = लाभ या सफलता होना।

रातिब *पुं.* {अ.} पशुओं का भोजन।

रात्र *पुं.* निशा, रजनी।

रात्रिशाला *स्त्री.* {सं.} वह पाठशाला जिसमें दिन में काम करनेवाले श्रमिकों आदि को रात्रि के समय लिखना-पढ़ना सिखाया जाता है।

रात्रिभोज *पुं.* {सं.} रात के समय दिया जानेवाला भोज (डिनर)।

राधना *स.* {सं. आराधन} आराधना या पूजा करना; (काम) सिद्ध या पूरा करना, जैसे साध राधना (साध में मुहावरा)।

राधा *स्त्री.* राधिका।

राधाधव *पुं.* {सं.} श्री कृष्णचन्द्र।

राधिका *स्त्री.* {सं.} वृषभानु की लड़की, राधा; एक प्रकार का मात्रिक 'छंद' जिसके प्रत्येक चरण में 22 मात्राएँ और 13 वीं मात्रा पर यति होती है, लावनी नामक प्रसिद्ध लोकगीत इसी छंद में होता है।

राधेय *पुं.* कर्ण।

रान *स्त्री.* {फा.} जंघा, जाँघ।

राना *अ.* {सं. राग} अनुरक्त होना; *पुं.* राणा।

रानी *स्त्री.* {सं. राज्ञी} राजा की स्त्री; स्वामिनी, मालकिन।

रानी काजल *पुं.* एक प्रकार का धान या उसका चावल।

राम *पुं.* {सं.} परशुराम; बलराम, बलदेव; श्री रामचन्द्र।

मुहा. राम राम करके = बहुत कठिनता से।

तीन की संख्या; ईश्वर, भगवान।

रामचन्द्र *पुं.* {सं.} अयोध्या के राजा दशरथ के बड़े पुत्र जो दस अवतारों में माने जाते हैं।

रामजना *पुं.* {हिं. राम + जना = उत्पन्न} {*स्त्री.* रामजनी} एक जाति जिसकी कन्याएँ वेश्यावृत्ति और नाच-गाने का काम करती हैं।

रामतारक *पुं.* {सं.} रामजी का तारकमंत्र जो यह है—रां रामाय नमः।

रामदल *पुं.* {सं.} रामचंद्र जी की वानर सेना; बहुत बड़ी और प्रबल सेना।

रामदूत *पुं.* {सं.} हनुमानजी।

रामधुन *स्त्री.* {सं. राम + हिं. धुन} भक्तिपूर्वक राम का नाम जपने की क्रिया या भाव; वह भजन या गीत जिसमें बार-बार राम का नाम आता हो।

रामनवमी *स्त्री.* {सं.} चैत्र सुदी नवमी, जो रामचंद्रजी की जन्मतिथि हैं

रामनामी *स्त्री.* {हिं. राम + नाम} वह कपड़ा जिसपर राम-राम लिखा रहता है; एक प्रकार का हार (गहना)।

रामपुरी *स्त्री.* {सं.} अयोध्या नगरी; साकेत; स्वर्ग।

रामबाण *पुं.* {सं.} अचूक, अमोघ; तुरंत लाभ करनेवाला (औषध)।

रामरज *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार की पीली मिट्टी।

रामराज्य *पुं.* {सं.} ऐसा काल्पनिक और आदर्श राज्य जो सब लोगों के लिए अत्यंत सुखदायक हो और जिसमें किसी को किसी बात का कष्ट न हो (उटोपिया)।

रामलीला *स्त्री.* {सं.} राम के चरित्रों का अभिनय।

रामशर *पुं.* {सं.} एक प्रकार का नरसल या सरकंडा।

रामा *स्त्री.* {सं.} सुंदर स्त्री; नदी; लक्ष्मी; सीता; राधा; पत्नी; हींग, अशोक, गेरू।

रामायण *पुं.* {सं.} वह ग्रंथ जिसमें राम के चरित्रों का वर्णन।

रामायणी *पुं.* {सं. रामायण} रामायण की कथा कहनेवाला।

राय[1] *पुं.* {सं. राजा} राजा; सरदार; राज्य; भाटों की उपाधि।

राय[2] *स्त्री.* {फा.} सम्मति, सलाह।

रायता *पुं.* {सं. राजिकाक्त} दही में पड़ा हुआ कद्दू, बुँदिया आदि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foun Chennai and eGangotri

रायभोग पुं. एक प्रकार का धान या उसका चावल।

रायमुनी *स्त्री.* {हिं. राय + मुनिया} लाल नामक पक्षी की मादा, मदिया, मुनिया।

रायरासि *स्त्री.* {सं. राजराशि} राजा का कोष।

राया पुं. = राजा; *स्त्री.* = राल (धूना)।

रार *स्त्री.* {सं. राटि} झगड़ा, विवाद।

रारा पुं. ज्योति, प्रकाश।

राल[1] *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार का वृक्ष; इस वृक्ष का निर्यास जो अपने सुगंधित धुएँ के लिए जलाया जाता है, धूना।

राल[2] *स्त्री.* {सं. लाला} लार।

रावट पुं. {हिं. राव} राजमहल।

रावटी पुं. {सं. राजपटी} छोटा तंबू, छौलदारी; छोटा घर; बारहदरी।

रावण पुं. {सं.} लंका का प्रसिद्ध राक्षस राजा जिसे रामचंद्र ने मारा था।

रावत पुं. {सं. राजपुत्र} छोटा राजा; शूर, वीर; सरदार।

रावर *सर्व.* {हिं. रावल} आपका (ब्रज.); पुं. रावल।

रावल[1] पुं. {सं. राजपुर} राजा का महल, रनिवास।

रावल[2] पुं. {फा. राजुल} {*स्त्री.* रावली} राजपूताने के कुछ राजाओं की उपाधि; रावत।

रावली *स्त्री.* {सं. राजपुत्र} राजाओं का महल, अंत:पुर।

राशन पुं. {अं. रैशन} खाने-पीने आदि के लिए मिलनेवाली सामग्री; वह राजकीय प्रबंध जिसमें लोगों के खाने-पीने या अन्य आवश्यकताओं की वस्तुएँ कुछ नियत मात्रा में और कुछ नियत काल पर ही दी जाती हैं।

राशनी *वि.* {हिं. राशन} राशन-संबंधी, राशन का, जैसे राशनी आटा।

राशि *स्त्री.* {सं.} ढेर; उत्तराधिकार; क्रांतिवृत्त में पड़नेवाले तारों के बारह समूह, जो ये हैं मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, तुला, धनु, मकर, कुंभ और मीन।

राशिचक्र पुं. {सं.} क्रांतिवृत्त में पड़नेवाले तारों का समूह जो बारह भागों में बँटा है, इसमें से प्रत्येक भाग राशि कहलाता है, भचक्र।

राष्ट्र पुं. {सं.} राज्य; देश; एक राज्य में बसनेवाला समस्त या पूरा जनसमूह (नेशन)।

राष्ट्रद्रोह पुं. {सं.} ऐसा अपराधपूर्ण कार्य जिससे राष्ट्र का अहित हो।

राष्ट्रनायक पुं. {सं.} राष्ट्र का नेता।

राष्ट्रपति पुं. {सं.} किसी आधुनिक प्रजातंत्री राष्ट्र द्वारा चुना हुआ उसका सर्वप्रधान शासक।

राष्ट्रपरिषद *स्त्री.* {सं.} किसी राष्ट्र के मुख्य-मुख्य लोगों या प्रतिनिधियों की सभा।

राष्ट्रभक्त पुं. {सं.} राष्ट्र की निष्ठापूर्वक सेवा करनेवाला।

राष्ट्रभाषा *स्त्री.* {सं.} किसी देश या राष्ट्र में प्रचलित वह प्रधान भाषा जिसका व्यवहार उस देश या राष्ट्र के रहनेवाले अन्य भाषा-भाषा भी सार्वजनिक कामों में करते हैं (नैशनल लैंग्वेज)।

राष्ट्रलिपि *स्त्री.* {सं.} वह लिपि जिसमें किसी देश की राष्ट्रभाषा लिखी जाती है।

राष्ट्रवाद पुं. {सं.} {*वि.* राष्ट्रवादी} वह सिद्धांत जिसमें अपने राष्ट्र के हितों को सबसे अधिक प्रधानता दी जाती है।

राष्ट्रवादी पुं. {सं.} वह जो अपने राष्ट्र या देश की एकता, महत्ता और कल्याण का पक्षपाती हो (नैशनलिस्ट)।

राष्ट्रसंघ पुं. {सं.} संसार के कुछ प्रमुख राष्ट्रों का एक संघ जो दूसरे यूरोपीय महायुद्ध के बाद बना था और जिसका उद्देश्य संसार में शांति बनाए रखना (यूनाइटेड नेशन्स ऑर्गनाइज़ेशन)।

राष्ट्रिकता *स्त्री.* {सं.} राष्ट्रीयता।

राष्ट्रीय *वि.* {सं.} राष्ट्र-संबंधी, राष्ट्र का; अपने राष्ट्र की एकता, महत्ता और उन्नति आदि से संबंध रखनेवाला (नैशनल)।

राष्ट्रीयता *स्त्री.* {सं.} किसी राष्ट्र के विशेष गुण; अपने देश या राष्ट्र के प्रति उत्कट प्रेम।

रास[1] *स्त्री.* {सं. मूलत: कदाचित् लास्य, प्रा. रास्स} प्राचीन भारत के गोपों की एक क्रीड़ा जिसमें वे घेरा बाँधकर नाचते थे; श्रीकृष्ण की रासलीला या उसका अभिनय।

रास[2] *स्त्री.* {सं. राशि} खलिहान में लगाया जानेवाला अन्न का ढेर; जोड़; गोद या दत्तक लेने की क्रिया या भाव; सूद, ब्याज; राशि।

रास[3] *स्त्री.* {इब. राश = सिर} चौपायों की गिनती में इकाई या संख्या का सूचक शब्द, जैसे दो रास गाय, चार रास घोड़े (हेड, ऑफ केटल); चौपायों का झुंड।

रास[4] *वि.* {फा. रास्त} अनुकूल; उचित, ठीक, वाजिब।

रासक पुं. {सं.} हास्यरस का एक प्रकार का एकांकी नाटक।

रासताल पुं. तेरह मात्राओं के ताल का नाम।

रासन पुं. स्वाद लेना।

रासधारी पुं. {सं. रासधारिन्} कृष्णलीला का अभिनय करनेवाला व्यक्ति।

रासनशीन पुं. {हिं. रास + फा. नशीन} गोद लिया हुआ लड़का, दत्तक; उत्तराधिकारी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रासमंडल पुं. रास क्रीड़ा करने का स्थान।

रासलीला *स्त्री.* {सं.} रासधारियों का कृष्णलीला संबंधी अभिनय।

रासविलास पुं. {सं.} रास लीला; आनंद, मंगल।

रासविहारी पुं. श्रीकृष्ण।

रासायनिक परीक्षक पुं. {सं.} वह जो किसी वस्तु के रासायनिक तत्वों का विश्लेषण या जाँच करके उनका ठीक पता लगाता हो; केमिकल इग्ज़ामिनर।

रासो पुं. {सं. रहस्य} किसी राजा के वीरतापूर्वक युद्धों के विवरणों से युक्त पद्य में लिखा हुआ जीवनचरित्र, जैसे हम्मीर रासो।

रास्त *वि.* {फा.} {*भाव.* रास्ती} सीधा, सरल; दुरुस्त, ठीक; उचित, वाजिब; अनुकूल।

रास्ता पुं. {फा. रास्त:} एक जगह से दूसरी जगह जाने के समय बीच में पड़नेवाला स्थान, मार्ग, राह।

मुहा. रास्ता देखना = प्रतीक्षा करना; *रास्ता पकड़ना* = चले जाना; *रास्ता बताना* = धता करना, हटा देना।

चाल, ढंग; कठिनता दूर करने या उससे बचने का उपाय, तरकीब।

रास्ना *स्त्री.* सर्पगंधा ओषधि।

राहखर्च पुं. {फा. राह + खर्च} यात्रा के समय रास्ते में होनेवाला खर्च, मार्गव्यय।

राहगीर पुं. {फा.} पथिक, बटोही।

राहचबेनी *स्त्री.* {हिं. राह + चबेना} हिन्दुओं का एक धार्मिक कृत्य जिसमें 360 लड्डू या इसी तरह की कुछ चीजें कोई व्यक्ति यह समझकर दान करता है कि जब मैं मर जाऊँगा तब मोक्ष होने पर 360 दिनों तक इनमें से एक-एक लड्डू या दान की हुई चीज मुझे नित्य मिलती रहेगी।

राहत *स्त्री.* {*अ.*} आराम, सुख; आनंद, चैन।

राहदारी *स्त्री.* {फा.} रास्ते का महसूल, सड़क का कर; चुंगी।

पद राहदारी का परवाना = रवन्ना।

राह-रीति *स्त्री.* जान-पहचान, परिचय।

राहित्य पुं. {सं.} रहित का भाव, खालीपन, अभाव।

राहिन *वि.* {*अ.*} कोई चीज किसी के पास रहने या बंधक रखनेवाला।

राही पुं. {फा.} पथिक, यात्री।

मुहा. राही होना = चलते बनना, चल देना, खिसक जाना।

राहु पुं. {सं.} नौ ग्रहों में से एक।

रिंगना *अ.* {प्रे. रिंगाना} रेंगना; दौड़ना, धीरे-धीरे चलना।

रिंद पुं. {फा.} धार्मिक बंधनों को व्यर्थ समझने या न माननेवाला; स्वेच्छाचारी और स्वच्छंद पुरुष; *वि.* {फा.} मतवाला; मस्त।

रिआयत *स्त्री.* {*अ.*} कोमल और दयालुतापूर्ण व्यवहार, नरमी; कृपा, अनुग्रह; जितना किया या लिया जाना उचित हो, उसमें कुछ कमी करना, छूट, कमी (कन्सेशन)।

रिऐयत *स्त्री.* {*अ.*} प्रजा, रिआया।

रिकवँछ *स्त्री.* {सं. अलीकमत्स्य} उड़द की पीठी का बना एक प्रकार का पकवान।

रिकाब *स्त्री.* रकाब।

रिक्त *वि.* {सं.} {*भाव.* रिक्तता} खाली; निर्धन।

रिक्ति *स्त्री.* {सं.} रिक्त होने की क्रिया या भाव, खाली होना; किसी अधिकारी या कर्मचारी के हट जाने पर उसका पद या स्थान खाली होना (वैकेंसी)।

रिक्थ पुं. {सं.} भू-संपत्ति और धन-दौलत; परिसंपदा, जो वारिसों में बँटती है।

रिक्शा पुं. {जा. जिन-रिकिशा} एक प्रकार की हलकी सवारी जिसे आदमी खींचते या चलाते हैं।

रिच्छ पुं. = रीछ।

रिजक पुं. {*अ.* रिज्क} नित्य के निर्वाह के लिए भोजन आदि, जीविका, रोजी।

रिझवार पुं. {हिं. रीझना} प्रसन्न या मोहित होनेवाला; अनुरागी, प्रेमी, गुणग्राहक।

रिझाना स. {सं. रंजन} किसी को अपने पर प्रसन्न या मोहित कर लेना।

रिझायल *वि.* {हिं. रीझना} रीझनेवाला।

रिझाव पुं. {हिं. रीझना} रीझने की क्रिया या भाव।

रिझौंहाँ *वि.* {हिं. रीझ + औंहाँ (प्रत्य.)} बहुत रीझने की प्रवृत्ति रखनेवाला।

रिट *स्त्री.* {अं.} वह प्रार्थना-पत्र जिसमें न्यायालय से किसी न्याय-विरुद्ध कार्य को रोकने के लिए कहा जाता है।

रिढ़ना *अ.* {?} घसीटते हुए चलना।

रित *स्त्री.* ऋतु।

रितआ *वि.* {सं. रिक्त} {*स्त्री.* रितई} रिक्त, रहित, खाली।

रिताना स. {हिं. रीता = खाली + आना (प्रत्य.)} खाली करना, रिक्त करना; *अ.* रिक्त या खाली होना।

रितु *स्त्री.* = ऋतु।

रिद्धि *स्त्री.* = ऋद्धि।

रिन पुं. = ऋण।

रिनी *वि.* = ऋणी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Founda[illegible]hennai and eGangotri

रिपु पुं. {भाव. रिपुता} शत्रु।

रिपोर्ट स्त्री. {अं.} किसी घटना की सूचना, जो किसी को दी जाए, आख्या; कार्य-विवरण (संस्था आदि का)।

रिपोर्टर पुं. {अं.} समाचार-पत्र का संवाददाता।

रिमझिम स्त्री. {अनु.} वर्षा की छोटी-छोटी बूँदें गिरना, फुहार; क्रि. वि. छोटी बूँदों के रूप में।

रियासत स्त्री. {अ.} {वि. रियासती} राज्य, अमलदारी; देशी राज्य (देखो); अमीरी, रईसी; वैभव, ऐश्वर्य।

रियाह स्त्री. {अ. रीह का बहु.} शरीर के अंदर की वायु, बाई।

रिर स्त्री. {हिं. रार} हठ, जिद; झगड़ा; गिड़गिड़ाहट।

रिरिहा वि. {हिं. रिरना} गिड़गिड़ाकर और दीनतापूर्वक माँगनेवाला।

रिलना अ. {हिं. रेलना} पैठना, घुसना; मिल जाना।

रिल-मिल स्त्री. {हिं. रिलना + मिलना} मेल-जोल, मेल-मिलाप।

रिवाज पुं. {अ.} प्रथा, रस्म।

रिवॉल्वर पुं. {अं.} एक प्रकार का तमंचा जिसमें एक साथ कई गोलियाँ लगातार छोड़ी जा सकती हैं।

रिश्ता पुं. {फा. रिश्तः} संबंध।

रिश्तेदारी स्त्री. {फा. रिश्तःदारी} नातेदारी।

रिश्वतखोर वि. {अ. रिश्वत + फा. ख़ोर} रिश्वत लेने या खानेवाला, घूसखोर।

रिश्वती वि. रिश्वतखोर।

रिष पुं. = ऋषि।

रिषभ पुं. = ऋषभ।

रिषि पुं. = ऋषि।

रिष्ट वि. {सं. हृष्ट} प्रसन्न; लंबा-चौड़ा या मोटा-ताजा।

रिस स्त्री. {सं. रुष} क्रोध, गुस्सा।

रिसाना अ. {हिं. रिस} क्रुद्ध होना; स. दूसरे को क्रुद्ध करना।

रिसाल पुं. {अ. इरसाल} राज्य-कर।

रिसालदार पुं. {फा.} घुड़सवार सेना का एक छोटा अधिकारी।

रिसाला पुं. {फा. रिसालः} घुड़सवार सेना; पुस्तकाकार प्रकाशित होनेवाला सामयिक पत्र, विशेषतः पाक्षिक या मासिक।

रिसिक स्त्री. {सं. रिषीक} तलवार, खड्ग।

रिसौंहाँ वि. {हिं. रिस + औंहाँ (प्रत्य.)} कुछ क्रोध से भरा हुआ।

रिहा वि. {फा. रहा} छूटा हुआ, मुक्त, बंधनमुक्त।

रिहाइश स्त्री. {फा.} रहने की क्रिया या भाव।

रिहाई स्त्री. {फा. रहाई} छुटकारा, मुक्ति।

रिहाज पुं. सेवा करना।

रिहाना स. {फा. रहा} रिहा या मुक्त कराना, छुड़ाना।

उदा. सूर कृपालु भए करुनामय, आपुन हाथ सों दूत रिहाए–सूर।

अ. रिहा या मुक्त होना, छूटना।

री स्त्री. गति, शब्द, वध, हत्या।

रीछ पुं. {सं. ऋछ} भालू (हिंसक पशु)।

रीझना अ. {सं. रंजन} {भाव. रीझ} किसी के रूप, गुण आदि के कारण उस पर प्रसन्न, अनुरक्त, या मोहित होना।

रीठ स्त्री. {सं. रिष्ट} तलवार, युद्ध; वि. अशुभ; बुरा, खराब।

रीठा पुं. {सं. रिष्ट} एक जंगली वृक्ष के फल जो कपड़े धोने के काम में आते हैं।

रीत स्त्री. = रीति।

रीता वि. {सं. रिक्त} खाली, रिक्त।

रीति स्त्री. {सं.} कोई काम करने का ढंग या प्रकार (मैनर); रिवाज, परिपाटी; नियम; कोई काम करने का नियत ढंग या प्रणाली, जैसे यह प्रार्थना-पत्र उचित रीति से आना चाहिए (कोर्स); साहित्य में वर्णों की ऐसी योजना जिससे वर्णों में ओज, प्रसाद, माधुर्य आदि गुण आते हैं।

रीतिक वि. {सं.} {भाव. रीतिकता} रीति-संबंधी, रीतिका; जो निश्चित और परंपरागत नीति, नियम, व्यवहार आदि के अनुसार किया जाए (फॉर्मल)।

रीतिका स्त्री. जस्ते का भस्म।

रीतिकाल पुं. {सं.} हिन्दी साहित्य के इतिहास में विक्रमी सोलहवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी तक का समय, जबकि रीति ग्रंथ अपेक्षाकृत अधिक बनते हैं।

रीतिग्रन्थ पुं. {सं.} वह ग्रंथ जिसमें साहित्यिक रीति अर्थात् इस बात का विवेचन हो कि लेखन या वर्णन में ओज, प्रसाद, माधुर्य आदि गुण किस प्रकार लाए जाने चाहिए (पिंगल, अलंकार आदि के ग्रंथ इसी के अंतर्गत हैं)।

रीधिर पुं. = रुधिर।

रीधि-सीधि स्त्री. = ऋद्धि-सिद्धि।

रीस स्त्री. {सं. ईर्ष्या} डाह; किसी की बराबरी करने की इच्छा, स्पर्द्धा।

रीसना अ. {हिं. रिस} क्रोध करना।

रुंड पुं. {सं.} सिर कट जाने पर खाली बचा हुआ धड़, कबंध; वह शरीर जिसमें के हाथ-पैर कट गए हों।

रुँधना अ. {सं. रुद्ध} मार्ग रुकना या घिरना; उलझना; घेरा जाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Fo n Chennai and eGangotri

रु *योज.* {हिं. अरु} और।

रुआब *पुं.* {अ.} धाक, भय।

रुई *स्त्री.* {सं. रोम} कपास का फूल जिससे सूत बनता है।

रुईदार *वि.* {हिं. फा.} जिसमें रुई भरी हो।

रुऐंदा *वि.* {हिं. रोना + ऐंदा (प्रत्य.)} जिसे रुलाई आना चाहती हो, रोआसा।

उदा. कुंजन की कूल की कलिंदी की रुऐंदी दसा, देखि-देखि आँस औ उसाँस उमगत है–**रत्ना.**।

रुकना *अ.* {हिं. रोक} {*भाव.* रुकावट, प्रे. रुकवाना} गति, प्रवाह आदि में किसी प्रकार का विश्राम या अवरोध होना, अवरुद्ध होना, अटकना; ठहर जाना; किसी कार्य या चलते हुए क्रम का बीच में बंद हो जाना।

रुकावट *स्त्री.* {हिं. रुकना} {*वि.* रुकावटी} रोकने या रोके जाने की क्रिया या भाव, रोक; बाधक होनेवाली चीज या बात, अड़चन, बाधा, विघ्न (ऑब्स्ट्रक्शन); रोकनेवाली बात या चीज (चैक)।

रुकावटी *वि.* {हिं. रुकावट} जो रुकावट डालने या रोकने के लिए हो, जैसे रुकावटी चिट्ठी या हुक्म।

रुक्का *पुं.* {अ. रुक्अ:} पत्र, चिट्ठी।

रुक्मिणी *स्त्री.* {सं.} श्रीकृष्ण की एक पटरानी का नाम।

रुक्ष *वि.* {सं.} {*भाव.* रुक्षता} जिसमें चिकनाहट न हो, रूखा; जिसमें घी, तेल या कोई चिकनी वस्तु न पड़ी या लगी हो; खुरदरा; नीरस, शुष्क; शीलरहित।

रुखसत *स्त्री.* {अ. रुखस्त} छुट्टी, अवकाश; *वि.* जे कहीं से चल पड़ा हो, विदा या रवाना हो जानेवाला।

रुखसती *स्त्री.* {अ. रुखसत} विदाई, विशेषत: दुलहिन की।

रुखाई *स्त्री.* {हिं. रूखा} रूखा होने का भाव, रुक्षता, रूखापन; शुष्कता, खुश्की; व्यवहार में संकोच या शील का अभाव, बेमुरौवती।

रुखानी *स्त्री.* बढ़इयों का एक औजार जिससे घाट बनाते हैं।

रुखित *स्त्री.* {सं. रुषिता} मान करने या रूसनेवाली नायिका।

रुग्ण *वि.* {सं.} जिसे कोई रोग हुआ हो, रोगी।

रुचना *अ.* {सं. रुचि} अच्छा लगना।

मुहा. रुच-रुच = बहुत रुचि से।

रुचा *स्त्री.* दीप्ति, प्रकाश, शोभा, इच्छा।

रुचि *स्त्री.* {सं.} {*वि.* रुचित, रुचिर, रुच्य; *भाव.* रुचिता} मन की वह अवस्था या वृत्ति जिसके कारण मनुष्य कुछ चीजों को अच्छा और काम में लाने योग्य मानता है और कुछ को इनके विपरीत; कला, साहित्य, प्रकृति आदि की कृति को पसंद करनेवाली मन की वृत्ति (टेस्ट); खाने-पीने या उपभोग के संबंध में कुछ वस्तुओं के संबंध में होनेवाली इच्छा या चाह, जैसे इस बीमारी के बाद से भोजन में रुचि नहीं रह गई; प्रेम, चाह; किरण; शोभा, कांति; स्वाद।

रुचिकर *वि.* {सं.} अच्छा लगनेवाला; रुचि उत्पन्न करनेवाला; भूख बढ़ानेवाला (वैद्यक)।

रुचिचूर्ण *पुं.* {सं.} तांत्रिक प्रयोग से बनाया हुआ एक प्रकार का चूर्ण या विभूति (कहते हैं कि यह चूर्ण किसी पर छिड़ककर उसे वश में किया जा सकता है)।

रुचिमान *वि.* {सं. रुचि + हिं. मान (प्रत्य.)} मनोहर, सुंदर रुचिर।

रुचिर *वि.* {सं.} {*भाव.* रुचिरता, रुचिराई} सुंदर; मीठा।

रुचिरता *स्त्री.* {सं.} रुचिर या सुंदर होने का भाव।

रुचिराई *स्त्री.* = रुचिरता।

रुज *पुं.* {सं.} रोग; कष्ट; क्षत, घाव; भाँग, भंग (पत्ती)।

रुजा *पुं.* {सं. रुज} बीमारी; कुष्ट नामक रोग, कोढ़।

रुजी *वि.* अस्वस्थ, रोगी।

रुजू *वि.* {अ. रुजूअ = प्रवृत्त} प्रवृत्त।

रुझना *पुं.* {अ. रुद्ध} घाव आदि भरना या पूजना।

रुझान *पुं.* {अ. रुज्हान} किसी ओर प्रवृत्त होने की क्रिया या भाव; साधारण या हलकी प्रवृत्ति।

रुणित *वि.* {सं.} बजता हुआ।

रुठना *क्रि. अ.* क्रुद्ध होना।

रुतवा *पुं.* {अ.} पद, ओहदा।

रुदन *पुं.* {सं. रोदन} रोने की क्रिया।

रुदना *अ.* {सं. रोदन} होना।

उदा. सकल सुरभी यूथ दिन अति रुदति पुर दिश झाई–**सूर**।

रुदराछ *पुं.* रुद्राक्ष।

रुदवा *पुं.* {?} एक प्रकार का धान या उसका चावल।

रुद्ध *वि.* {सं.} घेरा, रोका या रूँधा हुआ; बंद।

रुद्र *पुं.* {सं.} एक प्रकार के गण देवता जो संख्या में ग्यारह हैं; ग्यारह की संख्या; शिव का एक रूप जो बहुत ही उग्र तथा विकट माना जाता है और जो उन्होंने कामदेव को भस्म करने तथा दक्ष के यज्ञ को नष्ट करने के समय धारण किया था; साहित्य का रौद्र रस; संगीत में 16

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्राओं का ताल; एक प्रकार का यज्ञ; *वि.* डरावना, भयानक; उग्र, भीषण, विकट, जैसे–रुद्र रूप धारण करना; बड़ा, महान।

रुद्रतेज *पुं.* कार्तिकेय का दूसरा नाम।

रुद्रपति *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।

रुद्राक्ष *पुं.* {सं.} एक प्रसिद्ध वृक्ष के गोल बीज जिनसे जप, पूजा आदि करने की माला बनती है।

रुद्राणी *स्त्री.* {सं.} रुद्र या शिव की पत्नी, पार्वती।

रुधिर *पुं.* {सं.} रक्त, खून, लहू।

रुन-झुन *स्त्री.* {अन.} नूपुर आदि के बजने का शब्द, झनकार।

रुनाई *स्त्री.* {सं. अरुण} अरुणता, लाली, सुरखी।
उदा. नील स्वेत पर पीत लाल मनि लरकनि भाल बनाई–सूर।

रुनित *वि.* {सं. रुणित} बजता हुआ।

रुपना *अ.* {हिं.} रोपना का *अ.*।

रुपमनी *स्त्री.* {हिं. रूपवती} सुंदर स्त्री।
उदा. एक सों एक चाहि रूपमनी–**जायसी**।

रुपया *पुं.* {सं. रुप्य} चाँदी का सबसे बड़ा (भारतीय) सिक्का जो सोलह आने का होता है; लेन-देन आदि के लिए नियत, देय या प्राप्य ऐसे सिक्कों का वह मान जिसके अंतर्गत पैसे भी हो सकते हैं, जैसे इस माल का रुपया अभी नहीं आया; दौलत, धन, संपत्ति।

रुपहला *वि.* {हिं. रूपा = चाँदी + हला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* रुपहली} चाँदी के रंग का; चाँदी का-सा।

रुमाल *पुं.* {फा.} रूमाल।

रुरना *अ.* {सं. आरूढ़ ?} आच्छादित होना, छाना।

रुराई *स्त्री.* {हिं. रूरा} सुंदरता।

रुलना *अ.* {सं. ललन} इधर-उधर मारा फिरना, ठोकरें खाना या रौंदा जाना।
उदा. लाल की ललक रंग खेलन की रूलि (रुलि) गई–**रत्ना.**।

रुलाई *स्त्री.* {हिं. रोना} रोने की क्रिया या भाव, रोना; रोने की प्रवृत्ति।

रुलाना *स.* {हिं. रोना का प्रे.} दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना।

रुबा *पुं.* सेमल के फूल का धुआँ।

रुष्ट *वि.* {सं.} {*भाव.* रुष्टता} जिसे रोष हुआ हो, कुपित, अप्रसन्न, नाराज।

रुसवा *वि.* {फा. रुस्वा} {*भाव.* रुसवाई} लोक में जिसकी बदनामी हो, बदनाम; *पुं.* = रुसवाई।

रुसवाई *स्त्री.* {फा. रुस्वाई} बदनामी।

रुसूम *पुं.* = रसूम।

रुस्तम *पुं.* {*अ.*} फारस का एक प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान; बहुत बड़ा वीर।
पद छिपा रुस्तम = देखने में सीधा-सादा पर वास्तव में बहुत वीर या गुणी।

रुह *वि.* {सं.} उत्पन्न, जात।

रुहठि *स्त्री.* {हिं. रूठना} रूठने की क्रिया या भाव।

रुहेलखंड *पुं.* आधुनिक उत्तर प्रदेश का उत्तर - पश्चिमी भाग।

रुहेला *पुं.* {?} रुहेलखंड का निवासी; पठानों की एक जाति।

रूँधना *स.* {सं. रुंधन} कँटीले पौधों आदि से कोई स्थान घेरना; बंद करना, रोकना।

रूई *स्त्री.* = रुई।

रूक *पुं.* एक प्रकार की तलवार।

रूक्ष *वि.* जो चिकना और कोमल न हो, रूखा।

रूख *पुं.* {सं. रूक्ष} पेड़, वृक्ष; *वि.* रूखा।

रूखरा *वि.* = रुखा।

रूखा *वि.* {सं. रूक्ष} {*भाव.* रूखाई, रूखापन} जो चिकना न हो; जिसमें घी, तेल आदि कोई चिकनी वस्तु न पड़ी या मिली हो; स्वाद, रहित, फीका; सूखा, नीरस; खुरदरा; शील-संकोच न करनेवाला, शीलरहित।

रूखा-सूखा *वि.* जिसमें चिकनाई न पड़ी हो; सादा (भोजन)।

रूचना *अ.* = रुचना, अच्छा लगना।

रूठ (न) *स्त्री.* {हिं. रूठना} रूठने की क्रिया।

रूठना *अ.* {सं. रुष्ट} अप्रसन्न होकर उदासीन, चुप या अलग हो जाना।

रूढ़ *वि.* {सं. रूढ} {*स्त्री.* रूढ़ा} चढ़ा हुआ, आरूढ़; प्रसिद्ध; गँवार; चलता हुआ, प्रचलित; (फल, तरकारी आदि) जिसमें बहुत कड़ापन आ गया हो; (प्राय: अपने मौसम के अंत में चीजों के पकने पर और कोमलता निकल जाने पर वह जिस रूप में होती है, उसे 'रूढ़' कहते हैं)।

रूढ़ा (लक्षणा) *स्त्री.* {सं. रूढा} साहित्य में लक्षणा का एक प्रकार का भेद जिसमें मुख्यार्थ का बोध होने पर केवल रूढ़ि के कारण किसी दूसरे संबद्ध, अर्थ का ज्ञान होता है; जैसे–'लड़का' दुकान गया है का आशय रूढ़ि के कारण यह होगा कि लड़का दुकान पर किसी काम से गया है।

रूढ़ि *स्त्री.* {सं. रूढि} रूढ़ होने का भाव; प्रसिद्धि; बहुत दिनों से चली आई हुई प्रथा, चाल (कस्टम); रूढ़ा (लक्षणा)।

रूनी *पुं.* {देश.} घोड़ों की एक जाति।

रूप *पुं.* {सं.} शकल, सूरत (फॉर्म); सौंदर्य, खूबसूरती।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. (किसी का) रूप हरना = अपनी सुंदरता से किसी को लज्जित करना।

शरीर, देह; वेष, भेस।

मुहा. रूप दिखाना = स्वाभाविक के अतिरिक्त कोई कृत्रिम वृत्ति या भाव धारण करना, जैसे अपना काम निकालने के लिए उन्होंने कई रूप दिखाए।

रूपक पुं. {सं.} मूर्ति, प्रतिकृति; वह काव्य जिसका अभिनय किया जाए, इसके दस भेद माने गए हैं–नाटक प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, ईहामृग, अंक, वीथी और प्रहसन; किसी विषय के वर्णन का वह ढंग या प्रकार जिसमें उस (वर्ण्य) विषय से बहुत मिलते-जुलते किसी दूसरे विषय के वर्णन के रूप में सब बातें कही जाती हैं। उपमेय के वर्णन से ही उपमान का ज्ञान या परिवय कराने का ढंग, जो उपमान का ही कुछ बढ़ाया हुआ रूप है, जैसे रामचरित मानस में मानस या तालाब का रूपक; प्रार्थना, विवरण आदि से संबंध रखनेवाले पत्रों आदि का वह निश्चित रूप जिसमें भिन्न-भिन्न बातें भरने के लिए प्राय: कोष्ठक आदि बने रहते हैं, आकारपत्र (फार्म); केवल दिखलाने के लिए बनाया हुआ रूप, बनावटी मुद्रा या आचरण।

रूपकरण पुं. {सं. रूप-करण} घोड़ों की एक जाति।

रूपकातिशयोक्ति *स्त्री.* {सं.} साहित्य में अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेयों का उल्लेख न क्ररके केवल उपमानों का ही इस प्रकार रूपक की भाँति उल्लेख होता है कि उनसे उपमेयों का बोध हो जाए, जैसे नायिका और उसके भिन्न-भिन्न अंगों का उल्लेख न करके उन उपमानों का ही उल्लेख करना जिनसे नायिका के अंगों की उपमा दी जाती है, जैसे यह कहना कि वह (नायिका) सुंदर वाटिका है।

रूपकार पुं. {सं.} मूर्ति बनानेवाला।

रूपगर्विता *स्त्री.* {सं.} वह नायिका जिसे अपने रूप का गर्व या अभिमान हो।

रूप-घनाक्षरी *स्त्री.* {सं.} कवित्त नामक छंद का एक प्रकार या भेद जिसके प्रत्येक चरण में 32 वर्ण होते हैं (16वें वर्ण पर यति और अंतिम वर्ण लघु होता है)।

रूपभेद पुं. {सं.} चित्रकला में हर प्रकार की आकृति और उसकी विशेषताओं का विभेद, जो भारतीय चित्रकला के छह अंगों में से एक है।

रूपमय *वि.* {सं. रूप + मय (प्रत्य.)} {*स्त्री.* रूपमयी} बहुत सुंदर।

रूपरेखा *स्त्री.* {सं.} किसी बनाए जानेवाला रूप या किए जानेवाले काम का वह स्थूल अनुमान जो उसके आकार, प्रकार आदि का परिचायक होता है (प्लान); वह चित्र जो अभी केवल रेखाओं के रूप में हो (स्केच); किसी आकृति, चित्र आदि की वे बाहरी या सिरों के ओर की वह रेखा जिससे वह आकृति या चित्र घिरा रहता है; किसी कार्य के संबंध की वह मुख्य बात जो उसके स्थूल रूप की सूचक होती है (आउट लाइन; अंतिम दोनों अर्थों के लिए)।

रूपवती *स्त्री.* {सं.} चम्पकमाला वृत्त का दूसरा नाम।

रूपवान, रूपवान् *वि.* {सं. रूपवत्} {*स्त्री.* रूपवती} सुंदर, खूबसूरत।

रूपसंपदा *स्त्री.* {सं.} सौंदर्य।

रूपसाधन पुं. {सं.} व्याकरण में, भिन्न-भिन्न कारकों, लिंगों, वचनों आदि में किसी शब्द के होनेवाले अलग-अलग रूप या उनके वे रूप बनाने की प्रक्रिया (डिक्लेंशन)।

रूपसी *स्त्री.* {सं.} सुंदरी, सुंदर स्त्री।

रूपांतर पुं. {सं.} {*वि.* रूपांतरित} किसी वस्तु के साधारण अथवा किसी निश्चित रूप के सिवा उसका कोई और बदला हुआ रूप, जैसे गेहूँ का रूपान्तर आटा है; अलग-अलग अवस्थाओं में अथवा भिन्न-भिन्न कारणों अथवा प्रक्रियाओं से किसी वस्तु को प्राप्त होनेवाले दूसरे रूप।

रूपांतरण पुं. {सं.} एक रूप से दूसरे रूप में आना या लाया जाना, रूप बदलना या बदला जाना (ट्रांसफॉरमेशन)।

रूपा पुं. {सं. रूप्य} चाँदी; घटिया चाँदी; सफेद घोड़ा, नुकरा।

रूपायन पुं. {सं.} रूप प्रदान करना, कार्यरूप में परिणित करना।

रूपायित *वि.* {सं.} कार्यरूप में परिणत किया हुआ।

रूपी *वि.* {सं. रूपिन्} {*स्त्री.* रूपिणी} रूपवाला, रूपधारी; तुल्य, समान।

रूपोश *वि.* {फा.} {*भाव.* रूपोशी} छिपा हुआ; छिपकर भागा हुआ।

रूप्यक पुं. {सं.} रुपया।

रूबकार पुं. {फा.} किसी को बुलाने के लिए अदालत का आज्ञापत्र, आकारक; आज्ञापत्र।

रूबरू *क्रि. वि.* {फा.} सम्मुख, सामने।

रूम पुं. {फा.} एक देश।

रूमना *स.* {हिं.} झूमना का अनु.।

रूमाल पुं. {फा.} हाथ-मुँह पोंछने के लिए कपड़े का चौकोर टुकड़ा; चौकोर शाल या दुपट्टा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूमी *वि.* {फा.} रूम देश-संबंधी; पुं. रूम देश का निवासी; *स्त्री.* रूम देश की भाषा; पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

रूल पुं. {अं.} रूलर; सीधी खींची हुई लकीर; वह गोल डंडा जिससे लकीरें खींचते हैं।

रूलना *अ.* रुलना।

रूलर पुं. {अं.} सीधी लकीर खींचने की पट्टी या डंडा; शासक।

रूस पुं. {अं. रशा} एक बहुत बड़ा देश जो यूरोप और एशिया में फैला हुआ है।

रूसी[1] पुं. {हिं. रूस} रूस देश का निवासी; *स्त्री.* रूस देश की भाषा; *वि.* रूस देश-संबंधी, रूस का।

रूसी[2] *स्त्री.* {देश.} सिर के चमड़े के ऊपर की वह पतली झिल्ली जो बहुत छोटे टुकड़ों के रूप में फट या कटकर निकलती है।

रूह *स्त्री.* {अ.} {*वि.* रूहानी} आत्मा, जीव; सत्त, सार; एक प्रकार का इत्र।

रूहेलखंड पुं. रुहेलखंड।

रूहेला पुं. रुहेला।

रेंकना *अ.* {अनु.} गधे का बोलना; बहुत भद्दे ढंग से गाना या बोलना।

रेंगना *अ.* {सं. रिंगण} {*स.* रेंगाना} धीरे-धीरे और जमीन से रगड़ खाते हुए चलना, जैसे–साँप या चयूँटी का रेंगना।

रेंड़ पुं. {सं. एरंड} एक पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।

रेंड़ी *स्त्री.* {हिं. रेंड़} रेंड़ के बीज जो औषध के काम आते हैं और जिनका तेल रेचक होता है।

रे पुं. संगीत में ऋषभ स्वर का सूचक संक्षिप्त रूप, जैसे सा, रे, ग, म।

रेख *स्त्री.* {सं. रेखा} लकीर, रेखा; चिह्न, गिनती; निशान; नई निकलती हुई मूँछें।

रेखता पुं. {फा. रेख्तः} उर्दू भाषा में एक प्रकार की गजल जो पिंगल के विचार से दिग्पाल छंद में होती है; उर्दू भाषा का आरंभिक रूप और नाम।

रेखांकन पुं. {सं.} {*वि.* रेखांकित} चित्र की रूपरेखा बनाने के लिए रेखाएँ अंकित करना, खतकशी (स्केचिंग); रेखाचित्र।

रेखा *स्त्री.* {सं.} लंबा और पतला चिह्न, लकीर (लाइन); वह जिसमें लंबाई तो हो, पर चौड़ाई या मोटाई न हो (रेखागणित); गणना, गिनती; रूप, आकार; हथेली, तलवे आदि की वे लकीरें जिनसे सामुद्रिक में शुभाशुभ फलों या लक्षणों का विचार होता है।

रेखागणित पुं. {सं.} गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं, कोणों, चापों आदि का विवेचन या हिसाब होता है; यह ज्यामिति का विशेष अंग है (ज्योमेट्री)।

रेखाचित्रण पुं. {सं.} रेखाचित्र बनाने का काम।

रेखित *वि.* {सं. रेखा} जिसपर रेखाएँ या लकीरें पड़ी हों।

रेगमाल पुं. {फा. रेग + हिं. मलना} एक प्रकार का कागज जिसके ऊपर रेत जमाई हुई होती है और जिससे रगड़कर धातुएँ या लकड़ियाँ साफ की जाती हैं।

रेगिस्तान पुं. {फा.} मरुस्थल।

रेच पुं. ऐंठन, दोष।

रेचन पुं. {सं.} पेट साफ करने के लिए दस्त लाना; जुलाब।

रेचना *स.* {सं. रेचन} वायु, मल आदि पेट से बाहर निकालना।

रेचनीय *वि.* शौच लानेवाला।

रेज *वि.* {सं. न्यंच, पुं. हिं. रंच या फा. रेजः?} बहुत थोड़ा, अल्प।

रेजगारी, रेजगी *स्त्री.* {फा. रेजः} एकन्नी, दुअन्नी, चवन्नी और छोटे सिक्के; छोटे टुकड़े या कतरन आदि।

रेजा पुं. {फा. रेजः} बहुत छोटा टुकड़ा; कपड़ों, रत्नों आदि में का कोई एक थान या खंड।

रेडियम पुं. {अं.} एक उज्ज्वल मूल धातु जिसमें बहुत तेज संचित रहता है।

रेडियो पुं. {अं.} एक प्रसिद्ध उपकरण जिसके द्वारा बिना तार के संबंध के बहुत दूर से कही हुई बातें सुनाई देती हैं।

रेढ़ना *स.* {?} लुढ़काना; घसीटते हुए चलने में प्रवृत्त करना।

रेणु *स्त्री.* {सं.} धूल; बालू; कण।

रेतस् पुं. शुक्र, वीर्य।

रेतना *स.* {हिं. रेती} रेती से रगड़कर काटना या ऊपरी अंश कम करना।

रेती *स्त्री.* {हिं. रेत} एक प्रसिद्ध औजार जिसे किसी धातु पर रगड़ने से उसके महीन कण कटकर गिरते हैं।

रेतीला *वि.* {हिं. रेत} {*स्त्री.* रेतीली} जिसमें या जहाँ रेत हो, बालूवाला।

रेबोधा *वि., स्त्री.* गर्भिणी, गर्भवती।

रेफ पुं. {सं.} किसी अक्षर के ऊपर आनेवाला हलन्त रकार, जैसे 'हर्ष' या 'धर्म' में 'ष' या 'म' के ऊपर का रकार; रकार (र अक्षर)।

रेफरी पुं. {अं.} निर्णायक।

रेमि *वि.* रमण करनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेरिह *वि.* जीभ से बार-बार चाटना।

रेरी *स्त्री.* {हिं. रे = ओ + री (प्रत्य.)} किसी को 'रे' 'तू' आदि कहकर उससे बातें करना (तुच्छता का बोधक और अवज्ञा का सूचक)।

रेल *स्त्री.* {अं.} भाप, डीजल या बिजली के इंजन के द्वारा लोहे की पटरियों पर चलनेवाली गाड़ी, रेलगाड़ी।

रेलगाड़ी *स्त्री.* = रेल।

रेलना *स.* {देश.} धक्के या दबाव से आगे बढ़ाना, ढकेलना।

रेल-पेल *स्त्री.* {हिं. रेलना + पेलना} भारी भीड़; भरमार, बहुत अधिकता।

रेलयात्री *पुं.* {अं. + सं.} रेल से यात्रा करनेवाला व्यक्ति।

रेलवे *स्त्री.* {अं.} रेलगाड़ी की सड़क; रेल का महकमा या विभाग।

रेला *पुं.* {देश.} पानी का तेज बहाव, तोड़; समूह द्वारा चढ़ाई, धावा; जनसमूह का जोरों से आगे बढ़ना; रेल-पेल।

रेलिंग *स्त्री.* {अं.} बेड़े बल में बनी हुई वह इमारती बनावट जो एक सिरे पर किसी को गिरने से रोकने के लिए होती है।

रेवड़ *पुं.* {देश.} भेड़, बकरियों आदि का झुंड, लहँड़ा, गल्ला।

रेवड़ी *स्त्री.* {देश.} छोटी टिकियों के रूप में तिल और चीनी की बनी एक मिठाई।

रेशम *पुं.* {फा.} एक प्रकार के कीड़े से तैयार किए महीन चमकीले और दृढ़ तंतु जिनसे रेशमी कपड़े बनते हैं, कौशेय।

रेशा *पुं.* {फा. रेश:} महीन सूत के रूप में वह तत्व जो पशुओं के पेड़-पौधों आदि की भीतरी बनावट में दिखाई देता है, तंतु (फाइबर)।

रेषण *पुं.* घोड़े का हिनहिनाना।

रेस[1] *पुं.* {हिं. रोष} क्रोध, गुस्सा; ईर्ष्या, डाह, जलन।

रेस[2] *स्त्री.* {अं.} किसी प्रकार की दौड़, घुड़दौड़।

रेस्तराँ *पुं.* {फ्रां.} जलपानगृह।

रेह *स्त्री.* {सं. रेह्य} खाद मिली हुई वह मिट्टी जो ऊसरी मैदान में पाई जाती है।

रेहन[1] *पुं.* {फा. रिहन} किसी के पास कोई चीज इस शर्त पर रखना कि जब ऋण चुका दिया जाएगा तब वह चीज लौटा दी जाएगी, बंधक, गिरवी (मार्टगेज)।

रहन[2] *पुं.* {सं. रंधन} वह आटा या बेसन जो तरकारी आदि पकाते समय उसमें मिलाया जाता है, अरहन।

रेहनदार *पुं.* {फा.} {*भाव.* रेहनदारी} वह जिसके पास कोई चीज रेहन रखी जाए।

रेहननामा *पुं.* {फा.} वह पत्र जिसपर रेहन की शर्तें लिखी जाती हैं।

रैक *पुं.* {अं.} लकड़ी का खुला हुआ वह ढाँचा जिसमें पुस्तकें आदि रखने के लिए दर या खाने बने रहते हैं।

रैदास *पुं.* {सं. रविदास} एक प्रसिद्ध भक्त जो दलित जाति के थे; चमार।

रैदासा *वि.* रैदास भक्त का संप्रदाय, मोटा धान।

रैन *स्त्री.* {सं. रजनी} रात्रि, रात; *स्त्री.* = रेणु (धूल)।

रैना *अ.* {सं. रंजन} अनुरक्त होना; रँगा जाना; *स.* अनुरक्त करना; रँगना।

रैगुनिया *स्त्री.* अरघर।

रैनी *स्त्री.* {?} खूँटी; सोने, चाँदी आदि की गुल्ली या पासा; *स्त्री.* = रजनी (रात)।

रैयत *स्त्री.* {अ.} प्रजा, रियाआ।

रैली *स्त्री.* {अं.} विशाल जनसमूह का प्रदर्शन।

रैशनिंग *स्त्री.* {अं.} वह व्यवस्था जिसमें लोगों को खाद्य पदार्थ या उनके उपयोग की दूसरी वस्तुएँ कुछ निश्चित नियमों के अनुसार, निश्चित मात्रा में और निश्चित समय पर दी जाती हैं।

रोंगटा *पुं.* रोआँ।

रो *प्रत्य.* {?} ब्रजभाषा का एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर 'का' विभक्ति का सूचक होता है, जैसे 'तुम्ह' से तुम्हरो।

रोआँ *पुं.* {सं. रोम} शरीर पर के बहुत छोटे और पतले बाल, रोम।

मुहा. रोएँ खड़े होना = कोई भयानक बात देख या सुनकर बहुत क्षोभ या भय होना।

रोईं *स्त्री.* {हिं. रोआँ का अल्पा.} बहुत छोटा रोआँ, जैसा तरकारियों, फलों आदि पर होता है।

रोऊ *वि.* {हिं. रोना} बहुत अधिक रोनेवाला; बहुत गिड़गिड़ाकर या दीनतापूर्वक प्रार्थना करनेवाला।

रोएँदार *वि.* {हिं. रोआँ + फा. दार} जिसके शरीर पर बहुत अधिक रोएँ हों; जिसपर रोएँ की तरह सूत, रेशे आदि हों।

रोक *स्त्री.* {हिं. रोकना} रोकने की क्रिया या भाव, रुकावट, अवरोध, रोकनेवाली कोई बात या चीज; मनाही, निषेध; वह निश्चय, आज्ञा आदि जो किसी प्रकार का नियंत्रण रखने के लिए हो, प्रतिबंध (चैक)।

रोकड़ *स्त्री.* {सं. रोक = नकद} नगद रुपया-पैसा (कैश); जमा धन, पूँजी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोकड़-बही *स्त्री.* {हिं.} वह बही जिस पर प्रतिदिन की आय और व्यय लिखा जाता है (कैश बुक)।

रोकड़िया *पुं.* {हिं. रोकड़} वह व्यक्ति जिसके पास रोकड़ और आमदनी खर्च का हिसाब रहता है (कैशियर)।

रोक-थाम *स्त्री.* {हिं. रोकना + थामना} किसी अनुचित या दूषित कार्य को रोकने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न।

रोकना *स.* {हिं. रोक} किसी को आगे बढ़ने न देना, गति, प्रवाह आदि में बाधा डालना; कहीं जाने या कोई काम करने से मना करना; चली आती हुई बात या प्रथा बंद करना; अपने ऊपर कोई भार लेकर बीच में बाधक होना, जैसे गिरते हुए को रोकना या किसी का वार रोकना।

रोग[1] *पुं.* {सं.} {*वि.* रोगी, रुग्न} शरीर को अस्वस्थ रखनेवाली शारीरिक प्रक्रिया, व्याधि, मर्ज, बीमारी, जैसे ज्वर, पक्षाघात आदि (डिज़ीज)।

रोग[2] *वि.* {सं. रोगिन्} {*स्त्री.* रोगिणी} जिसे रोग हुआ, अस्वस्थ, बीमार; जो सदा या प्रायः बीमार रहता हो; वह जो अपनी चिकित्सा कराने के लिए किसी के पास जाए अथवा किसी से अपनी चिकित्सा कराए (पेशंट)।

रोगग्रस्त *वि.* {सं.} रोग से पीड़ित।

रोगजनक *वि.* {सं.} रोग उत्पन्न करनेवाला।

रोगन *पुं.* {फा. रौग़न} {*वि. रोगनी*} तेल, घी, चरबी आदि चिकने पदार्थ; वह चिकना लेप जो कोई वस्तु चमकाने के लिए उसपर लगाया जाता है (वारनिश)।

रोग-निवारण *पुं.* {सं.} रोग को दूर करना।

रोगोपचार *पुं.* {सं.} रोग का उपचार।

रोचक *वि.* {सं.} {*भाव.* रोचकता} अच्छा लगनेवाला; मनोरंजक।

रोचकता *स्त्री.* {सं.} रोचक होने की अवस्था, गुण या भाव।

रोचन *वि.* {सं.} रोचक; शोभा बढ़ानेवाला; लाल; *पुं.* गोरोचन।

रोज *पुं.* {फा. रोज़} दिन, दिवस; *अव्य.* प्रतिदिन।

रोजगार *पुं.* {फा. रोज़गार} व्यापार; व्यवसाय, कारबार, तिजारत।

रोजगारी *पुं.* {फा. रोज़गारी} व्यापारी।

रोजमर्रा *क्रि. वि.* {फा. रोज़मर्रः} नित्य; *पुं.* नित्य के व्यवहार में आनेवाली बोल-चाल की भाषा का विशिष्ट प्रयोग।

रोजा *पुं.* {फा. रोज़ः} मुसलिम धर्मशास्त्र की विधि से रखा जानेवाला उपवास; रौजा।

रोजाना *वि.* {फा. रोज़ानः} प्रतिदिन, हर रोज।

रोजी *स्त्री.* {फा. रोज़ी} दैनिक निर्वाह की सामग्री और साधन, जीविका।

रोझ *स्त्री.* {देश.} गवय या नीलगाय नामक पशु।

रोट *पुं.* {हिं. रोटी} मोटी और बड़ी रोटी, लिट्टः; मीठी रोटी या पुआ जो देवी-देवताओं को चढ़ाया जाता है।

रोटिहा *पुं.* वह सेवक जो केवल भोजन पर काम करता है।

रोटी *स्त्री.* {तामिल ?} गुँदे हुए आटे की आँच पर सेंकी या पकाई हुई लोई की टिकिया, चपाती; भोजन या रसोई।

पद रोटी-कपड़ा = खाने-पहनने की सामग्री या व्यय।

मुहा. किसी बात की रोटी खाना = किसी बात से जीविका चलाना; *किसी के यहाँ रोटियाँ तोड़ना* = किसी के घर रहकर उसके दिए हुए अन्न से निर्वाह करना; *रोटी-दाल चलना* = साधारण जीवन-निर्वाह होना।

रोड़ा *पुं.* {सं. लोष्ठ} ईंट या पत्थर का बड़ा टुकड़ा, ढेला।

मुहा. रोड़ा अटकाना = विघ्न डालना।

रोदन *पुं.* {सं.} रोना।

रोदसि *पुं.* {सं.} स्वर्ग; पृथ्वी।

रोदा *पुं.* {सं. रोध} धनुष की डोरी, चिल्ला।

रोध *पुं.* {सं.} {*वि.* रोधित} रोक, रुकावट, अवरोध (चैक)।

रोधन *पुं.* {सं.} रोकने की क्रिया या भाव।

रोना *अ.* {सं. रुदन} दुखी होकर आँसू बहाना, रुदन करना;

मुहा. रो रोकर = बहुत कठिनता से।

किसी के व्यवहार से बुरा मानना, चिढ़ना; *पुं.* दुख, खेद; कष्ट, विपत्ति;

मुहा. किसी बात का रोना होना = किसी बात का अभाव या कष्ट होना।

किसी के कष्ट या विपत्ति का करुणापूर्ण वर्णन; *वि.* {*स्त्री.* रोनी} जरा सी बात पर भी रो पड़नेवाला।

रोना-धोना *अ.* = गिड़गिड़ाना।

रोप *पुं.* हल की वह लकड़ी जो हरिस के छोर पर जड़ी रहती है।

रोपक *वि.* {सं.} रोपनेवाला।

रोपण *पुं.* {सं.} {*वि.* रोपित, रोप्य} (बीज या पौधा) कहीं से लाकर लगाना या स्थापित करना, जमाना, बैठाना; आरोप।

रोपना *स.* {सं. रोपण} (पौधे आदि) जमाना, लगाना या बैठाना; स्थित करना, ठहराना; बीज

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Founda... Chennai and eGangotri

डालना, बोना; हाथ या पाँव पसारना, फैलाना; रोकना।

रोपनी *स्त्री.* धान आदि के पौधों को क्यारी से उखाड़कर खेत में लगाने का काम।

रोब *पुं.* {*अ.* रोअब} {*वि.* रोबीला} शक्तिशाली होने की ऐसी धाक कि विरोधी कुछ कह या कर न सके, आतंक, दबदबा।

मुहा. रोब जमाना = आतंक उत्पन्न करना; *रोब में आना* = किसी के आतंक के कारण दब या रुक जाना।

रोम[1] *पुं.* {सं. रोमन} रोआँ, लोम।

पद रोम-रोम में = सारे शरीर में; *रोम-रोम से* = शुद्ध और पूर्ण हृदय से।

छेद या सूराख; ऊन।

रोम[2] *पुं.* इटली की राजधानी या उसके आसपास का प्रदेश।

रोमक *पुं.* {सं.} रोम का निवासी, रोमन; रोम नगर या देश।

रोमकूप *पुं.* {सं.} शरीर के वे छेद जिनमें रोएँ निकलते हैं।

रोमहर्षण *पुं.* {सं.} अचानक बहुत अधिक आनंद अथवा भय से रोएँ खड़े होना, रोमांच, सिहरन।

रोमांच *पुं.* {सं.} {*वि.* रोमांचित} आनंद या भय से रोएँ खड़े होना; साहित्य में हर्ष या भय से होनेवाला उक्त प्रकार का शारीरिक व्यापार जो सात्विक अनुभवों के अंतर्गत माना गया है।

रोमांचक *वि.* {सं.} रोमांच उत्पन्न करनेवाला।

रोमाग्र *पुं.* रोयें की नोक।

रोमावलि *स्त्री.* {सं.} पेट के बीचोबीच नाभि से ऊपर की रोओं की पंक्ति, रोमराजी।

रोमिल *वि.* {सं. रोग} रोएँदार।

रोर *स्त्री.* {सं. रव} कोलाहल, शोरगुल; उपद्रव, उत्पात; *वि.* प्रचंड; उपद्रवी; *पुं.* = रोड़ा।

रोरा *पुं.* चूर गाँजा।

रोरित *वि.* {हिं. रोर} जिसमें रोर हो, रोर से युक्त।

रोरी[1] *स्त्री.* {हिं. रोर} चहल-पहल।

रोल *स्त्री.* {सं. रव} रोर; ध्वनि, शब्द; *पुं.* पानी का बहाव, प्रवाह, रेला।

रोला *पुं.* {?} कोलाहल, शोर, हल्ला; चार चरणों का एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ (11वीं मात्रा पर यति) होती है; अंतिम दो मात्राएँ गुरु हों तो अच्छा है।

रोली *स्त्री.* {सं. रोचनी} तिलक लगाने का प्रसिद्ध लाल चूर्ण।

रोवंदा *पुं.* {हिं. रोना} रोने की क्रिया, भाव या प्रवृत्ति, रुलाई; *वि.* जिसकी रोने की प्रवृत्ति या स्वभाव हो।

रोवनी-धोवनी *स्त्री.* रोने-धोने का काम।

रोशन *वि.* {फा.} जलता हुआ, प्रदीप्त; चमकदार; प्रसिद्ध; प्रकट, जाहिर।

रोशन चौकी *स्त्री.* {फा. + हिं.} शहनाई।

रोशनदान *पुं.* {फा.} दीवार के ऊपरी भाग में प्रकाश आने का छेद, झरोखा।

रोशनाई *स्त्री.* स्याही।

रोशनी *स्त्री.* {फा.} उजाला, प्रकाश, दीपक, दीया।

रोष *पुं.* {सं.} {*वि.* रोषी, रुष्ट} क्रोध, गुस्सा; चिढ़; कुढ़न; वैर, विरोध; लड़ने का आवेश।

रोस *पुं.* = रोष।

रोहज *पुं.* {?} नेत्र।

रोहना *अ.* {सं. रोहण} चढ़ना; ऊपर की ओर जाना या बढ़ना; *स.* चढ़ाना; सवार कराना; पहनना।

रोहिणी *स्त्री.* {सं.} गाय, गौ; बिजली; वसुदेव की स्त्री और बलराम की माता; सत्ताइस नक्षत्रों में से एक।

रोहित *वि.* {सं.} लाल रंग का, सूर्य, मछली; *पुं.* लाल रंग, लहू, खून।

रोहिताश्व *पुं.* अग्नि, राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र का नाम।

रोही[1] *वि.* {सं. रोहिन्} {*स्त्री.* रोहिणी} चढ़नेवाला।

रोही[2] *पुं.* {देश.} एक प्रकार का हथियार।

रोहू *स्त्री.* {सं. रोहिष} एक प्रकार की बड़ी मछली।

रौथ *स्त्री.* {?} चौपायों की जुगाली।

रौंद *स्त्री.* {अं. राउंड} पहरे, देखरेख या जाँच-पड़ताल के लिए लगाया जानेवाला चक्कर (राउंड)।

रौंदना *स.* {सं. मर्दन} पैरों से कुचल या दबाकर नष्ट-भ्रष्ट करना, मर्दित करना।

रौ *स्त्री.* {फा.?} गति, चाल; वेग, तेजी।

रौजा *पुं.* {*अ.* रौज़:} वह कब्र जिसपर इमारत बनी हो, समाधि।

रौणी *स्त्री.* रमणी।

रौताइन *स्त्री.* राव या रावत की स्त्री, ठकुराइन, स्त्रियों के लिए आदरसूचक शब्द।

रौताई *स्त्री.* {हिं. रावत} रावत (राजा, सरदार आदि) का भाव या पद।

रौद्र *वि.* {सं.} {*भाव.* रौद्रता} रुद्र-संबंधी; प्रचंड, उग्र; क्रोधपूर्ण; *पुं.* साहित्य में नौ रसों में से एक जो किसी प्रकार का अत्याचार, अन्याय, अपमान, अशिष्टता, आदि का व्यवहार देखकर, उसे रोकने या उसका प्रतिकार करने के विचार से मन में होनेवाले क्रोध से उत्पन्न होता है।

रौनक *स्त्री.* {*अ.*} चमक-दमक, दीप्ति; प्रफुल्लता; शोभा; सुहावनापन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रौप्य *पुं.* {सं.} चाँदी, रूपा; *वि.* चाँदी का।
रौरई *स्त्री.* {हिं. रौर} शोरगुल, हल्ला।
रौरव *वि.* {सं.} भयंकर; *पुं.* एक भीषण नरक का नाम।
रौरे *सर्व.* {हिं. राव} आप (संबोधन)।
रौस *स्त्री.* {फा. रविश} रविश; रंग-ढंग; तौर-तरीका; छज्जा या बरामदा; निशान, चिह्न।
रौसली *स्त्री.* {सं. रजस्वला, प्रा. रजस्सला} वह चिकनी उपजाऊ मिट्टी जो बरसाती (रजस्वला) नदी अपने किनारों पर छोड़ जाती है, डाकर।
रौहार (ल) *वि.* {फा. रहवार = चलनेवाला} चलनेवाला।
रौहाल *स्त्री.* घोड़े की एक जाति।
रौहित *पुं.* मनु के पुत्र का नाम; कृष्ण के एक पुत्र का नाम।
रौहिष *पुं.* रोहिश घास।
रौही *स्त्री.* मृगी, हिरनी।

ल

ल नागरी वर्णमाला का अट्ठाईसवाँ अल्पप्राण वर्ण जिसका उच्चारण स्थान दंत है।
लंक *स्त्री.* {सं. लंका} लंका द्वीप।
लंकपति *पुं.* {सं. लंका + पति} लंका का राजा, रावण।
लंकलाट *पुं.* {अं. लांगक्लाथ} एक प्रकार का बढ़िया मोटा तथा चिकना सूती कपड़ा।
लंका *स्त्री.* {सं.} भारत के दक्षिण में बसा हुआ एक टापू, कहते हैं कि यहाँ पर रावण राज्य करता था।
लंकेश, लंकेश्वर *पुं.* रावण, विभीषण।
लंग *पुं.* {फा.} लँगड़ापन।
लंगड़ *पुं.* लँगड़ा; लंगर।
लँगड़ा *वि.* {फा. लंग} जिसका एक पैर बेकाम हो या टूट गया हो, लँगड़ाकर चलनेवाला; *पुं.* एक प्रकार का बनारसी बढ़िया आम।
लँगर *वि.* {सं. लंघट या लंघनट} नटखट, दुष्ट, पाजी; धृष्ठ, ढीठ।
लंगर *पुं.* {फा.} लोहे का वह बहुत बड़ा काँटा जिसे नदी या समुद्र में गिरा देने पर नावें या जहाज एक ही स्थान पर ठहरे रहते हैं; लकड़ी का वह कुंदा जो नटखट गाय या बैल के गले में बाँधा जाता है; लटकती हुई कोई भारी चीज, जैसे घड़ी का लंगर; पैर में पहनने का चाँदी का तोड़ा; कपड़े में वे टाँके जो पक्की सिलाई के पहले डाले जाते हैं; वह स्थान जहाँ से लोगों को विशेषत: गरीबों को भोजन मिलता है; वह भोजन जो भक्तों, आगंतुकों, अमीरों-गरीबों आदि को एक पंगत में बैठाकर वितरित किया जाता हो; *वि.* भारी; बहुत बड़ा; *वि.* लँगर।
लँगराइ *स्त्री.* {हिं. लँगर + आई (प्रत्य.)} पाजीपन, शरारत, दुष्टता।
लँगी *वि.* = लँगड़ा।
लंगूर *पुं.* {सं. लांगूलिन्} एक प्रकार का बड़ा बंदर जिसका मुँह काला और पूँछ बहुत लंबी रहती है; दुम।
लँगोट *पुं.* {सं. लिंग + पट} {*स्त्री.* लँगोटी} कमर पर बाँधने का वह पहनावा जिससे केवल उपस्थ और चूतड़ ढके रहते हैं, रूमाली।
लंगोटिया यार *पुं.* बाल अवस्था का मित्र।
लँगोटी *स्त्री.* {हिं. लँगोट} छोटा लँगोट।
लंघन *पुं.* {सं.} लाँघने की क्रिया या भाव, डाकना, अतिक्रमण; उपवास, अनहार, फाका।
लंघनट *पुं.* {सं.} कलाबाजी के खेल दिखानेवाला; नट।
लंठ *वि.* {देश.} {*भाव.* लंठई} मूर्ख।
लँडूरा *वि.* {देश. या सं. लांगूल} कटी हुई पूँछवाला (पशु या पक्षी)।
लंप *पुं.* {अं. लैम्प} पाश्चात्य ढंग का बना हुआ, मिट्टी के तेल से जलनेवाला दीपक या चिराग जिसके ऊपर, प्रकाश दूर तक फैलाने के लिए, चिमनी भी लगी होती है।
लंपट *वि.* {सं.} {*भाव.* लंपटता} व्यभिचारी, विषयी, बदचलन।
लंब *पुं.* {सं.} किसी रेखा पर सीधी और खड़ी गिरनेवाली रेखा; *वि.* लंबा; जो क्षितिज की ओर एक ही सीध में बहुत दूर तक चला गया हो (हॉरिजंटल); *स्त्री.* विलंब।
लंबन *पुं.* {सं.} {*वि.* लंबित} लंबा करना; कोई काम या बात कुछ समय के लिए रुकी या टली रहना (एबेयेंस)।
लंबरदार *पुं.* नंबरदार।
लंबा *वि.* {सं. लंब} {*स्त्री.* लंबी, *भाव.* लंबाई} जो एक दिशा में दूर तक सीधा चला गया हो, चौड़ा का उलटा; अधिक विस्तार या ऊँचाईवाला, बड़ा; *स्त्री.* दक्ष की कन्या।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंबाई *स्त्री.* {हिं. लंबा} लंबा होने का भाव या अवस्था, लंबापन।

लंबायमान *वि.* {हिं. लंबा} बहुत लंबा; लेटा हुआ।

लंबित *वि.* {सं.} लंबा किया हुआ; विचार, निश्चय आदि के लिए कुछ समय तक रोका या टाला हुआ (पेंडिंग)।

लंबोतरा *वि.* {हिं. लंबा} लंबे आकारवाला, जो कुछ अपेक्षाकृत लंबा हो।

लकच *पुं.* बड़हर का पेड़।

लउटी *स्त्री.* लकुटी।

लकड़बग्घा *पुं.* {हिं. लकड़ + बाघ} भेड़िए की जाति का एक पशु।

लकड़हारा *पुं.* {हिं. लकड़ी + हारा} जंगल से लकड़ी काटकर बेचनेवाला।

लकड़ा *पुं.* लकड़ी का मोटा कुंदा, लट्ठा।

लकड़ी *स्त्री.* {सं. लगुड़} पेड़ का कटा हुआ कोई ठोस या स्थूल अंग, काठ; ईंधन; छड़ी या लाठी।

लकलक *पुं.* {अ. लक़्लक़} सारस पक्षी; जबान, जीभ; *वि.* खूब सफेद, चमकीला।

लकवा *पुं.* {सं. लक़्वः} एक वात रोग जिसमें कोई अंग सुन्न और बेकार हो जाता है।

लकसी *स्त्री.* फल आदि तोड़ने की लाठी जिसके सिरे पर लोहे की चंद्राकार अँकुसी लगी होती है।

लकीर *स्त्री.* {सं. रेखा} वह सीधी आकृति जो एक सीध में दूर तक चली गई हो, रेखा, खत; प्राचीन काल से चली आई हुई परंपरा या मर्यादा।

मुहा. लकीर का फकीर होना या लकीर पीटना = पुरानी प्रथा पर चलना।

लकुच *पुं.* लुकाठ; बड़हर का पेड़।

लकुट *पुं.* लुकाठ।

लकुटी *स्त्री.* {सं. लगुड़} लाठी, छड़ी।

लक्कड़ *पुं.* {हिं. लकड़ी} लकड़ी का बहुत बड़ा और अनगढ़ टुकड़ा, कुंदा।

लक्खी[1] *पुं.* {हिं. लाख = वृक्ष का निर्यास} घोड़े की एक जाति।

लक्खी[2] *पुं.* {हिं. लाख (संख्या)} लखपती; *वि.* लाखों से संबंध रखनेवाला, जैसे लक्खी बाग, लक्खी मेला।

लक्ष *वि.* {सं.} एक लाख, सौ हजार; *पुं.* किसी उद्देश्य से किसी वस्तु या बात पर दृष्टि रखना; लक्ष्य; एक लाख की संख्या।

लक्षण *पुं.* {सं.} वह विशेषता जिसके आधार पर कोई चीज पहचानी जाए, चिह्न, निशान; नाम; परिभाषा; शरीर के अंगों पर शुभ और अशुभ माने जानेवाले कुछ विशेष प्राकृतिक चिह्न; चाल-ढाल, रंग-ढंग।

लक्षण-लक्षणा *स्त्री.* {सं.} लक्षणा का वह प्रकार या भेद जिसमें किसी शब्द का मुख्य अर्थ अपने स्वरूप को गौण करके किसी दूसरे या लक्ष्य अर्थ का उपलक्षण मात्र बन जाता है, जैसे वह गंगावासी है का आशय है कि वह गंगा तट का निवासी है।

लक्षना *स.* लखना।

लक्षित *वि.* {सं.} बतलाया हुआ, निर्दिष्ट; देखा हुआ; लक्षणा-शक्ति के द्वारा समझ में आनेवाला (अर्थ)।

लक्षिता *स्त्री.* {सं.} साहित्य में वह नायिका जिसके पर-पुरुष प्रेम, नायक-मिलन, संभोग आदि के लक्षण देखकर सखियों, आदि को उसकी इन बातों का पता चल गया हो।

लक्षितार्थ *पुं.* {सं.} वह अर्थ जो शब्द की लक्षणा-शक्ति से निकलता है, लक्ष्यार्थ।

लक्षी *स्त्री.* = लक्ष्मी।

लक्ष्मण *पुं.* {सं.} सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के एक अन्य पुत्र और रामचंद्र के छोटे भाई जो उनके साथ वन गए थे।

लक्ष्मी *स्त्री.* {सं.} धन की अधिष्ठात्री देवी जो विष्णु की पत्नी कही गई है, कमला, रमा; धन-संपत्ति, दौलत; शोभा, छवि; घर की मालकिन, गृहस्वामिनी।

लक्ष्मीपुत्र *पुं.* {सं.} धनवान, अमीर।

लक्ष्मीनिवास *पुं.* {सं.} विष्णु।

लक्ष्य *पुं.* {सं.} वह जिसपर किसी उद्देश्य से दृष्टि रखी जाए, उद्दिष्ट पदार्थ या बात, जैसे गेहूँ के उत्पादन का लक्ष्य इस वर्ष दस लाख टन रखा गया है; वह जिसे ध्यान में रखकर कोई वार या आघात किया जाए, निशाना (टार्गेट); वह जिसपर किसी प्रकार का आक्षेप हो; लक्षितार्थ; लक्ष्यार्थ।

लक्ष्यभेद *पुं.* {सं.} चलते या उड़ते हुए जीव या पदार्थ पर निशाना लगाना।

लक्ष्यार्थ *पुं.* {सं.} किसी शब्द या वाक्य का उसके साधारण अर्थ से भिन्न, वह अर्थ जो उसकी लक्षणा-शक्ति से निकलता है, लक्षितार्थ, जैसे यदि हमारा कोई अपकार करे और हम उससे कहें—वाह! आपने हमारा खूब उपकार किया। तो यहाँ 'उपकार' का लक्ष्यार्थ 'अपकार' होगा।

लक्ष्योपमा *स्त्री.* {सं.} साहित्य में उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें सम, समान आदि शब्दों या इनके वाचकों का प्रयोग न करके यह कहा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है कि वस्तु अमुक कोटि या वर्ग की है, उसे लज्जित करती है, उससे होड़ करती है अथवा इसने उससे अमुक गुण या बात चुरा या छीन ली है।

लखन पुं. = लक्ष्मण।

लखपति पुं. लखपती।

लखपती पुं. {सं. लक्ष +पति} जिसके पास लाखों रुपयों की संपत्ति हो।

लखपेड़ा *वि.* {हिं. लाख + पेड़} (बाग आदि) जिसमें बहुत अधिक वृक्ष हों।

लखलखा पुं. {लख्लख़ः} एक प्रकार सुगंधित मिश्रण जिससे बेहोशी दूर होती है।

लखाधर पुं. लाक्षागृह; *स.* हिं. लखना का प्रे.; *अ.* लखना।

लखिया पुं. {हिं. लखना} लखनेवाला।

लखेरना *स.* लथेड़ना।

लखेरा पुं. {हिं. लाख = वृक्ष का निर्यास} लाख की चूड़ियाँ आदि बनानेवाला।

लखौटा पुं. {हिं. लाख + औटा (प्रत्य.)} चंदन, केसर आदि से बनाया जानेवाला उबटन; वह डिब्बा जिसमें स्त्रियाँ सिंदूर आदि रखती हैं।

लखौरी[1] *स्त्री.* {सं. लाक्षा} एक प्रकार की भौंरी (कीड़ा) का घर; पुरानी चाल की पतली छोटी ईंट।

लखौरी[2] *स्त्री.* {हिं. लाख (संख्या)} देवी-देवता को उनके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियाँ या फल चढ़ाना।

लगंत *स्त्री.* लगने या स्त्री-प्रसंग करने की क्रिया, लग्न होने की क्रिया।

लग *क्रि. वि.* {हिं. लगना, पुं. हिं. लागि} तक, पर्यंत; निकट, पास; वास्ते, लिए; साथ; *स्त्री.* लगन, लौ।

लगदी *स्त्री.* छोटे बच्चों के नीचे बिछाने की कथरी।

लगन[1] *स्त्री.* {हिं. लगना} किसी व्यक्ति या काम की ओर पूरी तरह से ध्यान लगाना, लौ; स्नेह, प्रेम।

लगन[2] पुं. {सं. लग्न} विवाह का मुहूर्त;

मुहा. लगन धराना = विवाह का मुहूर्त स्थिर कराना।

उदा. अंध कहै अंधा पतियात, जस बिसवा के लगन धराय–**कबीर**।

हिन्दुओं में वे विशिष्ट दिन जिनमें विवाह होते हैं।

लगनपत्री *स्त्री.* विवाह के मुहूर्त का पत्रक जो कन्या का पिता वर के पिता के पास भिजवाता है।

लगनवट *स्त्री.* {हिं. लगन} लगन, प्रेम।

लगना[1] *अ.* {सं. लग्न} किसी पदार्थ के तल से दूसरे पदार्थ का मिलना, सटना, जुड़ना; किसी चीज पर कुछ सिया, टाँका, चिपकाया, जड़ा, या मढ़ा जाना; सम्मिलित होना, मिलना; तल, सीमा या आधार पर पहुँचकर टिकना या रुकना; क्रम से लगाया या सजाया जाना; व्यय होना, खर्च होना; जान पड़ना, मालूम होना; संबंध या रिश्ते में कुछ होना; आघात या चोट पहुँचना; जलन, चुनचुनाहट आदि मालूम होना; कार्य आदि में रत होना; फलों आदि का सड़ना या गलना प्रारंभ होना; मन पर किसी बात का प्रभाव या असर होना।

लगना[2] पुं. एक प्रकार का जंगली हिरन।

लगभग *क्रि. वि.* {हिं. लग = पास + भग (अनु.)} प्रायः, बहुत कुछ (संख्या या समय के संबंध में)।

लगमात *स्त्री.* {हिं. लगना + सं. मात्रा} व्यंजनों में लगनेवाली स्वरों की मात्राएँ या उनके सूचक चिह्न।

लगव *वि.* {*अ.* लगो} झूठ, मिथ्या, असत्य; व्यर्थ, बेकार।

लगवाना *स.* {हिं.} लगाना का प्रे.।

लगवार पुं. {हिं. लगना = स्त्री के साथ संभोग करना} उपपति, यार।

लगातार *क्रि. वि.* {हिं. लगना + तार = क्रम} बिना क्रम टूटे, बराबर, निरंतर; *वि.* जो अपने लगे हुए क्रम के अनुसार बराबर एक के बाद एक आता या चलता हो, क्रम से बराबर होता रहने वाला (कंसीक्यूटिव)।

लगाद *स्त्री.* {हिं. लगावट} प्रेम, प्रीति।

लगान पुं. {हिं. लगना} लगने या लगाने की क्रिया भाव; खेती-बारी की भूमि पर लगनेवाला कर, पोत (रेन्ट)।

लगाना बकाया पुं. बकाया लगान।

लगाना *स.* {हिं. लगना का स.} एक वस्तु के तल से दूसरी वस्तु का तल मिलाना, सटाना; किसी के साथ रखना या करना, सम्मिलित करना; वृक्ष आदि रोपना, जमाना; क्रम से यथास्थान रखना, चुनना; व्यय या खर्च करना; आघात करना, चोट पहुँचाना; किसी में कोई नई प्रवृत्ति, व्यसन चस्का आदि उत्पन्न करना; काम में लाना।

लगाम *स्त्री.* {फा.} घोड़े के मुँह में लगाया जानेवाला वह ढाँचा जिसके दोनों ओर (घोड़े चलाने के लिए) रस्से या चमड़े के तस्मे बँधे रहते हैं, रास, बाग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगामी *स्त्री.* {हिं. लगाम} वह जाली जो गौ, बैल, घोड़े आदि के मुँह पर इसलिए बाँधी जाती है कि वे कुछ चर या खा न सकें।

लगाय *स्त्री.* {हिं. लगन या लगावट} प्रेम, प्रीति। *उदा.* सूर जहाँ लौं श्याम गात हैं, तिन सौ क्यों कीजिए लगाय–**सूर**।

लगायत *क्रि. वि.* {हिं. लगाना} पर्यंत, तक।

लगार *स्त्री.* {हिं. लगना} नियमपूर्वक नित्य या बराबर काम करना, बंधी, बंधेज; लगाव, संबंध; सिलसिला, क्रम; लगन, लौ; प्रेम; *वि.* मेलमिलाप या संबंध रखनेवाला।

लगाव *पुं.* {हिं. लगना} लगे होने का भाव; संबंध वास्ता।

लगावट *स्त्री.* {हिं. लगाव} संबंध, लगाव; प्रेम या आपसदारी का संबंध।

लगि *क्रि. वि.* {हिं. लग या लौं} तक, पर्यंत; समीप, निकट।

लगी *स्त्री.* {हिं. लग्घा} छोटा लग्घा, लग्घी।

लगुड़ *पुं.* {सं.} डंडा, लाठी।

लगुल *पुं.* शिश्न, लिंग।

लगूल *स्त्री.* {सं. लागूल} पूँछ, दुम।

लगौहाँ *वि.* {हिं. लगना + औंहाँ (प्रत्य.)} जो किसी से लगन लगाने के लिए उत्सुक या उद्यत हो।

लग्गत *स्त्री.* {हिं. लगना} वह धनराशि जो व्यापार, संपत्ति आदि में पूँजी के रूप में लगी हो (इंवेस्टमेंट); लागत।

लग्गा *पुं.* {हिं. लगना} {*स्त्री.* अल्पा. लग्गी} कार्य का आरंभ या सूत्रपात, काम में हाथ लगना; किसी दाँव पर जुआरी के सिवा दूसरे लोगों का लगनेवाला धन, दाँव।

लग्घड़ *पुं.* {देश.} बाज; भेड़िए की तरह का एक छोटा पशु, लकड़बग्घा।

लग्घा *पुं.* {सं. लगुड} {*स्त्री.* अल्पा. लग्घी} लंबा बाँस, विशेषत: वृक्षों से फल तोड़ने का बाँस; लग्गा।

लग्घी *स्त्री.* {हिं. लग्घा} वह बाँस जिसे नदी के तल तक पहुँचाकर उसके जोर से नाव चलाते हैं (डाँडे से भिन्न)।

लग्न *पुं.* {सं.} ज्योतिष में उतना समय, जितने में कोई राशि किसी विशिष्ट स्थान में वर्तमान रहती है; शुभ कार्य का मुहूर्त; विवाह, शादी; *वि.* {*स्त्री.* लग्ना} लगा या सटा हुआ।

लग्निका *स्त्री.* नंगी स्त्री।

लघीयस् *स्त्री.* बहुत छोटा या हलका।

लघु *वि.* {सं.} {*भाव.* लघुता} कनिष्ठ, छोटा; हल्का; निस्सार; थोड़ा कम; *पुं.* एक मात्रा का व्यंजन या ह्रस्व स्वर, जैसे अ, इ, उ; छंद शास्त्र में वह अक्षर या वर्ण जिसमें एक ही मात्रा हो, गुरु का उलटा, इसका चिह्न '।' है।

लघुचेता *पुं.* {सं. लघुचेतस्} तुच्छ या बुरे विचारोंवाला, नीच।

लघुता *स्त्री.* {सं.} लघु या छोटे होने का भाव, लघुत्व, छोटाई।

लघुशंका *स्त्री.* {सं.} पेशाब करने की क्रिया या उसका वेग।

लचक *स्त्री.* {हिं. लचकना} लचकने की क्रिया या भाव, लचन, झुकाव; लचकने का गुण।

लचकना *अ.* {सं. न्यंच-न्यंचति} {*स.* लचकाना} भार पड़ने पर बीच से दबना या झुकना, लचना; कोमलता आदि के कारण या हाव-भाव के समय स्त्रियों की कमर या दूसरे अंग झुकना।

लचका *पुं.* एक प्रकार का गोटा।

लचकाना *स.* {हिं.} लचकाना का प्रे.।

लचना *अ.* लचकना।

लचपच *वि.* {हिं. लचना} ढीला-ढाला, शिथिल; दुर्बल, कमजोर; हीन, तुच्छ।

लचाना *क्रि. वि.* लचकाना, झुकाना।

लचारी *स्त्री.* {देश.} भेंट, नजर; एक प्रकार का देहाती गीत।

लचाव *पुं.* लचक।

लचीला *वि.* {हिं. लचना + ईला (प्रत्य.)} {*भाव.* लचीलापन} जो सहज में लच या झुक सकता हो, लचकदार, नमनीय (फ्लेक्सिबुल); जिसमें सहज में परिवर्तन, उतार-चढ़ाव या कमी-बेशी हो सकती हो।

लचीलापन *पुं.* {हिं. लचीला + पन (प्रत्य.)} लचीले या नमनीय होने की अवस्था या भाव; पदार्थों का वह गुण जिससे कोई वस्तु बीच में झुक सकती हो, नमनीयता (फ्लेक्सिबिलटी)।

लच्छ *पुं.* {सं. लक्ष्य} बहाना, मिस; निशाना, ताक; वह बात जिस पर ध्यान लगा हो, लक्ष्य। *उदा.* लच्छ दूरे सकल बिलोकत अलच्छ रहे, एक हाथ पाती, एक हाथ दिए छाती पर–**रत्ना.**।

लच्छन *पुं.* {सं. लक्षण} लक्षण; रंग-ढंग, तौर-तरीका; शरीर में होनेवाला एक विशेष प्रकार का काला दाग जो सामुद्रिक के अनुसार शुभ माना जाता है *पुं.* = लक्ष्मण।

लच्छमी *स्त्री.* = लक्ष्मी।

लच्छा *पुं.* {अनु.} {*स्त्री.* अल्पा. लच्छी} गुच्छे के रूप में गुथे हुए सूत या तार; सूत की तरह लंबे और पतले कटे हुए टुकड़े; हाथ या पैर में पहनने का एक प्रकार का गहना।

लच्छागृह *पुं.* लाक्षागृह।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लच्छि *स्त्री.* = लक्ष्मी।

लच्छित *वि.* {सं. लक्षित} देखा हुआ; निशान लगा हुआ, अंकित।

लच्छिनिवास *पुं.* = विष्णु।

लच्छी[1] *वि.* {देश.} एक प्रकार का घोड़ा।

लच्छी[2] *वि.* {सं. लक्षण} लक्षणों से युक्त, लक्षणवाला।

उदा. कच्छी कलित कमान पीठ सारे शुभ लच्छी–रत्ना.।

स्त्री. = लक्ष्मी।

लच्छेदार *वि.* {हिं. लच्छा + फा. दार (प्रत्य.)} (खाद्य पदार्थ) जिसमें लच्छे बने हों; चिकनी चुपड़ी और मजेदार (बात)।

लछमन *पुं.* = लक्ष्मण।

लछमी *स्त्री.* = लक्ष्मी।

लजवाना *स.* {हिं.} लजाना का प्रे.।

लजाना *अ., स.* {सं. लज्जा} लज्जित या शरमिन्दा होना या करना।

लजारा *वि.* {हिं. लाज = लज्जा} {*स्त्री.* लजारी} लज्जाशील; लज्जित।

लजालू *पुं.* {सं. लज्जालु} एक पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से सिकुड़ या कुछ मुरझा-सी जाती हैं।

लजीज *वि.* स्वादिष्ट।

लजीला *वि.* लज्जाशील।

लजुरी *स्त्री.* {सं. रज्जु} कुएँ से पानी खींचने की रस्सी।

लजौंहाँ *वि.* {सं. लज्जावह} {*स्त्री.* लजौंहाँ} लज्जाशील।

लज्जका *स्त्री.* बनकपास।

लज्जा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* लज्जाशील, लज्जित} वह मनोभाव, जो स्वभावतः अथवा संकोच, दोष आदि के कारण, दूसरों के सामने सिर उठाने या बोलने नहीं देता, व्रीडा, शर्म, हया (साहित्य में इसे एक संचारी भाव माना गया है); मान-मर्यादा।

लज्जाशील *वि.* {सं.} {*भाव.* लज्जाशीलता} जिसे स्वभावतः जल्दी लज्जा आती हो।

लज्जित *वि.* {सं.} जिसे लज्जा हुई हो, शरमाया हुआ।

लजोर *वि.* लज्जावान।

लट *स्त्री.* {सं. लट्वा} बालों का गुच्छा, केश-पाश, अलक; उलझे हुए बाल।

लटक *स्त्री.* {हिं. लटकना} लटकने की क्रिया या भाव; अंगों की कोमल, लचीली और मनोहर चेष्टा, अंग-भंगी।

लटकन *पुं.* {हिं. लटकना} लटकती हुई चीज या अंग; नाक में पहनने का एक गहना; एक प्रकार की वनस्पति के दाने जिनसे बढ़िया और सुगंधित वसंती या गेरुआ रंग निकलता है; इन दानों को उबालकर निकाला हुआ रंग।

लटकना *अ.* {सं. लटन = झूलना} ऊपर टिके रहने पर भी कुछ अंश का नीचे की ओर कुछ दूर तक बिना आधार के अधर में झुका रहना, झूलना; काम का कुछ समय तक अधूरा पड़ा रहना।

लटकवाना *क्रि. स.* लटकाने का काम दूसरे से कराना।

लटकीली *पुं.* {सं.} झूमता हुआ, बलखाता हुआ, लचकदार।

लटका *पुं.* {हिं. लटक} ढंग, ढब; बनावटी कोमल चेष्टा और बातचीत, हावभाव; उपचार आदि की छोटी और सहज युक्ति, टोटका।

लटकाना *स.* {हिं.} लटकना का *स.*।

लटजीरा *पुं.* अपामार्ग, चिचड़ा, महीन धान।

लटना *अ.* {सं. लड} थककर बेकाम होना; वृद्धा अवस्था, रोग आदि के कारण दुबला और अशक्त होना; विकल या बेचैन होना; मुरझाना; हीन अवस्था को प्राप्त होना, क्षीण होना।

लटपट *स्त्री.* {हिं. लटपटाना} कुछ साधारण और आरंभिक, पर अनुचित या बुरे उद्देश्य से किया जानेवाला संबंध; लटापटी; *वि.* लटापटा।

लटपटा *वि.* {हिं. लटपटाना} {*स्त्री.* लटपटी} लड़खड़ाता हुआ; ढीला-ढाला; अस्त-व्यस्त; अस्पष्ट और क्रमविरुद्ध (कथन); असक्त; जो न बहुत पतला हो और न बहुत गाढ़ा हो (खाद्य पदार्थ, रस आदि)।

लटपटाना[1] *अ.* {सं. लड + पत्} ठीक तरह से कोई काम न कर सकना।

लटपटाना[2] *अ.* {सं. लसन} लुभाना, मोहित होना; लीन या अनुरक्त होना।

लटा *वि.* {सं. लट्ट} {*स्त्री.* लटी} लम्पट, लुच्चा; तुच्छ, हीन।

लटापटी *स्त्री.* {हिं. लट + पट} लटपट होने की दशा या भाव; किसी से उलझने या लड़ने-झगड़ने का भाव, भिड़ंत।

लटी *स्त्री.* {हिं. लटा = बुरा} बुरी या झूठी बात; साधुनी या भक्तिन; वेश्या, रंडी।

लट्टू *पुं.* {सं. लुंठन = लुढ़कना} एक प्रकार का गोल खिलौना जो जमीन पर फेंककर नचाया जाता है;

मुहा. (किसी पर) लट्टू होना = मोहित या मुग्ध होना।

शीशे का वह गोला जिसमें बिजली का प्रकाश होता है (बल्ब)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लट्ठ पुं. {सं. यष्टि} बड़ी लाठी; सोंटा, बड़ा डंडा।

लट्ठबाज *वि.* {हिं. लट्ठ + फा. बाज} लाठी चलाने या उससे लड़नेवाला, लठैत।

लट्ठमार *वि.* {हिं. लट्ठ + मारना} लट्ठबाज; अप्रिय और कठोर (बात)।

लट्ठा पुं. {हिं. लट्ठ} लकड़ी का बड़ा बल्ला, शहतीर; एक प्रकार का कपड़ा।

लठधर पुं. = लठैत।

लठबाँसी *वि.* {हिं. लट्ठ + बाँस} लाठी, बाँस आदि से मारपीट करनेवाला, लट्ठमार।

लठैत पुं. {हिं. लठ + ऐत (प्रत्य.)} लाठी लेकर चलानेवाला।

लड़ पुं. {सं. यष्टि} {*स्त्री.* अल्पा. लड़ी} एक ही तरह की चीजों की श्रेणी या माला; रस्सी या डोर के कई तारों में का एक तार।

लड़क *स्त्री.* = ललक।

लड़कना *अ.* = ललकना।

लड़कपन पुं. {हिं. लड़का + पन} बाल्यावस्था; नासमझी।

लड़कई *स्त्री.* बाल्यावस्था, लड़कपन।

लड़कबुद्धि *स्त्री.* बालकों के समान बुद्धि।

लड़का पुं. {हिं. लाड़ = दुलार} {*स्त्री.* लड़की} छोटी अवस्था का मनुष्य, बालक; पुत्र, बेटा।

पद लड़कों का खेल = साधारण या सहज बात या काम।

लड़कानि *स्त्री.* {हिं. लड़का} बाल्यावस्था, लड़कपन।

लड़का-बाला पुं. {हिं. लड़का + सं. बाल} लड़का और लड़की, संतान, औलाद।

लड़की *स्त्री.* {हिं. लड़का} छोटी अवस्था की स्त्री, बालिका; पुत्री, कन्या; नौकरानी।

लड़कीला *वि.* {हिं. लड़क + ईला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* लड़कीली} जिसमें लड़क या ललक हो, प्रेम, वासना आदि से युक्त।

लड़कैयाँ *स्त्री.* {हिं. लड़का + ऐयाँ (प्रत्य.} लड़कपन, बाल्यावस्था।

लड़कौरी *वि., स्त्री.* {हिं. लड़का} बच्चेवाली (स्त्री)।

लड़खड़ाना *अ.* {अनु.} अच्छी तरह चल या खड़े न रह सकने के कारण इधर-उधर झुकना या गिरना, डगमगाना।

लड़खड़ी *स्त्री.* डगमगाहट।

लड़ना *अ.* {सं. रणन} एक दूसरे को चोट या हानि पहुँचाना, भिड़ना; झगड़ा या तकरार करना; बहस करना; टकराना; सफलता प्राप्त करने के लिए किसी के विरुद्ध प्रयत्न करना; जहरीले जानवर का काटना।

लड़बावला *वि.* {हिं. लड़का + बावला} {*स्त्री.* लड़बावली} अल्हड़; दुलारा; मूर्ख, नासमझ; गँवार, अनाड़ी।

लड़ाई *स्त्री.* {हिं. लड़ना + आई (प्रत्य.)} वह क्रिया जिसमें दो दल या पक्ष एक दूसरे को मार गिराने या हानि पहुँचाने के लिए वार करते हैं; संग्राम, युद्ध; झगड़ा, तकरार, हुज्जत; वाद-विवाद, बहस; किसी के विरुद्ध सफल होने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न; अनबन, विरोध, वैर।

लड़ाई-बंदी *स्त्री.* {हिं. लड़ाई + फा. बंदी} दोनो पक्षों का आपसी समझौते से चली हुई लड़ाई या युद्ध बंद करना, युद्धविराम (सीज़ फायर)।

लड़ाका *वि.* {हिं. लड़ना + आका (प्रत्य.)} {*स्त्री.* लड़ाकी} योद्धा; लड़ाई-झगड़ा करनेवाला।

लड़ाना¹ *स.* {हिं.} लड़ना का प्रे.।

लड़ना² *स.* {हिं. लाड़} प्यार या दुलार करना।

उदा. साँची कहौ केते कहि लालन लड़ावै हैं–रत्ना.।

लड़ी *स्त्री.* {हिं. लड़ का *स्त्री.* अल्पा.} माला आदि का छोटा लड़; एक ही तरह की बातों या चीजों का लगातार चलनेवाला क्रम, जैसे बातों की लड़ी।

लड़ीला *वि.* {हिं. लाड; + ईला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* लड़ीली} लाड़ला, दुलारा; प्रिय।

उदा. विपिन-बिहारी वेश बानक लड़ीली कौ –रत्ना.।

लड़ैता¹ *वि.* {हिं. लाड़ = प्यार + ऐता (प्रत्य.)} {*स्त्री.* लड़ैती} लाड़ना, दुलारा; जो लाड़-प्यार के कारण बहुत बिगड़ गया हो, धृष्ठ, शोख।

लड़ैता² *वि.* {हिं. लड़ना} लड़नेवाला, योद्धा।

लड्डू पुं. {सं. लड्डुक} एक प्रसिद्ध गोल मिठाई, मोदक।

लड्याना *स.* {हिं. लाड़ = प्यार} लाड़-प्यार करना, दुलार करना।

लढंत पुं. मल्ल युद्ध की एक युक्ति।

लढ़िया *स्त्री.* {हिं. लुढ़कना} बैल-गाड़ी।

लत *स्त्री.* {सं. रति} बुरी आदत।

लतखोर *वि.* {हिं. लात + फा. खोर = खानेवाला} {*स्त्री.* लतखोरिन} प्राय: लात खाने या दुर्दशा भोगनेवाला; कमीना, नीच।

लतखोरा पुं. {हिं. लतखोर} पैर पोंछने का बिछावन, पायँदाज।

लतमर्दन *स्त्री.* {हिं. लात + सं. मर्दन} पैरों से रौंदने की क्रिया या भाव।

लतर *स्त्री.* बल, वलरी, लता।

लतरी¹ *स्त्री.* {हिं. लतर} एक प्रकार की खेसारी, दुबिया मटर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लतरी² *स्त्री.* {हिं. लात} एक प्रकार का छोटा हल्का जूता; पुराना और फटा हुआ जूता।

लता *स्त्री.* {सं.} जमीन पर फैलने या किसी आधार पर चढ़नेवाला कोमल पतला पौधा, वलरी, बेल।

लतागृह *पुं.* {सं.} लताओं से घिरा और घर के रूप में बना हुआ स्थान।

लताड़ *स्त्री.* {हिं. लताड़ना} लताड़ने की क्रिया या भाव।

लतार्क *पुं.* प्याज का पौधा।

लताड़ना *पुं.* {हिं. लात} {*भाव.* लताड़} पैरों से कुचलना, रौंदना; खड़े होकर पैरों के भार से किसी के अंग दबाना; तंग करना।

लता-पता *पुं.* {सं. लतापत्र} पेड़-पत्ते; जड़ी-बूटी; रद्दी चीजें।

लतामंडप *पुं.* {सं.} लतागृह।

लतिका *स्त्री.* {सं.} छोटी लता, बेल।

लतियाना¹ *स.* {हिं. लात + आना (प्रत्य.)} पैरों से दबाना; पैरों से आघात करना, लातें मारना।

लतियाना² *स.* {हिं. लक्षी = लट्टू की डोरी + आना (प्रत्य.)} लत्ते या डोरी आदि से लट्टू को लपेटना।

उदा. लतियावहु जेतौ लट्टून लौं तेतहि गाजैं–**रत्ना.**।

लतीफा *पुं.* चुटकुला।

लत्ता *पुं.* {सं. लक्तक} फटा-पुराना कपड़ा या उसका चीथड़ा।

लत्ती¹ *स्त्री.* {हिं. लात} पशुओं के लात मारने की क्रिया।

लत्ती² *स्त्री.* {हिं. लत्ता} नचाए जानेवाले लट्टू पर लपेटने की डोरी।

लथपथ *वि.* {अनु.} भीगा हुआ तर; (कीचड़ आदि से) सना हुआ।

लथाड़ *स्त्री.* {अनु. लथपथ} जमीन पर घसीटने की क्रिया; झिड़की।

लथेड़ना *स.* {अनु. लथपथ} धूल-मिट्टी लगाकर मैला या गंदा करना; जमीन पर पटककर घसीटना; तंग करना।

लदन *स्त्री.* लदाव।

लदना *अ.* {हिं.} लादना का *अ.*; *वि.* {*स्त्री.* लदनी} (पशु) जिसपर अधिकतर माल ही लादा जाता हो, जैसे लदनी घोड़ी।

लदलद *अव्य.* किसी गीली वस्तु के गिरने का शब्द होना।

लदनुआँ *वि.* {हिं. लादना} माल, बोझ आदि लादनेवाला; (पशु) जिसपर अधिकतर माल ही लादा जाता हो।

लदवाना *स.* {हिं.} लादना का प्रे.।

लदाई *स्त्री.* {हिं. लादना} लादने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

लदान *स्त्री.* {हिं. लादना} लादने की क्रिया, भाव या मजदूरी; बाहर भेजने के लिए यानों या वाहनों पर माल लादना, जैसे गुड़ या गेहूँ की लदान; लादा हुआ सामान, लदाव।

लदाव *पुं.* {हिं. लादना} लादने की क्रिया या भाव; भार, बोझ; छत का एक प्रकार का पटाव जिसमें नीचे कड़ियाँ या धरने नहीं होतीं, केवल ईंटों की जुड़ाई होती है, जैसे लदाव की छत या पाटन।

लद्दू *वि.* {हिं. लादना} जिसपर बोझ लादा जाए, जैसे–लद्दू घोड़ा।

लद्धड़ *वि.* {हिं. लादना} मोटा और फलतः सुस्त, आलसी।

लप¹ *स्त्री.* {अनु.} लपलपाने की क्रिया या भाव।

लप² *पुं.* {देश.} अँजुली।

लपकना *अ.* {अनु.} {*भाव.* लपक} झपटकर या तेजी से आगे बढ़ना।

लपका *पुं.* {हिं. लपकना} लत, आदत, चस्का।

लपट *स्त्री.* {हिं. लौ + पट} आग के ऊपर उठनेवाली लौ, अग्निशिखा; गरम हवा का झोंका; गंध से युक्त हवा का झोंका; गंध, गमक।

लपटा *पुं.* {हिं. लपटना} गाढ़ी गीली वस्तु या पिंड; लपसी; कढ़ी; थोड़ा-बहुत संबंध या लगाव।

लपटाना *स.* {सं.} लिपटाना; *अ.* लिपटना।

लपटीला *वि.* {हिं. लिपटना} लिपट जानेवाला।

लपटौआँ *पुं.* {हिं. लपटना} एक प्रकार की घास की बाल जो कपड़ों में लपटकर फँस जाती है।

लपड़-झपड़ *स्त्री.* {अनु.} हड़बड़ाकर काम करने की क्रिया या भाव।

लपन *पुं.* मुख, भाषण, कथन।

लपना *अ.* {अनु. लपलप} इधर-उधर या ऊपर-नीचे लचना या झुकना; लपकना; हैरान या परेशान होना।

लपलप *स्त्री.* {अनु.} जीभ से चाटने या पीने का शब्द; तलवार के लपलपाने का शब्द।

लपलपाना *अ.* {अनु. लपलप} {*भाव.* लपलपाहट} लपना; छुरी, तलवार आदि का चमकना; *स.* छुरी, तलवार आदि हिलाकर चमकाना; लपाना।

लपसी *स्त्री.* {सं. लप्सिका} एक प्रकार का पतला हलुआ; गीले गाढ़े पिंडों का समूह।

लपाना *स.* {हिं.} लपना का *स.*।

लपेट *स्त्री.* {हिं. लपेटना} लपेटने की क्रिया या भाव; लपेटकर डाला हुआ घुमाव या फेरा, ऐंठन, बल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लपेटना *स.* {हिं. लिपटना} घुमाते हुए चारों ओर लगाना; सूत आदि लच्छे के रूप में करना; किसी चीज के चारों ओर घुमाते हुए उस पर जमाना या बैठाना; उलझन के लिए किसी को उत्तरदायी बनाकर उसे अपने साथ लगाना।

लप्पा *पुं.* छत की धरन के नीचे लगाई हुई लकड़ी।

लफंगा *वि.* {फा. लफंग} लम्पट, दुश्चरित्र; लुच्चा, बदमाश।

लफड़ा *पुं.* = झमेला।

लफना *अ.* लपना (लचना या लचकना)।

लफ्ज *पुं.* {अ. लफ़्ज} शब्द।

लफ्जी *वि.* {अ. लफ़्ज़ी} शाब्दिक।

लबड़-धोंधों *स्त्री.* {हिं. लबाड़ + धों धों (अनु.)} अँधेर, कुव्यवस्था; बेईमानी और जबरदस्ती की चाल।

लबड़ना *अ.* {सं. लप = बकना} झूठ बोलना; गप हाँकना।

लबधि *स्त्री.* = लब्धि।

लबरी *वि.* झूठ बोलनेवाली।

लबादा *पुं.* {फा.} चोंगा (पहनावा)।

लबार *वि.* {सं. लपन} {*भाव.* लबारी} झूठा; गप्पी।

लबारी *स्त्री.* {हिं. लबार} लबार होने की अवस्था का भाव, व्यर्थ की झूठी और बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना; *वि.* लबार।

लबालब *वि.* {फा.} ऊपर या किनारे तक भरा हुआ; छलकता हुआ।

लबी *स्त्री.* ईख का पका हुआ गाढ़ा रस, राब।

लबासी *वि.* {हिं. लबार ?} बहुत बढ़-बढ़कर झूठी और व्यर्थ की बातें करनेवाला; *स्त्री.* व्यर्थ की झूठी और बहुत बढ़ाकर कही हुई बात।

लबेद *पुं.* {सं. वेद का अनु.} लोकाचार की भद्दी या भोंडी बात या प्रथा।

लब्ध *वि.* {सं.} मिला हुआ, प्राप्त; *पुं.* भाग करने पर निकलनेवाला फल (गणित)।

लब्धप्रतिष्ठ *वि.* {सं.} जिसने किसी कार्य में अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की हो, प्रतिष्ठित।

लब्धि *स्त्री.* {सं.} प्राप्ति, लाभ; भागफल।

लभनी *स्त्री.* {सं. लभन = प्राप्त करना} वह हाँड़ी जो ताड़ के पेड़ में उससे ताड़ी निकालने के लिए बाँधी जाती है, लबनी।

लभ्य *वि.* {सं.} जो मिल सके; उचित, मुनासिब।

लभ्यांश *पुं.* {सं.} व्यापार या क्रय-विक्रय आदि में होनेवाला आर्थिक लाभ, मुनाफा (प्रॉफिट)।

लमछड़ *वि.* {हिं. लंबा} बहुत लंबा; *पुं.* भाला, बरछा।

लमतड़ंग *वि.* {हिं. लंबा + ताड़ + अंग} {*स्त्री.* लमतड़ंगी} बहुत लंबा या ऊँचा।

लमधी *पुं.* {हिं. समधी का अनु.} समधी का बाप; समधी का दूसरा समधी।

लमहा *पुं.* {अ. लम्हः} समय का एक बहुत ही सूक्ष्म मान, क्षण।

लमाना *स.* {हिं. लंबा} लंबा करना; *अ.* लंबा होना; दूर निकल जाना।

लय *पुं.* {सं.} एक का दूसरे में समाना, विलीन होना; ध्यान में लीन होना, लौ, लगन।

उदा. गई न निज-पर बुद्धि सुद्ध है, रहे न राम-लय लाए—तुलसी।

अंत में सारी सृष्टि या जगत् का होनेवाला विनाश, प्रलय; विनाश; तिरोहित या अदृश्य होना; विराम, विश्राम; रहने का स्थान, आलय, घर; *स्त्री.* संगीत में नृत्य, वाद्य और गीत के एकरस रहने की अवस्था या भाव; संगीत में लगनेवाले समय के विचार से कोई चीज ठीक और नियमित रूप से गाने की क्रिया या भाव; इसके ये तीन प्रकार या भेद हैं—द्रुत, मध्य और विलंबित (देखें); गीत गाने का विशेष और सुंदर ढंग, धुन; कोई ऐसी गति या शब्द जो बीच में कुछ रुक-रुककर परंतु नियमित रूप से उसी प्रकार हो जिस प्रकार उत्तम संगीत होता है (रिद्म; उक्त सभी अर्थों के लिए)।

लयक *वि.* {सं. लय + क (प्रत्य.)} लय से संबंध रखनेवाला; संगीत की लय के रूप में अथवा उसके ढंग पर होनेवाला, जैसे नाड़ी या हृदय का लयक स्पन्दन (रिद्मिकल)।

लयात्मक *वि.* {सं.} लय के रूप में होनेवाला; लय-संबंधी।

लरिकई *स्त्री.* {पु. हिं. लरका = लड़का} लड़के या बालक होने की अवस्था या भाव, बाल्यावस्था, लड़कपन; लड़कों का-सा आचरण, व्यवहार या स्वभाव।

लरखरनि *स्त्री.* {हिं. लड़खड़ाना} लड़खड़ाने की क्रिया या भाव।

लर्ज *पुं.* सितार में लगे हुए पीतल के तार का नाम।

लरजना *अ.* {फा. लर्जः = कंप} काँपना; हिलना; डर जाना, टहलना।

लरझर *वि.* {हिं. लड़ + झड़ना} बहुत अधिक, प्रचुर।

लरना *अ.* = लड़ना।

लरनि *स्त्री.* = लड़ाई।

लरिका *पुं.* = लड़का।

लरी *स्त्री.* = लड़ी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ललं¹ *स्त्री.* {सं. लालसा} प्रबल इच्छा या चाह।

ललं² *पुं.* {?} सर, तत्व।

उदा. अष्ट सिद्धि नव निधि सुर सम्पति तुम बिनु तुस कन कहूँ न कछु लल–**सूर**।

ललक *स्त्री.* {हिं. ललकना} ललकने की क्रिया या भाव।

ललकना *अ.* {सं. ललक} {*भाव.* ललक} बहुत अधिक लालसा करना, ललचना; प्रेम या चाह से भरना; उमंग या जोश में आना।

उदा. काल मन अगम लई ललकि लंका–**तुलसी**।

ललकार *स्त्री.* {हिं. ले-ले से अनु. + कार} ललकारने की क्रिया या भाव।

ललकारना *स.* {हिं. ललकार} {*भाव.* ललकार} अपने साथ लड़ने या किसी पर आक्रमण करने के लिए चिल्लाकर बुलाना या कहना, प्रचारणा।

ललकित *वि.* {हिं. ललक} गहरी चाह से भरा हुआ।

ललचाना *स.* {हिं. ललचना} ऐसा काम करना कि किसी के मन में लालच उत्पन्न हो; किसी को कुछ दिखाकर उसके पाने के लिए अधीर करना; *अ.* ललचना।

ललचौहाँ *वि.* {हिं. लालच} {*स्त्री.* ललचौहीं} लालच से भरा हुआ।

ललन *पुं.* {सं.} प्यारा बच्चा; नायक या पति; क्रीड़ा।

ललना *स्त्री.* {सं.} सुंदर स्त्री।

ललनाचक्र *पुं.* {सं.} परवर्ती हठयोगियों के अनुसार शरीर के अंदर का एक कमल या चक्र (अष्ट-कमल और षट्चक्र से अतिरिक्त)।

ललनी *स्त्री.* {सं. नलिनी} छोटा पतला चोंगा, नली।

लला *पुं.* {हिं. लाल} {*स्त्री.* ललो} प्यारा और दुलारा लड़का; नायक या पति।

ललाई *स्त्री.* = लाली (रंगत)।

ललाक *पुं.* शिश्न, लिंगेंद्रिय।

ललाट *पुं.* {सं.} मस्तक, माथा।

ललाटाक्षी *स्त्री.* दुर्गा देवी।

ललाम *वि.* {सं.} {*भाव.* ललामता} रमणीय, सुंदर; लाल, सुर्ख; श्रेष्ठ, उत्तम।

ललामक *पुं.* मस्तक पर लपेटने वाली माला।

ललामी *स्त्री.* {सं. ललाम} सुंदरता; लाली, सुर्खी।

ललित *स्त्री.* {सं.} {*भाव.* लालित्य} सुंदर, मनोहर; प्रिय, प्यारा; *पुं.* साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी प्रस्तुत कार्य या घटना का प्रत्यक्ष रूप से वर्णन न करके उसके समान अथवा प्रतिबिंब रूप किसी दूसरे कार्य या घटना का इस प्रकार उल्लेख होता है कि वह प्रस्तुत कार्य घटना पर ठीक तरह से घटित हो, जैसे तुमने उसे बिगाड़ करके मानो घर आनेवाली लक्ष्मी का द्वार बंद कर दिया; एक प्रकार का विषम वर्णवृत्त; षाड़व जाति का एक राग जो रात के अंतिम पहर में गाया जाता है; शृंगार रस में सुकुमारता से और आकर्षक रूप से अंग हिलाना जो एक हाव माना गया है; मनोहर अंगभंगी।

ललिता *स्त्री.* कस्तूरी, राधिका की प्रधान सखियों में से एक।

ललित कला *स्त्री.* {सं. ललित + कला} वह कला जिसके अभिव्यंजन में सुकुमारता और सौंदर्य की अपेक्षा हो और जिसकी सृष्टि मुख्यत: मनोविनोद के लिए हो, जैसे संगीत, चित्रकला आदि (फाइन आर्ट्स)।

ललिताई *स्त्री.* = लालित्य।

ललो *स्त्री.* {हिं. लला} लड़की का वाचक प्यार का शब्द।

ललौहाँ *वि.* {हिं. लाल} {*स्त्री.* ललौहीं} जो लाली लिए हुए हो।

लल्लाट *पुं.* = ललाट।

लल्लो *स्त्री.* {सं. ललना} जीभ, जबान।

लल्लो-चप्पो *स्त्री.* {सं. लल + अनु. चप} चिकनी-चुपड़ी और खुशामद की बातें।

लवंग *पुं.* {सं.} लौंग।

लव *पुं.* {सं.} बहुत थोड़ी मात्रा; दो काष्ठा या छत्तीस निमेष का समय; *वि.* अल्प, थोड़ा।

लवका *स्त्री.* {हिं. लौकना} बिजली।

उदा. लवका लपकै, ठनका ठनकै छतिया दरद उठि जाए (**गीत**)।

लवण, लवन *पुं.* {सं.} नमक।

लवणाकर *पुं.* नमक की खान।

लवणासुर *पुं.* मधु नामक दैत्य का पुत्र जिसको शत्रुघ्न ने मारा था।

लवनित *वि.* = नमकीन।

लवनी¹ *स्त्री.* {सं. लवन} अनाज की पकी फसल काटने की क्रिया, लुनाई।

लवनी² *स्त्री.* {सं. नवनीत} मक्खन।

लवलासी *स्त्री.* {हिं. लव = प्रेम + लासी = लसी} प्रेम की लगावट; संबंध स्थापित करने की चाह।

लवली *स्त्री.* {सं.} हरफारेवड़ी नामक वृक्ष और उसका फल।

लवलीन *वि.* {हिं. लव + लीन} तन्मय, तल्लीन, मग्न।

लवलेश *पुं.* {सं.} बहुत थोड़ा अंश या संसर्ग।

लवा¹ *पुं.* {सं. लावक} तीतर की जाति का एक पक्षी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लवा² *वि.* {हिं. लाना = लगाना} लगानेवाला, जैसे कंठलवा = गले लगानेवाला।

लवाई *स्त्री.* {देश.} नई बयाई गौ।

लवाजमा *पुं.* {अ. लवाज़िम} बड़े आदमियों के साथ रहनेवाले लोग और साज-सामान; आवश्यक सामग्री।

लवारा *पुं.* {हिं. लवाई} गौ का बच्चा।

लवासी *वि.* {सं. लव = बकना} बकवादी; लम्पट, बदचलन।

लशकर *पुं.* {फा. लश्कर} {*वि.* लशकरी} सेना, फौज; सेना की छावनी; जहाज पर काम करनेवाले साधारण नौकर-चाकरों, मजदूरों आदि का वर्ग या समूह।

लशकरी *वि.* {फा. लश्करी} लशकर-संबंधी, लशकर का।

लषन *पुं.* = लक्ष्मण।

लस *पुं.* {सं.} वह गुण या तत्व जिससे कोई चीज किसी से चिपकती है, लासा; लसी।

लसदार *वि.* {फा.} लस से युक्त।

लसना *स.* {सं. लसन} चिपकाना, सटाना; ऊपर रखना।

उदा. हौं जमुना जल भरन जात ही सिर पर गागरि लसिकै—**मीरा**।

लसनि *स्त्री.* {हिं. लसना} अवस्थिति, विद्यमानता; शोभा, छटा।

लसराना *अ.* हठ करना।

लसलसाना *अ.* {हिं. लस} चिपचिपा होना, लस से युक्त होना।

लसा *स्त्री.* हरिद्रा, हलदी।

लसित *वि.* {सं.} सजा या सुंदर जान पड़ता हुआ, सुशोभित।

लसी *स्त्री.* {सं. लस} लस; मन लगने की बात, आकर्षण।

लसीका *स्त्री.* {सं.} थूक; मवाद, पीब; शरीर के अंगों में से निकलनेवाला रक्त की तरह का एक तरल पदार्थ जिसका उपयोग चिकित्सा-संबंधी कार्यों में होता है (लिम्फ)।

लसीला *वि.* {हिं. लस} {*स्त्री.* लसीली} जिसमें लस हो, लसदार; सुंदर, मनोहर।

उदा. पारस खाड़ी के प्रबल अतिलाल लसीले —**रत्ना.**।

लसोड़ा *पुं.* छोटा पेड़ जिसमें बेर के समान गोल फल औषधों में प्रयक्त होते हैं।

लस्टम-पस्टम *क्रि. वि.* {देश.} किसी तरह से, जैसे-तैसे, शुद्धि का अभाव।

लस्त *वि.* {हिं. लटना} शिथिल।

लस्त-पस्त *वि.* = बहुत शिथिल।

लस्सी *स्त्री.* {सं. लप्सिका} छाछ, मठा, तक्र; एक आधुनिक पेय जो दही घोलकर बनाया जाता है; लसी।

लहँगा *पुं.* {हिं. लंक = कमर + अंगा} पश्चिमी भारत की स्त्रियों का एक घेरदार पहनावा; इस आकार का वह कपड़ा जो स्त्रियाँ महीन साड़ी के नीचे पहनती हैं, साया।

लहक *स्त्री.* लहकने की क्रिया का भाव, चमक, आग की लपट, छवि, शोभा।

लहकना *अ.* {अनु.} {*भाव.* लहक} रह-रहकर हिलना, लहराना; कुछ तेजी से चलना; विशेषत: वायु का; (आग) सुलगना; लपकना।

लहकौर *स्त्री.* {?} ललकार; विवाह के समय गाए जानेवाले व्यंग्यात्मक गीत; वे औपचारिक खेल जो वर और वधू को कोहबर में खेलाए जाते हैं।

लहनदार *पुं.* {हिं. लहना + फा. दार (प्रत्य.)} जो किसी से अपना प्राप्य धन या दिया हुआ ऋण लेने का अधिकारी हो।

लहन *पुं.* कंजा नाम की झाड़ी।

लहना *पुं.* {सं. लभन} उधार दिया हुआ या बाकी रुपया जो मिलने को हो।

लहबर *पुं.* {हिं. लहर ?} एक प्रकार का चोगा; ऊँचा लंबा झंडा।

लहर *स्त्री.* {सं. लहरी} नदी, समुद्र आदि के जल में थोड़ी-थोड़ी दूर पर रह-रहकर उठने और फिर नीचे बैठनेवाली जलराशि जो बराबर आगे बढ़ती हुई-सी जान पड़ती है, तरंग; उमंग, जोश; रोग या पीड़ा आदि का रह-रहकर होनेवाला वेग, जैसे साँप काटने की लहर; आनंद की उमंग, मौज; टेढ़ी-तिरछी चाल या रेखा।

लहरना *अ.* {हिं. लहर} लहरों के रूप में या लहरों से युक्त होना, लहराना।

लहर-पटोर *पुं.* {हिं. लहर + पट} पुरानी चाल का एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा।

लहर-बहर *स्त्री.* {हिं. लहर + अनु. बहर} सब प्रकार की प्रसन्नता, संपन्नता और सुख।

लहरा *पुं.* {हिं. लहर} लहर, तरंग; मौज, आनंद; नाच या गाना आरंभ होने से पहले सारंगी, तबले आदि साजों पर बजनेवाली गत।

लहरिया *पुं.* {हिं. लहर} लहर की तरह टेढ़ी लकीरों की श्रेणी; एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

लहरी *स्त्री.* {सं.} लहर, तरंग; ऊँचे-नीचे स्वरों की किसी दिशा में होनेवाली वह गति जो कंठ या वैद्युतिक प्रक्रियाओं से उत्पन्न होकर कानों तक पहुँचती है (वेव)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लहल पुं. एक प्रकार का राग।

लहलहाना अ. {अनु.} हरी पत्तियों से युक्त या हरा-भरा होना; प्रफुल्लित या प्रसन्न होना।

लहसुन पुं. {सं. लशुन} एक पौधा जिसकी जड़ मसाले के काम में आती है।

लहसुनिया पुं. {हिं. लहसुन} एक प्रकार का रत्न; वि. तीव्र गतिवाला; चंचल, चपल।

लहाना स. {सं. लसन, हिं. लहना} ऐसे ढंग से बात कहना कि अभिप्राय सिद्ध हो जाए।

लहालोट वि. {हिं. लाह + लोटना} हँसी में लोटता हुआ; बहुत मोहित।

लहास स्त्री. {हिं. लाश} मृत शरीर, शव।

लहासी स्त्री. {सं. रज्जु, पुं. हिं. लाव} नाव खींचने या बाँधने की मोटी रस्सी।

लहि अव्य. पर्यंत, तक।

लहुरा वि. {सं. लघु} {स्त्री. लहुरी, लहुरिया} अवस्था, पद आदि के विचार से छोटा।

लहू पुं. {सं. लोह} रक्त, खून।

पद लहू का प्यासा = बहुत बड़ा शत्रु।

लहू-लुहान वि. {हिं. लहू + अनु. लुहान} चोट आदि के कारण जिसका सारा शरीर लहू से भर गया हो।

लहेरा पुं. सदाबहार वृक्ष, लाह की चूड़ी बनाकर बेचनेवाला।

लाँग स्त्री. {सं. लांगूल} धोती का वह भाग जो पीछे खोंसा जाता है, काछ।

लांगल पुं. खेत जोतने का हल, ताल का वृक्ष, फूल।

लांगलि पुं. मजीठ, गजपीपल, केवाँच।

लांगली पुं. बलराम, नारियल।

लांगूली पुं. बंदर, केवाँच।

लाँघ स्त्री. {सं. लंघन} बाधा, रुकावट।

लाँघना स. {सं. लंघन} इस पार से उस पार जाना; ऊपर से डाँकना।

लाँच स्त्री. {देश.} रिश्वत, घूस।

लांछन पुं. {सं.} चिह्न, निशान; दाग, धब्बा; दोष, ऐब।

लांछित वि. {सं.} जिसे लांछन या कलंक लगा हो, कलंकित।

लाँझ स्त्री. {सं. लंघन ?} विघ्न, बाधा।

लाँबा वि. = लंबा।

लाइ[1] स्त्री. {सं. अलात = लुक} अग्नि, आग।

लाइ[2] स्त्री. {हिं. लाना = लगाना} लगने या लगाने की क्रिया या भाव; प्रेम की लगन, लगावट।

उदा. लगा-लगी करि लोइननु, उर मैं लाई लाइ—**बिहारी**।

लाइन स्त्री. {अं.} पंक्ति, कतार; सतर; रेखा, लकीर; रेल की सड़क; छावनी आदि में घरों की वह पंक्ति जिसमें सिपाही रहते हैं, बैरिक।

लाइसेंस पुं. {अं.} कोई कार्य करने की सरकारी आज्ञा।

लाइसेंसधारी पुं. {अं. + हिं.} जिसे लाइसेंस प्राप्त हो।

लाई स्त्री. {सं. लाजा} धान का लावा।

लाई-लुतरी स्त्री. चुगली; चुगलखोर (स्त्री)।

लाकेट पुं. {अं.} लटकन जो घड़ी की या और किसी प्रकार की पहनने की जंजीर में शोभा के लिए लगाया जाता है।

लाक्षणिक वि. {सं.} लक्षण-संबंधी; जिससे लक्षण प्रकट हो; लक्षण के रूप में होनेवाला (काम); जो केवल प्रतीक, प्रतिनिधि या संकेत के रूप में हो, प्रतीकी (सिम्बलिक)।

लाक्षा स्त्री. {सं.} लाख, लाह।

लाक्षागृह पुं. {सं.} लाख का वह घर जो दुर्योधन ने पांडवों को जला डालने के लिए बनवाया था।

लाख[1] वि. {सं. लक्ष} सौ-हजार; बहुत अधिक; क्रि. वि. बहुत, अधिक।

लाख[2] स्त्री. {सं. लाक्षा} एक प्रसिद्ध लाल पदार्थ जिसे कुछ विशिष्ट वृक्षों की टहनियों पर लाल रंग के कुछ छोटे कीड़े बनाते हैं, लाह।

लाखना स. {हिं. लाख} लाख लगाकर बरतनों का छेद बंद करना; लाख से बना हुआ घोल मिट्टी के बरतन पर लगाना।

लाखा पुं. {हिं. लाख} लाख से बनाया हुआ एक प्रकार का रंग जो स्त्रियाँ होठों पर लगाती हैं।

लाखिराज वि. {अ.} (जमीन) जिस का खिराज या लगान न देना पड़े, माफी।

लाखी वि. {हिं. लाख + ई (प्रत्य.)} लाख के रंग का; लाख का बना हुआ; पुं. लाख के रंग का घोड़ा।

लाखों वि. {हिं. लाख} कई लाख; बहुत अधिक, जैसे लाखों आदमियों की भीड़।

लाग स्त्री. {हिं. लगना} संपर्क, संबंध, लगाव; प्रेम, प्रीति; लगन, लौ; वह स्वाँग जिसमें कोई ऐन्द्रजालिक कौशल हो; वह नियत धन जो मंगल कार्यों के समय ब्राह्मणों, भाटों आदि को दिया जाता है; मुठभेड़; लागडाँट।

लागडाँट स्त्री. {हिं. लाग + डाँट} शत्रुता, वैर, दुश्मनी; प्रतियोगिता, चढ़ा-ऊपरी।

लागत स्त्री. {हिं. लगना} किसी चीज की तैयारी या बनाने में होने या लगनेवाला व्यय (कॉस्ट); लग्गत।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chen eGangotri

लागि' *क्रि. वि.* {हिं. लगना} कारण, हेतु, वास्ते, लिए; द्वारा, से।

लागि² *स्त्री.* {हिं. लग्गी} लंबी लकड़ी, लग्गी।

लागूडिक *पुं., वि.* पहरेदार, लाठीवाला।

लागू *वि.* {हिं. लगना} जो कहीं लग सके या प्रयुक्त हो सके, लगाए जाने के योग्य; जो कहीं प्रयुक्त किया या लगाया गया हो (एम्प्लायड); जो कहीं लगाया जा सकता हो या लगाया जाने को हो (एप्लिकेबुल)।

लागे *अव्य.* वास्ते, लिए।

लाघव *पुं.* {सं.} लघु का भाव, लघुता, छोटापन; कमी, न्यूनता; वर्णन में, थोड़े शब्दों में अधिक भाव प्रकट करना, कथन संक्षिप्त रखकर भी अधिक बातें प्रकट करने का भाव (ब्रेविटी); कोई काम करने में हाथ की सफाई, हस्तकौशल; फुरती, तेजी।

लाचार *वि.* {फा.} {*भाव.* लाचारी} जिसका कुछ वश न चले, विवश, मजबूर; जो शारीरिक असमर्थता के कारण कुछ कर न सकता हो, असमर्थ।

लाचारी *स्त्री.* {फा.} लाचार होने की अवस्था या भाव, विवशता।

लाची *पुं.* {हिं. इलायची ?} एक प्रकार का धान या उसका चावल।

लाछन *पुं.* लांछन।

लाछी *स्त्री.* = लक्ष्मी।

लाज *स्त्री.* {सं. लज्जा} लज्जा, शरम; मान-सम्मान, प्रतिष्ठा।

लाजना *अ.* {हिं. लाज} लज्जित होना।

उदा. कल जान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजही—**तुलसी**।

स. लज्जित करना।

उदा. तौ लाजौं गंगा जननी कौं सान्तनुसुत न कहाऊँ—**सूर**।

लाजबान *स्त्री.* {*अ.* ला + फा. ज़बान} कुवाच्य, गाली।

लाजवर्द *पुं.* {फा. मि. सं. राजावर्त} एक प्रकार का रत्न।

लाजवर्दी *वि.* {फा.} लाजवर्द के रंग का, हल्का नीला; *पुं.* हल्का नीला रंग।

लाजवर्णी *स्त्री.* फुंसी जो मकड़ी के मूतने से निकल जाती है।

लाजवाब *वि.* {फा.} अनुपम, बेजोड़।

लाजा *स्त्री.* {सं.} लावा (धान आदि का)।

लाजिम *वि.* {*अ.* लाज़िम} आवश्यक; अनिवार्य; उचित, मुनासिब।

लाजिमी *वि.* = लाजिम।

लाट *स्त्री.* {हिं. लट्ठा} मोटा, ऊँचा और बहुत बड़ा खम्भा; इस आकार की कोई इमारत या बनावट।

लाटपत्र *पुं.* दारचीनी।

लाटरी *स्त्री.* {अं. लॉटरी} वह योजना जिसमें लोगों को गोटी या गोली उठाकर, उनके भाग्य के अनुसार, धन बाँटा या कोई बहुमूल्य चीज दी जाती है।

लाटानुप्रास *पुं.* {सं.} साहित्य में एक शब्दालंकार जिसमें शब्दों, पदों, वाक्यों आदि की द्विरुक्ति होने पर भी किसी एक अक्षर या शब्द के बदलने से ही आशय या तात्पर्य बदल जाता है, जैसे पूत सपूत तो क्यों धन संचय, पूत कपूत तो क्यों धन संचय—*कहा.*।

लाटी *स्त्री.* {सं. लाला = लार} गला सूखने के कारण होंठों पर जमनेवाली पपड़ी; मुँह के अंदर की लार या लसी।

लाठी *स्त्री.* {सं. यष्टि} बड़ा डंडा।

मुहा. लाठी चलना = लाठियों से मारपीट होना।

लाठी-चार्ज *पुं.* {हिं. लाठी + अं. चार्ज} भीड़ आदि हटाने के लिए पुलिस आदि का लोगों पर लाठियाँ चलाना।

लाड, लाड़ *पुं.* {सं. लड्-लाड्यति} बच्चों के साथ किया जानेवाला प्रेमपूर्ण व्यवहार, दुलार।

लाडला *वि.* {हिं. लाड़} {*स्त्री.* लाडली} जिससे लाड़ किया जाए, दुलारा।

लात *स्त्री.* {*अ.* लत्त} पैर, पाँव; पैर से किया जानेवाला आघात।

मुहा. लात खाना = पैरों का आघात सहना, बेइज्जती सहना; *लात मारना* = तुच्छ समझकर दूर हटाना या छोड़ देना।

लाद *स्त्री.* {हिं. लादना} लादने की क्रिया या भाव, लदाई; पेट; आँत।

लाथ *पुं.* बहाना।

लादना *स.* {सं. लर्दयति} किसी के ऊपर बहुत सी चीजें रखना या भरना; देन आदि का भार रखना।

लादिया *पुं.* {हिं. लादना} वह जो एक स्थान से माल लादकर दूसरे स्थान पर ले जाता या पहुँचाता हो।

लाध *पुं.* {सं. लाभ} प्राप्ति।

लाधना *पुं.* {सं. लब्ध} प्राप्त करना, पाना।

लानंग *पुं.* अंगूर की किस्म।

लानत *स्त्री.* {*अ.* लअनत} धिक्कार।

लाना' *स.* {हिं. लेना + आना} कहीं से कुछ लेकर आना; उपस्थित करना, सामने रखना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाना² *स.* {हिं. लाय = आगा} आग लगाना, जलाना।

लाने *क्रि. वि.* {हिं. लाना} वास्ते, लिए।

लाप *पुं.* = आलाप या संलाप।

लापता *वि.* {*अ.* ला = बिना + हिं. पता} जिसका पता न लगे या न हो।

लापरवाह *वि.* {*अ.* ला + फा. परवाह} {*भाव.* लापरवाही} जिसे किसी बात की परवाह या चिंता न हो, बेफिक्र; असावधान।

लाबी *स्त्री.* {अं. लॉबी} विधायिका सभाओं आदि में वह बाहरी कमरा जिसमें उसके सदस्य बैठकर आपस में बातचीत करते और बाहरी लोगों से मिलते-जुलते हैं।

लाभ *पुं.* {सं.} हाथ में आना, मिलना, प्राप्ति; व्यापार आदि में होनेवाला मुनाफा, नफा (प्रॉफिट); किसी प्रकार प्राप्त होनेवाला कोई सुख या सुभीता या होनेवाली कोई भलाई, उपकार (बेनिफिट)।

लाभकर *वि.* {सं.} लाभकारी; जिससे या जिसमें आर्थिक लाभ अथवा बचत हो (इकॉनामिक)।

लाभदायक *पुं.* {सं.} जिससे किसी प्रकार का लाभ हो, लाभकारी; आर्थिक दृष्टि से जिससे कुछ लाभ या बचत हो, फायदेमन्द (प्रॉफिटेबुल)।

लाभांश *पुं.* {सं.} किसी व्यापार से होनेवाले आर्थिक लाभ का वह अंश जो उस व्यापार में रुपए लगानेवाले सब हिस्सेदारों को उनके हिस्से के अनुसार मिलता है (डिविडेंड)।

लाभान्वित *वि.* {सं.} जिसे लाभ प्राप्त हुआ हो।

लाभार्थी *वि.* {सं. लाभ + अर्थिन} वह जो किसी प्रकार का लाभ करना चाहता हो; वह जिसे किसी वसतु से लाभ होने को हो।

लाभालाभ *पुं.* {सं.} लाभ और हानि (प्रॉफिट एण्ड लॉस)।

लाम *पुं.* {फा. लार्म} सेना, फौज; बहुत से लोगों का साथ मिलकर चलना या जाना; भीड़, समूह।

लामज *पुं.* खस की तरह की घास।

लामा *पुं.* {तिब्बती} तिब्बत के बौद्धों का धर्माचार्य।

लामी *पुं.* लम्बा फल जिसकी तरकारी बनती है।

लाय *स्त्री.* {सं. अलात} आग, अग्नि; आग की लपट, ज्वाला, लौ।

लायक *वि.* {*अ.* लाइक़} {*भाव.* लायकी} उचित, ठीक, वाजिब; उपयुक्त, मुनासिब; सुयोग्य, गुणवान; समर्थ, सामर्थ्यवान।

लायचा *पुं.* {?} एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

उदा. ललित लायचा तहियाई च्यौली पंजाबी —रत्ना.।

लार¹ *स्त्री.* {सं. लाला} मुँह से निकलनेवाली पतली लसदार थूक; लासा, लुआब।

लार² *स्त्री.* {?} पंक्ति, कतार।

लारी *स्त्री.* {अं. लॉरी} वह लम्बी मोटरगाड़ी जिसपर बहुत से आदमियों के बैठने और माल लादने की जगह होती है।

लारू *पुं.* {सं.} लड्डू।

लाल¹ *पुं.* {सं. लालक} बेटा, पुत्र; प्यारा लड़का या आदमी; किसी प्रिय व्यक्ति के लिए सम्बोधन।

लाल² *पुं.* {फा. लाल} मानिक (रत्न); *वि.* रक्तवर्ण का; बहुत क्रुद्ध।

मुहा. *लाल होना* = बहुत अधिक धन पाकर सम्पन्न होना।

कम्युनिज्म के सिद्धांत मानने और उनका पालन करनेवाला, कम्युनिस्ट, जैसे लाल चीन = आजकल का चीन देश जो कम्युनिस्टों के हाथ में है।

लाल³ *पुं.* {?} एक प्रकार की छोटी सुन्दर चिड़िया जो प्रायः घरों में पाली जाती है, रायमुनी।

लालअगिन *पुं.* एक पक्षी।

लालक *वि.* प्यार करनेवाला।

लाल कुरती *स्त्री.* {हिं. लाल + कुरती} भारत की पश्चिमोत्तर सीमा के खुदाई खिदमतगारों की वर्दी और दल का सूचक नाम (रेडशर्ट)।

लाल कोठी *स्त्री.* {हिं. लाल + कोठी} व्यभिचारिणी स्त्रियों का अड्डा जहाँ पहुँचकर वे कसब कमाती हैं।

लाल चंदन *पुं.* वह चन्दन जिसे घिसने से लाल रंग का सार निकलता है, रक्तचन्दन, देवी चन्दन।

लालच *पुं.* {सं. लालसा, *वि.* लालची} कुछ पाने की बहुत अधिक और अनुचित इच्छा, लोभ।

लालची *वि.* {हिं. लालच} जिसे बहुत अधिक लालच हो, लोभी।

लालटेन *स्त्री.* {अं. लैन्टर्न} प्रकाश का वह आधार जिसमें तेल और बत्ती रहती है और जिसके चारों ओर गोल शीशा लगा रहता है, कंदील।

लालन *पुं.* {सं. *वि.* लालनीय} प्रेमपूर्वक बालकों को प्रसन्न करना, लाड़।

लालना *स.* {सं. लालन} दुलार या लाड़ करना।

लाल पानी *पुं.* मद्य, शराब।

लाल फीताशाही *स्त्री.* सरकारी कार्यों के सम्पादन, निर्णय आदि में लगनेवाली वह देर जो तरह-तरह की पेचीली और प्रायः निरर्थक प्रक्रियाओं के कारण होती है, दीर्घसूत्रता (रेड टेप)।

लाल बुझक्कड़ *पुं.* {हिं लाल + बूझना} बातों का अटकल-पच्चू और मूर्खतापूर्ण मतलब लगाने या अनुमान करनेवाला व्यक्ति।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation C[illegible] and eGangotri

लालमूली *स्त्री.* शलजम।
लालसर *पुं.* एक पक्षी।
लालसिरा *स्त्री.* बत्तख जिसका सिर लाल होता है।
लालवार *स्त्री.* लालूवार (तलवार)।
लालस *वि.* {सं. लालसा} ललचाया हुआ, लोलुप।
लालसा *स्त्री.* {सं.} कुछ पाने की बहुत अधिक इच्छा या चाह, लिप्सा।
लालसी *वि.* {सं. लालसा} लालसा या इच्छा करनेवाला।
लाल सेना *स्त्री.* कम्युनिस्ट सिद्धांत माननेवाली सेना जिसका झंडा लाला रंग का होता है (रेड आर्मी)।
लाला[1] *पुं.* {सं. लालक} एक प्रकार का आदरसूचक सम्बोधन, महाशय; कायस्थ जाति का वाचक शब्द; बच्चों के लिए सम्बोधन।
लाला[2] *स्त्री.* {सं.} लार, थूक।
लालायित *वि.* {सं. *स्त्री.* लालायिता} जिसे बहुत लालसा हो, लोलुप।
लालित *स्त्री.* {सं. *स्त्री.* लालिता} जिसका लालन हो, दुलारा, प्यारा; पाला-पोसा हुआ।
लालित्य *पुं.* {सं.} 'ललित' का भाव, सरसतापूर्ण सुन्दरता।
लालिमा *स्त्री.* {हिं लाल} 'लाल' होने का भाव, लाली।
लाली *स्त्री.* {हिं. लाल + ई (प्रत्य.)} लाल होने का भाव, लालपन; प्रतिष्ठा, इज्जत।
लालूवार *स्त्री.* {?} पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।
लाव[1] *स्त्री.* {सं. रज्जु?} मोटी रस्सी, विशेषत: नाव खींचने की।
उदा. फिरि-फिरि चित उतहीं रहतु, टूटी लाज की लाव।
लाव[2] *पुं.* {हिं. लाना = लगना} संबंध, लगाव; प्रेम, प्रीति; लौ, लगन।
लावक *पुं.* {सं.} लवा नाम का पक्षी।
लावण्य *पुं.* {सं.} 'लवण' का भाव या धर्म, नमकीनी; सरस सुन्दरता।
लावण्यवती *वि. स्त्री.* {सं.} रूपवती, सुन्दर।
लावन *स्त्री.* 'लावना' की क्रिया या भाव; *पुं.* = लावण्य।
लावना *स.* {हिं. लगाना} स्पर्श कराना, लगाना; जलाना।
लावनि *स्त्री.* लावण्य; सौंदर्य।
लावनी *स्त्री.* {देश.} एक प्रकार का लोकगीत हो प्राय: चंग पर गाया जाता है (यह राधिका नामक छंद में होता है)।
लावबाली *स्त्री.* {अ.} अविचार; लापरवाही, उपेक्षा; *वि.* आवारा; लापरवाह।
लाव-लश्कर *पुं.* {फा.} सेना, और उसके साथ रहनेवाले लोग तथा सामग्री।
लावसूल *वि.* {अ.} जो वसूल न हो सके।
लावा[1] *पुं.* {सं. लाजा} भूने हुए धान, ज्वार, रामदाने आदि के दाने जो फूल जाते हैं, खील, लाई।
मुहा. (किस पर) लावा मेलना = जादू टोना करके किसी को अपने वश में करना; (कहते हैं कि मन्त्र पढ़कर किसी पर धान का लावा फेंकने से वह वश में हो जाता है)।
लावा[2] *पुं.* {सं. लावक, हिं लवना} खेत की फसल काटनेवाला मजदूर, लुनने या लावनी करनेवाला, कपटा।
लावारिस *वि.* {अ.} जिसका कोई वारिस या उत्तराधिकारी न हो; (वस्तु) जिसका कोई मालिक न हो।
लावारिसी *स्त्री.* {अ.} लावारिस होने की अवस्था या भाव।
लाश *स्त्री.* {फा.} मृत शरीर, लोथ, शव।
लासक *पुं.* मोर, नाचनेवाला।
लासिका *स्त्री.* नाचनेवाली, नर्तकी।
लासा *पुं.* {हिं. लस} कोई लसदार चीज; वह लसदार पदार्थ जो बहेलिए चिड़ियाँ फँसाने के लिए उनके परों में लगाने के उद्देश्य से बनाते हैं, लोयन; किसी को जाल में फँसाने का साधन।
लास्य *पुं.* {सं.} नृत्य, नाच; शृंगार आदि कोमल रसों का उद्दीपन करनेवाला कोमल और स्त्रियों का-सा नृत्य।
लासाक *पुं.* नृत्य, नाच।
लाह[1] *पुं.* {सं. लाभ} लाभ, नफा।
लाह[2] *स्त्री.* {?} चमक, दीप्ति।
लाहल *पुं.* भूत-प्रेत की झाड़-फूँक में कहा जानेवाला शब्द।
लाहाक *वि.* {हिं. लाह = लाभ + क (प्रत्य.)} इच्छा करने या चाहनेवाला; आदर या कदर करनेवाला।
लाहु *पुं.* = लाभ।
लिंग *पुं.* {सं.} चिह्न, लक्षण, निशान; न्याय में वह लक्षण या बात जिसे देखकर कोई बात सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाता है, साधन हेतु; सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति; पुरुष की गुप्त इंद्रिय, शिश्न; शिव की इस आकार की मूर्ति; प्राणियों के शरीर में होनेवाले स्त्री या पुरुष के चिह्नों के आधार पर किया जानेवाला

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री-जाति और पुरुष-जाति का विभाग; व्याकरण में वह तत्व जिससे पुरुष और स्त्री वाची शब्दों के भेद का पता लगता है (जेन्डर, अन्तिम दोनों अर्थों के लिए) जैसे-पुल्लिंग, स्त्रीलिंग।

लिंगी *वि.* {सं. लिंगिन्} लिंग से युक्त, लिंगवाला; *स्त्री.* {हिं. 'लिंग' का *स्त्री.* अल्पा.} शिव की छोटी पिंडी या मूर्ति।

लिंगेंद्रिय *पुं.* {सं.} पुरुष की मूत्रेन्द्रिय।

लिंब *पुं.* =नींबू (फल)।

लिए, के परसर्ग/विभक्ति सम्प्रदान कारक का चिह्न जो किसी क्रिया का होना सूचित करता है, जैसे उसके लिए पानी लाओ।

लिकिन *पुं.* पुराने मटमैले रंग की बड़ी चिड़िया।

लिकुच *पुं.* बड़हर का वृक्ष।

लिक्खाड़ *पुं.* {हिं. लिखना} बहुत बड़ा लेखक (व्यंग्य)।

लिक्षा *स्त्री.* {सं.} जूँ नामक कीड़े का अंडा; एक प्रकार का बहुत छोटा परिमाण या तौल।

लिक्का *स्त्री.* जूँ का अंडा, लीख।

लिखत *स्त्री.* {हिं. लिखना} लेख के रूप में लाए जाने की अवस्था या भाव; लेख के रूप में लिखी हुई कोई बात या निश्चय; दस्तावेज, लेख।

लिखन *पुं.* लिपि, लिखावट।

लिखधार *पुं.* {हिं. लिखना} लिखनेवाला, लिपिकार।

लिखना *स.* {सं. लिखन} कलम और स्याही से अक्षरों की आकृति बनाना, लिपिबद्ध करना; चित्रित या अंकित करना, चित्र बनाना; ग्रंथ, लेख, काव्य की रचना करना; धातुओं आदि पर नक्काशी करने के लिए कलम (औजार या उपकरण) से रेखाएँ बनाना।

लिखवाई *स्त्री.* लिखाई।

लिखवाना *क्रि.वि.* लिखने का काम दूसरे से कराना।

लिखनी *स्त्री* लेखनी।

लिखहार *पुं.* {हिं. लिखना + हार = वाला (प्रत्य.)} लिखनेवाला, लेखक।

उदा. साँचौ से लिखहार कहावै–सूर।

हिसाब-किताब या लेख रखनेवाला।

लिखा *वि.* {हिं. लिखना} जिसे लिखना आता हो, जैसे पढ़ा-लिखा; *पुं.* लिखा हुआ लेख, जैसे भाग्य का लिखा; *स्त्री.* लिक्षा।

लिखाई *स्त्री.* {हिं. लिखना} लिखने का कार्य, भाव, ढंग या पारिश्रमिक; चित्र अंकित करने की क्रिया या भाव।

लिखाड़ *पुं* = लिक्खाड़।

लिखाना *स. हिं.* लिखना का प्रे.।

लिखा-पढ़ी *स्त्री.* {हिं. लिखना-पढ़ना} लिखने और पढ़ने का क़ाम; पत्रों का आना और उनके उत्तर जाना, पत्र-व्यवहार; किसी बात या व्यवहार का लिखकर निश्चित और पक्का होना।

लिखार *पुं.* लिखहार।

लिखावट *स्त्री.* {हिं. लिखना + आवट (प्रत्य.)} लिखने की क्रिया, भाव या ढंग, लेख-शैली।

लिखित *वि.* {सं.} लिखा हुआ, अंकित; जो लेख या लेख्य के रूप में हो (डॉक्युमेंटरी)।

लिखेरा *पुं.* लिखनेवाला, लेखक।

लिख्या *स्त्री.* लिक्षा।

लिच्छवि (वी) *पुं.* {सं.} नेपाल, मगध और कोसल का शासक एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवंश।

लिचेन *पुं.* घास।

लिटाना *स.* = लेटाना।

लिट्ट *पुं.* {देश., *स्त्री.* अल्पा. लिट्टी} आग पर सेंककर पकाई हुई बड़ी और मोटी रोटी।

लिट्टे *पुं.* {अं.} श्रीलंका के तमिल उग्रवादियों का संगठन।

लिपटना *अ.* {सं. लिप्त} चारों ओर से घेरते हुए सटना या लगना; गले लगना, आलिंगन करना; काम में पूरी मेहनत से लगना।

लिपटाना *स.* {हिं.} लिपटना का *स.*।

लिपना *अ.* {हिं.} लीपना का *अ.*

लिपवाना *क्रि. स.* लीपने-पोतने की क्रिया, लीपने की मजदूरी।

लिपाई *स्त्री.* {हिं. लीपना} लीपने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

लिपाना *स.* {हिं.} लीपना का प्रे.।

लिपि *स्त्री.* {सं.} अक्षरों या वर्णों के चिह्न; वर्णमाला के अक्षर लिखने की कोई विशिष्ट प्रणाली, जैसे ब्राह्मी लिपि, अरबी लिपि (कैरेक्टर, स्क्रिप्ट); लिखी हुई बात, लेख।

लिपिक *पुं.* {सं.} लिखनेवाला; कार्यालयों में लिखा-पढ़ी का काम करनेवाला, लेखक।

लिपिकार *पुं.* {सं.} प्रतिलिपि या लेख की नकल करनेवाला लेखक।

लिपिबद्ध *वि.* {सं.} लिपि के रूप में लाया हुआ, लिखा हुआ, लिखित।

लिप्त *वि.* {सं.} लिपा या पुता हुआ; कार्य में लगा हुआ, लीन।

लिप्तांग *वि.* जिसका शरीर सुगंधित द्रव्यों से लिप्त किया गया हो।

लिप्सा *स्त्री.* {सं.} पाने की इच्छा।

लिफाफा *पुं.* {अ.} कागज का वह चौकोर घर या पुट जिसके अंदर चिट्ठियाँ आदि रखी जाती हैं (एनवेलप); दिखावटी, तड़क-भड़क, आडंबर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation C and eGangotri

लिफाफेबाज *वि. पुं.* = आडंबरी।

लिफाफेबाजी *स्त्री.* = आडंबर।

लिबड़ना *अ., स* {अनु.} कीचड़ आदि में लथपथ होना या करना।

लिबड़ी बरताना *पुं.* {अं. लिबरी = वर्दी + अं. बैटन = सिपाहियों का डंडा} साधारण गृहस्थी अथवा निर्वाह का सब सामान, सारी सामग्री या असबाब (तुच्छतासूचक)।

लिबरी *वि. स्त्री.* छिनाल।

लिबास *पुं.* {अ.} पहनने के कपड़े, परिच्छद, पोशाक।

लियाकत *स्त्री.* {अ.} लायक या योग्य होने का भाव, योग्यता।

लिलाट *पुं.* ललाट।

लिल्ली घोड़ी *स्त्री.* एक बरसाती कीड़ा, ग्वालिन।

लिव *स्त्री.* {हिं. लौ} लगन।

लिवाल *पुं.* लेवाल।

लिवी *स्त्री.* लिपि, बनावट।

लिवैया *वि.* {हिं. लेना} लेने, लाने या लिवा ले जानेवाला।

लिह *पुं.* लेह।

लिसोड़ा *पुं.* मझोले आकार का वृक्ष।

लिहाज *पुं.* {अ.} व्यवहार या बर्ताव में किसी बात या व्यक्ति का आदरपूर्ण ध्यान; लज्जा, शर्म, हया।

लिहाड़ा *वि.* {हिं. लुँगाड़ा, *स्त्री.* लिहाड़ी} खराब, बुरा (पदार्थ); तुच्छ, नीच प्रकृति का और बेहूदा या वाहियात बातें बकनेवाला, वाहियात (मनुष्य)।

लिहाड़ी *स्त्री.* {हिं. लिहाड़} दूसरों के सामने किसी पर किया जानेवाला ऐसा आक्षेप जिससे उसे नीचा देखना और लज्जित होना पड़े।

मुहा. (किसी की) लिहाड़ी लेना = उक्त प्रकार की बातें करके किसी को तुच्छ ठहराना।

लिहाफ *पुं.* {अ. लिहाफ़} ओढ़ने का एक प्रकार का रुईदार कपड़ा, भारी रजाई।

लिहित *वि.* {सं. लिह} चाटता हुआ।

लीक *स्त्री.* {सं. लिख} लकीर, रेखा।

मुहा. लीक खींचना = किसी विषय में दृढ़ निश्चय या प्रतिज्ञा करना; *लीक खींचकर* = दृढ़तापूर्वक, जोर देकर; व्यवहार, आचरण आदि का स्वतन्त्र और निश्चित मार्ग, बँधी हुई मर्यादा या क्रम, लोक-नियम; *लीक लगना* = किसी के दिखलाए हुए मार्ग पर चलना, अनुकरण करना; *लीक खींचना* = मर्यादा या साख स्थापित करना; *(किसी की) लीक खँचना या खिंचना* = भली-भाँति किसी की कीर्ति फैलाना या प्रसिद्ध होना।

प्रतिष्ठा; प्रथा, चाल; सीमा, हद; कलंक, लांछन।

लीकति *स्त्री.* लीक।

उदा. धीरज मोचन लोचन लाल विलोक कै लोक की लीरकति छूटी—**केशव**।

लीक्का *स्त्री.* लिक्षा, लीख।

लीख *स्त्री.* {सं. लिक्षा} जूँ का अंडा; लिक्षा नामक बहुत छोटा परिमाण।

लीग *स्त्री.* {अं.} कुछ विशिष्ट दलों का किसी उद्देश्य से आपस में मिलना; बहुत बड़ी सभा या संस्था; लम्बाई की एक नाप जो स्थल के लिए तीन मील की और समुद्र के लिए साढ़े तीन मील की होती है।

लीगी *वि.* {अं. लीग} लीग का; *पुं.* लीग का सदस्य।

लीचड़ *वि.* {देश.} सुस्त, आलसी; निकम्मा; जल्दी पीछा न छोड़नेवाला।

लीची *स्त्री.* सदाबहार वृक्ष का फल जो खाने में मीठा होता है।

लीझी *स्त्री.* मैल-देह में मले हुए उबटन के साथ घुटी हुई।

लीथो *पुं.* {अं.} शिलाखंड पर अक्षर खोदकर छानने की कला।

लीद *स्त्री.* {देश.} घोड़े, गधे, हाथ आदि पशुओं का मल।

लीन *वि* {सं. *भाव.* लीनता} किसी में समाया हुआ; काम में पूरी तरह से लगा हुआ, तन्मय, मग्न।

लीन्हे *क्रि वि.* {पु. हिं. लीन्ह = लिया} लिए, वास्ते; फेर या चक्कर में पड़कर।

उदा. कंचन मनि तजि काँचहि सैंतत, या माया के लीन्हें—**सूर**।

लीपना *स.* {सं. लेपन} गीली वस्तु का पतला लेप चढ़ाना, पोतना।

मुहा. लीप पोतकर बराबर करना = पूरी तरह से चौपट या नष्ट करना।

लीपापोती *स्त्री.* {हिं. लीपना + पोतना} जमीन, दीवार आदि लीपने और पोतने का काम; दोष, भूल आदि छिपाने के लिए ऊपर से की जानेवाली या दिखौआ कार्रवाई; नाश, बर्बादी।

लीबर *वि.* {हिं. लिबड़ना} कीचड़ आदि से भरा या सना हुआ।

उदा. अँखियाँ लीबर बेसवै नासे, बाबै नासै दासी—**घाघ**।

लीर *स्त्री.* {सं. चीर} कपड़े की धज्जी; चिथड़ा।

लीलना *स.* निगलना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लील *वि.* नीला, नीले रंग का।
लीलम *पुं.* नीलम।
लीलया *क्रि.वि* {सं.} खेल या खिलवाड़ में; बहुत सहज में।
लीलांबर *पुं.* =नीलांबर।
लीला[1] *स्त्री.* {सं.} केवल मनोरंजन के लिए किया जानेवाला काम या व्यापार, क्रीड़ा, खेल) प्रेम का खिलवाड़, प्रेम-विनोद; साहित्य में संयोग शृंगार के अंतर्गत एक हाव जिसमें नायिका और नायक दोनों एक दूसरे के वेश, अलंकार आदि धारण करते अथवा उनकी गतिविधि, बातचीत आदि की नकल करते हैं, खिलवाड़; तोमर नामक छंद का वह प्रकार या भेद जिसमें उसके प्रत्येक चरण का अन्त जगण से होता है; किसी का किया हुआ कोई विचित्र काम; अवतारों या देवताओं के चरित्र का अभिनय।
लीला[2] *पुं.* {सं. नील} काला घोड़ा; *वि.* नीला।
लीलाभरण *पुं.* पद्म की माला से बना गहना।
लीलारविंद *पुं.* क्रीड़ा, खेल, लाल कमल।
लीलावतार *पुं.* वह अवतार जिसमें भगवान् विष्णु ने लीला दिखाई।
लीलैव *क्रि.वि.* {सं. लीला + ईव} लीला के रूप में; खिलवाड़ में; बहुत सहज रूप में।
लीह *स्त्री.* {?} पृथ्वी, जमीन।
उदा. जहाँ-जहाँ चरन धरै तरुनि, अरुन हाति सो लीह–**नन्ददास।**
लँगाड़ा *वि.* नीच, लुच्चा।
लुँगाड़ा *पुं.* =लुच्चा।
लुंगी *स्त्री.* {फा. लुंग} कमर में लपेटने का एक प्रकार का बड़ा अँगोछा, तहमद।
लुंचन *पुं.* {सं.} चुटकी से बाल उखाड़ना, नोचना, उत्पाटन।
लुंचित *वि.* {सं.} उखाड़ा या नोचा हुआ।
लुंज *वि.* {सं. लुचन} बिना हाथ-पैर का, लँगड़ा-लूला; बिना पत्तों का पेड़, ठूँठ।
लुंज-पुंज *वि.* **शारीरिक दृष्टि से पूर्णतः असमर्थ।**
लुंटाकी *स्त्री.* चोर स्त्री।
लुंठन *पुं.* {सं. *वि.* लुंठित} लुढ़कना; लूटना।
लुंठित *वि* {सं.} जो जमीन पर गिरा या लुढ़का हुआ हो; जो लूटा-खसोटा गया हो।
लुंड *वि.* **रुंड, गुंडा, बदमाश।**
लुंड-मुंड *वि.* {सं. रुंड + मुंड} जिसके सिर, हाथ, पैर आदि अंग कट गए हों; लुढ़कता हुआ।
लुंडा *वि.* {सं. रुंड} *स्त्री.* {लुंडी} जिसकी दुम और पर झड़ गए हों।
लुआठा *पुं.* {सं. लोक = काष्ठ} {*स्त्री.* अल्पा. लुआठी} जलती हुई लकड़ी।
लुआब *पुं.* {*अ.*} लासा।
लुआर *स्त्री.* लू।
लुकंजन *पुं.* लोपांजन।
लुक *पुं.* {सं. लो. = चमकना} चमकीला रोगन, वार्निश; आग की लपट, लौ, ज्वाला; छलावा।
लुकना *अ.* छिपना।
लुकाट *पुं.* {सं. लकुत्र} एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल लकुट; *पुं.* लुआठा।
लुकाना *अ.* {हिं. लुकना} लुकना-छिपना।
उदा. तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई–**तुलसी।**
स. आड़ में करना, छिपाना।
लुकार *स्त्री.* लुक।
लुखिया *स्त्री.* धूर्त स्त्री, वेश्या, रंडी।
लुगदी *स्त्री.* पिसी हुई गीली वस्तु का लोंदा।
लुगरी *स्त्री.* फटी पुरानी धोती।
लुगड़ा *पुं.* लूगा।
लुगदी *स्त्री.* {देश.} गीले चूर्ण का पिंड।
लुगाई *स्त्री.* {हिं. लोग} स्त्री, औरत।
लुग्गा *पुं.* लूगा।
लुचकना *स* = छीनना।
लुचवाना *क्रि.वि.* नोचवाना, उखड़वाना।
लुचुई *स्त्री.* लुच्ची।
लुच्चा *वि.* {हिं. लुचकना} {*स्त्री.* लुच्ची} नीच और पाजी, बदमाश।
लुच्ची[1] *स्त्री.* {हिं. रुचि या लोच ?} मैदे की बनी एक प्रकार की बहुत पतली और बड़ी पूड़ी।
लुच्ची[2] *वि., स्त्री.* {हिं.} लुच्चा का *स्त्री.* रूप।
लुटत *स्त्री* = लूट।
लुटना *अ.* {हिं.} लूटना का *अ.*; *अ.* लुठना।
लुटरना *अ.* = लुढ़कना।
लुटरा *वि.* घुँघराला।
लुटाना *स.* {हिं. लूटना का प्र.} कोई चीज इस प्रकार लोगों के सामने रखना कि वे उसे लूटें, दूसरों को लूटने देना; बहुत सस्ते दाम पर बेचना; व्यर्थ, बहुत अधिक व्यय करना, अंधाधुंध खरचना, बाँटना या दान करना।
लुटिया *स्त्री.* {हिं. लोटा} छोटा लोटा।
लुटेरा *पुं.* {हिं. लूटना} लूटनेवाला।
लुठना *अ.* {सं. लुंठन} भूमि पर गिरकर लोटना; लुढ़कना।
लुठाना *स.* {हिं.} लुठना का *स.*।
लुढ़कना *अ.* {सं. लुंठन} नीचे ऊपर चक्कर खाते हुए आगे या नीचे की ओर जाना, ढुलकना।
लुढ़काना *स.* {हिं.} लुढ़कना का *स.*।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Che d eGangotri

लुढ़का *स्त्री.* {हिं. लुढ़कना} गाढ़ी दही में छानी हुई भाँग या भंग।

लुढ़ना *अ.* लुढ़कना।

लुढ़ियाना *क्रि.वि.* गोल तुरपाई करना।

लुतरा *वि.* {फा. लुत्रः} {*स्त्री.* लुतरी} चुगलखोर; पाजी, दुष्ट।

लुतरी *वि. स्त्री.* पिशुन।

लुत्थ *स्त्री.* लोथ।

लुनना *स.* {सं. लवन} खेत से पकी फसल काटना; नष्ट करना।

लुनाई *स्त्री.* लावण्य; लवनी।

लुनेरा *पुं.* {हिं. लुनना} खेत की फसल काटने या लुननेवाला।

लुपना *अ.*= छिपना।

लुप्त *वि.* {सं.} छिपा हुआ, गुप्त; अदृश्य, गायब।

लुप्ताकार *पुं.* {सं. लुप्त + अकार} संस्कृत वर्णमाला का एक चिह्न जो आधे 'अ' (स्वर) का सूचक होता है और कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार पदों के बीच में लिखा जाता है, जैसे कोऽपि में का ऽ।

लुप्तोपम *वि.* उपमाशून्य, जिसमें उपमा का अंग लुप्त हो।

लुप्तोपमा *स्त्री.* {सं.} साहित्य में उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय, उपमान, साधारण धर्म और उपमावाचक शब्द इन चारों में से एक, दो या तीन का अभाव या लोप हो।

लुबुधना *अ., स.* = लुभाना।

लुबुधा *वि.* लोभी; लुब्ध।

लुब्ध *वि.* {सं.} पूरी तरह से लुभाया हुआ, मोहित; लोभी जैसे धनलुब्ध (धन का लोभी)।

लुब्धक *वि.* {सं.} लुब्ध करने या लुभानेवाला; धोखा देने या ठगनेवाला; *पुं.* चिड़ीमार, बहेलिया; ठग; उत्तरी गोलार्द्ध का एक बहुत चमकीला तारा।

लुभाना *अ.* {सं. लुब्ध} मोहित होना, रीझना; *स.* लुब्ध या मोहित करना, रिझाना; किसी के मन में कुछ पाने की गहरी चाह उत्पन्न करना, ललचाना।

लुभावना *वि.* {हिं. लुभाना} जिसमें लुब्ध करने की शक्ति हो; सुन्दर, दर्शनीय।

लुभित *वि.* मोहित, लुभाया हुआ।

लुभौंहाँ *वि.* {हिं. लुभाना + औहाँ (प्रत्य.)} लुभाने या मोहित करनेवाला, सुन्दर।

उदा. सब मिलि एकहि बार लुभौंहैं हगनि रिझावैं–**रत्ना.**।

लुब्ध या मोहित होनेवाला।

लुमरा *वि.* {*स्त्री.* लुमरी.} लूमर।

लुरका *पुं. स्त्री.* कान में पहनने की छोटी बाली, मुरकी।

लुरकना *अ.* = लटकना।

लुरकी *स्त्री.* बाली गहना।

लुरना *अ.* {सं. लुलन} झूलना; लटकना; ढल या झुक पड़ना; जमीन पर इधर-उधर लोटना; अचानक आ पहुँचना।

लुरिआना *क्रि.अ.* सहसा आ जाना।

लुरी *स्त्री.* लवाई; हाल की ब्याई हुई गाय।

लुलुआना *स.* {हिं. लूलू} लूलू या उल्लू (मूर्ख) बनाना।

लुहना *अ.* = लुभाना।

लुहार *पुं.* = लोहार।

लूँ *क्रि.वि.* =लौ।

लूबरी *स्त्री.* = लोमड़ी।

लू *स्त्री.* {सं. लुक या हिं. लौ} गरम और तेज हवा (ग्रीष्म ऋतु की)।

मुहा. लू *लगना* = लू लगने से ज्वर आदि होना।

लूक *स्त्री.* {सं. उल्का} आग की लपट; जलती हुई लकड़ी; टूटा हुआ तारा, उल्का; लू।

लूकट *पुं.* लूआटा।

उदा. तेहि मुख देखत लूकट लाए–**कबीर**।

लूकना *स.* {हिं. लूक} जलाना; *अ.* लुकना।

लूका *पुं.* लूक।

लूखा *वि.* =रूखा।

लूगा *पुं.* {फा. लुंग} कपड़ा, वस्त्र।

लूट *स्त्री.* {हिं. लूटना} लूटने की क्रिया या भाव; लूटने से मिला हुआ माल।

लूटक *पुं.* लुटेरा।

लूट-खसोट *स्त्री.* {हिं. लूट-खसोट} लोगों को लूटना या उनका माल छीनना।

लूटना *स.* {सं. लुट् = लूटना} किसी से जबर्दस्ती या डरा-धमकाकर उसका धन ले लेना; अनुचित रूप से ले लेना; बहुत दाम लेना, ठगना; मोहित या मुग्ध करना।

लूटपाट *स्त्री.* {हिं लूटना + अनु} लोगों को लूटने की क्रिया का भाव।

लूटमार *स्त्री.* {हिं. लूटना + मारना} लोगों को मार-पीट कर उनका धन छीनने की क्रिया का भाव।

लूता[1] *स्त्री.* {सं.} मकड़ी।

लूती[2] *पुं.* {हिं. लूका} लूका, लुआठा।

लूप *पुं.* {अं.} गर्भनिरोधक एक प्रकार का प्लास्टिक का छल्ला जिसे स्त्रियाँ धारण करती हैं।

लूम *पुं.* {सं.} पूँछ, दुम; चक्कर, फेरा।

उदा. आता लूम लेता हुआ पूर्ण घट नीचे से–**मैथिलीशरण**।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya S[illegible]undation Chennai and eGangotri

लूमना *अ.* = लटकना।

लूमर *वि.* {सं. रोम पु. हिं. लोम (रोमयुक्त)} *स्त्री.* {लूमरी} जवान, युवक।
उदा. ढीमर वह छीमर पहिरि लूमर मदन अरेर–**विक्रम**।

लूला *वि.* {सं. लून = कटा हुआ} {*स्त्री.* लूली} जिसका हाथ कटा हो, लुंजा, ठुंडा; असमर्थ, अशक्त।

लूलू *वि.* मूर्ख, बेवकूफ।

लृग्न *पुं.* फलदार वृक्ष।

लूसना *स.* {?} मटियामेट करना, चौका लगाना।
उदा. सब ग्रंथनि वै पढ़ैं, पढ़ैं, जो सो सब लूसै–**रत्ना.**।

लूह *स्त्री.* लू।

लूहर *पुं.* = लुआठा (बुन्देल.)।

लेंड़ *पुं.* बँधा हुआ मल जो बत्ती के रूप में निकलता है।

लेंड़ी *स्त्री.* {देश.} बँधे हुए मल की बत्ती; बकरी या ऊँट की मेंगनी।

लेंहड़ *पुं.* {देश.} पशुओं का झुंड या दल, गल्ला।

लेई *स्त्री.* {सं. लेही} किसी चूर्ण का गाढ़ा लसीला रूप अवलेह; लपसी; गाढ़ा उबाला हुआ मैदा जो कागज आदि चिपकाने के काम में आता है; वह गीला घोला हुआ बरी का चूना, सीमेंट या इसी प्रकार का और कोई मसाला जो ईंटों की जोड़ाई में काम आता है।

लेई-पूँजी *स्त्री.* सारी संपत्ति, सर्वस्व।

लेऊ *वि.* लेवाल।

लेख[1] *पुं.* {सं.} लिखे हुए अक्षर, लिपि; लिखावट, लिखाई; किसी विषय पर लिखकर प्रकट किए हुए विचार, मजमून; (राईटिंग, उक्त तीनों अर्थों के लिए); कोई ऐसी लिखी हुई आज्ञा या आदेश जो विधान के अनुसार किसी बड़े अधिकारी ने प्रचलित किया हो (रिट); *वि.* लिखने योग्य, लेख्य।

लेख[2] *स्त्री.* {हिं. लीक} पक्की बात।

लेखक *पुं.* {सं., *स्त्री.* लेखिका} लिखनेवाला, लिपिकार; ग्रंथ लिखनेवाला, ग्रंथकार; लिपिक।

लेखन *पुं.* {सं., *वि.* लेखनीय, लेख्य} लिखने की क्रिया या भाव (विधिक व्यवहार में मुद्रण या छापा और छाया चित्रण आदि भी इसी में आते हैं); लिखने की कला या विद्या; चित्र बनाने का काम; हिसाब लगाना, लेखा करना।

लेखकीय *वि.* {सं.} लेखक-संबंधी।

लेखन-सामग्री *स्त्री.* {सं.} कागज, कलम, स्याही आदि लिखने की सामग्री (स्टेशनरी)।

लेखनहार *वि.* = लिखनेवाला।
उदा. आपुहि कागर, आपुहि मसि, आपुहि लेखनहार–**कबीर**।

लेखना *स.* {सं. लेखन} लिखना; कुछ समझना या गिनना; समझना, सोचना, विचारना।

लेखनीय *वि.* लिखने योग्य।

लेखनी *स्त्री.* {सं.} कलम।

लेखनीवीर *पुं.* {सं.} बहुत बड़ा लिक्खाड़।

लेखा[1] *पुं.* {हिं. लिखना} गणना, हिसाब; आय-व्यय अथवा घटना आदि का विवरण (एकाउंट)।
मुहा. लेखा ड्यौढ़ा या डेवढ़ करना = हिसाब चुकता या बराबर करना; समाप्त करना, न रहने देना।
किसी कार्य, घटना आदि का हाल, विवरण, परिवृत्त; किसी के सम्बन्ध में मन में होनेवाली कल्पना या विचार।
मुहा. किसी के लेखे = किसी के विचार के अनुसार, किसी की समझ से।

लेखा[2] *स्त्री.* {सं.} हाथ की लिखावट, लेख; चित्र; रेखा; श्रेणी, पंक्ति; रश्मि, किरण।

लेखाकर्म *पुं.* {सं.} आय-व्यय आदि का हिसाब लिखने या रखने का काम (एकाउंटेंसी)।

लेखाध्यक्ष *पुं.* {सं. लेख + अध्यक्ष} वह जिसके जिम्मे रोकड़ रखने और खर्च करने अथवा आय-व्यय आदि का लेखा या हिसाब रखने का काम हो (एकाउंटेंट)।

लेखा-परीक्षक *पुं.* {हिं + सं.} वह जो किसी के आय-व्यय के लेखे की जाँच पड़ताल करता हो (ऑडिटर)।

लेखा-परीक्षा *स्त्री.* {हिं. लेखा + सं. परीक्षा} अच्छी तरह से जाँचकर यह देखना कि आय-व्यय का जो लेखा तैयार किया गया है, वह ठीक है या नहीं (ऑडिटिंग)।

लेखाबही *स्त्री.* {हिं.} वह बही जिसमें आय-व्यय आदि का हिसाब लिखा जाता है।

लेखा-विधि *स्त्री.* {सं.} हिसाब-किताब रखने की प्रणाली।

लेखिका *स्त्री.* {सं.} लिखनेवाली स्त्री; ग्रंथ या पुस्तक रचने या बनानेवाली स्त्री।

लेखित *वि.* लिखा या लिखवाया हुआ।

लेखी *स्त्री.* {हिं. लेख} खाते में लिखी जानेवाली रकम, मद (एंट्री)।

लेख्य *वि.* {सं.} लिखा जाने योग्य; जो लिखा जाने को हो; *पुं.* लिखी हुई वस्तु, पत्र या बात आदि, लेखा; वह लेख जो विधिक क्षेत्र में साध्य के रूप में काम आए या आ सके, दस्तावेज (डाक्युमेंट)।

लेख्यपत्र *पुं.* ताड़ का पत्ता, लेखपत्र, रसीद।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख्यस्थान पुं. वह स्थान जहाँ हिसाब-किताब का काम होता है।

लेज *स्त्री.* लेजर (रस्सी)।

लेजम *स्त्री.* {फा. लेज़म} वह कमान जिससे धनुष चलाने का अभ्यास करते हैं; कसरत करने की वह भारी कमान जिसमें लोहे की जंजीर लगी रहती है।

लेज़िम *स्त्री.* लेजम।

लेजुर *स्त्री.* {सं. रज्जु} कुएँ से पानी खींचने की रस्सी।

लेट[1] पुं. {देश.} चूने-सुर्खी की वह परत जो गच या छत पर डाली जाती है।

लेट[2] *वि.* {अं.} देर से आनेवाला।

लेटना *अ.* {सं. लेटयति} फर्श आदि से पीठ लगाकर सारा शरीर उस पर ठहराना; बगल की ओर झुककर जमीन पर गिर जाना।

लेटा पुं. गल्ले की मंडी।

लेटर पुं. {अं.} पत्र।

लेटरपैड पुं. {अं.} पत्रबंध।

लेटलतीफ *वि.* {अं. + फा.} देर से पहुँचने वाला।

लेटाना *स.* {हिं.} लेटना का प्रे.।

लेदी *स्त्री.* {देश.} जलाशयों के पास रहनेवाली एक प्रकार की चिड़िया।

लेन पुं. {हिं. लेना} लेने की क्रिया या भाव; वह धन जो किसी से लिया जाने का हो, लहना, पावना, देन का विरुद्धार्थक।

लेनदार पुं. {हिं. लेन + फा. दार (प्रत्य.)} जिसका कुछ धन या पावना बाकी हो, अपना प्राप्य लेनेवाला, लहनेदार।

लेन-देन पुं. {हिं. लेना + देना} लेने और देने का व्यवहार, आदान-प्रदान; बिक्री का माल या रुपए उधार देने और लेने का व्यवहार।

लेनहार *वि.* {हिं. लेना} लेनेवाला।

लेना *स.* {हिं. लहना} किसी के हाथ से अपने हाथ या अधिकार में करना, ग्रहण या प्राप्त करना; पकड़ना; मोल लेना, खरीदना; अगवानी या अभ्यर्थन करना; भार ग्रहण करना, जिम्मा लेना; सेवन करना, खाना या पीना; कुछ कहकर अपने ऊपर उसका आरोप करना, जैसे प्रतिज्ञा या पन लेना = प्रतिज्ञा पूरी करने का भार लेना। *उदा.* द्विज मुख ह्वै पन लीन्हों—सूर।

लेनिहार *वि.* {हिं. लेना + हार (प्रत्य.)} लेनेवाला; पुं. लेनदार।

लेप पुं. {सं.} लीपने, पोतने या चुपड़ने की चीज; ऐसी चीज की वह तह जो किसी वस्तु पर चढ़ाई जाए।

लेपक पुं. लेप करनेवाला।

लेपना *स.* {सं. लेपन} गाढ़ी गीली वस्तु की तह चढ़ाना, लेप लगाना।

लेपालक पुं. दत्तक।

लेबुल पुं. नाम, पता आदि का विवरण लिखा हुआ प्रेष्य सामग्रियों के ऊपर चिपकाया जानेवाला कागज का टुकड़ा।

लेलिहान पुं. {सं.} सर्प, साँप; *वि.* बार-बार चखने या चाटनेवाला; ललचाया हुआ।

लेव पुं. लेप, कहगिल।

लेवरना *क्रि.स.* ताने में माँड़ी लगाना।

लेवा[1] पुं. {सं. लेय} मिट्टी का वह लेप जो बर्तन को आग पर चढ़ाने से पहले उसकी पेंदी में लगाते हैं; लेप।

लेवा[2] *वि.* {हिं. लेना} लेनेवाला, जैसे नामलेवा।

लेरुआ (वा) पुं. गाय का बछड़ा।

लेवाल पुं. {हिं. लेना} लेने या खरीदनेवाला।

लेश पुं. {सं.} अणु; बहुत ही थोड़ा अंश; चिह्न, निशान; संसर्ग, संबंध; साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी गुण के कारण भी कोई दोष या खराबी होने का अथवा किसी दोष के कारण भी कोई अच्छी बात या भलाई होने का उल्लेख होता है।

लेश्या *स्त्री.* आलोक, दीप्ति, चमक।

लेस *स्त्री.* {हिं. लेसना} लेसने की क्रिया या भाव; लासा; *वि.* = लेश (बहुत थोड़ा)।

लेसना[1] *स.* {सं. लेश्य} प्रज्वलित करना, जलाना जैसे दीया लेसना।

लेसना[2] *स.* {सं. लेस} लेप लगाना, पोतना; चिपकाना, सटाना।

लेह पुं. {सं., *वि.* लेह्य} चाटकर खाई जानेवाली चीज, चटनी।

लेहन पुं. {सं. लेटक} चखने या चाटने या भाव।

लेह्य *वि.* {सं.} जो चाटा जाता हो, चाटने के योग्य, जैसे चटनी आदि।

लैंगिक *वि.* {सं.} लिंग-संबंधी, लिंग का; स्त्री या पुरुष के लिंग या जननेन्द्रिय से संबंध रखनेवाला, योनि संबंधी (सेक्सुअल)।

लैंगिकता *स्त्री.* {सं.} यौनाचार।

लै *क्रि.वि.* {हिं. लगना} तक, पर्यन्त।

लैटिन *स्त्री.* {प्राचीन रोम नगर संबंधी} दो ढाई हजार वर्ष पूर्व की रोम नगर और इटली देश की भाषा; *वि.* प्राचीन रोम नगर के निवासियों, भाषा आदि से संबंध रखनेवाला।

लैर *क्रि वि.* {?} संग, साथ; पीछे; पुं. संगति, साथ; पिछला भाग।

लैरू पुं. {?} बछड़ा, बच्चा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Foundation Chennai and eGangotri

लैला *स्त्री.* {फा.} लैला-मजनूँ की प्रेमकहानी की नायिका; प्रेयसी, सुन्दरी।

लैस[1] *वि.* {अ. लेस} हथियारों आदि से सजा हुआ; सब तरह से तैयार।

लैस[2] *पुं.* {अं.} कपड़े लगाने का सुनहला फीता।

लैस[3] *पुं.* {देश.} एक प्रकार का तीर।

लों *अव्य.* तक।

लोंदा *पुं.* {सं. लुंठन} {*स्त्री.* अल्पा. लोंदी} गीले पदार्थ का डले की तरह बँधा हुआ पिंड; गलाई हुई धातु की अवस्था या आकृति जो उसे गलने के बाद ठंडा होने के लिए छोड़ने पर प्राप्त होती है।

लो *अव्य.* इसका प्रयोग श्रोता का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए होता है।

लोइ[1] *पुं.* {सं. लोक} लोग।

लोइ[2] *स्त्री.* {सं. रोचि} प्रभा, दीप्ति; लौ।

लोइन[1] *पुं.* {सं. लोचन} आँख; नेत्र।

लोइन[2] *पुं.* {सं. लावण्य} मधुर सौंदर्य, लावण्य।

लोइन[3] *स्त्री.* {सं. लावक} लावा नामक पक्षी।

लोई[1] *स्त्री.* {सं. लोप्ती} गुँधे हुए आटे का पेड़ा जिसे बेलकर रोटी बनाई जाती है।

लोई[2] *स्त्री.* {सं. लोमीय} एक प्रकार की ऊनी चादर।

लोई[3] *पुं.* {सं. लोक} जनसमुदाय, लोग।

उदा. माया मोह बँधे सब लोई—**कबीर**।

लोकंजन *पुं.* 'लोपांजन'।

लोकंदा *पुं.* {*स्त्री.* लोकंदी} वह दास जो विवाह हो चुकने पर वधू के डोले के साथ उसकी ससुराल को भेजा जाता है।

लोक *पुं.* {सं.} ऐसा स्थान जिसका बोध प्राणी को हो अथवा जिसकी उसने कल्पना की हो, जैसे इहलोक, परलोक; पृथ्वी के ऊपर-नीचे के कुछ विशिष्ट कल्पित स्थान, भुवन, विशेष 'भुवन'; संसार, जगत्; लोग, जन; सारा समाज, जनता (पब्लिक); *वि.* सब लोगों से संबंध रखनेवाला, यौ. के आरम्भ में, जैसे-लोक स्वास्थ्य।

लोककंटक *पुं.* {सं.} ऐसी बात जिससे जनसाधारण को कष्ट पहुँचे, जैसे सड़क पर धुआँ करना या कूड़े का ढेर लगाना (पब्लिक नुएसेंस)।

लोकगाथा *स्त्री.* {सं.} जनसाधारण विशेषतः ग्राम्य लोगों में प्रचलित गाथाएँ या कहानियाँ।

लोकगीत *पुं.* {सं.} गाँव या देहातों में गाए जानेवाले जनसाधारण के वे गीत जो परम्परागत रूप से किसी जनसमाज में प्रचलित रहते हैं (फोक सांग)।

लोकजीवन *पुं.* {सं.} किसी व्यक्ति के निजी या घरेलू जीवन से भिन्न वह जीवन जिसमें वह सार्वजनिक संस्थाओं में रहकर या यों ही लोकोपकारक कार्य करता हो, सार्वजनिक जीवन (पब्लिक लाइफ)।

लोकटी *स्त्री.* = लोमड़ी।

लोकतंत्र *पुं.* {सं.} {*वि.* लोकतंत्री} वह शासन-प्रणाली जिसमें प्रमुख सत्ता लोक या जनता अथवा उसके चुने हुए प्रतिनिधियों या अधिकारियों के हाथ में होती है और जिसकी नीति आदि निर्धारित करने का सब लोगों को समान रूप से अधिकार होता है; यह सिद्धांत कि सार्वजनिक कार्य सब लोगों अथवा सबके प्रतिनिधियों की सम्मति से होने चाहिए।

लोकतंत्रवादी (दिन्) *वि.* {सं.} लोकतन्त्र संबंधी; *पुं.* लोकतन्त्र का पक्षधर।

लोकतंत्री *पुं.* {सं. लोकतांत्रिक} वह जो लोकतन्त्र का सिद्धांत मानता हो, जनवादी (डिमोक्रैट); *वि.* 'लोकतांत्रिक'।

लोकतांत्रिक *वि.* {सं. लोकतंत्र} लोकतंत्र-संबंधी, लोकतन्त्र का, जनवादी (डिमोक्रेटिक); *पुं.* वह जो लोकतन्त्र का सिद्धांत मानता हो।

लोकधुनि *स्त्री.* जनश्रुति।

लोकना *स.* {सं. लोपन} ऊपर से गिरती हुई चीज हाथों में रोकना; बीच में से ही उड़ा या ले लेना।

लोकाकाश *पुं.* शून्य स्थान, आकाश।

लोकनृत्य *पुं.* {सं.} गाँवों, देहातों में नाचे जानेवाले नाच (फोक डांस)।

लोकपति *पुं.* {सं.} ब्रह्मा; लोकपाल; राजा।

लोकपद *पुं.* {सं.} लोक या जनता की सेवा से संबंध रखनेवाला पद (पब्लिक ऑफिस)।

लोकप्रिय *वि.* {सं.} {*भाव.* लोकप्रियता} जिससे सब लोग प्रेम करते हों; जो सब या बहुत से लोगों को अच्छा लगता या भला जान पड़ता हो।

लोकप्रियता *स्त्री.* {सं.} लोकप्रिय होने की अवस्था या भाव (पॉपुलैरिटी)।

लोकभावना *स्त्री.* {सं.} लोक या जनसाधारण की सेवा, उपकार आदि करने की भावना, वृत्ति या विचार (पब्लिक स्पिरिट)।

लोकमत *पुं.* {सं.} किसी विषय में लोक या जनता की राय, समाज के बहुत से लोगों का ऐसा मत जो किसी एक वर्ग या दल के लिए नहीं बल्कि समष्टि के हित या विचार का सूचक हो, जनमत (पब्लिक ओपीनियन)।

लोकमान्य *वि.* {सं.} जिसे जनता ने स्वीकार किया हो।

लोकमान्यता *स्त्री.* {सं.} जनता द्वारा दी हुई स्वीकृति।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक-लीक *स्त्री.* {हिं. लोक + लीक} लोकमर्यादा।

लोकवंदनीय *वि.* {सं.} समाज जिसकी वन्दना करता हो।

लोकवार्ता *स्त्री.* {सं.} इतिहास, पुरातत्व आदि के अध्ययन का वह अंग जिसमें पुरानी प्रथाओं, धारणाओं, विश्वासों आदि से संबंध रखनेवाली और लोक या जनसाधारण में प्रचलित बातों का विचार या विवेचन होता है (फोकलोर)।

लोकवास्तु *पुं.* {सं.} राज्य आदि का वह विभाग जो लोक कल्याण या उपयोग के लिए सड़कें, कुएँ, नहरें आदि बनाता है (पब्लिक वर्क्स)।

लोकशांति *स्त्री.* {सं.} लोक या जनसाधारण अथवा समाज में बनी रहनेवाली ऐसी शान्ति, जिसमें किसी प्रकार का उपद्रव, उत्पात या लड़ाई-झगड़ा न हो (पब्लिक पीस)।

लोकसंग्रह *पुं.* {सं. *वि.* लोकसंग्रही} संसार के लोगों को प्रसन्न रखना; सबकी भलाई, लोकोपकार; लोगों को अपनी ओर मिलाना या अपने पक्ष में करना।

लोकसभा *स्त्री.* {सं.} प्रतिनिधि-सत्तात्मक राज्यों में साधारण जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह सभा जो विधान आदि बनाती है; भारतीय संविधान में उक्त प्रकार की सभा (हाउस ऑफ पीपुल); इंग्लैंड की उक्त प्रकार की सभा (हाउस ऑफ कामन्स)।

लोकसेवक *पुं.* {सं.} वह जो जनता के हित के काम या सेवा के लिए नियत हो (पब्लिक सर्वेंट)।

लोकसेवा *स्त्री.* {सं.} जनसाधारण के लिए किए जानेवाले कार्य; राज्य की सेवा या नौकरी, जो वस्तुतः जनसाधारण के लिए होती है।

लोकसेवा आयोग *पुं.* {सं.} राज्य द्वारा नियुक्त कुछ व्यक्तियों का वह आयोग या समिति जिसके जिम्मे लोक सेवा संबंधी पदों पर नियुक्त करने के लिए प्रार्थियों में से उपयुक्त व्यक्ति चुनने का काम होता है।

लोकसेवी *वि.* जनता की सेवा-संबंधी; *पुं.* लोकसेवक।

लोकस्वास्थ्य *पुं.* {सं.} सामूहिक रूप से सब लोगों के स्वस्थ और नीरोग रहने की अवस्था या व्यवस्था (पब्लिक हेल्थ)।

लोकाचार *पुं.* {सं.} जनता में प्रचलित व्यवहार, लोक व्यवहार।

लोकातिग *वि.* अद्‌भुत, असामान्य।

लोकादि *पुं.* संसार के सृष्टिकर्ता ब्रह्मा।

लोकाना[1] *क्रि.* {सं.} उछालना, फेंकना।

लोकाना[2] *स. हिं.* 'लोकना' का प्रे.।

लोकानुराग *पुं.* संसार का प्रेम।

लोकाभ्युदय *पुं.* जनता की उन्नति।

लोकापवाद *पुं.* {सं.} लोगों में होनेवाली बदनामी, लोकनिंदा।

लोकायत *पुं.* {सं.} चारवाक का चलाया हुआ एक प्राचीन दर्शन जिसमें आत्मा, ईश्वर, परलोक आदि का अस्तित्व नहीं माना जाता था और सब बातों के निर्णय का आधार विशुद्ध बुद्धिवाद माना जाता था; उक्त दर्शन या मत का अनुयायी, लोकायत्तिक।

लोकार्पण *पुं.* {सं.} जनता या राष्ट्र को समर्पित करने की क्रिया या भाव।

लोकालोक *पुं.* {सं. लोक + आलोक} ब्रह्मांड में फैले हुए अनन्त लोक।

लोकावेक्षण *पुं.* संसार की भलाई चाहना।

लोकेश (श्वर) *पुं.* {सं.} सब लोगों का स्वामी, ईश्वर।

लोकोक्ति *स्त्री.* {सं.} लोक में प्रचलित कोई ऐसा चमत्कारपूर्ण वाक्य जिसमें कोई अनुभव या तथ्य की बात सुन्दर ढंग से संक्षेप में कही गई हो, कहावत, मसल (प्रॉवर्ब, मैक्सिम); साहित्य में एक अलंकार जिसमें कहावत के द्वारा कुछ चमत्कार लाया जाता है।

लोकोत्तर *वि.* {सं.} {*भाव.* लोकोत्तरता} ऐसा अद्‌भुत जैसा इस संसार में न होता हो, अलौकिक।

लोकोपयोगी (गिन्) *वि.* {सं.} जनता के लिए उपयोगी।

लोग *पुं. बहु.* {सं. लोक} आसपास के सब आदमी, जनसमूह।

लोगाई *स्त्री.* लुगाई, स्त्री।

लोच[1] *स्त्री.* {हिं. लचक} लचक; कोमलतापूर्ण सौंदर्य।

लोच[2] *स्त्री.* {सं. रुचि} अभिलाषा।

लोचक *पुं.* मांस-पिंड, आँख की पुतली, केला, केंचुली।

लोचन *पुं.* {सं.} आँख, नयन।

लोचना[1] *स.* {हिं. लोचन} प्रकाशित करना, चमकाना; किसी बात की रुचि उत्पन्न करना; इच्छा या कामना करना, चाहना; विचार करना।

लोचना[2] *अ.* शोभा देना; इच्छा या कामना करना; ललचना, तरसाना।

उदा. लोचन उतावरे हैं लौचें हाय कैसे हो —घनानन्द।

लोचशिर *पुं.* अजमोदा।

लोट *स्त्री.* {हिं. लोटना} लोटने की क्रिया या भाव; स्त्रियों के पेट पर पड़नेवाले तीन बल (सुन्दरता के सूचक); त्रिबली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदा. कीजै कहा विधि की विध कौं कियो दारुन लोट पटा करिबै कौं–**पद्माकर।**

लोटन¹ *वि.* {हिं. लोटना} लोटनेवाला; इधर-उधर लुढ़कनेवाला।

लोटन² *स्त्री.* लोटने की क्रिया या भाव; छोटी कंकड़ियाँ जो हवा चलने पर इधर-उधर लुढ़कती रहती हैं; कँटीली झाड़ी; *पुं.* एक प्रकार का कबूतर जो जमीन पर लुढ़का देने से लोटने लगता है; साँप।

लोटपटा *पुं.* विवाह में वर-वधू का पट्टा, पीढ़ा या स्थान बदलने की रीति, उलट-फेर।

लोटक-पोट *वि.* लोट-पेट।

लोटना *अ.* {सं. लुंठन} चित्त और पट होते हुए इधर-उधर करना।

मुहा. *लोट जाना* = बेसुध होकर पड़ना लेट जाना; मर जाना।

लुढ़कना; कष्ट से करवटें बदलना, तड़पना; लेटना; मुग्ध होना।

लोट-पोट *स्त्री.* {हिं. लोटना} लेटने या आराम करने की क्रिया या भाव; *वि.* हँसी या प्रसन्नता के कारण लेट जानेवाला; बहुत अधिक प्रसन्न; उलटा-पुलटा हुआ, विपर्यस्त; छिन्न-भिन्न किया हुआ।

लोटा *पुं.* {हिं. लोटना} {*स्त्री.* अल्पा. लुटिया} पानी रखने का धातु का एक प्रसिद्ध गोल पात्र।

लोड़न *पुं.* इधर-उधर हिलना।

लोड़ना *स.* {हिं. = आवश्यकता} आवश्यकता होना, जरूरत होना।

लोढ़ना *स.* {सं. लुंचन} फूल चुनना या तोड़ना; ओटना।

लोढ़ा *पुं.* {सं. लोष्ठ} {*स्त्री.* अल्पा. लोढ़िया} सिल के साथ पत्थर का वह टुकड़ा जिससे चीजें पीसते हैं, बट्टा।

लोढ़िया *स्त्री.* छोटा लोढ़ा।

लोत *पुं.* चोरी का धन, आँसू।

लोत्र *पुं.* नेत्रजल, आँसू।

लोथ *स्त्री.* {सं. लोत्र (शरीर), प्रा. लोत्त} मृत शरीर, लाश, शव।

लोथड़ा *पुं.* {हिं. लोथ} मांस का कटा हुआ टुकड़ा, मांसपिंड।

लोदी *पुं.* भारत के एक मुसलमान राजवंश का नाम।

लोध *पुं.* {सं. लोध्र} एक वृक्ष।

लोन *पुं.* लवण (नमक); *वि.* सलोना।

लोन-हरामी *वि.* नमक-हरामी।

लोना¹ *वि.* {*स्त्री.* लोनी} {*भाव.* लोनाई} सलोना; *पुं.* नोना।

लोना² *स्त्री.* {देश.} एक चमाइन जो जादू-टोने में बहुत दक्ष मानी गई है।

लोना³ *स.* {सं. लवण} फसल काटना; लुनना।

लोनाई *स्त्री.* लावण्य; *वि.* {सं. लावण्य} सुन्दर।

उदा. गरबाहीं दिए झूलत-फूलत मुकता भरननि लोनिया बागैं–**आनन्दघन।**

लोनिया *पुं.* = नोनिया (जाति); *पुं.* अमलोनी (वनस्पति)।

लोप *पुं.* {सं.} {*भाव.* लोपन, *वि.* लुप्त, लोप्य} नाश, क्षय; गायब होना, अन्तर्ध्यान; व्याकरण में वह नियम जिसके अनुसार शब्द-साधन में कोई वर्ण निकाल या छोड़ देते हैं।

लोपना *स.* {सं. लोपन} लुप्त या गायब करना; छिपाना; न रहने देना, नष्ट करना, मिटाना।

उदा. भले-बुरे गुरुजन बचन लोपत कबहूँ न धीर–**वृन्द।**

अ. लुप्त होना; नष्ट होना।

लोपांजन *पुं.* {सं.} एक कल्पित अंजन; यह कहा जाता है कि इसे लगाने से आदमी दूसरों को दिखाई नहीं देता।

लोपापाक *पुं.* शृगाल, सियार।

लोपापिका *स्त्री.* शृगाली।

लोपामुद्रा *स्त्री.* अगस्त्य मुनि की पत्नी।

लोबान *पुं.* {*अ.*} एक प्रकार का सुगन्धित गोंद जो जलाने और दवा के काम में आता है, लोहबान।

लोभ *पुं.* {सं.} *वि.* लुब्ध, लोभी} दूसरे के पास की कोई वस्तु प्राप्त करने की कामना, लालच, लिप्सा।

लोभना *स.* {हिं. लोभ} मोहित करना; *अ.* मोहित होना।

लोभनीय *वि.* {सं. लोभ} जिसपर लोभ हो सके; सुन्दर, मनोहर।

लोभार *वि.* {हिं. लोभ} लुभानेवाला।

लोभी *वि.* {सं. लोभिन्} जिसे बहुत लोभ हो, लालची।

लोम¹ *पुं.* {सं.} रोआँ; बाल।

लोम² *पुं.* {सं. लोमश} लोमड़ी।

लोमड़ी *स्त्री.* {सं. लोमश} गीदड़ की तरह का एक प्रसिद्ध जंगली छोटा पशु।

लोमवड़ *स्त्री.* =लोमड़ी।

लोमहर्षण *वि.* {सं.} (ऐसा भीषण) जिसे देखकर रोएँ खड़े हो जाएँ, भयानक।

लोमाश *पुं.* गीदड़।

लोय¹ *पुं.* {सं. लोक} लोग।

लोय² *स्त्री.* {हि. लौ} आग की लपट, लौ।

लोय³ *पुं.* {सं. लोचन} आँख, नयन; *क्रि. वि.* लौं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation ... and eGangotri

लोयना पुं. {सं. लोचन} आँख, नेत्र; पुं. चिड़िया फँसाने का लासा।

लोर *वि.* {सं. लोल} चंचल, लोल; उत्सुक; पुं. कान का कुंडल; लटकन; आँसू।
उदा. झपसि पैसल हो लछमन तैना पोछे लोरवा–गीत।

लोरना *अ.* {सं. लोल} चंचल होना; लपकना; लिपटना; झुकना; लोटना।

लोरा पुं. {?} आँसू, अश्रु।

लोरी *स्त्री.* {सं. लाल} वह गीत जो स्त्रियाँ छोटे बच्चों को सुलाने के लिए गाती हैं (ललबी)।

लोल *वि.* {सं.} हिलता हुआ; बदलता हुआ; उत्सुक; पुं. पानी की बहुत बड़ी और ऊँची लहर, विशेषत: समुद्र की।

लोलक पुं. {सं.} नथों, बालियों आदि में लटकन, कान की लौ।

लोलन पुं. {सं.} हिलने या हिलाने-डुलाने की क्रिया या भाव।

लोलना *अ.* = हिलना।

लोला *वि.* = मूर्ख; *स्त्री.* जीभ, लक्ष्मी, चंचला स्त्री।

लोलाक्षिका *स्त्री.* चंचल आँखोंवाली स्त्री।

लोलार्क पुं. एक सूर्य।

लोलित *वि.* शिथिल, ढीला, कंपित।

लोलिनी *स्त्री.* चंचल प्रकृति की स्त्री।

लोलुप *वि.* {सं.} लोभी, लालची; परम उत्सुक।

लोवा *स्त्री.* = लोमड़ी; पुं. = लवा (पक्षी)।

लोस पुं. लोकसभा का संक्षिप्त रूप।

लोष्ठ पुं. {सं.} पत्थर; ढेला।

लोहँड़ा पुं. {हिं. लोहा + भाँडा} {*स्त्री.* अल्पा. लोहँड़ी} लोहे का बना हुआ एक प्रकार का तसला।

लोह पुं. {सं.} लोहा (धातु)।

लोहचूर्ण पुं. {हिं. लोहा + चूर} लोहे का चूरा या बुरादा।

लोहबान पुं. लोबान; पुं {हिं. लोहा} युद्ध, समर।

लोहसार पुं. {हिं. लोहा + सार} फौलाद।

लोहाँगी *स्त्री.* {हिं. लोहा} वह डण्डा जिसके सिरे पर आघात करने के लिए मुठिया के आकार का मोटा लोहा जड़ा रहता है, परिघ।

लोहा पुं. {सं. लौह} काले रंग की एक प्रसिद्ध धातु जिससे बर्तन, हथियार, यंत्र आदि बनते हैं।
कहा. *लोहा गहना* = युद्ध के लिए हथियार उठाना; *लोहा बजना* = युद्ध होना; *(किसी का) लोहा मानना* = किसी विषय में किसी का प्रभुत्व या अधिकार मानना; *लोहा मानना* = युद्ध करना; किसी प्रकार की लड़ाई लड़ना।

लोहाना *क्रि. अ.* लोहे के पात्र में (खाद्य-पदार्थ रखने से उसका (लोहे का) रंग या स्वाद आ जाना।

लोहार पुं. {सं. लोहकार} {*स्त्री.* लोहारिन, लोहाइन, *भाव.* लोहारी} लोहे की चीजें बनानेवाली एक प्रसिद्ध जाति (आयरन स्मिथ)।

लोहारी *स्त्री.* लोहार का काम।

लोहिका *स्त्री.* लोहे का पात्र।

लोहितांग पुं. मंगल ग्रह।

लोहितानन पुं. {*वि.*} लाल मुखवाला, नेवला।

लोहितायस पुं. ताँबा।

लोहितोद पुं. एक नरक का नाम।

लोहित्या *स्त्री.* एक अप्सरा।

लोहिया पुं. बनियों की एक जाति, लोहे की बनी हुई गोली।

लोही *स्त्री.* {सं. लोहित} उषाकाल या प्रभात के समय की लाली।

लोहू पुं. लहू।

लौं *क्रि. वि.* {हिं. लग} तक, पर्यंत; समान, तुल्य, बराबर।

लौंग पुं. {सं. लवंग} एक झाड़ की कली जो सुखाकर मसाले और दवा के काम लाई जाती है; इस आकार का नाक या कान में पहनने का एक गहना।

लौंग-चूरी पुं. {हिं. लौंग + चूरी} एक प्रकार का धान और उसका चावल।

लौंगिया मिर्च *स्त्री.* बहुत कड़वी मिर्च।

लौंडा पुं. {?} बालक, लड़का।

लौंडी *स्त्री.* {हिं. लौंड़ा} दासी।

लौंद पुं. मलमास, अधिमास।

लौ *स्त्री.* {हिं. लपट} आग की ज्वाला; दीपक की शिखा, टेम।

लौ *स्त्री.* {हिं. लाग} मन की सच्ची लगन।

लौकना *अ.* {हिं. लो} दिखाई पड़ना; चमकना।

लौका *स्त्री.* {हिं. लौकना} बिजली।

लौकायतिक पुं. {सं.} वह जो चार्वाक के लोकायत मत का अनुयायी हो; *वि.* लोकयात-संबंधी, लोकयात का।

लौकिक *वि.* {सं.} इस लोक या संसार से संबंध रखनेवाला, पारमार्थिक या आध्यात्मिक आदि से भिन्न, सांसारिक, ऐहिक (सेक्यूलर); व्यावहारिक।

लौकिक विवाह पुं. {सं.} वह विवाह जो ऐसे वर या वधू में होता है जो किसी धर्म या संप्रदाय का बंधन नहीं मानते और केवल विधि द्वारा निश्चित नियमों के अनुसार विवाह-बंधन में बँधते हैं (सिविल मैरिज)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौकी *स्त्री.* कद्दू।
लौज *पुं.* {फा.} बादाम, बादामवाली बरफी।
लौ-जोरा *पुं.* {हिं. लौ + जोड़ना} धातु की चीजें जोड़ने या बनानेवाला।
लौट *स्त्री.* लौटने की क्रिया।
लौटना *अ.* {हिं. उलटना} {*भाव.* लौट} कहीं जाकर वहाँ से आना, वापस आना, पलटना; पीछे की ओर घूमना; *स.* पलटना, उलटना।
लौट-फेर *पुं.* उलट-फेर; पट्टा बदलना।
लौटाना *स.* {हिं. लौटना} हिं. 'लौटना' का *स.*; नियत या उचित से अधिक लिया हुआ धन देनेवाले को वापस करना (रिफंड); उलटना।
लौड़ा *पुं.* {देश} पुरुष का लिंग।
लौन *पुं.* = नमक।
लौना *वि.* सलोना; *स.* लुनना।
लौनी *स्त्री.* {?} बछिया (गौ की)।
लौल्य *पुं.* चंचलता।
लौह *पुं.* {सं.} लोहा; *वि.* लोहे का बना हुआ, जैसे लौहपुरुष; लोहे से संबंध रखनेवाला, जैसे लौहयुग।
लौहटोप *पुं.* लोहे का टोप।
लौहपट *पुं.* {सं.} लोहे का बना हुआ परदा या आवरण; ऐसी व्यवस्था या रुकावट जिसकी आड़ में होनेवाली बातें या कार्य दूसरों पर किसी प्रकार प्रकट न हो सकें, ऐसा आवरण जो अंदर का कुछ भी देखने या जानने न दे (आयरन कर्टेन)।
लौहयुग *पुं.* {सं.} संस्कृति के इतिहास में वह युग जब अस्त्र-शस्त्र, औजार आदि लोहे के ही बनते थे।
लौहित *पुं.* शिवजी का त्रिशूल।
लौहित्य *पुं.* {सं.} लाल सागर; ब्रह्मपुत्र; *वि.* लोहे का; लाल रंग का।
लौहेय *पुं.* लोहे का बना हुआ हल।
ल्याना (वना) *स.* = लाना।
ल्यौ *स्त्री.* लौ, ध्यान।
ल्वारि *स्त्री.* लू।
ल्हेसना *अ. स.* लसना।
ल्हेसित *वि.* {सं. लसन} सजने या शोभा देनेवाला, सुशोभित।
उदा. लखति लाल की ओर लाज लेहसित नैंननि सौं—**रत्ना.**।

व

व नागरी और संस्कृत वर्णमाला का उनत्तीसवाँ व्यंजन वर्ण जो अंतस्थ अर्द्धव्यंजन माना गया है। योजक के रूप में यह और का अर्थ देता हो।
वंक *वि.* {सं.} {*भाव.* वंकता} टेढ़ा।
वंकनाली *स्त्री.* सुषुम्ना नाड़ी।
वंकिम *वि.* {सं.} टेढ़ा, वक्र।
वंग *पुं.* {सं.} {*वि.* वंगीय} बंगाल प्रदेश; राँगा (धातु); राँगे का भस्म (वैद्यक)।
वंगन *पुं.* बैंगन।
वंगाली *स्त्री.* रागिनी।
वंगीय *वि.* {सं.} वंग देश से संबंध रखनेवाला, बंगाल का, जैसे वंगीय साहित्य परिषद।
वंचक *वि.* {सं.} {*भाव.* वंचकता} धूर्त; ठग।
वंचकता *स्त्री.* {सं.} ठगपना, ठगी।
वंचन *पुं.* {सं.} धोखा, छल; धोखा देना, ठगना; किसी की प्राप्य या भोग्य वस्तु उसे प्राप्त करने या भोगने से रहित करना (प्राइवेशन, डिप्राइवेशन)।
वंचना[1] *स्त्री.* {सं.} {*वि.* वंचित} धोखा, छल।
वंचना[2] *स.* {सं. वंचन; ठगना; धोखा देना।
वंचना[3] *स.* {सं. वाचन} पढ़ना (लेख आदि)।
वंचनीय *वि.* ठगने योग्य।
वंचित *वि.* {सं.} जो ठगा गया हो; अलग किया हुआ; जिसे कोई वस्तु प्राप्त न हुई हो या न करने दी गई हो, जैसे सुख से वंचित (डिप्राइव्ड); हीन, रहित।
वंजुल *पुं.* {सं.} बेंत; अशोक का पेड़; एक प्रकार का पक्षी।
वंदन *पुं.* {सं.} स्तुति; प्रणाम; शरीर पर बनाए हुए तिलक आदि चिह्न; सिंदूर।
उदा. बूका, वंदन, अगर, कुमकुमा भरै गुलालन झोरी है—**आनन्दघन**।
वंदनमाला *स्त्री.* बंदनवार।
वंदना[1] *स्त्री.* {सं.} {*वि.* वंदित, वंदनीय, वंद्य} स्तुति; प्रणाम, अभिवादन।
वंदना[2] *स.* {सं. वंदन} वंदना या स्तुति करना।
वंदनीय *वि.* {सं.} जिसकी वंदना करना उचित हो, वंदना करने योग्य।
वंदारु *वि.* {सं.} वंदना करनेवाला।
वंदित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* वंदिता} जिसकी वंदना की गई हो; पूज्य।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chen[illegible] eGangotri

वंदी पुं. {सं. वंदिन्} वह जो पकड़कर कैद किया गया हो, कैदी; वह जिसे दंडस्वरूप कारागार में रखा गया हो, कैदी (प्रिज़नर)।

वंदीगृह पुं. {सं.} कारागार, कैदखाना।

वंदीजन पुं. {सं.} राजाओं की कीर्ति का वर्णन करनेवाली एक जाति, चारण।

वंद्य *वि.* {सं.} {*भाव.* वंद्यता} वंदनीय।

वंध्य *वि.* निष्फल, अनूत्पादक।

वंध्या *स्त्री.* वह स्त्री या गाय जिसके बच्चा न होता हो।

वंश पुं. {सं.} बाँस; पीठ की हड्डी, रीढ़; नाक की हड्डी, बाँसा; बाँसुरी; परिवार, खानदान।

वंशज पुं. {सं.} किसी के वंश में उत्पन्न, संतान, औलाद (डिसेंडेंट)।

वंशधर पुं. वंशज।

वंश-परंपरा *स्त्री.* {सं.} किसी वंश की बराबर चलती रहनेवाली परंपरा या क्रम।

वंशवृक्ष पुं. {सं.} वह लेख जो किसी वंश के मूल पुरुष से लेकर उसके परवर्ती विकास और उस वंश में होनेवाले सब लोगों के स्थान आदि सूचित करता है (प्रायः वृक्ष और उसकी शाखाओं के रूप में अंकित होता है)।

वंशाग्र पुं. बाँस का कल्ला।

वंशानुक्रम पुं. {सं.} {*वि.* वंशानुक्रमिक} किसी वंश में बराबर चलता रहनेवाला क्रम या परंपरा।

वंशानुक्रमण पुं. {सं.} किसी एक वंश में निरंतर चलता रहनेवाला क्रम, वंश-परंपरा।

वंशानुक्रमिक *वि.* {सं.} वंश में पीढ़ी-दर-पीढ़ी बराबर चलते रहनेवाला, आनुवंशिक (हेरीडेटरी)।

वंशावली *स्त्री.* {सं.} किसी वंश के लोगों की कालक्रम से बनी हुई सूची (जीनिएलॉजी)।

वंशी *स्त्री.* {सं.} मुँह से बजाया जानेवाले एक प्रसिद्ध बाजा, बाँसुरी, मुरली।

वंशीधर पुं. {सं.} श्रीकृष्ण।

वक पुं. {सं.} बगला (पक्षी)।

वकालत *स्त्री.* {*अ.*} दूत का काम; किसी का पक्ष पुष्ट करने के लिए उसके अनुकूल बातचीत करना; वकील का काम या पेशा।

वकालतनामा पुं. {*अ.* वकालत + फा. नामः} वह अधिकारपत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी ओर से न्यायालय में मुकदमा लड़ने के लिए नियत करता है।

वकासुर पुं. दैत्य जो पूतना का भाई और कंस का अनुचर था।

वकी *स्त्री.* {सं.} पूतना राक्षसी का एक अन्य नाम।

वकील पुं. {*अ.*} दूत; राजदूत, एलची; प्रतिनिधि; दूसरे के पक्ष का समर्थन करनेवाला; वह जिसने वकालत की परीक्षा पास की हो और जो अदालतों में किसी की ओर से बहस करे।

वकुल पुं. अगस्त का फूल, मौलसिरी।

वक्त पुं. {*अ.*} समय, काल; अवसर, मौका; अवकाश, फुरसत।

वक्तव्य पुं. {सं.} किसी विषय में कही हुई कोई बात; विशेषतः ऐसी बात जो किसी विषय को स्पष्ट करने के लिए हो (स्टेटमेंट); *वि.* कहने के योग्य।

वक्तव्यता *स्त्री.* {सं.} किसी बात के संबंध में वक्तव्य या उत्तर देने का भार, उत्तरदायित्व।

वक्ता पुं. {सं. वक्तृ} बोलनेवाला; भाषण करनेवाला; कथा कहनेवाला, व्यास।

वक्तृता *स्त्री.* {सं.} वाकपटुता; भाषण देने की योग्यता या शक्ति; व्याख्यान, भाषण।

वक्तृत्व पुं. {सं.} वक्तृता देने की योग्यता या शक्ति, वाग्मिता।

वक्तृत्व-कला *स्त्री.* {सं.} कोई बात बहुत अच्छी तरह समझाकर और प्रभावशाली ढंग से कहने या बहुत अच्छे ढंग से भाषण करने या वक्तृता देने की कला या विद्या (इलोक्यूशन)।

वक्त्र पुं. मुख, काम का आरंभ, दाँत, छंद।

वक्त्री *स्त्री.* स्त्री-वक्ता।

वक्फ पुं. {*अ.*} धर्मार्थ दान की हुई संपत्ति; किसी के लिए कोई चीज छोड़ देना।

वक्फनामा पुं. {*अ.*} लोव्य पत्र, पट्टा।

वक्र *वि.* {सं.} {*भाव.* वक्रता} टेढ़ा, तिरछा; झुका हुआ; कुटिल।

वक्रदृष्टि *स्त्री.* {सं.} टेढ़ी दृष्टि (प्रायः रोष या क्रोध की सूचक)।

वक्रांग पुं. हंस, सर्प, टेढ़ा अंग।

वक्रोक्ति *स्त्री.* {सं. वक्र + उक्ति} परिहास, व्यंग्य आदि के लिए कही हुई ऐसी बात जिसमें श्लिष्ट शब्दों का प्रयोग हुआ हो; साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी सुनी हुई बात का कुछ दूसरा ही अर्थ लगाया जाता है (जिसमें शब्दों को तोड़-मरोड़कर अथवा वर्णों को इधर-उधर लगाकर दूसरा अर्थ लगाया जाए उसे "शब्द-वक्रोक्ति" और जिसमें ऐसा न करके केवल श्लेष के द्वारा दूसरा अर्थ लगाया जाए, उसे 'अर्थ-वक्रोक्ति' या 'श्लेष- वक्रोक्ति' कहते हैं)।

वक्षःस्थल पुं. {सं.} छाती।

वक्ष पुं. {सं. वक्षस्} छाती।

वक्षोज, वक्षोरुह पुं. {सं.} स्तन, कुच।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वगैरह *क्रि. वि.* {अ. वगैर:} इत्यादि, आदि।
वच *पुं.* शुक. तोता, सूर्य, वचन।
वचन *पुं.* {सं.} मनुष्य के मुँह से निकलनेवाले सार्थक शब्द, वाणी; कथन, उक्ति; किसी से दृढ़ता या प्रतिज्ञापूर्वक यह कहना कि हम अमुक काम अवश्य करेंगे अथवा कभी न करें, वादा (प्रॉमिस, अंडरटेकिंग); व्याकरण में वह विधान जिसके द्वारा शब्द के रूप से एक या अनेक का बोध होता है (नंबर) हिन्दी में दो वचन हैं—एकवचन और बहुवचन); *क्रि. प्र.* देना, लेना।
वचनबद्ध *वि.* {सं.} वचन से बँधा हुआ, जिसने वचन दिया हो।
वचनबद्धता *स्त्री.* {सं.} अपने वचन से बँधे रहने की अवस्था या भाव।
वचनामृत *पुं.* {सं.} अमृत के समान वचन।
वचनीय *वि.* कहने योग्य, निंदनीय।
वचनीयता *स्त्री.* लोकापवाद।
वचर *पुं.* कुक्कुट, मुर्गा।
वचस्कर *वि.* वचनानुसार काम करनेवाला।
वजन *पुं.* {अ. वज़्न} {वि. वजनी} भारीपन, गुरुत्व; भार का मान, तौल; भार, बोझ (वेट); मान-मर्यादा, गौरव; वह विशेषता जिसके कारण चित्र का एक अंग दूसरे से न्यून या विषम हो जाए (चित्रकला)।
वजह *स्त्री.* {अ. वज्ह} कारण, हेतु।
वजा *स्त्री.* {अ. वज़्अ} रचना या बनावट का प्रकार या ढंग; सज-धज; प्रथा, रीति, प्रणाली; धन या और कुछ देते समय उसमें से कुछ काट लेना या कम करना, मुजरा, मिनहा।
वजादार *वि.* {अ. वज़्अ + फा. दार} जिसकी बनावट या ढंग बहुत सुंदर हो।
वजीफा *पुं.* {अ. वज़ीफ:} विद्वानों, छात्रों आदि को दी जानेवाली आर्थिक सहायता, वृत्ति; जप या पाठ (मुसल.)।
वजीफाधारी *पुं.* {अ. + हिं.} वह जिसे वजीफा मिलता हो।
वजीर *पुं.* {अ. वज़ीर} मंत्री।
वजीरी *स्त्री.* {अ. वज़ीर} वजीर का भाव, पद या कार्यकाल; *पुं.* घोड़ों की एक जाति।
वजू *पुं.* {अ. वज़ू} मुसलमानों में, नमाज पढ़ने से पहले हाथ-पैर और मुँह धोने का पानी।
वजूद *पुं.* {अ.} अस्तित्व, मौजूदगी।
पद बावजूद = इतना होने पर भी।
वज्र *पुं.* {सं.} इंद्र का प्रधान शस्त्र, कुलिश, पवि; आकाश में बिजली चमकने और बादल गरजने के बाद का वह विद्युत्प्रवाह जो आकाश से चलकर पृथ्वी पर कहीं आ गिरता और बहुत घातक सिद्ध होता है, विद्युत, बिजली (लाइटनिंग); हीरा; भाला, बरछा; *वि.* बहुत कड़ा और दृढ़ जैसे वज्र लेप; बहुत बड़ा या भीषण, विकट, जैसे वज्र मूर्ख।
वज्रा *स्त्री.* {सं.} थूहर, दुर्गा।
वज्राकार *पुं.* वज्र का रूप।
वज्राघात *पुं.* आकस्मिक दुर्घटना।
वज्राभ *वि.* हीरे के समान चमकवाला।
वज्रधर *वि., पुं.* = वज्रधारक।
वज्रधारक *वि.* {सं.} जो अपने पास वज्र रखे, वज्रधारण करनेवाला; *पुं.* एक विशेष प्रकार की धातु का टुकड़ा या छोटा यंत्र जो ऊँची इमारतों आदि पर उन्हें वज्रपात से बचाने और आकाश से गिरनेवाली बिजली को खींचकर जमीन के अंदर ले जाने के लिए लगाया जाता है (लाइटनिंग अरेस्टर)।
वज्रपाणि *पुं.* {सं.} इंद्र।
वज्रपात *पुं.* {सं.} आकाश में बिजली चमकने और बादल गरजने के बाद बिजली का आकार पृथ्वी पर कहीं गिरना जो बहुत नाशक और घातक होता है; सहसा होनेवाला कोई बहुत बड़ा अनर्थ या अनिष्ट।
वज्रयान *पुं.* {सं.} प्राचीन बौद्धों का वह संप्रदाय या शाखा जिसमें यंत्र, मंत्र और तांत्रिक प्रयोगों का विशेष रूप से प्रचलन था।
वज्रलेप *पुं.* {सं.} एक प्रकार का मसाला जिसके प्रयोग से दीवार, मूर्ति आदि या उनके जोड़ मजबूत हो जाते हैं।
वज्राग्नि *स्त्री.* {सं.} आकाश से गिरनेवाली बिजली या उससे उत्पन्न होनेवाली आग।
वज्रोली *स्त्री.* {हिं. वज्र} हठयोग की एक मुद्रा।
वट *पुं.* {सं.} बरगद (पेड़)।
वटक *पुं.* {सं.} बड़ी टिकिया या गोली, बट्टी।
वटिका, वटी *स्त्री.* {सं.} छोटी गोली या टिकिया।
वटु, वटुक *पुं.* {सं.} बालक, लड़का; ब्रह्मचारी; एक भैरव (देवता)।
वड़ा *स्त्री.* वटक, बड़ा।
वणिक् *पुं.* {सं.} व्यापारी; वैश्य, बनिया।
वतन *पुं.* {अ.} जन्मभूमि।
वतायन *पुं.* झरोखा, वातायन।
वत् *वि.* {सं.} समान, तुल्य।
वत्स *पुं.* {सं.} गौ का बच्चा, बछड़ा; बालक, लड़का।
वत्सनाभ *पुं.* {सं.} बछनाग नामक विष, मीठा जहर।
वत्सर *पुं.* {सं.} वर्ष, साल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वत्सल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* वत्सला, *भाव.* वत्सलता} संतान के प्रेम से भरा हुआ. छोटों से अत्यंत स्नेह और उनपर कृपा रखनेवाला; *पुं.* साहित्य में (पीछे से बढ़ाया हुआ) दसवाँ रस जिसमें माता-पिता का संतान के प्रति प्रेम दिखाया जाता है।

वदन *पुं.* {सं.} मुख, मुँह; बात कहना, बोलना।

वदनरोग *पुं.* मुख का रोग।

वदान्य *वि.* {सं.} {*भाव.* वदान्यता} बहुत बड़ा दानी; मधुरभाषी।

वदि *पुं.* {सं. अवदिन्} कृष्णपक्ष (चंद्रमास का), जैसे माघ वदि दूज।

वदुसाना *स.* {सं. विदूषण} दोष या कलंक लगाना; *अ.* भला-बुरा कहना।

वध *पुं.* {सं.} {*वि.* वधक, वध्य} किसी मनुष्य या पशु को जान-बूझकर किसी उद्देश्य से मार डालना।

वधास्त्र *पुं.* इंद्र का वज्र।

वधाह *वि.* वध करने योग्य।

वधुटी *स्त्री.* अविवाहिता कन्या।

वधक *पुं.* {सं.} वध करनेवाला; व्याध, शिकारी।

वधशाला *स्त्री.* {सं.} बूचड़खाना।

वधिक *पुं.* {सं.} वधक; वह जो प्राणदंड पानेवालों का वध करता है, फाँसी चढ़ानेवाला।

वधू *स्त्री.* {सं.} नई ब्याही हुई स्त्री, दुलहन; पत्नी, भार्या; पुत्र की बहू।

वधूवेशिनी *स्त्री.* {सं.} वह जिसने वधू का वेश धारण किया हो।

वधूटी *स्त्री.* वधू, पुत्रवधू, पतोहू, भार्या, पत्नी।

वन *पुं.* {सं.} जंगल; बगीचा, बाग; जल; घर; दशनामी साधुओं में से एक वर्ग की उपाधि।

वनचर, वनचारी (चारिन्) *वि.* {सं.} वन में घूमने या रहनेवाला।

वनजंतु *पुं.* {सं.} वन का जंतु।

वनज *पुं.* {सं.} वन (जंगल या पानी) में उत्पन्न होनेवाला पदार्थ; कमल।

वनद *पुं.* {सं. वन = जल + द (प्रत्य.)} मेघ।

वन-महोत्सव *पुं.* {सं.} स्वतंत्र भारत में सरकार की ओर से चलाया हुआ वन और वृक्ष आदि लगाने का कार्यक्रम।

वनमाला *स्त्री.* {सं.} जंगली फूलों की माला।

वनमाली (मालिन्) *पुं.* {सं.} श्रीकृष्ण।

वनरुह *पुं.* {सं.} कमल।

वनरोपण *पुं.* {सं.} किसी बड़े भूभाग में वन तैयार करने के उद्देश्य से बहुत से वृक्ष लगाना (फारेस्टेशन)।

वनलक्ष्मी *स्त्री.* {सं.} वन की शोभा।

वनवास *पुं.* {सं.} वन या जंगल में रहना; बस्ती छोड़कर जंगल में रहने का विधान या दंड।

वनस्थली *स्त्री.* {सं.} सुंदर जंगली स्थान, वनभूमि।

वनस्पति *स्त्री.* {सं.} पेड़-पौधे।

वनस्पति घी *पुं.* {सं. वनस्पति + हिं. घी} बिनौले, मूँगफली, नारियल आदि का साफ किया हुआ तेल।

वनस्पतिज्ञ *पुं.* {सं.} वनस्पतियों का विशेषज्ञ।

वनस्पति विज्ञान *पुं.* {सं.} वह शास्त्र जिसमें पेड़, पौधों की जातियों, अंगों आदि का विवेचन होता है।

वनाखु *पुं.* शशक, खरहा।

वनाग्नि *स्त्री.* वन में स्वतः लगनेवाली आग, दावानल।

वनिता *स्त्री.* {सं.} औरत, स्त्री।

वन्य *वि.* {सं.} वन में उत्पन्न होनेवाला, वनोद्भव; जंगली।

वपन *पुं.* {सं.} {*वि.* वपित} बीज बोना।

वपु *पुं.* {सं. वपुस्} शरीर, देह।

वपुमान *पुं.* {सं. वपुष्मान} सुंदर और हृष्ट-पुष्ट शरीरवाला।

वबाल *पुं.* {*अ.*} बोझ, भार; विपत्ति, आफत, झंझट।

वमन *पुं.* {सं.} {*वि.* वमित} कै करना, उलटी करना; वमन या कै किया हुआ तरल पदार्थ।

वमि *स्त्री.* {सं.} वमन का रोग।

वयःसंधि *स्त्री.* {सं.} बाल्यावस्था और युवावस्था के बीच का समय।

वय *स्त्री.* {सं. वयस्} अवस्था, उम्र (एज)।

वयन *पुं.* {सं.} बुनने का काम, बुनाई।

वयस *पुं.* {सं. वयस्} बीता हुआ जीवनकाल, अवस्था, उम्र।

वयस्क *वि.* {सं.} {*स्त्री.* वयस्का} उमर या अवस्थावाला (यौ. में, जैसे अल्पवयस्क); पूरी अवस्था को पहुँचा हुआ, बालिग; *पुं.* विवाह के योग्य युवक या युवती; वह युवक या युवती जिसने निर्वाचन में मत देने की अवस्था प्राप्त कर ली हो।

वयस्कता *स्त्री.* {सं.} वयस्क होने का भाव; विधि या कानून के अनुसार पूर्ण वयस्क होना।

वयस्क मताधिकार *पुं.* {सं.} निर्वाचन में प्रतिनिधि चुनने का वह अधिकार जो किसी स्थान के सभी वयस्क निवासियों को बिना किसी प्रकार के भेदभाव के प्राप्त होता है (एडल्ट सफरेज)।

वयस्य *पुं.* {सं.} समान अवस्था या उम्रवाला; मित्र, दोस्त, सखा।

वयस्या *स्त्री.* सखी, सहेली।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वयोधा *स्त्री., पुं.* शक्ति, युवा, अन्नदाता।
वयोवृद्ध *वि.* {सं.} बुड्ढा, वृद्ध।
वरंच *योज.* {सं.} ऐसा नहीं, बल्कि ऐसा; परंतु, लेकिन।
वर *पुं.* {सं.} देवता आदि से माँगा हुआ मनोरथ; किसी देवता या बड़े से मिला हुआ मनोरथ का फल या सिद्धि; वह जिसके साथ कन्या का विवाह निश्चित हो; पति, दूल्हा; *वि.* श्रेष्ठ, उत्तम; उच्च कोटि का, ऊँचे दरजे या श्रेणी का।
वरक *पुं.* {*अ.* वरक} पत्र; पुस्तकों का पन्ना या पृष्ठ; धातु का पतला पत्तर।
वरज *वि.* ज्येष्ठ, बड़ा।
वरट *पुं.* हंस, भिड़, बर्रे।
वरण *पुं.* {सं.} किसी को किसी काम के लिए चुनना (सेलेक्शन); कन्या के विवाह में वर को अंगीकार करने और विवाह पक्का करने की रीति।
वरणक *वि.* वरण करनेवाला।
वरणात्मक *वि.* {सं.} वरण-संबंधी।
वरणी *स्त्री.* {सं. वरण} मंगल अवसरों पर ब्राह्मणों को दिया जानेवाला आसन, वस्त्र, पात्र आदि का समूह।
वरणीय *वि.* {सं.} वरण करने योग्य, वरेण्य।
वरद *वि.* {सं.} {*स्त्री.* वरदा} वर देनेवाला, वरदाता।
वरदाता *पुं.* वर देनेवाला।
वरदान *पुं.* {सं.} किसी देवता या बड़े का प्रसन्न होकर कोई माँगी हुई वस्तु या सिद्धि देना।
वरदायी (यिन्) *वि.* {सं.} {*स्त्री.* वरदायिनी} वर देनेवाला।
वरदी *स्त्री.* {*अ.* वर्दी} वह पहनावा जो किसी विशेष विभाग के कार्यकर्ताओं के लिए नियत हो, परिच्छद (यूनिफार्म)।
वरन् *यांज.* {सं.} बल्कि।
वरना[1] *स.* {सं. वरण} किसी को किसी काम के लिए चुनना या मुकर्रर करना, वरण करना; विवाह के समय कन्या का वर को अंगीकार करना; ग्रहण या धारण करना; *पुं.* ऊँट।
वरना[2] *यांज.* {फा. वर्नः} नहीं तो।
वरनिश्चय *पुं.* पति चुनना।
वरपक्ष *पुं.* वरयात्रा, बारात।
वरपति *पुं.* हरताल।
वरफल *पुं.* श्रेष्ठफल, नारियल।
वरवत्सला *स्त्री.* सास।
वरम *पुं.* {*अ.*} सूजन, शोथ।
वरयात्रा *स्त्री.* = बरात।
वरसखा *पुं.* {सं.} सहबाला।
वरही *पुं.* वर्ही; *स्त्री.* सोने की लंबी पट्टी जो विवाह के समय वधू को पहनाई जाती है।
वराक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* वराकी} दरिद्र, गरीब; दया का पात्र, दयनीय; अभागा; दीन-हीन; नीच; *पुं.* शिव; युद्ध।
वराटिका *स्त्री.* {सं.} कौड़ी।
वरानना *स्त्री.* {सं.} सुंदर स्त्री।
वरापन *पुं.* {हिं. वर + आपन (प्रत्य.)} विवाह से पहले होनेवाली एक रीति; विवाह के समय वर पक्ष की ओर से गाया जानेवाला गीत।
वरारक *पुं.* हीरक, हीरा।
वरासत *स्त्री.* {*अ.* विरासत} वारिस होने का भाव, उत्तराधिकार; उत्तराधिकार से मिला हुआ धन, तरका।
वरासी *स्त्री.* मैला वस्त्र।
वराह *पुं.* {सं.} सुअर (पशु)।
वरिष्ठ *वि.* {सं.} श्रेष्ठ, बड़ा; पद में बड़ा, उच्च कोटि का, कनिष्क का उलटा (सीनियर)।
वरिष्ठता *स्त्री.* {सं.} वरिष्ठ होने की अवस्था या भाव।
वरीयता *स्त्री.* {सं.} ग्रहण या मान्य करने के लिए किसी वस्तु या बात को औरों की अपेक्षा अच्छा समझना, अधिमान (प्रिफरेंस)।
वरीषु *पुं.* कन्दर्प, कामदेव।
वरुण *पुं.* {सं.} एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति माना गया है; जल, पानी; सूर्य; हमारे सौर जगत् का सबसे दूरस्थ ग्रह जिसका पता सन् 1884 में लगा था (नेपच्यून)।
वरुणानी *स्त्री.* वरुण की पत्नी।
वरुणालय *पुं.* {सं.} समुद्र, सागर।
वरूथिनी *स्त्री.* {सं.} सेना, फौज।
वरे *क्रि. वि.* उरे।
वरेण्य *वि.* {सं.} प्रधान, मुख्य; पूज्य, श्रेष्ठ।
वरेय *पुं.* सूर्य देवता।
वर्कट *पुं.* कील, काँटा।
वर्कर *पुं.* भेड़ का बच्चा, मेमना।
वर्ग *पुं.* {सं.} {*वि.* वर्गीय} एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं का समूह, कोटि, श्रेणी (क्लास); सामान्य धर्म या स्वरूप रखनेवाले पदार्थों का समूह; परिच्छेद, अध्याय; दो समान अंकों या संख्याओं का घात या गुणनफल; वह चौकोर क्षेत्र जिसकी लंबाई-चौड़ाई और चारों कोण बराबर हों (स्क्वेयर)।
वर्ग-पहेली *स्त्री.* {सं. + हिं} वर्गाकार आकृति जिसमें संकेतों के अनुसार वर्ण भरे जाते हैं।
वर्गफल *पुं.* {सं.} दो समान राशियों के घात से प्राप्त होनेवाला गुणनफल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and e...tri

वर्गमूल पुं. {सं.} किसी वर्ण का वह अंक जिसे उसी अंक से गुणा करने पर वही वर्गांक आता है, जैसे 16 का वर्गमूल है।

वर्गलाना स. बहकाना।

वर्गविन्यास पुं. {सं.} वर्गीकरण।

वर्गांक पुं. {सं.} किसी अंक या संख्या को उसी अंक या संख्या से गुणा करने पर प्राप्त होनेवाला गुणनफल।

वर्गीकरण पुं. {सं.} {वि. वर्गीकृत} बहुत-सी वस्तुओं या व्यक्तियों को उनके अलग-अलग वर्ग के अनुसार छाँटकर अलग-अलग करना (क्लैसिफिकेशन)।

वर्गीकृत वि. {सं.} वर्गों में बँटा हुआ।

वर्गीय वि. वर्ग-संबंधी।

वर्चस्क पुं. दीप्ति, तेज।

वर्चस्व पुं. {सं.} तेज; श्रेष्ठता।

वर्चस्वी वि. {सं. वर्चस्विन्} तेजस्वी।

वर्जन पुं. {सं.} {वि. वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित} त्यागना, छोड़ना; कुछ करने से रोकना, मनाही, मुमानियत; कोई काम करते समय किसी विशेष कारण से कोई बात छोड़ या अलग कर देना (एक्सल्यूज़न)।

वर्जना[1] स्त्री. वर्जन।

वर्जना[2] स. {सं. वर्जन} मना करना।

वर्ज्य वि. छोड़ने योग्य।

वर्जित वि. {सं.} जिसके संबंध में मनाही हुई हो, निषिद्ध; जो कोई विशेष कारण से छोड़ या अलग कर दिया गया हो (एक्सक्लूडिड)।

वर्ण पुं. {सं.} पदार्थों के लाल, काले आदि भेदों के नाम, रंग (कलर); मनुष्य जाति के गोरे, काले, भूरे, पीले और लाल ये पाँचे भेद (कलर); हिन्दुओं के चार विभाग—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, जाति; भेद, प्रकार; अकारादि अक्षरों के चिह्न या संकेत, अक्षर; रूप, सूरत।

वर्णक पुं. {सं.} वास्तविक रूप छिपाने के लिए ऊपर से धारण किया जानेवाला कोई और रूप या आवरण (मास्क)।

वर्णक्रम पुं. {सं.} वर्णों के अनुसार होनेवाला क्रम।

वर्णक्रमिक वि. {सं.} वर्णक्रम के अनुसार होनेवाला।

वर्णच्छटा स्त्री. {सं.} किसी वस्तु की वह आकृति जो उसे देखने के बाद आँखें बंद कर लेने पर भी कुछ देर तक दिखाई देती है; प्रकाश में के रंग, जो कुछ विशेष प्रक्रिया से किसी परदे पर डालकर विश्लेषण आदि के लिए देखे जाते हैं (स्पेक्टर्म)।

वर्ण-तूलिका स्त्री. {सं.} चित्रों आदि में रंग भरने की कूँची या बुरुश।

वर्णन पुं. {सं.} {वि. वर्णनीय, वर्णित} विस्तारपूर्वक कहा जानेवाला हाल, बयान (एकाउंट); विवरण, लक्षण आदि से युक्त वह कथन जिससे किसी वस्तु, घटना या बात का ठीक स्वरूप जाना जाए (डिस्क्रिप्शन)।

वर्णदा स्त्री. गुणकथन, स्तुति, प्रशंसा।

वर्णनातीत वि. {सं.} जिसका वर्णन न हो सके, वर्णन के बाहर।

वर्णनीय वि. {सं.} वर्णन करने योग्य, वर्ण्य।

वर्णपट पुं. {सं.} किसी स्थान पर दिखाई पड़नेवाली वह रंगीन पट्टी जिसमें कहीं दूर से आनेवाले प्रकाश की कुछ आभा दिखाई पड़ती है, जैसे अंधेरी रात में आकाश में दिखाई पड़नेवाला सूक्ष्म प्रकाश या चमक।

वर्णभेद पुं. {सं.} हिन्दुओं में ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि चारों वर्णों में होनेवाला विभाग, भेदभाव या ऊँच-नीच का विचार; गोरी, काली, पीली, आदि जातियों में शरीर के वर्ण की दृष्टि से होनेवाला भेदभाव या ऊँच-नीच का विचार।

वर्णमाला स्त्री. {सं.} किसी लिपि के सब अक्षरों की क्रम से सूची (ऐल्फाबेट्स)।

वर्णविचार पुं. {सं.} व्याकरण का वह अंग जिसमें वर्णों या अक्षरों के स्वरूप, भेद, उच्चारण, प्रयोग आदि का विवेचन या विचार होता है, शिक्षा (ऑरथोग्रैफी)।

वर्ण-विपर्यय पुं. {सं.} निरुक्त के अनुसार शब्दों के वर्णों का बोलचाल के कारण कुछ आगे-पीछे हो जाना, जैसे 'हिंस' शब्द से 'सिंह' शब्द में हुआ है।

वर्णवृत्त पुं. {सं.} पिंगल में चार चरणों का वह वृत्त या छंद जिसके चारों चरण एक से होते हैं और प्रत्येक चरण में वर्णों या अक्षरों और मात्राओं का क्रम तथा संख्या निश्चित होती है।

वर्ण-व्यत्यय पुं. वर्ण-विपर्यय।

वर्णसंकर पुं. {सं.} वह जो दो भिन्न जातियों के यौन-संबंध से उत्पन्न हुआ हो, दोगला।

वर्णा स्त्री. आढ़की, अरहर।

वर्णाका स्त्री. लेखनी।

वर्णाट पुं. चित्रकार, गवैया।

वर्णाश्रम पुं. चारों वर्णों का आश्रम।

वर्णांध वि. {सं.} जिसे लाल, पीले, काले आदि रंगों का ज्ञान न होता हो (कलर-ब्लाइंड)।

वर्णांधता स्त्री. {सं.} नेत्रों का एक प्रकार का रोग या विकार जिसमें मनुष्य को लाल, काले, पीले आदि रंगों की पहचान नहीं रह जाती।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व

वर्णानुक्रम पुं. {सं.} वर्णक्रम।
वर्णिक छंद (वृत्त) पुं. वर्णवृत्त।
वर्णिका *स्त्री.* {सं.} स्याही, रोशनाई; सोने का पानी।
वर्णित *वि.* {सं.} जिसका वर्णन हुआ हो, कहा हुआ (डिस्क्राइब्ड)।
वर्णी पुं. लेखक, चित्रकार, ब्राह्मण।
वर्तका *स्त्री.* बर्तक पक्षी, मादा बटेर।
वर्ण्य *वि.* {सं.} वर्णन के योग्य; जिसका वर्णन हो रहा हो।
वर्तन पुं. {सं.} {*वि.* वर्तित} बरताव, व्यवहार; फेरना, घुमाना; पात्र, बरतन।
वर्तनि *स्त्री.* शुद्ध राग का एक भेद।
वर्तनी *स्त्री.* बटने की क्रिया, पिसाई।
वर्तमान *वि.* {सं.} जो इस समय हो या चल रहा हो (एग्ज़िस्टिंग); उपस्थित, मौजूद, विद्यमान (प्रेजंट); आधुनिक, आज-कल का, हाल का; पुं. व्याकरण में क्रिया का वह काल, जिससे सूचित होता है कि कार्य अभी हो रहा है, समाप्त नहीं हुआ; वृत्तांत, समाचार।
वर्त्तिका *स्त्री.* {सं.} कपड़े, रुई आदि की बटी हुई बत्ती; पेंसिल की तरह का एक उपकरण जो चित्रकला में रेखाचित्र बनाने के काम आता है।
वर्त्ती *वि.* {सं. वर्त्तिन्} {*स्त्री.* वर्त्तिनी} बरतनेवाला; स्थित रहनेवाला, जैसे पार्श्ववर्ती।
वर्त्तुल *वि.* {सं.} वृत्ताकार, गोल।
वर्त्म पुं. {सं.} मार्ग, रास्ता; किनारा; आँख की पलक।
वर्त्स पुं. {सं.} मसूढ़ा।
वर्त्स्य *वि.* {सं.} मसूढ़े से संबद्ध; (वर्ण) जिसका उच्चारण करते समय जीभ मसूढ़े को छूती हो।
वर्दी *स्त्री.* वरदी।
वर्द्धक *वि.* {सं.} बढ़ानेवाला।
वर्द्धन पुं. {सं.} {*वि.* वर्द्धित} बढ़ाना; वृद्धि, बढ़ती; पशुओं आदि को पाल-पोसकर उनकी उन्नति और वृद्धि करना (ब्रीडिंग)।
वर्द्धमान *वि.* {सं.} बढ़ता हुआ; बढ़ानेवाला।
वर्द्धित *वि.* {सं.} बढ़ा या बढ़ाया हुआ।
वर्धरुद्ध *वि.* {सं.} जिसकी वृद्धि या बाढ़ रुक गई हो।
वर्धरोध पुं. {सं.} वृद्धि का रुक जाना।
वर्ध्म पुं. आँत उतरने का रोग।
वर्म[1] पुं. {सं. वर्मन्} कवच, बख्तर; घर, मकान।
वर्म[2] पुं. {अ.} शोथ, सूजन।
वर्मन् पुं. वर्मा।
वर्मा पुं. {सं. वर्मन्} क्षत्रियों की उपाधि।
वर्य *वि.* {सं.} श्रेष्ठ, जैसे विद्वद्वर्य।
वर्या *स्त्री.* कन्या।
वर्वरा *स्त्री.* एक प्रकार की मक्खी।
वर्ष पुं. {सं.} बारह महीनों का समूह जो कालगणना में एक प्रसिद्ध मान है, बरस, साल; पुराणों के अनुसार सात द्वीपों का समूह या विभाग।
वर्षक *वि.* {सं.} (जल की) वर्षा करनेवाला; (कोई चीज) बरसनेवाला।
वर्ष-गाँठ *स्त्री.* बरस-गाँठ।
वर्षण पुं. {*वि.* वर्षित} वर्षा होना।
वर्षफल पुं. {सं.} किसी व्यक्ति के वर्ष भर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विवरण (फलित ज्योतिष)।
वर्षांक पुं. {सं.} संख्या-क्रम से किसी सन् या संवत् के वर्षों के निश्चित किए हुए नाम जो अंकों के रूप में होते हैं, जैसे सन् 1949 या संवत् 2006.
वर्षा *स्त्री.* {सं.} यह ऋतु जिसमें पानी बरसता है, बरसात; पानी बरसने की क्रिया या भाव, वृष्टि; किसी वस्तु का बहुत अधिक मात्रा में ऊपर से गिरना या चारों ओर से आना।
वर्षांग पुं. माघ का महीना।
वर्षाकाल पुं. {सं.} बरसात।
वर्षानुवर्षी *वि.* {सं.} बराबर एक के बाद एक करके हर वर्ष होनेवाला।
वर्षीय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* वर्षीया} वर्ष-संबंधी।
वर्षेश पुं. {सं. वर्ष + ईश} फलित ज्योतिष में किसी वर्ष या संवत्सर का स्वामी, जैसे इस वर्ष शनि वर्षेश है।
वर्षोत्सव पुं. {सं.} वार्षिक उत्सव।
वर्ह पुं. {सं.} मोर का पर; पत्ता।
वर्ही पुं. {सं. वर्हिन्} मयूर, मोर।
वलंदेज *वि., पुं.* ओलंदेज।
वलंब पुं. सीधी रेखा के ऊपर लंब रेखा।
वल पुं. मेघ, एक असुर का नाम जो बृहस्पति के द्वारा मारा गया था।
वलती *स्त्री.* वह मंडप जो घर के शिखर पर बना हो।
वलभी *स्त्री.* {सं.} घर के ऊपर का छोटा कमरा, चौबारा; गुजरात की एक प्राचीन नगरी जहाँ इसी नाम के एक प्रसिद्ध राज्यवंश का राज्य था।
वलय पुं. {सं.} मंडल, घेरा; कंकड़; चूड़ी।
वलाक पुं. {सं.} {*स्त्री.* वलाका} बगला।
वलाहक पुं. {सं.} मेघ, बादल; पर्वत, पहाड़।
वलि पुं. {सं.} रेखा, लकीर; पेट के दोनों ओर पेटी के सिकुड़ने से पड़ी हुई रेखा, बल; देवता को चढ़ाई जानेवाली चीज या उसके उद्देश्य से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and e... Trust

चढ़ाया या मारा जानेवाला पशु; एक दैत्य जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था; श्रेणी, पंक्ति।

वलिक पुं. ओरी, ओलती।

वलित *वि.* {सं.} बल खाया या घूमा हुआ; झुका या मुड़ा हुआ; घेरा या घिरा हुआ; लिपटा हुआ; मिला हुआ, युक्त।

वली[1] *स्त्री.* {सं.} झुर्री, सिलवट; श्रेणी, पंक्ति; रेखा, लकीर।

वली[2] पुं. {अ.} मालिक, स्वामी; साधु, फकीर; अल्पवयस्क बालक की देख-रेख करनेवाला व्यक्ति, अभिभावक।

वलिमुख पुं. वानर, बंदर।

वल्कल पुं. {सं.} वृक्ष की छाल।

वल्द पुं. {अ.} औरस पुत्र, बेटा, जैसे मोहन वल्द परमानंद, अर्थात् परमानंद का बेटा मोहन।

वल्दियत पुं. {अ.} वालिद या पिता होने का भाव, पितृत्व; पिता के नाम का उल्लेख।

वल्मीक पुं. {सं.} दीमकों के रहने की बाँबी, बिमौट; साँप का बिल।

वल्लकी *स्त्री.* वीणा, बीन।

वल्लभ *वि.* {सं.} {*भाव.* वल्लभता, *स्त्री.* वल्लभा} प्रियतम, प्यारा; पुं. पति, स्वामी; अध्यक्ष, मालिक; वैष्णव-संप्रदाय के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध आचार्य।

वल्लर पुं. मंजरी, कुंज।

वल्लभा *स्त्री.* {सं.} प्रेमिका, प्रेयसी।

वल्लभी *स्त्री.* वलभी; *स्त्री.* = वल्लभा।

वल्लरी *स्त्री.* {सं.} बेल, लता।

वल्लाह *पद* {अ.} ईश्वर की शपथ है।

वल्ली *स्त्री.* {सं.} बेल, पत्ता।

वंशकृत *वि.* वश में किया हुआ।

वश पुं. {सं.} अधिकार, काबू; शक्ति या अधिकार की सीमा, काबू।

मुहा. वश चलना = सामर्थ्य का अपना फल या प्रभाव दिखलाना।

स्वामित्वजन्य अधिकार, कब्जा।

वशवर्ती *वि.* {सं. वशवर्तिन्} किसी के वश या अधिकार में रहनेवाला, अधीन।

वशीकरण पुं. {सं.} मंत्र-तंत्र के द्वारा किसी को वश में करना।

वशीभूत *वि.* वशवर्ती।

वश्य *वि.* {सं.} {*भाव.* वश्यता} वश में आने या रहनेवाला।

वश्या *स्त्री.* वशीभूता स्त्री, गोरोचना।

वसंत पुं. {सं.} {*वि.* वासंत, वासंतिक, वसंती} सर्वप्रधान मानी जानेवाली वह ऋतु जिसके अंतर्गत चैत और वैशाख के महीने माने गए हैं, बहार का मौसम; शीतला या चेचक नामक रोग; षाड़व संपूर्ण जाति का एक राग जो आधी रात के बाद गाया जाता है।

वसंततिलका *स्त्री.* {सं.} चार चरणों का एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में नगण, भगण, दो जगण और दो गुरु वर्ण (न, भ, ज, ज, ग, ग) होते हैं।

वसंतोत्सव पुं. {सं.} प्राचीन काल में एक उत्सव जो वसंत पंचमी के दूसरे दिन होता था, मदनोत्सव।

वसति, वसती *स्त्री.* {सं.} निवास; घर; बस्ती।

वसन पुं. {सं.} वस्त्र, कपड़ा; रहना या बसना, निवास।

वसवास पुं. {अ. वस्वास} {*वि.* वसवासी} शंका, भ्रम, संदेह।

वसह पुं. = बैल (पशु)।

वसा *स्त्री.* {सं.} चरबी, मेद।

वसि *वि.* वसन, वस्त्र।

वसिष्ठ पुं. एक प्रसिद्ध मंत्रदृष्टा ऋषि, सप्तर्षि-मंडल का एक तारा।

वसीका पुं. {अ. वसीक:} सरकारी खजाने में जमा किए हुए धन का वह सूद जो जमा करनेवाले के वंशजों को मिलता है, वृत्ति।

वसीयत *स्त्री.* {अ.} यह कहना या लिखना कि हमारे मरने पर हमारी संपत्ति का विभाग या प्रबंध इस तरह हो।

वसीयतनामा पुं. {अ. वसीयत + फा. नाम:} वह लेख या पत्र जिसमें वसीयत की सब शर्तें लिखी हों, इच्छापत्र (विल)।

वसीला पुं. {अ. वसील:} संबंध, लगाव; जरिया, द्वार।

वसुंधरा *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी।

वसु पुं. {सं.} आठ वैदिक देवताओं का एक गण; आठ की संख्या; रत्न; धन; अग्नि; जल; सुवर्ण, सोना; सूर्य।

वसुधा *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी।

वसुमति *स्त्री.* {सं.} पृथ्वी।

वसूक पुं. अगस्त्य का वृक्ष।

वसूल *वि.* {अ.} मिला या लिया हुआ, प्राप्त; उगाहा हुआ।

वसूली *स्त्री.* {अ. वसूल} लोगों से धन या और कोई वस्तु लेकर इकट्ठा करने की क्रिया या भाव, समाहरण (कलेक्शन); दूसरे से अपना धन या वस्तु लेने की क्रिया या भाव, उगाही (रिकवरी)।

वस्ति *स्त्री.* {सं.} पेड़ू; मूत्राशय; आँतें साफ करने के लिए गुदा के मार्ग से जल ऊपर चढ़ाने की क्रिया, जिससे रेचन होता है (एनिमा)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तिकर्म पुं. {सं.} लिंगेन्द्रिय, गुदेन्द्रिय आदि मार्गों में पिचकारी लगाना।

वस्तिवात पुं. एक मूत्र-रोग।

वस्तु *स्त्री.* {सं.} {*वि.* वास्तव, वास्तविक} वास्तविक या कल्पित सत्ता, पदार्थ, चीज; वह जो किसी वाद-विवाद, आलोचना या विचार का विषय हो, विषय; कथावस्तु।

वस्तुतः *क्रि. वि.* {सं.} वास्तव में (एकचुअली); सचमुच (इन फैक्ट, इप्सो फैक्टो)।

वस्तुनिष्ठ *वि.* {सं.} वस्तु या पदार्थ से संबंध रखनेवाला।

वस्तुस्थिति पुं. {सं.} वास्तविक स्थिति या परिस्थिति।

वस्तूपमा *स्त्री.* उपमा अलंकार का एक भेद।

वस्तूत्प्रेक्षा *स्त्री.* {सं.} साहित्य में उत्प्रेक्षा अलंकार का एक भेद जिसमें किसी उपमेय वस्तु में उपमान वस्तु के कार्य या गुण की कल्पना की जाती है, इसमें मानो, जानो आदि या इनके वाचक दूसरे शब्द रखे जाते हैं, जैसे गोरे मुख पर स्याम तिल, तांकौं करौ प्रनाम, मनहुँ चन्द बिछाइकै, पौढ़े शालग्राम।

वस्त्र पुं. {सं.} कपड़ा।

वस्त्रांचल पुं. कपड़े का छोर।

वस्त्री *वि.* कपड़ा पहने हुए।

वस्ल पुं. {अ.} मिलन, मिलाप।

वस्न पुं. वल्कल, छाल, धन।

वहंत पुं. वायु, वाहक।

वह[1] *सर्व.* {सं. असौ} वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त किसी तीसरे मनुष्य या दूर के पदार्थ का संकेत करनेवाला सर्वनाम या परोक्ष वस्तुओं का सूचक शब्द।

वह[2] *वि.* {सं. वहन} वहन करनेवाला, वाहक (यौ. के अंत में, जैसे–भारवह)।

वहन पुं. {सं.} {*वि.* वहनीय, वहित} खींच या ढोकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना; ऊपर लेना, उठाना।

वहनक पुं. {सं.} वह जो वहन करके ले जाता हो; वह जिसपर या जिसमें कोई चीज रखकर कहीं ले जाई या पहुँचाई जाए (कैरियर)।

वहनपत्र पुं. {सं.} वह पत्र जो किसी जहाज का प्रधान अधिकारी अपने जहाज पर लादे हुए माल की रसीद के रूप में माल भेजनेवाले को देता है और जिसके अनुसार वह प्रेषिती को माल पहुँचाने का भार लेता है (बिल ऑफ लेंडिग)।

वहना *स.* {सं. वहन} वहन करना, ढोना; अपने ऊपर लेना, धारण करना; *अ.* किसी प्रकार के भार या अनिष्ट बात के वशीभूत होना; अपना आपको कुरूप या खराब करना।

उदा. ज्यों गयंद अन्हाई सरिता, बहुरि वहैं सुभाइ–**सूर**।

वहम पुं. {अ. वहम} {*वि.* वहमी} मन में होनेवाली मिथ्या धारणा; भ्रम, धोखा; झूठी शंका या संदेह।

वहमी *वि.* वहमयुक्त, संशय करनेवाला।

वहशत पुं. {अ. वहशत} वहशी होने की अवस्था या भाव; पागलपन।

वहशी *वि.* {अ. वहशी} जंगली; असभ्य।

वहाँ *क्रि. वि.* {हिं. वह} उस जगह।

वहिः *अव्य.* बाहर।

वहित पुं. प्रसिद्ध, प्रख्यात, प्राप्त।

वहित्र पुं. {सं. वहित्थ} जहाज; नाव।

वहिनी पुं. नौका, नाव।

वहिरंग पुं. {सं.} शरीर, पदार्थ, क्षेत्र आदि का बाहरी या ऊपरी भाग, अंतरंग का उलटा; *वि.* ऊपरी या बाहरी।

वहिर्गत *वि.* {सं.} बाहर निकला या निकाला हुआ, बाहर का।

वहिर्द्वार पुं. {सं.} बाहरी दरवाजा।

वहिर्भव *वि.* वाह्य प्रकृति का।

वहिर्भवन पुं. बाहर का घर।

वहिर्भाव *वि.* वाह्य भाव।

वहिर्भूत पुं. {सं.} वहिर्गत।

वहिर्मुख *वि.* {सं.} विमुख।

वहिष्कार पुं. बहिष्कार।

वहिष्कार्य *वि.* बहिष्कार करने योग्य।

वहिष्कृत *वि.* बाहर किया हुआ।

वहिष्प्राण पुं. श्वासवायु, प्राणतुल्य प्रिय वस्तु।

वहीं *क्रि. वि.* {हिं. वहाँ + ही} उसी स्थान पर, उसी जगह।

वही *सर्व.* {हिं. वह + ही} जिसका उल्लेख हुआ हो, वह ही; पूर्वोक्त ही; निर्दिष्ट व्यक्ति ही, और कोई नहीं।

वहै *स्त्री.* = वही (वह ही)।

वह्नि पुं. {सं.} अग्नि, आग।

वांछक *वि., पुं.* चाहनेवाला।

वांछन पुं. इच्छा करना, चाहना।

वांछनीय *वि.* {सं.} चाहने योग्य; जिसे प्राप्त करने की इच्छा हो, इष्ट; जिसका होना अनुचित या अप्रिय न हो।

वांछा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* वांछित, वांछनीय} अभिलाषा, चाह।

वांछित *वि.* {सं.} चाहा हुआ।

वांति *स्त्री.* वमन, कै, उल्टी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वा' *योज.* {सं.} या, अथवा।

वा' *सर्व.* {हिं. वह} वह; उस, जैसे--वाको = उसका या उसे।

वाइ *सर्व.* वाहि।

वाक् *पुं.* {सं.} वाणी; सरस्वती; बोलने की इंद्रिय।

वाकई *क्रि. वि.* {अ. वाक़िई} सचमुच, वस्तुतः।

वाकया *पुं.* घटना।

वाकिफ *वि.* {अ. वाक़िफ़} ज्ञाता; परिचित।

वाकिफकार *वि.* {अ.} जानकार, अनुभवी।

वाक् *स्त्री.* वाणी, वाक्य, सरस्वती।

वाक्छल *पुं.* {सं.} धोखा देने के लिए क्लिष्ट, समानक या भ्रामक शब्दों का प्रयोग करना, ऐसी बात कहकर अपना मतलब निकालना जिसके दो अर्थ हो सकते हों (इकिवोकेशन)।

वाक्जाल *पुं.* {सं.} शब्दजाल।

वाक्पटु *वि.* {सं.} बातें करने में चतुर।

वाक्सिद्धि *स्त्री.* {सं.} ऐसी शक्ति या सामर्थ्य जिससे मनुष्य इस योग्य हो जाता है कि वह भविष्य या परोक्ष के संबंध में जो कुछ कहे वह बिल्कुल ठीक और सत्य सिद्ध हो।

वाक्य *पुं.* {सं.} व्याकरण के नियमों के अनुसार क्रम से लगा हुआ वह सार्थक शब्द-समूह जिसके द्वारा किसी पर अपना अभिप्राय प्रकट किया जाता है।

वाक्य-रचना *स्त्री.* {सं.} यथास्थान शब्द रखकर वाक्य बनाना; शब्द-योजना के विचार से वाक्यों की बनावट या रूप (फ्रेजियालोजी)।

वाक्य-विन्यास *पुं.* {सं.} वाक्यों की बनावट, वाक्य-रचना।

वाक्यसिद्धि *स्त्री.* वाक्सिद्धि।

वाक्यांश *पुं.* {सं.} पूरे वाक्य का कोई अंश, खंड या टुकड़ा (फ्रेज)।

वागा *स्त्री.* लगाम।

वागारू *पुं.* आशा देकर निराश करनेवाला।

वागीश *पुं.* {सं. वाक् + ईश} वृहस्पति; ब्रह्मा; कवि; *वि.* अच्छा बोलनेवाला, सुवक्ता।

वागीश्वरी *स्त्री.* {सं.} सरस्वती।

वागुण *पुं.* कमरख, बेगन।

वागुरा *स्त्री.* हरिन फँसाने का जाल।

वागुलि *स्त्री.* डब्बा।

वाग्जाल *पुं.* {सं.} बातों का ऐसा आडंबर जिसमें अर्थ या तथ्य बहुत कम हो।

वाग्दत्त *वि.* {सं.} जिसे दूसरे को देने का वचन दिया जा चुका हो।

वाग्दत्ता *स्त्री.* {सं.} वह कन्या जिसके विवाह की बात किसी के साथ पक्की की जा चुकी हो।

वाग्दरिद्र *वि.* मितभाषी, कम बोलनेवाला।

वाग्दान *पुं.* {सं.} {*वि.* वाग्दत्त} कुछ देने या करने का वचन, वादा (प्रॉमिस); कन्या के अभिभावक का किसी से यह कहना कि मैं अपनी कन्या तुम्हारे साथ ब्याहूँगा।

वाग्देवी *स्त्री.* {सं.} सरस्वती।

वाग्दोष *पुं.* वाक्य में व्याकरण-संबंधी दोष।

वाग्वज्र *पुं.* कठोर वाक्य, शाप।

वाग्धारा *स्त्री.* {सं.} शब्दों का प्रवाह।

वाग्मी (मिन्) *पुं.* {सं.} {*भाव.* वाग्मिता} अच्छा वक्ता; पंडित, विद्वान।

वाच् *स्त्री.* वाणी, वाक्य।

वाचमय *वि.* मौनव्रत धारण करनेवाला।

वाग्विलास *पुं.* {सं.} आपस में प्रेम और सुख की बातें करना।

वाङ्मय *पुं.* {सं.} साहित्य।

वाङ्मुख *वि.* {सं.} उपन्यास।

वाचक *वि.* {सं.} किसी व्यक्ति या वस्तु आदि का निर्देश करने या परिचय देनेवाला (शब्द) वाची, जैसे--यहाँ सारंग शब्द मोर का वाचक है; *पुं.* नाम, संज्ञा; वह जो किसी बड़े अधिकारी को कागज आदि पढ़कर सुनाने के लिए नियत हो, पेशकार (रीडर)।

वाचन *पुं.* {सं.} पढ़ने का काम, पठन; विधान सभा में किसी विधेयक (बिल) के उपस्थित होने पर उसके तीन बार पढ़ने जाने में से किसी एक बार का पड़ा जाना, आवृत्ति (रीडिंग); (विशेष--पहली बार विधेयक इसलिए पढ़कर सुनाया जाता है कि सब लोग उसका सामान्य स्वरूप समझ लें, इसे 'पहला वाचन' कहते हैं, दूसरे वाचन में काट-छाँट, संशोधन, परिवर्तन और सुधार होते हैं; तीसरे या अंतिम वाचन में उसका वह रूप सामने आता है जिसमें वह स्वीकृत होने को होता है); किसी लिखी या छपी हुई बात की शब्दावली, अपने मूल रूप में वे शब्द, वाक्य आदि जिनका व्यवहार लिखने के समय किया गया हो, पाठ; किसी संप्रदाय आदि के द्वारा निश्चित की हुई वह शब्दावली या वाक्यावली जो उसकी संपत्ति में मूल लेखक की शब्दावली या वाक्यावली से अधिकतम सादृश्य रखती हो, पाठ (टेक्स्ट); किसी की कही या लिखी हुई बात या विवरण आदि का अविकल या ज्यों-का-त्यों रूप।

वाचना *स्त्री.* वाचन।

वाचनालय *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ लोगों के पढ़ने के लिए समाचार पत्र या पुस्तकें रखी रहती हैं (रीडिंग रूम)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाचा *स्त्री.* वाणी, वचन, शब्द।
वाचाट *वि.* बक्की, बकवादी।
वाचापत्र *पुं.* प्रतिज्ञापत्र।
वाचाबद्ध *वि.* प्रतिज्ञा से बद्ध।
वाचस्पति *पुं.* {सं.} वाणी; वचन; बहुत बड़ा विद्वान।
वाचाबंध *पुं.* {सं.} {*वि.* वाचाबद्ध} प्रतिज्ञा या वचन से बंधना।
वाचाल *वि.* {सं.} {*भाव.* वाचालता} बहुत बोलनेवाला, बकवादी; बातें करने में चतुर, वाक्पटु।
वाचायुद्ध *वि.* बातचीत करने में निपुण।
वाचिक *वि.* {सं.} वाणी-संबंधी, वाचा या वाणी से कहा या किया हुआ; *पुं.* अभिनय का वह प्रकार जिसमें केवल बातचीत और उसके ढंग से ही अभिनय का सारा तात्पर्य समझा जाता है।
वाची *वि.* {सं. वाचिन्} प्रकट करनेवाला, सूचक, वाचक जैसे भाववाची।
वाच्य *वि.* {सं.} कहने योग्य; जिसका ज्ञान या परिचय शब्दों के द्वारा हो, अभिधेय; *पुं.* व्याकरण में क्रिया से संबंध रखनेवाला वह तत्व जिससे यह कहा जाता है कि जो कुछ कहा गया है, वह कर्ता की प्रधानता के विचार से है या कर्म की प्रधानता के विचार से (वॉयस) इसके दो भेद हैं--कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य (दोनों देखें)।
वाच्यार्थ *पुं.* {सं.} शब्दों के नियत अर्थ से प्रकट होनेवाला आशय, विशुद्ध शब्दार्थ।
वाच्यावाच्य *पुं.* भली-बुरी बात।
वाजपेय *पुं.* एक श्रौत यज्ञ का नाम।
वाजसनि *पुं.* सूर्य, सूर्य से प्राप्ति।
वाजसनेय *पुं.* शुक्ल यजुर्वेद की संहिता का नाम, याज्ञवल्क्य मुनि।
वाजिब *वि.* {अ.} उचित, मुनासिब।
वाजिबी *वि.* = वाजिब।
वाजिमेध *पुं.* = अश्वमेध।
वाजी *पुं.* {सं. वाजिन्} घोड़ा।
वाजीकरण *पुं.* {सं.} {*वि.* वाजीकृत} वह प्रयोग जिससे मनुष्य का वीर्य बढ़ता है और उसमें घोड़े के समान बल आता है (वैद्यक)।
वाट *पुं.* {सं.} मार्ग, रास्ता।
वाटिका *स्त्री.* {सं.} बाग, बगीचा।
वाटी *स्त्री.* घर।
वाट्टक *पुं.* भुना हुआ जौ।
वाडवाग्नि *स्त्री.* {सं.} वह कल्पित प्रबल अग्नि जो समुद्र के अंदर जलती हुई मानी गई है।
वाण *पुं.* {सं.} धारदार फलवाला वह अस्त्र जो धनुष की सहायता से चलाया जाता है, तीर।
वाणावली *स्त्री.* तीरों की पंक्ति।
वाणिज्य *पुं.* {सं.} व्यापार, रोजगार (कॉमर्स)।
वाणिज्यदूत *पुं.* {सं.} किसी राज्य का वह दूत जो दूसरे देश में व्यापारिक संबंध सुरक्षित रखने और बढ़ाने के लिए रखा जाता है (कांसल)।
वाणी *स्त्री.* {सं.} सरस्वती; मुँह से निकलनेवाले सार्थक शब्द, वचन।
मुहा. वाणी फुरना = मुँह से बात निकलना।
वात *पुं.* {सं.} वायु, हवा; शरीर में की वह वायु जिसके बिगड़ने से अनेक प्रकार के रोग होते हैं (वैद्यक)।
वातज *वि.* {सं.} वायु या वात से उत्पन्न (रोग आदि)।
वाताट *पुं.* सूर्य का घोड़ा, हरिण।
वाताम *पुं.* {सं.} बादाम।
वातायन *पुं.* {सं.} झरोखा।
वातावरण *पुं.* {सं.} वह हवा जिसने पृथ्वी को चारों ओर से घेर रखा है; आसपास की परिस्थिति या चारों ओर की वे सब बातें जिनका जीवन, विकास, निर्वाह आदि बातों पर प्रभाव पड़ता है।
वातुल *पुं.* {सं.} बावला, पागल।
वातुलता *स्त्री.* {सं.} वातुल होने की क्रिया या भाव; पागलपन।
वात्या *स्त्री.* {सं.} बवंडर।
वात्सरिक *वि.* {सं.} वार्षिक, सालाना।
वात्सल्य *पुं.* {सं.} प्रेम, स्नेह; माता-पिता का संतान पर होनेवाला प्रेम।
वात्सल्य-भाजन *पुं.* {सं.} वह जिसके प्रति संतान का-सा प्रेम रखा जाए, पुत्र, पौत्र आदि के समान प्रिय।
वात्स्यायन *पुं.* कामसूत्र के प्रणेता एक ऋषि का नाम।
वाद *पुं.* {सं.} किसी तथ्य या तत्व के निर्णय के लिए होनेवाला तर्क-वितर्क, शास्त्रार्थ; तत्वज्ञों द्वारा निश्चित तत्व या सिद्धांत (इज्म); कुछ संज्ञाओं के अंत में प्रत्यय के रूप में प्रयुक्त, जैसे साम्यवाद, पूँजीवाद, अवसरवाद; बहस, विवाद; न्यायालय में उपस्थित किया हुआ अभियोग, मुकदमा (सूट)।
वादर *पुं.* सूती कपड़ा, बेर का पेड़।
वादरायण *पुं.* वेदव्यास।
वादरायणि *पुं.* व्यास ऋषि के पुत्र-शुकदेव।
वादऋणी *पुं.* {सं.} वह जो किसी वाद मुकदमें में न्यायालय के निर्णय के अनुसार ऋणी या कर्जदार ठहराया गया हो (जजमेंट क्रिडेटर)।
वादक *पुं.* {सं.} बाजा बजानेवाला; वाद या शास्त्रार्थ करनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वादग्रस्त *स्त्री.* {सं.} जिसके संबंध में विवाद या मतभेद हो।

वादपत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जो न्यायालय में वाद उपस्थित करते समय लिख दिया जाता है (प्लेंट)।

वादन *पुं.* {सं.} बाजा बजाना।

वाद-विवाद *पुं.* {सं.} किसी पक्ष के खंडन और मंडन में होनेवाली बातचीत, तर्क-वितर्क, बहस (कांट्रोवर्सी); किसी विषय में ठीक निश्चय या विचार करने के लिए कुछ लोगों में होनेवाला वाद-विवाद (डिस्कशन)।

वाद-व्यय *पुं.* {सं.} किसी वाद या मुकदमे में होनेवाला उचित और नियमित व्यय (कॉस्ट्स)।

वादा *पुं.* {अ. वअद:} वचन, इकरार (प्रॉमिस, अंडरटेकिंग)।

वादानुवाद *पुं.* वाद-विवाद।

वादित *वि.* बजाया हुआ।

वादित्र *पुं.* वाद्य, बाजा।

वादुलि *पुं.* विश्वामित्र के पुत्र का नाम।

वादिम *पुं.* {सं.} वाद्य, बाजा।

वादी *पुं.* {सं. वादिन्} वक्ता, बोलनेवाला; न्यायालय में कोई वाद या मुकदमा पेश करनेवाला; कोई पक्ष या तर्क उपस्थित करनेवाला, फरियादी, मुद्दई; विचार के लिए कोई पक्ष या तर्क उपस्थित करनेवाला; संगीत में वह स्वर जो अन्य स्वरों की अपेक्षा प्रधान रूप में व्यवहृत होता है और किसी राग के विशिष्ट स्वरूप का बोधक होता है।

वाद्य *पुं.* {सं.} वह उपकरण जिसमें संगीत के स्वर निकलते या ताल दिए जाते हैं, बाजा।

वाद्यगोष्ठी *स्त्री.* वाद्यवृन्द।

वाद्यवृंद *पुं.* {सं.} स्वर उत्पन्न करनेवाले और ताल देनेवाले अनेक प्रकार के बाजों का एक साथ मिलकर बजना (आरकेस्ट्रा)।

वाद्यसंगीत *पुं.* {सं.} बाजों से होनेवाला संगीत, साजसंगीत, कंठ-संगीत से भिन्न (इंस्ट्रूमेंटल म्यूजिक)।

वानप्रस्थ *पुं.* {सं.} प्राचीन भारतीय आश्रमों में से तीसरा आश्रम जिसमें मानव के पचास वर्ष के हो जाने पर वन में जाकर रहने का विधान है।

वानर *पुं.* {सं.} बंदर; एक प्राचीन जाति।

वानरी *स्त्री.* बंदरिया, मर्कटी।

वानस्पतिक *वि.* {सं.} वनस्पति-संबंधी, वनस्पति का; वनस्पति से निकला हुआ, जैसे वानस्पतिक दूध या दही।

वानस्पत्य *पुं.* {सं.} वनस्पतियों के तत्वों और उनकी वृद्धि, पोषण आदि से संबंध रखनेवाला शास्त्र या विद्या; *वि.* = वानस्पतिक।

वानीर *पुं.* बेंत, पाकड़ का वृक्ष।

वानीरक *पुं.* मूँज।

वाप *पुं.* बपन, बोना, मुंडन, क्षेत्र।

वापक *पुं.* बीज बोनेवाला।

वापन *पुं.* बीज बोना।

वापस *वि.* {फा.} लौटकर फिर अपने स्थान पर आया हुआ (व्यक्ति); मालिक को फेरा या लौटाया हुआ (पदार्थ)।

वापसी *वि.* {फा.} लौटाया हुआ या फेरा हुआ; जिसमें वापस आने का परिव्यय भी जुड़ा हो, जैसे वापसी टिकट (रेल का); *स्त्री.* लौटने या लौटाने की क्रिया या भाव, प्रत्यावर्तन।

वापिका (की) *स्त्री.* {सं.} छोटा जलाशय, बावली।

वापित *वि.* मूँड़ा हुआ, बोया हुआ।

वापी *स्त्री.* छोटा जलाशय, बावली।

वाम *वि.* {सं.} बायाँ, दाहिना का उलटा; प्रतिकूल, विरुद्ध; टेढ़ा, वक्र; *पुं.* चार चरणों का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात जगण और एक यगण होता है, इसे मंजरी, मकरन्द और माधवी भी कहते हैं।

वामदेव *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।

वामन *वि.* {सं.} छोटे डील या कद का, बौना; ह्रस्व, नाटा, छोटा; *पुं.* विष्णु; शिव; विष्णु का अवतार जो बलि को छलने के लिए हुआ था।

वामना *स्त्री.* एक अप्सरा।

वामनी *स्त्री.* बौनी स्त्री, घोड़ी।

वामपंथ, वामपक्ष *पुं.* {सं.} किसी विषय में बहुत उग्रमत रखनेवालों का सिद्धांत या वर्ग (लेफ्ट विंग)।

वामपंथी, वामपक्षी *वि.* वामपंथ संबंधी; *पुं.* वामपक्ष का पक्षधर।

वाममार्ग *पुं.* {सं.} तांत्रिक मत या धर्म जो वेदों में बतलाए हुए दक्षिण मार्ग के विरुद्ध पड़ता है और जिसमें तंत्र-मंत्र, अभिचार आदि के साथ मद्य, मांस आदि सेवन का भी विधान है; वामपंथ।

वाममार्गी (गिन्) *पुं.* {सं.} वह जो वाममार्ग का अनुयायी हो, कौल।

वामांगिनी *स्त्री.* {सं.} पत्नी।

वामा *स्त्री.* {सं.} औरत, स्त्री; दुर्गा; जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ की माता का नाम; पिंगल में दस अक्षरों का एक वृत्त।

वामावर्त *वि.* {सं.} बाईं ओर घूमा हुआ; (विशेषत: चक्कर के रूप में) चलने या घूमने के लिए बाईं ओर से आरंभ होनेवाला।

वामिल *वि.* पाखंडी, दंभी।

वामी *स्त्री.* शृगालिका, घोड़ी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by A[illegible]naj Foundation Chennai and eGangotri

व

वामेतर *वि.* बाएँ का उलटा, दाहिना।
वाय *सर्व.* वाई; *स्त्री.* = वायु (हवा)।
वायविक *वि.* {सं.} वायु-संबंधी, वायु का (एरियल); *पुं.* बाँसों आदि में लगा हुआ तार जिसकी सहायता से रेडियो वायु में से शब्द, ध्वनि आदि ग्रहण करता है (एरियल)।
वायव्य *वि.* {सं.} वायु-संबंधी, वायु का; *पुं.* उत्तर-पश्चिम का कोना, पश्चिमोत्तर; एक प्रकार का अस्त्र।
वायस *पुं.* अगर का वृक्ष, काक।
वायसतुंड *पुं.* कौआठोंठी।
वायसांतक *पुं.* पेचक, उल्लू।
वायसी *स्त्री.* सफेद घुँघची, छोटी मकोय।
वायस् *पुं.* {सं.} कौआ, पक्षी।
वायु *स्त्री.* {सं.} पाँच तत्वों में से एक जो पृथ्वी के चारों ओर ऊपर आकाश तक भरा है और जिसे सब प्राणी साँस लेते समय अंदर खींचते और बाहर फेंकते हैं, हवा (एअर)।
वायुपथ *पुं.* {सं.} आकाश में हवाई जहाजों के आने-जाने का रास्ता (एयरवे)।
वायुप्रदूषण *पुं.* {सं.} वायु का प्रदूषित होना।
वायुमंडल *पुं.* {सं.} आकाश; वातावरण।
वायुयान *पुं.* {सं.} हवा में उड़नेवाला यान, हवाई जहाज (एयरोप्लेन)।
वायुसेना *स्त्री.* {सं.} वह सेना जो वायुयानों पर लड़ती है।
वायुसेवन *पुं.* {सं.} स्वास्थ्य सुधारने के लिए खुली हवा में घूमना या बैठना।
वायुसेवा *स्त्री.* {सं.} वायुयान के द्वारा होनेवाले सार्वजनिक या लोक-उपकारक काम, सेवा (एयर सर्विस)।
वारंक *पुं.* पक्षी, चिड़िया।
वारंग *पुं.* अँकुसी के आकार का एक शस्त्र।
वारवार *अव्य.* बारंबार।
वारंट *पुं.* अधिपत्र।
वार[1] *पुं.* {सं.} द्वार, दरवाजा; रुकावट, रोक; अवसर; बार, दफा; सप्ताह का कोई दिन, जैसे रविवार; किनारा, तट (विशेषतः वक्ता की ओर का)।
वार[2] *पुं.* {सं. वार = दाँव} चोट, आघात; आक्रमण, हमला।
वार[3] *प्रत्य.* {फा.} एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में लगकर क्रम से, क्रमात् अथवा के अनुसार का अर्थ देता है, जैसे जिलेवार, सूचीवार या भाषावार प्रांत।
वारक *वि.* {सं.} वारण या निषेध करनेवाला; दूर करनेवाला।
वारटा *स्त्री.* हँसी।
वारण[1] *पुं.* {सं.} {*वि.* वारक, वारित, वार्य} निषेध, मनाही; रुकावट।
वारण[2] *पुं.* {सं. वारणः} हाथी।
वारणक *पुं.* {सं.} अनिष्ट, हानि आदि रोकने या उससे बचने के लिए अथवा अपने हित, कल्याण आदि के विचार से पहले से किया जानेवाला उपाय या कार्य (प्रिकॉशन)।
वारणिक *वि.* {सं.} (उपाय या कार्य) जो अनिष्ट, हानि आदि से बचने अथवा अपने हित-साधन के विचार से पहले से किया जाता है (प्रिकॉशनरी)।
वारणीय *वि.* निषेध करने योग्य।
वारणेन्द्र *पुं.* सुंदर हाथी।
वारतिय *स्त्री.* वेश्या, रंडी।
वारद *पुं.* = बादल, मेघ।
वारदात *स्त्री.* {अ.} भीषण या विकट दुर्घटना; मारपीट; दंगा-फसाद।
वारन[1] *स्त्री.* {हिं. वारना} वारने की क्रिया या भाव, निछावर, बलि।
वारन[2] *पुं.* {सं. वारणः} हाथी।
स्त्री. बंदनवार।
वारना *स.* {हिं. उतारना} कोई चीज किसी के ऊपर चारों ओर घुमाकर किसी को देना या फेंकना, निछावर करना (किसी की श्रेष्ठता या आदर का सूचक); *पुं.* निछावर, उत्सर्ग।
मुहा. वारने जाना = निछावर होना।
वारनारी *स्त्री.* = वेश्या, रंडी।
वारनिश *स्त्री.* {अं.} कोई चीज चमकाने के लिए उस पर लगाया जानेवाला रोगन।
वारपार *पुं.* {सं. पार} नदी का इस ओर का और सामने की ओर का किनारा, यह पार और वह पार; गहराई, योग्यता आदि की थाह, अन्त, जैसे-विद्या का वारपार नहीं; 'वारपार'; *क्रि. वि.* इस सिरे से उस सिरे तक, जैसे-तीर वारपार होना।
वारफेर *स्त्री.* निछावर बलि, वह 'पैसा' जो वर-वधू के सिर पर से घुमाकर 'परजुनियों' को बाँटा जाता है।
वारमुखी *स्त्री.* वेश्या, रंडी।
वारमुख्या *स्त्री.* श्रेष्ठ वारांगना।
वारयिता *पुं.* पति, स्वामी।
वारयुवती *स्त्री.* वेश्या, रंडी।
वारवधु *स्त्री.* {सं.} वेश्या, रंडी।
वारांगना *स्त्री.* {सं.} वेश्या, रंडी।
वारवधू *स्त्री.* वेश्या, रंडी।
वारवाणी *स्त्री.* बंसी बजानेवाला, न्यायाधीश।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chen eGangotri

वारा पुं. {सं. वारण} खर्च की कमी या बात, किफायत; लाभ, फायदा।
उदा. उनके वारे की कछू मोपै कही न जाइ–**रसनिधि**।
वि. कम या थोड़े दाम का, सस्ता; जिसमें आर्थिक दृष्टि से लाभ या बचत हो; *प्रत्य.* = वाला (जैसे देखनवारा)।

वाराणसी *स्त्री.* {सं.} काशी नगरी।

वारा-न्यारा पुं. {हिं. वार + न्यारा} किसी बात का पूरी तरह से इधर या उधर होने का निश्चय या निपटारा।

वारापार पुं. {हिं. वार + न्यारा} अंतिम सीमा या हद।

वाराह पुं. {सं.} सूकर या सुअर नामक पशु; विष्णु का तीसरा अवतार जो शूकर के रूप में हुआ था।

वाराही *स्त्री.* एक योगिनी, एक मातृका का नाम, कँगनी।

वारि पुं. {सं.} जल, पानी।

वारिचर पुं. {सं.} मछली।

वारिज पुं. {सं.} कमल; शंख; खरा सोना।

वारित *वि.* {सं.} जिसका वारण या मनाही की गई हो, वर्जित।

वारिद पुं. {सं.} बादल, मेघ।

वारिधि पुं. {सं.} समुद्र।

वारियाँ *स्त्री.* निछावर, बलि।

वारिवर्त्त पुं. {सं.} मेघ, बादल।

वारिस पुं. {अ.} उत्तराधिकारी।

वारींद्र पुं. {सं.} समुद।

वारी *स्त्री.* हाथी बाँधने की सिकड़ी, छोटा गगरा।

वारुणी *स्त्री.* {सं.} मदिरा, शराब; वरुण की स्त्री; एक पर्व जिसमें गंगा-स्नान का माहात्म्य है; सौर जगत् का एक ग्रह जिसका पता सन् 1781 में लगा था (यूरेनस)।

वार्ता *स्त्री.* {सं.} वृत्तांत, हाल; विषय, मामला; बातचीत; साधारण बातचीत के रूप में किसी विषय का संक्षिप्त विवेचन (टॉक); कृषि, वाणिज्य, गोरक्षा आदि वैश्यों के काम।

वार्तायन पुं. {सं.} {*वि.* वार्तायित} वह सामयिक पत्र जिसमें किसी राज्य या विभाग आदि से संबंध रखनेवाली बातें प्रकाशित होती हैं (गजट)।

वार्तायन पुं. दूत।

वार्तायित *वि.* {सं.} जिसका उल्लेख वार्तायन में हो चुका हो (गजटेड)।

वार्तालाप पुं. {सं.} बातचीत।

वार्तावह, वार्ताहर पुं. {सं.} संदेश पहुँचानेवाला, दूत, हरकारा।

वार्दर पुं. रेशम, जल।

वार्तिक पुं. {सं.} किसी ग्रंथ की टीका या व्याख्या।

वार्द्धक्य पुं. {सं.} वृद्धावस्था, बुढ़ापा; वृद्धि, बढ़ती।

वार्भट पुं. घड़ियाल।

वार्वट पुं. नौका, नावों का बेड़ा।

वार्षभ *वि.* वृषभ-संबंधी।

वार्षिक *वि.* {सं.} वर्ष-संबधी (ऐनुअल); जो प्रति वर्ष होता हो, अलग-अलग हर वर्ष से संबंध रखनेवाला, जैसे–वार्षिक विवरण, वार्षिक वृत्ति (ईयरली); *क्रि. वि.* प्रतिवर्ष के हिसाब से, जैसे तीन रुपए सैकड़े वार्षिक सूद (पर एनम्)।

वार्षिकी *स्त्री.* {सं. वार्षिक} प्रतिवर्ष दी जानेवाली वृत्ति या अनुदान (ऐनुईटी); प्रतिवर्ष होनेवाला कोई प्रकाशन (ऐनुअल)।

वाल पुं. केश, बालक।

वालक पुं. कंकण, अँगूठी, शिशु।

वालव पुं. ज्योतिष में करण का नाम।

वाला *प्रत्य.* {?} {*स्त्री.* वाली} कर्तृव्य, स्वामित्व, संबंध आदि का सूचक प्रत्यय, जैसे खानेवाला, घूमनेवाला, घरवाला, दिल्लीवाला आदि।

वालिका *स्त्री.* कान में पहनने का गहना, बाली।

वाली पुं. सुग्रीव का बड़ा भाई।

वालुका *स्त्री.* रेत, बालू, कपूर।

वाल्कली *स्त्री.* मदिरा।

वाशिता *स्त्री.* हथिनी।

वाशिष्ठी *स्त्री.* गोमती नदी।

वालिद पुं. {अ.} {*स्त्री.* वालिदा} पिता, बाप।

वालिदा *स्त्री.* {अ.} माता, माँ।

वाल्मीक (कि) पुं. {सं.} एक प्रसिद्ध मुनि जो रामायण के रचयिता और आदि कवि हैं।

वावैला पुं. {अ.} विलाप, रोना-कलपना; कोलाहल, हल्ला, शोर।

वाष्प पुं. {सं.} भाप।

वाष्पीकरण पुं. {सं.} किसी वस्तु को कुछ विशेष प्रक्रिया से वाष्प के रूप में लाना।

वाश्र पुं. मंदिर, चौराहा।

वासंत पुं. ऊँट, कोयल, मूँग।

वासंतक *वि.* वसंत ऋतु-संबंधी।

वासंतिक *वि.* {सं.} वसंत का, वासंती।

वासंती *स्त्री.* {सं.} माधवी, लता; वसंतोत्सव; चार चरणों का एक वर्णवृत्त; जिसके प्रत्येक चरण में मगण, तगण, नगण, भगण और दो गुरु (म, त, न, म, ग, ग) होते हैं; *वि.* वासंतिक, वसंत ऋतु का।

CC-0: Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by A maj Foundation Chennai and eGangotri

वासंती नवरात्र पुं. {सं.} चैत्र शुक्ल पक्ष में पड़नेवाला नवरात्र।

वास पुं. {सं.} रहना, निवास; स्थान, घर, मकान; *स्त्री.* गंध, महक, बू; बहुत ही सूक्ष्म लक्षणों से मिलनेवाला किसी बात का पता, जैसे पुलिस को भी इस घटना की वास लग गई है।

वासक पुं. {सं.} वासर, दिन; अड़ूसा नामक वृक्ष और उसका फल।

वासकसज्जा *स्त्री.* {सं.} वह नायिका जो नायक की प्रतीक्षा में शयन आदि सब सामग्री ठीक करके और स्वयं शृंगार करके बैठी हो।

वासना *स्त्री.* {सं.} कुछ पाने की इच्छा या कामना।

वासर पुं. {सं.} दिन, दिवस; मकान, घर; वह कोठरी या घर जिसमें वर-वधू की सुहाग रात होती है; सुखभोग।

वासरकृत पुं. सूर्य।

वारसंग पुं. प्रातःकाल।

वारुवज पुं. वासक का पुत्र अर्जुन।

वासव पुं. {सं.} इंद्र।

वासवि पुं. इंद्र का पुत्र अर्जुन।

वासवी *स्त्री.* व्यास ऋषि की माता सत्यवती।

वासा पुं. {सं. वास} रहने की जगह, निवास-स्थान।
उदा. मैं स्थिर भूतों का वासा, मैं मरघट का पीपल तरु हूँ-**नरेन्द्र**।

वासावेश्म पुं. रहने का घर।

वासि पुं. कुठार, बसूला।

वासित *वि.* {सं.} सुगंध से युक्त या सुगंधित किया हुआ।

वासिता *स्त्री.* हथिनी, स्त्री।

वासिल *वि.* प्राप्त, वसूल।

वासिष्ठ *वि.* वसिष्ठ-संबंधी।

वासी *वि.* बसनेवाला, रहनेवाला।

वासु पुं. विष्णु, पुनर्वसु नक्षत्र।

वासुकि पुं. एक नागराज का नाम।

वासुदेव पुं. {सं.} वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्णचंद्र; पीपल का पेड़।

वास्टक *स्त्री.* {अं. वेस्टकोट} एक प्रकार की कुरती, फतूही।

वास्तव *वि.* {सं.} {*भाव.* वास्तविकता} जो वास्तव में हो या हुआ हो, बिल्कुल ठीक (ऐक्चुअल); जिसका वास्तव में कोई दृढ़ अधिकार, स्वत्व आदि हो, (जैसे वास्तविक अधिकार (राइटफुल)।

वास्तविकता *स्त्री.* {सं.} वास्तविक या यथार्थ होने की अवस्था या भाव, यथार्थता (रिएलिटी)।

वास्तव्य *वि.* {सं.} रहने या बसने योग्य; पुं. बस्ती, आबादी।

वास्ता पुं. {अ.} संबंध, लगाव।

वास्तु पुं. {सं.} वह स्थान जहाँ घर बनाया जाए; घर, मकान; ईंट-पत्थर आदि से बनी चीज, इमारत।

वास्तुकला *स्त्री.* {सं.} वास्तु या मकान, महल आदि बनाने की कला।

वास्तुकार पुं. {सं.} वह जो वास्तुरचना करता या इमारतें आदि बनाता हो, भवन, सेतु आदि बनानेवाला (आर्किटेक्ट)।

वास्तुकाष्ठ पुं. {सं.} वह सूखी लकड़ी जो भवन, कुरसी आलमारी आदि बनाने के काम में आती है (टिम्बर)।

वास्तु-वृक्ष पुं. {सं.} वह वृक्ष जिसकी लकड़ी घर, आलमारी, मेज, कुरसी आदि बनाने के काम में आती हो (टिम्बर ट्री)।

वास्तुशास्त्र पुं. {सं.} वह शास्त्र जिसमें वास्तुकला का विवेचन होता है।

वास्तूक पुं. बथुए का साग।

वास्ते, के *संबंधसू.* {*अ.*} के लिए, के निमित्त; के हेतु,, के कारण।

वाह[1] *विस्मयादि.* {फा.} वहन करने या ढोनेवाला (प्रत्यय के रूप में शब्दों के अन्त में, जैसे भारवाह)।

वाह[2] *विस्मयादि.* {फा.} प्रशंसा या आश्चर्यसूचक शब्द।

वाहक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* वाहिका} बोझ ढोने या खींचनेवाला; भार ग्रहण करनेवाला; हाँकने या चलानेवाला; 'वाही'; पुं. सारथी।

वाहन पुं. {सं.} वह जिस पर चढ़कर चलते हों, सवारी जैसे-घोड़ागाड़ी, पालकी आदि; वह जिसपर कोई चीज चढ़ाई, बैठाई या रखी हो; वह चीज जिसके आधार पर कोई चीज कहीं पहुँचती हो, जैसे बिजली की धारा का वाहन वायु और तार हैं (वीहिकिल)।

वाहना *स.* बाहना।

वाहवाह *विस्मयादि.* {फा.} प्रशंसासूचक शब्द।

वाहवाही *स्त्री.* {फा. वाहवाह} लोगों की प्रशंसा, स्तुति, साधुवाद।

वाहरिपु पुं. महिष, भैंसा।

वाहि *सर्व.* {हिं. वा} उसको, उसे।

वाहिक पुं. गाड़ी, छकड़ा।

वाहित *वि.* {सं.} वहन किया हुआ, ढोया हुआ; बिताया हुआ।

वाहिनी *स्त्री.* {सं.} सेना, फौज; आज-कल सेना का वह विशिष्ट बड़ा विभाग जो किसी एक उच्च सैनिक अधिकारी के अधीन हो; *वि.* अपने ऊपर या अपने में रख या लेकर कहीं ले

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने या पहुँचानेवाली (यौ. के अन्त में, जैसे रक्तवाहिनी नलिका)।

वाहिनीपति पुं. {सं.} सेनापति।

वाहियात *वि.* {अ. वाही का बहुवचन रूप} व्यर्थ, फिजूल; बुरा, खराब।

वाही[1] *वि.* {सं. वाहिन्} {स्त्री. वाहिनी} वहन करनेवाला, जैसे भारवाही; अपने ऊपर या अपने में रख या लेकर कहीं ले जाने या पहुँचानेवाला, जैसे विमानवाही पोत; वाहक।

वाही[2] *वि.* {अ.} व्यर्थ, फिजूल।

वाही-तबाही *वि.* {अ. वाही + तबाही} वाहियात, बेहूदा; अंडबंड; स्त्री. अंडबंड या गाली-गलौच की बातें।

वाहुल पुं. कार्तिक मास।

वाहुल्य पुं. अधिकता, आधिक्य।

वाह्य *वि.* {सं.} वहन करने योग्य; वहन करनेवाला, जैसे-वाह्य पशु।

वाह्यांतर *वि.* भीतर और बाहर का।

वाह्लीक पुं. {सं.} अफगानिस्तान के पश्चिम का एक प्राचीन प्रदेश; इस देश का प्रसिद्ध घोड़ा।

विंद पुं. वृंद; विंदु।

विंदक पुं. {?} प्राप्त करनेवाला; जाननेवाला।

विंदु पुं. {सं. बिन्दु} पानी या और किसीस तरल पदार्थ की बूँद (ड्रॉप); बिन्दी; अनुस्वार; शून्य; रेखागणित में अंकित किया हुआ वह छोटा गोल धब्बा जो किसी स्थान का निर्देश तो करता है पर न तो उसमें लंबाई-चौड़ाई का होना माना जाता है और न जिसके विभाग हो सकते हैं।

विंदुक पुं. {सं. विन्दु + क (प्रत्य.)} पिचकारी का तरह का एक प्रकार का छोटा उपकरण जिससे आँख, कान, नाक आदि में बूँद-बूँद करके दवा डाली जाती है (ड्रापर)।

विंदुचित्र पुं. विंदुओं से बना चित्र।

विंदुर पुं. छोटी बिंदी, बुँद की।

विंध पुं. विंध्य।

विंध्य पुं. {सं.} भारत के मध्य में पूर्व-पश्चिम फैली हुई एक प्रसिद्ध पर्वतमाला।

विंध्यवासिनी स्त्री. {सं.} एक देवी जिसका मंदिर मिर्जापुर जिले में विन्ध्यपर्वत पर है।

विंध्याचल पुं. {सं.} विंध्य नामक पर्वतमाला।

विंश *वि.* {सं.} बीसवाँ।

वि *उप.* {सं.} एक उपसर्ग जो शब्दों में लगकर ये अर्थ देता है—विशेष; जैसे विक्षुब्ध; अनेकरूपता, जैसे विविध; निषेध या विपरीतता। कुछ अवस्थाओं में अं. सब और कुछ अवस्थाओं में अं. डी के अर्थ में, जैसे विक्रय, विपक्ष, विनियंत्रण, विसामान्य।

विकंकत पुं. कंटकारी।

विकंपित *वि.* काँपता हुआ, चंचल।

विक पुं. तुरत की व्यायी हुई गाय का दूध।

विकंपन पुं. {*वि.* विकंपित} = कंपन।

विकच *वि.* {सं.} खिला हुआ, विकसित; जिसके कच या बाल न हों; पुं. बालों की लट।

विकट *वि.* {सं.} {*भाव.* विकटता} भयंकर, भीषण; कठिन, मुश्किल; दुर्गम।

विकाटाक्ष पुं. विकराल आँखोंवाला।

विकत्था स्त्री. आत्मप्रंशसा।

विकथा स्त्री. बेकार बात।

विकर[1] पुं. {सं. वि = विशिष्ट + कर} कुछ विशेष अवस्थाओं में या विशिष्ट पदार्थों पर लगनेवाला कर, अबवाब (सेस)।

विकर[2] पुं. {सं.} रोग, बीमारी।

विकराल *वि.* {सं.} {*भाव.* विकरालता} भीषण, डरावना।

विकर्ण पुं. {सं.} वह रेखा जो किसी चतुर्भुज के तिरछे बाल में पड़नेवाले आमने-सामने के बिंदुओं को मिलाती और उस चतुर्भुज को दो त्रिभुजों में विभक्त करती है, कर्ण (डायगनल); *वि.* चार या अधिक कोणोंवाले क्षेत्र में किसी कोण से उसके ठीक विपरीत कोण तक होने या पहुँचानेवाला, टेढ़े बल में नीचे विपरीत कोण तक होने या पहुँचनेवाला, टेढ़े बल में नीचे से ऊपर जाने या ऊपर से नीचे आनेवाला।

विकर्णक पुं. शिव के एक गण का नाम।

विकर्णतः *क्रि. वि.* {सं.} विकर्ण के रूप में, तिरछे बल में (डायगनली)।

विकर्षण पुं. {सं.} {*वि.* विकृष्ट} आकर्षण का विपर्याय; प्राचीनकाल का एक शास्त्र जिसमें किसी को अपनी ओर खींचने या अपने पर अनुरक्त करने की विद्या का वर्णन है; न रहने देना, जैसे किसी प्रथा पद्धति आदि का विकर्षण (एबॉलिशन); निवर्तन।

विकर्षित *वि.* = विकृष्ट।

विकल *वि.* {सं.} {*भाव.* विकलता} जिसके मन में शांति न हो, विह्वल, व्याकुल, बेचैन; कला से रहित या हीन; टूटा-फूटा, खंडित; अपूर्ण, अधूरा।

विकलता स्त्री. {सं.} विकल होने की अवस्था या भाव, व्याकुलता, बेचैनी; कलाहीनता।

विकलन पुं. {सं.} खाते या रोकड़-बही में किसी के नाम उसे दिया हुआ धन लिखना, किसी के नाम खर्च की मद में लिखना (डेबिट)।

विकलांग *वि.* {सं.} जिसका कोई अंग टूटा या बेकाम हो, खंडित अंगवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकला *स्त्री.* {सं.} चंद्रमा की कला का सोलहवाँ भाग; गणित में समय का एक बहुत छोटा मान।

विकलाना *अ., स.* {सं. विकल} व्याकुलता या बेचैन होना या करना, घबराना या घबरा देना।

विकलित *वि.* विकल।

विकली *स्त्री.* ऋतुहीना स्त्री।

विकल्प *पुं.* {सं.} {*वि.* विकल्पित, वैकल्पिक} एक कल्पना के बाद उसके विरुद्ध या उससे मिलती-जुलती की जानेवाली दूसरी कल्पना, पहले कोई बात सोचकर फिर उसके विरुद्ध और-और बातें सोचना; वह अवस्था जिसमें सामने आए हुए कई विषयों या बातों में से कोई एक विषय या बात अपने लिए चुनने का अधिकार रहता है (ऑपशन); सामने आए हुए दो या अधिक ऐसी बातों या कामों में से हर एक जिनमें से कोई अपने लिए ग्रहण किया जाने को हो (आल्टरनेटिव); व्याकरण में, किसी विषय के कई नियमें में से अपनी इच्छा के अनुसार कोई एक नियम लेना या मानना; भ्रम, धोखा; योग के अनुसार एक प्रकार की चित्तवृति जिसमें मन में कुछ संदेह बना रहता है; एक प्रकार की समाधि; साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें दो ऐसी विरोधी बातें रखकर जो एक साथ न हो सकती हों, यह कहा जाता है कि या तो या होगा या वह (कै, कि, अथवा वा, या आदि शब्द इसके सूचक होते हैं); जैसे पार्वती का या प्रतिज्ञा करना कि या तो मैं शंकर जी से विवाह करूँगी या जन्म भर कुमारी रहूँगी।

विकल्पित *वि.* अनियमित, सदिग्ध।

विकल्पी *वि.* = वैकल्पिक।

विकल्मस *वि.* पापरहित।

विकवच *वि.* कवचरहित।

विकश्वर *वि.* विकासशील।

विकस *पुं.* चंद्रमा।

विकसन *पुं.* {सं.} {*वि.* विकसित} विकसित होने की क्रिया या भाव, विकसित होना; (कलियों आदि का) खिलना।

विकसना *अ.* {सं. विकास} विकसित होना, विकास को प्राप्त होना; (कलियों का) खिलना; (मन का) प्रसन्न होना।

विकसाना *स.* हिं. 'विकसना' का *स.*।

विकसित *वि.* {सं.} जिसका विकास हुआ हो, विकास को प्राप्त होनेवाला; खिला हुआ।

विकस्वर *पुं.* {सं.} साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमे पहले कोई बात साधारण रूप से कही जाती है और तब कोई उदाहरण या उपमा देकर विशेष रूप से उसकी पुष्टि या समर्थन किया जाता है।

विकार *पुं.* {सं.} {*वि.* विकृत, विकारी} वह दोष जिसके कारण किसी वस्तु का रूप-रंग बदल जाता है और वह खराब होने लगती है, बिगाड़; दोष, खराबी, बुराई; मन में उत्पन्न होनेवाला कोई प्रबल भाव या वृत्ति; व्याकरण में उसके नियम के अनुसार किसी शब्द का रूप बदलना, जैसे 'वह चलने लगा' में 'चलने' वस्तुतः 'चलना' का विकार या विकृत रूप है।

विकारी *वि.* {सं.} जिसमें किसी प्रकार का विकार या बिगाड़ हुआ हो; खराब, बुरा।

उदा. असुभ होई जिनके सुमिरे तें, बारन, रीछ विकारी—**तुलसी**

जिसमें किसी प्रकार का परिवर्तन या हेर-फेर हुआ हो; जिसमें मन में राग, द्वेष आदि विकार उत्पन्न हुए हो।

पुं. व्याकरण में वह शब्द जिसका रूप कुछ विशेष नियमों के अनुसार या कुछ विशेष अवस्थाओं में बदलता हो, जैसे प्रायः सभी संज्ञाएँ, क्रियाएँ और विशेषण विकारी होते हैं।

विकाल *पुं.* {सं.} किसी कार्य के उपयुक्त या नियत समय के बीत जाने के बाद का समय, अतिकाल, देर; दिन के तीसरे पहर के बाद का समय, संध्या।

विकाश *पुं.* {सं.} प्रकाश, रोशनी; विस्तार, फैलाव; विकास।

विकाशक *वि.* विकाश करनेवाला।

विकाशन *पुं.* {सं.} किसी वस्तु में अच्छी-अच्छी बातें बढ़ाकर उसे उन्नत करना; अच्छी, उन्नत या सम्पन्न दशा की ओर ले जाना (ड्वेलपमेंट)।

विकाशी *वि.* विकाश करनेवाला।

विकास *पुं.* {सं.} {*वि.* विकसित} किसी वस्तु या बात का बढ़कर कुछ नया, बड़ा अथवा अधिक प्रभावी रूप धारण करना, विकाशन, फैलाव (ड्वेलपमेंट); (फूलों आदि का) खिलना; विज्ञान में मानी जानेवाली वह प्रक्रिया जिसके अनुसार कोई वस्तु अपनी आरंभिक सामान्य अवस्था से धीरे-धीरे बढ़ती, फैलती और सुधरती हुई उन्नत और पूर्ण अवस्था को प्राप्त होती है (इवोल्यूशन)।

विकासन *पुं.* प्रकाशन, प्रदर्शन।

विकासना *स.* = विकसित करना; *अ.* विकसना।

विकासमान *वि.* {सं.} जिसका विकास हो रहा हो।

विकासवाद *पुं.* {सं.} {*वि., पुं.* विकासवादी} आधुनिक वैज्ञानिकों का एक प्रसिद्ध सिद्धांत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसमें यह माना जाता है कि आरंभ में पृथ्वी पर एक ही मूल तत्व था और सब वनस्पतियाँ, वृक्ष, जीव-जन्तु, मनुष्य आदि क्रमशः उसी से निकले, फैले और बढ़े हैं।

विकासशील *वि.* {सं.} जिसका विकास हो रहा हो।

विकिर *पुं.* पक्षी, चिड़िया।

विकिरण *पुं.* {सं.} बहुत-सी किरणों का एक केन्द्र में इकट्ठा किया जाना या होना, जैसे आतशी शीशे में।

विकीर्ण *वि.* {सं.} चारों ओर बिखरा या फैला हुआ; प्रसिद्ध, मशहूर।

विकुंठ *पुं.* = वैकुंठ।

विकुंठन *पुं.* दुर्बलता।

विकुंडल *वि.* कुंडलरहित।

विकुक्षि *वि.* तोंदवाला।

विकुत्सा *स्त्री.* अधिक निंदा।

विकूबर *वि.* सुंदर, मनोहर।

विकृत *वि.* {सं.} जिसमें किसी प्रकार का विकार हो गया हो, जिसका रूप बिगड़ गया हो; जो युक्ति, तर्क या बुद्धि के अनुसार ठीक न हो, बल्कि उसके विपरीत अनुचित या भ्रमपूर्ण हो (परवर्स)।

विकृत चित्त *वि.* {सं.} किसी प्रकार के मानसिक विकार, नशे आदि के कारण जिसका चित्त या बुद्धि ठिकाने न हो (ऑफ अनसाउंड माइंड)।

विकृति *स्त्री.* {सं.} विकार, बिगाड़; वह रूप जो किसी वस्तु के बिगड़ने पर उसे प्राप्त होता है, किसी वस्तु का बिगड़ा हुआ रूप; सांख्य में मूल प्रकृति का वह रूप जो उसमें विकार आने पर उसे प्राप्त होता है; मन का क्षोभ; व्याकरण में शब्द का वह रूप जो मूल धातु में विकार होने पर उसे प्राप्त होता है; सत्य, औचित्य, न्याय, तर्क, नियम, विधान आदि के सिद्धांतों के विपरीत या विरुद्ध होने की अवस्था या भाव (परवर्शन, परवर्सिटी)।

विकृष्ट *वि.* {सं.} खींचा या खिंचा हुआ, आकृष्ट; (विधान, आज्ञा आदि) जिसका अन्त कर दिया गया हो, जो न रहने दिया गया हो।

विकेंद्रीकरण *पुं.* {सं.} सत्ता आदि को एक केन्द्र से हटाकर आस-पास के भिन्न-भिन्न अंगों में बाँटना (डिसेंट्रलाइज़ेशन)।

विकेंद्रीकृत *वि.* {सं.} जिसका विकेंद्रीकरण हो चुका हो।

विकेशी *स्त्री.* पृथ्वी, पूतना नामक राक्षसी।

विक्रम *पुं.* {सं.} पराक्रम, वीरता, बहादुरी; बल, शक्ति, ताकत; विक्रमादित्य।

विक्रमण *पुं.* पाद विक्षेप, चलना।

विक्रमाजीत *पुं.* विक्रमादित्य।

विक्रमादित्य *पुं.* {सं.} उज्जयिनी का एक प्रसिद्ध और बहुत प्रतापी राजा जिसका ठीक-ठीक समय इतिहासज्ञ अभी तक निश्चित नहीं कर सके हैं, विक्रमी संवत् इन्हीं का चलाया हुआ माना जाता है।

विक्रमाब्द *पुं.* {सं.} विक्रमी संवत्।

विक्रमी *वि.* {सं.} जिसमें विक्रम या वीरता हो; विक्रम-संबंधी, विक्रम का।

विक्रमी संवत् *पुं.* {सं.} भारत में प्रचलित एक प्रसिद्ध संवत् जो उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य का चलाया हुआ माना जाता है।

विक्रय *पुं.* {सं.} मूल्य लेकर कोई वस्तु किसी को देना, बेचना, बिक्री, विक्रय (सेल)।

विक्रयकर *पुं.* बिक्री कर।

विक्रयकला *स्त्री.* {सं.} ग्राहकों के हाथ चीजें बेचने की कला या हुनर, माल बेचने का कौशल (सेल्समैनशिप)।

विक्रयार्थ *वि.* {सं.} जो बिकने के लिए हो, बिक्री का (फॉर सेल)।

विक्रयिक *वि.* {सं.} वह जो ग्राहकों के हाथ माल बेचने में चतुर हो, विक्रयकला का ज्ञाता (सैल्समैन)।

विक्रयिका *स्त्री.* {सं.} वह पुरजा जो नगद माल बेचने पर बेचनेवाला लिखकर खरीदनेवाले को देता है, नगद बिक्री का पुरजा (कैश मीमो)।

विक्रयी *पुं.* {सं. विक्रयिन्} वह जो बेचता हो या जिसने बेचा हो, बेचनेवाला, विक्रेता; विक्रयिक।

विक्रांता *स्त्री.* हंसपदी लता, अड़हुल।

विक्रांति *स्त्री.* शूरता, वीरता।

विक्रायक *वि.* बेचनेवाला, विक्रेता।

विक्री *स्त्री.* बेचने की क्रिया। बिक्री।

विक्रीत *वि.* बेचा हुआ।

विक्रियोपमा *स्त्री.* {सं.} उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें किसी विशिष्ट क्रिया या उपाय के अवलम्बन का वर्णन होता है।

विक्रेता *पुं.* {सं.} वह जिसने किसी के हाथ कोई चीज बेची हो; लोगों के हाथ माल बेचनेवाला, विक्रयी।

विक्रेय *वि.* {सं.} (वस्तु या माल) जो बेचा जाने को हो, बिकाऊ।

विक्लिष्ट *वि.* बहुत थका हुआ।

विक्लेद *पुं.* आर्द्रता, गीलापन।

विक्लेश *पुं.* बड़ा कष्ट।

विक्षत *वि.* चोट खाया हुआ, जिसे क्षत लगा हो, घायल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व

विक्षिप्त *वि.* {सं.} फैला, बिखरा या छितराया हुआ; जिसके मस्तिष्क में विकार हो गया हो, पागल (ल्यूनैटिक); *पुं.* योग के अनुसार चित्त की वह अवस्था जिसमें कभी वह स्थिर और कभी चंचल होता है।

विक्षिप्तता *स्त्री.* {सं.} पागलपन।

विक्षुब्ध *वि.* {सं.} जो विशेष रूप से क्षुब्ध हुआ हो, जिसे या जिसमें विक्षोभ हुआ हो।

विक्षेप *पुं.* {सं.} ऊपर या इधर-उधर फेंकना; मन का इधर-उधर भटकना, मन का संयत या शांत न रहना; प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र; विघ्न, बाधा।

विक्षेपण *पुं.* इधर-उधर फेंकने का काम।

विक्षोभ *पुं.* {सं.} {*वि.* विक्षुब्ध} मन की चंचलता, उद्वेग; किसी अप्रिय या अनिष्ट घटना के कारण मन में होनेवाला विकार; उथल-पुथल।

विक्षोभण *पुं.* क्षोभ, हिलाना, फाड़ना।

विक्षोभी *वि.* दुख उत्पन्न करनेवाला।

विखंडी *वि.* टुकड़े करनेवाला।

विखनन *पुं.* खोदने का काम।

विखनस् *पुं.* ब्रह्मा।

विखहा *पुं.* बिपहा।

विखान *पुं.* = विषाण।

विख्यात *वि.* {सं.} {*भाव.* विख्याति} जिसकी बहुत ख्याति हो, प्रसिद्ध।

विख्याति *स्त्री.* {सं.} प्रसिद्धि।

विख्यापन *पुं.* {सं.} {*वि.* विख्यापित} कोई बात सबकी जानकारी के लिए सार्वजनिक रूप से कहना या प्रकाशित करना (एनाउंसमेंट)।

विगत *वि.* {सं.} (समय) जो गत हो चुका हो, बीता हुआ; जो अभी तुरंत बीता हो, उससे ठीक पहले का, 'गत' के पहले का, जैसे विगत सप्ताह, विगत वर्ष (अर्थात् गत सप्ताह या गत वर्ष से पहले का, सप्ताह या वर्ष); रहित, विहीन।

विगता *स्त्री.* वह स्त्री जो परपुरुष से प्रेम करती हो।

विगतयौवन *वि.* {सं.} {*स्त्री.* विगतयौवना} अधेड़।

विगति *स्त्री.* 'विगत' का भाव; दुर्दशा, दुर्गति।

विगम *पुं.* अंत, नाश, मृत्यु।

विगर्हण *पुं.* निंदा।

विगर्हणा *स्त्री.* निंदा, डाँट-डपट।

विगर्हित *वि.* बुरा, खराब।

विगलन *पुं.* {सं.} {*वि.* विगलित} पुरानी या खराब होने के कारण किसी चीज का सड़ना या गलना; शिथिल होना, ढीला पड़ना; बिगड़ना, खराब होना; बह या गिरकर अलग होना या निकलना।

विगाह *पुं.* अवगाहन, स्नान।

विगीत *वि.* गर्हित, निंदित।

विगीति *स्त्री.* एक छंद।

विगुण *वि.* {सं.} गुणरहित, निर्गुण।

विग्र *वि.* {सं.} जिसकी नाक कटी हुई या बहुत चिपटी हो, नासिकाहीन।

विग्रह *पुं.* {सं.} {*वि.* विग्रही} दूर या अलग करना; विभाग; यौगिक शब्दों अथवा समस्त पदों की व्याख्या या विश्लेषण के लिए प्रत्येक शब्द अलग-अलग करना (व्याकरण); कलह, लड़ाई, झगड़ा; युद्ध; शत्रुओं या विरोधियों में फूट डालना; आकृति, रूप; शरीर; देवता, आदि की मूर्ति।

विघटन *पुं.* {सं.} {*वि.* विघटित} घटित करनेवाला या संयोजक अंगों को अलग-अलग करना, जैसे संस्था का विघटन (डिस्सोल्यूशन); बिगाड़ना; नष्ट करना; तोड़ना-फोड़ना।

विघटनकारी *वि.* {सं.} विघटन करनेवाला।

विघात *पुं.* {सं.} चोट, आघात; नाश; हत्या; विफलता; बाधा।

विघातन *पुं.* हत्या।

विघूर्णन *पुं.* {सं.} {*वि.* विघूर्णित} चक्कर खाना, घूमना।

विघोषण *पुं.* {सं. वि + घोष} {*वि.* विघोषित} घोषणा करने की क्रिया या भाव; सूचना, विधान आदि का वह प्रकाशन जो उसके प्रचलित किए जाने का सूचक हो (प्रोमल्गेशन)।

विघ्न *पुं.* {सं.} अड़चन, बाधा।

विघ्नेश *पुं.* गणेश।

विघ्नहरण *पुं.* {सं.} गणेश।

विचंद्र *वि.* चंद्ररहित।

विचंद्रा *स्त्री.* रात्रि, रात।

विचकित *वि.* = चकित।

विचक्षण *वि.* {सं.} चमकता हुआ; किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता, निपुण (एक्सपर्ट); पंडित, विद्वान; बहुत बड़ा बुद्धिमान।

विचच्छन *पुं.* = विचक्षण।

विचय *पुं.* एकत्र करना, परीक्षा करना।

विचयन *पुं.* {सं.} कोई चीज ढूँढ़ने या तलाश करने की क्रिया या भाव, तलाश, खोज; चुराई या छिपाई हुई चीज को ढूँढ़ निकालने के लिए किसी के पहने हुए वस्त्रों या घर में की जानेवाली खोज, तलाशी (सर्च)।

विचयन प्रकाश *पुं.* {सं.} वह बहुत तेज रोशनी जो अँधेरे में किसी ओर बहुत दूर तक चली गई

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and [illegible]gotri

हो और जिसकी सहायता से उस ओर की सब चीजें देखी या ढूँढ़ी जा सकती हों (सर्च लाइट)।

विचरण पुं. {सं.} चलना; घूमना-फिरना।

विचरन पुं. विचरण।

विचरना अ. {सं. विचरण} चलना-फिरना, घूमना।

विचरनि स्त्री. चलने-फिरने की क्रिया।

विचल वि. {सं.} {भाव. विचलता, वि. विचलित} जो स्थिर न हो, चलता या हिलता हुआ, अस्थिर; स्थान, प्रतिज्ञा आदि से हटा हुआ।

विचलना अ. {सं. विचलन} अपने स्थान से हटकर इधर-उधर होना; घबराना; प्रतिज्ञा या संकल्प से हट जाना या उसपर दृढ़ न रहना।

विचलाना स. हिं. 'विचलना' का स.।

विचलित वि. {सं.} अस्थिर, चंचल; अपने स्थान, प्रतिज्ञा, सिद्धांत आदि से हटा हुआ।

विचार पुं. {सं.} मन में सोचा या सोचकर निश्चित किया हुआ तत्त्व या बात, संकल्प; मन में उत्पन्न होनेवाली बात, भावना, ख्याल; किसी बात के सब अंग देखना या सोचना-समझना (कंसिडरेशन); मुकदमे की सुनवाई और फैसला।

विचारना क्रि. सोचना, समझना, ढूँढ़ना।

विचारालय पुं. न्यायालय, विचारस्थल।

विचारक पुं. {सं.} विचार करनेवाला; न्याय विभाग का वह अधिकारी जो अर्थ-संबंधी व्यवहारों या मुकदमों का विचार करता है (मुंसिफ)।

विचारगर्भित वि. {सं.} विचारों से भरा हुआ।

विचारण पुं. {सं.} विचार करने की क्रिया या भाव; अभियोग, विवाद आदि के संबंध में न्यायालय का किया हुआ निर्णय (जजमेंट)।

विचारणीय वि. {सं.} {स्त्री. विचारणीया} जिस पर कुछ विचार करना आवश्यक या उचित हो; जो विचार के लिए सामने आया हो, पर जो किसी कारण से विचार के लिए रोक रखा गया हो (पेंडिंग); जिसके ठीक होने में संदेह हो, संदिग्ध।

विचारतंत्र वि. {सं.} विचार-प्रणाली।

विचारना स. {सं. विचार + हिं. ना (प्रत्य.)} विचार करना, सोचना; पूछना; ढूँढ़ना, पता लगाना।

विचारवान वि. = विचारशील।

विचारशील वि. {सं.} {भाव. विचारशीलता} जिसमें अच्छी तरह विचार करने की शक्ति हो, विचारवान।

विचार-स्वातंत्र्य पुं. {सं.} राज्य, शासन आदि की ओर से मिलनेवाली वह स्वतंत्रता जिसमें मनुष्य हर तरह की बातें सोच सकता और उनके संबंध में अपने विचार प्रगट कर सकता हो (लिबर्टी ऑफ थॉट)।

विचारित वि. {सं.} जिस पर विचार हुआ हो, विचार किया हुआ।

विचारी पुं. {सं. विचारिन्} वह जो विचार करता हो, विचार करनेवाला।

विचारोत्तेजक वि. {सं.} विचारों को उत्तेजित करनेवाला।

विचार्य वि. = विचारणीय।

विचिकित्सा स्त्री. {सं.} छानबीन, ऊहापोह।

विचिंतन पुं. चिंता करना।

विचिंता स्त्री. सोच-विचार।

विचिंत्य वि. विचार करने योग्य।

विचिंत्यमान वि. विचार किया हुआ।

विचित्र वि. {सं.} {भाव. विचित्रता} कई रंगोंवाला; अद्‌भुत, विलक्षण; पुं. साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें कोई कार्य सिद्ध करने के लिए कोई उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख होता है, जैसे विरहिणी नायिका का जल मरने की इच्छा से शरीर में कपूर, चंदन आदि का लेप करना।

विचित्रता स्त्री. {सं.} विचित्र, विलक्षण या अद्‌भुत होने की अवस्था या भाव, विलक्षणता, अनोखापन।

विचूर्ण, चूर्णित वि. {सं.} अच्छी तरह पीसा या चूर्ण किया हुआ।

विचेतन वि. {सं.} बेहोश, बेसुध।

विचेष्ट वि. {सं.} चेष्टारहित।

विचेता वि. व्यग्र, घबड़ाया हुआ।

विचेष्टा स्त्री. प्रयत्न, कुचेष्टा।

विच्छिति स्त्री. {सं.} विच्छेद, अलगाव; कमी, त्रुटि; साहित्य में एक हाव जिसमें स्त्री ऐसे साधारण शृंगार से ही, जो उसकी शोभा बहुत बढ़ा देता है, पुरुष को मोहित करने की चेष्टा करती है।

विच्छंद पुं. देवालय, मंदिर।

विच्छिन्न वि. {सं.} काट या छेदकर अलग किया हुआ, विभक्त; अलग।

विच्छेद पुं. {सं.} {वि. विछिन्न, विच्छेदक} काट या छेदकर अलग करना; बीच से क्रम टूटना; टुकड़े-टुकड़े करना या होना; नाश; विरह, वियोग।

विच्छेद वि., पुं. विभाजक।

विच्युत वि. {सं.} {भाव. विच्युति} अपने स्थान आदि से गिरा हुआ, च्युत।

विछोई पुं. = वियोगी।

विछोह पुं. = वियोग।

विजन वि. {सं.} जिसमें जन या मनुष्य न हों; एकांत निराला।

विजना पुं. = पंखा।

विज़न्मा पुं. जारज, दोगला।

विजयंती स्त्री. एक अप्सरा का नाम।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय *स्त्री.* {सं.} युद्ध, विवाद, प्रतियोगिता आदि में होनेवाली जीत, जय।

विजयकामना *स्त्री.* {सं.} विजय की कामना, जीत की इच्छा।

विजयदायी (यिन्) *वि.* {सं.} विजय दिलानेवाला।

विजययात्रा *स्त्री.* {सं.} किसी को जीतने के लिए की जानेवाली यात्रा।

विजयलक्ष्मी *स्त्री.* {सं.} विजय की अधिष्ठात्री और विजय प्राप्त करानेवाली देवी।

विजयश्री *स्त्री.* {सं.} जीत, विजय; विजय का परिचायक उपहार (ट्रॉफी)।

विजया *स्त्री.* {सं.} दुर्गा; भाँग; चार चरणों का एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में दस मात्राएँ होती हैं (उद्धत दंडक और शुभ्र दंडक इसी के प्रकार का भेद हैं); चार चरणों का एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में आठ-आठ वर्णों के चार टुकड़े और अंत में या लघु-गुरु होता या नगण होता है; विजयादशमी।

विजयादशमी *स्त्री.* {सं.} आश्विन शुक्ला दशमी (हिन्दुओं का त्योहार)।

विजयानंद *पुं.* संगीत का एक ताल।

विजयी *पुं.* {सं. विजयिन्} {*स्त्री.* विजयिनी} विजय प्राप्त करने या जीतनेवाले, विजेता।

विजयेश *पुं.* शिव, महादेव।

विजयोत्सव *पुं.* {सं.} विजयादशमी का उत्सव; किसी पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष में होनेवाला उत्सव।

विजर *वि.* जरारहित, जिसको बुढ़ापा न आए।

विजल *वि.* {सं.} जलरहित; *पुं.* वर्षा का अभाव, अवर्षण।

विजल्प *पुं.* व्यर्थ बात, बकवास।

विजाग *वि.* वियोग।

विजागी *वि., पुं.* वियोगी।

विजात *वि.* वर्णसंकर, दोगला।

विजाता *स्त्री.* जिस स्त्री को हाल में बच्चा हुआ हो।

विजाति *वि.* भिन्न जाति का।

विजातीय *वि.* {सं.} दूसरी जाति का।

विजानना *स.* {हिं. जानना} अच्छी तरह जानना।

विजित *वि.* {सं.} जो जीत लिया गया हो, जीता हुआ।

विजेता *पुं.* {सं. विजेतृ} जिसने विजय प्राप्त की हो, जीतनेवाला, विजयी।

विजेय *वि.* जीते जाने योग्य।

विज्जु *वि.* विद्युत, बिजली।

विज्जुल *पुं.* त्वचा, छिलका।

विज्जुलता *स्त्री.* बिजली।

विजै *स्त्री.* = विजय।

वियोग *पुं.* = वियोग।

विज्ञ *वि.* {सं.} {*भाव.* विज्ञता} जानकार; बुद्धिमान; विद्वान।

विज्ञप्त *वि.* {सं.} जिसकी जानकारी कराई गई हो, जतलाया या बतलाया हुआ; जिसका या जिसके संबंध में विज्ञापन हुआ हो (एड्वराइज़्ड)।

विज्ञप्ति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* विज्ञप्त} जतलाने या सूचित करने की क्रिया (नोटिफिकेशन); अधिकारिक रूप से प्रकाशित की हुई कोई सूचना (कम्यूनिक); विज्ञापन, इश्तहार।

विज्ञान *पुं.* {सं.} ज्ञान, जानकारी; आत्मा; बौद्धों के अनुसार आत्मस्वरूप का ज्ञान; किसी विषय का अच्छा और पूरा ज्ञान; किसी विषय विशेषत: जड़ पदार्थों और लौकिक विषयों की जानी हुई बातों, तत्वों, सिद्धांतों आदि का वह विवेचन जो एक स्वतंत्र शास्त्र के रूप में हो, जैसे भौतिक, राजनीति विज्ञान (साइंस)।

विज्ञानमय कोष *पुं.* {सं.} ज्ञानेन्द्रियों और बुद्धि का समूह (वेदांत)।

विज्ञानवाद *पुं.* {सं.} एक बौद्ध दार्शनिक सिद्धांत जिसमें यह जाना जाता था कि विज्ञान या चित्त ही एक मात्र सत्य पदार्थ है।

विज्ञानी *पुं.* {सं. विज्ञानिन्} किसी विषय का अच्छा ज्ञाता; बहुत बड़ा ज्ञानी; विज्ञानवेत्ता।

विज्ञापक *पुं.* समझनेवाला, विज्ञापनकर्त्ता।

विज्ञापन *पुं.* {सं.} {*वि.* विज्ञापक, विज्ञापनीय, विज्ञापित} जानकारी कराना, सूचना देना; वह सूचना-पत्र जिसके द्वारा कोई बात लोगों को बताई जाती है, इश्तहार; बिक्री आदि के माल या किसी बात की वह सूचना जो सब लोगों को, विशेषत: सामयिक पत्रों के द्वारा दी जाती है (एडवरटाइज़मेंट)।

विज्ञापित *वि.* {सं.} जिसका या जिसके संबंध में विज्ञापन हुआ है (एडवरटाइज़्ड); जिसकी सूचना दी गई हो (नोटिफाइड)।

विज्ञापित क्षेत्र *पुं.* {सं.} स्थानिक स्वशासन और प्रबन्ध के लिए नियत किया हुआ छोटा क्षेत्र (नोटिफाइड एरिया)।

विज्ञेय *वि.* जानने योग्य।

विटंक *पुं.* कबूतर का दरबा, (*वि.*) सुंदर।

विट *पुं.* {सं.} कामुक और लम्पट; धूर्त, चालाक; साहित्य में वह धूर्त और स्वार्थी नायक जो भोग-विलास में अपनी सारी संपत्ति गँवा चुका हो; विष्ठा, गुह।

विटप *पुं.* {सं.} वृक्ष, पेड़।

विटपी *पुं.* वृक्ष, पेड़।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and e...ri

विटलवण पुं. नौसादर।

विटामिन पुं. {अ.} प्रायः खाद्य पदार्थों में पाया जानेवाला एक प्रकार का पोषक तत्व, विशेष पोषक।

विटैमिन पुं. विटामिन।

विडंब पुं. विडंबन; विडंबना।

विडंबक पुं. चिढ़ानेवाला।

विडंबन पुं. {सं.} चिढ़ाने या हँसी उड़ाने के लिए किसी के रंग-ढंग या हाव-भाव की नकल उतारना; हँसी उड़ाना, उपहास करना।

विडंबना *स्त्री.* {सं.} {*वि.* विडंबनीय, विडंबित} किसी को चिढ़ाने या तुच्छ ठहराने के लिए की जानेवाली उसकी नकल; हँसी, उपहास; दम्भ।

विडंबित *वि.* ठगा हुआ।

विडंबी पुं. विडंबना करनेवाला।

विडरना *अ.* {?} तितर-बितर होना; भागना।

विडारना *स.* हिं. 'विडरना' का *स.*।

विडाल पुं. {सं.} बिल्ली।

विडौजा पुं. {सं.} इंद्र।

वितुंड पुं. गज, हाथी।

वितंडा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* कर्ता वैतंडिक} दूसरे की बातों की उपेक्षा करते हुए अपनी बात कहते चलना; व्यर्थ का विवाद या कहा-सुनी।

वितंत पुं. {सं. *वि.* + तंत्र} (सारंगी, सितार आदि से भिन्न प्रकार का) वह बाजा जिसमें तार न लगे हों।

वित *वि.* {सं. विद्} जाननेवाला, ज्ञाता; चतुर, निपुण; पुं. = वित्त (धन)।

वितत *वि.* {सं.} विस्तृत, फैला हुआ।

विततना *अ.* {सं. व्यथा} व्याकुल होना, बेचैन होना।

वितति *स्त्री.* {सं.} विस्तार, फैलाव।

वितथ *वि.* मिथ्या, झूठ, निरर्थक।

वितथ *वि.* {सं.} जिसमें कुछ तथ्य न हों; मिथ्या, झूठ; पुं. आज्ञा, निश्चय, आभार आदि के निर्वाह या पालन का अनुचित या दंडनीय अकरण या अभाव (डिफॉल्ट)।

वितनु *वि.* अति सूक्ष्म।

वितथी पुं. {सं. वितथ} वह जो आज्ञा निश्चय, आभार आदि का ठीक समय और उचित रूप से पालन न कर सका हो, वितथ का दोषी (डिफॉल्टर)।

वितन पुं. {सं. वितनु} कामदेव।

उदा. तिय तन वितन जु पंचसर लगे पंच की बार—**नन्ददास**।

वितनु *वि.* {सं.} बिना तन या शरीर का; बहुत छोटा, सूक्ष्म; पुं. कामदेव।

वितपन्न *वि.* = व्युत्पन्न।

वितरक पुं. {सं.} वह जो बाँटता हो, बाँटनेवाला; वह जो किसी के अभिकर्ता के रूप में उसकी तैयार की हुई चीजें ग्राहकों या थोक व्यापारियों को देता हो (डिस्ट्रिब्यूटर)।

वितरण पुं. {सं.} देना; बाँटना (डिस्ट्रिब्यूशन)।

वितरना *स.* = बाँटना।

वितरित *वि.* {सं.} बाँटा हुआ।

वितर्क पुं. {सं.} मन में कोई विचार उत्पन्न होने पर उसके विरुद्ध कोई तर्क या शंका उत्पन्न होना जो साहित्य में एक संचारी भाव है। किसी महान कथन या तर्क को ठीक न मानकर उसके विरुद्ध दिया जानेवाला कोई तर्क (आर्गुमेंट); एक अर्थालंकार जिसमें संदेह या वितर्क का उल्लेख होता है।

वितर्क्य *वि.* अति विलक्षण।

वितल पुं. सात पातालों में से तीसरा पाताल।

वितस्ता *स्त्री.* पंजाब की झेलम नदी का पुराना नाम।

वितस्ति पुं. वित्ता, बारह अंगुल का नाप।

विताड़न पुं. ताड़ना।

वितान पुं. {सं.} विस्तार, फैलाव; बड़ा तम्बू या खेमा; यज्ञ।

वितानक पुं. बड़ा चँदवा, समूह।

विताानना *स.* {सं. वितान} खेमा आदि तानना।

वितामस पुं. प्रकाश, उजाला।

वित् पुं. = वित्त।

वितृण *वि.* तृणहीन।

वित्त पुं. {सं.} {*वि.* वैत्तिक, वित्तीय} धन, संपत्ति; राज्य, संस्था आदि की आय और व्यय की व्यवस्था, आर्थिक प्रबन्ध (फाइनेंस)।

वित्तनाश पुं. {सं.} वित्त या पूँजी का विनाश।

वित्त-मंत्रालय पुं. {सं.} वह मंत्रालय जो देश की अर्थनीति निर्धारित करता है।

वित्त-विधेयक पुं. {सं.} राज्य का वह विधेयक जो आगामी वर्ष की आय-व्यय आदि से संबंध रखता और विधान सभा में स्वीकृति के लिए उपस्थित किया जाता है (फाइनेंस बिल)।

वित्तीय पुं. {सं.} वित्त-संबंधी, वित्त का; वित्त की व्यवस्था के विचार से चलने या होनेवाला, जैसे वित्तीय वर्ष = साधारण वर्ष से भिन्न, किसी विशेष मास से आरम्भ होनेवाला वर्ष (भारत का वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल से 31 मार्च तक का होता है)।

वित्रप *वि.* निर्लज्ज।

विथकना *अ.* {हिं. थकना} थकना; मोह या आश्चर्य के कारण चुप होना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विथकित *वि.* {हिं. विथकना} थका हुआ; मोहित या चकित होने के कारण चुप।

विथराना *स.* {सं. वितरण} फैलाना; बिखराना, छितराना।

विथा *स्त्री.* = व्यथा।

विथारना *स.* = फैलाना।

विथित *वि.* = व्यथित।

विदग्ध *पुं.* {सं.} {*भाव.* विदग्धता, *स्त्री.* विदग्धा} रसिक; विद्वान, पंडित; चतुर, दक्ष, होशियार।

विधुरा *स्त्री.* वह स्त्री जिसका उसके स्वामी से वियोग हुआ हो।

विध्या *स्त्री.* गोभी।

विदक्षिण *वि.* दक्षिणारहित।

विदग्धा *स्त्री.* {सं.} साहित्य में वह परकीया नायिका जो होशियारी के साथ परपुरुष को अपनी ओर अनुरक्त करे; यह दो प्रकार की मानी गई हैं-वचन-विदग्धा और क्रिया-विदग्धा।

विदरना[1] *अ.* {सं. विदरण} फटना; *स.* विदीर्ण करना, फाड़ना।

विदरना[2] *क्रि.* विदीर्ण होना, फटना।

विदर्भ *पुं.* {सं.} आधुनिक बरार प्रदेश का पुराना नाम।

विदल *वि.* {सं.} जिसमें दल न हों; खिला हुआ।

विदलन *पुं.* {सं.} {*वि.* विदलित} रौंदने, मलने, दबाने आदि की क्रिया या भाव; फाड़ना; नष्ट करना।

विदलना *क्रि.* नष्ट करना।

विदलित *वि.* फाड़ा हुआ, मला हुआ।

विदा *स्त्री.* {*अ.* विदाअ} प्रस्थान; जाने की अनुमति; *वि.* प्रस्थित, रवाना।

विदाई *स्त्री.* {*अ.* विदाअ} विदा होने की क्रिया या भाव; प्रस्थान करने के समय दिया जानेवाला धन; किसी के प्रस्थान करने के समय उसके प्रति शुभ-कामना प्रकट करने के लिए लोगों का एकत्र होना (फेयरवेल)।

विदाई-पार्टी *स्त्री.* विदा के अवसर पर दी जानेवाली पार्टी।

विदाई-भाषण *पुं.* विदा लेते समय किया जानेवाला भाषण।

विदार *पुं.* युद्ध, समर।

विदारकर *पुं.* जल के बीच का वृक्ष या पर्वत।

विदारी *वि.* विदीर्ण करनेवाला।

विदारक *वि.* {सं.} फाड़नेवाला।

विदारण *पुं.* {सं.} फाड़ना; मार डालना।

विदारना *स.* = फाड़ना।

विदित *वि.* {सं.} जाना हुआ, ज्ञात।

विदिशा *स्त्री.* {सं.} दो दिशाओं के बीच की दिशा, कोण; मध्य भारत की एक प्राचीन नगरी (आजकल का भेलसा नामक नगर)।

विदीर्ण *वि.* {सं.} फाड़ा या फटा हुआ।

विदुष *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* विदुषी} पंडित, विद्वान।

विदुषी *स्त्री.* {सं.} विद्वान स्त्री।

विदूर *वि.* {सं.} {*वि.* विदूरित} बहुत दूर; *पुं.* वैदूर्य।

विदूषक *पुं.* {सं.} अपने वेष, चेष्टा, बातचीत आदि से दूसरों को हँसानेवाला, मसखरा; प्रायः नाटकों में इस प्रकार का एक पात्र जो नायक का अंतरंग मित्र या सखा होता है।

विदूषण *पुं.* {सं.} दोष लगाना।

विदूषना *क्रि.* {*अ.*} कष्ट देना, दुःखी होना।

विदेव *पुं.* {सं.} राक्षस, यक्ष।

विदेश *पुं.* {सं.} {*वि.* विदेशी, विदेशीय} अपने देश के सिवा दूसरा देश, परदेश।

विदेशी *वि.* {सं. विदेश} दूसरे देश या देशों से संबंध रखनेवाला; *पुं.* विदेश का निवासी, परदेशी।

विदेह *पुं.* {सं.} राजा जनक; मिथिला और मगध प्रदेशों का पुराना नाम, (इसमें कन्यावाचक शब्द लगने से 'सीता' का अर्थ होता है); *वि.* {सं.} जिसे अपने शरीर के अस्तित्व का कुछ भी ध्यान या चिंता न हो; शरीररहित; बेसुध।

विदेही[1] **(हिन्)** *पुं.* {सं.} ब्रह्मा।

विदेही[2] *वि.* {सं. विदेह} अशरीरी; *स्त्री.* सीता (वैदेही)।

विदोष *वि.* दोषरहित।

विद् *वि.* {सं.} जानकार, ज्ञाता (यौ. के अंत में, जैसे कलाविद्)।

विद्दरण *वि.* {सं.} दरण करने या दलनेवाला, विदारक।

विद्ध *वि.* {सं.} बेधा या छेदा हुआ; घायल; टेढ़ा; सटा हुआ।

विद्यमान *वि.* {सं.} {*भाव.* विद्यमानता} उपस्थित, मौजूद (प्रेजेंट)।

विद्या *स्त्री.* {सं.} शिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त किया हुआ ज्ञान; वे शास्त्र जिनमें ज्ञान की बातों का विवेचन होता है; ज्ञान के विशेष विभाग; गुण।

विद्यागम *पुं.* ज्ञान की प्राप्ति।

विद्याचार *पुं.* विद्वान्, पंडित।

विद्याधर *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* विद्याधरी} एक प्रकार की देवयोनि; एक प्रकार का अस्त्र; विद्वान व्यक्ति।

विद्याधिप *पुं.* बच्चों को विद्या पढ़ाना प्रारंभ करने का संस्कार।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and e...ri

विद्यापीठ पुं. {सं.} शिक्षा का बड़ा केन्द्र, महाविद्यालय।

विद्यारंभ पुं. {सं.} बालक की शिक्षा आरंभ करने का संस्कार।

विद्यार्थी (थिन्) पुं. {सं.} {*स्त्री.* विद्यार्थिनी} विद्या पढ़नेवाला, छात्र।

विद्यालय पुं. {सं.} वह जगह जहाँ विद्या पढ़ाई जाती हो, पाठशाला (स्कूल)।

विद्युत, विद्युत् *स्त्री.* {सं. विद्युत्} बिजली।

विद्युद्गौरी *स्त्री.* शक्ति की एक मूर्ति का नाम।

विद्युतचालक *वि.* {सं.} {*भाव.* विद्युतचालकता} (वह पदार्थ) जिसके एक सिरे पर विद्युत लगते ही उसके दूसरे सिरे तक पहुँच जाए (कंडक्टर ऑफ इलेक्ट्रिसिटी)।

विद्युतजनित्र पुं. {सं.} बिजली उत्पन्न करनेवाला उपकरण।

विद्युतप्रवाह पुं. {सं.} बिजली की धारा।

विद्युता *स्त्री.* विद्युत, बिजली; एक अप्सरा का नाम।

विद्युतिक *वि.* {सं. विद्युत्} विद्युत-संबंधी, विद्युत का; बिजली के कामों और यंत्रों से संबंध रखनेवाला (इलैक्ट्रिकल)।

विद्युन्माला *स्त्री.* {सं.} चार चरणों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण और दो गुरु होते हैं।

विद्रुम पुं. {सं.} मूँगा।

विद्रथ *वि.* मोटा, पुष्ट।

विद्रध *वि.* स्थूल, मोटा, पक्का।

विद्राव पुं. बहना, पिघलना।

विद्रावी *वि.* भागनेवाला।

विद्रुत *वि.* गला हुआ, भाग हुआ।

विद्रोह पुं. {सं.} द्वेष; वह भारी उपद्रव जिसका उद्देश्य राज्य को हानि पहुँचाना, उलटना या नष्ट करना हो, बलवा, बगावत (रिबीलियन, म्यूनिटी)।

विद्रोही पुं. {सं. विद्रोहिन्} द्वेष करनेवाला; बलवा करनेवाला, बागी।

विद्वत्ता *स्त्री.* {सं.} पांडित्य, ज्ञान।

विद्वान, विद्वान् पुं. {सं. विद्वस्} {*भाव.* विद्वत्ता} जिसने बहुत अधिक विद्या पढ़ी हो, पंडित।

विद्विष् पुं. शत्रु, बैरी।

विद्विष्ट *वि.* {सं.} विद्वेष से उत्पन्न; विरुद्ध पड़नेवाला (रिपगनेंट)।

विद्वेष पुं. {सं.} शत्रुता, वैर; विरोध, विपरीतता।

विध्वंस पुं. {सं. विध्वंस} {*क्रि.* विधंसना} नाश; *वि.* विध्वस्त, नष्ट, विनष्ट।

विध पुं. {सं. विधि} ब्रह्मा; *स्त्री.* विधि, प्रकार, तरह।

विधन *वि.* निर्धन।

विधरण पुं. रोकना, पकड़ना।

विधना *स्त्री.* {सं. विधि} विश्व का विधान करनेवाली शक्ति; होनी, होनहार, भवितव्यता।

विधया *क्रि. वि.* {सं.} विधि के रूप में: विधि के अनुसार।

विधर्म पुं. पराये का धर्म।

विधर्मी पुं. {सं. विधर्मिन्} {*भाव.* वैधर्म्य} अधर्म या दुष्कर्म करनेवाला; पराए या दूसरे धर्म का अनुयायी; किसी के गुण, धर्म आदि से भिन्न प्रकार के गुण आदि रखनेवला 'सधर्मी' का विपर्याय।

विधवा *स्त्री.* {सं.} {*भाव.* वैधव्य} वह स्त्री जिसका पति मर चुका हो, राँड़।

विधवाश्रम पुं. {सं. विधवा + आश्रम} वह स्थान जहाँ विधवाओं के पालन-पोषण और शिक्षा का प्रबन्ध होता है।

विधाँसना *स.* {सं.} विधंसना।

विधा *स्त्री.* {सं.} प्रकार, भेद; प्रणाली।

विधाता पुं. {सं. विधातृ} {*स्त्री.* विधात्री} विधान करनेवाला; उत्पन्न करने या जन्म देनेवाला; सृष्टि रचनेवाला (ब्रह्मा या ईश्वर)।

विधात्री *स्त्री.* {सं.} विधान करनेवाली।

विधान पुं. {सं.} किसी कार्य का आयोजन, अनुष्ठान; अवस्था, प्रबन्ध; विधि, प्रणाली, ढंग; रचना, निर्माण; कोई काम करने के लिए दी हुई आज्ञा, विधि; राज्य या शासन के द्वारा किसी विशेष विषय में बनाए हुए नियमों का समूह, कानून, जैसे साक्ष्य विधान, दंड विधान आदि (ऐक्ट); 'संविधान'।

विधान परिषद (द) *स्त्री.* {सं.} किसी देश या राज्य के चुने हुए प्रतिनिधियों की वह परिषद या सभा जो उसके लिए नए विधान या कानून बनाती और पुराने विधानों में संशोधन आदि करती है (लेजिस्टेटिव एसेम्बली); संविधान परिषद।

विधानमंडल पुं. विधानसभा।

विधानवाद पुं. संविधानवाद।

विधानवादी पुं. संविधानवादी।

विधानसभा *स्त्री.* {सं.} लोकतंत्री शासन में प्रजा के प्रतिनिधियों की वह सभा जो नए विधान या कानून बनाती और पुराने विधानों में संशोधन, परिवर्तन आदि करती है (लेजिस्लेचर)।

विधानसप्तमी *स्त्री.* माघ शुक्ला सप्तमी।

विधानी पुं. विधिपूर्वक कार्य करनेवाला।

विधायक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* विधायिका, विधायिनी} विधान करनेवाला; यह बतलानेवाला कि यह

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम इस प्रकार होना चाहिए; पुं. विधानसभा का सदस्य।

विधायन पुं. {सं. विधान से हिं.} विधान करना या बनाना; राज्य, शासन या विधान सभा का कोई नया विधान, अधिनियम, निर्देश आदि बनाना (एनैक्टमेंट); उक्त प्रकार से बने हुए विधान, अधिनियम, निर्देश आदि; किसी विषय या विभाग के कार्य-संचालन से संबंध रखनेवाले नियम आदि।

विधायन संग्रह पुं. {सं.} किसी विषय, विभाग, प्रान्त आदि के कार्य-संचालन से संबंध रखनेवाले नियमों, निर्देशों आदि का संग्रह (कोड)।

विधायिका *स्त्री.* {सं.} विधानसभा।

विधायित *वि.* विहित।

विधायी *वि.* विधायक।

विधारण पुं. {सं. वि (विकृत या विपरीत) + धारण} {*वि.* विधारित} किसी विवादास्पद या अप्रमाणित बात या विषय की पहले से स्थिर की हुई विपरीत, विकृत या पक्षपातपूर्ण धारणा (प्रिजुडिस)।

विधारा *स्त्री.* लता जो औषधों में इस्तेमाल होती है।

विधारित *वि.* {हिं. विधारण} जिसने अपने मन में किसी विषय में कोई विकृत या पक्षपातपूर्ण धारणा बना ली हो; जिसके संबंध में उक्त प्रकार की धारणा बनी या हुई हो (प्रिजुडिस्ड)।

विधि *स्त्री.* {सं.} काम करने का ढंग या रीति, प्रणाली, तरीका; व्यवस्था, प्रबंध; किसी धर्मशास्त्र या प्रामाणिक ग्रंथ में बतलाई हुई व्यवस्था, शास्त्रीय विधान; शास्त्रों की यह आज्ञा कि मनुष्य को अमुक-अमुक काम अवश्य करने चाहिए; मनुष्यों के आचार-व्यवहार के लिए राज्य द्वारा स्थिर किए हुए वे नियम या विधान, जिनका पालन सबके लिए आवश्यक और अनिवार्य होता है और जिनका उल्लंघन करने से मनुष्य दंडित होता या हो सकता है, कानून (लॉ); व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे किसी को कोई काम करने का आदेश दिया जाता है, जैसे यहाँ बैठो, सच बोलो आदि (इम्पेरेटिव मूड); साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी लोक-प्रसिद्ध या स्थापित विधान में किसी दूसरे अभिप्राय से फिर कोई नया विधान स्थापित किया जाए या कोई नई बात या शर्त लगाई जाए, जैसे–मनुष्य तो वह है जिसमें ईश्वरभक्ति, दया, परोपकार, सहानुभूति आदि गुण हों; प्रकृति या नियति; भाँति, तरह; पुं. सृष्टि की रचना करनेवाला, ब्रह्मा।

विधिक *वि.* {सं.} विधि या कानून से संबंध रखनेवाला; जो विधि के विचार से ठीक हो, वैध जैसे विधिक अधिकार, विधिक प्रतिनिधि आदि (लीगल, लॉफुल)।

विधिकता *स्त्री.* {सं.} विधि या विधि-विधान आदि के विचार से बिल्कुल ठीक होने की दशा या भाव (लीगैलिटी)।

विधिकर्ता पुं. {सं.} वह जो विधि या कानून बनाता हो (लॉ मेकर)।

विधिक प्रतिनिधि पुं. {सं.} वह जिसे विधि या कानून के अनुसार किसी के प्रतिनिधि के रूप में सब काम करने का अधिकार हो (लीगल रिप्रेजेंटेटिव)।

विधिक व्यवहार पुं. {सं.} वह कार्य या प्रक्रिया जो किसी व्यवहार या मुकदमे में विधि या कानून के अनुसार होती है (लीगल प्रोसीडिंग)।

विधिज्ञ पुं. {सं.} विधि का ज्ञाता; वह जिसने विधिशास्त्र या कानून का अच्छा अध्ययन किया हो और जो दूसरों के व्यवहारों के संबंध में न्यायालय में प्रतिनिधि के रूप में काम करता हो, जैसे वकील, बैरिस्टर आदि (लॉइयर)।

विधितः *क्रि. वि.* {सं.} विधि या कानून के अनुसर। (बाई लॉ); विधि या कानून की दृष्टि से ठीक या मान्य रूप में (लॉफुली)।

विधिना पुं. {सं.} विधि, ब्रह्मा।

विधिपत्नी *स्त्री.* {सं.} सरस्वती।

विधिभंग पुं. {सं.} ऐसा काम करना जिससे कोई विधि या कानून टूटता हो (ब्रीच ऑफ लॉ)।

विधिरानी *स्त्री.* = सरस्वती।

विधिवत् *क्रि. वि.* {सं.} विधि या नियम के अनुसार; उचित रूप से।

विधिविज्ञान पुं. {सं.} वह विज्ञान जिसमें किसी विषय के विशिष्ट नियमों, विधियों, सिद्धांतों आदि का विवेचन होता है और जिसके अध्ययन से मनुष्य उस विषय में दक्ष होता है (ज्यूरिसप्रूडेंस)।

विधिशास्त्र पुं. {सं.} किसी देश या राष्ट्र की सामान्य विधियों और प्रविधियों की समष्टि, जैसे भारतीय विधिशास्त्र (इण्डियन लॉ), जर्मन विधिशास्त्र (जर्मन लॉ) आदि।

विधिशास्त्री पुं. {सं.} विधिशास्त्र का पंडित।

विधिसंगत *वि.* {सं.} विधि की दृष्टि से उपयुक्त।

विधिसम्मत *वि.* {सं.} विधि जिसका अनुमोदन करती हो।

विधुंतुद पुं. {सं.} चंद्रमा को ग्रसनेवाला, राहू।

विधु पुं. {सं.} चंद्रमा, ब्रह्मा।

विधुवैनी *स्त्री.* विधुवदनी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai a ngotri

विधुर पुं. {सं.} {स्त्री. विधुरा} दुःखी; व्याकुल; असमर्थ; वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गयी हो, रंडुआ।

विधुलेखा स्त्री. {सं.} चंद्रमा की किरण।

विधुवदनी स्त्री. {सं.} सुंदर स्त्री।

विधुर वि. व्यग्र, व्याकुल, दुःखी, असमर्थ।

विधत वि. काँपता हुआ, हटाया हुआ।

विधम वि. धूम्ररहित।

विधूत वि. {सं.} काँपता या हिलता हुआ; छोड़ा हुआ, त्यक्त; दूर किया या हटाया हुआ।

विधूनन पुं. {सं.} {वि. विधूनित} काँपना।

विधेय वि. {सं.} जिसका विधान करना उचित हो, किए जाने के योग्य, कर्तव्य; जिसका विधान होने को हो; पुं. व्याकरण में वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा किसी के संबंध में कुछ कहा जाता है (प्रेडिकेट)।

विधेयक पुं. {सं.} किसी विधान या कानून का वह पूर्व या प्रस्तावित रूप जो पारित होने के लिए विधान सभा में उपस्थित किया जाता है, कानून का मसौदा (बिल)।

विध्वंस पुं. {सं.} पूरा-पूरा नाश, बरबादी।

विध्वंसक वि. {सं.} नाश करनेवाला; पुं. एक प्रकार का लड़ाई का जहाज (डिस्ट्रायर)।

विध्वस्त वि. {सं.} नष्ट किया हुआ।

विन सर्व. उस।

विनता स्त्री. दक्ष प्रजापति की कन्या जो गरुड़ की माता थी।

विनत वि. {सं.} झुका हुआ; नम्र।

विनति स्त्री. {सं.} झुकाव; नम्रता, सुशीलता; प्रार्थना, विनती।

विनती स्त्री. = विनति।

विनम्र वि. {सं.} {भाव. विनम्रता} बहुत विनीत या नम्र।

विनय स्त्री. {सं.} नम्रता; शिक्षा; प्रार्थना; नीति।

विनयन पुं. {सं.} विनय, नम्रता, शिक्षा; निर्णय; दूर करना, मोचन।

विनयी वि. {सं. विनयिन्} विनययुक्त, विनयशील, नम्र।

विनशन पुं. विनाशन।

विनश्य वि. {सं.} नष्ट किए जाने या होने के योग्य।

विनश्वर वि. {सं.} नाशवान, अनित्य।

विनष्ट वि. {सं.} {भाव. विनष्टि} नष्ट, ध्वस्त; मृत; बिगड़ा हुआ; पतित।

विनसना अ. {सं. विनशंन} नष्ट होना।

विना अव्य. अभाव में।

विनाण पुं. = विज्ञान।

विनाती स्त्री. = विनति।

विनाम पुं. {सं.} झुकाव, टेढ़ापन।

विनायक पुं. {सं.} गणेश।

विनाश पुं. {सं.} {वि. विनाशक} नाश; लोप; बिगाड़, खराबी।

विनाशक वि. {सं.} {स्त्री. विनाशिका} विनाश करनेवाला।

विनाशकारी (रिन्) वि. {सं.} विनाश करनेवाला।

विनाशन पुं. {सं.} {वि. विनाशी, विनश्य} नष्ट करना; संहार करना।

विनास पुं. विनाश।

विनासना स. {सं. विनाशन} नष्ट करना; मार डालना।

विनिधान पुं. {सं. वि + विधान} {वि. विनिधित} निर्देश, सूचना आदि के रूप में पहले से यह बतला देना कि अमुक कार्य इस रूप में हो अथवा अमुक-अमुक वस्तुओं का प्रयोग इस रूप में हो; इस प्रकार के निर्देश या सूचना से युक्त लेख (प्रेसक्रिप्शन)।

विनिधित वि. {सं. विनिधान} जिसका निर्देश, सूचना आदि के रूप में पहले से विनिधान हुआ हो (प्रेसक्राइब्ड)।

विनिमय पुं. {सं.} एक वस्तु लेकर उसके बदले में दूसरी वस्तु देना, परिवर्तन (बार्टर); वह प्रक्रिया जिसके अनुसार भिन्न-भिन्न पक्षों या देशों का लेन-देन विनिमय-पत्रों के अनुसार होता है (एक्सचेंज); वह प्रक्रिया जिसके अनुसार भिन्न-भिन्न देशों के सिक्कों का आपेक्षिक मूल्य स्थिर होता है और जिसके अनुसार आपसी लेन-देन चुकाए जाते हैं (एक्सचेंज)।

पद विनिमय की दर = वह दर जिससे एक देश के सिक्के दूसरे देश के सिक्कों से बदले जाते हैं।

साहित्य में परिवृत्ति।

विनिमय-पत्र पुं. {सं.} वह पत्र जो किसी आर्थिक देन या व्यय का सूचक होता है और जिसके द्वारा आपस में लेन-देन की दर तय होती है।

विनियंत्रण पुं. {सं.} {वि. विनियंत्रित} नियंत्रण का हटाया या दूर किया जाना (डि-कंट्रोल)।

विनियोग पुं. {सं.} किसी वस्तु का किसी काम में लाया या लगाया जाना, उपयोग, प्रयोग; प्रेषणा, भेजना; व्यापार में पूँजी लगाना; संपत्ति आदि किसी प्रकार (विक्रय या दान आदि से) दूसरे को देना; उपयोजन।

विनियोगिका स्त्री. {सं.} विनियोग करने के योग्य या विनियोग करने में सक्षम बुद्धि या वृत्ति (डिस्पोजिंग माइंड)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनियोजक पुं. {सं.} विनियोग करनेवाला; व्यापार में पूँजी लगानेवाला; अपनी संपत्ति किसी को देनेवाला।

विनियोजन पुं. {सं.} विनियोग करना।

विनिर्गत *वि.* निकला हुआ।

विनिर्गम पुं. बाहर होना, प्रस्थान।

विनिर्घोष पुं. उच्च शब्द।

विनिर्भय *वि.* भयरहित।

विनिर्दिष्ट *वि.* {सं.} विशेष रूप से निर्दिष्ट किया या बतलाया हुआ (स्पेसिफायड)।

विनिर्देश पुं. {सं.} विशेष रूप से किया हुआ कोई निर्देश या निश्चित रूप से बतलाई हुई कोई बात (स्पेसिफिकेशन)।

विनिवर्तन पुं. {सं.} {*वि.* विनिवर्तित} दी हुई वस्तु या आज्ञा, किया हुआ प्रस्ताव अथवा प्रचलित की हुई चीज लौटा, लेना, वापस लेना।

विनिवर्तित *वि.* {सं.} जिसका विनिवर्तन हुआ हो. देने या उपस्थित करने के बाद वापस लिया हुआ (विद्ड्रॉन)।

विनिर्याण पुं. गमन, जाना।

विनिवारण पुं. रोक, नियंत्रण।

विनिवृत्त *वि.* लौटा हुआ।

विनिश्चय पुं. {सं.} किसी विषय में, विशेषत: किसी सभा, समिति या न्यायालय में, होनेवाला निश्चय या निर्णय (डिसीजन)।

विनिश्चायक *वि.* {सं.} विनिश्चय या निर्णय करनेवाला (डिसाइसिव)।

विनीत *वि.* {सं.} {*स्त्री.* विनीता} विनयी, सुशील; शिष्ट, नम्र; धर्म या नीतिपूर्वक व्यवहार करनेवाला।

विनीति *स्त्री.* सुशीलता, सम्मान।

विनूठा *वि.* अपूर्व, अनूठा।

विनेता पुं. शिक्षक, शासनकर्ता।

विनेत्र पुं. उपदेशक।

विनोक्ति *स्त्री.* {सं.} साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें कोई वस्तु किसी बात के अभाव के कारण अशोभन अथवा किसी बात का अभाव होने पर भी शोभन या सुंदर बतलाई जाती है।

विनोद पुं. {सं.} {*वि.* विनोदी} मन बहलानेवाली बात या काम, तमाशा; क्रीड़ा; कोई ऐसी वास्तविक या कल्पित बात जिसे सुनकर लोग हँस पड़ें, परिहास (ह्यूमर); प्रसन्नता।

विनोदी पुं. {सं. विनोदिन्} वह जो लोगों को हँसानेवाली बातें कहता हो, प्राय: परिहास करनेवाला, विनोदशील (ह्यूमरिस्ट)।

विन्यस्त *वि.* स्थापित, रखा हुआ।

विन्यास पुं. {सं.} {*वि.* विन्यस्त} स्थापन, रखना; यथास्थान या ठीक क्रम से लगाना; जड़ना।

विपंची *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार की वीणा; बाँसुरी, मुरली।
वि. जिससे मनोहर शब्द निकले।

विपक्ष पुं. {सं.} दूसरा या विरोधी पक्ष; विरोध या खंडन; विपक्षी।

विपक्षी पुं. {सं. विपक्षिन्} विरुद्ध पक्ष का व्यक्ति; विरोधी, शत्रु; प्रतिद्वंद्वी (आपोनेंट); प्रतिवादी।

विपणी *स्त्री.* हाट, दुकान।

विपज्जनक *वि.* {सं. विपद् + जनक} विपत्ति में डालनेवाला, संकट उत्पन्न करनेवाला।

विपताक *वि.* पताकारहित।

विपत्ति *स्त्री.* {सं.} दुख, कष्ट; दुख की स्थिति; कठिनाई; कोई ऐसी अनिष्ट घटना या उससे उत्पन्न होनेवाली स्थिति जिसमें बड़ी हानि हो सकती हो, संकट, मुसीबत (कैलेमिटी)।

विपत्तिजनक *वि.* {सं.} जिससे विपत्ति उत्पन्न होती हो या हो सकती हो (डेंजरस)।

विपथ पुं. {सं.} बुरा या खराब रास्ता।

विपथगामी (गामिन्) पुं. {सं.} {*स्त्री.* विपथगामिनी} बुरे या खराब रास्ते पर चलनेवाला, कुमार्गी; चरित्रहीन।

विपथित *वि.* {सं.} मार्गच्युत।

विपद् *स्त्री.* {सं.} विपत्ति, आफत।

विपदा *स्त्री.* विपत्ति, संकट, दुख।

विपन्न *वि.* {सं.} {*स्त्री.* विपन्ना, *भाव.* विपन्नता} दुखी, आर्त।

विपरीधान पुं. परिवर्तन।

विपरीत *वि.* {सं.} जो अनुकूल या हित-साधन में सहायक न हो, प्रतिकूल, विरुद्ध, खिलाफ (कट्रैरी); जो प्रकृति, प्रवृत्ति, स्थिति आदि के विचार से किसी के मुकाबले में या दूसरे पक्ष में हो, उलटा (अपोज़िट); जो क्रम, मान्यता आदि के विचार से किसी के विरुद्ध या दूसरे पक्ष में पड़ता हो, उलटा (रिवर्स)।

विपर्ण पुं. {सं.} एक साथ या आमने-सामने लगी हुई रसीदों आदि का वह बाहरी भाग जो लिख या भरकर किसी को दिया जाता है।

विपर्णक *वि.* बिना पत्तों का।

विपर्यय पुं. {सं.} {*वि.* विपर्यस्त} इधर-उधर या आगे-पीछे होना, उलट-पुलट, व्यतिक्रम; क्रम में आगे से पीछे या पीछे से आगे होना, क्रम-परिवर्तन; कुछ का कुछ समझना, भ्रम; भूल, गलती; उलटकर फिर पहले रूप, स्थान आदि में लाना (रिवर्शन); गड़बड़ी, अव्यवस्था।

विपर्यस्त *वि.* {सं.} जिसका विपर्यय हुआ हो; जिसे ठीक या मान्य न समझकर उलट या रद्द कर दिया गया हो (ओवर रूल्ड)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपर्याय पुं. {सं. वि. (विरुद्ध) + पर्याय} किसी शब्द का ठीक विरोधी या विपरीत अर्थ या भाव सूचित करनेवाला शब्द, विरुद्धार्थक, जैसे 'दिन' का विपर्याय 'रात' या 'अंधेरा' का विपर्याय 'उजाला' है (एंटानिम)।

विपर्यास पुं. व्यक्तिक्रम मिथ्या ज्ञान।

विपल पुं. {सं.} एक पल का साठवाँ भाग।

विपलाश वि. बिना पत्तों का।

विपबन पुं. शुद्ध हवा।

विपाक पुं. {सं.} परिपक्व होना, पकना; पूरी अवस्था को पहुँचना; परिणाम, फल; पचना; दुर्दशा।

विपिन पुं. {सं.} वन, जंगल; उपवन, बगीचा, बाग।

विपुंसक वि. पुरुषत्व से हीन।

विपुंसी स्त्री. पुरुष के समान चेष्टा और प्रकृतिवाली स्त्री।

विपुल वि. {सं.} {स्त्री. विपुला, भाव. विपुलता, विपुलाई} संख्या, परिणाम आदि में बहुत अधिक।

विपुला स्त्री. वसुंधरा, पृथ्वी।

विपुष्ट वि. अपुष्ट, अदृढ़।

विपुष्प वि. बिना फूल का।

विपोहना स. {सं. वि + प्रोत} पोतना; नष्ट करना; पोहना।

विप्र पुं. {सं.} ब्राह्मण।

विप्रयोग पुं. {सं.} अलग या पृथक् होने की अवस्था या भाव, अलगाव, पार्थक्य; किसी बात या वस्तु से रहित या हीन होने की अवस्था या भाव, 'संयोग' का विरुद्धार्थक, जैसे–बिना धनुष-वाण के राम (यदि 'धनुष-वाणवाला राम' कहा जाएगा तो वह संयोग कहलाएगा।)

विप्रलंभ पुं. {सं.} प्रिय वस्तु या व्यक्ति का न मिलना; वियोग, विरह; साहित्य में वियोग शृंगार, छल, धोखा; धूर्तता।

विप्रलब्ध वि. {सं.} जिसे चाही हुई वस्तु न मिली हो।

विप्रलब्धा स्त्री. {सं.} साहित्य में वह नायिका जिसके मन में नायक के वियोग के कारण खेद और दुख हो।

विप्रलाप पुं. = प्रलाप।

विप्लव पुं. {सं.} उपद्रव, अशांति; विद्रोह, बलवा (रिबीलियन); उथल-पुथल, हलचल; आफत, विपत्ति; नदी आदि की बाढ़।

विप्लाव पुं. नदी की बाढ़।

विप्लवी वि., पुं. {सं. विप्लविन्} विप्लव या विद्रोह करनेवाला (रिबेल)।

विप्लावी वि. उपद्रव करनेवाला।

विप्लुति स्त्री. उपद्रव, विप्लव।

विप्सा स्त्री. वीप्सा।

विफल वि. {सं.} {भाव. विफलता} (वृक्ष) जिसमें फल न लगा हो; (काम) जिसका कोई फल या परिणाम न निकला हो, निष्फल, व्यर्थ; (व्यक्ति) जिसे प्रयत्न में सफलता न हुई हो; (विषय या निश्चय) जो न होने के समान हो या ऐसा कर दिया गया हो (नल)।

विफलता स्त्री. {सं.} 'विफल' होने की दशा या भाव (फेल्योर)।

विबुध पुं. {सं. वि + बुध} {स्त्री. विबुधा} विद्वान; बुद्धिमान; देवता; चन्द्रमा।

विबुधाकर पुं. {सं.} चन्द्रमा।

विबुधान पुं. आचार्य, देवता।

विवुधापगा स्त्री. आकाशगंगा।

विवुधावास पुं. देवमंदिर, स्वर्ग।

विवुधेतर पुं. असुर, दैत्य।

विबुधेश पुं. {सं.} इंद्र।

विबोध पुं. {सं.} {वि. विबोध्य, विबोधक} सो चुकने के उपरांत, जागने की अवस्था या भाव, जाग्रत होना, जागना (साहित्य में इसलिए यह संचारी भाव माना गया है कि प्रायः सोकर उठने के समय नायिका के मुख, शरीर आदि की शोभा भी विशेष प्रकार से आकर्षक होती है)।

विभंग पुं. {सं.} {वि. विभंगित} खंडित होना, टूटना; आघात आदि से शरीर की कोई हड्डी टूटना (फ्रैक्चर); तरंग, लहर।

वि. चंचल; प्रबल, तेज।

उदा. भँवर पर विभंग तर तरंग मालिका–तुलसी।

विभग्न वि. टूटा-फूटा।

विभक्त वि. {सं.} दो या कई भागों में बँटा हुआ, विभाजित; अलग किया हुआ।

विभक्ति स्त्री. {सं.} विभाजित या अलग होने की क्रिया या भाव, विभाग, अलगाव; कारक चिह्न, जैसे का, ने, से, को आदि (व्याकरण)।

विभव पुं. {सं.} धन, संपत्ति; ऐश्वर्य; अधिकता, बहुतायत।

विभवकर पुं. {सं.} वह कर जो किसी से उसकी धन-संपत्ति या वैभव के विचार से लिया जाता हो (सरकमस्टांसेस टैक्स)।

विभांडक पुं. एक मुनि जो ऋष्य शृंग के पिता थे।

विभाँति वि. {हिं. वि + भाँति} अनेक प्रकार का, तरह-तरह का।

विभा पुं. {सं.} दीप्ति, चमक, प्रकाश, रोशनी; किरण।

विभाकर पुं. {सं.} सूर्य; अग्नि; राजा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभाग पुं. {सं.} बाँटने की क्रिया या भाव, विभाजन, बँटवारा (डिस्ट्रीब्यूशन); अंश, हिस्सा; पुस्तक का प्रकरण, अध्याय; सुविधा या प्रबंध के लिए कार्य का अलग किया हुआ क्षेत्र, मुहकमा (डिपार्टमेंट); कार्य-संचालन की सुविधा के लिए किसी कार्यक्षेत्र के कई छोटे-छोटे हिस्सों में से एक (सेक्शन); किसी विशेष कार्य के लिए अलग और निश्चित किया हुआ कोई अंश, खंड, क्षेत्र आदि (डिविज़न)।

विभागाध्यक्ष पुं. {सं. विभाग + अध्यक्ष} वह जो किसी विभाग का अध्यक्ष अथवा प्रधान या सबसे बड़ा अधिकारी हो।

विभाजक *वि.* {सं.} विभाग या टुकड़े करनेवाला; बाँटनेवाला।

विभाजन पुं. {सं.} अलग-अलग भागों या हिस्सों में बाँटने की क्रिया या भाव, विभाग करना, बँटवारा (पार्टिशन, डिवीजन); थोड़ा-थोड़ा करके लोगों को देना या बाँटना, बँटवारा, तकसीम (डिस्ट्रिब्यूशन); लोगों में बाँटने के लिए आवश्यकता, उपयोगिता, उत्तरदायित्व, भार आदि के विचार से किसी वस्तु के अलग-अलग अंश या विभाग करना (अपोर्शनमेंट)।

विभाजित *वि.* {सं.} जिसका विभाजन हुआ हो, विभक्त।

विभाज्य *वि.* {सं.} {*भाव.* विभाज्यता} विभाग करने योग्य, जिसका विभाजन हो सके (डिवीज़िबुल); जिसका विभाग करना हो।

विभात पुं. प्रभात, सवेरा।

विभाति *स्त्री.* शोभा, सुंदरता।

विभाना *अ.* {सं. विभा} चमकना; शोभित होना; *स.* चमकाना; शोभित करना।

विभारना *क्रि.* चमकना।

विभाव पुं. {सं.} साहित्य में वे बातें या वस्तुएँ जो किसी रस के आश्रय (व्यक्ति) में करुणा, रति आदि स्थायी भाव उत्पन्न करके उन्हें उदीप्त तथा जाग्रत करती हैं। (आलम्बन और उद्दीपन दोनों इसके अंतर्गत आते हैं)।

विभावन पुं. {सं.} किसी विषय में होनेवाली स्पष्ट धारणा या विचार; किसी को देखकर पहचानना और कहना कि यह वही है, शिनाख्त (आइडेंटिफिकेशन); साहित्य के रस-विधान में वह मानसिक व्यापार जिसके कारण पात्र द्वारा प्रदर्शित भाव का, श्रोता या पाठक भी साधारणीकरण के द्वारा भागी होता है।

विभावना *स्त्री.* {सं.} किसी बात या वस्तु की विशिष्ट रूप से भावना या कल्पना करना; साहित्य में एक अर्थालंकर जिसमें कारण और कार्य का साधारण के अतिरिक्त कुछ विशेष या विलक्षण ढंग से उल्लेख होता है, जैसे कारण के अभाव या अपूर्णता से भी कोई कार्य होना, अथवा कारण के बाधक या विपरीत होने पर भी कार्य होना आदि।

विभावरी *स्त्री.* {सं.} रात, रात्रि; गणिका।

विभारीश पुं. चंद्रमा।

विभाव्य *वि.* {सं.} {*भाव.* विभाव्यता} जिसके होने की कुछ आशा या संभावना हो, जो हो सकताा हो (प्रोबेबुल)।

विभाषा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* वैभाषिक} यह कहना कि ऐसा हो भी सकता है और ऐसा नहीं भी हो सकता; व्याकरण में ऐसा प्रयोग जिसके संबंध में उक्त प्रकार की बात कही जाए; बोली, क्षेत्रीय भाषा।

विभास पुं. {सं.} {*क्रि.* विभासना} चमक, दीप्ति; ओड़व जाति का एक राग जो प्रातःकाल गाया जाता है।

विभासना *क्रि.* चमकना।

विभासित *वि.* प्रकाशित, प्रकट।

विभिन्न *वि.* {सं.} बिल्कुल अलग, पृथक्, जुदा; अनेक प्रकार के।

विभीषिका पुं. {सं.} भयभीत करना, डराना; भयानक कांड या दृश्य।

विभु *वि.* {सं.} {*भाव.* विभुता} सर्वव्यापक; बहुत बड़ा, महान; सदा बना रहनेवाला, नित्य; बलवान; पुं. जीवात्मा; ईश्वर।

विभुता *स्त्री.* = विभूति।

विभूति *स्त्री.* {सं.} अधिकता, बढ़ती; वैभव, ऐश्वर्य; सम्पत्ति, धन; दिव्य या अलौकिक शक्ति; दिव्य अलौकिक शक्ति के युक्त बहुत योग्य तथा गुणवान मनुष्य, महापुरुष; शिव के अंग में लगाने की राख या भस्म; लक्ष्मी; सृष्टि।

विभूषण पुं. {सं.} {*वि.* विभूषित} भूषण, गहना; गहनों आदि से सजाने की क्रिया या भाव, अलंकरण।

विभूषणा *स्त्री.* शोभा।

विभूषना *स.* {सं. विभूषण} गहनों से सजाना; सुशोभित करना।

विभूषा *स्त्री.* अलंकार, गहना।

विभूषित *वि.* सुशोभित, गुणों से युक्त।

विभूष्णु पुं. शिव, महादेव।

विभेंटन पुं. गले लगाना।

विभेत्ता पुं. डरानेवाला।

विभेटना *स.* = भेंटना।

विभेद पुं. {सं.} {*क्रि.* विभेदना} अन्तर, फरक; अनेक भेद, कई प्रकार; विशेष रूप से किया

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Che d eGangotri

हुआ भेद या अलगाव (डिस्क्रिमिनेशन); भेदन करना, छेदना या वेधना।

विभेदन पुं. छेदना, ताड़ना।

विभेदना क्रि. छेदना, काटना।

विभेदी वि. छेदनेवाला, काटनेवाला।

विभो पुं. हे प्रभु।

विभोर वि. {सं. विह्वल} विह्वल, विकल; मग्न, लीन; मत्त, मस्त।

विभौ पुं. = विभव।

विभ्रम पुं. {सं.} भ्रांति, धोखा; संदेह; पारस्परिक व्यवहार में किसी के काम या बात का आशय समझने में होनेवाली भूल, किसी के ठीक भाव को भी भ्रम से गलत समझना (मिसअंडरस्टैंडिंग); साहित्य में संयोग-शृंगार के समय का स्त्रियों का एक हाव जिसमें वे प्रियतम का आगमन सुनकर या उससे मिलने के लिए जाने के समय उत्सुकता के कारण जल्दी में उलटे-पुलटे भूषण-वस्त्र पहन लेती हैं।

विमत पुं. {सं.} विरुद्ध या विपक्ष में दिया जानेवाला मत (डिस्सेंट)।

विमद वि. मदरहित।

विमर्द पुं. पीसना, मथना, विनाश।

विमर्दन पुं. कुचलना, पीसना।

विमन वि. {सं. विमनस्} अनमना; उदास।

विमनस्क वि. {सं.} अन्यमनस्क, अनमना; उदास।

विमर्श (र्ष) पुं. {सं.} मन में होनेवाली अहंभाव की स्फूर्ति; विचार या विवेचन; आलोचना; परीक्षा, जाँच; परामर्श; नाटक की पाँच सन्धियों में से एक, जिसमें बीज के अधिक विकास होता है, परन्तु फल प्राप्ति से पहले शाप, विपत्ति आदि के रूप में विघ्न होने लगते हैं।

विमल वि. {सं.} {भाव. विमलता, स्त्री. विमला} स्वच्छ, निर्मल; पवित्र, निर्दोष; सुन्दर।

विमाता स्त्री. {सं. विमातृ} {वि. वैमात्रिक} पिता की दूसरी पत्नी, माता की सौत, सौतेली माँ (स्टेपमदर)।

विमान पुं. {सं.} आकाश-मार्ग से चलनेवाला रथ, उड़नखटोला; वायुयान, हवाई जहाज; मरे हुए वृद्ध मनुष्य की अरथी जो धूमधाम के साथ निकाली जाती है, रथ; घोड़ा; वि. मान या प्रतिष्ठा से रहित; जिसमें चमक-दमक न हो, फीका।

विमानचालक पुं. {सं.} वह जो विमान या हवाई जहाज चलाता हो।

विमानपोत पुं. हवाई जहाज।

विमानभेदी स्त्री. विमानवेधी।

विमानयुद्ध पुं. {सं.} विमानों की लड़ाई।

विमानवाहक पुं. {सं. विमान + वाहक} एक प्रकार का समुद्री जहाज जिसके ऊपर बहुत लंबी-चौड़ी छत होती है और जिस पर बहुत से हवाई जहाज रहते हैं।

विमानवेधी स्त्री. {सं. विमान + हिं. वेधी} एक प्रकार की तोप, जो उड़ते हुए हवाई जहाजों पर गोले चलाती है।

विमुक्त वि. {सं.} अच्छी तरह मुक्त; स्वतंत्र, स्वच्छंद; (दंड आदि से) बचा या छूटा हुआ (एक्विटेड); त्यक्त।

विमुक्ति स्त्री. {सं.} छुटकारा, रिहाई; मुक्ति, मोक्ष; अभियोग से मुक्त होना या छूटना। (एक्विटल); बहुत दिनों तक संकट, पराधीनता आदि भोगते रहने पर अंत में सदा के लिए उससे मिलनेवाला छुटकारा (इमैंसिपेशन)।

विमुख वि. {सं.} {भाव. विमुखता} जिसे मुँह न हो; जिसने किसी से मुँह मोड़ लिया हो, विरत; उदासीन; विरुद्ध; अप्रसन्न; निराश।

विमुद वि. आनंदरहित, उदास।

विमुहाँ वि. जिसका मुँह दूसरी तरफ हो।

विमूढ़ वि. मोहग्रस्त, अचेत, ज्ञानरहित।

विमूल वि. निर्मूल।

विमूल्यन पुं. अवमूल्यन।

विमोक पुं. छुटकारा।

विमोक्ष पुं. मुक्ति, छुटकारा।

विमोचन पुं. {सं.} {वि. विमोचित} बंधन आदि से छूटा हुआ; संतोषजनक प्रमाण के अभाव में अभियुक्त का अभियोग से मुक्त होना (एक्विटल); किसी आवर्तक भार या देने से छूटने के लिए एक ही बार में कुछ इकट्ठा धन दे देना (रिडम्पशन)।

विमोचना स. {सं. विमोचन} बंधन आदि से छुड़ाना या छोड़ना।

विमोचित वि. {सं.} बंधन आदि से छूटा हुआ; संतोषजनक; प्रमाण के अभाव में मुक्त किया हुआ (एक्विटेड); ऋण या देन जो चुका दिया गया हो (रिडीम्ड)।

विमोध वि. अमोघ, व्यर्थ।

विमोह पुं. भ्रम, अज्ञान।

विमोहना अ. {सं. विमोहन} मोहित होना; बेसुध होना; धोखे में आना; स. मोहित करना, लुभाना; बेसुध करना; धोखे में डालना।

वियंग पुं. = शिव।

विय वि. {सं. द्वि} दो; जोड़ा, युग्म; दूसरा, अन्य।

वियत पुं. {सं. वियत्} आकाश।

वियुक्त वि. {सं.} जिसका किसी से वियोग हुआ हो; अलग; रहित (माइनस)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वियुग्म *वि.* {सं.} जो युग्म या जोड़ा न हो, अकेला; जिसे दो से भाग देने पर एक बचे; जो साधारण, निश्चित या स्वाभाविक से कुछ भिन्न और अलग हो, विलक्षण, अनोखा (ऑड)।

वियो *वि.* {सं. द्वितीय} दूसरा।

वियोग *पुं.* {सं.} {*वि.* वियुक्त, वियोगी} किसी से बिछुड़ने या दूर होने की क्रिया, अवस्था या भाव, अलग होना; प्रिय व्यक्ति से मिलन न होना, विरह; अलग होने का दुख; घटाया या कम किया जाना।

वियोग शृंगार *पुं.* {सं.} साहित्य में शृंगार रस का वह विभाग जिसमें प्रेमियों के पारस्परिक वियोग या विरह का वर्णन होता है, विप्रलंभ, संयोग शृंगार का विरुद्धार्थक।

वियोगांत *वि.* {सं.} (नाटक, उपन्यास आदि) जिसका अंत या पर्यवसान दुखपूर्ण हो।

वियोगिन *स्त्री.* वह स्त्री जो अपने पति से बिछुड़ी हो।

वियोगी *वि.* {सं. वियोगिन्} {*स्त्री.* वियोगिनी} प्रेमिका के वियोग से दुखी, विरही।

वियोजक *पुं.* {सं.} पृथक् या अलग करनेवाला।

वियोजन *पुं.* {सं.} किसी वस्तु के संयोजक अंगों को अथवा कुछ मिले हुए तत्वों को अलग-अलग करना; युद्धकाल में बढ़ाए हुए सैनिकों को सैनिक सेवा से हटाना (डिमॉबिलाइज़ेशन)।

वियोजनीय *वि.* विश्लिष्ट, अलग किया जानेवाला।

वियोजित *वि.* अलगाया हुआ।

विरंच *पुं.* ब्रह्मा।

विरंचि *पुं.* {सं.} ब्रह्मा।

विरंजन *पुं.* {सं.} वह प्रक्रिया जिससे किसी वस्तु में के सब रंग हट या निकल जाएँ, रंगों से रहित करना; धोकर साफ करना (ब्लीचिंग)।

विरक्त *वि.* {सं.} {*भाव.* विरक्ति} विमुख, विरत; उदासीन; अप्रसन्न।

विरक्ति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* विरक्त} किसी के प्रति अनुराग, प्रेम, सहानुभूति आदि न रह जाने का भाव, विराग; सांसारिक सुख-भोगों से मन भर जाना और उनकी ओर प्रवृत्ति न रह जाना, वैराग्य; उदासीनता।

विरचन *पुं.* {सं.} {*वि.* विरचित} रचने का काम निर्माण, बनाना; तैयारी।

विरचना¹ *स.* {सं. विरचन} रचना या निर्माण करना, बनाना; सजाना।

विरचना² *अ.* {सं. वि + रंजन} विरक्त होना।

विरचित *वि.* {सं.} बनाया या रचा हुआ, निर्मित।

विरज *वि.* {सं.} कामना, वासना आदि से रहित।

विरजा *स्त्री.* कैथ का पेड़।

विरत *वि.* {सं.} {*भाव.* विरति} जो अनुरक्त न हो, विमुख; जो काम छोड़कर अलग हो गया हो, निवृत्त; विरक्त, वैरागी; कार्य, पद, सेवा आदि से हटा हुआ (रिटायर्ड)।

विरति *स्त्री.* {सं.} विरत होने की क्रिया या भाव; कार्य पद, सेवा आदि से अलग होना (रिटायरमेंट)।

विरथ *वि.* {सं.} जो रथ या सवारी पर न हो; पैदल।

विरद *पुं.* विरुद।

विरदावली *स्त्री.* विरुदावली।

विरदैत *वि.* {हिं. विरद} बड़े विरदवाला, कीर्ति या यशवाला।

विरमण *पुं.* संभोग, विलास।

विरमना *अ.* {सं. विरमण} {सं. विरमाना} किसी से या कहीं मन लगाना, रमना; रुकना, ठहरना; *अ.* विलंबना।

विरमाना *स.* *हिं.* 'विरमना' का *स.*।

विरल *वि.* {सं.} {*भाव.* विरलता} घना, 'सघन' का उलटा; दूर-दूर पर स्थित; दुर्लभ; कम, थोड़ा; पतला; निर्जन।

विरव *वि.* शब्दरहित।

विरस *वि.* {सं.} {भाव. विरसता} नीरस, फीका; अप्रिय, अरुचिकर; जिसमें रस का निर्वाह न हुआ हो (काव्य); *पुं.* रस का अभाव, रस का न होना; साहित्य में वह स्थिति जो रस के विपरीत हो; अनुराग, दया आदि का अभाव या विपरीत अवस्था।

उदा. राजत अंग रस विरस अति, सरस-सरस रस भेव—**केशव।**

विरह *पुं.* {सं.} किसी से अलग या रहित होने का भाव; वियोग।

विरह-निवेदन *पुं.* {सं.} विरहावस्था के दुख का वर्णन और प्रिय से उससे मुक्त करने की प्रार्थना करना।

विरहा *पुं.* गीत जिसको अहीर या गड़ेरिये गाते हैं।

विरहिणी *स्त्री.* वह स्त्री जिसका प्रियतम से वियोग हुआ हो।

विरहित *वि.* रहित, शून्य, बिना।

विरही *वि.* {*स्त्री.* विरहिणी} वियोगी।

विराग *पुं.* {सं.} {*वि.* विरागी} रुचि या इच्छा का अभाव; वैराग्य।

विराज¹ *वि.* {सं.} राज्यरहित; *पुं.* वैराज्य शासन प्रणाली वाले राज्य का राजा; प्राचीन काल के एक प्रकार के प्रजातंत्री राज्य का प्रधान राजा।

विराज² *पुं.* {सं. विराजस्} ब्रह्मा की पहली संतान या पुत्र जिससे पहले मनु या स्वायंभुव मनु की उत्पत्ति हुई थी (मनुस्मृति के आधार पर)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Che[illegible]d eGangotri

विराजना *अ.* {सं. विराजन} शोभित होना; बैठना; विद्यमान होना (आदरसूचक)।

विराजमान *वि.* {सं.} शोभित; उपस्थित, मौजूद; बैठा हुआ।

विराजित *वि.* बैठा हुआ, उपस्थित।

विराट, विराट् *पुं.* {सं. विराट्} विश्व रूप ब्रह्म; विश्व; क्षत्रिय; कान्ति, दीप्ति; *वि.* बहुत बडा या बहुत भारी।

विरातक *पुं.* अर्जुन वृक्ष।

विराधन *पुं.* पीड़ा, कष्ट।

विराणा *वि.* = पराया।

विराम *पुं.* {सं.} रुकना, ठहरना; विश्राम; पद, सेवा, कार्य आदि से अवकाश ग्रहण करना (रिटायरमेन्ट); वाक्य में वह स्थल जहाँ बोलते समय कुछ रुकना पड़ता हो; पद्य के चरण में की यति।

विरामकाल *पुं.* {सं.} वह समय या छुट्टी जो विराम करने या सुस्ताने के लिए मिलती है (वैकेशन)।

विरामचिह्न *पुं.* {सं.} लेख, छापे आदि में प्रयुक्त होनेवाले वे विशिष्ट चिह्न जो कई प्रकार के विरामों के सूचक होते हैं, जैसे " , ; । आदि (पंकचुएशन)।

विरामसंधि *स्त्री.* {सं.} वह संधि जो अंतिम या पक्की संधि होने से पहले उसकी शर्तें तय करने के लिए होती है (ट्रूस)।

विरासत *स्त्री.* = वरासत।

विरासी *वि.* = विलासी।

विरुज *वि.* {सं.} निरोग, रोगरहित।

विरुझना *अ.* = उलझना।

विरुद *पुं.* {सं.} राजाओं की स्तुति या प्रशंसा, यशवर्णन, प्रशस्ति; प्राचीन काल के राजाओं की कीर्तिसूचक पदवी; यश।

विरुदावली *स्त्री.* {सं.} गुण, पराक्रम, उदारता आदि का विस्तारपूर्वक होनेवाला वर्णन, प्रशंसा; गुणावली।

विरुद्ध, के संबंधसूचक के प्रतिकूल, के विपरीत; के मुकाबले में, के सामने।

विरुद्धार्थक *वि.* {सं. विरुद्ध + अर्थ + क (प्रत्य.)} विरुद्ध या विपरीत अर्थ प्रकट करनेवाला; *पुं.* वह शब्द जो किसी शब्द का ठीक विरोधी या विपरीत अर्थ अथवा भाव प्रकट करता हो, विपर्याय, जैसे सम और असम दोनों एक दूसरे के विरुद्धार्थक हैं (एंटॉनिम)।

विरुधिर *वि.* रक्तहीन, जिसमें रक्त न हो।

विरुक्ष *वि.* जो रुखा हो, कर्कश।

विरुढ़ *वि.* आरूढ़, चढ़ा हुआ।

विरुह *वि.* = विरुद्ध; *पुं.* = विरोध।

विरूप *वि.* {सं.} {*स्त्री.* विरूपा, *भाव.* विरूपता} अनेक रंग-रूपों का; कुरूप, भद्दा; परिवर्तित; शोभाहीन, श्रीहीन।

विरूपण *पुं.* {सं.} {*वि.* विरूपति} आघात आदि के द्वारा अथवा और किसी प्रकार किसी का रूप या आकार बिगाड़ना (डिफॉर्मेशन)।

विरूपता *पुं.* {सं.} रूप के बिगड़े हुए होने (या विरूप होने) का भाव (डिफॉर्मिटी)।

विरूपाक्ष *वि.* {सं.} बिगड़े हुए बेढंगे या विलक्षण नेत्रोंवाला; *पुं.* महादेव, शिव।

विरूपित *वि.* {सं.} जो विरूप किया गया हो, जिसका विरूपण हुआ हो।

विरूपी *वि.* कुरूप।

विरेचन *पुं.* {सं.} {*वि.* विरेचक, विरेचित} दस्त लानेवाली दवा, जुलाब; दस्त लाना; निकालना।

विरोक *पुं.* सूर्य, किरण, चमक।

विरोध *पुं.* {सं.} {*वि.* विरोधक} प्रतिकूलता; वैर, शत्रुता; दो विपरीत बातों का एक साथ न हो सकना, व्याघात; किसी कार्य को रोकने के लिए अथवा उसके विपरीत प्रयत्न; भिन्न-भिन्न विचारों या तथ्यों में होनेवाला पारस्परिक विपरीत भाव (रिपग्नेंसी); साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें घटनाओं, द्रव्यों आदि के कार्यों, गुणों जातियों आदि के विचार से परस्पर विरोधी होने पर भी कोई बात होने का उल्लेख होता है, जैसे वर्षा ऋतु और वसन्त अथवा अमृत और विष का एक साथ होना अथवा अपना प्रभाव या स्वरूप दिखलाना (इसके दस भेद माने गए हैं)।

विरोधना *अ.* {सं. विरोधन} विरोध, शत्रुता या लड़ाई करना।

विरोधपीठ *पुं.* {सं.} विधानसभाओं में वे आसन जिन पर राजकीय पक्ष या बहुमत दल के विरोधी लोग बैठते हैं (अपोज़िशन बेंचेज)।

विरोधाभास *पुं.* {सं.} दो बातों में दिखाई देनेवाला विरोध; साहित्य में एक अलंकार जिसमें क्रिया, गुण जाति, द्रव्य, धर्म आदि का इस प्रकार वर्णन किया जाता है कि उनकी कुछ बातों में पारस्परिक विरोध का कुछ आभास-सा मिलता है।

विरोधित *वि.* जिसका विरोध किया गया हो।

विरोधिता *स्त्री.* {सं.} विरोध का भाव, विरुद्ध होने की अवस्था या भाव; वैर, शत्रुता।

विरोधी *वि.* {सं. विरोधिन्} {*स्त्री.* विरोधिनी} विरोध करनेवाला; विरुद्ध पड़नेवाला, उलटा, विपरीत, जैसे ये दोनों सिद्धांत एक दूसरे के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरोधी हैं (अपोज़िट); पुं. वह जो सामने आकर मुकाबला करता हो, विपक्षी शत्रु, वैरी (अपोनेंट)।
विरोधोक्ति *स्त्री.* परस्पर-विरोधी कथन।
विरोध्य *वि.* विरोध के योग्य।
विरोम *वि.* रोम-रहित।
विरोष *वि.* क्रोधरहित, धीर।
विरोही *पुं.* पौधा लगानेवाला।
विलंघन *पुं.* लंघन करना।
विलंब *पुं.* {सं. विलंबन} साधारण या नियत से अधिक समय (जो किसी काम में लगे) देर, अतिकाल (डीले)।
विलंबना *अ.* {सं. विलंबन} देर करना या लगाना; लटकाना; सहारा लेना; *अ.* विरमना।
विलंबित *वि.* {सं.} लटकता हुआ; लम्बा किया हुआ; जिसमें देर हुई हो; देर लगाकर और मंद गति से गया जानेवाला (गान), 'द्रुत' का विपर्याय।
विलक्षण *वि.* {सं.} {*भाव.* विलक्षणता} अद्‌भुत, अनोखा; असाधारण।
विलक्षणता *स्त्री.* {सं.} विलक्षण होने की अवस्था का भाव; विलक्षण बात।
विलखना[1] *अ.* बिलखना।
विलखना[2] *स.* {सं. लक्ष} पता पाना; देखना।
विलग *वि.* = अलग।
विलगाना *अ., स.* {हिं. विलग} अलग या पृथक् होना या करना।
विलग्न *वि.* संलग्न, लगा हुआ।
विलज्ज *पुं.* लज्जारहित।
विलपना *अ.* {सं. विलाप} रोना।
विलम *पुं.* विलंब।
विलमना *अ.* बिलमना।
विलय (न) *पुं.* {सं.} लय या लीन होना; एक वस्तु का दूसरी वस्तु में मिलकर समा जाना; घुल या गल जाना (फ्यूजन); विघटित होना; किसी देशी रियासत या राज्य का आसपास के सरकारी या दूसरे बड़े राष्ट्र या राज्य में मिलकर एक हो जाना (मर्जर)।
विलयीकरण *पुं.* {सं.} विलय करना; राज्य या राष्ट्र का किसी छोटे राज्य को अपने में मिला लेना (मर्जर)।
विलसन *पुं.* {सं.} {*वि.* विलसित, *क्रि.* विलसना} चमकने की क्रिया; क्रीड़ा, आमोद-प्रमोद।
विलसना *क्रि.* विलास करना क्रीड़ा करना।
विलाप *पुं.* {सं.} {*क्रि.* विलापना} रोकर दुख प्रकट करना, रुदन, रोना।
विलायत *पुं.* {*अ.*} {*वि.* विलायती} विदेश; दूर का देश।
विलास *पुं.* {सं.} प्रसन्न करनेवाली क्रिया; मनोविनोद; आनन्द, हर्ष; स्त्रियों की पुरुषों के प्रति अनुराग सूचक चेष्टाएँ; साहित्य में संयोग शृंगार का एक हाव जिसमें प्रिय से सामना होने पर नायिका अपनी गतिविधि आदि से नायक का अनुराग उद्दीप्त करती है; कोई मनोहर चेष्टा; किसी वस्तु का मनोहर रूप में हिलना-डोलना; यथेष्ट सुखभोग।
विलासिनी *स्त्री.* {सं.} सुन्दर स्त्री, कामिनी; वेश्या।
विलासी *वि. पुं.* {सं. विलासिन्} {*स्त्री.* विलासिनी} सुखभोग में लगा रहनेवाला पुरुष; कामी, कामुक; क्रीड़ाशील, विनोदप्रिय।
विलीक *वि.* {सं. व्यलीक} अनुचित।
विलीन *वि.* {सं.} अदृश्य, लुप्त; मिला या घुला हुआ; छिपा हुआ।
विलुंपक *पुं.* चोर, ठग।
विलद्धना *अ.* {सं. विध्वंस} नष्ट होना।
विलुधित *वि.* चंचल।
विलुलित *वि.* लहराता हुआ।
विलून *वि.* कटा हुआ, अलग किया हुआ।
विलेख *पुं.* {हिं. लखना?} कल्पना, अनुमान; सोच-विचार; *पुं.* प्रलेख।
विलेप *पुं.* लेप।
विलेपन *पुं.* लेप करने की क्रिया; अंगराग।
विलोक *पुं.* दृष्टि।
विलोकना *स.* देखना।
विलोचन *पुं.* नयन, नेत्र, आँख।
विलोड़न *पुं.* {सं.} {*वि.* विलोड़ित} आलोड़न, मथना।
विलोपन *पुं.* {सं.} लुप्त या गायब करना; कुछ समय के लिए भंग या समाप्त करना।
विलोपना *स.* {सं. विलोप} लुप्त या नष्ट करना।
विलोम *वि.* {सं.} विपरीत, उलटा; *पुं.* ऊँचे से नीचे की ओर आने का क्रम।
विलोल *वि.* चंचल, चपल।
विलोचन *पुं.* कम्पन, काँपना।
विव *वि.* विवि।
विवक्षा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* विवक्षित} कहने की इच्छा; अर्थ, तात्पर्य; फल या परिणाम के रूप में या आनुषंगिक रूप से होनेवाली बात।
विवदना[1] *अ.* = विवाद करना।
विवर *पुं.* {सं.} छिद्र, छेद; बिल; दरार, गर्त; गुफा, कन्दरा।
विवरण *पुं.* {सं.} किसी बात या कार्य से संबंध रखनेवाली मुख्य बातों का उल्लेख या वर्णन, वृत्तांत, हल (डिस्क्रिप्शन, एकाउंट); किसी बड़े के पूछने पर अपने कार्यों आदि के संबंध

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बताई जानेवाली विस्तृत बातें. परिवृत्त (स्टेटमेंट); विवरणिका।

विवरणकार पुं. {सं.} विवरण प्रस्तुत करनेवाला।

विवरणिका *स्त्री.* {सं.} सभा-संस्थाओं या घटनाओं आदि का वह विवरण जो सूचना के लिए किसी को भेजा जाए (रिपोर्ट)।

विवर्जन पुं. = वर्जन; परित्याग; उपेक्षा।

विवर्ण पुं. {सं.} साहित्य में भय, मोह, क्रोध आदि के कारण मुख का रंग बदलना जो एक भाव माना गया है; *वि.* {भाव. विवर्णता} जिसका रंग बिगड़ गया या फीका पड़ गया हो, बदरंग; कान्तिहीन।

विवर्त पुं. {सं.} रूपांतर; भ्रांति, भ्रम; ह्रास।

विवर्तन पुं. {सं.} चक्कर लगाना, घूमना; घूमना-फिरना, टहलना।

विवर्तित *वि.* परिवर्तित, उखड़ा हुआ।

विवर्द्धन, विवर्धन पुं. {सं.} {*वि.* विवर्द्धित, विवर्धित} बढ़ाना; किसी छोटी वस्तु के प्रतिबिम्ब आदि को कुछ विशिष्ट प्रक्रियाओं से बड़ा करना (मैगनिफिकेशन)।

विवश *वि.* {सं.} {*भाव.* विवशता} जो ऐसी अवस्था में पड़ा हो, जिसमें वह अपनी इच्छा से कुछ कर न सके, बेबस, लाचार; जो दूसरे की ओर से उक्त प्रकार की अवस्था में लाया या रखा गया हो (कम्पेल्ड)।

विवशन पुं. {सं.} विवश करने की क्रिया या भाव।

विवसन *वि.* {सं.} {*स्त्री.* विवसना} जो कोई वस्त्र न पहने हो, नंगा, नग्न।

विवाक्य *वि.* वाक्यहीन।

विवस्त्र *वि.* {सं.} {*स्त्री.* विवस्त्रा} नंगा।

विवाद पुं. {सं.} {*वि.* विवादित, विवाद्य} ऐसी बात जिसके विषय में दो या अधिक विरोधी पक्ष हों, और जिसकी सत्यता का निर्णय होने को हो (डिस्प्यूट); कहा-सुनी, वाक्युद्ध; झगड़ा, कलह; दीवानी या फौजदारी मुकदमा।

विवादी *वि.*, पुं. विवाद करनेवाला।

विवादप्रिय *वि.* {सं.} झगड़ालू।

विवादास्पद *वि.* {सं.} जिसके विषय में विवाद हो, विवादयुक्त (डिस्प्यूटिड); जिसके संबंध में विवाद या बहस हो सकती हो सकती हो (डिबेटेबुल); जिसके संबंध में कोई विवाद चल रहा हो या चलने को हो (कांट्रोवर्सल)।

विवाधिक पुं. फेरीवाला।

विवासन पुं. वास करना।

विवादी पुं. {सं. विवादिन्} विवाद या झगड़ा करनेवाला; मुकदमा लड़नेवालों में से कोई एक; संगीत में वह स्वर जो किसी राग के मुख्य या वादी स्वर से मेल न खाता हो और किसी राग में लगकर उसका स्वरूप विकृत कर देता हो।

विवाद्य *वि.* {सं.} विवादास्पद।

विवाह पुं. {सं.} {*वि.* वैवाहिक, विवाहित} वह धार्मिक या सामाजिक कृत्य या प्रक्रिया जिसके अनुसार स्त्री और पुरुष में पत्नी और पति का संबंध स्थापित होता है, पाणिग्रहण, ब्याह, शादी (हमारे यहाँ आठ प्रकार के विवाह कहे गए हैं—ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच। आजकल इनमें से केवल ब्राह्म-विवाह प्रशस्त माना जाता है और वही प्रचलित है)।

विवाहना *स.* = विवाह करना।

विवाहपूर्ण *वि.* {सं.} विवाह से पहले का, जैसे विवाहपूर्व संबंध।

विवाहविच्छेद पुं. {सं.} पति और पत्नी का वैवाहिक संबंध तोड़ना या न रखना जो कुछ धर्मों में और कुछ विधियों के अनुसार होता है, तलाक (डाइवोर्स)।

विवाहित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* विवाहिता} जिसका विवाह हो चुका हो, ब्याहा हुआ।

विवाही *स्त्री.* {*वि.*} जिसका विवाह हो चुका।

विवि *वि.* {सं. द्वि} दो; दूसरा।

विविक्त *वि.* {सं.} किसी से अलग या पृथक् किया हुआ।; एकान्त में रहने या होनेवाला, ऐकांतिक; जो किसी कारण से दूसरों के सामने न हो सकता हो, एकान्त में कुछ गुप्त रूप से किया जाने या होनेवाला, जैसे विविक्त परामर्शालय (प्राइवेट); जिसका पता ऊपर से सहज में न लग सके, गंभीर, गहन, जैसे विविक्त निर्णय या विचार।

विविच्छेद पुं. विवाहविच्छेद।

विविध *वि.* {सं.} {*भाव.* विविधता} अनेक प्रकार का, कई तरह का; कई विभागों, मदों आदि का मिला-जुला, फुटकर (मिसलेनियस)।

विविधता *स्त्री.* {सं.} अनेक प्रकार की बातों से युक्त होने की स्थिति।

विवृत *वि.* {सं.} {*भाव.* विवृति} विस्तृत, फैला हुआ; खुला हुआ; विवरण, व्याख्या आदि के द्वारा स्पष्ट किया हुआ; पुं. ऊष्म स्वरों के उच्चारण में होनेवाला एक प्रकार का प्रयत्न (व्याकरण)।

विवृति *स्त्री.* {सं.} वह कथन या वक्तव्य जो अपने किसी कार्य के अनुचित समझे जाने पर उसके स्पष्टीकरण के लिए हो (एक्सप्लेनेशन)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवृतोक्ति *स्त्री.* {सं. विवृत = स्पष्ट + उक्ति} साहित्य में एक अलंकार जिसमें पहले तो कोई रहस्यपूर्ण बात श्लिष्ट शब्दों में कही जाती है, पर अंत में किसी कथन या क्रिया के द्वारा वह बात स्पष्ट कर दी जाती है।

विवृत्त *वि.* {सं.} {*भाव.* विवृत्त} घूमता हुआ; लौटा हुआ, परावृत्त; खुला हुआ।

विवृत्ति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* विवृत्त} घूमना, चक्कर खाना; लौटना, वापस होना।

विवृत्तोक्ति *स्त्री.* वह अलंकार जिसमें श्लेष का अर्थ कवि स्वयं प्रकट कर देता है।

विवेक *पुं.* {सं.} भली-बुरी बातें सोचने-समझने की शक्ति या ज्ञान (डिस्क्रिशन); मन की वह शक्ति जिससे भले-बुरे का ठीक और स्पष्ट ज्ञान होता है (कांशेंस); बुद्धि।

विवेकशील *वि.* {सं.} बुद्धिमान, विवेकी।

विवेकशीलता *स्त्री.* {सं.} बुद्धिमत्ता, विवेक।

विवेक-स्वातन्त्र्य *पुं.* {सं.} राज्य या शासन की ओर से लोगों को मिलनेवाली वह स्वतंत्रता जिसमें उन्हें अपने विवेक के विरुद्ध कोई काम करने से इंकार करने का अधिकार होता है, जैसे यदि राज्य किसी को लड़ाई पर जाने या किसी देवस्थान को नष्ट करने के लिए विवश करे तो वह अपने विवेक-स्वातंत्र्य के आधार पर ऐसा करने से इनकार कर सकता है (लिबर्टी ऑफ कांशेंस)।

विवेकाधीन *वि.* {सं.} जो किसी के विवेक या भले-बुरे के ज्ञान पर आश्रित हो (डिस्क्रिशनरी)।

विवेकी *पुं.* {सं. विवेकिन्} भले-बुरे का ज्ञान रखनेवाला, विवेकशील; बुद्धिमान; ज्ञानी; न्यायशील।

विवेचन *पुं.* {सं.} {*वि.* विवेचनीय, विवेचित} भली-भाँति आशय व्यक्त करना; विचारपूर्वक निर्णय करना, मीमांसा; तर्क-वितर्क।

विवेचना *स्त्री.* = विवेचन।

विवेचनीय *वि.* मीमांसा करने योग्य।

विवेचित *वि.* निश्चित, विवेचन किया हुआ।

विवेचनात्मक *वि.* {सं.} विवेचन के रूप में होनेवाला।

विव्वोक *पुं.* {सं.} साहित्य में एक हाव जिसमें अभिमान के कारण अथवा मानपूर्वक प्रिय अथवा उसकी दी हुई किसी वस्तु के प्रति कुछ अनादर या उपेक्षा या भाव प्रकट किया जाता है।

विशद *वि.* {सं.} {*भाव.* विशदता} लम्बा-चौड़ा; विस्तृत रूप से होनेवाला, जैसे विशद व्याख्या; स्वच्छ, निर्मल; स्पष्ट; व्यक्त; सफेद; सुंदर।

विशब्द *वि.* शब्दरहित।

विशय *पुं.* संशय, संदेह।

विशयी *वि.* संशययुक्त।

विशर, विशरण *पुं.* वध करना, मार डालना।

विशल्य *वि.* {सं.} काँटे आदि से रहित, निष्कंटक; कष्ट, चिंता आदि से रहित।

विशल्यकारिणी *स्त्री.* {सं.} शरीर के व्रण आदि में से विष का प्रभाव दूर करनेवाली प्रक्रिया या दवा।

विशारद *वि., पुं.* {सं.} पंडित, कुशल।

विशाल *वि.* {सं.} {*भाव.* विशालता} बहुत बड़ा; विस्तृत, लंबा-चौड़ा; भव्य, शानदार; वृहत्तर।

विशापति *पुं.* राजा।

विशाख *पुं.* शिव, कार्तिकेय।

विशाखा *स्त्री.* सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवाँ नक्षत्र।

विशाय *पुं.* पहरेदारों का बारी-बारी से सोना।

विशिख *पुं.* {सं.} बाण, तीर।

विशिष्ट *वि.* {सं.} {*भाव.* विशिष्टता} किसी विशेषता से युक्त; असाधारण; मुख्य, प्रधान।

विशिष्टता *स्त्री.* {सं.} विशिष्ट होने की अवस्था या भाव; कोई विशिष्ट गुण या भाव।

विशिष्टाद्वैत *पुं.* {सं.} एक भारतीय दार्शनिक सिद्धांत जिसमें जीवात्मा और जगत् दोनों ब्रह्म से भिन्न होने पर भी अभिन्न ही माने गए हैं (यह वेदांत दर्शन का एक संप्रदाय है)।

विशिष्टीकरण *पुं.* {सं.} किसी विषय को उसके ब्योरे की बातों पर ध्यान देते हुए विशिष्ट और स्वतंत्र रूप देना, ऐसा रूप देना जो विशेषता का सूचक या परिचायक हो; किसी विषय, कार्य, व्यवसाय आदि का विशेष रूप से अध्ययन करना, अथवा उसमें पारंगत होना।

विशीर्ण *वि.* {सं.} जीर्ण-शीर्ण।

विशील *वि.* बुरे चरित्र का।

विशुद्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* विशुद्धता, विशुद्धि} किसी प्रकार की मिलावट से रहित, खरा जैसे विशुद्ध घी (प्योर); जिसमें किसी प्रकार का दोष या खराबी न हो, जैसे विशुद्ध आचरण; जो व्यर्थ की या इधर-उधर की बातों से रहित या अलग हो, जैसे विशुद्ध ज्ञान; *पुं.* हठ योग के अनुसार शरीर के अंदर के छह चक्रों में से एक जो गले के पास माना गया है (यह धूम्रवर्ण का और सोलह दलोंवाला माना गया है। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार इसी केन्द्र की प्रक्रिया से शरीर से विष बाहर निकलते हैं)।

विशुद्धता *स्त्री.* {सं.} विशुद्ध होने की दशा या भाव (प्योरिटी)।

विशुद्धि *स्त्री.* = विशुद्धता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशुद्धिवाद पुं. {सं.} {*वि.* विशुद्धिवादी} यह सिद्धांत कि मनुष्य को अपने धार्मिक आचार-विचारों का पूरा-पूरा और कठोरतापूर्वक पालन करना चाहिए; किसी क्षेत्र में यह सिद्धांत कि अपने कार्यों या कृतियों में व्यर्थ की या इधर-उधर की बातें नहीं आने देनी चाहिए और उन्हें पूर्ण रूप से विशुद्ध रखना चाहिए, जैसे साहित्यिक क्षेत्र में अपनी भाषा में दूसरी भाषाओं के शब्दों का परित्याग और बहिष्कार।

विशुद्धिवादी पुं. {सं. विशुद्धवादिन्} वह जो विशुद्धिवाद का सिद्धांत मानता हो और उसके अनुकूल आचार या व्यवहार करता हो (प्यूरिटन)।

विशूचिका *स्त्री.* विसूचिका।

विशृंखल *वि.* {सं.} {*भाव.* विशृंखलता} जिसमें क्रम या शृंखला न हो।

विशृंग *वि.* शृंगरहित, बिना सींग का।

विशेष *वि.* {सं.} जो स्वरूप, मान मात्रा आदि के विचार से औरों से कुछ बढ़ा हुआ और फलतः कुछ अलग प्रकार का हो, जिसमें कोई खास, अलग या नई बात हो; किसी एक अलग विषय, वस्तु व्यक्ति या कार्य से संबंध रखनेवाला (स्पेशल, उक्त दोनों अर्थों के लिए); जितना होता हो या होना चाहिए उससे अधिक या सिवा, सामान्य या साधारण के सिवा कुछ बड़ा या बढ़ाया हुआ; किसी अलग, नए या खास काम के लिए अलगाया या रखा हुआ; किसी एक अवसर पर या उद्देश्य की सिद्धि के लिए अलग से या खासतौर पर नियत या नियुक्त किया हुआ (एक्स्ट्रा); पुं. किसी विषय में उसके स्पष्टीकरण के लिए या अपनी सम्मति के रूप में कही जानेवाली बात (रिमार्क); साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें बिना आधार के आधेय का, थोड़े परिश्रम से बहुत प्राप्ति का, एक ही चीज के कई स्थानों में होने का या इसी प्रकार की और किसी आश्चर्यजनक बात का वर्णन होता है।

विशेषक पुं. {सं.} साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें समान गुण और धर्मवाले प्रस्तुत और अप्रस्तुत दोनों तत्वों की समानता तो बतलाई जाती है, फिर भी प्रस्तुत में कोई ऐसी विशेषता बतलाई जाती है जिससे वह अप्रस्तुत से भिन्न और विशिष्ट हो जाता है।

विशेषज्ञ पुं. {सं.} वह जो किसी विषय का विशेष रूप से ज्ञाता हो, किसी काम का बहुत अच्छा जानकार (स्पेशलिस्ट)।

विशेषता *स्त्री.* विशिष्ट होने का भाव, खूबी।

विशेसना *क्रि.* विशेषता प्रदान करना।

विशेषित *वि.* जो विशेष गुण के आधार पर अलग किया गया हो।

विशेषण पुं. {सं.} वह जिससे किसी प्रकार की विशेषता सूचित हो; वह विकारी शब्द जो संज्ञा की विशेषता बतलाता है (व्याकरण)।

विशेषणात्मक *वि.* {सं.} विशेषण-संबंधी।

विशेषता *स्त्री.* {सं.} 'विशेष' का भाव या धर्म, खूबी, खासियत; विलक्षणता।

विशेषत्व पुं. = विशेषता।

विशेषना *स.* {सं. विशेष} विशेष रूप देना; विशिष्टता उत्पन्न करना; *अ.* निश्चय करना।

विशेष सूचना *स्त्री.* {सं.} किसी लेख से संबंध रखनेवाली वह आवश्यक, ध्यान में रखने योग्य या विशेष सूचना जो उसके अंत में एक दो वाक्यों में परिशिष्ट के रूप में रहती है, इसका संक्षिप्तक '*वि.* सू.' है और इसके स्थान पर प्रायः 'पुनश्च' का भी प्रयोग होता है (नोटा बेने)।

विशेषाधिकार पुं. {सं.} वह अधिकार जो साधारणतः सब लोगों को प्राप्त न हो, पर कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में किसी को विशेष रूप से प्राप्त हो, प्राधिकार (प्रिविलेज)।

विशेषोक्ति *स्त्री.* {सं.} साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें कारण के पूरी तरह से वर्तमान रहने पर भी कार्य के अभाव का अथवा किसी क्रिया के होने पर भी उसके परिणाम या फल का अभाव बतलाया जाता है।

विशेष्य पुं. {सं.} व्याकरण में वह संज्ञा जिसकी विशेषता कोई विशेषण सूचित करता हो।

विश्रंभ *वि.* {सं.} दृढ़ या पक्का विश्वास, पूरा एतबार (कॉफिडेंस); प्रेमी और प्रेमिका में संभोग के समय होनेवाला विवाद या झगड़ा; प्रेम।

विश्रंभी *वि.* {सं.} दृढ़ विश्वास रखनेवाला (कॉफिडेंट); जो इस बात का विश्वास रखकर किसी को बतलाया जाए कि वह दूसरे किसी को न बतलाएगा, गोप्य (कॉफिडेंशल)।

विश्रब्ध *वि.* {सं.} शांत; विश्वास के योग्य; निर्भय, निडर।

विश्रब्ध नवोढ़ा *स्त्री.* {सं.} साहित्य में नवोढ़ा नायिका जिसका पति पर कुछ प्रेम होने लगा हो और जिसके मन का भय कुछ-कुछ कम हो गया हो।

विश्रम पुं. विश्राम।

विश्रयी *वि.* सहारा लेनेवाला।

विश्रवा पुं. पुलस्त्य मुनि के पुत्र।

विश्रांत *वि.* {सं.} जो विश्राम करता हो; ठहरा या रुका हुआ; थका हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्रांति *स्त्री.* {सं.} विश्राम, आराम; थकावट; विराम।

विश्राम *पुं.* {सं.} श्रम या थकावट दूर करना, आराम करना; ठहरने का स्थान; आराम, चैन, सुख।

विश्रामकक्ष *पुं.* {सं.} अभ्यागतों के बैठने का कक्ष।

विश्रामालय *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ यात्री विश्राम करते हों (रेस्ट हाउस)।

विश्रामावकाश *पुं.* {सं.} विश्राम के लिए मिलनेवाला अवकाश।

विश्री *वि.* {सं.} श्री या कान्ति से रहित या हीन; भद्दा, कुरूप।

विश्रुत *वि.* {सं.} प्रसिद्ध, विख्यात।

विश्रुति *स्त्री.* {सं.} प्रसिद्धि, ख्याति; कोई बात सब लोगों में प्रसिद्ध करने या सबको जतलाने की क्रिया या भाव (पब्लिसिटी)।

विश्रुति-पत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जो ऋण लेते समय उसे नियत समय पर चुका देने की प्रतिज्ञा का सूचक होता है (प्रॉमिसरी नोट)।

विश्लिष्ट *वि.* {सं.} जिसका विश्लेषण हुआ हो; विकसित; प्रकट।

विश्लेष *पुं.* {सं.} वियोग, विछोह; विश्लेषण।

विश्लेषक *पुं.* {सं.} वह जो रासायनिक अथवा इसी प्रकार का और कोई विश्लेषण करता हो।

विश्लेषण *पुं.* {सं.} किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों या किसी बात के सब अंगों या तथ्यों की परीक्षा आदि के लिए अलग-अलग करना।

विश्लेषिक *वि.* {सं.} विश्लेषण-संबंधी।

विश्वंभर *पुं.* {सं.} ईश्वर; विष्णु।

विश्वंभरा *स्त्री.* पृथ्वी।

विश्व *पुं.* {सं.} सारा ब्रह्मांड; (कॉसमॉस, युनिवर्स); संसार, दुनिया; दस देवताओं का एक गण; विष्णु; शरीर, देह; *वि.* पूरा, सब, कुल; बहुत।

विश्वकर्मा *पुं.* {सं.} ईश्वर; ब्रह्मा; एक प्रसिद्ध देवता जो शिल्पशास्त्र के पहले आचार्य और आविष्कर्ता माने जाते हैं; बढ़ई; लोहार।

विश्वकिरण *स्त्री.* विष्वक् किरण।

विश्वकोष *पुं.* {सं.} वह ग्रंथ जिसमें सभी विषयों या किसी विषय के सभी अंगों का विस्तार से वर्णन हो (एंसाइक्लोपीडिया)।

विश्वनाथ *पुं.* {सं.} विश्व का स्वामी; शिव।

विश्वविजयी *वि.* {सं.} जिसने विश्व को जीता हो।

विश्वविजेता *पुं.* {सं.} वह खिलाड़ी जिसने विश्व के सभी खिलाड़ियों को किसी प्रतियोगिता में हरा दिया हो (वर्ल्ड चैम्पियन)।

विश्वप्रसिद्ध *वि.* {सं.} जो विश्व भर में प्रसिद्ध हो।

विश्वविद्यालय *पुं.* {सं.} वह बहुत बड़ा विद्यालय जिसमें अनेक प्रकार की विद्याओं की उच्च कोटि की शिक्षा देनेवाले अनेक महाविद्यालय हों (यूनिवर्सिटी)।

विश्वव्यापी, विश्वव्याप्त *वि.* {सं.} सारे विश्व में व्याप्त, फैला हुआ।

विश्वसन *पुं.* विश्वास।

विश्वसनीय *वि.* {सं.} {*भाव.* विश्वसनीयता} जिसका विश्वास या एतबार किया जा सके, विश्वस्त (रिलाएबुल)।

विश्वसित *वि.* विश्वासपूर्ण, विश्वस्त।

विश्वात्मा *पुं.* {सं.} ईश्वर।

विश्वामित्र *पुं.* प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो क्षत्रिया वर्ण के थे; इनका नाम गाधिज, गाधेय और कौशिक भी था।

विश्वायन *पुं.* विश्वात्मा, ब्रह्म।

विश्वास *पुं.* {सं.} यह निश्चय कि ऐसा ही होगा या है अथवा अमुक व्यक्ति ऐसा ही करता है या करेगा, एतबार।

विश्वासघात *पुं.* {सं.} {*वि.* विश्वासघातक} अपने पर विश्वास करनेवाले के विश्वास के विपरीत कार्य करना, धोखा।

विश्वासघातक *वि.* {सं.} विश्वासघात करनेवाला।

विश्वासपात्र, विश्वासभाजन *पुं.* {सं.} वह व्यक्ति जिसका विश्वास किया जाए।

विश्वासी *पुं.* {सं. विश्वासिन्} {*स्त्री.* विश्वासिनी} विश्वास करनेवाला; जिस पर विश्वास हो, विश्वासपात्र।

विषंग *पुं.* {सं.} आपस में मिले हुए तत्वों, अंगों आदि का अलग या पृथक् होना; अपने में से किसी को काटकर या और किसी प्रकार अलग कर देना (डिस्सो- सिएशन)।

विष *पुं.* {सं.} वह वस्तु जिसके खाने या शरीर में पहुँचने से प्राणी मर जाता है, जहर, गरल (मुहावरों के लिए देखें जहर के मुहावरे); जल, पानी; कमलनाल का रेशा; किसी की सुख-शांति या स्वास्थ्य आदि में बाधक वस्तु।
पद विष की गाँठ = बुराई या खराबी पैदा करनेवाला व्यक्ति, वस्तु या बात।
बहुत ही कटु और अप्रिय बात, जैसे विषवमन; बछनाग; कलिहारी।

विषकन्या *स्त्री.* {सं.} वह युवती जिसके शरीर में बाल्यावस्था से ही इसलिए विष प्रविष्ट किया गया हो कि उसके साथ संभोग करनेवाला मर जाए (प्राचीन)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषण्ण *वि.* {सं.} जिसे विषाद हुआ हो; दुखी, खिन्न।

विषदंड *पुं.* {सं.} कमलनाल, भसींड, मुरार।

विषधर *पुं.* {सं.} साँप।

विषम *वि.* {सं.} {*भाव.* विषमता} जो समान या बराबर न हो, 'सम' का उलटा (अनईवन); (वह संख्या) जो दे से भाग देने पर पूरी-पूरी न बँट सके, ताक; बहुत कठिन; तीव्र या तेज; भयंकर; *पुं.* वह वर्णवृत्त जिसके चारों चरणों में अक्षरों की संख्या समान न हो; साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें दो विरोधी वस्तुओं का संयोग अथवा उस संयोग का अनौचित्य या विषमता बतलाई जाती है।

विषमछंद *पुं.* {सं.} विषमवृत्त।

विषमता *स्त्री.* {सं.} विषम होने की अवस्था या भाव, असमानता।

विषमाक्ष *पुं.* शिव, महादेव।

विषमायुध *पुं.* कामदेव।

विषमेक्षण *पुं.* शिव, महादेव।

विषमेषु *पुं.* कामदेव।

विषमवृत्त *पुं.* {सं.} पिंगल में ऐसा छंद या वृत्त जिसके सब चरण एक से नहीं होते, वे एक दूसरे से कुछ छोटे या बड़े होते हैं।

विषमशर *पुं.* {सं.} कामदेव।

विषय *पुं.* {सं.} वह जिसके बारे में कुछ कहा या विचार किया जाए (सबजेक्ट); वे बातें जिनका किसी लेख, ग्रंथ आदि में विवेचन हो या जिनका विवेचन करना हो, मजमून (मैटर); स्त्री-संभोग; संपत्ति; बड़ा प्रदेश या राज्य; वह जिसे इन्द्रियाँ ग्रहण करें, जैसे नेत्र का विषय रूप या कान का विषय शब्द है।

विषयांत *पुं.* देश की सीमा।

विषयक *वि.* {सं.} किसी विषय से संबंध रखनेवाला, संबंधी।

विषय-प्रवर्तक *पुं.* {सं.} गोष्ठी में विषय का प्रवर्तन करनेवाला।

विषय-प्रवर्तन *पुं.* {सं.} गोष्ठी में, किसी विषय संबंधी समस्याओं को विचारार्थ प्रस्तुत करना।

विषय-प्रवेश *पुं.* {सं.} ग्रंथ की भूमिका या उसके विषय का परिचायक कथन।

विषय-निर्धारिणी *स्त्री.* = विषय-समिति।

विषय-समिति *स्त्री.* {सं.} कुछ विशिष्ट सदस्यों की वह समिति जो किसी महासभा या सम्मेलन में उपस्थित किए जानेवाले विषय या प्रस्ताव आदि निश्चित या प्रस्तुत करती है (सबजेक्ट कमिटी)।

विषयसूची *पुं.* {सं.} वर्णित विषयों की सूची।

विषयानुक्रमणिका *स्त्री.* {सं.} किसी ग्रंथ के विषयों के विचार से बनी हुई अनुक्रमणिका, विषयसूची (इंडेक्स)।

विषयासक्त *वि.* {सं.} {*भाव.* विषयासक्ति} जो विषय अर्थात् सांसारिक भोग-विलास में आसक्त हो; विलासी, विषयी, ऐयाश।

विषयासक्ति *स्त्री.* {सं. विषय + आसक्ति} {*वि.* विषयासक्त} सांसारिक विषयों अर्थात् भोग-विलास की ओर होनेवाली बहुत अधिक प्रवृत्ति; विलासिता, ऐयाशी।

विषयी *पुं.* {सं. विषयिन्} भोगविलास में आसक्त होनेवाला, विलासी, कामी; कामदेव; धनवान।

विषयेन्द्रिय *पुं.* नाक, कान आदि इंद्रियाँ।

विषांकुर *पुं.* विषाक्त तीर।

विषांगना *स्त्री.* विष-कन्या।

विषांतक *पुं.* शिव, महादेव।

विषवमन *पुं.* {सं.} बहुत ही कटु, अप्रिय और लगती हुई बातें कहना, विष या जहर उगलना।

विष विज्ञान *पुं.* {सं.} वह विज्ञान या विद्या जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि भिन्न-भिन्न प्रकार के विष किस प्रकार अपना-अपना काम करते हैं और उनका प्रभाव किस प्रकार दूर किया जा सकता है।

विषवैद्य *पुं.* {सं.} वह वैद्य जो विष का प्रभाव दूर करनेवाली चिकित्सा करता हो।

विषव्रण *पुं.* {सं.} एक प्रकार का बहुत जहरीला फोड़ा जिसके अच्छे हो जाने पर भी रोगी प्रायः अधिक दिन तक नहीं जीता, जहरबाद (कार्बंकल)।

विषा *स्त्री.* कलियारी, कड़वी तरोई।

विषाक्त *वि.* {सं.} विषयुक्त, जहरीला (पाएजनस); बहुत अधिक दूषित और घात, जैसे—आजकल का राजनीतिक वातावरण बहुत विषाक्त हो रहा है।

विषाक्तता *स्त्री.* {सं.} जहरीलापन।

विषाण *पुं.* {सं.} सींग; सुअर का दाँत, खाँग।

विषाणु *पुं.* {सं.} रोग उत्पन्न करनेवाला कीटाणु।

विषाद *पुं.* {सं.} {*वि.* विषण्ण} अभिलाषा पूरी न होने पर मन में होनेवाला खेद या दुख जो साहित्य में एक संचारी भाव माना गया है; जड़ता, निश्चेष्टता।

विषादन *पुं.* {सं.} साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें इच्छा या कामना के विरुद्ध विषाद उत्पन्न करनेवाली कोई विपरीत घटना या बात होने का उल्लेख होता है।

विषुव *पुं.* {सं.} वह समय जब सूर्य के विषुवत् रेखा पर पहुँचने से दिन तथा रात दोनों बराबर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं (ऐसा वर्ष में दो बार होता है–22 मार्च तथा 22 सितम्बर को)।

विषवुत् रेखा *स्त्री.* {सं.} वह कल्पित रेखा जो पृथ्वीतल के पूरे मानचित्र पर ठीक बीचोंबीच गणना के लिए पूर्व पश्चिम खींची गई है।

विष्टि *स्त्री.* बेगार, वेतन।

विष्ठा *स्त्री.* {सं.} मल, मैला, गुह।

विष्णु *पुं.* {सं.} हिन्दुओं के एक प्रसिद्ध और प्रमुख देवता जो सृष्टि का पालन करनेवाले और अवतार माने जाते हैं।

विष्णुपद *पुं.* {सं.} 26 मात्राओं का एक छंद जिसके कई भेद होते हैं।

विष्वक् *वि.* {सं.} विश्व-संबंधी, विश्व का; सारे विश्व में समान रूप से होने या पाया जानेवाला (यूनिवर्सल); इस जगत् से भिन्न, शेष सारे विश्व से संबंध रखनेवाला, पृथ्वी को छोड़कर सारे आकाश और ब्रह्मांड का (कॉस्मिक)।

विष्वक् किरण *स्त्री.* {सं.} एक विशिष्ट प्रकार की किरण जो इस पृथ्वी से नहीं, बल्कि आकाश या विश्व के अन्य भागों से आती है (कॉस्मिक रेज) विशेष–अभी तक इस बात का पता नहीं चला है कि ये किरणें कहाँ से आती हैं, परंतु कई पदार्थों और यंत्रों पर इनका वैद्युत् प्रभाव पड़ता हुआ दिखाई देता है, संभवत: वायुमंडल में वेग से चलनेवाले ऋणात्मक तथा धनात्मक अणुओं से किरणें उत्पन्न होती हैं।

विसंचारी *वि.* विषयभोगी।

विसंज्ञ *वि.* संज्ञाशून्य।

विसंशय *वि.* संशयरहित।

विसंधि *स्त्री.* {सं.} ऐसी संधि जिसमें व्याकरण के नियम का उल्लंघन हुआ है।

विसंवाद *पुं.* {सं.} सादृश्य, एकरूपता, मेल आदि का अभाव, 'संवाद' का विरोधी; छल, धोखा; असहमति; डाँट-फटकार।

विसदृश *वि.* {सं.} विपरीत, उलटा; असमान; विलक्षण।

विसम्मति *स्त्री.* {सं.} विरोध की सूचक राय।

विसर्ग *पुं.* {सं.} दान; छोड़ना, त्याग; व्याकरण में एक चिह्न जो किसी वर्ण के आगे लगाया जाता है (इसमें ऊपर नीचे दो बिन्दु होते हैं और इसका उच्चारण प्राय: अघोष ह के समान होता है); मोक्ष; मृत्यु; प्रलय।

विसर्जन *पुं.* {सं.} {*वि.* विसर्जित} परित्याग, छोड़ना; विदा करना, रवाना करना; किसी कर्मचारी पर कोई दोष या लांछन लगाकर उसे उसके पद से हटाना या अलग करना (डिस्मिसल); न्यायालय में वाद आदि का रद्द या खारिज होना।

विसपना *क्रि.* अस्त होना।

विसर्पी *वि.* {सं. विसर्पिन्} तेज चलनेवाला; फैलनेवाला।

विसामान्य *वि.* {सं.} जो सामान्य से कुछ घटकर हो (सबनार्मल)।

विसिख *पुं.* = विशिख (वाण)।

विसूचिका *स्त्री.* {सं.} प्राचीनकाल का एक रोग जिसे आजकल कुछ लोग हैजा मानते हैं।

विस्तर *वि.* {सं.} बड़ा और लंबा-चौड़ा, विस्तृत।

विस्तरण *पुं.* {सं.} विस्तार करने या बढ़ाने की क्रिया या भाव (एक्सटेंशन)।

विस्तार *पुं.* {सं.} लंबाई और चौड़ाई, फैलाव।

विस्तारण *पुं.* {सं.} विस्तार करना, बढ़ाना; फैलाना।

विस्तारना *स.* = विस्तार करना।

विस्तारित *वि.* {सं.} जिसका विस्तार किया गया हो, बढ़ाया हुआ (एक्सटेंडिड)।

विस्तारी *पुं.* बरगद का वृक्ष।

विस्तीर्ण *वि.* {सं.} विस्तृत।

विस्तृत *वि.* {सं.} {*भाव.* विस्तार, विस्तृति} जिसमें यथेष्ट विस्तार हो, लंबा-चौड़ा, विस्तारवाला; जिसकी चर्चा, व्याख्या या विवरण बहुत विस्तार से हो; दूर तक फैला हुआ या विशाल (इक्स्टेंसिव, उक्त सभी अर्थों के लिए)।

विस्तृति *स्त्री.* विस्तार, फैलाव।

विस्थापन *पुं.* {सं. वि + स्थापन} {*वि.* विस्थापित} किसी को अपने स्थान पर स्थापित न रहने देना, 'स्थापन' का विपर्याय; किसी स्थान पर बसे हुए लोगों को वहाँ से बलपूर्वक हटा देना।

विस्थापित *वि.* {सं. वि + स्थापित} जो अपने स्थान से हटा दिया गया हो (डिस्प्लेसड)।

विस्थिति *स्त्री.* {सं. *वि.* (विकट) स्थिति} किसी कार्य या क्रम में उत्पन्न होनेवाली वह विकट स्थिति जिससे कोई बहुत बड़ा उलट-फेर हो सकता हो (क्राइसिस)।

विस्फार *पुं.* धनुष का टंकार, कंप।

विस्फारण *पुं.* {सं.} {*वि.* विस्फारित} खोलना, फैलाना; फाड़ना।

विस्फारित *वि.* {सं.} अच्छी तरह से खोला या फैलाया हुआ, जैसे विस्फारित नेत्र; फाड़ा हुआ।

विस्फीति *स्त्री.* {सं. वि + स्फीति} कृत्रिम रूप से फूले हुए पदार्थ या बढ़े हुए मुद्रा के प्रचलन को फिर से पूर्वस्थिति में लाना, स्फीति का उलटा (डिफ्लेशन)।

विस्फुरित *वि.* अस्थिर, चंचल।

विस्फोट *पुं.* {सं.} अंदर की गरमी से बाहर उबल या फूट पड़ना; गोले, बारूद आदि के फटने से होनेवाला शब्द; जहरीला और खराब फोड़ा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विस्फोटक पुं. {सं.} जहरीला फोड़ा; गरमी या आघात के कारण भभक उठनेवाला पदार्थ (एक्सप्लोसिव); शीतला का रोग, चेचक।
विस्फोटकारी *वि.* = विस्फोटक।
विस्फोटन पुं. धड़ाके का शब्द।
विस्मय पुं. {सं.} {*वि.* विस्मित} आश्चर्य, ताज्जुब।
विस्मयवर्धक *वि.* {सं.} विस्मय बढ़ानेवाला।
विस्मयादिबोधक पुं. {सं.} एक प्रकार के अव्यय जो विस्मय, खेद, आश्चर्य आदि प्रकट करनेवाले होते हैं, जैसे हाय! हैं! आदि (इंटरजेक्शन)।
विस्मरण पुं. {सं.} {*वि.* विस्मृत} भूल जाना।
विस्मारक *वि.* भुलानेवाला।
विस्मरणीय *वि.* {सं.} भुला देने योग्य।
विस्मित *वि.* {सं.} जिसे विस्मय या आश्चर्य हुआ हो, चकित।
विस्मृत *वि.* {सं.} भूला हुआ।
विस्मृति *स्त्री.* {सं.} भूल जाना।
विस्राम पुं. = विश्राम।
विहंग पुं. {सं.} पक्षी, चिड़िया; वाण, तीर; मेघ, बादल; *वि.* आकाश में उड़नेवाला; स्वच्छंद रूप से विचरण करनेवाला।
विहंगमार्ग पुं. {सं.} सांख्य के अनुसार ऐसी सिद्धि या मोक्ष की प्राप्ति जिससे साधक मृत्यु से पहले अर्थात् इसी जन्म में मोक्ष का-सा सुख भोगने लगता है।
विहँसना *अ.* = हँसना।
विहग पुं. विहंग।
विहरना *अ.* {सं. विहरण} विहार करना; घूमना-फिरना।
विहान पुं. {सं. वि + अहि} प्रातःकाल, सवेरा।
विहार पुं. {सं.} टहलना, घूमना; मनोविनोद और सुख-प्राप्ति के लिए होनेवाली क्रीड़ा; बौद्ध भिक्षुओं या साधुओं के रहने का मठ, संघाराम।
विहारक *वि.* विहार करनेवाला।
विहारण पुं. विहार, क्रीड़ा।
विहारस्थान पुं. क्रीड़ाभूमि।
विहारी पुं. {सं.} श्रीकृष्ण; *वि.* {*स्त्री.* विहारिणी} विहार करनेवाला।
विहास *वि.* मुसकान।
विहिसक *वि.* नाश करनेवाला।
विहीन *वि.* त्यागा हुआ, रहित।
विहित *वि.* {सं.} जिसका विधान हुआ या किया गया हो; जिसे विधान या कानून का रूप दिया गया हो, विधान या कानून के रूप में लाया हुआ; नियमों के अनुसार उचित या ठीक।
विहीन *वि.* {सं.} {*भाव.* विहीनता} रहित, बिना; त्यागा हुआ।
विहून *वि.* = विहीन।
विह्वत पुं. {सं.} साहित्य में संयोगशृंगार के अंतर्गत वह अवस्था जिसमें लज्जा के कारण प्रिय पर अपना मनोभाव प्रकट नहीं किया जा सकता, इसकी गिनती हावों में होती है।
विह्वल *वि.* {सं.} {*भाव.* विह्वलता} व्याकुल, विकल, बेचैन।
विह्वली पुं. वह जो बहुत घबड़ा गया हो।
वीचि *स्त्री.* {सं.} पानी की लहर, विशेषतः छोटी और हलकी लहर जैसी प्रायः तालाबों, नदियों आदि में उठती हैं, तरंग।
वीज पुं. {सं.} मूल कारण; शुक्र, वीर्य; तेज; तांत्रिक मंत्र; बीज।
वीजगणित पुं. {सं.} वह प्रक्रिया जिससे सांकेतिक अक्षरों की सहायता से गणना करके अभीष्ट राशियाँ निकाली जाती हैं (गणित का एक अंग)।
वीटक पुं. {सं.} {*स्त्री.* अल्पा. वीटिका} पान का बीड़ा।
वीटिका *स्त्री.* {सं. वीटक का स्त्री अल्पा.} पान का छोटा बीड़ा, बीड़ी।
वीणा *स्त्री.* {सं.} एक प्रसिद्ध बाजा जो सब बाजों में श्रेष्ठ माना गया है।
वीतराग पुं. {सं.} जिसने सांसारिक वस्तुओं और सुखों के प्रति राग या आसक्ति बिल्कुल छोड़ दी हो।
वीथी *स्त्री.* {सं.} दृश्य काव्य में रूपक का एक भेद जिसमें एक ही अंक और एक ही नायक होता है; मार्ग, रास्ता; आकाश में नक्षत्रों के रहने के कुछ विशिष्ट स्थान।
वीप्सा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* वीप्सित} व्याप्त होने की इच्छा या कामना; व्याप्ति; शब्दों की वह द्विरुक्ति जो किसी कार्य के लगातार होते रहने की सूचक होती है, जैसे मैं तो बार-बार यही कहता था; साहित्य में एक अलंकार जिसमें आतुरता, आश्चर्य, खिन्नता, प्रसन्नता, बाहुल्य आदि प्रकट करने के लिए किसी शब्द की द्विरुक्ति होती है, जैसे-थक-थक के न बैठेंगे, न मर-मर के जिएँगे।
वीभत्स *वि.* {सं.} {*भाव.* वीभत्सता} जिसे देखकर घृणा उत्पन्न हो, घृणित; क्रूर; पापी; पुं. साहित्य में नौ रसों में से एक जो रक्त, मांस, हड्डी, चर्बी, मृत शरीर आदि गंदे पदार्थ देखकर या उनका वर्णन सुनकर मन में होनेवाली अरुचि, ग्लानि या घृणा से उत्पन्न होता है।
वीर पुं. {सं.} {*भाव.* वीरता} बहादुर, बलवान; योद्धा, सिपाही; उत्साह या साहस का कोई बड़ा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम करनेवाला; भाई, पति, पुत्र आदि के लिए संबोधन; साहित्य के नौ रसों में से एक जो असहाय या दीन-दुखी का कष्ट दूर करने के लिए मन में होनेवाले उत्साह और साहस से उत्पन्न होता है: पिंगल में एक प्रकार का मात्रिक सवैया जिसके प्रत्येक चरण की पहली और दूसरी आठ मात्राओं पर यति और अंत में एक गुरु और एक लघु होता है, इसी को लोक में 'आल्हा' कहते हैं।

वीरगति *स्त्री.* {सं.} युद्धक्षेत्र में वीरतापूर्वक लड़कर मरने पर प्राप्त होनेवाले गति जो श्रेष्ठ मानी गई है।

वीरचक्र *पुं.* {सं.} स्वतंत्र भारत में केंद्रीय सरकार की ओर से सैनिकों को वीरतापूर्ण कार्य करने पर, दिया जानेवाला एक प्रकार का चक्र या पदक।

वीरपूजा *स्त्री.* {सं.} वीरों, अर्थात् बड़े-बड़े नायकों और नेताओं का पूरा-पूरा आदर-सम्मान करना और उन्हें देवतुल्य तथा आदर्श मानकर उनके प्रति श्रद्धा-भक्ति प्रकट करना (हीरोवर्शिप)।

वीरमंगल *पुं.* {देश.} हाथी।

वीरमाता *स्त्री.* {सं. वीरमातृ} वीर पुत्र उत्पन्न करनेवाली स्त्री, वीर जननी।

वीरसू *वि., स्त्री.* {सं.} वीरों को उत्पन्न करनेवाली।

वीरा *स्त्री.* सुरा, विदारीकंद।

वीराचारी *पुं.* वाममार्गी जो मद्यादि में देवता की कल्पना करते हैं।

वीरान *वि.* {पहलवी अवीरान (जनहीन) से फा. } जिसमें बस्ती या आबादी न हो, उजाड़।

वीरासन *पुं.* {सं.} बैठने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा (वीरतासूचक)।

विरुध *पुं.* {सं.} लता; पौधा।

वीर्य *पुं.* {सं.} शरीर की वह धातु जिससे उसमें बल, तेज और कांति आती तथा संतान उत्पन्न होती है, शुक्र, रेत, बीज; रज; बल, पराक्रम।

वुज़ू *पुं.* {अ. वुज़ू} नमाज़ के लिए हाथ, पाँव, मुँह आदि धोने की क्रिया।

वुरना *अ.* {हिं. ओराना का व्रज रूप} ओर या सिरे पर आना; समाप्ति पर आना।

उदा. देखत वुरै कपूर, ज्यौं, उपै जाइ जिन लाल—**बिहारी।**

वुराना *अ., स.* ओराना।

वृंत *पुं.* {सं. वृन्त} कच्चा और छोटा फल; इस प्रकार का वनस्पति का कोई अंग, बौंडी; वह पतला डंठल जिस पर फूल लगा रहता है।

वृंद *पुं.* {सं.} दल, झुंड।

वृंदारक *पुं.* {सं.} देवता।

वृंदावन *पुं.* {सं.} मथुरा के पास का एक प्रसिद्ध तीर्थ जो श्रीकृष्ण चंद्र का क्रीड़ास्थल माना जाता है।

वृक *पुं.* {सं.} गीदड़; भेड़िया; चोर।

वृक्ष *पुं.* {सं.} पेड़; दरख्त; वृक्ष के समान वह आकृति जिसमें कोई मूल वस्तु और उसकी शाखाएँ आदि दिखाई गई हों, जैसे वंशवृक्ष।

वृक्षायुर्वेद *पुं.* {सं.} वह शास्त्र जिसमें वृक्षों की चिकित्सा का विवेचन होता है।

वृज *पुं.* व्रज।

वृजन *पुं.* आकाश, संग्राम, पाप।

वृजिन *पुं.* पाप, दुख, कष्ट।

वृत *वि.* नियुक्त, स्वीकृत।

वृत्त *पुं.* {सं.} वृत्तांत, हाल; चरित्र; जीविका का साधन, वृत्ति; वर्णिक छंद; वह क्षेत्र जो ऐसी रेखा से घिरा हो, जिसका प्रत्येक विंदु उस क्षेत्र के मध्य विंदु से समान अंतर पर हो, गोला।

वृत्ताकार *वि.* {सं.} जिसका आकार वृत्त जैसा हो।

वृत्तखंड *पुं.* {सं.} वृत्त का वह हिस्सा जो दो अर्धव्यासों के बीच हो।

वृत्तांत *पुं.* {सं.} समाचार, हाल; विवरण।

वृतांश *पुं.* {सं.} वृत्त या गोलाई का कोई अंश, गोलाई लिए हुए ऐसी रेखा जो पूरा वृत्त न बनाती हो।

वृत्ति *स्त्री.* {सं.} कोई ऐसा काम जिसमें मनुष्य कुशल हो और जिसके द्वारा वह अपना निर्वाह करता हो, जीविका, रोजी, पेशा; किसी दरिद्र या योग्य छात्र को उसके सहायतार्थ दिया जानेवाला धन (स्टाइपेंड); किसी के भरण-पोषण आदि के लिए दिया जानेवाला धन; सूत्र आदि की व्याख्या; शब्द-योजना की वह विशेषता जिससे रचना में माधुर्य, ओज, प्रसाद आदि गुण आते हैं, जैसे मधुरा, पुरुषा और प्रौढ़ा आदि (साहित्य); नाटकों में विषय के विचार से भारती, सात्वकी, कैशिकी और आरभटी ये चार वर्णन शैलियाँ; वृत्यानुप्रास; व्यापार, कार्य; स्वभाव, प्रकृति; एक प्रकार का पुराना अस्त्र।

वृत्तिक *वि.* {सं. वृत्ति} वृत्ति-संबंधी, वृत्तिका; वृत्ति, पेशे या व्यवसाय के रूप में होने या किया जानेवाला, व्यवसायिक (प्रोफेशनल)।

वृत्तिका *स्त्री.* {सं.} छात्रवृत्ति।

वृत्तिकाग्राही (हिन्) *वि.* {सं.} जिसे वृत्तिका मिलती हो।

वृत्यनुप्रास *पुं.* {सं.} साहित्य में एक शब्दालंकार जिसमें कुछ स्वरयुक्त या स्वररहित व्यंजनवर्ण कई बार आते हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृत्यानुप्राण पुं. अपने कुटुंब के भरण-पोषण का उपाय।

वृत्र पुं. {सं.} अंधेरा; मेघ, बादल; एक असुर जिसे इंद्र ने मारा था।

वृत्रासुर पुं. वृत्र।

वृथा *वि.* {सं.} {*भाव.* वृथात्व} जिससें कोई मतलब न निकले, व्यर्थ का; *क्रि. वि.* बिना मतलब के, व्यर्थ।

वृद्ध पुं. {सं.} {*भाव.* वृद्धता} साठ वर्ष से अधिक अवस्थावाला मनुष्य; वह जो साधारण की अपेक्षा बड़ा और श्रेष्ठ हो (एल्डर); बुड्ढा; पंडित, विद्वान।

वृद्धा *स्त्री.* {सं.} बूढ़ी स्त्री, बुढ़िया।

वृद्धायु *वि.* {सं.} बूढ़ा; पुं. = बुढ़ापा।

वृद्धावस्था *स्त्री.* {सं.} बुढ़ापा; मनुष्यों में साठ वर्ष से अधिक की अवस्था।

वृद्धि *स्त्री.* {सं.} 'वृद्ध' होने की क्रिया या भाव; बढ़ने की क्रिया, बढ़ती, अधिकता; ब्याज, सूद (इंटरेस्ट); वह अशौच जो संतान होने पर सगे-संबंधियों को होता है; अभ्युदय, समृद्धि; वेतन में होनेवाली अधिकता (इंक्रीमेंट)।

वृश्चिक पुं. {सं.} बिच्छू; बारह राशियों में से आठवीं राशि जिसमें विशाखा नक्षत्र का अंतिम पाद, पूरा अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र हैं (स्कार्पिओ)।

वृश्चिकाली *स्त्री.* लता जिसके रोएँ महीन होने से स्पर्श होते ही जलन पैदा होती है।

वृष पुं. {सं.} गौ का नर, साँड़; श्रीकृष्ण; बारह राशियों में से दूसरी राशि; जिसमें 141 तारे हैं और कृत्तिका नक्षत्र के अंतिम तीन पाद, पूरा रोहिणी नक्षत्र और मृगशिरा नक्षत्र के पहले दो पाद हैं (टारस); वृषभ।

वृषण पुं. {सं.} इंद्र; साँड़; घोड़ा; अंडकोश, पोता।

वृषभ पुं. {सं.} बैल या साँड़; चार प्रकार के पुरुषों में से एक जो बहुत समर्थ और श्रेष्ठ कहा गया है (कामशास्त्र)।

वृषभेक्षण पुं. विष्णु।

वृषल पुं. {सं.} शूद्र पत्नी या दासी के गर्भ से उत्पन्न पुरुष; शूद्र; दुष्कर्मी, बदचलन।

वृषली *स्त्री.* वह स्त्री जो अपने पति को त्यागकर परपुरुष से प्रेम करती हो, शूद्रा, ऋतुमती स्त्री।

वृषोत्सर्ग पुं. {सं.} शिव के निमित्त साँड़ को चक्र दाग कर छोड़ना।

वृष्टि *स्त्री.* {सं.} वर्षा; बहुत-सी चीजों का एक साथ आकर गिरना, जैसे फूलों की वृष्टि, गोलियों की वृष्टि आदि।

वृष्य *वि.* {सं.} वीर्य और बल बढ़ानेवाला (पदार्थ)।

वृषायण पुं. गौरैया चिड़िया।

वृष्या *स्त्री.* सतावर, केंवाच।

वृहच्छद पुं. अखरोट।

वृहत् *वि.* {सं.} बहुत बड़ा या भारी।

वृहद्रथ पुं. {सं.} इंद्र।

वे पुं., *सर्व.* {हिं. वह} हिं. 'वह' का बहु.।

वेग पुं. {सं.} प्रवाह, बहाव; मल, मूत्र आदि की शरीर से बाहर निकलने की प्रवृत्ति; जोर, तेजी; शीघ्रता, जल्दी।

वेगधारण पुं. {सं.} मल, मूत्र आदि का वेग या उन्हें निकलने से रोकना।

वेगवती *वि., स्त्री.* {सं.} तेजगति से चलनेवाली।

वेगवान् *वि.* {सं.} तेज चलनेवाला।

वेगी *वि.* वेगवान्, जिसमें बहुत वेग हो।

वेण पुं. {सं.} सूर्यवंशी राजा पृथु के पिता का नाम।

वेणा *स्त्री.* उशीर, खस।

वेणि *स्त्री.* स्त्रियों के बालों की लटकती चोटी।

वेणी *स्त्री.* {सं.} स्त्रियों के सिर के बालों की गूँथी हुई चोटी।

वेणीर पुं. नीम का वृक्ष; रीठा।

वेणु पुं. {सं.} बाँस, बाँसुरी।

वेतन पुं. {सं.} वह धन जो किसी को कोई काम करते रहने के बदले में निश्चित अवधि पर दिया जाता है, तनख्वाह, महीना (पे, सैलरी); पारिश्रमिक (वेजेज, रिम्यूनरेशन)।

वेतनफलक पुं. {सं.} वह फलक या कागज जिसपर किसी कार्यालय में काम करनेवाले सब कर्मचारियों के किसी मास के वेतन का पूरा विवरण हो और जिसपर वेतन चुकाने के उपरांत कर्मचारियों से हस्ताक्षर कराए जाते हों (पे शीट)।

वेतनभोगी पुं. {सं. वेतनभोगिन्} वेतन लेकर काम करनेवाला, वैतनिक (पेड)।

वेतनमान पुं. {सं.} अवस्था, पद आदि के विचार से वेतनवृद्धि की तालिका।

वेतनवृद्धि *स्त्री.* {सं.} वेतन में होनेवाली वृद्धि।

वेतल पुं. बेंत।

वेताल पुं. {सं.} द्वारपाल; शिव के गणों में से एक प्रधान गण; एक प्रकार की भूतयोनि।

वेत्ता *वि.* {सं.} जानेवाला, ज्ञाता।

वेद पुं. {सं.} सच्चा और वास्तविक ज्ञान; भारतीय आर्यों के सर्वप्रधान और सर्वमान्य धार्मिक ग्रंथ, श्रुति; ये चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद।

वेदन पुं. = वेदना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदना *स्त्री.* {सं.} उग्र या बहुत कष्टदायक पीड़ा, विशेषत: हार्दिक या मानसिक पीड़ा, व्यथा (एगोनी)।

वेदनाहर *वि.* {सं.} वेदना दूर करनेवाला।

वेदवाक्य *पुं.* {सं.} ऐसी प्रमाणित बात जिसमें तर्क की जगह न हो।

वेदनीय *वि.* वेदनाप्रद।

वेदाग्रणी *स्त्री.* सरस्वती।

वेदव्यास *पुं.* {सं.} महर्षि व्यास।

वेदांग *पुं.* {सं.} वेदों के ये छह अंग-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छंदशास्त्र।

वेदांत *पुं.* {सं.} वेदों के अंतिम भाग (उपनिषद् और आरण्यक आदि) जिनमें आत्मा, ईश्वर, जगत् आदि का विवेचन है, ब्रह्मविद्या, अध्यात्म; छह दर्शनों में से एक जिसमें पारमार्थिक सत्ता का विवेचन है, अद्वैतवाद।

वेदांती *पुं.* {सं. वेदांतिन्} वेदांत का अच्छा ज्ञाता।

वेदात्मा *पुं.* विष्णु, सूर्य।

वेदाध्यक्ष *पुं.* श्रीकृष्ण, विष्णु।

वेदार *पुं.* गिरगिट।

वेदि *स्त्री.* **यज्ञ कार्य के लिए स्वच्छ करके तैयार की हुई भूमि।**

वेदिका *स्त्री.* {सं.} वह चबूतरा जिसके ऊपर इमारत बनती है, कुरसी; वेदी।

वेदी *स्त्री.* {सं.} शुभ या धार्मिक कृत्य के लिए बनाई हुई ऊँची छायादार भूमि।

वेध *पुं.* {सं.} छेदना, बेधना; दूरदर्शक यंत्रों आदि से ग्रहों, नक्षत्रों, तारों आदि की गतिविधि देखना (ऑबजर्वेशन)।

वेधक *वि.* {सं.} वेध करनेवाला; छेदनेवाला।

वेधशाला *स्त्री.* {सं.} वह स्थान जहाँ ग्रहों, नक्षत्रों और तारों का वेध करने के लिए यंत्र रहते हों (ऑबजर्वेटरी)।

वेधालय *पुं.* = वेधशाला।

वेधित *वि.* छेदा हुआ, छिद्रित।

वेधी *वि.* बेधनेवाला, छेदनेवाला।

वेधी *पुं.* वेधक।

वेपथु *पुं.* {सं.} कँपकँपी, कम्प।

वेपन *पुं.* कंपन, काँपना।

वेपमान *वि.* कंपमान, काँपता हुआ।

वेल *पुं.* उपवन।

वेला *स्त्री.* {सं.} काल, समय; समुद्र की लहर; तट; सीमा।

वेलावलि *पुं.* एक रागिनी।

वेल्लज *स्त्री.* काली मिर्च।

वेल्लित *वि.* कंपित, लिपटा हुआ।

वेल्लि *स्त्री.* {सं.} बेल, लता।

वेल्ली *स्त्री.* बेल, लता।

वेश *पुं.* {सं.} वस्त्र आदि पहनने का ढंग; पहनने के वस्त्र, पोशाक।

वेशर *पुं.* खच्चर।

वेशी *वि.* वेश धारण करनेवाला।

वेशभूषा *स्त्री.* {सं.} पहनने के कपड़े और ढंग।

वेश्म *पुं.* {सं.} घर, मकान।

वेश्य *वि.* प्रवेश करने योग्य।

वेश्या *स्त्री.* {सं.} गाने-बजाने और धन लेकर संभोग करानेवाली स्त्री, रंडी (प्रॅस्टिच्यूट)।

वेश्यालय *पुं.* {सं.} वह घर जिसमें वेश्याएँ रहकर पेशा करती हों (ब्रॉथल)।

वेश्यावृत्ति *स्त्री.* {सं.} वेश्या बनकर अर्थात् धन लेकर परपुरुषों से संभोग कराना, कसब कमाना; किसी गुण, शक्ति आदि का बहुत ही बुरी तरह से होनेवाला अनुचित और बुरा उपयोग।

वेष *पुं.* {सं.} वेश; रंगमंच में का नेपथ्य।

वेषकार *पुं.* वेष्टन, बेठन।

वेष्टक *पुं.* प्राचीर, घेरा।

वेष्टित *वि.* लपेटा हुआ, घिरा हुआ।

वेष्टन *पुं.* {सं.} {*वि.* वेष्टित, *स्त्री.* वेष्टनी} घेरना या लपेटना; कोई चीज लपेटने का कपड़ा, बेठन।

वै *प्रत्य.* {सं. व} भी (शब्दों के अंत में) जैसे कछुवै = कुछ भी; ही, जैसे भुतवै = भूत ही; *पुं.* वय; *वि.* वे; दो।

वैकल्पिक *वि.* {सं.} किसी एक पक्ष में होनेवाला, एकांगी; जो अपनी इच्छा के अनुसार चुनकर ग्रहण किया जा सके (आप्शनल); उन दो या कइयों में से कोई एक, जिसे अपनी इच्छा से ग्रहण किया जा सके (ऑल्टरनेटिव)।

वैकल्य *वि.* = विकलता।

वैकुंठ *पुं.* {सं.} विष्णु; विष्णु का निवासस्थान या लोक; स्वर्ग।

वैक्रम (मीय) *वि.* विक्रमी।

वैकांत *पुं.* मणि विशेष, चुन्नी।

वैखरी *स्त्री.* {सं.} वाणी का व्यक्त रूप; व्यक्त और स्पष्ट वाणी; वाक्शक्ति; वाग्देवी।

वैखानस *पुं.* {सं.} वानप्रस्थ आश्रम में रहनेवाला यति; कृष्ण यजुर्वेद की चार प्रधान शाखाओं में से एक, जिसमें उक्त प्रकार के यतियों के आचारों, धर्मों आदि का विवेचन है।

वैगन *पुं.* {अं.} मालगाड़ी का डिब्बा जिसमें भरकर माल बाहर भेजा जाता है।

वैचारिक *वि.* {सं.} विचार-संबंधी; न्याय-विभाग और उसके विचार या व्यवहार-दर्शन से संबंध रखनेवाला, जैसे वैचारिक व्यवहार (ज्यूडिशल)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैचारिक अवेक्षा *स्त्री.* {सं.} किसी विषय में न्याय-विभाग या वैचारिकों के द्वारा होनेवाली अवेक्षा या उस पर दिया जानेवाला ध्यान (ज्यूडिशिल नोटिस)।

वैचारिक गवेषणा *स्त्री.* {सं.} किसी घटना की वह जाँच जो न्याय-विभाग के किसी उच्च कर्मचारी से, वैचारिक दृष्टि से कराई जाए (ज्यूडिसल इन्क्वायरी)।

वैचारिक मंडल *पुं.* {सं.} किसी बड़े अभियोग पर विचार करने के लिए विशिष्ट अधिकारियों या न्यायकर्ताओं का बना हुआ वर्ग या मंडल।

वैचारिक विधि विज्ञान *पुं.* {सं.} वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें व्यवहारों या मुकदमों के विचार से संबंध रखनेवाले मूल सिद्धांतों का वर्णन होता है (लीगल ज्यूरिस प्रूडेन्स)।

वैचारिकी *स्त्री.* {सं.} न्याय-विभाग में काम करनेवाले अधिकारियों का वर्ग (ज्यूडिशिअरी)।

वैचित्र्य *पुं.* विचित्रता।

वैजयंती *स्त्री.* {सं.} पताका, झंडी; एक प्रकार की माला जिसमें पाँच रंगों के फूल होते हैं।

वैजयिक *वि.* विजय-संबंधी।

वैजिक *वि.* वीर्य-संबंधी।

वैज्ञानिक *पुं.* {सं.} विज्ञान-संबंधी खोज या विज्ञान के क्षेत्र में काम करनेवाला, विज्ञान का ज्ञाता, विज्ञानवेत्ता; *वि.* विज्ञान-संबंधी, विज्ञान का; विज्ञान के क्षेत्र, प्रक्रिया, सिद्धांत आदि से संबंध रखनेवाला।

वैडाल व्रत *पुं.* पाप व कुकर्म करते हुए भी ऊपर से साधु बना रहना।

वैडूर्य *पुं.* वैदूर्य मणि।

वैणिक *पुं.* बीन बजानेवाला।

वैतंडिक *पुं.* {सं.} वह जो वितंडा या व्यर्थ का झगड़ा करता हो; *वि.* वितंडा-संबंधी।

वैतनिक *वि.* {सं.} वेतन पर काम करने या वेतन पानेवाला, वेतनभोगी (पेड, सैलरीड)।

वैतरणी *स्त्री.* {सं.} यम के द्वार के पास की एक कल्पित पौराणिक नदी।

वैताल, वैतालिक *वि.* {सं.} आय, व्यय आदि की व्यवस्था से संबंध रखनेवाला, वित्त-संबंधी, वित्त का (फाइनैंशल)।

वैतालीय *वि.* वेताल-संबंधी।

वैदंभ *पुं.* शिव का नाम।

वैदर्भी *स्त्री.* {सं.} काव्य की एक प्रकार की रीति या शैली जिसमें कोमल वर्णों से मधुर रचना की जाती है, इसमें प्रायः अनुस्वारयुक्त शब्द और छोटे समास आते हैं, यह करुणा, श्रृंगार और हास्य रसों के लिए उपयोगी मानी गई है।

वैदिक *पुं.* {सं.} वेदों का अनुयायी; वेदों का पंडित; *वि.* वेद-संबंधी, वेद या वेदों का।

वैदुष्य *पुं.* विद्वता, पांडित्य।

वैदूर्य *पुं.* {सं.} लहसुनिया (रत्न)।

वैदेशिक *वि.* {सं.} विदेश-संबंधी, विदेश का; दूसरे देशों या राष्ट्रों से संबंध रखनेवाला (फारेन)।

वैदेहिक *पुं.* वणिक, व्यापारी।

वैदेही *स्त्री.* {सं.} सीता, जानकी।

वैद्य *पुं.* {सं.} पंडित; वैद्यकशास्त्र के अनुसार रोगियों की चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक।

वैद्यक *पुं.* {सं.} वह शास्त्र जिसमें रोगों की पहचान तथा उनकी चिकित्सा आदि का विवेचन होता है, आयुर्वेद।

वैद्युतिक, वैद्युत् *वि.* {सं.} जिसमें विद्युत या बिजली का संयोग हो, बिजली संबंधी, बिजली का (इलेक्ट्रिक)।

वैध *वि.* {सं.} जो विधि के अनुसार हो, कानून के अनुसार ठीक (लीगल); जो विधान या संविधान के अनुसार ठीक हो (कांस्टिट्यूशनल)।

वैधन *पुं.* वैधीकरण।

वैधव *पुं.* विधवा का पुत्र।

वैधवेय *पुं.* विधवा होने का भाव, रंडापा।

वैधव्य *पुं.* {सं.} विधवा होने की अवस्था या भाव, रंडापा।

वैधात्र *पुं.* विधाता के पुत्र सनतकुमार।

वैधृत *पुं.* ग्यारहवें मन्वंतर के एक इंद्र का नाम।

वैधानिक *वि.* {सं.} विधान या संघटन के नियमों से संबंध रखनेवाला (कांस्टिट्यूशनल); जो विधान के रूप में हो (स्टैट्यूटरी); संविधानिक।

वेधीकरण *पुं.* {सं. वैध + करण} {*वि.* वैधीकृत} विधि या विधान के रूप में लाने की क्रिया या भाव, वैध करना; कार्य, लेख्य आदि को ऐसा रूप देना कि वह विधि या कानून की दृष्टि से ठीक या मान्य हो जाए (वैलिडेशन)।

वैधीकृत *वि.* {सं. वैध + कृत} {*भाव.* वैधीकरण} जो विधि या विधान के रूप में लाया गया हो; जो पहले वैध न रहा हो, पर अब वैध कर दिया गया हो (मेड लॉफुल, वैलिडेटेड)।

वैधेय *वि.* विधि-संबंधी, मूर्ख।

वैनायक *वि.* विनायक, गणेश-संबंधी।

वैपित्र *पुं.* वे संतानें जिनकी माता एक पर पिता भिन्न हों।

वैपुल्य *पुं.* विपुलता, अधिकता।

वैफल्य *पुं.* विफल होने का भाव।

वैफुल्य *पुं.* {सं.} विफल या निरर्थक होने का भाव, विफलता (नल्लिटी)।

वैभव *पुं.* {सं.} धन-संपत्ति, विभव; ऐश्वर्य।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैभवशाली *वि.* {सं.} वह जिसके पास बहुत धन-संपत्ति हो, मालदार, अमीर।

वैभाषिक *वि.* {सं.} विभाषा-संबंधी, विभाषा का; *पुं.* {सं.} बौद्धों के हीनयान शाखा के दो दार्शनिक संप्रदायों में से एक (दूसरा संप्रदाय सौत्रांतिक विभिन्नता कहलाता है)।

वैभिन्य *पुं.* {सं.} विभिन्नता।

वैमनस्य *पुं.* {सं.} शत्रुता, दुश्मनी।

वैमात्र, वैमात्रेय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* वैमात्रेयी} विमाता से उत्पन्न, सौतेला।

वैमात्री *वि., स्त्री.* सौतेली बहिन।

वैमानिक *वि.* {सं.} विमान-संबंधी; *पुं.* वह जो विमान पर सवार हो; हवाई जहाज चलानेवाला; जैन मत के अनुसार स्वर्गलोक में रहनेवाला जीव।

वैमुख्य *पुं.* विमुखता, विपरीतता।

वैयक्तिक *वि.* {सं.} किसी एक व्यक्ति से संबंधी रखनेवाला, व्यक्तिगत, निजी सामूहिक का विरुद्धार्थक (पर्सनल, प्राइवेट)।

वैयक्तिकता *स्त्री.* {सं.} व्यक्ति की प्रकृति तथा चरित्र।

वैया *प्रत्य.* {सं. वान्} एक प्रत्यय जो कुछ धातुओं के अंत में लगकर करनेवाला का अर्थ देता है, जैसे चढ़वैया, पढ़वैया आदि।

वैयाकरण *पुं.* {सं.} व्याकरण का पंडित।

वैर *पुं.* {सं.} {*भाव.* वैरता} शत्रुता।

मुहा. वैर चुकाना या निकालना = बदला लेने के लिए शत्रु को हानि पहुँचाना, बदला लेना; *वैर बाँधना* = शत्रुता उत्पन्न करना, दुश्मनी खड़ी करना; *वैर साधना* = वैर चुकाना।

वैरागी *पुं.* {सं.} वह जिसे वैराग्य हुआ हो, विरक्त; एक प्रकार के वैष्णव साधु।

वैराग्य *पुं.* {सं.} सांसारिक कार्यों और सुखभोगों अथवा किसी विशेष बात से होनेवाली विरक्ति।

वैराज्य *पुं.* **{सं.} एक ही देश में दो राजाओं या शासकों का शासन; राजा का अभाव।**

वैराट *वि.* विस्तृत, लंबा-चौड़ा।

वैरी *पुं.* {सं. वैरिन्} दुश्मन, शत्रु।

वैरूप्य *पुं.* विरूपता, विकृति।

वैवर्ण *पुं.* मलिनता।

वैवश्य *पुं.* विवशता।

वैलक्षण्य *पुं.* = विलक्षणता।

वैवर्ण्य *पुं.* {सं.} विवर्ण होने की अवस्था या भाव, विवर्णता; साहित्य में मोह, क्रोध, भय आदि से शरीर या चेहरे की रंगत बदल जाना, जो सात्विक अनुभवों के अंतर्गत माना गया है।

वैवाहिक *वि.* {सं.} विवाह-संबंधी।

वैशाख *पुं.* {सं.} चैत के बाद और जेठ के पहले का महीना।

वैशाखनन्दन *पुं.* {सं.} गधा।

वैशाली *स्त्री.* {सं.} बिहार की एक प्राचीन नगरी।

वैशंपायन *पुं.* एक प्रसिद्ध ऋषि जो वेदव्यास के शिष्य थे।

वैशिक *पुं.* **{सं.} वेश्यागामी नायक।**

वैशिष्ट *पुं.* विशिष्टता।

वैशेषिक *पुं.* कणाद मुनिकृत दर्शनशास्त्र का अनुयायी।

वैशेषणिक *वि.* {सं.} विशेषण-संबंधी।

वैशेषिक *पुं.* {सं.} महर्षि कणादकृत दर्शन जो छह दर्शनों में से एक है और जिसमें पदार्थों या तत्वों का विशेष रूप से विवेचन किया गया है; वैशेषिक दर्शन का ज्ञात या अनुयायी; *वि.* किसी विशेष विषय आदि से संबंध रखनेवाला, जैसे वैशेषिक विद्यालय।

वैश्य *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* वैश्या} भारतीय आर्यों के चार वर्णों में से तीसरा वर्ण, जिसके काम कृषि, गोरक्षा और वाणिज्य हैं।

वैश्या *स्त्री.* वैश्य जाति की स्त्री।

वैश्वरूप *वि.* विश्वरूप-संबंधी।

वैश्वानर *पुं.* {सं.} आग।

वैष्टुत *पुं.* होम का भस्म।

वैषम्य *पुं.* {सं.} विषमता।

वैष्णव *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* वैष्णवी} विष्णु का उपासक और भक्त; हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध विष्णु उपासक संप्रदाय; *वि.* विष्णु-संबंधी, विष्णु का।

वैष्णवी *स्त्री.* {सं.} विष्णु की शक्ति; दुर्गा; गंगा; तुलसी; वैष्णो देवी।

वैसा *वि.* {हिं. वह + सा} उस तरह का।

वैसे *क्रि. वि.* {हिं. वैसा} उस तरह।

मुहा. वैसे तो = प्रस्तुत को छोड़कर किसी और या दूसरी दिशा में (अदरवाइज़)।

वैहंग *वि.* पक्षी-संबंधी।

वोद्र *पुं.* {सं. उदर} पेट।

उदा. जननी वोद्र गर्भ मँह सूता—**कबीर।**

वोक *पुं.* {?} ओर, तरफ।

उदा. सूर श्याम काली उर विरतत आवत ब्रज की वोक—**सूर।**

वोट *पुं.* {अं.} चुनाव में किसी उम्मीदवार के पक्ष में दी जानेवाली राय या मत।

वोटर *पुं.* मतदाता।

वोटिंग *स्त्री.* {अं.} किसी चुनाव के लिए वोट या मत लिया जो दिया जाना।

व्यंग्य *पुं.* {सं.} किसी को चिढ़ाते, दुःखी करने, नीचा दिखाने आदि के लिए कही जानेवाली

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह बात जो स्पष्ट शब्दों में न होने पर भी अथवा विपरीत रूप की होने पर भी उक्त प्रकार का अभिप्राय या आशय प्रकट करती हो, ताना, बोली, चुटकी, जैसे वाह आपसे बढ़कर पंडित हमें कहाँ मिलेगा (आईरनी); साहित्य में ऐसी उक्ति जो शब्दों की व्यंजनावृत्ति के द्वारा उक्त प्रकार का आशय या अभिप्राय प्रकट करे।

व्यंग्यचित्र पुं. {सं.} किसी व्यक्ति या घटना का वह चित्र जो व्यंग्यपूर्वक उसका उपहास करने के लिए बना हो (कार्टून)।

व्यंग्यविदग्धा *स्त्री.* {सं.} साहित्य में नायिका की वह सखी जो व्यंग्यपूर्ण बात कहकर उसे यह जतलाती हो कि मैंने तुम्हारा सब हाल जान लिया है।

व्यंग्यार्थ पुं. {सं.} किसी शब्द या वाक्य का उसके साधारण अर्थ से भिन्न, वह अर्थ जो उसकी व्यंजन-शक्ति से निकलता है, जैसे यदि हम किसी से व्यंग्यपूर्वक कहें—आपने हम पर बहुत कृपा की, तो इसका व्यंग्यार्थ होगा कि आपने हमारे साथ बहुत अनुचित व्यवहार किया।

व्यंजक *वि.* {सं.} व्यक्त, प्रकट या सूचित करनेवाला।

व्यंजन पुं. {सं.} व्यक्त या प्रकट करने अथवा होने की क्रिया या भाव (एक्सप्रेशन); चावल, रोटी आदि के साथ खाए जानेवाले पदार्थ, जैसे तरकारी, साग आदि; पका हुआ भोजन; वह वर्ण जो बिना स्वर की सहायता के न बोला जा सके (हमारी वर्णमाला में 'क' से 'ह' तक के सब वर्ण व्यंजन हैं)।

व्यंजना *स्त्री.* {सं.} व्यक्त या प्रकट करने की क्रिया या भाव; शब्द की वह शक्ति जिससे वाच्यार्थ और लक्ष्यार्थ (अर्थात् अभिधा और लक्षणा-शक्ति से निकलनेवाले अर्थों) के सिवा ध्वनि के रूप में कुछ विशेष अर्थ निकलता है; यह दो प्रकार की मानी गई है—शब्दगत या शाब्दी और अर्थगत या आर्थी।

व्यसक पुं. धूर्त।

व्यंसित *वि.* धोखा खाया हुआ।

व्यक्त *वि.* {सं.} {*भाव.* व्यक्तता} जो प्रकट किया या सामने लाया गया हो, जिसका व्यंजन हुआ हो, प्रकट (एक्प्रेस्ड); साफ, स्पष्ट।

व्यक्ति *स्त्री.* {सं.} व्यक्त या प्रकट होना; पुं. मनुष्य आदमी (पर्सन); जाति या समूह में से कोई एक (इंडिविजुअल)।

व्यक्तिगत *वि.* {सं.} किसी व्यक्ति से संबंध रखनेवाला, वैयक्तिक (पर्सनल)।

व्यक्तिकृत *वि.* प्रकाशित, प्रकट किया हुआ।

व्यक्तिगत विधि *स्त्री.* {सं.} किसी धर्म के अनुयायिओं की वे नैतिक और सामाजिक रीतियाँ या विधियाँ जिनके अनुसार उनके सब काम होते हैं, निजी धर्मशास्त्र (पर्सनल लॉ)।

व्यक्तित्व पुं. {सं.} 'व्यक्ति' का गुण या भाव; वे विशेष गुण जिनके द्वारा किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सत्ता सूचित होती है (पर्सनैलिटी)।

व्यक्तीभूत *वि.* प्रकट किया हुआ।

व्यक्तोदित *वि.* स्पष्ट किया हुआ।

व्यग्र *वि.* {सं.} {*भाव.* व्यग्रता} घबराया हुआ, विकल; डरा हुआ, भयभीत; काम में लगा हुआ, व्यस्त।

व्यजन पुं. {सं.} पंखा।

व्यतिकर पुं. विनाश, व्यारित, समूह।

व्यतिकरण पुं. {सं.} क्रिया और प्रतिक्रिया के रूप में होना या करना; संपादन करना; बीच में बाधा के रूप में होना, बाधक होना; हस्तक्षेप।

व्यतिक्रम पुं. {सं.} क्रमभंग, उलट-फेर; बाधा, विघ्न।

व्यतिचार पुं. पापाचरण।

व्यतिपात पुं. बड़ा उपद्रव, अपमान'

व्यतिरिक्त *वि.* {सं.} फालतू।

व्यतिरेक पुं. {सं.} {*वि.* व्यतिरेकिन्} अभाव; भेद, अंतर; साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें उपमान की अपेक्षा उपमेय में कुछ उत्कर्ष या विशेषता अथवा उपमान में कुछ अपकर्ष या न्यूनता बतलाई जाती है, जैसे रात्रि के समय तुम्हारा मुख खिला रहता है कमल नहीं, साथ ही चंद्र भी प्रसन्न हो उठता है; इसके दो प्रकार या भेद माने गए हैं।

व्यतिरेकी *वि.*, पुं. जो किसी पदार्थ में व्यतिरेक उत्पन्न करता हो।

व्यतीत *वि.* {सं.} बीता हुआ, गत।

व्यतीतना *अ.* = बीतना।

व्यतीपात पुं. {सं.} ज्योतिष में एक योग जिसमें शुभ काम करना मना है।

व्यत्यय पुं. व्यतिक्रम।

व्यातिहार पुं. गाली-गलौज।

व्यथन पुं. व्यथा, पीड़ा।

व्यथा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* व्यथित} पीड़ा, वेदना, कष्ट; दुख, क्लेश।

व्यथित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* व्यथिता} जिसे किसी प्रकार की व्यथा या कष्ट हो; दुखित।

व्यधिक्षप पुं. निंदा।

व्यपगत *वि.* {सं.} असावधानी के कारण छूटा या भूला हुआ; (अधिकार या सुविधा) जो ठीक समय पर उपयोग में न आने के कारण हाथ से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व

निकल गया हो, और फिर जल्दी न मिल सकता हो; जो अवधि बीत जाने के कारण अब कार्यकारी न हो (लैप्स्ड)।

व्यपगति *स्त्री.* {सं.} असावधानी के कारण होनेवाली कोई सामान्य या छोटी भूल; नियत समय तक किसी अधिकार, प्राधिकार या सुविधा का उपयोग न करने के कारण उसका हाथ से निकल जाना।

व्यपदेश *पुं.* कपट, छल, नाम, कुल।

व्यपनीत *वि.* दूर किया हुआ।

व्यपोह *पुं.* विनाश।

व्यभिचार *पुं.* {सं.} {*कर्ता.* व्यभिचारी} उचित या ठीक मार्ग से हटकर अनुचित या बुरे मार्ग पर चलना या जाना, अनाचार; नियमित मार्ग से हटकर अनियमित मार्ग पर चलना या जाना, अतिचार; बुरा या दूषित आचार, दुश्चरित्रता, बदचलनी; नीतिशास्त्र में किसी पुरुष या स्त्री, विशेषतः विवाहित पुरुष या स्त्री का क्रमात् किसी परस्त्री या परपुरुष के साथ होनेवाला अनुचित लैंगिक संबंध, अनाचार, छिनाला (एडल्टरी); तर्कशास्त्र में वह अवस्था जिसमें हेतु तो हो पर उसका साध्य न हो।

व्यभिचारी *वि, पुं.* {सं. व्यभिचारिन्} {*स्त्री.* व्यभिचारिणी} दुश्चरित्र; परस्त्रीगामी; संचारी (भाव)।

व्यय *पुं.* {सं.} {*वि.* व्ययी} किसी तत्व या वस्तु का इस प्रकार काम में आना कि उसके परिमाण में कुछ कमी या क्षीणता हो, जैसे शक्ति या समय का व्यय; कोई काम पूरा करने के लिए पारिश्रमिक, मूल्य आदि के रूप में धन का दिया जाना या लगना, खर्च (एक्सपेंडिचर); उतना धन जितना कोई चीज तैयार करने में लगे, परिव्यय, लागत (कॉस्ट); न रह जाना, नष्ट होना, विनाश।

व्ययसाध्य *वि.* {सं.} महँगा।

व्यर्थ *वि.* {सं.} {*भाव.* व्यर्थता} बिना मतलब का, अर्थरहित; जिससे कोई लाभ न हो, निरर्थक; कार्य रूप में जिसका कोई लाभ, प्रभाव या फल न हो, विफल (नल्ल); *क्रि. वि.* बिना मतलब के; यों ही।

व्यर्थन *पुं.* {सं.} पहले की आज्ञा, निर्णय आदि को रद्द करके न किए हुए के समान करना (नलिफिकेशन)।

व्यर्थीकरण *पुं.* व्यर्थन।

व्यवकीण *वि.* मिश्रित।

व्यवच्छेद *पुं.* पृथक्त्व, अलगाव, विभाग, खंड।

व्यवच्छेदन *पुं.* {सं.} किसी चीज के सब अंग काटकर अलग-अलग करना; वह प्रक्रिया जिसमें मृत शरीर के सभी भीतरी अंगों या अंशों को अलग-अलग करके उनके कार्य, रूप आदि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है (डिस्सेक्शन)।

व्यवच्छेदित *वि.* {सं.} चीरा-फाड़ा हुआ।

व्यवधान *पुं.* {सं.} ओट, परदा; रुकावट, बाधा; विभाग, खंड; विच्छेद; परदा।

व्यवधायक *वि.* छिपानेवाला, आड़ करनेवाला।

व्यवसाय *पुं.* {सं.} {*वि.* व्यावसायिक, कर्ता व्यवसायी} जीविका-निर्वाह के लिए किया जानेवाला काम, पेशा, धंधा (ऑकुपेशन); किसी विशेष पेशे में रहकर उसके द्वारा धन कमाने के लिए उसका कार्य करना, जैसे चिकित्सक का व्यवसाय (प्रैक्टिस); जीविका, वृत्ति (प्रोफेशन); रोजगार, व्यापार; काम-धंधा।

व्यवसायिक *पुं.* व्यावसायिक।

व्यवसायी *पुं.* {सं. व्यवसायिन्} वह जो व्यवसाय करता हो; व्यापारी, रोजगारी।

व्यवसायीकरण *पुं.* {सं.} व्यवसाय का रूप देना।

व्यवसित *वि.* उद्यत, तत्पर।

व्यवस्था *स्त्री.* {सं.} शास्त्रों, नियमों आदि के द्वारा निश्चित या निर्धारित किसी कार्य का विधान जो उसके औचित्य का सूचक होता है (रूलिंग); चीजों को सजाकर या ठिकाने से रखना या लगाना; कोई काम ठीक ढंग या उचित प्रकार से करना या उसे पूरा करने का आयोजन करना (अरेंजमेंट); प्रबंध, इंतजाम (मैनेजमेंट); वह अवस्था जिसमें सब काम ठीक तरह से होते हों (ऑर्डर); सामने आया हुआ काम, कर्तव्य के भाव से पूरा करना (डिस्पोजल, डिस्पोज़ीशन); धन-संपत्ति के बँटवारे, प्रबंध आदि से संबंध रखनेवाली योजना या इंतजाम, जैसे मरणोत्तर व्यवस्था (वह योजना जिसमें यह बतलाया गया हो कि हमारे मरने के बाद हमारी संपत्ति का इस प्रकार बँटवारा या प्रबंध हो) (डिस्पोजीशन); विधान आदि में कोई उद्देश्य सिद्ध करने या किसी बात की गुंजाइश निकालने के लिए किया जानेवाला कोई कार्य या उसके लिए निकाला हुआ रास्ता, निर्देश (प्रॉविजन)।

व्यवस्थाता *स्त्री.* प्रबंधक, व्यवस्था करनेवाला।

व्यवस्थापक *पुं.* {सं.} प्रबंधकर्ता (मैनेजर)।

व्यवस्था-पत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था या वैचारिक विधान लिखा हो।

व्यवस्थापन *पुं.* {सं.} व्यवस्था देने या करने का काम या भाव।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवस्थापिका सभा *स्त्री.* {सं.} किसी देश के प्रतिनिधियों आदि की वह सभा जो देश के लिए कानून आदि बनाती है; विशेष–विधानसभा।

व्यवस्थित *वि.* {सं.} जिसमें किसी प्रकार की व्यवस्था या नियम हो, नियमित।

व्यवहरण *पुं.* विवाद विषय को न्यायालय में उपस्थित करना।

व्यवहर्ता *पुं.* मुकदमा लड़नेवाला।

व्यवहार *पुं.* {सं.} कार्य, काम; किसी बात को कार्य के रूप में लाना, कार्यान्वित करना (ऐक्शन); सामाजिक संबंधों में औरों के साथ किया जानेवाला, आचरण, बरताव (कांडक्ट); रुपए-पैसे आदि के लेन-देन का काम, महाजनी; मुकदमा (दीवानी और फौजदारी दोनों) (केस); किसी मुकदमे से संबंध रखनेवाली उसकी सारी प्रक्रिया (लीगल प्रोसीडिंग)।

मुहा. व्यवहार प्रस्तुत करना = ऐसा कार्य करना जिसमें किसी के विरुद्ध कोई कार्रवाई विशेषत: विधिक कार्रवाई हो सके या व्यवहार चल सके (टू टेक प्रोसिडिंग्स)।

बहुत दिनों से चली आई हुई और अब तक चलती हुई प्रथा या परिपाटी (यूसेज)।

व्यवहारास्पद *पुं.* अभियोग।

व्यवहारत: *क्रि. वि.* {सं.} व्यवहार की दृष्टि से; उपयोग के विचार से अथवा व्यवहार के रूप में (प्रैक्टिकली)।

व्यवहार-दर्शन *पुं.* {सं.} व्यवहारों या वादों (मुकदमों) का विचार और सुनवाई करना (ट्रायल ऑफ केसेज़)।

व्यवहार-निरीक्षक *पुं.* {सं.} वह अधिकारी जो छोटे या साधारण मुकदमों में सरकार की ओर से पैरवी करता है (कोर्ट इंस्पेक्टर)।

व्यवहारशास्त्र *पुं.* {सं.} वह शास्त्र जिसमें विधान के निर्णय और अपराधों के दंड का विवेचन होता है, धर्मशास्त्र।

व्यवहारी *वि.* व्यवहार करनेवाला।

व्यवहार्य *वि.* {सं.} व्यवहार या काम में आने या लाने के योग्य; जिसे क्रियात्मक रूप दिया जा सके (प्रैक्टिकल); जिसके संबंध में कोई व्यवहार या विधिक कार्रवाई की जा सकती हो, जैसे व्यावहार्य अपकार (ऐक्शनेबुल)।

व्यवहृत *वि.* {सं.} {*भाव.* व्यवहृति} व्यवहार या काम में लाया हुआ; जिसका व्यवहार या प्रयोग होता या हुआ हो।

व्यष्टि *पुं.* {सं.} समष्टि का कोई एक स्वतंत्र और पृथक् अंश या सदस्य, समष्टि का विरु. व्यक्ति (इंडिविजुअल)।

व्यष्टिवाद *पुं.* {सं.} {अनुयायी व्यष्टिवादी} वह सिद्धांत जिसमें व्यष्टि की स्वतंत्र सत्ता और अधिकार माना जाता है (इंडिविजुअलिज्म)।

व्यष्टिवादी *पुं.* {सं.} वह जो व्यष्टिवाद का अनुयायी हो (इंडिविजुअलिस्ट); *वि.* व्यष्टिवाद-संबंधी।

व्यसन *पुं.* {सं.} {*वि.* व्यसनी} विपत्ति: कोई बुरी या अमांगलिक बात; विषयों के प्रति आसक्ति: कोई बुरा शौक या बुरी लत; किसी काम या बात का शौक।

व्यसनी *पुं.* {सं. व्यसनिन्} वह जिसे कोई काम या बात का व्यसन हो।

व्यस्त *वि.* {सं.} किसी कार्य में रत।

व्याकरण *पुं.* {सं.} वह शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के प्रकारों और प्रयोग के नियमों आदि का निरूपण होता है (ग्रामर)।

व्याकर्ता *पुं.* सृष्टिकर्ता।

व्याकीर्ण *वि.* चारों ओर फैलाया हुआ।

व्याकरणिक *वि.* {सं.} व्याकरण-संबंधी, व्याकरण का (ग्रैमेटिकल)।

व्याकल्प *पुं.* {सं.} कुछ निश्चित अवधि तक होनेवाले आय-व्यय आदि का पहले से किया जानेवाला अनुमान: इस प्रकार अनुमान से तैयार किया हुआ लेखा (बजट)।

व्याकुल *वि.* {सं.} {*भाव.* व्याकुलता} घबराया हुआ; बहुत उत्कंठित।

व्याकृति *स्त्री.* {सं.} वाक्य में शब्दों का क्रम, जिसके आधार पर उसका अर्थ निकलता है (कंस्ट्रक्शन); शब्दों के क्रम के विचार से निकलनेवाला वाक्य या शब्द का अर्थ (रीडिंग)।

व्याक्षेप *पुं.* विलंब, देर, बाधा।

व्याख्या *स्त्री.* {सं.} {*वि.* व्याख्यात} किसी जटिल वाक्य आदि के अर्थ का स्पष्टीकरण, टीका (एक्सप्लेनेशन); किसी वाक्य, कथन आदि का अपनी बुद्धि या अपने दृष्टिकोण से लगाया जानेवाला अर्थ, अर्थापन (इंटरप्रेटेशन); किसी विषय का कुछ विस्तार से किया हुआ वर्णन।

व्याख्याकार *पुं.* {सं.} व्याख्या करनेवाला।

व्याख्यात *वि.* {सं.} जिसकी व्याख्या हुई हो।

व्याख्याता *पुं.* {सं. व्याख्यातृ} व्याख्या करनेवाला; भाषण करनेवाला।

व्याख्यान *पुं.* {सं.} व्याख्या या वर्णन करने का काम; वक्तृता, भाषण।

व्याख्यानदाता *पुं.* {सं.} वह जो व्याख्यान देता हो, भाषण करनेवाला।

व्याख्यापक *वि.* {सं.} व्याख्या करनेवाला; जो व्याख्या के रूप में हो (एक्सप्लेनेटरी)।

व्याख्यापन *पुं.* {सं.} व्याख्या करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्याख्यायक *वि.* व्याख्यापक।

व्याख्येय *वि.* व्याख्यान समझाने योग्य।

व्याघट्टन *पुं.* अच्छी तरह रगड़ने का काम।

व्याघात *पुं.* {सं.} विघ्न, बाधा; मार; किसी के अधिकार या स्वत्व पर होनेवाला आघात या उसमें पड़नेवाली बाधा (इंफ्रिन्जमेंट); साहित्य में एक अलंकार जिसमें ऐसे परस्पर विरोधी कार्यों, बातों, साधनों आदि का साथ-साथ उल्लेख होता है, जो एक दूसरे का व्याघात करनेवाले या बाधक होते हैं अथवा यह कहा जाता है कि एक उद्देश्य या उपाय से एक ने जो काम किया, उसी उद्देश्य या उपाय से दूसरा उसके ठीक विपरीत काम करता है, जैसे जो फल आपने इतना परिश्रम करके पाया, वह मुझे अनायास मिल गया; जिस काम से उनकी इतनी बदनामी हुई, वही काम आपका यश बढ़ानेवाला हो गया।

व्याघ्र *पुं.* {सं.} बाघ, शेर।

व्याघ्रचर्म *पुं.* {सं.} बाघ की खाल।

व्याज *पुं.* {सं.} छल, मिस, बहाना; बाधा, बिघ्न; विलंब; *पुं.* ब्याज।

व्याजनिंदा *स्त्री.* {सं.} किसी बहाने या ढंग से की जानेवाली वह निंदा जो साधारणत: देखने में निंदा न जान पड़े।

व्याजस्तुति *स्त्री.* {सं.} कुछ खास ढंग से की जानेवाली वह स्तुति जो साधारणत: देखने में स्तुति न जान पड़े; साहित्य में एक अलंकार जिसमें इस ढंग से किसी की निंदा या स्तुति की जाती है कि निंदा से तो स्तुति का अथवा स्तुति से निंदा का भाव प्रकट होता है।

व्याजी *स्त्री.* घलुवा।

व्याजोक्ति *स्त्री.* {सं.} साहित्य में एक अलंकार, जिसमें कोई भेद या रहस्य खुल जाने पर भी उसे किसी ब्याज या बहाने से छिपाने अर्थात् बात बनाकर कुछ का कुछ समझाने का उल्लेख होता है।

व्याडि *पुं.* एक ऋषि जिन्होंने व्याकरण और शब्दकोश बनाया था।

व्याप्त *वि.* फैलाया हुआ।

व्यादान *पुं.* विस्तार, फैलाव।

व्यादीर्ण *वि.* अति दीर्घ, फैलाया हुआ।

व्याध *पुं.* {सं.} पशु-पक्षियों को मारकर अपनी जीविका चलानेवाला, बहेलिया; उक्त काम करनेवाली एक प्राचीन जाति।

व्याधा *पुं.* व्याध; *स्त्री.* व्याधि।

व्याधि *स्त्री.* {सं.} रोग, बीमारी; साहित्य में कामवासना, प्रिय के चिंतन, वियोग या विरह आदि के कारण अस्वस्थ या रुग्न होना जो एक संचारी भाव और पूर्वराग की दस दशाओं में से एक माना गया है; विपत्ति, आफत; झंझट, बखेड़ा।

व्याधित *वि.* रोगी।

व्याधूत *वि.* कंपित, काँपता हुआ।

व्यापक *वि.* {सं.} {*भाव.* व्यापकता} चारों ओर फैला हुआ; भरा या छाया हुआ; घेरने या ढकनेवाला; जो अपने क्षेत्र में या उसके चारों ओर दूर-दूर तक फैला हो या प्रभाव डालता हो, जिसके पेटे में बहुत-सी बातें आती हों (कॉम्प्रिहेंसिव); साधारणत: किसी क्षेत्र की सब बातों से संबंध रखनेवाला, जैसे व्यापक निर्देश (जनरल)।

व्यापत्ति *स्त्री.* मृत्यु।

व्यापन *पुं.* {सं.} व्याप्त होना, फैलना।

व्यापना *अ.* {सं. व्यापन} किसी चीज के अंदर व्याप्त होना या फैलना।

व्यापार *पुं.* {सं.} कार्य, काम; क्रियात्मक रूप धारण करने का भाव, काम करना (ऑपरेशन); वह जो आचरण, व्यवहार, प्रयोग आदि के रूप में किया जाए, जैसे जीवन व्यापार (कांडक्ट); चीजें खरीदकर बेचने का काम, रोजगार (ट्रेड, बिजनेस)।

व्यापार-चिह्न *पुं.* {सं.} वह विशेष चिह्न जो व्यापारी अपने माल पर, उसे दूसरे व्यापारियों के माल से पृथक् सूचित करने के लिए अंकित करते हैं (ट्रेडमार्क)।

व्यापारिक *वि.* {सं.} व्यापार-संबंधी, रोजगार का, जैसे व्यापारिक संबंध, व्यापारिक समझौता।

व्यापारी[1] *पुं.* {सं. व्यापारिन्} व्यवसाय, व्यापार या रोजगार करनेवाला, रोजगारी (डीलर, ट्रेडर)।

व्यापारी[2] *वि.* {सं. व्यापार + हिं. ई (प्रत्य.)} व्यापार संबंधी, व्यापार का, व्यापारिक।

व्यापित्व *पुं.* व्यापक होने का भाव।

व्यापारेतर *वि.* {सं.} व्यापार से भिन्न या अलग।

व्यापी *वि.* {सं. व्यापिन्} व्याप्त होने या चारों ओर फैलनेवाला (यौगिक के अंत में जैसे संसारव्यापी महायुद्ध)।

व्याप्त *वि.* {सं.} किसी वस्तु या स्थान के अंगों या भागों में भरा, फैला या छाया हुआ; सीमा में या उसके अंतर्गत लाया हुआ।

व्यापृत *वि.* किसी कार्य में लीन।

व्याप्ति *स्त्री.* {सं.} **किसी वस्तु या स्थान के सब अंगों या भागों में फैले हुए या व्याप्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव (परवेजन); साधारणत: सभी अवस्थाओं**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में व्याप्त होने का भाव (जेनैरलिटी); न्यायशास्त्र में साध्य और साधन का पक्ष में रहना।

व्याप्य पुं. साधन हेतु।

व्यामिश्र *वि.* सम्मिलित, मिला हुआ।

व्यामोह पुं. {सं.} {*वि.* व्यामोहक, व्यामोही} अज्ञान; मोह; विपत्ति या घबराहट में पड़कर यह न समझ सकना कि क्या करना चाहिए।

व्यायत *वि.* अतिशय, दीर्घ।

व्यायाम पुं. {सं.} केवल बल बढ़ाने के उद्देश्य से किया जानेवाला शारीरिक श्रम, कसरत।

व्यायामी *वि.* कसरत करनेवाला।

व्यायुक् *वि.* निःशस्त्र।

व्यायोग पुं. {सं.} रूपक या दृश्यकाव्य का एक प्रकार या भेद जो एक अंक का होता है और जिसकी कथा ऐतिहासिक या पौराणिक होती है।

व्यारोष पुं. आक्रोश, क्रोध।

व्याल पुं. {सं.} {*स्त्री.* व्याली} साँप; बाघ; राजा; विष्णु।

व्यालसूदन पुं. {सं.} **साँपों को खानेवाला, गरुड़।**

व्यालाद पु. {स.} साँप खानेवाला, गरुड़।

व्यालू पुं. **ब्यालू, रात्रि का भोजन, कलेव.**

व्यालोल *वि.* थाड़ा हिलता हुआ।

व्यावर्तक *वि.* {सं.} चारों ओर से घेरनेवाला; बाँधने या बाधा डालनेवाला, बाधक; पीछे की ओर लौटाने या हटानेवाला; अंतर या भेद सूचित करनेवाला।

व्यावर्तन पुं. {सं.} चारों ओर से घेरना; पीछे की ओर लौटाना या मोड़ना; चारों ओर की स्थिति, परिस्थिति; चक्कर लगाना, घूमना; बराबर होता रहनेवाला परिवर्तन।

उदा. नित्य का वह अनित्य नर्तन, विवर्तन जग, जग व्यावर्तन–**पंत।**

अंतर, भिन्नता, भेद।

व्यावसायिक बुद्धि *स्त्री.* {सं.} कुशलता पूर्वक व्यवसाय चलाने की योग्यता।

व्यावहारिक *वि.* {सं.} व्यवहार या बरताव-संबंधी; जो व्यवहार में आ सकता या आता हो; कार्य के रूप में होनेवाला, क्रियात्मक (प्रैक्टिकल); व्यवहार (दीवानी और फौजदारी दोनों प्रकार के) या मुकदमों अथवा उनके अधिक्षेत्र से संबंध रखनेवाला (लीगल)।

व्यास पुं. {सं.} कृष्ण द्वैपायन, जिन्होंने वेदों का संग्रह और संपादन किया था और जो पुराणों के रचयिता माने जाते हैं; वह जो पुराणों आदि की कथाएँ सुनाता हो, कथावाचक; वह सीधी रेखा जो किसी वृत्त के गोल क्षेत्र के बीचोंबीच होती हुई गई हो और जिसके दोनों सिरे वृत्त की परिधि से मिले हों; विस्तार, फैलाव।

व्यासार्द्ध पुं. {सं.} किसी वृत्त के व्यास का आधा भाग (रेडिअस्)।

व्यासिद्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* व्यासिद्धि, व्यासेध} किसी विशेष कार्य, पद, व्यक्ति आदि के लिए मुख्य रूप से अलग या सुरक्षित किया हुआ, आरक्षित (रिजर्व्ड)।

व्यासेध पुं. {सं.} किसी विशिष्ट व्यक्ति, पद, कार्य आदि के लिए मुख्य रूप से अलग करने या सुरक्षित रखने की क्रिया या भाव, आरक्षण (रिजर्वेशन)।

व्याहत *वि.* निवारित, आहत।

व्याहरण पुं. व्यथन, उक्ति।

व्याहार पुं. वाक्य।

व्याहृत *वि.* {सं.} मना किया हुआ, वर्जित; बुरा, निषिद्ध; व्यर्थ; परस्पर-विरोधी; पुं. साहित्य में उक्ति या कथन का एक प्रकार का दोष जो उस समय माना जाता है जब एक साथ दो परस्पर-विरोधी बातें कही जाती हैं, जैसे चंद्रमुखी का मुख चंद्रमा के समान नहीं हो सकता (तर्कशास्त्र का वदतो व्याघात दोष इसी के अंतर्गत आता है)।

व्याहृति *स्त्री.* {सं.} कथन, उक्ति; भूः, भुवः और स्वः इन तीनों का मंत्र।

व्युत्क्रम पुं. क्रम में उलट-फेर होना।

व्युत्पत्ति *स्त्री.* {सं.} उद्गम या उत्पत्ति का स्थान; शब्द का वह मूल रूप जिससे वह निकला या बना हो (डेरिवेशन); शास्त्रों आदि का अच्छा ज्ञान।

व्युत्पन्न *वि.* {सं.} जिसकी किसी से व्युत्पत्ति हुई हो; जिसे किसी शास्त्र या विषय का अच्छा ज्ञान हो, किसी विद्या या कला या किसी शास्त्र का अच्छा ज्ञाता या पंडित।

व्युत्पादक *वि.* उत्पन्न करनेवाला।

व्युत्पादन पुं. व्युत्पत्ति।

व्युत्पादित *वि.* उत्पादित।

व्युदस्त *वि.* परित्यक्त, निवारित।

व्यूह पुं. {सं.} समूह, झुंड; निर्माण, रचना; शरीर; सेना; युद्ध में सैनिकों आदि या सेना की स्थापना का विशेष प्रकार, विन्यास।

व्योम पुं. {सं. व्योमन्} आकाश, आसमान; आकाश में व्याप्त वह पारदर्शी तत्व जिसमें से होकर सूर्य की किरणें पृथ्वी तक पहुँचती हैं, आकाश (ईथर)।

व्योमकेश पुं. {सं.} महादेव।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व

व्योमचारी पुं. {सं. व्योमचारिन्} जो आकाश में विचरण करता हो; देवता; पक्षी, चिड़िया।
व्योमयान पुं. {सं.} हवाई जहाज।
व्रच्छ पुं. = वृक्ष।
व्रज पुं. {सं.} जाना या चलना; समूह; मथुरा और वृंदावन के आसपास का क्षेत्र और श्रीकृष्ण की लीलाभूमि।
व्रजन पुं. {सं.} चलना, गमन; पाप।
व्रजप पुं. {सं.} व्रज का राजा।
व्रजपागना *स्त्री.* {सं.} व्रजप की पत्नी, व्रज की रानी।
व्रजभाषा *स्त्री.* {सं.} मथुरा, आगरा आदि में बोली जानेवाली एक प्रसिद्ध भाषा जिसमें सूर, तुलसी, बिहारी आदि कवियों के अनेक ग्रंथ-रत्न हैं।
व्रजमंडल पुं. {सं.} व्रज और उसके आसपास का प्रदेश।
व्रजराज पुं. {सं.} श्रीकृष्ण।
व्रजांगना *स्त्री.* {सं.} व्रज की स्त्री; गोपी।
व्रजेश पुं. {सं.} श्रीकृष्ण।
व्रज्या *स्त्री.* पर्यटन, घूमना-फिरना।
व्रण पुं. {सं.} {*वि.* व्रणित} फोड़ा; शरीर में प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न होनेवाला घाव (सोर या अल्सर)।
व्रणजिता *स्त्री.* गोरखमुंडी।
व्रणस्राव पुं. फोड़े से पीब निकलना।
व्रणहा *स्त्री.* गुरुच।
व्रणित *वि.* {सं.} व्रण से संबंध रखनेवाला; (अंग) जिसमें व्रण हो।
व्रण्य *वि.* व्रण-संबंधी।
व्रत पुं. {सं.} {*वि.* व्रती, व्रतिक} भोजन न करना; पुण्य या धार्मिक अनुष्ठान के लिए नियमपूर्वक उपवास करना; संकल्प या प्रतिज्ञा।
व्रतादेश पुं. उपनयन-संस्कार।
व्रतिक *वि.* {स.} व्रत-सबंधी, व्रत का।
व्रती पुं. {सं. व्रतिन्} वह जिसने कोई व्रत धारण किया हो; यजमान; ब्रह्मचारी।
व्रतेश पुं. शिव, महादेव।
व्रश्चन पुं. कुठार, छेनी।
व्राचड़ *स्त्री.* {अप.} अपभ्रंश भाषा का एक भेद जो सिंध में प्रचलित था।
व्राज पुं. दल, समूह।
व्राजपति पुं. दल का नायक।
व्रात पुं. {सं.} शरीर से किया जानेवाला परिश्रम, शारीरिक श्रम (मैनुअल लेबर); मनुष्य, आदमी; झुंड, दल; समूह, राशि।
व्रात्य पुं. {सं.} वह जिसके दस संस्कार न हुए हों; यज्ञोपवीत संस्कार से हीन या रहित; वर्णसंकर।
व्रीडा, व्रीडन पुं. लज्जा, शर्म।
व्रीड़न पुं. {सं.} लज्जित करना या होना; लज्जा, शर्म।
व्रीड़ा *स्त्री.* {सं.} लज्जा, लाज, शर्म (साहित्य में एक संचारी भाव)।
व्रीहि पुं. {सं.} धान; चावल।
व्रीहिकांचन पुं. मसूर।
व्रीहिमुख पुं. एक प्रकार का शस्त्र।
व्रीहिवेला *स्त्री.* शरतकाल।

श

श नागरी वर्णमाला में तीसवाँ व्यंजन वर्ण जिसका उच्चारण स्थान तालु है।
शं पुं. मंगल, कल्याण, शास्त्र।
शंक पुं. {सं.} डर, भय; शंका।
शंकना *अ.* {सं. शंका} शंका या संदेह करना; डरना।
शंकनीय *वि.* शंका करने योग्य।
शंकर *वि.* {सं.} मंगलकारक, शुभ; पुं. शिव; शंकराचार्य; शंकरा (राग); विष्णुपद नामक छंद का एक भेद; पुं. संकर।
शंकरा पुं. {सं. शंकर} ओड़व-षाड़व जाति का एक राग जो रात के दूसरे पहर में गाया जाता है।
शंकराचारी पुं. शंकराचार्य के मत का अनुयायी।
शंकराचार्य पुं. सुप्रसिद्ध अद्वैतवाद के प्रवर्तक।
शंकराभरण पुं. संपूर्ण जाति का एक राग।
शंकरालय पुं. कैलास धाम।
शकरावास पुं. कैलास पर्वत, भीमसेनी कपूर।
शंकरी *स्त्री.* {सं.} पार्वती।
शंकरीय *वि.* शंकर-संबंधी।
शकषण पुं. विष्णु।
शंका *स्त्री.* {सं.} अनिष्ट या भय, डर, खटका; अपने किसी अनुचित व्यवहार के कारण मन में उठनेवाला यह भाव कि इससे कहीं कोई अनिष्ट न हो जाए (साहित्य में यह एक संचारी भाव माना गया है); संदेह, संशय, शक (डाउट)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंकाकुल *वि.* {सं.} शंका से व्याकुल।
शंकालु *वि.* {सं.} शंका करनेवाला।
शंकित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* शंकिता} जिसे शंका हुई हो; डरा हुआ।
शंकितव्य *वि.* शंका के योग्य।
शंकु *पुं.* {सं.} मेख, कील; खूँटी; भाला, बरछा; वह खूँटी जिससे प्राचीन काल में सूर्य या दीए की छाया नापी जाती थी; मोटी सींक।
शंकुला *स्त्री.* सुपारी काटने का सरोंता।
शंख *पुं.* {सं.} एक प्रकार का बड़ा घोंघा जिसका कोष बहुत पवित्र माना जाता है और देवताओं के आगे बजाया जाता है, कंबु; सौ पद्म की संख्या जो अठारहवें स्थान पर आती है।
शंखचूड़ *पुं.* {सं.} एक प्रकार का बहुत जहरीला साँप।
शंखासुर *पुं.* {सं.} एक दैत्य जो ब्रह्मा के वेद चुराकर समुद्र में जा छिपा था और जिसे विष्णु ने मत्स्यावतार धारण करके मारा था।
शंखालुक *पुं.* सफेद शकरकंद।
शंखाहुलि *स्त्री.* शंखपुष्पी।
शंखिनी *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार की वनोषधि; कामशास्त्र में स्त्रियों के पद्मिनी आदि चार भेदों में से एक जो दुबली-पतली, छोटे स्तनोंवाली, कुछ निर्लज्ज और क्रोधी स्वभाव की कही गई है।
शंगर *पुं.* बहुत ऊँचा वृक्ष।
शंग (ज) रफ *पुं.* शिंगरफ।
शंड *पुं.* षंड; हिजड़ा।
शंपा *स्त्री.* {सं. शम्पा} विद्युत, बिजली; कमर, कटि।
शंबर[1] *पुं.* {सं. शंबरः} एक राक्षस जिसे प्रद्युम्न ने मारा था; पर्वत, पहाड़; एक प्रकार का हिरन; युद्ध, लड़ाई; इंद्रजाल, जादू।
शंबर[2] *पुं.* {सं. शंबरः} जल, पानी; बादल, मेघ; धन, संपत्ति।
शंबरारि *पुं.* {सं.} प्रद्युम्न, जिन्होंने शम्बर नामक राक्षस को मारा था; कामदेव।
शंबु *पुं.* घोंघा, सीप।
शंबुक *पुं.* {सं.} घोंघा।
शंबूक *पुं.* हाथी की सूँड़ का अग्र भाग, शंख, दैत्य।
शंभु *पुं.* {सं.} शिव, महादेव।
शंसिका *स्त्री.* {सं. शंसा} किसी व्यक्ति या घटना के संबंध में आलोचना के रूप में प्रकट किया हुआ संक्षिप्त विचार, उपकथन, टिप्पणी (रिमार्क)।
शंसित *वि.* निश्चित।
शंस्य *वि.* स्तुति करने योग्य।
शऊर *पुं.* {अ.} अच्छी तरह काम करने की योग्यता या ढंग; बुद्धि।
शक[1] *पुं.* {सं.} एक प्राचीन अनार्य जाति जो शक द्वीप की रहनेवाली थी और म्लेच्छों में गिनी जाती थी; शकाब्द।
शक[2] *पुं.* {अ.} {*वि.* शक्की} शंका, संदेह।
शकट *पुं.* {सं.} रथ; बैलगाड़ी, छकड़ा।
शककारक *पुं.* कोई संवत् चलानेवाला।
शकटाक्ष *पुं.* गाड़ी का धुरा।
शकटारी *पुं.* श्रीकृष्ण।
शकटि *स्त्री.* छोटी गाड़ी।
शकटिका *वि.* शकट-संबंधी।
शकटी *स्त्री.* छोटी गाड़ी।
शकर *स्त्री.* शक्कर।
शकरकंद *पुं.* {हिं. शकर + हिं. शकर + सं. कंद} एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद।
शकरपारा *पुं.* {फा. शकरपारः} एक प्रकार का फल; एक प्रकार की छोटी चौकोर मिठाई; इस आकार की चौकोर सिलाई जो रुईदार कपड़ों में होती है; सुंदर अंगोंवाली प्रेयसी।
शकल[1] *स्त्री.* {अ. शक्ल} मुख की आकृति, चेहरा, स्वरूप; मुख का भाव, चेष्टा; बनावट, गढ़न; (काम करने का) उपाय, ढंग, रास्ता।
शकल[2] *पुं.* {सं.} चमड़ा; छाल; अंश, खंड, टुकड़ा।
शकाब्द *पुं.* {सं.} राजा शालिवाहन का चलाया हुआ शक संवत् जो ई. सन् के 78 वर्ष पश्चात् आरंभ हुआ था।
शकुंत *पुं.* {सं.} पक्षी, चिड़िया।
शकुन *पुं.* {सं.} किसी विशेष कार्य के आरंभ में दिखाई देनेवाले शुभ या अशुभ लक्षण, सगुन; शुभ मुहूर्त; शुभ मुहूर्त में होनेवाला कार्य।
शक्कर *स्त्री.* {सं. शर्करा, फा. शकर} चीनी; कच्ची चीनी, खाँड़।
शक्की *वि.* {अ. शक + ई (प्रत्य.)} हर बात में शक या संदेह करनेवाला।
शक्त *पुं.* {सं.} समर्थ या शक्तिवान।
शक्तव *पुं.* भूने हुए अन्न का आटा।
शक्ति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* शाक्त} कोई ऐसा तत्व जो कोई कार्य करता, कराता अथवा क्रियात्मक रूप में अपना प्रभाव दिखलाता हो, बल, ताकत (एनर्जी); कोई ऐसा तत्व जो निश्चित रूप से और बलपूर्वक किसी से कोई काम करा सकता हो, बल (फोर्स); वे साधन या तत्व जिनसे कोई कार्य या अभीष्ट सिद्ध होता हो, जैसे सैनिक या आर्थिक शक्ति; बड़ा और पराक्रमी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ed by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य जिसमें यथेष्ट धन और सेना आदि हो (पॉवर); वह संबंध जो शब्द और उसके अर्थ में होता है; प्रकृति, माया; किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी, जिसकी उपासना करनेवाले शाक्त कहलाते हैं (तंत्र); दुर्गा; एक प्रकार का शस्त्र, साँग; अठारह मात्राओं का एक छंद।

शक्तिपुंज *वि.* {सं.} शक्तिमान।

शक्तिमत्ता *स्त्री.* {सं.} शक्तिमान होने का भाव, ताकत।

शक्तिवान, शक्तिवान् *वि.* {सं.} {*स्त्री.* शक्तिमती} बलवान, बलिष्ठ, ताकतवर।

शक्तिशाली *वि.* {सं. शक्तिशालिन्} {*स्त्री.* शक्तिशालिनी} बलवान, ताकतवर।

शक्तिशील *वि.* {*स्त्री.* शक्तिशीला} शक्तिशाली।

शक्ति-संतुलन *पुं.* {सं.} परस्पर विरोधी शक्तियों का ऐसा विभाजन या वर्गीकरण जिसमें दोनों पक्ष प्रायः समान रहें और एक दूसरे का अनिष्ट न कर सकें (बैलेंस ऑफ पॉवर)।

शक्य *वि.* {सं.} {*भाव.* शक्यता} क्रियात्मक रूप में हो सकने के योग्य, संभव।

शक्यता *स्त्री.* {सं.} शक्य होने की क्रिया या भाव (पोटेंशियालिटी)।

शक्र *पुं.* {सं.} इंद्र।

शक्रचाप *पुं.* {सं.} इंद्रधनुष।

शक्राख्य *पुं.* पेचक, उल्लू।

शक्राग्नि *स्त्री.* विशाखा नक्षत्र।

शक्रारि *पुं.* {सं.} इंद्र का शत्रु, मेघनाद।

शक्राशन *पुं.* विजया, भाँग।

शक्रासन *पुं.* इंद्र का आसन।

शक्रि *स्त्री.* वज्र, पर्वत।

शक्ल *स्त्री.* शकल।

शख्स *पुं.* {*अ.*} व्यक्ति, जन।

शगल *पुं.* {*अ.* शग्ल} व्यापार, काम-धंधा; मनोविनोद।

शगुन *पुं.* {सं.} शकुन; विवाह की बातचीत पक्की होने की रस्म, तिलक, टीका।

शगुनियाँ *पुं.* {हिं. शगुन} शकुन का विचार करनेवाला साधारण ज्योतिषी।

शगूफा *पुं.* {फा. शिगूफ़ः} कली; फूल; कोई नई और विलक्षण घटना या बात।

शची *स्त्री.* {सं.} इंद्र की पत्नी।

शजरा *पुं.* {*अ.* शज़रः} वंशवृक्ष; पटवारी का बनाया हुआ खेत का नकशा।

शटर *पुं.* {अं.} लोहे का दरवाजा जो खुलने पर इकट्ठा हो जाता है।

शटा *स्त्री.* {सं.} सिर के बालों की जटा; वृक्षों की जड़।

शठ *वि.* {सं.} {*भाव.* शठता} धूर्त, चालाक; लुच्चा, बदमाश; मूर्ख; दुष्ट, पाजी; *पुं.* साहित्य में वह नायक जो बातें बनाकर अपराध छिपाने में और अपना काम निकालने में धूर्त तथा निर्लज्ज हो।

शठी *स्त्री.* कपूरकचरी।

शठोदर *वि.* धूर्त।

शण *पुं.* सन नाम का पौधा।

शणालुक *पुं.* अमलतास का पौधा या पेड़।

शत *वि.* दस का दस गुना, सौ; *पुं.* सौ की संख्या।

शतक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* शतिका} एक ही तरह की सौ वस्तुओं का समूह या संग्रह; शताब्दी।

शतकुंडी *स्त्री.* {सं. शतकुंडिन्} वह महायज्ञ जिसमें सौ कुंडों में एक साथ यज्ञ होता है।

शतघ्नी *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र।

शतदल *पुं.* {सं.} कमल।

शतधा *क्रि. वि.* {सं.} सैकड़ों बार; सैकड़ों प्रकार से; सैकड़ों टुकड़ों में।

शतपति *पुं.* {सं.} वह जिसकी आयु सौ वर्ष की हो।

शतरंज *स्त्री.* {फा., मि. सं. चतुरंग} एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल जो बत्तीस गोटियों से खेला जाता है।

शतरंजी *स्त्री.* {फा.} रंग-बिरंगे सूतों से बनी हुई दरी या मोटा बिछावन।

शतशः *क्रि. वि.* {सं.} सैकड़ों प्रकार से, बहुत तरह से।

शतांश *पुं.* {सं.} सौ हिस्सों में से एक, 100वाँ भाग।

शताधिक *वि.* {सं.} सौ से अधिक।

शताब्दी *स्त्री.* {सं.} सौ वर्षों का विशेषतः किसी सन्, संवत् की किसी इकाई से सैकड़े तक का समय, शती, शतक (सेन्चुरी)।

शतायु *वि.* {सं. शतायुस्} सौ वर्ष की आयुवाला।

शतायुध *वि.* जो सौ अस्त्र धारण करता हो।

शतार *पुं.* व्रज, सुदर्शन चक्र।

शतार्ध *वि., पुं.* पचास।

शतावधान *पुं.* {सं.} {*वि.* शतावधानी} वह जो एक साथ बहुत सी बातें सुनकर उन्हें ठीक क्रम से याद रख सकता और बहुत से काम एक साथ कर सकता हो।

शतावर *पुं.* सफेद मूसली।

शतावरी *स्त्री.* इंद्र की भार्या।

शतावर्त *पुं.* विष्णु, महादेव।

शताष्टक *पुं.* एक सौ आठ।

शती *स्त्री.* {सं. शतिन्} सौ का समूह, सैकड़ा; शताब्दी (सेन्चुरी)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शतेश पुं. सौ गाँवों का स्वामी।
शतोदर पुं. शिव, महादेव।
शत्रि पुं. हस्ती, हाथी।
शत्रुतप *वि.* शत्रु को जीतनेवाला।
शत्रु पुं. {सं.} वैरी, दुश्मन।
शत्रुता पुं. {सं.} दुश्मनी, वैर।
शदक पुं. भूसीरहित अन्न।
शनाख्त *स्त्री.* {फा.} किसी व्यक्ति या वस्तु को देखकर पहचानने की क्रिया या भाव, विभावन, पहचान।
शनि पुं. {सं.} सौर जगत् का सातवाँ ग्रह जो फलित ज्योतिष में अशुभ और कष्टदायक माना जाता है (सैटर्न)।
शनिवार पुं. {सं.} शुक्रवार के बाद और रविवार के पहले का वार या दिन।
शनिश्चर पुं. शनि।
शनैः *क्रि. वि.* {सं.} धीरे, आहिस्ता।
शनैश्चर पुं. शनि।
शपथ *स्त्री.* {सं.} कसम, सौगंध (ओथ); दृढ़तापूर्वक कथन, प्रतिज्ञा।
शपथग्रहण पुं. {सं.} किसी पद को ग्रहण करते समय ली जानेवाली शपथ।
शपथग्रहण-समारोह पुं. {सं.} शपथग्रहण के समय होनेवाला समारोह।
शपथपत्र पुं. {सं.} वह पत्र जो किसी बात की सत्यता प्राख्यापित करने के समय शपथपूर्वक लिखकर न्यायालय में उपस्थित किया जाता है (एफिडेविड)।
शफ पुं. पशु का खुर, वृक्ष की जड़।
शफरुक पुं. संदूक, पेटी।
शफा पुं. {*अ.* शफ़ा} स्वास्थ्य, तन्दुरुस्ती।
शबनम *स्त्री.* {फा.} ओस; एक प्रकार का बहुत पतला कपड़ा।
शबर पुं. {सं.} भारत में बसनेवाली एक प्राचीन अनार्य जाति।
शबरी *स्त्री.* {सं.} शबर नामक अनार्य जाति की एक प्रसिद्ध भक्त स्त्री जिसने प्रवास के समय रामचंद्र को, पहले आप चखकर उनमें से मीठे बेर खिलाए थे।
शबल (लित) *वि.* {सं.} चितकबरा; रंगबिरंगा, बहुरंगा।
शबला *स्त्री.* कामधेनु।
शबलित *वि.* चितकबरा।
शबीह *स्त्री.* {*अ.*} चित्र, तस्वीर।
शब्द पुं. {सं.} ध्वनि, आवाज; अक्षरों या वर्णों आदि से बना हुआ और मुँह से उच्चरित अथवा लिखा जानेवाला वह संकेत जो किसी भाव, कार्य या बात का बोधक होता है, सार्थक ध्वनि, लफ्ज (वर्ड); संतों के बनाए हुए पद; किसी आप्त पुरुष की कही हुई ऐसी काव्य-रचना जिसमें कुछ उपदेश भी हों, जैसे कबीर या गुरुनानक के शब्द।
शब्दकोश पुं. {सं.} वह कोश (ग्रंथ) जिसमें बहुत से शब्द किसी क्रम से अथवा अर्थ सहित दिए हों (डिक्शनरी, लेक्सिकन)।
शब्दचित्र पुं. {सं.} शब्दों में किसी विषय या बात की ऐसी स्पष्ट और विस्तृत चर्चा जो देखने में उसके चित्र के समान जान पड़े।
शब्दजाल पुं. शब्दाडंबर।
शब्दप्रमाण पुं. {सं.} ऐसा प्रमाण जिसका आधार केवल किसी का कथन हो।
शब्दभेद पुं. {सं.} व्याकरण में शब्दों का वह विशेष प्रकार या विभाग जिसके अनुसार यह निश्चय होता है कि अमुक शब्द संज्ञा है या सर्वनाम, विशेषण है या क्रिया-विशेषण, क्रिया है या निपात आदि (पार्ट्स ऑफ स्पीच); शब्दवेध।
शब्द-योजना *स्त्री.* {सं.} किसी वाक्य या कथन के लिए उपयुक्त शब्द बैठाना; इस प्रकार बैठाए हुए शब्दों का क्रम और रूप (वर्डिंग)।
शब्दवक्रोक्ति *स्त्री.* वक्रोक्ति।
शब्दविरोध पुं. {सं.} वह विरोध जो वास्तविक या तात्पर्य संबंधी न हो, बल्कि केवल शब्दों में जान पड़ता हो, केवल शब्दगत विरोध।
शब्दवेध पुं. {सं.} {*वि.*, कर्ता शब्दवेधी} लक्ष्य को बिना देखे और उसपर होनेवाले आघात या उसकी ओर से आनेवाले शब्द से दिशा का ज्ञान करके लक्ष्य पर ठीक और सच्चा निशाना लगाना।
शब्दवेधी पुं. {सं. शब्दवेधिन्} केवल सुने हुए शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी वस्तु को वाण से मारनेवाला।
शब्दशः *क्रि. वि.* {सं.} किसी के कहे या लिखे हुए विचारों आदि के प्रत्येक शब्द के अनुसार या अनुकरण पर (वरबेटिव)।
शब्दशक्ति *स्त्री.* {सं.} शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उससे कोई अर्थ निकलता है, यह तीन प्रकार की कही गई है—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।
शब्दशास्त्र पुं. {सं.} व्याकरण।
शब्दश्लेष पुं. श्लेष (अलंकार)।
शब्दसाधन पुं. {सं.} व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, प्रकार और रूपांतर आदि का विचार होता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दाडंबर पुं. {सं.} साधारण बात कहने के लिए बड़े-बड़े शब्दों और जटिल वाक्यों का प्रयोग, शब्दजाल।

शब्दातिग पुं. विष्णु।

शब्दानुकरण पुं. शब्द का अनुकरण।

शब्दानुशासन पुं. व्याकरण।

शब्दायमान *वि.* शब्द करता हुआ।

शब्दान्वय पुं. {सं.} (व्याकरण में) वाक्य में आए हुए किसी शब्द का शब्दभेद, लिंग, वचन, कारक, काल आदि बतलाना और यह बतलाना कि दूसरे शब्दों के साथ उसका क्या संबंध है।

शब्दार्थ पुं. {सं. शब्द + अर्थ} किसी शब्द का साधारण अर्थ, माने।

शब्दालंकार पुं. {सं.} काव्य में वह अलंकार जिसमें प्रयुक्त होनेवाले शब्द से ही चमत्कार उत्पन्न हो, उसके स्थान पर उसके पर्याय रखने से वह चमत्कार न हो।

शब्दावली *स्त्री.* {सं.} किसी विषय या कार्य से संबंध रखनेवाले शब्द या उनकी सूची; किसी वाक्य, कथन या रचना में प्रयुक्त शब्दों का प्रकार या क्रम (वर्डिंग)।

शब्दित *वि.* {सं.} जिसमें शब्द उत्पन्न होता हो; बोलता हुआ।

शब्देंद्रिय *स्त्री.* कान, कर्ण।

शम पुं. {सं.} {*भाव.* शमता} शांति; मोक्ष; अंतःकरण तथा इंद्रियों को वश में रखना; क्षमा।

शमन पुं. {सं.} {*वि.* शमित} दोष, विकार, उपद्रव आदि दबाना; शांति; यम, यमराज; दमन।

शमनी *स्त्री.* रात्रि, रात।

शमनीय *वि.* शमन करने योग्य।

शमल पुं. पाप, विष्ठा।

शमशेर पुं. {फा. शम्शीर} तलवार।

शमा पुं. {*अ.* शम्अ} मोमबत्ती।

शमादान पुं. {*अ.* शम्अ + फा. दान} वह आधान जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती है।

शमित *वि.* {सं.} जिसका शमन हो चुका हो, बुझा हुआ; शांत।

शमि पुं. शमी वृक्ष।

शमिकर पुं. प्राचीन ऋषि।

शमित पुं. शांत किया हुआ।

शमिता पुं. शांतिकारक।

शमिष्ठ *वि.* अतिशांत।

शमी पुं. {सं. शिवा ?} एक प्रकार का बड़ा वृक्ष, सफेद कीकर।

शमीक पुं. प्रसिद्ध ऋषि, (तपस्या करते हुए समय) राजा परीक्षित ने इनके गले में मरा हुआ साँप डाल दिया था।

शमीगर्भ पुं. ब्राह्मण, अग्नि।

शमीर पुं. शमी वृक्ष।

शय *वि.* हाथ, शय्या, साँप, नींद।

शयत पुं. निद्रालु व्यक्ति।

शयथ पुं. अजगर, शूकर, मृत्यु, सर्प।

शयन पुं. {सं.} सोना, निद्रा लेना; लेटना; शय्या, पलंग; बिस्तर, बिछौना।

शयन आरती *स्त्री.* {सं. शयन + हिं. आरती} वह आरती जो देवी-देवता के सामने रात के समय उन्हें शयन कराने से पहले की जाती है।

शयनगृह पुं. शयनागार।

शयनरत *वि.* {सं.} जो सो रहा हो।

शयनागार पुं. {सं.} सोने का कमरा या घर, शयनगृह।

शयनालय पुं. शयनागार।

शयित *वि.* {सं.} सोया हुआ, निद्रित; शय्या पर पड़ा या लेटा हुआ।

शय्या *स्त्री.* {सं.} बिछौना, बिस्तर; सोने के लिए ओढ़ना-बिछौना या खाट अथवा पलंग; चिकित्सालय आदि में वह खाट जिसपर रोगी रहते हैं (बेड, उक्त सभी अर्थों के लिए)।

शय्यादान पुं. {सं.} मृतक के उद्देश्य से महाब्राह्मण को चारपाई, ओढ़ना, बिछौना, बरतन आदि दान देना।

शय्याव्रण पुं. {सं.} रोगियों की पीठ, कमर आदि में होनेवाला वह घाव जो बहुत दिनों तक बिस्तर पर पड़े रहने से हो जाता है, बिस्तर-घाव (बेड-सोर)।

शर पुं. {सं.} {*भाव.* शरता} वाण, तीर; सरकंडा, सरई; सरपत, रामशर; दूध या दही पर की मलाई; भाले का फल।

शरअ *स्त्री.* {*अ.* शर्अ} {*वि.* शरई} कुरान में बतलाया हुआ विधान; दस्तूर, परिपाटी; मुसलमानों का धर्मशास्त्र।

शरई *वि.* {*अ.*} जो शरअ या इस्लामी धर्मशास्त्र के अनुसार ठीक हो।

शरकांड पुं. शरकंडा, सरपत।

शकरकार पुं. तीर बनानेवाला।

शरगुल्म पुं. सरकंडा।

शरघात पुं. तीर की चोट।

शरज *वि.* सरकंडे का बना हुआ।

शरकोट पुं. {सं.} चलाए हुए तीरों या वाणों का ऐसा घेरा जो शत्रु सैनिकों को जल्दी बाहर न निकलने दे।

शरण *स्त्री.* {सं.} रक्षा, आश्रय; बचाव की जगह; घर, मकान; *वि.* शरण देने या रक्षा करनेवाला, यौगिक शब्दों के अंत में, जैसे अशरण-शरण।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरणगृह पुं. {सं.} वह स्थान जहाँ शरण ली जाए; जमीन के नीचे बनाया हुआ वह स्थान जहाँ लोग हवाई जहाजों के आक्रमण आदि से बचने के लिए छिपकर रहते हैं।

शरणद पुं. {सं. शरण + द (प्रत्य.)} शरण देनेवाला।

शरणागत *वि.* {सं.} शरण में आया हुआ।

शरणार्थी पुं. {सं. शरणार्थिन्} वह जो कहीं शरण पाना चाहता हो; वह जो अपने निवासस्थान से बलपूर्वक हटा दिया गया हो और दूसरी जगह शरण पाकर रहना चाहता हो (रिफ्यूजी)।

शरण्य *वि.* {सं.} शरण में आनेवाले की रक्षा करनेवाला।

शरत, शरत् *स्त्री.* {सं.} ऋतु जो आश्विन और कार्तिक में होती है; वर्ष, साल।

शरता *स्त्री.* {सं.} शर का भाव; शर या तीर चलाने की कला या विद्या।

उदा. छोंड़ि दई शरता सब काम मनोरथ के रथ की गति खूटी–**केशव**।

शरतिया *क्रि. वि.* शर्तिया।

शरत्काल पुं. शरत्।

शरदंड पुं. सरकंडा, चाबुक।

शरदंत पुं. हेमंत ऋतु।

शरदिंदु पुं. शरत् ऋतु का चंद्रमा।

शरद *स्त्री.* शरत्।

शरपंजर पुं. = शरकोट।

उदा. जार्‌यो शर पंजर झार कर्‌यो नैऋत्यन को अति चित्त कर्‌यो–**केशव**।

शरपट्टी पुं. एक प्रकार का शस्त्र।

शरपुंख पुं. बाण में लगा हुआ पर।

शरदपूनो *स्त्री.* = शरद पूर्णिमा।

शरद-पूर्णिमा *स्त्री.* {सं.} आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा।

शरबत पुं. {*अ.* शर्बत} {*वि.* शरबती} कोई मधुर पेय पदार्थ; चीनी आदि में पकाकर तैयार किया हुआ किसी ओषधि का रस; वह पानी जिसमें शक्कर या खाँड़ घुली हो।

शरबत-पिलाई *स्त्री.* वह धन जो कन्या-पक्ष के लोग वर-पक्ष को शरबत पिलाते समय देते हैं।

शरबती *वि.* {हिं. शरबत} शरबत के रंग का, पीला मिला हुआ और हल्का हरा; पुं. शरबत की तरह का पीला मिला हुआ हल्का हरा रंग; *स्त्री.* एक प्रकार की बढ़िया मलमल।

शरभंग पुं. एक महर्षि जिनका दर्शन करने हेतु प्रभु श्रीराम वनवास काल में गए थे।

शरभ पुं. {सं.} टिड्डी; हाथी का बच्चा; शेर; ऊँट; एक प्रकार का कल्पित जंतु जो आठ पैरोंवाला और शेर से भी अधिक बलवान माना जाता है; पशु, जानवर; बानरों की एक विशेष जाति; एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में 4 नगणों के बाद 1 सगण होता है, मणिगुण, शशिकला।

शरम *स्त्री.* {फा. शर्म} लज्जा, हया।

मुहा. मारे शरम के गड़ जाना या पानी पानी होना = बहुत लज्जित होना।

लिहाज, संकोच; प्रतिष्ठा, इज्जत।

शरमाऊ *वि.* शरमीला।

शरमाना *अ.* {*अ.* शर्म + हिं. आना (प्रत्य.)} लजाना, लज्जित होना; *स.* शरमिन्दा या लज्जित होना।

शरमिंदा *वि.* {फा.} {*भाव.* शरमिंदगी} लज्जित।

शरमीला *वि.* {फा. शर्म + हिं. ईला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* शरमीली} जिसे जल्दी शरम या लज्जा आती हो, लजीला, लज्जालु।

शरल *वि.* सरल, स्वच्छ हृदय।

शरवारण पुं. ढाल।

शरशय्या पुं. बाणों की बनी हुई शय्या।

शरस पुं. शर, बाण, तीर।

शरह *स्त्री.* {*अ.* शर्ह} टीका, भाष्य; दर या भाव; प्रथा, परिपाटी।

शरहबंदी *स्त्री.* दरबंदी।

शरहमुऐयन *वि.* {*अ.* शर्हअय्यन} (खेत) जिसकी मालगुजारी बिल्कुल निश्चित हो और किसी प्रकार बढ़ाई न जा सकती हो।

शराकत *स्त्री.* {*अ.*} साझा।

शराकतनामा पुं. {*अ.* शराकत + फा. नामः} वह पत्र जिस पर शराकत या साझे की शर्तें लिखी रहती हैं।

शरापना *अ.* = शाप देना।

शराफत *स्त्री.* {*अ.*} सज्जनता।

शराब *स्त्री.* {*अ.*} एक प्रसिद्ध तरल मादक पदार्थ जो कई तरह की चीजों का खमीर उठाकर बनाया जाता है, मदिरा, मद्य।

शराबखोरी *स्त्री.* {फा.} मदिरा-पान।

शराबी पुं. {*अ.*} वह जो प्रायः शराब पीता हो, मद्यप।

शराबोर *वि.* {फा.} बिल्कुल भीगा हुआ, लथपथ, तरबतर।

शरारत *स्त्री.* {*अ.*} पाजीपन, दुष्टता।

शरारती *वि.* शरारत करनेवाला।

शरारोप पुं. धनुष-बाण।

शरावर पुं. ढाल-कवच।

शरावाय पुं. धनुष, कमान।

शराश्रय पुं. तूण, तरकश।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरासन पुं. {सं.} धनुष।

शरिष्ठ *वि.* श्रेष्ठ, उत्तम।

शरीक *वि.* {अ.} {भाव. शराकत} किसी काम में साथ देनेवाला; मिला हुआ, शामिल, सम्मिलित।

शरीकत *स्त्री.* शराकत।

शरीफ पुं. {अ.} भला आदमी, सज्जन।

शरीफा पुं. {सं. श्रीफल या सीताफल} मझोले आकार का एक प्रसिद्ध वृक्ष; इस वृक्ष का फल, सीताफल।

शरीर[1] पुं. {सं.} प्राणियों के सब अंगों का समूह, देह, तन, बदन, काया (बॉडी)।

मुहा. शरीर छूटना = मृत्यु होना, मर जाना; *शरीर बरतना* = शरीर छूटना।

किसी वस्तु का सारा विस्तार या ढाँचा जिसमें उसके सब अंग सम्मिलित हों (फ्रेम)।

शरीर[2] *वि.* {अ.} {भाव. शरारत} पाजी, नटखट।

शरीरपात पुं. {सं.} मृत्यु।

शरीररक्षक पुं. अंगरक्षक।

शरीरशास्त्र पुं. {सं.} वह शास्त्र जिसमें शरीर के अंगों की बनावट और उनके कार्यों का विवेचन होता है।

शरीरांत पुं. {सं.} मृत्यु, मौत।

शरीरी पुं. {सं. शरीरिन्} शरीरधारी, प्राणी; आत्मा, जीव; *वि.* शरीर से युक्त, शरीरवाला।

शर्करा *स्त्री.* {सं.} शक्कर।

शर्करावेष्ठित *वि.* {सं.} चीनी में लपेटा हुआ।

शर्करी *स्त्री.* लेखनी, मेखला, नदी।

शर्करीय *वि.* चीनी का।

शर्कोट पुं. सर्प, साँप।

शर्त पुं. {अ.} किसी विषय के ठीक होने के संबंध में दृढ़तापूर्वक कुछ कहने का वह प्रकार जिसमें सत्य या असत्य सिद्ध होने पर हार-जीत और कुछ लेन-देन भी हो, दाँव, बाजी; किसी काम के पूरा होने के लिए बंधन या नियंत्रण के रूप में होनेवाली आवश्यक बात या काम; पारस्परिक निश्चय, संविदा आदि से संबंध रखनेवाली वह बात जिसका पालन प्रायः नियम के रूप में एक या सभी पक्षों के लिए आवश्यक होता है, पण (टर्म)।

शर्तिया *क्रि. वि.* {अ.} निश्चयपूर्वक; *वि.* बिल्कुल ठीक, निश्चित।

शर्ब पुं. शर्व।

शर्म पुं. {सं.} सुख; घर; सुख, आनंद; कल्या, मंगल; *स्त्री.* शरम।

शर्मकृत *वि.* मंगलकारी।

शर्मद *वि.* आनंद देनेवाला।

शर्मरी *स्त्री.* दारु हल्दी।

शर्मा पुं. {सं. शर्मन्} ब्राह्मणों की उपाधि।

शर्व पुं. {सं.} शिव; विष्णु।

शर्वरी *स्त्री.* {सं.} रात, रात्रि।

शर्वर पुं. अँधेरा, कामदेव।

शर्वाणी *स्त्री.* {सं.} पार्वती, दुर्गा।

शल पुं. ताड़ का पेड़, ब्रह्मा।

शलक पुं. साही का काँटा।

शलल पुं. साही का काँटा।

शलली *स्त्री.* शलल।

शलगम पुं. {फा. शल्ग़म} गाजर की तरह का एक प्रसिद्ध कंद।

शलभ पुं. {सं.} टिड्डी; फतिंगा।

शलवार *स्त्री.* सलवार।

शलाका *स्त्री.* {सं.} सलाई, सीख; बाण, तार; निर्वाचन आदि में छोटी रंगीन गोलियों या कागजों की सहायता से गुप्त रूप से दिया जानेवाला मत; इस प्रकार मत देने की प्रणाली (बैलट)।

शलातुर पुं. पाणिनी की जन्मभूमि।

शली *स्त्री.* साही नामक जंतु।

शलूका पुं. {फा.} आधी बाँह की एक प्रकार की कुरती।

शल्य पुं. {सं.} हड्डी, अस्थि; शलाका; साँग नामक अस्त्र; दुर्वचन, गाली; वे उपकरण जिससे फोड़े या रुग्न अंग चीरे-फाड़े जाते हैं (सर्जिकल इंस्ट्रूमेंट्स); शल्यकर्म।

शल्यक *वि.* {सं.} शल्य-संबंधी, शल्य का; शल्य चिकित्सा से संबंध रखनेवाला, जैसे शल्यक क्रिया (सर्जिकल)।

शल्यकर्म पुं. {सं.} फोड़ों, रोगयुक्त अंगों आदि को चीरने-फाड़ने और टूटी हुई हड्डियाँ आदि जोड़ने या उखड़ी हुई हड्डियाँ आदि बैठाने की विद्या या काम (सर्जरी)।

शल्यकर्मी पुं. = शल्य-चिकित्सक।

शल्यकार पुं. {सं.} वह जो शल्यकर्म का अच्छा ज्ञाता हो; शल्य-चिकित्सक।

शल्यकी *स्त्री.* = शल्यकर्म।

शल्य-चिकित्सक पुं. {सं.} चीर-फाड़ आदि करके अंगों के रोग दूर करनेवाला चिकित्सक (सर्जन)।

शल्य-चिकित्सा *स्त्री.* = शल्यकर्म।

शल्यविज्ञान (शास्त्र) पुं. {सं.} वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें फोड़ों, दूषित अंगों आदि की चिकित्सा के लिए चीरने-फाड़ने, काटने आदि की और टूटी या उखड़ी हुई हड्डियों आदि को जोड़ने-बैठाने की प्रक्रियाओं का विवेचन होता है (सर्जरी)।

शल्योपचार पुं. {सं. शल्य + उपचार} {*वि.* शल्योपचारीय} फोड़ों, रोग से युक्त अंगों आदि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को चीर कर उन्हें मवाद, रोग, विकार आदि से मुक्त या रहित करने की क्रिया, चीर-फाड़ (ऑपरेशन)।

शल्योपचारिक *वि.* {सं.} शल्योपचार से संबंध रखनेवाला, शल्योपचार का (सर्जिकल)।

शल्योपचारी *पुं.* {सं. शल्योपचारिन्} शल्योपचार द्वारा चिकित्सा करनेवाला (सर्जिकल ऑपरेटर)।

शल्ल *वि.* {सं.} शिथिल, सुन्न (हाथ, पैर आदि)।

शल्लिका *स्त्री.* नौका, नाव।

शल्व *पुं.* शाल्व।

शव *पुं.* {सं.} ऐसा शरीर जिसमें से प्राण निकल गए हों, मृत शरीर, लाश (कार्प्स)।

शवता *स्त्री.* {सं.} शव का भाव; निर्जीवता, मुरदापन।

शव-परीक्षा *स्त्री.* {सं.} किसी व्यक्ति के मृत शरीर या लाश की वह जाँच जो उसकी मृत्यु का कारण जाँचने के लिए होती है (पोस्टमार्टम)।

शव-पेटी *स्त्री.* वह पेटी जिसमें शव को रखकर गाड़ा जाता है।

शवर *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* शवरी} एक प्राचीन जंगली जाति।

शवल *वि.* शबव, चितकबरा।

शवला *स्त्री.* चितकबरी गाय।

शवलित *वि.* मिलाया हुआ।

शवाग्नि *स्त्री.* शवदाह की अग्नि।

शवोद्वह *पुं.* शव को ढोनेवाला।

शश *पुं.* {सं. शशः} खरगोश नामक जंतु।

शशक *पुं.* {सं.} खरगोश; चंद्रमा में का कलंक; काम-शास्त्र में पुरुष के चार भेदों में से एक।

शशधन *पुं.* {सं.} चंद्रमा।

शशशृंग *पुं.* {सं.} खरगोश के सींग की तरह असंभव या अनहोनी बात।

शशांक *पुं.* {सं.} चंद्रमा।

शशाद *पुं.* श्येन पक्षी, बाज।

शशि *पुं.* {सं. शशिन्} चंद्रमा।

शशिकला *स्त्री.* {सं.} चंद्रमा की कला; शरभ नामक वृत्त या छंद।

शशिधर *पुं.* {सं.} शिव।

शशिमुख *वि.* {सं.} {*स्त्री.* शशिमुखा} चंद्रमा के समान सुंदर मुखवाला।

शशिलेखा *स्त्री.* {सं.} चंद्रमा की लेखा।

शशिशेखर *पुं.* {सं.} महादेव, शिव।

शशीश *पुं.* महादेव।

शश्वत् *वि.* बहुत अधिक।

शष्कुल *पुं.* करंज।

शष्प *पुं.* नई घास, नव तृण।

शस्ति *स्त्री.* स्तुति, प्रशंसा।

शसा *पुं.* {सं. शश} खरगोश।

शसि *पुं.* शशि।

शस्त्र *पुं.* {सं.} वह साधन जिससे युद्ध के समय शत्रु पर आक्रमण तथा आत्मरक्षा की जाती है (आर्म्स); शत्रु पर आक्रमण करने का उपकरण, हथियार (वेपन); कार्य सिद्ध करने का उपाय, ढंग या साधन।

शस्त्र-चिकित्सक *पुं.* शल्यकार।

शस्त्र-चिकित्सा *स्त्री.* शल्यकर्म।

शस्त्रधारी *वि.* {सं. शस्त्रधारिन्} {*स्त्री.* शस्त्रधारिणी} शस्त्र धारण करनेवाला, हथियारबंद।

शस्त्रविद्या *स्त्री.* {सं.} हथियार चलाने की विद्या; धनुर्वेद।

शस्त्रशाला *स्त्री.* शस्त्रागार।

शस्त्रागार *पुं.* {सं.} शस्त्रों के रखने का स्थान, लड़ाई के लिए गोले, बारूद आदि रखने की जगह, शस्त्रशाला, सिलहखाना।

शस्त्रास्त्र *पुं.* {सं.} शस्त्र और अस्त्र जिनसे युद्ध में आक्रमण और आत्मरक्षा की जाती है।

शस्त्राभ्यास *पुं.* शस्त्र-शिक्षा।

शस्त्रायुध *वि.* शस्त्रधारी।

शस्त्री *वि.* शस्त्र चलानेवाला; *पुं.* सैनिक।

शस्त्रोपजीवी *वि., पुं.* शस्त्र द्वारा अपनी जीविका चलानेवाला।

शस्त्रीकरण *पुं.* {सं.} सेना या राष्ट्र को शस्त्रों आदि से सज्जित करना।

शस्य *पुं.* {सं.} अन्न, अनाज; फसल; नई घास; खेती-बारी और पेड़-पौधों की हरियाली, जैसे शस्य श्यामला भूमि।

शहंशाह *पुं.* शाहंशाह।

शह *वि.* {फा.} बढ़ा-चढ़ा, श्रेष्ठतर, (यौ. में) जैसे शहजोर = बलवान; *स्त्री.* शतरंज के खेल में कोई मोहरा, किसी ऐसे घर में रखना जहाँ से बादशाह उसकी घात में पड़ता हो, किश्त; भड़काने या बढ़ावा देने की क्रिया या भाव।

शहजादा *पुं.* शाहजादा।

शहजोर *वि.* {फा.} बली, बलवान।

शहजोरी *स्त्री.* {फा.} बल, दबाव, धाक।

शहतीर *पुं.* {फा.} लकड़ी का बड़ा और लंबा लट्ठा, धरन।

शहतूत *पुं.* {फा.} मझोले आकार का एक पेड़ जिसकी फलियाँ मीठी होती हैं।

शहद *पुं.* {अ.} मधुमक्खियों द्वारा फूलों से संग्रह करके छत्ते में संचित शीरे की तरह की प्रसिद्ध मीठी वस्तु, मधु।

मुहा. शहद लगाकर चाटना = निरर्थक पदार्थ व्यर्थ लेकर बैठे रहना (व्यंग्य)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहना *पुं.* {*अ.* शिहन:} शासक; कोतवाल; कर संग्रह करनेवाला।

शहनाई *स्त्री.* फूँक कर बजाया जानेवाला एक प्रसिद्ध बाजा।

शहबाला *पुं.* {फा., मि. सं. सहबाल} विवाह के समय दूल्हे के साथ जानेवाला छोटा बालक।

शहर *पुं.* {फा. शह्र} नगर, पुर।

शहरपनाह *स्त्री.* {फा. शह्रपनाह} शहर की चारदीवारी, प्राचीर, परकोटा।

शहराती *वि.* = नागरिक।

शहरी *वि.* {फा. शह्री} शहर का, शहर-संबंधी, नागर; *पुं.* शहर में रहनेवाला, नगरनिवासी, नागरिक।

शहवत *स्त्री.* {फा.} कामवासना।

शहवती *वि.* = कामुक।

शहादत *स्त्री.* {*अ.*} गवाही।

शहाना *वि.* {फा. शाहान:} {*स्त्री.* शहानी} शाही, राजसी; बहुत बढ़िया, उत्तम; *पुं.* संगीत में एक प्रकार का राग।

शहाब *पुं.* {फा.} एक प्रकार का गहरा लाल रंग जो कुसुम के फूलों से बनाया जाता है।

शहाबा *पुं.* अगिया-बैताल।

शहाबी *वि.* गहरे लाल रंग का।

शहीद *पुं.* {*अ.*} किसी शुभ प्रयत्न में अपने प्राण देनेवाला व्यक्ति।

शांकर *वि.* {सं.} शंकर-संबंधी, शंकर का।

शांकरी *स्त्री.* शिवसूत्र।

शांख *पुं.* शंख की ध्वनि।

शांखिक *पुं.* शंख बजानेवाला।

शांडिल्य *पुं.* एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

शांत *वि.* {सं.} {*भाव.* शांति} (मन) जिसमें क्षोभ, चिंता, दुख, उद्वेग आदि न हों, राग आदि से रहित और स्वस्थ; वेग, गति, क्रिया आदि से रहित, निश्चल; हो-हल्ले आदि से रहित; जिसके दुष्ट विकारों का अंत हो गया हो; (समाज या देश) जिसमें उपद्रव, आंदोलन, झगड़े-बखेड़े आदि न हों, सभी विघ्न-बाधाओं से रहित; धीर और सौम्य; मौन, चुप; मरा हुआ, मृत; *पुं.* साहित्य में नौ रसों में से एक जो संसार की असारता या नश्वरता के ज्ञान, धर्मग्रंथों के अनुशीलन अथवा आत्मा और परमात्मा के स्वरूप आदि के चिंतन से उत्पन्न होता है, सत्संगति और त्यागी साधु-महात्मा आदि इसके आलंबन और विनाश के दृश्य, महात्माओं के उपदेश, तपोवन आदि उसके उद्दीपन हैं।

शांता *स्त्री.* राजा दशरथ की कन्या जो ऋष्यशृंग ऋषि को ब्याही थी, रेणुका, शमी, दूब।

शांतात्मा *वि.* शांत स्वभाव का।

शांति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* शांत} मन की वह अवस्था जिसमें वह क्षोभ, दुख आदि से रहित रहता है, चित्त की स्वस्थता; वेग, गति, क्रिया आदि का अभाव, निश्चलता; हो-हल्ले या चीख-पुकार का अभाव, स्तब्धता, सन्नाटा; युद्ध, मारकाट आदि का अभाव; समाज या देश में उपद्रव, आंदोलन, विद्वेष झगड़े-बखेड़े आदि का अभाव (पीस, उक्त सभी अर्थों के लिए); बाधा, अमंगल आदि दूर करनेवाला धार्मिक उपचार या कृत्य।

शांतिभंग *पुं.* {सं.} कोई ऐसा उपद्रव या अनुचित काम जिससे जनसाधारण के सुख और शांतिपूर्वक रहने में बाधा होती हो (ब्रीच ऑफ पीस)।

शांतिवाद *पुं.* {सं.} {*वि.* शांतिवादी} यह सिद्धांत कि सब लोगों को यथासाध्य शांतिपूर्वक रहना चाहिए और संसार से लड़ाई-झगड़े आदि का अंत हो जाना चाहिए (पैसिफिज्म)।

शांतिवादी *पुं.* {सं. शांतिवादिन्} वह जो लड़ाई-झगड़ों से बचकर सबको शांतिपूर्वक रहने का उपदेश देता हो, शांतिवाद का अनुयाया (पैसिफिस्ट)।

शांति-संधि *स्त्री.* {सं.} युद्ध समाप्त होने पर युद्धरत राष्ट्रों में होनेवाली वह संधि जिसके द्वारा शांति स्थापित होती और परस्पर मित्रता का भाव आरंभ होता है (पीस ट्रीटी)।

शांब *पुं.* श्रीकृष्ण का पुत्र।

शांबरिक *पुं.* जादूगर।

शांबरी *स्त्री.* इंद्रजाल।

शांबुक *पुं.* घोंघा।

शांभव *वि.* शिव-संबंधी।

शांभवी *स्त्री.* दुर्गा देवी।

शाकंभरी *स्त्री.* शक जाति की इष्ट देवी, भगवती दुर्गा।

शांबदिक *पुं.* {सं.} ऐन्द्रजालिक, जादूगर; *वि.* इंद्रजाल या जादू से संबंध रखने वाला।

शाक[1] *पुं.* {सं.} भाजी, तरकारी।

शाक[2] *वि.* {सं.} शक जाति-संबंधी।

शाकद्वीप *पुं.* {सं.} {*वि.* शाकद्वीपीय} पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक द्वीप; ईरान और तुर्किस्तान के बीच का वह प्रदेश जिसमें पहले शक रहते थे।

शाकाहार *पुं.* {सं.} {*वि.* शाकाहार} वनस्पति जन्य पदार्थों और अन्न का भोजन, मांसाहार का विरुद्धार्थक।

शाक्त *वि.* {सं.} शक्ति-संबंधी; *पुं.* शक्ति या देवी का उपासक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाक्य पुं. {सं.} नेपाल की तराई में बसनेवाली एक प्राचीन क्षत्रिय जाति।

शाख *स्त्री.* शाखा।

शाखा *स्त्री.* {सं.} वृक्षों आदि के तने से इधर-उधर निकले हुए अंग, टहनी, डाल; किसी मूल वस्तु से इसी रूप में या इसी प्रकार के निकले हुए अंग; किसी मूल वस्तु के वे अंग जो स्वतंत्र विभाग के रूप में हो गए हों, जैसे वेद की शाखा; किसी संस्था का वह अंग जो दूर रहकर भी उसके अधीन और उसके अनुसार काम करता हो, जैसे किसी दुकान या बैंक की शाखा (पंच, उक्त सभी अर्थों के लिए); वेद की ऋचाओं के पाठ और क्रमभेद; किसी विषय या सिद्धांत के संबंध में एक ही तरह के विचार या मत रखनेवाले लोगों का वर्ग, संप्रदाय (स्कूल)।

शाखाग्र पुं. शाखा का अगला भाग।

शाखाम्ला *स्त्री.* इमली का पेड़।

शाखामृग पुं. {सं.} बंदर।

शाखी *वि.* {सं. शाखिन्} शाखाओंवाला; पुं. वृक्ष, पेड़।

शाखोच्चार पुं. {सं.} विवाह के समय होनेवाला वंशावली का बखान।

शाखोट पुं. सिहोर का पेड़।

शागिर्द पुं. {फा.} {*भाव.* शागिर्दी} शिष्य, चेला।

शाण पुं. {सं.} {*वि.* शाणित} सान रखने का पत्थर, कुरंड; पत्थर; कसौटी।

शाणित *वि.* सान पर रखा हुआ, जिसकी धार तेज की गई हो।

शात *वि.* {सं.} जिस पर शान चढ़ी हो, तेज किया हुआ; क्षीण; सुंदर, खूबसूरत; दीप्त, चमकीला; सुखी।

शातन पुं. काटना, नष्ट करना।

शातपत्र *वि.* कमल के समान।

शातवाहन पुं. {सं.} दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवंश; शालिवाहन।

शादी *स्त्री.* {फा.} खुशी, आनंद; आनंदोत्सव; विवाह, ब्याह।

शाद्वल पुं. {सं.} रेगिस्तान के बीच की हरियाली और बस्ती, मरुद्वीप (ओएसिस)।

शान *स्त्री.* {अ.} {*वि.* शानदार} तड़क-भड़क, ठाठ-बाट; दर्प, ठसक; भव्यता, विशालता; शक्ति, विभूति; प्रतिष्ठा; *स्त्री.* सान।

शानदार *वि.* वैभवशाली।

शान-शौकत *स्त्री.* {अ.} तड़क-भड़क, ठाठ-बाट, सजावट।

शानैश्चर *वि.* शनि-ग्रह-संबंधी।

शाप पुं. {सं.} किसी के अनिष्ट की कामना से कहा हुआ शब्द या वाक्य; धिक्कार, भर्त्सना।

शापना *स.* {सं. शाप} शाप देना।

उदा. जिय में डर्‌यो मोहिं मति शापै व्याकुल बचन कहन्त—सूर।

शापित *वि.* {सं.} जिसे किसी ने शाप दिया हो, शापग्रस्त।

शापोद्धार पुं. शाप के प्रभाव से छुटकारा।

शाफरिक पुं. मछुआ, धीवर।

शाबर *वि.* {सं.} शबर-संबंधी, शबरों का; पुं. अंधकार, अंधेरा; कष्ट, दुख; दोष, बुराई; दुष्ट, पाजी; कपटी, धोखेबाज।

शाबरी *स्त्री.* प्राकृत भाषा।

शाबल पुं. शंकर।

शाबास *विस्मयादि.* {फा.} {*भाव.* शाबासी} एक प्रशंसासूचक शब्द, वाह-वाह, धन्य हो, साधुवाद।

शाब्द *वि.* {सं.} {*स्त्री.* शाब्दी} शब्द-संबंधी, शब्द या शब्दों का।

शाब्दिक *वि.* {सं.} शब्द-संबंधी; शब्दों में (कहा हुआ); वाक्य-रचना के शब्दों या व्याकरण के नियमों से संबंध रखनेवाला, जैसे शाब्दिक रूपांतर (ग्रैमेटिकल); (अनुवाद में) प्रत्येक शब्द के विचार से ठीक और ज्यों का त्यों (लिटरल)।

शाब्दी *वि.* {सं.} शब्द-संबंधी, शाब्दिक।

शाब्दी व्यंजना *स्त्री.* **{सं.} व्यंजना (शब्दशक्ति) का वह प्रकार या भेद जिसमें व्यंजित होनेवाला अर्थ किसी विशेष शब्द तक ही परिमित रहता है, उससे आगे नहीं बढ़ता।**

शाम *स्त्री.* {फा.} साँझ, संध्या; पुं. अरब के उत्तर का एक प्राचीन देश जो अब सीरिया कहलाता है, इसे महात्मा नूह के पुत्र शाम ने बसाया था; *वि.*, पुं. श्याम।

शामकरण पुं. वह घोड़ा जिसके कान काले हों।

शामत *स्त्री.* {अ.} दुर्भाग्य।

पद शामत का मारा = जिसका दुर्भाग्य समीप आ गया हो।

विपत्ति, दुर्दशा।

मुहा. शामत सवार होना = दुर्दशा का समय निकट आना।

शामनी *स्त्री.* दक्षिण दिशा।

शामियाना पुं. {फा. शामियान:} एक प्रकार का बड़ा तंबू या खेमा।

शामिल *वि.* {फा.} सम्मिलित, संयुक्त।

शामूल पुं. ऊनी वस्त्र।

शामी पुं. {शाम (देश)} मनुष्यों का वह आधुनिक वर्ग या विभाग जिसमें यहूदी, अरब, मिस्री आदि जातियाँ हैं (सेमेटिक); *स्त्री.* प्राचीन शाम

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश की भाषा (सेमेटिक); *वि.* शाम देश-संबंधी; शाम देश में होनेवाला, जैसे शामी कबाब।

शायक¹ *पुं.* {सं.} बाण, तीर, शर; खड्ग, तलवार।

शायक² *पुं.* {सं. शायक (शौक से)} शौकीन।

शायद *क्रि. वि.* {फा.} कदाचित्।

शायर *पुं.* {*अ.* शाइर} कवि।

शायरी *स्त्री.* {*अ.* शाइरी} कविताएँ रचना; काव्य, कविता।

शायी *वि.* {सं. शायिन्} सोनेवाला (यौ. के अंत में, जैसे शेषशायी, जलशायी)।

शारंग *पुं.* चातक, हरिण, हाथी, मोर।

शारंगी *स्त्री.* सारंगी नामक बाजा।

शार *वि.* चितकबरा, पीला।

शारद *वि.* {सं.} शरद्काल का।

शारदा *स्त्री.* {सं.} सरस्वती; भारत की एक प्राचीन लिपि।

शारदीय *वि.* {सं.} शरद्काल का।

शारदीय नवरात्र *पुं.* {सं.} आश्विन शुक्ल पक्ष में होनेवाला नवरात्र।

शारि *पुं.* पासा खेलने की गोटी।

शारिका *स्त्री.* मैना नामक पक्षी।

शारित *वि.* रंग-बिरंगा।

शारिफल *पुं.* शतरंज खेलने की बिसात।

शारिबा *पुं.* अनंतमूल, सालसा।

शारी *स्त्री.* मैना, गूँज।

शारीर *वि.* {सं.} शरीर-संबंधी।

शारीरिक *वि.* {सं.} शरीर से युक्त,, शरीरधारी, शरीरवाला; *पुं.* जीवात्मा।

शारीर विज्ञान (शास्त्र) *पुं.* {सं.} वह शास्त्र जिसमें जीवों की उत्पत्ति और वृद्धि आदि का विवेचन हो; शरीर शास्त्र।

शारीरिक *वि.* {सं.} शरीर और उसके अंगों से संबंध रखनेवाला, शरीर का, जैसे शारीरिक कष्ट।

शारीरित *वि.* {सं.} शरीर के रूप में लाया हुआ, जिसे शरीर का रूप दिया गया हो।

शार्ग *पुं.* {सं. शाङ्र्ग} धनुष, कमान; विष्णु का धनुष।

शार्गधर (पाणि) *पुं.* {सं. शाङ्र्गधर} विष्णु; श्रीकृष्ण, एक कवि, वैद्य।

शार्दूल *पुं.* {सं.} बाघ; सिंह; एक प्रकार की चिड़िया; राक्षस; *वि.* सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

शार्दूलविक्रीडित *पुं.* {सं.} पिंगल में चार चरणों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में 19 अक्षर (म, स, ज, स, त, न और अंत में गुरु) होते हैं और बारहवें अक्षर के बाद यति होती है।

शाल¹ *पुं.* {सं.} एक प्रसिद्ध वृक्ष, साखू।

शाल² *पुं.* {सं. शल्य} सरहथ नाम का हथियार।

शाल³ *स्त्री.* = साल (सालने की क्रिया या भाव)।

शाल⁴ *पुं.* {फा.} दुशाला।

शालग्राम *पुं.* {सं.} विष्णु की गोल पत्थर की एक प्रकार की मूर्ति।

शालन *पुं.* साग।

शालभ *वि.* शलभ-संबंधी।

शालरस *पुं.* राल, छूना।

शालांकी *पुं.* गुड़िया, कठपुतली।

शाला *स्त्री.* {सं.} घर, गृह; जगह, स्थान, जैसे पाठशाला, धर्मशाला।

शालार *पुं.* सोपान, सीढ़ी।

शालि *पुं.* {सं.} जड़हन धान।

शालि धान्य *पुं.* {सं.} बासमती चावल।

शालिवाहन *पुं.* {सं.} एक प्रसिद्ध शक राजा जिसने 'शक' संवत् चलाया था।

शालिहोत्र *पुं.* {सं.} घोड़ा; पशु-चिकित्सा की विद्या (वेटरिनरी साइंस)।

शालिहोत्री *पुं.* {सं. शालिहोत्रिन्} पशुओं और पक्षियों की चिकित्सा करनेवाला (वेटरिनरी डॉक्टर)।

शालिहोत्रीय *वि.* {सं.} पशुओं की चिकित्सा से संबंध रखनेवाला (वेटेरिनरी)।

शाली *प्रत्य.* {सं. शालिन्} एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर स्वामित्व, संबंध आदि का सूचक होता है और 'संपन्न' या 'वाला' के समान अर्थ देता है, जैसे ऐश्वर्यशाली, भाग्यशाली।

शालीन *वि.* {सं.} {*भाव.* शालीनता} विनीत, नम्र; लज्जाशील; अच्छे आचार-विचार वाला; धनवान; दक्ष, चतुर।

शालीना *स्त्री.* सौंफ का पौधा।

शालीय *वि.* शाल वृक्ष-संबंधी।

शालूक *पुं.* कमल की जड़।

शालूर *पुं.* मेक, मेढ़क।

शालेय *पुं.* मधुरिका, सौंफ।

शाल्वण *पुं.* फोड़ा पकाने का लेप।

शाल्मलि *पुं.* {सं.} सेमल का पेड़; पुराणानुसार एक द्वीप।

शावक *पुं.* {सं.} पशु या पक्षी का बच्चा।

शाश्वत *वि.* {सं.} जो सदा बना रहे, नित्य (एटर्नल)।

शासक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* शासिका} वह जो शासन करता हो; हाकिम।

शासन *पुं.* {सं.} आज्ञा, आदेश, हुक्म; अधिकार या वश में अथवा उचित सीमा या मर्यादा के अंदर रखना, नियंत्रण जैसे सभा, समिति या इंद्रियों का शासन; राज्य के कार्यों का प्रबंध

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और संचालन, हुकूमत (गवर्मेन्ट); राज्य का संचालन करनेवाले मुख्य अधिकारियों का समूह या मंडल (ऑथारिटी); राजत्व का काल या समय; वह आज्ञापत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को कोई अधिकार दिया जाए, पट्टा; दंड, सजा।

शासनाध्यक्ष पुं. {सं.} देश का प्रधान शासनिक अधिकारी।

शासनिक *वि.* {सं.} शासन-संबंधी, शासन का; शासन विभाग का, जैसे शासनिक अधिकारी।

शासनीय *वि.* शासन करने योग्य।

शासित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* शासिता} जिसपर किसी का शासन या राज्य हो; जो किसी प्रकार के शासन या नियंत्रण में रहता हो (गवर्ड, उक्त दोनों अर्थों के लिए); जिसे दंड दिया जाए।

शासिता पुं. शासन करनेवाला, राजा।

शास्ता पुं. शासक।

शास्ति *स्त्री.* {सं.} शासन; दंड, सजा; दंड या हरजाने आदि के रूप में लिया जानेवाला धन या कार्य (पेनैल्टी)।

शास्त्र पुं. {सं.} जन-साधारण के हित के लिए विधान बतलानेवाले धार्मिक ग्रंथ, जैसे चारों वेद, व्याकरण, ज्योतिष, छंद, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद आदि; किसी विषय का वह सारा ज्ञान जो क्रम से एकत्र किया गया हो, विज्ञान।

शास्त्रकार पुं. {सं.} शास्त्र बनानेवाला।

शास्त्रज्ञ पुं. {सं.} वह जिसे शास्त्रों का अच्छा ज्ञान हो, शास्त्रवेत्ता।

शास्त्री पुं. {सं. शास्त्रिन्} शास्त्रों का ज्ञाता; धर्मशास्त्र का ज्ञाता।

शास्त्रीकरण पुं. {सं.} किसी विषय को शास्त्र का रूप देना।

शास्त्रीय *वि.* {सं.} शास्त्र-संबंधी, शास्त्र का; शास्त्रीय ज्ञान से संबंध रखने या उसपर आश्रित रहनेवाला, जैसे शास्त्रीय विवेचन, शास्त्रीय वाद-विवाद (एकेडमिक); शास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार ठीक, जैसे शास्त्रीय संगीत = वह संगीत जो संगीतशास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार और राग-रागिनियों के रूप हो।

शास्त्रीय *वि.* शास्त्र-संबंधी।

शास्त्रोक्त *वि.* {सं.} शास्त्रों में कहा गया या बतलाया हुआ।

शाहंशाह पुं. {फा.} {*भाव.* शाहंशाही} बहुत बड़ा बादशाह, महाराजाधिराज।

शाहंशाही *वि.* {हिं. शाहंशाह} शाहंशाह संबंधी, शाहंशाह का; *स्त्री.* शाहंशाह का कार्य, पद या भाव; अपने बड़प्पन, उदारता आदि की सूचक कोई बात या कार्य (बोलचाल)।

शाह पुं. {फा.} महाराज, बादशाह; मुसलमान फकीर; *वि.* बड़ा या भारी, महान।

शाहखर्च *वि.* {फा.} {*भाव.* शाहखर्ची} बहुत खर्च करनेवाला।

शाहजादा पुं. {फा. शाहज़ाद:} {*स्त्री.* शाहजादी} बादशाह का लड़का, महाराजकुमार।

शाहाना *वि.* {फा.} राजसी; पुं. वह कपड़ा जो विवाह के समय दूल्हे को पहनाया जाता है, जामा।

शाही *वि.* {फा.} बादशाहों का; *स्त्री.* कुंभ आदि पर्वों पर साधु-महात्माओं की निकलनेवाली सवारी।

शिंकित *वि.* आघ्रात, सूँघा हुआ।

शिंगरफ पुं. ईंगुर।

शिंघाण पुं. काँच का बरतन, नाक में मल का होना।

शिंघाणक पुं. कफ।

शिंघित *वि.* सूँघा हुआ।

शिंजित *वि.* बजता हुआ।

शिंजन पुं. {सं.} {*वि.* शिंजित} मधुर ध्वनि; आभूषणों की झंकार।

शिंजनी *स्त्री.* {सं.} नूपुर, पैजनी; अँगूठी; धनुष की डोरी।

शिंबी *स्त्री.* {सं.} छीमी, फली; सेम नाम की फली (तरकारी)।

शिंशया *स्त्री.* शीशम का पेड़।

शिंहान पुं. काँच का पात्र।

शिंशिया पुं. {सं.} शीशम का वृक्ष।

शिंशुमार पुं. {सं.} सूँस (जलजंतु)।

शिकंजवी *स्त्री.* {फा. शिकंजबीन} किसी फल के रस को पानी में घोलकर अथवा उबालकर तैयार किया हुआ पेय पदार्थ जिसका उपयोग औषध के रूप में होता है।

शि पुं. सौभाग्य, शांति।

शिकंजा पुं. {फा.} दबाने, कसने आदि का यंत्र; वह यंत्र जिसमें जिल्दबंद किताबों को कसकर जुज सिलाई के लिए घाट काटते अथवा कगर निकालते हैं; कठोर दंड देने के लिए एक प्राचीन यंत्र।

मुहा. किसी को शिकंजे में कसना = बहुत अधिक शारीरिक कष्ट देना (धमकी)।

शिकन *स्त्री.* {फा.} सिलवट।

शिकम पुं. {फा.} पेट।

शिकमी *वि.* {फा.} पेट-संबंधी; किसी के अंतर्गत रहनेवाला।

मुहा. (खेत आदि) शिकमी देना = (जमींदार या मालिक से) किराए, लगान आदि पर ली

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई चीज, अपनी ओर से किसी दूसरे को किराए, लगान आदि पर देना।

शिकमी काश्तकार पुं. {फा.} वह जो किसी दूसरे काश्तकार से जमीन लेकर जोतता हो, काश्तकार के अधीन रहनेवाला आसामी (सब टेनेंट)।

शिकरम *स्त्री.* {फा.} एक प्रकार की गाड़ी।

शिकरम-पट्टा पुं. {फा + हिं.} वह पट्टा जो कोई पट्टेदार, अपनी ओर से पट्टे पर ली हुई जमीन के संबंध में किसी को लिखकर देता है (सबलीज)।

शिकरा पुं. {फा.} एक प्रकार का बाज पक्षी।

शिकस्त *स्त्री.* {फा.} युद्ध, प्रतियोगिता आदि में होनेवाली, हार, पराजय।

शिकायत *स्त्री.* {*अ.*} {*वि.* शिकायती} निंदा; चुगली; उलाहना; रोग, बीमारी।

शिकार पुं. {फा.} मांस खाने या मनोविनोद के लिए जंगली पशुओं को मारने का कार्य, आखेट, मृगया।

मुहा. किसी का शिकार होना = किसी के जाल में फँसना; मर जाना; किसी के वशवर्ती या लक्ष्य होकर बुरी अवस्था में पहुँचना।

वह जानवर जो इस प्रकार मारा जाए; गोश्त, मांस; आहार, खाद्य; वह जिसके फँसने या हाथ में आने से बहुत आय या लाभ हो, आसामी।

शिकारगाह *स्त्री.* {फा.} शिकार खेलने की जगह।

शिकारी पुं. {फा.} शिकार करनेवाला; *वि.* शिकार से संबंध रखनेवाला या शिकार में काम आनेवाला।

शिक्टा पुं. छत में लटकाने का छींका।

शिक्षक पुं. {सं.} {*स्त्री.* शिक्षिका} शिक्षा, देनेवाला, विद्यालय में विद्यार्थियों को पढ़ानेवाला, गुरु।

शिक्षण पुं. {सं.} तालीम, शिक्षा।

शिक्षणविज्ञान पुं. {सं.} वह विज्ञान जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि विद्यार्थियों को शिक्षा किस प्रकार दी जाए।

शिक्षण-विद्यालय (महाविद्यालय) पुं. प्रशिक्षण-विद्यालय।

शिक्षणालय पुं. {सं.} वह स्थान जहाँ किसी प्रकार की शिक्षा दी जाती हो, विद्यालय।

शिक्षिका *स्त्री.* {सं.} शिक्षक की स्त्री; सिखाने-पढ़ाने का काम करनेवाली स्त्री, उस्तादनी।

शिक्षा *स्त्री.* {सं.} विद्या पढ़ाने या सिखाने की क्रिया, तालीम (एजुकेशन); उपदेश, नसीहत; एक वेदांग जिसमें वेदों के वर्णों, स्वरों, मात्राओं आदि का विवेचन है (आरथोग्राफी); सबक, पाठ; परामर्श, सलाह।

शिक्षागुरु पुं. {सं.} वह जिससे विद्या पढ़ी या किसी कार्य की शिक्षा ली जाए।

शिक्षार्थी पुं. {सं.} {*स्त्री.* शिक्षार्थिनी} वह जो किसी विद्या, कला या कार्य की शिक्षा प्राप्त करने के लिए उसमें लगा हो।

शिक्षालय पुं. शिक्षणालय।

शिक्षा-विभाग पुं. {सं.} {शिक्षा + विभाग} वह सरकारी विभाग जो देश में शिक्षा का प्रबंध करता हो (एजुकेशन डिपार्टमेंट)।

शिक्षाशास्त्र पुं. {सं.} वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि विद्यार्थियों को किस प्रकार विद्या सिखलाई जानी चाहिए (डिडैक्टिक्स, पेडागाजी)।

शिक्षित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* शिक्षिता} जिसने शिक्षा पाई हो, पढ़ा-लिखा या सीखा हुआ।

शिक्षु पुं. = प्रशिक्षु।

शिखंड पुं. {सं.} मोर की पूँछ; चोटी, शिखा।

शिखंडिक पुं. कुक्कुट, मुर्गा।

शिखंडिनी *स्त्री.* मयूरी, मोरनी, द्रुपद की कन्या।

शिखंडी पुं. {सं. शिखंडिन्} {*स्त्री.* शिखंडिनी} मोर; मुर्गा; बाण; शिखा; महाभारत का एक पात्र जिसकी आड़ में अर्जुन ने भीष्म पितामह पर तीर चलाए थे।

शिख *स्त्री.* = शिखा।

शिखर पुं. {सं.} सिरा, चोटी; पहाड़ की चोटी; मंदिर या मकान के ऊपर का नुकीला भाग, कँगूरा, कलश; मंडप, गुंबद।

शिखरन *स्त्री.* {सं. शिखरिणी} दही का बनाया हुआ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

शिखरिणी *स्त्री.* {सं.} स्त्रियों में श्रेष्ठ स्त्री; रोमावली; शिखरन; पिंगल में चार चरणों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सत्रह अक्षर (प, म, न, स, भ, अंत में एक लघु और एक गुरु) होते हैं तथा 6 और 11 अक्षरों पर यति होती है।

शिखरी पुं. वृक्ष, पहाड़ी, दुर्ग, कोट।

शिखा *स्त्री.* {सं.} चोटी, चुटिया; दीपक की लौ; आग कली लपट; नुकीला सिरा, नोक; शिखर।

शिखाभरण पुं. शिरोभूषण।

शिखासूत्र पुं. {सं.} चोटी और यज्ञोपवीत जो द्विजों के प्रधान चिह्न हैं।

शिखिन् पुं. मयूर, मोर, कामदेव, अग्नि।

शिखिनी *स्त्री.* मोरनी, मुर्गी, जटाधारी का पौधा।

शिखि पुं. {सं.} {*स्त्री.* शिखिनी} मोर; कामदेव; अग्नि।

शिखी *वि.* {सं. शिखिन्} {*स्त्री.* शिखिनी} शिखा या चोटीवाला; पुं. मोर; मुर्गा; बैल, साँड़; घोड़ा; अग्नि; बाण, तीर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिगाफ पुं. {फा.} दरार, दर्ज; छेद, सुराख।
शित *वि.* {सं.} (शस्त्र) जिसमें धार हो, धारदार (जैसे छुरी या कटारी)।
शिताफल पुं. सीताफल, शरीफा।
शितावर पुं. सतावर।
शिति *वि.* {सं.} श्वेत, सफेद; कृष्ण, काला।
शितिकंठ पुं. {सं.} महादेव, शिव; मोर (पक्षी)।
शिथिल *वि.* {सं.} {*भाव.* शिथिलता} जो अच्छी तरह बँधा, कसा या जकड़ा हुआ न हो, ढीला; जो थकावट आदि के कारण धीमा पड़ गया हो; सुस्त, धीमा; (आज्ञा या विधान) जिसका ठीक तरह से या पूरा पालन न हो; (वाक्य) जिसकी शब्द-योजना ठीक न हो।
शिथिलता *स्त्री.* {सं.} शिथिल का भाव; वह वाक्य जिसमें शब्दों की ठीक और संगत योजना न हो।
शिथिलाई *स्त्री.* = शिथिलता।
शिथिलाना *अ., स.* {सं. शिथिल} शिथिल होना या करना।
शिथिलत *वि.* = शिथिल।
शिथिलीकरण पुं. शिथिल करना।
शिथिलीभूत *वि.* शिथिल पड़ा हुआ।
शिनाख्त *स्त्री.* {फा.} पहचान।
शिपि पुं. किरण; *स्त्री.* चमड़ा, खाल।
शिप्रा *स्त्री.* उज्जैन के पास की नदी।
शिफर पुं. {फा. सिवर} तलवार का वार रोकने की ढाल।
शिफा *स्त्री.* क़ोड़े की फटकार या मार।
शिफारुह पुं. बरगद का पेड़।
शिमी *स्त्री.* शिंवी, सेम।
शिया पुं. शीया।
शिर पुं. सिर।
शिरकत *स्त्री.* {अ.} किसी वस्तु, कार्य, अधिकार आदि में शरीक या सम्मिलित होने का भाव; हिस्सेदारी, साझा; किसी काम में सम्मिलित होना।
शिरमौर *वि.* {सं. शिरस् + हिं. मौर} सब में श्रेष्ठ, सर्वोत्तम।
शिरश्चंद्र पुं. {सं.} शिव, महादेव।
शिरस्त्राण पुं. {सं.} युद्ध के समय सिर पर पहना जानेवाला लोहे का टोप, कूँड़, खोद।
शिरहन पुं. तकिया।
शिरा *स्त्री.* {सं.} शरीर में रक्त की छोटी नस, विशेषत: वह नस जिसके द्वारा शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों से रक्त चलकर हृदय तक पहुँचता है, 'धमनी' से भिन्न (वीन); इस आकार या प्रकार की कोई नाली।
शिरीष पुं. {सं.} सिरिस नामक वृक्ष।
शिरोगृह पुं. अट्टालिका।
शिरोज पुं. केश, बाल।
शिरोधरा *स्त्री.* गरदन, ग्रीवा।
शिरोधाम पुं. चारपाई का सिरहाना।
शिरोधार्य *वि.* {सं.} आदरपूर्वक ग्रहण करने के योग्य।
शिरोभूषण पुं. {सं.} सिर पर पहनने का गहना; मुकुट; *वि.* सबसे अच्छा, सर्वश्रेष्ठ।
शिरोमणि पुं. {सं.} सिर पर पहनने का रत्न; *वि.* सर्वश्रेष्ठ।
शिरोमाली पुं. शिव, महादेव।
शिरोमौलि पुं. सिर का रत्न।
शिरोरुजा *स्त्री.* सिर की वेदना।
शिरोरुह पुं. {सं.} सिर के बाल।
शिल पुं. उंछ।
शिला *स्त्री.* {सं.} पत्थर की पटिया का बड़ा चौड़ा टुकड़ा; उंछवृत्ति।
शिलाजीत *स्त्री.* {सं. शिलाजतु} पहाड़ों की चट्टानों से निकलनेवाली एक प्रसिद्ध पौष्टिक काली ओषधि, मोमियाई।
शिलान्यास पुं. {सं.} भवन आदि बनाने से पहले उसकी नींव का पत्थर रखा जाना।
शिलारोपण पुं. शिलान्यास।
शिलालेख पुं. {सं.} पत्थर पर खुदा हुआ कोई प्राचीन लेख (एपिग्राफ)।
शिलावट पुं. {सं. शिला} वह जो पत्थर आदि गढ़ने का काम करता हो, संगतराश।
शिलावृष्टि *स्त्री.* {सं.} ओलों की वर्षा।
शिलीमुख पुं. {सं.} भौंरा, बाज।
शिल्प पु. {सं.} हाथ सं चीजें बनाकर तैयार करने की कला, दस्तकारी, कारीगर।
शिल्पकार पुं. {सं.} शिल्पी, कारीगर।
शिल्पविद्या *स्त्री.* शिल्प।
शिल्पशास्त्र पुं. {सं.} वह शास्त्र जिसमें शिल्पों या हाथ की कारीगरियों का विवेचन होता है।
शिल्पिक *वि.* {सं.} शिल्पकला या उसकी शिक्षा से संबंध रखनेवाला, जैसे शिल्पिक प्रशिक्षण।
शिल्पी पुं. {सं. शिल्पिन्} शिल्प के काम करनेवाला कारीगर; किसी शिल्प का अच्छा ज्ञाता; *वि.* शिल्प-संबंधी, शिल्प का, जैसे शिल्पी प्रशिक्षण।
शिवंकर *वि.* कल्याण करनेवाला।
शिव पुं. {सं.} मंगल, कल्याण; मोक्ष; रुद्र; परमेश्वर; हिन्दुओं के एक प्रसिद्ध देवता जो सृष्टि का संहार करनेवाले माने जाते हैं।
शिवगामी पुं. {सं. शिवगामिन्} कल्याण या मंगल की कामना करनेवाला साधक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवनामी *स्त्री.* {सं. शिव + नाम + हिं. ई(प्रत्य.)} वह चादर या कपड़ा जिसपर जगह-जगह 'शिव' या 'जय शिव' छपा होता है।

शिवनिर्माल्य *पुं.* {सं.} **शिव पर चढ़ा हुआ पदार्थ जो ग्रहण करने के योग्य नहीं होता; परम अग्राह्य वस्तु।**

शिवपुरी *स्त्री.* {सं.} **काशी नगरी, श्मशान।**

शिवमय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* शिवमयी} कल्याणकारी।

शिवरात्रि *स्त्री.* {सं.} फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी, जो शिव के विवाह की तिथि और फलतः एक पर्व के रूप में मानी जाती है।

शिवरानी *स्त्री.* = पार्वती।

शिवलिंग *पुं.* {सं.} शिव या महादेव की पिंडी जिसकी पूजा होती है।

शिवलोक *पुं.* {सं.} कैलास।

शिवा *स्त्री.* {सं.} दुर्गा; पार्वती; गीदड़ जाति की मादा, शृगाली; मुक्ति, मोक्ष।

शिवाक्ष *पुं.* रुद्राक्ष।

शिवानी *स्त्री.* दुर्गा, जयंती वृक्ष।

शिवारुत *पुं.* सियार के बोलने का शब्द।

शिवालय *पुं.* {सं.} शिव का मंदिर।

शिवाला *पुं.* = शिवालय।

शिवालु *पुं.* शृगाल, सियार।

शिवि *पुं.* भूर्जपत्र का वृक्ष; अयोध्या के एक दानी राजा।

शिविका *स्त्री.* {सं.} पालकी, डोली।

शिविर *पुं.* {सं.} सेना के ठहरने का स्थान, पड़ाव; वह स्थान जहाँ कुछ लोग मिलकर किसी विशेष कार्य या उद्देश्य से रहें, जैसे शिक्षा शिविर (कैंप); डेरा, खेमा, निवेश; दुर्ग, किला, कोट।

शिविरवासी (सिन्) *पुं.* {सं.} शिविर में रहनेवाला।

शिशिर *पुं.* {सं.} माघ और फाल्गुन मास की ऋतु; जाड़ा, शीतकाल।

शिशिरांशु *पुं.* **चंद्रमा।**

शिशु *पुं.* {सं.} {*भाव.* शिशुता, शिशुत्व} छोटा बच्चा (बेबी)।

शिशुता *स्त्री.* {सं.} बाल्यावस्था, बचपन; बालकों का-सा आचरण, लड़कपन।

शिशुताई *स्त्री.* = शिशुता।

शिशुनाग *पुं.* {सं.} {*वि.* शैशुनाग} मगध का एक प्राचीन राजा।

शिशुपन *पुं.* = शिशुता।

शिशुपाल *पुं.* {सं.} चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा जो श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया था।

शिश्न *पुं.* {सं.} पुरुष का लिंग या जननेंद्रिय।

शिष *पुं.* = शिष्य; *स्त्री.* शिक्षा; शिखा।

शिषरी *वि.* शिखरवाला।

शिष्ट *पुं.* {सं.} {*भाव.* शिष्टता} अच्छे स्वभाव, व्यवहार और आचरणवाला, भला आदमी, सभ्य आदमी (सिविल); *वि.* अच्छा, उत्तम।

शिष्टता *स्त्री.* {सं.} सभ्यता, भलमनसत; उत्तमता, श्रेष्ठता।

शिष्टमंडल *पुं.* {सं.} कुछ शिष्ट लोगों का वह दल जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए कहीं भेजा जाता है, जैसे पार्लमेन्ट का शिष्टमंडल (डेपुटेशन)।

शिष्टाचार *पुं.* {सं.} सभ्य या शिष्ट पुरुषों का-सा आचरण, उत्तम व्यवहार; आनेवाले का आदर-सम्मान, आवभगत; दिखावटी और ऊपरी सभ्य व्यवहार।

शिष्टि *स्त्री.* आज्ञा, शासन, दंड।

शिष्य *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* शिष्या, *भाव.* शिष्यता} वह जिसे किसी ने कुछ पढ़ाया या सिखाया हो, चेला, शागिर्द।

शिष्या *स्त्री.* एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात गुरु अक्षर होते हैं।

शिस्त *स्त्री.* {फा.} निशाना, लक्ष्य।

शीकर *पुं.* तुषार, शीत, जाड़ा।

शीघ्र *क्रि. वि.* {सं.} {*भाव.* शीघ्रता} बिना विलंब किए या देर लगाए, जल्द।

शीघ्रगतिक *वि.* {सं.} शीघ्रगामी।

शीघ्रगामी *वि.* {सं. शीघ्रगामिन्} जल्दी या तेज चलनेवाला।

शीघ्रता *पुं.* {सं.} जल्दी, फुरती।

शीत *वि.* {सं.} ठंडा, शीतल; *पुं.* तापमान के गिरने से शरीर में होनेवाली वह अनुभूति जिसमें कपड़े आदि ओढ़ने या धूप, आग आदि तापने की इच्छा होती है, 'ताप' का विरोधी भाव, जाड़ा, सरदी (कोल्ड); जाड़े के दिन।

शीतक *वि.* {सं.} शीत उत्पन्न करने या ठंडक बनानेवाला; *पुं.* बिजली की सहायता से कार्य करनेवाला एक उपकरण जिससे गरमी के समय कमरे, कोठरियाँ आदि ठंडी रखी जाती हैं (कूलर)।

शीतकटिबंध *पुं.* {सं.} पृथ्वी के वे दो विभाग जो भूमध्य रेखा से 23-1/2 अंश उत्तर के बाद और 23-1/2 अंश दक्षिण के बाद पड़ते हैं और जिनमें बहुत सरदी होती है (टॉरिट ज़ोन)।

शीतकर *पुं.* {सं.} चंद्रमा।

शीतकाल *पुं.* {सं.} जाड़े के दिन, सरदी का मौसम।

शीतज्वर *पुं.* {सं.} जाड़ा देकर आनेवाला बुखार (मलेरिया)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and e

शीततरंग *स्त्री.* {सं.} शीतकाल में किसी स्थान पर बहुत अधिक सरदी या बरफ पड़ने पर उसके प्रभाव से किसी दिशा में बढ़नेवाली शीत की वह तरंग जिससे दो-चार दिनों के लिए सरदी बहुत बढ़ जाती है (कोल्ड वेव)।

शीतल *वि.* {सं.} {*भाव.* शीतलता} ठंडा, सर्द, 'गरम' का विरुद्धार्थक; क्षोभ या उद्वेगरहित, शांत; परम संतुष्ट और प्रसन्न (मन)।

शीतलता *स्त्री.* {सं.} 'शीतल' का भाव, ठंडापन, ठंडक।

शीतला *स्त्री.* {सं.} चेचक रोग; इस रोग की अधिष्ठात्री देवी।

शीतांबु *पुं.* ठंडा जल।

शीतांशु *पुं.* कपूर, चंद्रमा।

शीता *पुं.* क्षीरिणी, खिरनी।

शीताद्रि *स्त्री.* हिमालय पर्वत।

शीताभ *पुं.* कपूर, चंद्रमा।

शीतेतर *वि.* उष्ण, गरम।

शीतोष्ण *वि.* शीत और उष्ण।

शीभर *पुं.* शीकर, जलप्रवाह।

शीमूल *पुं.* सेमल का पेड़।

शीया *पुं.* {*अ.* शीअः} एक मुसलमानी संप्रदाय जो हजरत अली का अनुयायी है।

शीरिष *पुं.* = शीर्ष।

शीरा *पुं.* {फा.} चीनी या गुड़ पकाकर बनाया हुआ गाढ़ा रस, चाशनी।

शीराजी *वि.* {फा. शीराज (नगर)} शीराज नगर का; *पुं.* एक प्रकार का कबूतर; एक प्रकार की शराब।

शीरीनी *स्त्री.* {फा.} मिठास, मीठापन; मिठाई, मिष्ठान्न।

शीर्ण *वि.* {सं.} टूटा-फूटा; फटा-पुराना; मुरझाया या कुम्हलाया हुआ; दुबला, पतला।

शीर्ष *पुं.* {सं.} किसी चीज का सबसे ऊँचा या ऊपरी भाग, सिरा, चोटी; भूमिति में वह बिंदु, जिसपर दो ओर से दो तिरछी रेखाएँ आकर मिलती हों (वर्टेक्स, उक्त दोनों अर्थों के लिए); सिर, कपाल; माथा, मस्तक; सामने या आगे का भाग; खाते आदि की मद या विभाग का नाम (हेड)।

शीर्षक *पुं.* {सं.} शीर्ष; वह शब्द या पद जो विषय का परिचय कराने के लिए लेख के ऊपर उसके नाम के रूप में रहता है।

शीर्षनाम *पुं.* {सं.} लेख्य, विधान आदि का वह पूरा नाम जो उसके आरंभ में रहता है, सिरनामा।

शीर्षबिंदु *पुं.* {सं.} सिर के ऊपर या ऊँचाई में सबसे ऊपर का स्थान।

शील *पुं.* {सं.} {*भाव.* शीलता} स्वभाव की प्रवृत्ति या रुख, मिजाज, चाल-ढाल (डिस्पोजिशन); उत्तम स्वभाव और आचरण, सद्वृत्ति; संकोच, मुरव्वत; *वि.* {*स्त्री.* शीला} प्रवृत्त, तत्पर (यौ. के अंत में, जैसे प्रयत्नशील)।

शीली *वि.* शीलयुक्त।

शीलव *पुं.* शैवाल, सेवार।

शीलता *स्त्री.* {सं.} शील का भाव, जैसे दानशीलता, सहनशीलता।

शीलवान *वि.* = सुशील।

शीश *पुं.* शीर्ष।

शीशम *पुं.* {सं. शिंशिपा से फा.} एक बड़ा पेड़ जिसकी लकड़ी इमारत और सजावटी सामान बनाने के काम में आती है।

शीशमहल *पुं.* {फा. शीशः + *अ.* महल} वह मकान या कमरा जिसकी दीवारों में बहुत से शीशे लगे या जड़े हों।

शीशा *पुं.* {फा. शीशः} काँच नामक पारदर्शी मिश्र धातु, विशेष काँच; इस धातु के एक पार्श्व पर रासायनिक प्रक्रिया से लेप करके बनाया हुआ वह रूप जिसमें दूसरे पार्श्व पर सामने की वस्तु का प्रतिबिंब दिखाई देता हो, दर्पण, आईना; झाड़, फानूस आदि सजावट के बने हुए सामान।

शीशी *स्त्री.* {हिं. शीशा} शीशे का वह लंबोतरा छोटा पात्र जिसमें तरल पदार्थ, दवा आदि रखते हैं, छोटी बोतल।

मुहा. शीशी सुँघाना = बेहोशी की दवा सुँघाकर किसी को बेहोश करना (शल्य-चिकित्सा आदि के समय)।

शुंग *पुं.* {सं.} प्राचीन भारत का एक प्रसिद्ध क्षत्रिय राजवंश जिसने मौर्यों के बाद मगध पर राज्य किया था।

शुंठी *स्त्री.* सोंठ।

शुंड *पुं.* {सं.} हाथी की सूँड़।

शुंडा *स्त्री.* {सं.} सूँड़; एक तरह की शराब।

शुंडार *पुं.* मट्ठा बनाने या बेचनेवाला।

शुंडाल *पुं.* हस्ती, हाथी।

शुंडिक *पुं.* {सं.} वह जो शराब बनाता तथा बेचता हो, कलवार।

शुंडिका *स्त्री.* गले के भीतर की घंटी।

शुंडिनी *स्त्री.* छछूँदर।

शुंडी *पुं.* {सं. शुंडिन्} हाथी; मद्य बनाने और बेचनेवाला, कलवार।

शुंभ *पुं.* {सं.} एक प्रसिद्ध दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था।

शुक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* शुकी} तोता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

zed by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श

शुकदेव पुं. {सं.} एक प्रसिद्ध पौराणिक कथावाचक जो कृष्ण द्वैपायण के पुत्र थे।

शुकराना पुं. {अ. शुक्रान:} शुक्रिया, धन्यवाद; वह धन जो किसी के कोई काम कर देने पर उसे धन्यवादपूर्वक दिया जाता है।

शुकादन पुं. दाड़िम, अनार।

शुकानन *वि.* जिसका मुख सुग्गे के समान हो।

शुकी *स्त्री.* कश्यप की स्त्री, सुग्गी।

शुक्त *वि.* निष्ठुर, कठोर, निर्जन।

शुक्ताम्ल पुं. चूक का साग।

शुक्ति (का) *स्त्री.* {सं.} सीपी।

शुक्र[1] पुं. {सं.} अग्नि; हमारे सौर जगत् का एक प्रसिद्ध ग्रह जो पुराणों में दैत्यों का गुरु माना गया है (वीनस); पुरुष का वीर्य।

शुक्र[2] पुं. {अ.} धन्यवाद।

शुक्रमेह पुं. प्रमेह रोग।

शुक्रवार पुं. {सं.} वृहस्पतिवार के बाद और शनिवार के पहले का दिन।

शुक्रिया पुं. {फा. शुक्रिय:} धन्यवाद।

शुक्ल *वि.* {सं.} सफेद, उजला।

शुक्लपक्ष पुं. {सं.} अमावस्या के बाद की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक के 15 दिन।

शुक्लाभिसारिका पुं. {सं. शुक्लपक्ष + अभिसारिका} साहित्य में वह परकीया नायिका जो शुक्ल पक्ष या चाँदनी रात में सज-धजकर अपने प्रेमी से मिलने के लिए संकेतस्थल पर जाती है।

शुक्ला *स्त्री.* सरस्वती, चीनी।

शुक्लापांग पुं. मयूर, मोर।

शुक्लाक पुं. सफेद मदार।

शुक्लोपल पुं. सफेद पत्थर।

शुचि *स्त्री.* {सं.} पवित्रता, शुद्धता; स्वच्छता; *वि.* {*भाव.* शुचिता} शुद्ध, पवित्र; स्वच्छ, साफ, निर्दोष।

शुचिता *स्त्री.* {सं.} पवित्रता; वह स्वच्छता और शुद्धता जो स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए आवश्यक होती है (सैनिटेशन)।

शुजा *वि.* {*अ.* शुजाअ} बहादुर, वीर।

शुतुर पुं. {सं. उष्ट्र से व. *वि.* द्वारा फा.} ऊँट।

शुतुरनाल *स्त्री.* {*अ.* + फा.} ऊँट पर रखकर चलाई जानेवाली तोप।

शुतुरमुर्ग पुं. {फा.} एक बहुत बड़ा पक्षी जिसकी गरदन ऊँट की तरह लंबी होती है।

शुदनी *स्त्री.* {फा.} नियति, होनी, भावी, होनहार।

शुद्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* शुद्धता} पवित्र; स्वच्छ, साफ; जिसमें भूलें, त्रुटियाँ आदि न हों, ठीक, सही; मिलावट से रहित, खालिस; जिसमें से लागत, व्यय आदि निकाले जा चुके हों, जैसे शुद्ध लाभ (नेट); निर्दोष, बेऐब।

शुद्धकल्याण पुं. {सं.} ओड़व संपूर्ण जाति का एक राग जो रात के पहले पहर में गाया जाता है।

शुद्धता *स्त्री.* {सं.} शुद्ध या बेमेल होने का भाव; शुद्ध या ठीक होने का भाव; शुद्धि।

शुद्धतावादी (दिन्) *वि.* {सं.} शुद्धता का परिचायक, जैसे शुद्धतावादी दृष्टिकोण; पुं. वह जो शुद्धता का पक्षधर हो।

शुद्धसारंग पुं. {सं.} ओड़व पाड़व जाति का एक राग जो मध्याह्न में गाया जाता है।

शुद्धांत पुं. अंत:पुर।

शुद्धात्मा *वि.* पवित्र स्वभाव का।

शुद्धा *स्त्री.* {सं.} साहित्य में वह लक्षणा जिसका आधार कार्यकारण संबंध या अंगांगी भाववाला संबंध (सादृश्य से भिन्न) होता है।

शुद्धापह्नुति *स्त्री.* {सं.} साहित्य में अपह्नुति अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय को झूठा या व्यर्थ ठहराकर उपमान को ही ठीक बतलानेवाला वर्णन होता है।

शुद्धि *स्त्री.* {सं.} शुद्ध होने का कार्य या भाव; सफाई, स्वच्छता; वह धार्मिक कृत्य या संस्कार जो किसी धर्मच्युत, विधर्मी या अशुचि व्यक्ति को शुद्धकर अपने समाज में मिलाने के लिए होता है।

शुद्धिपत्र पुं. {सं.} पुस्तक के अंत का वह पत्र जिसमें यह बतलाया जाता है कि इसमें कहाँ और क्या-क्या अशुद्धियाँ हैं और उनका शुद्ध रूप क्या है (एरार्टा)।

शुद्धिवादी *वि.* {सं.} शुद्धि-संबंधी; पुं. शुद्धिकरण करनेवाला; शुद्धतावादी।

शुद्धीकरण पुं. {सं. शुद्ध + करण} शुद्ध करने की क्रिया या भाव, शुद्धि।

शुद्धोदन पुं. {सं.} गौतम बुद्ध के पिता जो शाक्य वंश के राजा थे।

शुद्धोदनि पुं. बुद्ध।

शुन:शेप पुं. एक ऋषि का नाम।

शुनासीर पुं. {सं.} इंद्र।

शुनि पुं. कुक्कुर, कुत्ता।

शुनी *स्त्री.* कुक्कुरी, कुतिया।

शुफा पुं. {*अ.* शुफ्अ:} पड़ोसी, पार्श्ववर्ती।

पद हक्क शुफा = किसी मकान या जमीन को खरीदने का वह अधिकार जो उसके पड़ोस में रहनेवालों को, औरों से पहले प्राप्त होता है।

शुबहा पुं. {*अ.* शुब्ह:} संदेह, शक; धोखा, भ्रम।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभंकर *वि.* {सं.} {*स्त्री.* शुभंकरी} मंगलकारक; *पुं.* कोई मंगलसूचक चिह्न।

शुभंगी *वि.* {सं. शुभ + अंग} शुभ या सुंदर अंगोंवाला; *पुं.* 'शोकहर' नामक छंद का दूसरा नाम।

शुभांगी *स्त्री.* कामदेव की पत्नी रति।

शुभ *वि.* {सं.} अच्छा, भला; कल्याणकारी, मंगलप्रद; *पुं.* कल्याण, भलाई।

शुभचिंतक *पुं.* {सं.} किसी का शुभ या कल्याण चाहनेवाला, किसी की भलाई की बातें सोचनेवाला, हितैषी, शुभेच्छु (वेलविशर)।

शुभचिंतन *पुं.* {सं.} {*वि.* शुभचिंतक} किसी की भलाई या हित की बातें सोचना।

शुभदंडक *पुं.* {सं.} विजया नामक छंद का वह भेद या प्रकार जिसमें प्रत्येक चरण का अंत नगण से होता है।

शुभदर्शन *वि.* {सं.} जिसके दर्शन करने से कुछ भलाई हो; सुंदर, खूबसूरत।

शुभमस्तु *पद* {सं.} शुभ हो (शुभकामना)।

शुभा *स्त्री.* {सं.} शोभा; कांति, चमक; देवसभा; *पुं.* शुबहा।

शुभागमन *पुं.* सुखद आगमन।

शुभाचार *वि.* जिसका आचार अच्छा हो।

शुभाचारा *स्त्री.* पार्वती की एक सखी।

शुभान्वित *वि.* मंगलयुक्त।

शुभार्थी *वि.* शुभकामना करनेवाला।

शुभावह *वि.* मंगलजनक।

शुभाकांक्षा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* शुभाकांक्षी} किसी व्यक्ति या कार्य के संबंध में की जानेवाली शुभ या अच्छी आकांक्षा या कामना।

शुभाकांक्षी (क्षिन्) *वि.* {सं.} {*स्त्री.* शुभाकांक्षिणी} शुभचिंतक।

शुभारंभ *पुं.* {सं.} नए क्रियाकलाप का औपचारिक आरंभ।

शुभाशय *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* शुभाकांक्षिणी} वह जिसके विचार या आशय अच्छे हों।

शुभाशुभ *वि.* शुभ और अशुभ।

शुभेच्छू *पुं.* = शुभचिंतक।

शुभ्र *वि.* {सं.} {*भाव.* शुभ्रता} सफेद, श्वेत, उजला।

शुमार *पुं.* {फा.} गिनती, गणना; हिसाब, लेखा।

शुरुआत *स्त्री.* {*अ.* शुरुआत} प्रारंभ, आरंभ।

शुरुआती *वि.* = आरंभिक।

शुरू *पुं.* {*अ.* शुरूअ} आरंभ।

शुल्क *पुं.* {सं.} वह देन जो किसी नियम, विधि या परिपाटी के अनुसार आवश्यक रूप से दिया या लिया जाए (ड्यूटी); आयात-निर्यात, विक्रय आदि की वस्तुओं पर राज्य की ओर से लगनेवाला एक विशेष प्रकार का कर (ड्यूटी); कोई काम करने के बदले में लिया जानेवाला धन (चार्ज, फी); किराया, भाड़ा; विवाह में कन्या को दिया जानेवाला दहेज।

शुल्कद्वार *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ शुल्क देने पर आगे जाने की अनुमति मिलती है।

शुल्कार्ह *वि.* {सं.} जिस पर शुल्क लग सकता हो, शुल्क लगाए जाने के योग्य (ड्यूटिएबुल)।

शुश्रूषा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* शुश्रूष्य} सेवा, टहल; रोगी की परिचर्या।

शुश्रूषु *वि.* सेवार्थी।

शुष्क *वि.* {सं.} {*भाव.* शुष्कता} जिसमें, गीलापन या तरी न हो, 'आर्द्र' का विरुद्धार्थक, सूखा; जिसमें से स्वाभाविक आर्द्रता या नमी निकल गई हो; जिसमें किसी तरल पदार्थ का उपयोग न किया गया हो, जैसे शुष्क प्रतिसारण; जिसमें साथ रहने या रह सकनेवाली कोई दूसरी बात न हो, जैसे शुष्क वेतन = ऐसा वेतन जिसमें मालिक से केवल धन मिले, भोजन, वस्त्र आदि न मिले; जिसमें कोमलता, सरसता आदि गुणों का अभाव हो, जैसे शुष्कहृदय; जिसमें मनोरंजकता, मनोहरता या रस न हो, नीरस, जैसे शुष्क विषय (ड्राई, उक्त सभी अर्थों के लिए)।

शुष्कता *स्त्री.* {सं.} शुष्क होने की अवस्था या भाव, सूखापन।

शुष्कली *पुं.* मांस।

शुष्कार्द्र *पुं.* शुंठी, सोंठ।

शुष्ण *पुं.* सूर्य, अग्नि।

शुष्म *पुं.* तेज, पराक्रम।

शुष्कहृदय *वि.* {सं.} जिसके हृदय में प्रेम, उदारता आदि उत्तम और कोमल गुण न हों।

शूक *पुं.* {सं.} अन्न की बाल या सींका; यव, जौ; कागज नत्थी की काँटी, आलपीन (कागज में लगानेवाली पिन)।

शूकधानी *स्त्री.* {सं.} गद्दी आदि लगी हुई डिबिया या आधार जिसमें आलपीनें खोंसकर रखी जाती हैं (पिन-कुशन)।

शूकर *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* शूकरी} सुअर नामक जंतु।

शूकरक्षेत्र *पुं.* {सं.} आजकल एटा जिले का सोरों नामक स्थान जहाँ वाराह अवतार की मूर्ति और मंदिर है।

शूकल *पुं.* भड़कनेवाला घोड़ा।

शूका *स्त्री.* केवाँच।

शूची *स्त्री.* सूई।

शूद्र *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* शूद्रा, शूद्री, *भाव.* शूद्रता} हिन्दुओं के चार वर्णों में से चौथा और अंतिम; इस वर्ण का मनुष्य।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

d by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श

शूना *स्त्री.* {सं.} चूल्हा, चक्की, आदि वे उपकरण या उनके रहने के स्थान जिसमें गृहस्थों से नित्य अनजान में अनेक जीवों की हत्या होती है।

शूनावत् *पुं.* कसाई।

शून्य *पुं.* {सं.} {*भाव.* शून्यता} वह जगह जिसके अंदर कुछ भी न हो, खाली स्थान (वैकुअम); आकाश; विंदी, बिंदु (जीरो); न होना, अभाव; हठयोग के अनुसार शरीर के अंदर के आठ चक्रों या कमलों में से सातवाँ जिसे 'सहस्रार' भी कहते हैं, विशेष 'सहस्रार'; स्वर्ग; ईश्वर; *वि.* जिसके अंदर कुछ न हो, खाली; विहीन, रहित. जैसे दयाशून्य, हृदयशून्य; जिसमें वैसी कोई बात न हो जैसे साधारणतः होनी चाहिए जैसे शून्यदृष्टि (ब्लैंक)।

शून्यकाल *पुं.* {सं.} वह समय जब कोई अभियान आरंभ करने का निश्चय किया गया हो।

शून्यपाल *पुं.* {सं.} वह जो किसी की जगह पर अस्थायी रूप से काम करे; प्राचीन भारत में, वह जो राजा के न रहने या उसके अयोग्य, असमर्थ, अल्पवयस्क आदि होने पर राज्य के सब कामों की देखरेख करता था (रीजेंट)।

शून्या *स्त्री.* बाँझ औरत।

शून्यालय *पुं.* एकांत स्थान।

शूप *पुं.* शूर्प, सूप।

शूम *वि.* कृष्ण, कंजूस।

शूर *पुं.* {सं.} {*भाव.* शूरता} वीर, बहादुर; योद्धा, सूरमा।

शूरता *स्त्री.* {सं.} वीरता, बहादुरी।

शूरताई *स्त्री.* = शूरता।

शूरवीर *पुं.* {सं.} अच्छा वीर और योद्धा, सूरमा।

शूरसेन *पुं.* {सं.} मथुरा प्रदेश का पुराना नाम।

शूरा *पुं.* {सं. शूर} बहादुर, वीर।

शूर्पणखा *स्त्री.* {सं.} रावण की बहन एक प्रसिद्ध राक्षसी जिसके नाक-कान लक्ष्मण ने काटे थे।

शूर्पनखा *स्त्री.* = शूर्पणखा।

शूर्पी *स्त्री.* बच्चों के खेलने का खिलौना।

शूर्म *पुं.* लोहे की बनी हुई मूर्ति।

शूल *पुं.* {सं.} बरछे की तरह का एक प्राचीन अस्त्र, विशेष 'त्रिशूल'; बड़ा लंबा और नुकीला काँटा; वायु के प्रकोप से पेट में होनेवाली एक प्रकार की प्रबल पीड़ा; पीड़ा, दर्द।

शूलना *अ.* {सं. शूल} शूल या काँटे की तरह गड़ना; दुख देना।

शूलपाणि *पुं.* {सं.} महादेव।

शूलस्तूप *पुं.* {सं.} वह विशेष प्रकार का स्तूप जो शूल के आकार का होता है।

शूलांग *पुं.* शिव, महादेव।

शूला *स्त्री.* वेश्या, रंडी; सूली।

शूलिक *पुं.* शशक, खरहा।

शूलिका *स्त्री.* सींकचे में गोदकर भूना हुआ मांस, कबाब।

शूलिनी *स्त्री.* दुर्गा का नाम।

शुलिमुख *पुं.* एक नरक।

शूली *पुं.* {सं. शूलि} शिव, महादेव; *स्त्री.* सूली।

शृंखल *पुं.* {सं.} {*भाव.* शृंखलता} कोई चीज बाँधने का लोहे का बड़ा सिक्कड़; हथकड़ी और बेड़ी; *वि.* जो शृंखला के रूप में, क्रम से या नियम, नियंत्रण आदि के अधीन हो, व्यवस्थित और ठीक।

शृंखलता *स्त्री.* {सं.} क्रम के अनुसार, नियमित, नियंत्रित या व्यवस्थित होने की दशा या भाव।

शृंखला *स्त्री.* {सं.} एक दूसरी में पिरोई हुई बहुत-सी कड़ियों का समूह; क्रम से आने या होनेवाली बहुत-सी बातें, चीजें, घटनाएँ आदि, जंजीर, साँकल, सिकड़ी (चेन, उक्त दोनों अर्थों के लिए); एक ही प्रकार के कार्यों, वस्तुओं आदि का, एक के बाद एक करके चलनेवाला क्रम, माला, जैसे कार्य शृंखला; एक ही दशा, विभाग, रूप आदि में कुछ दूर तक चलनेवाला क्रम, माला, श्रेणी, कतार; क्रम, सिलसिला; एक अलंकार जिसमें पहले कहे हुए पदार्थों का क्रम से वर्णन किया जाता है (साहित्य)।

शृंखलित *वि.* क्रमबद्ध. जंजीर से बँधा हुआ।

शृंग *पुं.* {सं.} पर्वत का शिखर, चोटी; गौ, बकरी आदि के सिर के सींग; कँगूरा।

शृंगज *पुं.* {सं.} शर, बाण, तीर।

शृंगाट *पुं.* चौराहा, सिंघाड़ा।

शृंगार *पुं.* {सं.} {*वि.* शृंगारित} सजाने की क्रिया या भाव, सजावट; वह जिससे किसी चीज की शोभा बढ़े; स्त्रियों का गहने-कपड़ों से अपने आपको सजाना (साहित्य में इसके 16 अंग कहे गए हैं हैं, यथा–उबटन लगाना, मंजन करना, मिस्सी लगाना, नहाना, अच्छे कपड़े पहनना, बाल सँवारना, काजल लगाना, माँग में सिंदूर डालना, पैर में महावर लगाना, बिन्दी लगाना, ठोढ़ी पर तिल बनाना, हाथ में मेंहदी लगाना, शरीर में गंध द्रव्य लगाना, गहने पहनना, फूलों की माला पहनना और पान खाना; साहित्य में नौ रसों में से सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रधान रसों में से एक जो सब में मुख्य माना जाता है, इसमें नायक-नायिका के मिलन या संयोग से उत्पन्न सुख और उनके वियोग के कारण होनेवाले कष्टों का वर्णन होता है, इसलिए

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eG

इन्हें क्रमात् संयोग शृंगार और वियोग शृंगार कहते हैं। नायक और नायिका इसके आलंबन तथा उनकी वेशभूषा, चेष्टाएँ, चाँदनी रात, वर्षाऋतु आदि इसके उद्दीपन हैं।

शृंगारक पुं. सिंदूर, सेंदुर।

शृंगारजन्मा पुं. कामदेव।

शृंगारना स. {सं. शृंगार} सजाना।

शृंगार भूषण पुं. सिंदूर, हरताल।

शृंगार मंडप पुं. वह स्थान जहाँ नायक-नायिका क्रीड़ा करते हैं।

शृंगारयोनि पुं. मदन, कामदेव।

शृंगारहाट स्त्री. {सं. शृंगार + हिं हाट} वेश्याओं के रहने का बाजार, चकला।

शृंगारिक वि. {सं.} शृंगार-संबंधी।

शृंगारिणी स्त्री. {सं.} स्रग्विणी नामक वर्णवृत्त का दूसरा नाम।

शृंगारिया पुं. {सं. शृंगार} वह जो देव-मूर्तियों आदि का शृंगार करता हो; बहुरूपिया।

शृंगारुहा स्त्री. सिंघाड़ा।

शृंगालिका स्त्री. विकारी कंद।

शृंगि स्त्री. सिंघी मछली।

शृंगिका स्त्री. मेढासिंगी, पीपल, अतीस, बरगद, मजीठ।

शृंगी पुं. {सं.} हाथी; वृक्ष, पेड़; पर्वत, पहाड़; सींगवाला पशु; सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा; महादेव, शिव; एक प्राचीन ऋषि (कहते हैं कि इन्हीं के श्राप से परीक्षित को तक्षक ने काटा था)।

शृग पुं. = शृगाल।

शृगाल पुं. {सं.} गीदड़।

शेख पुं. {अ. शैख} {स्त्री. शेखनी} मुहम्मद साहब के वंशजों की उपाधि; मुसलमानों के चार वर्गों में से पहला और श्रेष्ठ वर्ग; आचार्य; वि., पुं. = शेष।

शेख-चिल्ली पुं. {अ. शेख + हिं. चिल्ली} एक कल्पित महामूर्ख व्यक्ति; व्यर्थ बड़े-बड़े और असंभव मनसूबे बाँधनेवाला।

शेखर पुं. {सं.} शीर्ष, सिर, माथा; मुकुट, किरीट; पहाड़ की चोटी, शिखर; वि. सबसे अच्छा या श्रेष्ठ।

शेखरित वि. मुकुटयुक्त।

शेखरी स्त्री. लवंग, सहिजन की जड़।

शेखावत पुं. राजपूत क्षत्रियों का एक भेद।

शेखी स्त्री. {अ. शेख़ी} अभिमान, घमंड; ऐंठ, अकड़; बढ़-बढ़कर बातें करना, डींग।

मुहा. शेखी बघारना या हाँकना = बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना, डींग हाँकना।

शेखीबाज वि. {अ. शेख़ी + फा. बाज़} बहुत शेखी या डींग हाँकने या बढ़-बढ़कर बातें करनेवाला।

शेफ पुं. शिश्न, लिंग।

शेफालिका स्त्री. {सं.} निर्गुण्डी या नीले सिधुआर का पौधा।

शेर पुं. {फा.} {स्त्री. शेरनी} बिल्ली की जाति का एक बहुत बड़ा और भयंकर प्रसिद्ध हिंसक पशु, व्याघ्र, नाहर; बहुत बड़ा वीर और साहसी व्यक्ति।

शे'र पुं. {अ. शअर} गजल के दो चरण।

शेरदहाँ वि. शेरमुँहा।

शेरपंजा पुं. {फा. शेर + हिं. पंजा} शेर के पंजे के आकार का एक अस्त्र, बघनहाँ।

शेरबच्चा पुं. {फा. शेरबच:} एक प्रकार की तोप या बंदूक।

शेरबब्बर पुं. {फा.} सिंह, केसरी।

शेरमुँहा वि. {हिं. शेर + मुँह} जिसका मुँह शेर के मुँह की तरह का हो; जिसका अगला भाग शेर के मुँह की तरह का बना हो; (मकान या जमीन) जिसका अगला भाग अपेक्षाकृत अधिक चौड़ा और पिछला भाग उसकी अपेक्षा कम चौड़ा या तंग हो (ऐसा मकान या जमीन मालिक को अशुभ फल देनेवाली मानी जाती है)।

शेरवानी पुं. {फा. शेर} एक प्रकार का अंगा या लंबा पहनावा।

शेरिफ पुं. {अं.} विशिष्ट राजकीय उच्चाधिकारी जो भिन्न-भिन्न देशों में न्याय, शांति, रक्षा आदि कार्यों के लिए अवैतनिक और सम्मानित रूप से नियुक्त या निर्वाचित होता है; सुमान्य।

शेल पुं. सेल।

शेलक पुं. लिसोड़ा।

शेव पुं. तेद, लिंग, सर्प, सुख।

शेष पुं. {सं.} बाकी बची हुई वस्तु, संख्या आदि, बाकी (रिमेण्डर); (गणित में) घटाने से बची हुई संख्या या रकम, बाकी (बैलेंस); समाप्ति, अंत; शेषनाग; लक्ष्मण जो शेषनाग के अवतार कहे जाते हैं; वि. बचा हुआ, अवशिष्ट, बाकी; अंत तक पहुँचा हुआ, समाप्त।

शेषधन पुं. गणित में घटाने से बची हुई रकम।

शेषधर पुं. {सं.} महादेव, शिव।

शेषनाग पुं. {सं.} पुराणों के अनुसार हजार फनोंवाला वह नाग जिसके फनों पर यह पृथ्वी ठहरी हुई मानी जाती है।

शेषवत पुं. {सं.} न्यायशास्त्र में कोई कार्य होता हुआ देखकर उसका कारण निश्चित करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

d by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेषशय्या पुं. {सं.} शेषनाग की वह मुद्रा जिसपर विष्णु विश्राम करते हैं।

शेषशायी (शायिन्) पुं. {सं.} विष्णु।

शेषांश पुं. {सं.} बाकी बचा हुआ अंश; अंतिम अंश।

शेषा *स्त्री.* देवता को चढ़ायी माला।

शेषोक्त *वि.* {सं.} ऊपर या पहले कहे हुए शब्दों, कथनों, पदार्थों आदि में सबके पीछे आया या कहा हुआ, सबके अंत में कहा हुआ, शेषनाग का कहा, व्याकरण।

शैतान पुं. {अ.} ईसाई, इस्लाम आदि धर्मों में तमोगुण का प्रधान देवता जो मनुष्यों को ईश्वर के विरुद्ध चलाता और धर्ममार्ग से भ्रष्ट करता है।

पद शैतान की आँत = बहुत लंबा।

भूत, प्रेत; बहुत बड़ा पाजी या दुष्ट।

शैतानी *स्त्री.* {अ. शैतान} दुष्टता, पाजीपन; *वि.* शैतान-संबंधी, शैतान का; दुष्टतापूर्ण।

शैत्य पुं. {सं.} शीत का भाव, शीतता।

शैथिल्य पुं. = शिथिलता।

शैनेय पुं. सात्यकि का नाम।

शैल पुं. {सं.} पर्वत, पहाड़ (इसके साथ कन्या या पुत्री वाचक शब्द लगने से पार्वती का बोध होता है)।

शैलकुमारी *स्त्री.* {सं.} पहाड़ी देश की कन्या या कुमारी; पार्वती।

शैलजा *स्त्री.* {सं.} पार्वती।

शैलपुत्री *स्त्री.* {सं.} पार्वती; नौ दुर्गाओं में अग्रणी।

शैलाग्र पुं. पर्वत का शिखर।

शैलाट पुं. पहाड़ी आदमी।

शैलादि पुं. शिव के एक गण।

शैलाधिराज पुं. हिमालय पर्वत।

शैलाषा *स्त्री.* पार्वती।

शैलाह्व पुं. शिलाजीत।

शैलात्मजा *स्त्री.* {सं.} पार्वती।

शैली *स्त्री.* {सं.} चाल, ढब, ढंग; प्रणाली, तर्ज; रीति, प्रथा, रिवाज; वाक्यरचना का वह विशिष्ट प्रकार जो लेखक की भाषा-संबंधी निजी विशेषताओं का सूचक होता है (स्टाइल); हाथ से बनाई जानेवाली वस्तुओं में ऐसी बातों का समूह जिनकी विशेषताओं में उनके कर्ताओं की मनोवृत्ति की एकरूपता के कारण साम्य हो, कलम, जैसे मुगल या पहाड़ी शैली के चित्र।

शैल पुं. लिसोड़ा, चटाई।

शैलष पुं. नट, बेल का वृक्ष, धूर्त मनुष्य।

शैलेयी *स्त्री.* पार्वती।

शैल्य *वि.* पथरीला, कड़ा।

शैलूष पुं. {सं.} नाटक या अभिनय करनेवाला, नट; धूर्त, चालाक।

शैलेन्द्र पुं. {सं.} हिमालय (पर्वतों का राजा)।

शैलेय *वि.* {सं.} पहाड़ों में होनेवाला, पहाड़ी; जिसमें कंकड़-पत्थर बहुत हों, पथरीला।

शैव *वि.* {सं.} शिव-संबंधी, शिव का; पुं. शिव का उपासक एक संप्रदाय।

शैवलिनी *स्त्री.* {सं.} नदी।

शैवाल पुं. {सं.} सेवार।

शैवी *स्त्री.* पार्वती, मंगल, कल्याण।

शैव्य *वि.* शिव-संबंधी।

शैशव *वि.* {सं.} शिशु-संबंधी, छोटे बच्चों का; बाल्यावस्था का; पुं. वह अवस्था जब तक कोई शिशु रहता है, बचपन।

शैशुनाग *वि.* {सं.} मगध के प्राचीन राजा शिशुनाग या उसके वंशजों से संबंध रखनेवाला।

शोक पुं. {सं.} प्रिय व्यक्ति की मृत्यु या वियोग के कारण मन में होनेवाला परम कष्ट, सोग, गम।

शोकहर पुं. {सं.} एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 8, 8, 8, 6 के विश्राम से 30 मात्राएँ होती हैं, इसे 'शुभंगी' भी कहते हैं।

शोकाकुल *वि.* शोक से व्याकुल।

शोकार्त *वि.* शोकाकुल।

शोख *वि.* {फा.} {*भाव.* शोखी} ढीठ, धृष्ट; नटखट, पाजी; चंचल, चुलबुला; गहरा और चमकदार (रंग)।

शोखी *स्त्री.* {फा.} शोख होने की अवस्था या भाव, उद्दंडता।

शोच पुं. {सं. शोचन} दुख, रंज, अफसोस; चिंता, फिक्र।

शोचनीय *वि.* {सं.} जिसकी दशा देखकर दुख या चिंता हो; बहुत हीन या बुरा।

शोच्य *वि.* {सं.} सोचने या विचार करने के योग्य; शोचनीय।

शोण पुं. {सं.} लाल रंग; लाली, अरुणता; अग्नि, आग; रक्त, लहू; बिहार प्रदेश या राज्य का सोन नामक नद।

शोणित *वि.* {सं.} लाल, सुर्ख; पुं. रक्त, लहू, रुधिर, खून।

शोथ पुं. {सं.} रोग के कारण शरीर के किसी अंग का फूलना, सूजन, वरम।

शोध पुं. {सं.} {*वि.* शोधनीय, शोध्य} शुद्ध करनेवाला संस्कार; ठीक या दुरुस्त किया जाना, दुरुस्ती; चुकता या अदा होना (ऋण); जाँच, परीक्षा; खोज, तलाश।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोधक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* शोधिका} शोध करने, ढूँढ़ने या पता लगानेवाला; शुद्ध करनेवाला।

शोधन *पुं.* {सं.} {*वि.* शोधित, शोधनीय, कर्ता शोधक} शुद्ध या साफ करना; दुरुस्त या ठीक करना, सुधारना; ओषधियों का वह संस्कार जिससे वे व्यवहार के योग्य होती हैं; छानबीन, जाँच; तलाश करना, ढूँढ़ना; ऋण, देन आदि चुकाना; दस्त की दवा से पेट साफ करना।

शोधना *स.* {सं. शोधन} शोधन करना, शुद्ध या साफ करना; शोधन।

शोधनी *स्त्री.* मार्जनी, झाड़ू, बुहारी।

शोधनीय *वि.* शुद्ध करने के योग्य।

शोधवाना *स.* {हिं.} शोधना का प्रे.।

शोधाई *स्त्री.* {सं. शोधना + आई (प्रत्य.)} शोधने की क्रिया या भाव; शोधने का पारिश्रमिक।

शोधित *वि.* {सं. शोध} शुद्ध या साफ किया हुआ; जिसका या जिसके संबंध में शोध हुआ हो।

शोधी *वि.* = शोधक।

शोध्य *वि.* {सं.} जिसमें किसी प्रकार का शोधन करने की आवश्यकता हो; जिसके संबंध में किसी प्रकार का शोध या खोज करने की आवश्यकता हो या की जाए।

शोबदा *पुं.* {*अ.* शआबदः} इंद्रजाल, जादू; दूसरों की आँखों को धोखा देकर किया जानेवाला काम।

शोबदेबाज *पुं.* {*अ.* शआबदः + फा. बाज़} जादूगर; दूसरों को धोखा देने या ठगनेवाला, धूर्त, चालाक।

शोभ *स्त्री.* = शोभा।

शोभन *वि.* {सं.} {*स्त्री.* शोभिनी} सुंदर; सुहावना; उत्तम; शुभ; *पुं.* अलंकार, गहना; मंगल, कल्याण; सुंदरता।

शोभना *स्त्री.* {सं.} सुंदर स्त्री; *अ.* शोभा देना, भला लगना।

शोभनीय *वि.* शोभन।

शोभांजन *पुं.* {सं.} एक प्रकार का वृक्ष जिसमें लंबी फलियाँ लगती हैं, सहिजन।

शोभा *स्त्री.* {सं.} दीप्ति, कांति, चमक; सुंदरता, छटा; सजावट; किसी की सुंदरता बढ़ानेवाली कोई वस्तु या तत्व; दलाली का धन (दलाल)।

शोभाकर *वि.* शोभा उत्पन्न करनेवाला।

शोभान्वित *वि.* शोभायुक्त।

शोभायमान *वि.* {सं.} शोभा बढ़ाने या देनेवाला, सुंदर।

शोभायात्रा *स्त्री.* {सं.} जनयात्रा, जलूस (यह शब्द बंगला से हिन्दी में आया है)।

शोभावती *स्त्री.* एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं।

शोभित *वि.* {सं.} सुंदर, शोभा बढ़ाने या देनेवाला, फबता या अच्छा लगता हुआ।

शोभिनी *वि., स्त्री.* {सं.} शोभा देनेवाली।

शोर *पुं.* {फा.} बहुत से लोगों की एक साथ मिली हुई जोरों की आवाज, कोलाहल; प्रसिद्धि, धूम, जैसे आपकी किताब का तो शोर मच गया है।

शोरबा *पुं.* {फा.} उबाली हुई तरकारी आदि का रस, जूस, रसा।

शोर-शराबा *पुं.* होहल्ला, शोरगुल।

शोरा *पुं.* {फा. शोरः} मिट्टी से निकलनेवाला एक प्रसिद्ध क्षार।

शोरूम *पुं.* {अं.} वह कक्ष जिसमें बिक्री की वस्तुओं के नमूने सजा-सँवार कर रखे जाते हैं।

शोला *पुं.* {*अ.* शोअलः} जलती हुई आग की लपट, लौ, अग्निशिखा।

शोशा *पुं.* {फा. शोशः} निकली हुई नोक; विलक्षण विशेषतः शरारत से भरी बात; दोष।

शोशेबाज *पुं.* {फा. शोशः + बाज़} विलक्षण विशेषतः शरारत भरी बातें कहनेवाला।

शोष *पुं.* सूखने का भाव, शोषण, यक्ष्मा रोग।

शोषक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* शोषिका} शोषण करने या सोखनेवाला; दूसरों का धन हरण करनेवाला (एक्सप्लॉयटर)।

शोषण *पुं.* {सं.} {*वि.* शोषित, शोषनीय} किसी वस्तु में का जल या रस खींचकर अपने अंतर्गत करना, सोखना; सुखाना; नाश करना; दुर्बल या अधीनस्थ के परिश्रम, आय आदि से अनुचित लाभ उठाना (एक्सप्लायटेशन)।

शोषणीय *वि.* शोषण के योग्य।

शोषित *वि.* {सं.} जिसका शोषण किया गया हो; जो सोखा गया हो; जिसकी दुर्बलता, पराधीनता आदि से औरों ने अनुचित रूप से आर्थिक लाभ उठाया हो (एक्सप्लायटेड)।

शोषी *वि.* = शोषक।

शोहदा *पुं.* {*अ.*} व्यभिचारी, लम्पट; लुच्चा, बदमाश; आवारा।

शोहरत *स्त्री.* {*अ.* शुहत} मशहूर होने की अवस्था या भाव, प्रसिद्धि, ख्याति; किंवदंती, प्रवाद, अफवाह।

शौंड *वि.* जो मद्य पीकर मतवाला हो, प्रगल्भ।

शौंडिक *पुं.* {सं.} शराब बनानेवाला।

शौंडी *पुं.* पिप्पली, मिर्च।

शौंडीर *वि.* अहंकारी, घमंडी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ed by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शौक पुं. {अ. शौक़} किसी वस्तु की प्राप्ति या सुख के भोग की कुछ प्रबल, उत्कट या असाधारण अभिलाषा या लालसा।
पद शौक से = प्रसन्नतापूर्वक।
व्यसन, चस्का।

शौकत *स्त्री.* {अ.} वैभव।

शौकिया *क्रि. वि.* {अ. शौक़िय:} शौक के कारण, मन बहलाने के लिए।

शौकीन पुं. {अ. शौक़ीन} {*भाव.* शौकिनी} वह जिसे किसी बात का बहुत शौक हो, शौक करनेवाला; सदा बना-ठना रहनेवाला, छैला।

शौकीनी *स्त्री.* {अ.} अपना वैभव दिखाने या वासनाएँ पूरी करने के लिए व्ययसाध्य वेशभूषा रखने और तरह-तरह के शौक करने का भाव।

शौक्तिक पुं. {सं.} मोती।

शौक्तिका *स्त्री.* सीप।

शौच पुं. {सं.} शुद्धता, पवित्रता; सब प्रकार से पवित्र जीवन बिताना; मलत्याग, कुल्ला-दातुन आदि कृत्य जो सवेरे उठकर सबसे पहले किए जाते हैं; पाखाने या टट्टी जाना; अशौच।

शौचाचार पुं. शौच-कर्म।

शौचेय पुं. रजक, धोबी।

शौटीर पुं. त्यागी, वीर।

शौन पुं. वह मांस जो बिक्री हेतु हो।

शौनक पुं. वैदिक ऋषि।

शौनिक पुं. आखेट, मृगया।

शौध *वि.* {सं. शुद्ध} निर्मल।

शौरसेन पुं. {सं.} आधुनिक मथुरा और उसके आसपास के प्रदेश का पुराना नाम जो वहाँ के राजा शूरसेन के नाम पर पड़ा था।

शौरसेनी *स्त्री.* {सं.} शौरसेन प्रदेश की प्रसिद्ध प्राचीन अपभ्रंश भाषा जो 'नागर' भी कहलाती थी।

शौरि पुं. विष्णु, शनि ग्रह, कृष्ण।

शौरिप्रिय पुं. हीरक, हीरा।

शौरिरत्न पुं. नीलम।

शौर्य पुं. {सं.} शूर का भाव, शूरता, वीरता, बहादुरी।

शौल्किक पुं. {सं.} शुल्क-संबंधी, शुल्क का, जैसे शौल्किक अधिकारी।

शौहर पुं. {फा.} स्त्री का पति, खसम।

श्मशान पुं. {सं.} वह स्थान जहाँ मुरदे जलाए जाते हैं, मसान, मरघट; बिल्कुल उजड़ा हुआ या ध्वस्त किया हुआ स्थान।

श्मशान-यात्रा *स्त्री.* {सं.} शव या मृत शरीर का श्मशान ले जाया जाना, अरथी का श्मशान जाना।

श्मश्रु पुं. मुख पर के बाल, दाढ़ी-मूँछ।

श्मश्रू पुं. {सं.} दाढ़ी-मूँछ।

श्याम पुं. {सं.} श्रीकृष्ण का एक नाम जो उनके शरीर के वर्ण या रंग के कारण पड़ा था; *वि.* {*भाव.* श्यामता} काला और नीला मिला हुआ रंग; कुछ-कुछ काला, साँवला।

श्यामकर्ण पुं. {सं.} वह सफेद घोड़ा जिसका एक कान काला हो।

श्यामकल्याण पुं. {सं.} ओड़व संपूर्ण जाति का एक राग जो रात के पहले पहर में गाया जाता है।

श्यामकृष्ण *वि.* {सं.} जिसका रंग कुछ कालापन लिए हुए नीला हो; पुं. कुछ कालापन लिए हुए नीला रंग।

श्यामघन पुं. {सं.} घनश्याम, श्रीकृष्ण।

श्यामता *स्त्री.* {सं.} श्याम वर्ण या काले होने का भाव, कालापन; साँवलापन; मलिनता; शोभा आदि का अभाव, उदासी।

श्यामल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* श्यामला, *भाव.* श्यामलता} श्याम या कृष्ण वर्ण का, हल्का काला या कुछ-कुछ काला, साँवला।

श्यामला *स्त्री.* पार्वती, जामुन, कस्तूरी।

श्यामांग *वि.* साँवले रंग का।

श्यामसुंदर पुं. {सं.} श्रीकृष्ण।

श्यामा *स्त्री.* {सं.} राधा, राधिका; एक प्रसिद्ध सुरीला काला पक्षी; सोलह वर्ष की युवती; काले रंग की गाय; यमुना नदी; रात; स्त्री; *वि.* श्याम रंगवाली, काली।

श्याल (क) पुं. {सं.} किसी की पत्नी का भाई, साला; किसी की बहन का पति, बहनोई।

श्यालिका *स्त्री.* पत्नी की बहिन, साली।

श्येन पुं. {सं.} बाज (पक्षी)।

श्रंग पुं. श्रृंग।

श्रद्धांजलि *स्त्री.* {सं. श्रद्धा + अंजलि} अँजुली में फूल आदि भरकर श्रद्धापूर्वक किसी बड़े को अर्पित करना या देवता को चढ़ाना; श्रद्धा और आदरभाव से किसी बड़े या पूज्य के संबंध में प्रशंसात्मक बातें करना (होमेज)।

श्रद्धान *वि.* श्रद्धायुक्त, श्रद्धालु।

श्रद्धा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* श्रद्धालु} किसी बात की प्रबल इच्छा या किसी काम की उत्कट वासना; गर्भवती स्त्री की प्रबल इच्छा या वासना की हद; किसी अच्छे काम विशेषत: ईश्वर, धर्म या बड़े लोगों के प्रति आदरपूर्ण और पूज्य भाव, आस्था; कर्दम मुनि की कन्या जो अत्रि ऋषि को ब्याही गई थी; वैवस्वत मनु की पत्नी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धादेव पुं. {सं.} वैवस्वत मनु जो श्रद्धा के पति थे।
श्रद्धाभिभूत *वि.* {सं.} श्रद्धा से अभिभूत।
श्रद्धामय *स्त्री.* श्रद्धा से पूर्ण।
श्रद्धावान *वि.* श्रद्धायुक्त, जिसके मन में श्रद्धा हो।
श्रद्धालु *वि.* {सं.} जिसके मन में श्रद्धा हो, श्रद्धावान।
श्रद्धासिक्त *वि.* {सं.} श्रद्धा से ओतप्रोत।
श्रद्धास्पद *वि.* {सं.} जिसके प्रति श्रद्धा करना उचित हो, श्रद्धेय।
श्रद्धेय *वि.* {सं.} श्रद्धास्पद।
श्रम पुं. {सं.} {*वि.* श्रमित} ऐसा काम जिसे करते-करते शरीर में शिथिलता आने लगे, शरीर को थकानेवाला काम, परिश्रम; साहित्य में अति संयोग के कारण होनेवाली थकावट जिसकी गिनती संचारी भावों में की गई है; जीविका-निर्वाह या धन-उपार्जन के लिए किया जानेवाला इस प्रकार का कोई काम; हाथ में लिए हुए किसी काम में होनेवाली मेहनत (लेबर); थकावट, क्लान्ति; दौड़-धूप; पसीना।
श्रमकण पुं. {सं.} अधिक परिश्रम, लज्जा, आतंक आदि के कारण शरीर से निकलनेवाली पसीने की बूँदें।
श्रमण पुं. बौद्ध-संन्यासी, यति, मुनि; नीच कर्मजीवी।
श्रमांबु पुं. श्रमवारि, पसीना।
श्रमजन पुं. श्रमजीवी।
श्रमजल पुं. {सं.} पसीना, स्वेद।
श्रमजीवी *वि.* {सं. श्रमजीविन्} श्रम या मजदूरी करके पेट पालनेवाला (लेबरर)।
श्रमवारि पुं. {सं.} श्रमकण, पसीना, स्वेद।
श्रमविन्दु पुं. {सं.} पसीना, स्वेद।
श्रमविभाग पुं. {सं.} किसी कार्य के अलग-अलग अंगों के संपादन के लिए अलग-अलग व्यक्ति नियत करना (डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ लेबर); राज्य का वह विभाग जो श्रमजीवियों के सुख और कल्याण की व्यवस्था करता है।
श्रमसीकर पुं. {सं.} पसीना, स्वेद।
श्रमिक पुं. {सं.} वह जो शारीरिक श्रम करके अपना पेट पालता हो, मजदूर; *वि.* श्रम-संबंधी, शारीरिक श्रम का।
श्रमिक संघ पुं. {सं.} कल-कारखानों आदि में काम करनेवाले मजदूरों का वह संघ जो मजदूरों के हितों की रक्षा और उनकी अवस्था के सुधार के उद्देश्य से बनाया जाता है (लेबर यूनियन)।
श्रमित *वि.* {सं. श्रम} श्रम या मेहनत करने के कारण शिथिल या थका हुआ।
श्रमी पुं. परिश्रमी व्यक्ति, श्रमजीवी।
श्रयण पुं. आश्रय।
श्रवण पुं. {सं.} {*वि.* श्रवणीय} वह इंद्रिय जिससे शब्द का ज्ञान होता है, सुनने का अंग या इंद्रिय, कान, कर्ण; सुनना; धार्मिक कथाएँ और देवताओं के चरित्र आदि सुनना जो एक प्रकार की भक्ति है; बाईसवाँ नक्षत्र।
श्रवणा *स्त्री.* अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रों में से बाईसवाँ नक्षत्र।
श्रवणीय *वि.* {सं.} जो सुना जा सके, श्रव्य; जो सुनना प्रिय जान पड़े, सुनने योग्य।
श्रवन पुं. {सं. श्रवण} कान।
श्रवना *स.* {सं. स्राव} बहना; चूना, टपकना; रसना; *स.* गिराना; बहाना।
श्रवित *वि.* {सं. स्राव} बहा हुआ।
श्रव्य *वि.* {सं.} जो सुना जा सके, जिसे कान से सुन सकें (ऑडिबुल); सुनने योग्य, जैसे संगीत, कहानी आदि।
श्रव्यकाव्य पुं. {सं.} वह काव्य जो केवल सुना जा सके, पर जिसका अभिनय न हो सकता हो।
श्रांत *वि.* {सं.} {*भाव.* श्रांति} थका हुआ।
श्रांति *स्त्री.* {सं.} परिश्रम, मेहनत; परिश्रम के कारण होनेवाली थकावट मिटाने के लिए किया जानेवाला विश्राम।
श्राद्ध पुं. {सं.} श्रद्धापूर्वक किया जानेवाला काम; हिन्दुओं में पिंडदान और ब्राह्मण भोजन आदि कृत्य जो पितरों के उद्देश्य से और उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए होते हैं; किसी काम या बात को बहुत बुरी तरह करने या बिगाड़ने की क्रिया या भाव, जैसे अपनी इस रचना में तो उन्होंने कविता का श्राद्ध ही किया है; पितृपक्ष।
श्राद्धिक *वि.* श्राद्ध-संबंधी।
श्राप पुं. शाप।
श्राम पुं. मंडप, घर, काल, समय।
श्राव पुं. श्रवण, कान।
श्रावक पुं. {सं.} {*स्त्री.* श्राविका} बौद्ध संन्यासी या भिक्षु; जैनधर्म का अनुयायी, जैनी; *वि.* सुननेवाला, श्रोता।
श्रावगी पुं. {सं. श्रावक} जैनी।
श्रावण[1] पुं. {सं.} आषाढ़ के बाद और भादों के पहले का महीना, सावन।
श्रावण[2] *वि.* {सं. श्रवण} श्रवण अर्थात् कान अथवा सुनने से संबंध रखनेवाला (ऑडिटरी); पुं. सुनने की क्रिया या भाव।
श्रावणा *स्त्री.* सुदर्शना नामक वृक्ष, भूकदंन।
श्रावणी *स्त्री.* {सं.} सावन मास की पूर्णमासी जो 'रक्षाबंधन' का दिन है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रावन *स.* {हिं. स्रावना} गिराना।

श्रावस्ती *स्त्री.* {सं.} एक प्राचीन नगरी जो उत्तर-कोशल में गंगा के किनारे थी।

श्रावित *वि.* {सं.} सुना हुआ; जो सुनकर मान्य कर लिया गया हो; (लेख्य या दस्तावेज) जिसे सुनकर लिखनेवाले ने उसपर अपनी स्वीकृति के सूचक हस्ताक्षर कर दिए हों (एटेस्टेड)।

श्राव्य *वि.* {सं.} सुनने योग्य।

श्रित *वि.* सेवित, आश्रित, पका हुआ।

श्रिय *पुं.* मंगल, कल्याण, शोभा।

श्रिया *स्त्री.* विष्णु की पत्नी लक्ष्मी।

श्री *स्त्री.* {सं.} विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी, कमला: सरस्वती; संपत्ति, धन, दौलत; विभूति, ऐश्वर्य; छटा, शोभा; एक आदरसूचक शब्द जो पुरुषों के नाम के पहले लगाया जाता है, जैसे श्री नारायणदास; कांति, चमक; रोली; सफेद चंदन; कीर्ति, यश; स्त्रियों के माथे पर की बिंदी; *पुं.* संगीत में संपूर्ण जाति का एक राग जो शिशिर ऋतु में संध्या समय गाया जाता है।

श्रीकांत *पुं.* {सं.} विष्णु।

श्रीकृष्ण *पुं.* {सं. श्री + कृष्ण} यदुवंशी वसुदेव के पुत्र जो ईश्वर के प्रधान अवतारों में माने जाते हैं।

श्रीक्षेत्र *पुं.* {सं.} उड़ीसा का पुरी नामक स्थान जहाँ जगन्नाथ जी का प्रसिद्ध बड़ा मंदिर है।

श्रीखंड *पुं.* {सं.} हरिचंदन; शिखरन।

श्रीदामा *पुं.* {सं. श्रीदामन्} राधिका के बड़े भाई जो श्रीकृष्ण के सखा थे।

श्रीधर *पुं.* {सं.} विष्णु।

श्रीधाम *पुं.* {सं.} स्वर्ग।

श्रीपंचमी *स्त्री.* {सं.} माघ के शुक्ल पक्ष की पंचमी, वसंत पंचमी।

श्रीपति *पुं.* {सं.} विष्णु; रामचंद्र; श्रीकृष्ण; राजा।

श्रीपद *पुं.* {सं.} किसी पूज्य व्यक्ति या देवता के, मुख्यत: श्रीकृष्ण चंद्र के चरणचिह्न।

श्रीफल *पुं.* {सं.} बेल; नारियल।

श्रीमंत: *पुं.* {सं. श्री + मंत} श्रीमंत या श्रीमान् का बहु. जो प्राय: व्यापारिक संस्थाओं के दो या तीन मालिकों के एक साथ आनेवाले नामों के पहले लगाया जाता है, जैसे श्रीमंत: गोविंदलाल रामप्रसाद (मेसर्स)।

श्रीमंत *पुं.* {सं. सीमंत} एक प्रकार का शिरोभूषण; स्त्रियों के सिर की माँग।

श्रीमत् *वि.* श्रीमान।

श्रीमती *स्त्री.* {सं.} 'श्रीमान' का स्त्रीलिंग रूप, जिसका प्रयोग स्त्रियों के नाम के पहले होता है, जैसे श्रीमती विष्णुकुमारी देवी; पत्नी का वाचक शब्द, जैसे आपकी श्रीमती भी साथ आई हैं।

श्रीमान् *पुं.* {सं. श्रीमत्} धनवान, संपन्न, अमीर; एक आदरसूचक शब्द जो पुरुषों के नाम के पहले विशेषण के रूप में लगाया जाता है, श्रीयुत।

श्रीयुक्त *वि.* श्रीयुत।

श्रीयुत *वि.* {सं.} एक विशेषण जो भले आदमियों के नाम के पहले उनके आदर के लिए लगाया जाता है, श्रीमान्।

श्रीरमण *पुं.* {सं.} विष्णु।

श्रीलंका *स्त्री.* भारत के दक्षिण में स्थित एक टापू।

श्रीलंकाई *वि.* श्रीलंका-संबंधी; *पुं.* श्रीलंका का वासी।

श्रीवत्स *पुं.* {सं.} विष्णु; विष्णु के वक्षस्थल पर का वह चिह्न, जो भृगु के लात मारने से हुआ था।

श्रीवन *पुं.* {सं.} वृंदावन।

श्रीश *पुं.* {सं.} विष्णु।

श्रीहत *वि.* {सं.} जिसकी श्री या शोभा न रह गई हो, निस्तेज, निष्प्रभ।

श्रीहीन *वि.* {सं.} श्री से रहित; शोभाहीन।

श्रीहीनता *स्त्री.* {सं.} श्रीहीन होने की अवस्था या भाव।

श्रुत *वि.* {सं.} सुना हुआ; जो परंपरा से सुनते आए हों; प्रसिद्ध।

श्रुतार्थ *पुं.* वह बात जो सुनने के साथ ही समझ में आ जाए।

श्रुतपूर्व *वि.* {सं.} जो पहले सुना हो।

श्रुतलेख *पुं.* {सं.} सुनकर लिखा हुआ लेख।

श्रुति *स्त्री.* {सं.} श्रवण करना, सुनना; सुनने की इंद्रिय, कान; सुनी हुई बात; सृष्टि के आरंभ से चला आया हुआ पवित्र ज्ञान, वेद; चार की संख्या; एक प्रकार का अनुप्रास, विशेष 'श्रुत्यनुप्रास'; संगीत में सातों स्वरों में से प्रत्येक स्वर के कुछ नियत और निश्चित खंड या विभाग, स्वर के आरंभ, मध्य और अंत के भाग, षड्ज में 4, ऋषभ में 3, गांधार में 2 मध्यम में 4, पंचम में 4, धैवत में 2 और निषाद में 2, इस प्रकार कुल 22 श्रुतियाँ मानी गई हैं जिनके अलग-अलग नाम हैं; श्रुत्यनुप्रास।

श्रुतिकटु *वि.* {सं.} जो सुनने में बुरा जान पड़े।

श्रुतिपथ *पुं.* {सं.} श्रवणेंद्रिय, कान।

श्रुत्य *वि.* {सं.} सुनने या सुने जाने के योग्य; श्रुति-संबंधी, श्रुति का; प्रसिद्ध; प्रशस्त, अच्छा और भला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रुत्यनुप्रास पुं. {सं.} अनुप्रास का वह भेद जिसमें मुख के एक ही स्थान से उच्चरित होनेवाले व्यंजन कई बार आते हैं।

श्रुवा पुं. {सं.} काठ की वह कलछी जिससे हवन के लिए आग में घी छोड़ा जाता है, स्रुवा।

श्रूयमाण *वि.* जो सुना जाए, सुना जा रहा।

श्रेढ़ी *स्त्री.* एक प्रकार का पहाड़ा।

श्रेणि *स्त्री.* पंक्ति, अवली, परंपरा, शृंखला, समूह।

श्रेणी *स्त्री.* {सं.} पंक्ति, अवली, पाँति; क्रम, शृंखला, परंपरा; एक ही प्रकार का व्यवसाय करनेवाले व्यापारियों का संघात (कॉरपोरेशन); योग्यता, कर्तव्य आदि के विचार से किया हुआ विभाग, दरजा (क्लास); सीढ़ी।

श्रेणीकरण पुं. {सं.} {*वि.* श्रेणीकृत} बहुत सी वस्तुओं का अलग-अलग श्रेणियों में बाँटना या रखना (क्लैसिफिकेशन); व्यापारियों आदि के संघात या संस्था को विधि या कानून के अनुसार श्रेणी का रूप देना (इन्कॉरपोरेशन)।

श्रेणीकृत *वि.* {सं.} (संस्था या संघ) जिसे विधि के अनुसार श्रेणी का रूप दिया गया हो (इन्कॉरपोरेटेड)।

श्रेणीबद्ध *वि.* {सं.} श्रेणी या पंक्ति के रूप में लगा या रखा हुआ।

श्रेय *वि.* {सं. श्रेयस्} {*स्त्री.* श्रेयसी} अधिक अच्छा, बेहतर; श्रेष्ठ, उत्तम; पुं. अच्छापन; कल्याण, मंगल; शुभ और शुद्ध आचरण, सदाचार; किसी काम के लिए मिलनेवाला यश (क्रेडिट)।

श्रेयस् पुं. श्रेय।

श्रेयोमय *वि.* मंगलमय, शुभ।

श्रेयस्कर *वि.* {सं.} श्रेय देने या श्रेष्ठ बनानेवाला।

श्रेष्ठ *वि.* {सं.} {*स्त्री.* श्रेष्ठा, *भाव.* श्रेष्ठता} सर्वोत्तम; मुख्य, प्रधान; पूज्य; औरों या बहुतों की अपेक्षा अच्छा (सुपीरियर)।

श्रेष्ठा *स्त्री.* स्थल पद्मिनी, त्रिफला।

श्रेष्ठक *वि.* {सं.} श्रेष्ठता-संबंधी; श्रेष्ठता का सूचक, जैसे श्रेष्ठक भावना।

श्रेष्ठक भावना *स्त्री.* {सं.} मन में बैठी हुई यह धारणा या भावना कि हम अमुक अथवा औरों की अपेक्षा श्रेष्ठ हैं (सुपीरियारिटी काम्प्लेक्स)।

श्रेष्ठता *स्त्री.* {सं.} औरों की अपेक्षा श्रेष्ठ या अच्छे होने की दशा या भाव, उत्तमता।

श्रेष्ठी पुं. {सं. श्रेष्ठिन्} महाजन, सेठ।

श्रोण पुं. पंगु, खंज।

श्रोणि *स्त्री.* कटिदेश, कमर, नितंब, चूतड़, मार्ग, पथ।

श्रोणी *स्त्री.* कटि, कमर, चूतड़।

श्रोत पुं. श्रवणेंद्रिय, कान।

श्रोता पुं. {सं. श्रोतृ} सुननेवाला; कथा, पुराण, उपदेश, व्याख्यान आदि सुननेवाला।

श्रोता-वर्ग पुं. {सं.} कथा, उपदेश, व्याख्यान आदि के स्थान पर बैठकर सुननेवाले सब लोग या उनका समाज (ऑडिएंस)।

श्रोत्र पुं. {सं.} कान।

श्रोत्रिय पुं. {सं.} वह जो वेद-वेदांतों और शास्त्रों का अच्छा ज्ञाता हो; ब्राह्मणों में एक जाति।

श्रोसी पुं. श्रोत्रिय।

श्रोन पुं. शोण।

श्रोनित पुं. शोणित।

श्रौत *वि.* {सं.} श्रवण-संबंधी; श्रुति-संबंधी; जो वेदों के अनुसार हो।

श्रौन पुं. श्रवण।

श्लथ *वि.* {सं.} शिथिल, ढीला; मंद, धीमा; दुर्बल, कमजोर।

श्लाघन *वि.* अपनी प्रशंसा करनेवाला; पुं. डींग हाँकना।

श्लाघनीय *वि.* {सं.} श्लाघा या प्रशंसा के योग्य, जिसके लिए या जिसके कारण प्रशंसा की जा सके; उत्तम, बढ़िया।

श्लाघनीयता *स्त्री.* श्लाघा, खुशामद।

श्लाघा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* श्लाघ्य, श्लाघनीय} प्रशंसा, तारीफ; चापलूसी, खुशामद।

श्लाघी *वि.* {सं. श्लाघिन्} {*स्त्री.* श्लाघिनी} श्लाघा या प्रशंसा करनेवाला, तारीफ करनेवाला; स्तुति या बड़ाई करनेवाला; खुशामदी; इच्छुक।

श्लाघ्य *वि.* = श्लाघनीय।

श्लिष्ट *वि.* {सं.} एक में मिला या जुड़ा हुआ; (साहित्य में) श्लेषयुक्त, जिसके दो अर्थ हों।

श्लिष्टाक्षेप पुं. वह अलंकार जिसमें श्लिष्ट पदों के प्रयोग के आक्षेप होता है।

श्लिष्टि *स्त्री.* जोड़, मिलाना, आलिंगन।

श्लिष्टोदित *स्त्री.* श्लेषयुक्त वाक्य या कथन।

श्लीपद पुं. फीलपाँव नामक रोग।

श्लील *वि.* {सं.} {*भाव.* श्लीलता} उत्तम, बढ़िया; शुभ; शिष्टों और सभ्यों के योग्य।

श्लेष पुं. {सं.} {*वि.* श्लेषक, श्लिष्ट} संयोग, मिलना, जुड़ना; एक शब्द के दो या अधिक अर्थ होने की अवस्था या भाव (पन्): साहित्य में एक अलंकार जिसमें ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है जिनके अनेक अर्थ होते हैं और वे अर्थ प्रसंगों के अनुसार कई तरह से अलग अलग घटते हैं, जैसे 'नाहीं नाहीं करें थोरें माँगें बहु देन कहें, मंगन को देखि पट देत बार-बार हैं' में कही हुई सब बातें कृपण और दाता दोनों पर अलग-अलग प्रकार से समान रूप से घटती हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्लेषचित्र पुं. {सं.} वह चित्र जिसमें किसी स्पष्ट भाव के अतिरिक्त कोई और भाव भी छिपा हो, जैसे यदि कोई नायक किसी एक नायिका पर रीझकर अन्य नायिकाओं को भूल जाए और इस पर कोई मानिनी नायिका ऐसा चित्र अंकित करे जिसमें वह नायक बहुत-सी कुमुदिनियों के बीच में किसी एक ही कुमुदिनी का रस ले रहा हो, तो वह चित्र श्लेषचित्र कहलाएगा।

श्लेषण पुं. {सं.} {*वि.* श्लेषित, श्लेषणी} संयोग कराना, मिलाना, लगाना या जोड़ना; गले लगाना, आलिंगन।

श्लेष वक्रोक्ति *स्त्री.* वक्रोक्ति।

श्लेषोपमा *स्त्री.* {सं.} वह अर्थालंकार जिसमें ऐसे श्लिष्ट शब्दों का प्रयोग हो जो उपमेय और उपमान दोनों पर घटें।

श्लोक पुं. {सं.} शब्द, आवाज; स्तुति, प्रशंसा; कीर्ति यश; अनुष्टुप छंद; संस्कृत का कोई पद्य।

श्वन् पुं. कुक्कुर, कुत्ता।

श्वफल पुं. बिजौरा नींबू।

श्वपच पुं. {सं.} चांडाल।

श्वश्रू *स्त्री.* {सं.} श्वसुर की स्त्री, सास।

श्वसित *वि.* {सं.} जो श्वास लेता हो; जीवित; पुं. निःश्वास, ठंडा साँस।

श्वशुर पुं. पति या पत्नी का पिता, ससुर।

श्वश्रू *स्त्री.* पति या पत्नी की माता, सास।

श्वास पुं. प्राणवायु, साँस, दम, दमे का रोग, हाँफना।

श्वसुर पुं. {सं.} किसी स्त्री या पुरुष के विचार से उसके पति या पत्नी का पिता, ससुर।

श्वसन पुं. {सं.} श्वास, साँस; जीवन।

श्वान पुं. {सं. श्वानी} कुत्ता।

श्वापद पुं. {सं.} हिंसक पशु।

श्वासा *स्त्री.* {सं. श्वास} साँस; प्राण, वायु।

श्वासोच्छ्वास पुं. {सं.} वेग से साँस लेना और छोड़ना।

श्वेत *वि.* {सं.} {*भाव.* श्वेतता} सफेद; उज्ज्वल, साफ; जिसपर किसी प्रकार की छाया प्रभाव न पड़ा हो; अच्छा, भला; पुं. सफेद रंग; पुराणों के अनुसार एक द्वीप का नाम।

श्वेतकृष्ण *वि.* {सं.} सफेद और काला; पुं. किसी बात के भले और बुरे दोनों पक्ष या अंग; भलाई और बुराई, उपकार और अपकार।

श्वेतपत्र पुं. {सं.} (साधारणतः सफेद कागज पर छपा हुआ किसी विषय से संबंध रखनेवाला आधिकारिक वक्तव्य (ह्वाइट पेपर)।

श्वेतवाराह पुं. {सं.} एक कल्प जो ब्रह्मा के मास का पहला दिन कहा गया है।

श्वेतांबर पुं. सफेद वस्त्र, जैनों का संप्रदाय का नाम।

श्वेता *स्त्री.* कौड़ी, वंशलोचन, फिटकरी, चीनी, घुँघची।

श्वेताद्रि पुं. कैलास पर्वत।

श्वेताश्वत्तर पुं. कृष्ण यजुर्वेद का एक उपनिषद्।

श्वेसार पुं. {सं.} अनाजों, तरकारियों आदि का वह सफेद सत्त जो प्रायः कपड़े पर लगाने या दवाओं आदि में काम आता है, माँड़ी, कलफ।

श्वेतांग *वि.* {सं.} जिसके अंग का वर्ण श्वेत हो, सफेद रंग के शरीरवाला; पुं. गोरी जाति (अर्थात् यूरोप, अमेरिका आदि) का कोई व्यक्ति।

श्वेतांशु पुं. {सं.} चंद्रमा।

ष

ष नागरी वर्णमाला के व्यंजन वर्णों में इकत्तीसवाँ वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है, इससे वह मूर्धन्य कहलाता है। इसका उच्चारण 'श' के समान भी होता है और 'ख' के समान भी।

षंजन पुं. अलिंगन, समागम।

षंड (ढ) पुं. {सं.} हिजड़ा, नपुंसक।

षंडत्व पुं. हिजड़ापन।

षंडयोनि *स्त्री.* ऐसी स्त्री जो पुरुष-समागम के अयोग्य हो।

षटक पुं. {सं.} वेद के ये छह अंग-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष; शरीर के ये छह अंग-दो पैर, दो हाथ, सिर और धड़; *वि.* जिसके छह अंग हों।

षट् *वि.* {सं.} गिनती में छह।

षट्कर्म पुं. {सं. षटकर्मन्} ब्राह्मणें के ये छह काम-यज्ञ करना, यज्ञ कराना, पढ़ना, पढ़ाना, दान देना और दान लेना; मनुष्य के लिए नियत ये छह काम जो उसे नित्य करने पड़ते हैं या

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने चाहिए–स्नान, संध्या, पूजा, तर्पण, जप, होम; झगड़ा, झंझट।

षट्कार पुं. षट् शब्द का उच्चारण।

षट्कोण *वि.* {सं.} छह कोणोंवाला।

षट्चक्र पुं. {सं.} हठयोग में माने जानेवाले कुंडलिनी के ऊपर के ये छह चक्र-मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा; (परवर्ती) हठ योगियों ने इनके सिवा 34 और चक्रों की भी कल्पना की है; षड्यंत्र।

षट्चरण पुं. भ्रमर, खटमल; *वि.* छः पैरोंवाला।

षट्दर्शन पुं. {सं.} भारतीय आर्यों के ये छह दर्शन या शास्त्र-सांख्य, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक, योग और वेदांत।

षट्पद *वि.* {सं.} {*स्त्री.* षट्पदी} छह पदों या पैरोंवाला; पुं. भ्रमर, भौंरा।

षट्पदी *स्त्री.* {सं.} छप्पय नामक छह पदोंवाला छंद।

षट्प्रज्ञ पुं. व्यभिचारी, लंपट।

षट्मुख पुं. कार्तिकेय।

षट्रस पुं. षड्रस।

षट्राग पुं. {सं. षट् + राग} संगीत के छह राग जिनके नाम हैं–भैरव, मलार, श्री हिंडोला, मालकोस और दीपक; व्यर्थ का झगड़ा या बखेड़ा।

षट्रिपु पुं. षड्रिपु।

षट्शास्त्र पुं. षड्दर्शन।

षडक्ष *वि.* छः आँखोंवाला।

षडानन पुं. {सं.} कार्तिकेय।

षड्ज पुं. {सं.} संगीत के सात स्वरों में से पहला जिसका संकेत 'स' है।

षड्दर्शन पुं. {सं.} {*वि.* षड्दर्शनी} न्याय, मीमांसा (पूर्व), योग, सांख्य, वैशेषिक और वेदांत या उत्तर मीमांसा ये छह दर्शन।

षड्यंत्र पुं. {सं.} किसी के विरुद्ध गुप्त रूप से की जानेवाली कार्रवाई, भीतरी चाल; कपटपूर्ण आयोजन।

षड्रस पुं. {सं.} मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल ये छह प्रकार के रस या स्वाद।

षड्रिपु पुं. {सं.} मनुष्य के ये छह विकार-काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और अहंकार।

षड्वर्ग पुं. छः वस्तुओं का समूह।

षण्मुख पुं. षडानन, कार्तिकेय।

षष्ठ *वि.* {सं.} छठा।

षष्ठक *वि.* छठा।

षष्ठी *स्त्री.* {सं.} चांद्रमास के किसी पक्ष की छठी तिथि; दुर्गा; संबंध कारक (व्याकरण); शिशु के जन्म से छठे दिन का कृत्य; छठी।

षाड़व पुं. {सं.} वह राग जिसमें केवल छह स्वर लगते हों, कोई एक स्वर न लगता हो।

षाड़व-ओड़व पुं. {सं.} वह राग जो आरोही में षाड़व और अवरोही में ओड़व हो (संगीत)।

षाड़व-संपूर्ण पुं. {सं.} वह राग जो आरोही में षाड़व और अवरोही में संपूर्ण हो (संगीत)।

षाण्मातुर पुं. {सं.} कार्त्तिकेय।

षाण्मासिक *वि.* {सं.} छठे महीने पर होने या पड़नेवाला।

षादतर पुं. {सं.} संगीत में वह बनावटी सप्तक जो मंद्र से नीचे का होता है।

षुष्ठसु पुं. गर्भ-विमोचन।

षोड़श *वि.* {सं.} सोलह; पुं. सोलह की संख्या।

षोड़शगण पुं. पाँच ज्ञानेंद्रिय, पाँच कर्मेंद्रिय।

षोड़शदान पुं. श्राद्धादि के समय किये जानेवाले सोलह प्रकार के दान।

षोड़श मातृका *स्त्री.* 'मातृका', देवियों जो संख्या में सोलह मानी गई हैं–गौरी, पद्मा, शची, मेघा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, लक्ष्मी, शांति, पुष्टि, धृति, तुष्टि और आत्मदेवता।

षोड़श शृंगार पुं. {सं.} साहित्य में स्त्रियों का पूर्ण शृंगार जो सोलह अंगोंवाला कहा गया है।

षोड़श संस्कार पुं. {सं.} गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जात-कर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न-प्राशन, चूड़ा-कर्म, यज्ञोपवीत, केशांत, समावर्तन, विवाह आदि सोलह वैदिक संस्कार।

षोड़शांशु पुं. शुक्र ग्रह।

षोड़शिका *स्त्री.* प्राचीन परिमाण जो प्रायः सोलह माशे का होता था।

षोड़शी *वि. स्त्री.* {सं.} सोलहवाँ; सोलह वर्ष की (युवती); *स्त्री.* वह कृत्य जो किसी के मरने के दसवें या ग्यारहवें दिन होता है (हिन्दू)।

षोड़शोपचार पुं. {सं.} पूजन के ये 16 अंग-आवाहन, आसन, अर्घ्यपाद्य, आचमन, मधुपर्क, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, परिक्रमा और वंदना।

ष्ठीवन पुं. थूकना।

ष्ठीवी *स्त्री.* थूक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स

स नागरी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण-स्थान दन्त है, इसलिए यह दन्ती या दन्त्य 'स' कहलाता है। शब्दों के आरंभ में यह उपसर्ग के रूप लगकर ये अर्थ देता है—सहित या साथ; जैसे सशरीर, सजीव; एक ही में का, जैसे सगोत्र; पूर्वक, जैसे सप्रेम, सवेग; संगीतशास्त्र में यह षड्ज स्वर का और छन्दशास्त्र में 'सगण' के संक्षिप्त रूप का सूचक है।

सं *उप.* {सं. सम्} एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले शोभा, समानता, उत्कृष्टता, सततता आदि सूचित करने के लिए लगता है, जैसे, संयोग, संताप, संतुष्ट आदि।

सँइतना *स.* सैंतना।

सँउपना *स.* = सौंपना।

संकट *पुं.* {सं. सम + कृत} विपत्ति, आफत; दुख, कष्ट; जल या स्थल के दो बड़े विभागों को बीच से जोड़नेवाला तंग रास्ता या संकीर्ण अंग, जैसे गिरि संकट (पहाड़ का दर्रा), जल-संकट (जल-डमरुमध्य), स्थल-संकट (स्थल-डमरुमध्य); दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता, दर्रा।

संकटा *स्त्री.* {सं.} एक प्रसिद्ध देवी जो संकट दूर करनेवाली मानी जाती है; ज्योतिष में योगिनियों के विचार से एक दशा जो मनुष्य पर संकट लानेवाली मानी जाती है।

संकत *पुं.* = संकेत।

संकना *अ.* {सं. शंका} शंका या संदेह करना; डरना।

सँकर *स्त्री.* {सं. शृंखला} सिक्कड़, जंजीर; *पुं.* = संकर; *वि.* = सँकरा।

संकर *पुं.* {सं.} {*भाव.* संकरता} दो चीजों का आपस में मिलना या मिलकर एक हो जाना; वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न-भिन्न वर्णों या जातियों के पिता और माता से हुई हो, दोगला; साहित्य में दो या अधिक अलंकारों के इस प्रकार एक साथ और मिले-जुले रहने की अवस्था जिसमें या तो वे एक दूसरे से अलग न किए जा सकें या जिनका उस प्रसंग में स्वतंत्र रूप सिद्ध न हो सके। उदाहरणार्थ यदि किसी वर्णन में दो या अधिक अलंकार समान रूप से घटित होते हों तो उन्हें संकर कहा जाएगा। इसकी गणना स्वतंत्र अलंकार के रूप में होती है; *वि.* दो या अधिक के योग से बना हुआ, मिश्र, जैसे संकर जाति, संकर राग; *पुं.* 'शंकर'।

संकर-धरनी *स्त्री.* = पार्वती।

संकरता *स्त्री.* {सं.} संकर या मिले-जुले होने की दशा या भाव; दो भिन्न-भिन्न वर्गों के संयोग से उत्पन्न होने की दशा या भाव, दोगलापन।

संकर-समास *पुं.* {सं.} **दो ऐसे शब्दों का समास जिसमें से एक शब्द किसी एक भाषा का और दूसरा किसी दूसरी भाषा का हो, जैसे अछूतोद्धार में हिन्दी के 'अछूत' शब्द का संस्कृत के 'उद्धार' शब्द के समास हुआ है।**

संकर-धरनी *स्त्री.* पार्वती।

सँकरा *वि.* {सं. संकीर्ण} {*स्त्री.* सँकरी} पतला और कम चौड़ा, तंग; *स्त्री.* साँकल।

सँकराना *अ., स.* {हिं. सँकरा} सँकार या संकुचित होना या करना।

संकर्षण *पुं.* {सं.} {*वि.* संकृष्ट} खींचना; हल जोतना; कृष्ण के भाई बलराम जिनका आयुध हल था; कानून में अधिकार या उत्तरदायित्व आदि के विचार से किसी वस्तु या व्यक्ति के स्थान पर दूसरी वस्तु या व्यक्ति का रखा या नाम चढ़ाया जाना (सबरोगेशन)।

संकल *स्त्री.* सिकड़ी।

संकलक *पुं.* {सं.} संकलन करनेवाला।

संकलन *पुं.* {सं.} {*वि.* संकलित} संग्रह या जमा करना; संग्रह; गणित में योग नाम की क्रिया, जोड़; अनेक ग्रंथों या स्थानों से अच्छे-अच्छे विषय या बातें चुनने की क्रिया; इस प्रकार चुनकर तैयार किया हुआ ग्रंथ, संग्रह या और कोई चीज (कम्पाइलेशन)।

संकलनकर्ता (र्तृ) *पुं.* {सं.} संकलन करनेवाला।

संकलप *पुं.* = संकल्प।

संकलपना *स.* {सं. संकल्प} संकल्प का मंत्र पढ़कर धार्मिक कार्य या कोई वस्तु दान करने का निश्चय करना; *अ.* संकल्प या विचार करना; दृढ़ निश्चय करना।

संकला *स्त्री.* साँकल।

संकलित *वि.* {सं.} चुना हुआ; इकट्ठा किया हुआ, संगृहीत (कम्पाइल्ड); जो थोड़ा-थोड़ा करके बढ़ा या इकट्ठा होकर एक हो गया हो।

संकल्प *पुं.* {सं.} {*वि.* संकल्पित} कोई कार्य करने का दृढ़ विचार, पक्का इरादा; देव कार्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के समय विशिष्ट मंत्र पढ़ते हुए उसका दृढ़ निश्चय करना; इस प्रकार पढ़ा जानेवाला मंत्र; सभा-समिति आदि में किसी विषय में विचारपूर्वक किया हुआ पक्का निश्चय, मन्तव्य (रिजोल्यूशन)।

संकष्ट पुं. संकट।

संकल्पित *वि.* {सं.} जिसका संकल्प किया गया हो, संकल्प के रूप में लाया हुआ।

सँकाना *अ., स.* = डरना या डराना।

सँकार पुं. = संकेत।

संकारना *स.* {हिं. संकेत} संकेत करना।

संकाश *वि., अव्य.* सदृश समीप, निकट।

संकीर्ण *वि.* {सं.} {*भाव.* संकीर्णता} कम चौड़ा, सँकरा; सकुंचित, तंग; 'उदार' का विरुद्धार्थक, जैसे संकीर्ण विचार; क्षुद्र; छोटा; पुं. दो या अधिक रागों के मेल से बना हुआ राग, संकर राग।

संकीर्तन पुं. = कीर्तन, भगवद्-भजन गाकर करना।

संकु पुं. = शंकु।

संकुचन पुं. = संकोच, सिकुड़ना।

संकुचित *वि.* {सं.} जिसे संकोच हो, हिचकता हुआ; सिकुड़ा हुआ; तंग, सँकरा; जो औरों के अच्छे विचार ग्रहण न करे, उदार का विरुद्धार्थक।

संकुल *वि.* {सं.} {*वि.* संकुलित, *भाव.* संकुलता} संकीर्ण, तंग; भरा हुआ, परिपूर्ण; मिला हुआ, युक्त; पुं. युद्ध, लड़ाई; समूह, झुंड; भीड़; परस्पर विरोधी वाक्य।

संकुलता *स्त्री.* घनापन, परिपूर्णता।

संकुलित *वि.* {सं.} सिकोड़ा या सिकुड़ा हुआ; भरा हुआ; व्यास।

सँकेत पुं. {सं. संकष्ट} संकट या कठिनता की अवस्था।

संकेत पुं. {सं.} {*वि.* संकेतित, सांकेतिक} मन का भाव प्रकट करनेवाली कोई शारीरिक चेष्टा, इंगित, इशारा; साहित्य में शब्द का पहला और मुख्य अर्थ जो अभिधा शक्ति से निकलता है। 'बिंब' का विरुद्धार्थक; कोई ऐसी बँधी हुई बात या क्रिया जो किसी विशेष और बड़ी बात या कार्य की सूचक हो, चिन्ह (साइन); किसी घटना, कथा आदि का ऐसा संक्षिप्त उल्लेख या चर्चा जो उस सारी घटना, कथा या उसके प्रसंग की सूचक हो (एल्यूज़न); वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलते हैं; एकांत स्थान।

संकेत-ग्रह पुं. {सं.} कोई शब्द सुनकर, उसका अभिधा शक्ति से निकलनेवाला पहला और मुख्य अर्थ ग्रहण करना।

संकेतचित्र पुं. {सं.} वह चित्र जिसमें किसी वस्तु या व्यक्ति आदि के स्थान पर उसका कोई प्रतीक अंकित हो।

संकेतचिन्ह पुं. {सं.} वाक्य, पद, नाम आदि के सूचक वे चिन्ह जो संकेत के रूप में होते हैं, जैसे मध्य प्रदेश का म.प्र. (एब्रीवियेशन)।

संकेतलिपि *स्त्री.* {सं.} किसी लिपि के अक्षरों के छोटे और संक्षिप्त संकेत चिन्ह बनाकर तैयार की हुई वह लेख-प्रणाली जिससे कथन या भाषण बहुत जल्दी जाते हैं (शार्ट हैंड)।

संकेत-विघट्टना *स्त्री.* {सं.} साहित्य में वह अनशयाना नायिका जो अपने अभिसार का संकेत-स्थल नष्ट हो जाने के कारण दुखी होती और पछताती है।

संकेतस्थल पुं. {सं.} प्रेमियों के मिलने का पहले से नियत स्थान।

संकेतित *वि.* {सं.} जिसके संबंध में संकेत किया जाए, जैसे आपका संकेति भाव मैं समझ गया।

सँकेलना *स.* सकेलना।

उदा. प्रथम कुगति कर कपट सँकेला—**तुलसी**।

संकोच पुं. {सं.} सिकुड़ने की क्रिया या भाव; हल्की या थोड़ी लज्जा या शर्म; आगा-पीछा, हिचक; एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु के बहुत अधिक संकोच का वर्णन होता है।

संकोचन पुं. {सं.} संकुचित होने की क्रिया या भाव, सिकुड़ना।

संकोचना *क्रि. अ., स.* संकुचित करना, संकोच करना।

संकोचित पुं. {सं.} तलवार चलाने का एक प्रकार; *वि.* = संकुचित।

संकोची पुं. {सं. संकोचिन्} सिकुड़नेवाला; संकोच करनेवाला।

संकोपना *अ.* कोपना।

संक्रदन पुं. शुक्र, इंद्र।

संक्रम पुं. प्राटित, संक्रांति, सेतु, पुल।

संक्रमण पुं. {सं. संक्रमित} जाना या चलना; एक अवस्था से धीरे-धीरे बदलते हुए दूसरी अवस्था में पहुँचना (ट्रांजीशन); एक के हाथ या अधिकार से दूसरे के हाथ या अधिकार में जाना (पासिंग)।

संक्रमण-काल पुं. {सं.} वह समय जब कोई चीज पहले रूप से बदलकर दूसरे रूप में आ रही हो; संक्रांति।

संक्रमणकालीन *वि.* {सं.} संक्रमणकाल का।

संक्रमिक *वि.* {सं.} जिसका संक्रमण हुआ हो, जो अंतरित या हस्तांतरित किया गया हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्रमित *वि.* दूसरी राशि में सूर्य का प्रविष्ट होना, स्थापित।

संक्रांत *वि.* युक्त, व्याप्त, प्रतिबिंबित।

संक्रांति *स्त्री.* {सं.} सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाना; ठीक वह समय जब सूर्य एक राशि से निकलकर दूसरी राशि में प्रवेश करता है (हिन्दुओं का पर्व)।

संक्रामक *वि.* {सं.} रोग जो संसर्ग या छूत से फैलता हो (कंटेजस्)।

संक्रामण *पुं.* {सं.} {*वि.* संक्रामित} संक्रमण कराने की क्रिया या भाव; एक विभाग से दूसरे विभाग में या एक अधिकारी से दूसरे अधिकारी के पास विचार, कार्रवाई आदि के लिए भेजना, जैसे वाद या व्यवहार का एक न्यायालय से दूसरे न्यायालय में संक्रामण (ट्रांसफरेंस)।

संक्रामित *वि.* {सं.} जिसका संक्रामण हुआ हो (ट्रांस्फर्ड)।

संक्रामी *वि.* = संक्रामक।

संक्राम्य *वि.* {सं.} जिसका संक्रामण होने को हो या हो सकता हो (ट्रांसफरेबुल)।

संक्रोन *स्त्री.* = संक्रांति।

संक्षमण *पुं.* {सं.} किसी दोष या अपराध के लिए किसी को जान-बूझकर या उसके दोष या अपराध पर ध्यान न देते हुए क्षमा कर देना (कंडोन)।

संक्षय *पुं.* नाश, क्षय।

संक्षिप्त *वि.* {सं.} (लेख, कथन आदि) जो संक्षेप में लिखा या कहा गया हो, खुलासा (एब्रिज्ड)।

संक्षिप्त आलेख *पुं.* {सं.} बड़े लेख, वक्तव्य आदि का तैयार किया हुआ संक्षिप्त रूप (एब्रिवियेचर)।

संक्षिप्तीकरण *पुं.* {सं. संक्षिप्त + करण} किसी विषय, कथन आदि को संक्षिप्त करने की क्रिया या भाव।

संक्षेप *पुं.* {सं.} थोड़े में कोई बात कहना; बहुत-सी बातों को दिया जानेवाला छोटा रूप, सार।

संक्षेपक *वि.* {सं.} किसी को संक्षिप्त रूप देने या संक्षेप करनेवाला।

संक्षेपकर्ता (र्तृ) *पुं.* {सं.} संक्षेप करनेवाला।

संक्षेपण *पुं.* {सं.} संक्षिप्त रूप प्रस्तुत करना (एब्रिजमेंट)।

संक्षेपतः *क्रि. वि.* {सं.} संक्षेप में, थोड़े में।

संक्षोभ *पुं.* चंचलता, गर्व।

संक्षेपतया *अव्य.* संक्षेप में, सारांश-रूप में।

संख *पुं.* = शंख।

संखनारी *स्त्री.* एक प्रकार का छंद।

संखा *पुं.* चक्की में ऊपरी चाट में लगी हुई लकड़ी।

संखार *पुं.* एक प्रकार का पक्षी।

संखिया *पुं.* {सं. शृंगिका} एक प्रसिद्ध सफेद उपधातु जो बहुत उत्कट विष है।

संख्यक *वि.* {सं.} संख्यावाला, संख्या से युक्त, जैसे बहुसंख्यक, अल्पसंख्यक।

संख्या *स्त्री.* {सं.} एक दो, तीन आदि गिनती, तादाद; गिनती के विचार से किसी वस्तु का परिमाण बतानेवाला अंक, अदद; सामयिक पत्र का अंक। (नम्बर, सभी अर्थों के लिए)।

संख्यात *वि.* गिना हुआ।

संख्याता *पुं.* {सं. संख्या} वह जो संख्यान का काम करता या हिसाब-किताब आदि लिखता हो, लेखाध्यक्ष (एकाउंटेंट)।

संख्यान *पुं.* {सं.} आय-व्यय या लेन-देन का लिखा हुआ हिसाब (एकाउंटेंसी)।

संख्यात्मक *पुं.* = संख्याता।

संख्यान कर्म *पुं.* {सं.} आय-व्यय या लेन-देन का हिसाब लिखने का काम (एकाउंटेंसी)।

संख्येय *वि.* जो गिना जा सके।

संग[1] *पुं.* {सं. सङ्ग} {*वि.* संगी} मिलना, मिलन; साथ रहना, सहवास, सोहबत; सांसारिक विषयों में अनुराग, आसक्ति; *क्रि. वि.* साथ, सहित।

संग[2] *पुं.* {फा.} {*वि.* संगी, संगीन} पत्थर।

संगठन *पुं.* = संघटन।

संगठित *वि.* = संघटित।

संगत[1] *वि.* {सं.} जो किसी वर्ग, जाति आदि का होने के कारण उसके साथ रखा, बैठाया या लगाया जा सकता हो; (कम्पैटिबुल); पूर्वापर या आसपास की बातों के विचार से अथवा और किसी प्रकार से ठीक बैठने या मेल खानेवाला (कनसिस्टेंट या रेलेवेंट)।

संगत[2] *स्त्री.* {सं. संगति} संबंध, संसर्ग; किसी सत्संग या कीर्तन में सम्मिलित होनेवाले लोग; उदासी या निरमले साधुओं के रहने का मठ; संगीत में वाद्य आदि के द्वारा किसी कलाकार का किया जानेवाला साथ जैसे गवैये के साथ तबला, सारंगी या सितार बजाना उसकी संगत करना कहलाता है (अकम्पनीमेंट)।

संगतरा *पुं.* {फा. संगतर:} एक प्रकार का मीठा नींबू, संतरा।

संगतराश *पुं.* {फा.} {*भाव.* संगतराशी} पत्थर काटने या गढ़नेवाला कारीगर।

संगति *स्त्री.* {सं.} संगत होने की क्रिया या भाव। (कम्पैटिबिलिटि); मिलने की क्रिया, मेल, मिलाप; संग, साथ; संबंध; आगे-पीछे कहे

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानेवाले वाक्यों आदि का अर्थ के विचार से या कार्यों आदि का पूर्वापर के विचार से ठीक बैठना या मेल खाना (कॉसिस्टेंसी); सभा, समाज।

संगतिया पुं. {हिं. संगत} साथी; गवैये के साथ बाजा बजानेवाला।

संगती पुं. संगतिया।

संगदिल *वि.* {फा.} {*भाव.* संगदिली} कठोर हृदय।

संगम पुं. {सं.} मिलाप, सम्मेलन, मेल; दो नदियों के मिलने का स्थान; दो या अधिक वस्तुओं के एक जगह मिलने का भाव; वर्तमान काल की सब बातों का ज्ञान।

उदा. आगम-संगम निगम मति, ऐसे मंत्र विचारि–**केशव**।

संगमरमर पुं. {फा. संग + *अ.* मर्मर} एक प्रकार का बहुत चमकीला, मुलायम, बढ़िया, सफेद पत्थर।

संगमूसा पुं. {फा.} संगमरमर की तरह का काकला चिकना पत्थर।

संगर[1] पुं. {सं.} युद्ध, संग्राम; विपत्ति; नियम।

संगर[2] पुं. {फा.} सेना की रक्षा के लिए बनी हुई चारों ओर की खाई या धुस; मोरचा।

संगल पुं. एक प्रकार का रेशम।

संगसी *स्त्री.* सँड़सी।

संगरोध पुं. {सं.} लोगों से मिलने-जुलने पर लगी रोक।

सँगाती पुं. {हिं. संगी का *स्त्री.* रूप} संग या साथ रहनेवाली स्त्री, सहेली, सहचरी।

संगिनी *स्त्री.* भार्या, पत्नी।

संगी[1] *स्त्री.* {हिं. संग + ई (प्रत्य.)} {*स्त्री.* संगिनी, संगनी} संग रहनेवाला, साथी; मित्र, बंधु, दोस्त।

संगी[2] *स्त्री.* {देश.} एक प्रकार का रेशम का कपड़ा।

संगी[3] *वि.* {फा. संग = पत्थर} पत्थर का, संगीन।

संगीत पुं. {सं.} लय, ताल, स्वर आदि के नियमों के अनुसार किसी पद्य का आकर्षक और मनोरंजक रूप से होनेवाला वह उच्चारण, जिसके साथ कभी-कभी नृत्य और प्रायः वाद्य भी होता है (म्यूजिक)।

संगीतज्ञ पुं. {सं.} वह जो संगीत विद्या में निपुण हो, गवैया।

संगीतशास्त्र पुं. {सं.} वह शास्त्र जिसमें संगीत का विवेचन रहता है।

संगीतक *वि.* {सं.} संगीत-संबंधी।

संगीन पुं. {फा.} {*भाव.* संगीनी} वह बरछी जो बंदूक के सिरे पर लगी रहती है; *वि.* पत्थर का बना हुआ; मोटा या भारी; विकट, भीषण, जैसे संगीन जुर्म = बहुत बड़ा अपराध।

संगृहीत *वि.* {सं.} संग्रह या एकत्र किया हुआ, संकलित।

संगोतरा पुं. एक प्रकार की नारंगी, संतरा।

संगोपन पुं. {सं.} औरों से गुप्त रखना, प्रकट न होने देना, छिपाना।

संगोपित *वि.* छिपाया हुआ।

संगोष्ठी *स्त्री.* {सं.} किसी विषय के विशेषज्ञों की गोष्ठी।

संग्या *स्त्री.* = संज्ञा।

संग्रह पुं. {सं.} एकत्र या इकट्ठा करना, संचय; वह पुस्तक जिसमें अनेक विषयों की बातें इकट्ठी की गई हों; एक जगह इकट्ठी करके रखी हुई बहुत-सी चीजें (कलेक्शन); ग्रहण करना।

संग्रहणी *स्त्री.* {सं.} एक रोग जिसमें पतले दस्त आते हैं।

संग्रहणीय *वि.* संग्राह्य।

संग्रहना *स.* {सं. संग्रहण} संग्रह या इकट्ठा करना, जमा करना।

संग्रहाध्यक्ष पुं. {सं.} वह जो किसी संग्रह या संग्रहालय का अध्यक्ष या व्यवस्थापक हो (क्यूरेटर)।

संग्रहालय पुं. {सं.} वह स्थान जहाँ एक ही अथवा अनेक प्रकार की बहुत-सी चीजों का संग्रह हो (म्यूज़ियम)।

संग्रही *वि.* संग्राहक, संग्रह करनेवाला।

संग्रहीता पुं. संग्रह करनेवाला।

संग्राम पुं. {सं.} युद्ध, लड़ाई।

संग्राहक पुं. {सं.} संग्रह करनेवाला, संग्रहकर्ता।

संग्राह्य *वि.* {सं.} संग्रह करने योग्य।

संघ पुं. {सं.} समूह, समुदाय; संघटित समाज (सभा समिति आदि) (एसोसिएशन); प्राचीन बौद्ध भिक्षुओं आदि का धार्मिक समाज अथवा निवासस्थान; वह सभा या समाज जिसे कानून के अनुसार एक व्यक्ति के रूप में कार्य करने का अधिकार हो (कारपोरेशन); भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य; आजकल ऐसे राज्यों का समूह जो अपने-अपने क्षेत्र में बहुत-कुछ स्वतंत्र हों, पर कुछ विशिष्ट कार्यों के लिए किसी केंद्रीय शासन के अधीन हों (फेडरेशन)।

संघट पुं. {सं.} समूह, राशि, ढेर; युद्ध, लड़ाई; मुठभेड़; मिलन, संयोग।

उदा. सब संघट मिलि मंजु बध्यौ इमि समौ सुहायौ–रत्ना।

संघटन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघटन पुं. {सं.} मेल, संयोग; नायक और नायिका का मिलाप; रचना, बनावट; बिखरी हुई शक्तियों को एक में मिलाकर उन्हें किसी काम के लिए तैयार करना; इस उद्देश्य से बनाई हुई संस्था (आरगनाइज़ेशन)।

संघटित *वि.* {सं.} जिसका संघटन हुआ हो (ऑर्गनाइज्ड, कांस्टीट्युटेड)।

संघट्ट (न) पुं. {सं.} मिलन, मिलाप; कुछ वस्तुओं या व्यक्तियों का एक जगह आकर मिलना, जमघट; साहित्य में नायक और नायिका का वह मिलन जो दूती की सहायता से होता है; बनावट, रचना; संघटन।

संघति *स्त्री.* {सं.} दो अथवा अधिक दलों, संस्थाओं, राज्यों आदि का मिलकर इस प्रकार एक हो जाना कि एक दल, संस्था या राज्य के रूप में काम करें।

संघपति पुं. {सं.} किसी प्रकार के संघ का प्रधान या नायक, जैसे बौद्ध संघ या राष्ट्रसंघ का संघपति।

संघरना *स.* {सं. संहार} संहार या नाश करना।

संघर्ष (ण) पुं. {सं.} रगड़ खाना; प्रतियोगिता, होड़; एक चीज की दूसरी चीज के साथ होनेवाली रगड़ (फ्रिक्शन); दो दलों में होनेवाला वह विरोध जिसमें दोनों एक दूसरे को दबाने का प्रयत्न करते हैं (कानफ्लिक्ट); विकट और विपरीत परिस्थितियों से निकलकर आगे बढ़ने के लिए होनेवाला प्रयत्न या प्रयास, जैसे जीवन-संघर्ष (स्ट्रगल)।

संघर्षी *वि.* संघर्ष करनेवाला।

संघर्षरत *वि.* {सं.} संघर्ष में लगा हुआ।

संघस्थविर पुं. {सं.} संघाराम का प्रधान बौद्ध भिक्षु।

संघात पुं. {सं.} {*वि.* संघातिक} समूह, झुंड; कुछ लोगों का ऐसा समूह जो मिलकर कोई काम करने के लिए बना हो या कोई काम करता हो (बॉडी); रहने की जगह, निवासस्थान; संग, साथ; गहरी या भारी चोट; मार डालना, वध।

संघातक *वि.* प्राण लेनेवाला।

संघाती पुं. {सं. संघ} साथ रहनेवाला, साथी; मित्र, दोस्त।

संघात्मक साम्राज्य पुं. {सं.} प्राचीन भारतीय राजतंत्र में वह साम्राज्य जिसके अंतर्गत कई एकतंत्र राज्य होते थे।

संघार पुं. = संहार।

संघारना *स.* {सं. संहार} संहार या नाश करना; मार डालना।

संघाराम पुं. {सं.} प्राचीन काल के वे मठ जिनमें बौद्ध साधु या भिक्षु रहते थे।

संघी पुं. {सं. संघ} संघ का सदस्य।

संघीकरण पुं. {सं.} संघ बनाने का कार्य।

संच पुं. {सं. संचय} संचय, देखभाल।

संचक *वि.* {सं. संचय} संचय या इकट्ठा करनेवाला।

संचकर *वि.* {सं. संचय + कर} संचय या इकट्ठा करनेवाला; कंजूस।

संचना *स.* {सं. संचय} संचित या इकट्ठा करना, जमा करना।

उदा. सत गुरु कह्यौं, कहौं तोसौं हौं, राम रतन धन सँचिबौं–**सूर**।

संचय पुं. {सं.} {*वि.* संचयी} समूह, ढेर; एकत्र या संग्रह करना, जमा करना।

संचयी *वि.* संचय करनेवाला, कृपण।

संचरण पुं. = संचार, चलना।

संचरना *अ.* {सं. संचरण} चलना या घूमना-फिरना; फैलना; प्रचलित होना; *स.* संचारना।

संचरित *वि.* {सं.} जिसमें या जिसका संचार हुआ हो।

संचल पुं. साँभर नमक।

संचलन पुं. हिलना, डोलना, चलना।

संचान पुं. {सं.} बाज (पक्षी)।

संचार पुं. {सं.} {कर्ता, संचारक, *वि.* संचारित} गमन, चलना; फैलना, विशेषत: किसी के अंदर फैलना।

संचारक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* संचारिका, संचारिणी} संचार करने या फैलानेवाला।

संचारण पुं. प्रसारण, फैलाव।

संचारना *स.* {सं. संचारण} संचार करना, फैलाना; प्रचार करना; जन्म देना; (अस्त्र आदि) चलाना।

संचारिका *स्त्री.* {सं.} कुटनी, दूती; *वि.* संचार करनेवाली, संचारिणी।

संचारी पुं. {सं. संचारिन्} संगीत में स्थायी पहला पद, एक बार साधारण रूप से कह चुकने के बाद वही पद या उसका कुछ अंश अधिक ऊँचे स्वरों में तथा कुछ दूसरे प्रकार से कहने की क्रिया या भाव, उछाल; संचारी भाव; *वि.* {*स्त्री.* संचारिणी} संचरण या संचार करनेवाला।

संचारी भाव पुं. {सं.} साहित्य में मुख्य और स्थायी भावों से भिन्न वे गौण और अस्थायी भाव या मानसिक विकार जो कुछ विशेष अवसरों पर उत्पन्न होकर उनकी पुष्टि करते और अन्त में अपना काम कर चुकने पर नष्ट या विलीन हो जाते हैं; ये किसी एक ही भाव संबद्ध नहीं रहते, बल्कि अनेक भावों से संबद्ध होते हैं,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसीलिए इन्हें व्यभिचारी भी कहते हैं; साहित्यकारों ने इसके ये 33 भेद कहे हैं–अपस्मार, अमर्ष, अलसता, अवहित्था, अनसूया, आवेग, उग्रता, उन्माद, औत्युक्य, गर्व, ग्लानि, चपलता, चिंता, जड़ता, दैन्य, धृति, निद्रा, निर्वेद, मति, मद, मरण, मोह, लज्जा, वितर्क, विबोध, विषाद, व्याधि, शंका, श्रम, संत्रास, स्मृति, स्वप्न और हर्ष।

संचाल पुं. कंपन, चलना।

संचालक पुं. {सं.} {*स्त्री.* संचालिका, संचालिनी} चलाने या गति देनेवाला, परिचालक; कारखाने या कार्यालय आदि का काम चलानेवाला; अपने निरीक्षण में किसी बहुत बड़े कार्य या विभाग के सब काम कराने या चलानेवाला (डाइरेक्टर)।

संचालन पुं. {सं.} {*वि.* संचालित, कर्ता संचालक} गति देना, चलाना; ऐसा प्रबंध या व्यवस्था करना जिसमें कोई काम चलता या होता रहे (कंडक्शन)।

संचालनालय पुं. {सं.} संचालन-व्यवस्था का केंद्र।

संचालित *वि.* {सं.} जिसका संचालन किया गया हो या किया जा रहा हो, चलाया हुआ।

संचिका *स्त्री.* {सं. संचय} वह नत्थी जिसमें पत्र, कागज आदि इकट्ठे करके रखे जाते हैं (फाइल)।

संचित *वि.* {सं.} इकट्ठा या जमा किया हुआ; संचिका या नत्थी में लगाया हुआ (फाइल्ड)।

संचु पुं. {?} आनंद, प्रसन्नता; सुख, आराम।

संजन पुं. बंधन, संघटन।

संजम पुं. = संयम।

संजय पुं. {सं.} धृतराष्ट्र का एक मंत्री जो उन्हें महाभारत के युद्ध का विवरण सुनाता था।

संजल्प पुं. वार्तालाप, बातचीत।

संजात *वि.* {सं.} उत्पन्न, जैसे वातसंजात = हनुमान।

संजाफ *स्त्री.* {फा.} कपड़े पर टँकी हुई झालर, गोट, मगजी।

संजाफी पुं. {फा.} रंग के विचार से एक प्रकार का (आधा लाल और आधा हरा या सफेद) घोड़ा।

संजीव पुं. पुनः जीवित करनेवाला।

संजीवन *वि.* {सं.} जीवनशक्ति उत्पन्न करने या देनेवाला; पुं. बहुत अच्छी तरह जीवन बिताना; बहुत अच्छी तरह बिताया जानेवाला जीवन, सद्जीवन।

संजीवनी *वि.* {सं.} जीवन देनेवाला; *स्त्री.* मरे हुए मनुष्यों को जीवित करनेवाली एक कल्पित ओषधि या विद्या।

संजीवनी मंत्र पुं. {सं.} एक प्रकार का कल्पित मंत्र जिसके प्रयोग से मृत प्राणी का जी उठना माना जाता है।

संजीवनी विद्या *स्त्री.* {सं.} मरे हुए व्यक्ति को जिलाने की विद्या।

संजुक्त *वि.* = संयुक्त।

संजुग पुं. = संग्राम (युद्ध)।

संजुता *स्त्री.* एक प्रकार का छंद।

सँजोइ *क्रि. वि.* {सं. संयोग} साथ में।

सँजोइल *वि.* {हिं. सँजोना} अच्छी तरह सजा हुआ; जमा किया हुआ, एकत्र।

संजोऊ पुं. {हिं. सजाना} तैयारी, उपक्रम; सामग्री, सामान।

संजोग पुं. = संयोग।

संजोगी पुं. भार्या के साथ रहनेवाला पुरुष।

सँजोना¹ *स.* {सं. सज्जा} अलंकृत करना, सजाना।

सँजोना² *स.* {सं. संचय} इकट्ठा या जमा करना।

सँजोया पुं. {सं. सँजोना = सजाना} लड़ाई के समय पहना जानेवाला कवच।

सँजोवस *वि.* {हिं. सँजोना} सजा हुआ; सेना सहित; सावधान।

संजोह पुं. लकड़ी का वह चौखटा जिसको जुलाहे बुनते समय छत से लटका देते हैं।

संज्ञ *वि.* जो सब विषयों को अच्छी तरह जानता हो।

संज्ञक *वि.* {सं.} नामक।

संज्ञा *स्त्री.* {सं.} प्राणियों के शारीरिक अंगों की वह शक्ति जिसमें उन्हें बाह्य पदार्थों का ज्ञान और अपने शरीर या मन के व्यापारों की अनुभूति होती है, चेतनाशक्ति (सेन्स); बुद्धि; ज्ञान; नाम; व्याकरण में वह विकारी शब्द जो किसी वास्तविक या कल्पित वस्तु का बोधक होता है, जैसे राम, पर्वत, घोड़ा, दया आदि (नाउन)।

संज्ञात्मक *वि.* {सं.} संज्ञा के रूप में होनेवाला।

संज्ञापन पुं. {सं.} वह पत्र जिसमें भेजे जानेवाले माल का पूरा विवरण रहता है (एडवाइज़)।

संज्ञाभाव पुं. {सं.} बौद्ध शास्त्रों के अनुसार वह अवस्था जिसमें यह ज्ञान हो जाता है कि संज्ञा भी नहीं है और असंज्ञा भी नहीं है, और चित सदा समाहित रहता है, नैव संज्ञा।

संज्ञाहीन *वि.* {सं.} {*भाव.* संज्ञाहीनता} बेहोश, बेसुध।

सँझला¹ *वि.* {सं. संध्या} संध्या का।

सँझला² *वि.* {हिं. 'मँझला' का अनु.} मँझले से छोटा और छोटे से बड़ा, मँझले और छोटे के बीच का।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सँझवती *स्त्री.* {सं. संध्या + बत्ती} संध्या समय जलाया जानेवाला दीया; वह गीत जो ऐसे समय गाया जाता है।
संझवाती *स्त्री.* संध्या के समय जलाने का दीपक।
संझा *स्त्री.* = संध्या।
सँझोखा *पुं.* {सं. संध्या} संध्या का समय, सायंकाल।
संझिया *पुं.* संध्या का भोजन।
संठ *पुं.* चुप्पी, शठ, नीच।
संड-मुसंड *वि.* {हिं. संडा + मुसंड (अनु.)} हट्टा-कट्टा, मोटा-ताजा।
सँड़सना *अ.* {सं. संदंश} तंग जगह के बीच में पड़कर फँसना; संकट में पड़ना।
संड़सा *पुं.* {सं. संदंश} {*स्त्री.* अल्पा. सँड़सी} गरम या किसी चीज के पकड़ने का लोहे का एक प्रकार का चिमटा या औजार।
संड़ा *वि.* {सं. शंड} हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा।
संड़ास *स्त्री.* = संड़सी।
सँडास *पुं.* {?} एक प्रकार पाखाना जो जमीन में गहरा गड्ढा खोदकर बनाया जाता है, शौचकूप; पाखाना।
संत *पुं.* {सं. सत्} साधु, संन्यासी या महात्मा; ईश्वरभक्त।
संतजन *पुं.* {सं.} संतसमाज।
संतत *क्रि. वि.* {सं.} लगातार, निरंतर, बराबर; सदा, हमेशा।
संतति *स्त्री.* {सं.} बाल-बच्चे, संतान, औलाद।
संतति-निग्रह *पुं.* {सं.} बढ़ती हुई आबादी रोकने तथा उसके दुष्परिणामों से बचने के लिए इंद्रियनिग्रह अथवा कृत्रिम उपायों से संतान न उत्पन्न करने का सिद्धांत या प्रक्रिया।
संतप्त *वि.* {सं.} {*स्त्री.* संतप्ता} अच्छी तरह या खूब तपा हुआ; जिसके मन को बहुत दुख पहुँचा हो, परम दुखी।
संतरण *पुं.* {सं.} अच्छी तरह तैरना या तैरकर पार होना; *वि.* पार उतारने या तारनेवाला।
संतरा *पुं.* {पुर्त. संगतरा} एक प्रकार का मीठा नींबू।
संतरी *पुं.* {अं. संटरी} पहरेदार।
संतर्जन *पुं.* डराना, धमकाना, भगाना।
संतर्पक *वि.* तृप्त करनेवाला।
संतर्पण *पुं.* तृप्त करना।
संतर्पित *वि.* तृप्त किया हुआ।
संतान *स्त्री.* {सं.} {*वि.* संतानवान, संतानवती} किसी के लड़के-लड़कियाँ या बाल-बच्चे, संतति, औलाद।
संतानिका *स्त्री.* छुरी-चाकू का फल, मलाई, साढ़ी।
संताप *पुं.* {सं.} ताप, जलन, आँच; मानसिक कष्ट या दुख।
संतापन *पुं.* {सं.} संताप देने या संतप्त करने की क्रिया या भाव; कामदेव के पाँच बाणों में से एक जो विरही को संतप्त करता है।
संतापना *स.* {सं. संताप} संताप या कष्ट देना।
संतापित *वि.* = संतप्त।
संतापी *वि.* संताप देनेवाला।
संतुलन *पुं.* {सं.} आपेक्षिक तौल या भार बराबर और ठीक करना या होना; दो पक्षों का बल बराबर रखना या होना।
संतुलित *वि.* {सं.} बराबर, एक समान।
संतुष्ट *वि.* {सं.} {*भाव.* संतुष्टि} जिसका संतोष हो गया हो (सैटिस्फाइड); तृप्त।
संतुष्टीकरण *पुं.* {सं.} किसी को संतुष्ट करने की क्रिया या भाव (एपीजमेंट)।
संतोष *पुं.* {सं.} {*वि.* संतुष्ट} सदा प्रसन्न रहना और किसी की कामना न करना, सब्र; जी भर जाना, तृप्ति; किसी बात की चिंता, अपेक्षा या शिकायत न रह जाना, किसी बात से पूरा प्रसन्न होना (सैटिस्फैक्शन)।
संतोषजनक *वि.* {सं.} जिससे संतोष हो।
संतोषण *पुं.* संतोष, तृप्ति।
संतोषना *स.* {सं. संतोष} संतोष कराना, संतुष्ट करना; *अ.* संतुष्ट होना।
संतोषप्रद *वि.* {सं.} संतोष देनेवाला।
संतोषित *वि.* = संतुष्ट।
संतोषी *पुं.* {सं. संतोषिन्} वह जिसे संतोष हो।
संत्रस्त *वि.* {सं. त्रस्त} डरा हुआ, भयभीत; घबराया हुआ, व्याकुल; जिसे कष्ट पहुँचा हो, पीड़ित।
संत्रास *पुं.* {सं.} {*वि.* संत्रस्त} डर, भय; किसी प्रकार के अहित की आशंका से मन में उत्पन्न होनेवाली चिंता या भय जो साहित्य में एक संचारी भाव माना गया है।
संथा *स्त्री.* {सं. संहिता} एक बार में पढ़ा या पढ़ाया हुआ पाठ।
संदंश *पुं.* {सं.} सँड़सी; चिमटी; एक विशेष प्रकार की चिमटी जो चीर-फाड़ करते समय नसों आदि को पकड़ने के काम आती है।
संदन *पुं.* = स्यंदन (रथ)।
संदर्प *पुं.* अभिमान।
संदर्भ *पुं.* {सं.} वह परिस्थिति जिसमें कोई घटना घटी हो; किसी वाक्य में आए हुए किसी शब्द का अर्थ निर्धारित करनेवाले अन्य शब्द।
संदर्भग्रंथ *पुं.* {सं.} वह पुस्तक जिसमें किसी दूसरी पुस्तक में आई हुई किसी गूढ़ बात का स्पष्टीकरण हो (रेफरेंस बुक)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदर्शन पुं. {सं.} अच्छी तरह देखना।
संदल पुं. {फा.} चंदन।
संदली पुं. {फा. संदल} एक प्रकार का हलका पीला रंग; एक प्रकार का हाथी; एक प्रकार का घोड़ा; *वि.* संदल या चंदन का।
संदान पुं. शृंखला, रस्सी।
संदिग्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* संदिग्धता} जिसमें संदेह हो, संदेहपूर्ण (एम्बिगुवस); जिस पर संदेह हो (सस्पेक्टेड)।
संदिग्धता पुं. {सं.} संदिग्ध होने की अवस्था या भाव; साहित्य में एक प्रकार का दोष जो उस समय माना जाता है, जब किसी कथन का अर्थ स्पष्ट नहीं होता है और वह संदेह उत्पन्न करता है।
संदिग्धत्व पुं. = संदिग्धता।
संदिग्धमति *वि.* संदेह करनेवाला।
संदिग्धार्थ पुं. विषय जो विवादास्पद हो।
संदिष्ट पुं. वार्तालाप, समाचार; (*वि.*) कहा हुआ।
संदीपक *वि.* उद्दीपक, उद्दीपन करनेवाला।
संदीपन पुं. {*वि.* संदीप्त} उद्दीपन।
संदीपित *वि.* प्रज्वलित।
संदूक पुं. {*अ.*} {अल्पा. संदूकड़ी} लकड़ी या धातु की चौकोर पेटी, बक्स।
संदूकड़ी *स्त्री.* {*अ.* संदूक} छोटा संदूक।
संदेश पुं. {सं.} समाचार, हाल; किसी के उद्देश्य से कही या कहलाई हुई कोई महत्वपूर्ण बात (मेसेज); एक प्रकार की बंगला मिठाई।
सँदेसहर पुं. {संदेस + हर (प्रत्य.)} संदेश ले जानेवाला दूत।
सँदेसा पुं. {हिं. संदेश} जबानी कहलाया हुआ समाचार।
सँदेसी पुं. {हिं. सँदेसा} सँदेसा ले जानेवाला दूत।
संदेह पुं. {सं.} किसी विषय में यह धारणा कि यह ऐसा है या नहीं, निश्चय का अभाव, संशय, शंका, शक; साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी उपमेय के अनेक उपमान दिखाई देने पर भी या निश्चय नहीं किया जा सकता कि वास्तविक उपमान कौन-सा तथा उपमान पर ही उपमेय होने का संदेह होता है, जैसे यह मुख है या चंद्रमा? (प्राचीन कविताओं में 'किधौं या कीधौं' इसका सूचक शब्द होता है)।
संदेहात्मक *वि.* {सं.} जिसमें या जिसके कारण संदेह हो, संदिग्ध।
संदेहास्पद *वि.* {सं.} संदिग्ध।
संदोल *वि.* सुंदर {हिं.} डोला, कर्णफूल आभूषण।
संदोह पुं. {सं.} दूध दोहना; किसी वस्तु का समूचा मान या रूप; झुंड, समूह; ढेर, राशि।
संधना *अ.* {सं. संधि} संयुक्त होना।
संधनि *स्त्री.* प्रचार।
संधा *स्त्री.* स्थिति, प्रतिज्ञा, मिलन।
संधान पुं. {सं.} निशाना लगाने के लिए कमान पर तीर ठीक तरह से लगाना, निशाना बैठाना; ढूँढ़ने या पता लगाने का काम; युक्त करना, मिलाना; लेखे, खाते आदि में लेन-देन का हिसाब ठीक या पूरा करना, जमा-खर्च करना (एडजस्टमेंट); कोई ऐसा काम ठीक तरह से और उपयुक्त रूप में करना, जो सहज में ठीक तरह से न होता हो, मेल मिलाना या बैठाना (ऐडजस्टमेंट); दो चीजों का मिलना, सन्धि; किसी का किसी उद्देश्य से किसी ओर मिलना (एलायंस); किसी चीज को सड़ाकर उसमें खमीर उठाना (फर्मेंटेशन); काँजी; अचार।
संधानना *स.* {सं. संधान} निशान लगाना; जोड़ना।
संधाना पुं. अचार।
संधानिका *स्त्री.* आम का अचार।
संधानी *स्त्री.* मदिरा बनाने का स्थान, बंधन।
संधारण पुं. {सं.} अच्छी तरह धारण करना।
संधि *स्त्री.* {सं.} मेल, संयोग; दो खंडों या पदार्थों के मिलने की जगह, जोड़; राज्यों आदि में होनेवाला यह निश्चय कि अब हम आपस में नहीं लड़ेंगे और मित्रतापूर्वक रहेंगे, अथवा अमुक क्षेत्र में अमुक प्रकार से व्यवहार करेंगे, सुलह (ट्रीटी); व्याकरण में दो शब्दों के साथ-साथ आने पर उनके मिलने के कारण उनके कुछ अक्षरों में विशेष प्रकार का होनेवाला, परिवर्तन; चोरी करने के लिए दीवार में किया हुआ छेद, सेंध; एक अवस्था की समाप्ति और दूसरी अवस्था के आरंभ का समय या स्थिति; दो चीजों के बीच की थोड़ी-सी खाली जगह, अवकाश; भेद, रहस्य।
संधिचौर पुं. सेंध लगाकर चोरी करनेवाला।
संधिनी *स्त्री.* गाभिन गाय।
संधिबंधन पुं. शिरा, नस।
संधिविच्छेद पुं. {सं.} आपस की संधि या समझौता तोड़ना या टूटना; व्याकरण में, किसी पद को संधि के स्थान से तोड़कर उसके शब्द अलग-अलग करना, जैसे 'मतैक्य' का संधि विच्छेद होगा मत + ऐक्य।
संध्या *स्त्री.* {सं.} वह समय जब दिन का अन्त और रात का आरंभ होने को होता है, सायंकाल, शाम; आर्यों की एक प्रसिद्ध उपासना जो सबेरे, दोपहर और संध्या को होती है।
संनिवेश पुं. = सन्निवेश।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संन्यस्त *वि.* {सं. संन्यास} जिसमें संन्यास ले रखा हो; पूरी तरह से किसी काम में लगा हुआ, निरत।

संन्यास *पुं.* {सं.} हिंदुओं के चार आश्रमों में से अंतिम, जिसमें त्यागी और विरक्त होकर निष्काम भाव से किए जाते हैं; किसी निश्चित क्षेत्र या सीमा के अंदर ही रहने अथवा कोई काम करने या उस क्षेत्र या सीमा के बाहर न निकलने की प्रतिज्ञा या व्रत, जैसे गृहसंन्यास, क्षेत्रसंन्यास; अपने विधिक या कानूनी अधिकारों का स्वेच्छापूर्वक त्याग (सिविल सुइसाइड)।

संन्यासी *पुं.* {सं. संन्यासिन्} संन्यास आश्रम में रहनेवाला।

संपजना *अ.* {सं. सम + उपजना} उपजना, पैदा होना, उगना; प्रकाशित होना।

संपत (ती) *स्त्री.* = संपत्ति।

संपत्ति *स्त्री.* {सं.} धन-दौलत और जायदाद आदि जो किसी के अधिकार में हो और खरीदी और बेची जा सकती हो, जायदाद (प्रोपर्टी, एफेक्ट्स); ऐश्वर्य, वैभव।

संपत्ति-कर *पुं.* {सं.} वह कर जो किसी पर उसकी संपत्ति या जायदाद के विचार से लगाया जाता है (प्रापर्टी टैक्स)।

संपद् *स्त्री.* {सं.} वैभव, ऐश्वर्य; सौभाग्य; व्यापारिक मण्डली या संस्था की व्यापार में लगी हुई पूँजी; किसी व्यक्ति का वह धन या पूँजी जो उसने किसी व्यापारिक हो संस्था में अपने हिस्से के रूप में लगाई; इस प्रकार लगी हुई पूँजी का सूचक प्रमाणपत्र (स्टाक, अंतिम तीनों अर्थों के लिए)।

संपदा *स्त्री.* {सं. संपद्} धन, दौलत, संपत्ति (एस्टेट); ऐश्वर्य, वैभव।

संपन्न *वि.* {सं.} {*भाव.* संपन्नता} पूरा किया हुआ, सिद्ध; सहित, युक्त, जैसे गुणसम्पन्न; धनी दौलतमन्द।

संपरीक्षक *पुं.* {सं.} संपरीक्षण करनेवाला (स्क्रूटिनाइजर)।

संपरीक्षण *पुं.* {सं.} किसी कार्य, तथ्य, लेख आदि के संबंध में अच्छी तरह देखकर यह जाँचना कि ठीक और नियमानुसार है या नहीं (स्क्रूटिनी)।

संपरीक्षित *वि.* {सं.} जिसकी संपरीक्षा हो चुकी हो।

संपर्क *पुं.* {सं.} {*वि.* संपृक्त} लगाव, संबंध, वास्ता; स्पर्श।

संपर्कजनिक *वि.* {सं.} = संपर्कजन्य।

संपर्कजन्य *वि.* {सं.} संपर्क से उत्पन्न होनेवाला।

संपर्कित *वि.* संपृक्त।

संपाक *पुं.* अच्छी तरह पचना।

संपाचन *पुं.* अच्छी तरह पचना।

संपाट *पुं.* किसी त्रिभुज की बढ़ाई हुई भुजा पर गिरनेवाला लंब।

संपाठ्य *वि.* अच्छी तरह पढ़ने योग्य।

संपात *पुं.* {सं.} संगम, समागम; वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरी से मिलती या उसे काटती हुई बढ़ती है।

संपाति *पुं.* जटायु के बड़े भाई का नाम।

संपादक *पुं.* {सं.} {*भाव.* संपादकत्व} कार्य संपन्न या पूरा करनेवाला; किसी समाचार-पत्र या पुस्तक का क्रम आदि लगाकर और उसे सब प्रकार से ठीक करके प्रकाशित करवानेवाला (एडिटर)।

संपादकीय *वि.* {सं.} सम्पादक का; *पुं.* सामयिक पत्रों में वह अंश जो स्वयं संपादक का लिखा हो (एडिटोरियल)।

संपादन *पुं.* {सं.} {*वि.* संपादित, संपाद्य} काम पूरा और ठीक तरह से करना, पालना (डिस्चार्ज); पुस्तक या सामयिक पत्र आदि का क्रम, पाठ आदि ठीक करके उसे प्रकाशित करवाना (एडिटिंग)।

संपादनीय *वि.* संपादन करने योग्य।

संपाद्य *वि.* {सं.} जिसका संपादन करना हो या होना हो; *पुं.* वह बात या सिद्धांत जिसे विचारपूर्वक ठीक सिद्ध करने की आवश्यकता हो (प्राब्लम)।

संपादी *वि.* पूरा करनेवाला।

संपुट *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* अल्पा. संपुटी} पात्र के आकार की कोई वस्तु; दोना; डिब्बा; अंजली; कपड़े और गीली मिट्टी से लपेटकर बंद किया हुआ वह बरतन जिसमें कोई रस या ओषधि का भस्म तैयार करते हैं (वैद्यक)।

संपुटी *स्त्री.* {सं. संपुट} कटोरी, प्याली।

संपूजित *वि.* {सं.} अधिक सम्मान के योग्य।

संपूर्ण *वि.* {सं.} {*भाव.* संपूर्णता} खूब भरा हुआ; सब, कुल; समाप्त, खतम; *पुं.* स्वरों की संख्या के विचार से राग-रागिनियों की एक जाति या प्रकार; वह राग जिसमें सातों स्वर लगते हों।

संपूर्ण-ओड़व *पुं.* {सं.} वह राग जो आरोही में संपूर्ण और अवरोही में ओड़व हो (संगीत)।

संपूर्णतः *क्रि. वि.* {सं.} पूरी तरह से, पूर्ण रूप से।

संपूर्णतया *क्रि. वि.* = संपूर्णतः।

संपूर्ण-षाड़व *पुं.* {सं.} वह राग जो आरोही में संपूर्ण और अवरोही में षाड़व हो (संगीत)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपृक्त *वि.* {सं.} जिसका या जिससे संपर्क हो, संबद्ध।

सँपेरा *पुं.* {हिं. साँप} {*स्त्री.* सँपेरिन} साँप पालनेवाला, मदारी।

संपै *स्त्री.* = संपत्ति।

उदा. सँपै देखि न हरखिये, विपति देखि न रोय–**कबीर**।

संपोला *पुं.* {सं. सर्प-पोतलक, या हिं. साँप + ओला (प्रत्य.)} साँप का बहुत छोटा बच्चा।

संपोलिया *पुं.* = सँपोला।

संपोषक *वि.* {सं.} अच्छी तरह पालने-पोसनेवाला।

संपोषण *पुं.* {सं.} {*वि.* संपोषित, संपुष्ट} भली-भाँति पोषण या पालन करना।

संपोषित *वि.* {सं.} अच्छी तरह पाला-पोसा हुआ।

संप्रकाशक *वि.* अच्छी तरह प्रकाशित करनेवाला।

संप्रज्ञात *पुं.* {सं.} योग में समाधि की वह अवस्था जिसमें आत्मा को अपने स्वरूप का पूरा-पूरा ज्ञान तो नहीं होता, पर योगी ऐसे ज्ञान के बहुत-कुछ पास तक पहुँच जाता है।

संप्रति *क्रि. वि.* {सं.} इस समय, अभी।

संप्रतीति *स्त्री.* प्रसिद्धि।

संप्रद *वि.* {सं.} देनेवाला; वैभव, सुख आदि देनेवाला।

संप्रदान *पुं.* {सं.} दान देने की क्रिया या भाव; किसी की वस्तु उसे देना या उसके पास तक पहुँचाना (डेलिवरी) व्याकरण में वह कारक जिसमें शब्द 'देना' क्रिया का लक्ष्य होता है, इसका चिह्न 'को' है।

संप्रदाय *पुं.* {सं.} {*वि.* सांप्रदायिक} कोई विशेष धार्मिक मत (सेक्ट); किसी मत के अनुयायियों की मंडली; किसी विषय या सिद्धांत के संबंध में एक ही विचार या मत रखनेवाले लोगों का वर्ग, शाखा (स्कूल)।

संप्रदायवाद *पुं.* {सं.} {*वि.* संप्रदायवादी} अन्य लोगों की अपेक्षा किसी विशिष्ट संप्रदाय के लोगों का हित चाहना।

संप्रदायवादी *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* संप्रदायवादिनी} वह जो अपने संप्रदाय को सबसे अच्छा और दूसरे संप्रदायों को हेय या तुच्छ समझता और उनसे घृणा या द्वेष करता हो (कम्यूनलिस्ट); *वि.* संप्रदायवाद-संबंधी।

संप्रमाद *पुं.* मोह, भ्रांति।

संप्रवृत्त *वि.* आरंभ किया हुआ।

संप्रहर्ष *पुं.* अत्यधिक प्रसन्नता।

संप्राप्त *वि.* {सं.} {*भाव.* संप्राप्ति} आया या पहुँचा हुआ, उपस्थित; पाया हुआ, प्राप्त; जो हुआ हो, घटित।

संप्रिय *वि.* अधिक प्यारा।

संप्राप्ति *स्त्री.* {सं.} संप्राप्त होने की अवस्था या भाव।

संप्रेषण *पुं.* {सं.} एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजना।

संप्रेषित *वि.* {सं.} जो भेजा गया हो।

संबंध *पुं.* {सं.} एक साथ बँधना, जुड़ना या मिलना; लगाव, संपर्क, वास्ता (कनेक्शन); एक ही कुल में जन्म लेने अथवा दूसरे कुल में विवाह करने के कारण व्यक्तियों में होनेवाला पारस्परिक लगाव, नाता, रिश्ता (रिलेशन, रिलेशनशिप); विवाह अथवा उसका निश्चय; संबंधकारक; दो वस्तुओं में किसी प्रकार का लगाव या संपर्क बतलानेवाला तत्व, लगाव।

संबंधकारक *पुं.* {सं.} व्याकरण में वह कारक जिसमें एक शब्द का दूसरे शब्द के साथ संबंध कारक है (पजेसिव केस)।

संबंधवान, संबंधवान् *पुं.* {सं.} व्याकरण में संबंधकारक में रहनेवाला वह शब्द जिसका संबंध दूसरे शब्द के साथ दिखाया जाता है, जैसे 'राम का घर' में 'राम' संबंधवान् है।

संबंधातिशयोक्ति *स्त्री.* {सं.} अतिशयोक्ति अलंकार का वह भेद जिसमें किसी के साथ कोई संबंध न हेने पर भी संबंध किया जाता है।

संबंधित *वि.* संबद्ध, बँधा हुआ।

संबंधी *वि.* {सं. संबंधिन्} जिसका या जिसके साथ संबंध या लगाव हो; विषयक, किसी विषय से लगा हुआ; *पुं.* वह जिससे कुछ संबंध या नाता हो, रिश्तेदार (रिलेटिव)।

संबद्ध *वि.* {सं.} जिससे संबंध हो या हुआ हो; बँधा या जुड़ा हुआ; जिसका किसी के साथ संबंध लगा हो, संबंधयुक्त (कनेक्टेड)।

संबद्धता *स्त्री.* {सं.} संबद्ध होने की अवस्था या भाव, लगाव।

संबंधन *पुं.* {सं.} संबंध जोड़ना।

संबल *पुं.* {सं.} रास्ते का भोजन; वह सामग्री, साधन आदि जिनके भरोसे कोई काम किया जाए (रिर्सोसेज) सहारा।

संबाध *पुं.* संकट, बाधा, अड़चन; *वि.* संकुल, पूर्ण।

संबाधक *वि.* बाधा पहुँचानेवाला।

संबुद्ध *वि.* {सं.} जिसे बोध या ज्ञान हो गया हो; जिसका बोध या ज्ञान हुआ हो; *पुं.* गौतमबुद्ध, जैनों के जिनदेव।

संबुल *पुं.* {*अ.* सुंबुल} बालछड़, जटामासी (पौधा)।

संबूर *पुं.* समूर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबोधन *पुं.* {सं.} {*वि.* संबोधित, संबोध्य} जगाना; पुकारना; किसी के उद्देश्य से कोई बात कहना (एड्रेस); समझाना-बुझाना; सांत्वना या ढारस देना; व्याकरण में वह कारक जिससे शब्द का किसी को पुकारने या उससे कुछ कहने के लिए प्रयोग होता है, जैसे हे राम! (बोकेटिव केस)।

संबोधना *स.* {सं. संबोधन} संबोधन करना; समझाना-बुझाना।

संबोधित *पुं.* संभार।

संभक्ष *पुं.* साथ-साथ भोजन करना।

संभय *पुं.* अधिक डर।

संभर *पुं.* संभार।

संभरण *पुं.* {सं.} {*वि.* संभरित} भरण-पोषण आदि की व्यवस्था या सामग्री (प्रॉविजन)।

संभरण-निधि *स्त्री.* {सं.} वह निधि जिसमें किसी, विशेषत: कार्यालय में काम करनेवाले कर्मचारियों की वृद्धावस्था आदि के समय भरण-पोषण आदि के लिए धन एकत्र किया जाए (प्रॉविडेंट फंड)।

संभल *पुं.* घटक, दलाल।

सँभरना *अ.* = सँभलना।

सँभलना *अ.* {हिं. भालना = देखना} किसी बोझ आदि का रोका या किसी कर्तव्य आदि का निर्वाह किया जा सकना; किसी आधार या सहारे पर रुका रहना; होशियार या सावधान होना; चोट या हानि से बचाव करना; रोग से छूटकर स्वस्थता प्राप्त करना, चंगा होना।

संभव *पुं.* {सं. संभव} उत्पत्ति; *वि.* उत्पन्न (यौ. के अंत में, जैसे कर्मसंभव = कर्म से उत्पन्न); जो हो सकता हो, हो सकने के योग्य, मुमकिन (पॉसिबुल)।

संभवत: (तया) *क्रि. वि.* {सं.} हो सकता है कि, संभव या मुमकिन है कि।

संभवना *स.* {सं. संभव} उत्पन्न करना; *अ.* उत्पन्न होना; संभव होना।

संभवनीय *वि.* {सं.} संभव, मुमकिन।

सँभार *पुं.* {हिं. सँभालना} सँभाल।

पद सार-सँभार = पालन-पोषण और देखभाल।

संभार *पुं.* {सं.} संचय, एकत्र करना; वह स्थान जहाँ एक ही तरह की बहुत-सी वस्तुएँ इकट्ठी करके अथवा बिक्री के लिए रखी हों, भंडार (स्टोर); तैयारी, साज-सामान; सजावट; धन-संपत्ति; पालन-पोषण; देखरेख, रखवाली; प्रबंध, इंतजाम; होश-हवास, चेतना।

सँभारना[1] *स.* = सँभालना।

सँभारना[2] *स.* {सं. स्मरण} स्मरण करना, याद करना; सेवन करना।

सँभाल *स्त्री.* {सं. संभार} रक्षा, हिफाजत; पोषण या देखरेख आदि का भार; तन-बदन की सुध।

सँभालना *स.* {हिं. 'सँभालना' का *स.*} भार ऊपर लेना; रोककर वश में रखना; गिरने न देना; रक्षा करना; बुरी दशा में जाने से बचाना; पालन-पोषण या देखरेख करना; ठीक तरह से किसी कार्य का निर्वाह करना, चलाना; यह देखना कि कोई चीज ठीक और पूरी है या नहीं, सहेजना।

सँभाला *पुं.* {हिं. सँभाल} मरने के पहले कुछ चेतनता सी आना।

मुहा. सँभाला लेना = रोगी का मरने के पहले थोड़ा सँभल या ठीक हो जाना।

संभावन *पुं.* पूजा, सत्कार, आदर, कल्पना, मान।

संभावना *स्त्री.* {सं. संभावना} हो सकना, मुमकिन होना (पॉसिबिलिटी, प्रॉबेबिलिटी); साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी एक बात के होने पर दूसरी के आश्रित होने का वर्णन होता है, जैसे यदि आप आ जाएँगे, तो उत्सव की शोभा बढ़ जाएगी; कार्य, क्रिया।

संभावनीय *वि.* संभावन के योग्य।

संभावित[1] *वि.* {सं.} जिसके होने की संभावना हो, जो कभी हो सकता हो, मुमकिन (प्रॉबेबुल)।

संभावित[2] *वि.* {सं. सम्मानित?} अपने सम्मान का ध्यान रखनेवाला, स्वाभिमानी।

संभाव्य *वि.* {सं. संभाव्य} जिसकी संभावना हो, जो बहुत करके हो सकता हो, संभावित (प्रॉबेबुल)।

संभाव्यत: *क्रि. वि.* {सं.} हो सकने के विचार से जिसकी आशा की जा सकती हो, बहुत करके (लाइकली)।

संभाषण *पुं.* {सं.} {*वि.* संभाषित, संभाष्य} कथोपकथन, बातचीत।

संभाषणीय *वि.* संभाषण करने योग्य।

संभाष्य *वि.* {सं. संभाष्य} जिससे बातचीत करना उचित या योग्य हो, बातचीत करने योग्य।

संभीत *वि.* {सं.} डरा हुआ, भयभीत।

संभूत *वि.* {सं. संभूत} {*भाव.* संभूति} एक साथ उत्पन्न होनेवाले; उत्पन्न, पैदा; युक्त, सहित।

संभूति *स्त्री.* क्षमता, शक्ति, उत्पत्ति।

संभूय *क्रि. वि.* {सं.} साझे में।

संभेद *पुं.* {सं.} आपस में मिले हुए व्यक्तियों, पदार्थों, तत्वों आदि में होनेवाला वियोग, अलगाव या भेद (क्लीवेज)।

संभोग *पुं.* {सं.} अच्छी तरह होनेवाला भोग, उपयोग या व्यवहार; स्त्री के साथ होनेवाला समागम या इंद्रियसुख का भोग, कामवासना की

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृप्ति, रतिक्रीड़ा, मैथुन; प्रेमी और प्रेमिका का संयोग या मिलाप; भोगविलास की वस्तुएँ या सामग्री।

संभोगी *वि., पुं.* संभोग करनेवाला।

संभोजन *पुं.* एक साथ बैठकर भोजन करना।

संभ्रम *पुं.* {सं. संभ्रम} दौड़-धूप, प्रयत्न; घबराहट, व्याकुलता; मान, गौरव।

संभ्रांत *वि.* {सं. संभ्रान्त} भ्रम में पड़ा या घबराया हुआ; सम्मानित, प्रतिष्ठित।

संभ्राजना *अ.* {सं. संभ्राज्} अच्छी तरह सुशोभित होना।

संमत *वि.* सम्मत।

संम्राज *पुं.* = साम्राज्य।

संयत *वि.* {सं.} बँधा हुआ, बद्ध; किसी प्रकार की सीमा या मर्यादा के अंदर रहने और उसका उल्लंघन न करनेवाला, अथवा उस सीमा के अंदर रोककर रखा हुआ, औचित्य की सीमा के अंदर रहनेवाला, मर्यादित (मॉडरेट); किसी के नियंत्रण या दबाव में पड़ा हुआ, दमन किया हुआ; क्रमबद्ध, व्यवस्थित; वासनाओं और मन को वश में रखनेवाला, निग्रही।

संयति *स्त्री.* निरोध, वश में रखना।

संयम *पुं.* {सं.} {*वि.* संयमी, संयमित, संयत} रोक, दाब; बंधन; मन की वासनाओं को अनुचित या बुरे मार्गों में जाने से रोकना, इंद्रियनिग्रह; हानिकारक या बुरी बातों या कार्यों से दूर रहना या बचना, परहेज; औचित्य की सीमा के अंदर होना या रहना; बाँधना या बंद करना; योग में ध्यान, धारणा और समाधि का साधन।

संयमन *पुं.* {सं.} संयम करने की क्रिया या भाव, रोकना (मन आदि)।

संयमनी *स्त्री.* यम की नगरी।

संयमित *वि.* {सं.} जिस पर किसी प्रकार का संयम हो; संयम के द्वारा रोका हुआ।

संयमी *वि.* {सं. संयमिन्} मन और वासनाओं को वश में रखनेवाला, संयमपूर्वक रहनेवाला, आत्मनिग्रही; पथ्य से रहनेवाला।

संयान *पुं.* यात्रा, प्रस्थान।

संयुक्त *वि.* {सं.} {*भाव.* संयुक्तता} जुड़ा, सटा या लगा हुआ, संबद्ध; (एनेक्स्ड); एक में मिले या मिलाए हुए (कम्पाउंड); साथ रहकर या मिलकर बहुत-कुछ समान भाव से काम करनेवाला, जैसे संयुक्त संपादक, संयुक्त खाता।

संयुक्ता *स्त्री.* आवर्तकी लता, छंद।

संयुक्तक *पुं.* {सं.} वह पत्र या और कोई कागज जो किसी दूसरे पत्र आदि के साथ लगा दिया गया हो (एनेक्शर)।

संयुक्त कुटुंब *पुं.* संयुक्त परिवार।

संयुक्त परिवार *पुं.* {सं.} वह कुटुम्ब या परिवार जिसमें भाई-भतीजे आदि सब मिलकर एक साथ रहते हों (ज्वाइंट फैमिली)।

संयुक्त वाक्य *पुं.* {सं.} व्याकरण में तीन प्रकार के वाक्यों में से एक जिसमें दो या अधिक उपवाक्य होते हैं (कम्पाउंड सेंटेंस)।

संयुत *वि.* {सं.} जुड़ा या लगा हुआ; संयुक्त।

संयोग *पुं.* {सं.} मेल, मिलान; लगाव, संबंध; दो या कई बातों का अचानक एक साथ होना, इत्तफाक; पुरुष और स्त्री या प्रेमी और प्रेमिका का इकट्ठा रहना, 'वियोग' का विपर्याय।

संयोगजन्य *वि.* {सं.} संयोग से घटित होनेवाला।

संयोगवश, संयोगवशात् *क्रि. वि.* {सं.} संयोग के कारण।

संयोग शृंगार *पुं.* {सं.} साहित्य में शृंगार रस का वह विभाग जिसमें प्रेमियों के संयोग या मिलन से सबंध रखनेवाली बातों का उल्लेख होता है, 'वियोग शृंगार' का विरुद्धार्थक।

संयोगित *वि.* संयोग किया हुआ।

संयोगी *पुं.* {सं. संयोगिन्} {*स्त्री.* संयोगिनी} वह जिसकी प्रिया या प्रेमिका उसके पास हो, 'वियोगी' का उलटा; *पुं.* = संयोजक।

संयोजक *पुं.* {सं.} जोड़ने या मिलानेवाला; व्याकरण में वह शब्द जो दो शब्दों या वाक्यों के बीच में उन्हें जोड़ने या मिलाने के लिए आता है; सभा-समिति आदि का वह मुख्य सदस्य जो उसकी बैठकें बुलाने और उसके अध्यक्ष के रूप में उसका काम चलाने के लिए नियुक्त होता है (कंवीनर)।

संयोजन *पुं.* {सं.} {*वि.* संयोगी, संयोजनीय, संयोज्य, संयोजित} जोड़ने या मिलाने की क्रिया; चित्र अंकित करने में प्रभाव या रमणीयता लाने के लिए आकृतियों को ठीक जगह पर बैठाना, जुहाना; किसी बड़े राज्य का किसी छोटे राज्य या प्रान्त को बलपूर्वक अपने में मिला लेना (एनेक्सेशन)।

संयोजना *स्त्री.* प्रबंध, सहवास, प्रसंग।

संयोजित *वि.* मिलाया हुआ।

संयोज्य *वि.* {सं.} जिसका संयोजन हो सकता हो या होने को हो, जो मिलाया जा सके या मिलाया जाने को हो।

संयोज्य क्रिया *स्त्री.* {सं.} व्याकरण में वह क्रिया जो किसी के साथ, उसके अर्थ में कोई विशेषता लाने के लिए लगाई जाती है, जैसे उठ बैठना, चल पड़ना और मर जाना में 'बैठना', 'पड़ना' और 'जाना' संयोज्य क्रियाएँ हैं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोना *स.* सजाना।

संरक्त *वि.* अनुरक्त, आसक्त।

संरक्षक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* संरक्षिका} देखरेख या रक्षा करनेवाला; पालन-पोषण करने या आश्रय में रखनेवाला (पेट्रन); अभिभावक।

संरक्षण *पुं.* {सं.} {*वि.* संरक्षी, संरक्षित, संरक्ष्य, संरक्षणीय} हानि, विपत्ति आदि से बचाना, हिफाजत; अपने आश्रय में रखकर पालन-पोषण या संवर्द्धन करना; देख-रेख, निगरानी; अधिकार, कब्जा; दूसरों की प्रतियोगिता से अपने व्यापार आदि की रक्षा (प्रोटेक्शन)।

संरक्षण-कर *पुं.* संरक्षण-शुल्क।

संरक्षण-शुल्क *पुं.* {सं.} वह कर जो अपने देश में बननेवाली किसी वस्तु को प्रतियोगिता के कारण नष्ट होने से बचाने के लिए विदेशों से आनेवाली उस चीज पर लगता है, जैसे देशी चीनी के व्यापार के संरक्षण के लिए विदेश से आनेवाली चीनी पर लगानेवाला शुल्क या कर।

संरक्षित *वि.* {सं.} सँभालकर या अच्छी तरह बचाकर रखा हुआ; अपनी देखरेख या संरक्षण में लिया हुआ।

संरचना *स्त्री.* {सं.} अनेक अवयवोंवाली रचना।

संरचनात्मक *वि.* {सं.} जिसकी संरचना हुई हो।

संलक्ष्य *वि.* वह जो लक्षित हो सके।

संलग्न *वि.* {सं.} {*स्त्री.* संलग्ना} सटा हुआ; संबद्ध; किसी दूसरे के साथ पीछे से या अंत में लगा, जुड़ा या सटा हुआ (अपेंडेंट, एटैच्ड)।

संलपन *पुं.* संलाप, बातचीत।

संलाप *पुं.* {सं.} बातचीत, वार्तालाप; साहित्य में आप-ही-आप कुछ बोलना या बड़बड़ाना, जो पूर्वराग की दस दशाओं में से एक माना गया है; नाटक में ऐसी बातचीत जिससे धीरता प्रकट होती है।

संलापक *पुं.* {सं.} एक प्रकार का उपरूपक; संलाप करनेवाला।

संलीन *वि.* {सं.} पूर्णतः लीन, आच्छादित।

संलेख *पुं.* {सं.} वह लेख या विलेख जो विधिक क्षेत्रों में नियमानुसार लिखा हुआ, ठीक और प्रामाणिक माना जाता हो (वैलिड डीड)।

संलोभन *पुं.* प्रलोभन।

संवत् *पुं.* {सं.} वर्ष, साल; संख्या के विचार से चलनेवाली विशेषतः महाराज विक्रमादित्य के समय से प्रचलित मानी जानेवाली वर्ष-गणना में का कोई वर्ष, जैसे संवत् 2008.

संवत्सर *पुं.* {सं.} वर्ष, साल।

सँवर *स्त्री.* {सं. स्मृति} स्मरण, याद; वृत्तांत, हाल।

संवर *पुं.* संबल।

संवरण *पुं.* {सं.} {*वि.* संवरणीय, संवृत्त} पसंद करना, चुनना, जैसे विवाह के लिए वर का संवरण करना; दूर करना, हटाना; समाप्त या अंत करना, जैसे इहलीला संवरण करना; विचार या इच्छा को दबाना या रोकना, जैसे लोभ संवरण करना; गोपन करना, छिपाना।

संवरणीय *वि.* छिपाव, परदा, घेरा।

संवरना¹ *अ.* {हिं. 'सँवारना' का *अ.*} बिगड़ी हुई चीज का फिर से सुधरना, बनना या ठीक होना।

संवरना² *स.* {हिं. सुमिरना} स्मरण करना।

संवरिया *वि.* साँवला।

संवर्ग *पुं.* एक वस्तु का दूसरे में लीन होना।

संवर्तक *वि.* लपेटनेवाला।

संवर्धक *वि.* {सं.} संवर्द्धन करने या बढ़ानेवाला।

संवर्धन *पुं.* {सं.} बढ़ाना; पालना; बढ़ाना।

संवल *पुं.* संबल।

संवहन *पुं.* वहन करना।

संवाद *पुं.* {सं.} {कर्ता संवादक} सादृश्य, एकरूपता आदि के कारण आपस में ठीक बैठना, मेल खाना; वार्तालाप, बातचीत; खबर, समाचार; विवरण, हाल (रिपोर्ट)।

संवाददाता *पुं.* {सं.} वह जो समाचार या संवाद दे, खबर देनेवाला; वह जो किसी विशेष स्थान या क्षेत्र के समाचार लिखकर समाचार-पत्र में छपने के लिए भेजता हो (कॉरेस्पान्डेंट, रिपोर्टर)।

संवादहीन *वि.* {सं.} संवाद से रहित।

संवादिता *स्त्री.* सादृश्य, समानता।

संवादी *वि.* {सं. संवादिन्} {*भाव.* संवादिता, *स्त्री.* संवादिनी} संवाद या बातचीत करनेवाला; अनुकूल या मेल में होनेवाला, किसी के साथ ठीक बैठनेवाला; *पुं.* संगीत में वह सवर जो किसी राग के वादी स्वर के साथ लगकर उसकी श्रुति-मधुरता बढ़ाता हो।

सँवार¹ *स्त्री.* {सं. संवाद या स्मरण} हाल, समाचार।

सँवार² *स्त्री.* {हिं. सँवारना} सँवारने की क्रिया या भाव; क्षौरकर्म, हजामत; एक प्रकर का शाप या गाली।

संवार *पुं.* {सं.} शब्दों के उच्चारण में वह बाह्य प्रयत्न जिसमें कंठ कुछ सिकुड़ता है।

संवारण *पुं.* {सं. वारण} मना करना, रोकना।

सँवारना¹ *स.* {सं. संवरण} दोष, त्रुटियाँ आदि दूर करके ठीक या अच्छी अवस्था में लाना, दुरुस्त या ठीक करके काम में लाने के योग्य बनाना; अलंकृत करना, सजाना; काम बनाना, काम ठीक करना।

संवारना² *अ.* {सं. संवारण} मना करना, रोकना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवारित *वि.* रोका हुआ, मना किया हुआ।
संवास *पुं.* {सं.} {*वि.* संवासित} सुगन्ध, खुशबू; श्वास के साथ मुँह से निकलनेवाली दुर्गंध; सार्वजनिक निवासस्थान; मकान, घर।
संवाह *पुं.* ले जाना, ढोना।
संवाही *वि.*, *पुं.* हाथ-पैर दबानेवाला।
संविद् *स्त्री.* {सं.} चेतना, ज्ञानशक्ति; बोध, ज्ञान; समझ, बुद्धि; संवेदन, अनुभूति; वृत्तान्त, हाल; नाम, संज्ञा; युद्ध, लड़ाई; सम्पत्ति, जायदाद।
संविद *वि.* {सं.} चेतनायुक्त, चेतन।
संविदा *स्त्री.* {सं.} कुछ निश्चित पणों या शर्तों के आधार पर दो पक्षों में होनेवाला समझौता, ठीका (कट्रैक्ट)।
संविदा-पत्र *पुं.* {सं.} वह पत्र जिस पर किसी संविदा की शर्तें लिखी हों, ठीकानामा (कट्रैक्ट)।
संविदा-प्रविधि *स्त्री.* {सं.} वह प्रविधि या कानून जिसमें संविदा या ठीके के संबंध रखनेवाले नियमों का विवेचन हो (लॉ ऑफ कट्रैक्ट)।
संविदित *वि.* समझाया, दूँढ़ा हुआ।
संविधान *पुं.* {सं. सं = संघटन + विधान} {*वि.* संविधानिक} वह विधान या कानून जिसके अनुसार किसी राज्य, राष्ट्र या संस्था का संघटन, संचालन और व्यवस्था होती है (कांस्टिट्यूशन)।
संविधान-परिषद *स्त्री.* {सं.} वह परिषद या सभा जो किसी देश, जाति या राष्ट्र के राजनीतिक शासन की नियमावली आदि बनाने के लिए संघटित हो (कांसिटट्यूएंट एसेम्बली)।
संविधानवाद *पुं.* {सं.} वह सिद्धांत जिसके अनुसार विधान या नियम ही सर्वप्रधान माना जाता हो और उसके विरुद्ध कुछ न किया जाता हो (कांस्टिट्यूशनलिज्म)।
संविधानवादी *पुं.* {सं. संविधान + वादिन्} वह जो संविधानवाद का अनुयायी हो, विधान या नियम के अनुसार ही सब काम करनेवाला (कांस्टिशनलिस्ट)।
संविधान-सभा *स्त्री.* = संविधान + परिषद।
संविधानिक *वि.* {सं.} संविधान या संघटन के नियमों से संबंध रखनेवाला (कांस्टिट्यूशनल)।
संविभाग *पुं.* बाँट, बँटवारा।
संवीक्षण *पुं.* अन्वेषण, खोज।
संवृत *वि.* {सं.} ढका या छिपा हुआ; रक्षित।
संवृद्धि *स्त्री.* {सं.} किसी वस्तु के बाहरी अंगों में निरन्तर या बाद में होनेवाली वृद्धि (एडीशन)।
संवेग *पुं.* {सं.} संवेदन।
संवेतगान *पुं.* = सहगान।
संवेदन *पुं.* {सं.} {*वि.* संवेदनीय, संवेदित, संवेद्य} शरीर के किसी अंग या इंद्रिय का वह शारीरिक व्यापार या प्रतिक्रिया जो किसी विशेष अवस्था में पहुँचने या किसी विशिष्ट पदार्थ के संपर्क में आने से होती है और जिसके फलस्वरूप कोई विशेष चेतना या अनुभूति होती है, जैसे ताप-शीत या सुख-दुख आदि का अनुभव करना (सेंशेशन); ज्ञान; जताना, प्रकट करना।
संवेद *पुं.* अनुभव, वेदना।
संवेदनवाद *पुं.* {सं.} यह दार्शनिक सिद्धांत कि हमें सभी बातों का ज्ञान संवेदन-सूत्रों के द्वारा प्राप्त होता है (सेंशेनलिज्म)।
संवेदनशील *वि.* {सं.} {*भाव.* संवदेनशीलता} दूसरों की अनुभूति से प्रभावित होनेवाला; मर्मस्पर्शी।
संवेदन-सूत्र *पुं.* {सं.} सारे शरीर में फैले हुए तंतुओं का वह जाल जिसमें स्पर्श, शीत, ताप, सुख, पीड़ा आदि का अनुभव या ज्ञान होता है, स्नायु।
संवेदना *स्त्री.* {सं. संवेदन} मन में होनेवाला बोध या अनुभव, अनुभूति; किसी को कष्ट में देखकर मन में होनेवाला दुख, सहानुभूति।
संवेदनीय *वि.* अनुभव करने योग्य।
संवेश *पुं.* निद्रा, नींद, शय्या, प्रवेश।
संवेष्ट *वि.* वेष्टित, घिरा हुआ।
संशब्द *पुं.* प्रशंसा, स्तुति।
संशय *पुं.* {सं.} {*वि.* संशयी} ऐसा ज्ञान जिसमें पूरा निश्चय न हो, संदेह, शंका शुब्हा; आशंका, डर।
संशयात्मक *वि.* {सं.} जिसमें कुछ संशय या संदेह हो, संदिग्ध।
संशयात्मा *पुं.* {सं. संशयात्मन्} वह जिसके मन में अभी संशय बना हो और जिसका मन पूरी तरह से स्थिर न हुआ हो।
संशयिक *वि.* {सं.} जिसे या जिसमें संशय हो; जिसे हर बात में प्रायः संशय या संदेह होता रहे, संशयात्मा।
संशयी *वि.* {सं. संशयिन्} जो प्रायः संशय करता रहता हो, जो सहज में किसी व्यक्ति या बात का विश्वास न करता हो।
संशयोपमा *स्त्री.* {सं.} उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें कुछ वस्तुओं के साथ उपमा तो दी जाती है, पर साथ ही उन उपमाओं के संबंध में कुछ संशय या संदेह का भी उल्लेख होता है।
संशयित *वि.* संदिग्ध, अनिश्चित।
संशयी *वि.* संदेह करनेवाला।
संशासन *पुं.* उत्तम राज्य-प्रबंध।
संशुद्ध *वि.* {सं.} जिसका संशोधन हुआ हो, शुद्ध किया हुआ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संशोधक पुं. {सं.} संशोधन करनेवाला; बुरी से अच्छी दशा में लानेवाला, सुधारनेवाला।

संशोधन पुं. {सं.} {*वि.* संशोधनीय, संशोधित} भूल, दोष आदि दूर करके ठीक या शुद्ध करना (करेक्शन); ठीक करना, सुधारना; प्रस्ताव आदि में कुछ सुधार करने या घटाने-बढ़ाने का सुझाव; (एमेंडमेंट); (ऋण आदि) चुकता करना, (देन) चुकाना।

संशोधित *वि.* {सं.} जिसका संशोधन हुआ हो, शुद्ध या ठीक किया हुआ।

संश्रय पुं. {सं.} संयोग, मेल; संबंध, लगाव; आश्रय; सहारा।

संश्रयण पुं. अवलंब, पनाह।

संश्रित पुं. {सं.} लगा या सटा हुआ; शरण में आया हुआ; दूसरे के सहारे रहनेवाला, आश्रित।

संश्रुत *वि.* स्वीकृत, अच्छी तरह सुना हुआ।

संश्लिष्ट *वि.* {सं.} मिला, सटा या लगा हुआ।

संश्लेषण पुं. {सं.} {*वि.* संश्लिष्ट} एक में मिलाना, लगाना या सटाना; कार्य से कारण अथवा नियम, सिद्धांत आदि से उनके फल या परिणाम का विचार करना, मिलान करना; 'विश्लेषण' का विपर्याय (सिंथेसिस)।

संस पुं. = संशय (संदेह)।

संसक्त *वि.* {सं.} {*भाव.* संसक्ति} किसी की सीमा के साथ सटा या लगा हुआ (कंटिगुअस); संबद्ध; (किसी की ओर) अनुरक्त या प्रवृत्त; (किसी विचार या काम में) लग्न, लीन।

संसक्ति *स्त्री.* {सं.} {*भाव.* संसक्त} किसी के साथ सटे या लगे होने का भाव; (कंटीगुइटी); एक ही तरह के पदार्थों या तत्वों का आपस में मिल या सटकर एकरूप होना (कोहेशन); संबंध, लगाव; विशेष अनुराग या आसक्ति, लगन; लीनता; प्रवृत्ति।

संसनाना *क्रि.* सनसनाना।

संसद, संसद् *स्त्री.* {सं.} किसी विशेष कार्य के लिए संघटित बहुत से लोगों का समुदाय या निकाय (एसोसियेशन); राज्य या शासन-संबंधी कार्यों में सहायता देने और पुराने विधानों में संशोधन करने तथा नए विधान बनाने के लिए प्रजा के प्रतिनिधियों की चुनी हुई सभा (पार्लियामेंट)।

संसदीय *वि.* {सं.} संसद-संबंधी; संसद की मर्यादा के अनुरूप।

संसरण पुं. {सं.} {*वि.* संसृति} चलना; संसार, जगत्; रास्ता।

संसर्ग पुं. {सं.} साथ या पास रहने से होनेवाला संबंध, लगाव; मिलन, मिलाप; संगति, साथ; स्त्री और पुरुष का संबंध या सहवास।

संसर्गदोष पुं. {सं.} वह दोष या बुराई जो किसी के साथ रहने से उत्पन्न होती है।

संसर्गाभाव पुं. संबंध का न होना।

संसर्गरोध पुं. {सं.} वह व्यवस्था जो किसी स्थान को संक्रामक रोगों आदि से बचाने के लिए बाहर से आनेवाले लोगों को कुछ समय तक कहीं अलग रखकर की जाती है; इस काम के लिए अलग किया हुआ स्थान (क्वारेंटाइन)।

संसर्गी *वि.* {सं. संसर्गिन्} {*स्त्री.* संसर्गिणी} जिससे या जिसका संसर्ग या लगाव हो; सहचर।

संसा पुं. = संशय; पुं. संसौ।

संसाद पुं. सभा, समाज।

संसादित *वि.* एकत्र किया हुआ।

संसाधन पुं. {सं.} प्राप्ति का साधन; भंडार।

संसार पुं. {सं.} {*वि.* सांसारिक, संसारी} जगत्, दुनिया; इहलोक, मर्त्यलोक; घर।

संसारतिलक पुं. {सं.} एक प्रकार का धान और उसका चावल।

संसारयात्रा *स्त्री.* {सं.} जीवन का निर्वाह या यापन; जीवन जिंदगी।

संसारी *वि.* {सं. संसारिन्} {*स्त्री.* संसारिणी} संसार-संबंधी लौकिक; पुं. संसार या घर-गृहस्थी के झगड़ों में फँसा हुआ व्यक्ति।

संसक्ति *वि.* {सं.} बहुत भीगा हुआ या गीला।

संसृत *स्त्री.* {सं.} बारंबार जन्म लेने की परंपरा।

संसृति *स्त्री.* {सं.} संसार।

संसृष्ट *वि.* {सं.} {*भाव.* संसृष्टि} किसी के साथ मिला या लगाा हुआ, संबद्ध; किसी के अंतर्गत आया हुआ।

संसृष्टि *स्त्री.* {सं.} {*वि.* संसृष्ट} किसी के साथ होनेवाली सृष्टि, उत्पत्ति या आविर्भाव; संबंध, लगाव; मिश्रण, मिलावट; हेल-मेल, मेल-जोल; साहित्य में दो या अधिक काव्यालंकारों का इस प्रकार साथ-साथ आना कि सब अलग-अलग दिखाई दें। इसकी गणना एक स्वतंत्र अलंकार के रूप में होती है।

संसेक पुं. अच्छी तरह पानी का छिड़काव।

संसेवन पुं. {*वि.* संसेवित} = सेवन; उपयोग में लाना।

संसै पुं. = संशय।

संसौ पुं. {सं. श्वास} श्वास, साँस; जीवनी शक्ति, प्राण।

उदा. नित संसौ हंसौ बचतु, मनौ सु इहिं अनुमानु—बिहारी।

संस्करण पुं. {सं.} संस्कार करना, ठीक या दुरुस्त करना, सुधारना; पुस्तकों की एक बार की छपाई, आवृत्ति (एडिशन)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कर्ता पुं. {सं.} संस्कार करनेवाला।

संस्कार पुं. {सं.} दोष आदि दूर करके ठीक करना, दुरुस्ती, सुधार; पूर्व जन्म, कुल-मर्यादा, शिक्षा, सभ्यता आदि का मन पर पड़नेवाला प्रभाव; हिन्दुओं में धर्म की दृष्टि से शुद्ध और उन्नत करने के लिए होनेवाले 16 (या कुछ लोगों के मत से 12) विशिष्ट कृत्य, जैसे गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म या मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि; मन, रुचि आचार-विचार आदि को परिष्कृत तथा उन्नत करने का कार्य (कल्चर); परंपरा से चला आया हुआ कोई ऐसा कृत्य जिसका किसी विशेष अवसर के लिए विधान हो (सिक्रेमेंट); कुछ विशिष्ट अवसरों पर होनेवाला कोई ऐसा धार्मिक या सामाजिक कार्य जो किसी देश या समाज में साधरणत: और सब जगह प्रचलित हो (राइट, रिचुअल); मृतक की अंत्येष्टि-क्रिया।

संस्कारवान (वान्) *वि.* {सं.} अच्छे संस्कारोंवाला।

संस्कारी पुं. {सं. संस्कारिन्} वह जो किसी प्रकार का संस्कार करता हो; वह जो अच्छे संस्कारों या गुणों से युक्त हो; सोलह मात्राओं के छंदों की संज्ञा।

संस्कृत *वि.* {सं.} जिसका संस्कार हुआ हो, शुद्ध किया हुआ; सँवारा हुआ, परिमार्जित; सुधारा और ठीक किया हुआ; *स्त्री.* भारतीय आर्यों की प्रसिद्ध प्राचीन साहित्यिक भाषा, देववाणी।

संस्कृति *स्त्री.* {सं.} शुद्धि, सफाई; संस्कार, सुधार; किसी व्यक्ति, जाति, राष्ट्र आदि की वे सब बातें जो उसके मन, रुचि, आचार-विचार, कला-कौशल और सभ्यता के क्षेत्र में बौद्धिक विकास की सूचक होती हैं (कल्चर)।

संस्क्रिया *स्त्री.* संस्कार, सुधार।

संस्खलन पुं. भूल करना, चूकना।

संस्खलित *वि.* गिरा हुआ, भूला हुआ।

संस्तंभ पुं. हाथ-पैर आदि की गति का एकाएक रुक जाना।

संस्तव पुं. प्रशंसा, स्तुति।

संस्था *स्त्री.* {सं.} ठहरने की क्रिया या भाव, स्थिति; व्यवस्था, विधि; मर्यादा; जत्था, गिरोह; कोई संघटित समाज, समूह या वर्ग (बॉडी); किसी धार्मिक, सामाजिक या लोकोपकारी विशेष कार्य का उद्देश्य के लिए संघटित समाज या मंडल (इंस्टिट्यूशन); व्यावसायिक दृष्टि से कुछ अभीष्ट सिद्धांतों और नियमों के अनुसार काम करनेवाला कोई संघटित समाज या दल, जैसे सहकारी संस्था (सोसाइटी); किसी कार्यालय या विभाग में काम करनेवाले सब लोगों का समूह या वर्ग, अधिष्ठान (एस्टैब्लिशमेंट); राजनीतिक या सामाजिक जीवन से संबंध रखनेवाला कोई नियम, विधान, प्रथा, जैसे विवाह हमारे यहाँ की धार्मिक संस्था है।

संस्थान पुं. {सं.} ठहराव, स्थिति; बैठाना, स्थापन; अस्तित्व; सर्वसाधारण के इकट्टे होने का स्थान; किसी राज्य के अंतर्गत जागीर आदि (एस्टेट); साहित्य, विज्ञान कला आदि की उन्नति के लिए स्थापित समाज (इंस्टिट्यूशन); प्रबन्ध, व्यवस्था।

संस्थापक पुं. {सं.} {*स्त्री.* संस्थापिका} संस्थापन करनेवाला; (संस्था आदि) स्थापित करने या उसे आरंभ करनेवाला (फाउंडर)।

संस्थापन पुं. {सं.} {*वि.* संस्थापनीय, संस्थापित, संस्थाप्य} अच्छी तरह जमाकर बैठाना, लगाना या खड़ा करना; मंडली, संस्था आदि बनाना; कोई नई बात चलाना।

संस्थापित *वि.* निर्मित, बैठाया हुआ, संचित।

संस्थित *वि.* ठहरा हुआ, बटोरा हुआ।

संस्पर्धा *स्त्री.* ईर्ष्या, डाह।

संस्पृष्ट *वि.* जुटा हुआ, सटा हुआ।

संस्मरण पुं. {सं.} {*वि.* संस्मरणीय, संस्मृत} किसी व्यक्ति के संबंध की स्मरणीय घटनाएँ य उनका उल्लेख (रेमिनंसेज); अच्छी तरह सुमिरना या नाम लेना।

संस्मरणीय *वि.* {सं.} नाम जपने योग्य।

संस्वीकृति *स्त्री.* {सं.} अपने अपराध की स्वीकृति।

संहत *वि.* {सं.} खूब मिला या सटा हुआ; कड़ा, सख्त; गठा हुआ, घना; मिलाकर एक किया हुआ एकत्र, इकट्ठा (कंसालिडेटिड्)।

संहति *स्त्री.* {सं.} मिलान, मेल; बहुतों को मिलाकर एक करना, इकट्ठा होने की क्रिया या भाव; राशि, ढेर; समूह, झुंड; घनता, ठोसपन।

संहनन पुं. शरीर का मर्दन, वध, संयोग, डीलडौल।

संहर पुं. = संहार।

उदा. 'यही ते है असार संसार सृजन, सिंचन, संहर'—पंत।

संहरन *स.* {सं. संहार} संहार करना; *अ.* संहार या नाश होना।

संहात पुं. समूह, जमावड़ा।

संहार पुं. {सं.} {*क्रि.* संहारना, कर्ता संहारक} नाश, ध्वंस; (युद्ध आदि में) मार डालना; (सिर के बाल) अच्छी तरह समेटकर बाँधना, गूँथना; छोड़ा हुआ बाण फिर अपनी ओर लौटाना।

संहारक *वि.* {सं.} संहार या नाश करनेवाला; मार डालनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संहारकर्ता *वि.* = संहारक।

संहारना *स.* {सं. संहार} संहार या नाश करना; मार डालना, वध करना।

संहारी *वि.* = संहारक।

संहित *वि.* {सं.} इकट्ठा किया हुआ; मिला, सटा या जुड़ा हुआ; जो अधिकारिकी द्वारा नियमों, विधियों आदि की संहिता के रूप में लाया गया हो (कोडीफाइड)।

संहिता *स्त्री.* {सं.} संहित या मिले हुए होने का भाव; मेल, मिलावट; व्याकरण में संधि; वह ग्रंथ जिसका पद-पाठ आदि क्रम-परंपरा से एक नियमित या निश्चित रूप में चला आ रहा है, जैसे धर्म-संहिता; अधिकारिकी द्वारा किया हुआ नियमों, विधियों आदि का संग्रह, जैसे भारतीय दंड-संहिता।

संहृति *स्त्री.* {सं.} संग्रह, नाश।

सइ *क्रि. वि.* {सं. सह} से, साथ।

सई *स्त्री.* {सं.} बढ़ती, बढ़ोतरी।

सऊँ *क्रि. वि.* सों, से।

सक *पुं.* साका; *स्त्री.* शक्ति।

सकट *पुं.* शकट।

सकटी *स्त्री.* {स्त्री.} छोटी गाड़ी।

सकत *स्त्री.* {सं. शक्ति} बल, शक्ति, ताकत; धन, सम्पत्ति; *क्रि. वि.* जहाँ तक हो सके, यथाशक्ति; *पुं.* शाक्त।

सकता *पुं.* {अ. सक्त:} बेहोशी या उसकी बीमारी; स्तब्धता, भौचक्कापन; कविता में, यतिभंग; यतिभंग का दोष।

सकति (ती) *स्त्री.* = शक्ति।

सकती *स्त्री.* शक्ति नामक अस्त्र।

सकना[1] *अ.* {सं. सक् या शक्य} कुछ करने में समर्थ होना, कुछ करने के योग्य होना, जैसे चल सकना।

सकना[2] *अ.* {सं. शंका} मन में डरना, घबराना, शंकित या संकुचित होना।

उदा. 'सूखे से श्रमे से सकबके से सके से थके, भूले से भ्रमे से भमरे से भकुवाने से'–**रत्ना.**।

सकपकाना *अ.* चकपकाना।

सकबकाना *अ.* चकपकाना।

सकरना *अ.* {सं. स्वीकरण} सकारा या माना जाना, जैसे हुंडी सकरना।

सकरिया *स्त्री.* लाल शकरकंद, रतालू।

सकर्मक *वि.* {सं.} व्याकरण में वह क्रिया जो कर्म से युक्त हो (ट्रांजिटिव)।

सकर्मक क्रिया *स्त्री.* {सं.} व्याकरण में वह क्रिया जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त होता है, जैसे रखना, धोना आदि।

सकल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सकला} सब, समस्त।

सकलात *पुं.* {?} {*वि.* सकलाती} रजाई, दुलाई; सौगात, उपहार; मखमल नामक कपड़ा।

सकलाती *वि.* {हिं. सकलात} भेंट या उपहार के रूप में किसी के देने योग्य; बहुत अच्छा, बढ़िया।

सकलेश्वर *पुं.* विष्णु।

सकसकाना *अ.* {अनु.} डर से काँपना।

सकसना *अ.* {अनु.} भयभीत होना, डरना; अड़ना; फँसना।

उदा. निकसें सकसि न बचन भयौ हिचकिनी गह्वर गर–**रत्ना.**।

सका *पुं.* सक्का।

सकाना *अ.* {सं. शंका} संदेह करना; हिचकना।

उदा. क्षत्रिय तनुधरि सकाना–**तुलसी**।

डरना।

उदा. सोचत सबै सकाई कहा करि है कमालसन–**रत्ना.**।

दुखी होना।

उदा. सुनि मुनिवर के परुष बचन कुछ भूप सकाए–**रत्ना.**।

स. हिं. सकना का प्रे. (क्व.)।

सकाम *वि.* {सं.} वह जिसके मन में कोई कामना या वासना हो; वह जिसकी कामना पूरी हुई हो; कामुक; वह जो फल की इच्छा करे।

सकामा *स्त्री.* मैथुन की इच्छा रखनेवाली स्त्री।

सकामी *वि.* कामनायुक्त, कामी।

सकार *पुं.* {सं. सकाल} प्रात:काल, सवेरा।

सकारना *स.* {सं. स्वीकरण} स्वीकार करना, मंजूर करना; महाजन का अपने नाम पर आई हुई हुंडी मान्य करना (आनरिंग आफ ए ड्राफ्ट)।

सकारात्मक *वि.* {हिं. सकारना + सं. आत्मक} उत्तर या कथन जो स्वीकृति या सहमति का सूचक हो, 'नकारात्मक' का विपर्याय (अफरमेटिव)।

सकाश *वि.* {सं.} समीप, निकट।

सकारे *क्रि. वि.* {सं. सकाल} सवेरे; शीघ्र, जल्दी।

सकुच *स्त्री.* = संकोच।

सकुचना *अ.* {सं. संकुचन} लज्जा या संकोच करना; (फूलों का) सिमटना या सिकुड़ना, बंद होना।

सकुचाई *स्त्री.* = संकोच।

सकुचाना *अ.* {सं. संकोच} संकोच करना; *स.* संकुचित करना, सिकोड़ना; लज्जित करना।

सकुचीला (चौहाँ) *वि.* {हिं. संकोच} संकोच करनेवाला, लजीला।

सकुतूहल *वि.* कौतुक से भरा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकुन पुं. शकुन; सगुण; चिड़िया।
सकुपना *अ.* = कोपना।
सकुल्य पुं. सगोत्र; एक ही कुल का।
सकूनत *स्त्री.* {*अ.*} निवासस्थान।
सकृत *क्रि. वि.* {सं.} एक बार; सदा।
सकृद्दर्शन *क्रि. वि.* {सं.} देखने पर तुरन्त; ऊपर से देखने पर (प्राइमाफेसी)।
सकेत[1] पुं. संकेत।
सकेत[2] *वि.* {सं. संकीर्ण} तंग, संकुचित; पुं. विपत्ति, संकट।
सकेतना *अ.* सिकुड़ना।
सकेरना *स.* समेटना।
सकेरा पुं. {सं. सकाल} शीघ्रता, जल्दी।
सकेलना[1] *स.* {सं. सकल} इकट्ठा करना, जमा करना।
उदा. जो बनिता सुत-जूथ सकेले, हय-गय-विभव घनेरौ—सूर।
बिखरे हुए काम या चीजें एक जगह करना, समेटना।
सकेलना[2] *स.* {सं. संकलन} इकट्ठा करना; कसवाना; दबाना।
सकेला *स्त्री.* {*अ.* सैकल} एक प्रकार की तलवार।
सकोच पुं. = संकोच।
सकोचना *अ.* = संकोच करना; *स.* = सिकोड़ना।
सकोप *वि.* क्रोधयुक्त।
सकोपना *अ.* कोपना।
सकोरा पुं. कसोरा; मिट्टी का पीने का पात्र।
सक्का पुं. {फा.} मशक में पानी भरकर लोगों को पिलाने या घर-घर पहुँचानेवाला।
सक्तु पुं. भूने हुए अन्न को पीसकर तैयार किया आटा।
सक्र पुं. {सं. शक्र} इंद्र, मेघ, बादल।
सक्रारि पुं. {सं. शक्रारि} मेघनाद।
सक्रिय *वि.* {सं.} {*भाव.* सक्रियता} जिसमें क्रिया भी हो; जो क्रियात्मक रूप में हो; जिसमें कुछ करके दिखलाया जाए (ऐक्टिव)।
सक्षण *वि.* सावकाश।
सक्षम *वि.* {सं.} {*भाव.* सक्षमता} जिसमें क्षमता हो; समर्थ; किसी काम के लिए पूर्ण रूप से उपयुक्त और उसका अधिकारी (काम्पीटेंट)।
सख पुं. सखा, मित्र।
सखर *वि.* {हिं. स + खर = तेज धार} तेज धारवाला, चोखा, पैना; तेज, उग्र; प्रबल।
सखरच *वि.* {फा. शाह + खर्च} बहुत उदारतापूर्वक और जी खोलकर खरच करनेवाले, शाहखर्च।
उदा. बनियक सखरच, ठकुरक हीन, बैद कपूत व्याधि नहिं चीह्न—घाघ।
सखरस पुं. {?} मक्खन।
सखरा *वि.* {हिं. निखरा का अनु.} जो (भोजन या रसोई) घी, दूध आदि में नहीं बल्कि जल के संयोग से पकी हो, कच्चा; *स्त्री.* सखरी।
सखरी *स्त्री.* {हिं. निखरी से अनु.} दाल, रोटी आदि कच्ची रसोई।
सखा पुं. {सं. सखिन्} साथी, संगी; मित्र, दोस्त; साहित्य में नायक का वह मित्र या साथी जिससे वह अपने मन की सब बातें कहता है; इसके ये चार भेद हैं—पीठमर्द, विट, चेट और विदूषक; इन्हें सहचर भी कहते हैं।
सखार *वि.* {सं. स + हिं खार (क्षार)} क्षारयुक्त; खारा।
सखित्व पुं. बंधुता, मित्रता।
सखी[1] *स्त्री.* {सं.} सहेली, सहचरी; संगिनी; साहित्य में नायिका के साथ रहनेवाली वह स्त्री जिससे वह अपने मन की सब बातें कहती हैं; एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में 14 मात्राएँ होती हैं और अंत में मगण या यगण होना आवश्यक होता है।
सखी[2] *वि.* {*अ.* सखी} दानी, दाता।
सखीभाव पुं. {सं.} भक्ति का वह प्रकार जिसमें भक्त अपने आपको इष्ट देवता को पत्नी या सखी मानकर उसकी उपासना और सेवा करता है।
सखी संप्रदाय पुं. {सं.} भक्तों का वह संप्रदाय जो सखीभाव से अपने इष्टदेव की उपासना करता है।
सखुआ पुं. {सं. शाल} साखू या शाल नामक वृक्ष या उसकी लकड़ी।
सखुन पुं. {फा. सुखन} कथन, उक्ति; कविता, काव्य।
सखुन तकिया पुं. {फा. सुखन + तकिया} वह शब्द या पद जो कुछ लोगों के मुँह से बातचीत करते समय प्रायः निकला करता है, कथनाश्रय।
सखेद *क्रि. वि.* {सं.} खेदपूर्वक।
सख्त *वि.* {फा. सख़्त} {*भाव.* सख्ती} कठोर, कड़ा; मुश्किल, कठिन; कठोर व्यवहार करनेवाला; *क्रि. वि.* बहुत अधिक (दुष्ट या दूषित बातों के संबंध में, जैसे सख्त नालायक)।
सख्ती *स्त्री.* {फा. सख़्ती} कड़ापन; कठोरता।
सख्य पुं. {सं.} सखा का भाव, सखापन; मित्रता, दोस्ती; भक्ति का वह प्रकार जिसमें इष्टदेव को भक्त, अपना सखा मानकर उसकी उपासना करता है।
सगंध *वि.* गंधयुक्त।
सग *फा.* पुं. कुत्ता; *वि.* सगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सगड़ी *स्त्री.* छोटा सगड़।

सगण *पुं.* {सं.} पिंगल में दो लघु और एक गुरु अक्षर का एक गण, इसका रूप ।।ऽ है।

सगति *स्त्री.* = शक्ति।

सगपहिती *स्त्री.* {हिं. साग + पहिती = दाल} साग मिलाकर पकाई हुई दाल।

सगबग *वि.* {सं. सिक्त + अभ्यक्त} {*क्रि.* सगबगाना} तरबतर, लथपथ; द्रवित; परिपूर्ण, भरा हुआ; *क्रि. वि.* जल्दी से, तुरन्त।

सगबगाना *अ.* {हिं. सगबग} लथपथ या तर होना, बहुत भीगना; चकित होना, चकपकाना; *स.* गीला या तर करना; चकित या भौचक्का करना।

सगभत्ता *पुं.* साग मिलाकर पकाया हुआ भात।

सगर *पुं.* {सं.} अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो रामचंद्र के पूर्वज थे; *वि.* = सगरा (सब)।

सगरा[1] *वि.* {सं. साग्र} {*स्त्री.* सगरी} सब, सारा।

सगरा[2] *पुं.* {सं. सागर} समुद्र; बहुत बड़ा तालाब या जलाशय।

सगल *वि.* = सकल।

सगा *वि.* {सं. स्वक्} {*स्त्री.* सगी, *भाव.* सगापन} एक ही माता से उत्पन्न, सहोदर; संबंध या रिश्ते में अपने ही कुल या परिवार का, जैसे सगा चाचा।

सगाई *स्त्री.* {हिं. सगा + आई (प्रत्य.)} सगे होने का भाव, सगापन; आत्मीयता का यों घनिष्ठ पारिवारिक संबंध, नाता, रिश्ता।

उदा. देवहु लाग हरि कै सगाई, माय घरै पुत्र धिया सँग जाई–**कबीर**।

बिल्कुल एक से या एक वर्ग के होने की अवस्था या भाव, जैसे बैन सगाई = वर्ण मैत्री या अनुप्रास; विवाह का निश्चय, मँगनी; विधवा स्त्री के साथ पुरुष का वह संबंध जो कुछ जातियों में विवाह के ही समान माना जाता है; संबंध, नाता, रिश्ता।

सगापन *पुं.* {हिं. सगा} सगा या आत्मीय होने का भाव।

सगारता *स्त्री.* सगापन।

सगुण *पुं.* {सं.} सत्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त परमात्मा का रूप, साकार ब्रह्म; *वि.* तीनों गुणों से युक्त।

सगुणता *स्त्री.* सगुण होने का भाव।

सगुन *पुं.* शकुन; सगुण।

सगुनाना *स.* {सं. शकुन} शकुन निकालना या देखना।

सगुनिया *पुं.* {सं. शकुन} शकुन बतलानेवाला।

सगुनौती *स्त्री.* {हिं. सगुन} शकुन विचारने की क्रिया या भाव; मंगलाचरण, मंगल पाठ।

सगुरा *वि.* {हिं. स + गुरु} जिसने किसी गुरु से दीक्षा ली हो; जिसने किसी गुरु से किसी काम की अच्छी शिक्षा पाई हो, 'निगुरा' का विरुद्धार्थक।

सगोती *पुं.* = सगोत्र; गोत का।

सगोत्र *पुं.* {सं.} वे जो एक ही पूर्वज से उत्पन्न हुए हों, एक ही गोत्र के लोग (किंड्रेड)।

सगोत्रिय *पुं.* सगोत्र; एक ही गोत्र का।

सगौती *स्त्री.* {देश.} खाने का मांस।

सग्गड़ *पुं.* {सं. शकट} बोझ ढोने की एक प्रकार की बड़ी गाड़ी जिसे आदमी खींचते या ढकेलते हैं।

सग्गा *वि.* = सगा।

सघन *वि.* {सं.} {*भाव.* सघनता} घना, अविरल; ठोस, ठस।

सघृण *वि.* घृणा से भरा हुआ।

सच *वि.* {सं. सत्य} जैसा हो, वैसा ही (कहा हुआ), सत्य; वास्तविक; ठीक।

सचन *पुं.* सेवा करने की क्रिया।

सचना *स.* {सं. संचयन} संचय या इकट्ठा करना; पूरा करना।

उदा. 'बहु कुंड सोनित सों भरे तर्पणादि क्रिया सची'–**केशव**।

निर्माण करना, बनाना।

सचमुच *क्रि. वि.* {हिं. सच + मुच (अनु.)} वास्तव में, यथार्थ रूप में; अवश्य, निश्चय।

सचरना *अ.* {सं. संचरण} संचरित होना, फैलना।

सचराचर *पुं.* {सं.} संसार के चर और अचर सभी पदार्थ तथा प्राणी।

सचल *वि.* {सं.} {*भाव.* सचलता} जो अचल न हो, चलता हुआ; चंचल; जंगम।

सचाई *स्त्री.* {सं. सत्य, प्रा. सच्च} सच का भाव, सत्यता, सच्चापन; वास्तविकता, यथार्थता।

सचान *स. हिं.* सचरना का *स.*; बाज।

सचारना *क्रि. सं.* फैलाना।

सचावट *स्त्री.* = सच्चाई।

सचिंत *वि.* {सं.} जो किसी बात की चिन्ता में हो, चिन्तायुक्त।

सचिक्कण *वि.* {सं.} बहुत चिकना।

सचित् *वि.* {सं.} जिसको चेतना हो।

सचित्र *वि.* {सं.} चित्र से युक्त।

सचिव *पुं.* {सं.} मित्र, दोस्त; मंत्री; किसी विभाग या मंत्रालय का प्रधान प्रशासनिक अधिकारी (सेक्रेटरी)।

सचिवालय *पुं.* {सं.} वह भवन जिसमें किसी राज्य, प्रान्तीय सरकार अथवा किसी बड़ी संस्था

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सचिवों, मंत्रियों और विभागीय अधिकारियों के प्रधान कार्यालय रहते हैं (सेक्रेटेरिअट)।

सचिवीय *वि.* {सं.} सचिव-संबंधी।

सची *स्त्री.* = शची (इंद्र की पत्नी)।

सचीसुत *पुं.* जयंत।

सचु *पुं.* {?} सुख, आराम; प्रसन्नता, आनन्द; संतोष, तसल्ली।

सचुपाना *अ.* = चुप या मौन होना; *स.* चुप या मौन कराना।

सचेत *वि.* {सं. सचेतन} जो चेतनायुक्त हो; सावधान, होशियार, खबरदार; सचेतन।

सचेतन *पुं.* {सं.} {*भाव.* संचेतनता} वह जिसमें चेतना या ज्ञान हो; *वि.* 'जड़' का विरुद्धार्थक।

सचेती *स्त्री.* सावधानी से।

सचेष्ट *वि.* {सं.} जिसमें चेष्टा हो; जो चेष्टा कर रहा हो।

सच्चरित्र *वि.* {सं.} अच्छे चरित्र या चाल-चलन वाला, सदाचारी; *पुं.* उत्तम आचरण।

सच्चा *वि.* {सं. सत्य} {*स्त्री.* सची} सच बोलनेवाला, सत्यवादी; वास्तविक, यथार्थ, ठीक; असली, जो झूठा या बनावटी न हो; बिल्कुल ठीक और पूरा।

सच्चाई *स्त्री.* {हिं.} सच्चा होने का भाव, सत्यता, सच्चापन।

सच्चापन *पुं.* = सच्चाई।

सच्चाहट *स्त्री.* {सं.} सताता, सच्चापन।

सच्चिदानंद *पुं.* {सं.} सत्, चित् और आनंद से युक्त, परमात्मा।

सच्ची टिपाई *स्त्री.* {हिं. सच्ची = बिल्कुल ठीक + टिपाई} प्राचीन चित्रकला में चित्र बनाने के समय पहले रूपरेखा अंकित कर चुकाने पर गेरू से होनेवाला अंकन।

सच्छंद *वि.* = स्वच्छंद।

सच्छत *वि.* {सं. सक्षत} घायल।

सच्छाय *वि.* {सं.} छाया से युक्त।

सच्छास्त्र *पुं.* {सं. सद् + शास्त्र} अच्छे या उत्तम शास्त्र।

सच्छी *पुं. स्त्री.* साक्षी।

सज[1] *स्त्री.* {हिं. सजावट} सजावट; बनावट, गढ़न, डौल; शोभा; सुन्दरता।

सज[2] *पुं.* {देश.} एक प्रकार का वृक्ष।

सजग *वि.* {सं. सज्ञान} {*भाव.* सजगता} सावधान, सचेत, होशियार।

सजगता *स्त्री.* {हिं. सजग + सं. ता (प्रत्य.)} सजग रहने या होने की क्रिया या भाव; सतर्कता, होशियारी।

सजदार *वि.* = सजीला।

सजधज *स्त्री.* {हिं. सज + धज (अनु.)} बनाव-सिंगार, सजावट।

सजन *पुं.* {सं. सत् + जन = सजन} {*स्त्री.* सजनी} सज्जन; पति, स्वामी; प्रियतम।

सजना *अ.* {सं. सज्जा} सज्जित या अलंकृत होना, सजाया जाना; *स.* सजाना।

सजनी *स्त्री.* सखी, सहेली।

सजन्य *वि.* जाति का।

सजल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सजला} जल से युक्त; आँसुओं से भरा (नेत्र)।

सजवना *स.* = सजाना; तैयारी करना।

सजवल *पुं.* {हिं. सजना} सजावट; सुन्दरता; उपक्रम, तैयारी; ठाठबाट।

सजवाई *स्त्री.* {हिं. सजवाना} सजवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

सजवाना *स.* हिं. सजाना प्रे.।

सजा *स्त्री.* {फा. सज़ा} दंड; कारागार में बंद रखने का दंड।

सजाइ *स्त्री.* {हिं. सजाना} सजाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

सजाई *स्त्री.* सजाने का भाव।

सजागार *वि.* सजग।

सजात *वि.* {सं.} जो साथ में उत्पन्न हुआ हो; *पुं.* वे लोग जो एक ही स्थान में जनमे, पले और रहते हों; *वि.* सजाति।

सजाति, सजातीय *वि.* {सं.} एक ही जाति या वर्ग के (लोग या पदार्थ); एक ही प्रकृति, स्वरूप या प्रकार के (कॉग्नेट)।

सजान *पुं.* {सं. सज्ञान} जानकार, ज्ञाता; चतुर, होशियार।

सजाना *स.* {सं. सज्जा} इस प्रकार उचित स्थान पर अच्छे क्रम से रखना कि देखने में भला जान पड़े; नई चीजें या बातें जोड़ या रखकर सुंदर बनाना, अलंकृत करना।

सजाय *स्त्री.* सजा।

सजा-याफ्ता *वि.* {फा. सज़ा-याफ्ता} जिसे कैद की सजा मिल चुकी हो।

सजाव *पुं.* मलाईदार दही।

सजावट *स्त्री.* {हिं. सजाना} सजे हुए होने की क्रिया या भाव।

सजावटी *वि.* {हिं. सजावट} सजावट के काम आनेवाला।

सजावन *पुं.* सजाने की क्रिया।

सजावान *पुं.* = सजावट।

सजावना *स.* = सजाना।

सजावल *पुं.* {तु. सजाबुल} लेन या कर उगाहनेवाला कर्मचारी; जमादार।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजिल्द *वि.* = जिल्ददार।

सजीला *वि.* {हिं. सजना} {*स्त्री.* सजीला} सजधज से या बनठनकर रहनेवाला, छैला; सुंदर, आकर्षक।

सजीव *वि.* {सं.} जिसमें जीवन या प्राण हों; जिसमें ओज या तेज हो।

सजीवन *पुं.* संजीवनी बूटी।

सजुग *वि.* सजग, सचेत।

सजुता *स्त्री.* छंद जिसके हरेक चरण में सात अक्षर होते हैं।

सजूरी *स्त्री.* {?} एक प्रकार की मिठाई।

सजोना *स.* = सजाना।

सजोयल *वि.* सँजोइल।

सज्ज *पुं.* साज।

सज्जन *पुं.* {सं. सत् + तन} {*भाव.* सज्जनता} सबके साथ अच्छा, प्रिय और उचित व्यवहार करनेवाला, भला आदमी, शरीफ; प्रियतम।

सज्जनता *स्त्री.* {सं.} 'सज्जन' होने का भाव, भलमनसत, सौजन्य।

सज्जनताई *स्त्री.* = सज्जनता।

सज्जा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* सज्जित} सजाने की क्रिया या भाव, सजावट; वेश-भूषा; कोई काम ठीक तरह से पूरा करने के लिए सभी आवश्यक उपकरण, साधन आदि एकत्र करके यथास्थान बैठाना या लगाना; उक्त कार्य के लिए सभी आवश्यक और उपयोगी उपकरणों और साधनों का समूह (ईक्विपमेंट, अंतिम दोनों अर्थों के लिए); *स्त्री.* शय्या।

सज्जित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सज्जिता} सजा हुआ, अलंकृत; आवश्यक अंगों, उपकरणों, वस्तुओं या साधनों से युक्त, जैसे सज्जित सेना या भवन (इक्विपड)।

सज्जी *स्त्री.* {सं. सर्जिका} एक प्रसिद्ध क्षार जो चीजें धोने या साफ करने के काम में आता है।

सज्जता *स्त्री.* सजुता नाम छंद।

सज्जुष्ट *वि.* सुख देनेवाला।

सज्ञान *वि.* {सं.} ज्ञानवान; चतुर; बुद्धिमान।

सझनी *स्त्री.* छोटा पक्षी।

सञ्या *स्त्री.* सज्जा; शय्या।

सटक *स्त्री.* {अनु. सट से} सटकने की क्रिया या भाव; धीरे-से चल देना; पतली लचकीली छड़ी।

उदा. चिलक, चिकनई, चटक सौं लफति सटक लैं आइ–**बिहारी।**

हुक्का पीने की लचीली नली, नैचा।

सटकन *स्त्री.* {हिं. सटकना} सटकने की क्रिया या भाव, हट जाना।

सटकना *अ.* {अनु. सट से} धीरे से या चुपचाप खिसक जाना।

सटकाना *स.* {अनु. सट से} छड़ी आदि से मारना।

सटकारना *स्त्री.* {हिं. सटकारना} सटकारने की क्रिया या भाव; पशुओं को हाँकने की क्रिया।

सटकारना *स.* {अनु.} {*भाव.* सटकार} छड़ी या कोड़े से सट-सट मारना; गौ, बैल आदि हाँकना।

सटकारा *वि.* {अनु.} चिकना, मुलायम और लम्बा (विशेषत: बाल, बहु. में)।

सटकारी *स्त्री.* {हिं. सटकार} छोटी और पतली छड़ी।

सटना *अ.* {सं. स + स्था} आपस में इस प्रकार मिलना कि दोनों के पार्श्व या तल एक दूसरे से लग जाएँ; चिपकना; मार-पीट होना।

सटपट *स्त्री.* {अनु.} इधर-उधर की व्यर्थ की बातें या काम; संकोच; दुविधा, असमंजस, आगा-पीछा; डर, भय; घबराहट।

उदा. अरी खरी सटपट परी, विधु आधैं मग हेरि–**बिहारी।**

सटपटाना *अ.* सिटपिटाना।

सटर-पटर *वि.* {अनु.} व्यर्थ का, निकम्मा या तुच्छ।

सटा *स्त्री.* {सं. जटा} शेर की गरदन पर के बाल, अयाल।

उदा. सिंह की सटा ऐंचे कलम करनि करि–**केशव।**

शिखा।

उदा. यह कहिं कर गहि जटा सटा लौं सूँति सटाई–**रत्ना।**

जटा।

सटाक *पुं.* 'सट' शब्द।

सटाकी *स्त्री.* चमड़े की पट्टी वाली छड़ी।

सटान *स्त्री.* सटने की क्रिया।

सटाना *स. हिं.* सटना का *स.*।

सटियल *वि.* {?} घटिया, रद्दी।

सटिया *स्त्री.* {हिं. साटना या सटना} गुप्त रूप से बातचीत करके किसी को अपनी ओर मिलाने की क्रिया, षड्यंत्र रचना।

उदा. उनहुँ जाइ सौंह दै पूछौ, मै करि पठयौ सटिया–**सूर।**

सटीक[1] *वि.* {सं.} जिसमें मूल के सिवा टीका भी हो, व्याख्या सहित।

सटीक[2] *वि.* {हिं. ठीक} {*भाव.* सटीकपन} बिल्कुल ठीक (एक्योरेट)।

सटोरिया *पुं.* सट्टेबाज।

सट्टक *पुं.* {सं.} एक प्रकार का छोटा रूपक।

सट्टा *पुं.* {देश.} इकरारनामा; साधारण व्यापार से भिन्न खरीद-बिक्री का वह प्रकार जो केवल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेजी-मंदी के विचार से अतिरिक्त लाभ करने के लिए होता है, खेला (स्पेक्युलेशन)।

सट्टा-बट्टा पुं. {हिं. सटना + बट्टा} हेल-मेल; चालबाजी; अनुचित संबंध।

सट्टी स्त्री. {हिं. हट्टी} वह बाजार जिसमें एक ही तरह की चीजें कुछ निश्चित समय पर आकर बिकतो हैं, हाट।

सट्टेबाज पुं. {हिं. सट्टा + फा. बाज़} {भाव. सट्टेबाजी} वह जो केवल तेजी-मंदी, के विचार से खरीद-बिक्री करता हो, सट्टा खेलनेवाला (स्पेक्युलेटर)।

सट्टेबाजी स्त्री. सट्टा खेलने का काम; सट्टा खेलने की आदत।

सठ वि. दुष्ट, पाजी।

सठता स्त्री. शठता, पाजीपन।

सठमति वि. {सं. शठ + मति} दुष्ट प्रकृतिवाला, दुष्ट।

उदा. तजतु अठान न हठ परयो सठमति आठौ जाम-बिहारी।

सठियाना अ. {हिं. साठ} साठ वर्ष का होना; बुड्ढा हो जाने पर बुद्धि का ठीक काम न देना।

सठोरा पुं. सोंठोरा।

सड़क स्त्री. {अ. शरक} आने-जाने का चौड़ा पक्का रास्ता, राजमार्ग।

सड़न स्त्री. {हिं. सड़ना} सड़ने की क्रिया या भाव।

सड़ना अ. {सं. सरण} किसी चीज में ऐसा विकार होना जिससे उसके अंग गलने लगें और उसमें दुर्गंध आने लगे; जल मिले हुए पदार्थ में खमीर उठना या आना; हीन अवस्था में पड़ा रहना।

सड़सठ वि. साठ और सात की संख्या-67.

सड़सड़ स्त्री. {अनु.} कोड़े लगने का शब्द।

सड़ाक पुं. कोड़े के फटकराने का शब्द।

सड़ान स्त्री. सड़ने की क्रिया।

सड़ाना स. हिं. 'सड़ना' का स.।

सड़ायँध स्त्री. {हिं. सड़न + गंध} किसी चीज के सड़ने पर उसमें से आनेवाली दुर्गंध) घावों, फोड़ों आदि के जहरीले होकर सड़ने की अवस्था या भाव, पूति (लेप्सिस)।

सड़ाव पुं. {हिं. सड़ना} सड़ने की क्रिया या भाव।

सड़ासड़ क्रि. वि. {अनु. सड़ से} सड़-सड़ शब्द के साथ; जल्दी-जल्दी।

सड़ियल वि. {हिं. सड़ना} सड़ा हुआ; निकृष्ट, रद्दी, खराब।

सतत क्रि. वि. संतत।

सत¹ पुं. {सं. सत्} सत्यतापूर्ण धर्म।

मुहा. *सत पर चढ़ना* = पति का मृत शरीर लेकर चिता पर बैठना और उसके साथ सती होना; *सत पर रहना* = पतिव्रता होना।

सत² पुं. {सं. सत्य} किसी चीज में से निकाला हुआ सार भाग, तत्व; जीवनी शक्ति, ताकत।

सत³ वि. सात (संख्या) का संक्षिप्त रूप (यौ. के आरंभ में जैसे सतलड़ा हार); वि. शत; सत्।

सतकरा पुं. {सं. सत्य + कार्य} सत्य की रक्षा, पालन या उसके प्रति होनेवाली निष्ठा।

सतकार पुं. सत्कार।

सतकारना स. = सत्कार करना।

सतगँठिया स्त्री. वनस्पति जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

सतगारा पुं. सथिया।

सतगुरु पुं. {हिं. सत् + गुरु} सच्चा और अच्छा गुरु; परमात्मा।

सतजुग पुं. = सत्ययुग।

सतत क्रि. वि. {सं.} सदा, हमेशा, निरंतर, लगातार; वि. जिसका क्रम बीच में न टूटे, लगातार चलता रहनेवाला (परपेचुअल)।

सततरत वि. {सं.} सदा किसी काम में लगा रहनेवाला।

सतदल पुं. {सं.} कमल, शतदल।

सतनजा पुं. {हिं. सात + अनाज} सात भिन्न प्रकार के अन्नों का मेल।

सतनी स्त्री. सतितन।

सतनु वि. शरीरवाला।

सतपदी स्त्री. सप्तपदी।

सतफेरा पुं. सप्तपदी।

सतभाएँ क्रि. वि. {सं. सद्भाव} अच्छे भाव से, सद्भावपूर्वक।

सतभाय पुं. सद्भाव।

सतपतिया स्त्री. वह स्त्री जिसने सात पति किये हों, छिनाल।

सतमली स्त्री. शतावरी, सतावर।

सतमासा पुं. {हिं. सात + मास} वह बच्चा जो गर्भ के सातवें महीने में उत्पन्न हो; गर्भाधान के सातवें महीने होनेवाला कृत्य (हिन्दू)।

सतयुग पुं. सत्ययुग।

सतयुगी वि. = सत्ययुगी।

सतरंगा वि. {हिं. सात + रंग} {स्त्री. सतरंगी} सात रंगोंवाला; पुं. इंद्रधनुष।

सतर¹ स्त्री. {अ.} रेखा, लेकीर; पंक्ति, कतार; वि. टेढ़ा, वक्र; क्रुद्ध, नाराज।

सतर² क्रि. वि. {सं. सत्वर} शीघ्रतापूर्वक, जल्दी से।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतराई *स्त्री.* {सं. शत्रु + आई (प्रत्य.)} शत्रुता, दुश्मनी।
उदा. कोऊ कहै होई करम दुखदाता, सो तौ मैं न कीन्ह सतराई–सूर।

सतराना *अ.* {सं. संतर्जन} क्रुद्ध होना।

सतरौंहाँ *वि.* {हिं. सतराना} कुपित, क्रुद्ध।

सतर्क *वि.* {सं.} {*भाव.* सतर्कता} तर्क या युक्ति से युक्त; सावधान।

सतर्पना *स.* {सं. सतर्पण} अच्छी तरह से तुष्ट करना, खूब प्रसन्न करना।

सतल *वि.* तलयुक्त।

सतलज *स्त्री.* शतद्रु नदी।

सतलड़ी *स्त्री.* {हिं. सात + लड़} सात लड़ों की माला।

सतवंती *वि.* सती।

सतसई *स्त्री.* {सं. सप्तशती} एक ही प्रकार की सात सौ चीजों का समूह; किसी कवि के सात सौ पद्यों का संग्रह, जैसे बिहारी-सतसई, वृन्द-सतसई।

सतह *स्त्री.* {*अ.*} किसी वस्तु का ऊपरी भाग या तल।

सतहत्तर *वि.* सत्तर और सात की संख्या-77.

सतहरा *वि.* {हिं. सत + हारना} जिसने सत्य हार या छोड़ दिया हो।

सतांग *पुं.* {सं. शतांग} रथ (सवारी का)।

सताना *स.* {सं. संतापन} कष्ट या दुख देना, पीड़ित करना।

सतावना *स.* = सताना।

सतार *वि.* ताराओं से मंढ़ा हुआ।

सतालू *पुं.* सफतालू सब्जी।

सतासी *वि.* अस्सी और सात की संख्या-87.

सति *पुं.* सत्य, *स्त्री.* दान-दक्षिणा।

सतिभाएँ *क्रि. वि.* सतभाएँ।

सती¹ *वि.* {सं.} {*भाव.* सतीत्व} पति के सिवा और किसी पुरुष का ध्यान न करनेवाली स्त्री, साध्वी, पतिव्रता; *स्त्री.* दक्ष प्रजापति की कन्या और शिव की पहली पत्नी; वह जो अपने पति के शव के साथ चिता में जलकर या उसके मरने पर तुरन्त किसी और प्रकार से अपने प्राण दे दे।

सती² *पुं.* {सं. सत + ई (प्रत्य.)} सदा सत या सत्य पर आरूढ़ और दृढ़ रहनेवाला, परम सत्यनिष्ठ, जैसे जती-सती।

सतीत्व *पुं.* {सं.} सती होने का भाव; स्त्री की वह विशेषता या गुण जिसके कारण वह अपने पति के सिवा और किसी पुरुष से प्रेम-संबंध नहीं करती, पतिव्रत।

सतीत्वहरण *पुं.* {सं.} किसी सदाचारिणी स्त्री के साथ बलपूर्वक संभोग करना।

सतीपन *पुं.* = सतीत्व।

सतुआ *पुं.* = सत्तू।

सतुष *वि.* भूसी के साथ।

सतून *पुं.* {सं. स्थूण से फा. सुतून} खंभा, स्तम्भ।

सतृष्ण *वि.* {सं.} तृष्णा से युक्त, तृष्णापूर्ण।

सताखन *स.* {सं. संतोषण} संतुष्ट या तृप्त करना, ढारस देना।

सतोगुण *पुं.* सत्त्वगुण।

सतोगुणी *वि.* {हिं. सतोगुण} जिसमें सत्त्व गुण पूर्ण रूप से हो, सत्वगुण से युक्त।

सत् *पुं.* {सं.} ब्रह्म; *वि.* सत्य; सज्जन; नित्य, स्थायी; शुद्ध, पवित्र; श्रेष्ठ।

सत्कथा *स्त्री.* शास्त्र-संबंधी कथा।

सत्करण *पुं.* सत्कार करना।

सत्कर्ता *वि.* {सं.} सत्कार करनेवाला, सत्कारक।

सत्कर्म *पुं.* {सं. सत्कर्मन्} {कर्ता सत्कर्मी.} अच्छा या शुभ काम।

सत्कार *पुं.* {सं.} आनेवाले व्यक्ति का आदर या सम्मान, खातिरदारी; धन आदि भेंट देकर किसी का किया जानेवाला आदर, सम्मान या सेवा।

सत्कारक *वि.* {सं.} सत्कार करनेवाला, सत्कर्ता।

सत्कारी *वि.* सत्कार-संबंधी; *पुं.* सत्कारक।

सत्कार्य *वि.* {सं.} सत्कार करने के योग्य; *पुं.* उत्तम कार्य, अच्छा काम, सत्कर्म।

सत्कीर्ति *स्त्री.* {सं.} अच्छी और उत्तम कीर्ति या यश।

सत्कुल *पुं.* {सं.} अच्छा या ऊँचा कुल या वंश।

सत्कृत *वि.* {सं.} जिसका सत्कार किया गया हो, आदृत।

सत्कृति *पुं.* {सं.} वह जो अच्छे काम करता हो, सत्कर्मी; *स्त्री.* अच्छी कृति, उत्तम कार्य।

सत्त¹ *पुं.* {सं. सत्त्व} किसी मूर्त पदार्थ में से निकाला हुआ उसका सार भाग, जैसे मुलेठी का सत्त; जीवनी शक्ति; जीव, प्राणी; आदमी, मनुष्य।
उदा. यद्यपि होय शुद्ध मति सत्तु। फिरै पिशाची ज्यौं उनमत्तु–केशव।

सत्त² *पुं.* {सं. सत् या सत्य} स्त्री का सतीत्व, पतिव्रत्य; *पुं.* सत।

सत्तर *वि.* साठ और दस की संख्या-70.

सतर्क *पुं.* उत्तम तर्क।

सत्तम *वि.* {सं.} सबसे बढ़कर, सर्वश्रेष्ठ; परम पूज्य; परम साधु।

सत्ता¹ *स्त्री.* {सं.} मूर्त रूप में होने अथवा वर्तमान रहने की अवस्था या भाव, 'अभाव' का विपर्याय, अस्तित्व, भाव, हस्ती (बीइंग); शक्ति, सामर्थ्य

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का उपभोग करके अपना काम करती हो, जैसे राजसत्ता (पावर)।

मुहा. *सत्ता चलाना या जताना* = यह प्रकट या सिद्ध करना कि हममें यह सत्ता या शक्ति है।

सत्ता² पुं. {सं. सात} ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिस पर सात बूटियाँ होती हैं।

सत्ताइस *वि.* बीस और सात की संख्या-27.

सत्ताधारी (धारिन्) पुं. {सं.} वह जिसके हाथ में सत्ता हो।

सत्तानबे *वि.* नब्बे और सात की संख्या-97.

सत्तानाश पुं. सत्यानाश।

सत्तानाशी *वि.* सत्यानाशी।

सत्तापक्ष पुं. {सं.} वह पक्ष या दल जिसके पक्ष में सत्ता हो।

सत्तावन *वि.* पचास और सात की संख्या-57.

सत्तारूढ़ *वि.* {सं.} जो सत्ता प्राप्त किए हो।

सत्तू पुं. {सं. सक्तुक} भुने हुए जौ, चने आदि का चूर्ण।

सत्पति पुं. साधुओं का पालनकर्ता।

सत्तासीन *वि.* {सं.} सत्तारूढ़।

सत्त्व पुं. {सं.} {*वि.* सात्विक} सत्ता, अस्तित्व; सार, तत्व; चैतन्य; जीवनी शक्ति, प्राण; अच्छा काम।

सत्त्वगुण पुं. {सं.} प्रकृति का वह गुण जो अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्ति करता है।

सत्पथ पुं. {सं.} {*भाव.* सत्पात्रता} उत्तम मार्ग; सदाचार, अच्छा आचरण।

सत्परामर्श पुं. {सं.} ऐसा परामर्श जिससे हित हो।

सत्पात्र पुं. {सं.} दान आदि ग्रहण करने के योग्य श्रेष्ठ व्यक्ति या अधिकारी; श्रेष्ठ और सदाचारी व्यक्ति।

सत्पुरुष पुं. सज्जन।

सत्प्रवृत्ति *स्त्री.* {सं.} अच्छी प्रवृत्ति।

सत्यंकार पुं. {सं.} कोई बात निश्चित करने के समय पहले से दिया जानेवाला धन, अग्रिम, पेशगी, अगाऊ।

सत्य *वि.* {सं.} {*भाव.* सत्यता} जिसके बिल्कुल ठीक होने में कोई संदेह न हो (रूल); जैसा हो या होना चाहिए, वैसा; असल, वास्तविक; पुं. यथार्थ तत्व, ठीक बात; न्यायसंगत और धर्म की बात; ऊपर के सात श्लोकों में से सबसे ऊपरी लोक; सतयुग।

सत्यकाम *वि.* {सं.} सदा उत्तम या रूढ़ बातों की कामना करनेवाला।

सत्यता *स्त्री.* {सं.} सत्य का भाव, सच्चापन, सच्चाई।

सत्यनारायण पुं. {सं.} विष्णु का एक नया नाम या रूप; *वि.* सदा सत्य पर दृढ़ रहनेवाला, सत्यव्रत।

सत्यप्रतिज्ञ *वि.* {सं.} अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला, बात का पक्का।

सत्ययुग पुं. {सं.} पुराणों के अनुसार चार युगों में से पहला जो सबसे अच्छा माना गया है।

सत्ययुगीन *वि.* {सं.} सत्ययुग का।

सत्यलोक पुं. {सं.} सबसे ऊपर का लोक जिसमें ब्रह्म रहता है (पुराण)।

सत्यवादी *वि.* {सं. सत्यवादिन्} {*स्त्री.* सत्यवादिनी} सच बोलनेवाला।

सत्यव्रत पुं. {सं.} वह जिसने सदा सच बोलने और सद् आचरण करने का व्रत ले रखा हो, सदा सच बोलनेवाला।

सत्यसंध *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सत्यसंधा} अपने वचन का पालन करनेवाला।

सत्या *स्त्री.* सत्ता; सत्यता।

सत्याग्रह पुं. {सं.} {कर्ता सत्याग्रही} किसी सत्य या न्यायपूर्ण पक्ष की स्थापना के लिए शांतिपूर्वक हठ करना।

सत्याग्रही पुं. {सं. सत्याग्रहिन्} वह जो सत्याग्रह करता हो।

सत्यानाश पुं. {सं. सत्ता + नाश} {*वि.* सत्यानाशी} सर्वनाश, ध्वंस, बरबादी।

सत्यानाशी *वि.* {हिं. सत्यानाश} सत्यानाश या पूरी बरबादी करनेवाला; *स्त्री.* भड़भाँड़।

सत्यायु पुं. उर्वशी का पुत्र।

सत्येतर *वि.* सत्य से अलग।

सत्यापक *वि.* {सं.} सत्यापन करनेवाला, यह कहनेवाला कि यह बिल्कुल ठीक है, जैसे सत्यापक लेख या सत्यापक अधिकारी।

सत्यापन पुं. {सं.} {*वि.* सत्यापित} कहकर सिद्ध करना कि यह ठीक है (सर्टिफिकेशन); मिलान या जाँच करके यह देखना कि यह ठीक या ज्यों-का-त्यों है न (वेरिफिकेशन); लेख्य आदि पर उसके ठीक होने की बात लिखकर हस्ताक्षर करना (एटेस्टेशन)।

सत्यापित *वि.* {सं. सत्यापन} जिसका सत्यापन हुआ हो (वेरीफाइड)।

सत्र पुं. {सं.} {*वि.* सत्रिक} यज्ञ; घर, मकान; वह स्थान जहाँ गरीबों को भोजन बाँटा जाता है, क्षेत्र, सदावर्त; वह नियत काल जिसमें कोई कार्य एक बार आरंभ होकर कुछ समय तक बराबर होता रहता है (सेशन); वह नियत काल जिसमें कोई कार्यकर्ता या प्रतिनिधि अपना काम करता है (टर्म)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्र-न्यायालय पुं. {सं.} किसी जिले के जज का वह न्यायालय जिसमें कुछ विशिष्ट गुरुतर अपराधों का विचार होता है और जिसमें किसी व्यवहार या मुकदमे का विचार आरंभ होने पर तब तक चलता रहता है, जब तक उसका निर्णय नहीं हो जाता (सेशन्स कोर्ट)।

सत्राई *स्त्री.* {सं. शत्रुता} शत्रुता, दुश्मनी।
उदा. कोउ कहै सत्रु होई दुखदाई। सो तौ मैं न कीन्ह सत्राई–**सूर**।

सत्रावसान पुं. {सं.} {*वि.* सत्रावसानित} विधान सभाओं आदि के किसी अधिवेशन का अधिकारिक रूप से कुछ समय के लिए बंद किया जाना अथवा अगले अधिवेशन तक के लिए स्थगित किया जाना (प्रोरोग)।

सत्रिक *वि.* {सं.} सत्र-संबंधी, सत्र का; किसी सत्र या नियत काल पर होता रहनेवाला (पीरियॉडिक); किसी सत्र या नियत काल तक बराबर होता रहनेवाला (टरमिनल)।

स्त्री पुं. यज्ञ करनेवाला।

सत्रुहन पुं. शत्रुघ्न।

सत्वर *क्रि. वि.* {सं.} शीघ्र, जल्द।

सत्संग पुं. {सं.} {*वि.* सत्संगी} साधुओं या सज्जनों का संग-साथ, भली संगत; वह समाज जिसमें धर्म या आध्यात्म-संबंधी चर्चा होती हो।

सत्संगति *स्त्री.* = सत्संग।

सत्संगी *वि.* {हिं. सत्संग} सत्संग में रहने या सत्संग करनेवाला; धार्मिक या आध्यात्मिक समाज में बराबर जानेवाला और धर्मशील।

सत्समागम पुं. भले आदमियों का सेवन।

सत्साहित्य पुं. {सं.} उत्तम साहित्य, उच्चकोटि का साहित्य।

सथर *स्त्री.* {सं. स्थल} भूमि।

सथिया पुं. {सं. वास्तविक} स्वस्तिक चिह्न; भारतीय ढंग से फोड़ों की चीर-फाड़ करनेवाला, अस्त्र चिकित्सक; जुलाहों के काम की बाँस या सरकंडे की पतली छड़ी, सर।

संदभ *वि.* घमंडी।

सद[1] *वि.* {सं. सध} ताजा, हाल का।

सद[2] *वि.* {सं. सद्} बढ़िया, अच्छा।

सदई *क्रि. वि.* = सदैव य सदा।

सदका पुं. {*अ.* सद्कः} खैरात, दान; निछावर, उतारा।

सदके *वि.* {*अ.* सद्कः} निछावर किया हुआ (किसी के लिए अपना सर्वस्व निछावर करने का सूचक)।

सदगति *वि.* {सं.} सदा चलता रहनेवाला; पुं. वायु, हवा; सूर्य।

सदचारी पुं. = सदाचारी; *वि.* ठीक और सत्य।
उदा. एतो ही नहिं इष्ट होई सम्मति सदचारी–**रत्ना.**।

सदक्ष *वि.* ज्ञान से भरा, विवेक से युक्त।

सदन पुं. {सं.} {*वि.* सदनिक.} घर, मकान; वह स्थान जिसमें किसी विषय पर विचार करने या नियम, विधान आदि बनानेवाली सभा का अधिवेशन होता है; उक्त कार्यों के लिए होनेवाली सभा या उपस्थित होनेवाले लोगों का समूह; वह स्थान या भवन जिसमें बहुत से लोग, दर्शक या प्रेक्षक के रूप में उपस्थित हों; उक्त प्रकार के स्थानों में उपस्थित होनेवाले लोगों का समूह (हाउस, उक्त सभी अर्थों के लिए); पुं. एक प्रसिद्ध हरि भक्त कसाई का नाम।

सदना *क्रि.* छेद से रसना।

सदबर्ग पुं. हजार पत्तियों वाला गेंदा।

सदर्थ पुं. अच्छा विषय।

सदथना *क्रि.* समर्थन करना।

सदमा *वि.* {सं. सद्मः} किसी दुखद घटना का आघात या चोट।

सदय *वि.* {सं.} {*भाव.* सदयता} जिसके मन में दया हो, दयालु।

सदर *वि.* {*अ.* सद्र} प्रधान, मुख्य; पुं. वह स्थान जहाँ कोई बड़ा अधिकारी रहता हो या किसी विभाग का प्रधान कार्यालय हो, केन्द्रस्थल; सभापति।

सदरआला पुं. {*अ.* सद्र + आला = बड़ा} दीवानी अदालत का एक प्रकार का वैचारिक अधिकारी जो जज से छोटा होता है।

सदराला पुं. सदरआला।

सदरी *स्त्री.* {*अ.* सद्री} बिना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती।

सदर्थना *स.* {सं. समर्थ} समर्थन या पुष्टि करना।

सदसद्विवेक पुं. {सं.} सद् और असद् या अच्छे और बुरे की पहचान या विवेक।

सदसि *स्त्री.* {सं. सदस्य} सदस्यों या सभ्यों के बैठने का स्थान।
उदा. विपुल भूपति-सदसि मँह नर-नारि कह्यौ प्रभु पाहिं–तुलसी।

सदस्य पुं. {सं.} {*भाव.* सदस्यता} सभा या समाज में सम्मिलित व्यक्ति; सभासद (मेम्बर)।

सदस्यता *स्त्री.* {सं.} सदस्य होने की अवस्था, भाव या पद (मेम्बरशिप)।

सदा[1] *क्रि. वि.* {सं.} नित्य, हमेशा।

सदा[2] *स्त्री.* {*अ.*} शब्द, आवाज; पुकार; संगीत में कोई सुन्दर स्वर लहरी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदाचरण, सदाचार पुं. {सं.} उत्तम आचरण, अच्छा चाल-चलन।

सदाचारिता *स्त्री.* सदाचारण।

सदाचारी पुं. {सं. सदाचारिन्} {*स्त्री.* सदाचारिणी} नैतिक दृष्टि से अच्छे आचरणवाला मनुष्य।

सदातन पुं. {सं.} विष्णु।

सदाफल *वि.* {सं.} वृक्ष जो सदा या बारहों महीने फल देता हो; पुं. एक प्रकार का नींबू; गूलर; नारियल; बेल (वृक्ष और उसका फल)।

सदाबहार *वि.* {हिं. सदा + फा. बहार} सदा हरा रहनेवाला वृक्ष।

सदारत *स्त्री.* {*अ.*} सभापतित्व।

सदाभव *वि.* सदा रहनेवाला।

सदावर्त पुं. {सं. सदाव्रत} वह स्थान जहाँ गरीबों को नित्य भोजन मिलता हो, अन्नसत्र।

सदाशय *वि.* {सं.} {*भाव.* सदाशयता} अच्छी नीयतवाला, सज्जन, भला मानस।

सदाशिव पुं. {सं.} शिव, महादेव; *वि.* सर्वदा कल्याण करनेवाला।

सदासुख *वि.* हमेशा सुखी।

सदा-सुहागिन *स्त्री.* = वेश्या (परिहास)।

सदिच्छा *स्त्री.* {सं.} दूसरे की भलाई की इच्छा।

सदी *स्त्री.* शती।

सदुपदेश पुं. {सं.} उत्तम उपदेश, अच्छी शिक्षा; अच्छी सलाह।

सदुपयोग पुं. {सं. सद् + उपयोग} सद् या अच्छा उपयोग, अच्छी तरह या अच्छे काम में लगना।

सदूर पुं. {सं. शार्दूल} सिंह, शेर।

उदा. बेगि आइ पिउ बारहु गाजहु होइ सदूर–जायसी।

सदृश *वि.* {सं.} {*भाव.* सादृश्य} समान, तुल्य।

सदेश *वि.* पड़ौसी।

सदेह *क्रि. वि.* {सं.} इसी शरीर से, सशरीर; मूर्तिमान, प्रत्यक्ष।

सदैव *क्रि. वि.* {सं.} सदा, हमेशा।

सदोष *वि.* दोषयुक्त, अपराध करनेवाला।

सद्गति *स्त्री.* {सं.} मरने के बाद अच्छे लोग में जाना।

सद्गुण पुं. {सं.} {*वि.* सद्गुणी} अच्छा गुण।

सद्गुणी *वि.* अच्छे गुणों से युक्त।

सद्गुरु पुं. धर्मगुरु, परमात्मा।

सद्ग्रंथ पुं. अच्छे रास्ते पर ले जाना ग्रंथ।

सद्ग्रह पुं. शुभ ग्रह-बृहस्पति व शुक्र।

सद्द[1] पुं. {सं. शब्द} शब्द, ध्वनि।

सद्द[2] *क्रि. वि.* {सं. संघ} तुरन्त, तत्काल; *वि.* तुरन्त का बना, ताजा।

सद्दर्शन पुं. {सं.} सद् या उत्तम और उच्च कोटि का दर्शन शास्त्र।

सद्धर्म पुं. {सं.} {*वि.* सद्धर्मी} अच्छा या उत्तम धर्म; बौद्ध धर्म।

सद्भाव पुं. {सं.} प्रेम और हित का भाव; कोई काम करने में सच्चा या अच्छा भाव या नीयत (गुडविल); मेल-जोल, मैत्री।

सद्भावना *स्त्री.* {सं.} अच्छी और शुभ भावना; किसी के हित, मंगल या सद्भाव की भावना या कामना या उसे प्रकट करने की स्थिति; कार-बार या व्यापारिक संस्था बेचने के प्रसंग में एक तत्व जिसके अंतर्गत उस कार-बार का नाम और उसके साथ रहनेवाला ग्राहकों आदि का संबंध भी रहता है और जो प्रायः कार-बार के साथ ही बेचा जाता है (गुडविल)।

सद्म पुं. {सं. सद्मन् {*स्त्री.* अल्पा. सद्मनी}} घर, मकान; युद्ध।

सद्मनी *स्त्री.* {सं.} छोटा सुन्दर, घर; कोठरी।

सद्य, सद्यः *क्रि. वि.* {सं.} आज के दिन, आज ही; इसी समय, अभी।

उदा. कीरति कुमारी के दरस-रस सद्य बही की छलकनि चाहि पलकनि तुलकाए लेत–**रत्ना.**।

तुरन्त तत्काल, उसी समय।

सद्योजात पुं. शिव, महादेव।

सद्रूप *वि.* {सं.} {*भाव.* सद्रूपता} अच्छे स्वरूप वाला, सुन्दर; अच्छे गुणों या आचरणवाला, सज्जन।

उदा. साधु-शील सद्रुप पुरुष को, अपसज बहु उच्चरतौ–**सूर**।

सद्वाक्य पुं. {सं.} उत्तम वाक्य।

सद्वृत्त *वि.* {सं.} {*भाव.* सद्वृत्ति} अच्छी वृत्ति या आचरणवाला, सदाचारी।

सद्व्रत, सद्व्रती *वि.* {सं. सद्व्रतिन} {*स्त्री.* सद्व्रता} जिसने अच्छा व्रत धारण किया हो; सदाचारी, नेक-चलन; पुं. उत्तम या शुभ व्रत।

सधना *अ.* {हिं. साधना} कार्य सिद्ध होना, काम पूरा होना; काम चलन या निकलना, मतलब निकलना; अभ्यस्त होना, मँजना; प्रयोजन-सिद्धि के अनुकूल होना; हो सकना; निशाना ठीक होना।

सधर पुं. {सं.} ऊपर का होठ।

सधर्म *वि.* {सं.} एक ही धर्मवाला, तुल्य।

सधर्मी *वि.* {सं. सधर्मिन्} {*भाव.* साधर्म्य} किसी के समान धर्म रखनेवाला; किसी के समान, धर्म, गुणों आदि से युक्त, 'विधर्मी' का विपर्याय।

सधवा *स्त्री.* {हिं. विधवा का अनु.} वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सुहागिन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सधाना *स.* {हिं. साधना} साधने का काम दूसरे से कराना; पूरा, सम्पन्न या सिद्ध करना, निपटाना, जैसे परोसा हुआ भोजन सधाना = खाकर समाप्त करना; पशु-पक्षियों आदि को खिलाकर कोई काम करने के योग्य बनाना, जैसे मदारी बन्दर या भालू को साधता है।

सधावर *पुं.* आहार जो गर्भवती को सातवें मास में दिया जाता है।

सधुक्कड़ी *वि.* {हिं. साधु + उक्कड़ (प्रत्य.)} साधुओं का-सा, साधुओं की तरह का, जैसे सधुक्कड़ी बोली या कविता; *स्त्री.* 'साधु' होने का भाव, साधुता।

सधूम्र *वि.* धुएँ से भरा हुआ।

सन् *पुं.* {अ.} वर्ष; संवत्।

सन[1] *पुं.* {सं. शण} सनई के रेशे जिनसे रस्सियाँ और टाट बनते हैं।

सन[2] *स्त्री.* {अनु.} वेग से चलने या निकलने का शब्द।

सन[3] *प्रत्य.* {सं. संग} साथ।

सन[4] *विभ.* {प्रा. संतो} 'से' विभक्ति, का पुराना रूप।

उदा. प्रात कहा मनि सन रघुराई–तुलसी।

वि. सन्न।

सनअत *स्त्री.* {अ. सन्अत} {*वि.* सनअती} कारीगरी, शिल्प, कौशल।

सनई *स्त्री.* {हिं. सन (वनस्पति)} जूट की जाति का एक प्रकार का छोटा पौधा।

सनक *स्त्री.* {सं. शंक = खटका} पागलों की-सी धुन, प्रवृत्ति या आचरण, झक।

सनकना *अ.* {हिं. सनक} पागल होना; पागलों की-सी बातें या आचरण करना।

सनकाना *अ.* = सनकना; सनकने की आदत डालना।

सनकारना *अ.* {हिं. सैन करना} संकेत या इशारा करना।

उदा. सनकारे सेवक सकल चले स्वामी रुख पाई–तुलसी।

सनकियाना *अ.* = सनकारना।

सनत्कुमार *पुं.* {सं.} ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।

सनत्ता *पुं.* रेशम के कीड़ेवाला वृक्ष।

सनद *स्त्री.* {अ.} {*वि.* सनदी} प्रमाण, सबूत; प्रमाणपत्र।

सनना *अ.* {सं. सन्न = डूबा हुआ} गीला होकर किसी में मिलना; किसी के अन्दर घुसकर उसमें मिलना; लीन होना।

सननी *स्त्री.* सानी।

सनबंध *पुं.* = संबंध।

सनम *पुं.* {अ.} प्रिय या प्रिया।

सनमान *पुं.* सम्मान।

सनमानना *स.* {सं. सम्मान} सम्मान या सत्कार करना।

सनमुख *क्रि. वि.* = सम्मुख (सामने)।

सनसन *स्त्री.* {अनु.} हवा के चलने का शब्द।

सनसनाना *अ.* {अनु.} (हवा का) सनसन शब्द करते हुए चलना या बहना।

सनसनाहट *स्त्री.* {अनु.} सनसन शब्द होने की क्रिया या भाव।

सनसनी *स्त्री.* {फा.} शरीर के संवेदन-सूत्रों का एक प्रकार का स्पन्दन जिसमें कोई अंग जड़ होकर सनसन करता हुआ जान पड़ता है, झुनझुनी; किसी विकट, घटना के कारण लोगों में फैलनेवाली आश्चर्यपूर्ण स्तब्धता या उत्तेजना, उद्वेग, घबराहट (सेंसेशन)।

सनसनीखेज *वि.* {फा.} सनसनी उत्पन्न करनेवाला।

सनहक (की) *स्त्री.* {अ.} मिट्टी का एक प्रकार का बरतन (मुसल.)।

सना *प्रत्य.* {सं. संग} अवधि भाषा में 'करण कारक' का चिह्न साथ, से।

सनाढ्य *पुं.* {सं.} ब्राह्मणों का एक भेद जो गौड़ों के अंतर्गत है।

सनातन *पुं.* {सं.} {*भाव.* सनातनता} अत्यंत प्राचीन काल; बहुत दिनों से चला आया हुआ व्यवहार, क्रम या परंपरा; *वि.* बहुत दिनों से चला या हुआ।

सनातन धर्म *पुं.* {सं.} पुराना या परंपरागत धर्म; आजकल का हिन्दू धर्म, जिसमें पुराण, तंत्र, मूर्तिपूजन आदि विहिति और माननीय हैं।

सनातनी *पुं.* {सं. सनातन + हिं ई (प्रत्य.)} सनातन धर्म का अनुयायी; *वि.* सनातन।

सनाथ *वि.* जिसकी रक्षा करनेवाला।

सनाभ *पुं.* सगा भाई।

सनाह *पुं.* {सं. सन्नाह} कवच, बकतर।

सनि *पुं.* = शनि।

सनित *वि.* {हिं. सनना} सना या एक में मिला हुआ, मिश्रित।

उदा. सद्ग्रंथों से सनित मुख की बास संबंध से आ–हरिऔध।

सनिद्र *वि.* नींद से भरा हुआ।

सनिपात *पुं.* = सन्निपात।

सनीचर *पुं.* = शनैश्चर।

सनीड *अव्य.* समीप में।

सनस, सनेसा *पुं.* = संदेश; *पुं.* = स्नेह; प्रेम।

सनेह *पुं.* = स्नेह।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनेही *वि.* {सं. स्नेही} स्नेह या प्रेम रखनेवाला, प्रेमी।

सन् *पुं.* साल, संवत्।

सनौ *वि.* {सं. संग} मिला हुआ, युक्त।

सनौढ़िया *पुं.* = सनाढ्य (ब्राह्मण)।

सन्न *वि.* {सं. शून्य या अनु.} संज्ञाशून्य, निश्चेष्ट, जड़; स्तब्ध, भौचक; डर से चुप।

सन्नत *वि.* झुका हुआ, उदास।

सन्नद्ध *वि.* {सं.} तैयार उद्यत; काम में पूरी तरह लगा हुआ।

उदा. दैव सनद्ध (सन्नद्ध) कटिबद्ध कौन थिरता फिर थापै–**रत्ना.**।

सन्नयन *पुं.* {सं.} ले जाना; लेख या लेख्य आदि के द्वारा किसी संपत्ति, विशेषतः अचल संपत्ति का एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना या दिया जाना, अंतरण (कंवेयंस)।

सन्नाटा *पुं.* {हिं. सन से अनु.} वह अवस्था जिसमें कहीं कुछ भी शब्द न होता हो, नीरवता, निस्तब्धता; निर्जनता, एकांतता; भौचक्कापन; पूरा मौन, चुप्पी; चहल-पहल आदि का अभाव; *पुं.* जोर से हवा चलने का शब्द; *वि.* निर्जन, एकांत; नीरव, निश्शब्द।

सन्नाद *पुं.* जोर का शब्द।

सन्नाह *पुं.* {सं.} कवच, बख्तर।

सन्निकट *क्रि. वि.* {सं.} समीप, पास।

सन्निकर्ष *पुं.* {सं.} {*वि.* सन्निकृष्ट} संबंध, लगाव; निकटता, समीप।

सन्निधाता *पुं.* {सं. सन्निधातृ} प्राचीन भारतीय राजनीति में वह व्यक्ति जो राजकोष का प्रधान अधिकारी होता था।

सन्निधान *पुं.* {सं.} स्थापित करने, रखने, बैठाने आदि की क्रिया या भाव; समीपता, समागम।

सन्निधि *स्त्री.* {सं.} आपस में आमने-सामने होने की स्थिति, मुकाबला; समीपता, निकटता।

सन्निनाद *पुं.* जोर का शब्द।

सन्निपात *पुं.* {सं.} एक रोग जिसमें कफ, वात और पित्त तीनों बिगड़ जाते हैं। और सरदी लगने के कारण फेफड़ों में सूजन हो जाती है, त्रिदोष, सरसाम (न्यूमोनिया)।

सन्निबद्ध *वि.* जकड़ा हुआ।

सन्निमग्न *वि.* सोया हुआ।

सन्निरुद्ध *वि.* रोका हुआ।

सन्निविष्ट *वि.* {सं.} किसी के अंतर्गत आया या मिलाया हुआ।

सन्निवेश *पुं.* {सं.} साथ बैठना या स्थित होना; सजा या जमाकर रखना; अटना, समाना; एकत्र होना, इकट्ठा होना, जुटना।

सन्निवेशन *पुं.* {सं.} {*वि.* सन्निविष्ट} किसी को किसी दूसरी वस्तु या बात के अंतर्गत लाना, सन्निविष्ट करना, मिलाना; सजा, जमा या लगाकर रखना।

सन्निहित *वि.* {सं.} साथ या पास रखा हुआ; पास का।

सन्मान *पुं.* सम्मान।

सन्यपात *पुं.* सन्निपात।

सन्यस्त *वि.* जो साधु बन गया हो।

सन्यास *पुं.* संन्यास।

सपई *स्त्री.* पेट का केंचुआ।

सपक्ष *पुं.* समान, अनुकूल।

सपक्षता *स्त्री.* पक्ष के सहारे से।

सपंक, सपंका *वि.* {सं. स + पंक = कीचड़} कीचड़ से भरा हुआ; जिसे पार करना बहुत कठिन हो, बीहड़, विकट।

सपच *पुं.* श्वपच।

सपचना *अ.* सपुचना।

सपत्नी *स्त्री.* {सं.} पत्नी की दृष्टि से उसके पति की दूसरी स्त्री, सौत, सौतन।

सपत्नीक *क्रि. वि.* {सं.} पत्नी के सहित।

सपटा *पुं.* टाट की तरह।

सपत्न *पुं.* दुश्मन, वैरी।

सपथ *स्त्री.* कसम।

सपदि *क्रि. वि.* {हिं. स + पद = पैर} जल्दी-जल्दी (मुख्यतः चलते हुए)।

सपना *पुं.* {सं. स्वप्न} अच्छी तरह नींद न आने की दशा में दिखाई देनेवाला मानसिक दृश्य या घटना, स्वप्न।

मुहा. (कोई चीज) सपना हो जाना = इतना दुर्लभ या अप्राप्य हो जाना कि स्वप्न में भी दिखाई न दे।

सपनाना *स.* {सं. स्वप्न} स्वप्न दिखलाना; *अ.* स्वप्न देखना।

सपनी *स्त्री.* {सं. स्वप्न} स्वप्न देखने की अवस्था।

सपरदाई *पुं.* {सं. संप्रदायी} वेश्या के साथ तबला या सारंगी बजानेवाला आदमी, समाजी।

सपरना *अ.* {सं. संपादन} काम का पूरा होना, निपटना; काम हो सकना।

सपराना *स.* {हिं.} सपरना का *स.*।

सपरिषद *क्रि. वि.* {सं.} अपनी परिषद के सदस्यों या मंत्रियों आदि के साथ, जैसे सपरिषद राज्यपाद = अपने मंत्रियों या परिषद के साथ राज्यपाल (कोई काम करना या कोई आज्ञा देना)।

सपसप *स्त्री.* {अनु.} सुस्वादु पदार्थ के खाने से होनेवाला जीभ का शब्द।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपाट *वि.* {सं. स + पट्ट} जिसकी सतह पर कोई उभरी हुई वस्तु न हो, समतल; जो क्षितिज की ओर एक ही सीध में दूर तक चला गया हो (विशेषतः भूमि या मैदान) (हारिजेन्टल)।

सपाटा *पुं.* {सं. सर्पण} चलने या दौड़ने का वेग; तीव्र गति, दौड़।

सपाटू *पुं.* {देश.} महोगनी नामक वृक्ष का खाया जानेवाला फल।

सपाद *वि.* {सं.} जिसमें पूरे एक के साथ चौथाई और मिला हो, सवाया।

सपाल *वि.* लोक का पालनकर्ता।

सपिंड *पुं.* {सं.} एक ही कुल के वे लोग जो एक ही पितरों को पिंड देते हों।

सपिंडी *स्त्री.* {सं. सपिंड} मृतक के श्राद्ध में वह क्रिया जिसके अनुसार वह दूसरे मृत पूर्वजों के साथ मिलाया जाता है।

सपीतकर *पुं.* घीया, नेनुवा।

सुपुत्र *वि.* पुत्रवाला।

सपुचना *अ.* {सं. संपूर्ण} पूर्णता तक पहुँचना, पूरा होना।

उदा. नादे बिंदे रुधिर के संगे, घट ही घट सपुचे–**कबीर**।

बढ़ना; (आग) सुलगना।

सपुर्द *वि.* {फा. सिपुर्द} {*भाव.* सिपुर्दगी} किसी के जिम्मे किया हुआ, किसी को सौंपा हुआ, जैसे लड़का या मकान किसी को सुपुर्द करना; उचित कार्य, विचार आदि के लिए किसी अधिकारी के हाथ सौंपा हुआ, जैसे चोर को पुलिस से सपुर्द करना, अभियुक्त को दौरा सपुर्द करना (कमिटेड)।

सपुर्दगी *स्त्री.* {फा.} किसी के सपुर्द किए जाने, होने या रहने का भाव।

सपूत *पुं.* {सं. सत्पुत्र} अच्छा और योग्य पुत्र।

सपूती *स्त्री.* योग्य बेटा पैदा करनेवाली माता।

सपेट *स्त्री.* = झपट।

सपेद *वि.* सफेद रंग।

सपेरा *पुं.* सँपेरा।

सपोला *पुं.* साँप या छोटा बच्चा।

सप्त *वि.* {सं.} छह और एक, सात।

सप्तक *पुं.* {सं.} एक ही तरह की सात वस्तुओं, कृतियों आदि का समूह, जैसे सतसई सप्तक; संगीत में सातों स्वरों का समूह, 'षड्ज' से 'निषाद' तक के सातों स्वर (साधारणतः गाने-बजाने के लिए तीन सप्तक माने गए हैं–मन्द्र, मध्य और तार)।

सप्तपदी *स्त्री.* {सं.} विवाह के समय वर और वधू का अग्नि की सात परिक्रमाएँ करना, भाँवर।

सप्तभुज *पुं.* {सं.} सात भुजाओंवाला क्षेत्र (हेप्टिगन)।

सप्तम *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सप्तमी} सातवाँ।

सप्तमी *स्त्री.* {सं.} चांद्र मास के किसी पक्ष की सातवीं तिथि; अधिकरण कारक की विभक्ति (व्याकरण)।

सप्तर्षि *पुं.* {सं.} इन सात ऋषियों का समूह या मंडल गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप और अत्रि अथवा मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वशिष्ठ; वे सात तारे जो साथ रहकर ध्रुव की परिक्रमा करते हुए दिखलाई पड़ते हैं।

सप्ला *स्त्री.* चमेली का फूल।

सप्तशती *स्त्री.* {सं.} सात सौ (छंदों आदि) का समूह, सतसई।

सप्ताह *पुं.* {सं.} {*वि.* साप्ताहिक} सात दिनों का काल, हफ्ता; सोमवार से रविवार तक के सात दिन; भागवत, रामायण आदि की पूरी कथा सात दिन में पढ़ना या सुनना।

सप्ताहांत *पुं.* {सं.} सप्ताह का अंतिम भाग, शनिवार का आधा और रविवार का पूरा दिन।

सप्रतिबंध *वि., क्रि. वि.* {सं.} सशर्त।

सफ[1] *स्त्री.* {*अ.*} पंक्ति, कतार।

सफ[2] *स्त्री.* {फा. सैफ़} तलवार।

सफजंग *स्त्री.* {फा. सैफ़ = तलवार + जंग = युद्ध} योद्धाओं में तलवारों से होनेवाली लड़ाई।

सफर *पुं.* {*अ.* सफ़र} यात्रा; रवानगी।

सफरखर्च *पुं.* {*अ.* सफ़र + फा. ख़र्च} मार्गव्यय।

सफरदाई *पुं.* बाजा बजानेवाला।

सफरमैना *स्त्री.* {अं. सैपर + माइनर} सेना के वे सिपाही जो खाई खोदने, जंगल काटने या रास्ता साफ करने के लिए उसके आगे-आगे चलते हैं।

सफरी[1] *वि.* {*अ.* सफ़र} सफर में काम आनेवाला (छोटा और हल्का)।

सफरी[2] *स्त्री.* {सं. शफरी} सौरी मछली।

सफरी[3] *स्त्री.* {देश.} धातु का एक प्रकार का पीला वरक या पन्नी।

सफल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सफला, *भाव.* सफलता} जिसमें फल लगा हो; जिसका कुछ फल या परिणाम हो, सार्थक; जिसने प्रयत्न करके कार्य या उद्देश्य सिद्ध कर लिया हो, कृतकार्य, कामयाब (सक्सेसफुल)।

सफलता *स्त्री.* {सं.} 'सफल' होने का भाव, कार्य की सिद्धि, कामयाबी (सक्सेस)।

सफला *स्त्री.* पौष महीने की कृष्ण-पक्ष की एकादशी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफलित *वि.* = सफल।

सफलीभूत *वि.* {सं.} जिसने सफलता प्राप्त कर ली हो, जो सफल हो चुका हो।

सफा *पुं.* {अ. सफ़्हः} पुस्तक का पृष्ठ; *वि.* साफ।

सफाई *स्त्री.* {अ.} 'साफ' करने की क्रिया या भाव; लड़ाई-झगड़े आदि का निपटारा, दुर्भाव न रह जाना; अभियुक्त का अपनी निर्दोषिता प्रमाणित करना।

सफाई कर्मचारी *पुं.* सफाई का काम करनेवाला कर्मचारी।

सफाईपसंद *वि.* {फा.} जिसे सफाई पसंद हो।

सफाचट *वि.* {हिं. साफ} बिल्कुल साफ या चिकना।

सफ्तालू *पुं.* सफतालू।

सफाया *पुं.* {अ. साफ़} कुछ भी बाकी न रह जाना, पूरी सफाई; पूर्ण विनाश।

सफीना *पुं.* {अ. सफ़ीनः} अदालत या पुलिस की ओर से हाजिर होने का बुलावा।

सफीर *पुं.* {अ.} राजदूत।

सफेद *वि.* {फा. सुफ़ैद} उजला।

सफेद दाग *पुं.* {हिं. सफेद + अ. दाग} श्वेतकुष्ट नामक रोग में शरीर पर होनेवाला सफेद धब्बा; श्वेतकुष्ट।

सफेदपोश *पुं.* {फा.} {भाव. सफेदपोशी} साफ कपड़े पहननेवाला; साधारण गृहस्थ, पर भला आदमी।

सफेदा *पुं.* {फा. सुफ़ैदः} जस्ते का चूर्ण जो दवा के काम में आता है; एक प्रकार का बढ़िया आम; एक प्रकार का बहुत बड़ा वृक्ष जिसकी कलियों और फलों से निकलनेवाला सुगंधित तेल दवा के काम में आता है गंधसफेदा (यूकलिप्टस)।

सफेदी *स्त्री.* {फा. सुफ़ैदी} सफेद होने का भाव, श्वेतता उजलापन।

मुहा. सफेदी आना = बाल सफेद होना, बुढ़ापा आना।

दीवारों आदि पर चूने की सफेद रंग की पोताई, कली।

सब *वि.* {सं. सर्व} जितने हों, वे कुल, समस्त; पूरा, सारा।

सबक *पुं.* {फा.} पाठ; शिक्षा।

सबज *वि.* सब्ज।

सबद *पुं.* {सं. शब्द} शब्द; किसी साधु-महात्मा के वचन; धर्म, नीति आदि की उपदेशपूर्ण बात।

सबदरसी *वि.* = सर्वदर्शी।

सबब *पुं.* {अ.} कारण, वजह।

सबय *पुं.* {सं. स + वय = अवस्था} समान अवस्था या उमरवाला, समवयस्क; सखा, साथी।

सबर *पुं.* {सं. सब्र} संतोष, धैर्य।

मुहा. किसी का सबर पड़ना = किसी के चुपचाप सहन किए हुए मानसिक कष्ट का प्रकारांतर से प्रतिफल मिलना।

सबरा *वि.* {स्त्री. सबरी} = सब (समस्त)।

सबरी *स्त्री.* {सं. शर्वला = कुदाली} मिट्टी या दीवार खोदने का एक औजार साबर; *स्त्री.* शबरी।

सबल *वि.* {सं.} {भाव. सबलता} बलवान, ताकतवर; जिसके साथ सेना हो।

सबार *क्रि. वि.* {हिं. सबेरा} शीघ्र, जल्दी; सबेरे।

उदा. पूसमास सुनि सखिनु पैं, साईं चलत सवारु–बिहारी।

उचित या उपयुक्त समय से पहले।

सबी *स्त्री.* {अ. शबीह} चित्र, तसबीर।

उदा. लिखन बैठि जाकी सबी, गहि गहि गरब गरूर–बिहारी।

सबीज *वि.* बीज के साथ।

सबील *स्त्री.* {अ.} युक्ति, उपाय, तरकीब; व्यवस्था, प्रबंध; पौसरा, प्याऊ।

सबुनाना *स.* {हिं. साबुन} किसी चीज में विशेषतः कपड़ों आदि में साबुन लगाना।

सबुनी *स्त्री.* {हिं. साबुन} किसी चीज में विशेषतः कपड़ों आदि में साबुन लगाने की क्रिया या भाव।

सबूत[1] *पुं.* {अ.} प्रमाण।

सबूत[2] *वि.* {अ.} जो टूटा न हो, पूरा।

सबून *पुं.* साबुन।

सबेरा *पुं.* = सवेरा।

सबेरे *अव्य.* प्रातःकाल का समय।

सबै *वि.* = सभी।

सब्ज *वि.* {फा. सब्ज़} हरा (रंग); कच्चा और ताजा (फल, फूल आदि); सुंदर और लहलहाता हुआ।

मुहा. सब्ज बाग दिखलाना = फँसाने के लिए झूठी आशाएँ दिलाना।

सब्जकदम *पुं.* {फा.} वह जिसका आना अशुभ सिद्ध हो, मनहूस।

सब्जा *पुं.* {फा. सब्ज़} हरियाली; पन्ना नामक रत्न; वह घोड़ा जिसका रंग कालापन लिए सफेद हो।

सब्जी *स्त्री.* {फा. सब्ज़ी} हरापन; हरियाली; हरी तरकारी, साग-भाजी।

सब्र *पुं.* सबर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभर्तृका *स्त्री.* स्त्री जिसका पति जीवित हो।
सभय *वि.* डरा हुआ।
सभा *स्त्री.* {सं.} परिषद, गोष्ठी, समिति; वह संस्था जो कोई विशेष पर विचार करने के लिए बनी हो।
सभाग *पुं.* = सभागा।
सभागा *वि.* {हिं. स + भाग्य} भाग्यवान, 'अभागा' का विपर्याय।
सभागृह *पुं.* {सं.} वह स्थान या घर जिसमें कोई सभा होती हो।
सभाचतुर *पुं.* {सं.} वह जो सभा या शिष्ट समाज में बैठकर अच्छी-अच्छी बातें कह सकता हो।
सभाचातुरी *स्त्री.* {सं. सभा + हिं. चातुरी} सभा या शिष्य समाज में बैठकर सबको प्रसन्न करनेवाली और अच्छी-अच्छी बातें कह सकने की योग्यता।
सभाजन *पुं.* आदर-भाव से सत्कार।
सभापटल *पुं.* {सं.} सभापति के आगे रखा हुआ मेज या चौकी।
सभापति *पुं.* {सं.} {*भाव.* सभापतित्व} सभा का प्रधान, नेता या मुखिया (प्रेसिडेन्ट)।
सभामंडप *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ कोई सभा या समाज एकत्र होता हो; देवमंदिरों में गर्भगृह के सामने का वह स्थान जहाँ भक्त लोग बैठकर भजन, कीर्तन आदि करते हैं, जगमोहन।
सभाव *वि.* तेजवान, पराक्रम-युक्त।
सभासद *पुं.* {सं.} वह जो किसी सभा में उसके अंग के रूप में और अधिकारपूर्वक रहता हो, सदस्य (मेम्बर)।
सभिक *पुं.* {सं.} वह जो अपने यहाँ लोगों को बैठाकर जुआ खिलाता और बदले में उनसे कुछ धन लेता हो, फड़बाज।
सभी *वि.* {हिं. सब + ही} सब के सब।
सभीत *वि.* भीत।
सभेय *वि.* {सं.} सभा या शिष्ट समाज के योग्य; *पुं.* वह जो सभा या शिष्ट समाज में बैठकर अच्छी-अच्छी बातें कह सकता हो।
सभोचित *पुं.* पंडित; *वि.* सभा योग्य।
सभ्य *वि.* {सं.} {*भाव.* सभ्यता} अच्छे आचार-विचार रखने और भले आदमियों का-सा व्यवहार करनेवाला, शिष्ट (सिविल); *पुं.* सभा का सदस्य, सभासद; वह जिसका व्यवहार सज्जनों और शिष्टों का-सा हो, भला आदमी।
सभ्यता *स्त्री.* {सं.} सभ्य होने का भाव; शील और सज्जन होने की अवस्था या भाव, भलमनसत, शराफत; किसी जाति या राष्ट्र की वे सब बातें जो उसके सौजन्य तथा शिक्षित और उन्नत होने की सूचक होती हैं (सिविलाईज़ेशन)।
सभ्यीकरण *पुं.* {सं.} सभ्य बनाने का काम।
समंजन *पुं.* {सं.} {*वि.* समंजित} ठीक करना या बैठाना; लेन-देन का हिसाब या इसी तरह का और काम ठीक करके बैठाना (ऐडजस्टमेंट)।
समंजनीय *वि.* {सं.} समंजन के योग्य।
समंजस *वि.* {सं.} {*भाव.* सामंजस्य} प्रसंग, उल्लेख आदि के विचार से ठीक बैठनेवाला, उपयुक्त, ठीक।
समंत *पुं.* सीमा का प्रांत, किनारा।
समंतिक *अव्य.* सीमा के पास।
समंद *पुं.* {फा.} मटमैले बादामी रंग का घोड़ा।
समंदर[1] *पुं.* {सं. समुद्र} सागर, समुद्र; बड़ा तालाब या झील।
समंदर[2] *पुं.* {फा.} चूहे के आकार का एक प्रकार का कल्पित जंतु जिसकी उत्पत्ति आग से मानी जाती है।
सम[1] *वि.* {सं.} {*स्त्री.* समा, *भाव.* समता} जो आदि से अंत तक प्रायः एक-सा चला गया हो, जिसमें कहीं बहुत उतार-चढ़ाव या हेर-फेर न हो; जिसका तल बराबर हो, ऊबड़-खाबड़ न हो, चौरस; (संख्या) जिसे दो से भाग देने पर शेष कुछ न बचे, जूस (ईवेन); *क्रि. वि.* के समान या बराबर, जैसे पुत्रसम मानना; *पुं.* संगीत वह स्थान जहाँ लय के विचार से गति की समाप्ति होती है और जहाँ गाने-बजानेवालों का सिर हिलता या हाथ आप-से-आप आघात-सा करता है; साहित्य में एक अलंकार जिसमें स्थिति के ठीक अनुरूप किसी कार्य का अथवा रूप या नाम के अनुरूप कार्यों, गुणों आदि का वर्णन होता है।
सम[2] *पुं.* {*अ.*} विष, जहर।
सम[3] *पुं.* {*अ.* कसम} शपथ, सौगंध, कसम; *पुं.* = शम।
समकक्ष *वि.* {सं.} समान, तुल्य; सब बातों में किसी के बराबर होनवाला, बराबरी का (पैरेलल)।
समकक्ष सरकार *स्त्री.* {सं. + फा.} वह नई सरकार जो किसी देश की पुरानी सरकार को अवैध, अयोग्य आदि समझकर उसका स्थान लेने और उसे नष्ट करने के लिए बनाई जाती है (पैरेलल गवर्नमेंट)।
समकन्या *स्त्री.* विवाह-योग्य लड़की।
समकर्म *वि.* जिसके धंधे समान हो।
समकालीन *वि.* {सं.} जो (दो या कई) एक ही समय में हुए हों (पैरेलल गवर्नमेंट)।
समकिति *स्त्री.* = 'सम्यक' का भाव, सम्यकता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समकियाना *स.* {सं. सम = बराबर} बिखरी हुई चीजें ठीक करके यथास्थान रखना।

समकोण *पुं.* {सं.} ज्यामिति में 90 अंशों का कोण जो किसी बेड़ी रेखा पर बिल्कुल खड़ी रेखा के आकर मिलने से बनता है (राइट ऐंगिल); *वि.* (चतुर्भुज) जिसके आमने-सामने के सभी कोण समान हो।

समकोणीय *वि.* {सं.} (क्षेत्र) जिसके चारों कोण बराबर हों (रेक्टैंगुलर)।

समक्ष *क्रि. वि.* {सं.} सामने, सम्मुख।

समक्षणिक *वि.* {सं.} एक ही क्षण में होनेवाले।

समगामी *वि.* साथ-साथ जानेवाले।

समगी *स्त्री.* = सामग्री।

समग्र *वि.* {सं.} सारा, सब, पूरा; *पुं.* किसी लेखक की समग्र कृतियों का संग्रह, रचनावली, जैसे देवकीनंदन समग्र।

समग्रभाव *पुं.* {सं.} कुल मिलाकर पड़नेवाला प्रभाव (टोटल इफेक्ट)।

समचतुर्भुज *वि.* {सं.} (ज्यामिति में क्षेत्र) जिसके चारों भुज या बाहु बिल्कुल एक-से हों, छोटे-बड़े न हों।

समचित *पुं.* जिसका चित्त सुख-दुःख में समान रहे।

समछंद *पुं.* समवृत्त।

समजातीय *वि.* एक ही जाति का।

समज्ञा *स्त्री.* यश, कीर्ति।

समझ *स्त्री.* {सं. संबुद्ध, प्रा. समुज्झ, समुझ} जानने और समझने की शक्ति, बुद्धि, अक्ल (सेंस)।

समझदार *वि.* {हिं. समझ + दार} बुद्धिमान, अक्लमंद।

समझदारी *स्त्री.* {हिं. समझदार} समझदार होने का भाव, बुद्धिमत्ता (सेंस)।

समझना *स.* {हिं. समझ} कोई बात अच्छी तरह विचार करके ध्यान में लाना; किसी बात का स्वरूप आदि देखकर उसके संबंध की कुछ और बातों का अनुमान या कल्पना करना (डीम)।

समझाना *स.* {हिं. समझना} ऐसी बात करना जिससे कोई समझ जाए।

समझावा *पुं.* {हिं. समझाना} समझने या समझाने की क्रिया या भाव।

समझौता *पुं.* {हिं. समझ} लेन-देन, व्यवहार, झगड़े, विवाद आदि के संबंध में सब पक्षों में आपस में होनेवाला निपटारा (एग्रीमेंट, काम्प्रोमाइज़)।

समझौतावादी *पुं.* जिसका दृष्टिकोण समझौता करना रहता हो; *वि.* समझौता-संबंधी।

समतल *वि.* {सं.} जिसकी सतह या तल बराबर हो, सपाट।

समता *स्त्री.* {सं.} सम या समान होने का भाव, बराबरी, तुल्यता (इक्वैलिटी)।

समताई *स्त्री.* = समता।

समत्रिभुज *पुं.* त्रिभुज जिसकी तीनों भुजाएँ सम हों।

समत्सर *वि.* ईर्ष्यालु।

समद *वि.* मद से युक्त, घमंडी।

समतुलन *पुं.* समतोलन।

समतूल *वि.* समतोल।

समूतली *स्त्री.* {सं. सम + तुल्य} समानता, बराबरी।

समतोल *वि.* {सं. सम + हिं. तोल या सं. तुल्य} महत्व आदि के विचार से समान, बराबर।

समतोलन *पुं.* {सं.} महत्व आदि के विचार से सबको समान रखना; दोनों पलड़ों या पक्षों को समान रखना (बैलेंसिंग)।

समत्थ *वि.* समर्थ।

समत्व *पुं.* {सं.} समता।

समद *पुं.* = समुद्र।

समदन *पुं.* संग्राम, लड़ाई।

समदन *स्त्री.* {सं. समादान} उपहार, भेंट, नजर; भेंट, मुलाकात।

समदना *स.* {हिं. समदन} उपहार या भेंट देना; *अ.* प्रेमपूर्वक मिलना, आनंद या उमंग में आना।

समदर्शन *वि.* सबको समान नजर से देखना हो।

समदर्शी *वि.* {सं. समदर्शिन्} सबको एक-सा समझनेवाला।

समदृष्टि *वि.* जो सबको समान दृष्टि से देखे।

समद्विभुज *वि.* दो बराबर की भुजाओंवाला।

सम-धरातल *पुं.* {सं.} ऐसा धरातल जिसका ऊपरी भाग बिल्कुल सम हो, टेढ़ा-मेढ़ा या ऊँचा-नीचा न हो (प्लेन)।

समधिक *वि.* {सं.} बहुत, अधिक।

समधिगम *पुं.* अच्छी तरह समझना।

समधियाना *पुं.* {हिं. समधी} समधी का घर।

समधी *पुं.* {सं. संबंधी} {*स्त्री.* समधिन} पारस्परिक संबंध के विचार से, किसी के लड़के या लड़की का ससुर।

समन *पुं.* सम्मन; *पुं.* शमन।

समनाम *वि.* {सं.} जिसका नाम किसी और के नाम के समान हो।

समनुदेशन *पुं.* {सं.} नियत करना; सौंपना।

समन्वय *पुं.* {सं.} {*वि.* समन्वित} विरोध का अभाव, मिलान, मिलाप; कार्य या कारण की संगति या निर्वाह।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समन्वयवादी (दिन्) *वि.* {सं.} समन्वय-संबंधी; *पुं.* समन्वय का पक्षधर।

समन्वित *वि.* {सं.} जिसका समन्वय हुआ हो; किसी के साथ मिला या लगा हुआ, किसी के अंतर्गत आया हुआ।

समपाद *पुं.* जिस कविता के चारों चरण बराबर हों।

समबाहु *वि.* {सं.} जिसकी भुजाएँ बराबर हों।

समभाग *पुं.* बराबर के भाग।

समभुज *वि.* तीनों भुजाएँ बराबर की।

समय *पुं.* {सं.} {*वि.* सामयिक} सवेरे-संध्या या दिन-रात के विचार से काल का कोई मान, व्यक्त; अवसर, मौका, वक्त।

पद समय विशेष पर = किसी निश्चित समय पर; आनेवाले किसी ऐसे समय पर जब कोई बात हो सकती हो और जिसके संबंध में कोई विधान या व्यवस्था की गई हो।

अवकाश, फुरसत, खाली वक्त; आपस में होनेवाला किसी प्रकार का निश्चय, करार या समझौता; कोई धार्मिक या सामाजिक प्रथा या परिपाटी; सिद्धांत; परिणाम, अंत।

समय-कुसमय *पुं.* अच्छे या शुभ दिन और बुरे दिन और बुरे या संकट के दिन; *क्रि. वि.* उपयुक्त अवसर पर भी और अनुपयुक्त अवसर पर भी, मौके बेमौके, जैसे आप समय-कुसमय अपना ही राग अलापते रहते हैं।

समयपालन *पुं.* {सं.} नियत समय पर काम करना।

समयपूर्व *वि.* {सं.} समय से पहले होने वाला।

समयबद्ध *वि.* {सं.} निर्धारित अवधि में पूरा किया जानेवाला।

समयबद्धता *स्त्री.* {सं.} निर्धारित अवधि में काम पूरा करने की भावना।

समयानुसार *क्रि. वि.* {सं.} समय के अनुसार, समय पर।

समयानुसारी (रिन्) *वि.* {सं.} समय के अनुसार होनेवाला।

समय-सारिणी *स्त्री.* {सं.} कोष्ठकों की वह सारिणी जिसमें भिन्न-भिन्न समयों पर होनेवाले कार्यों का विवरण सूची के रूप में होता है, जैसे विद्यालय या रेल की समय-सारिणी (टाइम टेबुल)।

समर[1] *पुं.* {सं.} युद्ध, लड़ाई।

समर[2] *पुं.* {सं. स्मर} कामदेव।

समरजित् *वि.* लड़ाई जीतनेवाला।

समरथ *पुं.* = समर्थ।

समरनीति *स्त्री.* {सं.} रणनीति।

समरपोत *पुं.* युद्धपोत।

समरभूमि *स्त्री.* {सं.} युद्धक्षेत्र, लड़ाई का मैदान।

समरशय्या *स्त्री.* {सं.} युद्धक्षेत्र में वीरों के घायल होकर जमीन पर गिरने की अवस्था।

समरस *वि.* {सं. सम + रस} {*भाव.* समरसता, सामरस्य} एक ही प्रकार के रसवाले (पदार्थ); एक ही तरह या विचार के; सदा एक-सा रहनेवाला।

समरसेजा *स्त्री.* = समरशय्या।

समरांगण *पुं.* {सं.} युद्धक्षेत्र, लड़ाई का मैदान।

समराना *स्त्री.* {हिं. सवाँरना} सजाना या सजवाना; सवाँरना या सँवरवाना।

समरूप *वि.* {सं.} जो रूप के विचार से किसी के समान हो।

समरूपता *स्त्री.* {सं.} रूप की समानता।

समर्चन *पुं.* अर्चन, पूजन।

समर्चना *स्त्री.* {सं.} भलीभाँति की जानेवाली अर्चना।

समर्थ *वि.* {सं.} {*भाव.* समर्थता, सामर्थ्य} कोई काम करने की शक्ति या सामर्थ्य रखनेवाला, कुछ कर सकने के योग्य (एबुल); कोई काम ठीक तरह से कर सकने की पूरी योग्यता रखनेवाला और उसका उपयुक्त अधिकारी, सक्षम, जैसे समर्थ न्यायालय (कॉम्पिटेंट); दूसरे पदार्थों, कार्यों आदि पर अपना प्रभाव डालने की शक्ति रखनेवाला (एफेक्टिव); काम में आने या प्रयुक्त होने के योग्य।

समर्थक *वि.* {सं.} समर्थन करनेवाला।

समर्थता *स्त्री.* {सं.} 'समथ' होने का भाव, सामर्थ्य, शक्ति।

समर्थन *पुं.* {सं.} {*वि.* समर्थनीय, समर्थक, समर्थ्य} यह कहना कि अमुक विचार, सुझाव या प्रस्ताव ठीक है या इसके अनुसार काम होना चाहिए, किसी मत का पोषण (सेकेंडिंग)।

समर्थनीय *वि.* समर्थन-योग्य।

समर्पित *वि.* {सं.} जिसका समर्थन हुआ हो।

समर्पक *वि.* {सं.} समर्पण करनेवाला।

समर्पण *पुं.* {सं.} किसी को आदरपूर्वक कुछ देना, भेंट या नजर करना; धर्मभाव से या श्रद्धा-भक्तिपूर्वक कुछ कहते हुए अर्पित करना (डेडीकेशन); अपना अधिकार, स्वामित्व, भार आदि किसी दूसरे के हाथ में देना, सौंपना; युद्ध, विवाद आदि बंद करके अपने आपको शत्रु या विपक्षी के हाथ में सौंपना (सरेंडर; अंतिम दोनों अर्थों में); आत्मसमर्पण।

समर्पण मूल्य *पुं.* {सं.} वह धन जो बीमा करानेवाले की अवधि पूरी होने से पहले ही अपना बीमा रद्द कराने या बीमापत्र लौटा देने पर मिलता है (सरेंडर वैल्यू)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पना *स.* {सं. समर्पण} समर्पण करना, सौंपना।

समर्पित *वि.* {सं.} जो समर्पण किया गया हो।

समर्पिती *पुं.* {सं. समर्पित} वह जिसे कुछ समर्पित या भेंट किया गया हो।

समर्याद *वि.* अच्छे चरित्रवाला।

समल *वि.* गंदा, मैला।

समवतार *पुं.* अवतरण, उतरने का स्थान।

समवयस्क *वि.* {सं.} समान वयस या अवस्थावाला, बराबर की उमर का।

समवर्ती *वि.* {सं. समवर्तिन्} किसी के पास या साथ रहनेवाला; समकालीन; किसी के साथ समान रूप और समान भाव से होने, रहने या चलनेवाला (कांकरेंट)।

समवाय *पुं.* {सं.} {*वि.* समवायिक, समवायी} समूह, झुंड; अवयवी के साथ अवयव का या गुणी के साथ गुण का संबंध; किसी प्रकार का सदा बना रहनेवाला संबंध, नित्यसंबंध; विधि या कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार व्यापारिक कार्य के लिए बनी हुई वह संस्था जिसके हिस्सेदारों को अपनी लगाई हुई पूँजी के हिसाब से, उस व्यापार से होनेवाले लाभ का अंश मिलता है (कंपनी)।

समवायी *वि.* {सं. समवायिन्} जिसका किसी के साथ सदा बना रहनेवाला या नित्य संबंध हो।

समवृत्त *पुं.* {सं.} वह वृत्त या छंद जिसके चारों चरण समान हों।

समवेत *वि.* {सं.} इकट्ठा या जमा किया हुआ, एकत्र; सामूहिक।

समवेत गान *पुं.* बहुत से लोगों द्वारा मिलकर गाया जानेवाला गाना।

समवेदना *स्त्री.* हमदर्दी।

समशंकु *पुं.* वह वक्त जब सूर्य ठीक ऊर्ध्व बिंदु पर आता है, दोपहर का समय।

समशीतोष्ण-कटिबंध *पुं.* {सं.} पृथ्वी के वे दो भाग जो भूमध्य रेखा के नीचे और ऊपर उष्ण कटिबंध और शीत कटिबंध के मध्य में पड़ते हैं।

समष्टि *स्त्री.* {सं.} जितने हों, उन सबका समूह, जिसमें उसके सभी अंगों या व्यष्टियों का समावेश या अंतर्भाव होता है, 'व्यष्टि' का विरुद्धार्थक; साधुओं का वह भंडारा जिसमें सभी स्थानिक साधु निमंत्रित होते हैं।

समष्टिवाद *पुं.* {सं.} आधुनिक राजनीति में समाजवाद का वह विकसित और उग्र रूप, जिसमें कहा जाता है कि सब पदार्थों पर राष्ट्र के सब लोगों का समान रूप में अधिकार होना चाहिए, संपत्ति पर व्यक्तियों का अधिकार नहीं होना चाहिए।

समष्टिवादी (वादिन्) *पुं.* {सं.} समष्टिवाद का सिद्धांत माननेवाला; *वि.* समष्टिवाद संबंधी।

समसंख्यात *वि.* समान अंक वाला।

समसुप्ति *पुं.* महाप्रलय।

समसमुन्नत *वि.* {सं.} {*भाव.* समसमुन्नति} जो बराबर थोड़ी-थोड़ी दूरी के बाद पहलेवाले धरातल से कुछ ऊँचा होता जाए; सीढ़ियों की तरह कुछ रह-रहकर ऊँचा होता हुआ (टेरेस-लाइक)।

समसौरभ *वि.* जिसमें एकसी गंध हो।

समसान *पुं.* = श्मशान।

समसामयिक *वि.* समकालीन।

समस्त *वि.* {सं.} सब, कुल, समग्र (होल); समास के नियमों से मिला या मिलाया हुआ, समासयुक्त।

समस्तपद *पुं.* {सं.} समास से बना हुआ पद।

समस्या *स्त्री.* {सं.} वह उलझनवाली विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सके, कठिन या विकट प्रसंग (प्रॉब्लम); छंद आदि का वह अंतिम चरण या पद जो पूरा छंद बनाने के लिए कवियों के सामने रखा जाता है।

समस्यापूर्ति *स्त्री.* {सं.} किसी समस्या, छंद आदि के अंतिम चरण या पद के आधार पर उससे पहले रखने के योग्य चरण बनाकर छंद आदि पूरा करना।

समाँ *पुं.* {सं. समय} समय, वक्त।

मुहा. समाँ बँधना = (संगीत आदि का) इतनी उत्तमता से संपन्न होना कि लोग स्तब्ध हो जाएँ।

समांतर *वि.* {सं.} (दो या अधिक रेखाएँ आदि) जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक बराबर समान अंतर पर रहें (पैरेलल)।

समा *पुं.* वर्ष, साल।

उदा. राका राज जरा कारा, मास मास समा समा—**केशव**।

समाई *स्त्री.* {हिं. समाना} समाने की क्रिया या भाव; शक्ति, सामर्थ्य; औकात, बिसात।

समाउ *पुं.* समाई।

समाक *वि.* = सम्यक्।

समाकुल *वि.* शक में, बहुत घबराया हुआ।

समाक्रांत *वि.* फैला हुआ।

समाख्या *स्त्री.* यश, कीर्ति।

समख्यान *पुं.* {सं.} किसी घटना की सभी मुख्य-मुख्य बातें क्रम से कहना या बतलाना।

समागत *वि.* {सं.} {*स्त्री.* समागता} कहीं से आया हुआ, जैसे समागत अतिथि; जो इस समय आकर उपस्थित या वर्तमान हुआ हो, जैसे समागत समस्या या प्रसंग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समागम पुं. {सं.} आगमन, आना; मिलना; कुछ लोगों का किसी विशेष कार्य के लिए कहीं इकट्ठा होना; संभोग, मैथुन।

समागमन पुं. पहुँचना।

समाघात पुं. लड़ाई समर, मारकाट।

समाचार पुं. {सं.} संवाद, खबर, हाल।

समाचार-पत्र पुं. {सं. समाचार + पत्र} नियमित समय पर प्रकाशित होनेवाला वह पत्र जिसमें अनेक प्रकार के समाचार रहते हों, अखबार; उक्त प्रकार के सभी पत्रों का वर्ग या समूह (प्रेस)।

समाच्छन्न *वि.* ढँका हुआ।

समाज पुं. {सं.} समूह, गिरोह; एक जगह रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का काम करनेवाले लोगों का वर्ग, दल या समूह, समुदाय; किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की हुई सभा (सोसाइटी, उक्त सभी अर्थों में)।

समाज-कल्याण पुं. {सं.} समाज के लोगों की भलाई (सोशल वेलफेयर)।

समाजवाद पुं. {सं.} वह सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि समाज के आर्थिक क्षेत्र में बहुत बढ़ी हुई विषमता दूर करके समता स्थापित की जानी चाहिए (सोशलिज़्म)।

समाजवादी (दिन्) पुं. {सं.} वह जो समाजवाद का सिद्धांत मानता हो (सोशलिस्ट); *वि.* समाजवाद-संबंधी।

समाजशास्त्र पुं. {सं.} वह शास्त्र जो मनुष्यों को सामाजिक प्राणी मानकर उनके समाज और संस्कृति की उत्पत्ति, विकास आदि का विवेचन करता है (सोशियालोजी)।

समाजशास्त्री पुं. {सं. समाजशास्त्रिन्} समाजशास्त्र का ज्ञाता या पंडित।

समाजशास्त्रीय *वि.* {सं.} समाजशास्त्र- संबंधी।

समाजी[1] पुं. {हिं. आर्यसमाज} वह जो आर्यसमाज के सिद्धांत मानता हो, आर्यसमाज का अनुयायी, आर्यसमाजी।

समाजी[2] पुं. {हिं. समाज} वह जो वेश्याओं के साथ तबला, सारंगी, मजीरा आदि बजाता हो, सपरदाई।

समाजीकरण पुं. {सं. समाज + करण} किसी कार्य या बात को ऐसा रूप देना कि उसपर सारे समाज का अधिकार हो जाए और सब लोग समान रूप से उससे लाभ उठा सकें (सोशलाइज़ेशन)।

समातृ *स्त्री.* माँ के समान हो।

समादर पुं. {सं.} {*वि.* समादृत} यथेष्ट आदर या सम्मान।

समादरणीय *वि.* आदर-योग्य।

समादृत *वि.* {सं.} जिसका खूब आदर हुआ हो, सम्मानित।

समादेय *वि.* सत्कार के योग्य।

समादेश पुं. {सं.} {*वि.* समादिष्ट} अधिकारपूर्वक किसी को कोई काम करने का आदेश या आज्ञा देना; इस प्रकार दिया हुआ आदेश या आज्ञा (कमांड); वह आज्ञा जो न्यायालय, कोई होता हुआ काम रोकने के लिए देता है (इनजंक्शन)।

समादेशक पुं. {सं.} वह जो किसी को कोई काम करने का आदेश दे; वह प्रधान सैनिक अधिकारी जिसके आदेश से सेना के सब काम होते हैं (कमांडर)।

समाध *स्त्री.* समाधि।

समाधान पुं. {सं.} {*वि.* समाधानीय} किसी का संदेह दूर करनेवाली बात या काम, प्रबोध, तसल्ली; मतभेद या विरोध दूर करना; निष्पत्ति, निराकरण।

समाधानना *स.* {सं. समाधान} किसी का समाधान या संतोष करना; सांत्वना देना।

समाधि *स्त्री.* {सं.} ईश्वर के ध्यान में मग्न होना; योगसाधन का चरम फल, जिससे मनुष्य सब क्लेशों से मुक्त होकर अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त करता है; वह स्थान जहाँ किसी का मृत शरीर या अस्थियाँ गाड़ी गई हों; प्राणियों की वह अवस्था जिसमें उनकी संज्ञा या चेतना नष्ट हो जाती है और वे कोई शारीरिक क्रिया नहीं करते; साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी आकस्मिक कारण से सहायता मिलने पर किसी के कार्य में सुगमता होने का उल्लेख होता है, इसे 'समाहित' भी कहते हैं।

समाधिक्षेत्र पुं. मृत साधुओं को गाड़ने का स्थान।

समाधित *वि.* = समाधिस्थ।

समाधि-लेख पुं. {सं.} वह लेख जो किसी मृत व्यक्ति का संक्षिप्त परिचय कराने के लिए उसकी समाधि या कब्र पर लिखा या अंकित किया जाता है (एपिटैफ)।

समाधित्व पुं. समाधि ग्रहण करने का भाव।

समाधिस्थ *वि.* {सं.} जिसने समाधि ली या लगाई हो, समाधि में स्थित।

समाधेय *वि.* समाधान करने लायक।

समान *वि.* {सं.} {*भाव.* समानता} आकार, गुण, मूल्य, महत्व आदि का विचार से एक जैसे, बराबर तुल्य; *स्त्री.* समानता।

समानक पुं. {सं.} वह जो मूल्य, महत्व, कार्य आदि के विचार से किसी से पूरी समानता या बराबरी रखता हो (इक्विवेलेंट); समानार्थक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समानता *स्त्री.* {सं.} समान, बराबर या तुल्य होने की दशा या भाव (ईक्वैलिटी)।

समानांतर *वि.* समांतर।

समाना *अ.* {सं. समावेश} किसी वस्तु के अंदर पहुँचकर भर जाना या उसमें लीन हो जाना, भरना; कहीं से चलकर आना, पहुँचना; *स.* अंदर करना, भरना।

समानाधिकरण *पुं.* {सं.} वाक्य में अपने किसी समानार्थी शब्द या पद का अर्थ स्पष्ट करने के लिए आनेवाला शब्द या पद (व्याकरण)।

समानार्थ *पुं.* {सं.} वे शब्द जिनका अर्थ एक हो या एक-सा हो, पर्याय (सिनॉनिम)।

समानार्थक *वि.* {सं.} (किसी शब्द के) समान अर्थ रखनेवाला (दूसरा शब्द), पर्यायवाची (सिनॉनिम); *पुं.* समानार्थ।

समानिका *स्त्री.* वर्णवृत्त जिसके हरेक चरण में सात अक्षर हों।

समानीत *वि.* आदरपूर्वक लाया हुआ।

समानुपात *पुं.* दो या अधिक अनुपातों का संबंध।

समानोपमा *स्त्री.* एक भेद उपमा अलंकार का।

समापक *वि.* {सं.} समाप्त करनेवाला।

समापत *वि.* समाप्त।

समापत्ति *स्त्री.* {सं.} युद्ध, दंगे, दुर्घटना आदि के कारण लोगों के प्राणों या शरीर पर आनेवाला संकट (कैजुएलिटी)।

समापन *पुं.* {सं.} {*वि.* समाप्य, समापनीय} कार्य समाप्त या पूरा करना (डिस्पोज़ल); विवाद, विचार आदि के समय उसका अंत करने के लिए कोई विशेष बात कहना (वाइंडिंग अप); मार डालना।

समापनोत्सव *पुं.* {सं.} किसी कार्य का संपादन हो जाने पर होनवाला उत्सव।

समापात *पुं.* {सं.} दो कार्यों या बातों का संयोगवश साथ-साथ या एक ही समय में घटित होना (कॉयनसाइडेंस)।

समापिका क्रिया *स्त्री.* {सं.} व्याकरण में वह क्रिया जिससे किसी कार्य और फलतः उसके सूचक वाक्य या उपवाक्य की समाप्ति सूचित होती है।

समापित *वि.* = समाप्त।

समाप्त *वि.* {सं.} जो अंत तक पहुँचकर पूरा हो गया हो, खतम।

समाप्ति *स्त्री.* {सं.} किसी चलते हुए काम का पूरा होना; सीमा, अवधि आदि का अंत होना (एक्सपायरी, एक्सपायरेशन); किसी बात या चीज का स्थायी रूप से या सदा के लिए अंत होना, न रह जाना (एक्सटिंक्शन)।

समाभाषण *पुं.* बातचीत।

समायोग *पुं.* बहुत-से आदमियों का इकट्ठा होना।

समाराधन *पुं.* पूजा, शुरू।

समालाप *पुं.* अच्छी तरह से बातचीत।

समायोजक *पुं.* {सं.} समायोजन करनेवाला।

समायोजन *पुं.* {सं.} ठीक ढंग से कोई चीज कहीं रखना।

समारंभ *पुं.* {सं.} अच्छी तरह आरंभ या शुरू होना; समारोह।

समारना *स.* सँवारना।

समारोह *पुं.* {सं.} भारी आयोजन, धूमधाम; बहुत धूमधाम से होनेवाला उत्सव या कोई बड़ा काम।

समारोही *वि.* समारोह-संबंधी, जैसे समारोही परिधान।

समालोचक *पुं.* {सं.} समालोचना करनेवाला व्यक्ति।

समालोचन *पुं.* = समालोचना।

समालोचना *स्त्री.* {सं.} अच्छी तरह देखना-भालना, जिसमें दोषों और गुणों का पूरा पता लग जाए; इस प्रकार देखे हुए गुणों और दोषों की विवेचना करनेवाला लेख, आलोचना (रिव्यू)।

समाव *पुं.* समाई।

समावरण *पुं.* {सं. समय + आवरण} {*वि.* समावृत} वह टीप, लेख या सूचना जो किसी पत्र के साथ एक ही लिफाफे में बंद करके भेजी जाए, अंतर्गतक, सहगतक (एंक्लोज़र)।

समावर्त *पुं.* वापस आना।

समावर्तन *पुं.* {सं.} वापस आना, लौटाना; एक प्राचीन वैदिक संस्कार जो ब्रह्मचारी के अध्ययन समाप्त कर लेने पर गुरुकुल में उनके स्नातक बनकर लौटने के समय होता था; आधुनिक विश्वविद्यालयों में वह सभा जिसमें उच्च परीक्षाओं में उत्तीर्ण होनेवाले विद्यार्थियों को पदवियाँ दी जाती हैं, पदवीदान समारोह (कानवोकेशन)।

समावर्तनीय *वि.* समावर्तन-संस्कार करने लायक।

समावृत *वि.* अच्छी तरह से ढँका हुआ।

समावृत्त *वि.* {सं. सम + आवृत्त} (कागज, लेख सूचना आदि) जो किसी पत्र के साथ एक ही लिफाफे में बंद करके कहीं भेजा जाए, जैसे इस पत्र के साथ 100 (सौ) रुपये का चेक समावृत है (एनक्लोज़्ड)।

समावेश *पुं.* {सं.} {*वि.* समाविष्ट} एक साथ या एक जगह रहना; एक वस्तु का दूसरी वस्तु के अंतर्गत होना।

समाश्रय *पुं.* = आश्रय, रक्षा।

समाश्रित *वि.* = आश्रित।

समाश्लेष *पुं.* मिलन।

समाश्वासन *पुं.* धीरज।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समास पुं. {सं.} समर्थन; संग्रह; सम्मिलन; व्याकरण के नियमों के अनुसार दो शब्दों का मिलकर एक होना (साधारणत: हिन्दी में यह चार प्रकार का होता है–अव्ययीभाव, समाधिकरण, तत्पुरुष और द्वंद्व)।

समासन्न *वि.* समीप का।

समासादित *वि.* पाया हुआ, चुराया हुआ।

समासीन *वि.* {सं.} अच्छी तरह बैठा हुआ।

समासोक्ति *स्त्री.* {सं.} साहित्य में एक अलंकार जिसमें श्लिष्ट विशेषणों या संज्ञाओं की सहायता से कोई ऐसा वर्णन किया जाता है जो प्रस्तुत विषय के अतिरिक्त किसी दूसरे अप्रस्तुत विषय पर भी समान रूप से घटता है, जैसे बड़ो डील लखि पीज को, बन तज्यो बन थान, धनि सरजातू जगत में ताको हरयौ गुमान; इसमें 'सरजा' (संज्ञा) प्रस्तुत (सिंह या शेर), अप्रस्तुत (शिवाजी) के संबंध में घटता है।

समाहत *वि.* घायल।

समाहना[1] *अ.* {पु. हिं. सामुहें = सामने} सामना करना, सामने आना।

उदा. त्रिबली, नाभि दिखाई, कर सिर ढाकि, सकुचि समाहि–**बिहारी**।

समाहना[2] *स.* {सं. समाहित} पकड़ना।

उदा. अनम अठेल अभंग नीर असि मीर समाहिय–**चन्दबरदाई**।

समाहरण पुं. {सं.} एक स्थान पर इकट्ठा करना, संग्रह; राशि, ढेर; कर, चंदा, प्राप्य धन आदि उगाहना, वसूली (कलेक्शन); मिलाना; क्रम, नियम आदि से सजकर या ठीक ढंग से इकट्ठा होना, जैसे वायुयानों का समाहरण (फारमेशन)।

समाहर्ता पुं. {सं. समाहर्तृ} समाहार या संग्रह करनेवाला; मिलानेवाला; राजकर या प्राप्य धन आदि उगाहनेवाला अधिकारी (कलेक्टर)।

समाहार पुं. {सं.} व्याकरण में एक प्रकार का द्वंद्व समास जिसमें उसके दोनों शब्दों के साधारण अर्थों के सिवा कुछ और अर्थ या भाव सूचित होता है, जैसे धनी-मानी, सेठ-साहूकार; समाहरण।

समाहित *वि.* {सं.} एक जगह इकट्ठा किया हुआ, विशेषत: सुंदर और व्यवस्थित रूप से इकट्ठा किया हुआ, केंद्रित; शांत; समास; स्वीकृत; पुं. साहित्य में समाधि नामक अलंकार का दूसरा नाम।

समाहृत *वि.* इकट्ठा किया हुआ।

समाह्वान पुं. पुकार, जोर से आवाज देना।

समिता *स्त्री.* गेहूँ अधिक बारीक पीसा आटा।

समिति *स्त्री.* {सं.} सभा, समाज; वैदिक काल की वह सभा या संस्था जिसमें राजनीतिक विषयों पर विचार होता था; किसी विशेष कार्य के लिए बनी हुई छोटी सभा (कमिटी)।

समिदा *स्त्री.* = समिधा।

समिद्ध *वि.* {सं.} प्रज्वलित; भड़का या भड़काया हुआ, उत्तेजित।

समिध पुं. {सं.} अग्नि।

समिधा *स्त्री.* {सं. समिधि} हवनकुंड में जलाने की लकड़ी।

समीकरण पुं. {सं.} दो या अधिक राशियों, वस्तुओं आदि को समान या बराबर करने की क्रिया या भाव; गणित में वह क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से कोई अज्ञात राशि जानी जाती है; यह सिद्ध कर दिखलाना कि अमुक-अमुक राशियाँ या मान आपस में बराबर हैं (ईक्वेशन)।

समीक्षक पुं. {सं.} वह जो समीक्षा करता हो, छानबीन और जाँच-पड़ताल करनेवाला (एग्जामिनर); समालोचक।

समीक्षण पुं. {सं.} समीक्षा करने का काम।

समीक्षा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* समीक्षित, *भाव.* समीक्ष्य} छानबीन या जाँच-पड़ताल करने के लिए कोई वस्तु या बात अच्छी तरह देखना; आलोचना, समालोचना; मीमांसाशास्त्र।

समीक्षाकार पुं. {सं.} समीक्षा करनेवाला।

समीच पुं. समुद्र।

समीचकर पुं. मैथुन।

समीचीन *वि.* {सं.} {*भाव.* समीचीनता} उपयुक्त, ठीक; उचित, वाजिब।

समीति *स्त्री.* = समिति।

समीप *क्रि. वि.* {सं.} {*भाव.* समीपता} निकट, पास, नजदीक।

समीपता *स्त्री.* समीप में।

समीपवर्ती *वि.* पास में ही।

समीपस्थ *वि.* समीप ही।

समीर पुं. {सं.} वायु, हवा।

समीरकुमार पुं. = पवनकुमार (हनुमान)।

समीरण पुं. = समीर (हवा)।

समुंदर पुं. = समुद्र।

समुंदरफेन पुं. {सं. समुद्रफेन} समुद्र के पानी पर तैरनेवाला फेन या झाग जिसे सुखाकर ओषधि के रूप में काम में लाते हैं।

समुचित *वि.* {सं.} उचित, ठीक; जैसा चाहिए, वैसा, उपयुक्त।

समुच्चय पुं. {सं.} {*वि.* समुच्चित} कुछ वस्तुओं का एक में मिलना (कॉम्बिनेशन); समूह, राशि; कुछ वस्तुओं या बातों का एक साथ एक जगह इकट्ठा होना (क्यूमुलेशन); एक अलंकार जिसमें

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई भावों के एक साथ उदित होने अथवा कई कारणों से एक ही कार्य होने का वर्णन होता है।

समुच्चयबोधक पुं. {सं.} व्याकरण में वह पद जो दो शब्दों, पदों आदि को आपस में जोड़ता या मिलाता हो, जैसे और, तथा, व, आदि (कनजंक्शन)।

समुच्चयोपमा *स्त्री.* {सं.} साहित्य में उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय में उपमान के अनेक गुणों या धर्मों का एक साथ आरोप होता है।

समुच्चित *वि.* {सं. समुच्चय} जो धीरे-धीरे बढ़कर इकट्ठा और एककार हो गया हो (क्यूमूलेटेड)।

समुच्छेद पुं. तबाह, विनाश।

समुज्ज्वल *वि.* {सं.} {*भाव.* समुज्ज्वलता} विशेष रूप से उज्ज्वल या प्रकाशमान; चमकीला।

समुझ *स्त्री.* = समझ।

समुत्कंठ *वि.* घबराया हुआ।

समुत्कीर्ण *वि.* छेदा हुआ।

समुत्तर पुं. सही जवाब।

समुत्थान पुं. {सं.} उठने की क्रिया या भाव; उत्पत्ति; आरंभ।

समुत्सुक *वि.* {*भाव.* समुत्सुकता} विशेष रूप से उत्सुक।

समुदय पुं., *वि.* समुदाय।

समुदाय पुं. {सं.} समूह, ढेर; झुंड, गिरोह (एसेम्बली); *वि.* सब, समस्त, कुल।

समुदित *वि.* उठा हुआ, पैदा हुआ।

समुदीरित *वि.* बोला हुआ।

समुदाव पुं. = समुदाय।

समुद्यत *वि.* = उद्यत।

समुद्र पुं. {सं.} {*वि.* समुद्रीय, समुद्री} खारे पानी की वह विशाल राशि जो पृथ्वी के स्थल भाग को चारों ओर से घेरे हुए है, सागर, अम्बुधि, उदधि; किसी विषय के ज्ञान या गुण का बहुत बड़ा आगार।

समुद्रफेन पुं. समुंदरफेन।

समुद्रमंथन पुं. {सं.} एक प्रसिद्ध कथा या घटना जिसमें देवताओं और दानवों ने निकलकर समुद्र मथा था; इस मंथन से ये चौदह रत्न निकले थे–लक्ष्मी, मणि, रम्भा, वारुणी, अमृत, शंख, ऐरावत हाथी, कल्पवृक्ष, चंद्रमा, कामधेनु, धन, धनवंतरि वैद्य, विष और घोड़ा; कुछ ढूँढ़ने या काम करने के लिए बहुत अधिक विषयों या ग्रंथों की छानबीन।

समुद्रमथन पुं. {सं.} पुराणानुसार एक दानव का नाम; समुद्रमंथन।

समुद्रयात्रा *स्त्री.* {सं.} समुद्री मार्ग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।

समुद्रयान पुं. {सं.} समुद्र में चलनेवाली कोई सवारी या जहाज।

समुद्री *वि.* {सं. समुद्रीय} समुद्र-संबंधी, समुद्र का; सामुद्रिक शक्ति या सेना से संबंध रखनेवाला, नौसैनिक।

समुद्रीय *वि.* {सं.} समुद्र में रहने या होनेवाला; समुद्र का, समुद्र-संबंधी।

समुन्नत *वि.* {सं.} भलीभाँति उन्नत।

समुन्नति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* समुन्नत} यथेष्ट उन्नति; उच्चता, ऊँचाई।

समुपस्थित *वि.* = उपस्थित।

समुन्नाद पुं. भीड़ का नारा।

समुन्नाह पुं. ऊँचाई।

समुपेत *वि.* समागत, आया हुआ।

समुल्लास पुं. {सं.} उल्लास, आनंद, प्रसन्नता; किसी ग्रंथ का परिच्छेद या प्रकरण।

समुहा *वि., क्रि. वि.* = सामने।

समुहाना *अ.* {सं. सम्मुख} सामने आना।

उदा. 'अति भय त्रसित न कोउ समुहाइ'–तुलसी।

मुकाबला करना, सामना।

उदा. 'ढीर, निठुर, न डरति काँहू, त्रिगुनहै समुहाई'–सूर।

समूचा *वि.* {सं. समुच्चय} सारा, सब, कुल; जो कटा या टूटा न हो, अखंड, पूरा।

समूढ़ *वि.* {सं.} इकट्ठा या एकत्र किया हुआ, संचित; भोगा हुआ, भुक्त; संगत, ठीक; जो अभी उत्पन्न हुआ हो; ब्याहा हुआ, विवाहित; पुं. समूह, राशि, ढेर; आगार; भंडार।

उदा. प्रौढ़ रूढ़ि की समूढ़ गूढ़ गेह में गयो–केशव।

समूर पुं. {अ.} सांबर (हिरन)।

समूरा *वि.* {सं. समस्त} सब, समूचा, सारा।

समूल *वि.* {सं.} जिसका मूल या हेतु हो; *क्रि. वि.* जड़ से, मूल सहित।

समूलक *वि.* मूल हेतु हो।

समूह पुं. {सं.} बहुत-सी चीजों का समूह, राशि; मनुष्यों का समुदाय, झुंड।

समूहतः *क्रि. वि.* {सं.} समूह के रूप में, सामूहिक रूप से, जैसे सुधारवादियों ने समूहतः त्यागपत्र दे दिया (एन-ब्लॉक)।

समूहीकरण पुं. {सं. समूह + करण} वस्तुओं के ढेर या समूह बनाने की क्रिया या भाव।

समृद्ध *वि.* {सं.} संपन्न, धनवान।

समृद्धि *स्त्री.* {सं.} धन, वैभव आदि की अधिकता, संपन्नता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समेकन पुं. {सं.} एक में मिलाने का कार्य।
समेकित *वि.* {सं.} एक में मिलाया हुआ।
समेटना *स.* {सं. समेत} बिखरी या फैली हुई चीजें इकट्ठी करना।
समेत *वि.* {सं.} संयुक्त, मिला हुआ; *क्रि. वि.* सहित, साथ।
समेधित *वि.* बढ़ा हुआ।
समोह पुं. लड़ाई, युद्ध; *वि.* मोह से भरा।
समै पुं. = समय।
समोखना *स.* {सं. सम्मुख} बहुत ताकीद से या जोर देकर कहना।
समोधना *स.* {सं. संबोधन} समझा-बुझाकर शांत करना या ठीक रास्ते पर लाना।
समोना *स.* {?} मिलाना; *अ.* निमग्न होना, डूबना; मग्न या लीन होना।
उदा. भरत अंक परजंक पर दोउन रसनि समोइ—**विक्रम सतसई।**
समोसा पुं. {?} एक प्रकार का प्रसिद्ध पकवान जो नमकीन और मीठा दोनों तरह का होता है।
समौ पुं. = समय (वक्त)।
समौरिया *वि.* {सं. सम + उमर} जो उमर में किसी दूसरे के बराबर हो, समवयस्क।
सम् *उप.* बहुत ज्यादा।
सम्मतव्य *वि.* अच्छी तरह विचारने योग्य।
सम्मत *वि.* {सं.} जिसकी राय मिलती हो, सहमत (एग्रीड); मान्य।
सम्मति *स्त्री.* {सं.} सलाह, राय; आदेश, अनुज्ञा; किसी विषय में प्रकट किया जानेवाला अपना विचार, मत, राय (ओपीनियन); किसी विषय में कुछ लोगों का एक मत होना (एग्रीमेंट); किसी के प्रस्ताव या विचार को ठीक और उचित मानकर उसके निर्वाह के लिए दी जानेवाली अनुमति (कंसेंट)।
सम्मद पुं. खुशी से।
सम्मन पुं. {अं. समन} न्यायालय का वह आज्ञा पत्र जिसमें किसी को न्यायालय में उपस्थित होने की आज्ञा दी जाती है।
सम्मर्द पुं. लड़ाई, आपस का विवाद।
सम्मा *स्त्री.* बराबरी।
सम्माद पुं. पागलपन।
सम्मान पुं. {सं.} {*वि.* सम्मानित} मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।
सम्मानना *स्त्री.* सम्मान; *स.* सम्मान या आदर करना।
सम्मानभाजन पुं. {सं.} सम्मान का पात्र।
सम्मानित *वि.* {सं.} जिसका सम्मान किया गया हो; जिसका सब लोग सम्मान करते हों, प्रतिष्ठित।
सम्मान्य *वि.* {सं.} सम्मान के योग्य, जिसका सम्मान करना उचित हो या किया गया हो।
सम्मार्जनी *स्त्री.* {सं.} झाड़ू।
सम्मिलन पुं. {सं.} मिलाप, मेल।
सम्मिलित *वि.* {सं.} किसी से या किसी से मिला हुआ, मिश्रित, युक्त।
सम्मिश्रक पुं. {सं.} वह जो किसी प्रकार का सम्मिश्रण, विशेषत: विलायती ओषधियों आदि के मिश्रण प्रस्तुत करता हो (कम्पाउंडर)।
सम्मिश्रण पुं. {सं.} {*वि.* सम्मिश्रक} मिलने की क्रिया; मेल, मिलावट; ओषधि तैयार करने के लिए कई प्रकार की ओषधियाँ एक में मिलाना (कंपाउंडिंग)।
सम्मुख *क्रि. वि.* {सं.} सामने, समक्ष।
सम्मुहौं *क्रि. वि.* = सम्मुख (सामने)।
सम्मूढ़ *वि.* अज्ञान, मुग्ध।
सम्मेलन पुं. {सं.} मनुष्यों का, किसी विशेष उद्देश्य से अथवा किसी विशेष विषय पर विचार करने के लिए, एकत्र होनेवाला समाज; जमावड़ा, जमघट; मिलाप, संगम।
सम्मोह पुं. वहम, बेहोशी।
सम्मोहक *वि.* बेहोश करनेवाला।
सम्मोहन पुं. {सं.} मोहित करने या लुभाने की क्रिया या भाव; प्राचीन काल का एक कल्पित अस्त्र जिसके प्रयोग से शत्रुओं का मोह में पड़ जाना माना जाता था; कामदेव के पाँच बाणों में से एक; *वि.* मोहित करनेवाला।
सम्यक *वि.* {सं.} पूरा, सब; *क्रि. वि.* सब तरह से; अच्छी तरह।
सम्राज्ञी *स्त्री.* {सं.} सम्राट की पत्नी; साम्राज्य की अधीश्वरी।
सम्राट, सम्राट् पुं. {सं.} वह बहुत बड़ा राजा जिसके अधीन अनेक राजा या राज्य हों, महाराजाधिराज, शहंशाह (एम्परर)।
सम्रिति *स्त्री.* = स्मृति।
सम्हलना *अ.* = सँभलना।
सय *वि.* = सौ (संख्यावाचक)।
सयण पुं. शयन, सज्जन।
सयन पुं. शयन, सैन।
सयल पुं. = शैल (पर्वत); *वि.* = सकल (सब)।
सयान पुं. सयाना, सयानापन।
सयानप, सयानपत *स्त्री.* सयानपन।
सयानपन पुं. {हिं. सयाना + पन} 'सयाना' होने का भाव; चतुरता, चालाकी।
सयाना *वि.* {सं. सज्ञान} अधिक या पूरी अवस्थावाला, वयस्क; बुद्धिमान; चतुर; चालाक, धूर्त।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरंजाम पुं. {अ. सर + अंजाम} कार्य की समाप्ति; व्यवस्था, प्रबंध; सामग्री, सामान।

सर[1] पुं. {सं. सरस्} तालाब।

सर[2] स्त्री. {सं. सदृश} समानता, बराबरी।

सर[3] स्त्री. {सं. शर} चिता।

सर[4] पुं. {फा.} सिर; सिरा; चरम सीमा; वि. बलपूर्वक दबाया हुआ; जीता हुआ, पराजित; अभिभूत।

सर[5] पुं. {सं. अवसर का अनु.} ऐसा अवसर जो किसी काम के लिए उपयुक्त न हो।

मुहा. सर-अवसर न देखना या न समझना = यह न सोचना कि अमुक काम के लिए यह अवसर ठीक है या नहीं।

उदा. नृप सिसुपाल महापद पायौ, सर-अवसर नहिं जान्यौ–**सूर**।

पुं. शर, सथिया।

सरई स्त्री. सरहरी।

सरकंडा पुं. {सं. शरकांड} सरपत की जाति की एक वनस्पति।

सरक स्त्री. {हिं. सरकना} 'सरकना' का भाव या प्रकार; नशे, विशेषतः शराब के नशे की खुमारी; शराब पीने का प्याला, मद्यपात्र।

सरकना अ. खिसकना।

सरकस पुं. {अं.} पशुओं और कलाबाजों आदि का कौशल या ऐसा कौशल दिखलानेवालों का दल या मंडली।

सरकार स्त्री. {फा.} {वि. सरकारी} मालिक, प्रभु; देश का शासन करनेवाली संस्था या सत्ता।

सरकारी वि. {फा.} सरकार या मालिक का; सरकार या राज्य का, राजकीय, जैसे सरकारी कागज, सरकारी हुकुम (ऑफिशियल)।

सरक्त वि. खून से लथपथ।

सरक्क वि. {हिं. सरक = मद्यपात्र} मत्त, मस्त।

उदा. मद, सरक्का, पट्टे तिना–**चन्दवरदाई**।

सरखत पुं. {फा.} वह कागज या छोटी बही जिसपर मकान आदि के किराए या इसी प्रकार के और लेन-देन का ब्योरा लिखा जाता है।

सरखप पुं. = सर्षप (सरसों)।

सरग पुं. = स्वर्ग।

सरगतीय स्त्री. अप्सरा; देवांगना।

सरगना पुं. {फा. सर्गनः} सरदार।

सरग-पताली वि. {सं. स्वर्ग + पाताल} (गौ या बैल) जिसका एक सींग ऊपर उठा हो और दूसरा नीचे झुका हो।

सरगम पुं. {हिं. सा, रे, ग, म} संगीत में सातों स्वरों का समूह या उनके चढ़ाव-उतराव का क्रम, स्वरग्राम।

सर-घर पुं. {सं. शर = तीर + हिं. घर} तीर रखने का तरकस, तूणीर।

उदा. लोने-लोने धनुष विशिष कर कमलनि, लोने मुनि पट कटि लोने सर-घर हैं–**तुलसी**।

सरघा स्त्री. शहद की मक्खी।

सरज पुं. मक्खन; वि. मैला।

सरजना स. सिरजना।

सरजा पुं. {फा. सरजाह} सरदार; सिंह, शेर; छत्रपति शिवाजी की वाचक एक संज्ञा या नाम।

उदा. साजि चतुरंग वीर रंग में तरंग चढ़ि, सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत हैं–**भूषण**।

सरजिव वि. = सजीव।

सरजीवन वि. {सं. संजीवन} जीवन देने या जीवनी शक्ति प्रदान करनेवाला; हरा, भरा और ताजा; उर्वर, उपजाऊ; प्रसन्न या प्रफुल्लित करनेवाला।

सरजोर वि. {फा. सरज़ोर} {भाव. सरजोरी} बलवान, ताकतवर; प्रबल, जबरदस्त; उद्धत, उद्दंड; विद्रोही, विप्लवी।

सरट, सरटक पुं. गिरगिट।

सरण पुं. आगे बढ़ना।

सरणी स्त्री. {सं.} मार्ग, रास्ता; ढर्रा, ढंग; लकीर, रेखा।

सरताज पुं. सिरताज।

सरतारा वि. {हिं. सर + तरना ?} जो अपना काम करके निश्चिंत हो गया हो।

सरद वि. सर्द।

सरदई वि. {हिं. सरदा} सरदा नामक फल के रंग का, हल्का हरापन लिए पीला; पुं. हल्का हरापन लिए पीला रंग।

सरदर क्रि. वि. {फा. सर + दर = भाव} एक सिरे से; सबको एक मानकर उनके विचार से, औसत में।

सरदल पुं. दरवाजे का साह।

सरदा पुं. {फा. सर्दः} एक प्रकार का बढ़िया खरबूजा।

सरदार पुं. {फा.} {भाव. सरदारी} नायक, अगुआ; शासक; अमीर, रईस।

सरदारतंत्र पुं. कुलतंत्र।

सरदारनी स्त्री. सरदार की पत्नी।

सरदारी स्त्री. {हिं. सरदार} सरदार का पद, काम या भाव।

सरदियाना अ. {हिं. सरदी} सरदी के कारण ठंडा होना; आवेश आदि शांत होना, ठंडा पड़ना 'गरमाना' का विपर्याय।

सरदी स्त्री. {फा. सर्दी} शीतलता, ठंडक; जाड़ा; प्रतिश्याय, जुकाम।

सरधन वि. = धनवान।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर-धर पुं. तरकश।

सरधा *स्त्री.* {सं. श्रद्धा} श्रद्धा; अभिलाषा, वासना; पुं. सरदा (फल)।

सरनदीप पुं. सिंहलद्वीप।

सरना *अ.* {सं. सरण} सरकना, खिसकना; हिलना-डोलना; काम चलना या निकलना, उद्देश्य सिद्ध होना।

उदा. भैया बन्धु कुटुम्ब घनेरे, तिनतैं कछु न सरी–**सूर**।

किसी के उपयोग में आना।

उदा. हाथ वही, उन गात सरै–**रसखान**।

किया जाना, पूरा होना; किसी चीज, काम या बात का यथेष्ट होना; आपस में सद्‌भाव बना रहना, निभना, पटना; *अ.* = सड़ना।

सरनाम *वि.* {फा.} प्रसिद्ध, मशहूर।

सरनामा पुं. सिरनामा।

सरपंच पुं. {फा. सर + हिं. पंच} पंचों में प्रधान व्यक्ति, पंचायत का सभापति।

सर-पंजर पुं. {सं. शर + पिंजरा} वाणों का बना हुआ पिंजड़ा या घेरा।

उदा. माया बल कीन्हैसि सर-पंजरा–**तुलसी**।

सरप पुं. = सर्प (साँप)।

सरपट पुं. {सं. सर्पण} घोड़े की एक प्रकार की तेज चाल; *क्रि. वि.* घोड़े की उक्त चाल की तरह तेज या दौड़ते हुए।

सरपत पुं. {सं. शरपत्र} एक प्रकार का तृण या घास जिससे छप्पर आदि छाए जाते हैं।

सरपना *अ.* {सं. सर्पण} खिसकना; आगे बढ़ना।

सरपेच पुं. {फा.} पगड़ी के ऊपर लगाने की जड़ाऊ कलगी।

सरफराना *अ.* {अनु.} व्याकुल होना, घबराना।

सरबंधी पुं. {सं. शरबंध} तीरन्दाज, धनुर्धर; पुं. संबंधी।

सरब *वि.* सर्व।

सरबग्य *वि.* = सर्वज्ञ।

सर-बर[1] *स्त्री.* {हिं. सर = बराबरी + बर अनु.} समानता, बराबरी।

सर-बर[2] *स्त्री.* {अनु.} व्यर्थ की बकवाद या बहुत बढ़-चढ़कर की जानेवाली बात।

सरबरना *अ.* {हिं. सरबर} किसी की समता या बराबरी करना।

सरबराह पुं. {फा.} प्रबंधकर्ता, व्यवस्थापक; मजदूरों आदि का सरदार; रास्ते के खान-पान का और ठहरने आदि का प्रबंध करनेवाला।

सरबरी *स्त्री.* {सं. शर्वरी} रात्रि, रात।

सरबस पुं. = सर्वस्व।

सरबोर *वि.* सराबोर।

सरभ पुं. शरभ।

सरम *स्त्री.* = शर्म।

सरमा[1] *स्त्री.* {सं.} वैदिक काल की, देवताओं की एक प्रसिद्ध कुतिया।

सरमा[2] *स्त्री.* विभीषण की पत्नी।

सरमात्मज पुं. कुत्ते का बच्चा।

सप्या पुं. मोटा धान जिसका चावल लाल होता है।

सरमाया पुं. {फा. सरमायः} मूलधन, पूँजी; धन-दौलत, संपत्ति।

सरयू *स्त्री.* {सं.} उत्तर प्रदेश की एक प्रसिद्ध नदी, घाघरा।

सरयूपारी *वि.* सरयू के उस पार का; पुं. सरयू के उस पार का निवासी; ब्राह्मणों की एक जाति।

सरर पुं. बाँस की पतली छड़ी।

सरराना *क्रि.* हवा की तेज गति से शब्द होना।

सरल *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सरला, *भाव.* सरलता} जो टेढ़ा न हो, सीधा, जैसे सरल रेखा (स्ट्रेट, राइट); निश्छल, निष्कपट, सीधा-साधा; सहज, सुगम; पुं. चीड़ का पेड़; इस पेड़ का गोंद, गंधा-बिरोजा।

सरलता *स्त्री.* {सं.} 'सीधा' होने का भाव, सीधापन; निष्कपटता, निश्छलता; 'सहज' होने का भाव, सुगमता।

सरला *स्त्री.* मोतिया, चीड़ का पेड़।

सरलीकरण पुं. {सं. सरल + करण} किसी कठिन विषय आदि को सरल करने की क्रिया या भाव (सिम्पलिफिकेशन)।

सरवंग पुं. = सर्वांग।

सरवन पुं. {सं. भ्रमण} अंधक मुनि के पुत्र श्रवण जो अपने पिता को काँवर या बँहगी पर रखकर तीर्थाटन करते थे; इनकी पुण्यात्मक कथा कहकर भीख माँगनेवाला ब्राह्मण; पुं. = श्रमण।

सरवर पुं. = सरोवर।

सरवरि *स्त्री.* {सं. सदृश} बराबरी, समता; प्रतियोगिता, होड़।

सरवरिया *वि.* {हिं. सरवार} सरवार या सरयू के उस पार का; पुं. सरयूपारी।

सरवांक पुं. {सं. शरावक} डिबिया; कटोरी; कसोरा।

सरवाक पुं. दीया, कसोरा।

सरवार पुं. {सं. सरयू+पार} सरयू नदी के उस पार का देश जिसमें गोरखपुर और बस्ती आदि के जिले हैं।

सरस *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सरसा, *भाव.* सरसता} जिसमें रस हो, रसयुक्त, रसीला; गीला, तर; हरा और ताजा; सुंदर, मनोहर; मधुर, मीठा; जिसमें मन के कोमल भाव जगाने की शक्ति हो, भावपूर्ण।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरसई¹ *स्त्री.* = सरस्वती; हरापन, सरसता।

सरसई² *स्त्री.* {सं. सरस} सरसता।

सरसई³ *स्त्री.* {हिं. सरसों} सरसों के दाने की तरह का फलों का आरंभिक और बहुत छोटा रूप।

सरसता *स्त्री.* {सं.} 'सरस' होने का भाव; रसीलापन; रसिकता; सुंदरता; मधुरता; भावपूर्णता।

सरसना *अ.* {सं. सरस} हरा होना, पनपना; उन्नत होना, बढ़ाना; शोभित होना, सोहाना; रसपूर्ण होना. कोमल या सरस भाव के आवेश में आना।

उदा. सब देवनि सादर प्रनाम करि अति सुख सरसै–**रत्ना.**।

सरसर *स्त्री.* {अनु.} साँपों आदि के जमीन पर रेंगने या वायु के चलने से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

सरसराना *अ.* {अनु. सरसर} {*भाव.* सरसराहट} वायु का सरसर शब्द करते हुए चलना, सनसनाना; जल्दी-जल्दी कोई काम करना।

सरसराहट *स्त्री.* झाड़ आदि में साँप के रेंगने से शब्द होना, सुरसुराहट।

सरसरी *क्रि. वि.* {फा. सरासरी} अच्छी तरह ध्यान लगाकर नहीं, बल्कि जल्दी में; स्थूल रूप से, मोटे तौर पर (समरी)।

सरसाई *स्त्री.* {सं. सरस} सरसता; अधिकता।

सरसाना *स.* {हिं.} 'सरसना' का *स.*; *अ.* सरसना।

सरसाम *पुं.* {फा.} सन्निपात नामक रोग।

सरसिका *स्त्री.* छोटा तालाब, बावली।

सरसिरुह *पुं.* कमल।

सरसिज *पुं.* {सं.} कमल।

सरसी *स्त्री.* {सं.} छोटा सरोवर या जलाशय; बावली; एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 27 मात्राएँ (16वीं मात्रा पर यति) और अंत में गुरु और लघु होते हैं। इसे सुमन्दर भी कहते हैं। होली के दिनों में गाया जानेवाला कबीर प्राय: इसी छंद में होता है।

सरसीरुह *पुं.* {सं.} कमल।

सरसेटना *पुं.* {अनु.} डाँटना, फटकारना।

सरसों *स्त्री.* {सं. सर्षप} एक प्रसिद्ध पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है।

सरसौंहाँ *वि.* {हिं. सरस} सरस या रसयुक्त करनेवाला।

सरस्वती *स्त्री.* {सं.} विद्या और वाणी की अधिष्ठात्री देवी, वाग्देवी, भारती, शारदा; विद्या, इल्म; पंजाब की एक प्राचीन नदी।

सरस्वती-पूजा *स्त्री.* {सं.} वसंत पंचमी के अवसर पर विशेष रूप से होनेवाली सरस्वती की पूजा।

सरहंग *पुं.* {फा.} सेनापति; पहलवान; कोतवाल; सिपाही।

सरह *पुं.* {सं. शलभ} टिड्डी (कीड़ा)।

सरहज *स्त्री.* साले की स्त्री।

सरहथ *पुं.* {सं. शर या शल्य + हिं. हाथ} बरछी की तरह का एक हथियार जिससे बड़ी मछलियों का शिकार किया जाता है।

सरहद *स्त्री.* {फा. सर + *अ.* हद} {*वि.* सरहदी} सीमा; चौहद्दी बतानेवाली रेखा या चिह्न; चित्र में किसी व्यक्ति, उसके किसी अंग, अथवा किसी वस्तु की रूपरेखा जिससे उसके आकार का स्थूल ज्ञान होता है।

सरहदी *वि.* {हिं. सरहद} सरहद या सीमा-संबंधी; सरहद या सीमा पर रहनेवाला।

सरा *स्त्री.* {सं. शर} चिता; *पुं.* = शर (वाण)।

सराई *स्त्री.* = सलाई।

सराख *स्त्री.* सलाख।

सराग *पुं.* सींकचा।

सराजक *वि.* राजा द्वारा शासित।

सराजाम *पुं.* = सरंजाम।

सराध *पुं.* = श्राद्ध।

सराना *स.* {हिं. सारना का प्रे.} काम पूरा कराना, संपादित कराना; (काम) पूरा करना।

उदा. सिल्पकार आति निपुन कला कौ सार सरावत–**रत्ना.**।

सराप *पुं.* = शाप।

सरापना *स.* {सं. शाप} शाप देना।

सरापा *पुं.* {फा.} नख-शिख।

सराफ *पुं.* {*अ.* सर्राफ़} {*भाव.* सराफी} सोने-चाँदी का व्यापारी; रुपए-पैसे रखकर, बैठनेवाला वह दुकानदार जिससे लोग, रुपए, नोट आदि भुनाते हैं।

सराफा *पुं.* {*अ.* सर्राफ़:} सराफ का काम या पेशा; सराफों का बाजार।

सराफी *स्त्री.* {हिं. सराफ} सराफ का काम या भाव; महाजनी या कोठीवाली लिपि, मुंडा।

सराबोर *वि.* {सं. श्राव + हिं. बोर} बिल्कुल भीगा हुआ, तर।

सराय *स्त्री.* {फा.} यात्रियों के ठहरने की जगह, मुसाफिरखाना।

सराव *पुं.* {सं. शराव} मद्य पीने का प्याला; कटोरा; दीया।

सरावग *पुं.* जैनी।

सरावगी *पुं.* जैन।

सरासन *पुं.* शरासन।

सरासर *क्रि. वि.* {फा.} {*भाव.* सरासरी} बिल्कुल, पूरा-पूरा; साक्षात्, प्रत्यक्ष।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरासरी *स्त्री.* {फा.} शीघ्रता, जल्दी; *क्रि. वि.* जल्दी में, शीघ्रतापूर्वक; मोटे हिसाब से अनुमानतः।

सराह *स्त्री.* {हिं. सराहना} सराहने की क्रिया या भाव, प्रशंसा, तारीफ।

सराहना *स.* {सं. श्लाघन्} प्रशंसा या बड़ाई करना; *स्त्री.* प्रशंसा, तारीफ।

सराहनीय *वि.* {हिं. सराहना} प्रशंसा के योग्य, अच्छा।

सरि[1] *स्त्री.* {सं. सरित्} नदी।

सरि[2] *स्त्री.* {सं. सदृश} समता, बराबरी।

सरि[3] *स्त्री.* {सं. सृक} शृंखला, लड़ी।

उदा. मोतिन की सरि सिर कंठमाल हार–**केशव**।

सरि[4] *वि.* समान तुल्य, बराबर।

सरि[5] *क्रि. वि.* पर्यंत, तक।

सरिका *स्त्री.* मोती, झील, ताल।

सरित् *स्त्री.* नदी।

सरिया *स्त्री.* सरई, पतली छड़।

सरितराज *पुं.* समुद्र।

सरिता *स्त्री.* {सं. सरित्} धारा; नदी।

सरितातट *पुं.* {सं.} नदी का तट।

सरियाना *स.* {हिं. सर = पंक्ति} क्रम से लगाकर चीजें यथास्थान रखना; मारना, पीटना; सुलझाना।

सरिश्ता *पुं.* {फा. सरिश्तः} कार्यों अथवा कार्यालय का विभाग, महकमा; कार्यालय; कार्य, व्यवहार आदि का निश्चित और परंपरागत क्रम या रीति।

सरिश्तेदार *पुं.* {फा. सरिश्तःदार} किसी विभाग या प्रधान अधिकारी; अदालतों में मुकदमों की नत्थियाँ आदि रखनेवाला अधिकारी।

सरिल *पुं.* सलिल।

सरिवन *पुं.* शालपर्ण पेड़।

सरिवरि *स्त्री.* समता, बराबरी।

सरिस *वि.* {सं. सदृश} सदृश, समान।

सरी *स्त्री.* {सं.} छोटा सर या तालाब, झरना, सोता, चश्मा।

सरीकता *स्त्री.* {अ. शरीक} साझा।

सरीखा *वि.* {सं. सदृश} समान, तुल्य।

सरीफा *पुं.* शरीफा, श्रीफल।

सरीर *पुं.* देह।

सरीसृप *पुं.* {सं.} रेंगकर चलनेवाला जंतु, जैसे साँप, कनखजूरा आदि।

सरुज *वि.* {सं.} जिसे रोग हो, रोगी।

सरुझना *अ.* = सुलझना।

सरूप *वि.* {सं.} आकार या रूप से युक्त; सुंदर; सदृश, समान; *वि., पुं.* = स्वरूप।

सरूर *पुं.* {फा.} हलका नशा।

सरेख, सरेखा *वि.* {सं. श्रेष्ठ} {*स्त्री.* सरेखी} सयाना और समझदार, होशियार।

सरेखना *स.* सहेजना।

सरेस *पुं.* {फा. सरेश} एक प्रसिद्ध लसदार वस्तु जो चमड़े, सींग आदि को उबालकर निकाली जाती है।

सरो *पुं.* {फा. सर्व} एक प्रकार का वृक्ष जो सीधे और सुंदर आकार के लिए प्रसिद्ध है।

सरोकार *पुं.* {फा.} आपस के व्यवहार का संबंध; लगाव, वास्ता।

सरोज *पुं.* {सं.} कमल।

सरोजना *स.* {?} प्राप्त करना, पाना।

सरोजिनी *स्त्री.* {सं.} कमलों से भरा हुआ तालाब; कमल।

सरोट *स्त्री.* सिलवट।

सरोता *पुं.* श्रोता।

सरोद *पुं.* {फा. मि. सं. स्वरोदय} सारंगी की तरह का एक बाजा।

सरोरुह *पुं.* {सं.} कमल।

सरोवर *पुं.* {सं.} तालाब।

सरोष *वि.* {सं.} क्रोधयुक्त, कुपित; *क्रि. वि.* रोषपूर्वक, क्रोध से।

सरोसमान *पुं.* {फा. सर + व + सामान} सारी सामग्री या उपकरण।

सरौ *पुं.* कटौरा।

सरौट *स्त्री.* सिलवट।

सरौता *पुं.* {सं. सार = लोहा + पत्र} एक प्रसिद्ध औजार जिससे सुपारी आदि काटते हैं।

सरौती *स्त्री.* छोटा सरौता, ईख।

सर्कस *पुं.* शारीरिक कौशल।

सर्करा *स्त्री.* = शर्करा।

सर्ग *पुं.* {सं.} चलना या आगे बढ़ना, गमन; संसार, सृष्टि; बहाव, प्रवाह; प्राणी, जीव; संतान, औलाद; स्वभाव, प्रकृति किसी ग्रंथ, विशेषतः महाकाव्य का अध्याय (कैंटो); प्राकृतिक वस्तुओं, जीवों आदि का कोई स्वतंत्र और पूरा समूह या वर्ग, जैसे जीवसर्ग, वनस्पति-सर्ग आदि (किंग्डम)।

सर्गबद्ध *वि.* {सं.} जो कई सर्गों या अध्यायों में रचा हुआ हो।

सर्गुन *वि.* सगुण।

सर्ज *वि.* शल्ल की वृक्ष, राल, छूना।

सर्जन[1] *पुं.* {सं.} {*वि.* सर्जनीय, सर्जित} (कोई चीज) चलाना, छोड़ना या फेंकना; निकालना; कोई चीज बनाकर तैयार करना, रचना (क्रिएशन)।

सर्जन[2] *पुं.* {अं.} फोड़ों आदि की चीर-फाड़ करनेवाला डाक्टर।

सर्जनात्मक *वि.* {सं.} सर्जन-संबंधी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्ता पुं. घोड़ा।
सर्द *वि.* {फा.} ठंडा, शीतल; सुस्त, मंद, धीमा।
सर्दी *स्त्री.* सरदी।
सर्प पुं. {सं.} {*स्त्री.* सर्पिणी} साँप।
सर्पयज्ञ पुं. नागयज्ञ।
सर्पविद्या *स्त्री.* गारुड़ी।
सर्पिल *वि.* {सं.} साँप की चाल की तरह का टेढ़ा-तिरछा; जो साँप की तरह कुंडली मारे हुए हो।
सर्फा पुं. {*अ.* सर्फ़:} व्यय, खर्च।
सर्वस पुं. = सर्वस्व।
सर्रक *स्त्री.* {अन.} सर्राते हुए आगे बढ़ने की क्रिया या भाव।
सर्राटा पुं. {हिं. सर्र से अनु.} हवा के जोर से चलने पर होने वाला सर्रसर्र शब्द; इस प्रकार तेजी से भागना कि सर्रसर्र शब्द हो।
मुहा. सर्राटा भरना = तेजी के साथ सर्रसर्र शब्द करते हुए इधर से उधर जाना।
सर्व *वि.* {सं.} सब, समस्त, कुल।
सर्वऋतु *वि.* {सं.} सभी ऋतुओं में होने या मिलनेवाला, बारहमासी।
सर्वकाम *वि.* {सं.} सब प्रकार की इच्छाएँ रखनेवाला; सब प्रकार की कामनाएँ पूरी करनेवाला।
सर्वक्षमा *स्त्री.* {सं.} किसी विशिष्ट कारण से या विशिष्ट अवसर पर किसी प्रकार के सभी अपराधी बंदियों को एक साथ क्षमा करके छोड़ देना (एमनेस्टी)।
सर्वक्षार पुं. {सं.} आधुनिक युद्ध में शत्रु से हारकर पीछे हटने के समय सारी संपत्ति और पैदावार इसलिए नष्ट कर डालना कि वह आगे बढ़नेवाले शत्रु के काम न आ सके (स्कार्च्ड अर्थ)।
सर्वग *वि.* {सं.} सब जगह जाने या पहुँचनेवाला।
उदा. यद्यपि श्री रघुनाथ जू, सम सर्वग सर्वज्ञ—**केशव**।
सर्वग्रास पुं. {सं.} चंद्रमा या सूर्य का वह ग्रहण जिसमें उसका सारा बिंब ढक जाता है।
सर्वजनसुलभ *वि.* = सर्वसुलभ।
सर्वजनीन *वि.* सार्वजनिक।
सर्वजित् *वि.* {सं.} सबको जीतनेवाला।
सर्वजीववाद पुं. {सं.} यह सिद्धांत कि हर पदार्थ में आत्मा होती है।
सर्वजेता पुं. {सं. सर्वजित} वह खिलाड़ी जिसने सभी प्रतिस्पर्धियों को हटा दिया हो, चैम्पियन।
सर्वज्ञ *वि.* {सं.} {*भाव.* सर्वज्ञता} सभी बातें जाननेवाला; पुं. ईश्वर; बुद्धदेव।
सर्वज्ञता *स्त्री.* {सं.} सर्वज्ञ होने की अवस्था, गुण या भाव, जो ईश्वर का एक गुण माना जाता है।
सर्वतंत्र पुं. {सं.} सब प्रकार के शास्त्रीय सिद्धांत; *वि.* जिसे सब शास्त्र या लोग मानते हों।
सर्वतः *क्रि. वि.* {सं.} चारों ओर; सब प्रकार से।
सर्वतोभद्र *वि.* {सं.} सब प्रकार से कल्याणकारी; जिसके सिर, दाढ़ी, मूँछ आदि के सब बाल मुँड़े हों; पुं. एक प्रकार का मांगलिक चिह्न जो देवताओं पर चढ़ाने के वस्त्र पर बनाया जाता है; सिर, दाढ़ी, मूँछ आदि सबके बाल मुँड़ाना; एक प्रकार का चित्रकाव्य।
सर्वतोभाव *क्रि. वि.* {सं.} सब तरह से; अच्छी तरह, भली भाँति।
सर्वतोमुख *वि.* {सं.} जिसका या जिसके मुँह चारों ओर हो; सब जगह मिलने या होनेवाला, व्यापक।
सर्वतोमुखी *वि.* = सर्वतोमुख।
सर्वत्यागी (गिन्) *वि.* {सं.} जिसने सब कुछ त्याग दिया हो।
सर्वत्र *क्रि. वि.* {सं.} सब जगह।
सर्वथा *क्रि वि.* {सं.} सब प्रकार से, पूरी तरह से; बिल्कुल, पूरा।
सर्वदर्शिता *स्त्री.* {सं.} सर्वदर्शी होने का भाव।
सर्वदर्शी पुं. {सं. सर्वदर्शिन्} {*स्त्री.* सर्वदर्शिणी, *भाव.* सर्वदर्शिता} विश्व में होनेवाली सभी बातें देखनेवाला।
सर्वदल पुं. {सं.} {*वि.* सर्वदलीय} किसी विषय पर विचार करने अथवा किसी क्षेत्र में काम करनेवाले सभी दल या वर्ग, जैसे उस समय एक सर्वदल-सम्मेलन हुआ था।
सर्वदा *क्रि. वि.* {सं.} हमेशा, सदा।
सर्वनाम पुं. {सं. सर्वनामन्} व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा की जगह आता है जैसे मैं, तुम, वह।
सर्वनाश पुं. {सं.} सब चीजों की पूरी बरबादी।
सर्वनाशक *वि.* {सं.} सब बातें या सब प्रकार के काम नष्ट करनेवाला, सबकुछ चौपट करनेवाला।
सर्वनाशी *वि.* {सं.} सर्वनाशक।
सर्वपति पुं. {सं.} विष्णु।
सर्वप्रिय *वि.* {सं.} जो सबको प्रिय हो या अच्छा लगे (पापुलर)।
सर्वप्रियता *स्त्री.* {सं.} सबको प्रिय होने या अच्छा लगने का भाव, लोकप्रियता (पापुलैरिटी)।
सर्वभक्षी *वि.* {सं. सर्वभक्षिन्} {*स्त्री.* सर्वभक्षिणी} सबकुछ खा जानेवाला।
सर्वभोगी (भोगिन्) *वि.* {सं.} अच्छी और बुरी अथवा ग्राह्य और अग्राह्य सभी वस्तुओं का भोग करनेवाला या आनंद लेनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वमंगला *स्त्री.* {सं.} दुर्गा; लक्ष्मी; *वि., स्त्री.* सब प्रकार से मंगल या कल्याण करनेवाली।

सर्वमान्य *वि.* {सं.} जो सबको मान्य हो।

सर्ववर्तुल *वि.* {सं.} (पिंड) जिसका प्रत्येक बिन्दु उसके मध्य बिन्दु से समान अंतर पर हो, गोल (स्फेरिकल); पुं. उक्त प्रकार का पिंड, गोला (स्फियर)।

सर्वविदित *वि.* {सं.} जिसे सब जानते हों।

सर्वव्यापक *वि.* {सं.} {*भाव.* सर्वव्यापकता} सब पदार्थों में व्याप्त रहनेवाला (ओम्निप्रेजेंट); पुं. = ईश्वर।

सर्वशक्तिमान *वि.* {सं.} जिसमें सबकुछ करने की शक्ति हो (ओम्निपोटेंट); पुं. = ईश्वर।

सर्वश्री *वि.* {सं.} एक आदरसूचक विशेषण जो बहुत से नामों का उल्लेख होने पर उन सबके साथ अलग-अलग श्री न लगाकर, उन सबके सामूहिक सूचक के रूप में, आरंभ में लगाया जाता है, जैसे सर्वश्री सीताराम, माधोप्रसाद, बालकृष्ण, नारायणदास आदि।

सर्वश्रेष्ठ *वि.* {सं.} {*भाव.* सर्वश्रेष्ठता} सबसे उत्तम।

सर्वसम्मत *वि.* {सं.} जिससे उपस्थित या संबद्ध सभी लोग सहमत हों, जिसके पक्ष में सबकी सहमति हो (यूनैनिमस)।

सर्वसम्मति *स्त्री.* {सं.} ऐसी स्थिति जिसमें उपस्थित या संबद्ध सभी लोग सहमत हों, सबकी एक सम्मति या राय (यूनैनिमिटी)।

सर्वसाधारण पुं. {सं.} सभी प्रकार के लोग, जनता, आम लोग; *वि.* जो सबमें पाया जाए, आम (कॉमन)।

सर्वसामान्य *वि.* {सं.} जो सबमें सामान्य रूप से पाया जाए (कॉमन); जो सब लोगों के लिए हो (पब्लिक)।

सर्वसोख *वि.* {सं. सर्व + हिं. सोखना} सबकुछ सोख लेने, निगल जाने या ले लेनेवाला।

उदा. सत्यानाशी जुद्ध कालहूँ सर्वसोख सों–रत्ना.।

सर्वस्व पुं. {सं.} जो कुछ पास में हो, वह सब, सारी संपत्ति या पूँजी।

सर्वतोभावेन *अव्य.* पूर्णरूप से।

सर्वतोमुख *वि.* जिसका मुख चारों ओर हो।

सर्वांग पुं. {सं.} संपूर्ण शरीर, सारा बदन; किसी चीज, काम या बात के सब अवयव या अंश।

सर्वांगपूर्ण *वि.* {सं.} जो सभी आवश्यक अंगों या अवयवों से युक्त हो, सब तरह से भरा-पूरा।

सर्वांगसुंदर *वि.* {सं.} जो सभी दृष्टियों या अंगों से सुंदर या अच्छा हो।

सर्वांगीण *वि.* {सं.} सब अंगों से संबंध रखनेवाला; सब अंगों से युक्त, संपूर्ण।

सर्वात्मभाव पुं. {सं.} सभी में एक ही आत्मा का निवास मानना।

सर्वाक्ष पुं. शिवाक्ष, रुद्राक्ष।

सर्वाणी *स्त्री.* दुर्गा देवी।

सर्वांश *वि.* {सं.} पूर्ण।

सर्वांश में *क्रि. वि.* {सं.} पूर्ण रूप में।

सर्वात्मा पुं. {सं.} आत्मा के रूप में सभी में व्याप्त रहनेवाला, ब्रह्मा।

सर्वाधिकार पुं. {सं.} {*वि.* सर्वाधिकारी} सबकुछ करने का अधिकार, पूरा इख्तियार; सारे अधिकार।

सर्वाधिकारी (कारिन्) पुं. {सं.} वह जिसे सब प्रकार के अधिकार हों या मिले हों।

सर्वास्तिवाद पुं. {सं.} एक प्रकार का दार्शनिक सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि संसार की सभी वस्तुओं की सत्ता या अस्तित्व है, वे असार नहीं हैं।

सर्वेक्षक पुं. {सं.} सर्वेक्षण करनेवाला।

सर्वेक्षण पुं. {सं.} चारों ओर से निरीक्षण करना, पूरी जाँच-पड़ताल के साथ निरीक्षण करना।

सर्वेश (श्वर) पुं. {सं.} सबका स्वामी; ईश्वर।

सर्वेश्वरवाद पुं. {सं.} वह सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि ईश्वर एक है और वह विश्व के सभी प्राणियों और तत्वों में समान रूप से वर्तमान है (पैंथिइज्म)।

सर्वेसर्वा *वि.* {सं. सर्वे-सर्वाः} जिसे किसी विषय या कार्य में सब प्रकार के और पूरे अधिकार हों, पूरा मालिक।

सर्वोच्च *वि.* {सं.} सबसे ऊँचा।

सर्वोत्तम *वि.* {सं.} सबसे उत्तम, सबसे बढ़कर या अच्छा।

सर्वोदय पुं. {सं.} स्वतंत्र भारत का एक नया आंदोलन जिसमें सभी लोगों के आर्थिक, नैतिक, शारीरिक, सामाजिक आदि सुधारों तथा सब प्रकार की उन्नति के प्रयत्न किए जाते हैं।

सर्वोपयोगी (गिन्) *वि.* {सं.} जो सबके लिए उपयोगी हो।

सर्वोपरि *वि.* {सं.} सबसे ऊपर या बढ़कर होनेवाला।

सर्षप पुं. {सं.} सरसों।

सर्षषी *स्त्री.* सफेद सरसों।

सल[1] *स्त्री.* {देश.} किसी चीज में पड़ा हुआ बल, सिकुड़न, सिलवट; परत, तह।

सल[2] *स्त्री.* {देश.} जानकारी, पता; परिचय, ज्ञान।

सल[3] पुं. {सं.} जल, पानी।

सलई *स्त्री.* {सं. शल्लकी} चीड़ का पेड़; चीड़ का गोंद, कुन्दुर।

सलज्ज *वि.* {सं.} जिसे लज्जा हो, लज्जाशील; *क्रि. वि.* लज्जापूर्वक, शरमाते हुए।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलतनत *स्त्री.* {*अ.* सल्तनत} राज्य; साम्राज्य; प्रबंध; सुविधा।

सलना *अ.* {हिं.} सालना का *अ.*।

सलभ *पुं.* = शलभ (पतिंगा)।

सलमा *पुं.* {*अ.* सलम:} सोने या चाँदी का वह तार जो कपड़ों पर बेल-बूट बनाने के काम में आता है, बादला।

ससलवट *स्त्री.* सिलवट।

सलवार *स्त्री.* {फा. शलवार = जाँघिया} पायजामे के नीचे पहनने का जाँघिया; एक प्रकार का बहुत ढीला पायजामा जो विशेषत: पंजाब और उसके पश्चिमी भागों में पहना जाता है।

सलसलाहट *स्त्री.* खुजली।

सलहज *स्त्री.* {हिं. साला} साले की स्त्री।

सलाई[1] *स्त्री.* {सं. शलाका} काठ या धातु का छोटा पतला छड़, जैसे गंजी, मोजे आदि बुनने की सलाई; आँखों में सुरमा लगाने की सलाई।

मुहा. किसी की आँख में सलाई फेरना = किसी को अंधा करने के लिए सलाई गरम करके उसकी आँखों में लगाना।

दीयासलाई।

सलाई[2] *स्त्री.* {हिं. सालना} सालने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

सलाक *पुं.* तीर।

सलाख *स्त्री.* {फा. मि. सं. शलाका} धातु का मोटा, लंबा छड़।

सलाजीत *स्त्री.* शिलाजीत।

सलाद *पुं.* {अं. सैलाड} एक प्रकार के कंद के पत्ते जो पाचक होने के कारण कच्चे खाए जाते हैं।

सलाम *पुं.* {*अ.*} प्रणाम, बंदगी।

मुहा. दूर से सलाम करना = पास न जाना, दूर या अलग रहना।

सलामत *वि.* {*अ.*} हानि या आपत्ति से बचा हुआ, रक्षित; जीवित और स्वस्थ, सकुशल; स्थित, कायम।

सलामती *स्त्री.* {*अ.*} तंदुरुस्ती, स्वस्थता; कुशल, क्षेम।

सलामी *स्त्री.* {*अ.* सलाम} सलाम करने की क्रिया या भाव; सैनिकों आदि की सलाम करने की प्रणाली; इस ढंग से (तोपें, बंदूकें आदि छोड़कर) बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति या अभिवादन करना।

मुहा. सलाम उतारना = किसी बड़े अधिकारी के आने या जाने के समय उक्त प्रकार से अभिवादन करना; *सलामी लेना* = किसी बड़े अधिकारी का खड़े होकर सैनिकों से अभिवादन स्वीकार करना।

वह धन जो मकान या जमीन का मालिक मकान या जमीन किराए पर देने के समय किराए के अतिरिक्त पहले ले लेता है, पगड़ी; *वि.* थोड़ा ढालुआँ (स्थान)।

सलार *पुं.* चिड़िया।

सलारा *पुं.* {?} एक प्रकार की चिड़िया।

सलाह *स्त्री.* {*अ.*} यह बतलाना कि अमुक कार्य इस प्रकार होना चाहिए अथवा इस प्रकार नहीं होना चाहिए, सम्मति, राय; परामर्श।

सलाहकार *पुं.* {*अ.* सलाह + फा. कार (प्रत्य.)} परामर्श या सलाह देनेवाला, परामर्शदाता।

सलिल *पुं.* {सं.} जल, पानी।

सलिला *स्त्री.* {सं. सलिल} नदी।

सलिलाकर *पुं.* समुद्र।

सलिलाधिप *पुं.* वरुण।

सलिलेंद्र *पुं.* वरुण।

सलीका *पुं.* {*अ.* सलीक:} अच्छी तरह काम करने का ढंग, योग्यता, शऊर; हुनर; शिष्टता।

सलीता[1] *पुं.* {देश.} एक प्रकार का बहुत मोटा मारकीन (कपड़ा)।

सलीता[2] *पुं.* {*स्त्री.* अल्पा. सलीती} झोला, थैला।

सलील *वि.* {सं.} लीलायुक्त; क्रीड़ाशील, खिलवाड़ी; कुतूहलप्रिय, कौतुकी; किसी प्रकार की भावभंगी से युक्त।

सलूक *पुं.* {*अ.*} आपसदारी का अच्छा बरताव या व्यवहार; भलाई, उपकार।

सलोतर *पुं.* शालिहोत्र।

सलोतरी *पुं.* शालिहोत्री।

सलोना *वि.* {हिं. स + लोन = नामक} {*स्त्री.* सलोनी, *भाव.* सलोनापन} जिसमें नमक पड़ा हो, नमकीन; सुंदर।

सलोनो *पुं.* {सं. श्रावणी} हिन्दुओं का रक्षाबंधन नामक त्योहार।

सल्लम *स्त्री.* {देश.} हाथ का बुना एक प्रकार का मोटा कपड़ा, गजी, गाढ़ा।

सव *पुं.* {सं. शव} मृत शरीर, शव।

मुहा. सव साजना = चिता बनाकर जलाने के लिए उसपर शव रखना।

सवत, सवति *स्त्री.* सौत।

सवत्स *क्रि. वि.* {सं.} बछड़े सहित।

सवन *पुं.* {सं.} यज्ञ।

सवर्ण *वि.* {सं.} समान, सदृश; एक ही वर्ण या जाति के, जैसे–क्षत्रिय के लिए क्षत्रिय या ब्राह्मण के लिए ब्राह्मण सवर्ण होते हैं; उच्च वर्ण का (हिन्दू)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवाँग पुं. स्वाँग।

सवाँगना अ. {हिं. स्वाँग} स्वाँग झूला भेस बनाना, रूप भरना।

सवा वि. {सं. स + पाद} जिसमें पूरे के सिवा चौथाई और लगा हो, जैसे सवा चार।

सवाई स्त्री. {हिं. सवा + ई (प्रत्य.)} वह ऋण जिसमें मूलधन का सवाया चुकाना पड़ता है; जयपुर के महाराजाओं की उपाधि; वि. सवाया।

सवाद पुं. स्वाद।

सवादिक वि. स्वादिष्ट।

सवादिल वि. = स्वादिष्ट।

सवादी वि. {हिं. सवाद} स्वाद लेने या चखनेवाला; आनंद या रस लेनेवाला, रसिक।

सवाब पुं. {अ.} पुण्य; उपकार।

सवाया वि. {हिं. सवा} {स्त्री. सवाई} पूरे से एक चौथाई अधिक, सवा गुना; दूसरे की उपेक्षा कुछ बढ़ा हुआ या अधिक, श्रेष्ठतर।

सवार पुं. {फा.} वह जो घोड़े, गाड़ी या किसी वाहन पर चढ़ा हो; अश्वारोही सैनिक।

मुहा. पाँचवाँ सवार बनना = योग्यता न होने पर भी बड़ों के साथ अपनी गिनती कराने का प्रयत्न करना।

वि. किसी पर चढ़ा या बैठा हुआ।

सवारा पुं. = सवेरा।

सवारी स्त्री. {फा.} वह चीज जिसपर सवार हों, वाहन; वह व्यक्ति जो सवार हो; बड़े आदमी, देव-मूर्ति आदि के साथ चलनेवाला जलूस।

सवाल पुं. {अ.} पूछने की क्रिया, प्रश्न; कुछ देने की प्रार्थना, माँग; वह प्रश्न जो परीक्षा या जाँच के समय उत्तर पाने के लिए दिया जाता है।

सवाल-जवाब पुं. {सं.} उत्तर-प्रत्युत्तर; तर्क-वितर्क, वाद-विवाद, बहस।

सविकल्प वि. {सं.} विकल्प या संदेह से युक्त संदिग्ध; पुं. किसी आलंबन की सहायता से होनेवाली समाधि (योग)।

सविकार वि. जिसमें विकार न हो।

सविकाश वि. फैला हुआ।

सविचार वि. सोचा हुआ।

सविता पुं. {सं. सवितृ} ईश्वर, भगवान; सूर्य; बारह की संख्या; कुछ लाली लिए सफेद रंग की एक चमकीली धातु जो प्रायः निकल और लोहे के साथ पाई जाती है (कोबाल्ट)।

सविनय अवज्ञा स्त्री. {सं. विनय + अवज्ञा} राज्य या अधिकारी की अनुचित आज्ञा या कानून न मानकर उसकी अवज्ञा या उल्लंघन करना (सिविल डिस्ओबीडिएंस)।

सविस्तर क्रि. वि. {सं.} विस्तारपूर्वक।

सवेतन वि. {सं.} जिसके साथ वेतन भी हो, जैसे सवेतन छुट्टी।

सवेरा पुं. {हिं. स + सं. वेला} दिन निकलने का समय, प्रातः काल, सुबह; निश्चित या नियत समय के पहले का समय (क्व.)।

सवैया पुं. {हिं. सवा + ऐया (प्रत्य.)} सवा सेर का बाट; वह पहाड़ा जिसमें संख्याओं का सवाया रहता है; ऋण के रूप में अनाज, धन आदि देने की एक प्रणाली जिसमें दिए हुए मान का सवाया वसूल किया जाता है; एक प्रसिद्ध छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु होता है, मालिनी, मदिरा।

सव्य वि. {सं.} वाम, बायाँ; दक्षिण, दाहिना; प्रतिकूल, उलटा।

सव्यसाची पुं. {सं.} अर्जुन (पांडव)।

सव्रत वि. व्रत या नियमबद्ध।

सशंक वि. {सं.} जिसे शंका हो; डरा हुआ, भयभीत।

सशंकता अ. {सं. सशंक} शंका या संदेह करना; डरना।

सशब्द वि. शब्द से भरा।

सशरीर वि. शरीरधारी।

सश्रीक वि. धनवान।

सशक्त वि. {सं.} शक्तिशाली, बलवान।

सशर्त क्रि. वि. शर्त के साथ; वि. जिसके साथ शर्त हो।

सशस्त्र वि. {सं.} शस्त्रसहित, शस्त्र से युक्त; जिसके पास शस्त्र हो, शस्त्रों आदि से सज्जित या युक्त किया हुआ, सायुध, जैसे सशस्त्र बल (आर्म्ड)।

सस[1] पुं. {सं. शशि} चंद्रमा; चंद्रमा का कलंक।

सस[2] पुं. {सं. शस्य} धान्य, अनाज; खेती-बारी।

ससका पुं. {सं. शशक} खरगोश।

ससना[1] अ. {सं. शासन} विपत्ति भोगना, कष्ट सहना।

ससना[2] अ. {हिं. साँस} साँस लेने में कष्ट होना, दम घुटना।

ससना[3] अ. {?} प्रविष्ट होना, समाना।

ससम्मान क्रि. वि. {सं.} सम्मानपूर्वक।

ससहर पुं. {सं. शशिधर} चंद्रमा।

ससहरना अ. {हिं. सिहरना} डरना।

उदा. रह्यौ ढीठ ढारसु गहैं, ससहरि गयौ न सूर-बिहारी।

ससा पुं. ससक।

ससाना अ. {?} घबराना; काँपना।

ससि[1] पुं. शशि, चंद्रमा।

ससि[2] पुं. {सं. शस्य} धान्य, अनाज।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ससिधर पुं. = चंद्रमा।
ससिहर पुं. = ससिधर (चंद्रमा)।
ससी पुं. शशि।
ससुर पुं. {सं. श्वसुर} स्त्री या पुरुष के विचार से उसके पति (या पत्नी) का पिता।
ससुरा पुं. ससुर; ससुराल।
ससुराल *स्त्री.* {सं. श्वसुरालय} ससुर का घर।
सस्ता *वि.* {सं. स्वस्थ} {*स्त्री.* सस्ती, *क्रि.* सस्ताना} साधारण से कम मूल्य का; साधारण, मामूली (क्व.); जिसका भाव उतर गया हो।
मुहा. सस्ते छूटना = हज में किसी बड़े काम या संकट से छुटकारा पाना।
जो बहुत ही थोड़े परिश्रम या व्यय से अथवा बहुत ही सहज में मिल जाए, जैसे सस्ता यश या सम्मान (चीप)।
सस्ताना *अ.* = सस्ता होना; *स.* = सस्ता करना।
सस्ती *स्त्री.* {हिं. सस्ता} सस्तापन; वह समय जब सब चीजें सस्ती मिलती हों।
सस्त्रीक *क्रि. वि.* {सं.} स्त्री या पत्नी के साथ।
सस्मित *वि.* {सं. स + स्मित} मुस्कराता या हँसता हुआ; *क्रि. वि.* मुस्कराकर, मुस्कराते हुए।
सस्य पुं. = शस्य।
सहँगा *वि.* {हिं. महँगा का अनु.} थोड़े दामवाला, सस्ता।
उदा. मनि मानिक महँगे किए, सहँगे तृन जल नाज–**तुलसी**।
सह *क्रि. वि* {सं.} {*भाव.* सहत्व} सहित, समेत, साथ।
सहकर्मी (र्मिन्) पुं. {सं.} वह जो किसी के साथ मिलकर काम करता हो।
सहकार पुं. {सं.} सुगंधित पदार्थ; आम का वृक्ष; औरों के साथ मिलकर काम करने की वृत्ति, क्रिया या भाव, सहयोग (कोऑपरेशन)।
सहकारिता *स्त्री.* {सं.} साथ मिलकर काम करना (कोऑपरेशन); सहकारी या सहायक होने का भाव।
सहकारी पुं. {सं. सहकारिन्} {*स्त्री.* सहकारिणी} साथी, सहयोगी; सहायक (एसिस्टेंट)।
सहकारी समिति *स्त्री.* {सं.} वह समिति या संस्था जो कुछ विशेष प्रकार के उपभोक्ता, व्यवसायी आदि आपस में मिलकर सबके हित के लिए बनाते हैं और जिसके द्वारा वे कुछ चीजें बनाने, बेचने आदि की व्यवस्था करते हैं (कोआपरेटिव सोसाइटी)।
सहगमन पुं. {सं.} किसी के साथ जाना या चलना; पति के शव के साथ पत्नी का जल मरना, सती होना।
सहगान पुं. {सं.} कई आदमियों का एक साथ मिलकर गाना; वह गाना जो इस प्रकार गाया जाए (कोरस)।
सहगामिनी *स्त्री.* {सं.} सहगमन करनेवाली स्त्री; पत्नी; सहेली।
सहगामी *वि., पुं.* {सं. सहगामिन्} {*स्त्री.* सहगामिनी} साथ चलनेवाला; साथ रहनेवाला, साथी; समवर्ती।
सहचर पुं. {सं.} {*स्त्री.* सहचरी} साथ रहने और चलनेवाला; साथी, संगी; सेवक, नौकर; सखा।
सहचरी *स्त्री.* {सं.} पत्नी; सखी।
सहचार पुं. {सं.} साथ, संग।
सहचारिणी *स्त्री.* {सं.} साथ रहनेवाली, स्त्री, सखी सहेली; पत्नी, भार्या।
सहचारी पुं. {सं. सहचारिन्} {*स्त्री.* सहचारिणी, *भाव.* सहचारिता} साथ चलनेवाला; संगी-साथी, सहचर।
सहज पुं. {सं.} {*स्त्री.* सहजा, *भाव.* सहजता} सगा भाई; स्वभाव; *वि.* साथ उत्पन्न होनेवाला; स्वाभाविक; सरल, सुगम।
सहजधर्मी पुं. {सं. सहजधर्मिन्} जो सहज बातों को ही धर्म का विषय मानता हो।
सहजधारी पुं. {हिं. सहज + धारी = धारण करनेवाला} गुरु नानक का वह अनुयायी जो सिर और दाढ़ी आदि के बाल न बढ़ाता हो, बल्कि साधारण हिन्दुओं की तरह कटवाता या मुँड़ाता हो।
सहजध्यान पुं. {सं.} सहज-समाधि।
सहजपंथ पुं. {सं.} {*वि.* सहजपंथी} गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय की एक शाखा।
सहजबुद्धि *स्त्री.* {सं.} जीव-जंतुओं में होनेवाली वह स्वाभाविक शक्ति या ज्ञान जो उन्हें कोई काम करने या न करने की प्रेरणा करता है।
सहज-समाधि *स्त्री.* {सं.} वह ध्यान या समाधि जो सद्गुरु के बतलाए हुए सहज या सरल रूप से लगाई जाती है और जिसमें आसन, मुद्रा आदि के प्रयोगों की आवश्यकता नहीं होती।
सहजात *वि.* {सं.} साथ-साथ जन्म लेने या उत्पन्न होनेवाला (कांजेनिटल); यमज; पुं. सगा भाई, सहोदर।
सहजातिक *वि.* {सं.} एक ही साथ या प्रकार के (होमोजिनीयस)।
सहजिया पुं. = सहजपंथी।
सहतरा पुं. {फा.} पर्पट।
सहताना *अ.* सुस्ताना; सस्ताना।
सहत्व पुं. {सं.} 'सह' का गुण या भाव; संग-साथ, मेल-जोल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहदानी *स्त्री.* निशानी।
सहदूल *पुं.* शार्दूल।
सहदेव *पुं.* {सं.} पाँचों पाँडवों में सबसे छोटा भाई।
सहधर्मिणी *स्त्री.* {सं.} पत्नी, भार्या।
सहधर्मी *वि.* {सं. सहधर्मिन्} समान धर्मवाला; *पुं.* {*स्त्री.* सहधर्मिणी} पति।
सहन[1] *पुं.* {सं.} सहने की क्रिया या भाव; आज्ञा या निर्णय मानकर उसका पालन करना (एबाइड); क्षमा।
सहन[2] *पुं.* {*अ.*} घर के बीच का खुला भाग, आँगन या चौक; एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
सहनशील *वि.* {सं.} {*भाव.* सहनशीलता} सहने या बरदाश्त करनेवाला, सहिष्णु (टॉलरेंट)।
सहनशीलता *स्त्री.* {सं.} सहनशील होने की अवस्था या भाव, सहिष्णुता (टॉलरेंस, टॉलरेशन्)।
सहना *स.* {सं. सहन} झेलना, बरदाश्त करना; भार वहन करना; *पुं.* साहनी।
सहनीय *वि.* {सं.} जो सहन किया जा सके, सहे जाने के योग्य, सह्य।
सहमना *क्रि.* डरना, शक करना।
सहपरीक्षक *पुं.* {सं.} उन दो परीक्षकों में से कोई एक जो मिलकर परीक्षा लेते हों।
सहपाठी *पुं.* {सं. सहपाठिन्} वह जो किसी के साथ पढ़ा हो, सहाध्यायी।
सहप्रतिवादी *पुं.* {सं.} किसी वाद या मुकदमे में वह व्यक्ति जो मुख्य प्रतिवादी के साथ गौण रूप से उत्तरदायी बतलाया जाता है (कोडिफेंडेंट)।
सहबद्ध *वि.* {सं.} साथ में बँधा या लगा हुआ।
सहबात *स्त्री.* {सं. सह = साथ + हिं. बात} मेलजोल की बातचीत।
उदा. क्यौं हूँ सहबात न लगे, थाके भेद-उपाइ —बिहारी।
सहबाला *पुं.* {सं. सह + बाल = बालक} वह छोटा बालक जो विवाह के समय वर के साथ घोड़े या पालकी पर बैठकर उसके सखा के रूप में जाता है।
सहभागिता *स्त्री.* {सं.} सहभागी होने की अवस्था या भाव, हिस्सेदारी।
सहभागिनी *वि., स्त्री.* {सं.} समानता के भाव से किसी कार्य में सम्मिलित होने वाली, सहभागी का *स्त्री.*; *स्त्री.* पत्नी, जोरू।
सहभागी *वि.* {सं. सह + भागिन्} {*स्त्री.* सहभागिनी} समानता के भाव से किसी काम में किसी के साथ सम्मिलित होनेवाला; *पुं.* वह जो व्यापार आदि में किसी के साथ समानता के भाव से सम्मिलित हो और उसके हानि-लाभ आदि का समान रूप से भागी हो, हिस्सेदार (शेयर)।
सहभावी *वि.* {सं. सहभाविन्} साथ-साथ होने, रहने या चलनेवाला (कॉनकमिटेंट)।
सहभोज *पुं.* {सं.} {*वि.* सहभोजी} बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर भोजन करना।
सहम *पुं.* {फा. सह्म} भय, डर; संकोच; हिचक।
सहमत *वि.* {सं.} जिसकी राय दूसरों से मिलती हो, एकमत (एग्रीड)।
सहमति *स्त्री.* {सं.} सहमत होने की क्रिया या भाव, किसी के साथ एक मत होना।
सहमना *अ.* {फा. सह्म} डरना।
सहमाना *स.* {हिं.} सहमना का *स.*।
सहमृता *वि., स्त्री.* {सं.} अपने मृत पति के शव के साथ सती होने या मर जानेवाली।
सहयोग *पुं.* {सं.} किसी काम में किसी के साथ लगकर उसकी सहायता करना; बहुत से लोगों के साथ मिलकर कोई काम करने का भाव (कोऑपरेशन); सहायता।
सहयोगी (गिन्) *पुं.* {सं.} किसी के साथ मिलकर उसी का या उसी तरह का काम करनेवाला; सहकारी, साथी।
सहयोजित *वि.* {सं.} साथ में जोड़ा हुआ।
सहर[1] *क्रि. वि.* {हिं. सहराना} मंदगति से, धीरे-धीरे।
सहर[2] *पुं.* {देश.} बन-बिलाव या स्याहगोश नामक जंगली जंतु।
सहर[3] *पुं.* {*अ.*} बहुत सवेरा, तड़का।
सहरगही *स्त्री.* {*अ.* सहर = प्रभात + फा. गह} निर्जल व्रत आरंभ करने के पहले बहुत तड़के उठकर किया जानेवाला हल्का भोजन, सहरी।
सहराना *स.* सहलाना।
सहरिया *पुं.* एक तरह का गेहूँ।
सहरी[1] *स्त्री.* {सं. शफरी} एक प्रकार की मछली।
सहरी[2] *स्त्री.* = सहरगही।
सहल *वि.* {*अ.*} सरल, सुगम, सहज।
सहगल *पुं.* = साथी।
सहलाना *स.* {अनु.} किसी वस्तु या अंग पर धीरे-धीरे हाथ फेरना; मलना।
सहलाहट *स्त्री.* सहलाने की क्रिया या भाव।
सहलेखक *पुं.* {सं.} उन दो लेखकों में से कोई एक जिन्होंने मिलकर कोई पुस्तक लिखी हो।
सहवास *पुं.* {सं.} साथ रहना; मैथुन, स्त्रीसंभोग।
सहवासी (सिन्) *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* सहवासिनी} साथ रहनेवाला; पति।
सहशिक्षा *स्त्री.* {सं.} शिक्षा की वह पद्धति जिसमें युवा लड़के और लड़कियाँ एक ही कक्षा में पढ़ते हों।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहस *वि.* = सहस्र।

सहसकिरन *पुं.* = सूर्य।

सहसगो *पुं.* = सूर्य।

सहसचरन *पुं.* = सूर्य।

सहसनयन *पुं.* इंद्र।

सहसा *क्रि. वि.* {सं.} एकाएक, अकस्मात्।

सहसाई *पुं.* = सहाइ।

सहसाक्षि *पुं.* {सं. सहस्राक्ष} इंद्र।

उदा. जिहि सिहात करि विघन पात सहसा सहसाखी (सहसाक्षि)–**रत्ना.**।

सहसाखी *पुं.* = सहसाक्षि, इंद्र।

सहसान *पुं.* {सं.} मोर, मयूर।

सहसानन *पुं.* {सं. सहस्रानन} शेषनाग।

सहस्र *पुं.* {सं.} दस सौ, हजार; *वि.* जो गिनती में दस सौ हो।

सहस्रदल *पुं.* {सं.} कमल।

सहस्रपाद *पुं.* {सं.} सूर्य; विष्णु।

सहस्रफन *पुं.* {सं.} शेषनाग।

सहस्रबाहु *पुं.* = सहस्रार्जुन।

सहस्रमुखी (खिन्) *वि.* {सं.} हजारों मुखवाला।

सहस्रलोचन *पुं.* {सं.} = इंद्र।

सहस्राक्ष *पुं.* {सं.} इंद्र; विष्णु।

सहस्राब्दी *स्त्री.* {सं.} किसी संवत् या सन् के हर एक से हर हजार तक के वर्षों का समूह, साहस्री (माइलीनियम)।

सहस्रार *पुं.* {सं.} हठयोग के अनुसार शरीर के अंदर के आठ कमलों या चक्रों में से एक जो हजार दलों का माना गया है, इसका स्थान मस्तिष्क का ऊपरी भाग माना जाता है, इसे शून्य चक्र भी कहते हैं, आधुनिक विज्ञान के अनुसार यह विचार शक्ति और शरीर का विकास करनेवाली गिल्टियों का केंद्र है।

सहस्रार्जुन *पुं.* {सं.} राजा कृतवीर्य का पुत्र जिसकी राजधानी माहिष्मती में थी, सहस्रबाहु।

सहांश *पुं.* {सं.} अपने हिस्से या अंश के रूप में किसी को दी जानेवाली कोई चीज या धन (कॉंट्रिब्यूशन)।

सहांशिक *पुं.* {सं.} वह जो अपने हिस्से या अंश के रूप में किसी को कुछ देता हो (कॉंट्रिब्यूटर); *वि.* सहांश के रूप में होनेवाला (कांट्रिब्यूटरी)।

सहाइ (ई) *स्त्री.* {सं. सहाय} सहायता, मदद सेना।

उदा. सहित सहाइ कलिकाल भीरू भागि है–**तुलसी**।

पुं. = सहायक।

सहादर *अव्य.* आदर के साथ।

सहाउ *पुं.* = सहाय।

सहाध्यायी *पुं.* = सहपाठी।

सहाना *वि.* {*स्त्री.* सहानी} शहाना।

सहानुभूति *स्त्री.* {सं.} किसी का दुख देखकर उसी की तरह दुखी होना, हमदर्दी।

सहाब *पुं.* = शहाब (लाल रंग)।

सहाय *पुं.* {सं.} सहायता, मदद; सहायक; आश्रय, सहारा।

सहायक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सहायिका} सहायता करनेवाला; कार्य की सिद्धि में योग देनेवाला; अधीन रहकर काम में सहायता करनेवाला, सहकारी (असिस्टैन्ट)।

सहायक नदी *स्त्री.* {सं.} किसी बड़ी नदी में मिलनेवाली छोटी नदी (ट्रिब्युट्री)।

सहायता *स्त्री.* {सं.} किसी के कार्य में इस प्रकार योग देना कि वह काम जल्दी या ठीक तरह से हो, मदद; कोई कार्य आगे बढ़ाने या चलता रखने के लिए दिया जानेवाला धन (एड)।

सहायता-प्राप्त *वि.* {सं.} जिसे सहायता विशेषत: आर्थिक सहायता मिलती हो।

सहायतार्थ *क्रि. वि.* {सं.} सहायता करने के उद्देश्य से; *वि.* सहायता के उद्देश्य से किया जानेवाला।

सहायी *वि.* मदद करनेवाला।

सहार *पुं.* {हिं. सहारना} सहारने या सहने का भाव, गुण या शक्ति, सहनशीलता, सहम।

सहारना[1] *स.* {*भाव.* सहार} सहना।

सहारना[2] *स.* {हिं. सहारा} सहारा देना या लगाना।

सहारा *पुं.* {सं. सहाय} आश्रय, आसरा; भरोसा; सहायता।

सहालग *पुं.* {सं. सह + हिं. लग} ब्याह-शादी के दिन, लगन (हिन्दू)।

सहावल *पुं.* साहुल।

सहिक *वि.* {सं. हिं. सह + इक्} (कथन) जो निश्चित और स्पष्ट रूप से प्रस्थापित या व्यक्त किया गया हो, ठीक मानकर साफ कहा हुआ; जो सचमुच वर्तमान हो, सत्ता से युक्त, वास्तविक; जिसमें किसी प्रकार का संदेह, संकोच या आगा-पीछा न हो, दृढ़ और निश्चित; जिसमें कोई विशिष्ट तत्व या भाव वर्तमान हो; गणित में शून्य की अपेक्षा अधिक जो 'धन' कहलाता है, 'ऋण' का विपर्याय; (प्रतिकृति या मूर्ति) जिसमें मूल के समान ही छाया या प्रकाश हो, जो उलटा न जान पड़े, सीधा, 'नहिक' का विपर्याय (पॉजिटिव, उक्त सभी अर्थों के लिए); *पुं.* वह कथन या बात जिसमें किसी तत्व या सिद्धांत का निश्चित रूप से निरूपण या प्रस्थापन किया गया हो, ठीक मानकर दृढ़तापूर्वक कही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई बात; किसी विषय, निश्चय आदि का वह अंश या पक्ष जिसमें उक्त प्रकार का निरूपण या प्रस्थापन हो; (प्रतिकृति या मूर्ति) जिसमें मूल की छाया के स्थान पर छाया और प्रकाश के स्थान पर प्रकाश हो, वह नकल जो देखने में सीधी जान पड़े, उलटी नहीं; छाया-चित्र में नहिक शीशे पर से कागज पर छापी हुई वह प्रति जो मूल के ठीक अनुरूप होती है, 'नहिक' का विपर्याय (पॉजिटिव, उक्त सभी अर्थों के लिए)।

सहिजन *पुं.* {सं. शोभांजन} एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लंबी फलियों की तरकारी बनती है।

सहिजानी *स्त्री.* निशानी।

सहित *क्रि. वि.* {सं.} समेत, साथ।

सहिथी *स्त्री.* बरछी।

सहिदानी *स्त्री.* {सं. सज्ञान} स्मृति के लिए किसी को दी हुई वस्तु, निशानी; पहचान, चिह्न, लक्षण।

सहिष्णु *वि.* {सं.} {*भाव.* सहिष्णुता} बरदाश्त करनेवाला, सहनशील (टॉलरेंट)।

सहिष्णुता *स्त्री.* {सं.} सहिष्णु होने का भाव, गुण या शक्ति, सहनशीलता (टॉलरेंस, टॉलरेशन)।

सही *वि.* {फा. सहीह} सत्य, प्रामाणिक; शुद्ध, ठीक, 'गलत' का विरुद्धार्थक।

मुहा. (किसी की) सही भरना = यह कहना कि हाँ, यह ठीक है, किसी की सत्यता की साक्षी देना।

स्त्री. हस्ताक्षर, दस्तखत; *क्रि. वि.* सचमुच, वस्तुतः।

सही-सलामत *वि.* {हिं. सही + *अ.* सलामत} स्वस्थ, भला चंगा; विद्यमान; *क्रि. वि.* कुशलपूर्वक सकुशल।

सहुँ *क्रि. वि.* {सं. सम्मुख} सामने; तरफ, ओर।

सहु *वि.* = सब (सारा)।

सहूर *पुं.* शऊर।

सहूलियत *स्त्री.* {फा.} सुविधा।

सहृदय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सहृदया, *भाव.* सहृदयता} दूसरों के सुख-दुख आदि समझनेवाला; दयालु; रसिक, भावुक।

सहेजना *स.* {*अ.* सही} {प्रे. सहेजवाना} यह देखना कि सब चीजें पूरी हैं या नहीं, सँभालना; सँभालने या याद रखने के लिए कहना।

सहेजवाना *स.* {हिं.} सहेजना का प्रे.।

सहेट *पुं.* सहेत।

सहेटना *अ.* {?} घूमना-फिरना, चक्कर लगाना; *स.* = समेटना।

सहेटी *पुं.* {हिं. सहेटना} बहुत घूमने- फिरनेवाला, घुमक्कड़।

सहेत *पुं.* {सं. संकेत} प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का निर्दिष्ट तथा गुप्त स्थान।

सहेतुक *वि.* {सं.} जिसमें कुछ हेतु या उद्देश्य हो; *क्रि. वि.* किसी हेतु या उद्देश्य से।

सहेखा *पुं.* हरसिंगार का पेड़।

सहेलरा *वि., पुं.* = सुहेला।

सहेलरी *स्त्री.* = सहेली।

सहेला *वि., पुं.* = सुहेला।

सहेली *स्त्री.* {सं. सह + एली (प्रत्य.)} स्त्री के साथ रहनेवाली दूसरी स्त्री, सखी।

सहेस *क्रि. वि.* {सं. स + हर्ष} प्रसन्नता या खुशी से, सहर्ष।

सहैया[1] *पुं.* {हिं. सहाय} सहायक।

सहैया[2] *वि.* {सं. सहन} सहनेवाला।

सहोक्ति *स्त्री.* {सं.} साहित्य में एक अलंकार जिसमें 'सह', 'संग', 'साथ' आदि शब्द इस प्रकार प्रयुक्त होते हैं कि किसी क्रिया के एक कार्य के साथ और भी कई कार्यों का होना सूचित होता है, जैसे रात्रि के समय तुम्हारे मुख के साथ ही चंद्रमा भी सुशोभित हो जाता है, अथवा कोई श्लिष्ट शब्द इस प्रकार प्रयुक्त होता है कि अलग-अलग प्रसंगों में अलग-अलग अर्थ देता है, जैसे यौवन में उसके ओष्ठ तथा प्रिय दोनों साथ ही रागयुक्त (क्रमात् लाल और प्रेमपूर्ण या अनुरक्त) हो गए।

सहोढ *पुं.* गर्भवती अवस्था में ब्याही हुई लड़की का बेटा।

सहोदर *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* सहोदरा} सगा भाई; *वि.* एक ही माता के उदर या गर्भ से उत्पन्न, सगा।

सह्य *वि.* {सं.} सहने या बर्दाश्त करने योग्य, जो सहा जा सके (टॉलरेबुल)।

सह्याद्रि *पुं.* {सं.} एक प्रसिद्ध पर्वत जो महाराष्ट्र राज्य में है।

साँई *पुं.* {सं. स्वामी} स्वामी, मालिक; ईश्वर; पति; मुसलमान फकीर।

साँक *स्त्री.* शंका; *वि.* संशक।

साँकड़ा *पुं.* {सं. शृंखला} पैर में पहनने का एक प्रकार का गहना।

सांकर[1] *स्त्री.* {सं. शृंखला} जंजीर।

सांकर[2] *पुं.* {सं. संकीर्ण} संकट, विपत्ति; *वि.* संकीर्ण, सँकरा; दुखमय।

साँकरा *वि.* {सं.} संकीर्ण, कम चौड़ा, तंग, संकीर्ण; *पुं.* कष्ट, विपत्ति, संकट; कठिन समय, संकट की अवस्था।

सांकर्य *पुं.* = संकरता।

सांकेतिक *वि.* {सं.} जो संकेत के रूप में हो, इशारे का; भाषा-विज्ञान में, शब्द के संकेत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अभिधा शक्ति से निकलनेवाले पहले और मुख्य अर्थ) से संबंध रखनेवाला, 'बिंबाधायक' का विरुद्धार्थक।

सांकेतिक भाषा *स्त्री.* {सं.} कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में काम आनेवाली ऐसी भाषा जिसमें साधारण और प्रचलित शब्दों के स्थान पर कुछ ऐसे सांकेतिक शब्द और पद बना लिए जाते हैं, जिन्हें साधारण लोग नहीं समझ सकते (कोड लैंग्वेज)।

साँखा *स्त्री.* = शंका।

सांख्य *पुं.* {सं.} महर्षि कपिलकृत एक प्रसिद्ध दर्शन, जिसमें जड़ प्रकृति और चेतन पुरुष को ही जगत् का मूल माना गया है।

सांख्यिकी *स्त्री.* {सं.} किसी विषय की संख्याएँ आदि एकत्र करके उनके आधार पर कुछ सिद्धांत स्थिर करने या निष्कर्ष निकालने की विद्या; इस प्रकार एकत्र की हुई संख्याएँ (स्टैटिक्स)।

साँग *स्त्री.* {सं.} {*अल्पा.* साँगी} एक प्रकार की बरछी, शक्ति; *पुं.* स्वाँग।

सांग *वि.* {सं. साङ्ग} सब अंगों से युक्त, संपूर्ण, पूरा; *पुं.* सांगरूपक।

साँगरी *स्त्री.* 'रंग' जिससे कपड़े रँगे जाते हैं।

सांगरूपक *पुं.* {सं.} साहित्य में रूपक अलंकार का वह भेद जिसमें उपमान के सभी अंगों या अवयवों का उपमेय में आरोप होता है, जैसे 'चिबुक कूप, रसरी अलक, तिल सुचरस दृग बैल। बारी बैस गुलाब की सींचित मनमथ छैल'–बिहारी (सस्टेंड मैटाफर)।

साँगी *स्त्री.* {सं. साँग} छोटी साँग या बरछी।

सांगोपांग *वि.* {सं. सांगोपांग} सब अंगों और उपांगों से युक्त, संपूर्ण।

सांग्रामिक *वि.* युद्ध से संबंधित।

सांघात *पुं.* दल, समुदाय।

सांघातिक *वि.* {सं.} 'संघात' से संबंध रखनेवाला; (चोट या प्रहार) जिससे आदमी मर सकता हो, घातक (फैटल); जिसमें प्राणों पर संकट आ सकता हो, बहुत जोखिम का।

सांघिक *वि.* {सं.} संघ-संबंधी, संघ का।

साँच *वि., पुं.* {*स्त्री.* साँची} सच और सच्चा।

साँचना *स.* {सं. संचय} संचित करना; किसी चीज में भरना।

साँचला *वि.* {*स्त्री.* साँचली} सच्चा।

साँचा *पुं.* {सं. स्थाता} विशिष्ट आकार का वह उपकरण जिसमें कोई गीली चीज ढालकर उसी के आकार की दूसरी और चीजें बनाई जाती हैं। *पद साँचे में ढला* = सर्वांग सुंदर और सुडौल। किसी बड़ी आकृति का छोटा नमूना; बेल-बूटे छापने का ठप्पा, छापा; शरीर, देह; *वि.* {*स्त्री.* साँची} सच्चा।

साँची *स्त्री.* {?} पुस्तकों की छपाई का वह ढंग जिसमें पृष्ठ के बेड़े बल में पंक्तियाँ रहती हैं; *पुं.* एक प्रकार का पान।

साँझ *स्त्री.* संध्या।

साँझा *पुं.* साझा।

साँझी *स्त्री.* {हिं. साँझ} मंदिरों में भूमि पर रंगीन चूर्णों से बनाई हुई बेल-बूटों आदि की सजावट, जो प्रायः सावन में या उत्सवों के समय होती है।

साँट *स्त्री.* {सट से अनु.} छड़ी; कोड़ा; शरीर पर कोड़े आदि की मार का दाग या निशान; *स्त्री.* साँठ।

साँटा[1] *पुं.* {हिं. साँट = छड़ी} कोड़ा; गन्ना।

साँटा[2] *पुं.* {?} प्रतिकार, बदला।

उदा. यह साँटो लै कृष्णावतार, तब ह्वैहो तुम संसार पार–**केशव**।

साँटि *क्रि. वि.* {?} बदले में, किसी की जगह।

साँटिया *पुं.* {?} डुग्गी या डाँड़ी पीटनेवाला, ढँढोरिया; *पुं.* साँटेमार।

साँटी *स्त्री.* {हिं. साँटा} छोटी पतली छड़ी; साँटा; *स्त्री.* साँठ-गाँठ।

साँटेमार *पुं.* {हिं. साँटा = कोड़ा + मार (प्रत्य.)} एक प्रकार के सिपाही जो हाथ में साँटा लेकर राजा की सवारी में हाथी के साथ चलते थे।

साँठ[1] *पुं.* {देश.} साँकड़ा; ईख, गन्ना, सरकंडा।

साँठ[2] *स्त्री.* {हिं. सटना} संबंध, संपर्क; हेल-मेल।

साँठ[3] *स्त्री.* {?} मूलधन, पूँजी।

साँठ-गाँठ *पुं.* घनिष्ठ या गुप्त संबंध; गुप्त संधि, षड्यंत्र।

साँठना *स.* = पकड़ना।

साँठा *पुं.* {सं. शरकांड} सरकंडा; ईख, गन्ना।

साँठी *स्त्री.* पूँजी।

साँड़[1] *पुं.* {सं. षंड} केवल संतान उत्पन्न कराने के लिए पाला हुआ गौ का नर; मृतक की स्मृति में दागकर छोड़ा हुआ बैल।

साँड़[2] *पुं.* {*स्त्री.* साँड़नी} नर ऊँट।

साँड़नी *स्त्री.* {हिं. साँड़िया} ऊँटनी जो बहुत तेज चलती है।

साँड़ा *पुं.* {हिं. साँड़} एक प्रकार का जंगली छोटा जंतु जिसकी चरबी का औषधों में उपयोग होता है।

साँड़िया *पुं.* {हिं. साँड़ ?} साँड़नी पर सवारी करनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साँढ़ू *पुं.* {सं. श्यालिवोढर} किसी की साली (पत्नी की बहन) का पति।

सांत *वि.* {सं.} जिसका अंत अवश्य होता हो; अंत युक्त; *वि.* = शांत।

सांति *स्त्री.* = शांति।

सांत्वना *स्त्री.* {सं.} दुखी व्यक्ति को धीरज दिलाना, ढारस, तसल्ली।

साँयरी *स्त्री.* चटाई, बिछौना।

साँद *पुं.* ढिंगुर, ढेंगुर।

सांद्र *वि.* चिकना, सुंदर।

साँध *पुं.* लक्ष्य; *स्त्री.* संधि; सेंध।

साँधना[1] *स.* {सं. संधान} निशाना ठीक करना या साधना, संधान करना।

साँधना[2] *स.* {सं. साधन} पूरा करना, साधना; सम्मिलित करना, मिलाना; सानना।

साँधि *स्त्री.* = संधि।

साँधिल *वि.* {हिं. साधना} साधन करने या साधनेवाला, साधक।

सांध्य *वि.* {सं.} संध्या-संबंधी।

साँप *पुं.* {सं. सर्प, प्रा. सप्प} {*स्त्री.* साँपिन्} एक प्रसिद्ध सरीसृप जिसकी कुछ जातियाँ बहुत ही जहरीली और घातक होती हैं, भुजंग, विषधर।

मुहा. कलेजे पर साँप लोटना = ईर्ष्या आदि के कारण अत्यंत दुख होना; *(किसी को) साँप सूँघ जाना* = किसी को साँप का काट लेना, जिससे वह प्रायः मर जाता है।

कहा. साँप छछूँदर की दशा या गति = बहुत असमंजस की अवस्था।

बहुत बड़ा दुष्ट और घातक व्यक्ति।

साँपा *पुं.* सियापा।

सांपत्तिक *वि.* {सं.} संपत्ति से संबंध रखनेवाला, संपत्ति का।

साँपधरन *पुं.* {सं. सर्प + धारी} शिव, महादेव।

साँपिन *स्त्री.* साँप की मादा।

साँपिया *पुं.* {हिं. साँप} साँप के (काले) रंग से मिलता-जुलता एक प्रकार का भूरा रंग; *वि.* उक्त प्रकार के रंग का।

सांप्रत *क्रि. वि.* {सं.} {*वि.* सांप्रतिक} इस समय, अभी।

सांप्रतिक *वि.* {सं.} जो इस समय हो या चल रहा हो (करेंट); जो समय या आवश्यकता को देखते हुए ठीक और उपयुक्त हो।

सांप्रदायिक *वि.* {सं.} किसी विशेष संप्रदाय से संबंध रखनेवाला; परस्पर विरोधी और विद्वेषी संप्रदायों से संबंध रखनेवाला (कम्यूनल)।

सांप्रदायिकता *स्त्री.* {सं.} सांप्रदायिक होने का भाव; केवल अपने संप्रदाय की श्रेष्ठता और हितों का विशेष ध्यान रखना और दूसरे संप्रदायों से द्वेष रखना (कम्यूनलिज़्म)।

सांबरी *स्त्री.* माया, जादूगरनी।

साँभर[1] *पुं.* {सं. सम्मल या साम्भल} राजपूताने की एक झील जिसके पानी से नमक बनता है; इस झील के पानी से बना हुआ नमक; एक प्रकार का हिरन।

साँभर[2] *पुं.* {तमिल} दक्षिण भारत का एक व्यंजन; *पुं.* संबल।

साँमुहें *क्रि. वि.* {सं. सम्मुखे} सामने।

साँवत *पुं.* सामंत।

सांवत्सरिक *वि.* {सं.} संवत्सर का, संवत्सर-संबंधी।

साँवर *वि.* साँवला।

साँवलताई *स्त्री.* = साँवलापन।

साँवला *वि.* {सं. श्यामल} {*स्त्री.* साँवली, *भाव.* साँवलापन} कुछ-कुछ काला, हल्के श्याम वर्ण का; *पुं.* श्रीकृष्ण; पति; प्रेमी; गीत।

साँवलापन *पुं.* {हिं. साँवला + पन (प्रत्य.)} 'साँवला' होने का भाव, गुण या अवस्था, श्यामलता।

साँवाँ[1] *पुं.* {सं. श्यामक} कँगनी या चेना की तरह एक प्रकार का घटिया अन्न।

साँवा[2] *वि.* {सं. श्याम} साँवला; काला।

सांवादिक *वि.* {सं.} संवाद-संबंधी; समाचार -संबंधी; *पत्रकार।*

सांवादिक सम्मेलन *पुं.* पत्रकार-सम्मेलन।

सांशयिक *वि.* शक से भरा हुआ।

साँस *पुं.* {सं. श्वास} नाक या मुँह से हवा अंदर फेफड़ों तक खींचकर फिर उसे बाहर निकालने की क्रिया, श्वास, दम।

मुहा. साँस उखड़ना या टूटना = मरने के समय रोगी का बहुत कष्ट से साँस लेना; *साँस ऊपर-नीचे होना* = साँस रुकना, दम घुटना; *साँस चढ़ना* = परिश्रम आदि के कारण साँस का जल्दी-जल्दी चलना; *साँस तक न लेना* = कुछ भी न बोलना; *साँस फूलना* = दमे का रोग होना, जल्दी-जल्दी साँस चलना; *साँस रहते* = जीते जी; *गहरा, ठंडा या लंबा साँस लेना* = बहुत दुख या शोक होना; संतोष या विश्राम का अनुभव करना; *उल्टा साँस लेना* = साँस उखड़ना; गहरा या ठंडा साँस लेना।

अवकाश, फुरसत।

मुहा. साँस लेना = कोई काम करते-करते कुछ रुकना या ठहरना।

गुंजाइश, समाई; किसी चीज में वह बहुत छोटी संधि या दरज जिसमें पानी याहवा जा सकती हो; दमा या श्वास नामक रोग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साँसत *स्त्री.* {सं. शास्ति} बहुत अधिक शारीरिक कष्ट या पीड़ा, यातना; सजा, दंड।

साँसत-घर *पुं.* काल-कोठरी।

सांसद *वि.* {सं. संसद्} (कथन, व्यवहार या आचरण) जो संसद या उसके सदस्यों की मर्यादा के अनुकूल हो, पूर्णभद्रोचित (पार्लमेंटरी); *पुं.* संसद का सदस्य; वह जो संसद के रीति-व्यवहारों का अच्छा ज्ञाता हो और उसमें बैठकर सब काम ठीक तरह से चलाने में पूर्ण पटु हो (पार्लामेन्टेरियन)।

साँसना *स.* सासना।

सांसर्गिक *वि.* {सं.} संसर्ग-संबंधी; संसर्ग से उत्पन्न होनेवाला।

साँसा[1] *पुं.* {हिं. साँस} श्वास, साँस; जीवन, जिंदगी, जैसे जब तक साँसा, तब तक आशा।

साँसा[2] *पुं.* {सं. संशय} संदेह, शक; भय, डर।

सांसारिक *वि.* {सं.} {*भाव.* सांसारिकता} संसार का, लौकिक, ऐहिक।

सांस्कारिक *वि.* संस्कार से बँधा हुआ।

सांस्थानिक *वि.* एक ही देश का।

साँसी *स्त्री.* मिस्की (गाने का ढंग)।

साँसो *पुं.* = संशय।

सांस्कृतिक *वि.* {सं.} संस्कृति से संबंध रखनेवाला, संस्कृति-संबंधी (कल्चरल)।

सा[1] *वि.* {सं. सदृश} {*स्त्री.* सी} समान, तुल्य; एक परिमाणसूचक शब्द, जैसे थोड़ा-सा, बहुत-सा।

सा[2] *पुं.* {सं. षड्ज} संगीत में षड़ज स्वर का सूचक शब्द, जैसे सा, रे, ग।

साइक *पुं.* {सं. शायक} बाण, तीर; खड्ग, तलवार।

साइकिल *स्त्री.* {अं.} दो पहियोंवाली एक प्रसिद्ध गाड़ी जिसके दोनों पहिए आगे-पीछे होते हैं और जो पैरों से चलाई जाती है, पैर-गाड़ी।

साइत *स्त्री.* {*अ.* साअत} पल, क्षण; समय; मुहूर्त; शुभ समय।

साइन बोर्ड *पुं.* नामपट्ट।

साइयाँ *पुं.* = साईं (ईश्वर)।

साइर *पुं.* {सं. सागर} समुद्र, सागर।

उदा. जनक-सुता हित हत्यौ लंकपति, बाँध्यौ साइर-पाँज-सूर।

साईं *पुं.* साँई।

साई *स्त्री.* {हिं. साइत} वह धन जो पारिश्रमिक देकर कोई काम कराने से पहले बातचीत पक्की करने के लिए दिया जाता है, पेशगी, बयाना (अर्नेस्ट मनी)।

साईस *पुं.* {*अ.* साइस} घोड़े की देखरेख करनेवाला, घोड़े का रखवाला।

साईसी *स्त्री.* {*अ.* साइस} साईस का कार्य या पद।

साउज *पुं.* सावज; आखेट का जानवर।

साकंभरी *पुं.* साँभर झील के पास का नगर।

साकचोरि *स्त्री.* = मेंहदी।

साकत *पुं.* {सं. शाक्त} शाक्त मत का अवलंबी या अनुयायी।

उदा. तुम साकत, वै भगत-भागवत, राग द्वेष तैं न्यारे।

वह जो किसी गुरु से दीक्षा लिए बिना ही साधु या वैरागी हो गया हो; दुष्ट पाजी; *स्त्री.* = शक्ति।

साकर *स्त्री.* = शक्कर।

साकला *पुं.* {सं. साकल्य} एक में मिले हुए जौ, तिल आदि दाने जिनसे हवन किया जाता है।

साकल्य *पुं.* {सं.} 'सकल' का भाव, सकलता।

साका *पुं.* {सं. शाका} संवत्; यश, कीर्ति; कीर्ति का स्मारक; ख्याति, प्रसिद्धि; धाक, रोब; कोई बड़ा काम जिससे कर्ता की बहुत कीर्ति हो।

मुहा. साका चलाना या बाँधना = आतंक फैलाना, रोब जमाना।

साकार *वि.* {सं.} {*भाव.* साकारता} रूप या आकारवाला; मूर्तिमान, मूर्त; स्थूल; (कल्पना या योजना) जिसे उद्दिष्ट, क्रियात्मक या उपयोगी आकार अथवा रूप प्राप्त हुआ हो; *पुं.* ईश्वर का आकारयुक्त माना जानेवाला रूप।

साकिन *वि.* {*अ.*} निवासी, रहनेवाला।

साकेत *पुं.* {सं.} स्वर्ग माना जानेवाला रामचंद्र का लोक; अयोध्या नगरी।

साक्षर *वि.* {सं.} {*भाव.* साक्षरता} जो पढ़ना-लिखना जानता हो, शिक्षित (लिटरेट)।

साक्षरता *स्त्री.* {सं.} साक्षर या पढ़े-लिखे होने का भाव (लिटरेसी)।

साक्षात् *क्रि. वि.* {सं.} सामने, सम्मुख; *वि.* मूर्तिमान्, साकार, जैसे आप साक्षात् बृहस्पति हैं; *पुं.* भेंट, मुलाकात।

साक्षात्कार *पुं.* {सं.} भेंट।

साक्षी *पुं.* {सं. साक्षिन्} {*स्त्री.* साक्षिणी} वह व्यक्ति जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो; साखी, गवाह (विटनेस); दूर से देखनेवाला, तटस्थ दर्शक; *स्त्री.* किसी के सामने कोई बात प्रमाणित करने के लिए यह कहना कि ऐसा ही है या हुआ है, गवाही (एविडेंस)।

साक्ष्य *पुं.* {सं.} गवाही।

साक्ष्य प्रविधि *स्त्री.* {सं.} वह प्रविधि या कानून जिसमें साक्षी देने के नियमों आदि की व्यवस्था हो (लॉ ऑफ एविडेंस)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साक्ष्य विधान *स्त्री., पुं.* साक्ष्य-प्रविधि।

साक्ष्यांकन *पुं.* {सं.} साक्षी के रूप में हस्ताक्षर करना।

साख *स्त्री.* {सं. शाका} धाक, रोब; मर्यादा; लेन-देन या व्यवहार के खरेपन की मान्यता (क्रेडिट)।

साखना *स.* {सं. साक्षि} गवाही देना।

साखर *वि.* = साक्षर; *पुं.* = शक्कर।

साखा *स्त्री.* = शाखा।

साखी[1] *पुं.* {सं. साक्षिन्} गवाह; आपसी झगड़ों का निपटारा करनेवाला पंच; *स्त्री.* साक्षी, गवाही।
मुहा. साखी पुकारना = गवाही देना।
ज्ञान संबंधी दोहे या पद्य, जैसे कबीर की साखी।

साखी[2] *पुं.* {सं. शाखिन्} वृक्ष, पेड़।

साखू *पुं.* {सं. शाल} शाल या सखुआ नामक वृक्ष या उसकी लकड़ी जो इमारत के काम में आती है।

साखोचारन *पुं.* गोत्रोच्चार।

साखोट *पुं.* सिहोर का पेड़।

साग *पुं.* {सं. शाक} कुछ विशेष प्रकार के पौधों की तरकारी की तरह खाने योग्य पत्तियाँ, शाक; तरकारी, भाजी।

साग-पात *पुं.* रूखा-सूखा भोजन; तुच्छ और निकम्मी चीज़।

सागर *पुं.* {सं.} समुद्र; झील; एक प्रकार के दशनामी साधुओं की उपाधि या सांप्रदायिक नाम।

सागरसुता *स्त्री.* {सं.} लक्ष्मी।

सागू *पुं.* {अं. सैगो} ताड़ की जाति का एक वृक्ष जिसके तने के गूदे से सागूदाना बनता है; सागूदाना।

सागूदाना *पुं.* {अं. सैगो + हिं. दाना} सागू वृक्ष के तने के गूदे से तैयार किए हुए दाने जो शीघ्र पच जाते हैं, साबूदाना।

सागौन *पुं.* शाल (वृक्ष)।

साग्निक *वि.* हमेशा यज्ञ-कर्ता।

साग्र *वि.* {सं.} पूरा, सब, सारा; *क्रि. वि.* आदि या आरंभ से।

साग्रह *क्रि. वि.* {सं.} आग्रहपूर्वक, जोर देकर।

साचित्य *पुं.* {सं. सचेत} सचेत होने की अवस्था या भाव, संचेतता (कॉशन)।

साचेत *वि.* {सं. सचेत} जिसमें चेतना हो, चेतनायुक्त; होशियार, सचेत।

साच्छात *क्रि. वि.* = साक्षात्।

साछ *पुं., स्त्री.* साक्षी।

साज *पुं.* {सं. सज्जा से फा. साज़} सजे हुए होने की अवस्था या भाव, सजावट; रंग-ढंग, वैभव, शोभा आदि की सूचक बातें, ठाठ-बाट; किसी चीज को ठीक करके उपयुक्त या काम में लाने योग्य सामग्री, जैसे घोड़े का साज; वाद्य, बाजा; लड़ाई के हथियार; *वि.* मरम्मत करने या बनानेवाला (यौगिक के अंत में, जैसे घड़ीसाज)।

साजन *पुं.* {सं. सज्जन} पति; प्रेमी, प्रिय; सज्जन।

साजना *स.* सजाना; *अ.* सजना।

साज-बाज *पुं.* {फा. साज़ + बाज (अनु.)} तैयारी; मेल-जोल।

साज-संगीत *पुं.* {फा. साज़ + सं. संगीत} साज या बाजे पर होनेवाला संगीत, वाद्यसंगीत, 'कंठसंगीत' से भिन्न (इंस्ट्रूमेंटल म्यूजिक)।

साज-सज्जा *स्त्री.* {फा. साज़ + सं.} सजावट; सजावट का सामान।

साज-सामान *पुं.* {फा. साज़ + सामान} सामग्री, उपकरण; ठाठ-बाट।

साजिंदा *पुं.* {फा. साज़िन्दः} किसी गानेवाले के साथ साज या बाजा बजानेवाला।

साजिया *वि.* {हिं. साज या सजाना} सजानेवाला; *पुं.* साजिंदा।

साजिश *स्त्री.* {फा. साज़िश} बनावट, गढ़न; षड्यंत्र।

साजुज्य *पुं.* सायुज्य (मुक्ति)।

साझा *पुं.* {सं. सार्धक = आधा हिस्सा} हिस्सेदारी; भाग, हिस्सा।

साझा-सीरा *पुं.* {हिं. साझा + सीर} खेत की वह जोताई जिसमें दो आदमी आधी-आधी उपज या हिस्से के मालिक होते हैं; किसी काम या लाभ में होनेवाली हिस्सेदारी।

साझिया *पुं.* साझेदार।

साझी *पुं.* साझेदार।

साझेदार *पुं.* {हिं. साझा + दार (प्रत्य.)} {*भाव.* साझेदारी} किसी काम या रोजगार में साझा रखनेवाला, हिस्सेदार, साझी।

साझेदारी *स्त्री.* हिस्सेदारी।

साट[1] *स्त्री.* {सं.} साड़ी (स्त्रियों के पहनने की); साँट।

साट[2] *पुं.* {?} बेचने की क्रिया, विक्रय।

साटक *पुं.* छिलका, भूसी।

साटन *स्त्री.* {अं. सैटिन} एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा।

साटना *स.* {हिं. सटाना} किसी को किसी काम के लिए गुप्त रूप से अपनी ओर मिलाना; सटाना।

साठ *वि.* {सं. षष्टि} {*वि.* साठा, *क्रि.* सठियाना} तीस का दूना, पचास में दस और; *पुं.* साठ का सूचक अंक या संख्या।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साठ-नाठ¹ *स्त्री.* {हिं. सटना} मेल-जोल; अनुचित संबंधी षड्यंत्र।

साठ-नाठ² *वि.* {हिं. साठ? + नाठ = नष्ट} दरिद्र, गरीब; रूखा या फीका, नीरस; इधर-उधर फैला या बिखरा हुआ; नष्ट-भ्रष्ट।

साठा¹ *पुं.* {देश.} ईख, गन्ना।

साठा² *वि.* {हिं. साठ} साठ वर्ष का।

साठी *पुं.* एक तरह का धान।

साड़ी *स्त्री.* {सं. शाटिका} स्त्रियों के पहनने की चौड़े किनारे की धोती; *स्त्री.* मलाई (दूध की)।

साढ़ी *स्त्री.* {सं. सार} दूध या दही के ऊपर जमनेवाली मलाई; *स्त्री.* = साड़ी; *वि.* = असाढ़ी।

साढ़ *पुं.* साँढ़।

साढ़े *वि.* {सं. सार्द्ध} एक शब्द जो पूरी संख्या के सूचक शब्द के साथ लगकर आधे से अधिक का सूचक होता है, जैसे साढ़े चार।

साढ़े साती *स्त्री.* {हिं. साढ़े + सात + ई (प्रत्य.)} शनिग्रह की अशुभ दशा या प्रभाव जो प्रायः साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात महीने, या साढ़े सात दिन तक रहता है।

सातंक *क्रि. वि.* {सं. स + आतंक} आतंक या भय-प्रदर्शन के साथ, आतंकपूर्वक।

सात *वि.* {सं. सप्त} पाँच और दो; *पुं.* इस अंक की सूचक संख्या।

मुहा. सात पाँच करना = धूर्तता की बातें करना।

पद सात समुद्र पार = बहुत दूर।

सातत्य *पुं.* {सं.} 'सतत' का भाव, सदा या निरंतर होते रहना; (पर्पेचुइटी)।

सातिक *वि.* सात्विक।

सात् *वि.* {सं.} एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर 'मिला हुआ' या 'रूप में आया हुआ' का अर्थ देता है, जैसे भूमिसात्, भस्मसात्।

सात्म्य *पुं.* {सं.} समान रूप होने का भाव, एकरूपता, सरूपता।

उदा. समसुर सात्म्य समीप बाद की नाद धमकी सौं–**रत्ना.**।

सात्वती *स्त्री.* {सं.} शिशुपाल की माता का नाम; सुभद्रा का एक नाम; नाटक में एक प्रकार की वृत्ति, जिसमें मुख्यतः दान, दया, शौर्य आदि वीरोचित कार्यों का वर्णन होता है, इसका व्यवहार वीर, रौद्र, अद्‌भुत और शांत रसों में होता है।

सात्विक *वि.* {सं.} सतोगुणी; पवित्र, निर्मल; सत्व गुण से उत्पन्न; *पुं.* साहित्य से उत्पन्न ये अंग विकार-स्तंभ, स्वेद, मंद, स्वरभंग, कम्प, वैवर्ण्य, अश्रु और प्रलय; सात्वती।

सात्विकी *स्त्री.* दुर्गा, दुर्गा-पूजा।

साथ *पुं.* {सं. सार्थ} संगति, सहचार; साथी, संगी; मेल, मित्रता; *क्रि. वि.* सहित।

पद साथ ही = साथ में; *साथ ही साथ* = एक साथ, एक क्रम में।

प्रति, से; द्वारा।

साथरा *पुं.* {सं. सस्तरक} बिछौना; चटाई।

साथी *पुं.* {हिं. साथ} {*स्त्री.* साथिन} साथ रहनेवाला, संगी; मित्र।

साद *पुं.* शरण, विषाद, नाश।

सादगी *स्त्री.* {फा.} सादापन; सीधापन, निष्कपटता।

सादरा *पुं.* {?} एक प्रकार का बढ़िया पक्का गाना।

सादा *वि.* {फा. सादः} {*स्त्री.* सादीन} साधारण बनावट का; जिसके ऊपर बेल-बूटे, सजावट आदि का कोई काम न हो, जैसे सादा कागज; जिसपर कुछ लिखा न हो; जो छल-कपट न जानता हो, सीधा, सरल।

सादित *वि.* छिन्न-भिन्न।

सादी¹ *स्त्री.* {हिं. सादा} वह पूरी या रोटी जिसके अंदर पूर या कोई चीज भरी न हो, 'कचौरी' का विपर्याय; लाल नामक पक्षी की मादा, सदिया।

सादी² *पुं.* {फा. सद = शिकार} शिकारी; घोड़ा; सवार; *स्त्री.* = शादी, विवाह।

सादूर *पुं.* {सं. शार्दूल} सिंह, शेर; हिंसक पशु।

सादृश्य *पुं.* {सं.} रूप, प्रकार आदि की समानता, एकरूपता; बराबरी, तुलना; परस्पर विरोधी या भिन्न बातों के कुछ विशेष तत्वों में पाई जानेवाली समानता, अतिदेश (एनॉलोजी)।

साध¹ *स्त्री.* {सं. श्रद्धा = प्रबल वासना} अभिलाषा, उत्कंठा।

मुहा. (किसी बात की) साध न रहने देना = सब प्रकार से इच्छा पूरी कर लेना, कुछ कमी या कसर न करना; *साध रखना* = अभिलाषा पूरी करना या होना।

उदा. व्याध अपराध की साध राखी कहा, पिंगलै कौन मति भक्ति भई–**तुलसी**।

गर्भवती होने का सातवें महीने में होनेवाला एक प्रकार का उत्सव।

साध² *पुं.* {सं. साधु} साधु, संत, महात्मा; सज्जन; *वि.* उत्तम, अच्छा।

साधक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* साधिका} साधना करनेवाला; योगी, तपस्वी; साधन, जरिया; वह जो अनुकूल और सहायक हो; किसी उद्देश्य की सिद्धि में सहायता देनेवाला; न्याय में वह लक्षण, जिसके आधार पर कोई बात सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाता है, हेतु।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधन पुं. {सं.} कार्य आरंभ करके सिद्ध या पूरा करना; निर्णय, आज्ञा आदि के अनुसार कार्य को रूप देना, पालन करना; अपने कार्यों का निर्वाह अथवा अपने पद के कर्तव्यों का पालन करना; कोई ऐसी बात जिससे किसी दोष या क्षति का परिहार हो, उपचार (रेमेडी); विधिक लेख्यों आदि में बतलाए हुए काम पूरे करना (एग्ज़िक्यूशन, उक्त सभी अर्थों के लिए); कोई चीज तैयार करने का सामान, सामग्री; कोई काम पूरा करने की सामर्थ्य या शक्ति (मीन्स) वह जिसके द्वारा या जिसकी सहायता से कोई कार्य सिद्ध हो, उपकरण (एजेंसी); उपाय, युक्ति; औषध के लिए धातुएँ आदि शोधने का काम।

साधनपत्र पुं. करण; साधिका।

साधनवात् *वि.* साधन से युक्त।

साधनहार *वि.* {हिं. साधना + हार (प्रत्य.)} साधने या सिद्ध करनेवाला; जो साधा या सिद्ध किया जा सके; हो सकने योग्य, साध्य।

साधना[1] *स्त्री.* {सं.} कोई कार्य सिद्ध करने की क्रिया या भाव, सिद्धि; उपासना, आराधना; साधन।

साधना[2] *स.* {सं. साधन} पूरा करना; निशाना लगाना; अभ्यास करना; पक्का करना, ठहराना; एकत्र करना; वश में करना; बनावटी को असल की तरह कर दिखाना।

साधनात्मक *वि.* {सं.} साधना के उद्देश्य से होनेवाला।

साधनिक *वि.* {सं.} साधन-संबंधी, साधन का; किसी राज्य या संस्था के प्रबंध, शासन या कार्य-साधन से संबंध रखनेवाला (एग्ज़िक्यूटिव)।

साधनिक अधिकारी पुं. {सं.} किसी संस्था का वह अधिकारी जो उसके प्रबंध आदि का साधन या संचालन करता है (एक्जिक्यूटिव ऑफिसर)।

साधनी *स्त्री.* {सं. साधन} लोहे या लकड़ी का एक औजार जिससे दीवार या जमीन की सतह की सीध नापते हैं; राज, मेमार।

उदा. बोलि साधनी पुंज मुंजु मंडप रचवायौ–रत्ना.।

साधनीय *वि.* साधना करने लायक, जो साधा जा सके।

साधर्म्य पुं. {सं.} सधर्मी अर्थात् समान धर्म या गुणों से युक्त होने की अवस्था या भाव, एकधर्मता, 'वैधर्म्य' का विपर्याय।

साधार *वि.* {सं. स + आधार} जिसका कुछ आधार हो, आधारयुक्त।

साधारण *वि.* {सं.} जैसा प्रायः सब जगह होता या पाया जाता हो, जिससे औरों की अपेक्षा कोई विशेषता न हो, सामान्य (यूजुअल); प्रकार, प्रकृति, रूप आदि के विचार से जैसा सब जगह होता हो, वैसा, प्रकृत, सहज (नॉर्मल); अच्छे से कुछ हल्के दरजे का, विशेषता या उत्कृष्टता से रहित, मामूली (आर्डिनरी, उक्त दोनों अर्थों के लिए)।

साधारणतः *क्रि. वि.* {सं.} सामान्य रूप से, मामूली तौर पर; बहुधा, प्रायः, अक्सर।

साधारण वाक्य पुं. {सं.} व्याकरण में तीन प्रकार के वाक्यों में से पहला जो प्रायः बहुत छोटा होता है और जिसमें एक कर्ता और एक क्रिया (सकर्मक होने पर क्रिया के साथ एक कर्म भी) होती है; (वाक्य के शेष दो प्रकार मिश्र और संयुक्त कहलाते हैं)।

साधारणीकरण पुं. {सं.} एक ही प्रकार के बहुत से विशिष्ट तत्वों या गुणों के आधार पर कोई ऐसा साधारण नियम या सिद्धांत स्थिर करना जो उन सब तत्वों या गुणों पर समान रूप से प्रयुक्त हो सके; किसी समान गुण या धर्म के आधार पर अनेक तत्वों को एक तल पर या एक वर्ग में लाना, गुणों आदि के आधार पर समानता स्थिर करना (जेनरलाईज़ेशन)।

साधिका *स्त्री.* {सं. साधक} वह लेख या पत्र जिसपर किसी प्रकार के देने-पावने का ठीक-ठीक हिसाब या भेजे हुए माल का पूरा विवरण लिखा रहता है (वाउचर)।

साधिकार *क्रि. वि.* {सं.} अधिकारपूर्वक, अधिकार के साथ (ऑथारिटेटिवली); *वि.* जिसे अधिकार प्राप्त हो; अधिकारपूर्वक या आधिकारिक रूप से कहा या किया हुआ (ऑथारिटेटिव)।

साधित *वि.* {सं.} जिसका साधन हुआ हो, साधा या सिद्ध किया हुआ।

साधु पुं. {सं.} {*भाव.* साधुता} कुलीन, आर्य; सांसारिक झगड़ों और संबंधों या बंधनों से अलग रहकर धार्मिक जीवन बितानेवाला पुरुष, संत; सज्जन; *वि.* अच्छा; प्रशंसनीय; उचित; शिष्ट और शुद्ध (भाषा); *विस्मयादि.* ठीक है, अच्छी बात है; बहुत अच्छा, बहुत सुंदर या उत्तम।

साधुवाद पुं. {सं.} किसी के कोई अच्छा काम करने पर 'साधु-साधु' कहकर उसकी प्रशंसा या आदर करना।

साधो पुं. {सं.} संत, साधु।

साध्य *वि.* {सं.} {*भाव.* साध्यता} करने योग्य; जो हो सके; सहज, सुगम; (बात) जिसे प्रमाणित या सिद्ध करना हो; रोग जो अच्छा किया जा सके, चिकित्स्य (क्योरेबुल); पुं. देवता; शक्ति,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामर्थ्य; प्रश्न या समस्या के रूप में सामने आनेवाली वह बात जिसे ठीक सिद्ध करना हो (प्रॉपोज़िशन); तर्क शास्त्र में किसी पक्ष की कही हुई वह बात जो अभी प्रमाणित या सिद्ध की जाने को हो।

साध्वस *पुं.* भय, डर, घबराहट।

साध्यवसाना *स्त्री.* {सं. स + अध्यवसान + आ} साहित्य में लक्षणा का वह प्रकार या भेद जिसमें उपमेय का अध्यवसान करके अर्थात् उसे बिल्कुल हटाकर केवल उपमान इस प्रकार उपस्थित किया जाता है कि उपमेय से उसका कोई भेद नहीं रह जाता है, जैसे यदि हम कहें–ऐसे विकट अवसर पर 'पंजाब का शेर' मैदान में आया, तो 'पंजाब का शेर' से प्रसंग के अनुसार महाराज रणजीत सिंह अथवा लाला लाजपत राय का बोध होगा।

साध्यवाद *पुं.* {सं.} यह विचारधारा कि हर कार्य के पीछे कोई उद्देश्य रहता ही है।

साध्या *स्त्री.* **{सं. साध्य} किसी व्यवहार या दीवानी मुकदमे में वे विचारणीय बातें जिनका एक पक्ष स्थापन करता हो और जिन्हें दूसरा पक्ष न मानता हो और जिनके आधार पर उस व्यवहार या मुकदमे का निर्णय होने को हो (इश्यू); विशेष–ये दो प्रकार की होती हैं–विधिक अर्थात् कानूनी प्रश्नों से संबंध रखनेवाली साध्या (इश्यू ऑफ लॉ) और तथ्यक अर्थात् वास्तविक अथवा वास्तविक घटनाओं तथा तथ्यों से संबंध रखनेवाली साध्या (इश्यू ऑफ फैक्ट्स)।**

साध्वी *वि.* {सं.} पतिव्रता या पवित्र आचरणवाली (स्त्री)।

सानंद *क्रि. वि.* {सं.} आनंदपूर्वक।

सान *पुं.* {सं. शाण} वह पत्थर जिसपर रगड़कर अस्त्रों की धार तेज की जाती है, कुरंड।

मुहा. सान धरना = धार तेज करना।

सानना *स.* {हिं. सनना का *स.*} चूर्ण आदि किसी तरल पदार्थ में मिलाकर गीला करना, गूँधना; मिश्रित करना, मिलाना; सम्मिलित करना; दोष, अपराध आदि के लिए किसी के साथ अकारण दोषी या उत्तरदायी बनाना।

साना *अ.* {सं. शांत} शांत होना; समाप्त होना, न रह जाना।

उदा. कृपासिंधु, बिलोकिए जन-मन की साँसति सान–तुलसी।

सानी[1] *स्त्री.* {हिं. सानना} पानी में भिगोया हुआ गौ-भैंसों का चारा।

सानी[2] *वि.* {*अ.*} दूसरा; बराबरी का, सम।

पद लासानी = अद्वितीय, बेजोड़।

सानु *पुं.* {सं.} पर्वत का शिखर; पत्थर; छोर, सिरा; *वि.* लंबा-चौड़ा; चौरस, सपाट।

सानुकूल *वि.* = अनुकूल।

सानुज *क्रि. वि.* {सं. स + अनुज} अनुज या छोटे भाई के साथ।

सान्निध *क्रि. वि.* = समीप।

सान्निध्य *पुं.* {सं.} 'सन्निधि' का भाव, समीपता, निकटता (प्रॉक्सिमिटी)।

सान्मुख्य *पुं.* {सं.} 'सन्मुख' होने की अवस्था या भाव, सामना।

साप *पुं.* = शाप।

सापत्न्य *पुं.* सपत्नी भाव, सौतपन।

सापत्य *वि.* औलादवाला।

सापना *स.* {सं. शाप} शाप देना।

सापराध *वि.* **अपराध से भरा हुआ।**

सापेक्ष *वि.* {सं.} {*भाव.* सापेक्षता} जो किसी दूसरे तत्व, विचार, दृष्टिकोण आदि से संबद्ध होने के कारण उसकी अपेक्षा रखता हो, बिना किसी दूसरे के ठीक या पूरा न होनेवाला; किसी की अपेक्षा करनेवाला; जो विचार, निर्णय या आज्ञा की अपेक्षा में रुका पड़ा हो (पेंडिंग)।

सापेक्षवाद *पुं.* {सं.} वह सिद्धांत जिसमें दो वस्तुओं या बातों को एक दूसरी का अपेक्षक माना जाता है।

साप्ताहिक *वि.* {सं.} सप्ताह-संबंधी; प्रति सप्ताह होनेवाला, हफ्तेवार। (वीकली); *पुं.* प्रति सप्ताह प्रकाशित होनेवाला समाचार-पत्र (वीक्ली)।

साफ *वि.* {*अ.* साफ़} स्वच्छ, निर्मल; शुद्ध, पवित्र; निर्दोष; स्पष्ट; उज्ज्वल; जिसमें कोई झगड़ा-बखेड़ा न हो; निखरा हुआ, चमकीला; निष्कपट; सादा कोरा; जिसमें रद्दी अंश न हो; खाली।

मुहा. साफ करना = मार डालना; नष्ट करना। (लेन-देन) जो चुकता किया गया हो।

क्रि. वि. बिना किसी दोष या कलंक के) बिना किसी प्रकार की हानि के; इस प्रकार जिसमें किसी को पता न लगे; बिल्कुल, परम।

साफल्य *पुं.* = सफलता; लाभ।

साफ-सुथरा *वि.* पूर्णत: स्वच्छ।

साफा *पुं.* {*अ.* साफ़} छोटी पगड़ी; कपड़ों में साबुन लगाकर उन्हें साफ करने की क्रिया या भाव।

मुहा. साफा देना या लगाना = कपड़ों में साबुन लगाकर उन्हें साफ करना।

साफी *स्त्री.* {*अ.* साफ़} भाँग छानने या गाँजे की चिलम के नीचे लगाने का छोटा कपड़ा; हाथ में रखने का छोटा रूमाल।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साबन पुं. = साबुन।

साबर[1] पुं. {सं. शम्बर} साँभर (हिरन) का चमड़ा।

साबर[2] पुं. {सं. शर्वला = कुदाल} मिट्टी खोदने की सबरी; *वि.* शाबर।

साबल पुं. बरछी, भाला।

साबस पुं. शाबास; (अव्य.) वाहवाह।

साबिक *वि.* {*अ.*} पहले का, पुराना।

साबिक दस्तूर *क्रि. वि.* {*अ.* साबिक़े दस्तूर} जैसी प्रथा हो वैसे ही।

साबिका पुं. {*अ.* साबिक़} पारस्परिक व्यवहार के कारण होनेवाला संबंध, संपर्क।

साबित *वि.* {*अ.*} जिसका सबूत या प्रमाण मिल चुका हो, प्रमाणित, सिद्ध।

साबुत *वि.* {*अ.* साबित} जो खंडित न हुआ हो, पूरा; समस्त, सब।

साबुन पुं. {*अ.* साबून} क्षार, तेल आदि से बनाया हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर और कपड़े साफ किए जाते हैं।

साबूत *वि.* साबुत; पुं. सबूत।

साबूदाना पुं. सागूदाना।

साभार *क्रि. वि.* {सं. स + आभार} आभार मानते हुए, कृतज्ञतापूर्वक।

सामंजस्य पुं. {सं.} औचित्य; अनुकूलता; मेल, एकरसता।

सामंत पुं. {सं.} वीर, योद्धा; जमींदार या सरदार।

सामंतवाद पुं. {सं.} किसी राज्य के अंतर्गत वह प्रणाली जिसमें सामन्तों, सरदारों और जमींदारों आदि को किसानों, खेतीबारी की जमीनों आदि के संबंध में बहुत अधिक या पूरे-पूरे अधिकार होते हैं (फ्यूडल सिस्टम)।

सामंतवादी (दिन्) *वि.* {सं.} सामंतवाद- संबंधी पुं. सामंतवाद का पक्षधर।

सामंतसभा *स्त्री.* {सं.} इंग्लैंड के संविधान में वहाँ के बड़े-बड़े सामंतों (लॉर्डों) की वह सभा जो वहाँ की लोकसभा से बड़ी मानी जाती है। (हाउस ऑफ लार्ड्स)

सामंती *वि.* {सं. सामंत} सामंत-संबंधी।

साम पुं. {सं. सामन्} गाए जानेवाले वेदमंत्र; सामवेद; पुं. श्याम देश; *वि.* श्याम; पुं. श्याम (कृष्ण); पुं. स्वामी।

सामग पुं. {सं.} वह जो सामवेद के मंत्र गाता हो।

सामग्री *स्त्री.* {सं.} वे आवश्यक वस्तुएँ जिनका किसी कार्य में उपयोग होता है हो, आवश्यक द्रव्य (मेटीरियल); घर-गृहस्थी का काम चलाने की सब चीजें, सामान (एफेक्ट्स); साधन, उपकरण।

सामग्र्य पुं. अस्त्र-शस्त्र, भंडार।

सामधेनी *स्त्री.* {सं.} यज्ञ में आग प्रज्वलित करने तथा हवा करने के लिए प्रयुक्त बाँस की नली।

सामना पुं. {हिं. सामने} समक्ष या सम्मुख होने की क्रिया या भाव; भेंट, मुलाकात; सामने या आगेवाला भाग; प्रतियोगिता, मुकाबला।

सामने *क्रि. वि.* {सं. सम्मुख} सम्मुख, समक्ष, आगे; उपस्थिति में; सीधे आगे की ओर; मुकाबले में, विरुद्ध।

सामयिक *वि.* {सं.} {*भाव.* सामयिकता} समय से संबंध रखनेवाला; वर्तमान समय का; समय को देखते हुए उचित, उपयुक्त या ठीक।

सामयिकता *स्त्री.* {सं.} सामयिक होने का भाव; वर्तमान समय, परिस्थिति आदि के विचार से उपयुक्त दृष्टिकोण या अवस्था।

सामयिक पत्र पुं. {सं.} कुछ निश्चित समय पर बराबर प्रकाशित होता रहनेवाला पत्र।

सामरथ *स्त्री.* = सामर्थ्य।

सामरस्य पुं. = समरसता।

सामरा *वि.*, पुं. = साँवला।

सामराधिप पुं. सेनापति।

सामरिक *वि.* {सं.} समर-संबंधी, युद्ध का, जैसे सामरिक व्यवस्था।

सामर्थी पुं. शक्तिशाली, पराक्रमी।

सामर्थ्य *स्त्री.* {सं.} 'समर्थ' का भाव, कुछ कर सकने की शक्ति (पॉवर)।

सामवाद पुं. मीठे वचन, मीठी बोली।

सामवायिक *वि.* {सं.} समवाय-संबंधी, समवाय का।

सामवेद पुं. {सं. सामन्} {*वि.* सामवेदी} चार वेदों में से तीसरा जिसमें गाए जानेवाले स्तोत्र हैं।

सामवेदिक पुं. सामवेद के मानने वाला ब्राह्मण।

सामवेदी पुं. {सं. सामवेदिन्} वह जो सामवेद का अनुयायी अथवा ज्ञाता हो।

सामहिं *क्रि. वि.* = सामने।

सामाँ पुं. = सामान; *स्त्री.* = श्यामा।

सामाजिक *वि.* {सं.} {*भाव.* सामाजिकता} सारे समाज से संबंध रखनेवाला, समाज का (सोशल); पुं. काव्य, नाटक आदि का श्रोता या दर्शक, सहृदय।

सामाजिकता *स्त्री.* {सं.} सामाजिक संबंधों का निर्वाह।

सामाधान पुं. शमन करने की क्रिया।

सामान पुं. {फा.} सामग्री; उपक्रम, आयोजन; घर, गृहस्थी आदि की या कोई काम चलाने की सब चीजें (एफक्ट्स)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान्य *वि.* {सं.} जिसमें कोई विशेषता न हो, मामूली; सब या बहुतों से संबंध रखनेवाला; प्रायः सभी व्यक्तियों, अवसरों, अवस्थाओं आदि में पाया जानेवाला या उनसे संबंध रखनेवाला, सार्वजनिक आम। (जनरल; अंतिम दोनों अर्थों के लिए); मध्यक; पुं. {सं.} समानता, बराबरी; किसी जाति या प्रकार की सब चीजें या बातों में पाया जानेवाला समान गुण, जैसे मनुष्यों में मनुष्यत्व; मध्यक ; साहित्य में एक अलंकार जिसमें उपमान और उपमेय अथवा प्रस्तुत और अप्रस्तुत में गुणों, धर्मों आदि के बिल्कुल समान या एक-से होने का उल्लेख रहता है, जैसे यह कहना कि चाँदनी रात में अटारी में खड़ी हुई नायिका और चंद्रमा में इतनी समानता है कि यह पता नहीं चलता कि मुख कौन है और चंद्रमा कौन।

सामान्यतः *क्रि. वि.* {सं.} सामान्य रूप से, साधारण रीति से, साधारणः जैसा साधारणत या प्रायः होता हो (कामनली)।

सामान्यता *स्त्री.* {सं.} **'सामान्य' या मामूली होने की अवस्था या भाव; 'सामान्य' होने या सब जगह सामान्य रूप से होने या पाए जाने की अवस्था या भाव (जेनरैलिटी)।**

सामान्य बुद्धि *स्त्री.* {सं.} प्रायः सब लोगों में पाई जानेवाली वह सामान्य या सहज बुद्धि जिससे वे साधारण बातें बिना किसी प्रयत्न के या आप-से-आप समझ लेते हैं (कॉमन सेंस)।

सामान्य विधि *स्त्री.* {सं.} कोई साधारण विधि या आज्ञा, जैसे बुरे काम मत करो; किसी देश या राष्ट्र में प्रचलित विधि-प्रविधियों का वह सामूहिक मान जिसके अनुसार उस देश या राष्ट्र के निवासियों का आचरण या व्यवहार परिचालित होता है (कॉमन लॉ)।

सामान्या *स्त्री.* {सं.} साहित्य में वह नायिका जो केवल धन के लोभ से परपुरुषों से संबंध करती हो, गणिका।

सामासिक *वि.* {सं.} समास से संबंध रखनेवाला, समास का।

सामिग्री *स्त्री.* = सामग्री।

सामि *स्त्री.* निंदा।

सामियाना *पुं.* शमियाना।

सामिल *वि.* शामिल।

सामिष *वि.* {सं.} (भोजन) जिसमें आमिष (मांस, मछली आदि) भी मिला हो।

सामी *पुं.* स्वामी; *वि., पुं. स्त्री.* शामी।

सामीप्य *पुं.* {सं.} 'समीप' होने का भाव, निकटता, समीपता।

सामुझि *स्त्री.* = समझ।

सामुदायिक *वि.* {सं.} समुदाय का।

सामुदायिक केन्द्र *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ किसी उद्देश्य से लोग एकत्र होते हैं।

सामुद्र *वि.* {सं.} समुद्र-संबंधी, समुद्र का; समुद्र से उत्पन्न।

सामुद्रिक *वि.* {सं.} समुद्र-संबंधी; *पुं.* वह विद्या जिसमें मनुष्य के शारीरिक लक्षण, विशेषतः हथेली की रेखाएँ देखकर शुभाशुभ फल बतलाए जाते हैं; इस शास्त्र का ज्ञाता।

सामुहाँ *अव्य.* आगे।

सामुहें *क्रि. वि.* = सामने।

सामूहिक *वि.* {सं.} {*भाव.* सामूहिकता} समूह या बहुत से लोगों से संबंध रखनेवाला, 'वैयक्तिक' का विरुद्धार्थक।

सामोद *वि.* खुशी से भरा।

साम्य *पुं.* {सं.} 'सम' या 'समान' होने का भाव या दशा, समता, समानता।

साम्यवाद *पुं.* {सं.} यह सिद्धांत कि देश की राजनीतिक तथा आर्थिक गतिविधियों में सभी को भाग लेने का समान अवसर मिलना चाहिए।

साम्यवादी (दिन्) *वि.* साम्यवाद-संबंधी; *पुं.* साम्यवादी का पक्षधर।

साम्या *स्त्री.* {सं.} साधारण न्याय के अनुसार सब लोगों के साथ निष्पक्ष और समान भाव से किया जानेवाला व्यवहार, समदर्शितापूर्ण व्यवहार।

साम्यमूलक *वि.* **{सं. साम्या + मूलक} जिसमें साम्या या समदर्शिता का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया हो (ईक्विटेबुल)।**

साम्यावस्था *स्त्री.* {सं.} वह अवस्था या स्थिति जिसमें परस्पर विरोधी शक्तियाँ इतनी हों कि एक दूसरी पर अपना अनिष्ट प्रभाव डालकर कोई गड़बड़ी न उत्पन्न कर सकें।

साम्राज्य *पुं.* {सं.} वह बड़ा राज्य जो एक सम्राट के शासन में हो और जिसमें कई राज्य या देश हों, सार्वभौम राज्य। (एम्पायर); किसी क्षेत्र या कार्य में किसी का पूरा अधिकार, आधिपत्य।

साम्राज्यवाद *पुं.* {सं.} साम्राज्य को बनाए रखने और बढ़ाते चलने का सिद्धांत (इम्पीरियलिज़्म)।

साम्राज्यवादी (दिन्) *पुं.* {सं.} वह जो साम्राज्यवाद का अनुयायी और समर्थक हो, साम्राज्य को दृढ़तापूर्वक बनाए रखने का पक्षपाती; *वि.* साम्राज्य-संबंधी।

सायं *पुं.* {सं.} सन्ध्या, शाम (समय); *वि.* सन्ध्या के समय होनेवाला, जैसे-सायं सन्ध्या = सायंकाल की जानेवाली सन्ध्या नाम की धार्मिक हिन्दू उपासना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सायंकाल पुं. {सं.} {*वि.* सायंकालीन} सन्ध्या का समय, शाम।

साय पुं. = सायंकाल, सन्ध्या।

सायक पुं. {सं.} बाण; खड्ग।

सायत *स्त्री.* साइत।

सायण पुं. वेदों के प्रसिद्ध टीकाकार।

सायन पुं. {सं.} वर्ष में दो बार आनेवाला वह समय (22 मार्च और 22 सितम्बर) जब सूर्य के भूमध्य रेखा पर पहुँचने पर दिन और रात दोनों बराबर होते हैं (ईक्वीनॉक्स)।

सायना *अ.* साना।

सायबान पुं. {फा. साय:बान} मकान या कमरे के आगे की ओर छाया के लिए बनी हुई टीन आदि की छत।

सायर[1] पुं. {सं. सागर} समुद्र।

सायर[2] पुं. {*अ.*} भूमि जिसकी आय पर कर नहीं लगता; अतिरिक्त और फुटकर आय; *वि.* प्रकीर्णक, फुटकर।

सायल पुं. {*अ.*} सवाल या प्रश्न करनेवाला; प्रार्थना-पत्र देने या प्रार्थना करनेवाला, प्रार्थी; माँगनेवाला, याचक।

साया[1] पुं. {फा. साय: मि. सं. छाया} छाया; परछाईं; भूत, प्रेत आदि; सान्निध्य से पड़नेवाला प्रभाव, असर।

साया[2] पुं. {*अ.* शेमीज} घाघरे की तरह का एक जनाना पहनावा।

सायास *क्रि. वि.* {सं. स + आयास} आयास, प्रयत्न या परिश्रमपूर्वक।

सायाह्न पुं. दिन के आखिर का मुहूर्त-संध्या।

सायुज पुं. सायुज्य।

सायुज्य पुं. {सं.} किसी में मिलकर उसके साथ एक होने की अवस्था या भाव, संपूर्ण मिलन; एक प्रकार की मुक्ति जिसके संबंध में यह माना जाता है कि जीवात्मा जाकर परमात्मा के साथ मिल गया और उसमें लीन हो गया।

सायुध *वि.* {सं. स + आयुध} आयुध या शस्त्रों से युक्त, जिसके पास हथियार आदि हों, सशस्त्र, सायुध रक्षीदल (आर्म्ड)।

सारंग पुं. {सं.} एक प्रकार का हिरन; कोयल; हंस; मोर; पपीहा; हाथी; घोड़ा; शेर; कमल; स्वर्ण, सोना; तालाब; भौंरा; एक प्रकार की मधुमक्खी; विष्णु का धनुष; शंख; चंद्रमा; समुद्र; पानी, जल; तीर; साँप; चंदन; बाल, केश; शोभा; तलवार; बादल, मेघ; आकाश; मेढक; सारंगी; कामदेव; बिजली; फूल; दीपक, दीया; स्त्री, औरत; ग्रह, नक्षत्र आदि; ईश्वर; गहने, कपड़े आदि सजावट के सामान; चार तगण का एक छंद; ओड़व जाति का एक राग जो दिन के दूसरे पहर में गाया जाता है; *वि.* रँगा हुआ, रंगीन; सुंदर, मनोहर; सरस, रसयुक्त।

सारगपाणि पुं. {सं.} विष्णु।

सारंगा *स्त्री.* लकड़ी की बनी हुई छोटी नाव।

सारंगिया पुं. {हिं. सारंगी} सारंगी बजानेवाला।

सारंगी *स्त्री.* {सं. सारंग} एक प्रसिद्ध बाजा जिसमें लगे हुए तार कमानी से रेतकर बजाए जाते हैं।

सारंड पुं. साँप का अंडा।

सार[1] पुं. {सं.} {*भाव.* सारता} किसी पदार्थ का मुख्य या मूल भाग, तत्व, सत्त; तात्पर्य, निष्कर्ष; अरक, रस; जल, पानी; गुदा, मग्ज; परिणाम, फल; धन, दौलत; मलाई या मक्खन; बल, शक्ति; लोहा; लोहे का बना हुआ कोई हथियार; तलवार; जुआ खेलने का पासा; शतरंज, चौसर आदि की गोटी, गोट; साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक बात कहकर उत्तरोत्तर उसके उत्कर्षसूचक सार के रूप में दूसरी अनेक बातों का उल्लेख होता है, जैसे सब प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ है और सब मनुष्यों में उदार, धर्मात्मा और सज्जन श्रेष्ठ हैं; पिंगल में एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं अंत में दो गुरु होते है तथा 16 मात्राओं पर यति होती है।

सार[2] पुं. {सं. सारिका} मैना (पक्षी)।

सार[3] पुं. {हिं. सारना} पालन-पोषण; देखरेख; पलंग, खाट।

सार[4] पुं. {सं. घनसार} कपूर।

सार[5] पुं. {सं. शल्य हिं. साल का पुराना रूप} सालने की क्रिया या भाव, मन में खटकने या कष्ट देनेवाली बात।

उदा. भेदि दुसार कियो हियौ तन दुति भेदे सार–**बिहारी।**

पुं. साला; *वि.* = कठिन।

सारकथन पुं. {सं.} सार के रूप में कही हुई बात।

सारखा *वि.* बराबर का।

सारगंध पुं. चंदन।

सारगर्भित *वि.* {सं.} जिसमें सार या तत्व हो, सारायुक्त, तत्वपूर्ण।

सारग्राहिता *स्त्री.* {सं.} सारग्राही होने का भाव, अवस्था या प्रवृत्ति।

सारग्राही (हिन्) *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सारग्राहिणी} {*भाव.* सारग्राहिता} वस्तुओं या विषयों का तत्व या सार ग्रहण करनेवाला।

सारण पुं. अतिसार रोग, आँवला।

सारणिक पुं. पथिक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारणी *स्त्री.* {सं.} छोटी नदी या नाला; *स्त्री.* सारिणी।

सारथित्व *पुं.* {सं.} सारथी का काम, पद या भाव, सारथ्य।

सारथी (थिन्) *पुं.* {सं.} {*भाव.* सारथित्व, सारथ्य} रथ चलानेवाला, सूत; समुद्र।

सारथ्य *पुं.* {सं.} सारथी का कार्य, भाव या पद, सारथित्व।

सारद[1] *स्त्री.* {सं. शारदा} सरस्वती।

सारद[2] *वि.* {सं. शारद} शरद ऋतु-संबंधी, शारदीय।

सारदा *स्त्री.* = शारदा।

सारदी *वि.* = शारदीय।

सारद्रुम *पुं.* खैर का पेड़।

सारना *स.* {हिं. सरना का *स.*} (काम) पूरा या ठीक करना, बनाना; सुंदर बनाना, सजाना; रक्षा करना; (आँखों में अंजन या सुरमा) लगाना; (अस्त्र-शस्त्र) चलाना, प्रहार करना; पालन पोषण या देखरेख करना; दूर करना, हटाना।

उदा. धारत धरा पै ना उदार अति आदर सौं सारत बँहोलिनी दो आँस अधिकाई है–**रत्ना.**।

छंडा करना, बुझाना।

उदा. कहै रत्नाकर वियोग आगि सारन कौ, उधौ हाय हमकौं बारि भखिबौ कहौ–**रत्ना.**।

सारनाथ *पुं.* बनारस से चार मील दूर महात्मा बुद्ध का मंदिर है।

सारबान *पुं.* {फा.} {*भाव.* सारबानी} वह जो ऊँट चलाने या हाँकने का काम करता है।

सारभाग *पुं.* {सं.} किसी तथ्य, कथन, पदार्थ आदि का मुख्य अंश या सार।

सारभाटा *पुं.* {सं. सार = सारण या पीछे हटना} समुद्र में ज्वार आने के बाद उसके पानी का फिर पीछे हटना।

सारभूत *वि.* सबसे अच्छा।

सारल्य *पुं.* = सरलता।

सारवती *स्त्री.* {सं.} दस वर्णों का एक प्रकार का वर्ण वृत्त, जिसमें तीन भगणों के उपरांत अंत में एक गुरु वर्ण होता है, इसे 'हाकली' भी कहते हैं।

सारवत्ता *स्त्री.* {सं.} सारवान् का भाव; सारग्राहिता।

सारवान्, सारवान् *वि.* {सं.} {*भाव.* सारवत्ता} जिसमें सार या तत्व हो, सारयुक्त।

सारसंग्रह *पुं.* {सं.} वह संग्रह जिसमें सार रूप में विचार प्रकट किये गए हों।

सारस *पुं.* {सं.} एक प्रकार का सुंदर बड़ा पक्षी; हंस; चंद्रमा; कमला।

सारसन *पुं.* तलवार की पेटी।

सारसुता *स्त्री.* यमुना।

सारस्य *पुं.* {सं.} सरसता।

सारस्वत *पुं.* {सं.} पंजाब में सरस्वती नदी के तट पर का प्राचीन प्रदेश; इस देश के प्राचीन निवासी; इस देश में रहनेवाले ब्राह्मण; *वि.* सरस्वती-संबंधी; विद्वानों का; सारस्वत देश का।

सारांश *पुं.* किसी पूरे तथ्य, पदार्थ, कथन आदि के सब तत्वों आदि का मुख्य आशय, सार या निचोड़ संक्षेप, सारभाग। (ऐब्सट्रैक्ट); किसी बात की मुख्य-मुख्य और सारभूत विशेषताएँ, तात्पर्य, निष्कर्ष। (समरी); वह छोटा लेख जिसमें किसी बड़े लेख की मुख्य बातें बतलाई गई हों (कम्पैण्डियम)।

सारा[1] *वि.* {सं. सह} {*स्त्री.* सारी} समस्त, पूरा।

सारा[2] *वि.* {सं. सारा} उत्तम, श्रेष्ठ; *पुं.* साला।

सारि *पुं.* {सं.} जुआ खेलने का पासा।

सारिका *स्त्री.* {सं.} मैना (पक्षी)।

सारिणी *स्त्री.* {सं.} एक पृष्ठ में अलग-अलग स्तम्भों या खानों के रूप में दिए हुए शब्दों, पदों, अंकों आदि का वह विन्यास जिससे उन शब्दों, पदों, अंकों के पारस्परिक संबंध या कुछ विशिष्ट तथा सूचित होते हैं और जिसका उपयोग अध्ययन, गणना आदि के लिए होता है, कोष्ठक (टेबुल)।

सारिवा *स्त्री.* अनंतमूल नाम की लता।

सारिष्ट *वि.* सबसे सुंदर।

सारी *स्त्री.* {सं.} सारिका पक्षी, मैना; जुआ खेलने का पासा, गोटी; थूहर; *स्त्री.* साड़ी; साली।

सारूप्य *पुं.* {सं.} {*भाव.* सारूप्यता} वह मुक्ति जिसमें भक्त अपने उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है; सरूपता, समानता।

सारो *स्त्री.* सारिका; *पुं.* साला; अगहनिया धान।

सारोपा *स्त्री.* {सं.} साहित्य में लक्षणा का एक प्रकार जिसमें उपमेय में उपमान का इस प्रकार आरोप किया जाता है कि उपमान से उपमेय आच्छादित नहीं होने पाता, जैसे विद्या में आप वृहस्पति हैं।

सारौं *स्त्री.* सारिका (पक्षी)।

सार्दूल *पुं.* सिंह, शेर।

सार्थ *वि.* {सं.} अर्थ सहित।

सार्थक *वि.* {सं.} {*भाव.* सार्थकता} जिसका अर्थ हो; सफल, पूर्ण-मनोरथ।

सार्थवाह *पुं.* {सं.} व्यापारी, विशेषत: वह व्यापारी जो अपना माल बेचने दूर तक जाता हो।

सार्द्ध *वि.* {सं.} जिसमें आधा और मिला या लगा हो, ड्योढ़ा।

सार्वकालिक *वि.* {सं.} सब कालों में होनेवाला; सब समयों का।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वजनिक *वि.* {सं.} सब लोगों से संबंध रखनेवाला, सर्वसाधारण-संबंधी, जैसे सार्वजनिक उपयोग (पब्लिक); समान रूप से सब लोगों के काम में आनेवाला, जैसे सार्वजनिक कुआँ या धर्मशाला (कॉमन)।

सार्वजनिक जीवन *पुं.* लोकजीवन।

सार्वजनीन *वि.* सार्वजनिक।

सार्वदेशिक *वि.* {सं.} सारे देश से संबंध रखने या सारे देश में होनेवाला; सब देशों से संबंध रखने या सब देशों में होनेवाला (यूनिवर्सल)।

सार्वभौतिक *वि.* {सं.} भूतों या तत्वों से संबंध रखने या उनमें होनेवाला।

सार्वभौम *पुं.* {सं.} {*वि.* सार्वभौमिक} चक्रवर्ती राजा; हाथी *वि.* सारी पृथ्वी या उसके सब देशों से संबंध रखने या उनमें होनेवाला।

सार्वभौमिक *वि.* सार्वभौम (यूनिवर्सल); *पुं.* {सं.} वह जिसका दृष्टिकोण इतना विस्तृत हो कि वह संसार के सब लोगों या देशों को एक-सा समझता हो, स्थानिक, राष्ट्रीय अथवा दूसरे संकुचित विचारों से रहित (कॉस्पोपालिटन)।

सार्वराष्ट्रीय *वि.* {सं.} {*भाव.* सार्वराष्ट्रीयता} सब या अनेक राष्ट्रों से संबंध रखनेवाला (इंटरनेशनल)।

सार्वत्रिक *वि.* सब जगह से ताल्लुक रखनेवाला।

सार्विक *वि.* {सं.} सर्व-संबंधी, सबका; सब जगह समान रूप से होने या पाया जानेवाला (यूनिवर्सल)।

साल[1] *पुं.* {पहलवी सालक् से फा. मि. सं. शरद्} वर्ष, बरस, काल, मान।

साल[2] *स्त्री.* {हिं. सालना} 'सालने' की क्रिया या भाव; मन में होनेवाला कष्ट, वेदना, पीड़ा, कसक; क्षत, घाव; लकड़ियाँ जोड़ने के लिए उनमें किया जानेवाला चौकोर छेद; छेद, सूराख; *पुं.* 'शालि' और 'शाल'; *स्त्री.* शाला।

सालंग *पुं.* संगीत के तीन रागों में से एक शुद्ध परन्तु जिसमें राग का आभास हो।

सालक *वि.* {हिं. सालना} सालने, खटकने, चुभने या मन में कष्ट देनेवाला; *पुं.* = साला (किसी की पत्नी का भाई)।

सालगिरह *स्त्री.* {फा.} बरस-गाँठ।

सालन *पुं.* {सं. सलवण} पक्की हुई मसालेदार तरकारी।

सालना *अ.* {सं. शल्य} {*भाव.* साल} मन में खटकना, मानसिक कष्ट या पीड़ा होना; चुभना, गड़ना; *स.* दुख पहुँचाना; छेद करना; चुभना; प्रविष्ट करना, अंदर पहुँचाना; लकड़ी आदि में छेद करके दूसरी लकड़ी का सिरा उसमें घुसाना।

सालममिसरी *स्त्री.* {*अ.* सालब + मिस्र (देश.)} एक प्रकार के क्षुप का कंद जो पौष्टिक होता है और दवा के काम आता है।

सालस *पुं.* दो पक्षों के झगड़े निपटानेवाला, पंच।

सालसा *पुं.* {*अ.* सारसा पेरिल्ला} खून साफ करनेवाली एक प्रसिद्ध दवा।

साला[1] *पुं.* {सं. श्यालक} {*स्त्री.* साली} किसी की पत्नी का भाई; इस संबंध की सूचक एक प्रकार की गाली।

साला[2] *पुं.* {सं. सारिका} मैना (पक्षी)।

सालाना *वि.* {फा. सालानः} हर साल या हर वर्ष होनेवाला, वार्षिक।

सालार *पुं.* {फा.} मार्गदर्शक; प्रधान नेता, अगुआ।

सालिम *वि.* {*अ.*} पूरा, समूचा, सारा; दृढ़, पक्का।

सालिया *पुं.* {फा. साल = वर्ष} प्रति वर्ष लिया या दिया जानेवाला कोई कर या शुल्क।

सालियाना *वि.* = सालाना; *पुं.* सालिया।

सालिसनामा *पुं.* पंचनामा।

साली *स्त्री.* पत्नी की बहिन।

सालु *स्त्री.* साल।

सालू *पुं.* {देश.} लाल रंग का एक कपड़ा (मांगलिक)।

सालेपा *स्त्री.* सौंफ।

सालोक्य *पुं.* {सं.} वह मुक्ति जिसमें जीव को भगवान का लोक प्राप्त होता है।

साव्रत *पुं.* सामंत।

साव *पुं.* साहू।

सावक *पुं.* शावक।

सावकरन *पुं.* श्यामकर्ण।

सावकाश *पुं.* {सं.} आकाश, फुरसत, छुट्टी; मौका, अवसर।

क्रि. वि. {सं. स + अवकाश} अवकाश होने पर, फुरसत के समय।

सावचेत *वि.* = सावधान।

सावचेती *स्त्री.* सावधानी।

सावज *पुं.* {?} वह जंगली जानवर जिसका शिकार किया जाता हो, शिकार।

सावत *पुं.* {हिं. सौत} सौतों का आपस का भेद या डाह, सौतिया डाह; ईर्ष्या, जलन, डाह।

उदा. तँह गए मद मोह लोभ अति, सरगहुँ मिटत न सावक—**तुलसी**।

सावधान *वि.* {सं.} {*भाव.* सावधानता, सावधानी} सचेत सतर्क, होशियार, खबरदार।

सावधानता *स्त्री.* {सं.} सावधान, सचेत या सतर्क रहने की अवस्था या भाव।

सावधानी *स्त्री.* = सावधानता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावधि *वि.* {सं. स + अवधि} जिसमें या जिसकी कुछ अवधि हो, अवधियुक्त।

सावन[1] *पुं.* {सं. श्रावण} आषाढ़ के बाद और भाद्रपद के पहले का महीना, श्रावण।

सावन[2] *पुं.* {सं.} एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का काल या समय, पूरा एक दिन और एक रात जिसका मान 60 दंड है।

सावनी *वि.* {हिं. सावन (महीना)} सावन-संबंधी, सावन का; सावन में होनेवाला; *स्त्री.* सावन में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत; सावन में वरपक्ष से कन्या के लिए भेजे जानेवाले कपड़े, मिठाइयाँ आदि; *स्त्री.* श्रावणी।

सावनी कल्याण *पुं.* {हिं. सावनी + सं. कल्याण} सावनी और कल्याण के मेल से बना हुआ एक प्रकार का संकर राग (संगीत)।

सावर *पुं.* लोध, पाप, अपराध।

सावर्ण *पुं.* आठवें मनु जो सूर्यपुत्र थे, एक मन्वंतर का नाम।

सावशेष *वि.* अवशेषयुक्त।

सावित्र *पुं.* ब्राह्मण, शंकर, वसु, सूर्य।

सावित्री *स्त्री.* {सं.} गायत्री; सरस्वती; उपनयन के समय होनेवाला एक संस्कार; सत्यवान् की पत्नी जो अपने सतीत्व के लिए प्रसिद्ध है; यमुना नदी; सुहागिन, सधवा।

सावित्रीसूत्र *पुं.* यज्ञोपवीत।

साश्रु *क्रि. वि.* {सं. स + अश्रु} आँखों में आँसू भरकर; *वि.* जिसमें आँसू भरे हों, अश्रुयुक्त।

साषी *स्त्री.* सासी; साखी।

साष्टांग *वि.* {सं.} आठों अंगों से होनेवाला या किया जानेवाला।

साष्टांग प्रणाम *पुं.* {सं.} सिर, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन और मन इन आठों से भूमि पर लेटकर किया जानेवाला प्रणाम।

सास *स्त्री.* {सं. श्वश्रु} स्त्री या पुरुष के विचार से उसके पति या पत्नी की माता।

सासदा *पुं.* = ससुराल।

सासन *स.* {सं. शासन} दंड देना, सजा देना; बहुत अधिक कष्ट पहुँचाना; डाँटना, डपटना; *स्त्री.* दंड, सजा; बहुत अधिक शारीरिक कष्ट, साँसत।

उदा. बहुत सासना दई प्रहलादहिं, ताहि निसंक कियौ–सूर।

सासा *पुं.* {सं. संशय} संदेह; *पुं.* श्वास।

सासुर *पुं.* साहु; शाह।

साहचर्य *पुं.* {सं.} 'सहचर' होने का भाव, सहचरता; किसी प्रकार किसी के संग या साथ रहने या होने का भाव, संग, साथ (एसोसिएशन)।

साहजिक *वि.* {सं.} सहज बुद्धि या स्वभाव से होनेवाला (इंस्टिक्टिव); स्वाभाविक।

साहना *स.* {?} ग्रहण करना, लेना।

उदा. खाँ ततार मारूफ खाँ लिए पान कर साहि–चन्दबरदाई।

साहनी *पुं.* {सं. साधनिक, प्रा. साहनिय} प्राचीन भारत के एक प्रकार के राजकर्मचारी जो सेना आदि के किसी उपविभाग के अध्यक्ष होते थे; मध्यकालीन भारत के एक प्रकार के राजकर्मचारी; परिषद; संगी, साथी; *स्त्री.* सेना, फौज।

साहब *पुं.* {*अ.* साहिब} {*स्त्री.* साहबा} प्रभु, स्वामी, मालिक; परमेश्वर, ईश्वर; सम्मानसूचक शब्द, महाशय; गोरी जाति का व्यक्ति, गोरा।

साहब सलामत *स्त्री.* {सं.} परस्पर अभिवादन, बंदगी, सलाम; परस्पर अभिवादन का संबंध, मेल-जोल।

साहबी *वि.* {*अ.* साहिब} साहबों या अंग्रेजों का-सा; *स्त्री.* प्रभुता या ऐश्वर्य से युक्त उच्च अधिकार; बड़ाई।

साहस *पुं.* {सं.} मन की वह दृढ़ता जो कोई बड़ा काम करने में प्रवृत्त करती है, हिम्मत, हियाव (करेज); बलपूर्वक दूसरे का धन लेना, लूटना; कोई बुरा काम।

साहसिक *पुं.* {सं.} {*भाव.* साहसिकता} पराक्रमी; डाकू; चोर; *वि.* (कार्य) जिससे साहस प्रकट हो, साहसपूर्ण (करेजस); निर्भीक, निडर।

साहकिता *स्त्री.* निर्भीकता।

साहसी *वि.* {सं. साहसिन्} साहस रखनेवाला, हिम्मती, दिलेर (करेजस)।

साहस्र *वि.* {सं.} सहस्र-संबंधी, हजार का।

साहस्रक *वि.* हजार से संबंधित।

साहा *पुं.* शादी आदि के लिए शुभ लग्न, राजा।

साहाय्य *पुं.* मदद, सहायता।

साहस्रिक *वि.* = साहस्र।

साहस्त्री *स्त्री.* {सं. साहस्रिक} किसी सन् या संवत् के हर एक से हजार वर्षों तक का समूह, सहस्राब्दी (माइलीनिआ)।

साहाय्य *पुं.* {सं.} सहायता, मदद।

साहि *पुं.* {सं. शाह} राजा।

साहित्य *पुं.* {सं.} 'सहित' या 'साथ' होने का भाव, एक साथ होना, रहना या मिलना; किसी भाषा अथवा देश के उन सभी (गद्य और पद्य) ग्रंथों, लेखों आदि का समूह या सम्मिलित राशि, जिसमें स्थायी, उच्च और गूढ़ विषयों का सुंदर रूप से व्यवस्थित विवेचन हुआ हो, वाङ्मय (लिटरेचर); वे सभी लेख, ग्रंथ आदि जिनका सौंदर्य, गुण, रूप या भावुकतापूर्ण प्रभावों के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण समाज में आदर होता है; किसी विषय, कवि या लेखक से संबंध रखनेवाले सभी ग्रंथों और लेखों आदि का समूह, जैसे वैज्ञानिक साहित्य, तुलसी का साहित्य; किसी विषय या वस्तु से संबंध रखनेवाली सभी बातों का विस्तृत विवरण जो प्रायः उसके विज्ञापन के रूप में बँटता है, जैसे किसी बड़े ग्रंथ, संस्था, यंत्र आदि का साहित्य (लिटरेचर); गद्य और पद्य की शैली और लेखों तथा काव्यों के गुण-दोष, भेद-प्रभेद सौंदर्य अथवा नायिका-भेद और अलंकार आदि से संबंध रखनेवाले ग्रंथों का समूह।

साहित्यकार पुं. {सं.} वह जो ग्रंथ आदि लिखकर साहित्य की रचना करता हो (लिटरेच्योर)।

साहित्यिक *वि.* {सं.} साहित्य-संबंधी, साहित्य का (लिटरेरी); पुं. वह जो साहित्य की सेवा या रचना करता हो, साहित्यकार।

साहित्यिकता *स्त्री.* {सं.} साहित्यिक होने की अवस्था या भाव।

साहिनी *स्त्री. पुं.* साहनी।

साहिब *पुं.* = साहब।

साहियाँ *पुं.* = साईं।

साहिल *पुं.* {*अ.*} किनारा, तट।

साही *स्त्री.* {सं. शल्यकी} एक जंगली जंतु जिसके शरीर पर लंबे काँटे होते हैं।

साहु *पुं.* {सं. साधु} सज्जन, भला आदमी; सेठ, महाजन; बनिया, वणिक; ईमानदार, 'चोर' या 'बेईमान' का विरुद्धार्थक।

साहुल *पुं.* {फा. शाकूल} दीवारें आदि बनाते समय उनकी सीध नापने का एक प्रकार का डोरेदार लट्टू या यंत्र।

साहूकार *पुं.* {सं. साहु} {*भाव.* साहूकारी} बड़ा महाजन, कोठीवाल।

साहूकारा *पुं.* {हिं. साहूकार + आ (प्रत्य.)} महाजनी कारोबार; वह बाजार जहाँ ऐसा कारोबार होता हो।

साहूकारी *स्त्री.* {हिं. साहूकार} 'साहू' का काम, भाव या पद।

साहैं[1] *स्त्री.* {हिं. बाँह} भुजदंड।

साहैं[2] *क्रि. वि.* {हिं. सामुहें} सामने, सम्मुख।

सिंउ *प्रत्य.* स्यों।

सिंकना *अ.* हिं. सेंकना का *अ.*।

सिंगल *पुं.* संकेत, रेलगाड़ी को रोकने का इशारा।

सिंगरफ *पुं.* ईंगुर।

सिंगा *पुं.* {हिं. सींग} नरसिंहा या तुरही को फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा, बड़ी सिंगी।

सिंगार *पुं.* {सं. शृंगार} {*क्रि.* सिंगारना} सजावट, सज्जा, बनाव; शोभा; *पुं.* हरसिंगार।

सिंगारदान *पुं.* {हिं. सिंगार + फा. दान} शीशा, कंघी आदि शृंगार की सामग्री रखने का छोटा संदूक।

सिंगारना *स.* शृंगार करना।

सिंगारहाट *स्त्री.* {हिं. सिंगर + हाट} वेश्याओं के रहने का बाजार, चकला।

सिंगारहार *पुं.* हरसिंगार।

सिंगारिया *पुं.* {सं. शृंगार} देवमूर्ति का शृंगार करनेवाला पुजारी।

सिंगारी *वि.* = शृंगार-संबंधी; *पुं.* = सिंगारिया।

सिंगाल *पुं.* पहाड़ी बकरा।

सिंगिया *पुं.* {सं. शृंगिका} एक प्रकर का स्थावर विष।

सिंगी *पुं.* {सं.} फूँककर बजाया जानेवाला सींग का एक बाजा; *स्त्री.* एक प्रकार की मछली; सींग की वह नली जिससे जर्राह शरीर का दूषित रक्त या मवाद चूसकर निकालते हैं।

सिंगौटा *पुं.* {हिं. सींग} बैलों आदि के सींगों पर चढ़ाया जानेवाला धातु का आवरण।

सिंगौटी *स्त्री.* बैल की सींग का गहना, छोटी शृंगार-पेटी।

सिंघ *पुं.* = सिंह।

सिंघल *पुं.* = सिंहल।

सिंघी *स्त्री.* सिंगी।

सिंचन *पुं.* सेचन।

सिंचना *अ. हिं.* 'सींचना' का *अ.*।

सिंचाई *स्त्री.* {सं. सेचन} सींचने या पानी छिड़कने का काम या भाव; खेती-बारी के लिए खेतों आदि में जल पहुँचाने की क्रिया या भाव, आबपाशी (इरिगेशन); उक्त प्रकार के काम का पारिश्रमिक या मजदूरी।

सिंचाना *स. हिं.* 'सींचना' का प्रे.।

सिंचित *वि.* {सं. सिंचित} सींचा हुआ; भीगा हुआ, गीला।

सिंजित *स्त्री.* {सं. सिंजा} शब्द, आवाज; ध्वनि, झनकार; *वि.* जिसमें ध्वनि, शब्द या झनकार हो।

सिंदन *पुं.* स्यंदन।

सिंदुरी, सिंदुवार *स्त्री.* बलूत जाति का पेड़।

सिंदूर *पुं.* {सं.} एक प्रकार का लाल रंग का चूर्ण जिसे हिन्दू सुहागिनें माँग में भरती हैं।

मुहा. *सिंदूर चढ़ना* = कुमारी का विवाह होना; *सिंदूर देना* = विवाह के समय वर का कन्या की माँग में सिंदूर डालकर उसे अपनी पत्नी बनाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंदूरदान पुं. {सं.} विवाह के समय वर का कन्या की माँग में सिंदूर भरना।
सिंदूरिया *वि.* {सं.} सिंदूर के रंग का, गाढ़ा लाल।
सिंदूरी *वि.* {सं. सिंदूर + हिं. ई (प्रत्य.)} सिंदूर के रंग का, पीला मिला लाल।
सिंदौरा पुं. लकड़ी की डिब्बी जिसमें स्त्रियाँ सिंदूर रखती हैं।
सिंध पुं. {सं. सिंधु} पश्चिमी भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश जो अब पाकिस्तान में चला गया है; सिंधु।
सिंधवी पुं. {मरा शिं } ग्वालियर के प्रसिद्ध मराठा राजवंश की उपाधि।
सिंधी *स्त्री.* {हिं. सिंध + ई (प्रत्य.)} सिंध प्रान्त की बोली; पुं. सिंध देश का निवासी; सिंध देश का घोड़ा; *वि.* सिंध देश का।
सिंधु पुं. {सं.} नद, बड़ी नदी; पंजाब के पश्चिमी भाग की एक प्रसिद्ध नदी; समुद्र; सिंध प्रदेश।
सिंधुजा *स्त्री.* {सं.} लक्ष्मी देवी।
सिंधुद्वार पुं. {सं.} मध्य प्रदेश के छिन्दवाड़ा और उसके आसपास के प्रदेश का पुराना नाम।
सिंधुर पुं. {सं.} हाथी।
सिंधुरवदन पुं. {सं.} गणेश।
सिंधूरा पुं. {सं. सिधुर} ओड़व-संपूर्ण जाति का एक राग जो सन्ध्या समय या कुछ रात होने पर गाया जाता है।
सिंधोरा पुं. {हिं. सिंदूर} {*स्त्री.* अल्पा. सिंधोरी} स्त्रियों का सिंदूर रखने का काठ का डिब्बा; पुं. सिंधूरा।
सिंवई *स्त्री.* = सेंवई।
सिंह पुं. {सं.} {*स्त्री.* सिंहनी} बिल्ली के वर्ग में सबसे अधिक बलवान हिंसक जंगली जंतु, सिके नर की गर्दन पर बड़े-बड़े बाल होते हैं, शेर बबर, मृगराज, केशरी; बहुत बड़ा वीर; ज्योतिष में बारह राशियों में से एक जिसमें पूरा मघा और पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र तथा उत्तरा फाल्गुनी का प्रथम पाद है (लिओ)।
सिंहद्वार पुं. {सं.} किले, महल आदि का सदर और बड़ा फाटक।
सिंहनाद पुं. {सं.} सिंह की दहाड़ या गरज; युद्ध के समय वीरों की ललकार; ललकार कर कही हुई बात।
सिंहपौर पुं. = सिंहद्वार।
सिंहल पुं. {सं.} एक द्वीप जो भारतवर्ष के दक्षिण में है और जिसे लोग प्राचीन लंका मानते हैं।
सिंहलक पुं. बढ़िया पीतल, राँगा।
सिंहलद्वीपी पुं. सिंहल द्वीप का रहनेवाला।
सिंहली *वि.* {हिं. सिंहल} सिंहल द्वीप का; पुं. सिंहल देश का निवासी; *स्त्री.* सिंहल द्वीप की भाषा।
सिंहस्थ *वि.* {सं.} सिंह राशि में स्थित कोई ग्रह; पुं. वह समय जब बृहस्पति सिंह राशि में स्थित रहता है (कुछ शुभ काम ऐसे समय में वर्जित है)।
सिंहाक्ष *वि.* शेर के समान आँखोंवाला।
सिंहाण पुं. नाक का मल।
सिंहारहार पुं. हरसिंगार।
सिंहाली *वि., पुं. स्त्री.* = सिंहली।
सिंहावलोकन पुं. {सं.} सिंह की तरह पीछे देखते हुए आगे बढ़ना; संक्षेप में पिछली बातों का दिग्दर्शन या वर्णन।
सिंहासन पुं. {सं.} राजा या देवता के बैठने की विशेष प्रकार की चौकी।
सिंहिका *स्त्री.* {सं.} समुद्र में रहनेवाली एक राक्षसी जो राहु की माता थी। यह आकाश में उड़नेवाले पक्षियों को उनकी छाया के द्वारा पकड़कर खा जाती थी, जिससे इसे 'छाया ग्रहिणी' भी कहते हैं। जब हनुमान जी समुद्र पार करके लंका जा रहे थे, तब उन्हें भी इसने पकड़ा था। उस समय हनुमान जी ने इसे मार डाला था।
सिंहिनी *स्त्री.* {हिं.} सिंह की मादा, शेरनी।
सिंहेजा, सिंहेला पुं. {सं. सिंध} सिंह या शेर का बच्चा।
सिंहेश्वरी *स्त्री.* दुर्गा देवी।
सिंहोदरी *वि.* {सं.} शेर के समान पतली कमर वाली।
सि *वि. स्त्री* {हिं. सा} समान, तुल्य।
सिअन *स्त्री.* सीवान।
सिअरा *वि.* {सं. शीतल} ठंडा; पुं. छाया, छाँह।
सिआर पुं. = गीदड़।
सिकंजबी *स्त्री.* {फा. सीकंजुबीन} सिरके या नींबू के रस में पकाया हुआ कोई शरबत या दवा; पानी में घोला हुआ नींबू का रस और चीनी।
सिकंदरा पुं. {फा. सिंकदर} स्टेशनों के पास रेल की पटरी के किनारे ऊँचे खंभे पर लगा हुआ डंडा जो झुककर गाड़ी के आगे बढ़ने का संकेत करता है (सिगनल)।
सिकड़ी *स्त्री.* {सं. शृंखला} जंजीर; किवाड़ का साँकल; गले में पहनने का एक गहना; करधनी, तागड़ी।
सिकत *स्त्री.* सिकता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिकता *स्त्री.* {सं.} बालू, रेत; रेतीली जमीन; चीनी, शर्करा।

सिकतिल *वि.* {सं. सिकता} रेतीला।

सिकत्तर *पुं.* {अं. सेक्रेटरी} मंत्री।

सिकरवार *पुं.* क्षत्रियों की एक शाखा।

सिकली *स्त्री.* {अ. सैकल} {कर्ता सिकलीगर} अस्त्र आदि माँजकर साफ और तेज करने की क्रिया।

सिकलीगर *पुं.* {हिं. सिकली + फा. गर (प्रत्य.)} अस्त्रों आदि पर सान रखने या धातुओं आदि को रगड़कर चमकानेवाला कारीगर।

सिकहर *पुं.* छीका।

सिकुड़न *स्त्री.* {हिं. सिकुड़ना} सिकुड़ने के कारण पड़ा हुआ कुछ बल, शिकन।

सिकुड़ना *अ.* {सं. संकुचन} संकुचित होना, सिमटना; बल या शिकन पड़ना; तनाव के कारण छोटा होना।

सिकोड़ना *स.* *हिं.* 'सिकुड़ना' का *स.*।

सिकोरा *पुं.* सिकोरा, कसोरा।

सिकोली *स्त्री.* बेंत आदि की बनी छोटी डलिया।

सिकोही *वि.* {फा. शिकोह = वैभव} वैभवशाली; वीर, बहादुर; अभिमानी, घमंडी।

सिक्कक *पुं.* बाँसुरी में लगाने की जीभी।

सिक्कड़ *पुं.* सिकड़ी।

सिक्का *पुं.* {अ. सिक्क:} मुद्रा, मोहर, छाप, ठप्पा; टकसाल में ढला हुआ निर्दिष्ट मूल्य का धातु का टुकड़ा जो वस्तु-विनिमय का साधन होता है, मुद्रा, रुपया, पैसा आदि; अधिकार।
मुहा. सिक्का बैठना या जमना = प्रभाव या अधिकार स्थापित होना; रोब जमना, आतंक छाना।

सिक्की *स्त्री.* छोटा सिक्का।

सिक्ख[1] *पुं.* {सं. शिष्य} शिष्य, चेला; गुरुनानक के पंथ का अनुयायी।

सिक्ख[2] *स्त्री.* {सं. शिक्षा} सीख, शिक्षा।

सिक्ख[3] *स्त्री.* {सं. शिक्षा} शिखा, चोटी।

सिक्खेकार *पुं.* {हिं. सीखना + कार (प्रत्य.)} {*भाव.* सिक्खेकारी} जिसने किसी गुरु से अच्छी तरह सीखकर विद्या प्राप्त की हो।

सिक्त *वि.* सेचित।

सिखंड *पुं.* {सं. शिखंडी} मोर (पक्षी); मोर का पर, मोरपंख; *पुं.* श्रीखंड।

सिख *पुं.* = सिक्ख।

सिखना *अ.* = सीखना।

सिखर *पुं.* = शिखर।

सिखरन *स्त्री.* शिखरन; दही में चीनी केशर, इलायची, मेवे मिलाकर बना हुआ शरबत।

सिखलाना *स.* = सिखाना।

सिखवन *स्त्री.* = सिखावन।

सिखा *स्त्री.* = शिखा; चुटिया।

सिखाना *स.* {सं. शिक्षण} विद्या, कला आदि की शिक्षा या उपदेश देना।

सिखावन *पुं.* {हिं. सिखाना} शिक्षा, उपदेश।

सिखावना *स.* = सिखाना।

सिखी *पुं.* = शिखी।

सिगनल *पुं.* {अ.} किसी विशेष उद्देश्य से किया जानेवाला कोई निश्चित संकेत; सिकंदरा।

सिगरा *वि.* {सं. समग्र} {*स्त्री.* सिगरी} समस्त, पूरा; सब, समस्त।

सिगरेट *पुं.* {अ.} कागज में लपेटा हुआ तंबाकू का चूरा जिसका धुआँ पीते हैं।

सिगरो *वि.* {सं. समग्र} {*स्त्री.* सगरी} जितना हो वह सब, संपूर्ण, सारा।

सिगार *पुं.* चुरुट।

सिगरा *वि.* संपूर्ण, सब।

सिगाहार *पुं.* हरसिंगार।

सिगोन *स्त्री.* रेतीली मिट्टी।

सिचान *पुं.* {सं. संचान} बाज (पक्षी)।

सिच्छा *स्त्री.* = शिक्षा।

सिजदा *पुं.* {अ. सिद्ध:} प्रणाम, दंडवत्।

सिचय *पुं.* पुराना कपड़ा।

सिजल *वि.* देखने में सुंदर लगे।

सिजादर *पुं.* नख में पाल चढ़ाने का समय।

सिझना *अ.* सीझना।

सिझाना *स.* {सं. सिद्ध} आँच पर पकाकर गलाना; कष्ट देना; मिलने के योग्य कराना, प्राप्य करना, जैसे हम्हीं ने तुम्हारी दलाली सिझा दी; अनुचित रूप से या बहकाकर वसूल करना, उतारना, जैसे उन्होंने जुए में उनसे सौ रुपए सिझा लिए (बाजारू)।

सिटकिनी *स्त्री.* {अनु.} किवाड़ बंद करने के लिए लोहे या पीतल का एक विशेष प्रकार का उपकरण।

सिटपिटाना *अ.* {अनु.} भयभीत या संकुचित होकर चुप होना; दब जाना; असमंजस या दुविधा में पड़ जाना।

सिट्टी *स्त्री.* {हिं. सिटना} बहुत बढ़-बढ़कर कही हुई बात, ढींग।
मुहा. सिट्टी भुलना = सिटपिटा जाना, कुछ कहने या करने में अक्षम होना।

सिट्ठी *स्त्री.* सीठी।

सिठना *पुं.* विवाह के समय गाई या दी जानेवाली गाली।

सिठनी *स्त्री.* 'सीठना'।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिठाई *स्त्री.* {हिं. सीठा} सीठे या फीके होने का भाव, सीठापन।

सिड़ *स्त्री.* {हिं. सिड़ी} पागलपन, उन्माद; सनम, झक।

सिडवार *वि.* सिड़ी।

उदा. या विधि जाँचक लघु विवेक और बहु सिड़वारे–**रत्ना.**।

सिड़ी *वि.* {सं. शृणीक} पागल, सनकी।

सित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सिता, *भाव.* सितता} सफेद; चमकीला; साफ; *पुं.* शुक्ल पक्ष; शक्कर; चाँदी।

सितकंठ *पुं.* = शितिकंठ।

सितकर *पुं.* {सं.} चंद्रमा।

सितम *पुं.* {फा.} {कर्ता सितमगर} अत्याचार, जुल्म।

सितमगर *पुं.* {फा.} अत्याचार करनेवाला, अत्याचारी।

सितल *वि.* = शीतल।

सितलाई *स्त्री.* = शीतलता।

सितली *स्त्री.* दर्द आदि में निकलनेवाला पसीना।

सिता *स्त्री.* {सं.} शक्कर; ज्योत्स्ना; मल्लिका, मोतिया (फूल); मदिरा।

सितानन *पुं.* गरुड़, बेल का पेड़।

सिताब *क्रि. वि.* {फा. शताब} शीघ्र, जल्दी; सहज में।

उदा. नूपुर के ऊपर बढ़ी कहत न बनत सिताब–**विक्रम**।

सिताभ *पुं.* कपूर, सफेद चीनी।

सितार *पुं.* {फा.} तारों का बना एक प्रसिद्ध बाजा।

सितारा *पुं.* {फा. सितार:} आकाश का तारा, नक्षत्र; प्रारब्ध, भाग्य।

मुहा. सितारा चमकना = भाग्य का बहुत प्रबल या अनुकूल होना।

चमकीले पत्तर की छोटी गोल बिन्दी जो शोभा के लिए कपड़ों आदि पर टाँकी या लगाई जाती है, चमकी।

सितारिया *पुं.* {हिं. सितार} सितार नाम का बाजा बजानेवाला।

सितालक *पुं.* सफेद मदार।

सितालिका *स्त्री.* सोप।

सितावर *पुं.* सुसना की सब्जी।

सितासित *वि.* काला और सफेद।

सिति *वि.* = शिति।

सिथिल *वि.* = शिथिल।

सिथिलाई *स्त्री.* = शिथिलता।

सिद *पुं.* {सं. सिद्ध} सोनार; पारखी।

सिदिक *वि.* {सं. सिद्क} वास्तविक और सच्चा, खरा।

सिदिका *वि.* वास्तविक, खरा।

सिदौसी *क्रि. वि.* {?} जल्दी, शीघ्र।

सिद्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* सिद्धि, सिद्धिता} जिसकी आध्यात्मिक साधना पूरी हो गई हो; जिसे अलौकिक सिद्धि हुई हो; जो योग की विभूतियाँ प्राप्त कर चुका हो; सफल तर्क या प्रमाण से ठीक माना हुआ, प्रमाणित (एस्टैब्लिशड); जो प्रमाणों आदि के द्वारा ठीक ठहराया गया हो, जैसे उन्होंने अपना पक्ष सिद्ध कर दिया; जो नियमों आदि के अनुसार ठीक हो, जैसे व्याकरण से सिद्ध शब्द; *पुं.* वह जिसे योग या तपस्या के द्वारा कोई सिद्धि या अलौकिक शक्ति प्राप्त हुई हो; पूर्ण योगी या ज्ञानी; आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत बड़ा या पहुँचा हुआ संत या महात्मा; एक प्रकार के देवता।

सिद्धगुटिका *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार की कल्पित मंत्रसिद्ध गुटिका (कहते हैं कि इसे मुँह में रख लेने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है)।

सिद्धपीठ *पुं.* {सं.} वह जगह जहाँ योग या आध्यात्मिक अथवा तांत्रिक साधन सहज में सम्पन्न होता है।

सिद्धहस्त *वि.* {सं.} {*भाव.* सिद्धहस्तता} जिसका हाथ कोई काम करने में खूब बैठा या मँजा हो, निपुण, कुशल।

सिद्धांजन *पुं.* {सं.} तांत्रिकों के अनुसार एक प्रकार का कल्पित अंजन (कहते हैं कि इसे आँखों में लगा लेने से जमीन में गड़ी हुई चीजें दिखलाई देने लगती हैं)।

सिद्धांत *पुं.* {सं.} विचार और तर्क द्वारा निश्चित किया हुआ मत, असूल; विद्या, कला आदि के संबंध में कोई ऐसी मूल बात या मत जो किसी विद्वान द्वारा प्रतिपादित या स्थापित हो और जिसे बहुत लोग ठीक मानते हों; ऋषियों आदि के मान्य उपदेश (डॉक्ट्रिन); सार की बात, तत्वार्थ।

सिद्धांतज्ञ *पुं.* सिद्धांत को समझनेवाला।

सिद्धांतवादी (दिन्) *पुं.* {सं.} वह जो सिद्धांतों के अनुसार आचरण करता हो; *वि.* सिद्धांत संबंधी।

सिद्धांती *वि.* {सं. सिद्धांत} शास्त्रों आदि के सिद्धांत जाननेवाला; अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहनेवाला।

सिद्धांबा *स्त्री.* दुर्गा देवी।

सिद्धा¹ *वि.* {सं.} 'सिद्ध' का स्त्री।

सिद्धा² *पुं.* {सं. असिद्ध} बिना पका हुआ अन्न, सीधा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्धाई *स्त्री.* {हिं. सिद्ध} सिद्ध या महात्मा होने की दशा या भाव।

सिद्धाग्नि *स्त्री.* {सं.} पवित्र अग्नि।

सिद्धान्न *पुं.* {सं.} पका हुआ अन्न।

सिद्धार्थ *वि.* पूर्ण कामना पानेवाला; *पुं.* गौतम बुद्ध।

सिद्धासन *पुं.* {सं.} योग साधन का एक प्रकार का आसन; सिद्धपीठ।

सिद्धि *स्त्री.* {सं.} काम पूरा या ठीक होना, सफलता; प्रमाणित होना; निश्चय, निर्णय; पकना, सीझना; योग या तपस्या के द्वारा प्राप्त होनेवाली अलौकिक शक्ति; योग-साधन के अलौकिक फल (ये आठ सिद्धियाँ मानी गई हैं-अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व); मुक्ति, मोक्ष; दक्षता, निपुणता; गणेश की दो स्त्रियों में से एक; भाँग, विजया।

सिद्धोदक *पुं.* पकाया हुआ जल, काँजी।

सिध *वि. पुं.* = सिद्ध।

सिधाई *स्त्री.* सीधापन।

सिधाना *अ.* सिधारना।

सिधारना *अ.* {हिं. सीधा + जाना} चले जाना, प्रस्थान करना; मरना; *स.* सुधारना।

सिधि *स्त्री.* = सिद्धि।

सिन *पुं.* {सं.} उम्र, अवस्था, वय।

सिनक *स्त्री.* नेटा, नाक का मल।

सिनकना *अ.* {सं. सिंघाणक} {*भाव.* सिनक} जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर फेंकना।

सिनि *पुं.* सात्यकि का पिता, क्षत्रियों की शाखा।

सिनीवाली *स्त्री.* {सं.} एक वैदिक देवी; शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा।

सिनेदर्शक *पुं.* सिनेमा-घर में जाकर चलचित्र देखनेवाला।

सिनेप्रेमी *पुं.* सिनेमा-घर जाने का शौकीन।

सिनेमा *पुं.* {अ.} चलचित्र, फिल्म; सिनेमा-घर।

सिनेमा-घर *पुं.* वह स्थान जहाँ नियमित रूप से फिल्मों का प्रदर्शन होता है।

सिनेमागृह *पुं.* = सिनेमा-घर।

सिन्नी *स्त्री.* {फा. शीरीनी} मिठाई; पीर, देवता, गुरु आदि को चढ़ाई जानेवाली मिठाई।

सिपर *स्त्री.* {फा.} तलवार आदि का वार रोकने की ढाल।

सिपरिहा *पुं.* {?} क्षत्रियों की एक जाति या भेद।

सिपहगरी *स्त्री.* {फा.} सिपाही का पेशा।

सिपहसालार *पुं.* {फा.} सेनापति।

सिपाह *पुं.* {फा.} सेना, फौज।

सिपाही *पुं.* {सं.} सैनिक, योद्धा; पुलिस या रक्षा विभाग का एक छोटा कर्मचारी. पहरेदार, वीर, बहादुर।

सिप्पर *स्त्री.* = सिपर।

सिप्पा *पुं.* {देश.} निशाने पर किया हुआ वार; कार्य सिद्ध करने की युक्ति; उद्देश्य सिद्ध करने का सुयोग।

मुहा. *सिप्पा जमाना या बैठाना* = कार्य, साधन की युक्ति या उपाय करना।

पुरानी चाल की एक प्रकार की छोटी तोप।

सिप्रा *स्त्री.* उज्जैन की प्रसिद्ध नदी।

सिफर *स्त्री.* {अ. सिफ़र} शून्य, सुन्ना।

सिफाकंद *पुं.* = कमलनाल (बुन्देल)।

सिफारिश *स्त्री.* {फा. सुफ़ारिश} {*वि.* सिफारिशी} किसी के पक्ष में कुछ अनुकूल अनुरोध, अनुशंसा (रिकमेंडेशन)।

सिफारिशी *वि.* {फा. सुफ़ारिश} जिसमें सिफारिश हो; सिफारिश करनेवाला; खुशामदी।

सिफारिश टट्टू *पुं.* वह जो केवल सिफारिश से या खुशामद करके किसी पद पर पहुँचा हो या काम निकालता हो।

सिमंत *पुं.* = सीमंत।

सिमट *स्त्री.* सिमटने की क्रिया।

सिमटी *स्त्री.* एक तरह का कपड़ा।

सिमटना *अ.* {सं. समित + ना} सिकुड़ना; बल या शिकन पड़ना; विस्तार छोड़कर एक जगह एकत्र होना; कार्य समाप्त होना, निपटना।

सिमरना *स.* सुमिरना; ध्यान करना।

सिमसिमी *स्त्री.* {अनु.} वह थोड़ा सा तरल पदार्थ जो प्रायः गीली लकड़ी जलने पर बुदबुदों के रूप में निकलता है।

सिमिरिख *पुं.* = शिंग्रफ।

उदा. कोउ काषादि वसन पहिरि कोउ सिमरिख रंगी–**रत्ना.।**

सिमल *पुं.* जुए में लगी खूँटी।

सिमाना *पुं.* हद, सीमा।

सिमेंट *पुं.* मकानादि को पक्का करने हेतु पत्थर का चूर्ण।

सिमेटना *क्रि.* इकट्ठा करना।

सिय *स्त्री.* {सं. सीता} जानकी।

सियना *अ.* {सं. सृजन} रचना; *स.* सीना।

सियर *वि.* सियरा।

सियरना *अ.* {हिं. सियरा} ठंडा होना।

सियरा *वि.* {सं. शीतल} {*स्त्री.* सियरी, *भाव.* सियराई} ठंडा, शीतल; कच्चा, अपक्व।

सियराई *स्त्री.* {हिं. सियरा} शीतलता, ठंडक।

सिया *स्त्री.* {सं. सीता} जानकी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सियार पुं. {सं. शृंगाल} गीदड़।

सियाह[1] पुं. {फा.} आय-व्यय के लेखे की बही, रोजनामचा; मालगुजारी जमा करने की पंजी या बही।

सियाह[2] *वि.* स्याह।

सियाही *स्त्री.* = स्याही।

सिर पुं. {सं. शिरस्} शरीर का सबसे आगे या ऊपर का भाग, कपाल, खोपड़ी; शरीर में गरदन से आगे या ऊपर का भाग; ऊपर का सिरा, चोटी; *वि.* महान, बड़ा; उत्तम, श्रेष्ठ; अच्छा, बढ़िया।

सिरई *स्त्री.* चारपाई में सिरहानेवाली पाटी।

सिर-कटा[1] *वि.* {हिं. सिर + कटना} जिसका सिर (ऊपरी भाग) कटा हो।

सिर-कटा[2] *वि.* {हिं. सिर + काटना} दूसरों का सिर काटने अर्थात् अपकार करनेवाला।

सिरका पुं. {फा. सिर्कः} धूप में पकाकर खट्टा किया हुआ किसी फल का रस।

सिरकी *स्त्री.* {हिं. सरकंडा} सरकंडे या सरई का छोटा छप्पर जो प्रायः बैलगाड़ियों पर आड़ करने के लिए रखते हैं; पुं. 'कुंजर' (जाति)।

सिरखय *वि.* मेहनती।

सिरावपी *स्त्री.* माथापच्ची।

सिरखिरली *स्त्री.* चिड़िया।

सिरगा *स्त्री.* घोड़े की जाति।

सिरगिरी *स्त्री.* चिड़िया के सिर की कलगी।

सिरगोटी *स्त्री.* {?} गलगल (पक्षी)।

सिरचंद पुं. {हिं. सिर + चंद चंद्रमा} हाथी के मस्तक का एक प्रकार का अर्द्ध चन्द्राकार गहना।

सिरजक पुं. {हिं. सिरजना} रचने या बनानेवाला; सृष्टिकर्ता, ईश्वर।

सिरजनहार पुं. {सं. सृजन + हिं. हार} सृष्टि रचानेवाला, परमात्मा।

सिरजना *स.* {सं. सृजन} रचना, बनाना; उत्पन्न, या तैयार करना।

सिरजित *वि.* रचा हुआ।

सिरताज पुं. {हिं. सिर + फा. ताज} मुकुट; शिरोमणि; सरदार।

सिरतान पुं. किसान, असामी।

सिरदुआली *स्त्री.* घोड़े की लगामवाला चमड़े का पट्टा।

सिरधरा (धरू) पुं. {हिं. सिर + धरना (पकड़ना)} संरक्षक, पृष्ठपोषक; *वि.* {*स्त्री.* सिरधरी} जिसे सिर पर धारण किया जाए, शिरोधार्य।

उदा. आह सती सिरधरी प्रमीला का बहुक्रन्दन—**हरिऔध**।

सिरनामा पुं. {सं. शीर्ष + नाम, मि. फा. सरनामः} पत्रों आदि के ऊपर लिखा जानेवाला पता; लेख आदि का शीर्षक या नामसूचक शब्द या पद।

सिरनेत पुं. पगड़ी, चीरा।

सिपच्ची *स्त्री.* {हिं. सिर + पचाना} सिर खपाना, माथापच्ची।

सिरपाव पुं. सिरोपाव।

सिरपेच पुं. {फा. सर + पेच} पगड़ी पर बाँधने का एक गहना, कलगी।

सिरफूल पुं. {हिं. सिर + फूल} सिर पर पहना जानेवाला एक गहना।

सिरफैटा पुं. मुरेठा।

सिरबंदी *स्त्री.* {हिं. सिर + फा. बंद} सिर पर पहनने का एक गहना।

सिरमनि *वि., पुं.* = शिरोमणि।

सिरमौर पुं. {हिं. सिर + मौर} सिर का मुकुट; सिरताज, शिरोमणि; प्राचीन काल का एक केश-विन्यास।

सिखार पुं. जमींदार की खेती का प्रबंधकर्ता।

सिरस पुं. शीशम की तरह का ऊँचा पेड़, रासायनिक द्रव।

सिरसी *स्त्री.* तीतर।

सिरहाना पुं. {सं. शिरस् + आधान} सोने की जगह पर सिर की ओर का भाग; तकिया।

सिरा पुं. {हिं. सिर} लंबाई में किसी ओर का अंत, छोर; ऊपरी भाग; आरंभ या अंत का भाग; शीर्ष (हेड); नोक, अनी।

मुहा. *सिरे का* = सबसे अच्छा।

सिराजी पुं. {फा. शीराज (देश.)} शीराज देश का घोड़ा; शीराज देश का कबूतर; *वि.* शीराज देश का।

सिराना *अ.* {हिं. सीरा = ठंडा} ठंडा होना; मंद पड़ना; पूरा या समाप्त होना।

उदा. भव मग अगम अनन्त है, बिनु स्रमहिं सिरातो—**तुलसी**।

बीतना।

उदा. ऐसहिं सोच विचार माँहि नृप आयु सिराई—**रत्ना.**।

बंद होना; फुरसत पाना; निबाहना; *स.* ठंडा करना; बिताना।

सिरावन *वि.* {हिं. सिराना} ठंडा या शीतल करनेवाला; संताप, क्लेश आदि दूर करनेवाला; पुं. खेत चौरस करनेवाला 'हेंगा'।

सिरावृत्त पुं. सीसा।

सिरियारी *स्त्री.* सुसना का साग।

सिरिता पुं. सरिश्ता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिरी *स्त्री.* {हिं. सिर} खाने के लिए मारे हुए पशु या पक्षी का सिर; सिर पर पहनने का एक गहना; *स्त्री.* = श्री (शोभा)।
सिरीखंड *पुं.* = श्रीखंड।
सिरोपाव *पुं.* {हिं. सिर + पाँव} वह पूरी पोशाक जो राज दरबार से सम्मान रूप में किसी को मिलती है, खिलअत।
सिरोमनि *वि., पुं.* = शिरोमणि।
सिरोरुह *पुं.* = सरोरुह (कमल)।
सिरोही[1] *स्त्री.* {देश.} एक प्रकार की काली चिड़िया।
सिरोही[2] *स्त्री.* सिरोही (राजपूताने का एक नगर) की बनी बढ़िया तलवार।
सिर्का *पुं.* सिरका।
सिर्फ *वि.* {अ. सिर्फ़} केवल, मात्र।
सिल *स्त्री.* {सं. शिला} शिला, पत्थर का बड़ा लम्बा, टुकड़ा; पत्थर की पटिया जिस पर मसाले आदि पीसते हैं; *पुं.* उंछ।
सिलक *स्त्री.* लड़ी, हार; *पुं.* धागा।
सिलकी *पुं.* बेल।
सिलखड़ी *स्त्री.* चिकना कोमल पत्थर जिसके बर्तन बनाये जाते हैं।
सिपलट *वि.* {सं. शिलापट्ट} चौरस, बराबर; चौपट।
सिलवट *स्त्री.* {देश.} बल, सिकुड़न।
सिलवाना *स.* सिलाना।
सिलसिला[1] *पुं.* {अ. सिक्सिलः} क्रम, बँधा हुआ तार; श्रेणी, पंक्ति; वंशवृक्ष।
सिलसिला[2] *वि.* {सं. शिशिर} आर्द्र।
सिलसिलेवार *वि.* {अ. सिल्सिलः + फा. वार} तरतीब या सिलसिले से, क्रमानुसार।
सिलह *पुं.* {अ. सिलाह} हथियार, शस्त्र।
सिलहखाना *पुं.* {अ. सिलाह + फा. खानः} हथियार रखने का स्थान, अस्त्रागार।
सिलहला *वि.* {हिं. सील या सीड़ + हिला = कीचड़} {*स्त्री.* सिलहली} (स्थान) जो इतना गीला और चिकना हो कि उस पर पैर फिसले।
सिलहारा *वि.* {हिं. सिल + हारा (प्रत्य.)} खेतों में गिरा हुआ अन्न चुनकर उससे निर्वाह करनेवाला।
सिलहिला *वि.* पैर फिसलने वाला फर्श।
सिलही *स्त्री.* चिड़िया।
सिला[1] *पुं.* {सं. शिल} कटे हुए खेतों में गिरा और बचा हुआ अन्न चुनकर निर्वाह करने की वृत्ति, शिलवृत्ति, उंछवृत्ति।
सिला[2] *पुं.* {सं. सिलः} बदला, प्रतिकार; *स्त्री.* = शिला।
सिलाई *स्त्री.* {हिं. सीना + आई (प्रत्य.)} सीने का काम, ढंग या मजदूरी।
सिलाना *स.* हिं. 'सीना' का प्रे.।
सिलापट *पुं.* {अं. स्लीपर} लकड़ी आदि का वह मोटा, चौड़ा तख्ता जो रेल की पटरी के नीचे उसके आधार स्वरूप बिछाया जाता है (स्लीपर)।
सिलाह *पुं.* {अ.} कवच; हथियार।
सिलाहबंद *वि.* {अ. सिलह + फा. बंद} सशस्त्र।
सिलाहार *वि.* सिलहारा।
सिलाही *पुं.* सैनिक; कवचधारी।
सिलिमुख *पुं.* = शिलीमुख (भौंरा)।
सिलेट *स्त्री.* काले पत्थर की पतली पटरी जिस पर लड़के लिखते हैं।
सिलौटा *पुं.* {हिं. सिल} शिला, सिल; सिल और उसका बट्टा।
सिलौआ *पुं.* सन के मोटे रेशे।
सिलौटी *स्त्री.* भाँग आदि पीसने हेतु छोटी सिल।
सिल्क *पुं.* {अ.} रेशम; रेशमी कपड़ा।
सिल्ला *पुं.* {सं. शिल} फसल कट जाने पर खेत में गिरे हुए अन्न के दाने।
सिल्ली *स्त्री.* {सं. शिला} हथियार की धार तेज करने का पत्थर, सान; पत्थर की पटिया।
सिव *पुं.* शिव।
सिवई *स्त्री.* सेवई।
सिवक *पुं.* कपड़ा सीने वाला दरजी।
सिवा के संबंधबोध. {अ. सिवा} के अतिरिक्त, के अलावा; *स्त्री.* शिव।
सिवान *पुं.* {सं. सीमांत} हद, सीमा।
सिवाय, के संबंधबोध. {अ. सिवा} के सिवा; *वि.* अधिक, ज्यादा।
सिवार *स्त्री.* {सं. शैवाल} पानी में होनेवाली एक प्रकार की लंबी घास।
सिष *स्त्री.* = शिक्षा; *पुं.* = सिक्ख।
सिष्ठ *पुं.* {सं. शिष्ट} भला, आदमी, सज्जन; साधु, महात्मा; *वि.* शिष्ट।
सिवाली *पुं.* हलके रंग का पन्ना।
सिसकना *अ.* {अनु.} सिसकी भरकर रोना, खुलकर नहीं बल्कि धीरे-धीरे रोना।
सिसकारना *अ.* {अनु. सी-सी + करना} मुँह से सीटी का-सा शब्द निकालना; सीत्कार करना।
सिसकारी *स्त्री.* {हिं. सिसकारना} सिसकारने का शब्द; सीत्कार।
सिसिर *पुं.* = शिशिर।
सिसु *पुं.* बालक।
सिसुमार *पुं.* शिशुमार; सूँस।
सिस्टि *स्त्री.* = सृष्टि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिहरन *स्त्री.* {हिं. सिरहना} सिहरने की क्रिया या भाव, सिहरी।

सिहरना *अ.* {सं. शीत + ना} शीत या भय से काँपना।

सिहरावन *स्त्री.* सिहरन।

सिहाना *अ.* {सं. समीहा} ईर्ष्या करना; लालायित होना।

उदा. मेरो भलोकि अबतें सकुचाहुँ सिहाहूँ –तुलसी।

मुग्ध होना; संतुष्ट होना; *स.* ईर्ष्या या अभिलाषा की दृष्टि से देखना।

सिहारना *स.* {देश.} तलाश करना, ढूँढ़ना; एकत्र करना जुटाना।

सिहिकना *क्रि.* सूखना।

सिहोर *पुं.* {सं. सिहुंड़} थूहर नाम का कटीला पौधा।

सींक *स्त्री.* {सं. इषीका} सरकंडा; घास आदि क पतला कड़ा डंठल; तृण; नाक की कील (गहना)।

सींकर *पुं.* सींक में लगा हुआ फूल।

सींका *पुं.* {हिं. सींक} पेड़-पौधों की बहुत पतली उपशाखा या टहनी, डाँड़ी; *पुं.* छींका।

सींकिया *पुं.* महीन कपड़ा जिसमें डोरियाँ होती हैं।

सींग *पुं.* {सं. शृंग} वे कठोर, लंबे और नुकीले अवयव जो खुरवाले पशुओं के सिर पर दोनों ओर निकलते हैं, विषाण; सिंगी नाम का बाजा।

सींगड़ा *पुं.* बारूद रखने हेतु सींग का चोंगा, सींगी।

सींगदाना *पुं.* मूँगफली।

सींगी *स्त्री.* सिंगी।

सींच *स्त्री.* सिंचाई करना।

सींचना *स.* {सं. सेचन} खेतों आदि में पानी देना; तर करना, भिगोना; छिड़कना।

सींड *पुं.* {सं. सिंहाण} नाक से निकला हुआ मल या कफ।

सींव *स्त्री.* = सीमा।

सी *वि.* {हिं. 'सा' का *स्त्री.*} सदृश।

मुहा. अपनी-सी = अपनी इच्छा या शक्ति भर, अपने मन के अनुसार; *स्त्री.* सीत्कार।

सीअर *वि.* = शीतल।

सीउ *पुं.* = शीत।

सीक *पुं.* सीत्कार।

सीकचा *पुं.* तीली, पतली-सी छड़।

सीकर[1] *पुं.* {सं.} जलकण, पानी की बूँद; बूँद, छींटा।

सीकर[2] *स्त्री.* {सं. शृंखला} जंजीर, सिक्कड़।

सीकल *स्त्री.* सिकली।

सीकस *पुं.* {सं. सिकता या सैकत} रेतीली भूमि, बलुई जमीन; ऊसर, बंजर।

सीका *पुं.* सिर पर पहनने का गहना।

सीकाकाई *स्त्री.* रीठे की फलियाँ जो बाल धोने के काम में आती हैं।

सीकी *स्त्री.* छोटा सिकहर; *पुं.* छेद।

सीकुर *पुं.* जौ आदि फसलों पर बालों के पतले शूक।

सीख *स्त्री.* {हिं. सिखाना} सिखाई जानेवाली हित की बात, शिक्षा, उपदेश; सलाह, परामर्श, मंत्रणा; *स्त्री.* सींक; सीखचा।

सीखचा *पुं.* {फा.} लोहे का लंबा छड़।

सीखन *स्त्री.* {हिं. सीख} हित के लिए बतलाई हुई बात, उपदेश, शिक्षा।

सीखना *स.* {सं. शिक्षण} ज्ञान प्राप्त करना; शिक्षा पाना, समझना।

सीगा *पुं.* {*अ.*} विभाग, महकमा।

सीगारा *पुं.* मोटा, कपड़ा।

सीझ *स्त्री.* सीझने की क्रिया।

सीझना *अ.* {सं. सिद्ध} {*भाव.* सीझ} आँच पर पकना या गलना; आग में पड़कर भस्म होना।

उदा. लै करसी प्रयाग कब सीझे–तुलसी।

सूखे हुए चमड़े का मसाले आदि में भीगकर मुलायम और टिकाऊ होना; कष्ट सहना; तपस्या करना।

सीट *स्त्री.* डींग, घमंड से भरा शब्द।

सीटना *अ.* {अनु.} बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना, शेखी मारना।

सीटी *स्त्री.* {सं. शीतृ} होंठ सिकोड़कर बाहर वायु फेंकने से निकला हुए महीन पर तेज शब्द; इस प्रकार का शब्द जो किसी बाजे आदि से निकलता है; वह बाजा जिससे उक्त प्रकार का शब्द निकले।

सीठना *पुं.* {?} विवाह आदि मंगल अवसरों पर स्त्रियों द्वारा गाए जानेवाले वे गीत जिनमें दूसरों पर कुछ व्यंग्य या अश्लील बातें होती हैं; गाली।

सीठा *वि.* {सं. शिष्ट} नीरस, फीका।

सीठी *स्त्री.* {सं. शिष्ट} चूसे या रस निचोड़े हुए फल आदि का नीरस अंश, खूद; सारहीन पदार्थ; फीकी या बची-खुची चीज।

सीड़ *स्त्री.* {सं. शीत} सीली या तर जमीन के कारण होनेवाली नमी, तरी।

सीढ़ *पुं.* सीड़।

सीढ़ी *स्त्री.* {सं. श्रेणी} ऊँचे स्थान पर चढ़ने का वह उपकरण या साधन जिसमें एक के बाद एक पैर रखने के स्थान बने हों, निसेनी, पैड़ी,

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीना; ऐसे मार्ग या साधन में बना हुआ पैर रखने का प्रत्येक स्थान या डंडा।

सीत *वि.* {सं. शीतल} शीतल, ठंडा; सुस्त, धीमा; *पुं.* = शीत।

सीतकर *पुं.* {सं. शीत + कर} चंद्रमा।

सीतल *वि.* = शीतल।

सीतला *स्त्री.* शीतला।

सीतलपाटी *स्त्री.* {सं. शीतल + हिं. पट} एक प्रकार की बढ़िया पतली चटाई।

सीता *स्त्री.* {सं.} भूमि जोतने पर हल की फाल से पड़ी हुई रेखा, कूँड़; जानकी (राजा जनक की कन्या, राम की पत्नी); पिंगल में एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, तगण, मगण, रगण होते हैं।

सीताफल *पुं.* {सं.} शरीफा; कुम्हड़ा।

सीताहार *पुं.* एक तरह का पौधा।

सीतिनक *पुं.* मटर, दाल।

सीत्कार *पुं.* {सं.} पीड़ा या आनंद, विशेषत: स्त्री-संभोग के समय मुँह से निकलनेवाला सी-सी शब्द, सिसकारी।

सीथ *पुं.* {सं. सिक्थ} अन्न का दाना; पके या भुने हुए अन्न का दाना; जूठन।

उदा. साधुन के पनवारे चुनि-चुनि उदर, पोषिए सीथिन—**हरिराम व्यास**।

सीद *पुं.* {सं. शीद्} कष्ट, पीड़ा।

सीदना *अ.* {सं. सीदति} दुख पाना; नाश होना, नष्ट होना।

सीध *स्त्री.* {हिं. सीधा} सीधे होने की दशा या भाव, सीधापन; सीधी रेखा या दिशा; लक्ष्य, निशाना।

सीधा[1] *वि.* {सं. शुद्ध} {*स्त्री.* सीधी, *भाव.* सीधापन} जो टेढ़ा न हो, सरल, ऋत्; जो ठीक लक्ष्य की ओर हो; जो चतुर न हो, भोला; शान्त और सुशील; सहज, आसान, सुगम; दाहिना, दक्षिण; *पुं.* सामने का भाग (ऑबवर्स)।

सीधा[2] *पुं.* {सं. असद्धि} बिना पका हुआ अन्न।

सीधि *स्त्री.* = सिद्धि।

सीधे *क्रि. वि.* {हिं. सीधा} सामने की ओर; बिना बीच में रुके या मुड़े; शिष्ट व्यवहार से, अच्छी तरह से।

सीना[1] *स.* {सं. सीवन} कपड़े आदि के टुकड़ों को रुई-तागे से जोड़ना, टाँका लगाना।

सीना[2] *पुं.* {फा.} छाती, वक्षस्थल।

सीनातोड़ *पुं.* मल्लयुद्ध करने का दाँव।

सीनाबाँह *पुं.* एक तरह की कसरत।

सीप *स्त्री.* {सं. शक्ति, प्रा. सुत्ति} शंख आदि की तरह कड़े आवरण में रहनेवाला एक जलजंतु, सीपी; समुद्री सीप का सफेद चमकीला आवरण जिससे बटन आदि बनते हैं।

सीपज *पुं.* मोती।

सीपति *पुं.* = श्रीपति (विष्णु)।

सीपर *पुं.* सिपर (ढाल)।

सीपा *पुं.* {देश.} कड़ा जाड़ा।

सीपिया[1] *पुं.* {हिं. सीप?} एक प्रकार का बड़ा और बढ़िया आम।

सीपिया[2] *पुं.* {*अ.*} एक प्रकार का गहरा भूरा रंग जो कुछ पीलापन लिए होता है।

सीपी *स्त्री.* {हिं. सीप} सीप नामक जंतु का आवरण या सम्पुट।

सीबी *स्त्री.* {अनु. सी-सी} स्त्रियों का संभोग के समय का सीत्कार, सिसकारी।

सीमंत *पुं.* {सं.} स्त्रियों के सिर की माँग; सीमंतोन्नयन।

सीमंतकर्म *पुं.* सीमंतोन्नयन।

सीमंतिनी *स्त्री.* महिला, नारी।

सीमंतोन्नयन *पुं.* {सं.} हिन्दुओं के दस संस्कारों में से तीसरा जो गर्भाधान के चौथे, छठे या आठवें महीने होता है।

सीम *स्त्री.* {सं. सीमा} सीमा, हद।

सीमांकन *पुं.* {सं.} सीमा को अंकित करने का कार्य।

सीमांकित *वि.* {सं.} जिसका सीमांकन हो चुका हो।

सीमांत *पुं.* {सं.} वह स्थान जहाँ सीमा का अंत होता हो (फ्रांटियर)।

सीमांतिक *वि.* {सं.} सीमांत से संबंध रखनेवाला, सीमांत-संबंधी; *पुं.* सीमाशुल्क।

सीमा *स्त्री.* {सं.} किसी प्रदेश या स्थान के चारों ओर के विस्तार की अंतिम रेखा या स्थान, हद, सरहद (बाउंडरी)।

मुहा. सीमा बंद करना = ऐसी राजनीतिक व्यवस्था करना कि देश की सीमा पर से आदमियों और माल का आना-जाना रुक जाए।

वह अंतिम स्थान जहाँ तक कोई बात या काम हो सकता हो या होना उचित हो, नियम या मर्यादा की हद (लिमिट)।

मुहा. सीमा से बाहर जाना = उचित से अधिक बढ़ जाना। (निषिद्ध)

सीमाचिह्न *पुं.* {सं.} सीमा का सूचक चिह्न।

सीमातिक्रमण *पुं.* सीमा का उल्लंघन।

सीमातिबंध *पुं.* नियम, मर्यादा।

सीमाधिप *पुं.* सीमा-अध्यक्ष।

सीमापुलिस *स्त्री.* {सं. सीमा = शुल्क} वह शुल्क जो देश की सीमा पर बाहर से आनेवाले

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और देश से बाहर जानेवाले पदार्थों पर लगता है (कस्टम ड्यूटी)।

सीमेंट पुं. {अ.} मटमैले रंग का एक विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ मसाला जो आजकल इमारतों की जोड़ाई में काम आता है।

सीमोल्लंघन पुं. {सं. सीमा + उल्लंघन} किसी निश्चित सीमा या मर्यादा के बाहर जाना, मर्यादा के विरुद्ध कार्य करना; किसी राज्य पर आक्रमण आदि करने के लिए अपनी सीमा पार करके उसकी सीमा में पहुँचना।

सीय[1] *स्त्री.* {सं. सीता} जानकी।

सीय[2] *वि.* {सं. शीतल} ठंडा; पुं. = शीत।

सीयन *स्त्री.* सीथन।

सीयरा *वि.* सियरा।

सीर[1] पुं. {सं.} हल, सूर्य।

सीर[2] *स्त्री.* {सं. सीर = हल} साझा, शराकत; किसी के साझे में जमीन जोतने-बोने की रीति; इस प्रकार जोती-बोई जानेवाली जमीन; वह जमीन जो जमींदार स्वयं अथवा किसी असामी के साझे में जोतता हो; संबंध, लगाव।

सीर[3] *वि.* {सं. शीतल} ठंडा, शीतल।

सीर[4] पुं. {सं. शीर्ष} ऊपरी भाग; सिर।

सीरक पुं. {सं. सीरा} ठंडा करनेवाला।

सीरदार पुं. {हिं. सीर + फा. दार} {*भाव.* सीरदारी} वह भूमिधर (पुराना जमींदार) जो अपनी भूमि किसी असामी के साझे में जोतता-बोता हो और जिस पर उसे स्थायी वंशानुक्रमिक अधिकार प्राप्त हो।

सीरदारी *स्त्री.* {हिं. सीरदार} 'सीरदार' का काम, पद या भाव।

सीरधर पुं. बलराम, हलधारी।

सीरन पुं. बच्चों का पहनावा।

सीसी *स्त्री.* मिठाई चढ़ाना।

सीरपति पुं. किसान।

सीरपाणि पुं. हलधर, बलदेव।

सीरध्वज पुं. {सं.} राजा जनक।

सीरा[1] पुं. {फा. शीर:} घुली हुई चीनी पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस, चासनी।

सीरा[2] *वि.* {सं. शीतल} {*स्त्री.* सीरी} ठंडा शीतल; शांत; मौन, चुप।

सीरियल पुं. {अ.} धारावाहिक।

सीरोसा पुं. एक तरह की मिठाई।

सील *स्त्री.* {सं. शीतल} भूमि की आर्द्रता, सीड़, नमी; पुं. शील।

सीला[1] पुं. {सं. शिल} 'सिल्ला'; खेत में गिरे हुए दानों से निर्वाह करने की उंछवृत्ति।

सीला[2] *वि.* {सं. शीतल} {*स्त्री.* सीली} आर्द्र।

सीलिंग फैन पुं. {अ.} छत का पंखा।

सीव *स्त्री.* = सीमा।

सीवन *स्त्री.* {सं.} सीने का काम; सिलाई के टाँके; दरार, संधि।

सीवनी *स्त्री.* अंडकोष के बीच के मलद्वार तक जानेवाली रेखा।

सीवाँ *स्त्री.* = सीमा (हद)।

सीष पुं. {सं. शिष्य} चेला, शिष्य।

उदा. गुरू सीष सहित सब बूड़े अंतकाल पछिताना—**कबीर**।

पुं. शीर्ष।

सीस पुं. = सिर।

सीसक पुं. {सं.} सीसा (धातु)।

सीसताज पुं. {हिं. सीस = सिर + फा. ताज} शिकारी जानवरों की आँखें, मुँह आदि बंद रखने के लिए उन्हें पहनाई जानेवाली टोपी।

सीसत्रान पुं. सैनिकों का सिर पर बाँधनेवाला टोप।

सीसफूल पुं. {हिं. सीस + फूल} सिर पर पहनने का एक गहना।

सीसमहल पुं. = शीशमहल।

सीसल पुं. केवड़े की तरह का क्षुप।

सीसा पुं. {सं. सीसक} हल्के काले रंग की एक मूल धातु; पुं. शीशा।

सीसी *स्त्री.* {अनु.} सीत्कार; *स्त्री.* शीशी।

सीह *स्त्री.* {सं. सुगंध} महक, गंध; पुं. {*स्त्री.* सीहणी} सिंह।

सुखड़ पुं. साधुओं का एक टोला।

सुँघनी *स्त्री.* {हिं. सूँघना} सूँघने के लिए बनाई हुई तंबाकू के पत्तों की बुकनी, हुलास, नस्य।

सुँघाना *स.* {हिं. सूँघना} किसी को सूँघने में प्रवृत्त करना।

सुंड पुं. = सूँड़।

सुंड-भसुंड *वि.* = संड-भुसंड।

सुंडा *स्त्री.* = सूँड।

सुंडाल पुं. हाथी।

सुंदर *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सुंदरी, *भाव.* सुंदरता} रूपवान, खूबसूरत; मनोहर; अच्छा।

सुंदरता *स्त्री.* {सं.} सुंदर होने की अवस्था या भाव, सौन्दर्य, खूबसूरती।

सुंदरताई *स्त्री.* = सुंदरता।

सुंदराई *स्त्री.* = सुंदरता।

सुंदरी *स्त्री.* {सं.} सुंदर या रूपवती स्त्री; चार चरणों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है (इसी को द्रुत विलंबित भी कहते हैं); सवैया नामक छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आठ सगणों के बाद एक गुरु वर्ण होता है, सुखदायी।

सुँधावट *स्त्री.* सौंधापन, महक।

सुंबा *पुं.* {देश.} इस्पंज; तोप या बंदूक की गरम नली ठंडी करने के लिए उस पर फेरा जानेवाला गीला कपड़ा, पुचारा।

सु[1] *उप.* {सं.} सुंदर या श्रेष्ठ का वाचक एक उपसर्ग, जैसे सुकवि, सुकाल।

सु[2] *सर्व.* {सं. स} सो, वह।

सु[3] *विभ.* {सं. सह} तृतीया, पंचमी और षष्टी विभक्तियों का चिह्न; *वि.* = स्व (अपना); *वि.* = सम।

सुअंग *वि.* सुंदर।

सुअटा *पुं.* 'तोता' (पक्षी)।

सुअन *पुं.* {सं. सुत} पुत्र, बेटा।

उदा. बेच देह दारा सुअन, होहि दासहू मंद—**भारतेन्दु।**

सुअना *अ.* {हिं. सुअन या सं. प्रसव?} उत्पन्न होना; *पुं.* 'तोता' (पक्षी)।

सुअर *पुं.* शूकर।

सुअवसर *पुं.* अच्छा मौका।

सुआ *पुं.* {हिं. सुई} टाट या बोरे आदि सीने की बड़ी सुई।

सुआउ *वि.* {सं. सु + आयु} दीर्घायु।

सुआद *पुं.* स्वाद।

सुआना *स.* = सुलाना; *स.* हिं. 'सूना' (प्रसव करना) का प्रे.।

सुआमी *पुं.* = स्वामी।

सुआर *पुं.* = रसोइया।

सुआसिनी *स्त्री.* {सं. सुवासिनी} स्त्री, विशेषतः पास रहनेवाली स्त्री, सहचरी, सधवा, सुहागिन।

सुआहित *पुं.* {?} तलवार चलाने का एक प्रकार का ढंग।

सुई *स्त्री.* {सं. सूची} लोहे का वह पतला उपकरण जिसके छेद में धागा पिरोकर कपड़ा सीते हैं; किसी विशेष परिणाम, अंक, दिशा आदि का सूचक तार या काँटा, जैसे घड़ी की सुई; पौधे का छोटा पतला अंकुर; चिकित्सा-क्षेत्र में नली के आकार का एक प्रसिद्ध छोटा उपकरण, जिसकी सहायता से कुछ तरल दवाएँ शरीर की रगों या पट्ठों में पहुँचाई जाती हैं, पिचकारी (सीरिंज); उत्तम उपकरण से शरीर की रगों या पट्ठों में तरल औषध आदि पहुँचाने की क्रिया।

सुईकारी *स्त्री.* {हिं. सुई + फा. कारी (किया हुआ काम)} कपड़े पर सुई और डोरे की सहायता से (तीलीकारी से भिन्न) बनाए हुए बेल-बूटे आदि, सूचीशिल्प (नीडलवर्क)।

सुकंठ *वि.* {सं.} जिसकी गरदन सुंदर हो; जिसका स्वर मधुर हो; *पुं.* सुग्रीव।

सुक *पुं.* सुग्गा, सिरस का पेड़।

सुकचाना *अ.* = संकोच करना।

सुकड़ना *अ.* = सिकुड़ना।

सुकनासा *वि.* {सं. शुक + नासिका} तोते की चोंच के समान सुंदर नाकवाली (स्त्री)।

सुकर *वि.* {सं.} {*भाव.* सुकरता} जो सहज में किया जा सके; सुगम, सहज।

सुकरता *स्त्री.* {सं.} 'सुकर' का भाव, सुगमता, सुभीता (फैसिलिटी)।

सुकरात *पुं.* {अ.} मशहूर यूनानी दार्शनिक।

सुकरित *पुं.* 'सुकृत'।

सुकर्म *पुं.* {सं.} {*वि.* सुकर्मी} उत्तम या अच्छा काम, सत्कर्म।

सुकर्मी (र्मिन्) *वि.* {सं.} सत्कर्म करनेवाला।

सुकल *पुं.* = शुल्क।

सुकल्प *वि.* बहुत निपुण।

सुकल्पित *वि.* अच्छी प्रकार सोचा हुआ।

सुकवना *अ.* {?} अचम्भे में होना, चकित होना।

सुकवाना *स.* {?} अचम्भे में डालना, चकित करना; *अ.* = सुकवना (चकित होना)।

सुकवि *पुं.* {सं.} अच्छा कवि।

सुकाज *पुं.* अच्छा काम।

सुकाना *स.* सुखाना।

सुकाल *पुं.* {सं.} अच्छा समय; सस्ती का समय, 'अकाल' का विरुद्धार्थक।

सुकिज *पुं.* अच्छा काम।

सुकित *पुं.* = सुकृत (अच्छा कार्य)।

सुकिया (कीउ) *स्त्री.* 'स्वकीया'।

सुकी *स्त्री.* सुग्गी, तोते की मादा।

सुकुआर *वि.* = सुकुमार।

सुकुति *स्त्री.* {सं. शुक्ति} सीप।

सुकुमार *वि.* {सं.} {स्त्री सुकुमारी.} {*भाव.* सुकुमारता} कोमल अंगोंवाला; कोमल; *पुं.* कोमलांग बालक; कोमल अक्षरों या शब्दों से युक्त काव्य।

सुकुमारा *स्त्री.* चमेली, मालती।

सुकुल *पुं.* {सं.} उत्तम कुल; कुलीन व्यक्ति; 'शुल्क'।

सुकुवार *वि.* {*स्त्री.* सुकुवारी} सुकुमार।

सुकृत *पुं.* {सं.} पुण्य; सत्कर्म; *वि.* भाग्यवान; धर्मशील।

मुहा. सुकृत मनाना = अपने सत्कर्मों को इस अभिप्राय से मनाना कि संकट से रक्षा हो।

उदा. लगी मनावन सुकृत, हाथ कानन पर दीने—**रत्ना.।**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुकृति *स्त्री.* {सं.} अच्छा कार्य *पुं.* अच्छा काम करनेवाला व्यक्ति।

सुकृती *पुं.* {सं.} वह जो सुकृत करता हो; धर्मात्मा, पुण्यवान व्यक्ति; भाग्यवान व्यक्ति।

सुक्की *वि.* {सं. स्वकीय} अपना।

उदा. ए वार सुर बंटहु नहीं बंधि लेहु सुक्की बधुआ—**चन्दबरदाई।**

सुक्रित *वि.* = सुकृत; *पुं.* = सुकृत।

सुकेत *पुं.* सूर्य, भास्कर।

सुकेश *स्त्री.* सुंदर बालोंवाली स्त्री।

सुकेशी *स्त्री.* अप्सरा का नाम।

सुखंडी *स्त्री.* {हिं. सूखना} बच्चों का शरीर सूखने का रोग, सूखा रोग।

सुख *पुं.* {सं.} वह अनुकूल और प्रिय अनुभव जिसके सदा होते रहने की कामना हो। 'दुख' का विरुद्धार्थक।

मुहा. सुख मनाना = संतुष्ट या प्रसन्न होना; *सुख की नींद सोना* = निश्चिंत होकर रहना। आरोग्य; सरलता; जल, पानी; सवैया छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में ८ सगण और दो लघु वर्ण होते हैं; *क्रि. वि.* स्वभावतः; सुखपूर्वक।

सुख-आसन *पुं.* 'सुखासन'।

सुखकंद *वि.* = सुखदाता।

सुखकर *वि.* {सं.} सुख देनेवाला; सहज में होनेवाला, सुगम।

सुखकारक *वि.* {सं.} सुखदायक।

सुखकारी *वि.* = सुखकारक।

सुख-चाव *पुं.* {हिं. सुख + चाव = चाह} आनंद-मंगल।

सुखजीवी *वि.* {सं. सुख + जीविन्} वह जो झगड़े-बखेड़ों और परिश्रम आदि से यथासाध्य दूर रहकर, निश्चिन्ततापूर्वक और सुखपूर्वक जीवन बिताना चाहता हो।

सुखद *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सुखदा} सुख या आनंद देनेवाला, सुखदायी।

सुखदा *स्त्री.* {*स्त्री.*} स्वर्ग की वेश्या।

सुखदाता *वि.* {सं. सुखदातृ} सुखद।

सुखदानि *वि.* {हिं. सुख + दान} सुख देनेवाला, सुखद; *पुं.* = प्रियतम; *स्त्री.* 'सुन्दरी' नामक छंद का दूसरा नाम।

सुखदानी *वि.* सुखदानि।

सुखदायक *वि.* 'सुखद'।

सुखदायी *वि.* = सुखद।

सुखदेन *वि.* {*स्त्री.* सुखदेनी} = सुखद।

सुखदेव *पुं.* = शुकदेव।

सुखधाम *पुं.* {सं.} सुख का घर; बैकुंठ, स्वर्ग।

सुख-प्रसवा *स्त्री.* सुखपूर्वक, बिना कष्ट के बच्चा पैदा करनेवाली।

सुखपाल *पुं.* {सं. सुख + हिं. पाल (की)} एक प्रकार की पालकी।

सुखप्रद *वि.* = सुखद।

सुखमन *स्त्री.* = सुषुम्ना।

सुखमा *स्त्री.* सुषमा।

सुखमुख *वि.* {सं.} सुंदर बातें करनेवाला।

सुखरात्रि *स्त्री.* कार्तिक मास की अमावस।

सुखरास *वि.* {सं. सुख + राशि} सर्वथा सुखमय।

सुखलाना *स.* = सुखाना।

सुखवंत *वि.* {सं. सुखवंत्} सुखी; सुखदायक।

सुखवन *स्त्री.* {हिं. सूखना} किसी चीज के सूखने या सुखाने के कारण उसमें होनेवाली कमी या छीज।

सुखवार *वि.* {*स्त्री.* सुखवारी} 'सुखी'।

सुखसाध्य *वि.* {सं.} सहज में हो सकनेवाला, सुगम, सहज।

सुखसार *पुं.* {सं.} मोक्ष, मुक्ति।

सुख-सुविधा *स्त्री.* {सं. + हिं.} सुख और सुविधा।

सुखस्वप्न *पुं.* {सं.} प्रायः निराधार रूप से यह समझना कि हमें आगे चलकर ये-ये सुख मिलेंगे।

सुखांत *पुं.* {सं.} वह जिसका अंत सुखपूर्ण हो (काव्य, नाटक आदि)।

सुखाचार्य *पुं.* = शुकदेव।

सुखाना[1] *स.* {हिं. 'सूखना' का *स.*} गीली चीज का गीलापन दूर करने के लिए उसे धूप में या आग पर रखना; आर्द्रता दूर करना; दुर्बल बनाना।

सुखाना[2] *अ.* {हिं. सुख} अच्छा या भला लगना; शरीर के लिए सह्य या अनुकूल होना।

सुखानी *पुं.* मल्लाह।

सुखारा (री) *वि.* {हिं. सुख} सुखद; सहज, सुगम।

सुखार्थी *वि.* सुख चाहनेवाला।

सुखाला *वि.* {हिं. सुख} सुखी; सहज।

सुखावह *वि.* {सं.} सुखद; सहज।

सुखासन *पुं.* {सं.} पालकी।

सुखित *वि.* {सं.} प्रसन्न, सुखी।

सुखिता *स्त्री.* {सं.} सुखी होने की अवस्था या भाव; सुखा, आनंद, प्रसन्न।

सुखिया *वि.* 'सुखी'।

सुखी *वि.* {सं. सुखिन्} जिसे सब प्रकार के सुख हों या मिलते हों; आनंदित, प्रसन्न।

सुखनि *पुं.* एक तरह की चिड़िया।

सुखेन *क्रि. वि.* {सं.} सुखपूर्वक, सुख से; *पुं.* 'सुषेण'।

सुखैना *वि.* 'सुखद'।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख्याति *स्त्री.* {सं.} प्रसिद्धि; कीर्ति, यश।

सुगंध *स्त्री.* {सं.} {*वि.* सुगंधित} अच्छी गंध या महक, सुवास, खुशबू; वह वस्तु जिसमें से अच्छी महक निकलती हो; चंदन; *वि.* सुगंधित, खुशबूदार।

सुगंधा *स्त्री.* असवर्ग, सोंठ, सोंफ, बकुची।

सुगंधित *वि.* {सं. सुगंध} सुगंधयुक्त।

सुगत *पुं.* {सं.} महात्मा बुद्ध का एक नाम; बौद्ध।

सुगति *स्त्री.* {सं.} मरने के उपरांत होनेवाली अच्छी गति, मोक्ष।

सुगथ *वि.* {सं. सु + गंथ} सुंदर ढंग से गूँथा हुआ।

सुगना *पुं.* {सं. शुक} तोता (पक्षी)।

सुगबुग *स्त्री.* {देश.} मंद स्वर में होनेवाला विचार-विमर्श।

सुगम *वि.* {सं.} {*भाव.* सुगमता} जिसमें जाना या पहुँचना कठिन न हो; जल्दी हो सकनेवाला, सहज।

सुगर *वि.* सुघड़; सुकंठ; सुगम।

सुगाना[1] *अ.* {सं. शोक} दुखी होना; बिगड़ना, नाराज होना।

सुगाना[2] *अ.* {?} संदेह करना।

सुगीति *स्त्री.* सुंदर गान।

सुगुरा *पुं.* {सं. सुगुरु} वह जिसने अच्छे गुरु से मंत्र लिया या शिक्षा पाई हो।

सुगैया *स्त्री.* चोली (स्त्रियों की)।

सुग्गा *पुं.* {सं. शुक} तोता (पक्षी)।

सुग्राह्य *वि.* {सं.} जिसे सुगमता से ग्रहण किया जा सके।

सुग्रीव *वि.* {सं.} सुंदर ग्रीवा या गर्दनवाला।
पुं. {सं.} बानरों का राजा, राम का मित्र; इंद्र; शंख।

सुघट *वि.* {सं.} सुंदर, सुडौल; सहज में बन या हो सकनेवाला, सुगम।

सुघटित *वि.* {सं.} अच्छी तरह से बना हुआ।

सुघड़ *वि.* {सं. सुघट} {*भाव.* सुघड़ाई, सुघड़पन} सुंदर, सुडौल; हाथ के काम करने में निपुण, कुशल।

सुघड़ई *स्त्री.* {हिं. सुघड़+ई (प्रत्य.)} सुंदरता, अच्छी बनावट; चतुरता, निपुणता; षाड़व संपूर्ण जाति की एक रागिनी जो दिन के दूसरे पहर में गाई जाती है।

सुघर *वि.* सुघड़।

सुघरई *स्त्री.* = सुघड़ई।

सुघराई *स्त्री.* = सुघड़ई; एक रागिनी।

सुघरी *स्त्री.* {हिं. सु + घड़ी} अच्छी या शुभ घड़ी, शुभ समय या साइत।

सुचंग *पुं.* घोड़ा, अश्व।

सुचंद *वि.* {सं. सु + चंद ?} उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया; *पुं.* पूर्णिमा का चंद्रमा।

सुच *वि.* शुचि।

सुचना *स.* {सं. संचय} इकट्ठा करना; *अ.* इकट्ठा होना।

सुचरित्र *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सुचरित्र} उत्तम आचरण वाला, नेकचलन।

सुचर्मा *पुं.* भोजपत्र।

सुचा *स्त्री.* {सं. सूचना} सूचना; ज्ञान, चेतना; *वि.* शुचि।

सुचान *स्त्री.* {हिं. सोचना} सोचने की क्रिया या भाव; सूझ, विचार; सुझाव, सूचना।

सुचाना *पुं.* {हिं. 'सोचना' का प्रे.} सोचने में प्रवृत्त करना; दिखलाना; ध्यान आकृष्ट करना, सुझाना।

सुचार *स्त्री.* 'सुचाल'; *वि.* 'सुचारु'।

सुचारु *वि.* {सं.} {*भाव.* सुचारुता} अत्यंत सुंदर।

सुचाल *स्त्री.* {सं. सु + हिं. चाल} {*वि.* सुचाली} अच्छी चाल, उत्तम आचरण।

सुचाली *वि.* {हिं. सुचाल} अच्छे चाल-चलनवाला, सदाचारी।

सुचाव *पुं.* {हिं. सुचाना + आव (प्रत्य.)} सुझाने की क्रिया या भाव; सुझाव, सूचना।

सुचि *वि.* शुचि।

सुचित *वि.* सूचित।

सुचितई *स्त्री.* {हिं. सुचित्त} निश्चिंतता, बेफिक्री; छुट्टी, फुर्सत।

सुचित *वि.* {सं. सु + चित} (किसी काम से) निवृत्त; निश्चिंत; एकाग्र।

सुचित्र *पुं.* सुंदर चित्र।

सुचिमत *वि.* {सं. शुचि + मत्} शुद्ध आचरणवाला, सदाचारी।

सुचिमन *वि.* {सं. शुचि + मन} पवित्र मनवाला, शुद्ध हृदय।
उदा. पहिले ऐसे विवेक, ऐसे सुचि मन—**रत्ना.**।

सुचिर *वि.* {सं.} स्थायी; पुराना।

सुचेत *वि.* {सं. सुचेतस्} चौकन्ना, सतर्क।

सुच्च *वि.* {सं. शुचि} पवित्र, शुद्ध; जो खाकर जूठा न किया गया हो; जो हर तरह से बिल्कुल ठीक और निर्दोष हो; जो असली या सच्चा हो, नकली न हो, जैसे सच्चा मोती।

सुच्छंद *वि.* = स्वच्छंद।

सुच्छ *वि.* = स्वच्छ।

सुच्छम *वि.* = सूक्ष्म।

सुछंद *वि.* = स्वच्छंद।

सुजक्का *वि.* {?} {*स्त्री.* सुजक्की} सुंदर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदा. उज्जल दन्तिय अठ्ठ, बीस सुर ढाल सुजक्की–चन्दबरदाई।

सुजड़ी *स्त्री.* कटारी।

सुजन[1] *पुं.* {सं.} {*भाव.* सुजनता} सज्जन पुरुष, भला आदमी।

सुजन[2] *पुं.* {सं. स्वजन} परिवार के लोग।

सुजनी *स्त्री.* {फा. सोज़नी} बिछाने की एक प्रकार की बड़ी और मोटी चादर।

सुजल्प *पुं.* अच्छा, भाषण।

सुजस *पुं.* सुयश।

सुजागर *वि.* {सं. सं + जागर} प्रकाशमान; सुंदर।

सुजात *वि.* {सं.} अच्छे कुल में उत्पन्न; सुंदर।

सुजान *वि.* {सं. सज्ञान} {*भाव.* सुजानपन} बुद्धिमान, चतुर, होशियार; निपुण, कुशल; सज्जन।

सुजानी *वि.* ज्ञानी, पंडित।

सुजीवित *पुं.* सुखी जीवन।

सुजोग *पुं.* = सुयोग।

सुजोधन *पुं.* दुर्योधन।

सुजोर *वि.* {सं. सु + फा. जोर} दृढ़, पक्का; बलवान।

सुज्ञ *वि.* {सं.} सविज्ञ, विद्वान।

सुझाना *स.* {हिं. सूझना का प्रे.} दूसरे की सूझ या ध्यान में लाना, दिखाना।

सुझाव *पुं.* {हिं. सुझाना + आव (प्रत्य.)} सुझाने की क्रिया भाव; जिस बात की ओर किसी का ध्यान न गया हो, उसकी ओर उसका ध्यान दिलाना; इस प्रकार ध्यान दिलाने के लिए कही हुई बात, प्रस्ताव, सूचना (सजेशन)।

सुटकुन *स्त्री.* {हिं. सटकना} छोटी पतली छड़ी।

सुटुकना *अ.* {अनु.} चुपचाप या धीरे से चल देना, खिसक जाना; सिकुड़ना; *स.* = सुरकना।

सुठ *वि.* सुठि।

सुठहर *पुं.* अच्छा स्थान।

सुठार *वि.* {सं. सुष्ठु} सुडौल, सुंदर।

सुठि[1] *वि.* {सं. सुष्ठ} सुंदर; अच्छा; बहुत।

सुठि[2] *क्रि. वि.* {सं. सुष्ठु} पूरा-पूरा, बिल्कुल।

सुठैना *वि.* सूठि।

सुठौन *वि.* सुठि।

सुड़कना *अ.* सुरकना; पी जाना।

सुड़सुड़ाना *स.* {अनु.} सुड़-सुड़ शब्द उत्पन्न करना, जैसे हुक्का सुड़सुड़ाना।

सुडौब्ल *वि.* सुंदर आकृति का।

सुडौल *वि.* {सं. सु + हिं. जौल} सुंदर डौल, आकार या बनावटवाला, सुंदर।

सुडौलपन *पुं.* {हिं. सुडौल + पन (प्रत्य.)} सुडौल होने का भाव, सब अंगों से ठीक होना, सर्वांग सुंदरता।

सुढंग *पुं.* 'सुघड़', रीति।

सुढंगी *वि.* {हिं. सुढंग + ई (प्रत्य.)} अच्छे ढंगवाला; सुंदर; उच्चकोटि का, अच्छा।

उदा. ग्रंथनि कौ औ मनुष्य प्रकृबत कौ ज्ञान सुढंगी–रत्ना.।

सुढर[1] *वि.* {सं. सु + हिं. ढलना} कृपालु।

सुढर[2] *वि.* {हिं. सु + ढार} सुडौल।

सुढार *वि.* {*स्त्री.* सुढारी} सुडौल।

सुतंत *वि.* = स्वतंत्र।

सुतंत्र *पुं.* {सं.} अच्छा तंत्र या शासन; *वि.* = स्वतंत्र।

सुतंत्रि *पुं.* बीन या दूसरे तार के बाजे विधिपूर्वक बजानेवाला।

सुत *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* सुता} पुत्र, बेटा।

सुतधार *पुं.* = सूत्रधार।

सुतप *पुं.* सूर्य, विष्णु।

सुतप्त *वि.* बहुत गरम।

सुतर *पुं.* शुतर।

सुतरां *योज.* {सं. सुतराम्} अतः, इसलिए, और भी।

सुतरी *स्त्री.* सुतली; तुरही।

सुतल *पुं.* {सं.} सात पाताल लोकों में से एक।

सुतली *स्त्री.* {हिं. सूत} सूत की बनी हुई डोरी; सन की डोरी।

सुतवाँ *वि.* सूतवाँ।

सुतहर (हार) *पुं.* = सुतार।

सुता *स्त्री.* कन्या, पुत्री।

सुतापति *पुं.* दामाद; जमाई।

सुतार[1] *पुं.* {सं. सूत्रकार} बढ़ई; कारीगर, शिल्पी।

सुतार[2] *वि.* {सं. सु + तार} अच्छा काम; *पुं.* विधा।

सुतारी *स्त्री.* {सं. सूत्रकार} चमड़ा सीने का मोचियों का सुआ; शिल्पी, कारीगर।

सुतिनी *स्त्री.* बेटेवाली।

सुतिया *स्त्री.* स्त्रियों के गले में पहननेवाला गहना।

सुती *वि.* {सं. सुतिन्} जिसे सुत या पुत्र हो, पुत्रवाला।

सुतीक्ष्ण *वि.* {सं.} बहुत तीक्ष्ण या तीखा; बहुत तेज धारवाला; *पुं.* एक ऋषि जो अगस्त्य मुनि के भाई थे।

सुतीछन *वि. पुं.* सुतीक्ष्ण।

सुतीछा *वि.* {सं. सुतीक्ष्ण} {*स्त्री.* सुतीछी} बहुत तेज धारवाला।

सुतुही *स्त्री.* सीपी।

सुथना *पुं.* सूथन, पाजामा।

सुथनी *स्त्री.* {देश.} पिंडालू, रतालू; सूथन; ढीला पाजामा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुथरा *वि.* {सं. स्वच्छ} {*स्त्री.* सुथरी, भाव, सुथरापन} स्वच्छ, साफ।

सुथराई *स्त्री.* {हिं. सुथरा} सुथरे या साफ होने का भाव, सुथरापन।

सुथरापन *पुं.* {हिं. सुथरा + पन} सुथरे या साफ होने का भाव, सफाई।

सुथरेशाही *स्त्री.* {सुथराशाह} गुरुनानक के शिष्य सुथराशाह का चलाया हुआ एक संप्रदाय; उक्त संप्रदाय का अनुयायी।

सुदत *वि.* {सं. सु + दत = दंत या दाँत} {*स्त्री.* सुदित, सुदती} सुंदर दाँतोंवाला।

सुदत्त *वि.* अच्छे उद्देश्य से दिया हुआ।

सुदरसन *वि., पुं.* = सुदर्शन।

सुदर्शन *पुं.* {सं.} विष्णु का चक्र; शिव; एक प्रकार का वृक्ष; वैद्यक में एक प्रकार का चूर्ण जिसका प्रयोग विषम ज्वर में होता है; *वि.* देखने में सुंदर, मनोरम।

सुदर्शना *स्त्री.* शुक्लपक्ष की रात; *वि.* सौंदर्यवती।

सुदामा *पुं.* {सं. सुदामन्} श्रीकृष्ण के सहपाठी और परम मित्र एक दरिद्र ब्राह्मण जिन्हें उन्होंने बहुत सम्पत्तिशाली बना दिया था।

सुदावन *पुं.* राजा जनक का सचिव।

सुदि *स्त्री.* सुदी।

सुदिन *पुं.* {सं. सु + दिन} अच्छा या शुभ दिन।

सुदी *स्त्री.* {सं. शुक्ल या शुद्ध} चांद्र मास का उजाला पक्ष (महीने के नाम के साथ जैसे चैत सुदी नवमी)।

सुदीर्घ *वि.* {सं.} बहुत लंबा।

सुदीर्घा *वि.* बहुत लंबी।

सुदूर *वि.* {सं.} बहुत दूर।

सुदृढ़ *वि.* {सं.} खूब मजबूत।

सुदेव *पुं.* उत्तम देवता।

सुदेस[1] *वि.* {सं. सुदर्श} मनोहर, सुंदर।

उदा. भाँति-भाँति सुदेश केशव दुंदुभी न बजाय—**केशव**।

अच्छा, उत्तम, बढ़िया।

सुदस[2] *पुं.* {सं. सु + देश} अच्छा या उत्तम देश; *पुं.* = स्वदेश।

सुदेसी *वि.* स्वदेशी; सुदेश।

सुदेह *पुं.* सुंदर शरीर; *वि.* सुंदर।

सुद्धा *स्त्री.* {*अ.* सुद्धः} पेट से निकलनेवाला सूखा मल, कंडी।

सुद्र *पुं.* = शूद्र।

सुधंग *वि.* सुढंग।

सुध *स्त्री.* {सं. शुद्ध (स्पष्ट होना)} स्मृति, याद; चेतना, होश; खबर या हाल, पता; *स्त्री.* सुधा।

सुधना *अ.* {सं. शुद्ध} शुद्ध या ठीक किया जाना; नियमों आदि के अनुसार उपयुक्त और ठीक किया जाना; ठीक बैठना या होना।

सुधबुद्ध *स्त्री.* होश-हवास, चेतना।

सुधमना *वि.* {हिं. सुध = होश + न} जो होश में हो; सचेत, सतर्क।

सुधरना *अ.* {हिं. सु. + ढरना = ढलना} बिगड़ी हुई या सदोष वस्तु का अच्छे या ठीक रूप में आना, ठीक होना।

सुधराई *स्त्री.* {हिं. सुधरना} सुधारने या सुधरवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

सुधर्म *वि.* {सं. सुधर्मन्} अच्छे धर्मों से युक्त, अच्छे धर्मवाला; अच्छा, बढ़िया।

पुं. {सं.} अच्छा या उत्तम धर्म।

सुधांग *पुं.* चंद्रमा।

सुधांशु *पुं.* {सं.} चंद्रमा।

सुधा *स्त्री.* {सं.} अमृत; जल; दूध; पृथ्वी, धरती।

सुधाई *स्त्री.* {हिं. सीधा} सीधापन; *स्त्री.* शोधाई।

सुधाकर *पुं.* {सं.} चंद्रमा।

सुधाघट *पुं.* सुधाकर।

सुधागृह *पुं.* {सं.} चंद्रमा।

सुधा-दीधिति *पुं.* {सं.} चंद्रमा।

सुधाधर[1] *पुं.* {सं. सुधा + धर} चंद्रमा।

सुधाधर[2] *वि.* {सं. सुधा + अधर} जिसके अधरों में अमृत का-सा स्वाद हो।

सुधाना[1] *पुं.* {हिं. सुध} याद दिलाना।

सुधाना[2] *स.* {हिं. शोधना} किसी से शोधने का काम कराना; (लग्न, कुंडली आदि) ठीक करना।

सुधानिधि *पुं.* {सं.} चंद्रमा, समुद्र।

सुधापन *पुं.* {सं.} अमृत का पान।

सुधार *पुं.* {हिं. सुधारना} सुधारने या सुधारने की क्रिया या भाव; बिगड़ी हुइ बातें बनाना या ठीक करना, संस्कार (रिफॉर्म); किसी चीज को और अच्छा या अधिक उपयोगी बनाना (इम्प्रूवमेंट)।

सुधारक *पुं.* {हिं. सुधार + क (प्रत्य.)} दोषों या त्रुटियों का सुधार करनेवाला, संशोधक; धार्मिक या सामाजिक सुधार के लिए प्रयत्न करनेवाला (रिफॉर्मर)।

सुधारगृह *पुं.* {हिं. + सं.} वह स्थान जहाँ चारित्रिक दृष्टि से सुधार के लिए लोगों को रखा जाता है।

सुधारना *स.* {हिं. सु + ढार = ढालना} दोष या त्रुटि दूर करके ठीक करना।

सुधारवादी *पुं.* {हिं. सुधार + वादी} वह जो किसी विषय में सुधार करने का पक्षपाती हो।

सुधारा *वि.* सरल, सीधा।

सुधारालय *पुं.* {हिं. सुधार + सं. आलय} वह कारागार जहाँ अपराधी बालक दंड भोगने और

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ ही नैतिक दृष्टि से सुधारे जाने के लिए भेजे जाते हैं (रिफॉर्मेटरी)।

सुधासुर पुं. {सं.} राहु नामक ग्रह।

सुधि *स्त्री.* सुध।

सुधियाना *अ.* {हिं. सुधि + आना (प्रत्य.)} सुध आना, याद पड़ना; *स.* सुधि दिलाना, याद कराना।

सुधी पुं. {सं.} बुद्धिमान, समझदार; विद्वान, पंडित; *स्त्री.* अच्छी और तीव्र बुद्धि।

सुधीर *वि.* बहुत धैर्यवाला।

सुनकिरवा पुं. {हिं. सोना + किरवा = कीड़ा} एक प्रकार का कीड़ा जिसके पर चमकीले और हरे रंग के होते हैं।

सुनक्षत्र पुं. शुभ-नक्षत्र।

सुनगुन *स्त्री.* {हिं. सुनना + अनु. गुन} वह भेद या पता जो इधर-उधर से कोई बात सुनने लगता हो; *क्रि. प्र.* लगना।

सुनत (ति) *स्त्री.* सुन्नत।

उदा. पेट न काहू बेद पढ़ाया। सुनति कराय तुरुक नहिं आया—**कबीर**।

सुनना *स.* {सं. श्रवण} कही हुई बात या शब्द का कानों से ज्ञान प्राप्त करना, श्रवण करना।

मुहा. *सुनी अनसुनी कर देना* = कोई बात सुनकर भी न सुनी हुई के समान मानना या समझना, ध्यान न देना।

किसी की बात या प्रार्थना पर ध्यान देना; अपनी निंदा की बात या डाँट-फटकार श्रवण करना; विचार के लिए दोनों पक्षों की बातें अपने सामने आने देना।

सुनबहरी *स्त्री.* कुष्ठ रोग।

सुनयना *स्त्री.* {*स्त्री.*} राजा जनक की पत्नी; *वि.* सुंदर आँखोंवाली।

सुनरी *स्त्री.* {सं. सुंदरी} सुंदर स्त्री।

सुनवाई *स्त्री.* {हिं. सुनना + वाई (प्रत्य.)} सुनने की क्रिया या भाव; अभियोग आदि का विचार के लिए सुना जाना (हियरिंग)।

सुनवैया *वि.* = सुननेवाला।

सुनसर पुं. एक तरह का गहना।

सुनसान *वि.* {सं. शून्य + स्थान} जहाँ कोई न हो, निर्जन, एकांत; पुं. सन्नाटा।

सुनहरा (ला) *वि.* {हिं. सोना} {*स्त्री.* सुनहरी, सुनहली} सोने के रंग का।

सुनहा पुं. {सं. श्वान} कुत्ता; कामी (जंतु)।

सुनाई *स्त्री.* सुनवाई।

सुनाद पुं. शंख; (*वि.*) अच्छी आवाजवाला।

सुनाना *स.* हिं. 'सुनना' का प्रे.।

सुनाभ पुं. मैनाक पर्वत।

सुनाभि *वि.* {सं.} सुंदर नाभीवाला।

सुनाम पुं. {सं.} कीर्ति, यश।

सुनार पुं. {सं. स्वर्णकार} {*स्त्री.* सुनारी, *भाव.* सुनारी} सोने-चाँदी के गहने आदि बनानेवाला कारीगर (गोल्डस्मिथ)।

सुनाल पुं. {सं.} लाल कमल।

सुनावनी *स्त्री.* {हिं. सुनाना} परदेश से किसी संबंधी की मृत्यु का आया हुआ समाचार; ऐसा समाचार आने पर होनेवाला स्नान, शोक आदि।

सुनाहक *क्रि. वि.* नाहक।

सुनाही पुं. {देश.} एक प्रकार का घोड़ा।

सुन्न *वि.* {सं. शून्य} (अंग) जिसकी चेष्टा या चेतना कुछ समय के लिए बिल्कुल सुन्न हो गई हो, स्पन्दनहीन, निश्चेष्ट; शून्य; पुं. सुन्ना; शून्य।

सुन्नत *स्त्री.* {*अ.*} लिंगेन्द्रिय के अगले भाग का चमड़ा काटने की कुछ धर्मों की रस्म, खतना, मुसलमानी (सरकमसीजन)।

सुन्ना पुं. {सं. शून्य} शून्य की सूचक गोल बिंदी, सिफर (साइफर, जीरो)।

सुन्नी पुं. {*अ.*} मुसलमानों का एक संप्रदाय।

सुन्नैया *वि.* = सुननेवाला।

सुपच पुं. श्वपच; डोम।

सुपटु पुं. {सं.} वह जो किसी विषय का बहुत अच्छा ज्ञाता अथवा किसी विषय में बहुत पटु हो (एक्सपर्ट)।

सुपत *वि.* {हिं. सु + पत = प्रतिष्ठा} प्रतिष्ठित।

सुपत्रा *स्त्री.* सतावर, पालक का साग।

सुपथ पुं. {सं.} उत्तम या अच्छा पथ।

सुपन पुं. स्वप्न।

सुपनाना पुं. {हिं. सुपना} स्वप्न दिखाना।

सुपर्ण पुं. गरुड़, मुरगा, गंधर्व, नागकेशर, विष्णु।

सुपर्णा *स्त्री.* गरुड़ की माता, पद्मिनी।

सुपर्णी *स्त्री.* अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

सुपर्व पुं. {सं.} देवता।

सुपात्र पुं. {सं.} दान, शिक्षा आदि लेने या कोई काम करने के लिए कोई योग्य या उपयुक्त व्यक्ति, अच्छा पात्र।

सुपारी *स्त्री.* {सं. सुप्रिय} एक विशेष वृक्ष के छोटे गोल फल जो काटकर पान के साथ खाए जाते हैं।

सुपास पुं. {देश.} {*वि.* सुपासी} सुख, आराम; सुविधा।

सुपुत्र पुं. {सं.} {*स्त्री.* सुपुत्री} अच्छा और योग्य पुत्र।

सुपुष्ट *वि.* {सं.} बहुत मजबूत हो।

सुपुष्प *वि.* जिसमें सुंदर पुष्प लगे हों।

सुपूत *वि.* अति पवित्र; पुं. अच्छा बेटा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुपेत *वि.* सफेद।
सुपेती *स्त्री.* सफेदी; सुपेदी।
सुपेद *वि.* सफेद।
सुपेदी *स्त्री.* {फा. सफेदी} सफेदी, उज्ज्वलता; बिछौना, बिस्तर; तोशक, गद्दा; रजाई या लिहाफ।
सुप्त *वि.* {सं.} {*भाव.* सुप्ति} सोया हुआ, निद्रित; जिसकी क्रिया या चेष्टा रुकी हुई हो (डारमेंट)।
सुप्ति *स्त्री.* {सं.} सोए रहने की अवस्था, निद्रा।
सुप्रतिष्ठा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* सुप्रतिष्ठित} अच्छी प्रतिष्ठा या इज्जत।
सुप्रतिष्ठित *वि.* {सं.} जिसकी बहुत प्रतिष्ठा हो, इज्जतदार।
सुप्रसिद्ध *वि.* {सं.} बहुत प्रसिद्ध।
सुफल *पुं.* {सं.} अच्छा फल या परिणाम; *वि.* {*स्त्री.* सुफला} सुंदर फलवाला; सफल।
सुफला *स्त्री.* कुम्हड़ा, मुनक्का; *वि.* सुंदर फल देनेवाली।
सुफलक *पुं.* {सं.} अक्रूर यादव के पिता का नाम।
सुबल *पुं.* **शकुनि का पिता और धृतराष्ट्र का ससुर।**
सुबरन *वि.* {सं. सु. + वर्ण} सुंदर रंगवाला; *पुं.* = स्वर्ण (सोना)।
सुबस *वि.* {सं. स्व + वश} जो अपने वश या अधिकार में हो; *क्रि. वि.* अपने अधिकार या वश में।
सुबह *स्त्री.* {*अ.*} प्रातःकाल, सबेरा।
सुबहान अल्ला *पद.* {*अ.*} एक अरबी पद जिसका अर्थ है–ईश्वर धन्य है।
सुबास[1] *स्त्री.* सुगंध।
सुबास[2] *पुं.* {सं. स्ववास} ईश्वर का निवास स्थान अर्थात् ब्रह्मलोक।
सुबासना *स.* {सं. सुवास} सुगंधित करना।
सुबाहु *वि.* सुंदर बाहुवाला; *पुं.* एक दानव, शत्रुघ्न का पुत्र, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।
सुबिस्ता *पुं.* = सुविधा।
सुबुक *वि.* {फा.} हलका; सुंदर; *पुं.* एक प्रकार का घोड़ा।
सुबुद्धि *वि.* {सं.} बुद्धिमान; *स्त्री.* अच्छी बुद्धि।
सुबूत *पुं.* सबूत; प्रमाण।
सुबेद *वि.* {सं. सुवेद्य} अच्छी तरह जानने योग्य। *उदा.* स्याम सुबेद कौ सार है–**सहचरिशरण।**
सुबोध *वि.* {सं.} अच्छी बुद्धिवाला, समझदार; (विवेचन आदि) जो सब लोग सहज में समझ सकें।
सुबोधिनी *स्त्री.* सद्ज्ञानवाली।
सुब्रह्मण्य *पुं.* **दक्षिण भारत में कार्तिकेय का नाम।**
सुभंग *पुं.* नारियल का पेड़।
सुभ *वि.* = शुभ।
सुभग *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सुभगा, *भाव.* सुभगता} सुंदर, मनोहर; भाग्यवान; प्रिय, प्यारा; सुखद।
सुभगा *स्त्री.* {सं.} सुंदर स्त्री; सौभाग्यवती स्त्री; अपने पति को परम प्रिय स्त्री।
सुभट *पुं.* {सं.} बड़ा योद्धा।
सुभद्रा *स्त्री.* {सं.} श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की पत्नी।
सुभर[1] *वि.* = शुभ्र।
सुभर[2] *वि.* {हिं. सु + भरना} अच्छी तरह भरा हुआ।
सुभाई (उ) *पुं.* = स्वभाव; *क्रि. वि.* सहज भाव से; स्वभावतः बहुत सहज में।
सुभाग *पुं.* {*वि.* सुभागी} = सौभाग्य।
सुभागा *वि.* = भाग्यवान।
सुभागिन *वि.* = भाग्यवान।
सुभानअल्ला *पद.* सुबहान अल्ला।
सुभाना *अ.* {हिं. शोभना} शोभित होना, सुंदर जान पड़ता।
सुभानु *पुं.* श्रीकृष्ण का एक पुत्र।
सुभाय *पुं.* = स्वभाव; = सद्भाव।
सुभायक *वि.* = स्वाभाविक।
सुभाव *पुं.* = स्वभाव।
सुभाषित *वि.* {सं.} (कथन आदि) अच्छे ढंग से कहा हुआ; *पुं.* सूक्ति।
सुभाषी *वि.* {सं. सुभाषिन्} अच्छा, सुंदर या मीठा बोलनेवाला।
सुभिक्ष *पुं.* {सं.} ऐसा समय जिसमें अन्न बहुत और सस्ता हो, सुकाल।
सुभी *वि.* शुभकारिणी।
सुभीता *पुं.* {देश.} वह स्थिति जिसमें कोई काम करने में कुछ कठिनता या अड़चन न हो, सुगमता, सहूलियत; वह स्थिति जिसमें कोई काम अपेक्षाकृत। कम कठिनता से या सहज में हो सके, सुकरता (फैसिलिटी); सुअवसर, सुयोग।
सुभीरु *वि.* बहुत डरपोक।
सुभोग्य *वि.* अच्छी तरह भोगने योग्य।
सुमंगला *स्त्री.* एक अप्सरा।
सुमंगली *स्त्री.* {सं. सुमंगल} वह दक्षिणा जो विवाह में सप्तपदी के बाद पुरोहित को दी जाती है।
सुमंत *पुं.* = सुमंत्र।
सुमंत्र *पुं.* {सं.} राजा दशरथ का एक सखा जो उनका मंत्री और सारथी था।
सुमंत्रित *वि.* {सं.} (व्यक्ति) जिसे अच्छी मंत्रणा दी गई हो; आचरण या कार्य जिसके संबंध में

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी सलाह या शुभ परामर्श मिला हो (वेल ऐड्वाइज्ड)।

सुमंदर पुं. {सं.} सरसी नामक छंद का दूसरा नाम, विशेष सरसी।

सुम पुं. {फा.} गौ, घोड़े आदि चौपायों का खुर, टाप।

सुमत *स्त्री.* = सुमति।

सुमति *स्त्री.* {सं.} अच्छी बुद्धि; आपस का मेल-जोल; *वि.* बुद्धिमान; पुं. भरत के एक पुत्र का नाम।

सुमद *वि.* मतवाला, मदोन्मत्त।

सुमधुर *वि.* {सं.} बहुत मीठा।

सुमन पुं. {सं. सुमनस्} देवता; विद्वान; फूल, पुष्प; *वि.* सहृदय; सुंदर।

सुमनस पुं. {सं. सुमनस्} देवता; विद्वान; महात्मा; फूल; *वि.* प्रसन्नचित्त।

सुमनित¹ *वि.* {सं. सु + पणि} अच्छी मणियों से जड़ा या युक्त।

सुमनित² *वि.* {सं. सुमन} जिसमें फूल लगे हों, फूला हुआ (पौधा या वृक्ष)।

सुमनोहर *वि.* बहुत सुंदर।

सुमरन पुं. = स्मरण।

सुमरना *स.* {सं. स्मरण} स्मरण करना; जपना (नाम)।

सुमरनी *स्त्री.* {हिं. सुमरना} जप करने की सत्ताइस दानों की छोटी माला।

सुमान्य *वि.* {सं.} विशिष्ट रूप से मान्य और प्रतिष्ठित; पुं. कलकत्ते, बम्बई आदि बड़े नगरों में एक विशिष्ट अवैतनिक सम्मानित राजपद जिस पर नियुक्त होनेवाले लोगों को शांति, रक्षा और न्याय विभाग के कुछ विशिष्ट कार्य करने पड़ते हैं; इस पद पर नियुक्त होनेवाला व्यक्ति।

सुमार्ग पुं. {सं.} ऐसा अच्छा और साफ रास्ता या सड़क जिस पर चलने में कोई बाधा या कठिनता न हो (थॉरोफेयर); नैतिक दृष्टि से अच्छा और प्रशंसनीय मार्ग या रास्ता।

सुमाली पुं. एक राक्षस जिसकी कन्या कैकसी के गर्भ से रावण, कुंभकरण आदि उत्पन्न हुए थे।

सुमित्रा *स्त्री.* {सं.} राजा दशरथ की एक रानी जिनसे लक्ष्मण और शत्रुघ्न उत्पन्न हुए थे।

सुमिरना *स.* सुमरना।

सुमिल *वि.* {हिं. सु + मिलना} जो सहज में मिल सके या मिला हो; जिसका किसी के साथ ठीक मेल बैठे, उपयुक्त; मेल-जोल या स्नेह का संबंध रखनेवाला।

सुमुख *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सुमुखी} सुंदर मुखवाला; पुं. गणेश; शिव; गरुड़।

सुमुखी *स्त्री.* {सं.} सुंदर मुखवाली स्त्री, सुंदरी; पिंगल में एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में सात जगण, एक लघु और एक गुरु होता है, इसे 'मानिनी' और 'मल्लिका' भी कहते हैं।

सुमेधा *स्त्री.* मालकँगनी।

सुमेरु पुं. {सं.} कल्पित पर्वत जो पुराणों में सब पर्वतों का राजा और सोने का कहा गया है; जप करने की माला में ऊपरवाला दाना; उत्तरी ध्रुव; पिंगल में एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में 19 मात्राएँ होती हैं, अंत में यगण होता है, 12 मात्राओं पर यति होती है तथा पहली, आठवीं और पन्द्रहवीं मात्राओं का लघु होना आवश्यक होता है; *वि.* सबसे अच्छा, सर्वश्रेष्ठ।

सुमेरु-ज्योति *स्त्री.* मेरुज्योति।

सुम्मा पुं. बकरा।

सुम्मी *स्त्री.* सुनारों का छेद करने का यंत्र।

सुम्रति *स्त्री.* = स्मृति।

सुम्रिति *स्त्री.* = स्मृति।

सुयश पुं. {सं.} अच्छी और बहुत कीर्ति या यश।

सुयशा *स्त्री.* एक अप्सरा, परीक्षित की पत्नी का नाम।

सुयोग पुं. {सं.} अच्छा योग, सुअवसर।

सुयोग्य *वि.* {सं.} बहुत योग्य या लायक।

सुयोधन पुं. = दुर्योधन।

सुरंग¹ *वि.* {सं.} अच्छे रंग; लाल रंग का, *उदा.* रहे सुरँग रँगि उहीं, नहदी महदी नैन–बिहारी। रसपूर्ण; सुंदर; सुडौल; स्वच्छ, साफ; पुं. नारंगी; रंग के विचार से घोड़ों का एक भेद।

सुरंग² *स्त्री.* {सुरंगा} जमीन खोदकर या बारूद से उड़ाकर उसके नीचे बनाया हुआ रास्ता; बारूद आदि की सहायता से किला या उसकी दीवार उड़ाने के लिए उसके नीचे खोदकर बनाया हुआ गहरा और लंबा गड्ढा; एक प्रकार का आधुनिक यंत्र जिससे समुद्र में शत्रुओं के जहाजों के पेंदे में छेदकर उन्हें डुबाया अथवा जिसे स्थल में शत्रुओं के रास्ते में बिछाकर उनका नाश किया जाता है (माइन) सेंध।

सुरंगधातु पुं. गेरू।

सुरंगी *स्त्री.* कौआठोंठी।

सुरंग-बुहार पुं. {फा. सुरंग + हिं. बुहार (ना)} एक प्रकार का जहाज जो समुद्र में शत्रु द्वारा बिछाई हुई सुरंगें हटाकर दूसरे जहाजों के लिए आगे बढ़ने का रास्ता साफ करता है (माइन स्वीपर)।

सुर¹ पुं. {सं.} {*भाव.* सुरता} देवता; सूर्य; मुनि, ऋषि।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुर² पुं. {सं. स्वर} स्वर।
मुहा. किसी के सुर में सुर मिलाना = किसी की हाँ में हाँ मिलाना, खुशामद करते हुए किसी का समर्थन करना; *नया सुर अलापना* = कोई विलक्षण, नई या औरों से अलग तरह की बात कहना।
सुरकंत पुं. = इंद्र।
सुरक पुं. {सं. सुरेख} मत्थे पर लगाया जानेवाला एक प्रकार का तिलक जो बरछी या भाले के आकार का होता है।
उदा. हनतु तरुन मृग तिलक सर, सुरक भाल भरि तानि–**बिहारी**।
सुरकना स. {अनु.} {*भाव.* सुरक} नाक या मुँह से धीरे-धीरे सुड़सुड़ शब्द करते हुए ऊपर खींचना।
सुरकानन पुं. देवताओं के विहार-वन।
सुरकामिनी *स्त्री.* अप्सरा।
सुर-कुदाव पुं. {सं. स्वर + हिं. दाँव} धोखा देने के लिए स्वर बदलकर कही हुई बात।
सुरक्षा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* सुरक्षित} अच्छी तरह की जानेवाली रक्षा, रखवाली, हिफाजत (सिक्योरिटी)।
सुरक्षाकर्मी (मिन्) पुं. {सं.} सुरक्षा के लिए नियत कर्मचारी।
सुरक्षा-व्यवस्था *स्त्री.* {सं.} सुरक्षा के लिए की हुई व्यवस्था।
सुरक्षित *वि.* {सं.} जिसकी अच्छी तरह रक्षा की गई हो (सिक्योर्ड); जो ऐसी स्थिति में हो कि उसकी कोई हानि न हो सके; व्यासिद्ध।
सुरख *वि.* सुर्ख; लाल।
सुरखाब पुं. {फा.} चकवा (पक्षी)।
मुहा. सुरखाब का पर लगना = श्रेष्ठतासूचक विशेषता होना (व्यंग्य)।
सुरखी¹ *स्त्री.* {फा. सुर्ख} इमारत के काम में आनेवाला एक प्रकार का लाल चूर्ण या मसाला जो प्रायः ईंटें पीसकर बनाया जाता है।
सुरखी² *स्त्री.* {फा.} लाली, अरुणता; लेखों आदि का शीर्षक।
सुरग पुं. = स्वर्ग।
सुरगज पुं. {सं.} इंद्र का हाथी, ऐरावत।
सुरगा *वि.* = सरंग (सुंदर)।
सुरगाय *स्त्री.* कामधेनु।
सुरगिरि पुं. {सं.} सुमेरु पर्वत।
सुरगैया *स्त्री.* कामधेनु।
सुरचाप पुं. इंद्रधनुष।
सुरज पुं. सूर्य।
सुरजन *वि.* सुजन; चतुर।
सुरज्येष्ठ पुं. चतुरानन ब्रह्मा।
सुरझना *अ.* = सुलझना।
सुरत¹ पुं. {सं.} संभोग, मैथुन; कामकेलि।
सुरत² *स्त्री.* {सं. स्मृति} सुध, ज्ञान; ध्यान, लौ, लगन; समाधि। (क्व.)
मुहा. सुरत बिसारना = भूल जाना।
सुरत-तरंगिनी *स्त्री.* {सं.} आकाशगंगा; गंगा नदी; सरयू नदी।
सुरतरू पुं. {सं.} कल्पवृक्ष।
सुरता¹ *स्त्री.* {सं.} सुर या देवता होने का भाव, देवत्व।
सुरता² *वि.* {हिं. सुरत} चतुर, सयाना।
सुरता³ *स्त्री.* {सं. स्मृति} ध्यान; याद, स्मृति।
सुरतात पुं. देवताओं के पिता, कश्यप।
सुरति *स्त्री.* {सं.} पति-पत्नी का वह प्रेम जो काम-वासना की तृप्ति से उत्पन्न होता है. रति; *स्त्री.* सुरत; सूरत।
सुरति-कमल पुं. {सं.} हठ योग के अनुसार शरीर के अंदर के आठ कमलों या चक्रों में से अंतिम जिसका स्थान मस्तक में सहस्रार के ऊपर माना गया है।
सुरतिगोपना *स्त्री.* {सं.} साहित्य में वह नायिका जो अपनी सखियों से अपने संभोग की बात छिपाती हो।
सुरतिसंगोपना *स्त्री.* सुरतिगोपना।
सुरती *स्त्री.* {सं. सूरत (नगर)} पान के साथ या यों ही चूने के साथ खाया जानेवाला अथवा बीड़ी, सिगरेट आदि में भरकर पिया जानेवाला तंबाकू के पत्तों का चूरा।
सुरत्राता पुं. विष्णु, श्रीकृष्ण।
सुरद *वि.* {सं.} सुंदर या अच्छे दाँतोंवाला; पुं. सुहृद।
सुरदार *वि.* = सुरीला।
सुरदेवी *स्त्री.* योगमाया।
सरदार *वि.* = सुरीला।
सुरधनु पुं. {सं.} इंद्रधनुष।
सुरधाम पुं. {सं.} स्वर्ग।
सुरधामिनी *स्त्री.* {सं.} गंगा।
सुरधामी *वि.* {सं. सुरधामिन्} जो स्वर्ग में रहता हो; स्वर्गीय।
सुरधुनी *स्त्री.* {सं.} गंगा।
सुरधेनु *स्त्री.* {सं.} कामधेनु।
सुरनदी *स्त्री.* {सं.} आकाशगंगा; गंगा नदी।
सुरनाथ पुं. {सं.} इंद्र।
सुरनारी *स्त्री.* देवांगना।
सुरनाह पुं. = सुरनाथ।
सुरप (पति) पुं. = इन्द्र।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरपथ पुं. आकाश।
सुरपाल(क) पुं. {सं.} स्वर्ग।
सुरपुर पुं. अमरावती।
सुरबहार पुं. {हिं. सुर + फा. बहार} सितार की तरह का एक प्रकार का बाजा।
सुरबाला *स्त्री.* {सं.} देवता की स्त्री या कन्या, देवांगना।
सुरबेल *स्त्री.* कल्पलता।
सुरभंग पुं. {सं. स्वर + भंग} साहित्य में बोलते समय स्वर में होनेवाला वह कम्प या और कोई परिवर्तन जो प्रेम, क्रोध, भय आदि के कारण होता है और सात्विक भावों में गिना जाता है।
सुरभवन पुं. देव-निवास, सुरपुरी।
सुरभान पुं. इंद्र, सूर्य।
सुरभि *स्त्री.* पृथ्वी; गौ; कामधेनु; सुगंध, खुशबू; *वि.* सुगंधित; सुंदर; उत्तम।
सुरभित *वि.* {सं.} सुगंधित, सौरभित।
सुरभि-भक्षण पुं. {सं.} हठ योग की एक क्रिया जिसमें साधक खेचरी मुद्रा के द्वारा अपनी जीभ उलटकर तालू के मूलवाले छेद में लगाता और सहस्रार से निकलने वाला अमृत पीता है, इसे 'गोमांसभक्षण' भी कहते हैं।
सुरभी *स्त्री.* सुगंध, रुद्रजटा, चंदन।
सुरभोग पुं. अमृत।
सुरमई *वि.* {फा.} सुरमे के रंग का, हलका नीला; पुं. हल्का नीला रंग; इस रंग में रँगा हुआ कपड़ा; इस रंग का घोड़ा।
सुरमचू पुं. {फा. सुर्मः + चू (प्रत्य.)} आँखों में सुरमा लगाने की सलाई।
सुरमणि पुं. {सं.} चिंतामणि।
सुरमा पुं. {फा. सुर्मः} एक प्रसिद्ध नीला खनिज पदार्थ जिसका महीन चूर्ण आँखों में अंजन की तरह लगाते हैं।
सुरमीला *वि.* {हिं. सुरमा + ईला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* सुरमीली} जिसमें सुरमा लगा हो, जैसे सुरमीली आँखें।
सुरमेदानी *स्त्री.* {फा. सुरमः + दानी (प्रत्य.)} सुरमा रखने का एक विशेष प्रकार का लंबोतरा पात्र।
सुरम्य *वि.* {सं.} अत्यंत रम्य या मनोहर, परम सुंदर और रमणीक।
सुरयान पुं. देवताओं का रथ।
सुरयुवती *स्त्री.* अप्सरा।
सुररिपु पुं. राक्षस, दैत्य।
सुरराई पुं. = इंद्र।
सुरराज पुं. {सं.} इंद्र।
सुरराव पुं. = सुरराज (इंद्र)।
सुरल *वि.* {*स्त्री.* सुरलि, सुरली} सुरीला।
उदा. तेरी गुंजन सुरलि, मधुप, उत मधुर मुरलि धुनि–**सत्यनारायण**।
सुरली *स्त्री.* {हिं. सु + रली} सुंदर क्रीड़ा।
सुरलोक पुं. {सं.} स्वर्ग।
सुरवधू *स्त्री.* {सं.} देवांगना।
सुरवाजि पुं. {सं.} इंद्र का घोड़ा, उच्चैःश्रवा।
सुरवाणी *स्त्री.* संस्कृत भाषा।
सुरवाहन पुं. {सं.} इंद्र का हाथी, ऐरावत।
सुरवीथी *स्त्री.* नक्षत्रों का मार्ग, आकाश।
सुरशत्रुघ्न पुं. शिवजी।
सुरशयना *स्त्री.* आषाढ़ शुक्ला एकादमा।
सुरशिल्पी पुं. विश्वकर्मा।
सुरस *वि.* {*भाव.* सुरसता} सरस; स्वादिष्ट; सुंदर।
सुरसती *स्त्री.* = सरस्वती।
सुरसरि *स्त्री.* = गंगा।
सुरसा *स्त्री.* {सं.} पुराणानुसार एक राक्षसी जो सर्पों की माता मानी गई है; तुलसी, सतावर ब्राह्मी, सौंफ।
सुरसाईं पुं. = इंद्र।
सुरसुंदरी *स्त्री.* {सं.} अप्सरा; देवकन्या, देवांगना।
सुरसुता *स्त्री.* {सं.} यमुना।
सुरसुराना *अ.* {अनु.} {*भाव.* सुरसुराहट, सुरसुरी} कीड़ों आदि का रेंगना; कुलबुलाना; हल्की खुजली होना; *स.* हल्की खुजली उत्पन्न करना।
सुरसुरी *स्त्री.* {अनु.} शरीर के किसी अंग में ऐसा जान पड़ना कि कोई बहुत छोटी चीज चल या रेंग रही है; हलकी खुजली; सुनगुन।
सुरसैया पुं. = इंद्र।
सुरहर *वि.* {सं. सरल} सीधा ऊपर की ओर गया हुआ।
सुरही *स्त्री.* सोरही।
सुरहुर *वि.* = सुरहर।
सुरांगना *स्त्री.* देवांगना।
सुरा *स्त्री.* {सं.} मदिरा, शराब।
सुराकार पुं. मद्य बनानेवाला।
सुराई *स्त्री.* = शूरता।
सुराख पुं. सूराख; सुराग।
सुराग[1] पुं. {*अ.* सुराग} अपराध, षड्यंत्र आदि का गुप्त रूप से लगाया हुआ पता, टोह।
सुराग[2] पुं. {सं. सु + राग} अच्छा राग; उत्तम अनुराग।
सुरागाय *स्त्री.* {सं. सुरभि} एक प्रकार का जंगली पशु, चमरी, चौरी।
सुराज पुं. सुराज्य; स्वराज्य।
सुराज्य पुं. {सं.} अच्छा या सुखद राज्य या शासन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरानीक *स्त्री.* {सं.} देवताओं की सेना।
सुरापात्र *पुं.* मदिरा पीने का पात्र।
सुरापी *वि.* {सं. सुरापिन्} शराब पीनेवाला, मद्यप, शराबी।
सुराय *पुं.* {सं. सु + राय} अच्छा राजा।
सुरारि *पुं.* {सं.} स्वर्ण; शराब बिकने का स्थान, कलवरिया, शराबखाना।
सुरावट *स्त्री.* {हिं. सुर} स्वरों का न्यास या उतार-चढ़ाव; सुरीलापन।
उदा. मुरज वीणा वेणु आदिक बज उठे। विज्ञ वैतालिक सुरावट सज उठे–**मैथिली.।**
सुराष्ट्र *पुं.* सौराष्ट्र।
सुरासार *पुं.* {सं.} कुछ विशिष्ट पदार्थों में से भबके की सहायता से निकाला हुआ वह मादक तरल पदार्थ जो शराब बनाने तथा अनेक प्रकार की रासायनिक प्रक्रियाओं में काम आता है, फूल शराब (अलकोहल)।
सुराही *स्त्री.* {अ.} जल रखने का मिट्टी, धातु आदि का एक प्रसिद्ध पात्र।
सुराहीदार *वि.* {अ. सुराही + फा. दार} सुराही की तरह गोल और लंबोतरा, जैसे सुराहीदार मोती या गरदन।
सुरीला *वि.* {हिं. सुर + ईला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* सुरीली} बोलने, गाने आदि में मीठे स्वरवाला, सुस्वर।
सुरुख *वि.* {हिं. सु + फा. +ख} सुंदर आकृति या रूपवाला, खूबसूरत; प्रसन्न रहकर दया करनेवाला, अनुकूल।
उदा. सुरुख सुमुख एक रस एक रूप तोहि–**तुलसी।**
वि. सुर्ख।
सुरुचि *स्त्री.* {सं.} अच्छी, शिष्ट या परिष्कृत रुचि, उत्तम रुचि; *वि.* अच्छी रुचिवाला।
सुरुज *वि.* अस्वस्थ, रोगी।
सुरुति *स्त्री.* = श्रुति।
सुरूप *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सरूपा, *भाव.* सुरूपता} सुंदर; *पुं.* स्वरूप।
सुरूपा *वि.* रूपवती औरत।
सुरेंद्र, सुरेश *पुं.* {सं.} इंद्र।
सुरेश्वरी *स्त्री.* दुर्गा, लक्ष्मी।
सुरैत *स्त्री.* {अ. सुरियत} रखेल, रखेली।
सुरोचना *स्त्री.* **कार्तिकेय की एक माता।**
सुरोत्तम *पुं.* **विष्णु, सूर्य।**
सुर्ख *वि.* {फा. सुर्ख} रक्त वर्ण का, लाल; *पुं.* गहरा लाल रंग।
सुर्खरू *वि.* {फा. मि. सं. शुक्र रूप} {*भाव.* सुर्खरूई} वह जिसके मुँह पर लाली हो, अर्थात् तेजस्वी, कांतिवान; प्रतिष्ठित; सफल होने के कारण जिसके मुँह पर लाली आ गई हो या जिसके मुँह की लाली रह गई हो।
सुर्खी *स्त्री.* सुरखी।
सुर्लभ *वि.* = सुलभ। (दुर्लभ के अनु. पर)।
सुलक्षण *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सुलक्षणा} अच्छे लक्षणोंवाला; *पुं.* शुभ लक्षण, अच्छा चिह्न।
सुलक्षणी *वि.* अच्छे लक्षणवाली स्त्री।
सुलक्षणक *वि.* {सं.} अच्छे लक्षणोंवाला।
सुलग *क्रि. वि.* {हिं. सु + लगना} समीप, पास, निकट; *स्त्री.* = सुलगन।
सुलगन *स्त्री.* {हिं. सुलगना} सुलगाने की क्रिया या भाव।
सुलगना *अ.* {सं. सु + हिं. लगना} {*भाव.* सुलग, सुलगन} (लकड़ी आदि का) जलना, दहकना; अधिक दुख या संताप से दुखी होना।
सुलगाना *स.* हिं. 'सुलगना' का *स.*।
सुलग्न *पुं.* शुभ मुहूर्त।
सुलच्छन *वि.* = सुलक्षण।
सुलछ *स्त्री.* {हिं. सुलझना} सुलझने की क्रिया या भाव।
सुलझना *अ.* {सं. सुरध्य} उलझन या जटिलता दूर होना या हटना।
सुलझाना *स.* हिं. 'सुलझना' का *स.*।
सुलझाव *पुं.* = सुलझन।
सुलटा *वि.* {हिं. उलटा} {*स्त्री.* सुलटी} सीधा, 'उलटा' का विरुद्धार्थक।
सुलतान *पुं.* {फा. सुल्तान} बादशाह, महाराज।
सुलतानी *वि.* {फा. सुल्तान} सुलतान या बादशाह-संबंधी; लाल (रंग का); *स्त्री.* सुलतान का राज्य या शासनकाल; एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
सुलप[1] *वि.* स्वल्प।
सुलप[2] *पुं.* {सं. सु + आलाप} सुंदर आलाप।
सुलफ *वि.* लचीला, कोमल।
सुलफा *पुं.* {फा. सुल्फः} गाँजा, चरस आदि; तंबाकू की चिलम भरने का वह प्रकार जिसमें मिट्टी के तवे का प्रयोग नहीं होता।
सुलभ *वि.* {सं.} {*भाव.* सुलभता, सुलभत्व} सहज में प्राप्त होने या मिलनेवाला; सहज, सुगम।
सुलभा *स्त्री.* जंगली उड़द।
सुलह *स्त्री.* {अ.} मेल, मिलाप; लड़ाई या झगड़ा समाप्त होने पर होनेवाला मेल, संधि।
सुलहनामा *पुं.* {अ. सुलह + फा. नामः} वह पत्र जिस पर सुलह या मेल की शर्तें लिखी हों, संधि-पत्र।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुलाखना *क्रि.* सोने-चाँदी को तपाकर परखना।
सुलगाना *अ.* सुलगाना।
सुलाना *स.* हिं. 'सोना' का प्रे.।
सुलेख *पुं.* सुंदर लिखावट।
सुलेमान *पुं.* {फा.} {*वि.* सुलेमानी} एक सिद्ध यहूदी बादशाह जो पैगम्बर भी माना जाता है। पश्चिमी पंजाब का एक पर्वत।
सुलोम *वि.* **{सं.} जिसके रोयें सुंदर हों।**
सुव *पु.* सअन।
सुवटा *पुं.* = तोता (पक्षी)।
सुवन *पुं.* सअन; सुमन।
सुवर्ण *पुं.* {सं.} सोना, स्वर्ण (धातु); दस माशे की एक पुरानी स्वर्णमुद्रा; *वि.* सुंदर वर्ण या रंग का।
सुवस *वि.* {सं. स्व + वश} जो अपने वश या अधिकार में हो।
सुवा *पुं.* सुग्गा।
सुवाचा *स्त्री.* {सं. सुर + वाचा} मुँह से निकलने वाली अच्छी और शुभ बात।
सुवाना *स.* = सुलाना।
सुवार *पुं.* {सं. सूपकार} रसोइया।
सुवास *पुं.* {सं.} {*वि.* सुवासित} सुगंध, खुशबू; सुंदर या अच्छा घर।
सुवासित *वि.* {सं.} जो अच्छी महक से युक्त किया गया हो; सुगंधित, खुशबूदार।
सुवासिनी *स्त्री.* {सं.} सधवा (स्त्री)।
सुविचार *पुं.* {सं.} {*वि.* सुविचारी} अच्छा या उत्तम विचार या ख्याल; अच्छा न्याय या फैसला।
सुविचारी *वि.* {सं. सुविचारिन्} सूक्ष्म या उत्तम रूप से विचार करनेवाला; अच्छा फैसला करनेवाला, न्यायशील।
सुविज्ञ *वि.* {सं.} बहुत अच्छा ज्ञाता।
सुविधा *स्त्री.* {सं. सुविधि} ऐसी स्थिति जिसमें या जिसके कारण कोई सहज ढंग से हो सके।
सुविधि *स्त्री.* {सं.} काम करने की ऐसी विधि या ढंग जो सब तरह से अच्छा और पूरा हो, त्रुटिरहित विधि या ढंग (थॉरोनेस)।
सुविधितः *क्रि. वि.* {सं.} ठीक, अच्छी या पूरी तरह से (थारोली)।
सुविनीत *वि.* अत्यंत नम्र।
सुवीज *पुं.* सुंदर बीज, शिव।
सुवृत्त *वि.* **{सं.} अच्छी तरह कोई बात कहनेवाला; अच्छी-अच्छी बातें कहने या बतलानेवाला; उत्तम आचरणवाला, सदाचारी।**
सुवृक्ष *पुं.* फल-फूलों से लदा हुआ पेड़।
सुवेल *पुं.* समुद्र-किनारे एक पर्वत जहाँ श्रीराम सेना-सहित ठहरे थे।
सुवेस *वि.* {सं. सु + वेष} जिसने अच्छा वेष धारण किया हो; मनोहर, सुंदर।
सुशिक्षित *वि.* {सं.} जिसने अच्छी शिक्षा पाई हो।
सुशील *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सुशीला, *भाव.* सुशीलता} अच्छे शील या स्वभाववाला, अच्छे आचरण और व्यवहारवाला।
सुशीला *स्त्री.* राधा की एक दासी।
सुशोभन *वि.* {सं.} खूब शोभा देनेवाला; सुंदर।
सुशोभित *वि.* {सं.} अच्छी तरह शोभित और सजता हुआ, अत्यंत शोभायमान।
सुश्री *वि.* {सं.} सुंदर या अच्छी श्री से युक्त; *स्त्री.* एक आदरसूचक शब्द जो स्त्रियों विशेषतः कुमारी कन्याओं के नाम के पहले लगाया जाता है, जैसे सुश्री मालती देवी।
सुश्रुखा *स्त्री.* = सुश्रुषा।
सुश्रुत *पुं.* {सं.} आयुर्वेद के एक प्रसिद्ध प्राचीन आचार्य।
सुषमना (नि) *स्त्री.* = सुषम्ना।
सुषमा *स्त्री.* {सं.} बहुत अधिक शोभा या सुंदरता।
सुषिर *पुं.* {सं.} बाँस; अग्नि, आग; वह बाजा जो हवा के दबाव या जोर से बजता हो; *वि.* जिसमें छेद हों; खोखला, पोला।
सुषुप्त *वि.* {सं.} अच्छी तरह या गहरी नींद में सोया हुआ।
सुषुप्ति *स्त्री.* {*वि.* सुषुप्त} गहरी निद्रा; योग साधन में वह अवस्था जिसमें ब्रह्म को प्राप्त कर लेने पर भी जीव को उसका ज्ञान नहीं होता।
सुषुप्सा *स्त्री.* सोने की इच्छा।
सुषुम्ना *स्त्री.* {सं.} वैद्यक और हठयोग के अनुसार एक नाड़ी जो नाभि से आरंभ होकर मेरुदंड में से होती हुई ब्रह्मरन्ध्र तक गई है; हठ-योग में कहा गया है कि इसी के अंतर्गत वह ब्रह्म नाड़ी है जिससे चलकर कुंडलिनी ब्रह्मरन्ध्र तक पहुँचती है।
सुषेण *पुं.* {सं.} विष्णु; एक वानर जो बालि का ससुर और रावण का वैद्य था।
सुष्ट *वि.* {सं. 'दुष्ट' का अनु. या सं. सुष्ठु} {*भाव.* सुष्टता (अशुद्ध रूप)} अच्छा, भला, 'दुष्ट' का विरुद्धार्थक।
सुष्ठु *वि.* {सं.} {*भाव.* सुष्ठुता, सौष्ठव} उत्तम, अच्छा; सुंदर।
सुष्मना *स्त्री.* = सुषुम्ना।
सुसंगति *स्त्री.* {सं. सु + हिं. संगति} अच्छे आदमियों की संगत, सत्संग।
सुसंस्कार *पुं.* {सं.} उत्तम संस्कार।
सुसंस्कारी (रिन्) *वि.* {सं.} उत्तम संस्कारोंवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुसकना *अ.* = सिसकना।
सुसज्जित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सुसज्जित} अच्छी तरह सजा या सजाया हुआ।
सुसताना *क्रि.* थकान मिटाना।
सुसमय *पुं.* सुकाल, अच्छा समय।
सुसमा *स्त्री.* सुषमा।
सुसर *पुं.* ससुर।
सुसराल *स्त्री.* = ससुराल।
सुसरी *स्त्री.* {हिं. सुरसुराना} गेहूँ आदि में लगनेवाला एक प्रकार का छोटा कीड़ा।
सुलह *वि.* सहन किया जाने योग्य।
सुसा *स्त्री.* {सं. स्वसृ} बहन।
सुसाध्य *वि.* {सं.} सहज में हो सकनेवाला, सुगम।
सुसारना *स.* {सं. सु + सारण} अच्छी तरह समझाकर कहना।
सुसिद्धि *स्त्री.* {सं.} साहित्य में एक अलंकार जिसमें एक के किए हुए अच्छे कार्य का फल दूसरे को मिलने का वर्णन होता है।
सुसुकना *अ.* = सिसकना।
सुषुप्ति *स्त्री.* सुषुप्ति।
सुस्त *वि.* {फा.} {*भाव.* सुस्ती} जिसकी प्रसन्नता या उत्साह बहुत कम हो, उदास; जिसका बल या बेग घट गया हो, मंद; जो अच्छी तरह पूरा काम न कर सके, ढीला, आलसी; जिसकी गति अपेक्षाकृत मंद हो, जैसे घड़ी या गाड़ी की सुस्त चाल।
सुस्तना (नी) *स्त्री.* सुंदर स्तनवाली स्त्री, वह स्त्री जो पहली बार रजस्वला हुई हो।
सुस्ताई *स्त्री.* = सुस्ती।
सुस्ताना *अ.* {फा. सुस्त} काम करते-करते थककर विश्राम करना, थकावट मिटाने के लिए काम रोकना।
सुस्ती *स्त्री.* {फा.} सुस्त होने का भाव, शिथिलता; आलस्य।
सुस्तैन *पुं.* = स्वस्तयन।
सुस्थ *वि.* {सं.} {*भाव.* सुस्थता} भला-चंगा, निरोग, स्वस्थ; प्रसन्न खुश; अच्छी तरह बैठा या जमा हुआ।
सुस्वर *वि.* {सं.} {*भाव.* सुस्वरता} जिसके कंठ का स्वर अच्छा या मधुर हो।
सुस्वादु *वि.* {सं.} जिसका स्वाद बहुत अच्छा हो, बहुत स्वादिष्ट।
सुहँगा[1] *वि.* {हिं. 'महँगा' का अनु.} सस्ता।
सुहँगा[2] *वि.* {सं. सुगम} सहज।
सुहँगा[3] *वि.* {हिं. सु + ढंग} सुंदर।
सुहटा *वि.* {*स्त्री.* सुहटी} सुहावना।
सुहम *वि.* = सूक्ष्म।
सुहराना *स.* = सहलाना।
सुहल *वि.* = सुहेल।
सुहव *पुं.* = सूहा (राग)।
सुहा *वि.* {*स्त्री.* सुही} (लाल)।
सुहाग *पुं.* {सं. सौभाग्य} स्त्री की वह अवस्था जिसमें उसका पति जीवित हो, सधवा रहने की दशा, सौभाग्य; वे गीत जो विवाह के समय कन्यापक्ष की स्त्रियाँ गाती हैं; *पुं.* सुहागा।
सुहाग-रात *स्त्री.* {हिं. सुहाग + रात} विवाह के बाद की वह पहली रात जिसमें वर और वधू का पहले-पहले समागम होता है।
सुहागा *पुं.* {सं. सुभग} एक प्रकार का खनिज क्षार जो सोना गलाने और औषधों के काम में आता है।
सुहागिन *स्त्री.* {हिं. सुहाग} वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सधवा, सौभाग्यवती।
सुहागिल *स्त्री.* = सुहागिन।
सुहाना *अ.* {सं. शोभन} अच्छा या भला जान पड़ना, सुंदर लगना; सुशोभित होना, शोभा देना; *वि.* सुहावना।
सुहाया *वि.* = सुहावना।
सुहारी *स्त्री.* {सं. सु + आहार} पूरी नामक पकवान।
सुहाल *पुं.* मैदे से बना हुआ नमकीन पकवान।
सुहावना *वि.* {हिं. सुहाना} {*स्त्री.* सुहावनी} देखने में भला और सुंदर जान पड़नेवाला, प्रियदर्शन; *अ.* सुहावना।
सुहावन *वि.* जो देखने में भला लगे।
सुहास *वि.* सुंदर मुसकानवाला।
सुहासिनी *वि.* सुंदर हँसी हँसनेवाली।
सुहूँ *वि.* {सं. शुद्ध} शुद्ध, साफ; पूरा; ठीक।
सुहृद, सुहृद् *पुं.* {सं. सुहृत्} अच्छे और शुद्ध हृदयवाला मनुष्य; सखा, मित्र।
सुहेल *पुं.* {*अ.* सुहैल} एक कल्पित तारा, जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह यमन देश में दिखलाई देता है और इसके उदित होने पर चमड़े में सुगंध आ जाती हे, तथा कीड़े मर जाते हैं (हिन्दी के कवियों ने इसका निकलना शुभ माना है)।
सुहेलरा *वि., पुं.* सुहेला।
सुहेला[1] *वि.* {सं. शुभ?} सुहावना, सुंदर; सुख देनेवाला; *पुं.* मंगल-गीत; स्तुति।
सुहेला[2] *पुं.* {सं. सुहृद} मित्र, दोस्त; सखा, साथी।
सूँ[1] *विभ.* {सं. सह} करण और अपादान कारक का चिह्न, से (ब्रज भाषा)।
सूँ[2] *पुं.* {अनु.} किसी चीज से निकलनेवाला 'सूँ' शब्द, जैसे सुअर का सूँसूँ करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूँघना *स.* {सं. स + घ्राण} नाक के गंध का अनुभव करना, वास लेना; बहुत थोड़ा भोजन करना (व्यंग्य); (साँप का) काटना, डसना।

सूँघा *पुं.* {हिं. सूँघना} वह जो केवल सूँघकर बतलाता हो कि जमीन के नीचे इस जगह पानी या खजाना है; भेदिया, जासूस।

सूँड *पुं.* {सं. शुण्ड} हाथी का वह अगला लंबा अंग जो प्रायः जमीन तक लटकता और नाक का काम देता है, शुंड।

सूँड़ी *स्त्री.* {सं. शुंडी} अनाज या फसल में लगनेवाला एक प्रकार का सफेद कीड़ा; जलस्तंभ।

सूँतना *स.* सूतना।

उदा. यह कहि कर गहि जटा सटा लौं सूँति सटाई–**रत्ना.**।

सूँस *स्त्री.* {सं. शिंशुमार} एक प्रसिद्ध बड़ा जलजंतु, सूस।

सूँह *क्रि. वि.* {सं. सम्मुख} सामने।

सूअर *पुं.* = सुअर।

सूआ[1] *पुं.* {सं. शक} तोता।

सूआ[2] *पुं.* {हिं. सुई} बड़ी सुई।

सुई *स्त्री.* = सुई।

सूक *पुं.* 'शुक्र'।

सूकना *अ.* = सूखना।

सूकर *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* सूकरी} सुअर (जंतु)।

सूकरखेत *पुं.* शूकरक्षेत्र।

सूका *पुं.* {सं. सपादक} चार आने मूल्य का सिक्का, चवन्नी।

सूक्त *पुं.* {सं.} वेद के मंत्रों या ऋचाओं का कोई संग्रह; *वि.* अच्छी तरह कहा हुआ।

सूक्ति *स्त्री.* {सं.} उत्तम या सुंदर उक्ति, पद, वाक्य आदि।

सूक्तिक *पुं.* करताल नाक बाजा।

सूक्ष्म *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सूक्ष्मा, *भाव.* सूक्ष्मता} बहुत छोटा, पतला या थोड़ा; *पुं.* लिंग शरीर; साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी सूक्ष्म चेष्टा या सांकेतिक व्यवहार से ही अपने मन का भाव प्रकट करने का अथवा किसी के प्रश्न या संकेत का उत्तर देने का उल्लेख होता है।

सूक्ष्मजीव *पुं.* {सं.} वह जीव जिसे सूक्ष्मदर्शक यंत्र से ही देखा जा सके।

सूक्ष्मदर्शक (यंत्र) *पुं.* {सं.} वह यंत्र जिसके द्वारा देखने पर छोटी चीजें बड़ी दिखाई देती हैं।

सूक्ष्मदर्शी *वि.* {सं. सूक्ष्मदर्शिन्} {*भाव.* सूक्ष्मदर्शिता} बहुत ही सूक्ष्म या छोटी-छोटी बातें तक सोच या समझ लेनेवाला।

सूक्ष्मदृष्टि *स्त्री.* {सं.} छोटी-छोटी बातें तक सहज में समझ या देख लेनेवाली दृष्टि।

सूक्ष्मशरीर *पुं.* {सं.} वह कल्पित शरीर जो पाँच प्राणों, पाँच ज्ञानेन्द्रियों, पाँच सूक्ष्म भूतों, मन और बुद्धि के योग से बना हुआ और मनुष्य की मृत्यु के उपरांत भी बना रहनेवाला माना जाता है, लिंगशरीर।

सूक्ष्माक्ष *वि.* तेज दृष्टि।

सूक्ष्मात्मा *पुं.* शिवजी।

सूखना[1] *क्रि.* गीलापन मिटना, रसहीन होना, कमजोर होना, उदास होना।

सूखना[2] *अ.* {सं. शुष्क} नमी, रस आदि से रहित हो जाना, शुष्क होना; जल न रहना या कम हो जाना; बहुत डर जाने के कारण सन्न होना; रोग, चिंता आदि से दुबला होना।

सूखा *वि.* {सं. शुष्क} {*स्त्री.* सूखी, *भाव.* सूखापन} जिसमें जल या उसका कोई अंश न हो या रह गया हो, जैसे सूखा कपड़ा, सूखी नदी; जिसमें आर्द्रता या नमी न हो या न रह गई हो, जैसे सूखा मौसम = ऐसा मौसम जिसमें वर्षा न हो और हवा में नमी न हो; जिसमें से जीवनी शक्ति का सूचक हरापन निकल गया हो, जैसे सूखा वृक्ष; जिसमें जीवनी शक्ति बहुत कम या नहीं के समान हो, जैसे सूखा चेहरा; जिसमें भावुकता, सरसता आदि कोमल गुणों का अभाव हो (ड्राई, उक्त सभी अर्थों के लिए) विशेष 'शुष्क'; कोरा, निरा; *पुं.* पानी न बरसने की दशा या समय, अनावृष्टि (ड्रॉट); ऐसा स्थान जहाँ जल न हो, स्थल; तंबाकू का सुखाया हुआ चूरा या पत्ता; एक प्रकार की खाँसी, हब्बा-डब्बा; सुखंडी (रोग)।

सूघर *वि.* सुघड़।

सूचक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सूचिका} सूचना देनेवाला या कोई बात बतानेवाला; किसी बात के अस्तित्व के लक्षण आदि बतानेवाला, बोधक।

सूचना *स्त्री.* {सं.} {*वि.* सूचनीय, सूचित} वह बात जो किसी को किसी विषय का ज्ञान या परिचय कराने के लिए कही जाए, जताने या बताने के लिए कही हुई बात (इंफार्मेशन); वह पत्र आदि जिसपर उक्त प्रकार की कोई बात लिखी या छपी हो, विज्ञापन, इश्तहार (नोटिस); वह बात जो कोई कार्रवाई करने से पहले किसी संबद्ध व्यक्ति को पहले से सचेत करने के लिए कही जाए (इंफॉर्मेशन); दुर्घटना के संबंध में अदालती या और किसी तरह की कार्रवाई करने से पहले पुलिस या किसी और उपयुक्त अधिकारी से उसका हाल कहना (रिपोर्ट); कहीं से आनेवाले माल के साथ या उसके संबंध में आया हुआ विवरण, सूची आदि, बीजक, चलान (एडवाइस)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचनापट्ट पुं. {सं.} वह पट्ट या तख्ता जिसर सबकी जानकारी के लिए सूचनाएँ टाँगी या चिपकाई जाती हैं (नोटिस बोर्ड)।

सूचनापत्र पुं. {सं.} वह पत्र जिसपर कोई सूचना छपी या लिखी हो, विज्ञप्ति, इश्तहार (नोटिस)।

सूचनीय *वि.* सूचित करने योग्य।

सूचिका *स्त्री.* {सं.} सुई।

सूचिकाभरण पुं. {सं.} वैद्यक में एक औषध जो मरणासन्न रोगियों की चिकित्सा के लिए सुई से उनके मस्तक पर लगाते हैं।

सूचिकामुख पुं. हाथी।

सूचित *वि.* {सं.} जिसकी सूचना दी गई हो, जताया हुआ, ज्ञापित; जिसे सूचना दी गई हो, जैसे उन्हें सूचित कर दिया है।

सूची *स्त्री.* {सं.} कपड़ा सीने की सुई; सेना का एक प्रकार का व्यूह; किसी विषय की मुख्य-मुख्य बातों की क्रम से दी हुई सूची, अनुक्रमणिका (इंडेक्स); सूचीपत्र; चहारदीवारी आदि में हर दो खंभों के ऊपर आड़ा रखा जानेवाला पत्थर, तकिया; छंदशास्त्र में वह रीति जिससे यह जाना जाता है कि कुछ नियत वर्णों या मात्राओं से कितने प्रकार के छंद या वृत्त बनते या बन सकते हैं।

सूचीपत्र पुं. {सं.} वह पुस्तिका जिसमें बहुत-सी चीजों की नामावली, विवरण, मूल्य आदि लिखे हों, तालिका, सूची (कैटलॉग)।

सूचीपद्म पुं. सेना का व्यूह।

सूचीफलक पुं. {सं.} वह फलक जिसपर क्रम से बहुत-सी सूचियाँ या अनुक्रमणिकाएँ दी हों।

सूचीमुख पुं. हीरा नाम का नरक।

सूचीशिल्प पुं. {सं.} कपड़े पर सुई-डोरे से बनाए हुए बेल-बूटे, सुईकारी (नीडल वर्क)।

सूच्छम *वि.* = सूक्ष्म।

सूच्य *वि.* {सं.} सूचित करने के योग्य।

सूच्यार्थ पुं. {सं.} शब्दों की व्यंजना-शक्ति से निकलनेवाला अर्थ।

सूछदम *वि.* = सूक्ष्म।

सूजन *स्त्री.* {हिं. सूजना} सूजने की क्रिया या भाव, शोथ।

सूजना *अ.* {फा. सोज़िश} आघात, रोग आदि के कारण शरीर के किसी अंग का प्रायः पीड़ा लिए हुए फूलना, शोथ होना।

सूजा पुं. {फा. सोज़न} बड़ी सुई; पुं. = सूजन।

सूजाक पुं. {फा. सोज़ाक} मूत्रेन्द्रिय का एक रोग जिसमें उसके अंदर घाव हो जाता है।

सूजी *स्त्री.* {सं. शुचि} गेहूँ का एक विशेष प्रकार का दरदरा आटा।

सूझ *स्त्री.* {हिं. सूझना} सूझने का भाव; दृष्टि, नजर; अच्छी-अच्छी बातें ध्यान में आने का भाव, होने या आनेवाली बातों के संबंध में समझदारी; अनोखी कल्पना, उपज।

सूझना *अ.* {सं. संज्ञान} दिखाई देना; ध्यान में आना।

सूझ-बूझ *स्त्री.* {हिं. सूझना + बूझना = समझना} अच्छी बातें ध्यान में आना और समझ-बूझकर उनका उपयोग करना, दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता।

सूट पुं. {अं.} पहनने के कोट, पतलून आदि कपड़े।

सूटा पुं. तंबाकू या गाँजे का धुआँ जोर से खींचना।

सूटना *स्त्री.* {??} (हथियार) घुमाना या चलाना।

सूत[1] पुं. {सं. सूत्र} रुई, रेशम आदि का वह पतला बटा हुआ तागा जिससे कपड़ा बुनते हैं, तंतु, धागा, डोरा; किसी चीज में से निकलनेवाला इस प्रकार का तार; लंबाई नापने का एक छोटा मान; इमारत के काम में लकड़ी आदि पर निशान डालने की डोरी।

मुहा. सूत धरना या बाँधना = निशान लगाना।

सूत[2] पुं. {सं.} {*स्त्री.* सूती} प्राचीन काल की एक वर्णसंकर जाति; सारथी; भाट, चारण; पुराणों की कथा कहनेवाला, पौराणिक; सूत्रधार।

सूत[3] *वि.* {सं.} प्रसूत, उत्पन्न।

सूत[4] *वि.* {सं. सूत्र = सूत} भला, अच्छा।

सूतक पुं. {सं.} जन्म; घर में संतान होने या किसी के मरने पर परिवारवालों को लगनेवाला अशौच।

सूतकगेह पुं. सूतिकागार।

सूतकी *वि.* {सं. सूतकिन्} जिसे सूतक या अशौच लगा हो।

सूतज पुं. कर्ण का नाम।

सूतना *स.* {हिं. सूत + ना (प्रत्य.)} उस प्रकार सीधा करना जैसे लकड़ी पर निशान डालने या दीवार की सीध नापने के लिए सूत लगाया जाता है; ऊपर से नीचे की ओर हाथ फेरना, जैसे पेट सूतना; डोरे आदि पर माँझा या कलफ चढ़ाना; नोचना, खसोटना; साफ करना; सोखना, चूसना, जैसे पसीना सूतना; *अ.* सोना (शयन करना)।

सूतपुत्र पुं. कीचक, सारथि।

सूतवाँ *वि.* {हिं. सूत} (सूत से नापकर ठीक की हुई वस्तु के समान) सुडौल, जैसे–सूतवाँ नाक।

सूतिका *स्त्री.* {सं.} वह स्त्री जिसे अभी हाल में बच्चा हुआ हो, जच्चा।

सूतिकागार पुं. {सं.} वह कमरा या घर जिसमें स्त्री बच्चा जनती है, सौरी, प्रसवगृह।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूतिग *पुं.* सूतक।

सूतिमारुत *पुं.* प्रसव-पीड़ा।

सूतिमास *पुं.* महीना जिसमें किसी स्त्री के प्रसव हो।

सूती *वि.* {हिं. सूत} सूत का बना हुआ; *स्त्री.* सीपी।

सूतीघर *पुं.* सूतिकागार।

सूत्र *पुं.* {सं.} {*वि.* सूत्रित} सूत, तागा, डोरा; यज्ञोपवीत, जनेऊ; करधनी; नियम, व्यवस्था; थोड़े शब्दों में कहा हुआ वह पद या वचन जिसमें बहुत और गूढ़ अर्थ हों। वह बात जिसके सहारे किसी दूसरी बहुत बड़ी बात, घटना, रहस्य आदि का पता लगे, संकेत, पता, सुराग; वह सांकेतिक पद या शब्द जिसमें कोई वस्तु बनाने या कार्य करने के मूल सिद्धांत, प्रक्रिया आदि का संक्षिप्त विधान निहित हो; किसी कार्य या योजना के संबंध में उन अनेक बातों में से कोई, जो उस कार्य या योजना की सिद्धि के लिए सोची जाए, जैसे इस योजना के चार सूत्रों में से दो बहुत ही उपयोगी और आवश्यक हैं।

सूत्रकार *पुं.* {सं.} वह जिसने सूत्रों की रचना की हो, सूत्र-रचयिता (विशेष 'सूत्र') बढ़ई; जुलाहा।

सूत्रधर *पुं.* {सं.} नाट्यशाला का प्रधान और नाटक की व्यवस्था करनेवाला नट; बढ़ई; पुराणानुसार एक प्राचीन वर्णसंकर जाति; व्यवस्थापक या संचालक।

सूत्रधार *पुं.* = सूत्रधर।

सूत्रपात *पुं.* {सं.} किसी कार्य का प्रारंभ होना या प्रारंभ होने का पूरा आयोजन होना, नींव पड़ना।

सूत्रित *वि.* {सं.} सूत्र के रूप में लाया या बनाया हुआ (फॉरमूलेटेड)।

सूत्री *वि.* {सं. सूत्र + हिं. ई (प्रत्य.)} सूत्र-संबंधी, सूत्र का; सूत्रों से युक्त, जिनमें सूत्र हों (यौगिक के अंत में), जैसे अष्टसूत्री योजना।

सूत्रीय *वि.* {सं.} सूत्र-संबंधी, सूत्र का; जिसमें सूत्र हों जैसे अष्ट-सूत्रीय योजना।

सूथन *स्त्री.* {सं. स्वस्थाना = एक प्राचीन पहनावा} एक प्रकार का पायजामा।

सूथनी *स्त्री.* स्त्रियों का पहनने का पायजामा।

सूद *पुं.* {फा.} लाभ, फायदा; उधार दिए हुए धन के बदले में मिलनेवाला (मूल से भिन्न) धन, ब्याज, वृद्धि (इंटरेस्ट)।

सूदक *वि.* नाश करनेवाला।

सूदखोर *वि.* {फा. सूदखोर} {*भाव.* सूदखोरी} बहुत सूद या ब्याज लेनेवाला।

सूद-दर-सूद *पुं.* {फा.} वह ब्याज या सूद जो मूलधन के सिवा बाकी पड़े हुए या पुंजित सूद पर भी दिया जाता हो, चक्रवृद्धि (कम्पाउंड इंटरेस्ट)।

सूदन *वि.* {सं.} विनाश करनेवाला; *पुं.* वध करना, मार डालना।

सूदना *पुं.* {सं. सूदन} नष्ट करना।

सूदित *वि.* नष्ट किया हुआ।

सूदी *वि.* {फा. सूद} जो सूद या ब्याज पर दी गई हो, ब्याज।

सूद्र *पुं.* = शूद्र।

सूध *वि.* सीधा; शुद्ध।

सूधना *अ.* {सं. शुद्ध} सिद्ध होना; सत्य या ठीक होना।

सूधा *स्त्री.* = सीधा।

सूधी *स्त्री.* = सीधी।

सूधे *क्रि. वि.* {हिं. सूधा} सीधी तरह से।

सून *पुं.* {सं.} प्रसव, जनन; फूल की कली; फूल; पुत्र, बेटा; *वि., पुं.* शून्य; *वि.* सूना।

सूनसान *वि.* निर्जन।

सूना[1] *वि.* {सं. शून्य} {*स्त्री.* सूनी} जिसमें या जहाँ कोई न हो, निर्जन, एकांत, सुनसान; *पुं.* निर्जन स्थान, एकांत।

सूना[2] *स.* {सं. प्रसव} गर्भ से जन्म लेना, प्रसव करना।

सूना[3] *स्त्री.* {सं.} पुत्री, बेटी; कसाईखाना; गृहस्थ के यहाँ ऐसा स्थान या चीजें (चूल्हा, चक्की आदि) जिनमें या जिनसे अनजान में जीव-हिंसा होती या होने की संभावना रहती है; हत्या।

सूप *पुं.* {सं.} पकाई हुई दाल या उसका पानी; रसेदार तरकारी; रसोइया; वाण, तीर; *पुं.* छाज (अनाज फटकने का)।

सूपक *पुं.* रसोइया।

सूपकार *स्त्री.* {सं.} रसोई बनानेवाला, रसोइया, बावर्ची।

सूपनखा *स्त्री.* = शूर्पनखा (रावण की बहन)।

सूपशास्त्र *पुं.* = पाक-शास्त्र।

सूपोग *पुं.* हींग।

सूफ़ *पुं.* {सं. सूफ़} पशम, ऊन; देशी काली स्याहीवाली दवात में डाला जानेवाला लता या चिथड़ा।

सूफ़ियाना *वि.* {*अ.* सूफ़ी} सूफ़ियों का, सूफ़ी-संबंधी; देखने में सादा होने पर भी बहुत सुंदर।

सूफ़ी *पुं.* {*अ.* सूफ़ी} मुसलमानों का एक धार्मिक संप्रदाय जो अपने विचारों की उदारता के लिए प्रसिद्ध है और जिसमें साधारण मुसलमानों का कट्टरपन बिल्कुल नहीं है; इस संप्रदाय का अनुयायी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूब पुं. ताँबा।

सूबा पुं. {अ. सूबः} किसी देश का कोई भाग, राज्य, प्रदेश; सूबेदार।

सूबेदार पुं. {फा. सूबःदार (प्रत्य.)} किसी सूबे या प्रांत का प्रधान अधिकारी या शासक; सेना विभाग में एक छोटा पद; इस पद पर रहनेवाला व्यक्ति।

सूबेदारी *स्त्री.* {फा.} सूबेदार का पद या काम।

सूभर *वि.* {सं. शुभ्र} सफेद; सुंदर।

सूम *वि.* {अ. शूम} कृपण, कंजूस।

सूमति *स्त्री.* {हिं. सूम = कंजूस} कृपणता या कंजूसी।

उदा. जेती संपति कृपण कै, तेती सूमति जोर—**बिहारी**।

सूर[1] पुं. {सं.} सूर्य; आक, मदार; विद्वान; आचार्य; सुप्रसिद्ध महात्मा और कवि सूरदास के नाम का संक्षिप्त रूप; अंधा व्यक्ति।

सूर[2] पुं. {सं. शूर} बीर बहादुर; राजा या बादशाह।

पद सूर *सावंत (सामंत)* = बहुत बड़ा बहादुर, युद्ध का संचालन करनेवाला अधिकारी, नायक, सरदार।

सूर[3] पुं. {सं. शूकर} सूअर; भूरे रंग का घोड़ा।

सूर[4] पुं. {देश.} पठानों का एक वंश।

सूरकंद पुं. जमीकंद, सूरन।

सूरकांत पुं. सूर्यकांत मणि।

सूरज[1] पुं. {सं. सूर्य} सूर्य (मुहावरों के लिए 'सूर्य' के मुहा.)।

सूरज[2] *वि.* {सं. शूर + ज (प्रत्य.)} जो शूर से उत्पन्न हो, वीर की संतान।

सूरजतनी *स्त्री.* = सूर्यतनया।

सूरजभगत पुं. गिलहरी।

सूरजमुखी पुं. {सं. सूर्यमुखिन्} एक पौधा जिसके पीले रंग के फूल दिन के समय सीधे खड़े रहते और रात के समय नीचे झुके जाते हैं; एक प्रकार का शीशा जिसपर सूर्य का ताप पड़कर एक केंद्र में एकत्र होता और वहाँ ताप या अग्नि उत्पन्न करता है; बड़े पंखे के आकार का एक प्रकार का राजचिह्न; मनुष्यों के शरीर का एक विशेष प्रकार का रोगजन्य वर्ण जो यूरोपियनों आदि के वर्ण से मिलता-जुलता होता है।

सूरज-सुत पुं. सुग्रीव।

सूरज-सुता *स्त्री.* यमुना नदी।

सूरत[1] *स्त्री.* {फा.} रूप, आकृति, शक्ल।

मुहा. सूरत दिखाना = सामने आना; सूरत बनाना = अच्छा रूप देना या बनाना, नाक-भौं सिकोड़ना; सूरत बिगाड़ना = रूप, रंग आदि खराब होना, फीका पड़ना। शोभा, सौंदर्य; कार्य-सिद्धि का मार्ग या युक्ति; अवस्था, दशा, हालत।

सूरत[2] *स्त्री.* {अ. सूरः} कुरान का प्रकरण।

सूरत[3] पुं. {सं. सौराष्ट्र} गुजरात का एक प्रसिद्ध नगर; *स्त्री.* सुरत।

सूरता *स्त्री.* = सूरत।

सूरति *स्त्री.* स्मरण, सूरत।

सूरती *स्त्री.* {हिं. सूरत नगर} पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

सूरदास पुं. {सं.} व्रज भाषा के एक प्रसिद्ध और परम श्रेष्ठ कृष्णभक्त महाकवि और महात्मा जो अंधे थे।

सूरन पुं. {सं. सूरण} एक प्रसिद्ध कंद जिसकी तरकारी बनती है, जमींकंद, ओल।

सूरनखा *स्त्री.* शूर्पणखा।

सूरमल्लार पुं. {सूरदास (महात्मा) + मल्लार} सारंग और मल्लार के योग से बना हुआ एक संकर राग जो वर्षा ऋतु में दिन के दूसरे पहर में गाया जाता है।

सूरमा पुं. {सं. शूर} वीर, बहादुर।

सूरमापन पुं. शूरता।

सूरमुखी पुं. = सूर्यकांत (शीशा)।

सूरवाँ पुं. = सूरमा।

सूरसागर पुं. महाकवि सूरदास का महाकाव्य।

सूरसुता *स्त्री.* = सूर्यसुता (यमुना)।

सूराख पुं. {फा.} छेद, छिद्र।

सूरि पुं. {सं.} सूर्य; यज्ञ करानेवाला, ऋत्विज; बहुत बड़ा पंडित, दिग्गज विद्वान।

सूरी[1] *स्त्री.* {सं.} विद्वान स्त्री; विदुषी; सूर्य की पुत्री।

सूरी[2] *स्त्री.* {सं. शकूरी} सुअर नामक जंतु की मादा।

सूरी[3] पुं. {सं. शूल} भाला; पुं. सूरि; *स्त्री.* = सूली।

सूर्य पुं. {सं.} हमारे सौर जगत् का वह सबसे बड़ा और ज्वलंत पिंड जिससे सब ग्रहों को गरमी और प्रकाश मिलता है, प्रभाकर, दिनकर।

मुहा. सूर्य को दीपक दिखाना = जो स्वयं बहुत महान हो, उसे कुछ बतलाना या उसकी प्रशंसा करना; सूर्य पर थूकना = जो बहुत महान हो उसके संबंध में कोई अनुचित बात करना।

बारह की संख्या (क्योंकि सूर्य बारह माने गए हैं); बहुत बड़ा कृती।

सूर्यकांत (मणि) पुं. {सं.} एक तरह का बिल्लौर; सूरजमुखी (शीशा)।

सूर्यग्रहण पुं. {सं.} पृथ्वी और सूर्य के बीच में चंद्रमा के आ जाने और उसकी छाया पड़ने से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होनेवाला सूर्य का ग्रहण; हठयोग की परिभाषा में वह अवस्था जब पिंगला नाड़ी से होकर प्राण कुंडलिनी में पहुँचते हैं।

सूर्यतनया *स्त्री.* {सं.} यमुना।

सूर्यलोक *पुं.* {सं.} सूर्य का लोक (कहते हैं कि युद्धक्षेत्र में लड़कर मरनेवाले इसी लोक में जाते हैं)।

सूर्यवंश *पुं.* {सं.} {*वि.* सूर्यवंशी} क्षत्रियों के दो प्रसिद्ध और मूल वंशों या कुलों में से एक जिसकी उत्पत्ति सूर्य से मानी गई है (दूसरा चंद्रवंश है)।

सूर्यसुता *स्त्री.* {सं.} यमुना।

सूर्या *स्त्री.* सूर्य की पत्नी।

सूर्यालोक *पुं.* सूर्य का प्रकाश।

सूर्यावर्त *पुं.* {सं.} सिर की एक प्रकार की पीड़ा जो सूर्योदय से सूर्यास्त तक रहती है, अधकपारी, आधा-सीसी।

सूर्यास्त *पुं.* {सं.} संध्या को सूर्य का छिपना या डूबना; संध्या का समय।

सूर्योदय *पुं.* {सं.} सूर्य का उदय होना या निकलना; सूर्य निकलने का समय, प्रातःकाल, सवेरा।

सूर्योपासना *स्त्री.* {सं.} {*वि.* सूर्योपासक} सूर्य को ही सर्वश्रेष्ठ देवता और ईश्वर का प्रतीक मानकर उसकी उपासना करना।

सूल *पुं.* शूल।

सूलना *स.* {हिं. सूल + ना (प्रत्य.)} नुकीली चीज से छेदना; कष्ट देना; *अ.* नुकली चीज से छिदना; पीड़िता या व्यथित होना।

सूली[1] *स्त्री.* {सं. शूल} लोहे आदि का वह नुकीला डंडा या इसी प्रकार का और कोई उपकरण जिसपर बैठा या लेटाकर प्राचीन काल में अपराधियों को प्राणदंड दिया जाता था; प्राणदंड; फाँसी।

सूली[2] *पुं.* {सं. शूलिन्} महादेव, शिव।

सूवना *अ.* {सं. स्रवण} बहना।

सूवा *पुं.* सुग्गा।

सूस *पुं.* सूँस (जलजंतु)।

सूसमार *पुं.* शिशुमार जंतु।

सूहा *पुं.* {हिं. सोहना} एक प्रकार का लाल रंग; ओड़व-षाड़व जाति का एक राग जो दिन के दूसरे पहर के अंत में गाया जाता है; *वि.* {*स्त्री.* सूही} लाल रंग का।

सृंग *पुं.* = शृंग।

सृंगज *पुं.* = शृंगज।

सृंगारना *स.* = शृंगार करना।

सृक[1] *पुं.* {सं.} बरछा, भाला; बाण, तीर; वायु, हवा।

सृक[2] *पुं.* {सं. स्रज, स्त्रक्} माला, हार।

सृकाल *पुं.* सियार, गीदड़।

सृग *पुं.* सृक।

सृगाल *पुं.* = शृगाल।

सृजक *पुं.* {सं. सृज्} सृष्टि या रचना करनेवाला, सर्जक।

सृजन *पुं.* {सं. सृज्, सर्जन} सृष्टि या रचना करने की क्रिया; सृष्टि।

सृजनहार *पुं.* = सृष्टिकर्ता।

सृजना {सं. सृज् + हिं. ना (प्रत्य.)} सृष्टि या रचना करना, बनाना।

सृजनात्मक *वि.* = सर्जनात्मक।

सृत *वि.* {सं.} चला या खिसका हुआ।

सृति *स्त्री.* {सं.} पथ, रास्ता; गमन, चलना; सरकना, खिसकना।

सृष्ट *वि.* {सं.} जिनकी सृष्टि या रचना की गई हो, बनाया हुआ, निर्मित, रचित; छोड़ा हुआ, त्यक्त।

सृष्टि *स्त्री.* {सं.} रच या बनाकर तैयार करने की क्रिया या भाव (क्रिएशन); उत्पत्ति, जन्म; निर्माण, रचना; संसार, जगत्।

सृष्टिकर्ता *पुं.* {सं. सृष्टिकर्तृ} संसार की रचना करनेवाला (ब्रह्मा या ईश्वर)।

सृष्टिपूर्व *वि.* {सं.} जो सृष्टि के अस्तित्व से पहले का हो।

सृष्टिविज्ञान *पुं.* {सं.} वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति, बनावट और विकास का विवेचन होता है (कॉस्मोजनी)।

सेंक *पुं.* {सं. श्रेष} सेंकने की क्रिया या भाव; ताप, गरमी; शरीर के किसी रुग्न अंग पर गर्म चीज से पहुँचाई जानेवाली गर्मी, टकोर (फोमेंटेशन)।

सेंकना *स.* {सं. श्रेषण} आग पर या उसके सामने रखकर साधारण गरमी पहुँचाना, जैसे रोटी सेंकना; धूप में या गरमी पहुँचानेवाली चीज के सामने रहकर उसकी गरमी से लाभ उठाना, जैसे धूप सेंकना।

सेंगर *पुं.* पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है, बबूल का फल, अगहनिया धान, क्षत्रियों की शाखा।

सेंट *स्त्री.* {?} स्तन से निकलनेवाली दूध की धार।

सेंठा *पुं.* मूँज के सरकंडे का निचला भाग।

सेंढ़ *पुं.* एक खनिज पदार्थ।

सेण *पुं.* = सेवक।

सेंत *स्त्री.* {सं. संहति} पास का कुछ खर्च न होना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. सेंत का = जिसमें कुछ व्यय न हुआ हो, मुफ्त का; *सेंत-मेंत या सेंत में* = बिना कुछ व्यय किए हुए, मुफ्त में; व्यर्थ।
वि. बहुत अधिक।

सेंतना *स.* सैंतना।

सेंत-मेंत *क्रि. वि.* {हिं. सेंत + मेंत (अनु.)} मुफ्त में; व्यर्थ।

सेंति *विभ.* {प्रा. सुंती} पुरानी हिन्दी में करण और अपादान कारक की विभक्ति, से; *स्त्री.* सेंत।

सेंथी *स्त्री.* {सं. शक्ति} छोटा भाला, बरछी।

सेंदुर *पुं.* सिंदूर।

सेंदुरिया *पुं.* सदाबहार पौधा जिसमें सिंदूर के समान लाल फूल लगते हैं।

सेंद्रिय *वि.* {सं.} जिसमें इंद्रियाँ हों, इंद्रियोंवाला, जैव (जीव या जंतु) (आर्गनिक)।

सेंध *स्त्री.* {सं. संधि} दीवार में किया हुआ वह छेद जिसमें से घुसकर चोर चोरी करते हैं, सुरंग, नकब।

सेंधना *अ.* {हिं. सेंध} सेंध लगाना।

सेंधा *पुं.* {सं. सैंधव} एक प्रकार का खनिज नमक, सैंधव।

सेंधिया *पुं.* {हिं. सेंध} सेंध लगाकर चोरी करनेवाला, चोर; *पुं.* सिधिया।

सेंधी *स्त्री.* खजूर।

सेंधुआर *पुं.* {देश.} एक प्रकार का मांसाहारी जंतु।

सेंधुर *पुं.* सिंदूर।

सेंवई *स्त्री.* सेवई।

सेंवर *पुं.* सेमल।

सेंसर *पुं.* {अं.} वह सरकारी अफसर जिसे पुस्तकें, समाचारपत्र आदि छपने या प्रकाशित होने, नाटक खेले जाने, चित्रपट दिखाए जाने या तार से कहीं समाचार भेजे जाने के पूर्व उन्हें देखने या जाँचने और रोकने का अधिकार होता है।

सेंहा *पुं.* कुआँ खोदनेवाला मजदूर।

सेंहुड़ *पुं.* {सं. सिंहुड़} थूहर नाम का कँटीला पौधा।

से *परसर्ग, विभ.* {प्रा. सुंत} करण और अपादान कारक का चिह्न, तृतीया और पंचमी की विभक्ति, जिसका प्रयोग इन अर्थों में होता है–(क) द्वारा; जैसे–हाथ से देना, (ख) आपेक्षिक मान में कम या अधिक; जैसे–इससे कम, (ग) सीमा का आरंभ; जैसे–यहाँ से; *वि.* हिं. 'सा' (समान) का बहु.; सर्व. हिं. 'सों' (वह) का बहु.।

सेउ *पुं.* सेव और सेव।

सेउटा *पुं.* = सेवट(1)।

सेकंड *पुं.* {अं.} एक मिनट का साठवाँ भाग (काल-मान)।

सेक *पुं.* जल की सिंचाई, सिंचाव, छिड़काव।

सेकड़ा *पुं.* हलवाहे की बैल हाँकने की छड़ी।

सेकपात्र *पुं.* सींचने का पात्र।

सेकित *वि.* खूब सींचा हुआ।

सेंकुता *पुं.* लंबे डंडे का करछा।

सेक्ता *पुं.* सींचनेवाला।

सेक्रेटरी *पुं.* {अं.} सचिव।

सेख *पुं.* शेख और शेख।

सेखर *पुं.* शेखर; शिखर।

सेगा *पुं.* {अ.} विभाग।

सेचक *वि.* {सं.} सींचनेवाला।

सेचन *पुं.* {सं.} {*वि.* सेचनीय, सेचित} जमीन आदि जल से सींचना, सिंचाई; छिड़काव; अभिषेक।

सेचनीय *वि.* सींचने योग्य।

सेचित *वि.* सींचा हुआ।

सेज *स्त्री.* {सं. शय्या} शय्या, पलंग।

सेजपाल *पुं.* {हिं. सेज + पाल} राजा का सेज का पहरा देनेवाला सैनिक।

सेजरिया *स्त्री.* सेज।

सेज्या *स्त्री.* शय्या।

सेटना *अ.* {सं. श्रत} मानना; महत्व स्वीकार करना।

सेठ *पुं.* {सं. श्रेष्ठी} {*स्त्री.* सेठानी} धनी और महाजन, बड़ा साहूकार।

सेठन *पुं.* बुहारी।

सेढ़ा *पुं.* सींड़।

सेत *पुं.* सेतु; *वि.* श्वेत।

सेतदुति *पुं.* चंद्रमा।

सेतवाह *पुं.* अर्जुन (पाँडव)।

सेती *विभ.* से।

सेतु *पुं.* {सं.} नदी आदि पर पुल; पानी की रुकावट के लिए बना हुआ बाँध (डैम); खेत की मेंड़, डाँड़; सीमा, हद।

सेतुक *पुं.* {सं.} छोटा पुल, पुलिया; छोटा बाँध; *पुं.* सौंतुख।

सेतुबंध *पुं.* {सं.} पुल या बाँध बनाने का काम; कन्याकुमारी के पास का समुद्र का वह पुल जो लंका पर चढ़ाई करने के समय रामचंद्र जी ने बनवाया था।

सेथिया *पुं.* {तेलगू चेट्टि} एक प्रकार के चिकित्सक जो आँख, गुदा, मूत्रेन्द्रिय आदि की चिकित्सा करते हैं।

सेद *पुं.* स्वेद; पसीना।

सेदज *वि.* = स्वेदज।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेदरा पुं. तीन तरफ वाले द्वार का घर।
सेध पुं. मना करना।
सेन पुं. {सं. श्येन} बाज (पक्षी); *स्त्री.* सेना।
सेनप पुं. सेनापति।
सेना[1] *स्त्री.* {सं.} युद्ध के लिए सिखाए हुए और अस्त्र-शस्त्र से सजे हुए सैनिकों या सिपाहियों का बड़ा दल या समूह, फौज, पलटन (आर्मी); बहुत बड़ा दल, झुंड।
सेना[2] *स.* {सं. सेवन} सेवा-टहल करना।
मुहा. चरण सेना = पैर दबाना; किसी की तुच्छ चाकरी करना।
आराधना या उपासना करना; नियमित रूप से प्रयोग करना; पवित्र स्थान पर निरंतर वास करना, जैसे–काशी या वृंदावन सेना; यों ही किसी चीज पर बराबर पड़े रहना, जैसे–चारपाई सेना; मादा पक्षी का गरमी पहुँचाने के लिए अपने अंडों पर बैठना; व्यर्थ लेकर बैठे रहना (व्यंग्य)।
सेनादार पुं. = सेना-नायक।
सेनाध्यक्ष पुं. {सं.} सेनापति।
सेनानायक पुं. {सं.} सेनापति।
सेनानी पुं. {सं.} सेनापति; कार्त्तिकेय।
सेना-न्यायालय पुं. = सैनिक न्यायालय।
सेनापति पुं. {सं.} {*भाव.* सेनापत्य} सेना का प्रधान और सबसे बड़ा अधिकारी; कार्त्तिकेय।
सेनापत्य पुं. {सं.} सेना के रहने का स्थान या पड़ाव, छावनी।
सेनावाहक पुं. {सं.} वह हवाई या समुद्री जहाज जो सैनिकों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाता है।
सेनि *स्त्री.* श्रेणी।
सेनिका *स्त्री.* बाज पक्षी की मादा।
सेनी[1] *स्त्री.* {फा. सीनी} तश्तरी।
सेनी[2] *स्त्री.* {सं. श्येनी} मादा बाज (पक्षी); *स्त्री.* = श्रेणी।
सेव पुं. {फा.} नाशपाती की तरह का एक प्रसिद्ध फल और उसका पेड़।
सेम पुं. {सं. शिबी} एक प्रकार की कली जिसकी तरकारी बनती है।
सेमा पुं. बड़ी सेम।
सेमई *स्त्री.* सेवईं।
सेमर पुं. सेमल।
सेमल पुं. {सं. शाल्मलि} एक बहुत बड़ा पेड़ जिसके फल में से एक प्रकार की रुई निकलती है।
सेमल का सुआ पुं. व्यर्थ का काम या परिश्रम करके उसके बुरे परिणाम से दुखी होने और पछतानेवाला (सेमल के बीज में चोंच मारनेवाले तोते के दृष्टांत पर)।
उदा. = कत तूँ सुवा होत सेमर कौ, अंतहि कपट न बचिबौ–**सूर**।
सेमेटिक पुं. शामी।
सेर पुं. {सं. सेठ} सोलह छटाँक, चार पाव या अस्सी तोले की एक तौल।
सेरवा पुं. वह कपड़ा जो अन्न को ओसाने में हवा करने हेतु आता है।
सेरही *स्त्री.* फसल की उपज का कर।
सेरा[1] पुं. {हिं. सिर} चारपाई में सिरहाने की ओर की पाटी या लकड़ी।
सेरा[2] पुं. {हिं. सेर} सेर भर या 16 छटाँक का मान या बटखरा।
सेरा[3] पुं. {फा. सेराब} सींची हुई जमीन।
सेराना[1] *अ.* {सं. शीतल} ठंडा होना; मर जाना; समाप्त होना *स.* ठंडा करना; मूर्ति आदि जल में प्रवाहित करना।
सेराना[2] *अ.* {फा. सेर} तृप्त होना, अघाना; *स.* तृप्त करना।
सेराल पुं. हलका पीलापन।
सेरी *स्त्री.* {फा.} तृप्ति।
उदा. नेक ही न पावति भजि भजन सेरी–**सूर**।
सेरीना *स्त्री.* अन्न या चारे का वह भाग जो किसान जमींदार को देता है।
सेल पुं. {सं. शल} बरछा, भाला।
सेलना[1] *अ.* {सं. शीतल} मर जाना।
सेलना[2] *अ.* {सं. शेल} छेदना।
सेला पुं. {सं. शल्लक} {*स्त्री.* अल्पा. सेली} एक प्रकार का तिल्लेदार दुपट्टा।
सेलिया पुं. {?} एक प्रकार का घोड़ा।
सेलिस पुं. सफेद हिरन।
सेल्ला पुं. अस्त्र-भाला।
सेली[1] *स्त्री.* {हिं. सेल} बरछी।
सेली[2] *स्त्री.* {हिं. सेला} छोटा दुपट्टा; गाँती; वह माला जो योगी लोग गले में पहनते या सिर पर लपेटते हैं; एक प्रकार का गहना।
सेल्हा पुं. अगहनिया धान।
सेल्ही *स्त्री.* सेली।
सेव पुं. {सं. सेविका} सूत के रूप में बना हुआ बेसन का एक प्रकार का पकवान; *स्त्री.* सेवा; पुं. सेब।
सेवईं *स्त्री.* {सं. सेविका} गूँधे हुए मैदे से बनाए हुए पतले लच्छे जो दूध या पानी में पकाकर खाए जाते हैं।
सेवक पुं. {सं.} {*स्त्री.* सेविका, सेवकनी, सेवकिनी} सेवा करनेवाला, नौकर (सर्वेंट); सेवन करनेवाला;

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी पवित्र स्थान में नियमपूर्वक स्थायी रूप में निवास करनेवाला।

सेवकाई *स्त्री.* = सेवा।

सेवग *पुं.* = सेवक।

सेवटा *पुं.* {देश.} नदियों के मुहाने अथवा संगम पर जमा होनेवाली मिट्टी।

उदा. लोग फूल दल सेवट लेखौ, एक फूल दल बालक देखौ–**केशव।**

सेवड़ा[1] *पुं.* {सं. श्रमणक या श्वेताम्बर} एक प्रकार के जैन साधु; जैनों की श्वेताम्बर शाखा का अनुयायी।

सेवड़ा[2] *पुं.* {हिं. सेव} सेव की तरह का पर उससे मोटा एक प्रकार का पकवान।

सेवति *स्त्री.* स्वाती (नक्षत्र)।

सेवती *स्त्री.* {सं.} सफेद गुलाब।

सेवन *पुं.* {सं.} {*वि.* सेवनीय, सेवित, सेव्य, सेवी} परिचर्या, टहल, सेवा; उपासना, आराधना; नियमित रूप से किया जानेवाला प्रयोग, व्यवहार, इस्तेमाल, जैसे औषध का सेवन; बराबर किसी बड़े के पास या किसी अच्छे स्थान पर रहना, जैसे काशी-सेवन; उपभोग।

सेवना *स.* सेना।

सेवनी *स्त्री.* = दासी।

सेवनीय *वि.* {सं.} सेवन करने योग्य।

सेवर *पुं.* शबर; *वि.* कम पका हुआ (मिट्टी का पात्र)।

सेवरी *स्त्री.* शवरी।

सेवल *पुं.* विवाह की एक रीति।

सेवा *स्त्री.* {सं.} बड़े, पूज्य, स्वामी आदि को सुख पहुँचाने के लिए किया जानेवाला काम, परिचर्या, टहल; सेवक या नौकर होने की अवस्था या काम, नौकरी; व्यक्ति, संस्था आदि से कुछ वेतन लेकर उनका कुछ काम करने की क्रिया या भाव, नौकरी; किसी लोकोपयोगी वस्तु, विषय, कार्य आदि में रुचि होने के कारण उसके हित, वृद्धि, उन्नति आदि के लिए किया जानेवाला काम, जैसे देश-सेवा; सार्वजनिक अथवा राजकीय कार्यों का कोई विशेष विभाग जिसके जिम्मे कोई विशेष प्रकार का काम हो, जैसे वैचारिक सेवा, कार्यपालक सेवा; एक प्रकार के किसी विभाग में काम करनेवालों का समूह या वर्ग (सर्विस, उक्त सभी अर्थों के लिए); धार्मिक दृष्टि से ईश्वर, देवता आदि का पूजन या उपासना, आराधना; आश्रय, शरण, जैसे आजकल मैं इन्हीं की सेवा में हूँ।

सेवाकाल *पुं.* {सं.} उतना समय या उतने दिन जिनमें किसी ने कोई सेवा या नौकरी की हो।

सेवाती *स्त्री.* = स्वाति (नक्षत्र)।

सेवा-धर्म *पुं.* दास का भाव, टहल करना।

सेवादार *पुं.* {हिं. सेवा + फा. दार} सिक्ख गुरुद्वारे में रहकर वहाँ की व्यवस्था करनेवाला अधिकारी।

सेवानिवृत्त *वि.* {सं.} सेवा या कारोबार से अलग हो जाना।

सेवानिवृत्ति *स्त्री.* {सं.} सेवा या कारोबार से अलग हो जाना।

सेवापंजी *स्त्री.* {सं.} वह पंजी या पुस्तिका जिसमें सेवकों, विशेषत: राजकीय सेवकों के सेवाकाल की कुछ मुख्य बातें लिखी जाती हैं (सर्विस बुक)।

सेवापन *पुं.* दासत्व, दास का काम करना।

सेवाबंदगी *स्त्री.* आराधना, पूजा।

सेवामुक्त *वि.* {सं.} सेवा से अलग किया हुआ, नौकरी से हटाया हुआ।

सेवार, सेवाल *स्त्री.* {सं. शैवाल} पानी के अंदर होनेवाली एक प्रकार की घास।

सेवावृत्ति *स्त्री.* {सं.} नौकरी।

सेवित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सेविता} जिसकी सेवा की जाए या की गई हो; जिसका सेवन या प्रयोग किया जाए या किया गया हो; उपभोग किया हुआ।

सेविता *स्त्री.* सेवा, दासकर्म।

सेवी *वि.* {सं. सेविन्} सेवन करनेवाला (विशेष 'सेवन'); किसी की या किसी प्रकार की सेवा करनेवाला, जैसे देशसेवी, समाजसेवी, साहित्यसेवी आदि (विशेष 'सेवा')।

सेव्य *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सेव्या} जिसकी सेवा, पूजा या आराधना करना हो या की जाए; सेवन करने के योग्य; *पुं.* स्वामी, मालिक।

सेव्या *स्त्री.* वह पौधा जो दूसरे पेड़ों पर उगता है।

सेव्य-सेवक *पुं.* {सं.} स्वामी और सेवक।

पद सेव्य सेवक भाव = भक्ति मार्ग में उपासना का एक भाव जिसमें देवता को स्वामी और अपने आपको उसका सेवक माना जाता है।

सेश्वर *वि.* {सं.} जिसमें ईश्वर की सत्ता मानी गई हो।

सेष *पुं.* शेष।

सेस *पुं.* शेष।

सेसनाग *पुं.* शेषनाग।

सेसरंग *वि.* सफेद रंग।

सेसर *पुं.* {फा. सेह = तीन + सर = बाजी} ताश का एक प्रकार का जुआ; धूर्तता, चालबाजी; छल-कपट, जालसाजी; जाल।

सेसरिया *पुं.* {हिं. सेसर} धूर्त, चालबाज; जाल-फरेब करनेवाला, जालिया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेह *स्त्री.* = साही (जंतु)।

सेहत *स्त्री.* स्वास्थ्य।

सेइथना *क्रि.* झाड़ना, बुहारना।

सेहरा *पुं.* {हिं. सिर + हार} विवाह के समय वर को पहनाने के लिए फूलों या सुनहले-रुपहले तारों आदि की बड़ी मालाओं की पंक्ति या पुंज; विवाह का मुकुट, मौर।

मुहा. किसी के सिर सेहरा बँधना = किसी को किसी बात का श्रेय मिलना।

विवाह के अवसर पर वर पक्ष में गाए जानेवाले मांगलिक गीत या पद्य।

सेहरी *स्त्री.* छोटी मछली, सहरी।

सेहा *पुं.* कुआँ खोदनेवाला।

सेही *स्त्री.* = साही (जंतु)।

सेहुँआ *पुं.* {?} एक प्रकार का चर्म रोग।

सेहुड़ *पुं.* थूहर।

सैं[1] *विभ.* = से।

सैं[2] *वि.* {सं. सदृश = समान} समान, तुल्य।

उदा. सपटाति सैं ससिमुखी, मुख घूँघट पटु ढाँकि–**बिहारी**।

सैंकड़ा *पुं.* {हिं. सै या सौ} सौ का समूह, एक सौ।

सैंकड़े *क्रि. वि.* {हिं. सैकड़ा} प्रति सौ के हिसाब से, प्रतिशत, जैसे चार रुपए सैंकड़े (परसेन्ट)।

सैंकड़ों *वि.* {हिं. सैंकड़ा} कई सौ; गिनती में बहुत अधिक।

सैंगर *पुं.* बबूल की फली।

सैंडल *पुं.* {अं.} पैर में पहनने का एक प्रकार का जूता, चप्पल।

सैंतना *स.* {सं. संचय} संचित करना, इकट्ठा करना।

उदा. कंचन मनि तजि काँचहिं सैंतत, या माया के लीन्हें–**सूर**।

समेटना; सहेजना।

सैंतालीस *वि.* संख्या में चालीस और सात–47.

सैंतीस *वि.* संख्या में तीस और सात–37.

सैंथी *स्त्री.* {सं. शक्ति} भाला, बरछा।

उदा. इन्द्रजीत लीन्हीं जब सैंथी, देवन हहा कर्‌यो–**सूर**।

सैंदूर *वि.* सिंदूर के रंग का।

सैंधव *पुं.* {सं.} नमक; सिंध देश का घोड़ा; *वि.* सिंध देश का; सिंधु या समुद्र-संबंधी।

सैंधवी *स्त्री.* {सं.} संगीत में षाड़व जाति की एक रागिनी जो भैरव राग की भार्या मानी जाती और ग्रीष्म ऋतु में दिन के चौथे पहर में गाई जाती है।

सैंह *स्त्री.* सौंह।

सैंहथी *स्त्री.* सैंथी।

सैंहल *वि.* सिंहल द्वीप से संबंधी।

सै[1] *वि.* {सं. शत्} सौ।

सै[2] *स्त्री.* {सं. सत्व, या फा. शै (चीज) ?} सत्व, सार; वीर्य; बल, शक्ति; बढ़ती; वृद्धि।

सैकत (तिक) *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सैकती} रेतीला, बलुआ (स्थान); रेत या बालू का बना हुआ (पदार्थ)।

सैकल *पुं.* सिकली।

सैद *पुं.* सैयद।

सैद्धांतिक *पुं.* {सं.} सिद्धांत का ज्ञाता, विद्वान, पंडित; *वि.* सिद्धांत-संबंधी, सिद्धांत का, जैसे सैद्धांतिक मतभेद या विवाद; (व्यवहारिक से भिन्न) सिद्धांत के आधार पर आश्रित, जैसे सैद्धांतिक ज्ञान (थियोरेटिकल)।

सैन[1] *स्त्री.* {सं. संज्ञपन} संकेत, इशारा; चिह्न, निशान; पहचान, निशानी।

सैन[2] *पुं.* {देश.} एक प्रकार का बगला; *पुं.* शयन; श्येन; *स्त्री.* सेना।

सैनपति *पुं.* = सेनापति।

सैनभोग *पुं.* शयन-भोग।

सैना *स्त्री.* सेना।

सैनानिक *वि.* सेना के अग्र-भाग से संबंधित।

सैनिक *पुं.* {सं.} {*भाव.* सैनिकता} सेना या फौज में रहकर लड़नेवाला, सिपाही; *वि.* सेना-संबंधी, सेना का, जैसे सैनिक न्यायालय, सैनिक आयोजन।

सैनिका *स्त्री.* एक तरह का छंद।

सैनिकता *स्त्री.* {सं.} सैनिक या योद्धा होने की अवस्था या भाव; सैनिक सामग्री से युक्त और युद्ध करने की शक्ति का भाव या दशा।

सैनिक न्यायालय *पुं.* सैनिक विभाग का वह विशिष्ट न्यायालय जो साधारणतः सेना विभाग में होनेवाले अपराधों का विचार और न्याय करता है (कोर्ट-मार्शल)।

सैनिकीकरण *पुं.* {सं. सैनिक + करण} लोगों को सैनिक बनाने और सैनिक सामग्री से सज्जित करने का काम (मिलिटराइज़ेशन)।

सैनिटोरियम *पुं.* स्वास्थ्य-निवास।

सैनी[1] *पुं.* {सेना भगत (व्यक्ति)} हज्जाम।

सैनी[2] *स्त्री.* {सं. श्रेणी} पंक्ति, कतार; *स्त्री.* सेना।

सैनेय *वि.* {सं. सेना} सेना में रहकर लड़ सकने के योग्य।

सैन्य *पुं.* {सं.} सैनिक, सिपाही; सैना, फौज; सैनिक पड़ाव, छावनी; *वि.* सेना-संबंधी, फ़ौज का।

सैनंतिक *पुं.* सिंदूर।

सैन्यसज्जा *स्त्री.* {सं.} सेना को आवश्यक अस्त्र-शस्त्र से सज्जित करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैन्याध्यक्ष पुं. = सेनापति।
सैफ *स्त्री.* {अ. सैफ़} तलवार।
सैयद पुं. {अ.} मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंशजों का अल्ल या उपाधि।
सैयाँ पुं. {सं. स्वामी} पति।
सैया *स्त्री.* = शय्या।
सैरंध्र पुं. {सं.} {*स्त्री.* सैरंध्री} प्राचीन काल की एक संकर जाति; घर में काम करनेवाला नौकर।
सैरंध्री *स्त्री.* {सं.} घर में काम करनेवाली दासी; द्रौपदी का उस समय का नाम जब वह अज्ञातवास में थी।
सैर *स्त्री.* {फा.} मन बहलाने के लिए कहीं जाना या इधर-उधर घूमना-फिरना; मौज, आनंद; बाग-बगीचे आदि में कुछ मित्रों का होनेवाला खान-पान और आमोद-प्रमोद; मनोरंजक दृश्य, तमाशा।
सैरा पुं. {फा. सैर} हाथ से अंकित चित्रों में भूमिका के रूप में वह प्राकृतिक दृश्य जिसके आगे व्यक्तियों या घटनाओं का चित्र अंकित होता है।
सैरिभ पुं. स्वर्ग, आकाश।
सैल *स्त्री.* {फा. सैलाब} नद्, नदी आदि की बाढ़; पानी का बहाव; पुं. शैल; *स्त्री.* सैर।
सैलजा, सैलसुता *स्त्री.* शैलजा।
सैला पुं. लकड़ी का डंडा, गुल्ली, चैला।
सैलात्मजा *स्त्री.* पार्वती।
सैलानी *वि.* {फा. सैर} सैर-सपाटा करने या मनमाना घूमनेवाला।
सैलाब पुं. {फा.} पानी की बाढ़।
सैलाबी *वि.* {फा.} सैलाब-संबंधी; (खेत या स्थान) जो बाढ़ आने पर डूब जाता हो।
सैली *स्त्री.* {फा.} छोटा सैला।
सैलुख पुं. शैलूष।
सैवाल पुं. = शैवाल।
सैस *वि.* सीसे का बना हुआ।
सैसव पुं. = शैशव।
सों *वि.* {प्रा. सुन्तो} द्वारा, से; *क्रि. वि.* संग, साथ; *वि.* सा; *स्त्री.* सौंह।
सोंचर नमक पुं. = काला नमक।
सोंटा पुं. {सं. शुण्ड या हिं. सटना} मोटा डंडा; भंग घोटने का डंडा।
सोंठ *स्त्री.* {सं. शुण्ठी} सुखाया हुआ अदरक।
सोंठौरा पुं. {सं. हिं. सोंठ + औरा (प्रत्य.)} सोंठ तथा कुछ मेवे-मसालों का बना हुआ एक प्रकार का लड्डू (प्रसूता स्त्री के लिए)।
सोंध *क्रि. वि.* सौंह; *स्त्री.* = सुगंध; *वि.* = सोंधा।
सोंधा *वि.* {सं. सुगंध} {*स्त्री.* सोंधी} सुगंधित, खुशबूदार; मिट्टी पर वर्षा ऋतु का पहला पानी पड़ने या भुने हुए चने, बेसन आदि से निकलनेवाली सुगंध के समान; पुं. सिर के बाल धोने का एक प्रकार का सुगंधित मसाला; तेल को सुगंधित करने के लिए उसमें मिलाया जानेवाला एक प्रकार का मसाला; कोई सुगंधित पदार्थ जैसे तेल, इतर आदि।
सोंधिया पुं. रोहिस।
सोंधी पुं. बढ़िया धान।
सोंवनिया पुं. औरतों की नाक का गहना।
सोंह *स्त्री., क्रि. वि.* सौंह।
सो *सर्व.* {सं. सः} वह; *क्रि. वि.* इसलिए, अतः।
सोऽहम् *पद.* {सं. सः + अहम्} वह (अर्थात् ब्रह्म) मैं ही हूँ (वेदांत का सिद्धांत)।
सोअना *अ.* सोना (शयन)।
सोआ पुं. {सं. मिश्रेया} एक प्रकार का साग।
सोइ (ई) *सर्व.* वही; *क्रि. वि.* सो।
सोऊ *वि.* {हिं. सोना} सोनेवाला।
उदा. तृष्ना हाथ पसारे निसि-दिन, पेट भरे पर सोऊ–सूर।
सर्व. वह भी।
सोक पुं. = शोक।
सोकन पुं. {सं.} एक प्रकार का बैल जिसका चमड़ा कुछ लाल रंग का होता है, केरा।
सोकना *स.* {सं. शोक} शोक करना।
सोकित *वि.* {सं. शोक} जिसे शोक हुआ हो, शोकग्रस्त।
सोखक *वि.* {सं. शोषक} सोखनेवाला; नष्ट करनेवाला।
सोखन *वि.* सोखनेवाला।
सोखना *स.* {सं. शोषण} जल या नमी चूसना, शोषण करना।
सोखाई *स्त्री.* सुखाने की मजदूरी।
सोखू *वि.* {हिं. सोखना} सोखनेवाला।
सोखता पुं. {फा. सोख्तः} एक प्रकार का खुरदरा कागज जो तुरंत के लिखे हुए लेखों पर की स्याही सोख लेता है।
सोग पुं. {सं. शोक} किसी के मरने पर होनेवाला दुख या शोक, मातम।
सोगवारा पुं. {हिं. सोक (शोक) + वारा (प्रत्य.)} वह स्थान जहाँ सब लोग बहुत शोक कर रहे हों।
सोगंद *स्त्री.* शपथ।
सोगिनी *वि.* {हिं.} 'सोगी' का *स्त्री.*।
सोगी *वि.* {हिं. सोग} {*स्त्री.* सोगिनी} शोक मनानेवाला; वियोगी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोच पुं. {सं. शोच} चिंता, फिक्र; दुख, रंज; पछतावा, पश्चाताप।

सोचना अ. {सं. शोचन} किसी विषय पर मन में कुछ विचार करना; चिंता या फिकर करना; खेद या दुख करना।

सोच-विचार पुं. {हिं. सोच + सं. विचार} सोचने और समझने या विचार करने की क्रिया या भाव, गौर।

सोचान *स्त्री.* {हिं. सोचना} सोचने या विचार करने की क्रिया या भाव।

सोचाना स. {हिं. सोचना का प्रे.} किसी को सोचने में प्रवृत्त करना, सुचाना; किसी के आगे कोई सुझाव रखकर उसका ध्यान उसकी ओर आकृष्ट करना।

सोज *स्त्री.* सूजने की अवस्था, सूजन।

सोझ, सोझा *वि.* = सोंधा।

सोटर *वि.* {देश.} मूर्ख, बेवकूफ।

सोड़ *स्त्री.* सौंड़।

सोढर *वि.* मूर्ख।

सोढा *वि.* क्षमाशील।

सोत पुं. स्रोत या सोता।

सोतली *स्त्री.* सौत।

सोता पुं. {सं. स्रोत} {*स्त्री.* अल्पा. सोती} प्राकृतिक रूप से कहीं से निकलकर बराबर बहती रहनेवाली जल की छोटी धारा, झरना; नदी की एक शाखा; नहर।

सोती *स्त्री.* {हिं. सोता का *स्त्री.* अल्पा.} पानी का छोटा सोता; *स्त्री.* = स्वाती (नक्षत्र); पुं. = क्षोत्रिय (ब्राह्मणों की एक जाति)।

सोते-जागते *क्रि. वि.* हर समय।

सोदर पुं. {सं. सहोदर} {*स्त्री.* सोदरा} सगा भाई।

सोदरा *स्त्री.* सगी बहिन।

सोदाहरण *क्रि. वि.* {सं.} उदाहरण के सहित।

सोध पुं. {सं. सौंध} प्रासाद, महल; शोध।

सोधक पुं. शोधक।

सोधन पुं. अनुसंधान।

सोधना स. {सं. शोधन} शुद्ध करना; शुद्धता की जाँच की परीक्षा करना।

उदा. सिय लौं सोधति तिय तनहिं लगनि अगनि की ज्वाल–**बिहारी।**

दोष या भूल दूर करना; ढूँढ़ना; कुछ संस्कार करके धातुओं को औषध के रूप में काम में लाने के योग्य बनाना; ऋण चुकाना।

सोधाना स. {हिं.} सोधना का प्रे.।

सोधी *वि.* शोधक।

सोन[1] पुं. {सं. शोण} बिहार का एक प्रसिद्ध नद जो गंगा में मिलता है।

सोन[2] *वि.* {सं. शोण} लाल, अरुण।

सोन[3] पुं. जलाशय के आसपास रहनेवाली एक प्रकार की चिड़िया; पुं. सोना।

सोनखरिक पुं. {?} एक प्रकार का धान और उसका चावल।

सोनगुलाल पुं. {हिं. सोन + गुलाल} एक प्रकार का बढ़िया लाल रंग।

सोनचिरी *स्त्री.* {हिं. सोना + चिड़िया} नट जाति की स्त्री, नटिनी, नटी।

सोनजूही *स्त्री.* {सं. स्वर्णयूथी} एक प्रकार की पीली जूही स्वर्णयुथिका, पीली चमेली।

सोनभद्र पुं. {सं. शोणभद्र} बिहार का सोन नामक नद (बड़ी नदी)।

सोनरास पुं. {हिं. सोना = स्वर्ण + राशि} पका हुआ सफेद या पीला पान।

सोनवाना *वि.* {हिं. सोना (स्वर्ण) + वर्ण} {*स्त्री.* सोनवानी} सोने के रंग का, सुनहरा।

सोनहला *वि.* = सुनहला।

सोनहा पुं. = कोगी (जंतु)।

सोनहार पुं. {?} एक प्रकार की चिड़िया।

सोना[1] पुं. {सं. स्वर्ण} एक प्रसिद्ध बहुमूल्य पीली धातु जिसके गहने आदि बनते हैं, स्वर्ण, कांचन (गोल्ड)।

मुहा. सोने का घर मिट्टी करना = बहुत अधिक धन-संपत्ति व्यर्थ और पूरी तरह से नष्ट करना; *सोने में घुन लगना* = परम असंभव बात होना; *सोने में सुगंध होना* = किसी बहुत अच्छी चीज में और भी कोई अच्छा गुण या विशेषता होना। *पद सोने की कटार* = वह चीज जो देखने में बहुत सुंदर होने पर भी वस्तुतः बहुत घातक या हानिकारक हो।

बहुत सुंदर या बहुमूल्य पदार्थ।

सोना[2] अ. {सं. सुप्यते} लेटकर शरीर और मस्तिष्क को विश्राम देनेवाली निद्रा की अवस्था में होना, नींद लेना, शयन; शरीर के किसी के अंग का सुन्न होना; किसी विषय या बात की ओर से उदासीन होकर चुप या निष्क्रिय रहना।

सोनामक्खी *स्त्री.* {सं. स्वर्णमाक्षिका} एक खनिज पदार्थ जिसका प्रयोग औषध में होता है।

सोनार पुं. सुनार।

सोनित पुं. शोणित।

सोनी पुं. सुनार।

सोपत पुं. सुविधा।

सोपप्लव पुं. ग्रहण लगे सूर्य-चंद्र।

सोपम *वि.* उपमा से युक्त।

सोपवास *वि.* उपवास के साथ।

सोपहास *वि.* उपहास से युक्त।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोपाक पुं. चांडाल।

सोपाधिक *वि.* {सं.} जिसमें कोई प्रतिबंध या शर्त लगी हो (कंडिशनल); किसी विशिष्ट सीमा, मर्यादा, व्याख्या आदि में बँधा हुआ।

सोपान पुं. {सं.} {*वि.* सोपानित} ऊपर चढ़ने की सीढ़ी, जीना।

सोपानित *वि.* {सं.} जिसमें सोपान या सीढ़ियाँ बनी या लगी हों।

सोऽपि *वि.* {सं. सः अपि} वही; वह भी।

सोफता पुं. {हिं. सुभीता का उर्दू रूप} एकांत या निर्जन स्थान; अवकाश या फुरसत का समय; रोग आदि में कमी होने का भाव या दशा।

सोफा पुं. {अं. सोफ़ा} एक प्रकार का लंबा गद्दीदार आसन, कोच।

सोफियाना *वि.* सूफियाना।

सोफी पुं. = सूफी।

सोभ *स्त्री.* = शोभा।

सोभना *अ.* {सं. शोभन} शोभा देना।

सोभर पुं. सूतिका-गृह।

सोभा *स्त्री.* = शोभा।

सोभाकारी *वि.* {सं. शोभाकार} सुंदर।

सोभार *वि.* {सं. स + हिं. उभार} जिसमें उभार हो, उभरा हुआ, उभारदार।

उदा. मुक्त नभ-श्रेणी में सोभार—**पंत**।

क्रि. वि. उभार के साथ, उभरकर।

सोभित *वि.* = शोभित।

सोम पुं. {सं.} एक प्राचीन भारतीय लता जिसके रस का सेवन वैदिक ऋषि मादक पदार्थ के रूप में करते थे; एक प्राचीन वैदिक देवता; चंद्रमा; सोमवार; अमृत; जल।

सोमकर पुं. {सं.} चंद्रमा की किरण।

सोमन पुं. सामना।

सोमनस पुं. = सोमनस्य।

सोमनाथ पुं. {सं.} बाहर ज्योतिर्लिंगों में से एक जिसका मंदिर काठियावाड़ में है।

सोमपान पुं. {सं.} सोम लता का रस पीना।

सोमपायी *वि.* {सं. सोमपायिन्} सोम लता का रस पीनेवाला।

सोमयज्ञ (याग) पुं. {सं.} वैदिक काल का एक प्रकार का यज्ञ।

सोमयाजी पुं. {सं. सोमयाजिन्} वह जो सोमयज्ञ करता हो या जिसने सोमयज्ञ किया हो।

सोमरस पुं. {सं.} सोमलता का रस।

सोमराज पुं. {सं.} चंद्रमा।

सोमवंश पुं. {सं.} क्षत्रियों का चंद्रवंश।

सोमवती *स्त्री.* {सं.} सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या, जिसकी गिनती बड़े पर्वों में होती है।

सोमवल्लरी *स्त्री.* {सं.} सोमलता; चामर नामक छंद का एक नाम।

सोमवल्ली *स्त्री.* सोम।

सोमा *स्त्री.* सोमलता, एक अप्सरा।

सोमाधार पुं. सोम रखने का बरतन।

सोमाभा *स्त्री.* चंद्रमा की किरणें।

सोमालक पुं. पुखराज नाम की मणि।

सोमाष्टमी *स्त्री.* सोमवारी अष्टमी।

सोमास्त्र पुं. {सं.} प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र, जिसे अधिष्ठाता देवता चंद्रमा माने जाते थे।

सोमेश्वर पुं. सोमनाथ।

सोय *सर्व.* {हिं. सो + ही, ई} वही; *सर्व.* सो।

सोर[1] पुं. {फा. शोर} कोलाहल, हल्ला; प्रसिद्धि, ख्याति।

सोर[2] *स्त्री.* {सं. शटा} पेड़ों की जड़, मूल।

सोरठ पुं. {सं. सौराष्ट्र} गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम; इस देश की राजधानी, सूरत।

सोरठा पुं. {सं. सौराष्ट्र} पिंगल में चार चरणों का एक छंद जिसके पहले और तीसरे चरणों में ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरणों में तेरह मात्राएँ होती हैं (दोहे के प्रत्येक चरण को यतिस्थान से उलट देने पर सोरठा हो जाता है)।

सोरनी *स्त्री.* = झाड़ू।

सोरह *वि.* = सोलह।

सोरही *स्त्री.* {हिं. सोलह} जुआ खेलने के लिए सोलह चित्ती कौड़ियाँ; इन कौड़ियों से खेला जानेवाला जुआ।

सोलंकी पुं. {?} प्राचीन क्षत्रियों की एक शाखा जिसने बहुत दिनों तक गुजरात में राज्य किया था।

सोलह *वि.* {सं. षोडश} गिनती में दस से छह अधिक, षोडश।

मुहा. सोलहो आने = पूरा-पूरा, सब।

सोलह सिंगार पुं. षोडश शृंगार।

सोला पुं. {देश.} एक प्रकार का झाड़ जिसके छिलके से अंग्रेजी टोप बनते हैं।

सोल्लास *क्रि. वि.* {सं. स + उल्लास} उल्लासपूर्वक, आनंद और उत्साह से।

सोवज पुं. सावज।

सोवन पुं. {हिं. सोवना = शयन करना} सोने की क्रिया या भाव, शयन।

सोवना *अ.* सोना।

सोवनार पुं. {हिं. सोना (शयन) + आर = आगार} सोने का कमरा, शयनागार।

सोबरी *स्त्री.* सौरी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवियत पुं. {रूसी} रूस के जन-प्रतिनिधियों की सभा; रूसी प्रजातंत्र।
सोवैया पुं. {हिं. सोवना} सोनेवाला।
सोसन पुं. {फा. सौसन} {*वि.* सोसनी} एक प्रकार का पौधा; इस पौधे का फूल।
सोसनी *वि.* {हिं. सोसन} सोसन के फूल के रंग का, लाली मिला पीला।
सोसाइटी *स्त्री.* {अं.} समाज; सभा, समिति।
सोसू, सोधू *वि.* {हिं. सोखना} सोखनेवाला, शीर्षक।
सोस्मि *पद.* सोऽहम्।
सोहं (ग) *पद.* सोऽहम्।
सोह *क्रि. वि.* सौंह।
सोहगी *स्त्री.* {हिं. सुहाग} ब्याह की एक रस्म जिसमें तिलक के बाद वरपक्ष से लड़की के लिए कपड़े, गहने आदि भेजे जाते हैं; सिंदूर, मेंहदी आदि सुहाग की सूचक वस्तुएँ।
सोहन *वि.* {सं. शोभन} {*स्त्री.* सोहनी} सुंदर, सुहावना; पुं. सुंदर पुरुष; नायक; एक प्रकार का पक्षी।
सोहन पपड़ी *स्त्री.* {हिं. सोहन + पपड़ी} एक प्रकार की बढ़िया मिठाई।
सोहन हलुआ पुं. {हिं. सोहन + *अ.* हलवा} एक प्रकार की बढ़िया मिठाई।
सोहना *अ.* {सं. शोभन} शोभित होना, सुंदर लगना; रुचिकर लगना, अच्छा लगना; *वि.* {*स्त्री.* सोहनी} सुंदर, मनोहर।
सोहनी[1] *स्त्री.* {सं. शोधनी} झाड़ू।
सोहनी[2] *वि., स्त्री.* {हिं. सोहना} सुहावनी, सुंदर; *स्त्री.* एक प्रकार की रागिनी।
सोहबत *स्त्री.* {*अ.*} संग-साथ, संगत; स्त्रीप्रसंग, संभोग।
सोहमस्मि *पद.* सोऽहम्।
सोहर[1] पुं. {सं. सूतिगृह, प्रा. सूइहर} बच्चा पैदा होने के समय घर में गाए जानेवाले गीत, सोहला।
सोहर[2] *स्त्री.* {?} नाव का पाल खींचने या बाँधने की रस्सी; *स्त्री.* सौरी।
सोहराना *स.* सहलाना।
सोहला पुं. {हिं. सोहाना} घर में बच्चा पैदा होने पर गाए जानेवाले गीत; कोई मांगलिक गीत; *वि.* = सरल (सुगम)।
सोहाइन *वि.* = सुहावना।
सोहाग पुं. सुहाग।
सोहागा पुं. क्षार-द्रव्य, सुहागा।
सोहागिन *स्त्री.* = सुहागिन।
सोहाता *वि.* सुहावना, अच्छा।
सोहाना पुं. सुहाना; *वि.* सुहावना।
सोहाया *वि.* शोभायमान।
सोहारद पुं. सौहार्द्र।
सोहारी *स्त्री.* पूरी (पकवान)।
सोहाल पुं. सुहाल।
सोहासित[1] *वि.* {हिं. सोहाना} अच्छा लगनेवाला, रुचिकर; सुंदर।
सोहासित[2] पुं. {सं. सुभाषित} ठकुर-सुहाती, खुशामद।
सोहिं *क्रि. वि.* सौंह।
सोहिनी *वि., स्त्री.* {हिं. सोहन} सुंदर, शोभायमान; *स्त्री.* षाड़व जाति की करुण रस की एक रागिनी जो मध्य रात्रि के बाद गाई जाती है।
सोहित पुं. सुहेल (तारा)।
सोहिल पुं. अगस्त्य नाम का तारा।
सोहिला पुं. सोहला; *वि.* {*स्त्री.* सोहिली} सरल, सहज।
सोहीं, सोहैं *क्रि. वि.* = सामने।
सौं *स्त्री.* सौंह (शपथ); *क्रि. वि.* सों; *वि.* सा (समान)।
सौंकेरा पुं. {सं. सकाल} सवेरे का समय।
सौंकेरे *क्रि. वि.* {हिं. सौंकेरा} प्रातःकाल, सवेरे; नियत समय से कुछ पहले या जल्दी।
सौंघा *वि.* {हिं. महँगा का विरु.} {*भाव.* सौंघाई} अच्छा, उत्तम; ठीक, वाजिब; सस्ता।
सौंघाई *स्त्री.* {हिं. सौंघा} उत्तमता, अच्छाई, औचित्य; सस्तापन; अधिकता, बहुतायत।
सौंचना *स.* {सं. शौच} मलत्याग करने पर गुदा और हाथ-पैर धोना।
सौंचर पुं. सोंचर नमक।
सौंज *स्त्री.* सौज।
सौंजना *स.* = सुपुर्द करना।
सौंजा पुं. {हिं. समझना} आपस में होनेवाला समझौता; गुप्त रूप से होनेवाला परामर्श या स्थिर किया जानेवाला मन्तव्य; सौंपने की क्रिया या भाव।
सौंजाई *स्त्री.* {हिं. सौंज} अलंकृत करने या शोभा बढ़ानेवाली चीज, सजावट का सामान।
उदा. बल, विद्या, धन, धाम, रूप, गुन और सकल मिथ्या सौंजाई—सूर।
सौंड़ *स्त्री.* {देश.} ओढ़ने की चादर।
सौंड़ा *वि.* {*स्त्री.* सौंड़ी} चौड़ा।
सौंतना *स.* सूतना।
साँतुख *क्रि. वि.* सामने, प्रत्यक्ष।
सौंदन *स्त्री.* {हिं. सौंदना} कपड़े धोने के पहले उन्हें रेह मिले पानी में भिगोना (धोबी)।
सौंदना *स.* {सं. संधम्} मिलाना, सानना; मिट्टी आदि के योग से मैला या गंदा करना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य पुं. {सं.} सुंदरता; खूबसूरती।
सौंध पुं. सौध; *स्त्री.* सुगंध।
सौंधना *स.* = सुगंधित करना।
सौंधा¹ *वि.* {हिं. सौंधा} {*स्त्री.* सौंधी} सौंधा; अच्छा लगनेवाला, रुचिकर; मनोहर, सुंदर; उचित।
सौंधा² पुं. {सं. सुगंध} सुगंध, खुशबू।
सौंपना *स.* {सं. समर्पण} व्यवस्था, देख-रेख आदि के लिए किसी को कुछ देना, सुपुर्द करना (एन्ट्रस्ट); सहेजना।
सौंफ *स्त्री.* {सं. शतपुष्पा} {*वि.* सौंफी} एक छोटा पौधा जिसके बीज दवा और मसाले के काम में आते हैं।
सौंफिया *स्त्री., वि.* सौंफी।
सौंफी *वि.* {हिं. सौंफ} जिसमें सौंफ मिली हो; *स्त्री.* सौंफ के योग से बनी हुई एक प्रकार की शराब।
सौंरई *स्त्री.* {हिं. साँवला} साँवलापन, श्यामलता।
सौंरना¹ *अ.* {हिं. सँवरना} सँवारा, जाना, अच्छा या ठीक किया जाना; *स.* = सँवारना।
सौंरना² *स.* {सं. स्मरण} स्मरण या याद करना।
सौंह *स्त्री.* {हिं. सौगंध} शपथ, कसम; पुं. = सामना; *क्रि. वि.* = सामने।
सौंहन पुं. सोहन।
सौंही *स्त्री.* {?} एक प्रकार का हथियार।
सौंहे *क्रि. वि.* {सं. सन्मुख} सामने, समक्ष।
सौ *वि.* {सं. शत} गिनती में पचास का दूना, नब्बे और दस, शत।
पद सौ बात की एक बात = सारांश, निचोड़।
वि. सा (समान)।
उदा. अति नव, कै प्राचीन, एक सौ बेदब जानौ—रत्ना.।
सौक¹ *स्त्री.* {हिं. सौत} सौत, सपत्नी।
सौक² *वि.* {हिं. सौ + एक या क (प्रत्य.)} एक-सौ; *क्रि. वि.* सौ के लगभग, प्रायः एक सौ।
सौकन *स्त्री.* सौत।
सौकरायण पुं. शिकारी।
सौकर्य पुं. {सं.} सुकर का भाव, सुकरता; सुविधा।
सौकुमार्य पुं. {सं.} सुकुमारता; यौवन, जवानी; काव्य का एक गुण जो ग्राम्य और श्रुतिकटु शब्दों का त्याग करने से उत्पन्न होता है।
सौकीन *वि.* शौकीन।
सौकृत्य पुं. यज्ञ का अनुष्ठान।
सौक्ष्म्य पुं. सूक्ष्म का धर्म।
सौख पुं. शौक।
सौख्य पुं. {सं.} सुख का भाव, सुखता; सुख, आराम।
सौगंद *स्त्री.* = सौगंध।
सौगंध *स्त्री.* {सं. सौगंध} शपथ, कसम।
सौगत पुं. {सं.} बौद्ध धर्म; सौगतिक।
सौगम्य पुं. सुगमता।
सौगतिक पुं. {सं.} सुगत का अनुयायी, बौद्ध, नास्तिक।
सौगात *स्त्री.* {तु.} {*वि.* सौगाती} वह अच्छी चीज हो इष्ट-मित्रों को देने के लिए कहीं से लाई जाए, भेंट, उपहार, तोहफा।
सौधा *वि.* = सस्ता।
सौच पुं. = शौच।
सौचिक पुं. दरजी।
सौज *स्त्री.* {सं. सज्जा} सामग्री, समान; वस्तु, चीज; सजावट।
सौजना *अ.* = सजना।
सौजन्य पुं. {सं.} सुजन होने का भाव, सज्जनता, भलमनसत।
सौजन्यता *स्त्री.* = सौजन्य (सौजन्यता रूप अशुद्ध है)।
सौजा पुं. {हिं. सावज} वह पशु या पक्षी जिसका शिकार किया जाता हो।
सौड़ा *वि.* {हिं. चौड़ा का अनु.} {*स्त्री.* सौड़ी} कम चौड़ा।
सौत *स्त्री.* {सं. सपत्नी} किसी स्त्री की दृष्टि से उसके पति या प्रेमी की दूसरी पत्नी या प्रेमिका, सपत्नी।
सौतन, सौतिन *स्त्री.* = सौत।
सौतिया डाह पुं. दो सौतों में होनेवाली डाह या ईर्ष्या।
सौतुक *अव्य.* सम्मुख, सामने।
सौतेला *वि.* {हिं. सौत} {*स्त्री.* सौतेली} सौत से उत्पन्न; जिसका संबंध किसी सौत के पक्ष से हो, जैसे सौतेला भाई-माता की सौत का लड़का।
सौत्र *वि.* सूत्र से संबंधित।
सौत्रांतिक पुं. {सं.} बौद्धों के हीनयान के दो प्रमुख संप्रदायों में से एक (दूसरा संप्रदाय 'वैभाषिक' कहलाता था)।
सौत्रामणी *स्त्री.* यज्ञ जो इंद्र के हेतु किया जाता है।
सौत्रिक पुं. जुलाहा।
सौदर्य पुं. भाईचारा; *वि.* सगे भाई का।
सौदा¹ पुं. {*अ.*} खरीदने और बेचने की चीज, माल; खरीदने-बेचने या लेन-देन की बातचीत या व्यवहार (बार्टरिंग); ऐसा व्यवहार जिसमें किसी का कोई काम या हित करने उसके बदले में उससे अपना कोई काम या हित कराया जाता हो (बारगेन)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहा. सौदा करना या पटाना = बातचीत करके लेन-देन, आदान-प्रदान आदि का कोई व्यापार या व्यवहार पक्का या स्थिर करना।

सौदा² *स्त्री.* {फा.} {*वि.* सौदाई} पागलपन (रोग)।

सौदाई *पुं.* {फा. सौदा} पागल।

सौदागर *पुं.* {फा.} {*भाव.* सौदागरी} व्यापारी, व्यवसायी।

सौदागरी *स्त्री.* {फा.} सौदागर का काम, पेशा, पद, व्यवहार आदि, वाणिज्य, व्यापार।

सौदामनी *स्त्री.* {सं.} बिजली, विद्युत।

सौदामिनी *स्त्री.* = सौदामनी (बिजली)।

सौदायिक *पुं.* जो स्त्री को विवाह के समय उसके संरक्षक के यहाँ से धन मिलता हो।

सौदा-सुलुफ *पुं.* खरीदने की चीजें या वस्तुएँ, कई तरह की चीजें।

सौदा-सूत *पुं.* {*अ.* सौदा + सूत (अनु.)} क्रय-विक्रय का व्यवहार, व्यापार, रोजगार।

उदा. सुहृद समाज दगाबाजि ही को सौदा सूत—तुलसी।

पुं. सौदा-सुलुफ।

सौदेबाज *पुं.* {*अ.* सौदा + फा. बाज़} सौदेबाजी करनेवाला।

सौदेबाजी *स्त्री.* {*अ.* सौदा + फा. बाज़ी (प्रत्य.)} मोल-भाव करने की क्रिया या भाव (बारगेनिंग)।

सौध *पुं.* {सं.} बड़ा और ऊँचा मकान, प्रासाद; चाँदी, रजत।

सौधना *स.* सोधना।

सौन *पुं.* {सं. स्वर्ण} स्वर्ण या सोना; सोने का सुंदर पीला रंग; अबीर; *क्रि. वि.* = सामने।

सौनक *पुं.* शौनक।

सौनजाइ *स्त्री.* = सोनजूही।

सौनजुही *स्त्री.* सोनजूही।

सौभ *पुं.* राजा हरिश्चंद्र की कल्पित नगरी, प्राचीन जनपद।

सौभग *पुं.* सुख, आनंद।

सौभद्र *पुं.* अभिमन्यु।

सौभरि *पुं.* ऋषि जिन्होंने मांधाता की पचास कन्याओं से विवाह किया था।

सौभागिनी *स्त्री.* सुहागिन।

सौभाग्य *पुं.* {सं.} अच्छा भाग्य, खुशकिस्मती; सुख, आनंद; ऐश्वर्य, वैभव; स्त्री के सधवा होने की दशा, सुहाग, अहिवात।

सौभाग्यवती *वि.* {सं.} (स्त्री) जिसका पति जीवित हो, सधवा, सुहागिन।

सौभाग्यवावन, सौभाग्यशाली *वि.* = भाग्यवान।

सौभिक्ष्य *पुं.* = सुभिक्ष।

सौम *वि.* = सौम्य।

सौमन *पुं.* {सं.} एक प्रकार का पुराना हथियार।

सौमनस *वि.* {सं.} सुमनों या फूलों का; मनोहर, सुंदर; *पुं.* प्रसन्नता, आनंद; अस्त्रों को व्यर्थ करनेवाला एक प्राचीन अस्त्र।

सौमनस्य *पुं.* {सं.} भलमनसत; प्रसन्नता; प्रेम, प्रीति; संतोष।

सौमित्र *पुं.* {सं.} लक्ष्मण जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

सौमित्रा *स्त्री.* = सुमित्रा।

सौम्य *वि.* {सं.} {*स्त्री.* सौम्या} सोम या उसके रस से संबंध रखनेवाला; सोम या चंद्रमा से संबंध रखनेवाला, चांद्र; ठंडा और शांत; अच्छे स्वभाववाला, नम्र और सुशील; सुंदर, मनोहर; *पुं.* सोम यज्ञ; बुध, जो चंद्रमा का पुत्र माना जाता है; अगहन का महीना, मार्गशीर्ष; रक्त का वह पूर्व रूप जिसमें वह लाल रंग का होने से पहले रहता है (सीरम)।

सौम्या *स्त्री.* दुर्गा, ब्राह्मी, मोती, आर्या, छंद।

सौम्यदर्शन *वि.* {सं.} देखने में सुंदर।

सौम्यविज्ञान *पुं.* {सं.} वह विज्ञान जिसमें औषध के काम के लिए जीवों के रक्त से सौम्य बनाने का विवेचन होता है।

सौर¹ *वि.* {सं.} सूर्य-संबंधी, सूर्य का, जैसे सौर जगत्; सूर्य उत्पन्न; सूर्य के प्रभाव से होनेवाला (सोलर); *पुं.* सूर्य का उपासक; सूर्यवंशी; शनि गृह।

सौर² *स्त्री.* {हिं. सौंड़} चादर।

सौरज *पुं.* = शौर्य (शूरता)।

सौर जगत (जगत्) *पुं.* {सं.} सूर्य और उसकी परिक्रमा करनेवाले ग्रहों (पृथ्वी, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, यूरेनस आदि) का समूह या वर्ग जो आकाशचारी पिंडों में स्वतंत्र इकाई के रूप में माना जाता है (सोलर सिस्टम)।

सौरठवाल *पुं.* वैश्यों की जाति।

सौरत *वि.* रति-क्रीड़ा से संबंधित।

सौर दिवस *पुं.* {सं.} एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय।

सौरभ *पुं.* {सं.} {*वि.* सौरभित} सुगंध, खुशबू; आम्र, आम।

सौरभक *पुं.* एक तरह का छंद।

सौरभित *वि.* {सं.} सौरभ या सुगंधि से युक्त, सुगंधित।

सौरमास *पुं.* {सं.} एक सौर संक्रांति से दूसरी सौर संक्रांति तक का महीना।

सौरवर्ष *पुं.* {सं.} एक मेष संक्रांति से दूसरी मेष संक्रांति तक का वर्ष।

सौरस्य *पुं.* {सं.} सुरसता।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौरसेय पुं. सौकंद, कार्त्तिकेय।
सौराटी स्त्री. एक रागिनी।
सौराष्ट्र पुं. {सं.} {वि. सौराष्ट्रिक} गुजरात-काठियावाड़ का प्राचीन नाम, सोरठ देश; उक्त प्रदेश का निवासी।
सौराष्ट्रिक वि. {सं.} सौराष्ट्र देश-संबंधी, सौराष्ट्रिक; पुं. सौराष्ट्र देश का निवासी।
सौरास्त्र पुं. {सं.} प्राचीन काल का एक प्रकार का दिव्यास्त्र।
सौरि पुं. शनि, हुरहुर का पौधा।
सौरिक वि. मद्य से संबंधित।
सौरिरत्न पुं. नीलम।
सौरी[1] स्त्री. {सं. सूतिगृह प्रा. सूइहर} वह कोठरी जिसमें स्त्री बच्चा प्रसव करती है, सूतिकागार, जच्चाखाना (लेबर रूम)।
सौरी[2] स्त्री. {सं. शफरी} एक प्रकार की मछली; स्त्री. = सौड़ (चादर)।
सौर्य वि. {सं.} सूर्य-संबंधी, सौर।
सौलभ्य पुं. सुलभता से प्राप्त।
सोविद पुं. अंत:पुर का पहरेदार, चोंली, कंचुकी।
सौवीर पुं. {सं.} सिंधु नद के आसपास का प्राचीन प्रदेश; इस प्रदेश का निवासी।
सौवीरा स्त्री. संगीतशास्त्र की मूर्च्छना।
सौष्ठव पुं. {सं.} 'सुष्ठु' होने का भाव, सुष्ठता; सुंदरता, सौंदर्य।
सौसन पुं. सोसन।
सौहँ[1] स्त्री. {सं. शपथ} सौगंध, कसम।
सौहँ[2] क्रि. वि. {सं. सम्मुख} सामने, आगे।
सौहार्द्र पुं. {सं.} 'सुहृद' होने का भाव; सज्जनता; मित्रता।
सौहों क्रि. वि. = सामने।
सौहृद पुं. {सं.} {भाव. सौहृद्य} मित्रता, दोस्ती; मित्र, दोस्त।
स्कंद पुं. {सं.} {वि. स्कंदित} निकलना या बाहर आना; विनाश, ध्वंस; कार्त्तिकेय जो देवताओं के सेनापति और युद्ध के देवता माने जाते हैं; शरीर, देह।
स्कंदगुप्त पुं. {सं.} गुप्तवंश के एक प्रसिद्ध और प्रतापी सम्राट (ईसवी पाँचवीं शताब्दी)।
स्कंद पुराण पुं. {सं.} एक प्रसिद्ध पुराण जो 18 पुराणों के अंतर्गत है।
स्कंध पुं. {सं.} कंधा; वृक्ष के तने का वह ऊपरी भाग जिसमें से डालियाँ निकलती हैं, कांड; शाखा, डाल; समूह, झुंड; वह स्थान जहाँ विक्रय, उपयोग आदि के लिए बहुत-सी चीजें जमा रहती हों, भंडार (स्टॉक); ग्रंथ का वह विभाग जिसमें कोई पूरा विषय हो; शरीर, देह; युद्ध, लड़ाई; दर्शनशास्त्र में शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध।
स्कंधक पुं. {सं.} वह जो विक्रय आदि के लिए बहुत-सी वस्तुएँ (या स्कंध) अपने पास रखता हो (स्टॉकिस्ट)।
स्कंधधारी (रिन्) पुं. {सं.} अपने पास किसी प्रकार की बहुत सी वस्तुएँ या उनका स्कंध रखनेवाला (स्टॉक-होल्डर)।
स्कंधपंजी स्त्री. {सं.} वह पंजी या बही जिसमें स्कंध या भंडार में रखी हुई वस्तुओं का विवरण हो (स्टॉक-बुक)।
स्कंधपाल पुं. {सं.} वह अधिकारी जो किसी स्कंध या भंडार की देख-रेख आदि के लिए नियत हो (स्टॉक-कीपर)।
स्कंधावार पुं. {सं.} राजा का शिविर; सेना का पड़ाव, छावनी; सेना।
स्कंभ पुं. {सं.} स्तंभ, ईश्वर।
स्काउट पुं. बालचर।
स्किपर पुं. {अं.} क्रिकेट की टीम का कप्तान।
स्कूटर पुं. {अं.} तेल से चलनेवाली दुपहिया गाड़ी।
स्कूल पुं. {अं.} {वि. स्कूली} विद्यालय; संप्रदाय या शाखा।
स्कूली वि. स्कूल से संबंधी।
स्क्रू पुं. पेच जो घुमाकर लोहे, लकड़ी आदि में जड़ी जाती है।
स्कैंडल पुं. {अं.} कोई अनैतिक कार्य।
स्खलन पुं. {सं.} {वि. स्खलित} गिरना; चीरना-फाड़ना; हत्या।
स्खलित वि. {सं.} गिरा हुआ, च्युत; लड़खड़ाया हुआ, विचलित; चुका हुआ।
स्टांप पुं. अंकपत्र।
स्टीमर पुं. {अं.} भाप के जोर से चलनेवाला छोटा समुद्री जहाज।
स्टेट[1] पुं. {अं.} बड़ा राज्य।
स्टेट[2] पुं. {अं. एस्टेट} बड़ी जमींदारी; स्थावर और जंगम संपत्ति।
स्टेडियम पुं. {अं.} खेल का मैदान विशेषत: जिसमें दर्शकों के बैठने के लिए दीर्घाएँ बनी हों।
स्टेनो पुं. = स्टेनोग्राफर।
स्टेनोग्राफर पुं. {अं.} आशुलिपिक।
स्टेशन पुं. {अं.} रेल-गाड़ी के ठहरने का स्थान; किसी विशेष कार्य के संचालन के लिए नियत स्थान, आस्थान (विशेष 'अवस्थान')।
स्तंब पुं. घास की आँटी।
स्तंबक पुं. गुच्छा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तंबकार पुं. गुच्छा बनानेवाला।
स्तंबहनन पुं. घास खोदने की खुरपी।
स्तंबी *स्त्री.* घास खोदने की खुरपी।
स्तंभ पुं. {सं.} {*वि.* स्तंभित} खंभा; वह व्यक्ति, तत्व या तथ्य जो किसी संस्था, कार्य, सिद्धांत आदि के आधार के रूप में हो, जैसे आप उस संस्था के स्तंभ हैं; समाचार-पत्रों के पृष्ठों, सारिणियों आदि में खड़े बल का वह विभाग जिसमें ऊपर से नीचे तक कुछ विशेष बातें, अंक आदि होते हैं; समाचार-पत्रों में उक्त प्रकार के विभागों का वह वर्ग जिसमें किसी विशेष विषय का प्रतिपादन या निरूपण होता है, जैसे संपादकीय स्तंभ, स्थानिक स्तंभ आदि (कालम, उक्त सभी अर्थों के लिए); पेड़ का तना; साहित्य में किसी कारण या घटना (जैसे हर्ष, लज्जा, भय, श्रम आदि) से अंगों का बिल्कुल शिथिल हो जाना, जो सात्विक भावों में माना गया है; जड़ता, अचलता; प्रतिबंध, रुकावट; तंत्र में किसी शक्ति को रोकनेवाला प्रयोग।
स्तंभक *वि.* {सं.} रोकनेवाला, रोधक; मल रोकने या कब्ज करनेवाला; संभोग के समय वीर्य को जल्दी स्खलित होने से रोकनेवाला (औषध)।
स्तंभकर *वि.* रोकनेवाला।
स्तंभता *स्त्री.* जड़ता।
स्तंभन पुं. {सं.} रोकने की क्रिया या भाव, रुकावट, अवरोध; वीर्य आदि को स्खलित होने या मल को पेट से बाहर निकलने से रोकना; वीर्यपात रोकने की दवा; जड़ या निश्चेष्ट करना, जड़ीकरण; किसी की चेष्टा, क्रिया या शक्ति रोकनेवाला तांत्रिक प्रयोग; कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
स्तंभनी *स्त्री.* इंद्रजाल का प्रकार।
स्तंभनीय *वि.* स्तंभन करने योग्य।
स्तंभिका *वि.* {सं.} छोटा खंभा।
स्तंभित *वि.* {सं.} जो जड़ और निश्चेष्ट हो गया हो, निस्तब्ध, सुन्न; रुका या रोका हुआ, चकित।
स्तंभी *वि.* रोकनेवाला।
स्तन पुं. {सं.} स्त्रियों या मादा पशुओं का वह अंग जिसमें दूध रहता है, छाती।
स्तनन पुं. {सं.} {*वि.* स्तनित} बादल का गरजना; ध्वनि या शब्द होना; आर्तनाद।
स्तनपान पुं. {सं.} स्तन में मुँह लगाकर उसमें का दूध पीना।
स्तनपायी (यिन्) पुं. {सं.} वे जंतु या जीव जो जन्म लेने पर अपनी माता का दूध पीकर पलते हैं, जैसे मनुष्य, चौपाए आदि (मैमल)।
स्तनपोषी *वि.* {सं.} स्तनपान के द्वारा अपने बच्चों को पालनेवाला (प्राणी)।
स्तनहार पुं. {सं.} गले में पहनने का एक प्रकार का हार।
स्तनित पुं. {सं.} बादल की गरज; बिजली की कड़क; ताली बजाने का शब्द; *वि.* गरजता या शब्द करता हुआ।
स्तन्य *वि.* {सं.} स्तन-संबंधी; पुं. दूध।
स्तन्यप पुं. दूध पीनेवाला बच्चा।
स्तब्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* स्तब्धता} जो जड़ या निश्चेष्ट हो गया हो, स्तंभित; दृढ़, पक्का; मंद, धीमा।
स्तब्धता *स्त्री.* {सं.} स्तब्ध होने की दशा या भाव; जड़ता; भौचक्कापन; सन्नाटा।
स्तर पुं. {सं.} एक दूसरी के ऊपर पड़ी या लगी हुई तह, परत; भूमि आदि का एक प्रकार का विभाग जो भिन्न-भिन्न कालों में बनी हुई उसकी तहों के आधार पर किया गया है (स्ट्रेटा)।
स्तरण पुं. {सं.} {*वि.* स्तीर्ण} फैलाने या बिखेरने का काम।
स्तरणीय *वि.* फैलाना योग्य।
स्तरीय *वि.* {सं.} स्तर-संबंधी; सही स्तरवाला।
स्तरोन्नयन पुं. {सं.} स्तर ऊँचा करना।
स्तव पुं. {सं.} (पद्य के रूप में) देवता आदि का स्वरूप-वर्णन या गुणगान, स्तोत्र; स्तुति, प्रशंसा।
स्तवक पुं. {सं.} स्तव या स्तुति करनेवाला; फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता; समूह, झुंड; राशि, ढेर; पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद।
स्तवन पुं. {सं.} स्तव या स्तुति करना।
स्तवरक पुं. घेरा।
स्तीर्ण *वि.* {सं.} दूर तक फैला हुआ, विस्तृत; इधर-उधर बिखरा या छितराया हुआ, विकीर्ण।
स्तुत *वि.* {सं.} जिसकी स्तुति की गई हो।
स्तुति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* स्तुत्य} किसी के गुणों का वर्णन, प्रशंसा, बड़ाई; स्तव।
स्तुत्य *वि.* {सं.} स्तुति या प्रशंसा के योग्य, प्रशंसनीय।
स्तुत्या *स्त्री.* गोपीचंदन।
स्तुनक पुं. छाग, बकरा।
स्तूप पुं. {सं.} मिट्टी, पत्थर आदि का ऊँचा ढूह, टीला; वह ढूह या टीला जो भगवान बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा की अस्थि, दाँत, केश आदि स्मृतिचिह्नों को सुरक्षित रखने के लिए उनके ऊपर बनाया गया हो; ऊँचा ढेर।
स्तेन पुं. {सं.} चोर; चोरी।
स्तेम पुं. गीलापन।
स्तेय पुं. {सं.} चोरी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तेयी पुं. सुनार, चूहा।
स्तोक पुं. चातक, बूँद; *वि.* थोड़ा, कम।
स्तोतव्य *वि.* स्तुति के योग्य।
स्तोता *वि.* {सं. स्तोतृ} स्तुति करनेवाला।
स्तोत्र पुं. {सं.} देवता आदि का पद्यात्मक गुणगान; स्तव, स्तुति (साम)।
स्तोम पुं. {सं.} स्तुति, स्तव; यज्ञ; समूह, झुंड; राशि, ढेर।
स्त्री *स्त्री.* {सं.} {*भाव.* स्त्रीत्व, *वि.* स्त्रैण} मनुष्य जाति के जीवों के दो भेदों में से एक जो अपनी सुंदरता, कोमलता आदि के लिए प्रसिद्ध है और जिसका काम गर्भ धारण करके संतान उत्पन्न करना है, 'पुरुष' का उलटा, नारी, औरत; पत्नी, जोरू; किसी जीवजंतु की मादा, 'पुरुष' या 'नर' का उलटा; *स्त्री.* इस्तरी।
स्त्रीत्व पुं. {सं.} 'स्त्री' होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव, औरतपन; गुण, धर्म आदि के विचार से स्त्रियों का-सा होने का भाव, जनानापन; शब्दों के अंत में लगनेवाला स्त्रीलिंग का सूचक प्रत्यय (व्याकरण)।
स्त्रीधन पुं. {सं.} स्त्री को उसको मैके या ससुराल से मिला हुआ वह धन जिसपर उसका पूरा-पूरा अधिकार रहता है और जो परिवार के लोगों में बँट नहीं सकता।
स्त्रीधर्म पुं. {सं.} स्त्री का रजस्वला होना, मासिक धर्म।
स्त्रीप्रसंग पुं. {सं.} मैथुन, संभोग।
स्त्रीलिंग पुं. {सं.} हिन्दी व्याकरण में दो लिंगों में से एक जो स्त्री-जाति का अथवा किसी शब्द के अल्पार्थक रूप का वाचक होता है, जैसे 'लड़का' का स्त्रीलिंग 'लड़की' या 'छुरा' का स्त्रीलिंग 'छुरी' है।
स्त्रीव्रत पुं. पत्नीव्रत।
स्त्री-समागम पुं. = स्त्रीप्रसंग।
स्त्रैण *वि.* {सं.} स्त्री-संबंधी, स्त्रियों का; स्त्रियों का-सा, स्त्रियों की तरह का; स्त्री या पत्नी के वश में रहनेवाला, स्त्रीरत (पुरुष); सदा स्त्रियों की मंडली में रहने की प्रवृत्ति रखनेवाला।
स्थ *प्रत्य.* {सं.} एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर ये अर्थ देता है—स्थित, जैसे तटस्थ; उपस्थित, वर्तमान, जैसे कंठस्थ; रहनेवाला, जैसे काशीस्थ; लीन, रत, मग्न, जैसे ध्यानस्थ।
स्थगन पुं. {सं.} छिपाना; सभा की बैठक, बात की सुनवाई अथवा और कोई चलता हुआ काम कुछ समय के लिए रोक देना (एडजर्नमेंट); विचार आदि के लिए कुछ समय तक रोकना (सस्पेंशन)।
स्थगनक *वि.* {सं.} स्थगन-संबंधी, स्थगन का।
स्थगन-प्रस्ताव पुं. {सं.} वह प्रस्ताव जो विधायिकाओं आदि में यह कहकर उपस्थित किया जाता है कि और काम छोड़कर पहले इसपर विचार होना चाहिए (एडजर्नमेंट मोशन)।
स्थगित *वि.* {सं.} ढका हुआ, आच्छादित; ठहराया या रोका हुआ (स्टेंड); जो कुछ समय के लिए रोक दिया गया हो, मुलतवी (एडजर्न्ड)।
स्थगु पुं. ऊँट के पीठ का कूबड़।
स्थपति पुं. राजा, नृप, अंत:पुर का पहरेदार।
स्थपनी *स्त्री.* दोनों भौंहों के बीच का स्थान।
स्थपुट *वि.* कुबड़ा; पुं. कूबड़।
स्थल पुं. {सं.} {*वि.* स्थलीय} भूमि, जमीन; जल से रहित भूमि, खुश्की (लैंड) स्थान, जगह (प्लेस); कोई ऐसी जगह जहाँ कोई विशेष बात, रचना आदि हो या होने को हो (साइट); अवसर, मौका।
स्थलकमल पुं. {सं.} स्थल में होनेवाला कमल के आकार का एक प्रकार का फूल।
स्थलचर *वि.* {सं.} स्थल में रहने या विचरण करनेवाला।
स्थलचारी *वि.* = स्थलचर।
स्थलज *वि.* {सं.} स्थल में उत्पन्न होनेवाला।
स्थल-डमरूमध्य पुं. {सं.} दाहिने और बाएँ पानी से घिरा हुआ स्थल का वह लंबा भाग जो दोनों ओर के दो बड़े स्थलों बीच में हो और उन्हें मिलता हो (स्थमस)।
स्थलपद्म पुं. स्थलकमल।
स्थलयुद्ध पुं. {सं.} स्थल या भूभाग पर होनेवाला युद्ध, मैदान की लड़ाई।
स्थलसेना *स्त्री.* {सं.} स्थल या जमीन पर लड़नेवाली फौज, पैदल सिपाही और घुड़सवार आदि (आर्मी)।
स्थलालेख्य पुं. {सं.} किसी स्थल का रेखाचित्र (साइट प्लान)।
स्थलारविंद पुं. स्थल का कमल।
स्थली *वि.* {सं.} जमीन, भूमि; स्थान, जगह।
स्थलीय *वि.* {सं.} स्थल या भूमि से संबंध रखनेवाला, स्थल का; स्थानीय।
स्थलेशय पुं. हरिन।
स्थविरा *स्त्री.* बूढ़ी औरत।
स्थाई *वि.* = स्थायी (अशुद्ध अक्षरी)।
स्थाणु पुं. {सं.} खंभा; पेड़ का वह खाली तना जिसके ऊपर की डालियाँ न रह गई हों, ठूँठ; शिव; *वि.* स्थिर, अचल।
स्थाणु पुरुष पुं. {सं.} पुरातत्व के क्षेत्र में ग्राम-देवताओं या स्थान-देवताओं की उन मूर्तियों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सामूहिक नाम जो प्रायः सभी देशों में पत्थर आदि के लंबे खड़े टुकड़ों के रूप में पाई जाती हैं (वर्टिकल मैन, दी)।

स्थातव्य *वि.* रहने योग्य।

स्थान *पुं.* {सं.} {*वि.* स्थानिक, स्थानीय} स्थिति, ठहराव; खुला हुआ भूभाग, जमीन, मैदान; निश्चित और परिमित स्थितिवाला वह भूभाग जिसमें कोई बस्ती, प्राकृतिक रचना या कोई विशेष बात हो, जगह, स्थल, जैसे वहाँ देखने योग्य अनेक स्थान हैं; रहने की जगह (मकान, घर आदि); सेवा या लोकोपकार आदि के काम करने की जगह, पद, ओहदा (पोस्ट); बैठने का वह विशिष्ट स्थान जो निर्वाचित अथवा प्रतिनिधित्व करनेवाले लोगों के लिए व्यासिद्ध होता है; देवालय, आश्रम या इसी प्रकार का और कोई पवित्र स्थान; अवसर, मौका।

स्थानच्युत, स्थानभ्रष्ट *वि.* {सं.} {*भाव.* स्थानच्युति} जो अपने स्थान से गिर या हट गया हो।

स्थानदेवता *पुं.* {सं.} किसी स्थान (गाँव, जंगल, पहाड़ आदि) का अधिष्ठाता माना जानेवाला वह देवता जिसकी पूजा उस स्थान के आसपास रहनेवाले लोग करते हैं।

स्थानांतर *पुं.* {सं.} प्रकृत या प्रस्तुत से भिन्न या दूसरा स्थान।

स्थानांतरण *पुं.* {सं.} {*वि.* स्थानांतरित} किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर पहुँचाना, रखना या भेजना (रिसूवल); अंतरण।

स्थानाध्यक्ष *पुं.* किसी का स्थान का रक्षक।

स्थानांतरित *वि.* {सं.} जो अपने पहले स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर कर, रख या भेद दिया गया हो।

स्थानापन्न *वि.* {सं.} किसी के न रहने पर उसके स्थान पर बैठनेवाला; किसी कर्मचारी के कुछ दिनों के लिए कहीं चले जाने पर उसकी जगह काम करनेवाला, एवजी (ऑफिसिएटिंग)।

स्थानाभाव *पुं.* {सं.} स्थान का अभाव, जगह की कमी।

स्थानिक *वि.* {सं.} उस स्थान का, जिसके विषय में कोई उल्लेख य चर्चा हो; उस स्थान का जहाँ से कोई बात कही जाए (लोकल)।

स्थानिक अधिकारण्य *पुं.* {सं.} किसी विशेष स्थान पर रहनेवाले अधिकारियों का समूह, वर्ग या निकाय (लोकल ऑथॉरिटी)।

स्थानिक कर *पुं.* {सं.} किसी स्थान पर लगनेवाला कर (लोकल टैक्स)।

स्थानिक परिषद *स्त्री.* {सं.} किसी बस्ती के निवासियों के प्रतिनिधियों की वह परिषद या सभा जिसपर वहाँ के कुछ विशिष्ट लोकहित संबंधी सार्वजनिक कार्यों का भार हो (लोकल बोर्ड)।

स्थानिक स्वराज्य *पुं.* स्थानिक स्वशासन।

स्थानिक स्वशासन *पुं.* {सं.} किसी देश या प्रांत के भिन्न-भिन्न नगरों आदि को अपना शासन और व्यवस्था करने के लिए मिला हुआ अधिकार, अथवा ऐसे अधिकार के अनुसार अपना शासन आप करने की स्वतंत्रता और प्रणाली (लोकल सेल्फ-गवर्नमेंट)।

स्थानी *वि.* उचित, ठहरनेवाला।

स्थानीय *वि.* {सं.} स्थान-संबंधी; उस स्थान का जिसकी चर्चा या उल्लेख हो।

स्थानीयकरण *पुं.* {सं.} चारों ओर फैली हुई बहुत-सी शक्तियों, वस्तुओं, उपद्रवों आदि को घेर या लाकर किसी एक स्थान पर एकत्र करना (लोकलाइज़ेशन)।

स्थानेश्वर *पुं.* कुरुक्षेत्र में थानेश्वर नाम का स्थान।

स्थापक *वि.* {सं.} स्थापन करनेवाला; मूर्ति बनानेवाला; नाटक में सूत्रधार का सहकारी; संस्थापक।

स्थापत्य *पुं.* {सं.} वह विद्या जिसमें मकान, पुल आदि बनाने के सिद्धांतों और प्रणालियों का विवेचन होता है, वास्तुशास्त्र; चार उपवेदों में से एक जिसमें उक्त विषय (वास्तुशास्त्र) का विवेचन है।

स्थापन *पुं.* {सं.} {*वि.* स्थापनीय, स्थापित, कर्ता स्थापक} दृढ़तापूर्वक जमाना, रखना या बैठाना, जैसे वृक्ष या देवता का स्थापन; दृढ़ या पुष्ट आधार पर स्थित करना, स्थायी रूप देना; कोई नई संस्था या व्यापारिक कारोबार खड़ा करना; प्रमाण आदि के द्वारा ठीक सिद्ध करते हुए कोई विषय सामने रखना, निरूपण, प्रतिपादन (इस्टैब्लिशमेंट, उक्त सभी अर्थों के लिए); किसी को किसी पद पर काम करने के लिए लगाया या नियत करना (पोस्टिंग)।

स्थापना *स्त्री.* स्थापन; *स.* = स्थापित करना।

स्थापनिक *वि.* स्थापित किया हुआ।

स्थापनीय *वि.* स्थापित करने योग्य।

स्थापित *वि.* {सं.} जिसका स्थापन हुआ हो (एस्टेब्लिश्ड); विशेष 'स्थापन'।

स्थायित्व *पुं.* {सं.} 'स्थायी' होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव; किसी वस्तु विशेषतः सेवा या नौकरी के पद आदि पर होनेवाला ऐसा अधिकार जो कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरक्षित और नियत काल के लिए स्थायी हो (टेन्योर)।

स्थाय पुं. आधार, पात्र।

स्थायी *वि.* {सं.} {*भाव.* स्थायित्व} बराबर बना रहने या काम करनेवाला, सदा स्थिर रहनेवाला (परमानेंट); बहुत दिनों तक चलनेवाला, टिकाऊ; पुं. संगीत में किसी गीत का पहला पद, टेक (दूसरा पद अंतरा कहलाता है)।

स्थायीकरण पुं. {सं.} {*वि.* स्थायीकृत} किसी वस्तु, कार्य या बात को स्थायी रूप देना; किसी पद पर अस्थायी रूप से अथवा परीक्षण के रूप में काम करनेवाले व्यक्ति को उस पद पर स्थायी रूप से नियत करना; उक्त कार्य के लिए दी जानेवाली आज्ञा या स्वीकृति (कंफार्मेशन)।

स्थायी कोष पुं. {सं.} किसी संस्था आदि का वह कोष या धनराशि जो उसे स्थायी रूप से बनाए रखने के लिए क्रम-क्रम से बराबर संचित होती रहती है और जिसका उपयोग उस संस्था को पुष्ट रूप देने और स्थायी बनाए रखने में होता है।

स्थायी निधि *स्त्री.* {सं.} वह निधि जो कोई काम चलाए चलने के लिए स्थापित की गई हो और जिसके ब्याज मात्र से वह काम चलता हो; स्थायी कोष (एंडाउमेंट)।

स्थायी भाव पुं. {सं.} साहित्य में वे मूल तत्व या भाव जो मूलत: मनुष्यों के मन में प्राय: सदा निहित रहते और कुछ विशिष्ट अवसरों पर अथवा कुछ विशिष्ट कारणों से स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं, जैसे प्रेम, हर्ष या उससे उत्पन्न होनेवाला हास्य, खेद, दुख, शोक, भय, वैराग्य आदि; इन्हीं तत्वों या भावों के आधार पर साहित्य के ये नौ रस स्थिर हुए हैं—शृंगार, हास्य करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स और शांत; इन्हीं रसों से मूल तथा स्थायी रूप से स्थित रहनेवाले भाव स्थायी कहलाते हैं।

स्थायी समिति *स्त्री.* {सं.} वह समिति जो स्थायी रूप से बनी रहकर काम करने के लिए नियुक्त की गई हो; किसी सम्मेलन या महासभा आदि की वह समिति जो उस सम्मेलन या महासभा के अगले अधिवेशन तक सब कार्यों की व्यवस्था के लिए चुनी जाती है (स्टैंडिंग कमिटी)।

स्थाली *स्त्री.* {सं.} हंडी, हँडिया; मिट्टी की रिकाबी।

स्थालीपुलाक न्याय पुं. {सं.} (हाँडी में का एक चावल देखकर, अर्थात्) कोई एक बात देखकर उसके संबंध की या उस तरह की और बातें जान लेना।

स्थावर *वि.* {सं.} अचल, स्थिर; जो अपने स्थान से हट न सके, अचल, गैरमनकूला 'जंगम' का विरु. (इम्मूवेबुल); उक्त प्रकार के पदार्थों से उत्पन्न होने या संबंध रखनेवाला, जैसे स्थावर विष।

स्थावर विष पुं. {सं.} वह विष जो स्थावर पदार्थों में या उनके साथ पाया जाता है, जैसे सँखिया।

स्थावर संपत्ति *स्त्री.* {सं.} वह संपत्ति जो अपने स्थान पर दृढ़तापूर्वक लगी या जमी हो और वहाँ से हटाई न जा सकती हो, अचल संपत्ति।

स्थाविर पुं. वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

स्थित *वि.* {सं.} {*भाव.* स्थिति} एक स्थान पर ठहरा या टिका हुआ; बैठा हुआ, आसीन; उपस्थित, मौजूद।

स्थिति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* स्थित} स्थित होने की क्रिया या भाव, रहना या होना, अवस्थान, अस्तित्व; एक ही स्थान पर या एक ही रूप में बना रहना; आर्थिक, सामाजिक आदि दृष्टियों से प्राय: होनेवाली अवस्था, दशा, हालत, जैसे उनकी स्थिति अच्छी नहीं है; पद, मर्यादा आदि के विचार से समाज में किसी व्यक्ति, संस्था आदि की वह विधिक स्थिति जो अपने क्षेत्र में कुछ निश्चित सीमा में प्राप्त होती है और जो उसकी मर्यादा, पद, सम्मान आदि की सूचक होती है (स्टेटस); वे बातें जो कोई पक्ष अपने वक्तव्य, अभियोग, आरोप आदि के संबंध में कहता या उपस्थित करता है, जैसे इस विषय में मैं अपनी स्थिति आपको बतला चुका हूँ (केस)।

स्थितिक *वि.* {सं.} एक ही स्थान या रूप में ठहरा या बना रहनेवाला, स्थिर (स्टैटिक)।

स्थितिप्रज्ञ *वि.* {सं.} जिसकी विवेकबुद्धि स्थिर हो; सब प्रकार के मनोविकारों से रहित और आत्म में ही संतुष्ट तथा सदा प्रसन्न रहनेवाला।

स्थितिस्थापक *वि.* {सं.} {*भाव.* स्थितिस्थापकता} दाब हट जाने पर फिर ज्यों-का-त्यों हो जानेवाला, लचीला।

स्थिर *वि.* {सं.} {*भाव.* स्थिरता} एक ही स्थिति में रहने या ठहरनेवाला, निश्चल; सदा ज्यों-का-त्यों बना रहनेवाला, स्थायी (स्टैबल); निश्चय के रूप में लाया हुआ, निश्चित; उद्वेग, चंचलता आदि से रहित, शांत।

स्थिरचित्त *वि.* {सं.} जो अपने विचारों आदि पर स्थिर या दृढ़ रहता हो, दृढ़ चित्त; जिसके मन में किसी प्रकार की विकलता, उद्वेग, घबराहट आदि न हो।

स्थिरता *स्त्री.* {सं.} स्थिर होने का भाव, धर्म, गुण या दशा, निश्चलता; दृढ़ता (स्टेबिलिटी)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिरबुद्धि *वि.* {सं.} जिसकी बुद्धि स्थिर या ठिकाने हो, जो अच्छी तरह और उचित रूप में सब बातें सोच-समझ सकता हो।
स्थिरा *स्त्री.* पृथ्वी, दृढ़ चित्तवाली स्त्री।
स्थिरायु *पुं.* दीर्घजीवी।
स्थिरीकरण *पुं.* {सं.} घटती-बढ़ती रहनेवाली वस्तुओं का स्वरूप या मानक स्थिर करना, जैसे मूल्य या भाव का स्थिरीकरण (स्टैबिलाइज़ेशन)।
स्थूण *पुं.* एक यक्ष का नाम।
स्थूणा *स्त्री.* खंभा, थूनी, निहाई।
स्थूल *वि.* {सं.} {*भाव.* स्थूलता} मोटा; तुरंत या बिना परिश्रम के समझ में आनेवाला, 'सूक्ष्म' का विरु., जैसे स्थूल आय (ग्रॉस)।
स्थूल आय *स्त्री.* {सं.} वह सारी आय जिसमें से लागत या परिव्यय निकाला न गया हो (ग्रॉस इन्कम)।
स्थूलता *स्त्री.* {सं.} 'स्थूल' का गुण, भाव या धर्म; मोटापन, मोटाई।
स्थूला *स्त्री.* गजपीपल, बड़ी इलायची।
स्थूलाक्ष *पुं.* खर का साथी दैत्य।
स्थूलास्य *पुं.* सर्प, साँप; *वि.* बड़े मुँहवाला।
स्थैतिक *वि.* {सं.} एक ही स्थिति में बना रहनेवाला (स्टैटिक)।
स्थैर्य *पुं.* = स्थिरता।
स्थौल्य *पुं.* मोटे होने का भाव।
स्नात *वि.* {सं.} {*स्त्री.* स्नाता} नहाया हुआ; जिसके सब अंगों पर किसी प्रकार का प्रभाव पड़ा हो, जैसे चंद्रिका से स्नात उद्यान।
स्नातक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* स्नातिका} वह जिसने विद्या का अध्ययन और ब्रह्मचर्य व्रत समाप्त कर लिया हो; वह जिसने किसी विश्वविद्यालय की कोई परीक्षा पारित की हो (ग्रेजुएट)।
स्नान *पुं.* {सं.} {*वि.* स्नात} स्वच्छ या शीतल करने के लिए सारा शरीर जल से धोना या जलराशि में प्रवेश करना, नहाना; धूप, वायु आदि के सामने इस प्रकार बैठना, लेटना या होना कि सारे शरीर पर उसका पूरा प्रभाव पड़े, जैसे वायुस्नान, आतपस्नान; इस प्रकार किसी वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु का पड़नेवाला प्रभाव या प्रसार, जैसे–चंद्रमा की चाँदनी में पृथ्वी का स्नान।
स्नानागार *पुं.* {सं.} स्नान करने का कमरा या कोठरी।
स्नायविक *वि.* {सं.} स्नायु-संबंधी।
स्नायी *वि.* स्नान करनेवाला।
स्नायु *स्त्री.* {सं.} {*वि.* स्नाविक} सूक्ष्म या महीन नस।
स्नायुतंत्र *पुं.* {सं.} सारे शरीर में फैला हुआ बहुत सूक्ष्म नसों का वह जाल जिससे स्पर्श, शीत, ताप, वेदना आदि की अनुभूति होती है (नर्व्स सिस्टम)।
स्निग्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* स्निग्धता} जिसमें स्नेह या प्रेम हो; जिसमें स्नेह या तेल हो या लगा हो, चिकना।
स्निग्धता *स्त्री.* {सं.} 'स्निग्ध' होने का भाव, गुण या धर्म; चिकनापन।
स्नुषा *स्त्री.* पुत्रवधू, लड़के की पत्नी।
स्नुही *स्त्री.* थूहड़ का पौधा।
स्नेह *पुं.* {सं.} {*वि.* स्नेही} प्रेम, प्यार, मुहब्बत; चिकना पदार्थ, विशेषत: तेल।
स्नेहपात्र *पुं.* {सं.} वह जिसके साथ स्नेह किया जाए।
स्नेहपान *पुं.* {सं.} वैद्यक के विधान के अनुसार कुछ विशिष्ट रोगों में तेल, चरबी आदि पीने की प्रक्रिया।
स्नेहित *वि.* तेल लगाया हुआ, चिकना।
स्नेहिल *वि.* {सं.} स्नेह से भरा।
स्नेही *पुं.* {सं. स्नेहिन} वह जिसके साथ स्नेह या प्रेम हो, प्रेमी।
स्पंद *पुं.* {सं.} {*वि.* स्पंदित} धीरे-धीरे हिलना या काँपना; स्पंदन की क्रिया में होनेवाला हल्का आघात या फड़क (पल्स); विशेष 'स्पंदन'।
स्पंदन *पुं.* {सं.} {*वि.* स्पंदित} रह-रहकर धीरे-धीरे हिलना या काँपना; जीवों के शरीर में रक्त के प्रवाह या संचार के कारण कुछ रुक-रुककर होनेवाली वह गति जो हृदय के बार-बार फूलने और संकुचित होने से आघात या खटक के रूप में उत्पन्न होती है, जैसे नाड़ी या हृदय से होनेवाला उक्त प्रकार का व्यापार या स्थिति, फड़क (पल्सेशन)।
स्पंदिनी *स्त्री.* रजस्वला स्त्री।
स्पंदित *वि.* {सं.} हिलता, काँपता या फड़कता हुआ।
स्पंदी *वि.* काँपनेवाला।
स्पर्धा, स्पर्द्धा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* स्पर्धित, स्पर्द्धित} प्रतियोगिता आदि में किसी से होनेवाली होड़; सामर्थ्य या योग्यता से अधिक करने या पाने की इच्छा; किसी में कोई अच्छी बात देखकर सद्भावपूर्वक उसके समान होने की कामना (एम्यूलेशन)।
स्पर्धी, स्पर्द्धी *वि.* {सं. स्पर्द्धिन्} स्पर्द्धा करनेवाला।
स्पर्श *पुं.* {सं.} {*वि.* स्पृष्ट} त्वचा का वह गुण जिससे छूने, दबने आदि का अनुभव होता है; एक वस्तु के तल का दूसरी वस्तु के तल से

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सटना या छूना (टच); व्याकरण के उच्चारण के चार प्रकार के आभ्यन्तर प्रयत्नों में से एक जिसमें उच्चारण करते समय वागिन्द्रिय का द्वार बंद-सा हो जाता है ('क' से 'म' तक के व्यंजनों का उच्चारण इसी प्रयत्न से होता है); ग्रहण के समय सूर्य अथवा चंद्रमा पर छाया पड़ने लगना; *वि.* {सं.} (वर्ण) जिसका उच्चारण करते समय जीभ मुख के किसी अंग को छूती हो तथा वायु रगड़ खाते हुए बाहर निकलती हो।

स्पर्शजन्य *वि.* {सं.} स्पर्श से उत्पन्न; संक्रामक।

स्पर्शमणि *पुं.* {सं.} पारस पत्थर।

स्पर्शरेखा *स्त्री.* {सं.} ज्यामिति में, वह सरल रेखा जो किसी वृत्त को किसी एक बिंदु पर स्पर्श करती हुई (बिना उस वृत्त को कहीं से काटे) एक ओर से दूसरी ओर निकल जाती है (टैन्जेंट)।

स्पर्शा *स्त्री.* कुलटा, छिनाल स्त्री।

स्पर्शी *वि.* {सं.} {*स्त्री.* स्पर्शिनी} स्पर्श करने या छूनेवाला।

स्पर्शेंद्रिय *स्त्री.* {सं.} त्वचा, चमड़ा।

स्पष्ट *वि.* {सं.} {*भाव.* स्पष्टता} साफ दिखाई देने या समझ में आनेवाला (एक्सप्रेस्ड); जिसके संबंध में कोई धोखा या संदेह न हो (क्लियर)।

स्पष्टतया *क्रि. वि.* {सं.} स्पष्ट रूप से, साफ-साफ।

स्पष्टवक्ता *पुं.* {सं.} वह जो बिना किसी संकोच या भय के स्पष्ट या साफ बातें कहने का अभ्यस्त हो।

स्पष्टवादी *पुं.* = स्पष्ट वक्ता।

स्पष्टीकरण *पुं.* {सं.} कोई बात इस प्रकार स्पष्ट या साफ करना कि उसके संबंध में कोई भ्रम न रहे (एल्यूसिडेशन); जो बात स्पष्ट होने से रह गई हो, उसे इस प्रकार स्पष्ट करना कि औरों का भ्रम दूर हो जाए, सफाई; किसी अपने किए हुए कार्य के विषय में आपत्ति होने पर यह बतलाना कि किन कारणों से यह काम इस रूप में किया गया है, विवृत्ति, व्याख्या।

स्पुक्का *स्त्री.* लजाधुर लता।

स्पृश *वि.* स्पर्श करनेवाला।

स्पृश्य *वि.* {सं.} स्पर्श करने के योग्य, छूने लायक।

स्पृष्ट *वि.* {सं.} जिसका या जिससे स्पर्श हुआ हो, छुआ हुआ; *पुं.* व्याकरण में वर्णों के उच्चारण का वह प्रयत्न जिसमें दोनों होंठ एक दूसरे को छू लेते हैं, जैसे प या म में।

स्पृहणीय *वि.* {सं.} जिसकी स्पृहा या कामना करना उचित या योग्य हो, बहुत अच्छा।

स्पृहा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* स्पृहणीय} इच्छा, कामना।

स्पृही *वि.* अभिलाषा करनेवाला।

स्फटिक *पुं.* {सं.} एक प्रकार का सफेद पारदर्शी पत्थर जो देखने में प्रायः बरफ के टुकड़े की तरह होता है; उक्त प्रकार के पत्थर की तरह बनाया हुआ एक प्रकार का शीशा जिसमें पारदर्शिता अपेक्षाकृत अधिक होती है (क्रिस्टल, उक्त दोनों अर्थों के लिए); शीशा, काँच।

स्फटिका *स्त्री.* फिटकरी।

स्फटिकाभ्र *पुं.* कपूर।

स्फटिकीकरण *पुं.* {सं.} ऐसा कार्य या प्रक्रिया करना जिससे कोई वस्तु स्फटिक का रूप धारण करे (क्रिस्टलाइज़ेशन)।

स्फटिकोषल *पुं.* बिल्लौर।

स्फाटक *पुं.* फिटकरी।

स्फार *वि.* {सं.} प्रचुर, विपुल, बहुत अधिक; विकट; जो फैल या फूल कर बड़ा हो गया हो। **उदा.** मोगरा कर्ण-फूल सा स्फार-**पंत**।

स्फीत *वि.* {सं.} {*भाव.* स्फीति} बढ़ा हुआ, वर्द्धित; फूला या उभरा हुआ, जैसे गर्व से स्फीत वक्षस्थल; समृद्ध संपन्न।

स्फीति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* स्फीत} कुछ विशिष्ट कारणों से अस्वाभाविक या कृत्रिम रूप से बढ़ना या फूलना (इंफ्लेशन); मुद्रास्फीति।

स्फुट *वि.* {सं.} दिखाई देनेवाला, व्यक्त; खिला हुआ, विकसित।

स्फुटन *पुं.* {सं.} सामने आना; (फूल का) खिलना या फूलना; फूटना।

स्फुटित *वि.* {सं.} खिला हुआ; हँसता हुआ।

स्फुरण *पुं.* {सं.} {*वि.* स्फुरित} कुछ-कुछ हिलना; (अंग का) फड़कना।

स्फुरति *स्त्री.* = स्फूर्ति।

स्फुर्लिंग *पुं.* {सं.} चिनगारी।

स्फूर्ति *स्त्री.* {सं.} धीरे-धीरे हिलना; फड़कना; किसी काम के लिए मन में होनेवाला उत्साह; फुरती, तेजी।

स्फोट (न) *पुं.* {सं.} किसी वस्तु का अपने ऊपरी आवरण को फाड़कर वेगपूर्वक बाहर निकलना, फूटना, जैसे ज्वालामुखी का स्फोट; फोड़ा, फुन्सी आदि।

स्फोटन *पुं.* फाड़ना, आवाज।

स्फोटा *स्त्री.* साँप का फन।

स्फोरण *पुं.* स्फूर्ति।

स्मगलर *पुं.* {अं.} तस्करी करनेवाला, तस्कर।

स्मगलरी *स्त्री.* = तस्करी।

स्मय *पुं.* अभिमान, घमंड।

स्मर *पुं.* {सं.} कामदेव।

स्मरण *पुं.* {सं.} {*वि.* स्मृत, स्मरणीय} किसी देखी, सुनी या बीती हुई बात का मन में ध्यान

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहना या फिर से याद आना; नौ प्रकार की भक्तियों में से वह जिसमें उपासक अपने देवता को बराबर याद करना रहता है; साहित्य में एक अलंकार जिसमें पहले की देखी हुई किसी वस्तु या सुनी हुई किसी बात के समान कोई दूसरी वस्तु देखने या दूसरी बात सुनने पर उस पहली वस्तु या बात का ध्यान आने का उल्लेख होता है, इसे 'स्मृति' भी कहते हैं।

स्मरणपत्र पुं. {सं.} किसी को कोई बात याद दिलाने के लिए लिखा जानेवाला पत्र (रिमाइंडर); स्मृतिपत्र।

स्मरणशक्ति *स्त्री.* {सं.} वह मानसिक शक्ति जिससे बातें स्मरण या याद रहती हैं (मेमोरी)।

स्मरणीय *वि.* {सं.} याद रखने योग्य।

स्मरना पुं. {सं.} स्मरण या याद करना।

स्मरागार पुं. भग, योनि।

स्मरारि पुं. महादेव।

स्मरासव पुं. ताड़ी।

स्मरोद्दीपन पुं. कामोद्दीपन।

स्मर्ण पुं. = स्मरण।

स्मर्प *वि.* {सं.} स्मरण या याद रखने योग्य।

स्मर्पमाण *वि.* {सं.} स्मरण करानेवाला, याद दिलानेवाला।

स्मशान पुं. = श्मशान।

स्मारक *वि.* {सं.} स्मरण करानेवाला; पुं. वह कार्य, पदार्थ या रचना जो किसी की स्मृति बनाए रखने के लिए हो, यादगार (मेमोरियल); वह चीज जो किसी को अपना स्मरण बनाए रखने के लिए दी जाए, यादगार; वह पत्र जो किसी बड़े आदमी को कुछ बातों का स्मरण कराने या कुछ बातें स्मरण रखने के लिए दिया जाए (मेमोरियल); स्मारिका।

स्मारणी *स्त्री.* ब्राह्मी बूटी।

स्मारिका *स्त्री.* {सं. स्मारक} वह पत्रिका या अंक जो किसी विशिष्ट व्यक्ति या अवसर की स्मृति बनाए रखने के लिए प्रकाशित किया जाए।

स्मार्त पुं. {सं.} वह जो स्मृतियों का अनुयायी हो।

स्मित पुं. {सं.} धीमी हँसी, मुस्कराहट; *वि.* खिला हुआ; मुस्कराता हुआ।

स्मृत *वि.* {सं.} जिसका स्मरण हो, याद में आया हुआ।

स्मृति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* स्मृत} वह ज्ञान जो स्मरण शक्ति के द्वारा एकत्र या प्राप्त होता है, याद (मेमोरी); साहित्य में किसी पुरानी या भूली हुई बात का फिर से याद आना जो एक संचारी भाव माना गया है; प्रिय के संबंध की देखी या सुनी हुई बातें रह-रहकर याद आना जो पूर्वराग की दस दशाओं में से एक है; धर्म, दर्शन, आचार-व्यवहार, आदि से संबंध रखनेवाले हिन्दू धर्मशास्त्र जिनकी रचना ऋषि-मुनियों ने वेदों का स्मरण या चिंतन करके की थी; 'स्मरण' नामक अलंकार का दूसरा नाम; विशेष 'स्मरण'।

स्मृतिचित्र पुं. {सं.} वह चित्र जो किसी व्यक्ति या घटना आदि की सामान्य स्मृति के आधार पर बनाया जाए और जिसमें भाव की अपेक्षा रूप या दृश्य आदि की ही प्रधानता हो।

स्मृतिपत्र पुं. {सं.} वह पत्र, पुस्तिका आदि जिसमें किसी विषय की कुछ मुख्य, मुख्य बातें स्मरण रखने या कराने के विचार से एकत्र की गई हों; किसी संस्था आदि के मुख्य-मुख्य नियमों आदि की पुस्तिका (मेमोरेंडम)।

स्यंद पुं. टपकना, चूना, पसीजना।

स्यंदन पुं. {सं.} रथ, विशेषतः युद्ध का।

स्यमंतक पुं. {सं.} एक मणि जिसकी चोरी का कलंक श्रीकृष्ण पर लगा था।

स्यात् *क्रि. वि.* {सं.} कदाचित्, शायद।

स्याद्वाद पुं. {सं.} जैन दर्शन जिसमें कहा गया है कि स्यात् ऐसा है, स्यात् वैसा है, स्यात् वैसा है।

स्यानपत पुं. चतुराई।

स्यानपन पुं. {हिं. सयाना + पन (प्रत्य.)} चतुरता, बुद्धिमानी; चालाकी।

स्याना *वि.* {सं. सज्ञान} {*स्त्री.* स्यानी} चतुर, बुद्धिमान, होशियार; चालाक, धूर्त; वयस्क, बालिग; पुं. बड़ा-बूढ़ा, वृद्ध पुरुष; झाड़-फूँक करनेवाला ओझा; चिकित्सक।

स्यापा पुं. {फा. स्याहपोश} मरे हुए व्यक्ति के शोक में कुछ काल तक स्त्रियों का प्रतिदिन एकत्र होकर शोक करना।

मुहा. स्यापा पड़ना = रोना-चिल्लाना मचना, बिल्कुल उजाड़ या सुनसान हो जाना।

स्याम पुं. {सं. श्याम} भारत और बर्मा के पूर्व का एक देश, थाइलैण्ड; पुं., *वि.* श्याम।

स्यामी *वि.* {हिं. स्याम} स्याम देश का; पुं. स्याम देश का निवासी; *स्त्री.* स्याम देश की भाषा।

स्यार पुं. गीदड़।

स्यारी *स्त्री.* सियारिन।

स्याल पुं. श्यालक, साला।

स्यालक पुं. पत्नी का भाई, साला।

स्यालिका *स्त्री.* पत्नी की बहन, साली।

स्यावज पुं. सावज।

स्याह *वि.* {फा.} कृष्ण वर्ण का, काला; पुं. घोड़े की एक जाति।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्याह-कलम पुं. {फा.} मुगल चित्रशैली के एक प्रकार के बिना रंग भरे रेखाचित्र जिनमें एक-एक बाल तक अलग-अलग दिखाया जाता है और होंठों, आँखों और हथेलियों में नाममात्र की और बहुत हलकी रंगत रहती है।

स्याहा पुं. सियाहा।

स्याही *स्त्री.* {फा.} वह प्रसिद्ध रंगीन तरल अथवा कुछ गाढ़ा पदार्थ जो लिखने या कपड़े, कागज आदि छापने के काम में आता है, रोशनाई; कालापन, कालिमा; कालिख, कलौंछ; *स्त्री.* साही।

स्यों *क्रि. वि.* स्यौं।

स्यौं *क्रि. वि.* {सं. सह} साथ, सहित; निकट, पास।

स्रक् पुं. {सं.} फूलों की माला, हार।

स्रग पुं. = स्रक्।

स्रगणु पुं. माला के आकार में लिखित मंत्र।

स्रग्धर *वि.* माला पहननेवाला।

स्रग्धरा *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में भ, र, भ, न, प, य और य होता है।

स्रग्विणी *स्त्री.* {सं.} एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में र, र, र, और र होता है।

स्रज *स्त्री.* माला।

स्रज्वा *स्त्री.* माला बनानेवाला माली।

स्रजना *स.* सृजना।

स्रद्धा *स्त्री.* = श्रद्धा।

स्रम पुं. = श्रम।

स्रमना *अ.* {सं. श्रम + ना (प्रत्य.)} श्रम या परिश्रम करना; थकना।

उदा. सूखे से, स्रमे से, सकबके से, थके, भले से, भ्रमे से, भभरे से, भकुवाने से–**रत्ना.।**

स्रवण पुं. {सं.} {*वि.* स्रवणीय, स्रुत} बहने की क्रिया या भाव, बहाव, प्रवाह; गर्भ का समय से पहले गिरना, गर्भपात; आय-व्यय, लाभ, फल आदि के रूप में किसी वस्तु से कुछ प्राप्त होना (एक्रूअल)।

स्रवन पुं. = श्रवण, श्रमण।

स्रवना *अ.* {सं. स्रवण} बहना, टपकना; गिरना; *स.* बहाना; टपकाना; गिराना।

स्रष्टा पुं. {सं. स्रष्ट} सृष्टि बनानेवाले, ब्रह्मा; विष्णु; शिव; *वि.* कोई चीज बनानेवाला (क्रिएटर)।

स्रस्त *वि.* {सं.} अपने स्थान से गिरा हुआ, च्युत; शिथिल, ढीला।

स्राध पुं. = श्राद्ध।

स्राप पुं. = शाप।

स्राव पुं. {सं.} बह या रसकर निकलना, क्षरण (डिस्चार्ज); गर्भपात, गर्भस्राव; निर्यास, रस।

स्रावक *वि.* {सं.} स्राव कराने, बहाने या टपकाने वाला।

स्रावित *वि.* चुआकर निकाला हुआ।

स्रावी *वि.* = स्रावक।

स्रुत *वि.* {सं.} बह या रसकर निकला हुआ; बहता हुआ; जो आय, ब्याज, लाभ, फल आदि के रूप में किसी से प्राप्त हो (एक्रूड)।

स्रुति *स्त्री.* बहाव, क्षरण।

स्रुतिमाथ पुं. = विष्णु।

स्रुवा *स्त्री.* {सं.} लकड़ी की वह कलछी जिससे हवन के समय अग्नि में घी आदि की आहुति दी जाती है।

स्रोत पुं. {सं. स्रोतस्} पानी का बहाव, धारा; नदी; पानी का सोता, झरना; वह आधार या साधन जिससे कोई वस्तु बराबर निकलती या आती हुई किसी को मिलती रहे (सोर्स)।

स्रोतस्विनी *स्त्री.* {सं.} नदी।

स्रोनकन पुं. {सं. श्रमकण} पसीने की बूँद, स्वेदकण, श्रमकण।

उदा. स्रवत स्रोतकन, तन सोभा, छबि घन बरसत मनु लाल–**सूर।**

स्वः पुं. {सं.} आकाश; स्वर्ग।

स्व *वि.* {सं.} अपना, निज का; *प्रत्य.* एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अंत में लगकर ता, स्व आदि की भाँति भाववाचकता; (जैसे–निजस्व, परस्व) या प्राप्य धन (जैसे–राजस्व, स्वामित्व) आदि का अर्थ देता है।

स्वकंपन पुं. वायु, हवा।

स्वक *वि.* निजी।

स्वकरण पुं. स्वीकार।

स्वकर्म पुं. अपना काम।

स्वकर्मी *वि.* स्वार्थी, खुदगर्जी।

स्वकाल पुं. निर्दिष्ट काल।

स्वकीय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* स्वकीया} अपना, निज का।

स्वकीया *स्त्री.* {सं.} साहित्य में वह नायिका जो केवल अपने पति से प्रेम करती हो, परपुरुष का ध्यान न करती हो; 'परकीया' का विपर्य्याय।

स्वख्यापन पुं. {सं.} स्वयं ही अपनी प्रशंसा करके अपने आपको प्रसिद्ध करना।

स्वगत *क्रि. वि.* {सं.} आप ही आप, स्वतः (कुछ कहना); *वि.* अपने में आया या लाया हुआ, आत्मगत; मन में आया हुआ, मनोगत; पुं. स्वगत-कथन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वगत-कथन *पुं.* {सं.} नाटक में किसी पात्र की कोई बात इस प्रकार कहना, मानो उसकी बात सुननेवाला वहाँ कोई हो ही नहीं, अश्राव्य।

स्वच्छंद *वि.* {सं.} {*भाव.* स्वच्छंदता} अपनी इच्छा के अनुसार सब काम कर सकनेवाला, स्वाधीन, स्वतंत्र; मनमाना आचरण करनेवाला, निरंकुश; *क्रि. वि.* बिना किसी संकोच या विचार के।

स्वच्छ *वि.* {सं.} {*भाव.* स्वच्छता} निर्मल, साफ; उज्ज्वल, शुभ्र; शुद्ध, पवित्र।

स्वच्छता *स्त्री.* {सं.} स्वच्छ होने की क्रिया या भाव, निर्मलता, सफाई।

स्वच्छना *स.* {सं. स्वच्छ} स्वच्छ, शुद्ध या साफ करना।

स्वच्छी *वि.* स्वच्छ, साफ-सुथरा।

स्वज *पुं.* खून, बेटा, पसीना; *वि.* स्वाभाविक।

स्वजन *पुं.* {सं.} अपने परिवार के लोग; रिश्तेदार, संबंधी।

स्वजनि (नी) *स्त्री.* {सं. स्वजन} अपने कुटुंब या आपसदारी की स्त्री; सखी, सहेली, सहचरी।

स्वजाति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* स्वजातीय} अपनी जाति; *वि.* अपनी ही जाति का।

स्वजातीय *वि.* {सं.} अपनी ही जाति या वर्ग का।

स्वजीवनी *स्त्री.* आत्मचरित।

स्वतंत्र *वि.* {सं.} {*भाव.* स्वतंत्रता} जो किसी के दबाव के बिना स्वयं सबकुछ कर सकता हो, स्वाधीन, आजाद (इंडिपेंडेंट); अलग, जुदा, भिन्न; नियमों आदि के बंधन से रहित (फ्री)।

स्वतंत्रता *स्त्री.* {सं.} बिना बाहरी दबाव के स्वयं सबकुछ कर सकने की शक्ति या अधिकार, आजादी (फ्रीडम); वह अवस्था जिसमें बिना किसी प्रकार की रोक-टोक के विशेषत: बिना किसी राजकीय या शासनिक रोक-टोक के कोई काम करने का अधिकार होता है, स्वातंत्र्य, जैसे–भाषण या विवेक-संबंधी स्वतंत्रता।

स्वतंत्रा *स्त्री.* {सं.} साहित्य में 'गणिमा' या 'सामान्या' नायिका का दूसरा नाम।

स्वतंत्री *वि.* स्वाधीन।

स्वत: *क्रि. वि.* {सं. स्वतस्} आपसे आप, आपही, स्वयं, खुद।

स्वत:सिद्ध *वि.* स्वयंसिद्ध।

स्वतुल्य *वि.* अपने समान।

स्वत्व *पुं.* {सं.} स्व का भाव, अपनापन; वह अधिकार जिसके आधार पर कोई चीज अपने पास रखी या किसी से ली या माँगी जा सकती हो, अधिकार, हक; वह स्थिति जिसमें किसी वस्तु या विषय के हानि-लाभ से किसी व्यक्ति का विशेष रूप से संबंध हो, स्वार्थ (इंटरेस्ट)।

स्वत्वाधिकारी *पुं.* {सं. स्वत्वाधिकारिन्} वह जिसे किसी बात का पूरा स्वत्व या अधिकार प्राप्त हो; स्वामी, मालिक।

स्वतोविरोधी *पुं.* अपना ही खंडन करनेवाला।

स्वदेश *पुं.* {सं.} अपना देश, मातृभूमि।

स्वदेशी *वि.* {सं. स्वदेशीय} अपने देश का; अपने देश में बना हुआ।

स्वधर्म *पुं.* अपना धर्म।

स्वधा *विस्मयादि.* {सं.} एक शब्द जिसका प्रयोग यज्ञ में हवि देने के समय होता है; *स्त्री.* दक्ष की एक कन्या का नाम; पितरों के उद्देश्य से दिया जानेवाला भोजन।

स्वधाभोजी *पुं.* पितृगण।

स्वन *पुं.* {सं.} शब्द, आवाज।

स्वनामधन्य *वि.* {सं.} जो अपने नाम से ही धन्य या प्रसिद्ध हो, बहुत बड़ा पराक्रमी या महापुरुष।

स्वपच *पुं.* = श्वपच (चांडाल)।

स्वप्न *पुं.* {सं.} सोने की क्रिया या अवस्था, निद्रा, नींद; सोने के समय पूरी नींद न आने के कारण कुछ घटनाएँ आदि दिखाई देना (ड्रीम); नींद में इस प्रकार दिखाई देनेवाली घटना (साहित्य में इसे एक संचारी भाव माना गया है); मन में उठनेवाली वह बहुत ऊँची कल्पना या विचार जो सहज में पूरा न हो सके।

स्वप्नदोष *पुं.* {सं.} एक रोग जिसमें सोने की दशा में वीर्यपात हो जाता है।

स्वमाना *अ., स.* {सं. स्वप्न} स्वप्न देखना या दिखाना।

स्वप्निल *वि.* {सं.} सोया हुआ; स्वप्न देखता हुआ; स्वप्न-संबंधी, स्वप्न का।

स्वबीज *पुं.* आत्मा।

स्वभाव *पुं.* {सं.} {*वि.* स्वाभाविक, *क्रि. वि.* स्वभावत:} व्यक्ति या वस्तु में सदा प्राय: एक-सा बना रहनेवाला मूल या मुख्य गुण, प्रकृति (नेचर); आदत, बान (हैबिट)।

स्वभावत: *क्रि. वि.* {सं.} स्वभाव से ही, प्राकृतिक रूप से।

स्वभाव-सिद्ध *वि.* = स्वाभाविक।

स्वभावोक्ति *स्त्री.* {सं.} साहित्य में एक अलंकार जिसमें किसी जाति, वर्ग या व्यक्ति के सहज और स्वाभाविक कार्यों, धर्मों आदि का उल्लेख होता है।

स्वयं *क्रि. वि.* {सं. स्वयम्} आप, खुद; आपसे आप।

स्वयंदूत *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* स्वयंदूती} नायिका पर अपनी वासना और प्रेम आप ही या स्वयं प्रकट करनेवाला नायक।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयंदूतिका *स्त्री.* {सं.} साहित्य में वह नायिका जो नायक से मिलने की इच्छा उसपर स्वयं प्रकट करती हो।

स्वयंदूती *स्त्री.* = स्वयंदूतिका।

स्वयंपाक *पुं.* {सं.} {कर्ता स्वयंपाकी} अपना भोजन आप पकाना, अपने हाथ से भोजन बनाकर खाना।

स्वयंपाकी *पुं.* {सं. स्वयंपाकिन्} वह जो धार्मिक दृष्टि से, छूतछात से बचने के लिए अपने खाने के लिए स्वयं भोजन बनाता हो।

स्वयंभव *वि.* स्वयंभू।

स्वयंभू *पुं.* {सं.} ब्रह्मा; काल; कामदेव; शिव; *वि.* आपसे आप उत्पन्न होनेवाला; आपसे आप कुछ बन जानेवाला (बिना शिक्षा, अधिकार, योग्यता आदि प्राप्त किए); जैसे–स्वयं नेता या स्वयं संपादक।

स्वयंभूत *वि., पुं.* = स्वयंभू।

स्वयंवर *पुं.* {सं.} प्राचीन भारत की एक प्रसिद्ध प्रथा जिसमें कन्या अपने लिए आप ही वर चुन लेती थी।

स्वयंवरा *स्त्री.* {सं.} अपना वर आप चुननेवाली कुमारी या स्त्री, पतिवरा।

स्वयंसिद्ध *वि.* {सं.} {*भाव.* स्वयंसिद्धि} (बात या तत्व) जो किसी तर्क या प्रमाण के बिना आप ही ठीक और सिद्ध हो, सर्वमान्य।

स्वयंसिद्धि *स्त्री.* {सं.} {*वि.* स्वयंसिद्ध} वह सर्वमान्य सिद्धांत या तत्व जिसे सिद्ध या प्रमाणित करने की कोई आवश्यकता न हो (एग्जियम)।

स्वयंसेवक *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* स्वयंसेविका} अपनी इच्छा से और केवल सेवाभाव से आप ही किसी काम में विशेषकर सैनिक ढंग के काम में सम्मिलित होनेवाला व्यक्ति।

स्वयमधिगत *वि.* स्वयं प्राप्त किया हो।

स्वयमनुष्ठित *वि.* जिसका अनुष्ठान स्वयं किया हो।

स्वयमेव *क्रि. वि.* {सं.} आप ही।

स्वयमर्जित *वि.* स्वयं कमाया हुआ।

स्वयमीश्वर *पुं.* परमेश्वर।

स्वयमुदित *वि.* आप ही उदित हुआ हो।

स्वयश *पुं.* अपनी कीर्ति।

स्वयोनि *वि.* जो आप ही अपनी उत्पत्ति का स्थान हो।

स्वर *पुं.* {सं.} {*भाव.* स्वरता} कोमलता, तीव्रता, उतार-चढ़ाव आदि से युक्त वह शब्द जो प्राणियों के गले अथवा एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का आघात पड़ने से निकलता है; संगीत में इस प्रकार के ये सात निश्चित शब्द या ध्वनियाँ जिनका स्वरूप, तीव्रता, तन्यता आदि स्थिर हैं, सुर, यथा–षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद; व्याकरण में वह वर्णात्मक शब्द जिसका उच्चारण बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता के और आप-से-आप होता है और जिसके बिना किसी व्यंजन का उच्चारण नहीं हो सकता (वॉवेल); यथा–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ और औ।

स्वरकर *वि.* स्वर को सुरीला बनानेवाला।

स्वरग्राम *पुं.* {सं.} संगीत में 'सा' से 'नि' तक के सातों स्वरों का समूह, सप्तक।

स्वरपात *पुं.* {सं.} किसी शब्द का उच्चारण करने में उसके किसी वर्ण पर कुछ ठहरना या रुकना; उचित वेग, रुकाव आदि का ध्यान रखते हुए होनेवाला शब्दों का उच्चारण (एक्सेंट)।

स्वरभंग *पुं.* {सं.} आवाज या गला बैठना, जो एक रोग माना गया है; साहित्य में हर्ष, भय, क्रोध, मद आदि से गला भर आना अथवा जो कुछ कहना हो उसके बदले मुख से और कुछ निकल जाना जो एक सात्विक अनुभाव माना गया है।

स्वरभानु *पुं.* श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

स्वरभेद *पुं.* गला बैठ जाना।

स्वरमंडल *पुं.* {सं.} वीणा की तरह का एक बहुत पुराना बाजा जिसका प्रचार आजकल बहुत कम हो गया है।

स्वरयंत्र *पुं.* {सं.} गले के अंदर का वह अवयव या अंश जिसकी सहायता या प्रयत्न से स्वर या शब्द निकलता है (लैटिंक्स)।

स्वरलहरी *स्त्री.* {सं.} ऊँचे-नीचे स्वरों की वह लहर या क्रम जो प्रायः संगीत आदि के लिए उत्पन्न की जाती है।

स्वरलिपि *पुं.* {सं.} संगीत में किसी गीत या तान आदि में आनेवाले सभी स्वरों का क्रमबद्ध लेख (नोटेशन)।

स्वरशास्त्र *पुं.* वह शास्त्र जिसमें स्वर की बातों का ज्ञान हो।

स्वरस *पुं.* {सं.} पत्तियों आदि को कूटकर निकाला हुआ रस (वैद्यक)।

स्वराज्य *पुं.* {सं.} वह शासन-प्रणाली जिसमें किसी देश के निवासी अपने देश का सब शासन और प्रबंध स्वयं और बिना किसी विदेशी शक्ति के दबाव के रहते हों, अपना राज्य।

स्वराट् *पुं.* ईश्वर, परमात्मा।

स्वरिक *वि.* {सं. स्वर} कंठ से निकलनेवाले स्वर से संबंध रखनेवाला (फोनेटिक)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वरित *वि.* {सं.} जिसमें स्वर होता हो, स्वर से युक्त।

स्वरुचि *स्त्री.* अपनी रुचि।

स्वरूप *पुं.* {सं.} व्यक्ति, पदार्थ, कार्य आदि की आकृति, शकल; मूर्ति, चित्र आदि; वह जिसने किसी देवता का रूप धारण किया हो; *वि.* {*स्त्री.* स्वरूपा} खूबसूरत; तुल्य, समान; *प्रत्य.* एक प्रत्यय जो संस्कृत की संज्ञाओं में लगकर उन्हें क्रिया-विशेषण रूप देता है; रूप में, तौर पर।

स्वरूपवान, स्वरूपवान् *वि.* {सं. स्वरूपवत्} {*स्त्री.* स्वरूपवती} सुंदर, खूबसूरत।

स्वरूपी *वि.* {सं. स्वरूपिन्} स्वरूपवाला; किसी के स्वरूप के अनुसार होने या दिखाई देनेवाला; *पुं.* सारूप्य।

स्वरूपोत्प्रेक्षा *स्त्री.* वस्तूत्प्रेक्षा।

स्वरोदय *पुं.* {सं.} स्वरों या श्वासों के द्वारा सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जानने की विद्या।

स्वर्गंगा *स्त्री.* आकाश-गंगा।

स्वर्ग *पुं.* {सं.} हिन्दुओं के अनुसार सात लोकों में से वह जिसमें पुण्य और सत्कर्म करनेवालों की आत्माएँ जाकर निवास करती हैं, देवलोक; अन्य धर्मों के अनुसार इसी प्रकार का एक विशिष्ट स्थान जो आकाश में माना जाता है, बहिश्त (हेवेन); वह स्थान जहाँ बहुत अधिक सुख मिले और किसी प्रकार का कष्ट न हो; आकाश।

स्वर्गगामी *वि.* {सं. स्वर्गगामिन्} {*स्त्री.* स्वर्गगामिनी} स्वर्ग की ओर जानेवाला; जो मर चुका हो, स्वर्गीय।

स्वर्गवास *पुं.* {सं.} मृत्यु, मौत।

स्वर्गवासी *वि.* {सं. स्वर्गवासिन्} {*स्त्री.* स्वर्गवासिनी} स्वर्ग में रहनेवाला; जो मर गया हो, स्वर्गीय, मृत।

स्वर्गस्थ *वि.* {सं.} जो स्वर्ग में हो या स्थित हो; स्वर्गवासी।

स्वर्गापमा *स्त्री.* मंदाकिनी।

स्वर्गामी *वि.* जो स्वर्ग चला गया हो।

स्वर्गारूढ़ *वि.* स्वर्ग को सिधारा हुआ।

स्वर्गारोहण *पुं.* {सं.} स्वर्ग की ओर चढ़ना या जाना; मरना।

स्वर्गिक *वि.* = स्वर्गीय।

स्वर्गी *पुं.* देवता; *वि.* स्वर्गगामी।

स्वर्गीय *वि.* {सं.} {*स्त्री.* स्वर्गीया} स्वर्ग-संबंधी, स्वर्ग का; स्वर्ग में रहने या होनेवाला; जो मर कर स्वर्ग चला गया हो, मृत; जिसकी मृत्यु अभी हाल में अथवा कुछ ही दिन पहले हुई हो (लेट)।

स्वर्ण *पुं.* {सं.} सोना नामक बहुमूल्य और प्रसिद्ध धातु, सुवर्ण।

स्वर्णाकर *पुं.* सोने की खान।

स्वर्णकार *पुं.* {सं.} सोने-चाँदी के गहने आदि बनानेवाला, सुनार।

स्वर्णकीट *पुं.* {सं.} एक प्रकार का चमकीला कीड़ा, सोन-किरवा; जुगनूँ।

स्वर्णगिरि *पुं.* {सं.} सुमेरु पर्वत।

स्वर्ण जयंती *स्त्री.* {सं.} किसी व्यक्ति, संस्था आदि या किसी महत्वपूर्ण कार्य के जन्म या आरंभ होने के 50 वर्ष पूरा होने पर होनेवाली जयंती (गोल्डन जुबिली)।

स्वर्ण दिवस *पुं.* {सं.} बहुत ही अच्छा, शुभ और महत्वपूर्ण दिन।

स्वर्णपुरी *स्त्री.* {सं.} लंका।

स्वर्ण मुद्रा *स्त्री.* {सं.} सोने का सिक्का।

स्वर्ण युग *पुं.* {सं.} सबसे अच्छा और श्रेष्ठ युग या समय।

स्वर्णाभ *वि.* {सं.} सोने की-सी आभा या चमकवाला; सोने के रंग का सुनहला; (प्रतिभूति) जो सब प्रकार से सुरक्षित हो और जिसके डूबने या व्यर्थ होने की कोई आशंका न हो (गिल्ड एजेड)।

स्वर्णाभा *स्त्री.* पीली, जूही।

स्वर्णारि *पुं.* गंधक, सीसा।

स्वर्णिभ *वि.* {सं. स्वर्ण} सोने के रंग का; सुनहला।

स्वर्भू *पुं.* {सं.} स्वर्गलोक।

स्वर्वासी *वि.* {सं. स्वर्वासिन्} स्वर्ग का निवासी, स्वर्ग में रहनेवाला; *पुं.* देवता।

स्ववश *वि.* जो अपने वश में हो।

स्ववासिनी *स्त्री.* अपने पिता के घर रहनेवाली स्त्री।

स्वल्प *वि.* {सं.} बहुत थोड़ा।

स्वविवेक *पुं.* {सं.} कुछ विशिष्ट नियमों और बंधनों के अधीन रहकर उचित अनुचित और युक्त-अयुक्त का विचार करने की शक्ति।

स्वशासन *पुं.* {सं.} अपने सब कामों की व्यवस्था स्वयं करने का पूरा अधिकार (ऑटोनोमी); अपने अधिक्षेत्र में शासन, राजनीतिक प्रबंध आदि स्वयं करने का पूरा अधिकार (सेल्फ गवर्नमेंट)।

स्वस्ति *पद.* {सं.} कल्याण हो, मंगल हो, भला हो (आशीर्वाद); *स्त्री.* कल्याण, मंगल।

स्वस्तिक *पुं.* {सं.} एक प्रकार का बहुत प्राचीन मंगल-चिह्न जो शुभ अवसरों पर दीवारों आदि

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अंकित किया जाता है; आजकल इसका यह रूप प्रचलित है 卐; हठयोग में एक प्रकार का आसन।

स्वस्तिवाचन पुं. {सं.} एक धार्मिक कृत्य जिसमें कोई शुभ कार्य आरंभ करते समय मांगलिक मंत्रों का पाठ होता है।

स्वस्त्ययन पुं. मंगलजनक कर्म जिसके करने से अशुभ का नाश हो और शुभ प्राप्त हो।

स्वस्थ *वि.* {सं.} {*भाव.* स्वस्थता, स्वास्थ्य} जिसे कोई रोग न हो, नीरोग, तंदुरुस्त, चंगा; जिसका चित्त ठिकाने हो, सावधान; जिसमें कोई दोष, अश्लीलता आदि न हो (हेल्दी, उक्त सभी अर्थों के लिए); जिसमें कोई विकार या त्रुटि न हो, जैसे स्वस्थप्रज्ञ (साउंड)।

स्वस्थप्रज्ञ *वि.* {सं.} जिसकी बुद्धि सब बातें समझने और सब काम ठीक तरह से करने में समर्थ हो (ऑफ साउंड माइंड)।

स्वस्रीया *स्त्री.* **बहिन की लड़की, भानजी।**

स्वांग पुं. {सं. सु + अंग} किसी के अनुरूप धारण किया जानेवाला बनावटी वेष या रूप, भेस; परिहासपूर्ण खेल या तमाशा, नकल; लोगों को धोखा देने के लिए बनाया हुआ रूप या किया जानेवाला काम, आडंबर।

स्वाँगना *अ.* {हिं. स्वाँग} कृत्रिम रूप या वेष धारण करना, स्वाँग बनाना।

स्वाँगी पुं. बहुरूपिया।

स्वांगीकरण पुं. {सं.} किसी वस्तु को अपने शरीर या अंग में पूरी तरह से मिलाकर लीन या एक कर लेना, आत्मसात् करना (एसिमिलेशन)।

स्वांत पुं. {सं.} अंत:करण।

स्वांबु पुं. {सं.} अपना मूत्र।

स्वाँस, स्वाँसा पुं. = साँस।

स्वाक्षर पुं. {सं.} {*वि.* स्वाक्षरित} (किसी का) अपने हाथ से लिखा हुआ कोई छोटा लेख या हस्ताक्षर जिसे लोग अपने पास स्मृति के रूप में रखते हैं (ऑटोग्राफ); हस्ताक्षर।

स्वाक्षरित *वि.* = हस्ताक्षरित।

स्वागत पुं. {सं.} किसी मान्य या प्रिय के आने पर आगे बढ़कर आदरपूर्वक उसका किया जानेवाला अभिनंदन, अभ्यर्थना।

स्वागता *स्त्री.* ग्यारह अक्षर के प्रत्येक चरणवाला छंद।

स्वागतकारिणी समिति *स्त्री.* {सं.} वह समिति जो किसी बड़े सम्मेलन आदि में आनेवालों के स्वागत-सत्कार के लिए बनती है।

स्वागतपतिका *स्त्री.* {सं.} साहित्य में वह नायिका जो अपने पति के विदेश से लौटने पर प्रसन्न हो।

स्वागतयोग्य *वि.* {सं.} स्वागत के योग्य।

स्वागत-सत्कार पुं. {सं.} अतिथि का किया जानेवाला स्वागत और सेवा।

स्वागताध्यक्ष पुं. {सं.} स्वागत समिति का अध्यक्ष।

स्वाच्छंद *क्रि. वि.* {सं. स्वच्छंद} स्वच्छंदतापूर्वक; सुख से, सहज में; *स्त्री.* स्वच्छदंता।

स्वातंत्र्य पुं. = स्वतंत्रता।

स्वातंत्र्योत्तर *वि.* {सं.} स्वतंत्रता के बाद का।

स्वाति *स्त्री.* {सं.} पंद्रहवाँ नक्षत्र जिसकी वर्षा के जल से मोती की उत्पत्ति मानी जाती है।

स्वाती *स्त्री.* {सं. स्वाति} स्वाति नक्षत्र।

स्वाती की बूँद *स्त्री.* ऐसी दुष्प्राप्य वस्तु जिसके मिलने पर बहुत प्रसन्नता हो।

स्वात्म *वि.* {सं. स्व + आत्म} अपना, निज का।

स्वाद पुं. {सं.} कुछ खाने या पीने से जीभ या मुँह को होनेवाला अनुभव, जायका; किसी बात में होनेवाली रुचि या उससे मिलनेवाला आनंद (टेस्ट)।

स्वादक पुं. स्वाद चखनेवाला।

स्वादन पुं. {सं.} स्वाद लेने या चखने की क्रिया या भाव।

स्वादित *वि.* चखा हुआ।

स्वादिष्ट *वि.* {सं. स्वादिष्ट} जिसका स्वाद अच्छा हो।

स्वादी *वि.* {सं. स्वाद} स्वाद लेनेवाला; मजा या आनंद लेनेवाला, रसिक।

स्वादु *वि.* = स्वादिष्ट।

स्वाधिकार पुं. {सं.} अपना अधिकार; स्वाधीनता, स्वतंत्रता।

स्वाधिष्ठान पुं. {सं.} हठयोग के अनुसार शरीर के आठ चक्रों में से दूसरा जिसका स्थान शिश्न का मूल या पेड़ू है; यह छह दलों का ओर सिंदूर वर्ण का माना गया है (आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार इसी केंद्र से यौवन और शरीर की प्रजनन-शक्ति आती है)।

स्वाधीन *वि.* {सं.} {*भाव.* स्वाधीनता} जो किसी के अधीन न हो, स्वतंत्र, आजाद।

स्वाधीनता *स्त्री.* {सं.} किसी दूसरे के अधीन नहीं, बल्कि स्वयं अपने अधीन या स्वतंत्र होने की अवस्था या भाव, स्वतंत्रता, आजादी।

स्वाधीनपतिका *स्त्री.* {सं.} साहित्य में वह नायिका जिसका पति उसके वश में रहता हो।

स्वाधीनी *स्त्री.* स्वाधीनता।

स्वाध्याय पुं. {सं.} वेद की कोई शाखा जो किसी कुल या वंश में परंपरा से चली आई हो; वेदों का नियमपूर्वक, पूरा और ठीक अध्ययन; किसी विषय का अनुशीलन, अध्ययन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाना *स.* = सुलाना।

स्वाप *पुं.* {सं.} निद्रा, नींद; अज्ञान।

स्वापक *वि.* नींद लानेवाला।

स्वापन *पुं.* {सं.} प्राचीन काल का एक अस्त्र (कहते हैं कि यह अस्त्र चलने पर शत्रुओं को सुला देता था); *वि.* सुलाने या नींद लानेवाला।

स्वाभाविक *वि.* {सं.} {*भाव.* स्वाभाविकता} स्वभाव से या आप-से-आप होनेवाला, प्राकृतिक, नैसर्गिक, कुदरती (नेचुरल); स्वभाव से संबंध रखने या होनेवाला।

स्वाभिमान *पुं.* {सं.} {*वि.* स्वाभिमानी} अपनी प्रतिष्ठा या गौरव का अभिमान।

स्वाभिमानी *पुं.* {सं. स्वाभिमानिन्} {*स्त्री.* स्वाभिमानिनी} वह जिसे अपनी प्रतिष्ठा या गौरव का स्वाभिमान या ध्यान हो, अपनी इज्जत का ख्याल रखनेवाला।

स्वामि *पुं.* = स्वामी।

स्वामिकता *स्त्री.* {सं.} वह अवस्था जिसमें कोई किसी वस्तु का स्वामी या मालिक होता है, मालिक होने का भाव, मिल्कियत (ओनरशिप)।

स्वामिकार्तिक *पुं.* {सं.} शिव के पुत्र, स्कंद, कार्तिकेय।

स्वामिकुमार *पुं.* स्वामि कार्तिक।

स्वामित्व *पुं.* {सं.} 'स्वामी' होने का भाव, मालिकपन (ओनरशिप)।

स्वामित्व-चिह्न *पुं.* {सं.} वह चिह्न जो किसी वस्तु या संपत्ति पर उसका स्वामी अपना अस्तित्व सूचित करने के लिए लगा देता है (प्रॉपर्टी मार्क)।

स्वामिनी *स्त्री.* {हिं. स्वामी का *स्त्री.*} मालकिन; घर की मालकिन, गृहिणी; श्री राधिका।

स्वामिस्व *पुं.* {सं. स्वामी + स्व} वह धन जो किसी वस्तु के आविष्कर्ता, ग्रंथ के लेखक आदि को उसके स्वामित्व, अधिकार या रचना से होनेवाले लाभ के अंश के रूप में कुछ नियत मात्रा में और नियत समय पर बराबर मिलता रहता है (रॉयल्टी)।

स्वामिहीनत्व {सं.} स्वामित्व से हीन होने की अवस्था या भाव।

स्वामी *पुं.* {सं. स्वामिन्} {*स्त्री.* स्वामिनी, *भाव.* स्वामित्व} वह जिसे किसी वस्तु पर पूरे और सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हों, मालिक; घर का प्रधान व्यक्ति; पति, शौहर; साधु, संन्यासी आदि के लिए संबोधन।

स्वाम्य *पुं.* = स्वामित्व।

स्वायंभुव *पुं.* {सं.} पुराणानुसार पहले मनु का नाम जो स्वयंभू (ब्रह्मा) से उत्पन्न माने जाते हैं।

स्वायत्त *वि.* {सं.} {*भाव.* स्वायत्तता} जिसपर अपना ही अधिकार हो, जो अपने अधीन हो; जो किसी दूसरे के शासन या निगंत्रण में न हो बल्कि अपने कार्यों का संचालन अपने आप करता हो (ऑटोनोमस)।

स्वायत्त शासन *पुं.* {सं.} राजनीति या शासन की दृष्टि से स्थानीय क्षेत्रों में अपने सब काम आप करने की स्वतंत्रता (ऑटोनोमी)।

स्वार *पुं.* बादलों की गड़गड़ाहट।

स्वारथ *पुं.* {सं. स्वार्थ} अपना अर्थ, लाभ या हित, अपनी भलाई, स्वार्थ; *वि.* उचित या उपयुक्त रूप से काम में आया हुआ, सफल सार्थक, जैसे सारा परिश्रम स्वारथ हो गया।

स्वारस्य *पुं.* {सं.} सरसता; किसी बात से मिलनेवाला आनंद या सुख।

स्वारी *स्त्री.* = सवारी।

स्वारोचिस *पुं.* स्वरोचिष के पुत्र, दूसरे मनु।

स्वार्थ *पुं.* {सं.} {*भाव.* स्वार्थता} अपना अर्थ, या उद्देश्य, अपना मतलब; ऐसी बात जिसमें स्वयं अपना लाभ या हित हो; विधिक क्षेत्रों में, किसी वस्तु या संपत्ति के साथ होनेवाला किसी व्यक्ति का वह संबंध जिसके अनुसार उसे उस वस्तु या संपत्ति पर अथवा उससे होनेवाले लाभ आदि पर स्वामित्व अथवा इसी प्रकार का और कोई अधिकार प्राप्त रहता है (इंटरेस्ट)।

स्वार्थता *स्त्री.* {सं.} अपने स्वार्थ का पोषण करने की वृत्ति।

स्वार्थत्याग *पुं.* {सं.} {*वि.* स्वार्थत्यागी} किसी अच्छे काम के लिए अपने हित या लाभ का ध्यान छोड़ देना।

स्वार्थत्यागी (गिन्) *वि.* {सं.} किसी अच्छे काम या किसी के उपकार के लिए अपने हित या लाभ का ध्यान छोड़ देनेवाला।

स्वार्थपर *वि.* {सं.} {*भाव.* स्वार्थपरता} स्वार्थी, खुदगरज।

स्वार्थपरायण *वि.* {सं.} स्वार्थी।

स्वार्थसाधन *पुं.* {सं.} {*कर्ता.* स्वार्थ साधक} अपना मतलब या काम निकालना, स्वार्थ सिद्ध करना।

स्वार्थांध *वि.* {सं.} {*भाव.* स्वार्थंधता} जो अपने स्वार्थ के फेर में पड़कर अंधा हो रहा हो और भले-बुरे का ध्यान न रखता हो।

स्वार्थिक *वि.* अपने स्वार्थ के उद्देश्य से किया कार्य।

स्वार्थी *वि.* {सं. स्वार्थिन्} {*स्त्री.* स्वार्थिनी} अपना मतलब निकालनेवाला, मतलबी, खुदगरज।

स्वार्थीपन *पुं.* {सं. = हिं.} स्वार्थपरता।

स्वावना *स.* सुलाना।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वावलंबन पुं. {सं.} अपने ही भरोसे रहकर और अपने बल पर काम करना।

स्वावलंबी *वि.* {सं. स्वालम्बिन्} {*स्त्री.* स्वावलंबिनी} अपने ही भरोसे या सहारे पर रहनेवाला।

स्वाश्रय पुं. {सं.} {*वि.* स्वाश्रित} वह जिसे केवल अपना सहारा हो, दूसरों का सहारा न हो।

स्वाश्रित *वि.* {सं.} {*स्त्री.* स्वाश्रिता} केवल अपने ही सहारे रहनेवाला।

स्वास, स्वासा *स्त्री., पुं.* = श्वास।

स्वास्थ्य पुं. {सं.} स्वस्थ या नीरोग होने की दशा, आरोग्य, तंदुरुस्ती (हेल्थ)।

स्वास्थ्यकर *वि.* {सं.} तंदुरुस्ती बढ़ानेवाला आरोग्यवर्धक।

स्वास्थ्य-निवास पुं. {सं.} विशेष रूप से निश्चित या निर्मित वह स्थान जहाँ जाकर लोग स्वास्थ्य सुधार के लिए रहते हैं (सैनिटोरिअम)।

स्वास्थ्य विज्ञान पुं. {सं.} वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें शरीर को नीरोग और स्वस्थ बनाए रखने के नियमों और सिद्धांतों का विवेचन हो (हाईजीन)।

स्वाहा *पद* {सं.} एक शब्द जिसका प्रयोग हवन की हवि देते समय होता है; *वि.* जो जलकर राख हो गया हो; पूरी तरह से नष्ट, बरबाद।

स्वाहार पुं. अपना आहार।

स्वाहार्ह *वि.* छवि पाने योग्य।

स्वाहेय पुं. कार्त्तिकेय।

स्विन्न *वि.* उबाला हुआ।

स्वीकरण पुं. {सं.} स्वीकारा या अंगीकार करना; मानना।

स्वीकार पुं. {सं.} अपनाने या ग्रहण करने की क्रिया, अंगीकार, मंजूरी।

स्वीकारात्मक *वि.* {सं.} (कथन) जिसमें कोई बात स्वीकृत की गई हो अथवा उसकी पुष्टि की गई हो (अफर्मेटिव)।

स्वीकारोक्ति *स्त्री.* {सं.} वह कथन या बयान जिसमें अपना अपराध स्वीकृत किया जाए; दोष, अपराध, पाप आदि की स्वीकृति, अपने मुँह से कहकर यह मान लेना कि हमने अमुक अनुचित या बुरा काम किया है (कंफेशन)।

स्वीकार्य *वि.* {सं.} स्वीकृत या ग्रहण करने या मानने के योग्य।

स्वीकृत *वि.* {सं.} जिसके संबंध में स्वीकृति दी जा चुकी हो, स्वीकार किया हुआ (सैंक्शंड); ग्रहण किया या माना हुआ, प्रतिपन्न, मंजूर; किसी आधिकारिक रूप से मान्यता मिली हो, मान्य (रिकग्राइज़्ड)।

स्वीकृति *स्त्री.* {सं.} {*वि.* स्वीकृत} स्वीकार करने की क्रिया या भाव, मंजूरी; प्रस्ताव, शर्तें आदि मान लेने या उपहार, देने आदि ग्रहण करने की क्रिया या भाव (ऐक्सेप्टेंस); बड़ों, अधिकारियों आदि के द्वारा छोटों की प्रार्थना आदि मान लेने की क्रिया या भाव (सैक्शन)।

स्वीडी *वि.* {स्वीडन} स्वीडन देश का; *स्त्री.* स्वीडन की भाषा; पुं. स्वीडन का निवासी।

स्वीय *वि.* {सं.} अपना, निज का।

स्वीया *स्त्री.* वह नायिका जो स्वामी में अनुरक्त तथा पतिव्रता रहने की कोशिश करती है।

स्वे *वि.* = स्वः (अपना)।

स्वेच्छया *क्रि. वि.* {सं.} अपनी इच्छा से और बिना किसी के दबाव के, जैसे स्वेच्छया किया हुआ काम (वालंटरिली)।

स्वेच्छा *स्त्री.* {सं.} अपनी इच्छा, जैसे स्वेच्छा से कोई काम करना।

स्वेच्छाचार पुं. {सं.} {*भाव.* स्वेच्छाचारिता, *वि.* स्वेच्छाचारी} भला-बुरा जो कुछ मन में आए, वही कर डालना, मनमाना आचरण; यथेच्छाचार।

स्वेच्छाचारी *वि.* {सं. स्वेच्छाचारिन्} {*स्त्री.* स्वेच्छाचारिणी} स्वेच्छाचार या मनमाने ढंग से सब काम करनेवाला।

स्वेच्छासेवक पुं. = स्वयंसेवक।

स्वेटर पुं. {अं.} बनियाइन या गंजी आदि की तरह का एक प्रकार का मोटा पहनावा जो कमीज आदि के ऊपर पहना जाता है।

स्वेद पुं. {सं.} {*वि.* स्वेदित} पसीना; साहित्य में रोष, लज्जा, हर्ष, श्रम आदि से शरीर का पीसने से भर जाना जो एक सात्विक अनुभाव माना गया है; भाप।

स्वेदक *वि.* {सं.} स्वेद या पसीना लानेवाला (पदार्थ)।

स्वेदकण पुं. {सं.} पसीने की बूँद।

स्वेदज पुं. {सं.} पसीने से उत्पन्न होनेवाला जीव, जैसे खटमल, जूँ आदि।

स्वेदन पुं. {सं.} शरीर में पसीना लाना।

स्वेदनिका *स्त्री.* रसोईघर।

स्वेदनी *स्त्री.* लोहे का पात्र, तवा।

स्वेदांबु पुं. पसीना।

स्वेदायन पुं. रोमकूप।

स्वेदित *वि.* पसीने से भरा हुआ।

स्वेदी *वि.* पसीना लानेवाला।

स्वै *वि.* {सं. स्वीय} अपना; *सर्व.* सों।

स्वैच्छिक *वि.* {सं.} अपनी इच्छा से संबंध रखनेवाला; अपनी इच्छा से किया या अपने ऊपर लिया जानेवाला (वॉलेंटरी)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वैर *वि.* {सं.} {*भाव.* स्वैरता} स्वेच्छाचारी; स्वतंत्र; धीमा, मंद; मनमाना।

स्वैराचार *पुं.* {सं.} {*वि.* स्वैराचारी} ऐसा मनमाना आचरण जो नैतिक, धार्मिक, सामाजिक आदि नियमों या बंधनों की उपेक्षा करके किया जाए।

स्वैराचारी *वि.* {सं. स्वैराचारिन्} {*स्त्री.* स्वैरचारिणी} मनमाना काम करनेवाला; व्यभिचारी, लंपट।

स्वैरिणी *स्त्री.* {सं.} व्यभिचारिणी।

स्वोपार्जित *वि.* {सं. स्व + उपार्जित} स्वयं उपार्जित किया या कमाया हुआ।

ह

ह संस्कृत या नागरी वर्णमाला का तैंतीसवाँ व्यंजन जो उच्चारण के विचार से ऊष्म वर्ण कहलाता है।

हँकड़ना *अ.* = ललकारना।

हँकवा *पुं.* {हिं. हाँकना} बहुत से लोगों का शेर, चीते आदि को चारों ओर से घेरकर शिकारी के सामने लाना।

हँकवाना *स.* {हिं.} हाँकना का प्रे.।

हँकवैया *पुं.* = हाँकनेवाला।

हंका *स्त्री.* ललकार, डपट।

हँकाई *स्त्री.* {हिं. हाँकना} हाँकने की क्रिया, भाव, या मजदूरी।

हँकाना *स्त्री.* {हिं. हाँक} हाँकना; पुकारना; हँकवाना।

हँकार *स्त्री.* {सं. हुंकार} जोर से बुलाने की क्रिया या भाव, पुकार।

हंकार *पुं.* {सं. अहंकार} गर्व, घमंड; *पुं.* हुंकार।

हँकारना *स.* = पुकारना; *अ.* हुंकार करना।

हँकारा *पुं.* बुलावा, पुकार।

हँकारी *पुं.* {हिं. हँकार} लोगों को बुलाकर लानेवाला व्यक्ति; दूत; *स्त्री.* बुलाने की क्रिया या भाव, बुलाहट।

हंगामा *पुं.* {फा. हंगाम:} उपद्रव, उत्पात; शोरगुल, हल्ला; भीड़भाड़।

हंडना *अ.* {सं. अभ्यटन} घूमना, फिरना, चलना; इधर-उधर ढूँढ़ना; वस्त्र आदि का व्यवहार में आने पर कुछ समय तक चलना या ठहरना।

हंडा *पुं.* {सं. भांडक} {*स्त्री.* अल्पा. हंडी, हँडिया, हाँडी} पानी रखने या भरने का पीतल या ताँबे का एक प्रकार का बड़ा बरतन; एक विशिष्ट प्रकार की वह बड़ी रोशनी जिसके ऊपर हंडे के आकार की शीशे की बहुत बड़ी चिमनी लगी रहती है।

हँडाना *स.* {हिं.} हंडना का स.।

हँडिया *स्त्री.* हाँड़ी या हंडी।

हंडी *स्त्री.* {हिं. हंडा का *स्त्री.* अल्पा.} मिट्टी, धातु आदि का बना एक प्रसिद्ध छोटा गोलाकार बरतन, हाँड़ी।

हंत *विस्मयादि.* {सं.} एक दुखसूचक शब्द, जैसे हा हंत यह क्या हो गया।

हंतकार *पुं.* अभ्यागत हेतु निकाला हुआ भोजन।

हंतव्य *वि.* मारने योग्य।

हंता *पुं.* {सं. हेतृ} {*स्त्री.* हंत्री} हत्या या वध करनेवाला।

हँथोरी *स्त्री.* हथेली।

हँथौरा *पुं.* हथौड़ा।

हँफनी *स्त्री.* {हिं. हाँफना} हाँफने की क्रिया या भाव।

मुहा. हँफनी मिटाना = सुस्ताना।

हँवा *विस्मयादि.* {हिं. हाँ} सहमति या स्वीकृति सूचक शब्द।

हँवाना *अ.* रँभाना (गौओं का)।

हंस *पुं.* {सं.} {*स्त्री.* हंसिनी, हंसी} बत्तख की तरह का एक प्रसिद्ध जलपक्षी; सूर्य; ब्रह्मा; माया से निर्लिप्त और शुद्ध आत्मा, जीवात्मा; जीवनी शक्ति, प्राण; संन्यासियों का एक भेद; प्राणवायु (आत्मा, विशुद्ध रूप में); पैर में पहनने का नूपुर नामक गहना; ईश्वर, नारायण।

हंसक *पुं.* {सं.} **पैर में पहनने का नूपुर नाम का गहना, कडा।**

हंस-किंकिणी *स्त्री.* {सं.} ओड़व-संपूर्ण जाति की एक रागिनी जो दिन के तीसरे पहर में गाई जाती है।

हंसगति *स्त्री.* {सं.} जीवात्मा का ब्रह्मा में मिल जाना, सायुज्य मुक्ति।

हंसजा *स्त्री.* {सं.} सूर्य की कन्या, यमुना।

हँसता-मुखी *वि.* = हँस-मुख।

हँसन *स्त्री.* हँसने की क्रिया।

हँसना *अ.* {सं. हंसन} प्रसन्नता प्रकट करने के लिए मनुष्य का मुँह खोलकर हा-हा करना, हास करना।

पद हँसते हँसते = प्रसन्नता से, सहज में। दिल्लगी या परिहास करना; घर, स्थान आदि का इतना सुंदर लगना कि हँसता हुआ-सा जान पड़े।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हँसनि *स्त्री.* {हिं. हँसना} हँसने की क्रिया या भाव, हास।

हँसमुख *वि.* {हिं. हँसना + मुख} सदा हँसता रहनेवाला; विनोदशील, हास्यप्रिय, ठठोल, मसखरा।

हँसली *स्त्री.* {सं. अंसली} गले के पास छाती के ऊपर की दोनों धन्वाकार हड्डियाँ; गले में पहनने का एक गहना।

हँसाई *स्त्री.* {हिं. हँसना} हँसी; लोक में होनेवाली बदनामी या निंदा, जैसे नाम-हँसाई।

हंसाधिरूढ़ *पुं.* ब्रह्मा।

हंसाधिरूढ़ा *स्त्री.* सरस्वती।

हँसाना *स.* {हिं. हँसना} किसी को हँसने में प्रवृत्त करना।

हँसाय *स्त्री.* = हँसाई।

हंसालि *स्त्री.* एक छंद।

हंसिनी *स्त्री.* {सं.} हंस (पक्षी) की मादा।

हँसिया *स्त्री.* {सं. असिद, प्रा. असिअ} खेत की फसल, घास, तरकारी आदि काटने का एक औजार।

हँसी *स्त्री.* {हिं. हँसना} हँसने की क्रिया या भाव, हास; परिहास, दिल्लगी, मजाक, ठट्ठा; लोक में होनेवाली उपहासपूर्ण निंदा या बदनामी।

हंसी *स्त्री.* {सं.} हंस (पक्षी) की मादा।

हंसीरा *वि.* हंस-संबंधी।

हँसुआ *पुं.* = हँसिया।

हँसुली *स्त्री.* = हँसली।

हँसोड़ *वि.* {हिं. हँसना + ओड़ (प्रत्य.)} सदा हँसी की बातें करनेवाला, दिल्लगी-बाज, मसखरा, ठठोल।

हंसोदक *पुं.* नए मिट्टी के पात्र में भरकर धूप में रखा हुआ जल।

हँसौहाँ *वि.* {हिं. हँसना} {*स्त्री.* हँसौहीं} हँसानेवाला; हँसी या दिल्लगी।

हई[1] *अ.* {हिं. है + ही} 'है ही' का संक्षिप्त रूप, जैसे यह तो हई है।

हई[2] *पुं.* {सं. हयिन्} घुड़सवार।

हई[3] *विस्मयादि.* {अनु.} आश्चर्यसूचक शब्द।

हई[4] *स्त्री.* {आश्चर्य-सूचक है! या अ हैवत = डर} डर, भय।

हउँ *सर्व.* हौं।

हक *वि.* {*अ.*} सच, सत्य; उचित, वाजिब, ठीक, मुनासिब; *पुं.* अधिकार, इख्तियार; कर्तव्य, फर्ज; वह वस्तु जिसपर न्याय से अधिकार प्राप्त हो; किसी लेन-देन में बंधेज आदि के अनुसार मिलनेवाला धन; उचित या ठीक बात अथवा पक्ष; ईश्वर (मुसलमान)।

हकतलफी *स्त्री.* हक मारना, अन्याय।

हकदार *पुं.* {*अ.* हक + फा. दार} हक या अधिकार रखनेवाला, अधिकारी।

हक-नाहक *क्रि. वि.* {*अ.* नाहक + फा. हक} जबरदस्ती से; व्यर्थ, फजूल।

हकबक *वि.* हक्का-बक्का।

हकबकाना *अ.* {अनु.} हक्का-बक्का हो जाना, घबरा जाना।

हकराना *स.* {हिं. हकार} पुकारना, बुलाना।

हकलना *अ.* {सं. हुंकार} हुंकार करना; ललकारना (राज.)।

हकला *वि.* {हिं. हकलाना} हकलाकर या रुक-रुककर बोलनेवाला।

हकलाना *अ.* {अनु. हक} {*भाव.* हकलापन} शब्दों का ठीक तरह से उच्चारण न कर सकने के कारण बीच-बीच में कोई शब्द बहुत रुक-रुककर बोलना।

हकशफा (शुफा) *पुं.* {*अ.* हक्के-शुफ्अ = पड़ोसी का अधिकार} जमीन, मकान आदि खरीदने का वह हक जो गाँव के हिस्सेदारों अथवा पड़ोसियों को औरों से पहले प्राप्त होता है (प्रिएम्पशन)।

हकार *पुं.* 'ह' अक्षर।

हकाहक *क्रि. वि.* {अनु.} खूब जोरों से, प्रबल रूप से; *स्त्री.* जोरों की लड़ाई, घोर युद्ध।

हकीकत *स्त्री.* {*अ.*} वास्तविक तत्व या बात, तथ्य, असलियत; सच्चा और वास्तविक वृत्तांत।

हकीकी *वि.* असली, सच्चा।

हकीम *पुं.* {*अ.*} विद्वान, पंडित; यूनानी रीति से चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक।

हकीमी *स्त्री.* {*अ.* हकीम + ई (प्रत्य.)} हकीम का पेशा या काम; यूनानी चिकित्सा-शास्त्र, हिकमत; *वि.* हकीम-संबंधी।

हकूमत *स्त्री.* {*अ.* हुकूमत} शासन; आधिपत्य, अधिकार; राजनीतिक शासन या आधिपत्य।

हक्का *पुं.* {सं. हुंकार} हुंकार; हाँक, पुकार।

हक्काक *पुं.* {?} नगीने आदि काटने और जड़ने का काम करनेवाला।

हक्का-बक्का *वि.* {अनु. हक, बक} बहुत घबराया हुआ, भौचक्का।

हक्कार *पुं.* चिल्लाकर बुलाने का शब्द।

हक्कारना *स.* {सं. हुंकार} ललकारना।

हगना *अ.* {?} मलत्याग करना, झाड़ा या पखाना फिरना; *स.* विवश होकर देन चुकाना या कुछ देना।

हगाना *क्रि.* मल-त्याग कराना।

हगास *स्त्री.* मल-त्याग करने की इच्छा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हगोड़ा *वि.* बार-बार मल-त्याग करनेवाला, दस्त लगना।

हचकना *अ.* {अनु.} हचहच शब्द करते हुए बीच में रुकना या झुकना।

हचका *पुं.* हचकोला।

हचकोला *पुं.* {हिं. हचकना} गाड़ी आदि चलनेवाली चीजों के हिलने-डोलने से लगनेवाला धक्का, धचका।

हचना *अ.* = हिचकना।

हज *पुं.* {अ.} मुसलमानों का काबे की परिक्रमा के लिए मक्का (अरब) जाना।

हजम *वि.* {अ.} जिसका पाचन हुआ हो, पचा हुआ; बेईमानी या अनुचित रीति से इस प्रकार लिया हुआ (धन) कि फिर दिया न जाए।

हजरत *पुं.* {अ.} महात्मा, महापुरुष; दुष्ट या धूर्त।

हजाम *पुं.* नाई।

हजामत *स्त्री.* {अ.} बाल काटने और दाढ़ी बनाने का काम, क्षौर।

हजार *वि.* {फा. हज़ार } दस सौ, सहस्र; बहुत, अनेक; *पुं.* दस सौ की संख्या या अंक, 1000.

हजारा *वि.* {फा. हज़ारा} (फूल) जिसमें हजारों (बहुत अधिक) पंखुड़ियाँ हों; *पुं.* फुहारा।

हजारी *पुं.* {फा. हज़ारी} एक हजार सिपाहियों का सरदार; वर्णसंकर, दोगला।

हजारों *वि.* {हिं. हजार} कई हजार; बहुत अधिक, जैसे हजारों घटनाएँ।

हजूम *पुं.* {अ. हुजूम} भीड़।

हजूर *पुं.* {अ. हुजूर} किसी बड़े की समक्षता; बादशाह या हाकिम का दरबार, कचहरी; बहुत बड़ों को संबोधन करने का शब्द; *क्रि. वि.* (किसी बड़े के) सामने, समक्ष।

हजूरा *पुं.* {अ. हुजूरी} हजूरी।

हजूरी *पुं.* {अ. हुजूर} बड़े आदमी, बादशाह या राजा की सेवा में सदा उपस्थित रहनेवाला सेवक; *वि.* हजूर का।

हजो *स्त्री.* {अ. हज्व} निंदा।

हज्ज *पुं.* हज।

हज्जाम *पुं.* {अ.} हजामत बनानेवाला, नाई, नापित।

हटक *स्त्री.* {हिं. हटकना} हटकने या मना करने की क्रिया, वारण, वर्जन; पशुओं को हाँकने का कामे।

हटका *पुं.* किवाड़ों को खुलने से रोकने हेतु काठ।

हटकन *स्त्री.* {हिं. हटकना} हटक; पशुओं को हाँकने की लाठी।

हटकना *स.* {हिं. हटक} मना करना, रोकना; पशुओं को किसी ओर हाँकना; *अ.* मना करने पर मनाना या रुकना।

हटतार *पुं.* = टकटकी; माला का सूत।

हटना *अ.* {सं. घट्टन} अपना स्थान छोड़कर इधर-उधर होना, खिसकना, सरकना; सामने से इधर-उधर या दूर होना, टलना; अपने स्थान से पीछे की ओर चलना, जाना या पहुँचना; न रह जाना; वचन आदि का पालन न करना; *स.* हटकना।

हटवाई *स्त्री.* {हिं. हाट} हाट में जाकर सौदा लेना या बेचना, क्रय-विक्रय; *पुं.* हाट में बैठकर सौदा बेचनेवाला।

हटवाना *स.* {हिं. 'हटाना' का प्रे.} हटाने का काम दूसरे से कराना।

हटवार *पुं.* = दुकानदार।

हटा *पुं.* {हिं. हटकना या हटाना} निषेध, मनाही।

हटाना *स.* {हिं. 'हटना' का *स.*} पहले के स्थान से किसी दूसरे स्थान पर करना या भेजना; अलग या दूर करना; हराकर भगाना; जाने देने, छोड़ देना।

हटी *स्त्री.* = हट्टी (दुकान); हाट (बाजार)।

हटौती *स्त्री.* शरीर की गठन।

हट्ट *पुं.* {सं.} दुकान; बाजार, हाट।

हट्टविलासिनी *स्त्री.* वेश्या, रंडी।

हट्टा-कट्टा *वि.* {सं. हृष्ट + अनु. कट्टा} {*स्त्री.* हट्टी-कट्टी} हृष्ट-पुष्ट, बलवान।

हट्टाध्यक्ष *पुं.* हाट का अध्यक्ष।

हट्टी *स्त्री.* {सं. हट्ट} दुकान।

हठ *पुं.* {सं.} {*वि.* हठी, हठीला} आग्रहपूर्वक यह कहना कि ऐसा ही है, होगा या होना चाहिए, अड़, टेक; दृढ़प्रतिज्ञा, अटल संकल्प; अनुचित जिद, दुराग्रह।

हठना *अ.* {हिं. हठ} हठ या जिद करना; दृढ़ प्रतिज्ञा करना; आग्रह करना, जोर देना।

हठयोग *पुं.* {सं.} योग का वह अंग जिसमें शरीर को वश में करने के लिए कठिन मुद्राओं और आसनों का विधान है।

हठात् *क्रि. वि.* {सं.} हठपूर्वक; जबरदस्ती; अचानक, सहसा।

हठाहठ *क्रि. वि.* हठात्।

हठिका *स्त्री.* कोलाहल।

हठी *वि.* {सं. हठिन्} हठ करनेवाला, जिद्दी।

हठीला *वि.* {सं. हठ + हिं. ईला (प्रत्य.)} {*स्त्री.* हठीली} हठी; लड़ाई में धीरतापूर्वक जमा रहनेवाला।

हड़ *स्त्री.* {सं. हरीतकी} एक बड़ा पेड़ जिसका प्रसिद्ध फल औषध के रूप में काम आता है, हर्रे; उक्त फल के आकार का एक गहना, लटकन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हड़कंप पुं. {सं. हत्कंप} लोगों में घबराहट फैलाने या उनकी हड्डियाँ तक कँपानेवाली भारी हलचल, तहलका।

हड़कना अ. {हिं. हड़क} कोई चीज न मिलने या कोई काम पूरा न होने से बहुत व्याकुल होना; पागल होना (विशेषत: कुत्ते का)।

हड़कम पुं. हड़कम।

हड़काना स. {हिं. हड़क} तंग करने के लिए किसी को किसी के पीछे लगाना; बहुत तरसाना; दूर हटाना; अ. हड़काना।

हड़काया वि. {हिं. हड़कना} पागल (कुत्ता)।

हड़गीला पुं. बगले की जाति का पक्षी।

हड़जोड़ पुं. लता जो भीतरी चोट पर लगाई जाती है।

हड़ताल स्त्री. {सं. हट्ट = दुकान + ताला} दुख, विरोध या असंतोष प्रकट करने के लिए कल-कारखानों, कार्यालयों आदि के कर्मचारियों या जन-साधारण का सब कारबार, दुकानें आदि बंद कर देना (स्ट्राइक); स्त्री. हरताल।

हड़ताली वि. {हिं. हड़ताल + ई (प्रत्य.)} हड़ताल-संबंधी, हड़ताल का; पुं. हड़ताल करनेवाला।

हड़प वि. {अनु.} खाया निगला हुआ; लेकर छिपाया हुआ।

हड़पना स. {अनु. हड़प} मुँह में रखकर निगल जाना; अनुचित रूप से लेना, उड़ा लेना।

हड़फूटन स्त्री. हड्डियों की व्यथा।

हड़फोड़ पुं. एक तरह की चिड़िया।

हड़बड़ स्त्री. हड़बड़ी।

हड़बड़ाना अ. {अनु.} जल्दी मचाना; स. जल्दी मचाकर किसी को जल्दी-जल्दी कोई काम करने में प्रवृत्त करना।

हड़बड़िया वि. {हिं. हड़बड़} जल्दी मचानेवाला, उतावला।

हड़बड़ी स्त्री. {अनु.} जल्दी, शीघ्रता, उतावली; जल्दी या उतावलेपन के कारण होनेवाली घबराहट।

हड़हड़ाना क्रि. हड़-हड़ शब्द होना।

हड़ावर[1] पुं. {हिं. 'जड़ावर' का अनु. या हाड़ = आषाढ़} गरमी के दिनों में पहनने के कपड़े जो मालिक की ओर से नौकरों को मिलते हैं।

हड़ावर[2] स्त्री. {हिं. हाड़ = हड्ड} हड्डियों की माला।

हड़ावल स्त्री. {हिं. हाड़ + सं. अवलि} हड्डियों का ढाँचा, ठठरी; हड्डियों की माला।

हड़ीला वि. {हिं. हाड़} जिसमें हड्डियाँ मात्र रह गई हों; दुबला-पतला।

हड्डा पुं. भिड़, बर्रे।

हड्डी स्त्री. {सं. अस्थि} मनुष्यों, पशुओं आदि के शरीर के अंदर की वह प्रसिद्ध कड़ी, सफेद वस्तु जो भीतरी ढाँचे के अंग के रूप में होती है, अस्थि; वंश, खानदान।

हत् विस्मयादि. {अनु.} एक शब्द जिसका प्रयोग उपेक्षापूर्वक किसी को दूर भगाने अथवा त्याज्य या बुरा सूचित करने के लिए होता है, जैसे हत् तेरे की।

हत वि. {सं.} जो मार डाला गया हो; जिसे मार पड़ी हो; रहित; जिसका अस्तित्व मिट गया हो, जो न रह गया है, नष्ट; जिसमें विकार या न्यूनता आ गई हो, बिगड़ा हुआ, जैसे–हत्प्रभ।

हतक स्त्री. {सं. अ. हतक = फाड़ना} अपमान, अप्रतिष्ठा, हेठी।

हतचेत वि. = हतज्ञान।

हतज्ञान वि. {सं.} बेहोश, बेसुध।

हतदर्प वि. {सं.} जिसके सम्मान को चोट लगी हो।

हतना स. {सं. हत} मार डालना; मारना, पीटना; पालन न करना, न मानना; भंग करना, तोड़ना।

हतवाना क्रि. पिटवाना।

हत्प्रभ वि. {सं.} जिसकी प्रभा या श्री नष्ट हो गई हो, श्रीहीन।

हतबुद्धि वि. {सं.} बुद्धिहीन, मूर्ख; जिसकी समझ में यह न आए कि क्या करना चाहिए, किंकर्तव्यविमूढ़।

हतबोध वि. = हतबुद्धि।

हतभागा वि. अभागा।

हतभाग्य वि. {सं.} भाग्यहीन।

हतमना वि. {सं. हत + मानस्} जिसके मन में उत्साह, प्रसन्नता आदि न रह गई हो; चिंतित तथा दुखी।

हतवाना स. {हिं.} हतना का प्रे.।

हतश्री वि. {सं.} जिसके चेहरे पर कांति न रह गई हो, हत्प्रभ; मुरझाया हुआ, उदास।

हता अ. {स्त्री. हती} 'होना' का भूतकालिक एक वचन रूप था।

हताई स्त्री. {हिं. हतना} युद्ध, दंगों, दुर्घटनाओं आदि में लोगों के घायल होने, मरने आदि की क्रिया या भाव, समाप्ति (कैजुएलिटी)।

हताना स. = हतवाना।

हताश वि. {सं.} जिसकी आशा हत या नष्ट हो गई हो, निराश।

हताहत वि. {सं. हत + आहत} हत और आहत, मारे हुए और घायल।

हते अ. होना का भूतकालिक बहुवचन रूप, थे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हतो *अ.* = हता (था)।

हतोत्साह *वि.* {सं.} जिसमें उत्साह न रह गया हो।

हत्थ *पुं.* = हाथ।

हत्था *पुं.* = हाथ।

हत्था *पुं.* {हिं. हत्थ, हाथ} औजार का वह भाग जिससे उसे पकड़ते हैं, दस्ता, मूठ; केले के फलों का गुच्छा, घौद; खेतों से पानी उलीचने का काठ का एक उपकरण।

हत्यारा *पुं.* {सं. हत्या + हिं. आरा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* हत्यारिन, हत्यारी} हत्या करने या मार डालनेवाला (मर्डरर); हत्या के समान बड़े-बड़े दुष्कर्म करनेवाला, बहुत बड़ा पापी।

हत्यारी *स्त्री.* हत्या करनेवाली।

हथ *पुं.* {हिं. हाथ} समस्त पदों के आरंभ में लगनेवाला हाथ का संक्षिप्त रूप।

हथकंडा *पुं.* {हिं. हाथ + सं. कांड} हाथ की चालाकी; छिपी हुई चालबाजी (काम निकालने के लिए)।

हथकड़ी *स्त्री.* {हिं. हाथ + कड़ी} लोहे के वे कड़े जो कैदी के हाथ बाँधने के लिए उसे पहनाए जाते हैं।

हथगोला *पुं.* {हिं. हाथ + गोला} तोप के गोलों की तरह का एक प्रकार का गोला जो शत्रुओं पर हाथ में फेंकते हैं (ग्रेनेड)।

हथनाल *स्त्री.* {हिं. हाथी + नाल = तोप} हाथी पर रखकर चलाई जानेवाली तोप।

हथनी *स्त्री.* {हिं. हाथ + फूल} हथेली पर पहनने का एक गहना।

हथफेर *पुं.* {हिं. हाथ + फेरना} हाथ फेरने की क्रिया; चालाकी से किसी का माल उड़ा लेना; थोड़े दिनों के लिए दिया हुआ उधार।

हथबाह *स्त्री.* हाथाबाही।

हथसाँकर *स्त्री.* हथफूल।

हथसार *स्त्री.* {हिं. हाथी + सं. शाला} हाथियों के रहने का स्थान, फीलखाना।

हथाहथी *क्रि. वि.* {हिं. हाथ} हाथोंहाथ; चटपट, तुरंत।

हथिनी *स्त्री.* हथनी।

हथबाँसना *क्रि.* व्यवहार में लाना।

हथाहथी *स्त्री.* झटपट, हाथोंहाथ।

हथिया *पुं.* हस्त नक्षत्र।

हथियाना *स.* {हिं. हाथ + आना (प्रत्य.)} अपने हाथ में करना; धोखे से लेना।

हथियार *पुं.* {सं. हस्त + हिं. आर} हाथ से पकड़कर चलाया जानेवाला अस्त्र, जैसे तलवार, बंदूक आदि (आर्म्स); औजार, उपकरण।

हथियारबंद *वि.* {हिं. हथियार + फा. बंद} जो हथियार लिए हो, सशस्त्र।

हथेरी *स्त्री.* = हथेली।

हथेली *स्त्री.* {सं. हस्त + तल} हाथ पर का कलाई के आगे का वह ऊपरी चौड़ा हिस्सा जिसके आगे उँगलियाँ होती हैं, करतल।

हथेव *पुं.* = हथौड़ा।

हथोरी *स्त्री.* = हथेली।

हथौटी *स्त्री.* कोई भी काम करने का ढंग।

हथौड़ा *पुं.* {हिं. हाथ + औड़ा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* अल्पा. हथौड़ी} एक प्रसिद्ध औजार जिससे कारीगर कोई चीज तोड़ते, पीटते, ठोंकते या गढ़ते हैं।

हथौड़ी *स्त्री.* छोटा हथौड़ा।

हथौना *पुं.* वर-कन्या के हाथ में मिठाई रखने की रीति।

हथ्याना *स.* = हथियाना।

हथ्यार *पुं.* = हथियार।

हद *स्त्री.* {*अ.*} सीमा; वह स्थान या परिमाण जहाँ तक कोई बात ठीक हो सकती हो, मर्यादा; *क्रि. वि.* बहुत अधिक, अत्यंत।

हनन *पुं.* वध, आघात, गुणा करना।

हनना *क्रि.* वध करना, मार डालना।

हनवाना *क्रि.* मारने का काम दूसरे के द्वारा।

हननीय *वि.* वध करने योग्य।

हनील *पुं.* केतकी, केवड़ा।

हदस *स्त्री.* {*अ.* हादिस} मन में उत्पन्न होनेवाला ऐसा भय जिसमें मनुष्य किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाए।

हदसना *अ.* {हिं. हदस} {*स.* हदसाना} मन में हदस या भय उत्पन्न होना, डरना।

हदसाना *स.* {हिं.} हदसना का *स.*।

हनन *पुं.* {सं.} {*वि.* हननीय, हनित} मार डालना, वध करना; आघात करना, मारना; गुणा करना (गणित)।

हनना *स.* {सं. हनन} हनन करना; (नगाड़ा आदि) लकड़ी के आघात से बजाना; (शस्त्र) चलाना।

हनवाना *स.* {हिं.} हनना का प्रे.।

हनिवंत *पुं.* = हनुमान।

हनु *स्त्री.* {सं.} दाढ़ की हड्डी, जबड़ा; दाढ़ी, चिबुक।

हनुग्रह *पुं.* दाढ़ बैठ जाने का रोग।

हनुमान, हनुमान् *वि.* {सं. हनुमत्} भारी दाढ़ या जबड़ेवाला; बहुत बड़ा वीर; *पुं.* श्री रामचंद्र के परम भक्त, एक प्रसिद्ध वीर वानर, महावीर।

हनुल *वि.* पुष्ट दाढ़ वाला।

हनुव *पुं.* = हनुमान।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनू *स्त्री.* दुड्डी।

हफ्ता *पुं.* {फा. हफ्त:} सप्ताह; सात दिन।

हफ्तेवार *वि.* {फा. हफ्त:वार} साप्ताहिक।

हबकना *अ.* {अनु. हप} खाने या काटने के लिए झपटना; *स.* दाँत काटना।

हबराना *अ.* हड़बड़ाना।

हबशी *पुं.* {*अ.* हब्शी} अफ्रीका के हबश देश का निवासी, जिसके शरीर का रंग घोर काला होता है।

हबीब *पुं.* {*अ.*} मित्र, दोस्त; मुहम्मद साहब जिन्हें मुसलमान ईश्वर का परम प्रिय मित्र मानते हैं।

हबूड़ा *पुं.* {?} एक यायावर जाति।

हब्बा-डब्बा *पुं.* {हब-ढब से अनु.} बच्चों का एक रोग जिसमें साँस जोर-जोर से चलती है।

हम[1] *सर्व.* {सं. अहम् या वेदकालीन लुप्त रूप 'अस्मे'} उत्तम पुरुष, बहुवचन का सूचक सर्वनाम, 'मैं' का बहुवचन; *पुं.* अहंभाव, अहंकार, घमंड।

हम[2] *वि.* {फा.} समान, तुल्य (यौ. के आरंभ में, जैसे हमजोली, हमउमर)।

हमकना *अ.* = हुमकना।

हमकाना *स.* {अनु.} हमहम शब्द करके घोड़े आदि को चलाना।

हमजोली *पुं.* {फा. हम + हिं. जोड़ी} समान अवस्था के और बराबर साथ रहनेवाले, साथी, संगी।

हमता *स्त्री.* {हिं. हम + ता (प्रत्य.)} यह समझना कि हम बहुत कुछ हैं, अहंकार।

हमदर्द *पुं.* {फा.} {*भाव.* हमदर्दी} सहानुभूति रखनेवाला।

हमदर्दी *स्त्री.* {फा.} सहानुभूति।

हमरा *स्त्री.* = हमारा।

हमल *पुं.* {*अ.* हम्ल} गर्भ।

हमला {*अ.* हम्ल:} **आक्रमण, गर्भवती**

हमलावर *पुं.* = आक्रमणकारी।

हमसना *अ.* = हुमकना।

हमारा *सर्व.* {हिं. हम + आरा (प्रत्य.)} {*स्त्री.* हमारी} 'हम' का संबंधकारक रूप।

हमाल *पुं.* {*अ.* हम्माल} बोझ ढोनेवाला मजदूर, कुली।

हमाहमी *स्त्री.* {हिं. हम} सब लोगों का अपने-अपने लाभ के लिए होनेवाला आतुरतापूर्ण प्रयत्न।

हमें *सर्व.* {हिं. हम} 'हम' का कर्म और संप्रदानकारक का रूप, हमको।

हमेव *पुं.* {हिं. हम} घमंड, अहंकार।

हमेशा *क्रि. वि.* {फा. हमेश:} सदा, सदैव।

हम्द *स्त्री.* {*अ.*} प्रशंसा, स्तुति; ईश्वर का गुणगान या उससे संबंध रखनेवाली कविता अथवा गीत।

हम्मला {*अ.* हम्ल} आक्रमण, चढ़ाई।

हम्माम *पुं.* {*अ.*} चारों ओर से बंद वह कमरा जिसमें गरम पानी से नहाते हैं; स्नानागार।

हम्मीर *पुं.* {सं.} संपूर्ण जाति का एक संकर राग जो रात के पहले पहर में गाया जाता है; रणथंभौर का एक प्रसिद्ध राजा जो बहुत दृढ़प्रतिज्ञ था और अलाउद्दीन खिलजी के साथ लड़कर मरा था।

हयंद *पुं.* {सं. हयेन्द्र} बड़ा या अच्छा घोड़ा।

हय *पुं.* {सं.} घोड़ा; इंद्र।

हयन *पुं.* ढकी हुई गाड़ी।

हया *स्त्री.* असगंध।

हयागार *पुं.* अश्वशाला।

हयना *स.* {सं. हनन = मार डालना} मार डालना, हनना; *अ.* डरना, भयभीत होना।

हयनाल *स्त्री.* {सं. हय + हिं. नाल} घोड़े पर से चलाई जानेवाली तोप।

हयारोह *पुं.* घुड़सवार।

हयोत्तम *पुं.* अच्छा घोड़ा।

हयमेध *पुं.* = अश्वमेध (यज्ञ)।

हयशाला *स्त्री.* {सं.} घुड़साल, अस्तबल।

हयसार *स्त्री.* = हयशाला, घुड़साल।

हया *स्त्री.* {*अ.*} {*वि.* हयादार} लज्जा, शर्म।

हयादार *वि.* {*अ.* हया + फा. दार} {*भाव.* हयादारी} जिसे अनुचित काम करने में लज्जा आती हो, लज्जाशील।

हर[1] *वि.* {सं.} {*स्त्री.* हरी} छीनने, लूटने या हरण करनेवाला; दूर करने या मिटानेवाला; वध या नाश करनेवाला; ले जानेवाला, वाहक; *प्रत्य.* एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर ऊपर बतलाए हुए (विशेषण वाले) सभी अर्थ देता है, जैसे कष्टहर = कष्ट दूर करनेवाला; संदेशहर = संदेश ले जानेवाला; *पुं.* शिव, महादेव; गणित में वह संख्या जिससे भाग देते हैं, भाजक।

हर[2] *प्रत्य.* {सं. गृह से व. *वि.*} एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगकर घर, स्थान आदि का अर्थ देता है, जैसे खंडहर, धौरहर, मैहर, पीहर आदि।

हर[3] *वि.* {फा.} प्रत्येक, एक-एक।

हरई *स्त्री.* {हिं. हरुआ = हल्का} हल्कापन; तुच्छता।

हरउद *पुं.* लोरी।

हरएँ *क्रि. वि.* {हिं. हरुआ} धीरे-धीरे; चुपके से; क्रम-क्रम से।

हरकत *स्त्री.* {*अ.*} हिलना-डोलना, गति; चेष्टा, क्रिया।

हरकना *स.* {हिं. हटकना का पुराना रूप} अलग या दूर करना, हटाना; मना करना, रोकना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरकारा *पुं.* {फा. हरकार:} पत्र आदि पहुँचाने या ले जानेवाला दूत, पत्रवाह।
हरकेस *पुं.* अगहनिया धान।
हरख *पुं.* = हर्ष।
हरखना *अ.* {सं. हर्ष} प्रसन्न होना।
हरखाना *क्रि.* प्रसन्न करना।
हरगिज *क्रि. वि.* {फा.} कदापि, कभी।
हरगिरि *पुं.* {सं.} कैलाश पर्वत।
हरगौरी *स्त्री.* शिव की अर्धनारीश्वर-मूर्ति।
हरचूड़ामणि *पुं.* चंद्रमा।
हरज *पुं.* {फा. हर्ज} काम में पड़नेवाली अड़चन या बाधा, रुकावट; क्षति, हानि।
हरजाई *वि.* {फा.} हर जगह व्यर्थ घूमनेवाला; हर किसी से अनुचित प्रेम-संबंधी स्थापित करनेवाला, आवारा; *स्त्री.* व्यभिचारिणी, कुलटा।
हरजाना *पुं.* {फा. हर्जाना:} किसी का हर्ज या हानि होने पर उसके बदले में दिया जानेवाला धन, क्षतिपूर्ति, प्रतिकर।
हरट्ट *वि.* {सं. हृष्ट} हृष्ट-पुष्ट।
हरण *पुं.* {सं.} छीनना, लूटना या अनुचित रूप से बलपूर्वक ले लेना; दूर करना, मिटाना; नाश; ले जाना, वहन; भाग देना (गणित)।
हरता-धरता *पुं.* कर्ता-धर्ता।
हरताल *स्त्री.* {सं. हरिताल} {*वि.* हरताली} पीले रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ जो दवा के काम में आता है।
हरतेज *पुं.* पारद, पारा।
हरद *स्त्री.* हलदी।
हरदी *स्त्री.* हलदी।
हरद्वार *पुं.* हरिद्वार।
हरन *पुं.* = हरण; *पुं.* हिरन (पशु)।
हरनतक *पुं.* एक छंद।
हरना *स.* {सं. हरण} हरण करना, छीनना या ले लेना (विशेष 'हरण'); *अ.* हारना; *पुं.* {*स्त्री.* हरनी} हिरण।
हरनाकस *पुं.* = हिरण्यकशिपु।
हरनाच्छ *पुं.* = हिरण्याक्ष।
हरनी *स्त्री.* {हिं. हिरन} हिरन की मादा, मृगी।
हरनौटा *पुं.* {हिं. हिरन} हिरन का बच्चा।
हरपा *पुं.* {देश.} सिंदूर रखने का डिब्बा, सिन्थोरा; डिब्बा।
हरफ *पुं.* {अ.} अक्षर, वर्ण।
हरफनमौला *पुं.* {अ.} वह जो सब काम कर सकता हो, हर काम में विशेषज्ञ।
हरफारेवड़ी *स्त्री.* {सं. हरिपर्वरी} कमरख की जाति का एक पेड़; उक्त पेड़ का फल।
हरबर *स्त्री.* हड़बड़ी।
हरबराना *अ., स.* हड़बड़ाना।
हरबरी *स्त्री.* हड़बड़ी।
हरबा *पुं.* {अ. हरब:} हथियार, अस्त्र।
हरबोंग *पुं.* {?} अंधेर; उपद्रव; *वि.* गँवार, उजड्ड।
हरम *पुं.* {अ. मि. सं. हर्म्य = प्रासाद} अंत:पुर, जनानखाना, रनिवास; *स्त्री.* स्त्री; रखेली।
हरमजदगी *स्त्री.* {फा.} हरामजादे का काम।
हरयारी *स्त्री.* = हरियाली।
हरयाल *स्त्री.* = हरियाली।
हरयें *क्रि. वि.* हरएँ।
हरवल *पुं.* हरावल।
हरवली *स्त्री.* {तु. हरवल} हरावल के अधिकारी का कार्य या पद; सेना की अध्यक्षता, फौज की अफसरी।
हरवा *वि.* {सं. ह्रस्व} {*स्त्री.* हरवी} जो भारी न हो, हल्का; *पुं.* 'हार' (गले में पहनने का)।
हरवाहा *पुं.* हलवाहा।
हरवाही *स्त्री.* हलवाहों का काम।
हरशंकरी *स्त्री.* पीपल व पाकड़ का संलग्न रूप।
हरष *पुं.* = हर्ष।
हरषना *अ.* {सं. हर्ष + हिं. ना (प्रत्य.)} हर्षित या प्रसन्न होना।
हरषाना *स.* {हिं.} हरषना का *स.*; *अ.* हर्षित या प्रसन्न होना।
हरषित *वि.* = हर्षित।
हरसना *अ.* हरषना।
हरसा *पुं.* हरिस।
हरसिंगार *पुं.* {सं. हार + सिंगार} एक पेड़ जिसमें छोटे सुगंधित फूल लगते हैं, परजाता।
हरहाया *वि.* {?} {*स्त्री.* हरहाई} नटखट (गौ, बैल आदि)।
हरहार *पुं.* {?} (शिव के गले का हार) सर्प, साँप; शेषनाग।
हरहूरा *स्त्री.* द्राक्षा, दाख।
हराँस *स्त्री.* {अ. हिरास} भय, डर; दुख, चिंता; थकावट; हल्का ज्वर या ताप, हरारत।
हरा[1] *वि.* {सं. हरित} {*स्त्री.* हरी} घास, पत्ती आदि के रंगों का, हरित, सब्ज; प्रफुल्ल, प्रसन्न; जो मुरझाया न हो, ताजा; *पुं.* घास या पत्ती का-सा रंग, हरित वर्ष।
हरा[2] *पुं.* {सं. हार} गले में पहनने का हार या माला।
हरा[3] *वि.* {हिं. हराना} हारा हुआ; जो (कोई बात) हार या छोड़ चुका हो, जैसे सतहरा = जो सत्य छोड़ चुका हो।
हरा[4] *वि.* {सं. हर} रहित, शून्य।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हराठा *वि.* {सं. हृष्ट} {*स्त्री.* हराठी} मोटा-ताजा और मजबूत, हट्टा-कट्टा।

हराना *स.* {हिं. हारना} युद्ध, प्रतियोगिता आदि में प्रतिद्वन्दी को परास्त करना, पराजित करना; ऐसा काम करना जिससे कोई हार जाए; थकाना।

हरा-भरा *वि.* जो सूखा या मुरझाया न हो; जो हरे पेड़-पौधों से भरा हो।

हराम *वि.* {*अ.*} जो इस्लाम धर्मशास्त्र में वर्जित या त्याज्य हो, निषिद्ध; बुरा, दूषित; *पुं.* अधर्म, पाप; स्त्री-पुरुष का अनुचित संबंध, व्यभिचार।

हरामखोर *पुं.* {*अ.* हराम + फा. ख़ोर} {*भाव.* हरामखोरी} मुफ्त का माल खानेवाला; धन लेकर भी काम न करनेवाला।

हरामजादा *वि.* {*अ.* हराम + फा. ज़ादा} {*स्त्री.* हरामजादी} दोगला, वर्णसंगर; परम दुष्ट, बहुत बड़ा पाजी।

हरामी *वि.* हरामजादा।

हरामीपन *पुं.* {*अ.* हराम + हिं. ई + पन} अधिक दुष्टता या नीचता।

हरारत *स्त्री.* {*अ.*} गरमी, ताप; हल्का ज्वर, ज्वरांश।

हरावल *पुं.* {तु.} सेना में सबसे आगे चलनेवाले सिपाहियों का दल।

हरास[1] *पुं.* {*अ.* हिरास} भय, डर; आशंका, खटका; दुख; निराशा।

हरास[2] *स्त्री.* {हिं. हारना} हराने की क्रिया या भाव।

हराहर *पुं.* {हिं. हरना = हरण करना} बलपूर्वक एक दूसरे की चीजें छीनना, छीनाझपटी; *पुं.* = हलाहल।

हरि *पुं.* {सं.} विष्णु; शिव, महादेव; बंदर; अग्नि, आग; विष्णु के अवतार, श्रीकृष्ण; घोड़ा; *क्रि. वि.* = हरएँ।

हरिअर *वि.* हरा (रंग)।

हरिआना *अ.* हरियाना।

हरिआली *स्त्री.* हरियाली।

हरिकीर्तन *पुं.* {सं.} ईश्वर या उसके अवतारों के नामों या गुणों का कीर्तन।

हरिखंड *पुं.* {सं.} मोर का पंख, मोरपंख।

हरिगीतिका *स्त्री.* {सं.} पिंगल में एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं, अंत में एक लघु और एक गुरु होता है और 16 मात्राओं पर यति होती है, इसकी पाँचवीं, उन्नीसवीं और छब्बीसवीं मात्राएँ लघु होनी चाहिए।

हरिचंदन *पुं.* {सं.} एक प्रकार का चंदन।

हरिजन *पुं.* {सं.} ईश्वर का भक्त; पददलित या अस्पृश्य जातियों का सामूहिक नाम।

हरिजाना *पुं.* हरियान।

हरिण *पुं.* {*स्त्री.* हरिणी} हिरन।

हरिणाक्षी *वि.* {सं.} हिरन की आँखों के समान सुंदर आँखों वाली (स्त्री)।

हरिणी *स्त्री.* {सं.} हिरन की मादा; चित्रिणी।

हरित, हरित् *वि.* {सं.} हरा, सब्ज।

हरिक्रांति *स्त्री.* {सं.} हरी क्रांति।

हरिताभ *वि.* {सं.} जिसमें हरे रंग की आभा हो, जो हरापन लिए हुए हो।

हरिताश्म *पुं.* तूतिया, पन्ना।

हरितोपल *पुं.* मणि, पन्ना।

हरितालिका *स्त्री.* {सं.} भादों के शुल्क पक्ष की तृतीया जो स्त्रियों के लिए व्रत की तिथि है, तीज।

हरिद्रा *स्त्री.* {सं.} हलदी।

हरिद्वार *पुं.* {सं.} उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा तट पर है।

हरिधाम *पुं.* {सं.} बैकुंठ।

हरिन *पुं.* {*स्त्री.* हरिनी} हिरन।

हरिनग *पुं.* {सं.} साँप की मणि।

हरिनाकुस *पुं.* हिरण्यकशिपु।

हरिनाम *पुं.* {सं. हरिनामन्} ईश्वर या भगवान का नाम (जपने के लिए)।

हरिनी *स्त्री.* {हिं. हिरन} मादा हिरन।

हिरप्रिया *स्त्री.* {सं.} लक्ष्मी; पिंगल में एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में 46 मात्राएँ होती हैं और अंत में गुरु होता है, इसमें बारह-बारह मात्राओं पर यति होती है।

हरिन्मणि *पुं.* मरकत मणि, पन्ना।

हरिभक्त *पुं.* {सं.} ईश्वर का भक्त या दास।

हरियर *वि.* हरा (रंग)।

हरियाई *स्त्री.* हरियाली।

हरियान *पुं.* {सं.} विष्णु का वाहन, गरुड़।

हरियाना[1] *पुं.* {सं. हरियान} हिसार, रोहतक, करनाल तथा इनके आसपास का प्रदेश जो भारत का एक राज्य है।

हरियाना[2] *अ.* {हिं. हरिअर (यर)} पेड़-पौधों का हरा होना; प्रफुल्लित या प्रसन्न होना; हरा-भरा करना; प्रसन्न करना।

हरियानवी *स्त्री.* {हिं. हरियाना} हरियाना प्रदेश में बोली जानेवाली भाषा, बांगड़ू।

हरियाली *स्त्री.* {हिं. हरा} हरे-भरे पेड़-पौधों का समूह या विस्तार।

हरिवाह *पुं.* {सं.} गरुड़।

हरिश्चन्द्र *पुं.* {सं.} सूर्यवंश के एक प्रसिद्ध राजा जो बहुत बड़े सत्यनिष्ठ थे।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिस *स्त्री.* {सं. हलीषा} हल का वह लट्ठा जिसके एक सिरे पर फालवाली लकड़ी और दूसरे पर जूआ रहता है।
हरिहय *पुं.* {सं.} इंद्र; सूर्य।
हरिहाई *वि.* {हिं.} 'हरहाया' का *स्त्री.*।
हरिहित *पुं.* {सं.} बीर-बहूटी (कीड़ा)।
हरी *स्त्री.* {सं.} हर की पत्नी, पार्वती; चौदह वर्णों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ज, र, ज, र और अंत में एक लघु और एक गुरु होता है, उसे 'अनंद' भी कहते हैं; *पुं.* हरि।
हरीकेन *स्त्री.* {अं.} एक प्रकार की दस्ती लालटेन।
हरी क्रांति *स्त्री.* वह स्थिति जब देश में खूब पैदावार होने लगे।
हरीचाह *पुं.* नींबू के समान सुगंधवाली घास।
हरीतकी *स्त्री.* {सं.} हड़, हर्रे।
हरीतिमा *स्त्री.* {सं.} हरे-भरे पेड़ों का विस्तार, हरियाली; हरापन।
हरीरा[1] *पुं.* {अ. हरीर:} दूध में मेवे डालकर बनाया हुआ एक पेय पदार्थ।
हरीरा[2] *वि.* {हिं. हरिअर} {*स्त्री.* हरीरी} हरा, सब्ज; हर्षित, प्रसन्न।
हरीश *पुं.* बंदरों का राजा सुग्रीव।
हरुअ *वि.* {*भाव.* हरुआई} हल्का।
हरुआई[1] *स्त्री.* {हिं. हरुआ} हल्कापन।
हरुआई[2] *स्त्री.* {हिं. हरुआना} शीघ्रता; जल्दी; तेजी, फुर्ती।
हरुआना *अ.* {हिं. हरुआ} हल्का होना; फुरती करना; घबराकर या और किसी कारण से जल्दी मचाना।
हरुए *क्रि. वि.* हरएँ।
हरुवा *वि.* हरुआ।
हरू *वि.* हलका।
हरें *क्रि. वि.* हरएँ।
हरे[1] *पुं.* {सं.} 'हर' का संबोधन कारकवाला रूप, हे हर!
हरे[2] *क्रि. वि.* {हिं. हरएँ} धीरे से, मंद गति से।
हरे[3] *वि.* हल्का; धीमा, मंद; कोमल।
हरेक *वि.* = हर एक (अशुद्ध रूप)।
हरेरी *स्त्री.* हरियाली।
हरेव *पुं.* {देश.} मंगोलों का देश; मंगोल जाति।
हरेवा *पुं.* {हिं. हरा} बुलबुल की तरह की हरे रंग की एक चिड़िया।
हरैना *पुं.* हल में लगी 'गावदुम' जिसमें फाल लगाया जाता है।
हरैं *क्रि. वि.* {हिं. हरुए} धीरे से, आहिस्ते।
हरैया *पुं.* {हिं. हरना} हरण करने या हरनेवाला; दूर करने या मिटानेवाला।
हरौल *पुं.* हरावल।
हरौहर *स्त्री.* {सं. हरण} बलपूर्वक छीनना; लूट।
हर्ज *पुं.* हरज।
हर्ज-मर्ज *पुं.* बाधा, अड़चन, विघ्न।
हर्ता *पुं.* {सं. हर्तृ} {*स्त्री.* हर्त्री} हरण करनेवाला।
हर्फ *पुं.* हरफ।
हर्म्य *पुं.* {सं.} सुंदर प्रासाद, महल।
हर्रे *स्त्री.* हड़।
हर्ष *पुं.* {सं.} {*वि.* हर्षित} प्रसन्नता या भय के कारण रोएँ खड़े होना, रोमांच; साहित्य में संयोग-शृंगार के अंतर्गत एक संचारी भाव जिसमें प्रसन्नता के कारण रोएँ खड़े हो जाते हैं या चेहरे पर कुछ पसीना आ जाता है; प्रसन्नता, आनंद, खुशी।
हर्षित *वि.* {सं.} प्रसन्न, खुश।
हर्षोन्मत्त *वि.* {सं.} जो हर्ष से पागल हो गया हो।
हल् *पुं.* {सं.} व्यंजन का वह विशुद्ध रूप जिसके अंत में स्वर न लगा हो, जैसे 'सम्राट्' का ट्।
हलंत *वि.* {सं.} (शब्द) जिसके अंत में हल् हो, जैसे क्वचित्, कदाचित्।
हल[1] *पुं.* {सं.} जमीन जोतने का एक प्रसिद्ध उपकरण, सीर, लांगल; एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।
हल[2] *पुं.* {अ.} हिसाब लगाना, गणित करना; समस्या का समाधान का निराकरण।
हलकंप *पुं.* हड़कंप।
हलक *पुं.* {अ.} गले की नली, कंठ।
हलकना *अ.* {सं. हल्लन} {*भाव.* हलकन} बरतन में भरे हुए जल का हिलने से शब्द करना: हिलोरें लेना, लहराना: हिलना।
हलका[1] *वि.* {सं. लघुक} {*स्त्री.* हलकी, *भाव.* हलकापन} जो भारी न हो, कम वजन का; जो तेज या चटकीला न हो; जो गहरा न हो, उथला; जो अपने साधारण मान, बल, वेग आदि से कुछ कम या घटकार हो, कम अच्छा; कम, थोड़ा; ओछा, टुच्चा; सहज, सुख साध्य; निश्चित; प्रफुल्ल, प्रसन्न; हरा, ताजा।
हलका[2] *वि.* {हिं. हड़कना} पागल (कुत्ते, गीदड़ आदि के लिए)।
हलका[3] *पुं.* {अनु. हल-चल} तरंग, लहर।
हलका[4] *पुं.* {अ. हल्क:} वृत्त, मंडल, गोलाई; घेरा, परिधि; मंडली, गिरोह; चारों ओर घेर कर रहनेवालों का झुंड, जैसे हाथियों का हलका; किसी विशेष कार्य के लिए निर्धारित कुछ गाँवों और कसबों का समूह।
हलकाई *स्त्री.* = हलकापन।
हलकान *वि.* हलाकन।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलकापन पुं. {हिं. हलका + पन (प्रत्य.)} 'हलका' होने का भाव या गुण; ओछापन, तुच्छता; अप्रतिष्ठा, हेठी।

हलकारना स. {अनु.} तितर-बितर करना, छितराना।

हलकोरा पुं. {अनु.} तरंग, लहर।

हलचल स्त्री. {हिं. हिलना + चलना} हिलने-डुलने की क्रिया या भाव; जनता में घबराहट फैलने के कारण होनेवाली दौड़-धूप, भगदड़, शोरगुल, विकलता आदि खलबली; वि. डगमगाता या हिलता हुआ।

हलजुता स्त्री. सामान्य किसान।

हलदंड पुं. हल का लंबा डंडा।

हलदहात स्त्री. विवाह के तीन या पाँच दिन पूर्व वर-कन्या के शरीर में तेल और हलदी लगाने की रीति।

हलदी स्त्री. {सं. हरिद्रा} एक प्रसिद्ध पौधे की जड़ जो मसाले और रँगाई के काम में आती है।

हलधर पुं. {सं.} बलराम जी; बैल।

हलफ पुं. {अ.} शपथ, कसम।

हलफ़ेनामा पुं. शपथपत्र।

हलफी वि. शपथ से कहा गया।

हलबल[1] पुं. {हिं. हल + बल} {क्रि. हलबलाना} खलबली, हलचल।

हलबल[2] वि. {हलब देश} हलब देश का; मोटे दल का और बढ़िया (शीशा); बहुत मोटा; स्त्री. पुरानी चाल की एक प्रकार की तलवार।

हलयंत्र पुं. {सं.} जमीन जोतने का वह बड़ा हल जो इंजन की सहायता से चलता है और जिससे बहुत अधिक भूमि बहुत जल्दी जोती जाती है।

हलराना स. {हिं. हिलोरा} (बच्चों को) हाथ पर लेकर इधर-उधर हिलाना; अ. इधर-उधर हिलना-डोलना।

हलवा पुं. हलुआ।

हलवाई पुं. {अ. हलवा + ई (प्रत्य.)} {स्त्री. हलवाइन} मिठाई, पूरी नमकीन, पकवान आदि बनाने और बेचनेवाला।

हलवाई-खाना पुं. {हिं. हलवाई + फा. ख़ाना = घर या स्थान} वह स्थान जहाँ हलवाई बैठकर बिक्री या भोज आदि के लिए मिठाई, नमकीन, पूरी आदि बनाते हैं।

हलवाहा पुं. {सं. हलवाह} हल चलाने वाला।

हलहल वि. {हिं. हिलना} हिलता या काँपता हुआ।

हलहलाना स. {अनु. हलहल} जोर से हिलाना, झकझोरना; अ. काँपना, थरथराना।

हलाक वि. {फा. हलाक} जो मार डाला गया हो, हत।

हलाकान वि. {फा. हलाक} {भाव. हलाकानी} परेशान, हैरान, तंग।

हलाकू वि. {अ. हलाक} हलाक करनेवाला।

हलाना स. {हिं. हलना का स.} किसी को हलने या पैठने में प्रवृत्त करना।

हला-भला पुं. {हिं. भला और उसका अनु.} कल्याण, मंगल; आराम, सुख।

हलायुध पुं. {सं.} बलरामजी।

हलाल वि. {अ.} जो शरअ या इस्लामी धर्मशास्त्र के अनुकूल या ठीक हो, जायज; पुं. वह पशु जिसका मांस खाने की मुसलमानी धर्मपुस्तक में आज्ञा हो।

हलालखोर पुं. मेहतर।

हलाहल पुं. {सं.} वह प्रचंड विष जो समुद्रमंथन के समय निकला था; उग्र विष, भारी जहर; वि. पूरा-पूरा, भरपूर।

हली पुं. {सं. हलिन्} बलराम; किसान।

हलीशा स्त्री. हरीस, हल दंड।

हलीम पुं. {अ.} सुशील और शांत।

हलुआ पुं. {अ. हलवः} एक प्रसिद्ध मीठा खाद्य पदार्थ, मोहनभोग।

हलुक वि. हलका।

हलुवा पुं. हलुआ।

हलूफा पुं. {अ. अलूफ:} वे मिठाइयाँ, पकवान आदि जो कुछ विशिष्ट जातियों में विवाह से एक दो दिन पहले लड़कीवालों के यहाँ से लड़केवालों के यहाँ भेजे जाते हैं।

हलोर पुं. हिलोर।

हलोरना स. {हिं. हिलोर} पानी में हिलोरा उत्पन्न करना; अनाज फटकना; दोनों हाथों से समेटना (धन आदि)।

हल्का वि. = हलका।

हल्दी स्त्री. हलदी।

हल्य वि. हल से जोता हुआ।

हल्या स्त्री. हलों का समुदाय।

हल्ला पुं. {अनु.} शोरगुल, कोलाहल; लड़ाई के समय की ललकार या शोर; आक्रमण, चढ़ाई।

हल्लीश पुं. {सं.} एक प्रकार का नृत्यप्रधान और एक अंकवाला उपरूपक।

हवन पुं. {सं.} {वि. हवनीय} मंत्र पढ़कर, घी, जौ, तिल आदि अग्नि में डालने का वैदिक तथा धार्मिक कृत्य, होम।

हवलदार पुं. {अ. हवाल: + फा. दार} पुलिस या फौज का एक छोटा अफसर।

हवस स्त्री. {अ.} लालसा, वासना, चाह; तृष्णा; काम वासना; दिल का अरमान।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवा *स्त्री.* {*अ.*} प्राय: सर्वत्र चलता रहनेवाला वह तत्व जो सारी पृथ्वी में व्याप्त है और जिसमें प्राणी साँस लेते हैं, हवा (एअर); भूत, प्रेत; यश, कीर्ति; महत्व या उत्तम व्यवहार का विश्वास, साख।

हवाई *वि.* {*अ.* हवा} हवा का, वायु-संबंधी; हवा में चलनेवाला, जैसे हवाई जहाज; कल्पित या झूठ, निर्मूल, जैसे–हवाई खबर; *स्त्री.* बान या आसमानी नाम की आतिशबाजी।

हवाई अड्डा *पुं.* वह स्थान जहाँ हवाई जहाज यात्रियों को उतारने-चढ़ाने के लिए आकर ठहरते हैं (एयरोड्रोम)।

हवाई जहाज *पुं.* हवा में उड़नेवाली सवारी, वायुयान (एयरो प्लेन)।

हवाई डाक *स्त्री.* वह डाक, चिट्ठियाँ आदि जो हवाई जहाज के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजी जाती हों (एयरमेल)।

हवागाड़ी *स्त्री.* मोटर।

हवा-चक्की *स्त्री.* {हिं. हवा + चक्की} हवा के जोर से चलनेवाली आटे की चक्की, पवन-चक्की; इस प्रकार का कोई यंत्र।

हवादार *वि.* {फा.} जिसमें हवा आने-जाने के लिए खिड़कियाँ, द्वार, मार्ग आदि हों; *पुं.* सवारी के काम का एक प्रकार का हलका तख्त (मुगलकालीन)।

हवा-पानी *पुं.* किसी स्थान की वायु, जल आदि वे प्राकृतिक बातें जिनका प्राणियों, वनस्पतियों आदि के जीवन, स्वास्थ्य, विकास आदि पर प्रभाव पड़ता है, जलवायु (क्लाइमेट)।

हवाबाज *पुं.* {*अ.* हवा + फा. बाज़} वह जो हवाई जहाज चलाता हो, उड़ाका।

हवाल *पुं.* {*अ.* अहवाल} हाल, दशा; परिणाम; वृत्तांत।

हवालदार *पुं.* हवलदार।

हवाला *पुं.* {*अ.*} प्रमाण का उल्लेख; दृष्टांत, मिसाल; सुपुर्दगी, जिम्मेदारी।

हवालात *स्त्री.* {*अ.*} पहरे में रखा जाना; वह स्थान जहाँ विचार होने तक अभियुक्त पहरे में रखा जाता है।

हवालाती *वि.* {*अ.*} हवालात-संबंधी; हवालात में रखा हुआ (अभियुक्त)।

हवाली *स्त्री.* {*अ.*} आसपास के स्थान, विशेषत: किसी नगर के आसपास के गाँव आदि।

हवास *पुं.* {*अ.*} इंद्रियाँ; संवेदन; चेतना, सुध, होश।

हवि *पुं.* {सं. हविस्} आहुति देने की वस्तु।

हवित्री *स्त्री.* अग्निकुंड।

हविर्गृह *पुं.* हवन करने का घर।

हविर्दान *पुं.* यज्ञ में घृत आदि की आहुति।

हविर्यज्ञ *पुं.* हवि द्वारा किया गया यज्ञ।

हविष्य *वि.* {सं.} हवन करने योग्य; *पुं.* देवता के उद्देश्य से अग्नि में डाली जानेवाली बलि, हवि; हविष्यान्न।

हविष्यान्न *पुं.* {सं.} व्रत।

हविस *स्त्री.* हवस।

हवेली *स्त्री.* {*अ.*} बड़ा मकान; पत्नी, स्त्री (पूरब)।

हव्य *पुं.* {सं.} हवन की वस्तु।

हव्वा *स्त्री.* हौवा; *पुं.* हौआ।

हसद *पुं.* {*अ.*} ईर्ष्या, डाह।

हसन *पुं.* {सं.} हँसना, परिहास, दिल्लगी।

हसब *क्रि. वि.* {*अ.* हस्ब} अनुसार, मुताबिक।

हसरत *स्त्री.* {*अ.* हस्रत} दुख, अफसोस; हार्दिक कामना।

हसि *अ.* {सं. अस्ति} हिं 'है' या 'हो' का अव. रूप।

हसित *वि.* {सं.} जिसपर लोग हँसते हों, हास्यास्पद; हँसता हुआ; खिला हुआ; *पुं.* हास्य, हँसी; उपहास, हँसी-ठट्ठा; हास्य या हँसी का एक विशेष प्रकार।

हसीन *वि.* {*अ.*} बहुत सुंदर (व्यक्ति)।

हसील *वि.* {*अ.* असील} सीधा-सादा।

हस्त *पुं.* {सं.} हाथ; हाथी की सूँड़; चौबीस अंगुल की एक नाप, हाथ; एक नक्षत्र जिसमें पाँच तारे हैं।

हस्तक *पुं.* {सं.} हाथ; हाथ से बजाई जानेवाली ताली; करताल; नृत्य में हाथों की मुद्रा।

हस्त कौशल *पुं.* {सं.} हाथ की कारीगरी।

हस्तक्षेप *पुं.* {सं.} किसी होते या चलते हुए काम में कुछ फेर-बदल करने के लिए हाथ डालना या कुछ कहना, दखल देना (इन्टरफिअरेन्स)।

हस्तगत *वि.* {सं.} हाथ में आया या मिला हुआ, प्राप्त, हासिल।

हस्तमुद्रा *स्त्री.* {सं.} नृत्य आदि में भाव बताने के लिए हाथ को किसी विशेष स्थिति में रखने की मुद्रा या ढंग, हस्तक।

हस्तरेखा *स्त्री.* {सं.} हथेली पर की वे रेखाएँ जिन्हें देखकर सामुद्रिक के अनुसार किसी के जीवन की मुख्य-मुख्य घटनाएँ बताई जाती हैं।

हस्तलाघव *पुं.* {सं.} हाथ की चालाकी, सफाई या फुरती।

हस्तलिखित *वि.* {सं.} हाथ का लिखा हुआ (ग्रंथ, लेख आदि)।

हस्तलिपि *स्त्री.* {सं.} किसी के हाथ की लिखावट या लिपि (कैलिग्राफिटिंग)।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हस्तांतरकर्ता पुं. {सं.} वह जो कोई संपत्ति या उसके संबंध के अधिकार आदि दूसरे को देता हो, हस्तांतरण करनेवाला (ट्रांसफरर)।

हस्तांतरण पुं. {सं.} {*वि.* हस्तांतरित} (संपत्ति, स्वत्व आदि का) एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना या दिया जाना (ट्रांसफरेन्स)।

हस्तांतरणीय *वि.* {सं.} जिसका हस्तांतरण हो सकता हो, संक्राम्य (ट्रांसफरेबुल)।

हस्तांतरित *वि.* {सं.} (संपत्ति या अधिकार) जो एक के हाथ से दूसरे के हाथ में गया हो, जिसका हस्तांतरण हुआ हो।

हस्तांतरिती पुं. {सं. हस्तांतरित} वह जिसे किसी संपत्ति का अधिकार दिया या सौंपा गया हो (ट्रांसफरी)।

हस्ता *स्त्री.* हस्त नक्षत्र।

हस्ताक्षर पुं. {सं.} लेख आदि के नीचे अपने हाथ से लिखा हुआ अपना नाम जो उस लेख या उसके उत्तरदायित्व की स्वीकृति का सूचक होता है, दस्तखत (सिगनेचर)।

हस्ताक्षरित *वि.* {सं.} जिसपर हस्ताक्षर हुए हों।

हस्तामलक पुं. {सं.} वह चीज या बात जिसके सभी अंग (हथेली पर रखे हुए आँवले की तरह) सामने आते ही स्पष्ट या प्रकट हो जाते हों।

हस्तायुर्वेद पुं. {सं.} हाथियों के रोगों की चिकित्सा का शास्त्र।

हस्तिजिहन *स्त्री.* {सं.} हठयोग के अनुसार बाईं आँख की नाड़ी।

हस्तिनापुर पुं. कौरवों की राजधानी।

हस्तिनी *स्त्री.* {सं.} मादा हाथी, हथिनी; कामशास्त्र और साहित्य में चार प्रकार की स्त्रियों में से सबसे निकृष्ट प्रकार की स्त्री जो स्थूल और लोमयुक्त शरीरवाली तथा पति या प्रेमी को अधिकारपूर्वक अपने वश में रखनेवाली मानी गई है।

हस्ती[1] पुं. {सं. हस्तिन्} {*स्त्री.* हस्तिनी} हाथी।

हस्ती[2] *स्त्री.* {फा.} अस्तित्व; व्यक्तित्व।

हस्ते *क्रि. वि.* {सं.} हाथ से, द्वारा (धन और किसी वस्तु का दिया जाना)।

हहरना *अ.* {अनु.} काँपना; दहलना, थर्राना; दंग रह जाना, चकित होना; ईर्ष्या या डाह करना।

हहराना *स.* {हिं.} हहराना का *स.*; *अ.* हहरना।

हहलाना *अ.* हहरना।

हहा *स्त्री.* {अनु.} हँसने का शब्द, ठट्ठा; हाहाकार; दीनता प्रकट करने या गिड़गिड़ाने का शब्द।

हाँ *निपा.* {सं. आम} स्वीकृति, समर्थन आदि का सूचक शब्द; क्रि. *वि.* यहाँ।

हाँक *स्त्री.* {सं. हुँकार} वह जोर का शब्द जो किसी को पुकारने के लिए किया जाए, पुकार; ललकार, हुँकार; बढ़ावा; दुहाई।

हाँकना *स.* {हिं. हाँक} जानवरों को चलाने या हटाने के लिए आगे बढ़ाना या इधर-उधर करना; गाड़ी, रथ आदि चलाना; जोर से पुकारना या बुलाना; लड़ाई या धावे के समय शत्रु को लड़ने के लिए ललकारना, हुँकार करना; बढ़-बढ़कर बातें करना, डींग मारना; पंखे से हवा करना।

हाँका[1] पुं. {हिं. हाँकना} जंगली जानवरों का शिकार करने के लिए उन्हें हाँककर ऐसी जगह ले जाना जहाँ सहज में उनका शिकार हो सके।

हाँका[2] पुं. {हिं. हाँक} पुकार, टेर; ललकार; गरज; हँकवा।

हाँगर *स्त्री.* {बँग.} एक प्रकार की विकट और भीषण समुद्री मछली जो प्रायः मनुष्यों पर घातक प्रहार करती है (शार्क)।

हाँगा पुं. शारीरिक बल।

हाँगी *स्त्री.* {हिं. हाँ} किसी प्रश्न के उत्तर में 'हाँ' कहना, स्वीकृति।

हाँड़ी *स्त्री.* {सं. भांड} देगची के आकार का मिट्टी का छोटा बरतन, हँड़िया; इसी आकार का शीशे का वह पात्र जिसमें मोमबत्ती जलाते हैं।

हाँड़ना *स.* {सं. भंडन} यों ही इधर-उधर घूमना।

हाँतना *स.* {सं. हात} अलग करना; दूर करना; हतना।

हाँता *वि.* {सं. हात} {*स्त्री.* हाँत} अलग या दूर किया हुआ।

हाँपना *अ.* {अनु.} परिश्रम करने, दौड़ने आदि के कारण जोर-जोर से और जल्दी-जल्दी साँस लेना।

हाँसना *अ., स.* = हँसना।

हाँसल पुं. {देश.} लाल रंग का वह घोड़ा जिसके पैर कुछ काले हों, कुम्मैत, हिनाई।

हाँसी *स्त्री.* = हँसी।

हाँसू पुं. = हँसली (गहना)।

हाँ-हाँ *निपा.* {सं. आम्} स्वीकृति या सहमति का शब्द; मना करने या रोकने का शब्द।

हा *निपा.* {सं.} शोक, दुख भय आदि का सूचक शब्द; आश्चर्य या प्रसन्नता का सूचक शब्द; *प्रत्य.* हनन करनेवाला, मारनेवाला (यौ. के अंत में, जैसे वृत्रहा)।

हाइ *स्त्री.* {सं. घात} दशा, हालत, अवस्था; घात, गौ; तौर, ढंग, ढब; *विस्मयादि.* हाय!

हाइकमान *स्त्री.* {अं. हाइकमांड} किसी राजनीतिक दल की सर्वोच्च समिति।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाइल[1] *वि.* {अ. हायल} चारों ओर से घिरा या बँधा हुआ।

हाइल[2] *वि.* {हिं. हाहीउत्कट लालसा} जिसे किसी बात की हाही पड़ी हो, उत्कट लालसा रखनेवाला।

हाईकोर्ट *पुं.* {अं.} उच्च न्यायालय।

हाऊ *पुं.* हौआ।

हाकल *पुं.* {?} 14 मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसमें नवीं मात्रा के बाद यति और अंत में गुरु वर्ण होता है।

हाकलिका *स्त्री.* एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में पंद्रह अक्षर होते हैं।

हाकली *स्त्री.* {सं.} सारवती नामक छंद का दूसरा नाम।

हाकिम *पुं.* {अ.} {*वि., भाव.* हाकिमी} शासक; बड़ा अधिकारी।

हाकिमाना *वि.* हाकिम के जैसा।

हाजत *स्त्री.* {अ.} {*वि.* हाजती} आवश्यकता, जरूरत; चाह; पहरे में रखा जाना, हिरासत, हवालात।

हाजमा *पुं.* {अ.} भोजन पचाने की क्रिया या शक्ति।

हाजरी *स्त्री.* हाजिरी।

हाजिर *वि.* {अ. हाज़िर} उपस्थित, मौजूद।

हाजिर जवाब *वि.* {अ.} {*भाव.* हाजिर जवाबी} हर बात का तुरंत और उपयुक्त उत्तर देनेवाला।

हाजिरात *स्त्री.* {अ.} एक प्रक्रिया जिसमें किसी वस्तु या व्यक्ति पर कोई आत्मा बुलाकर उससे कुछ बातें पूछी जाती हैं।

हाजिरी *स्त्री.* {अ.} हाजिर होने की क्रिया या भाव; उपस्थिति, मौजूदगी; भोजन, विशेषत: दोपहर का।

हाजी *पुं.* **{अ.} वह जो हज कर आया हो (मुसल.)।**

हाट *स्त्री.* {सं. हट्ट} दुकान; बाजार।

हाटक *पुं.* {सं.} सोना, स्वर्ण (धातु)।

हाटकपुर *पुं.* {सं.} लंका।

हाटकीय *वि.* सोने का बना हुआ।

हाड़ *पुं.* {सं. हड्ड} हड्डी, अस्थि; वंश की मर्यादा, कुलीनता।

हाड़ी *पुं.* बगला, कौआ।

हाता[1] *पुं.* अहाता।

हाता[2] *वि.* {सं. हात} {*स्त्री.* हाती} अलग या दूर किया हुआ।

हाता[3] *पुं.* {सं. हंता} वध करनेवाला।

हाथ *पुं.* {सं. हस्त} कंधे से पंजे तक का वह अंग जिससे चीजें पकड़ते और काम करते हैं, कर, हस्त।

हाथफूल *पुं.* {हिं. हाथ + फूल} हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना।

हाथा *पुं.* {हिं. हाथ} औजारों आदि की मूठ, दस्ता; मंगल अवसरों पर हलदी आदि से दीवारों पर लगाई जानेवाली पंजे की छाप।

हाथापाई (बाँही) *स्त्री.* {हिं. हाथ + पाँय या बाँह} हाथ-पैर से खींचने और ढकेलने की लड़ाई, भिड़ंत।

हाथी[1] *पुं.* {सं. हस्तिन्} {*स्त्री.* हथिनी} एक बहुत बड़ा प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया जो अपने स्थूल और विशाल आकार तथा सूँड़ के कारण सब जानवरों से विलक्षण होता है, गज; शतरंज का एक मोहरा।

हाथी[2] *स्त्री.* {हिं. हाथ} हाथ का सहारा।

हाथीखाना *पुं.* {हिं. हाथी + फा. ख़ाना} वह स्थान जहाँ पाले हुए हाथी रहते हों।

हाथी-दाँत *पुं.* **{हिं. हाथी + दाँत} हाथी के मुँह के दोनों ओर बाहर निकले हुए दाँत के आकार के वे सफेद अवयव जिनसे कई तरह की चीजें बनती हैं।**

हाथीनाल *स्त्री.* **गजनाल।**

हाथीपाँव *पुं.* **फीलपाँव।**

हाथीवान *पुं.* महावत।

हादसा *पुं.* {अ.} दुर्घटना।

हान *पुं.* {सं. हानि} त्याग, छोड़ना; *स्त्री.* = हानि।

हानि *स्त्री.* {सं.} टूटने-फूटने आदि के कारण होनेवाला नाश (लॉस); आर्थिक क्षति, नुकसान (डैमेज); कोई ऐसी अनुचित बात या आघात जिससे मान-मर्यादा, संपत्ति आदि में कुछ कमी होती हो, क्षति (इंजरी); घाटा, टोटा; 'लाभ' का विरु.; स्वास्थ्य को पहुँचनेवाली खराबी; अपकार, बुराई।

हानिकर (कारक) *वि.* {सं.} हानि करनेवाला, जिससे नुकसान हो; स्वास्थ्य बिगाड़नेवाला।

हानि-लाभ *पुं.* {सं.} व्यापार आदि में होनेवाला या और किसी प्रकार का नुकसान और नफा (प्रॉफिट एण्ड लॉस)।

हानी *वि.* {सं. हीन} रहित, हीन।
उदा. इक रसना, सोउ लोचन-हानी कहौ पार क्यों पाऊँ–**हित वृंदावनवासी।**
स्त्री. = हानि (नुकसान)।

हाफिज *पुं.* {अ. हाफ़िज} वह धार्मिक मुसलमान जिसे कुरान कंठस्थ हो; *वि.* हिफाजत करनेवाला, रक्षक।

हामी[1] *स्त्री.* {हिं. हाँ} 'हाँ' करने की क्रिया या भाव, स्वीकृति।

हामी[2] *वि.* {अ.} हिमायत करनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाय *विस्मयादि.* {सं. हा} शोक, दुख पीड़ा आदि का सूचक शब्द।

हायन *पुं.* {सं.} वर्ष, साल।

हायल[1] *वि.* {सं. हात = छोड़ा हुआ या हत ?} क्षत-विक्षत, घायल।
उदा. पाप लगौ छाँड़ौ न अब हायल नंद कुमार–**राम सतसई**।
ढीला, शिथिल; थका हुआ; बहुत ही दुखी, परम खिन्न।

हायल[2] *वि* {*अ.*} बीच में आड़ करनेवाला।

हाया *प्रत्य.* {हिं. हाही} (किसी वस्तु के लिए) आतुर, व्याकुल (यौ. शब्दों के अंत में)।

हार[1] *स्त्री.* {सं. हारि} युद्ध, प्रतियोगिता, खेल आदि में प्रतिद्वंद्वी से न जीत सकने की दशा या भाव, पराजय; शिथिलता, थकावट; हानि।

हार[2] *पुं.* {सं.} राज्य द्वारा हरण; विरह, वियोग; गले में पहनने की सोने, चाँदी मोतियों, फूलों आदि की माला; अंकगणित में भाजक; जंगल, वन; मैदान; *वि.* वहन करने या ले जानेवाला; हरण करनेवाला; नाशक; *पुं.* = हाल (दशा); *प्रत्य.* {*स्त्री.* हारी} हारा।

हारक *वि.* {सं.} {*स्त्री.* हारिका} हरण करनेवाला; मनोहर, सुंदर; *पुं.* चोर; लुटेरा; गणित में भाजक; हार, माला।

हारगुटिका *स्त्री.* माला का दाना।

हारद *पुं.* {सं. हृदय} मन की बात, अभिप्राय, उद्देश्य, वासना आदि; *वि.* हार्दिक।

हारना *अ.* {हिं. हार} युद्ध, खेल, प्रतिद्वंद्विता आदि में प्रतिपक्षी के सामने विफल या पराजित होना, 'जीतना' का विरु.; थक जाना; प्रयत्न में विफल होना; *स.* प्रतियोगिता, युद्ध, खेल आदि में सफल न होने के कारण हाथ से उसे या उससे संबंध रखनेवाली चीज जाने देना, जैसे लड़ाई, धन या बाजी हारना; गँवाना, खोना।

हारबंध *पुं.* चित्रकाव्य जिसमें पद्य हार के आकार में लिखे जाते हैं।

हारल *पुं.* एक चिड़िया।

हारसिंगार *पुं.* हरसिंगार।

हारहूर *पुं.* मद्य, शराब।

हारावली *स्त्री.* मोतियों की माला।

हारवार *स्त्री.* हड़बड़ी।

हारा *प्रत्य.* {?} {*स्त्री.* हारी} गद्य के 'वाला' प्रत्यय की जगह कविता, विशेषत: प्राचीन कविता में प्रयुक्त होनेवाला प्रत्यय जो कर्तृत्व, स्वामित्व आदि का सूचक होता है, जैसे करनहारा, चलावनहारा।

हारित[1] *पुं.* {देश.} एक चिड़िया जो प्राय: अपने चंगुल में तिनका या छोटी पतली लकड़ी लिए रहती है।

हारित[2] {हिं. हारना} हारा हुआ; थका हुआ।

हारी[1] *वि.* {सं. हारिन्} {*स्त्री.* हारिणी} हरण करनेवाला (यौ. के अंत में)।

हारी[2] *स्त्री.* {हिं. हारना} पराजय, हार।

हारीत *पुं.* {सं.} चोर; डाकू, कबूतर, तोता।

हारौल *पुं.* हरावल।

हार्द *पुं.* स्नेह, अभिप्राय।

हार्दिक *वि.* {सं.} हृदय-संबंधी, हृदय का; हृदय से निकला हुआ, ठीक और सच।

हार्दिकता *स्त्री.* {सं.} सद्भाव; प्रेमभाव।

हार्य *वि.* छीनने-योग्य, रोकने योग्य।

हाल[1] *पुं.* {*अ.*} दशा, अवस्था; परिस्थिति; समाचार, वृत्तांत; विवरण, ब्योरा; *वि.* वर्तमान, मौजूद; क्रि. *वि.* इसी समय, अभी; तुरंत, चटपट।

हाल[2] *स्त्री.* {हिं. हिलना} हिलने की क्रिया या भाव, कंप; पहिए पर चढ़ाया जानेवाला लोहे का गोल बंद।

हालगोला *पुं.* गेंद।

हालडोल *पुं.* {हिं. हालना = डोलना} हिलने-डोलने की क्रिया या भाव; हलचल।

हालत *स्त्री.* {*अ.*} दशा, अवस्था; आर्थिक स्थिति; परिस्थिति।

हालना *अ.* = हिलना; *स.* = हिलना।

हालरा *पुं.* {हिं. हालना} बच्चों को गोद में लेकर हिलाना-डुलाना; झोंका; लहर, हिलोर।

हालरी *पुं.* {हिं. हालना} बच्चों को सुलाने के लिए गाया जानेवाला गीत, लोरी (राज.)।

हालफूल *स्त्री.* हलका, हलचल।

हालांकि *योज.* {फा.} यद्यपि।

हाला *स्त्री.* {सं.} मद्य, शराब।

हालाहल *पुं.* = हलाहल।

हालाहली *स्त्री.* मदिरा।

हालै *क्रि. वि.* {*अ.* हाल} इसी समय, अभी; बहुत शीघ्र, तुरंत।

हाव *पुं.* {सं.} साहित्य में संयोग के समय नायक को मोहित करने अथवा उसपर मिलन की इच्छा प्रकट करने के लिए की जानेवाली स्वाभाविक चेष्टाएँ जो कायिक तथा मानसिक अनुभावों के अंतर्गत मानी गई हैं और जो बारह प्रकार की कही गई है, यथा–लीला, विलास, विच्छिति, विभ्रम, किलकिंचित, मोट्टायित, विव्वोक, विहृत, कुट्टमित, ललित, बोधक और हेला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हावन दस्ता पुं. {फा.} खरल के आकार का धातु का बना हुआ एक प्रकार का पात्र जिसमें कोई चीज उसी धातु की मुँगरी से कूटी जाती है, इमाम दस्ता।

हावला-बावला *वि.* सनकी, झक्की।

हावभाव पुं. {सं.} पुरुषों को मोहित करने के लिए स्त्रियों की मनोहर चेष्टाएँ, नाज-नखरा।

हाशिया पुं. {*अ.* हाशिय:} किनारा, पाड़; गोट, मगजी; लिखने के समय कागज के किनारे खाली छोड़ी हुई जगह, उपान्त; किसी बात पर की हुई टीका-टिप्पणी।

हास पुं. {सं.} हँसने की क्रिया भाव, हँसी; दिल्लगी, ठठोली; साहित्य में केवल कौतुक के लिए कही जानेवाली वह बात या बनाया जानेवाला वह रूप या वेश जो आह्लाद या प्रसन्नता या सूचक और उत्पादक होता है, यह सात्विक भावों के अंतर्गत है।

हासक पुं. {सं.} {*स्त्री.* हासिका} हँसने-हँसानेवाला; हँसोड़।

हासन पुं. हँसानेवाला।

हासनिक पुं. खेल का साथी।

हासिल *वि.* {*अ.*} पाया या मिला हुआ, प्राप्त, लब्ध; पुं. जोड़ में किसी संख्या का वह अंश जो अंतिम अंक के नीचे लिखे जाने पर बच रहे; गणित की क्रिया का फल; पैदावार, उपज; लाभ, नफा; जमीन का लगान, जमा; वह धन जो किसी से अधिकारपूर्वक किया जाता हो, जैसे खिराज, चौथ आदि।

हासी *वि.* {सं. हासिन्} {*स्त्री.* हासिनी} हँसनेवाला।

हास्तिक पुं. हाथियों का झुंड।

हास्य *वि.* {सं.} हँसने के योग्य, जिसपर लोग हँसें; उपहास के योग्य; पुं. हँसने की क्रिया या भाव, हँसी; साहित्य में नौ रसों में से एक जो अयुक्त, असंगत, कुरूप या विकृत घटनाओं, पदार्थों या बातों आदि से उत्पन्न होता है, इसका स्थायी भाव हास या हँसी है; दिल्लगी, मजाक।

हास्यक पुं. {सं. हास्य + क (प्रत्य.)} हँसी की बात या किस्सा, चुटकुला।

हास्यास्पद *वि.* {सं.} {*भाव.* हास्यास्पदता} जिसके बेढंगेपन की लोग हँसी उड़ाएँ, उत्पन्न करनेवाला।

हा हंत *विस्मयादि.* {सं.} हे ईश्वर, यह क्यों हो गया।

हा-हा पुं. {अनु.} हँसने का शब्द; बहुत विनती की पुकार, दुहाई।

हाहाकार पुं. {सं.} घबराहट के समय 'हाय-हाय' की पुकार या चिल्लाहट (विशेषत: बहुत से लोगों की), कुहराम।

हाहाहूत पुं. हाहाकार।

हाही *स्त्री.* {हिं. हाय-हाय} कुछ पाने के लिए बहुत 'हाय-हाय' करते रहना, चरम सीमा का लोभ।

हाहू पुं. {अनु.} शोरगुल, कोलाहल, हल्ला; हलचल।

हिंकारना *अ.* {सं. हिंकार} पीड़ा से कराहना; हिनहिनाना; रँभाना।

हिंकार पुं. गाय के रँभाने का शब्द।

हिंगु पुं. {सं.} हींग।

हिंगुल पुं. {सं.} ईंगुर, शिंगरफ।

हिंगोट पुं. {सं. हिंगुपत्र} एक प्रकार का कँटीला जंगली पेड़ जिसके फलों से तेल निकलता है, इंगुदी।

हिंछा *स्त्री.* = इच्छा।

हिंडारना पुं. हिंडोला।

हिंडोरा पुं. हिंडोला।

हिंडोल पुं. {सं. हिंदोल} हिंडोला; संगीत में ओड़व जाति का एक राग जो वसंत ऋतु में दिन के पहले पहर में गाया जाता है।

हिंडोला पुं. {सं. हिंदोल} काठ का बना हुआ वह बड़ा चक्कर जिसमें लोगों के बैठने के लिए ऊपर-नीचे घूमनेवाले छोटे-छोटे चौखटे होते हैं; पालना, झूला; वह कविता जिसमें हिंडोले पर झूलने का वर्णन हो।

हिंताल पुं. {सं.} खजूर की जाति का एक प्रकार का सुंदर पेड़ जो प्राय: जलाशयों के किनारे होता है।

हिंदवाना पुं. = तरबूज।

हिंदवी *स्त्री.* हिंदी (भाषा)।

हिंदी *वि.* {फा.} हिन्द या हिन्दुस्तान का, का, भारतीय; पुं. हिन्द का निवासी, भारतवासी; *स्त्री.* हिन्दुस्तान की भाषा; उत्तरी और मध्य भारत की वह भाषा जिसके अंतर्गत कई उप-भाषाएँ या बोलियाँ हैं और जो इस देश की राष्ट्रभाषा है।

हिंदी वर्णमाला *स्त्री.* देवनागरी वर्णमाला का वह रूप जिसमें ऋ, ऌ और ॡ ये तीनों स्वर नहीं होते; विशेष (देवनागरी)।

हिंदुस्तान पुं. {फा. हिन्दोस्तान} भारतवर्ष।

हिंदुस्तानी *वि.* {फा. हिंदोस्तानी} हिन्दुस्तान का, हिन्दुस्तान संबंधी, भारतीय; पुं. हिन्दुस्तान का निवासी, भारतवासी, भारतीय; *स्त्री.* हिन्दुस्तान की भाषा; बोल-चाल या लोक-व्यवहार की (पर साहित्यिक से भिन्न) वह हिन्दी जिसमें न तो अरबी के शब्द अधिक हों, न संस्कृत के।

हिंदुस्थान पुं. हिन्दुस्तान।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदू पुं. {फा.} {*भाव.* हिंदूपन, हिंदुत्व} भारतीय आर्यों के वर्तमान भारतीय वंशज जो वेदों, स्मृतियों, पुराणों आदि को अपने धर्मग्रंथ मानते हैं।

हिंदोरना *क्रि.* तरल वस्तु में हाथ डालकर घुमाना।

हिंदोल पुं. उत्सव जिसमें देवताओं की मूर्ति झूले पर बैठाकर झुलाई जाती है।

हिंवार पुं. {सं. हिमालि} हिम, बरफ; तुषार, पाला।

हिंस *स्त्री.* घोड़े का हिनहिनाना।

हिंसक पुं. {सं.} {*भाव.* हिंसकता, हिंसा} हिंसा करने या मार डालनेवाला, घातक; दूसरों की बुराई या हानि चाहने और करनेवाला; *वि.* (पशु) जो पशुओं या जीवों को मारकर उनका मांस खाता हो।

हिंसना *स.* {सं. हिंसन} हिंसा या हत्या करना; किसी की निंदा या बुराई करना, बुरा-भला कहना।

हिंसा *स्त्री.* {सं.} {*वि.* हिंसक} प्राणियों को मारने-काटने और शारीरिक कष्ट देने की वृत्ति; किसी को हानि पहुँचाना।

हिंसात्मक *वि.* {सं.} जिसमें हिंसा हो, हिंसा से युक्त।

हिंस्र (क) *वि.* {सं.} हिंसा करनेवाला।

हि *विभ.* एक पुरानी विभक्ति जो पहले सब कारकों में चलती थी, पर बाद में 'को' के अर्थ में ही रह गई है; *निपा.* ही।

हिअ, हिआ पुं. = हृदय।

हिआव पुं. = हियाव (साहस)।

हिकमत *स्त्री.* {*अ.* हिक्मत} {*वि.* हिकमती} कोई नई बात ढूँढ़ निकालने की बुद्धि; युक्ति, उपाय, तरकीब; यूनानी चिकित्सा-शास्त्री।

हिकमती *फा.* {*वि.*} चालाक, बुद्धिमान।

हिक्कल पुं. बौद्ध संन्यासियों का दंड।

हिक्का *स्त्री.* {सं.} हिचकी; एक रोग जिसमें बहुत हिचकियाँ आती हैं।

हिचक *स्त्री.* {हिं. हिचकना} कोई काम करने से पहले मन में होनेवाली हलकी रुकावट, आगा-पीछा।

हिचकना[1] *अ.* {हिं. हिचक या अनु.} {*भाव.* हिचक, हिचकिचाहट} कोई काम करने से पहले, आशंका, अनौचित्य, असमर्थता आदि का ध्यान करके कुछ रुकना, आगा-पीछा करना।

हिचकना[2] *अ.* {हिं. हिचकी} हिचकियाँ लेना।

हिचकिचाना *अ.* = हिचकना, रुकना।

हिचकी *स्त्री.* {अनु. हिच या सं. हिक्का} प्रसिद्ध शारीरिक व्यापार जिसमें पेट या कलेजे की वायु कुछ रुक-रुककर गले के रास्ते निकलने का प्रयत्न करती है; इसी प्रकार का वह शारीरिक व्यापार जो बहुत अधिक रोने पर होता है।

हिचर-मिचर पुं. आगा-पीछा, टालमटोल।

हिजड़ा पुं. {फा. हीज़ (नपुंसक) + हिं. ड़ा} नपुंसक।

हिजरत *स्त्री.* {*अ.*} एक स्थान छोड़कर दूसरे स्थान पर जाना; मुहम्मद साहब का मक्के से मदीने जाना।

हिडिंब पुं. एक राक्षस जिसको बनवास में भीम ने मारा था।

हिडिंबा *स्त्री.* हिडिंब राक्षस की बहिन, घटोत्कच की माता।

हिजरी पुं. {*अ.*} मुसलमानी सन् जो मुहम्मद साहब के मक्के से मदीने भागने या हिजरत करने की तिथि (15 जुलाई, 622 ई.) से चला है।

हिज्जे पुं. {*अ.* हिज्ज:} किसी शब्द में आए हुए अक्षरों, मात्राओं आदि का क्रम, अक्षरी, वर्तनी (स्पेलिंग)।

हिज्र पुं. {*अ.*} वियोग।

हिटलिस्ट *स्त्री.* {अं.} वह सूची जिसमें आतंकवादियों ने उन लोगों के नाम लिखे हों जिन्हें वे मारना चाहते हैं।

हित पुं. {सं.} कल्याण मंगल; भलाई, उपकार; लाभ, फायदा; अनुराग, प्रेम; विविध क्षेत्रों में किसी वस्तु या विषय के साथ होनेवाला किसी व्यक्ति का वह संबंध जिसके अनुसार उस विषय या वस्तु के कारण भविष्य में होनेवाले हानि या लाभ से उस व्यक्ति की भी हानि या लाभ होता या हो सकता हो (इंटरेस्ट); स्नेह, मुहब्बत; वह जो किसी की भलाई चाहता और करता हो, हितैषी; संबंधी, रिश्तेदार; *क्रि. वि.* (किसी की भलाई या प्रसन्नता के) लिए वास्ते; निमित्त, लिए, वास्ते।

हितकर, हितकारक *वि.* {सं.} {*भाव.* हितकारिता} हित या भलाई करनेवाला; लाभदायक, फायदेमंद; स्वास्थ्य के लिए अच्छा और लाभदायक।

हितकारी *वि.* = हितकर।

हितचिंतक *वि.* {सं.} {*भाव.* हितचिंतन} भला चाहनेवाला शुभचिंतक, हितैषी।

हितचिंतन पुं. {सं.} किसी के उपकार या भलाई की बातें सोचना।

हितता *स्त्री.* हित; भलाई।

हितवना *अ.* हिताना।

हितवाई *स्त्री.* हिताई।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिताई *स्त्री.* {सं. हित} संबंध, रिश्तेदारी, नातेदारी; हितचिंतन; आपसदारी या मित्रता का संबंध, मेलजोल।

हिताना *अ.* {सं. हित} हितकारी या लाभदायक होना; प्रेम या स्नेह करना; उपकार या भलाई करना।

हितावह *वि.* = हितकारी।

हिताहित *पुं.* {सं.} हित और अहित, भलाई और बुराई; लाभ और हानि, नफा और नुकसान।

हिती *पुं.* {सं. हित} हितैषी; संबंधी, रिश्तेदार; सुहृद, स्नेही।

हितू *वि.* {सं. हित} हितकारक; हितैषी।

हितूकर *वि.* हितू।

हितषिता *स्त्री.* किसी का कल्याण चाहना।

हितेच्छु *वि.* = हितैषी।

हितैती *स्त्री.* हिताई।

हितैषणा *स्त्री.* {सं.} दूसरों के हित की इच्छा।

हितैषी *वि.* {सं. हितैषिन्} {*स्त्री.* हितैषिणी, *भाव.* हितैषिता} हित या भला चाहनेवाला, हितचिंतक।

हितोपदेश *पुं.* भलाई का उपदेश।

हिदायत *स्त्री.* {*अ.*} बड़े का छोटे को यह बतलाना कि अमुक कार्य इस प्रकार होना चाहिए; अधिसूचना, निर्देश।

हिनती *स्त्री.* = हीनता।

हिनहिनाना *अ.* {अनु.} {*भाव.* हिनहिनाहट} घोड़े का हिन्-हिन् शब्द करना, हीसना।

हिनहिनाहट *स्त्री.* घोड़े की बोली।

हिना *स्त्री.* {*अ.*} मेंहदी।

हिनाई *वि.* {*अ.*} मेंहदी के रंग की तरह का, लाल; *पुं.* उक्त रंग का घोड़ा।

हिफाजत *स्त्री.* {*अ.* हिफ़ाज़त} रक्षा, रखवाली।

हिब्बा *पुं.* {*अ.* हिब्बः} कौड़ी; दान।

हिब्बानामा *पुं.* = दानपत्र।

हिमंचल *पुं.* = हिमालय।

हिमंत *पुं.* = हेमंत।

हिम *पुं.* {सं.} पाला, तुषार; जाड़ा, शीत, ठंड; जाड़े का मौसम, शीत ऋतु; चंद्रमा; कपूर; *वि.* ठंडा या शीतल।

हिमकण *पुं.* {सं.} तुषार या पाले के बहुत छोटे-छोटे कण या टुकड़े।

हिमकर *पुं.* {सं.} चंद्रमा।

हिमजन *पुं.* {अं. हीलियम को दिया हुआ सं. रूप} एक प्रकार का रासायनिक तत्व जो एक पारदर्शक वाष्प के रूप में होता है और जिसका पता हाल में लगा है (हीलियम)।

हिमपात *पुं.* {सं.} प्राकृत रूप से बरफ गिरना (स्नो फॉल)।

हिमभानु *पुं.* {सं.} चंद्रमा।

हिमयानी *स्त्री.* {फा.} कमर में बाँधी जानेवाली रुपए रखने की लंबी थैली।

हिमवान, हिमवान् *वि.* {सं. हिमवत्} {*स्त्री.* हिमवती} जिसमें बरफ या पाला हो; *पुं.* हिमालय; चंद्रमा।

हिमांक *पुं.* {सं.} कपूर; तापमापक यंत्र में वह अंक या स्थान जो ऐसे शीत का सूचक होता है जिसमें कोई द्रव पदार्थ, विशेषत: जल, जमने लगता है (फ्रीजिंग प्वॉइंट)।

हिमांभ *पुं.* ठंडा पानी।

हिमांशु *पुं.* {सं.} चंद्रमा।

हिमा *स्त्री.* छोटी इलायची, मूली।

हिमाकत *स्त्री.* {*अ.* अहमक का भाव.} मूर्खता, बेवकूफी।

हिमाचल *पुं.* = हिमालय।

हिमाद्रि *पुं.* = हिमालय।

हिमानी *स्त्री.* {सं.} तुषार, पाला; बरफ; बरफ की वे बड़ी चट्टानें या नदियाँ जो ऊँचे पहाड़ों पर रहती हैं (ग्लेशियर)।

हिमाब्ज *पुं.* नील कमल।

हिमाभ्र *पुं.* कपूर।

हिमायत *स्त्री.* {*अ.*} {*वि.* हिमायती} पक्षपात; किसी के पक्ष का समर्थन या पोषण।

हिमालय *पुं.* {सं.} भारत के उत्तर का और संसार के सब पर्वतों से बड़ा और ऊँचा प्रसिद्ध पर्वत।

हिमालयी *वि.* हिमालय के समान ऊँचा या विशाल।

हिमि *पुं.* हिम, पाला।

हिमिका *स्त्री.* घास पर जमा हुआ पाला।

हिमीकर *वि.* {सं. हिम + कर} हिम की तरह बहुत ही ठंडा या शीतल करनेवाला; *पुं.* अलमारी, संदूक आदि की तरह का वह आधान जिसका उपयोग खाद्य पदार्थ, औषध आदि ठंडे रखने और फलत: उन्हें सड़ने-गलने या नष्ट होने से बचाने के लिए होता है (रेफ्रिजरेटर)।

हिमोदक *पुं.* ठंडा पानी।

हिमोपम *पुं.* प्रवाल, मूँगा।

हिम्मत *स्त्री.* {*अ.*} {*वि.* हिम्मती} साहस।

हिय (रा) *पुं.* {सं. हृदय, प्रा. हिअ} हृदय; साहस।

हियाँ *क्रि. वि.* = यहाँ।

हिया *पुं.* {सं. हृदय} हृदय।

पद हिए का अंधा = परम मूर्ख।

वक्षस्थल, छाती; साहस, हिम्मत।

हियाव *पुं.* {हिं. हिय} साहस।

हिरकना *अ.* {सं. हरुक् = समीप} पास आना; सटना; परचना; मना करना, रोकना, हटकना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदा. कोउ काहू कौं पकरि पीठि पाछें हरि हिरकत–रत्ना.।

हिरकाना स. {हिं.} 'हिरकना' का स.।

हिरण पुं. हिरन।

हिरण्मय वि. {सं.} सोने का, सुनहरा।

हिरण्य पुं. {सं.} सोना, स्वर्ण।

हिरण्यकशिपु पुं. {सं.} दैत्यों का एक प्रसिद्ध राजा जो प्रह्लाद का पिता था और जिसे भगवान ने नृसिंह अवतार धारण करके मारा था।

हिरण्यकश्यप पुं. = हिरण्यकशिपु।

हिरण्यगर्भ पुं. {सं.} वह ज्योतिर्मय अंड जो ब्रह्मा और सारी सृष्टि का उत्पादक मूल माना जाता है; ब्रह्मा; विष्णु।

हिरण्यनाभ पुं. {सं.} विष्णु; मैनाक पर्वत।

हिरण्याक्ष पुं. {सं.} हिरण्यकशिपु दैत्य के भाई का नाम।

हिरण्याश्व पुं. सोलह महादानों में से एक।

हिरदय पुं. = हृदय।

हिरदावल पुं. घोड़े की छाती पर एक भौंरी जो अशुभ मानी जाती है।

हिरन पुं. {सं. हरिण} सींगोंवाला एक प्रसिद्ध चौपाया जो मैदानों और जंगलों में रहता है, मृग।

हिरनवारि पुं. = मृगतृष्णा।

हिरना पुं. हिरन; स. हेरना।

हिरनाकुस पुं. = हिरण्यकशिपु।

हिरनाद पुं. हिरण्याक्ष।

हिरनौटा पुं. {हिं. हिरन + प्रा. उत्त (युक्त) से बना औटा (प्रत्य.)} हिरन का बच्चा।

हिरन्य पुं. {सं. हिरण्य} सोना, स्वर्ण।

हिरमजी वि. = किरमजी।

हिरस स्त्री. हिर्स।

हिराती पुं. {हिरात देश} अफगानिस्तान के उत्तर में हिरात नामक प्रदेश का घोड़ा।

हिराना अ., स. हेराना; क्रि. खो जाना, मिटना।

हिरास स्त्री. हरास।

हिरासत स्त्री. {अ.} किसी व्यक्ति पर रखा जानेवाला पहरा या चौकी; हवालात।

हिरौंजी स्त्री. किरमिज।

हिरौल पुं. हरावल।

हिर्स स्त्री. {अ.} लालच, लोभ; स्पर्धा; वासना।

हिलकना अ. {सं. हिक्का} हिचकी लेना; सिसकना; हिलगना।

हिलकी स्त्री. {सं. हिक्का} हिचकी विशेषतः देर तक रोने या सिसकने के कारण होनेवाली।

हिलकोर पुं. हिलोर।

हिलग स्त्री. {हिं. हिलगना} हिलगने या हिल-मिल जाने की क्रिया या भाव; प्रेम, प्रीति; लगन, लौ।

हिलगन स्त्री. {हिं. हिलगना} हेल-मेल, हिलग।

उदा. हिलगन, कठिन है या मन की–कुम्भनदास।

प्रीति, प्रेम।

हिलगना अ. {सं. अधिलग्न} {भाव. हिलग} अटकना, फँसना, उलझना; हिलना-मिलना, परचना; लटकना; सटना।

हिलगाना स. {हिं.} हिलगना का स.।

हिलना[1] अ. {सं. हल्लन} अपने स्थान से कुछ इधर-उधर होना, साधारण गति में आना।

मुहा. *हिलना-डोलना* = थोड़ा इधर-उधर होना, घूमना-फिरना, किसी काम के लिए उठना या आगे बढ़ना।

कंपित या चलायमान होना, गतियुक्त होना; लहराना; काँपना; जमा या दृढ़ न रहना, ढीला होना; पानी में पैठना, धँसना; मन का चंचल होना, डिगना।

हिलना[2] अ. {हिं. हिलगना} हिलना-मिलना, परचना।

हिलमोर्चा स्त्री. एक साग।

हिलाना स. {हिं.} 'हिलना' का स.।

हिलसा स्त्री. चपटी और बड़ी मछली।

हिलाल पुं. दूज का चाँद।

हिलोर स्त्री. {सं. हिल्लोल} पानी की लहर, तरंग।

मुहा. *हिलोरें लेना* = लहराना।

हिलोरना स. {हिं. हिलोर + ना (प्रत्य.)} पानी को इस प्रकार हिलाना कि लहरें उठें; लहराना; हलोरना।

हिल्लोल पुं. {सं.} पानी की लहर, तरंग; आनंद की तरंग, मौज, उमंग।

हिवंचल पुं. = हिमालय (पर्वत)।

हिवड़ा पुं. {सं. हृदय} हृदय, मन।

उदा. चोट लगी निज नाम गरी की, म्हाँरै हिवड़े खिरकी–मीरा (राज.)।

हिसका स्त्री. हिसखा।

हिसखा पुं. {सं. हिंसा} द्वेष, दुश्मनी; ईर्ष्या, डाह; किसी के बराबर बनने की इच्छा, स्पर्धा।

उदा. केशोदास मुख हास हिसखो ही कहियत–केशव।

हिसना अ. {सं. ह्रास} कम या क्षीण होना।

उदा. . . . हिसि गई हिम्मत हजारों लोग सारे की–भूषण।

हिसाब पुं. {अ.} {वि. हिसाबी} गिनकर लेखा तैयार करने का काम या विधा; लेन-देन, आय-व्यय आदि का लिखा हुआ विवरण, लेखा; गणित-संबंधी प्रश्न; भाव, दर; तरीका, ढंग; धारणा, समझ; अवस्था, दशा; किफायत।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिसाब-किताब पुं. {अ.} आय-व्यय आदि का (विशेषत: लिखा हुआ) ब्योरा या लेखा; व्यापारिक लेन-देन का व्यवहार; ढंग, रीति।

हिसाबी पुं. {अ.} हिसाब या गणित का जानकार; *वि.* हिसाब का, हिसाब-संबंधी।

हिसाल्क पुं. {देश.} एक प्रकार का छोटा पौधा या बेल जिसके लाल गूदेदार और रसीले फूल खाए जाते हैं (स्ट्रॉ-बेरी)।

हिसिषा *स्त्री.* हिसखा।

हिस्का *स्त्री.* हिसखा।

हिस्सा पुं. {अ. हिस्स:} समष्टि या समूह का कोई अंश, अवयव, अंग; टुकड़ा, खंड; विभक्त होने या बँटने पर मिलनेवाला अंश, भाग, बखरा; व्यापार आदि में होनेवाला साझा; वह अधिकार जो किसी व्यापार में और लोगों के साथ धन लगाने पर उसके हितों आदि के संबंध में प्राप्त होता है, अंश (शेयर)।

हिस्सेदार पुं. {अ. हिस्स: + फा. दार (प्रत्य.)} {*भाव.* हिस्सेदारी} वह जिसे कुछ हिस्सा मिला हो या मिलने को हो; वह जो व्यापार, संपत्ति आदि में औरों के साथ या साझे में कुछ धन लगाकर उसके किसी अंश या हिस्से का मालिक बनता है, साझेदार, सहभागी (शेयरर)।

हींग *स्त्री.* {सं. हींगु} अफगानिस्तान और फारस में होनेवाले एक पौधे का जमाया हुआ दूध या गोंद जिसमें बहुत तीव्र गंध होती है और जो दवा और मसाले के काम में आता है।

हींचना *स.* = खींचना।

हींछना *स.* {हिं. हीछा = इच्छा} इच्छा करना, चाहना।

हींछा *स्त्री.* इच्छा।

हींसा *स्त्री.* = इच्छा।

हींड़ना *अ.* {हिं. हंडना} चलना-फिरना, घूमना।

उदा. सोबन कबिरन हीडिया सुन्न समाधि लगाय–**कबीर**।

स. पता लगाना, ढूँढ़ना।

हींसना *अ.* {*भाव.* हींस} हिनहिनाना।

हींही *स्त्री.* हँसने का शब्द।

ही *निपा.* {सं. हि (निश्चयार्थक)} एक उपपद जिसका प्रयोग नीचे लिखे अर्थों में होता है–निश्चय, जैसे–यही, वही आदि; केवल, जैसे–मुझे पुस्तक ही चाहिए, पैसे नहीं; हीनता या उपेक्षा, जैसे अब वह आ ही जाए तो क्या?; किसी बात पर जोर देने के लिए, जैसे यह काम होकर ही रहेगा; पुं. हिय या हृदय।

हीक *स्त्री.* {सं. हिक्का} हिचकी; हलकी अप्रिय गंध या स्वाद।

हीचना *अ.* = हिचकना।

उदा. कहत सारदहु कर मति हीचे-**तुलसी**।

हीजड़ा पुं. {?} नपुंसक।

हीड़ना *अ., स.* हींड़ना।

हीठना *क्रि.* पास जाना, समीप होना।

हीन *वि.* {सं.} {*स्त्री.* हीना, *भाव.* हीनता} किसी तत्व, गुण, वस्तु, बात आदि से खाली, रहित, जैसे हीन बुद्धि; निम्न कोटि या श्रेणी का निकृष्ट, घटिया, जैसे हीनपक्ष; बहुत छोटा, तुच्छ या नगण्य; औरों या बहुतों की अपेक्षा घटकर, घटिया (इन्फीरियर); अपेक्षाकृत हलका, कम या थोड़ा।

हीनक *वि.* {सं.} हीनता-संबंधी, हीनता का सूचक, जैसे हीनक भावना।

हीनक भावना *स्त्री.* {सं.} मन में बैठी हुई यह भावना कि हम अमुक अथवा औरों की अपेक्षा हीन हैं (इन्फीरियॉरिटी कॉम्प्लेक्स)।

हीनबुद्धि *वि.* {सं.} मूर्ख।

हीनबोध पुं. {सं.} दूसरे से अपने को हीन समझने की वृत्ति।

हीनयान पुं. {सं.} बौद्ध धर्म की मूल और प्राचीन शाखा जिसका विकास बरमा, स्याम आदि देशों में हुआ था।

हीन-हयात *स्त्री.* {अ.} जीवनकाल।

हीनांग *वि.* खंडित अंगवाला।

हीनांगी *स्त्री.* छोटी चींटी।

हीनार्थ *वि.* अर्थहीन, विफल।

हीय पुं. = हृदय।

हीर पुं. {हिं. हीरा} किसी वस्तु के अंदर का भाव; इमारती लकड़ी के अंदर का भाग; धातु या वीर्य, जो शरीर का सार भाग है; शक्ति, बल, ताकत; पुं. = हीरा।

हीरक पुं. {सं.} हीरा नामक रत्न।

हीरक-जयंती *स्त्री.* {सं.} किसी व्यक्ति, संस्था, महत्वपूर्ण कार्य आदि की वह जयंती जो उसके जन्म या आरंभ होने के 60वें वर्ष होती है।

हीरा पुं. {सं. हीरक} एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न जो अपनी उज्ज्वल द्युति और बहुत अधिक कठोरता के लिए प्रसिद्ध है।

मुहा. *हीरे की कनी चाटना* = हीरे का कण खाकर आत्महत्या करना।

वि. हीरे के समान स्वच्छ, उज्ज्वल और बहुमूल्य, जैसे हीरा जनम; पुं. हियरा (हृदय)।

हीराकट *वि.* {हिं. हीरा + काट} जिसके पहल हीरे के पहलों की तरह कटे हों।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीरातराश पुं. {हिं. हीरा + फा. तराश} {*भाव.* हीरातराशी} वह जो हीरे घिसने या तराशने का काम करता हो।

हीरामन पुं. {हिं. हीरा + मणि} एक प्रकार का तोता जिसका रंग सोने का-सा माना गया है।

हीरो पुं. {अं.} नायक।

हीरोइन *स्त्री.* {अं.} नायिका।

हीलना *अ.* = हीलना।

हीला पुं. {सं. हील:} बहाना, मिस।

पद हीला-हवाला = बहाना।

साधन।

हीसका, हीसा *स्त्री.* {सं. हिंसा} ईर्ष्या, डाह; प्रतियोगिता, होड़।

हुँ *निपा.* हू; हाँ।

हुंकार पुं. {सं.} भयभीत करने के लिए जोर से किया जानेवाला शब्द, गर्जन, गरज; ललकार।

हुंकारना *अ.* {सं. हुंकार} डराने के लिए जोर का शब्द करना; गरजना।

हुँकारी *स्त्री.* {अनु. हुँ} 'हूँ' 'हुँ' करके स्वीकृति या सहमति सूचित करने की क्रिया; *स्त्री.* बिकारी।

हुंड पुं. बाघ, सूअर, राक्षस।

हुँड़ावन *स्त्री.* {हिं. हुंडी} हुंडी से रुपए भेजने का पारिश्रमिक या दस्तूरी।

हुंडा पुं. वह धन जो वर पक्षवाले कन्या के पिता को विवाह-कृत्य हेतु देते हैं।

हुंडावन पुं. वह रकम जो हुंडी लिखते समय बट्टे के रूप में काट ली जाती है।

हुँडियाना *अ.* {हिं. हुंडी} किसी के नाम हुंडी लिखना।

हुंडी *स्त्री.* {देश.} भारतीय महाजनी क्षेत्र में वह पत्र जो कोई महाजन किसी से कुछ ऋण लेने के समय उसके प्रमाणस्वरूप ऋण देनेवाले को लिखकर देता है और जिसपर यह लिखा होता है कि यह धन इतने दिनों में ब्याज सहित चुका दिया जाएगा (पुराने ढंग का एक प्रकार का हैंड नोट)।

मुहा. हुंडी सकारना = हुंडी के रुपए देना और चुकाना।

रुपए उधार लेने की एक रीति जिसमें लेनेवाले को कुछ निश्चित समय के अंदर ब्याज सहित कुछ किस्तों में सारा ऋण चुका देना पड़ता है; अपना प्राप्य धन या उसका कोई अंश पाने के लिए किसी के नाम लिखा हुआ वह पत्र जिसपर यह लिखा होता है कि इतने रुपए अमुक व्यक्ति, महाजन या बैंक को दे दिए जाएँ (ड्राफ्ट या बिल ऑफ एक्स्चेंज)।

हुँत *प्रत्य.* {प्रा. विभक्ति 'हिंतो'} पुरानी हिन्दी में पंचमी और तृतीया की विभक्ति, से; लिए, वास्ते, द्वारा।

हु *निपा.* {सं. उप} 'भी' का वाचक एक शब्द।

हुआ *अ.* {हिं.} 'होना' क्रिया या भूत.।

हुक[1] पुं. {अं.} टेढ़ी कील; अँकुसी।

हुक[2] *स्त्री.* {देश.} एक प्रकार का नस का दरद जो प्रायः पीठ में सहसा बल पड़ने पर उत्पन्न होता है।

हुकना *क्रि.* भूलना, चूकना।

हुकुर-पुकुर *स्त्री.* शीघ्रता से साँस चलना।

हुकुम पुं. हुक्म।

हुकूमत *स्त्री.* हकूमत।

हुक्का पुं. {*अ.* हुक्क:} तंबाकू पीने के लिए विशेष प्रकार का एक उपकरण (इसके गड़गड़ा, फरशी, पेचवान आदि कई भेद होते हैं)।

हुक्का-पानी पुं. {*अ.* हुक्क: + हिं. पानी} एक बिरादरी के लोगों का आपस में जल, हुक्का आदि पीने-पिलाने का व्यवहार, बिरादरी का बरताव।

मुहा. हुक्का-पानी बंद करना = बिरादरी से निकाल या अलग कर देना।

हुक्काम पुं., *अ.* 'हाकिम' का बहु.।

हुकारना *अ.* = हुंकारना।

हुक्म पुं. {*अ.*} {*वि.* हुक्मी} किसी बड़े का छोटे से यह कहना कि ऐसा करो या ऐसा मत करो, आज्ञा, आदेश।

मुहा. हुक्म चलाना = आज्ञा देना; *हुक्म तोड़ना* = आज्ञा न मानना।

जनसाधारण के लिए राज्य या शासन द्वारा निकाली हुई आज्ञा; शासन, प्रभुत्व; धर्मशास्त्र आदि में बतलाई हुई विधि; ताश का एक रंग।

हुक्मनामा पुं. = आज्ञापत्र।

हुक्मी *वि.* {*अ.*} हुक्म या आज्ञा के अनुसार काम करनेवाला, आज्ञापालक; पराधीन; अवश्य गुण दिखानेवाला, अचूक, अव्यर्थ।

हुचकना *अ.* {हिं. हुचकी = हिचकी} हिचकियाँ लेना, सिसकना।

उदा. कह्यौ हुचकि हा नाथ, हमैं ऐसी बिसरायौ—**रत्ना.**।

अ. हचकना।

हुचकी *स्त्री.* हिचकी।

हुजूर पुं. हजूर।

हुजूरी पुं. हजूरी।

हुज्जत *स्त्री.* {*अ.*} {*वि.* हुज्जती} व्यर्थ का विवाद।

हुज्जती *वि.* {*अ.* हुज्जत} बहुत या प्रायः हुज्जत करनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुड पुं. मेष, लाठी।

हुड़क *स्त्री.* {अनु.} हुड़कने की क्रिया या भाव।

हुड़कन *स्त्री.* = हुड़क।

हुड़कना *अ.* {अनु.} {*स.* हुड़काना, *भाव.* हुड़क, हुड़कन} वियोग के कारण बहुत दुखी होना (विशेषत: छोटे बच्चे का); भयभीत और चिंतित होने का भाव; तरसने का भाव।

हुड़दंग पुं. {अनु. हुड़ + हिं. दंगा} उपद्रवयुक्त उछल-कूद।

हुड़ुक पुं. {सं.} एक प्रकार का छोटा ढोल या बाजा।

हुड्ड पुं. {देश.} जंगली, गँवार, उजड्ड; उद्दंड।

हुढक्क पुं. हुड़क।

हुत[1] *वि.* {सं.} हवन किया हुआ; आहुति के रूप में दिया हुआ।

हुत[2] *अ.* 'था' का पुराना रूप।

हुत[3] *विभ.* {प्रा. हुतो} द्वारा, से (अवधी)।

हुता *अ.* {हिं. हुत} 'होना' क्रिया का पुराना रूप, था।

हुताश पुं. आग, डर, चीता-वृक्ष।

हुताशन पुं. {सं.} अग्नि।

हुति *विभ.* {प्रा. हिंतो} कारण और अपादान कारक का चिह्न, से, द्वारा; ओर से, तरफ से।

हुते *विभ.* {प्रा. हिंतो} से, द्वारा; ओर से, तरफ से; *अ.* हिं. 'होना' का ब्रज. भूतकालिक बहु. रूप, थे।

उदा. कोमल कर गोवर्धन धर्‌यौ जब हुते नन्द दुलारे–सूर।

हुतो *क्रि. वि.* {प्रा. हिंतो} ओर से, तरफ से; *अ.* हिं. 'है' का पुराना भूतकालिक रूप, था।

हुदकाना *स.* उकसाना।

हुदना *अ.* {सं. हुंडन} स्तब्ध होना, चपचपकाना; ठिठकना।

हुदहुद पुं. {सं.} एक प्रकार का पक्षी।

हुन[1] पुं. {सं. हूण} सोना, स्वर्ण; मोहर, अशरफी।

मुहा. हुन बरसना = बहुत आय होना।

हुन[2] *क्रि. वि.* {देश.} इस समय, अब।

हुनना *स.* {सं. हवन} आहुति देना।

उदा. हुते अनल कहँ बार बहु हरषि साषि गौरसि–तुलसी।

हवन करना; भस्म करना।

हुनर पुं. {फा.} कला, कारीगरी; कोई काम करने का कौशल।

हुनरमंद *वि.* {फा.} हुनर जाननेवाला, कलाविद्; निपुण, कुशल।

हुमकना *अ.* {अनु. हुँ} हुमचना; ठुमकना (बच्चों का)।

हुमकाना *स.* {हिं.} हुमकना का *स.*।

हुमगना *अ.* {सं. उमंग} बलपूर्वक आगे बढ़ना।

उदा. हुमगी लाल तकि कूबर मारा–तुलसी।

प्रसन्न होना।

हुमचना *अ.* {अनु.} किसी चीज पर चढ़कर उसे बार-बार जोर से नीचे दबाना; उछलना, कूदना; हुमकना।

हुमड़ना *अ.* उमड़ना; उभड़ना।

हुमरना *अ.* = हुमड़ना।

हुमसना *अ.* हुमचना; उमसना।

हुमसाना *स.* {हिं. हुमसना} जोर से ऊपर की तरफ उठाना, उछालना।

उदा. जुगल कंध बल संघ हुमकि हुमसाइ उचाए–रत्ना.।

बढ़ाना; उत्तेजित करना, उकसाना।

हुमा *स्त्री.* {फा.} एक कल्पित पक्षी (कहते हैं कि जिसपर इस पक्षी की छाया पड़ जाए, वह राजा हो जाता है)।

हुमेल *स्त्री.* {*अ.* हमायल} अशरफियाँ, रुपयों आदि को गूँथकर बनाई हुई माला।

हुर पुं. {देश.} सिंध में रहनेवाले एक प्रकार के अर्धसभ्य मुसलमान।

हुरहुर पुं. बरसाती पौधा।

हुरुट्टक पुं. हाथी का अंकुश।

हुरुमयी *स्त्री.* एक नाच।

हुलरना *अ.* = हिलना (राज.)।

हुलराना *स.* = हिलाना (राज.)।

हुलसना *अ.* {हिं. हुलास} बहुत प्रसन्न होना; उभरना; उमड़ना; *स.* आनंदित या प्रसन्न करना।

हुलसाना *स.* {हिं.} हुलसना का *स.*।

हुलसित *वि.* {हिं. हुलास} आनंद की उमंग से भरा हुआ, परम प्रसन्न।

हुलसी *स्त्री.* {हिं. हुलास} हुलास, उल्लास; कुछ लोगों के मत से गो. तुलसीदास जी की माता का नाम।

हुलाना *स.* हूलना।

हुलास पुं. {सं. उल्लास} विशेष आनंद, उल्लास; उत्साह, हौसला; *स्त्री.* सुँघनी, नस्य।

हुलासा *क्रि.* लाठी से ठेलना।

हुलिया पुं. {*अ.* हुलिय:} रूप, शकल, आकृति; किसी मनुष्य के रूप-रंग आदि का ऐसा विवरण जिससे उसकी पहचान हो सके।

मुहा. हुलिया कराना = किसी आदमी का पता लगाने के लिए उसकी शकल, सूरत आदि पुलिस को बताना।

हुलु पुं. भेड़ा।

हुलूक पुं. बंदर।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुल्ल पुं. नृत्य।

हुल्लड़ पुं. {अनु.} कोलाहल, हो-हल्ला; उपद्रव, उत्पात।

हुल्लड़बाज *वि.* {हिं. हुल्लड़ + फा. बाज़} हुल्लड़ मचानेवाला, उपद्रव करनेवाला।

हुल्लड़बाजी *स्त्री.* {हिं. हुल्लड़ + फा. बाज़ी} हो-हल्ला या शोरगुल मचने, मचाने या उपद्रव करने की क्रिया।

हुशियार *वि.* = होशियार।

हुस्न पुं. {अ.} सौंदर्य, उत्तम रूप।

हूँ *निपा.* {अनु.} स्वीकृति सूचक शब्द, हाँ; *निपा.* हू; *अ.* 'होना' क्रिया का वर्तमान कालिक उत्तम पुरुष एकवचन रूप; *सर्व.* = हौ (मैं)

हूँकना *अ.* {सं. हुंकार} गरजकर बोलना, हुंकार करना।

हूँठा पुं. साढ़े तीन का पहाड़ा।

हूँड़ा *स्त्री.* सिंचाई आदि कामों में किसानों का परस्पर लेना-देना।

हूँसना *स.* {अनु.} {*भाव.* हूँस} नजर लगाना; बराबर डाँड सुनाते रहना; ललचाना; कोसना।

हू *निपा.* {सं. उप = आगे} भी।

हूक *स्त्री.* {सं. हिक्का} हृदय की वेदना; दर्द, पीड़ा; आशंका, खटका।

हुकना *अ.* {हिं. हूक} पीड़ा या कसक होना; पीड़ा या कष्ट से चौंकना।

हूटना *अ.* {हिं. हटाना} अपने स्थान से इधर-उधर होना, हटना, पीछे हटना (लड़ाई आदि में); हूठना।

हूठना *अ.* {?} किसी को चिढ़ाने के लिए उसकी भावभंगी, मुद्रा आदि की नकल करना (ब्रज.)।

हूठा पुं. {?} देहाती स्त्रियों का किसी को चिढ़ाने या तुच्छ ठहराने के लिए मुट्ठी बाँधकर दोनों हाथ कमर पर रखकर इतराते हुए मटकना (ब्रज.)।

हूड़ *वि.* हुड्ड।

हूण पुं. {?} एक प्राचीन मंगोल जाति जो कुछ दिनों तक एशिया और यूरोप के देशों पर आक्रमण करती फिरती थी।

हूत *वि.* {सं.} बुलाया हुआ।

हुनना *स.* {सं. हवन} आग में डालना; विपत्ति में फँसाना।

हू-बहू *वि.* {अ.} ज्यों-का-त्यों, जैसा हो, ठीक वैसा ही; किसी के बिल्कुल अनुरूप या समान।

हूर *स्त्री.* {अ.} मुसलमानों के अनुसार, स्वर्ग की अप्सरा; पुं. हुर।

हूरना *स.* {अनु.} बहुत अधिक भोजन करना; मारना, हूलना।

हूल[1] *स्त्री.* {सं. शूल} हूलने की क्रिया या भाव, भोंकना; हूक, टीस, जोर से हाँकना।

हूल[2] *स्त्री.* {अनु.} कोलाहल, हल्ला; हर्षध्वनि; ललकार।

हूलना *स.* {हिं. हूल} लाठी, भाले आदि का सिरा जोर से धँसाना या घुसाना।

हूश *वि.* {हिं. हूड़} गँवार, उजड्ड।

हूह *स्त्री.* {अनु.} हुँकार।

हुचक्कर पुं. अष्टकमल।

हृत *वि.* {सं.} {*भाव.* हृति} हरण किया हुआ, छीनकर लिया हुआ।

हृतबंधु *वि.* {सं.} जिसका भाई छीन लिया गया हो।

हृत्कंप पुं. {सं.} हृदय की धड़कन।

हृत्पीड़न पुं. छाती की पीडा।

हृत्तंत्री *स्त्री.* {सं.} हृदय-रूपी तंत्री या वीणा।

हृत्तल पु. {सं.} हृदय, कलेजा, दिल।

हृत्पिंड पुं. {सं.} कलेजा।

हृद पुं. = हृदय; पुं. = ह्रद (तालाब)।

हृदयंगम *वि.* {सं.} अच्छी तरह हृदय या समझ में आया हुआ।

हृदय पुं. {सं.} छाती के अंदर बाईं ओर का एक अवयव जिसके द्वारा शुद्ध रक्त शरीर की नलियों में पहुँचता है, दिल, कलेजा; इसी के पास छाती के मध्य भाग में माना जानेवाला वह अंग जिसमें प्रेम, हर्ष, शोक, करुणा, क्रोध आदि मनोविकार उतपन्न होते और रहते हैं, मन; अंत:करण, विवेक, बुद्धि।

हृदयग्राही (हिन्) पुं. {सं.} {*स्त्री.* हृदयग्राहिणी} मन को आकृष्ट करनेवाला।

हृदय-परिवर्तन पुं. {सं.} द्वेषभाव छोड़कर किसी के प्रति मन में होनेवाला सद्‌भाव।

हृदय-विदारक *वि.* {सं.} मन को बहुत अधिक कष्ट पहुँचानेवाला।

हृदयहारी *वि.* {सं. हृदयहारिन्} {*स्त्री.* हृदयहारिणी} मन को हरण करने या लुभानेवाला, मनोहर।

हृदयाघात पुं. {सं.} दिल की चोट।

हृदयाला *वि.* हृदयालु।

हृदयालु *वि.* {सं.} दृढ़ हृदयवाला; साहसी; उदार; सहृदय।

हृदयेश, हृदयेश्वर पुं. {सं.} {*स्त्री.* हृदयेश्वरी} प्रियतम; पति।

हृद्‌गत *वि.* {सं.} हृदय में का, आंतरिक; मन में बैठा या जमा हुआ।

हृद्देश पुं. {सं. हृत् = हृदय + देश} हृदय, मन।

हृद्य *वि.* {सं.} हृदय-संबंधी, हृदय का।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदरोग पुं. {सं.} हृदय में होनेवाला रोग, जैसे कलेजे की धड़कन।

हृद्रोध पुं. {सं.} हृदय की गति का रुक जाना।

हृषीकेश पुं. {सं.} विष्णु; कृष्ण।

हृष्ट *वि.* {सं.} {*भाव.* हृष्टि} प्रसन्न।

हृष्टपुष्ट *वि.* {सं.} मोटा-ताजा।

हेंगा पुं. {सं. अभ्यंग} खेत में मिट्टी के ढेले चूर करने का उपकरण, पाटा।

हें हें *स्त्री.* {अनु.} दीनतापूर्वक हँसने या गिड़गिड़ाने का शब्द।

हे *विस्मयादि.* {सं.} संबोधन का सूचक शब्द; *अ.* ब्रज भाषा के हौ (था) का बहु. रूप थे।
उदा. मानी हार विमुख दुरजोधन, जाके जोधा हे सौ भाई–**सूर**।

हेकड़ *वि.* {हिं. हिया + कड़ा} {*भाव.* हेकड़ी} हृष्ट-पुष्ट, मोटा ताजा; प्रबल, प्रचंड; अक्खड़, उद्धत।

हेकड़ी *स्त्री.* {हिं. हेकड़} हेकड़ या अक्खड़ होने का भाव, उद्धतता।
मुहा. किसी की हेकड़ी भुलाना = किसी को पराजित करके उसका अभिमान नष्ट करना।

हेकला *वि.* = अकेला (राज.)।

हेच *वि.* {फा.} तुच्छ, हीन।

हेठ *क्रि. वि.* {सं. अधस्थः} नीचे।

हेठा *वि.* {हिं. हेठ = नीचे} नीचा; घटकर, हलका; तुच्छ।

हेठी *स्त्री.* {सं. हेठा} अप्रतिष्ठा।

हेड़ी *स्त्री.* चौपायों का समूह जिसको बनजारे बेचने हेतु साथ-साथ हाँकते चलते हैं।

हेत पुं. {सं. हित} प्रेम, मुहब्बत।
उदा. काकौ गृह, दारा, सुत, सम्पति, जासौ कीजै हेत–**सूर**।
पुं. हेतु।

हेति *स्त्री.* {सं.} आग की लपट, लौ; वज्र; सूर्य की किरण; भाला; चोट, आघात।

हेतु पुं. {सं.} वह बात जिसे ध्यान में रखकर अथवा जिसके विचार से कोई काम किया जाए अभिप्राय, उद्देश्य; कारण, वजह, सबब; वह बात जिसके होने से कोई और बात घटित हो; तर्क, दलील; तर्कशास्त्र में वह तर्कसंगत कारण या युक्ति जिससे कोई निष्कर्ष निकलता या सिद्धांत स्थिर होता हो, साधक; साहित्य में एक अलंकार जिसमें या तो कारण के होते ही कार्य के भी हो जाने का उल्लेख होता है, जैसे उन्हें देखते ही मेरे मन में श्रद्धा उत्पन्न हो गई अथवा कारण का ही कार्य रूप में भी उल्लेख होता है, जैसे आपकी कृपा ही मेरा कल्याण है; पुं. हेत।

हेतूत्प्रेक्षा *स्त्री.* उत्प्रेक्षा अलंकार जहाँ हेतु द्वारा उत्प्रेक्षा होती है।

हेतूपमा *स्त्री.* उपमा अलंकार जिसमें हेतु द्वारा उत्प्रेक्षा होती है।

हेतुमत् *वि., पुं.* हेतुमान्।

हेतुमान् *वि.* {सं. हेतुमन्} जिसका कोई हेतु या कारण हो, हेतु या कारण से उत्पन्न या सामने आया हुआ; पुं. वह बात या तथ्य जिसका कोई कारण हो, कार्य, काम।

हेतुवाद पुं. {सं.} तर्कशास्त्र; कुतर्क, ओछी दलील; नास्तिकता।

हेत्वाभास पुं. {सं.} कोई बात सिद्ध करने के लिए बतलाया जानेवाला ऐसा कारण जो देखने में ठीक जान पड़ने पर भी वास्तव में ठीक न हो, मिथ्या हेतु (फैलेसी)।

हेमंत पुं. {सं.} अगहन-पूस की ऋतु।

हेमंतनाय पुं. कपित्थ, कैथ।

हेम पुं. {सं. हेमन} हिम, पाला; सोना, स्वर्ण; पुं. हिम।

हेममुद्रा *स्त्री.* {सं.} सोने का सिक्का, अशरफी, मोहर।

हेमांग पुं. गरुड़, विष्णु, चंपक वृक्ष।

हेमाद्रि पुं. {सं.} सुमेरु पर्वत।

हेमाभ *वि.* {सं.} हेम या सोने की-सी आभावाला, सुनहला।

हेय *वि.* {सं.} छोड़ने योग्य, त्याज्य; बुरा, खराब; तुच्छ।

हेरंब पुं. {सं.} गणेश, भैंसा।

हेर *स्त्री.* हिं. 'हेरना' का भाव; पुं. अहेर।

हेरना[1] *स.* {सं. आखेट हिं. अहेर} ढूँढ़ना; देखना; परखना।

हेरना[2] *स.* {हिं. हारना} खोना, गँवाना; बिताना।
उदा. वन मकरंद प्रमत्त आयु अठहत्तर हेरी–**सहचरिशरण**।

हेर-फेर पुं. {हिं. हेरना + फेरना} घुमाव-फिराव, चक्कर; दाँव-पेंच, चालबाजी; अदल-बदल, उलट-पलट; कुछ बेचना और कुछ खरीदना।

हेरा पुं. {हिं. हेरना} किसी को पुकारने या बुलाने का शब्द।
उदा. ठुमकि ठुमकि चलति हेरा दै बोलनि पुलकति नंदकिसोरै–**ललित किशोरी**।
किसी को ढूँढ़ने की क्रिया या भाव, तलाश।

हेराना *अ.* {सं. हरण} पास से निकल या खो जाना; लुप्त हो जाना, न रह जाना; किसी के सामने फीका या मंद पड़ना; सुध-बुध भूलना; *स.* कोई चीज खोना, गँवाना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेरा-फेरी *स्त्री.* {हिं. हेर + फेर} हेर-फेर, अदल-बदल; इधर-उधर होना या करना; बार-बार आना-जाना।

हेरिक *पुं.* भेद लेनेवाला, दूत, भेदिया।

हेरी *स्त्री.* {हिं. हेरना} पुकार।
मुहा. हेरी देना = पुकारना।

हेलन *पुं.* क्रीड़ा करना, तिरस्कार।

हेलना[1] *अ.* {सं. हेलन} क्रीड़ा या मनोविनोद करना; मन-बहलाव।

हेलना[2] *स.* {हिं. हेला} हेय या तुच्छ समझना।

हेलना[3] *अ.* {सं. हिलना} पैठना; तैरना।

हेल-मेल *पुं.* = मेल-जोल।

हेलया *क्रि. वि.* {सं.} खिलवाड़ में; हँसी या मजाक में।

हेला[1] *स्त्री.* {सं.} तुच्छ या उपेक्ष्य समझना, तिरस्कार; खेलवाड़, क्रीड़ा; प्रेमपूर्ण क्रीड़ा, केलि; साहित्य में संयोग शृंगार के अंतर्गत एक हाव जिसमें नायिका आँखें या भौंहें नचाकर मिलन की अभिलाषा कुछ धृष्टतापूर्वक और अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट करती है।

हेला[2] *पुं.* {हिं. हल्ला} पुकार, हाँक; धावा, चढ़ाई।

हेला[3] *पुं.* {हिं. रेलना} धक्का, रेला।

हेला[4] *पुं.* {हिं. हेल} {*स्त्री.* हेलिन, हेलिनी} भंगी, मेहतर।

हेलि *पुं.* सूर्य; (*स्त्री.*) आलिंगन।

हेलिन *स्त्री.* डोमन।

हेली[1] *स्त्री.* {संबोधन हे + अली} हे सखी।
उदा. जुध में वामन डंड, जिमि, हेली बाधै हत्थ–**बांकीदास**।

हेली[2] *स्त्री.* सहेली।

हेली[3] *पुं.* {हिं. हेला} प्रायः क्रीड़ा या विनोद करता रहनेवाला, क्रीड़ाशील।

हेली-मेली *वि.* {हिं. हेल-मेल} जिससे हेल-मेल हो।

हेवंत *पुं.* = हेमंत।

हेष *पुं.* घोड़े का हिनहिनाना।

हेव *अ.* = था। (ब्रज.)

हैं[1] *अ.* 'होना' क्रिया के वर्तमान रूप 'है' का बहुबचन।

हैं[2] *विस्मयादि.* {अनु.} एक अव्यय जो आश्चर्य, असम्मति आदि का सूचक है।

है *अ.* 'होना' क्रिया का वर्तमान-कालिक एक वचन रूप; *पुं.* हय (घोड़ा)।

हैकड़ *वि.* हेकड़।

हैकड़ी *स्त्री.* हेकड़ी।

हैकल *स्त्री.* {सं. हय + हिं. गला} गले में पहनने का एक गहना।

हैजा *पुं.* {*अ.* हैज:} प्रसिद्ध घातक और संक्रामक रोग जिसमें कै होती और दस्त आते हैं, विशूचिका।

हैतुक *वि.* जिसका कोई हेतु हो।

हैना *स.* {सं. हनन} मार डालना, वध करना।
उदा. सुन सुग्रीव प्रतिज्ञा मेरी एकहिं बान असुर सब हैहौं–**सूर**।

हैफ *विस्मयादि.* {*अ.* हैफ} एक अव्यय जो मन की बहुत ही कष्टदायवक अवस्था सूचित करता है, 'परम दुख की बात है' का सूचक अव्यय।

हैबर *पुं.* {सं. हयबर} अच्छा, घोड़ा।

हैम *वि.* {*स्त्री.* हैमी} सोने का बना हुआ; सोने के रंग का, सुनहला; *वि.* {सं.} हिम या बरफ का; जाड़े में होनेवाला।

हैमन *वि.* हेमंत ऋतु में होनेवाला, सोने का।

हैमवत *वि.* हिमालय का।

हैमवती *स्त्री.* पार्वती, उमा, हर्रे।

हैमा *स्त्री.* पीली चमेली।

हैमी *स्त्री.* केतकी।

हैरान *वि.* {*अ.*} {*भाव.* हैरानी} चकित, भौचक्का; परेशान, तंग।

हैवान *पुं.* {*अ.*} {*वि.* हैवानी} पशु, जानवर।

हैसियत *स्त्री.* {*अ.*} सामर्थ्य, शक्ति; आर्थिक योग्यता, वित्त, बिसात; धन-संपत्ति।

हों *अ.* 'होना' क्रिया का संभाव्य काल का बहुबचन रूप।

होंठ *पुं.* ओंठ।

हो[1] *अ.* 'होना' क्रिया के अन्य पुरुष, संभाव्य काल और मध्यम पुरुष, बहुबचन के वर्तमान काल का रूप; ब्रजभाषा में 'है' का सामान्य भूत रूप, था।

हो[2] *पुं.* {सं.} पुकारने का शब्द, है।

होई *स्त्री.* अहोई।

होछ *स्त्री.* = इच्छा।

होछना *अ.* = इच्छा करना।

होड़ *स्त्री.* {सं. हार = विवाद} शर्त, बाजी; चढ़ा-ऊपरी, प्रतियोगिता; हठ, जिद।

होड़ाबाजी *स्त्री.* होड़ाहोड़ी।

होडा-होडी *स्त्री.* {हिं. होड} प्रतियोगिता, चढ़ा-ऊपरी; शर्त, बाजी।

होत[1] *स्त्री.* {हिं. होना} होने की क्रिया या भाव, अस्तित्व; पास में होने का भाव, सम्पन्नता; वित्त, सामर्थ्य।

होत[2] *अ.* {हिं. हो} पुकारने का शब्द, हो।

होतब (ब्य) *पुं.* = होनहार।

होतव्य *पुं.* होनहार।

होता *पुं.* {सं. होतृ} {*स्त्री.* होत्री} हवन करने या यज्ञ में आहुति देनेवाला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होत्र पुं. होम।

होनहार *वि.* {हिं. होना + हारा (प्रत्य.)} जो अवश्य होने को हो, होनी, भावी; आगे चलकर जिसके सुयोग्य होने की आशा हो, अच्छे लक्षणोंवाला, उदीयमान (प्रॉमिसिंग); *स्त्री.* वह बात जो अवश्य होने को हो, होनी, भवितव्यता।

होना *अ.* {सं. भवन} सत्ता, अस्तित्व, उपस्थिति अदि सूचित करनेवाली मुख्य अैर सबसे अधिक प्रचलित क्रिया, अस्तित्व में आना या वर्तमान रहना।

मुहा. किसी का होना = किसी के अधीन या वश में होना; किसी का आप्त सा संबंधी होना, रिश्ते में होना; *कहीं का हो रहना* = कहीं जाकर वहीं रह जाना; *हो आना* = भेंट करने के लिए जाना और भेंट करके लौट आना

पहला रूप छोड़कर दूसरे या नये रूप में आना।

मुहा. हो बैठना = नये रूप में स्थित होना, बन जाना।

कार्य या घटना का प्रत्यक्ष रूप से सामने आना, व्यवहार या परिणाम के रूप में सामने आना।

मुहा. होकर रहना = किसी तरह न टलना, जरूर होना।

स्त्री. का रजस्वला होना; कार्य के रूप में सिद्ध या सम्पन्न होना; बनाया या तैयार किया जाना, बनना; रोग आदि का अपना रूप प्रगट करना, जैसे ज्वहर होना; जन्म लेना, जैसे लड़का होना।

होनी *स्त्री.* {हिं. होना} होने की क्रिया या भाव; अवश्य होने या होकर रहनेवाली बात या घटना, भावी भवितव्यता।

होम पुं. {सं.} हवन, यज्ञ।

मुहा. होम करना = जलाना; नष्ट या बरबाद करना; अर्पण या उत्सर्ग करना, जैसे जी होम करना।

होमना *स.* {सं. होम + हिं. ना (प्रत्य.)} होम या हवन करना; पूरी तरह से अर्पण या उत्सर्ग करना; नष्ट करना।

होमाग्नि *स्त्री.* यज्ञ की अग्नि।

होमीय *वि.* होम-संबंधी।

होर *वि.* ठहरा हुआ. रुका हआ।

होरसा पुं. पत्थर का गोल चिकना चकला जिस पर चंदन रगड़ा जाता है।

होरहा पुं. {सं. हालक} बूट, चने का हरा पौधा।

होरा *स्त्री.* {यू.} घंटा, दिन-रात का चौबीसवाँ भाग; जन्मकुंडली; पुं. होला।

होरिल (ा) पुं. {देश.} शिशु, छोटा बच्चा, बहुत छोटा बालक।

होरिहा पुं. {हिं. होली + हा (प्रत्य.)} होली खेलनेवाला।

होरिहार पुं. {हिं. होरी} होली खेलनेवाला।

होरी *स्त्री.* = होली।

होलक पुं. आग में भुनी हुई हरा चना या मटर की फलियाँ।

होला[1] पुं. {हिं. होली} सिक्खों की होली जो होली जलने के दूसरे दिन होती है।

होला[2] पुं. {सं. होलक} बूट, आग में भुने हुए हरे चने या मटर की फलियाँ; चने का हरा पौधा या दाना, होरहा।

होलाक पुं. आग की गरमी पहुँचाकर पसीना लाना।

होलाका *स्त्री.* वसंतोत्सव, होली का त्यौहार, फागुन मास की पूर्णमासी।

होलाष्टक पुं. होली के त्योहार के पहले के आठ दिन जिनमें विवाहादि कृत्य वर्जित हैं।

होलिका *स्त्री.* होली का त्योहार, लकड़ी, घास-फूस आदि का ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है।

होलिहार पुं. {हिं. होली} वह जो घूम-घूमकर धूमधाम से होली खेलता फिरता हो।

होली *स्त्री.* {सं. होलिका} हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध त्योहार जो फाल्गुन की पूर्णिमा को होता है और जिसमें आग जलाते और एक दूसरे पर रंग, अबीर आदि छिड़कते हैं।

मुहा. होली खेलना = एक दूसरे पर रंग, अबीर आदि डालना; लकड़ियों आदि का वह ढेर जो उक्त दिन जलाया जाता है; एक प्रकार का गीत जो माघ-फागुन में गाया जाता है।

होलैया पुं. होलिहार।

होश पुं. {फा.} चेतना, ज्ञान करानेवाली मानसिक शक्ति या वृत्ति।

मुहा. होश उड़ना या जाता रहना = कष्ट, भय आदि से सुध-बुध भूल जाना; *होश सँभालना* = समझने-बूझने के वयस में आना, सयाना होना; *होश में आना* = बेहोशी दूर होने पर फिर चेतना प्राप्त करना; *होश की दवा करना* = बुद्धि ठिकाने लाना; *होश ठिकाने होना* = भ्रम होना; हानि सहकर या दंड भोग कर पछतावा होना। बुद्धि, समझ।

पद होश-हवास = चेतना और बुद्धि।

होशियार *वि.* {फा.} {*भाव.* होशियारी} बुद्धिमान, समझदार; कुशल, दक्ष; सावधान, सचेत; जो वय के विचार से समझने-बूझने के योग्य हो गया हो, सयाना; चालाक, धूर्त।

होशियारी *स्त्री.* {फा.} समझ, बुद्धिमानी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होस पुं. होश; *स्त्री.* हौस।
होसा-होसी *स्त्री.* {हिं. हवस = लालसा} चढ़ा-ऊपरी, लाग-डाँट।
होस्टल पुं. = छात्रावास।
हौं *सर्व.* {सं. अहम्} व्रज भाषा में उत्तम पुरुष का एकवचन रूप, मैं (व्रज.); *अ.* हूँ (व्रज.)।
हौंकना *अ.* {हिं. हुंकार} गरजना; *स.* हाँकना; धौंकना।
हौंस *स्त्री.* {अ. हवस} कामना, चाह, लालसा; *स्त्री.* {हिं. हौसला} उत्साह।
हौ *अ.* था; हो।
हौआ पुं. {अनु. हौ} बच्चों को डराने के लिए कल्पित भयानक प्राणी; *स्त्री.* हौवा।
हौका पुं. {हिं. हाय} दीर्घ निःश्वास; किसी बात की बहुत प्रबल इच्छा।
हौज पुं. {अ.} पानी का छोटा कुंड।
हौद पुं. हौज; छोटा जलाशय।
हौदा पुं. {अ. हौद्‌अ} हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला चौखटा जिस पर आदमी बैठते हैं, अम्बरी।
हौदी पुं. {हिं. हौदा} छोटा हौज; छोटा, होदा; मकानों के सामने बना हुआ वह छोटा गड्ढा जिसमें मकान का खराब पानी, कीचड़ और गंदगी आकर जमा होती है।
हौन पुं. {सं. अहम्} अपनापन, निजत्व; पुं. हवन।
होरा पुं. {अनु.} हल्ला, कोलाहल।
हौरे *क्रि. वि.* हौल।
हौल पुं. {अ.} भय, डर।
हौल-दिल पुं. {फा.} कलेजे की धड़कन; कलेजा धड़कने का रोग।
हौल-दिली *स्त्री.* {फा.} संग-यशब (पत्थर) का वह टुकड़ा जो गले में हृदय-संबंधी रोग दूर करने के लिए पहना जाता है, नादली।
हौली *स्त्री.* {सं. हाला = मद्य} देशी शराब बनने या बिकने की जगह, कल्वरिया।
हौले *क्रि. वि.* {हिं. हरुआ} आहिस्ते, धीरे; हल्के हाथ से।
हौवा *स्त्री.* {अ.} पैगम्बरी मतों के अनुसार संसार की वह पहली स्त्री जो आदम की पत्नी थी और जिससे सारी मनुष्य-जाति की उत्पत्ति मानी जाती है; पुं. हौआ।
हौस *स्त्री.* {अ. हवस} उत्साह, हौसल्ग; लालसा, कामना, चाह।
हौसला पुं. {अ. हौसिल:} प्रबल उत्कंठा, कोई काम करने की उमंग; प्रयत्न कर देखना; उत्साह।
हौसाहौस पुं. {हिं. हौस से अनु.} मुकाबला, लाग-डाँट।
ह्यस् *अव्य.* गत दिन, काल।
ह्यस्तन *वि.* (गत) कल का।
ह्याँ *क्रि. वि.* = यहाँ (इस स्थान पर)।
ह्यो पुं. हिया; *अ.* = था (व्रज.)।
ह्रद पुं. {सं.} सरोवर, तालाब, बड़ा ताल, झील।
ह्रदग्रह पुं. कुंभीर जलजंतु।
ह्राद पुं. ध्वनि, मेघ की गर्जना।
ह्रादिनी *स्त्री.* बिजली, नदी।
ह्रस्व *वि.* {सं.} {*भाव.* ह्रस्वता} नाटा; थोड़ा; छोटा; नीचा; पुं. दीर्घ की अपेक्षा कुछ कम खींचकर बोला जानेवाला स्वर, जैसे अ, ई आदि।
ह्रस्वता *स्त्री.* {सं.} लघुता, छोटाई।
ह्रस्वांग *वि.* ढिंगना।
ह्रसित *वि.* छोटा किया हुआ।
ह्रास पुं. {सं.} कमी, घटती; किसी वस्तु के गुणों, तत्वों आदि में कमी होना; उतार, घटाव; किसी प्रकार घिसने, नष्ट होने या व्यर्थ जाने की क्रिया या भाव।
ह्रासन पुं. कम करना।
ह्री *स्त्री.* {सं.} शर्म, लज्जा, हया; दक्ष प्रजापति की पुत्री जो धर्म की पत्नी मानी जाती है।
ह्रीक पुं. नेवला।
ह्रीका *स्त्री.* डर, लज्जा।
ह्रीण *वि.* लज्जित।
ह्रीत *वि.* लजाया हुआ।
ह्रीति *स्त्री.* लज्जा, शर्म।
ह्रीमान् *वि.* लज्जाशील।
ह्रीमूढ़ *वि.* लज्जा से दबा हुआ।
ह्रीवैर पुं. सुगंधवाला।
ह्राद पुं. हिरणकश्यपु के पुत्र का नाम।
ह्रादक *वि.* प्रसन्न करनेवाला।
ह्रादन पुं. आह्लाद; (पुं.) शिवजी।
ह्रादिका *स्त्री.* आनंद देनेवाली।
ह्रादिनी *स्त्री.* ईश्वरीय शक्ति, बिजली।
ह्रादी *वि.* प्रसन्न।
ह्राँ *अव्य.* वहाँ।
ह्रैं *क्रि. वि.* = वहीं।

●●●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Hindi Proverbs & Phrases

लोकोक्तियाँ तथा मुहावरे

मुहावरों तथा लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा में तीखापन, सौष्ठव और माधुर्य तो आता ही है, कथन में चमत्कार तथा प्रभाव उत्पन्न करने की शक्ति भी बढ़ जाती है। भारतेन्दु-युग के गद्य लेखकों ने इनका प्रचुर प्रयोग करके ही अपने लेखों तथा अन्य गद्य-रचनाओं को पाठकों के लिए अधिक रोचक एवं चुस्त-दुरुस्त बना दिया था।

मुहावरा तथा लोकोक्ति में अंतर ये हैं–1. मुहावरा छोटा होता है, लोकोक्ति अपेक्षाकृत बड़ी होती है।

2. मुहावरा वाक्यांश होता है, लोकोक्ति पूरे का पूरा वाक्य।

3. कहावतों का प्रयोग पूरे वाक्य के रूप में होता है और उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता; मुहावरा लिंग, वचन, क्रिया के अनुसार परिवर्तित होता है।

मुहावरा उस वाक्यांश को कहते हैं जिसका प्रयोग करने पर वाक्य के अर्थ में कुछ विलक्षणता आ जाती है। इसमें प्रयुक्त शब्द अपने मूल अर्थ या अभिधार्थ को छोड़ लक्ष्यार्थ ग्रहण करते हैं। 'अँगूठा दिखाना' का अर्थ अँगूठा दिखाना नहीं होता, बल्कि किसी चीज को देने या काम करने का वायदा कर उस वस्तु को देने का काम करने से मुकर जाना होता है। छात्र से अपेक्षा की जाती है कि वह मुहावरे का शब्दार्थ न बताकर उसका भावार्थ बताए। मुहावरों और लोकोक्तियों की संख्या तो बहुत अधिक है। हम यहाँ केवल अधिक प्रचलित मुहावरों और लोकोक्तियों के अर्थ तथा उनके प्रयोग दे रहे हैं।

(क) लोकोक्तियाँ

☞ **अंधा क्या चाहे, दो आँखें**–(इच्छित वस्तु को बिना परिश्रम-प्रयास किए पा जाना) भूखे रामदास से जब मोहन ने कहा, रोटी खाओगे? तो वह बोला–**अंधा क्या चाहे दो आँखें।**

☞ **अंधी पीसे कुत्ते खाएँ**–(किसी की कमाई दूसरा खाए) निःसंतान परमेश कमाते-कमाते मर गया, अब दूसरे मजे उड़ा रहे हैं। इसे कहते हैं–**अंधी पीसे, कुत्ते खाएँ।**

☞ **अंधे के आगे रोवे अपने दीदे खोवे**–(मूर्ख, कठोर व्यक्ति को उपदेश देना व्यर्थ है) सुदर्शन को समझाना-बुझाना **अंधे के आगे रोना, अपने दीदे खोना है।**

☞ **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता**–(एक व्यक्ति कोई महत्वपूर्ण या बड़ा कार्य नहीं कर सकता। मेल से, सहयोग से ही बड़े काम होते हैं) देश की निरक्षरता दूर करने के लिए वह दिन-रात मेहनत तो कर रहा है, पर **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।**

☞ **अधजल गगरी छलकत जाए**–(थोड़े से धन, ज्ञान या गुण होने पर बहुत इतराना, इठलाना) लिपिक की नौकरी मिलते ही वह अपने मित्रों से बात तक नहीं करता। ठीक कहा है, **अधजल गगरी छलकत जाए।**

☞ **अपना सिक्का खोटा तो परखने वाले का क्या दोष**–(यदि स्वयं अपने में या अपने संबंधी में दोष है तो उन्हें बुरा कहने वाले को दोष देना गलत है) पिता ने पुत्र को चोरी से रोका नहीं, अब वह पक्का चोर हो गया है तो लोग अंगुली उठाते हैं। **अपना सिक्का ही खोटा हो तो परखनेवाले का क्या दोष।**

☞ **अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है**–सोहन कायर है पर उसके घर जाओ तो बड़ी डींग मारता है। **अपनी गली में तो कुत्ता भी शेर होता है।**

☞ **अपने घर में दिया जलाकर तब मस्जिद में जलाते हैं**–(पहले स्वयं अपना काम पूरा करो तब दूसरे को सहयोग दो) दुनिया का दस्तूर है कि पहले **अपने घर में दिया जलाकर तब मस्जिद में दिया जलाते हैं।**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ **अशर्फियों की लूट और कोयलों पर छाप (या मोहर)**–(मूल्यवान् चीज की चिंता न कर तुच्छ वस्तु की रक्षा के लिए परेशान होना) पौष्टिक भोजन पर ध्यान न देकर शराब में हजारों रुपये लुटा रहा है। इसी को कहते हैं–**अशर्फियों की लूट और कोयलों पर मुहर।**

☞ **आँख का अंधा गाँठ का पूरा**–(मूर्ख पर धनवान् व्यक्ति) उसे **आँख का अंधा गाँठ का पूरा** सेठ मिल गया है अत: उसे उल्लू बनाकर अपनी जेब भर रहा है।

☞ **आँवाँ का आँवाँ बिगड़ना**–(परिवार या दल के सभी सदस्यों का कुकर्म करना) रामदास और उसके पुत्र सभी चोर हैं। अत: लोग कहते हैं–**यहाँ तो आँवाँ का आँवाँ ही बिगड़ गया है।**

☞ **आए थे हरिभजन को ओटन लगे कपास**–(किसी अच्छे कार्य को करने के लिए जाना पर उसे न कर दूसरे व्यर्थ के काम में जुट जाना) गए थे इंग्लैंड बैरिस्टर बनने पर सारा धन और समय रंगरेलियाँ मनाने में नष्ट कर दिया। ऐसे ही लोगों के विषय में कहा गया है–**आए थे हरिभजन को ओटन लगे कपास।**

☞ **आज मरे कल दूसरा दिन**–(चिंता न करना) क्यों कौड़ी-कौड़ी जोड़ रहा है। **आज मरे कल दूसरा दिन।**

☞ **आम के आम गुठलियों के दाम**–(एक वस्तु या काम से दुहरा लाभ होना) अखबार पढ़िए और रद्दी बेचकर **आम के आम गुठली के दाम** वसूल कीजिए।

☞ **आठ कनौजिया नौ चूल्हे**–(आपस में बहुत अधिक भेदभाव या फूट होना) वे लोग इतने स्वार्थी तथा संकीर्ण विचारों के हैं कि मिल कर नहीं रह पाते। ऐसे ही लोगों के संबंध में कहा गया है–**आठ कनौजिए, नौ चूल्हे।**

☞ **आप मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता**–(अपना काम अपने आप करने से ही होता है) उससे कोई आशा मत रखो, स्वयं वहाँ जाओ। **आप मरे बिना स्वर्ग नहीं दिखता।**

☞ **उलटा चोर कोतवाल को डाँटे**–(अन्यायी द्वारा न्यायी को, अपराधी द्वारा निरपराध को दोषी बताना) चोरी हुई राम की लापरवाही के कारण, पर दोष मढ़ रहा है, अपनी पत्नी पर। इसी को कहते हैं–**उलटा चोर कोतवाल को डाँटे।**

☞ **ऊँची दुकान फीका पकवान**–(नाम बड़ा पर उसके अनुरूप गुण या कार्य न करना) अपनी दुकान पर विज्ञापन–यह तो बड़ा शानदार लगा रखा है, पर अंदर फर्नीचर के नाम पर दो-चार कुर्सियाँ हैं। इसे कहते हैं **ऊँची दुकान फीका पकवान।**

☞ **ऊधो का लेना न माधो का देना**–(अपने काम से काम रखना, दूसरों के झंझट में न पड़ना) भाई हमारा तो सिद्धांत है–**ऊधो का लेना, न माधो का देना,** बस अपना काम करना।

☞ **एक अनार सौ बीमार**–(चीज़ कम और उसे चाहनेवाले अनेक) अब एक पाव मिठाई है और खानेवाले हैं सौ। कैसे काम चलेगा? यह तो वही बात हुई–**एक अनार सौ बीमार।**

☞ **एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है**–(एक व्यक्ति के कारण सारी जाति, धर्म या संप्रदाय का बदनाम होना) पाठशाला का एक लड़का बाग से आम चुरा लाया पर बदनाम हुई पाठशाला। **एक मछली ने सारे तालाब को गंदा कर दिया।**

☞ **एक हाथ से ताली नहीं बजती**–(लड़ाई-झगड़े या मित्रता के लिए दोनों पक्षों को प्रयास करना पड़ता है) पाकिस्तान का रवैया इतना धूर्तापूर्ण है कि उसके साथ मित्रता नहीं हो सकती, कहीं **एक हाथ से ताली बजती देखी गई है?**

☞ **ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर**–(जोखिम भरा काम शुरू करने के बाद कष्टों की चिंता न करना) अब कारखाना डाला है तो परिश्रम तो करना ही होगा। **ओखली में सिर दिया है तो मूसलों से क्या डर!**

☞ **ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती**–(थोड़ी-सी वस्तु से आवश्यकता पूरी न होना) चार दिन से भूखा-प्यासा है। कहीं एक रोटी से कम चलेगा! **ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती।**

☞ **कभी नाव गाड़ी पर कभी गाड़ी नाव पर**–(समय एक-सा नहीं रहता है। कभी दुर्भाग्य तो कभी सौभाग्य) पहले वह सेठ श्यामाचरण के यहाँ मुनीम था पर अब श्यामाचरण उसका कर्जदार है। इसी को कहते हैं–**कभी नाव गाड़ी पर तो कभी गाड़ी नाव पर।**

☞ **करम गति टारे नाहिं टरे**–(जो भाग्य में लिखा है वह होकर रहता है) सत्यवादी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा हरिश्चन्द्र को डोम के यहाँ चाकर बनना पड़ा। सच है–**करम गति टारे नाहिं टरे।**

☞ **कहने से धोबी गधे पर नहीं चढ़ता**–(जिद्दी आदमी लाख अनुनय-विनय करने पर भी अपनी बात पर अड़ा रहता है) उसे लाख समझाया कि वह प्रस्ताव स्वीकार कर ले। पर वह नहीं माना। **कहने से धोबी गधे पर नहीं चढ़ता।**

☞ **कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली**–(दो ऐसे व्यक्ति जिनके सामाजिक स्तर में बहुत अंतर हो) मैं अपने धनाढ्य मित्र को भला चुनौती कैसे दे सकता हूँ। **कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली।**

☞ **कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा**–(इधर-उधर की चीजें एकत्र कर जंजाल खड़ा करना) आजकल के लेखक अनेक पुस्तकों से अंश लेकर नया लेख लिखने का दम भरते हैं पर होता यह है कि वे कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा वाली बात करते हैं।

☞ **काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती**–(बेईमानी या धोखाधड़ी बार-बार सफल नहीं होती) चोरबाज़ारी करते-करते आखिर सेठजी पकड़े गए। ठीक ही कहा गया है कि **काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती।**

☞ **काबुल में क्या गधे नहीं होते**–(मूर्ख, अयोग्य और गरीब लोग सर्वत्र होते हैं) राजधानी दिल्ली में रहनेवालों को प्रायः सभ्य समझा जाता है पर **काबुल में क्या गधे नहीं होते।**

☞ **काला अक्षर भैंस बराबर**–(निरक्षर, अनपढ़) जिनके लिए **काला अक्षर भैंस बराबर है,** वे भी चुनाव जीतकर मंत्री बन गए।

☞ **कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती**–(व्यक्ति का स्वभाव नहीं बदलता) उसे बहुत समझाया, पर उसने चोरी करना न छोड़ा। सच है–**कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती।**

☞ **कोयले की दलाली में हाथ काले**–(दुर्जनों की संगति से कलंक लगना। जुआ खेलनेवालों के साथ बैठता था अतः जुआरियों के साथ मोहन भी पकड़ा गया। **कोयले की दलाली करते हाथ काले होते ही हैं।**

☞ **खग जाने खग ही की भाषा**–(संगत में रहनेवाले ही एक-दूसरे को समझ पाते हैं) तुम भोले-भाले उनकी बातें क्या समझोगे? **खग जाने खग ही की भाषा।**

☞ **खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है**–(व्यक्ति अपने साथियों को देखकर पुराना मार्ग छोड़कर नया मार्ग अपनाता है) चार भाइयों में सदाशिव सबसे सीधा था। पर अब अन्य तीन भाइयों की तरह वह भी मक्कार हो गया है। **खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता ही है।**

☞ **खाली चना बाजे घना**–(गुणहीन व्यक्ति डींग मारता है) रोटी के लाले पड़े हैं पर बातें ऐसी करता है जैसे लखपति हो। सच है–**खाली चना बाजे घना।**

☞ **खून सिर पर चढ़कर बोलता है**–(पाप या अपराध एक न एक दिन प्रकट होकर रहता है) पत्नी को मारकर झाड़ी में फेंक आया पर जिस गड़ासे से गर्दन काटी थी, वह मिल गया और पकड़ा गया। पड़ोसियों ने कहा–**खून सिर पर चढ़कर बोलता है।**

☞ **खोदा पहाड़ निकली चुहिया**–(बहुत परिश्रम करने के बाद थोड़ा-सा लाभ होना) छिपा खज़ाना पाने के लोभ में वह महीनों तक खेत खोदता रहा पर मिला क्या? केवल एक टूटा पीतल का कलश। गाँववाले बोले–वाह रामू! **खोदा पहाड़ निकली चुहिया।**

☞ **गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त**–(जिसका काम हो वह चिंता न करे, दूसरे तत्परता दिखाएँ) मैं तुम्हारे घर के चक्कार काटते-काटते थक गया पर तुम्हारे कान पर जूँ तक नहीं रेंगी। मुझे तुम्हारा यह **'गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त'** वाला रवैया बिलकुल पसंद नहीं।

☞ **गागर में सागर भरना**–(थोड़े से शब्दों में बड़ी गंभीर और महत्वपूर्ण बात कहना) कवि बिहारी के दोहों में अनुभावों की योजना और रस का पूर्ण परिपाक देखकर आलोचकों ने कहा है कि **गागर में सागर भरने** की कला में वे अनन्य थे।

☞ **गुड़ खाए गुलगुले से परहेज़**–(बनावटी, ढोंगपूर्ण आचरण) वह कहता है कि रिश्वत नहीं लेता पर बेटे के विवाह पर ठेकेदारों द्वारा दी गई बहुमूल्य भेंट स्वीकार की। इसे कहते हैं–**गुड़ खाए, गुलगुलों से परहेज़ करे।**

☞ **गुड़ गुड़ ही रहा, चेला शक्कर हो गया**–(शिष्य का गुरु से अधिक योग्य होकर कीर्ति पाना) रामदास के गुरु तो जीवन-भर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राध्यापक ही रहे पर वह स्वयं विश्वविद्यालय का कुलपति हो गया। इसे कहते हैं–**गुड़ गुड़ ही रहा, चेला शक्कर हो गया।**

☞ **घर का जोगी जोगड़ा आन गाँव का सिद्ध या घर का नाग न पूजई, बमई पूजन जाय**–(निकट के परिचित व्यक्ति का सम्मान न कर दूर के कम योग्य व्यक्ति की आवभगत करना) मुझे तो गाँववाले नीम हकीम समझते हैं और उस शहर के डॉक्टर को फीस भी देते हैं और उसकी चापलूसी भी करते हैं। इसी को कहते हैं–**घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध या घर का नाग न पूजई, बमई पूजन जाय।**

☞ **घर का भेदी लंका ढाहे**–(फूट और परस्पर वैरभाव के कारण सर्वनाश होना) यह कहना गलत है कि हमारा कोई शत्रु नहीं है। कौन जाने तुम्हारा भाई ही चुगली कर तुम्हें फँसा दे। भैया! **घर का भेदी लंका ढहा देता है।**

☞ **घर में नहीं दाने, बुढ़िया चली भुनाने**–(झूठा दिखावा करना) हरिमोहन की शान तो देखो। पास में कौड़ी नहीं और दहेज में कार देने की बात करता है इसी को कहते हैं–**घर में नहीं दाने, बुढ़िया चली भुनाने।**

☞ **घूरे के दिन भी बारह साल बाद बदलते हैं**–(भाग्य बदलता है, बुरे दिनों के बाद अच्छे दिन आते हैं) क्यों उसका मज़ाक उड़ाते हो? **घूरे के दिन भी बारह साल बाद बदलते हैं।**

☞ **घोड़ा घास से यारी करेगा तो खाएगा क्या**–(पारिश्रमिक माँगने में संकोच नहीं करना चाहिए) वकील साहब अपने मित्रों से भी अच्छी रकम लेकर ही मुकदमा लड़ते हैं और कहते हैं–**घोड़ा घास से यारी करेगा तो खाएगा क्या!**

☞ **घोड़े के आगे गाड़ी रखना**–(उलटा काम करना) छात्रों को पहले अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त करने तथा बाद में राजनीतिशास्त्र की अंग्रेजी पुस्तक पढ़ने के लिए कहना **घोड़े के आगे गाड़ी रखना है।**

☞ **चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए**–(बहुत अधिक कंजूसी करना) रघुबीर बड़ा ही कृपण है। दिन-रात मेहनत कर पाई- पाई जोड़ रहा है पर सेहत का ध्यान नहीं। लोग कहते हैं कि चाहे उसकी **चमड़ी चली जाए पर वह दमड़ी नहीं** जाने देगा।

☞ **चार दिन की चाँदनी, फिर अँधेरी रात**–(थोड़े दिन की प्रसन्नता, बाद में कष्ट) लक्ष्मी चंचला है। धन टिकता नहीं। अत: यह सोचकर कि **चार दिन की चाँदनी, फिर अँधेरी रात,** विवेक से काम करो।

☞ **चिराग तले अँधेरा**–(योग्य, न्यायपूर्ण एवं धार्मिक व्यक्ति के आसपास ही अयोग्यता, अन्याय एवं अधर्म का पनपना) न्यायाधीश की पत्नी ही रिश्वत लेती है। अब कोई इसके सिवा क्या कहे कि **चिराग तले ही अँधेरा है।**

☞ **चूल्हे से निकल कर भट्टी में पड़ना**–(छोटी मुसीबत से छुटकारा पाने पर बड़ी विपत्ति में फँसना) बड़ी अदालत में सज़ा के खिलाफ अपील की पर सज़ा दो साल कैद से तीन साल कैद हो गई। बेचारा **चूल्हे से निकलकर भट्टी में जा गिरा।**

☞ **चूहे के चमड़े से दमामे नहीं मढ़े जाते**–(स्वल्प साधनों से बड़ा काम नहीं होता) छुटभैयों के कहने से कहीं मंत्री जी तुम्हें नौकरी देते? **चूहे के चमड़े से दमामा नहीं मढ़ा जाता।**

☞ **चोर के पैर नहीं होते**–(अपराधी में हिम्मत नहीं होती) मोहन ने घड़ी चुराई पर जब पूछताछ की गई तो उसके हाथ-पैर फूल गए और उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। ठीक ही कहा है कि **चोर के पैर नहीं होते।**

☞ **चोर की दाढ़ी में तिनका**–(अपराधी का अपने अपराध के विषय में संकेत दे देना) रामू से जब उसकी घरवाली ने कहा कि मालिक बुला रहे हैं तो वह बोल पड़ा–उन्हें मेरे बारे में कुछ मालूम तो नहीं हो गया। इसे कहते हैं–**चोर की दाढ़ी में तिनका।**

☞ **चोर चोर मौसेरे भाई**–(समान स्वभाव या व्यवसाय के लोग) हमीद और ज्ञानी दोनों जुआरी हैं, अत: एक दूसरे के खिलाफ कुछ नहीं बोलते। सच कहा है–**चोर-चोर मौसेरे भाई।**

☞ **छठी का दूध याद आना**–(कठिनाई का सामना करना) राणा प्रताप से लड़ते-लड़ते मुगलों की सेना को **छठी का दूध याद आ गया।**

☞ **छप्पर फाड़ कर देना**–(बिना परिश्रम किए घर बैठे धन मिल जाना) उसकी एक लाख रुपए की लाटरी निकल आई। सच कहा है कि खुदा जब देता है तो **छप्पर फाड़कर देता है।**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ **छाती पर साँप लोटना**–(ईर्ष्या से जलना) देवरानी-जिठानी को साथ-साथ बैठ तथा घुलमिल कर बतियाते देख **सास की छाती पर साँप लोटने लगा।**

☞ **छोटा मुँह बड़ी बात**–(अपनी हैसियत से बढ़कर बात करना) मैं उसे समझाना चाहता था कि वह उसकी संगति छोड़ दे पर यह सोचकर कि वह कहेगा **'छोटा मुँह बड़ी बात'** मैं चुप रह गया।

☞ **जंगल में मोर नाचा किसने देखा**–(एकांत में गुण दिखाने से कोई उसका महत्व नहीं समझता) घर में कोई कितना ही मधुर स्वर से गाए बेकार है। संगीत-सम्मेलन में कलावंत की कद्र होती है। **जंगल में मोर नाचा किसने देखा।**

☞ **ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाना**–(डींग मारना, बढ़चढ़ कर बातें करना) **ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाने** से कुछ नहीं होता, कुछ करके दिखाओ तो जानें।

☞ **पाँव तले की ज़मीन खिसक जाना**–(भय या घबराहट के कारण सिट्टी-पिट्टी गायब हो जाना) दीवाला निकलने का समाचार पाते ही उसके **पाँव तले की ज़मीन खिसक गई।**

☞ **जल में रहकर मगरमच्छ से बैर करना**–(आश्रयदाता से शत्रुता करना) अपने कार्यालय के उच्च अधिकारी से लड़कर रामू ने अच्छा नहीं किया। अब वह उसे नौकरी से निकाल देगा। **जल में रहकर मगरमच्छ से बैर** करने में कुशल नहीं।

☞ **जल्दी का काम शैतान का**–(जल्दबाज़ी में किया हुआ काम बिगड़ जाता है) परीक्षा में सोच-विचार कर उत्तर दो। जल्दबाज़ी मत करो, **जल्दी का काम शैतान का होता है।**

☞ **जब तक साँस तब तक आस**–(निराश मत होओ, अंत तक आशा रखो) हिम्मत क्यों हारते हो? फिर परीक्षा में बैठना। **जब तक साँस तब तक आस।**

☞ **जहाँ मुरगा नहीं बोलता वहाँ क्या सवेरा नहीं होता**–(किसी के बिना काम नहीं रुकता) अरे, मोहन नहीं है तो क्यों हताश होते हो। तुम्हारा काम होकर रहेगा। **जहाँ मुरगा नहीं बोलता, वहाँ क्या सवेरा नहीं होता।**

☞ **जाके पाँव न फटी बिवाई सो क्या जाने पीर परायी**–(जिसपर दुःख नहीं पड़ता वह दूसरों का दुःख नहीं समझता) अकेले पुत्र की मृत्यु पर मुझे जो दुःख हो रहा है, उसे मेरा दोस्त क्या समझेगा? **जाके पाँव न फटी बिवाई सो क्या जाने पीर परायी!**

☞ **जान न पहचान, बड़ी बुआ सलाम**–(परिचय न होने पर भी घनिष्ठता का व्यवहार करना) सोहना बड़ा चतुर है। दफ्तर में घुस गया और अफसर से ऐसे घुल-मिल कर बातें कर रहा है जैसे वह लंगोटिया यार हो। इसे कहते हैं–**जान न पहचान, बड़ी बुआ सलाम।**

☞ **जाको राखे साँइयाँ मार न सकिहै कोय**–(जिसकी भगवान् रक्षा करता है, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता) चौथी मंज़िल से गिरने पर भी बच्चे को चोट तक न लगी। सच कहा है–**जाको राखे साँइयाँ मार न सकिहै कोय।**

☞ **जिसकी लाठी उसकी भैंस**–(बलवान आदमी की विजय होती है) आज की सामाजिक व्यवस्था में धनवान जो चाहते हैं वही होता है। हाँ, भाई! आज **जिसकी लाठी उसकी भैंस** की नीति चल रही है।

☞ **जैसा देश वैसा वेश**–(जहाँ रहना, उसी के रीति-रिवाज मानना) ठंडे देशों, में शराब पीना ज़रूरी है अन्यथा सेहत खराब हो जाती है। ठीक ही कहा है–**जैसा देश वैसा वेश।**

☞ **जैसा राजा वैसी प्रजा**–(जैसा शासक वर्ग होता है, वैसी ही जनता होती है। भ्रष्टाचारी शासन में यदि सामान्य जन भी भ्रष्ट काम करें, रिश्वत लें तो क्या आश्चर्य। **जैसा राजा वैसी प्रजा।**

☞ **जैसा बोओगे, वैसा काटोगे**–(जैसी करनी वैसी भरनी) फल कर्मों के अनुसार मिलता है। चोरी करने पर सज़ा तो मिलेगी ही। जैसा **जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।** सच कहा है, जैसी करनी, वैसी भरनी।

☞ **जैसी चले बयार, पीठ तब तैसी दीजै**–(समय और परिस्थितियों के अनुसार काम करना चाहिए। मुसीबत के दिन हैं, चुपचाप रहकर अपना काम करो। सच कहा है–**जैसी चले बयार, पीठ तब तैसी दीजै।**

☞ **जैसे कन्ता घर रहे, वैसे रहे विदेश**–(निकम्मे आदमी के घर न रहने पर भी कोई अंतर नहीं आता) भोला विदेश चला गया है। यहाँ रहता था तो भी मुफ्त की रोटियाँ तोड़ता था। अतः उसके जाने से कोई अंतर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं पड़ा। जैसे–**कन्ता घर रहे, वैसे रहे विदेश।**

☞ **जो गरजते हैं, सो बरसते नहीं**–(डींग मारनेवाला व्यक्ति काम नहीं करता) धमकी भरे पत्रों पर कोई ध्यान मत दो। द्वारका कुछ नहीं करेगा। **जो गरजते हैं, सो बरसते नहीं।**

☞ **जो जस करै सो तस फल चाखा**–(जो जैसा करेगा, वैसा फल पाएगा) तुम्हें क्या पड़ी है। तुम्हारा भाई तुम्हारी मानता नहीं और रिश्वत लेता है तो लेने दो। एक दिन पकड़ा जाएगा। **जो जस करै सो तस फल चाखा।**

☞ **जो तोको काँटा बोवे, ताहि बोय तू फूल**–(बुराई करनेवाले के साथ भी भलाई करनी चाहिए) ठीक है, उसने तुम्हारी चुगली खाई और तुम्हें दण्ड दिलवाया। पर तुम उसकी पोल मत खोलो। नीतिज्ञ कह गए हैं–**जो तोको काँटा बोवे, ताहि बोय तू फूल।**

☞ **ज्यों ज्यों भीगै कामरी त्यों त्यों भारी होय**–(जितना अधिक ऋण लोगे, उतना ही मुसीबत में पड़ोगे) आय से अधिक खर्च करना तो अच्छा लगता है। पर आगे चलकर मुसीबत खड़ी हो जाती है। तभी तो कहा गया है–**ज्यों ज्यों भीगै कामरी त्यों त्यों भारी होय।**

☞ **टके की हाँडी गई, कुत्ते की जात पहचानी गई**–(थोड़ी हानि उठाकर दूसरे के स्वभाव को अच्छी तरह जान लेना) चंद्रशेखर ने मेरे पाँच रुपए नहीं चुकाए, आना भी छोड़ दिया। चलो अच्छा हुआ, पाँच रुपए तो गए पर पता चल गया कि बेईमान है। **टके की हाँडी गई, तो कुत्ते की जात पहचानी गई।**

☞ **डंके की चोट कहना**–(साहसपूर्वक सबको सुनाकर अपनी बात कहना) उसने **डंके की चोट** कह दिया कि वह विश्वासघात का बदला लेकर छोड़ेगा।

☞ **डूबते को तिनके का सहारा**–(विपत्ति में पड़े को थोड़ा-सा सहारा मिलना) कर्ज में डूबे हुए श्याम को उसके मित्र ने ब्याज के पैसे चुकाने को धन दिया तो श्यामू बोला–मित्र, तुमने **डूबते को तिनके का सहारा** देकर बड़ा परोपकार किया है।

☞ **डेढ़ ईंट की अलग मस्जिद बनाना**–(दूसरों से सहयोग लेने की बजाय अलग-अलग रहना) वह जीवन में कभी सुखी न रहेगा। भला **डेढ़ ईंट की अलग मस्जिद** बनाने से कहीं काम चलता है।

☞ **ढोल की पोल**–(ढोंगी, दिखावा करनेवाला, कपटी व्यक्ति) पाकिस्तान भले ही मित्रता का दावा करे, उसकी नीयत में बेईमानी है। **ढोल की पोल** खुलकर रहेगी।

☞ **तबेले की बला बन्दर के सिर पर**–(किसी का दोष किसी और के सिर मढ़ना) सब कामचोर हैं केवल शेखर परिश्रमी है। अतः साहब भी सब काम उसी को सौंप देते हैं। इसे कहते हैं–**तबेले की बला बन्दर के सिर पर।**

☞ **तिरिया तेल, हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार**–(दृढ़ प्रतिज्ञ व्यक्ति अपना वचन निभाते हैं) राणा प्रताप ने परिवार सहित अनेक कष्ट झेले, जंगलों की खाक छानी पर अकबर के आगे घुटने न टेके। सच कहा है–**तिरिया तेल, हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार।**

☞ **तीन लोक से मथुरा न्यारी**–(असाधारण काम या असाधारण आचरण करनेवाला व्यक्ति) उसकी तो **तीन लोक से न्यारी मथुरा** है। जब सब सोते हैं तो वह काम करता रहता है।

☞ **तीर नहीं तो तुक्का**–(सफलता मिल जाए तो ठीक वर्ना कोई बात नहीं) तैयारी तो है नहीं, तुम कहते हो तो परीक्षा में बैठे जाता हूँ। चलो, **तीर नहीं तो तुक्का** ही सही।

☞ **तेते पाँव पसारिये जेती लाँबी सौर**–(मनुष्य को अपनी शक्ति तथा साधनों के अनुरूप ही महत्वाकांक्षी होना चाहिए। अरे भाई, पुत्र के विवाह में इतना खर्च क्यों कर रहे हो, इतने लोगों को भोज में क्यों बुला रहे हो? बड़ों का कहना है–**तेते पाँव पसारिये जेती लाँबी सौर।**

☞ **थोथा चना बाजे घना**–(ओछे और निकम्मे आदमी दिखावा अधिक करते हैं) उसने आज तक कोई अच्छा काम नहीं किया पर बातें ऐसी करता है जैसे दूसरा गांधी हो। ऐसे व्यक्तियों के विषय में ही कहा गया है–**थोथा चना बाजे घना।**

☞ **दाल-भात में मूसलचंद**–(दो व्यक्तियों की बातें में हस्तक्षेप करना) हम दोनों को बातें करने दो। तुम कहाँ से **दाल-भात में मूसलचंद** बनकर आ गए?

☞ **दाल में काला होना**–(संदेह होना) वह इतना सीधा-सच्चा तो नहीं है मुझे तो **दाल में कुछ काला** दिखता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ **दिन को तारे दिखना**–(कठिनाई अनुभव करना) ऐसा दंड दूँगा कि **दिन को तारे दिखने** लगेंगे।

☞ **दिल्ली दूर होना**–(लक्ष्य प्राप्ति में विलंब होना) अभी तो सिर्फ बी.ए. पास किया है। अच्छी नौकरी के सपने मत देखो, **अभी दिल्ली दूर है।**

☞ **दीवारों के भी कान होते हैं**–(गुप्त बातें एकांत में तथा धीमी आवाज़ में करनी चाहिए) धीरे बोलो, **दीवारों के भी कान होते हैं।**

☞ **दुधारू गाय की लात भी सही जाती है**–(स्वार्थ के लिए कटु वचन, अपमान भी सहना पड़ता है) कड़वी बात सुनकर बिगड़ो मत! काम पूरा हो जाए तब देखेंगे, धैर्य रखो। **दुधारू गाय की लात भी सहनी पड़ती है।**

☞ **दुविधा में दोनों गए माया मिली न राम**–(दुविधा, असमंजस के कारण हानि उठाना, कोई भी काम सिद्ध न होना) वह सोचता ही रह गया कि रेल से जाऊँ या बस से। दोनों निकल गईं। परिणाम, घोर निराशा। इसी को कहते हैं–**दुविधा में दोनों गए माया मिली न राम।**

☞ **दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँक कर पीता है**–(एक बार धोखा खाने के बाद बड़ी सावधानी बरतना) अपने घनिष्ठ मित्र द्वारा धोखा दिए जाने के बाद अब रमेश बहुत सावधान हो गया है। अपने सगे भाई की बातों पर भी सहज विश्वास नहीं करता। सच है, **दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँक कर पीता है।**

☞ **दूध का दूध और पानी का पानी कर देना**–(सच्चा न्याय करना) पंच परमेश्वर होते हैं। हमें आशा है कि पंचायत में जाकर **दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा।**

☞ **दूर के ढोल सुहावने लगना**–(अपरिचित और अप्राप्त वस्तु या व्यक्ति अच्छे लगते हैं) मथुरा के पेड़ों से तो हमारे गाँव के पेड़े ही अधिक स्वादिष्ट हैं। **दूर के ढोल सुहावने लगते हैं।**

☞ **दोनों हाथों में लड्डू होना**–(दोनों ओर से लाभ) इस पद को पाने के बाद तो वह फूला नहीं समाता क्योंकि उसकी आय और प्रतिष्ठा दोनों बढ़ गए हैं। क्यों न हो, उसके **दोनों हाथों में लड्डू हैं।**

☞ **द्रौपदी का चीर होना**–(अनंत और असीम हो जाना) अरे चार घंटे हो गए पत्र समाप्त नहीं हुआ। **पत्र है या द्रौपदी का चीर।**

☞ **धूप में बाल सफेद करना**–(अनुभवशून्य जीवन बिताना) **धूप में बाल सफेद नहीं किए हैं।** मैं तुम्हारी सारी चालाकी समझ गया हूँ।

☞ **धूल डालने से सूरज नहीं छिपता**–(निराधार निंदा करने से सज्जन व्यक्ति का महत्व, उसकी प्रतिष्ठा कम नहीं होती) गांधी जी के चरित्र तक पर लोगों ने कीचड़ उछाली। **पर धूल डालने से सूरज नहीं छिपता है।**

☞ **धोबी का कुत्ता घर का न घाट का**–(दोनों ओर से हानि उठाना, काम बिगड़ जाना) बेचारा रामशरण अपनी नौकरी छोड़कर आगरा गया पर वहाँ के मिल-मालिक ने टका-सा जवाब दे दिया। बेचारा कहीं का न रहा। **धोबी का कुत्ता घर का न घाट का।**

☞ **धोबी से पार न पावे, गदहा के कान उमेठे**–(बलवान से वश न चलने पर निर्बल पर रोष प्रकट करना) पत्नी से तो बस चलता नहीं, उसके सामने तो दुम दबाए पड़ा रहता है। बच्चों पर झुँझलाकर गालियाँ देता है। इसे कहते हैं–**धोबी से पार न पावे, गदहा के कान उमेठे।**

☞ **न ऊधो का लेना, न माधो का देना**–(कोई संबंध न रखना, किसी पचड़े में न पड़ना) अपने तो यहाँ निर्द्वन्द्व रहते हैं। न जनता दल से संबंध न कांग्रेस पार्टी से। **न ऊधो का लेना, न माधो का देना।**

☞ **न तीन में न तेरह में**–(जिसे कोई सम्मान न दे, तुच्छ, सामान्य व्यक्ति) तुम मेरी रचना का मज़ाक क्यों उड़ाते हो? तुम तो **न तीन में न तेरह में।**

☞ **न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी**–(असंभव परिस्थिति, ऐसी शर्त जिसे पूरा न किया जा सके) उसने पाँच हज़ार माँगे हैं। इतनी बड़ी रकम जुटाना असंभव है। वह जानता था कि **न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।**

☞ **न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी**–(मूल कारण समाप्त करना, जड़ को ही काट देना) उस अत्याचारी शासक को ही मार दो। सब झंझट अपने आप समाप्त हो जाएँगे, **न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।**

☞ **नमाज़ छुड़ाने गए, रोज़े गले पड़े**–(एक झंझट से छुटकारा पाने का प्रयास करना पर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा झंझट और आ जाना) संध्या समय में छुट्टी की अर्जी लेकर साहब के पास गया। छुट्टी तो दूर रही, रात को रुकने तथा काम पूरा करने का आदेश दे दिया। गए थे **नमाज़ छुड़ाने, रोज़े गले पड़ गए।**

☞ **नाच न जाने आँगन टेढ़ा**–(काम करना न आने पर साधनों को दोष देना) उसकी लिखावट देखकर जब अध्यापक रुष्ट हुए तो बोला–श्रीमान् कलम का निब टूट गया था। अध्यापक बोले, **"ठीक है, नाच न जाने आँगन टेढ़ा।"**

☞ **नाम बड़े दर्शन थोड़े**–(ख्याति के अनुरूप गुण न होना) महात्मा जी की ख्याति दूर-दूर तक फैली थी, अत: मैं भी दर्शन करने गया पर मैंने तो उसे धूर्त पाया। **नाम बड़े दर्शन थोड़े वाली** बात सच निकली।

☞ **नीम हकीम खतरे जान**–(अधूरा ज्ञान खतरनाक होता है) उस नए आए डॉक्टर की दवा से तो रोग और बढ़ गया है। कहीं **नीम हकीम खतरे जान** वाली बात न हो जाए।

☞ **नेकी कर कुएँ में डाल**–(प्रत्युपकार की इच्छा न कर परोपकार करना) उसका तो सिद्धांत ही है कि **नेकी कर कुएँ में डाल।** अत: कृतघ्न व्यक्तियों से भी घृणा नहीं करता।

☞ **नौ दिन चले अढ़ाई कोस**–(बहुत धीमी गति से काम करना) दस दिन काम करते-करते हो गए। यह छोटी-सी दीवार भी नहीं चिनी गई। लोग तुम्हारे विषय में सच ही कहते हैं–**नौ दिन चले अढ़ाई कोस।**

☞ **नौ नगद न तेरह उधार**–(नगद दाम पर बेचना उधार बेचने से अधिक अच्छा है) हमारी दुकान का तो नियम ही यह है कि **नौ नगद न तेरह उधार।** अत: हमें व्यापार में कभी घाटा नहीं होता।

☞ **नौ सौ चूहे खाय के बिल्ली चली हज को**–(जन्म-भर पाप करने के बाद अंत में धर्मात्मा बनने का ढोंग करना) मुझे उस औरत के बारे में सबकुछ पता है। बड़ी पापिन है। अब कंठी पहन ली है। **नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली है।**

☞ **पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं**–(परतंत्रता में दु:ख ही दु:ख है) पराधीन देश के लोग सदा कष्ट में रहते हैं। ठीक ही कहा है–**पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।**

☞ **पाँचों अंगुलियाँ बराबर नहीं होतीं**–(सब मनुष्य समान नहीं होते) राम, चार भाई हैं। तीन भाई तो ऊँचे ओहदों पर हैं पर सबसे छोटा गुंडा है तभी तो कहा है–**पाँचों अंगुलियाँ बराबर नहीं होतीं।**

☞ **पाप का घड़ा फूटकर रहता है**–(पाप एक दिन प्रकट होकर रहता है, और फिर पापी का नाश हो जाता है) जब रावण के अत्याचार बढ़ गए तो वह राम के हाथों मारा गया। यह सच ही है कि **पाप का घड़ा फूटकर रहता है।**

☞ **पासा पड़े तो दाव, राजा करै सो न्याय**–(जो भाग्य में लिखा है वह तो सहना ही पड़ता है) नियति बलवान है। उसके आगे सबको झुकना पड़ता है। किसी ने सच कहा है–**पासा पड़े तो दाव, राजा करै सो न्याय।**

☞ **पूत कपूत तो क्यों धन सँचै, पूत सपूत तो क्यों धन संचै**–(सब स्थितियों में धन एकत्र करना व्यर्थ है) संतान अच्छी होगी तो अपने आप कमाकर पेट भर लेगी, बुरी होगी तो पिता के धन को उड़ा देगी। अत: ठीक ही कहा है–**पूत कपूत तो क्यों धन सँचै, पूत सपूत तो क्यों धन संचै।**

☞ **पेशाब में चिराग़ जलना**–(अत्यंत प्रतापी होना) राजा साहब के पास क्या नहीं है? धन, वैभव, ज़मीदारी, मिल और संतान। तभी तो उनके **पेशाब में चिराग़ जलता है।**

☞ **पैसा पैसा को खींचता है**–(धनवान व्यक्ति धन लगाकर और धन कमाता है। उसके पास शुरू में केवल पाँच हज़ार थे। वह रकम व्यापार में लगाकर अब वह करोड़पति बन गया है। सच कहा है–**पैसा पैसे को खींचता है।**

☞ **प्यादे से फरजी भयो, टेढ़ो-टेढ़ो जाय**–(बड़ा पद पाकर छोटा आदमी इतराता है) कल तक क्लर्क था, आज अफसर हो गया तो सीधे मुँह बात तक नहीं करता। ठीक है भाई, **प्यादे से फरजी भयो, टेढ़ो-टेढ़ो जाय।**

☞ **प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं**–(अधिकार और सत्ता पाने का घमंड हो ही जाता है) मंत्री हो जाने पर अब वह पुराने मित्रों को भी नहीं पहचानता। **प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं।**

☞ **फटी न जाके पाँव विवाई, वह क्या जाने पीर पराई**–(सुखी आदमी दूसरों के कष्टों

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अनुमान नहीं लगा सकता) वह सदा महलों में रहा है। वह क्या जाने कि बरसात में टपकती झोंपड़ी में रहनेवालों को कितना कष्ट होता है। **फटी न जाके पाँव विवाई, वह क्या जाने पीर पराई।**

☞ **बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद**–(अयोग्य, मूर्ख व्यक्ति मूल्यवान वस्तु की कद्र नहीं करता) उसने कपूर देखा नहीं अत: सोडा जानकर फेंक दिया तो क्या आश्चर्य? **बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।**

☞ **बकरा जान से गया खानेवाले को स्वाद ही न आया**–(किसी के मर मिटने पर भी उसका मूल्य महत्व न मानना) रामबिहारी ने उसके चुनाव में रात-दिन एक करके अपना स्वास्थ्य खराब कर लिया पर वह उसका तनिक भी एहसान नहीं मानता। सच कहा है–**बकरा जान से गया खानेवाले को स्वाद ही न आया।**

☞ **बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी**–(पापी को एक न एक दिन उसके किए का फल भोगना पड़ता है) पिता कब तक अपने रिश्वतख़ोर बेटे को बचाएगा। एक न एक दिन तो हज़रत को सज़ा मिलेगी ही, **बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी।**

☞ **बहती गंगा में हाथ धोना**–(अनुकूल समय पाने पर उससे लाभ उठाना) सेठ अपने पिता के श्राद्ध में बरतन दान कर रहा है। तुम भी चले जाओ और **बहती गंगा में हाथ धो लो।**

☞ **बाँझ क्या जाने प्रसव की पीर**–(अनुभवहीन व्यक्ति को ज्ञान और संवेदना नहीं होती) उसने कभी खेतों में काम तो किया नहीं। वह किसानों के दु:ख-दर्द को क्या जाने! ठीक ही कहा है–**बाँझ क्या जाने प्रसव की पीर!**

☞ **बाघ और बकरी का एक घाट पर पानी पीना**–(शांति सुव्यवस्था और न्याय का वातावरण) रामराज्य में **बाघ और बकरी एक घाट पर पानी पीते थे।**

☞ **बिन घरनी घर भूत का डेरा**–(गृहिणी के बिना गृहस्थी का काम सुचारु रूप से नहीं चलता) होरी ने विधुर भोला को दूसरा विवाह करने की सलाह देते हुए कहा–सगाई कर लो, क्योंकि **बिन घरनी घर भूत का डेरा ही रहता है।**

☞ **बिल्ली के गले में घंटी बाँधना**–(ख़तरे का काम करना) बहराम डाकू बड़ा ख़ौफ़नाक बदमाश है, देखते ही गोली चला देता है। भला कौन ऐसा साहसी है जो **बिल्ली के गले में घंटी बाँधे।**

☞ **बिल्ली के भागों छींका टूटना**–(संयोग से कोई लाभदायक काम हो जाना) गोवर्धन अपनी बेटी के विवाह के विषय में चिंतित थे तथी पड़ौस के रामधन की पत्नी मर गई। उन्होंने स्वयं गोवर्धन से उनकी बेटी का हाथ माँगा। गोवर्धन ने सोचा **बिल्ली के भागों छींका टूटा।**

☞ **बीती ताहि बिसारिए आगे की सुधि लेहि**–(अतीत की घटनाओं को भूलकर भविष्य के लिए कुछ करना ताकि उन्नति हो) पिछले परीक्षा-परिणाम को भूलकर वार्षिक परीक्षा की तैयारी करो। जो हुआ सो हुआ, **बीती ताहि बिसारिए आगे की सुधि लेहि।**

☞ **बूँद-बूँद सों घट भरे टपकत रीतो होय**–(थोड़ा-थोड़ा लाभ) धनवान तथा थोड़ी-थोड़ी हानि कंगाल बना देती है।

(क) प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा लिखोगे तो दो-चार माह में ही पुस्तक पूरी कर लोगे, **बूँद-बूँद में घट भरता है।**

(ख) प्रतिदिन एक रुपया भी जुए में हारे तो एक दिन दिवाला निकल जाएगा। क्या सुना नहीं है, **बूँद-बूँद सों घट भरे टपकत रीता होय।**

☞ **भई गति साँप छंछूदर केरी**–(किसी काम को न करते न छोड़ते बनना, दुविधा में पड़ जाना) प्रस्ताव तो बड़ा आकर्षक था थोड़ा-सा ख़तरा भी था। अत: मेरी गति **साँप-छंछूदर की हो गई।**

☞ **भागते भूत की लंगोटी भली**–(थोड़ा-सा भी मिले तो उसे अंगीकार कर लेना) अरे जमींदारी जानेवाली है अत: यदि दो-चार हज़ार भी मिलते हों, तो ले लो, **भागते भूत की लंगोटी भली।**

☞ **भैंस के आगे बीन बजाये, भैंस रही पगुराय**–(अयोग्य या मूर्ख के आगे अपने गुण दिखाने से कोई लाभ नहीं) दीनू के आगे इत्र रखा तो वह उसे चखने लगा। सच कहा है–**भैंस के आगे बीन बजाये, भैंस रही पगुराय।**

☞ **मन के हारे हार है, मन के जीते जीत**–(साहस कभी नहीं छोड़ना चाहिए, पुरुषार्थ की विजय होती है) निराश क्यों होते हो? फिर परिश्रम करो। साहस से काम लो, **मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ **मन चंगा तो कठौती में गंगा**–(मन प्रसन्न है, शुद्ध है तो तीर्थ करने की आवश्यकता नहीं) अरे पगले, ठाकुर जी तो भक्ति के भूखे हैं। सच्चे मन से भगवान का भजन करो, यही पर्याप्त है सुना नहीं है, "**मन चंगा तो कठौती में गंगा।**"

☞ **मन मन भावे मूड़ हिलावै**–(मन से स्वीकार करते हुए भी दिखाने के लिए अस्वीकार करना) भावी वर को देखकर गायत्री के मर में लड्डू फूटने लगे पर सखियों से मना करती रही। इसी को कहते हैं–**मन मन भावे मूड़ हिलावै।**

☞ **मान न मान मैं तेरा मेहमान**–(ज़बर्दस्ती गले पड़ना) भाई! छोटेलाल बड़ा धूर्त है। जिसके घर जाता है, दो-चार दिन अवश्य रुककर मौज-मज़े करता है। इसी को कहते हैं–**मान न मान मैं तेरा मेहमान।**

☞ **मार के आगे भूत भागता है**–(यातना देने पर बड़े से बड़ा अपराधी भी अपना अपराध स्वीकार कर लेता है) बड़ी हैकड़ी दिखा रहा था। पुलिस ने दस डंडे मारे तो सारी बात उगल गया। सच कहा है–**मार के आगे तो भूत भी भागता है।**

☞ **मियाँ की जूती मियाँ के सिर पर**–(किसी व्यक्ति के साधनों से उसी को तंग करना) रामदयाल ने परमेश्वरी से झूठ बोल कर रुपए लिए और फिर वे ही रुपए उसे देकर अपना काम निकाल लिया। इसे कहते हैं–**मियाँ की जूती मियाँ के सिर पर।**

☞ **मुख में राम बगल में छुरी**–(कपटपूर्ण आचरण) वह बगुला भगत है। बड़ी मीठी-मीठी बातें करता है। मुझे उसका तनिक भी विश्वास नहीं। **मुख में राम बगल में छुरी** वाले व्यक्तियों से मुझे सख्त नफरत है।

☞ **मुफलिसी में आटा गीला**–(दु:ख पर दु:ख पड़ना) पहले से ही सिर पर कर्ज था, जब भाई जेल गया तो रिश्वत देनी पड़ेगी तब छूटेगा। इसे कहते हैं–**मुफलिसी में आटा गीला।**

☞ **मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक**–(सीमित शक्ति या साधन होना) जब रुपए की जरूरत पड़ती है तो बेचारा अपने दोस्त के पास ही दौड़ा जाता है और कहाँ जाए? **मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक ही तो है।**

☞ **मेरे मन कछु और है विधना के कछु और**–(योजनाएँ, कल्पनाएँ पूरी नहीं होती) सोचा था, बेटा डिप्टी-कलक्टर हो जाएगा तो ठाठ से रहेंगे पर वह तो लिखित परीक्षा में ही फेल हो गया। क्या कहें, **मेरे मन कछु और है विधना के कछु और।**

☞ **मौनं स्वीकृतिलक्षणम्**–(चुप रहना स्वीकृति का लक्षण है) माता ने पुत्री से पूछा, "वर पसंद है?" कुंती चुप रही तो पास खड़ी उसकी सहेली ने कहा, "**मौनं स्वीकृति-लक्षणम्।**"

☞ **यथा राजा तथा प्रजा**–(जैसे शासक वैसी जनता) जब शासक ही अधर्म पर चलता हो तो प्रजा से धर्म-कर्म करने की आशा बेकार है, **यथा राजा तथा प्रजा।**

☞ **रोज़ कुआँ खोदना, रोज़ पानी पीना**–(उतनी आय जिससे पेटभर भोजन मिल सके) बंद और हड़ताल के कारण सबसे अधिक कष्ट खोमचेवालों को होता है। उनका तो काम ही **रोज़ कुआँ खोदना, रोज़ पानी पीना।**

☞ **रोपे पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाए**–(बुरे काम का फल अच्छा नहीं होता) जवानी में तो शराब पीता रहा अब फेफड़े खराब हो गए तो भगवान को दोष देता है। अरे पूछो–**रोपे पेड़ बबूल का आम कहाँ से होय।**

☞ **लातों के भूत बातों से नहीं मानते**–(दुष्ट आदमी मीठी बातों से अपना कुमार्ग नहीं छोड़ता, उसे दंड देना पड़ता है) मैंने साल-भर तुम्हें समझाया कि जुआ मत खेलो पर **लातों के भूत कहीं बातों से मानते हैं?** अब जेब-खर्च बंद करना होगा।

☞ **लालच बुरी बला है**–(लालच से हानि होती है) लाटरी के चक्कर में उसने अपना संचित धन तो गँवा ही दिया, अब उधार लेकर लाटरी खरीदता है। सच है **लालच बुरी बला है।**

☞ **लिखत सुधाकर लिखिगा राहू**–(विधाता का रुष्ट हो जाना, इष्ट की जगह अनिष्ट हो जाना) राम को राज्याभिषेक होना था, पर मिला बनवास। इसीलिए तुलसीदास ने लिखा है–**लिखत सुधाकर लिखिगा राहू।**

☞ **लोहे को लोहा काटता है**–(धूर्त, कपटी पर धूर्तता तथा कपट से ही विजय प्राप्त की जा सकती है) रमेश अपने आगे किसी को कुछ समझता ही न था, अब सोमेश्वर से पाला पड़ा है। सच कहा है–**लोहा ही लोहे को काटता है।**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ **वह गुड़ नहीं है जो चींटे खाएँ**–(जहाँ से कुछ भी प्राप्त न हो) वह बड़ा कंजूस है। मैंने पहले ही कह दिया था कि वह गुड़ नहीं है जो चींटे खाएँ।

☞ **वह दिन गए जब खलील खाँ फाख्ता उड़ाते थे**–(आनंद या खुशहाली के दिन समाप्त हो गए) अब दिवाला निकलने के बाद उसकी हालत पतली हो गई है, **वे दिन गए जब खलील खाँ फाख्ता उड़ाते थे।**

☞ **विनाशकाले विपरीत बुद्धि**–(विपत्ति पड़ने से पूर्व ही मनुष्य की सोच-समझ विकृत हो जाती है) वह स्वयं दूसरों को सट्टा लगाने को मना करता था, पर स्वयं सारी पूँजी सट्टे में लगा दी और हार गया। ठीक ही कहा है–**विनाशकाले विपरीत बुद्धि।**

☞ **विषस्य विषमौषधम् शठे शाठ्यं समाचरेत्**–(काँटे को काँटा निकालता है। दुष्ट व्यक्ति को दुष्टता से ही वश में किया जाता है) चाणक्य की तो नीति ही यह थी कि शठ को भलाई से नहीं चतुराई और जरूरत पड़े तो धूर्तता से पराजित करना चाहिए। उसका नीतिवाक्य था–**विषस्य विषमौषधम्।**

☞ **विद्या होवे कंठ, रुपैया होवे गंठ**–(विद्या वह है जिसकी आवश्यकता पड़ते ही उपयोग किया जा सके और नकद रुपया ही काम आता है) विदेश जा रहे हो, पास में नकद रुपया है न? याद रखो–**विद्या होवे कंठ, रुपैया होवे गंठ।**

☞ **वीरभोग्या वसुन्धरा**–(वीरों को ही सफलता मिलती है। कायर और भीरु लोग कभी सफल नहीं होते) लक्ष्मी वीरों का ही वरण करती है। कहा है–**वीरभोग्या वसुन्धरा।**

☞ **शुभस्य शीघ्रम्**–(जितनी जल्दी शुभ काम करो, उतना ही अच्छा है) देर क्यों कर रहे हो। जाओ और विवाह की तैयारी करो, **शुभस्य शीघ्रम्।**

☞ **संतोषं परं सुखम्**–(संतोषी व्यक्ति ही सुखी रहता है) निन्यानवे के फेर में पड़ा रहा और जीवनभर कष्ट पाता रहा। उसे यह रहस्य बाद में पता चला कि **संतोषं परं सुखम्।**

☞ **सब धान बाईस पसेरी**–(अच्छे-बुरे की पहचान न होना) गोपाल धनवान तो है पर मूर्ख है। सबको दान देता है। उसके लिए **सब धान बाईस पसेरी हैं।**

☞ **समरथ को नहिं दोष गोसाईं**–(समर्थ एवं शक्तिशाली व्यक्ति को कोई दोष नहीं देता) प्रधानमंत्री है, सफेद को काला करता रहता है, निर्दोषों को दंड देता रहता है पर कोई चूँ तक नहीं करता। **समरथ को नहिं दोष गोसाईं।**

☞ **सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ते**–(धनवान में सभी गुण दिखते हैं) धन से सबकुछ प्राप्त हो सकता है–नाम, न्याय, शिक्षा, ऊँचा पद और सुंदर पत्नी। ठीक ही कहा है–**सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ते।**

☞ **सस्ता रोवे बार-बार, महँगा रोवे एक बार**–(सस्ती चीज़ खराब होती है) पचास रुपए में कहीं रेडियो आता है। अब रोज़-रोज़ मरम्मत कराता फिरता है। पैसे भी खर्च करता है और समय भी बर्बाद होता है। **सस्ता रोवे बार-बार, महँगा रोवे एक बार।**

☞ **साँच को आँच क्या**–(सच्चा मनुष्य निर्भय होता है) मैंने चोरी की ही नहीं तो क्यों डरना और क्यों मालिक के पैरों पड़ूँ। बुला ले पुलिस **साँच को आँच क्या?**

☞ **साँप चला गया, लकीर पीटते रहो**–(अवसर खोने के बाद पश्चात्ताप करना बेकार है) अच्छा-खासा मौका था नौकरी पाने का पर अकड़ कर बैठे रहे। अब दूसरा व्यक्ति नियुक्त हो गया तो क्यों पछताते हो? **साँप चला गया, लकीर पीटने से क्या लाभ!**

☞ **साँप मरे और लाठी भी न टूटे**–(ऐसी तरकीब लड़ाना कि सरलता से काम हो जाए) कोई ऐसी युक्ति बताओ कि **साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे।**

☞ **सावन के अंधे को हरा ही हरा दीखता है**–(सुखी व्यक्ति को सब लोग सुखी लगते हैं) उसका क्या, उसके पास सबकुछ है, सब तरह से सुखी है अतः समझता है कि सारा पड़ौस आराम से रह रहा है। **सावन के अंधे को हरा ही हरा दीखता है।**

☞ **सिर मुँड़ाते ही ओले पड़ना**–(कार्य शुरू करते ही हानि उठाना) कल ही तो दुकान खोली थी। रात को आग लग गई और सब स्वाहा हो गया। बेचारे के लिए **सिर मुँड़ाते ही ओले पड़ गए।**

☞ **सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता**–(सिधाई या नरमी से काम नहीं निकलता) लाख मिन्नत करो, वह नहीं मानेगा। कहीं **सीधी अंगुली से घी निकलता है।**

☞ **सूरदास की कामरी कारी चढ़त न दूजो रंग**–(दुष्ट दुष्टता नहीं छोड़ता) जुआ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेलते-खेलते और हारते-हारते सब गँवा बैठा पर बाज़ नहीं आता। ठीक ही कहा है–**सूरदास की कारी कामरी चढ़त न दूजो रंग।**

☞ **सैंया भये कोतवाल अब डर काहे का**–(मित्र या निकट संबंधी के अधिकारी हो जाने पर निर्भय होकर गलत काम करना) अब बेटा कलक्टर हो गया है तो और भी अधिक गुंडागर्दी करता है। ठीक है भाई, **सैंया भये कोतवाल अब डर काहे का।**

☞ **सौ सुनार की न एक लुहार की**–(ठीक और शक्तिशाली कदम उठाने से बार-बार झक नहीं मारनी पड़ती) मैं तो मौके की तलाश में हूँ। मौका मिलते ही ऐसा बदला लूँगा कि जन्मभर याद रखेगा। मेरी तो नीति है–**सौ सुनार की न एक लुहार की।**

☞ **हथेली पर सरसों जमाना**–(शीघ्र कार्य संपन्न करना) **हथेली पर सरसों नहीं जमती।** प्रतीक्षा करो, अभी कुछ समय और लगेगा।

☞ **हवा के घोड़े पर सवार होना**–(बहुत जल्दी में होना) वह हमेशा **घोड़े पर सवार** रहता है और कर्मचारियों के नाक में दम किए रहता है। ऐसे में काम बिगड़ेगा नहीं तो क्या होगा!

☞ **हाथ कंगन को आरसी क्या**–(प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं) आपके हाथ में साड़ी है अच्छी तरह देखिए और परखिए। मान जाएँगे कि कपड़ा बहुत अच्छा है। **हाथ कंगन को आरसी क्या?**

☞ **हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और**–(कहना एक बात, करना दूसरी बात, कथनी और करनी में अंतर) अरे साहब, उसकी बात का यकीन नहीं। वह तो बहकाता रहता है, **हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और।**

☞ **होनहार बिरवान के होत चीकने पात**–(प्रतिभाशाली तथा सफल व्यक्ति के गुण बचपन में ही दिखने लगते हैं) नेताजी को बचपन में ही ज्योतिषी ने कहा था कि यह बालक भविष्य में देश का महान पुरुष बनेगा। क्यों न हो, **होनहार बिरवान के होत चीकने पात।**

(ख) मुहावरे

☞ **अंगुली उठाना**–(चरित्र, ईमानदारी पर संदेह करना) वह बड़ा ईमानदार है। व्यर्थ ही लोग उसपर **अंगुली उठाते हैं।**

☞ **अंगुली पकड़कर पहुँचा पकड़ना**–(थोड़ी सहायता मिलने पर बहुत अधिकार पाने की चेष्टा करना) मैंने उसे सौ रुपए दिए ताकि उसका परिवार भूखा न मरे पर वह तो अब **अंगुली पकड़कर पहुँचा पकड़ना** चाहता है। कल हज़ार रुपए माँग रहा था।

☞ **अंगूठा दिखाना**–(कार्य करने से साफ मुकर जाना) मैंने सोचा था भलाई को रामू कभी न भूलेगा और समय पर काम आएगा परंतु उसने तो मुझे **अंगूठा दिखा दिया।**

☞ **अंगूर खट्टे होना**–(किसी वस्तु के प्राप्त न होने पर उसमें दोष बताना) जब रामू को नौकरी नहीं मिली तो कहने लगा उस नौकरी का वेतन तो मेरे जेब-खर्च के लिए भी पूरा न पड़ता। इसी को कहते हैं–**जब लोमड़ी को अंगूर न मिले तो कहने लगी खट्टे हैं।**

☞ **आँचल पसारना**–(विनयपूर्वक कुछ माँगना) मैं **आँचल पसारकर** अपने पुत्र के प्राणों की भीख माँगती हूँ, मुझ पर दया करो।

☞ **अंधे की लकड़ी होना**–(एकमात्र सहारा) बेचारे का इकलौता लड़का मर गया। वही तो बुढ़ापे में **अंधे की लकड़ी था।**

☞ **अंधे के हाथ बटेर लगना**–(संयोग से किसी को कोई सफलता या धन मिल जाना) रहीम महामूर्ख था पर देखो कैसे अच्छी नौकरी लग गई। इसे कहते हैं–**अंधे के हाथ बटेर लगना।**

☞ **अक्ल के पीछे लट्ठ लिए फिरना**–(मूर्खता का काम करना) तुम्हें हो क्या गया है। अच्छी-खासी मित्रता थी। संबंध तोड़ दिया। **अक्ल के पीछे लट्ठ लिए फिरते** हो अब भोगना।

☞ **अगर-मगर करना**–(टाल-मटोल करना) **अगर-मगर मत करो,** चुपचाप पैसे लाकर अपना हिसाब-किताब पूरा करो।

☞ **अपना उल्लू सीधा करना**–(अपना काम निकालना, मतलब सिद्ध करना) **अपना उल्लू सीधा कर** वह तुरंत चला जाएगा और तुम देखते ही रह जाओगे।

☞ **अपनी खिचड़ी अलग पकाना**–(सबसे अलग रहना, किसी से मेल न करना) आजकल के ज़माने में **अपनी खिचड़ी**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलग पकाने से काम नहीं चलता। परस्पर सहयोग और सहायता का ज़माना है।

☞ **अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना**–(अपनी हानि स्वयं करना) अपने पति से आग्रह कर सौ ले आई और **अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली।**

☞ **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना**–(अपनी प्रशंसा स्वयं करना) जब कोई उसकी प्रशंसा नहीं करता, तो स्वयं ही **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनता है।**

☞ **आँख का तारा**–(परम प्रिय व्यक्ति) अकेला बेटा होने के कारण सोहन अपनी माँ की **आँखों का तारा है।**

☞ **आँख का पानी गिर जाना**–(बेशर्म हो जाना) मोहिनी की **आँखों का तो पानी** ही गिर गया है। अत: वह खुले आम लड़कों के साथ घूमती फिरती है।

☞ **आँखें चार होना**–(प्रेम हो जाना) पहली भेंट में ही नायक नायिका की **आँखें चार हो गईं** और फिर वे प्राय: मिलने लगे।

☞ **आँख चुराना**–(कतराना, सामने न आना) ऋण चुकाने में असमर्थ भोला अपने ऋणदाताओं से **आँखें चुराता** फिरता है।

☞ **आँख दिखाना**–(क्रोधपूर्वक देखना) जब कभी मैं अपनी पुस्तक लौटाने को कहता हूँ, **वह आँखें दिखाता है।**

☞ **आँख फेरना**–(व्यवहार में पहले जैसा स्नेह न होना) पता नहीं उसे किसी ने बहका दिया है या कान भर दिए हैं। अब उसने मुझसे **आँखें फेर ली हैं।**

☞ **आँख मारना**–(इशारा करना, इशारे से मना करना) सोहन राम को पुस्तक दे रहा था पर जब उसकी पत्नी ने **आँख मारी** तो उसने बहाना बना दिया और पुस्तक नहीं दी।

☞ **आँखों में चर्बी छाना**–(घमंड में चूर होना) करोड़पति क्या हो गया है, **आँखों में चर्बी** छा गई है अत: किसी को कुछ समझता ही नहीं।

☞ **आँखों में धूल झोंकना**–(धोखा देना) तिलक लगाकर, कण्ठी माला पहनकर पुजारी सबकी **आँखों में धूल झोंक रहा है।**

☞ **आँख लगना**–(झपकी आना) कल देर रात तक जागना पड़ा। अत: लेटते ही **आँख लग गई।**

☞ **आकाश के तारे गिनना**–(नींद न आना, बेचैन रहना) प्रिय के वियोग में सारी रात विरहिणी **आकाश के तारे गिनती** रहती है।

☞ **आकाश के तारे तोड़ना**–(असंभव काम करना) प्रेमी ने प्रेमिका से कहा, "मैं तेरे लिए सबकुछ कर सकता हूँ। कहें, तो **आकाश के तारे भी तोड़ लाऊँ।**"

☞ **आकाश पाताल एक करना**–(अत्यधिक प्रयास करना) अपनी बेटी के विवाह के लिए शेखर ने **आकाश पाताल एक कर** दिया पर अभी भी बेचारे को जामाता नहीं मिल पाया है।

☞ **आग पर तेल छिड़कना**–(किसी के क्रोध को और भड़काना) उसके झूठे आक्षेपों ने **आग पर तेल छिड़क दिया।**

☞ **आग बबूला होना**–(बहुत क्रुद्ध होना) अपना अपमान देखकर दुर्वासा ऋषि **आग बबूला होकर** शाप देने लगे।

☞ **आटा-दाल का भाव मालूम होना**–(असलियत का पता चलना) अभी तो पिताजी के पैसे पर गुलछर्रे उड़ा रहा है। जब अपने पैरों पर खड़ा होगा तो बच्चू को **आटा-दाल का भाव** मालूम होगा।

☞ **आटे के साथ घुन पिसना**–(दोषी के साथ निर्दोष व्यक्ति का भी दंडित होना) डाकुओं ने सेठ के घर डाका डाला और उसके नौकर का बक्सा भी उठा कर ले गए। **आटे के साथ घुन भी पिस गया।**

☞ **आड़े हाथों लेना**–(भर्त्सना करना, बुरा-भला कहना) अध्यापक ने परीक्षार्थी को नकल करते देखा तो उसे **आड़े हाथों लिया।**

☞ **आपे से बाहर होना**–(क्रोध, हर्ष आदि में सुध-बुध खोना) परीक्षाफल सुनते ही वह खुशी के मारे आपे से बाहर हो उठा।

☞ **आफत की पुड़िया**–(कष्ट या विपत्ति का कारण) बुढ़िया क्या है, **आफत की पुड़िया** है! देखते ही गालियाँ देने लगती है।

☞ **आसन डिगना**–(स्थिर न रह पाना, चंचल हो जाना) साधु ने ज्यों ही सुंदर नर्तकी को देखा, उसका आसन डिग गया।

☞ **आसमान पर थूकना**–(किसी सज्जन पर व्यर्थ का दोषारोपण करना) महात्मा गांधी के चरित्र पर संदेह कर उनको बदनाम करने की कोशिश करना **आसमान पर थूकना है।**

☞ **आसमान फट जाना**–(अनहोनी बात होना) जब उसपर शराबी होने का दोष लगाया गया, तो उसे ऐसा लगा जैसे **आसमान फट गया हो** या जमीन खिसक गई हो।

☞ **आसमान में थिगली लगाना**–(असंभव कार्य करने की चेष्टा करना) उसका यह कहना

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वह एवरेस्ट पर चढ़ेगा **आसमान में थिगली लगाना है।**

☞ **आस्तीन का साँप**–(मित्रता दिखाकर शत्रुता करे) अरे! वह तो **आस्तीन का साँप निकला।** घर में रहता रहा और चोरी करा दी।

☞ **ईंट से ईंट बजाना**–(किसी नगर के भवन को नष्ट करना या झगड़ा करा देना) अगर मेरा वश चले तो इस वेश्या-बस्ती की **ईंट से ईंट बजा दूँ।**

☞ **ईद का चाँद होना**–(बहुत दिनों बाद दर्शन होना) आप तो **ईद के चाँद** हो गए हैं! महीनों हो जाते हैं, दिखते ही नहीं।

☞ **उड़ती चिड़िया को पहचानना**–(भेद की बात जानना) मुझसे चालाकी मत चलो। मैं **उड़ती चिड़िया को पहचानता हूँ।** सच-सच बताओ!

☞ **उधार खाए रहना**–(उतावला होना) वह तो सिनेमा जाने के लिए **उधार खाए रहता है।**

☞ **उलटी गंगा बहाना**–(अनहोनी बात करना) अब तक जिनकी हर संकट में सहायता की, प्राण देने का दम भरते रहे, अब उनके साथ ऐसा अभद्र व्यवहार कर **उलटी गंगा मत बहाओ।**

☞ **उलटे छुरे से मूड़ना**–(बुरी तरह ठगना, उल्लू बनाना) यही तो कमाल है कि **उलटे छुरे से मूड़ता है** और फिर भी लोग उसे सच्चा, ईमानदार व्यक्ति समझते हैं।

☞ **उल्लू बनाना**–(मूर्ख बनाकर अपना काम निकालना) उसका भाई बड़ा घाघ निकला। सबको **उल्लू बनाकर** यह गया, वह गया।

☞ **उल्लू बोलना**–(उजाड़ होना) जिस हवेली में दिन को होली और रात को दीवाली मनाई जाती थी, अब उसमें **उल्लू बोल रहे हैं।**

☞ **ऊँट के मुँह में जीरा**–(आवश्यकता से बहुत कम) अरे वह दस रोटियाँ खाता है, एक रोटी तो **ऊँट के मुँह में जीरा है।**

☞ **एक आँख से सबको देखना**–(सबके साथ समान व्यवहार करना) साधु के लिए शत्रु-मित्र, गरीब-अमीर, ऊँच-नीच में कोई भेद नहीं होता। **वह सबको एक आँख से देखता है।**

☞ **एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना**–(कठिन परिश्रम करना) परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए **एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा** दो। यह अंतिम अवसर है।

☞ **औने के पौने करना**–(काट-कपट करना, बेईमानी करना) **औने पौने करने** की आदत नहीं थी, अत: जब पहली बार भाइयों के पैसे दबाए तो उसकी आत्मा धिक्कारने लगी।

☞ **कंठी बाँधना**–(शिष्य बनना, दीक्षा लेना) विधवा होने के बाद सुशीला **कंठी बाँधकर** वृंदावन में रहने लगी।

☞ **कंधा डालना**–(हिम्मत हारना) चार वर्ष तक हाड़-तोड़ मेहनत की पर फल कुछ न निकला। अब तो बेचारे ने **कंधा डाल दिया है।**

☞ **कचूमर निकलना**–(शक्तिहीन होना, बहुत रुपया खर्च हो जाना) बेटी के विवाह में इतना दहेज़ देना पड़ा कि बेचारे हरवंश का **कचूमर ही निकल** गया।

☞ **कच्ची गोटी खेलना**–(अनाड़ी होना, गलत चाल चलना) **मैंने कच्ची गोटी नहीं खेली हैं।** यह काम होकर ही रहेगा।

☞ **कफन सिर से बाँधना**–(मरने के लिए तैयार रहना) **कफन सिर से बाँधकर** अनेक देशभक्त भारत-छोड़ो आंदोलन में कूद पड़े।

☞ **कब्र में पाँव लटकाना**–(मरने के निकट होना) **कब्र में पाँव लटकाए हैं** पर अब भी माया-ममता में फँसा है।

☞ **कमर कसना**–(किसी काम को पूरा करने का दृढ़ संकल्प करना) मैंने **कमर कस** ली है कि चाहे जो कुछ हो परीक्षा में प्रथम श्रेणी पानी है।

☞ **कमर टूटना**–(निराश होना, पस्त होना) बेटे के मरने से उसकी तो कमर ही टूट गई।

☞ **कमान से तीर निकलना**–(अवसर गँवा देना, गलत चाल चलना) तुमने राममोहन को वचन दे दिया है। अब **कमान से तीर निकल चुका,** व्यर्थ पश्चात्ताप कर रहे हो।

☞ **कलई खुलना**–(असलियत प्रकट होना, भेद खुलना) कब तक झूठ बोलकर अपनी बेइमानी छिपाता। कल रंगे हाथों पकड़े जाने पर उसकी **कलई खुल गई।**

☞ **कलम तोड़ना**–(अनूठी रचना लिखना) प्रेमचंद ने ग्रामीण जीवन का चित्रण करने में सचमुच **कलम तोड़** दी है।

☞ **कलेजा छलनी होना**–(व्यंग्यमयी बातें कहकर हृदय को बहुत दु:ख पहुँचाना) उसने ऐसी ऊट-पटाँग एवं निराधार बातें कही हैं कि मेरा **कलेजा छलनी** हो गया है।

☞ **कलेजा मुँह को आना**–(बहुत व्याकुल होना) विधवा स्त्री इतना विलाप कर रही

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी कि देखनेवालों का **कलेजा मुँह को आने लगा।**

☞ **काँटा बोना**–(अहित, बुराई करना) यदि कोई **काँटा भी बोवे** तो भी तुम उसका बुरा मत सोचो। ईश्वर तुम्हारा कल्याण करेगा।

☞ **काँटों में घसीटना**–(प्रशंसा या अत्यधिक सम्मान देकर लज्जित करना) आप उम्र में भी बड़े हैं और ज्ञान में भी। मेरे चरणों पर गिरकर मुझे **काँटों में क्यों घसीटते है?**

☞ **काटो तो खून नहीं**–(सुन्न हो जाना, स्तब्ध रह जाना) आधी रात को जब पुलिस ने द्वार खटखटाया तो द्वार पर खड़े दारोगा को देखकर रामू के **काटो तो खून नहीं।**

☞ **काठ मारना**–(बहुत घबरा जाना) पत्र में दिवाला निकलने की बात पढ़ते ही सेठजी को **काठ मार गया।**

☞ **कान का कच्चा**–(सहज विश्वास करने वाला, चुगली की बातें सुनकर उन पर विश्वास करना) वह **कान का कच्चा है,** अपने मुसाहिबों की बात सुनकर उसने अपने घनिष्ठ मित्र को भला-बुरा कह डाला।

☞ **कान काटना**–(बहुत चतुर होना) कुछ दिन पहले नितांत बुद्धू कहकर सब उसका मज़ाक उड़ाते थे। पर अब तो वह हम सबके **कान काटता है।**

☞ **कान खड़े करना**–(सतर्क, सावधान हो जाना) अपने विरोधियों के षड्यंत्र का पता लगते ही जनता दल के नेताओं के **कान खड़े हो गए।**

☞ **कान खाना**–(बार-बार पूछकर या तकाजा कर तंग करना) परीक्षाएँ कब से आरंभ होंगी? यह पूछ-पूछ कर उसने मेरे **कान खा लिए।**

☞ **कान पकना**–(सुनते-सुनते चिढ़ जाना) उसकी शिकायतें सुनते-सुनते मेरे तो **कान पक गए।** अब किसी तरह पीछा छुड़ाओ।

☞ **कान पर जूँ न रेंगना**–(बिल्कुल ध्यान न देना) मैं अपनी पुस्तक माँगते-माँगते थक गया पर उसके **कान पर जूँ तक नहीं रेंगती।**

☞ **कान फूँकना**–(दीक्षा देना, गुरु मंत्र देना; बहकाना) कान फुँकवाकर अब वह गृहस्थी छोड़कर गंगा-तट पर वास करता है। किसने मेरे विरुद्ध तुम्हारे **कान फूँक दिए हैं?**

☞ **कान भरना**–(शिकायत करना, उल्टी-सीधी बातें करना) चलो, जल्दी चलो। कहीं ऐसा न हो कि वे लोग पहले ही पहुँचकर पिता जी के **कान भर दें।**

☞ **कान में तेल डालना**–(ध्यान न देना) कोई मेरी प्रार्थना नहीं सुनता। सबने **कान में तेल डाल रखा है।**

☞ **कानी कौड़ी न होना**–(नितांत दरिद्र होना) मेरे पास **कानी कौड़ी नहीं है,** भला पुस्तक कैसे खरीदूँ?

☞ **काफूर हो जाना**–(गायब हो जाना) ठग चकमा देकर तथा अपना उल्लू सीधा कर तुरंत **काफूर हो गया।**

☞ **काम तमाम करना**–(मार डालना) उसके खून से रंगे हाथों को देखते ही मैं समझ गया कि उसने सेठजी का **काम तमाम कर डाला है।**

☞ **किनारा करना**–(अलग हो जाना, साथ छोड़ देना) सट्टे में सारा धन गँवाने के बाद जब रामसहाय पैसे-पैसे को मोहताज हो गया तो दोस्तों ने **किनारा कर लिया।**

☞ **किस खेत की मूली**–(नगण्य, तुच्छ व्यक्ति) जब तक सहायता की जरूरत थी मेरी खुशामद करता रहा। अब कहता है, **"तुम हो किस खेत की मूली?"**

☞ **कुल्हिया में गुड़ फोड़ना**–(गुप्त रीति से कोई काम करना) तुम जानते नहीं वह तो **कुल्हिया में गुड़ फोड़ने** में माहिर है।

☞ **केंचुल बदलना**–(रूप बदलना, व्यवहार बदलना) काम निकलते ही स्वार्थी एवं धूर्त लोग **केंचुल बदल** लेते हैं और अपना असली रंग दिखलाने लगते हैं।

☞ **कोख उजड़ना**–(संतान का मर जाना) बेचारी पहले ही विधवा थी, अब **कोख भी उजड़** गई।

☞ **कोढ़ की खाज**–(संकट पर संकट) गोविंद का पहले ही सारा धन जाता रहा अब बेटी की नौकरी भी छूट गई। इसे कहते हैं **कोढ़ की खाज।**

☞ **कोल्हू का बैल**–(बहुत अधिक परिश्रम करनेवाला) वह रात-दिन मेहनत करता है फिर भी दो वक्त खाना नहीं मिलता। **कोल्हू के बैल** बनने से क्या लाभ?

☞ **कौड़ियों के मोल**–(बहुत कम कीमत पर) अब की बार आप की फसल इतनी अच्छी हुई है कि कोई **कौड़ियों के मोल** भी आम नहीं खरीद रहा।

☞ **खटाई में पड़ना**–(किसी काम का टल जाना या सफलता में संदेह होना) लगता है

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीणा का विवाह फिर **खटाई में पड़** गया है।

☞ **खाक उड़ाना**–(मारा-मारा फिरना, भटकना) नौकरी छूटने के बाद अब **खाक उड़ाता** फिरता है।

☞ **खाक छानना**–(बेकार यात्रा करना, मारा-मारा फिरना) मैं पूरे पाँच वर्ष राजस्थान की **खाक छानता रहा** पर मुझे कोई नई बात नहीं मिली जिसे अपने शोध-ग्रंथ में लिखता।

☞ **खार खाना**–(डाह, द्वेष करना) पता नहीं वह मुझसे क्यों खार खाए रहता है? मैंने तो उसका कभी कोई अहित नही किया।

☞ **खिचड़ी पकाना**–(गुप्त परामर्श करना, षड्यंत्र रचना) कई दिन से विरोधी दल नेताजी के खिलाफ **खिचड़ी पका** रहा है। देखना, जल्दी ही गुल खिलेगा।

☞ **खीस निपोरना**–(खिसियाना, दीन भाव से प्रार्थना करना) जब वह **खीस निपोरने** लगा तो मुझे दया आ गई और मैंने उसका काम कर दिया।

☞ **खूँटे के बल कूदना**–(किसी बड़े या धनवान व्यक्ति का सहारा पा अभिमान करना, अकड़ना) मैं जानता हूँ कि तुम मंत्रीजी के दामाद हो। तभी तो **खूँटे के बल कूद** रहे हो।

☞ **खून पसीना एक करना**–(कठिन परिश्रम करना) **खून पसीना एक कर** दो-चार कमाए हैं तो डाह क्यों करते हो। तुम भी परिश्रम करो।

☞ **खून का घूँट पीना**–(क्रोध को भीतर ही भीतर दबाना) सेठजी ने दस गालियाँ दीं। मन तो करता था ईंट का जवाब पत्थर से दूँ पर स्थिति समझ कर **खून का घूँट पीकर रह गया।**

☞ **खेत आना**–(युद्ध में मारा जाना) पानीपत की लड़ाई में अनेक योद्धा **खेत आए।**

☞ **खोद-खोद कर पूछना**–(गहराई से तहकीकात करना, जिरह करना) अदालत में प्रतिपक्ष के वकील ने जब **खोद खोद कर पूछा** तो उसने सारी बातें उगल दीं।

☞ **खोपड़ी खा जाना**–(बहुत बातें कर परेशान करना) बस एक बार बात शुरू करने के बाद तो वह रुकता ही नहीं, **खोपड़ी खा जाता है।**

☞ **ख्याली पुलाव पकाना**–(कपोल कल्पना करना, झूठे सपने देखना) मेहनत करो, **ख्याली पुलाव पकाने** से कोई काम नहीं होता।

☞ **गंगा नहाना**–(कृतार्थ होना, काम संतोषजनक रीति से हो जाना) बेटी का विवाह कर मैं तो **गंगा नहा गया।**

☞ **गंगा लाभ होना**–(मर जाना) परसों उसके बूढ़े पिताजी को **गंगा लाभ हो गया।**

☞ **गड़े मुर्दे उखाड़ना**–(पुरानी बातों की चर्चा करना) जो बीत गया, उसे भूल जाओ। **गड़े मुर्दे उखाड़ने** से किसी का कोई हित नहीं होगा।

☞ **गढ़ जीतना**–(कठिन काम में सफलता प्राप्त करना) चुनाव जीतने के बाद सोहन लाल ने इत्मीनान की साँस लेते हुए कहा, "भाई, मैंने अंततः **गढ़ जीत ही लिया।**"

☞ **गधे को बाप बनाना**–(काम निकालने के लिए अयोग्य व्यक्ति की खुशामद करना) वह बड़ा व्यवहारकुशल व्यक्ति है। स्वार्थ-सिद्धि के लिए वह **गधे को भी बाप** बना लेता है।

☞ **गरदन नापना**–(दंड देना) ज्यादा मुनाफा कमाओगे तो **गरदन नापी** जाएगी, अब पुराना ज़माना लद गया, जनता का राज्य है।

☞ **गले पड़ना**–(इच्छा के विरुद्ध किसी के यहाँ रहना) क्या करता? संकेत से मना भी किया पर जब **गले पड़ गया** तो दो-चार दिन ठहरना ही पड़ा।

☞ **गले मढ़ना**–(इच्छा के विरुद्ध किसी वस्तु को सौंपना) अच्छी तरह परख लो, तब खरीदना। मैं यह घड़ी तुम्हारे **गले नहीं मढ़ना** चाहता।

☞ **गाँठ पड़ना**–(मनमुटाव हो जाना) अब दोनों में पहले जैसी दाँत-काटी रोटी नहीं रही विवाह के बाद दोनों के मन में **गाँठ पड़ गई है।**

☞ **गागर में सागर भरना**–(थोड़े शब्दों में बहुत अर्थ भर देना) कवि बिहारी ने दोहे जैसे छोटे छंद में इतनी अर्थगर्भित बातें कह दी हैं कि सभी आलोचक कहते हैं कि वह **गागर में सागर भरने** की कला में निपुण थे।

☞ **गाजर-मूली समझना**–(तुच्छ समझना) हिटलर ने यूरोप के देशों को ही नहीं अमरीका को भी **गाजर-मूली समझा** और लड़ बैठा।

☞ **गाढ़े का साथी**–(संकट के समय काम आनेवाला मित्र) अपने मित्र की मृत्यु के बाद भी रामधन ने उसके परिवार का पालन-पोषण किया। तभी तो सब कहते हैं कि वह **गाढ़े का साथी** निकला।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ **गाल फुलाना**–(रूठ जाना) जब से मैंने सिनेमा जाने की मना की है, मेरी पत्नी **गाल फुलाकर** बैठी है।

☞ **गाल बजाना**–(डींग मारना) **गाल बजाने** से काम नहीं चलेगा। हिम्मत है तो आगे बढ़ो और अपना ध्वज फैलाओ।

☞ **गुड़ गोबर होना**–(बना-बनाया काम बिगड़ जाना) रात को इतनी वर्षा हुई कि बारात के स्वागत के लिए बनाया गया मंडप तहस-नहस हो गया। प्रकृति के कोप ने सब **गुड़ गोबर कर दिया।**

☞ **गुदड़ी का लाल**–(सामान्य घराने में प्रतिभासंपन्न व्यक्ति) गरीब घराने में पैदा हुआ राजमोहन आई.ए.एस. हो गया तो सब कहने लगे वह **गुदड़ी का लाल** निकला।

☞ **गूँगे का गुड़**–(जिसका वर्णन शब्दों में न हो सके) काश्मीर के सौंदर्य को देखकर हम सभी आश्चर्य-विमुग्ध हो गए। उसका वर्णन करना **गूँगे का गुड़ है।**

☞ **गोटी लाल करना**–(सफलता पाना, प्रयोजन सिद्ध करना) अपनी **गोटी लाल करने** के लिए वह सबकुछ कर सकता है, अफसर के जूते तक चाट सकता है।

☞ **घड़ों पानी पड़ना**–(अत्यंत लज्जित होना) देश के लिए प्राण तक न्यौछावर करने की बात कहनेवाले, मुरलीधर को पुलिस के डर से छिपते देखकर जब मैंने उस पर नुक्ता कसा तो उसके ऊपर **घड़ों पानी पड़ गया।**

☞ **घर की मुर्गी दाल बराबर**–(परिचित व्यक्ति या सहज प्राप्त वस्तु का उचित आदर न करना) वह अच्छा चिकित्सक है पर लोग उसकी कद्र नहीं करते, शहर भागते हैं ठीक ही कहा है कि **घर की मुर्गी दाल बराबर।**

☞ **घाट घाट का पानी पीना**–(अनुभवी होना; तरह-तरह के कुकर्म करना) सोहनलाल ने दुनिया देखी है, घाट-घाट का पानी पिए है, उसे मूर्ख बनाना सहज नहीं। तुम्हारी पड़ौसिन **घाट-घाट का पानी पिए है,** उससे तो वैश्या भी भली है.

☞ **घात लगाना**–(उपयुक्त अवसर की खोज में रहना) सँभल कर जाना। रास्ते में डकैत **घात लगाए** बैठे रहते हैं।

☞ **घाव पर नमक छिड़कना**–(दुःखी को और अधिक सताना) अब **घाव पर नमक क्यों छिड़कते हो?** मैं पहले से ही अपने किए पर शर्मिन्दा हूँ।

☞ **घोड़े बेचकर सोना**–(निश्चिंत होकर आराम करना) एक माह तक चुनाव-प्रचार में रात-दिन लगा रहा। **अब घोड़े बेचकर सो रहा है।**

☞ **चल बसना**–(मर जाना) कल रामू के नाना **चल बसे।**

☞ **चाँद का टुकड़ा**–(अत्यंत सुंदर व्यक्ति) बेटा क्या है? **चाँद का टुकड़ा है।**

☞ **चाँदी का जूता**–(घूस, रिश्वत) **चाँदी का जूता** हो तो कौन काम नहीं निकल सकता?

☞ **चार चाँद लगाना**–(शोभा, प्रतिष्ठा आदि बढ़ाना) वह सच्चरित्र तो था ही, ईमानदारी तथा परोपकार भावना ने उसके व्यक्तित्व में **चार चाँद लगा दिए हैं।**

☞ **चारपाई पकड़ना**–(बीमारी में बहुत अधिक दुर्बल हो जाना) मोहन की माँ बूढ़ी तो थी ही उसे बुखार भी आ गया। अब तो उसने **चारपाई पकड़ ली है।**

☞ **चारों खाने चित्त होना**–(पूरी तरह पराजित होना) नेताजी ने ऐसी चाल चली कि सब प्रतिनिधि **चारों खाने चित्त हो गए।**

☞ **चिड़िया फँसाना**–(किसी को कपट-ज़ाल में डालकर काम निकालना) वह बड़ा धूर्त तथा चालाक निकला। अपनी सहपाठिनी को बहला-फुसलाकर शादी कर ली। इसे कहते हैं **चिड़िया फँसाने** में माहिर।

☞ **चिराग लेकर ढूँढ़ना**–(बहुत छानबीन करके खोजना) **चिराग लेकर ढूँढोगे** तो भी ऐसी बहू न मिलेगी। वह तो चाँद का टुकड़ा है।

☞ **चींटी के पर निकलना**–(मृत्यु या नाश के निकट होना) बहुत डींग मारता फिरता है, अंजाम अच्छा न होगा। **चींटी के पर निकलते हैं** तो शीघ्र ही मरती है।

☞ **चुल्लू भर पानी में डूब मरना**–(लज्जित होना) तुमने काम ही ऐसा किया है कि **चुल्लू भर पानी में डूब मरो।**

☞ **चूड़ियाँ पहनना**–(कायर होना) **चूड़ियाँ पहनकर** घर बैठे रहे, इतना भी न हुआ कि बाप की बेइज्जती का बदला लेते।

☞ **चूना लगाना**–(धोखा देना, हानि पहुँचाना) ऐसा चूना लगाकर गया है कि जीवन भर याद करोगे।

☞ **चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना**–(भय, घबराहट के कारण चिंतित होना) गाँव के निहत्थे लोगों को जब पता चला कि बंदूकधारी डाकू आ गए हैं तो सबके **चेहरों पर हवाइयाँ** उड़ने लगीं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ **चैन की वंशी बजाना**–(सुख से जीवन बिताना) अब बेटा ऊँचा अधिकारी बन गया है। **चैन की बंशी बजाएगा।**

☞ **चोला छोड़ना**–(मर जाना) एक मास तक समाधि लगाने के बाद कल रात साधु महाराज ने **चोला छोड़ दिया।**

☞ **चोली-दामन का साथ**–(घनिष्ठ मित्रता) अधिकार और घमंड का **चोली-दामन का साथ है।**

☞ **चौकड़ी भूल जाना**–(इतना घबरा जाना कि कुछ उपाय न सूझे) मौखिकी में परीक्षक ने ऐसे प्रश्न किए कि मैं तो सारी **चौकड़ी भूल गया** और अपना-सा मुँह लेकर लौट आया।

☞ **छक्के छुड़ाना**–(परेशान करना, हिम्मत पस्त कर देना) राजपूतों ने ऐसा पराक्रम दिखाया कि मुगल सेना के **छक्के छुड़ा दिए।**

☞ **छठी का दूध याद आना**–(बहुत परेशान या हैरान होना) सिपाही ने चोर को इतना लताड़ा कि उसे **छठी का दूध या आ गया।**

☞ **छाती पर मूँग दलना**–(जबर्दस्ती यातना पहुँचाना) रामू बड़ा बेहया है। कुछ काम भी नहीं करता और ऐंठ में रहता है। वह सचमुच अपने भाइयों की छाती पर मूँग दल रहा है।

☞ **छाती पर साँप लोटना**–(डाह, ईर्ष्या करना) उसकी लाटरी क्या निकल आई, पड़ौसियों की **छाती पर साँप लोटने लगा।**

☞ **छाया उठ जाना**–(आश्रय समाप्त हो जाना) माँ-बाप की **छाया उठते ही** बड़े भाई उसे तरह-तरह से तंग करते हैं।

☞ **छिपा रुस्तम**–(चालाक, धूर्त व्यक्ति, जिसकी चतुराई आदि गुणों का पता न चले) वाह दोस्त! **छिपे रुस्तम** निकले, परीक्षा में अव्वल आए हो।

☞ **जड़ काटना**–(समूल नाश करना) भाई भाई की **जड़ काट** रहा है। भगवान ही इस परिवार की रक्षा करे।

☞ **ज़बान खींचना**–(कठोर दंड देना) अब एक शब्द भी आगे बोला तो **ज़बान खींच** लूँगा।

☞ **ज़बान चलाना**–(बहस करना, बदतमीज़ी की बातें करना) बड़ों के आगे **ज़बान चलाते** शर्म नहीं आती।

☞ **ज़बान में लगाम न होना**–(बिना सोचे-समझे बोलते चले जाना) उसकी **ज़बान में लगाम** नहीं है, जो मन में आता है बोलता ही रहता है।

☞ **ज़मीन आसमान एक करना**–(अत्यधिक परिश्रम करना, या बहुत शोर मचाना) उसने परीक्षा में प्रथम आने के लिए **ज़मीन आसमान** एक कर दिया।

☞ **जली-कटी सुनाना**–(बुरा-भला कहना) मुझे मौका मिला तो मैंने भी **जली-कटी सुनाकर** अपने दिल का गुब्बार निकाल लिया।

☞ **ज़हर का घूँट पीना**–(क्रोध को दबाना, असह्य बात को सह जाना) उसकी बेतुकी बातें सुनकर क्रोध तो बहुत आया पर अपनी स्थिति देखकर **ज़हर का घूँट पीना पड़ा।**

☞ **जान छुड़ाना**–(झंझट से छुटकारा पाना, पीछा छुड़ाना) बड़ी कठिनाई से **जान छुड़ाकर** आया हूँ वर्ना वह तो और उलझाए रहता।

☞ **जान में जान आना**–(स्वस्थ मन होना, मुक्ति की साँस लेना) अपहरणकर्ताओं के चंगुल से छूटकर जब वह राजमार्ग पर आ गया तो उसकी **जान में जान आई।**

☞ **जान हथेली पर रखना**–(प्राणों को ख़तरे में डालना) पुलिस का नायक **जान हथेली पर रखकर** डाकुओं के छिपने की जगह जा पहुँचा और उसने उन्हें ललकारा।

☞ **आपे से बाहर होना**–(आत्म-नियंत्रण या संयम खो बैठना) **आपे से बाहर** क्यों हो रहे हो? पहले मेरी पूरी बात तो सुन लो।

☞ **जी का बुखार निकालना**–(क्रोध, शोक आदि के वेग को बक-झक कर शांत करना) उसे क्षमा कर दो। बेचारे ने क्रोध में आकर अपने **जी का बुखार निकाला है,** फिर ठीक हो जाएगा।

☞ **जी जान से**–(पूरी शक्ति के साथ) वह परीक्षा की तैयारी में **जी जान से** जुट गया है। अवश्य सफल होगा।

☞ **जीती मक्खी निगलना**–(जानबूझ कर कोई ग़लत काम करना) भाई! मैं यह दुष्कर्म नहीं कर सकता। मुझसे तो **जीती मक्खी निगली** नहीं जाती।

☞ **जूता चलना**–(मारपीट, लड़ाई होना) पिता के मरते ही भाइयों में **जूता चल गया।**

☞ **जूता चाटना**–(खुशामद करना) मैं कम से कम तुम्हारी तरह **जूते तो नहीं चाटता।** मुझे भूखों मरना स्वीकार है।

☞ **जूतियाँ चटकाना**–(बेरोज़गार होना, मारे-मारे फिरना) अब नौकरी छूट गई है तो दिन-रात **जूतियाँ चटकाता** फिरता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ **जोड़-तोड़ मिलाना**–(उपाय करना, तरकीब भिड़ाना) **जोड़-तोड़** तो बहुत लगा रहा है, देखें नौकरी पाने में सफल होता है या नहीं?

☞ **झंडा गाड़ना**–(अधिकार जमाना) आखिर उसने अपनी चतुराई से अपना **झंडा गाड़** ही दिया। अब सब उसे सलाम करते हैं।

☞ **झंडे तले आना**–(किसी विचारधारा या दल का सदस्य बनना) चार विपक्ष के विधायक कांग्रेस के **झंडे तले आ गए**। अब उसका बहुमत है।

☞ **टका-सा मुँह लेकर रह जाना**–(खिसिया जाना) जब आपने उसकी कलई खोल दी तो बेचारा **टका-सा मुँह लेकर रह गया**।

☞ **टस से मस न होना**–(अड़े रहना, बात न मानना) मैंने उसे बहुत समझाया पर वह **टस से मस न हुआ** और वही किया जिसका मुझे अंदेशा था।

☞ **टाँय-टाँय फिस हो जाना**–(असफल होना) बेचारे ने योजना तो बड़ी लंबी-चौड़ी बनाई थी, ऋण भी लिया था पर सब **टाँय-टाँय फिस हो गई**।

☞ **टुकड़े तोड़ना**–(दूसरे के दिए पर निर्वाह करना) जब कहीं कुछ न मिला तो आख़िरकार उसे ससुराल के **टुकड़े तोड़ने** के लिए बाध्य होना पड़ा और अब ज़लील हो रहा है।

☞ **टेढ़ी खीर**–(कठिन काम) इस प्रश्न को हल करना खाला जी का घर नहीं है, **टेढ़ी खीर है**।

☞ **टोपी उछालना**–(बेइज़्ज़त करना) छोटा आदमी बड़ों की **टोपी उछालने** में तनिक भी संकोच नहीं करता।

☞ **ठकुर सोहाती करना**–(चापलूसी करना) **ठकुर सोहाती** न करता तो क्या करता। ज़मींदार बेदखली कर देते और मेरा परिवार भूखों मरता।

☞ **ठाठ पड़ा रह जाना**–(मृत्यु के बाद सुख-संपत्ति का यहीं छूट जाना) सब **ठाठ पड़ा रह जाएगा** जब कूच करेगा बनजारा।

☞ **ठेंगा दिखाना**–(साफ इनकार करना) मैंने दो दिन के लिए पुस्तक माँगी, पर उसने **ठेंगा दिखा दिया**।

☞ **ठोकर खाना**–(कष्ट सहना, मुसीबत झेलना) **ठोकर खाकर** ही समझ आती है।

☞ **डंका बजना**–(आधिपत्य होना, दबदबा होना) रूस को शक्तिहीन बनाकर अमरीका विश्व की पहली शक्ति बन गया है। अब उसी का **डंका बज रहा है**।

☞ **डंडी मारना**–(तौलने में बेईमानी करना) वह **डंडी मारकर** ग्राहकों को ठगता है।

☞ **डकार न लेना**–(चुप्पी साधना, हज़म कर जाना) पड़ौसी के घर का सारा सामान हड़प लिया अब **डकार नहीं लेता**।

☞ **डोरा डालना**–(प्रेमजाल में फँसाना) आजकल वह अपनी पड़ौसिन पर डोरे डाल रहा है पर मुँह की खाएगा।

☞ **ढेर हो जाना**–(मर जाना) ज़रा-सा पैर फिसला और बेचारा **ढेर हो गया**।

☞ **ढोल की पोल**–(दिखावा, असलियत छिपाना) पाकिस्तान ने कितना ही बहकाया पर अंततः विदेशों पर उसकी **ढोल की पोल** खुलकर ही रही।

☞ **ढोल पीटना**–(प्रचार करना, अपनी बड़ाई करना) कितना ही **ढोल पीटे** अब उसका कोई विश्वास नहीं करेगा।

☞ **तख्ता उलटना**–(सत्ता में परिवर्तन करना, अधिकार, प्रभुत्व नष्ट कर देना) रूसी आंदोलन में जनता ने वहाँ के शासक ज़ार का **तख्ता पलट** दिया।

☞ **तलवे सहलाना**–(खुशामद करना) जब साहूकार के पैरों तले अंगुली दबी हो तो तलवे सहलाने में ही कुशल है।

☞ **तलवार का धनी**–(वीर, योद्धा) राजपूत **तलवार के धनी** थे और प्राण रहते युद्ध से पीठ नहीं दिखाते थे।

☞ **तारे गिनना**–(चिंता के कारण नींद न आना बेचैन रहना) प्रिय की प्रतीक्षा करते-करते वह **तारे गिनती** रहती थी।

☞ **तिनका तोड़ना**–(संबंध तोड़ना) उसने अपने घरवालों से **तिनका तोड़ने** में तनिक भी लाज-शर्म नहीं की और अछूत कन्या से विवाह कर लिया।

☞ **तिनका दाँतों में पकड़ना**–(दीनतापूर्वक क्षमा माँगना, कृपा की याचना करना) यदि तिनका दाँतों में पकड़कर पश्चात्ताप करो तो कदाचित् वह तुम्हें क्षमा कर दें।

☞ **तिल का ताड़ बनाना**–(छोटी-सी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहना) बच्चे ने पैंसिल ही तो चुराई थी। तुमने तो **तिल का ताड़** बना दिया।

☞ **तीन तेरह करना**–(तितर-बितर करना) उसकी मृत्यु के बाद सुरेश ने सारी संपत्ति **तीन-तेरह कर दी**।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ **तीन पाँच करना**–(झगड़ा करना, टालमटोल करना) **तीन पाँच** क्यों करते हो। उसकी पुस्तक है दे दो।

☞ **तू-तू-मैं-मैं करना**–(कहा-सुनी, झगड़ा करना) स्त्रियों में **तू-तू-मैं-मैं** होना कोई नई बात नहीं है। यह तो हुआ ही करता है।

☞ **तूती बोलना**–(नाम, यश, प्रतिष्ठा होना) चुनाव जीतने के बाद उसकी तूती बोल रही है।

☞ **तेली का बैल**–(परिश्रमी हर समय काम करनेवाला) परीक्षा के दिन हैं। यदि रमेश **तेली का बैल** बना हुआ है, तो इसमें आश्चर्य क्या?

☞ **तोता पालना**–(जानबूझ कर रोब बढ़ाना) तुम वैद्यजी की बताई ओषधि क्यों नहीं लेते? व्यर्थ का **तोता पाल रखा है।**

☞ **तोते की तरह आँखे फेरना**–(कृतघ्न होना) बरसों तक हमारी गहरी दोस्ती रही पर अब पद पाते ही उसने **तोते की तरह आँखें फेर ली हैं।**

☞ **त्राहि-त्राहि करना**–(रक्षा के लिए गुहार करना, गिड़गिड़ाना) **त्राहि-त्राहि करते** हुए शत्रु विजयी सेनापति के चरणों में आ गिरा।

☞ **थाली का बैंगन**–(अस्थिर, डाँवाडोल) वह तो **थाली का बैंगन है।** पहले कांग्रेस में था अब जनता दल में आ गया।

☞ **दम लगाना**–(गाँजा, चरस का सेवन करना) **दम लगाते** ही साधु की आँखें लाल हो गईं।

☞ **दाँत काटी रोटी**–(घनिष्ठ मित्रता) दोनों में **दाँत काटी रोटी** थी पर पता नहीं क्या हुआ अब जान के दुश्मन बन गए हैं।

☞ **दाँत खट्टे करना**–(पराजित करना, हराना) युद्ध में राणा प्रताप ने अकबर के **दाँत खट्टे कर दिए।**

☞ **दाँत निकालना या निपोरना**–(गिड़गिड़ाना, दीनता दिखाना) जब मैंने उसकी चोरी का भंडा फोड़ा तो वह **दाँत निपोरकर रह गया।**

☞ **दाँत पीसना**–(क्रोध करना) अपशब्द और निराधार आक्षेप सुनकर वह **दाँत पीसने लगा।**

☞ **दाँतों तले अँगुली दबाना**–(आश्चर्य करना) जादूगर के करिश्मे देखकर सभी दर्शक **दाँतों तले अंगुली दबाकर** रह गए।

☞ **दामन पकड़ना**–(आश्रय लेना) जिसने मंत्री जी का **दामन पकड़** लिया, वह निश्चिंत हो गया।

☞ **दाल गलना**–(युक्ति सफल होना) जब कहीं **दाल नहीं गली** तो बेचारा फिर मेरे पास आकर विनती करने लगा।

☞ **दाल में कुछ काला होना**–(संदेह, गड़बड़ होना) बार-बार झाँक रहा है। मुझे तो **दाल में कुछ काला** नज़र आता है।

☞ **दाहिना हाथ होना**–(मुख्य सहायक होना) महाविद्यालय में उपप्रधानाचार्य प्रधानाचार्य के **दाहिने हाथ हैं।**

☞ **दिन को तारे दिखाई देना**–(कठिनाई के कारण बुद्धि ठिकाने न रहना, परेशान होगा) प्रश्न पत्र में इतने कठिन प्रश्न थे कि मुझे तो **दिन को तारे दिखने लगे।**

☞ **दिन-रात एक करना**–(कठोर परिश्रम करना) **दिन-रात एक कर** उसने अंतत: आई.ए.एस. में दूसरा स्थान प्राप्त कर ही लिया।

☞ **दिमाग़ आसमान पर चढ़ना**–(बहुत घमंड करना) उसके **दिमाग़ तो आसमान पर चढ़** गए हैं, अब वह किसी की बात नहीं सुनता।

☞ **दिल खट्टा होना**–(विरक्ति होना, मनमुटाव होना) जबसे उसने वचन तोड़ा है, **मेरा दिल उससे खट्टा** हो गया है।

☞ **ईद का चाँद होना**–(बहुत कम दिखाई देना) तुम तो यार **ईद के चाँद** हो गए हो, कई बार घर आया पर मिले ही नहीं।

☞ **दूध की मक्खी**–(तुच्छ और तिरस्कृत व्यक्ति) काम निकलते ही सोहन ने अपने साथी को **दूध की मक्खी** की तरह निकाल बाहर किया।

☞ **धज्जियाँ उड़ाना**–(तीखी आलोचना करना) संसद में विपक्ष के नेता ने प्रधानमंत्री की **धज्जियाँ उड़ा** दीं, बेचारे कोई उत्तर न दे सके।

☞ **धरती पर पैर न रखना**–(घमंड करना) अब वह उच्च अधिकारी बन गया है। **धरती पर पैर ही नहीं रखता।**

☞ **धूल फाँकना**–(मारा-मारा फिरना) नौकरी क्या छूटी, **धूल फाँकनी** पड़ रही है।

☞ **धूल में मिलना**–(सर्वथा नष्ट हो जाना) चोरी करते पकड़ा गया। सारी इज्ज़त **धूल में मिल गई।**

☞ **नमक-मिर्च लगाना**–(बढ़ा-चढ़ा कर कहना) पता नहीं उसने मेरे बारे में पिताजी से क्या **नमक-मिर्च लगाई** है कि वह बोलते ही नहीं।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ **नाक कटना**–(प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल जाना) बेटी घर से भाग गई। बेचारे की **नाक ही कट गई।**

☞ **नाक का बाल होना**–(अत्यंत घनिष्ठ संबंध होना) आजकल रमेश मंत्रीजी का **नाक का बाल** बना हुआ है। वे उसकी हरेक बात मानते हैं।

☞ **नाक पर मक्खी न बैठने देना**–(किसी की परवाह न करना, अकड़े रहना) वह **नाक पर मक्खी नहीं बैठने देता,** सदा गरदन ताने चलता है।

☞ **नाकों चने चबवाना**–(बहुत परेशान करना) मेरा भी नाम नहीं यदि तुम्हें **नाकों चने न चबवा दिए।**

☞ **नानी मर जाना**–(होश उड़ जाना, परेशान होना) रेल के डिब्बे में टिकट चैकर को देखते ही बेटिकट यात्रा करनेवालों की **नानी मर गई।**

☞ **नीला पीला होना**–(बहुत क्रोध करना) इतना **नीला-पीला होने** की ज़रूरत नहीं, लो अपने पैसे और चलते बनो।

☞ **पगड़ी उछालना**–(बेइज्ज़त करना) किसी की **पगड़ी उछालना** ठीक नहीं है, भगवान तुम्हें क्षमा न करेंगे।

☞ **पट्टी पढ़ाना**–(बहकाना, झूठा-सीधा सिखाना) पता नहीं उसकी बहन ने उसे क्या **पट्टी पढ़ाई** है कि मेरा पति मुझसे बोलता तक नहीं।

☞ **पत्थर की लकीर होना**–(अमिट वचन) सत्य हरिश्चन्द्र की बात तो **पत्थर की लकीर थी।** अत: उन्होंने इतने कष्ट सहे।

☞ **पर न मारना**–(प्रवेश न कर पाना) मुलायम सिंह ने कहा कि मस्जिद में कोई **पर भी न मार** सकेगा।

☞ **पलक बिछाना**–(बड़े आदर से स्वागत करना) जनता ने जवाहरलाल नेहरू के स्वागत में अपने **पलक बिछा दिए।**

☞ **पसीने की कमाई**–(बड़े परिश्रम से कमाया धन) यह मेरे **पसीने की कमाई है।** इसे यों लुटता नहीं देख सकता।

☞ **पसीने-पसीने होना**–(बहुत घबरा जाना) परीक्षा में नकल करते पकड़ा गया तो बेचारा **पसीने-पसीने** हो गया।

☞ **पहाड़ टूटना**–(घोर संकट या विपदा आ पड़ना) बैठे-बिठाए बेचारे पर **पहाड़ टूट पड़ा।** किसे पता था कि जवान बेटा यों चल बसेगा।

☞ **पाँव की जूती समझना**–(तुच्छ मानना) भारतीय पति अपनी पत्नी को **पाँव की जूती समझकर** उसका तिरस्कार करते हैं।

☞ **पाँव में सनीचर होना**–(एक जगह न रह पाना, घूमते रहना) उसके **पाँव में तो सनीचर है।** आज यहाँ तो कल वहाँ।

☞ **पाँव भारी होना**–(गर्भवती होना) आजकल शीला के **पाँव भारी हैं,** उससे कहो कि बोझ न उठाए।

☞ **पानी उतारना**–(अपमान करना) साहूकार ने सबके सामने कोड़ों से पीटा और गालियाँ दीं। बेचारे भोलू का **पानी ही उतार दिया।**

☞ **पानी-पानी होना**–(लज्जित होना) चोरी करने के बाद भी जब सेठजी ने अपने नौकर की प्रशंसा की तो वह **पानी-पानी हो गया।**

☞ **पापड़ बेलना**–(कठिनाई सहना, परिश्रम करना) बड़े **पापड़ बेले हैं** जब जाकर कहीं हिल्ले से लगा है।

☞ **पीठ दिखाना**–(कायरता से युद्धभूमि से भाग खड़ा होना) क्षत्रिय **पीठ दिखाना** पाप समझते थे।

☞ **पेट का पानी न पचना**–(किसी रहस्य को न छिपा सकना, कह देना) तुमने भी किसको अपना रहस्य बता दिया? उसके **पेट में पानी नहीं पचता।**

☞ **पेट पर लात मारना**–(जीविका छीन लेना) नौकर गिड़गिड़ाकर बोला, "मालिक **पेट पर लात मत मारिए,** मेरे बीबी-बच्चे भूखों मर जाएँगे।"

☞ **पेट में घुसना**–(रहस्य जानने के लिए मेलजोल बढ़ाना) पहले तो **पेट में घुस गया** और अब उसका मज़ाक उड़ाता फिरता है। ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिए।

☞ **पेट में चूहे कूदना**–(बहुत भूखा होना) बारह घंटे से एक दाना भी मुँह में नहीं गया। **पेट में चूहे तो कूदेंगे ही।**

☞ **पैर उखड़ जाना**–(टिक न सकना) राजपूतों का शौर्य देखकर मुगल सेना के **पैर उखड़ गए।**

☞ **पौ बारह होना**–(सफल होना) **पौ बारह होने दो,** सबको मिठाई खिलाऊँगा।

☞ **पौने सोलह आना**–अधिकाँश, मेरा मत **पौने सोलह आना** सच निकला। उसको पचहत्तर प्रतिशत वोट मिले हैं।

☞ **फटे में पाँव देना**–(दूसरे की विपत्ति में स्वयं को झोंकना) तुम्हें दूसरों के **फटे में**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँव देने की आदत है। अब दारोगा जी को रिश्वत देनी पड़ेगी तब छूटोगे।

☞ **फूँक से पहाड़ उड़ाना**–(असंभव काम करने का प्रयास करना) उसे अपने वचन से डिगाना **फूँक से पहाड़ उड़ाने** की तरह है।

☞ **फूटी आँखों से न देख सकना**–(ईर्ष्या करना, डाह करना) वह अपने सौतेले बेटे को **फूटी आँखों से नहीं** देख सकती। सदा उसमें दोष निकालती रहती है।

☞ **फूलकर कुप्पा हो जाना**–(अत्यधिक प्रसन्न होना या गर्व करना) अपने नाम लॉटरी निकलने की खबर पाते ही सोहन **फूल कर कुप्पा** हो गया।

☞ **फूलों की सेज**–(सरल और सुखदायक कार्य) देश की आज़ादी पाने और शोषण के विरुद्ध लड़ना **फूलों की सेज** नहीं है, सिर पर कफन बाँधना पड़ता है।

☞ **बखिया उधेड़ना**–(पोल खोलना, कटु आलोचना करना) संसद में विपक्षी दल के नेता ने शिक्षा मंत्रालय के कार्यों की **बखिया उधेड़** कर रख दी।

☞ **बग़लें झाँकना**–(निरुत्तर हो जाना, बचाव का रास्ता ढूँढ़ना) न्यायालय में वकील सहाब के प्रश्न सुनकर धूर्त रामू **बग़लें झाँकने** लगा।

☞ **बगुला भगत होना**–(ढोंगी होना, दुर्जन होते हुए भी सज्जनता का स्वांग रचना) भोलूराम बड़ा **बगुला भगत** निकला। गांधी टोपी और जवाहर वास्कट पहनकर देशभक्त बनता था, अब पता चला कि वह अंग्रेज सरकार का भेदिया है।

☞ **बला मोल लेना**–(विपत्ति को निमंत्रण देना, जानबूझकर झमेले में पड़ना) पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध अख़बार में लिखना **बला मोल लेना है**, वे बदला लेकर रहते हैं।

☞ **बाँछें खिलना**–(बहुत प्रसन्न होना) यकायक अपने घनिष्ठ मित्र को देखकर हरीराम की **बाँछें खिल गईं**।

☞ **बाग-बाग होना**–(बहुत खुश होना) अपने यहाँ पुत्र-जन्म का समाचार पाते ही बूढ़ी दादी **बाग-बाग हो उठी**।

☞ **बात का बतंगड़ करना**–(छोटी बात को बढ़ा-चढ़ा कर झगड़ा करना) लड़कों ने शरारत की थी, तो डाँट देते, झगड़ा मिट जाता, ज़रा-सी **बात का बतंगड़** क्यों बना रहे हो?

☞ **बाएँ हाथ का खेल**–(बहुत सरल काम) यह तो मेरे **बाएँ हाथ का खेल** है। चुटकी बजाते ही प्रश्न हल कर दूँगा।

☞ **बाल की खाल निकालना**–(छोटी-छोटी बातों पर बहस करना, छोटी-छोटी गल्तियाँ निकालना) **बाल की खाल निकालने** की तो उसकी आदत है। इतने दु:खी क्यों होते हो?

☞ **बाल बाँका न होना**–(तनिक भी हानि न होना) सात मंजिल से गिरा पर तनिक भी चोट नहीं आई। सच कहा है जाको राखै साँइयाँ **बाल न बाँका होई**।

☞ **बाल-बाल बचना**–(जान बचना) आतंक-वादियों ने सड़क के नीचे बारूदी सुरंग बिछा रखी थी अत: विस्फोट तो हुआ पर वह **बाल बाल बच गया**।

☞ **बिना पैंदी का लोटा**–(अस्थिर, चंचल मनवाला व्यक्ति) कासिम **बिना पैंदी का लोटा है**, कल तक जनता दल में था, आज भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गया।

☞ **बिल्ली के गले में घंटी बाँधना**–(खतरे का काम करना) सब जानते थे कि कोठरी में पिस्तौल लिए डाकू छिपा है, पर भीड़ में कोई ऐसा माई का लाल न निकला जो **बिल्ली के गले में घंटी बाँधने** का साहस करता।

☞ **बीड़ा उठाना**–(किसी काम को करने का दृढ़ संकल्प करना) राजपूतों ने **बीड़ा उठा** लिया कि मुग़लों को युद्ध में पराजित करने के बाद ही घर लौटेंगे।

☞ **बेपर की उड़ाना**–(निराधार बातें करना, गप्प मारना) उसकी बातों पर विश्वास मत करो। उसे तो **बेपर की उड़ाने** में मज़ा आता है।

☞ **बेभाव की पड़ना**–(बहुत मार खाना) चोर के पकड़े जाने पर उस पर इतनी **बेभाव की पड़ी** कि चाँद गंजी हो गई।

☞ **बोरिया-बँधना, उठाना**–(जाने की तैयारी करना) अब इस नौकरी से मन भर गया। चौबीसों घंटे की हाय-हाय से मैंने निश्चय कर लिया है कि कल प्रात:काल ही **बोरिया-बँधना** उठाकर अपने घर चला जाऊँगा।

☞ **भंडा फोड़ना**–(भेद खोलना) वह मोटेराम की गालियाँ चुपचाप सुनता रहा क्योंकि उसे डर था कि वह उसका **भंडा फोड़ देगा** और उसे लज्जित होना पड़ेगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ **भगीरथ प्रयत्न करना**–(भारी प्रयास करना) पंचवर्षीय योजना को सफल बनाने के लिए हम सबको मिलकर **भगीरथ प्रयत्न** करना होगा।

☞ **भाड़ झोंकना**–(व्यर्थ परिश्रम करना, व्यर्थ समय गँवाना) बारह वर्ष राजधानी में रहकर भी कुछ न कमाया! क्या **भाड़ झोंकते रहे?**

☞ **भाड़े का टट्टू**–(रुपया पाकर काम करने वाला) **भाड़े का टट्टू** यह काम नहीं कर सकते। इसके लिए समर्पित एवं निष्ठावान् व्यक्तियों की आवश्यकता है।

☞ **भीगी बिल्ली बनना**–(भय या स्वार्थ के कारण नम्र एवं दीन बन जाना) वह अपनी अकड़ तथा झूठी शान के लिए विख्यात है पर जब बेटे की नौकरी का सवाल आया तो **भीगी बिल्ली बन गया।**

☞ **भैंस के आगे बीन बजाना**–(मूर्ख एवं अयोग्य व्यक्ति के सामने कला का प्रदर्शन करना) वह धनवान अवश्य है पर संगीत-कला से पूर्णत: अनभिज्ञ है। बागेश्वरी राग में गाना **भैंस के सामने बीन बजाना** है।

☞ **मक्खी निगलना**–(जान बूझकर कोई अनुचित कार्य करना या सहना) भाई! मैं यह अन्याय नहीं करूँगा। मुझसे **मक्खी नहीं निगली** जाती।

☞ **मक्खी मारना**–(बेकार रहना, कुछ न करना) यहाँ **मक्खी ही तो मार** रहे हो। चलो मेरे साथ कुछ न कुछ पैसा तो मिल ही जाएगा।

☞ **मज़ा चखाना**–(अपराध का दंड देना) ऐसा **मज़ा चखाऊँगा** कि जीवनभर याद रखेगा।

☞ **मन का मैला**–(खोटा, कपटी, दुर्भाव रखनेवाला) वह बातें तो बड़ी मीठी करता है, पर है **मन का मैला**। अत: सावधान रहना।

☞ **मन खट्टा होना**–(बुरा लगना) दहेज में सबकुछ आया पर कार न थी। अत: सेठजी का **मन खट्टा हो गया।**

☞ **मन फटना**–(अरुचि होना) उस दिन के झगड़े के बाद दोनों के **मन फट गए हैं।**

☞ **महाभारत मचाना**–(खूब झगड़ा-झंझट करना) **घर में महाभारत मचा है,** कोई किसी की नहीं सुनता।

☞ **माथा ठनकना**–(दुर्घटना की शंका करना) मेरा **माथा तो तभी ठनका** था जब वह कार की चाबी माँगने आया था। वही हुआ, दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई।

☞ **माथापच्ची करना**–(व्यर्थ समझाना, सिर खपाना) वह मूर्ख ही नहीं ज़िद्दी भी है। लाख **माथापच्ची करो** वह वही करेगा जो उसकी इच्छा होगी।

☞ **माथा रगड़ना**–(खुशामद करना, अनुनय-विनय करना) वह कई दिन तक उनकी देहली पर **माथा रगड़ता** रहा परंतु वह नहीं पसीजे और उसपर जुर्माना कर ही दिया।

☞ **मिट्टी खराब करना, मिट्टी पलीत करना**–(दुर्गति करना) उसके बेटे ने अपने कुकर्मों से स्वयं तो कष्ट पाए ही अपने पिता की **मिट्टी भी ख़राब कर दी।**

☞ **मीनमेख निकालना**–(नुक्ताचीनी करना, छोटी-छोटी बात के लिए आलोचना करना) उसका तो स्वभाव ही **मीनमेख निकालना** है। बेकार भावुक मत बनो और जाकर आराम करो।

☞ **मुँह काला होना**–(बदनाम होना, कलंक लगना) चुपचाप रिश्वत में लिए पैसे लौटा दो वर्ना **मुँह काला हो जाएगा।**

☞ **मुँह की खाना**–(पराजित होना) आस्ट्रेलिया की विश्वविजयी क्रिकेट की टीम को भारत की टीम के आगे **मुँह की खानी** पड़ी तो सारी शेख़ी धूल में मिल गई।

☞ **मुँहतोड़ जवाब देना**–(अपने उत्तर से प्रतिपक्ष को निरुत्तर कर देना) मेरे सामने आकर जो कहना है कहे। ऐसा **मुँहतोड़ जवाब दूँगा** कि बच्चू को छठी का दूध याद आ जाएगा।

☞ **मुँह में खून लगना**–(चस्का पड़ जाना) अब तो चपरासी के **मुँह में खून लग गया** है। जब तक पाँच रुपये का नोट न दो, वह भीतर जाने नहीं देता।

☞ **मुँह में पानी भर आना**–(ललचाना) रुपयों की थैली देखकर उस ईमानदार कर्मचारी के **मुँह में भी पानी भर आया।**

☞ **मुट्ठी गरम करना**–(रिश्वत देना) जब तक **मुट्ठी गरम नहीं** करोगे, मकान का नक्शा पास नहीं होगा।

☞ **मेंढकी को जुकाम होना**–(इतराना, घमंड करना) कल तक भीख माँगता फिरता था, अब बेटा कलक्टर हो गया तो किसी को कुछ नहीं समझता, **मेंढकी को जुकाम हो गया है।**

☞ **म्याऊँ की ठौर**–(खतरनाक काम) उससे रिश्वत लेकर काम करने की बात कहना बड़े साहस का काम है। कौन **म्याऊँ की ठौर जाए।**

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ **रंग जमाना**–(प्रभाव डालना, धाक जमाना) उसने अधिकारियों पर अपनी पोशाक तथा बातचीत करने के ढंग से ऐसा **रंग जमाया** है कि अब उसे कुलीन समझकर उसका आदर करते हैं।

☞ **रंग में भंग करना**–(विघ्न डालना) राम के राज्याभिषेक का समाचार सुन मंथरा के तन-बदन में आग लग गई और उसने कैकेयी को ऐसी पट्टी पढ़ाई कि **रंग में भंग हो गया।**

☞ **रंगा सियार**–(कपटी व्यक्ति) गेरुए वस्त्र पहन, रुद्राक्ष की माला तथा कमंडल लिए रामानंद महात्मा लगता था, पर जब कल रात उसने युवती को छेड़ा तो पता चला कि वह तो **रंगा सियार है।**

☞ **राई से पर्वत बनाना**–(छोटी सी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना) **राई से पर्वत बनाना** उसकी पुरानी आदत है। इसी आदत के कारण मैं उसको कई बार झिड़क चुका हूँ पर बाज़ नहीं आता।

☞ **रोटियाँ तोड़ना**–(निकम्मा होकर दूसरे के यहाँ रहना) ससुराल में **रोटियाँ तोड़ रहा है।** एक न एक दिन अवश्य अपमानित होकर निकाला जाएगा।

☞ **लंगोटिया यार**–(बचपन का मित्र, घनिष्ठ मित्र) हम आप तो बचपन के दोस्त, हैं, **लंगोटिया यार** हैं, एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं।

☞ **लंबी तानना**–(निश्चिंत होकर सोना) चुनाव जीतने के बाद अब सोहनलाल **लंबी तानकर** सो रहा है।

☞ **लकीर का फकीर होना**–(पुरानी रूढ़ियाँ एवं परिपाटी माननेवाला) समय के साथ बदलो। **लकीर का फकीर** बने रहे तो देश पिछड़ जाएगा।

☞ **लट्टू होना**–(मुग्ध होना, आसक्त होना) मैं तो अपनी भावी पत्नी को देखते ही उसपर इतना **लट्टू हो गया** कि तुरंत विवाह की स्वीकृति दे दी।

☞ **लाख टके की बात**–(बहुत उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सुझाव) चौधरी लखनपाल ने **लाख टके की बात** कही है। उसे मानो और झगड़ा ख़त्म करो।

☞ **लुटिया डुबोना**–(काम चौपट करना, अपयश का काम करना) जुए-सट्टे में सबकुछ गँवा कर उसने तो परिवार की **लुटिया ही डुबो दी।**

☞ **लेने के देने पड़ना**–(भारी नुकसान उठाना, लाभ के बदले हानि होना) गए थे करोड़पति बनने पर ऐसा काम बिगड़ा कि **लेने के देने पड़ गए हैं।**

☞ **लोहा मानना**–(किसी की शक्ति या प्रभुत्व स्वीकार करना) उसने ऐसी चाल चली कि सारी वोटें उसके पक्ष में पड़ीं और विपक्षी दल वाले उसका **लोहा मान गए।**

☞ **लोहा लेना**–(युद्ध करना, संघर्ष के लिए तैयार होना) किस में इतना साहस कि जग्गू पहलवान से **लोहा ले?**

☞ **लोहे के चने चबाना**–(बहुत कठिन काम करना) आचार्य शुक्ल के निबंधों को समझना **लोहे के चने चबाना है।**

☞ **विष की गाँठ**–(उपद्रव या बुराई की जड़) वह तो **विष की गाँठ** है, उसको मत, छेड़ो।

☞ **शैतान की खाला**–(दुष्ट, झगड़ालू स्त्री) तुम उसे नहीं समझते, वह **शैतान की खाला** है अत: उससे बचते रहो।

☞ **श्री गणेश करना**–(कार्य प्रारंभ करना) **श्री गणेश करो,** शुभस्य शीघ्रम्।

☞ **सफेद झूठ**–(एकदम झूठी बात) **वह सफेद झूठ बोलता है।** मेरे सामने उसने करीम से रुपए उधार लिए थे।

☞ **सिर-आँखों पर बिठाना**–(आदर-सत्कार करना) उसके समान अतिथि-सत्कार करनेवाला दूसरा नहीं है। कोई भी आ जाए **सिर आँखों पर बिठाकर** उसकी आवभगत करता है।

☞ **साँप सूँघ जाना**–(जड़ हो जाना, चुप्पी साध लेना) मैंने जब किताब माँगी तो ऐसे चुप हो गया मानो **साँप सूँघ गया हो।**

☞ **सिर धुनना**–(पश्चात्ताप करना) पहले तो पिताजी की बात मानी नहीं और दिन-रात दोस्तों के साथ घूमता रहा अब परीक्षा में फेल हो गया तो **सिर धुन रहा है।**

☞ **सिर मुँड़ाते ही ओले पड़ना**–(कार्य आरंभ करते ही विघ्न पड़ना) कल ही छप्पर डलवाया था पर रात को इतने ज़ोर की आँधी आई कि उड़ गया। **सिर मुँड़ाते ही ओले पड़े।**

☞ **सुर्खाब के पर लगना**–(कोई विशेषता होना) उसमें क्या **सुर्खाब के पर लगे हैं** जो इतनी चापलूसी करते रहते हो?

☞ **सूरज को चिराग़ दिखाना**–(किसी अति गुणवान व्यक्ति की तुलना किसी अपेक्षाकृत

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीन व्यक्ति से करना) राहुल सांकृत्यायन इतने प्रकांड पंडित थे कि उनका परिचय देना **सूरज को दीपक दिखाना** होगा।

☞ **सोना बरसना**–(बहुत अधिक धन या आय होना) जब से नई दुकान खोली है, **सोना बरस रहा है।**

☞ **सोने की चिड़िया**–(बहुत संपन्न, समृद्ध होना) भारत **सोने की चिड़िया** कहलाता था, पर अब अधिकांश लोग गरीबी की रेखा पर हैं।

☞ **सोने में सुगंध होना, सोने में सुहागा होना**–(किसी अच्छे काम या वस्तु में कोई और अच्छाई जुड़ जाना) तुम्हारे साथ तुम्हारी पत्नी भी आ गईं। यह तो **सोने में सुगंध और सोने में सुहागा हो गया।**

☞ **हड्डी-पसली एक करना**–(बहुत पीटना) चोर को पकड़कर घरवालों ने उसकी **हड्डी-पसली एक कर दी।**

☞ **हथेली पर सरसों जमाना**–(जल्दी से काम होना) धैर्य रखो, कुछ समय लगेगा। **हथेली पर सरसों नहीं जमती।**

☞ **हरी झंडी दिखाना**–(काम शुरू करने का संकेत देना) अब मंत्रालय से **हरी झंडी मिल** गई है। बस एक-दो दिन में ही काम शुरू कर दूँगा।

☞ **हवा के घोड़े पर सवार होना**–(जल्दबाज़ी करना) सदा **हवा के घोड़े पर सवार** रहता है। कहीं इतनी जल्दी काम पूरा होता है।

☞ **हवाई किले बनाना**–(निराधार कल्पना करना, काल्पनिक योजना बनाना) **हवाई किले बनाता** रहता है, जीवन में सफल होने के लिए व्यावहारिक एवं परिश्रमी बनना होता है।

☞ **हाथ खाली होना**–(धन न होना) इन दिनों मेरा **हाथ बिल्कुल खाली है।** मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता।

☞ **हाथ धोकर पीछे पड़ना**–(बहुत सताना) सास-ससुर दहेज़ के कारण बेचारी बहू के पीछे **हाथ धोकर पड़ गए हैं** और पति महाशय चुप बैठे रहते हैं।

☞ **हाथ पाँव फूलना**–(घबरा जाना) पुलिस के सिपाही के देखते ही बेचारी बुढ़िया के **हाथ-पाँव फूल गए** और वह गिड़गिड़ाने लगी।

☞ **हाथ साफ करना**–(ठगना, चोरी करना) एक क्षण को बाहर गया था, पता नहीं किसने **हाथ साफ कर दिया।** सारी रकम गायब है।

☞ **हाथों के तोते उड़ जाना**–(भौंचक्का होना या घबरा जाना) श्याम ने तिजोरी खोली तो उसमें एक भी पैसा न था। यह देखते ही उसके **हाथों के तोते उड़ गए।**

☞ **हिरन हो जाना**–(भागना, लुप्त हो जाना) सामने अचानक पिताजी को देखा तो उसका नशा **हिरन हो गया।**

☞ **होम करते हाथ जलना**–(अच्छा काम करते नुकसान उठाना) बेचारे चुन्नू को पुलिस की मार से बचा रहा था, उन्होंने मुझे ही गाली देना शुरू कर दिया। **होम करते हाथ जलना** इसी को कहते हैं।

☞ **होश ठिकाने लगाना**–(सीधे रास्ते पर लाना) बहुत गाली-गलौच मत करो वर्ना एक चाँटे में **होश ठिकाने लगा दूँगा।**

☞ **हौसला पस्त होना**–(हिम्मत टूट जाना, जोश कम हो जाना) बड़े उत्साह से काम शुरू किया था पर पहले दिन ही दो हज़ार रुपए का नुकसान देख उसका **हौसला पस्त हो गया।**

●●●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

English Proverbs' with their Hindi Meanings

अंग्रेज़ी तथा हिन्दी की कहावतें

☞ अ ☜

अंत भले का भला–All is well that ends well.
अक्ल बड़ी या भैंस–Knowledge is better than mere strength.
अक्ल के पीछे डंडा लिए फिरते हैं–He demands tribute of the dead.
अँखिया सुख कलेजा ठंडा–Bright to sight heart's delight.
अज्ञानी किसी से नहीं डरते–They that know nothing fear nothing.
अज्ञानी धन और ज्ञानी गुण चाहता है–The foolish seek for wealth and the wise for perfection.
अंधे के आगे राए अपना दीदा खोए–Throwing pearls before swine.
अंधों में काना राजा–A figure among cyphers.
अधजल गगरी छलकत जाय, भरी गगरिया चुप्पे जाय–Deep rivers move with silent, majesty shallow brooks are noisy.
अपना मकान कोट समान–Everyman's house is his castle.
अपना तोसा अपना भरोसा–Everyone must stand on his own legs.
अपना पूत सबही को प्यारा, अपने दही सब मीठा कहते हैं–Every potter praises his pot.
अपने मुँह मियाँ मिट्ठू–Fool to others, to himself a sage.
अपनी मर्यादा अपने हाथ–Respect yourself and you will be respected.
अपनी दही को कोई खट्टा नहीं कहता–Every potter praises his own pot.
अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने से काम नहीं चलता–Self praise is no recommendation.
अपने घर में कुत्ता भी शेर होता है–Every dog fights best on his own house.
अपमान भरा जीवन मौत से भी बुरा है–Dishonour is worse than death.
अवसर को कभी न गँवाओ, समय का उचित उपयोग करो–Strike the iron while it is hot.
अपनी इज्जत अपने हाथ–Respect yourself and you will be respected.

☞ आ ☜

आगे दौड़ पीछे चौड़–Haste makes waste.
आप भला तो जग भला–Good mind, good find.
आप मरे जग लोप–Death's day is Doomsday.
आप सुखी तो जग सुखी–He, that is warm, thinks all are so.
आप काज महा काज–Better do a thing than wish it to be done.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप मरे जग प्रलय–When I am dead, the world is gone.
आपका जूता आपका सिर–To try one in one's own Greece.
आग लगने पर कुँआ खोदना उचित नहीं, अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत–It is too late to lock the stable-door when the steed is stolen.
आदमी की कदर मरे पीछे–A man's worth is known after his death.
आदत प्रकृति बन जाती है–Habit is the second nature.
आधी छोड़ सारी को धावै, आधी रहै न सारी पावै–Quit not certainty for hope.
आज ऐसा क्यों करें कि कल पछताना पड़े–Do not do today what you will repent tomorrow
आय लिए की लाज–A bargain is after all a bargain..
आया न घाव वैद्य बुलाओ–Call not a surgeon before you are hurt.
आम के आम गुठलियों के दाम–Earth's joys and heaven's combined.
आवश्यकता में सभी कुछ उचित है–Necessity knows no law.
आशीर्वाद विपत्ति हटाने को होता है–Blessings are not relieved till they are gone.
आसमान का थूका मुँह पर पड़ता है–Puff not against the wind.
आहार व्यवहार में लज्जा क्या–Fair exchange is not robbery. Fair bottle leave no bitterness behind.

☞ इ ☜

इलाज से बचाव अच्छा–Prevention is better than cure.
इस हाथ दे उस हाथ ले–Early sow, early mow.

☞ ई ☜

ईश्वरेच्छा बलीयसी–God's will be done.

☞ उ ☜

उतावला सो बावला–Hurry spoils curry. Marry in haste repent at leisure.
उपदेश करने से स्वयं करना भला–Example is better than precept.
उतने पाँव पसारिए जितनी चादर होए–Cut your coat according to your cloth.
उधार स्नेह की कैंची है–He that does lend does lose a fore friend.
उलटे बाँस बरेली को–To carry coal to New Castle.
उसकी अक्ल चरने गई है–His wits are gone a wool-gathering.

☞ ऊ ☜

ऊँट के मुँह में जीरा–A drop in the ocean.
ऊँची दुकान फीका पकवान–Great cry little wool.
ऊँची दुकान फीकी पकवान–Much cry and little wool.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ ए ☜

एक सड़ी मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है–A rotten fish pollutes the whole pond.
एक हाथ से ताली नहीं बजती–It takes two to make a quarrel.
एक पंथ दो काज, एक तीर से दो शिकार–Killing two birds with one stone.
एक फूल से माला नहीं बनती–One flower makes no garland.
एक पंथ दो काज–To kill two birds with one stone.
एक म्यान में दो तलवार नहीं समातीं–Two of a trade seldom agree.
एक ही साँचे में ढले हैं–Cast in the same mould.
एक रंग की चिड़िया उड़ी–Birds of a feather flock together.
एक परहेज सौ इलाज–Diet cures more than doctors.
एक नजर सौ नसीहत–Example is better than precept.
एक परहेज लाख दवा–Temperature is the best physic.
एक ही थैले की चट्टे-बट्टे–Cast in the same mould.
एक अनार सौ बीमार–One post and one hundred candidates.
एक कान से सुनो और दूसरे कान से उड़ा दो–In at one ear and out at the other.
एकता ही बल है–Union is strength.

☞ ओ ☜

ओस चाटे प्यास नहीं बुझती–A fog cannot be dispelled by a fan.
ओछे के पेट में बात नहीं पचती–Children and fools tell the truth.

☞ औ ☜

औरत की बात का क्या विश्वास–A winter's wind.

☞ क ☜

कभी हताश न हो–Despair loses all.
खर्चा कम बाला नशीन–Small cost and great show.
कर काम ले दाम–No miles no meals.
करने की सौ राह–Where there is a will there is a way.
कर बुरा तो हो बुरा–Do evil and look for like.
कुछ नहीं से थोड़ा भला, नाहीं मामा से काना मामा अच्छा–Half a loaf is better than no bread.
कर भला तो हो भला–He who would sow well, must reap well.
काम को काम सिखलाता है–It is work that makes a workman.
कानी के ब्याह को नौ सौ जोखिम–Many a slip between the cup and the lip.
काँटे से काँटा निकलता है–One nail drives out another.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमीने मित्र से सदा भय–Friendship with mean fellow is always dreadful.
कहना और करना और–Deeds are fruits, words are but leaves.
कहीं बूढ़े तोते भी पढ़ते हैं?–Can you teach an old woman to dance?
कल किसने देखा–Tomorrow never comes.
कहीं गधा भी घोड़ा बन सकता है–Can the Ethopian change his skin.
काठ की हंडिया एक ही बार चढ़ती है–It is the silly fish that is caught with the same bait.
A cheating play never thrives.
काम ही कारीगर बनाता है–Practice makes perfect.
काली माँ के गोरे बच्चे–A black hen lays white eggs.
काम प्यारा होता है चाम नहीं–Handsome is that handsome does.
काल के गाल में सब चले जाते हैं–Time devours everything.
कुम्हारी अपने बर्तन सराहती है–Every potter praises his own pot.
कुत्ते की पूँछ टेढ़ी ही होती है–Curst cows have short horns.
कुत्ते को कभी घी हजम नहीं होता–A low-born person feels proud of his honours.
कुत्ता भूँके तो चंद्रमा को क्या–The moon does not heed the barking dog.
कुत्ते के भी दिन फिरते हैं–Every dog has his day.
कौन है जिससे कि गलती नहीं होती–Even a good horse stumbles.
कौन सा सुख ऐसा नहीं जिसमें दुःख न होए–No joy without alloy.
क्या बूढ़े तोते भी पढ़ते हैं–An old dog will learn no tricks.
क्या अक्ल चरने गई है–Wits have gone wool-gathering.

ख

खरी मजूरी चोखा काम–A good servant should have good wages.
खाने में भी क्या शरमाना–Never feel shy to eat your meal.
खीर पीछे खाँड़–After meat mustard.
खेती खसम सेती–The master's eye makes the mare fat.

ग

गँवार गन्ना न दे भेली दे–Penny wise, pound foolish.
गया वक्त फिर हाथ नहीं आता–Time and tide wait for no man.
गरीब की जोरू सबकी भाभी–A light purse is a heavy curse.
गरीबी में आटा गीला–Misfortunes seldom come alone.
गोली अंदर दम बाहर–Pill in and breath out.
गेरुए वस्त्रों से कोई साधू नहीं बनता–Cowl does not make a monk.
गुड़ न दे गुड़ जैसी बात कह दे–A good word costs nothing.
गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है–When the buffaloes fight crops suffer.
गाय मारकर जूता दान–To rob Peter to pay Paul.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ घ ☜

घोड़े का सवार भी गिरता है, बड़े-बड़े भी चूक जाते हैं–Good marksman may miss.
घर का जोगी जोगना आन गाँव का सिद्ध–A prophet is not honoured in his own country
घर में सूत न कपास, जुलाहे से लट्ठम-लट्ठा–Count not your chicken before they are hatched.
घर की आधी भली बाहर सारी नहीं–Dry bread at home is better than sweetmeat abroad.
घर घोड़ा नकास मोल–To count one's chickens before they are hatched.
घर का भेदी लंका ढावे–Traitors are the worst enemies.
घायल की गति वैद्य क्या जाने–The wearer best knows where the shoe pinches.

☞ च ☜

चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरा पाख–A nine day's wonder.
चिंता चिता के समान है–Grief is the canker of heart.
चिराग तले अँधेरा–Near the church further from heaven.
चोर-चोर मौसेरे भाई–Birds of a feather flock together.
चोर-चोर मौसेरे भाई–Like draws like.
चोरी का सामान लेनेवाला भी चोर–The receiver is as bad as the theirf.
चोरी का धन मोरी में जाता है–Ill gotten goods seldom prosper.
चूहा मारकर गोबर सूँघना–He breaks his wife's head and then buys a plaster for it.

☞ ज ☜

जब तक साँस है तब तक आस है–As long as there is life, there is hope.
जब अपनी उतार दी तो दूसरे की उतारते क्या देर–Beware of him who regards not his reputation.
जब तक तो साँप का काटा मर जाएगा जब तक जहरमोहरा आएगा–The steed will die, until the grass grows.
जुबान को लगाम देना जरूरी है–A bridle for the tongue is a necessary piece of furniture.
जुबान कैंची के जैसी चलती है–His tongue runs on wheels.
जुबान तलवार से भी तेज चलती है–Tongue is not steel but cuts deeper.
ज़र, ज़ोरू और ज़मीन लड़ाई की जड़ हैं–Money, woman and land are the roots of all troubles.
ज़ल्दी का कार्य अच्छा नहीं होता–Quick and well do not go well together.
जहाँ फूल होता है वहाँ काँटा जरूर होता है–No rose without a thorn.
ज़रूरत के समय गधे को बाप बनाना पड़ता है–The needy stoops to everything however mean.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानबूझकर कुएँ में कूदना–To run against the point of spear.
जिस काम को रोका जाए उसी को जी चाहे–From prohibition desires increase.
जिस कार्य की ओर ध्यान दो वही खराब हो जाता है–Bussiness neglected, business lost.
जिसके पास गेहूँ नहीं होता वह चने की रोटी से ही खुश रहता है–They that have no other meat, bread and butter are glad to them.
जितना अधिक धन उतनी अधिक चिंता–Much coin, much care.
जैसा बर्ताव चाहते हो वैसा आप भी करो–Do as you would be done.
जैसा फल बोओगे वैसा फल पाओगे–As you sow, so you will reap.
जैसा देश वैसा ही भेष–When you go to Rome, do as the Rromans do.
जैसा राजा वैसी प्रजा–As the king so are the subjects.
जैसी करनी वैसी भरनी–As you sow, so you reap.
जो गरजते हैं सो बरसते नहीं–Barking dogs seldom bite.
जो होना था वह हो चुका–What is done is done.
जो आएगा वह अपना सिक्का चलाएगा–New lords, new laws.
जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय–Whom God keeps no frost can kill.
जैसे आया वैसे गया–Evil gotten, evil spent.
जल में रहकर मगर से बैर करना उचित नहीं–It is hard to live in Rome and to fight with the Pope.
जस बाप, तस बेटा–Like father, like son.
जितने नर उतनी बुद्धि, नाना मुनि नाना मति–Many men, many minds.
जिसकी लाठी उसकी भैंस–Might is right.
जाके पाँव न फटी बेवाई सो का जाने पीर पराई–No one knows the weight of another's burden.
जिसका दु:ख वही जानता है, जाके तन ना फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई–The wearer best knows where the shoe pinches.
जैसे को तैसा, शठे शाठ्यम्–Tit for tat.

☞ झ ☜

झूठे याद करने की शक्ति तेज होती है–A liar should have a good memory.

☞ ट ☜

टालमटोल समय का चोर होता है–Procrastination is the thief of time.

☞ ठ ☜

ठण्डा करके खाना चाहिए–Blow first and sip afterwards.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ ड ☜

डण्डा सबका पीर–Rod tames every brute.
डायन को भी दामाद प्यारा होता है–It is a hard winter when dogs eat dogs.
डूबते को तिनके का सहारा–Drowning man catches at straw.
डौला–डौल की मिट्टी खराब–A rolling stone gathers no moss.

☞ त ☜

तुख्म–तासीर सोहबत का असर–Kid after kid.
तुरंत दान महाकल्याण–He gives thrice who gives in a trice.
तेतो पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर–Cut your coat according to your cloth.
तुम हमको हम तुमको–Claw me and I will claw thee.
तीन का तेरह होना–To be at sixes and sevens.
तेल को देखो और तेल की धार को देखो–See which way the wind blows.
तेल के डालने से आग नहीं बुझा करती–Casting oil into the fire is not the way to extinguish it.
तंदुरुस्ती हजार नियामत–Good health is above wealth.

☞ थ ☜

थोथा चना बाजै घना–An empty vessel sounds much.
थोथे वृक्ष पर कोई नहीं बैठता है–In times of prosperity friends are plenty; In times of adversity not one in twenty.

☞ द ☜

दयानतदारी सबसे अच्छी रीति है–Honesty is the best policy.
दाम कराए कम–Money makes the man run.
दाल में काला है–There is something black.
दीवारों के भी कान होते हैं–Hedges have eyes and walls have ears.
दुर्बल में गुस्सा अधिक होता है–A little pot is soon hot.
दूध का दूध का पानी का पानी–Oil and truth must come out.
दिए का उजाला अंत तक–Whatever is given to the poor is laid up in heaven.
दु:ख भोगे बिना सुख कहाँ–Grief lengthens the hour.
दूर के ढोल सुहावने होते हैं–Distant drums sound well.
दूसरों की कमियाँ निकालना–To pick holes in the coat.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखते हैं कि ऊँट किस करवट बैठता है–Let us see which way the wind blows.
दूध का जला छाँछ या मट्ठा फूँककर पीता है–A burnt child dreads the fire.
दान की बछिया का दाँत नहीं देखा जाता–Beggars cannot be choosers.
दुविधा में दोनों गए, माया मिली न राम–Between two stools we come to the ground.
दरिद्रता कलह की जड़ है, गरीबी झगड़े की जड़ है–Poverty breeds strife.
दु:ख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय–Vows made in storm are forgotten in calm.

ध

धन से धन कमाया जाता है–Money begets money.
धन ईश्वर से बढ़कर है–Mammon has more worshippers than God.
धन सभी को अंधा बना देता है–Gold is the dust that blinds all eyes.
धूप में बाल सफेद नहीं करे हैं–Wisdom is the daughter of old age.
धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का–Whistling maid and crowing hen are neither fit for gods nor men.

न

नया नौ दिन और पुराना सौ दिन–New brooms are not better than old ones.
न कुत्ता देख न भौंके–A blind dog won't bark at the moon.
न आए की खुशी न गए का गम–If rich be not elected, if poor be not dejected.
नकल में अकल क्या–Imitation has not intelligence.
न घर का रहा न घाट का–Neither fish in or fowl.
न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी–If the sky falls we shall gather larks.
नाक की सीध में चलते जाना–To follow one's nose.
निर्धन के बच्चे ही उसका धन होते हैं–Children are treasures to the poor.
नेक नाम अमीरी से अच्छा है–A good name is better than riches.
नौ-सौ चूहे खाके बिल्ली हज को चली–Singing all the days in the week and going to church on Sunday.
नाच ना आवे अँगनवे टेढ़–A bad workman quarrels with his tools.
नव नगद न तेरह उधार–A bird in hand is worth two in the bush.
नीम-हकीम खतरे जान–A little knowledge is a dangerous thing.
नीम न मीठी होय सींचो गुड़ घी से–Crows are never the whiter for washing.
नेकी कर दरिया में डाल–Do good and cast it into the river.
नाचने उठे तो घूँघट कैसा–He who would catch fish must not mind getting wet.
नहीं से कुछ भला, नाहीं मामा से काना मामा अच्छा–Something is better than nothing.
निहाई की चोरी और सूई का दान–Steal a goose and give giblets in alms.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ प ☜

पुरुषसिंह जे उद्यमी लक्ष्मी ताकी चेरि–Fortune favours the brave.
पानी का मन सदा शंकित रहता है, चोर की दाढ़ी में तिनका–Guilty conscience is always suspicious.
पाप का धन प्रायश्चित में जाता है, सूम का धन शैतान खाता है–Ill got, ill spent.
पढ़ना न लिखना आवे नाम विद्यासागर–An ignorant man keeping a great fuss.
परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता–Perserverance is never unfruitful.
परिश्रम भाग्य का दायाँ हाथ है–Industry is fortune's right hand.
पहले सुयोग्य बनो फिर माँगो–First deserve then desire.
पानी में रहके मगरमच्छ से वैर–To live in Rome and strife with the Pope.
पाँचों की पाँचों उँगलिआँ घी में–Your bread is buttered on both sides.
पहले तोलो फिर बोलो–Calculate well before you speak.
पेड़ की पहचान फल से होती है–The tree is known by the fruit it bears.
पूत-कपूत के पाँव पालने में ही नजर आ जाते हैं–The child is the father of the man.
प्रत्येक काम मनुष्य नहीं कर सकता–No living man can do all things.
प्रश्न गेहूँ और उत्तर जौं–His answer is besides the question.
प्रेम का रोग असाध्य है–Love is incurable.

☞ फ ☜

फिज़ूलखर्ची पर कमर बँधी है–He burns the candles at both ends.
फिक्र करने से क्या होता है–Care avails not.
फिराक में इश्क तड़पता रहता है–Absence sharpens love.
फिक्र पीती है खून-ए-दिल–Anxiety is the canker of the heart.

☞ ब ☜

बद अच्छा बदनाम बुरा–A bad man is better than a bad name.
बैठे से बेगार भला–Better wear your shoes than your bed clothes.
बिल्ली के सरापे छीका नहीं टूटता–Cattle do not die from crow's cursing.
बेकार से बेगार भला–Forced labour is better than idleness.
बोवे पेड़ बबूल का आम कहाँ से खाय–Gather thistles and expect pickles.
बड़ों की बड़ी बात–High winds blow on high hills.
बिना अपने मरे स्वर्ग नहीं दीख पड़ता–If you want a thing well done, do it yourself.
बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेय–It is no use crying over split milk.
बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेय–Let bygones be bygones.

CC-0 Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहती गंगा में हाथ धोना–Make hay while the sun shines.
बूँद-बूँद करके घड़ा भरता है–Many a little makes a mickle.
बिना सेवा मेवा नहीं मिलता–No pains, no gains.
बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद–To cast pearls before swine.
बहुत से जोगी मठ उजाड़–Too many cooks spoil the broth.
बंदा जोड़े पली-पली और राम उघारें कुप्पा–Man prosposes, God disposes.
बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी–How long will the mother's prayers avail to save her kid.
बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ छोटे मियाँ सुभान-अल्लाह–The younger is even worse than the elder.
बातों से ही पेट नहीं भरा करता–It is money that buys the land.
बात का बतंगड़ बन जाना–To make a mountain out of mole-hill.
बिन बुलाए इज्जत नहीं मिलती–Uninvited guests sit on thorns.
बिल्ली ने शेर को सिखाया, शेर बिल्ली को खाने आया–My foot my tutor.
बुरे के साथ भलाई करना–Charity towards uncharitable.
बुरा करने पर बुरा ही होता है–Do evil and look for the like.
बुरी संगत से अकेला ही भला–Better be alone than in bad company.
बेड़ी सोने की भी बुरी होती है–Fetters even of gold are heavy.

☞ भ ☜

भैंस के आगे बीन बजाना–Crying in wilderness.
भाड़ से निकला मेंढ़ में पड़ा, आम से टपका, बबूल में अँटका–Out of the frying-pan into the fire.
भय और प्रेम एक जगह नहीं रहा करते–Dread and affection never exist together.
भलाई करने से न चूको–Never be weary of doing good.
भाग्य के लिखे हुए को कौन मिटा सकता है–What is lotted, cannot be blotted.
भूखा सो रूखा–A hungry man is an angry man.
भूसा बहुत और आटा कम–Much bran and little meal.

☞ म ☜

मुख में राम बगल में छुरी–A honey tongue, a heart of gall.
मुख में राम बगल में छूरी, इंसान की शकल में शैतान–A wolf in lamb's clothing.
माँगे मुँह मौत भी नहीं मिलती–Even death cannot be had for the asking.
मेरे मन कुछ और है, कर्ता के कुछ और–Man proposes, God disposes.
मुफलिसी में आटा गीला, मुसीबत अकेले नहीं आती–Misfortunes never come singly.
मोहर लुटा जाय कोयले पर छाप–Penny wise pound foolish.
मधुरी बानी, दगाबाज की निशानी–Too much courtesy, too much craft.

CC-0.Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महँगा रोए एक ही बार और सस्सा रोए बार-बार-The cheaper buyer takes not meat.
मरता क्या न करता-The desperate man does all things.
मक्खी शहद पर गिरती है-Daub you mouth with honey and you will get plenty of flies.
माया बादल की छाया-Riches have wings.
मित्र वही जो वक्त पर काम आए-A friend in need, is a friend in deed.
मुँह पर झूठ नहीं बोला जाता-Face to face the teeth comes out.
मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक-The priest goes no further from the church.
मौन का मतलब आधी स्वीकृति-Silence gives consent.

☞ य ☜

यथा राजा, यथा प्रजा-As king, so are his subjects.
यहाँ तुम्हारी दाल नहीं गलने वाली-Your schemes won't take here.

☞ र ☜

रोज कुँआ खोदना रोज पानी पीना-Living from hand to mouth.
राई का पर्वत बनाना, तिल से ताड़ बनाना-To make a mountain of a mole hill.
रफूचक्कर हो जाना-To show a clear pair of heels.
राम नाम जपना पराया माल अपना-A robber in the garb of a saint.
रूप को अलंकार की जरूरत नहीं होती है-A fair face needs no paint.
रोजाना पानी के टपकने से पत्थर भी घिस जाता है-Constant dropping wears the stone away.

☞ ल ☜

लालच बुरी बला है-Avarice is the root of all evils.
लोहे से लोहा कटता है-Diamonds cut diamonds.
लोहे के चने चबाना-Hard nut to crack.
लकड़ी के बल पर बंदर नाचता है-Need makes the old wife trot.
लोभ से कुछ भी नहीं मिलता-All covet, all lost.
लोभी का पेट खाली रहता है-A covetous man is ever in want.

☞ व ☜

विष-रस भरा कनक-घट जैसे-Beneath the rose lies the serpent.
विषस्य विषमौषधम्-Like cures like.
वह दिन गए जब मियाँ फ़ाख्ता उड़ते थे-Gone is the goose that was golden.
वैद्य खुद ही बीमार हो तो वह दूसरों को क्या अच्छा करेगा-An ill physician cannot cure others.
वीरता का काम न चाहे नाम-दाम-Good deeds need no show.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ श ☜

शनैः-शनैः प्रगति करनेवाला जोतता है-Slow and steady wins the race.
श्रीगणेश अच्छा हो जाए तो आधा काम हो जाता है-Well begun is half done.
श्रीगणेश ही गलत होना-Wrong at the very beginning.

☞ स ☜

सूरदास की काली कमरिया चढ़े न दूजो रंग-Black will take no other hue.
संतोषं परमं सुखम्-Contentment is happiness.
संतोष धन परम धन होता है-A contented mind is a contented feast.
सत डिगा तो जहान डिगा-When character is lost all is lost.
सखी से सूम भला है तो तुरंत जवाब दे-He gives twice who gives in a trice.
सबको अपना ही मतलब प्यारा होता है-Every one knows his interest best.
सबसे भला चुप होता है-Silence is golden.
समय को दुर्लभ समझो-Make hay while the sun shines.
समय पर टाँका नौ का काम करता है-A stitch in time saves nine.
समझदार को इशारा ही काफी होता है-Word to the wise is enough.
स्याना कौवा गंद पर ही बैठता है-Positive men are often in error.
सावन के अंधे को हरा ही हरा दीख पड़ता है-Everything looks yellow to a jaundiced eye.
सब्र का फल मीठा ही हुआ करता है-Bear and forbear is good.
सब्र सबसे बड़ा धन है-Contentment is more than a kingdom.
साँच को आँच नहीं-Innocent have nothing to fear.
साँच को आँच नहीं-Pure gold does not fear the flame.
साँच को आँच नहीं-The innocent have nothing to fear.
साँप के तो सँपोले ही होंगे-As the crow is, so the egg be.
सिर मुँड़ाते ही ओले पड़े-His fortune overtook him at the very outset.
साझे की हँड़िया चौराहे में ही फूटा करती है-A common horse is worst shod.

☞ ह ☜

होनहार बिरवान के होत चीकने पात-Coming events cast their shadows before.
हत्या के बदले फाँसी, जैसे को तैसा-Measure for measure.
हथेली पर सरसों नहीं जमा करती-Rome was not built in a day.
हवा में पुल बाँधना, हवाईकिले बनाना-To make castles in the air.

●●●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Different Meanings of the Word

एक शब्द के अनेक अर्थ

अक्षर–वर्ग, अ (नहीं) + क्षर (नाशी) = परमात्मा, ब्रह्मा, धर्म, विष्णु, तप।
अनंत–आसमान, जो कभी समाप्त न हो।
अंतर–भेद, फर्क मध्य, अवसर, अवधि, समय, बाधा।
अंबर–कपड़े, आसमान।
अंक–चिह्न, नाटक का एक भाग, गोद, नंबर, गिनती, भाग्य।
अक्ष–आँख, सर्प, ज्ञान, रथ।
अज–दशरथ का पिता, परमेश्वर, बकरा, शिव।
अर्क–सूर्य, आक का पौधा, काढ़ा।
अर्थ–धन, ऐश्वर्य, मतलब, प्रयोजन, हेतु, व्याख्या, लिए।
अपवाद–निंदा, किसी नियम का विरोधी उदाहरण।
अरुण–सूर्य का सारथी, प्रभात का सूर्य, हल्का लाल रंग।
आराम–शांति, विश्राम, बीमारी दूर होना, बाग।
आम–एक फल का नाम, साधारण।
आलि–पंक्ति, सखि।
उत्तर–चारों दिशाओं में से एक दिशा का नाम, जवाब, बाद वाला।
और–तथा, एवं, दूसरा, अधिक, योजक।
कटाक्ष–मजाक, आक्षेप, तिरछी नजर।
कनक–सोना, धतूरा, पंजाबी भाषा में गेहूँ को कनक कहा जाता है।
कर–टैक्स, किरण, हाथ, हाथी की सूँड, कुछ करने की आज्ञा देना।
कर्ण–कान, कुंती का पहला पुत्र।
कल–आनेवाला दिन, बीता हुआ दिन, चैन, मशीन, सुंदर, मधुर।
कला–आर्ट, चंद्रकिरण, 16वाँ भाग।
काम–कर्म, कार्य, कामदेव, मतलब, प्रयोजन, लालसा, फायदा।
कुशल–पटु, खैरियत।
कुल–सब, समस्त, वंश।
कृष्ण–श्रीकृष्णचंद्र, श्याम, काला।
कोष–खजाना, शब्दकोष।
खर–खुरदरा, गधा।
ग्रहण–स्वीकार करना, लेना, सूर्य या चंद्र का ग्रास।
गति–मोक्ष, हालत, चाल।
गिरा–गिर पड़ा, वाणी।
गुण–खूबी, स्वभाव, चतुराई, रस्सी।
गुरु–उपदेश देनेवाला, पढ़ानेवाला, भारी, बृहस्पति।
गो–गाय, बल, भूमि, पृथ्वी, वाणी, इंद्रिय।
घट–घड़ा, शरीर, कम होना, हृदय।
घन–घना, गाढ़ा, बादल, हथौड़ा, दृढ़।
चक्र–विष्णु भगवान का एक अस्त्र, षड्यंत्र, पहिया।
चपला–लक्ष्मी, बिजली, चंचल स्त्री।
छत्र–राजछत्र, छतरी, कुकरमुत्ता।
जड़–अचेतन, मूल, मूर्ख।
जलज–मोती, मछली, कमल, शंख।
जलधर–सागर, बादल।
जीवन–जल, जिंदगी।
तत्व–मूल, निचोड़, यथार्थ, **पाँच तत्व**–पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश।
तनु–शरीर, पतला, कृश।
तम–पाप, राहु, अंधेरा।
तात–प्रिय।
ताल–गीत का स्वर-ताल, ताली बजाना, ताड़ का पेड़, तालाब।
तारा–सितारा, आँख की पुतली, सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र की पत्नी का नाम।
दंड–सजा, डंडा, एक व्यायाम।
दल–समूह, पत्ता, पंखड़ी, पक्ष, सेना।
द्विज–ब्राह्मण, दाँत, पक्षी, चंद्रमा, द्विजन्मा।
द्रव्य–वस्तु, धन, **नौ द्रव्य**–पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा, मन।
धर्म–प्रकृति, स्वभाव, **धारण करने योग्य गुण**–धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, शोच, इंद्रियनिग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य, क्रोध न करना।
धातृ–पृथ्वी, धाय माँ।
नग–नगीना, पहाड़, वृक्ष, सूर्य, रत्न।
नव–नया, नौ।
नाक–नासिका, सम्मान, स्वर्ग।
नाग–नागेश्वर, साँप, हाथी, मनुष्य की एक जाति।
निदेश–निर्देश, आज्ञा, कथा, अनुमति, उपदेश।
निशाचर–उल्लू, राक्षस।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पक्ष–बल-आधार, पंख, पंद्रह दिन का समय, एक विशेष दल की तरफ के लोग।
पतंग–गुड्डी, कीट-पतंग, सूर्य, पक्षी।
पत्र–खत, पत्ता, किसी धातु का पतरा, पंख।
पद–पैर, स्थान, पदवी, भाग, छंद का एक चरण, उपाधि, गीत (जैसे सूरदास के पद), विभक्ति सहित शब्द (व्याकरण में)।
पय–दूध, पानी।
पयोधर–स्तन, बादल।
पंच–निर्णय करनेवाला, गाँव का सरपंच, पाँच की संख्या।
पृष्ठ–कॉपी या पुस्तक का पेज, पीछे का भाग, पीठ।
पानी–लाज, जल, आब, धार, तेजस्विता।
पूत–पुत्र, पवित्र।
पूर्व–पहले, चारों दिशाओं में से एक दिशा।
पोत–शावक, बच्चा, पानी का जहाज।
प्रभाव–दबदबा, महिमा, असर।
फल–खाने का फल, परिणाम, चाकू या तलवार का फलका।
ब्याज–सूद, बहाना, छल।
बल–सेना, शक्ति, ताकत, पेंच।
बलि–राजा बलि, न्यौछावर।
बाल–केश, बालक, गेहूँ।
बहार–मौसम, बसंत, एक राग।
भव–जन्म, डर, हेतु, शिव, संसार।
भुवन–त्रिलोक, संसार।
भूत–बीता काल, प्रेत, मरा हुआ प्राणी, **पाँच महाभूत**–पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश।
मधु–मीठा, शहद, मधुरता, मद, शराब, फूलों का रस, वसंत, अमृत।
मंत्र–वेद की ऋचा, सलाह, मोहनमंत्र, जादू-मंतर।
मान–सम्मान, अभिमान, घमंड, परिमाण, नक्षत्र के दिखाई देने का समय।
मित्र–दोस्त, सखा।
मोद–कस्तूरी, सुगंध, प्रसन्नता, खुशी।
रस–स्वाद, जल, पेय, रुचि, पारा, भक्ति, कविता का आनंद, फल या पेड़-पौधों का रस।
रक्त–लाल रंगवाला, खून, अनुरागी।
राग–प्रेम, रंग, मोह, संगीत का रंग, लाली।
लक्ष्य–उद्देश्य, निशाना।
वन–जंगल, जल।
वर–दूल्हा, श्रेष्ठ, सुंदर।
वर्ण–हरा-पीला-नीला आदि रंग, अखर, **चार जातियाँ**–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।
वाम–उल्मा, बायाँ, स्त्री, बुरा, एक छंद, कामदेव।
वास–कपड़ा, सुगंध, रहने का स्थान।
विग्रह–शरीर, लड़ाई, देवता की मूर्ति।
विधि–रीति, कानून।
विषम–बहुत कठिन, टेढ़ी, जो सम न हो।
विषय–विचार की बात, भोगविलास, मजमून।
शिखा–चोटी, नोक, आग की लपट, प्रकाश की किरण।
सार–सत, खबर का निचोड़, तत्व, फौलाद।
सारस–हंस, कमल, एक पक्षी।
सारंग–साँप, मोर, हिरण, बादल, कमल, हंस, घोड़ा, भौंरा, तालाब।
साल–घाव, शूल, वर्ष, एक वृक्ष।
सूत–धागा, सारथी (रथ चलानेवाला)।

●●●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

With Minute Difference in Meanings

भिन्नाकार सूक्ष्म भिन्नार्थक

अबला-निर्बला–अबला हर औरत को कहा जाता है, किंतु निर्बला सिर्फ बलहीन औरत को कहा जाता है।

अभिमान-अहंकार–गर्व को अभिमान कहते हैं, जैसे–हम सभी को अपने देश भारत पर गर्व है, किंतु अहंकार घमंड को कहते हैं, अहंकार का सिर हमेशा नीचा होता है।

अवस्था-आयु–वर्तमान उम्र को अवस्था कहते हैं, जैसे–पच्चीस वर्ष की अवस्था में उसकी शादी हुई। आयु का अर्थ है किसी व्यक्ति, पशु-पक्षी या प्राणी की संपूर्ण आयु, जैसे–व्यक्ति की अधिकतम आयु प्राय: सौ साल होती है।

अलौकिक-अस्वाभाविक–किसी अद्‌भुत बढ़िया वस्तु, गुण या मनुष्य को अलौकिक कहते हैं, प्रकृति के विरुद्ध किसी बात को अस्वाभाविक कहा जाता है। महापुरुषों में अलौकिक शक्ति का वास होता है। आठ घंटे कार्य करने के बाद थकावट न होना अस्वाभाविक है।

ईर्ष्या-द्वेष–किसी को फलता-फूलता देखकर जलना ईर्ष्या है; परंतु दूसरे के विरुद्ध शत्रुता का भाव रखना द्वेष है। लालाजी का सुख-वैभव देखकर सब उनसे ईर्ष्या करते हैं। बिना वजह किसी से द्वेष रखना बेवकूफी है।

उद्योग-उपाय–परिश्रम या उद्यम को उद्योग कहा जाता है। उपाय का अर्थ है किसी समस्या का समाधान करने का तरीका। गरीबी को दूर करने के लिए घरेलू उद्योग अति आवश्यक है। राष्ट्रभाषा के प्रसार के लिए उपाय करने चाहिएँ।

कृपा-दया-अनुग्रह–***कृपा***–दूसरों की सहायता करना; ***दया***–दीन-दुखियों को देखकर हृदय का पिघलना; ***अनुग्रह***–प्रसन्न हो जाने पर किसी का कोई बड़ा भला करना।

खेद-शोक-दु:ख-कष्ट–***खेद***–मन का अप्रसन्न होना; ***शोक***–रोग, मृत्यु आदि अति दु:खदायी घटना से दु:ख होना; ***दु:ख***–किसी भी प्रकार शरीर, मन या आत्मा का दु:खी होना; ***कष्ट***–शरीर को किसी प्रकार की चोट लग जाने से कष्ट (पीड़ा) होना।

देखना-दर्शन करना–किसी सामान्य मनुष्य या सामान्य वस्तु के लिए 'देखना' शब्द का प्रयोग किया जाता है और बड़े-बूढ़ों, महानुभावों, नेता, गुरु और पवित्र स्थानों के लिए 'दर्शन करना' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

निर्णय-न्याय–निर्णय का अर्थ है फैसला लेना चाहे उसमें न्याय हुआ हो या नहीं हुआ हो, न्याय का अर्थ है ठीक-ठीक इंसाफ।

पाप-अपराध–प्रकृति, समाज, ईश्वर तथा धर्म-शास्त्रों का अपमान या उनके विरुद्ध आचरण पाप है; राज्य-नियम या कानून का भंग करना या अपमान करना अपराध है।

प्रेम-स्नेह-वात्सल्य–पति-पत्नी और प्रेमी-प्रेमिका के प्यार को प्रेम कहा जाता है; अपने से उम्र में छोटों के प्रति प्यार को स्नेह कहा जाता है; और शिशुओं पर प्यार को वात्सल्य कहा जाता हैं।

श्रद्धा-भक्ति–महात्माओं, संतों, श्रेष्ठ व्यक्तित्व, धर्म तथा संप्रदाय आदि के प्रति विश्वास और सम्मान के भाव को श्रद्धा कहते हैं; ईश्वर में विश्वास करना और भजन-पूजन करना भक्ति कहलाता है।

भिन्न-विपरीत–भिन्न का अर्थ है अलग-थलग होना, और किसी वस्तु से समानता न होना; विपरीत का अर्थ है किसी वस्तु से बिल्कुल उल्टा होना। जैसे कमल चमेली से बिल्कुल भिन्न प्रकार का फूल है; परंतु काँटा फूल के विपरीत है–काँटा कठोर है और फूल कोमल होता है।

भ्रम-संदेह–रस्सी को देखकर उसे साँप समझना भ्रम होता है; किंतु रस्सी को देखकर ऐसा लगना कि 'यह साँप' है 'रस्सी' इस तरह की दुविधा में पड़ना संदेह है, इसे संशय भी कहा जाता है।

धर्म-मत–न्याय, सत्य, दया आदि मानवता के श्रेष्ठ, सर्वोच्च और ऊँचे आदर्श तथा पूजा आदि 'धर्म' के प्रतीक हैं। संप्रदाय, मजहब या पंथ को 'मत' कहा जाता है। मत में बाहरी विधि-विधान और रीति-रिवाज आदि पर जोर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया गया है। एक ही धर्म में कई मत होते हैं।

मूर्ख-मूढ़-अनभिज्ञ–बुद्धिहीन व्यक्ति को मूर्ख कहते हैं; जो कभी-कभी मूर्ख बन जाए उसे मूढ़ कहते हैं; बुद्धिमान को यदि किसी विशेष बात का ज्ञान न हो तो उसे अनभिज्ञ कहा जाता है; जैसे नेहरू जी इस बात से बिल्कुल अनभिज्ञ थे कि भारत के विभाजन के समय इतना रक्तपात होगा।

स्त्री-पत्नी–नारी के लिए स्त्री शब्द का प्रयोग किया जाता है, किसी विवाहिता नारी को पत्नी कहा जाता है।

लज्जा-ग्लानि–स्वभाव के अनुसार ही किसी व्यक्ति के सामने लजाना लज्जा है; किसी अपराध या दोष के कारण मन में बुरी तरह लज्जित होना ग्लानि होती है।

शंका-आशंका–लगता है कोई बात ठीक नहीं, यह भाव में आना 'शंका' कहलाता है; 'आशंका' शब्द वहीं प्रयोग होता है जहाँ किसी आनेवाले खतरे का भय हो।

भय-त्रास-आतंक–किसी अभीष्ट की आशंका भय कहलाता है; किसी वस्तु या मनुष्य से डर जाना त्रास कहलाता है; किसी बड़े अधिकारी या शत्रु का दबदबा आतंक है।

बहुमूल्य-अमूल्य–जो वस्तु साधारण वस्तु से अधिक कीमती है उसे बहुमूल्य कहा जाता है; और जिसका मूल्य ही निश्चित न किया जा सके अमूल्य कहा जाता है। जैसे–यह आभूषण बहुमूल्य है और विद्या अमूल्य है।

यत्न-चेष्टा–कार्य को शुरू करने की कोशिश को 'यत्न' कहते हैं; और कार्य को शुरू से अंत तक करने की कोशिश को 'चेष्टा कहते हैं।

वेदना-व्यथा-पीड़ा–शरीर से संबंधी या मानसिक पीड़ा को 'वेदना' कहते हैं; विरह से या किसी के द्वारा किए गए अपमान से 'व्यथा' उत्पन्न होती है; शारीरिक कष्ट को 'पीड़ा' कहते हैं।

प्रलाप-विलाप–प्रलाप का अर्थ बकवाद होता है; विलाप का अर्थ है किसी जीव की मृत्यु पर रोना-पीटना।

●●●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Literary Technical Vocabulary

साहित्यिक पारिभाषिक शब्दावली

अंतर्मुखी–बाह्य विषयों के ठीक विपरीत।
अक्रमता–क्रमानुसार वस्तुओं का वर्णन न करना।
अगूढव्यंग्य–जहाँ व्यंग्यार्थ ठीक जान पड़े।
अज्ञातयोवना–जिसको अपने यौवन का पता न हो।
अतियर्थावाद–फ्रांस में उत्पन्न एक साहित्यिकवाद जिसमें रोमांटिक साहित्य का खुलकर विरोध किया जाता है।
अतिराष्ट्रीयतावाद–फासिज़्म, राष्ट्रवाद की पराकाष्ठा।
अतिशयोक्ति–अलंकार का एक भेद।
अतींद्रिय–इंद्रियों से अलग।
अतुकांत–जिस पद्य के अंत में तुक न मिले।
अत्युक्ति–किसी का गुण का झूठा वर्णन।
अद्‌भुत–विस्मयजनक काव्य-रस।
अद्वैतवाद–आत्मा-परमात्मा को अलग-अलग न मानना।
अधमा–बहुत हठीली नायिका।
अधिकपद–कोई पद वाक्य में बेकार होना।
अधिनायकवाद–तानाशाही।
अध्यांतरिक–स्वात्मनिष्ठ।
अध्यात्मवाद–आत्मा, परमात्मा और परलोक संबंधी दार्शनिक विचार।
अनन्वय–एक अलंकार।
अनलहक–मैं ही ब्रह्म हूँ।
अनवाकृत–जहाँ कोई नई बात कही न गई हो।
अनाहत–अनहद शब्द।
अनीश्वरवाद–नास्तिकवाद।
अनुग्रह–कृपा।
अनुचितार्थ–एक शब्द दोष।
अनुप्रास–एक ही जैसे शब्दों का दो या दो से अधिक बार आना।
अनुभाव–रस का एक तत्व।
अनुभूति–अनुभव, चेतना।
अनुमान–जहाँ चालाकी से साधन द्वारा साध्य बोध कराया जाए।
अनुशयाना–परकीया नायिका जो अपने प्रिय से मिलने का अवसर खोकर दु:खी हो।
अनुष्टुप–अक्षर का चतुष्पाद छंद।
अनूढ़ा–अविवाहिता प्रेमिका।
अन्योन्य–जहाँ एक क्रिया द्वारा दो वस्तुओं का आपस में संबंध बताया जाए।
अपकर्ष–जहाँ रस को हानि करनेवाले शब्दों का प्रयोग हो।
अपभ्रंश–6ठी से 12वीं शताब्दी तक की उत्तर भारत की भाषा।
अपभ्रंश-साहित्य–अपभ्रंश भाषा में लिखा गया साहित्य।
अपवारित–रंगमंच पर किसी पात्र का दूसरी तरफ मुँह करके दर्शकों को सुनाकर पास खड़े पात्र की बात कहना।
अपह्नुति–जहाँ प्रस्तुत को छिपाकर अप्रस्तुत की स्थापना की जाए।
अभिजात वर्ग–समाज का उच्चतम वर्ग।
अभिधा–जहाँ किसी शब्द का रूढ़ अर्थ लिया जाए।
अभिनेता–अभिनय करनेवाला।
अभिप्राय–अर्थ और उद्देश्य।
अभिव्यंजनावाद–इटली के क्रोचे द्वारा चलाया गया एक मत जिसमें कवि या कलाकार अपने अंतर की भावना को प्रकाशित करता है।
अभिसारिका–जो नायिका स्वयं ही प्रियमिलन के लिए जाए।
अमर्ष–तेंतीस में से एक संचारी भाव।
अमियरस–ब्रह्मरंध से झरनेवाला आनंद-रस।
अप्रयुक्त–ऐसे शब्द का किसी ऐसे अर्थ के लिए प्रयोग करना जिसके लिए पहले उसका प्रयोग न हुआ हो।
अप्रस्तुत-प्रशंसा–जहाँ अप्रस्तुत के वर्णन से प्रस्तुत का वर्णन किया जाए।
अरविन्द दर्शन–योगी अरविन्द का एक मत।
अराजकतावाद–जिसमें राज्य, समाज तथा परिवार को तोड़ने के विषय के पक्ष में विचार हो।
अर्थ प्रकृति–रूपक के कथावृत्त की पाँच स्थितियाँ–बीज, बिंदु, पताका, प्रकरी, कार्य।
अर्थवक्रोक्ति–जहाँ वक्ता द्वारा कहे गए अर्थ से भिन्न अर्थ लिया जाए।
अर्थश्लेष–जहाँ एक अर्थ के दो अर्थ निकलें।
अर्थांतरन्यास–जहाँ पर सामान्य द्वारा विशेष का और विशेष द्वारा सामान्य का समर्थन हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलख–नागपंथियों के भक्ति-गीत, अलक्ष्य ईश्वर।
अवतार–ईश्वर या उसकी शक्ति का जन्म ग्रहण करना।
अवदान–लोककथा।
अवधी–हिंदी का वह रूप जो अवध में बोला जाता है।
अश्राव्य–नाटकीय संवाद में कथावस्तु का एक भेद जिसे केवल कहनेवाला पात्र सुनता है, रंगमंच का कोई दूसरा पात्र मानो नहीं सुनता।
अश्लील–जहाँ काम और वासना से संबंधी खुला वर्णन हो।
अष्टछाप–पुष्टि मार्ग के प्रवर्तक वल्लभचार्य के द्वारा स्थापित मंडल। इसमें सूरदास आदि आठ कवि थे।
असंगति–जहाँ कर्म कहाँ हो और कारण कहाँ।
असूया–दूसरे के गुण को न सहना, यह तेंतीस संचारी भावों में से एक है।
अहार–एक मात्रिक सम छंद, ग्वाला।
अहेरी–अपना मन मृग है और मन ही अहेरी, शिकारी, बहेलिया।
आकाशभाषित–रंगमंच पर आकाशवाणी होना।
आख्यायिका–कहानी।
आगतपतिका–जिसका पति बाहर (परदेश) से आया हो।
आत्मकथा–लेखक के द्वारा लिखी अपनी जीवन कथा (जीवनी)।
आत्मपीड़न–अपने-आप को कष्ट पहुँचाना।
आत्मवाद–अध्यात्मवाद।
आदर्शवाद–यथार्थ से अलग छोटे मूल्यों को स्वीकार करनेवाला मत।
आदर्शोन्मुख यथार्थवाद–जिस विचारधारा में आदर्श और यथार्थ का सम्मिश्रण हो।
अधिककारिक वस्तु–दृश्य काव्य में कथावस्तु के दो भेद होते हैं–
1. आमिकारिक (मुख्य)
2. प्रासंगिक (गौण)।

आधुनिकाल–संवत् 1900 से शुरू हुआ हिन्दी साहित्यकाल।
आनंद–रस या आत्मानंद।
आनंदवाद–रस या आनंद को प्रमुख माननेवाला साहित्यिक मत।
आंतरिक आलोचना प्रणाली–जिस आलोचना प्रणाली में रचना के आंतरिक गुणों पर बल दिया जाए।
आमुख–नाटक की प्रस्तावना।
आराधना–स्तुति गीत।
आर्था व्यंजना–व्यंजना शब्द शक्ति का एक भेद।
आर्या–संस्कृत का एक मात्रिक छंद, नाटक में स्त्री प्रमुखत: नायिका का संबोधन।
आलंबन विभाग–पात्र विशेष के भावों का आलंबन।
आलोचना–साहित्य के किसी भाग की व्याख्या, गुण-विश्लेषण या मूल्यांकन।
आवेग–हर्ष या डर से शरीर में सनसनी फैलना।
आसक्ति–स्नेह या अत्यधिक राग-रंजित रूप।
इंद्रवज्रा–एक सम वर्णवृत्त।
इतिवृत्तात्मक काव्य–चरित काव्य।
इतिवृत्तात्मकता–काव्य के अंदर चरित्र की प्रधानता से नीरसता आना।
ईहामृग–रूपक (नाटक) का एक भेद जिसके अंदर नारी के लिए युद्ध हो।
उग्रता–एक संचारी भाव।
उच्च मध्यवर्ग–धन से संपन्न बुद्धिवादी वर्ग के लोग।
उत्कंठिता–संकेत स्थल पर नायक का चिंतापूर्वक इंतजार करनेवाली नायिका।
उत्तमा–नायक के द्वारा अहित होने पर भी जो उसका हित करे।
उत्तरमध्यकाल–हिन्दी साहित्य का रीतिकाल सं. 1700 से 1900 तक।
उत्पाद्य (कथा) वस्तु–कथानक का कवि-कल्पित भाग।
उत्प्रेक्षा–उमेय में उपमान की कल्पना या संभावना, उत्साह वीर रस का स्थायी भाव।
उदात्त–उत्कर्ष रूप से किसी पदार्थ का ग्रहण।
उदारवाद–उदारता मत।
उद्दीपन विभाव–रस को उद्दीपित करनेवाली आलंबन की कोशिश आदि।
उन्मालित–जहाँ साम्य के कारण उपमेय उपमान मिल गए हों, पर किसी अन्य विशेष कारण से उपमेय का अलग पता चल जाए।
उपचेतन–मानस का चेतनेतर पक्ष।
उपजाति–जाति का उपभेद, इंद्रवज्रा उपेंद्रवज्रा के मेल से बना एक वर्णवृत्त।
उपदेशवाद–साहित्य में उपदेश पर अधिक जोर देना।
उपन्यास–साहित्य की एक गद्यात्मक विधा, जिसमें समाज का विस्तृत चित्र प्रस्तुत होता है।
उपमा–उपमेय उपमान की समानता का वर्णन।
उपमान–जिस ऊँचे गुणवाली वस्तु से उपमेय की समानता बताई जाए।
उपमेय–जिस व्यक्ति या वस्तु के गुण की उत्तमता को बताने के लिए उसे ऊँचे गुणवाली प्रसिद्ध वस्तु के समान कहा जाए–'मुख चंद्रमा के

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समान है' यहाँ मुख उपमेय है और चंद्रमा उपमान है।

उपयोगितावाद–किसी वस्तु, विचार या कार्य का महत्व आँकने के लिए उसे उपयोगिता की कसौटी पर कसने के उपरांत।

उपरूपक–नृत्य पर आधारित दृश्य काव्य।

उपहासकाव्य–चरित्रोपहास।

उपाख्यान–काव्य के कथानक में आई कोई स्वतंत्र अन्य कथा।

उपालंभ–उलाहना।

उपेंद्रवज्र–एक वर्णिक छंद।

उल्लाप्य–एक उपरूपक जिसमें चार नायिकाएँ होती हैं।

उल्लाला–एक मात्रिक छंद।

उल्लेख–जहाँ एक व्यक्ति, वस्तु आदि का कई प्रकार से वर्णन हो।

ऋचा–ऋग्वेद का मंत्र।

एकपात्रीय नाटक–जिस नाटक में एकमात्र अभिनेता हो।

एकांकी–जो नाटक एक ही अंक में पूर्ण हो, जिसमें जीवन के किसी एक भाग का उल्लेख हो।

एकीकरण–एकता, अनेक तत्वों को एक में मिलाना।

एकेश्वरवाद–एक ही ईश्वर को मानना।

एलिजा–शोकगीत।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य–इतिहास की गतिविधि को ध्यान में रखकर योजना बनाना।

ऐतिहासिक भौतिकवाद–हिस्टॉरिकल मैटिरियलिज़्म।

औजगुण–रीति के तीन गुण–ओज, प्रसाद, माधुर्य।

औत्सुक्य–एक संचारी भाव उत्सुकता।

औदार्य–गायक का सात्विक गुण उदारता।

कंप–एक सात्विक अनुभव।

कजरी–सावन में गाया जानेवाला एक लोकगीत।

कथनी–सिर्फ कहना, अमल न करना।

कथा–कहानी।

कथा साहित्य–जिस साहित्य में कहानी प्रधान हो।

कथानक–कथा का सारांश, कथावस्तु।

कपाली–कापालिक या शिवजी।

कबीरपंथ–कबीर का चलाया हुआ संप्रदाय।

करखा–एक मात्रिक सम दंडक छंद।

करुणगीति–शक्तिगीत।

करुणरस–दुखी होने के उपरांत आनंद की प्राप्ति।

कलहांतरिता–विकलता को संभालने में असमर्थ नायिका।

कलापक्ष–साहित्य का बाहरी रंग, काव्य आदि का बाहरी पक्ष।

कलावाद–कला के लिए माननेवाला मत।

कल्पना–पूर्व अनुभूतियों और वर्तमान के मिलाप से अपूर्व को सोचना।

कवि-चर्या–कवि का पूरे दिन का कार्यक्रम।

कविता–पद्य में रसात्मक भावों का प्रकटीकरण।

कविसमय–परंपरा से चली आती अशास्त्रीय और अलौकिक बातें।

कव्वाली–सूफियों, कव्वालों का सामूहिक गान जिसके अंदर लौकिक प्रेम के बहाने अलौकिक प्रेम का उल्लेख किया जाता है।

कष्टकल्पना–एक रस दोष।

काकुवक्रोक्ति–जहाँ वक्ता के कंठ-ध्वनि-विकार से और का और अर्थ लिया जाए।

कापालिक–गले में खोपड़ी पहननेवाला शैव साधु।

काफिया–तुक लाने से पूर्व एक जैसे शब्दों का प्रयोग, जैसे–बहार, करार आदि।

कामनापूर्ति–इच्छा की पूर्ति, इष्टापूर्ति।

कामिक–हास्य का एक उद्दीपक नाटक।

कायापलट–शरीर और जीवन में विशेष परिवर्तन, योग-साधना की एक विशिष्ट क्रिया।

कायिक अनुभाव–शरीर-संबंधी अनुभाव।

कारणमाला–जहाँ पर पूर्ववर्ती अर्थ उत्तरोत्तर वाले का कारण बनता जाए।

कार्यव्यापार–नाटक की घटनाओं की शृंखला।

कालविभाग–काल-विभाजन।

काव्य–कवि की कृति।

काव्यशास्त्र–काव्य-रचना के नियम, रीति आदि का विचार करनेवाला शास्त्र।

काव्यहरण–किसी अन्य कवि के प्रयोग को अपने काव्य में लाना।

काव्यहेतु–काव्य-रचना के कारण।

किंवदंती–लोक-प्रसिद्ध उक्ति।

किरीट सवैया–सवैया छंद का एक भेद।

कुंडलियाँ–दोहा-रोला जोड़कर बनाया गया छंद।

कृति–रचना, कलाकार की कलापूर्ण रचना।

कृतित्व–रचना के अंदर कलाकार की अनुभूति, कला तथा अभिव्यक्ति।

कृष्णकाव्य–कृष्ण-भक्ति का काव्य।

कृष्ण भक्ति शाखा–हिन्दी के पूर्व-मध्यकाल की एक विशेष काव्य-शाखा।

क्लिष्ट–कठिन शब्द-विन्यास।

क्रोध–रौद्र रस का स्थायी भाव।

क्लासिकल–उच्चकोटि की, शाश्वत, सर्वश्रेष्ठ।

खंडकाव्य–एक प्रकार का प्रबंध-काव्य, जिसमें जीवन के एक भाग का उल्लेख हो।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खंडिता–जिसका प्रियतम अन्य नारी से संयोग करने आया हो।

खड़ी बोली–सरहिन्द से लखनऊ तक बोली जानेवाली साधारण हिन्दी भाषा।

खसम–निर्गुणियों का ईश्वर।

खुमार (री)–आध्यात्मिक प्रेम का नशा।

ख्याल–लोक नाटक का एक प्रकार।

गगनमंडल–सहस्रदलकमल चक्र, सहस्रार चक्र, आसमान।

गद्य–छंदों के बंधन में न बँधी रचना।

गद्यकाल–हिन्दी साहित्य का वह काल, जो संवत् 1900 से आरंभ हुआ।

गर्बा–गुजराती लोकगीत–नाच की एक शैली।

गर्भसंधि–यह रूपक की पाँच संधियों में से एक है।

गर्व–एक संचारी-भाव-प्रभाव, ऐश्वर्य, विद्या, कुल आदि के अहंकार से दूसरों की आज्ञा की अवहेलना का भाव।

गांधीवाद–गांधीजी की विचार पद्धति का मत।

गांभीर्य–नायक का सात्विक गुण।

गाथा–संत साहित्य में आत्मा, 'गाय तो नाहर खायो'।

गीतिकाव्य–लिरिक।

गीतिनाट्य–गीतात्मक रूपक।

गुण–खूबी, काव्य की विशेषता।

गुणीभूत-व्यंग्य–दूसरी कोटि का काव्य, जहाँ ध्वनि प्रधान न हो।

गुरु–उपाय अथवा मंत्र, छंद में दीर्घ आदि, अज्ञान-अंधकार को नाश करनेवाला व्यक्ति।

गेय-काव्य–गान योग्य काव्य।

गोचारणकाव्य–ग्राम्यगीति।

गोरख पंथ–गोरखनाथ का चलाया मार्ग।

गोष्ठी–एक अंक का शृंगार रस-प्रधान उपरूपक।

गौडी रीति–परुषाक्षरा वृत्ति, वीर रस में उपयोगी रीति।

गौणी लक्षणा–लक्षणा शब्द-शक्ति का एक प्रकार।

ग्राम्यत्व–काव्य में गँवारूपन का दोष।

ग्लानि–एक संचारी भाव।

घनाक्षरी–एक तरह का मुक्तक दंडक छंद।

चंद्रावल–सावन में गाई जानेवाली एक गेय कथा।

चंपू–वह श्रव्यकाव्य, जिसमें गद्य-पद्य का मिश्रण हो।

चकवा–एक पक्षी जो प्रेमी का प्रतीक है, यह रात को प्रिया से बिछुड़कर चिल्लाता, कराहता है।

छल–एक संचारी भाव, जहाँ नायिका धोखे से अपनी अवज्ञा का बदला लेती है।

छायानाट्य–आधुनिक चलचित्रों का मूल रूप, इनमें चमड़े की कठपुतलियाँ बनाकर प्रकार के आगे रखते थे और उनकी छाया सामने पर्दे पर डालते थे।

छायावाद–आधुनिक हिन्दी की रोमांटिक धारा, इसका आरंभ सन् 1918 में हुआ। छायावादी कविता में बाह्यर्थ और वस्तु का वर्णन कम होता है और अंतःकरण का नियोग अधिक होता है। छायावाद में हैं–

1. आत्मानुभूति प्रधानता,
2. कल्पना की प्रधानता,
3. सौंदर्याकर्षण,
4. विस्मय भावना,
5. सर्वचेतनतावाद,
6. सामाजिक-धार्मिक-राजनीतिक-साहित्यिक रूढ़िबंधनों के प्रति विद्रोह है। प्रसाद पंत, निराला और महादेवी–ये छायावाद के प्रमुख स्तंभ हैं।

छेकानुप्रास–जहाँ वर्णों की एक बार आवृत्ति हो।

जड़ता–एक संचारी भाव, मूक स्तब्ध रह जाना।

जन आंदोलन–किसी लक्ष्य के लिए जनता की सामूहिक हलचल।

जनतंत्र–जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों का शासन।

जनपद–प्रदेश, इलाका।

जनवाद–मार्क्स के अनुसार जनता के हित का हर बात में ध्यान रखना।

जिकड़ी–ब्रज का एक गीत जो होली में गाया जाता है।

जुलाहा–योग-साधना में साधक का प्रतीक है, एक जाति विशेष।

जैनचरित काव्य–जैनमत में प्रचलित कथा-प्रधान काव्य।

ज्ञातयौवना–मुग्धा नायिका का दूसरा भेद, जिसे यौवन का ज्ञान हो चुका हो।

ज्ञानाश्रयी शाखा–हिन्दी के पूर्व-मध्यकाल की शाखा जिसमें कबीर आदि हुए।

झुलना–सावन में झूले का गीत।

झूमर–मंगल-गीत।

टिप्पणी–संक्षिप्त टीका।

टीका–तिलक, विस्तृत व्याख्या।

टेक–गीत के आरंभ की स्वतंत्र कड़ी, जिस पर गीत की सब पंक्तियों की तुक टिकी रहती है।

टेबलो–चरित्र या घटना-प्रधान मूक नाट्य।

ट्राटस्कीवाद–ट्राटस्की का मत, जिसमें क्रांति कभी रुकती नहीं।

ट्रेजेडी–दुःखांत नाटक।

डिंगल–पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी) का साहित्यिक रूप।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिम–वह दृश्यकाव्य या रूपक जिसमें विद्रोह का वर्णन हो।
डेन्यूमाँ–गाँठ खुलना।
ढकोसला–ढोंग, बेसिर पैर की काव्य उक्ति।
ढोला–प्रियतम, एक लोक काव्य।
तद्गुण–जहाँ प्रस्तुत अपने गुण को छोड़कर अप्रस्तुत के गुण को ग्रहण करता है।
तमिल–द्राविड़ परिवार की सबसे प्राचीन भाषा।
तरीकत–सूफियों का आध्यात्मिक मार्ग।
तसब्बुफ–सूफीमत।
तांत्रिकमत–ई. 600 से 1200 तक की भारत में प्रचलित साधना पद्धति।
तादूप्य रूपक–जहाँ रूपक अलंकार में उपमेय द्वारा उपमान का ही रूप धारण करना वर्णित हो।
तार्किकसत्य–क्रियाशील दृष्टि के प्रभाव में बुद्धि से सिद्ध सत्य।
तुक–कविता में चरणों के अंत में एक जैसे वर्ण आना, जैसे–राम, श्याम, अभिराम, निष्काम।
तुल्ययोगिता–प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत का परस्पर समान धर्म से संबद्ध होना।
तोटक–4 सगण प्रत्येक चरज में।
तोमर–12 मात्रा, अंत में 5.
त्रिकुटी–इड़ा पिंगला-सुषुम्ना नाड़ियों का मिलन-स्थल।
त्रोटक–दूसरा उपरूपक, इसके पात्रों में देव मनुष्य दोनों होते हैं, जैसे कालिदास का विक्रमोर्वशीय।
थीम–तत्व, कथासूत्र।
थीसिस–किसी व्यक्ति की गवेषणा और विचारों का लिखित रूप, महानिबंध, शोध-प्रबंध।
थोरगाथा–वृद्धकथा, पाली में प्रसिद्ध कथाएँ।
दक्खिनी–दक्खिन के मुसलमान कवियों तथा लेखकों द्वारा प्रयुक्त हिन्दी का रूप।
दादूपंथ–संत दादू साहब का चलाया भक्ति संप्रदाय।
दास्यभाव–दास की तरह उपास्य की भक्ति-भावना।
दिवास्वप्न–अत्यंत कल्पना का एक रूप।
दीपक–एक अर्थालंकार।
दुःखवाद–गौतम बुद्ध का मत–सब दुख है।
दुर्मल्लिका–चार अंक का एक उपरूपक।
दुर्मिल सवया–एक तरह का सवैया छंद।
दूतकाव्य–जैसे–मेघदूत, पवनदूत आदि।
दूती–जो नायक से नायिका को मिलाए।
दूती कर्म–दूती का कार्य।
दृश्य-श्रव्य–काव्य के दो भेद, रंगमंच पर खेले जाने योग्य–दृश्य, केवल पढ़ने सुनने से आनंद देनेवाला–श्रव्य।
दृष्टांत–भक्ति में उदाहरण, एक अलंकार।
देवधनाक्षरी–33 वर्णों का वृत्त।
देवनागरी–ब्राह्मी लिपि की उत्तराधिकारिणी लिपि, हिन्दी में लिखी जाती है।
देशकाल–कथा-साहित्य में एक प्रमुख-तत्व।
दैन्य–एक संचारी भाव, भक्ति में भक्त की अतिशय दीनता।
दोहा–एक मात्रिक अर्थ सम छंद, जिसमें 1, 3 पादों में 13-13 मात्राएँ तथा 2, 4 पादों में 11-11 मात्राएँ होती हैं, इसे पहले दोहा-साखी भी कहते थे।
द्रुतविलंबित–इसमें प्रत्येक चरण में (न भ भर र) कुल 12 वर्ण होते हैं।
द्वंद्वात्मक भौतिकवाद–डायलेक्टिकल मैटीरियलिज़्म, यह वाद दैनिक अनुभवों तथा पर्यवेक्षणों पर आधारित है।
द्विवेदी युग–महावीर प्रसाद द्विवेदी के प्रभाव से चला सुधारवादी काल।
द्वैतवाद–वह दार्शनिक विचार जिसमें जीव तथा ब्रह्म को अलग-अलग माना जाता है।
धारणा–योग की एक क्रिया।
धीरप्रशांत–नायक का एक भेद।
धीरललित–नायक का एक भेद।
धौरा–नायिका भेद।
धीरोद्धत–ढीठ नायक।
ध्वनिसंप्रदाय–संस्कृत के काव्य शास्त्र का सबसे मुख्य तथा प्रौढ़ संप्रदाय, यह 'ध्वन्यालोक' नामक ग्रंथ से चला।
नचारी–शिवभक्ति के गीत।
नटी–अभिनेत्री।
नफ़्स–सूफीमत में आत्मा का नीचे दर्जे का भेद।
नई कविता–हिन्दी की सन् 1951 के बाद की कविता।
नवजागरण (रिनेसाँ)–ई. 1300 से 1600 तक यूरोप में एक प्रबल आंदोलन चला, जिसे रिनेसाँ कहते हैं। इस युग में पुरानी रूढ़ियों को तोड़कर कला का नए ढंग से विकास हुआ।
नवोढा–नवविवाहिता स्त्री, एक नायिका भेद।
नागरी–चतुरा, राधा, देवनागरी।
नांदी–देवता ब्राह्मण, राजा आदि की स्तुति जो नाटक के आरंभ में की जाती है।
नाजीवाद–हिटलर का चलाया उग्र राष्ट्र-जातिवाद।
नाटक–रूपक का सबसे मुख्य भेद।
नाटिका–उपरूपक का मुख्य भेद, इसमें गीत और नृत्य प्रधान होता है।
नाट्यरासक–एक उपरूपक।
नाट्य वृत्ति–नाटक रचना की चार वृत्तियाँ हैं–भारती, सात्वती, कैशिकी, आरभटी।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाथ संप्रदाय–गोरखनाथ से चला मत।
नाद–अनाहत शब्द।
नानकपंथ–गुरु नानक द्वारा चलाया गया एक निर्गुण संप्रदाय।
नर्मसचिव–नायक का कामवासना-सचिव।
नायक–नाटक का मुख्य पात्र।
नायिका–नाटक की मुख्य स्त्री पात्र।
निदर्शना–एक अर्थालंकार।
निम्नमध्यवर्ग–दफ्तरों के बाबू, क्लर्क आदि।
निरंजन–माया से अलिप्त।
निरर्थक–अर्थ रहित या व्यर्थ के शब्द का प्रयोग।
निराशावाद–आदर्शवाद से च्युत और यथार्थ के संपर्क में आए कलाकार की मनःस्थिति को प्रकट करनेवाला वाद।
निर्गुण संप्रदाय–हिन्दी में इसका अर्थ है निराकार की उपासना करनेवाले कवियों का मार्ग।
निरुक्ति–एक अलंकार, पदों का निर्वचन करना।
निष्कामभक्ति–जिस भक्ति में भक्त की कोई इच्छा न हो।
निहालदे–एक लोक-कथात्मक गीत।
नातिकाव्य–जिस काव्य में समाजनीति के उपदेश हों (इसमें रस की कमी आती जाती है)।
नीर–सहस्रार से झरनेवाला अमृत रस।
नेपाली–नेपाल देश की भाषा।
नौटंकी–स्वाँग, भगत आदि लोक-गीति-नाट्य।
पंचचामर–'ज र ज र ज ग' इस प्रकार जहाँ 16 वर्ण हों छंद पंचचामर होता है।
पंजाबी–पंजाब की भाषा।
पतत्प्रकर्ष–जहाँ कविता के एक वाक्य से दूसरे वाक्य में या पूर्व पद से उत्तर पद में उत्कर्ष कम हो जाए।
पत्रगीति–गीतात्मक पत्र।
पद्धरि–(मात्रिक सम छंद) प्रत्येक पाद में 16 मात्राएँ तथा अंत में अगण।
पनघट–शृंगार काव्य का एक विशेष संकेत स्थल।
पनिहारिन–पानी भरनेवालियों का गीत।
परंपरावाद–पुरानी रूढ़ियों को अच्छा समझने का मत।
परकीया नायिका–जो स्त्री किसी अन्य पुरुष से प्रेम संबंध की स्थापना करे।
परदेसिया–परदेश में गए पति के विरह में गाए गए गीत।
परपीड़न–आत्म-पीड़न का उलटा।
पराभक्ति–भगवान के प्रति (संसार की आसक्ति छोड़कर) भक्ति।
परिकर–जहाँ विशेषण किसी अभिप्राय से रखे जाएँ।
परिणाम–एक अर्थालंकार, नाटक की कथावस्तु की चरम परिणति।
परिसंख्या–किसी वस्तु का एक स्थान में निषेध करके किसी अन्य स्थान में होना बताया जाए और इसका विशेष अभिप्राय हो, जैसे–राम के राज्य में दंड नहीं मिलता, केवल यतियों के कर में ही मिलता है।
परुषा–कठोर शब्दोंवाली दूसरी काव्य वृत्ति या रीति।
पर्यालोचना–चारों ओर से समीक्षा।
पलना–पालना, झूला, हिंडोला।
पलायनवाद–यथार्थ से दूर भागने की वृत्ति।
पवाड़ा–महाराष्ट्र में एक लोक-प्रसिद्ध छंद जो प्रायः वीर रस में प्रयुक्त होता है।
पँछाहां–पश्चिमी हिन्दी।
पांचाली–तीसरी वृत्ति या काव्यरीति।
पात्र–काव्य, गद्यकाव्य का नाटक का मुख्य तत्व, चरित्र।
पादाकुलक–16 मात्रा का एक छंद।
पालि–मध्यप्रदेश की एक भारतीय भाषा, जिसमें बौद्ध साहित्य की रचना अधिक हुई है।
पाशुपत–एक अस्त्र, एक शैव संप्रदाय।
पिंगल–छंद शास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य, छंद का भी पर्याय।
पिंगल काव्य–ब्रजभाषा से पूर्व की काव्य भाषा में रचित काव्य।
पुनरुक्तवदा भास–जहाँ शब्द की मिथ्या पुनरुक्ति प्रतीत हो, वास्तव में शब्द का अन्य अर्थ में प्रयोग हुआ हो।
पुनरुथानकाल–हिन्दी में भारतेन्दु से इस काल का आरंभ माना जाता है।
पुराणकथा–पुराणों से ली गई कथा।
पुष्टिमार्ग–वल्लाभाचार्य का चलाया संप्रदाय, जिसमें प्रवृत्ति का निषेध नहीं, पर मानसिक निवृत्ति पर बल दिया जाता है।
पूँजीवाद–वह अर्थव्यवस्था जिसमें उत्पादन के साधनों पर राज्य का नहीं, बल्कि व्यक्ति का अधिकार माना जाता है।
पूर्वमध्यकाल–हिन्दी साहित्य का वह काल जिसमें ज्ञानमार्गी, प्रेममार्गी, रामभक्ति तथा कृष्ण-भक्ति कविता का विकास हुआ, सं. 1375 से 1700 तक का समय।
पूर्वरंग–नाटक से पूर्व रंगशाला में गीत आदि की आयोजना द्वारा दर्शकों को आनंद देने की क्रिया।
पूर्वराग–विवाहपूर्व प्रेम।
पैगम्बर–खुदा का संदेशवाहक।
पैंफलेट–छोटा-सा निबंध या पुस्तिका।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैराडी–किसी शैला पर टीपी गई व्यंग्यगीति।
पौराणिक–पुराणों का आधार लेकर बनाया गया काव्य नाटक आदि।
प्रकरण–प्रसंग, रूपक का एक भेद।
प्रकरणांतर–प्रसंगांतर।
प्रकृतिवाद–प्रकृति-संबंधी रोमांटिक कविता-धारा संबंधीवाद।
प्रगतिवाद–साम्यवादी यथार्थवाद का साहित्यिक मत।
प्रगीतकाव्य–गेय और कवि की व्यक्तिगत प्रबल भावना का काव्य।
प्रणयगीत–प्रेमगीत।
प्रतिक्रियावादी–प्रगति विरोध।
प्रतिस्तूपमा–जहाँ साम्यवाले उपमेय-उपमान का साधारण धर्म भिन्न-भिन्न शब्दों में कहा जाए।
प्रतीक–चिह्न, चिह्न शब्द।
प्रतीप–उपमा का उल्टा अर्थालंकार, जहाँ उपमान का वर्णन मुख्य बनाकर उपमेय का गुण कथन किया जाए।
प्रतीयमाना उत्प्रेक्षा–जिस उत्प्रेक्षा अलंकार में 'मानो' आदि उत्प्रेक्षावाचक शब्द न हों।
प्रत्यक्षवाद–इंद्रियों से ग्राह्य वस्तुओं को माननेवाला मत।
प्रत्यालोचना–आलोचना की आलोचना।
प्रत्यावर्तन–अतीत या पुरातन को पुनः लौटाने की लहर।
प्रत्युत्तर काव्य–गडरिए का गीत, जिसमें प्रेमी प्रेमिका के प्रश्नों का एकतरफा उत्तर देता है।
प्रपत्ति–अनन्या भक्ति।
प्रबन्ध काव्य–श्रव्य काव्य का एक भेद जिसमें कथा का क्रमिक विकास होता है और उद्‌यों का पूर्वापर-प्रसंग होता है।
प्रबोधक काव्य–उपदेशमय काव्य।
प्रभाववाद–इसमें कलाकार अपने अंतःकरण पर झलके प्रभाव की हल्की-सी छाया प्रस्तुत करता है।
प्रयाणगीत–युद्ध के लिए जानेवाले वीरों का प्रचलन गीत।
प्रयोगवाद–सन् 1943 में हिन्दी कविता में चली नई धारा, ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ने की बौद्धिक जागरूकता।
प्ररूढ़यौवना–भरपूर यौवनवाली।
प्रलय–सर्वनाश, एक सात्विक अनुभाव।
प्रवक्ता–विशेष बोलने के लिए नियुक्त व्यक्ति, रेडियो नाटक में एक व्यक्ति।
प्रवत्स्यत्पतिका–वह नायिका जिसका पति परदेश जाने ही वाला है।
प्रवेश–पात्र का रंगमंच पर आना।
प्रसादगुण–सरलता का काव्यगुण।
प्रस्तावना–नाटक की भूमिका।
प्रस्थानक–दो अंकों तथा दस नायकोंवाला एक उपरूपक।
प्रहसन–रूपक का वह भेद जिसमें किसी व्यक्ति या मत की हँसी उड़ाई जाती है।
प्रहेलिका–पहेली, बुझारत।
प्राकृत–भारत की मध्यकालीन भाषा।
प्राकृतवाद–नैचुरलिज्म।
प्रागैतिहासिक युग–लिखित इतिहास से पहले का युग।
प्रासंगिक वस्तु–दृश्य काव्य में प्रसंगवश आई गौण कथा-वस्तु।
प्रेखण–एक उपरूपक।
प्रेममार्गी–सूफी साधक कवि, जैसे जायसी।
प्रेमलक्षणा भक्ति–जहाँ भक्ति में प्रेम की प्रधानता हो।
प्रेमाख्यान काव्य–जिन काव्यों की प्रेम कहानी के आधार पर रचना हुई हो (इनमें प्रायः लौकिक प्रेम के बहाने अलौकिक प्रेम की प्रतीति कराई जाती है)।
प्रेयस्–प्रेम, श्रेयस् का उलटा, वे कार्य जो प्रिय लगें परंतु परिणाम में कल्याणकारी न हों।
प्रोषितपतिका–जिस नायिका का पति परदेश गया हुआ हो।
प्रौढ़ा–पूर्ण विकसिता चतुरा वाक्‌कुशता नायिका।
फलागम–रूपक की पाँच अवस्थाओं में से अंतिम अवस्था।
फासिज्म–कट्टर राष्ट्रवाद, एक तरह का अधिनायकवाद।
फिक्शन–कथा साहित्य।
फलैश बैक–स्मृति दृश्य, पूर्वदीप्ति।
बंकनाल–शंखिनी नाड़ी।
बंगला–बंगाल की भाषा।
बरवै–मात्रिसक धर्सस छंद जिसमें 1, 3 पादों में 12-12 मात्राएँ तथा 2, 4 में 7-7 मात्राएँ होती हैं।
बहिर्मुखी–अंतर्मुखी का उलटा, वह प्रवृत्ति जिसमें बाहरी टीप-टाप पर अधिक ध्यान हो।
बहुदेवतावाद–नाना देवी-देवताओं को मानना।
बाउल–बंगाल का एक संप्रदाय, जिनके अनुयायी गीत गाकर माँगते हैं।
बारहमासा–एक तरह का लोकगीत जिसमें चैत्र आदि महीनों में प्रकृति की नाना स्थितियों और विरही की मनःस्थितियों का वर्णन होता है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बावरी पंथ–यू. पी. के गाजीपुर जिले में बावरी साहिबा से यह पंथ चला, इसमें अजपा जाप तथा व्यक्तिगत सदाचार पर बहुत बल दिया जाता है।

बासोख्त–उर्दू की वह कविता जिसमें प्रेमी अपनी प्रेमिका को उलाहना देता है।

बिन्दु–दृश्यकाव्य की पाँच अर्थ प्रकृतियों में से द्वितीय।

बिंदु–नाद रूप है ईश्वर का और बिन्दु रूप है जीव का।

बिंबविधान–कल्पना करना।

बिदेसिया–परदेशी प्रियतम के विरह में गाए जानेवाले गीत।

बीज–रूपक की पाँच अर्थप्रकृतियों में से पहली।

बीजाक्षर–मंत्र जो किसी एक अक्षर में इकट्ठा करके उसी का जाप करना।

बीभत्स रस–इसका स्थायी भाव घृणा या जुगुप्सा है, इसमें मांस, वसा, श्मशान आदि का वर्णन रहता है।

बुत-परस्त–मूर्ति-पूजक।

बुतशिकन–मूर्ति-भंजक।

बुद्धिवाद–बुद्धि से समझ में आनेवाली बातों को माननेवाला वाद, इसमें प्राय: इंद्रियों से परे की बातों को नहीं माना जाता।

बूर्जुआ–पूँजीपतियों का उच्चवर्ग।

बैलेड–नृत्यगीत।

बैसवाड़ी–उन्नाव, लखनऊ, रायबरेली, फतेहपुर–इन जिलों की बोली।

बोधिसत्व–बुद्ध के अवतार।

बोलशेविक–रूस की साम्यवादी क्रांतिकारी पार्टी, जिसने जार का शासन समाप्त किया।

ब्रजभाषा–मथुरा-आगरा-अलीगढ़ आदि में प्रचलित हिन्दी का रूप।

ब्रह्मरंथ–कुंडलिनी का जहाँ सिर है उससे ऊपर मस्तिष्क में एक छिद्र है (हठयोग)।

ब्रह्मवाद–ब्रह्म सत्य है, जगत् मिथ्या यह मत।

ब्रह्मसमाज–एक सुधारक संप्रदाय, जिसकी स्थापना राजाराम मोहनराय ने की थी।

ब्रह्मानन्दसहोदर–काव्य रस को ब्रह्म की प्राप्ति से मिलनेवाले रस के समान बताया गया है।

भक्तिकाल–हिन्दी साहित्य के इतिहास का पूर्व मध्यकाल, संवत् 1375 से 1700 तक कबीर, जायसी, सूर और मीरा आदि इसी काल में हुए।

भयानक-रस–इस रस का स्थायी भाव भय है, इस रस के आश्रय स्त्री, नीच, स्वभाव व्यक्ति, बालक आदि हो सकते हैं।

भागवत धर्म–विष्णु भगवान या उसके किसी अवतार की भक्ति को माननेवाला संप्रदाय, वास्तव में सभी सगुणोपासक इसके अंतर्गत आते हैं।

भाण–इस रूपक में एक ही पात्र होता है।

भाणिका–उपरूपक का एक भेद, इसमें केवल एक अंक होता है।

भारती वृत्ति–चौथी नाट्यवृत्ति।

भारोपीय–भारत-यूरोपीय भाषा।

भाव–मानसिक अवस्था की अभिव्यक्ति।

भावनाट्य–मेलोड्रामा, जिस नाटक में भाव गीतों का अभिनय हो।

भावपक्ष–काव्य अंतरंग, काव्य की आंतरिक विशेषताएँ, कविता की आत्मा, कविता के भाव-विचार रस आदि।

भाव-विरोध–जहाँ एक भाव के वर्णन में विरोधी भाव लाया जाए, वहाँ काव्य में यह वर्णन-दोष होता है।

भावशबलता–एक भाव के बाद दूसरे भाव का आना, दूसरे के बाद तीसरे का–इस प्रकार जहाँ भावों की शृंखला हो, परंतु दूसरा भाव पहले को दबाकर, तीसरा भाव दूसरे को दबाकर आए, इस प्रकार भाव चमत्कार उत्पन्न हो।

भावशांति–पहले से विद्यमान भाव की अकस्मात् चमत्कार-पूर्ण शांति होना।

भावसंधि–जहाँ एक भाव के बाद दूसरा भाव आए और दोनों के बीच चमत्कारपूर्ण स्थिति हो।

भावाभास–अनुचित स्थान पर भाव प्रकाशन, जैसे शत्रु की सराहना शत्रु करे या वेश्या लजाए तो वहाँ भाव फीका पड़ेगा।

भावोदय–एक भाव को शांत करके दूसरे भाव के उदय होने से चमत्कार होना।

भुजंगी–एक वर्ण छंद जिसमें तीन यगण हर एक चरण में हों।

भुजंगप्रयात–जहाँ चार गण प्रत्येक चरण में हों।

भूत–प्राणी पंचमहाभूत, पृथ्वी, जेल, तैज, वायु आकाश, भूतप्रेत योनि विशेष।

भोजपुरी–पूर्वी उत्तर-प्रदेश तथा बिहार के विस्तृत भू-भागों में बोली जानेवाली हिन्दी की शाखा।

भौतिकी–विज्ञान का प्रथम अंग।

भौतिकवाद–पदार्थवाद, सांसारिक इंद्रियग्राह्य पदार्थों को ही मानना।

भ्रमरगीत–कृष्ण भक्ति का एक अंग, उद्भव-गोपी संवाद, सूर, नंददास आलम और ब्रजरत्नदास का भ्रमरगीत प्रसिद्ध है; पर वास्तव में उत्तर सूर और नंददास का ही है।

भ्रमर गुफा या गुहा–ब्रह्मरंध।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्रांतिमान–उपमेय में उपमान का भ्रम होना।
मंगलपाठ–नांदी।
मंगलाचरण–काव्य या किसी भी ग्रंथ के आदि में देवता, गुरु आदि की स्तुति।
मंडन–समर्थन कृष्ण भक्ति में सखी द्वारा नायिका (राधा) को सजाना।
मंत्र–वेद का पद्य, गुरु-मंत्र, गुप्त सलाह, मंत्री की दी हुई सलाह।
मंदाक्रांता–(वर्णवृत्त) म भ न त त ग त 17 वर्ण का छंद।
मगही–मागधी अपभ्रंश से पैदा हुई बोली जो पटना और गया में बोली जाती है।
मणिपुर–हठयोग में दूसरा चक्र।
मति–बुद्धि, मत, सलाह, एक संचारी भाव।
मत्तगयन्द सवैया–सबसे प्रसिद्ध सवैया, इसमें सात भगण और दो गुरु होते हैं।
मदनगुपाल–श्याम (कृष्ण)।
मदिरा–एक सवैया।
मधुमती भूमिका–रसास्वादन की वह सात्विक अवस्था जिसमें आस्वादक अपनी सत्ता खोकर तल्लीन हो जाता है।
मध्यकाल–सं. 1375 से 1900 तक का हिन्दी साहित्य का समय।
मध्यमा–वह नायिका जो प्रेम करने पर प्रियतम से प्रेम करे, अवज्ञा करने पर अवज्ञा करे।
मध्यवर्ग–मिडिल क्लास के लोग, जो सामंतवादी अर्थव्यवस्था में नौकरी या दलाली द्वारा गुजारा करते हैं। मार्क्सवादी इसे सबसे अधिक घृणा की दृष्टि से देखता है।
मनोविकार–मन के रोग, मानसिक परिवर्तन।
मनोविश्लेषण–मानस के विभिन्न अंशों की विस्तृत व्याख्या–फ्रायड, जुंग और एडलर इसके मुख्य आचार्य माने जाते हैं, मनोविश्लेषण का संचार के साहित्य तथा आलोचना पर गहरा प्रभाव पड़ा है।
मरसिया–शोकगीत।
मलयालम–द्रविड़ गौत्र की वह भाषा जो मालावार (केरल) में बोली जाती है।
मसनवी–कथा काव्य की एक शैली जिसमें शे'रों की संख्या तथा भावों का कोई बंधन नहीं होता। जायसी का पद्मावत इसी शैली में लिखा गया है।
महाकाव्य–पद्य में विस्तृत कथात्मक काव्य जिसमें जीवन के विविध अंगों और समाज का चित्रण हो, कथानक उदात्त व्यक्ति के चरित्र से संबद्ध हो और अवांतर कथाएँ भी हों, साथ ही देश-काल की झलक हो–रामायण, महाभारत, पृथ्वीराज रासो, रामचरितमानस, पद्मावत, प्रियप्रवास, कामायनी, साकेत, कृष्णायन आदि महाकाव्य है।
महायान–बुद्ध धर्म की पूर्वी शाखा।
मात्रा–परिमाण, औषधि की खुराक, छंद शास्त्र में ध्वनि के उच्चारण की इकाई–मत्ता, मन, कला भी इसी के नाम हैं–मात्रा के दो भेद गुरु और लघु हैं।
माधुर्य–एक काव्य गुण।
मानवीकरण–अमानव में मानव गुण का आरोप, जैसे 'संध्या-सुंदरी'।
मारिफ़त–ईश्वरीय, ईश्वर भक्ति में भक्त की दास्य अवस्था।
मार्क्सवाद–द्वंद्वात्मक भौतिकवाद, मार्क्स का पदार्थवाद जिसमें पदार्थ को प्रधान माना गया है और प्रत्यय (चेतना) को पदार्थ से उत्पन्न।
मालिनी–न न म य य–15 वर्णों का छंद।
मालोपमा–जहाँ एक उपमेय के अनेक उपमान हों।
माहिया–पंजाबी का विरहपूर्ण लोकगीत।
मिश्रवस्तु–नाटक में प्रख्यात के साथ उत्पाद्य कथावस्तु का मिश्रण।
मिसरा–छंद का एक चरण।
मीमांसा–गवेषणा, तर्कपूर्ण विचार, मीमांसा एक दर्शनशास्त्र भी है।
मीलित–उपमेय उपमान का गुणों की एकता के कारण परस्पर मिलकर अलग न दिखाई देना 'जुवति जोन्ह में मिलि गई'।
मुकरी–कहमुकरनी, पहेली का एक प्रकार।
मुक्तक काव्य–प्रबंध काव्य के विपरीत जिस काव्य का प्रत्येक पद्य स्वतंत्र हों, उसमें पूर्वा पर प्रसंग न हो।
मुग्धा–जिस नायिका के शरीर में नवयौवन का प्रथम संचार हुआ हो।
मुद्रा–मोहर, अँगूठी, हठयोग की मुद्रा एक अर्थालंकार।
मुरली–श्याम की बंसरी।
मुलकथावस्तु–मुख्य (आधिकारिक) कथावस्तु।
मूलप्रवृत्तियाँ–आदिम वृत्तियाँ।
मूलाधार–हठयोग में पहला चक्र।
मूषक–चंचल मन का प्रतीक।
मेंढक–उछलकूद करनेवाला मन।
मैथिलकोकिल–कवि विद्यापति।
मैथिली–मिथिला-दरभंगा को बोली।
यथार्थवाद–आदर्शवाद के विपरीत वस्तु को उसके हूबहू रूप में देखना और वर्णन करना, यह वाद कल्पना की उड़ानों के विरुद्ध है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यमक–जहाँ भिन्न आकार वाले दो ऐसे शब्द हों जो एकार्थक प्रतीत हों पर दोनों का अर्थ भिन्न-भिन्न हों।

युक्ति–योग की युक्ति, एक अर्थालंकार, प्रियमिलन की युक्ति (उपाय)।

योग–चित्तवृत्ति का निरोध, प्रियतम से संयोग।

योग माया–विष्णु की माता भगवती जिसने संसार को सम्मोहित कर रखा है।

यौन वर्जना–काम-उपभोग में किसी तरह की मनाही।

यौन विकृति–काम संबंधी अस्वाभाविक अवस्था।

रचना–साहित्य की किसी विधा की कृति–कविता, काव्य, महाकाव्य, नाटक आदि।

रचनात्मक–कर्तृस्वशक्तिवाला।

रति–प्रेम, अनुरक्ति, शृंगार रस का स्थायी भाव।

रस–विभाव अनुभाव संचारी भावों से योग से उत्पन्न ब्रह्मानंद सहोदर आनंद जो काव्य के अध्ययन दर्शन आदि से मिलता है। शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्‌भुत शांत ये नव रस माने गए हैं। कुछ विद्वान् वात्सल्य को भी मानते हैं।

रसराज–शृंगार रस।

रस संप्रदाय–रसवाद।

रसा भाव–जहाँ उचित स्थान पर रस की योजना न हो।

रसाभिव्यक्ति–रसनिष्पत्ति।

रसिया–रसिक श्याम या कृष्ण ध्रुपद घराने का एक संगीत।

रहस्यवाद–जीवात्मा की उस प्रवृत्ति का काव्यमय प्रकाशन हो, उसमें परामात्मा से मिलन की उत्कंठा के कारण रहती है।

राधावल्लभी संप्रदाय–गोसाईं हित-हरिवंश का चलाया कृष्णभक्ति का एक पंथ।

रामकाव्य–वाल्मीकि की रामायण से लेकर आज के साकेत काव्य तक का सारा रामचरिताश्रित काव्य।

राष्ट्रीय कविता–देशभक्ति की कविता।

रास–रासलीला।

रासधारी–रास रचानेवाला।

रासो–वह काव्य जिसमें राजा की शोभा का वर्णन हो, वह शब्द राजसूय, रसायन या रहस्य से बना है।

रीति–ढंग, काव्य-शैली, वृत्ति, काव्यशास्त्र संबंधी सब नियम।

रीतिकाल–संवत् 1700 से 1900 तक का हिन्दी साहित्य का समय।

रूपक–एक अलंकार, जहाँ उपमेय को उपमान का रूप दिया जाता है, जैसे–मुखचंद्र।

रूपक कथा-काव्य–जहाँ काव्य में पात्र किन्हीं भावों के प्रतीक रूप में आते हैं।

रूपगर्विता–नायिका जिसे अपनी सुंदरता का बहुत अभिमान हो।

रेखता–ऐसी कविता जिसमें फारसी और हिन्दी का मिश्रण हो, ऐसी बोली जिसमें हिन्दवी और फारसी का मिश्रण हो (बाद में इसके लिए उर्दू शब्द प्रसिद्ध हो गया)।

रोपना–वर्षा में धान बीजने के समय के गीत।

रोमांच–रांगटे खड़े होना, एक सात्विक अनुभाव।

रोमांटिसिज्म–स्वच्छन्दतावाद, यह क्लासिज्म के विरुद्ध होता है, इसमें पुरानी रूढ़ियों को स्वीकार नहीं किया जाता।

रोला–प्रसिद्ध मात्रिक छंद, इसमें 24 मात्रा और 11, 13 पर यति होती है।

रौद्र–एक रस जिसका स्थायी भाव क्रोध है।

लक्षक–वह शब्द जिसका अर्थ लक्षणा शक्ति से जाना जाए।

लक्षिता–वह नायिका जिसका पर पुरुष से प्रेम प्रकट हो जाए।

लय–ताल (द्रुत, मध्यम और विलंबित)।

ललित कला–फाइन आर्ट।

लाटानुप्रास–शब्द या वाक्य की आवृत्ति, शब्दों के अर्थ भी एक–परंतु अन्वय करने पर तात्पर्य में भेद।

लावनी–एक छंद, संगीत में एक उपराग, लावनी बाजों के दंगल होते हैं।

लिटरेचर–साहित्य।

लोक–तीन लोक, लोग, जनता, आम जनता।

लोकगीत–जनसाधारण के गीत।

लोकयात्रा–निर्वाह, आजीविका, संसार यात्रा।

लोक परंपरा–लोकरूढ़ि, पुराने चले आए रीति-रिवाज।

लोक मानस–जनमानस।

लौ–लगन, चाह, चित्तवृत्ति।

लौकिक छंद–जिन शब्दों का प्रयोग वेदों में नहीं हुआ।

वक्रता–कविता शैली में विदग्धता और चारुता।

वक्रोक्ति–शब्दालंकार, जहाँ श्रोता कंठ ध्वनि विकार से या श्लेष से वक्ता के अर्थ से अलग अर्थ ग्रहण करे।

वज्रयान–बौद्ध धर्म का एक तांत्रिक रूप।

वटगमनी–एक प्रकार के मैथिली लोकगीत।

वर्गयुद्ध–वर्ग-संघर्ष।

वर्गहीन समाज–साम्यवादी समाज।

वर्णवृत्त–जिन छंदों में वर्णों की गणना और गुरु लघु आदि का नियम हों।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसंततिलका–(छंद) जहाँ 'त भ ज ज ग ग' हों।
वस्तु सत्य–यथार्थ।
वाङ्मय–साहित्य।
वात्सल्य–दसवाँ रस।
वाममार्ग–तांत्रिक मत के दक्षिणाचार के विपरीत संप्रदाय जिसमें मद्य, मांस, मीन, मुद्रा और मैथुन ये पाँच साधन माने जाते थे, इनमें भैरवी चक्र होते थे, जिनमें मनमाना व्यभिचार होता था।
वासकसज्जा–प्रिय मिलन के निश्चय से शरीर तथा सेज सजानेवाली नायिका।
विकासवाद–लामार्क डारविन आदि द्वारा स्थापित सिद्धांत।
विघटन–संघटन का विपरीत, इकाइयों को अलग-अलग करना।
विदूषक–नायक का हँसोड़ सहायक।
विनोक्ति–जहाँ बिना शब्द के द्वारा चमत्कार लाया गया हो।
विप्रलंभ–वियोग शृंगार।
विबोध–एक संचारी भाव।
विभव–वैभव, अवतार।
विभ्रम–अप्रस्तुत व्यक्तियों या पदार्थों को देखना (वहम)।
विरेचक सिद्धांत–अरिस्टाटल का चलाया सिद्धांत–इसमें बताया गया है कि दु:खांत से आनंद इस कारण मिलता है कि उससे हमारा शोक बाहर बह निकलता है और वह हृदय स्वच्छ हो जाता है।
विरोधाभास–जहाँ विरोध-सा होता हो, पर वास्तव में न हो।
विशिष्टद्वैतवाद–कारण ब्रह्म और कार्य ब्रह्म की एकता का सिद्धांत, रामानुज इसके प्रवर्तक और रामानंद उत्तर भारत में प्रचारक थे।
विश्लेषण–किसी रचना के आंतरिक तत्वों को पृथक्-पृथक् करके समझना।
विषय प्रधान काव्य–जिस काव्य में जगत् का वर्णन मुख्य हो।
विष्कंभ–दो अंकों के बीच में आनेवाला नाटक का अंग, जिसमें हो चुके या होनेवाले गद्यांश को बताया जाता है।
विस्मय–अद्भुत रस का स्थायी भाव, रहस्यवाद की पहली स्थिति।
वीथी–गली, पंक्ति, रूपक का एक भेद जिसमें दो या एक ही पात्र हों।
वीप्सा–भय, घृणा, हर्ष आदि की प्रकट करने के लिए जहाँ शब्द की द्विरुक्ति हो।
वीर–आल्हा छंद।
वीर काव्य–योद्धाओं के यशोगान का काव्य।
वीर पूजा–वीर या आदर्श व्यक्ति की पूजा।
वीर रस–उत्साह इसका स्थायी भाव है।
वेदांत–वेदसार, उपनिषद्, अद्वैतवाद।
वैदर्भी–प्रथम काव्य रीति।
व्यंजना शक्ति–अकथित अर्थ को बतानेवाली सबसे उत्तम शब्द शक्ति।
व्यक्तिवाद–इंडिविजुअलिज्म, अपने 'मैं' को ही केंद्र मानकर हर एक बात को सोचना और हर एक काम को करना।
व्यतिरेक–जहाँ उपमेय का उपमान से या उपमान का उपमेय से उत्कर्ष कहा जाए।
व्याघात–बाधा: एक अर्थालंकार।
व्याजस्तुति या व्याजनिंदा–बहाने निंदा या निंदा के बहाने स्तुति की जाए।
व्याधि–रोग, एक संचारी भाव, शारीरिक ताप या मन:संताप।
व्यायोग–रूपक का एक भेद, जिसमें स्त्री पात्र कम; पुरुष अधिक हो, एक ही अंक हो।
व्याहतत्व–एक अर्थदोष, पहले किसी का उत्कर्ष या अपकर्ष दिखाकर फिर उसके विपरीत कथन।
व्रीडा–लज्जा, लज्जा संचारी भाव।
शंका–एक संचारी भाव, दूसरे की कठोरता या अपनी त्रुटि से अपने अनिष्ट की आशंका।
शंकार–राजा का साला (नाटकों में एक मूर्ख पात्र)।
शक्ति–संस्कार रूप से वर्तमान काव्य-रचना की शक्ति।
शठ–जो नायक किसी अन्य नायिका में अनुराग रखे; परंतु सामने उपस्थित नायिका में झूठमूठ अनुराग दिखाए।
शतक–मुक्तक सौ पद्यों का संग्रह।
शब्ददोष–पदांशगत, पदगत और वाक्यगत तीन प्रकार के शब्द दोष होते हैं।
शब्दशक्ति–शब्द के अर्थ का बोध करानेवाला व्यापार।
शब्दालंकार–जहाँ काव्य में संगीत के आधार पर छंद चमत्कार हो।
शांत–काव्य का नौवाँ रस, इसका स्थायीभाव शम, तप आदि; विभाग काम क्रोध आदि का अभाव और मति आदि संचारीभाव है।
शाक्तमत–शक्ति की उपासना करनेवालों का पंथ।
शार्दूलक्रिडित–म, स, ज, स, त, त ग और 12, 7 वर्णों पर यति।
शालिनी–म त त ग ग से पालन करते हुए।
शिखरिणी–य म न स भ ल ग।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिल्पक–चार अंक, चार वृत्तियाँ, शांत और हास्य के सिवाय अन्य सब रस होते हैं।

शुक्लाभिसारिका–चाँदनी रात में अभिसार करने वाली नायिका।

शुद्धतावाद–प्योरिज्म या प्यूरिटनिज्म।

शुद्धाद्वैतवाद–वल्लभाचार्य का अद्वैत संबंधी मत, इसमें ब्रह्म को माया संबंध से रहित अंतः शुद्ध माना जाता है।

शून्य–विष्णु के सहस्र नामों में से एक नाम, वेदांत में ब्रह्म का एक वाचक।

शून्यवाद–बौद्धमत के महायान का दार्शनिक संप्रदाय।

शृंगारकाल–हिन्दी साहित्य का रीति काल (संवत् 1700 से 1900 तक)।

शृंगार रस–रसराज, काव्य और नाटक का प्रथम रस, रति इसका स्थायी-भाव है।

शृगाल–ज्ञानवान् मन का प्रतीक, 'उलटि सियर सिंह को खायो'–कबीर।

शेर–उर्दू कविता का कोई एक छंद बहुवचन 'अशआर'।

शैली–रीति, काव्य की पद-रचना का विशेष ढंग।

शैवमत–शिव के उपासकों का पंथ।

शैवागम–शैव, पाशुपत कालायन और कापालिक, इन चार मतों के ग्रंथ, इनकी संख्या 200 है।

शोक–करुण रस का स्थायी भाव।

शोभा–अयत्नज अलंकार।

श्रम–तेंतीस में से एक संचारी भाव रति (संभोग) या मार्ग चलने आदि से होनेवाला खेद।

श्रव्यकाव्य–जिस काव्य में कवि स्वयं कथा का वर्णन करे, दृश्य के विपरीत।

श्रव्य नाटक–रेडियो नाटक का एक प्रकार।

श्रावकयान–हीनयान का ही एक अच्छा नाम।

श्रुतिकटु–पद दोष, कर्ण कटु शब्दों का प्रयोग।

श्रुत्यनुप्रास–कंठतालु आदि से उच्चारण से किसी एक ही स्थान से उच्चारण किए जानेवाले शब्दों की आवृत्ति।

श्लेष–जहाँ एक शब्द के कई अर्थ निकलें और वे अर्थ अभिलषित हों।

श्लेषवक्रोति–जहाँ श्लेष के कारण वक्रोक्ति अलंकार हो।

षड्दर्शन–न्याय, सांख्य, योग, वैशेषिक, पूर्वमीमांसा, उत्तममीमांसा।

षोडशोपचार–मूर्ति-पूजा के सोलह विधान।

संकटकाल–व्यक्ति के जीवन में जब नीति-अनीति और जीवन-मरण में से एक को चुनने का समय आ जाए, साहित्य-समीक्षा में पूँजीवाद के कारण संस्कृति की अवनति का काल।

संकर–जब एक पद में नीर-क्षीर न्याय से एक से अधिक अलंकार मिले हुए हों इसके तीन भेद हैं। अंगांगिभाव संकर, एकवाचकानुप्रवेश संकर, संदेह संकर।

संक्रमण–ऐसा परिवर्तन, जिसमें पुराने का भी अंश रहता है और नया भी आता है।

संक्रमणकाल–जब साहित्य नया रूप धारण कर रहा होता है, वह समय।

संख्या संकेत–छंद शास्त्र में वर्णसंख्या के स्थान पर प्रयोग में आने-वाले शब्द, जैसे भुज, नेत्र, पक्ष, ये दो की संख्या के सूचक हैं।

संगति–सामंजस्य, विरोध का अभाव, सौंदर्य बोध की तृप्ति।

संगीत रूपक–गीतों की प्रधानता वाला एक रेडियो रूपक।

संघर्ष–पश्चिमी नाट्यशास्त्रों के अनुसार नाटक की वह स्थिति जिनमें विरोधी शक्तियों का अंतिम बार संघर्ष होता है।

संचारी भाव–निर्वेद, ग्लानि आदि 33 संचरण करनेवाले, भाव, संचारी-भाव को व्यभिचारीभाव भी कहते हैं।

संतुलन–सामंजस्य, संगति।

संदर्भ साहित्य–वह साहित्य जिसमें सामान्यतया साहित्य में आई गूढ़ बातों का स्पष्टीकरण हो।

संदेशकाव्य–विरह संदेश की कविता का काव्य, इसमें भावानुभूति की तल्लीनता होती है।

संदेहवाद–वह वाद है जिसमें किसी भी प्रकार के विश्वसनीय ज्ञान को असंभव माना जाए।

संधि–व्याकरण में अक्षरों के मेल से होनेवाला विकार, रूपक (दृश्य काव्य) में प्रकृति और अवस्था का मेल।

संबोधन गीति–गीति-काव्य का वह रूप जिसमें प्रेमी या प्रेमिका को संबोधन करके हृदय के भावों के उद्‌गार कहे गए हों।

संभोग शृंगार–जहाँ प्रेमी प्रेमिका दर्शन, स्पर्शन, संभाषण या शरीर संबंध से आनंद उपलब्ध करें, ऐसा काव्य-प्रसंग (इसे संभोग शृंगार) भी कहते हैं।

संवेदना–ज्ञानेंद्रियों की अनुभूति।

संश्लेष–विश्लेषण का विपरीत शब्द।

संसृष्टि–एक पद्य या वाक्य में एक से अधिक शब्दालंकार या अर्थालंकारों का तिल तंडुल न्याय से मिलना।

संस्कृत–आर्य परिवार की एक प्राचीन भाषा के दो रूप–वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत।

संस्कृत साहित्य या वाङ्मय–वेदों से लेकर आज तक संस्कृत भाषा में लिखे गए ग्रंथ।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृति–सामाजिक परंपरा से प्राप्त संस्कार और व्यवहार, पाश्चात्य संस्कृति या पश्चिमी संस्कृति–यूरोपीय संस्कृति।

संस्मरण–आत्मचरित का वह रूप जिसमें किसी अन्य के चरित्र को प्रधानता देकर उसकी विगत बातों का उल्लेख हो।

सकाम भक्ति–कामना सहित प्रभु-भजन ध्यान आदि करना।

सखी भाव–गोपी के रूप भक्त द्वारा उपासना।

सखी संप्रदाय–निबार्कमत की एक शाखा, इसकी संस्थापना स्वामी हरिदास ने की थी, इसमें भक्त सखी की वेशभूषा धारण कर लेते थे।

सगुण धारा–हिन्दी साहित्य के भक्ति काल की एक विशेष शाखा।

सगुण संप्रदाय–वे सब संप्रदाय जो साकार की उपासना को स्वीकार करते हैं।

सट्टक–उपरूपक का वह भेद जिसमें अद्भूत रस प्रधान हो और प्रवेशक, विष्कंभक आदि का अभाव हो।

सतनामी–संप्रदाय का भक्त पंथ जिसके अनुनायी आपस में मिलने पर 'सत्तनाम कहते हैं।'

सतसई–सात सौ मुक्तक पद्यों की एक ही कवि की रचना।

सत्याग्रह–गांधी जी का प्रचारित शब्द जिसमें सत्य के आग्रह के लिए कोई व्यक्ति विरोधी के हाथों कष्ट सहन करना है पर उसे सत्य पर चलाने का प्रयत्न नहीं छोड़ता, अहिंसा इनका मुख्य अंग है।

समदाउनि–मिथिला में बेटी की विदाई में गाया जानेवाला गीत।

समरस–शिव शक्ति का तादात्म्य, आनंद बोध के समय गायक, गान और गेय का अभेद, रसानुभूति की स्थिति।

समवकार–इसमें कई गायक होते हैं।

समवेतगान–सामूहिक गान।

समष्टिवाद–व्यक्तिवाद का विपरीत शब्द।

समाजवाद–सोशलिज्म।

समाधि–एक अलंकार जहाँ काकतालीय न्याय से किसी अर्थ की सिद्धि हो जाए।

समालोचना–किसी साहित्यिक रचना की परख करके उसके विषय में अपनी सम्मति देना।

समासोक्ति–जहाँ समान विशेषण की सामर्थ्य से प्रकृत के कथन द्वारा अप्रकृत का कथन किया जाए।

समाहारवाद–परस्पर विरोधी तत्वों, मतों या संप्रदायों का समन्वय करना।

समीक्षा–अच्छी तरह देख और जाँच करके किसी वस्तु अथवा साहित्य की रचना की विवेचना, आलोचना आदि करना।

समूह-गीत–सामूहिक गान।

समूहवाद–एक तरह की समष्टिवादी विचारधारा।

सरस साहित्य–ललित साहित्य।

सरसी–एक छंद जिसमें 16, 11 के क्रम से 27 मात्राएँ प्रत्येक चरण में हों और चरणांत में 1-1 गुरु-लघु अवश्य हों।

सर्वश्राव्य–नाटक में कथोपकथन का वह भाग जो 'स्वगत' के बाद सबको सुनाने के लिए कहा जाए।

सर्वात्मवाद–सर्वेश्वरवाद, सब में एक ही आत्मा है।

सलज्जरति–जो लाज के साथ रति बढ़ाने की इच्छा करे, वह नायिका।

सवैया–एक चरण में 22 से 26 अक्षरों वाले छंद को सवैया कहते हैं, हिन्दी में कवित्त के बाद सवैया छंद का बड़ा महत्व और प्रयोग है, सुंदरी (मत्त-गयन्द), दुमिल, किरीट, अरसात, मदिरा, सुमुखी आदि इसके कई भेद हैं।

सहज–परमतत्व।

सहज रहनि–समाधि।

सहजिया–परकीया प्रेम को महत्व देनेवाला एक संप्रदाय।

सहस्त्रदलकमल–हथयोगियों के अनुसार एक चक्र।

सहस्त्रार–ब्रह्मरंध्र।

सहोक्ति–जहाँ सह, साथ आदि शब्दों के द्वारा चमत्कार हो।

सांग रूपक–जहाँ रूपक अलंकार में उपमेय के अवयवों पर अपमान के अवयवों का भी आरोप हो।

साकांक्षता–सामंजस्य, समन्वय, अंग प्रत्यंग का उचित सन्निवेश।

सात्विक अनुभाव–चित्तवृत्तियों के द्वारा स्तंभ, स्वेद, रोमांच आदि शरीर पर पड़नेवाले प्रभाव।

सात्विक अलंकार–शोभा, कांति, दीप्ति, माधुर्य, आदि सत्वगुण वाले व्यक्तित्व की सुंदरता बढ़ानेवाले गुण।

साधना–सिद्धि के लिए प्रयत्न।

साधारण धर्म या सामान्य धर्म–उपमा अलंकार में चौथा अंग।

साधारणीकरण–विभावादि का व्यक्ति-विशिष्ट से संबंध छूट जाना और सामाजिक का व्यक्तित्व बंधन नष्ट होना, अतः रस की प्रतीति होना।

सानेट–चतुर्दशपदी छंद।

सापेक्षता–दो परिणामों की तुलना।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य–विश्लेषण में अ की ब से तुलना।
सापेक्षतावाद–आइंसटाइन का आविष्कृत सिद्धांत, इस सिद्धांत में दिवकाल निरंतरता को वास्तविक माना जाता है।
सामंजस्य–नाना विभिन्न अनुभवों तथा प्रभावों की समन्विति।
सामंदवाद–राज रजवाड़ा, उमांदारवाद।
सामगान–सामवेद के मंत्रों का स्वर सहित गाना।
सामाजिक दायित्व–समाज के प्रति व्यक्ति के कर्तव्य।
सामाजिक यथार्थवाद–मनुष्य के व्यापारों, जीवन-प्रक्रिया तथा लौकिक संबंधों को ही महत्वपूर्ण एवं सत्य माननेवाला मत।
सामाजिक समष्टि–समुदायवाद।
सामान्य–अविशेष, एक अर्थालंकार, समानता।
सामूहिक चेतना–वह चेतना जो व्यक्ति विशेष की न होकर कालविशेष में समष्टिगत हो।
सामूहिक मानस–सभा-समिति या वर्ग का मानस।
साम्यवाद–कम्यूनिज्म।
सारंगा सदाब्रज–उत्तरी भारत का एक कथागीत।
सार–एक छंद, सारांश, जन्मोत्सव का गीत, एक अलंकार।
सरोपा लक्षणा–लक्षणा शब्द शक्ति का एक भेद जिसमें विषयी तथा विषय दोनों का शब्द द्वारा प्रतिपादन होता है।
सावन–एक मास जो विरह के काव्य का सबसे उपयुक्त समय है।
सावनी हिंडोला–स्त्रियों द्वारा झूला झूलते समय गाए जानेवाले गीत।
साहित्य–किसी भाषा के ललित-रसपूर्ण काव्य, नाटक, उपन्यास आदि ग्रंथों का समुदाय।
साहित्य-विधा–साहित्य के रूप।
सिंहलगढ़–हठयोग में शरीर।
सिंहावलोकन–आगे-पीछे देखकर वर्णन करना या देखना।
सिद्ध–जिसकी साधना पूर्ण हुई, साबित तंत्र युग में सफल साधनावाला योगी।
सुपर इगो–इड या अहम्।
सुरति–चित्त के स्रोत का प्रवाह, स्मृति।
सुषुम्ना–इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना, तीन नाड़ियाँ हैं।
सूक्तिकाव्य–कवि अनुभव सार।
सूत–सूत, तार, जनेऊ, छोटे वाक्य में बहुत अर्थ कथन, पुतलियों का डोरी, मूल ग्रंथ।
सूत्रधार–रंगशाला का प्रबंधकर्त्ता।
सूफी–इस्लाम में रहस्यवादी।
सूफी मत–वह मत जिसमें लौकिक प्रेम के बहाने अलौकिक प्रेम किया जाता है।
सेहरा–सोने-चाँदी की तारों या फूलों की झालर, विवाह के समय बधाई के रूप में गाई जानेवाली कविता।
सैटायर–व्यंग्यगीत या व्यंग्य कविता।
सोमरस–समीरस, एक लता का रस जिसे वेदों के काल में आर्य पीते थे।
सोरठ–एक रोमांटिक लोकगाथात्मक कविता।
सोहना–पंजाब की एक लोकगाथा सोहनी महिवाल की नायिका, आषाढ़ में निराली के समय लोकगीत।
सोहम्–वेदांत का मूलमंत्र–मैं ब्रह्म हूँ।
सोहर–जन्मोत्सव का गीत।
सौंदर्य चेतना–सौंदर्यमय वस्तु की रचना या आस्वादन करते समय आत्मा की स्थिति विशेष।
स्तंभ–प्रथम सात्विक अनुभाव।
स्तुतिगीत–स्तोत्र, अर्चना गीत।
स्थापक–सूत्रधार के बाद रंगमंच पर कथा की स्थापना करनेवाला।
स्थैर्य–स्थिरता, नायक का सात्विक गुण।
स्फोट–प्रस्फुटित होना, विकसित होना, नाद का शाश्वत रूप।
स्मरण–स्मृति, का एक अर्थालंकार जिसमें सदृश वस्तु को देखकर पूर्व दृश्य के स्मरण में चमत्कार हो।
स्मित–मुस्कान, हास्य रस का एक अंग।
स्मृति–एक संचारी भाव।
स्मृति दृश्य–पूर्व स्मृति का दृश्य की भाँति साकार होना।
स्त्रग्धरा–वर्णवृत्त म र भ न य य य 7, 7, 7 वर्ण पर यति।
स्त्राग्विणी–चार रगण प्रत्येक चरण में।
स्वकीया–आत्मीया या स्वीया नायिका।
स्वगत–नाटकीय कथोपकथन का वह भाग जिसे दर्शक तो सुनते हैं पर समीपस्थ अन्य पात्र नहीं सुनते, स्वगत के द्वारा नाटककार पात्र का चरित्र-चित्रण करता है और उसके अंत:करण को व्यक्त करता है तथा उसके अंतर्द्वंद्व को प्रकट करता है।
स्वच्छन्दतावाद–इस वाद के अनुयायी प्राचीन रूढ़ियों का उल्लंघन करके स्वतंत्र रूप में शृंगार, प्रकृति तथा वीरता की रचनाएँ करते हैं।
स्वप्नप्रतीक–मनोविज्ञान मे स्वप्नों में दृष्ट कुछ वस्तुओं को अन्य गुप्त बातों का प्रतीक माना जाता है।
स्वप्न सर्जना–स्वप्न में की गई कलात्मक रचना।
स्वभावज अलंकार–लीला विलास आदि हाव।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वभावोक्ति–जाति, गुण, क्रिया तथा स्वभाव आदि का वर्णन।

स्वाँग–भंगी, धोबी, कुर्मी आदि का वेश बदलकर शृंगारमय नृत्य करना जिसमें ढोलक, डफ आदि बजाए जाते हैं, विशेषतया होली में स्वाँग भरे जाते हैं और इसमें पुरुष स्त्री का वेश बनाता है तथा स्त्री पुरुष का वेश बनाती है।

स्वागता–न भ ग ग।

स्वात्मनिष्ठकाव्य–सब्जेक्टिव पोइट्री।

स्वाधिष्ठान–हठयोगियों का बताया शरीर में ही दूसरा चक्र।

स्वाधीनपतिका–जिसका पति आज्ञा का पालन करे।

हकीकत–सूफीमत की वह मंजिल जहाँ साधक को 'रब' का यथार्थ ज्ञान होता है।

हठयोग–योग-साधना का वह अंग जिसमें इंद्रिय-निग्रह कड़ाई से किया जाता है और प्राणायाम तथा ध्यान आदि द्वारा कुंडलिनी को जगाकर ब्रह्मरंध्र से टपकनेवाला अमृतरस पिया जाता है।

हरिगीतिका–16, 12 यति के क्रम से प्रत्येक चरण में 28 मात्रा का मात्रिक छंद।

हरिप्रिया–इसके प्रत्येक पद में 12, 12, 12, 10 कुल 46 मात्राएँ होती हैं, अंत में 5 या 5 5 लगा होता है। यह मात्रिक दंडक है।

हर्ष–संचारी भाव।

हल्सीश–इसमें 7-8 या 10 नारी पात्र होते हैं।

हारमनी–सामंजस्य।

हाल–सूफियों की वह अवस्था जब वे सभी मानवीय गुण-दोषों से ऊपर उठकर भावावेश की अवस्था में हो जाते हैं।

हालावाद–शराब, मधुवाला और मदिरालय के प्रतीकों से की जानेवाली कविता का पंथ।

हाव–अंगज अलंकार।

हास–हास्य रस का स्थायी भाव।

हास्यरस–इसका स्थायी भाव हास्य है। इसका वर्ण श्वेत है, देवता प्रथम है।

हिंदवी–हिन्दी का पुराना नाम।

हीर राँझा–झंग में हीर का तख्त हजारे में राँझे का जन्म हुआ। दोनों की प्रेम-कहानी पंजाब में अमर हो गई, पंजाबी में कवि वारस शाह का 'हीर' नामक काव्य बड़ा प्रसिद्ध है, पंजाब का सबसे प्रसिद्ध लोकगीत।

हृदयवाद–वह मत जिसमें साहित्य रचना के लिए हृदय की अनुभूतियों को सर्वोपरि माना जाता है।

हेला–अंगज अलंकार।

होली–फाग के गीत।

ह्रासोन्मुख–पतन की ओर प्रवृत्त।

●●●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Authenticated Administrative Vocabulary

प्रामाणिक शासन-शब्दावली

जनतंत्र की केंद्रीय तथा प्रादेशिक शासन-व्यवस्था में प्रयुक्त शब्दों की हिन्दी सूची

☞ अ ☜

अकारथ करते हुए–In supersession of.
अकिंचन अपील–Pauper appeal.
अकिंचनता की मद–Forma Pauperis.
अकिंचन वाद–Pauper Suit.
अक्षधुरी–Axis
अक्षर-विन्यास–Spelling.
अक्षिकूप–Orbit.
अखाद्य फसलें–Non-food Crops.
अग्नि-प्रशामक–Fireman, Fire-extinguisher.
अग्नि-इष्टिका–Fire-brick.
अग्नि-सुरक्षित तिजोरी–Fire-proof Safe.
अग्र ऋण–Taqavi advance.
अग्रतम (प्रमुख)–Foremost.
अग्रधन–Imprest.
अग्रहार-दान–Endowment.
अग्राह्य दावा–Inadmissible Claim.
अग्रीव–Flange.
अचल संपत्ति–Immovable property.
अढ़वाल (कसनी)–Brace.
अणु-कण–Corpuscles.
अंडवृत्त–Ellipse.
अतिपत्ति–Lapse.
अतिरिक्त अनुदान–Additional Grant.
अतिरिक्त कर–Cess.
अतिरिक्त कर्त्तव्य–Extraneous duties.
अतिरिक्त खेती–Additional Cultivation.
अतिरिक्त नियमपत्र–Collateral agreement.
अतिरिक्त प्रविष्टि–Additional entry.
अतिरेक (बचत)–Surplus.
अत्यधिक–Excessive.
अत्यंत छोटा–Infinitesimal.
अत्यवस्थान–Overstayal.
अदह–Asbestos.
अधस्तन–Lower.
अधिकतर उन्नति के लिए योग्यता–Fitness for further advance.
अधिकतम माँग-सूचक–Maximum Demand Indicatory.
अधिक बलन–Reinforcement.
अधिक भार का करण पत्र–Instrument of further charge.
अधिक भुगतान–Overpayment.
अधिक मूल्य पर–At a higher value or rate.
अधिकरण–Article, Bench.
अधिकरणिक–Magistrate.
अधिकरणिक वर्ग–Bench of magistrates.
अधिक व्यय–Overcharge.
अधिकार–Power.
अधिकार-क्षेत्र–Jurisdiction.
अधिकार घोषक न्यायपत्र–Declaratory decree.
अधिकार त्यागपत्र पर शुल्क–Duty on resignation of authority.
अधिकार सीमा–Purview.
अधिकारिवर्ग-सूची–Civil list.
अधिकारी–Authority, Officer.
अधिकृत करना–Authorise.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकृत–Official.
अधिकोष (धनागार)–Bank.
अधिक्षेत्र–Commanded area.
अधिगमन–Acquisition.
अधिनियम–Act.
अधिपत्र–Warrant.
अधिपत्र-अधिकारी–Warrant-officer.
अधिभार–Overcharge, Surcharge.
अधिमान–Preference.
अधिमूल्यन–Appreciation.
अधिया–Batainisf.
अधियाचक–Claimant.
अधियाचन (दावा)–Claim.
अधिवक्ता–Advocate.
अधिष्ठाता–Rector, Pleader, Lawyer.
अधीनस्थ–Subordinate.
अधीनस्थ पशुचिकित्सा सेवा–Subordinate Veterinary Service.
अध्यादेश–Ordinance (law).
अध्ययन-अवकाश–Study-leave.
अनन्य–Identical.
अनधिकारिक–Non-official.
अनामक–Anonymous.
अनायुक्त अधिकारी–Non-commissioned officer.
अनावर्ती व्यय–Non-recurring expenditure.
अनावृष्टि–Drought.
अनावासिक–Non-residential.
अनावासिक छात्र–Day scholar.
अनियत–Non-contract.
अनियम–Anomaly.
अनियमता–Irregularity.
अनिर्दय-पशुवध-यंत्र–Humane Cattle-Killer.
अनिवार्य निवृत्ति–Compulsory retirement.
अनिवार्य भरती–Conscription.
अनिश्चित–Erratic.
अनुक्रम (परंपरा)–Succession.
अनुक्रमणिका–Index.
अनुग्रह-धन–Compassionate Gratuity.
अनुग्रह रूप सहायता–Exgratia relief.
अनुचित दबाव–Coercion.
अनुचित्रक–Tracer.
अनुच्छेद–Para.
अनुज्ञप्ति खंडन–Revocation of Licence.
अनुज्ञापत्र–Licence.
अनुज्ञापत्र दायक–Licensing authority.
अनुज्ञाधारी–Licensee.
अनुज्ञेय–Permissible.
अनुतर–Freight.
अनुत्पादक–Unproductive.
अनुदर्शन (जाँच)–Survey.
अनुदान–Grant.
अनुदेश–Instruction.
अनुधावन (अनुसरण)–Pursuance.
अनुपत्र–Enclosure.
अनुप्रस्थ छेद–Cross or transverse section.
अनुपस्थान–Default.
अनुपस्थित (नादिहंद)–Defaulter.
अनुपस्थिति विवरणपत्र–Absentee Statement.
अनुपात–Proportion.
अनुपाततः–Pro-rata.
अनुपालन–Maintenance.
अनुपूरक–Supplementary.
अनुमति–Approval.
अनुमतिपत्र–Permit.
अनुमानिक (वेतन)–Presumptive (pay).
अनुमानित अभ्युद्देश्य–Speculative reference.
अनुमोदन–Endorsement, Approval.
अनुमोदित सेवा–Approved service.
अनुरूपता–Conformity.
अनुरेखण–Tracing.
अनुलेख–Postscript.
अनुशासन–Discipline.
अनुशासनात्मक कार्यवाही–Disciplinary action.
अनुसंधेय–Cognizable.
अनुसंधान–Investigation.
अनुसचिव–Under-secretary.
अनुशासन की कार्यवाही–Disciplinary action.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुशासित–Disciplined.
अनुशीलन–In pursuit of.
अनुसूची–Schedule.
अनुस्मारक–Reminder.
अनेकार्थ (वाद)–Multifarious (suit).
अनैतिक पण–Immoral traffic.
अनैयमिक–Anamalous.
अन्वायाम काट–Long or vertical section.
अपयार्जन–Deletion.
अपमृत्यु-मीमांसक–Coroner.
अपराध–Crime, offence.
अपराध (बुरा काम)–Perpetration, Delinquency.
अपराध रोधक पुलिस–Crime Police.
अपराध वृत्त–Histroy sheet.
अपरिगणित–Non-scheduled.
अपरिश्रमी–Non-labouring.
अपर्याप्त–Inadequate.
अपलाभ (जरे वासलात)–Mesne profit.
अपवाद–Exception.
अपसृत–Escapee.
अपहरण–Abduction, Kidnapping.
अपहरण–Forfeiture.
अपहार–Embezzlement.
अपाकरण (दीवाला)–Liquidation.
अपाहरण–Misappropriation.
अपील–Appeal.
अपीलकर्ता–Appellant.
अपील के आधार–Grounds of appeal.
अपीली–Appellated.
अपेक्षण–Requisition.
अप्रगुणता–Inefficiency.
अप्रचलित मुद्रा–Uncurrent coin.
अप्रचलित स्टांप–Obsolete-stamp.
अप्रतिलभ्य–Irrecoverable.
अप्रवीण–Unskilled.
अप्रवेश्य–Impervious.
अप्रिय (थकाऊ)–Irksome.
अबंधित रहना–Remain at large.
अबाधित आज्ञा–Absolute order.
अभाव–Lack, Want.
अभिकर्त्ता–Agent
अभिकर्त्तापत्र–Power of attorney.
अभिप्रेषण–Deputation.
अभिभाषक–Pleader.
अभिभाषक परिषद्–Bar Council.
अभिभाषक संघ–Bar Association.
अभियुक्त–Accused.
अभियोक्ता–Complinant.
अभियोग–Charge.
अभियोग–Prosecution.
अभियोग (चलाना)–Prosecute.
अभियोग (दोषण)–Accusation.
अभियोग पक्ष–Prosecution.
अभियोग फलक–Charge sheet.
अभियोग मुक्त–Discharged.
अभियोग साक्षी–P.W. (Prosecution witness).
अभियोगी–Complainant.
अभिलेख–Record.
अभिलेखपाल–Record-keeper.
अभिलेख संशोधन–Record rectification.
अभिलेखाधिकृत–Record-in-charge.
अभिशून्यन–Annulling.
अभिहरण अधिपत्र–Distress warrant.
अभिहस्तांकन (बेंची)–Assignment (of land).
अभिहस्तांकिती–Assignee.
अभ्यर्थना (याचिका)–Petition.
अभ्यर्थी–Petitioner.
अभ्युक्ति (कैफियत)–Remarks.
अभ्युद्देश–Reference.
अमान्य लेख–Discredited document.
अमुक-अमुक के अंश से–As hissa fulan-fulan.
अमूर्त संपत्ति–Intangible property.
अयोग्यता–Disqualification.
अराजपत्रित (अधिकारी)–Non-gazetted (officer).
अरिष्ट गुणक–Safety factor.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरिष्टि–Security.
अर्गल–Bar (as in efficiency bar), Bolt, Latch.
अर्थदंड–Fine.
अर्थ पुस्तिका–Financial Hand book.
अर्थमंत्री–Finance Minister.
अर्ध–सरकारी–Demi-official.
अर्ध–सरकारी पत्र–D.O. letter.
अर्ध–स्थायी–Quasi-permanent.
अर्धोपांत–Half-margin.
अलगाव–Segregation.
अलपेट–Kink.
अलाव–Fire-place.
औलती–Eaves.
अल्पकाल ऋण–Floating debt.
अल्पवयस्क–Minor.
अल्पवयस्क अपराधी–Juvenile offender.
अल्पवाद न्यायालय–Small Causes Court.
अल्प शुल्क–Low fees.
अवकाश–Recess, Vacation.
अवक्रमण–Devolution.
अवक्षेपण (विवरणपत्र)–Objection (statement).
अवतरण (उद्धरण)–Extract.
अवधि–Limitation.
अवधिताकाल–Period of limitation.
अवधि बाधित–Barred by limitation.
अवमूल्यन–Depreciation.
अवयव–Component parts.
अवर कर्मचारी वर्ग–Inferior Staff.
अवरुद्ध–Detenue.
अवरोध–Detention.
अवर्गीकृत–Unclassified.
अवधि वृद्धि–Extension.
अवशिष्ट–Arrears.
अवशिष्ट के प्राप्य–Arrear Claims.
अवशेष–Residue.
अवहार (छूट)–Rebate.
अविनय–Misbehaviour.
अविभक्त जोत–Undivided holding.
अविभक्त परिवार संपत्ति–Undivided family property.
अविभाज्य लेन–देन–Indivisible transaction.
अविरत सक्रिय सेवा–Continuous active service.
अविरत सेवा–Continuous service.
अविवेकी, अविवेकपूर्ण–Indiscriminate.
अवेक्षक–Overseer.
अवेक्षा–Care (regard).
अवैतनिक–Honorary.
अवैध–Illegal.
अवैध समुदाय–Unlawful assembly.
अव्यवस्था–Random.
अशक्त–Infirm.
अशक्तता अवकाश–Disability leave.
अशुद्ध वर्णन–Mis-description.
अशुद्धि शोधन–Rectification of error.
अशुद्धि–सूची–Errata list.
अश्रु–धूम टुकड़ी–Tear-smoke Squad.
अश्व–शक्ति–Horse-power.
असमर्थता–Infirmity.
असमलंब चतुर्भुज–Trapezoid (with no sides parallel).
असली काश्तकार–Tenant-in-chief.
असाधारण अवकाश–Extraordinary leave.
असाध्य–Unmanageable.
असावधानी–Negligence.
असिग्रंथि–Sword knot.
असैनिक कर्मचारी–Civil employee.
असोख–Non-porous.
असंगत–Irrelevant.
असंगति–Discrepancy.
असंबंधित इच्छापत्र–Unrelated testament or will.
अस्थायी–Provisional.
अस्थायी पद–Temporary post.
अस्थायी मूल–Provisional substantive.
अस्थि–मज्जा–Bone marrow.
अस्पष्ट (अप्रसिद्ध)–Obscure.
अस्वस्थ–Unsound.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्वाभाविक–Unnatural.
अस्वाभाविक धन–Escheat.
अस्वामिक–Unclaimed.
अस्वामिक लेखपत्र–Unclaimed document.
अस्वास्थ्यकर–Unwholesome.
अस्वास्थ्यकरता–Unhealthiness.
अहस्तक्षेप्य–Incognizable.

☞ आ ☜

आकल्प (सज्जा)–Accountrement.
आकस्मिक–Emergent, Casual.
आकस्मिक अवकाश–Casual Leave.
आकस्मिक धृतदल–Contingent Reserve.
आकस्मिक व्यय–Emergent expenditure.
आकाश (रिताई)–Space.
आक्रमण–Assault.
आखेट (खेल)–Game.
आगणन–Estimate.
आगमपत्र–Title-deed.
आगामी–Forthcoming.
आघात–Injury.
आचरण–Conduct.
आजीवन पट्टा–Life lease.
आज्ञा नस्ती–Order file.
आज्ञापत्र (फरमान)–Writ.
आज्ञा पुस्तक–Order book.
आज्ञा फलक–Order sheet.
आज्ञासार संग्रह–Manual of orders.
आड़–Hypothecation.
आतति (तनाव)–Tension.
आतान–Strain.
आतिथि–Up-to-date.
आतुरालय–Infirmary.
आत्ययिक–Urgent.
आत्ययिक पर्ची–Urgent slip.
आदाता–Donor.
आदिता (पूर्वता)–Priority.
आदेय–Assets (as opposed to liability).
आदेश–Provision, Instructions (law).
आदेशपत्र-वाहक–Process server.
आदेश-पंजी–Order-book.
आदेशात्मक–Mandatory.
आघर्षण–Conviction.
आघर्षित–Convict.
आधारभूत–Fundamental.
आधार-रेखा–Base-line.
आधि (गिरवी)–Pawn, Pledge.
आधिकारिक (सरकारी)–Official.
आनियम (नियमन)–Regulation.
आनुपातिक–Proportionate.
आनुषंगिक व्यय–Incidental or Contingent charge.
आपत्ति–Objection.
आपत्तिकर्त्ता–Objector.
आपराधिक षड्यंत्र–Criminal Conspiracy.
आपात–Incidence.
आपेक्षिक–Specific.
आप्त (प्रामाणिक)–Authentic.
आबकारी विभाग–Excise Department.
आभ्यासिक अपराधी–Habitual offender.
आमान–Gauge.
आयकर–Income-tax.
आयत (आयताकार)–Oblong.
आयतन (खंड)–Volume.
आयति–Prospect.
आयव्ययक (बजट)–Budget.
आयव्ययक सारसंग्रह–Budget manual.
आयात–Import.
आयात-निर्यात कर–Tariff, Customs duty.
आयुक्त–Commissioner.
आयुधक–Armourer.
आयुध-कार–Armourer.
आयुधपाल–Retainer of armours.
आयोग–Commission.
आयोजक–Organiser.
आरोप–Allegation, Imposition.
आरंभ–Commencement.
आरंभ और क्षणिक–Commencement and transitory.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरंभिक–Initial, Opening balance.
आरंभिक निर्णय–Original decision.
आरंभिक वेतन–Initial pay.
आर्थिक–Pecuniary, Monetary.
आर्थिक दिष्टि–Monetary allotment.
आलेख (नक्शा)–Draft.
आलेखक–Draftsman.
आलोचन–Observation.
आलोचना–Comment
आलंब (टेक)–Fulcrum.
आवक्ष भित्ति–Breast wall.
आवधिक–Terminal.
आवरण–Cover.
आवर्ती–Recurring.
आवश्यक परिवर्तनों सहित–Mutatis Mutandis.
आवारागर्द–Vagrant.
आवारागर्दी–Vagrancy.
आवास–Residence, Quarter.
आवासिक–Resident.
आवेदक–Memorialist.
आवेदन पत्र–Representation.
आशु–Express.
आशु पत्र–Express letter.
आश्वासन–Assurance.
आसजन–Co-ordinate.
आसेध–Warrant of arrest.
आस्थगति वेतन–Deferred pay.
आस्थान–Site.
आस्पद (पदवी)–Rank.
आस्मारक (अभिरक्षित)–Protected monument.
आह्वानपत्र–Summons.
आँकड़े–Figures, Statistics.
आँकड़ों का संकलन–Complilation of Statistics.
आँकना–Assess.
आंशिक पूर्ति–Part performance Part supply.
आह्वान शुल्क–Process fees.

☞ इ ☜

इकबारा–Casual (As in casual Prisoner).
इकसार–Uniform.
इच्छापत्रकर्त्ता–Testator.
इच्छापत्र की प्रमाणित प्रतिलिपि–Probate.
इच्छापत्र साधक–Executor.
इजरा की कार्रवाई करना–Taking up execution proceedings.
इष्टिका–Brick.

☞ उ ☜

उगाही (वसूली)–Realization.
उग्रवादी–Extremist.
उचंत (अवर्गित)–Suspense.
उच्च न्यायालय–High Court.
उच्च प्राधिकारी–Higher authority.
उज्रदारी (इत्तलानामा)–Caveat.
उतार–चढ़ाव–Fluctuation.
उत्केंद्र–Eccentric.
उत्तरदायी–Liable.
उत्तरवादी–Respondent.
उत्तर पक्ष–Defence.
उत्तर रोध–Estoppel.
उत्तरवादी और सहोत्तरवादी–Respondent and Corespondent.
उत्तराधिकार प्रमाणपत्र–Succession certificate.
उत्तराधिकार (विरासत) का प्रमाणपत्र–Succession certificate.
उत्तराधिकारी–Successor, Heir.
उत्तरी भारत घाट विधान–Northern India Ferries Act.
उत्पाद कर–Excise duty.
उत्पादन–Production.
उत्प्रवासी संरक्षक–Protector of emigrants.
उदरकीट का विरु–Bots & warble.
उदासीनता–Apathy.
उदाहृत–Illustrated, Exemplified.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहृत करना–Exemplify.
उद्गम कार्यजात–Head works.
उद्देश्य–Object.
उद्यान–Park.
उद्विकास–Evolution.
उद्धकरण–Extract.
उद्धावन–Flush.
उन्मूलन–Abolition.
उप अनुच्छेद–Sub-paragraph.
उपकर–Cesses.
उपकरण–Implement, Tools.
उपज–Yield.
उपजीवन (निर्वाह)–Subsistence.
उपदान–Offer.
उपदंश कानून–Dourine Act.
उपधारा–Sub-section.
उपनिधान–Deposit.
उपनियम–Bye-laws.
उपनिवेशी सेवा–Colonial service.
उप प्रमाणक–Sub-voucher.
उपभाग–Sub-division.
उपभोक्ता–Consumer.
उपयुक्त–Appropriate.
उपरिव्यय–Overhead charges.
उपलब्ध–Available.
उपविभाग–Section.
उपशिक्षा–Subordinate Training.
उपशीर्षक–Sub-head.
उपसंक्षेप–Abstract.
उपसंक्षेप पुस्तक–Abstract book.
उप संस्थान–Sub-station.
उपसन्न–Approximate.
उपसमिति–Sub-committee.
उपस्कर–Furniture.
उपस्थापन–Submission.
उपस्थित होना–Appear.
उपस्थिति–Appearance.
उपस्थिति का स्मृतिपत्र–Memo of appearance.
उपस्थिति के लिए सफीना–Citation.
उपस्वामी–Sub-proprietor.
उपाधिक–Additional.
उपाधि-प्राप्ति–Predication.
उपांत–Margin.
उपांत शीर्षक (पार्श्व शीर्षक)–Marginal heading.
उपांत लिखित–Marginally noted.
उभयपक्ष–Both the parties.
उभार–Relief (Carving).
उल्लंघन–Infringement, Contravention.

ऊ

ऊपर–Supra.
ऊपरिक–Formal (superficial).
ऊसर–Barren.

ए

एकड़ों में क्षेत्रफल–Acreage.
एकपक्षीय–Exparte.
एकमत निर्णय–Concurrent judgment.
एकमत्य–Concurrence.
एकराशि–Lump sum.
एक सार (वर्दी)–Uniform.
एक स्थानीय चौराहा ड्यूटी–Fixed point duty.
एकस्थीकरण–Consolidation.
एकस्थीकृत–Consolidated.
एकस्व भेषज–Patent Medicine.
एकाधिकार–Monopoly.
एकीकरण–Amalgamation Coordination.
एकीकृत पूर्वामान–Consolidated forecast.
एकीकृत वेतन–Consolidated pay.
एड़ी-जोड़ा–Heel file.
एतदर्थ–Ad Hoc.

ऐ

ऐतिहासिक क्रम–Chronological order.

ओ

ओरी कोल–Sector (Radius Vector).

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ औ ☜

औद्योगिक–Technical.
औद्योगीकरण–Industrialization.
औपाधिक आदेश–Conditional Order.
औपांतिक–Marginal.
औरस–Legitimate (as in legitimate child).
औसत–Average.
औसत परिलाभ–Average emoluments.

☞ अं ☜

अंकनी–Pencil.
अंकित मूल्य से कम–Below par.
अंग–Member (Roof).
अंगुल–छाप–Finger-Print.
अंगुष्ठ भित्ति–Toe wall.
अंडाकार क्षेत्र तथा वक्र क्षेत्र–Eliptic and curved figures.
अंतराल–Interval.
अंतरिक्ष विज्ञान मान–मंदिर–Meteorological observatory.
अंतरिक्ष विद्या–Meteorology.
अंतर्कालीन (अंतरिम)–Interim.
अंतर्गतपत्र–Enclosure.
अंतर्परजीवी–Entozoa.
अंतर्न्यास–Insertion.
अंतर्वस्तु–Contents.
अंत:स्थायी–Intermediary Intermediate.
अंतिम डिगरी–Decree absolute.
अंतिम रूप से निर्णीत–Finally disposed of (decided).
अंतिम शेष–Closing balance.
अंश–Numerator, Share.
अंश (घटक द्रव्य)–Ingredient.
अंशकालिक–Part-time.
अंश–दान–Contribution.
अंश हस्तांतरण–Transfer of share.
अंशाधिपत्र–Share warrant.
अंशी–Coparcener.
अंशुक बकीय (रोग)–Actinomycosis.

☞ ऋ ☜

ऋण (उधार)–Credit.
ऋणग्रस्त–Encumbered.
ऋणशोधन (किश्तों में)–Amortization.
ऋणात्मक–Negative.
ऋण चुकाव कोष–Sinking fund.
ऋणपत्र–Debenture.

☞ क ☜

कक्ष (ग्रहपथ)–Orbit.
कक्षस्थ (गुप्त)–In Camera.
कच्चा–Kham.
कच्चा काश्तकार–Tenant at will.
कच्चा माल–Raw material.
कछार–Alluvion.
कटघरा–Balustrade.
कट्टा–Segment.
कटौती–Cut, Deduction.
कड़ा–Anklet.
कड़ाबीन आधार–Carbine bucket.
कड़ी (धरणी)–Rafter.
कड़ी–Link.
कनकूत–Appraisement.
कपट (कट, छल, धोखा)–Fraud.
कपास का गूलर–Cotton balls.
कबूलियत–Qabuliat.
कब्जा आराजी–Tenancy.
कमरकोटा (मुड़ेर)–Parapet.
कमी का स्मृतिपत्र–Discrepancy memo.
कंपनी का विधान नियम–Article of Association.
करघटा–Railings, Rack.
करणपत्र–Instrument (in writing).
करनिर्धारक जज–Assessing Judge.
कर निर्धारण–Assessment, Assess.
कर्जे में दिया गया रुपया–Subscription for the loan.
कर्ण–Hypotenuse.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्ण शिक्षा–Aural education.
कर्तनी चिह्न–Cross mark.
कर्तव्यपालन–Discharge of duties.
कर्तव्य भत्ता–Duty allowance.
कर्मचारी–Official.
कर्मशाला–Workshop.
कर्मचारी वर्ग–Staff.
कलश (शिखर)–Finial.
कलादीर्घा–Art gallery.
कल्पना–Hypothesis.
कल्याण केंद्र–Welfare Centre.
कागजात का नुकसान–Injury to records.
कागजात तलब करना–Calling for the records.
काचावृत रचनाएँ–Cover glass preparation.
काट (खड़ी और लंबानी)–Section (Cross & long).
काठी–Harness.
कानून–व्यवस्था–Statute.
काम (ठेके का)–Job.
कामगर–Workman.
कारगर चौड़ाई–Effective span.
कारण से–By virtue of.
कारापाल–Jailer, Jailor.
कारा शिविर–Concentration Camp.
कारोपांत–Jail premises.
कार्य-पद्धति–Procedure.
कार्यपीठ–Bureau.
कार्यत्यक्त–Discharged.
कार्यग्रहण अवधि–Joining time.
कार्यभार प्रमाणपत्र–Charge Certificate.
कार्य योग्यता प्रमाणपत्र–Fitness certificate.
कार्यवाह नियुक्ति–Acting appointment.
कार्यवाही–Proceedings, Action.
कार्यवाही का रजिस्टर–Minute book.
कार्यवाही सार–Minutes.
कार्यविधि–Procedure.
कार्यविवरण पत्र–Business statement.
कार्यसमिति–Working Committee.
कार्यस्तर–Standard of work.
कार्यान्वित–Implementation.
कार्यावली–Agenda.
कालकोठरी–Solitary Confinement, Dungeon.
कालक्रम–Time Scale.
काल तिरोहित–Time-barred.
काल व्यतिक्रम (तारीख की गलती)–Anachronism.
कालातीत–Lapsed.
काश्त में–Bakasht, Under cultivation.
कांजी हाउस–Cattle Pound.
काँटा (ठोकर)–Spur.
किराए का नकशा–Rent statement.
किराए की गाड़ी–Public conveyance Hackney-carriage.
किराएदार की दर–Occupiers' rate.
किशोर अपराधी–Juvenile offender.
कीट (कृमि)–Maggot.
कीटाणु-नाशक–Disinfectant.
कीटाणु-परीक्षा–Bacteriological examination.
कुछ वाजिबी अधिक–In moderate excess.
कुड़क करना–Attach (Legal Term).
कुड़क कराना–Distrain.
कुड़की–Seizure, Attachment.
कुत्ता–Ratchet.
कुत्ते का संक्रामक पांडुरोग–Infectious Jaundice of the dogs.
कुंद–Lathe.
कुंदकार–Turner.
कुंदा कब्जा–Hasp.
कुल चिह्न–Coat of Arms.
कुलाह–Turban.
कूटकरण (जाल कल्पना)–Forgery.
कूट रचना–Forgery.
कूप वेधन–Well-boring.
कृत्य–Function.
कृषक–Cultivator.
कृषक ऋण ऐक्ट–Agriculturiests' Loan Act.
कृषि उपकरण–Agricultural implements.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषि पट्टा–Agricultural lease.
कृषि योग्य बंजर–Culturable waste.
कृषि विषयक–Agricultural.
केंद्राभिग–Centripetal.
केंद्रायग–Centrifugal.
केंद्रीय अभिलेखालय–Central Record Office.
केंद्रीय उत्पादकर और नमक–Central Excise & Salt.
केंद्रीय भाग–Central Division.
केंद्रीय विवरणपत्र–Central Statement.
केंद्रीय राजस्व मुद्रांक–Central revenue stamp.
कैंची, डंडा, बेड़ी–Cross, bar, fetters.
कोई शब्द छल से लिख देना–Interpolation.
कोटि–Ordinate, Grade.
कोटिक्रम सूची–Gradation list.
कोटि क्रम–Gradation.
कोर्ट साहिब–Prosecuting Inspector.
कोषस्थीकरण–Encasing.
कोष–Cysts.
कोष्ठीय–Cellular.
कंकड़ी (छोटी-छोटी)–Shingle.
कंटक (बाधा)–Nuisance.
क्रमिक–Serial.
क्रय-विक्रय योग्य-सरकारी हुंडी–Marketable security.
क्रेता–Transferee.
क्रोड़पत्र–Codicil.
क्लीवाक्ष–Neutral axis.
क्षणिक–Transitory.
क्षतिपूर्ति–Indemnity.
क्षति मुद्रांक–Injured stamp.
क्षतिपूरक बंध–Bond of Indemnity.
क्षतिपूर्ति–Compensation.
क्षतिपूरक प्रतिज्ञापत्र–Indemnity-bond.
क्षतिपूर्ति का वाद–Damage suit.
क्षमा–Condonation.
क्षेपक–Addendum.
क्षेत्रमिति–Mensuration.
क्षमता–Calibre.
क्षय–Decay.
क्षय रोग संबंधी–Tubercular.
क्षुद्र प्रासंगिक व्यय–Petty Contingent Expenditure.

☞ ख ☜

खजाना–Treasury.
खड़ा लंब–King post.
खपत–Absorption.
खराद–Lathe.
खलीता–Satchel.
खसरा–Field-book.
खाँचा–Mould.
खाद–Fertiliser, manure.
खाद्य कोष्ठ–Pantry.
खाद्य मंत्री–Minister for food.
खाद्य सामग्री भंडार–Larder.
खारिज करना–Dismiss, Weed out, Set aside.
खुजली–Demodectic scabies.
खुजीला–Scarbotic.
खुला रखना–Keep exposed.
खुली हुई रूई–Loose cotton.
खेल-कूद–Games & sport.
खंड–Volume, Bay (division of roof).

☞ ग ☜

गजनिमीलिका–Connivance.
गट्ठा–Bamboo measuring rod.
गणना–Calculation.
गणनाकार–Computor.
गणनाधिकारी–Accounts Officer.
गणनाध्यक्ष–Accountant.
गणना परीक्षा विवरण–Audit report.
गणवेश–Uniform.
गतस्वामित्व–Ex-proprietory.
गतिशास्त्र–Dynamics.
गति सीमा–Speed limit.
गत्ताकारी–Book-craft.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गबन–Embezzlement.
गवाक्ष–Fenestra.
गर्भपात–Miscarriage, Abortion.
गर्भाधान–Insemination.
गश्त–Beat (Patrolling), Patrol.
गश्ती दस्ता–Mobile Squad.
गार्टर–Girder.
गाभिन करना (या कराना)–To cover.
गाभिन फार्म–Covering farm.
गाभिन विवरण पत्र–Covering return.
गारद–Escort.
गारद और कमान–Guards & Escorts.
गारा–Mud mortar.
गिट्टी–Ballast.
गिनती की किताब–Muster-roll.
गिनती (हाजिरी)–Muster.
गुट्ट (समूह)–Group.
गुणक–Factor.
गुनिया–Offset piece.
गुप्त अक्ष विचार–En-camera Trial.
गुप्तमत–Ballot.
गुप्त सेवा व्यय–Secret Service Charges.
गुरुत्व–Gravity.
गुंडा–Bully.
गुंबज–Vault.
गुल–Guts, Water-course.
गृहोपांत–Premises.
गैरदखिलकारी असामी–Non-occupancy tenant.
गैर वसूललागत–Cost outstanding.
गोला–Sphere.
गोला-बारूद–Ammunition.
गोली–Balled Ammunition.
गोली रोक–Bullet-proof.
गोपनीय, गोप्य–Confidential.
गोष्ठ–Stable.
गौण उत्तरवादी–Proforma-respondent.
गौण प्रतिवादी–Proforma-defendant.
गंदा नाला–Sewer.
ग्रस्त (प्रभावित)–Affected.
ग्रहणाधिकार–Lien.
ग्राम रक्षा समिति–Village-Defence Society.
ग्राम्य–Rural.
ग्राहक-पुस्तिका (पासबुक)–Pass-book.
ग्राह्य–Admissible.

घ

घटना (घटाया जाना)–Abatement.
घटबढ़–Variation.
घटाव–Substraction.
घटोत्तरी–Set-off.
घन–Cube.
घनमूल–Cube-root.
घाट–Ferries.
घुड़सवार पुलिस–Mounted Police.
घुंडी (गुंठी)–Frog.
घुन लगना–Weevilling.
घोल–Solution (Chemistry).
घोषणा–Proclamation, Declaration.
घोषणापत्र–Manifesto.
घोष विक्रय (नीलाम)–Auction.

च

चकबंदी–Consolidation of holdings.
चकबंदी अधिकारी–Consolidation Officer.
चकबंदीकर्त्ता–Consolidator.
चक्राधिकारी–Circle Officer.
चढ़ता–Sliding Scale.
चतुष्पथ–Crossing.
चरित्रवर्ति (चरित्रावली)–Character-roll.
चर्बी-रहित–Grease-free.
चर्मसार (पंछा)–Serum.
चर्मीय–Cutaneous.
चलता विवरण–Running statement.
चल संपत्ति–Movable property.
चहला (कीचड़)–Silt.
चालक–Operator.
चालन-व्यय–Propulsion Charges.
चालू–Current.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चालू कर्त्तव्य–Current duty.
चिकित्सकीय अवकाश–Medical leave.
चित्रसम (प्रक्षेप)–Isometric.
चिह्न–Identification mark.
चुनाव आंदोलन–Election Campaign.
चुनावपद–Selection Post.
चुंगीकर–Octroi duty.
चूना (टपकना)–Ooze.
चूल (जिस पर कोई वस्तु घूमे)–Pivot.
चूषण–Suction.
चेक चुकाई एजेंट–Clearing Agent.
चेक चुकाई कार्यालय–Clearing Office.
चेतावनी–Warning.
चोये की भूमि–Water-logged land.
चोर घंटी–Burglar Alarm.
चोरबत्ती–Torch.
चौक (चबूतरा, बाजार, कचहरी)–Forum.
चौकसी–Vigilance.
चौकी–Outpost (Police).
चौकी पुलिस–Watch & Ward (Police).
चौर्यपणन–Smuggling.
चौपार (डेवढ़ी)–Lobby, Chaupal.
चौसाला–Quadrennial.

☞ छ ☜

छँटनी–Retrenchment.
छत्ता–Arcade.
छद (आवरण)–Cover.
छद्मव्यक्तिता–Impersonation, False personation.
छर्रा–Buck ammunition.
छल (हरण, गबन)–Embezzlement.
छलनी परीक्षा–Sieve test.
छल्ला–Ferrule.
छाप–Impression.
छायांकित–Adumbrated.
छावनी कानून–Cantonment Act.
छिद्र पक्ष–Jambs.
छिद्र व्यास–Calibre.
छिपटी (खपच्ची)–Splinter.
छीलन–Scrap.
छुटकारा–Exoneration.
छुट्टी बढ़ाना–Extension of leave.
छुट्टी का वेतन–Leave salary.
छुट्टी से वापस बुलाना–Recall from leave.
छूट–Remission.
छेद–Aperture.
छेदा–Logarithm.
छेदिका–Secant.

☞ ज ☜

जड़ता–Inertia.
जड़ता प्रवृत्ति–Moment of Inertia.
जत्था–Batch.
जनगणना–Census.
जनजाति–Tribe.
जनभृत्या आयोग–Public Service Commission.
जन-सुरक्षा–Public safety.
जन-सेवक–Public servant.
जनित्र (जनक)–Generator.
जब्त करना–Forfeit.
जब्त किए हुए लेख पत्र–Impounded or forfeited documents.
जब्ती–Confiscation, Forfeiture.
जमा–Credit.
जमा की सूचना–Credit adivice.
जमानत दाखिल करना–Furnish security.
ज़मीन दबाना–Encroachment.
ज़मीन का उठाना–Letting.
ज़रपेशगी पट्टा–Zarpeshagi lease.
ज़रीब–Chain (measuring).
जल–Hydro.
जल-चालित–Hydraulic.
जलतोड़–Groyne.
जल नियंत्रक पुल–Aqueduct.
जल निगमन मार्ग–Spill way.
जलमग्न–Submerged.
जल विद्युत् तारजाल–Hydro-electric grid.
जलाशय (टंकी, हौज)–Reservoir.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलातंक चिकित्सा–Anti-Rabic treatment.
जलोत्सारण–Drainage.
जहरबाद–Farcy.
जहाज़ का किरायानामा–Charter party.
जहाज़ के मास्टर का प्रतिज्ञापत्र–Bots-tomary bond.
जस्त चढ़ी–Galvanized.
जागरण–Vigil.
जागर नियंत्रण–Vigilant Control.
जानपद–Civil (law).
जानपद भृत्या–Civil Service.
जानपद भृत्या आनियम–Civil Service Regulation.
जानपद विमान विभाग–Civl Aviation Department.
जाब्ता फौजदारी–Criminal Procedure Code.
जारी करना–Issue.
जाल (जालिका छेद)–Mesh.
जाली (झँझरी)–Gratings.
जाँच–Verification, inquiry.
जाँच आयोग–Commission of inquiry.
जिरह–Cross examination.
जिला पुलिस–District Executive, Force.
जीवा–Chord.
जूरी पंच–Foreman of the jury.
जेवनार–Banquet.
ज्येष्ठता–Seniority.
जोड़पत्र–Addendum.
जोत–Tillage, Holdings.
जोत का बँटवारा–Division or distribution of holdings.
ज्ञानमंदिर (ज्ञानालय)–Institute.
ज्ञानवृद्ध–Veteran.

☞ झ ☜

झगड़ालू–Violent.
झालर (नीली)–Blue Fringe.
झिलमिली–Louver.
झुका–Inclined.
झोंक–Momentum.

☞ ट ☜

टिड्डी–Locust.
टिप्पणी लेखक तथा पांडु लेखक–Noter and drafter.
टीका–Inoculation, Comments, Notes.
टीपें और आज्ञाएँ–Notes and orders.
टीला–Mound.
टूट-फूट–Wear and tear.
टूटा हुआ कुआँ–Chah shikasta.
टोंटी–Bib cock, Cock stop.
टोली नायक–Group leader.
टोटा भरना–Make restoration Compensate.
टंकन–Coinage.

☞ ठ ☜

ठीका–Contract.
ठीके का काम–Piece work.

☞ ड ☜

डंडा–Main wall (Jail ward), Baton, Bludgeon.
डंडा बेड़ी–Bar-fetters.
डाक–Dak.
डाक सवार–Despatch Rider.
डाट का पार्श्व–Rib of an arc.
डामर–Asphalt.
डाँट-फटकार–Admonition.
डाँड़–Penalty.
डाँस–Biting.
डिगरी–Decree.
डिगरी इजरा करना–To execute decree.
डेरी फार्म–Dairy Farm.
ड्यूटी का रजिस्टर–Roster of duty.

☞ ढ ☜

ढाल–Run off, Gradient.
ढाल चालित नहर–Gravity canal.
ढूला (नौशय्या)–Berth.
ढोर पालक–Breeder.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ त ☜

तड़ित संवाहक–Lightning conductor.
तत्त्वाधान में–Undr the auspices of.
तन्य–Tensile.
तरपल (तिरपाल)–Tarpaulin.
तर्क–Argument.
तली–Exhaust.
तंवा (लपरी)–Griddle.
तंग–Girths.
तंग मोड़–Sharp curve, Hairpin bend.
तानक–Stretcher.
तापमापक–Thermometer.
तामील–Execution.
तामील किया गया–Served.
तारण गृह–Rescue Home.
तार काट–Cable Crossing.
तार जोड़–Cable jointers.
तारा चिह्न–Asterisk.
तावान देना–Indemnification.
त्याग–Relinquishment, Abandonment, Surrender.
त्यागपत्र–Resignation.
तिर्यक्–Oblique.
तिबरसा रोग–Surra.
तीव्र अनुधावन–Hot-pursuit.
त्रिपाद–Tripod.
त्रैमासिक विवरण–Quarterly Statement.
तुकमा और हुक–Eye and hook.
तुच्छ–Insignificant.
तुषार–Blight.
तैनाती–Posting.
तोड़ना (भंग करना)–Violate.
तोरण शीर्ष–Crown of an arc.
तोरणाधार–Abutment.

☞ थ ☜

थानेदार (बड़ा)–Station Officer.
थानेदार–Sub-Inspector.
थोक–Bulk.
थोक भाव–Wholesale price.
थोप चेप मरम्मत–Patch repairs.

☞ द ☜

दखिलकार असामी–Occupancy tenant.
दग्ध भाग–Branded portion.
दग्धांकन प्रमाणपत्र–Branding Certificate.
दत्तक पत्र–Adoption deed.
दत्तक ग्रहण का अधिकारपत्र–Authentication of power of attorney.
दमकल–Fire brigade.
दमकल भृत्या–Fire service.
दलत्यागी–Deserter.
दया की अभ्यर्थना–Mercy petition.
दयामूलक–Compassionate.
दर अनुसूची–Schedule of rates.
दलेल–Fatigue.
दशमलव भिन्न–Decimal fractions.
दशा–Condition.
दहन–Combustion.
दहन वर्ति–Fuses.
दहनागार–Combustion Chamber.
दहेजकारणपत्र–Instrument of dower.
दंड (धरा)–Shaft.
दंड–Punishment, Penalty.
दंड आज्ञा देनेवाले प्राधिकारी–Sentencing authority.
दंडनायक–Magistrate.
दंडनीय (अपराध)–Culpable.
दंड विधि संग्रह–Criminal Procedure Code.
दंड विषयक–Penal.
दंड अपराध–Criminal offence.
दंडशास्त्र–Penology.
दंडात्मक श्रम–Servitude.
दंडावधि–Term of Sentence.
दाखिल खारिज रजिस्टर–Mutation Register.
दानपत्र–Deed of gift.
दांता–Notch.
दाय (बपौती)–Heritage, Inheritance.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाय वंचित करना–Disinherit.
दायर करने की तारीख–Date of institution.
दायरा क्लर्क–Suits Clerk.
दायित्व–Liability.
दायित्व का करण पत्र–Obligation Instrument.
दारा-भृति–Alimony.
दावा छोड़नेवाला–Disclaimer.
दावा छोड़ देना–Yield.
दावेदार–Claimant.
दिक् स्थिति–Bearing (Direction).
दिलहा–Panel (architecture).
दिवालिया ठहराना–Adjudication.
दिष्टि–Allotment.
दीर्घा–Gallery.
दीवानी के सामान्य नियम–General Rules, Civil.
दीवारगीर–Bracket.
दीवार-पकड़ रंग–Distemper.
दी हुई बातें–Data.
दुग्धशाला–Diary.
दुर्भिक्ष कर्त्तव्य–Famine-duty.
दुर्भिक्ष संहिता–Famine-code.
दुरुत्साहन–Abatement.
दुहरा–Duplicate.
दुर्वाचनीय कापी–Illegible copy.
दूती (संचारिका)–Procuress.
दूधा–Emulsion.
दूरदर्शी–Far-sighted.
दूरभाष (टेलीफोन)–Telephone.
दृढ़ कोष्ठ–Strong room.
दृष्टांक–Visas.
देखिए–Vide.
देन विक्रेता–Ex-officio Vendors.
देय–Chargeable.
देशांतर (लंबान)–Longitude.
देशित्र–Indicator.
देशीकरण (नागरिकीकरण)–Naturalization.
देशी भाषा विभाग–Vernacular Department.
दैनंदिनी (दिन पंजी)–Diary.
दोष–Default.
दोषमुक्त–Discharged.
दोषमुक्ति–Acquittal.
दोषी (अपराधी)–Delinquent.
दोषी (दोष प्राप्त)–Guilty.
दौरा–Sessions.
दौरा अदालत में मुकदमा–Sessions Trial.
दौरा का प्रोग्राम–Tour Programme.
दौरा जज–Sessions Judge.
दौरा न्याय गृह–Sessions House.
द्राष्टिक संकेत उपविभाग–Visual Signalling section.
द्वारपट–Leaves of doors.
द्विपारी प्रथा–Double shift system.
द्विमुखी कृमि–Amphistome worm.
द्विवर्षीय–Biennial.
द्विवार्षिक–Biennial.
द्विविभाजन–Bifurcation.
द्वेषजनक–Invidious.

ध

धन तथा ऋण का स्मृति-पत्र–Plus & minus memo.
धनात्मक–Positive.
धनादेश–Cheque.
धनुर्वात–Tetanus.
धमनी–Artery.
धरणी–Joist.
धरोहर–Deposit.
धर्म-मूर्ति–My Lord.
धवनी–Flush Latrine.
धारा–Section.
धारा के अधीन–Under Section.
धावक (हरकारा)–Runner.
धूलरोक–Dust-proof.
धृतवार्डर–Warder reserve.
धृतदल रक्षिगण–Reservists.
ध्वनिशास्त्र–Acoustics.
धोखादेही से बचाने की रोकथाम–Check against fraud.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ न ☜

नई परती–New fallow.
नकद फीस–A fee in cash.
नकद भुगतान–Cash payment.
नकदी लगान–Cash rent.
नगदी लगान–Cash Outlay.
नगर पालिका–Municipality.
नगर योजक सड़क–Arterial Road.
नज़ीर का हवाला–Citations.
नत्थी (मिसिल, नस्ती)–File.
नत्थी–Annexure.
नदमट (कछार)–Alluvium.
न पालन करना–Non-compliance.
नभ-सेना–Air-force.
नमूना–Representative fraction.
नए सिरे से–De Novo.
नरमी (तार खींचे जाने की क्षमता)–Ductility.
नल कूप–Tube well.
नवीकर कोर्स–Refresher Course.
नवीकरण–Renewal.
नस्ती पंजी–File register.
नस्या (टग)–Tag.
नहर की सिंचाई–Canal Irrigation.
नहर डिविजन अधिकारी–Divisional Canal Officer.
नाक (टोंटी)–Nozzle.
नागरिक (दीवानी)–Civil.
नाप पुस्तक–Measurement book.
नाभि–Focus.
नाम सूची–Nominal roll.
नाम निवेश–Enrolment.
नामकरण–Nomenclature.
नाम की सूचना–Debit advice.
नामे और जमा–Debit and Credit.
नामे संक्रम सूचना–Advice of Credit Transfer.
नाल (टोंटी)–Jet.
नालीदार–Corrugated.
नावंतरण–Trans-shipment.
नाविक सेना–Naval Force.
निकम्मा–Unserviceable.
निकाली हुई धनराशि–Withdrawn amount.
निकास–Outlet.
निकासा–Bay window.
निकासी–Discharge of water.
निक्षेपण–Bailment.
निकृंत (स्टेंसिल)–Stencil.
निगरानी–Surveillance, Revision.
निचय–Stock.
निधि–Fund.
निनाल–Syphon.
निंदा–Censure.
निपटारा पत्र–Composition deed.
निबटाया गया–Disposed of.
नियत–Prescribed.
नियतन–Allocation.
नियत फारम–Prescribed form.
नियत भत्ता–Fixed allowance.
नियंत्रक अधिकारी–Controlling Officer.
नियंत्रण परिवर्तन–Transfer of control.
नियम पत्र–Deed of agreement.
नियमबद्ध विक्रय–Regular sale.
नियम भंजन–Breach of rule.
नियम विरुद्ध–Abnormal, Irregular.
नियमानुरूप–Pro-forma.
नियामक–Regulator.
नियुक्ति विभाग–Appointment Department.
निरर्थक किया हुआ (मंसूख किया हुआ)–Annulled.
निरसन (मंसूखी)–Revocation, Cancellation.
निरस्त करना–Revoke.
निराई–Weeding.
निरीक्षक–Visitor, Inspector.
निरीक्षण–Inspection.
निरीक्षण पुस्तक–Visitors' Book.
निरीक्षण शुल्क–Inspection Fee.
निरोगिता प्रमाणपत्र–Fitness certificate.
निरोध करना–Impound.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरुंतर–Constant.
निलंबन–Suspension.
निवारक–Preventive.
निवास प्रतिबंध–Obligation of residence.
निविदा (टेंडर)–Tender.
निवेश–Impression (copy).
निवेशन (छावनी)–Encampment.
निवेशन–Halt.
निवेशन (भत्ता)–Halting (allowance).
निवेश संभार–Camp equipage.
निवेश स्थल–Encamping ground.
निवेश सज्जा–Camp equipment.
निवृत्ति–Retirement.
निवृत्तिपूर्व अवकाश–Leave preparatory to retirement.
निवृत्ति वेतन–Pension.
निवृत्ति वेतनी–Pensioner.
निर्गम मूल्य–Issue Price.
निर्गमन–Issues.
निर्णय–Decision, Finding, Judgment.
निर्णय लेखक–Judgment writer.
निर्णय का पुनर्निरीक्षण–Review of Judgment.
निर्णीत–Decided.
निर्णीत ऋणी–Judgment-debtor.
निर्दान (निराई)–Weeding.
निर्दान चिप्पी–Weeding label.
निर्दान सूची–Weeding list.
निर्दिष्ट–Specific.
निर्दिष्ट करना–Earmark.
निर्दिष्ट भाग–Allotment.
निर्देश–Direction.
निर्देशिनी–Directory.
निर्दान पर्ची–Weeding slip.
निर्धन–Indigent, Needy, Poor.
निर्धारित वेतन क्रम–Scale prescribed.
निर्मुक्ति (बेदखली)–Ejectment.
निर्माण–Manufacture.
निर्माण क्रिया–Manufacturing process.
निर्यात–Export.
निर्वर्तन योग्य–Executable.
निर्वर्तन–Disposal.
निर्वाचनाध्यक्ष–Presiding Officer.
निर्वासन (देश-निकाला)–Deportation.
निर्वाह अनुदान–Subsistance grant.
निर्वाह भत्ता–Substance allowance.
निर्वाही–Executive.
निष्क्रयवर्ति (वेतन चिट्ठा)–Acquittance Roll.
निष्कास–Egress.
निष्पादन–Execution (as of decree).
निष्पादन की इन्कारी–Denial of Execution.
निष्प्रभाव और निरर्थक–Null and void.
निषेध–Prohibition.
निषेधाधिकार–Veto.
निषेधाज्ञा–Injunction.
न्यायालय–Court of Law.
न्यायालय–अपमान–Contempt of Court.
न्यायालय की आज्ञा से–By order of the Court.
न्यायालय उपस्थितिपत्र–Appearance slip.
न्यायालय द्वारा रोक–Restraint by Court.
न्यायालय संबंधी–Forensic.
न्यायालयिक प्राधिकारी–Judicial Authority.
न्यायाधिकार–Judicature.
न्यायाधिकारी वर्ग–Judiciary.
न्यायिक कार्यवाही–Judicial proceeding.
न्यायिक निर्णय–Adjudication.
न्यायिक विचारण–Judicial Consideration.
न्यायेतर स्टांप–Non Judicial Stamp.
न्यायोचित दातव्य–Legitimate dues.
न्याय्य–Legitimate.
न्यायता–Equity.
न्यूनकोण–Acute angle.
न्यायपत्रग्राही (डिगरीदार)–Decree-holder.
न्याय विभाग–Judicial Department.
न्याय वैफल्य–Miscarriage of Justice.
न्याय शुल्क–Court fee.
न्याय शुल्क चिप्पी–Court fee label.
न्याय संबंधी–Judicial.
न्याय शुल्क विधान–Court fees act.
न्यायाधीश गण–Full Bench.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यायालयतर–Non Judicial.
न्यायपत्र–Decree.
नीचे–Infra.
नीला थोथा (तूतिया)–Blue Vitriol.
नींव–Basement, Foundation.
नौकरी की शर्त–Condition of service.
नौचालन–Navigation.
नौभार–Cargo.

☞ प ☜

पक्का करना–Confirm.
पक्की (सड़क)–Metalled (Road).
पक्षपात–Prejudice.
पक्षियों की यक्ष्मा परीक्षा–Avian Tuberculin test.
पचपनसाला–Superannuation.
पचपनसाले की तारीख–Superannuation (date of).
पटरी (पाया)–Stave.
पटौरन–Lintel.
पट्टा–Lease.
पट्टा इस्तमरारी–Tenure in perpetuity.
पट्टा करनेवाला–Lessor.
पट्टा समर्पण पत्र–Surrender of Lease.
पट्टिका–Plate.
पट्टीदारी–Tenure in severality.
पट्टे–Leases.
पट्टे की भूमि–Lease-hold.
पट्टेदार–Lessee.
पड़ोस–Vicinity.
पणायन (लेनदेन)–Transaction.
पतला अनाज–Shrivelled grain.
पताका दंड–Flag staff.
पत्री वर्ष–Calendar year.
पथदर्शक योजना–Pilot scheme.
पद (ओहदा)–Post, Rank.
पद कर्त्तव्य–Function, Duty.
पद कारणात्–Ex-officio.
पदकारणात् उपपंजीयक–Ex-officio Sub Registrar.
पदच्युति–Dismissal.
पद धारणा–Incumbency.
पदनाम, ओहदा–Designation.
पदभार–Charge of office.
पद स्थापन–Creation of post.
पदाति–Infantry.
पदार्थी–Candidate.
पदावनति–Reduction, Demotion.
पदिक–Pedestrian.
पदेन–Ex-officio.
पदोन्नति–Promotion.
परकार–Compasses (pair of).
पर नोटिस तामील करना–To serve notice on.
परम पूज्य–Right Reverend.
पर राष्ट्रिक–Foreigner.
पर हितकारी प्रन्यास–Benevolent Trust.
पराकृत (करना)–Set aside.
परिकल्पक–Designer.
परिकल्पना–Design.
परिकल्पित–Designed.
परिगणित–Scheduled.
परिचर–Attendant.
परिचारक–Attendant.
परिणामस्वरूप–In consequence.
परितर्कण–Discussion.
परितोष–Gratification.
परित्यागदस्तबरदारी–Relinquishment.
परिदेवना–Complaint.
परिधिस्थ–Aide-de-camp.
परिपक्वता–Maturity.
परिपत्र–Circular (letter).
परिमाप–Perimeter.
परिमाण–Quantity, Volume.
परिमार्जक–Cleaner.
परिरक्षा–Preservation.
परिलाभ–Emoluments.
परिवाह–Escape (for surplus water).
परिव्यय उपसंक्षेप–Abstract of cost.
परिशिष्ट–Appendix.
परिश्रम–Industry, Labour.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिषद्–Council, Board.
परिपद्यता–Fellowship.
परिसम्पत (संपत्ति)–Assets.
परीक्षण–Probation.
परीक्ष्यमाण–Probationer.
परीवर्त–Turbine.
परेषणी–Consignee.
पर्चीपुस्त–Slip book.
पर्ण–Folio.
पर्यवेक्षक–Supervisor.
पर्याण–Saddle.
पर्यादान–Appropriation.
पलट–Conversion.
पलटा करना–Commute.
पल्वल (पोखर)–Pool.
पलायित दोषी–Fugitive Criminal.
पशुओं की नसलकशी का फार्म–Cattle Breeding Farm.
पशुचिकित्सा सहायक सर्जन–Veterinary Assistant Surgeon.
पशुधन–Live-stock.
पशुपालन विभाग–Animal Husbandry Department.
पशु प्रवर्धन क्रिया–Cattle Breeding Operation.
पशुवध यंत्र–Cattle-killer.
पशुविज्ञान महाविद्यालय–Veterinary College.
पहली दृष्टि में–Prima facie.
पहिचान–Identification.
पहुँच–Access.
पाक विषयक–Culinary.
पातालजलपुंज–Ground water supply.
पात्रता–Eligibility.
पाद–Quadrant.
पापड़ (पपड़ी)–Flake.
पाया (खंभा)–Pier.
पारदेशिक सेवा–Foreign service.
पारपत्र–Passport.
पारप्रेषण–Transmission.
पारस्परिक संविदा–Covenants.
पारस्परिकता–Reciprocity.
पारिणामिक–Consequential.
पारितोषिक प्रतिज्ञापत्र–Prize-Bond.
पारिवारिक व्यवस्थापन–Family-arrangement.
पारिश्रमिक–Remuneration.
पारेषण–Transmission.
पांपरीय (पैतृक)–Hereditary.
पार्श्व भित्ति–Side-wall.
पालन करते हुए–In compliance with.
पालन करना–Abide by.
पालनादेश–Compliance.
पावती–पावनी–Acknowledgment due.
पावती–Acknowledgment, Receipt.
पांडुलेख (मसविदा)–Draft.
पाँचा–Rake.
पिघलाकर जोड़ना–Welding.
पिचक–Stear.
पिचकारी–Syringe.
पिंजापट्ट–Switch-board.
पिंड–Lump.
पिंडराशि–Lump-sum.
पिटवा–Apron.
पिठर (बायलर)–Boiler.
पिस्सू–Fleas.
पीठभू (कुर्सी)–Plinth.
पीड़ित–Rolled (steel).
पीट्ट (चरबी)–Tallow.
पुनर्ग्रहण–Resumption.
पुनर्दर्शन–Review.
पुनर्नवीकरण–Renovation.
पुनर्नियुक्त–Re-employed.
पुनर्नियुक्ति–Re-employment.
पुनर्न्यायार्थी–Appellant.
पुनर्योग–Re-totalling.
पुनरवलोकन–Review.
पुनरावृत्ति–Revision.
पुनःपर्यादान–Re-appropriation.
पुनःपंजीयन–Re-registration.
पुनःरचना–Re-construction.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुन:शस्त्रीकरण–Re-armament.
पुन:स्थापन–Re-establishment, Re-instatement.
पुन:संगठन–Re-organisation.
पुरातत्त्व विभागीय–Archaeological.
पुरानी परती–Old fallow.
पुरीष (विष्ठा)–Excreta.
पुर:स्थापना–Introduction.
पुश्तीवान–Batten.
पुस्त संक्रम–Book transfer.
पूँजीकृत–Capitalized.
पूँजी परिव्यय–Capital Cash.
पूज्य–Reverend.
पूतिक–Rotten.
पूरक लेख्य–Supplemental deed.
पूरी तरह उपचार करना–Deal thoroughly.
पूर्णता (अंतिमता)–Finality.
पूर्णयोग–Grant total.
पूर्ण बिक्री–Turn-over.
पूर्व–Ante.
पूर्वक्रयाधिकार (हकशफा)–Pre-emption, Right of pre-emption.
पूर्वतटीय ज्वर–East-coast fever.
पूर्वता (आदिता)–Precedence.
पूर्वता अधिपत्र–Warrant of precedence.
पूर्व दृष्टांत–Antecedent, Precedent.
पूर्वदोष वेचन–Pre-censorship.
पूर्व प्रभाव–Retrospective effect.
पूर्व प्रभाव सहित–With retrospective effect.
पूर्वानुदर्शन–Reconnaissance.
पूर्वानुमान–Fore-cast.
पूर्वाह्न–Fore-noon.
पूर्वी–Oriental.
पूर्वोपाय–Precaution.
पूर्वोपायी कोष–Provident fund.
पृष्ठ लेख–Endorsement.
पृष्ठ विवरण–Topography.
पृष्ठांकन–Endorsement.
पेंशन का संराशिकरण–Commutation of pension.
पेटरौल (पेटरौल)–Petrol.
पैत्तिक ज्वर (अश्व)–Bilious fever (horse).
पैतृक संपत्ति–Ancestral property.
पोट्टलिका (पार्सल)–Parcel, Packet.
पोतपति–Master of ship.
पोषक–Feeder.
पोषक क्षेत्र–Catchment.
पोषक माध्यम–Culture medium.
पौधशाला–Nursery.
पंककिट्ट–Silt.
पंकार (बंध)–Embankment.
पंक्ति–Alignment.
पंक्तिकरण–Line.
पंक्तिमध्य लेख–Interlination.
पंच (मध्यस्थ)–Arbitrator.
पंच निर्णय–Award.
पंचमंडल–Arbitration, Tribunal.
पंचवर्षीय–Quinquenial.
पंचायत–Arbitration.
पंचांग मास–Calendar month.
पंजी–Register.
पंजीयक–Registrar.
पंजीयन–Registration.
पंजीयित–Registred.
प्रकाशना (प्रख्यापना)–Publicity.
प्रकीर्ण (विविध)–Miscellaneous.
प्रक्रम–Procedure.
प्रक्षेपण–Projection.
प्रगति–Headway, Advancement Progress.
प्रगाढ़ता–Intensity.
प्रगुणता अर्गल–Efficiency bar.
प्रचंड–Virulent.
प्रचार–Propaganda.
प्रच्छना–Interrogation, Inquiry.
प्रति (बनाम)–Versus.
प्रति आपत्ति–Cross Objection.
प्रति उपकुलपति–Pro-vice-Chancellor.
प्रतिकर (क्षतिपूर्ति)–Compensation.
प्रतिकर भत्ता–Compensatory allowance.
प्रतिकाश–Reflection.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिकाशक–Reflector.
प्रतिग्राहक–Receiver.
प्रतिज्ञा, प्रतिज्ञान–Affirmation.
प्रतिज्ञापत्र–Bond.
प्रतिदान–Return.
प्रतिधारण–Retention.
प्रतिनिधि–Representative.
प्रतिनिधि पत्र–Power of attorney.
प्रतिनियुक्ति (प्रतिनिधि मंडल)–Deputation.
प्रतिनियुक्ति भत्ता–Deputation (duty) allowance.
प्रतिपक्ष–Opposite party.
प्रतिपरीक्षा–Cross examination.
प्रतिपर्ण (मुसन्ना)–Couterfoil.
प्रतिपुरुष–Proxy, locum tenens.
प्रतिबंध–Ban.
प्रतिबंधात्मक वाक्य-खंड–Proviso.
प्रतिबंधित न्यायपत्र–Decree nisi.
प्रतिभाव्य–Bailable.
प्रतिभू–Security (of a person), Bail order.
प्रतिभूति–Security, Bail, Surety.
प्रतिभूतिपत्र–Bail bond, Security bond.
प्रति महानिरीक्षक–Deputy Inspector General.
प्रतिपुलिस अधीक्षक–Deputy Superintendent of Police.
प्रतिमान–Pattern.
प्रतियोगिता परीक्षा–Competitive examination.
प्रतिरक्षाविभाग–Defence Department.
प्रतिरक्षा–Defence.
प्रतिरूप–Counterpart.
प्रतिरोध–Resistance.
प्रतिलब्धि–Recovery.
प्रतिलिपि (मुसन्ना)–Counterpart, Copy.
प्रतिलिपिक–Copyist.
प्रतिलिपिक यंत्र–Pantographer.
प्रतिलिपि पर शुल्क–Duty on counterpart or duplicate.
प्रतिलिपि मुद्रित पत्र–Copy stamped papers.
प्रतिलिपि विभाग–Copying Department.
प्रतिलेखन–Transcription.
प्रतिवाद साक्षी–Defence witness.
प्रतिवादी–Defendant.
प्रतिवेदन–Report.
प्रतिव्यक्तिप्रभार–Capitation charges.
प्रतिपथपत्र–Counter affidavit.
प्रतिष्ठापन–Installation.
प्रतिष्ठापनिक–Inaugural.
प्रति सचिव–Deputy Secretary.
प्रतिसेकेन्ड घनफुट–Cu. ft. per sec.
प्रतिस्थापन–Replacement.
प्रतिस्थानी बनने के लिए प्रार्थनापत्र–Substitution application.
प्रतिहस्त–Locum Tenens.
प्रतिहस्ताक्षर–Counter signature.
प्रतीक–Token.
प्रतीप दर–Inverse rate.
प्रत्यक्ष व्यय–Direct Charge.
प्रत्यक्ष रोगग्रस्त–Clinically affected.
प्रत्युत्तर–Rejoinder.
प्रत्यय–Suffix.
प्रत्यधिकार–Encroachment.
प्रत्यनुयोग–Cross examination.
प्रत्ययपत्र–Letter of credit.
प्रत्यर्ची–Defendant.
प्रत्याक्षेप–Cross objection.
प्रत्यादान–Resumption.
प्रत्यायुक्त–Deputed.
प्रत्यायुक्ति–Delegation.
प्रत्यावर्तन–Reversion.
प्रत्याशा–Anticipation.
प्रत्याशिक–Anticipater.
प्रत्याशित–Anticipated.
प्रत्याशित अधिक व्यय और बचत–Anticipated excess expenditure and savings.
प्रत्यासन्न–Imminent.
प्रथम दृष्टि सिद्ध–Prima facie.
प्रथमोपचार–First-aid.
प्रथानुसार–Conventionally.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रदर्शन–Display.
प्रदर्शित वस्तु–Exhibit.
प्रदान–Gift, Investment.
प्रदान पत्र–Instrument of gift.
प्रदेश–Region.
प्रधान–Preponderant.
प्रधान प्रेरक–Prime mover.
प्रधानलेखापाल–Accountant General.
प्रन्यास घोषणा–Declaration of trust.
प्रन्यास वृत्तिदान–Trust endowment.
प्रन्यास संपत्ति–Trust property.
प्रबंधक–Manager.
प्रबंधक विवरण पत्र–Manager's Return.
प्रबंधाधिकार पत्र–Letter of administration.
प्रभार शीर्षक पर डालाजाय–The charge should be debited to the head.
प्रभार–Charge.
प्रभाव रेखा–Influence line.
प्रभावित–Induced, Influenced.
प्रभावित करना–Affect.
प्रमाणक–Voucher.
प्रमाण भार–Burden of proof.
प्रमाणित अवतरण–Certified extract.
प्रमाणीकरण–Verification, Authentication, Certification.
प्रमाण–Standard.
प्रमाण से ऊपर–Above standard.
प्रमेय (साध्य)–Theorem.
प्रमोदकर मुद्रांक–Entertainment tax stamps.
प्रयोगात्मक–Experimental.
प्रलंबन–Suspension.
प्रवर समिति–Select Committee.
प्रवर स्थापना–Select establishment.
प्रवाहमान ईक्षण–Stream Guaging Observation.
प्रविधि–Technique.
प्रविष्टि–Entry.
प्रवीण–Proficient.
प्रवीण श्रम–Skilled labour.
प्रवेश (द्वार)–Ingress, Inlet.
प्रवेश परिषद्–Admission board.
प्रव्याजि–Premium.
प्रशासक–Administrator.
प्रशासकीय–Administrative.
प्रशासकीय प्रतिज्ञापत्र–Administrative Bond.
प्रशासकीय विभाग–Administrative department.
प्रशासन–Administration.
प्रश्नावली–Questionnaire.
प्रसूति अवकाश–Maternity leave.
प्रसूति चिकित्सालय–Maternity-hospital.
प्रसंग–Context.
प्रसंधि–Confederacy.
प्रस्ताव–Resolution, Proposal.
प्रस्तावना–Preamble, Introduction.
प्रस्तावित नकशा–Proposed statement.
प्रस्तावित विवरण–Proposition statement.
प्रस्तुत–Presented, Submitted.
प्रस्तुति–Production (as a document).
प्रहरी–Sentry.
प्रांकन्याय–Res-Judicata.
प्राचीन अवशेष–Antiquities.
प्राणदंड–Capital sentence.
प्रणिधि–Care (attention).
प्राथमिक इकाई–Primary unit.
प्रादेशिक–Regional.
प्रादेशिक ढंग पर लागू होना–Territortial application.
प्राधिकारी वर्ग–Authority.
प्राधिकृत अधिकर्ता–Authorized agent.
प्राप्ति–Acquisition.
प्राप्ति पंजी–Receipt register.
प्राप्ति स्वीकार–Acknowledgment.
प्राप्य–Dues.
प्रामाणिक–Standard, Bonafide.
प्रामाणिक करना–Standardize, Attest.
प्रारंभिक–Preliminary.
प्रारंभिक सूचना रपट–First Information Report.
प्रार्थी–Applicant.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रावैधिक–Technical.
प्रावधिक स्वीकृति–Technical sanction.
प्रासंगिक–Contingent.
प्रासंगिक व्यय–Contingency, Contingent expenditure or charges.
प्रिवि कौंसिल–Privy Council.
प्रेरणा (प्रलोभन)–Inducement.
प्रेषण–Consignment.
प्रेषित–Forwarded.
प्रोत्साहन–Stimulus.
प्रौढ़ (परिपक्व)–Mature.

☞ फ ☜

फटकन–Cleaning losses.
फटन–Rupture.
फन्नी–Wedge.
फरार–Absconding.
फसल की प्रत्याशा–Crop propsects.
फालतू–Spare.
फार्मों का संरक्षण और पूर्ति–Custody & Supply of forms.
फाँसी–Execution.
फाँसी का कैदी–Condemned prisoner.
फोड़ा–Ulcer.
फौज, फौजी दस्ते–Troops.
फौजी टोपी–Forage Cap.
फीता–Fillet.
फीसमाफी–Fee-concession.

☞ ब ☜

बचन पत्र–Pronote.
बच्चों का कालाजार–Infantile heishmaniasis.
बटमारी–Dacoity.
बटालियन–Battalion.
बट्टे की जाँच पड़ताल–Check of discount.
बट्टा–Discount.
बट्टे खाते डालना–Write-off.
बट्टे पर (से)–At a discount.
बड़ा शीर्षक–Major head.
बढ़ती पर (से)–At par.
बदरावण रोग–Coccidiasis.
बदली–Transfer.
बधिया करना–Castration.
बंदर अधिकारी–Port Officer.
बंदूक की मक्खी–Sight.
बंदूकदार छड़ी–Walking stick guns.
बंदीकरण–Imprisonment.
बंदी करना–Imprison, Arrest.
बंधक कर्ता–Mortgagor, Mortgager.
बंधक ग्राही–Mortgagee.
बंबा (पीटी हुई नाली)–Conduit.
बरमा–Auger.
बरसाती–Water-proof.
बराबर करना–Counter-balance.
बलात् ग्रहण–Extortion.
बसंत ऋतुराज–Spring, Florescence.
बस्ताबरदार–Bundle Lifter.
बहाव–Afflux.
बहिर्परजीवी–Ectozoa.
बहि:शुल्क अधिकारी–Custom Officer.
बहि:शुल्क का प्रतिज्ञापत्र–Customs bond.
बहीखाता–Ledger.
बहुभुज–Polygon.
बहुमत–Majority.
बहुविधवाद–Multifarious suit.
बाद की कार्यवाही–Subsequent proceeding.
बाँध–Weir, Barrage, Dam.
बारद्योतक–Co-efficient.
बारूद–Gunpowder.
बारंग (डंडी)–Shank.
बालवीर (सेनाछात्र)–Cadet.
बाष्प शील–Volatile.
बिगाड़ना–Efface.
बिरंजी–Tack.
बिलकुल–In toto.
बिल्ला–Chevron, Badge, Stripe.
बिसहरिया–Anthrax.
बीच का पूर्वानुमान–Intermediate forecast.
बीजक–Invoice.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीज छाग–Stud-buck.
बीजाज–Stud-ram.
बीजाश्व (घुड़साँड़)–Horse Stallion.
बुलेटिन–Bulletin.
बेगार–Forced labour.
बेड़ी–Fetter.
बेतार तार चालक–Wireless-Operator.
बेदखली–Ejectment.
बेदन–Rinderpest.
बेब्याज–Interest-free.
बेलन–Cylinder.
बैंक की हुंडी–Bank Draft.
बैठक (बरौठा)–Parlour.
बोझ–Burden, Load.
बोया हुआ क्षेत्रफल–Sown area.
ब्योरेवार बिल–Detailed bill.
बौछार–Volley.
बंजर–Banjar.
बंद–Bunds.
बंध (तमस्सुक)–Bond.
बंधक–Mortgage.
बंधक पत्र–Mortgage bond.
बंधक मोक्षण, प्रतिरोध–Foreclosure of mortgage.
बंधक मोचन–Redemption of mortgage.
बंधन (कैद)–Confinement.

☞ भ ☜

भकजल–Inflammable.
भगोड़ा–Absconder.
भत्ता–Allowance.
भबका–Boiler.
भरता–Recruitment.
भरती रोगी–Indoor patient.
भवन भाग (घर)–Tenement.
भवनांग–Ward.
भवन्निष्ठ–Yours truly, Yours sincerely, Yours faithfully.
भस्त्रका–Bellows.
भांडक (माल)–Goods.
भांडकशुल्क–Tariff.
भांडागारिक–Storeman.
भाजन (आधान)–Receptacl.
भाड़ाक्रय–Hire purchase.
भारतवासी–Native of India.
भारतीय उत्तराधिकारी विधान–Indian Succession Act.
भारतीय जनपद भृत्या–Indian Civil Service.
भारतीय दंड संहिता–Indian Penal Code.
भारतीय विवाह विच्छेद विधान–Indian Divorce Act.
भारतीय शस्त्र विधान–Indian Arms Act.
भारतीय साक्ष्य विधान–Indian Evidence Act.
भारतीय सेना विधान–Indian Army Act.
भारधारक बढ़ाव–Corbel.
भार–वृद्धि–Extension of load.
भारित–Loaded.
भारी प्रमाद–Gross negligence.
भावी–Prospective.
भित्ति भीतर–Intramural.
भिन्नता–Variation, Difference.
भिश्ती–Water Carrier.
भुगतान–Payment.
भुगतानकारी अधिकारी–Disbursing Officer.
भुगतान प्राधिकारी–Disbursing Authority.
भूअभिलेख लेखक–Land Record Clerk.
भूअभिलेख सार संग्रह–Land Record Manual.
भूगर्भ अनुदर्शन–Geological Survey.
भूतपूर्व असामी–Ex-tenant.
भूमाप और भूव्यवस्था–Survey and Settlement.
भूमापफलक–Survey sheet.
भूमाप शिक्षक–Survey Instructor.
भूमि–Ground, Earth Land.
भूमि अधिकार–Tenancy.
भूमि का अधिकारत्याग–Relinquishment of land.
भूमि खंड–Tract.
भूमि प्रविष्ट पुल–Pile bridge.
भूमि वर्गीकारक–Soil classifier.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमि-सुधार ऋण विधान-Land Improvement Loans Act.
भूमि-सुधारार्थ ऋण-Land Improvement Loan.
भू राजस्व-Land Revenue.
भू लेखा-Land Record.
भू लेखा विभाग-Land Record Department.
भू व्यवस्था-Settlement.
भूसंपत्ति-Landed property, Estate.
भूस्वामी-Landlord.
भृति-Wage.
भृति अर्जन योजना-Wage Earning Scheme.
भेंट-Visiation.
भेदगुणक-Diversity factor.
भोगाधिकार (दखीलकारी)-Occupancy right.
भोजन-व्यय-Dict money.
भौतिक परिसम्पत्-Physical assets.
भंग करना-Infringement.
भ्रष्टाचार-Corruption.

☞ म ☜

मकान किराया भत्ता-House rent allowance.
मक्खन-मलाई शाला-Creamery.
मक्खी रोक-Fly-proof.
मजदूर-Wage-earner.
मतदत्त दिष्टि-Voted allotment.
मतभेद-Difference of opinion.
मत्स्य पट्टिका-Fish plate.
मत्स्यारोह सीढ़ी-Fish ladder.
मद-Item.
मद्यनिषेध-Prohibition.
मध्यम भार-Medium pressure.
मध्यवर्ती-Interim.
मध्यवर्ती स्थगन-Interim stay.
मनोनीत-Designate.
मरणासन्न कथन-Dying declaration.
मरोड़ (ऐंठन)-Torsion.
मलकूप-Sink.
मलत्याग-Faecal discharge.
मवाद पड़ा हुआ घाव-Suppurating lesion.
मसकेट-Musket.
मसूरी, मसूरी लस-Vaccine.
मेहराब-Intrados.
महाअधिवक्ता-Advocate General.
महाकारानिरीक्षक-Inspector General of Prisons.
महागणनाध्यक्ष-Accountant General.
महानिरीक्षक-Inspector General.
महामान्य (महामहिम)-His Excellency.
महामारी-Epidemic disease.
महाप्रबंधक-Administrator General.
महाप्लव-स्तर-चिह्न-High Flood Level.
महालेखा निरीक्षक-Auditor General.
महाशिला-Boulders.
माँग-Demand, Requisition.
माँग-पत्र-Indent.
मातृका-Matron.
मादक द्रव्य-Intoxicating drug.
माध्य (औसत)-Mean.
माध्यमिक-Intermediate.
माध्य वेतन-Average pay.
मानचित्र-Plan.
मानचित्र-Ribands (of decorations & medals), Sash and banner.
मानदेय-Honorarium.
मानहानि-Defamation.
माना हुआ लगान-Assumed rent.
मान्यता-Recognition.
मान्यताप्राप्त अभिकर्ता-Recognised Agent.
माम-Modulus.
मापक (मीटर)-Meter.
मार्गण-Investigation.
मार्गणा-Inquiry.
माल-Revenue.
माल अधिपत्र-Warrant for goods.
माल का स्टांप-Revenue Stamp.
मालखाना-Malkhana.
मालगुजारी-Land Revenue.
माल प्रशासक-Revenue Administrator.
माल बोर्ड-Board of Revenue.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माल विभाग की रिपोर्ट–Revenue Administration Report.
मालस्थापना–Revenue Establishment.
मालियत जमाबंदी–Rental Value.
मालियत–Valuation.
मासिक उपसंक्षेप–Monthly abstract.
मासिक विवरणपत्र–Monthly return.
मियान–Scabbard.
मिलावट–Adulteration.
मिल्कियत ज़मीन–Tenure, Land Tenure.
मिश्रक–Compounder, Mixer.
मीटर वाचक–Meter Reader.
मुकदमे का प्रकार–Nature of the case.
मुकदमे की पैरवी करना–To defend the case.
मुकदमे में कागजात दाखिल करना–Filing of documents.
मुकदमों को सूचीगत करना–Listing of Cases.
मुकाबिल दावा–Counter claim.
मुक्ति (छूट)–Exemption.
मुखचित्र–Frontis-piece.
मुख्य आयुक्त–Chief Commissioner.
मुख्य धरणी–Principal rafter.
मुखावरण–Mask.
मुख्य नियंत्रक राजस्व प्राधिकारी–Chief Controlling Revenue Authority.
मुख्य न्यायाधीश–Chief Justice.
मुख्य परिवर्तन–Material change.
मुख्य स्थान–Headquarter.
मुख्यालय–Headquarters.
मुचलका–Recognizance.
मुद्रलेखक–Typist.
मुद्रलेखन–Type writing.
मुद्रा (आसन)–Posture.
मुद्रांक नियंत्रक–Controller of Stamps.
मुद्रांकित स्टांप–Impressed Stamp.
मुद्रास्फीति–Inflation.
मुद्रास्फीतिरोधक–Anti-inflatory.
मुवक्किल–Client.
मुहर–Seal.
मूढिक–Hyperbola.
मूर्तिकर्म–Sculpture.
मूल–Original.
मूल कूपन–Basic Coupon.
मूलधन–Principal money.
मूल पद–Substantive post.
मूल रचना–Cadre.
मूल वेतन–Substantive pay.
मूल्य–Value.
मूल्यनाम–Denomination.
मूल्यानुसार–Ad Valorem.
मृत्यु विचारणा–Inquest.
मौखिक–Verbal.
मौखिक परीक्षा–Viva Voce.
मौखिक साक्ष्य–Oral evidence.
मौलिक–Fundamental.
मौलिक नियम–Fundamental Rule.
मौलिक पथप्रदर्शनी–Fundamental Guide Book.
मंडूर (जंग)–Rust.
मंत्रणा–Counsel.
मंत्रणा अधिकारी–Advisory Officer.
मंसूखी–Repeal.

☞ य ☜

यक्ष्मा परीक्षा–Tuberculine Test.
यथाचार–Formal.
यथानियम उत्तरवादी–Proforma Respondent.
यथानियम चेतावनी–Formal Warning.
यथापूर्व–Badastur.
यथापूर्व कर देना–Restitution.
यथावत्–Duly.
यथाविधि स्वीकृति–Duly approved.
यथाशीघ्र–At your earlies convenience, as early as possible.
यथासमय–In due course.
यथोचित–Adequate.
यथोचित टिकट लगा हुआ–Duly stamped.
यंत्र (औजार)–Appliance.
यंत्र-कलाप–Apparatus.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यंत्रजात–Apparatus (for a particular experiment).
यंत्रजाल (यंत्र कलाप)–Apparatus (as a whole).
यातायात–Traffic, Transport Communication.
यातायात मंत्री–Minister for Communication.
यात्रिक भत्ता–Travelling Allowance.
युद्धोत्तर–Post-war.
योग–Aggregate.
योग पंजी–Totalling Register.
योग्यकारी सेवा की शर्त–Condition of qualifying service.
योग्यता–Competency.
योग्य (समर्थ)–Competent.
योग्य पात्र–Eligible person or Candidate.
योग्या (अभ्यास)–Drilling.
योजना–Project, Scheme.
योधागार–Barrack.

☞ र ☜

रकाब–Stirrup.
रक्त तंतु–Fibrin.
रक्षक वर्ग–Escort.
रक्षा–Protection.
रक्षित–Reverse.
रक्षी (तिलंगा)–Constable.
रखरखाव–Maintenance.
रखरखाव निरीक्षक–Maintenance Inspector.
रखरखाव अधिकारी–Maintenance Officer.
रचनात्मक–Creative.
रजबहा–Distributory.
रद्द किया गया–Cancelled.
रद्द किया हुआ लेखपत्र–Discredited or cancelled document.
रद्द करनेवाला अधिकारी–Cancelling Officer.
रपट–Report.
रसकपूर–Corrosive sublimate.
रसीद बही–Receipt book.
रेहन बंधक–Mortgage.
रंगमान (रंग)–Shade.
रंजक–Painter.
राखिया–Ashman.
राज–Mason.
राजक्षमा–Amnesty.
राजगीरी–Masonry.
राजच्युत करना–Depose.
राजदया–Clemency.
राजदया अपील–Clemency appeal.
राजद्रोह–Sedition.
राजपत्र (गजट)–Gazette.
राजपत्रित अधिकारी–Gazetted Officer.
राजमंत्री–Secretary of State.
राजमार्ग–Highway.
राजस्व–Revenue.
राजस्व विषयक–Fiscal.
राजसंघ–Confederacy.
राजसाक्षी–Approver.
राजसात् किया माल–Escheat.
राजसात्करण–Confiscation.
राज्यनिष्ठा शपथ–Oath of allegiance.
राज्य परिषद–Council of State.
राज्यपाल–Governor.
राल–Bitumen.
राष्ट्रीयकरण–Nationalization.
राष्ट्रीय सेवा–Imperial Service.
रास्ता–Post, Way.
रास्ते से हटाना–Deviate.
रिक्त स्थान–Vacancy.
रिक्ति–Vacancy.
रिक्थ (वसीयत)–Will.
रिक्थपत्रों का संरक्षण–Custody of wills.
रिक्थ साधक–Executor of will.
रिक्थी–Legatee.
रियायतें–Concessions.
रियायती छुट्टी–Privilage leave.
रीति–Process.
रुक्का–Pronote.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुचि–Option.
रुझान–Affinity.
रुद्धगति–Brake speed.
रुपये का बँटवारा–Allocation of fund.
रुपये का लगाना–Investment.
रुपये की वापसी–Refund.
रूप (ढाँचा)–Skeleton form.
रूपपत्र (फार्म)–Form.
रूपपरिवर्तक–Transformer.
रूपांतर–Transformation.
रोक–Bar, Sturt.
रोकना–Withhold.
रोकड़ की पेटी–Cash Chest, Cash Box.
रोकड़ बही–Cash book.
रोकड़ बाकी–Cash balance.
रोकड़पाल–Cashier.
रोक रखने की लागत–Holding cost.
रोग फैलाने का स्थान–Scene of outbreak.
रोगज वृद्धि–Malignant growth.
रोग विषयक–Clinical.
रोग विषयक नमूने–Pathological specimens.
रोगशास्त्र–Pathology.
रोगहर उपाय–Curative measure.
रोगाणुनाशक–Disinfectant.
रोटी–कपड़े का दावा–Suit for maintenance.
रोड़ा (कंकड़)–Gravel.
रोड़ी (छान)–Pebble.

ल

लकीरी–Linear.
लक्षण–Symptoms.
लगभग क्षेत्रफल–Approximate area.
लगान का नकशा–Rent statement.
लगान में कमी–Abatement of rent.
लगान–Levy.
लगाम (दहाना)–Bit, Bit-Head, Bit-Rims.
लघु स्थापना–Petty establishment.
लघुवाद न्यायालय–Small Causes Court.
लघुहस्ताक्षरित–Initialled.
लटकन (झूमका)–Pendant, Hanger.
लसीका ग्रंथि–Lymphatic glands.
लंगर–Anchor.
लँगड़िया–Black quarter.
लंबमान–Pending.
लंबमानता–Pendency.
लाइन के बीच में लिखना–Inter lineation.
लागत–Outlay.
लाघवकारक–Derogatory.
लाठी–Truncheon.
लाभांश–Bonus.
लालमूत्र रोग–Cattle Prioplasmose of Red water.
लिखा-पढ़ा गया लेखपत्र–Executed Document.
लिखित उत्तरवाद–Written statement.
लिपि–Script.
लेखक–Clerk.
लेखकवर्गीय सेवक–Ministerial servant.
लेखकवर्गीय सेवा–Ministerial service.
लेखन-सामग्री–Stationery.
लेखपत्र (लेख्य)–Document.
लेखापाल–Accountant.
लेख्यप्रमाणक–Notary public.
लेख्यात्मक–Documentary.
लेखा (गणना)–Account.
लेखापरीक्षा–Audit.
लेखापरीक्षा अधिकारी–Audit Officer.
लेखापरीक्षा आपत्ति–Audit objection.
लेखा परीक्षक–Auditor.
लेखा महापरीक्षक–Auditor General.
लेखा लेखक–Accounts Clerk.
लेखा शीर्षक–Head of account.
लोप–Disappearance.
लौट कालर–Turn-down Collar.

व

वक्फ–Waqf.
वक्र–Curve.
वक्र (पीछे को, उलटा)–Retrograde (Motion).

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वक्ष:स्थल–Thorax.
वधस्थान–Gallows.
वयस प्रतिबंध–Age limit.
वयस्क–Major.
वरण–Selection.
वरणीयता–Eligibility.
वरीवर्त मिस्त्री–Turbine Mistri.
वर्ग समीकरण–Quadratic Equation.
वर्गीकरण–Classification.
वर्जित–Excepted.
वर्णन–Statement.
वर्णनवर्ति–Descriptive roll.
वर्तमान परती–Current fallow.
वर्तमान स्टाक–Stock-in-hand.
वर्तुलाकार जीव–Oval creature.
वर्दी–Uniform.
वर्धमान वेतन–Progressive pay.
वर्षा की दशा–Character of rainfall.
वर्षामापक–Rain-guage.
वसूल लागत–Cost realized.
वसूली छोड़ देना–Waive the recovery.
वहन पत्र–Bill of transporting.
वाक्य खंड–Clause.
वाणिज्य विभाग–Commercial Department.
वाणिज्य संबंधी–Commercial.
वाद–Suit, case.
वाद, अर्ज़ीदावा–Plaint.
वाद (नालिश)–Suit.
वादपत्र (अर्जीदावा)–Plaint.
वाद मूल्य विधान–Suit Valuation Act.
वाद स्थगन–Stay of suit.
वादी–Plaintiff.
वापसी–Withdrawal.
वायुसंचालित बंदूक–Air-gun.
वायुसंचार–Ventilation.
वायुस्त–Air-Service.
वायुभार मापक–Barometer.
वारंवारता–Frequency.
वार्डर–Warder.
वार्षिकवृत्ति प्रतिज्ञापत्र–Annuity Bond.
वास्तविक अन्याय–Material Injustice.
वास्तविक आँकड़े–Actuals.
वास्तविक क्षमता–Effective Capacity.
वास्तविक प्रांत्रिक व्यय–Actual travelling allowance.
वास्तविक संपत्ति–Net assets.
वास्तु विद्या (स्थापत्य)–Architecture.
वाहन–Transport.
विकलन–Debit.
विकल्प–Option, Alternative.
विकासमंत्री–Development Minister.
विकेंद्रीकरण (समिति)–Decentralization Committee.
विक्रयपत्र, पट्टा–Sale, Deed, Lease.
विक्रय पमाणपत्र–Sale certificate.
विकृत कायिक पदार्थ–Morbid-material.
विक्री का प्रस्ताव–Sale proposal.
विक्षिप्त दोषी–Criminal Lunatic.
विखंडन करना–Repeal.
विचारकालिक दाराभृति–Alimony-pendenti-lite.
विचार न्यायालय–Trial Court.
विचार भू–Tribunal.
विचारार्थ–For consideration.
विचाराधिकार–Power or Authority of Consideration.
विचाराधिकार विधान–Jurisdiction Act.
विचाराधीन–Under consideration.
विचाराधीन बंदी–Undertrial prisoner.
विज्ञप्ति–Notification, Communique.
वितरण–Disbursement, Distribution.
विदेशी अपराधी का प्रत्यर्पण–Extradition.
विदेशी मुद्रा–Foreign currency.
विदेशी शाखा–Alien's Branch.
विद्यापरिषद्–Academy.
विद्युत् उत्पादन संस्थान–Generating Station.
विद्युत् प्रतिष्ठापन–Electrical Installation.
विद्युत् सज्जा–Electical Equipment.
विधान–Act.
विधानत:–De jure.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधायन (कानन)–Enactment.
विधि–Procedure.
विधि अनुकूल सभा–Lawful Assembly.
विधिकरण, विधिनिर्माण–Enactment.
विधि प्रक्रम–Course of law.
विधि भंग–Breach of law.
विधि वक्ता–Barrister.
विधिविहित फार्म–Statutory form.
विधेयक–Bill (land).
विध्युपजीवी अभिभाषक–Legal Practitioner.
विनिमय–Exchange.
विनिमयकरण पत्र–Exchange instrument.
विनिमय, क्षतिपूरक भत्ता–Exchange of compensation allowance.
विनिमय दर–Rate of exchange.
विनिमय पत्र–Exchange deed.
विंदुरेख–Graph.
विंदु रेखा–Dotted line.
विपक्ष–Opposite party.
विपत्ति–Calamity, Distress.
विपरीत–Opposite.
विपणी (आपण)–Market.
विप्रषित धनराशि–Remittance.
विभागाध्यक्ष–Head of the department.
विभाजन–Division.
विभिन्न–Various.
विभेदक अक्षर–Distinguishing letter.
विमोचन–Redemption.
विरुद्ध–Against.
विलोपन–Cancellation.
विलोमत:–Vice Versa.
विवरण–Particulars, Statement.
विवरण, प्रतिवेदन–Report.
विवरण पत्र–Returns (Statistics).
विवाद–Litigation.
विवाद प्रश्नों को स्थिर करना–Framing of issues.
विवादास्पद–Disputed.
विवाह का रद्द किया जाना–Marriage (Nullity of).
विवाह प्रमाणपत्र–Marriage Certificate.
विवाह भंग–Marriage (Dissolution of).
विवाह लेखक–Matrimonial Clerk.
विवाह विषयक पेशकार–Matrimonial Reader.
विवेक–Discretion.
विवेकाधीन रजिस्टरी–Discretional registration.
विषम–Odd.
विषमार–Antidote.
विषय–Combination.
विशिष्ट (सविशेष)–Particular.
विशिष्ट अनुष्ठान–Specific performance.
विशिष्ट क्षेत्र–Specific area.
विशेष अभियोग अधिकारी–Special prosecuting officer.
विशेष कार्य–Special duty.
विशेष कार्यार्थ–On special duty.
विशेष कार्याधिकारी–Officer on special duty.
विशेषज्ञ–Expert.
विशेष दूत–Special messenger.
विशेष विषयक वेतन–Technical pay.
विशेष वेतन–Special pay.
विश्लेषक–Analyst.
विश्लेषण–Analysis.
विशेषाधिकार–Privilege.
विशुद्ध प्रतिलिपि–Fair Copy.
विश्वास–Belief.
विश्राम (छुट्टी)–Recess.
विश्रामकोण–Angle of repose.
विसंवाहक–Insulator.
विसंवाहक स्तर–Insulation layer.
विस्फोटक पदार्थ विधान–Explosives Act.
विहित (निर्धारित)–Prescribed.
वृक्षरोपण विद्या–Arboriculture.
वृत्त (व्यवसाय)–Profession.
वृत्तांत–Narrative.
वृत्ति, पेशा–Occupation.
वृद्धि (इज़ाफा)–Enhancement.
वेग–Velocity.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेगक्षय–Retardation.
वेगवृद्धिकरण–Accleration.
वेतन–Pay, Salary.
वेतन कालक्रम–Time scale of pay.
वेतन क्रम–Scale of pay.
वेतन क्रम का संशोधन–Revision of scale of pay.
वेतनलेखा–Pay account.
वेतनवृद्धि–Increment.
वेधनी–Perforator.
वेष, वस्त्र–Dress.
वेष नियमावली–Dress Regulation.
वैक्सीन भंडार–Vaccine Depot.
वैक्सीन लसीका–Vaccinal lymph.
वैतनिक–Salaried.
वैद्युतिक–Electrician.
वैधता–Validity.
वैधानिक–Statutory.
वैधानिक उत्तरदायित्व–Statutory Responsibility.
वैध उद्‌बोधक–Legal Remembrancer.
वैधिक–Legal.
वैभागिक–Departmental.
वैभागिक लेखा–Departmental account.
वैयक्तिक प्रपंजी–Personal ledger.
वैयक्तिक वेतन–Personal Pay.
वैयक्तिक स्वतंत्रारक्षक–Habeas Corpus.
वैवाहिक अधिकार–Conjugal right.
व्यक्तिगत उपस्थिति–Personal appearance.
व्यय–Charge, Expenditure.
व्यय पर नियंत्रण–Control over expenditure.
व्यय विवरण–Statement of expenditure.
व्ययहरण–Defalcation.
व्यवसाय वेतन–Trade pay.
व्यवस्था (आयव्ययक)–Provision (Budget).
व्यवस्था (नज़ीर)–Ruling.
व्यवस्थापिका विभाग–Legislative Department.
व्यवस्थापिका सभा–Legislative Assembly.
व्यवस्था, खंडन–Settlement revocation of.
व्यवस्थान–Settlement.
व्यवस्थापत्र–Settlement, instrument of.
व्यवसाय–Vocation.
व्यवस्था पुलिस–Order Police.
व्यवहार (लेन-देन)–Transaction.
व्यवहार न्यायाधीश–Civil Judge.
व्यवहार न्यायालय–Civil Court.
व्यवहार विधि संग्रह–Code of Civil Procedure.
व्यवहार विवाद–Civil case.
व्यवहारासन–Tribunal.
व्यवहारोपजीव विधान–Legal Practitioners' Act.
व्याख्या–Interpretation.
व्याख्यात्मक अनुपूरक–Explanatory Supplement.
व्यापक संक्रामक रोग (पशु)–Epizootic.
व्यापक संक्रामक रोग (मनुष्य)–Epidemic.
व्यापार चिह्न–Trade mark.
व्यायाम शिक्षक–P.T. Instructor.
व्यायाम शिक्षक–Corporal Instructor.
व्यायामशाला–Gymnasium.
व्यावसायिक–Vocational.
व्यासिद्ध (विनिषिद्ध)–Contraband.
व्योरा–Specification.

☞ श ☜

शक्त प्राधिकारी–Competent Authority.
शक्ति–Calibre, Energy.
शपथ पत्र–Affidavit.
शपथपूर्वक साक्ष्य देना–Depose.
शमन (न्यूनीकरण)–Mitigation.
शरणार्थी–Refugee.
शरीर का रस–Body juice.
शर्त–Condition.
श्रमिकों का दैनिक नकशा–Daily labour returns.
शल्यवैद्य (सर्जन)–Surgeon.
शवपरीक्षा–Post-mortem.

CC-Ô. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शस्त्रागार–Arsenal, Magazine.
शहरी–Urban.
शंकु–Cone.
शंकुकक्ष–Axis of a Cone.
शाख़ा–Branch.
शाखा कोठार–Branch depot.
शांत होना–Abate.
शांति–Peace.
शांति-रक्षा दंडनायक–Judicial Magistrate.
शांति-रक्षा अधिकरणिक–Justice of the Peace.
शांति-भंग–Breach of peace.
शारीरिक दंड–Corporal punishment.
शाश्वत भत्ता–Perpetual allowance.
शासित–Governed.
शिक्षणाधीन अधिकारी–Officer under Training.
शिक्ष्यमाण–Apprentice.
शिक्षणपाठचर्या–Courses of Training.
शिखर–Crest.
शिखर दंड–Crown post.
शिथिलता–Relaxation.
शिथिलीकरण–Relaxation.
शिथिलीकृत–Relaxed.
शिररज्जु–Head rope.
शिरस्त्राण–Helmet.
शिलालेख–Inscription.
शिल्पकार–Artisan.
शिविर–Camp.
शिशुवध–Infanticide.
शिष्टमंडल–Delegation.
शीर्ष–Vertex.
शीर्षक और उपशीर्षक–Heads and Sub-heads.
शीर्षस्तर नियामक–Head Regulator.
शीर्ष शहतीर–Hip rafter.
शुद्ध–Net.
शुद्ध परिलाभ–Net emoluments.
शुद्ध लाभ–Net profit.
शुद्धिपत्र–Corrigendum.
शुद्धि पर्ची–Correction slip.
शुल्क–Duty.
शुल्क गणना–Computation of fees.
शून्य–Void.
शून्यक (रिक्त)–Vacuum.
शेष–Remnant, Remainder, Remains.
शैथिल्य–Relaxation.
शोधन (सुधार)–Correction.
श्रेणी–Category.
श्लेष्य मुद्रांक–Adhesive stamp.

☞ ष ☜

षष्ठक–Sextant.

☞ स ☜

सकपट रजिस्ट्री को बचा लेना–Evasion of registration.
सकल–Gross, Aggregate.
सकल भार–Gross charge.
सकल वेतन–Gross salary.
सक्रिय भत्ता–Active allowance.
सगोत्र–Cognate.
सचिव–Secretary.
सज्जा–Equipment.
सज्जा सूची–Equipment list.
सज्जा सारणी–Equipment table.
सजातीय (समाधान)–Homogeneous.
सटीक–Annotated.
सड़न रोक रस–Antiseptic fluid.
सत्यंकार (बयाना)–Earnest money.
सत्यशीलता–Integrity.
सतर्कता–Caution.
सद्भाव–Good faith.
सदाचार–Good behaviour.
सत्यापन (जाँच)–Verification.
सप्रतिबंधक विक्रय–Conditional sale.
सफाई का रजिस्टर–Cleaning register.
सभ्य–Assessor.
सभ्यगण–Gentlemen of the jury.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभ्यगण (जूरी)–Jury.
सभ्यगण सूची–Panel (law).
सभाकक्ष–Lobby.
सभाभवन–Auditorium.
समकालिक–Concurrent.
समतल–Plane.
समता–Par.
समतोल–Equilibrium.
सम्मन–Summons.
समय के बाहर–Beyond time.
समय लेखक–Time-keeper.
समय विभाग–Time-table.
समय-समय पर पूरा किया जानेवाला–To be recouped from time to time.
समय सार्गल–Time barred.
समयोत्तर (काम)–Overtime.
समर्थ न्यायालय–Competent Court.
समर्पण (कारागार भेजना)–Commitment.
समर्पित–Delivered.
समलंब चतुर्भुज–Trapezium (with only two sides parallel).
समादेश–Command.
समादेशक–Commandant.
समाधान–Adjustment.
समाधेय अपराध–Compoundable offence.
समान कार्यविधि–Uniform Procedure.
समान प्रभार–Flat charge.
समानांतर–Parallel.
समानुपात–Proportion.
समानुपात नियम–Rule of proportion.
समाप्त–Ceased.
समाप्ति–Termination, Abolition.
समाप्ताधिकार–Functus Officio.
समापन–Completion.
समारंभ–Undertaking.
समावेश–Merger.
समाहरण–Collection.
समाहरणकारी सरकार–Collecting government.
समाहर्ता–Collector.
समाहिति–Layout.
समिति–Committee.
समीपस्थ (आसन्न)–Adjacent.
समुद्र पार का वेतन–Overseas pay.
समुद्री पालिसी–Marine policy.
समुद्री अधिकारी–Marine Officer.
सरकार–Government, Crown.
सरकारी अधिवक्ता–Government Advocate.
सरकारी अभिभाषक–Government pleader.
सरकारी अधिहस्तांकिती–Official Assignee.
सरकारी आज्ञा–G.O.
सरकारी ऋणपत्र–Security.
सरकार-चालित मुकदमा–Public Prosecution.
सरकार द्वारा जारी की हुई हुंडी–Treasury bill.
सरकारी प्रन्यासी–Official Trustee.
सरकारी साँड़–Government Stud-Bull.
सरदल–Bressummer.
सरसरी तौर पर–Summarily.
सरसरी तौर पर खारिज–Dismissed summarily.
सरसरी निर्णय–Summary Judgement.
सर्पीली (सँपैनी)–Serpentine.
सरेस–Glue.
सवारी–Conveyance.
सशपथ कथन–Deposition.
सशस्त्र रक्षिगण–Armed guard.
सहकारिता (सहयोग)–Co-operation.
सहकारी–Co-operative.
सहकारी समितियाँ–Co-operative Societies.
सहकृषक–Co-tenant.
सहताबारिक–Association Barrack.
सहमति–Concurrence.
सहवर्ति (संगामी)–Concurrent.
सहयोग–Collaboration.
सहस्वामी–Co-owner.
सहायक–Accessory, Subsidiary.
सहायक अनुदान–Subsidiary Grant-in-aid.
सहायक नियम–Subsidiary rule.
सहायक महानिरीक्षक–Asstt. Inspector General.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायक पुलिस अधीक्षक–Asstt. Supt. of Police.
सहायक वस्तुएँ–Accessories.
संकट (पुलिस)–Emergency (Police).
संकटकाल (आपत्, विपत्ति)–Emergency.
संकटकालीन–Emergent.
संकलन–Compilation.
संकल्प–Assignment (of Property).
संकल्प–Resolution.
संकीर्णनिर्गम मार्ग–Bottle-neck.
संकेत लिपिक–Stenographer.
संकेंद्र–Concentric.
संक्रम–Transfer, Transit.
संक्रमण–Transition.
संक्रामक रोग–Clontagious disease.
संक्षिप्त–Abbreviated.
संक्षिप्त संग्रह–Digest.
संख्यात–Numbered.
संख्याशास्त्र–Statistics.
संख्या शास्त्रीय सहायक–Statistical Assistant.
संख्या शास्त्रीय सारिणी–Statistical table.
संगठन–Organisation.
संगत–Consistent.
संगम–Junction.
संगर–Parole.
संगर बद्ध–On Parole.
संगीन–Bayonet.
संग्रहालय संरक्षक–Custodian of Museum.
संघ–Federation, Union.
संघटन–Organisation.
संघटनकर्ता–Organiser.
संघानी–Foundry.
संचय–Savings.
संचयन–Storage.
संचयन में माल की हानियाँ–Storage losses.
संचालक–Director.
संचालन कार्यालय–Directorate.
संडास–Water Closet.
संतोषजनक–Satisfactory.
संदर्भ ग्रंथ–Books of reference.
संदिग्ध–Suspected.
संघाता–Welder.
संपत्ति का पृथक् पूर्ण अधिकार–Severality.
संपत्ति हस्तांतरण पर शुल्क–Duty on conveyance.
संपर्क–Contract.
संपीड़न–Compression.
संपूर्ण–Whole.
संप्राप्त अधिकार–Power-vested.
संप्रेषक–Despatcher.
संबक–Plumb (mason).
संबद्धता–Affiliation.
संबंध रखना–Pertain.
संभार–Equipage.
संभूत वेतन-वृद्धि–Accrual increment.
संमत्रण–Consulation.
संयात्रा–Passage (voyage by sea).
संयोजक–Convener.
संरक्षक–Patron, Custodian.
संरक्षण–Custody.
संरक्षतावाद–Suit for Guardianship.
संरक्षा–Care, Protection.
संराशि–Commuted value.
संराशिदान–Commutation.
संलग्नशीलता–Viscosity.
संवर (बाँध)–Dam.
संवातन–Ventilation.
संवाहन–Conduction.
संविदा–Convenant, Contract.
संविदाबद्ध जानपद सेवक–Covenanted Civil Servant.
संविद्जनित संबंध–Contractual relation.
संविधान–Constitution.
संविभाग–Apportionment.
संशोधक अधिकारी–Revising Officer.
संशोधक विधान–Amendment Act.
संशोधन–Modification, Amendment.
संशोधित–Revised, Amended.
संशोधित अनुदान–Modified grant.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संशोधित आगणन–Revised estimate.
संसर्ग–Intercourse.
संस्थान–Station.
संस्थापित–Stationed.
संहिता–Code.
साइक्लोस्टाइल–Cyclostyle.
साकितुल मिल्कियत असामी–Exproprietary tenant.
साकितुल मिल्कियत जोत–Exproprietary tenancy.
साक्षी–Witness.
साक्षीकरण–Attestation.
साक्षी का बयान–Deposition.
साक्षीकृत–Attested.
साक्ष्य–Evidence.
साक्ष्य में ग्राहिता–Admissibility in-evidence.
साख–Credit.
साझाभंग पत्र–Dissolution of partnership.
साधारण–Normal.
साधारण वेष–Simple dress or form.
साधारण सैनिक वर्ग–Simple Rank & File.
सान–Grind-stone.
सामयिक–Periodical.
सामान–Paraphernalia.
सामान अस्तबल–Stable gear.
सामान्य–Normal, General.
सामान्य नियम–General rules.
सामान्य प्रासंगिक व्यय–Common Contingent Charges.
सामान्य पूर्वोपायी कोष–General Provident Fund.
सामान्य लेखक–Routine Clerk.
सामूहिक चंदा–Collective subscription.
सारिणी–Table.
सार-संग्रह–Manual (books).
सारा वृत्तांत–Full particulars.
सार्वजनिक अधिकारी–Public Officer.
सार्वजनिक उपयोगिता–Public Utility.
सार्वजनिक ऋण–Public debt.
सार्वजनिक निर्माण विभाग–Public Works Department.
सार्वजनिक मामले–Public affairs.
सार्वजनिक सेवक–Public servant.
सार्वजनिक हितोन्नति–Furtherance of Public Interest.
सावधान–Caveat.
सावधिक पद–Tenure of post.
साहित्यिक विद्यालय–Arts College.
सिकंजा–Clamp.
सिंचाई आदेश सारसंग्रह–Manual of Irrigation Order.
सिद्ध करना–Prove, Establish.
सिद्धांत–Theory.
सिरा (चोटी)–Apex.
सिविल सर्जन–Civil Surgeon.
सीका (कगार)–Cornice.
सीटी–Whistle.
सीढ़ी–Tread of steps.
सीधी देखभाल–Direct supervision.
सीमाकर–Terminal Tax.
सीमा-भंजन–Encroachment.
सीमांकित–Terminal.
सीसागर–Plumber.
सुखाधिकार का वाद–Suit of Easement.
सुधरा हुआ–Improved.
सुना भाग–Part-heard.
सुनवाई–Hearing.
सुनवाई के लिए नियत की गई–Fixed for hearing.
सुनवाई के लिए स्वीकृत–Admitted for hearing.
सुपुर्दगी का अधिपत्र–Warrant of commitment.
सुपुर्दगी लेनेवाला–Assignee.
सुवहनीय–Portable.
सुरक्षापत्र–Guarantee letter.
सुरक्षित भूमि–Protected land.
सुलझान–Solution (Math).
सूक्ष्मदर्शकीय परीक्षा–Microscopical Examination.
सूक्ष्म परीक्षा–Scrutiny.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूक्ष्माकार (लघुचित्र)–Miniature.
सूख–Dryage.
सूचना–Intimation.
सूची–Pyramid (ancient word).
सूची–Inventory.
सूजा–Arrows.
सूत्र–Formula.
सेतु–Viaduct.
सेंध–Burglary.
सेना–Troops.
सेनापति–Commander.
सेवानियम पत्र–Agreement for service.
सेवा नियमावली–Service-rules.
सेवा पुस्तिका–Service-book.
सेवाभिलेख–Record of service.
सेवावर्त्ति–Service roll.
सेवोपहार–Gratuity.
सैनिक अधिकारी–Military Officer.
सैनिक कोष्ठागार–Military-Stores.
सैनिक चिह्न–Decorations.
सैनिक सेवा–Military service.
सोना–चाँदी–Bullion.
सोपाधिक दीर्घकालीन बंदोबस्त–Conditinal long settlement.
सोपाधिक मुक्ति–Conditional release.
सौंप–Committal.
सौंप पत्र–Consignment.
स्टांप निरीक्षणाधिकारी वर्ग–Inspectorate of stamps.
स्टांप रजिस्टरों की जाँच-पड़ताल–Check of stamp-register.
स्टांप विक्रेता–Stamp-vendor.
स्टांप व्यवहरण–Stamp-defalcation.
स्टांप शुल्क–Stamp-duty.
स्टांप का संरक्षण–Custody of stamp.
स्तरमापक दंड–Levelling staff.
स्तरांक–Bench mark.
स्थगन–Adjournment.
स्थगन–Postponement.
स्थगन आज्ञा–Stay order.
स्थगित करना–Postpone.
स्थगन प्रार्थनापत्र–Stay application.
स्थगित ग्रहणाधिकार–Lien suspended.
स्थायी दाराभूति–Permanent alimony.
स्थपति–Architect.
स्थायी निवास–Domicile.
स्थल चित्र–Site-plan.
स्थायी पद–Permanent post.
स्थानाधिकार–Locus standi.
स्थायी बंदोबस्ती–Permanently settled.
स्थानानांतरण–Transfer.
स्थायी भूक्तिधारी–Permanent tenure holder.
स्थानापन्न–Officiating, Substitute.
स्थायी वकील–Standing Counsel.
स्थानापन्न नियुक्ति–Officiating appointment.
स्थावर संपत्ति–Immovable Property.
स्थानिक (स्थानीय)–Local.
स्थिति निर्धारण–Orientation.
स्थानित करना–Posting.
स्थिति विवरण–Balance Sheet.
स्थानीय कर–Local cess.
स्थिर–Stationary.
स्थानीय कोठार–Local depot.
स्थिर पत्र–Plant.
स्थानीय निकाय–Local bodies.
स्थिर जमा–Fixed Deposit.
स्थानीय भत्ता–Local allowance.
स्थिरयंत्र और मशीनें–Plants and Machinery.
स्थानीय सरकार–Local Government.
स्थिरीकरण–Stabilization.
स्थानीय संस्थाकोष–Local funds.
स्पर्शवर्जन–Quarantine.
स्थापना–Establishment.
स्पर्शवर्जन छुट्टी–Quarantine leave.
स्थायी अग्रधन–Permanent advance.
स्पष्टवादी–Candid, Outspoken.
स्थायी आदेश–Standing Order.
स्पष्टीकरण–Explanation.

●●●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Hindi Vocabulary used in Indian Constitution and Synonyms in English

भारतीय गणतंत्र के संविधान में प्रयुक्त हिन्दी के पारिभाषिक शब्दों और पदों के अंग्रेजी समानार्थक शब्द व पद

☞ अ ☜

अक्षम–Incomptent.
अक्षमता–Incompetency.
अग्रिम धन–Advance.
अतिक्रमण–Violation
अतिरिक्त न्यायाधीश–Additional Judge.
अतिरिक्त लाभ–Excess profit.
अधिकरण–Tribunal.
अधिकार–Right.
अधिकार-अभिलेख–Record of rights.
अधिकार-पृच्छा–Quo warranto.
अधिग्रहण–Requisition.
अधिनियम–Act.
अधिनियमन–Enactment.
अधिपत्र–Warrant.
अधिभार–Sur-charge.
अधिमान–Preference.
अधिवक्ता–Advocate.
अधिवास–Domicile.
अधिवासी–Domiciled.
अधिष्ठाता–Presiding Officer.
अधिसूचना–Notification.
अधीक्षक–Superintendent.
अधीक्षण–Superintendence.
अधीन–Subject, Subordinate.
अधीन-अधिकारी–Subordinate Officer.
अधीन-न्यायालय–Subordinate Court.
अध्यक्ष–Speaker.
अध्यादेश–Ordinance.
अध्यासीन होना–Preside.
अनन्य क्षेत्राधिकार–Exclusive Jurisdiction.
अनर्हता–Disqualification.
अनर्हकरण–Disqualify.
अनियमितता–Irregularity.
अनूकूलन–Adaptation.
अनुच्छेद–Article.
अनुज्ञप्ति–Licence.
अनुज्ञा–Permit.
अनुदान–Grant.
अनुदेश–Instruction.
अनुन्मुक्त–Undischarged.
अनुपाती प्रतिनिधित्व–Proportional Representation.
अनुपूरक–Supplementary.
अनुपूरक अनुदान–Supplementary Grant.
अनुमति–Assent.
अनुमोदन करना–Approve.
अनुमोदन–Approval
अनुशासन–Discipline.
अनुशासन-संबंधी–Diciplinary.
अनुशक्ति–Adherence.
अनुष्ठान–Exercise.
अनुसमर्थन–Ratification.
अनुसमर्थन करना–Ratify.
अनुसंधान–Investigation.
अनुस्मारक–Reminder.
अनुसूचित-क्षेत्र–Schedule area.
अनुसूचित-जनजाति–Scheduled Tribe.
अनुसूचित–Scheduled Caste.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसूची करना–Schedule.
अंतर्ग्रसन–Involve.
अंतर्ग्रस्त–Involved.
अंतर्देशीय जलपथ–Inland Waterway.
अंतर्राष्ट्रीय–International.
अंत:करण–Conscience.
अन्यदेशीय–Aliens.
अन्य संक्रामण करना–Alienate.
अन्य-संक्रामण–Alienation.
अपमान लेख–Libel.
अपमान-वचन–Slander.
अपमिश्रण–Adulteration.
अपर-न्यायाधीश–Additional Judge.
अपराध–Crime.
अपराध–Offence.
अपराधी–Criminal.
अपवर्जन करना–Exclude.
अपवर्जन–Exclusion.
अपात्र–Ineligible.
अपात्रता–Ineligibility.
अपील–Appeal.
अपील न्यायालय–Court of Appeal.
अप्रवृत्त–Inoperative.
अभिकथन–Allegation.
अभिकरण–Agency.
अभिकर्त्ता–Agent.
अभिप्राय–Intention.
अभियाचना–Demand.
अभियुक्त–Accused.
अभियुक्ति–Charge.
अभियुक्ति–Prosecution.
अभियोग–Accusation.
अभियोजन–Prosecution.
अभियोज्य दोष–Actionable Wrong.
अभिरक्षा–Custody.
अभिलेख–Record.
अभिलेख न्यायालय–Court of Record.
अभिशस्त–Convicted.
अभिशस्ति–Conviction.
अभिसमय–Convention.
अभ्यर्थी–Candidate.
अमान्य–Invalid.
अयुक्त प्रभाव–Undue Influence.
अर्जन–Acquisition.
अर्जी–Petition.
अर्थ करना–Construe.
अर्थ-दंड–Fine.
अर्हता–Qualification.
अल्पसंख्यक वर्ग–Minority.
अल्पीकरण–Derogation.
अवधिदान–Adjournment.
अवमान–Contempt.
अवयस्क–Minor.
अविभक्त कुटुंब–Joint-family.
अविभक्त परिवार–Joint-family.
अविश्वास प्रस्ताव–Motion of No-confidence.
अवैध–Illegal.
अवैधाचरण–Illegal practice.
असमर्थता–Incapacity.
असमर्थता निवृत्ति वेतन–Invalidity Pension.
असैनिक–Civil.
असैनिक शक्ति–Civil power.
अहितकारी–Detrimental.
अंकन–Endorsement.
अंकित–Endorsed.
अंग–Unit.
अंश–Share.
अंशदान–Contribution.

☞ आ ☜

आकलन–Credit.
आकस्मिकता निधि–Contingency Fund.
आचार–Custom.
आज़ादी–Freedom.
आजीविका–Calling.
आजीविका कर–Calling Tax.
आज्ञप्ति–Decree.
आदेश–Order.
आदेशिका–Process.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनुषंगिक–Consequential, Contingent.
आपराधिक–Criminal.
आपात–Emergency.
आपात की उद्घोषणा–Proclamation of Emergency.
आपाती–Emergent.
आभार–Obligation.
आय-कर–Income Tax.
आयात-शुल्क–Import duty.
आयुक्त–Commissioner.
आयोग–Commission.
आरक्षक–Police.
आरक्षक-बल–Police Force.
आरोप–Allegation.
आरोपण करना–Impose.
आरोपण–Levy.
आर्थिक–Economic.
आर्थिक क्षेत्राधिकार–Pecuniary Jurisdiction.
आवर्त्तक–Recurring.
आवारागर्दी–Vagrancy.
आह्वान–Summons.
आहूत–Summoned.
आँक–Estimate.

☞ इ ☜

इच्छा-पत्र–Will.
इच्छा-पत्रहीन–Intestate.
इच्छा-पत्रहीनत्व–Intestacy.

☞ उ ☜

उगाहना–Levy.
उच्चतम न्यायालय–Supreme Court.
उच्च न्यायालय–High Court.
उत्तराधिकार–Sucession.
उत्तराधिकारी-शुल्क–Succession duty.
उत्तराधिकारी–Successor.
उत्तरवादिता–Liability.
उत्पादन–Production.
उत्पादन-शुल्क–Excise duty.
उत्प्रवास–Emigration.
उत्प्रेषण-लेख–Certiorari.
उद्ग्रहण–Levy.
उद्घोषणा–Proclamation.
उद्भव–Descent.
उद्यम–Enterprise.
उद्योग–Industry.
उधार–Loan.
उधार-ग्रहण–Borrowing.
उन्मत्त–Lunatic.
उन्माद–Lunacy.
उन्मुक्ति–Immunity.
उपकर–Cess.
उपक्रमण–Initiation.
उपचार–Remedy.
उपजीविका–Occupation.
उपदान–Gratuity.
उपदेश–Advice, Instruction.
उपनिर्वाचन–Bye-election.
उपनिवेशन–Colonization.
उपबंध–Provision.
उपभोग–Consumption.
उपराष्ट्रपति–Deputy President.
उपलब्धि–Emolument.
उपविभाग–Sub-division.
उपवेशन–Sitting.
उपविधि–Bye-law.
उपसभापति–Deputy Chairman.
उपस्थित होना–Appear.
उपाध्यक्ष–Deputy Speaker.
उपायुक्त–Deputy Commissioner.
उपायोजन–Employment.
उपार्जित–Accrued.
उम्मेदवार–Candidate.
उल्लंघन–Contravention.

☞ ऋ ☜

ऋण–Debt.
ऋणग्रस्तता–Indebtedness.
ऋणपत्र–Debenture.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ए

एकक–Unit.
एकल निगम–Sole Corporation.
एकल संक्रमणीय मत–Single transferable vote.
एकस्व–Patent.

क

कटक–Cantonment.
कणकु–Account.
कदाचार–Misbehaviour.
कब्जा–Possession.
कंपनी–Company.
कर–Tax.
करार–Agreement.
कर्तव्य–Duty.
कर्तुमभिप्रेत–Purporting to be done.
कर्मचारी–वृंद–Staff.
कानून संबंधी–Legal.
कारखाना–Factory.
कारबार–Business.
कारागार–Prison.
काराबंदी–Prisoner.
कारावास–Imprisonment.
कार्मिक–संघ–Trade Union.
कार्य–Business.
कार्यकारी–Acting.
कार्यपालिका–शक्ति–Executive Power.
कार्यपालिका–Executive.
कालदान–Adjournment.
काबल–Custody.
काँजी हौस–Cattle pound.
किराया–Fare.
किसान–Farmer, Cultivator.
कुर्की–Attachment.
कृति–स्वाम्य–Copyright.
कृत्य–Function.
केंद्रीय गुप्त वार्ता–विभाग–Central Intelligence Bureau.
क़ैद–Imprisonment.
क़ैदी–Prisoner.

ख

खनिज–Mineral.
खनि–वसति–Mining settlement.
खनिज–संपत्–Mineral resources.
खर्च–Cost.
खंड–Clause.

ग

गज़ट–Gazette.
गणना–Calculation.
गणनानुदान–Grant on Account.
गणनापरीक्षा–Audit.
गणपूर्ति–Quorum.
गवेषणा–Research.
गण–पत्र–Ballot.
ग्राम–परिषद्–Village Council.
ग्राह्य–Admissible.

घ

घोषणा–Declaration.

च

चट्टम–Act.
चर्चा–Discussion.
चल–अर्थ–Currency.
चलावणी–Currency.
चित्त–विकृति–Unsoundness on mind.
चिह्न–Mark.
चुकती–Agreement.
चुने हुए–Elected.
चुंगी–Octroi.
चेक–Cheque.

छ

छावनी–Cantonment.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ ज ☜

जगह–Post.
जनगणना–Census.
जन–जाति–Tribe
जनजाति–क्षेत्र–Tribal-Area.
जनजाति–परिषद्–Tribal Council.
जलदस्युता–Piracy.
जल–प्रांगण–Territorial waters.
जामिन–Bail.
जाँच करना–Inquire.
ज़िला–District.
ज़िला–गण–District Board.
ज़िला–निधि–District Fund.
ज़िला–न्यायालय–District Court.
ज़िला–परिषद्–District Council.
ज़िला–मंडली–District Board.
जीविका–Livelihood.
जुआ–Gambling.
जुर्माना किया–Fined.
जेल–Prison.
ज्वार–जल–Tidal water.

☞ झ ☜

झाप–Memo.
झापन–Memorandum.

☞ ट ☜

टंकण–Coinage.
टाँच–Attachment.
ट्राम–Tramway.
ट्रामगाड़ी–Tram car.

☞ ड ☜

डिक्री–Decree.

☞ त ☜

तत्समय–For the time being.
तत्स्थानी–Corresponding.
तदर्थ–Ad hoc.
तीर्ण–Passed.
तीर्व–Assessment.
तृतीय–पठन–Third reading.
त्रैवार्षिक–Triennial.

☞ थ ☜

थाना–Police Station.

☞ द ☜

दत्तक–ग्रहण–Adoption
दत्तक–स्वीकरण–Adoption.
दस्तकारी–Handicraft.
दस्तावेज–Document.
दंड देना–Punish.
दंड–न्यायालय–Criminal Court.
दंड–विधि–Criminal Law.
दंड–संबंधी–Criminal.
दंडादेश–Sentence.
दंडाधिकारी न्यायालय–Magistrate's Court.
दाखिला–Entry.
दातव्य–Charities.
दाय–Inheritance.
दायित्व–Liability.
दावा–Claim.
दिवाला–Bankruptcy.
दीवानी–Civil.
दीवानी–अदालत–Civil Court.
दुष्टांक–Visas.
देय–Fee.
देशीयकरण–Naturalization.
दोधरा–Bicameral.
दोष–प्रमाणित–Convicted.
दोष–सिद्धि–Conviction.
दोषारोप–Charge.
द्यूत–Gambling.
द्विगृही–Bicameral.
द्वितीय पठन–Second reading.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

☞ ध ☜

धन–Money
धन–विधेयक–Money-bill.
धर्म–Faith.
धर्मस्व–Endowment.
धंधा–Occupation.

☞ न ☜

नक्ष–Design
नगर–क्षेत्र–Municipal area.
नगर–ट्रामवे–Municipal Tramway.
नगरनिगम–Municipal Corporation.
नगरपालिका–Municipality.
नगर रथ्यायान–Municipal Tramway.
नगर–समिति–Municipal Committee.
नागरिकता–Citizenship.
नाम–निदर्शन–Nomination.
नावाधिकरण–Admiralty.
निकाय–Body.
निक्षेप–निधि–Sinking fund.
निखात–निधि–Treasure trove.
निगम–Corporation.
निगम–कर–Corporation tax.
निगमन–Incorporation.
निगम, निकाय–Body, Corporate.
निर्देश–Direction.
निधि–Fund.
निबद्ध–Registered.
निबंधन–Registration.
निबंधन–Term.
नियंत्रक तथा महालेखा–परीक्षक–Controller &Auditor General.
नियंत्रण–Control.
नियम–Rule.
नियुक्ति–Appointment
नियोजक–उत्तरवादिता–Employer's liability.
नियोजक–दातव्य–Employer's liability.
निरसन–Repeal.
निराकरण करना–Abrogate.
निरोध–Custody.
निरोधा–Quarantine.
निर्णय–Judgment.
निर्णायक मत–Casting vote.
निर्देश–Reference
निर्धारण–Fixture.
निर्बंधन–Restriction.
निर्माण–Manufacture.
निर्यात–Export.
निर्यात–कर–Export tax.
निर्यात–शुल्क–Export duty.
निर्योग्यता–Disability.
निर्वचन–Interpretation.
निर्वसीयत–Intestate.
निर्वसीयता–Intestacy.
निर्वहन–Discharge.
निर्वाचक–गण–Electorate.
निर्वाचक–नामावली–Electoral rolls.
निर्वाचन (करना)–Elect.
निर्वाचन–Election.
निर्वाचन–अधिकरण–Election Tribunal.
निर्वाचन–आयुक्त–Election Commissioner.
निर्वाचन–क्षेत्र–Constituency.
निर्वाचित–Elected.
निर्वासन–Transportation.
निर्वाह–मजूरी–Living-wage.
निलंबन–Suspension.
निवारक–निरोध–Preventive detention.
निवृत्त होना–Retire.
निवृत्ति–Retirement.
निवृत्ति–वेतन–Pension.
निषेध–Prohibition.
निषिद्ध–Forbidden.
निष्ठा–Allegiance.
नौंदना–Register.
नौकरी–Employment.
नौकरी–कर–Employment tax.
नौकाधिकरण–Admiralty.
नौ–परिवहन–Navigation.
नौ–सेना–संबंधी–Naval.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यस्त करना–Entrust.
न्यायपालिका–Juddiciary.
न्यायाधिकरण–Tribunal.
न्यायाधिपति–Justice.
न्यायाधीश–Judge.
न्यायालय–Court.
न्यायालय–अवमान–Contempt of Court.
न्यायिक–कार्यरीति–Judicial process.
न्यायिक–कार्यवाही–Judicial Proceedings.
न्यायिक–मुद्रांक–Judicial stamp.
न्यायिक–शक्ति–Judicial power.
न्यास–Trust.
न्यूनन–Abridgement.

☞ प ☜

पक्ष–Party.
पण लगाना–Bet.
पण–क्रिया–Betting
पण्य–चिह्न–Merchandise Mark.
पत–Credit.
पत्तन–निरोधा–Port quarantine.
पथ–कर–Toll.
पथ–नियम–Rule of the road.
पद–Post
पद–Office.
पदच्युत करना–Dismiss.
पदत्याग–Resignation.
पदधारी–Incumbent of an office.
पदाधिकारी–Officer.
पदावधि–Tenure.
पदावास–Official residence.
पदेन–Ex-officio.
परकीयकरण–Alenation.
परमादेश–Consultation.
परंतु–Provided.
परमिट–Permit.
परामर्श–Consultation.
परित्यजन–Abandonment.
परित्याग–Abanbonment.
परित्राण–Safeguard.
परिपालन–Implementation.
परिप्रश्न–Enquiry.
परिलब्धि–Perquisite.
परिवहन–Transport.
परिव्यय–Cost.
परिषद्–Council.
परिषद्–आदेश–Order-in-Council.
परिसीमन–Delimintation.
परिसीमा–Limitation.
परिहार–Resission.
परिहार–विधेयक–Bill of Indemnity.
परोक्ष–निर्वाचन–Indirect election.
पर्यवेक्षण–Inspection.
पर्यालोचन–Deliberation.
पशु–अवरोध–Cattle Pounds.
पंचाज्ञा–Award.
पंजी–Register.
पंजीबद्ध–Registered.
पंजीबंधन–Registration.
पंजीयन–Registration.
पात्रता–Eligibility.
पात्रता के योग्य–Eligible.
पार–पत्र–Passport.
पारण–Pass
पारित–Passed.
पारितोषिक–Reward.
पारिश्रमिक–Remuneration.
पावती–Receipt (Paper).
पीठासीन होना–Preside.
पीठासीन–पदाधिकारी–Presiding Officer.
पुनर्निरीक्षण–Revision.
पुनर्विचार–न्यायालय–Court of Appeal.
पुनर्विलोकन–Review.
पुरःस्थापना करना–Introduce.
पुरःस्थापना–Introduction.
पूर्त–Charity.
पूर्त धार्मिक धर्मस्व–Charitable &religious endowments.
पूर्त–संस्था–Charitable institution.
पूर्व–मंजूरी–Previous sanction.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व-सम्मति-Previous consent.
पूँजी-Capital
पृष्ठांकन-Endorsement. Endorsed.
पृष्ठांकित-Endorsed.
पेशगी-Advance.
पेशा-Profession.
पोषण-Maintenance.
पोषण करना-Maintain.
पौरात्व-Citizenship.
प्रकट करना-Express.
प्रकाशन-Publication.
प्रक्रिया-Procedure.
प्रख्यापन-Promulgation.
प्रग्रहण-Arrest.
प्रचलित-Current.
प्रचार करना-Propagate.
प्रतिकर-Compensation.
प्रतिकूल असर या प्रभाव डालना-Affect adversely.
प्रतिकूलता-Contravention.
प्रतिकूल प्रभाव-Adverse effect.
प्रतिकृति-Copy.
प्रतिज्ञान-affirmation.
प्रतिनिधि-Representative.
प्रतिनिधित्व-Representation.
प्रतिपत्री-Proxy.
प्रतिपालक अधिकरण-Court of Wards.
प्रतिभूति-Security.
प्रतिरक्षा-Defence.
प्रतिलिपि-Copy.
प्रतिलिप्यधिकार-Copyright.
प्रतिवेदन-Report.
प्रतिव्यक्ति-कर-Capitation tax.
प्रतिषिद्ध-Prohibited.
प्रतिषेध-Prohibination.
प्रति-शुल्क-Countervailing duties.
प्रतिषेध-लेख-Writ of prohibition.
प्रतिसंहरण-Revoke.
प्रत्यक्ष निर्वाचन-Direct election.
प्रत्यय-Credit.
प्रत्यय-पत्र-Letter of Credit.
प्रत्ययानुदान-Votes of Credit.
प्रत्यर्पण-Extradition.
प्रत्याभूति-Guarantee.
प्रथम पठन-First reading.
प्रथम सदन-Lower House.
प्रधानमंत्री-Prime Minister.
प्रपत्र-Form.
प्रभाव-Influence.
प्रभु-Sovereign.
प्रभुता-Soveregnty.
प्रमाण-पत्र-Certificate.
प्रमाणीकरण-Authentication.
प्रमोद-कर-Entertainment tax.
प्रयुक्ति-Application.
प्रयोग-Application.
प्रयोग-Exercise.
प्रविलंबन करना-Reprieve.
प्रवर-समिति-Select Committee.
प्रविष्टि-Entry.
प्रवेश-Entrance.
प्रवेशन-Accession.
प्रव्रजन-Migration.
प्रशांति-Tranquillity.
प्रशासन-Administration.
प्रशासन करना-Administer.
प्रशासन-कार्यक्षमता-Efficiency of Administration.
प्रशासन कार्यपटुता-Efficiency of Administration.
प्रशासनीय-Administrative.
प्रशासनीय कृत्य-Adminitrative Functions.
प्रशासित-Administered.
प्रशिक्षण-Training.
प्रसंग-Context.
प्रसारण-Broadcasting.
प्रसूति-साहाय्य-Maternity relief.
प्रसूति-सहायता-Maternity relief.
प्रस्ताव-Motion.
प्रस्तावना-Preamble.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्थापना–Proposal.
प्राक्कलन–Estimate.
प्रादेशिक–आयुक्त–Regional Commissioner.
प्रादेशिक–क्षेत्राधिकार–Territorial Jurisdiction.
प्रादेशिक–निधि–Regional Fund.
प्रादेशिक–निर्वाचन–Territorial Constituency.
प्रादेशिक–परिषद्–Regional Council.
प्रादेशिक–भार–Territorial Charges.
प्राधिकार–Authority.
प्राधिकारी–Authority.
प्राधिकृत–Authorised.
प्रांत–Province.
प्राप–Accrual.
प्राप्त होना–Accrue.
प्राप्ति–Receipt.
प्रामिसरी–नोट–Promissory note.
प्रासंगिक–Incidental.
प्रोद्भवन–Accrual.
प्रोद्भूत–Accrued.

☞ फ ☜

फरियाद–Complaint.
फारम–Forms.
फीस–Fees.
फेडरल–न्यायालय–Federal Court.

☞ ब ☜

बटवारा–Allocation.
बनाए रखना–Maintain.
बंदी करना–Arrest.
बंदी–प्रत्यक्षीकरण–Habeout Corpus.
बंधक–Mortgage.
बल–Forces.
बहि:शुल्क–Custom duty.
बहुमत–Majority.
बाँट–Allotment.
बिल–Bill.
बीमा–Insurance.
बीमा–पत्र–Policy of insurance.
बेकारी–Unemployment.
बैठक–Sitting.
बैंक–Bank.
बोर्ड–Board.

☞ भ ☜

भत्ता–Allowance.
भविष्य निधि–Provident Fund.
भर्ती–Recruitment.
भागिता–Partnership.
भाटक–Rent.
भाड़ा–Fare.
भार–Charge.
भारग्रस्त–संपदा–Encumbered estate.
भारत–सरकार–Government of India.
भारित करना–Charge.
भू–अभिलेख–Land Records.
भू–धृति–Land tenure.
भू–राजस्व–Land Revenue.
भ्रष्ट–Corrupted.

☞ म ☜

मजूरी–Wage.
मंडल–District.
मंडल–न्यायालय–District Court.
मंडलाधीश–Magistrate.
मंडलायुक्त–Commissioner.
मंडली–Board.
मत–Vote.
मतदाता–Voter
मतदान–Voting.
मताधिकार–Suffrage.
मतिमान्द्य–Dullness.
मध्यस्थ–न्यायाधिकरण–Arbitral Tribunal.
मध्यस्थ–Arbitrator.
मध्यस्थ–निर्णय–Arbitration.
मनोदौर्बल्य–Mental weakness.
मनोनयन–Nomination.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोवैकल्य–Mental deficiency.
मंत्रणा–Advice.
मंत्रणा देना–Advise.
मंत्रणा–परिषद्–Advisory Council.
मंत्रिपरिषद्–Council of Ministers.
मंत्री–Minister.
मरण–शुल्क–Death duty.
महाजनी–Banking.
महाधिवक्ता–Advocate General.
महान्यायवादी–Attorney General.
महाप्रशासक–Administrator General.
महालेखापरीक्षक–Auditor General.
महाभियोग–Impeachment.
मंजूरी–Sanction.
मानदेय–Honorarium.
मानवी–पण्य–Traffic in human beings.
मानहानि–Defamation.
मान्यता–Validity.
मार्ग–प्रदर्शन–Guidance.
माँग–Demand.
मीन–क्षेत्र–Fishery.
मुक्त–Exempted.
मुखिया–Headman.
मुख्य–Chief.
मुख्य–आयुक्त–Chief Commissioner.
मुख्य– निर्वाचन– आयुक्त–Chief Election Commissioner.
मुख्य–न्यायाधिपति–Chief Justice.
मुख्य–न्यायाधीश–Chief Judge.
मुख्यमंत्री–Chief Minister.
मुद्रा–Seal.
मुद्रांक–शुल्क–Stamp duty.
मूलधन–Capital.
मूलधन मूल्य–Capital value.

☞ य ☜

यथास्थिति–As the case may be.
यंत्र–शास्त्र–Engineering.
याचिका–Petition.
यातायात–Traffic.
योगकाल–Joining time.

☞ र ☜

रक्षण–Reservation.
रक्षाकवच–Safeguard.
रक्षित–वन–Reserved forest.
रथ्यायान–Tram Car.
रद्द करना–Annul.
रसीद–Receipt.
राजगामी–Escheat.
राजनय–Dipomacy.
राजस्व–Revenue.
राजस्व–न्यायालय–Revenue Court.
राज्य–State.
राज्य की सरकार–Government of State.
राज्यक्षेत्र–Territory.
राज्य–क्षेत्रातीत प्रवर्तन–Extra territorial operation.
राज्य–निधि–State Fund.
राज्यपरिषद्–Council of States.
राज्यपाल–Governor.
राज्य–सूची–State-list.
राय–Opinion.
राशि–Amount.
राष्ट्र–Nation.
राष्ट्र–ऋण–Public debt.
राष्ट्रपति–President.
राष्ट्रपति–प्रसाद–पर्यंत–During the pleasure of the President.
राष्ट्रीय–राजपथ–National highways.
राष्ट्रों की विधि–Law of Nations.
रिक्तता–Vacancy.
रिक्त स्थान–Vacancy.
रिक्ति–Vacancy.
रिक्थ–Property
रुकावट–Bar.
रूढ़ि–Custom, Tradition.
रूप–Form.
रूप–भेद–Modification.
रूपांकन–Design.
रेल–Railway.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

* Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ल

लगान–Rent.
लगाना–Impose.
लघुकरण–Commutation.
लंबमान–Pending.
लंबित–Pending.
लाइसेंस–Licence.
लागत–Cost.
लागू होना–To be applicable.
लाभ–Profit.
लाभांश–Dividend.
लिखित–Instrument.
लिखित-सूचना–Notice in writing.
लेख–Writ.
लेखा–Account.
लेखा-परीक्षा–Audit.
लेखानुदान–Votes an accounts.
लेख्य–Document.
लेना-देना–Dealings.
लोक–People.
लोक-अधिसूचना–Public Notification.
लोकसभा–House of the People.
लोक-समाज–Community.
लोक-सेवाएँ–Public Services.
लोक-सेवा-आयोग–Public Service Commission.
लोक-स्वास्थ्य–Public health.

वं

वकालत करना–Plead.
वकील–Pleader.
वचन-पत्र–Promissory note.
वचन-बंध–Engagement.
वणिक-पोत–Merchant marine.
वयस्क–Major.
वयस्क-मताधिकार–Adult suffrage.
वसीयत–Will.
वस्तु-भाड़ा–Freight.
वहन-पत्र–Bill of coveying.
वंटन–Allotment.
वाक्-स्वातंत्र्य–Freedom of speech.
वाणिज्य–Commerce.
वाणिज्य-दूत–Consul.
वाणिज्य-संबंधी–Commercial.
वाद–Cause.
वाद-पद–Issue.
वाद-प्रतिवाद–Controversy.
वाद-मूल–Cause of action.
वाद-विवाद–Debate.
वाद-विषय–Subject matter.
वायदा-बाजार–Future market.
वायु-पथ–Airway.
वार्षिक–Annual.
वार्षिक-वित्त-विवरण–Annual Financial Statement.
वार्षिकी–Annuities.
विकलन–Debit.
विकृत-चित्त–Unsound mind.
विक्रय-कर–Sale tax.
विघटन–Dissolution.
विचार–Consideration.
विचारार्थ प्रस्ताव–Motion for consideration.
वितरण–Distribution.
वित्त–Finance.
वित्त विधेयक–Finance bill.
वित्तायोग–Finance Commission.
वित्तीय–Financial.
वित्तीय-भार–Financial obligation.
वित्तीय-विवरण–Financial statement.
विदेशीय कार्य–Foreign Affairs.
विदेशीय-विनिमय–Foreign exchange.
विधान–Legislation.
विधानपरिषद्–Legislative Council.
विधानमंडल–Legislature.
विधानसभा–Legislative Assembly.
विधायिनी-शक्ति–Legislative power.
विधि-प्रश्न–Question of law.
विधि-मान्य–Legal tender.
विधियों का समान संरक्षण–Equal Protection of Law.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि-संबंधी-Legal.
विधेयक-Bill.
विनिमय-पत्र-Bill of exchange.
विनिमय-Regulation.
विनियमन करना-Regulate.
विनियोग-Appropriation.
विनियोग-विधेयक-Appropriation Bill.
विनिश्चय-Decision.
विभाजन-Distribution.
विभेद-Discrimination.
विमति-Dissent.
विमान-परिवहन-Air navigation.
विमान-यातायात-Air traffic.
विमान-बल-Air Force.
विमोचन-Redemption.
विमोचन-भार-Redemption charges.
वियुक्त करना-Deprive.
विराम-Respite.
विरुद्ध-Repugnant.
विरोध-Repugnance.
विरोध-Repugnancy.
विलेख-Deed.
विवरण-Returns.
विवाद-Dispute.
विवाह-विच्छेद-Divorce.
विशेषाधिकार-Privilege.
विश्वास-प्रस्ताव-Motion of Confidence.
विश्वास का अभाव-Want of Confidence.
विषय-Subject.
विसर्जन-Dispersion.
विसंगत-Irrelevant.
विस्तार-Extent.
विस्फोटक-Explosive.
वीसा-Visa.
वृत्ति-Profession.
वृत्ति-कर-Profession tax.
वृद्धि-Increment.
वेतन-Pay.
वेलन-Salary.
वेलई-Employment.
वेला-जल-Tidal waters.
वैदेशिक कार्य-External Affairs.
वोटदाता-Voter.
वंचित करना-Deprive.
व्यक्ति-Person.
व्यपयत होना-Lapse.
व्यय-Expenditure.
व्यवसाय-Vocation.
व्यवस्था-Order.
व्यवहार-Behaviour, Conduct.
व्यवहार-Dealing.
व्यवहार-अदालत-Civil Court.
व्यवहारालय-Civil Court.
व्यवहार-न्यायालय-Civil Court.
व्यवहार-प्रक्रिया-Civil Procedure.
व्यवहार-प्रक्रिया-संहिता-Civil Procedure Code.
व्यवहार-वाद-Civil suit.
व्यवहार-विषयक अपकृत्य-Civil wrong.
व्यवहार-विषयक दोष-Civil wrongs.
व्यवहार-शक्ति-Civil power.
व्यापार-Trade.
व्यापार-कर-Trade tax.
व्यापार-चिह्न-Trade mark.
व्यापार-संघ-Trade Union.
व्यावृत्ति-Savings.

श

शक्ति-Power.
शर्त-Condition.
शलाका-Ballot.
शलाका-पद्धति-Ballot System.
शांति-Peace.
शाश्वत-उत्तराधिकार-Perpetual Succession.
शासक-Ruler.
शासन-Governance.
शासन-Government.
शासन करना-Govern.
शासी-निकाय-Governing body.
शास्ति-Penalty.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा–Instruction.
शिक्षा–Education.
शिल्पी–प्रशिक्षण–Technical Training.
शिविर–Camp.
शिशु–Infant.
शिस्त–Disciplinary.
शुल्क–Duty.
शुल्क, सीमांत–Custom, Frontiers.
शून्य–Void.
शरीफ–Sheriff.
शोध, शोधना–Research.
श्रद्धा–Faith.
श्रम–Labour.
श्रमिक–संघ–Labour Union.
श्रेष्ठि–चत्वर–Stock Exchange.

☞ स ☜

सक्षम–Competent.
सत्र–Session.
सत्र–न्यायालय–Sessions Court.
सत्रावसान–Prorogue.
सदाचरण–पर्यंत–During good behaviour.
सदाचार–Morality.
संस्था–Association.
संधि–Treaty.
सभा–Assembly.
समता–Equality.
समर्पण–Dedication.
समवर्ती–सूची–Concurrent list.
समवाय–Company.
समवाय–संस्था–Co-operative Society.
समवेत होना–Assemble.
समागम–Intercourse.
समापन–Winding-up.
समुदाय–Community.
समुद्र–नौवहन–Maritime shipping.
संपदा–Estate.
संपदा–शुल्क–Estate duty.
संपूर्ण–प्रभुत्व–संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य–Sovereign Democratic Republic.
सम्मेलन–Conference.
सरकार–Government.
सरकारी अभियाचना–Public demand.
सर्वक्षमा–Amnesty.
सर्वोच्च समादेश–Supreme Command.
सलाह–Advice.
सशस्त्र बल–Armed forces.
सहकारी संस्था–Co-operative Society.
सहमति–Concurrence.
सहायक–Auxiliary.
सहायक–अनुदान–Subsidiary Grant.
संकटमय–Hazardous.
संकल्प–Resolution.
संक्रमण–Transition.
संगणना–Computation.
संघ–Union.
संघ–सूची–Union List.
संचार–Communication.
संचार करना–Communicate.
संचार–साधन–Means of Communication.
संचित–निधि–Consolidated Fund.
संयोधित–Addressed.
संपत्ति–हस्तांतरण–पत्र–Assurances of transfer of property.
संपर्क–Contact.
सम्मति–Consent.
संभावना–Probability.
संरक्षक–Guardian.
संलग्न–Appended.
संविदा–Contract.
संविधान–Constitution.
संविधान–सभा–Constituent Assembly.
संशोधन–Amendment.
संसद–Parliament.
संस्था–Institution.
संस्थापन–Establishment.
संहिता–Code.
साक्ष्य–Evidence.
साधारण–निर्वाचन–General Election.
सामाजिक–बीमा–Social Insurance.
सामाजिक रूढ़ि–Social Custom.
सामाजिक सेवा–Social Service.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामान्य मुद्रा–Common Stamp.
सामान्य मुहर–Common Seal.
सार्वजनिक अधिसूचना–Public Notification.
सार्वजनिक अभियाचना–Public demand.
सार्वजनिक कल्याण–Common good, Pub-lic Welfare.
सार्वजनिक व्यवस्था–Public Order.
साहूकार–Money-Lender.
साहूकारी–Money-Lending.
सांसर्गिक–Contagious.
सांक्रामिक–Infectious.
सिद्ध-दोष–Convicted.
सीमाकर–Terminal Tax.
सीमांत–Frontiers.
सीमा-शुल्क–Frontier duty.
सीमांकन–Demarcation.
सुधार-प्रन्यास–Improvement Trust.
सुधारालय–Reformatory.
सुसंगत–Relevant.
सुसंगति–Relevancy.
सूचना-पत्र–Gazette Notice.
सूद–Interest.
सूत्र–Formula.
सूत्रित–Formulated.
सेना–न्यायालय–Court Martial.
सेवा–Service.
सेवा की शर्त–Condition of service.
सेवा–नियोजन–Employment.
सेवा–भार–Service charge.
सैनिक–Military.
सैन्य-वियोजन–Demobilization.
सौंपना–Assign.
सौंपना–Entrust.
स्थानांतरण–Transfer.
स्थानीय क्षेत्र–Local area.
स्थानीय गण–Local Board.
स्थानीय निकाय–Local Body.
स्थानीय प्राधिकारी–Local Authority.
स्थानीय मंडली–Local Board.
स्थानीय शासन–Local Government.
स्थानीय स्वशासन–Local Self-Government.
स्थापना–Establishment.
स्थापित करना–Establish.
स्थायी आदेश–Standing Order.
स्थायी समिति–Standing Committee.
स्पष्टीकरण–Clarification.
स्पष्टीकरण–Explanation.
स्मारक–Momorial.
स्वतंत्रता–Freedom.
स्ववश–Possession.
स्वविवेक–Discretion.
स्वातंत्र्य–Freedom.
स्वाधीनता–Liberty.
स्वामित्व–Ownership.
स्वामिलम्य–Royalty.
स्वामित्व–Royalty.
स्वामी–Owner.
स्वामिहीनत्व–Bona vacancia.
स्वामी होना–Own.
स्वायत्तता–Autonomy.
स्वीय विधि–Personal law.

☞ ह ☜

हक्क–Title.
हक्क होना–Entitled.
हटाना–Remove.
हस्त-शिल्प–Handicraft.
हस्तांतर पत्र–Conveyance.
हस्तांतरण–Transfer.
हिदायतें–Instructions.

☞ क्ष ☜

क्षति–Injury.
क्षतिपूर्ति बिल–Bill of Indemnity.
क्षमताशाली–Competent.
क्षमा–Pardon.
क्षेत्र–Area.
क्षेत्राधिकार–Jurisdiction.

●●●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Authenticated Administrative & Social Phraseology

शासन-व्यवस्था एवं समाज में प्रयुक्त आँग्ल पारिभाषिक शब्दों के पर्यायवाची हिन्दी शब्द

☞ A ☜

Abaction–पशु की चोरी.
Abactor–पशु चोर.
Abalienation–आगम पत्र या कवाले का संक्रामण (transfer of title of right).
Abandoned claim–परित्यक्त अधिकार या दावा.
Abandonee–परित्यक्त वस्तु का ग्रहणकर्ता.
Abandonment–परित्याग परित्यजन.
Abandonment of holdings–जोतों के अधिकार का परित्यजन.
Abate–कमी करना, दूर करना, हटाना, उठाना, कम करना, शांत करना, समाप्त करना.
Abatement–कमी, न्यूनीकरण, घटाव, समाप्ति.
Abatement of Land Revenue–मालगुजारी का घटना या घटाया जाना, तखफ़ीफ़ मालगुजारी.
Abatement of rent–लगान में कमी.
Abatement of Suit–वादान्तकरण, वादसमाप्ति, झगड़े या मुकदमे की समाप्ति.
Abbreviated–संक्षिप्त, संक्षिप्त किया गया.
Abbreviated form–संकेत चिह्न, संक्षिप्त रूप.
Abbreviation–संक्षेप, संकेताक्षर.
Abbreviator–संक्षेपक.
Abdication of throne–सिंहासन-त्याग.
Abdominal–उदर संबंधी, उदरक.
Abdominal bandage–उदरपट्टिका.
Abduction–अपहरण, स्त्री या बच्चे को भगा ले जाने का काम.
Abducator–अपहर्ता, स्त्री या बच्चे को भगा ले जानेवाला.
Abet–दुरुत्साहित करना.
Abetment–दुरुत्साहन, अनुत्तेजन.
Abeyance–आस्थगन, स्थायी रूप से टाल देने का काम.
Abstract of stock issues–दिए गए सामान की संक्षिप्त सूची.
Abstract statement–संक्षिप्त विवरण.
Abstract table–उपसंक्षेप सारणी.
Abundant–प्रभूत, प्रचुर, अधिक.
Abutment–मेहराब का पाया, तोरणाधार.
Abuttals–प्रतिसीमाएँ, संलग्न सीमाएँ.
Abutter–प्रतिसीमा का स्वामी.
Abutting–प्रतिस्पर्शी, सटा हुआ.
Abutting owner–प्रतिस्पर्शी स्वामी.
A.C. (A class)–प्रथम श्रेणी.
A.C. (Assistant Commissioner)–सहायक आयुक्त.
Academic–शास्त्रीय, विद्या-विषयक, आधि-विद्य.
Accomplish–संपन्न करना, सम्पादन करना, पूरा करना.
Accomplished–गुण-सम्पन्न, कृत-विद्य.
Accomplished fact–निष्पन्न तथ्य, सिद्ध बात.
Accomplishment–निष्पादन, परिपूर्ति, समाप्ति.
Accord–ऐकमत्य, आनुकूल्य, रुचि, प्रदान, समान होना, एक स्वर.
Accord approval–अनुमोदन करना, स्वीकृति देना.
Accordingly–इस प्रकार, इसलिए, तद्नुसार.
Accord sanction–स्वीकृति देना.
Accost–अभिवादन करना.
Account–लेखा, गणन, हिसाब, विवरण, स्पष्टी- करण, कथन, अर्थ.
Accountable–उत्तरदायी, जवाबदेह.
Accountable receipt–उत्तरदेय प्राप्ति.
Account, Appropriation–विनियोग लेखा.
Account, Detailed–सविस्तार लेखा.
Accountant–लेखपाल, गाणनिक, गणनाध्यक्ष.
Act of grace–क्षमादान.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Act of hostility–शत्रुता का कार्य.
Act of indecency–असभ्य-कृति.
Act of Law–विधि क्रिया.
Act of violence–हिंसा-कार्य.
Act and manuals–अधिनियम तथा नियमावलियाँ.
Actual–वास्तविक.
Actials–वास्तविक आँकड़े या प्राप्ति.
Actual service–वास्तविक सेवा.
Actual service (as of summons)–वास्तविक निष्पादन, सम्मन की सही तामीली.
Actual travelling allowance–वास्तविक यात्रिक भत्ता.
Actual travelling expenses–वास्तविक यात्रिक व्यय.
Acute angle–न्यून कोण.
Adaptation–अनुकरण, अनुकूलन.
Addendum–जोड़पत्र, क्षेप, क्षेपक.
Addition–परिवर्धान, योग, जोड़.
Addition and alteration–बढ़ाव और बदलाव, वृद्धि और परिवर्तन, परिवर्धन और परिवर्तन.
Additional–अतिरिक्त, अधिक, अपर, उपधिक, समधिक.
Additional Assistant Research Officer–अतिरिक्त या संयुक्त सहायक अन्वेषण अधिकारी.
Additional Deputy Secretary–अतिरिक्त उपसचिव.
Additional Director of Education–अतिरिक्त या संयुक्त शिक्षा-निदेशक.
Additional District Magistrate–अतिरिक्त ज़िला मजिस्ट्रेट.
Additional entry–अतिरिक्त प्रविष्टि.
Additional fees–अतिरिक्त शुल्क.
Additional grant–अतिरिक्त अनुदान.
Additional Judge–अतिरिक्त न्यायाधीश, अपर जज.
Additional pay–अतिरिक्त वेतन.
Admission of instrument–करणपत्रों की प्रतिपत्ति.
Admission of students–छात्रों का प्रवेश, छात्रों की भर्ती.
Admission Register–प्रवेशपंजी, रजिस्टर दाखिला.
Admission ticket–प्रवेश पत्रक.
Admit–प्रवेश करना, भर्ती करना.
Admittance–प्रवेशाज्ञा.
Advisory Officer–मंत्रणा अधिकारी.
Advocate–अधिवक्ता, वकील.
Advocate-General–महाधिवक्ता.
Aerial–हवाई, वायु या वायुयान-सम्बन्धी.
Aerial lines–हवाई तार.
Aerodrome–हवाई अड्डा, विमान-क्षेत्र.
Aeronautical–वैमानिक.
Aeronautics–विमान-विद्या.
A fee in cash–नकद फीस.
Affair–कार्य, कारोबार, घटना.
Affect–प्रभाव डालना, प्रभावित करना.
Arson–गृहदाह.
Art–कला, आर्ट.
Arterial–धमनी-संबंधी.
Arterial drainage–धमनीजालरूप जलोत्सारण.
Artery forceps–धमनी संदंशिका.
Art-gallery–कलादीर्घा, आर्टगैलरी.
Article–अनुच्छेद, अन्तर्नियम.
Articles–वस्तुएँ, पदार्थ, चीजें, धारा, अधिकरण.
Articles of Association–संघ के आधार नियम, संस्था विधान.
Articles of Civil Service Regulations–समाज-सेवा विधानों के अन्तर्नियम.
Artificer–प्रशिल्पी, शिल्पकार.
Artificial–कृत्रिम.
Artisan–कारीगर, दस्तकार, शिल्पकार.
Artist–कलाकार.
Artistic work–कलाकृति.
Arts College–साहित्यिक महाविद्यालय, आर्ट्स कॉलेज.
As adapted–जैसा संशोधित करके अनुकूल बनाया गया.
As aforesaid–पूर्व कथनानुसार.
As a general rule–सामान्यतः.
As a matter of course–स्वभावतः.
As a matter of fact–यथार्थतः.
As a matter of right–साधिकार.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

As a rule–नियमतः.
As a whole–पूर्णतया.
As before–यथापूर्व, पूर्वानुसार.
Asbestos–अदाह.
As carriers–वाहकों की भाँति.
Ascendants–पूर्वज.
Ascertain–निश्चय करना, मालूम करना.
As compared with–की अपेक्षा, की तुलना में, जैसा कि मिलान किया गया.
Assesssment statement–कर-निर्धारण विवरणपत्र.
Assessor–कर-निर्धारक.
Assessor–पारिषद, पंच, परामर्शक.
Assets–सम्पत्ति पावना, परिसम्पत्.
Assets and liabilities–परिसम्पत् और देनदारी, पावना और देना.
Asseverate–शपथपूर्वक कहना.
Asseveration–सशपथोक्ति.
Assign–अभिहस्तांकित करना, सौंपना, नियत करना.
Assigned–अभिहस्तांकित, सौंपा गया.
Assignee–अभिहस्तांकिती, जिसके नाम हस्तान्तरण किया जाए.
Assignment–अभिहस्तांकन, बेची, सुपुर्दगी.
Assistant Accountant–सहायक लेखपाल.
Assistant Auditor–सहायक लेखा-परीक्षक.
Assistant Commandant–सहायक समादेशक या सेनानी.
Attachment–कुड़की, कुर्की, अभ्याग्रहण, जब्ती.
Attachment of salary–वेतन की कुड़की.
Attain–प्राप्त करना, पाना.
Attain an age–वयस्क या बालिग होना.
Attain a standard–प्रामाणिक स्तर तक पहुँचना.
Attainment–योग्यता.
Attempt–प्रयत्न, प्रयास.
Attendance–उपस्थिति.
Attendance Grant–उपस्थिति अनुदान.
Attendance Register–उपस्थिति रजिस्टर, उपस्थिति पंजिका.
Attendant–परिचारक.
Attention–अवधान, ध्यान.
Attest–प्रमाणित करना, साक्षीत करना, तस्दीक करना.
Attestation–साक्षीकरण, तस्दीक.
Attested–प्रमाणित, साक्षीत, तस्दीक किया हुआ.
Attested True Copy–प्रमाणित यथार्थ प्रतिलिपि.
At the instance of–(किसी के) के कहने पर.
At the latest–अधिक-से-अधिक समय लेकर भी.
Attesting witness–हाशिये का गवाह, उपान्त साक्षी, प्रमाणकर्ता साक्षी.
Attitude–भाव, वृत्ति, अवस्था, रुख.
Attorney–अभिकर्ता, प्रतिहस्तक, न्यायवादी, मुख्तार.
Attributable–आरोपणीय, उपारोप्य.
Attribute–सहजगुण, विशेषता.
At variance with–किसी से असहमत.
At will–इच्छानुसार.
At your earliest convenience–यथाशीघ्र.
Auction–घोष विक्रय, नीलाम, क्रोश-विक्रय.
Audit–लेखा या गणना-परीक्षा, हिसाब की जाँच.
Audit and Inspection Note–लेखापरीक्षा तथा निरीक्षण टिप्पणी, आडिट तथा निरीक्षण नोट.
Audited accounts–आडिट किए हुए लेख या हिसाब.
Audit certificate–लेखापरीक्षा प्रमाणपत्र.
Audit intimation–लेखापरीक्षा सूचना.
Audit note–लेखापरीक्षा टीप, लेखापरीक्षा टिप्पणी.
Audit objections–लेखापरीक्षा आपत्तियाँ, आडिट की आपत्तियाँ.
Automobile–आत्मवह, स्वयंवह.
Autonomous–स्वायत्त.
Autonomy–स्वायत्तता, स्वायत्त शासन.
Autopsy–शव-परीक्षा.
Auxiliary Nursing Service–सहायक उपचार सेवा या भृत्या.
Avail–काम में लाना, लाभ उठाना.
Available–प्राप्य, ग्राह्य.
Avenue–पहुँच, मार्ग, रीस, रविश.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Average–माध्य, औसत.
Average anna condition–आनों में फसल की हालत.
Average cost–औसत लागत.
Average temperature of day and night–दिन और रात का औसत तापमान.
Average pay–श्रेणिक वेतन, औसत वेतन.
Average salary–माध्य वेतन, औसत वेतन.
Avian Tuberculin Test–पक्षियों की यक्ष्मा परीक्षा.
Aviation–उड्डयन, विमानचालन.
Aviation Department–विमान-विभाग.
Avocation–उप-व्यवसाय.
Avoid–टालना, बचना, दूर रहना, परिहार करना, आनाकानी करना.
Avowterer–परस्त्रीगामी.
Await–प्रतीक्षा करना, स्थगित करना.
Await or suspend–प्रतीक्षा करना या स्थगित करना.
Award–पंच का निर्णय, पारितोषिक, पुरस्कार.
Aware–अवगत.
Axis–अक्ष, धुरी.
Axis of a circle or sphere–वृत्त या गोले का अक्ष.
Axis of a cone–शंकु-अक्ष.
Axis of a cylinder–बेलन का अक्ष.
Axis of rotation–घुमाव-अक्ष.
Axis Power–धुरी-राष्ट्र.
Axles–धुरे.
Ayes–हाँ पक्ष, हाँ वाले.

☞ B ☜

Bachelor of a university–विश्वविद्यालय का स्नातक.
Back-biting–पैशुन्य, चुगुलखोरी.
Bequeath–इच्छा-पत्र द्वारा देना, वसीयत करना.
Bequest–रिक्थ, उत्तरदान, संकल्प, वसीयत, वसीयतनामा, इच्छा-पत्र द्वारा प्राप्त सम्पत्ति, हिब्बा.
Berar (बरार)–विदर्भ.
Bereaved–शोक-संतप्त.
Berth–नौशय्या, रेलगाड़ी या जहाज में शायिका या सोने का स्थान, बर्थ, लंगर-स्थान.
Bestiality–पशु-मैथुन.
Betrayer–विश्वासघाती, रहस्य स्फोटी.
Betrothal–वागदान, मँगनी, सगाई.
Betterment–सुधार.
Betting–पण-क्रिया, बाज़ी लगाना.
Beverage–मादक-पेय.
Bewildered–किंकर्त्तव्यविमूढ़, हक्का-बक्का.
Beyond power–शक्ति से बाहर.
Blaze–दीप्ति, लपट, लपटें उठना.
Bleach–मसाले से सफेद करना.
Blight–तुषार, सोख्त.
Blind Relief Scheme–अन्ध-साहय्य योजना.
Blinds (windows)–परदा, झिलमिली.
Block–उपरोध, ठप्पा, कुन्दा.
Blockade–समवरोध, नाकेबन्दी.
Blocked–समवरुद्ध.
Blood-bank–रुधिर-कोष.
Blood Pressure Instrument–रक्तभार यंत्र, रक्त निपीड़ यंत्र.
Blood Transfusion Scheme–रक्त संक्रामण योजना.
Breaches of Canals–नहरभंग.
Breaches of Law–विधि-भंग.
Breakage–टूट-फूट.
Break down–असफल हो जाना, बैठ जाना, ठप हो जाना, टूट जाना.
Breaking out–प्रारम्भ होना.
Break of service–नौकरी का क्रम-भंग.
Break-water–लहरतोड़.
Breast-ticket–बंदी की छाती का बिल्ला.
Breast-wall–आवक्ष-भित्ति, छाती तक की दीवार.
Breeches–बिरजिस.
Breed–अभिजाति, नसल.
Breeder–अभिजनक.
Breeding–अभिजनन.
Breeding of cattle–पशु-संवर्धन.
Bressummer–सरदल, लम्बा लिंटल.
Breviate–सारांश, वकील का मसौदा.
Brevity–संक्षेप.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Bribery & corruption–घूस और भ्रष्टाचार.
Brick–ईंट.
Brick-work–ईंटों का काम.
Bridle–लगाम.
Bridle-road–घुड़सवारों के लिए सड़क.
Bridge, Combined Road and Rail–रेल और सड़क का सम्मिलित पुल.
Bridge headways and waterways–सड़क का पुल तथा पानी का पुल.
Bridoon-reins–कजलगाम, रिसाले की लगाम.
Brief–वाद-बंध.
Briefless–वाद-विहीन.
Brigand–लुटेरा, बटमार.
Bring about–कार्य सम्पादन करना.
Bring home to–हृदयंगम करना.
Bring round–सिद्ध करना.
Bully–गुंडा.
Bully (*v.*)–डराना, धमकाना, सताना.
Bumper–धक्का.
Bund–बाँध.
Bundle–गठरी, बस्ता.
Bundle lifter–पूलात्थापक, बस्ता उठानेवाला.
Bungalow, Inspection–डाक बँगला.
Bungle (*n. & v.*)–घपला, गड़बड़ी, घपला या गड़बड़ी करना.
Bungler–गड़बड़ी करनेवाला.
Burden of Proof–प्रमाण-भार या दायित्व कार्यालय.
Bureau–कार्यपीठ, कार्यालय.
Bureaucracy–अधिकारी शासन, नौकरशाही.
By Order of the Court– न्यायालय की आज्ञा से.
By-pass–उपमार्ग.
By-products–गौणोत्पाद, गौण उत्पादित वस्तुएँ.
By return of post–लौटती डाक से.
By virtue of–से.
By-way–उपमार्ग.

☞ C ☜

Cabinet–मंत्रिमंडल.
Cabinet Council–मंत्रिपरिषद्, गुप्त-मंत्रणा.
Cabinet-room–मंत्रिमंडल कोष्ठक.
Cable-gram–समुद्री तार.
Cable Jointer–तार जोड़.
Cadaster–भूकर-पंजी.
Cadastration–भूकर-मापन.
Cadet–युवक सैनिक.
Cadet-corps–छात्र-सेना.
Cadre–संवर्ग, मूल रचना.
Cartage–ढुलाई, गाड़ी-भाड़ा.
Cart-load–शकट-भार, बैलगाड़ी का बोझ.
Cartoon–व्यंग-चित्र.
Carteidge–कारतूस.
Cart-stand–बैलगाड़ी का अड्डा.
Case–मुकदमा, प्रकरण, व्यवहार, न्याय, अर्थ, अक्ष, वाद दशा, अवस्था, घटना, विषय.
Case-diary–पुलिस की अनुसंधान दैनन्दिनी, मामले का रोज़नामचा.
Case-fee–वाद-शुल्क, मुकदमे की फीस.
Case-file–अभियोग नस्ति.
Casement–झरोखा, खिड़की, गवाक्ष, वातायन.
Case-work–प्रकरण-संबंधी कार्य, मुकदमा-संबंधी कार्य.
Cash–रोकड़, नगद, नकदी.
Cash Book–रोकड़ बही.
Cash Chest–नगदी रखने का बकस.
Cashier–रोकपाल, रोकड़िया.
Cash-memo–रोकपत्र, नगदी पुरजा.
Cash-outlay–नगद लागत.
Cash-rent–नगदी लगान.
Cash-security–नगदी जमानत, रोकड़-प्रतिभू.
Cash-transaction–नगदी लेन-देन.
Casting vote–निर्णायक मत.
Cast iron–ढला लोहा.
Castration–बधिया करना, आख्ता करना.
Casual leave–आकस्मिक अवकाश.
Casual leave register–आकस्मिक छुट्टी का रजिस्टर.
Casualties–आकस्मिक मृत्यु की घटनाएँ.
Casual vacancies–आकस्मिक रिक्तियाँ.
Catalogue–सूची, सूचीपत्र, पुस्तक-सूची.
Catalogued–सूचीबद्ध.
Catalogue of Register Books–रजिस्टरों की सूची.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Catastrophe–अनर्थ, अनिष्ट, विपत्ति.
Catchment–पोषक क्षेत्र.
Certificate of registration–रजिस्ट्री का प्रमाण-लेख.
Certificate of Sale–विक्रय-प्रमाणपत्र.
Certification–प्रमाणीकरण.
Certification (by Governor)–राज्यपाल द्वारा प्रमाणीकरण.
Certified–प्रमाणित.
Certified copy–प्रमाणित प्रतिलिपि.
Certified extract–प्रमाणित अवतरण, प्रमाणित उद्धरण, तस्दीक किया हुआ इन्तखाब.
Certifier–प्रमाणक, प्रमाणकर्त्ता.
Certify–प्रमाणित करना.
Cess–उपकर, महसूल, अबवाब.
Cessation–विरति, समाप्ति, विराम.
Cession–अभ्यर्पण.
Cess-pool–मल-कूप.
Cestui Que Trust–वह व्यक्ति जिसके लिए निक्षेप (trust) किया जाए.
Ceteries Parilus–अन्य बातें पूर्ववत् रहते हुए, अन्य बात यथापूर्व रहते हुए.
Chah Shikasta (Broken Well)–टूटा हुआ कुआँ.
Chain–शृंखला, लड़ी, जंज़ीर, जरीब.
Chain and arrows–जरीब और तीर.
Chain-man–शृंखला-पुरुष.
Chair–पीठिका, आसन्दी.
Chairman–सभापति, अध्यक्ष.
Chairman, Improvement Trust–नगर-सुधार प्रन्यास अध्यक्ष.
Chairman, Penel of–सभापति तालिका.
Chalan–चालान.
Challenge–चुनौती.
Challenged vote–प्रश्नास्पद मतदान.
Chamber–वेश्म, मण्डल.
Closet–कोठरी, तहखाना, अमला, डाक.
Close-examination–सूक्ष्म-परीक्षण.
Closing–अंतिम.
Closing balance–अंतिम शेष.
Closing stock–अंतिम शेष पूँजी.
Closure–विवादान्तक प्रस्ताव, समाप्ति.
Closure report–समापन आख्या या विवरण.
Cloth-godown–वस्त्र-भण्डार, गोदाम.
Cloth-licence–वस्त्र-अनुज्ञप्ति.
Cloth-lined envelope–वसनास्तर वेष्टन कपड़े के अस्तरवाला लिफाफा.
Club–गोष्ठी-गृह, मण्डली.
Clubbed–संयोजित.
Club-law–बलपूर्वक शासन, डण्डाशाही.
Clutches–पकड़, शिकंजे, पंजे.
Co-accused–सह-अभियुक्त.
Co-adjutor–सह-न्याय-निर्णेता.
Co-administrator–सह प्रशासक या प्रबन्धक.
Coagulate–जमाना, जमना.
Coagulation–जमाव, आतंचन.
Collateral kinsmen–सगोत्र, सपिंड, समानोदक.
Collateral security–सहवर्ती प्रतिभूति, अतिरिक्त प्रतिभूति, जमानत मजीद.
Collation–परीक्षण, तुलना, संशोधन, दो भोजनों के बीच का जलपान.
Colleague–सहकारी, सहकर्मी, सहयोगी.
Collecting Government–संग्राही सरकार.
Collection–समाहरण, संग्रह, उगाही.
Collective–सामूहिक.
Collective fine–सामूहिक अर्थदण्ड.
Collective responsibility–सम्मिलित उत्तर-दायित्व.
Collector–समाहर्ता, संग्रहकर्ता, संग्राहक.
College–महाविद्यालय.
Commutation–अन्तर्वर्तन, परिवर्तन, लध्वादेश, एकराशिकरण, बदलाव, लघुकरण.
Commutation of Leave–छुट्टी का अन्तर्वर्तन.
Commutation of Pension–निवृत्ति वेतन का संराशिकरण.
Commutation of rent–लगान का रूपान्तर.
Commute–बदलना, हलका करना.
Commuted pension–लघुंत निवृत्ति वेतन.
Confidential report–गोप्य प्रतिवेदन.
Configuration–रूपरेखा, परिलेख, साक्षप स्थिति, बाहरी आकार.
Confinement–संसीमन, रोक, नज़रबन्दी.
Confines–सीमा प्रदेश.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Confirm–पुष्टि करना, दृढ़ करना, पक्का करना, तय करना.
Confirmation–पुष्टिकरण, पक्का किया जाना, मुस्तकिली.
Confirmed–पुष्टिकृत, स्थिरीकृत, स्थायीकृत.
Confiscate–समपहरण करना, जब्त करना.
Confiscated weapon–जब्त किए हुए हथियार.
Confiscation–समपहरण, जब्ती, राजसात्करण.
Conflict–संघर्ष, टक्कर.
Conflicting–विवादग्रस्त, विरोधी.
Conformity–अनुरूपता, अनुकूलता, समानता, मेल.
Confused–गड़बड़, घबड़ाया हुआ, संशयात्मक.
Confusion–क्रमभंग, व्यग्रता, गड़बड़ी, अस्त-व्यस्तता, घबराहट.
Congress Party–कांग्रेस दल, कांग्रेस पक्ष.
Conic section–शांकव काट.
Conjecture–अनुमान, अंदाजा.
Conjointly–संयुक्त रूप में.
Conjugal rights–वैवाहिक या दाम्पत्य अधिकार.
Conjunction–सहयोग, संयुक्ति.
Conjunctively–संयुक्त रूप से.
Conjucture–संकटपूर्ण स्थिति.
Connexion (connection)–सम्बन्ध.
Connivance–अक्षिसंकोच, गजनिमिलिका, आँख बचाना, चश्मपोशी.
Connive at–उपेक्षा करना, चश्मपोशी करना, आँख फेरना.
Consanguinity–सपिण्डता.
Consort–पति या पत्नी.
Conspicuous–ध्यानाकर्षी, स्पष्ट, विशेष, प्रमुख.
Conspiracy–षड्यंत्र, साजिश.
Conspirator–षड्यंत्रकारी.
Conviction–विश्वास, दोष सिद्धि, दण्ड, बन्दीकरण.
Convincing–विश्वासोत्पादक.
Convocation–दीक्षान्त-समारोह, समावर्तन.
Convocation address–दीक्षान्त-भाषण.
Convoy–रक्षक वर्ग.
Co-occupant–सहभोगी.
Coolie–भारवाहक.
Correction and Addition Slips–शोधन तथा जोड़ की पर्चियाँ.
Correction fluid–शोधन रस.
Correction slip–शुद्धिपर्ची.
Correction-table–संशोधन-सारणी.
Correspondence–पत्र-व्यवहार.
Correspondence resting with–पड़ा हुआ पत्र- व्यवहार.
Credit-balance–आकलन शेष, बाकी जमा.
Credit notes–जमा की चिट्ठियाँ, समाकलन पत्र.
Creditor–उत्तमर्ण, ऋणदाता, धनी.
Credit revenue–ऋण राजस्व.
Creed–मत, पन्थ, सम्प्रदाय.
Cremation–शवदाह, दाह संस्कार.
Cremation ground–श्मशान भूमि.
Cremery–मक्खन मलाईशाला.
Crime of violence–हिंसापराध.
Crime-police–अपराध शोधन पुलिस.
Crime Report Officer–अपराध अभिलेख अधि- कारी.
Crime-reports–अपराध प्रतिवेदन.
Criminal–अपराधी, दण्ड्य, आपराधिक.
Culpable–दण्डनीय.
Culpable homicide not amounting to murder–नरहत्या का अपराध जो कतल के दर्जे तक न पहुँचा हो.
Culprit–अभियुक्त, अपराधी.
Cultivate–खेती करना.
Cultivation–कृषिकर्म, जोत, खेती.
Cultivator–किसान, कृषक.
Culturable–कृषि योग्य.
Cultural programme–सांस्कृतिक कार्यक्रम.
Culture–संस्कृति.
Culture medium–पोषक माध्य, संवर्धन माध्यम.
Culvert–पुलिआ.
Cumbersome–कष्टकर, क्लेशप्रद.
Cypres–'सीप्रे' का सिद्धांन्त या नियम जिसके अनुसार धर्मादा की सम्पत्ति मूल उद्देश्य के नष्ट

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाने पर यथाशक्य उसके समीप वस्तु पर लगा दी जाती है.

Cysto–कोष्ठ.

D

D.B.L.M. guns–दुनली कारतूसी बन्दूक.

Dacoity–डाका, डकैती.

Dafedar–छोटा सेनानायक.

Daftari–दफ्तरी.

Dagger–कौक्षयक, कटार.

Daily–प्रतिदिन, दैनिक, दैन, दैनिक समाचारपत्र.

Daily allowance–दैनिक भत्ता, आह्निक भत्ता.

Daily labour return–दैनिक भृत्ति, चिट्ठा.

Daily note–दैनिक टिप्पणी.

Daily routine–नित्य का कार्य.

Daily wages–दैनिक भृत्ति या मजदूरी रोज़ही.

Dairy–दुग्धशाला, दुग्धालय.

Dairy-farm–दुग्धशाला प्रक्षेप.

Daity-farming–दुग्धशाला, उद्योग.

Dairy Jamadar–दुग्धशाला का जमादार.

Dairy-maid–ग्वालिन.

Dairyman–ग्वाला, दुग्धशाला कर्मचारी.

Dairy-organizer–दुग्धालय आयोजक या संघटक.

Dak bungalow–डाक बँगला.

Dak bungalow establishment–डाक बँगले के कर्मचारी.

Dak-runner–हरकारा, प्रेष-धावक.

Damage–क्षति, उपघात, हानि, हानि पहुँचाना.

Damaged stamp–बरबाद हुए स्टाम्प.

Damage-proof–हानि-रोधक.

Damages–क्षति, हरजाना.

Damage suit–क्षतिपूर्ति का वाद.

Debit–विकलन, नामे, विकलित करना, नामे लिखना.

Debitable–विकलनीय, नामे लिखने योग्य.

Delegacy–प्रतिनिधिक.

Delegate–प्रतिनिधि बनाकर भेजना, प्रत्यायुक्त करना.

Delegate (*n.*)–प्रत्यायुक्त, प्रतिनिधि.

Demonstrator–प्रदर्शक.

Demote–पदावनत करना.

Demotion–पदावनति.

Demurrage–विलम्ब दंड, हरजाना, विलम्ब शुल्क.

Denaturalized–स्वभाव विकृत.

Denial–प्रत्याख्यान, अस्वीकृति.

Denization–अन्तर्वासीयन.

Denizen–अन्तर्वासी.

Denomination–नाम, सम्प्रदाय, मूल्यांक, मूल्यनाम, अभिधान.

Denominational–साम्प्रदायिक.

Denominational Institution–साम्प्रदायिक संस्था.

Denominator–हर (गणित).

Derivatives–व्युत्पन्न.

Derive–व्युत्पत्ति करना, प्राप्त करना, परिणाम निकालना.

Derogate–आंशिक निष्प्रभाव करना, अमार्यादित करना, अपमानित करना.

Deserving–योग्य, उपयुक्त.

Desiccators–शोषयिता, सोख्ता.

Design–रूपांकन, रंगरूप, नकशा, योजना, षड्यन्त्र.

Designate–मनोनीत, नियुक्त.

Designation–पदनाम, अभिधान, पदवी.

Desirable–वांछनीय.

Desire–अभिलाषा, मनोरथ, इच्छा.

Desired–इच्छित, वांछित, इष्ट, अभिलषित.

Desolation–ध्वंस, उद्ध्वस्तता.

Desorption–अपचूषण.

Despatch–प्रेषण, आवश्यक चिट्ठी, डाक, प्रेषित करना, संप्रेषित करना, चालान करना, भेजना, शीघ्रता.

Despatcher–संप्रेषक.

Dethrone–सिंहासन च्युत करना, गद्दी से उतारना.

Detinue–अवरुद्ध, नज़रबन्द, राजबन्दी.

Detraction–मानहानि, प्रत्याहरण.

Detrimental–अहितकर, हानिकर.

Develop–विकसित करना या होना, खुलना, खिलना, पूर्णता को प्राप्त होना.

Developed Agricultural System–विकसित कृषि प्रणाली.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Developing–वर्धन.
Development–विकास, उभार, सुधार.
Development Board–विकास परिषद्.
Development Commissioner–विकास आयुक्त.
Development Co-oridination–विकास सहयोग.
Director of Public Health–सार्वजनिक स्वास्थ्य निदेशक.
Direct (tax)–प्रत्यक्ष (कर).
Directed to–को प्रेषित.
Disability–असामर्थ्य, असमर्थता, अयोग्यता, बेबसी.
Disability leave–असमर्थता-छुट्टी.
Disadvantage–असमर्थता, हानि.
Disabled–अंगहीन.
Disablement–अंगहानि.
Disabuse–भ्रान्ति दूर करना, भ्रम-निवारण करना.
District–जिला, जनपद.
District and Sessions Judge–जिला और दौरा जज, जनपद तथा सत्र न्यायाधीश.
District Board–जिला बोर्ड, जनपद परिषद्.
District Executive Force–जिला पुलिस, जनपद आरक्षी.
District Field Inspector–जिला या जनपद क्षेत्र शिक्षक.
District Fund–जिला या जनपद कोष.
District grain account–जिला या जनपद अन्नराशि लेखा.
District Hospital–जिला अस्पताल, जनपद चिकित्सालय.
Divulge–रहस्य खोलना.
Divulgence–रहस्योद्घाटन.
Docket–संक्षेपांकी-पत्र.
Docket form–संक्षेपांकी-पत्र-प्रपत्र.
Docketing–संक्षिप्तकरण.
Document–लेख्य, लेखपत्र, दस्तावेज.
Documentary–लिखित, लेख्यात्मक, दस्तावेजी, कागजी.
Documentary evidence–लिखित प्रमाण, लेख्यात्मक प्रमाण.
Dofasli area–दोफसली क्षेत्र.
D.O. letter–अर्धसरकारी पत्र.
Dogma–कट्टर मत, निश्चित सिद्धान्त, अटल मत.
Dogmatic–दुराग्रही, हठवादी, कट्टर.
Due–देय, प्राप्य, दातव्य, नियत, यथोचित, यथायोग्य.
Due disposal of cases–प्रकरणों तथा वादों का उचित निर्वर्तन.
Due notice–नियमित सूचना, समयोचित सूचना.
Due respect–यथाचित सम्मान.
Dues–दातव्य, (to be given), प्राप्तव्य (if to be received).
Duly–यथावत्, यथासमय, यथाविधि.
Duly approved–विधिवत् स्वीकृत, बाज़ाब्ता मंजूर.
Duly stamped–विहित मुद्रांक युक्त.
Dummy–मूक, बनावटी, नकली.
Duplicate–प्रति, दोहरा, प्रतिलिपि, मुसन्ना.
Duplicate copy–दूसरी कापी, द्वितीय प्रति, मुसन्ना, उतारा, दूसरा परत.
Duplicate will–द्वितीय इच्छापत्र.
Duplication–द्विगुणन, द्वितीया वृत्ति.
Duplicator–प्रतिलिपि-यंत्र.
Durability–चिरस्थायिता, टिकाऊपन.
Duranti Absentia Administrator–अनुपस्थिति में प्रशासक.
Duration–कालावधि, अवधि, स्थितिकाल, पदावधि, समय.
Duress–दबाव, धमकी, बंधन में रखा स्वीकार कराना.
During–कालावधि तक, पर्यन्त, अवधि में.
During good behaviour–सदाचार पर्यन्त.
During life time–जीवनपर्यन्त, जीवनकाल में.
During the term of office–पदावधि पर्यन्त.
Dust-bin–धूलिभाण्ड, कूड़ा-कचरा की टोकरी.
Dust proof–धूल रोक.
Duster–झाड़न.
Dutch auction–अवरोही नीलाम.
Dutiable–शुल्कारोप्य.
Duty–कर्त्तव्य, कार्य, कृत्य, बलि (task), शुल्क.
Duty allowance–कर्त्तव्य भत्ता.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Duty on conveyance–सम्पत्ति हस्तान्तरण पर शुल्क.
Dutyroom–कार्य नियोजन कोष्ठ.
Dyeing–रंजन, रँगाई.
Dying–मरण.
Dynamic–गतिशील.
Dysentery–आमातिसार.

☞ E ☜

Each year–प्रतिवर्ष.
Earliest–शीघ्रातिशीघ्र.
Early–शीघ्र, पूर्व, पहले, जल्दी.
Early Kharif Crop–अगौती खरीफ की फसल.
Earmark–विशेष प्रयोजनार्थ अलग रखना या निर्दिष्ट करना.
Earned–अर्जित.
Earned leave–अर्जित अवकाश या छुट्टी.
Eearned leave on average pay–औसत वेतन पर अर्जित छुट्टी.
Earned leave on full pay–पूरे वेतन पर अर्जित छुट्टी.
Eearned leave on half average pay on medical certificate–चिकित्सक के प्रमाण-पत्र द्वारा आधे औसत वेतन पर अर्जित छुट्टी.
Earnest–सच्चा, पक्का.
Earnest money–बयाना, सत्यंकार, साई.
Eearning–कमाई.
Earthed–भूयोजित.
Eearthing system–भूयोजन पद्धति.
Earth-strainer–खर्चाल.
Eearth-tester–भूयोजन-परीक्षक.
Eearth-work–मिट्टी का काम.
Ease–सरलता.
Easement–सुखाधिकार.
Employer's liability–नियोक्ता दातव्य या उत्तरवादिता.
Employment–सेवायुक्ति, सेवायोजन, व्यवसाय- युक्ति; काम-धंधा, नौकरी, व्यापार, व्यवसाय.
Employment Bureau–कार्यनियोजनालय.
Employment Exchange–सेवा-योजन कार्यालय.
Employment Officer–सेवा-योजन अधिकारी.
Employment Tax–नियुक्ति कर.
Emporium–विक्रयालय.
Empower–अधिकार देना.
Empowered–अधिकारप्राप्त, अधिकृत.
Emulation–प्रतिस्पर्धा.
Emulsion–दूधा, दूधिया दवा.
Equity of redemption–बन्धक मोचन की न्यायता, विमोचन की न्यायता.
Equivalent–समान, समतुल्य, सममूल्य, समाई, बराबर.
Equivocate–शब्द छल करना, गोलमाल करना.
Era–युग, कल्प, संवत्.
Eradicate–निर्मूल करना, मिटाना, उखाड़ना.
Eradication–उन्मूलन.
Eraser–रबर, इरेज़र.
Erasing–मिटाना, छीलना.
Erasures–उद्घर्षण, काट-कट, खरोंच.
Erect–बनाना, खड़ा करना, चिनाई करना, सीधा, खड़ा.
Erected–बनाया गया.
Erection–भवन, मकान.
Erosion–कटाव, छीलन, रगड़, काट.
Err–भूलना, चूकना, भूल करना, भटकना, बहकना.
Errata list–अशुद्धि-सूची.
Erratic–अनिश्चित, अनियमित, भ्रमणशील.
Erroneous–भ्रान्तिमूलक, भूलयुक्त, अशुद्ध.
Erroneous entry–अशुद्ध प्रविष्टि.
Errot–भ्रान्ति, भूल, चूक, त्रुटि, अशुद्धि.
Escape–बचकर भाग जाना, निकल भागना, उपाय, चारा.
Escaped prisoner–पलायित या भागा हुआ बन्दी या कैदी.
Escapee–भागा हुआ व्यक्ति, भग्गू.
Escheat–उत्तराधिकारी न होने पर राज्य-सत्ता द्वारा ले लिया गया धन, जब्त होना, अधिकारी होना.
Escort–मार्गरक्षक, पथ रक्षी.
Espouse–पत्नी, ब्याहता, पति (if a man).
Esquire–महाशय, श्रीमान्.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Essential–सारभूत, आवश्यक.
Essentials–सारभूत बात, सारभूत विषय.
Essential services–परमावश्यक सेवाएँ.
Established–प्रतिष्ठित, स्थापित, सुस्थित.
Establishing–सिद्ध करनेवाला या सिद्धिकरण, स्थापन.
Establishment–स्थापना, कर्मचारी वर्ग.
Establishment charges–स्थापना-प्रभार.
Establishment Officer–स्थापनाधिकारी.
Establishment Order Book–स्थापना आज्ञा-पंजी.
Estate–संपदा, सम्पत्ति, भूसम्पत्ति, मिलकिअत, जायदाद.
Estate duty–भूसम्पत्ति-कर.
Estimate–आगणन, तखमीना.
Estimated–आगणित, आँकी हुई.
Estimated yield of current year–चालू वर्ष की आँकी हुई उपज.
Exampt–मुक्त करना, बरी करना, अनिबद्ध, बरी, मुक्त.
Exampted–मुक्त किया गया, छूट दिया गया.
Exemption–मुक्ति, माफी, छुटकारा, छूट.
Exercise–प्रयोग, अभ्यास, व्यायाम, कसरत, प्रयोग करना.
Exertion–प्रयास.
Ex-gratia–अनुग्रह-धन.
Ex-gratia payment–अनुग्रह रूप प्रदान.
Ex-gratia relief–अनुग्रह रूप सहायता.
Exhaust–खाली कर देना, निर्बल कर देना, खींच लेना, खतम कर डालना, तली.
Exhausted paper–निश्शेषित पत्र.
Exhaustive–पूर्ण, निःशेष, विस्तृत.
Exhibited–प्रदर्शित.
Exhibition–प्रदर्शन, प्रदर्शनी, नुमाइश.
Exhibits–प्रदर्शित वस्तुएँ.
Exhort–उत्साहित करना, प्रबोधित करना.
Exigency–अत्यावश्यकता.
Exile–उद्वासित करना.
Exiled–उद्वासित.
Exilement–उद्वासन, वनवास.
Exist–विद्यमान होना, अस्तित्व होना, जीवित रहना, रहना.
Existence–अस्तित्व, सत्ता.
Existing–वर्तमान, विद्यमान.
Exit–बहिर्गमन या निर्गमन द्वार.
Ex-officio–पदेन, पदाधिकारेण, पद के नाते.
Ex-officio Sub-Registrar–पदाधिकारेण उप-पंजीयक.
Ex-officio vendors–पदेन विक्रेता.
Exoneration–दोषशुद्धि, छुटकारा, दोष-मुक्ति.
Expand–प्रसार या विस्तार करना, बढ़ना या बढ़ाना, फैलाना, विस्तृत करना.
Expanded–प्रसारित, विस्तारित.
Expanded metal–धातु की जाली.
Expander–प्रसारक, विस्तारक.
Expanse–विस्तार, प्रसार, विस्तृति.
Eexpansion–विस्तार, प्रसार, फैलाव, प्रसारण, विस्तारण.
Expansible–विस्तार्य, प्रसार्य.
Expansion joint–बढ़ा संगत जोड़, विस्तार-संगत संधि.
Ex-parte–एकपक्षीय, एकतरफा.
Ex-patriate–देश से निकाल देना, देश त्यागना.
Expatriation–देश निकाला, देश त्याग, नागरिकता त्याग.
Extraordinary pass–असाधारण प्रवेशपत्र.
Extraordinary pension–असाधारण निवृत्ति-वेतन.
Extra staff–अतिरिक्त कर्मचारीवर्ग.
Extra-statutory–कानून के बाहर का, विधि-बाह्य.
Extreme–अंतिम, दूरतम, बाह्य, अति तीव्र.
Extremely–अत्यधिक, नितांत, अत्यंत.
Extremist–गरम दलवाला, उग्रवादी, उग्रपंथी, अतिमार्गी.
Extrinsic–बाह्य.
Extrovert–बहिर्मुख.
Exudation–स्राव.
Eye & hook–तुकमा और हुक, छेद और हुक.
Eye-drops, ear-drops, Nasal-drops–अक्षिड्राप्स (आँख की दवा) कर्णड्राप्स, नासिका-ड्राप्स.
Eye, Ear, Nose and Throat Department–आँख, कर्ण, नासिका तथा कंठ विभाग.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Eye-estimates–दृष्टिवान् (मान्) देखकर अनुमान.
Eye-let–अक्षिका.
Eye O.P.D.–अक्षि बहिरंग विभाग.
Eye-piece–नेत्र-वीक्ष.
Eye-sight–दृष्टि-शक्ति.
Eye-Specialist–अक्षिरोग-विशेषज्ञ, अक्षि-विशेषज्ञ.
Eye-ward–अक्षिकक्ष.
Eye-witness–प्रत्यक्षी, कर्मदर्शी, कर्मसाक्षी, चश्मदीद गवाह.

☞ F ☜

Fabric–बनावट, ढाँचा, वस्त्र, पारचा, कपड़ा.
Fabricate–जाल रचना, मामला बनाना.
Fabricated–कूट, बनावटी, जाल रचा गया.
Fabrication–मिथ्या रचना, कल्पना, छल रचना.
Fabricator–जाल रचनेवाला.
Face-plait–मुखोर्मि.
Face-value–अंकित मूल्य.
Face value ticket–अंकित मूल्य टिकट.
Facilitate–सुगम करना, सुधार करना, सुविधा देना, सरल बनाना.
Facility–सुविधा, सौकार्य.
Facsimile–अनुलिपि, अनुप्रति.
Fact–तथ्य.
Faction–दलबंदी.
Factitious–कृत्रिम, अनैसर्गिक, बनावटी, रूढ़िबद्ध, असहज.
Facto–वस्तुतः.
Factor–गुणक, गुणनखंड, कारिंदा.
Factorage–आढ़त.
Factory–निर्णाणशाला, कारखाना, कर्मशाला.
Factual–वास्तविक, तात्विक.
Factum–तथ्य, सचाई.
Fee-income–शुल्क-आय, शुल्क द्वारा आय.
Feign–स्वांग करना, बहाना करना, ढोंग करना.
Feint–कूटाघात, कूटाक्रमण.
Fellow–अधि सदस्य, अधिछात्र, साथी.
Fellowship–अधि सदस्यता, अधिछात्रवृत्ति, पारिपद्यता.
Felon–घोर अपराधी.
Felony–घोर अपराध.
Felt–नमदा, जमड़ी, ऊन जमाना, नमदा बनाना, अनुभव किया.
Female–महिला, जनाना.
Female attendant–अनुचरी.
Female Nurse, Sick-room–उपचारिका-आतुरालय.
Female ward–महिला कक्ष.
Feminine style–स्त्रियोचित शैली.
Fence–प्राकार, घेरा, चहारदीवारी, आड़, बाड़ा, कठघरा, रोकना, आवेष्टित करना, घेरना.
Fence, Gates of bars–बाड़ा, सलाखों के फाटक.
Feucing–पटाबाजी, बनैती, पटा, घेरा.
Fenestra–गवाक्ष, झरोखा.
Feral–जंगली.
Ferries–घाट.
Ferrule–छल्ला, शामी.
Fertilizer–खाद.
Fertilizer controller–खाद-नियंत्रक.
Fete–(फेट्) त्यौहार, उत्सव का दिन.
Fetish–जड़-पूजा, जड़ासक्ति, अंधभक्ति.
Fetters–बेड़ी.
Feudatoryeud–कुलवैर, पीढ़ीजात शत्रुता.
Few–सामंत.
Fiance–कुछ, कम.
Fiancee–वाग्दत्ता.
Fiasco–अपहास्य, विफलता, फजीती.
Fibrin–रक्त तंतु.
Fiction–कल्पित कथा, परिकल्पना.
Fictitious–अवास्तविक, कल्पित, कृत्रिम, कथात्मक.
Fidelity–स्वामिभक्ति, पातिव्रत्य, एकनिष्ठा.
Fiduciary–न्यासधारी, न्यास-संबंधी, अमानती.
Fiduciary-estate–विश्वासाश्रित संपत्ति, अमानती जायदाद.
Field–खेत, मैदान.
Field book–खसरा, पैमाइशवालों की किताब.
Figure–अंक, आकार, आँकड़ा, मूर्ति, चित्र, प्रतिरूप, आकृति.
Figurehead–सामने की तस्वीर, नामधारी शासक.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Fixity–स्थिरता.
Fixtures–दृढ़ स्थित वस्तुएँ, स्थावर द्रव्य संपत्ति, स्थावर संपत्ति से संयोजित द्रव्य.
Flag–ध्वज, ध्वजा, पताका, झंडा, झंडी.
Flag 'A'–झंडी 'क'.
Flagrant–अति घोर, स्पष्ट.
Flag-staff–झंडे का डंडा, पताका डंडा.
Flake–पापड़ फाहा, गाला.
Flame–ज्वाला, लपट, लौ, जलना, लपट उठना, बलना.
Flare up–भड़क उठना.
Flat (*n.*)–वास खंड.
Flat charge–समान प्रभार.
Flat rate–एक भाव, समान दर.
Flavour–वास, सुवास, स्वाद, सुस्वाद.
Flavoured–सुवासित, सुस्वादित.
Flaw–त्रुटि, दोष, छिद्र.
Flawless–निर्दोष.
Flay–चमड़ा उतारना.
Fleas–पिस्सू.
Flicker–फुफुरण, ज्वाला कंप.
Flight–पलायन, उड़ान.
Flit pump–फ्लिट पिचकारी.
Float–डोंगा, बेड़ा.
Float (*v.*)–आरंभ करना, निकालना, तरना, बहना.
Floatation debt–अल्पकाल ऋण.
Floating bridge–प्लव-सेतु, तैरनेवाला पुल.
Floating Capital–चल-पूँजी, हेतु धन.
Flogging–कोड़ों की मार, कोड़ेबाजी.
Flood–बाढ़, सैलाब.
Flood relief–बाढ़-पीड़ितों की सहायता.
Floors–मंज़िलें.
Flora–उद्भिज्जात, वनस्पति वर्ग.
Florescence–फूलने की ऋतु, वसंत बहार.
Floriculture–पुष्प-कृषि, फूलों की खेती.
Flow and Lift Irrigation–बहाव और उठान की सिंचाई.
Flow Irrigation–बहाव की सिंचाई.
Fluctuate–उतरना-चढ़ना, घटना-बढ़ना.
Fluctuation–चढ़ाव-उतार, घट-बढ़, उच्चावचन.
Fluke–आकस्मिक लाभ.
Flume–कृत्रिम खुली नाली.
Flush–एकदम से बहना, उद्धावन.
Flushing system–जल धावन प्रणाली.
Flush latrine–फ्लश का पाखाना, उद्धावन शौचालय.
Fluvial action–नदी का बहाव.
Fly-boy (one who takes printed sheets from the press)–उद्धावहक.
Forward–अग्रसारित करना, अग्रप्रेषित करना, आगे भेजना, अग्रस्थ, अग्रगामी.
Forwarded–अग्रप्रेषित, अग्रसारित.
Forwarded for disposal–निर्वर्तनार्थ अग्रप्रेषित.
Forwarded for information & necessary action–सूचना तथा आवश्यक कार्यवाही के लिए अग्रसारित.
Forwarder–अग्रसारक, अग्रेषक.
Forward estimates–अगाऊ तखमीने.
Forwarding–अग्रेप्रेषण.
Forwarding note–अग्रसारण टिप्पणी.
Found–सिद्ध, उपपादित.
Founder–प्रवर्तक.
Found guilty–अपराधी सिद्ध हुआ या पाया गया.
Foundry–संघानी, ढलाई घर.
Fountain–सोता, फुहारा.
Fountain-pen–मसिपथ-लेखनी, धारा-लेखनी, झरनी.
Fourteen Years' Rule–चौदह वर्षवाला नियम, चौदहसाला नियम.
Fowl choler–चिड़ियों का रक्तदोष.
Fowler's bed–टूटवाली शय्या, फाउलरीय शय्या.
Fraction–भिन्न, भाग.
Fracture–अस्थिभंग.
Fracture bed–अस्थिभंग-शय्या.
Fracture ward–अस्थिभंग-कक्ष.
Fragile–भंगुर, शीघ्र टूट जानेवाला.
Frame–ढाँचा, चौखट, घेरा, बनाना.
Framing of issues–तनकीह कायम करना, विवाद-प्रश्नों का स्थिरीकरण.
Franchise–मताधिकार.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Fraternity–भ्रातृ-भाव, बंधु-भाव, बंधुता.
Fratricide–भ्रातृ-हत्या.
Fraud–छल, धोखा, कपट, कूटता, प्रतारण.
Fraudulent–कपटी, जालसाज, धोखेबाज, प्रतारक.
Fraught with risk–संकटपूर्ण, संकटयुक्त.
Free–स्वतंत्र, नि:शुल्क, अबाध, मुक्त, प्रतिबंध रहित, अनियंत्रित.
Free board–मुफ्त खाना, नि:शुल्क भोजन.
Freedom of conscience–अंत:करण की स्वतंत्रता.
Freedom of speech–वाक्-स्वातन्त्र्य, भाषण स्वातन्त्र्य.
Freedom of trade–वाणिज्य-स्वातन्त्र्य.
Free from encumbrances–भारमुक्त.
Free from limit–असीम.
Free from restriction–अबाध.
Free goods–करमुक्त वस्तुएँ.
Frequent–बार-बार का, बार-बार जाना, आया-जाया करना.
Fresh-disposal–पुनर्व्यवस्था.
Fret work–जालीदार काम.
Furnished–सुसज्जित, उपस्कृत.
Furnish information–सूचना देना.
Furnish security–जमानत दाखिल करना.
Furniture–उपस्कर, सज्जा, साज, सामान.
Further–आगे और अधिक दूर तक, अग्रिम, आगे बढ़ाना.
Further action–और आगे की कार्यवाही.
Further charge–अधिक भार.
Further information–और अधिक जानकारी.
Furtive–गुप्त, गुपचुप.
Fury–प्रकोप.
Fuses–फ्यूज़, दहनवर्तियाँ.
Futile–व्यर्थ.
Future–भविष्य, भावी, भाव्य, भवितव्य.
Future estate–भविष्य, भूसंपत्ति.
Future market–वायदे का बाजार.
Future weekly programme–आगामी साप्ताहिक कार्यक्रम.

☞ G ☜

Gallantry awards–शौर्य पारितोषिक.
Gallery–दीर्घा, बीथिका, दालान.
Galli Pots–मर्तबान, मलहमपात्र.
Gallows–वधफलक, फाँसी का तख्ता.
Galvanized wire–कलईदार तार.
Gambling–जुआ, द्यूत-क्रीड़ा या कर्म.
Game Laws–शिकार संबंधी कानून, आखेट-संबंधी नियम.
Games fee–क्रीड़ा-शुल्क.
Games-materials–क्रीड़ा-सामग्री, खेल का सामान.
Gaming-house–द्यूत-ग्रह, जूआखाना.
Gang–दल, गिरोप, टोली, वृंद.
Gang case–श्रमिकों का मामला.
Gang huts–श्रमिक वृंद के झोंपड़े.
Gaol–कारागार.
Gaoler–कारापाल.
Gap–अवकाश, अंतर, अंतराल, रिक्ति.
Garage–यानशाला, मोटरघर, मोटरखाना.
Garbage–कूड़ा-कचरा.
Garbled–विकृत.
Gardener–माली.
Garden Overseer–उद्यान-अवेक्षक, बाग ओवर- सियर, उद्यान ओवरसियर.
Garden party–गार्डेन पार्टी, उद्यान-भोज.
General Rules, Civil–दीवानी के सामान्य नियम.
General Rules, Criminal–फौजदारी के सामान्य नियम.
Government business–शासकीय कार्य.
Government Central Workshop–सरकारी केंद्रीय शिल्पशाला या कर्मशाला.
Government House–राजभवन, गवर्नमेंट हाउस.
Government of India Act–भारत सरकार अधिनियम या विधान.
Government of India Extraordinary Gazette–भारत सरकार का असाधारण राजपत्र.
Government of India Gazette–भारत सरकार का राजपत्र.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Government of India Provisional Constitution Order, 1947–भारत सरकार की अस्थायी विधान- आज्ञा, 1947.
Government Order–राजाज्ञा, राजकीय आज्ञा, सरकारी आज्ञा.
Government Pleader–सरकारी अभिभाषक, राज-अभिभाषक.
Government Printing–राजकीय मुद्रण.
Government Resolution–सरकारी निश्चय, राज- निश्चय.
Government Security–सरकारी ऋणपत्र.
Government Servants–राजसेवक, सरकारी नौकर, राजकर्मचारी.
Government Servants Conduct Rules–राजसेवक व्यवहार नियमावली.
Government studbull–सरकारी साँड़.
Governor–राज्यपाल, गवर्नर.
Governor's Box–राज्यपाल प्रकोष्ठ.
Governor's Secretary–राज्यपाल के सचिव.
Governor's Secretary's Office–राज्यपाल के सचिव का कार्यालय.
Gown–चोगा, गाउन.
G.P. Fund–राजकीय पूर्वोपायी कोष या आरक्षा निधि.
Grace–अनुग्रह, अनुकंपा, कृपा.
Grace, Day of–अनुग्रह-दिवस.
Grace marks–कृपांक, रियायती नंबर.
Gradation list–कोटिक्रम या क्रमबंध सूची.
Grade–पदक्रम, प्रक्रम, वर्ग, श्रेणी, वेतनमान.
Graded–कोटिबद्ध, क्रमबद्ध, क्रमिक, श्रेणीबद्ध.
Graded Pathologist–कोटिगत, रोगशास्त्रज्ञ.
Grade examination–कोटि-परीक्षण.
Grade promotion–कोटि-वृद्धि.
Grades of schools–पाठशालाओं या विद्यालयों की कोटियाँ.
Gratification–परितोषण, परितुष्टि.
Gratings–जाली, सलाखें, झँझरी.
Gratis–नि:शुल्क, बिना मूल्य, मुफ्त.
Grouped–वर्गीकृत, वर्गबद्ध.
Grouping–वर्गीकरण, वर्गबंधन.
Groupleader–टोली-नायक.
Group-mindedness–पक्षभावना, दलबंदी की भावना.
Group of minor heads–लघुशीर्षक-समुदाय.
Group-psychotherapy–सामूहिक मानसिक चिकित्सा.
Grow more food–अधिक अन्न उपजाओ.
Growth–वृद्धि, बढ़वार.
Groyne–जलतोड़.
Guarantee–प्रत्याभूति.
Guaranteed–प्रत्याभूत.
Guarantee letter–गारंटी पत्र, सुरक्षा पत्र, प्रत्याभूति-पत्र.
Guarantor–प्रत्याभू.
Guard–प्रहरी, गारद, पहरेदार.
Guard Book–पहरे का रोजनामचा.
Guardian–संरक्षक, सरपरस्त.
Guardian-ad-litem–प्रतिवादार्थ नियुक्त संरक्षक.
Guardianship–संरक्षता.
Guard-mounting–रक्षकारोहण, संतरी-दल द्वारा भार ग्रहण.
Guard of honour–सैनिक अभिवादन.
Guards and escorts–गारद और कमान.
Guidance–पथ-प्रदर्शन, प्रणीति, मार्गदर्शन.
Guide–पथ-प्रदर्शन करना, पथ-प्रदर्शक.
Guilt–अपराध.
Guilt-edged–सुनहरी, परम.
Guiltless–निरपराध.
Guilty–दोषप्राप्त, दोषी, अपराधी.
Guise–छद्मवेश.
Gul culvert–गूल की पुलिया.
Guls–गूल.
Gum–एक प्रकार की गोंद.
Gun barrel–बंदूक की नली.
Gusset plate–जोड़नेवाली या बाँधनेवाली प्लेट.
Gutter–नाली, मोरी.
Gymnasium–व्यायामशाला.
Gymnastics–व्यायाम विद्या.
Gypsy–कंजर.

☞ H ☜

Habeas Corpus–वैयक्तिक स्वतंत्रता निगम, वैयक्तिक स्वतंत्रता-शासनपत्र, बंदी-उपस्थापन या प्रत्यक्षीकरण.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

High tension–अधिक तनाव, विशेष वैमनस्य, बड़े वोल्टेज.
High-way–राजमार्ग.
Highway bill–राजमार्ग, विधेयक.
Highway code–राजमार्ग नियम संग्रह.
Highwayman–पारिपंथिक, बटमार.
High allowance–पहाड़ का भत्ता.
High exodus–पर्वत-यात्रा.
Hill recess–(राजकीय अधिकारियों के लिए) पहाड़ पर जाकर कार्य करने की अवधि.
Hind Flying Club–हिंद उड्डयन मंडल.
Hindrance–अड़चन, बाधा, रुकावट.
Hinduism–हिंदू-धर्म.
Hindu Law–हिंदू-विधि.
Hinge–चूल, कब्जा.
Hint–संकेत.
Hinted–संकेतित.
Hip rafter–शीर्षशहतीर.
Hireling–भाड़े का टट्टू.
Hire purchase–भाड़ा-क्रयन.
His Excellency–महामान्य, महामहिम, परम श्रेष्ठ.
His Majesty in Council–सपरिषद् महामहिम सम्राट.
Historic interest–ऐतिहासिक अभिरुचि.
History sheet–वृत्तफलक, अपराध वृत्त, चरित्र वृत्त.
History ticket–वृत्त पत्रक.
Hoard–संचय करना, जोड़ना, संचय.
Hobby–व्यासंग रुचि.
Hoe–कुदाल.
Hoisting of flag–ध्वजारोहण, झंडोत्तोलन.
Holder–धारक, गृहीता.
Hold good–लागू होना.
Hold in abeyance–स्थगित करना, टाल देना.
Holding–खेत, जोत, क्षेत्र, घृत क्षेत्र.
Holding of a tenant–असामी की जोत.
Holding Office–पदस्थ.
Hold out–टिकना.
Hold over–अवधि से परे अधिकार में रखना, स्थगित करना.
Hold-up–रोक रखना.
Holiday, Public–सार्वजनिक छुट्टी, सरकारी छुट्टी.
Holographic will–पूर्णत: स्वलिखित इच्छापत्र.
Homage–श्रद्धांजलि.
Home Department (Criminal)–गृह-विभाग (फौजदारी).
Home Department (Jails)–गृह-विभाग (कारागार).
Hypothecation–बंधक या गिरवी रखने का कार्य.
Hypothesis–उपकल्पनागृहीत पक्ष.
Hypothetical proposition–औपकाल्पनिक प्रस्थापना.

☞ I ☜

I am directed to–मुझे आदेश हुआ है कि.
I am directed to enquire–मुझे अनुसंधान करने का आदेश हुआ है.
I am to add–मुझे यह भी लिखना है कि . . .
I.A.S. (Indian Administrative Service)–भारतीय प्रशासन-सेवा.
I beg to say–मेरा निवेदन है कि . . .
I bid or Ibidem–तत्रव, वहीं, उसी स्थान पर.
Ice-bag–बर्फ की थैली.
Ice-box–बर्फ का बक्स.
Ice-cap–हिमशिरस्क, हिमटोपी, बर्फ की टोपी.
Iconography–प्रतिमा-विद्या.
I.C.S. (Indian Civil Service)–भारतीय जनपद सेवा.
Idea–अभिप्राय, विचार, राय, भावना, कल्पना, ख्याल.
Ideal–आदर्श, ध्येय.
Identical–अभिन्न, अनन्य, एक, एक-सा, पूर्णतया एक, एक ही.
Identification–अभिज्ञान, पहिचान, सायुज्य, शिनाख्त.
Identification card–अभिज्ञान पत्रक, पहिचान पत्रक.
Identify–अभिज्ञान करना, पहिचान करना, शिनाख्त करना.
Identity card–पहिचान पत्रक.
Illegible–अपाठ्य, अवाच्य.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Illegible Copy–न पढ़ी जा सकने योग्य प्रतिलिपि, दुर्वाचनीय.

Illegitimacy–जारजता, जारजात्य, वैजात्य, दोगलपन.

Illegitimate–जारज, अनौरस, दोगला.

Ill-fame–अकीर्ति, अपयश, अयश.

Ill-gotten–अन्यायार्जित.

Ill-health–अनारोग्य, दुःस्वास्थ्य.

Illicit–अधर्म्य, आज्ञाविरुद्ध, निषिद्ध, अवैध, अगम्य, अनुचित, नियमविरुद्ध, गैरकानूनी.

Illicit distillation–अनुचित आसवन.

Illicit intercourse–नियमविरुद्ध गमन या सहवास या मैथुन.

Illiteracy–निरक्षरता.

Inclusion–समावेश, सम्मिलित करना.

Inclusive–लेकर, मिलाकर, शामिल करके.

Incognito–अज्ञात, गुप्त वेश में, गुप्त रूपधारी, अज्ञातवासी.

Income tax–आयकर.

Incommensurate–असमान, अतुल्यमान.

Indexed–सूचीबद्ध.

Index-number–देशनांक.

Indian Air Force–भारतीय नभ या वायु सेना.

Indian and Colonial Divorce–भारतीय और उपनिवेशिक विवाह-विच्छेद.

Indian Arms Act–भारतीय शस्त्र विधान.

Indian Army Act–भारतीय सेना विधान.

Indian Civil Service–भारतीय जनपद सेवा या भृत्या.

Indian Divorce Act–भारतीय विवाह-विच्छेद विधान.

Indian etiquette–भारतीय शिष्टाचार.

Indian Evidence Act–भारतीय साक्ष्य-विधान, कानून शहादत.

Indian Independence Act, 1947–भारतीय स्वातंत्र्य अधिनियम, 1947.

Indian Languages Deptt.–भारतीय लोकभाषा-प्रसार विभाग.

Indian Medical Association–भारतीय भेषज संघ.

Indian Museum–भारतीय संग्रहालय या अजायब घर.

Indian Penal Code–भारतीय दंड-विधान दंड विधिसंग्रह, भारतीय दंड संहिता.

Indian Research Fund Association–भारतीय गवेषणा निधि संघ.

Indian State–देशी राज्य.

Indian Store Department–भारतीय भंडार वस्तु विभाग, भारतीय भांडागार विभाग.

Indian Succession Act–भारतीय उत्तराधिकार विधान.

Indian Territorial Force–भारतीय प्रदेशी सेना.

Indian War Memorial–भारतीय युद्ध-स्मारक.

Indication–संकेत, लक्षण, चिह्न, सूचना.

Indict–अपराध लगाना.

Indictment–दोषारोप.

Indifferent–उदासीन, तटस्थ, असावधान.

Indigenous–देशी.

Indigent–गरीब, निर्धन, कंगाल, अकिञ्चन.

Indigent patients–निर्धन रोगी.

Indirect–अप्रत्यक्ष.

Indirect collection–अप्रत्यक्ष समाहरण, अप्रत्यक्ष वसूली.

Injustice–अन्याय.

Inland–अंतर्देशीय.

In law–विध्यनुसार, विधिगत.

Inlet–प्रवेश-द्वार.

In leu of–. . . के बदले, . . . के स्थान पर.

In limine–आरंभ में.

In loco–उचित स्थान में.

In lump–थोक में.

Inmate–आवासी, रहनेवाला, रहैया.

In moderate excess–वाजिबी से कुछ अधिक.

Inn–पांथशाला, पांथ-निवास, सराय.

Innate–अन्मजात, अंतरज.

Inner–आंतरिक, भीतरी, अंदर का.

In obedience–आज्ञापालन करते हुए.

Inoculation–टीका, अंतःक्रमण.

Inoculator–अंतःक्रामक, टीका लगानेवाला.

In one's bad books–अवकृपापात्र, अप्रसाद भाजन.

Inopportune–अनवसर, असमयोचित, अवकालिक, अयोग्य.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

In order–नियमानुकूल, ठीक.
In partial modification–आंशिक संशोधन करते हुए.
In-Patient Department–अंतर्वासी रोगी विभाग.
In proper form–उचित रूप में.
In pursuit of–अनुशीलन करने में.
Inquest–मरणान्वेषण, मृत्यु के कारण की जाँच.
Inquire–पूछताछ करना, जाँच करना.
Inquiry–जाँच.
Insane–विक्षिप्त, पागल, उन्मत्त, उन्मादी.
Insanity–विक्षिप्तता, पागलपन, उन्माद, वातुलता.
In statisfaction of–चुकाने के लिए.
Inscription–शिलालेख.
Insect Collector–कीट समाहर्ता.
Insemination–गर्भाधान.
In sequence–लगातार, निरंतर.
Insert–अंतर्न्यस्त करना, बैठाना, भरना, निविष्ट करना.
Insertion–निवेशन, जोड़, अंतर्न्यास.
In sextuplicate–छः प्रतियों में.
Insight–अंतर्दृष्टि.
Insignia–अधिचिह्न.
Insignificant–नगण्य, उपेक्षणीय, तुच्छ, महत्त्वहीन क्षुद्र.
Insist–आग्रह करना, हठ करना, जोर देना.
Insistence–आग्रह.
Insolvency–दिवाला.
Intestinal and other parasites–अंतड़ियों के तथा दूसरे परजीवी.
Intestinal contents–आँतों का अंतर्द्रव्य.
In the alternative–विकल्प के रूप में.
In the circumstances–इस परिस्थिति में.
In this behalf–एतदर्थ, इस बारे में.
Intimate–घनिष्ठ, गहरा, गाढ़ा, दिली, जिगरी, सूचना देना, जताना, आगाह करना.
Intimation–सूचना, प्रज्ञापन.
Intimation Book–सूचना पुस्तक.
In time–समय पर.
Intimidation–तर्जना, भय, भीषा, धमकी, त्रास.
In token of–. . . के प्रतीक या प्रमाण स्वरूप.
In toto–बिल्कुल, पूर्णतया.
Intoxicating drink–मादक पेय.
Intoxicating drug–मादक औषधि.
Intoxicating liquor–मदिरा.
Intramural–बंदीगृह (जेल) की भीत (दीवाल) के भीतर का.
Intra-State–राज्याभ्यंतर.
Intra vires–अधिकारांतर्गत.
Intra-vitam–जीवन काल में.
Intrigue–षड्यंत्र, कपट, प्रबंध, कूटयुक्ति, साजिश.
Intriguer–षड्यंत्रकारी.
Introduce–पुरःस्थापन करना, प्रस्तुत करना, परिचय करना, आरंभ करना.
Introduction–पुरःस्थापन (as of a bill), प्रस्तावना (as of a book), जारी करना.
Intrusion–धृष्टागम, अनधिकार प्रवेश.
Inure to his own benefit–आत्महित में लगाना.
Invalid–अमान्य, बीमार, रोगी, रुग्ण, अशक्त, रोगातुर, अवैध, दुर्बल, रोग से निर्बल, बिमरिहा.
Invalidate–अवैध या विधिहीन ठहराना, रद्द करना.
Invalid certificate–अशक्तता प्रमाणपत्र.
Invalid pension–असमर्थता निवृत्ति वेतन, असमर्थता की पेंशन.
Invariably–सदैव, नित्य, सदा, बराबर, बिना नागा.
Inventory–सूची, तालिका, फेहरिस्त.
Inverse–विपरीत, उलटा.
Investigation–अनुसंधान, अन्वेषण, जाँच, मार्गणा (by police), विचारणा (by court).
Investigation of claims–दावों के संबंध में जाँच.
Investment–विनियोजना, लागत, लगा हुआ रुपया, धन-विनियोग.
Investment figures–लगाई हुई पूँजी के आँकड़े, लगी पूँजी के आँकड़े.
Invidious–द्वेषजनक.
In view of–. . . को ध्यान में रखते हुए, . . . को दृष्टि में रखते हुए.
Invitation–निमंत्रणपत्र, निमंत्रण, बुलावा.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Invite attention to–ध्यान दिलाना.
Invoice–बीजक.
Invoice Register–बीजक पंजी.
Involve–फँसाना, लपेटना, उलझाना, रखना, सम्मिलित करना या होना, अंतर्ग्रस्त करना.
Involuntary–अनैच्छिक.
Item–मद, पद, वस्तु, बात.
Itemize–पदबद्ध करना, मद के अनुसार व्यवस्थित करना.
Item No.–पद या मद क्रमांक.
Item on the agenda–कार्यावली की मद.
Iteration–पिष्टपेषण, बार-बार दुहराना.
Itinerating–पिष्ट पेषक, बार-बार दुहरानेवाला, गस्ती, सफरी.

☞ J ☜

Jackarch–कम गोलाई की मेहराब.
Jacket–जाकेट, मिरजई, कमरी.
Jagir, Sanad of–जागीर की सनद.
Jail–कारागार, बंदीगृह, जेल, कारा, बंधनागार.
Jailbird–व्यसनी चोर, कारापक्षी.
Jail, Central–केंद्रीय कारागृह.
Jail charge–काराभार.
Jail delivery–कारामोचन, कारामुक्ति.
Jailor–जेलर, काराध्यक्ष, कारापाल, बंदीपाल.
Jail, District–जिला या जनपद कारागृह.
Jail Premises–कारागृह का अहाता, कारोपांत.
Jails & Convict Settlements–कारागार तथा बंदी बस्तियाँ.
Jeopardy–विपद, संकट, प्राणभय, जानजोखों, अंदेशा.
Job–कोंचना, भोंकना, छोटा और अस्थायी काम, छपाई का फुटकर काम, क्रय-विक्रय करना.
Jobber–मध्य वणिक, अढ़तिया, खंड कर्मी.
Jobbery–स्वार्थाचरण, अनाचार.
Join–कार्य ग्रहण करना, पद सँभालना.
Joinder–संयोजन.
Joinery–लकड़ी के जोड़ों का काम.
Joining report–कार्यग्रहण सूचना.
Joining time–कार्यग्रहण अवधि.
Joint account–संयुक्त गणना, संयुक्त लेखा.
Joint and several–संयुक्त तथा अलग-अलग.
Joint Committee–संयुक्त समिति.
Joint Director of Agriculture–संयुक्त कृषि संचालक या निदेशक.
Joint family property–अविभक्त पारिवारिक संपत्ति.
Juvenile–तारुणिक, बाल-संबंधी.
Juvenile Court–बाल न्यायालय.
Juvenile deliquency–बाल अपराध.
Juvenile Jail–बाल कारावास.
Juvenile offender–अल्पवयस्क अपराधी.
Juxtaposition–सान्निध्य, सन्निधान.

☞ K ☜

Kanungo competitive examination–कानूनगो प्रतियोगिता परीक्षा.
Keen–उत्सुक, प्रबल, उग्र, प्रखर, तीव्र, कुशाग्र.
Keenest critic–तीव्रतम या उग्रतम आलोचक.
Keep–पालन करना, रक्षा करना, रखना, पूरा करना, संचालित करना, चलाना.
Keeper–पालक.
Keeping–संरक्षण, पालन.
Keep the peace–शांतिपालन करना, शांति रखना.
Keep with file–नत्थी करके रखिए.
Kept (n.)–उपपत्नी, रखैल.
Kept in abeyance–आस्थगित.
Key-industry–आधारोद्योग, मूलभूत-उद्योग.
Key-sentence–मुख्य वाक्य.
Key-stone–डाट के बीच का पत्थर, डाट की चाभी.
Key-words–बीज-शब्द.
Kham–कच्चा.
Khansama–गृहपाल.
Khewat–खेवट, हर कृषक या पट्टीदार के खेत का विवरण रखनेवाली पटवारी की पंजी.
Khewat chausala malikan–भूस्वामियों की चौसाला खेवट.
Khewat chausala matahatdaran–मातहट दारान या अधीनस्थ असामियों की चौसाला खेवट.
Khudkasht–शुदकाश्त, निजी जोत.
Kiask–मकान का आगे निकला डिब्बेदार भाग.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Kidnap–बालापहरण करना.
Kidnapper–अपहर्ता, अपहारक, भगानेवाला.
Kidnapping–बालापहरण.
Kidney-shaped–गुर्दाकार.
Kidney tray–गुर्दाकार कूँड़ी.
Killed & wounded–हताहत.
Knock-out (n.)–स्पर्धारोधन.
Knot–गाँठ, गिरह, कोस.
Knowledge–ज्ञान, बोध, अवगति, परिचय, जानकारी.

L

Label–नामपत्र, चिप्पी, नामपत्र या चिप्पी लगाना.
Laboratory–प्रयोगशाला.
Lawful exercise of powers–अधिकारों का विधि अनुकूल प्रयोग.
Lawful possession–विधिवत् अधिकार.
Law in force–प्रवृत्त-विधि, चालू नियम.
Lawless–विधिहीन, विधि-विरुद्ध.
Law officers–सरकारी विधि-अधिकारी वर्ग.
Law of succession–उत्तराधिकार विधान.
Law suit–वाद, मुकदमा.
Lawyer–विधिज्ञ, वकील.
Lay–रखना, आगे रखना, लगाना.
Lay a foundation stone–शिलान्यास करना.
Lay arms to surrender–आत्मसमर्पण करना.
Lay before–समक्ष रखना, उपस्थित करना.
Lay claim to–दावा करना.
Lay down–निर्धारित करना, निर्दिष्ट करना.
Lay hands on–झड़ना, हथियाना.
Lay on the table–सभा के समक्ष उपस्थित करना या पेश करना.
Lay-out (n.)–अभिन्यास, मानचित्र, खाका, नकशा.
Lead (n.)–नेतृत्व, आरंभ.
Lead (v.)–मार्ग दिखलाना, रास्ता दिखाना, नेतृत्व करना, आगे चलना.
Lead a witness–साक्षी से सूचक प्रश्न करना.
Leaderette–लघु अग्रलेख.
Leader of the House–सभा या सदन का नेता.
Leader of opposition–प्रतिपक्ष नेता, विरोध पक्ष का नेता.
Leading–प्रमुख, अग्र.
Leading article–अग्रलेख.
Leading cases–दृष्टांतात्मकवाद, उदाहरण.
Leaflet–पत्रक, पर्चा.
League–संघ.
Leakage–रहस्योद्घाटन, चूअन, टपकन.
Leakage of papers–पर्ची के रहस्य की जानकारी.
Lease–पट्टा.
Lease Deed–पट्टे का लेखपत्र.
Lease-hold–पट्टाधिकार, पट्टे की भूमि.
Lease-holder–पट्टेदार.
Lease-hold value–पट्टे की भूमि का मूल्य.
Lease of Government Buildings etc.–सरकारी भवनों का पट्टा.
Leave account–छुट्टी का लेखा.
Legal Secretary–विधि सचिव.
Legal tender–विधिमान्य या वैधानिक रूप से चालू मुद्रा.
Legated–रिक्थागत, वारसाना.
Legatee–रिक्था या इच्छापत्र द्वारा प्रदत्त संपत्ति-ग्राही.
Legation–प्रणिध्यावास, दूतावास.
Level crossing, Specifications for–रेल के फाटक के लिए विवरण.
Level (instruments)–समतल मापयंत्र.
Level of administration–प्रशासन स्तर.
Level of nutrition–आहार-पुष्टि का स्तर.
Levelling staff–स्तरमापक गज, स्तरमापक दंड.
Leviable–कर लगाए जाने योग्य.
Levied–कर लगाया हुआ.
Levy–समाहरण, उगाहना, कर लगाना, भरती करना, लगाना.
Lex Fori–स्थानीय विधान, मुकामी कानून.
Lexicographer–कोषकार.
Lexicography–कोषरचना.
Lex Loci–स्थानीय विधि या विधान.
Liabilities–देय धन, देय, देयता, ऋण, देनदारी, दायित्व.
Liability–उत्तरदायित्व, देनदारी, जिम्मेदारी.
Liability of a person to a tax–किसी व्यक्ति का करदायित्व.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Liable–उत्तरदायी, बाध्य, धर्मबद्ध.
Liable to any proceeding–किसी भी कार्यवाही के लिए उत्तरदायी.
Liable to disqualification–अयोग्य ठहराए जा सकने योग्य.
Liaison & Welfare Officer–मेल तथा कल्याण अधिकारी.
Libel–अपमानलेख, निंदालेख.
Liberal–उदार.
Liberation–विमोचन, छुटकारा.
Libertine–स्वेच्छाचारी, लंपट, कामुक, विषयी.
Liberty–स्वतंत्रता.
Librarian–पुस्तकालयाध्यक्ष, ग्रंथागारिक.
Library–पुस्तकालय, ग्रंथालय.
Library department–पुस्तकालय विभाग.
Licence–अनुज्ञापत्र, अनुज्ञप्ति.
Licence fee–अनुज्ञप्ति शुल्क.
Licence-holder–अनुज्ञप्तिधारी.
Licence, Revocation of–अनुज्ञप्ति खंडन.
Licentiate–अनुज्ञप्तिधारी.
Licensed–अनुज्ञप्ति युक्त या प्राप्त.
Licensed vendors–अनुज्ञप्ति प्राप्त विक्रेता.
Licensee–अनुज्ञप्ति ग्राही.
Lien–ग्रहणाधिकार, पदाधिकार, संबंध, अधिकार.
Line Inspector–पथ निरीक्षक.
Line of regression–प्रतिगमन रेखा.
Line supervisor–पथ या पंक्ति पर्यवेक्षक.
Lining–पंक्तिबंधन, अस्तर.
Louver–झिलमिली.
Low diet–अल्पाहार, कम खुराक.
Lower–निचला.
Lower court–छोटी अदालत, छोटा न्यायालय.
Lower division assistant–निम्नवर्ग सहायक.
Lower grade clerk–निम्न श्रेणी लिपिक.
Lower House–निम्न सदन.
Lower subordinate–निम्न अधीनस्थ कर्मचारी.
Lowest value in the month–मास का न्यूनतम भव या मूल्य.
Low tension–न्यून तनाव, कम वोल्टेज.
Loyalty–राजभक्ति, स्वामिभक्ति.
Lubricate–चिकनाना, तेल देना.
Lubricator–तेल देनेवाला, तेल देने का यंत्र.
Lucrative–लाभकारी, लाभप्रद.
Lucre–द्रव्य–लाभ.
Lump cash rent–एकराशि नगद लगान.
Lump sum–पिंडराशि, इकट्ठी रकम, एकराशि धन.
Lump sum contract–एकराशि ठेका.
Lunatic–उन्मत्त, वातुल, पागल, बावला, विक्षिप्त.
Lunatic Asylum–उन्मत्तालय, पागलखाना.
Lunch party–अपराह्न भोज.
Luxury–विलास, आरामतलबी.
Lying about–इतस्ततः, इधर-उधर बिखरे हुए.

☞ M ☜

Machination–षड्यंत्र, कपट-प्रबंध.
Machinator–षड्यांत्रिक.
Machine–मशीन, यंत्र.
Machineman–यंत्रचालक.
Machinery–यंत्रजात, मशीनें, मशीनरी.
Machinery annual list–यंत्रांगों की वार्षिक सूची.
Mackintosh sheeting–रबर की चादर, बरसाती.
Madam–महोदया.
Magazine (rifle, gun)–शस्त्रागार मैगज़ीन, बारूद- खाना, पत्रिका.
Magisterial–दंडाधिकारीय.
Magistracy–दंडाधिकारी वर्ग.
Magistrate–आधिकारिक, दंडनायक, अधिकर- णिक.
Magna carta–महाधिकार-पत्र.
Magniloquence–शब्दाडंबरता.
Magnitude–परिमाण, आकार, महत्त्व, गौरव, डीलडौल, लंबाई-चौड़ाई.
Mahals–महाल, मुहल्ला.
Mahfuz–सुरक्षित.
Manuscript—(*adj.*)–हस्तलिखित, (*n.*) हस्तलेख, पांडुलिपि, पांडुलेख.
Map–नकशा, मानचित्र.
Masonry–ईंट-पत्थर का काम, चिनाई, राजगिरी.
Masonry pillars or mounds–पक्के खंभे.
Masonary work–ईंट-पत्थर का काम, ईंट-चूने का काम.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Mass–पिंड, राशि, ढेर.
Mass contact–जनसंपर्क.
Masses–जनता, जनसाधारण.
Master–शिक्षक, अध्यापक, स्वामी, पति, अध्यक्ष.
Master of ship–पोतपति, पोताध्यक्ष.
Master Security Printing, India–भारतीय सरकारी हुंडियों के मुद्रण अध्यक्ष.
Match–समान बल, अग्निशलाका, दियासलाई, विवाह योग्य, प्रतियोगिता.
Match excise vandrols–दियासलाई के उत्पादक बंदरोले.
Mate–साथी, जीवनसंगी, सहचारी, सहचारिणी, अवेक्षक, मुखिया.
Material–सामग्री, सामान, भौतिक, मूर्त, वास्तविक.
Material change–मुख्य या आवश्यक परिवर्तन.
Material exhibit–महत्त्वपूर्ण प्रदर्शित वस्तु.
Material injustice–वास्तविक अन्याय.
Materialism–भौतिकवाद.
Material resources–भौतिक संपत्ति.
Maternal–मातृक.
Maternity and Child Welfare Advisory Committee–प्रसूति तथा शिशु-कल्याण संबंधी परामर्श-समिति.
Maternity and Child Welfare Centre–प्रसूति तथा शिशुकल्याण केंद्र.
Mattress–गद्दा, तोशक.
Mattress covers–गद्दों के लिहाफ.
Mattresses, Assorted–विभिन्न नाप के गद्दे.
Mattresses, Babies–बच्चों के गद्दे.
Mature–वयस्क, परिपक्व, पूरा, तैयार, निस्तारोन्मुख, प्रौढ़.
Maturity–परिपक्वता, प्रौढ़ता, वयस्कता, परिपाक (किसी हुंडी इत्यादि का).
Mauza–मौज़ा, ग्राम.
Mauza register–मौजा रजिस्टर, ग्राम पंजी.
Maxim–सूत्र, अनुभवोक्ति.
Maximum–अधिकतम, अधिक से अधिक, सबसे अधिक.
Maximum & minimum salary–अधिकतम और न्यूनतम वेतन.
Maximum demand indicatory–अधिकतम माँग सूचक.
Memo–स्मृतिपत्र.
Memo-form–स्मारिका.
Memo of appearance–उपस्थिति का स्मृतिपत्र.
Memo of cost–व्यय-स्मरण पत्र.
Memoranda–स्मृतिपत्र.
Memorandum–स्मृतिपत्र, ज्ञापन, स्मृतिलेख.
Memorandum of agreement–इकरारनामे का नियमपत्र या स्मृतिपत्र.
Memorandum of appeal–पुनर्विचार आवेदन का स्मृतिपत्र.
Memorandum of Association of a Company–कंपनी का संघ नियम, कंपनी का याददाश्त शराकत, कंपनी का विधानपत्र.
Memorandum of evidence–साक्ष्य का प्रमाणपत्र, साक्ष्य का संक्षिप्त विवरण.
Memorandum of securities–सरकारी हुंडियों का स्मृतिपत्र या संक्षिप्त विवरण.
Memorial–अभ्यावेदन, विनतिपत्र, स्मारक.
Memorialist–विनतिकर्ता, अभ्यावेदक, विनतिपत्र लिखनेवाला.
Menial staff–परिचारक वर्ग.
Men of influence–प्रभावशील व्यक्ति, बाअसर आदमी.
Mensuration–मसाहत, क्षेत्रमिति.
Mental–मानसिक, मनोमय, दिमागी, मस्तिष्क संबंधी.
Mental aberration–मानसिक विकृति.
Mental defect–मस्तिष्कदीप, दिमागी खराबी.
Mental hospital–उन्मत्त-चिकित्सालय, मानसिक रोग चिकित्सालय, मस्तिष्क रोग चिकित्सालय.
Mental patient–मानसिक रोगी.
Mention–उल्लेख करना.
Merchandise–वाणिज्य द्रव्य, पण्य वस्तु.
Message–संदेश.
Message, Original–मूल-संदेश.
Mess allowance–भोजनालय भत्ता.
Messenger–संदेशवाहक, दूत.
Messing–भोजन.
Messing charges–भोजन-व्यय.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Mess manager–पाकशाला प्रबंधक.
Messers–सर्वश्री.
Mess supervisor–भोजनालय पर्यवेक्षक.
Metalled road–पक्की सड़क.
Metal work–धातु का काम.
Metallic tapes–लोहे का फीता.
Metayer system–अर्धार्ध या घटाई पद्धति.
Meteorological department–अंतरिक्ष-विज्ञान-विभाग.
Meteorological observatories–अंतरिक्ष विज्ञान वेध-शालाएँ.
Mobile traffic squads–यातायात नियंत्रण चलदल.
Mobocracy–जनसंकुलतंत्र.
Mock show–कृत्रिम या आभासी प्रदर्शन.
Mode–रीति, ढंग, प्रणाली, पद्धति.
Model rules–प्रतिमान नियम.
Moderate (question paper)–(प्रश्नपत्र का) अनुसीमन करना.
Moderate defect–साधारण दोष.
Moderate to large excess–साधारण से बृहत् स्तर तक.
Moderation (question paper)–अनुसीमन, परिमिताचार, मंदीकरण.
Moderator (question paper)–अनुसीमक.
Modification–संशोधन, परिवर्तन, सुधार, परिष्कार.
Modified grant–संशोधित अनुदान.
Modify–परिवर्तन करना, संशोधन करना.
Modulus–माप.
Modus operandi–कार्य-प्रणाली.
Moiety fees–अर्द्ध शुल्क.
Moisture–नमी, तरी, आर्द्रता.
Molasses–खाँड़, जूसी, गुड़.
Moment–क्षण, महत्त्व, प्रवृत्ति.
Momentary–क्षणिक.
Moment, Bending–झुकन-प्रवृत्ति.
Moment of inertia–जड़ता-प्रवृत्ति.
Momentum–गति.
Monetary–आर्थिक.
Monetary allotment–आर्थिक निष्टि, अर्थ निदेशन.
Money–मुद्रा, धन.
Money-bill–धन विधेयक.
Moneyed man–धनवान् व्यक्ति.
Money-lender–साहूकार, ऋणदाता, सेठ या महाजन.
Money order–धनप्रेष, मनीआर्डर.
Monogram–गुंफाक्षर.
Monologue–स्वगत भाषण.
Mono mechanic–एकमुद्र मिस्त्री.
Monopoly–एकाधिकार.
Monotyny–अभिन्नता, एकरसता, एकतानता, नीरसता.
Month in which to be accounted for–महीना जिसमें हिसाब डाला जाए.
Monthly–मासिक, माहवारी.
Monthly abstract–मासिक सारांश, मासिक उपसंक्षेप.
Monthly account–मासिक लेखा.
Monthly return–मासिक विवरणपत्र, माहवारी नकशा.
Mutual–पारस्परिक, आपस की, एक दूसरे की.
Mutual Testaments–पारस्परिक इच्छापत्र.
Mutwalli–उत्तराधिकारी.
Muzzle–थूथन.
My lord–धर्ममूर्ति, न्यायमूर्ति, धर्मावतार.
Myself–मैं, स्वयं.
Mystic will–गुप्त इच्छापत्र.
Mythology–पुराण-कथा, पौराणिकी.

☞ N ☜

Nabaligh–अल्पवयस्क, नाबालिग.
N.B.–विशेष सूचना.
Naik–नायक.
Naik girls–नायक लड़कियाँ.
Nail–कँटिया, कील.
Nail brush–नखमार्जनी, लखकूर्चिका या नाखून साफ करने की कूँची.
Name–नाम, प्रसिद्धि, ख्याति, नाम लेना.
Name card–नामपत्रक.
Name-sake–समनाम, नामराशि, नौरासी.
Naqsha–मानचित्र, नक़शा.
Narration–वर्णन, कथा, आख्यान.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Narrative–वृत्तांत.
Narrative of the case–मामले का वर्णन या वृत्तांत.
Narrow–संकीर्ण, तंग.
Natal–जन्म संबंधी.
Nation–राष्ट्र, कौम.
National–राष्ट्रीय, कौमी.
National airway–राष्ट्रीय वायु-पथ.
National Cadet Corps (N.C.C.)–राष्ट्रीय छात्र सेना.
National economy–राष्ट्रीय मितव्ययिता.
National highway–राष्ट्रीय राजपथ.
Nationalism–राष्ट्रपथ.
Nationalization–राष्ट्रीकरण.
Nation-builder–राष्ट्र-निर्माता.
Native Converts Marriage Dissolution Act–ईसाइयों का विवाह-विच्छेद विधान.
Native of India–भारतवासी.
Nativity–जन्म, जन्मोत्सव, जन्मपत्री, कुंडली.
Natural–नैसर्गिक, स्वाभाविक, प्राकृतिक.
Natural Causes–प्राकृतिक कारण.
Natural child–अनौरस संतान.
Naturalism–प्रकृतिवाद.
Naturalist–प्रकृतिवादी.
Naturalization–देशीकरण.
Natural life–स्वाभाविक जीवन.
Natural losses–स्वाभाविक हानियाँ.
Naturaly–स्वभावत:, प्राकृतिक रूप से.
Nomination of reporters–संवाददाताओं का मनोनयन.
Non-statutory–अपरिनियत.
Non-stop–अविराम.
Non-sui juris–अस्वाधीन, पराधीन.
Non-suit–वादावसान.
Non-technical–साधारण, अविशिष्ट विषयक.
Non-testamentary–इच्छापत्र-रहित.
Non-vegetarian–अशाकाहारी, मांसाहारी, आमिषभोजी, सामिष.
Non-vegetarian diet–मांसाहार, आमिषभोजन.
Non-violence–अहिंसा.
Non-violent–अहिंसात्मक.
Normal–सामान्य, नियमबद्ध, वैधिक, यथाक्रम, यथादर्श.
Normally–सामान्यतया, सामान्यत:.
Normal School–प्रशिक्षण विद्यालय.
Normal time–साधारण अवधि.
No., Serial No. (letter)–संख्या, क्रम-संख्या, क्रमांक.
North India Ferries Act–उत्तर भारतीय घाट विधान.
Notarial act–लेख्य प्रमाणक का कार्य.
Notary–लेख्यप्रमाणक, लेख्यप्रमाण अधिकारी.
Notary Public–जनलेख्य प्रमाणक.
Not available–अप्राप्य.
Note–टिप्पणी, टीप, नोट, रुक्का.
Note Book–टिप्पणी पुस्तक, नोट बुक, स्मृति पुस्तिका.
Noted–टीप किया गया, लिख लिया गया.
Noted below–निम्नांकित.
Note form–टिप्पणी, चिट.
Noter–टिप्पणीक.
Noter and drafter–टीपकार तथा पांडु लेखक.
Notes and orders–टिप्पणियाँ और आज्ञाएँ.
Notes cover–टिप्पणी आवरण.
Note sheet–टीप पत्र, टिप्पणी पत्र.
No thorough fare–सार्वजनिक मार्ग नहीं है, आम रास्ता नहीं है.
Notice–सूचना, नोटिस, विज्ञप्ति.
Notice board–सूचनापट्ट, नोटिस बोर्ड.
Notice in writing–लिखित सूचना.
Notice is hereby given–इसके द्वारा सूचना दी जाती है.
Notice of completion of work–कार्य पूरा करने की सूचना या चेतावनी.
Notice of demand–माँग की सूचना.
Notice of ejectment–निष्कासन सूचना.
Notice-office–सूचनालय.
Numerous–अनेक, असंख्य.
Numismatic–टंक या मुद्राशास्त्र संबंधी.
Nuncupative will–मौखिक इच्छा-पत्र जो दो साक्षियों के सामने किया गया हो और तत्पश्चात् लिखा गया हो.
Nurse–उपचारिका.
Nursery–शिशु-गृह, पौधाघर, वृक्षरोपणी.
Nurses staff–उपचारिका वर्ग.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Nursing orderly–उपचार परिचर, उपचार अर्दली.
Nursing scheme–उपचार योजना.
Nursing service–उपचार सेवा, उपचार भृत्या.
Nutrition institute–आहार-पोषण-संस्था.
Nutrition Officer–पोषण अधिकारी.
Nutritional status–पोषण-स्तर.

O

Oath–शपथ, हलफ.
Oath of allegiance–राज्यनिष्ठा शपथ.
Obedience–आज्ञापालन, अनुवर्तन.
Obedient–आज्ञाकारी.
Obiter dicta–प्रासंगिक अधिवचन.
Obiter dictum–प्रसंगोक्ति.
Obituary notice–मृत्यु-सूचना.
Object–वस्तु, द्रव्य, प्रयोजन, उद्देश्य, आपत्ति करना, विरोध करना.
Objection–आपत्ति, आक्षेप, विरोध, एतराज़.
Objectionable–आपत्तिजनक, सदोष, अवक्षेप्य, काबिल एतराज़.
Objection statement–आपत्ति कथन-पत्र, अवक्षेप विवरणपत्र, उज्रनामा.
Objective–उद्देश्य, लक्ष्य.
Objects and reasons–उद्देश्य और कारण.
Obligation–देय, दायित्व, ऋण, अनुग्रह, आभार, कर्तव्य.
Obligation of residence–निवास प्रतिबन्ध.
Obligatory–अपरिहार्य, अनिवार्य, आवश्यक, अवैकल्पिक.
Oblique–तिर्यक, आड़ी.
Oblivion–विस्मृति, विस्मरण.
Oblong–आयताकार, आयत.
Obloquy–निन्दोक्ति.
Obnoxious–घृणित, कुत्सित, अप्रीतिकर, अति अनभावना.
Obscence–अश्लील.
Obscure–अस्पष्ट, अप्रसिद्ध, गुप्त, पोशीदा.
Observance–पालन.
Officiating appointment–स्थानापन्न नियुक्ति.
Off season–ऋतुबाह्य, बेमौसम, बेसमय का.
Opinion thereon–उस विषय में सम्मति.
Opium department–अफीम विभाग.
Opportunist–अवसरवादी.
Opportunity–अवसर, मौका.
Oppose–विरोध करना, प्रतिरोध करना, रोकना.
Opposite party–विपक्षी, प्रतिपक्षी.
Opposition–विरोधी, विरोधपक्ष, प्रतिपक्ष.
Option–विकल्प, इच्छा, मर्जी, रुचि.
Oral–मौखिक, ज़बानी.
Oral leases–मौखिक पट्टे, ज़बानी पट्टे.
Orbit–कक्ष, ग्रहपक्ष.
Orchard–फलों का बाग.
Ordeal–अग्नि-परीक्षा.
Order–आज्ञा, आदेश, हुक्म, क्रम, पद्धति, व्यवस्था.
Orderly–व्यवस्थित, अर्दली.
Order file–आज्ञा नस्ती.
Orderless–अव्यवस्थित, अस्तव्यस्त.
Orderliness–सुव्यवस्था.
Orderly peon–अर्दली.
Order of merit–योग्यताक्रम, गुणानुक्रम.
Order ! Order–सावधान ! सावधान.
Order sheet–आज्ञाफलक.
Ordinance–अध्यादेश, आर्डिनेंस.
Ordinary grade–साधारण क्रम.
Ordinary grant–साधारण अनुदान.
Ordinary pension–साधारण निवृत्ति-वेतन.
Ordinate–कोटि.
Ordnance–लड़ाई के हथियार, बड़ी तोप, तोपखाना, गोला-बारूद.
Ordnance depot–आयुध आगार.
Ordnance factory–आयुध-निर्माणी, हथियारों का कारखाना.
Ore–कच्ची धातु.
Organization–संघटन, संस्था.
Organized–संगठित.
Organizer–संगठनकर्ता.
Organs–अंग.
Orgy–मद्यपानोत्सव.
Oriental–पूर्वी.
Orientation–अनुस्थापन, स्थिति निर्धारण, स्थिति निश्चयन.
Origin–मूल, आरंभ, उद्भव, निकास.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Original–मूल, मौलिक, असली.
Original authority–मूल प्राधिकारी, मूल अधिकार.
Original work–मूल निर्माणकार्य, नया काम.
Overwriting–उपरिलेखन.
Owe–आभारी होना, ऋणी होना, कर्ज़दार होना.
Ownership–स्वामित्व, स्वत्व, मिलकियत.
Owner's rate–मालिक की दर.
Oxygen bottle–ओषजन बोतल.
Oxygen cylinder–ओषजन बेलन.

☞ P ☜

Pacifism–शान्तिवाद.
Pacifist–शान्तिवादी.
Package–गठरी, पुलिंदा.
Packer–संवेष्टक, (गठरी) बाँधनेवाला.
Packet–पोटली.
Paddy Extension Officer–धानप्रसार अधिकारी.
Paid apprentice–वैतनिक शिक्ष्यमाण.
Paid-up-capital–प्राप्त पूँजी.
Paint–रंग, रोगन.
Painter–रंगसाज, चित्रकार.
Paint measure–लेप मापके.
Pair of compasses–परकार.
Pamphlets–पर्चे, पुस्तिका, पैम्फ्लेट.
Pan–कढ़ाई.
Panel–तालिका, दिलहा, मण्डल, सभ्यगण सूची.
Panel of chairman–अध्यक्ष तालिका.
Pane of glass–काँच-फलक.
Panic–समुद्वेग, आतंक, विद्रव, भगदड़.
Pantographer–प्रतिलिपिक यंत्र, नकशों को छोटा- बड़ा करनेवाला यंत्र.
Pantry–खाद्य कोष, अन्न कोठार.
Paper book–पत्र पुस्तक, मुकदमे के कागज़ात.
Paper under consideration–विचाराधीन काग़ज़ या पत्र.
Paper-weight–पत्र-भार, पेपरवेट.
Pat–समता, सममूल्य.
Para–पैरा, अनुच्छेद.
Paraboia–शिखामूलक, परवलय.
Parade–सैनिक व्यायाम.
Paragraph–अनुच्छेद.
Parallel–समानान्तर, सदृश, उसी प्रकार का.
Parallelogram–समानान्तर चतुर्भुज.
Parapet–मुँडेरा, छाती तक ऊँची दीवाल.
Paraphernalia–साजसज्जा वसनभूषण, सामान, असबाब.
Paraphrase–टीका, गद्य या पद्य की व्याख्या करना, अन्वय.
Parasitic–परजीवी.
Parasitic nodules–परजीविका ग्रन्थिका.
Parcel–पोट्टलिका.
Parcha Abpasi–पर्चा सिंचाई.
Pawn or pledge–गिरवी, आधि, बन्धक.
Pawn–निक्षेप.
Pawanee–निक्षेपग्राही, निक्षेपधर्ता.
Pay–वेतन.
Payable–देय, देनी.
Pay and allowance–वेतन और भत्ता.
Payable revenue–देय भूराजस्व, देय मालगुजारी.
Pay-bill–वेतन चिट्ठा, चिट्ठा.
Pensionary charges–निवृत्ति-वेतन सम्बन्धी व्यय.
Pension, Commutation of–निवृत्ति वेतन का संराशि- करण.
Pensioner–निवृत्ति, वेतन या पेंशनभोगी, पेंशनग्राही.
Pension paper–निवृत्ति वेतनपत्र.
Pension payment orders–निवृत्ति-वेतन भुगतान.
Peon–चपरासी.
Peon Book–प्रेष्य-पुस्तिका.
Pepper-corn (nominal rent)–नाममात्र भाड़ा.
Per annum–प्रतिवर्ष.
Per capital consumption–प्रति-व्यक्ति उपभोग या खपत.
Per capital income–प्रतिव्यक्ति आय.
Percent–प्रतिशत.
Percentage, Increase and decrese–प्रतिशत, बढ़ती तथा कमी.
Per contra credit–अन्य पार्श्व जमा.
Per diem–प्रतिदिन, दैनिक.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Peremptory–अनुलंघनीय, अविवाद्य, आज्ञापक.
Perennial–बारहमसिया, वर्षानुवर्ष जीवी या स्थायी.
Perfect–पूर्ण, सम्पूर्ण.
Perfection–पूर्णता.
Perforated line–बिन्दु छिद्ररेखा.
Perform–पूरा करना, करना.
Performance of additional duties–अतिरिक्त कर्त्तव्यों का पालन.
Perhaps–कदाचित्, शायद.
Perimeter–परिमिति.
Period–समय, अवधि, काल, कालावधि, घंटा (class hour).
Periodic–नियतकालिक, सामयिक, मियादी.
Periodical–सामयिक या नियतकालिक पत्रिका.
Periodical inspection–सामयिक निरीक्षण.
Periodically–नियतकालिक रूप से, समय-समय पर.
Periodical payment–नियतकालिक भुगतान.
Periodical review–सिंहावलोकन.
Period of limitation–अवधि का काल.
Physical assets–भौतिक सम्पत्ति.
Physical fitness certificate–स्वस्थता-प्रमाणपत्र.
Physically fit–शरीर से योग्य.
Physical training–शारीरिक शिक्षण.
Pickery–छोटी-मोटी चोरी.
Picket (v.)–धरना देना, प्रवेशरोध करना.
Picket (n.)–प्रवेशरोधी, धरना देनेवाला.
Picket (n.)–सैनिक टुकड़ी.
Pickings–क्षुद्र ऊपरी आय.
Pick-up (of a gramophone)–ध्वनिग्रह.
Plant–पौधा, पौधा लगाना, स्थिरयंत्र.
Plant & Machinery–स्थिर यंत्र और मशीनें.
Plantation–रोपस्थली, साग-सब्जी की खेती, बगीचा.
Plantation, Roadside–सड़क के किनारे के बाग-बगीचे या खेती.
Plant pathology–वनस्पति रोगनिदान शास्त्र.
Plastic–बनाने या ढालने योग्य रूपधारी साँचे, साँचे में ढला हुआ, प्लास्टिक.
Plate number–पट्टिका संख्या.
Platoon–गुल्मक, पदातिसैन्य दल, पैदल सेना.
Platoon commander–पदाति सैन्य सेनानी, पैदल सेना का सेनापति.
Plausible–सत्याभासी, सत्य प्रतीत होनेवाला, दिखावटी.
Playground–क्रीड़ास्थल, खेल का मैदान.
Pleader–अभिभाषक, अधिवक्ता, वकील.
Plead guilty–अपराध स्वीकार करना.
Pleading–पक्ष निवेदन.
Please–कृपया, प्रसन्न करना.
Please quote–कृपया उद्धृत कीजिए.
Please report–कृपया विवरण दीजिए.
Pledge–प्रतिगहन, बन्धक, गिरवी, गिरवी की हुई वस्तु, बन्धक रखना, वचन देना, शपथ लेना.
Plenary conference–सर्वाङ्गीण सम्मेलन.
Plenary session–सम्पूर्ण सत्र.
Plenipotentiary–पूर्णाधिकार, पूर्णाधिकारी.
Plinth area–भवन संवत क्षेत्र, क्षेत्र जितने पर मकान बना हो.
Plot–भूमिखण्ड, जमीन का टुकड़ा, किता.
Plumb–लम्बक, राज का साहुल.
Plus and minus memo–धन और ऋण का स्मृतिपत्र.
Play–झुकना, मुड़ना, तह करना, परिश्रम से काम करना, लगा रखना, कदम उठाना, जल्दी करना, दो पत्तनों के बीच बराबर आना-जाना, तह, मोड़.
Poet laureate–राजकवि.
Point–नोक, बिन्दु, विषय, संकेत करना, बताना, जताना, संधिपूर्ण करना, टीप करना.
Pointing masonory–ईंटों या पत्थरों पर टीप करना.
Point of order–औचित्य प्रश्न, व्यवस्था प्रश्न.
Postwar schemes–युद्धोत्तर योजनाएँ.
Potentiality–गुप्त-शक्ति, सम्भाविता, शक्यता.
Potentials–सम्भाव्य साधन.
Pottery works–मिट्टी के बर्तन की शिल्पशाला.
Pouch–थैला.
Pound–पशु-अवरोध-गृह, काँजीहाउस.
Poundage–प्रति पौण्ड कर, काँजीहाउस का महसूल.
Predisposing–पूर्वप्रवृत्त.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Pre-emption–पूर्वक्रयाधिकार, हकशफा.
Pre-existing–पूर्ववर्त्ती.
Preface–प्रस्तावना, भूमिका, प्राक्कथन.
Prefer–अधिमान देना, अधिक पसंद करना, दायर करना.
Preferable–श्रेष्ठतर, अधिमान्य.
Preferably–अधिमानतः, अच्छा तो हो कि.
Preference–अधिमान, पूर्वाधिकार, तरजीह.
Preference shares–पूर्वाधिकार अंश, रियायती हिस्से.
Prefix–उपसर्ग, आदि में जोड़ना.
Prejudice–पक्षपात की धारणा, विपरीत प्रभाव.
Prejudicial–प्रतिकूल, हानिकारक, प्रतिकूल प्रभावकारी.
Preliminary–प्राथमिक, प्रारंभिक निर्धारित.
Preliminary estimate–प्रारंभिक आगणन.
Preliminary objection–प्रारंभिक आपत्ति.
Preliminary statement of excesses and savings–अधिक व्ययों और बचतों का प्रारंभिक विवरणपत्र या नकशा.
Premature–समय से पहले, कच्चा.
Premature release–समय से पूर्व कारागार-मुक्ति.
Premier–प्रधानमंत्री.
Premises–भूगृहादि, गृहोपांत, पक्ष, प्रतिज्ञा (logic).
Premium–प्रव्याजि, बीमे की किस्त, वृद्धि वास्तविक मूल्य पर वृद्धि, बढ़ती, अग्रधन, पट्टादाता को नज़र.
Pre-occupation–तल्लीनता, मग्नता, अन्य-मनस्कता.
Preparatory–सज्जाकारी, प्रथम, पहला, प्रारंभिक, प्राथमिक, प्रावेशिक.
Preparatory to retirement–निवृत्तिपूर्व, पूर्व की, निवृत्ति के पूर्व की.
Prepared–निर्मित, रचित, तैयार.
Preponderance–प्रबलता, प्रधानता.
Prerogative–परमाधिकार.
Prescribe–विहित करना, निर्धारित करना, विनिर्दिष्ट करना.
Prescribed–विहित, निर्धारित.
Prescribed form–नियत प्रपत्र.
Probate–इच्छा-पत्र की प्रमाणित प्रतिलिपि, इच्छापत्र प्रमाण.
Probate court–इच्छापत्र प्रतिलिपि न्यायालय.
Probate duty–इच्छापत्र प्रतिलिपि शुल्क.
Probation–परीक्षण, नए अभ्यास का काल.
Probationary period–परीक्षाकाल, परीक्षण-काल.
Probationer–परीक्षणकालाधीन, परीक्ष्यमाण.
Probationer nurse–परीक्ष्यमाण उपचारिका.
Progressive use–उत्तरोत्तर अधिक प्रयोग.
Progress report–प्रगति विवरण पत्र.
Prohibit–निषेध करना, प्रतिषेध करना, मना करना, रोकना.
Prohibited articles–निषिद्ध वस्तुएँ.
Prohibition–मद्यनिषेध, नशाबंदी.
Prohibitory–निषेधक.
Project–योजना, परियोजना.
Projectiles–क्षेप्यास्त्र.
Projection–प्रक्षेप, बाहर निकला हुआ भाग.
Pro-memoria–स्मरणार्थ.
Prominence–प्रमुखता, प्राधान्य, व्यक्तता, प्रलंबता.
Prominent–प्रमुख, प्रधान.
Promisee–प्रतिज्ञाग्राही, प्रतिज्ञाती.
Promissory note–वचनपत्र, रुक्का.
Promotee–पदोन्नीत.
Promotion–पदोन्नति, समुन्नति, वेतन-वृद्धि, बढ़ती, तरक्की.
Prompt–क्षिप्र, तुरंत, अतिशीघ्र, तत्पर.
Promulgated–प्रचारित किया गया.
Promulgation–प्रचारण.
Pronote–वचन-पत्र, रुक्का.
Pronote-server–आदेशपत्र वाहक.
Pronounce–अधिघोषित करना, सुनाना, उच्चारण करना.
Pronouncement–अधिघोषणा.
Proof–प्रमाण, उपपत्ति, सिद्धि.
Proof in duplicate–दो प्रतियों में प्रमाण.
Proofs (from press)–मुद्रण-फलक, इक्ष्य, शोध्य, प्रूफ.
Propaganda–प्रचार.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Propaganda of safety-first and rule of road–सुरक्षा प्रथम तथा सड़क नियम का प्रचार.
Propagate–प्रचार करना, प्रसार करना.
Proper–उचित, यथोचित, सम्यक्, ठीक.
Proper channel–उचित मार्ग.
Property–संपत्ति, जायदाद.
Property registers (movable and immovable)–संपत्ति पंजी (चल और अचल).
Proportion–अनुपात.
Provisions (Law)–आदेश, खाने-पीने का सामान.
Provisions of Act–अधिनियम के आदेश.
Provisions of Sections–धाराओं के आदेश.
Proviso–प्रतिबंधात्मक वाक्यखंड.
Proximo–आगामी मास का.
Proxy–प्रतिपत्री, प्रतिहस्तक पत्र.
Pseudonymous communications–झूठे नाम के पत्र.
P.T.O.–कृ.पृ.उ., कृपया पृष्ठ उलटिए.
Public–जनता, सार्वजनिक, राजकीय, लोक.
Public Accounts Committee–सार्वजनिक लेखा समिति.
Public Act–सार्वजनिक अधिनियम.
Public act–लोक क्रिया.
Public affairs–सार्वजनिक कार्य या विषय या मामले.
Public Analyst to Government–सरकार के सार्वजनिक विश्लेषक.
Publication–प्रकाशन.
Punctual–समयनिष्ठ, समयपालक, सामयिक.
Pungent remark–तीखा कटाक्ष.
Punishable–दंडनीय, दंड योग्य.
Punishment–दंड, सजा.
Punitive charges–दंडात्मक देय भार, दंडात्मक मुतालबा.
Punitive rates–दंडात्मक दर.
Purchase–क्रय, खरीद, क्रय करना, खरीदना.
Purchase of government vehicles–राजकीय गाड़ियों का क्रय.
Purchases–क्रय.
Purchasing centre–क्रय केंद्र.
Purchase of type-writers–टाइप मशीनों की खरीददारी का क्रय.
Pure–शुद्ध, बेमेल, अमिश्रित, निर्दोष.
Purporting to be done–कर्तुमभिप्रेत.
Pursue–अनुसरण, अनुधावन, पीछा करना, अनुसरण करना.
Purview–अधिनियम का मुख्यांश, व्याप्ति, सीमा, अधिकार, क्षेत्र, विस्तार.
Push through–शीघ्र आगे बढ़ाना, शीघ्र पूरा करना.
Put an end to–अंत करना, समाप्त करना.
Put in–लगाना (नौकरी में).
Put off–स्थगित करना, टाल देना.
Put over–पहुँचाना (सूचना).
Putative father–नामनिहाद बाप या कल्पित पिता.
Putrefaction–दुर्गंध, सड़न.
Put up–प्रस्तुत करना.
P.W. (Prosecution witness)–अभियोग साक्षी.
P.W.D.–लोक-निर्माण-विभाग.
Pyramid–स्तूप.

Q

Quabuliat–कबूलियत, स्वीकारोक्ति.
Quack–ढोंगी वैद्य या चिकित्सक या डॉक्टर.
Quadrangle–चतुष्कोण, चौकोना.
Quadrant–पाद, चतुर्थांश, तुरीय.
Quadratic equation–वर्ग समीकरण.
Quadrennial–चतुर्वर्षीय.
Quadrennial repairs–चौबरसी मरम्मत, चतुर्वार्षिक जीर्णोद्धार.
Quadruplicate–चार प्रतियाँ, चौथी प्रति.
Qualification–अधिकारिता, योग्यता, अर्हता.
Qualified–योग्य, योग्यताप्राप्त, अधिकारी, अर्ह.
Qualified property–परिमित संपत्ति, सप्रतिबंध संपत्ति.
Qualify–अधिकारिता या योग्यता प्राप्त करना, योग्य बनना, अर्ह बनना.
Qualifying test–योग्यता प्रदायी परीक्षा.
Qualifying service–अर्हकारी या अर्हकारी सेवा.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Qualitative test–गुणात्मक परीक्षा.
Quality–गुण, प्रकार, वर्ग, लक्षण, श्रेणी.
Quantum of rationing–भोजन सामग्री का प्रमाण.
Quarantine–स्पर्शवर्जन, निरोधा, कलातीना.
Quarantine Leave–स्पर्शवर्जन अवकाश, निरोधावकाश.
Quantity–परिमाण, मात्रा, राशि, इयत्ता.
Quarter–निवेश, मुहल्ला, पुरा, पुरवा, महाल, वासगृह, मकान, चौथाई.
Quarterly–त्रैमासिक, तिमाही.
Quarterly report–त्रैमासिक विवरण.
Quarterly statement–त्रैमासिक विवरण-पत्र.
Quarter-master–सामग्री अध्यक्ष.
Quash–रद्द करना, खण्डन करना, लोप करना, निरर्थक करना, निष्प्रभाव करना.
Quasi permanent–अर्धन्यायिक.
Queen mother–राजमाता.
Queen regent–राजरानी, प्रतिनिधि रानी.
Queries–पृच्छाएँ.
Query–प्रश्न, पृच्छा.
Query half-margin–पृच्छा-प्रपत्र.
Question–प्रश्न, प्रश्न करना.
Question before the House is–सभा के सामने प्रश्न यह है कि.
Quod vide–देखिए.
Quorum–कार्यवाह संख्या, कोरम.
Quota–उद्धारण, अवतरण, भाव.
Quote–उद्धृत, भाव निर्देशित.

☞ R ☜

Rabies–जलांतक रोग.
Range–परिक्षेत्र, श्रेणी, सीमा, विस्तार, दूरी.
Range, Training Centre–शिक्षण केंद्र का क्षेत्र.
Rank–श्रेणी, पदवी, वर्ग, पद, पंक्ति, वर्गीकृत करना, क्रम से रखना, अत्यधिक, बहुत उपजाऊ, स्थूल, उग्रगंध, निरा अशिष्ट.
Rank and file–साधारण सैनिक वर्ग.
Rankers–सैनिकों की श्रेणी.
Ransom–मोचनमूल्य, उद्धारमूल्य, बंधन से छुड़ाने का मूल्य.
Records maintenance and weeding of guage readings–अभिलेख मापक यंत्र के वचनों का अनुपालन और निर्दान.
Records of rights–स्वत्वसूची, अधिकार अभिलेख.
Recoupment (of permanent advance)–पुनःपूर्तिकरण (स्थायी अग्रधन का).
Recover–पुनः प्राप्त करना, वसूली करना, वापस पाना.
Reference–निर्देश, अभ्युद्देश, हवाला; with reference to your letter–आपके पत्र के उत्तर में . . .
Reference clerk–अभ्युद्देश लिपिक, निर्देश लेखक.
Reference Table–अभ्युद्देश सारणी.
Referential–अभ्युद्दिष्ट.
Refer order–आज्ञा का हवाला देना.
Referring department–निर्देशक विभाग.
Refer to select committee–प्रवर समिति के निर्णयार्थ प्रेषित करना.
Reflection–दोषारोप, कटाक्ष, दोष, आरोप.
Reflects upon–दोषारोप लाता है, कटाक्ष करता है.
Reforestation–पुनर्वनरोपण.
Reform–सुधार, सुधार करना.
Reformation–सुधार.
Reformative–सुधारकारी.
Reformatory–सुधारशाला.
Refraction–प्रत्यावर्तन, वक्रीभाव, तिरछापन, मुड़ जाना, टेढ़ा हो जाना.
Refresher course–नवीकरण पाठ्यक्रम.
Refugee–शरणार्थी.
Refugee camp–शरणार्थी शिविर.
Refund–प्रत्यर्पण, रुपये की वापसी, रुपये वापस करना.
Refund of fees–शुल्कों का प्रत्यर्पण.
Refunds and renewals–प्रत्यर्पण तथा नवीनीकरण.
Refund voucher–प्रत्यर्पण प्रमाणक.
Refusal–अस्वीकृति, प्रत्याख्यान, इन्कार.
Refuse–अस्वीकृत करना, अस्वीकार करना, इन्कार करना, मना करना, प्रत्याख्यान करना.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Refuse (n.)–कूड़ा-करकट, कचरा.
Refused–अस्वीकृत.
Refutation–खंडन, निराकरण.
Refute–खंडन करना, निराकरण करना.
Regard–आदर, मान, आदर करना, ध्यान देना, विचार करना.
Regarding–. . . के संबंध में, . . . के विषय में.
Regeneration–पुनर्जन्म, नया जन्म, पुनर्जीवन.
Regimental–सेना संबंधी.
Region–प्रदेश.
Regional Accounts Officer–प्रादेशिक गणन- अधिकारी.
Regional Grain Account–प्रादेशिक अन्न लेखा.
Regional Transport Authority–प्रादेशिक वाहन प्राधिकारी.
Regional Youth Rally–मांडलिक युवक-समारोह.
Regular channel–नियमित मार्ग.
Regular forecast–नियमित पूर्वानुमान.
Regular intervals–नियत अंतरावधि या मध्यावकाश.
Regularization–नियमितीकरण.
Regularize–नियमबद्ध करना, नियमांतर्गत करना.
Regular leave–नैयमिक छुट्टी.
Regular settlement–नियत-भू-व्यवस्था, यथा- नियम भू-व्यवस्था.
Regulated–नियमित.
Regulation–नियमन, आनियम, विनियम, नियम, कायदा, कानून.
Regulation of offensive trades–घृणोत्पादक व्यवसायों का नियमन.
Regulation of supplies in canals–नहरों में जल-पूर्ति का नियमन.
Regulation, University–विश्वविद्यालय का आनियम.
Regulations of examination–परीक्षा का विनियम.
Regulator–नियामक.
Re-imbursement–प्रतिपूर्ति, चुकौती, अदायगी.
Re-import–पुनः आयात.
Reinforcement–दृढ़ीकरण, दृढ़कारक, लोहदंड.
Reinstate–पुनःस्थापित करना.
Reinstatement–पुनःस्थापन, पुनः नियुक्ति, दोबारा बहाली.
Respondentia bond–पोतबंधक लेखपत्र.
Response–उत्तर, प्रत्युत्तर, प्रतिक्रिया, अनुक्रिया.
Responsibility–उत्तरदायित्व.
Responsible–उत्तरदायी.
Restaurant car–आहारयान, भोजनवाहक यान.
Rest house–विश्रामगृह, डाकबँगला.
Resting with–. . . से अवलंबित.
Restitution–प्रत्यास्थापन, वापसी, लौटाव, पुनः-स्थापना.
Restore–प्रतिपादन करना, लौटाना, पुनःस्थापित करना, सुधारना.
Restore to use–पुनः उपयोग में लाना, पुनरुपयोजन करना.
Restrain from doing–करने से रोकना.
Restraint by courts–न्यायालय द्वारा रोक.
Restrict–सीमित करना, रोकना, रोक लगाना, प्रतिबंध लगाना, प्रतिबंधित करना.
Restriction–प्रतिबंध, रोक.
Restriction and control–प्रतिबंध तथा नियंत्रण.
Result–फल.
Result slip–परिणाम सूची, निर्णय सूची.
Resume–प्रत्यादान करना, पुनर्ग्रहण करना.
Resume (n.)–संक्षेप, सारांश.
Resume seat–आसन ग्रहण करना, बैठना.
Revenue-free tenures–भू-राजस्व-मुक्त जोतें.
Revenue jurisdiction–राजस्व अधिकार क्षेत्र.
Revenue paying mahals–राजस्व देनेवाले महाल.
Revenue reserve fund–राजस्व सुरक्षित कोष.
Revenue stamp–राजस्व मुद्रांक.
Revered–सम्मानित, नम्य.
Reverse–उल्टा, विपरीत, प्रतिकूल.
Reversion–प्रत्यावर्तन, विपर्यय, उलट-पलट, परिवर्तन.
Reversioner–उत्तरभोगी, उत्तराधिकारी.
Reversioner, Release by Hindu–हिंदू उत्तरभोगी द्वारा मोचन या त्याग.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reversion to land-lord–भूस्वामी को प्रत्यावर्तन.
Revert–पूर्व पद पर पुन: लौटना.
Revetted–जोड़ा हुआ, रिपीट किया हुआ.
Review–सारलेख, सिंहावलोकन, समालोचना.
Review application–पुनरावलोकन प्रार्थना पत्र.
Review of judgment–निर्णय का पुनर्निरीक्षण.
Revise–पुनर्विचार करना, संशोधन करना, सुधारना, दोहराना.
Revised–संशोधित, दोहराया गया.
Revised estimates–संशोधित आगणन.
Revised figures–संशोधित आँकड़े.
Revised manual–संशोधित सारसंग्रह.
Revised scale–संशोधित वेतनक्रम.
Revising Board–संशोधक परिषदें.
Revising Officer–संशोधन अधिकारी.
Revision–पुनरीक्षण, संशोधन, निगरानी.
Revision of rent–भाटक संशोधन, लगान संशोधन.
Revisional jurisdiction–निगरानी का न्यायाधिकार.
Revision of scale–वेतनक्रम का संशोधन.
Revision of sentence sheet–दंडफलक का संशोधन.
Revival–पुनर्जीवन; पुन: प्रवर्तन.
Revive–पुनर्जीवित करना, पुन: प्रवर्तित करना.
Revoke–रद्द करना, निरस्त करना.
Revolution–क्रांति.
Revolutionary–क्रांतिकारी.
Revolutionism–क्रांतिवाद.
Revolutionist–क्रांतिवादी.
Reward–पारितोषिक, इनाम.
Rewiring–फिर से तार लगाना.
Re-written–पुन: लिखित.
Rex–राजा.
Rhythmic exercises–समयक्रमबद्ध व्यायाम.
Rice-paper–टाइप कागज, राइल पेपर.
Right–ठीक, उचित, दाहिना.
Round about expression–घुमौवा बातचीत.
Round worms–मलसर्प, केचुआ.
Route–मार्ग, पथ, रास्ता.
Routine–नित्यक्रम, दिनचर्या.
Routine action–सामान्य कार्यवाई.
Routine clerk–सामान्य लेखक.
Routine note–सामान्य टिप्पणी.
Rowdyism–हुल्लड़, दंगा.
Royal Sanitary Institute–राजकीय स्वच्छता संस्था.
Royalty–राजस्व, ग्रंथकर्ता का राजस्व या अधिकार शुल्क.
Roznamcha-navis–दिनपंजी लेखक.
Rub–नियम, शासन, शासन करना.
Rubber cap–रबर की टोपी.
Rubber catheters–रबर की मूत्र-शलाका.
Rubber seal or stamp–रबर की मुद्रा या नाममुद्रा.
Rule of proportion–समानुपात नियम.
Rule of the road–पथ-नियम.
Rules, Fundamental–मौलिक नियम.
Rules-Instructor–नियम शिक्षक.
Rules of court–न्यायालय के नियम.
Running statement–चलता विवरण.
Run-off–ढाल.
Rupture–फटन, विदार, फटाव, फट जाना.
Rural–ग्राम्य, ग्रामीण, ग्राम संबंधी, देहाती.
Rural area–ग्रामीण क्षेत्र.
Rural Development Association–ग्राम-सुधारसंघ.
Rural Development Department–ग्राम-सुधार-विभाग.
Rural Development Dispensary–ग्राम-सुधार-औषधालय.
Rusticate–निस्सारित करना, निकाल देना.
Rustication–निस्सादन, निष्कासन.
Rut–चक्रखात नमिमार्ग, लीक.

☞ S ☜

Sabotage (*n. & v.*)–अंतर्ध्वंस, फोड़फाड़, तोड़फोड़, अंतर्ध्वंस करना, फोड़फाड़ करना.
Sack (v.)–निकाल देना.
Sacrament–संस्कार.
Sacred thread–यज्ञोपवीत, जनेऊ.
Sacrilege–देवस्वापरण, धर्मघात.
Saddlery–जीनसाजी, जीनसंबंधी.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Saddlery allowance–काठीभत्ता.
Safe–सुरक्षित, अभय, तिजोरी.
Safe custody–सुरक्षित संरक्षण.
Safeguard–रक्षाकवच, परित्राण, बचाव, सुरक्षण, एहतियात. रक्षा करना.
Safety factor–अरिष्ट गुणक.
Sag–झुकाव, झुकन, झुकना.
Salary–वेतन.
Sale–बिक्री, विक्रय.
Saleable–विक्रय, बिक्री योग्य, बेचने योग्य, बिकने योग्य.
Saleable forms–विक्रय योग्य रूपपत्र.
Sale agreement for–विक्रय के लिए इकरारनामा.
Sale certificate–विक्रय प्रमाणपत्र.
Sale Deed–विक्रय-पत्र, बैनामा.
Sale-proceeds–विक्रय आगम.
Sale-proposal–विक्रय प्रस्ताव.
Sales tax–बिक्रीकर.
Salient–मुख्य, स्पष्ट, व्यक्त, उभरा हुआ, निकला हुआ.
Saline irrigator–लवण जलप्रवाहक.
Saloon–अधियान, अधिकारियों का विशेष यान; केश-कर्तनालय, बाल छाँटने की दुकान.
Salvage–भ्रंशोद्धार, तारण.
Seepage drain–रिसे पानी का नाला.
Segment–कटा भाग, कट्टा.
Seizure–आक्रम, आक्रमण, कुड़की, माल की गिरफ्तारी, कब्जाजब्ती, रोगग्रसित होना.
Seizures–रोगग्रस्त होना, रोगाक्रम.
Select–चुनी हुई, प्रवर.
Select committee–प्रवर समिति.
Selection–प्रवरण, चुनाव, पसंद, छाँट.
Selection committee–प्रवरण या चुनाव समिति.
Selection grade–प्रवरण क्रम.
Selection post–चुनावपद.
Self-confidence–आत्म-विश्वास.
Self-contained–स्वत: पूर्ण, अनन्यापेक्ष.
Sergeant at law–उच्च श्रेणी का अधिवक्ता, सरकारी वकील.
Serial–क्रमिक.
Serial (*n.r.*)–माला-प्रकाशन.
Serialism–अनुक्रमश:, यथाक्रम, सिलसिलेवार.
Serialize–क्रमबद्ध करना.
Serially numbered–क्रमांकित.
Serial number–क्रमांक, क्रमसंख्या.
Series–श्रेणीमाला.
Serum–चमसार, सीरम, पनछा.
Servant–नौकर, सेवक, परिचर, अनुचर, अभिचर, भृत्य, भृतक.
Serve–आज्ञा की तामील करना, निर्वाहण करना, परोसना, काम आना.
Service–सेवा, चाकरी, नौकरी, भृत्या, निष्पादन, तामील.
Serviceable–काम लायक, उपयुक्त, काम का, उपयोज्य.
Service book–सेवापुस्तक, सर्विस बुक.
Service of Engineers' Rules–वास्तुक सेवा नियमावली.
Service of the loan–ब्याज सहित ऋण का किस्तों में भुगतान.
Service postage stamp–शासकीय मुद्रांक, डाक के सरकारी टिकट.
Service roll–सेवावर्ति.
Service stamps–सरकारी डाक टिकट, राज़कीय डाक टिकट.
Servient estate–सुविधाभारित संपदा.
Servitude–सेवावधि, सुविधा भार, दासता, गुलामी.
Session–अधिवेशन, दौरा, सेशन, सत्र.
Sessions House–दौरा न्यायगृह.
Sessions Judge–सत्र न्यायाधीश, दौरा जज.
Set a good example–अच्छा उदाहरण या आदेश उपस्थित करना.
Set a question–प्रश्न चुनना.
Social-workers–समाज-सेवक.
Socket–कूप.
So far as may be–यथासंभव, यथाशक्य, जहाँ तक हो सके.
So far as practicable–यथासाध्य.
Sohawal–सोहावल.
Soil–मिट्टी, भूमि, दूषित करना, मैल करना.
Soil classification–भूमि वर्गीकरण.
Soil classifier–भूमि वर्गीकारक.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Soil conservation–तल मिट्टी संरक्षण, भूमि संरक्षण.
Soils–मिट्टियों के प्रकार, किस्म जमीन.
Sole executor–एकमात्र निर्वर्तक.
Species–जाति, वर्ग, प्रकार.
Specific–निश्चित, नियत, विशिष्ट, विशेष, निर्दिष्ट.
Specific area–विशिष्ट क्षेत्र.
Specification–विशेष लक्षण, विशेषीकरण, निर्देशन, विशेष वर्णन, ब्योरा.
Specific device–विशिष्ट युक्ति.
Specific legacy–विशिष्ट पत्ररिक्थ, विशिष्ट इच्छापत्र द्वारा प्रदान.
Specific performance–निर्दिष्ट प्रतिज्ञा पूर्ति, विशेष कृति, तामील खास.
Specific privilege–विशिष्ट विशेषाधिकार.
Specific Relief Act–विशेष दादरसी विधान.
Specified below–नीचे दिया गया, निम्न-निर्दिष्ट.
Specific performance–विशिष्ट अनुष्ठान.
Specifiy–निर्दिष्ट करना.
Speculative reference–अनुमानित अभ्युद्देश, कयासी हवाला.
Speech–भाषण, व्याख्यान.
Speed–चाल, रफ्तार, गति, तेजी.
Spelling–वर्ण या अक्षर-विन्यास.
Sphere–मंडल, क्षेत्र, अधिकारक्षेत्र.
Spike–काँटा, कील, मेख, तेज़ नोक.
Spill-way–जल निर्गमन मार्ग.
Spiral–पेंचदार, कुंतल.
Spirit–भावना, भाव, भावार्थ, तत्त्व प्रासव, मद्य, भूत, प्रेत.
Spirit lamp–प्रासव दीप.
Spirituous preparations–मद्यात्मक रचनाएँ, मद्यसार द्वारा बनी हुई वस्तुएँ.
Spirochaetosis–सर्पिल, केशाररोग.
Spittoons–थूकदान, पीकदान.
Splash–छींटा डालना, छपछप करना.
Spleen–प्लीहा, तिल्ली.
Spleenic tissue–प्लीहो तंतु.
Status quo–यथास्ति, यथापूर्व, ज्यों का त्यों, पूर्व दशा.
Statute–परिनियम, संविधि, व्यवस्था, कानून, व्यवस्थान.
Statutes–लेखबद्ध कानून, व्यवस्थापन.
Statutory–वैधानिक, वैध, कानूनी.
Statutory declaration–वैध कथन.
Statutory responsibility–वैधानिक उत्तर-दायित्व.
Stay–स्थगन.
Stay-in-strike–कामरोक हड़ताल.
Stay of suit–वाद स्थगन.
Steady–स्थिर, दृढ़, निश्चल, सतत्.
Steady decline in income–आय में लगातार कमी.
Store-keeper–भांडारी, कोठारी, संग्रहागारिक.
Store-room–संग्रह-कक्ष या कोष्ठ.
Storeman–भांडारिक.
Stores purchase department–भांडार वस्तु-क्रय विभाग.
Storm–तूफान, आँधी.
Straggle–भटकते-फिरना.
Straggler–पथत्यागी, भटकते फिरनेवाला.
Straight–सरल, सीधा, ऋजु.
Straight forwardness–सचाई.
Strain–संतति, प्रवृत्ति, भार, श्रम, तनाव.
Strained relations–मनोमालिन्य, मनमुटाव.
Stranded–अकेला छूटा हुआ, निस्सहाय छोड़ दिया गया.
Strange–अद्भुत, अनोखा, विचित्र, अपरिचित.
Strangles–कंठ संपीड़.
Strap–तस्मा, सिकड़ियों के जोड़ने की लोहे की पट्टिका.
Stratum–तह, स्तर.
Stream guaging observation–प्रवाहमान ईक्षण.
Strength–शक्ति, बल.
Strength of the staff–कर्मचारियों की संख्या.
Stress–प्रत्यास्थ बल.
Stretch–फैलाव.
Stretcher–वितत डोली, अवस्तार, स्ट्रेचर.
Strict–नियमनिष्ठ, अशिथिल, सीधा और पतला.
Stricture–कक्ष, कड़ी टीका, निंदा, अधिक्षेप, आकुचन.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Strike a camp–डेरा उठाना.
Strike a total–जोड़ निकालना.
Strike off–काट देना, निकाल देना.
Stringency–तंगी, कमी.
Strong room–दृढ़कोष्ठ.
Structural difficulties–भवन निर्माण संबंधी कठिनाइयाँ.
Supreme Court–सर्वोच्च न्यायालय.
Surcharge–अभिसार, अधिकार.
Surety–प्रतिभू, प्रतिभूति, जामिन, जमानत.
Surety–प्रतिभू, जामिन, जमानतदार.
Surface–सतह, स्तर, तल.
Surgeon–शल्य-चिकित्सक.
Surgical–शल्यकर्म-संबंधी, शल्य-क्रिया-विषयक, शल्यशास्त्र-विषयक.
Surgical and medical wards–शल्य कर्म तथा कार्य चिकित्सा विभाग.
Surgical dressing–व्रणोपचार.
Surgical dressing room–व्रणोपचार-गृह.
Surgical instrument–शल्यकर्मयंत्र.
Surgical side–शल्य कर्म विभाग.
Surname–कुल-नाम.
Syringe–पिचकारी.
System–पद्धति, प्रथा, प्रणाली, रीति, ढंग.
Systematic–क्रमबद्ध, व्यवस्थित.
Systematical–क्रमानुसारी.

☞ T ☜

T.A. (Travelling allowance)–यात्रिक भत्ता.
T.A. Bill–यात्रिक भत्ते का देयक.
Table–सारिणी, तालिका, कोष्ठक.
Tabled–उपस्थापित.
Tabled questions–विचारार्थ प्रस्तुत प्रश्न, उपस्थापित प्रश्न.
Table for converting into Naye Paise–नए पैसे में बदलने की सारिणी.
Table of contents–विषय-सूची.
Technical sanction–प्रावैधिक स्वीकृति.
Technical staff–विशेष विषयक कर्मचारीवर्ग.
Technician–कला वैज्ञानिक.
Technique–प्रविधि, शिल्पकला, तंत्रकला.
Technology–प्रौद्योगिकी.
Telegram–तार.
Telegraph office–तारघर.
Telephone–दूरभाष.
Teleprinter–दूर-मुद्रक.
Telescope–दूरवीक्ष, दूरवीक्षण यंत्र, दूरबीन.
Television–दूर-वीक्षण.
Teller–मतदान-गणक.
Temper–लोहे या फौलाद को आब देना, मुलायम करना, आब, दम (State of a metal as to its hardness).
Terminal report–आवधिक विवरण.
Termination–समाप्ति, अंत, अवसान.
Terminology–पारिभाषिक शब्दावली.
Terminus or terminal station–अंत का स्टेशन.
Term of office members–सदस्यों का कार्यकाल.
Term of sentence–दंड की अवधि.
Terms–प्रतिबंधें, शर्तें.
Terrace–चबूतरा, बरामदा, चपटी छत, घरों की पंक्ति.
Terrestrial–भूमि संबंधी.
Territorial–प्रादेशिक.
Territorial application–प्रादेशिक विनियोग.
Territorial division–प्रादेशिक भाग.
Territorial jurisdiction–प्रादेशिक क्षेत्राधिकार.
Territory of India–भारतीय राज्य क्षेत्र.
Terrorist–आतंकवादी, आतंककारी.
Test–परीक्षा, जाँच.
Thereto–उसके विषय में.
Theretofore–तत्पूर्व, उसके पूर्व.
Thereunder–तदधीन, तदनुसार.
There-upon–तत्पश्चात्, ऐसा होने पर.
Therewith–उसके साथ, उससे.
Thermometer–तापमापक, थर्मामीटर.
Thesis–अनुसंधान ग्रंथ या प्रबंध.
Thorax–वक्षःस्थल.
Through–पूर्ण, पूरा.
Through-bred–शुद्ध या असली नस्ल के.
Thoroughfare–सार्वजनिक मार्ग, आम रास्ता.
Threat–धमकी.
Through–द्वारा.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Through-booking–अबाध यात्रा का टिकट देना.
Throughout–सर्वत्र, प्रत्येक भाग में.
Through proper channel–यथोचित प्रणाली द्वारा.
Through traffic–अबाध यातायात.
Thumb–अंगुष्ठ, अँगूठा.
Thumb-impression–अँगूठे का निशान, अंगुष्ठ चिह्न.
Ticket–पत्रक.
Ticks–प्रांकन करना.
Tied up–बँधा, बाँधा.
Tiles–खपड़ैल, खपड़.
Tillage–कृषिकर्म, खेती, जुताई, जोत, खेत.
Tiller–कृषक.
Till further orders–अन्य आदेश पर्यंत.
Timber–विसार, इमारती लकड़ी.
Time-barred–समय सार्गल, कालतिरोहित.
Time-barred decree–समय सार्गल डिगरी, मियाद निकली हुई डिगरी.
Time Keeper–समय लेखक.
Traffic–यातायात.
Traffic census–यातायात संबंधी जनगणना.
Traffic Inspector–यातायात निरीक्षक, ट्रैफिक इंस्पेक्टर, चौराहा पुलिस इंस्टपेक्टर.
Traffic in women and children–औरतों और बच्चों को बेचने का व्यापार.
Traffic Manager–यातायात प्रबंधक.
Traffic Police–यातायात नियंत्रक आरक्षी, चौमुहानी- आरक्षी.
Traffic surveys–यातायात विषयक परिमाप.
Trailor–मोटरगाड़ी के पीछे बाँधी जानेवाली बोझागाड़ी.
Trailor pump–ठेला पर जानेवाला यंत्र.
Train–ट्रेन, रेलगाड़ी, कतार, पंक्ति, आपस में दाँतेदार पहियों की (gears) पंक्ति.
Trained–प्रशिक्षित, सीखे हुए.
Transliteration–अक्षरांतरण, भाषांतरण.
Transmission–पारेषण, प्रसारण, दाय हस्तांतरण अधिकार.
Transmit–पारेषित करना, भेजना.
Transmitted–पारेषित, भेजा गया.
Transpire–खुलना, घटित होना.
Transplantation–रोपाई करना, पौधों को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाना.
Transplanted rice–रोपा हुआ धान.
Transport–परिवहन, ढुलाई.
Transportation for life–आजीवन निर्वासन, कालापानी.
Transport Commissioner–परिवहन आयुक्ति.
Transport Deptt.–परिवहन विभाग.
Transport facilities–परिवहन सुविधाएँ.
Transverse–अनुप्रस्थ, चौड़ानी.
Trapezium–असमलंब चतुर्भुज.
Trapezoid–असलंब चतुर्भुज की आकृति का.
Travelling Allowance Rules–यात्रिक भत्ते के नियम.
Travelling Eye Hospital–चलता-फिरता नेत्र- चिकित्सालय, आँखों का चलता-फिरता चिकित्सालय.
Traverse–रोक, प्रतिबंध, प्रतिपक्ष द्वारा आरोप का प्रतिकार करना, खंडन करना, तोड़ना.
Traverse chart–मालारेख चित्र.
Traverse-programme–मालारेख कार्यक्रम.
Traverse-survey–रेखामापन.
Tray cloth–तश्तरी ढकने का कपड़ा.
Tread of steps–सीढ़ी.
Treason–राजद्रोह.
Treasurer (Honorary)–कोषाध्यक्ष (अवैतनिक).
Treasure vault–खज़ाने का तहखाना.
Treasury–कोषागार, खज़ाना.
Treasury bills–सरकार हुंडी.
Treasury Officer–कोषागार अधिकारी.
Treasury strong room–कोषागार दृढ़ कोष्ठ.
Treatment–व्यवहार, उपचार, इलाज.
Tremor–कंपकंपी, थरथरी.
Trench–खाई.
Trespassers–अतिक्रमी, अनधिकार प्रवेशक.
Trial–विचार, परीक्षण, मुकदमा.
Trial Clerk–विचार लेखक.
Triangular–त्रिकोणी, तीन कोन की.
Triangular bandage–त्रिभुजाकारबंधन, त्रिभुजाकार पट्टी.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Tribal Advsory Council–आदिम जाति मंत्रणापरिषद्.
Turn over–पूर्ण बिक्री, पलटाव.
Turn up–उपस्थित होना.
Turpitude–गिरावट, हीनता.
Turret–बुर्जी, परिश्रमी.
Tuition fee–शिक्षण शुल्क.
Tutorial–शिक्षा संबंधी.
Twice–दोबारा.
Type–प्रकार, नमूना, प्रतिरूप, निदर्शन, मुद्र, मुद्राक्षर.
Typed–टाइप किया हुआ, मुद्रलिखित.
Type design–प्रामाणिक टाइप का डिजाइन.
Typewriter–मुद्रलेखन यंत्र, टाइप राइटर.
Typewriter Mechanic–टाइपराइटर का यांत्रिक.
Typewriting–मुद्रलेखन.
Typical–द्योतक, लाक्षणिक, आदर्श, स्वाभाविक.
Typist–मुद्रलेखक, टाइपिस्ट.
Typographical error–मुद्रण-दोष, छपाई की भूल.

U

Ubiquitous–सर्वव्यापी.
Ulterior–अव्यक्त, प्रछन्न, गूढ़, गुप्त.
Ultimate–अंतिम, परम, चरम.
Ultimately–अंततः, अंततोगत्वा.
Ultimatum–अंतिम चेतावनी.
Ultimo–गतमास.
Ultra-violet ray treatment room–पारनील-लोहित रश्मि चिकित्सा कोष्ठ.
Ultra-violet treatment–पारजम्बु, रश्मि-चिकित्सा.
Ultra-vires–अधिकार से बाहर, अधिकारबाह्य, शक्ति-परस्तात्.
Unable–अक्षम, असमर्थ.
Unacceptable–अस्वीकार्य.
Universal application–व्यापक प्रयोग.
Universe (out of which a sample is drawn)–समग्र विश्व.
University Court–विश्वविद्यालय सभा.
University Grants Committee–विश्व-विद्यालय अनुदान समिति.
Unjust–अनुचित, अन्यायपूर्ण.
Unlawful–अवैध, गैरकानूनी.
Unlawful assembly–अवैध सभा.
Unlikely–असंभाव्य, अघटनीय, अनहोनी.
Unmetalled road–कच्ची सड़क.
Unnatural–अस्वाभाविक, अप्राकृतिक.
Unnatural offence–अप्राकृतिक अपराध (मैथुन).
Unobjectionable–आपत्तिजनक.
Unofficial–अशासकीय, अनधिकारिक, गैरसरकारी.
Unofficial bodies–अनधिकारिक संस्थाएँ.
U.P. Public Health Service–उत्तरप्रदेशीय स्वास्थ्य सेवा, उत्तरप्रदेशीय स्वास्थ्य भृत्या.
U.P. Regulation of Agricultural Credit Act–उत्तरप्रदेशीय कृषि ऋण नियमन अधिनियम.
Upstream–बहाव के ऊपर.
U.P. Tenancy Rent & Revenue–उत्तर-प्रदेशीय काश्तकारी लगान और राजस्व या मालगुज़ारी.
Up-to-date–अतिथि, आज की तारीख तक.
Urban–शहरी, नागरिक.
Urban outpost–नगर चौकी.
Urgency–अविलंब्यता, आत्ययिकता.
Urgent–अत्यावश्यक, अत्यधिक, अविलंब.
Urgent copies–अत्यावश्यक प्रतिलिपियाँ.
Urgent slip–अत्यावश्यक पर्ची.
Urinal–मूत्रालय, पेशाबखाना.
Urine–मूत्र.
Urine blood–मूत्ररक्त.
Usage–व्यवहार, प्रयोग, रूढ़ि, दस्तूर.
Use–उपयोग, उपभुक्ति, प्रयोग, काम में लाना, उपयोग करना, बरतना.
Useful–उपयोगी, काम का.
Usefulness–उपयोगिता.
Useless–अनुपयोगी, व्यर्थ, निरुपयोगी, निरर्थक, बेकार.
User–उपभोक्ता, उपयोगकर्त्ता, प्रयोगाधिकारी.
Uses–प्रयोग.
Usual–प्रायिक, सामान्य, साधारण.
Usual legatee–असामान्य रिक्थी, असाधारण रिक्थभोगी.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Usufruct–भोगलाभ.
Usufructuary mortgagee–भोग-बंधकग्राही.
Usurious–अनुचित ब्याज लेनेवाला.
Usury–अनुचित ब्याज, कुसीद, कुसीदपथ.
Utilization–उपयोग.
Utilization certificate–उपयोगीकरण, प्रमाण-पत्र.
Utmost–परम.
Uttar Pradesh Service of Engineers, Class I (Hydel)–उत्तरप्रदेशीय अभियंता सेवा, श्रेणी 1 (जल-बिजली).
Uttar Pradesh Service of Engineers, Class II, Irrigation Branch–उत्तरप्रदेशीय अभियंता सेवा, श्रेणी 2, सिंचाई शाखा.

☞ V ☜

Vacancy–रिक्त स्थान, रिक्ति.
Vacant–रिक्त, खाली.
Vacant possession–रिक्त भोग.
Vacant succession–रिक्त उत्तराधिकार.
Venereal–रतिज.
Venereal Department–रतिज रोग विभाग.
Venereal diseases clinic–रतिज रोग चिकित्सालय.
Veneriologist–रतिज रोग चिकित्सक.
Venetian Blind–झिलमिली.
Ventilate–खोलना, प्रकट करना, प्रकाश में लाना, वायुमय करना.
Ventilation–संवातन, वायु संचार.
Ventricle–हृदय संपुट, प्रवेश्म.
Venture–साहस करना, जोखों में पड़ना, साहस, उपक्रम, साहस का कार्य.
Venue–स्थान, विचार-स्थान, वह न्यायालय जहाँ दावा दायर होना चाहिए.
Veracity–सत्यता, सच्चाई.
Verandah–बरामदा.
Verbal–मौखिक, शाब्दिक.
Verbally–वाचा, शब्दशः.
Verbatim–शब्दशः.
Verdict–निर्णय, पंचायती निर्णय.
Verge–सीमा, किनारा, हद, दंड, स्तंभ, झुकना, पटरी की घास, रौस के किनारे की घास.
Verification–प्रमाणीकरण, सत्यापन, जाँच-पड़ताल.
Verification of accounts–लेखा पड़ताल.
Verification of stock of stamps–मुद्रांक के संच की जाँच-पड़ताल.
Verify–प्रमाणित करना, तसदीक करना, जाँच-पड़ताल करना.
Versus–प्रति, बनाम.
Vertex–शीर्ष.
Vertical–खड़ी, खड़े बल में.
Very severe–अति तीव्र, दुःसह.
Vest–प्राप्त होना, अधिकार देना, अधिकारयुक्त करना, हक देना, पहुँचना.
Vested–संप्राप्त, लगाया हुआ.
Vested interest–प्राप्त अधिकार, निहितस्वार्थ.
Vested possession–प्राप्त भोगाधिकार.
Vested remainder–अधिकार जो किसी विशेष अधिकार समाप्त होने के बाद किसी निर्दिष्ट व्यक्ति को प्राप्त हो.
Vestibule–डेवढ़ी, बरोठा, दहलीज.
Vesting–अधिकार दानकारी.
Vesting order–अधिकार दान आदेश, निधायी आदेश.
Veteran–अखाड़िया, ज्ञानवृद्ध, वयोवृद्ध.
Veterinary–पशु-चिकित्सा संबंधी.
Veterinary Assistant Surgeon–पशु चिकित्सा सहायक सर्जन.
Veterinary Service–पशु चिकित्सा सेवा.
Veto–निषेधाधिकार.
Vexatious action–दुःखदायी वाद, कष्ट पहुँचाने के लिए वाद या नालिश.
Via–रास्ते से, द्वारा.
Viaduct–ऊँचा पुल या सेतु.
Vibration–कंपन, थरथरी, लहराव.
Vice–स्थान में, बदल में.
Vice-Chancellor–उप-कुलपति.
Vice versa–विपर्ययेण, विलोमतः, उल्टा.
Vicinity–पड़ोस, अड़ोस-पड़ोस.
Vide–देखिए.
Vigilance–जागरण, चौकसी, खबरदारी, होशियारी, देखभाल.
Vigorous–ओजस्वी.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Violence–हिंसा, अत्याचार, मारपीट.
Violent–हिंसात्मक, अत्याचारी, मारपीट करनेवाला.
Virulent–अति उग्र, प्रचंड, तेज़.
Virus–ज़हरीला, माद्दा, विषैला तत्त्व.
Visa–दृष्टांक, पासपोर्ट पर पृष्ठांकन.
Vis-a-vis–आमने-सामने, सम्मुखीन.
Viscosity–संलग्नशीलता, लसलसाहट.
Vision–दर्शन, साक्षात्कार, दृष्टि, दृश्य, कल्पना, स्वप्न, आभास.
Visionary–काल्पनिक.
Visit–समाय, अभ्यागम, अभ्यागमन, निरीक्षण, दर्शन, भेंट, मुलाकात.
Visitation–दैवकोप.
Visitors' book–दर्शक पंजी.
Visitors' gallery–दर्शक दीर्घा.
Visitors' shed–दर्शनार्थी शाला.
Visual Signalling Section–द्राष्टिक संकेत उपविभाग.
Vital–मार्मिक, जीवन विषयक, जीवन-मरण संबंधी.
Vital statistics–जन्ममरण संबंधी आँकड़े.
Vitiate–बिगाड़ना, भ्रष्ट करना, दूषित करना.
Vulgar–अशिष्ट, गँवार, अश्लील.
Vulnerable–मार्मिक, चोट पहुँचने योग्य.

W

Wage–मजदूरी, भृति.
Wage earner–भृति अर्जन करनेवाला, मजदूरी पानेवाला.
Wage earning scheme–भृति अर्जन योजना.
Wagon–वाहन, गाड़ी, डब्बा.
Waist coat–बंडी, बासकट.
Waiting list–प्रतीक्षक सूची.
Waiting room–प्रतीक्षालय, प्रतीक्षाकोष्ठ.
Waive–परित्याग करना, छोड़ना.
Waive of recovery–वसूली छोड़ देना.
Walking stick guns–बंदूकदार छड़ी.
War concession leave–युद्ध अनुग्रह-अवकाश.
War-costs surcharge–युद्धकालीन लागत संबंधी अधिभार.
Ward–कक्ष, वार्ड, चौकी, नगरभाग, पाल्य, विभाग.
Warp–ताना, तानी, लकड़ी का मुड़ना.
Warrant–अधिपत्र, अधिकारपत्र, वारंट.
Warrant for goods–माल अधिपत्र.
Warrant of appointment–नियुक्ति अधिपत्र.
Warrant of arrest–आसेध अधिपत्र, गिरफ्तारी का वारंट.
Warrant of commitment–सुपुर्दगी का अधिपत्र.
Warrant Officer–वारंट अधिकारी, अधिपत्र अधिकारी.
Warrant of precedence–पूर्वता अधिपत्र.
Warrantor–उत्तरदायी, वह व्यक्ति जो किसी बात की जिम्मेवारी करे.
White chevron–सफेद बिल्ले.
White vest–सफेद वासकट.
Whole–संपूर्ण, सारा, सब.
Whole-life–आजीवन.
Whole period–संपूर्ण अवधि.
Wholesale prices–थोक भाव.
Wholesome–स्वास्थ्यकर, आरोग्यप्रद, रुचिकर.
Whole-time servant–पूर्णकालिक सेवक.
Wholly–पूर्णतया, पूरे तौर से.
Widespread–विस्तीर्ण, दूर विस्तृत.
Widower–विधुर.
Wilful absence from duty–काम से जान-बूझकर अनुपस्थिति.
Will–इच्छापत्र, रिक्थपत्र, वसीयत.
Winders–लपेटनेवाला, बेठन, वेष्टक.
Wind-fall–अप्रत्याश-आय, सहसा-प्राप्ति.
Winding up of an estate–किसी संपत्ति का समापन.
Women Medical Officer–चिकित्साधिकारिणी.
Women Police–महिला आरक्षी.
Women Service–महिला भृत्या.
Wooden–काष्ठमय, लकड़ी का.
Wooden angular–काष्ठमय कोनेदार.
Wordy–शब्दाडंबरमय.
Workable–करने योग्य.
Work accounts–निर्माण कार्य लेखा.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Work charged establishment–विशेष कार्य युक्त संस्थापन.
Work-house–दीनागार, मोहताजखाना.
Working agreement–कार्यकरण नियमपत्र.
Working capital–कार्यकारी पूँजी.
Working committee–कार्यकारिणी समिति.
Working days–काम के दिन, कार्य-दिवस.
Working of local bodies–स्थानीय संस्थाओं का काम, स्थानीय निकायों का काम.
Working order–ठीक-ठीक अवस्था या व्यवस्था.
Working plan–कार्य-योजना.
Workman–कर्मकार, कारीगर, मज़दूर, श्रमिक.
Workmen's Compensation Fund–श्रमिकों का प्रतिकर कोष.
Work Order–निर्माण कार्यादेश.
Working-plan–कार्य योजना.
Works abstract–निर्माण कार्यों का उप-संक्षेप.
Works accounts–निर्माणकार्य लेखाजात.
Works and Covenience–निर्माणकार्य और सुविधाएँ.
Works of Collection–तहसील वसूल.
Works expenditure–निर्माण कार्यों पर व्यय.
Workshop–कर्मशाला, शिल्पशाला, कारखाना.
Workshop Foreman–कर्मशाला अधिकर्मिक.
Workshop-progress-record–कर्मशाला-उन्नति-अभिलेख.
Works Manager–निर्माणकार्य प्रबंधक.
Works outlay–निर्माण कार्यों पर लागत.
Worth analysing–विश्लेषण योग्य.
Wound up–समापित.
Writ–मुद्रांकित आदेशपत्र, हस्ताक्षरित आदेशपत्र.
Write off–बट्टेखाते में डालना.
Write off losses–हानि की रकमों को बट्टेखाते में डालना.
Writ of habeas corpus–बंदी-प्रत्यक्षीकरण आदेश-पत्र.
Written authority–लिखित अधिकार.
Written examination of Complaints–शिकायतों की लिखित जाँच.
Written instrument–लिखित दस्तावेज, करण पत्र.
Written off–बट्टेखाते डाला हुआ.
Written statement–लिखित उत्तर.
Wrong–दूषणीय, अशुद्ध, सदोष, अपक्रिया, दुष्कर्म.

☞ X ☜

X-ray–क्षरश्मि.
X-ray department–क्षरश्मि विभाग, एक्सरे विभाग.
X-ray room–क्षरश्मि कोष्ठ, क्षरश्मि विभाग.
X-ray training–क्षरश्मि शिक्षण.

☞ Y ☜

Yearly–वार्षिक.
Yield–उपज, देना, छोड़ना, माल लेना, जगह देना.
Young Men's Christian Association–नवयुवक क्रिश्चियन संघ.
Young Women's Christian Association–नवयुवती क्रिश्चियन संघ.
Yours faithfully–भवन्निष्ठ.
Yours sincerely–भवदीय, सच्चाई से आपका.

☞ Z ☜

Zabti rent (cash value of grain rent)–ज़ब्ती लगान.
Zaid–अतिरिक्त फसल, ज़ायद.
Zaid Jinswar–ज़ायद जिंसवार, अतिरिक्त सस्य.
Zamima (Supplementary memo)–ज़मीमा, अनुपूरक मापन.
Zamindari mushturrika–साझे की ज़मींदारी या भूसंपत्ति.
Zamindari tracts–ज़मींदारी भूखंड.
Zamindari wahid–अकेले की ज़मींदारी.
Zarpeshgi lease–ज़रपेशगी पट्टे, अग्रदाय पट्टे.
Zeal–उत्साह, ज़ोश.
Zerab (covered with water)–जलाच्छादित.
Zero–शून्य.
Zone–क्षेत्र, चक्र, कटिबंध.
Zoology–प्राणिशास्त्र, ज़ीवविज्ञान, जंतुविज्ञान.

●●●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Some Indian and European Herbs

भारतीय जड़ी-बूटियों के अंग्रेज़ी, लैटिन व आयुर्वेदिक नामों की तालिका

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
अकरंकरा	Anacyclus Pyrethrum (एनासाइक्लस पाइरेथ्रम)	Pellitory Root (पेलिटरी रूट)	आकरंकरा तीक्ष्ण मूल
अकलबेर	Datisca Cannabina (डिटिस्का कैनाबिना)	Datisca (डेटिस्का)	–
अखरोट	Jugloas Regia (जुगलास रेजिया)	Walnut (वालनट)	अक्षोट
अगर	Aquilaria Agallocha (एक्यूलेरिया एगालॅका)	Eagle Wood or Aloe Wood (ईगलवड या अलूवुड)	अगरू या विश्वधूपक
अगस्त (अगस्तिया)	Sesbania or Agati Grandi Flora (सेसवानिया या अगती ग्रांडी फ्लोरा)	Large flowered agate (लार्ज फ्लावर्ड गेट्)	अगस्त्य या मुनिपुष्प
अगिया या अग्नि बूटी	Andropagancitratis (एन्ड्रोपोगान सिटरेटिस)	Lemongrass or Sweet Rush Ginger Grass (लेमन-ग्रास, स्वीट रश्, जिंजर ग्रास)	भूतृण
अङ्कोल या अंकोल	Alangium Lamorokii (अलेजियम लेमारोक्की)	Sage Leaved Alangium (सेज लीव्ड अलेंजियम)	अङ्कोल या दीर्घकीलक
अंगूर या दाख, द्राक्षा, मनुक्का और किसमिस तथा इसी के सूखे रूप	Vitis Vinifera (वाइटिस विनीफेरा)	Grapes or Vine (ग्रेप्स या वाइन)	
अंगूर शेफा या साग अंगूर	Atropa Belladona (एट्रोपा बेलाडोना)	—	सूचि
अजगंधा	Ocimum Canum (ओसिमम कैनम)	Hoary Basil (होरी बेसिल)	अजगंधा जंगली अजवायन
अजमोद	Apium Graviolens or Carum Rox Barghianum (एपियम ग्रेवियोलेंस या केरम राक्स बर्घियेनम)	Celery Seed (सेलेरी सीड)	
अजवायन (देशी या) अजमान	Carum Ccopticum (केरम कोप्टिकम)	Bishop's Weed or Omum Seed (बिशप बीड् या ओमम सीड)	अजमोद
अजवायन (खुरासानी)	Hyoscyamus Niger (हायोसाइसस नाइगर)	Henbane Seeds (हेनबेन् सीड्स)	मदकारिणी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
अजवायन (किरमानी)	Artemisia Maritima (आर्टिमिसिया मेरिटिम)	Wormseed Santonica (वॅर्मसीड सेंटोनिका)	चौहार या जंतु विनाशन
अजवायन (जंगली)	Thymus Serphyllum or Seseli Indicum (थाइमस सरफाइलम या सेसेली इंडीकम)	Wild Tthyme (वाइल्ड थाइम्)	बनयबानी
अंजनी (अंजन)	Memecylon Edule (मेमीसीलोन इड्यूले)	Iron Wood Tree (आइरन वुड ट्री)	अंजन
अंजीर	Ficus Carica (फाइकस केरीका)	Fig Tree (फिग ट्री)	फल्गु या अंजीर
अंजीर जंगली	Ficus Opposite Folia (फाइकस अपोजिट फोलियो)	—	–
अंजीरी	Ficus Palmata (फाइकस पामेटा)	—	–
अड़ूसा	Adhatoda Vasika (एढ़ाटोडा वासिका)	Malabar Nut Tree (मालाबार नट ट्री)	कासा
अरंड खरबूजा या पपीता	Carica Papaya (केरीका पपाया)	Papow (पेपो)	वातकुँभ या मधुकर्कटी
अतीस	Aconitum Hetrophylum or Aconitum Cordatum (एकोनाइटम हेट्रोफिलम या एकोनाइटम कार्डेटम)	Indian Atees (इंडियन अतीस)	अति विषा या शृंगी
अदरक	Zingiber Officinale (जजिबर अफिसिनेल)	Ginger Root (जिंजर रूट)	आर्दक या कटुभद्र
अनंतमूल	Hemidesmus Indicus (हेमीडेसमस इंडीकस)	Indian Sarsaperilla (इंडियन सारसापेरिला)	अनंतमूल
अनानास	Ananas Sativus (अनानास सेटाइबस)	Pine Apple (पाइन एपल)	अनेमार्स
अनार	Punica Granatum (पुनिका ग्रेनेटम)	Promegranate (प्रोमेग्रेनेट)	दाडिम या दत्त बीजक
अंतमूल	Tylophora or Asclepias Asthmatica (टाइलोफोरो या एस्किले पिअस अस्थेमेटिका)	Indian Epikequina (इंडियन इपीकेक्वाइना)	मखांड या अंडमूल
अंधाहुली या छोटा कुल्फा	Trichodesma Indicum (ट्राइकोडेस्मा इंडिकम)	Borago Indicum (बोरागो इंडिकम)	अंधपुष्पी
अपराजिला या कोयल	Clitoria Ternatia (क्लाईटोरिया टर्नेशिया)	Megrin (मेग्रिन)	अपराजिता
अपामार्ग या चिरचिटा या लटजीरा	Achyranthes Aspera (एकिरेंथिस अस्पेरा)	Rough Chaff Tree (रफ चैफ ट्री)	अपामार्ग या खरमंजारी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
अफीम आफूक इसका	Papaver Samniferum (पापावर सामनीफेरम)	Opium (ओपियम)	अहिफेन या बीज 'खशखश' या 'पोश्तदान' होता है
अमरबेल	Ruscuta Reflexa (रस्कुटा रिफ्लेक्सा)	Dodder (डोडर)	अमरबल्ली या अमरबल्लरी
अमरबेल (निराधारी)	Cuscuta Hyalina (कुस्कुटा ह्यालिना)	Dodder (डोडर)	दुस्पर्शा अमरबल्लरी
अमरबेल (अकाशबेल)	Cassytha Filiformes (केसिया फिलीफोर्मिस)	Dodder (डोडर)	आकाशबल्लरी
अमरूद या सफरी	Psidium Guyava (पिसीडियम गुयावा)	Guava (गुयावा)	अमृत या बहुबीज
अमलतास या बानर ककड़ी	Cassia Fistula (केसिया फिस्टुला)	Pudding Pipe Tree or The Purging Cassia (पुडिंग पाइप ट्री या दि पर्जिंग केसिया)	आरम्बध या राजवृक्ष
अमलबेत या अमलवेद नींबू	Ruvcus Vessicarius (रूबेक्स वेसिकेरियस)	Sour. Yellowdock (साबरच यलोडोक)	अम्लवेतस
अमसानि	Ephedra Vulgaris (एफिड्रा वल्गेरिस)	—	–
अआम्बाडा या अमरा	Spondias Mangifera (स्पोंडियस मेंगिफेरा)	Wild Mango (वाइल्ड मैंगो)	आम्रातक
अरहर	Cajanus Indicus (केजेनस इंडिकस)	Pigeon Pea or Cardian Pea (पिजियन पी या काडजन पी)	तुबरी या पीतपुष्पा
अरारोट या एरारूटट	Maranta Arundinacea (मेरेंटा एरंडीनेसिया)	Arrow Root (अरोरूट)	–
अरिमेद या विलायती कीकर	Acacia Farnesiana (अकेसिया फोर्नसियाना)	The Casia Flower (दि केसिया फ्लावर)	इरिमेद
अर्जुन	Terminalia Arjuna (टरमीनेलिया अर्जुना)	Arjuna Myrobalan (अर्जुन मायरोबालन)	कुकुभ
अलसी	Linum Usitatissimum (लाइनम युसिटेटिसिसमम्)	Linseed or Flax Plant (लिनसीड या फ्लास्क प्लांट)	अलसी
अलिया या सोनलता	Dodoneea Viscosa (डोडोनिया विस्कोसा)	Swich Sarel (स्विच सारेल)	–
अशोक	Saraca Indica or Jonesia Ashoka (सैरेका इंडिका या जोनिशिया अशोका	The Asoka Tree (दि अशोक ट्री)	अशोक या खत्तपल्लव
असगंध या नागोरी असगंध	Withania Somnifera (विथेनिया सोम्नीफेरा या फाइसेलिस सोम्नीफेरा)	Winter Cherry (विंटर चेरी)	अश्व या बाजीवाचक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
आक या मदार	Calotropis Procera or Calotropis Gigantica केलोट्रोपिस प्रोसीरा या केलोट्रोपिस जाइगांटिका)	Mudar or Gigantic Swallow Wort (मडार या जाइगाण्टिक स्वालोवार्ट)	मंदार या मादर
आड़ू	Prunus Persica (प्रूनस पर्सिका)	Peach (पीच)	कारूक या वीरसेन
आतरीलाल	Anthriscus Cerefolium (एंथ्रिसकस सेरीफोलियम)	Chervil (शर्विल)	–
आबनूस	Diospyros Ebinaster (डायोस्पाइरस एबिनेस्टर)	Ebony (एबोनी)	आबनूस
आम	Mangifera Indica (मैंगिफेरा इंडिका)	Mango (मैंगो)	आम्र
आमपीच	Cookie Punctate (कुकी पंकटेट)	Wample (वामपिल)	आंबपीच
आमला अथवा आंवला	Phyllanthus Embelica (फाइलंथस एम्बिलिका)	Indian Goose Berry (इंडियन गूसबेरी)	आमलक
आमा हल्दी अथवा अंबा हल्दी	Curcuma Aromatica (केरकूमा एरोमेटिका)	Cochin-Turmeric (कोचीन टर्मेरिक)	आमाहल्दी
आरी अथवा खैरबेल बबूरक	Acacia Penata (एकेशिया पिनेटा)	Acacia (एकेशिया)	आरि अथवा जाल
आल अथवा बड़ी आल	Morinda Tinctoria or Morinda Tomentosa (मोरिंडा टिंक्टोरिया या मोरिंडा टोमंटोसा)	Brimstone Tree or The Togariwood of Madras (ब्रिमस्टोन ट्री या दि तोगारिबुड ऑफ मद्रास)	अच्युत अच्छ
आलू	Solanum Tuberosum (सोलेनम टुबरोसम)	Potato (पोटाटो)	आलुक
आलूचा अथवा भोटिया बादाम	Prunus Domestics or Prunus Aloocha (प्रूनस डोमेस्टिका या प्रूनस अलूचा)	French Plum or Prunes (फ्रेंच प्लम या प्रूनस)	आरूद भेद
आलू बालू अथवा लदाखी बादाम	Prunus Cerasus (प्रूनस सिरेसस)	Dwarf Cherry (ड्वार्फ चेरी)	–
आलू बोखारा	Prunus Communis (प्रूनस कम्यूनिस)	Bokhara Plum or Cherry Plum (बोखारा प्लम या चेरी प्लम)	आरुकम्
आसन अथवा विजयसार	Pterocarpus Marsupium (टीरोकार्पस मार्सुपीयम)	Indian Kino Tree (इंडियन काइनो ट्री)	महासर्ज
इंद्रायण बड़ी	Citrullus Colocynthis Indian Colocynth (सिटरूलस कोलीसिंथिस या इंडियन कोलोसिंथ)	Bitter Apple (बिटर एपल)	विशाला अथवा महाफला या त्रिपुसी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
इंद्रायण छोटी	Cucumis Trigonus (कुकीमस ट्राइगोनस)	Bitter Gourd (बिटर गोर्ड)	एंद्री अथवा गवाक्षी
इंद्रायण लाल	Trichosanthes Palmata (ट्राइकोसेंथीज पामेटा)	—	अरूणा
इंद्रायण काँटेदार	Cucumis Prophitarum (कुकुमिस प्रोफिटेरम)	—	छुद्र कंटक फला
इपिकेक्वाना अथवा विदेशी अंतमूल की जड़	Psychotria Ipeca Canvha (साइकोट्रिया इपिकेक्वाना)	Ipecoc Root or Hippo– (इपिकेक्वाना रूप)	
इमली अथवा अमली	Tamarindus Indica (टेमेरिंडस इंडिका)	Tamarind (टेमेरिंड)	अम्लिका
इलायची छोटी अथवा लाची	Elettaria Cardamom (एलेटेरिया कार्डमम्)	The Lesser Cardamom or Malabar Cardamom (दि लेसर कार्डमम या मालाबार कार्डमम)	सुक्ष्मेला अथवा उप कुंचिका
इलायची बड़ी अथवा स्थूलैला	Amomum Subulatum (अमोमम सब्युलेटम)	The Greater Cardamom or Nepal Cardamom (दि ग्रेटर कार्डमम या नेपात कार्डमम)	बृहत् उपकुंचिका
इश्क	Ipomoea Quamoclit (आइपोमिया क्वामोक्लिट)	Cupids Flower (क्युपिड्स फ्लावर)	पेचाकामलता
इसबगोल प्लैंटेगो आवेटा अथवा प्लैंटगो इस्पधुल	Plantago Ovata or Plantago or Ispaghula	Spogel Seeds or Spage Seeds (स्पोगेल सीड्स अथवा स्पेज सीड्स)	ईषद्रोल अथवा स्निग्ध बीज
ईसरमूल अथवा ईश्वरमूल	Aristolochia Iddica (अरिस्टोलोचिया इंडिका)	Indian Birth Wort (इंडियन बर्थ वर्ट)	रुद्रजटा अथवा रौद्री
ईख	Saccharum Officinarum (सैकेरम आफिसीनेरम्)	Sugar Cane (सुगर केन)	इक्षु
ईरसा अथवा सोसन	Iris Versicolor (आयरिस वर्सीकलर)	Oris (आरिस)	इंद्रधनुष पुष्पी
उटंगन	Blephoris Edulis or Acanthodium Hirtum (ब्लेफारिस एडुलस अथवा एकेंथेडियम हिरटम)		उच्चटा
उड़द	Phaseolus Radiata (फेसिओलस रेडियेटा)	Kedney Bean (किडनी बीन)	माष
उतरन	Daemia Extensa (डीमिया एक्सटेंसा)	Hairy Flowered Senanecum (हेयरी फ्लावर्ड सिनानिकम)	दीर्घवृत्ता
उदर पुंच्छी	Justicia Diffusa Wild (जसटीसिया डिफूसा वाइल्ड)	—	–

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
उन्नाव	Zizyphus Sativa or Vulgaris (झिझिफस सेटाइवा या वल्गेरिस)	Berries (जुजुब)	राजबदर
उलट कंबल	Abroma Augusta (एब्रोमा आगस्टा)	Devil's Cotton (डेविल्स् काटन)	पोबरी
ऊशक अथवा कल्यान	Dorema Glabrum or Ammoniacum (डोरेमा ग्लेब्रम या एमोर्निआकम)	Ammoniacum Gum (एमोनाइकम गम)	अमुनायकम्
उस्तखद्दस	Lavendula Strechas or Brunella Vulgaris (लवेंडुला स्टीकास अथवा ब्रूनेलिया वुल्गेरिस)	Arabian Lavender (अरेबियन लवेंडर)	–
ऊंकटारा	Echinops Echinatus (इकिनाप्स एकीनेटस)	Camel's Thistle (केमल थिसल)	उष्ट्रफटक
एरक अथवा गोंदपेटर	Typha Elephantina (टइफा एलीफेंटिना)	Elephant Grass (एलीफेंट ग्रास)	गुँद्र
एलुबा	Prunus Corasus (प्रूनस कोरासुस)	The Sour Cherry (दि सोर चेरी)	एलबालुद
ओटफल	Gracinia Xanthochymus (ग्रेसीनिया जेंथेकाइमस)	—	भव्य फल
औधफली	Trichodesma Emplexi Caule (ट्राइकोडेसमा एम्पलेक्सी कॉल)	—	–
ककड़ी	Cucumis Utilissimus (कुकुमिस युटिलिसीमस)	Cucumber (कुकुंबर)	कर्कटी
ककोड़ा अथवा वनकरेला	Momorbica Dioica (मोमोर्डिका डायोइका)	—	कर्कोटक
कचनारू लाल	Bouhinia Variegata (बोहिनिया वेरीगेटा)	Mountain Eboney (माउंटेन एबोनी)	कांचनार
कचनार-सफेद	Bauhinia Acuminata (बौहिनिया अक्युमिनेटा)	—	श्वेतकांचन
कचनार पीला	Bauhinia Purpurea (बौहिनिया परपुरिया)	—	पीतकांचन
कचनार भेद	Bauhinia Racemosa or Bauhinia Tomentosa (बौटिनिया रेसीमोसा अथवा बौहेनिया टोमेंटोसा)	Downy Mountain Eboney (डाउनी माउंटेन एबोनी)	अश्मत्तक
कचरी अथवा सेंध	Cucumis Duadin (क्युक्युमिस डूडेन)	Cucumber Pulbescent (कुकुंबर प्यूवेसेंट)	चिर्मेट
कचूर अथवा काखी हल्दी	Curcuma Zedooria (कर्क्युमा जेडोरिया)	Long Zedoary (लोंग जिडोआरि)	गंधमूल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
कटकरंज	Caesalpinia Bonducella (सीसेलपीनिया बोडयूसिला)	Fever Nut (फीवर नट)	कुबेराक्षी
कटहल	Autocarpus Integrifolia (ऑटोकॉर्पस इंटेग्रिफोलिया)	Indian Jack Tree (इंडियन जैक ट्री)	पनस
कटेरी छोटी अथवा भटकटैया	Solanum Xanthocarpus (सोलेनम जेंथोकारपस)	Wild Egg Plant (वाइल्ड एग प्लांट)	कंटकारी
कटेरी बड़ी	Solanum Indicum (सोलेनम इंडिकम)	—	महाबृहती
कठगूलर	Ficus Hispida (फाइकस हिसपिडा)	—	खरपत्री
कड़वी तुंबी अथवा डितलौकी	Lagenasia Vulgaris (लेजिनेसिया वुल्गेरिस)	Bitter Bottle Gourd (बिटर बाटल गोर्ड)	कटुतुंब
कड़वी तोरई	Luffa Amara (लुफा अमरा)	Bitter Luffa (बिटर लुफा)	तिक्तकोपातकी
कंटला	Agave Americana (अगेव अमेरिकाना)	American Aloe Carata (अमेरिकन अलू कराटा)	कंटालु
कदमकदंब	Anthocephalus Cadamba (ऐंथेकिफेलस कदंबा)	Wild Cinchona (वाइल्ड सिंकोना)	–
कद्दू अथवा मीठी तुंबी	Cucurbita Lagenaria (कुकुबिटा लेजेनेरिया)	White Gourd or Sweet Gourd (ह्वाइड गोर्ड अथवा स्वीट गोर्ड)	अलांबु अथवा मिष्ठ तुंबी
कुमडा सफेद (पेठा)	Benincasa Cerifera or Cucurbita Moschata (बेनिनकेसा सेरीफेरा अथवा कुकुरबिटा माँसचाटा)	—	श्वेत कुष्मांड
कनक चंपा	Pterospermum Acerifolium (टेरोस्पर्मम एकेरीफिलियम)	—	कनक चंपक
कनफोड़ा	Cardiospermum Halicacabum (कोर्डियोस्पर्मम हेलिकाकेबम)	Baloon Vine (बेलून वाइन)	कर्ण स्फोटा
कनेर श्वेत	Nerium Oleandar (निरियम औलियंडर)	Sweet Scented Oleandar (स्वीटसेंटेड ओलियंडर)	शतकुंभ
कनेर लाल	Nerium Odorum (नेरियम ओडोरम)	Roseberry Spurge (रोजबरी स्पर्ज)	रक्त पुष्प अथवा चपड़ी कुसुम
कनेर पीली	Thevetia Narifolia (थिवटिया नेरीफोलिया)	Yellow Oleandar (येलो ओलियंडर)	पीत प्रसद
कनोचा	Phyllanthus Maderaspa-tensis or Salvia Spinosa (फाइलेंथस मडरासपेटेंसिस अथवा सेलविया स्पाइनोसा)	—	–

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
कंदरू	Coccinia Indica (कोक्सीनिया इंडिका)	—	बिंबी
कपास	Gossypium Herbaceum (गोसीपियम हरबेसियम)	Indian Cotton (इंडियन काटन)	कार्पासी
कपासदेव अथवा (वरमा कपास)	Gossypium Arboreum (गोसीपियम आरबोरियम)	Religious Cotton Tree (रिलिजस काटन ट्री)	उद्यान कार्पास
कवन कपास	Thespesia Lampas or Hebiscus Lampas (थेसपेसिया लेम्पास अथवा हिबिसकस लेम्पास)	The Wild Cotton (दि वाइल्ड काटन)	वन कार्पास
कपूर	Camphora Officinerum (कैंफोरा आफिसिनेरम)	Camphor (कैंफर)	कर्पूर
कपूरकचरी	Hedychium Spicatium (हेडीकियम स्पाइकेटियम)	—	सुगंधमूला
कबर	Capparis Spinosa (केपेरिस स्पाइनोसा)	Capper Plant (केपर प्लांट)	–
कवाब चीनी	Piper Cubeba (पाइपर क्यूबेबा)	Tailed Pepper (टेल्ड पेपर)	कंकोल या सुगंध मरिच
कमर कस	Salvia Brochiata (सेलविया ब्रोकोयाटा)	—	–
कमरख	Averrhoa Carmbola (ऐवरोहा केरमबोला)	Carambole Apple or Chinese Gooseberry (केरमबोल एपल अथवा चाइनीज गूजबेरी)	कर्मरक
कमल	Nelumbium Speciosum (निलमबियम स्पेसियोसम)	Sacred Lotus (सेक्रेड लोटस)	कमल
कमीला अथवा कबीला	Mallotus Phillippenensis (मैलोटस फिलिप्पानेंसिस)	Kemala Dye or Monkey Face Tree (कमला डाई अथवा मंकी फेस ट्री)	रक्तांग अथवा रेची
करंज	Pongamia Glabra (पोंगेमिया ग्लेब्रा)	Indian Beech (इंडियन बीच)	करंज
करौल	Capparis Ophylla (Cappari's Decidua) (कैपरिस अफाइला अथवा कैपरिस डेसीडुआ)	Caper Plant (केपर प्लांट)	करीर
करेला और करेली	Momordica Charantia (मोमोर्डिका चरेंटिया)	Bitter Gourd (बिटर गोर्ड)	कारवेल्लक
करौंदा	Capparis Corundus (केरिसा केरेंडस)	Bengal Currantas (बेंगाल करेंटस)	करमर्द
कटीला	Astragalus Gummifer (एस्ट्रेगेलस गम्मीफर)	—	

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
कलमी शाक	Ipomoea Aquatica (आइपोमिया अक्वाटिका)	—	–
कलंबा	Jateorhisa Palmata (जेटिओरिसा पामैटा)	Calumbo Root (कलंबो रूट)	–
कलौंजी	Nigella Sativa (नाइगेला सेटाइवा)	Nigella Seeds (नाइगेला सीड्स)	कालाजाजी
कसेरू	Scirpus Grossus (इस्क्रिप्स ग्रोसस)	Water Chestnut (वाटर चेस्टनट)	कसेरूक
कसौंदी	Cassia Occidentalis (केसिया ऑक्सीडेंटेलिस)	Negro Coffee Plants (निग्रोकाफी प्लांट्स)	कासमर्द
कस्तूरी दाना	Hibiscus Abemoscheus (हिबिस्कस एबिमोस्कस)	Musk Mallow (मुस्क म्यालो)	लता कस्तूरिका
कंगनी	Setaria Italica (सिटेरिया इटेलिका)	Italian Millet or Deccan Grass (इटालिन मिलेट अथवा डेकन ग्रास)	कंगनी
काई	Vallisneria Spiralis (वेलिस्नेरिया स्पाइरेलिस)	Moss (मास)	शैबाल
कांकड़ा सिंगी	Pistacia Integerrima (पिस्टासिया इंटेजेरिया)	Galls or Crebsclaw (गाल्स अथवा क्रेब्सक्ला)	कर्कट शृंगी
काकतुंडी	Asclepias Currassavica (एस्कलेपियास कुरासिबिका)	Blood Flower (ब्लड फ्लावर)	काकतुंडी
काकनज	Physalis Alkakenji (फाइसेलिस अल्केकेंजी)	Strawberry Tomato (स्ट्राबरी टोमाटो)	राजपुत्रिका
काकमारी	Anamirta Cocculus or Cocculus Indica (एनमिर्टा काक्युलस अथवा काक्युलस इंडिका)	Fish Berry (फिशबेरी)	गोविष
काजू	Anocardim Occidentale (एनाकार्डियम आक्सिडेंटेल)	Cashew Nut (केश्यूनट)	काजू तक
काफी अथवा कहवा	Coffea Arabica (काफिया अरेबिका)	Coffee (काफी)	अंतवी अथवा मलेच्छ फल
कायफल	Myrica Negi (मायरिका नेगी)	Box Myrtle (बाक्स मिर्टल)	कट्फल
कायापुटी	Malaleuca Leucadendron (मेलाल्युका ल्यूकाडेंड्रोन)	Cajuput Oil Tree (काजुपुट आईल ट्री)	काजुपुट
कालमेघ	Andrographis Peniculata (एंड्रोग्रेफिस पेनीकुलेटा)	The Creet or Kalmegh (दि क्रीट अथवा कालमेघ)	यर्वीतक्ता अथवा कालमेघ
काला दाना	Ipomoea Nil (आईपामिया निल)	Indian Jalap Pharbitis Seeds (इंडियन जेलप अथवा फार्बाइटिस सीड्स)	कृष्णा बीज

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
कालीजोरी	Ascardia Indica (एस्कार्डिया इंडिका)	Purple Fleabane (पर्पल फ्लीबेन)	अरण्य जीरक
काली मिर्च	Piper Nigrum (पाइपर नाग्रम)	Black Pepper (ब्लैक पेपर)	अरिच
	Saccharum Spontaneum (सैकरम स्पोटेनियम)	Thatch Grass (थैच ग्रास)	कास अथवा इक्षु गंधा
कासनी	Cicohrium Intybus (किकोरियम इंटीबस)	Chicory (चिकरी)	–
काहू	Lactuca Scraiola (लेक्टुसा स्कारियोला)	Wild Lettuce (वाइल्ड लेटूस)	–
कीड़ामार	Aristolochia Bracteata (एरस्टिलोचिया ब्रेकर्टिवेटा)	Birth Wort (बर्थ वर्ट)	कीटमारी
कुंभी अथवा कटभी	Careya Arborea (केरिया आरबारिया)	Patana Oak (पाटाना ओक)	कुंभी
कुकरोंधा	Blumea Lacera (ब्लुमिया लसेरा)	—	कुकुंदर
कुथला	Stryehnos Nuxvomica (स्ट्रिहनस नक्स वोमिका)	Poison Nut or Nux Vomica (पौइजन नट अथवा नक्स वोमिका)	कुथील
कुचला लता	Strychnos Colubrina (स्ट्रिकनस कोलूब्राइना)	Snake Wood (स्नेक वुड)	कटुबल्ली
कुटकी सफेद या देशी	Picrorrhyza Kurrooa (पिकरोराइजा कुरुआ)	Helle Bore (हेले बोर)	कटुका अथवा तिक्ता
कुटकी काली	Helleborus Niger (हेलीबोरस नाइगर)	Black Hellebore (ब्लेक हेले बोर)	कृष्ण भेदी अथवा वक्राग्र
कुंद	Jasminam Pubescens (जेसमीनम प्यूबेसेंस)	Musk Jasmine (मुस्क जेसमिन)	कुंद
कुप्पी	Acalypha Indica (एकलिफा इंडिका)	Indian Acalypha (इंडियन एकलिफा)	हरित मंजरी
कुमुद	Nymphea Lotus (निम्फिया लोटस)	Water Lily (वाटर लिली)	कुमुद
कुलथी	Dolichos Biflorus (डोलीकस बाइफ्लोरस)	Horse Grass (होर्स ग्रास)	कुलत्थ
कुलफा	Portulaca Oleracea (पोर्टुलाका ओलीरेसिया)	Garden Purselane (गार्डन पर्सलेन)	घोटिका
कुलिंजन	Alpinia Galanga (एलपीनिया गलंगा)	Greater Galangal (ग्रेटर गेलेगाल)	कुलिंजन
कुश	Eragrostis Cynosuroides (एराग्रोस्टिस साइनोसुराइडीस)	—	कुश
कुसुम	Carthamus Tinctorius (कार्थेमस टिंक्टोरियस)	Wild Saffron (वाइल्ड सेफ्रान)	कुसुंभ

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
कूठ	Sassurea Lappa (सासुरिया लैप्पा)	Costus Root (कोस्टस रूट)	कुष्ठ वाष्प
केला	Musa Sapientum (मूसा सेपिएंटम)	Banana or Plantain (बनाना अथवा प्लांटेन)	
केला जंगली	Musa Paradisiaca (मूसा पाराडिसियाका)	Wild Plantain (वाइल्ड प्लांटेन)	–
केवड़ा	Pandanus Tectorius or Pandanus Fascicularis (पानडानस टेक्टोरियस अथवा पानडानस फेसीकुलेरिस)	Fragrant Screw Pine (फ्रैगरेंट स्क्रू पाइन)	केतकी अथवा सूत्री पुष्प
कौंच	Macuna Pruriens (मुक्युना प्रूरियेंस)	Cow Hage or Cow Itch कौंच (काऊ हेज अथवा काऊ इच)	
केसर	Crocus Sativus (क्रोकस सेटाइवस)	Saffron (सेफ्रान)	कुंकुम
कैथ	Feronia Elephantum (फिरोनिया एलिफेंटम)	Wood Apple (वुड एपल)	कपित्थ
कोकम	Garcinia Indica (गारसीनिया इंडिका)	Kokum Butter Tree (कोकम बटर ट्री)	वृक्षाम्ल
कोकीन	Erythroxylon Cocka (इरीथ्रोजाइलॉन कोका)	—	–
कोको	Theobroma Cocao (थियोब्रीमा काकाओ)	Cacao or Chocolate Tree (काकाओ अथवा चोकलेट ट्री)	–
कोसुम	Schleichera Trijuga (स्केलिचेरा ट्रिजुगा)	Ceylon Oak (सीलोन ओक)	कोशाम्
खजूर	Phoenix Dectylifera (फिनिक्स डेक्टीलिफेरा)	Date (डेट)	खर्जूर
खजूरी	Phoenix Sylvestris (फिनिक्स सिल्वेस्ट्रिस)	Wild Date Tree (वाल्ड डेट ट्री)	खर्जूरी
खरबूजा खरैंटी लता (नागबला)	Cucumis Melo Sida Humalis (कुकुमिस मला अथवा सिडा ह्युमेलिस)	Sweet Melon (स्वीट मेलन)	खर्बूज भूमिबला
खस	Andropogon Muricatus (एंड्रोपोगान म्यूरी केटस)	Cus Cus (कुस कुस)	उशीर
खस-खस	Papaveris Capsulae (पेपेवेरिस कैपसुली)	Poppy Seeds (पोपी सीडस)	खसफल
खीरा	Cacumis Sativus (कुकुमिस सेटाइवस)	Common Cucumber (कॉमन कुकुंबर)	कंटकिफल
खब्बानी अथवा गुलखेर	Malva Sylvestris (माल्वा सिलवेस्ट्रिस)	Common Mellow (कॉमन मेलो)	–

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
खूबकला अथवा जंगली सरसों	Sisymbrium Irio (सिसिम्ब्रियस आयरियाँ)	Hedge Mustard (हेज मस्टर्ड)	–
खैर	Acacia Catechu (अकेशिया केटेचु)	Catechu Tree (केटेचु ट्री)	कंठकी या खदिर
खैर चिनाय	Uncaria Gambier (अंकेरिया गैम्बियर)	Pale Catechu (पेल कटाचु)	लता खदरी
गंगरेन छोटी अथवा नाग बाला	Sida Spinosa (सिडा स्पाईनोसा)	—	नाग बला
गंगरेन बड़ी	Grewia Hirsuta (ग्रीविया हिरसुटा)	—	गुड़ शर्करा
गंजनी	Andropagon Nardus (एंड्रोपोगान नार्डस)	Citronella (सिट्रोनेला)	गुच्छ
गंदना	Allium Ampeloprasum (एलियम एंपलोप्रेशम)	Leek (लीक)	गंधना
गज पीपल अथवा बड़ी पीपल	Scindapsus Officinalis or Pothos Officinalis (सिंडाप्सस ऑफिसिनेलिस अथवा पोथेस ऑफिसिनेलिस)		गज चिप्पली
गंधप्रसारणी	Paederia Fetida	Chinese Flower Plant or Moon Creeper (चाइनीज फ्लावर प्लांट अथवा मून क्रीपर)	प्रसारणी अथवा गंध भद्रा
गरजन	Dipterocarpus Alatus (डिप्ट्रीरो कार्पस एलाटस)	Gurjun Oil Tree (गरजन ऑयल ट्री)	वक्ष द्रम
गाजर (केरट)	Daucus Carota (डोकस केरोटा)	Carrot	गर्जर अथवा गाजर
गाजवाँ	Onosma Bracteatum (ओनेस्मा ब्रैक्टियेटम)	—	वोजिव्हा
गाजयाँ-2	Elephantopus Scaber (एलीफेंटोपस स्केवर)	Prickly Leaves (प्रिकली लीवस)	गोजिव्हा
विमोथ	Tinospora Cardifola (टिनो स्पोरा कॉडीफोलिया)	Heart Leaves (हर्ट लीव्ज्)	गुडुची
गुँजा अथवा रत्ती	Abrus Precatorius (एबरस प्रिकेटारियस)	Indian Liquorice (इंडियन लायकोरिस)	गुँजा
गुडमार	Gymnema Sylvestra (जिनेमा सिलवेस्टरा)	—	मधुनाभना
गुड़हल	Hibiscus Rosa Sinensis (हिबिस्कस रोजा साईनेनसिस)	Shoe Flower or Chinese Rose (शू फ्लावर अथवा चाइनीज रोज)	जया
गुलखेरू अथवा गुलखरा	Althaea Rosea (एल्थिया रोजिया)	Round Dock (राउंड डोक)	–

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
गुलतुर्रा नं. 1	Ceesalpinia Pulcherrima (सीसलपिनिया पुलचेरिया)	False Peacock Flower (फाल्स पीकाक फ्लावर)	गुलमी
गुलतुर्रा नं. 2 अथवा सफेद गुलमोहर	Poinciana Elata (पोइनसियाना ऐलाटा)	White Gulmohar or Cream Peacock Flower (ह्वाइट गुलमोहर अथवा क्रीम पीकाक फ्लावर)	सिद्धेश्वर
गुलदाउदी	Chrysanthemum Coronarium (क्राइसेंथिमम कोरोनेरियम)	Chrysanthemum (क्राइसेंथिमम)	शत पत्रिका
गुलबकावली	Clerodendrum Fragrans (किलोरोडेंड्रोन फ़ेग्रेंस)	—	
गुलवास	Mirabilis Jalapa (मिराबिलिस जालापा)	Marvel of Peru (मार्वल ऑफ पेरू)	कृष्णकेली
गुमेंदी	Impations Balsamina (इम्पेशंस बालसेमिना)	Garden Balsam (गार्डन बालसम)	
गुलशब्बो	Polianthes Tuberosa (पोलिएंथस ट्यूबरोज)	Tuberose (ट्यूबरोज)	रजनीगंधा
लाब	Rosa Centifolia (रोजा सेंटीफोलिया)	Rose (रोज़)	शतपत्री
गुवार फली	Cyamopsis Tetragonoloba (स्यामोप्सिस् टेट्रागोनोलोबा)	—	दृढ़बीज
गूगल	Balsamo Dendron Mukul (बाल्समो डेंड्रान मुकुल)	Indian Bedellium (इंडियन बेडेलियम)	गुड़गुल
गूलर	Ficus Glomerata (फाइक्स ग्लोमेराटा)	Cluster Fig (क्लस्टर फिग)	उदुंबर
गेंदा	Tagetes Eracta (टेगेटीस इरेक्टा)	French Marigold (फ्रेंच मेरीगोल्ड)	झंडू
गेहूँ	Triticum Vulgare (ट्राईटिकम वुल्गेर)	Wheat (ह्वीट)	गोधूम
गोखरू छोटा	Tribulus Terristris (ट्रिबुलस टेरेस्ट्रिर्स)	Small Caltrap (स्माल कालट्राप)	छुद्र गोक्षुर
गोखरू बड़ा	Pedalium Murex (पिडेलियम् म्यूरेक्स)	—	वृहद् गोक्षुर
गोभी 1. फूल गोभी	Brassica Botrytis (ब्रेसिका बोट्राइटिस)	Brassica Cauli Flower (काली फ्लावर)	–
2. पात गोभी	Brassica Oleracea (ब्रेसिका ऑलरेसी)	Cabbage (करमकल्ला केबेज)	–
3. गाँठ गोभी	Brassica Caulocarpa (ब्रेसिका कॉलोकार्पा)	Knol-khol (नाल-खोल)	–
गोरख आमली	Adansonia Digitata (एडन्सोनिया डिजिटेटा)	Monkey Bread Tree of Africa (मंकी ब्रेड ट्री ऑफ अफ्रीका)	गोरक्षी अथवा कल्पवृक्ष

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
ग्वार पाठा	Aloe Indica (एलो इंडिका)	Indian Aloe (इंडियन एलो)	कुमारी
घिया तोरई	Luffa Pentendra (लूफा पेटेंड्रा)	Smooth Loofa (स्मूथ लूफा)	महाकोशातकी
घुइयाँ अथवा अरबी	Arum Colocasia (ऐरम कोलोकेसिया)	Colocasia (कोलोकेसिया)	आलुकी
चकोतरा	Citrus Decumana (साइट्रस डेक्युमाना)	Pomelo (पोमेलो)	शतवेधी
चचेंडा	Trichosanthes Anguina (ट्राइकोसेंथीज एन्गुवाइना)	Snake Gourd (स्नेक गोर्ड)	चिचिंडा
चचेंडा जंगला	Trichosanthes Cucumerina (ट्राइकोसेंथीज कुकुमेराइना)	Snake Gourd (स्नेक गोर्ड)	कटुपटौल
चना	Cicer Arietinum (सायकर एरिटिनम)	Gram or Chicken Pea (ग्राम अथवा चिकेन पी)	चणक
चंदन	Santalum Album (सेंटॅलम ऐल्बम)	Sandal Wood (सैंडल वुड)	चंदन
चंदन लाल	Pterocarpus Santalivus (टेरोकार्पस सेंटलिवस)	Red Sandalwood (रेड सेंडलवुड)	खत्त चंदन
चमेली	Jasminum Grandiflorum (जेस्मीन ग्रेंडी फ्लोरम)	Spanis Jasmine (स्पेनिस जेस्मीन)	तिका
चंपा पीली	Michelia Champaca (माइकीलिया चंपका)	Golden Champa (गोल्डन चंपा)	चंपक
चंपा श्वेत	Plumeria Acutifolia (प्लूमेरिया एकूटीफ़ोलिया)	White Champa (ह्वाइट चंपा)	–
चव्य	Piper Chaba (पाइपर चाबा)	—	चव्य
चाकसू	Cassia Absus (केसिया एबसस)		चक्षुष्या
चाय	Camellia Theifera (केमेलिया थीफेरा)	Tea (टी)	चाय अथवा चाह
चाल मोगरा नं. 1	Hydnocarpus Wigthiana (हिडनोकार्पस वायटियाना)	Jangli Almond (जंगली ऑमंड)	तुवरक
चाल मोगरा नं. 2	Taraktogenos Kurzie (टेरक्ट्रो जेनस कर्जाई)	Chaul Mogra (चाल मोगरा)	तुवरक
चावल	Oryza Sativa (ओराइजा सेटाइवा)	Rice (राइस)	धान्य
चिउरा	Bassia Butyracea (बेसिया ब्युटीरेसिया)	Phulwara Butter (फुलवारा बटर)	मधूक
चित्रक	Plumbago Rosea (प्लेम्बेगो रोजिया)	White Lead Wort (ह्वाइट लेड वर्ट)	चित्रक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
चिनाई घास	Gracilaria Lichenoides (ग्रेसीलेरिया लाइकेनॉयडीज)	Ceylon Moss (सीलोन मॉस)	–
चिरायता	Swertia or Ophelia Chirata (स्वर्टिया या ओफेलिया चिराटा)	Chiretta (चिरेटा)	किरात
चिरोंची	Buchanenia Latifolia (बुकनानिया लेटीफोलिया)	Cuddapa Almond (कुडापा आमंड)	प्रियास
चिलगोजा	Pinus Gerardiana (पाइनस गिरार्डियाना)	Edible Pine Necza Pine (एडिबिल पाइन अथवा नेक्ज़ा पाइन)	निकोचक
चिलबिल	Holoptelea Integrifolea (होलोप्टेलिया इंटेग्रिफोलिया)	Jungle Cork Tree (जंगल कार्क ट्री)	करंजी
चिल्ला नं. 1	Caseria Tomentosa (केसिएरिया टोमेंटोसा)	—	चिल्हक
चिल्ला नं. 2	Caseria Esculenta (केसिएरिया एस्कुलेंटा)	Wild Cowrie Fruit (वाइल्ड कौरी फ्रूट)	सप्तचंद्रा
चीकू	Achras Sapota (एक्रस सेपोटा)	Sapodillo Plum (सेपोडिलो प्लम)	सपोटा
चीड़	Pinus Longifolia (पाइनस लोंगीफोलिया)	Long Leaved Pine (लौंग लीव्ड पाइन)	सरल धूप वृक्ष
चीड़ कतरान अथवा कनोवर	Pinus Sylvestris (पाइनस सिल्वेस्ट्रिस)	Yellow Pine (यलो पाइन)	
चुकंदर	Beta Vulgaris (बिटा वुल्गेरिस)	Sugar Beet (शुगर बीट)	
चूका पालक	Rumax Vesicarius (रूमेक्स वेसिकेरियस)	Country Sorrel (कंट्री सोरेल)	चुक्र
चोब चीनी	Smilax China (स्माइलेक्स चाइना)	China Root (चाइना रूट)	द्वीपात्तत्वा
चोबहयात	Guaicum Officinalis (ग्वाएकम ऑफिसिनेलिस)	Lignum Vitae (लिग्नम वायटी)	लोहकाष्ठ
चौधारा	Anisomeles Malabarica (एनीसोमिल्स मालाबारिका)	Malabar Catmint (मालाबार केटमिंट)	स्रक्का
चौलाई अथवा लाल मरसा	Amaranthus Polygamus (अमरेंथस पोलीगैमस)	Prickly Amaranth (प्रिकली अमेरंथ)	मरसा
छड़ीला	Parmelia Perforata (परमिलिया परकोरेटा)	Stone Flower or Yellow Lichen (स्टोन फ्लावर अथवा यलो लाइकिन)	शैलेय
छत्री	Polyporus Officinalis (पोलीपोरस आफिसिनेलिस)	Mushroom (मशरूम)	भूमि छत्रक
छिखेल	Holostemma Reddi (होलोस्टेमा रेड्डी)	—	अर्क पुष्पी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
छोंकर	Prosopis Spicigera (प्रोसोपिस स्पाइसीजेरा)	Sponge Tree (स्पंज ट्री)	शमी
जंगली अंगूर	Vitis Indica (वाइटिस इंडिका)	Indian Wild Vine (इंडियन वाइल्ड वाइन)	वनद्राक्ष
जंगली अखरोट	Aleuritis Modluceina (अल्यूराइटिस मोड्लूसियाना)	Indian Walnut (इंडियन वाल्नट्)	–
जंगली अदरक	Zingiber Cassumunar (जिंनजोबर केसुमुनार)	Wild Ginger (वाइल्ड जिंजर)	–
जंगली उशवा	Smilax Macrophylla (स्माइलेक्स मेक्रोफिला)	Wild Sarsaparilla (वाइल्ड सार्सापरेला)	
जंगली काली मिर्च	Toddalia Aculecta (टोडालिया एक्यूलियेटा)	Wild Piper (वाइल्ड पाइपर)	कंज
गूलर	Ficus Asperrima (फाइकस एसपेरिमा)	Ficus (फाइकस)	खरपत्री
जंगली जायफल	Myristica Malabarica (मिरिस्टिका मालाबारिका)	Malabar Nut Meg (मालाबार नट मेग)	कामुक
जंगली प्याज	Urginea Indica (अर्जिनिया इंडिका)	Indian Squill (इंडियन स्किवल)	वनलयांडु
जंगली बादाम	Sterculia Foetida (स्टरकुलिया फॉटिडा)	Canarium Commune or Wild Almond (बादाम पर्पटी अथवा वाइल्ड बादाम)	–
जंगली मदनमस्त अथवा बजरबट्टू	Cycas Circinalis (साइकस सरसीनेलिस)	—	–
जटामांसी	Nardostachys Jatamansi (नार्डोस्टैकिस जटामांसी)	Spike Nard or Indian Nard (स्पाइकेनार्ड अथवा इंडियन नार्ड)	भूतजटा
जमालगोटा	Croton Tiglium (क्राटन टिगलीयम)	Pargative Ceroton (परगेटिव क्राटन)	जयपाल
जमीकंद (सूरण)	Amorpholus Ceompenulatus (एमोरफोफैलस कम्पेन्युलेटस)	Telugo Peotato (तेलुगो पोटेटो)	सूरण
जरदालू	Prunus Deesrmeniaca (प्रूनस आर्मीनिएका)	Apricot (एप्रिकाट)	पीतालुक
जल कुंभी	Pistia Stratiotes (पिस्टिया स्ट्रेडिओटस)	Tropical Duck Weed (ट्रापिकल डक वीड)	कुंभिका
जल धनिया	Ranunculus Secleratus (रेननकुलस स्कलेरेटस)	Water Celery (वाटर सेलेरी)	कांडीर
जलनीम	Herpestis Meonniera (हुरपेस्टिस मोनिएरा)	Thyme Leaved Gratiola (थइम लीव्ड ग्रेटिओला)	जल निंब

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
जल पीपली	Lippia Nodiflora (लीपिया नोडीफ्लोरा)	Purple Lippia (पर्पल लीपिया)	जल पिप्पली
जलापा	Ipomoca Convolvulus (आइपोमिया कानवाल्वुलस)	Jalep (जेलेप)	जलापा
जय अथवा जौ	Hordeum Vulgare (हार्डियम वुल्गेर)	Barley (बार्ले)	यब
जवाशीर	Ferula Galbaniflua (फेरूला गेलवेनीफुलुवा)	—	
जवासा	Alhagi Comelorum (अल्हेगी कोमेलोरम)	Arabian or Persian Manna Plant (अरेबियन या परसियन मन्ना प्लांट)	यास
जामुन	Eugenia Jambolana (यूजीनिया जम्बोलना)	Jambul (जांबुल)	राज जंबू
जायफल	Myristica Fragranss (मिरिस्टिका फ्रेग्रेन्स)	Nut Meg (नट मेग)	जातीफल
जीबत्ती	Cimicifuga Foetida (सिमिसिफ्युगा फोटिडा)	Bugbane (बगबेन)	मत्कुणारि (खटमल मांसवाली)
जीरा श्वेत	Cuminum Cyminum (क्युमीनम साइमीनम)	Cumin Seed (क्युमिन सीड)	जीरक
जीरा (स्याह)	Carum Carvi (कैरम कार्वी)	Black Cumin (ब्लैक क्युमिन)	कृष्ण जीरक
जीरा काला अथवा विष जीरा	Conium Maculatum (कोनियम मैकुलेटम)	Hemlok (हेमलेक)	किरमाणी जीरा
जीवंती	Leptadenia Reticulata (लेप्टाडीनिया रेटिकुलेटा)	—	जीवत्ती
जुआर	Sorghum Vulgare (सोरधम ब्लगेर)	Millet (मिलेट)	यावनाल
जूट	Corchorus Capsularis (कारकोरस केप्सुलारिस)	Jute Plant (जूट प्लांट)	पाट
जूही श्वेत व पीत	Jasminum Humile (जेस्मिनम हूमाइल)	Pearl Jasmine (पर्ल जेस्मिन)	यूथिका
जूही पालक	Rhinacanthus Communis (रीनाकेंथस क्युनिस)		यूथिक पर्णी
जैत	Sebania Aegyptiaca (सिवेनिया ईजिप्टियाका)		जयंती
जैतून	Olea Europaea (ओलिया यूरोपिया)		–
झाऊ अथवा फरास	Tamarix Indica (टेमेरिक्स इंडिका)	Tamarisk (टेमिरिस्क)	झाबुक
टमाटर	Lycopersicum Esculeutum or Solanum Lycopersicum	Tomato (टोमाटो)	रक्तवृतांक्त

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
	(लायको परसीकम एस्कुलेटम अथवा सोलेनम लायको परसीकम)		
टिंडे मुनि निर्मित	Tricho Santhes Laciniosa (ट्रायको संथिस लेसिनओसा)	—	डिंडिश अथवा
डिजिटेलिस	Digitalis Purpurea (डिजिटेलिस परप्युरिया)	Digitalis or Foxglove (डिजिटेलिस अथवा फोक्स ग्लोव)	हत्पत्री
ढाक	Butea Frondosa (ब्युटिया फ्रोंडोसा)	Bastard Teak (बास्टर्ड टीक)	पलाश
ढाक (पलाश लता)	Butea Superba (ब्यूटिया सुपरबा)	—	लता पलाश
तगर देशी	Valeriana Wallichii (वेलेरियन वालाचिजाई)	Indian Valerian (इंडियन वलेरियन)	तगर
तगर विदेशी	Valerian Officinalis (वेलेरियन आफिसिनेलिस)	True Valerian (ट्रू वलेरियन)	–
तगर पिंडी	Tabernaemontana Coronaria (टेबरनीमोंटेना कोरोनेरिया)	Wax Flower Plant (वैक्स फ्लावर प्लांट)	दंडहस्त
तमाखू	Nicotiana Tabacum (निकोटियाना टेबाकम)	Indian Tobacco (इंडियन टोबेको)	तमाखू
तंबाकू जंगली	Verbascum Thapsus (वर वासकम या पसस)	Great Mulein (ग्रेट मुलियन)	अरणम तंबाकू
तरबूज	Citrullus Vulgaris (सिटरूलस वुल्गेरिस)	Water Melon (वाटर मेलन)	कालिंदक
तवाखीर	Curcuma Augustifolia. (करकुमा ऑगस्टी फोलिया)	Curcuma Starch (कुरकुमा स्टार्च)	वनक्षीर
ताड़	Borassus Flabelliferra (वोरेसस फ्लेबेलिफेरा)	Palmyra Palm (पामीरा पाम)	ताल
तांबूल	Piper Bettle (पाइपर बीटल)	Betel Leaf (बीटल लीफ)	तांबूल बल्ली
ताल मखाना	Asteracantha Leongi Folia (एस्टिराकेंटा लोंगी फोलिया)	Long Leaved Balaria (लोंग लीव्ड बालेरिया)	कोकिलाक्ष
तिल	Sisamum Indicum (सिसेमम इंडिकम)	Sesame (सिसेम)	तिल
तुंबुरू (नेपाली धनिया)	Zathoxylum Alatum (जेंथेजाइलम एलेटम)	Zanth (जेंथ)	तंबरू
तुलसी	Ocimum Sanctum (ओसाईमम सेंक्टम)	Holy. Sacred Basil (होली, सेक्रेड बेसिल)	तुलसी
तुलसी अर्जकी वन तुलसी	Ocimum Canum (ओसाइमम केनम)	Hoary Basil (होरी बेसिल)	अर्जका
तुलसी रामा	Ocimum Gratissimum (ओसाइमम ग्रेटिसिमम)	Shrubby Basil (श्रबी बेसिल)	अर्जका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
तुलसी मरूवा	Origanum Marjorana (ओरीगातनम मार जोरीना)	Sweet Marjoram (स्वीट मारजोरम)	मरूबक
तून	Cedrela Toona (सिरेला टूना)	Red Toon Indian Mahogany Tree (रेडटून इंडियन मेहोनेगी ट्री)	तृणी
तेंदू (काला)	Diospyrous Embryopteris (डीयास्पाइरस एम्ब्रेयप्टिरिस)	Indian Persimon (इंडियन पर्सिमन)	तिंदुक
तेजपात	Cinnamum Tamola (सिनेमम तमोला)	Indian Cinnamum (इंडियन सिनेमम)	पत्रक
तेजबल	Zanthoxylum Hostile (जेंथोजाइलम होस्टाइल)	Tooth Ache Tree (टूथ ऐक ट्री)	तेजीवती
तेरई झिंगा	Luffa Actuangula (लफ्फा एकूटेंगुला)	Ribbed Luffa (रिब्ड लफ्फा)	धाराफला
तोरई घिया	Luffa Cylindrica (लफ्फा सिलेंड्रिका)	Towel Gourd (टावल गोर्ड)	राजकोशातको
थूहर नं. 1	Euphorbia Neriifolia (यूफोरबिया नेरीफोलिया)	Common Milk Hedge (कॉमन मिल्क हेज)	स्नुही
थूहर नं. 2 चौधारा	Euphorbia Nivulia (यूफोरबिया निवुलिया)		वज्रवृक्ष
थूहर नं. 3 त्रिधारा	Euphorbia Antiquorum (यूफोरबिया एंटीकोरम)	Triangular Spurge (ट्रायंगुलर स्पर्ज)	वज्रकंटक
थूहर नं. 4 खुरासानी	Euphorbia Tirucally (यूफोरबिया टिरुकल्ली)	Milk Hedge (मिल्क हेज)	सातला
थूहर नं. 5 तितली	Euphorbia Dracunculoides (यूफोरबिया ड्रेकनकुलीडीज)	—	सातला
थूहर नं. 6 नागफनी	Opuntia Dilleni (ओपनशिया डिलेनि)	Prickly-pear (प्रिकली पियर)	कंथारि
थूहर नं. 7 हडजोड	Vitis Quadrangularis (वाइटिस क्वार्डर-गुलेरिस)	Adamant Creeper (एडमांट क्रीपर)	अस्थि संहारी
दंती (छोटी)	Baliospermum Montanum (बेलियोर्स्पमम मोनटेनम)	—	दन्ती
दंती (बड़ी)	Jatropa Glandulifera (जटरोपा ग्लेंडयूलिफेरा)	—	वृहद्दन्ती
दंत बड़ी (चंद जोत या रतन जोत)	Jatropa Curces (जटरोपा करकास)	Purging Nut (पर्जिंग नट)	दुग्धगर्मा
दरियाई नारियल	Lodoicea Seyechellarum (लोडॉयसिया सिचेलेरम)	Sea Cocoa Nut (सी कोकोनट)	–
दाक मुनक्का	Ribes Rubrum (रिबीस रूबरम)	Red and Black Currantus (रेड व ब्लेक केंरटस)	दाख
दाद मर्दन	Cassia Alata (केसिया अलेटा)	Ringworm Shrub (रिंगवर्म श्रब)	वद्रुधन

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
दारू हल्दी	Breberis Asiatica (ब्रेबरिस एशियाटिका)	Indian Opinthalmic Berberry (इंडियन ओपिन थेलनिक बरबेरी)	दारू हरिद्रा
दालचीनी	Cinnamomum Zeylanicum (सिनोमोमम जिलेनीकम)	Cinamon Bark (सिनामोन बार्क)	तम्क
दुद्धि (छोटी)	Euphorbia Thymifolia (यूफोरबिया थाईमीफोलिया)		लघु या क्षुद्र
दुद्धि बड़ी (लाल) अथवा (नागार्जुनी)	Euphorbia Pilulifera (यूफोरबिया पिलूलीफिरा)	Snake Weed (स्नेक वीड)	–
दुधेरी	Taraxacum Officinale (टाराक्साकम ऑफिसिनेल)	Dendelion (डंडेलियान)	दुग्धफेनी
दूधियालता	Oxystelma Esculentum (आक्सीस्टेलमा एस्कूलेंटम)	—	दुग्धिका
दूधिया हेमकंद	Maerua Arenaria (मेरूआ एरीनेरिया)	Earth Sugar Root (अर्थ सुगर रूट)	दुग्धकंद
दूब	Cynodon Dactylon (साइनोडोन डैक्टिलन)	Coach Grass (कौच ग्रास)	दूर्वा
देवदारू	Cedrus Deodar (सिड्रस देवदाव)	Deodar (देवदारू)	देवदार
धतूरा	Datura Stramonium (दतूरा स्ट्रेमोनियम)	Datura Thorn Apple (दतूरा अथवा थार्न एपिल)	धत्तूर
धनिया	Coriandrum Sativa (कोरिएंड्रम सेटाइवा)	Coriander (कोरिअंडर)	धानक
धमासा	Fagonia Cretica (फैगोनिया क्रैटिका)	Khorasari Thorn (खुरासान थोर्न)	धलवास
नकछिंकनी	Centipeda Orbicularis (सेंटी पीडा आरबिकुलारस)	Sneeze Weed (स्नीज वीड)	क्षबक (छींक लानेवाली)
नरक चूर	Zingiber Zerumbet (जिंजिवर झेरंबेट)	Curcuma (करक्युमा)	अवती
नरगिस	Narcissus Tazetta (नारसीसस टजट्टा)		–
नागकेसर (पीला)	Mesua Ferrea (मेसुआ फेरिया)	Cobras Saffron (कोबराज सफ्रान)	नागकेशर
नागकेसर (लाल)	Ochrocarpus Longifolious (आक्राकार्पस लांगिफीलियस)	Alexandrian Laurel (अलेक्झेड्रिंयन लारेल)	सुखुन्नाग
नागदमनी	Crinum Asiaticum (क्राइनम एशियाटिकम)	Poison Bulb (पोइजन बल्ब)	नागदमनी
नागरमोथा	Cyperus Scariosus (साइपरस स्केरिओसस)	Nut Grass (नट ग्रास)	मुस्तक
नारंगी (संतरा)	Citrus Vulgaris (साइट्रस वल्गेरिस)	Chinese Orange (चाइनीज ऑरेंज)	नारंगी

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
नारंगी कडु	Citrus Cigarabia (साइट्रस सिगाराबिया)	Bietter Orange or Seville (कडु नारंगी)	–
नारियल	Cocos Nucifera (कोकस म्युसिफेरा)	Coconut Palm (कोकोनट पाम)	नारिकेल अथवा स्कंद फल
नासपाती	Pyrus Communis (पायरस काम्युनिस)	Pear Tree (पियर ट्री)	अमृत फल
निर्मली	Strychnos Potatorum (स्ट्रिकनस पोटेटोरम)	Clearing Nut (क्लियरिंग नट)	कतक
निसोथ	Operculina Turpethum (ओपर कुलिना टर्पेथम)	Turpeth Root (टर्पेथ रूट)	निशोत्रा
नींबू (कागजी)	Citrus Medica-acida (साइट्रस मेडिका एसिडा)	Lime (लाईम)	निंबुक
नींबू (बिजौरा)	Citrus Medica-typica (साइट्रस मेडीका-टिपीका)	Lime (लाईम)	मातुतुंग
नींबू (जंबारी)	Citrus Medica-limonum (साइट्रस मेडीका लाईमोनम)	Lime or the Lemon of India (लाईम अथवा दी लेमन ऑफ इंडिया)	जंबीर
नींबू मीठा	Citrus Medica-limetta (साइट्रस मेडीका लिमेटा)	Sweet Lemon (स्वीट लेमन)	मिष्ट निंबुक
नींबू जंगली	Atalantia Monophylla (एटलेटिया मोनाफिला)	Wild Lime (वाइल्ड लाईम)	अटबी जंबीरी
नीम	Azadirachta Indica (अजाडिरेक्टा इंडिका)	Neem Tree (नीम ट्री)	निंब
नीम (महा) बकायन	Melia Azedarach (मेलिया एजेडरैक)	Persian Liliac (पार्शियन लिलियाक)	महा निंब
नीम मीठा	—	Curry Leaf Tree (करी लीफ ट्री)	मिष्ट निंब
नील	Indigofera (इंडिगोफेरा टिंक्टोरिया)	Indigo Tinctoria (इंडिगो टिंक्टोरिया)	नालिनी
नेत्रवाला (सुगंधवाला)	Pavonia Odorata (पवोनिया औडोरेटा)	—	बाल
पाषाड़ भेद	Sexifraga Ligulata (सेक्सीफ्रागा लिंगुलेटा)		पाषाण भेद
पतंग	Caesalpinia Sappan (सीसेल्पीनिया सेपन)	Sappan Wood (सेपन वुड)	पतंग
पत्थर धोड़ी	Linaria Ramosissima (लाइनेरिया रेमोसिसिमा)	Toad Flax (टोड फ्लेक्स)	–
देपमाख	Prunus Puddum (प्रूनस पुद्दुम)	Bird Cherry & Himalayan Cherry (बर्ड चेरी अथवा हिमालय चेरी)	पद्म गंध

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
अपोता	Strychnos Ignasia (स्ट्रिक्नोस इग्नेशिया)	St Ignatium Been (सेंट इग्नेशियम बीन)	–
परबल	Tricho Santhes Diocia (ट्राईको सेंथस डायोसिआ)	Sespadula (सेसपाडुला)	पटोल
पर्ण बीज (हिमसागर)	Bryophyllum Calycinum (ब्रायोफिलम कैलीसिनम)	—	–
नंदी वृक्ष पहाड़ी पीपल	Ficus Arnottiana (फाइक्स अरनोटियाना)	—	–
पाकर पीपल	Infectoria (इफाइक्स इन्फेक्टोरिया)	Peepal (फाइक्स)	प्लक्ष अथवा बट प्लब
पाठा (राजपाठा)	Cyclea Peltata (साइकिलिया पेल्टेटा)	Velvet Leaf (वेल्वेट लीफ)	पाठा
पाताल तुंबी	Ceropegia Bulbosa (सेरोपेजिया बल्बोसा)	—	–
पानलता	Derris Uliginosa (डैरिस यूलिजिनोसा)	Indian Tuber Root (इंडियन ट्यूबर रूट)	–
पारी	Pavetta Indica (पावेटा इंडिका)	Indian Pellet Shrub (इंडियन पेलेट श्रब)	पापटा अथवा तिर्यक फला
पामुख	Verbena Officinalis (वरबीना ऑफिसिनेलिस)	Columbina (कोलुंबाइना)	–
पालक	Spinacia Oleracea (स्पाइनेसिया ऑलीरेसिया)	Spinage or Spinach (स्पाइनेज अथवा स्पिनाच)	पालक्वा
पिंडालु	Randia Uliginosa (रेडिया युलिगिनोसा)	—	पिंडालुक
पित्त पापडा नं. 1	Fumaria Parviflora (फ्युमेरिया पारवी फ्लोरा)	Common Fumitory (कॉमन फ्यूमिटरी)	पर्पट
पित्त पापडा नं. 2 अथवा दमन पापडा	Oldenlandia Corymbosa (ओल्डेनलंडिया कोरिम्बोसा)	Two Flowered Indian Madder (टू फ्लावर्ड इंडियन माडर)	क्षेत्र पर्पट
पित्त पापडा नं. 3 (पुनाका)	Glossocardia Linearifolia (ग्लासोकार्डिया लिनीएरी फोलिया)	Rock Anethum (राक ऐनथम)	पियारी
पिपर मिंट	Mentha Piperita (मेंथा पिपेरिटा)	March Mint or Papper Mint (मार्श मिंट अथवा पेपर मिंट)	–
पिप्पली	Piper Longum (पाइपर लोंगम)	Long Pepper (लांग पेप्पर)	पिप्पली
पियारागा (समीरी)	Thalictrum Foliolosum (थैलिक्ट्रम फोलियोलोसम)	Gold Thread (गोल्ड थ्रेड)	पीत रंगा
पिस्ता	Pistacia Vera (पिस्टॉसिया वीरा)	Pistachio (पिस्टेशियो)	निकोचक

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
पवित्र पीपल वृक्ष	Ficus Religiosa (फाइकस रिलीजियोसा)	Sacred Fig (सेक्रेड फिग)	अश्वत्थ अथवा पिप्पल
पीपल पाकर	Ficus Rumphi (फाइकस रमफी)	—	नंदी वृक्ष
पीली कपास	Cochlospermum Gossypium (कोक्लोस्पर्मम गोसीपियम)	Golden Silk Cotton (गोल्डन सिल्क कॉटन)	पीत कार्पास
पीलु छोटा	Selbedora Parsica (सैलबेडोरा परसीका)	Tooth Brush Tree (टूथ ब्रुश ट्री)	पीलु गुडफल
पुदीना	Mentha Sativa (मेंथा सेटाइवा)	Spear Mint (स्पिअर मिंट)	पूतिहा
पुनर्नवा लाल	Boehavia Diffusa (बोहेविया डिफ्यूसा)	Hag Weed (हॉग वीड)	शिलाटिका
पुनर्नवा (श्वेत)	Trianthema Portulacastrum (ट्रायेंथिमा पोर्टयूलेक्स्ट्रम)	Spreading Hog Weed (स्प्रेडिंग हॉग बीड)	वर्षाभू
प्याज	Allium Ceppa (ऐनियम सिप्पा)	Onion (अनियन)	–
प्रेम पुष्पी	Passiflora Incarnata (पेसीफ्लोरा एन्कारनेटा)	Passian Flower (पैशियन फ्लावर)	प्रेम पुष्पी
फंजी	Rivea Ornata (रिविया ऑर्नेटा)	Good Night Flowers Creeper (गुड नाइट फ्लावर्स क्रीपर)	फंजिका
फरहद	Arythrina Indica (एरिथ्रिना इंडिका)	Indian Coral Tree (इंडियन कोरेल ट्री)	पारिभद्र
फरास	Tamarix Articulata (टमरिक्स आरटिक्युलेटा)	—	फरास
फालसा	Grewia Asiatica (ग्रीविया एशियाटिका)	Asiatic Greevia (एशियाटिक ग्रीविच)	परुषक
फूट	Cucumis Momordica (कुकुमिस मोमोरडिका)	Cucumber Momordica (कुकुंबर मोमोर्डिका)	उर्चास
बच नं. 1	Acorus Calamus (एकोरस कैलेमस)	Sweet Flag (स्वीट फ्लेग)	बचा
बच (श्वेत) नं. 2	Paris Polyphylla (पेरिस पोलीफाइला)	—	शुक्ल बचा
बच सुगंधा (चंद मूला)	Kaempferia Galanga (केम्फेरिया गेलैंगा)	—	सुगंध बचा
बछनाग (श्वेत या दूधिया)	Aconitum Napellus (एकोनाइटम नेपिलस)	Monk's Hood (मोंक्स हुड)	शृंगी विष
बडहर	Artocarpus Lakoocha (आर्टोकार्पस लकुचा)	Monkey Fruit (मंकी फ्रूट)	लकुच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
बथुआ	Chenopodium Alba (चीनोपोडियम एल्बम)	White Goose Foot (ह्वाइट गूज फुट)	वास्तूक (जो लोगों में जीवन संचार करे)
वन उड़द	Teramnus Labialis (टिरेमनस लेबियेलिस)	—	माषपर्णी
वन गोखरू	Tribulus Alatus (ट्रब्युलस एलेटस)	Winged Caltrops (विंग्ड कालट्रोप्स)	वन गोखरू
वनफसा	Viola Odorata (वायला ओडोरेटा)	Wild or Sweet Violet (वाइल्ड या स्वी ब्योलेट)	नील पुष्पा
वन लौंग	Jassiaea Suffruticosa (जूसिया सफ्रू टिकोसा)	Primerose Willow or Water Clove (प्राइमरोज विली अथवा वाटर क्लोव)	भूलवङ्ग
बबूल	Acacia Arabica (एकेशिया अरेबिका)	Acacia Tree (एकेसिया ट्री)	बबूल
बरगद	Ficus Bengalensis (फाइकस बंगालेंसिस)	Banyan Tree (बैनयिन ट्री)	वट
वरना	Crataeva Religiosa (क्रेटेवा रिलीजियोसा)	Three Leaved Caper & Holy Garlic Pear (थ्री लीव्ड केपर अथवा होली गार्लिक पियर)	वरुण
बरमूला	Callicarpa Arborea (केलिकार्पा आर्बोरिया)	—	बरमूला
बलूत	Quercus Incana (क्येकस इन्काना)	Kumaon Oak (कुमाऊँ ओक)	–
बसंत	Hypericum Perforatum (हाइपेरिकम परफोरटम)	Hypericon (हाइपेरिकन)	–
बेटडा	Herminalia Blerica (हरमीनेलिया ब्लेरीका)	Bedda Nuts (बहेड़ा नट्स)	विभीतक
बांदा बड़ा	Lorenthus Longiflorus (लोरेंथस लोंजीफ्लोरस)	Parasite of the Tree (पैरासाइट ऑफ द ट्री)	बंदाक
बांदा छोटा	Lorenthus Globusus (लोरेंथस ग्लाबुसस)	—	–
बांस	Bambusa Arundinacea (बेंबूसा अरेंडीनेसिया)	Bamboo (बांबू)	
बाकला	Phaseolus Vulgaris (फेसियोलस वुल्गेरिस)	Common French or Kidney Bean (कॉमन फ्रेंच या किडनी बीन)	–
बाजरा	Pennisetam Typhoideum (पेनीसिटाम टाइफाइडियम)	Spiked or Pearl Millet (स्पाइक्ड या पर्ल मिलेट)	बर्जटी
बादाम मीठा	Prunus Amygdalus (प्रूनस एमिगडेलस)	Sweet Almond (स्वीट आमंड)	बाताद (मधुर)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
बादाम देशी	Terminalia Catappa (टरमीनेलिया केटेपा)	Indian Almond (इंडियन आमंड)	–
बादाबर्द	Volutarella Divaricata (वाल्युटेरेला डायवारिकटा)	Bank Thistle (बैंक थिसिल)	भूदंडी
बादियान खताई (सटार एनिसी)	Illicium Verum (इलिसियम बेरम)	Star Anisae	–
बाबूना	Matricaria Chamomilla (मेट्रिकेरिया केमोमिला)	Charmomite Flower (केमोमाइल फ्लावर)	–
वाय विडंग	Embalia Ribes (इमेलिया रिब्स)	Babreng (बब्रेंग)	विडंग
वराहीकंद	Dioscorea Bulbifera (डायोस्कोरिया बल्बीफेरा)	—	बाराहीकंद
बावची	Psoralea Corylifolia (सोरेलिया कोरलीफोलिया)	Esculant Fiacurtia (एस्कुलेंट फायकर्टिया)	बाकुची
बिछुआ	Martynia Diandra (मार्टीनिया डिएनड्रा)	Tigers Claw (टाइगर्स क्ला)	बघनखा
बिदारीकंद	Puereria Tuberosa (पुरेरिया ट्यूबेरोसा)	—	स्वादुकंदा
विधारा नं. 1	Rourea Santoloides (रोरिया सेंटोकोयडीज)	—	वृद्धदारुक
विधारा नं. 2 अथवा समुद्रशोष	Argyreia Speciosa (आर्जिरिया स्पीसीयोसा)	Elephant Creeper (एलीफेंट क्रीपर)	वृद्धदारू
बिसौरा	Aspidium Felix (एस्पीडियम फिलिक्स मास)	Male Fern (मेल फर्न)	–
विहीदाना	Cydonia Vulgaris (साइडोनिया वुल्गेरिस)	Quince (क्विंस)	अमृतफल
बेंत	Calamus Rotang (वैलेमस रोटंग)	Cane (केन)	बेतस
बेंत-सादा	Salix Alba (सेनिक्स ऐल्बा)	White Willow (ह्वाइट विलो)	बेतस
दमुश्क	Salix Caprea (सेलियस केप्रिया)	Broad Leaved Willow (ब्राड लीव्ड विलो)	वेटास
बोदाना	Berberis Vulgaris (बरबेरिस वुल्गेरिस)	True Barberry (टु बारबरी)	दारुह
बेबीना	Mussaendra Frandosa (मुर्सीड्रा फ्रांडोसा)	White Calycine (ह्वाइट केलिसीन)	नागबल्ली
बेर	Zizyphus Jujuba (जीजीफस जुजुबा)	Indian Jujube (इंडियन जुजुबे)	बदरीकोल
बेल	Aegle Marmelos (एगल मारमेलोस)	Beel (बेल)	बिल्व
बेला (मोगरा)	Jasminum Sambac (जेस्मिनम संबक)	Arabian Jasmine (अरेबियन जेसमिन)	मल्लिका

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
बेलाडोना	Atropa Belladona (एट्रोपा बेलाडोना)	—	–
बैंगन	Solanum Melongena (सोलेनम मेलोनजिना)	Brinjal (ब्रिंजल)	वृताक्त
ब्रह्मकमल अथवा सूरजकौल	Saussurea Obvallata (सोस्युरिया आबर्वलाटा)	—	ब्रह्मकमल
ब्रह्मदंडी	Tricholepsis Glaberrima (ट्रायकोलेप्सि ग्लेबेरिमा)	Thistle (थिसल)	ब्रह्मदंडी
ब्रह्मी	Hydrocotyle Asiatica (हाइड्रोकोटाइल एशियाटिक)	Indian Penny Wort (इंडियन पैनीवर्ट)	मंडूकपर्णी
भाँग या विजया बूटी	Cannabis Indica (केनाबिस इंडिका)	Indian Hemp (इंडियन हेम्प)	भंगा
भाँगरा (श्वेत)	Eclipta Alba (एकलिप्टा ऐल्बा)	—	श्वेत भृङ्गराज
भिंडी	Hibiscus Esculentus (हिबिस्कस एस्क्यूलेंटस)	Lady's Finger (लेडीज फिंगर)	भेंडा
भिलावा	Semicarpus Anacardium (सेमीकारपस एनाकारडियम)	Darking Nut Tree (डारकिंग नट ट्री)	भल्लातग
भोजपत्र	Betula Bhojapatra (बेटुला भोजपत्र)	—	भूर्जपत्र
मक्का	Zea Mays (जी मेस)	Indian Corn Maize (इंडियन कोर्न मेज)	मकाय
मकोय	Solanum Nigrum (सोलेनम नाइग्रम)	—	काकमाची
मखाना	Euryl Ferox (ड्यूरियल फोरेक्स)	Fox Nut (फोक्स नट)	–
मजीत	Rubia Cordifolia (रूबिया कोर्डीफोलिया)	Heart Leaved Maddar (हार्ट लीव्ड मैडर)	मंजिष्ठा
मटर	Pisum Sativum (पीसम सेटाइवम)	Garden Pea (गार्डन पी)	वर्तुल
ममीरा	Captis Teeta (केप्टिस टीटा)	Captis Gold Thread (केप्टिस गोल्ड थ्रेड)	महातिक्ता
मोरशिखा	Celosia Cristata (सिलोसिया क्रिस्टेटा)	Cock's Comb (कोक्स कोम्ब)	मयूरशिखा
मसूर	Lens Esculenta (लेंस एस्कुलेंटा)	Lentle (लेंटल)	मसूर
महुआ	Bassia Latifolia (बेसिया लेटीफोलिया)	—	मधूक
माजूफल	Quercus Infectoria (क्वेर्कस इन्फेक्टोरिया)	Oak Galls (ओक गाल्स)	मायाफल
मस्तंगी	Pistacia Lentiscus (पिस्टेसिया लेंटिस्कस)	—	

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम हिंदी	नाम लैटिन	नाम सामान्य अंग्रेजी	आयुर्वेदिक नाम तथा अन्य
मार्धवीलता	Hiptage Bengalensis (हिप्टेज बेंगालेंसिस)	Clustered Hiptage (क्लस्टर्ड हिप्टेज)	माधवी
मालतो	Aganosma Dichotoma (एगानोस्मा डिकोटोमा)	—	मालती
कांगनी	Celastrus Peniculatus (सिलेस्ट्रस पेनीकुलेटस)	Staff Tree (स्टॉफ ट्री)	ज्योतिषलता
मिरची लाल	Capsicum Frutescens (केप्सीकम फ्रूटेसेंस)	Red Chilies (रेड चिलीज)	मिरचीफला
Liquorica (लिकोरिया)	Glycyrrhiza Glabra (ग्लिसराइजा ग्लैब्रा)		यष्टि मधु
मूँज	Saccharum Sara Roxb (सेक्रम सारा रोक्सव)	Saccharum Munja (सेक्रम मुज)	मुन्ज
मूँग	Phaseolus Mungo (फसियोलस मूँगो)	Green Gram (ग्रीन ग्राम)	मुँग
मूँगफली	Arachis Hypogaea (एरेकिस हाइपोगिया)	Peanut or Ground Nut (पीनट या ग्राउंड नट)	–
मूली	Raphanus Sativa (रेफेंस सेटाइवा)	Raddish (रेडिस)	मूलक
मूर्बा	Bauhinia Vahulii (बोहेनिया वाहुली)	Enormous Camels Foot Climber (इनोरमस कैमल्स फुट क्लाइंबर)	दृढ़ सूत्रिका
मूसली सफेद	Asparagus Abscendens (एस्पेरेगस ऐबसेडेंस)	—	मूसली सफेद
मूसला स्याह	Curculigo Orchiodis (कुरकुलीगो आरकियोडीज)	Black Musle (ब्लैक मसल)	ताल मूली
मेथी	Trigonella Foenem Graecum (ट्रिगोनेला फोइनम ग्रीकम)	Fenu Greek (फेनू ग्रीक)	मेथिका
मेहँदी (हिना)	Lawsonia Inermis (लाउसोनिया इनूमिस)	Hesnna (हेसना)	रक्त
विलायती मेहँदी	Myrtus Communis (मिर्टस कम्युनिस)	Common Myrtle (कॉमन मार्टल)	–
मोरबा	Momordica Balsamina (मामोर्डिका बालसेमिना)	Balsamina (बालसेमिना)	
मोंठ	Phasceolus Aconiti Folius (फोसियोलस एकोनिटिफोलयस)	Kidney Been (किडनी बीन)	–
मोथा (नागर)	Cyperus Scariosus (साइपिरस स्केरियोसस)	—	मकुष्ठ नायर मुस्तक
मोरपंखी	Actinopteris Dichotoma (एक्टीनोप्टेरिस डाइकोटोमा)	Peacock's Tail (पीकॉक टेल)	मयूर शिखा
मोलसिरी	Mimusops Elengi (मिमुसोप्स इलेंजाई)	Surinam Medalcar (सुरीनाम मेडलकर)	बकुल

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Sign & Symbols

चिन्ह एवं प्रतीक

Astrological

♒ Aquarius. कुंभ राशि.
♈ Aries. मेष राशि.
☊ ascending node. आरोही पर्व.
⚷ asteroid. मंगल तथा बृहस्पति के मध्य में, स्थित उपग्रह.
♋ Cancer. कर्क राशि.
♑ Capricornus. मकर राशि.
☌ conjunction. संधि.
° degrees. अंश.
☋ descending node. अवरोही पर्व.
♁ Earth. पृथ्वी.
○ Full Moon. पूर्ण चंद्र.
♊ Gemini. मिथुन राशि.
♃ Jupiter. बृहस्पति गृह या राशि.
♌ Leo. सिंह राशि.
♎ Libra. तुला राशि.
♂ Mars. मंगल ग्रह या राशि.
☿ Mercury. बुध ग्रह या राशि.
′ minutes. कला.
☽ Moon's first quarter. चंद्रकला का प्रथम चतुर्थांश.
☾ Moon's last quarter. चंद्रकला का अंतिम चतुर्थांश.
♆ Neptune. वरुण.
● New Moon. नवीन चंद्र.
☍ opposition. विरोध.
♓ Pisces. मीन राशि.
♐ Sagittarius. धनु राशि.
♄ Saturn. शनि ग्रह या राशि.
♏ Scorpio. वृश्चिक राशि.
″ Seconds. विकला.
☉ Sun. सूर्य ग्रह या राशि.
♉ Taurus. वृष राशि.
♅ Uranus. अरुण.
♀ Venus. शुक्र ग्रह या राशि.
♍ Virgo. कन्या राशि.

Commercial

a/c account. लेखा.
A/c account of. के कारण या लेखा में.
A/S account sales. लेखा बिक्री.
a/d after date. उत्तर तिथि या मिति.
@ at the rate of. दर से.
B/E Bill of Exchange. हुंडी या विनिमय पत्रक.
B/L Bill of Lading. द्रव्य संक्रांत प्राप्ति स्वीकार पत्र या द्रव्य-भारन पत्रक.
B/S Bill of Sale. बिक्री पत्रक.
c/o care of. द्वारा, मार्फत.
C/. coupon. चिट, पुर्जा.
C.O.D. Cash on delivery. पाने पर नगद भुगतान.
d/a days after acceptance. स्वीकृति के उपरांत दिन.
d/d day's date. दिन की तिथि.
d/s day's sight. दिवस या तिथि दर्शन.
$ dollars. अमरीकी चाँदी के सिक्के = 4 शि. 2 पें.
′ feet. फीट.
f.o.b. free on board. जहाज़ द्वारा शुल्क मुक्त.
f.o.r. free on rail. रेल द्वारा शुल्क मुक्त.
″ inches. इंच.
J/A Joint account. संयुक्त लेखा.
L/c Letter of Credit. ऋणपत्र.
Mc metallic currency. धातु के सिक्के.
m/d month's date. महीने की तिथि.
m/s month's sight. महीने का दर्शन.
No. number. संख्या.
o/a on account. लेखा के मद में.
% per cent. प्रतिशत.
‰ per thousand. प्रतिसहस्र.
£ pound sterling. अंग्रेजी पाउंड या स्वर्ण-मुद्रा.
P/N Promissory Note. प्रतिज्ञा-पत्र, रुक्का, तमस्सुक.
R/T Radio telephony. बेतार के तार द्वारा वार्तालाप की प्रणाली.
W/T Wireless telegraphy. बेतार के तार द्वारा सूचना भेजने की प्रणाली.

Mathematical

+ sum. (plus). धन.
∠ angle. कोण.
∡ angles. कोणों.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

because. चूँकि, यतः.
⊙ circle. वृत्त.
circumference. परिधि.
∛ cube root. घनमूल.
~ difference. अंतर.
÷ division, divided by. भाग, भागे.
≈ double integration. द्विगुण पूर्णाङ्किकरण.
∜ eighth root. अष्टममूल.
= equal to. तुल्य या समान.
≦ less than or equal to. लघुतर या तुल्य.
≧ greater than or equal to. अधिकतर या तुल्य.
Δ finite difference. सीमित अंतर.
∜ fifth root. पंचम मूल.
′ foot. फुट.
f function. कार्य, अनुष्ठान.
g gravity. आकर्षण.
G gravitational constant. आकर्षी अंचल.
> greater than. अधिकतर या दीर्घतर.
< less than. न्यूनतर या लघुतर.
≶ lesser or greater than. लघुतर या दीर्घतर.
≷ greater or less than. दीर्घतर या लघुतर.
≡ identically equal to. सर्वाङ्गसम.
″ inch. इंच.
∞ infinity. अनंत.
∫ integral. पूर्णाङ्कीय.
: is to. अनुपात.
≦ equal to or less than. तुल्य या न्यूनतर.
≧ equal to or greater than. तुल्य या अधिकतर.
∓ minus or plus. ऋण या धन.
× multiplication, multiplied by. गुणन, गुणे.
∜ ninth root. नवम मूल.
∜ nth root. अनिश्चित संख्यक मूल.
≮ not less than. लघुतर या न्यूनतर नहीं या अधिकतर.
≯ not greater than. अधिकतर या दीर्घतर नहीं या लघुतर.
≠ not equal to. तुल्य नहीं, असमान.
∦ not parallel to. असामानांतर.
∥ parallel. समानांतर.
parallelogram. समानांतर चतुर्भुज.
⊥ perpendicular. लंब.
∝ proportional to. अनुपाती.
± plus or minus. धन या ऋण.
∜ qth root. क्यूवाँ मूल.
▭ rectangle. आयत.
∟ right angle. समकोण.
√ root. मूल.
∫ single integration. एक पूर्णाङ्कन.
sixth root. षष्ठ मूल.
∷ so is. यथा क्रमिते.
square. वर्ग.
- subtraction (minus). ऋणकरण.
Σ addition. योगकरण.
∴ therefore. अतः, इसलिए.
δ variation. परिणमन.
∝ varies as. परिणमिते.
⊤ vertical. लंब, खड़ा.

☞ Typographic ☜

Proof-Reading Abbreviations & Signs.

alt. Alter. स्थानांतरित करें.
C. or *Cap.* Use capital letters. बड़े अक्षरों का प्रयोग करें.
d. Delete. मिटा या हटा दीजिए.
d.l. Take out the lead. लेड हटाइए.
D.Pr. Put darker print. अधिक काला अक्षर छापिए.
Ital. Print in italics. टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में छापें.
L. Less spacing. दो शब्दों के बीच का स्थान कम करें.
L.c. (lower casing) use small letters. छोटे अक्षरों का प्रयोग करें.
lead in. Put a lead between two lines. दो पंक्तियों के बीच में लेड बैठाएँ.
L.Pr. Put lighter print. हलके काले अक्षरों में छापें.
N.P. Begin a new paragraph. नया पैराग्राफ, नया अनुच्छेद आरंभ करें.
Rom. Replace with Roman Type. रोमन अक्षरों में छापें.
run on. Put in the same line. एक ही पंक्ति में सजाएँ.
S.cap. Small capitals. छोटे अक्षरों में छापें.
Stet. Put the lines though penned through. कटे शब्दों को ज्यों का त्यों छापें.
tr. Transpose. स्थानांतरित करें.
w.f. Wrong fount or font. अक्षरों में भिन्नता आ गई है.
´ acute accent. तीव्र बल दें.
= Aline. ऊँचे-नीचे अक्षरों की पंक्ति ठीक करें.
& ampersand. 'एवं' का संकेत दें.
' apostrophe. लुप्ताक्षर संकेत दें.
* asterisk. ताराङ्कित करें.
⁂ asterism. ताराङ्कपुंज दें.
{ } braces. संयुक्त करें या घन कोष्ठक दें.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

() brackets (small) or single. लघु कोष्ठक या बंधनी दें.

[] (big) brackets. दीर्घ या गुरु कोष्ठक दें.

[Carry a word further to the left. बाईं ओर खिसकाएँ.

] Carry a word further to the right. दाईं ओर खिसकाएँ.

^ caret. छूटा या छूटे अक्षर या शब्द जोड़ें.

-- circumflex. दीर्घोच्चारक चिह्न दें.

× Change the broken type. टूटे हुए अक्षर बदलें.

⊂ close up. दूर-दूर छपे अक्षरों को जोड़ें.

: colon. : चिह्न दें.

:- colon and dash. :– चिह्न दें.

, comma. , चिह्न दें.

† dagger. † चिह्न दें.

— dash. – चिह्न दें.

⌐ Elevate a word or letter. शब्द या अक्षर ऊपर उठाएँ.

⌐ Depress a word or letter. शब्द या अक्षर नीचे खिसकाएँ.

‡ Double dagger. चिह्न दें.

&c. et cetera. संक्षिप्त 'एवं' तथा इत्यादि सूचक संकेत छापें.

! exclamation. विस्मय-सूचक चिह्न.

⊙ full stop. पूर्णविराम का चिह्न दें.

- hyphen. (योजक) - चिह्न दें.

☞ index. हाथ का चिह्न (संकेतक) चिह्न दें.

? interrogation. ? (प्रश्नवाचक) चिह्न दें.

¯ macron. दीर्घ स्वर सूचक चिह्न दें.

¶ Paragraph. अनुच्छेद आरंभ करें.

per. (प्रतिसूचक) चिह्न दें.

" " quotation marks. " " (उद्धरण-सूचक) चिह्न दें.

§ section. (परिच्छेद-सूचक) चिह्न दें.

; semicolon. ; चिह्न दें.

⊥ Space appears improperly. स्थानांतर ठीक नहीं.

space out. सटे शब्दों को पृथक् करें.

~ tilde. (प्रभेद-सूचक) चिह्न दें.

● ● ●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भोजन का प्रोटीन मूल्य

खाद्य पदार्थ	जैविक मूल्य	प्रोटीन-क्षमता अनुपात
चावल	68	2.2
गेहूँ	65	1.5
मक्का	59	1.2
चना	68	1.7
लाल चना	57	1.5
मूँगफली	55	1.7
तेल	62	1.8
अंडा	94	3.9
दूध	84	3.1
मांस	74	2.3
मछली	76	3.5

● ● ●

संतुलित आहार का संघटन

शाकाहारी मात्रा खाद्य पदार्थ (ग्राम)	मांसाहारी (जी)		शाकाहारी कैलोरी प्रोटीन (जी)		मांसाहारी कैलोरी प्रोटीन (जी)	
अनाज	325	325	1150	29	1150	29
दाल व गिरी	100	50	320	22	160	11
दूध	200 (मि.ली.)	100 (मि.ली.)	235	8	117	4
मूल वाली सब्जियाँ	150	150	145	2	145	2
पत्तीवाली सब्जियाँ	100	100	50	3	50	3
अन्य सब्जियाँ	100	100	—	—	—	—
फल	100	100	80	—	80	—
अंडा	(एक)	50	—	—	85	6
मांस/मछली	—	100	—	—	195	18
वसा	50	50	450	—	450	—
गुड़	30	30	120	—	120	—
योग			**2550**	**64**	**2552**	**73**

● ● ●

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

List of Corresponding Roman & Hindu-Arabic Numerals

Roman	*Hindu-Arabic*	*Roman*	*Hindu-Arabic*
I	1	XL	40
II	2	L	50
III	3	LV	55
IV	4	LX	60
V	5	LXV	65
VI	6	LXX	70
VII	7	LXXX	80
VIII	8	XC	90
IX	9	XCV	95
X	10	XCVIII	98
XI	11	IC	99
XII	12	C	100
XIII	13	CC	200
XIV	14	CD	400
XV	15	D	500
XVI	16	DC	600
XVII	17	DCC	700
XVIII	18	DCCC	800
XIX	19	CM	900
XX	20	M	1000
XXI	21	MC	1100
XXII	22	MCD	1400
XXIII	23	MDC	1600
XXIV	24	MDCLXVII	1667
XXV	25	MDCCCLXXXVI	1886
XXVI	26	MDCCCXC	1890
XXVII	27	MCM	1900
XXVIII	28	MCMLXXV	1975
XXIX	29	MCMLXXXV	1985
XXX	30	MM	2000
XXXI	31	X	10000
XXXV	35	M	1000000

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिकित्सा विज्ञान (आयुर्विज्ञान) की प्रमुख शाखाओं के अंग्रेज़ी एवं हिंदी में नाम

1.	Medicine	काय चिकित्सा
2.	Biochemistry	जीव रसायन
3.	Dermatology	त्वचा विज्ञान
4.	Veneriology	रति रोग विज्ञान
5.	Ophthalmology	नेत्र विज्ञान
6.	Obstetrics	प्रसूति विज्ञान
7.	Gynaecology	स्त्री रोग विज्ञान
8.	Nursing	परिचर्या
9.	Paediatrics	बाल चिकित्सा विज्ञान
10.	Pharmacology	भेषज गुण विज्ञान; औषधि विज्ञान
11.	Pharmaceutical Science	भेषज विज्ञान
12.	Psychiatry	मनोविकार विज्ञान
13.	Orthopaedics	विकलांग विज्ञान
14.	Radiology	विकिरण विज्ञान
15.	Pathology	विकृति विज्ञान (रोग विज्ञान) , विकार विज्ञान
16.	Microbiology	सूक्ष्म जीवन विज्ञान
17.	Physiology	कायकी; शरीर क्रिया विज्ञान
18.	Anatomy	शरीर रचना विज्ञान
19.	Surgery	सर्जरी, शल्य विज्ञान
20.	Anaesthesiology	संवेदना हरण विज्ञान
21.	Social and Preventive Medicine	सामाजिक एवं रोधक काय चिकित्सा विज्ञान
22.	Anthropology	नृ विज्ञान (मानव विज्ञान)

तापक्रम (Temperature) और नब्ज (Pulse) संबंधी तालिका

तापक्रम	*नब्ज*
98°F	60 प्रत्येक मिनट
99°F	70 " "
100°F	80 " "
101°F	90 " "
102°F	100 " "
103°F	110 " "
104°F	120 " "
105°F	130 " "
106°F	140 " "

सामान्य तापक्रम 98.4°F पर नब्ज 60 और 70 के बीच प्रत्येक मिनट में चलती है और मोटे तौर पर सामान्य तापक्रम से प्रत्येक 1° तापक्रम ऊँचा होने पर नब्ज लगभग 8 से 10 बार अधिक होती जाती है।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

List of Important Geographical Names

African ऐफ़रीकन *a.* अफ्रीका का; *n.* अफ्रीका का निवासी.

Algeria ऐल्'जिअरिअ *n.* अल्जीरिया.

America अ'मैरिक्आ *n.* अमरीका महाद्वीप; **American** अ'मैरिकन *a.* अमरीका का; *n.* अमरीका का निवासी; **American Indian** *n.* अमरीका का मूल निवासी.

Amsterdam ऐम्स्टर'डैम *n.* हालैंड का प्रमुख नगर, एम्स्टर्डेम.

Arabia अ'रेबिअ *n.* अरब प्रदेश, जिसमें सऊदी अरब, उत्तर यमन, ओमान, बहरीन, कतार, कुवैत और संयुक्त अरब अमीरात शामिल हैं.

Asian एशन *a.* एशिया का; *n.* एशिया का नागरिक.

Australia ऑ'स्ट्रेलिअ *n.* आस्ट्रेलिया; **Australian** *a.* आस्ट्रेलिया का; *n.* आस्ट्रेलिया का नागरिक.

Austria ऑस्ट्रिअ *a.* आस्ट्रिया; **Austrian** *a.* आस्ट्रिया का; *n.* आस्ट्रिया का नागरिक.

Beijing बेजिंग *n.* चीन की राजधानी जिसे पीकिंग भी कहा जाता था.

Belfast बेल्फ़ास्ट *n.* उत्तरी आयरलैंड की राजधानी बेल्फ़ास्ट.

Belgian बेल्जन *a.* बैल्जियम का; *n.* बेल्जियम का नागरिक.

Belgium बैल्जम *n.* बेल्जियम.

Berlin बर्'लिन *n.* जर्मनी का प्रमुख नगर बर्लिन.

Bonn बॉन *n.* जर्मनी का एक प्रमुख नगर, बॉन.

Brazil ब्र'ज़िल *n.* ब्राज़ील.

Cardiff कार्डिफ *n.* वेल्ज की राजधानी कार्डिफ़.

Czechoslovakia चैकोस्लो'वैकिअ *n.* चैकोस्लोवाकिया.

Danish डेनिश *a.* डेन्मार्क का; *n.* डेन्मार्क की भाषा.

Denmark डेन्मार्क *n.* डेन्मार्क.

Dublin डब्लिन *n.* आयरलैंड की राजधानी, डबलिन.

Edinburgh ऐडिन्बर्अ *n.* स्काटलैंड की राजधानी, एडिनबरा.

England इंग्लंड *n.* इंगलैंड.

Europe युअरप *n.* योरुप.

France फ्रांस *n.* फ्रांस.

Himalayas हिम'लेअज़, हिम्'लियाज़ *n.* हिमालय पर्वतमाला.

Holland हॉलंड *n.* हालैंड जिसे नीदरलैंड्स भी कहते हैं.

Hungary हंगरि *n.* हंगरी.

Iceland आइसलंड *n.* आइसलैंड.

Iran इ'रान *n.* ईरान.

Iraq इ'राक *n.* इराक.

Ireland आइअरलंड *n.* आयरलैंड.

Irish आइरिश *a.* आयरलैंड का; *n.* आयरलैंड का नागरिक.

Israel इज़्रेअल *n.* इज़राइल.

Italy इटलि *n.* इटली.

Japan ज'पैन *n.* जापान.

Jordan जॉर्डन *n.* जार्डन.

Kuwait कु'वेत *n.* कुवैत.

Lebanon लैबनन *n.* लेबनान.

Lisbon लिज़्बन *n.* लिसबन.

London लण्डन *n.* लंदन.

Luxembourgh लक्सम्बर्ग *n.* लक्सम्बर्ग.

Madrid म'ड्रिड *n.* स्पेन की राजधानी, मेडरिड.

Mexico मैक्सि'का *n.* मैक्सिको.

Moscow मॉस्को *n.* मास्को.

Myanmar म्यान्मार *n.* बर्मा का नया नाम, म्यान्मार.

New Delhi न्यू 'डैलि *n.* नई दिल्ली.

New York न्यू 'यार्क *n.* अमरीका का प्रमुख नगर, न्यूयार्क.

New Zealand न्यू 'ज़ीलैंड *n.* न्यूज़ीलैंड.

North American नार्थ अ'मैरिकन *a.* उत्तरी अमरीका का; *n.* उत्तरी अमरीका का नागरिक.

Norway नार्वे *n.* नार्वे.

Paris पैरिस *n.* फ्रांस की राजधानी, पेरिस.

Peking पी'किंग *n.* चीन की राजधानी, पीकिंग जिसका नाम अब बेजिंग है.

Peru प'रु *n.* दक्षिण अमरीका का देश, पेरु.

Poland पोलंड *n.* पोलैंड.

Polish पोलिश *a.* पोलैंड का; *n.* पोलैंड की भाषा.

Prague प्राग *n.* चेकोस्लोवाकिया की राजधानी, प्राग.

Saudi Arabia सौदि अ'रेबिअ *n.* सऊदी अरब.

Spain स्पेन *n.* स्पेन.

Sweden स्वीड्न *n.* स्वीडन.

Swiss स्विस *a.* स्विट्ज़रलैंड का; *n.* स्विटज़रलैंड का नागरिक.

137476

Switzerland स्विट्सरलंड *n.* स्विटज़रलैंड.

Syria सिरिअ *n.* सीरिया.

Tokyo टोक्यो, टोकियो *n.* जापान की राजधानी, टोकियो.

UK यू.के. *n.* **United Kingdom** का संक्षेप.

Washington वाशिंग्टन *n.* संयुक्त राज्य अमरीका की राजधानी, वाशिंगटन.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त लेख

1.
2.
3.
4.
5.
6.
7.
8.
9
10
11.
12.
13
14
15
16
17
18
1
2
3
4

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधा पब्लिकेशन्स
4378/4B, अंसारी रोड़, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 23261839, 23254306

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar